CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पवित्र बाइबिल

JUBILEE EDITION

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पवित्र बाइबिल

[मूल इब्रानी - अरामी और यूनानी भाषाओं से अनुवाद]

बाइबिल सोसाइटी ऑफ इंडिया
२०६ महात्मा गांधी रोड
बेंगलोर - ५६० ००१

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

THE HOLY BIBLE

(With Deuterocanonical Books)

Hindi C.L. Inter-confessional

10P 0001/1999-2000/52M PL
ISBN 81-221-1843-7

© Catholic Hindi Sahitya Samithi of the Bishops of North India

and

United Bible Societies

© DC : *Catholic Hindi Sahitya Samithi of the Bishops of North India*

COPYRIGHT NOTICE

Written permission must be obtained from the United Bible Societies and Catholic Hindi Sahitya Samithi of the Bishops of North India as joint copy right holders, prior to the reproduction of any part of this publication in any form or by any means, electronic or mechanical, including photo-copying, recording, or any information storage and retrieval system.

Imprimatur:

+ Patrick D'Souza
Bishop of Varanasi
Catholic Hindi Sahitya Samithi of the Bishops of North India
1999

Published by:

Catholic Hindi Sahitya Samithi of the Bishops of North India
32 Thornhill Road, Allahabad - 211 002, U.P.

Printed in collaboration with Wet Bible project
Potta, Chalakudy, Kerala.

Printed in India by Photo offset process at
Swapna Printing works pvt. Ltd., Calcutta-9

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पवित्र बाइबिल

भूमिका

सम्पूर्ण पवित्र बाइबिल का प्रथम हिन्दी अनुवाद श्री रामपुर बैपटिस्ट प्रेस से सन् 1818 में प्रकाशित हुआ था और अनुवाद कार्य की चार पीढ़ियों के बाद भारत की बाइबिल सोसाइटी की ओर से सन् 1978 में एक और नया अनुवाद प्रकाश में आया। उस आधुनिक अनुवाद के अनुवादक थे डा. जॉन हेनरी आनन्द तथा श्रद्धेय येसुदास तिवारी। काथलिक कलीसिया के हिन्दी पाठक प्राय: फ़ादर साह, फादर वाल्द तथा फादर डा. कामिल बुल्के के अनुवाद प्रयुक्त करते आ रहे हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि हिन्दी बाइबिल की आयु प्राय: दो शताब्दी हो रही है। इन दो सौ वर्षों में हिन्दी भाषा का रूप भी विकसित हुआ है। सन् 1818 में हिन्दी केवल क्षेत्रीय भाषा थी, अब वह समस्त देश की राष्ट्र भाषा है। सन् 1991 की जनगणना के अनुसार कुल तीस करोड़ व्यक्ति हिन्दी भाषा प्रयुक्त करते हैं। वह अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर प्रतिष्ठित भी होने लगी है।

हिन्दी भाषा की इसी व्यापकता के कारण हिन्दी बाइबिल अनुवाद का महत्व बढ़ गया है। साथ-साथ कलीसियाओं में एकता की सार्वभौम भावना भी प्रबल होती गयी है। इसलिए, व्यापक आवश्यकता को ध्यान में रखकर तथा काथलिक धर्माध्यक्षीय हिन्दी साहित्य समिति के सहयोग से, यूनाइटेड बाइबिल सोसाइटीज़ ने हिन्दी में भी बाइबिल का संयुक्त (अंतर-कलीसियायी) संस्करण प्रकाशित करने का निश्चय किया, जो सभी मसीही कलीसियाओं एवं हिन्दी प्रेमियों द्वारा प्रयुक्त किया जा सके।

संयुक्त संस्करणों का यह सर्वमान्य प्रचलन है कि यहूदियों के प्राचीन यूनानी बाइबिल-अनुवाद के कुछ अतिरिक्त ग्रंथ (अन्य-प्रामाणिक अथवा अपॉक्रिफा ग्रंथ), अलग रूप से इब्रानी "पुराना विधान" के अन्त में ही प्रकाशित करें। यह यहाँ भी किया गया है।

पवित्र बाइबिल के इस संयुक्त हिन्दी संस्करण के लिए पूर्वप्रयुक्त अनुवादों का ही प्रयोग किया गया है। एकीकृत अनुवाद की तैयारी में इब्रानी, अरामी और यूनानी भाषाओं के मूल पाठ एवं पाठान्तर-सूची पर पूर्ण ध्यान दिया गया है। इनके अतिरिक्त नव-प्रकाशित अंग्रेजी अनुवादों को संदर्भ के रूप में सामने रखा गया है।

प्रस्तुत अनुवाद के प्रकाशन के पूर्व अनेक धर्माध्यक्षों, पास्तरों, धर्म-वैज्ञानिकों, प्रचारकों, भाषाविदों, लेखकों, अध्यापकों तथा सामान्य हिन्दी भाषा-भाषी मसीही पाठकों को अनुवाद की प्रतियाँ, उनके विचार और प्रतिक्रिया जानने के लिए भेजी गयीं। अनेक उत्तर प्राप्त हुए और अनुवाद समिति ने उनसे लाभ उठाया।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इस शुभ कार्य में बाइबिल अनुवाद के सामान्य नियमों का पालन किया गया है। बाइबिल अनुवाद के कुछ सिद्धान्त इस प्रकार हैं : अनुवाद करते समय अनुवादकों का मूल लक्ष्य यह रहता है कि मूल पाठ का अर्थ ही अनूदित किया जाए, किन्तु यह शाब्दिक अनुवाद न हो। अतः अनुवादकों के लिए यह अनिवार्य है कि वे पहले मूल का सही अर्थ समझें। अर्थ-निर्धारण के लिए प्रत्येक प्रकार की सहायता उपलब्ध हो।

मूल भाषाओं का सही अर्थ समझना ही पर्याप्त नहीं है। इस अर्थ को पाठक तक किस प्रकार सम्प्रेषित किया जाए, किस रूप में, और किस पद्धति से? पवित्र बाइबिल सामान्य पाठक के लिए है, जो अपनी भाषा को प्रतिदिन बोलचाल और व्यवहार में प्रयुक्त करता है। अतः अनुवादक उन शब्दों और रूपों को नहीं प्रयुक्त करते हैं जो आजकल दैनिक व्यवहार में प्रचलित नहीं हैं, जो अपना अर्थ खो चुके हैं। इसके विपरीत अनुवाद की भाषा को स्वाभाविक, सहज, साधारण और सार्थक बनाने की भरसक कोशिश की जाती है। इसलिए अनुवादक मूल भाषाओं के शब्द-क्रम अथवा वाक्य-रचना को यों ही अनूदित भाषा में रखने की चेष्टा नहीं करते हैं, क्योंकि वे व्याकरण नहीं बल्कि अर्थ अनूदित करते हैं।

शुद्ध अनुवाद की एक प्रमुख शर्त है: मूल भाषाओं के ऐतिहासिक तत्वों का आधुनिकीकरण न किया जाए। किन्तु जो तत्व आधुनिक सभ्यता के सन्दर्भ में सामान्य पाठक की समझ से परे हो गये हैं, और जिनका सही अर्थ समझना भी कठिन है, ऐसे तत्वों का आधुनिकीकरण पाठक के अर्थ-ग्रहण के लिए महत्वपूर्ण है। उदाहरणार्थ, माप-तौल के शब्द, दिनमान (समय, बजे), दूरी, क्षेत्रफल आदि। आधुनिक अनुवाद में मीटरी पद्धति को यथासम्भव प्रयुक्त किया जाता है— फिर भी कहीं-कहीं मील, मन, बांस, पहर, अंगुल रह जाते हैं, जो बोलचाल के मुहावरों-लोकोक्तियों में प्रयुक्त होते हैं।

मूल पाठ की अभिव्यक्ति में कभी ऐसा तथ्य अव्यक्त रहता है जो लेखक के समकालीन पाठकों को स्पष्ट करने की आवश्यकता नहीं थी। आधुनिक प्रस्तुति में उस अर्थ को कभी स्पष्ट करना पड़ता है, जो मूल अभिव्यक्ति में अव्यक्त होने पर भी उसमें निहित रहता है, उदाहरणार्थ "यर्दन" का स्पष्टीकरण "यर्दन नदी" किया जा सकता है। पुरुष-प्रधान दृष्टिकोण से जब प्राचीन भाषा में पुल्लिंग का प्रयोग होता है, तो उसमें कभी व्यापक संदर्भ के अनुसार स्त्रीलिंग का अर्थ भी सम्मिलित समझना चाहिये। उदाहरणार्थ, यूनानी व्याकरण यही निर्देश देता है कि "भाई" शब्द का पुल्लिंग बहुवचन रूप एक उभयलिंगी अर्थ "भाई-बहिन" धारण कर सकता है। इस सम्भव विस्तार को गंभीरता से लागू किया जा सकता है।

संयुक्त हिन्दी बाइबिल में प्रयुक्त स्थान और व्यक्ति के नामों के विषय में स्पष्टीकरण आवश्यक है। सन् 1905 के पूर्व हिन्दी बाइबिल में मूल भाषाओं के मूल रूपों का अधिक प्रयोग हुआ है: दाविद, अब्राहम, योसेफ आदि। किन्तु सन् 1905 के बाद, क्योंकि अनुवाद-समितियाँ उर्दू अथवा अरबी-फारसी भाषाओं से प्रभावित थीं, और उत्तर भारत की कलीसियाओं में अधिकतर उर्दू भाषा का प्रचलन था, इसलिए मूल भाषाओं के मूल रूपों को हटाकर प्रायः उर्दू रूप रखे गये थे: दाविद दाऊद हो गया, अब्राहम इब्राहीम और योसेफ यूसुफ। असंगतियाँ बढ़ती गयीं और एकरूपता असम्भव दीखती थी।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रस्तुत संस्करण में नाम यथासम्भव मूल के निकट रखे गये हैं, उदाहरणार्थ ''येशु''। अपवाद वे नाम हैं जो अत्यधिक प्रचलित हैं: जैसे योहन, पतरस, याकूब, अय्यूब।

भारत में व्यक्ति के नाम के साथ उसके पिता, जन्म-स्थान, जाति का नाम भी जोड़ा जाता है। मूल इब्रानी बाइबिल में यहूदी व्यक्ति के नाम के साथ उसके पिता का नाम तथा निवासस्थान का नाम भी है: जैसे ''यहोशुआ बेन-नून'', ''मोआबी नाओमी''। अंग्रेजी बाइबिल के कारण हिन्दी बाइबिल में व्यक्तिवाचक नामों को अब तक अनूदित किया जाता रहा है (नून का पुत्र यहोशुआ)। प्रस्तुत अनुवाद में अधिकतर मूल इब्रानी पद्धति प्रयुक्त की गयी है।

परमेश्वर का विशिष्ट इब्रानी प्रबोधन (जिसका लिप्यंतरण चार व्यंजन ''य् ह् व् ह्'' किया जाता है) प्रस्तुत अनुवाद में ''प्रभु'' किया गया है, क्योंकि प्राचीन प्रयोग के अनुसार पवित्र नाम के स्थान पर इब्रानी में ''अदोनाय'' और यूनानी में ''कुरिओस'' का उच्चारण किया जाता था, जिसका अर्थ ''प्रभु'' ही है। यदि मूल में ''अदोनाय'' शब्द मिलता है तो उसका अनुवाद ''स्वामी'' किया गया है।

अनुवाद की विषय-वस्तु को पाठक के लिए सहज, सरल बनाने के लिए शीर्षक, उपशीर्षक, अनुच्छेद, संवाद के चिह्न (विराम), आदि प्रयुक्त किये गये हैं। टिप्पणी तथा सन्दर्भ-संकेत भी जागरूक पाठक के लिए उपयोगी हैं। अध्याय तथा पद-संख्या परम्परा-पद्धति के अनुरूप हैं। किन्तु कहीं-कहीं विचार और घटना की समरूपता के लिए एक-दो पदों को एक-दूसरे से जोड़ा गया है, अर्थात् एक पद को पूर्व-निर्धारित स्थान से हटा कर अन्यत्र ले जाया गया है।

अनुवादक (डॉ. जान हेनरी आनन्द और श्री हेमराज) तथा अनुवाद-समिति के अतिरिक्त और कौन उनके कार्य की कठिनाइयों का अनुमान कर सकता है? फिर भी उन्होंने प्रार्थना में पवित्र आत्मा की प्रेरणा तथा सहायता को मांगते हुए यह महान कार्य पूर्ण किया है। मुद्रण-मण्डल के कार्यकर्त्ताओं के अथक परिश्रम का यही परिणाम है कि ग्रंथ इतने शुद्ध और सुन्दर रूप में प्रकाशित हुआ। बाइबिल परमेश्वर का शुभ सन्देश* है, केवल यहूदी अथवा मसीही समाज के लिए नहीं, वरन समस्त मानव-जाति के लिए, जिससे हम-सब परमेश्वर का सन्देश सुनें और परमेश्वर के अनुग्रह से उसको दैनिक जीवन के व्यवहार में लायें।

भारत की बाइबिल सोसायटी तथा काथलिक धर्माध्यक्ष समिति की यह आशा है कि भारत के करोड़ों हिन्दी पाठक प्रस्तुत अनुवाद के पठन-पाठन तथा अध्ययन के माध्यम से न केवल परमेश्वर के शुभ-सन्देश को अधिकाधिक समझ सकेंगे, वरन् जीवन की पूर्णता भी प्राप्त करेंगे।

धर्माध्यक्ष पैट्रिक डिसूज़ा

अध्यक्ष, संयुक्त बाइबिल अनुवाद समिति

---

* पढ़िये : व्य 30 : 11-14; यश 55 : 10-11; नहे 8 : 5-8; यो 20 : 30-31; 2 तिम 3 : 15-17; 2 पत 1 : 20-21

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पुस्तक-सूची

पुराना विधान (पुराना नियम)

पुस्तक का नाम	पृष्ठ-संख्या
1. उत्पत्ति	1
2. निर्गमन	67
3. लेवीय व्यवस्था	123
4. जन-गणना ग्रंथ	162
5. व्यवस्था विवरण	217
6. यहोशुअ	270
7. शासक ग्रंथ	304
8. रूत	339
9. शमूएल : पहला भाग	345
10. शमूएल : दूसरा भाग	391
11. राजाओं का वृत्तांत : पहला भाग	430
12. राजाओं का वृत्तांत : दूसरा भाग	475
13. इतिहास : पहला भाग	520
14. इतिहास : दूसरा भाग	560
15. एज्रा	612
16. नहेम्याह	626
17. एस्तर	648
18. अय्यूब	659
19. भजन संहिता	710
20. नीति-वचन	820
21. सभा-उपदेशक	868
22. श्रेष्ठ गीत	880
23. नबी यशायाह का ग्रंथ	888
24. नबी यिर्मयाह का ग्रंथ	983
25. शोक-गीत	1077
26. नबी यहेजकेल का ग्रंथ	1087
27. नबी दानिएल का ग्रंथ	1163

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पुस्तक का नाम	*पृष्ठ-संख्या*
28. नबी होशे	1187
29. नबी योएल	1201
30. नबी आमोस	1207
31. नबी ओबद्याह	1218
32. नबी योना	1220
33. नबी मीका	1223
34. नबी नहूम	1231
35. नबी हबक्कूक	1235
36. नबी सफन्याह	1239
37. नबी हग्गय	1244
38. नबी जकर्याह	1246
39. नबी मलाकी	1259

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अन्य - प्रामाणिक ग्रंथ

प्राचीन यूनानी बाइबिल-अनुवाद में पुराना विधान के साथ

पुस्तक का नाम *पृष्ठ-संख्या*

1. तोबीत 3
2. यहूदीत 19
3. शेष-एस्तर (यूनानी एस्तर-ग्रंथ के अन्तर्गत) 39
4. मक्काबियों का पहला ग्रंथ 53
5. मक्काबियों का दूसरा ग्रंथ 94
6. प्रज्ञा ग्रंथ (सुलेमान का प्रज्ञा ग्रंथ) 124
7. प्रवक्ता ग्रंथ (येशूअ बेन-सीराह का प्रवक्ता ग्रंथ) 146
8. बारूक 217
9. यिर्मयाह का पत्र (अथवा बारूक, अध्याय 6) 224

शेष-दानिएल के तीन अतिरिक्त अंश :

10. अजर्याह की प्रार्थना और तीन युवकों का गीत (दानिएल 3:24-90) 228
11. सूसन्नाह (दानिएल, अध्याय 13) 231
12. बेल-देवता और अजगर (दानिएल, अध्याय 14) 234

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नया विधान (नया नियम)

पुस्तक का नाम *पृष्ठ-संख्या*

1. संत मत्ती के अनुसार शुभ-समाचार 1
2. संत मारकुस (मरकुस) के अनुसार शुभ-समाचार 49
3. संत लूकस (लूक) के अनुसार शुभ-समाचार 79
4. संत योहन (यूहन्ना) के अनुसार शुभ-समाचार 129
5. प्रेरितों के कार्य-कलाप 168
6. रोम नगर की कलीसिया के नाम संत पौलुस का पत्र 217
7. कुरिन्थुस नगर की कलीसिया के नाम संत पौलुस का पहला पत्र 239
8. कुरिन्थुस नगर की कलीसिया के नाम संत पौलुस का दूसरा पत्र 260
9. गलातिया प्रदेश की कलीसियाओं के नाम संत पौलुस का पत्र 274
10. इफिसुस नगर की कलीसिया के नाम संत पौलुस का पत्र 282
11. फिलिप्पी नगर की कलीसिया के नाम संत पौलुस का पत्र 290
12. कुलुस्से नगर की कलीसिया के नाम संत पौलुस का पत्र 296
13. थिस्सलुनीके नगर की कलीसिया के नाम संत पौलुस का पहला पत्र 302
14. थिस्सलुनीके नगर की कलीसिया के नाम संत पौसुस का दूसका पत्र 307
15. तिमोथी के नाम संत पौलुस का पहला पत्र 310
16. तिमोथी के नाम संत पौलुस का दूसरा पत्र 316
17. तीतुस के नाम संत पौलुस का पत्र 320
18. फिलेमोन के नाम संत पौलुस का पत्र 323
19. इब्रानियों के नाम पत्र 325
20. संत याकूब का पत्र 341
21. संत पतरस का पहला पत्र 347
22. संत पतरस का दूसरा पत्र 353
23. संत योहन का पहला पत्र 357
24. संत योहन का दूसरा पत्र 363
25. संत योहन का तीसरा पत्र 364
26. संत यहूदा का पत्र 365
27. संत योहन का प्रकाशन ग्रंथ 367

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पुस्तकों के संक्षिप्त संकेत-चिह्न

(वर्णानुक्रम से)

	संकेत-चिह्न	*पुस्तक का नाम*
	[अजर्याह]	[अजर्याह की प्रार्थना और तीन युवकों का गीत]
	अय्य	अय्यूब
	आमो	नबी आमोस
1/2	इति	इतिहास : पहला/दूसरा भाग
	इफ	इफिसुस नगर की कलीसिया के नाम संत पौलुस का पत्र (इफिसियों)
	इब्र	इब्रानियों के नाम पत्र
	उत	उत्पत्ति
	एज्रा	एज्रा
	एस	एस्तर
	ओब	नबी ओबद्याह
1/2	कुर	कुरिन्थुस नगर की कलीसिया के नाम संत पौलुस का पहला/दूसरा पत्र (कुरिन्थियों)
	कुल	कुलुस्से नगर की कलीसिया के नाम संत पौलुस का पत्र (कुलुस्सियों)
	गण	जन-गणना ग्रंथ
	गल	गलातिया प्रदेश की कलीसिया के नाम संत पौलुस का पत्र (गलातियों)
	जक	नबी जकर्याह
1/2	तिम	तिमोथी के नाम संत पौलुस का पहला/दूसरा पत्र
	तीत	तीतुस के नाम संत पौलुस का पत्र
	[तोब]	[तोबीत]
1/2	थिस	थिस्सलुनीके नगर की कलीसिया के नाम संत पौलुस का पहला / दूसरा पत्र (थिस्सलुनीकियों)
	दान	नबी दानिएल का ग्रंथ
	नहू	नबी नहूम
	नहे	नहेम्याह

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

संकेत-चिह्न		पुस्तक का नाम
	नि	निर्गमन
	नीति	नीति-वचन
1/2	पत	संत पतरस का पहला / दूसरा पत्र
	प्रक	संत योहन का प्रकाशन ग्रंथ
	[प्रज्ञा]	[प्रज्ञा ग्रंथ]
	[प्रव]	[प्रवक्ता ग्रंथ]
	प्रे	प्रेरितों के कार्य-कलाप
	[बारू]	[बारूक]
	[बेल]	[बेल-देवता और अजगर]
	फिल	फिलिप्पी नगर की कलीसिया के नाम संत पौलुस का पत्र (फिलिप्पियों)
	फिले	फिलेमोन के नाम संत पौलुस का पत्र
	भज	भजन-संहिता
	मक	संत मारकुस के अनुसार शुभ समाचार
[1/2	मका]	[मक्काबियों का पहला/दूसरा ग्रंथ]
	मत	संत मत्ती के अनुसार शुभ समाचार
	मला	नबी मलाकी
	मी	नबी मीका
	यश	नबी यशायाह का ग्रंथ
	यहू	संत यहूदा का पत्र
	[यहूदी]	[यहूदीत]
	यहेज	नबी यहेजकेल का ग्रंथ
	यहो	यहोशुअ
	याक	संत याकूब का पत्र
	[यि. पत्र]	[यिर्मयाह का पत्र]
	यिर	नबी यिर्मयाह का ग्रंथ
	यो	संत योहन के अनुसार शुभ समाचार
1/2/3	यो	संत योहन का पहला/दूसरा/तीसरा पत्र
	योए	नबी योएल

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

	संकेत-चिह्न	पुस्तक का नाम
	योना	नबी योना
1/2	रा	राजाओं का वृत्तांत : पहला/दूसरा भाग
	रूत	रूत
	रोम	रोम नगर की कलीसिया के नाम संत पौलुस का पत्र (रोमियों)
	लू	संत लूकस के अनुसार शुभ समाचार
	लेव	लेवीय व्यवस्था
	व्य	व्यवस्था-विवरण
1/2	शम	शमूएल : पहला/दूसरा भाग
	शास	शासक ग्रंथ
	[शेष-एस]	[शेष-एसतर]
	शोक	शोक-गीत
	श्रेष्ठ	श्रेष्ठ गीत
	सफ	नबी सफन्याह
	सभ	सभा-उपदेशक (सभोपदेशक)
	[सूस]	[सूसन्नाह]
	हग	नबी हग्गय
	हब	नबी हबक्कूक
	हो	नबी होशे

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पुराना विधान

(पुराना नियम)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उत्पत्ति

पुस्तक परिचय

पुस्तक के शीर्षक से ही विषय-सामग्री स्पष्ट है। न केवल यह पवित्र बाइबिल की प्रथम पुस्तक है, बल्कि यह विश्व और मनुष्य-जाति की "उत्पत्ति" का विस्तृत विवरण प्रस्तुत करती है। मानव की उत्पत्ति, और उसके पापाचार का वर्णन तथा परमेश्वर द्वारा मनुष्य-जाति के साथ किये गये व्यवहार का विवरण **उत्पत्ति** ग्रंथ में उपलब्ध है।

(1) **अध्याय 1-11** में सृष्टि का वर्णन है और मानव-जाति के आरंभिक इतिहास की "वंशावलियाँ" हैं। हम इन अध्यायों में मानव-जाति के आदि माता-पिता आदम और हव्वा, काइन और हाबिल, नूह और जलप्रलय तथा बेबीलोन की मीनार के विषय में पढ़ते हैं।

(2) **अध्याय 12-50 में** इस्राएली कौम के पूर्वजों का आख्यान है। सर्वप्रथम अब्राहम का आख्यान है जो अपने विश्वास और परमेश्वर की आज्ञाओं के पालन के लिए विख्यात हैं। उनके पश्चात् उनके पुत्र इसहाक, इसहाक के पश्चात् याकूब तथा उन के बारह पुत्रों के आख्यान हैं। इन बारह पुत्रों से ही इस्राएली कौम के बारह कुलों की स्थापना हुई। याकूब का दूसरा नाम इस्राएल भी था। इनके एक पुत्र यूसुफ पर उत्पत्ति ग्रंथ में विशेष ध्यान दिया गया है। उसके जीवन से संबंधित घटनाओं का विस्तार से उल्लेख किया गया है और बताया गया है कि कनान तथा आसपास के देशों में अकाल पड़ने पर याकूब अपने पुत्रों तथा उनके परिवारों को लेकर मिस्र देश जाते हैं, और वहीं निवास करने लगते हैं।

यह सच है कि **उत्पत्ति** ग्रंथ में मनुष्यों से संबंधित आख्यान हैं, किन्तु प्रस्तुत ग्रन्थ में मुख्य रूप से मनुष्य-जाति के साथ परमेश्वर के कार्यों का विवरण है। ग्रन्थ का आरंभ ही इस विश्वास के साथ होता है कि परमेश्वर ने इस विश्व की रचना की है। और ग्रन्थ के अन्तिम पृष्ठों में परमेश्वर की प्रतिज्ञा का उल्लेख है कि वह मनुष्यों की देखभाल, उनकी चिंता सदा करता रहेगा; वह उन पर से अपना वरद-हस्त कभी नहीं हटायेगा।

सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रमुख पात्र परमेश्वर ही है। वह पाप करने वाले मनुष्य को दण्ड देता है। वह धार्मिक मनुष्य का न्याय करता है। अपनी आज्ञा मानने वालों की भलाई करता और उनका मार्गदर्शन करता है। वह अपने निज लोगों के इतिहास को सुगठित करता है, उसे गढ़ता है।

प्राचीन युग के संबंध में इस ग्रन्थ की रचना का उद्देश्य यह था कि एक विशेष कौम, अर्थात् इस्राएल के विश्वास का विवरण सुरक्षित रखा जाए, और उस जीवंत विश्वास से लोगों को प्रेरणा प्राप्त हो।

इस प्रकार मानव-मात्र के लिए प्रभु परमेश्वर का व्यापक प्रबन्ध प्रकट होने लगा और इस्राएली कौम के साथ उसका विशेष संबंध आरंभ हुआ, जो बाइबिल के प्रथम भाग, इब्रानी-अरामी भाषाओं में लिखित "पुराना विधान" (पुराना नियम) का केन्द्रीय विचार है। इस विधान की संस्थापना और उसकी शिक्षाओं का वर्णन **"व्यवस्था" (तौरेत)** के पांच आरंभिक ग्रंथों में मिलता है। **उत्पत्ति** इस पंचग्रंथ की पहली पुस्तक है। यह विभिन्न परम्पराओं की एकीकृत अथवा संपादित रचना मानी जाती है।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

1.	मानव-जाति की उत्पत्ति	1:1—11:32
	विश्व और मनुष्य की रचना	1:1—2:25
	पाप और दुःख का आरंभ	3:1-24
	आदम से नूह तक	4:1—5:32
	नूह तथा जल-प्रलय	6:1—10:32
	बेबीलोन की मीनार	11:1-9
	शेम से अब्राम तक	11:10-32
2.	इस्राएली कौम की उत्पत्ति	12:1—50:26
	तीन कुलपतिः अब्राहम, इसहाक और याकूब	12 : 1—35:29
	एसाव के वंशज	36 :1-43
	यूसुफ और उसके भाई	37:1—45:28
	मिस्र देश में इस्राएलियों का निवास	46: 1—50:26

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

विश्व एवं मनुष्य की रचना का वर्णन

1 परमेश्वर ने आरम्भ में आकाश और पृथ्वी
को रचा*। 2पृथ्वी आकार-रहित और
सुनसान थी। अथाह सागर के ऊपर अन्धकार
था। जल की सतह पर परमेश्वर का आत्मा**
मंडराता था।

3 परमेश्वर ने कहा, 'प्रकाश हो', और
प्रकाश हो गया। 4 परमेश्वर ने देखा कि प्रकाश
अच्छा है। परमेश्वर ने प्रकाश को अन्धकार से
अलग किया। 5परमेश्वर ने प्रकाश को 'दिन'
तथा अन्धकार को 'रात' नाम दिया। सन्ध्या
हुई, फिर सबेरा हुआ। इस प्रकार पहला दिन
बीत गया।

6 परमेश्वर ने कहा, 'जल के मध्य मेहराब+
हो, और वह जल को जल से अलग करे।'
7परमेश्वर ने मेहराब बनाया, तथा मेहराब के
ऊपर के जल को, उसके नीचे के जल से अलग
किया। ऐसा ही हुआ। 8परमेश्वर ने मेहराब को
'आकाश' नाम दिया। सन्ध्या हुई, फिर सबेरा
हुआ। इस प्रकार दूसरा दिन बीत गया।

9 परमेश्वर ने कहा, 'आकाश के नीचे का
जल एक स्थान में एकत्र हो, और सूखी भूमि
दिखाई दे।' ऐसा ही हुआ। 10परमेश्वर ने सूखी
भूमि को 'पृथ्वी', तथा एकत्रित जल को
'समुद्र' नाम दिया। परमेश्वर ने देखा कि वे
अच्छे हैं। 11तब परमेश्वर ने पृथ्वी को आज्ञा
दी कि वह वनस्पति, बीजधारी पौधे और
फलदायक वृक्ष उगाए। पृथ्वी पर उन वृक्षों की
जाति के अनुसार उनके फलों में बीज भी हों।
ऐसा ही हुआ। 12 पृथ्वी ने वनस्पति, जाति-
जाति के बीजधारी पौधे, फलदायक वृक्ष,
जिनके फलों में बीज थे, उनकी जाति के
अनुसार उगाए। परमेश्वर ने देखा कि वे अच्छे
हैं। 13 सन्ध्या हुई, फिर सबेरा हुआ। इस प्रकार
तीसरा दिन बीत गया।

14 परमेश्वर ने कहा, 'दिन को रात से
अलग करने के लिए आकाश के मेहराब में
ज्योति-पिण्ड हों। वे ऋतु, दिन और वर्ष के
चिह्न बनें। 15 पृथ्वी पर प्रकाश करने के लिए
आकाश के मेहराब में ज्योति-पिण्ड हों।' ऐसा
ही हुआ। 16 परमेश्वर ने दो विशाल ज्योति-
पिण्ड बनाए : अधिक शक्तिवान ज्योति-
पिण्ड को दिन का शासक, और कम शक्तिवान
ज्योति-पिण्ड को रात का शासक बनाया।
उसने तारे भी बनाए। 17परमेश्वर ने उन्हें आकाश
के मेहराब में स्थित किया कि वे पृथ्वी को
प्रकाशित करें, 18दिन और रात पर शासन करें
और प्रकाश को अन्धकार से अलग करें।
परमेश्वर ने देखा कि वे अच्छे हैं। 19 सन्ध्या
हुई, फिर सबेरा हुआ। इस प्रकार चौथा दिन
बीत गया।

20 परमेश्वर ने कहा, 'समुद्र जीवित
जलचरों के झुण्ड के झुण्ड उत्पन्न करें तथा पक्षी
पृथ्वी पर आकाश के मेहराब में उड़ें।' 21 इस
प्रकार परमेश्वर ने बड़े-बड़े जल-जन्तुओं
और गतिमान जलचरों को, जो झुण्ड के झुण्ड
समुद्र में तैरते हैं, उनकी जाति के अनुसार
उत्पन्न किया। उसने सब पंखवाले पक्षियों को
भी उनकी जाति के अनुसार उत्पन्न किया।
परमेश्वर ने देखा कि वे अच्छे हैं। 22परमेश्वर
ने उन्हें यह आशिष दी, 'फलो-फूलो, और
समुद्रों को भर दो। पक्षी भी पृथ्वी में असंख्य
हो जाएँ।' 23सन्ध्या हुई, फिर सबेरा हुआ। इस
प्रकार पांचवां दिन बीत गया।

24 परमेश्वर ने कहा, 'पृथ्वी जीव-जन्तुओं
को उनकी जाति के अनुसार उत्पन्न करें, अर्थात्
प्रत्येक की जाति के अनुसार पालतू पशु, रेंगने
वाले जन्तु, और धरती के वन पशु।' ऐसा ही
हुआ। 25 परमेश्वर ने धरती के वन पशुओं,
पालतू पशुओं और भूमि पर रेंगनेवाले जन्तुओं
को उनकी जाति के अनुसार बनाया। परमेश्वर
ने देखा कि वे अच्छे हैं।

---

* पहले पद का अनुवाद यह भी हो सकता है, 'जब परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी को बनाना आरंभ किया तब...।'
**अथवा 'प्रचण्ड पवन' +अथवा, 'गुम्बज'। प्राचीन विश्वास के अनुसार मेहराब अपने ऊपर के जल को नीचे गिरने से रोकता था।

1:1 यो 1:1-3; रोम 1:20; इब्र 11:3; भज 104 **1:3** 2 कुर 4:6; 2 मक 7:28 **1:6** 2 पत 3:5 **1:14** व्य 4:19 **1:15** भज 136:7

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

26 परमेश्वर ने कहा, 'हम मनुष्य को अपने
स्वरूप में, अपने सदृश बनाएँ, और समुद्र के
जलचरों*, आकाश के पक्षियों, पालतू पशुओं,
धरती पर रेंगने वाले जन्तुओं और समस्त पृथ्वी
पर मनुष्य का अधिकार हो।' 27 अत: परमेश्वर
ने अपने स्वरूप में मनुष्य को रचा। परमेश्वर
के स्वरूप में उसने मनुष्य की सृष्टि की।
परमेश्वर ने उन्हें नर और नारी बनाया। 28
परमेश्वर ने उन्हें यह आशिष दी, 'फलो-फूलो
और पृथ्वी को भर दो, और उसे अपने अधिकार
में कर लो। समुद्र के जलचरों, आकाश के
पक्षियों और भूमि के समस्त गतिमान जीव-
जन्तुओं पर तुम्हारा अधिकार हो।' 29 परमेश्वर
ने कहा, 'देखो, मैंने समस्त पृथ्वी के प्रत्येक
बीजधारी पौधे और फलदायक वृक्ष, जिनके
फलों में बीज हैं, तुम्हें प्रदान किए हैं। वे तुम्हारा
आहार हैं। 30 धरती के समस्त पशुओं, आकाश
के पक्षियों, धरती पर रेंगनेवाले जन्तुओं,
प्रत्येक प्राणी को जिसमें जीवन का श्वास है,
मैंने सब हरित पौधे आहार के लिए दिए हैं।'
ऐसा ही हुआ। 31 परमेश्वर ने अपनी सृष्टि को
देखा, और देखो, वह बहुत अच्छी थी। सन्ध्या
हुई, फिर सबेरा हुआ। इस प्रकार छठा दिन बीत
गया।

2 इस प्रकार आकाश और पृथ्वी एवं जो
कुछ उनमें है, इन सबकी रचना पूर्ण हुई।
2 जो कार्य परमेश्वर ने किया था, उसको उसने
सातवें दिन समाप्त किया। उसने उस समस्त
कार्य से जिसे उसने पूरा किया था, सातवें दिन
विश्राम किया। 3 अत: परमेश्वर ने सातवें दिन
को आशिष दी, और उसे पवित्र किया; क्योंकि
परमेश्वर ने उस दिन सृष्टि के समस्त कार्यों से
विश्राम किया था।

4 आकाश और पृथ्वी की रचना का यही
विवरण है।

मनुष्य की उत्पत्ति का अन्य वर्णन

प्रभु** परमेश्वर ने पृथ्वी और आकाश को
बनाया। 5 पर उस समय धरती पर भूमि का कोई
पौधा उगा नहीं था, और न ही भूमि की कोई
वनस्पति अंकुरित हुई थी; क्योंकि प्रभु परमेश्वर
ने पृथ्वी पर वर्षा न की थी, और भूमि की
जोताई करने के लिए मनुष्य न था।

6 कुहरा*** धरती से ऊपर उठा, और उसने
समस्त भूमि सींच दी। 7 तब प्रभु परमेश्वर ने
मनुष्य+ को भूमि++ की मिट्टी से गढ़ा तथा
उसके नथुनों में जीवन का श्वास फूँका और
मनुष्य एक जीवित प्राणी बन गया।

अदन का उद्यान

8 प्रभु परमेश्वर ने पूर्व दिशा में अदन में एक
उद्यान लगाया, और वहाँ उस मनुष्य को, जिसे
उसने गढ़ा था, रख दिया। 9 प्रभु परमेश्वर ने
समस्त वृक्षों को, जो देखने में सुन्दर थे, और
आहार के लिए उत्तम हैं, भूमि से उगाया। उसने
उद्यान के मध्य में जीवन का वृक्ष तथा भले-
बुरे के ज्ञान का वृक्ष उगाया।

10 एक महा नदी उद्यान को सींचने के लिए
अदन से निकली और वहाँ विभाजित होकर
चार नदियों में परिवर्तित हो गई। 11 पहली नदी
का नाम पीशोन है। यह वही नदी है जो हवीला
देश के चारों ओर बहती है, जहाँ सोना पाया
जाता है। 12 उस देश का सोना उत्तम होता है।
वहाँ मोती और सुलेमानी पत्थर भी पाए जाते
हैं। 13 दूसरी नदी का नाम गीहोन है। यह वही
नदी है जो कूश देश के चारों ओर बहती है।
14 तीसरी नदी का नाम दजला है, जो असीरिया
देश की पूर्व दिशा में बहती है। चौथी नदी का
नाम फरात है।

15 प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य को लेकर अदन
के उद्यान में नियुक्त किया कि वह उसमें खेती
करे और उसकी रखवाली करे। 16 प्रभु परमेश्वर
ने मनुष्य को आज्ञा दी, 'तुम उद्यान के सब पेड़ों
के फल निस्संकोच खा सकते हो, 17 पर भले-
बुरे के ज्ञान के पेड़ का फल न खाना; क्योंकि
जिस दिन तुम उसका फल खाओगे, तुम

---

* शब्दश: 'मछलियों' ** मूल, 'यह्‌वह्‌' *** शब्दश: 'बाढ़', 'जल-प्रवाह'। अथवा, 'धुन्ध' + मूल में, 'आदम' ++ मूल में, 'अदामाह' **1:26-27** भज 8:6; 1 कुर 11:7; कुल 3:10; मत 19:4; प्रक 17:3 **1:31** 1तिम 4:4 **2:2** इब्र 4:4 **2:3** नि 20:11 **2:7** 1 कुर 15:45; भज 104:29; अय्य 34:14; प्रज्ञा 15:11 **2:9** नीति 3:18; प्रक 22:2; 14 **2:10** यहेज 47:11 **2:17** रोम 6:23

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अवश्य मर जाओगे।'
18 प्रभु परमेश्वर ने कहा, 'मनुष्य का
अकेला रहना अच्छा नहीं। मैं उसके लिए एक
उपयुक्त सहायक बनाऊंगा।' 19अत: प्रभु
परमेश्वर ने भूमि की मिट्टी* से वन के समस्त
पशु और आकाश के सब पक्षी गढ़े। वह उन्हें
मनुष्य के पास लाया कि देखें, मनुष्य उनका
क्या नाम रखता है। प्रत्येक जीव-जन्तु का वही
नाम होगा, जो मनुष्य उसे देगा। 20मनुष्य ने सब
पालतू पशुओं, आकाश के पक्षियों और वन-
पशुओं के नाम रखे; किन्तु मनुष्य को अपने
लिए उपयुक्त सहायक नहीं मिला। 21अत: प्रभु
परमेश्वर ने मनुष्य को गहरी नींद में सुला
दिया। जब वह सो रहा था तब उसकी पसलियों
में से एक पसली निकाली और उस रिक्त स्थान
को मांस से भर दिया। 22 प्रभु परमेश्वर ने उस
पसली से, जिसको उसने मनुष्य में से निकाला
था, स्त्री को बनाया और वह उसे मनुष्य के पास
लाया। 23मनुष्य ने कहा,

'अन्ततः यह मेरी ही अस्थियों की अस्थि,
मेरी ही देह की देह है;
यह "नारी" कहलाएगी;
क्योंकि यह नर से निकाली गई है।'

24 इसलिए पुरुष अपने माता-पिता को
छोड़कर अपनी पत्नी के साथ रहेगा, और वे
एक देह होंगे।
25 मनुष्य और उसकी पत्नी नग्न थे, पर वे
लज्जित न थे।

मनुष्य का पतन

3 उन सब वन-प्राणियों में जिन्हें प्रभु परमेश्वर
ने रचा था, सबसे अधिक धूर्त सांप था।
उसने स्त्री से पूछा, 'क्या सचमुच परमेश्वर ने
कहा है कि तुम उद्यान के किसी भी पेड़ का
फल न खाना?' 2 स्त्री ने सांप को उत्तर दिया,
'हम उद्यान के पेड़ों का फल खा सकते हैं।
3परन्तु परमेश्वर ने कहा है, "उद्यान के मध्य
में लगे पेड़ का फल न खाना, उसे स्पर्श भी नहीं
करना, अन्यथा तुम मर जाओगे।"' 4 सांप ने
स्त्री से कहा, 'तुम नहीं मरोगे। 5परमेश्वर जानता
है कि जब तुम उसे खाओगे तब तुम्हारी आंखें
खुल जाएंगी। तुम भले और बुरे को जानकर
परमेश्वर के समान बन जाओगे।' 6 स्त्री ने देखा
कि आहार के लिए वृक्ष उत्तम है। वह आंखों
को लुभाता है, और बुद्धिमान बनने के लिए
वांछनीय है। अत: उसने उसका फल तोड़ा,
और उस को खाया। उसने अपने पति को भी
दिया, जो उसके साथ था, और उसने भी
खाया। 7 तब दोनों की आंखें खुल गईं, और
उन्हें ज्ञात हुआ कि वे नग्न हैं। अत: उन्होंने
अंजीर के पत्तों को सी कर लंगोट बनाए।
8 जब संध्या समय हवा बहने लगी, तब
उन्होंने उद्यान में प्रभु परमेश्वर की पग-ध्वनि
सुनी। मनुष्य और उसकी पत्नी ने प्रभु परमेश्वर
की उपस्थिति से स्वयं को उद्यान के वृक्षों में
छिपा लिया। 9 परन्तु प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य को
पुकारा, 'तू कहाँ है?' 10उसने उत्तर दिया, 'मैंने
उद्यान में तेरी पग-ध्वनि सुनी। मैं डर गया,
क्योंकि मैं नंगा था। इसलिए मैंने स्वयं को छिपा
लिया है।' 11प्रभु परमेश्वर ने पूछा, 'किसने
तुझसे कहा कि तू नंगा है? क्या तूने उस पेड़
का फल खाया है, जिसे न खाने के लिए मैंने
तुझे आज्ञा दी थी?' 12 मनुष्य ने उत्तर दिया, 'जो
स्त्री तूने मेरे साथ रहने के लिए दी है, उसने उस
पेड़ का फल मुझे दिया, और मैंने उसे खा
लिया।' 13प्रभु परमेश्वर ने स्त्री से पूछा, 'यह
तूने क्या किया?' स्त्री ने उत्तर दिया, 'सांप ने
मुझे बहका दिया और मैंने फल खा लिया।'
14प्रभु परमेश्वर ने सांप से कहा,

'तूने यह कार्य किया,
इसलिए तू समस्त पालतू पशुओं तथा सब
वन-पशुओं में शापित है!
तू पेट के बल चलेगा।
तू आजीवन धूल चाटता रहेगा।
15मैं तेरे और स्त्री के बीच,

---

* शब्दश: 'अदामाह' [भूमि] **2:19** भज 8:6 **2:22** यो 19:34 **2:23** उत 29:14; 2 शम 5:1; 1 कुर 11:8; 1 तिम 2:13 **2:24** मत 19:5; 1कुर 6:16; इफ 5:31 **3:1** प्रक 12:9; यो 8:44; प्रज्ञा 2:24 **3:4** 2 कुर 11:3; 1 तिम 2:14 **3:5** यहेज 28:2 **3:6** रोम 5:12-19 **3:14** यश 65:25 **3:15** प्रक 12:17; रोम 16:20

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तेरे वंश और स्त्री के वंश के मध्य
शत्रुता उत्पन्न करूँगा।
वह तेरा सिंर कुचलेगा,
और तू उसकी एड़ी डसेगा।'
16 प्रभु परमेश्वर ने स्त्री से कहा,
'मैं तेरी प्रसव-पीड़ा को असहनीय
बनाऊंगा।
तू पीड़ा से ही बच्चों को जन्म देगी।
तेरी इच्छाएं पति के लिए होंगी।
वह तुझपर शासन करेगा।'
17 प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य से कहा,
'तूने अपनी पत्नी की बात सुनी,
और उस पेड़ का फल खाया
जिसके विषय में मैंने आज्ञा दी थी
कि "उसका फल न खाना।"
अतएव तेरे कारण भूमि शापित हुई।
उसकी फसल खाने के लिए तुझे जीवनभर
कठोर परिश्रम करना पड़ेगा।
18 वह तेरे लिए कांटे और ऊंटकटारे उगाएगी,
जब तू खेत की उपज खाएगा।
19 तू तब तक अपने पसीने की रोटी खाएगा,
जब तक उस भूमि में न लौटे जिससे तू
बनाया गया था।
तू तो मिट्टी है,
और मिट्टी में ही मिल जाएगा।'

20 मनुष्य ने अपनी पत्नी का नाम हव्वा*
रखा, क्योंकि वह समस्त जीवन-धारी प्राणियों
की माता बनी। 21प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य और
उसकी पत्नी को चमड़े के वस्त्र बनाकर
पहिनाए।

22 प्रभु परमेश्वर ने कहा, 'देखो, मनुष्य
भले और बुरे को जानकर हममें से एक के
समान बन गया है। अब कहीं ऐसा न हो कि
वह हाथ बढ़ाकर जीवन के वृक्ष का फल तोड़
ले, और उसे खाकर अमर हो जाए।' 23अतः
प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य को अदन के उद्यान से
भेज दिया कि वह उस भूमि पर खेती करे, जिसमें
से उसे बनाया गया था। 24उसने मनुष्य को
निकाल दिया। उसने जीवन के वृक्ष की ओर
जाने वाले मार्ग की रखवाली करने के लिए
अदन के उद्यान की पूर्व दिशा में करूबों को**
तथा चारों ओर घूमनेवाली ज्वालामय तलवार
को नियुक्त किया।

काइन और हाबिल का आख्यान

4 आदम+ ने अपनी पत्नी हव्वा के साथ
सहवास किया। वह गर्भवती हुई और
उसने काइन को जन्म दिया। हव्वा ने कहा,
'प्रभु की कृपा से मुझे बालक प्राप्त हुआ++।'
2तत्पश्चात् हव्वा ने काइन के भाई हाबिल को
जन्म दिया। हाबिल भेड़ों का चरवाहा था, और
काइन खेती करने वाला किसान था। 3काइन ने
समय आने पर खेत की उपज प्रभु को भेंट
चढ़ाई। 4हाबिल ने अपने पशुओं के पहिलौठे
बच्चे और उनका चर्बीयुक्त मांस चढ़ाया। प्रभु
ने हाबिल तथा उसकी भेंट पर कृपा-दृष्टि की।
5पर काइन और उसकी भेंट को अस्वीकार कर
दिया। इसलिए काइन बहुत नाराज हुआ।
उसका मुंह उतर गया। 6प्रभु ने काइन से पूछा,
'तू क्यों नाराज है? क्यों तेरा मुंह उतरा हुआ है?
7यदि तू भलाई करे तो क्या मैं तुझे ग्रहण न
करूंगा? किन्तु यदि तू भलाई न करे तो देख,
तेरे द्वार पर पाप खड़ा† है। वह तेरी कामना कर
रहा है। तू उसको अपने वश में कर।'

8 काइन ने अपने भाई हाबिल से कहा,
'आओ, हम खेत को चलें।'‡ जब वे खेत में
थे तब काइन अपने भाई हाबिल के विरुद्ध उठा
और उसने हाबिल की हत्या कर दी।

9 प्रभु ने काइन से पूछा, 'तेरा भाई हाबिल
कहां है?' उसने उत्तर दिया, 'मैं नहीं जानता।
क्या मैं अपने भाई का रखवाला हूं?' 10प्रभु ने
कहा, 'यह तूने क्या किया? तेरे भाई का रक्त
भूमि से मुझे पुकार रहा है। 11अब तू उस भूमि

* इब्रानी शब्द का अर्थ संभवतः 'जीवनदायिनी' है। ** विशिष्ट प्रकार के स्वर्गदूत, जिनके पंख होते हैं; अथवा 'पंखधारी प्राणी' +मूल में 'मनुष्य' ++ शब्दशः, 'मैंने पुरुष प्राप्त किया'। मूल में 'काइन' की समध्वनि है।' † मूल में 'घात लगाकर बैठा है' ‡ यह कथन केवल प्राचीन अनुवादों में मिलता।

3:17 इब्र 6:8; रोम 8:20 **3:19** भज 90:3 **3:22** प्रक 22:14 **3:24** यहेज 28:16 **4:4** नि 34:19; इब्र 11:4 **4:7** उत 3:16 **4:8** मत 23:35; 1 यो 3:12; प्रज्ञा 10:3 **4:10** इब्र 12:24

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

की ओर से शापित है, जिसने तेरे भाई का रक्त
तेरे हाथ से स्वीकार करने के लिए अपना मुंह
खोला है। 12जब तू भूमि पर खेती करेगा तब
वह अपनी क्षमता के अनुसार तुझे उपज न
देगी। तू पृथ्वी पर भगोड़ा होगा और यहां-वहां
भटकता फिरेगा।' 13काइन ने प्रभु से कहा,
'मेरा दण्ड असहनीय है। 14देख, तूने आज मुझे
खेती-किसानी से हटा दिया। मैं तेरे सम्मुख
छिपा रहूंगा। मैं पृथ्वी पर भगोड़े की तरह यहां-
वहां भटकता रहूंगा। और कोई भी व्यक्ति जो
मुझ को मिलेगा, वह मेरी हत्या कर देगा।'
15प्रभु ने काइन से कहा, 'ऐसा नहीं होगा। जो
कोई काइन की हत्या करेगा, उससे सात गुना
प्रतिशोध लिया जाएगा।' प्रभु ने काइन पर एक
चिह्न अंकित किया कि उसे पाने वाला कोई भी
उसकी हत्या न करे। 16तब काइन प्रभु के
सम्मुख से चला गया। वह अदन की पूर्व दिशा
में नोद नामक प्रदेश में रहने लगा।

काइन के वंशज

17 काइन ने अपनी पत्नी के साथ सहवास
किया। वह गर्भवती हुई और उसने हनोक को
जन्म दिया। काइन ने एक नगर बसाया, और
उसका नाम अपने पुत्र के नाम पर 'हनोक
नगर' रखा। 18हनोक से ईरद, ईरद से महूयएल,
महूयएल से मथूशएल, मथूशएल से लामेक
उत्पन्न हुए। 19लामेक की दो पत्नियां थीं। एक
का नाम अदा और दूसरी का नाम सिल्ला था।
20अदा ने याबल को जन्म दिया। याबल उन
लोगों का पूर्वज बना जो तम्बुओं में रहते और
पशु पालते हैं। 21उसके भाई का नाम यूबल था।
वह सितार और बांसुरी बजानेवालों का पूर्वज
था।

22 सिल्ला ने तूबल-काइन को जन्म दिया।
वह पीतल और लोहे को ढालकर अस्त्र-शस्त्र
बनानेवाला पहला धातुकार+ था। तूबल-काइन
की बहिन नमा थी।
23 लामेक ने अपनी पत्नियों से कहा:

'अदा और सिल्ला, मेरी बात सुनो;
मेरी++ पत्नियो, मेरे कथन पर ध्यान दो :
जिस मनुष्य ने मुझे घायल किया,
जिस तरुण ने मुझपर आघात किया,
उसको मैंने मार डाला है!
24यदि काइन का बदला सात गुना है,
तो लामेक का सतहत्तर गुना होगा।'

शेत के वंशज

25 आदम ने पुनः अपनी पत्नी से सहवास
किया, और उसने एक पुत्र को जन्म दिया।
उसने उसका नाम 'शेत'* रखा; क्योंकि वह
कहती थी, 'काइन ने हाबिल की हत्या की,
इसलिए परमेश्वर ने हाबिल के स्थान पर यह
दूसरा बालक प्रदान किया है।' 26शेत को भी
एक पुत्र हुआ। उसने उसका नाम एनोश रखा।
उस समय से लोग प्रभु के नाम से आराधना
करने लगे।

आदम के वंशज

5 आदम की वंशावली का विवरण इस प्रकार
है: जब परमेश्वर ने मनुष्य को रचा, तब
उसने उसे अपने सदृश बनाया। 2उसने उन्हें नर
और नारी के रूप में रचा। जब वे दोनों रचे गए,
तब उसने उन्हें 'मनुष्य-जाति'** कहा और
उन्हें आशिष दी। 3जब आदम एक सौ तीस वर्ष
का हुआ तब उसने अपने सदृश, अपने ही
स्वरूप में एक पुत्र को उत्पन्न किया। उसने
उसका नाम 'शेत' रखा। 4शेत के जन्म के
पश्चात् आदम आठ सौ वर्ष तक जीवित रहा।
उसको अन्य पुत्र-पुत्रियां भी उत्पन्न हुईं। 5इस
प्रकार आदम कुल नौ सौ तीस वर्ष जीवित रहा।
तत्पश्चात् उसकी मृत्यु हुई।

6 जब शेत एक सौ पांच वर्ष का हुआ तब
उसने एनोश को उत्पन्न किया। 7एनोश के जन्म
के पश्चात् शेत आठ सौ सात वर्ष तक जीवित
रहा। उसको अन्य पुत्र-पुत्रियां भी उत्पन्न हुईं।
8इस प्रकार शेत कुल नौ सौ बारह वर्ष जीवित
रहा। तत्पश्चात् उसकी मृत्यु हुई।

+ अथवा "लौहार" ++ शब्दशः "लामेक की" * अर्थात् 'प्रदत्त'। ** मूल में "आदम"

4:24 मत 18:22 **4:26** नि 3:14 **5:1** उत 1:27

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

9 जब एनोश नब्बे वर्ष का हुआ तब उसने केनन को उत्पन्न किया। 10केनन के जन्म के पश्चात् एनोश आठ सौ पन्द्रह वर्ष तक जीवित रहा। उसको अन्य पुत्र-पुत्रियां भी उत्पन्न हुईं। 11इस प्रकार एनोश कुल नौ सौ पांच वर्ष जीवित रहा। तत्पश्चात् उसकी मृत्यु हुई।

12 जब केनन सत्तर वर्ष का हुआ तब उसने महल्लेल को उत्पन्न किया। 13महल्लेल के जन्म के पश्चात् केनन आठ सौ चालीस वर्ष तक जीवित रहा। उसको अन्य पुत्र-पुत्रियां भी उत्पन्न हुईं। 14इस प्रकार केनन कुल नौ सौ दस वर्ष जीवित रहा। तत्पश्चात् उसकी मृत्यु हुई।

15 जब महल्लेल पैंसठ वर्ष का हुआ तब उसने यारद को उत्पन्न किया। 16यारद के जन्म के पश्चात् महल्लेल आठ सौ तीस वर्ष तक जीवित रहा। उसको अन्य पुत्र-पुत्रियां भी उत्पन्न हुईं। 17इस प्रकार महल्लेल कुल आठ सौ पंचानबे वर्ष जीवित रहा। तत्पश्चात् उसकी मृत्यु हुई।

18 जब यारद एक सौ बासठ वर्ष का हुआ तब उसने हनोक को उत्पन्न किया। 19हनोक के जन्म के पश्चात् यारद आठ सौ वर्ष तक जीवित रहा। उसको अन्य पुत्र-पुत्रियां भी उत्पन्न हुईं। 20इस प्रकार यारद कुल नौ सौ बासठ वर्ष जीवित रहा। तत्पश्चात् उसकी मृत्यु हुई।

21 जब हनोक पैंसठ वर्ष का हुआ तब उसने मथूशेलह को उत्पन्न किया। 22मथूशेलह के जन्म के पश्चात् हनोक तीन सौ वर्ष तक परमेश्वर का सहचर बना रहा। उसको अन्य पुत्र-पुत्रियां भी उत्पन्न हुईं। 23इस प्रकार हनोक कुल तीन सौ पैंसठ वर्ष जीवित रहा। 24हनोक परमेश्वर का सहचर था। तत्पश्चात् वह यहाँ नहीं रहा; क्योंकि परमेश्वर ने उसे उठा लिया।

25 जब मथूशेलह एक सौ सत्तासी वर्ष का हुआ तब उसने लामेक को उत्पन्न किया। 26लामेक के जन्म के पश्चात् मथूशेलह सात सौ बयासी वर्ष तक जीवित रहा। उसको अन्य पुत्र-पुत्रियां भी उत्पन्न हुईं। 27इस प्रकार मथूशेलह कुल नौ सौ उनहत्तर वर्ष जीवित रहा। तत्पश्चात् उसकी मृत्यु हुई।

28 जब लामेक एक सौ बयासी वर्ष का हुआ तब उसने एक पुत्र उत्पन्न किया। 29उसने उसका नाम 'नूह'* रखा, और कहा, 'जिस भूमि को प्रभु ने शाप दिया है, उसमें कार्य करते समय हमारे कठोर परिश्रम में यह हमें आराम देगा।'

30 नूह के जन्म के पश्चात् लामेक पांच सौ पंचानबे वर्ष तक जीवित रहा। उसको अन्य पुत्र-पुत्रियां भी हुईं। 31इस प्रकार लामेक कुल सात सौ सतहत्तर वर्ष जीवित रहा। तत्पश्चात् उसकी मृत्यु हुई।

32 जब नूह पांच सौ वर्ष का हुआ तब उसने शेम, हाम और याफत को उत्पन्न किया।

मनुष्य-जाति का दुराचार

6 जब मनुष्यों की संख्या भूमि पर बढ़ने लगी, और उनको कन्याएं भी उत्पन्न हुईं 2तब ईश-पुत्रों ने मनुष्य की पुत्रियों को देखा कि वे सुन्दर हैं। उन्होंने उनमें से जिन कन्याओं को पसन्द किया, उनको पत्नी बना लिया। 3प्रभु ने कहा, 'मेरा आत्मा मनुष्य में सदा निवास न करेगा; क्योंकि मनुष्य शरीर मात्र है। उसका जीवनकाल एक सौ बीस वर्ष का होगा।' 4उन दिनों पृथ्वी पर दानव थे। वे तब भी थे, जब ईश-पुत्रों ने मनुष्य की पुत्रियों से सहवास किया था। उनसे जो पुत्र उत्पन्न हुए, वे प्राचीनकाल के शक्तिशाली और सुप्रसिद्ध वीर थे।

5 प्रभु ने देखा कि पृथ्वी पर मनुष्य का दुराचार बढ़ गया है, और उसके मन के सारे विचार निरन्तर बुराई के लिए ही होते हैं। 6इस बात से प्रभु को दुःख हुआ कि उसने पृथ्वी पर मनुष्य को बनाया। उसके हृदय को बड़ी ठेस पहुंची। 7प्रभु ने कहा, 'मैं मनुष्य को पृथ्वी की सतह से मिटा दूंगा, जिसको मैंने रचा था। मैं मनुष्यों को, पशुओं को, रेंगनेवाले जन्तुओं

* नूह का अर्थ—'आराम देनेवाला' कहा गया है।

5:24 2 रा 2:11; इब्र 11:5; यहू 14; प्रव 44-16; 49:14; प्रज्ञा 4:10 **6:3** 1पत 3:20; यो 3:5 **6:4** गण 13:33; प्रव 16:7; बारू 3:26 **6:5** भज 14:2; मत 24:37 **6:6** 1 शम 15:11

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और आकाश के पक्षियों को नष्ट करूंगा;
क्योंकि मुझे इस बात का दुःख है कि मैंने उन्हें
बनाया।' 8किन्तु नूह पर प्रभु की कृपा-दृष्टि
थी।

9 यह नूह के परिवार का वृत्तान्त है। नूह
भक्त* पुरुष था। वह अपने समय के लोगों में
सर्वाधिक निर्दोष था। वह परमेश्वर का सहचर
था। 10उससे तीन पुत्र उत्पन्न हुए : शेम, हाम
और याफत।

जल-प्रलय के जलयान का निर्माण

11 परमेश्वर की दृष्टि में पृथ्वी भ्रष्ट हो गई
थी। वह हिंसा से भर गई थी। 12परमेश्वर ने
पृथ्वी को देखा कि वह भ्रष्ट हो गई है; क्योंकि
समस्त प्राणियों ने पृथ्वी पर अपना आचरण
भ्रष्ट कर लिया था। 13परमेश्वर ने नूह से कहा,
'मैंने समस्त प्राणियों का अन्त करने का
निश्चय किया है। उनके कारण पृथ्वी हिंसा से
भर गई है। मैं पृथ्वी सहित उनको नष्ट करूंगा।
14तू गोफेर वृक्ष** की लकड़ी का एक जलयान
बना। तू उसमें कमरे बनाना। उसके बाहर-
भीतर राल भी पोत देना। 15इस रीति से तू
जलयान बनाना: जलयान की लम्बाई डेढ़ सौ
मीटर,+ चौड़ाई पचीस मीटर और ऊंचाई पंद्रह
मीटर रखना। 16जलयान में एक झरोखा बनाना
और उसके आधा मीटर ऊपर छत बनाना।
जलयान में एक ओर द्वार रखना। तू जलयान
को तीन खण्डों का बनाना : निचला खण्ड,
बिचला खण्ड और उपरला खण्ड। 17मैं आकाश
के नीचे उन सब प्राणियों को, जिनमें जीवन का
श्वास है, नष्ट करने के लिए पृथ्वी पर जल-
प्रलय करूंगा। पृथ्वी के सब प्राणी मर जाएंगे।
18परन्तु मैं तेरे साथ अपना विधान++ स्थापित
करूंगा। तू अपनी पत्नी, अपने पुत्रों, और
बहुओं सहित जलयान में प्रवेश करना। 19प्रत्येक
जाति के जीवित प्राणियों में से दो-दो, नर और
मादा, अपने साथ जलयान में ले जाना जिससे
वे तेरे साथ जीवित रहें। 20प्रत्येक जाति के
पक्षियों, पशुओं, भूमि पर रेंगनेवाले जन्तुओं में
से दो-दो तेरे पास आएंगे कि तू उनको जीवित
रखे। 21प्रत्येक प्रकार का भोज्य पदार्थ, जो
खाया जाएगा, एकत्र कर लेना। वह तेरे और
उनके भोजन के लिए होगा।' 22नूह ने ऐसा ही
किया। उसने परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार
सब कुछ किया।

जल-प्रलय

7 प्रभु ने नूह से कहा 'तू अपने परिवार सहित
जलयान में जा। मैंने इस समय के लोगों में
केवल तुझे ही अपनी दृष्टि में धार्मिक पाया है।
2तू सब शुद्ध पशुओं में से नर और मादा के सात
जोड़े, और अशुद्ध पशुओं में से नर-मादा का
एक-एक जोड़ा लेना। 3आकाश के पक्षियों में
से नर और मादा के सात जोड़े लेना, जिससे
समस्त पृथ्वी पर उनकी जाति जीवित रहे। 4मैं
सात दिन के पश्चात् चालीस दिन और चालीस
रात तक पृथ्वी पर वर्षा करूंगा, और उन सब
प्राणियों को भूमि की सतह से मिटा दूंगा, जिन्हें
मैंने बनाया था।' 5नूह ने प्रभु की आज्ञा के
अनुसार सब कुछ किया।

6 जब पृथ्वी पर जल-प्रलय हुआ तब नूह
की आयु छः सौ वर्ष की थी। 7नूह जल-प्रलय
से बचने के लिए अपनी पत्नी, पुत्रों और
बहुओं के साथ जलयान में गया। 8शुद्ध और
अशुद्ध पशुओं के, पक्षियों के, भूमि पर
रेंगनेवाले समस्त जन्तुओं के9 दो-दो, अर्थात्
नर और मादा, नूह के साथ जलयान में गए,
जैसे परमेश्वर ने नूह को आज्ञा दी थी। 10सात
दिन के पश्चात् पृथ्वी पर प्रलय का जल बरसने
लगा। 11जिस वर्ष नूह छः सौ वर्ष का हुआ,
उसके दूसरे महीने के सत्रहवें दिन अथाह
महासागर के झरने फूट पड़े, आकाश के झरोखे
खुल गए और 12चालीस दिन और चालीस रात
तक पृथ्वी पर वर्षा होती रही। 13उसी दिन नूह
ने अपनी पत्नी तथा शेम, हाम और याफत
नामक पुत्रों, एवं तीनों बहुओं के साथ जलयान

---

* अथवा, 'धार्मिक'। ** संभवतः 'सरू' अथवा 'सरो' नामक वृक्ष + मूल में 'तीन सौ हाथ'। पुरानी माप हाथ प्रायः पैंतालीस सेन्टीमीटर के बराबर है। ++ अथवा 'व्यवस्थान', 'वाचा', 'प्रतिश्रव, 'संधि', 'समझौता', 'प्रसंविदा'।

6:9 2पत 2:5; प्रव 44:17 **6:22** इब्र 11:7 **7:1** प्रज्ञा 10:4 **7:2** लेव 11 **7:7** मत 24:34-39 **7:11** 2पत 3:6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

में प्रवेश किया। 14उनके साथ प्रत्येक जाति के
वन-पशु, पालतू पशु, धरती पर रेंगनेवाले जन्तु
और जाति-जाति के पक्षी तथा पतिंगे भी गए।
15समस्त प्राणियों में से दो-दो प्राणी, जिनमें
जीवन का श्वास था, नूह के साथ जलयान में
गए। 16समस्त प्राणियों के नर और मादा
जलयान में गए, जैसे परमेश्वर ने आज्ञा दी थी।
प्रभु ने नूह को जलयान के भीतर बन्द कर
दिया। 17पृथ्वी पर चालीस दिन तक प्रलय
होता रहा। जल बढ़ता गया। उससे जलयान
ऊपर उठने लगा। वह पृथ्वीतल से ऊंचा उठ
गया। 18जल प्रबल होने लगा। वह बढ़ते-बढ़ते
पृथ्वी पर फैल गया, और जलयान जल की
सतह पर तैरने लगा। 19जल बढ़कर पृथ्वी पर
इतना प्रबल हुआ कि आकाश के नीचे के
समस्त ऊंचे-ऊंचे पहाड़ भी उसमें डूब गए।
20जल की प्रबलता से पहाड़ भी उसमें प्राय:
सात मीटर+ तक डूब गए। 21पक्षी, पालतू पशु,
वन-पशु, पृथ्वी पर झुण्ड के झुण्ड में रहनेवाले
जीवजन्तु, और मनुष्य-जाति, अर्थात् पृथ्वी का
प्रत्येक प्राणी मर गया। 22शुष्क भूमि का प्रत्येक
प्राणी, जिसके नथुनों में जीवन का श्वास था,
मर गया। 23प्रभु ने भूमि पर रहनेवाले प्रत्येक
जीवित प्राणी को, मनुष्य और पशु को,
रेंगनेवाले जन्तुओं को, आकाश के पक्षियों को
मिटा डाला। वे पृथ्वी से मिटा डाले गए। केवल
नूह और उसके साथ जलयान में रहनेवाले बच
गए।

24 जल पृथ्वी पर एक सौ पचास दिन तक
प्रबल रहा।

जल-प्रलय की समाप्ति

8 परमेश्वर ने नूह एवं उन समस्त वन-
पशुओं और पालतू पशुओं की सुध ली,
जो जलयान में उसके साथ थे। उसने पृथ्वी पर
हवा बहायी और जल घटने लगा। 2अतल सागर
के झरने तथा आकाश के झरोखे बन्द हो गए।
आकाश से वर्षा भी रुक गई, 3और जल पृथ्वी
पर धीरे-धीरे घटने लगा। एक सौ पचासवें दिन
जल घट गया 4और जलयान सातवें महीने के
सत्रहवें दिन* अरारट नामक पर्वत पर टिक
गया। 5जल दसवें महीने तक घटता चला गया।
दसवें महीने के पहले दिन पहाड़ों के शिखर
दिखाई दिए।

6 नूह ने चालीस दिन के पश्चात् जलयान
का झरोखा खोला, जिसे उसने बनाया था,
7और एक कौआ उड़ा दिया। जब तक पृथ्वी
पर का जल सूख न गया, तब तक कौआ यहां-
वहां उड़ता रहा। 8तत्पश्चात् नूह ने यह देखने
के लिए कि भूमि की सतह का जल घटा कि
नहीं, अपने पास से एक कबूतरी को भी
उड़ाया। 9पर कबूतरी को अपने पैर टेकने का
आधार भी न मिला; क्योंकि समस्त पृथ्वी की
सतह पर जल फैला था। अत: वह नूह के पास
जलयान में लौट आई। नूह ने अपना हाथ
बढ़ाकर उसे पकड़ लिया, और उसे अपने साथ
जलयान में ले गया। 10वह सात दिन तक और
ठहरा रहा। तत्पश्चात् उसने जलयान से कबूतरी
को पुन: उड़ाया। 11सन्ध्या के समय कबूतरी
उसके पास लौट आई। उसकी चोंच में ताजा
तोड़ी हुई जैतून की पत्ती थी। अत: नूह को
मालूम हो गया कि पृथ्वी की सतह का जल
घट गया है। 12पर उसने सात दिन तक और
प्रतीक्षा की। तत्पश्चात् नूह ने कबूतरी को
उड़ाया, किन्तु वह उसके पास फिर लौट कर
न आई।

13 जिस वर्ष नूह छ: सौ एक वर्ष का हुआ,
उसके पहले महीने के पहले दिन पृथ्वी का
जल सूख गया। नूह ने जलयान की छत
खोलकर देखा कि भूमि की सतह सूख रही है।
14दूसरे महीने के सत्ताइसवें दिन धरती सूख
गई। 15तब परमेश्वर ने नूह से कहा, 16'तू अपनी
पत्नी, पुत्रों और बहुओं को साथ ले कर
जलयान से बाहर निकल। 17तेरे साथ जो जीवित
प्राणी, अर्थात् पशु-पक्षी, धरती पर रेंगनेवाले
जन्तु हैं, उन्हें भी तू जलयान से बाहर निकाल
ले जिससे वे पृथ्वी पर झुण्ड के झुण्ड उत्पन्न

+ मूल में, 'पन्द्रह हाथ'। * अथवा, '17वीं तारीख को'

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

करें, अत्यन्त फलवन्त हों, और पृथ्वी में भर
जाएं।' 18नूह अपनी पत्नी, पुत्रों और बहुओं के
साथ जलयान से बाहर निकला। 19सब पशु,
रेंगनेवाले जन्तु, पक्षी तथा धरती के समस्त
गतिमान जीव अपनी जाति के अनुसार जलयान
से बाहर निकल आए।

20नूह ने प्रभु के लिए एक वेदी बनाई।
उसने शुद्ध पशुओं और शुद्ध पक्षियों में से कुछ
को चुना और वेदी पर उनकी अग्नि-बलि
चढ़ाई। 21जब प्रभु को अग्निबलि क़ी सुखद
सुगन्ध मिली तब उसने अपने हृदय में कहा,
'अब मैं मनुष्य के क़ारण भूमि को कभी शाप
न दूंगा। बचपन से ही मनुष्य के मन के विचार
बुराई के लिए होते हैं। जैसा मैंने अभी किया
है वैसा जीवित प्राणियों का पुनः विनाश न
करूंगा। 22अब से जब तक पृथ्वी स्थिर रहेगी
तब तक बोआई और कटाई का समय, ठण्ड
और गर्मी, ग्रीष्म तथा शीत, दिन और रात का
होना समाप्त न होगा।'

परमेश्वर का नूह के साथ विधान [वाचा] स्थापित करना

9 परमेश्वर ने नूह और उसके पुत्रों को
आशिष दी और उनसे कहा, 'फलो-फूलो
और पृथ्वी में भर जाओ। 2धरती के पशु, आकाश
के पक्षी, भूमि पर रेंगनेवाले जन्तु, और समुद्र
की मछलियां, वे सब के सब आतंकित होकर
तुमसे डरेंगे। उन पर तुम्हारा अधिकार होगा।
मैं उनको तुम्हारे हाथ में सौंपता हूं। 3सब गतिमान
जीव-जन्तु तुम्हारा आहार होंगे। जैसे मैंने
तुमको हरे पौधे दिए थे वैसे अब सब कुछ देता
हूं। 4पर, तुम मांस को उसके प्राण अर्थात् रक्त
के साथ न खाना; 5क्योंकि मैं निश्चय ही तुम्हारे
रक्त का बदला लूंगा। मैं प्रत्येक पशु से, प्रत्येक
मनुष्य से उसका प्रतिशोध लूंगा। मैं प्रत्येक
मनुष्य से उसके भाई-बहिन के रक्त का बदला
लूंगा। 6जो कोई मनुष्य का रक्त बहाएगा,
उसका भी रक्त मनुष्य द्वारा बहाया जाएगा;
क्योंकि परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप में
बनाया है। 7तुम फलो-फूलो, पृथ्वी पर अत्यन्त
बढ़ते जाओ और असंख्य हो जाओ।'

8 परमेश्वर ने नूह और उसके पुत्रों से कहा,
9 'मैं तुम्हारे और तुम्हारे पश्चात् होने वाली
तुम्हारी सन्तान के साथ 10एवं तुम्हारे पास के
प्रत्येक जीवित प्राणी अर्थात् पक्षी, पालतू पशु,
पृथ्वी के समस्त वन-पशु और जलयान से
बाहर निकलने वाले सब जीव-जन्तुओं के
साथ अपना विधान स्थापित करता हूं। 11मैं
तुम्हारे साथ यह विधान स्थापित करता हूं कि
फिर कभी जल-प्रलय से प्राणी नष्ट न होंगे।
पृथ्वी का विनाश करने के लिए फिर कभी
जल-प्रलय न होगा।' 12परमेश्वर ने पुनः कहा,
'मैं तुम्हारे साथ तथा तुम्हारे जीवित प्राणियों के
साथ युग-युगान्त की पीढ़ी के लिए एक विधान
स्थापित करता हूं। उसका यह चिह्न है: 13मैं
बादलों में अपना धनुष रखता हूं। वह मेरे और
पृथ्वी के मध्य किये गये विधान का चिह्न होगा।
14जब मैं पृथ्वी के ऊपर बादल लाऊंगा और
उनके मध्य धनुष दिखाई देगा, 15तब तुम्हारे
एवं समस्त जीवित प्राणियों के साथ किये गये
अपने विधान को स्मरण करूंगा, और जल का
प्रलय कदापि न होगा कि समस्त प्राणी नष्ट हो
जाएं। 16जब बादलों में धनुष दिखाई देगा तब
उसे देखकर मैं उस शाश्वत विधान को स्मरण
करूंगा, जो मुझ-परमेश्वर और पृथ्वी के
समस्त जीवित प्राणियों के मध्य स्थापित किया
गया है।' 17तत्पश्चात् परमेश्वर ने नूह से कहा,
'जो विधान मैंने अपने और पृथ्वी के समस्त
प्राणियों के मध्य स्थापित किया है, उसका यही
चिह्न है।'

नूह और उसके पुत्र

18 जलयान से बाहर निकलनेवाले नूह के
पुत्र थे: शेम, हाम और याफत। हाम कनान का
पिता था। 19ये ही तीन नूह के पुत्र थे, और
उनके द्वारा ही पृथ्वी मनुष्यों से भर गई।

20 खेती-किसानी करने वाले नूह ने खेती
करना आरम्भ किया। उसने अंगूर का एक

---

8 : 21 2 कुर 2 : 15 ; यश 54 : 9 **9 : 1** उत 1 : 28 **9 : 4** लेव 7 : 26 ; 17 : 11 ; व्य 12 : 23 ; 1 तिम 4 : 3
9 : 6 नि 20 : 13 ; उत 1 : 27 **9 : 10** उत 17 : 4 ; नि 24 : 7 **9 : 11** यश 54 : 9 ; प्रव 44 : 18

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
उद्यान लगाया। 21वह एक दिन अंगूर की
मदिरा पीकर मतवाला हो गया और अपने तम्बू
में नग्न होकर लेट गया। 22कनान के पिता हाम
ने अपने पिता की नग्नता देखी। उसने बाहर
जाकर अपने दोनों भाइयों को बता दिया।
23शेम और याफत ने एक चादर ली। वे उसे
अपने कन्धों पर डालकर उल्टे पग चलकर
भीतर गए और उन्होंने अपने पिता की नग्नता
को ढांप दिया। वे अपना मुंह पीछे किए हुए थे।
उन्होंने अपने पिता की नग्नता न देखी। 24जब
नूह का नशा उतरा तब उसे ज्ञात हुआ कि उसके
छोटे पुत्र ने उसके साथ कैसा व्यवहार किया
है। 25नूह ने उसे शाप दिया,

'कनान शापित है,
वह अपने भाइयों का दासानुदास होगा।'

26 नूह ने फिर कहा,
'शेम का प्रभु परमेश्वर धन्य है,
कनान शेम का दास हो।

27 परमेश्वर याफत* के नाम के अनुरूप उसका
विस्तार करे!
याफत शेम के तम्बुओं में निवास करे,
और कनान उसका दास बने।'

28 जल-प्रलय के पश्चात् नूह तीन सौ
पचास वर्ष तक और जीवित रहा। 29इस प्रकार
नूह की कुल आयु नौ सौ पचास वर्ष की हुई।
तत्पश्चात् उसकी मृत्यु हो गई।

नूह के पुत्रों का वंश

10 नूह के पुत्रों—शेम, हाम और याफत—की
वंशावली यह है। जल-प्रलय के पश्चात्
उनको पुत्र उत्पन्न हुए थे।

2 याफत के पुत्र : गोमर, मागोग, मादई,
यवन, तूबल, मेशक और तीरस थे। 3गोमर के
पुत्र : अशकनज, रीपत और तोगर्मा थे। 4यवन
के पुत्र एलीशाह, तर्शीश, कित्ती और दोदानी+
थे। 5इन्हीं से समुद्रतटवर्ती देशों में रहने वाली
जातियां फैलीं। ये ही अपने-अपने देशों
अपनी-अपनी भाषाओं, कुलों और जातियों के
अनुसार याफत के वंशज थे।

6 हाम के पुत्र : कूश, मिस्र, पूट और कनान
थे। 7कूश के पुत्रः सबा, हवीला, सबता, रमा
और सब्तका थे। रमा के पुत्रः शबा और ददान
थे। 8कूश ने निमरोद नामक पुत्र को भी उत्पन्न
किया था, जो पृथ्वी का पहला महा शक्तिशाली
विजेता था। 9वह प्रभु की दृष्टि में महान
शिकारी था। इसलिए उसके विषय में यह
कहावत प्रचलित है : 'प्रभु की दृष्टि में निमरोद
के समान महान शिकारी।' 10उसके राज्य का
आरम्भ बेबीलोन, एरख और अक्कद से हुआ।
ये सब शिनआर देश में स्थित हैं। 11वह उस
देश से निकलकर असीरिया देश में आया और
वहां नीनवे, रहोबोत-ईर और कालह नामक
नगरों को बसाया। 12उसने रसन नगर को भी
बसाया जो नीनवे और कालह के बीच में है।
वह महानगर है। 13मिस्र ने लूदी, अनामी,
लहाबी, नप्तूही, 14पत्रूसी, कसलूही और कप्तोरी
को उत्पन्न किया। कसलूही से पलिश्ती जाति
निकली।

15 कनान ने अपने पहिलौठे पुत्र सीदोन को
उत्पन्न किया, तदुपरान्त हेत, 16यबूसी, एमोरी,
गिर्गाशी; 17हिव्वी, अर्की, सीनी, 18अर्वादी,
समारी और हमाती हुए। कनानियों का कुल भी
सर्वत्र फैल गया। 19कनानियों की सीमा सीदोन
से गरारा की ओर गाजा तक और सदोम,
गमोरा, अदमा और सबोयीम की ओर लाशा
तक थी। 20ये ही अपने कुलों, भाषाओं, देशों
और जातियों के अनुसार हाम के वंशज थे।

21 शेम को भी पुत्र उत्पन्न हुए। वह सभी
एबर-वंशियों का मूल-पुरुष और याफत का
बड़ा भाई था। 22शेम के पुत्र : एलाम, अश्शूर,
अर्पक्षद, लूद और सीरिया** थे। 23सीरिया के
पुत्र : ऊस, हूल, गेतर और मश थे। 24अर्पक्षद
ने शेलह को, और शेलह ने एबर को उत्पन्न
किया। 25एबर के दो पुत्र उत्पन्न हुए : पहले
का नाम 'पेलग'* था, क्योंकि उसके दिनों में
पृथ्वी के निवासी विभाजित हो गए थे। उसके
भाई का नाम योक्टन था। 26योक्टन ने अल्मोदद,

---

* याफत अर्थात् 'विस्तार करना' + पाठांतर, 'रोदानी' ** अथवा 'अराम' * अर्थात् 'विभाजन'

9 : 22 लेव 20 : 13 **9 : 25** व्य 27 : 16 **10 : 1** 1इत 1 : 5; व्य 32 : 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शेलप, हसर्मावत, यारह, 27हदोराम, ऊजल,
दिक्ला, 28ओबल, अबीमाएल, शबा, 29ओपीर,
हवीला और योबाब को उत्पन्न किया। ये सब
योक्टन के पुत्र थे। 30उनके निवास स्थान की
सीमा मेशा से पूर्व के पहाड़ी प्रदेश सपारा तक
थी। 31ये ही अपने कुलों, भाषाओं, देशों और
जातियों के अनुसार शेम के वंशज थे।
32ये ही अपनी विभिन्न वंशावलियों और
जातियों के अनुसार नूह के पुत्रों के वंशज थे।
इन्हीं से जल-प्रलय के पश्चात् जातियां
निकलकर पृथ्वी में फैल गईं।

बेबीलोन की मीनार

11 सारे संसार की एक ही भाषा थी, और
सब जातियां समान शब्दों का प्रयोग
करती थीं। 2जब लोगों ने पूर्व में प्रवास किया
तब उन्हें शिनआर देश में एक मैदान मिला। वे
उस मैदान में बस गए। 3उन्होंने आपस में कहा,
'आओ, हम ईंटें बनाकर उन्हें आग में भलीभांति
पकाएं।' उन्होंने पत्थर के स्थान पर ईंटें और
चूने के स्थान पर मिट्टी का गारा* प्रयुक्त किया।
4उन्होंने फिर कहा, 'आओ, हम अपने लिए
एक नगर और ऐसी एक मीनार बनाएं जिसका
शिखर आकाश को स्पर्श करे। इस प्रकार हम
नाम कमा लें। ऐसा न हो कि हमें समस्त पृथ्वी
पर तितर-बितर होना पड़े।' 5जिस नगर और
मीनार को मानव-पुत्र बना रहे थे, उनको देखने
के लिए प्रभु स्वर्ग से उतरा। 6प्रभु ने कहा,
'देखो, ये एक ही कौम के लोग हैं। इन सबकी
भाषा भी एक है। यह तो उनके भविष्य के
कार्यों का आरम्भ मात्र है। जो कार्य वे आगे
करना चाहेंगे, वह उनके लिए असम्भव न
होगा। 7इसलिए आओ, हम उतरकर वहां
उनकी भाषा में ऐसा सम्भ्रम उत्पन्न करें कि वे
एक दूसरे की भाषा समझ न सकें।' 8इस प्रकार
प्रभु ने उनको वहां से समस्त पृथ्वी पर तितर-
बितर कर दिया। उन्होंने उस नगर का निर्माण
करना छोड़ दिया। 9इस कारण उस का नाम
'बाबेल'** पड़ा; क्योंकि वहां प्रभु ने समस्त
संसार की भाषा में सम्भ्रम उत्पन्न किया था।
प्रभु ने वहीं से उन लोगों को समस्त पृथ्वी पर
तितर-बितर किया।

शेम के वंशज

10 ये शेम के वंशज हैं : जलप्रलय के दो
वर्ष पश्चात् जब शेम सौ वर्ष का हुआ तब उसने
अर्पक्षद को उत्पन्न किया। 11अर्पक्षद के जन्म
के पश्चात् शेम पांच सौ वर्ष तक जीवित रहा।
उसको अन्य पुत्र-पुत्रियां भी उत्पन्न हुईं।
12 जब अर्पक्षद पैंतीस वर्ष का हुआ तब
उसने शेलह को उत्पन्न किया। 13शेलह के जन्म
के पश्चात् अर्पक्षद चार सौ तीन वर्ष तक
जीवित रहा। उसको अन्य पुत्र-पुत्रियां भी
उत्पन्न हुईं।
14 जब शेलह तीस वर्ष का हुआ तब उसने
एबर को उत्पन्न किया। 15एबर के जन्म के
पश्चात् शेलह चार सौ तीन वर्ष तक जीवित
रहा। उसको अन्य पुत्र-पुत्रियां भी उत्पन्न हुईं।
16 जब एबर चौंतीस वर्ष का हुआ तब
उसने पेलग को उत्पन्न किया। 17पेलग के जन्म
के पश्चात् एबर चार सौ तीस वर्ष तक जीवित
रहा। उसको अन्य पुत्र-पुत्रियां भी उत्पन्न हुईं।
18 जब पेलग तीस वर्ष का हुआ तब उसने
रऊ को उत्पन्न किया। 19रऊ के जन्म के पश्चात्
पेलग दो सौ नौ वर्ष तक जीवित रहा। उसको
अन्य पुत्र-पुत्रियां भी उत्पन्न हुईं।
20 जब रऊ बत्तीस वर्ष का हुआ तब उसने
सरुग को उत्पन्न किया। 21सरुग के जन्म के
पश्चात् रऊ दो सौ सात वर्ष तक जीवित रहा।
उसको अन्य पुत्र-पुत्रियां भी उत्पन्न हुईं ।
22 जब सरुग तीस वर्ष का हुआ तब उसने
नाहोर को उत्पन्न किया। 23नाहोर के जन्म के
पश्चात् सरुग दो सौ वर्ष तक जीवित रहा।
उसको अन्य पुत्र-पुत्रियां भी उत्पन्न हुईं ।
24 जब नाहोर उनतीस वर्ष का हुआ तब
उसने तेरह को उत्पन्न किया। 25तेरह के जन्म

* शब्दशः, 'डामर' ** अर्थात् 'गड़बड़' संभ्रम

11 : 4 यश 14 : 13 **11 : 7** प्रे 2 : 4-11 ; जक 8 : 23 प्रक 7 : 9 **11 : 9** यिर 51 : 53 , यो 11 : 52
11 : 10 1 इत 1 : 17

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

के पश्चात् नाहोर एक सौ उन्नीस वर्ष तक
जीवित रहा। उसको अन्य पुत्र-पुत्रियां भी
उत्पन्न हुईं।

26 जब तेरह सत्तर वर्ष का हुआ तब उसने
अब्राम, नाहोर और हारान को उत्पन्न किया।

तेरह के वंशज

27 ये तेरह के वंशज हैं : उसने अब्राम,
नाहोर और हारान को उत्पन्न किया। हारान ने
लोट* को उत्पन्न किया। 28हारान की मृत्यु
उसके पिता तेरह के जीवन काल में ही कसदी
जाति के ऊर नामक नगर में हुई, जो उसका
जन्म स्थान था। 29अब्राम और नाहोर ने विवाह
किया। अब्राम की पत्नी का नाम सारय और
नाहोर की पत्नी का नाम मिल्का था। मिल्का
हारान की पुत्री थी और हारान मिल्का और
यिस्का दोनों का पिता था। 30सारय बांझ थी।
उसके कोई सन्तान न थी।

31 तेरह ने अपने पुत्र अब्राम, हारान के पुत्र
अर्थात् अपने पौत्र लोट और अब्राम की पत्नी
एवं अपनी बहू सारय को साथ लेकर कसदी
जाति के ऊर नगर को छोड़ दिया। वह कनान
देश की ओर चल पड़ा। परन्तु जब वे हारान
नामक देश में पहुंचे तब वहीं बस गए।

32 तेरह की पूर्ण आयु दो सौ पांच वर्ष की
थी। उसकी मृत्यु हारान देश में हुई।

अब्राहम के आख्यान का आरम्भ : अब्राहम को परमेश्वर का आवाहन

12 प्रभु ने अब्राम से कहा, 'तू अपने देश,
जन्म-स्थान और नाते-रिश्तेदारी को**
छोड़कर उस देश को जा, जो मैं तुझे दिखाऊंगा।
2मैं तुझसे एक बड़ा राष्ट्र उत्पन्न करूंगा। मैं तुझे
आशिष दूंगा, और तेरे नाम को महान बनाऊंगा
कि तू मानव-जाति के लिए आशिष का माध्यम
बने। 3जो तुझे आशिष देंगे, मैं उनको आशिष
दूंगा। परन्तु जो तुझे शाप देगा, उसे मैं शाप
दूंगा। पृथ्वी के समस्त कुटुम्ब तेरे द्वारा मुझसे
आशिष पाएंगे।'

4 प्रभु की आज्ञा अनुसार अब्राम चले गए।
उनके साथ उनका भतीजा लोट भी गया। जब
अब्राम ने हारान देश से प्रस्थान किया तब वह
पचहत्तर वर्ष के थे। 5वह अपनी पत्नी सारय,
भतीजे लोट और अपनी अर्जित सम्पत्ति एवं
हारान देश में प्राप्त दास-दासियों को लेकर
कनान देश की ओर चले। उन्होंने कनान देश
में प्रवेश किया। 6वे चलते-चलते शकेम नामक
स्थान पर पहुंचे जहां 'मोरे का पवित्र बांज वृक्ष'
है। उस समय कनानी जाति उस देश में रहती
थी। 7प्रभु ने अब्राम को दर्शन देकर कहा, 'मैं
यह देश तेरे वंश को दूंगा।' अत: अब्राम ने प्रभु
के लिए, जिसने उन्हें दर्शन दिया था, वहां एक
वेदी बनाई। 8तत्पश्चात् वह वहां से हटकर
बेत-एल नगर की पूर्व दिशा में स्थित एक
पहाड़ पर पहुंचे। वहां उन्होंने अपना तम्बू
गाड़ा। पहाड़ के पश्चिम में बेत-एल और पूर्व
में ऐ नगर थे। वहां अब्राम ने प्रभु के लिए एक
वेदी बनाई, और प्रभु के नाम से आराधना की।
9अब्राम यात्रा करते रहे। वह नेगेव क्षेत्र+ की
ओर गये।

अब्राहम मिस्र देश में

10 उस देश में अकाल पड़ा था। अब्राम
मिस्र देश में प्रवास करने के लिए चले गए,
क्योंकि देश में भयंकर अकाल था। 11जब वे
मिस्र देश के निकट पहुंचे तब अब्राम ने उसमें
प्रवेश करने से पूर्व अपनी पत्नी सारय से कहा,
'सुनो, मैं जानता हूं कि तुम देखने में सुन्दर हो।
12मिस्र के निवासी तुम्हें देखकर कहेंगे, "यह
उसकी पत्नी है", और वे मुझे मार डालेंगे, पर
तुम्हें जीवित रहने देंगे। 13इसलिए तुम यह कहना,
कि तुम मेरी बहिन हो जिससे तुम्हारे कारण
मेरा कल्याण हो, और मेरे प्राण बचें।' 14जब

---

* अथवा, 'लूत' **शब्दश: 'पिता के घर को' +अथवा कनान देश का दक्षिणी भाग

12 : 1 प्रे 7 : 3; प्रज्ञा 10 : 5 **12 : 2** उत 15 : 5 ; 17 : 6; 18 : 18 ; 22 : 17 ; 28 : 14 ; 32 : 12 ; 35 : 11 46 : 3 **12 : 3** उत 26 : 4 ; गल 3 : 8 **12 : 5** इब्र 11 : 8 **12 : 7** उत 13 : 15 ; 15 : 18 ; 17 : 8 ; 26 : 3 ; 28 : 4 ; 35 : 12; 48 : 4 ; प्रे 7 : 5 ; गल 3 : 16 **12 : 8** उत 4 : 26 **12 : 10–20** उत 20 ; 26 : 7–11 **13 : 10** उत 2 : 10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अब्राम ने मिस्र देश में प्रवेश किया तब वहां के निवासियों ने देखा कि वह स्त्री बड़ी सुन्दर है।
15मिस्र के अधिकारियों ने उसे देखकर राजा फरओ* से उसकी प्रशंसा की। अत: सारय को फरओ के महल में पहुंचाया गया।
16फरओ ने उसके कारण अब्राम से सद्‌व्यवहार किया। अब्राम को भेड़-बकरी, गाय-बैल, सेवक-सेविकाएं, गधे-गदहियां और ऊंट प्राप्त हुए।
17 किन्तु प्रभु ने अब्राम की पत्नी सारय के कारण फरओ और उसके राज-परिवार को बड़ी-बड़ी विपत्तियों से पीड़ित किया।
18अतएव फरओ ने अब्राम को बुला कर उनसे कहा, 'तुमने मेरे साथ यह क्या किया? तुमने मुझे क्यों नहीं बताया कि वह तुम्हारी पत्नी है?
19तुमने मुझसे क्यों कहा कि वह तुम्हारी बहिन है? इसीलिए मैंने उसे अपनी पत्नी बना लिया था। परन्तु अब अपनी पत्नी को लेकर चले जाओ।'
20फरओ ने अब्राम के विषय में अपने अधिकारियों को आदेश दिया, और उन लोगों ने अब्राम को उनकी पत्नी एवं समस्त सम्पत्ति के साथ विदा कर दिया।

अब्राहम और लोट का विभिन्न दिशाओं में जाना

13 अब्राम अपनी पत्नी और समस्त सम्पत्ति के साथ मिस्र देश से नेगेब क्षेत्र की ओर लौटे। लोट उनके साथ था।
2 अब्राम अपने पशुओं और सोना-चांदी के कारण बहुत धनी हो गए थे।
3वह नेगेब से आगे बढ़कर बेत-एल नगर के उस स्थान पर पहुँचे जहाँ उन्होंने आरम्भ में बेत-एल और ऐ नगर के बीच में डेरा डाला था।
4उन्होंने वहीं पर सर्वप्रथम वेदी बनाई थी, और वहीं प्रभु के नाम से आराधना की थी।
5 लोट के पास भी, जो अब्राम का सहचर था, भेड़-बकरी, गाय-बैल और तम्बू थे।
6उस देश में इतना बड़ा चरागाह नहीं था कि वे एक साथ रह सकें; क्योंकि उनके पास पशु और सेवक-सेविकाएँ इतने अधिक थे कि वे एक साथ नहीं रह सकते थे।
7अब्राम के पशुओं के चरवाहों एवं लोट के पशुओं के चरवाहों के मध्य झगड़े होने लगे। (उस समय उस देश में कनानी और परिज्जी जातियाँ रहती थीं।)
8 अब्राम ने लोट से कहा, 'तुम्हारे और मेरे मध्य, तुम्हारे चरवाहों और मेरे चरवाहों के मध्य झगड़े नहीं होने चाहिए, क्योंकि हम रिश्तेदार हैं।
9देखो, सारा देश तुम्हारे सामने है। तुम मुझसे अलग हो जाओ। यदि तुम बायीं ओर जाओगे तो मैं दाहिनी ओर जाऊँगा। यदि तुम दाहिनी ओर जाओगे तो मैं बायीं ओर जाऊँगा।'
10अत: लोट ने अपनी आँखें ऊपर उठायीं और सामने देखा : सोअर की दिशा में यर्दन नदी की समस्त घाटी प्रभु के उद्यान एवं मिस्र देश की भूमि के समान जल से सर्वत्र सिंची हुई थी। (यह प्रभु के द्वारा किए गए सदोम और गमोरा के विनाश के पूर्व की बात है।)
11 लोट ने यर्दन नदी की समस्त घाटी अपने लिए चुन ली। वह पूर्व की ओर चला गया। इस प्रकार वे एक दूसरे से अलग हो गए।
12अब्राम कनान देश में बस गये। लोट घाटी के नगरों में रहने लगा। उसने सदोम नगर के पास अपना तम्बू गाड़ा।
13प्रभु की दृष्टि में सदोम नगर के निवासी बड़े दुष्ट और महापापी थे।
14 जब लोट अब्राम से अलग हो गया, तब प्रभु ने अब्राम से कहा, 'अपनी आँखें ऊपर उठा। जिस स्थान पर तू खड़ा है, वहाँ से उत्तर-दक्षिण, पूर्व-पश्चिम चारों ओर दृष्टि दौड़ा।
15यह सारा देश, जो तू देख रहा है, मैं तुझे और तेरे वंश को युग-युगान्त के लिए दूंगा।
16मैं तेरे वंशजों को पृथ्वी के रजकणों के सदृश बढ़ाऊँगा। उनकी गिनती करना असम्भव होगा: यदि कोई पृथ्वी के रजकणों को गिन सकेगा तो वह तेरे वंशजों को भी गिन सकेगा।
17उठ, इस समस्त देश में भ्रमण कर; **क्योंकि मैं यह देश तुझे दूंगा।'
18अब्राम अपना तम्बू उखाड़कर ममरे के बांज+ वृक्षों के पास, जो

---

* अथवा, ''फिरौन''; मिस्र देश के राजा की एक उपाधि। ** मूल में ''लम्बाई-चौड़ाई में चल'' + अथवा, 'बलूत'

13 : 15 प्रे 7 : 5

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
हेब्रोन नगर में थे, आकर रहने लगे। उन्होंने वहाँ प्रभु के लिए एक वेदी बनाई।

अब्राहम का लोट को बन्धन-मुक्त करना

14 शिनआर के राजा अम्रापल, एल्लसार के राजा अर्योक, एलम के राजा कदार्लाओमर और गोयीम के राजा तिदाल के राज्यकाल की यह घटना है।
[2]इन राजाओं ने मिलकर
सदोम के राजा बेरा, गमोरा के राजा बिर्शा, अदमा के राजा शिनाब, सबोयीम के राजा शेमएबर और बेला अर्थात् सोअर के राजा के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया।
[3]ये पांच राजा सिद्दीम की घाटी अर्थात् मृत सागर में एकत्र हुए।
[4]ये बारह वर्ष तक कदार्लाओमर के अधीन रहे; किन्तु तेरहवें वर्ष उन्होंने विद्रोह कर दिया।
[5]चौदहवें वर्ष कदार्लाओमर और उसके सन्धिबद्ध राजा चढ़ आए। वे अशतरोत-कर्नयिम में रपाई जाति को, हाम में जूजी जाति को, शाबेकिर्यातईम में एमी जाति को
[6]और सेईर पर्वत के निवासी होरी जाति को पराजित करते हुए निर्जन प्रदेश की सीमा पर स्थित एल-पारन तक पहुँच गए।
[7]तत्पश्चात् वे लौटकर एन-मिशपाट अर्थात् कादेश में आए। उन्होंने अमालेकी जाति के समस्त प्रदेश को, एवं हससोन-तामर में रहनेवाली एमोरी जाति को भी पराजित किया।
[8]तब सदोम, गमोरा, अदमा, सबोयीम और बेला अर्थात् सोअर के राजा निकले। वे सिद्दीम की घाटी में
[9]एलाम के राजा कदार्लाओमर, गोयीम के राजा तिदाल, शिनआर के राजा अम्रापल और एल्लसार के राजा अर्योक के विरुद्ध युद्ध के लिए एकत्र हुए। चार राजा पांच के विरुद्ध!
[10]सिद्दीम की घाटी में डामर के अनेक गड्ढे थे। जब सदोम और गमोरा के राजा भागे तब उनकी सेना के अनेक सिपाही उनमें गिर पड़े। शेष पहाड़ की ओर भाग गए।
[11]शत्रुओं ने सदोम और गमोरा की समस्त सम्पत्ति और भोजन सामग्री लूट ली और वे चले गए।
[12]उन्होंने सदोम में रहनेवाले अब्राम के भतीजे लोट को भी बन्दी बना लिया और वे उसकी सम्पत्ति लूटकर चले गए।

13 एक मनुष्य, जो भागकर बच गया था, इब्रानी जाति के अब्राम के पास आया, और उन्हें यह समाचार दिया। अब्राम बांज वृक्षों के जंगल में रहते थे। यह जंगल एमोरी जाति के ममरे नामक व्यक्ति का था। वह एशकोल और आनेर का भाई था। ये तीनों अब्राम के सन्धिबद्ध मित्र थे।
[14]जब अब्राम ने सुना कि उनका भतीजा लोट बन्दी बना लिया गया है तब उन्होंने अपने परिवार के तीन सौ अठारह, युद्ध-विद्या में प्रशिक्षित, सेवकों को लेकर दान नगर तक शत्रु का पीछा किया।
[15]अब्राम ने रात में अपने सेवकों को अनेक दलों में बांट दिया, तथा अपने सेवकों के साथ शत्रु पर आक्रमण किया और दमिश्क नगर के उत्तर में होबा नगर तक उनका पीछा किया।
[16]तत्पश्चात् वह समस्त संपत्ति तथा अपने भतीजे लोट को उसकी सम्पत्ति-सहित तथा स्त्री-पुरुषों को छुड़ाकर वापस ले आए।

मलकीसेदेक का अब्राहम को आशीर्वाद

17 कदार्लाओमर और उसके साथी राजाओं की पराजय के पश्चात् अब्राम लौट रहे थे। तब सदोम का राजा, अब्राम से भेंट करने, शावे की घाटी अर्थात् राजघाटी में आया।
[18]शालेम का राजा मलकीसेदेक रोटी और अंगूर का रस लेकर आया। वह सर्वोच्च परमेश्वर का पुरोहित था।
[19]उसने अब्राम को यह आशीर्वाद दिया:

'आकाश और पृथ्वी का सृष्टिकर्ता
सर्वोच्च परमेश्वर,
अब्राम को आशिष दे।
20 सर्वोच्च परमेश्वर धन्य है,
जिसने तेरे बैरियों को तेरे हाथ में
सौंप दिया।'

अब्राम ने उसको अपनी प्रत्येक वस्तु का दसवां अंश भेंट किया।
[21]सदोम के राजा ने अब्राम से कहा, 'सम्पत्ति तो आप अपने पास रखिए, पर मेरे आदमी मुझे वापस दे दीजिए।'
[22]अब्राम ने सदोम के राजा को उत्तर दिया, 'मैंने आकाश और पृथ्वी के सृष्टिकर्ता, सर्वोच्च प्रभु परमेश्वर की शपथ खाई है
[23]कि मैं आपकी

---

14 : 18 इब्र 7 :1-10; भज 110 : 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

परमेश्वर हूंगा।'
9 परमेश्वर ने अब्राहम को आज्ञा दी, 'तू
और तेरे पश्चात् तेरा वंश मेरे विधान का पालन
पीढ़ी से पीढ़ी करता रहे। 10यह मेरा विधान है
जिसका पालन तुम्हें करना है। यह मेरे और तेरे
मध्य तथा तेरे पश्चात् तेरे वंश के मध्य स्थापित
है : तुममें से प्रत्येक पुरुष का खतना किया
जाए। 11तुम अपने शिश्न के अग्रचर्म का खतना
करवाना। यह मेरे और तुम्हारे मध्य स्थापित
विधान का चिह्न होगा। 12तुम्हारे प्रत्येक बालक
का खतना उसके जन्म के आठवें दिन किया
जाए। प्रत्येक पीढ़ी के पुरुष का खतना होना
चाहिए, चाहे वह तुम्हारे घर में उत्पन्न हुआ दास
हो, अथवा विदेशी से धन देकर खरीदा गया
हो, जो तेरे वंश का नहीं है। 13जो तेरे घर में
उत्पन्न हुआ दास है, और जो धन देकर खरीदा
गया है, दोनों का खतना किया जाए। इस प्रकार
मेरा विधान, जिसका चिह्न तुम्हारे शरीर पर
होगा, शाश्वत विधान बना रहेगा। 14खतनारहित
पुरुष अर्थात् जिसके शिश्न के अग्रचर्म का
खतना नहीं किया गया है, वह अपने लोगों में
से नष्ट† किया जाएगा, क्योंकि उसने मेरे विधान
का उल्लंघन किया है।'
15 परमेश्वर ने अब्राहम से कहा, 'तू अपनी
पत्नी सारय को अब सारय मत कहना। उसका
नाम सारा* होगा। 16मैं उसको आशिष दूंगा।
मैं तुझे उसके माध्यम से एक पुत्र प्रदान करूँगा।
मैं उसको आशिष दूंगा और वह राष्ट्रों की माता
बनेगी। अनेक राज्यों के राजा उससे जन्म लेंगे'
17अब्राहम ने मुंह के बल गिर कर प्रणाम
किया। पर वह हंस पड़े। उन्होंने अपने हृदय
में कहा, 'क्या सौ वर्ष के बूढ़े को भी सन्तान
हो सकती है ? क्या नब्बे वर्ष की सारा गर्भवती
होगी ?' 18अब्राहम ने परमेश्वर से कहा, 'स्वामी,
यिश्माएल तेरी दृष्टि में बना रहे, यही बहुत है।'
19परमेश्वर ने कहा, 'नहीं, तेरी पत्नी सारा तेरे
लिए एक पुत्र को जन्म देगी। तू उसका नाम
इसहाक** रखना। मैं उसके साथ अपना
विधान स्थापित करूँगा। यह विधान उसके
पश्चात् भी उसके वंश के साथ शाश्वत विधान
होगा। 20मैंने यिश्माएल के विषय में तेरी बात
सुनी। देख, मैं उसे भी आशिष दूंगा। मैं उसे
फलवन्त बनाऊँगा, और उसे अत्यधिक बढ़ा
दूंगा। उससे बारह नायक उत्पन्न होंगे। मैं उसे
एक महान राष्ट्र बनाऊँगा। 21किन्तु मैं इसहाक
के साथ ही अपना विधान स्थापित करूँगा।
सारा इसहाक को आगामी वर्ष इसी ऋतु में
जन्म देगी।'
22 जब परमेश्वर उनसे बात कर चुका, तब
वह अब्राहम के पास से ऊपर चला गया।
23अब्राहम ने अपने पुत्र यिश्माएल और अपने
घर में उत्पन्न एवं धन देकर खरीदे गए प्रत्येक
दास को अर्थात् अपने परिवार के प्रत्येक पुरुष
को लेकर उनके शिश्न के अग्रचर्म का उसी
दिन खतना किया, जैसे परमेश्वर ने कहा था।
24जब अब्राहम का खतना किया गया तब वह
निन्यानबे वर्ष के थे। 25जब उनके पुत्र यिश्माएल
का खतना किया गया तब वह तेरह वर्ष का था।
26अब्राहम और उनके पुत्र का खतना एक ही
दिन किया गया। 27उनके परिवार के सब पुरुष-
दासों का खतना भी उन्हीं के साथ किया गया,
जो घर में उत्पन्न हुए थे, और जो धन देकर
विदेशियों से खरीदे गए थे।

इसहाक के जन्म की भविष्यवाणी

18 जब अब्राहम ममरे के बांज वृक्षों के
मध्य दोपहर की तेज धूप में अपने तम्बू
के द्वार पर बैठे थे, तब प्रभु ने उन्हें दर्शन दिया।
2अब्राहम ने आँख ऊपर उठाकर देखा कि उनके
सामने तीन पुरुष खड़े हैं। वह उनको देखते ही
उनका स्वागत करने के लिए तम्बू के द्वार से
दौड़कर आए, और भूमि की ओर झुककर
उनका अभिवादन किया। 3अब्राहम ने कहा,
'स्वामी, यदि आपकी कृपा-दृष्टि मुझ पर हो,
तो आप अपने सेवक के पास से चले न जाइए।

---

† अथवा, 'अलग'। * अर्थात् 'राजमाता'। ** अर्थात् 'वह हंसा'। अथवा, '':यिसहाक''

17 : 10 प्रे 7 : 2 ; रोम 4 : 11 17 : 12 लेव 12 : 3; लू 2 : 21 ; यो 7 : 22 17 : 17 उत 18 : 12; 21 : 6; यो 8 : 56 17 : 20 उत 25 : 12-16 18 : 2 इब्र 13 : 2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
[4]मैं थोड़ा जल मंगवाता हूं। आप अपने पैर धोइए और पेड़ के नीचे विश्राम कीजिए। [5]तब तक मैं रोटी ले आऊँगा कि आप उसे खाकर अपने को ताजा करें। उसके पश्चात् आप आगे चले जाना। आप तो अपने सेवक के पास आए हैं।' उन्होंने कहा, 'जैसा तुम कहते हो, वैसा ही करो।' [6]अब्राहम तुरन्त सारा के पास तम्बू में गए और उससे कहा, 'शीघ्र ही दस किलो* मैदा लेकर उसे गूंध डालो और उसकी रोटियाँ बना लो।' [7]फिर वह रेवड़ की ओर दौड़े। वहाँ उन्होंने नरम और अच्छे पशु को छांट कर सेवक को दिया। सेवक उसे अविलम्ब पकाने गया। [8]अब्राहम ने दूध और दही तथा पशु का पका हुआ मांस तीन पुरुषों के सम्मुख परोस दिया। जब तक वे भोजन करते रहे, अब्राहम पेड़ के नीचे उनके पास खड़े रहे।

9 उन्होंने पूछा, 'तुम्हारी पत्नी सारा कहाँ है?' अब्राहम ने उत्तर दिया, 'वह तम्बू में है।' [10]प्रभु ने कहा, 'मैं निश्चय ही तेरे पास वसन्त ऋतु में वापस आऊँगा, और तेरी पत्नी सारा को पुत्र उत्पन्न होगा।' सारा, जो अब्राहम के पीछे खड़ी थी, तम्बू के द्वार से उनका वार्तालाप सुन रही थी। [11]अब्राहम और सारा वृद्ध थे। उनकी आयु पक चुकी थी। सारा का मासिक धर्म बन्द हो गया था। [12]अतएव सारा अपने मन में हंसकर बोली, 'मैं बूढ़ी हो गयी हूं। मेरे स्वामी वृद्ध हैं। क्या इसके पश्चात् भी मुझे सहवास का आनन्द प्राप्त होगा?' [13]प्रभु ने अब्राहम से कहा, 'सारा क्यों हंसी? वह क्यों बोली, "मैं बूढ़ी हो जाने पर भी क्या पुत्र को जन्म दूंगी?" [14]क्या प्रभु के लिए कोई कार्य असम्भव है? मैं निर्धारित समय पर वसन्त ऋतु में तेरे पास वापस आऊँगा, और सारा को पुत्र उत्पन्न होगा।' [15]सारा अपनी बात से मुकर गई; क्योंकि वह डर गई थी। वह बोली, 'मैं नहीं हंसी।' प्रभु ने कहा, 'नहीं, तू अवश्य हंसी थी।'

अब्राहम का सदोम नगर के लिए निवेदन

16 वे पुरुष वहाँ से उठे, और उन्होंने सदोम नगर की ओर दृष्टि की। अब्राहम उन्हें विदा करने के लिए उनके साथ गए। [17]प्रभु ने सोचा, 'मैं जो कार्य करने जा रहा हूं, क्या उसे अब्राहम से गुप्त रखूं, [18]जबकि वह एक महान् और शक्तिशाली राष्ट्र बनेगा? पृथ्वी के समस्त राष्ट्र उसके द्वारा मुझसे आशिष पाएँगे। [19]मैंने उसे चुना है कि वह अपने पुत्रों और परिवार को, जो उसके पश्चात् रहेंगे, शिक्षा दे कि वे धार्मिकता और न्याय के कार्य करें और मुझ-प्रभु के मार्ग पर चलते रहें। तब मैं उस वचन को पूर्ण करूँगा जो मैंने अब्राहम को दिया है।' [20]प्रभु ने कहा, 'सदोम और गमोरा नगर के विरुद्ध लोगों की दुहाई बढ़ रही है। उनके पाप बहुत गम्भीर हो गए हैं। [21]मैं उतरकर देखूंगा कि उस दुहाई के अनुसार कार्य हुआ है अथवा नहीं, जो मुझ तक पहुँची है। यदि नहीं, तो मैं उसे जान लूंगा।'

22 वे पुरुष वहाँ से मुड़कर सदोम नगर की ओर चले गए। किन्तु अब्राहम प्रभु के सम्मुख खड़े रहे। [23]अब्राहम ने पास आकर कहा, 'स्वामी, क्या तू निश्चय ही दुराचारियों के साथ धार्मिकों को नष्ट करेगा? [24]मान ले, वहाँ नगर में पचास धार्मिक हों। तो क्या तू उस स्थान को नष्ट करेगा, और उन पचास धार्मिकों के कारण उसे क्षमा नहीं करेगा, जो उसमें हैं? [25]तू ऐसा कार्य करने से सदा दूर रहे कि दुराचारियों के साथ धार्मिक भी मारे जाएँ। धार्मिकों की दशा दुराचारियों के सदृश हो, यह कार्य तुझसे कभी न हो। क्या सारी पृथ्वी का न्यायाधीश उचित न्याय न करेगा?' [26]प्रभु ने कहा, 'यदि मुझे सदोम नगर में पचास धार्मिक मिलेंगे तो उनके कारण मैं समस्त स्थान को क्षमा करूँगा।' [27]अब्राहम ने उत्तर दिया, 'मैं तो मिट्टी और राख मात्र हूँ, फिर भी अपने स्वामी से बातें

---

* मूल में, 'तीन सेअ-माप'।

18 : 10 रोम 9 : 9 **18 : 12** 1 पत 3 : 6 **18 : 14** मत 19 : 26; लू 1 : 37 **18 : 18** उत 12 : 3; प्रे 3 : 25; गल 3 : 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

करने का साहस कर रहा हूँ। 28मान ले, यदि
पचास धार्मिकों में पाँच कम हों, तो क्या तू पाँच
के कम हो जाने के कारण समस्त नगर को नष्ट
कर देगा?' उसने कहा, 'यदि मुझे वहाँ
पैंतालीस धार्मिक मिलेंगे तो मैं उसको नष्ट
नहीं करूंगा।' 29अब्राहम ने कहा, 'मान ले,
वहाँ चालीस मिलें?' प्रभु ने उत्तर दिया, 'मैं
चालीस के लिए उसे नष्ट नहीं करूंगा।'
30अब्राहम ने पुनः कहा, 'यदि स्वामी क्रोध न
करे तो मैं कहूँगा। मान ले, वहां तीस ही
मिलें?' उसने उत्तर दिया, 'यदि मुझे वहाँ तीस
मिलेंगे, तो मैं उसे नष्ट नहीं करूँगा।' 31अब्राहम
ने कहा, 'देख, मैंने स्वामी से बातें करने का
साहस किया है। मान ले, वहां बीस धार्मिक
मिलें?' उसने उत्तर दिया, 'मैं बीस के लिए भी
उसे नष्ट नहीं करूँगा।' 32 तब अब्राहम ने
कहा, 'यदि स्वामी क्रोध न करे तो मैं एक बार
और कहूँगा : मान ले, वहां दस धार्मिक मिलें?'
उसने उत्तर दिया, 'मैं दस के लिए भी उसे नष्ट
नहीं करूंगा।'

33 जब प्रभु अब्राहम से बातें कर चुका तब
वह चला गया। अब्राहम अपने निवास-स्थान
को लौट गए।

सदोम और गमोरा नगर-राज्यों का विनाश

19 वे दो दूत सन्ध्या के समय सदोम नगर
पहुंचे। लोट सदोम नगर के प्रवेश द्वार
पर बैठा था। जब लोट ने उन्हें देखा तब वह
उनके स्वागत के लिए उठा। उसने भूमि की
ओर सिर झुकाकर उनका अभिवादन किया,
2और कहा, 'मेरे स्वामियो, मैं आपसे विनती
करता हूँ। आप अपने सेवक के घर पधारिए
और अपने पैर धोइए। आप यहीं रात व्यतीत
कीजिए। आप प्रातःकाल उठकर अपने मार्ग
पर चले जाना।' किन्तु उन्होंने उत्तर दिया,
'नहीं, हम चौक में ही रात बिताएंगे।' 3जब लोट
ने बहुत अनुनय-विनय की तब वे उसके साथ
चले और उसके घर में आए। लोट ने उनके
लिए विशेष भोजन तैयार किया। उसने बेखमीर+
रोटी बनाई, और उन्होंने खायी।

4 उनके शयन करने के पूर्व नगर के लोगों
ने, अर्थात् सदोम के पुरुषों ने, युवकों से लेकर
वृद्धों तक, चारों ओर के सब पुरुषों ने, लोट
के घर को घेर लिया। 5 उन्होंने लोट को
पुकारा और उससे पूछा, 'वे पुरुष कहां हैं जो
आज रात तेरे पास आए हैं? उन्हें बाहर
निकाल। हम उनके साथ भोग करेंगे।' 6लोट
द्वार से निकल कर उनके पास आया। उसने
अपने पीछे दरवाजा बन्द कर 7उनसे कहा, 'मैं
आप लोगों को हाथ जोड़ता हूँ। भाइयो, ऐसा
मत करना। 8देखिए, मेरी दो कुंआरी कन्याएं
हैं। मैं उन्हें आपके पास बाहर लाता हूँ। जो
आपकी दृष्टि में भला लगे, वैसा ही उनके साथ
कीजिए। किन्तु इन पुरुषों के साथ कुछ न
कीजिए, क्योंकि ये मेरी छत तले आए हैं।'
9उन्होंने कहा, 'हट जा।' फिर वे बोले, 'तू यहां
प्रवास करने आया था, और अब न्याय करके
न्यायाधीश बनना चाहता है। हम उनसे अधिक
तेरे साथ बुरा व्यवहार करेंगे।' उन्होंने लोट को
धकेल दिया और दरवाजा तोड़ने के लिए
समीप आए। 10परन्तु उन दूतों ने हाथ बढ़ाकर
लोट को अपने पास भीतर खींच लिया, और
दरवाजा बन्द कर दिया। 11 तत्पश्चात् उन्होंने
बड़े-छोटे सब पुरुषों को जो घर के द्वार पर थे,
अन्धा बना दिया। अतः वे द्वार को टटोलते-
टटोलते थक गए।

12 दूत ने लोट से पूछा, 'यहाँ तुम्हारे और
कौन-कौन हैं? दामाद, पुत्र-पुत्रियां तथा नगर
में जो कोई भी तुम्हारा आत्मीय है, उन सबको
इस स्थान से बाहर ले जाओ। 13हम इस स्थान
को नष्ट करने वाले हैं। इसके विरुद्ध लोगों की
बड़ी दुहाई प्रभु के सम्मुख पहुंची है। प्रभु ने हमें
इसका विनाश करने को भेजा है।' 14लोट घर
से निकलकर अपने भावी दामादों के पास गया,
जो उसकी पुत्रियों से विवाह करने वाले थे।
उसने उनसे कहा, 'उठो, और इस स्थान से
निकल चलो; क्योंकि प्रभु इस नगर को नष्ट

+ अर्थात् 'बिना खमीर की'।

18 : 32 यिर 5 : 1; यहेज 22 : 30; याक 5 : 16 **19 : 6** शास 19 : 24 **19 : 11** 2 रा 6 : 18

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

करने वाला है।' परन्तु उसके दामादों ने समझा
कि वह उनसे मजाक कर रहा है।
15 जब पौ फटने लगी तब दूतों ने लोट से
आग्रह किया कि वह शीघ्रता करे। उन्होंने कहा,
'उठो, अपनी पत्नी और दोनों पुत्रियों को जो
यहां हैं, लेकर चले जाओ। अन्यथा तुम भी इस
नगर के कुकर्म-दण्ड में भस्म हो जाओगे।'
16किन्त वह विलम्ब करता रहा। अत: दूत
उसका तथा उसकी पत्नी एवं उसकी दोनों
पुत्रियों का हाथ पकड़कर उन्हें नगर से बाहर
ले गए; क्योंकि प्रभु लोट के प्रति दयालु था।
17दूतों ने उन्हें नगर के बाहर लाकर उनसे कहा,
'अपने प्राण बचा कर भाग जाओ। पीछे
मुड़कर न देखना, और न घाटी में कहीं रुकना।
पहाड़ की ओर भागो। अन्यथा तुम भी भस्म हो
जाओगे।' 18लोट ने उनसे कहा, 'नहीं, नहीं,
मेरे स्वामियो! 19आपके सेवक पर आपकी
कृपा-दृष्टि हुई है। आपने मेरे प्राण बचाकर
मुझ पर अपार करुणा की है। पर मैं पहाड़ की
ओर नहीं भाग सकता। ऐसा न हो कि वहाँ मेरे
साथ कोई दुर्घटना हो जाए और मैं मर जाऊँ।
20देखिए, ऊपर एक नगर है। वह मेरे लिए
निकट है। वह कस्बा है। मुझे वहां भाग जाने
दीजिए। तब मेरे प्राण बच जाएंगे। क्या वह
छोटा नगर नहीं है?' 21दूत ने लोट से कहा,
'मैंने इस नगर के विषय में तुम्हारी विनती
स्वीकार की। जिस नगर के विषय में तुमने कहा
है, उसे मैं नष्ट नहीं करूंगा। 22अविलम्ब वहां
भाग जाओ। जब तक तुम वहां नहीं पहुंच
जाओगे, मैं कुछ नहीं कर सकता।' इसलिए
उस नगर का नाम सोअर* पड़ा। 23जब लोट
सोअर नगर में प्रविष्ट हुआ, तब पृथ्वी पर सूर्य
निकल आया था।
24 प्रभु ने आकाश से सदोम और गमोरा
नगरों पर गंधक तथा आग की वर्षा की।
25उसने उन नगरों और सम्पूर्ण घाटी को,
समस्त नगर निवासियों को, तथा भूमि पर
उगनेवाले पेड़-पौधों को नष्ट कर दिया।
26लोट की पत्नी उसके पीछे थी। उसने मुड़कर
पीछे देखा, और वह नमक का खम्भा बन गई!
27 अब्राहम बड़े सबेरे उठकर उस स्थान
पर गए, जहाँ वह पहले प्रभु के सम्मुख खड़े
हुए थे। 28उन्होंने सदोम, गमोरा और घाटी के
समस्त प्रदेश पर दृष्टि की और देखा कि
धधकती भट्टी के सदृश धुआं भूमि से निकलकर
ऊपर जा रहा है।
29 ऐसा हुआ कि जब परमेश्वर ने घाटी के
नगरों को नष्ट किया, तब उसे अब्राहम का
स्मरण हुआ। जब उसने उन नगरों को उलट-
पुलट दिया, जहां लोट रहता था, तब विनाश
के मध्य से लोट को निकालकर अन्यत्र भेज
दिया।

मोआब और अम्मोनी जातियों का उद्गम

30 लोट सोअर नगर को छोड़कर अपनी दो
पुत्रियों के साथ पहाड़ पर रहने लगा। वह
सोअर नगर में रहने से डरता था। अत: वह
अपनी दो पुत्रियों के साथ गुफा में रहने लगा।
31बड़ी पुत्री ने छोटी से कहा, 'हमारे पिता बूढ़े
हैं, और यहां एक भी ऐसा पुरुष नहीं जो संसार
के रीति-रिवाज के अनुसार हमारे पास आए
और हम सन्तान उत्पन्न करें। 32आ, हम अपने
पिता को मदिरा पिलाएं और उसके साथ
सहवास करें, जिससे हम अपने पिता के द्वारा
उसके वंश की रक्षा करें।' 33दोनों पुत्रियों ने
उस रात अपने पिता को मदिरा पिलाई, और
बड़ी पुत्री जाकर उसके साथ लेट गई। उसके
पिता को पता नहीं चला कि वह कब आकर
लेटी और कब उठकर चली गई।
34 दूसरे दिन बड़ी पुत्री ने छोटी से कहा,
'मैं कल रात अपने पिता के साथ लेटी थी। हम
आज रात भी अपने पिता को शराब पिलाएं,
जिससे तू जाकर उसके साथ लेट सके और हम
अपने पिता के द्वारा उसके वंश की रक्षा करें।'
35उन्होंने उस रात भी अपने पिता को शराब

---

* अर्थात् 'छोटी वस्तु'

19 : 16 2 पत 2 : 7 **19 : 17** मत 24 : 15 **19 : 24** यश 1 : 10; मत 10 : 15; 11 : 23; 2 पत 2 : 6; यहू 6
19 : 26 लू 17 : 31; प्रज्ञा 10 : 7 **19 : 28** यश 34 : 9 ; प्रक 9 : 2; 1[illegible] · 10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पिलाई, और छोटी पुत्री जाकर उसके साथ लेट गई। उसके पिता को पता नहीं चला कि वह कब आकर लेटी और कब उठकर चली गई।

36 इस प्रकार लोट की दोनों पुत्रियां अपने पिता से गर्भवती हुईं। 37बड़ी पुत्री को एक पुत्र उत्पन्न हुआ। उसने उसका नाम मोआब* रखा। वह आज तक मोआबी जाति का राष्ट्र-पिता माना जाता है। 38छोटी पुत्री को भी एक पुत्र उत्पन्न हुआ। उसने उसका नाम बेनअम्मी+ रखा। वह आज तक अम्मोनी जाति का राष्ट्र-पिता माना जाता है।

अब्राहम और राजा अबीमेलक

20 अब्राहम ने वहां से नेगेब क्षेत्र की ओर प्रस्थान किया। वह शूर मरुस्थल और कादेश मरूद्यान के मध्य बस गए। वह गरार नगर में प्रवास करने लगे। 2अब्राहम ने अपनी पत्नी सारा के परिचय में कहा, 'यह मेरी बहिन है।' अतएव नगर के राजा अबीमेलक ने दूत भेजा और सारा को अपने पास रख लिया। 3परन्तु परमेश्वर ने रात के समय स्वप्न में अबीमेलक के पास आकर उससे कहा, 'देख, जिस स्त्री को तूने रखा है, उसके कारण तू मर जाएगा; क्योंकि वह दूसरे पुरुष की पत्नी है।' 4अबीमेलक अब तक सारा के पास नहीं गया था, इसलिए उसने कहा, 'स्वामी, क्या तू निर्दोष व्यक्ति को भी मार डालेगा? 5क्या अब्राहम ने स्वयं मुझसे नहीं कहा था, "यह मेरी बहिन है?" वह स्त्री स्वयं बोली थी, "यह मेरा भाई है।" मैंने अपने निष्कपट हृदय और निर्दोष हाथ से यह कार्य किया है।' 6परमेश्वर ने स्वप्न में उसे उत्तर दिया, 'हां, मैं जानता हूँ कि तूने निष्कपट हृदय से यह कार्य किया है। मैंने ही तुझे अपने विरुद्ध पाप करने से रोका था। इसलिए मैंने तुझे उसे स्पर्श भी नहीं करने दिया। 7अब तू उस पुरुष की पत्नी लौटा दे। वह एक नबी है। वह तेरे लिए प्रार्थना करेगा, और तू जीवित रहेगा। यदि तू उस स्त्री को नहीं लौटाएगा, तो जान ले, कि तू और तेरे नगर के सब लोग मर जाएंगे।'

8 अतः अबीमेलक ने सबेरे उठकर अपने सब कर्मचारियों को बुलाया और उनसे ये बातें कहीं। वे बहुत डर गए। 9तब उसने अब्राहम को बुलाकर उनसे कहा, 'यह आपने हमारे साथ क्या किया? मैंने आपके प्रति कौन सा पाप किया था कि आपने मुझसे और मेरे राज्य के निवासियों से इतना बड़ा पाप करवाया? आपने मेरे साथ जो व्यवहार किया है, वह आपको नहीं करना चाहिए था।' 10तब अबीमेलक ने अब्राहम से पूछा, 'आपने क्या सोचकर यह कार्य किया?' 11अब्राहम ने उत्तर दिया, 'मैंने यह कार्य इसलिए किया: मैं सोचता था कि इस स्थान में परमेश्वर का भय किसी को नहीं है। इसलिए वे मुझे मेरी पत्नी के कारण मार डालेंगे। 12इसके अतिरिक्त वह निस्सन्देह मेरी बहिन है। वह मेरे पिता की पुत्री तो है, पर मेरी मां की नहीं; और वह मेरी पत्नी बन गयी। 13जब परमेश्वर की आज्ञा से मुझे अपना पितृगृह छोड़कर जाना पड़ा, तब मैंने सारा से कहा था, "तुम मुझ पर यह कृपा करना कि प्रत्येक स्थान में, जहाँ हम पहुंचेंगे वहां मेरे परिचय में कहना, 'यह मेरा भाई है'।"

14 तब अबीमेलक ने भेड़-बकरी, गाय-बैल और सेवक-सेविकाएं अब्राहम को भेंट कीं और उनकी पत्नी सारा उन्हें लौटा दी। 15अबीमेलक ने कहा, 'देखिए, मेरा देश आपके सम्मुख है। जो स्थान आपकी दृष्टि में भला लगे, वहां आप रह सकते हैं।' 16अबीमेलक ने सारा से कहा, 'देखो, मैंने तुम्हारे भाई को एक हजार चांदी के सिक्के दिए हैं। जो लोग तुम्हारे साथ हैं, उन सब लोगों की दृष्टि में यह तुम्हारी निर्दोषता का प्रमाण है कि तुम निर्दोष हो। सब लोगों के सामने तुम्हारे साथ न्याय हुआ है।'

17अब्राहम ने परमेश्वर से प्रार्थना की। फलतः परमेश्वर ने अबीमेलक को स्वस्थ किया। उसने अबीमेलक की पत्नी और

---

* अर्थात् 'अपने पिता से'। + अर्थात् 'अपने सम्बन्धी का पुत्र'।

20 : 2 उत 12 : 13; 26 : 7

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सेविकाओं को भी स्वस्थ कर दिया। वे फिर से
सन्तान उत्पन्न करने लगीं। 18क्योंकि प्रभु ने
अब्राहम की पत्नी सारा के कारण अबीमेलक
के महल की सभी स्त्रियों को पूर्णतः बन्ध्या
बना दिया था।

इसहाक का जन्म

21 प्रभु परमेश्वर ने सारा की सुध ली, जैसा
उसने कहा था। उसने सारा से वैसा ही
किया, जैसा उसने वचन दिया था। 2सारा गर्भवती
हुई। उसने उसी निर्धारित समय पर, जिसके
विषय में परमेश्वर ने कहा था, अब्राहम से
उसकी वृद्धावस्था में पुत्र को जन्म दिया।
3अब्राहम ने अपने उस पुत्र का नाम, जिसे सारा
ने जन्म दिया, इसहाक रखा। 4जब इसहाक आठ
दिन का हुआ तब अब्राहम ने उसका खतना
किया, जैसी परमेश्वर ने आज्ञा दी थी। 5अपने
पुत्र इसहाक के जन्म के समय अब्राहम सौ वर्ष
के थे। 6सारा बोली, 'परमेश्वर ने मुझे हंसाया
है*; इसलिए सब सुनने वाले भी मेरे साथ
हंसेंगे! 7अब्राहम से कौन यह कह सकता था
कि सारा बच्चों को कभी दूध पिलाएगी। फिर
भी मैंने अब्राहम की वृद्धावस्था में पुत्र को जन्म
दिया।'

8 बच्चा बड़ा हुआ, और उसका दूध
छुड़ाया गया। जिस दिन इसहाक का दूध
छुड़ाया गया, उस दिन अब्राहम ने बड़ा भोज
दिया।

दासी हागार और उसका पुत्र यिश्माएल

9 एक दिन सारा ने मिस्री हागार के पुत्र को,
जिसे हागार ने अब्राहम से उत्पन्न किया
था, अपने पुत्र इसहाक के साथ खेलते देखा।
10उसने अब्राहम से कहा, 'इस दासी को इसके
पुत्र सहित निकाल दीजिए; क्योंकि दासी का
पुत्र मेरे पुत्र इसहाक के साथ उत्तराधिकारी नहीं
बनेगा।' 11अपने पुत्र यिश्माएल के सम्बन्ध में
ऐसी बात अब्राहम को बहुत बुरी लगी।
12परमेश्वर ने अब्राहम से कहा, 'तू बालक
और अपनी दासी के कारण बुरा मत मान। जो
बातें सारा तुझसे कहती है, उनको सुन। क्योंकि
इसहाक द्वारा तेरे वंशजों में तेरा नाम बना रहेगा।
13मैं दासी के पुत्र से भी एक राष्ट्र उत्पन्न
करूंगा; क्योंकि वह तेरी सन्तान है।'

14 अब्राहम सबेरे उठे। उन्होंने रोटी और
पानी भरी मशक हागार को दी। उसे हागार के
कन्धे पर रख दिया, और बालक सहित उसको
विदा कर दिया। हागार चली गई, और बएर-
शबा के निर्जन प्रदेश में भटकने लगी। 15जब
मशक का पानी समाप्त हो गया तब उसने
बालक को एक झाड़ी के नीचे छोड़ दिया।
16वह बालक के सामने पर्याप्त दूर—सौ
मीटर** की दूरी पर—बैठ गई; क्योंकि वह
सोचती थी, 'मैं अपने बच्चे की मृत्यु अपनी
आंखों से नहीं देख सकती।' जब वह उसके
सामने दूर बैठी तब बालक चीख मार कर रोने
लगा।+ 17परमेश्वर ने बालक के रोने की
आवाज सुनी। परमेश्वर के दूत ने स्वर्ग से
हागार को पुकारा और उससे कहा, 'हागार,
तुझे क्या हुआ है? मत डर, जहां तेरा बालक
पड़ा है वहां से परमेश्वर ने उसकी आवाज सुनी
है। 18उठ, और बालक को उठा। उसे अपने
हाथों में सावधानी से संभाल; क्योंकि मैं उससे
एक महान राष्ट्र का उद्भव करूंगा।' 19तब
परमेश्वर ने उसकी आंखें खोल दीं। उसे एक
कुआं दिखाई दिया। वह उसके निकट गई,
और मशक को पानी से भर लिया। तत्पश्चात्
उसने बालक को पानी पिलाया।

20 परमेश्वर बालक के साथ था। वह बड़ा
होता गया। वह निर्जन प्रदेश में रहता था। वह
विख्यात धनुर्धारी बना। 21 वह पारन के निर्जन
प्रदेश में रहता था। उसकी मां ने उसके लिए
एक कन्या ढूंढ़ी जो मिस्र देश की रहने वाली
थी, और उसके साथ उसका विवाह कर दिया।

अब्राहम और राजा अबीमेलक

22 उस समय अबीमेलक ने अपने सेनापति

* अथवा 'परमेश्वर ने मेरे लिए हंसी का साधन प्रस्तुत किया है।' ** अथवा, 'तीर के निशाने की दूरी'। + मूल में, 'तब वह .....रोने लगी'।

21 : 2 इब्र 11 : 11 **21 : 4** उत 17 : 12; प्रे 7 : 8 **21 : 10** गल 4 : 29–31 **21 : 12** रोम 9': 7 ; इब्र 11 : 18
21 : 14 यो 8 : 35; 35; 1 रा 19 : 3 **21 : 22** उत 26 : 26

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पीकोल के साथ आकर अब्राहम से कहा, 'आपके प्रत्येक कार्य में परमेश्वर आपके साथ रहता है। 23अतएव अब मुझसे परमेश्वर की शपथ खाइए, कि आप न मुझसे, न मेरी सन्तान और न मेरे वंश से छल-कपट करेंगे। वरन् जैसा मैंने आपके साथ प्रेममय व्यवहार किया है, वैसा ही आप मेरे और मेरे देश के साथ, जहाँ आप प्रवास करते हैं, व्यवहार करेंगे।' 24अब्राहम बोले, 'मैं शपथ खाता हूँ।'

25 पर जब अब्राहम ने अपने एक कुएं के विषय में, जिस पर अबीमेलक के सेवकों ने कब्जा कर लिया था, उससे शिकायत की 26तब वह बोला, 'मैं नहीं जानता कि किसने यह कार्य किया है। आपने भी मुझे नहीं बताया। मैंने आज तक इसके विषय में सुना भी नहीं था।' 27अब्राहम ने भेड़-बकरी और गाय-बैल अबीमेलक को भेंट में दिए और दोनों ने आपस में सन्धि की। 28अब्राहम ने भेड़ों के सात मेमनों को झुण्ड से अलग रखा। 29अबीमेलक ने अब्राहम से पूछा, 'इन सात मेमनों का, जिन्हें आपने अलग रखा है, क्या अर्थ है?' 30अब्राहम ने उत्तर दिया, 'आप मेरे हाथ से इन सात मेमनों को ग्रहण करेंगे कि आप मेरे साक्षी बनें कि मैंने ही यह कुआं खुदवाया था।' 31वहां दोनों ने शपथ ली। इसलिए उस स्थान का नाम 'बएर-शबा'* पड़ा। 32उन्होंने बएर-शबा में सन्धि की। तत्पश्चात् अबीमेलक और उसका सेनापति पीकोल उठे, और वे पलिश्तियों के देश को लौट गए। 33अब्राहम ने बएर-शबा में झाऊ-वृक्ष का एक पौधा लगाया, और वहां प्रभु के नाम से शाश्वत परमेश्वर की आराधना की। 34अब्राहम ने पलिश्तियों के देश में बहुत दिन प्रवास किया।

प्रभु की आज्ञा, अब्राहम की परीक्षा

22 इन घटनाओं के पश्चात् परमेश्वर ने अब्राहम की परीक्षा ली। उसने उन्हें पुकारा, 'अब्राहम!' उन्होंने उत्तर दिया 'क्या आज्ञा है?'** 2परमेश्वर ने कहा, 'तू अपने पुत्र, अपने एकलौते पुत्र इसहाक को प्यार करता है। तू उसको लेकर मोरियाह देश जा। वहां उस पहाड़ पर जिसे मैं तुझे बताऊंगा, तू अपने पुत्र को अग्नि-बलि में चढ़ाना।'

3 अब्राहम सबेरे उठे। उन्होंने अपने गधे पर जीन कसी, अपने साथ दो सेवकों एवं अपने पुत्र इसहाक को लिया, अग्नि-बलि के लिए लकड़ी काटी और उस स्थान की ओर चले जिसकी चर्चा परमेश्वर ने उनसे की थी। 4अब्राहम ने तीसरे दिन आंखें ऊपर उठाकर उस स्थान को दूर से देखा। 5उन्होंने अपने सेवकों से कहा, 'तुम यहीं गधे के पास ठहरो। मैं और इसहाक आगे जाकर आराधना करेंगे, फिर तुम्हारे पास लौट आएंगे।' 6अब्राहम ने अग्नि-बलि की लकड़ी अपने पुत्र इसहाक पर लाद दी, और अपने हाथ में अग्नि और छुरा लिया। वे दोनों एक साथ चले। 7इसहाक अपने पिता अब्राहम से बोला, 'पिताजी!' उन्होंने कहा, 'हां मेरे पुत्र, क्या बात है?' इसहाक ने पूछा, 'आग और लकड़ियां तो हैं; परन्तु अग्नि-बलि का मेमना कहां है?' 8अब्राहम ने उत्तर दिया, 'मेरे पुत्र, परमेश्वर स्वयं अग्नि-बलि के लिए मेमने का प्रबन्ध करेगा+।' वे दोनों साथ-साथ आगे बढ़े।

9 वे उस स्थान पर पहुंचे, जिसके विषय में परमेश्वर ने अब्राहम से कहा था। वहां अब्राहम ने एक वेदी बनाकर इस पर लकड़ियां सजायीं। तब उन्होंने अपने पुत्र इसहाक को बांधा और उसे लकड़ियों के ऊपर वेदी पर लिटा दिया। 10फिर अब्राहम ने अपने पुत्र को बलि करने के लिए हाथ बढ़ाकर छुरा उठाया। 11किन्तु प्रभु के दूत ने स्वर्ग से उन्हें पुकार कर कहा, 'अब्राहम! अब्राहम!' वह बोले, 'क्या आज्ञा है?' 12दूत ने कहा, 'बालक की ओर अपना

---

* अर्थात् 'सात मेमनों का कुआँ' अथवा, 'शपथ का कुआँ' ** मूल में, 'मुझे देख'। + अथवा, 'परमेश्वर देखेगा'।

21 : 31 उत 26 : 33 **21 : 33** यश 40 : 28; 1 तिम 1 : 17 **22 : 1** इब्र 11 : 17-19; उत 31 : 11; 46 : 2; नि 3 : 4; 1 शम 3 : 4 ; प्रज्ञा 10 : 5 ; प्रव 44 : 20 **22 : 2** यो 1 : 18 ; 3: 16 ; 2 इत 3 : 1 **22 : 6** यो 19 : 17 **22 : 9** याक 2 : 21 **22 : 12** रोम 8 : 32; 1 यो 4 : 9

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हाथ मत बढ़ा और न उसे कुछ हानि पहुंचा।
अब मैं जान गया हूं कि तू परमेश्वर का सच्चा
भक्त है। क्योंकि तूने मेरे लिए अपने पुत्र, अपने
एकलौते पुत्र को भी नहीं रख छोड़ा।' 13अब्राहम
ने अपनी आंखें ऊपर उठाईं तो देखा कि उनके
पीछे एक मेढ़ा है।' वह अपने सींगों से एक
झाड़ी में फंसा हुआ है। अब्राहम गए। उन्होंने
उस मेढ़े को पकड़ा और अपने पुत्र के स्थान
पर उसकी अग्नि-बलि चढ़ाई।

14 अब्राहम ने उस स्थान का नाम, 'प्रभु
प्रबन्ध करता है' रखा। इसलिए आज तक यह
कहा जाता है: 'प्रभु के पहाड़ पर कोई प्रबन्ध
होगा।'

15 प्रभु के दूत ने स्वर्ग से दूसरी बार
अब्राहम को पुकारा, 16'प्रभु कहता है : तूने यह
कार्य किया है; तूने मेरे लिए अपने पुत्र, अपने
एकलौते पुत्र को भी नहीं रख छोड़ा। इसलिए
मैं स्वयं अपनी शपथ खाता हूं कि 17मैं निश्चय
ही तुझे आशिष दूंगा, और तेरे वंश को आकाश
के तारों एवं समुद्र तट के रेत-कणों के सदृश
असंख्य बनाऊंगा। तेरे वंशज अपने शत्रुओं के
नगर-द्वारों पर अधिकार करेंगे। 18पृथ्वी के
समस्त राष्ट्र तेरे वंश के द्वारा मुझसे आशिष
प्राप्त करेंगे+; क्योंकि तूने मेरी आज्ञा सुनकर
उसका पालन किया।'

19 इसके पश्चात् अब्राहम अपने सेवकों के
पास लौट आए। वे उठकर उनके साथ बएर-
शबा गए। अब्राहम बएर-शबा में रहने
लगे।

नाहोर के वंशज

20 इन घटनाओं के पश्चात् अब्राहम को
यह सन्देश मिला, 'आपके भाई नाहोर से
उसकी पत्नी मिल्का को पुत्र उत्पन्न हुए हैं।'
21मिल्का के ये पुत्र थे : ज्येष्ठ पुत्र ऊस और
उसका भाई बूज, अराम का पिता कमूएल,
22केसद, हजो, पिल्दाश, यिद्लाप और बतूएल।
23इन आठ पुत्रों को मिल्का ने अब्राहम के भाई
नाहोर से जन्म दिया। बतूएल रिबका का पिता
बना। 24नाहोर की रखेल रूमा ने टेबह, गहम,
तहश और माका नामक पुत्रों को जन्म दिया।

सारा की मृत्यु

23 सारा एक सौ सत्ताइस वर्ष तक जीवित
रही। यही उसके जीवन काल के कुल
वर्ष थे। 2सारा की मृत्यु कनान देश के किर्यत-
अरबा अर्थात् हेब्रोन नगर में हुई। अब्राहम सारा
के लिए शोक मनाने और विलाप करने के लिए
आए। 3वह शव के सामने से उठकर उस देश
के निवासी, हित्तियों से बोले, 4'मैं आप लोगों
के मध्य प्रवासी के रूप में रहता हूँ। मुझे
कब्रिस्तान के लिए अपने यहाँ भूमि दीजिए कि
मैं अपनी पत्नी का शव गाड़कर उसे आंखों से
दूर करूं।' 5हित्तियों ने अब्राहम को उत्तर दिया,
6'हे स्वामी, हमारी बात सुनिए। आप तो हमारे
मध्य में परम शक्तिमान* हैं। आप हमारी सर्वोत्तम
कबर में शव को गाड़ दीजिए। हममें से कोई
भी व्यक्ति अपनी कबर आपको देना अस्वीकार
न करेगा, और न शव गाड़ने में रुकावट
डालेगा।'

7 अब्राहम उठे और हित्तियों का झुककर
अभिवादन किया। 8वह उनसे बोले, 'यदि
आप सहमत हैं कि मैं अपनी पत्नी के शव को
गाड़ कर उसे अपनी आंखों से दूर करूं, तो मेरी
बात सुनिए। आप मेरे लिए सोहर के पुत्र एप्रोन
से निवेदन कीजिए 9जिससे वह मकपेला में
स्थित अपनी गुफा मुझे दे दें। वह उनकी भूमि
के सीमान्त पर है। वह आप लोगों की
उपस्थिति में मुझसे पूरा मूल्य ले लें, और
उसको मुझे दे दें, जिससे मैं उसको कब्रिस्तान
बना सकूं।' 10एप्रोन स्वयं सहजातीय हित्तियों
के बीच में बैठा था। उसने नगर-द्वार पर आने
वाले सब हित्तियों को सुनाते हुए अब्राहम को
उत्तर दिया, 11 'नहीं, स्वामी, आप मेरी बात
सुनिए। मैं आपको न केवल अपनी भूमि दूंगा,
वरन् कबर की गुफा भी, जो उसमें है। मैं अपने

+ शब्दशः, 'स्वयं को आशीषित मानेंगे'। * शब्दशः, 'परमेश्वर के नायक'

22 : 16 लू 1 : 73; इब्र 6 : 13-14 **22 : 17** इब्र 11 : 12 **22 : 18** प्रे 3 : 25; गल 3 : 16 **23 : 4** इब्र 11 : 9.13; 1 पत 2 : 11; प्रे 7 : 16 **23 : 11** 2 शम 24 : 20-24

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लोगों की उपस्थिति में अपनी भूमि आपको
प्रदान करता हूँ। आप शव को गुफा में गाड़
दीजिए।' 12अब्राहम ने देश के निवासियों के
समक्ष झुककर उनका अभिवादन किया। 13वह
उन्हें सुनाते हुए एप्रोन से बोले, 'यदि आप मुझे
भूमि देंगे, तो मेरी बात सुनिए। मैं आपको भूमि
का मूल्य दूंगा। वह मुझसे लीजिए, जिससे मैं
अपनी पत्नी का शव वहां गाड़ सकूं।' 14एप्रोन
ने अब्राहम को उत्तर दिया, 15'स्वामी, मेरी बात
सुनिए। उस भूमि के टुकड़े का मूल्य तो चार
सौ चांदी के सिक्के* हैं। पर वह आपके और
मेरे बीच में क्या है? आप शव को गाड़ दीजिए।
16अब्राहम ने एप्रोन की बात मान ली। एप्रोन
ने जितना मूल्य हित्तियों को सुनाते हुए बताया
था, अब्राहम ने व्यापारियों में प्रचलित माप के
अनुसार एप्रोन को चार सौ चांदी के सिक्के
तौलकर दिए।

17 इस प्रकार मकपेला में स्थित एप्रोन की
भूमि, जो ममरे के पूर्व में थी, एवं उस भूमि
सहित वह गुफा भी जो उस पर थी, तथा भूमि
पर और भूमि के क्षेत्र में लगे सब पेड़, 18नगर-
द्वार पर आने वाले सब हित्तियों की उपस्थिति
में अब्राहम के अधिकार में कर दिए गए।

19 तत्पश्चात् अब्राहम ने अपनी पत्नी सारा
को मकपेला वाली भूमि की गुफा में गाड़ दिया,
जो कनान देश के ममरे (अर्थात् हेब्रोन नगर)
के पूर्व में है। 20भूमि और उस भूमि पर स्थित
गुफा कब्रिस्तान के लिए हित्तियों द्वारा अब्राहम
के अधिकार में दे दी गई।

इसहाक के लिए वधु-प्राप्ति का विवरण

24 अब्राहम वृद्ध थे। उनकी आयु पक
चुकी थी। प्रभु ने उन्हें सब प्रकार की
आशिष दी थी। 2एक दिन अब्राहम ने अपने घर
के सबसे बूढ़े और अपनी सम्पत्ति का प्रबन्ध
करने वाले सेवक से कहा, 'अपना हाथ मेरी
जांघ के नीचे रखो।+ 3मैं तुम्हें स्वर्ग और पृथ्वी
के प्रभु परमेश्वर की शपथ खिलाता हूँ कि तुम
मेरे पुत्र के लिए कनानी जाति की कन्याओं में
से, जिनके देश में मैं निवास करता हूँ, वधू नहीं
लाओगे। 4वरन् तुम मेरी जन्म-भूमि में मेरे
कुटुम्बियों के पास जाकर मेरे पुत्र इसहाक के
लिए वधू लाओगे।' 5सेवक ने उनसे कहा,
'कदाचित् वह कन्या मेरे साथ इस देश में आना
न चाहे। तब क्या मैं आपके पुत्र को उस देश
में, जहां से आप आए हैं, ले जा सकता हूँ?'
6अब्राहम ने उससे कहा, 'सावधान, तुम मेरे
पुत्र को वहां कदापि वापस न ले जाना। 7स्वर्ग
का प्रभु परमेश्वर मुझे पितृगृह और मेरी
जन्मभूमि से निकालकर लाया है। उसने मुझसे
कहा था; उसने मुझसे यह शपथ खाई थी, "मैं
यह देश तेरे वंश को दूंगा।" वही प्रभु परमेश्वर
अपने दूत को तुम्हारे मार्ग-दर्शन के लिए
भेजेगा कि तुम मेरे पुत्र के लिए वहीं से वधू
लाओ। 8यदि कन्या तुम्हारे साथ आना न चाहे
तो तुम मेरी इस शपथ से मुक्त हो जाओगे। पर
तुम मेरे पुत्र को वहां कदापि वापस न ले जाना।'
9सेवक ने अपने स्वामी अब्राहम की जांघ के
नीचे अपना हाथ रखा, और इस आदेश के
अनुसार शपथ खाई।

10 सेवक अपने स्वामी अब्राहम के ऊंटों में
से दस ऊंट और सर्वोत्तम भेंट लेकर उन के भाई
नाहोर के नगर को चला गया जो उत्तर-
मेसोपोतामिया देश में था। 11उसने नगर के द्वार
पर पहुंचकर एक कुएं के पास अपने ऊंटों को
बैठाया। सन्ध्या का समय था। ऐसे समय
स्त्रियां कुएं से पानी भरने निकलती थीं।
12सेवक ने कहा, 'हे प्रभु, मेरे स्वामी अब्राहम
के परमेश्वर! मुझे आज सफलता प्रदान कर।
मैं विनती करता हूँ। मेरे स्वामी अब्राहम पर
करुणा कर। 13देख, मैं झरने पर खड़ा हूँ, और
नगर निवासियों की पुत्रियां जल भरने को बाहर
निकल रही हैं। 14अब ऐसा हो कि जिस कन्या
से मैं कहूं, "कृपया अपना घड़ा नीचे करो कि
मैं पानी पीऊं", और वह उत्तर दे, "आप पानी

* मूल में 'शेकल'। एक विशेष प्रकार की तत्कालीन तौल, प्रायः बारह ग्राम। + अगली पीढ़ियों को भी बांधने वाली अटल शपथ के अर्थ में।

23 : 17 प्रे 7 : 16 24 : 2 उत 47 : 29 24 : 11 नि 2 : 16; उत 29 : 2; यो 4 : 7

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पीजिए। मैं आपके ऊंटों को भी पानी पिलाऊंगी,'' तो वह वही कन्या हो जिसे तूने अपने सेवक इसहाक के लिए चुना है। इससे मैं जान लूंगा कि तूने मेरे स्वामी पर करुणा की है।'

15 उसने बोलना समाप्त नहीं किया था कि रिबका अपने कन्धे पर घड़ा रखे हुए बाहर आई। वह अब्राहम के भाई नाहोर और उसकी पत्नी मिल्का के पुत्र बतूएल की पुत्री थी। [16]वह कन्या देखने में बहुत सुन्दर थी। वह कुंआरी थी। अभी उसका विवाह नहीं हुआ था।* वह झरने पर गई। उसने घड़ा भरा और ऊपर आई। [17]अब्राहम का सेवक उससे भेंट करने को दौड़ा, और उससे बोला, 'कृपया, मुझे अपने घड़े से थोड़ा पानी पिलाओ।' [18]उसने कहा, 'महाशय, अवश्य पीजिए।' उसने अविलम्ब अपना घड़ा अपने हाथ पर उतारकर उसे पानी पिलाया। [19]जब वह उसे पानी पिला चुकी तब बोली, 'जब तक आपके ऊंट पानी न पी लें, मैं उनके लिए पानी भरूंगी।' [20]उसने शीघ्रता से घड़े का जल नांद में उण्डेल कर खाली किया और फिर जल भरने को कुएं पर दौड़कर गई। उसने सब ऊंटों के लिए कुएं से पानी खींचा। [21]सेवक टकटकी लगाकर उसे देखता रहा। वह यह बात जानने को चुप था कि क्या प्रभु ने उसकी यात्रा सफल की है अथवा नहीं।

22 जब सब ऊंट पानी पी चुके तब सेवक ने छः ग्राम सोने की एक नथ, और उसके हाथों के लिए एक सौ बीस ग्राम के दो स्वर्ण कंगन लेकर उसको पहिनाए। [23]उसने उससे पूछा, 'कृपया, मुझे बताओ, तुम किसकी पुत्री हो? क्या तुम्हारे पिता के घर में हमारे ठहरने के लिए स्थान है?' [24]उसने उत्तर दिया, 'मैं नाहोर और मिल्का के पुत्र बतूएल की पुत्री हूँ।' [25]उसने आगे कहा, 'हमारे पास पशुओं के लिए पर्याप्त पुआल और चारा है, और आपके ठहरने के लिए स्थान भी।' [26]सेवक ने सिर झुकाया और प्रभु की वन्दना करके [27]कहा, 'हे मेरे स्वामी अब्राहम के प्रभु परमेश्वर, तू धन्य है! तूने अपनी करुणा और सच्चाई मेरे स्वामी से नहीं हटाई। प्रभु, तूने मेरे स्वामी के कुटुम्बी के घर तक मार्ग में मेरी अगुआई की।'

28 कन्या ने दौड़कर अपनी मां के घर में सब को ये बातें बताईं। [29-30] रिबका का एक भाई था। उसका नाम लाबान था। जब लाबान ने नथ और रिबका के हाथों में कंगन देखे और उसके ये शब्द सुने, 'उस मनुष्य ने मुझसे ऐसी बातें कहीं,' तब वह बाहर कुएं की ओर सेवक के पास दौड़ कर गया। उसने उसे झरने पर अपने ऊंटों के पास खड़ा देखा। [31]लाबान ने उससे कहा, 'प्रभु के धन्य पुरुष, आप बाहर क्यों खड़े हैं? आइए। मैंने आपके लिए घर और आपके ऊंटों के लिए स्थान तैयार किया है।' [32]अब्राहम का सेवक घर में आया। लाबान ने ऊंटों की काठियां खोलकर उनके आगे पुआल और चारा डाला। उसने सेवक और उसके साथियों को पैर धोने के लिए जल दिया। [33]तत्पश्चात् सेवक के सम्मुख खाने के लिए भोजन परोसा गया। परन्तु सेवक ने कहा, 'नहीं, जब तक मैं अपना सन्देश नहीं सुना लूंगा तब तक भोजन नहीं करूंगा।' लाबान ने कहा, 'सुनाइए।'

34 सेवक ने कहा, 'मैं अब्राहम का सेवक हूं। [35]प्रभु ने मेरे स्वामी को इतनी आशिष दी है कि वह बहुत धनी हो गए हैं। प्रभु ने उनको भेड़-बकरी, गाय-बैल, सोना-चांदी, सेवक-सेविकाएं, ऊंट, गधे दिए हैं। [36]मेरे स्वामी की पत्नी सारा को उनकी वृद्धावस्था में एक पुत्र उत्पन्न हुआ है। मेरे स्वामी ने उस पुत्र को अपना सब कुछ सौंप दिया है। [37]उन्होंने मुझे शपथ खिलायी है। उन्होंने कहा है, ''मेरे पुत्र के लिए तुम कनानी जाति की कन्याओं में से, जिनके देश में मैं निवास करता हूं, वधू नहीं लाओगे, [38]वरन् तुम मेरे पितृगृह और मेरे कुटुम्बियों के पास जाकर मेरे पुत्र के लिए वधू लाओगे।'' [39]मैंने अपने स्वामी से कहा,

---

* शब्दशः 'किसी पुरुष ने उसे जाना न था।'
24 : 33 यो 4 : 34

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

''कदाचित् कन्या मेरे साथ आना न चाहे।''
40तब उन्होंने मुझसे कहा, ''प्रभु, जिसकी
उपस्थिति में रहता हुआ मैं आचरण करता हूँ,
अपना दूत तुम्हारे साथ भेजकर तुम्हारी यात्रा
सफल करेगा, और तुम मेरे पुत्र के लिए मेरे
कुटुम्बियों और मेरे पितृगृह से वधू लाओगे।
41यदि तुम मेरे कुटुम्बियों के पास पहुंचो और
वे तुम्हें कोई कन्या न दें, तो तुम मेरी शपथ से
मुक्त हो जाओगे। ऐसी बात होने पर ही तुम
मेरी शपथ से मुक्त हो सकोगे।''

42 'मैं आज झरने पर पहुंचा और प्रार्थना
की, ''हे प्रभु, मेरे स्वामी अब्राहम के परमेश्वर,
जिस मार्ग पर मैं जा रहा हूं, उसे तू आज सफल
कर। 43देख, मैं झरने पर खड़ा हूं। अब ऐसा
हो कि जल भरने को आने वाली कन्या जिससे
मैं कहूंगा, 'कृपया मुझे अपने घड़े में से थोड़ा
पानी पिलाओ,' 44और वह मुझे उत्तर देगी,
'पीजिए, मैं आपके ऊंटों के लिए भी पानी
भरूंगी,' तो वह वही कन्या हो जिसे प्रभु ने मेरे
स्वामी के पुत्र के लिए चुना है।''

45 'मैंने अपने मन में बोलना समाप्त ही
नहीं किया था कि रिबका अपने कन्धे पर घड़ा
रखे हुए बाहर आई। वह झरने पर गई, और
उसने पानी खींचा। मैंने उससे कहा, ''कृपया,
मुझे पानी पिलाओ।'' 46उसने अपने कन्धे से
घड़ा तुरन्त नीचे उतारा और कहा, ''पीजिए,
मैं आपके ऊंटों को भी पानी पिलाऊंगी।'' मैंने
पानी पिया। उसने ऊंटों को भी पानी पिलाया।
47मैंने उससे पूछा, ''तुम किसकी पुत्री हो?''
उसने उत्तर दिया, ''मैं नाहोर और मिल्का के
पुत्र बतूएल की पुत्री हूँ।'' अतएव मैंने उसकी
नाक में नथ और उसके हाथों में कंगन पहिना
दिए। 48तत्पश्चात् मैंने सिर झुका कर प्रभु की
वन्दना की। मैंने अपने स्वामी अब्राहम के
परमेश्वर प्रभु को धन्य कहा, जिसने मेरे स्वामी
के पुत्र के लिए उसके कुटुम्बी की पुत्री प्राप्त
करने के लिए सफलतापूर्वक मेरा मार्ग-दर्शन
किया। 49अब यदि आप मेरे स्वामी से प्रेमपूर्ण
और सच्चाई का व्यवहार करना चाहते हैं, तो
मुझे बताइए। यदि नहीं, तो वैसा मुझसे कहिए,
जिससे मैं निश्चय कर सकूं कि मुझे क्या
करना+ चाहिए।'

50 लाबान और बतूएल ने उत्तर दिया, 'यह
प्रस्ताव प्रभु की ओर से आया है। हम तुमसे भला
और बुरा कुछ भी नहीं कह सकते। 51रिबका
तुम्हारे सामने है। उसे ले जाओ। जैसा प्रभु ने
कहा है, वैसे ही वह तुम्हारे स्वामी के पुत्र की
पत्नी बने।'

52 जब अब्राहम के सेवक ने उनके ये शब्द
सुने तब उसने भूमि की ओर झुककर प्रभु की
वन्दना की। 53तत्पश्चात् सेवक ने सोना-चांदी
के आभूषण और वस्त्र निकाल कर रिबका को
दिए। उसने उसके भाई और मां को भी
बहुमूल्य गहने दिए। 54तब उसने और उसके
साथियों ने खाया और पिया। उन्होंने रात वहीं
बिताई। जब वे सबेरे सोकर उठे तब सेवक ने
कहा, 'अब मुझे अपने स्वामी के पास जाने की
आज्ञा दीजिए।' 55रिबका के भाई और मां ने
कहा, 'कन्या को कुछ समय तक, कम से कम
दस दिन तक, हमारे पास रहने दीजिए। उसके
पश्चात् वह जा सकती है।' 56परन्तु उसने उनसे
कहा, 'जब प्रभु ने मेरी यात्रा सफल की है, तब
आप मुझे न रोकिए। मुझे विदा कीजिए कि मैं
अपने स्वामी के पास जाऊं।' 57उन्होंने कहा,
'हम कन्या को बुलाकर उससे पूछते हैं।'
58अतएव उन्होंने रिबका को बुलाया और
उससे पूछा, 'क्या तुम इस मनुष्य के साथ
जाओगी?' उसने उत्तर दिया, 'जी हां, मैं
जाऊंगी।' 59अत: उन्होंने लाबान की बहिन
रिबका और उसकी धाय को अब्राहम के सेवक
और उसके साथियों के साथ विदा किया।
60उन्होंने रिबका को आशीर्वाद देते हुए कहा,
'हे हमारी बहिन, तुम हजारों-लाखों पुत्र-
पुत्रियों की माता बनो। तुम्हारे वंशज अपने
बैरियों के नगरों पर अधिकार करें।' 61उसके
पश्चात् रिबका और उसकी सेविकाएं यात्रा के
लिए तैयार हुईं। वे ऊंटों पर सवार हुईं और
अब्राहम के सेवक के पीछे चलीं। इस प्रकार

+ शब्दश:, 'दाहिनी या बाईं ओर फिरना'।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सेवक रिबका को साथ लेकर चला गया।

62 इसहाक नेगेब क्षेत्र में रहता था। वह लहई-रोई नामक कुएं के निर्जन प्रदेश में आया। [63]वह सन्ध्या के समय खुले मैदान में मृत्यु-शोक मनाने* निकला। जब उसने अपनी आंखें ऊपर उठाईं तो देखा कि ऊंट आ रहे हैं। [64]रिबका ने भी उसकी ओर देखा। जब उसने इसहाक को देखा तब वह ऊंट से उतर पड़ी। [65]उसने अब्राहम के सेवक से पूछा, 'वह मनुष्य कौन है जो हमसे भेंट करने के लिए मैदान से आ रहा है?' सेवक ने उत्तर दिया, 'वह मेरे स्वामी हैं।' रिबका ने घूंघट निकालकर अपना मुख ढक लिया। [66]जो कुछ सेवक ने किया था, उसका सम्पूर्ण वृत्तान्त सेवक ने इसहाक को सुनाया। [67]इसहाक रिबका को अपनी मां सारा के तम्बू में ले गया। उसने रिबका को ग्रहण किया। वह उसकी पत्नी बन गई। इसहाक ने उसे प्यार किया। इस प्रकार इसहाक को अपनी मां की मृत्यु के पश्चात् सान्त्वना प्राप्त हुई।

अब्राहम के वंशजः कटूरा से

25 अब्राहम ने एक और स्त्री से विवाह किया। उसका नाम कटूरा था। [2]उसने अब्राहम से जिम्रान, याक्षान, मदान, मिद्यान, यिशबाक और शूह नामक पुत्रों को जन्म दिया। [3]याक्षान ने शबा और ददान नामक पुत्र उत्पन्न किए। ददान के वंश में अश्शूरी, लटूशी और लऊमी नामक कबीले हुए। [4]मिद्यान के पुत्र एपा, एपेर, हनोक, अबीदा और एल्दाआ थे। ये सब कटूरा की सन्तान कहलाए।

5 अब्राहम ने अपना सब कुछ इसहाक को सौंप दिया, [6]पर अपनी रखेल स्त्रियों+ से उत्पन्न पुत्रों को केवल उपहार देकर अपने जीवनकाल में ही अपने पुत्र इसहाक से दूर, पूर्व दिशा में, पूर्वी प्रदेश में भेज दिया।

अब्राहम की मृत्यु

7 जब अब्राहम की कुल आयु एक सौ पचहत्तर वर्ष की हुई [8]तब उन्होंने अन्तिम सांस ली। वह वृद्ध और दीर्घायु थे। उनका अच्छी पकी आयु में देहान्त हुआ और वह अपने मृत पूर्वजों में जाकर मिल गए। [9]ममरे की पूर्व दिशा में हित्ती जातीय सोहर के पुत्र एप्रोन की भूमि में स्थित मकपेला की गुफा में अब्राहम को उनके पुत्र इसहाक और यिशमाएल ने गाड़ा। [10]अब्राहम ने यह भूमि हित्तियों से खरीदी थी। वहां अपनी पत्नी सारा के साथ अब्राहम गाड़े गए।

11 परमेश्वर ने अब्राहम की मृत्यु के पश्चात् उनके पुत्र इसहाक को आशिष दी। इसहाक लहई-रोई नामक कुएं के पास रहने लगा।

यिशमाएल के वंशज

12 अब्राहम के पुत्र यिशमाएल की वंशावली, जिसको सारा की मिस्री दासी हागार ने अब्राहम से जन्म दिया था, यह है: [13]यिशमाएल के पुत्रों के नाम, उनके जन्म के क्रमानुसार इस प्रकार हैं: यिशमाएल का ज्येष्ठ पुत्र नबायोत था। उसके पश्चात् क्रमशः केदार, अदबएल, मिबसाम, [14]मिश्मा, दूमा, मस्सा, [15]हदद, तेमा, यटूर, नापीश और केदमा नामक पुत्र थे। [16]ये ही यिशमाएल के पुत्र थे। इनके नामों के अनुसार इनके गांवों और पड़ावों के नाम भी हुए। ये ही बारह अपने-अपने कबीले के मुखिया बने।

17 जब यिशमाएल की कुल आयु एक सौ सैंतीस वर्ष की हुई तब उसने अन्तिम सांस ली, और अपना प्राण त्याग दिया। वह अपने मृत पूर्वजों में जाकर मिल गया।

18 उसके वंशज हवीला से शूर तक, जो मिस्र देश के पूर्व में और असीरिया** के मार्ग में है, रहते थे।

प्रत्येक अपने भाई-बन्धुओं के विरुद्ध बसा हुआ था।

याकूब के आख्यान का आरम्भ: एसाव और याकूब का जन्म

19 यह अब्राहम के पुत्र इसहाक के परिवार का वृत्तान्त है। अब्राहम ने इसहाक को उत्पन्न

---

* मूल में अस्पष्ट; परंपरागत अनुवाद, 'ध्यान करने'। + अर्थात् हाजिरा और कटूरा ** अथवा, 'अश्शूर'

24 : 62 उत 16 : 14 ; **25 : 1** 1 इत 1 - 32 **25 : 10** उत 23 : 16 **25 : 12** 1 इत 1 : 29

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

किया था। 20जब इसहाक चालीस वर्ष का
हुआ तब उसने पद्दन-अराम के निवासी अराम
वंशीय बतूएल की पुत्री और अराम वंशीय
लाबान की बहिन रिबका से विवाह किया।
21रिबका बांझ थी। अतएव इसहाक ने अपनी
पत्नी के लिए प्रभु से निवेदन किया। प्रभु ने उसे
सुना, और इसहाक की पत्नी गर्भवती हुई।
22उसके गर्भ में बच्चे आपस में लड़ने-झगड़ने
लगे। रिबका बोली, 'यदि ऐसा ही होता रहा
तो मैं क्यों जीऊं?' अत: वह प्रभु से पूछने गई।
23प्रभु ने उससे कहा,

'तेरे गर्भ में दो राष्ट्र हैं;
तुझसे जन्म लेते ही दो जातियां विभाजित हो
जाएंगी;
एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र से शक्तिशाली होगा,
ज्येष्ठ, कनिष्ठ की सेवा करेगा।'

24 जब रिबका के प्रसव के दिन पूरे हुए कि
वह शिशु को जन्म दे, तब मालूम हुआ कि
उसके गर्भ में जुड़वां बच्चे हैं। 25गर्भ से बाहर
आने वाला पहला बच्चा लाल था। उसका सारा
शरीर कम्बल के समान रोएंदार था। इसलिए
उन्होंने उसका नाम एसाव रखा। 26तत्पश्चात्
उसका भाई गर्भ से बाहर आया। वह अपने हाथ
में एसाव की एड़ी पकड़े हुए था। अत: उसका
नाम याकूब* रखा गया। जब रिबका ने उनको
जन्म दिया तब इसहाक की आयु साठ वर्ष की
थी।

एसाव द्वारा ज्येष्ठ पुत्र होने के अधिकार का त्याग

27 जब दोनों बालक युवा हुए तब एसाव
जंगल में रहनेवाला एक कुशल शिकारी बना।
किन्तु याकूब तम्बुओं का निवासी एक सीधा-
सादा मनुष्य था। 28इसहाक ज्येष्ठ पुत्र एसाव
से प्रेम करते थे, क्योंकि वह एसाव के शिकार
का मांस खाते थे। रिबका छोटे पुत्र याकूब से
प्रेम करती थी।
29 एक दिन याकूब दाल उबाल रहा था।
एसाव वन से आया। वह बहुत भूखा था।
30उसने याकूब से कहा, 'मुझे लाल-लाल
वस्तु में से कुछ खिला, क्योंकि मुझे बहुत भूख
लगी है।' (इसलिए उसका नाम 'एदोम'+ भी
पड़ा।) 31याकूब बोला, 'पहले मुझे अपना
ज्येष्ठ पुत्र होने का अधिकार बेच दो।'
32एसाव ने कहा, 'देख, मैं मरने पर हूं। इस
अधिकार का मेरे लिए क्या लाभ?' 33याकूब
बोला, 'पहले मुझसे शपथ खाओ।' अत:
एसाव ने उससे शपथ खाई, और उसे अपने
ज्येष्ठ होने का अधिकार बेच दिया। 34तत्पश्चात्
याकूब ने एसाव को रोटी और उबली हुई मसूर
की दाल दी। उसने खाया-पिया और उठकर
चला गया।

इस प्रकार एसाव ने अपने ज्येष्ठ पुत्र होने
के अधिकार को तुच्छ समझा।

इसहाक का गरार और बएर-शबा नगर में आगमन

26 देश में अकाल पड़ा। यह अब्राहम के
समय के अकाल से भिन्न था। अतएव
इसहाक पलिश्ती जाति के राजा अबीमेलक के
पास गरार नगर गए। 2प्रभु ने इसहाक को दर्शन
देकर कहा, 'मिस्र देश मत जा, वरन् जिस देश के
विषय में मैं तुझसे कहूँगा, उसी में निवास करना।
3इसी देश में प्रवास कर। मैं तेरे साथ रहूंगा,
और तुझे आशिष दूंगा। मैं तुझे और तेरे वंशजों
को ये सब देश प्रदान करूंगा। जो शपथ मैंने
तेरे पिता अब्राहम से खायी थी, उसे पूर्ण
करूंगा। 4मैं तेरे वंश को आकाश के तारों के
सदृश असंख्य बनाऊंगा, और उन्हें ये सब देश
प्रदान करूंगा। पृथ्वी के समस्त राष्ट्र तेरे वंश
द्वारा मुझसे आशिष प्राप्त करेंगे; 5क्योंकि अब्राहम
ने मेरी वाणी सुनी और उसने मेरे आदेश, मेरी
आज्ञाएं, मेरी संविधि और व्यवस्था का पालन
किया था।'

6 अतएव इसहाक गरार नगर में रहने लगे।
7जब उस स्थान के पुरुषों ने उनकी पत्नी

* अड़ंगा मारनेवाला, अथवा कपट से दूसरे को हटाकर अधिकार जमानेवाला। + अर्थात् 'लाल'।

25 : 23 रोम 9 : 12 ; मला 1 : 2 **25 : 26** हो 12 : 3 **25 : 31** व्य 21 : 17 **25 : 33** इब्र 12 : 16 **26 : 4** उत 22 : 18 **26 : 7** उत 20 : 2.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रिबका के विषय में उनसे पूछा तब वह बोले,
'यह मेरी बहिन है।'इसहाक 'मेरी पत्नी' कहने
से डरते थे। वह सोचते थे: 'ऐसा न हो कि
रिबका के कारण इस स्थान के पुरुष मुझको
मार डालें;' क्योंकि रिबका देखने मे बहुत
सुन्दर थी।

8 जब इसहाक को वहां रहते हुए बहुत
समय बीत गया तब एक दिन पलिश्तियों के
राजा अबीमेलक ने खिड़की से झांक कर देखा
कि इसहाक अपनी पत्नी के साथ क्रीड़ा कर रहे
हैं। 9अबीमेलक ने इसहाक को बुलाया और
उनसे कहा, 'वह स्त्री निश्चय ही तुम्हारी पत्नी
है। तुमने क्यों कहा था, "वह स्त्री मेरी बहिन
है"?' इसहाक ने उत्तर दिया, 'मैं सोचता था
कि ऐसा न हो कि मुझे उसके कारण अपने
प्राणों से हाथ धोना पड़े।' 10अबीमेलक ने कहा,
'तुमने हमारे साथ यह क्या किया? मेरी प्रजा
का कोई भी पुरुष तुम्हारी पत्नी के साथ सहज
ही कुकर्म कर सकता था और तुम हम पर
इसका दोष मढ़ते।' 11अबीमेलक ने अपनी
प्रजा को आदेश दिया, 'जो कोई इस मनुष्य
और इसकी पत्नी को अनिष्ट करने के उद्देश्य
से स्पर्श करेगा, उसे मृत्युदण्ड मिलेगा।'

12 इसहाक ने उस देश में भूमि पर अनाज
बोया और उसी वर्ष सौ गुना उपज प्राप्त की।
प्रभु ने उनको आशिष दी। 13वह धनी हो गए।
वह अधिकाधिक उन्नति करते गए। वह बहुत
धनवान बन गए। 14उनके पास भेड़-बकरी,
गाय-बैल और अनेक सेवक-सेविकाएं थीं।
अत: पलिश्ती लोग उनसे ईर्ष्या करने लगे।
15(जिन कुओं को इसहाक के पिता अब्राहम
के सेवकों ने उनके जीवनकाल में खोदा था,
उन्हें पलिश्ती जाति के लोगों ने मिट्टी से भरकर
बन्द कर दिया।) 16अबीमेलक ने इसहाक से
कहा, 'तुम हमारे पास से चले जाओ; क्योंकि
तुम हमसे अधिक शक्तिशाली हो गए हो।'

17 इसहाक वहां से चले गए। उन्होंने गरार
की घाटी में पड़ाव डाला, और वहां रहने लगे।
18जो कुएं उनके पिता अब्राहम के जीवनकाल
में खोदे गए थे, उन्हें इसहाक ने पुन: खोदा;
क्योंकि पलिश्ती लोगों ने अब्राहम की मृत्यु के
पश्चात् उन कुओं को बन्द कर दिया था।
इसहाक ने उनके वही नाम रखे जो उनके पिता
ने रखे थे। 19जब इसहाक के सेवकों ने घाटी
में खुदाई की और उन्हें वहां बहते जल का एक
झरना* मिला 20तब गरार के चरवाहे इसहाक
के चरवाहों से झगड़ने लगे। वे कहने लगे, 'यह
जल हमारा है।' अतएव इसहाक ने उस कुएं
का नाम 'एसक'** रखा; क्योंकि उन्होंने इसहाक
से झगड़ा किया था।

21 इसहाक के सेवकों ने दूसरा कुआं
खोदा। पर उन्होंने उसके लिए भी झगड़ा
किया। इसहाक ने उसका नाम 'सिटना'+ रखा।
22इसहाक ने वहां से प्रस्थान कर अन्यत्र एक
और कुआं खोदा। उन्होंने इस कुएं के लिए
झगड़ा नहीं किया। अत: इसहाक ने उसका
नाम 'रहोबोत'++ रखा। इसहाक बोले, 'अब
प्रभु ने हमें विस्तृत स्थान प्रदान किया है, और
हम इस भूमि पर फलेंगे-फूलेंगे।'

23 वह वहां से बएर-शबा गए। 24 प्रभु ने
उसी रात उन्हें दर्शन देकर कहा, 'मैं तेरे पिता
अब्राहम का परमेश्वर हूँ। मत डर, क्योंकि मैं
तेरे साथ हूँ। मैं तुझे आशिष दूंगा, और अपने
सेवक अब्राहम के कारण तेरे वंश की संख्या
बढ़ाऊंगा।' 25इसहाक ने वहां एक वेदी बनाई,
और प्रभु के नाम से आराधना की। उन्होंने वहां
अपना तम्बू गाड़ा। उनके सेवकों ने वहां भी
एक कुआं खोदा।

इसहाक और अबीमेलक

26 अबीमेलक अपने मन्त्री अहूज्जत और
सेनापति पीकोल के साथ गरार नगर से इसहाक
के पास आया। 27इसहाक ने उनसे कहा, 'आप
लोग मेरे पास क्यों आए हैं? आप तो मुझे अपना
शत्रु मानते हैं। आपने मुझे अपने देश से निकाल
दिया था।' 28 वे बोले, 'हमने स्पष्ट देखा कि
प्रभु आपके साथ है। इसलिए हमने कहा कि

* अथवा कुआं' ** अर्थात्, 'झगड़ा' + अर्थात्, 'शुत्रता' ++ अर्थात् 'विस्तृत स्थान'

26 : 25 उत 12 : 8.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आपके और हमारे मध्य शपथ ली जाए।
आइए, हम आपके साथ संधि करें, 29कि जैसे
हमने आपको स्पर्श भी नहीं किया था, वरन्
आपके साथ केवल भलाई की थी और
शान्तिपूर्वक आपको विदा किया था, वैसे ही
आप हमसे कोई बुरा व्यवहार नहीं करेंगे। अब
आप प्रभु की आशिष पाए हुए व्यक्ति हैं।'

30 इसहाक ने उनके लिए विशेष भोजन
तैयार किया। उन्होंने खाया-पिया। 31वे सबेरे
उठे। उन्होंने आपस में शपथ ली। तत्पश्चात्
इसहाक ने उन्हें विदा किया। वे उनके पास से
शान्तिपूर्वक चले गए।

32 उसी दिन इसहाक के सेवकों ने आकर
एक कुएं के विषय में बताया जिसे उन्होंने
खोदा था। उन्होंने इसहाक से कहा, 'हमें जल
मिल गया है।' 33इसहाक ने कुएं का नाम
'शिबा'+ रखा। इसलिए आज तक उस नगर का
नाम बएर-शबा है।

34 जब एसाव चालीस वर्ष का हुआ, उसने
हित्ती जाति की दो कन्याओं से विवाह किया :
यहूदीत और बाशमत। यहूदीत के पिता का नाम
बएरी और बाशमत के पिता का नाम एलोन
था। 35दोनों बहुओं के कारण इसहाक और
रिबका के मन को ठेस लगी।++

याकूब का इसहाक से आशीर्वाद प्राप्त करना

27 जब इसहाक वृद्ध हो गए, और उनकी
आंखें इतनी धुंधली पड़ गयीं कि वह
देख नहीं सकते थे, तब उन्होंने ज्येष्ठ पुत्र
एसाव को बुलाया और उससे कहा, 'मेरे पुत्र
एसाव!' एसाव ने उन्हें उत्तर दिया, 'क्या बात
है, पिताजी?' 2इसहाक बोले, 'देख, मैं बूढ़ा हो
गया हूँ। मैं अपनी मृत्यु का दिन नहीं जानता।
3अब तू अपने धनुष-बाण आदि शस्त्र ले और
जंगल को जा। वहां से तू मेरे लिए शिकार मार
कर ला। 4उसके बाद तू मेरी रुचि के अनुसार
मेरे लिए स्वादिष्ट भोजन पकाना और उसको
मेरे पास लाना। मैं उसको खाऊंगा और मरने
के पूर्व तुझे आशीर्वाद दूंगा।'

5 जब इसहाक अपने पुत्र एसाव से बातें कर
रहे थे तब रिबका भी सुन रही थी। एसाव
शिकार लाने के लिए जंगल चला गया।
6रिबका अपने पुत्र याकूब से बोली, 'मैंने तेरे
पिता की यह बात सुनी है। उन्होंने तेरे भाई
एसाव से कहा है, 7''मेरे लिए शिकार मार कर
ला। मेरे लिए स्वादिष्ट भोजन पका। मैं उसको
खाऊंगा और मरने के पूर्व प्रभु के सम्मुख तुझे
आशीर्वाद दूंगा।'' 8अब, मेरे पुत्र, मेरी बात
सुन। जैसा मैं तुझसे कहती हूँ, वैसा ही कर।
9तू बकरियों के बाड़े में जा और वहां से बकरी
के दो अच्छे बच्चे ले आ। मैं उनसे तेरे पिता के
लिए उनकी रुचि के अनुसार स्वादिष्ट भोजन
पकाऊंगी। 10उसके बाद तू उसको अपने पिता
के पास ले जाना कि वह उसको खाकर अपनी
मृत्यु से पहले तुझे आर्शीवाद दें।' 11याकूब ने
अपनी मां रिबका से कहा, 'परन्तु मेरा भाई
एसाव रोएंदार है, और मैं रोमहीन हूँ। 12कदाचित्
पिताजी मुझे स्पर्श करें। तब मैं उनकी दृष्टि में
उनके अन्धेपन का मजाक उड़ानेवाला ठहरूंगा,
और अपने ऊपर उनका आशीर्वाद नहीं, वरन्
अभिशाप लाऊंगा।' 13उसकी मां उससे बोली,
'मेरे पुत्र, तेरा अभिशाप मुझपर पड़े। तू केवल
मेरी बात सुन। तू जा, और बकरी के बच्चे मुझे
लाकर दे।' 14अत: वह गया और बकरी के दो
बच्चे लेकर अपनी मां के पास आया। उसकी
मां ने उसके पिता की रुचि के अनुसार स्वादिष्ट
भोजन पकाया। 15रिबका ने अपने ज्येष्ठ पुत्र
एसाव के विशिष्ट वस्त्र लिये, जो रिबका के
पास घर में थे, और उन्हें अपने कनिष्ठ पुत्र
याकूब को पहिना दिए। 16उसने बकरी के बच्चों
की खाल उसके हाथों तथा गले के चिकने भाग
पर लपेट दी। 17तत्पश्चात् उसने रोटी और
स्वादिष्ट भोजन, जिसको उसने स्वयं पकाया
था, अपने पुत्र याकूब के हाथ में सौंप दिया।

18 याकूब अपने पिता के पास आया। उसने
कहा, 'पिताजी!' इसहाक ने पूछा, 'क्या बात

+ अर्थात् 'शपथ' ++ पाठांतर, 'वे इसहाक और रिबका के लिए कलह का कारण बनीं।'

26 : 33 उत 21 : 31

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
है? पुत्र, तुम कौन हो?' 19याकूब ने अपने पिता
को उत्तर दिया, 'मैं आपका पहिलौठा पुत्र
एसाव हूं। जैसा आपने मुझसे कहा था वैसा ही
मैंने किया है। कृपया उठिए और आइए, मेरे
शिकार का मांस खाइए जिससे आप अपनी
आत्मा से मुझे आशीर्वाद दे सकें।' 20इसहाक
ने अपने पुत्र से कहा, 'मेरे पुत्र, यह क्या! तुझे
इतने शीघ्र शिकार मिल गया?' याकूब बोला,
'आपके प्रभु परमेश्वर ने उसे मेरे सामने कर
दिया था।' 21इसहाक याकूब से बोले, 'पुत्र,
पास आ कि मैं तुझे स्पर्श करके मालूम कर सकूं
कि तू निश्चय ही मेरा पुत्र एसाव है, अथवा
नहीं।' 22याकूब अपने पिता इसहाक के निकट
आया। इसहाक ने उसका स्पर्श किया, और यह
कहा, 'तेरी आवाज तो याकूब की आवाज
जैसी लगती है, पर तेरे हाथ एसाव के हाथ जैसे
ही हैं।' 23इस प्रकार इसहाक उसे नहीं पहचान
सके; क्योंकि उसके हाथ उसके भाई एसाव के
समान रोएंदार थे। अत: इसहाक ने उसे आशी-
र्वाद दिया। 24पर उन्होंने पूछा, 'क्या तू निश्चय
ही मेरा पुत्र एसाव है?' याकूब बोला, 'हाँ, मैं
हूँ।' 25इसहाक ने कहा, 'तो मुझे भोजन परोस।
मैं अपने पुत्र के शिकार को खाऊंगा जिससे मैं
अपनी आत्मा से तुझे आशीर्वाद दूं।' उसने
भोजन परोसा। इसहाक ने भोजन किया। वह
उनके लिए अंगूर का रस भी लाया, और उन्होंने
उसे पिया। 26तत्पश्चात् उसके पिता इसहाक ने
उससे कहा, 'पुत्र, पास आ और मुझे चुम्बन दे।'
27उसने पास जाकर इसहाक को चूमा। इसहाक
ने उसके वस्त्र की सुगन्ध सूंघकर उसको यह
आशीर्वाद दिया :

'देखो, मेरे पुत्र की सुगन्ध!
यह उस खेत की सुगन्ध के सदृश है
जिसे प्रभु ने आशिष दी है।
28परमेश्वर तुझे आकाश से ओस एवं भूमि की
सर्वोत्तम उपज,
अधिकाधिक अनाज और अंगूर की फसल
प्रदान करे।
29राष्ट्र तेरी सेवा करें,
विभिन्न जातियां तुझे दण्डवत् करें।
तू अपने भाइयों का स्वामी बने।
तेरी मां के पुत्र तुझे दण्डवत् करें।
तुझे शाप देने वाले स्वयं शापित हों,
पर आशिष देनेवाले, आशिष प्राप्त करें।'

30 इसहाक ने याकूब को आशीर्वाद देना
समाप्त किया और जैसे ही याकूब अपने पिता
इसहाक के पास से बाहर निकला कि उसका
भाई एसाव शिकार से लौटा। 31उसने भी स्वादिष्ट
भोजन पकाया। तत्पश्चात् वह उसे अपने पिता
के पास लाया। उसने कहा, 'पिताजी, उठिए
और अपने पुत्र के शिकार का मांस खाइए
जिससे आपकी आत्मा मुझे आशीर्वाद दे।'
32उसके पिता इसहाक ने उससे पूछा, 'तुम
कौन हो?' वह बोला, 'मैं आपका पुत्र, आपका
ज्येष्ठ पुत्र एसाव हूं।' 33इसहाक थरथर कांपने
लगे। उन्होंने पूछा, 'तब वह कौन था जो मेरे
पास शिकार लाया था? मैंने तेरे आने से पहले
उसका परोसा हुआ भोजन खाया, और उसे
आशीर्वाद दिया। अब वही आशीर्वाद उस पर
बना रहेगा।' 34जब एसाव ने अपने पिता
इसहाक की ये बातें सुनीं, तब उसने अत्यन्त
ऊँची और दु:खपूर्ण आवाज में अपने पिता से
कहा, 'पिताजी, मुझे भी आशीर्वाद दीजिए।'
35वह बोले, 'तेरा भाई धूर्तता से आया और तेरा
आशीर्वाद लेकर चला गया।' 36एसाव ने कहा,
'उसका नाम याकूब ठीक ही रखा गया था।
उसने दो बार मुझे अड़ंगा मारा : पहले तो मेरा
ज्येष्ठ पुत्र होने का अधिकार ले लिया, और अब
मेरा आशीर्वाद भी छीन लिया।' एसाव ने पूछा,
'क्या आपने मेरे लिए कोई आशीर्वाद बचाकर
नहीं रखा?' 37इसहाक ने एसाव को उत्तर
दिया, 'मैंने उसे तेरा स्वामी बनाया है। मैंने
उसके सब भाइयों को उसके सेवक बनने के
लिए प्रदान कर दिया। मैंने अनाज और अंगूर
से उसको सम्पन्न बना दिया। अब मेरे पुत्र, मैं
तेरे लिए क्या कर सकता हूं?' 38एसाब अपने
पिता से बोला, 'क्या आपके पास केवल एक
ही आशीर्वाद था? पिताजी, मुझे भी आशीर्वाद

---

27 : 28 इब्र 11 : 20 **27 : 29** उत 12 : 3 **27 : 36** उत 25 : 26; 33 यश 43 : 27 **27 : 38** इब्र 12 : 17

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दीजिए।' एसाव फूट-फूट कर रोने लगा।
39तब उसके पिता इसहाक ने उसे उत्तर
दिया,

'उपजाऊ भूमि से दूर,
ऊँचे आकाश की ओस से दूर,
तेरा निवास स्थान होगा।
40तू तलवार के बल पर जीवित रहेगा।
तू अपने भाई की सेवा करेगा।
पर जब तू अशान्त हो जाएगा*
तब अपनी गरदन से उसके गुलामी के जूए
को तोड़ फेंकेगा।'

इसहाक का याकूब को हारान नगर भेजना

41 उस आशीर्वाद के कारण जिसे उसके
पिता ने याकूब को दिया था, एसाव याकूब से
घृणा करने लगा। एसाव ने अपने मन में कहा,
'पिता के मृत्यु-शोक दिवस निकट हैं।**
उसके बाद मैं अपने भाई की हत्या करूंगा।'
42जब रिबका को उसके ज्येष्ठ पुत्र एसाव की
ये बातें बताई गईं तब उसने सेवक भेजकर
अपने कनिष्ठ पुत्र याकूब को बुलाया। रिबका
ने उससे कहा, 'देख, तेरा भाई एसाव तुझे मार
डालने के लिए अपने हृदय को धैर्य बंधा रहा
है। 43अब मेरे पुत्र, मेरी बात सुन। तू मेरे भाई,
अपने मामा लाबान के पास हारान नगर भाग
जा। 44कुछ दिन, जब तक तेरे भाई का क्रोध
शान्त न हो जाए, तू अपने मामा के साथ रहना।
45जब तेरे भाई का क्रोध शान्त हो जाएगा, और
जो तूने उसके साथ किया है, उसे वह भूल
जाएगा तब मैं सेवक भेजकर तुझे वहाँ से बुला
लूंगी। मैं एक ही दिन तुम दोनों पुत्रों को क्यों
खो दूं?'

46 रिबका ने इसहाक से कहा, 'मैं हित्ती
जाति की बहुओं के कारण जीवन से ऊब गई
हूं। यदि याकूब भी इन बहुओं के समान इस
देश की किसी हित्ती जाति की कन्या से विवाह
कर लेगा तो मुझे अपने जीवन से क्या लाभ?
मैं मर जाऊँगी।'

28 अतएव इसहाक ने याकूब को बुलाया।
उन्होंने उसे आशीर्वाद देते हुए आज्ञा
दी, 'तू कनान देश की कन्याओं में से किसी के
साथ विवाह मत करना। 2उठ, और पद्दन-
अराम क्षेत्र में अपने नाना बतूएल के घर जा।
वहाँ अपने मामा लाबान की पुत्रियों में से किसी
के साथ विवाह करना। 3सर्वशक्तिमान परमेश्वर
तुझे आशिष दे, तुझे इतना फलवन्त और
असंख्य बनाए कि तू अनेक जातियों का एक
समुदाय बन जाए। 4वह तुझे और तेरे साथ तेरे
वंशजों को अब्राहम की आशिष प्रदान करे,
जिससे तू अपने प्रवास के उस देश पर
अधिकार करे, जिसे परमेश्वर ने अब्राहम को
दिया था।' 5इस प्रकार इसहाक ने याकूब को
भेज दिया। वह पद्दन-अराम क्षेत्र में लाबान के
पास चला गया। लाबान अराम वंशीय बतूएल
का पुत्र था। वह याकूब और एसाव की मां
रिबका का भाई था।

एसाव का एक और विवाह करना

6 एसाव ने देखा कि इसहाक ने याकूब को
आशीर्वाद देकर पद्दन-अराम क्षेत्र भेजा है कि
वह वहाँ की कन्या से विवाह करे। इसहाक ने
उसे आशीर्वाद देते हुए यह भी आज्ञा दी है, "तू
कनान देश की कन्याओं में से किसी कन्या के
साथ विवाह न करना", 7और याकूब अपने
माता-पिता की बात सुनकर पद्दन-अराम क्षेत्र
चला गया है। 8एसाव ने यह भी देखा कि कनान
देश की कन्याएँ उसके पिता इसहाक को बुरी
लगती हैं। 9अतएव वह अब्राहम के पुत्र
यिश्माएल के पास गया। उसने अपनी अन्य
पत्नियों के होते हुए भी यिश्माएल की पुत्री
और नबायोत की बहिन महलत से विवाह कर
लिया।

बेत-एल में याकूब का स्वप्न

10 याकूब बएर-शबा से निकल कर हारान
नगर की ओर गया। 11वह एक स्थान पर पहुँचा।
उसने वहीं रात व्यतीत की; क्योंकि सूर्य अस्त
हो गया था। उसने उस स्थान में पड़े पत्थरों में

---

* मूल में अस्पष्ट। ** भावानुवाद, 'मेरे पिता की मृत्यु निकट है।'

27 : 40 उत्त 36 : 8; 2 रा 8 : 20 27 : 43 उत 24 : 29; प्रज्ञा 10 : 10 28 : 4 उत 17 : 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

से एक पत्थर लेकर उसे अपने सिर के नीचे
रखा, और वह उसी स्थान पर सो गया। [12]तब
याकूब ने यह स्वप्न देखा : धरती पर सीढ़ियाँ
हैं। उनका शिखर स्वर्ग को स्पर्श कर रहा है।
परमेश्वर के दूत उस पर चढ़-उतर रहे हैं।
[13]प्रभु उसके पास खड़ा होकर कह रहा है, 'मैं
तेरे दादा अब्राहम का परमेश्वर, तेरे पिता
इसहाक का परमेश्वर, प्रभु हूँ। जिस भूमि पर
तू लेटा है, उसे मैं तुझे और तेरे वंश को प्रदान
करूँगा। [14]तेरे वंशज पृथ्वी के रजकणों के
सदृश असंख्य होंगे। तेरा वंश उत्तर, दक्षिण,
पूर्व और पश्चिम में फैल जाएगा। पृथ्वी के
समस्त कुटुम्ब तेरे और तेरे वंश के द्वारा मुझसे
आशिष पाएंगे। [15]देख, मैं तेरे साथ हूँ। जहाँ
कहीं तू जाएगा, मैं तेरी रक्षा करूंगा। मैं तुझे इस
देश में वापस लाऊँगा। जो बातें मैंने तुझसे कही
हैं, जब तक उनको पूर्ण नहीं कर लूंगा तब तक
तुझे नहीं छोड़ूंगा।'

16 तब याकूब नींद से जाग गया। उसने
कहा, 'निश्चय इस स्थान में प्रभु उपस्थित है।
मैं यह नहीं जानता था।' [17]वह भयभीत होकर
बोला, 'यह स्थान कितना भयावह है। यह
परमेश्वर के भवन के अतिरिक्त और कुछ नहीं
हो सकता। यह स्वर्ग का द्वार है।'

18 याकूब सबेरे उठा। उसने अपने सिर के
नीचे रखे पत्थर को उठाया, और उसको खम्भे
के रूप में खड़ा किया। तत्पश्चात् उसके शीर्ष
पर तेल उण्डेला। [19]याकूब ने उस स्थान का
नाम 'बेत-एल' * रखा। पहले उस नगर का
नाम लूज था। [20]याकूब ने यह मन्नत मानी,
'परमेश्वर, यदि तू मेरे साथ रहेगा, और मेरे इस
मार्ग पर, जिस पर मैं चल रहा हूं, मेरी रक्षा
करेगा, मुझे खाने को रोटी और पहनने को वस्त्र
देगा [21]कि मैं सकुशल अपने पिता के घर लौट
सकूं, तो तू प्रभु ही मेरा परमेश्वर होगा। [22]यह
पत्थर जिसे मैंने स्तम्भ के रूप में खड़ा किया
है, परमेश्वर का भवन बनेगा। जो कुछ तू मुझे
प्रदान करेगा, उसका दशमांश मैं तुझे अर्पित
करूँगा।'

याकूब का आगमन

29 याकूब आगे बढ़ा। वह पूर्व के निवासियों
के देश में आया। [2]उसे मैदान में एक
कुआं दिखाई दिया। वहाँ कुएँ के पास भेड़-
बकरियों के तीन रेवड़ बैठे थे; क्योंकि कुएँ से
ही उन्हें पानी पिलाया जाता था। कुएँ के मुँह
पर एक बड़ा पत्थर था। [3]जब सब भेड़-बकरियों
के रेवड़ वहाँ एकत्र हो जाते, तब चरवाहे उस
पत्थर को कुएँ के मुँह से लुढ़काकर भेड़-
बकरियों को पानी पिलाते थे। उसके बाद वे
उस पत्थर को कुएँ के मुँह पर, उसके स्थान पर,
पुनः रख देते थे।

4 याकूब ने चरवाहों से पूछा, 'भाइयो, आप
कहाँ से आए हैं?' उन्होंने उत्तर दिया, 'हम
हारान नगर से आए हैं।' [5]वह उनसे बोला,
'क्या आप नाहोर के पुत्र लाबान को जानते हैं?'
उन्होंने कहा, 'हम जानते हैं।' [6]उसने उनसे पूछा,
'क्या वह सकुशल हैं?' वे बोले, 'हाँ, वह
सकुशल हैं। देखिए, उनकी पुत्री राहेल भेड़-
बकरियों के साथ आ रही है।' [7]याकूब ने कहा,
'अभी तो दिन बीतने में बहुत समय शेष है। यह
पशुओं के एकत्र किए जाने का समय नहीं है।
भेड़-बकरियों को पानी पिलाओ और जाओ,
उन्हें फिर से चराओ।' [8]परन्तु वे बोले, 'अभी
हम ऐसा नहीं कर सकते। जब सब रेवड़ एकत्र
हो जाएँगे और कुएँ के मुंह से पत्थर लुढ़काया
जाएगा, तब हम भेड़-बकरियों को पानी
पिलाएंगे।'

9 वह अभी उनसे बातें कर ही रहा था कि
राहेल अपने पिता की भेड़ों के साथ आई। वह
भेड़ें चराती थी। [10]याकूब अपने मामा लाबान
की पुत्री राहेल और उसकी भेड़ों को देखकर
कुएँ के पास गया। उसने उसके मुंह पर रखे
पत्थर को लुढ़का दिया और अपने मामा
लाबान की भेड़ों को पानी पिलाया। [11]फिर

---

* अर्थात्, 'परमेश्वर का भवन' (अथवा घर)।

28 : 12 यो 1 : 51 **28 : 13** उत 13 : 15 **28 : 14** उत 12 : 3 **28 : 16** नि 3 : 5 **28 : 19** शास 1 : 23
29 : 9 नि 2 : 16

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

याकूब ने राहेल का चुम्बन लिया और वह फूट-फूट कर रोने लगा। 12उसने राहेल को बताया कि वह उसके पिता का कुटुम्बी है। वह रिबका का पुत्र है। राहेल दौड़ कर गई। उसने अपने पिता को बताया।

13 जब लाबान ने अपनी बहिन के पुत्र याकूब का समाचार सुना तब वह उससे भेंट करने को दौड़ा। उसने याकूब को गले लगाया और उसका चुम्बन लिया। वह उसे अपने घर ले गया। जब याकूब ने उससे अपना सब वृत्तान्त सुनाया, 14तब लाबान उससे बोला, 'तुम तो मेरा रक्त और मांस हो!' याकूब लाबान के साथ एक महीना रहा।

याकूब का राहेल और लिआ के लिए लाबान की सेवा करना

15 एक दिन लाबान ने याकूब से कहा, 'क्या तुम मेरे कुटुम्बी होने के कारण बिना मजदूरी लिए मेरी सेवा करते रहोगे? मुझे बताओ कि तुम्हारी मजदूरी क्या है?' 16लाबान की दो पुत्रियाँ थीं। बड़ी का नाम लिआ और छोटी का नाम राहेल था। 17लिआ की आँखें कमजोर* थीं, पर राहेल सुडौल और सुन्दर थी। 18याकूब राहेल से प्रेम करता था। वह बोला, 'मैं आपकी छोटी पुत्री राहेल के लिए सात वर्ष तक आपकी सेवा करूंगा।' 19लाबान ने कहा, 'मैं राहेल को पराए पुरुष को दूं, इससे तो अच्छा है कि मैं उसे तुम्हीं को सौंप दूं। तुम मेरे साथ रहो।' 20इस प्रकार याकूब ने राहेल के लिए सात वर्ष तक सेवा की। राहेल के प्रति अपने प्रेम के कारण वे सात वर्ष उसे कुछ ही दिन जैसे प्रतीत हुए।

21 याकूब ने लाबान से कहा, 'मेरी पत्नी मुझे दीजिए कि मैं उसके पास जाऊँ; क्योंकि मेरा सेवाकाल समाप्त हो गया है।' 22लाबान ने उस स्थान के लोगों को एकत्र कर एक बड़ा भोज तैयार किया। 23किन्तु सन्ध्या समय वह अपनी पुत्री लिआ को लेकर याकूब के पास आया। याकूब ने उसके साथ रात व्यतीत की।

24 (लाबान ने अपनी पुत्री लिआ को अपनी सेविका जिल्पा भेंट की कि वह उसकी सेवा करे।) 25सबेरे याकूब को मालूम हुआ कि वह लिआ है। उसने लाबान से कहा, 'यह आपने मेरे साथ कैसा व्यवहार किया? क्या मैंने राहेल के लिए आपकी सेवा नहीं की थी? आपने मुझे धोखा क्यों दिया?' 26लाबान ने कहा, 'हमारे देश में ऐसी प्रथा नहीं है कि हम बड़ी पुत्री के पहले छोटी पुत्री को विवाह में दें। 27इसका सप्ताह तो पूरा करो। उसके बाद हम यह दूसरी कन्या भी तुम्हें उस सेवा के बदले में देंगे जो तुम मेरे साथ सात वर्ष तक करोगे।' 28याकूब ने ऐसा ही किया। उसने सप्ताह पूरा किया। इसके पश्चात् लाबान ने अपनी पुत्री राहेल का विवाह उससे कर दिया। 29(लाबान ने अपनी पुत्री राहेल को अपनी सेविका बिल्हा भेंट की कि वह उसकी सेवा करे।) 30याकूब राहेल के पास भी गया।** पर उसने लिआ से अधिक राहेल से प्रेम किया। उसने सात वर्ष और लाबान की सेवा की।

याकूब की सन्तान

31 जब प्रभु ने देखा कि लिआ से घृणा की जाती है, तब उसने उसे पुत्रवती बनाया। पर राहेल निस्सन्तान रही। 32लिआ गर्भवती हुई। उसने एक पुत्र को जन्म दिया। उसने उसका नाम 'रूबेन'*** रखा; क्योंकि वह कहती थी, 'प्रभु ने मेरी पीड़ा पर दृष्टि की है। अब निश्चय ही मेरा पति मुझसे प्रेम करेगा।' 33वह पुनः गर्भवती हुई। उसने एक और पुत्र को जन्म दिया। वह बोली, 'प्रभु ने सुना कि मुझसे घृणा की गई है। अतएव उसने मुझे यह पुत्र भी प्रदान किया है।' उसने उसका नाम 'शिमोन' रखा। 34तत्पश्चात् वह फिर गर्भवती हुई, और उसने एक पुत्र को जन्म दिया। उसने कहा, 'अब मेरा पति मुझे मिल जाएगा; क्योंकि मैंने उससे तीन पुत्रों को जन्म दिया है।' इसलिए उसका नाम

* अथवा, 'सुन्दर' ** भावानुवाद, ''उसके साथ सहवास किया।'' *** पुत्रों के नामकरण का संबंध उन शब्दों के मूल उच्चारण से माना गया है : रूबेन-पुत्र, शिमोन-सुना, लेवी-मिल जाएगा, यहूदा-स्तुति, दान-न्याय, नफ्ताली-द्वन्द्वयुद्ध, गाद-भाग्य, आशेर-धन्य, इस्साकार-मज़दूरी, जबूलून-साथ रहेगा, यूसफ-एक और।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'लेवी' रखा गया। 35वह फिर गर्भवती हुई।
उसने एक पुत्र को जन्म दिया। वह बोली, 'इस
बार मैं प्रभु की स्तुति करूंगी।' अतएव उसने
उसका नाम, 'यहूदा' रखा। तब उसको सन्तान
होना बन्द हो गया।

30 जब राहेल ने देखा कि उससे याकूब के
लिए सन्तान उत्पन्न नहीं हुई, तब वह
अपनी बहिन से ईर्ष्या करने लगी। उसने याकूब
से कहा, 'मुझे सन्तान दो, अन्यथा मैं मर
जाऊँगी।' 2राहेल के प्रति याकूब का क्रोध
भड़क उठा। वह बोला, 'क्या मैं परमेश्वर के
स्थान पर हूं, जिसने तुझे गर्भवती होने से वंचित
किया है?' 3राहेल ने कहा, 'देखो, मेरी सेविका
बिल्हा है। तुम उससे सहवास करो, जिससे वह
मेरे घुटनों पर सन्तान को जन्म दे। शायद उसके
माध्यम से मुझे सन्तान प्राप्त हो।' 4अतः उसने
अपनी सेविका याकूब को दी कि वह उसकी
स्त्री बने। याकूब ने उसके साथ सहवास किया।
5बिल्हा गर्भवती हुई, और उसने याकूब से एक
पुत्र को जन्म दिया। 6राहेल बोली, 'परमेश्वर
ने मेरे पक्ष में न्याय किया। उसने मेरी पुकार
सुनी और मुझे एक पुत्र प्रदान किया।' इसलिए
उसने उसका नाम 'दान' रखा। 7राहेल की
सेविका बिल्हा पुनः गर्भवती हुई। उसने याकूब
से दूसरे पुत्र को जन्म दिया। 8राहेल ने कहा,
'मैंने अपनी बहिन के साथ कड़ा संघर्ष कर
द्वन्द्वयुद्ध में विजय प्राप्त की है।' अतः उसका
नाम 'नफ्ताली' रखा।

9 जब लिआ ने देखा कि उसके सन्तान होना
बन्द हो गया है, तब उसने अपनी सेविका
जिल्पा याकूब को दी कि वह उसकी स्त्री बने।
10लिआ की सेविका जिल्पा ने याकूब से एक
पुत्र को जन्म दिया। 11लिआ बोली, 'अहो
भाग्य!' अतएव उसने उसका नाम 'गाद' रखा।
12लिआ की सेविका जिल्पा ने याकूब से दूसरे
पुत्र को जन्म दिया। 13लिआ ने कहा, 'मैं कितनी
धन्य हूं! स्त्रियाँ मुझे धन्य-धन्य कहेंगी।'
इसलिए उसने उसका नाम 'आशेर' रखा।

14 गेहूँ की कटाई के दिनों में रूबेन बाहर
गया। उसे मैदान में दूदा फल मिले। वह उनको
अपनी मां लिआ के पास लाया। राहेल ने लिआ
से कहा, 'कृपया मुझे अपने पुत्र के दूदाफलों
में से कुछ फल दो।' 15लिआ ने उससे कहा,
'क्या यह कोई साधारण बात है कि तूने मेरे पति
को मुझसे छीन लिया? अब क्या तू मेरे पुत्र के
दूदाफल भी छीन लेगी?' राहेल बोली, 'तुम्हारे
पुत्र के दूदाफलों के बदले में याकूब आज रात
तुम्हारे साथ सो सकते हैं।' 16जब सन्ध्या समय
याकूब खेत से आया तब लिआ उससे भेंट
करने को बाहर निकली। लिआ ने कहा, 'तुम्हें
मेरे पास आज रात आना ही होगा; क्योंकि मैंने
तुम्हें अपने पुत्र के दूदाफलों के बदले में किराए
पर लिया है।' याकूब उस रात लिआ के साथ
सोया। 17तब परमेश्वर ने लिआ की प्रार्थना
सुनी। वह गर्भवती हुई और उसने याकूब से
पांचवें पुत्र को जन्म दिया। 18लिआ ने कहा,
'परमेश्वर ने मुझे मेरी मजदूरी दी है; क्योंकि
मैंने अपनी सेविका अपने पति को दी थी।'
अतएव उसने उसका नाम 'इस्साकार' रखा।।
19लिआ पुनः गर्भवती हुई। उसने याकूब से
छठे पुत्र को जन्म दिया। 20लिआ बोली,
'परमेश्वर ने मुझे एक उत्तम वरदान से सम्पन्न
किया है। अब मेरा पति मेरे साथ रहेगा; क्योंकि
मैंने उसके लिए छः पुत्रों को जन्म दिया है।'
अतः लिआ ने उसका नाम 'जबूलून' रखा।
21इसके पश्चात् उसने एक पुत्री को जन्म दिया,
और उसका नाम दीना रखा। 22परमेश्वर ने राहेल
को स्मरण किया। उसने उसकी प्रार्थना सुनी,
और उसके गर्भाशय को खोला। 23वह गर्भवती
हुई और उसने एक पुत्र को जन्म दिया। वह
बोली, 'परमेश्वर ने मेरी निन्दा दूर कर दी।'
24उसने यह कहते हुए उसका नाम 'यूसुफ'
रखा कि प्रभु उसे एक और पुत्र प्रदान करे।

याकूब का लाबान से सौदा करना

25 जब राहेल ने यूसुफ को जन्म दिया तब
याकूब लाबान से बोला, 'मुझे विदा कीजिए
कि मैं अपने घर, अपने देश जाऊँ। 26मुझे मेरी
पत्नियाँ, मेरी सन्तान दीजिए जिनके लिए मैंने
आपकी सेवा की है। मुझे जाने दीजिए, क्योंकि
जो सेवा मैंने आपकी की है, उसे आप जानते

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हैं।' 27लाबान ने उससे कहा, 'यदि तुम मेरा
आदर-सम्मान करते हो तो मुझे यह कहने दो।
मुझे अनुभव से+ ज्ञात हुआ कि प्रभु ने तुम्हारे
कारण मुझे आशिष दी है। 28अपनी मजदूरी
बताओ, मैं उसे अवश्य दूंगा।' 29याकूब ने उससे
कहा, 'जो सेवा मैंने आपकी की है, और जिस
प्रकार आपके पशु मेरे साथ रहे हैं, उनके विषय
में आप स्वयं जानते हैं। 30मेरे यहाँ आने के
पहले आपके पास थोड़ी सम्पत्ति थी, पर अब
वह कितनी बढ़ गई! जहाँ-जहाँ मेरे पैर पड़े,
प्रभु ने आपको आशिष दी। परन्तु मैं अपनी
घर-गृहस्थी के लिए कब कार्य करूँगा?'
31लाबान ने कहा, 'मैं क्या दूँ?' याकूब ने उत्तर
दिया, 'आप मुझे कुछ मत दीजिए। यदि आप
मेरा एक कार्य करें तो मैं आपकी भेड़-
बकरियों को चराऊँगा, और उनकी देख-भाल
करूँगा: 32मुझे आज अपनी सब भेड़-बकरियों
के बीच में जाने दीजिए। मैं प्रत्येक चित्ती तथा
चितकबरी भेड़ और काले मेमने को एवं
बकरियों में से सब चित्ती तथा चितकबरी
बकरियों को अलग करूँगा। ये ही मेरी मजदूरी
होंगी। 33जब आप मेरी मजदूरी में प्राप्त भेड़-
बकरियों का निरीक्षण करने आएंगे, तब उस
दिन मेरी सच्चाई ही मेरे बदले आपको उत्तर
देगी। रेवड़ की ऐसी बकरी, जो चित्ती और
चितकबरी न होगी, और ऐसा मेमना जो काला
न होगा, यदि मेरे पास पाए जाएंगे तो वे चोरी
के कहलाएँगे।' 34लाबान ने कहा, 'ठीक है।
जैसा तुमने कहा है, वैसा ही करो।' 35पर उसी
दिन लाबान ने सब धारीदार और चितकबरे
बकरों, सब चित्ती और चितकबरी बकरियों
को, जिन पर सफेद धब्बे थे, और समस्त काले
मेमनों को अलग करके अपने पुत्रों के हाथ
सौंप दिया। 36उसके बाद वह इस रेवड़ को
लेकर याकूब से दूर तीन दिन के मार्ग की दूरी
पर चला गया। याकूब लाबान की भेड़-
बकरियों को चराने लगा।
37 याकूब ने चनार, बादाम और अमोन के
वृक्षों की हरी छड़ियाँ लीं। उसने उनके कहीं-
कहीं छिलके छील डाले जिससे उनके भीतर
की सफेदी दिखाई दे सके। 38उसने छीली हुई
छड़ियाँ भेड़-बकरियों के सम्मुख नालियों में,
अर्थात् नांदों में, जहाँ वे पानी पीने आती थीं,
खड़ी कर दीं। जब वे पानी के लिए आईं, तब
गाभिन हो गईं। 39भेड़-बकरियाँ छड़ियों के
सम्मुख गाभिन हुई थीं, इसलिए उन्होंने धारीदार,
चित्तीवाले और चितकबरे बच्चों को जन्म
दिया। 40याकूब ने मेमनों को अलग किया,
और अपने रेवड़ के मुंह को लाबान के धारीदार
और काले पशुओं की ओर किया। उसने अपने
झुण्ड को अलग रखा। उसने लाबान के रेवड़
में उन्हें मिलने नहीं दिया। 41जब सबल भेड़-
बकरियाँ गाभिन होतीं, याकूब उनकी आँखों
के सामने नांदों में छड़ियां रख देता जिससे वे
उन्हें देखकर गाभिन हों। 42किन्तु वह रेवड़ की
दुर्बल भेड़-बकरियों के सम्मुख छड़ियाँ नहीं
रखता था। अतएव लाबान को दुर्बल भेड़-
बकरियाँ प्राप्त हुईं, परन्तु याकूब को सबल।
43इस प्रकार याकूब अत्यन्त समृद्ध हो गया।
उसके पास अनेक भेड़-बकरियाँ, सेवक-
सेविकाएँ, ऊँट और गधे हो गए।

याकूब का लाबान के पास से भागना

31 याकूब ने सुना कि लाबान के पुत्र उसके
विषय में ये बातें कह रहे हैं, 'याकूब
ने हमारे पिता का सब कुछ छीन लिया है। हमारे
पिता के धन से ही उसने यह सब धन-सम्पत्ति
अर्जित की है।' 2याकूब ने लाबान के मुख को
देखकर ताड़ लिया कि वह उसके प्रति पहले
जैसा कृपालु नहीं रहा। 3तब प्रभु ने याकूब से
कहा, 'अपनी पितृ-भूमि, अपने जन्म स्थान
को लौट जा। मैं तेरे साथ रहूँगा।' 4अतएव याकूब
ने सेवक भेजकर राहेल और लिआ को उस
मैदान में बुलवाया, जहाँ उसका रेवड़ था।
5याकूब ने उनसे कहा, 'मैं तुम्हारे पिता के मुख
को देखकर अनुभव करता हूं कि वह मेरे प्रति
पहले जैसे कृपालू नहीं रहे। पर मेरे पिता का
परमेश्वर मेरे साथ है। 6तुम तो जानती हो कि
मैंने अपनी पूरी शक्ति से तुम्हारे पिता की सेवा

+ अथवा, 'शकुन विचारने से'

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

की है। [7]तो भी उन्होंने मुझे धोखा दिया, और
दस बार मेरी मजदूरी बदली। परन्तु परमेश्वर
ने उनको मेरा अनिष्ट नहीं करने दिया। [8]जब
उन्होंने कहा, "चित्तीवाले बच्चे तुम्हारी मजदूरी
होंगे", तब सब भेड़-बकरियों ने चित्तीवाले
बच्चों को ही जन्म दिया। जब उन्होंने कहा,
"धारीदार बच्चे तुम्हारी मजदूरी होंगे," तब भी
सब भेड़-बकरियों ने धारीदार बच्चों को जन्म
दिया। [9]इस प्रकार परमेश्वर ने तुम्हारे पिता के
पशु लेकर मुझे प्रदान किए। [10]बकरियों की
समागम ऋतु में मैंने आंखें ऊपर उठाईं और
स्वप्न में देखा, बकरियों पर चढ़ने वाले बकरे
धारीदार, चित्ते और धब्बेवाले हैं। [11]तब परमेश्वर
के दूत ने स्वप्न में मुझसे कहा, "याकूब!" मैंने
उत्तर दिया, "क्या आज्ञा है?" [12]उसने आदेश
दिया, "अपनी आंखें ऊपर उठाकर देख कि
बकरियों पर चढ़नेवाले सब बकरे धारीदार
चित्ते और धब्बेवाले हैं। लाबान तेरे साथ जो
कुछ कर रहा है, वह मैंने देखा है। [13]मैं उसी
बेत-एल स्थान का परमेश्वर हूं, जहाँ तूने
स्तम्भ को तेल से अभिसिंचित किया था, जहाँ
तूने मेरी मन्नत मानी थी। अब उठ! इस देश से
बाहर निकल और अपनी जन्मभूमि को लौट
जा।" [14]राहेल और लिआ ने कहा, 'क्या हमारे
पिता के घर में हमारा हिस्सा, हमारी पैतृक
सम्पत्ति शेष है? [15]क्या पिता ने हमें पराया नहीं
समझा? हमें बेच दिया, और हमारे मूल्य के
रूप में जो कुछ प्राप्त हुआ उसे स्वयं खा गए।
[16]इसलिए जो सम्पत्ति परमेश्वर ने हमारे पिता
से मुक्त की है, वह हमारी तथा हमारे पुत्रों की
है। अब जो कुछ परमेश्वर ने आपसे कहा है,
वही कीजिए।'

17 याकूब ने अपने बच्चों और पत्नियों को
ऊँटों पर बैठाया। [18]उसने अपने सब पशुओं
को, अपने समस्त पशुधन को जिसे उसने
अर्जित किया था, जो पशु पद्दन-अराम क्षेत्र में
उसके पास थे, उन्हें कनान देश में अपने पिता
इसहाक के पास ले जाने के लिए हांका।
[19]लाबान अपनी भेड़ों का ऊन काटने गया था।
राहेल ने अपने पिता के गृहदेवताओं की मूर्तियाँ
चुरा लीं। [20]इस प्रकार याकूब ने चतुराई से
अराम वंशीय लाबान को पराजित किया। उसने
लाबान पर प्रकट नहीं किया कि वह भागनेवाला
है। [21]किन्तु वह अपना सब कुछ लेकर भाग
गया। उसने फरात नदी पार की और वह
गिलआद के पहाड़ी प्रदेश की ओर चल पड़ा।

लाबान द्वारा याकूब का पीछा करना

22 जब तीसरे दिन लाबान को बताया गया
कि याकूब भाग गया [23] तब उसने अपने साथ
कुटुम्बियों को लेकर याकूब का सात दिन तक
पीछा किया और गिलआद के पहाड़ी प्रदेश में
उसके पीछे-पीछे चला। [24]परमेश्वर रात में
अराम वंशीय लाबान के पास स्वप्न में आया,
और उससे कहा, 'सावधान! तू याकूब से
भला-बुरा कुछ मत कहना।'

25 लाबान ने याकूब को पकड़ लिया।
याकूब ने अपना तम्बू पहाड़ पर गाड़ा था।
लाबान ने भी अपने कुटुम्बियों के साथ
गिलआद के पहाड़ी प्रदेश में पड़ाव डाला।
[26]वह याकूब से बोला, 'यह तुमने क्या किया?
तुमने मुझे धोखा दिया? तुम मेरी पुत्रियों को
ऐसे हांक कर ले आए मानो वे तलवार के बल
पर बनाये गये बंदी हों। [27]क्यों तुम चुपके से
भाग आए? तुमने मुझे धोखा क्यों दिया? तुमने
मुझे क्यों नहीं बताया? मैं तुम्हें गीत गाते, मृदंग
और सितार बजाते आनन्द से विदा करता।
[28]तुमने मुझे अपने पुत्र-पुत्रियों को विदाई का
चुम्बन तक देने नहीं दिया। तुमने मूर्खतापूर्ण
कार्य किया है। [29]तुम लोगों का अनिष्ट करने
की शक्ति मेरे हाथ में है। किन्तु तुम्हारे पिता
के परमेश्वर ने पिछली रात में मुझसे कहा,
"सावधान! तू याकूब से भला-बुरा कुछ मत
कहना।" [30]सम्भव है कि तुम अपने पिता के
घर पहुँचने की प्रबल इच्छा के कारण भाग
आए, किन्तु तुम मेरे गृह-देवताओं की मूर्तियाँ
क्यों चुरा लाए?' [31]याकूब ने लाबान को उत्तर
दिया, 'मैं डर गया था। मैं सोचता था कि कहीं
आप अपनी पुत्रियाँ मुझ से बलपूर्वक छीन न

31 : 13 उत 28 : 18 31 : 19 शास 17 : 5; 1 शम 19 : 13; 2 रा 23 : 24

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लें।[32]जिस किसी के पास आपके गृह-देवताओं की मूर्तियाँ मिलेंगी, वह जीवित नहीं रहेगा। आप मेरे और अपने कुटुम्बियों के सामने बतलाइए कि मेरे पास आपकी कौन-सी वस्तु है? तब आप उसे ले लें।' याकूब नहीं जानता था कि राहेल ने गृह-देवताओं की मूर्तियाँ चुराई हैं।

33 अतः लाबान, याकूब के तम्बू में गया। उसके बाद वह लिआ के तम्बू में गया, और फिर वह दोनों सेविकाओं के तम्बुओं में गया; पर उसे मूर्तियाँ नहीं मिलीं। तत्पश्चात् वह लिआ के तम्बू से बाहर निकला और राहेल के तम्बू में आया।[34]राहेल गृह-देवताओं की मूर्तियां ऊंट की काठी में छिपा कर स्वयं उन पर बैठ गई थी। लाबान ने पूरे तम्बू में ढूँढ़ा पर वे उसे नहीं मिलीं। [35]राहेल अपने पिता से बोली, 'पिता जी, क्रोध न करें। मैं आपके सम्मुख खड़े होने में असमर्थ हूं। मुझे मासिक धर्म हो रहा है।' इस प्रकार लाबान ने ढूंढ़ा; पर उसे गृह-देवताओं की मूर्तियाँ नहीं मिलीं।

36 अब याकूब का क्रोध भड़क उठा। उसने लाबान को झिड़का। उसने लाबान से कहा, 'मेरा अपराध क्या है? मेरा पाप क्या है कि आपने उत्तेजित होकर मेरा पीछा किया? [37]यद्यपि आपने मेरे सब सामान की तलाशी ली, पर आपको मेरे घर की सामग्री में क्या मिला? उसे मेरे कुटुम्बी तथा अपने कुटुम्बी जनों के सामने रखिए जिससे वे हम दोनों का न्याय करें। [38]मैं बीस वर्ष तक आपके साथ रहा। इस अवधि में आपकी किसी भेड़ अथवा बकरी का गर्भपात तक नहीं हुआ। मैंने आपके रेवड़ के मेढ़ों का मांस तक नहीं खाया।[39]जिस पशु को जंगली जानवर मार डालते थे, उसे मैं आपके पास नहीं लाता था और मैं स्वयं उस हानि की पूर्ति करता था। पशु की चोरी चाहे रात को हो, अथवा दिन को, आप मुझसे ही उसकी क्षति-पूर्ति करवाते थे।[40]मेरी ऐसी दशा थी: दिन की धूप और रात की ठण्ड से मैं मारा जाता था। मेरी नींद मेरी आंखों से भाग जाती थी।[41]मैं बीस वर्ष तक आपके घर में रहा। मैंने आपकी दो पुत्रियों के लिए चौदह वर्ष तक, और आपकी भेड़-बकरियों के लिए छः वर्ष तक आपकी सेवा की। आपने दस बार मेरी मजदूरी बदली।[42]यदि मेरे पिता का परमेश्वर, अब्राहम का परमेश्वर, और इसहाक का "भयावह परमेश्वर" मेरे पक्ष में न होता तो आप निश्चिय ही मुझे खाली हाथ विदा कर देते। परमेश्वर ने मेरी पीड़ा और मेरे हाथों के परिश्रम को देखा, और पिछली रात आपको डाँटा।'

याकूब और लाबान में परस्पर सन्धि

43 लाबान ने याकूब को उत्तर दिया, 'ये पुत्रियाँ मेरी ही पुत्रियाँ हैं। ये बच्चे मेरे ही बच्चे हैं। ये भेड़-बकरियाँ भी मेरी भेड़-बकरियाँ हैं। जो कुछ तुम देख रहे हो, वह सब मेरा ही है। परन्तु आज मैं इन पुत्रियों और इनसे उत्पन्न बच्चों के साथ क्या कर सकता हूँ?[44]अब, आओ, मैं और तुम सन्धि करें और यह सन्धि मेरे और तुम्हारे मध्य साक्षी बने।' [45]तब याकूब ने एक पत्थर लेकर उसे स्तम्भ के रूप में खड़ा किया। [46]उसने अपने कुटुम्बियों से कहा, 'पत्थर के टुकड़े एकत्र करो।' उन्होंने पत्थरों को एकत्र करके एक ढेर बनाया, और वहां उस पर बैठकर भोजन किया। [47]लाबान ने उस ढेर का नाम 'यगर-साहदूता'* रखा। पर याकूब ने उसको 'गलएद'** कहा। [48]लाबान ने कहा, 'आज से यह ढेर मेरे और तुम्हारे मध्य एक साक्षी है।' अतएव उसने उस ढेर का नाम 'गलएद' और उस स्तंभ का नाम 'मिसपा'+ रखा [49]क्योंकि वह कहता था, 'जब हम एक दूसरे से अलग होंगे तब प्रभु मेरा और तुम्हारा निरीक्षण करता रहेगा। [50]यदि तुम मेरी पुत्रियों के साथ दुर्व्यवहार करोगे, यदि तुम मेरी पुत्रियों के अतिरिक्त अन्य स्त्रियों से विवाह करोगे तो देखो, यद्यपि कोई मनुष्य हमारे साथ नहीं रहेगा, तथापि मेरे और तुम्हारे मध्य परमेश्वर साक्षी रहेगा।'

---

* अरामी भाषा में 'साक्षी का ढेर' ** इब्रानी भाषा में, 'साक्षी का ढेर' + अर्थात्, 'निरीक्षण स्थान', 'चौकी'

31 : 35 लेव 15 : 19; 19 : 32 31 : 39 नि 22 : 12

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

51 लाबान ने याकूब से कहा, 'इस ढेर तथा
इस स्तम्भ को देखो, जिन्हें मैंने अपने और
तुम्हारे मध्य खड़ा किया है। 52यह ढेर साक्षी
है। यह स्तम्भ साक्षी है कि अनिष्ट करने के
अभिप्राय से न मैं इस ढेर को पार कर तुम्हारे
पास आऊंगा और न तुम इस ढेर एवं स्तम्भ को
पार कर मेरे पास आओगे। 53अब्राहम का
परमेश्वर, नाहोर का परमेश्वर, अर्थात् प्रत्येक
के पूर्वज का परमेश्वर हम दोनों का न्याय
करेगा।' याकूब ने अपने पिता इसहाक के
''भयावह परमेश्वर'' की शपथ ली। 54उसने
पहाड़ पर बलि चढ़ाई और रोटी खाने के लिए
अपने कुटुम्बियों को बुलाया। उन्होंने रोटी खाई
और पहाड़ पर रात व्यतीत की।

55 लाबान सबेरे उठा। उसने अपनी पुत्रियों,
एवं उनके बच्चों का चुम्बन लिया और उन्हें
आशीर्वाद दिया। उसके बाद वह चला गया।
वह अपने स्थान को लौट गया।

याकूब की एसाव से भेंट

32 तत्पश्चात् याकूब भी अपने मार्ग पर
चला गया। किन्तु मार्ग में उसे परमेश्वर
के दूत मिले। 2जब याकूब ने उन्हें देखा तब वह
बोला, 'यह तो परमेश्वर की सेना है।' अतएव
उसने उस स्थान का नाम 'महनईम' ++रखा।

3 याकूब ने घर पहुँचने के पूर्व अपने भाई
एसाव के पास एदोम के मैदान अर्थात् सेईर देश
में अपने दूत भेजे। 4उसने दूतों को आदेश
दिया, 'मेरे स्वामी एसाव से कहना, ''आपका
सेवक याकूब यों कहता है, मैं प्रवासी होकर
लाबान के साथ रहा और अब तक उन्हीं के
पास था। 5मेरे पास गाय-बैल, गधे, भेड़-
बकरियां और सेवक-सेविकाएं हैं। मैंने अपने
स्वामी को बताने के लिए यह सन्देश भेजा है
जिससे मैं आपकी कृपा-दृष्टि प्राप्त करूं।'' '

6 दूत याकूब के पास लौट आए। उन्होंने
कहा, 'हम आपके भाई एसाव के पास गए थे।
वह आपसे भेंट करने आ रहे हैं। उनके साथ
चार सौ पुरुष हैं।' 7याकूब बहुत डर गया। वह
संकट में पड़ गया। उसने अपने साथ के लोगों
को, भेड़-बकरियों को, गाय-बैलों और ऊँटों
को विभक्त कर दो दल बनाए। 8उसने सोचा,
'यदि एसाव आकर एक दल को नष्ट करेगा तो
दूसरा दल भागकर बच जाएगा'

9 याकूब ने परमेश्वर से प्रार्थना की, 'मेरे
दादा अब्राहम के परमेश्वर, मेरे पिता इसहाक
के परमेश्वर! हे प्रभु, तूने मुझसे कहा था,
''अपने देश, अपने जन्म-स्थान को लौट जा।
मैं तेरे साथ भलाई करूंगा।'' 10जो करुणा और
सच्चाई तूने अपने सेवक पर की है, उसके लिए
मैं सर्वथा अयोग्य हूं। जब मैंने यह यर्दन नदी
पार की थी तब सम्पत्ति के नाम पर मेरे पास
मात्र एक लाठी थी; किन्तु अब मैं इतना समृद्ध
हूं कि मैं दो दलों में विभक्त हो लौट रहा हूं।
11कृपया मुझे मेरे भाई एसाव के हाथ से मुक्त
कर। मैं उससे डरता हूं। ऐसा न हो कि वह
आकर हम सबको, बच्चों समेत माताओं को
मार डाले। 12तूने कहा था, ''मैं तेरे साथ भलाई
करूंगा, और तेरे वंश को समुद्र के रेतकणों के
सदृश असंख्य बनाऊंगा, जिनका अधिकता के
कारण गिनना असम्भव होता है।'' '

13 याकूब ने वह रात वहीं व्यतीत की।
उसने अपने भाई एसाव को भेंट में देने के लिए
अपनी समस्त सम्पत्ति में से ये पशु चुने: 14दो
सौ बकरियां, बीस बकरे, दो सौ भेड़ें, बीस
मेढ़े, 15अपने-अपने बच्चों समेत तीस दुधारू
ऊँटनियां, चालीस गायें, दस बैल, बीस गदहियां
और दस गधे। 16याकूब ने इनके अलग-अलग
झुण्ड बनाकर उनको अपने सेवकों के हाथ में
सौंप दिया और उनसे कहा, 'तुम लोग मुझसे
पहले प्रस्थान करो। झुण्डों के बीच में पर्याप्त
दूरी रखना।' 17तत्पश्चात् उसने आगेवाले झुण्ड
के रखवाले को आदेश दिया, 'जब तुम्हें मेरे
भाई एसाव मिलें और वह तुमसे पूछें, ''तुम
किसके सेवक हो? तुम कहां जा रहे हो? ये
तुम्हारे सामने किसके पशु हैं?'' 18तब तुम
कहना, ''ये आपके सेवक याकूब के पशु हैं।

++ अर्थात् 'दो सेना'

32 : 12 उत 22 : 17

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उन्होंने अपने स्वामी एसाव को भेंट के रूप में इनको भेजा है। आपके सेवक याकूब भी हमारे पीछे आ रहे हैं।'' 19इसी प्रकार उसने दूसरे, तीसरे तथा उन सब रखवालों को, जो झुण्ड के पीछे-पीछे चल रहे थे, आदेश दिया, 'जब तुम एसाव से मिलो तब ये ही बातें उनसे कहना। 20यह भी कहना, ''आपके सेवक याकूब हमारे पीछे आ रहे हैं''। वह सोचता था, 'सम्भवत: मैं अपने आगे जानेवाली भेंट के माध्यम से एसाव का क्रोध शान्त कर सकूं। इसके पश्चात् मैं उनका दर्शन करूंगा। कदाचित् वह मुझे स्वीकार करें।' 21अत: उसने भेंट अपने पहले ही भेज दी और वह स्वयं उस रात पड़ाव पर रह गया।

याकूब का अज्ञात व्यक्ति से मल्लयुद्ध करना

22 याकूब उसी रात उठा। उसने अपनी दोनों पत्नियों और दोनों सेविकाओं एवं ग्यारह पुत्रों को लेकर यब्बोक नदी का घाट पार किया। 23उसने उन्हें नदी के पार भेज दिया। जो कुछ उसके पास था, उसे उसने नदी के पार भेज दिया। 24याकूब अकेला रह गया। एक मनुष्य आया और वह उससे प्रात:काल तक लड़ता रहा। 25जब उस मनुष्य ने देखा कि वह याकूब को पराजित नहीं कर सकता, तब उसने याकूब की जांघ के जोड़ को स्पर्श किया। अत: उससे लड़ते-लड़ते याकूब की जांघ का जोड़ उखड़ गया। 26उस मनुष्य ने कहा, 'मुझे जाने दे। सबेरा हो रहा है।' याकूब बोला, 'जब तक तू मुझे आशीर्वाद नहीं देगा, मैं तुझे नहीं जाने दूंगा।' 27उसने पूछा, 'तेरा नाम क्या है?' याकूब ने उत्तर दिया, 'याकूब।' 28तब वह बोला, 'अब तेरा नाम याकूब न होगा, वरन् ''इस्राएल''* होगा; क्योंकि तूने परमेश्वर और मनुष्य से लड़कर विजय प्राप्त की है।' 29याकूब ने पूछा, 'कृपया, मुझे अपना नाम बता।' उसने कहा, 'तूने मेरा नाम क्यों पूछा?' तत्पश्चात् उसने याकूब को आशीर्वाद दिया। 30याकूब ने उस स्थान का नाम 'पनीएल'** रखा; क्योंकि उसने कहा, 'मैंने परमेश्वर को साक्षात् देखा+ फिर भी मैं जीवित रहा!'

31 जब याकूब ने पनीएल से प्रस्थान किया तब वह अपनी जांघ के कारण लंगड़ा रहा था और सूर्य उस पर चमकने लगा था।

32 इस्राएली जाति के लोग आज तक पशु के कूल्हे की नस को, जो जांघ के जोड़ों पर होती है, नहीं खाते; क्योंकि उस मनुष्य ने याकूब की जांघ में कूल्हे की नस को स्पर्श किया था।

याकूब-एसाव का मिलन

33 याकूब ने अपनी आंखें ऊपर उठाईं तो देखा एसाव आ रहा है, और उसके साथ चार सौ पुरुष हैं। उसने लिआ, राहेल और दोनों सेविकाओं को उनके बच्चे सौंप दिए। 2उसने सबसे आगे दोनों सेविकाओं और उनके बच्चों को, उनके पीछे लिआ को उसके बच्चों के साथ, तथा सबसे पीछे राहेल और यूसुफ को खड़ा किया। 3याकूब उनके आगे-आगे गया। जब तक वह अपने भाई के पास नहीं पहुंच गया, तब तक वह भूमि पर झुककर सात बार उसका अभिवादन करता रहा।

4 किन्तु एसाव उससे भेंट करने को दौड़ा। उसने याकूब को बाहों में भर लिया। उसे गले लगाया। उसका चुम्बन किया। वे दोनों रोने लगे। 5जब एसाव ने आंखें ऊपर कीं, और स्त्रियों और बच्चों को देखा तब याकूब से पूछा, 'ये तुम्हारे साथ कौन हैं?' याकूब बोला, 'परमेश्वर ने मुझ पर कृपा की और उसने मुझ को ये बच्चे प्रदान किए हैं। ये आपके सेवक के बच्चे हैं।' 6दोनों सेविकाएँ और उनके बच्चे निकट आए। उन्होंने झुककर एसाव का अभिवादन किया। 7इसी प्रकार लिआ और उसके बच्चे निकट आए। उन्होंने झुककर एसाव का अभिवादन किया। अन्त में राहेल और यूसुफ निकट आए। उन्होंने एसाव का

* अर्थात् 'परमेश्वर से लड़नेवाला', अथवा 'परमेश्वर लड़ता है' ** अर्थात् 'परमेश्वर का मुख' + अक्षरश: 'परमेश्वर का मुख, आमने-सामने देखा'

32 : 26 हो 12 : 4; प्रज्ञा 10 : 12 **32 : 28** उत 35:10 **32 : 30** नि 33: 20; शास 13 : 22

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

झुककर अभिवादन किया।
8 एसाव ने पूछा, 'जो पशुओं के झुण्ड मुझे
मार्ग में मिले, उनसे तुम्हारा क्या अभिप्राय है ?'
याकूब ने उत्तर दिया, 'स्वामी की कृपादृष्टि
प्राप्त करना।' 9किन्तु एसाव बोला, 'भैया, मेरे
पास बहुत है। जो तुम्हारा है, उसे अपने ही पास
रखो।' 10याकूब ने कहा, 'नहीं, यदि मुझे
तुम्हारी कृपा-दृष्टि प्राप्त हुई है तो तुम मेरे हाथ
से मेरी भेंट स्वीकार करो। निस्सन्देह तुम्हारे
मुख को देखना मानो परमेश्वर के मुख को
देखना है; क्योंकि तुमने मुझे अपनाया है।
11कृपया, जो भेंट तुम्हारे पास लाई गई है, उसे
स्वीकार करो। परमेश्वर ने मुझ पर अनुग्रह
किया है। मेरे पास भी बहुत है।' इस प्रकार
याकूब ने उससे आग्रह किया। तब एसाव ने
उसकी भेंट स्वीकार की।
12 एसाव बोला, 'आओ, हम अपने मार्ग
पर बढ़ चलें। मैं तुम्हारे आगे जाऊंगा।' 13परन्तु
याकूब उससे बोला, 'मेरे स्वामी, तुम तो जानते
हो कि बच्चे सुकुमार हैं। मेरे साथ दूध देनेवाली
भेड़-बकरियां और गाएं हैं, जिनकी देखभाल
मुझे करनी पड़ती है। यदि इन्हें एक दिन भी
अधिक हांका जाए तो ये सब मर जाएंगे। 14मेरा
स्वामी अपने सेवक के आगे बढ़ जाए। जो पशु
मेरे आगे-आगे हैं, उनकी गति एवं अपने बच्चों
की गति के अनुसार मैं धीरे-धीरे आगे बढ़ूंगा,
जब तक सेईर नगर में अपने स्वामी के पास न
पहुंच जाऊं।'
15 एसाव बोला, 'क्या मैं अपने साथ के
कुछ मनुष्य तुम्हारे पास छोड़ जाऊं ?' किन्तु
याकूब ने कहा, 'इसकी क्या आवश्यकता है ?
मेरे स्वामी की कृपा-दृष्टि मुझपर बनी रहे।'
16अतः एसाव उसी दिन सेईर नगर को चला
गया। 17परन्तु याकूब सुक्कोत नगर की ओर
गया। वहाँ उसने अपने लिए घर और पशुओं
के लिए पशु-शालाएं बनाईं। इस कारण उस
स्थान का नाम 'सुक्कोत'* पड़ा।
18 याकूब पद्दन-अराम क्षेत्र से निकलकर
कनान देश के शकेम नगर में सकुशल पहुँचा।
उसने नगर के सम्मुख पड़ाव डाला। 19जिस भूमि
पर उसने तम्बू गाड़े, उसको उसने शकेम के
पिता हमोर के पुत्रों से एक सौ मुद्रा** में खरीद
लिया। 20वहाँ उसने एक स्तम्भ† खड़ा किया
और उसका नाम 'एल-एलोहे-इस्राएल++'
रखा।

दीना के कुकर्म का प्रतिशोध

34 एक दिन लिआ की पुत्री दीना, जिसको
उसने याकूब से जन्म दिया था, कनान
देश की कन्याओं से भेंट करने गई। 2उस देश
के शासक का नाम हमोर था और हमोर के पुत्र
का नाम शकेम था। वह हिव्वी जाति का था।
जब शकेम ने दीना को देखा तब उसे पकड़
लिया। वह उसके साथ सोया और उसका
शीलभंग कर दिया। 3पर उसके प्राण याकूब
की पुत्री पर मुग्ध हो गए। वह लड़की से प्रेम
करने लगा। उसने उससे मधुर बातें कीं।
4शकेम ने अपने पिता हमोर से कहा, 'मुझे यह
लड़की पत्नी के रूप में प्रदान कीजिए।'
5याकूब ने सुना कि शकेम ने उसकी पुत्री दीना
के साथ बलात्कार किया है। उस समय उसके
पुत्र पशुओं के साथ चरागाह में थे। अतः वह
उनके लौटने तक शान्त रहा। 6शकेम का पिता
हमोर याकूब से बातचीत करने के लिए उसके
पास आया। 7जब याकूब के पुत्रों ने उसके
विषय में सुना तब वे दुःखित हुए। वे चरागाह
से आए। वे बहुत क्रुद्ध थे; क्योंकि शकेम ने
याकूब की पुत्री के साथ सोकर इस्राएली
समाज में मूर्खतापूर्ण कार्य किया था। ऐसा कार्य
नहीं किया जाना चाहिए था।
8 हमोर उनसे बोला, 'मेरा पुत्र शकेम
आपकी पुत्री से प्रेम करने लगा है। अतएव
कृपया अपनी पुत्री को पत्नी के रूप में उसे
प्रदान कीजिए। 9हम लोगों से विवाह-सम्बन्ध
स्थापित कीजिए। अपनी पुत्रियाँ हमें दीजिए,

* अर्थात् 'झोपड़ी', 'घर' ** मूल में 'कसीता', एक विशेष प्रकार का सिक्का † अथवा 'वेदी' ++ अर्थात् 'ईश्वर इस्राएल का परमेश्वर'

33 : 18 यो 3 : 23 33 : 19 यहो 2 : 32 ; यो 4 : 5

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हमारी पुत्रियाँ आप लीजिए। 10तब आप इस
देश में रह सकेंगे। इसका द्वार आपके लिए खुल
जाएगा। यहाँ रहिए और व्यापार कीजिए।
धन-सम्पत्ति अर्जित कीजिए।' 11शकेम ने भी
दीना के पिता और भाइयों से कहा, 'आप लोग
मुझपर कृपा-दृष्टि कीजिए। जो कुछ भी आप
मुझसे कहेंगे, वह मैं आपको दूंगा। 12आप जितना
भी अधिक दहेज़ और भेंट मांगेंगे, मैं आपके
वचन के अनुसार दूंगा। आप केवल मुझे अपनी
लड़की पत्नी के रूप में प्रदान कर दीजिए।'

13 याकूब के पुत्रों ने शकेम और उसके
पिता हमोर को कपटपूर्ण उत्तर दिया; क्योंकि
शकेम ने उनकी बहिन के साथ बलात्कार
किया था। 14वे उनसे बोले, 'हम ऐसा नहीं कर
सकते। हम उस पुरुष को अपनी बहिन नहीं
दे सकते जिसका खतना नहीं हुआ है; क्योंकि
वह हमारे लिए निन्दा की बात होगी। 15हम
केवल इस शर्त पर तुम्हारी बात स्वीकार कर
सकते हैं कि तुम भी हमारे समान खतनावाले
बनोगे। तुम्हारी जाति के प्रत्येक पुरुष का
खतना किया जाए। 16तब हम अपनी पुत्रियाँ
तुम लोगों को देंगे और तुम्हारी पुत्रियाँ हम
ग्रहण करेंगे। हम तुम्हारे साथ रहेंगे और हम
सब एक ही जाति बन जाएँगे। 17पर यदि तुम
हमारी बात नहीं सुनोगे, और खतना नहीं
कराओगे तो हम अपनी लड़की को लेकर यहाँ
से चले जाएँगे।'

18 उनकी बातों से हमोर और उसका पुत्र
शकेम प्रसन्न हुए। 19युवक शकेम ने उसकी
मांग को पूरा करने में विलम्ब नहीं किया;
क्योंकि वह याकूब की पुत्री को बहुत चाहता
था। वह अपने पिता के समस्त परिवार में
सर्वाधिक सम्मानित व्यक्ति था। 20हमोर और
उसका पुत्र शकेम नगर के प्रवेश-द्वार पर आए।
उन्होंने नगर-निवासियों से कहा, 21'ये व्यक्ति
हमारे साथ मित्रतापूर्ण व्यवहार करते हैं। इन्हें
इस देश में रहने और व्यापार करने दो। देखो,
इनके लिए भी यह देश बहुत विस्तृत है।
आओ, हम इनकी पुत्रियों से विवाह करें, और
अपनी पुत्रियाँ इन्हें प्रदान करें। 22ये इस शर्त पर
हमारे साथ रहने को और एक ही जाति बनने
को सहमत हैं कि जैसे इनका खतना हुआ है
वैसे ही हममें से प्रत्येक पुरुष का खतना किया
जाए। 23तब इनके पालतू पशु, इनकी धन-
सम्पत्ति और वन पशु हमारे हो जाएंगे। हम
केवल इनकी शर्त को स्वीकार कर लें। तब ये
हमारे साथ रहने लगेंगे।' 24नगर के प्रवेश-द्वार
पर आए सब लोगों ने हमोर और उसके पुत्र
शकेम की बातें मान लीं। प्रत्येक पुरुष ने जो
नगर-द्वार पर आया था, अपना खतना करवाया।

25 जब तीसरे दिन वे सब पीड़ित पड़े थे तब
दीना के भाई, अर्थात् याकूब के दो पुत्र शिमोन
और लेवी, तलवार लेकर नगर पर अचानक
चढ़ आए। उन्होंने सब पुरुषों को मार डाला।
26उन्होंने हमोर और उसके पुत्र शकेम का भी
वध कर दिया। वे शकेम के घर से दीना को
लेकर चले गए। 27याकूब के अन्य पुत्र मृतकों
के पास गए। उन्होंने नगर को लूट लिया;
क्योंकि उनकी बहिन के साथ बलात्कार किया
गया था। 28याकूब के पुत्रों ने उनकी भेड़-
बकरी, गाय-बैल, गधे, अर्थात् जो कुछ नगर
और मैदान में था, सब लूट लिया। 29उनकी धन-
सम्पत्ति, उनके बाल-बच्चे, उनकी स्त्रियाँ और
जो कुछ उनके घरों में था, सब को लूटकर
अपने अधिकार में कर लिया।

30 याकूब ने शिमोन और लेवी से कहा,
'तुम लोगों ने मुझे इस देश के निवासियों
में—कनानी तथा परिज्जी जातियों में, अप्रिय
बनाकर आपत्ति मोल ली है। मेरे पास बहुत
कम व्यक्ति हैं। यदि वे परस्पर एकत्रित होकर
मुझपर आक्रमण करें तो सारे परिवार सहित मैं
नष्ट हो जाऊँगा।' 31परन्तु उन्होंने कहा, 'क्या
शकेम को हमारी बहिन के साथ वेश्या के
समान व्यवहार करना चाहिए था?'

परमेश्वर का याकूब को आशिष देना

35 परमेश्वर ने याकूब से कहा, 'उठ,
बेत-एल नगर को जा, और वहाँ निवास
कर। तू वहाँ उस ईश्वर के लिए एक वेदी

35 : 1 उत 28 : 19

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बनाना जिसने तुझे दर्शन दिया था जब तू अपने
भाई एसाव के सम्मख से भागा था।' 2याकूब
ने अपने परिवार और उन सब लोगों से जो
उसके साथ थे, कहा, 'तुम्हारे मध्य में अन्य
जातियों के देवताओं की मूर्तियाँ हैं। उन्हें हटा
दो और अपने आपको शुद्ध करो। अपने वस्त्रों
को बदल डालो। 3तत्पश्चात् हम तैयार होंगे
और बेत-एल नगर को जाएंगे। मैं वहाँ उस
ईश्वर के लिए एक वेदी निर्मित करूँगा जिसने
संकट के दिन मुझे उत्तर दिया था।' 4अन्य
जातियों के देवताओं की मूर्तियाँ लोगों के पास
थीं। उन्हें उन्होंने याकूब को दे दिया था।
उन्होंने अपने कानों के कुण्डल भी सौंप दिए।
याकूब ने शकेम नगर के निकट सिन्दूर वृक्ष के
नीचे उन्हें गाड़ दिया।

5 जब याकूब और उसके पुत्रों ने प्रस्थान
किया, तब उनके आसपास के नगरों पर परमेश्वर
का आतंक छा गया। अतएव वहाँ के निवासी
याकूब के पुत्रों का पीछा नहीं कर सके।

6 याकूब कनान देश के लूज नगर (अर्थात्
बेत-एल) में आया। उसका परिवार एवं उसके
साथ के सब लोग भी आए। 7याकूब ने वहाँ
एक वेदी बनाई और उस स्थान का नाम 'एल-
बेत-एल'* रखा; क्योंकि जब वह अपने भाई
के सम्मख से भागा था, तब वहाँ परमेश्वर ने
स्वयं को उस पर प्रकट किया था।

8 रिबका की धाय दबोरा की मृत्यु हो गई।
उसे बेत-एल नगर के निचले भाग में एक
सिन्दूर वृक्ष के नीचे गाड़ा गया। फलतः उस
स्थान का नाम 'अल्लोन् बकूत**' पड़ा।

9 जब याकूब पद्दन-अराम क्षेत्र से आया तब
परमेश्वर ने पुनः उसे दर्शन दिया और आशिष
दी। 10परमेश्वर ने उससे कहा, 'तेरा नाम
याकूब है। किन्तु अब से तेरा नाम याकूब नहीं
रहेगा, वरन् तेरा नाम इस्राएल होगा।' अतः
उसका नाम इस्राएल रखा गया। 11परमेश्वर ने
उससे पुनः कहा, 'मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर
हूं। फलो-फूलो और असंख्य हो जाओ। राष्ट्र
और राष्ट्रों का समूह तुझसे निकलेगा। अनेक
राजाओं का उद्‌गम तुझसे होगा। 12जो देश मैंने
अब्राहम और इसहाक को दिया था, वह तुझे
भी दूंगा। मैं वह देश तेरे पश्चात् तेरे वंश को
भी प्रदान करूँगा।' 13तब परमेश्वर उस स्थान
से जहाँ उसने याकूब से वार्तालाप किया था,
ऊपर चला गया। 14याकूब ने उस स्थान पर,
जहाँ परमेश्वर ने उससे बातें की थीं, पत्थर का
एक स्तम्भ खड़ा किया। उसने उस पर
'पेयबलि' उण्डेली। उसने उस पर तेल भी
उण्डेला। 15जिस स्थान पर परमेश्वर ने याकूब
से वार्तालाप किया था, उसने उस स्थान का
नाम बेत-एल रखा।

राहेल की मृत्यु

16 तत्पश्चात् याकूब और उसके परिवार ने
बेत-एल नगर से प्रस्थान किया। जब वे एप्राता
नगर से कुछ दूर थे तब राहेल को प्रसव पीड़ा
होने लगी। उसे प्रसव का बड़ा कष्ट था। 17जब
उसे तीव्र प्रसव पीड़ा होती तब दाई कहती,
'मत डरो। इस बार भी आपको पुत्र होगा।'
18जब उसके प्राण छूट रहे थे (फिर उसकी
मृत्यु हो गई) तब उसने पुत्र का नाम 'बेन-
ओनी'+ रखा। परन्तु उसके पिता ने उसे
'बिन्यामिन'++ कहा। 19राहेल की मृत्यु हो गई।
उसे एप्राता (अर्थात् बेतलेहम) के मार्ग पर
गाड़ा गया। 20याकूब ने उसकी कबर पर एक
स्तम्भ खड़ा किया। उसे राहेल की कबर का
स्तम्भ कहते हैं। वह आज भी वहाँ खड़ा है।

21याकूब+ ++ आगे बढ़ता गया। उसने एदर
की मीनार के आगे अपना तम्बू फैलाया। 22जब
याकूब उसी देश में निवास कर रहा था तब
रूबेन अपने पिता की रखेल बिल्हा के पास
गया और उसके साथ सहवास किया। याकूब
ने यह बात सुनी।

---

* शब्दशः 'बेत-एल का ईश्वर' ** अर्थात्, 'रोदन का सिन्दूर' +अर्थात्, 'मेरे दुःख का पुत्र'++ अर्थात् 'मेरे दाहिने हाथ', अथवा 'दक्षिण दिशा का पुत्र' ++ +मूल में, ''इस्राएल''

35 : 10 उत 32 : 28 **35 : 11** उत 17 : 4 **35 : 14** उत 28: 18 **35 : 19** उत 48 : 7 ; मी 5 : 2 ; 2 : 6
35 : 22 उत 49 : 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

याकूब के पुत्र

याकूब के बारह पुत्र थे। 23ये लिआ के पुत्र थे : रूबेन (याकूब का ज्येष्ठ पुत्र), शिमोन, लेवी, यहूदा, इस्साकार और जबूलून। 24ये राहेल के पुत्र थे : यूसुफ और बिन्यामिन। 25ये राहेल की सेविका बिल्हा के पुत्र थे : दान और नफ्ताली। 26ये लिआ की सेविका जिल्पा के पुत्र थे : गाद और आशेर। ये ही याकूब के पुत्र हैं, जो उसे पद्दन-अराम क्षेत्र में उत्पन्न हुए थे।

इसहाक की मृत्यु

27 याकूब अपने पिता के पास ममरे नगर (अथवा किर्यत-अर्बा अर्थात् हेब्रोन नगर) में आया, जहाँ अब्राहम और इसहाक ने प्रवास किया था। 28जब इसहाक की आयु एक सौ अस्सी वर्ष की हुई 29तब उन्होंने अन्तिम सांस ली, और प्राण त्याग दिया। वह वृद्ध और पूर्ण आयु भोग कर अपने मृत पूर्वजों में जा कर मिल गए। उनके पुत्र एसाव और याकूब ने उन्हें गाड़ा।

एसाव के वंशज

36 ये एसाव (अर्थात् एदोम) के वंशज हैं: 2एसाव ने कनान देश की स्त्रियों से विवाह किया था। ये उसकी स्त्रियाँ थीं: हित्ती जातीय एलोन की पुत्री आदा; अना की पुत्री और हिव्वी जातीय सिबओन की नातिन आहलीबामा, 3तथा यिश्माएल की पुत्री और नबायोत की बहिन बासमत। 4आदा ने एसाव से एलीपज और बासमत ने रूएल को जन्म दिया। 5आहलीबामा ने यूश, यालाम और कोरह को जन्म दिया। ये ही एसाव के पुत्र हैं, जो उसे कनान देश में उत्पन्न हुए।

6 एसाव अपनी पत्नियों, पुत्र-पुत्रियों, अपने परिवार के सब सदस्यों, पालतू पशुओं, गाय-बैल, भेड़-बकरी, तथा कनान देश में अर्जित अपनी सब सम्पत्ति को लेकर अपने भाई याकूब के पास से अन्य देश को चला गया। 7उन दोनों के पास इतनी सम्पत्ति हो गई थी कि वे एक साथ नहीं रह सकते थे। जिस देश में वे प्रवास कर रहे थे, वह दोनों को समा नहीं सकता था; क्योंकि उनके पास बहुत पशु थे। 8एसाव पहाड़ी प्रदेश सेईर में बस गया। एसाव को एदोम भी कहते हैं।

9 पहाड़ी प्रदेश सेईर में रहने वाले एदोम वंशियों के राष्ट्रपिता एसाव की वंशावली यह है : 10ये एसाव के पुत्रों के नाम हैं : एसाव की पत्नी आदा का पुत्र एलीपज, एसाव की पत्नी बासमत का पुत्र रूएल। 11ये एलीपज के पुत्र हैं : तेमान, ओमर, सपो, गताम और कनज। 12(एसाव के पुत्र एलीपज की तिम्ना नामक एक रखेल थी। उसने एलीपज से अमालेक को जन्म दिया।) एसाव की पत्नी आदा के ये ही पुत्र हैं। 13ये रूएल के पुत्र हैं : नहत, जेरह, शम्मा और मिज्जा। एसाव की पत्नी बासमत के ये ही पुत्र हैं। 14एसाव की पत्नी आहलीबामा के, जो सिबओन की नातिन और अना की पुत्री थी, ये पुत्र हैं : उसने एसाव से यूश, यालाम और कोरह को जन्म दिया।

15 ये एसाव के वंशजों के मुखिया हुए : एसाव के ज्येष्ठ पुत्र एलीपज के वंश में ये मुखिया हुए : तेमान, ओमर, सपो, कनज, 16कोरह, गताम और अमालेक। ये ही एदोम देश में एलीपज के वंश में मुखिया हुए। ये ही आदा के वंशज हैं। 17एसाव के पुत्र रूएल के वंश में ये मुखिया हुए : नहत, जेरह, शम्मा और मिज्जा। ये ही एदोम देश में रूएल के वंश में मुखिया हुए। ये ही एसाव की पत्नी बासमत के वंशज हैं। 18ये एसाव की पत्नी आहलीबामा के वंशज हैं, जो मुखिया हुए : यूश, यालाम और कोरह। एसाव की पत्नी और अना की पुत्री आहलीबामा से ये ही मुखिया उत्पन्न हुए। 19ये ही एसाव अर्थात् एदोम के वंशज और उनके मुखिया हैं।

सेईर के वंशज

20 ये होरी जातीय सेईर के पुत्र हैं। ये एदोम देश के मूल निवासी हैं : लोटन, शोबल, सिबओन, अना, 21दीशोन, एसर और दीशन। ये ही एदोम देश में सेईर के पुत्र होरी जाति के मुखिया हुए। 22लोटन के पुत्र होरी और हेमन

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

थे। लोटन की बहिन तिम्ना थी। 23ये शोबल
के पुत्र हैं : अल्वान, मानहत, एबल, शपो और
ओनम। 24ये सिबओन के पुत्र हैं : अय्या और
अना। यह वही अना है जिसने अपने पिता
सिबओन के गदहे चराते समय निर्जन प्रदेश में
गर्म पानी के झरने पाए थे। 25यह अना की
सन्तान हैं : पुत्र दीशोन और पुत्री आहलीबामा।
26ये दीशोन के पुत्र हैं : हेमदान, एशबान,
यित्रान और करान। 27ये एसर के पुत्र हैं :
बिल्हान, जावन और अकान। 28ये दीशन के
पुत्र हैं : ऊस और अरान। 29ये होरी जाति के
मुखिया हुए : लोटन, शोबल, सिबओन, अना,
30दीशोन, एसर और दीशन। ये एदोम (सेईर)
देश में अपने-अपने कबीलों के अनुसार होरी
जाति के मुखिया बने।

एदोम राज्य के राजा

31 इस्राएलियों पर राज्य करने वाले राजाओं
के पूर्व एदोम देश पर इन राजाओं ने राज्य
किया। 32बोर के पुत्र बेला ने एदोम देश पर
राज्य किया। उसकी राजधानी का नाम दिन्हाबा
है। 33बेला की मृत्यु हुई। बोस्रा नगर के रहने
वाले जेरह के पुत्र योबाब ने उसके स्थान पर
राज्य किया। 34योबाब की मृत्यु हुई। तेमानी
जाति के देश का निवासी हूशम ने उसके स्थान
पर राज्य किया। 35हूशम की मृत्यु हुई। बदद
के पुत्र हदद ने, जिसने मोआब के देश में
मिद्यानी जाति को पराजित किया था, उसके
स्थान पर राज्य किया। उसकी राजधानी का
नाम अबीत है। 36हदद की मृत्यु हुई। मसरेका
नगर के निवासी सम्ला ने उसके स्थान पर राज्य
किया। 37सम्ला की मृत्यु हुई। फरात नदी के
तट के रोहबोत नगर के निवासी शाऊल ने
उसके स्थान पर राज्य किया। 38शाऊल की मृत्यु
हुई। अकबोर के पुत्र बालहानन ने उसके स्थान
पर राज्य किया। 39अकबोर के पुत्र बालहानन
की मृत्यु हुई। हदर ने उसके स्थान पर राज्य
किया। उसकी राजधानी का नाम पाऊ है।
उसकी पत्नी का नाम महेटबेल था। वह
मेजाहब की नातिन और मटरेद की पुत्री थी।
40 एसाव के वंशजों के मुखियों के नाम
उनके कुल और निवास स्थानों के अनुसार ये
हैं : तिम्ना, अल्बा, यतेत, 41आहलीबामा, एला,
पीनोन, 42कनज, तेमान, मिबसार, 43मगदीएल
और ईरम।

जो देश एदोम वंशियों ने अपने अधिकार में
कर लिया था, उसके निवास स्थानों के अनुसार
ये ही एदोम (अर्थात् एसाव, जो एदोम वंशियों
का राष्ट्रपिता है) के वंशजों के मुखिया हैं।

यूसुफ के आख्यान का आरम्भ

यूसुफ और उसके भाई

37 याकूब कनान देश में रहते थे, जहाँ
उनके पिता ने प्रवास किया था। 2यह
याकूब के परिवार का वृत्तान्त है :

यूसुफ सत्रह वर्ष का था। वह अपने भाइयों
के साथ भेड़-बकरी चराता था। वह किशोर
था। वह अपने पिता की अन्य स्त्रियों, बिल्हा
और जिल्पा के पुत्रों के साथ रहता था। वह
अपने उन भाइयों की बुरी बातों की खबर अपने
पिता के पास लाया करता था। 3याकूब* अपने
सब पुत्रों की अपेक्षा यूसुफ से अधिक प्रेम
करते थे; क्योंकि वह उनकी वृद्धावस्था का पुत्र
था। उन्होंने उसके लिए बाहों वाला एक
अंगरखा सिलवा दिया था। 4जब यूसुफ के
भाइयों ने देखा कि उनके पिता सब भाइयों की
अपेक्षा यूसुफ से अधिक प्रेम करते हैं, तब वे
उससे घृणा करने लगे! वे उससे शान्तिपूर्वक
बातें भी नहीं करते थे।

5 एक बार यूसुफ ने स्वप्न देखा। जब उसने
अपने भाइयों को स्वप्न बताया तब वे उससे
और अधिक घृणा करने लगे। 6यूसुफ ने उनसे
यह कहा, 'मैंने जो स्वप्न देखा है, उसे तुम
सुनो। 7हम सब खेत में पूले बाँध रहे हैं।
अचानक मेरा पूला उठकर सीधा खड़ा हो
गया। तुम्हारे पूलों ने मेरे पूले को चारों ओर से
घेर लिया। वे झुककर उसका अभिवादन करने
लगे।' 8भाइयों ने यूसुफ से कहा, 'क्या तू हम

---

* मूल में 'इस्राएल'।

36 : 31 1 इत 1 : 43 **37 : 5** मत 1 : 20

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पर शासन करेगा ? क्या तू निश्चय ही हम पर राज्य करेगा ?' अतएव वे यूसुफ के स्वप्न और उसकी बातों के कारण उससे अत्यधिक घृणा करने लगे।

9 यूसुफ ने एक और स्वप्न देखा। उसने अपने भाइयों को स्वप्न बताया। यूसुफ ने कहा, 'देखो, मैंने आज एक और स्वप्न देखा है : सूर्य, चन्द्रमा और ग्यारह तारे झुककर मेरा अभिवाहन कर रहे हैं।' [10]जब उसने अपने पिता और भाइयों को यह स्वप्न बताया तब उसके पिता ने उसे डांटा और उससे कहा, 'जो स्वप्न तूने देखा है, उसका क्या अर्थ है ? क्या सचमुच मैं और तेरी मां तथा तेरे भाई तेरे सम्मुख खड़े होंगे और भूमि की ओर झुककर तेरा अभिवादन करेंगे ?' [11]यूसुफ के भाई उससे ईर्ष्या करते थे। परन्तु उसके पिता ने ये बातें स्मरण रखीं।

यूसुफ का गुलाम बनकर मिस्र देश जाना

12 एक समय यूसुफ के भाई अपने पिता की भेड़-बकरी चराने के लिए शकेम नगर को गए। [13]याकूब* ने यूसफ से कहा, 'तेरे भाई शकेम नगर के मैदान में भेड़-बकरी चरा रहे हैं। आ, मैं तुझे उनके पास भेजूंगा।' यूसुफ ने अपने पिता से कहा, 'मैं तैयार हूँ।' [14]वह यूसुफ से बोले, 'जाकर देख कि तेरे भाई एवं भेड़-बकरी सकुशल हैं अथवा नहीं। उनका समाचार मेरे पास लाना।' याकूब ने उसे हेब्रोन की घाटी से भेज दिया। यूसुफ शकेम नगर में आया। [15]एक मनुष्य ने उसे मैदान में भटकते हुए पाया। उस मनुष्य ने यूसुफ से पूछा, 'तुम क्या ढूंढ़ रहे हो ?' [16]यूसुफ ने उत्तर दिया, 'मैं अपने भाइयों को ढूंढ़ रहा हूँ। कृपया मुझे बताइए कि वे भेड़-बकरी कहां चरा रहे हैं ?' [17]मनुष्य ने कहा, 'वे यहां से चले गए हैं। मैंने उनको यह कहते सुना था, "आओ, हम दोतान नगर को चलें।" अतः यूसुफ अपने भाइयों के पीछे चला गया और उसने उन्हें दोतान नगर में पाया।

18 भाइयों ने उसे दूर से देखा। उसके निकट आने के पूर्व ही उन्होंने उसकी हत्या करने का षड्यन्त्र रचा। [19]उन्होंने एक-दूसरे से कहा, 'देखो, वह आ रहा है स्वप्न-द्रष्टा! [20]अब आओ, हम उसे मार कर किसी गड्ढे में फेंक दें। हम घर जाकर कह देंगे कि जंगली जानवर ने उसे खा लिया। तब हम देखेंगे कि उसके स्वप्न भविष्य में कैसे पूरे होते हैं।' [21]जब रूबेन ने यह सुना तब उसने यूसुफ को उनके हाथ से मुक्त करने के अभिप्राय से कहा, 'उसके प्राण मत लो।' [22]रूबेन ने उनसे आगे कहा, 'रक्त मत बहाओ, वरन् निर्जन प्रदेश के इस गड्ढे में उसे फेंक दो। उस पर हाथ मत उठाना।' वह उनके हाथ से यूसुफ को मुक्त कर पिता के पास पहुँचाना चाहता था। [23]जब यूसुफ अपने भाइयों के पास पहुंचा, उन्होंने उसके वस्त्र, उसका बाहों वाला अंगरखा जिसे वह पहिने हुए था, उतार लिये। [24]तत्पश्चात् उन्होंने उसे पकड़कर गड्ढे मे फेंक दिया। गड्ढा सूखा था। उसमें पानी न था।

25 वे रोटी खाने बैठे। जब उन्होंने अपनी आँखें ऊपर उठाईं तब उन्हें यिश्माएलियों का एक कारवां दिखाई दिया, जो गिलआद की ओर से आ रहा था। वे अपने ऊँटों पर गोंद, बलसान और गन्धरस लादे हुए मिस्र देश जा रहे थे। [26]यहूदा ने अपने भाइयों से कहा, 'यदि हम अपने भाई की हत्या करें, और उसका रक्त छिपाएं, तो हमें क्या लाभ होगा ? [27]आओ, हम उसे यिश्माएलियों के हाथ बेच दें, और अपना हाथ उसपर न उठाएं; क्योंकि वह हमारा भाई है, हमारी ही देह है।' उसके भाइयों ने उसकी बात सुनी।

28 उस समय मिद्यानी व्यापारी वहाँ से निकले। भाइयों ने गड्ढे से यूसुफ को खींचकर बाहर निकाला और उसे चांदी के बीस सिक्कों में यिश्माएलियों के हाथ बेच दिया। वे यूसुफ को मिस्र देश ले गए।

29 जब रूबेन गड्ढे की ओर लौटा और देखा कि यूसुफ गड्ढे में नहीं है तब उसने अपने वस्त्र फाड़े। [30]रूबेन अपने भाइयों के

---

* मूल में "इस्राएल"

37 : 11 प्रे 7 : 9 37 : 26 उत 4 : 10; अय्य 16 : 18 37 : 28 प्रे 7 : 9 ; प्रज्ञा 10 : 13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पास लौटा। वह उनसे बोला, 'लड़का गड्ढे में नहीं है। अब मैं कहां जाऊं?' 31उन्होंने यूसुफ का अंगरखा लिया और एक बकरा मार कर उसके रक्त में उसे डुबोया। 32तत्पश्चात् उन्होंने बाहोंवाले उस अंगरखे को अपने पिता के पास भेजा और कहा, 'हमने इसे पाया है। देखिए, क्या यह आपके पुत्र का है अथवा नहीं?' 33पिता ने अंगरखे को पहचान लिया। वह बोले, 'यह तो मेरे पुत्र का अंगरखा है। जंगली पशु ने उसे खा लिया। निस्सन्देह यूसुफ टुकड़े-टुकड़े कर दिया गया।' 34याकूब ने अपने वस्त्र फाड़े। उन्होंने कमर पर टाट का वस्त्र लपेटा, और बहुत दिन तक अपने पुत्र के लिए शोक मनाया। 35उसके पुत्र-पुत्रियों ने उन्हें सान्त्वना देने का प्रयत्न किया। किन्तु उन्होंने सान्त्वना स्वीकार नहीं की। वह कहते रहे, 'नहीं, मैं अपने पुत्र के पास शोक करता हुआ अधोलोक जाऊंगा।' इस प्रकार यूसुफ के पिता ने उसके लिए विलाप किया।

36 उधर मिद्यानी व्यापारियों ने यूसुफ को मिस्र देश में राजा फरओ* के पोटीफर नामक एक पदाधिकारी को बेच दिया। पोटीफर अंगरक्षकों का नायक** था।

यहूदा और उसकी बहू तामार

38 एक समय ऐसा हुआ कि यहूदा अपने भाइयों से अलग होकर चला गया। वह अदुल्लाम नगर के एक निवासी के पास रहने लगा जिसका नाम हीरा था। 2वहाँ यहूदा ने एक कनानी मनुष्य की पुत्री को देखा। उस मनुष्य का नाम शूआ था। यहूदा ने शूआ की पुत्री से विवाह कर लिया। फिर उसके साथ सहवास किया। 3वह गर्भवती हुई और उसने एक पुत्र को जन्म दिया। यहूदा ने उसका नाम एर रखा। 4वह पुनः गर्भवती हुई। उसने एक और पुत्र को जन्म दिया। मां ने उसका नाम ओनन रखा। 5उसने एक और पुत्र को जन्म दिया। मां ने उसका नाम शेला रखा। जब उसने उसे जन्म दिया तब वह कजीब नगर में थी।

6 यहूदा ने अपने ज्येष्ठ पुत्र एर का विवाह किया। उसकी पुत्र-वधू का नाम तामार था। 7यहूदा का ज्येष्ठ पुत्र एर प्रभु की दृष्टि में बुरा आदमी था। अतएव प्रभु ने उसे मार डाला। 8यहूदा ने ओनन से कहा, 'तुम अपने भाई की पत्नी के साथ सहवास करो, और देवर का कर्तव्य पूरा कर अपने भाई के लिए वंश उत्पन्न करो।' 9किन्तु ओनन यह बात जानता था कि तामार से उत्पन्न वंश उसका अपना न कहलाएगा। अतएव जब उसने अपने भाई की पत्नी के साथ सहवास किया तब वीर्य भूमि पर गिरा दिया जिससे वह अपने मृत भाई को वंश प्रदान न कर सके। 10उसका यह कार्य प्रभु की दृष्टि में बुरा था। अतः प्रभु ने उसे मार डाला। 11यहूदा ने अपनी बहू तामार से कहा, 'जब तक मेरा पुत्र शेला युवा न हो जाए, तुम अपने पिता के घर में विधवा के सदृश रहो।' यहूदा सोचता था कि ऐसा न हो कि शेला भी अपने भाइयों के समान मर जाए। अतः तामार चली गई। वह अपने पिता के घर में रहने लगी।

12 बहुत दिन बीत गए। शूआ की पुत्री अर्थात् यहूदा की पत्नी की मृत्यु हो गई। उसने अपनी पत्नी के लिए शोक मनाया। जब शोक के दिन समाप्त हुए और उसको सान्त्वना प्राप्त हुई, तब वह अपने अदुल्लामी मित्र हीरा के साथ तिम्नाह नगर गया, जहाँ उसकी भेड़-बकरी का ऊन कतरने वाले रहते थे। 13किसी ने तामार को बताया, 'तुम्हारा ससुर अपनी भेड़-बकरियों का ऊन कतरने के लिए तिम्नाह नगर जा रहा है।' 14तामार ने विधवा के वस्त्र उतार दिए। उसने एक बुरका ओढ़ कर अपने को ढांप लिया और वह तिम्नाह के मार्ग पर स्थित ए-नईम नगर के प्रवेश-द्वार पर बैठ गई। तामार ने देखा कि उसका देवर शेला जवान हो गया है; पर उसके साथ उसका विवाह नहीं किया गया।

15 जब यहूदा ने तामार को देखा, तब उसे देवदासी समझा; क्योंकि वह अपना मुख ढांपे

---

* अथवा, 'फिरौन' ** अथवा, 'मुख्य जल्लाद', 'मुख्य रसोइया'

37 : 35 यिर 31 : 15 38 : 8 मत 22 : 24 38 : 9 व्य 25 : 6 38 : 11 रूत 1 : 13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हुए थी। 16वह मार्ग के किनारे उसके पास
गया। उसने तामार से कहा, 'मुझे अपने साथ
सहवास करने दो।' यहूदा नहीं जानता था कि
वह उसकी बहू है। तामार बोली, 'यदि मैं
आपको अपने साथ सहवास करने दूं, तो आप
मुझे क्या देंगे?' 17यहूदा बोला, 'मैं रेवड़ में से
एक बकरी का बच्चा तुझे भेज दूंगा।' तामार ने
कहा, 'जब तक आप उसे भेजेंगे, तब तक क्या
आप मेरे पास कुछ रेहन रखेंगे?' 18यहूदा ने
पूछा, 'मैं रेहन में तुम्हें क्या दूं?' तामार ने उत्तर
दिया, 'आपकी मोहर, गले की डोरी और
आपके हाथ का डंडा।' यहूदा ने ये वस्तुएँ उसे
दे दीं और उसके साथ सहवास किया। तामार
उससे गर्भवती हुई। 19तत्पश्चात् वह उठकर
चली गई। उसने बुरका उतार दिया और विधवा
के वस्त्र पहिन लिये।

20 यहूदा ने अपने अदुल्लामी मित्र हीरा के
हाथ बकरी का एक बच्चा भेजा कि वह
देवदासी के हाथ से रेहन छुड़ा ले। परन्तु वह
उसको न मिली। 21 हीरा ने उस स्थान के लोगों
से पूछा, 'वह देवदासी कहां है जो ए-नईम के
प्रवेश-द्वार पर मार्ग के किनारे बैठी थी?'
उन्होंने कहा, 'यहाँ कोई देवदासी नहीं थी।'
22उसने लौटकर यहूदा से कहा, 'मुझे वह नहीं
मिली। उस स्थान के लोगों का कहना है, यहाँ
कोई देवदासी नहीं थी।' 23यहूदा बोला, 'अच्छा,
वह रेहन की चीजें अपने पास रख ले। अन्यथा
यहाँ के लोग हमारा मजाक उड़ाएंगे। मैं उसका
मूल्य चुकाना चाहता था। इसलिए मैंने यह
बकरी का बच्चा भेजा था, किन्त वह तुम्हें नहीं
मिली।'

24 लगभग तीन महीने के पश्चात् यहूदा को
किसी ने बताया, 'तुम्हारी बहू तामार ने
व्यभिचार किया है। उसे व्यभिचार से गर्भ भी
है।' यहूदा ने कहा, 'उसे बाहर निकालकर
जला दो।' 25जब लोग उसे बाहर निकाल रहे
थे तब उसने अपने ससुर को यह सन्देश भेजा,
'जिस व्यक्ति की ये वस्तुएँ हैं, उसका मुझे गर्भ
है। कृपया ध्यान से देखिए कि ये वस्तुएँ—मोहर,
डोरी और डण्डा—किस व्यक्ति की हैं?'
26यहूदा ने उन्हें पहचान लिया। उसने कहा,
'वह मुझसे अधिक धार्मिक है; क्योंकि मैंने
उसके प्रति अपने कर्तव्य को पूरा नहीं किया
और अपने पुत्र शेला का विवाह उससे नहीं
किया।' उस ने तामार के साथ फिर कभी
सहवास नहीं किया।

27 जब तामार का प्रसव-काल आया तब
ज्ञात हुआ कि उसके गर्भ में जुड़वां बच्चे हैं।
28जब वह बच्चों को जन्म दे रही थी तब एक
बच्चे ने हाथ बाहर निकाला। दाई ने उसका हाथ
पकड़ा और उस पर एक लाल डोरा बांध कर
कहा, 'यह गर्भ से पहिले बाहर निकला।'
29परन्तु जब बच्चे ने अपना हाथ भीतर कर
लिया तब उसका भाई बाहर निकला। दाई ने
कहा, 'अरे! तूने स्वयं ही निकलने का मार्ग
बना लिया।' अतएव उसका नाम 'पेरेस'+ रखा
गया। 30उसके जन्म के पश्चात् उसका भाई
जिसके हाथ पर लाल डोरा बंधा था, गर्भ से
बाहर निकला। उसका नाम 'जेरह'* रखा गया।

यूसुफ और पोटीफर की पत्नी

39 यूसुफ मिस्र देश में लाया गया। राजा
फरओ के पदाधिकारी पोटीफर ने
यिश्माएलियों के हाथ से उसे खरीदा, जो
यूसुफ को वहाँ लाए थे। पोटीफर मिस्र देश का
उच्चाधिकारी और राजमहल के अंगरक्षकों का
नायक था। 2प्रभु यूसुफ के साथ था। अत: वह
सफल व्यक्ति बना। वह अपने मिस्र-निवासी
स्वामी के घर में रहता था। 3यूसुफ के स्वामी
ने देखा कि प्रभु उसके साथ है। जो कुछ वह
करता है, उसे उसके हाथ से प्रभु सफल बनाता
है। 4अत: यूसुफ ने पोटीफर की कृपादृष्टि प्राप्त
की, और वह उसका निजी सेवक बन गया।
पोटीफर ने उसे अपने घर का निरीक्षक नियुक्त
किया और उसके हाथ में अपना सब कुछ सौंप
दिया। 5जिस समय से पोटीफर ने उसे अपने
घर का निरीक्षक बनाया, और उसके हाथ में

+ अर्थात्, 'निकलने की दरार' * अर्थात्, 'लालिमा'

38 : 29 रूत 4 : 12; मत 1 : 3 39 : 2 प्रे 7 : 9

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
अपना सब कुछ सौंपा, उस समय से प्रभु ने यूसुफ के कारण उस मिस्र-निवासी के घर को आशिष दी। उसके घर और खेत की प्रत्येक वस्तु पर प्रभु की आशिष होने लगी।

6 पोटीफर ने अपना सब कुछ यूसुफ के हाथ में छोड़ दिया। उसके रहते वह भोजन करने के अतिरिक्त घर के सम्बन्ध में और कुछ नहीं जानता था।

यूसुफ शरीर से सुडौल और देखने में सुन्दर था। [7]कुछ समय के पश्चात् यूसुफ के स्वामी की पत्नी ने उस पर बुरी नज़र डाली। उसने कहा, 'मेरे साथ सो।' [8]यूसुफ ने अस्वीकार करते हुए अपने स्वामी की पत्नी से कहा, 'देखिए, मेरे स्वामी घर के सम्बन्ध में कुछ भी नहीं जानते हैं। जो कुछ उनके पास है, उन्होंने उसे मेरे ही हाथ में सौंप दिया है। [9]वह इस घर में मुझसे अधिक बड़े नहीं हैं। उन्होंने मुझे कोई भी वस्तु देना अस्वीकार नहीं किया, केवल आपको, क्योंकि आप उनकी पत्नी हैं। तब मैं परमेश्वर के विरुद्ध इतना बड़ा कुकर्म, यह पाप कैसे कर सकता हूं?'

10 यद्यपि वह दिन-प्रतिदिन यूसुफ से बोलती रही कि वह उसके साथ सोए, उसके साथ रहे, तथापि यूसुफ ने उसकी बात नहीं सुनी। [11]एक दिन यूसुफ काम करने के लिए घर में आया। उस समय वहाँ घर का कोई भी मनुष्य नहीं था। [12]पोटीफर की पत्नी ने यूसुफ का वस्त्र पकड़ लिया और उससे बोली, 'मेरे साथ सो।' किन्तु यूसुफ अपना वस्त्र उसके हाथ में छोड़कर भागा और घर से बाहर निकल गया। [13]जब पोटीफर की पत्नी ने देखा कि यूसुफ अपना वस्त्र उसके हाथ में छोड़ कर घर से बाहर निकल गया है, [14]तब उसने अपने घर के मनुष्यों को बुलाया और उनसे कहा, 'इब्रानी सेवक को देखो। उसे मेरा स्वामी हमारा अपमान करने के लिए लाया है। वह इब्रानी मुझसे बलात्कार करने के लिए मेरे पास आया था। पर मैं ऊँची आवाज में पुकारने लगी। [15]जब उसने सुना कि मैं ऊँचे स्वर में चिल्लाकर पुकार रही हूं, तब वह अपना वस्त्र मेरे हाथ में छोड़कर भागा और घर से बाहर निकल गया।' [16]जब तक उसका स्वामी अपने घर में नहीं आया, उसने यूसुफ का वस्त्र अपने पास पड़ा रहने दिया। [17]उसने अपने स्वामी से भी यही कहा, 'जिस इब्रानी सेवक को आप हमारे मध्य में लाए हैं, वह मेरा अपमान करने के लिए मेरे पास आया। [18]परन्तु जैसे ही मैंने ऊंची आवाज में पुकारा, वह अपना वस्त्र मेरे पास छोड़कर भागा और घर से बाहर निकल गया।'

19 जब यूसुफ के स्वामी ने अपनी पत्नी के ये शब्द सुने, 'आपके सेवक ने मुझसे ऐसा व्यवहार किया', तब उसका क्रोध भड़क उठा। [20]यूसुफ के स्वामी ने उसे पकड़कर कारागार में डाल दिया। इस स्थान में राजा के बन्दी कैद थे। यूसुफ भी कारागार में था। [21]प्रभु उसके साथ था। उसने यूसुफ पर करुणा की और उसे कारागार के मुख्याधिकारी की कृपा-दृष्टि प्रदान की। [22]अत: कारागार के मुख्याधिकारी ने कारागार के सब बन्दियों को यूसुफ के हाथ में सौंप दिया। जो कुछ भी कारागार में होता था, उसका कर्ता यूसुफ था। [23]कारागार का मुख्याधिकारी यूसुफ के हाथ में सौंपी गई किसी भी वस्तु को देखता तक न था; क्योंकि प्रभु यूसुफ के साथ था। जो कुछ भी यूसुफ करता था, प्रभु उसे सफल बनाता था।

बन्दियों के स्वप्नों का अर्थ

40 इन घटनाओं के कुछ समय पश्चात् मिस्र देश के राजा फरओ के साकी* और रसोइए ने अपने स्वामी के विरुद्ध अपराध किया। [2]फरओ, अपने दोनों पदाधिकारियों—मुख्य साकी और मुख्य रसोइए—से क्रुद्ध हुआ। [3]उसने उनको हिरासत में लेकर अंगरक्षकों के नायक के घर में, उसी काराकार में, जहाँ यूसुफ कैद था, डाल दिया। [4]अंगरक्षकों के नायक ने यूसुफ को उनकी देखभाल करने का

* अर्थात्, ''राजा को शराब पिलानेवाला''

39 : 20 भज 105 : 18

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

काम सौंपा। वह उनकी सेवा करने लगा। वे
कुछ दिन तक हिरासत में रहे।

5 एक दिन मिस्र देश के राजा के साकी तथा
रसोइए, दोनों ने रात में एक स्वप्न देखा। प्रत्येक
स्वप्न का अपना एक विशेष अर्थ था। 6जब
यूसुफ सबेरे उनके पास आया और उसने
उनको देखा, तब वे बेचैन थे। 7उसने फरओ
के अधिकारियों से, जो उसके साथ उसके
स्वामी के घर में हिरासत में थे, पूछा, 'आज
आपके मुंह क्यों उतरे हुए हैं?' 8उन्होंने यूसुफ
से कहा, 'हमने स्वप्न देखे हैं। किन्तु यहाँ
उनका अर्थ बतानेवाला कोई नहीं है।' यूसुफ
बोला, 'क्या यह सच नहीं है कि स्वप्नों के अर्थ
बताना केवल परमेश्वर का कार्य है? कृपाकर,
मुझे सुनाइए।'

9 मुख्य साकी ने अपना स्वप्न यूसुफ को
सुनाया। उसने यूसुफ से कहा, 'मैंने स्वप्न में
देखा कि मेरे सम्मुख एक अंगूर की बेल है।
10अंगूर की बेल में तीन शाखाएँ हैं। जैसे ही
उसमें कलियाँ आईं, उसके फूल शीघ्र ही खिल
गए, और उसके गुच्छों में अंगूर लग कर पक
गए। 11फरओ का चषक* मेरे हाथ में था। मैंने
अंगूर लेकर उन्हें फरओ के चषक में निचोड़ा
और उसे फरओ के हाथ में दिया।' 12यूसुफ
ने उससे कहा, 'यह आपके स्वप्न का अर्थ है :
वे तीन शाखाएँ तीन दिन हैं। 13तीन दिन के
पश्चात् फरओ आपका सिर ऊँचा करेंगे। वह
आपको आपका पद लौटा देंगे। आप पहिले के
समान, जब आप फरओ के साकी थे, उनके
हाथ में चषक देंगे। 14जब आप का भला होगा
तब मुझे स्मरण करना। मैं विनती करता हूं, मुझ
पर करुणा कर फरओ से मेरा उल्लेख करना,
और मुझे इस कारागार से बाहर निकलवा लेना;
15क्योंकि इब्रानियों के देश से सचमुच मेरा
अपहरण किया गया है। मैंने ऐसा कोई कार्य
नहीं किया कि वे मुझे कारागार में डालें।'

16 जब मुख्य रसोइए ने देखा कि स्वप्न का
अर्थ अच्छा है तब वह यूसुफ से बोला, 'मैंने
भी स्वप्न देखा है। मेरे सिर पर सफेद रोटियों
की तीन टोकरियाँ हैं। 17ऊपर की टोकरी में
फरओ के लिए सब प्रकार के पके व्यंजन हैं।
पक्षी मेरे सिर की टोकरी में से उन्हें चुग रहे हैं।
' 18यूसुफ ने उसे उत्तर दिया, 'आपके स्वप्न
का यह अर्थ है : वे तीन टोकरियाँ तीन दिन हैं।
19तीन दिन के पश्चात् फरओ आपका सिर
ऊँचा करेंगे। वह आपका सिर आपके धड़ से
अलग करेंगे! वह आपको काठ पर लटका
देंगे, और पक्षी आपका मांस नोच-नोच कर
खाएँगे।'

20 तीसरे दिन फरओ का जन्म-दिवस था।
उसने अपने समस्त कर्मचारियों को भोज
दिया। उसने अपने कर्मचारियों के मध्य मुख्य
साकी और मुख्य रसोइए के सिरों को ऊंचा
किया। 21उसने मुख्य साकी को उसका साकी
पद लौटा दिया। वह फरओ के हाथ में चषक
पुनः देने लगा। 22जैसा यूसुफ ने स्वप्नों का
अर्थ बताया था, उसके अनुरूप फरओ ने मुख्य
रसोइए को काठ पर लटका दिया। 23किन्तु मुख्य
साकी ने यूसुफ को स्मरण न किया। वह उसे
भूल गया।

फरओ के स्वप्नों का अर्थ

41 पूरे दो वर्ष के पश्चात् फरओ ने स्वप्न
देखा कि वह नील नदी के किनारे खड़ा
है। 2सहसा सात मोटी और देखने में सुन्दर गायें
नदी से बाहर निकलीं। वे नरकुल की घास
चरने लगीं। 3उनके पीछे सात दुबली और
देखने में कुरूप गायें नील नदी से बाहर
निकलीं। वे नदी के तट पर अन्य गायों के एक
ओर खड़ी हो गईं। 4तब दुबली और कुरूप
गायों ने उन सात मोटी और सुन्दर गायों को खा
लिया। तत्पश्चात् फरओ जाग गया।

5 वह फिर सो गया। उसने दूसरी बार स्वप्न
देखा कि एक ही डंठल में सात मोटी और
अच्छी बालें फूट रही हैं। 6उनके पीछे सात
पतली और पूर्वी वायु से झुलसी हुई बालें
फूटीं। 7तब पतली बालों ने मोटी और भरी
बालों को खा लिया। तत्पश्चात् फरओ जाग
गया। यह स्वप्न था। 8सबेरे उसकी आत्मा

* अर्थात्, "शराब का प्याला"

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

व्याकुल थी। उसने दूत भेजकर अपने सब तान्त्रिकों* और विद्वानों को बुलाया। फरओ ने उनको अपने स्वप्न सुनाए। पर कोई भी फरओ को उनका अर्थ न बता सका।

9 तब मुख्य साकी ने फरओ से कहा, 'आज
मुझे अपने अपराधों की स्मृति हुई। [10]जब आप**
अपने सेवकों से क्रुद्ध हुए थे और मुझे तथा मुख्य रसोइए को अंगरक्षकों के नायक के घर
में हिरासत में रखा था, [11]तब हमने एक ही रात
में एक-एक स्वप्न देखा था। प्रत्येक स्वप्न का
अपना एक विशेष अर्थ था। [12]वहाँ हमारे साथ
एक इब्रानी युवक था। वह अंगरक्षकों के नायक का सेवक था। हमने उसे अपना-अपना स्वप्न सुनाया और उसने हमें उनका अर्थ बताया। प्रत्येक व्यक्ति को उसके स्वप्न का अर्थ
बताया। [13]जैसा उसने हमें अर्थ बताया था वैसा
ही हुआ। मुझे अपना पूर्व पद प्राप्त हुआ और मुख्य रसोइए को वृक्ष पर लटकाया गया।'

14 फरओ ने दूत भेजकर यूसुफ को बुलाया। वे अविलम्ब उसे कारागार से बाहर लाए। यूसुफ ने बाल बनाए और वस्त्र बदले। तत्पश्चात् वह फरओ के सम्मुख आया।
[15]फरओ ने यूसुफ से कहा, 'मैंने एक स्वप्न देखा है। किन्तु उसका अर्थ बतानेवाला कोई नहीं है। मैंने तुम्हारे विषय में सुना है कि तुम स्वप्न सुनकर उसका अर्थ बता सकते हो।'
[16]यूसुफ ने फरओ को उत्तर दिया, 'नहीं, मैं नहीं जानता। परन्तु परमेश्वर फरओ को
कल्याणकारी उत्तर देगा।' [17]फरओ यूसुफ से
बोला, 'देखो, मैं स्वप्न में नील नदी के किनारे
खड़ा था। [18]सहसा सात मोटी और सुन्दर गायें
नील नदी से बाहर निकलीं। वे नरकुल की घास
चरने लगीं। [19]उनके पीछे सात दुबली, देखने
में बहुत कुरूप और कृश गायें निकलीं। मैंने ऐसे कुरूप पशु मिस्र देश में कभी नहीं देखे थे।
[20]दुबली और देखने में कुरूप गायों ने पहली
सात मोटी गायों को खा लिया। [21]परन्तु जब वे
उन्हें खा चुकीं, तब किसी को ऐसा प्रतीत नहीं
होता था कि उन्होंने उनको खाया है; क्योंकि जैसी कृश वे पहले थीं, वैसी अभी भी थीं। तब
मैं जाग गया। [22]फिर मैंने अपने स्वप्न में एक
ही डंठल में सात मोटी और अच्छी बालें फूटती
हुई देखीं। [23]उनके पीछे सात मुरझाई, पतली,
और पूर्वी वायु से झुलसी बालें फूटीं। [24]तब
पतली बालों ने सात अच्छी बालों को खा लिया। मैंने अपना यह स्वप्न तान्त्रिकों को सुनाया। पर मुझ पर इसका अर्थ प्रकट करने वाला यहाँ कोई नहीं है।'

25 यूसुफ ने फरओ से कहा, 'आपके दोनों
स्वप्न एक ही हैं। जो कार्य परमेश्वर करने वाला है, उसे उसने आप पर प्रकट किया है।
[26]सात अच्छी गायें सात वर्ष हैं। सात बालें भी
सात वर्ष हैं। इस प्रकार स्वप्न एक ही है।
[27]उनके पीछे नदी से निकलने वाली सात दुर्बल
और देखने में कुरूप गायें सात वर्ष हैं। सात खाली और पूर्वी वायु से झुलसी बालें भी सात
वर्ष हैं। अकाल के सात वर्ष! [28]जो बात मैंने
आपसे कही, वह यही है। जो कार्य परमेश्वर करने वाला है, उसको उसने आप को दिखाया
है। [29]देखिए, ऐसे सात वर्ष आएँगे जब समस्त
देश में अत्यधिक अन्न उत्पन्न होगा। [30]किन्तु
उनके पश्चात् अकाल के सात वर्ष आएँगे। फलतः मिस्र देश में सुकाल के दिनों की उपज भुला दी जाएगी। अकाल देश को खा जाएगा।
[31]सुकाल के उपरान्त आने वाले अकाल के कारण समस्त देश में सुकाल की उपज अज्ञात हो जाएगी; क्योंकि वह बहुत भयंकर अकाल
होगा। [32]आपको एक ही स्वप्न दो बार इसलिए
दिखाई दिया कि परमेश्वर द्वारा यह बात निश्चित की जा चुकी है, और वह उसे शीघ्र
ही कार्यरूप में परिणत करेगा। [33]अब आप किसी
समझदार और बुद्धिमान व्यक्ति को देखें और उसे मिस्र देश का प्रधान मन्त्री नियुक्त करें।
[34]आप तत्काल देश में निरीक्षक भी नियुक्त
करें। वे मिस्र देश के सुकाल के वर्षों में उपज
का पांचवां भाग लें। [35]निरीक्षक आगामी सुकाल

* अथवा, ''जादू टोना करनेवाले'' या ''ज्योतिषी'' ** मूल में फरओ।

41 : 8 नि 7 : 11 ; दानं 2 : 2 ; 4 : 7

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

के सात वर्षों में सब प्रकार की भोजन सामग्री एकत्र करें। वे आपके अधीन नगरों में भोजन के लिए अन्न के भण्डार-गृह खोलें, और अन्न की रक्षा करें। 36यह भोजन-सामग्री देश के निमित्त अकाल के उन सात वर्षों के लिए सुरक्षित रहेगी, जो मिस्र देश पर आएंगे, जिससे मिस्र देश अकाल से विनष्ट न हो जाए।'

यूसुफ : मिस्र देश का प्रधान मन्त्री

37 यह परामर्श फरओ और उसके सब कर्मचारियों को भला लगा। 38फरओ ने अपने कर्मचारियों से कहा, 'क्या हम इस व्यक्ति के सदृश, जिसमें परमेश्वर का आत्मा है, किसी दूसरे व्यक्ति को पा सकते हैं ?' 39अत: फरओ ने यूसुफ से कहा, 'परमेश्वर ने तुम पर ही ये बातें प्रकट कीं। इसलिए तुम्हारे सदृश समझदार और बुद्धिमान व्यक्ति और कोई नहीं है। 40तुम मेरे देश* के प्रधान मंत्री होंगे। मेरी प्रजा तुम्हारे आदेशों का पालन** करेगी। केवल राजसिंहासन पर मैं तुम से बड़ा रहूँगा।' 41फरओ ने यूसुफ से पुन: कहा, 'देखो, मैं तुम्हें समस्त मिस्र देश का प्रधान मन्त्री नियुक्त करता हूं।' 42फरओ ने अपने हाथ से मुद्रा की अंगूठी निकालकर यूसुफ के हाथ में सौंप दी। उसने यूसुफ को महीन मलमल के वस्त्र पहनाए। उसने उसके गले में सोने की माला डाली। 43तत्पश्चात् उसे अपने द्वितीय रथ पर चढ़ाया। लोग यूसुफ के सम्मुख पुकारते थे, 'घुटने टेको+'। इस प्रकार फरओ ने यूसुफ को समस्त मिस्र देश का प्रधान मन्त्री नियुक्त किया। 44फरओ ने यूसुफ से यह भी कहा, 'मैं फरओ हूं। तुम्हारी आज्ञा के बिना कोई भी मनुष्य समस्त मिस्र देश में न हाथ उठा सकेगा, और न पैर।' 45फरओ ने यूसुफ का नाम 'साफनत-पानेह'++ रखा। उसने ओन नगर के पुरोहित पोटीफेरा की पुत्री आसनत से उसका विवाह करा दिया। यों यूसुफ को मिस्र देश पर अधिकार प्राप्त हो गया।

46 जब यूसुफ ने मिस्र देश के राजा फरओ की सेवा में प्रवेश किया तब वह तीस वर्ष का था। वह फरओ के दरबार से निकलकर समस्त मिस्र देश में दौरा करने लगा। 47सुकाल के सात वर्षों में खेतों में अत्यधिक अन्न उत्पन्न हुआ। 48जब मिस्र देश में प्रचुर मात्रा में अन्न था तब यूसुफ ने सुकाल के सात वर्षों की सब प्रकार की भोजन-वस्तु को एकत्र किया। उसने नगरों में भोजन-वस्तु जमा की। उसने प्रत्येक नगर में उसके आस-पास के खेतों का अनाज जमा किया। 49यूसुफ ने अत्यधिक मात्रा में, समुद्र के रेतकणों के सदृश अनाज को जमा किया, यहाँ तक कि उसने उसको मापना भी छोड़ दिया; क्योंकि उसे मापना असम्भव था।

50 अकाल-वर्ष के आगमन के पूर्व यूसुफ के दो पुत्र उत्पन्न हुए। ओन नगर के पुरोहित पोटीफेरा की पुत्री आसनत ने उनको यूसुफ से जन्म दिया। 51यूसुफ ने ज्येष्ठ पुत्र का नाम 'मनश्शे'† रखा; क्योंकि वह कहता था 'परमेश्वर ने मुझे मेरे सब कष्ट और पिता का समस्त परिवार भुला दिया है।' 52उसने दूसरे पुत्र का नाम 'एफ्रइम'†††रखा, क्योंकि वह कहता था, 'परमेश्वर ने मुझे उस देश में फलवन्त किया है, जहाँ मुझे विपत्तियाँ झेलनी पड़ी थीं।'

53 मिस्र देश में सुकाल के सात वर्ष समाप्त हुए। 54अकाल के सात वर्षों का आगमन होने लगा, जैसा यूसुफ ने कहा था। सब देशों में अकाल था किन्तु मिस्र देश में अन्न था। 55जब मिस्र देश में भी अकाल पड़ा तब प्रजा ने अन्न के लिए फरओ की दुहाई दी। फरओ ने मिस्र निवासियों से कहा, 'यूसुफ के पास जाओ। जो कुछ वह तुमसे कहे, वही करना।' 56जब अकाल समस्त देश में फैल गया तब यूसुफ ने अन्न के भण्डार-गृह खोल दिए। वह मिस्र-निवासियों को अन्न बेचने लगा। मिस्र देश में अकाल का रूप भयंकर था। 57अन्य देशों के लोग भी अन्न खरीदने के लिए यूसुफ के पास आने लगे क्योंकि समस्त पृथ्वी पर भीषण अकाल था।

* मूल में 'घर' ** मूल में, 'मुख का चुम्बन' +मूल में 'अब्रेक'; इस मिस्री शब्द का अर्थ निश्चित नहीं है। ++ अर्थात् 'ईश्वर कहता : तुम जीवित रहो' † शब्दश: 'उपस्थिति' †† अर्थात् 'भुलानेवाला' ††† अर्थात् 'फलवंत'

41 : 38 दान 5 : 11; सूस 45 **41 : 41** प्रे 7 :10 भज 105 : 21 **41 : 54** प्रे 7 : 11 **41 : 55** यो 2 : 5

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यूसुफ के भाइयों का मिस्र में आगमन

42 जब याकूब ने देखा कि मिस्र देश में
अन्न है तब उन्होंने अपने पुत्रों से कहा,
'तुम एक-दूसरे का मुंह क्यों ताक रहे हो? 2मैंने
सुना है कि मिस्र देश में अन्न है। तुम वहाँ
जाओ, और हमारे लिए अन्न खरीद कर लाओ,
जिससे हम मरें नहीं वरन् जीवित रहें।' 3अत:
यूसुफ के दस भाई अन्न खरीदने के लिए मिस्र
देश में आए। 4याकूब ने यूसुफ के भाई बिन्यामिन
को उसके भाइयों के साथ नहीं भेजा। उन्हें भय
था कि कहीं बिन्यामिन पर कोई विपत्ति आ न
पड़े। 5आनेवालों में याकूब* के पुत्र भी थे जो
अनाज खरीदने आए थे, क्योंकि कनान देश में
भी अकाल था।

6 यूसुफ मिस्र देश का प्रधान मन्त्री था। वह
देश के सब लोगों का अन्न-विक्रेता था। यूसुफ
के भाई आए। उन्होंने भूमि की ओर सिर झुका
कर यूसुफ का अभिवादन किया। 7यूसुफ ने
अपने भाइयों को देखकर पहचान लिया, परन्तु
उनसे अपरिचित-सा व्यवहार किया। उसने
उनसे कठोरता से बातें कीं। यूसुफ ने उनसे
पूछा, 'तुम लोग कहाँ से आए हो?' वे बोले,
'हम भोजन-सामग्री खरीदने के लिए कनान
देश से आए हैं।' 8यूसुफ ने अपने भाइयों को
पहचान लिया, पर उन्होंने उसे नहीं पहचाना।
9यूसुफ को उन स्वप्नों का स्मरण हुआ, जो
उसने अपने भाइयों के विषय में देखे थे। उसने
उनसे कहा, 'तुम लोग गुप्तचर हो, और मिस्र देश
के असुरक्षित स्थानों का भेद लेने आए हो।'
10वे यूसुफ से बोले, 'नहीं, स्वामी! आपके
सेवक भोजन-सामग्री खरीदने के लिए आए
हैं। 11हम सब एक ही पुरुष के पुत्र हैं। हम
सच्चे लोग हैं। हम, आपके सेवक, गुप्तचर नहीं
हैं।' 12यूसुफ उनसे बोला, 'नहीं, तुम लोग
मिस्र देश के असुरक्षित स्थानों का भेद लेने
आए हो।' 13उन्होंने कहा, 'हम आपके सेवक,
बारह भाई हैं। हम कनान देश के एक ही पुरुष
के पुत्र हैं। सबसे छोटा भाई इस समय हमारे
पिता के साथ है, और एक भाई नहीं रहा।'
14यूसुफ ने उनसे कहा, 'जो बात मैंने तुमसे
कही, वह ठीक है। तुम गुप्तचर हो। 15तुम्हारी
जाँच की जाएगी : फरओ के जीवन की
सौगन्ध, जब तक तुम्हारा छोटा भाई यहाँ नहीं
आएगा, तब तक तुम यहाँ से नहीं जा सकोगे।
16तुम अपने में से किसी एक को भेजो कि वह
तुम्हारे भाई को लाए। तब तक तुम बन्दी रहोगे
जिससे तुम्हारे कथन की जाँच की जा सके कि
तुममें सच्चाई है कि नहीं। फरओ के जीवन की
सौगन्ध, तुम निश्चय ही गुप्तचर हो।' 17यूसुफ
ने उन सबको तीन दिन तक हिरासत में रखा।

18 यूसुफ ने तीसरे दिन उनसे कहा, 'यह
कार्य करो तो तुम जीवित रहोगे, क्योंकि मैं
परमेश्वर से डरता हूं। 19यदि तुम सच्चे लोग हो
तो तुम्हारा कोई एक भाई हवालात में रहे। शेष
भाई अपने भूखे परिवार के लिए अन्न लेकर
जाएँ, 20और अपने सबसे छोटे भाई को मेरे
पास लाएँ। इस प्रकार तुम्हारा कथन सच्चा
सिद्ध होगा और तुम मरने से बच जाओगे।' तब
उन्होंने वैसा ही किया। 21उन्होंने आपस में
कहा, 'निस्सन्देह, हम अपने भाई यूसुफ के
प्रति दोषी हैं। हमने उसकी आत्मा का कष्ट
देखा था। जब उसने हमसे दया की भीख मांगी
तब हमने नहीं सुना। अतएव अब यह कष्ट हम
पर आया है।' 22रूबेन ने उनको उत्तर दिया,
'क्या मैंने तुम लोगों से नहीं कहा था कि लड़के
के विरुद्ध पाप न करो! परन्तु तुम लोगों ने मेरी
बात नहीं सुनी। अब हमसे उसके रक्त का
प्रतिशोध लिया जाएगा।' 23वे नहीं जानते थे
कि यूसुफ उनकी बातें समझ रहा है; क्योंकि
उनके मध्य में एक दुभाषिया था। 24यूसुफ उनके
पास से हटकर रोने लगा। वह पुन: उनके पास
लौटा और उनसे बातचीत की। यूसुफ ने उनमें
से शिमोन को लेकर उनकी आंखों के सम्मुख
उसे बन्दी बना लिया। 25तत्पश्चात् उसने आज्ञा
दी कि उनके बोरे अन्न से भर दिए जाएँ। प्रत्येक
व्यक्ति के बोरे में उसके रुपए भी रखे जाएं।

---

* मूल में ''इस्राएल''

42 : 1 प्रे 7 : 12 **42 : 9** उत 37 : 5, 9 **42 : 22** उत 37 : 21

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उन्हें मार्ग के लिए भोजन-सामग्री भी दी जाए। उनके लिए ऐसा ही किया गया।

यूसुफ के भाइयों का कनान देश लौटना

26 यूसुफ के भाई अन्न के बोरे अपने गधों पर लादकर चले। 27जब उनमें से एक भाई ने सराय में अपने गधे को चारा देने के लिए अपना बोरा खोला, तब उसने बोरे के मुंह में अपने रुपए रखे हुए देखे। 28वह अपने भाइयों से बोला, 'मेरे रुपए लौटा दिए गए। देखो, ये मेरे बोरे में हैं।' यह सुनकर वे अचरज में डूब गए। वे भयभीत होकर एक दूसरे को देखने लगे। उन्होंने कहा, 'परमेश्वर ने हमारे साथ यह क्या किया?'

29 जब वे कनान देश में अपने पिता याकूब के पास आए तब उन्होंने अपने साथ घटी घटनाओं का उल्लेख उनसे किया। उन्होंने कहा, 30'मिस्र देश के स्वामी ने हमसे कठोरता से बातें कीं। उसने हमें उस देश में गुप्तचर समझा। 31परन्तु हमने उससे कहा, "हम सच्चे लोग हैं। हम गुप्तचर नहीं हैं। 32हम बारह भाई हैं। हम एक ही पिता के पुत्र हैं। एक भाई नहीं रहा। सबसे छोटा भाई इस समय कनान देश में हमारे पिता के पास है।" 33तब उस देश के स्वामी ने हमसे कहा, "यदि तुम यह कार्य करो तो मुझे ज्ञात हो जाएगा कि तुम सच्चे लोग हो: तुम अपने भाइयों में से एक को मेरे पास छोड़ जाओ। तुम अपने भूखे परिवार के लिए अन्न लेकर जाओ, 34और अपने सबसे छोटे भाई को मेरे पास लाओ। तब मुझे विश्वास होगा कि तुम गुप्तचर नहीं, वरन् सच्चे लोग हो। मैं तुम्हारे भाई को तुम्हें सौंप दूंगा। तब तुम इस देश में व्यापार भी कर सकोगे।"'

35 उन्होंने अन्न के बोरे खोले तो देखा कि प्रत्येक व्यक्ति की रुपयों की थैली उसके बोरे में है। जब उन्होंने तथा उनके पिता ने रुपयों की थैलियाँ देखीं तब वे डर गए। 36उनके पिता याकूब ने उनसे कहा, 'तुम लोगों ने मुझे सन्तानहीन कर दिया। यूसुफ नहीं रहा। शिमोन भी नहीं रहा। अब तुम बिन्यामिन को ले जाओगे। ये सब विपत्तियाँ मुझपर ही आ पड़ी हैं।' 37रूबेन ने अपने पिता से कहा, 'यदि मैं बिन्यामिन को वापस न लाऊं तो मेरे दोनों पुत्रों का वध कर देना। उसे मेरे हाथ में दीजिए। मैं उसे आपके पास वापस लाऊंगा।' 38किन्तु याकूब ने कहा, 'मेरा पुत्र बिन्यामिन तुम्हारे साथ नहीं जाएगा। उसका भाई यूसुफ तो मर चुका और वह अकेला बचा है। जिस मार्ग पर तुम जाओगे यदि उसमें बिन्यामिन पर कोई विपत्ति आ पड़े तो तुम लोग मुझ वृद्ध को शोक-सन्तप्त दशा में ही अधोलोक पहुंचा दोगे।'

बिन्यामिन का मिस्र देश आना

43 कनान देश में भयंकर अकाल था। 2जो अन्न वे मिस्र देश से लाए थे, जब उन्होंने उसे खाकर समाप्त किया तब उनके पिता याकूब ने उनसे कहा, 'मिस्र देश को फिर जाओ, और हमारे लिए कुछ भोजन-सामग्री खरीदकर लाओ।' 3यहूदा ने अपने पिता याकूब से कहा, 'मिस्र देश के स्वामी* ने हमें गम्भीर चेतावनी दी थी, "जब तक तुम्हारे साथ तुम्हारा भाई न होगा, तुम मेरे दर्शन नहीं कर सकते।" 4यदि आप हमारे साथ हमारे भाई बिन्यामिन को भेजेंगे तो हम मिस्र देश जाएँगे और आपके लिए भोजन-वस्तु खरीदेंगे। 5पर यदि आप बिन्यामिन को नहीं भेजेंगे तो हम मिस्र देश नहीं जाएंगे; क्योंकि मिस्र देश के स्वामी ने हमें गम्भीर चेतावनी दी है, "जब तक तुम्हारे साथ तुम्हारा भाई नहीं होगा, तुम मेरे दर्शन नहीं कर सकते।"' 6याकूब** ने कहा, 'तुमने उस व्यक्ति को यह बताकर कि तुम्हारा एक और भाई है, मेरे साथ क्यों बुराई की?' 7वे बोले, 'उस व्यक्ति ने हमारे और हमारे कुटुम्बियों के विषय में सावधानी से प्रश्न पूछे थे। उसने पूछा था, "क्या तुम्हारा पिता अभी तक जीवित है? क्या तुम्हारा एक और भाई है?" जो कुछ हमने उसे बताया, वह इन प्रश्नों के उत्तर में बताया। हम कैसे जान सकते थे कि वह हमसे कहेगा,

---

* मूल में, "उस व्यक्ति" ** मूल में 'इस्राएल'

42 : 38 उत 37 : 35

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

"अपने भाई को यहाँ लाओ?" ' [8]यहूदा ने अपने पिता याकूब से कहा, 'लड़के को मेरे साथ भेजिए। हम मिस्र देश जाएंगे जिससे हम और आप एवं हमारे छोटे-छोटे बच्चे भूख से मरें नहीं, वरन् जीवित रहें। [9]मैं बिन्यामिन की सुरक्षा का दायित्व लेता हूं। आप मेरे हाथ से उसे वापस लेंगे। यदि मैं उसे आपके पास वापस लाकर आपके सम्मुख नहीं खड़ा करूँगा, तो मैं आपके प्रति सदा के लिए अपराधी बना रहूंगा। [10]यदि हम विलम्ब न करते तो अब तक दो बार वहाँ से लौट चुके होते।' [11]उनके पिता याकूब ने उनसे कहा, 'यदि ऐसी ही बात है तो यह करो : अपने बोरों में कनान देश की सर्वोत्तम वस्तुएँ रखो : बलसान, शहद, गोंद, गन्धरस, पिस्ता और बादाम। इन्हें मिस्र देश के स्वामी को भेंट देने के लिए ले जाओ। [12]अपने हाथों में दुगुनी रकम लेते जाओ। जो रुपया तुम्हारे बोरों में लौट आया था, उसे अपने साथ वापस ले जाना। सम्भवतः यह उनकी असावधानी है। [13]अपने भाई बिन्यामिन को भी अपने साथ लो, और मिस्र के स्वामी के पास पुनः जाओ। [14]सर्वशक्तिमान परमेश्वर उस पुरुष की कृपादृष्टि तुम्हें प्रदान करे जिससे वह तुम्हारे दूसरे भाई और बिन्यामिन को तुम्हारे साथ भेज दे। यदि मुझे सन्तान से वंचित होना है, तो होने दो।' [15]यूसुफ के भाई वह भेंट, अपने हाथ में दुगुनी रकम और बिन्यामिन को लेकर मिस्र देश गए और यूसुफ के सम्मुख उपस्थित हुए।

16 यूसुफ ने उनके साथ बिन्यामिन को देखा। उसने अपने गृह-प्रबन्धक से कहा, 'इन लोगों को महल में ले जाओ। पशु काटकर भोजन तैयार करो। ये लोग दोपहर को मेरे साथ भोजन करेंगे।' [17]जैसा यूसुफ ने कहा था वैसा ही गृह-प्रबन्धक ने किया। वह उनको यूसुफ के महल में ले गया। [18]वे डर गए, क्योंकि उनको यूसुफ के महल में पहुँचाया जा रहा था। उन्होंने कहा, 'जो रुपया पहली बार हमारे बोरों में रखा गया था, उसी के कारण हमें यहाँ लाया गया है, जिससे वह हम पर दोषारोपण करके हमें गुलाम बना सके और हमारे गधों को छीन ले।' [19]अतएव वे यूसुफ के गृह-प्रबन्धक के पास गए, और उससे द्वार पर बातचीत की। [20]उन्होंने कहा, 'हे हमारे स्वामी! हम पहले भोजन-सामग्री खरीदने आए थे। [21]जब हम लौटकर सराय में आए और अपने बोरे खोले, तब देखा कि प्रत्येक व्यक्ति की पूरी रकम उसके बोरे के मूंह में रखी है। अतएव हम उस रकम को अपने साथ वापस लाए हैं। [22]हम भोजन-सामग्री खरीदने के लिए अपने हाथ में दूसरी रकम भी लाए हैं। हम नहीं जानते हैं कि किस व्यक्ति ने हमारी रकम हमारे बोरों में वापस रखी थी।' [23]उसने कहा, 'निश्चिन्त रहो, मत डरो। तुम्हारे परमेश्वर, तुम्हारे पिता के परमेश्वर ने बोरों में तुम्हारे लिए धन रखा होगा। मुझे तो तुम्हारी रकम मिल गई थी।' तत्पश्चात् वह शिमोन को निकाल कर उनके पास लाया। [24]गृह-प्रबन्धक उनको यूसुफ के महल में ले गया। उसने उनको पानी दिया। उन्होंने अपने पैर धोए। उसने उनके गधों को चारा भी दिया। [25]उन्होंने यूसुफ के दोपहर में आगमन के लिए भेंट तैयार रखी; क्योंकि उन्होंने सुना था कि वे वहाँ यूसुफ के साथ भोजन करेंगे।

26 यूसुफ महल में आया। वे अपने पास की भेंट लेकर महल में उसके पास गए। उन्होंने भूमि की ओर झुककर उसका अभिवादन किया। [27]यूसुफ ने उनके कुशल-मंगल के विषय में पूछा, 'क्या तुम्हारे पिता, वह वृद्ध पुरुष जिनके विषय में तुमने कहा था, सकुशल हैं? क्या वह अभी तक जीवित हैं?' [28]उन्होंने उत्तर दिया, 'आपके सेवक, हमारे पिता, सकुशल हैं। वह अब तक जीवित हैं।' उन्होंने सिर झुकाकर पुनः अभिवादन किया। [29]यूसुफ ने आंखें ऊपर उठाकर अपने सगे भाई बिन्यामिन को देखा और उनसे पूछा, 'क्या यह तुम्हारा सबसे छोटा भाई है, जिसके विषय में तुमने मुझसे कहा था?' वह बिन्यामिन से बोला, 'मेरे पुत्र, परमेश्वर तुम पर अनुग्रह करे।' [30]यूसुफ शीघ्रता से उठा; क्योंकि अपने छोटे भाई के

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कारण उसका हृदय भर आया था। उसने
एकान्त में आंसु बहाने के लिए स्थान खोजा।
वहअपने कक्ष में आया और वहाँ रो पड़ा।
31तत्पश्चात् उसने अपना मुंह धोया। वह कक्ष
से बाहर निकला। उसने अपने को संयमित
किया और आदेश दिया, 'भोजन परोसा
जाए।'

32 सेवकों ने यूसुफ को अलग भोजन
परोसा। इसी प्रकार यूसुफ के भाइयों को एवं
यूसफ के साथ भोजन करनेवाले मिस्र निवासियों
को भी अलग-अलग भोजन परोसा गया।
मिस्र के निवासी इब्रानियों के साथ भोजन नहीं
करते; क्योंकि उनके लिए यह घृणास्पद कार्य
माना जाता है। 33यूसुफ के भाई उसके सम्मुख
अपनी आयु के क्रम से बैठाए गए। पहले ज्येष्ठ
पुत्र और सबसे अन्त में सबसे छोटा पुत्र। वे
अचरज में डूबे एक-दूसरे को देखने लगे।
34यूसुफ अपने सम्मुख से व्यंजन उठाकर
उनके पास भेजता था। बिन्यामिन के व्यंजन की
मात्रा अन्य भाइयों की अपेक्षा पांच गुना अधिक
थी। यूसुफ के भाइयों ने खाया-पिया और
उसके साथ आनन्द मनाया।

चांदी का चषक*

44 यूसुफ ने अपने गृह-प्रबन्धक को
आदेश दिया, 'इन लोगों के बोरों में
इतनी भोजन-सामग्री भर दो जितनी वे ले जा
सकते हैं। प्रत्येक व्यक्ति के रुपए भी उसके
बोरे के मुंह में रख दो। 2मेरा चांदी का चषक
सबसे छोटे भाई के बोरे के मुंह में उसके अन्न
के रुपयों के साथ रख दो।' जैसा यूसुफ ने गृह-
प्रबन्धक से कहा था, उसने वैसा ही किया।
3जब प्रातः प्रकाश हुआ तब वे अपने गधों के
साथ भेज दिए गए। 4वे नगर से अधिक दूर नहीं
गए थे कि यूसुफ ने अपने गृह-प्रबन्धक से
कहा, 'जाओ, उन लोगों का पीछा करो। जब
तुम उनके निकट पहुँचो, तब उनसे कहना,
"क्यों तुम लोगों ने भलाई के बदले बुराई की?
क्यों तुमने मेरे स्वामी का चांदी का चषक
चुराया?** 5मेरे स्वामी इस चषक में जल पीकर
शकुन विचारते हैं। जो तुमने किया, वह बुरा
कार्य है।" '

6 गृह-प्रबन्धक ने उनका पीछा करके उन्हें
पकड़ लिया। उसने यूसुफ के भाइयों से वे ही
बातें कहीं। 7वे गृह-प्रबन्धक से बोले, 'स्वामी,
क्यों आप ऐसी बातें कह रहे हैं? आपके सेवकों
से ऐसा काम दूर ही रहे। 8देखिए, जो रुपया हमें
अपने बोरों के मुंह में रखा हुआ मिला था, उसे
हम कनान देश से आपके पास वापस लाए थे।
तब क्यों हम आपके स्वामी के महल से सोने-
चांदी की चोरी करते? 9आपके सेवकों में से
जिस किसी के पास चषक पाया जाए, उसे मृत्यु
दण्ड मिले। हम भी स्वामी के गुलाम बन
जाएँगे।' 10गृह-प्रबन्धक ने कहा, 'तो अब
तुम्हारे कथन के अनुसार हो। परन्तु वही व्यक्ति
मेरा गुलाम बनेगा, जिसके पास चषक पाया
जाएगा। शेष व्यक्ति निर्दोष माने जाएंगे।'
11प्रत्येक व्यक्ति ने शीघ्रता से अपना बोरा भूमि
पर उतारा और उसको खोला। 12गृह-प्रबन्धक
ने ज्येष्ठ भाई के बोरे से आरम्भ करके सबसे
छोटे भाई के बोरे में ढूंढ़ा। चषक बिन्यामिन के
बोरे में मिला। 13भाइयों ने अपने वस्त्र फाड़कर
शोक प्रकट किया। वे गधों पर बोरे लादकर
नगर की ओर लौटे।

14 यहूदा और उसके भाई यूसुफ के महल
में आए। यूसुफ वहीं था। वे उसके सम्मुख
भूमि पर गिरे। 15यूसुफ उनसे बोला, 'तुमने यह
कैसा कार्य किया? क्या तुम नहीं जानते कि मुझ
जैसा व्यक्ति निश्चय ही शकुन विचार सकता
है?' 16यहूदा ने कहा, 'हम अपने स्वामी से
क्या कह सकते हैं? हम क्या बोलें? हम कैसे
अपने को निर्दोष सिद्ध करें? परमेश्वर ने
आपके सेवकों के दुष्कर्म का पता लगा लिया
है। अब हम और वह, जिसके पास चषक पाया
गया, आपके गुलाम हैं।' 17यूसुफ ने कहा,
'ऐसा कार्य मुझसे दूर ही रहे। जिस व्यक्ति के
अधिकार में चषक पाया गया है, वही मेरा
गुलाम बनेगा। तुम लोग सकुशल अपने पिता
के पास चले जाओ।'

* अर्थात् 'प्याला' ** यह वाक्य यूनानी अनुवाद तथा प्रामाणिक संस्करणों में पाया जाता है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बिन्यामिन के लिए निवेदन

18 तब यहूदा, यूसुफ के निकट आया। उसने कहा, 'हे मेरे स्वामी, कृपया अपने सेवक को अनुमति दीजिए कि वह आपसे कुछ कह सके। आपके सेवक पर आपका क्रोध न भड़के; क्योंकि आप स्वयं फरओ के सदृश हैं। 19मेरे स्वामी, आपने अपने सेवक से पूछा था, "क्या तुम्हारे पिता तथा अन्य भाई हैं?" 20हमने अपने स्वामी को उत्तर दिया था, "हमारे वृद्ध पिता हैं और उनकी वृद्धावस्था में उत्पन्न एक छोटा भाई है। उसके सगे भाई की मृत्यु हो चुकी है। वह अपनी मां के बच्चों में अकेला बचा है। हमारे पिता उससे विशेष प्रेम करते हैं।" 21तब आपने हमें अपने सेवकों को, आदेश दिया था, "उसे मेरे पास लाओ जिससे मैं अपनी आंखों से उसे देखूं।" 22हम अपने स्वामी से बोले थे, "वह लड़का अपने पिता को नहीं छोड़ सकता। यदि वह अपने पिता को छोड़ेगा तो उसके पिता मर जाएंगे।" 23तब आपने हमें, अपने सेवकों को चेतावनी दी थी, "जब तक तुम्हारे साथ तुम्हारा छोटा भाई नहीं आएगा, तुम मेरे दर्शन नहीं कर सकते।" 24हम अपने पिता, आपके सेवक, के पास गए, और उनको आपकी बातें बताईं। 25जब हमारे पिता ने कहा, "मिस्र देश फिर जाओ, और हमारे लिए कुछ भोजन-सामग्री खरीद लाओ," 26तब हमने कहा, "हम नहीं जा सकते। यदि हमारा छोटा भाई हमारे साथ जाएगा तो हम जाएंगे; क्योंकि जब तक हमारा छोटा भाई हमारे साथ न होगा हम मिस्र देश के स्वामी के दर्शन नहीं कर सकते।" 27हमारे पिता, आपके सेवक, ने हमसे कहा, "तुम तो जानते हो राहेल* ने मुझसे दो पुत्रों को जन्म दिया था। 28एक पुत्र मुझे छोड़कर चला गया। निस्सन्देह वह टुकड़े-टुकड़े कर दिया गया। तब से मैंने उसे कभी नहीं देखा। 29यदि तुम इसको भी मेरे पास से ले जाओ और इस पर कोई विपत्ति आ पड़े, तो तुम लोग मुझ वृद्ध को शोक-सन्तप्त दशा में ही अधोलोक पहुँचा दोगे।" 30-31अब, यदि मैं अपने पिता, आपके सेवक, के पास जाऊँ और लड़का हमारे साथ नहीं हो, और वह देखें कि लड़का हमारे साथ नहीं है, तो वह मर जाएंगे; क्योंकि उनके प्राण तो लड़के में अटके हैं। अतः हम अपने वृद्ध पिता को शोक-सन्तप्त दशा में ही अधोलोक पहुँचा देंगे। 32आपके सेवक, मैंने, अपने पिता से लड़के की सुरक्षा का दायित्व यह कहकर लिया है, "यदि मैं उसे आपके पास वापस नहीं लाता तो मैं आपके प्रति आजीवन अपराधी बना रहूंगा।" 33इसलिए अब कृपया अनुमति दीजिए कि इस लड़के के स्थान पर आपका यह सेवक अपने स्वामी का गुलाम बन कर रहे और लड़का अपने भाइयों के साथ लौट जाए। 34यदि लड़का मेरे साथ नहीं हो तो मैं अपने पिता के पास कैसे लौट सकता हूं? मैं नहीं चाहता कि मुझे अपने पिता के साथ घटनेवाली सम्भावित दुर्घटना को देखना पड़े।'

यूसुफ का स्वयं को अपने भाइयों पर प्रकट करना

45 यूसुफ अपने पास खड़े लोगों के सम्मुख स्वयं को रोक न सका। वह चिल्लाया, 'मेरे पास से सब लोगों को बाहर करो।' जब यूसुफ ने स्वयं को अपने भाइयों पर प्रकट किया तब उसके साथ कोई न था। 2वह उच्च स्वर में रो पड़ा। मिस्र-निवासियों ने उसके रोने की आवाज सुनी। फरओ के राजमहल में भी इसका समाचार पहुँचा। 3यूसुफ ने अपने भाइयों से कहा, 'मैं यूसुफ हूं। क्या अब तक मेरे पिता जीवित हैं?' उसके भाई उसे उत्तर न दे सके; क्योंकि वे उसके सामने घबरा गए थे।

4 यूसुफ ने अपने भाइयों से कहा, 'कृपया मेरे निकट आओ।' वे निकट आए। उसने कहा, 'मैं तुम्हारा भाई यूसुफ हूं, जिसे तुमने मिस्र देश आने वाले व्यापारियों को बेच दिया था। 5अब दुःखित न हो। अपने आप पर क्रोध भी न करो कि तुमने मुझे बेचा था। पर परमेश्वर

* मूल में, 'मेरी पत्नी'।

45 : 3 प्रे 7 :13 45 :5 उत 50 : 20; भज 105 : 17

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
ने जीवन बचाने के लिए तुमसे पहले मुझे यहाँ
भेजा है। 6पिछले दो वर्ष से इस देश में अकाल
पड़ रहा है। अभी पांच वर्ष और शेष हैं। उस
अवधि में न हल चलेगा और न फसल काटी
जाएगी। 7परमेश्वर ने तुमसे पहले मुझे भेजा
कि तुम्हारे वंश की पृथ्वी पर रक्षा की जाए,
तुम्हारी अनेक सन्तान के प्राण बचाए जाएं।
8इसलिए तुमने नहीं, वरन् परमेश्वर ने मुझे यहाँ
भेजा है। उसी ने मुझे फरओ का प्रधान मन्त्री*,
उसके महल का स्वामी और समस्त मिस्र देश
का शासक नियुक्त किया है। 9शीघ्रता करो,
और मेरे पिता के पास जाकर उनसे कहो,
''आपका पुत्र यूसुफ यह कहता है: परमेश्वर
ने समस्त मिस्र देश का स्वामी मुझे नियुक्त
किया है। अत: मत रुकिए वरन् मेरे पास आ
जाइए। 10आप गोशेन प्रदेश में निवास करेंगे।
आप, आपके पुत्र-पौत्रादि, आपकी भेड़-
बकरी, गाय-बैल, एवं आपके पास जो कुछ है,
मेरे निकट ही रहेंगे। 11वहाँ मैं आपके लिए
भोजन-सामग्री की व्यवस्था करूंगा; क्योंकि
अभी अकाल के पांच वर्ष शेष हैं। ऐसा न हो
कि आप, आपके परिवार एवं आपके साथ के
लोगों को अभाव हो।'' 12देखो, तुम्हारी आंखें,
मेरे भाई बिन्यामिन की आंखें, देख रही हैं कि
तुमसे वार्तालाप करने वाला मैं यूसुफ हूं। 13तुम
मेरे पिता से, मिस्र देश में मेरे समस्त प्रताप का,
और जो कुछ तुमने देखा है, उन सबका वर्णन
अवश्य करना। अब शीघ्रता करो और मेरे पिता
को यहाँ ले आओ।' 14तब यूसुफ अपने भाई
बिन्यामिन के गले लग कर रोने लगा। वह भी
उसके गले लग कर रोया। 15उसने अपने सब
भाइयों का चुम्बन किया और उनके गले लग
कर रोया। तत्पश्चात् यूसुफ के भाइयों ने उससे
बातचीत की।

16 जब फरओ के राजभवन में यह समाचार
पहुँचा कि यूसुफ के भाई आए हैं, तब वह और
उसके कर्मचारी आनन्दित हुए। 17फरओ ने
यूसुफ से कहा, 'तुम अपने भाइयों से कहो कि
वे यह कार्य करें: वे अपने पशुओं पर अन्न लाद
कर कनान देश को लौटें। 18वहाँ से वे अपने
पिता और अपने समस्त परिवार को लेकर
तुम्हारे पास आएं। मैं उनको मिस्र देश की
सर्वोत्तम वस्तुएँ दूंगा। वे मिस्र देश के राजसी
व्यंजन खाएँगे। 19उनको आदेश दो कि वे
छोटे-छोटे बच्चों और स्त्रियों के लिए मिस्र देश
से गाड़ियाँ ले जाएँ और अपने पिता को लेकर
आएं। 20वे अपने सामान की चिन्ता न करें,
क्योंकि समस्त मिस्र देश की सर्वोत्तम वस्तुएँ
उनकी ही हैं।'

21 याकूब के पुत्रों ने ऐसा ही किया। यूसुफ
ने उन्हें फरओ के आदेशानुसार गाड़ियां दीं,
मार्ग के लिए भोजन-सामग्री दी। 22यूसुफ ने
प्रत्येक भाई को एक-एक जोड़ा राजसी वस्त्र
दिए, पर बिन्यामिन को चांदी के तीन सौ
सिक्के के साथ पांच जोड़े राजसी वस्त्र दिए।
23उसने अपने पिता को ये वस्तुएँ भेजीं : दस
गधों पर लदी मिस्र देश की सर्वोत्तम वस्तुएँ,
दस गदहियों पर लदा अन्न तथा रोटियाँ, और
पिता के यात्रा-मार्ग के लिए भोजन-सामग्री।
24तत्पश्चात् उसने अपने भाइयों को भेज दिया।
जब वे प्रस्थान करने लगे, यूसुफ ने उनसे कहा,
'मार्ग में लड़ाई-झगड़ा मत करना।'

25 वे मिस्र देश से चले गए। वे अपने पिता
याकूब के पास कनान देश में आए। 26उन्होंने
अपने पिता को बताया, 'यूसुफ अभी तक जीवित
है। वह समस्त मिस्र देश का शासक है।'
याकूब का हृदय सुन्न पड़ गया, क्योंकि उन्होंने
उनकी बातों पर विश्वास नहीं किया। 27परन्तु
जब यूसुफ के भाइयों ने वे सब बातें, जो यूसुफ
ने उनसे कही थीं, अपने पिता याकूब को बताईं,
जब उन्होंने स्वयं उन गाड़ियों को देखा जिन्हें
यूसुफ ने उन को लाने के लिए भेजा था, तब
उनकी आत्मा को नवस्फूर्ति प्राप्त हुई। 28याकूब
+ ने कहा, 'बस, इतना ही पर्याप्त है कि मेरा
पुत्र यूसुफ अब तक जीवित है। मैं जाऊँगा। मैं
अपनी मृत्यु के पूर्व उसे देखूंगा।'

* शब्दश: 'पिता', प्रधानमंत्री की पदवी। + मूल में, 'इस्राएल'

45 :10 नि 8 : 22; प्रे 7 :14

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

याकूब का सपरिवार मिस्र देश की यात्रा

46 याकूब+ ने अपनी समस्त सम्पत्ति के साथ प्रस्थान किया। वह बएर-शबा पहुँचे। वहाँ उन्होंने अपने पिता इसहाक के परमेश्वर को अनेक प्रकार की बलि चढ़ाई। 2परमेश्वर ने रात को दर्शन में याकूब से कहा, 'याकूब! याकूब!' वह बोले, 'क्या आज्ञा है?' 3परमेश्वर ने कहा, 'मैं परमेश्वर हूँ: तेरे पिता का परमेश्वर हूँ। तू मिस्र देश जाने से मत डर; क्योंकि मैं वहाँ तुझसे एक महान राष्ट्र का उद्भव करूंगा। 4मैं तेरे साथ मिस्र देश जाऊँगा और वहाँ से तुझे पुन: वापस लाऊंगा। तेरी मृत्यु पर यूसुफ ही तेरी आँखें बन्द करेगा।*' 5याकूब ने बएर-शबा से प्रस्थान किया। जो गाड़ियाँ फरओ ने याकूब को लाने के लिए भेजी थीं, उनमें याकूब + के पुत्रों ने अपने पिता, छोटे-छोटे बच्चों और अपनी स्त्रियों को बैठाया और उन्हें ले गए। 6याकूब और उनके साथ जो सन्तति थी, वे सब अपने पशुओं तथा कनान देश में अर्जित सम्पत्ति को लेकर मिस्र देश में आए। 7याकूब अपने पुत्र-पौत्रों एवं पुत्री-पौत्रियों अर्थात् अपनी समस्त सन्तति को अपने साथ मिस्र देश में लाए।

8 इस्राएल अर्थात् याकूब के पुत्रों के नाम जो मिस्र देश में आए थे, ये हैं: याकूब का ज्येष्ठ पुत्र रूबेन; 9रूबेन के पुत्र: हनोक, पल्लू, हेस्रोन और कर्मी। 10शिमोन के पुत्र : यमूएल, यामीन, ओहद, याकीन, सोहर और कनानी स्त्री से उत्पन्न शाऊल। 11लेवी के पुत्र : गेर्शोन, कहात, और मरारी। 12यहूदा के पुत्र: एर, ओनन, शेला, पेरेस और जेरह। एर और ओनन की मृत्यु कनान देश में हो गई थी। पेरेस के पुत्र हेस्रोन और हामूल थे। 13इस्साकार के पुत्र : तोला, पूव्वा, याशूब++ और शिम्रोन। 14जबूलून के पुत्र : सेरद, एलोन और यहलएल। 15ये लिआ के पुत्र थे जिन्हें उसने याकूब से पद्दन-अराम क्षेत्र में जन्म दिया था। उसकी पुत्री दीना भी थी। ये सब पुत्र-पौत्र आदि मिलकर तैंतीस प्राणी थे।

16 गाद के पुत्र : सिप्योन, हग्गी, शूनी, एस्बोन, एरी, अरोदी और अर्एली। 17आशेर के पुत्र : यिम्ना, यिश्वा, यिश्वी, बरीआ थे। उनकी बहिन सेरह थी। बरीआ के पुत्र : हेबर और मल्कीएल थे। 18ये सेविका जिल्पा के, जिसे लाबान ने अपनी पुत्री लिआ को दिया था, पुत्र-पौत्र आदि थे। उसके द्वारा ये सोलह प्राणी याकूब को उत्पन्न हुए।

19 याकूब की पत्नी राहेल के पुत्र यूसुफ और बिन्यामिन थे। 20यूसुफ को मिस्र देश में मनश्शे और एफ्रइम नामक पुत्र उत्पन्न हुए थे। उन्हें ओन नगर के पुरोहित पोटीफेरा की पुत्री आसनत ने जन्म दिया था। 21बिन्यामिन के पुत्र : बेला, बेकर, अश्बेल, गेरा, नामन, एही, रोश, मूप्पीम, हूप्पीम और आर्द। 22ये सब चौदह प्राणी राहेल के द्वारा याकूब को उत्पन्न हुए।

23 दान का पुत्र हूशीम था। 24नफ्ताली के पुत्र : यहसएल, गूनी, येसर और शिल्लेम। 25ये सेविका बिल्हा के, जिसे लाबान ने अपनी पुत्री राहेल को दिया था, पुत्र-पौत्र आदि थे। उसके द्वारा ये सात प्राणी याकूब को उत्पन्न हुए। 26याकूब के वंश के समस्त प्राणी, जो उनके साथ मिस्र देश में आए थे, याकूब की बहुओं को छोड़कर, कुल छियासठ व्यक्ति थे। 27यूसुफ के पुत्र, जो उसको मिस्र देश में उत्पन्न हुए थे, दो थे। इस प्रकार याकूब के परिवार के समस्त प्राणी, जो मिस्र देश में आए, कुल सत्तर थे।

याकूब का सपरिवार मिस्र में आगमन

28 याकूब+ ने अपने आगे यहूदा को यूसुफ के पास भेजा कि वह उनसे मिलने को गोशेन प्रदेश में आए**। तत्पश्चात् उन्होंने गोशेन प्रदेश में प्रवेश किया। 29यूसुफ ने अपना रथ जुतवाया, और वह अपने पिता याकूब+ से भेंट

+ मूल में, 'इस्राएल' * शब्दश: 'यूसुफ अपने हाथ तेरी आँखों पर रखेगा।' ++ मूल में, 'योब'।
** पाठांतर, 'गोशेन प्रदेश का मार्ग दिखाए'

46 : 5 प्रे 7 : 15 **46 : 8** नि 1: 1-4; गण 26 : 5 **46 : 20** उन 41 : 50 **46 : 26** नि 1 : 5 **46 : 27** व्य 10 : 22 ; प्रे 7 : 14

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

करने को गोशेन प्रदेश गया। वह उनके सम्मुख गया। वह उनके गले लगकर देर तक रोता रहा। [30]याकूब+ ने यूसुफ से कहा, 'अब मैं मर सकूंगा, क्योंकि मैंने तेरा मुख देख लिया कि तू अब तक जीवित है।' [31]यूसुफ अपने भाइयों और पिता के परिवार के सदस्यों से बोला, 'अब मैं जाकर फरओ से कहूंगा, ''मेरे भाई और मेरे पिता का परिवार जो कनान देश में थे, मेरे पास आए हैं। [32]ये लोग चरवाहे हैं, क्योंकि ये बहुत समय से पशु-पालन करते आए हैं। वे अपने साथ भेड़-बकरी, गाय-बैल तथा अपनी समस्त सम्पत्ति लाए हैं।'' [33]जब फरओ आपको बुलाए और आपसे पूछे, ''तुम्हारा व्यवसाय क्या है?'', [34]तब आप कहना, ''आपके सेवक, हम, और हमारे पूर्वज बचपन से अब तक पशु पालते आए हैं'' जिससे आप गोशेन प्रदेश में रह सकें। मिस्र निवासी चरवाहों से घृणा करते हैं!'

47 यूसुफ ने जाकर फरओ को बताया, 'मेरे पिता और भाई अपनी भेड़-बकरी, गाय-बैल, तथा समस्त सम्पत्ति के साथ कनान देश से आए हैं। वे अभी गोशेन प्रदेश में हैं।' [2]यूसुफ ने अपने भाइयों में से पांच व्यक्ति चुनकर उन्हें फरओ के सम्मुख प्रस्तुत किया। [3]फरओ ने यूसुफ के भाइयों से पूछा, 'तुम्हारा व्यवसाय क्या है?' उन्होंने फरओ को उत्तर दिया, 'हम, आपके सेवक, अपने पूर्वजों के समान चरवाहे हैं।' [4]उन्होंने फरओ से यह भी कहा, 'हम मिस्र देश में प्रवास करने के लिए आए हैं। कनान देश में भयंकर अकाल पड़ा है। इसलिए आपके सेवकों को भेड़-बकरी के लिए चारा नहीं रहा। अब कृपया अपने सेवकों को गोशेन प्रदेश में रहने की अनुमति दीजिए।' [5]फरओ ने यूसुफ से कहा, 'तुम्हारे पिता और भाई तुम्हारे पास आए हैं। [6]मिस्र देश तुम्हारे सम्मुख है। अपने पिता और भाइयों को मिस्र देश की सर्वोत्तम भूमि पर बसाओ। उन्हें गोशेन प्रदेश में रहने दो। यदि तुम जानते हो कि उनमें परिश्रमी पुरुष हैं तो उन्हें मेरे पशुओं के अधिकारी नियुक्त कर दो।'

7 यूसुफ अपने पिता याकूब के पास आया। उसने उन्हें फरओ के सम्मुख उपस्थित किया। याकूब ने फरओ को आशीर्वाद दिया। [8]फरओ ने याकूब से पूछा: 'आपकी उम्र कितने वर्ष की है?' [9]याकूब ने फरओ को उत्तर दिया, 'मेरे प्रवास की अवधि कुल एक सौ तीस वर्ष हुई है। मेरे जीवन के दिन थोड़े हैं और वे बुरे बीते हैं। अभी मैंने अपने जीवन के उतने दिन व्यतीत नहीं किए हैं जितने मेरे पूर्वजों ने अपने प्रवास काल में बिताए थे।' [10]याकूब फरओ को आशीर्वाद देकर उसके सम्मुख से बाहर चले गए। [11]यूसुफ ने अपने पिता और भाइयों को बसा दिया। उसने फरओ की आज्ञा के अनुसार उन्हें मिस्र देश में, उसके सर्वोत्तम भूमिक्षेत्र अर्थात् रामसेस प्रदेश में खेती करने का अधिकार प्रदान किया। [12]उसने अपने पिता और भाइयों और अपने पिता के समस्त परिवार के लोगों की संख्या अनुसार भोजन-व्यवस्था कर दी।

अकाल की अवधि में यूसुफ का प्रबन्ध

13 समस्त पृथ्वी पर भोजन-सामग्री उपलब्ध न थी; क्योंकि अकाल अत्यन्त भयंकर था। मिस्र और कनान देश अकाल के कारण त्रस्त थे। [14]जो मुद्रा मिस्र और कनान देश में लेन-देन में उपलब्ध थी, और जिससे लोग अनाज खरीदते थे, उसे यूसुफ ने संग्रह करके फरओ के कोष में जमा कर दिया। [15]जब मिस्र और कनान देश में मुद्रा समाप्त हो गई तब मिस्र के निवासी यूसुफ के पास आए। उन्होंने कहा, 'हमें रोटी दीजिए। क्यों हम आपके रहते मरें? हमारा रुपया-पैसा समाप्त हो गया है।' [16]यूसुफ बोला, 'तो अपने पशु लाओ। यदि तुम्हारा रुपया-पैसा समाप्त हो गया है तो मैं तुम्हें तुम्हारे पशुओं के बदले में अनाज दूंगा।' [17]अत: वे यूसुफ के पास अपने पशु ले आए। यूसुफ ने घोड़ों, भेड़-बकरियों, गाय-बैलों और गधों के बदले में उनको अनाज दिया। यूसुफ ने उस वर्ष उनके समस्त पशुओं के बदले में उनकी भोजन-व्यवस्था की। [18]वह वर्ष

+ मूल में, 'इस्राएल' 47:11 नि 1 : 11

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

व्यतीत हुआ। लोग दूसरे वर्ष यूसुफ के पास
पुन: आए। वे उससे बोले, 'हम अपने स्वामी
से यह बात नहीं छिपाएंगे कि हमारा रुपया-
पैसा समाप्त हो गया है। हमारे पशु भी स्वामी
के हो गए। अब स्वामी की दृष्टि में हमारी देह
और भूमि के अतिरिक्त हमारे पास और कुछ
भी शेष नहीं रहा। 19हम और हमारे खेत आपके
रहते क्यों नष्ट हों ? आप अनाज देकर हमें और
हमारे खेतों को खरीद लीजिए। तब हम और
हमारे खेत फरओ के गुलाम हो जाएंगे। हमें
बीज दीजिए जिससे हम नष्ट न हों वरन् जीवित
रहें। हमारे खेत न उजड़ें।'

20 अत: यूसुफ ने फरओ के लिए मिस्र देश
के सब खेत खरीद लिये। प्रत्येक मिस्र निवासी
ने अपना खेत बेच दिया; क्योंकि अकाल ने
उन्हें भयंकर रूप से प्रभावित किया था। भूमि
पर फरओ का अधिकार हो गया। 21यूसुफ ने
मिस्र देश के एक सीमान्त से दूसरे सीमान्त तक
लोगों को हटाकर नगरों में बसा दिया।+
22उसने केवल पुरोहितों के खेत नहीं खरीदे।
फरओ की ओर से पुरोहितों को अन्न मिलता
था। जो भत्ता फरओ उन्हें देता था, उसी से वे
अपनी जीविका चलाते थे। अतएव उन्होंने
अपने खेत नहीं बेचे।

23 यूसुफ ने लोगों से कहा, 'देखो, आज
मैंने तुम्हें और तुम्हारे खेतों को फरओ के लिए
खरीदा है। यह बीज तुम्हारे लिए है। तुम खेतों
में इसे बोओ। 24तुम फसल की कटाई के समय
उपज का पांचवां अंश फरओ को दोगे। शेष
चार अंश तुम्हारे होंगे। अर्थात् प्रत्येक अंश खेत
के बीज के लिए, तुम्हारे एवं परिवार के सदस्यों
के लिए तथा छोटे बच्चों के आहार के लिए
होगा।' 25वे बोले, 'आपने हमारी जीवन-रक्षा
की है। यदि हमारे स्वामी हम पर कृपा
दृष्टि बनाए रखें, तो हम फरओ के गुलाम बने
रहेंगे।'

26 यूसुफ ने मिस्र देश की भूमि से
सम्बन्धित नियम बनाया कि फरओ उपज का
पांचवां अंश लेगा। यह नियम आज तक
प्रचलित है। केवल पुरोहितों के खेतों पर
फरओ का अधिकार नहीं हुआ।

याकूब की अन्तिम इच्छा

27 इस्राएली समाज* मिस्र देश के गोशेन
प्रदेश में रहने लगा। उन्होंने उस पर अधिकार
कर लिया। वे फले-फूले और असंख्य हो गए।
28याकूब सत्रह वर्ष तक मिस्र देश में जीवित
रहे। इस प्रकार उनकी पूर्ण आयु एक सौ
सैंतालीस वर्ष की हुई। 29याकूब* की मृत्यु का
दिन निकट आया तब उन्होंने अपने पुत्र यूसुफ
को बुलाकर उससे कहा, 'यदि तू मेरा आदर-
सम्मान करता है तो मेरी जांघ के नीचे हाथ
रखकर शपथ खा कि तू मेरे साथ प्रेमपूर्ण और
सत्यनिष्ठ व्यवहार करेगा। मुझे मिस्र देश में मत
गाड़ना। 30वरन् जब मैं अपने मृत पूर्वजों के
साथ सोऊं तब मुझे मिस्र देश से ले जाना और
मेरे पूर्वजों के कब्रिस्तान में गाड़ना।' यूसुफ ने
उत्तर दिया, 'मैं आपके वचन के अनुसार
करूँगा।' 31पर याकूब ने कहा, 'मुझसे शपथ
खा।' यूसुफ ने उनसे शपथ खाई। याकूब ने
पलंग के सिरहाने पर अपना सिर झुकाकर
वन्दना की।

मनश्शे और एफ्रइम को आशीर्वाद

48 इन बातों के पश्चात् किसी ने यूसुफ से
कहा, 'आपके पिता बीमार हैं।' अतएव
वह अपने दोनों पुत्रों, मनश्शे और एफ्रइम को
लेकर गया। 2किसी ने याकूब को बताया,
'आपका पुत्र यूसुफ आपके पास आया है।'
याकूब न अपनी शक्ति संचित की और वह *
उठकर पलंग पर बैठ गए। 3याकूब ने यूसुफ
से कहा, 'सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने मुझे
कनान देश के लूज नगर में दर्शन दिए थे। उसने
मुझे यह आशिष दी थी, 4"देख, मैं तुझे फलवन्त
करूँगा। मैं तुझे असंख्य बनाऊँगा। मैं तुझे
अनेक जातियों का समुदाय बनाऊँगा। मैं तेरे
पश्चात् तेरे वंश के अधिकार में यह देश सदा-
सर्वदा के लिए सौंप दूंगा।" 5अब तेरे दोनों

+ पाठांतर, 'लोगों को गुलाम बना लिया' * मूल में, 'इस्राएल'

47 : 29-30 उत 49 : 29-32; 50 : 6 **47 : 31** 1 रा 1 : 47; इब्र 11 : 21 **48 : 3** उत 28 : 13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पुत्र, जो मिस्र देश में मेरे आगमन के पूर्व तुझे
उत्पन्न हुए थे, वे मेरे हैं। जैसे रूबेन और शिमोन
हैं वैसे मनश्शे और एफ्रइम मेरे हैं। 6जो पुत्र
इनके पश्चात् तुझे उत्पन्न होंगे, वे तेरे ही
कहलाएँगे। किन्तु वे उत्तराधिकार में अपने
भाइयों के वंश-नाम से सम्बोधित किए जाएंगे।
7जब मैं पद्दन से आ रहा था, एप्राता नगर अभी
कुछ दूर था, तब कनान देश में मेरे सम्मख ही
राहेल का मार्ग में देहावसान हो गया। मैंने उसे
वहीं एप्राता नगर (अर्थात् बेतलेहम) के मार्ग
में गाड़ दिया।'

8 जब इस्राएल, अर्थात् याकूब ने यूसुफ के
पुत्रों को देखा तब पूछा, 'ये कौन हैं?' 9यूसुफ
ने अपने पिता को उत्तर दिया, 'ये मेरे पुत्र हैं,
जो परमेश्वर ने मुझे इस देश में दिए हैं।' उन्होंने
कहा, 'इन्हें मेरे पास ला कि मैं आशीर्वाद दूं।'
10इस्राएल की आँखें वृद्धावस्था के कारण
धुंधली हो गई थीं। अत: वह नहीं देख सकते
थे। यूसुफ अपने पुत्रों को उनके निकट लाया।
इस्राएल ने उनका चुम्बन लिया और उन्हें गले
लगाया। 11उन्होंने यूसुफ से कहा, 'मैंने सोचा
न था कि फिर कभी तेरा मुख देखूंगा। पर देख,
परमेश्वर ने मुझे तेरे बच्चों को भी दिखाया।'
12यूसुफ ने उन्हें अपने पिता के घुटनों के बीच
में से हटाया और भूमि की ओर सिर झुकाकर
अभिवादन किया। 13तत्पश्चात् यूसुफ उन दोनों
को लेकर पिता के निकट आया। एफ्रइम
उसकी दाहिनी ओर परन्तु इस्राएल के बायें
हाथ पर, और मनश्शे उसकी बायीं ओर परन्तु
इस्राएल के दाहिने हाथ पर था। 14इस्राएल ने
अपना दाहिना हाथ बढ़ाकर उसे एफ्रइम के
सिर पर रखा। एफ्रइम कनिष्ठ पुत्र था। उन्होंने
अपना बायां हाथ आड़ा करके मनश्शे के सिर
पर रखा। मनश्शे ज्येष्ठ पत्र था। 15तदुपरान्त उन्होंने
उनको* आशीर्वाद दिया:

'परमेश्वर, जिसकी उपस्थिति में रहकर
मेरे पूर्वज अब्राहम और इसहाक आचरण
करते थे,
परमेश्वर, जिसने दीर्घायु में आज तक मेरा
नेतृत्व किया,
16 मेरी समस्त बुराइयों से मुझे मुक्त करने वाला
दूत,
इन बच्चों को आशिष दे।
इनके माध्यम से मेरा और मेरे पूर्वजों,
अब्राहम और इसहाक का नाम चले,
ये महान बनें, और पृथ्वी पर असंख्य
हों।'

17 जब यूसुफ ने देखा कि उसके पिता ने
दाहिना हाथ एफ्रइम के सिर पर रखा है, तब
यह बात उसे अपनी दृष्टि में बुरी लगी। अतएव
उसने अपने पिता का हाथ पकड़ा कि उसे
एफ्रइम के सिर से हटाकर मनश्शे के सिर पर
रखे। 18उसने अपने पिता से कहा, 'पिताजी,
ऐसा मत कीजिए। देखिए, यह है ज्येष्ठ पुत्र!
उसके सिर पर अपना दाहिना हाथ रखिए।'
19परन्तु उसके पिता ने उसकी बात अस्वीकार
कर दी। उन्होंने कहा, 'मैं जानता हूं, मेरे पुत्र,
मैं जानता हूं। मनश्शे भी एक राष्ट्र बनेगा। वह
भी महान बनेगा। फिर भी उसका छोटा भाई
उससे अधिक महान होगा। उसके वंशजों से
अनेक राष्ट्रों का उद्‍भव होगा।' 20उसके पिता
ने उस दिन बच्चों को यह आशीर्वाद दिया:

'तुम्हारे नाम से इस्राएली लोग आशीर्वाद
देंगे कि
"परमेश्वर तुम्हें एफ्रइम और मनश्शे के
समान बनाए।"'

इस प्रकार उन्होंने मनश्शे के आगे एफ्रइम को
रखा।

21 तत्पश्चात् इस्राएल ने यूसुफ से कहा,
'देख, मेरी मृत्यु निकट है। परन्तु परमेश्वर तुम
लोगों के साथ रहेगा और तुमको तुम्हारे पूर्वजों
के देश में वापस ले जाएगा। 22इसके अतिरिक्त
मैंने तेरे भाइयों की अपेक्षा तुझे एक ढलुआ
पहाड़ी क्षेत्र+ प्रदान किया है, जिसे मैंने अम्मोरी
जाति के अधिकार से अपनी तलवार और धनुष
के बल से छीना है।'

---

* मूल में 'यूसुफ को' + मूल में, 'शकेम'।

48 : 7 उत 35 : 19 48 : 15 इब्र 11 : 21 48 : 19 व्य 33 : 17

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

याकूब की भविष्यवाणी

49 तब याकूब ने अपने पुत्रों को बुलाकर उनसे कहा, 'परस्पर एकत्र हो। मैं तुम्हें आगामी दिनों की बातें बताऊँगा जो तुम्हारे साथ घटेंगी।
2 'ओ याकूब के पुत्रो, एकत्र होकर मेरी बातें सुनो,
अपने पिता इस्राएल की बातों पर ध्यान दो।
3 'ओ रूबेन! तू मेरा ज्येष्ठ पुत्र,
मेरा बल और मेरे पौरुष का प्रथम फल है।
तू अहंकार का धनी,
और शक्ति में श्रेष्ठ है।
4तू जल के झाग के सदृश अस्थिर है।
तू श्रेष्ठ नहीं रहेगा।
क्योंकि तू अपने पिता की शय्या पर चढ़ा था,
तूने उसे अपवित्र किया था,
तू मेरे बिछौने पर चढ़ा था।
5 'शिमोन और लेवी भाई हैं।
हिंसा के शस्त्र ही उनकी तलवार हैं।
6ओ मेरे प्राण! उनकी गुप्त बैठक में भाग मत ले,
ओ मेरी आत्मा! उनकी सभा से सहयोग मत कर।
क्योंकि वे अपने क्रोध में मनुष्यों की हत्या करते हैं।
वे अपनी असंयमित इच्छा के कारण बैलों को लंगड़ा बनाते हैं।
7उनके क्रोध को धिक्कार है,
क्योंकि वह प्रचण्ड है।
उनके रोष को धिक्कार है,
क्योंकि वह निर्दय है।
मैं उन्हें याकूब के देश में विभाजित करूँगा;
उन्हें इस्राएल में तितर-बितर करूंगा।
8 'ओ यहूदा, तेरे भाई तेरी सराहना करेंगे;
तेरा हाथ तेरे शत्रुओं की गरदन पर सवार रहेगा,
तेरे पिता के पुत्र तेरे सम्मुख सिर झुकाएंगे।
9यहूदा सिंह का बच्चा है।
वह, मेरा पुत्र, शिकार पर लौट गया है;
वह सिंह जैसा, सिंहनी के सदृश झुककर बैठा है;
कौन उसको छेड़कर उठा सकता है?
10जब तक राजदण्ड का स्वामी न आए*
तब तक राजदण्ड यहूदा से दूर न होगा,
और न प्रशासक का दण्ड उसके पैरों के मध्य से अलग होगा।
समस्त जातियाँ उसकी आज्ञा का पालन करेंगी।
11वह जवान गधे को अंगूर लता से,
सर्वोत्तम लता से गधे के बच्चे को बांध कर
अंगूर के रस में अपने वस्त्र, अंगूर के रक्त में अपनी पोशाक धोता है।
12अंगूर के रस से अधिक उसकी आंखें लाल,
और दूध से अधिक उसके दांत सफेद होंगे।
13 'जबूलून समुद्र के तट पर निवास करेगा।
वह जलयानों के लिए बन्दरगाह बनेगा,
उसके राज्य की सीमा सीदोन देश तक होगी।
14 'इस्साकार एक बलवान गधा है;
जो भेड़शालाओं के मध्य लेटता है।
15 जब उसने देखा कि विश्रामस्थल अच्छा है,
देश मनोहर है,
तब उसने बोझ उठाने के लिए अपने कन्धे झुका दिए,
और बेगार करने को गुलाम बन गया।
16 'दान, इस्राएल के कुलों में एक कुल,
अपने कुल के लोगों का न्याय करेगा।
17वह मार्ग का सांप,
पथ का नाग होगा,
जो अश्वों की एड़ी को डंसता है,
और अश्वारोही पीछे गिर पड़ता है।
18 'हे प्रभु, मैं तेरे उद्धार की प्रतीक्षा करता हूं।

---

* अथवा, 'जब तक उसे राजकर न दिया जाए'; मूल में : 'जब तक शीलो न आए'।

49 व्य 33 49 : 9 गण 24 : 9; प्रक 5 : 5 49 : 10 गण 24 : 17; यश 11 : 1; यहेज 21 : 27; मत 21 : 2, 9
49 : 18 यश 25 : 9

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

19 'गाद पर आक्रमणकारी आक्रमण करेंगे,
पर वह पीछे से उन पर आक्रमण करेगा।
20 'आशेर का अन्न उत्तम होगा;
वह राजसी भोजन खिलाया करेगा।
21 'नफ्ताली स्वच्छन्द हरिण है,
वह मधुर भाषी है।*
22 'यूसुफ फलवन्त डाल है,
झरने के किनारे लगी फलवन्त डाल,
उसकी शाखाएँ दीवार पर फैली हैं।
23धनुर्धारी ने उस पर भयंकर आक्रमण
किया;
उस पर बाण छोड़े;
उसे अत्यधिक सताया।
24फिर भी उसका धनुष स्थिर रहा।
उसकी भुजाएँ, उसके हाथ गतिवान थे।
याकूब के सर्वशक्तिमान परमेश्वर के हाथ
से,
इस्राएल की चट्टान, मेषपाल के नाम से,
25तेरे पिता के परमेश्वर के द्वारा,
जो तेरी सहायता करेगा,
सर्वशक्तिमान परमेश्वर के द्वारा,
जो तुझे ऊपर आकाश की आशिषें
नीचे महासागर की आशिषें
स्तन और गर्भाशय की आशिषें देगा।
26तेरे पिता के आशीर्वाद,
चिरस्थायी पर्वतों के आशीर्वादों की अपेक्षा,
सनातन पहाड़ियों के वरदानों से अधिक
महान हो गए हैं।
वे यूसुफ के सिर पर ठहरें,
उसके ललाट पर ठहरें,
जो अपने भाइयों से बिछुड़ गया था।
27 'बिन्यामिन खूंखार भेड़िया है,
जो प्रातः शिकार को फाड़ता,
और सन्ध्या को लूट का माल बांटता है।'

याकूब की मृत्यु और अन्त्येष्टि

28 ये इस्राएल के बारह कुल हैं। ये ही
आशीर्वचन उनके पिता ने उच्चारे थे। उन्होंने
प्रत्येक कुल को उसके उपयुक्त आशीर्वाद
दिया था। 29तत्पश्चात् उन्होंने उनको यह
आज्ञा दी, 'मैं अपने मृत पूर्वजों में जाकर मिलने
वाला हूं। मुझे मेरे पूर्वजों की गुफा में, जो हित्ती
जातीय एप्रोन की भूमि में है, गाड़ना। 30मुझे
उस गुफा में गाड़ना जो कनान देश में ममरे की
पूर्व दिशा में मकपेला की भूमि में है, जिसे
अब्राहम ने निजी कब्रिस्तान बनाने के लिए
हित्ती जातीय एप्रोन से भूमि सहित खरीदा था।
31वहाँ उन्होंने अब्राहम और उनकी पत्नी सारा
को गाड़ा। वहाँ उन्होंने इसहाक और उनकी
पत्नी रिबका को गाड़ा। वहाँ मैंने लिआ को
गाड़ा। 32भूमि और उस पर स्थित गुफा हित्ती
जाति से खरीदी गई थी।' 33जब याकूब अपने
पुत्रों को आज्ञा दे चुके, उन्होंने पलंग पर अपने
पैर समेट लिये और अन्तिम सांस ली और यों
अपने मृत पूर्वजों में जाकर मिल गए।

50 यूसुफ अपने पिता के मुख पर गिर कर
रोने लगा। उसने पिता का चुम्बन
लिया। 2यूसुफ ने अपने कर्मचारियों, वैद्यों को
आदेश दिया कि वे उसके पिता के शव पर
मसाले का लेप लगाएँ। वैद्यों ने शव पर मसाले
का लेप लगाया। 3इस संलेपन-कार्य में चालीस
दिन लगे; क्योंकि शव पर मसाले का लेप
लगाने के लिए इतने ही दिन लगते हैं। मिस्र के
निवासियों ने याकूब के लिए सत्तर दिन तक
शोक मनाया।

4 जब शोक के दिन समाप्त हुए तब यूसुफ
ने फरओ के राजपरिवार से कहा, 'यदि आप
लोगों की कृपादृष्टि मुझ पर हो तो फरओ से यह
बात कहिए : 5"मेरे पिता ने मुझे इन शब्दों में
शपथ खिलाई थी : देख मेरी मृत्यु निकट है।
जो कबर मैंने कनान देश में अपने लिए खोदी
है, वहीं तू मुझे गाड़ना।" अब कृपया मुझे जाने
दीजिए कि मैं अपने पिता के शव को गाड़ दूं।
तत्पश्चात् मैं लौट आऊँगा।' 6फरओ ने उत्तर
दिया, 'जाओ, और तुम्हारे पिता ने जैसी शपथ
तुम्हें खिलाई थी, उसी के अनुसार अपने पिता
को गाड़ो।' 7अतः यूसुफ अपने पिता को गाड़ने

---

* अथवा, 'उसके हिरनौटे सुन्दर हैं'।

49 : 30 उत 23 :16 **49 : 31** उत 25 : 9; 35 : 29 **50 : 5** उत 47 : 29-31

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

के लिए गया। उसके साथ फरओ के कर्मचारी,
उसके राजपरिवार के मुखिया एवं मिस्र देश के
समस्त गण्यमान्य व्यक्ति, 8यूसुफ के परिवार
के लोग, उसके भाई और उसके पिता के
परिवार के लोग भी गए। किन्तु वे अपने बच्चों,
भेड़-बकरियों और गाय-बैलों को गोशेन
प्रदेश में छोड़ गए। 9यूसुफ के साथ रथ और
घुड़सवार भी गए। इस प्रकार शव-यात्रा में
विशाल जनसमूह हो गया। 10जब वे यर्दन नदी
के किनारे पर स्थित 'आटद का खलियान'
नामक स्थान पर पहुँचे, तब उन्होंने अत्यन्त
शोक मनाया। यूसुफ ने भी अपने पिता के लिए
सात दिन तक शोक किया। 11अब उस नगर के
रहने वाले कनानी लोगों ने आटद के खलियान
में लोगों को शोक मनाते देखा तब कहा, 'यह
मिस्र के निवासियों का अत्यन्त दु:खपूर्ण शोक
है।' इसी कारण उस स्थान का नाम आबेल
मिस्रीम* पड़ा। यह यर्दन नदी के उस पार है।
12जैसा याकूब ने उन्हें आदेश दिया था, वैसा
ही उनके पुत्रों ने किया। 13उनके पुत्र उनके शव
को कनान देश में लाए और उन्हें ममरे की पूर्व
दिशा में मकपेला की भूमि में स्थित उस गुफा
में गाड़ा, जिसे निजी कब्रिस्तान बनाने के लिए
अब्राहम ने हित्ती जातीय एप्रोन से भूमि सहित
खरीदा था। 14यूसुफ अपने पिता को गाड़ने के
पश्चात् अपने भाइयों एवं उन सब के साथ मिस्र
देश को लौट गया, जो शव को गाड़ने के लिए
उसके साथ आए थे।

यूसुफ का अपने भाइयों को आश्वासन

15 जब यूसुफ के भाइयों ने देखा कि उनके
पिता की मृत्यु हो चुकी है तब कहने लगे, 'अब
कदाचित् यूसुफ हमसे घृणा करेगा। हमसे उन
सब बुराइयों का बदला लेगा, जो हमने उससे
की थीं।' 16अत: उन्होंने यूसुफ के पास एक
दूत भेजा और कहा, 'तुम्हारे पिता ने अपनी
मृत्यु के पूर्व यह आदेश दिया था : 17''यूसुफ
से कहना कि वह कृपा कर अपने भाइयों के
अपराध और पाप को क्षमा करे; क्योंकि उन्होंने
उसके साथ बुराई की थी।'' अब कृपाकर
अपने पिता के परमेश्वर के सेवकों के अपराध
क्षमा कीजिए।' जब उन्होंने ये बातें यूसुफ से
कहीं तब वह रो पड़ा। 18उसके भाई भी आए।
वे उसके सम्मुख भूमि पर गिरकर बोले, 'हम
आपके सेवक हैं।' 19किन्तु यूसुफ ने कहा,
'मत डरो! क्या मैं परमेश्वर के स्थान पर हूं?
20तुमने मेरे साथ बुराई की योजना बनायी,
किन्तु परमेश्वर ने भलाई के लिए उसका
उपयोग किया कि अनेक लोग जीवित बचें,
जैसे वे आज भी जीवित हैं। 21अत: तुम मत
डरो। मैं तुम्हारा और तुम्हारे छोटे-छोटे बच्चों
का पालन-पोषण करता रहूंगा।' इस प्रकार
यूसुफ ने उन्हें आश्वस्त किया और अपनी
प्रेमपूर्ण बातों से उनको शान्ति दी।

22 यूसुफ और उसके पिता का परिवार
मिस्र देश में निवास करता रहा। वह एक सौ
दस वर्ष तक जीवित रहा। 23यूसुफ ने एफ्रइम
की संतान को तीसरी पीढ़ी तक देखा। मनश्शे
के पुत्र मकीर के बच्चे भी यूसुफ के घुटनों पर
उत्पन्न हुए थे। 24यूसुफ ने अपने भाइयों से
कहा, 'मेरी मृत्यु निकट है। किन्तु परमेश्वर
तुम्हारी सुध लेगा, और तुम्हें इस देश से निकाल
कर उस देश में ले जाएगा, जिसकी शपथ उसने
अब्राहम, इसहाक और याकूब से खाई थी।'
25तत्पश्चात् यूसुफ ने इस्राएली लोगों को
शपथ खिलाई, 'परमेश्वर तुम्हारी सुध लेगा,
और तुम यहाँ से मेरी अस्थियाँ ले जाना।'
26यूसुफ की मृत्यु एक सौ दस वर्ष की अवस्था
में हुई। उन्होंने उसके शव पर मसाले का
संलेपन किया, और उसे मिस्र देश में ही एक
शव-मंजूषा में रख दिया।

---

* अर्थात् 'मिस्र निवासियों का शोक'

50 :13 प्रे 7 : 16 **50 : 19** रोम 12 : 19 **50 : 24** इब्र 11 : 22 **50 : 25** नि 13 : 19; यहो 24 : 32

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

निर्गमन

पुस्तक परिचय

''निर्गमन'' का अर्थ है ''प्रस्थान, बाहर निकलना'' आदि। निर्गमन ग्रंथ में वर्णित प्रमुख घटना यही है कि मिस्र देश में सैकड़ों वर्षों के प्रवास के पश्चात् इस्राएली कौम मिस्र देश से प्रस्थान करती है। मिस्र देश में वे गुलाम थे। उस गुलामी से छुटकारा पाना और वहां से प्रस्थान करना, यह इस्राएली कौम के इतिहास में अत्यंत महत्वपूर्ण घटना है, और यह ''मुक्ति इतिहास'' की प्रथम कड़ी कहलाती है।

निर्गमन ग्रंथ के तीन खण्ड हैं :

(1) इब्रानी (इस्राएली) गुलामों का दासत्व से मुक्त होना, और मिस्र देश से प्रस्थान कर सीनय पर्वत तक की यात्रा करना ;

(2) सीनय पर्वत पर परमेश्वर इस्राएली कौम से विधान (वाचा, व्यवस्थान) का संबंध स्थापित करता है। इस्राएलियों को इस विधान के माध्यम से नैतिक, सामाजिक तथा धार्मिक नियम प्राप्त होते हैं।

(3) निर्गमन ग्रंथ के तीसरे खण्ड में इस्राएली कौम के केन्द्रीय आराधना-स्थल के निर्माण, उसकी सामग्री, साज-सज्जा, पुरोहितों से सम्बन्धित विधि-परंपरा तथा परमेश्वर की आराधना-विधि का विस्तार से उल्लेख है।

निर्गमन ग्रंथ में वर्णित इन बातों के अतिरिक्त सर्वप्रमुख बात तो यह है कि परमेश्वर ने अपनी चुनी हुई कौम को दासत्व के जुए से विमुक्त किया, और उन्हें एक ही विधान में सुसम्बद्ध समाज के रूप में संयुक्त किया, और उन्हें भविष्य के लिए एक स्वर्णिम आशा प्रदान की।

निर्गमन ग्रंथ के प्रमुख नायक हैं मूसा। स्वयं परमेश्वर ने मूसा को चुना कि वह उसके निज लोगों को मिस्र देश की गुलामी से छुड़ायें और उनका नेतृत्व करें।

प्रस्तुत ग्रंथ का सर्वविदित अंश व्यवस्था की ''दस आज्ञाएं'' हैं, जिसका उल्लेख अध्याय 20 में किया गया है।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

1. मिस्र देश के दासत्व से मुक्ति	**1 : 1 —18 : 27**
(क) मिस्र देश में गुलामी	**1 : 1-22**
(ख) मूसा का जन्म और आरंभिक जीवन	**2 : 1 — 4 : 31**
(ग) मूसा और हारून मिस्र देश के फरओ (राजा) के दरबार में : दस विपत्तियां	**5 : 1 — 11 : 10**
(घ) पास्का (फसह) के पर्व की स्थापना तथा मिस्र देश से प्रस्थान	**12 : 1 — 15 : 21**
(ङ) लाल सागर से सीनय पर्वत तक की यात्रा	**15 : 22 — 18 : 27**
2. व्यवस्था की शिक्षाएं तथा विधान की स्थापना	**19 : 1 — 24 : 18**
3. विधान की मंजूषा, पवित्र निवास-स्थान (शिविर) तथा आराधना के विषय में निर्देश	**25 : 1 — 40 : 38**

[इस सामग्री के मध्य में, अध्याय 32-34 : 'सोने के बछड़े' का प्रसंग]

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मिस्र देश में इस्राएलियों की दुर्दशा

1 इस्राएल अर्थात् याकूब के पुत्रों के नाम, जो अपने पिता के साथ अपने-अपने परिवार सहित मिस्र देश में आए थे, ये हैं : 2रूबेन, शिमोन, लेवी, यहूदा, 3इस्साकार, जबूलून, बिन्यामिन, 4दान, नफ्ताली, गाद और आशेर। 5याकूब के ही वंश में उत्पन्न व्यक्ति कुल सत्तर थे। यूसुफ पहले से ही मिस्र देश में था। 6यूसुफ और उसके सब भाई एवं उस पीढ़ी के समस्त व्यक्ति मर गए। 7किन्तु इस्राएल के वंशज फलवन्त हुए। वे अत्यन्त बढ़ गए। उनकी संख्या में भारी वृद्धि हुई और वे शक्तिशाली हो गए। उनसे समस्त देश भर गया।

8 मिस्र देश में एक नया राजा हुआ, जो यूसुफ को नहीं जानता था। 9उसने अपनी प्रजा से कहा, 'देखो, इस्राएली लोग कितने अधिक बढ़ गए हैं। वे हमसे अधिक शक्तिशाली हो गए हैं। 10आओ, हम उनसे चतुराई से व्यवहार करें। ऐसा न हो कि वे बढ़ते जाएं और जब हम पर युद्ध आ पड़े तब वे हमारे बैरियों से जा मिलें, हमारे विरुद्ध लड़ें और देश से भाग जाएं।'

11उन्होंने इस्राएलियों पर बेगार कराने वाले अधिकारियों को नियुक्त किया कि वे उन पर भारी बोझ डाल कर उन्हें पीड़ित करें। इस प्रकार इस्राएली लोगों ने फरओ के लिए पितोम और रामसेस नामक भण्डारगृह के नगरों का निर्माण किया। 12 किन्तु जितना अधिक उन्हें पीड़ित किया गया उतना अधिक वे बढ़ते और फैलते गए। मिस्र के निवासी इस्राएलियों से और घृणा करने लगे। 13वे इस्राएली लोगों से कठोरता से बेगार करवाने लगे। 14उन्होंने ईंट-गारा और खेती सम्बन्धी सब कामों में इस्राएली लोगों से कठोर बेगार* करवा कर उनका जीवन कड़वा बना डाला। वे अपने प्रत्येक कार्य में उनसे कठोर बेगार करवाते थे।

15 मिस्र देश के राजा ने इब्रानी दाइयों को, जिनमें एक का नाम शिफ्रा और दूसरी का नाम पूआ था, आदेश दिया, 16'जब तुम इब्रानी स्त्रियों का प्रसव करवाने जाओ और उन्हें प्रसव-शिला पर देखो तब यदि लड़के का जन्म हुआ हो, तो उसे मार डालना; किन्तु यदि लड़की हो तो उसे जीवित रहने देना।' 17परन्तु दाइयां परमेश्वर से डरती थीं। अत: उन्होंने मिस्र देश के राजा के आदेशानुसार नहीं किया। उन्होंने लड़कों को जीवित रहने दिया। 18मिस्र देश के राजा ने दाइयों को बुलाकर उनसे पूछा, 'तुमने यह कार्य क्यों किया ? क्यों लड़कों को जीवित रहने दिया ?, 19दाइयों ने फरओ को उत्तर दिया, 'इब्रानी स्त्रियां, मिस्र देश की स्त्रियों के समान नहीं हैं। वे फुरतीली होती हैं और दाइयों के पहुंचने के पूर्व ही बच्चों को जन्म दे देती हैं।' 20परमेश्वर ने दाइयों के साथ भला किया। इस्राएली और बढ़कर अत्यन्त बलवान हो गए। 21दाइयां परमेश्वर से डरती थीं। इसलिए परमेश्वर ने उन्हें परिवार प्रदान किए। 22फरओ ने अपनी समस्त प्रजा को आदेश दिया, 'तुम इब्रानियों से उत्पन्न सब लड़कों को नील नदी में फेंक देना, किन्तु लड़कियों को जीवित रहने देना।'

मूसा का जन्म

2 लेवी वंशीय एक पुरुष ने लेवी कुल की एक कन्या से विवाह किया। 2उसकी पत्नी गर्भवती हुई। उसने एक पुत्र को जन्म दिया। जब उसने देखा कि बालक सुन्दर है, तो तीन महीने तक उसे छिपाये रखा। 3पर जब वह बालक को और न छिपा सकी तब उसके लिए सरकण्डों की एक टोकरी ली। उसने टोकरी पर डामर और राल का लेप लगाया, और उसके भीतर बालक को रख दिया। तत्पश्चात् उसने टोकरी नील नदी के किनारे कांसों के मध्य में रख दी। 4बालक की बहिन यह देखने के लिए दूर खड़ी रही कि उसके साथ क्या होता है।

5फरओ की पुत्री नील नदी में स्नान करने

---

* अथवा, 'गुलामी'।

1 : 1 उत 46 :8 **1 : 5** व्य 10 : 22 **1 : 6** उत 50 : 26 **1 : 7** भज 105 : 24; प्रे 7 : 17; 13 : 17 **1 : 10** प्रे 7 : 19 **1 : 11** उत 47 : 11 **2 : 1** नि 6 : 20 **2 : 2** इब्र 11 : 23 **2 : 5** प्रे 7 : 21

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आई। उसकी सहेलियां नदी के तट पर टहल
रही थीं। फरओ की पुत्री ने कांसों के मध्य
टोकरी देखी। उसने टोकरी लाने के लिए
अपनी दासी को भेजा। 6जब उसने उसको
खोला तो एक बालक को देखा। वह रो रहा
था। उसे बालक पर दया आई। उसने कहा,
'यह इब्रानियों का कोई बच्चा है।' 7बालक की
बहिन ने फरओ की पुत्री से कहा, 'क्या मैं
जाकर आपके लिए इब्रानी धायों में से किसी
स्त्री को बुलाऊं कि वह आपके हेतु बच्चे को
दूध पिलाए?' 8फरओ की पुत्री ने उससे कहा,
'जा!' लड़की गई और बालक की मां को बुला
लायी। 9फरओ की पुत्री ने उससे कहा, 'इस
बच्चे को ले जाओ और मेरे हेतु इसको दूध
पिलाओ। मैं तुम्हें मजदूरी दूंगी।' अतः वह
बालक को ले गयी और उसको दूध पिलाने
लगी। 10जब बालक बड़ा हुआ, तब मां उसे
लेकर फरओ की पुत्री के पास आई। फरओ की
पुत्री ने बालक को अपना पुत्र मान लिया। उसने
कहा, 'मैंने इसे जल से निकाला है,' इसलिए
उसने बालक का नाम मूसा* रखा।

मूसा का मिद्यान देश भागना

11 जब मूसा जवान हुए तब एक दिन यह
घटना घटी। वह अपने जाति-भाइयों के पास
गए। उन्होंने अपने जाति-भाइयों को भारी बोझ
से लदे हुए देखा। उन्होंने यह भी देखा कि एक
मिस्र निवासी उनके एक इब्रानी भाई को मार
रहा है। 12मूसा ने इधर-उधर दृष्टि दौड़ायी।
जब कोई मनुष्य दिखाई नहीं दिया तब उन्होंने
मिस्र-निवासी की हत्या कर दी और उसका
शव रेत में छिपा दिया।

13 जब मूसा दूसरे दिन बाहर गए, उन्होंने
दो इब्रानियों को परस्पर लड़ते हुए देखा। मूसा
ने दोषी व्यक्ति से कहा, 'तुम अपने ही भाई को
क्यों मार रहे हो?' 14वह बोला, 'किसने आपको
हमारे ऊपर मुखिया और न्यायाधीश नियुक्त
किया है? क्या आप मुझे भी मार डालना चाहते
हैं जैसे आपने मिस्र-निवासी को मार डाला
था?' मूसा डर गए। उन्होंने सोचा, 'निस्संदेह,
लोगों पर घटना का भेद खुल गया है।' 15जब
फरओ ने यह बात सुनी तब उसने मूसा का वध
करने के लिए उनको खोजा। किन्तु वह फरओ
के सम्मुख से भाग गए। वह मिद्यान देश में रहने
लगे।

मूसा एक कुएं पर बैठे थे। 16मिद्यान देश के
पुरोहित की सात पुत्रियां थीं। वे कुएं से पानी
खींचने आईं। उन्होंने अपने पिता की भेड़-
बकरियों को पानी पिलाने के लिए नांदों में पानी
भरा। 17किन्तु चरवाहे आकर उन्हें हटाने लगे।
तब मूसा उठे। उन्होंने पुरोहित की पुत्रियों की
सहायता की और उनके रेवड़ को पानी
पिलाया। 18वे अपने पिता रूएल के पास आईं।
उसने पूछा, 'आज तुम लोग इतने शीघ्र कैसे आ
गईं?' 19वे बोलीं, 'एक मिस्र-निवासी पुरुष ने
चरवाहों के हाथ से हमें मुक्त किया। उसने
हमारे लिए पानी भी खींचा, और रेवड़ को पानी
पिलाया।' 20उसने अपनी पुत्रियों से पूछा, 'वह
कहां है? तुम उस पुरुष को क्यों छोड़ आईं?
उसे बुलाओ कि वह हमारे साथ भोजन
करे।' 21मूसा रूएल के साथ रहने को सहमत
हो गए। उसने मूसा के साथ अपनी पुत्री
सिप्पोरा का विवाह कर दिया। 22वह गर्भवती
हुई। उसने एक पुत्र को जन्म दिया। मूसा ने
कहा, 'मैं विदेश में प्रवासी हूं'। इसलिए उन्होंने
उसका नाम गेर्शोम+ रखा।

23 अनेक वर्षों के बाद मिस्र देश के राजा
की मृत्यु हो गई। इस्राएली बेगार के कारण
कराहते थे। अतः वे सहायता के लिए चिल्लाने
लगे। बेगार से उत्पन्न उनकी दुहाई परमेश्वर
तक पहुंची। 24परमेश्वर ने उनका कराहना
सुना। उसे अब्राहम, इसहाक और याकूब के
साथ स्थापित अपने विधान का स्मरण हुआ।
25परमेश्वर ने इस्राएलियों को देखा। उसने
उनकी दुर्दशा पर ध्यान दिया।

---

* अथवा 'मोशे,' अर्थात् निकाला हुआ। + अर्थात् "वहां का प्रवासी"

2 : 11 इब्र 11 : 24 **2 : 14** प्रे 7 : 35 **2 : 16** उत 24 : 11; 29 : 10 **2 : 22** नि 18 : 3 **2 : 24** उत 15 : 14

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मूसा का आवाहन

3 एक दिन मूसा अपने ससुर यित्रो, मिद्यान
देश के पुरोहित, की भेड़-बकरियां चरा
रहे थे। वह उन्हें निर्जन प्रदेश की पश्चिम दिशा
में ले गए। वह परमेश्वर के पर्वत होरेब* के
पास आए। 2प्रभु के दूत ने उन्हें झाड़ी के मध्य
अग्नि-शिखा में दर्शन दिया। मूसा ने देखा कि
अग्नि से झाड़ी जल तो रही है पर वह भस्म नहीं
हो रही है। 3मूसा ने कहा, 'मैं उधर जाकर इस
महान दृश्य को देखूंगा कि झाड़ी क्यों नहीं
भस्म हो रही है।' 4जब प्रभु परमेश्वर ने देखा
कि मूसा झाड़ी को देखने के लिए आ रहे हैं
तब उसने झाड़ी के मध्य से मूसा को पुकारा,
'मूसा ! मूसा !!' वह बोले, 'क्या आज्ञा है ?'
5प्रभु ने कहा, 'निकट मत आ। पैरों से जूते
उतार; क्योंकि जिस स्थान पर तू खड़ा है, वह
पवित्र भूमि है।' 6प्रभु ने फिर कहा, 'मैं तेरे पिता
का परमेश्वर, अब्राहम का परमेश्वर, इसहाक
का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर हूं।'
मूसा ने अपना मुंह ढक लिया; क्योंकि वह
परमेश्वर पर दृष्टि करने से डरते थे।

7 प्रभु ने कहा, 'मैंने निश्चय ही अपनी प्रजा
की, जो मिस्र देश में है, दु:ख-पीड़ा देखी है।
उनसे बेगार कराने वालों के कारण उत्पन्न
उनकी दुहाई सुनी है। मैं उनके दु:ख को जानता
हूं। 8मैं मिस्र-निवासियों के हाथ से उन्हें मुक्त
करने के लिए, इस देश से निकालकर उन्हें एक
अच्छे और विशाल देश में, ऐसे देश में जहां दूध
और शहद की नदियां बहती हैं, अर्थात् कनानी,
हित्ती, अमोरी, परिज्जी, हिव्वी और यबूसी
जातियों के देश में ले जाने के लिए उतर आया
हूं। 9देख, इस्राएलियों की दुहाई मुझ तक
पहुंची है। मैंने उस अत्याचार को भी देखा है,
जो मिस्र के निवासी उन पर कर रहे हैं। 10अब
तू जा, मैं तुझे फरओ के पास भेजता हूं कि तू
मेरे लोगों को, इस्राएल के वंशजों को, मिस्र से
बाहर निकाल लाए।' 11मूसा ने परमेश्वर से
कहा, 'मैं कौन होता हूं, जो फरओ के पास
जाऊं और इस्राएलियों को मिस्र देश से बाहर
निकालकर लाऊं ?' 12परमेश्वर ने कहा, 'मैं
तेरे साथ रहूंगा। मैंने तुझे भेजा है; इस बात का
यह चिह्न होगा : जब तू मेरे लोगों को मिस्र देश
से निकाल कर लाएगा, तब इस पर्वत पर मेरी,
अपने परमेश्वर की, सेवा+ करेगा।'

13 तब मूसा ने परमेश्वर से पूछा, 'यदि मैं
इस्राएली लोगों के पास जाकर उनसे कहूं कि
मुझे तुम्हारे पूर्वजों के परमेश्वर ने तुम्हारे पास
भेजा है, और वे मुझसे पूछें कि उसका नाम क्या
है, तो मैं उन्हें क्या उत्तर दूंगा ?' 14परमेश्वर ने
मूसा से कहा, 'मैं हूं, जो मैं हूं।'** परमेश्वर ने
फिर कहा, 'इस्राएली लोगों से यह कहना :
"मैं-हूं ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।" '
15परमेश्वर ने मूसा से यह भी कहा, 'इस्राएली
लोगों से यह कहना, "तुम्हारे पूर्वजों के
परमेश्वर, अब्राहम के परमेश्वर, इसहाक के
परमेश्वर और याकूब के परमेश्वर, प्रभु*** ने
मुझे तुम्हारे पास भेजा है।" सदा के लिए यही
मेरा नाम है। इसी नाम से मुझे पीढ़ी से पीढ़ी
स्मरण किया जाएगा। 16जा और इस्राएल के
धर्मवृद्धों को एकत्र कर उनसे कहना, "तुम्हारे
पूर्वजों के परमेश्वर, अब्राहम के परमेश्वर,
इसहाक के परमेश्वर, और याकूब के परमेश्वर,
प्रभु ने मुझे दर्शन दिया है। उसने कहा है : मैंने
निश्चय तुम्हारी सुध ली है। जो मिस्र देश में
तुम्हारे साथ किया जा रहा है, उस पर ध्यान
दिया है। 17मैं वचन देता हूं कि तुम्हें मिस्र देश
की पीड़ित दशा से निकालकर कनानी, हित्ती,
अमोरी, परिज्जी, हिव्वी, और यबूसी जातियों
के देश में, ऐसे देश में ले जाऊँगा, जहां दूध और
शहद की नदियां बहती हैं।" 18इस्राएली तेरी

---

* अथवा 'सीनय'। + अथवा, 'उपासना' ** इस पदांश के अनेक अर्थ हो सकते हैं; जैसे 'मैं जो हूं; मैं जो होऊंगा सो हूंगा; मैं वही हूं, जो हूं।' *** मूल में "यह्‌व्‌ह्" जिसका रूपान्तर प्रस्तुत अनुवाद में "प्रभु" किया गया है। क्रिया पद "यहवह" का अर्थ "होना" (सत्) है।

3 : 1 1 रा 19 : 8 **3 : 2** व्य 33 : 16; प्रे 7 : 30; 13 : 17 **3 : 5** यहो 5 : 15 **3 : 6** उत 28 : 13; नि 33 : 20; यश 6 : 5; मत 22 : 32; प्रे 3 : 13 **3 : 14** नि 6 : 3; उत 4 : 26; यश 42 : 8; यो 8 : 58; 17 : 6; प्रक 1 : 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बात सुनेंगे। तब तू और इस्राएल के धर्मवृद्ध
मिस्र देश के राजा के पास जाना। तुम उससे
कहना, ''इब्रानियों का परमेश्वर, प्रभु हमसे
मिला है। अब कृपया हमें तीन दिन की यात्रा
की दूरी पर निर्जन प्रदेश में जाने दीजिए कि हम
अपने प्रभु परमेश्वर के लिए बलि चढ़ाएं।''
19मैं जानता हूं कि जब तक मिस्र देश का राजा
मेरे भुजबल से विवश नहीं होगा, तब तक तुम्हें
नहीं जाने देगा। 20मैं अपना हाथ बढ़ाऊंगा और
मिस्र देश में अपने सब आश्चर्यपूर्ण कार्य कर
उस पर प्रहार करूंगा। तत्पश्चात् वह तुम्हें जाने
देगा। 21मैं अपने इन लोगों को मिस्र निवासियों
की कृपा-दृष्टि प्रदान करूंगा। अतः जब तुम
प्रस्थान करोगे तब खाली हाथ नहीं जाओगे।
22प्रत्येक स्त्री अपनी पड़ोसिन और अपने घर
की प्रवासिनी स्त्री से सोने-चांदी के आभूषण
एवं वस्त्र मांग लेगी। तुम उन्हें अपने पुत्र-
पुत्रियों को पहनाना। इस प्रकार तुम मिस्र
निवासियों को लूट लेना।'

4 मूसा ने उत्तर दिया, 'पर देख, वे मुझ पर
विश्वास नहीं करेंगे,वे मेरी बात नहीं
सुनेंगे; क्योंकि वे कहेंगे, ''प्रभु ने तुझे दर्शन
नहीं दिया।''' 2प्रभु ने मूसा से पूछा, 'तेरे हाथ
में यह क्या है?' उन्होंने उत्तर दिया, 'लाठी।'
3प्रभु ने कहा, 'इसे भूमि पर फेंक दे।' मूसा ने
उसे भूमि पर फेंका तो वह सर्प बन गई। मूसा
उसके सम्मुख से हट गए। 4प्रभु ने मूसा से
कहा, 'अपना हाथ बढ़ा और उसकी पूंछ से
उसे पकड़।' उन्होंने अपना हाथ बढ़ाकर उसे
पकड़ा, और वह उनके हाथ में पुनः लाठी बन
गई।' प्रभु ने कहा, 5'इस प्रकार उन्हें विश्वास
होगा कि उनके पूर्वजों के परमेश्वर, अब्राहम
के परमेश्वर, इसहाक के परमेश्वर और याकूब
के परमेश्वर, मुझ-प्रभु ने तुझे दर्शन दिया है।'
6तत्पश्चात् प्रभु ने उनसे पुनः कहा, 'अपना
हाथ वस्त्र के भीतर छाती पर रख।' मूसा ने
वस्त्र के भीतर छाती पर अपना हाथ रखा। जब
उन्होंने उसे बाहर निकाला तब उनका हाथ बर्फ
के समान कोढ़+ जैसा सफेद हो गया। 7परमेश्वर
ने कहा, 'अब अपना हाथ फिर से वस्त्र के
भीतर छाती पर रख।' अतः मूसा ने पुनः अपना
हाथ वस्त्र के भीतर छाती पर रखा। जब उन्होंने
उसे छाती से बाहर निकाला तब वह उनके शेष
शरीर के सदृश जैसा का तैसा हो गया।
8परमेश्वर ने कहा, 'यदि वे तुझ पर विश्वास
न करें, अथवा प्रथम चिह्न पर ध्यान न दें तो वे
दूसरे चिह्न पर ध्यान देंगे। 9यदि वे इन दोनों
चिह्नों पर भी विश्वास न करें, और तेरी बात को
न सुनें तो तू नील नदी का जल लेना और उसे
सूखी भूमि पर उण्डेलना। जो जल तू नील
नदी से लेगा, वह सूखी भूमि पर रक्त बन
जाएगा।'

10 मूसा ने प्रभु से कहा, 'हे मेरे स्वामी, मैं
कुशल वक्ता नहीं हूं। मैं न पहले कभी था, और
न जब से तू अपने सेवक से वार्तालाप करने
लगा है, मैं हूं। मुझे बोलने में कठिनाई होती है
और मेरी जीभ लड़खड़ाती है।' 11प्रभु ने उनसे
पुनः कहा, 'किसने मनुष्य का मुंह बनाया?
कौन उसे गूंगा, बहरा, दृष्टिवाला अथवा अन्धा
बनाता है? क्या मैं प्रभु ही उसे ऐसा नहीं
बनाता? 12अब जा, मैं तेरी वाणी पर निवास
करूंगा। जो बोलना है, वह मैं तुझे सिखाऊंगा।'
13पर मूसा ने कहा, 'हे मेरे स्वामी, कृपया तू
किसी अन्य व्यक्ति को भेज।' 14तब प्रभु का
क्रोध मूसा के प्रति भड़का। प्रभु ने कहा, 'क्या
लेवी के वंश का हारून तेरा भाई नहीं है? मैं
जानता हूं कि वह अच्छे से बोल सकता है।
देख, वह तुझसे भेंट करने को आ रहा है। जब
वह तुझे देखेगा तब अपने हृदय में आनन्दित
होगा। 15तू उससे बात करना। तू अपने शब्द
उसके मुंह में डालना। मैं तेरी और उसकी वाणी
पर निवास करूंगा। जो कार्य तुम्हें करना है, वह
मैं तुम्हें सिखाऊंगा। 16हारून तेरी ओर से मेरे
लोगों से बात करेगा। वह तेरा प्रवक्ता* होगा,

+ अनेक प्रकार के चर्मरोग के अर्थ में प्रयुक्त * शब्दशः, 'मुंह'

3 : 21 नि 11 : 3; 12 : 36; प्रज्ञा 10 : 17 **4 : 1** मत 13 : 57 **4 : 10** यिर 1 : 6 **4 : 12** व्य 18 : 18; मत 10 : 19 **4 : 13** यश 6 : 8 **4 : 16** नि 7 : 1

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
और तू उसके लिए ईश्वर के सदृश। 17तू अपने
साथ यह लाठी ले जाना। तू इसके द्वारा
आश्चर्यपूर्ण कार्य करके चिह्न दिखाना।'

मूसा का मिस्र देश लौटना

18 मूसा वहां से चले गए। वह अपने ससुर
यित्रो के पास लौटे। उन्होंने कहा, 'कृपया, मुझे
जाने दीजिए। मैं अपने भाई-बन्धुओं के पास,
जो मिस्र देश में हैं, लौटूंगा। मैं जाकर देखूंगा
कि क्या वे अब तक जीवित हैं।' यित्रो ने मूसा
से कहा, 'शान्ति से जाओ।' 19प्रभु ने मिद्यान
देश में मूसा से कहा, 'मिस्र देश को लौट जा;
क्योंकि जो लोग तेरे प्राण लेना चाहते थे, वे सब
मर चुके हैं।' 20अत: मूसा ने अपनी पत्नी और
पुत्रों को गधे पर बैठाया और मिस्र देश की ओर
लौटे। मूसा ने अपने हाथ में परमेश्वर की लाठी
ली।

21 प्रभु ने मूसा से कहा, 'जब तू मिस्र देश
लौटेगा तब, देख, फरओ के सम्मुख उन सब
आश्चर्यपूर्ण कार्यों को करना, जिनको करने
का सामर्थ्य मैंने तुझे दिया है। किन्तु मैं उसका
हृदय हठीला बनाऊंगा, और वह मेरे लोगों को
नहीं जाने देगा। 22तब तुम फरओ से कहना,
"प्रभु यों कहता है: इस्राएल मेरा ज्येष्ठ पुत्र है,
23और मैं तुझसे कहता हूं,'मेरे पुत्र को जाने दे
कि वह मेरी सेवा करे।' यदि तू उसे नहीं जाने
देगा, तो देख, मैं तेरे ज्येष्ठ पुत्र का वध
करूंगा।" '

24 प्रभु मार्ग की एक सराय में मूसा से मिला
और उसने मूसा को मार डालना चाहा। 25पर
सिप्पोरा ने एक तेज चकमक पत्थर लेकर
अपने पुत्र का खतना किया और कटी हुई
चमड़ी से मूसा का पैर स्पर्श किया। वह बोली,
'निश्चय ही रक्त के मेरे दूल्हा आप हैं।' 26प्रभु
ने उन्हें छोड़ दिया। सिप्पोरा ने खतना के कारण
कहा था, 'रक्त के मेरे दूल्हा आप हैं।'

27 प्रभु ने हारून को आदेश दिया, 'मूसा से
भेंट करने के लिए निर्जन प्रदेश की ओर जा।'
अतएव हारून गया। वह परमेश्वर के पर्वत पर
मूसा से मिला और उनका चुम्बन लिया। 28जो
बातें प्रभु ने मूसा के द्वारा प्रेषित की थीं एवं जिन
चिह्नों को प्रदर्शित करने का उन्हें आदेश दिया
था, उन सबको मूसा ने हारून को बताया।
29तत्पश्चात् मूसा और हारून ने जाकर
इस्राएलियों के सब धर्मवृद्धों को एकत्र किया।
30जो बातें प्रभु ने मूसा से कही थीं, उन्हें हारून
ने इस्राएलियों को सुनाया। हारून ने उनकी
आंखों के सम्मुख आश्चर्यपूर्ण कार्य करके
चिह्न भी दिखाए। 31उन्होंने विश्वास किया।
जब उन्होंने सुना कि प्रभु ने इस्राएलियों की
सुध ली है, उनकी दु:ख-पीड़ा पर दृष्टि की है,
तब उन्होंने सिर झुकाकर वन्दना की।

फरओ के सम्मुख मूसा और हारून

5 तत्पश्चात् मूसा और हारून राजा फरओ
के पास गए। उन्होंने उससे कहा,
'इस्राएलियों का परमेश्वर, प्रभु यों कहता है :
"मेरे लोगों को जाने दे कि वे निर्जन प्रदेश में
मेरे लिए यात्रा-पर्व मनाएं।" ' 2फरओ ने कहा,
'यह प्रभु कौन है जिसकी बात सुनकर मैं
इस्राएलियों को जाने दूं? मैं इस प्रभु को नहीं
जानता। मैं इस्राएलियों को नहीं जाने दूंगा।'
3उन्होंने कहा, 'इब्रानियों के परमेश्वर ने स्वयं
को हम पर प्रकट किया है। *कृपया हमें तीन
दिन की यात्रा की दूरी पर निर्जन प्रदेश में जाने
दीजिए कि हम अपने प्रभु परमेश्वर के लिए
बलि चढ़ाएं। ऐसा न हो कि वह हमें महामारी
अथवा तलवार से नष्ट करे।' 4मिस्र देश के
राजा ने उनसे कहा, 'मूसा और हारून ! क्यों
तुम इस्राएलियों से उनका काम-धन्धा छुड़वाना
चाहते हो? जाओ, अपना भारी बोझ का काम
करो।' 5फरओ ने आगे कहा, 'देखो, वे मिस्र
देश की जनता से कितने अधिक हैं। और तुम
उन्हें उनके भारी बोझ के काम से आराम कराना
चाहते हो?' 6उसी दिन फरओ ने बेगार करवाने
वालों और उनके मेटों को आदेश दिया, 7'जो
भूसा ईंट बनाने के लिए अब तक इस्राएलियों
को तुम देते थे वह भविष्य में नहीं देना। वे स्वयं

* अथवा, 'हम से मिलने आया है।'

4 : 19 प्रे 7 : 34 ; मत 2 : 20 **4 : 22** व्य 1 : 31 ; हो 11 : 1 ; यिर 31 : 9 **4 : 23** नि 12 : 29 **4 : 24** उत 17 : 14 ; 32 : 25 **4 : 25** यहो 5 : 2 **4 : 31** नि 14 : 31 ; यो 2 : 11

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जाकर भूसा एकत्र करें। [8]जितनी ईंटें वे अब तक बनाते थे, तुम उनसे उतनी ही ईंटें बनवाना। उनकी संख्या कदापि कम मत करना। वे कामचोर हैं ; इसलिए चिल्लाकर कहते हैं, ''आओ हम जाकर अपने परमेश्वर के लिए बलि चढ़ाएँ।'' [9]उनसे और भारी काम करवाना जिससे वे उसी में जुटे रहें और मूसा एवं हारून की झूठी बातों पर ध्यान न दें।'

10 बेगार करवाने वालों और मेटों ने महल से बाहर जाकर इस्राएलियों से कहा, 'फरओ यों कहते हैं, ''मैं तुम्हें ईंटों के लिए भूसा नहीं दूंगा। [11]तुम स्वयं जाओ, और जहां-कहीं तुम्हें भूसा मिले, वहां से प्राप्त करो। परन्तु तुम्हारा काम कदापि कम नहीं किया जाएगा।'' ' [12]अतः इस्राएली लोग भूसा के लिए अन्न के पौधे की खूंटियां एकत्र करने हेतु समस्त मिस्र देश में फैल गए। [13]बेगार करवाने वाले व्यक्ति काम को शीघ्र करने के लिए कहते थे, 'अपने दिन भर का काम उसी गति से पूरा करो जिस गति से भूसा रहने पर करते थे।' [14]इस्राएलियों के मेटों को भी, जिन्हें फरओ के बेगार करवाने वालों ने उन पर नियुक्त किया था, पीटा गया और उनसे पूछा गया, 'जैसा तुम अब तक करते थे, वैसा निश्चित संख्या में ईंटें बनवाने के लिए कल और आज तुमने अपना काम क्यों नहीं किया?'

15 इस्राएलियों के मेटों ने फरओ के पास जाकर उसकी दुहाई दी, 'आप अपने सेवकों से ऐसा व्यवहार क्यों करते हैं? [16]आपके सेवकों को भूसा नहीं दिया गया, फिर भी हमसे कहा जाता है, ''ईंटें बनाओ।'' देखिए, आपके सेवकों को पीटा भी गया। दोष तो आपकी जाति के लोगों का है।' [17]फरओ ने कहा, 'तुम कामचोर हो। तुम आलसी हो, इसलिए तुम कहते हो, ''हमें जाने दीजिए कि हम प्रभु के लिए बलि चढ़ाएं।'' [18]जाओ और काम करो। तुम्हें भूसा नहीं दिया जाएगा, पर तुम्हें उतनी ही संख्या में ईंटें बनाकर देनी होंगी।' [19]जब इस्राएली मेटों से कहा गया, 'तुम ईंटों की संख्या में कमी नहीं करोगे', तब उन्होंने देखा कि अब उनके दुर्दिन आ गए हैं। [20]वे फरओ के पास से निकलकर बाहर आए और मूसा और हारून से मिले, जो उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। [21]इस्राएली मेटों ने उनसे कहा, 'प्रभु आप के इस काम को देखे और आपको दंड दे। आप लोगों ने फरओ और उसके पदाधिकारियों की दृष्टि में हमें घृणा का पात्र बना दिया है। आपने हमारी हत्या के निमित्त उनके हाथ में तलवार दी है।'

मूसा का प्रार्थना करना

22 मूसा प्रभु के पास लौटे और उससे कहा, 'हे स्वामी, तूने इन लोगों के साथ बुराई क्यों की? तूने मुझे भेजा ही क्यों? [23]देख, जबसे मैंने फरओ के पास आकर तेरे नाम में उससे बात की है, उसने इन लोगों से दुर्व्यवहार किया। तूने भी अपनी प्रजा को मुक्त नहीं किया।'

6 प्रभु ने मूसा से कहा, 'जो व्यवहार मैं फरओ के साथ करूंगा, अब तू उसे देखेगा। वह मेरी महान् शक्ति के कारण अपने देश से उन्हें भेजेगा। निस्सन्देह मेरी महान् शक्ति के कारण वह उन्हें निकाल देगा।'

मूसा और हारून को परमेश्वर का आदेश

2 परमेश्वर ने मूसा को बताया, 'मैं प्रभु हूं। [3]मैंने अब्राहम, इसहाक और याकूब को सर्वशक्तिमान परमेश्वर के रूप में दर्शन दिए थे। परन्तु मैंने अपना नाम ''प्रभु'' उन पर प्रकट नहीं किया था। [4]मैंने उनके साथ अपना विधान* स्थापित किया कि मैं उनको कनान देश प्रदान करूंगा, जिसमें वे प्रवासी होकर निवास करते थे। [5]मैंने इस्राएलियों का कराहना सुना है, जिन्हें मिस्र देश के निवासियों ने गुलाम बना रखा है। अतः मुझे अपने विधान का स्मरण हुआ है। [6]जा, इस्राएलियों से कहना, ''मैं प्रभु हूं। मैं तुम्हें मिस्र निवासियों के बोझ के दबाव से बाहर निकालूंगा। मैं तुम्हें उनकी गुलामी से मुक्त करूंगा। मैं अपना हाथ बढ़ाऊंगा और

---

* अथवा, 'वाचा'

6 : 3 नि 3 : 14 **6 : 4** उत 15 : 18 ; 17 : 7

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

न्याय-निर्णय के महान कार्य करके तुम्हारा
उद्धार करूंगा। 7मैं तुम्हें अपनी प्रजा के रूप में
ग्रहण करूंगा और तुम्हारा परमेश्वर होऊंगा।
तुम्हें ज्ञात होगा कि मैं तुम्हारा परमेश्वर, प्रभु हूं
जिसने तुम्हें मिस्र निवासियों के बोझ के दबाव
से बाहर निकाला है। 8मैं तुम्हें उस देश में
लाऊंगा, जिसे अब्राहम, इसहाक और याकूब
को प्रदान करने के लिए मैंने शपथ खाई थी।
मैं तुम्हें उसे प्रदान करूंगा कि तुम्हारा उस पर
अधिकार हो। मैं प्रभु हूं।'' ' 9मूसा ने इस्राएलियों
को ये बातें सुनाईं। परन्तु उन्होंने अपनी अधीर
आत्मा और कठोर गुलामी के कारण उनकी
बातें नहीं सुनीं।

10 प्रभु ने मूसा से कहा, 11'मिस्र के राजा
फरओ के पास जा; उससे कहना, ''अपने देश
से इस्राएलियों को जाने दे।''' 12किन्तु मूसा ने
प्रभु से कहा, 'देख, जब इस्राएलियों ने ही मेरी
बात नहीं सुनी, तब फरओ कैसे मेरी बात
सुनेगा ? मैं अच्छा वक्ता भी नहीं हूं।' 13फिर
भी प्रभु मूसा और हारून से बोला और उन्हें
आदेश दिया कि वे इस्राएलियों और मिस्र देश
के राजा फरओ के पास जाएं, और इस्राएलियों
को मिस्र देश से बाहर निकाल कर लाएं।

मूसा और हारून की वंशावली

14 ये उनके पूर्वजों के परिवारों के मुखिया
हैं : इस्राएल के ज्येष्ठ पुत्र रूबेन के पुत्र :
हनोक, पल्लू, हेस्रोन और कर्मी। ये ही रूबेन
के गोत्र हैं। 15ये शिमोन के पुत्र हैं : यमूएल,
यामीन, ओहद, याकीन, सोहर और कनानी
जाति की एक स्त्री से उत्पन्न पुत्र शाऊल। ये ही
शिमोन के गोत्र हैं। 16अपनी-अपनी पीढ़ी के
क्रम में ये लेवी के पुत्र हैं : गेर्शोन, कहात और
मरारी। लेवी के जीवन के कुल वर्ष एक सौ
सैंतीस थे। 17ये गेर्शोन के पुत्र हैं : लिबनी और
शिमई। ये अपने गोत्र के मुखिया थे। 18ये कहात
के पुत्र हैं: अम्राम, यिसहार, हेब्रोन और
ऊज्जीएल। कहात के जीवन के कुल वर्ष एक
सौ तैंतीस थे। 19ये मरारी के पुत्र हैं : महली
और मूशी। अपनी-अपनी पीढ़ी के क्रम में ये
ही लेवी वंश के गोत्र हैं। 20अम्राम ने अपनी
फूफी योकेबेद से विवाह किया। उसने उससे
हारून और मूसा नामक पुत्रों को जन्म दिया।
अम्राम के जीवन के कुल वर्ष एक सौ सैंतीस
थे। 21ये यिसहार के पुत्र हैं: कोरह, नेपेग और
जिक्री। 22ये ऊज्जीएल के पुत्र हैं : मीशाएल,
एलसापन और सित्री। 23हारून ने अम्मीनादब
की पुत्री और नहशोन की बहिन एलीशेबा से
विवाह किया। उसने उससे नादब, अबीहू,
एलआजर और ईतामर नामक पुत्रों को जन्म
दिया। 24ये कोरह के पुत्र हैं : अस्सीर,
एलकाना और अबीआसप। ये ही कोरह वंश
के गोत्र हैं। 25हारून के पुत्र एलआजर ने
पूटीएल की पुत्री से विवाह किया। उसने
पीनहास नामक पुत्र को जन्म दिया। ये ही
अपने-अपने गोत्रों के क्रम में लेवी वंश के
पूर्वजों के परिवार के मुखिया हैं।

26 ये वे ही मूसा और हारून हैं जिन्हें प्रभु
ने आदेश दिया था, 'इस्राएलियों को दलबल
सहित मिस्र देश से बाहर निकाल ले जाओ।'
27ये वे ही मूसा और हारून हैं, जिन्होंने मिस्र
देश से इस्राएलियों को बाहर ले जाने के लिए
मिस्र देश के राजा फरओ से बातें की थीं।

मूसा को प्रभु की आज्ञा

28 जिस दिन प्रभु ने मूसा से मिस्र देश में
बातें कीं, 29उसने मूसा को बताया, 'मैं प्रभु हूं।
जो कुछ मैं तुझसे कहता हूं, वह मिस्र देश के
राजा फरओ से कहना।' 30किन्तु मूसा ने प्रभु
को उत्तर दिया, 'मैं अच्छा वक्ता नहीं हूं।
फरओ मेरी बात कैसे सुनेगा ?'

7 प्रभु ने मूसा से कहा, 'देख, मैं तुझे फरओ
के लिए ईश्वर-सा नियुक्त करता हूं, और
तेरा भाई हारून तेरा नबी होगा। 2जो आज्ञाएं मैं
तुझे दूंगा, उन्हें तू कहना ! तेरा भाई हारून
फरओ से कहेगा कि वह मिस्र देश से
इस्राएलियों को जाने दे। 3किन्तु मैं फरओ के
हृदय को हठी बना दूंगा। यद्यपि मैं मिस्र देश
में अपने अनेक चिह्न और आश्चर्यपूर्ण कार्य
दिखाऊंगा 4तथापि फरओ तुम्हारी बातें नहीं

6 : 15 उत 46 : 10 6 : 16 गण 3 : 17 6 : 18 गण 26 : 57 ; 1इत 6 : 18 7 : 3 प्रे 7 : 36

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सुनेगा। तब मैं मिस्र देश पर अपना हाथ
उठाऊंगा। मैं न्याय-निर्णय के महान कार्य
करके अपनी सेना, अपने लोगों, इस्राएल के
वंशजों को मिस्र देश से बाहर निकाल लूंगा।
5जब मैं मिस्र निवासियों पर अपना हाथ
उठाकर उनके मध्य से इस्राएलियों को बाहर
निकाल ले जाऊंगा, तब मिस्र निवासियों को
ज्ञात होगा कि मैं प्रभु हूं।'
6 मूसा और हारून ने ऐसा ही किया।
उन्होंने प्रभु की आज्ञा के अनुसार किया। 7जब
उन्होंने फरओ से बातचीत की तब मूसा की
आयु अस्सी वर्ष और हारून की आयु तिरासी
वर्ष की थी।

हारून की लाठी

8 प्रभु ने मूसा और हारून से पुनः कहा,
9'जब फरओ तुमसे कहेगा, "अपने कथन के
प्रमाण में आश्चर्यपूर्ण कार्य दिखाओ", तब तू
हारून से कहना, "अपनी लाठी उठा और उसे
फरओ के सम्मुख फेंक कि वह लाठी अजगर
बन जाए।"' 10अतः मूसा और हारून फरओ
के पास गए। जैसी प्रभु ने उन्हें आज्ञा दी थी,
वैसा ही उन्होंने किया। हारून ने फरओ और
उसके दरबारियों के सम्मुख अपनी लाठी
फेंकी। वह अजगर बन गई। 11फरओ ने विद्वानों
और तान्त्रिकों को बुलाया। मिस्र देश के
जादूगरों ने भी अपने मन्त्र-तन्त्र से वैसा ही
किया। 12उन्होंने अपनी-अपनी लाठी भूमि पर
फेंकी तो वे अजगर बन गईं। किन्तु हारून की
लाठी उनकी लाठियों को निगल गई। 13फरओ
का हृदय और हठीला हो गया। उसने मूसा
और हारून की बात नहीं सुनी, जैसा प्रभु ने
कहा था।

पहली विपत्ति: जल का रक्त में परिवर्तन

14 प्रभु ने मूसा से कहा, 'फरओ का हृदय
कठोर हो गया है। वह मेरे लोगों को नहीं जाने
देगा। 15अतः जब फरओ सबेरे नदी की ओर
आएगा, तब तू उसके पास जाना। तू नील नदी
के किनारे उसकी प्रतीक्षा करना। जो लाठी सर्प
बन गई थी, उसे अपने हाथ में लेना। 16तू उससे
कहना: इब्रानियों के परमेश्वर, प्रभु ने मुझे
आपके पास भेजा है। उसने कहा है, "मेरे
लोगों को जाने दे कि वे निर्जन प्रदेश में मेरी
सेवा करें।" देख, अब तक तूने मेरी बात नहीं
सुनी। 17प्रभु यों कहता है, "तू इस बात से
जानेगा कि मैं प्रभु हूं : मैं अपने हाथ की लाठी
से नील नदी के जल पर प्रहार करूंगा, और
जल रक्त में बदल जाएगा। 18नील नदी की
मछलियां मर जाएंगी। उसका जल दुर्गन्धमय
हो जाएगा। मिस्र निवासी नील नदी का जल
पीना घृणित समझेंगे।"' 19प्रभु ने मूसा से
कहा, 'हारून से कहना : अपनी लाठी ले और
अपने हाथ को मिस्र देश के समस्त जल अर्थात्
नदियों, नहरों, तालाबों और जल-कुण्डों पर
उठा कि जल रक्त बन जाए। तब समस्त मिस्र
देश में, लकड़ी और पत्थरों के जलपात्रों का
जल रक्त बन जाएगा।'
20 जैसी प्रभु ने मूसा और हारून को आज्ञा
दी थी, उन्होंने वैसा ही किया। हारून ने फरओ
और उसके दरबारियों के सम्मुख अपनी लाठी
उठाई और नील नदी के जल पर प्रहार किया।
नील नदी का समस्त जल रक्त बन गया।
21नील नदी की मछलियां मर गईं। उसका जल
दुर्गन्धमय हो गया। अतः मिस्र निवासी नील
नदी का जल पी न सके। समस्त मिस्र देश में
रक्त ही रक्त था। 22मिस्र देश के जादूगरों ने भी
अपने मन्त्र-तन्त्र से वैसा ही किया। अतएव
फरओ का हृदय हठीला बना रहा। उसने मूसा
और हारून की बातें नहीं सुनीं, जैसा प्रभु ने
कहा था। 23फरओ अपने महल को लौट गया।
उसने इस बात को हृदय में स्थान नहीं दिया।
24मिस्र निवासियों ने पीने के जल के लिए नील
नदी के आसपास खुदाई की; क्योंकि वे नील
नदी का जल न पी सके।

दूसरी विपत्ति : मेंढकों का आक्रमण

25 जिस दिन प्रभु ने नील नदी पर प्रहार
किया, तब से सात दिन व्यतीत हो चुके थे।*

---

* इब्रानी में अध्याय 7 : 26 ....

7 : 11 2 तिम 3 : 8 **7 : 14** प्रज्ञा 11 : 6-8 **7 : 17** प्रक 16 : 4 **7 : 20** भज 78 : 44; 105 : 29

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

8 प्रभु ने मूसा से कहा, 'फरओ के पास जा;
उससे कहना, ''प्रभु यों कहता है: मेरे
लोगों को जाने दे कि वे मेरी सेवा करें। 2पर
यदि तू इन्हें नहीं जाने देगा तो देख, मैं तेरे
सम्पूर्ण देश पर मेंढकों द्वारा प्रहार करूंगा।
3नील नदी में मेंढकों के झुण्ड के झुण्ड भर
जाएंगे। वे तेरे महल और शयनागार में, तेरी
शय्या पर, तेरे कर्मचारियों और तेरी प्रजा के
घरों में, तेरे तन्दूरों और आटा गूंधने के पात्रों पर
चढ़ जाएंगे। 4तेरी देह पर, तेरी प्रजा और तेरे
कर्मचारियों की देह पर मेंढक चढ़ जाएंगे।'''

5 * प्रभु ने मूसा से कहा, 'हारून से कहना,
''हाथ में लाठी लेकर नदियों, नहरों और
जलकुण्डों की ओर अपना हाथ फैला कि
मेंढक समस्त मिस्र देश पर आक्रमण करें।'''
6हारून ने मिस्र देश के जलाशयों की ओर
अपना हाथ फैलाया। मेंढकों ने आक्रमण कर
दिया। वे समस्त मिस्र देश पर छा गए। 7किन्तु
जादूगरों ने भी मन्त्र-तन्त्र के द्वारा वैसा ही
किया। वे भी मेंढकों को मिस्र देश पर बुला
लाए।

8 फरओ ने मूसा और हारून को बुलाया
और उनसे कहा, 'प्रभु से निवेदन करो कि वह
मुझसे और मेरी प्रजा से मेंढकों को दूर करे।
मैं इस्राएलियों को जाने दूंगा कि वे प्रभु के लिए
बलि चढ़ाएं।' 9मूसा ने फरओ से कहा, 'कृपया
मुझे आदेश दीजिए कि आपके लिए, आपके
कर्मचारियों और आपकी प्रजा के लिए, कब
निवेदन करूं जिससे मेंढक आपके पास से एवं
आपके महल से नष्ट हो जाएं, और वे केवल
नील नदी में शेष रहें ?' 10उसने कहा, 'कल।'
मूसा बोले, 'जैसा आप कहते हैं, वैसा ही होगा,
जिससे आप को ज्ञात हो जाए कि हमारे प्रभु
परमेश्वर के सदृश और कोई ईश्वर नहीं है।
11मेंढक आपके पास से, आपके घरों से,
आपके कर्मचारियों और आपकी प्रजा के पास
से चले जाएंगे। वे केवल नील नदी में शेष
रहेंगे।' 12मूसा और हारून फरओ के पास से
बाहर चले गए। मूसा ने फरओ से जैसा निश्चय
किया था, उसके अनुसार उन्होंने प्रभु से मेंढकों
के विषय में दुहाई दी। 13प्रभु ने मूसा के
कथनानुसार किया। घरों, आंगनों और खेतों में
मेंढक मर गए। 14मिस्र निवासियों ने उन्हें
एकत्र करके उनके ढेर लगा दिए। देश दुर्गन्ध
से भर गया। 15जब फरओ ने देखा कि संकट
टल गया, तब उसने अपना हृदय कठोर कर
लिया। उसने मूसा और हारून की बात नहीं
सुनी, जैसा प्रभु ने कहा था।

तीसरी विपत्ति : मच्छरों का आक्रमण

16 प्रभु ने मूसा से कहा, 'हारून से कहना :
अपनी लाठी उठा और भूमि की धूल पर प्रहार
कर जिससे समस्त मिस्र देश में भूमि की धूल
मच्छर बन जाए।' 17उन्होंने वैसा ही किया।
हारून ने अपना हाथ फैलाया और लाठी लेकर
भूमि की धूल पर प्रहार किया। अत: मच्छरों
ने मनुष्य और पशु दोनों पर आक्रमण कर
दिया। समस्त मिस्र देश में भूमि की धूल मच्छर
बन गई। 18जादूगरों ने अपने मन्त्र-तन्त्र के द्वारा
मच्छरों को लाने का प्रयत्न किया; किन्तु वे
सफल न हुए। मनुष्य और पशु दोनों के शरीर
पर मच्छर बने रहे। 19जादूगरों ने फरओ से
कहा, 'यह परमेश्वर का काम है**।' किन्तु फरओ
का हृदय हठीला बना रहा। उसने मूसा और
हारून की बात नहीं सुनी, जैसा प्रभु ने कहा था।

चौथी विपत्ति : डांसों का आक्रमण

20 प्रभु ने मूसा से कहा, 'तू सबेरे उठकर
नील नदी की ओर जाना, और फरओ की
प्रतीक्षा करना। वह वहाँ जाता है। तू उससे
कहना, ''प्रभु यों कहता है : मेरे लोगों को जाने
दे कि वे मेरी सेवा करें। 21यदि तू मेरे लोगों को
नहीं जाने देगा तो मैं तुझ पर, तेरे कर्मचारियों
और तेरी प्रजा पर, तुम्हारे घरों में डांसों के दल
भेजूंगा। मिस्र निवासियों के मकान और जिस
भूमि पर वे खड़े हैं, वे डांसों से भर जाएंगे।
22किन्तु उस दिन मैं गोशेन प्रदेश को, जहां मेरे
लोग निवास करते हैं, पृथक् रखूंगा, जिससे

*इब्रानी में अध्याय 8 : 1 ** शब्दश:, 'उंगली'

8 : 6 भज 78 : 45 ; 105 : 30 **8 : 17** भज 105 : 31 **8 : 19** लू 11: 20

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वहां डांसों का आक्रमण न हो और तुझे ज्ञात
हो जाए कि समस्त पृथ्वी में+ मैं ही प्रभु हूं।
23इस प्रकार मैं अपने लोगों और तेरी प्रजा के
मध्य भेद++ करूंगा। कल यह चिह्न प्रकट
होगा।''' 24प्रभु ने वैसा ही किया। डांसों
के विशाल झुण्ड ने फरओ के महल और
कर्मचारियों के प्रासादों पर, समस्त मिस्र देश
पर आक्रमण किया। देश डांसों के कारण नष्ट
हो गया।

25 फरओ ने मूसा और हारून को बुलाया।
उसने उनसे कहा, 'जाओ, और इसी देश में
अपने परमेश्वर के लिए बलि चढ़ाओ।'
26मूसा ने कहा, 'ऐसा करना उचित नहीं होगा।
हम अपने प्रभु परमेश्वर को ऐसी बलि चढ़ाएंगे
जिसे मिस्र निवासी घृणित समझते हैं। यदि हम
मिस्र निवासियों द्वारा घृणित समझी जाने वाली
बलि उनके सम्मुख चढ़ाएं, तो क्या वे हमें
पत्थरों से नहीं मारेंगे? 27हमें तीन दिन की यात्रा
की दूरी पर निर्जन प्रदेश अवश्य जाना होगा।
हमारा प्रभु परमेश्वर हमें जैसी आज्ञा देगा,
उसके अनुसार हम वहां बलि चढ़ाएंगे।'
28फरओ ने कहा, 'मैं तुम्हें जाने दूंगा कि तुम
अपने प्रभु परमेश्वर को निर्जन प्रदेश में बलि
चढ़ाओ। परन्तु तुम अधिक दूर न जाना। तुम
मेरे लिए निवेदन करो।' 29मूसा ने कहा, 'देखिए
मैं आपके पास से बाहर जा रहा हूं। मैं प्रभु से
निवेदन करूंगा कि वह कल आपके पास से,
आपके कर्मचारियों और आपकी प्रजा के पास
से डांसों के दल दूर करे। पर आप मुझे पुनः
धोखा न दें और कृपया, इस्राएलियों को प्रभु
के लिए बलि चढ़ाने दें।' 30मूसा फरओ के
पास से बाहर निकले। उन्होंने प्रभु से निवेदन
किया। 31प्रभु ने मूसा के कथनानुसार किया।
उसने फरओ, उसके समस्त कर्मचारियों और
उसकी प्रजा से डांस दूर कर दिए। एक भी डांस
न रहा। 32किन्तु फरओ ने इस बार भी अपना
हृदय कठोर बनाया और इस्राएलियों को नहीं
जाने दिया।

पांचवीं विपत्ति : पशु रोग

9 प्रभु ने मूसा से कहा, 'फरओ के पास जा;
तू उससे कहना, ''इब्रानियों का परमेश्वर
प्रभु यों कहता है : मेरी प्रजा को जाने दे कि
वे मेरी सेवा करें। 2यदि तू उन्हें नहीं जाने देगा
और उन्हें अब भी रोके रखेगा 3तो देख, तेरे
घोड़े, गदहे, ऊंट, गाय-बैल और भेड़-
बकरियां, आदि पशु जो मैदान में हैं, उन पर प्रभु
का हाथ उठेगा और एक भयंकर पशु-रोग
फैलेगा। 4परन्तु प्रभु इस्राएलियों के पशुओं
और मिस्र निवासियों के पशुओं के मध्य भेद
करेगा जिससे इस्राएलियों का एक भी पशु नहीं
मरेगा।''' 5प्रभु ने समय निश्चित किया, 'मैं
कल यह कार्य मिस्र देश में करूंगा।' 6प्रभु ने
दूसरे दिन ऐसा ही किया। मिस्र निवासियों के
सब पशु मर गए ; परन्तु इस्राएलियों का
एक भी पशु नहीं मरा। 7फरओ ने दूत भेजकर
देखा कि इस्राएलियों का एक भी पशु नहीं मरा
है। फिर भी उसका हृदय कठोर बना रहा और
उसने इस्राएलियों को नहीं जाने दिया।

छठी विपत्ति : फोड़ों का निकलना

8 प्रभु ने मूसा और हारून से कहा, 'तुम
भट्ठी से मुट्ठी-भर राख लो, और मूसा उसको
फरओ के सम्मुख आकाश की ओर उड़ा देगा।
9तब वह सूक्ष्म धूल बनकर मिस्र देश पर
फैल जाएगी, और समस्त देश में मनुष्यों तथा
पशुओं के शरीर पर फोड़े बन कर फूट
निकलेगी।' 10अतएव उन्होंने भट्ठी से मुट्ठी-
भर राख ली, और वे फरओ के सम्मुख खड़े
हुए। मूसा ने आकाश की ओर राख उड़ाई तो
वह मनुष्यों और पशुओं के शरीर पर फोड़े
बनकर फूट पड़ी। 11जादूगर फोड़ों के कारण
मूसा के सामने खड़े न हो सके। समस्त मिस्र
निवासियों के और जादूगरों के शरीर पर फोड़े
निकल आए थे। 12प्रभु ने फरओ के हृदय को
हठीला बना दिया। अतएव उसने इस्राएलियों
को नहीं जाने दिया, जैसा प्रभु ने मूसा से कहा
था।

+ अथवा, 'देश के मध्य' ++ अथवा, ''उद्धार''

8 : 24 भज 78 : 45 **9 : 6** भज 78 : 50 **9 : 9** प्रक 16 : 2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सातवीं विपत्ति : ओलों की वर्षा

13 प्रभु ने मूसा से कहा, 'सबेरे उठकर फरओ के सम्मुख खड़ा हो। तू उससे कहना, "इब्रानियों का परमेश्वर, प्रभु यों कहता है : मेरे लोगों को जाने दे कि वे मेरी सेवा करें। 14अन्यथा मैं इस बार अपनी सब विपत्तियां तुझ पर, तेरे कर्मचारियों और तेरी प्रजा पर भेजूंगा जिससे तुझे ज्ञात हो जाए कि समस्त पृथ्वी पर मुझ जैसा कोई नहीं है। 15मैं चाहता तो अब तक अपना सामर्थ्य भेजकर तुझे और तेरी प्रजा को महामारियों के द्वारा मार डालता और तू पृथ्वी से मिट जाता। 16किन्तु मैंने तुझे इस उद्देश्य से जीवित रखा कि तुझे अपना सामर्थ्य दिखाऊं, जिससे समस्त पृथ्वी पर मेरे नाम का गुणगान किया जाए। 17पर तू अब तक मेरे लोगों के सम्मुख बाधा बनकर खड़ा है और उन्हें नहीं जाने दे रहा है। 18अतएव देख, कल इसी समय मैं भारी ओलों की ऐसी भंयकर वर्षा करूंगा, जैसी मिस्र देश की स्थापना के दिन से अब तक नहीं हुई है। 19अब तू कर्मचारियों को भेजकर अपने सब पशुओं को एवं तेरे पास मैदान में जो पशु हों, उन सबको सुरक्षित स्थान में पहुंचा दे। क्योंकि वे सब मनुष्य और पशु जो भीतर इकट्ठे न होकर बाहर मैदान में रहेंगे, उन पर ओलों की वर्षा होगी और वे मर जाएंगे।" ' 20फरओ के कर्मचारियों में से जो व्यक्ति प्रभु के वचन का भय मानता था, उसने अपने सेवकों और पशुओं को घरों के भीतर भगा दिया, 21परन्तु जिसने प्रभु के वचन को अपने हृदय में स्थान नहीं दिया था, उसने अपने सेवक और पशु मैदान में रहने दिए।

22 प्रभु ने मूसा से कहा, 'अपना हाथ आकाश की ओर फैला जिससे समस्त मिस्र देश के मनुष्यों, पशुओं और खेतों के पौधों पर ओलों की वर्षा हो।' 23मूसा ने अपनी लाठी आकाश की ओर उठाई तो प्रभु ने मेघों की गरज के साथ ओले भेजे। विद्युत् धरती की ओर दौड़ी। इस प्रकार प्रभु ने मिस्र देश पर ओलों की वर्षा की। 24ओलों की वर्षा होती रही। विद्युत् निरन्तर ओलों के मध्य चमकती रही। जब से मिस्र राष्ट्र बना तब से ओलों की ऐसी भीषण वर्षा समस्त देश में कभी नहीं हुई थी। 25ओलों ने देश के मनुष्यों और पशुओं को जो मैदान में थे, नष्ट कर दिया। ओलों ने भूमि के पौधों को नष्ट कर दिया, मैदान के वृक्षों को ध्वस्त कर दिया। 26केवल गोशेन प्रदेश में, जहां इस्राएली निवास करते थे, ओलों की वर्षा नहीं हुई।

27 फरओ ने दूत भेजकर मूसा और हारून को बुलाया, और उनसे कहा, 'मैंने इस बार पाप किया है। प्रभु सच्चा प्रमाणित हुआ है, पर मैं और मेरी प्रजा झूठी। 28प्रभु से निवेदन करो। मेघों की गरज के साथ ओलों की अत्यधिक वर्षा हो चुकी है। मैं तुम्हें जाने दूंगा, तुम और अधिक नहीं रुकोगे।' 29मूसा ने उससे कहा, 'जैसे ही मैं नगर के बाहर जाऊंगा, प्रभु की ओर अपने हाथ फैलाऊंगा। तब मेघों की गरज बन्द हो जाएगी और ओले फिर न बरसेंगे, जिससे आपको ज्ञात हो जाएगा कि पृथ्वी प्रभु की है। 30किन्तु जहां तक आपका और आपके कर्मचारियों का सम्बन्ध है, मैं जानता हूं कि आपको प्रभु परमेश्वर का कोई भय नहीं है।' (31अलसी और जौ की फसल नष्ट हो गई, क्योंकि जौ की बालें निकल चुकी थीं और अलसी में फूल आ गए थे। 32किन्तु गेहूं और कठिया गेहूं नष्ट नहीं हुए। वे विलम्ब से बढ़ते हैं।) 33मूसा फरओ के पास से नगर के बाहर गए, और प्रभु की ओर अपने हाथ फैलाए। अत: मेघों की गरज एवं ओलों की वर्षा रुक गई। पृथ्वी पर वर्षा भी बन्द हो गई। 34जब फरओ ने देखा कि वर्षा, ओला-वृष्टि और मेघों की गरज बन्द हो गई तब उसने पुन: पाप किया। उसने एवं उसके कर्मचारियों ने अपने हृदय को कठोर किया। 35फरओ का हृदय हठीला हो गया। उसने इस्राएलियों को नहीं जाने दिया, जैसा प्रभु ने मूसा के द्वारा कहा था।

---

9 : 16 रोम 9 : 17 **9 : 23** भज 78 : 47; प्रक 8 : 7 ; 16 : 21 **9 : 25** भज 105 : 33

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आठवीं विपत्ति: टिड्डी दल का आक्रमण

10 प्रभु ने मूसा से कहा, 'फरओ के पास
जा। मैंने उसका और उसके कर्मचारियों
का हृदय कठोर कर दिया है कि उनके मध्य में
अपने ये चिह्न दिखाऊं, 2 और तुम अपने पुत्र-
पौत्रादि से वर्णन कर सको कि मैंने मिस्र देश
को कैसा उपहास का पात्र बनाया और उनके
मध्य कितने चिह्न दिखाए, जिससे तुम्हें ज्ञात हो
जाए कि मैं प्रभु हूं।'
3 मूसा और हारून फरओ के पास गए।
उन्होंने उससे कहा, 'इब्रानियों का परमेश्वर,
प्रभु यों कहता है, "तू कब तक मेरे सम्मुख
नतमस्तक नहीं होगा? मेरे लोगों को जाने दे कि
वे मेरी सेवा करें। 4यदि तू उन्हें नहीं जाने देगा
तो देख, कल मैं तेरे देश पर टिड्डी दल का
आक्रमण कराऊंगा। 5टिड्डियां भूमि की सतह
को ऐसा ढक लेंगी कि वह किसी को दिखाई
न देगी। जो ओलों की वर्षा से बच गया है,
उसको वे खा लेंगी। वे तुम्हारे मैदान के समस्त
पेड़ों को भी खा लेंगी। 6वे तेरे महल में, तेरे
कर्मचारियों के प्रासादों में और मिस्र निवासियों
के सब घरों में भर जाएंगी। इतनी टिड्डियां तेरे
बाप-दादा ने, तेरे पूर्वजों ने अपने जन्म से आज
तक नहीं देखी होंगी।"' तब मूसा फरओ के
पास से लौटकर बाहर चले गए।
7 फरओ के कर्मचारियों ने उससे कहा,
'कब तक यह मनुष्य हमारे लिए फन्दा बना
रहेगा? इस्राएलियों को जाने दीजिए कि वे
अपने प्रभु परमेश्वर की सेवा करें। क्या आप
अभी तक नहीं जानते कि मिस्र देश नष्ट हो
गया है?' 8अत: मूसा और हारून को फरओ
के पास वापस लाया गया। फरओ ने उनसे
कहा, 'जाओ, अपने प्रभु परमेश्वर की सेवा
करो, किन्तु जाने वाले लोग कौन-कौन हैं?'
9मूसा ने कहा, 'हम बाल-बच्चों और बूढ़ों
समेत जाएंगे। हम अपने पुत्र-पुत्रियों, भेड़-
बकरियों, गाय-बैलों को लेकर जाएंगे;
क्योंकि हमें प्रभु के लिए यात्रा-पर्व मनाना
है।' 10फरओ ने उनसे कहा, 'यदि मैं तुम्हें और
तुम्हारे बच्चों को जाने दूं तो प्रभु तुम्हारे साथ
हो! पर देखो, तुम्हारे मुख पर बुराई झलक रही
है। 11नहीं, कदापि नहीं। केवल पुरुष जाएं
और प्रभु की सेवा करें। यही तो तुम चाहते
हो।' वे फरओ के सम्मुख से बाहर निकाल
दिए गए।
12 प्रभु ने मूसा से कहा, 'मिस्र देश की ओर
अपना हाथ उठा कि टिड्डी दल मिस्र देश पर
आक्रमण करें और देश के प्रत्येक पौधे को खा
डालें जो ओलों की वर्षा से बच गया है।'
13अतएव जब मूसा ने मिस्र देश की ओर
अपनी लाठी उठाई तब प्रभु ने समस्त मिस्र देश
पर पूरे दिन और रात पूर्वी वायु को बहाया। जब
सबेरा हुआ तब पूर्वी वायु अपने साथ टिड्डी दल
ले आई। 14टिड्डी दल समस्त मिस्र देश पर टूट
पड़ा। टिड्डियां सारे देश में छा गईं। टिड्डियों का
दल इतना विशाल था जितना इससे पूर्व कभी
नहीं देखा गया और न कभी इसके पश्चात् देखा
जाएगा। 15टिड्डियों ने भूमि की सतह को ऐसा
ढक लिया कि सम्पूर्ण देश में अन्धकार छा
गया। उन्होंने देश के समस्त पौधों को, वृक्षों के
फलों को, जो ओलों की वर्षा से बच गए थे,
खा लिया। समस्त मिस्र देश में कोई भी हरी
वस्तु नहीं बची, न तो मैदान के पौधे और न
पेड़।
16 फरओ ने अविलम्ब मूसा और हारून
को बुलाया और उनसे कहा, 'मैंने तुम्हारे
परमेश्वर, प्रभु के प्रति और तुम्हारे प्रति पाप
किया है। 17अब कृपया इस बार और मेरा पाप
क्षमा करो और अपने प्रभु परमेश्वर से निवेदन
करो कि वह मुझ पर से यह मृत्यु-संकट दूर
करे।' 18मूसा फरओ के पास से बाहर गए।
उन्होंने प्रभु से निवेदन किया। 19अत: प्रभु ने
प्रचण्ड पश्चिमी वायु बहाई। वह टिड्डियों को
उड़ा ले गई और उन्हें लाल सागर+ में डुबा
दिया। समस्त मिस्र देश में एक भी टिड्डी शेष
नहीं रही। 20किन्तु प्रभु ने फरओ का हृदय

+ अथवा "नड सागर"

10 : 2 व्य 4 : 9; भज 44 : 1 **10 : 14** भज 78 : 46 ; 105 : 34 ; प्रक 9 : 2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हठीला बना दिया। अत: उसने इस्राएलियों को नहीं जाने दिया।

नौवीं विपत्ति : अन्धकार

21 प्रभु ने मूसा से कहा, 'अपना हाथ आकाश की ओर उठा जिससे मिस्र देश पर अन्धकार छा जाए, ऐसा अन्धकार जिसका बोध हो सके।' 22अत: मूसा ने अपना हाथ आकाश की ओर उठाया तो तीन दिन तक समस्त मिस्र देश पर घोर अन्धकार छाया रहा। 23मिस्र निवासी एक-दूसरे को नहीं देख सके। वे तीन दिन तक अपने स्थान से उठ भी न सके। परन्तु इस्राएलियों के निवास-स्थानों में प्रकाश था। 24फरओ ने मूसा को बुलाया। उसने कहा, 'जाओ, अपने प्रभु की सेवा करो। तुम्हारे बाल-बच्चे भी तुम्हारे साथ जा सकते हैं, केवल अपनी भेड़-बकरियों और गाय-बैलों को छोड़ जाओ।' 25मूसा ने कहा, 'आपको हमें बलि और अग्नि-बलि के लिए पशु भी प्रदान करने चाहिए जिससे हम अपने प्रभु परमेश्वर के लिए बलि चढ़ा सकें। 26हमारे पशु हमारे साथ अवश्य जाएंगे। एक भी पशु नहीं छोड़ा जाएगा। हम अपने प्रभु परमेश्वर की सेवा के लिए उनको अपने साथ ले जाएंगे। जब तक हम वहां नहीं पहुंच जाते, तब तक नहीं जानते कि हम अपने प्रभु परमेश्वर की सेवा कैसे करेंगे।' 27किन्तु प्रभु ने फरओ के हृदय को हठीला बना दिया जिससे उसने इस्राएलियों को नहीं जाने दिया। 28फरओ ने मूसा से कहा, 'मेरे पास से चले जाओ। तुम सावधान रहना। मेरा मुख फिर न देखना; अन्यथा जिस दिन तुम मेरा मुख देखोगे, मर जाओगे।' 29मूसा ने कहा, 'आपने ठीक कहा। मैं आपके मुख को कभी नहीं देखूंगा।'

पहिलौठों की मृत्यु की चेतावनी

11 प्रभु ने मूसा से कहा, 'मैं एक और विपत्ति फरओ और मिस्र पर लाऊंगा। तत्पश्चात् वह तुम्हें यहां से जाने देगा। जब वह जाने देगा तब तुम्हें पूर्णत: यहां से निकाल ही देगा। 2अब तू मेरे निज लोगों से बोलना कि प्रत्येक पुरुष अपने पड़ोसी से और प्रत्येक स्त्री अपनी पड़ोसिन से सोने-चांदी के आभूषण मांग ले।' 3प्रभु ने अपने लोगों को मिस्र निवासियों की कृपा-दृष्टि प्रदान की। इतना ही नहीं, वह व्यक्ति—मूसा—मिस्र देश में फरओ के कर्मचारियों एवं सब लोगों की दृष्टि में अत्यन्त महान थे।

4 मूसा ने फरओ से कहा, 'प्रभु यों कहता है, ''मैं आधी रात को मिस्र देश के मध्य विचरण करूँगा 5और मिस्र देश के सब पहिलौठे मर जाएंगे। सिंहासन पर विराजने वाले फरओ के ज्येष्ठ पुत्र से लेकर चक्की पीसने वाली सेविका के ज्येष्ठ पुत्र तक। पशुओं के भी सब पहिलौठे मर जाएँगे। 6सारे मिस्र देश में बड़ा हाहाकार मचेगा। ऐसा हाहाकार न कभी हुआ था और न कभी होगा। 7किन्तु इस्राएलियों के प्रति, चाहे वे मनुष्य हों अथवा उनके पशु, कुत्ता भी नहीं गुर्राएगा, जिससे तुमको ज्ञात होगा कि प्रभु मिस्र निवासियों और इस्राएलियों के मध्य भेद करता है।'' 8ये आपके सब कर्मचारी मेरे पास आएंगे और सिर झुकाकर मेरा अभिवादन करेंगे। वे कहेंगे, ''कृपया, अपने अनुचरों को लेकर चले जाइए।'' तत्पश्चात् मैं भी चला जाऊँगा।' मूसा तीव्र क्रोध में भरे हुए फरओ के पास से चले गए।

9 प्रभु ने मूसा से कहा, 'फरओ तेरी बातें नहीं सुनेगा जिससे मैं मिस्र देश में अधिकाधिक आश्चर्यपूर्ण कार्य करूँ।'

10 मूसा और हारून ने फरओ के सम्मुख ये आश्चर्यपूर्ण कार्य किए। किन्तु प्रभु ने फरओ का हृदय हठीला बना दिया। अतएव उसने मिस्र देश से इस्राएलियों को नहीं जाने दिया।

पास्का (फसह)+ का पर्व

12 प्रभु ने मूसा और हारून से मिस्र देश में कहा, 2'यह महीना तुम्हारे लिए सब

+ पाठक स्थानीय कलीसिया की परम्परा के अनुसार 'फसह' अथवा 'पास्का' शब्द का प्रयोग कर सकता है। मूल इब्रानी शब्द का उच्चारण 'पेसख' है।

10 : 22 भज 105 : 28 ; प्रक 16 : 10 ; प्रज्ञा 17 **11 : 3** नि 3 : 21

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

महीनों में प्रथम माना जाएगा। तुम इस महीने
को वर्ष के महीनों में प्रथम मानना। 3तुम समस्त
इस्राएली मंडली* से यह कहो कि इस महीने
के दसवें दिन प्रत्येक व्यक्ति, अपने पूर्वजों के
परिवार के अनुसार, घर पीछे एक-एक मेमना
लेगा। 4यदि कोई परिवार मेमने का मांस खाने
के लिए छोटा हो, तो वह और उसका
निकटतम पड़ोसी अपने-अपने परिवार की
सदस्य-संख्या के अनुसार मेमना लेगा। तुम
प्रत्येक व्यक्ति के खाने के सामर्थ्य के अनुसार
मेमने के मांस का हिसाब करना। 5तुम्हारा मेमना
निष्कलंक, नर और एक वर्ष का होना चाहिए।
तुम उसे भेड़ों अथवा बकरियों के झुण्ड से
लेना। 6तुम उसे इस महीने के चौदहवें दिन तक
जीवित रखना। उस दिन गोधूली के समय
इस्राएली मंडली की समस्त धर्मसभा अपने-
अपने मेमने का वध करेगी। 7तत्पश्चात् वे उसका
कुछ रक्त लेंगे और जिन घरों में वे उसे खाएंगे,
उनके द्वार के दोनों बाजुओं और चौखट के सिरे
पर उसे लगा देंगे। 8वे उसी रात मेमने का मांस
अग्नि में भूनकर खाएँगे। वे मांस को बेखमीर
रोटी और कड़वे साग-पात के साथ खाएँगे।
9मेमने के मांस को कच्चा अथवा जल में
उबालकर मत खाना, वरन् सिर, पैर और
अंतड़ियों सहित उसको अग्नि में भूनकर
खाना। 10तुम उसका अवशेष सबेरे तक न
छोड़ना। यदि कुछ मांस सबेरे तक रह जाएगा
तो उसे अग्नि में जला देना। 11तुम उसे ऐसी
स्थिति में खाओगे : अपनी कमर कसे, पैरों में
जूते पहिने और हाथ में लाठी लिये हुए तुम
मांस को शीघ्रता से खाना। यह प्रभु का
'पारगमन'** है। 12मैं इस रात मिस्र देश में
विचरण करूँगा, और समस्त देश के मनुष्यों
और पशुओं के पहिलौठों को मारूँगा। मैं मिस्र
देश के सब देवताओं को दण्ड दूंगा। मैं प्रभु हूं।
13जिन घरों में तुम रहते हो, उन पर लगाया
हुआ रक्त तुम्हारे लिए एक चिह्न होगा। जब मैं
उस रक्त को देखूंगा तब आगे बढ़ जाऊँगा। जब
मैं मिस्र देश को मारूंगा तब तुम्हें नष्ट करने के
लिए तुम पर महामारी का आक्रमण न होगा।

14 'यह दिन तुम्हारे लिए एक स्मारक
दिवस होगा। तुम इसे प्रभु के लिए यात्रा-पर्व
के रूप में मनाना। तुम इसे पीढ़ी से पीढ़ी तक
स्थायी संविधि मानना। 15तुम सात दिन तक
बेखमीर रोटी खाना। तुम पहले ही दिन अपने-
अपने घरों से खमीर दूर कर देना; क्योंकि जो
व्यक्ति पहले दिन से सातवें दिन तक, इस
अवधि में खमीरी वस्तु खाएगा, वह इस्राएली
समाज में से नष्ट किया जाएगा। 16तुम पहले
दिन और सातवें दिन पवित्र सभा बुलाना। इन
दोनों दिनों में कोई भी काम न किया जाए;
प्रत्येक मनुष्य के लिए जो भोजन चाहिए,
केवल उसको तुम पका सकते हो। 17तुम
बेखमीर रोटी के पर्व का पालन करना। इस दिन
मैं तुमको दल-बल सहित मिस्र देश से बाहर
निकाल लाया हूं। इसलिए तुम पीढ़ी से पीढ़ी
तक स्थायी संविधि के रूप में इस दिन का
पालन करना। 18तुम प्रथम महीने के चौदहवें
दिन की सन्ध्या से इक्कीसवें दिन की सन्ध्या
तक बेखमीर रोटी खाना। 19सात दिन तक तुम्हारे
घरों में खमीरी वस्तुएँ नहीं पाई जाएंगी; क्योंकि
खमीर को खाने वाले सब व्यक्ति, चाहे वे
विदेशी हों अथवा देशी, इस्राएली मंडली में से
नष्ट किए जाएंगे। 20तुम कोई भी खमीरी वस्तु
न खाना। तुम अपने निवास स्थानों में बेखमीर
रोटी ही खाना।'

21 मूसा ने इस्राएलियों के सब धर्मवृद्धों को
बुलाया और उनसे कहा, 'तुम अपने-अपने
परिवार के अनुसार मेमना चुनो और पास्का
(फसह) पर्व का मेमना बलि करो। 22तुम जूफा
का एक गुच्छा लो और उसे चिलमची में भरे
हुए रक्त में डुबाओ। तत्पश्चात् चिलमची के

* अथवा 'समाज' ** अथवा ''पास्का'' जिसका अर्थ है 'लांघना', 'छोड़कर आगे बढ़ जाना'।

12 : 5 लेव 22 : 19 ; 1 पत 1 : 19 **12 : 8** 1 कुर 5 : 7 **12 : 11** लेव 23 : 5; गण 9 : 1-5; 28 : 16; व्य 16 : 1-2; यहेज 45 : 21 **12 : 12** गण 33 : 4 **12 : 13** इब्र 11 : 28 **12 : 17** नि 23 : 15; 34 : 18; लेव 23 : 6-8; गण 28 : 17-25; व्य 16 : 3-8; मत 26 : 17

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रक्त को द्वार की चौखट के सिरे और दोनों
बाजुओं पर लगाओ। कोई भी व्यक्ति सबेरा
होने तक अपने घर के द्वार के बाहर नहीं
निकलेगा; [23]क्योंकि प्रभु मिस्र-निवासियों का
वध करने के लिए वहाँ से होकर जाएगा। जब
वह द्वार की चौखट के सिरे और दोनों बाजुओं
पर रक्त देखेगा, तब द्वार से आगे बढ़ जाएगा।
वह विनाशक दूत को तुम्हारा वध करने के लिए
घर के भीतर नहीं जाने देगा। [24]तुम और तुम्हारे
वंशज संविधि के रूप में इस धर्मविधि का सदा
पालन करते रहें। [25]जब तुम उस देश में पहुँचो,
जिसे प्रभु अपने वचन के अनुसार तुम्हें प्रदान
करेगा, तब भी तुम इसी धर्मविधि का पालन
करना। [26]जब तुम्हारी सन्तान तुमसे पूछे, "इस
धर्मविधि का क्या अर्थ है?" [27]तब तुम कहना,
"यह प्रभु के 'पारगमन' की बलि है; क्योंकि
प्रभु मिस्र देश में इस्राएलियों के घरों को
छोड़कर आगे बढ़ गया था। यद्यपि प्रभु ने मिस्र
निवासियों का वध किया था, किन्तु उसने
हमारे घरों को छोड़ दिया था"। 'इस्राएलियों
ने सिर झुकाकर वन्दना की। [28]तब वे जाकर
ऐसा ही करने लगे। जो आज्ञा प्रभु ने मूसा और
हारून को दी, उसी के अनुसार इस्राएलियों ने
किया।

अन्तिम विपत्ति : पहिलौठों का वध

29 प्रभु ने मध्य रात्रि में सिंहासन पर
विराजमान फरओ के ज्येष्ठ पुत्र से लेकर
कारागार में पड़े बन्दी के ज्येष्ठ पुत्र, और पशुओं
के पहिलौठे बच्चे तक, मिस्र देश में सब
पहिलौठों को मार डाला। [30]फरओ, उसके
कर्मचारी और सब मिस्र-निवासी रात में उठे।
सारे देश में हाहाकार मचा था। एक भी घर ऐसा
न था जहाँ किसी की मृत्यु न हुई थी। [31]फरओ
ने रात को ही मूसा तथा हारून को बुलाया और
उनसे कहा, 'उठो, तुम और इस्राएली, मेरी
प्रजा के मध्य से निकल जाओ। जाओ, जैसा
तुमने कहा था, अपने प्रभु की सेवा करो।
[32]जैसा तुमने कहा था, अपनी भेड़-बकरियाँ,
गाय-बैल भी ले जाओ। तुम मुझे आशीर्वाद भी
देना।'

33 मिस्र-निवासी भी इस्राएलियों पर दबाव
डालने लगे, जिससे उन्हें देश से अविलम्ब
बाहर किया जा सके। मिस्र-निवासी कहते थे,
'हम सब मर मिटे!' [34]इस्राएलियों ने अपने
गूंधे हुए आटे को, खमीर मिलाने के पूर्व, गून्धने
के पात्रों सहित चादरों में बांधकर अपने कन्धों
पर डाल लिया। [35]जैसा मूसा ने उनसे कहा था,
उन्होंने वैसा ही किया। उन्होंने मिस्र-निवासियों
से सोने-चांदी के आभूषण और वस्त्र मांग
लिये। [36]प्रभु ने इस्राएलियों को मिस्र-निवासियों
की कृपादृष्टि प्रदान की। अतः उन्होंने जो मांगा
था, वह मिस्र-निवासियों ने उन्हें दे दिया। इस
प्रकार उन्होंने मिस्र-निवासियों को लूट लिया।

मिस्र देश से निर्गमन

37 इस्राएलियों ने रामसेस नगर से सुक्कोत
नगर की ओर प्रस्थान किया। स्त्रियों और बच्चों
को छोड़कर पैदल चलने वाले पुरुष प्रायः छः
लाख थे। [38]उनके साथ अनेक गैर-इस्राएली
लोग+ भी गए। भेड़-बकरी, गाय-बैल का भी
बड़ा समूह उनके साथ था। [39]जो गून्धा हुआ
आटा वे मिस्र देश से लाए थे, उन्होंने उससे
बेखमीर रोटी बनाई। अभी तक आटे में खमीर
नहीं मिलाया गया था, क्योंकि इस्राएलियों को
मिस्र देश से निकाला गया था। वे न तो कुछ
समय के लिए वहाँ ठहर सके थे और न अपनी
यात्रा के लिए भोजन-आदि पका ही सके थे।

40 इस्राएलियों का मिस्र-प्रवासकाल समाप्त
हुआ : उन्होंने मिस्र देश में चार सौ तीस वर्ष
तक निवास किया था। [41]चार सौ तीस वर्ष के
ठीक अन्तिम दिन प्रभु के लोग दल-बल
सहित मिस्र देश से निकल गए। [42]प्रभु की यह
ऐसी रात है जिसमें उसने इस्राएलियों को मिस्र

+ अथवा, 'मिली-जुली जातियों की एक भीड़'

12 : 23 यहेज 9 : 6; इब्र 11 : 28 **12 : 26** व्य 32 : 7; यहो 4 : 6 **12 : 29** भज 78 : 51; 105 : 36; 135 : 8; 136 : 10; प्रज्ञा 18 : 15 **12 : 35** नि 3 : 22 **12 : 37** गण 33 : 5; 1 : 46 **12 : 40** उत 15 : 13; प्रे 7 : 6; गल 3 : 17

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

देश से निकालने के लिए जागरण किया था।
इसलिए यह रात प्रभु के लिए समस्त इस्राएली
लोगों के द्वारा पीढ़ी से पीढ़ी तक जागरण-रात्रि
के रूप में मनाई जाएगी।

पास्का (फसह) के पर्व की अन्य धर्म-विधियाँ

43 प्रभु ने मूसा और हारून से कहा, 'यह
पास्का के पर्व की संविधि है : कोई भी विदेशी
पास्का बलि को नहीं खाएगा, 44किन्तु रुपया
देकर खरीदा हुआ गुलाम, जिसका तुम खतना
कर चुके हो, उस को खा सकता है। 45अस्थायी
प्रवासी और मजदूर उसको नहीं खा सकते।
46मेमने का मांस केवल एक ही घर के भीतर
खाया जाएगा। तुम मांस का कुछ भी अंश घर
के बाहर न ले जाना। तुम बलि-पशु की एक
भी हड्डी न तोड़ना। 47सम्पूर्ण इस्राएली मंडली
इस पर्व को मनाएगी। 48यदि कोई प्रवासी तुम्हारे
साथ निवास करता है और वह प्रभु के लिए
पास्का का पर्व मनाना चाहे, तो उसके परिवार
के सब पुरुषों का खतना किया जाए। तभी वह
धर्मविधि में भाग लेकर पर्व को मना सकेगा।
वह उस देश का ही निवासी समझा जाएगा। पर
कोई भी खतना-रहित मनुष्य पास्का बलि को
नहीं खा सकता। 49देशी और प्रवासी व्यक्ति
के लिए, जो तुम्हारे मध्य निवास करता है, एक
ही व्यवस्था है।'

50 इस्राएलियों ने ऐसा ही किया। जैसी
आज्ञा प्रभु ने मूसा और हारून को दी थी, उसी
के अनुसार इस्राएलियों ने किया। 51प्रभु ठीक
उसी दिन इस्राएलियों को दल-बल सहित
मिस्र देश से बाहर निकाल लाया।

13 प्रभु ने मूसा से कहा, 2'समस्त पहिलौठों
को मुझे अर्पित कर। सब बच्चे, जो
इस्राएल में पहिलौठे हैं, चाहे मनुष्य के हों,
अथवा पशु के, वे मेरे ही हैं।'

बेखमीर रोटी का पर्व

3 मूसा ने इस्राएलियों से कहा, 'इस दिन को
स्मरण रखना। इस दिन तुम मिस्र देश से,
दासत्व के घर से, निकले थे। प्रभु ने अपने
भुजबल से तुम्हें उस स्थान से बाहर निकाला
था। इस दिन खमीरी रोटी न खाई जाए।
4आबीब के महीने में आज ही के दिन तुम
निकले हो। 5जब प्रभु तुम्हें कनानी, हित्ती,
अमोरी, हिव्वी और यबूसी जातियों के देश में
ले जाएगा, जिसको प्रदान करने की शपथ
उसने तुम्हारे पूर्वजों से खाई थी, जिसमें दूध
और शहद की नदियाँ बहती हैं, तब तुम इसी
महीने में प्रस्तुत धर्मविधि का पालन करना।
6तुम सात दिन तक बेखमीर रोटी खाना, और
सातवें दिन प्रभु के लिए यात्रा-पर्व मनाना।
7सात दिन तक बेखमीर रोटी खाई जाएगी।
खमीरी रोटी तुम्हारे पास न दिखाई दे, यहाँ तक
कि समस्त देश में तुम्हारे पास खमीर न दिखे।
8तू अपने पुत्र से उस दिन यह कहना, "जब
मैं मिस्र देश से निकला था तब प्रभु ने मेरे लिए
जो किया उसकी स्मृति में यह पर्व मनाया जाता
है।" 9वह तेरे हाथ पर एक चिह्न और तेरी दोनों
आंखों के मध्य स्मारक होगा, जिससे प्रभु की
व्यवस्था तेरे मुंह में विराजती रहे; क्योंकि प्रभु
ने सबल हाथों से तुझे मिस्र देश से बाहर
निकाला है। 10तू इस संविधि का पालन प्रतिवर्ष
नियत समय पर करते रहना।

पहिलौठों का अर्पण

11 'जब प्रभु तुझे कनानी जाति के देश में
ले आए जिसकी शपथ उसने तुझसे और तेरे
पूर्वजों से खाई थी, और जब वह देश तुझे दे
12तब तू सब पहिलौठों को प्रभु के लिए अलग
करना। तेरे पशुओं के सब पहिलौठे, नर बच्चे
प्रभु के होंगे। 13तू गधे के प्रत्येक पहिलौठे बच्चे
को मेमना देकर छुड़ा लेना। यदि तू उसे न
छुड़ाए तो उसकी गर्दन तोड़ देना। पर मनुष्य
का प्रत्येक पहिलौठा पुत्र छुड़ाया जाएगा।
14जब भविष्य में तेरा पुत्र तुझसे पूछे, "इसका
क्या अर्थ है?" तब तू उससे कहना, "प्रभु
अपने भुजबल से हमें मिस्र देश से, दासत्व के
घर से बाहर निकाल लाया था। 15जब फरओ

---

12 : 46 गण 9 : 12; यो 19 : 36 **12 : 49** गण 9 : 14 ; 15 : 15 **13 : 2** नि 22 : 30; गण 3 : 13; लू 2 : 23
13 : 9 गण 15 :39; मत 23 : 5 **13 : 12** नि 34 : 19; लेव 27 : 26; गण 18 : 15; यहेज 44 : 30

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ने हठपूर्वक हमें नहीं जाने दिया तब प्रभु ने मिस्र
देश के सब पहिलौठों को, मनुष्यों और पशुओं
के पहिलौठों को, मार डाला था। इसलिए मैं
प्रत्येक नर पहिलौठा प्रभु को चढ़ाता हूं, किन्तु
मैं अपने पहिलौठे पुत्र को छुड़ा लेता हूं।''
16यह संविधि तेरे हाथ पर एक चिह्न अथवा
तेरी दोनों आंखों के मध्य टीका बनेगी; क्योंकि
प्रभु ने सबल हाथों से हमें मिस्र देश से बाहर
निकाला था।'

मेघ-स्तम्भ और अग्नि-स्तम्भ

17 फरओ ने इस्राएलियों को जाने दिया।
परमेश्वर उन्हें पलिश्ती देश के मार्ग से नहीं ले
गया, यद्यपि वह निकट था। परमेश्वर ने कहा,
'ऐसा न हो कि जब वे युद्ध देखें तब पछताकर
मिस्र देश लौट जाएं।' 18इसलिए परमेश्वर
उनको घुमा-फिराकर निर्जन प्रदेश के मार्ग से
लाल सागर की ओर ले गया। इस्राएली मिस्र
देश से अस्त्र-शस्त्र से सज्जित होकर निकले
थे। 19मूसा ने अपने साथ यूसुफ की अस्थियाँ
लीं; क्योंकि यूसुफ ने इस्राएलियों से यह शपथ
ली थी, 'जब परमेश्वर तुम्हारी सुध ले, तब
अपने साथ मेरी अस्थियों को यहाँ से अवश्य
ले जाना।' 20वे सुक्कोत नगर से आगे बढ़े और
उन्होंने निर्जन प्रदेश के छोर पर स्थित एताम
नगर में पड़ाव डाला। 21प्रभु दिन में उन्हें मार्ग
दिखाने के लिए मेघ-स्तम्भ और रात में उन्हें
प्रकाश देने के लिए अग्नि-स्तम्भ में होकर
उनके आगे-आगे चलता था, जिससे वे रात-
दिन यात्रा कर सकें। 22दिन में मेघ-स्तम्भ और
रात में अग्नि-स्तम्भ इस्राएलियों के सम्मुख से
नहीं हटता था।

इस्राएलियों का लाल सागर पार करना

14 प्रभु मूसा से बोला, 2'तू इस्राएलियों
को बता कि वे पीछे लौटकर मिगदोल
नगर और समुद्र के मध्य में स्थित पीहाहीरोत
नगर के सम्मुख बअल-सफोन के सामने
पड़ाव डालें। तुम समुद्र के किनारे पड़ाव
डालना। 3फरओ इस्राएलियों के विषय में
कहेगा, ''वे अनजान देश में भटककर घबरा
गए हैं। निर्जन प्रदेश ने उन्हें बन्दी बना लिया
है।'' 4मैं फरओ के हृदय को हठीला बना दूंगा
और वह इस्राएलियों का पीछा करेगा। तब मैं
फरओ तथा उसकी समस्त सेना को पराजित
कर अपनी महिमा करूँगा जिससे मिस्र-
निवासी जान लें कि मैं प्रभु हूं।' इस्राएलियों ने
ऐसा ही किया।

5 जब मिस्र देश के राजा को बताया गया
कि इस्राएली भाग गए, तब उनके प्रति फरओ
और उसके कर्मचारियों का मन बदल गया। वे
कहने लगे, 'यह हमने क्या किया कि इस्राएलियों
को दासत्व से मुक्त कर जाने दिया?' 6अतएव
फरओ ने अपना रथ जुतवाया और अपने साथ
सैनिकों* को लिया। 7उसने छः सौ चुने हुए
रथ, तथा मिस्र देश के सब दूसरे रथ भी लिये,
जिनपर उच्चाधिकारी सवार थे। 8प्रभु ने मिस्र
देश के राजा फरओ का हृदय हठीला बना
दिया। अतः उसने इस्राएलियों का पीछा किया
जो साहस के साथ बढ़ते जा रहे थे। 9समस्त
मिस्र-निवासियों ने, फरओ के सब घोड़ों,
रथों, घुड़सवारों और उसकी सम्पूर्ण सेना ने
उनका पीछा किया, और बअलसफोन के
सम्मुख पीहाहीरोत के पास, जहाँ इस्राएली
समुद्र तट पर पड़ाव डाले हुए थे, जा पहुँचे।

10 जब फरओ निकट आया, इस्राएलियों
ने अपनी आंखें उठाकर देखा कि सारा मिस्र
देश उनका पीछा कर रहा है। वे बहुत डर गए।
उन्होंने चिल्लाकर प्रभु की दुहाई दी।
11इस्राएलियों ने मूसा से कहा, 'क्या मिस्र देश
में कबरों का अभाव था जो आप हमें निर्जन
प्रदेश में मरने के लिए ले आए? आपने हमें
मिस्र देश से निकालकर हमारे साथ यह क्या
किया? 12क्या हमने आपसे मिस्र देश में यह

---

* मूल में, ''अपनी प्रजा''

13 :16 व्य 6 : 8 **13 : 17** गण 14 : 1 **13 : 19** उत 50 : 25; यहो 24 : 32 **13 : 20** गण 33 : 6 **13 : 21** व्य 1 : 33; नह 9 : 19 : भज 78 : 14; यश 4 : 5; यो 8 : 12 **13 : 22** प्रज्ञा 10 : 17; 18 :3**14 : 8** प्रे 13 : 17 **14 : 12** नि 16 : 3; 17 : 3

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नहीं कहा था, ''हमारे पास से चले जाइए; हमें
मिस्र-निवासियों की गुलामी करने दीजिए?''
हमारे लिए यह अच्छा होता कि हम निर्जन
प्रदेश में मरने की अपेक्षा मिस्र-निवासियों की
गुलामी करते।' [13]मूसा ने इस्राएलियों से कहा,
'मत डरो! निश्चिन्त खड़े रहो, और प्रभु का
उद्धार-कार्य देखो, जिसे वह आज तुम्हारे लिए
करेगा। जिन मिस्र-निवासियों को आज तुम
देख रहे हो, उन्हें फिर कभी नहीं देखोगे।
[14]प्रभु तुम्हारे लिए युद्ध करेगा। तुम केवल
शान्त रहो।' [15]प्रभु ने मूसा से कहा, 'तू मेरी
दुहाई क्यों दे रहा है? इस्राएलियों को आगे
बढ़ने का आदेश दे। [16]अपनी लाठी उठा। अपना
हाथ समुद्र की ओर फैला और उसे दो भागों
में विभाजित कर जिससे इस्राएली समुद्र के
मध्य सूखी भूमि पर जा सकें। [17]मैं मिस्र-
निवासियों का हृदय हठीला कर दूंगा जिससे वे
इस्राएलियों का पीछा करते हुए समुद्र के मध्य
जाएँ। तब मैं फरओ, उसकी समस्त सेना,
उसके रथों और घुड़सवारों को पराजित कर
अपनी महिमा करूंगा। [18]जब मैं फरओ, उसके
रथों और घुड़सवारों पर विजय* प्राप्त करूँगा
तब मिस्र-निवासियों को ज्ञात होगा कि मैं प्रभु
हूं।'

19 तत्पश्चात् इस्राएलियों के सम्मुख आगे-
आगे चलने वाला परमेश्वर का दूत हटकर
उनकी सेना के पीछे चला गया। मेघ-स्तम्भ भी
उनके सम्मुख से हटकर उनके पीछे खड़ा हो
गया। [20]यों वह इस्राएलियों और मिस्र की
सेनाओं के मध्य में आ गया। वहाँ मेघ था और
अन्धकार भी था। रात व्यतीत हुई+; परन्तु दोनों
सेनाएँ रात में एक-दूसरे के निकट नहीं आ
सकीं।

21 मूसा ने समुद्र की ओर अपना हाथ
फैलाया। प्रभु ने रात भर पूर्वी वायु बहाकर
समुद्र को पीछे धकेल दिया। प्रभु ने समुद्र को
सूखी भूमि बना दिया। समुद्र का जल दो भागों
में विभाजित हो गया। [22]इस्राएली समुद्र के
मध्य सूखी भूमि पर चलकर गए। जल उनकी
दाहिनी ओर तथा बायीं ओर दीवार बनकर
खड़ा था। [23]मिस्र-निवासियों ने उनका पीछा
किया। फरओ के रथ, घोड़े और घुड़सवार
उनके पीछे-पीछे समुद्र के मध्य में गए। [24]रात्रि
के अन्तिम पहर में प्रभु ने अग्नि और मेघ के
स्तम्भ में से मिस्र सेना पर दृष्टिपात किया। प्रभु
ने मिस्र की सेना को भयाकुल बना दिया।
[25]उसने उनके रथों के पहिए धंसा दिए जिससे
उनका चलना कठिन हो गया। मिस्र-निवासी
कहने लगे, 'आओ, इस्राएलियों के पास से
भाग जाएँ; क्योंकि प्रभु उनकी ओर से हमसे
युद्ध कर रहा है।'

26 प्रभु ने मूसा से कहा, 'अपना हाथ समुद्र
की ओर फैला जिससे जल मिस्र-निवासियों
पर, उनके रथों और घुड़सवारों पर लौट आए।'
[27]अतः मूसा ने समुद्र की ओर अपना हाथ
फैलाया। सबेरा होते-होते समुद्र अपने पहले
के स्थान पर पुनः आ गया। जब मिस्र-निवासी
उसमें भाग रहे थे तब प्रभु ने उन्हें समुद्र में बहा
दिया। [28]जल अपने स्थान को लौटा और रथ,
घुड़सवार तथा फरओ की समस्त सेना को,
जिसने समुद्र के मध्य में इस्राएलियों का
पीछा किया था, डुबा दिया। उनमें से एक भी
न बचा। [29]पर इस्राएली समुद्र के मध्य सूखी
भूमि पर चलकर पार हो गए। जल उनकी
दाहिनी ओर तथा बायीं ओर दीवार बन कर
खड़ा था।

30 उस दिन प्रभु ने मिस्र-निवासियों के
हाथ से इस्राएलियों की रक्षा की। इस्राएलियों
ने मिस्र-निवासियों को समुद्रतट पर मृत पड़े
हुए देखा। [31]जब इस्राएलियों ने मिस्र-निवासियों
के विरुद्ध किए गए प्रभु के भुजबल के महान
कार्य को देखा, तब वे प्रभु से डरने लगे। उन्होंने
प्रभु और उसके सेवक मूसा पर विश्वास
किया।

---

* शब्दश : ''महिमा'' + मूल में 'उसने रात को प्रकाशित किया'।

14 : 14 व्य 20 : 4; यहो 10 : 14; यश 30 : 15 **14 : 21** भज 106 : 9; 114 :3 **14 : 22** 1 कुर 10 : 1; इब्र 11 : 29 **14 : 28** व्य 11 : 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मूसा का गीत

15 तत्पश्चात् मूसा और इस्राएलियों ने प्रभु
के लिए यह गीत गाया :
'मैं प्रभु के निमित्त गीत गाऊँगा;
उसने अद्‌भुत रीति से विजय प्राप्त की;
उसने अश्वों और अश्वारोहियों को सागर
में बहा दिया।
2प्रभु मेरी शक्ति और मेरा सामर्थ्य ++ है;
वह मेरा उद्धार बना है;
यही मेरा परमेश्वर है;
मैं इसकी स्तुति करूँगा;
यही मेरे पूर्वजों का परमेश्वर है,
मैं इसका गुणगान करूँगा।
3प्रभु योद्धा है;
उसका नाम प्रभु है।
4'उसने फरओ के रथों तथा उसकी सेना को
समुद्र में फेंक दिया;
फरओ के श्रेष्ठ नायक लाल सागर में डूब गए।
5अथाह जल-प्रवाह ने उन्हें ढांप लिया;
वे पत्थर के सदृश गहरे सागर में डूब गए।
6हे प्रभु, तेरा दाहिना हाथ बल से विभूषित है;
हे प्रभु, तेरा दाहिना हाथ शत्रुओं को छिन्न-
भिन्न करता है।
7 तू अपने महा प्रताप से बैरियों को गिरा देता
है;
तू अपना कोप उनपर प्रेषित करता है;
वह उन्हें भूसे के सदृश भस्म कर देता है।
8तेरे क्रोध-भरे श्वास से*
जल एकत्र हो गया,
जल ढेर बनकर खड़ा हो गया,
समुद्र के गर्भ में जल-प्रवाह जम गया।
9शत्रु ने कहा, ''मैं पीछा करूंगा,
मैं उन्हें पकड़ूंगा,
मैं लूट के माल को बाटूंगा,
उससे मेरे प्राण तृप्त होंगे।
मैं अपनी तलवार खीचूंगा,
मेरा हाथ उन्हें नष्ट करेगा।''
10तूने अपने श्वास से उन्हें बहाया,
समुद्र ने उन्हें ढांप लिया,
वे सीसे के सदृश
अतल सागर में डूब गए।
11 'हे प्रभु, देवताओं में तेरे सदृश कौन है?
तेरे समान पवित्रता में महाप्रतापी,
स्तुत्य कार्यों में भयावह,
आश्चयपूर्ण कर्मों का कर्ता
और कौन है?
12तूने अपना दाहिना हाथ फैलाया
तो धरती उन्हें निगल गई।

13 'जिन लोगों को तूने मुक्त किया,
उनका, अपनी प्रजा का, तूने करुणा से
नेतृत्व किया।
तूने अपनी शक्ति से उनका अपने पवित्र
निवास स्थान तक मार्गदर्शन किया।
14विजातियाँ यह सुनकर कांप उठीं,
पलिश्ती देश के निवासियों को प्रसव-
पीड़ा के सदृश पीड़ा होने लगी।
15 एदोम कबीले के मुखिया आतंकित हो गए,
मोआब कबीले के नेताओं पर कम्पन छा
गया,
समस्त कनान-निवासी डर से पिघल गए।
16जब तक, हे प्रभु, तेरे लोग,
तेरी खरीदी हुई प्रजा,
वहाँ से निकल न गई,
तब तक आतंक और भय उन पर छाया रहा,
तेरे भुजबल की महानता के कारण वे पत्थर
के समान निर्जीव बने रहे।

17 'हे प्रभु, तू अपने उस पर्वत पर,
अपने उस स्थान पर,

++ अथवा, 'गीत' * शब्दश: 'तेरे नासिका-पुट के धमाके से'।

15 : 1 प्रक 15 : 3 **15 : 2** यश 12 : 2 ; भज 118 : 14 **15 : 11** भज 86 : 8; व्य 3 : 24 **15 : 16** यश 11 : 11; इफ 1 : 14 **15 : 17** भज 74 : 2; 1 रा 8 : 13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जिसे तूने अपने निवास-स्थान के लिए
बनाया है,
उन्हें पहुँचाएगा।
हे प्रभु, अपने पवित्र स्थान पर,
जिसे तेरे हाथों ने स्थापित किया है,
तू उन्हें रोपेगा।
18प्रभु सदा-सर्वदा राज्य करेगा।'
19जैसे ही फरओ के रथ, घोड़े और
घुड़सवार सागर के भीतर गए, प्रभु उनके ऊपर
समुद्र-जल लौटा लाया। पर इस्राएली समुद्र के
मध्य सूखी भूमि पर चलकर पार हुए।
20तत्पश्चात् हारून की बहन मिर्याम+ ने, जो
नबिया थी, अपने हाथ में खंजरी ली। अन्य
स्त्रियां भी खंजरी लेकर नाचती हुई उसके पीछे
गईं।
21 मिर्याम उनके साथ यह टेक गा रही थी:
'प्रभु के निमित्त गीत गाओ,
उसने अद्‌भुत रीति से विजय प्राप्त की;
उसने अश्वों और अश्वारोहियों को सागर
में बहा दिया।'

मारा झरने का कड़वा जल

22 तत्पश्चात् मूसा इस्राएलियों को लाल
सागर से आगे ले गए। वे शूर के निर्जन प्रदेश
में पहुँचे। वे तीन दिन तक निर्जन प्रदेश में चलते
रहे, परन्तु उन्हें पीने को पानी नहीं मिला।
23जब वे मारा नामक झरने पर पहुँचे, वे उसका
पानी न पी सके, क्योंकि वह कड़वा था।
अतएव उस झरने का नाम "मारा" *पड़ा।
24इस्राएली मूसा के विरुद्ध बक-बक करने
लगे, 'हम क्या पीएँ?' 25मूसा ने प्रभु की दुहाई
दी। प्रभु ने मूसा को वृक्ष का एक लट्ठा
दिखाया। उन्होंने उसको पानी में फेंक दिया
और पानी मीठा हो गया।
प्रभु ने वहाँ संविधि और न्याय-सिद्धान्त
स्थापित किए। वहाँ उसने उन्हें कसौटी पर भी
कसा। 26प्रभु ने कहा, 'यदि तुम अपने प्रभु
परमेश्वर की वाणी ध्यानपूर्वक सुनोगे, जो
कार्य मेरी दृष्टि में उचित है, उसे करोगे, मेरी
आज्ञाओं पर कान दोगे और मेरी समस्त
संविधियों का पालन करोगे, तो मैं तुम पर
महामारियाँ नहीं डालूंगा, जो मैंने मिस्र-
निवासियों पर डाली थीं, क्योंकि मैं प्रभु
हूं—तुम्हें स्वस्थ करने वाला।'
27 तत्पश्चात् इस्राएली एलीम में आए।
वहाँ बारह झरने और सत्तर खजूर के वृक्ष थे।
वहाँ उन्होंने जल के तट पर पड़ाव डाला।

परमेश्वर आहार के लिए 'मन्ना' देता है

16 समस्त इस्राएली मंडली ने एलीम
निकुंज से प्रस्थान किया। मिस्र देश से
उनके निर्गमन के दूसरे महीने के पन्द्रहवें दिन
वे सीन नामक निर्जन प्रदेश में पहुँचे। यह
निर्जन प्रदेश एलीम निकुंज और सीनय पर्वत
के मध्य में है। 2समस्त इस्राएली मंडली निर्जन
प्रदेश में मूसा और हारून के विरुद्ध बक-बक
करने लगी। 3इस्राएलियों ने उनसे कहा, 'जब
हम मिस्र देश में मांस की देगची के निकट
बैठकर भरपेट भोजन करते थे, तब अच्छा होता
कि हम प्रभु के हाथ मर गए होते; क्योंकि आप
लोग इस निर्जन प्रदेश में समस्त जन-समुदाय
को भूख से मार डालने के लिए मिस्र देश से
हमें निकालकर लाए हैं।'
4 प्रभु ने मूसा से कहा, 'देख, मैं तुम्हारे लिए
स्वर्ग से भोजन की वर्षा करूंगा। ये लोग प्रत्येक
दिन बाहर निकलकर दैनिक भोजन एकत्र
करेंगे। इससे मैं उनको परखूंगा कि वे मेरी
व्यवस्था के अनुसार चलेंगे अथवा नहीं।
5जितनी भोजन-सामग्री ये छठे दिन लाकर
तैयार करेंगे, वह उससे दुगुनी होगी जो ये
प्रतिदिन एकत्र करते हैं।' 6अतः मूसा और
हारून ने सब इस्राएलियों से कहा, 'सन्ध्या
समय तुम्हें ज्ञात हो जाएगा कि प्रभु ने ही तुम्हें
मिस्र देश से बाहर निकाला है। 7प्रातःकाल तुम

+ अथवा 'मरियम', * अर्थात् "कड़ुआ"

15 : 20 शास 11 : 34; 1 शम 18 : 6 **15 : 23** गण 33 : 8 **15 : 25** 2 रा 2 : 21; यहेज 47 : 8; यहो 24 : 25; प्रव 38 : 5 **15 : 26** भज 147 : 3; 103 : 3 **16 : 3** गण 11 : 4 **16 : 4** भज 78 : 24; 105 : 40; यो 6 : 31; व्य 8 : 2; प्रज्ञा 16 : 20

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उसकी महिमा देखोगे; क्योंकि प्रभु ने अपने
विरुद्ध तुम्हारा बक-बकाना सुना है। हम क्या
हैं कि तुम हमारे विरुद्ध बक-बक करते हो?'
8मूसा ने पुनः कहा, 'यह तब होगा जब प्रभु
सन्ध्या समय तुम्हें खाने के लिए मांस और
प्रातःकाल भर-पेट रोटी देगा; क्योंकि जो
बक-बक तुमने प्रभु के विरुद्ध की थी, उसने
उसे सुना है। हम क्या हैं? तुम्हारा बक-बकाना
हमारे विरुद्ध नहीं, वरन् प्रभु के विरुद्ध है।'

9 तत्पश्चात् मूसा ने हारून से कहा, 'तुम
समस्त इस्राएली मंडली से यह कहो, "प्रभु के
सम्मुख, उसके निकट जाओ; क्योंकि उसने
तुम्हारा बक-बकाना सुना है।"' 10जब हारून
समस्त इस्राएली मंडली से बोला तब वे लोग
निर्जन प्रदेश की ओर उन्मुख हुए और देखो,
प्रभु की महिमा मेघ में दिखाई दी। 11प्रभु मूसा
से बोला, 12'मैंने इस्राएलियों का बक-बकाना
सुना है। तू उनसे यह कह, "तुम गोधूलि के
समय मांस खाओगे और प्रातःकाल रोटी से
तृप्त होगे। तब तुम्हें ज्ञात होगा कि मैं प्रभु,
तुम्हारा परमेश्वर हूं।"'

13 सन्ध्या समय बटेरें उड़कर आईं। उन्होंने
पड़ाव को ढक लिया। सबेरे पड़ाव के चारों
ओर ओस गिरी। 14जब ओस सूख गई तब
सूखी भूमि की सतह पर छोटे-छोटे छिलके,
पाले के समान छोटे कण, दिखाई दिए। 15जब
इस्राएलियों ने उसे देखा तब वे एक दूसरे से
कहने लगे, 'यह क्या है?'* क्योंकि वे नहीं
जानते थे कि वह क्या है। मूसा ने उनसे कहा,
'यह रोटी है, जो प्रभु ने तुम्हें खाने के लिए दी
है। 16जो आज्ञा प्रभु ने दी, वह यह है, "प्रत्येक
व्यक्ति अपनी खुराक के अनुसार उसे एकत्र
करेगा। प्रत्येक व्यक्ति अपने तम्बू में रहने वाले
मनुष्यों की गिनती के अनुसार व्यक्ति पीछे
एक-एक ओमेर** लेगा।"' 17इस्राएलियों ने
ऐसा ही किया। किसी ने अधिक, किसी ने कम
एकत्र किया। 18किन्तु जब उन्होंने ओमेर पात्र
से मापा तब अधिक एकत्र करने वाले के पास
अतिरिक्त न निकला, और न कम एकत्र करने
वाले के पास आवश्यकता से कम। प्रत्येक
व्यक्ति ने अपनी खुराक के अनुसार एकत्र
किया था। 19मूसा ने उनसे कहा, 'कोई भी
व्यक्ति प्रातःकाल तक उसे बचाकर नहीं
रखेगा।' 20किन्तु उन्होंने मूसा की बात नहीं
सुनी। कुछ लोगों ने उसे सबेरे तक बचाकर
रखा। पर उसमें कीड़े पड़ गए और वह
दुर्गन्धमय हो गया। मूसा उन पर क्रोधित हुए।
21प्रत्येक व्यक्ति प्रतिदिन सबेरे अपनी खुराक
के अनुसार उसे एकत्र करता था। किन्तु जब
सूर्य तपने लगता, वह पिघल जाता था।

22उन्होंने छठे दिन भोजन दुगुनी मात्रा में,
अर्थात् प्रति व्यक्ति पीछे दो ओमेर एकत्र
किया। जब इस्राएली मंडली के सब अगुओं
ने आकर मूसा को यह बताया 23तब मूसा ने
उनसे कहा, 'यह वही बात है, जो प्रभु ने कही
थी। कल परम विश्राम का दिन, प्रभु का पवित्र
विश्राम-दिवस है। आज तुम्हें जितना पकाना
है, उतना पकाओ; जितना उबालना है, उतना
उबालो। जो कुछ शेष रहे, उसे सबेरे तक
सुरक्षित रखो।' 24उन्होंने मूसा की आज्ञा के
अनुसार भोजन सबेरे तक अलग रखा। वह न
तो दुर्गन्धमय हुआ और न उसमें कीड़े पड़े।
25मूसा ने कहा, 'तुम इसे आज खाओ। आज
प्रभु का विश्राम-दिवस है। इसलिए यह आज
तुम्हें मैदान में नहीं मिलेगा। 26तुम छः दिन तक
इसे एकत्र करना। सातवां दिन विश्राम-दिवस
है। उस दिन यह तुम्हें नहीं मिलेगा।' 27कुछ
व्यक्ति सातवें दिन उसे एकत्र करने के लिए
बाहर गए, किन्तु उन्हें कुछ नहीं मिला। 28प्रभु
ने मूसा से कहा, 'तुम कब तक मेरी आज्ञाओं
और नियमों का पालन नहीं करोगे? 29देखो,
मैंने तुम्हें विश्राम-दिवस प्रदान किया है।
इसलिए मैं तुम्हें छठे दिन दो दिन के लिए
भोजन प्रदान करता हूं। अतः प्रत्येक व्यक्ति

---

* मूल में "मान हूँ"। ** एक विशेष प्रकार की माप, प्रायः एक किलो।

16 : 8 लू 10 : 16 **16 : 13** गण 11 : 31 **16 : 15** यो 6 : 49. 58 ; 1 कुर 10 : 3 **16 : 18** 2 कुर 8 : 15
16 : 23 नि 20 : 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अपने स्थान पर रहे। सातवें दिन कोई भी
व्यक्ति अपने निवास-स्थान से बाहर न जाये।
' 30इस प्रकार इस्राएलियों ने सातवें दिन
विश्राम किया।

31 इस्राएल के वंशजों ने उस भोजन वस्तु
का नाम 'मन्ना' रखा। वह धनिये के बीज के
समान सफेद था। उसका स्वाद शहद से बने
पुओं के सदृश था। 32मूसा ने कहा, 'जो आज्ञा
प्रभु ने दी है, वह यह है: एक ओमेर माप
''मन्ना'' तुम्हारी पीढ़ी से पीढ़ी तक सुरक्षित
रखा जाए जिससे वे उस भोजन को देखें जिसे
मैंने तुम्हें निर्जन प्रदेश में खिलाया था, जब मैं
तुम्हें मिस्र देश से निकालकर लाया।' 33मूसा
ने हारून से कहा, 'तुम एक घड़ा लो। उसमें
एक ओमेर भर ''मन्ना'' डालो। उसे प्रभु के
सम्मुख रखो जिससे वह तुम्हारी पीढ़ी से पीढ़ी
तक सुरक्षित रहे।' 34मूसा को दी गई प्रभु की
आज्ञा के अनुसार हारून ने घड़े को साक्षी की
मंजूषा के सम्मुख रखा कि वह सुरक्षित रहे।
35जब तक इस्राएली आबाद देश में नहीं पहुँच
गए, वे चालीस वर्ष 'मन्ना' ही खाते रहे। कनान
देश की सीमा पहुँचने तक इस्राएलियों ने
'मन्ना' ही खाया। 36(एक ओमेर माप एपा+ का
दसवां भाग होता है।)

चट्टान से जल का फूटना

17 प्रभु की आज्ञा के अनुसार समस्त
इस्राएली मंडली, सीन के निर्जन प्रदेश
से प्रस्थान कर, स्थान-स्थान पर पड़ाव डालते
हुए आगे बढ़ी। उन्होंने रफीदीम नामक स्थान
में पड़ाव डाला। पर वहाँ लोगों के लिए पीने
का पानी न था। 2अत: वे मूसा से विवाद करने
लगे। उन्होंने कहा, 'हमें पानी दीजिए कि हम
पीएँ।' मूसा ने उनसे कहा, 'क्यों तुम मुझसे
विवाद करते हो? क्यों तुम प्रभु को परखते
हो?' 3किन्तु लोग वहाँ पानी के लिए प्यासे थे।
वे मूसा के विरुद्ध बक-बक करने लगे। उन्होंने
कहा, 'आप हमें, हमारी सन्तान और पशुओं
को प्यास से मार डालने के लिए मिस्र देश से
क्यों ले आए?' 4अत: मूसा ने प्रभु की दुहाई
दी, 'मैं इन लोगों के साथ क्या करूं? ये मुझे
पत्थर से मार डालने को तत्पर हैं।' 5प्रभु ने मूसा
से कहा, 'अपने साथ इस्राएलियों के कुछ
धर्मवृद्धों को लेकर लोगों के आगे-आगे जा।
तू अपने हाथ में उस लाठी को लेकर जाना
जिससे तूने नील नदी पर प्रहार किया था।
6देख, वहाँ मैं तेरे सम्मुख होरेब पर्वत की
चट्टान पर खड़ा रहूँगा। तू चट्टान पर प्रहार
करना। तब उससे जल निकलेगा कि लोग उसे
पी सकें।' मूसा ने इस्राएलियों के धर्मवृद्धों की
आंखों के सामने ऐसा ही किया। 7मूसा ने उस
स्थान का नाम मस्सा* और मरीबा** रखा;
क्योंकि इस्राएलियों ने वहाँ मूसा से विवाद
किया और प्रभु को परखा था। उन्होंने कहा,
'क्या हमारे मध्य प्रभु है, अथवा नहीं?'

अमालेक जाति से युद्ध

8 तत्पश्चात् अमालेक जाति के लोग आये।
उन्होंने रफीदीम में इस्राएलियों से युद्ध किया।
9मूसा ने यहोशुअ से कहा, 'हमारे हेतु इस्राएलियों
में से पुरुषों को चुन, और जा! अमालेक जाति
से युद्ध कर! कल मैं परमेश्वर की लाठी अपने
हाथ में लेकर पहाड़ी की चोटी पर खड़ा
रहूंगा।' 10जैसा मूसा ने यहोशुअ से कहा था,
वैसा ही उसने किया। उसने अमालेक जाति से
युद्ध किया। मूसा, हारून और हूर पहाड़ी की
चोटी पर गए। 11जब-जब मूसा अपना हाथ
ऊपर उठाते तब-तब इस्राएली जीतते। किन्तु
जब वह अपना हाथ नीचे कर लेते तब अमा-
लेक जाति जीत जाती। 12मूसा के हाथ थक
गए। अतएव हारून और हूर ने एक पत्थर लिया
और उसको नीचे रखा। मूसा उस पर बैठ गए।
हारून और हूर उनके हाथ संभाले रहे; एक
उनकी बाईं ओर था, दूसरा दाहिनी ओर। अत:
उनके हाथ सूर्यास्त तक उठे रहे। 13यहोशुअ ने
अपनी तलवार की धार से अमालेक जाति को

+ एक विशेष माप, प्राय: दस किलो * अर्थात् 'परखना' ** अर्थात् ''विवाद''

16 : 31 गण 11 : 7 **16 : 33** इब्र 9 : 4 **16 : 35** यहो 5 : 12 **17 : 1** गण 33 : 12.14 **17 : 2** गण 20 : 3; व्य 6 : 16 **17 : 7** भज 95 : 8 **17 : 8** 1 शम 15 : 2 **17 : 11** भज 44 : 6; याक 5 : 16

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

परास्त कर दिया।

14 प्रभु ने मूसा से कहा, 'यह बात स्मरण के लिए पुस्तक में लिख और उसको यहोशुअ के कान में डाल कि प्रभु आकाश के नीचे से अमालेक जाति का स्मृति-चिह्न पूर्णतः मिटा देगा।' 15मूसा ने एक वेदी निर्मित की। उन्होंने उसका यह नाम रखा, 'प्रभु मेरी ध्वजा है,' 16और कहा, 'प्रभु की ध्वजा पकड़े रहो।+ पीढ़ी से पीढ़ी तक प्रभु के लिए अमालेक जाति से हमारा युद्ध होता रहेगा।'

पुरोहित यित्रो का आगमन

18 मूसा के ससुर, मिद्यान देश के पुरोहित यित्रो ने उन सब कार्यों के विषय में सुना जो परमेश्वर ने मूसा और अपने निज लोग इस्राएल के लिए किये थे। यित्रो ने सुना कि प्रभु इस्राएलियों को मिस्र देश से निकाल लाया है। 2मूसा का ससुर यित्रो मूसा की पत्नी सिप्पोरा को (जिसे मूसा ने पहले ही उसके पिता के घर भेज दिया था) 3और उसके दो पुत्रों को लेकर आया। उनमें से एक पुत्र का नाम 'गेर्शोम' (क्योंकि मूसा ने कहा था, 'मैं विदेश में प्रवासी हूं।') 4और दूसरे का नाम 'एलीएजर'++ था (क्योंकि वह कहते थे, 'मेरे पूर्वजों का परमेश्वर मेरा सहायक था। उसने मुझे फरओ की तलवार से छुड़ाया था।')। 5जहाँ मूसा परमेश्वर के पर्वत पर पड़ाव डाले हुए थे, वहाँ निर्जन प्रदेश में उनका ससुर यित्रो अपने साथ मूसा की पत्नी और उनके पुत्रों को लेकर आया। 6किसी ने मूसा से कहा, 'देखिए, आपके ससुर यित्रो आपकी पत्नी और दोनों पुत्रों को लेकर आप के पास आ रहे हैं।' 7मूसा अपने ससुर से भेंट करने को शिविर से बाहर निकले। उन्होंने झुककर अपने ससुर का अभिवादन किया, उसका चुम्बन लिया। वे एक-दूसरे का कुशल-मंगल पूछते हुए तम्बू के भीतर आए। 8मूसा ने अपने ससुर को उन कार्यों का वृत्तान्त सुनाया जो प्रभु ने इस्राएली लोगों के हितार्थ फरओ और मिस्र-निवासियों के साथ किए थे। उन रुकावटों का जो उनके मार्ग में आई थीं, और किस प्रकार प्रभु ने उन्हें छुड़ाया, आदि का भी वर्णन किया। 9यित्रो ने हर्ष प्रकट किया कि प्रभु ने इस्राएल के साथ भलाई की और मिस्र-निवासियों के हाथ से उन्हें मुक्त किया।

10 यित्रो ने कहा, 'प्रभु धन्य है, जिसने तुम्हें मिस्र-निवासियों के हाथ से, फरओ के हाथ से मुक्त किया। 11अब मुझे ज्ञात हुआ कि प्रभु समस्त देवताओं से महान है, क्योंकि जब मिस्र-निवासियों ने इस्राएलियों के साथ तिरस्कारपूर्ण व्यवहार किया तब उसने उनको मिस्र-निवासियों की अधीनता से मुक्त किया।' 12तत्पश्चात् मूसा के ससुर यित्रो ने परमेश्वर को अग्नि-बलि एवं पशु-बलि चढ़ाई।* हारून तथा इस्राएल के सब धर्मवृद्ध मूसा के ससुर के साथ परमेश्वर के सम्मुख रोटी खाने आए।

शासकों की नियुक्ति

13 दूसरे दिन सबेरे मूसा लोगों का न्याय करने को बैठे। लोग सबेरे से सन्ध्या तक उन्हें घेरकर खड़े रहे। 14जब मूसा के ससुर ने उन्हें लोगों का न्याय करते देखा तब उनसे पूछा, 'लोगों के लिए तुम यह क्या कर रहे हो? क्यों तुम अकेले बैठते हो? क्यों लोग सबेरे से सन्ध्या तक तुम्हारे आस-पास खड़े रहते हैं?' 15मूसा ने अपने ससुर से कहा, 'लोग मेरे पास परमेश्वर के निर्णय की जिज्ञासा से आते हैं। 16जब उनमें झगड़ा आदि होता है तब वे मेरे पास आते हैं। मैं वादी और प्रतिवादी** के मध्य न्याय करता हूं। मैं उन्हें परमेश्वर की संविधि और व्यवस्था बतलाता हूं।' 17मूसा के ससुर ने उनसे कहा, 'जिस प्रकार तुम काम कर रहे हो, वह अच्छा नहीं है। 18तुम और तुम्हारे साथ के ये लोग थक जाएंगे; क्योंकि यह कार्य तुम्हारे लिए अत्यन्त भारी है। तुम अकेले इसे नहीं कर सकते हो। 19अब तुम मेरी बात सुनो। मैं तुम्हें

+ अथवा, "क्योंकि उसने प्रभु के सिंहासन पर हाथ उठाया।" ++ अर्थात्, 'मेरा परमेश्वर सहायक है'। *मूल में, 'ग्रहण की' **शब्दश: "वादी और उसका पड़ोसी"।

17 : 14 व्य 25 : 19; 1 शम 15 : 2 **18 : 3** नि 2 : 21-22; प्रे 7 : 29 **18 : 18** गण 11 : 14 ; व्य 1 : 9

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

परामर्श देता हूं। परमेश्वर तुम्हारे साथ हो। तुम
परमेश्वर के सम्मुख लोगों का प्रतिनिधित्व
करना, और उनके मुकद्दमे परमेश्वर के पास
लाना। 20तुम उनपर परमेश्वर की संविधि और
व्यवस्था प्रकाशित करना। तुम उन्हें मार्ग
बतलाना, जिस पर उन्हें चलना चाहिए; वे कार्य
सिखाना, जो उन्हें करने चाहिए। 21अब तुम
सब इस्राएली लोगों में योग्य, परमेश्वर के
भक्त , सत्य-निष्ठ और घूस से घृणा करने वाले
व्यक्ति चुनो। ऐसे व्यक्तियों को हजार-हजार,
सौ-सौ, पचास-पचास एवं दस-दस के समूह
पर शासक नियुक्त करो। 22वे हर समय लोगों
का न्याय करें। प्रत्येक बड़ा मुकद्दमा तुम्हारे
पास लाया जाए, किन्तु सब छोटे मुकद्दमों का
न्याय वे स्वयं करें। इस प्रकार वे तुम्हारे साथ
दायित्व संभालेंगे, और तुम्हारा भार हल्का
होगा। 23यदि तुम ऐसा करोगे और यदि
परमेश्वर ऐसी आज्ञा देगा, तो तुम समर्थ बने रह
सकोगे और लोग भी अपने-अपने निवास-
स्थान को शान्ति से जाएंगे।'

24 मूसा ने अपने ससुर की बात सुनी। जो
यित्रो ने कहा था, उन्होंने वही किया। 25मूसा
ने सब इस्राएली लोगों में योग्य व्यक्तियों को
चुना और उन्हें लोगों का मुखिया बनाया। उन्हें
हजार-हजार, सौ-सौ, पचास-पचास और
दस-दस के समूह पर शासक नियुक्त किया।
26वे हर समय लोगों का न्याय करते थे। वे
कठिन मुकद्दमा मूसा के पास लाते, किन्तु छोटे
मुकद्दमे का न्याय स्वयं करते थे। 27मूसा ने अपने
ससुर को विदा किया। यित्रो अपने देश चला
गया।

इस्राएली समाज का सीनय पर्वत पर पहुँचना

19 इस्राएली लोग मिस्र देश से निकलने के
ठीक तीन महीने के पश्चात् सीनय के
निर्जन प्रदेश में आए।

2 जब उन्होंने रफीदीम से प्रस्थान किया
और सीनय के निर्जन प्रदेश में पहुँचे तब वहीं,
निर्जन प्रदेश में पड़ाव डाला। इस्राएली समाज
ने पहाड़ के सामने पड़ाव डाला। 3मूसा परमेश्वर
के पास पहाड़ पर गए। प्रभु ने पहाड़ पर से
पुकार कर उनसे कहा, 'तू याकूब के वंशजों से
यह कहना; तू इस्राएली समाज को यह बताना:
4"तुमने देखा कि मैंने मिस्र-निवासियों के
साथ क्या किया; किस प्रकार तुम्हें बाज के
पंखों पर बैठाकर अपने पास तक ले आया।
5अब यदि तुम ध्यान से मेरी बात सुनोगे और
मेरे विधान का पालन करोगे, तो तुम सब
जातियों में मेरी निज सम्पत्ति बनोगे, क्योंकि
समस्त पृथ्वी मेरी ही है। 6तुम मेरे लिए पुरोहितों
का राज्य, एक पवित्र राष्ट्र बनोगे।" तू ये ही
बातें इस्राएलियों से कहना।'

7 मूसा आए। उन्होंने इस्राएली समाज के
धर्मवृद्धों को बुलाया, और उनके सम्मुख ये
बातें रखीं जिनकी आज्ञा प्रभु ने मूसा को दी थी।
8सब लोगों ने एक-साथ उत्तर दिया, 'प्रभु ने
जो कहा है, वह हम करेंगे।' मूसा लौटे और
उन्होंने प्रभु को लोगों का उत्तर सुनाया। 9प्रभु
ने मूसा से कहा, 'देख, मैं सघन मेघ में तेरे पास
आ रहा हूं, जिससे जब मैं तुझसे बात करूँ तब
लोग उसे सुन सकें और सदा तुझपर विश्वास
करते रहें।'

मूसा ने लोगों की बातें प्रभु को बताईं। 10प्रभु
ने मूसा से कहा, 'तू लोगों के पास जा, उन्हें
आज और कल शुद्ध* कर। वे अपने वस्त्र धोएँ
11और तीसरे दिन तक तैयार हो जाएँ। क्योंकि
मैं तीसरे दिन सीनय पर्वत पर लोगों के सम्मुख
उतरूंगा। 12तू लोगों के लिए चारों ओर एक
सीमा-रेखा खींच देना और उनसे कहना
"सावधान! तुम पर्वत पर मत चढ़ना और न
उसके सीमान्त को स्पर्श करना। जो व्यक्ति
पर्वत को स्पर्श करेगा, उसे मृत्यु-दण्ड दिया
जाएगा। 13वह पत्थरों अथवा तीरों से मारा
जाएगा। चाहे मनुष्य हो अथवा पशु वह जीवित
नहीं रहेगा। ऐसे व्यक्ति या पशु को कोई मनुष्य

---

* अथवा, 'पवित्र, समर्पित'।

19 : 1 गण 33 : 15 **19 : 4** व्य 32 : 11; यश 63 : 9 **19 : 5** व्य 4 : 20; 7 : 6; 10 : 14 ; 26 : 18; तीत 2 : 14
19 : 6 1 पत 2 : 9; प्रक 1 : 6; 5 : 10 **19 : 8** यहो 24 : 14 **19 : 12** इब्र 12 : 20

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

स्पर्श न करे।'' जब नरसिंगे का शब्द देर तक
सुनाई दे तब कुछ निश्चित लोग* पर्वत पर
चढ़ेंगे।' 14मूसा पहाड़ से उतरकर लोगों के
पास आए। उन्होंने लोगों को शुद्ध किया।
लोगों ने अपने-अपने वस्त्र धोए। 15मूसा लोगों
से बोले, 'तीसरे दिन तक तैयार हो जाओ। तुम
स्त्री के साथ सहवास न करना।'
16 तीसरे दिन के प्रात:काल मेघ-गर्जन
हुआ, विद्युत चमकी। एक सघन मेघ पहाड़ पर
उतरा और नरसिंगे का इतना घोर स्वर सुनाई
दिया कि वे लोग भी कांप उठे जो तम्बुओं के
भीतर थे।
17 तत्पश्चात् मूसा लोगों को परमेश्वर से
भेंट कराने के लिए शिविर से बाहर लाए। वे
पहाड़ की तलहटी में खड़े हो गए। 18सीनय पर्वत
धुएं से आच्छादित था, क्योंकि प्रभु अग्नि में
उस पर उतरा था। सहसा भट्ठे के धुएँ के सदृश
उसका धुआँ ऊपर उठा और सारा पहाड़ बहुत
कांपने लगा। 19जैसे-जैसे नरसिंगों का स्वर
तीव्र होता गया, मूसा परमेश्वर से बोले और
उसने मेघ-गर्जन से मूसा को उत्तर दिया।
20प्रभु सीनय पर्वत के शिखर पर उतरा। उसने
मूसा को पहाड़ के शिखर पर बुलाया। वह गए।
21प्रभु ने मूसा से कहा, 'उतरकर जा और लोगों
को सावधान कर। ऐसा न हो कि वे मुझ प्रभु
को देखने के लिए सीमा-रेखा का उल्लंघन
करें, और उनमें से अनेक नष्ट हो जाएँ। 22मेरे
निकट आने-वाले पुरोहित स्वयं को शुद्ध करें,
अन्यथा मैं उन पर टूट पड़ूंगा।' 23मूसा ने प्रभु
से कहा, 'लोग सीनय पर्वत पर नहीं चढ़
सकते; क्योंकि स्वयं तूने हमें चेतावनी दी है;
''पर्वत के चारों ओर सीमा-रेखा खींचकर
उसे पवित्र रखो।'' ' 24प्रभु ने मूसा से कहा,
'तू जा, और लौटकर अपने साथ हारून को
ला। किन्तु पुरोहित और लोग मेरे पास आने के
लिए सीमा-रेखा का उल्लंघन न करें। अन्यथा
मैं उन पर टूट पड़ूंगा।' 25अत: मूसा पहाड़
से उतरकर लोगों के पास गए और उनसे ये
बातें कहीं।

दस आज्ञाएँ

20 परमेश्वर ने ये समस्त वचन कहे:
2'मैं प्रभु, तेरा परमेश्वर हूं, जो तुझे
मिस्र देश से, दासत्व के घर से बाहर निकाल
लाया। 3तू मेरे अतिरिक्त+ किसी और को
ईश्वर नहीं मानना।
4 'तू अपने लिए कोई मूर्ति न बनाना और
न किसी प्राणी अथवा वस्तु की आकृति बनाना,
जो ऊपर आकाश में अथवा नीचे धरती पर या
धरती के नीचे जल में है। 5तू झुककर उनकी
वन्दना न करना और न उनकी सेवा करना;
क्योंकि मैं तुम्हारा प्रभु परमेश्वर, ईर्ष्यालु ईश्वर
हूं। जो मुझसे घृणा करते हैं, उनके अधर्म का
दण्ड** मैं तीसरी और चौथी पीढ़ी तक उनकी
संतान को देता रहता हूं। 6परन्तु मुझ से प्रेम
करने वाले और मेरी आज्ञा का पालन करनेवाले
व्यक्तियों पर मैं हजार पीढ़ियों तक++ करुणा
करता हूं।
7 'तू अपने प्रभु परमेश्वर का नाम व्यर्थ न
लेना; क्योंकि जो व्यक्ति प्रभु का नाम व्यर्थ
लेगा, उसे प्रभु निर्दोष घोषित नहीं करेगा।
8 'विश्राम दिवस को पवित्र मानने के लिए
स्मरण रखना। 9तू छ: दिन तक परिश्रम करना,
अपने सब कार्य करना। 10किन्तु सातवां दिन
तेरे प्रभु परमेश्वर का विश्राम दिवस है।
इसलिए तू, तेरे पुत्र-पुत्री, सेवक-सेविका, तेरे
पशु और तेरे नगरों में रहने वाले प्रवासी व्यक्ति
उस दिन कोई कार्य न करें। 11क्योंकि प्रभु ने
छ: दिन में आकाश, पृथ्वी, समुद्र एवं उन
सबको बनाया, जो उनमें हैं, तथा सातवें दिन
विश्राम किया। अत: प्रभु ने विश्राम दिवस को

---

*मूल में, 'वे ही'। + अथवा, 'मेरे सम्मुख'। ** अथवा, 'की सुध'। ++ अथवा, 'करनेवाले हजारों व्यक्तियों पर'

19 : 17 व्य 4 : 10 **19 : 18** शास 5 : 5; भज 68 : 8 **20 : 2-17** व्य 5 : 6-21 **20 : 2** हो 13 : 4 **20 : 3** व्य 6 : 4. 14 **20 : 4** नि 34 : 17; लेव 19 : 4; 26 : 1; व्य 4 : 16 **20 : 5** नि 34 : 6; गण 14 : 18 **20 : 6** व्य 7. : 9 **20 : 7** लेव 19 : 12 **20 : 8** नि 31 : 13 **20 : 9** नि 23 : 12; 31 : 15; 34 : 12; 35 : 2; लेव 23 : 3; व्य 5 : 13 **20 :10** उत 2 : 2; लू 13 : 14

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आशिष दी, और उसे पवित्र घोषित किया।
12 'अपने माता-पिता का आदर कर
जिससे तेरी आयु उस भूमि पर दीर्घ हो सके
जिसे तेरा प्रभु परमेश्वर तुझे प्रदान कर रहा
है।
13 'तू हत्या न करना।
14 'तू व्यभिचार न करना।
15 'तू चोरी न करना।
16 'तू अपने पड़ोसी के विरुद्ध झूठी साक्षी
न देना।
17 'तू अपने पड़ोसी के घर का लालच न
करना। तू अपने पड़ोसी की पत्नी, उसके
सेवक-सेविका, बैल-गधे, तथा उसकी किसी
भी वस्तु का लालच न करना।'

परमेश्वर की उपस्थिति से इस्राएली समाज का भयभीत होना

18 जब लोगों ने मेघ-गर्जन, विद्युत का
चमकना, नरसिंगे का स्वर और पहाड़ से
धुआं निकलता हुआ देखा तब वे डरकर कांपने
लगे। वे दूर खड़े हो गए। 19उन्होंने मूसा से
कहा, 'आप हमसे बात कीजिए। हम आपकी
बात सुनेंगे। किन्तु परमेश्वर को हमसे बात न
करने दीजिए; अन्यथा हम मर जाएंगे।' 20मूसा
लोगों से बोले, 'मत डरो; क्योंकि परमेश्वर
तुम्हें परखने आया है कि उसका भय तुम्हारी
आंखों के सम्मुख बना रहे और तुम पाप न
करो।'

पवित्र वेदी से सम्बन्धित नियम

21 मूसा सघन मेघ के निकट गए, जहाँ
परमेश्वर था। पर लोग दूर खड़े रहे। 22प्रभु ने
मूसा से कहा, 'तू इस्राएली समाज से यों
कहना, "तुमने स्वयं देखा कि मैंने स्वर्ग से
तुमसे बातें कीं। 23तुम चांदी के देवता न बनाना
कि तुम मेरे साथ उनकी भी आराधना करो;
और न अपने लिए स्वर्ण-देवता बनाना। 24तू
मिट्टी की एक वेदी बनाना और उस पर मुझे
अपनी अग्नि-बलि और सहभागिता-बलि,
अपनी भेड़ और बैल की बलि चढ़ाना। प्रत्येक
स्थान में, जहाँ मैं अपना नाम स्मरण के लिए
प्रतिष्ठित करता हूं, वहाँ मैं आकर तुझे आशिष
दूंगा। 25किन्तु यदि तू मेरे लिए पत्थरों की वेदी
बनाता है तो उसे तराशे हुए पत्थरों की न
बनाना। क्योंकि जब तू तराशने के लिए उस पर
औजार उठाएगा, तब उसे अपवित्र कर देगा।
26तू मेरी वेदी पर सीढ़ियों से मत चढ़ना जिससे
तेरी नग्नता उस पर प्रकट न हो।"

21 'तुझे ये न्याय-सिद्धान्त इस्राएली समाज
के सम्मुख स्थापित करने हैं :

गुलामों से उचित व्यवहार करना

2 'जब तू इब्रानी जाति का गुलाम खरीदे तब
वह छ: वर्ष तक गुलामी करेगा। वह सातवें वर्ष
बिना मूल्य चुकाए स्वतन्त्र होकर जा सकेगा।
3यदि वह अविवाहित आया है तो अविवाहित
ही स्वतन्त्र होकर जाए। किन्तु यदि वह पत्नी
सहित आया है तो उसके साथ उसकी पत्नी भी
जाए। 4यदि उसके स्वामी ने उसे स्त्री प्रदान की
है, और स्त्री ने उससे पुत्र अथवा पुत्रियाँ उत्पन्न
की हैं तो स्त्री तथा उसकी सन्तान स्वामी की
होंगी, और वह अकेला स्वतन्त्र होकर जाएगा।
5किन्तु यदि गुलाम दृढ़ता से कहे, "मैं अपने
स्वामी, अपनी पत्नी और अपने बच्चों से प्रेम
करता हूं। मैं स्वतन्त्र होकर नहीं जाऊँगा", 6तो
उसका स्वामी उसे परमेश्वर* के निकट लाएगा।
उसका स्वामी उसे द्वार अथवा चौखट के
निकट लाकर सूजे से उसका कान छेदेगा।
तत्पश्चात् वह अपने स्वामी की सदा गुलामी
करेगा।
7 'जब कोई व्यक्ति अपनी पुत्री को दासी
के रूप में बेचेगा, तब वह पुरुष-दासों के सदृश
स्वतन्त्र होकर न जा सकेगी। 8यदि वह अपने

* अथवा 'न्यायाधीशों'।

20 : 12 लेव 19 : 3; व्य 27 : 16; मत 15 : 4; 19 : 19; इफ 6 : 2 **20 : 13** उत 9 : 6; लेव 24 : 17; रोम 13 : 9; याक 2 : 11; मत 5 : 21 **20 : 14** लेव 20 : 10; मत 5 : 27 **20 : 15** लेव 19 : 11 **20 : 16** नि 23 : 1 **20 : 17** मी 2 : 2; रोम 7 : 7; 13 : 9 **20 : 18** इब्र 12 : 18 **20 : 25** व्य 27 : 5; यहो 8 : 31 **21 : 2** व्य 15 : 12; यिर 34 : 14 **21 : 4** लेव 25 : 44

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

स्वामी को, जिसने उसे अपने लिए खरीदा है,
प्रसन्न न रख सके तो स्वामी उसका मूल्य लेकर
उसे स्वतन्त्र कर दे। उसको विदेशी के हाथ में
बेचने का अधिकार न होगा। अन्यथा यह
उसके साथ विश्वासघात होगा। 9किन्तु यदि
स्वामी ने अपने पुत्र के लिए उसे खरीदा है तो
वह उसके साथ पुत्रीवत् व्यवहार करेगा।
10यदि वह दूसरी स्त्री रखता है तो इस दासी को
भोजन, वस्त्र और सहवास-सुख से वंचित
नहीं करेगा। 11यदि स्वामी उसके लिए इन तीन
बातों की व्यवस्था नहीं करता तो वह बिना
मूल्य चुकाए चली जाएगी।

हिंसक कार्यों से सम्बन्धित न्याय-सिद्धान्त

12 'जो कोई किसी व्यक्ति पर ऐसा प्रहार
करे कि वह मर जाए तो उसे निश्चय ही मृत्यु-
दण्ड दिया जाएगा। 13पर यदि उसने घात लगाकर
प्रहार नहीं किया था, वरन् दुर्घटनावश ऐसा हो
गया था,** तो मैं तुम्हारे लिए एक स्थान
निश्चित करूंगा, जहाँ वह भाग सकेगा। 14पर
यदि कोई अपने पड़ोसी की कपटपूर्ण हत्या के
अभिप्राय से आघात करे, तो तू उसका वध
करने के लिए मेरी वेदी से भी उसे घसीट कर
ले जाना।

15 'जो कोई अपने माता-पिता पर प्रहार
करे, उसे निश्चय ही मृत्यु-दण्ड दिया जाएगा।

16 'जो कोई किसी व्यक्ति का अपहरण
करे, और उसको बेच दे अथवा अपहृत व्यक्ति
उसके अधिकार में पाया जाए, तो उसे निश्चय
ही मृत्यु-दण्ड दिया जाएगा।

17 'अपने माता-पिता को अपशब्द कहने
वाले व्यक्ति को निश्चय ही मृत्यु-दण्ड दिया
जाएगा।

18 'जब मनुष्य झगड़ा करें और एक मनुष्य
अपने पड़ोसी पर पत्थर से प्रहार करे, या घूंसा
मारे और उसकी मृत्यु न हो, वरन् उसे प्रहार
के कारण शय्या पर लेटना पड़े, 19यदि वह पुनः
उठकर अपनी सोंटी के सहारे बाहर चलने-
फिरने लगे, तो प्रहार करने वाला व्यक्ति दण्ड
से मुक्त माना जाएगा। उसे केवल उसके नष्ट
समय की क्षति-पूर्ति करना तथा उसको पूर्ण
स्वस्थ करवाना होगा।

20 'यदि कोई व्यक्ति अपने गुलाम पर,
चाहे वह स्त्री अथवा पुरुष हो, लाठी से प्रहार
करे, और वह उसके हाथ से मर जाए, तो उसे
निश्चय ही दण्ड दिया जाएगा। 21किन्तु यदि
गुलाम एक अथवा दो दिन जीवित रहे तो उसे
दण्ड नहीं दिया जाएगा; क्योंकि गुलाम उसका
धन है।

22 'जब मनुष्य मार-पीट करें, और गर्भिणी
स्त्री को इतनी चोट लगे कि उसका गर्भपात हो
जाए परन्तु और कुछ हानि न हो, तब स्त्री के
पति की मांग के अनुसार मारनेवाले व्यक्ति को
अर्थ-दण्ड दिया जाएगा। जितना पंच निश्चित
करेंगे, उतना उसे देना होगा।

23 'यदि मार-पीट में किसी की मृत्यु हो
जाए तो तुझे प्राण के बदले प्राण देना होगा;
24अथवा किसी प्रकार की हानि होती है तो
आंख के बदले आंख, दांत के बदले दांत, हाथ
के बदले हाथ, पैर के बदले पैर, 25दाह के बदले
दाह, घाव के बदले घाव, आघात के बदले
आघात का दण्ड।

26 'जब कोई व्यक्ति अपने गुलाम की,
चाहे वह स्त्री अथवा पुरुष हो, आंख पर प्रहार
करे और वह फूट जाए, तब स्वामी उस आंख
के बदले गुलाम को स्वतन्त्र करके जाने देगा।
27यदि वह अपने गुलाम का, चाहे वह स्त्री
अथवा पुरुष हो, दांत तोड़ता है तो उस दांत के
बदले गुलाम को स्वतन्त्र करके जाने देगा।

पशु आदि के स्वामी का दायित्व

28 'यदि बैल किसी स्त्री अथवा पुरुष को
सींग से मार डाले तो पत्थर मारकर उसका वध
किया जाएगा। ऐसे बैल का मांस नहीं खाया

** शब्दशः: ''परमेश्वर ने उसके हाथ में उसे कर दिया था।''

21 : 12 लेव 24 : 17; गण 35 : 30 **21 : 13** व्य 19 : 4-5; गण 35 : 11; यहो 20 : 2 **21 : 14** 1 रा 2 : 28
21 : 16 व्य 24 : 7 **21 : 17** लेव 20 : 9; मत 15 : 4; प्रव 3 : 16 **21 : 24** उत 4 : 23; लेव 24 : 20; व्य 19 :
21; मत 5 : 38

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जाएगा। बैल का स्वामी दण्ड-मुक्त माना
जाएगा।29किन्तु यदि बैल को पहले से ही सींग
से मारने की आदत पड़ी है और उसके स्वामी
को चेतावनी देने पर भी उसने उसको बान्ध कर
नहीं रखा और स्त्री अथवा पुरुष को बैल मार
डालता है, तो पत्थरों से मारकर उस बैल का
वध किया जाए। उसके स्वामी को भी मृत्यु-
दण्ड दिया जाएगा।30यदि उस पर उद्धार का
शुल्क निश्चित किया जाए, तो उसे अपने प्राण
के विमोचन के लिए निश्चित किया गया शुल्क
देना होगा।31यदि बैल किसी मनुष्य के पुत्र
अथवा पुत्री को सींग से मार डालता है, तो इसी
न्याय-सिद्धान्त के अनुसार उससे व्यवहार
किया जाएगा।32यदि बैल किसी गुलाम को,
चाहे वह स्त्री अथवा पुरुष हो, सींग से मार
डालता है तो उसका मालिक चांदी के तीस
सिक्के गुलाम के स्वामी को देगा तथा पत्थर
मार कर बैल का वध किया जाएगा।

33 ‘जब कोई मनुष्य गड्ढे को खुला रहने दे,
अथवा यदि वह गड्ढा खोदे पर उसे नहीं ढांपे
और उसमें बैल या गधा गिर जाए, 34तब गड्ढे
का स्वामी क्षति-पूर्ति करेगा। वह पशु के
स्वामी को उसका मूल्य लौटाएगा, परन्तु लोथ
पर उसका अधिकार होगा।

35 ‘जब किसी मनुष्य का बैल पड़ोसी के
बैल को इतना मारे कि वह मर जाए, तब वे
जीवित बैल को बेचकर उसका मूल्य आधा-
आधा बांट लेंगे। वे लोथ को भी आपस में बांट
लेंगे।36यदि यह बात सर्व विदित है कि बैल
को पहले से ही सींग से मारने की आदत थी
और उसके स्वामी ने उसको बान्धकर नहीं
रखा, तो वह बैल के बदले बैल देकर क्षति-
पूर्ति करेगा, परन्तु लोथ पर उसका अधिकार
होगा।

क्षति-पूर्ति के नियम

22 *‘यदि कोई मनुष्य एक बैल अथवा
एक भेड़ चुराकर उसे काटता अथवा
बेचता है, तो वह एक बैल के बदले पांच बैल
और एक भेड़ के बदले चार भेड़ देकर क्षति-
पूर्ति करेगा।** उसे उनको वापस करना पड़ेगा।
यदि उसके पास वापस करने के लिए कुछ नहीं
है तो उसे चोरी करने के अपराध में बेच दिया
जाएगा।2यदि चुराया हुआ पशु चाहे वह बैल,
गधा अथवा भेड़ हो, उसके अधिकार में
जीवित पाया जाए तो वह उसका दुगुना
लौटाएगा।

3+‘यदि चोर सेंध लगाते हुए रात में पकड़ा
जाए और उस पर ऐसा प्रहार हो कि उसकी
मृत्यु हो जाए, तो उसकी हत्या का दोष
नहीं लगेगा।4पर यदि प्रहार के समय सूर्य
उदित हो चुका था तो उसकी हत्या का दोष
लगेगा।

5‘जब कोई व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के खेत
अथवा अंगूर-उद्यान को अपने पशुओं से
चराएगा या वह अपने पशुओं को खुला छोड़ेगा
कि वे दूसरे के खेत को चर जाएँ, तब वह अपने
ही खेत और अंगूर-उद्यान की सर्वोत्तम उपज
से उसकी क्षति-पूर्ति करेगा।

6 ‘जब आग झाड़-फूस में लगकर ऐसी
फैलती है कि पूलों के ढेर, खड़ी फसल अथवा
खेत जलकर राख हो जाते हैं तब आग लगाने-
वाला व्यक्ति सम्पूर्ण क्षति-पूर्ति करेगा।

7 ‘जब कोई व्यक्ति अपने पड़ोसी को
रुपया अथवा अन्य वस्तुएँ रखने के लिए देता
है, पर उसके घर से उसकी चोरी हो जाती है
तब, यदि चोर पकड़ा जाए तो दुगुना वापस
करेगा।8यदि चोर नहीं पकड़ा जाएगा तो गृह-
स्वामी परमेश्वर++ के निकट आएगा, जिससे
ज्ञात हो सके कि उसने अपने पड़ोसी की
वस्तुओं की चोरी की है अथवा नहीं।

9‘जब विश्वास-भंग का अपराध हो, चाहे
वह बैल, गधे, भेड़, वस्त्र अथवा प्रत्येक खोई
हुई वस्तु का दावा क्यों न हो, जिसके विषय
में एक व्यक्ति कहता है; ‘‘यह मेरी है,’’ तब
ऐसे दोनों व्यक्तियों का मुकद्दमा परमेश्वर के
सम्मुख लाया जाएगा। परमेश्वर जिसे अपराधी

---

* मूल में अध्याय 21 : 37 ** मूल में अध्याय 22 : 3 का आधा अंश पद 4 के साथ जोड़ा गया। +मूल में अध्याय
22 : 1 ++ अथवा, ‘न्यायाधीशों’

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

घोषित करेगा, वह अपने पड़ोसी को दुगुना
वापस करेगा।
10 'जब कोई व्यक्ति अपने पड़ोसी को
गधा, बैल अथवा भेड़ तथा अन्य पशु रखने के
लिए देता है और वह पशु बिना किसी की दृष्टि
में पड़े मर जाए, घायल हो जाए अथवा हांक
लिया जाए, 11तब दोनों के मध्य प्रभु की शपथ
ली जाएगी, जिससे ज्ञात हो सके कि व्यक्ति
ने अपने पड़ोसी की सम्पत्ति की चोरी की है
अथवा नहीं। पशु का स्वामी शपथ को स्वीकार
करेगा, और दूसरे व्यक्ति को क्षति-पूर्ति नहीं
करनी पड़ेगी। 12यदि उसके पास से निश्चय ही
धरोहर रखे पशु की चोरी हो जाए तो उसे
स्वामी की क्षति-पूर्ति करनी पड़ेगी। 13यदि
धरोहर रखा पशु, जंगली पशु के द्वारा फाड़
डाला गया है, तो वह फाड़े हुए पशु को प्रमाण
के रूप में लाएगा। तब उसे क्षति-पूर्ति नहीं
करनी पड़ेगी।
14 'यदि कोई व्यक्ति अपने पड़ोसी से एक
पशु उधार में लाता है और उसके स्वामी की
अनुपस्थिति में पशु घायल हो जाए अथवा मर
जाए, तो वह निश्चय ही सम्पूर्ण क्षति-पूर्ति
करेगा। 15किन्तु यदि उसके साथ पशु का
स्वामी उपस्थित था तो वह क्षति-पूर्ति नहीं
करेगा। यदि पशु किराए पर लिया गया था तो
उसकी क्षति-पूर्ति किराए में हो गई* ।

नैतिक और धार्मिक नियम

16 'जब कोई पुरुष किसी कुंवारी कन्या
को, जिसकी सगाई नहीं हुई है, फुसलाकर
उसके साथ सहवास करता है तब वह कन्या-
शुल्क चुकाकर उसे अपनी पत्नी बनाएगा।
17किन्तु यदि कन्या का पिता उसको अपनी
कन्या प्रदान करना सर्वथा अस्वीकार कर दे, तो
पुरुष कन्या-शुल्क के बराबर मुद्राएँ चुकाएगा।
18 'जादू-टोना करनेवाली स्त्री को जीवित
नहीं छोड़ना।
19 'पशुगमन करने वाले व्यक्ति को निश्चय
ही मृत्यु-दण्ड दिया जाएगा।
20 'एक ही प्रभु के अतिरिक्त देवताओं के
लिए बलि चढ़ानेवाला व्यक्ति पूर्णतः नष्ट
किया जाएगा।
21 'तू किसी प्रवासी के साथ न तो अन्याय
करना और न उसका दमन ही करना, क्योंकि
तुम भी मिस्र देश में प्रवासी थे। 22तू किसी विधवा
अथवा अनाथ को पीड़ित मत करना। 23यदि
तू उनको पीड़ा पहुँचाएगा और वे मेरी दुहाई
देगें तो मैं निश्चय ही उनकी दुहाई सुनूंगा।
24मेरा क्रोध प्रज्वलित होगा और मैं तलवार से
तुम्हारा वध करूंगा। तब तुम्हारी पत्नियाँ
विधवा, और तुम्हारे पुत्र अनाथ हो जाएँगे।
25 'यदि तू मेरे लोगों में से किसी निर्धन
व्यक्ति को जो तेरे साथ रहता है रुपया उधार
देगा, तो उसके लिए सूद-खोर जैसा नहीं
बनना। तू उस पर ब्याज नहीं लगाना।
26 'यदि तू अपने पड़ोसी के वस्त्र कभी
बन्धक में रखे तो सूर्य के अस्त होने तक उसे
लौटा देना; 27क्योंकि वह उसकी चादर है,
उसके शरीर का एकमात्र वस्त्र है। वह क्या
ओढ़कर सोएगा ? अत: जब वह मेरी दुहाई देगा
तब मैं उसको सुनूंगा; क्योंकि मैं अनुग्रह-दाता
परमेश्वर हूँ।
28 'तू परमेश्वर** का अनादर नहीं करना,
और न अपने समाज के किसी अगुए को
अपशब्द कहना।
29 'तू मुझे अपने खेत की प्रचुर उपज और
रस-कुण्डों के रस में से भेंट अर्पित करने में
विलम्ब न करना।
'तू मुझे अपने पुत्रों में से पहिलौठा पुत्र देना।
30ऐसा ही अपने बैलों और भेड़ों के पहिलौठे
के साथ करना। वह सात दिन तक अपनी माँ
के साथ रहेगा किन्तु आठवें दिन तू उसको मुझे
देना।

---

* मूल में अस्पष्ट ** अथवा 'न्यायाधीशों'

22 : 12 उत 31 : 39 **22 : 16** व्य 22 : 28 **22:18** व्य 18 : 10 **22 : 19** लेव 18 : 23; 20 : 15; व्य 27 : 21 **22 : 20** गण 25 : 2; व्य 17: 2 **22 : 21** लेव 19 : 33; नि 23: 9; व्य 10 : 19; 24 : 17; मला 3 : 5 **22 : 22** यश 1 : 17 **22 :25** लेव 25 : 35; व्य 15 : 7 **22 : 26** व्य 24 : 10; आमो 2 : 8 **22 : 28** सभ 10 : 20; प्रे 23 : 5

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

31 'तुम मेरे लिए पवित्र बनोगे। अतएव तुम
मैदान में जंगली पशु द्वारा फाड़े गए पशु का
मांस मत खाना, वरन् उसे कुत्तों के सामने फेंक
देना।

न्याय और नीति के सिद्धान्त

23 'तू झूठी अफवाह नहीं फैलाना। विद्वेष-
पूर्ण साक्षी देने के लिए दुर्जन से सहयोग
मत करना। 2तू बुरा कार्य करने के लिए भीड़
का अनुसरण नहीं करना। तू न्याय को विकृत
करने के उद्देश्य से भीड़ का अनुसरण मत
करना और मुकद्दमे में झूठी साक्षी नहीं देना।
3तू दरिद्र व्यक्ति के मुकद्दमे में उसका पक्षपात
नहीं करना।

4 'जब तुझे तेरे शत्रु का बैल अथवा गधा
भटकता हुआ मिले तब तू उस पशु को उसके
पास लाना। 5जब तू उस व्यक्ति के गधे को
बोझ से दबा हुआ देखे, जो तुझसे घृणा करता
है, तब उसे वैसा ही मत छोड़ना वरन् बोझ
उठाने में उसकी सहायता करना*।

6 'अपने दरिद्र अभियुक्त के मुकद्दमे में
न्याय को विकृत नहीं करना। 7तू झूठे आरोप
से दूर रहना और निर्दोष तथा भक्त का वध न
करना; क्योंकि मैं दुर्जन को निर्दोष नहीं घोषित
करूँगा। 8तू घूस मत लेना; क्योंकि घूस दृष्टिवाले
व्यक्तियों को भी दृष्टिहीन बनाती है। वह भक्तों
के न्याय-पक्ष को उलट देती है।

9 'तू प्रवासी व्यक्ति का दमन मत करना।
तुम्हें प्रवासी के जीवन का अनुभव है; क्योंकि
तुम स्वयं मिस्र देश में प्रवासी थे।

विश्राम दिवस

10 'तू छः वर्ष तक अपने खेत में बोआई
करना और उसकी उपज एकत्र करना; 11किन्तु
सातवें वर्ष उसे परती रहने देना। उसे वैसे ही
छोड़ देना जिससे तेरी प्रजा के दरिद्र व्यक्ति
खाएँ। जो शेष रहे, उसे वन पशु खाएँ। तू ऐसा
ही अपने अंगूर उद्यान और जैतून कुंज के विषय
में करना।

12 'तू छः दिन तक अपने कार्य में परिश्रम
करना, किन्तु सातवें दिन विश्राम करना जिससे
तेरा बैल और गधा सुस्ताएँ, तेरी सेविका के पुत्र
तथा प्रवासी को आराम मिले।

13 'जो बातें मैंने तुमसे कही हैं, उनका
पालन करना। तू अन्य देवताओं के नाम भी नहीं
लेना, ये नाम तेरे मुंह से न निकलें और सुनाई
भी न दें।

तीन विशिष्ट पर्व

14 'तू वर्ष में तीन बार मेरे लिए यात्रा पर्व
मनाना। 15तू बेखमीर रोटी का पर्व मनाना।
जैसी आज्ञा मैंने तुझे दी है, उसके अनुसार तू
निर्धारित समय पर अबीब महीने में सात दिन
तक बेखमीर रोटी खाना; क्योंकि तुम उस
महीने में मिस्र देश से बाहर निकले थे। कोई
भी व्यक्ति मेरे दर्शन के लिए खाली हाथ न
आए। 16जो तू खेत में बोता है, अपने परिश्रम
के प्रथम फल का कटनी पर्व मनाना। जब तू
वर्ष के अन्त में खेत में अपने परिश्रम का फल
संग्रह करता है, तब संग्रह पर्व मनाना। 17तेरे
परिवार के सब पुरुष वर्ष में तीन बार प्रभु
परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित होंगे।

18 'तू बलि-पशु का रक्त खमीरी रोटी के
साथ मत चढ़ाना। तू पर्व की चर्बी सबेरे तक
न छोड़ना।

19 'तू अपनी भूमि के प्रथम फलों में से
सर्वोत्तम फल मेरे, अपने प्रभु परमेश्वर के गृह
में लाना।

'तू बकरी के बच्चे को उसकी मां के दूध में
मत पकाना।

प्रभु के दूत के द्वारा इस्राएल का मार्ग-दर्शन

20 'सुन, जो स्थान मैंने तेरे लिए तैयार
किया है, वहाँ तुझे पहुँचाने के उद्देश्य से तथा

---

* मूल में अस्पष्ट

22 : 31 लेव 17 : 15 **23 : 1** नि 20 : 16 लेव 19 : 11 **23 : 3** लेव 19 : 15 **23 : 4** व्य 22 : 1-4 **23 : 6** व्य 16 : 19 **23 : 9** लेव 19 : 33; व्य 24 : 17 **23 : 10** लेव 25 : 3 **23 : 11** व्य 24 : 19 **23 : 12** नि 20 : 9-11 **23 : 15** नि 12 : 11 **23 : 16** गण 28 : 26 **23 : 19** व्य 26 : 2; नि 34 : 26 **23 : 20** मला 3 : 1, यश 63 : 9

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मार्ग में तेरी रक्षा के निमित्त मैं तेरे आगे-आगे एक दूत को भेज रहा हूं। 21उस पर ध्यान देना। उसकी वाणी को सुनना। उससे विद्रोह मत करना। वह तेरे अपराधों को क्षमा नहीं करेगा; क्योंकि मेरा नाम उसमें है।

22 'किन्तु यदि तू ध्यान से उसकी वाणी सुनेगा, जो कुछ मैं कहूँगा, उसको करेगा, तो मैं तेरे शत्रुओं को अपने शत्रु और तेरे बैरियों को अपने बैरी मानूंगा।

23 'जब मेरा दूत तेरे आगे जाकर तुझे अमोरी, हित्ती, परिज्जी, कनानी, हिव्वी और यबूसी जातियों के देश में पहुँचाएगा, और मैं उन्हें मिटा डालूंगा 24तब तू उनके देवताओं की वन्दना नहीं करना, उनकी सेवा मत करना, और न उनके कार्यों के अनुरूप कार्य करना वरन् उनको पूर्णतः ध्वस्त करना, उनके पूजा-स्तम्भों को तोड़-फोड़ देना। 25तू केवल अपने प्रभु परमेश्वर की सेवा करना। मैं तेरे अन्न-जल पर आशिष दूंगा। तेरे मध्य से रोग को दूर करूँगा। 26तेरे देश में न तो किसी स्त्री का गर्भपात होगा और न कोई स्त्री बांझ होगी। मैं तेरी आयु के दिन पूर्ण करूँगा। 27मैं तेरे आगे अपना आतंक प्रेषित करूँगा। जिन जातियों पर तू आक्रमण करेगा, उनको मैं भयाकुल करूँगा। तेरे पास से समस्त शत्रुओं को पलायन करने के लिए विवश करूँगा। 28मैं तेरे आगे बर्रे भेजूंगा और वे हिव्वी, कनानी तथा हित्ती जातियों को तेरे सम्मुख से निकाल देंगे। 29मैं उन्हें एक ही वर्ष में तेरे सम्मुख से नहीं निकालूंगा, अन्यथा तेरा देश उजाड़ हो जाएगा और वनपशु बढ़ जाएंगे और वे तेरी हानि करेंगे। 30जब तक तू बढ़कर समस्त देश पर अधिकार न कर ले तब तक मैं उन्हें थोड़ा-थोड़ा करके तेरे सम्मुख से निकालता रहूंगा। 31मैं तेरे राज्य की सीमा लाल सागर से पलिश्ती जाति के समुद्र तक, निर्जन प्रदेश से फरात नदी तक निश्चित करूँगा। मैं देश के निवासियों को तेरे हाथ में सौंप दूंगा और तू उन्हें अपने सम्मुख से निकाल देगा। 32तू न तो उनसे सन्धि करना और न उनके देवताओं के साथ विधान का संबंध स्थापित करना। 33वे तेरे देश में निवास नहीं करेंगे, ऐसा न हो कि वे मेरे विरुद्ध तुझसे पाप कराएँ। यदि तू उनके देवताओं की सेवा करेगा, तो यह निश्चय ही तेरे लिए जाल बन जाएगा।'

विधान का समर्थन

24 प्रभु ने मूसा से कहा, 'तू, हारून, नादब, अबीहू तथा इस्राएल के सत्तर धर्मवृद्ध मेरे पास ऊपर आएँ और दूर से वन्दना करें। 2केवल तू मेरे निकट आएगा, पर दूसरे व्यक्ति निकट नहीं आएँगे। लोग तेरे साथ ऊपर नहीं चढ़ेंगे।'

3 मूसा लौटे। उन्होंने इस्राएली लोगों से प्रभु के सब वचनों तथा न्याय-सिद्धान्तों का वर्णन किया। लोगों ने मूसा को एक स्वर से उत्तर दिया, 'जो वचन प्रभु ने कहे हैं, उन सबका हम पालन करेंगे।' 4मूसा ने प्रभु के सब वचन लिख लिये। वह सबेरे उठे। उन्होंने पहाड़ की तलहटी में एक वेदी बनाई, और इस्राएल के बारह कुलों के अनुसार बारह स्तम्भ खड़े किये। 5मूसा ने इस्राएली समाज के युवकों को भेजा, जिन्होंने प्रभु को अग्नि-बलि चढ़ाई तथा बैलों को सहभागिता-बलि में अर्पित किया। 6मूसा ने आधा रक्त लेकर उसे पात्रों में रखा, और शेष आधा रक्त वेदी पर छिड़क दिया। 7तत्पश्चात् उन्होंने विधान की पुस्तक ली, और इस्राएली समाज को पढ़कर सुनाई। लोगों ने कहा, 'जो वचन प्रभु ने कहे हैं, उन सबका हम पालन करेंगे, हम उनको सुनेंगे।' 8मूसा ने रक्त लिया और उसको लोगों पर छिड़ककर उनसे कहा, 'देखो, यह उस विधान का रक्त है, जिसे प्रभु ने इन सब वचनों के आधार पर तुम्हारे साथ स्थापित किया है।'

9 तत्पश्चात् मूसा, हारून, नादब, अबीहू तथा इस्राएली समाज के सत्तर धर्मवृद्ध ऊपर गए। 10उन्होंने इस्राएल के परमेश्वर को देखा।

---

23 : 24 मी 5 :12 **23 : 29** व्य 7 : 22 **23 : 33** शास 2 : 3 **24 : 3** यहो 24 : 16 **24 : 4** यहो 4 : 3 **24 : 8** मत 26 : 28; 1 कुर 11 : 25; इब्र 9 : 19; 10 : 29; 1पत 1: 2 ; भज 50 : 5 **24 :10** यहेज 1: 26 : प्रक 4 : 3

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उसके चरणों के नीचे नीलमणि का चबूतरा-जैसा कुछ था, जो आकाश के सदृश स्वच्छ था। [11]परमेश्वर ने इस्राएली समाज के प्रधानों पर हाथ नहीं उठाया, वरन् उन्होंने परमेश्वर का दर्शन किया, और खाया-पिया।

मूसा का सीनय पर्वत पर चढ़ना

12 प्रभु ने मूसा से कहा, 'मेरे पास पहाड़ पर चढ़कर आ, और वहाँ मेरी प्रतीक्षा कर। मैं तुझे पत्थर की पट्टियाँ दूंगा, जिनपर मैंने लोगों की शिक्षा के लिए व्यवस्था तथा आज्ञाएँ लिखी हैं।' [13]अत: मूसा उठे और अपने धर्म-सेवक यहोशुअ के साथ परमेश्वर के पहाड़ पर चढ़े। [14]उन्होंने धर्मवृद्धों से कहा, 'जब तक हम वापस नहीं आते, आप यहाँ हमारी प्रतीक्षा कीजिए। देखिए, हारून और हूर आपके साथ हैं। अत: यदि किसी का कोई मुकद्दमा हो तो वह न्याय के लिए उनके पास जाए।'

15 तत्पश्चात् मूसा पहाड़ पर चढ़े। मेघ ने पहाड़ को आच्छादित कर लिया। [16]प्रभु की महिमा सीनय पर्वत पर निवास करने लगी। मेघ छ: दिन तक उसे आच्छादित किए रहा। सातवें दिन प्रभु ने मेघ के मध्य से मूसा को पुकारा। [17]पहाड़ के शिखर पर प्रभु की महिमा का दर्शन इस्राएली समाज की दृष्टि में प्रचण्ड अग्नि के सदृश प्रतीत हुआ। [18]मूसा ने मेघ के भीतर प्रवेश किया, और वह पहाड़ पर चढ़े। वह चालीस दिन और चालीस रात पहाड़ पर रहे।

इस्राएली समाज का भेंट चढ़ाना

25 प्रभु ने मूसा से कहा, [2]'इस्राएली लोगों से कह कि वे मेरे लिए भेंट लाएं। प्रत्येक व्यक्ति से, जो स्वेच्छा से देना चाहे, मेरे लिए भेंट स्वीकार करना। [3]जो भेंटें तू उनसे लेगा, वे ये हैं: सोना, चांदी तथा पीतल, [4]नीले, बैंजनी और लोहित रंग के वस्त्र, पतले सूत से बुना हुआ कपड़ा, बकरी के बाल, [5]मेढ़े की पकी हुई खाल, सूंस का चमड़ा, बबूल की लकड़ी, [6]दीप-प्रज्वलन के लिए तेल, अभ्यंजन के तेल एवं सुगन्धित धूप के लिए मसाले, [7]उरावरण* और उरपट में लगाने तथा अन्य वस्तुओं में जड़ने के लिए सुलेमानी पत्थर और मणि। [8]वे मेरे लिए एक पवित्र स्थान बनाएँगे जिससे मैं उनके मध्य निवास करूंगा। [9]अपने निवास-स्थान के नमूने तथा उसके समस्त उपकरणों से सम्बन्धित जो वस्तुएँ मैं तुझे दिखाता हूं, उन्हीं के अनुरूप तू उसे निर्मित करना।

साक्षी मंजूषा का निर्माण

10 'वे बबूल की लकड़ी की एक मंजूषा बनाएँगे। उसकी लम्बाई, एक मीटर साढ़े बारह सेंटीमीटर, चौड़ाई साढ़े सड़सठ सेंटीमीटर और ऊँचाई साढ़े सड़सठ सेंटीमीटर होगी।+ [11]तू उसे शुद्ध सोने से मढ़ना। तू उसे बाहर-भीतर मढ़ना। तू मंजूषा के ऊपर चारों ओर सोने की भित्ति बनाना। [12]तू उसके लिए सोने के चार कड़े ढालना और उसके चारों पायों पर लगाना, उसकी एक ओर दो कड़े तथा दूसरी ओर दो कड़े। [13]तू बबूल की लकड़ी के डण्डे बनाना और उन्हें सोने से मढ़ना। [14]तू डण्डों को मंजूषा के दोनों ओर के कड़ों में डालना जिससे उनके सहारे मंजूषा को उठाया जा सके। [15]डण्डे मंजूषा के कड़ों में लगे रहेंगे। वे उससे अलग नहीं किए जाएंगे। [16]जो साक्षी-पत्र मैं तुझे दूंगा, उसे मंजूषा में रखना।

17 'तत्पश्चात् तू शुद्ध सोने का दया-आसन** बनाना। उसकी लम्बाई एक मीटर साढ़े बारह सेंटीमीटर, और चौड़ाई साढ़े सड़सठ सेंटीमीटर होगी। [18]सोने के दो करूब बनाना। तू दया-आसन के दोनों छोर पर उन्हें ढाल कर बनाना: [19]एक करूब एक छोर पर और दूसरा करूब दूसरे छोर पर। दया-आसन को, और उसके दोनों छोर पर करूबों को धातु के एक ही टुकड़े से बनाना। [20]करूब अपने

---

* एक विशेष वस्त्र। मूल में एपोद + मूल में 'उसकी लंबाई अढ़ाई अम्मा, चौड़ाई डेढ़ अम्मा और ऊँचाई डेढ़ अम्मा होगी'। एक 'अम्मा' लगभग पैंतालीस सेंटीमीटर है। ** अथवा, ''प्रायश्चित्-पट''।

24 : 12 नि 32 : 15 ; व्य 5: 22; 2 कुर 3 : 3 **24 : 18** व्य 9 : 9; 1 रा 19 : 8 ; मत 4 : 2 **25 : 2-8** नि 35 : 4-9 **25 : 10-22** नि 37 : 1-9 **25 : 16** व्य 10 : 2 **25 : 17** रोम 3 : 25; लेव 16 : 15

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पंखों को इस प्रकार ऊपर फैलाएँ कि उनके पंखों से दया-आसन ढका रहे और उनके मुख आमने-सामने हों। करूबों के मुख दया-आसन की ओर रहेंगे। 21तू दया-आसन को मंजूषा के ऊपर स्थापित करना। जो साक्षी-पत्र मैं तुझे दूंगा, उसे मंजूषा में रखना। 22मैं वहाँ तुझसे भेंट किया करूंगा। जो आज्ञाएँ मैं तुझे इस्राएली समाज के लिए दूंगा, उनके विषय में मैं तुझसे दया-आसन के ऊपर से, साक्षी-मंजूषा पर स्थापित दोनों करूबों के मध्य से, वार्तालाप करूंगा।

पवित्र मेज़

23 'तू बबूल की लकड़ी की एक मेज़ बनाना। उसकी लम्बाई नब्बे सेंटीमीटर, चौड़ाई पैंतालीस सेंटीमीटर, और ऊँचाई साढ़े सड़सठ सेंटीमीटर होगी। 24तू उसे शुद्ध सोने से मढ़ना और उसके चारों ओर सोने की भित्ति बनाना। 25तू उसके चारों ओर साढ़े सात सेंटीमीटर चौड़ा चौखटा बनाना और इस चौखटे के चारों ओर सोने की भित्ति बनाना। 26 तू उसके लिए सोने के चार कड़े बनाना, और उसके चारों पायों के किनारे में कड़ों को लगा देना। 27चारों कड़े चौखटे के निकट ही होने चाहिए जिससे वे मेज को उठाने के लिए डण्डों के जकड़-पट्टे का काम दें। 28तू बबूल की लकड़ी के डण्डे बनाना, और उन्हें सोने से मढ़ना। मेज उन्हीं के सहारे उठाई जाएगी। 29तू धूप के लिए परात, धूपदान, तथा पेयार्पण के लिए सुराहियाँ और चषक बनाना। तू इन्हें शुद्ध सोने से बनाना। 30तू मेज पर मेरे सम्मुख भेंट की रोटियाँ निरन्तर रखना।

स्वर्ण दीपाधार

31 'तू शुद्ध सोने का एक दीपाधार बनाना। उसका पाया और डण्डी सोना ढालकर बनाए जाएं। उसके पुष्प-कोष, गाँठ और फूल धातु के एक ही टुकड़े से बनाना। 32उसकी छः शाखाएँ निकली होंगी। दीपाधार की एक ओर तीन शाखाएँ और दूसरी ओर तीन शाखाएँ रहेंगी। 33प्रत्येक शाखा में बादाम की बौंड़ी के समान तीन पुष्पकोष, एक गांठ और एक फूल होंगे। दीपाधार की छः शाखाओं में ऐसा ही होगा। 34दीपाधार की डण्डी में भी बादाम की बौंड़ी के समान चार पुष्प-कोष, अपनी-अपनी गांठ और फूल के साथ होंगे। 35दीपाधार की डण्डी पर छः शाखाओं की एक-एक जोड़ी-शाखा के नीचे एक-एक गांठ होगी। गांठें और डण्डी धातु के एक ही टुकड़े से बनाई जाएंगी। 36गांठें और शाखाएँ भी धातु की एक ही टुकड़े से बनाई जाएँगी। शुद्ध सोना ढालकर पूरा दीपाधार एक ही टुकड़े से बनाना। 37तू उसके लिए सात दीपक बनाना। उनको इस प्रकार जलते हुए रखना कि उनका प्रकाश सामने के स्थान पर पड़े। 38उसके गुलतराश और गुलदान शुद्ध सोने के होंगे। 39दीपाधार और उसके सब पात्र लगभग पैंतीस किलो* शुद्ध सोने से बनाए जाएंगे। 40ध्यान रखना कि ये वस्तुएँ अपने-अपने ढांचे के अनुरूप बनाई जाएँ, जो मैंने तुझे पहाड़ पर दिखाया है।

निवास-स्थान

26 'तू दस परदों का एक निवास-स्थान बनाना। ये परदे पतले सूत से बुने हुए नीले, बैंजनी और लोहित रंग के वस्त्र के होने चाहिए। तू उनपर कुशलता से करूबों के चित्रों की कढ़ाई करना। 2प्रत्येक परदे की लम्बाई बारह मीटर साठ सेंटीमीटर और चौड़ाई एक मीटर अस्सी सेंटीमीटर होगी। सब परदे एक ही नाप के होंगे। 3पांच परदे एक-दूसरे से जोड़े जाएंगे। इसी प्रकार शेष पांच परदे भी एक-दूसरे से जोड़े जाएंगे। 4पहले जुड़े हुए परदे के छोर में नीले रंग के फन्दे डाले जाएंगे। इसी प्रकार दूसरे जुड़े हुए परदे के छोर में भी नीले रंग के फन्दे डालना। 5पहले जुड़े परदे में पचास फन्दे डालना, और दूसरे जुड़े हुए परदे के छोर में भी पचास फन्दे डालना। फन्दे आमने-

---

* मूल में, "एक किक्कार"

25 : 23-29 नि 37 : 10-15 **25 : 30** लेव 24 : 5 **25 : 31-40** नि 37 : 17-24 **25 : 40** नि 26 : 30; गण 8 : 4; प्रे 7 : 44; इब्र 8 : 5 **26 : 1-14** नि 36 : 8-19; इब्र 9 : 2-11

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सामने होने चाहिए। [6]तू सोने के पचास अंकड़े
बनाना, और जुड़े हुए परदों को इन अंकड़ों के
द्वारा जोड़ देना जिससे पूरा निवास-स्थान एक
बन जाए।
7 'तू निवास-स्थान के ऊपर, तम्बू के लिए
बकरी के बाल के परदे बनाना। तू कुल ग्यारह
परदे बनाना। [8]प्रत्येक परदे की लम्बाई साढ़े
तेरह मीटर और चौड़ाई एक मीटर अस्सी
सेंटीमीटर होगी। ये ग्यारह परदे एक ही नाप
के होंगे। [9]तू पांच परदों को एक-दूसरे से
जोड़ना। इसी प्रकार शेष छः परदों को परस्पर
जोड़ना। किन्तु तू छठे परदे को तम्बू के सम्मुख
दोहराकर लटका देना। [10]तू पहले जुड़े हुए
परदे के छोर में पचास फन्दे डालना। ऐसे ही
दूसरे जुड़े हुए परदे के छोर में पचास फन्दे
डालना।
11 'तू पीतल के पचास अंकड़े बनाना।
उन्हें फन्दों में डालकर तम्बू को जोड़ देना,
जिससे वह एक बन जाए। [12]तम्बू के परदों का
बचा हुआ भाग, आधा परदा, जो बच जाता है,
वह निवास-स्थान की पिछली ओर लटकता
रहेगा। [13]तम्बू के परदों की लम्बाई में बचा
हुआ भाग निवास-स्थान के दोनों ओर, अगल-
बगल, उसे ढांपने के लिए पैंतालीस सेंटीमीटर
इधर, पैंतालीस सेंटीमीटर उधर लटकता रहे।
[14]तू तम्बू के लिए मेढ़े और सूंस के पके हुए
चमड़े का आवरण बनाना।
15 'तू निवास-स्थान के लिए बबूल की
लकड़ी के सीधे-खड़े तख्ते बनाना। [16]प्रत्येक
तख्ते की लम्बाई साढ़े चार मीटर, और चौड़ाई
साढ़े सड़सठ सेंटीमीटर होगी। [17]उन्हें परस्पर
जोड़ने के लिए प्रत्येक तख्ते में दो चूलें रहेंगी।
तू निवास-स्थान के सब तख्तों में चूलें बनाना।
[18]निवास-स्थान के लिए तख्ते इस प्रकार
बनाना : निवास-स्थान के दक्षिणी भाग के
लिए बीस तख्ते। [19]तू इन बीस तख्तों के नीचे
चांदी की चालीस आधार-पीठिकाएँ बनाना।
एक तख्ते के नीचे उसकी चूलों के लिए दो
आधार-पीठिकाएँ और दूसरे तख्तों के नीचे भी
उनकी दोनों चूलों के लिए दो-दो आधार-
पीठिकाएँ। [20]निवास-स्थान की दूसरी ओर,
उत्तरी भाग में बीस तख्ते: [21]उनके लिए भी
चांदी की चालीस आधार-पीठिकाएँ बनाना।
प्रत्येक तख्ते के नीचे दो आधार-पीठिकाएँ।
[22]तू पश्चिमी दिशा में निवास-स्थान के पिछले
भाग के लिए छः तख्ते बनाना। [23]तू निवास-
स्थान के कोनों के लिए पिछले भाग में दो तख्ते
बनाना। [24]वे नीचे तो अलग-अलग होंगे,
किन्तु ऊपर की ओर पहले कड़े पर जुड़े हुए
होंगे। दोनों तख्तों का यही रूप होगा। ये दो
कोने बनाएँगे। [25]यों आठ तख्ते, और चांदी की
सोलह आधार-पीठिकाएँ होंगी : एक तख्ते के
नीचे दो आधार-पीठिकाएँ, इसी प्रकार दूसरे
तख्तों के नीचे दो-दो आधार-पीठिकाएँ।
26 'तू बबूल की लकड़ी की छड़ें बनाना।
निवास-स्थान की एक ओर के तख्तों के लिए
पांच, [27]दूसरी ओर के तख्तों के लिए पांच,
तथा पश्चिम की ओर निवास-स्थान के पिछले
भाग के तख्तों के लिए पांच। [28]तख्तों के बीचों-
बीच, मध्यवर्ती छड़ निवास-स्थान के एक
छोर से दूसरे छोर तक जाएगी। [29]तू तख्तों को
सोने से मढ़ना। तत्पश्चात् तू उनके कड़ों को,
जो छड़ों के जकड़-पट्टा होंगे, सोने के बनाना।
तू छड़ों को भी सोने से मढ़ना। [30]तू निवास-
स्थान को उसकी योजना के अनुसार खड़ा
करना, जो तुझे पर्वत पर दिखाई गई है।
31 'तू नीले, बैंजनी और लोहित रंग के
वस्त्र से, पतले सूत से बुने हए वस्त्र से एक
अन्त:पट बनाना। उस पर कुशलता से करूबों
के चित्र काढ़ना। [32]तू उसे बबूल की लकड़ी
के, और सोने से मढ़े हुए, चार खम्भों पर
लटकाना। वे चांदी की चार आधार-पीठिकाओं
में लगे हुए और सोने के छल्लों में फंसे हुए होने
चाहिए। [33]तू अन्त:पट को अंकड़ों द्वारा
लटकाना, और साक्षी-मंजूषा को अन्त:पट के
पीछे भीतर ले आना। अन्त:पट तुम्हारे लिए
पवित्र स्थान को महापवित्र स्थान से अलग
करेगा। [34]तू महापवित्र स्थान में साक्षी-मंजूषा

---

26 : 15-29 नि 36 : 20-34 **26 : 31-37** नि 36 : 35-38 **26 : 33** इब्र 6 : 19; 9 : 2-4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

के ऊपर दया-आसन को रखना। 35तू अन्त:पट के बाहर मेज को, और उसके सामने निवास-स्थान के दक्षिणी भाग में दीपाधार को रखना। उत्तरी भाग में मेज रखना।

36 'तू तम्बू के द्वार के लिए नीले, बैंजनी और लोहित रंग के वस्त्र से, पतले सूत से बुने हुए वस्त्र से, जिसपर बेल-बूटे काढ़े गए हों, एक परदा बनाना। 37तू परदे के लिए बबूल की लकड़ी के, और सोने से मढ़े हुए, पांच खम्भे बनाना। उनके छल्ले सोने के होंगे। तू उनके लिए पीतल की पांच आधार-पीठिकाएँ ढालना।

अग्नि-बलि की वेदी

27 'तू बबूल की लकड़ी की एक वेदी बनाना जो दो मीटर पचीस सेंटीमीटर लम्बी और दो मीटर पचीस सेंटीमीटर चौड़ी होगी। वेदी वर्गाकार हो। उसकी ऊंचाई एक मीटर पैंतीस सेंटीमीटर होनी चाहिए। 2तू उसके लिए चारों कोनों पर चार सींग बनाना। वेदी और उसके सींग लकड़ी के एक ही टुकड़े के होने चाहिए। तू उसको पीतल से मढ़ना। 3तू उसके राख उठाने के पात्र, फावड़ियां, कटोरे, कांटे और अंगीठियां बनाना। उसके सब पात्र पीतल धातु से बनाना। 4तू उसके लिए पीतल की जाली की एक झंझरी बनाना। झंझरी के चारों कोनों पर पीतल के चार कड़े बनाना। 5तू झंझरी को वेदी के चारों ओर की कंगनी के नीचे ऐसे लगाना, कि वह वेदी के मध्य तक ऊंची रहे। 6तू वेदी के लिए बबूल की लकड़ी के डण्डे बनाना, और उन्हें पीतल से मढ़ना। 7डण्डे कड़ों में इस प्रकार डाले जाएंगे कि जब वेदी उठाई जाएगी तब वे उसके दोनों बाजुओं में रहें। 8तू तख्ते जोड़कर उसको खोखली बनाना। जैसे तुझे पहाड़ पर दिखाया गया है, वैसे ही वेदी बननी चाहिए।

निवास-स्थान का आंगन

9 'तू निवास-स्थान का आंगन बनाना। आंगन के दक्षिणी भाग के परदे पतले बुने हुए सूती वस्त्र के होंगे। वे एक ओर पैंतालीस मीटर लम्बे होंगे। 10उनके लिए बीस खम्भे और पीतल की बीस आधार-पीठिकाएँ होनी चाहिए। किन्तु खम्भों के छल्ले तथा उनको जोड़ने वाली पट्टियाँ चांदी की होंगी। 11इसी प्रकार आंगन की लम्बाई के लिए उत्तरी भाग के परदे पैंतालीस मीटर लम्बे होंगे। उनके लिए बीस खम्भे और पीतल की बीस आधार-पीठिकाएँ होंगी। किन्तु खम्भों के छल्ले तथा उनको जोड़नेवाली पट्टियाँ चांदी की होंगी। 12आंगन की चौड़ाई के लिए पश्चिमी भाग के परदे साढ़े बाईस मीटर लम्बे होंगे। उनके लिए दस खम्भे और दस आधार-पीठिकाएँ होंगी। 13पूर्वीय भाग के आंगन की चौड़ाई साढ़े बाईस मीटर होनी चाहिए। 14आंगन के द्वार की एक ओर के परदे छ: मीटर पचहत्तर सेंटीमीटर लम्बे होंगे। उनके लिए तीन खम्भे और तीन आधार-पीठिकाएँ होंगी। 15आंगन के द्वार की दूसरी ओर के परदे छ: मीटर पचहत्तर सेंटीमीटर लम्बे होंगे। उनके लिए तीन खम्भे और तीन आधार-पीठिकाएँ होंगी। 16आंगन के द्वार का परदा नौ मीटर लम्बा, नीले, बैंजनी और लोहित रंग एवं पतले बुने हुए सूती वस्त्र से बना होगा। वह बेल-बूटों से कढ़ा होगा। उसके लिए चार खम्भे और उनकी चार आधार-पीठिकाएँ होंगी। 17आंगन के चारों ओर के सब खम्भे चांदी की पट्टियों से जुड़े होंगे। उनके छल्ले चांदी के तथा आधार- पीठिकाएँ पीतल की होंगी। 18आंगन की लम्बाई पैंतालीस मीटर, चौड़ाई साढ़े बाईस मीटर, और ऊंचाई दो मीटर पचीस सेंटीमीटर होगी। उसके परदे पतले बुने हुए सूती वस्त्र के तथा आधार-पीठिकाएँ पीतल की होंगी। 19निवास-स्थान के समस्त पात्र, प्रत्येक प्रकार के कार्य में प्रयुक्त होने वाले पात्र, उसके सब खूंटे, आंगन के समस्त खूंटे पीतल के होंगे।

20 'तू इस्राएली समाज को आदेश देना कि वे दीप-प्रज्वलन के लिए पेरकर निकाला गया जैतून का शुद्ध तेल लाएँ, जिससे एक दीप निरन्तर* जलता रहे। 21हारून और उसके पुत्र

---

* अथवा, 'नित्य', 'नियमित रूप से'।

27 : 1-8 नि 38 : 1-7 **27 : 1** यहेज 43 : 13 **27 : 9-19** नि 38 : 9-20; यहेज 40 **27 : 20** लेव 24 : 2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मिलन-शिविर के अन्त:पट के बाहर, जो
साक्षी-मंजूषा के सामने है, दीप को सन्ध्या से
सबेरे तक प्रभु के सम्मुख सजा कर रखें। यह
सदा के लिए संविधि होगी, जिसका पालन
इस्राएली समाज पीढ़ी से पीढ़ी तक करता
रहेगा।

पुरोहितों की पोशाक

28 'तू इस्राएली लोगों के मध्य से अपने
भाई हारून को तथा उसके साथ उसके
पुत्रों, नादब, अबीहू, एलआजर और ईतामर
को अर्पित करने के उद्देश्य से अपने पास लाना
कि वे मेरे लिए पुरोहित का कार्य करें। 2तू अपने
भाई हारून की मर्यादा और शोभा के लिए
पवित्र पोशाक बनाना। 3तू उन सब बुद्धियुक्त
कारीगरों से, जिनको मैं बुद्धि की आत्मा से
परिपूर्ण करूँगा, कहना कि वे हारून के लिए
पोशाक बनाएं कि वह पवित्र होकर मेरे लिए
पुरोहित का कार्य करे। 4यह पोशाक वे बनाएंगे:
उरपट, उरावरण, अंगरखा, चारखाने का लम्बा
कुरता, साफा और कमरबन्द। वे तेरे भाई हारून
और उसके पुत्रों के लिए पवित्र पोशाक
बनाएँगे कि वे मेरे लिए पुरोहित का कार्य करें।
5 'वे कारीगर स्वर्णतार तथा पतले सूत में
बुने हुए नीले, बैंजनी और लोहित रंग के वस्त्र
लेंगे। 6तत्पश्चात् वे स्वर्णतार, तथा पतले सूत
से बुने हुए नीले, बैंजनी और लोहित रंग के
वस्त्र से, जिसपर निपुणता से कढ़ाई की गई है,
उरावरण तैयार करेंगे। 7उरावरण के दोनों सिरों
पर जुड़ी हुई दो कंधा-पट्टियाँ होंगी, जिनसे
उसके दोनों भागों को जोड़ा जा सके। 8उसे बांधने
वाले पट्टे की, जो उसपर निपुणता से बुना होगा,
कारीगरी और सामग्री एक ही होगी। वह भी
स्वर्णतार तथा पतले सूत से बुने हुए नीले,
बैंजनी और लोहित रंग के वस्त्र का होगा।
9 'तत्पश्चात् तू दो सुलेमानी मणियाँ लेना
और उनपर इस्राएल के पुत्रों के नाम जन्म-क्रम
के अनुसार खोदना। 10उनमें से छ: नाम एक
मणि पर, और शेष छ: नाम दूसरी मणि पर।
11जिस प्रकार जौहरी मुद्राओं को खोदता है,
उसी प्रकार तू इस्राएल के पुत्रों के नाम उन दो
मणियों पर खोदना। उन्हें नक्काशी किए हुए
सोने के खांचों में जड़ना। 12तू उरावरण के
कंधों पर दोनों मणियाँ जड़ देना। ये इस्राएल
के पुत्रों की स्मृति-मणि होंगी। हारून अपने
कंधों पर उनके नाम प्रभु के सम्मुख स्मृति के
लिए धारण करेगा। 13तू नक्काशी किए हुए
सोने के खांचे बनाना। 14तू रस्सी के समान
बटी हुई शुद्ध सोने की दो जंजीरें बनाना।
तत्पश्चात् इन बटी हुई जंजीरों को खांचों में
जड़ देना।
15 'तू कलात्मक ढंग से कढ़ा हुआ एक
निर्णायक उरपट बनाना। उसे उरावरण के
सदृश ही बनाना। तू उसे स्वर्णतार तथा पतले
सूत से बुने हुए नीले, बैंजनी और लोहित रंग
के वस्त्र से बनाना। 16वह वर्गाकार और दोहरा
होगा। वह साढ़े बाईस सेंटीमीटर लम्बा और
साढ़े बाईस सेंटीमीटर चौड़ा होगा। 17तू उसपर
मणि की चार पंक्तियाँ जड़ना। पहली माणिक्य,
पद्मराग और लालड़ी की पंक्ति होगी। 18दूसरी
पंक्ति मरकत, नीलमणि और हीरा की होगी।
19तीसरी पंक्ति लशम, सूर्यकांत और नीलम
की होगी। 20चौथी पंक्ति फीरोजा, सुलेमानी
मणि और यशब की होगी। वे सोने के खांचों
में जड़ी जाएंगी। 21इस्राएल के पुत्रों के
नामानुसार, नामों सहित बारह मणियाँ होंगी।
वे बारह कुलों के लिए होंगी। वे मुद्राओं के
सदृश होंगी। प्रत्येक पर एक कुल का नाम खुदा
होगा। 22तू उरपट के लिए रस्सी के समान बटी
हुई शुद्ध सोने की जंजीरें बनाना। 23तू उरपट के
लिए सोने के दो छल्ले भी बनाना। इन दो
छल्लों को उरपट के दोनों सिरों पर लगाना।
24तू उरपट के सिरों पर लगे हुए दोनों छल्लों
में सोने के दो तार डालना। 25सोने के दोनों तारों
के दो किनारों को दो खांचों में जड़ना। उन्हें
उरावरण के कंधों पर सामने की ओर जड़ना।
26तू सोने के दो छल्ले बनाना, और उन्हें उरपट
के दोनों सिरों पर, भीतर की ओर, उरावरण के
पास, लगाना। 27तू सोने के दो छल्ले बनाना

---

27 : 21 1 शम 3 : 3 **28 : 6-12** नि 39 : 2-7 **28 : 15-28** नि 39 : 8-21 **28 : 21** प्रक 21 : 12

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और उन्हें उरावरण के दोनों कंधों के निचले
भाग के जोड़ पर, उरावरण के कलात्मक ढंग
से बुने हुए पट्टे के ऊपर जड़ देना। [28]कारीगर
उरपट को उसके छल्लों के माध्यम से नीले
फीते के द्वारा उरावरण के छल्लों से जोड़ेंगे
जिससे वह उरावरण के कलात्मक ढंग से बुने
हुए पट्टे पर झूलता रहे, पर उरावरण से अलग
न हो सके। [29]इस प्रकार जब हारून प्रभु के
सम्मुख इस्राएली समाज के निरन्तर स्मरणार्थ
जाएगा, तब वह अपने हृदय पर लटकते
निर्णायक उरपट पर खुदे इस्राएल के पुत्रों के
नाम धारण करेगा। [30]तू निर्णायक उरपट के
भीतर ऊरीम और तुम्मीम* रखना। जब हारून
प्रभु के सम्मुख जाएगा तब वे भी उसके हृदय
के ऊपर लटकते रहेंगे। इस प्रकार हारून
इस्राएली समाज के न्याय-पक्ष को अपने हृदय
पर प्रभु के सम्मुख निरन्तर धारण करता रहेगा।

31 'तू उरावरण के लिए सम्पूर्ण नीले रंग का
एक अंगरखा भी बनाना। [32]उसके मध्य में सिर
डालने के लिए एक छेद रखना। उस छेद के
चारों ओर बख्तर के छेद के सदृश बुनी हुई
किनारी होनी चाहिए जिससे वह फट न सके।
[33]उसके निचले घेरे में नीले, बैंजनी और
लोहित रंग के कपड़े के अनार लगाना। उनके
मध्य में चारों ओर स्वर्ण घंटियाँ लगाना।
[34]अंगरखा के चारों ओर उसके निचले घेरे में
पहले स्वर्णघंटी तब अनार, स्वर्णघंटी तब
अनार होंगे। [35]हारून, पुरोहित का कार्य करते
समय, उस अंगरखा को पहन लेगा। जब हारून
प्रभु के सम्मुख पवित्र स्थान में जाएगा अथवा
वहाँ से बाहर आएगा तब घंटियों का शब्द
सुनाई देना चाहिए, अन्यथा वह मर जाएगा।

36 'तू शुद्ध सोने का एक पुष्प बनाना। मुद्रा
में अंकित अक्षरों के सदृश उसमें ये अक्षर
खोदना : "प्रभु के हेतु पवित्र।" [37]तू उसको
नीले फीते से साफा में बांधना। उसको साफा
के सामने की ओर बांधना। [38]वह पुष्प हारून
के माथे पर रहेगा। जब इस्राएली लोग, जिन
वस्तुओं को वे पवित्र मानते हैं, उनकी पवित्र
भेंट चढ़ाएंगे तब पवित्र अर्पण के समय कोई
दोष होने पर हारून उस दोष को अपने ऊपर
लेगा। पुष्प हारून के माथे पर सदा रहेगा
जिससे वे प्रभु के सम्मुख ग्रहण किए जा सकें।

39 'तू महीन सूती वस्त्र के चारखाने का
कुरता बुनना, तथा महीन सूती वस्त्र का साफा
बनाना। तू कमरबन्द बनाना, जिसपर सुई से
कसीदा काढ़ा गया हो।

40 'तू हारून के पुत्रों के लिए कुरते,
कमरबन्द और टोपियाँ बनाना। उन्हें मर्यादा
और शोभा के लिए बनाना। [41]तू ये वस्त्र अपने
भाई हारून, और उसके साथ उसके पुत्रों को
पहनाना। तत्पश्चात् उनका अभ्यंजन करना।
उन्हें पुरोहित-पद पर अभिषिक्त करना** । उन्हें
पवित्र करना कि वे मेरे लिए पुरोहित का कार्य
करें। [42]तू उनकी नग्नता ढांपने के लिए उनके
लिए सूती वस्त्र के जांघिए बनाना। वे कमर से
जाँघ तक लम्बे हों। [43]जब हारून और उसके
पुत्र मिलन-शिविर में जाएंगे, अथवा जब वे
पवित्र-स्थान में सेवा-कार्य के लिए वेदी के
निकट आएंगे, तब वे जांघिया पहिनेंगे। अन्यथा
उन्हें अपने अधर्म का भार स्वयं वहन करना
पड़ेगा और वे मर जाएंगे। यह हारून एवं उसके
पश्चात् उसके वंशजों के लिए स्थायी संविधि
होगी।

हारून एवं उसके पुत्रों का पुरोहित पद पर अभ्यंजित किया जाना

29 'तू हारून और उसके पुत्रों को पवित्र
करने के लिए यह करना जिससे वे मेरे
लिए पुरोहित का कार्य करें: तू एक निष्कलंक
बछड़ा और दो निष्कलंक मेढ़े लेना। [2]साथ ही
बेखमीर रोटी, तेल सम्मिश्रित बेखमीर पूरियां,
तेल में चुपड़ी बेखमीर चपातियाँ लेना। तू उन्हें

* विशेष प्रकार की चिट्ठियाँ, जिनके द्वारा परमेश्वर की इच्छा ज्ञात की जाती थी। महापुरोहित इनसे किसी बात के पक्ष अथवा विपक्ष में निर्णय करता था। ** मूल में मुहावरा "हाथ भरना" जिसका अर्थ "पुरोहित पद पर अभिषिक्त करना।"

28 : 30 गण 27 : 21 ; 1 शम14 :41; एज्रा 2 : 63; नह 7 : 65 **28 : 31-34** नि 39: 22-26; प्रव 45 : 9
28 : 36-37 नि 39 : 30-31; जक 14 : 20 **28 : 39-42** नि 39 : 27-31 **29 :1-37** लेव 8 : 1-34; इब्र 7 : 27

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गेहूं के मैदे से बनाना। 3तू उन्हें एक टोकरी में
रखना और उन्हें उस टोकरी में लाना। तू बछड़े
और मेढ़ों को भी लाना। 4तू हारून और उसके
पुत्रों को मिलन-शिविर के द्वार पर लाना। उन्हें
जल से स्नान करवाना। 5तू पोशाक लेना। तब
हारून को कुरता, उरावरण के साथ पहना जाने
वाला अंगरखा, उरावरण और उरपट पहनाना।
उसकी कमर को कलात्मक ढंग से बुने
उरावरण के पट्टे से बांधना। 6उसके सिर पर
साफा बांधना। साफा के ऊपर पवित्र किरीट-
पट रखना। 7तत्पश्चात् अभ्यंजन का तेल लेना
और उसको उसके सिर पर उण्डेल कर उसका
अभ्यंजन करना। 8तब उसके पुत्रों को लाना,
और उन्हें कुरते पहनाना। 9तू उनकी कमर
कमरबन्द से बांधना। उनको टोपी पहनाना।
तब स्थायी संविधि के द्वारा उन्हें पुरोहिताई
प्राप्त होगी। इस रीति से तू हारून और उसके
पुत्रों का पुरोहित-पद के लिए अभिषेक
करना।

10 'तू बछड़े को मिलन-शिविर के सम्मुख
लाना। हारून और उसके पुत्र बछड़े के सिर पर
अपने हाथ रखेंगे। 11तू प्रभु के सम्मुख, मिलन-
शिविर के द्वार पर बछड़े को बलि करना।
12तत्पश्चात् बछड़े का कुछ रक्त लेना और
उसको अपनी अंगुलियों से वेदी के सींगों पर
लगाना। शेष रक्त वेदी की आधार-पीठिका में
उण्डेलना। 13तू उस चर्बी को जिससे अंतड़ियाँ
ढकी रहती हैं, तथा कलेजी की झिल्ली को,
और चर्बी सहित दोनों गुरदों को लेकर वेदी पर
उन्हें जलाना। 14किन्तु बछड़े का मांस, उसकी
खाल और गोबर को पड़ाव के बाहर आग में
जलाना। यह पापबलि है।

15 'तब तू एक मेढ़ा लेना। हारून और
उसके पुत्र मेढ़े के सिर पर अपने हाथ रखेंगे।
16तू मेढ़े को बलि करना। तत्पश्चात् उसका
रक्त लेकर वेदी के चारों ओर उसे छिड़कना।
17इसके पश्चात् तू मेढ़े के टुकड़े-टुकड़े
करना। उसकी अंतड़ियाँ और पैर धोना, और
उन्हें मेढ़े के टुकड़ों तथा उसके सिर के साथ
रखना। 18तत्पश्चात् सम्पूर्ण मेढ़े को वेदी पर
जलाना। यह प्रभु के लिए अग्नि-बलि है। यह
प्रभु के लिए सुखद सुगन्ध है, अग्नि में अर्पित
बलि है।

19 'तू दूसरा मेढ़ा लेना। हारून और उसके
पुत्र मेढ़े के सिर पर अपने हाथ रखेंगे। 20तू मेढ़े
को बलि करना। तत्पश्चात् उसका कुछ रक्त
लेना, और उसको हारून तथा उसके पुत्रों के
दाहिने कान की लौ पर, उनके दाहिने हाथ तथा
दाहिने पैर के अंगूठों पर लगाना। शेष रक्त को
वेदी के चारों ओर छिड़कना। 21तू वेदी के रक्त
का कुछ अंश और अभ्यंजन का तेल लेकर
हारून तथा उसकी पोशाक पर, उसके पुत्रों एवं
उनकी पोशाक पर छिड़कना। तब हारून तथा
उसकी पोशाक; उसके पुत्र एवं उनकी पोशाक
शुद्ध हो जाएंगी।

22 'तू मेढ़े की चर्बी भी लेना : चर्बीयुक्त
पूंछ, अंतड़ियों को ढकने वाली चर्बी, कलेजी
की झिल्ली, चर्बी सहित दोनों गुर्दे और दाहिनी
जाँघ लेना। (क्योंकि यह पुरोहित की अभिषेक-
बलि का मेढ़ा है।) 23प्रभु के सम्मुख रखी
बेखमीर रोटियों की टोकरी में से एक रोटी, तेल
से सम्मिश्रित एक पूरी और एक चपाती लेना।
24तू इन सब को हारून, और उसके पुत्रों की
हथेलियों पर रखना। तत्पश्चात् लहर-बलि के
अभिप्राय से उन्हें प्रभु के सम्मुख लहराना।
25इसके पश्चात् उन्हें उनके हाथों से लेकर
अग्नि-बलि के अतिरिक्त सुखद सुगन्ध के रूप
में प्रभु के सम्मुख जलाना। यह प्रभु के लिए
अग्नि में अर्पित बलि है।

26 'अब तू हारून की अभिषेक-बलि के
मेढ़े का सीना लेकर लहर-बलि के अभिप्राय
से उसको प्रभु के सम्मुख लहराना। यह तेरा
भाग होगा। 27तू इस मांस को पवित्र घोषित
करना: लहर-बलि में चढ़ाया गया सीना और
पुरोहितों के भाग की वह जाँघ, जो लहराई गई
और जो अभिषेक-बलि के मेढ़े में से काटकर
चढ़ाई गई; क्योंकि यह हारून और उसके पुत्रों
के लिए है। 28यह मांस इस्राएली समाज की

---

29 : 4-8 नि 40 : 12-15 **29 : 18** उत 8 : 21; इफ 5 : 2; फिल 4 : 18 **29 : 26** लेव 7 : 31

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ओर से हारून और उसके पुत्रों के लिए स्थायी देय-भाग होगा। यह पुरोहितों का वह भाग है, जो इस्राएली समाज द्वारा अपनी सहभागिता-बलि में से भेंट किया जाएगा। यह प्रभु को अर्पित उनकी भेंट है।

29 'हारून की पवित्र पोशाक उसके पश्चात् उसके पुत्रों और पौत्रों के उपयोग में आएगी। उसी पोशाक में उनका अभ्यंजन होगा, उन्हें पुरोहित पद पर अभिषिक्त किया जाएगा।
30जो पुत्र हारून के स्थान पर पुरोहित होगा, जब वह मिलन-शिविर में आकर पवित्र-स्थान में सेवाकार्य करेगा तब उस पोशाक को सात दिन तक पहनेगा।

31 'तू पुरोहित की अभिषेक-बलि का मेढ़ा लेना और उसके शेष मांस को पवित्र स्थान में उबालना। 32हारून और उसके पुत्र मेढ़े का मांस और टोकरी की रोटी मिलन-शिविर के द्वार पर खाएँगे। 33जिन वस्तुओं से प्रायश्चित करके हारून और उसके पुत्रों को पवित्र एवं पुरोहित-पद पर अभिषिक्त किया गया था, उनको वे ही खाएंगे। जो व्यक्ति पुरोहित कुल का नहीं है, वह उनको न खाए; क्योंकि वे वस्तुएँ पवित्र हैं। 34यदि पुरोहित की अभिषेक-बलि का कुछ मांस अथवा रोटी सबेरे तक बच जाए, तो तू बचे हुए भाग को अग्नि में जला देना। वह खाया न जाए; क्योंकि वह पवित्र है।

35 'जो आज्ञाएँ मैंने तुझे दी हैं, उन्हीं के अनुसार तू हारून और उसके पुत्रों के साथ व्यवहार करना। तू सात दिन तक उनका पुरोहित-पद पर अभिषेक करते रहना। 36तू प्रायश्चित के निमित्त प्रतिदिन पाप-बलि के रूप में एक बछड़ा चढ़ाना। जब तू वेदी के लिए प्रायश्चित करेगा तब तू उसके लिए पाप-बलि चढ़ायेगा। उसे पवित्र करने के लिए उसका अभ्यंजन करना। 37तू वेदी के लिए सात दिन तक प्रायश्चित करके उसे पवित्र करना। इस प्रकार वेदी परम पवित्र हो जाएगी। जो भी वेदी को स्पर्श करेगा, वह पवित्र हो जाएगा।

दैनिक भेंट

38 'तू वेदी पर यह चढ़ाएगा : प्रतिदिन एक-एक वर्ष के दो मेमने निरन्तर चढ़ाना। 39तू पहला मेमना सबेरे, और दूसरा मेमना सन्ध्या समय चढ़ाना। 40पहले मेमने के साथ दो लिटर* पेरकर निकाले हुए तेल से सना हुआ एक किलो** मैदा, और पेय-बलि के लिए दो लिटर अंगूर का रस चढ़ाना। 41तू दूसरा मेमना सन्ध्या समय चढ़ाना। उसके साथ सबेरे के समान अन्न-बलि और पेय-बलि चढ़ाना, जिससे वह प्रभु के लिए सुखद सुगन्ध और अग्नि में अर्पित बलि हो सके। 42यह अग्नि-बलि पीढ़ी से पीढ़ी तक मुझ प्रभु के सम्मुख मिलन-शिविर के द्वार पर निरन्तर चढ़ाई जाएगी, जहाँ मैं तुझसे भेंट करूंगा, जहाँ तुझसे वार्तालाप करूंगा। 43वहाँ मैं इस्राएली समाज से भेंट करूंगा और वह स्थान मेरी महिमा से पवित्र होगा। 44मैं मिलन-शिविर और वेदी को पवित्र करूँगा। अपने लिए पुरोहित का कार्य करने के निमित्त हारून और उसके पुत्रों को मैं पवित्र करूँगा। 45मैं इस्राएली समाज के मध्य निवास करूँगा और उनका परमेश्वर होऊंगा। 46वे जान लेंगे कि मैं प्रभु, उनका परमेश्वर हूं, जिसने मिस्र देश से उन्हें बाहर निकाला है कि मैं उनके मध्य निवास करूँ। मैं प्रभु उनका परमेश्वर हूं।

धूप-वेदी

30 'धूप जलाने के लिए एक वेदी बनाना। तू उसको बबूल की लकड़ी का बनाना। 2उसकी लम्बाई पैंतालीस सेंटीमीटर और चौड़ाई भी पैंतालीस सेंटीमीटर होगी। वह वर्गाकार होगी। उसकी ऊंचाई नब्बे सेंटीमीटर होगी। उसके सींग उसी टुकड़े से बनाए जाएंगे। 3तू उसके उपरले ढक्कन, उसके चारों ओर के बाजुओं, और उसके सींगों को शुद्ध सोने से मढ़ना। उसके चारों ओर सोने की भित्ति

---

* मूल में, ''हीन की एक चौथाई'' ** मूल में, ''एपा का दसवां भाग''

29 : 35 लेव 8 : 33 **29 : 37** लेव 16 : 18 ; 2 शम 6 : 6 **29 : 38** गण 28 : 3 **29 : 39** यहेज 46 : 13
30 : 1-5 नि 37 : 25-28 **30 : 1** प्रक 8 : 3; 1 रा 6 : 20

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बनाना। 4उसके लिए सोने के दो कड़े बनाना।
उन्हें भित्ति के नीचे दोनों ओर बाजुओं में
लगाना। वे डण्डों के जकड़-पट्टे बनेंगे जिससे
वेदी उठाई जा सके। 5तू डण्डों को बबूल की
लकड़ी का बनाना, और उन्हें सोने से मढ़ना।
6वेदी को साक्षी-मंजूषा के सामने लटके हुए
अन्त:पट के आगे रखना, अर्थात् साक्षी-मंजूषा
पर रखे हुए दया-आसन के आगे, जहाँ मैं
तुझसे मिला करूंगा। 7हारून वेदी पर सुगन्धित
धूप जलाएगा। प्रतिदिन सबेरे, जब वह दीपकों
को सजाकर रखेगा तब उसको जलाएगा।
8सन्ध्या समय, जब वह दीपकों को जलाए तब
भी धूप जलाएगा। यह धूप पीढ़ी दर पीढ़ी प्रभु
के सम्मुख निरन्तर जलाई जाए। 9तुम उसपर
अपवित्र धूप न जलाना, न अग्नि-बलि और न
अन्न-बलि चढ़ाना। तुम उसपर पेय-बलि न
उण्डेलना। 10हारून वर्ष में एक बार उसके
सींगों पर प्रायश्चित्त करेगा। तुम्हारी पीढ़ी से
पीढ़ी, वर्ष में एक बार, प्रायश्चित्त की पाप-
बलि के रक्त से उसपर प्रायश्चित किया जाए।
यह वेदी प्रभु के लिए परम पवित्र है।'

प्राणों का उद्धार-शुल्क

11 प्रभु मूसा से बोला, 12'जब तू इस्राएली
समाज की जनगणना करे तब प्रत्येक व्यक्ति
गणना के समय अपने प्राणों के उद्धार का
शुल्क† प्रभु को देगा, जिससे गणना के समय
उसपर किसी महामारी का प्रकोप न हो।
13जिस व्यक्ति की गणना की गई है, वह यह
देगा: पवित्र स्थान की तौल++ के अनुसार चाँदी
का आधा सिक्का (एक सिक्के में प्राय: बारह
ग्राम* है)। वह प्रभु को आधा सिक्का भेंट के
रूप में देगा। 14प्रत्येक व्यक्ति जिसकी आयु
बीस वर्ष अथवा उससे अधिक होगी, प्रभु की
भेंट चढ़ाएगा। 15जब तुम अपने प्राणों के उद्धार
का शुल्क, आधा सिक्का, प्रभु की भेंट में
चढ़ाओगे तब धनी व्यक्ति इससे अधिक न दे
और न दरिद्र कम। 16तू उद्धार-शुल्क इस्राएली
समाज से लेना और उसे मिलन-शिविर के
सेवा-कार्यों में व्यय करना, जिससे वह प्रभु के
सम्मुख इस्राएली समाज के लिए एक स्मृति-
चिह्न बने और तुम्हारे प्राणों के उद्धार का शुल्क
हो।'

कण्डाल**

17 प्रभु मूसा से बोला, 18'तू हाथ-पैर धोने
के लिए पीतल का एक कण्डाल बनाना।
उसकी आधार-पीठिका भी पीतल की बनाना।
उसे मिलन-शिविर तथा वेदी के मध्य रखना।
उसमें जल भरना। 19हारून और उसके पुत्र
उससे अपने हाथ-पैर धोएंगे। 20जब वे मिलन-
शिविर में प्रवेश करेंगे, अथवा जब वे प्रभु के
लिए अग्नि में हव्य जलाने के उद्देश्य से, सेवा
के अभिप्राय से वेदी के निकट आएंगे तब जल
से हाथ-पैर धोएंगे, अन्यथा वे मर जाएंगे। 21वे
अपने हाथ-पैर धोएंगे अन्यथा मर जाएंगे। यह
हारून एवं उसके वंश तथा उनकी पीढ़ी से
पीढी तक के लिए स्थायी संविधि
होगी।'

अभ्यंजन का तेल

22 प्रभु मूसा से बोला, 23'तू उत्तम मसाले
लेना : साढ़े पांच किलो द्रव्य रूप में गन्धरस,
उसका आधा अर्थात् पौने तीन किलो सुगन्धित
दारचीनी, पौने तीन किलो सुगन्धित अगर,
24पवित्र स्थान की तौल के अनुसार साढ़े पांच
किलो तेजपात तथा साढ़े सात लिटर जैतून का
तेल लेना। 25जैसे गन्धी बनाता है, वैसे तू उन
वस्तुओं से पवित्र अभ्यंजन-तेल बनाना। यह
पवित्र अभ्यंजन-तेल होगा। 26तू इससे मिलन-
शिविर एवं साक्षी-मंजूषा, 27उसके सब पात्रों
सहित मेज, उसके सब सामान सहित दीपाधार
और धूप-वेदी, 28उसके सब सामान सहित
अग्नि-बलि की वेदी और आधार-पीठिका
सहित कण्डाल का अभ्यंजन करना। 29तू उनको
पवित्र करना कि वे परम पवित्र हों। उन्हें स्पर्श
करने वाले भी पवित्र हो जाएंगे। 30तू हारून

† अथवा ''प्रायश्चित् मूल्य''। ++ मूल में 'शेकल'। * मूल में ''बीस गेरा'' ** अथवा ''हौदी''

30 : 12-16 नि 38 : 25-28 30 : 13 मत 17 : 24 30 : 15 1 पत 1 : 19 30 : 18 1 रा 7 : 38; नि 38 : 8
30 : 25 नि 37 : 29

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और उसके पुत्रों का अभ्यंजन करना, उन्हें
पवित्र करना जिससे वे मेरे लिए पुरोहित का
कार्य करें। 31तू इस्राएली समाज से कहना,
''यह तुम्हारी पीढ़ी से पीढ़ी में मेरे लिए पवित्र
अभ्यंजन का तेल होगा। 32यह साधारण मनुष्य
के शरीर पर नहीं उण्डेला जाएगा। तुम
सम्मिश्रण द्वारा इसके सदृश दूसरा तेल मत
बनाना। यह पवित्र है, और तुम्हारे लिए भी
पवित्र होगा। 33जो कोई इसके सदृश सम्मिश्रण
तैयार करेगा, अथवा किसी अपुरोहित को
उसमें से देगा तो वह अपने समाज में से नष्ट
किया जाएगा।'' '

34 प्रभु ने मूसा से कहा, 'तू ये सुगन्धित
मसाले ले : गंधरस, नखी, गंधाबिरोजा, गंध
द्रव्य और स्वच्छ लोबान। (इन सब की मात्रा
बराबर तौल की होगी।) 35जैसे एक गंधी इत्र
बनाता है वैसा इनसे नमक सम्मिश्रित धूप
बनाना, जो शुद्ध और पवित्र हो। 36उसमें से
कुछ पीसकर बारीक करना। फिर उसमें से
कुछ मिलन-शिविर में साक्षी-पत्र के सम्मुख
रखना जहां मैं तुझसे मिला करूंगा। वह तुम्हारे
लिए परम पवित्र होगी। 37जो धूप तू बनाएगा
वैसे ही सम्मिश्रण के द्वारा तुम अपने लिए मत
बनाना। तू उसको अपने प्रभु के लिए पवित्र
मानना। 38जो कोई व्यक्ति सूंघने के लिए इसके
सदृश धूप बनाएगा, वह अपने समाज में से नष्ट
किया जाएगा।'

शिल्पकार

31 तब प्रभु मूसा से बोला, 2'देख, मैं यहूदा-
कुल के बसलएल को, जो ऊरी का पुत्र
और हूर का पौत्र है, विशेष रूप से मनोनीत*
करता हूं। 3मैंने उसे अपने आत्मा+ से बुद्धि,
प्रवीणता, ज्ञान और शिल्प-कौशल से परिपूर्ण
किया है 4कि वह ऐसे कलात्मक नमूने निकाले
जिन्हें वह सोने, चांदी और पीतल के पात्रों पर
बना सके, 5जड़ने के लिए मणि काट सके,
लकड़ी पर खुदाई कर सके तथा शिल्प के अन्य
कार्य भी कर सके। 6देख, मैंने उसके साथ दान
कुल के अहीसामख के पुत्र ओहोलीआब को
नियुक्त किया है। मैंने अन्य बुद्धिमान व्यक्तियों
के हृदय भी बुद्धि से भर दिए हैं कि वे उन सब
वस्तुओं को बनाएँ जिनकी आज्ञा मैंने तुझे दी
है : 7मिलन-शिविर, साक्षी-मंजूषा, उस पर
लगा दया-आसन, तम्बू की सब वस्तुएँ, 8मेज
और उसके पात्र, शुद्ध सोने से बना दीपाधार
तथा उसके सब पात्र, धूप-वेदी, 9अग्नि-बलि
की वेदी तथा उसके सब पात्र, कण्डाल और
उसकी आधार-पीठिका, 10सज्जापूर्ण पोशाकें—
पुरोहित हारून की पोशाक, उसके पुत्रों की
पोशाकें जिन्हें वे पुरोहित के कार्य करते
समय पहनेंगे—11अभ्यंजन तेल और पवित्र-
स्थान के लिए सुगन्धित द्रव्य। जैसी आज्ञा
मैंने तुझे दी है, उसी के अनुसार तू सब कार्य
करना।'

विश्राम दिवस: व्यवस्था का चिह्न

12 प्रभु ने मूसा से कहा, 13'तू इस्राएली समाज
से यह बोलना : तुम मेरे विश्राम-दिवसों को
अवश्य मनाना। यह मेरे और तुम्हारे मध्य पीढ़ी
से पीढ़ी तक एक चिह्न है जिससे तुम्हें ज्ञात हो
कि मैं प्रभु, तुम्हें पवित्र करता हूं। 14तुम विश्राम-
दिवस मनाना, क्योंकि वह तुम्हारे लिए पवित्र
दिवस है। उसे अपवित्र करने वाले व्यक्ति को
निश्चय ही मृत्यु-दण्ड दिया जाएगा। जो
व्यक्ति उस दिन कोई कार्य करेगा, वह अपने
समाज में से नष्ट किया जाएगा। 15छः दिन तक
काम किया जाएगा, पर सातवां दिन परम
विश्राम-दिवस है, प्रभु के लिए पवित्र दिवस
है। जो व्यक्ति विश्राम-दिवस पर कार्य करेगा,
उसे मृत्यु-दण्ड दिया जाएगा। 16इसलिए
इस्राएली समाज विश्राम-दिवस को मनाएगा।
वे विश्राम-दिवस को शाश्वत विधान के रूप
में पीढ़ी से पीढ़ी तक मानेंगे। 17यह मेरे और
इस्राएली समाज के मध्य इस बात का स्थायी
चिह्न है कि प्रभु ने छः दिन में आकाश और
पृथ्वी बनाए, और सातवें दिन विश्राम करके
शान्ति की सांस ली।'

* मूल में, ''नाम से बुलाया।'' +शब्दशः, 'परमेश्वर के आत्मा से'।

31 : 1-6 नि 35 : 1 31 : 13 यहेज 20 : 12 31 : 14 व्य 5 : 12; नि 35 : 2 31 : 17 यहेज 20 : 12

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

18 जब प्रभु ने सीनय पर्वत पर मूसा से
वार्तालाप समाप्त किया तब उन्हें साक्षी की दो
पट्टियाँ, अपने हाथ से++ लिखी पत्थर की दो
पट्टियाँ दीं।

सोने का बछड़ा

32 जब लोगों ने देखा कि मूसा पहाड़ से
उतरने में विलम्ब कर रहे हैं तब वे
हारून के पास एकत्र हुए। उन्होंने कहा,
'उठिए! हमारे लिए ऐसा देवता बनाइए, जो
हमारे आगे-आगे चले; क्योंकि हम नहीं जानते
हैं कि इस पुरुष मूसा को, जो हमें मिस्र देश से
निकाल लाया है, क्या हुआ?' [2]हारून ने उनसे
कहा, 'जो सोने की बालियाँ तुम्हारी पत्नियों,
पुत्रों और पुत्रियों के कानों में हैं, उन्हें उतारकर
मेरे पास लाओ।' [3]लोगों ने अपने कानों से सोने
की बालियाँ उतार लीं। वे उनको हारून के
पास लाए। [4]उसने उनके हाथ से सोना लिया।
तत्पश्चात् उसने उसे सांचे में ढाला, और उससे
बछड़े की एक मूर्ति बनाई। लोगों ने कहा, 'ओ
इस्राएली समाज! यह है तेरा ईश्वर जो तुझे
मिस्र देश से निकाल लाया है।' [5]हारून ने यह
देखकर उसके सम्मुख एक वेदी निर्मित की।
उसने पुकारकर कहा, 'कल प्रभु के लिए एक
पर्व मनाया जाएगा।' [6]उन्होंने दूसरे दिन सबेरे
उठकर अग्नि-बलि तथा सहभागिता-बलि
चढ़ाई। तत्पश्चात् लोग खाने-पीने के लिए बैठ
गए। उन्होंने उठकर आमोद-प्रमोद भी किया।

7 प्रभु मूसा से बोला, 'जा, नीचे उतर जा!
तेरे लोग, जिन्हें तू मिस्र देश से निकाल लाया
है, भ्रष्ट हो गए हैं। [8]जिस मार्ग पर चलने के
लिए मैंने उनको आज्ञा दी थी, उससे वे इतने
शीघ्र भटक गए। उन्होंने अपने लिए बछड़े की
मूर्ति बनाई है। उन्होंने उसकी पूजा की, उसको
बलि चढ़ाई और कहा, "ओ इस्राएली समाज!
यह है तेरा ईश्वर, जो तुझे मिस्र देश से निकाल
लाया है।"' [9]प्रभु ने मूसा से आगे कहा, 'मैंने
इन लोगों को देखा है। ये ऐंठी गरदन के लोग
हैं। [10]अब तू मुझे अकेला छोड़ दे कि मेरी
क्रोधाग्नि उनके विरुद्ध प्रज्वलित हो और मैं
उनको भस्म करूँ। परन्तु मैं तुझको एक महान्
राष्ट्र बनाऊँगा।' [11]मूसा ने अपने प्रभु परमेश्वर
का क्रोध शान्त करते हुए उससे विनती की, 'हे
प्रभु, क्यों तेरी क्रोधाग्नि तेरे लोगों के विरुद्ध
प्रज्वलित हुई है, जिसे तू अपने महान् सामर्थ्य
और भुजबल के द्वारा मिस्र देश से निकाल
लाया है? [12]मिस्र निवासी क्यों यह बात कहें,
कि तू उन्हें बुरे उद्देश्य से, पहाड़ों पर उनका वध
करने के लिए, धरती की सतह से उन्हें मिटा
डालने के लिए मिस्र देश से निकाल लाया था?
अतएव अपनी क्रोधाग्नि को शान्त कर, और
अपने लोगों की हानि का विचार छोड़ दे।
[13]अपने सेवक अब्राहम, इसहाक और इस्राएल
को स्मरण कर, जिनसे तूने स्वयं अपनी शपथ
खाई थी, और उनसे कहा था, "मैं तुम्हारे वंश
को आकाश के तारों के सदृश असंख्य करूंगा।
मैं यह समस्त देश, जिसकी प्रतिज्ञा मैंने की थी,
तेरे वंश को प्रदान करूंगा। वे उसपर सदा
अधिकार रखेंगे।"' [14]अत: अपने लोगों की
जो हानि प्रभु करने वाला था, उसका विचार
उसने छोड़ दिया।

15 मूसा लौटे। वे अपने हाथ में दोनों साक्षी-
पट्टियाँ लिये हुए पहाड़ से उतर गए। पट्टियों पर
दोनों ओर लिखा हुआ था। वे सामने की ओर
तथा पीछे की ओर लिखी हुई थीं। [16]पट्टियाँ
परमेश्वर की कृति थीं। जो लेख उन पट्टियों पर
खुदा हुआ था, वह परमेश्वर का लेख था।
[17]जब यहोशुअ ने लोगों के कोलाहल को सुना
तब उसने मूसा से कहा, 'पड़ाव में युद्ध का
कोलाहल सुनाई दे रहा है।' [18]मूसा ने कहा,
'यह कोलाहल न तो विजय-उल्लास का स्वर
है, और न पराजय का रोदन-स्वर। मैं तो गाने
की आवाज सुन रहा हूं।' [19]मूसा पड़ाव के

++ शब्दश:, 'परमेश्वर की उंगली से'।

32 : 1 नि 24 : 18; प्रे 7 : 40 **32 : 4** 1 रा 12 : 28 ; नह 9 : 18; भज 106 : 19 **32 : 6** 1 कुर 10 : 7 **32 : 8** यिर 31 : 32 **32 : 10** उत 12 : 2 ; गण 14 : 12 **32 : 11** व्य 9 : 26-29; भज 106 : 23 **32 :12** यहेज 20 : 9 **32 : 13** उत 12 : 7; 17 : 8 ; 35 : 12

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

निकट आए। जब उन्होंने बछड़ा और नाच देखा तब उनका क्रोध भड़क उठा। उन्होंने अपने हाथ से पट्टियाँ फेंक दीं और पहाड़ की तलहटी में उनके टुकड़े-टुकड़े कर दिए। [20]जो बछड़ा उन्होंने बनाया था, उसको लेकर आग में झोंक दिया। उसको पीसकर चूर्ण बनाया और उसको जल में छितरा दिया। तब उसको इस्राएली समाज को पिलाया।

21 मूसा ने हारून से पूछा, 'इन लोगों ने तुम्हारे साथ क्या किया था, जो तुमने उनको ऐसे घोर पाप में फंसाया?' [22]हारून ने उत्तर दिया, 'हे स्वामी, आपका क्रोध न भड़के। आप स्वयं इन लोगों को जानते हैं कि ये बुराई करने को तत्पर रहते हैं। [23]इन्होंने मुझसे कहा, "हमारे लिए ऐसा देवता बनाइए, जो हमारे आगे-आगे चले; क्योंकि हम नहीं जानते हैं कि इस पुरुष मूसा को, जो हमें मिस्र देश से निकाल लाया है, क्या हुआ?" [24]तब मैंने इनसे कहा, "जिनके पास सोना है; वे उसे उतारकर दें।" अत: उन्होंने मुझे दिया। मैंने उसे अग्नि में डाला। तब यह बछड़ा बाहर निकला।'

25 जब मूसा ने देखा कि लोग अनियन्त्रित हो गए हैं (क्योंकि हारून ने उनको अपने शत्रुओं के मध्य उपहास का पात्र बनने के लिए मुक्त छोड़ दिया था) [26]तब वह पड़ाव के द्वार पर खड़े हुए। उन्होंने कहा, 'कौन प्रभु के पक्ष में है? वह मेरे पास आए।' लेवी-कुल के सब व्यक्ति उनके पास एकत्र हो गए। [27]मूसा ने उनसे कहा, 'इस्राएल का प्रभु परमेश्वर यों कहता है: तुममें से प्रत्येक व्यक्ति अपनी कमर में तलवार बांध ले। तब पड़ाव में घूम-घूमकर एक द्वार से दूसरे द्वार पर जाकर मनुष्य का वध करे—चाहे वह उसका भाई हो, मित्र हो अथवा पड़ोसी।' [28]लेवियों ने मूसा के कथनानुसार किया। उस दिन इस्राएली समाज में प्राय: तीन हजार मनुष्य मारे गए। [29] मूसा ने कहा, 'आज तुम में से प्रत्येक व्यक्ति ने अपने पुत्र, अपने भाई का उत्सर्ग कर प्रभु की सेवा के लिए पुरोहित पद पर स्वयं को अभिषिक्त किया है। अतएव वह आज तुमको आशिष देगा।'

30 दूसरे दिन मूसा ने लोगों से कहा, 'तुमने घोर पाप किया है। अब मैं प्रभु के पास ऊपर जाऊँगा। सम्भव है कि मैं तुम्हारे पाप का प्रायश्चित्त कर सकूं।' [31]अत: मूसा प्रभु के पास लौटे। मूसा ने कहा, 'आह! इन लोगों ने घोर पाप किया है। इन्होंने अपने लिए सोने का देवता बनाया है। [32]अब तू उनके पाप क्षमा कर। यदि तू नहीं करेगा तो, मैं विनती करता हूं, तू अपनी उस पुस्तक में से मेरा नाम काट दे, जिसे तूने लिखा है।' [33]प्रभु ने मूसा से कहा, 'जिन लोगों ने मेरे विरुद्ध पाप किया है, उनका नाम मैं अपनी पुस्तक में से काट दूंगा। [34]अब जा: तू लोगों का उस स्थान की ओर नेतृत्व कर जिसके विषय में मैंने कहा था। देख, मेरा दूत तेरे आगे-आगे जाएगा। फिर भी जिस दिन मैं उनको दण्ड देने के लिए उनकी सुध लूंगा, उसी दिन उनको इस पाप का भी दण्ड दूंगा।'

35 प्रभु ने लोगों पर महामारी भेजी; क्योंकि उन्होंने हारून के द्वारा बनाए हुए बछड़े की सेवा की थी।*

प्रस्थान करने का आदेश

33 प्रभु मूसा से बोला, 'प्रस्थान कर! तू तथा वे लोग जिन्हें तू मिस्र देश से निकाल लाया है, यहाँ से उस देश को जाएँ जिसके विषय में मैंने अब्राहम, इसहाक और याकूब से यह शपथ खाई थी, "मैं उसे तेरे वंश को दूंगा।" [2]मैं तेरे आगे-आगे एक दूत को भेजूंगा। मैं उस देश की कनानी, अमोरी, हित्ती, परिज्जी, हिव्वी और यबूसी जातियों को निकाल दूंगा। [3]इसलिए, जाओ, दूध और शहद की नदियों के देश में जाओ। परन्तु मैं स्वयं तुम्हारे मध्य में आगे-आगे नहीं जाऊंगा। ऐसा न हो कि मैं तुम्हें मार्ग में भस्म कर दूं; क्योंकि ये ऐंठी गरदन के लोग हैं।'

---

* मूल में, 'बछड़े को बनाया था।'

32 : 27 व्य 33 : 9; गण 25 : 11; मत 10 37 **32 : 32** भज 69 : 28; रोम 9 : 3; प्रक 3 : 5 **33 : 1** उत 12: 7; 26 : 3; 28 : 13 **33 : 3** प्रे 7 : 51

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

4 जब लोगों ने यह बुरा समाचार सुना तब
वे विलाप करने लगे। किसी भी मनुष्य ने
आभूषण धारण नहीं किए। 5क्योंकि प्रभु ने
मूसा से कहा था, 'तू इस्राएली समाज से यह
कहना, ''तुम ऐंठी गरदन के लोग हो। यदि मैं
एक क्षण भी तुम्हारे मध्य में आगे-आगे चलूं
तो तुम्हें भस्म कर दूंगा। अत: अब अपने ऊपर
से आभूषण उतार लो, जिससे मैं जान सकूं कि
मुझे तुम्हारे साथ क्या करना चाहिए।'' '
6इसलिए इस्राएली लोगों ने होरेब पर्वत से
लेकर आगे तक आभूषण नहीं पहने।

मिलन-शिविर

7 मूसा पड़ाव के बाहर, उससे पर्याप्त दूरी
पर, तम्बू गाड़ा करते थे। वह उसे मिलन-
शिविर कहते थे। प्रभु के खोजी मिलन-शिविर
को, जो पड़ाव के बाहर था, जाते थे। 8जब-
जब मूसा बाहर शिविर के पास जाते, सब लोग
खड़े हो जाते। जब तक वह शिविर के भीतर
नहीं चले जाते तब तक प्रत्येक व्यक्ति अपने
तम्बू के द्वार पर खड़ा रहता और उनकी ओर
देखता रहता था। 9जब मूसा शिविर में प्रविष्ट
हो जाते तब मेघ-स्तम्भ उतर आता और शिविर
के द्वार पर खड़ा हो जाता था। इस प्रकार प्रभु
मूसा से वार्तालाप करता था। 10जब लोग शिविर
के द्वार पर मेघ-स्तम्भ को खड़ा हुआ देखते तब
वे सब उठकर अपने-अपने तम्बू-द्वार से
वन्दना करते थे। 11जैसे कोई मनुष्य अपने मित्र
से आमने-सामने बात करता है, वैसे ही प्रभु
मूसा से वार्तालाप करता था। जब मूसा पड़ाव
को लौट आते तब उनका निजी सेवक, नून का
पुत्र नवयुवक यहोशुअ, शिविर में से नहीं
निकलता था।

प्रभु अपनी उपस्थिति का वचन देता है

12 मूसा ने प्रभु से कहा, 'देख, तू मुझ से
कहता है, ''इन लोगों को ले जा,'' परन्तु तूने
मुझे नहीं बताया कि किसको तू मेरे साथ
भेजेगा। तूने मुझसे कहा, ''मैं तुझे नाम से
जानता हूं। तूने मेरी कृपा-दृष्टि प्राप्त की है।''
13अब, इसलिए मैं तुझसे विनती करता हूं: यदि
मैंने तेरी कृपा-दृष्टि प्राप्त की है तो मुझे अपना
मार्ग सिखा जिससे मैं तुझे जान सकूँ और तेरी
कृपा-दृष्टि प्राप्त करूं। देख, यह राष्ट्र तेरे ही
लोग हैं।' 14प्रभु ने कहा, 'मेरी उपस्थिति+ तेरे
साथ जाएगी। मैं तुझे विश्राम दूंगा।' 15मूसा ने
उससे कहा, 'यदि तेरी उपस्थिति मेरे साथ नहीं
जाएगी, तो हमें यहाँ से आगे नहीं ले जा। 16यह
कैसे ज्ञात होगा कि मैंने और तेरे लोगों ने तेरी
कृपा-दृष्टि प्राप्त की है? यदि तू हमारे साथ नहीं
जाएगा तो मैं और तेरे लोग पृथ्वी के सब दूसरे
लोगों से विशिष्ट कैसे माने जाएंगे?'

17 प्रभु ने मूसा से कहा, 'जो तूने कहा, वह
कार्य भी मैं करूंगा, क्योंकि तूने मेरी कृपादृष्टि
प्राप्त की है। मैं तुझे नाम से जानता हूं।' 18मूसा
ने कहा, 'कृपया, मुझे अपनी महिमा के दर्शन
करा।' 19उसने कहा, 'मैं अपनी समस्त अच्छाई
तेरे सम्मुख प्रदर्शित करूंगा। तेरे सामने अपना
नाम ''प्रभु'' घोषित करूंगा। जिस पर मैं
अनुग्रह करना चाहूंगा, उस पर अनुग्रह करूंगा।
जिस पर मैं दया करना चाहूंगा, उस पर दया
करूंगा।' 20उसने यह भी कहा, 'तू मेरे मुख का
दर्शन नहीं कर सकता; क्योंकि मनुष्य मुझे
देखकर जीवित नहीं रह सकता।' 21प्रभु ने कहा,
'देख, मेरे समीप एक स्थान है, जहाँ तू चट्टान
पर खड़ा होगा। 22जब तक मेरी महिमा तेरे
सामने से न चली जाएगी तब तक मैं तुझे चट्टान
की दरार में रखूंगा। जब तक मैं तेरे सम्मुख
से निकल न जाऊं, आड़ के निमित्त अपनी
हथेली तुझपर रखूंगा। 23तत्पश्चात् मैं अपनी
हथेली हटा लूंगा। तब तू मेरी पीठ को देखेगा;
परन्तु मेरा मुख नहीं दिखाई देगा।'

नई पट्टियाँ

34 प्रभु ने मूसा से कहा, 'तू प्रथम पट्टियों
के समान पत्थर की दो पट्टियाँ खोद।
मैं उन पर वे ही शब्द लिखूंगा जो प्रथम पट्टियों

+ शब्दश:, 'मेरा मुंह'।

33 : 11 व्य 34 : 10; गण 12 : 8 ; यो 15 : 15 33 : 14 भज 95 : 11; इब्र 4 : 1 33 : 18 यो 1 : 14 33 : 19 1 रा 19 : 11; रोम 9 : 15 33 : 20 उत 32 : 30; व्य 5 : 24, यश 6 : 5

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पर लिखे थे, जिनके तूने टुकड़े-टुकड़े किये
थे। 2तू सबेरे तैयार रहना। तू सबेरे ही सीनय
पर्वत पर चढ़ना, और शिखर पर मेरे सम्मुख
प्रस्तुत होना। 3कोई भी व्यक्ति तेरे साथ ऊपर
न चढ़े। समस्त पहाड़ पर मनुष्य दिखाई भी न
दे। भेड़-बकरी, गाय-बैल उस पहाड़ के
सम्मुख न चराए जाएँ।' 4मूसा ने प्रथम पट्टियों
के समान पत्थर की दो पट्टियाँ खोदीं। वह सबेरे
उठे। जैसी प्रभु ने उनको आज्ञा दी थी, उसी के
अनुसार वह अपने हाथ में पत्थर की दो पट्टियाँ
लेकर सीनय पर्वत पर चढ़ गए।
5 प्रभु मेघ में उतरा। वह वहाँ मूसा के साथ
खड़ा हुआ और उसने अपना "प्रभु" नाम+
घोषित किया। 6प्रभु उनके सामने से निकला
और उसने घोषित किया, 'प्रभु! प्रभु! वह
दयालु, और अनुग्रह करने वाला, विलम्ब-
क्रोधी, अत्यन्त करुणामय, सत्य परमेश्वर है।
7वह हजारों पीढ़ियों पर करुणा करने वाला;
अधर्म, अपराध और पाप को क्षमा करनेवाला
है। किन्तु वह दोषी को किसी भी प्रकार निर्दोष
सिद्ध न करेगा। वह पूर्वजों के अधर्म का दण्ड
तीसरी और चौथी पीढ़ी तक उनकी संतान तथा
आनेवाली संतान को देता रहता है।' 8मूसा ने
भूमि की ओर अपना सिर अविलम्ब झुकाया,
और प्रभु की वन्दना की। 9मूसा ने कहा, 'हे
स्वामी, यदि मैंने तेरी कृपा-दृष्टि प्राप्त की है,
तो मैं विनती करता हूं, स्वामी, यद्यपि वे ऐंठी-
गरदन के लोग हैं, तो भी तू हमारे मध्य में होकर
चल। हमारे अधर्म को, हमारे पाप को क्षमा कर
और हमें अपनी निज सम्पत्ति बना।'

विधान की पुनरावृत्ति

10 प्रभु ने कहा, 'देख, मैं विधान स्थापित
करता हूं। मैं तेरे सब लोगों के सामने ऐसे
आश्चर्यपूर्ण कर्म करूंगा, जो समस्त पृथ्वी
पर, सारे राष्ट्रों में कभी नहीं किए गए। जिन
लोगों के मध्य में तू है, वे सब प्रभु के कार्य को
देखेंगे। वह आतंकमय कार्य है, जिसे मैं तेरे
लिए करूंगा।
11 'जो आज्ञा मैं आज तुझे देता हूं, उसका
पालन करना। देख, मैं तेरे सम्मुख से अमोरी,
कनानी, हित्ती, परिज्जी, हिव्वी और यबूसी
जातियों को निकाल दूंगा। 12तू ध्यान दे; ऐसा
न हो कि जिस देश की ओर तू जा रहा है, उसके
निवासियों से सन्धि करे, और वह तेरे मध्य में
फन्दा बन जाए। 13अत: तू उनकी वेदियों को
तोड़ डालना। उनके स्तम्भों को गिरा देना।
उनकी अशेरा देवी के खम्भों को ध्वस्त करना।
14(तू किसी अन्य देवता की वन्दना न करना।
प्रभु जिसका नाम ईर्ष्यालु है, एक ईर्ष्यालु
परमेश्वर है।) 15ऐसा न हो कि तू उस देश के
निवासियों से सन्धि करे। ऐसा न हो कि जब
वे अपने देवताओं का अनुगमन करें और यों
वेश्या के सदृश व्यवहार करें, अपने देवताओं
को बलि चढ़ाएँ और कोई तुझे निमन्त्रित करे
तब तू उसकी बलि का मांस खाए। 16तू अपने
पुत्रों का विवाह करने के लिए उनकी पुत्रियाँ
मत ग्रहण करना। ऐसा न हो कि उनकी पुत्रियाँ
अपने देवताओं का अनुगमन करें और यों
वेश्या के सदृश व्यवहार करें, और ऐसा ही
व्यवहार तुम्हारे पुत्रों से करवाएँ कि वे उनके
देवताओं का अनुगमन करें।
17 'तू अपने लिए देवताओं की मूर्तियाँ
ढालकर मत बनाना।
18 'तू बेखमीर रोटी का पर्व मनाना।
जैसी आज्ञा मैंने तुझे दी है, उसके अनुसार तू
निर्धारित समय पर आबीब महीने में सात दिन
तक बेखमीर रोटी खाना; क्योंकि तू उस
आबीब महीने में मिस्र देश से बाहर निकला
था।
19 'प्रत्येक पहिलौठी सन्तान मेरी है।
तुम्हारे पशुओं के नर बच्चे, गाय और भेड़ के
पहिलौठे बच्चे मेरे हैं।

+ मूल में "य् ह् व् ह्" देखिए 3 : 15 की टिप्पणी।

34 : 6 नि 20 : 5; गण, 14 : 18; नह 9 : 17; भज 86 : 15; 103 : 8; 145 : 8; योना 4 : 2; योए 2 : 13 **34 : 7** यिर 32 : 18; यो 1 : 14 **34 : 13** व्य 16 : 21 **34 : 14** नि 20 : 5 **34 : 17** लेव 19 : 4 **34 : 18** नि 12 : 15

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

20 'तू गधे के पहिलौठे बच्चे को मेमना
देकर छुड़ा लेना। यदि तू उसे न छुड़ाए तो
उसकी गरदन तोड़ देना। तू अपने पुत्रों की
पहिलौठी सन्तान को अवश्य छुड़ाना। कोई
व्यक्ति खाली हाथ मुझे अपना मुंह न दिखाए।
21 'तू छः दिन तक परिश्रम करना। किन्तु
सातवें दिन विश्राम करना। तू हल जोतते और
फसल काटते समय भी विश्राम-दिवस मनाना।
22 'तू गेहूं की नई फसल के समय सप्ताहों
का पर्व+ और वर्ष के अन्त में संग्रह-पर्व
मनाना।
23 'तेरे परिवार के सब पुरुष वर्ष में तीन
बार प्रभु परमेश्वर, इस्राएल के परमेश्वर के
सम्मुख उपस्थित होंगे। 24मैं तेरे सम्मुख से
राष्ट्रों को निकालकर तेरे सीमान्तों को विस्तृत
करूंगा। जब तू वर्ष में तीन बार अपने प्रभु
परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित होने के लिए
जाएगा तब कोई भी व्यक्ति तेरी भूमि का
लालच नहीं करेगा।
25 'तू मेरी पशु-बलि का रक्त खमीरी रोटी
के साथ मत चढ़ाना। तू पास्का पर्व की पशु-
बलि सबेरे तक न छोड़ना। 26तू अपनी भूमि के
प्रथम फलों में से सर्वोत्तम फल अपने प्रभु
परमेश्वर के गृह में लाना। तू बकरी के बच्चे को
उसकी मां के दूध में मत पकाना।'
27 प्रभु ने मूसा से कहा, 'तू ये शब्द लिख
ले। मैंने इन शब्दों के अनुसार तेरे एवं इस्राएल
के साथ विधान स्थापित किया है।' 28मूसा वहाँ
प्रभु के साथ चालीस दिन और चालीस रात
रहे। न तो उन्होंने रोटी खाई और न पानी पिया।
उन्होंने विधान की बातें, अर्थात् दस आज्ञाएँ*
पट्टियों पर लिख लीं।

मूसा का पहाड़ से उतरना

29 जब मूसा सीनय पर्वत से उतरे, उनके
हाथ में साक्षी की दो पट्टियाँ थीं। जब मूसा
सीनय पर्वत से उतरे, उन्हें ज्ञात नहीं था कि
परमेश्वर के साथ वार्तालाप करने के कारण
उनका मुख प्रकाशवान हो गया है। 30हारून और
समस्त इस्राएली समाज ने मूसा को देखा कि
उनके मुख से प्रकाश निकल रहा है। अतएव
वे उनके निकट जाने से डरे। 31किन्तु मूसा ने
उनको बुलाया। तब हारून एवं इस्राएली
मंडली के सब अगुए उनके पास लौटे। मूसा
ने उनसे बातचीत की। 32तत्पश्चात् सम्पूर्ण
समाज निकट गया। जो बातें प्रभु ने मूसा से
सीनय पर्वत पर कही थीं, उन्होंने वे सब
आज्ञाएँ उनको सुनाईं। 33जब मूसा ने उनके
साथ बात करना समाप्त किया तब अपने मुख
पर परदा डाल लिया। 34जब जब मूसा प्रभु से
वार्तालाप करने को मिलन-शिविर के भीतर
जाते थे, वह अपने मुख पर से परदा हटा लेते,
और बाहर निकलने तक उसे हटाए रखते थे।
जो आज्ञा उन्हें दी जाती, वह उसको बाहर
आकर इस्राएली समाज को बता देते थे।
35इस्राएली समाज मूसा का मुख देखता कि
वह प्रकाशवान है। जब तक मूसा भीतर प्रभु के
साथ वार्तालाप करने नहीं जाते थे, तब तक अपने
मुख पर परदा डाले रहते थे।

विश्राम दिवस मनाने का नियम

35 मूसा ने समस्त इस्राएली मंडली को
एकत्र किया और उनसे कहा, 'प्रभु ने
इन कार्यों को करने की आज्ञा तुम्हें दी है : 2छः
दिन तक काम किया जाएगा। किन्तु तुम सातवें
दिन प्रभु के हेतु परम विश्राम दिवस मनाना। जो
व्यक्ति उस दिन काम करेगा, उसे मृत्यु-दण्ड
दिया जाएगा। 3तुम विश्राम दिवस पर अपने-
अपने निवास-स्थान में चूल्हा भी नहीं
जलाना।'

प्रभु को भेंट अर्पित करना

4 मूसा ने समस्त इस्राएली मंडली से कहा,
'प्रभु ने इस कार्य को करने की आज्ञा दी है :
5तुम अपने पास से प्रभु के लिए भेंट लो। जो

+ अर्थात्, "सप्त-सप्ताह का पर्व" * मूल में, "वचन"।

34 : 20 नि 13 : 13 34 : 21 नि 20 : 9 34 : 22 नि 23 : 16 34 :25 नि 12 : 10 34 : 26 व्य 26 : 2
34 : 28 मत 4 : 2 34 : 33 यो 1 : 17; 2 कुर 3 : 13 35 : 2 गण 15 : 32; व्य 5 : 12; नि 31 : 14-15
35 : 5 नि 25 : 2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

स्वेच्छा से देना चाहे, वह प्रभु के लिए भेंट लाए: सोना, चांदी तथा पीतल, [6]नीले, बैंजनी और लोहित रंग के वस्त्र; पतले सूत से बुना हुआ कपड़ा; बकरी के बाल, [7]मेढ़े की पकी हुई खाल और सूंस का चमड़ा, बबूल की लकड़ी, [8]दीप-प्रज्वलन के लिए तेल, अभ्यंजन-तेल एवं सुगन्धित धूप के लिए मसाले, [9]उरावरण एवं उरपट में लगाने के लिए, तथा अन्य वस्तुओं में जड़ने के लिए सुलेमानी पत्थर और मणि।

निवास-स्थान की विभिन्न वस्तुएँ

10 'जो बुद्धिमान व्यक्ति तुम्हारे मध्य में हैं, वे आएं और प्रभु की आज्ञानुसार ये वस्तुएँ बनाएं : निवास-स्थान, [11]उसके तम्बू, आच्छादन, अंकड़े, तख्ते, छड़ें, खम्भे, और आधार-पीठिकाएँ, [12]मंजूषा और उसके डण्डे, दया-आसन और अन्तःपट, [13]पवित्र मेज, उसके डण्डे एवं अन्य पात्र; भेंट की रोटी; [14]प्रकाश के लिए दीपाधार, उसके अन्य पात्र एवं दीपक, दीप-प्रज्वलन के लिए तेल; [15]धूपवेदी, उसके डण्डे, अभ्यंजन-तेल, सुगन्धित धूप-द्रव्य, निवास-स्थान के प्रवेश-द्वार के लिए परदा; [16]अग्नि-बलि की वेदी, पीतल की झंझरी, डण्डे और उसके सब पात्र, कण्डाल और उसकी आधार-पीठिका; [17]आंगन के परदे, खम्भे, आधार-पीठिकाएँ, आंगन के प्रवेशद्वार के लिए परदा; [18]निवास-स्थान की खूंटियाँ, आंगन के लिए खूंटियाँ और उनकी रस्सियाँ; [19]पवित्र-स्थान में सेवा कार्य करते समय पहनने की सज्जापूर्ण पोशाकें; पुरोहित हारून की पवित्र पोशाक, और पुरोहित के रूप में सेवा कार्य के लिए हारून के पुत्रों की पोशाकें।'

इस्राएली भेंट चढ़ाते हैं

20 समस्त इस्राएली मंडली मूसा के सम्मुख से लौट गयी। [21]प्रत्येक मनुष्य, जिसका हृदय उल्लसित हुआ, जिसकी आत्मा ने स्वेच्छा से देने को प्रेरित किया, वह मिलन-शिविर के उपयोग के लिए, उसकी समस्त सेवाओं और पवित्र पोशाकों के लिए प्रभु की भेंट ले आया। [22]स्त्री और पुरुष आए। जिनके हृदय इच्छुक थे, वे जुगनू, बालियाँ, अंगूठियां और कंगन आदि सब प्रकार के सोने के आभूषण लाए। जो जो व्यक्ति प्रभु को भेंट चढ़ाना चाहता था, उसने सोना चढ़ाया। [23]जिन मनुष्यों के पास नीले, बैंजनी और लोहित रंग के वस्त्र, पतले सूत से बुना हुआ कपड़ा, बकरी के बाल, मेढ़े की पकी हुई खाल, सूंस का चमड़ा था, वे उन्हें ले आए। [24]जो व्यक्ति चांदी और पीतल की भेंट चढ़ा सकते थे, वे उनको प्रभु के लिए भेंट के रूप में लाए। जिस किसी के पास उपयोग में आनेवाली बबूल की लकड़ी थी, वह उसको लाया। [25]जिन स्त्रियों के हृदय में बुद्धि का प्रकाश था, उन्होंने अपने हाथों से सूत काता। वे नीले, बैंजनी और लोहित रंग का पतला सूत कातकर ले आईं। [26]उन स्त्रियों ने सूंस के बाल भी काते जिनके हृदय बुद्धि से प्रेरित हुए। [27]अगुए उरावरण और उरपट के लिए सुलेमानी मणि और जड़ने के लिए मणि, [28]दीप-प्रज्वलन, अभ्यंजन-तेल और सुगन्धित धूप के लिए मसाले और तेल लाए।

29 अतः जिन कार्यों को सम्पन्न करने का आदेश प्रभु ने मूसा के द्वारा दिया था, उनके लिए स्त्रियाँ और पुरुष, जिनके हृदय ने स्वेच्छा से देने को प्रेरित किया, भेंट ले आए। इस प्रकार इस्राएली समाज ने प्रभु को स्वेच्छा-बलि चढ़ाई।

बसलएल और ओहोलीआब नामक कारीगरों का आवाहन

30 मूसा ने इस्राएली समाज से कहा, 'देखो, प्रभु ने यहूदा-कुल के बसलएल को, जो ऊरी का पुत्र और हूर का पौत्र है, विशेष रूप से मनोनीत किया है। [31]प्रभु ने उसे अपने आत्मा से, बुद्धि, प्रवीणता, ज्ञान और शिल्प-कौशल से परिपूर्ण किया है [32]कि वह ऐसे कलात्मक नमूने निकाले, जिन्हें सोने, चांदी और पीतल के पात्रों पर बना सके, [33]जड़ने के लिए मणि

35 : 30-36 : 1 नि 31 : 1-6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

काट सके, लकड़ी पर खुदाई कर सके, तथा अन्य शिल्प के कार्य भी कर सके। 34प्रभु ने उसे तथा दान-कुल के अहीसामख के पुत्र ओहोलीआब को प्रेरित किया है कि वे दूसरों को प्रशिक्षित करें। 35प्रभु ने उनके हृदय में बुद्धि का प्रकाश भरा है कि वे उन सब कार्यों को करें, जिन्हें कुशल कारीगर, अभिकल्पी+ और नीले, बैंजनी और लोहित रंग के वस्त्रों पर, पतले सूत से बुने हुए कपड़ों पर बेल-बूटा काढ़ने वाले करते हैं, अथवा जिनको कोई भी बुनकर, कामगार या कुशल अभिकल्पी करता है।

36 'बसलएल, ओहोलीआब और वे सब बुद्धिमान व्यक्ति, जिनमें प्रभु ने बुद्धि और समझ भरी है कि वे पवित्र-स्थान के निर्माण-कार्य को करने के लिए उसे समझ लें, प्रभु की सब आज्ञाओं के अनुसार काम करेंगे।'

इस्राएली अपार भेंट चढ़ाते हैं

2 मूसा ने बसलएल और ओहोलीआब तथा उन बुद्धिमान व्यक्तियों को बुलाया, जिनके हृदय में प्रभु ने बुद्धि और समझ भरी थी तथा उन लोगों को जिनके हृदय प्रेरित हुए थे कि वे निकट आकर काम करें। 3उन्होंने मूसा के हाथ से* समस्त स्वेच्छाबलि ग्रहण की, जिसे इस्राएली समाज पवित्र-स्थान के निर्माण-कार्य के लिए लाया था। किन्तु लोग प्रतिदिन सबेरे मूसा के पास स्वेच्छा-बलि लाते रहे। 4अत: पवित्र-स्थान में काम करने वाले सब बुद्धिमान कामगार अपना-अपना काम छोड़कर आये। 5उन्होंने मूसा से कहा, 'जिस कार्य को करने की आज्ञा प्रभु ने दी है, उसके लिए जितनी वस्तुएँ चाहिए, उससे अधिक वस्तुएँ लोग ला रहे हैं।' 6अतएव मूसा ने अपना यह आदेश समस्त पड़ाव में घोषित किया, 'कोई पुरुष अथवा स्त्री पवित्र-स्थान के लिए अब और भेंट न लाए।' इस प्रकार लोग भेंट लाने से रोके गए; 7क्योंकि जितनी सामग्री कामगारों के पास एकत्र हो चुकी थी, वह निर्माण के सब कार्यों के लिए पर्याप्त थी। वस्तुत: पर्याप्त से अधिक थी।

निवास-स्थान का निर्माण

8 कामगारों में सब बुद्धिमान कारीगरों ने दस परदों का एक निवास-स्थान बनाया। ये परदे पतले सूत से बुने हुए नीले, बैंजनी और लोहित रंग के वस्त्र के थे। उनपर कुशलता से करूबों के चित्रों की कढ़ाई की गई थी। 9प्रत्येक परदे की लम्बाई बारह मीटर साठ सेंटीमीटर और चौड़ाई एक मीटर अस्सी सेंटीमीटर थी। सब परदे एक ही नाप के थे। 10बसलएल ने** पांच परदों को एक-दूसरे से जोड़ा। इसी प्रकार शेष पांच परदों को भी एक-दूसरे से जोड़ा। 11उसने पहले जुड़े हुए परदे के छोर में नीले रंग के फन्दे डाले। इसी प्रकार दूसरे जुड़े हुए परदे के छोर में भी नीले रंग के फन्दे डाले। 12उसने पहले जुड़े परदे में पचास फन्दे डाले, और दूसरे जुड़े हुए परदे के छोर में भी पचास फन्दे डाले। फन्दे आमने-सामने थे। 13उसने सोने के पचास अंकड़े बनाए और जुड़े हुए परदों को इन अंकड़ों के द्वारा जोड़ दिया। इस प्रकार पूरा निवास-स्थान एक बन गया।

14 उसने निवास-स्थान के ऊपर, तम्बू के लिए बकरी के बाल के परदे बनाए। उसने कुल ग्यारह परदे बनाए। 15प्रत्येक परदे की लम्बाई साढ़े तेरह मीटर और चौड़ाई एक मीटर अस्सी सेंटीमीटर थी। ये ग्यारह परदे एक ही नाप के थे। 16उसने पांच परदों को एक-दूसरे से जोड़ा। इसी प्रकार शेष छ: परदों को परस्पर जोड़ा। 17उसने पहले जुड़े परदे के छोर में पचास फन्दे डाले। ऐसे ही दूसरे जुड़े हुए परदे के छोर में पचास फन्दे डाले। 18उसने परदों को जोड़ने के लिए पीतल के पचास अंकड़े बनाए, जिससे पूरा तम्बू एक हो जाए। 19उसने तम्बू के लिए मेढ़े और सूंस के पके हुए चमड़े का आवरण बनाया।

20 तत्पश्चात् उसने निवास-स्थान के लिए

+ अथवा, 'खाका, बनावट तैयार करनेवाला' * शब्दश: ''सम्मुख से'' ** मूल में, 'उसने'।

36 : 8-19 नि 26 : 1-14 36 : 20-34 नि 26 : 15-29

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
बबूल की लकड़ी के सीधे-खड़े तख्ते बनाए।
[21]प्रत्येक तख्ते की लम्बाई साढ़े चार मीटर,
और चौड़ाई साढ़े सड़सठ सेंटीमीटर थी।
[22]उन्हें परस्पर जोड़ने के लिए प्रत्येक तख्ते में
दो चूलें थीं। उसने निवास-स्थान के सब तख्तों
में चूलें लगाईं। [23]उसने निवास-स्थान के लिए
इस प्रकार तख्ते बनाए : निवास-स्थान के
दक्षिणी भाग के लिए बीस तख्ते। [24]उसने इन
बीस तख्तों के नीचे चांदी की चालीस आधार-
पीठिकाएँ बनाईं। एक तख्ते के नीचे उसकी
चूलों के लिए दो आधार-पीठिकाएँ, और दूसरे
तख्तों के नीचे भी उनकी दोनों चूलों के लिए
दो-दो आधार-पीठिकाएँ। [25]निवास-स्थान की
दूसरी ओर उत्तरी भाग में बीस तख्ते, [26]और उनके
लिए चांदी की चालीस आधार-पीठिकाएँ
बनाईं। प्रत्येक तख्ते के नीचे दो-दो आधार-
पीठिकाएँ। [27]उसने पश्चिमी दिशा में निवास-
स्थान के पिछले भाग के लिए छः तख्ते बनाए।
[28]उसने निवास-स्थान के कोनों के लिए
पिछले भाग में दो तख्ते बनाए। [29]वे नीचे तो
अलग-अलग थे, किन्तु ऊपर पहले कड़े पर
जुड़े थे। उसने दो कोनों के लिए दो तख्ते इस
प्रकार बनाए। [30]यों आठ तख्ते थे और उनकी
चांदी की सोलह आधार-पीठिकाएँ : प्रत्येक
तख्ते के नीचे दो आधार-पीठिकाएँ।

31 उसने बबूल की लकड़ी की छड़ें बनाईं।
निवास-स्थान की एक ओर के तख्तों के लिए
पांच, [32]दूसरी ओर के तख्तों के लिए पांच,
तथा पश्चिम की ओर, निवास-स्थान के
पिछले भाग के तख्तों के लिए पांच। [33]उसने
तख्तों के बीचों-बीच मध्यवर्ती छड़ को ऐसा
बनाया कि वह निवास-स्थान के एक छोर से
दूसरे छोर तक गई। [34]उसने तख्तों को सोने से
मढ़ा। उसने उनके कड़ों को भी, जो छड़ों के
जकड़-पट्टा थे, सोने के बनाए। उसने छड़ों को
भी सोने से मढ़ा।

35 उसने नीले, बैंजनी और लोहित रंग के
वस्त्र से, पतले सूत के बुने हुए वस्त्र से एक
अन्तःपट बनाया। उसने उस पर कुशलता से
करूबों के चित्र काढ़े। [36]उसने उसके लिए
बबूल की लकड़ी के चार खम्भे बनाए, और
उनको सोने से मढ़ा। उनके छल्ले सोने के थे।
उसने उनके लिए चांदी की चार आधार-
पीठिकाएँ ढालीं। [37]उसने तम्बू के प्रवेश-द्वार
के लिए भी नीले, बैंजनी और लोहित रंग के
वस्त्र से, पतले सूत के बुने हुए वस्त्र से, जिस
पर बेल-बूटे काढ़े गए थे, एक परदा बनाया।
[38]उसने उसके लिए पांच खम्भे और छल्ले भी
बनाए। उसने खम्भों के मस्तक तथा उनको
जोड़नेवाली पट्टियों को सोने से मढ़ा।
किन्तु उनकी पांच आधार-पीठिकाएँ पीतल
की थीं।

साक्षी-मंजूषा का बनाया जाना

37 बसलएल ने बबूल की लकड़ी की
मंजूषा बनाई। उसकी लम्बाई एक
मीटर साढ़े बारह सेंटीमीटर, चौड़ाई साढ़े
सड़सठ सेंटीमीटर और ऊँचाई साढ़े सड़सठ
सेंटीमीटर थी। [2]उसने उसे बाहर-भीतर शुद्ध
सोने से मढ़ा, और उसके चारों ओर सोने की
भित्ति बनाई। [3]उसने उसके चार पायों के लिए
सोने के चार कड़े ढाले : उसकी एक ओर दो
कड़े तथा दूसरी ओर दो कड़े। [4]उसने बबूल की
लकड़ी के डण्डे बनाए और उन्हें सोने से मढ़ा।
[5]उसने डण्डों को मंजूषा के दोनों ओर से कड़ों
में डाला जिससे मंजूषा को उठाया जा सके।
[6]तत्पश्चात् उसने शुद्ध सोने का दया-आसन
बनाया। उसकी लम्बाई एक मीटर साढ़े बारह
सेंटीमीटर, और चौड़ाई साढ़े सड़सठ सेंटीमीटर
थी। [7]उसने सोने के दो करूब ढालकर बनाए।
उसने दया-आसन के दोनों छोर पर उन्हें
बनाया : [8]एक करूब एक छोर पर, और दूसरा
करूब दूसरे छोर पर। दया-आसन को और
उसके दोनों छोर पर करूबों को धातु के एक
ही टुकड़े से बनाया। [9]करूब अपने पंखों को
इस प्रकार ऊपर फैलाए हुए थे कि उनके पंखों
से दया-आसन ढका था, और उनके मुख
आमने-सामने थे। करूबों के मुख दया-आसन
की ओर थें।

---
36 : 35-38 नि 26 : 31-37 37 : 1-9 नि 25 : 10-22

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पवित्र मेज का बनाया जाना

10 उसने बबूल की लकड़ी की एक मेज
भी बनाई। उसकी लम्बाई नब्बे सेंटीमीटर,
चौड़ाई पैंतालीस सेंटीमीटर, और ऊँचाई साढ़े
सड़सठ सेंटीमीटर थी। 11उसने उसे शुद्ध सोने
से मढ़ा और उसके चारों ओर सोने की भित्ति
बनाई। 12उसने उसके चारों ओर साढ़े सात
सेंटीमीटर चौड़ा चौखटा बनाया, और इस
चौखटे के चारों ओर सोने की भित्ति बनाई।
13उसने उसके लिए सोने के चार कड़े ढाले,
और उसके चारों पायों के किनारों में कड़ों को
लगाया। 14कड़े चौखटे के निकट ही थे जिससे
वे मेज को उठाने के लिए डण्डों के जकड़-
पट्टे का काम दें। 15उसने मेज को उठाने के
लिए बबूल की लकड़ी के डण्डे बनाए, और
उन्हें सोने से मढ़ा। 16उसने मेज पर रखने के
लिए शुद्ध सोने के पात्र बनाए : धूप के लिए
परात, धूपदान, तथा पेयार्पण के लिए सुराहियां
और चषक।

स्वर्ण दीपाधार बनाना

17उसने शुद्ध सोने का एक दीपाधार
बनाया। उसने दीपाधार का पाया और डण्डी
सोना ढालकर बनाए। उसके पुष्प-कोष, गांठ
और फूल धातु के एक ही टुकड़े से बनाए।
18उसकी छः शाखाएँ थीं। दीपाधार की एक
ओर तीन शाखाएँ, और दूसरी ओर तीन
शाखाएँ निकली हुई थीं। 19प्रत्येक शाखा में
बादाम की बौंड़ी के समान तीन पुष्पकोष, एक
गांठ और एक फूल थे। इसी प्रकार दीपाधार से
निकली हुई छः शाखाओं में भी थे। 20दीपाधार
की डण्डी में भी बादाम की बौंड़ी के समान चार
पुष्पकोष अपनी-अपनी गांठ और फूल के
साथ थे। 21दीपाधार की डण्डी पर छः शाखाओं
की एक-एक जोड़ी-शाखा के नीचे एक-एक
गांठ थी। गांठें और डण्डी धातु के एक ही
टुकड़े से बनी थीं। 22गांठें और शाखाएँ भी धातु
के एक ही टुकड़े से बनी थीं। शुद्ध सोना
ढालकर पूरा दीपाधार एक ही टुकड़े से बनाया
गया था। 23उसने उसके सात दीपक, गुल-
तराश और गुलदान शुद्ध सोने के बनाए।
24उसने दीपाधार और उसके सब पात्र लगभग
पैंतीस किलो शुद्ध सोने के बनाए।

धूप-वेदी बनाना

25 उसने बबूल की लकड़ी की एक धूप-
वेदी बनाई। उसकी लम्बाई पैंतालीस सेंटीमीटर,
और चौड़ाई भी पैंतालीस सेंटीमीटर थी। वह
वर्गाकार थी। उसकी ऊंचाई नब्बे सेंटीमीटर
थी। उसके सींग एक ही टुकड़े से बनाए गए
थे। 26उसने उसके उपरले ढक्कन को, तथा
उसके चारों ओर के बाजुओं, और उसके सींगों
को शुद्ध सोने से मढ़ा। उसने उसके चारों ओर
सोने की भित्ति बनाई। 27उसने सोने के दो कड़े
बनाए; उन्हें भित्ति के नीचे दोनों ओर बाजुओं
में लगाया। वे डण्डों के जकड़पट्टे थे, जिनसे
वेदी उठाई जा सके। 28उसने बबूल की लकड़ी
के डण्डे बनाए और उन्हें सोने से मढ़ा।

अभ्यंजन का तेल तैयार करना

29उसने पवित्र अभ्यंजन का तेल तैयार
किया। जैसे गन्धी बनाता है वैसे उसने शुद्ध
सुगन्धित धूप-द्रव्य बनाया।

अग्नि-बलि की वेदी बनाना

38 उसने बबूल की लकड़ी की एक वेदी
बनाई, जो दो मीटर पचीस सेंटीमीटर
लम्बी और दो मीटर पचीस सेंटीमीटर चौड़ी
थी। वह वर्गाकार थी। उसकी ऊंचाई एक मीटर
पैंतीस सेंटीमीटर थी। 2उसने वेदी के लिए
उसके चारों कोनों पर चार सींग बनाए। वेदी
और उसके सींग लकड़ी के एक ही टुकड़े से
बने थे। उसने उसे पीतल से मढ़ा। 3उसने वेदी
के सब पात्र भी बनाए : राख उठाने के पात्र,
फावड़ियाँ, कटोरे, कांटे और अंगीठियाँ। उसने
सब पात्र पीतल से बनाए। 4उसने वेदी के लिए
कंगनी के नीचे, पीतल की जाली की एक ऐसी
झंझरी बनाई जो वेदी के मध्य तक ऊंची थी।
5उसने पीतल की झंझरी के चारों कोनों पर,
डण्डों के जकड़पट्टे के लिए, चार कड़े ढाले।
6उसने बबूल की लकड़ी के डण्डे बनाए, और
उन्हें पीतल से मढ़ा। 7उसने वेदी के बाजुओं

---

37 : 10-16 नि 25 : 23-29 **37 : 17-24** नि 25 : 31-39 **37: 25-28** नि 30 : 1-5 **37 : 29** नि 30 : 22-38

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
में डण्डों को कड़ों में इस प्रकार डाला कि उनके सहारे वेदी उठाई जाए। उसने तख्ते जोड़कर वेदी को खोखला बनाया।

कण्डाल बनाना

8 उसने मिलन-शिविर के द्वार पर सेवा करनेवाली स्त्रियों के दर्पणों से पीतल का एक कण्डाल तथा उसकी आधार-पीठिका बनाई।

निवास-स्थान का आंगन बनाना

9 उसने आंगन बनाया। आंगन के दक्षिणी भाग के परदे पतले बुने हुए वस्त्र के थे। वे पैंतालीस मीटर लम्बे थे। 10उनके लिए बीस खम्भे और पीतल की बीस आधार-पीठिकाएं थीं। किन्तु खम्भों के छल्ले तथा उनको जोड़नेवाली पट्टियाँ चांदी की थीं। 11उत्तरी भाग के परदे पैंतालीस मीटर लम्बे थे। उनके लिए बीस खम्भे और पीतल की बीस आधार-पीठिकाएँ थीं। किन्तु खम्भों के छल्ले तथा उनको जोड़नेवाली पट्टियाँ चांदी की थीं। 12पश्चिमी भाग के परदे साढ़े बाईस मीटर लम्बे थे। उनके लिए दस खम्भे और दस आधार-पीठिकाएँ थीं। खम्भों के छल्ले तथा उनको जोड़नेवाली पट्टियाँ चांदी की थीं। 13पूर्वीय भाग में सामने की ओर के परदे साढ़े बाईस मीटर लम्बे थे। 14आंगन के द्वार की एक ओर के परदे छः मीटर पचहत्तर सेंटीमीटर लम्बे थे। उनके लिए तीन खम्भे और तीन आधार-पीठिकाएँ थीं। 15ऐसा ही दूसरी ओर भी था। आंगन के द्वार के दोनों ओर के परदे छः मीटर पचहत्तर सेंटीमीटर लम्बे थे। उनके लिए तीन खम्भे और तीन आधार-पीठिकाएँ थीं। 16आंगन के चारों ओर के सब परदे पतले बुने हुए सूती वस्त्र के थे। 17खम्भों की आधार-पीठिकाएँ पीतल की थीं, किन्तु उनके छल्ले, और उनको जोड़ने-वाली पट्टियाँ चांदी की थीं। उनके मस्तक भी चांदी से मढ़े हुए थे। आंगन के सब खम्भे चांदी की पट्टियों से जुड़े थे। 18आंगन के द्वार का परदा बेल-बूटों से कढ़ा हुआ, नीले, बैंजनी और लोहित रंग का, पतले बुने हुए सूती वस्त्र का था। आंगन के अन्य परदों के बराबर उसकी लम्बाई नौ मीटर, उसकी ऊँचाई, अर्थात् उसकी चौड़ाई दो मीटर पचीस सेंटीमीटर थी। 19उनके लिए चार खम्भे थे। उनकी चार आधार-पीठिकाएँ पीतल की, और उनके छल्ले चांदी के थे। उनके मस्तक पर चांदी मढ़ी हुई थी। उनको जोड़नेवाली पट्टियाँ भी चांदी की थीं। 20निवास-स्थान और आस-पास के आंगन के सब खूंटे पीतल के थे।

पवित्र-स्थान में प्रयुक्त धातु का विवरण

21 निवास-स्थान अर्थात् साक्षी-पत्र रखने के स्थान की सामग्री का यह विवरण है। मूसा की आज्ञा के अनुसार पुरोहित हारून के पुत्र ईतामर के निरीक्षण में लेवियों के सेवाकार्य के लिए सामग्री की गणना की गई थी। 22जो आज्ञा प्रभु ने मूसा को दी थी, उसके अनुसार यहूदा-कुल के बसलएल ने, जो ऊरी का पुत्र और हूर का पौत्र था, सब तैयार किया। 23उसके साथ दान-कुल के अहीसामख का पुत्र ओहोलीआब था। वह कुशल कारीगर, अभिकल्पी, पतले सूत से बुने हुए नीले, बैंजनी और लोहित रंग के वस्त्रों पर, बेल-बूटे काढ़ने वाला था।

24 जो सोना पवित्र-स्थान के निर्माण कार्य में, उसके समस्त कार्य में प्रयुक्त हुआ, जो भेंट के रूप में दिया गया, वह पवित्र-स्थान की तौल के अनुसार लगभग एक हजार दो किलो* था। 25मंडली में गिने गये लोगों की भेंट में अर्पित चांदी पवित्र स्थान की तौल के अनुसार लगभग तीन हजार पांच सौ बीस किलो+ थी। 26प्रत्येक व्यक्ति से, जिसकी अवस्था गणना के अनुसार बीस वर्ष से अधिक थी, (कुल मिलाकर छः लाख तीन हजार पांच सौ पचास व्यक्ति थे) पवित्र स्थान की तौल के अनुसार आधा सिक्का, अर्थात् प्राय: छः ग्राम** प्राप्त हुआ। 27लगभग साढ़े तीन हजार किलो चांदी पवित्र-स्थान की आधार-पीठिकाओं तथा

* मूल में, ''उन्तीस किक्कार, सात सौ तीस शेकल'' + मूल में, ''सौ किक्कार, सत्रह सौ पचहत्तर शेकल'' ** मूल में, ''एक बैका''

38 : 8 नि 30 : 18 **38 : 9-20** नि 27 : 9-19 **38 : 25-26** नि 30 : 11-16; मत 17 : 24 **38 : 26** गण 1:46

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अन्त:पट की आधार-पीठिकाओं को ढालने में
प्रयुक्त हुई। एक आधार-पीठिका में लगभग
पैंतीस किलो चांदी लगी। इस प्रकार साढ़े तीन
हजार किलो से सौ आधार-पीठिकाएँ बनीं।
28शेष बीस किलो से उन्होंने खम्भों के छल्ले
बनाए, उनके मस्तक को मढ़ा तथा उनको
जोड़ने वाली पट्टियाँ बनाईं। 29जो पीतल भेंट
में चढ़ाया गया, वह लगभग दो हजार चार सौ
पचीस किलो† था। 30उन्होंने इससे मिलन-
शिविर के द्वार की आधार-पीठिकाएँ, वेदी,
झंझरी और वेदी के सब पात्र, 31आंगन के आस-
पास की आधार-पीठिकाएँ, आंगन के द्वार की
आधार-पीठिकाएँ, निवास-स्थान की सब
खूंटियाँ, और आंगन के आस-पास की सब
खूंटियाँ बनाईं।

पुरोहित की पोशाक तैयार करना

39 उन्होंने पवित्र-स्थान में सेवा करते
समय पहनने के लिए नीले, बैंजनी
और लोहित रंग के कपड़े से सज्जापूर्ण पोशाकें
तैयार कीं। उन्होंने हारून के लिए पवित्र
पोशाक तैयार की; जैसी प्रभु ने मूसा को आज्ञा
दी थी।

2 उन्होंने उरावरण को सोने से, पतले सूत
से बुने हुए नीले, बैंजनी और लोहित रंग के
वस्त्र से बनाया। 3उन्होंने सोने को पीटकर
पतली पत्तियाँ बनाईं और उनमें से तार काटे।
तत्पश्चात् उन तारों के द्वारा पतले सूत से बुने
हुए नीले, बैंजनी और लोहित रंग के वस्त्रों पर
निपुणता से बेल-बूटे काढ़े। 4उन्होंने उरावरण
के लिए उसके दोनों सिरों पर जुड़े हुए दो कन्धे
बनाए। 5उसे बांधनेवाले पट्टे की, जो उसपर
निपुणता से बुना हुआ था, कारीगरी और
सामग्री एक ही थी। वह भी स्वर्ण-तार तथा
पतले सूत से बुने हुए नीले, बैंजनी और लोहित
रंग के वस्त्र का था; जैसी प्रभु ने मूसा को आज्ञा
दी थी।

6 तत्पश्चात् सुलेमानी मणियाँ काटी गईं;
और उन्हें सोने के खांचों में जड़ा गया। उनपर
इस्राएल के पुत्रों के नाम मुद्रा के सदृश खोदे
गए। 7उन्होंने उरावरण के कन्धों पर उनको
जड़ दिया। ये इस्राएल के पुत्रों की स्मृति-मणि
थीं; जैसी प्रभु ने मूसा को आज्ञा दी थी।

8 उन्होंने कलात्मक ढंग से काढ़ा हुआ एक
उरपट, उरावरण के सदृश स्वर्णतार से तथा
पतले सूत से बुने हुए नीले, बैंजनी और लोहित
रंग के वस्त्र से बनाया। 9वह वर्गाकार था। उरपट
दोहरा बनाया गया था। जब वह दोहरा किया
गया तब साढ़े बाईस सेंटीमीटर लम्बा और साढ़े
बाईस सेंटीमीटर चौड़ा था। 10उन्होंने उस पर
मणि की चार पंक्तियाँ जड़ीं। पहली माणिक्य,
पद्मराग और लालड़ी की पंक्ति थी। 11दूसरी
पंक्ति मरकत, नीलमणि और हीरा की थी।
12तीसरी पंक्ति लशम, सूर्यकान्त और नीलम
की थी। 13चौथी पंक्ति फीरोजा, सुलेमानी
मणि और यशब की थी। वे सोने के खांचों में
जड़ी गई थीं। 14इस्राएल के पुत्रों के नामानुसार,
नामों सहित बारह मणियाँ थीं। वे बारह कुलों
के लिए थीं। वे मुद्राओं के सदृश थीं। प्रत्येक
पर एक कुल का नाम खुदा था। 15उन्होंने उरपट
पर रस्सी के समान बटी हुई शुद्ध सोने की
जंजीरें बनाईं। 16उन्होंने नक्काशी किए हुए
सोने के दो खांचे और सोने के दो छल्ले बनाए।
इन दो छल्लों को उरपट के दोनों सिरों पर
लगाया। 17उन्होंने उरपट के सिरों पर लगे दोनों
छल्लों में सोने के दो तार डाले। 18उन्होंने सोने
के दोनों तारों के दो किनारों को दो खांचों में
जड़ा। उन्हें उरावरण के कन्धों पर सामने की
ओर जड़ा। 19तत्पश्चात् उन्होंने सोने के दो
छल्ले बनाए, और उन्हें उरपट के दोनों सिरों
पर भीतर की ओर, उरावरण के पास, लगाया।
20उन्होंने सोने के दो छल्ले बनाए, और उन्हें
उरावरण के दोनों कन्धों के निचले भाग के
जोड़ पर, उरावरण के कलात्मक ढंग से बुने
हुए पट्टे के ऊपर जड़ा। 21उन्होंने उरपट को
उसके छल्लों के माध्यम से, नीले फीते के द्वारा
उरावरण के छल्लों से जोड़ा, जिससे वह

† मूल में, "सत्तर किक्कार और दो हजार चार सौ शेकल"

39 : 2-7 नि 28 : 6-12 39 : 8-21 नि 28 : 15-28

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उरावरण के कलात्मक ढंग से बुने हुए पट्टे पर झूलता रहे, पर उरावरण से अलग न हो सके; जैसी प्रभु ने मूसा को आज्ञा दी थी।

22 उसने उरावरण के लिए सम्पूर्ण नीले रंग का एक अंगरखा बुनकर बनाया। 23बख्तर के छेद के सदृश अंगरखा के मध्य में एक छेद था। उस छेद के चारों ओर बुनी हुई किनारी थी, जिससे वह फट न सके। 24उन्होंने अंगरखा के निचले घेरे में पतले सूत से बुने हुए नीले, बैंजनी और लोहित रंग के कपड़े के अनार बनाए। 25उन्होंने शुद्ध स्वर्ण की घण्टियाँ भी बनाईं और उन्हें अंगरखा के चारों ओर उसके निचले घेरे में अनारों के बीच-बीच में लगाया। 26पहले स्वर्णघण्टी, तब अनार : इस क्रम में स्वर्णघण्टी और अनार सेवा-कार्य के अंगरखा के निचले घेरे में थे, जैसी प्रभु ने मूसा को आज्ञा दी थी।

27-28 उन्होंने हारून और उसके पुत्रों के लिए ये पोशाकें बनाईं : महीन सूती वस्त्र के कुरते, साफा और टोपियाँ; पतले सूत से बुने हुए वस्त्र के जांघिए 29और पतले सूत से बुने हुए नीले, बैंजनी तथा लोहित रंग के वस्त्र का कमरबन्द, जिसपर सूई से कसीदा काढ़ा गया था, जैसी प्रभु ने मूसा को आज्ञा दी थी।

30 उन्होंने पवित्र किरीट-पट के पुष्प को शुद्ध सोने का बनाया। उन्होंने मुद्रा में अंकित अक्षरों के सदृश उसमें ये अक्षर खोदे, 'प्रभु के हेतु पवित्र।' 31उन्होंने उसको साफा के ऊपर बांधकर रखने के लिए उसे नीले फीते से बांधा; जैसी प्रभु ने मूसा को आज्ञा दी थी।

मिलन-शिविर की वस्तुओं का तैयार होना

32 इस प्रकार मिलन-शिविर के निवास-स्थान का निर्माण-कार्य समाप्त हुआ। जैसी प्रभु ने मूसा को आज्ञा दी थी, उसी के अनुसार इस्राएली समाज ने सब कार्य किये। 33वे मूसा के पास निवास-स्थान की वस्तुएँ लाए : तम्बू और उसके सब पात्र, अंकड़े, तख्ते, छड़ें, खम्भे, आधार-पीठिकाएँ, 34मेढ़े और सूंस के पके हुए चमड़े का आवरण, अन्त:पट, 35खम्भों और दया-आसन सहित साक्षी-मंजूषा; 36मेज, उसके पात्र, भेंट की रोटी; 37शुद्ध सोने का दीपाधार और उसके दीपक, अर्थात् सजे हुए दीपक, उसके समस्त पात्र, दीप-प्रज्वलन के लिए तेल; 38स्वर्ण वेदी, अभ्यंजन तेल, सुगन्धित धूप-द्रव्य, तम्बू के प्रवेश-द्वार के लिए परदा, 39पीतल की वेदी, उसकी पीतल की झंझरी, डण्डे और उसके समस्त पात्र; कण्डाल और उसकी आधार-पीठिका; 40आंगन के परदे, उसके खम्भे, उसकी आधार-पीठिकाएँ, आंगन के प्रवेश-द्वार का परदा, उसकी रस्सियाँ, उसकी खूंटियाँ; और सब सामान जो मिलन-शिविर, निवास-स्थान की सेवा के लिए आवश्यक था; 41पवित्र-स्थान में सेवा करते समय पहनने की सज्जापूर्ण पोशाकें, पुरोहित हारून की पवित्र पोशाक, पुरोहित के रूप में सेवा-कार्य के लिए हारून के पुत्रों की पोशाकें। 42जैसी प्रभु ने मूसा को आज्ञा दी थी, उसी के अनुसार इस्राएली समाज ने सब कार्य किये। 43मूसा ने सब काम का निरीक्षण किया, और देखो, लोगों ने सब काम पूर्ण किया था। जैसी प्रभु ने मूसा को आज्ञा दी थी, उसी के अनुसार लोगों ने काम किया था। मूसा ने उन्हें आशीर्वाद दिया।

प्रभु के निवास-स्थान की स्थापना और प्रतिष्ठा

40 प्रभु मूसा से बोला, 2'तू पहले महीने के पहले दिन मिलन-शिविर के निवास-स्थान को खड़ा करना। 3तू वहाँ साक्षी-मंजूषा रखना। साक्षी-मंजूषा को अन्त:पट की आड़ में कर देना। 4तू मेज को भीतर लाना। जो वस्तुएँ उसपर हैं, उन्हें यथा-स्थान रखना। तू दीपाधार को भीतर लाना और उसके दीपकों को जलाना। 5तू सुगन्धित धूप-द्रव्य की स्वर्ण वेदी को साक्षी-मंजूषा के सम्मुख रखना। तू निवास-स्थान के प्रवेश-द्वार पर परदा लगाना। 6तू अग्नि-बलि की वेदी को मिलन-शिविर के निवास-स्थान के द्वार के सामने रखना। 7तब मिलन-शिविर और वेदी के मध्य कण्डाल को रखकर उसमें जल भरना। 8तू चारों ओर कनात

39 : 22-26 नि 28 : 31-34 **39 : 27 -29** नि 28 : 39-42 **39 : 30-31** नि 28 : 36-37

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

खड़ी करके आंगन बनाना और आंगन के द्वार
पर परदा लटकाना। 9तत्पश्चात् अभ्यंजन-तेल
लेकर निवास-स्थान तथा उसके भीतर की
समस्त सामग्री का अभ्यंजन करना। उसे तथा
उसकी समस्त वस्तुओं को पवित्र करना। तब
वह पवित्र हो जाएगा। 10तू अग्नि-बलि की
वेदी एवं उसके समस्त पात्रों का अभ्यंजन
करना। तू वेदी को पवित्र करना। तब वेदी परम
पवित्र हो जाएगी। 11तू कण्डाल और उसकी
आधार-पीठिका का भी अभ्यंजन करना और
कण्डाल को पवित्र करना। 12तू हारून और
उसके पुत्रों को मिलन-शिविर के द्वार पर
लाना। उन्हें जल से स्नान कराना। हारून को
पवित्र पोशाक पहनाना। 13तब तू उसका
अभ्यंजन करना, उसे पवित्र करना कि वह
पुरोहित के रूप में मेरी सेवा करे। 14उसके पुत्रों
को भी लाना और उन्हें कुरते पहनाना। 15जैसे
तू उनके पिता का अभ्यंजन करेगा, वैसे उनका
भी अभ्यंजन करना जिससे वे पुरोहित के रूप
में मेरी सेवा करें। उनका यह अभ्यंजन पीढ़ी
से पीढ़ी तक उन्हें स्थायी पुरोहिताई का पात्र
बनाता रहेगा।'

16 मूसा ने ऐसा ही किया। जो आज्ञा प्रभु
ने उनको दी थी, उसी के अनुसार उन्होंने सब
कार्य किया। 17दूसरे वर्ष के पहले महीने के
पहले दिन निवास-स्थान खड़ा किया गया।
18मूसा ने निवास-स्थान को खड़ा किया।
उन्होंने उसकी आधार-पीठिकाएँ रखीं। उसके
तख्ते लगाकर उनमें छड़ें डालीं और खम्भे खड़े
किए। 19उन्होंने निवास-स्थान के ऊपर तम्बू
फैलाया और उसके ऊपर तम्बू का आच्छादन
लगाया; जैसी प्रभु ने मूसा को आज्ञा दी थी।
20मूसा ने साक्षी-पट्टियाँ लेकर मंजूषा में रख
दीं। उन्होंने मंजूषा में डण्डे डाले और मंजूषा
के ऊपर दया-आसन रखा। 21वह मंजूषा को
निवास-स्थान के भीतर लाए। उन्होंने
अन्तःपट को लटकाया और साक्षी-मंजूषा को
अन्तःपट की आड़ में किया, जैसी प्रभु ने मूसा
को आज्ञा दी थी। 22मूसा ने मिलन-शिविर में,
निवास-स्थान के उत्तरी भाग में, अन्तःपट के
बाहर मेज रखी। 23उन्होंने उसपर प्रभु के सम्मुख
रोटी यथास्थान रखी, जैसी प्रभु ने मूसा को
आज्ञा दी थी। 24मूसा ने दीपाधार को मिलन-
शिविर की मेज के सामने, निवास-स्थान के
दक्षिणी भाग में रखा 25और प्रभु के सम्मुख
दीपक जलाए, जैसी प्रभु ने मूसा को आज्ञा दी
थी। 26मूसा ने स्वर्णवेदी को मिलन-शिविर में
अन्तःपट के सामने रखा 27और उस पर सुगन्धित
धूप-द्रव्य जलाए; जैसी प्रभु ने मूसा को आज्ञा
दी थी। 28मूसा ने निवास-स्थान के प्रवेश-द्वार
पर परदा लटकाया। 29उन्होंने मिलन-शिविर
के निवास-स्थान के द्वार पर अग्नि-बलि की
वेदी रखी और उसपर अग्नि-बलि तथा अन्न-
बलि चढ़ाई; जैसी प्रभु ने मूसा को आज्ञा दी थी।
30 मूसा ने मिलन-शिविर तथा वेदी के मध्य में
कण्डाल रखा और स्नान के लिए उसमें जल
भरा, 31जिसमें से जल लेकर मूसा, हारून और
उसके पुत्रों ने अपने हाथ-पैर धोए। 32जब वे
मिलन-शिविर के भीतर आते थे, अथवा जब
वे वेदी के निकट जाते थे तब स्नान करते थे;
जैसी प्रभु ने मूसा को आज्ञा दी थी। 33मूसा ने
निवास-स्थान और वेदी के चारों ओर कनात
खड़ी करके आंगन बनाया और आंगन के
प्रवेश-द्वार पर परदा लटकाया। इस प्रकार मूसा
ने कार्य समाप्त किया।

मिलन-शिविर के ऊपर मेघ

34 तब मेघ ने मिलन-शिविर को ढक लिया
और प्रभु की महिमा निवास-स्थान में भर गई।
35 मूसा मिलन-शिविर में प्रवेश नहीं कर सके;
क्योंकि उसपर मेघ का वास था, और प्रभु की
महिमा निवास-स्थान में भर गई थी। 36अपनी
समस्त यात्रा में इस्राएली लोग, जब मेघ
निवास-स्थान से ऊपर उठ जाता, तब ही
प्रस्थान करते थे। 37यदि मेघ ऊपर नहीं उठता
तो वे उस समय तक प्रस्थान नहीं करते थे, जब
तक वह ऊपर नहीं उठ जाता था। 38उनकी समस्त
यात्रा में प्रभु का मेघ दिन के समय निवास-
स्थान के ऊपर वास करता था और रात में
इस्राएल के परिवार को उसमें अग्नि दिखाई
देती थी।

---

40 : 23 नि 25 : 30; 39 : 36; लेव 24 : 5 **40 : 30–32** नि 30 : 18–21 **40 : 34** 1 रा 8 : 10; यश 6 : 4; यहे 43 : 4; प्रक 15 : 8 **40 : 36** भज 78 : 14 **40 : 37** गण 9 : 19 **40 : 38** नि 13 : 21; गण 9 : 15

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लेवीय व्यवस्था

पुस्तक परिचय

प्रस्तुत ग्रंथ में सामूहिक आराधना तथा धार्मिक कर्मकांडों से सम्बन्धित ऐसे विधि-विधान संकलित हैं, जिनका प्रयोग प्राचीन इस्राएली समाज में होता था। ये धार्मिक विधि-विधान उन पुरोहितों के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण थे, जो यरूशलेम के मंदिर में धार्मिक कृत्यों को सम्पन्न करते थे। इस्राएल के बारह कुलों में ''लेवी'' कुल इस धर्म-सेवा के लिए अर्पित था।

लेवीय व्यवस्था की मुख्य विषय-वस्तु है परमेश्वर की पवित्रता। इसी से सम्बन्धित हैं समस्त विधि-नियम और निषेध-आदेश। इनका तात्पर्य था कि इस्राएली समाज शुद्ध शरीर और हृदय से सच्चे परमेश्वर की आराधना करे तथा धर्मपरायण जीवन बिताए, जिससे ''इस्राएल के पवित्र परमेश्वर'' से उसका सम्बन्ध बना रहे। यह विशिष्ट पुरोहिती दृष्टिकोण, व्यवस्था-विवरण ग्रंथ को छोड़, समस्त पंचग्रंथ के विधि-संकलन में यहां-वहां दिखाई देता है।

प्रस्तुत ग्रंथ के अध्याय 19:18 के शब्द सर्वप्रचलित हैं, जिनका प्रभु येशु ने प्रयोग किया था, और उन्हें एक नया शीर्षक दिया था: ''दूसरी प्रमुख आज्ञा यह है: अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करो''।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

भेंट तथा बलि सम्बन्धी नियम	1 : 1 — 7 : 38
हारून वंश के पुरोहितों के अभिषेक के नियम	8 : 1 — 10 : 20
धार्मिक कर्मकांड की शुद्धता तथा अशुद्धता के नियम	11:1 — 15:33
प्रायश्चित दिवस	16:1-34
निजी जीवन तथा आराधना से सम्बन्धित पवित्रता के नियम	17: 1 — 27:34

अग्नि-बलि

1 प्रभु ने मूसा को पुकारा, और उनसे मिलन-
शिविर में कहा, 2 'इस्राएली समाज से यह
बोलना, तू उनसे कहना कि उनमें से जो मनुष्य
प्रभु को पशु का चढ़ावा चढ़ाए, तो वह गाय-
बैलों अथवा भेड़-बकरियों के रेवड़ में से बलि
का पशु चढ़ाए।
3 'यदि कोई व्यक्ति गाय-बैलों में से अग्नि-
बलि चढ़ाता है, तो उसे निष्कलंक नर पशु
चढ़ाना होगा। वह उसे मिलन-शिविर के द्वार
पर चढ़ाएगा जिससे वह प्रभु के सम्मुख ग्रहण
किया जाए। 4 वह अग्नि-बलि के पशु के सिर
पर अपना हाथ रखेगा, और अग्नि-बलि उसके
प्रायश्चित्त के रूप में ग्रहण की जाएगी। 5 वह
बछड़े को प्रभु के सम्मुख बलि करेगा। तब
पुरोहित, हारून के पुत्र, रक्त को निकट
लाकर, मिलन-शिविर के द्वार पर स्थित वेदी
के चारों ओर उसको छिड़केंगे। 6 वह अग्नि-
बलि के पशु की खाल उतार लेगा और मांस
के टुकड़े-टुकड़े करेगा। 7 पुरोहित हारून के
पुत्र, वेदी पर अग्नि प्रज्वलित करेंगे, और
अग्नि पर लकड़ी सजाकर रखेंगे। 8 वे वेदी की
अग्नि पर रखी हुई लकड़ी के ऊपर सिर और
चर्बी सहित उन टुकड़ों को सजाकर रखेंगे;
9 पर वह पशु की अंतड़ियों और पैरों को जल
से धोएगा। पुरोहित अग्नि-बलि के लिए, प्रभु

1 : 1 नि 25 : 22 1 : 3 लेव 22 : 20 1 : 4 यश 53 : 4; 2 कुर 5 : 21 1 : 5 लेव 17 : 11; यहेज 44 : 11

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

को अग्नि में अर्पित सुखद सुगन्ध के रूप में,
सम्पूर्ण बलि को वेदी पर जलाएगा।
10 'यदि वह रेवड़ में से भेड़ अथवा बकरों
की अग्नि-बलि चढ़ाता है तो उसे निष्कलंक
नर पशु चढ़ाना होगा। [11]वह उसको प्रभु के
सम्मुख वेदी के उत्तरी भाग में बलि करेगा।
पुरोहित, हारून के पुत्र, उसके रक्त को वेदी
के चारों ओर छिड़केंगे। [12]वह उसके टुकड़े-
टुकड़े करेगा, उसके सिर और चर्बी को
अलग-अलग करेगा। पुरोहित वेदी की अग्नि
पर रखी हुई लकड़ी के ऊपर उन टुकड़ों को
सजाकर रखेगा; [13]पर वह पशु की अंतड़ियों
और पैरों को जल से धोएगा। पुरोहित सम्पूर्ण
बलि को चढ़ाएगा, और वेदी पर उसको
जलाएगा। यह अग्नि-बलि प्रभु को अग्नि में
अर्पित सुखद सुगन्ध है।
14 'यदि वह प्रभु को पक्षी की अग्नि-बलि
चढ़ाता है तो चढ़ावे में पण्डुकों अथवा कबूतर
के बच्चों को चढ़ाएगा। [15]पुरोहित उसको वेदी
के निकट लाएगा और मरोड़कर उसका सिर
धड़ से अलग करेगा और उसे वेदी पर
जलाएगा। उसका रक्त वेदी की एक ओर बह
जाएगा। [16]तत्पश्चात् वह उसके मल तथा परों
को वेदी के पूर्व दिशा में, राख डालने के स्थान
में, फेंक देगा। [17]वह उसको पंखों के बीच से
फाड़ेगा; पर वह उसे पूरा अलग-अलग नहीं
करेगा। तब पुरोहित उसको वेदी की अग्नि की
लकड़ी पर रखकर जलाएगा। यह अग्नि-बलि
प्रभु को अग्नि में अर्पित सुखद सुगन्ध है।

अन्न-बलि

2 'जब कोई व्यक्ति प्रभु को अन्न-बलि का
चढ़ावा चढ़ाएगा तब उसका चढ़ावा मैदे
का होना चाहिए। वह उस पर तेल उण्डेलेगा,
और लोबान को उसपर रखेगा। [2]वह उसको
हारून के पुत्रों, अर्थात् पुरोहितों के पास
लाएगा। वह उसमें से मुट्ठी भर मैदा और तेल
एवं उसका सारा लोबान लेगा। पुरोहित इसको
अन्न-बलि के स्मरण दिलाने वाले भाग के रूप
में वेदी पर जलाएगा कि यह अन्न-बलि प्रभु को
अग्नि में अर्पित सुखद सुगन्ध ठहरे। [3]अन्न-बलि
का शेष भाग हारून और उसके पुत्रों का होगा।
यह प्रभु को अग्नि में अर्पित अनेक बलियों का
परम पवित्र भाग है।
4 'जब तू अन्न-बलि के लिए तन्दूर में
पकाया हुआ चढ़ावा चढ़ाएगा, तब वह तेल
सम्मिश्रित मैदे की गूंधी हुई बेखमीर रोटियों
अथवा तेल से चुपड़ी हुई चपातियों का होगा।
[5]यदि तेरा चढ़ावा तवे पर सिंकी हुई अन्न-बलि
है तो वह तेल सम्मिश्रित बेखमीर मैदे का होना
चाहिए। [6]तू उसको टुकड़े-टुकड़े कर उसपर
तेल उण्डेलना। यह अन्न-बलि है।
7 'यदि तेरा चढ़ावा कड़ाही में तली हुई
अन्न-बलि है, तो वह तेल सम्मिश्रित मैदे का
होना चाहिए। [8]तू इन वस्तुओं से बनी हुई अन्न-
बलि प्रभु के पास लाना। जब वह पुरोहित के
पास लाई जाएगी, तब वह उसको वेदी के
निकट ले जाएगा। [9]पुरोहित अन्न-बलि में से
स्मरण दिलाने वाला भाग निकालकर वेदी पर
जलाएगा कि यह अन्न-बलि प्रभु को अग्नि में
अर्पित सुखद सुगन्ध ठहरे। [10]अन्न-बलि का
शेष भाग हारून और उसके पुत्रों का होगा। यह
प्रभु को अग्नि में अर्पित अनेक बलियों का
परम पवित्र भाग है।
11 'जो अन्न-बलियां तू प्रभु को चढ़ाएगा,
वे खमीर से नहीं बनाई जाएंगी। तू प्रभु को
अग्नि में अर्पित बलि के रूप में खमीर अथवा
मधु कभी नहीं जलाना। [12]तू उनको प्रथम फल
के चढ़ावे के रूप में प्रभु को चढ़ाना; किन्तु वे
सुखद सुगन्ध के लिए वेदी पर नहीं चढ़ाए
जाएंगे। [13]तू अपनी सब अन्न-बलि को नमक
से नमकीन बनाना। तेरी प्रत्येक अन्न-बलि तेरे
परमेश्वर के विधान के नमक* से वंचित नहीं
होनी चाहिए। तू अपनी सब अन्न-बलि के साथ
नमक चढ़ाना।
14 'यदि तू प्रभु को प्रथम फल की अन्न-बलि
चढ़ाएगा, तो अपनी प्रथम फल की अन्न-बलि

---

* अलंघनीय विधान का प्रतीक।

1 : 17 उत 15 : 10 गण 2 : 1-16 गण 15 : 1-16 2 : 13 मक 9 : 49; गण 18 : 19

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

के लिए हरी बालों को मींजकर नए दाने निका-
लना, और उन्हें अग्नि में भूंजकर चढ़ाना। 15तू
उस पर तेल डालना और लोबान को उस पर
रखना। यह अन्न-बलि है। 16पुरोहित मींजकर
निकाले हुए कुछ दाने, तेल और उसके सारे
लोबान को स्मरण दिलानेवाले भाग के रूप में
जलाएगा। यह प्रभु को अग्नि में अर्पित बलि है।

सहभागिता-बलि

3 'यदि कोई व्यक्ति सहभागिता-बलि
चढ़ाता है, और वह गाय-बैल में से नर
अथवा मादा पशु चढ़ाता है तो वह प्रभु के
सम्मुख निष्कलंक पशु को चढ़ाएगा। 2वह अपने
चढ़ावे के पशु के सिर पर अपना हाथ रखेगा,
और मिलन-शिविर के द्वार पर उसको बलि
करेगा। तब पुरोहित, हारून के पुत्र, वेदी के
चारों ओर रक्त को छिड़केंगे।

3 'वह सहभागिता-बलि में से, प्रभु को अग्नि
में अर्पित बलि के रूप में यह चढ़ाएगा : अर्थात्
अंतड़ियों को ढांपनेवाली चर्बी तथा अंतड़ियों
के ऊपर लिपटी हुई चर्बी, 4दोनों गुरदे, और
उनके ऊपर की चर्बी, जो कमर के पास रहती
है तथा गुरदों सहित कलेजे के ऊपर से निकाली
हुई झिल्ली। 5हारून के पुत्र इसको वेदी की
अग्नि-बलि की अग्नि के ऊपर रखी हुई
लकड़ी पर जलाएंगे। वह सहभागिता-बलि
प्रभु को अग्नि में अर्पित सुखद सुगन्ध है।

6 'यदि प्रभु की सहभागिता-बलि के लिए
उसका चढ़ावा भेड़-बकरियों के रेवड़ में से नर
अथवा मादा पशु है तो वह निष्कलंक पशु को
ही चढ़ाएगा। 7यदि वह चढ़ावे में मेमना चढ़ाता
है तो वह प्रभु के सम्मुख उसको चढ़ाएगा।
8वह अपने चढ़ावे के पशु के सिर पर अपना
हाथ रखेगा और मिलन-शिविर के सम्मुख
उसको बलि करेगा। तब हारून के पुत्र वेदी के
चारों ओर उसके रक्त को छिड़केंगे। 9वह
सहभागिता-बलि में से, प्रभु को अग्नि में
अर्पित बलि के रूप में चर्बी चढ़ाएगा। वह
चर्बी भरी मोटी पूंछ को रीढ़ के पास से अलग
करेगा, अंतड़ियों को ढांपनेवाली चर्बी तथा
अंतड़ियों के ऊपर लिपटी हुई चर्बी, 10दोनों गुरदे
और उनके ऊपर की चर्बी जो कमर के पास
रहती है, तथा गुरदों सहित कलेजे के ऊपर से
निकाली हुई झिल्ली, 11पुरोहित इनको वेदी पर
जलाएगा। यह सहभागिता-बलि प्रभु को
अग्नि में अर्पित आहार है।

12 'यदि उसका चढ़ावा बकरा अथवा
बकरी है, तो वह प्रभु के सम्मुख उसको
चढ़ाएगा। 13वह उसके सिर पर अपना हाथ
रखेगा, और मिलन-शिविर के सम्मुख उसको
बलि करेगा। तब हारून के पुत्र वेदी के चारों
ओर उसके रक्त को छिड़केंगे। 14वह उसमें से
अपना यह चढ़ावा प्रभु को अग्नि में चढ़ाएगा:
अंतड़ियों को ढांपने-वाली चर्बी तथा अंतड़ियों
के ऊपर लिपटी हुई चर्बी, 15दोनों गुरदे और
उनके ऊपर की चर्बी, जो कमर के पास रहती
है तथा गुरदों सहित कलेजे के ऊपर से निकाली
हुई झिल्ली। 16पुरोहित इनको वेदी पर जलाएगा।
यह आहार प्रभु को अग्नि में अर्पित सुखद
सुगन्ध है। सब चर्बी प्रभु की ही है। 17यह तुम्हारी
पीढ़ी से पीढ़ी तक, तुम्हारे समस्त निवास-
स्थानों में चिरस्थायी संविधि होगी कि तुम
चर्बी और रक्त नहीं खाओगे।'

पाप-बलि

4 प्रभु मूसा से बोला, 2'तू इस्राएली समाज से
बोलना : यदि कोई व्यक्ति अनजाने में प्रभु
की आज्ञा के विरुद्ध उन कार्यों में से किसी कार्य
को करता है, जिन्हें प्रभु ने मना किया और यों
पाप करता है, 3और जो व्यक्ति पाप करता है,
यदि वह अभ्यंजित पुरोहित है, तो वह प्रजा को
भी दोषी बनाता है। ऐसा व्यक्ति अपने पाप के
लिए, जो उसने किया है, प्रभु को एक
निष्कलंक बछड़ा पाप-बलि के रूप में चढ़ाएगा।
4वह मिलन-शिविर के द्वार पर, प्रभु के सम्मुख
बछड़े को लाएगा, और उसके सिर पर अपना
हाथ रखेगा तथा प्रभु के सम्मुख उसको बलि
करेगा। 5अभ्यंजित पुरोहित बछड़े का कुछ
रक्त लेगा, और उसको मिलन-शिविर में
लाएगा। 6पुरोहित अपनी अंगुली रक्त में डुबाएगा

---

3 : 1-17 लेव 7 : 11-18; 19 : 5-8; 1 कुर 10 : 18 4 : 2-12 गण 15 : 27-29 4 : 5 इब्र 9 : 13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और उसका कुछ अंश प्रभु के सम्मुख, पवित्र
स्थान के अन्त:पट के आगे सात बार छिड़केगा।
7तत्पश्चात् पुरोहित रक्त का कुछ अंश मिलन-
शिविर में स्थित सुगन्धित धूप की वेदी के सींगों
पर, प्रभु के सम्मुख लगाएगा। वह बछड़े का
शेष रक्त मिलन-शिविर के द्वार पर अग्नि-
बलि की वेदी की आधार-पीठिका में उण्डेल
देगा। 8वह पाप-बलि के बछड़े की यह सब
चर्बी उससे अलग करेगा : अंतड़ियों को ढांपने
वाली चर्बी, अंतड़ियों के ऊपर लिपटी हुई
चर्बी, 9दोनों गुरदे और उनके ऊपर की चर्बी,
जो कमर के पास रहती है, और गुरदों सहित
कलेजे के ऊपर की झिल्ली। 10(सारी चर्बी को
वह ऐसे अलग करे, जैसे सहभागिता-बलि के
चढ़ावे के बैल से अलग की जाती है।) पुरोहित
अग्नि-बलि की वेदी पर उसको जलाएगा।
11किन्तु बछड़े की खाल, उसका सारा मांस,
सिर, पैर, अंतड़ियां, गोबर, 12अर्थात् सारे बछड़े
के शेष अंश को वह पड़ाव के बाहर शुद्ध स्थान
में, जहां राख डाली जाती है, ले जाकर
लकड़ियों की अग्नि में जलाएगा। जहाँ राख
डाली जाती है, वहीं वह जलाया जाएगा।

13 'यदि सम्पूर्ण इस्राएली मण्डली अनजाने
में पाप करे, और वह बात धर्मसभा की आँखों
से छिपी हो और वे उन कार्यों में से, जिन्हें प्रभु
ने मना किया, कोई कार्य करने के कारण दोषी
ठहरें, 14तो जब पाप, जो उन्होंने किया है,
विदित हो जाता है तब धर्मसभा एक बछड़ा
पाप-बलि के रूप में चढ़ाएगी। वह उसे
मिलन-शिविर में लाएगी। 15मण्डली के धर्मवृद्ध
प्रभु के सम्मुख बछड़े के सिर पर अपना हाथ
रखेंगे और बछड़ा वेदी के सम्मुख बलि किया
जाएगा। 16अभ्यंजित पुरोहित बछड़े का कुछ
रक्त मिलन-शिविर में लाएगा। 17पुरोहित अपनी
अंगुली रक्त में डुबाएगा और प्रभु के सम्मुख
अन्त:पट के आगे सात बार उसको छिड़केगा।
18वह रक्त का कुछ अंश प्रभु के सम्मुख
मिलन-शिविर में स्थित वेदी के सींगों पर
लगाएगा। वह शेष रक्त को अग्नि-बलि की
वेदी, जो मिलन-शिविर के द्वार पर है, की
आधार-पीठिका में उण्डेल देगा। 19वह उसकी
सब चर्बी उससे अलग करके वेदी पर जलाएगा।
20वह बछड़े के साथ वैसा ही करेगा जैसा उसने
पाप-बलि के बछड़े के साथ किया था।
पुरोहित लोगों के लिए प्रायश्चित करेगा और
वे क्षमा प्राप्त करेंगे। 21वह बछड़े को पड़ाव के
बाहर ले जाएगा। जैसा उसने पहले बछड़े को
जलाया था, वैसा इसको भी जलाएगा। यह
धर्मसभा की पाप-बलि है।

22 'यदि कोई मुखिया पाप करे, अनजाने
में उन कार्यों में से किसी कार्य को करे जिन्हें
प्रभु परमेश्वर ने मना किया और यों वह दोषी
ठहरे, 23जब पाप, जो उसने किया है, उस पर
विदित किया जाए, तो वह अपने चढ़ावे के रूप
में एक निष्कलंक बकरा लाएगा। 24वह बकरे
के सिर पर अपना हाथ रखेगा, और जहाँ वे
अग्नि-बलि के पशु को प्रभु के सम्मुख बलि
करते हैं वहां, उस स्थान पर, उसको बलि
करेगा। यह पाप-बलि है। 25तब पुरोहित अपनी
अंगुली से पाप-बलि के पशु का कुछ रक्त
लेगा, और उसे अग्नि-बलि की वेदी के सींगों
पर लगाएगा। वह शेष रक्त को अग्नि-बलि
की वेदी की आधार-पीठिका में उण्डेल देगा।
26वह सहभागिता-बलि की चर्बी के सदृश
सब चर्बी को वेदी पर जलाएगा। इस प्रकार
पुरोहित मुखिया के हेतु, उसके पाप के निमित्त
प्रायश्चित करेगा और उसे क्षमा प्राप्त होगी।

27 'यदि कोई सामान्य व्यक्ति अनजाने में
पाप करे, उन कार्यों में से किसी कार्य को करे
जिन्हें प्रभु ने मना किया और यों वह दोषी ठहरे,
28जब उसका पाप, जो उसने किया है, उस पर
विदित किया जाए, तो वह चढ़ावे के रूप में
अपने पाप के लिए, जिसे उसने किया है, एक
निष्कलंक बकरी लाएगा । 29वह पाप-बलि
के पशु के सिर पर अपना हाथ रखेगा और
अग्नि-बलि के स्थान पर पाप-बलि के पशु को
बलि करेगा। 30पुरोहित अपनी अंगुली से उसका
कुछ रक्त लेगा और उसे अग्नि-बलि की वेदी

4 : 23-26 गण 15 : 22-26 4 : 24 गण 15 : 27

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

के सींगों पर लगाएगा। वह शेष रक्त को वेदी
की आधार-पीठिका में उण्डेल देगा। 31जैसे
सहभागिता-बलि के पशु की चर्बी निकाली
जाती है, वैसे ही वह उसकी सब चर्बी
निकालेगा। पुरोहित प्रभु के लिए सुखद सुगन्ध
के हेतु चर्बी को वेदी पर जलाएगा। पुरोहित
उस व्यक्ति के लिए प्रायश्चित करेगा और उसे
क्षमा प्राप्त होगी।

32 'यदि वह सामान्य व्यक्ति पाप-बलि के
लिए चढ़ावे में मेमना लाता है, तो वह
निष्कलंक मादा मेमना लाएगा। 33वह पाप-
बलि के पशु के सिर पर अपना हाथ रखेगा,
और जहां वे अग्नि-बलि का पशु बलि करते
हैं, वहां, उस स्थान पर, पाप-बलि के लिए
उसको बलि करेगा। 34पुरोहित अपनी अंगुली
से पाप-बलि का कुछ रक्त लेगा और उसे
अग्नि-बलि की वेदी के सींगों पर लगाएगा।
वह शेष रक्त को वेदी की आधार-पीठिका में
उण्डेल देगा। 35जैसे सहभागिता-बलि के मेमने
की चर्बी निकाली जाती है वैसे ही वह उसकी
सब चर्बी निकालेगा। पुरोहित प्रभु को अग्नि
में अर्पित अन्य बलि के अनुसार उसको भी
वेदी पर जलाएगा। पुरोहित उस व्यक्ति के हेतु
उसके पाप के निमित्त, जो उसने किया है,
प्रायश्चित्त करेगा और उसे क्षमा प्राप्त होगी।

5 'यदि कोई व्यक्ति साक्षी होकर ऐसा पाप
करता है कि शपथ खिलाकर पूछने पर कि
"क्या तुमने यह देखा है," अथवा "क्या तुम
यह जानते हो?" वह बात को प्रकट नहीं करता
है, तो उसे अपने अधर्म का भार स्वयं वहन
करना पड़ेगा। 2अथवा यदि कोई व्यक्ति किसी
अशुद्ध वस्तु को, चाहे वह अशुद्ध वनपशु
अशुद्ध पालतू पशु या अशुद्ध रेंगनेवाले जीव-
जन्तु की लोथ हो, स्पर्श करता है और उससे
यह बात छिपी रहती है तो वह अशुद्ध और
दोषी हो जाएगा। 3अथवा यदि वह किसी
अशुद्ध मनुष्य को स्पर्श करता है, चाहे वह
अशुद्धता किसी भी प्रकार की हो, जिसको
स्पर्श कर व्यक्ति अशुद्ध हो जाता है, और
उससे यह बात छिपी रहती है तो जब उसे यह
ज्ञात होगा तब वह दोषी हो जाएगा। 4अथवा
यदि कोई व्यक्ति बिना विचार किए भला-बुरा
करने की शपथ खाता है, बिना विचार किए
कोई भी शपथ खाता है, और उससे यह बात
छिपी रहती है, तो जब उसे यह ज्ञात होगी तब
वह दोषी हो जाएगा। 5यदि कोई व्यक्ति इन
बातों में से किसी एक के कारण दोषी बनता
है, तो वह अपने पाप को स्वीकार करेगा, जिसे
उसने किया है। 6जो पाप उसने किया है, उसके
कारण वह प्रभु के सम्मुख अपनी दोष-बलि
लाएगा। वह पाप-बलि के लिए रेवड़ में से एक
मादा मेमना अथवा बकरी लाएगा। पुरोहित
उस व्यक्ति के हेतु उसके पाप के निमित्त
प्रायश्चित्त करेगा।

7 'यदि वह मेमना या बकरी चढ़ाने में
असमर्थ है, तो जो पाप उसने किया है, उसके
कारण वह प्रभु के सम्मुख अपनी दोष-बलि
के रूप में दो पण्डुक या कबूतर के दो बच्चे
लाएगा: उनमें से एक बच्चा पाप-बलि के लिए
और दूसरा अग्नि-बलि के लिए। 8वह उनको
पुरोहित के पास लाएगा। पुरोहित पाप-बलि के
पक्षी को पहले चढ़ाएगा। वह उसका सिर
गरदन के पास से मरोड़ देगा, पर उसे अलग
नहीं करेगा। 9वह पाप-बलि का कुछ रक्त वेदी
की एक ओर छिड़केगा, परन्तु शेष रक्त वेदी
की आधार-पीठिका में बहाया जाएगा। यह
पाप-बलि है। 10तत्पश्चात् वह दूसरे पक्षी को
विधि के अनुसार अग्नि-बलि में चढ़ाएगा।
पुरोहित उस व्यक्ति के हेतु, उसके पाप के
निमित्त, जो उसने किया है, प्रायश्चित करेगा
और उसे क्षमा प्राप्त होगी।

11 'यदि वह दो पण्डुक या कबूतर के दो
बच्चे चढ़ाने में असमर्थ है तो, जो पाप उसने
किया है, उसके कारण वह प्रभु के सम्मुख
अपनी पाप-बलि के रूप में एक किलो* मैदा
लाएगा। वह उस पर तेल नहीं डालेगा। वह उस

---

* मूल में, 'एपा का दसवाँ भाग'।

5 : 1 नीति 29 : 24

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पर लोबान भी नहीं रखेगा; क्योंकि यह पाप-
बलि है। 12वह उसको पुरोहित के पास लाएगा।
पुरोहित उसमें से मुट्ठी भर मैदा स्मरण दिलाने
वाले भाग के रूप में, प्रभु को अग्नि में अर्पित
बलियों के ऊपर, वेदी पर जलाएगा। यह पाप-
बलि है। 13पुरोहित उस व्यक्ति के पाप के
लिए, जो उसने इन बातों में से किसी एक बात
में किया है प्रायश्चित्त करेगा, और उसे क्षमा
प्राप्त होगी। शेष भाग अन्न-बलि के सदृश
पुरोहित का होगा।'

दोष-बलि

14 प्रभु मूसा से बोला, 15'यदि कोई व्यक्ति
विश्वास-भंग करता है और प्रभु की किसी
पवित्र भेंट के सम्बन्ध में अनजाने में पाप करता
है, तो वह अपनी दोष-बलि के रूप में रेवड़
से एक निष्कलंक मेढ़ा प्रभु के पास लाएगा।
उसका मूल्य पवित्र स्थान की तौल के अनुसार
चांदी के सिक्के में निश्चित किया जाएगा। यह
दोष-बलि है। 16जो पाप उसने पवित्र भेंट के
सम्बन्ध में किया है, उसकी क्षति-पूर्ति भी वह
करेगा। वह इसमें पांचवाँ भाग जोड़कर पुरोहित
को देगा। पुरोहित दोष-बलि में मेढ़ा चढ़ाकर
उसके हेतु प्रायश्चित करेगा, और उसे क्षमा
प्राप्त होगी।

17 'यदि कोई व्यक्ति पाप करे, वह उन
कार्यों में से किसी कार्य को करे जिन्हें प्रभु ने
मना किया, यद्यपि वह यह नहीं जानता है, तो
भी दोषी होगा और उसे अपने अधर्म का भार
स्वयं वहन करना पड़ेगा। 18वह रेवड़ में से एक
निष्कलंक मेढ़ा पुरोहित के पास लाएगा। मेढ़ा
उतने ही मूल्य का होगा, जितना पुरोहित+
दोष-बलि का निश्चित करेगा। जो भूल उसने
अनजाने में की है, उसके कारण पुरोहित उसके
निमित्त प्रायश्चित्त करेगा, और उसे क्षमा प्राप्त
होगी। 19यह दोष-बलि है। वह व्यक्ति निश्चय
ही प्रभु के सम्मुख दोषी था।'

6 ** प्रभु मूसा से बोला, 2'यदि कोई व्यक्ति
पाप करता है, धरोहर अथवा अमानत के
सम्बन्ध में या चोरी के द्वारा अपने देश-भाई
अथवा बहिन को धोखा देकर प्रभु के प्रति
विश्वास-भंग करता है, अथवा यदि उसने
अपने देश-भाई अथवा बहिन पर अत्याचार
किया है, 3या खोई हुई वस्तु को पाकर उसके
विषय में झूठ बोला है, झूठी शपथ खाई है,
अर्थात् इन समस्त कार्यों में से एक कार्य भी
करने के कारण पाप करता है, 4तो जब वह पाप
करके दोषी हो जाता है तब जो उसने लूटा था,
अथवा अत्याचार करके प्राप्त किया था, या
उसके पास रखी गई धरोहर, अथवा खोई हुई
वस्तु जो उसने पाई थी; 5या जिस वस्तु के
विषय में उसने झूठी शपथ खाई थी, इन सबको
वह लौटाएगा। वह इनकी पूरी-पूरी क्षति-पूर्ति
करेगा, और उसमें पांचवां भाग जोड़कर अपनी
दोष-बलि के दिन उस व्यक्ति को देगा,
जिसको वह देय है। 6वह अपनी दोष-बलि के
रूप में रेवड़ में से एक निष्कलंक मेढ़ा पुरोहित
के पास प्रभु के सम्मुख लाएगा। मेढ़ा उतने
ही मूल्य का होगा जितना पुरोहित दोष-बलि
का निश्चित करेगा। 7पुरोहित उस व्यक्ति के
हेतु प्रभु के सम्मुख प्रायश्चित्त करेगा; इन
समस्त कार्यों में से उस एक कार्य के लिए
जिसके द्वारा वह दोषी हो गया था, उसे क्षमा
प्राप्त होगी।'

विविध बलि के भिन्न-भिन्न नियम

8* प्रभु मूसा से बोला, 9'हारून और उसके
पुत्रों को यह आदेश दे : यह अग्नि-बलि की
व्यवस्था है। अग्नि-बलि भट्टी के ऊपर रातभर
तथा सबेरे तक वेदी पर रहेगी। वेदी की अग्नि
उसमें जलती रहेगी। 10पुरोहित अपना सूती
वस्त्र तथा शरीर पर सूती जांघिया पहिनेगा।
तत्पश्चात् वह वेदी पर की राख, जो अग्नि के
द्वारा अग्नि-बलि को भस्म करके बनी है,
उठाएगा और उसे वेदी की एक ओर रखेगा।
11तदुपरान्त वह अपने ये वस्त्र उतार कर दूसरे
वस्त्र पहनेगा और राख को पड़ाव के बाहर
किसी शुद्ध स्थान पर ले जाएगा। 12वेदी पर

+ शब्दश: तू ** मूल में अध्याय 5 : 20 * मूल में अध्याय 6 : 1

5 : 15 नि 30 : 13 **6 : 1-7** नि 22 : 7-15; गण 5 : 5-8 **6 :12** 2 रा 16 :15; यहेज 46 :13; 2 मक 1 : 18-36

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अग्नि निरन्तर जलती रहेगी; वह कभी न बुझने पाए। पुरोहित प्रतिदिन सबेरे उसपर लकड़ी जलाएगा, और अग्नि-बलि के टुकड़े उस पर सजाकर रखेगा। वह सहभागिता-बलि की चर्बी उस पर जलाएगा। 13वेदी पर अग्नि निरन्तर जलती रहेगी; वह कभी न बुझने पाए।

14 'यह अन्न-बलि की व्यवस्था है : हारून के पुत्र उसको वेदी के सामने, प्रभु के सम्मुख चढ़ाएंगे। 15उनमें से एक पुत्र अन्न-बलि का मुट्ठी भर तेल-सम्मिश्रित मैदा तथा अन्न-बलि के ऊपर रखा हुआ सारा लोबान लेगा, और इसको अन्न-बलि के स्मरण दिलाने वाले भाग के रूप में वेदी पर जलाएगा कि यह प्रभु को सुखद सुगन्ध हो। 16हारून और उसके पुत्र उसका शेष भाग खाएंगे। वह बिना खमीर डाले पवित्र स्थान में खाया जाएगा। वे उसको मिलन-शिविर के आंगन में खाएंगे। 17वह खमीर के साथ नहीं पकाया जाएगा। यह भाग मैंने अग्नि में अर्पित अपनी बलियों में से उनको प्रदान किया है। यह पाप-बलि तथा दोष-बलि के सदृश परम पवित्र है। 18हारून के वंश के सब पुरुष उसको खा सकते हैं। यह तुम्हारी पीढ़ी से पीढ़ी तक स्थायी संविधि है कि प्रभु को अग्नि में अर्पित बलियों में से यह भाग पुरोहितों का होगा। जो बलि को स्पर्श करेगा, वह पवित्र हो जाएगा।'

19 प्रभु मूसा से बोला, 20'जिस दिन हारून का पुरोहित पद पर अभ्यंजन किया जाएगा उस दिन वह अपने पुत्रों के साथ प्रभु को यह चढ़ावा चढ़ाएगा : एक किलो मैदा अन्न-बलि में निरन्तर चढ़ाएगा; उसका आधा भाग सबेरे और आधा भाग सन्ध्या के समय चढ़ाएगा। 21वह तवे पर तेल में पकाया जाएगा। जब वह तेल में तर हो जाए तब अन्न-बलि के पके हुए टुकड़े के रूप में उसे लाना, और प्रभु के लिए सुखद सुगन्ध के हेतु चढ़ाना। 22हारून के पुत्रों में से जो पुरोहित उसके स्थान पर अभ्यंजित होगा, वह भी स्थायी संविधि के अनुसार प्रभु को उसे अर्पित करेगा; उसका सम्पूर्ण भाग जलाया जाएगा। 23पुरोहित की सब अन्न-बलि पूर्णतः जलाई जाएगी। वह कभी नहीं खाई ज़ाएगी।'

24 प्रभु मूसा से बोला, 25'तू हारून और उसके पुत्रों से बोलना, यह पाप-बलि की व्यवस्था है : जिस स्थान पर अग्नि-बलि के पशु का वध किया जाता है, उसी स्थान पर प्रभु के सम्मुख पाप-बलि के पशु का वध किया जाएगा। वह बलि परम पवित्र है। 26उसको पाप के निमित्त चढ़ाने वाला पुरोहित खाएगा। वह पवित्र स्थान पर,मिलन-शिविर के आंगन में खाया जाएगा। 27 जो कोई उसके मांस का स्पर्श करेगा, वह पवित्र हो जाएगा। यदि उसके रक्त के छींटे वस्त्र पर पड़ेंगे तो उस वस्त्र को जिस पर छींटे पड़ गए हैं, पवित्र स्थान पर धोना। 28जिस मिट्टी के पात्र में वह उबाला जाएगा, उसको तोड़ देना। किन्तु यदि वह कांस्य के पात्र में उबाला गया है तो वह मांजा और जल से धोया जाएगा। 29पुरोहितों के परिवार के सब पुरुष उसको खा सकते हैं। वह परम पवित्र है। 30किन्तु जिस पाप-बलि का रक्त पवित्र-स्थान पर प्रायश्चित के लिए मिलन-शिविर में लाया गया है, वह बलि नहीं खाई जाएगी वरन् आग में जलाई जाएगी।

7 'यह दोष-बलि की व्यवस्था है : वह परम पवित्र है। 2जिस स्थान में अग्नि-बलि के पशु का वध करते हैं, उसी स्थान में दोष-बलि के पशु का वध किया जाएगा, और उसका रक्त वेदी के चारों ओर छिड़का जाएगा। 3उसकी सारी चर्बी चढ़ाई जाएगी : उसकी चर्बी भरी मोटी पूँछ, अंतड़ियों को ढांपने वाली चर्बी, 4दोनों गुरदे तथा वह चर्बी जो उनके ऊपर और कमर के पास रहती है,और गुरदों सहित कलेजे के ऊपर से निकाली हुई झल्ली। 5पुरोहित उनको वेदी पर जलाएगा। वह प्रभु को अग्नि में अर्पित दोष-बलि है। 6पुरोहितों के परिवार के समस्त पुरुष उसको खा सकते

---

6 : 25 यहेज 44 : 27

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हैं। वह पवित्र स्थान में खाई जाएगी। वह परम
पवित्र है। 7दोष-बलि, पाप-बलि के समान
है। दोनों के लिए एक ही व्यवस्था है। जो
पुरोहित उसके द्वारा प्रायश्चित करता है, वह
उसको ले लेगा। 8किसी व्यक्ति के अग्नि-
बलि के पशु को चढ़ाने वाला पुरोहित उस पशु
की खाल को स्वयं लेगा, जिसे वह चढ़ाएगा।
9तन्दूर, कड़ाही अथवा तवे पर पकी हुई प्रत्येक
अन्न-बलि चढ़ाने वाले पुरोहित की होगी, जो
उसे चढ़ाता है। 10तेल-सम्मिश्रित अथवा सूखी
प्रत्येक अनपकी अन्न-बलि हारून के सब पुत्रों
को बराबर-बराबर मिलेगी।

11 'सहभागिता-बलि की, जिसे कोई
व्यक्ति प्रभु को चढ़ाएगा, यह व्यवस्था है :
12यदि वह उसको स्तुति के हेतु चढ़ाता है तो
ऐसी स्तुति-बलि* के साथ तेल-सम्मिश्रित
बेखमीर रोटियां, तेल में चुपड़ी हुई बेखमीर
चपातियां और तेल-सम्मिश्रित मैदे की पूरियां
चढ़ाएगा। 13वह स्तुति के लिए अर्पित
सहभागिता-बलि के पशु के साथ अपने चढ़ावे
के अतिरिक्त खमीरी रोटियां भी लाएगा। 14वह
ऐसे सब चढ़ावों में अर्पित वस्तुओं में से एक-
एक रोटी चढ़ाएगा। यह प्रभु की भेंट होगी। यह
सहभागिता-बलि पशु का रक्त छिड़कने वाले
पुरोहित को प्राप्त होगी। 15स्तुति के लिए अर्पित
सहभागिता-बलि के पशु का मांस चढ़ावे के
दिन खाया जाएगा। वह उसका कुछ भी भाग
सबेरे तक नहीं छोड़ेगा। 16यदि उसके चढ़ावे
का बलि-पशु, मन्नत-बलि अथवा स्वेच्छा-
बलि का है तो जिस दिन वह अपनी बलि को
चढ़ाता है, उसी दिन बलि-मांस खाया जाएगा।
जो उसमें से बचेगा, वह दूसरे दिन खाया
जाएगा। 17किन्तु तीसरे दिन बलि-मांस का
अवशेष अग्नि में जलाया जाएगा। 18तीसरे दिन
सहभागिता-बलि के पशु का मांस खाने वाला,
उसको चढ़ाने वाला व्यक्ति ग्रहण नहीं किया
जाएगा, और न उसका फल ही उसको
मिलेगा। यह अखाद्य वस्तु होगी। उसको
खानेवाला व्यक्ति अपने अधर्म का भार स्वयं
वहन करेगा।

19 'वह मांस, जिसका अशुद्ध वस्तु से स्पर्श
हो जाए, नहीं खाया जाएगा। उसे अग्नि में
जलाया जाएगा। जो व्यक्ति शुद्ध हैं, वे ही
बलि-मांस खा सकते हैं। 20किन्तु यदि कोई
प्रभु को अर्पित सहभागिता बलि के पशु का
मांस खाता है और वह अशुद्ध है तो वह व्यक्ति
भी अपने लोगों के मध्य से नष्ट+ किया जाएगा।
21यदि कोई व्यक्ति अशुद्ध वस्तु का स्पर्श करता
है, फिर चाहे वह मनुष्य की अशुद्धता हो, अथवा
अशुद्ध पशु या कोई घृणित तथा अशुद्ध वस्तु
हो, और प्रभु को अर्पित सहभागिता-बलि के
पशु का मांस खाता है तो वह व्यक्ति भी अपने
लोगों के मध्य से नष्ट किया जाएगा।'

22 प्रभु मूसा से बोला, 23 'इस्राएली समाज
से बोलना : तुम बैल, भेड़ अथवा बकरी की
चर्बी नहीं खाओगे। 24स्वाभाविक मृत्यु से मरे
पशु की चर्बी एवं हिंस्र पशु के फाड़े गए पशु
की चर्बी का अन्य काम में उपयोग किया जा
सकता है; किन्तु तुम उसको कदापि मत खाना।
25प्रभु को अग्नि में अर्पित चढ़ावे के पशु की
चर्बी खानेवाला प्रत्येक व्यक्ति अपने लोगों के
मध्य से नष्ट किया जाएगा। 26तुम अपने निवास-
स्थानों में न तो पक्षी का और न पशु ही का
रक्तपान करोगे। 27प्रत्येक व्यक्ति, जो रक्तपान
करेगा, वह अपने लोगों के मध्य से नष्ट किया
जाएगा।'

28 प्रभु मूसा से बोला, 29 'इस्राएली समाज
से बोलना : प्रभु को सहभागिता-बलि का पशु
चढ़ाने वाला व्यक्ति अपना चढ़ावा प्रभु के पास
लाएगा, और अपने सहभागिता-बलि-पशु के
मांस में से 30अपने हाथ में प्रभु को अग्नि में
अर्पित करने के लिए वक्ष सहित चर्बी लाएगा;
वह वक्ष इसलिए लाएगा कि उसे लहर-बलि
के रूप में प्रभु के सम्मुख लहराया जा सके।
31पुरोहित चर्बी को वेदी पर जलाएगा, किन्तु
वक्ष हारून और उसके पुत्रों का होगा। 32तुम

---

* अथवा, 'धन्यवाद बलि' + अथवा, 'अलग', 'बहिष्कृत'।

7 : 26 उत 9 : 4; लेव 17 : 10-14; व्य 12 : 16

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अपनी सहभागिता-बलि के पशु की दाहिनी
जांघ भी चढ़ावे के रूप में पुरोहित को देना।
33सहभागिता-बलि-पशु के रक्त एवं चर्बी को
चढ़ाने वाला हारून का पुत्र अपने भाग में
दाहिनी जांघ प्राप्त करेगा। 34मैंने इस्राएली समाज
से लहर-बलि का वक्ष एवं अर्पण की जांघ
उनकी सहभागिता-बलियों में से ली है, और
उनको पुरोहित हारून और उसके पुत्रों को
प्रदान किया है जिससे वह इस्राएली समाज की
ओर से स्थायी देयभाग के रूप में उन्हें मिलता
रहे। 35जिस दिन हारून और उसके पुत्र प्रभु के
लिए पुरोहित का कार्य करने के लिए अर्पित
किए गए, उसी दिन से प्रभु को अग्नि में अर्पित
बलि में से उनका यह भाग पवित्र किया गया
है। 36जिस दिन उनका पुरोहित पद पर अभ्यंजन
किया गया, उसी दिन प्रभु ने इस्राएली समाज
को यह भाग देने का आदेश दिया। यह उनकी
पीढ़ी से पीढ़ी के लिए स्थायी संविधि है।'
37 यह अग्नि-बलि, अन्न-बलि, पाप-
बलि, दोष-बलि, पुरोहित की प्रतिष्ठान-बलि
और सहभागिता-बलि की व्यवस्था है,
38जिसका आदेश प्रभु ने सीनय पर्वत पर मूसा
को उस दिन दिया था, जब उसने इस्राएली
समाज को आज्ञा दी थी कि वे लोग अपना-
अपना चढ़ावा प्रभु को सीनय के निर्जन प्रदेश
में चढ़ाएं।

हारून और उसके पुत्रों का अभ्यंजन

8 प्रभु मूसा से बोला, 2'तू हारून और उसके
साथ उसके पुत्र, उनकी पोशाकें, अभ्यंजन
का तेल, पाप-बलि का बछड़ा, दो मेढ़े और
बेखमीर रोटी की टोकरी ले; 3और सब मण्डली
को मिलन-शिविर के द्वार पर एकत्र कर।'
4जैसी प्रभु ने मूसा को आज्ञा दी, उन्होंने वैसा
ही किया। मण्डली मिलन-शिविर के द्वार पर
एकत्र हुई। 5मूसा ने मण्डली से कहा, 'जो कार्य
करने का आदेश प्रभु ने दिया, वह यह है।'
6मूसा हारून और उसके पुत्रों को निकट लाए
और उन्होंने उनको जल से स्नान कराया।
7उन्होंने हारून को कुरता पहनाया, और कुरते
को कमरबन्द से कस दिया। उसे अंगरखा
पहनाया। उस के ऊपर उरावरण डाला, और
कलात्मक ढंग से बुने हुए उरावरण के पट्टे से
उसको बांधकर कस दिया। 8उसको उरपट
पहनाया और उसके भीतर ऊरीम और तुम्मीम
रख दिए। 9उसके सिर पर साफा रखा, और उस
पर सामने की ओर स्वर्ण-पुष्प अर्थात् पवित्र
किरीट-पट लगाया; जैसी प्रभु ने मूसा को
आज्ञा दी थी।
10 मूसा ने अभ्यंजन का तेल लिया, और
निवास-स्थान एवं उसमें जो कुछ था, उन
सबको अभ्यंजित कर पवित्र किया। 11उन्होंने
उसमें से कुछ तेल सात बार वेदी पर छिड़का
और पवित्र करने के अभिप्राय से वेदी और
उसके सब पात्र, कण्डाल और उसकी आधार-
पीठिका को अभ्यंजित किया। 12उन्होंने
अभ्यंजन का कुछ तेल हारून के सिर पर
उण्डेला, उसे पवित्र करने के लिए उसका
अभ्यंजन किया। 13तत्पश्चात् मूसा हारून के
पुत्रों को निकट लाए। उन्हें कुरता पहनाया और
कमरबन्द बांधा। उन्हें टोपी पहनायी; जैसी प्रभु
ने मूसा को आज्ञा दी थी।
14 मूसा पाप-बलि का बछड़ा पास लाए।
हारून और उसके पुत्रों ने पाप-बलि के बछड़े
के सिर पर अपने हाथ रखे। 15तब मूसा ने
उसको बलि किया। उन्होंने उसका रक्त लिया,
और उसको अंगुली से वेदी के सींगों के चारों
ओर लगा दिया। यों उन्होंने वेदी को शुद्ध किया
और रक्त वेदी की आधार-पीठिका में उण्डेल
दिया। उसके प्रायश्चित्त के निमित्त उसको
पवित्र किया। 16उन्होंने अंतड़ियों की
चर्बी, कलेजे की झिल्ली और चर्बी सहित दोनों
गुरदों को लेकर उनको वेदी पर जलाया।
17किन्तु उन्होंने बछड़े, उसकी खाल, मांस, और
गोबर को पड़ाव के बाहर आग में जलाया;
जैसी प्रभु ने मूसा को आज्ञा दी थी।
18 तब मूसा ने अग्नि-बलि का मेढ़ा अर्पित
किया। हारून और उसके पुत्रों ने मेढ़े के सिर
पर अपने हाथ रखे। 19मूसा ने उसको बलि

8 : 1-36 नि 29 : 1-37 **8 : 12** नि 30 : 30; भज 133 : 2 **8 : 27** नि 28 : 41

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

किया, और रक्त वेदी के चारों ओर छिड़क दिया। 20 जब मेढ़े के टुकड़े किए गए, तब मूसा ने उसके सिर, उसके टुकड़ों और चर्बी को जलाया। 21 जब अंतड़ियां और पैर जल से धोए गए तब मूसा ने वेदी पर सम्पूर्ण मेढ़े को जलाया; और वह सुखद सुगन्ध, प्रभु को अग्नि में अर्पित अग्नि-बलि हो गया; जैसी प्रभु ने मूसा को आज्ञा दी थी।

22 तब मूसा ने दूसरा मेढ़ा, पुरोहित की अभिषेक-बलि का मेढ़ा, अर्पित किया। हारून और उसके पुत्रों ने मेढ़े के सिर पर अपने हाथ रखे। 23 मूसा ने उसको बलि किया, और उसका कुछ रक्त लेकर हारून के दाहिने कान की लौ पर, उसके दाहिने हाथ और दाहिने पैर के अंगूठों पर लगा दिया। 24 हारून के पुत्र निकट लाए गए। मूसा ने कुछ रक्त उनके दाहिने कान की लौ पर, उनके दाहिने हाथ और दाहिने पैर के अंगूठों पर लगाया। मूसा ने शेष रक्त वेदी के चारों ओर छिड़क दिया। 25 तत्पश्चात् उन्होंने चर्बी, चर्बी भरी मोटी पूंछ, अंतड़ियों की चर्बी, कलेजे की झिल्ली, दोनों गुरदे और उनकी चर्बी और दाहिनी जांघ ली। 26 उन्होंने प्रभु के सम्मुख रखी हुई बेखमीर रोटियों की टोकरी में से एक बेखमीर रोटी, तेल-सम्मिश्रित मैदे की एक चपाती और एक पूरी ली और उनको चर्बी एवं दाहिनी जांघ पर रख दिया। 27 मूसा ने ये वस्तुएं हारून और उसके पुत्रों के हाथों पर रखीं, और उनको लहर-बलि के लिए प्रभु के सम्मुख लहराया। 28 तत्पश्चात् मूसा ने उनको उनके हाथ से लिया और अग्नि-बलि के साथ वेदी पर जला दिया। यह अभिषेक-बलि, प्रभु को अग्नि में अर्पित सुखद सुगन्ध थी। 29 मूसा ने वक्ष लिया, और उसको लहर-बलि के लिए प्रभु के सम्मुख लहराया। यह अभिषेक-बलि के मेढ़े में से मूसा का भाग था; जैसी प्रभु ने मूसा को आज्ञा दी थी।

30 मूसा ने अभ्यंजन-तेल तथा वेदी पर रखा हुआ रक्त लिया और उन्हें हारून तथा उसकी पोशाक पर, उसके पुत्रों एवं उनकी पोशाकों पर छिड़का। इस प्रकार उन्होंने हारून तथा उसकी पोशाक और उसके पुत्रों एवं उनकी पोशाकों को पवित्र किया।

31 मूसा ने हारून और उसके पुत्रों से कहा, 'मिलन-शिविर के द्वार पर मांस उबालो, और वहीं बैठकर उसको एवं अभिषेक-बलि की टोकरी की रोटियों को खाओ, जैसा मैंने आदेश दिया था, "हारून और उसके पुत्र उसको खाएंगे"। 32 मांस और रोटियों के अवशेष को आग में जला देना। 33 तुम सात दिन तक मिलन-शिविर के द्वार से बाहर नहीं निकलोगे, जब तक तुम्हारे अभिषेक संस्कार के दिन न बीत जाएं; क्योंकि पुरोहित पद पर तुम्हारा अभिषेक करने में सात दिन लगेंगे। 34 जैसा आज किया गया, वैसा ही करने की आज्ञा प्रभु ने दी है कि तुम्हारे लिए प्रायश्चित्त किया जाए। 35 प्रभु ने जिन आज्ञाओं का पालन करने को कहा है, उनका तुम मिलन-शिविर के द्वार पर सात दिन और सात रात रहकर पालन करोगे, अन्यथा तुम मर जाओगे; क्योंकि ऐसा ही आदेश मुझे दिया गया है।' 36 हारून और उसके पुत्रों ने उन सब कार्यों को किया जिनका आदेश प्रभु ने मूसा के द्वारा दिया था।

हारून का बलि-अर्पण करना

9 मूसा ने आठवें दिन हारून, उसके पुत्रों एवं इस्राएल के धर्मवृद्धों को बुलाया। 2 मूसा ने हारून से कहा, 'तुम पाप-बलि के लिए एक निष्कलंक बछड़ा तथा अग्नि-बलि के हेतु निष्कलंक मेढ़ा लेना और प्रभु के सम्मुख उन्हें चढ़ाना। 3 तुम इस्राएली समाज से यह कहना, पाप-बलि के लिए एक बकरा, और अग्नि-बलि के लिए एक-एक वर्ष का निष्कलंक बछड़ा और मेमना लो; 4 सहभागिता-बलि में प्रभु के सम्मुख बलि करने के हेतु बैल तथा मेढ़ा एवं तेल-सम्मिश्रित मैदा की अन्न-बलि लो; क्योंकि प्रभु आज तुम्हें दर्शन देगा।' 5 जिन वस्तुओं को लाने का आदेश मूसा ने दिया था, वे उनको मिलन-शिविर के द्वार पर ले आए। सारी मण्डली निकट आई और प्रभु के सम्मुख खड़ी हो गई। 6 मूसा ने कहा, 'यह वह कार्य है जिसको करने का आदेश प्रभु ने तुम्हें दिया है;

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और तब तुम्हें प्रभु की महिमा दिखाई देगी।'
7मूसा ने हारून से कहा, 'वेदी के निकट अपनी
पाप-बलि तथा अग्नि-बलि अर्पित करो; और
अपने तथा अपने परिवार के लिए* प्रायश्चित
करो। लोगों का चढ़ावा भी चढ़ाओ और उनके
लिए प्रायश्चित्त करो; जैसी प्रभु ने आज्ञा दी
थी।'

8 हारून वेदी के निकट गया। उसने पाप-
बलि के बछड़े का वध किया, जो स्वयं हारून
के लिए था। 9हारून के पुत्रों ने उसके सम्मुख
रक्त प्रस्तुत किया। उसने रक्त में अपनी
अंगुली डुबोई और वेदी के सींगों पर उसको
लगाया। शेष रक्त वेदी की आधार-पीठिका में
उण्डेल दिया। 10उसने पाप-बलि के पशु की
चर्बी, गुरदों और कलेजे की झिल्ली को वेदी
पर जलाया; जैसी प्रभु ने मूसा को आज्ञा दी थी।
11उसने मांस और खाल को पड़ाव के बाहर
आग में जलाया। 12उसने अग्नि-बलि के पशु
का वध किया। हारून के पुत्रों ने रक्त उसके
हाथ में दिया। उसने उसको वेदी के चारों ओर
छिड़का। 13उन्होंने अग्नि-बलि-पशु के टुकड़े,
उसके सिर के साथ हारून के हाथ में दिए।
उसने उनको वेदी पर जलाया। 14उसने अंतड़ियां
तथा पैर धोए और उनको अग्नि-बलि-पशु के
साथ वेदी पर जलाया।

15 हारून ने लोगों का चढ़ावा चढ़ाया।
पाप-बलि का बकरा जो लोगों के लिए था,
उसे उसने लिया और उसका वध किया।
तत्पश्चात् उसे भी प्रथम पाप-बलि के सदृश
पाप के हेतु अर्पित किया। 16उसने अग्नि-बलि
भी चढ़ाई, और उसको विधि के अनुसार
अर्पित किया। 17उसने अन्न-बलि भी चढ़ाई।
उसने उससे अपनी मुट्ठी भरी, और प्रातःकाल
की अग्नि-बलि के अतिरिक्त इसको भी वेदी
पर जलाया।

18 उसने लोगों की सहभागिता-बलि के
बैल तथा मेढ़े का वध किया। हारून के पुत्रों
ने रक्त उसके हाथ में दिया। उसने उसको वेदी
के चारों ओर छिड़का। 19उन्होंने बैल की चर्बी,
मेढ़े की चर्बी, चर्बी भरी मोटी पूंछ, अंतड़ियों
को ढांपने वाली चर्बी, गुरदों सहित कलेजे की
झिल्ली भी उसके हाथ में दी। 20उन्होंने चर्बी
को पशुओं के वक्षों पर रखा, और उसने वेदी
पर चर्बी जलाई। 21परन्तु हारून ने वक्षों और
दाहिनी जांघ को प्रभु के सम्मुख लहर-बलि के
रूप में लहराया; जैसा मूसा ने आदेश दिया था।

22 हारून ने लोगों की ओर हाथ उठाए और
उन्हें आशीर्वाद दिया। वह पाप-बलि, अग्नि-
बलि और सहभागिता-बलि चढ़ाकर नीचे
उतर आया। 23मूसा और हारून मिलन-शिविर
में आए। जब वे बाहर निकले, उन्होंने लोगों
को आशीर्वाद दिया। तत्पश्चात् प्रभु की महिमा
सब लोगों को दिखाई दी। 24प्रभु के सम्मुख से
आग निकली और उसने अग्निबलि एवं वेदी
की चर्बी को भस्म कर दिया। यह देखकर
लोगों ने जय-जयकार किया। उन्होंने मुंह के
बल गिरकर वन्दना की।

नादब और अबीहू का पाप

10 हारून के पुत्रों, नादब और अबीहू, ने
अपना-अपना धूपदान लिया। उन्होंने
उसमें आग भरी, और उसके ऊपर धूप रखी।
तत्पश्चात् उन्होंने प्रभु के सम्मुख अपवित्र
अग्नि अर्पित की, जिसकी आज्ञा प्रभु ने नहीं
दी थी। 2तब प्रभु के सममुख से आग निकली,
और उसने उनको भस्म कर दिया। वे प्रभु के
सम्मुख मर गए। 3मूसा ने हारून से कहा, 'प्रभु
ने यही बात कही थी:

"अपने निकटवर्ती लोगों के मध्य,
मैं स्वयं को पवित्र सिद्ध करूंगा;
समस्त लोगों के सम्मुख
मैं अपनी महिमा करूंगा।"'

परन्तु हारून मौन रहा।

4 मूसा ने हारून के चाचा ऊज्जीएल के
पुत्रों, मीशाएल और एलसापन, को बुलाया।

---

* मूल में, 'अपने तथा लोगों के लिए'

9 : 7 इब्र 5 : 3; 7 : 27 **9 : 18-21** लेव 3 : 1-11 **9 : 22** गण 6 : 22-26 **9 : 24** 1 रा 18 : 39 **10 : 2** गण 16 : 25

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उन्होंने उनसे कहा, 'निकट आओ, और अपने
भतीजों को पवित्र स्थान के सामने से उठाकर
पड़ाव के बाहर ले जाओ।' 5वे निकट आए
और अपने कुरतों से हीं उनको उठाकर पड़ाव
के बाहर ले गए; जैसा मूसा बोले थे।
6 मूसा ने हारून और उसके पुत्रों— एल-
आजर तथा ईतामर—से कहा, 'तुम मृत्यु शोक
प्रकट करने के लिए अपने सिर कें बाल मत
बिखराओ, अपने वस्त्र भी मत फाड़ो। ऐसा न
हो कि तुम मर जाओ, और समस्त मण्डली पर
प्रभु का क्रोध भड़क उठे। किन्तु तुम्हारे भाई-
बन्धु, इस्राएल के सब वंशज, उस आग के
लिए विलाप करें, जिसको प्रभु ने प्रज्वलित
किया है। 7तुम मिलन-शिविर के द्वार से बाहर
मत निकलना, अन्यथा तुम भी मर जाओगे;
क्योंकि प्रभु के अभ्यंजन का तेल तुम पर लगा
है।' उन्होंने मूसा के आदेशानुसार किया।

पुरोहितों के कर्त्तव्य और देय-भाग

8 प्रभु हारून से बोला, 9'जब तू अथवा तेरे
साथ तेरे पुत्र मिलन-शिविर में प्रवेश करें तब
अंगूर का रस या मदिरा मत पीना। ऐसा न हो
कि तुम मर जाओ। यह तुम्हारी पीढ़ी से पीढ़ी
के लिए स्थायी संविधि है। 10तुम्हें पवित्र और
अपवित्र के मध्य, शुद्ध और अशुद्ध के मध्य,
भेद पहचानना है। 11तुम्हें इस्राएली समाज को
वे सब संविधियां सिखाना है, जिन्हें मैंने मूसा
के द्वारा इस्राएलियों को बतलाया है।'
12मूसा हारून तथा उसके बचे हुए दोनों
पुत्रों—एलआजर और ईतामर—से बोले, 'प्रभु
को अग्नि में अर्पित अन्न-बलि का शेष भाग
लो, और उसको बिना खमीर डाले वेदी के
निकट खाओ; क्योंकि वह परम पवित्र है।
13तुम उसको पवित्र स्थान में खाना। वह प्रभु
को अग्नि में अर्पित बलि में से तुम्हारा और
तुम्हारे पुत्रों का देय भाग है; क्योंकि मुझे ऐसी
ही आज्ञा दी गई है। 14किन्तु तुम तथा तुम्हारे
साथ तुम्हारे पुत्र-पुत्रियां लहराया जानेवाला
वक्ष और अर्पित की जानेवाली जांघ किसी शुद्ध
स्थान में खा सकते हैं; क्योंकि वे इस्राएली
समाज की सहभागिता-बलि में से तुम्हें एवं
तुम्हारी संतान को देय भाग के रूप में दिए गए
हैं। 15 इस्राएली लोग अग्नि में अर्पित चर्बी के
साथ लहराया जानेवाला वक्ष और अर्पित की
जानेवाली जांघ प्रभु के सम्मुख लहर-बलि के
रूप में लहराने के हेतु लाएंगे। ये तुम्हारा और
तुम्हारे साथ तुम्हारे पुत्रों का स्थायी देय भाग है;
जैसी प्रभु ने आज्ञा दी है।'
16जब मूसा ने पाप-बलि के बकरे की
अत्यधिक खोज की, तब ज्ञात हुआ कि वह
जलाया जा चुका है*। वह हारून के बचे हुए
दोनों पुत्रों, एलआजर तथा ईतामर, पर क्रुद्ध
हुए। उन्होंने कहा, 17'जब कि पाप-बलि परम
पवित्र है और तुम्हें वह इसलिए दी गई है कि
मण्डली के अधर्म का भार वहन करके प्रभु के
सम्मुख उनके लिए प्रायश्चित्त करो तब तुमने
उसको पवित्र स्थान में क्यों नहीं खाया?
18देखो, उसका रक्त भी पवित्र स्थान के भीतरी
भाग में नहीं लाया गया था। तुम्हें उसको पवित्र
स्थान में निश्चय खाना चाहिए था; जैसे मैंने
आदेश दिया था।' 19हारून मूसा से बोला,
'देखिए, आज ही उन्होंने अपनी पाप-बलि
तथा अग्नि-बलि प्रभु के सम्मुख चढ़ाई, फिर
भी मुझ पर ऐसी विपत्तियां आ पड़ीं! यदि मैं
आज** पाप-बलि का मांस खाता तो क्या यह
प्रभु की दृष्टि में उचित होता?' 20जब मूसा ने
यह सुना तो उन्हें अपनी दृष्टि में यह बात उचित
लगी।

शुद्ध और अशुद्ध पशु

11 प्रभु मूसा और हारून से बोला, 2'इस्राएली
समाज से कहो : तुम पृथ्वी के समस्त
जीवित पशुओं में से इन पशुओं को खा सकते
हो। 3पशुओं में से सब चिरे और फटे खुरवाले
तथा पागुर करने वाले पशुओं को तुम खा सकते
हो। 4फिर भी तुम पागुर करने वाले अथवा फटे

---

*अर्थात्, वेदी पर नहीं वरन् पड़ाव के बाहर। ** अर्थात्,मृत्यु-शोक की स्थिति में।

10 : 9 यहेज 44 : 21 10 : 12-13 लेव 6 : 14-18 10 : 14-15 लेव 7 : 30-34 11 : 2-47 व्य 14 : 3-21
11 : 2 उत 9 : 3; मत 15 : 11; मक 7 : 19; प्रे 10 : 12; रोम 14 : 2; 1 कुर 8 : 8; कुल 2 : 16

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

खुरवाले पशुओं में से इन पशुओं को नहीं खाना। ऊँट : वह पागुर तो करता है परन्तु उसके खुर चिरे हुए नहीं होते। अत: वह तुम्हारे लिए अशुद्ध है। [5]चट्टानी बिज्जू : वह पागुर तो करता है, परन्तु उसके खुर चिरे हुए नहीं होते। अत: वह तुम्हारे लिए अशुद्ध है। [6]खरगोश : वह पागुर तो करता है, परन्तु उसके खुर चिरे हुए नहीं होते। अत: वह तुम्हारे लिए अशुद्ध है। [7]सूअर : वह चिरे अथवा फटे खुरवाला पशु तो है, परन्तु वह पागुर नहीं करता। अत: वह तुम्हारे लिए अशुद्ध है। [8]तुम इनके मांस को नहीं खाना। इनकी लोथ को स्पर्श भी मत करना। ये तुम्हारे लिए अशुद्ध हैं।

9 'तुम जल-जन्तुओं में से इन जल-जन्तुओं को खा सकते हो : प्रत्येक पंखवाला और चोईंवाला जल-जन्तु चाहे वह समुद्र में हो, अथवा नदी में, तुम खा सकते हो। [10]परन्तु झुण्ड-के-झुण्ड रहने वाले जल-जन्तुओं तथा अन्य जलचर प्राणियों में बिना पंख और चोईंवाले जीव-जन्तु जो समुद्र तथा नदियों में हैं, वे तुम्हारे लिए अखाद्य+ हैं। [11]वे तुम्हारे लिए अखाद्य ही रहेंगे। तुम उनका मांस नहीं खाना और उनकी लोथ से घृणा करना। [12]बिना पंख और चोईंवाला प्रत्येक जल-जन्तु तुम्हारे लिए अखाद्य है।

13 'तुम इन पक्षियों को अखाद्य मानना : इनको मत खाना। ये तुम्हारे लिए अखाद्य ही हैं: गरुड़, हड़फोड़, कुरर, [14]चील, सब प्रकार के बाज, [15]सब प्रकार के कौए, [16]शुतुरमुर्ग, रात-शिकरा, जल-कुक्कुट, सब प्रकार के शिकरे, [17]उल्लू, जलकौवा, बुज्जा, [18]जलमुर्गी, जलसिंह, गिद्ध, [19]लगलग, सब प्रकार के बगुले, हुदहुद और चमगादड़।

20 'सब पंखवाले और चार पैरों पर चलने वाले कीड़े तुम्हारे लिए अखाद्य हैं। [21]फिर भी पंखवाले और चार पैरों पर चलनेवाले कीड़ों में से उनको खा सकते हो, जिनके पैरों के ऊपर ऐसी मुड़ी हुई जांघ होती है, जिसके बल पर वे भूमि पर कूदते हैं। [22]तुम उनमें से इनको खा सकते हो : सब प्रकार की टिड्डियां, सब प्रकार के पतंगे, सब प्रकार के झींगुर और सब प्रकार के टिड्डे। [23]किन्तु वे सब पंखवाले कीड़े जिनके चार पैर हैं, तुम्हारे लिए अखाद्य हैं।

24 'इन पशुओं के कारण तुम अशुद्ध होगे। इनकी लोथ का स्पर्श करने वाला व्यक्ति सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। [25]इनकी लोथ को ले जाने वाला व्यक्ति अपने वस्त्र धोएगा और वह सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा : [26]वे सब पशु जो चिरे हुए खुर के हैं, पर जिनके खुर पूर्णत: फटे हुए नहीं हैं, और जो पागुर नहीं करते, तुम्हारे लिए अशुद्ध हैं। उनका स्पर्श करने वाला व्यक्ति अशुद्ध हो जाएगा। [27]चार पैरों पर चलने वाले सब पशुओं में से पंजों पर चलने-वाले पशु तुम्हारे लिए अशुद्ध हैं। उनकी लोथ का स्पर्श करने वाला व्यक्ति सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। [28]उनकी लोथ को ले जानेवाला व्यक्ति अपने वस्त्र धोएगा और वह सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। वे तुम्हारे लिए अशुद्ध हैं।

29 'भूमि पर रेंगने वाले जन्तुओं में से ये जन्तु तुम्हारे लिए अशुद्ध हैं : नेवला, चूहा, सब प्रकार की गोह, [30]छिपकली, मगर, टिकटिक, साण्डा और गिरगिट। [31]ये तुम्हारे लिए सब रेंगने वाले जन्तुओं में अशुद्ध हैं। इनकी लोथ का स्पर्श करने वाला व्यक्ति सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। [32]वे सब वस्तुएं जिन पर इनकी लोथ गिरेगी, अशुद्ध हो जाएंगी, चाहे वे लकड़ी, वस्त्र, चमड़ा, या टाट की हों, अथवा किसी भी कार्य में प्रयुक्त होने वाला कोई भी पात्र; उसको जल में डाला जाएगा, और वह सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा, तत्पश्चात् वह शुद्ध हो जाएगा। [33]मिट्टी के जिस पात्र में इन जन्तुओं में से किसी की लोथ गिर पड़ी है, उसके भीतर की वस्तु अशुद्ध हो जाएगी। तुम उस पात्र को तोड़ देना। [34]उसके समस्त खाद्य पदार्थ, जिनमें जल प्रयुक्त किया जाता है, अशुद्ध हो जाएंगे। ये सब पेय पदार्थ, जो ऐसे पात्र में पीए जाते हैं, अशुद्ध हो जाएंगे। [35]यदि किसी वस्तु पर इनकी लोथ का

+ अक्षरश: 'घृणित'।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कुछ भी भाग गिर पड़े तो वह अशुद्ध हो जाएगी;
चाहे वह तन्दूर हो अथवा चूल्हा हो, उसे तोड़ा
जाएगा। वे अशुद्ध हैं, और तुम्हारे लिए भी अशुद्ध
होंगे। 36फिर भी झरना तथा कुआं, जहां जल
संचित रहता है शुद्ध माने जाएंगे; किन्तु इन
जन्तुओं की लोथ का स्पर्श करने वाली वस्तु
अशुद्ध हो जाएगी। 37यदि इन जन्तुओं की लोथ
का कुछ भाग बोए जाने वाले बीज पर गिर पड़े
तो वह बीज शुद्ध माना जाएगा। 38परन्तु यदि
बीज पर जल डाला गया है और उस पर इसकी
लोथ का कुछ भाग गिर पड़ता है तो वह तुम्हारे
लिए अशुद्ध होगा।

39'जिन पशुओं को तुम खा सकते हो,
उनमें से यदि कोई पशु मर जाता है तो उसकी
लोथ का स्पर्श करने वाला व्यक्ति सन्ध्या तक
अशुद्ध रहेगा। 40उसकी लोथ को खानेवाला
व्यक्ति अपने वस्त्र धोएगा और वह सन्ध्या तक
अशुद्ध रहेगा। उसकी लोथ को ले जाने वाला
व्यक्ति भी अपने वस्त्र धोएगा और वह सन्ध्या
तक अशुद्ध रहेगा।

41'भूमि पर रेंगनेवाले सब जीव-जन्तु
अखाद्य हैं, वे नहीं खाए जाएंगे। 42सब जीव-
जन्तुओं को जो पेट के बल चलते हैं, अथवा
जो चार पैर पर चलते हैं, जिनके अनेक पैर
हैं—भूमि पर रेंगने वाले सब जीव-जन्तुओं को
मत खाना; क्योंकि वे अखाद्य जन्तु हैं। 43तुम
अपने को रेंगनेवाले जीव-जन्तुओं के द्वारा
घृणित न बनाना। उनके द्वारा स्वयं को अशुद्ध
नहीं करना, ऐसा न हो कि तुम अपवित्र हो
जाओ। 44मैं प्रभु तुम्हारा परमेश्वर हूँ, इसलिए
अपने आपको पवित्र बनाओ, और पवित्र बने
रहो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ। तुम भूमि पर
रेंगनेवाले जीव-जन्तुओं के द्वारा अपने आपको
अशुद्ध मत करना। 45तुम्हारा परमेश्वर होने के
लिए, तुम्हें मिस्र देश से बाहर निकालकर
लानेवाला, मैं प्रभु हूँ। मैं पवित्र हूँ, इसलिए तुम
भी पवित्र बनोगे।'

46 यह पशुओं, पक्षियों, जीवित जलचरों
एवं भूमि पर रेंगनेवाले प्राणियों के सम्बन्ध में
व्यवस्था है कि 47अशुद्ध और शुद्ध के मध्य,
भक्ष्य और अभक्ष्य जीवित प्राणियों के मध्य,
भेद किया जाए।

प्रसूता का शुद्धीकरण

12 प्रभु मूसा से बोला, 2'यह इस्राएली समाज
से कहना : यदि कोई स्त्री गर्भवती होकर
लड़के को जन्म देती है तो वह सात दिन तक
अशुद्ध रहेगी; जैसे वह मासिक धर्म के समय
अशुद्ध रहती है। 3आठवें दिन लड़के का खतना
किया जाएगा। 4वह स्त्री अपने शुद्धीकरण के
रक्त में तैंतीस दिन तक रहेगी। जब तक उसके
शुद्धीकरण के दिन पूरे न हो जाएंगे, वह पवित्र
वस्तु का स्पर्श नहीं करेगी, और न पवित्र-
स्थान में ही प्रवेश करेगी। 5यदि वह लड़की को
जन्म देती है तो चौदह दिन तक अशुद्ध रहेगी,
जैसे वह मासिक धर्म के समय रहती है। वह
अपने शुद्धीकरण के रक्त में छियासठ दिन तक
रहेगी।

6'जब उसके शुद्धीकरण के दिन पूरे हो
जाएंगे, तब चाहे उसने पुत्र को जन्म दिया हो
अथवा पुत्री को, वह अग्नि-बलि के लिए एक
वर्ष का मेमना, पाप-बलि के लिए कबूतर का
एक बच्चा अथवा पण्डुक मिलन-शिविर के
द्वार पर पुरोहित के पास लाएगी। 7पुरोहित उनको
प्रभु के सम्मुख चढ़ाएगा और स्त्री के लिए
प्रायश्चित करेगा। तब वह अपने रक्त-स्राव से
शुद्ध हो जाएगी। लड़का अथवा लड़की को
जन्म देनेवाली प्रसूता के लिए यही व्यवस्था है।
8यदि उसके हाथ में मेमना चढ़ाने के लिए धन
न हो तो वह दो पण्डुक अथवा कबूतर के दो
बच्चे लेगी : एक अग्नि-बलि के लिए और
एक पाप-बलि के लिए। पुरोहित उसके लिए
प्रायश्चित करेगा और वह शुद्ध हो जाएगी।'

कुष्ठ-रोग के सदृश लक्षण

13 प्रभु मूसा और हारून से बोला 2'जब
किसी मनुष्य के शरीर की त्वचा पर
सूजन, अथवा पपड़ी या दाग हो, उसकी त्वचा

11: 44 लेव 19 : 2; मत 5 : 48; 1 पत 1 : 15-16; 1 यो 3 : 3 **12 : 3** उत 17 : 12; लू 1 : 59; 2 : 21 **12 : 6** लू 2 : 22 **12 : 8** लू 2 : 24 **13 : 2** मत 8 : 3; यो 13 : 10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पर कुष्ठ-रोग + के सदृश लक्षण दिखाई दें तो वह पुरोहित हारून अथवा उसके पुरोहित पुत्रों में किसी एक के पास लाया जाएगा। [3]पुरोहित उसकी त्वचा के रोगग्रस्त भाग की जांच करेगा। यदि रोगग्रस्त भाग के रोएं सफेद हो गए हैं और रोग त्वचा के भीतर गहरा दिखाई देता है तो यह कुष्ठ-जैसा चर्म-रोग होगा। जब पुरोहित जांच कर चुकेगा तब उसे अशुद्ध घोषित करेगा। [4]यदि उसके शरीर की त्वचा का दाग सफेद है और त्वचा के भीतर गहरा नहीं दिखाई देता है, तथा उस भाग के रोएं सफेद नहीं हुए हैं तो पुरोहित रोगग्रस्त व्यक्ति को सात दिन तक बन्द रखेगा। [5]पुरोहित सातवें दिन उसकी जांच करेगा। यदि उसकी दृष्टि में रोग ज्यों का त्यों है, त्वचा पर नहीं फैला है तो पुरोहित उसको सात दिन तक और बन्द रखेगा। [6]पुरोहित सातवें दिन उसकी पुन: जांच करेगा। यदि रोगग्रस्त भाग हलका पड़ गया है, और वह त्वचा पर नहीं फैला है तो पुरोहित उसे शुद्ध घोषित करेगा। यह केवल पपड़ी है। वह मनुष्य अपने वस्त्र धोकर शुद्ध हो जाएगा। [7]परन्तु पुरोहित की शुद्धि-घोषणा के हेतु जांच कराने के पश्चात् यदि पपड़ी त्वचा पर सर्वत्र फैल जाती है तो वह व्यक्ति पुरोहित के पास दूसरी बार उपस्थित होगा। [8]पुरोहित जांच करेगा। यदि पपड़ी त्वचा पर फैल गई है तो पुरोहित उसको अशुद्ध घोषित करेगा। वह कुष्ठ जैसा चर्म-रोग है।

9 'यदि कोई मनुष्य कुष्ठ जैसे रोग से पीड़ित है तो वह पुरोहित के पास लाया जाएगा। [10]पुरोहित जांच करेगा। यदि उसकी त्वचा पर सफेद-सी सूजन है, जिसने रोओं को भी सफेद कर दिया है, और सूजन पर चर्महीन मांस दिखाई देता है [11]तो यह उसके शरीर की त्वचा पर पुराना कुष्ठ जैसा रोग है। पुरोहित उस व्यक्ति को अशुद्ध घोषित करेगा। वह उसे बन्द नहीं रखेगा; क्योंकि वह अशुद्ध है। [12]यदि चर्म-रोग त्वचा पर, रोगी की सारी त्वचा पर, सिर से पैर तक, जहाँ तक पुरोहित देख सकता है, फूट पड़ा है [13]तो पुरोहित जांच करेगा। यदि चर्म-रोग उसके सारे शरीर पर फैल गया है तो वह रोगी को शुद्ध घोषित करेगा। उसका सारा शरीर सफेद हो गया है, और वह शुद्ध है। [14]किन्तु जब उसके शरीर पर चर्महीन मांस दिखाई दे तब वह अशुद्ध होगा। [15] पुरोहित चर्महीन मांस की जांच करेगा और उसको अशुद्ध घोषित करेगा। चर्महीन मांस अशुद्ध है; क्योंकि वह कुष्ठ जैसा रोग है। [16]परन्तु यदि चर्महीन मांस बदल जाए, सफेद हो जाए तब वह व्यक्ति पुरोहित के पास आएगा। [17]पुरोहित जांच करेगा । यदि रोग पुन: सफेद हो गया है, तो पुरोहित रोगी व्यक्ति को शुद्ध घोषित करेगा। वह शुद्ध है।

18 'जब किसी व्यक्ति की त्वचा पर फोड़ा निकल आए पर वह अच्छा हो जाए [19]और फोड़े के स्थान पर सफेद सूजन अथवा लाली लिये हुए सफेद दाग हो तब उसे पुरोहित को दिखाया जाएगा। [20]पुरोहित जांच करेगा। यदि सूजन त्वचा के भीतर गहरी दिखाई देगी, उस स्थान के रोएं सफेद हो गए होंगे, तो पुरोहित उस व्यक्ति को अशुद्ध घोषित करेगा। यह कुष्ठ जैसा रोग है और फोड़े में फूटा है। [21]परन्तु यदि पुरोहित उसकी जांच करके देखेगा कि उसके रोएं सफेद नहीं हैं, वह त्वचा के भीतर गहरा नहीं है, वरन् हल्का है तो पुरोहित उस व्यक्ति को सात दिन तक बन्द रखेगा। [22]यदि रोग त्वचा पर सर्वत्र फैल जाता है तो पुरोहित उसे अशुद्ध घोषित करेगा। यह रोग है। [23]किन्तु यदि दाग ज्यों का त्यों रहता है और वह नहीं फैलता है तो यह फोड़े का दाग है। तब पुरोहित उसे शुद्ध घोषित करेगा।

24 'अथवा, यदि किसी व्यक्ति की त्वचा पर जलने का घाव है, और इस घाव का चर्महीन मांस लाली लिये हुए सफेद अथवा केवल सफेद दाग हो जाता है, [25]तो पुरोहित उसकी जांच करेगा। यदि दाग के स्थान के रोएं

+ मूल शब्द अनेक चर्म-रोगों अथवा चर्म-रोग जैसे दागों का व्यापक अर्थ अभिव्यक्त करता है।

13 :10 गण 12 : 10 13 : 15 व्य 24 : 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सफेद हो गए हैं, वह त्वचा के भीतर गहरा
दिखाई देता है तो यह कुष्ठ जैसा रोग है; और
ज्वलन के घाव में फूटा है। पुरोहित उस व्यक्ति
को अशुद्ध घोषित करेगा। यह कुष्ठ जैसा रोग
है। [26]किन्तु यदि पुरोहित उसकी जांच करके
देखता है कि दाग के स्थान के रोएं सफेद नहीं
हैं, और दाग त्वचा के भीतर गहरा नहीं है, वरन्
हल्का है तो पुरोहित उस व्यक्ति को सात दिन
तक बन्द रखेगा। [27]पुरोहित सातवें दिन उसकी
जांच करेगा। यदि दाग त्वचा पर सर्वत्र फैल
रहा है तो पुरोहित उस व्यक्ति को अशुद्ध
घोषित करेगा। यह कुष्ठ जैसा रोग है। [28]किन्तु
यदि दाग ज्यों का त्यों रहता है, और वह त्वचा
पर नहीं फैलता है वरन् हल्का रहता है, तो यह
ज्वलन की सूजन है। पुरोहित उस व्यक्ति को
शुद्ध घोषित करेगा; क्योंकि यह ज्वलन का दाग
है।

29 'जब किसी पुरुष अथवा स्त्री के सिर या
ठुड्डी में रोग दिखाई दे [30]तो पुरोहित उस रोग
की जांच करेगा। यदि वह त्वचा के भीतर गहरा
दिखाई देगा, और उसके बाल पीले तथा पतले
होंगे तो पुरोहित उस पुरुष या स्त्री को अशुद्ध
घोषित करेगा। यह सिर अथवा ठुड्डी का
चर्म-रोग, अर्थात् खाज है। [31]यदि पुरोहित
खाज-रोग की जांच करके देखता है कि वह
त्वचा के भीतर गहरी नहीं है, उस पर काले
बाल भी नहीं हैं तो पुरोहित खाज के रोगी को
सात दिन बन्द रखेगा। [32]पुरोहित सातवें दिन
रोग की जांच करेगा। यदि खाज नहीं फैली है,
खाज ग्रस्त भाग के बाल पीले नहीं हुए हैं, और
खाज त्वचा के भीतर गहरी नहीं दिखाई देती
है, [33]तो वह व्यक्ति दाढ़ी बनाएगा; किन्तु वह
खाज ग्रस्त भाग को नहीं मूंड़ेगा। पुरोहित खाज
के रोगी को सात दिन और बन्द रखेगा।
[34]पुरोहित सातवें दिन खाज की जांच करेगा।
यदि खाज त्वचा पर नहीं फैली है, और वह
त्वचा के भीतर गहरी नहीं दिखाई देती है तो
पुरोहित उस व्यक्ति को शुद्ध घोषित करेगा।
वह व्यक्ति अपने वस्त्र धोएगा और शुद्ध हो
जाएगा। [35]यदि उसकी शुद्धि के पश्चात् भी
खाज त्वचा पर सर्वत्र फैलती है, [36]तो पुरोहित
उसकी जांच करेगा। यदि खाज त्वचा पर फैल
गई है तो पुरोहित पीले बालों की खोज नहीं
करेगा। वह व्यक्ति अशुद्ध है। [37]परन्तु यदि
उसकी दृष्टि में खाज ज्यों की त्यों है, उस स्थान
पर काले बाल उग आए हैं, तो खाज अच्छी हो
गई है और वह व्यक्ति शुद्ध है। पुरोहित उस
व्यक्ति को शुद्ध घोषित करेगा।

38 'जब किसी पुरुष अथवा स्त्री के शरीर
की त्वचा पर सफेद दाग हों [39]तब पुरोहित जांच
करेगा। यदि त्वचा के दाग हलके सफेद हैं तो
यह दाद है जो त्वचा में फूटी है। वह व्यक्ति
शुद्ध है।

40 'यदि किसी पुरुष के सिर के बाल झड़
गए हैं तो वह गंजा है, पर शुद्ध है। [41]यदि किसी
पुरुष के माथा और कनपटी के बाल झड़ गए
हैं तो उसका गंजापन माथे का है, किन्तु वह
शुद्ध है। [42]यदि उसके गंजे सिर अथवा गंजे
माथे पर लाली लिये हुए सफेद दाग है तो यह
कुष्ठ जैसा रोग है जो गंजे सिर अथवा गंजे माथे
में फूटा है। [43]पुरोहित उसकी जांच करेगा।
यदि उसके गंजे सिर अथवा गंजे माथे पर रोग
की सूजन शरीर की त्वचा के कुष्ठ-रोग के
समान लाली लिये हुए सफेद है [44]तो वह कुष्ठ-
रोगी के समान चर्म-रोगी है; वह अशुद्ध है।
पुरोहित उसको निश्चय ही अशुद्ध घोषित
करेगा। उसके सिर पर रोग है।

45 'कुष्ठ जैसे रोग का रोगी फटे वस्त्र
पहनेगा। उसके सिर के बाल बिखरे रहेंगे। वह
उपरले ओंठ को ढांपकर पुकारेगा, "अशुद्ध!
अशुद्ध!!" [46]जितने दिन तक उसमें रोग
रहेगा, वह व्यक्ति अशुद्ध माना जाएगा। वह
अशुद्ध है। वह पड़ाव के बाहर, अकेला निवास
करेगा।

47 जब कुष्ठ-रोग जैसे दाग वस्त्र में हों,
चाहे वह ऊनी या सूती हो; [48]सूत अथवा ऊन
के ताना-बाना में हों; चमड़े में अथवा चमड़े
की बनी किसी वस्तु में हों, [49]तब यदि दाग

13 : 46 2 रा 14 : 5

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वस्त्र में, चाहे ताना–बाना में, चमड़े में अथवा चमड़े की बनी किसी वस्तु में हरा या लाल दिखाई दे तो यह कुष्ठ–रोग जैसा दाग है और उसे पुरोहित को दिखाना होगा। [50]पुरोहित दाग की जांच करेगा। वह दाग वाली वस्तु को सात दिन तक बन्द रखेगा। [51]वह सातवें दिन दाग की पुनः जांच करेगा। यदि दाग वस्त्र, ताना–बाना, चमड़े या चमड़े की किसी वस्तु में फैल गया है, तो यह गलित कुष्ठ–रोग जैसा दाग है। वह वस्तु अशुद्ध है। [52]वह दाग–वाले वस्त्र को, चाहे वह ऊनी अथवा सूती हो, चाहे उसके ताना–बाना में दाग हो, अथवा चमड़े की कोई वस्तु में हो, इन सब को जला देगा, क्योंकि यह गलित कुष्ठ–रोग जैसा दाग है; प्रत्येक वस्तु आग में जलाई जाएगी।

53 'यदि पुरोहित जांच करके देखता है कि दाग वस्त्र, ताना–बाना, अथवा चमड़े की किसी वस्तु में नहीं फैला है [54]तब वह आदेश देगा कि लोग दाग वाली वस्तु को धोएं। तत्पश्चात् पुरोहित उस वस्तु को और सात दिन तक बन्द रखेगा। [55]पुरोहित दाग वाली वस्तु की, उसके धोने के पश्चात् जांच करेगा। यदि दाग का रंग नहीं बदला है, यद्यपि दाग नहीं फैला है, तो भी वह वस्तु अशुद्ध मानी जाएगी। तुम उसको आग में जलाना, चाहे कुष्ठ–रोग जैसा दाग पीछे हो अथवा आगे।

56 'किन्तु यदि पुरोहित जांच करके देखता है कि धोने के पश्चात् रोग जैसा दाग हल्का पड़ गया है तो वह वस्त्र, चमड़े अथवा ताना–बाना से दागी भाग को फाड़ देगा। [57]यदि दाग वस्त्र, ताना–बाना अथवा चमड़े की कोई वस्तु में पुनः दिखाई देता है तो वह रोग के सदृश फैल रहा है। तुम दागवाली वस्तु को आग में जलाना। [58]वस्त्र, ताना–बाना अथवा चमड़े की कोई वस्तु जिसे धोने के पश्चात् दाग निकल गया है, पुनः धोई जाएगी। तब वह शुद्ध होगी।'

59 ऊनी, या सूती वस्त्र में, या ताना–बाना में, या चमड़े की किसी भी वस्तु में कुष्ठ–रोग जैसे दाग होने पर उसको शुद्ध या अशुद्ध घोषित करने की यही व्यवस्था है।

14 प्रभु मूसा से बोला, [2]'जिस दिन कुष्ठ–रोगी के समान चर्म–रोगी शुद्ध घोषित किया जाएगा, उस दिन की यह व्यवस्था है : वह पुरोहित के पास लाया जाएगा। [3]पुरोहित पड़ाव के बाहर जाएगा। वह जांच करेगा। यदि रोगी कुष्ठ जैसे रोग से स्वस्थ हो गया है [4]तो पुरोहित आदेश देगा कि शुद्ध होने वाले व्यक्ति के हेतु शुद्ध और जीवित दो पक्षी, देवदार की लकड़ी, लोहित रंग का वस्त्र तथा जूफा लाया जाए। [5]पुरोहित आदेश देगा कि बहते हुए जल के ऊपर मिट्टी के पात्र में एक पक्षी बलि किया जाए। [6]तत्पश्चात् वह जीवित पक्षी के साथ देवदार की लकड़ी, लोहित रंग का वस्त्र एवं जूफा लेगा। वह उनको तथा जीवित पक्षी को उस पक्षी के रक्त में डुबाएगा जिसकी बहते हुए जल के ऊपर बलि की गई है। [7]वह कुष्ठ जैसे रोग से शुद्ध होने वाले व्यक्ति के ऊपर सात बार रक्त छिड़केगा। तब वह उसे शुद्ध घोषित करेगा, और जीवित पक्षी को खुले मैदान में छोड़ देगा। [8]शुद्ध होने वाला व्यक्ति अपने वस्त्र धोएगा, सब बाल मुड़वाकर जल में स्नान करेगा, और वह शुद्ध हो जाएगा। इसके पश्चात् वह पड़ाव में प्रवेश करेगा, किन्तु सात दिन तक अपने तम्बू के बाहर निवास करेगा। [9]वह सातवें दिन सिर के सब बाल मूंड़ेगा। वह दाढ़ी और भौंहों के सब बाल मूंड़ेगा। तत्पश्चात् वह अपने वस्त्र धोएगा, जल में स्नान करेगा, और वह शुद्ध हो जाएगा।

10 'वह आठवें दिन दो निष्कलंक मेमने, एक वर्ष की एक निष्कलंक भेड़, अन्न–बलि के हेतु तेल सम्मिश्रित अढ़ाई किलो मैदा और आधा लिटर* तेल लेगा। [11]शुद्ध करनेवाला पुरोहित इन वस्तुओं के साथ शुद्ध होनेवाले मनुष्य को प्रभु के सम्मुख मिलन–शिविर के द्वार पर खड़ा करेगा। [12]तत्पश्चात् पुरोहित एक मेमना लेगा और आधा लिटर तेल के साथ

* मूल में ''एक लोग माप''

14 : 2 मत 8 : 4; लू 17 : 14 14 : 4 गण 19 : 6;भज 51 : 7 14 : 7 2 रा 5 : 14

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उसको दोष-बलि के हेतु अर्पित करेगा। वह
प्रभु के सम्मुख लहर-बलि के रूप में उनको
लहराएगा। 13वह उस पवित्र स्थान में जहां
अग्नि-बलि एवं पाप-बलि के पशु बलि किए
गए थे, मेमना बलि करेगा। पाप-बलि के सदृश
दोष-बलि भी पुरोहित का देय भाग होगा। यह
परम पवित्र है। 14पुरोहित दोष-बलि का कुछ
रक्त लेकर शुद्ध होने वाले व्यक्ति के दाहिने
कान की लौ पर, उसके दाहिने हाथ और दाहिने
पैर के अंगूठों पर लगाएगा। 15पुरोहित आधा
लिटर तेल में से कुछ तेल लेकर उसको अपने
बाएं हाथ की हथेली पर उण्डेलेगा, 16और अपने
बाएं हाथ की हथेली के तेल में दाहिने हाथ की
अंगुली डुबाकर प्रभु के सम्मुख सात बार
उसको छिड़केगा। 17जो तेल उसकी हथेली में
शेष रहेगा, उसको पुरोहित शुद्ध होनेवाले व्यक्ति
के दाहिने कान की लौ, दाहिने हाथ और दाहिने
पैर के अंगूठों तथा दोष-बलि के रक्त पर
लगाएगा। 18वह अपनी हथेली के शेष तेल को
शुद्ध होने वाले व्यक्ति के सिर पर लगाएगा।
तत्पश्चात् वह उसके लिए प्रभु के सम्मुख
प्रायश्चित्त करेगा। 19अपनी अशुद्धता से शुद्ध
होने वाले व्यक्ति के हेतु प्रायश्चित्त के उद्देश्य
से पुरोहित पाप-बलि चढ़ाएगा। इसके पश्चात्
वह अग्नि-बलि के पशु का वध करेगा।
20पुरोहित वेदी पर अग्नि-बलि एवं अन्न-बलि
अर्पित करेगा। इस प्रकार पुरोहित उसके लिए
प्रायश्चित्त करेगा और वह शुद्ध हो जाएगा।

21 'यदि वह दरिद्र हो और उतना न दे सके
तो प्रायश्चित्त के निमित्त दोष-बलि में लहराने
के लिए एक मेमना, अन्न-बलि के हेतु तेल
सम्मिश्रित एक किलो मैदा और आधा लिटर
तेल लाएगा। 22दो पण्डुक अथवा कबूतर के
दो बच्चे, जो वह ला सकता है, लाएगा; एक
पाप-बलि के लिए और एक अग्नि-बलि के
लिए। 23वह उनको अपने शुद्धीकरण के निमित्त
आठवें दिन पुरोहित के पास, प्रभु के सम्मुख
मिलन-शिविर के द्वार पर लाएगा। 24पुरोहित
दोष-बलि का मेमना और आधा लिटर तेल
लेगा, और उन्हें लहर-बलि के लिए प्रभु के
सम्मुख लहराएगा। 25पुरोहित दोष-बलि का
पशु बलि करेगा। तत्पश्चात् वह दोष-बलि का
कुछ रक्त लेकर शुद्ध होने वाले व्यक्ति के
दाहिने कान की लौ पर, उसके दाहिने हाथ और
दाहिने पैर के अंगूठों पर लगाएगा। 26पुरोहित
आधा लिटर तेल में से कुछ तेल अपने बाएं हाथ
की हथेली पर उण्डेलेगा; 27और अपने बाएं
हाथ की हथेली के तेल को दाहिने हाथ की
अंगुली से प्रभु के सम्मुख सात बार छिड़केगा।
28पुरोहित अपने दाहिने हाथ की हथेली का
कुछ तेल शुद्ध होने वाले व्यक्ति के दाहिने
कान की लौ पर, उसके दाहिने हाथ और दाहिने
पैर के अंगूठों पर, जहां दोष-बलि का रक्त
लगाया गया है, लगाएगा। 29वह अपनी हथेली
के शेष तेल को शुद्ध होनेवाले व्यक्ति के
प्रायश्चित्त के लिए प्रभु के सम्मुख उसके सिर
पर लगाएगा। 30तत्पश्चात् वह पण्डुक, अथवा
कबूतर के बच्चे, जिन्हें शुद्ध होने वाला व्यक्ति
ला सकता है, अन्न-बलि के साथ चढ़ाएगा :
31एक पक्षी पाप-बलि के लिए, और दूसरा
अग्नि-बलि के लिए। पुरोहित शुद्ध होने वाले
व्यक्ति के हेतु प्रभु के सम्मुख प्रायश्चित्त
करेगा। 32जो व्यक्ति कुष्ठ-रोगी है और जिसके
पास अपने शुद्धीकरण के लिए पर्याप्त पूंजी
नहीं है, उसके लिए यह व्यवस्था है।'

33 प्रभु मूसा और हारून से बोला, 34'जब
तुम कनान देश में आओगे जिसको मैं तुम्हारे
अधिकार में दे रहा हूँ, तब यदि मैं तुम्हारे
अधिकृत देश में किसी व्यक्ति के घर में कुष्ठ
रोग के सदृश फफूंदी लगने दूंगा, 35तो घर का
स्वामी आकर पुरोहित को बताएगा, "मुझे
ऐसा दिखाई देता है कि मेरे घर में कोई रोग
है।" 36पुरोहित आदेश देगा कि रोग की जांच
के हेतु घर में उसके प्रवेश करने के पूर्व घर
खाली कर दिया जाए; ऐसा न हो कि घर की
सब वस्तुएं अशुद्ध घोषित हो जाएं। तत्पश्चात्
पुरोहित घर की जांच के हेतु भीतर आएगा।
37वह रोग की जांच करेगा। यदि घर की दीवारों
पर हरे-हरे अथवा लाल-लाल दाग के रूप में
रोग दिखाई देगा, यदि वह सतह से अधिक

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गहरा दिखाई देगा [38]तो पुरोहित घर के बाहर निकलकर घर के द्वार पर आएगा, और घर को सात दिन के लिए बन्द कर देगा। [39]पुरोहित सातवें दिन पुन: आएगा और जांच करेगा। यदि रोग घर की दीवारों पर फैल गया है [40]तो वह आदेश देगा कि जिन पत्थरों पर रोग है, उनको वे निकाल लें, और नगर के बाहर अशुद्ध स्थान में फेंक दें। [41]वह घर के भीतर चारों ओर खुरचवाएगा। वे खुरचन की मिट्टी को नगर के बाहर अशुद्ध स्थान में उण्डेल देंगे। [42]वे दूसरे पत्थर लेंगे और निकाले गए पत्थरों के स्थान पर उनको लगाएंगे। वह ताजा गारा लेकर घर की लिपाई-पुताई करेगा।

43 'यदि रोग पत्थरों के निकाल लेने, घर को खुरचने तथा लिपाई-पुताई के पश्चात् भी घर में पुन: फूटता है [44]तो पुरोहित आकर जांच करेगा। यदि रोग घर में फैल गया है, तो उस घर में गलित कुष्ठ-रोग के समान ही रोग है, और वह घर अशुद्ध है। [45]वह घर को गिरा देगा। वह उसके पत्थर, बल्लियां और घर का सब गारा उठाकर नगर के बाहर अशुद्ध स्थान में फेंक देगा। [46]इसके अतिरिक्त, घर के बन्द रहने की अवधि में प्रवेश करने वाला व्यक्ति सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। [47]घर में सोनेवाला व्यक्ति अपने वस्त्र धोएगा। घर में भोजन करनेवाला व्यक्ति अपने वस्त्र धोएगा।

48 'किन्तु यदि पुरोहित आकर जांच करता है कि घर की लिपाई-पुताई के पश्चात् रोग घर में नहीं फैला है, तो वह घर को शुद्ध घोषित करेगा; क्योंकि वह रोग से स्वस्थ हो गया है। [49]पुरोहित घर के शुद्धीकरण के लिए देवदार की लकड़ी, रोहित रंग के वस्त्र एवं जूफा के साथ दो छोटे पक्षी लेगा। [50]वह बहते हुए जल के ऊपर मिट्टी के पात्र में एक पक्षी को बलि करेगा। [51]वह जीवित पक्षी, देवदार की लकड़ी और जूफा लेकर उस बलित पक्षी के रक्त में और बहते हुए जल में उनको डुबाएगा। वह घर पर सात बार रक्त छिड़केगा। [52]इस प्रकार वह पक्षी के रक्त, बहते हुए जल, जीवित पक्षी, देवदार की लकड़ी, जूफा तथा लोहित रंग के वस्त्र से घर को शुद्ध करेगा। [53]वह जीवित पक्षी को नगर के बाहर खुले मैदान में छोड़ देगा। वह घर के लिए प्रायश्चित करेगा; और घर शुद्ध हो जाएगा।'

54 यह सब प्रकार के कुष्ठ-रोग जैसे दाग अर्थात् खाज, [55]वस्त्र अथवा घर में लगे कुष्ठ-रोग के सदृश फफूंदी, [56]सूजन, पपड़ी या अन्य दाग [57]के विषय में किसी को शुद्ध और अशुद्ध घोषित करने की व्यवस्था है। यही सब प्रकार के कुष्ठ-रोग जैसे दाग की व्यवस्था है।

शरीर के अशुद्ध स्राव

15 प्रभु मूसा और हारून से बोला, [2]'तुम इस्राएली समाज से कहना कि यदि किसी मनुष्य के शरीर से स्राव होता है तो उसका स्राव अशुद्ध है। [3]यह स्राव के सम्बन्ध में अशुद्धता की व्यवस्था है : चाहे उसके शरीर से स्राव होता रहता है, अथवा शरीर से स्राव बन्द हो गया है, फिर भी वह अशुद्ध है। [4]जिस शय्या पर स्राव-ग्रस्त व्यक्ति लेटता है, वह अशुद्ध मानी जाएगी। जिस चौकी पर वह बैठता है, वह भी अशुद्ध मानी जाएगी। [5]जो मनुष्य उसकी शय्या का स्पर्श करेगा, वह अपने वस्त्र धोएगा और जल से स्नान करेगा। वह सन्ध्या तक अशुद्ध माना जाएगा। [6]जिस चौकी पर स्रावग्रस्त व्यक्ति बैठा था, उसपर बैठनेवाला मनुष्य भी अपने वस्त्र धोएगा और जल से स्नान करेगा। वह सन्ध्या तक अशुद्ध माना जाएगा। [7]स्रावग्रस्त व्यक्ति के शरीर का स्पर्श करनेवाला मनुष्य अपने वस्त्र धोएगा और जल से स्नान करेगा। वह सन्ध्या तक अशुद्ध माना जाएगा। [8]यदि स्राव-ग्रस्त व्यक्ति किसी शुद्ध मनुष्य पर थूकता है तो शुद्ध मनुष्य अपने वस्त्र धोएगा और जल से स्नान करेगा। वह सन्ध्या तक अशुद्ध माना जाएगा। [9]जिस काठी पर स्राव-ग्रस्त व्यक्ति सवार होता है, वह अशुद्ध मानी जाएगी। [10]स्राव-ग्रस्त व्यक्ति के नीचे की वस्तु का स्पर्श करने वाला सन्ध्या तक अशुद्ध माना जाएगा। ऐसी वस्तु को उठाकर ले जाने वाला

15 : 2 इब्र 9 : 10; 2 कुर 7 : 1

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

व्यक्ति अपने वस्त्र धोएगा और जल से स्नान
करेगा। वह सन्ध्या तक अशुद्ध माना जाएगा।
11यदि स्राव-ग्रस्त व्यक्ति जल में बिना हाथ
धोए किसी मनुष्य का स्पर्श करेगा, तो ऐसा
मनुष्य अपने वस्त्र धोएगा और जल से स्नान
करेगा। वह सन्ध्या तक अशुद्ध माना जाएगा।
12जिन मिट्टी के पात्रों का स्रावग्रस्त व्यक्ति
स्पर्श करेगा, वे फोड़ दिए जाएंगे। किन्तु
लकड़ी के सब पात्र जल से धोए जाएंगे।

13 'जब स्रावग्रस्त व्यक्ति अपने स्राव से
मुक्त हो जाता है तब वह अपने शुद्धीकरण के
लिए सात दिन गिन लेगा। वह अपने वस्त्र
धोएगा। वह बहते हुए जल में स्नान करेगा और
शुद्ध हो जाएगा। 14वह आठवें दिन दो पण्डुक
अथवा कबूतर के दो बच्चे लेकर मिलन-
शिविर के द्वार पर प्रभु के सम्मुख आएगा, और
उन्हें पुरोहित को देगा। 15पुरोहित उनमें से एक
को पाप-बलि के लिए और दूसरे को अग्नि-
बलि के लिए अर्पित करेगा। पुरोहित उसके
स्राव के हेतु उसके लिए प्रभु के सम्मुख
प्रायश्चित करेगा।

16 'यदि किसी मनुष्य का वीर्यपात हो जाए
तो वह अपने सारे शरीर को धोएगा। वह सन्ध्या
तक अशुद्ध रहेगा। 17जिस वस्त्र अथवा चर्मवस्तु
पर वीर्य गिरता है, वह जल से धोई जाएगी। वह
सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगी। 18जब पुरुष स्त्री से
सहवास करता है और उसका वार्यपात होता है
तब दोनों जल से स्नान करेंगे। वे सन्ध्या तक
अशुद्ध रहेंगे।

19 'जब स्त्री को रक्तस्राव होता है, जो
उसके शरीर का नियमित स्राव है, तब वह
ऋतुमती सात दिन तक अशुद्ध मानी जाएगी।
उसका स्पर्श करने वाला व्यक्ति सन्ध्या तक
अशुद्ध माना जाएगा। 20वह सब जिस पर वह
अपने ऋतुकाल में लेटेगी अथवा बैठेगी, वह
अशुद्ध मानी जाएगी। 21उसकी शय्या का स्पर्श
करने वाला व्यक्ति अपने वस्त्र धोएगा और
जल से स्नान करेगा। वह सन्ध्या तक अशुद्ध
माना जाएगा। 22जिस चौकी पर वह बैठी थी,
उसका स्पर्श करने वाला व्यक्ति अपने वस्त्र
धोएगा और जल से स्नान करेगा। वह सन्ध्या
तक अशुद्ध रहेगा। 23जिस वस्तु पर वह बैठती
है, चाहे वह शय्या हो, उसका स्पर्श करने वाला
व्यक्ति सन्ध्या तक अशुद्ध माना जाएगा।
24यदि पुरुष उससे सहवास करता है और
उसका अशुद्ध रक्त उसको लग जाता है तो वह
सात दिन तक अशुद्ध रहेगा। जिस शय्या पर
वह लेटेगा, वह भी अशुद्ध मानी जाएगी।

25 'यदि स्त्री को उसके ऋतु-काल में ही
नहीं, वरन् उसके अतिरिक्त बहुत दिन तक
रक्तस्राव होता है; अथवा यदि उसके ऋतुकाल
से अधिक दिन तक रक्तस्राव होता है तो वह
उन दिनों में भी, जिनमें उसको रक्तस्राव होता
है, अपने ऋतुकाल के समान अशुद्ध मानी
जाएगी। वह अशुद्ध रहेगी। 26जिस-जिस शय्या
पर वह अपने रक्त-स्राव के दिनों में लेटेगी,
वह उसके ऋतुकाल के समान अशुद्ध मानी
जाएगी; अथवा जिस चौकी पर वह बैठेगी, वह
उसके ऋतुकाल के सदृश अशुद्ध मानी जाएगी।
27उनका स्पर्श करने वाला व्यक्ति अशुद्ध माना
जाएगा। वह अपने वस्त्र धोएगा और जल से
स्नान करेगा। वह सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा।
28परन्तु यदि वह रक्त-स्राव से मुक्त हो गई है
तो वह सात दिन प्रतीक्षा करेगी। तत्पश्चात् वह
शुद्ध मानी जाएगी। 29वह आठवें दिन दो पण्डुक
अथवा कबूतर के दो बच्चे लेकर मिलन-
शिविर के द्वार पर पुरोहित के पास आएगी।
30पुरोहित एक को पाप-बलि और दूसरे को
अग्नि-बलि के लिए अर्पित करेगा। पुरोहित
उसके अशुद्ध स्राव के हेतु उसके लिए प्रभु के
सम्मुख प्रायश्चित्त करेगा।

31 'इस प्रकार तुम इस्राएली समाज को
उनकी अशुद्धता से अलग रखना; ऐसा न हो कि
वे मेरे निवास-स्थान को, जो उनके मध्य में है,
अशुद्ध करें और अपनी अशुद्धता के कारण मर
जाएं।'

32 स्रावग्रस्त व्यक्ति, अथवा वीर्यपात के
कारण अशुद्ध होने वाले व्यक्ति, 33या अपने

---

15 : 19 यहेज 36 : 17. 25 15 : 24 लेव 20 : 18 15 : 25 मत 9 : 20

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मासिक धर्म के कारण अस्वस्थ स्त्री, अथवा
चाहे पुरुष हो या स्त्री, जिसका स्राव होता है,
तथा जो पुरुष ऋतुमती स्त्री से सहवास करता
है, इन सबके लिए यह व्यवस्था है।

प्रायश्चित-दिवस

16 जब हारून के उन दो पुत्रों की मृत्यु हुई,
जो प्रभु के सम्मुख उसके निकट गए
और मर गए, तब प्रभु मूसा से बोला। 2प्रभु ने
मूसा से कहा, 'तू अपने भाई हारून से कहना
कि वह मंजूषा के ऊपर बने हुए दया-आसन
के सम्मुख, अन्त: पट के भीतर पवित्र-स्थान
में हर समय प्रवेश न करे, अन्यथा वह मर
जाएगा; क्योंकि मैं दया-आसन के ऊपर बादल
में प्रकट होता हूँ। 3हारून पवित्र-स्थान में इस
प्रकार प्रवेश करेगा : वह पाप-बलि के लिए
एक बछड़ा तथा अग्नि-बलि के लिए एक मेढ़ा
लेकर प्रवेश करेगा। 4वह सूती वस्त्र का पवित्र
अंगरखा पहने हुए, अपने शरीर पर सूती वस्त्र
का जांघिया धारण किए हुए, सूती वस्त्र का
कटिबन्द कसे हुए और सूती वस्त्र की पगड़ी
बांधे हुए प्रवेश करेगा। ये पवित्र वस्त्र हैं। वह
जल में स्नान करेगा, और तब उनको पहनेगा।
5तत्पश्चात् वह इस्राएली मण्डली से पाप-
बलि के लिए दो बकरे तथा अग्नि-बलि के
लिए एक मेढ़ा लेगा।

6'हारून अपनी पाप-बलि के रूप में
बछड़ा चढ़ाएगा और अपने तथा अपने परिवार
के लिए प्रायश्चित्त करेगा। 7वह दो बकरे लेगा,
और उन्हें प्रभु के सम्मुख मिलन-शिविर के
द्वार पर खड़ा करेगा। 8हारून इन बकरों पर दो
चिट्ठियां डालेगा: एक चिट्ठी प्रभु के लिए
तथा दूसरी चिट्ठी अजाजेल* के लिए होगी।
9जिस बकरे पर प्रभु के लिए चिट्ठी निकलेगी,
उसको हारून अर्पित करेगा। वह उसको पाप-
बलि में चढ़ाएगा। 10पर जिस बकरे पर अजाजेल
के लिए चिट्ठी निकलेगी, वह प्रभु के सम्मुख
जीवित खड़ा किया जाएगा कि उस पर
प्रायश्चित्त किया जाए और उसको निर्जन
प्रदेश में अजाजेल के पास भेजा जा सके।

11'हारून अपनी पाप-बलि के रूप में
बछड़ा चढ़ाएगा और अपने तथा अपने परिवार
के लिए प्रायश्चित्त करेगा। वह अपनी पाप-
बलि के लिए बछड़े का वध करेगा। 12तब वह
प्रभु के सम्मुख की वेदी से अंगारों-भरा
धूपदान तथा अंजलि भर पिसा हुआ सुगन्धित
धूप-द्रव्य लेगा। वह उसको अन्त:पट के
भीतर लाएगा, 13और प्रभु के सम्मुख सुगन्धित
धूप-द्रव्य को अग्नि पर रखेगा जिससे सुगन्धित
धूप-द्रव्य का धुंआ साक्षी-पत्र की मंजूषा के
ऊपर निर्मित दया-आसन को ढक ले; अन्यथा
वह मर जाएगा। 14वह बछड़े का कुछ रक्त
लेगा, और उसको अपनी अंगुली से दया-
आसन के अग्र भाग पर छिड़क देगा। वह
दया-आसन के सामने अपनी अंगुली से सात-
बार रक्त छिड़केगा।

15'हारून लोगों के लिए पाप-बलि के
बकरे का वध करेगा। वह उसके रक्त को
अन्त:पट के भीतर लाएगा। जैसा उसने बछड़े
के रक्त के साथ किया वैसा ही बकरे के रक्त
के साथ करेगा। वह उसको दया-आसन के
ऊपर तथा उसके सामने छिड़क देगा। 16इस
प्रकार वह इस्राएली समाज की सब अशुद्धताओं,
उनके अपराधों तथा सब पापों के कारण
पवित्र-स्थान के हेतु प्रायश्चित्त करेगा। ऐसा
ही वह मिलन-शिविर के लिए करेगा, जो
उनकी अशुद्धताओं के मध्य, उनके साथ स्थित
है। 17जब वह प्रायश्चित्त के हेतु पवित्र-स्थान
में प्रवेश करेगा और जब तक वह अपने, अपने
परिवार एवं समस्त इस्राएली धर्मसभा के लिए
प्रायश्चित्त करके बाहर नहीं निकलेगा, तब
तक मिलन-शिविर में कोई भी मनुष्य उपस्थित
नहीं होगा। 18वह प्रभु के सम्मुख की वेदी के
पास बाहर आएगा और उसके हेतु प्रायश्चित्त
करेगा। वह बछड़े तथा बकरे का कुछ रक्त

---

* अर्थात्, 'उग्र देवता' (अज-बकरा) नामक भूत, जिसे 'भगाया हुआ बलि का बकरा' अर्थ दिया गया।

16 : 2 इब्र 6 : 19 **16 : 3** इब्र 9 : 7 **16 : 5** गण 29 : 11 **16 : 10** यश 13 : 21; 34 : 13-14 **16 : 15** इब्र 9 : 12 **16 : 16** रोम 3 : 25; 1 यो 2 : 2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लेकर वेदी के चारों ओर सींगों पर उसको
लगाएगा। [19]वह वेदी के ऊपर अपनी अंगुली
से सात बार रक्त छिड़केगा। इस प्रकार वह
इस्राएली समाज की अशुद्धता से उसको शुद्ध
और पवित्र करेगा।

20 'हारून पवित्र-स्थान, मिलन-शिविर
तथा वेदी के हेतु प्रायश्चित्त करने के पश्चात्
जीवित बकरे को अर्पित करेगा। [21]वह अपने
दोनों हाथ जीवित बकरे के सिर पर रखेगा, और
इस्राएली समाज के समस्त अधर्म, अपराध
और पाप स्वीकार करेगा। वह उनको बकरे के
सिर पर डाल देगा, और उस व्यक्ति के हाथ
से, जो इस कार्य के लिए नियुक्त होगा, बकरे
को निर्जन प्रदेश में भेज देगा। [22]बकरा उनके
सब अधर्म अपने ऊपर लादकर सुनसान स्थान
में ले जाएगा। वह व्यक्ति बकरे को निर्जन
प्रदेश में छोड़ देगा।

23 'तत्पश्चात् हारून मिलन-शिविर में
आएगा। वह उन सब सूती वस्त्रों को उतार कर
वहां रख देगा जो उसने पवित्र स्थान में प्रवेश
करते समय पहने थे। [24]वह शुद्ध स्थान में जल
में स्नान करेगा और अपने वस्त्र पहनकर बाहर
आएगा। तब वह अपनी तथा लोगों की अग्नि-
बलि अर्पित करेगा और अपने तथा लोगों के
लिए प्रायश्चित्त करेगा। [25]वह पाप-बलि-पशु
की चर्बी वेदी पर जलाएगा। [26]अजाजेल के
पास बकरा ले जानेवाला व्यक्ति अपने वस्त्र
धोएगा और जल में स्नान करेगा। इसके पश्चात्
ही वह पड़ाव में प्रवेश कर सकेगा। [27]पाप-बलि
का बछड़ा एवं पाप-बलि का बकरा, जिनका
रक्त प्रायश्चित्त के हेतु पवित्र-स्थान में लाया
गया था, पड़ाव के बाहर लाए जाएंगे और वहां
उनकी खाल, मांस और गोबर आग में जलाए
जाएंगे। [28]उनको जलाने वाला व्यक्ति अपने
वस्त्र धोएगा और जल में स्नान करेगा। इसके
पश्चात् ही वह पड़ाव में प्रवेश कर सकेगा।

29 'यह तुम्हारे लिए स्थायी संविधि होगी:
तुम सातवें महीने के दसवें दिन स्वयं को
उपवास के द्वारा पीड़ित करना। उस दिन कोई
भी व्यक्ति चाहे वह देशी हो अथवा तुम्हारे
मध्य में निवास करने वाला प्रवासी हो, काम
नहीं करेगा; [30]क्योंकि इस दिन तुम्हारे लिए,
तुम्हें शुद्ध करने हेतु प्रायश्चित्त किया जाएगा।
तुम प्रभु के सम्मुख अपने सब पापों से शुद्ध
किए जाओगे। [31]यह तुम्हारे लिए परम विश्राम
दिवस है। तुम स्वयं को उपवास के द्वारा पीड़ित
करना। यह स्थायी संविधि है। [32]जो पुरोहित,
अपने पिता के स्थान पर पुरोहित का कार्य करने
के लिए प्रतिष्ठित और अभ्यंजित किया गया
है, वह पवित्र सूती पोशाक पहिनकर प्रायश्चित्त
करेगा। [33]वह परम पवित्र स्थान, मिलन-
शिविर और वेदी के लिए प्रायश्चित्त करेगा।
वह पुरोहितों तथा सब लोगों की धर्मसभा के
हेतु प्रायश्चित्त करेगा। [34]यह तुम्हारे लिए स्थायी
संविधि है कि इस्राएली समाज के सब पापों के
कारण उनके लिए वर्ष में एक बार प्रायश्चित्त
किया जाए।' जैसी प्रभु ने मूसा को आज्ञा दी
थी, उन्होंने वैसा ही किया।

बलि चढ़ाने का स्थान एक ही है

17 प्रभु मूसा से बोला, [2]'हारून, उसके पुत्रों
तथा सब इस्राएलियों से बोलना; तू
उनसे यह कहना। प्रभु ने यह आज्ञा दी है :
[3]यदि इस्राएली वंश* का कोई व्यक्ति पड़ाव
में अथवा पड़ाव के बाहर बैल या मेमना अथवा
बकरी का वध करता है [4]और उसको मिलन-
शिविर के द्वार पर नहीं लाता है कि प्रभु के
निवास-स्थान के सम्मुख प्रभु को भेंट रूप में
उसे अर्पित करे, तो उस व्यक्ति पर हत्या का
आरोप लगाया जाएगा। उसने रक्त बहाया है।
ऐसा व्यक्ति अपने लोगों में से नष्ट किया
जाएगा। [5]इसका उद्देश्य यह है कि इस्राएली
लोग अपने अपने बलि-पशु जिन्हें वे खुले
मैदान में बलि चढ़ाते हैं, प्रभु के पास मिलन-
शिविर के द्वार पर पुरोहित के पास लाएं और

---

* अथवा, परिवार, घर

16 : 21 तोब 8 : 3 **16 : 22** मत 8 : 17; 12 : 43 **16 : 23** यहेज 44 : 19 **16 : 27** इब्र 13 : 11 **16 : 29** लेव 23 : 27; गण 29 : 7 **17: 1** व्य 12 : 5

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उनको प्रभु के लिए सहभागिता-बलि के रूप
में चढ़ाएं। 6पुरोहित मिलन-शिविर के द्वार पर
प्रभु की वेदी के ऊपर रक्त छिड़केगा और प्रभु
को सुखद सुगन्ध के लिए चर्बी जलाएगा।
7अत: वे अज-देवताओं* को, जिनका अनुसरण
करके वे वेश्या के सदृश विश्वासघात करते हैं,
पुन: अपने बलि-पशु न चढ़ाएं। यह पीढ़ी से
पीढ़ी तक उनके लिए स्थायी संविधि रहेगी।
8 'तू उनसे यह कहना : यदि इस्राएली वंश
का कोई व्यक्ति अथवा उनके मध्य निवास
करने वाला प्रवासी व्यक्ति, जो अग्निबलि या
बलि-पशु चढ़ाता है, 9और उसको प्रभु के
लिए अर्पित करने के हेतु मिलन-शिविर के द्वार
पर नहीं ले आता, तो ऐसा व्यक्ति अपने लोगों
में से नष्ट किया जाएगा।

रक्तपान वर्जित है

10 'यदि इस्राएली समाज का कोई व्यक्ति
अथवा उनके मध्य निवास करने वाला प्रवासी
रक्तपान करता है, ** तो मैं रक्तपान करने वाले
व्यक्ति से विमुख रहूंगा और उसके लोगों के
मध्य में से उसको नष्ट करूंगा; 11क्योंकि प्राणी
का प्राण रक्त में रहता है। मैंने तुम्हें रक्त
इसलिए दिया है कि तुम उसको अपने प्राणों के
प्रायश्चित के लिए वेदी पर चढ़ाओ। रक्त में
प्राण होने के कारण ही उससे प्रायश्चित होता
है। 12इसलिए मैं इस्राएली समाज से कहता हूं:
तुम में से कोई भी व्यक्ति रक्तपान न करे।
तुम्हारे मध्य में निवास करने वाला प्रवासी भी
रक्तपान न करे। 13यदि इस्राएली समाज का
कोई व्यक्ति अथवा तुम्हारे मध्य निवास करने
वाला प्रवासी भक्ष्य पशु या पक्षी का शिकार
करता है, तो वह उसका रक्त उण्डेल दे और
उसको धूल से ढक दे।
14 'प्रत्येक प्राणी का प्राण उसका रक्त है,
इसलिए मैंने इस्राएली समाज से कहा है : तुम
किसी प्राणी का रक्तपान मत करना ; क्योंकि
प्रत्येक प्राणी का प्राण उसका रक्त है। रक्तपान
करने वाला व्यक्ति समाज में से नष्ट किया
जाएगा। 15जो व्यक्ति, चाहे वह देशी हो अथवा
प्रवासी, हिंस्र पशु द्वारा फाड़े गए पशु अथवा
स्वाभाविक मृत्यु से मरे हुए पशु का मांस
खाएगा, तो वह अपने वस्त्र धोएगा और जल
में स्नान करेगा। वह सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा;
और तब शुद्ध हो जाएगा। 16किन्तु यदि वह
उनको न धोए, और स्नान न करे तो उसे अपने
अधर्म का भार स्वयं वहन करना पड़ेगा।'

अनैतिकता के कार्य वर्जित हैं

18 प्रभु मूसा से बोला, 2 'तू इस्राएली समाज
से बोलना ; तू उनसे यह कहना : मैं प्रभु
तुम्हारा परमेश्वर हूं। 3जैसा वे मिस्र देश में,
जहां तुमने निवास किया था, करते हैं वैसा तुम
मत करना। जैसा वे कनान देश में करते हैं, जहां
मैं तुम्हें ले जा रहा हूं, वैसा तुम मत करना। तुम
उनकी संविधियों पर मत चलना। 4तुम मेरे
न्याय-सिद्धान्तों को मानना, मेरी संविधियों का
पालन करना और उन पर चलना। मैं प्रभु,
तुम्हारा परमेश्वर हूं। 5तुम मेरी संविधियों एवं
न्याय-सिद्धान्तों का पालन करना; क्योंकि
उनको मानने से मनुष्य जीवित रहेगा। मैं प्रभु
हूं।
6 'तुम में से कोई भी व्यक्ति अपने निकट-
कुटुम्ब की स्त्री के पास संभोग करने+ के लिए
नहीं जाएगा । मैं प्रभु हूं। 7तुम अपनी मां से
संभोग करके अपने पिता का अनादर मत
करना। वह तुम्हारी मां है, तुम उसके साथ
संभोग मत करना। 8तुम अपने पिता की रखेल
स्त्री के साथ संभोग मत करना; क्योंकि उसके
साथ तुम्हारे पिता ने संभोग किया है। 9तुम अपने
पिता अथवा माता से उत्पन्न पुत्री के साथ, चाहे
उसका जन्म घर में अथवा बाहर हुआ हो,
अपनी बहिन के साथ संभोग मत करना। 10तुम
अपनी पोती अथवा नतिनी से संभोग मत

* अथवा, अजासुर, वन-देवता'। ** मूल में , 'रक्त खाता है'। + मूल में 'नग्नता उघाड़ने'।

17 : 10 उत 9 : 4 ; लेव 7 : 26 ; व्य 12 : 16-23 **17 : 11** मक 14 : 24 ; रोम 5 : 9 ; इफ 1 : 7 ; 1 पत 1 : 2 ; 1 यू 1 : 7 ; इब्र 9 : 22 **17 : 15** नि 22 : 31 ; व्य 14 : 21 ; यहेज 4 : 14 **18 : 5-23** लेव 20 : 8-21 **18 : 5** व्य 4 : 1 ; नह 9 : 29 ; यहेज 18 : 9 ; 20 : 11-13 ; लू 10 : 28 ; रोम 10 : 5 ; गल 3 : 12 **18 : 6** प्रे 15 : 20 ; 1 थिस 4 : 3-7 **18 : 8** उत 2 : 23 ; व्य 22 : 30 ; 27 : 20 ; 1 कुर 5 : 1 ; 6 : 9

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

करना; क्योंकि उनका अनादर तुम्हारा अनादर
है। 11तुम अपने पिता की रखेल स्त्री की पुत्री
से, जो तुम्हारे पिता से उत्पन्न हुई है, संभोग नहीं
करना क्योंकि वह तुम्हारी बहिन ही है। 12तुम
अपनी फूफी से संभोग मत करना; क्योंकि वह
तुम्हारे पिता की निकट कुटुम्बिनी है। 13तुम
अपनी मौसी से संभोग मत करना; क्योंकि वह
तुम्हारी माता की निकट कुटुम्बिनी है। 14तुम
अपने चाचा का अनादर मत करना; अर्थात्
उसकी पत्नी से संभोग मत करना; क्योंकि वह
तुम्हारी चाची है। 15तुम अपनी बहू से संभोग
मत करना। वह तुम्हारे पुत्र की पत्नी है। तुम
उसका अनादर नहीं करना। 16तुम अपनी भाभी
से संभोग करके अपने भाई का अनादर मत
करना। 17यदि तुमने किसी स्त्री से संभोग
किया तो उसकी पुत्री से संभोग नहीं करना और
न उसकी पोती अथवा नतिनी से संभोग करने
के उद्देश्य से उनको अपनाना। वे तुम्हारी निकट
कुटुम्बिनियां है। यह लम्पटता है। 18तुम अपनी
पत्नी की बहिन को अपना कर सौत न बनाना,
और उसकी बहिन के जीवित रहते उससे
संभोग मत करना।

19 जब कोई स्त्री मासिक धर्म के कारण
अशुद्ध है, तब उससे संभोग करने के लिए
उसके पास मत जाना। 20तुम अपने देश-भाई
की स्त्री के साथ कामुक होकर सहवास नहीं
करना और उससे अपने को अशुद्ध मत करना।
21तुम अपनी कोई भी सन्तान मोलेक देवता को
न देना ; और इस प्रकार अपने परमेश्वर का
नाम अपवित्र न करना। मैं प्रभु हूं। 22तुम स्त्री
के साथ सहवास के ढंग पर पुरुष के साथ
सहवास मत करना। यह घृणास्पद है। 23तुम
पशुगमन नहीं करना और न उससे अपने को
अशुद्ध करना। कोई स्त्री संभोग के उद्देश्य से
किसी पशु के सम्मुख खड़ी न हो। यह
अप्राकृतिक मैथुन है।

24 'ये कार्य करके अशुद्ध मत हो जाना ;
क्योंकि इन्हीं कार्यों द्वारा उन जातियों ने, जिन्हें
मैं तुम्हारे सम्मुख से निकाल रहा हूं, स्वयं को
अशुद्ध किया था। 25उनकी भूमि भी अशुद्ध हो
गई थी। अत: मैंने उस भूमि के अधर्म के कारण
उसे दण्ड दिया, और उसने अपने निवासियों
को निकाल दिया।* 26तुम मेरी संविधियों एवं
न्याय-सिद्धान्तों का पालन करना। कोई भी
व्यक्ति चाहे देशी हो अथवा तुम्हारे मध्य
निवास करने वाला प्रवासी हो, ये घृणास्पद
कार्य नहीं करेगा। 27तुमसे पूर्व उस भूमि पर
निवास करने वाले लोगों ने ये घृणास्पद कार्य
किए थे, अत: भूमि अपवित्र हो गई थी। 28ऐसा
न हो कि तुम भी भूमि को अशुद्ध करो, और
वह तुम्हें निकाल दे, जैसा उसने तुमसे पूर्व
निवास करने वाली जातियों को निकाला था।
29वे सब मनुष्य, जो इन घृणास्पद कार्यों में से
एक भी कार्य करते हैं, अपने लोगों में से नष्ट
किए जाएंगे। 30इसलिए मेरे आदेश का पालन
करो : तुम उन घृणास्पद प्रथाओं को नहीं
मानना, जिनको तुमसे पूर्व माना जाता था।
उनके द्वारा स्वयं को अशुद्ध मत करना। मैं प्रभु
तुम्हारा परमेश्वर हूं।'

पवित्रता और न्याय के नियम

19 प्रभु मूसा से बोला, 2'तू समस्त इस्राएली
मण्डली से बोलना; तू उनसे यह कहना:
पवित्र बनो ! क्योंकि मैं प्रभु तुम्हारा परमेश्वर
पवित्र हूं। 3प्रत्येक व्यक्ति अपने माता-पिता
का आदर करेगा। तुम मेरे विश्राम दिवसों का
पालन करोगे । मैं प्रभु, तुम्हारा परमेश्वर हूं।

4 'तुम मूर्तियों की ओर उन्मुख मत होना,
और न उनकी पूजा करने के लिए देवताओं की
प्रतिमाएं बनाना । मैं प्रभु तुम्हारा परमेश्वर हूं।

5 'जब तुम सहभागिता-बलि के पशु को
मेरे लिए बलि करोगे, तब उसको इस प्रकार
बलि करना कि मैं तुमसे प्रसन्न हो सकूं। 6जिस

---

* शब्दश: 'उगल दिया'

18 : 20 इब्र 13 : 4 **18 : 21** लेव 20 : 1-5; 2 रा 16 : 3 ; यिर 19 : 5 **18 : 22** व्य 23 : 18 **18 : 23** नि 22 : 19 ; व्य 27 : 21 **18 : 24-30** लेव 20 : 22-26 **19 : 2** लेव 11 : 44 ; 20 : 7 , 26 ; इफ 1 : 4 ; 1 थिस 4 : 7 ; 1 पत 1 : 16 **19 : 3** नि 20 : 8, 12 ; व्य 5 : 12, 16 **19 : 4** नि 20 : 4, 23 ; 34 : 16 ; लेव 26 : 1 ; व्य 27 : 15

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दिन तुम बलि करोगे, उसी दिन अथवा दूसरे
दिन उसका मांस खाना। परन्तु तीसरे दिन का
बचा हुआ मांस अग्नि में जलाया जाएगा। 7यदि
तुम बचा हुआ मांस तीसरे दिन भी खाओगे तो
वह दूषित होगा। उससे मुझे प्रसन्नता न होगी।
8उसको खाने वाला अपने अधर्म का भार स्वयं
वहन करेगा; क्योंकि उसने प्रभु की पवित्र वस्तु
को अपवित्र किया है। ऐसा व्यक्ति अपने लोगों
में से नष्ट किया जाएगा।

9 'जब तुम अपनी भूमि की फसल काटोगे
तब खेतों को पूरा का पूरा मत काटना, और न
फसल की कटाई के पश्चात् सिल्ला बीनना।
10तुम अपने अंगूर-उद्यान के सब अंगूर तोड़कर
उसको पूर्णतः झाड़ मत देना; और न अपने
अंगूर-उद्यान के गिरे हुए फलों को बीनना। तुम
उनको निर्धन और प्रवासी लोगों के लिए छोड़
देना। मैं प्रभु, तुम्हारा परमेश्वर हूं।

11 'तुम चोरी न करना। धोखा मत देना।
एक-दूसरे से* झूठ मत बोलना। 12तुम मेरे नाम
से झूठी शपथ नहीं खाना; और इस प्रकार अपने
परमेश्वर का नाम अपवित्र मत करना। मैं प्रभु
हूँ। 13तुम अपने पड़ोसी पर अत्याचार मत
करना, और न उसको लूटना। किसी मजदूर
की मजदूरी रात से सबेरे तक तुम्हारे पास नहीं
रहनी चाहिए। 14तुम बहरे को अपशब्द मत
कहना, और न अन्धे के सम्मुख रोड़ा अटकाना,
वरन् तुम परमेश्वर से डरना। मैं प्रभु हूं।

15 'तुम न्याय करते समय अन्याय मत
करना। तुम न तो दरिद्र व्यक्ति का पक्ष लेना
और न बड़े मनुष्य के सम्मुख झुकना, वरन्
धार्मिकता से अपने देश-भाई अथवा बहिन का
न्याय करना। 16तुम निन्दक के समान अपने
लोगों में यहां-वहां निन्दा मत फैलाना, और न
अपने पड़ोसी की हत्या के उद्देश्य से घात
लगाना। मैं प्रभु हूं।

17 'तुम अपने भाइयों अथवा बहिनों+ से
हृदय में घृणा मत करना। तुम अपने देश-भाई
अथवा बहिन को अवश्य समझाना। ऐसा न हो
कि उसके कारण तुम्हें पाप का भार वहन करना
पड़े। 18तुम अपने जाति-भाई-बहिनों से
प्रतिशोध न लेना, और न उनके प्रति शत्रुता
रखना, वरन् अपने पड़ोसी को अपने ही समान
प्रेम करना। मैं प्रभु हूं।

19 'तुम मेरी संविधियों का पालन करना।
तुम अपने पशुओं को विजातीय पशुओं से
गर्भाधान मत कराना। तुम अपने खेतों में दो
जाति के बीज नहीं बोना, और न सूती-ऊनी
धागे के सम्मिश्रण से बुने हुए वस्त्र अपने ऊपर
धारण करना।

20 'यदि कोई पुरुष ऐसी स्त्री के साथ, जो
दासी है, जिसकी मंगनी दूसरे पुरुष से हुई है
और जिसको मूल्य देकर मुक्त नहीं किया गया
है, अथवा जिसे स्वतन्त्रता नहीं दी गई है,
कामुक होकर सहवास करता है, तो जांच-
पड़ताल की जाएगी। उन्हें मृत्यु-दण्ड नहीं
मिलेगा; क्योंकि वह स्वतन्त्र नहीं थी। 21किन्तु
वह पुरुष प्रभु के लिए दोष-बलि में चढ़ाने के
हेतु एक मेढ़ा मिलन-शिविर के द्वार पर
लाएगा। 22जो पाप उसने किया है, उसके लिए
पुरोहित प्रभु के सम्मुख दोष-बलि के मेढ़े से
प्रायश्चित करेगा। तब उसका पाप क्षमा किया
जाएगा।

23 'जब तुम कनान देश में प्रवेश करोगे,
और वहां आहार के लिए सब प्रकार के वृक्ष
लगाओगे, तब उनके फलों को वर्जित मानना।
तीन वर्ष तक उनके फल तुम्हारे लिए वर्जित
रहेंगे। तुम उन्हें कदापि मत खाना। 24वृक्ष के
सब फल चौथे वर्ष में प्रभु के स्तुति-उत्सव के
निमित्त पवित्र होंगे। 25तुम पांचवें वर्ष में उनके
फल खा सकते हो, जिससे वे तुम्हारे लिए फल
की भरपूर फसल उत्पन्न करें। मैं प्रभु, तुम्हारा
परमेश्वर हूं।

---

* शब्दशः, 'प्रत्येक अपने देश-भाई से'। + मूल में, 'भाई'

19 : 9 लेव 23 : 22 ; व्य 24 : 19-22 **19 : 11** नि 20 : 15 ; व्य 5 : 19 **19 : 12** नि 20 : 7 ; व्य 5 : 11 ; मत 5 : 33 **19 : 13** व्य 24 : 14 ; याक 5 : 4 **19 : 14** व्य 27 : 18 **19 : 15** नि 23 : 6-8 ; व्य 1 : 17 ; 16 : 19 **19 : 17** यहेज 33 : 6 ; मत 18 : 15 **19 : 18** मत 5 : 43, 19 : 19; 22 : 39 ; रोम 12 : 17, 19; 13 : 9; गल 5 : 14; याक 2: 8 **19 : 19** व्य 22 : 9-11

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

26 'तुम रक्त सम्मिश्रित मांस मत खाना।
तुम शकुन-अपशकुन मत मानना, और न
जादू-टोना करना। [27]तुम मृत्यु शोक प्रकट
करने के लिए अपनी कनपटी के केशों को मत
मूंड़ना और न दाढ़ी के किनारे को काटना।
[28]किसी व्यक्ति की मृत्यु के कारण अपने शरीर
पर घाव मत करना, और न उस पर गोदने
गुदवाना। मैं प्रभु हूं।

29 'तुम अपनी पुत्री को वेश्या बनाकर भ्रष्ट
मत करना; ऐसा न हो कि सारा देश वेश्यागमन
करने लगे और वह लम्पटता से भर जाए।
[30]तुम मेरे विश्राम-दिवसों का पालन करना;
मेरे पवित्र-स्थान के प्रति श्रद्धा रखना। मैं प्रभु
हूं।

31 'तुम ओझों अथवा भूत-प्रेत साधनेवालों
की ओर उन्मुख मत होना। उन्हें मत खोजना,
अन्यथा उनके द्वारा तुम अपवित्र हो जाओगे।
मैं प्रभु, तुम्हारा परमेश्वर हूं।

32 'तुम आदर देने के लिए वृद्ध मनुष्य के
सम्मुख खड़े होना, और वयोवद्ध मनुष्य का
सम्मान करना। तुम अपने परमेश्वर से डरना।
मैं प्रभु हूं।

33 'यदि कोई प्रवासी तुम्हारे साथ तुम्हारे
देश में निवास करता है तो तुम उस पर
अत्याचार मत करना। [34]तुम्हारे मध्य में निवास
करने वाला प्रवासी व्यक्ति तुम्हारे लिए देशी
भाई अथवा बहिन के सदृश होगा। तुम उससे
अपने समान प्रेम करना; क्योंकि तुम भी
मिस्र देश में प्रवासी थे। मैं प्रभु, तुम्हारा
परमेश्वर हूं।

35 'तुम न्याय, नाप, तौल और मात्रा में
अन्याय मत करना। [36]तुम्हारे तराजू, बाट, किलो
और लिटर* सब ठीक-ठीक हों। मैं प्रभु,
तुम्हारा परमेश्वर हूं, जिसने तुम्हें मिस्र देश से
बाहर निकाला है। [37]तुम मेरी सब संविधियों
और न्याय-सिद्धान्तों का पालन करना, और
उन्हें व्यवहार में लाना। मैं प्रभु हूं।'

आज्ञा-उल्लंघन का दण्ड

20 प्रभु मूसा से बोला, [2]'तू इस्राएली समाज
से यह कहना : यदि इस्राएली समाज का
कोई व्यक्ति अथवा इस्राएलियों के मध्य में
निवास करने वाला कोई प्रवासी अपनी सन्तान
मोलेक देवता को देगा, तो उसे मृत्युदण्ड दिया
जाएगा। उस देश के लोग उसे पत्थरों से मार
डालेंगे। [3]यदि किसी ने मेरे पवित्र-स्थान को
अशुद्ध और मेरे पवित्र नाम को अपवित्र करके
अपनी सन्तान मोलेक देवता को दी, तो मैं स्वयं
ऐसे व्यक्ति से विमुख होऊंगा और उसके
लोगों के मध्य से उसे नष्ट करूंगा। [4]यदि देश
के लोग उस मनुष्य की, जिसने अपनी सन्तान
मोलेक देवता को दी है, देखी-अनदेखी करेंगे
और उसे मृत्युदण्ड नहीं देंगे, [5]तो मैं उससे तथा
उसके परिवार से विमुख होऊंगा, और उनके
लोगों के मध्य से उस व्यक्ति को तथा उन
सबको नष्ट कर दूंगा जो उस व्यक्ति की देखा-
देखी मोलेक देवता का अनुगमन कर वेश्या
सदृश व्यवहार करेंगे, और यों मुझसे विश्वासघात
करेंगे।

6 'यदि कोई व्यक्ति ओझों तथा भूत-प्रेतों
को साधने वालों की ओर उन्मुख होगा और
उनका अनुगमन कर मेरे प्रति वेश्या सदृश
व्यवहार करेगा, तो मैं उस व्यक्ति से विमुख
होऊंगा और उसके लोगों के मध्य से उसको
नष्ट करूंगा। [7]इसलिए तुम अपने आपको शुद्ध
करो; पवित्र बनो, क्योंकि मैं प्रभु, तुम्हारा
परमेश्वर पवित्र हूं। [8]मेरी संविधियों का पालन
करो और उनको व्यवहार में लाओ। तुम्हें
पवित्र करने वाला मैं, प्रभु हूं। [9]जो व्यक्ति अपनी
माता अथवा पिता को अपशब्द कहेगा, उसे
मृत्यु-दण्ड दिया जाएगा। क्योंकि उसने अपनी

---

* मूल में "एपा और हीन"

19 : 26 इत 9 : 4; लेव 7 : 26; व्य 18 : 10 **19 : 28** लेव 21 : 5 ; व्य 14 : 1 यिर 16:6; यहेज 7 : 18 **19 : 29** व्य 23 : 17 **19 : 30** लेव 26 : 2 ; नि 20 : 8 ; यिर 17 : 21; यहेज 20 : 12 **19: 31** 1 शम 28: 7; 2 रा 23 : 4; यश 8 : 19; **19 : 33** नि 22: 21; व्य 24 : 17; 27 : 19 **19 : 35** आमो 8 : 5; यश 10 : 2 **19 : 36** व्य 25 : 13; नीति 20 : 10 ; यहेज 45 : 10 **20 : 2** लेव 18 : 21 **20 : 6** लेव 19 : 31 ; 2 रा 23 : 24 **20 : 7** लेव 11 : 44 **20 : 8-21** लेव 18 : 5-23 **20 : 9** नि 21 : 17 ; व्य 27 : 16 ; मत 15 : 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

माता अथवा पिता को अपशब्द कहे थे, अतः उसका रक्त उसी के सिर पर पड़ेगा।

10 'यदि कोई पुरुष अपने पड़ोसी की स्त्री से व्यभिचार करता है, तो व्यभिचारी तथा व्यभिचारिणी, दोनों को मृत्युदण्ड दिया जाएगा। [11]जो पुरुष अपने पिता की स्त्री के साथ सहवास करता है, वह अपने पिता का अनादर करता है। दोनों को मृत्यु-दण्ड दिया जाएगा। उनका रक्त उनके सिर पर पड़ेगा। [12]यदि कोई पुरुष अपनी बहू के साथ सहवास करेगा, तो दोनों को मृत्यु-दण्ड दिया जाएगा। उन्होंने कौटुम्बिक व्यभिचार किया है; अतः उनका रक्त उन्हीं के सिर पर पड़ेगा। [13]यदि कोई पुरुष स्त्री के साथ सहवास के ढंग पर दूसरे पुरुष के साथ सहवास करेगा, तो दोनों घृणास्पद कार्य करेंगे। दोनों को मृत्यु-दण्ड दिया जाएगा। उनका रक्त उन्हीं के सिर पर पड़ेगा। [14]यदि कोई पुरुष स्त्री और उसकी मां दोनों को रखेगा, तो यह लम्पटता है। तीनों अग्नि में जलाए जाएंगे, जिससे तुम्हारे मध्य में लम्पटता न रहे। [15]यदि कोई पुरुष पशुगमन करेगा, तो उसे मृत्युदण्ड दिया जाएगा। तुम पशु का वध करना। [16]यदि कोई स्त्री पशु के निकट जाकर उससे संभोग करेगी, तो तुम उस स्त्री और पशु का वध करना। दोनों को मृत्यु-दण्ड दिया जाएगा। उनका रक्त उन्हीं के सिर पर पड़ेगा।

17 'यदि कोई पुरुष अपनी बहिन को, चाहे वह उसके पिता अथवा उसकी माता की पुत्री हो, रखेगा और वह उसकी नग्नता को देखेगा या उसकी बहिन उसकी नग्नता देखेगी तो यह लज्जाजनक बात होगी। वे दोनों अपने लोगों की आंखों के सम्मुख नष्ट किए जाएंगे। उसने अपनी बहिन की नग्नता उघाड़ी है; अतः वह अपने अधर्म का भार स्वयं वहन करेगा। [18]यदि कोई पुरुष ऋतुमति स्त्री के साथ सहवास करेगा और उसकी नग्रता को उघाड़ेगा तो ऐसा पुरुष उसके रक्त-स्रोत को नग्न करता है। और वह स्त्री भी अपने रक्त-स्रोत को उघाड़ती है। अतः दोनों अपने लोगों के मध्य से नष्ट किए जाएंगे। [19]तुम अपनी मौसी अथवा फूफी से संभोग मत करना; क्योंकि ऐसा करना अपनी निकट कुटुम्बिनी का अनादर करना है। वे अपने अधर्म का भार स्वयं वहन करेंगे। [20]यदि कोई पुरुष अपनी चाची के साथ सहवास करेगा तो वह अपने चाचा का अनादर करेगा। अतः वे अपने पाप के भार स्वयं वहन करेंगे। वे निस्सन्तान मरेंगे। [21]यदि कोई पुरुष अपनी भाभी को रखेगा तो यह अशुद्ध सम्बन्ध होगा। उसने अपने भाई का अनादर किया है। वे दोनों निस्सन्तान होंगे।

22 'अतः तुम मेरी सब संविधियों और न्याय-सिद्धान्तों का पालन करना, और उनको व्यवहार में लाना जिससे वह देश जहां मैं तुम्हें ला रहा हूं, तुम्हें नहीं निकाल सके। [23]तुम उन जातियों की प्रथाओं पर मत चलना, जिन्हें मैं तुम्हारे सम्मुख से निकाल रहा हूं। उन्होंने ये सब कार्य किए थे; अतएव मैंने उनसे घृणा की। [24]परन्तु मैंने तुमसे कहा है, "तुम उनके देश पर अधिकार करोगे। मैं उनके देश को तुम्हें दूंगा कि तुम उस पर अधिकार करो। उस देश में दूध और शहद की नदियां बहती हैं।" मैं प्रभु, तुम्हारा परमेश्वर हूं, जिसने तुम्हें अन्य जातियों से अलग कर पवित्र किया है। [25]इसलिए तुम शुद्ध और अशुद्ध पशु, शुद्ध और अशुद्ध पक्षी में भेद करना। मैंने जिस पशु, पक्षी अथवा भूमि पर रेंगनेवाले जीव-जन्तु को तुम्हारे लिए अशुद्ध निश्चित किया है, उसके द्वारा तुम अपने को घृणास्पद मत बनाना। [26]तुम मेरे लिए पवित्र होगे; क्योंकि मैं प्रभु, पवित्र हूं। मैंने तुम्हें अन्य जातियों से अलग किया है कि तुम मेरे अपने बनो।

27 'प्रत्येक स्त्री अथवा पुरुष को जो ओझा या भूत-प्रेत साधने वाला है, मृत्यु-दण्ड दिया जाएगा। उनका पत्थरों से मार कर वध किया जाएगा। उनका रक्त उन्हीं के सिर पर पड़ेगा।'

---

20 : 10 नि 20 : 14 ; व्य 5 : 18 **20 : 11** व्य 27 : 23 **20 : 14** लेव 18 : 17 **20 : 15** नि 22 : 19 **20 : 18** लेव 15 : 24 **20 : 21** लेव 18 : 16; मत 14 : 4 **20 : 22-26** लेव 18 : 24-30 **20 : 27** लेव 19 : 31 ; 20 : 6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पुरोहितों की शुद्धता

21 प्रभु ने मूसा से कहा, 'हारून के पुत्रों, पुरोहितों से बोलना; तू उनसे यह कहना : तुम्हारे लोगों में किसी की मृत्यु होने पर कोई भी व्यक्ति अपने को अशुद्ध नहीं करेगा;2 वह केवल अपने निकट सम्बन्धी अर्थात् माता, पिता, पुत्र, पुत्री, भाई3 तथा कुंवारी बहिन (जो उसकी निकट सम्बन्धी है; क्योंकि उसका पति नहीं है) की मृत्यु होने पर अपने को अशुद्ध कर सकता है। 4वह अपने लोगों में स्वामी होने के कारण* स्वयं को अशुद्ध नहीं करेगा जिससे वह अपवित्र हो जाए। 5पुरोहित शोक प्रकट करने के लिए अपने-अपने सिर का मुंडन नहीं कराएंगे, अपनी दाढ़ी के किनारे को नहीं मुड़ाएंगे और न अपने शरीर पर घाव करेंगे। 6वे अपने परमेश्वर के हेतु पवित्र बनेंगे, और अपने परमेश्वर के नाम को अपवित्र नहीं करेंगे। वे परमेश्वर का आहार अर्थात् बलि, प्रभु के लिए अग्नि में अर्पित करते हैं। अतएव वे पवित्र रहेंगे। 7वे वेश्या अथवा भ्रष्ट स्त्री से विवाह नहीं करेंगे। वे परित्यक्ता स्त्री से, जिसे उसके पति ने त्याग दिया है, विवाह नहीं करेंगे; क्योंकि पुरोहित अपने परमेश्वर के लिए पवित्र है। 8तुम उसे पवित्र मानना; क्योंकि वह तुम्हारे परमेश्वर का आहार चढ़ाता है। वह तुम्हारे लिए पवित्र होगा ; क्योंकि मैं प्रभु, जो तुम्हें पवित्र करता हूं, पवित्र हूं। 9यदि किसी पुरोहित की पुत्री वेश्यावृत्ति के द्वारा अपने को अपवित्र करेगी, तो वह अपने पिता को ही अपवित्र करेगी। उसे आग में जलाया जाएगा।

10 'जो पुरोहित अपने पुरोहित-भाइयों में प्रमुख है, जिसके सिर पर अभ्यंजन का तेल उण्डेला गया है, जिसको पुरोहित पद पर प्रतिष्ठित किया गया है कि वह पुरोहित की पोशाक पहिन सके, वह अपने सिर के केश बिखरने नहीं देगा और न मृत्युशोक प्रकट करने के लिए अपने वस्त्र फाड़ेगा। 11वह किसी शव के निकट, चाहे वह उसके पिता अथवा माता का हो, नहीं जाएगा और स्वयं को अशुद्ध नहीं करेगा। 12वह पवित्र-स्थान से बाहर नहीं निकलेगा, और अपने परमेश्वर के पवित्र-स्थान को अशुद्ध नहीं करेगा; क्योंकि उसके सिर पर परमेश्वर का अभ्यंजन-तेल उण्डेलकर उसको पवित्र सेवा के लिए अलग किया गया है। मैं प्रभु हूं। 13वह किसी स्त्री से, उसके कौमार्य में ही विवाह करेगा। 14वह विधवा, परित्यक्ता, भ्रष्ट अथवा वेश्या से विवाह नहीं करेगा, किन्तु अपनी जाति की कुंवारी कन्या से विवाह कर उसे पत्नी बनाएगा, 15जिससे वह अपनी सन्तान को अपनी जाति में अपवित्र न करे; क्योंकि उसे पवित्र करने वाला मैं, प्रभु हूं।'

16 प्रभु मूसा से बोला, 17'तू हारून से यह कहना : तेरे वंश में पीढ़ी से पीढ़ी तक यदि किसी पुरोहित में कोई शारीरिक दोष होगा, तो वह अपने परमेश्वर का आहार अर्पित करने के लिए उसके निकट नहीं आएगा। 18कोई व्यक्ति जिसमें शारीरिक दोष होगा, निकट नहीं आएगा, चाहे वह अन्धा, लंगड़ा, विकृत मुखवाला, असमान अंगवाला हो, 19अथवा जिसका पैर या हाथ टूटा हो, 20अथवा कुबड़ा, बौना, जिसकी आंख में कोई दोष हो, जिसको खाज-खुजली हो, अथवा जिसके अण्डकोष कुचले हुए हों। 21पुरोहित हारून के वंश का व्यक्ति, जिसमें कोई शारीरिक दोष होगा, प्रभु के लिए अग्नि में बलि चढ़ाने के हेतु निकट नहीं आएगा। उसमें शारीरिक दोष है, इसलिए वह अपने परमेश्वर का आहार अर्पित करने के लिए निकट नहीं आएगा। 22वह परमेश्वर का परम पवित्र आहार तथा अर्पण की अन्य पवित्र वस्तुएं खा सकता है। 23किन्तु वह अन्तःपट तथा वेदी के निकट नहीं आएगा; जिससे वह मेरे पवित्र स्थानों को अपवित्र न करे; क्योंकि उसमें शारीरिक दोष है। उन्हें पवित्र करने वाला

* अथवा, 'पिता के रूप में', 'विवाहित होने पर'।

21 : 1 यहेज 44 : 25 **21 : 5** लेव 19 : 27-28 ; व्य 14 : 1 **21 : 7** यहेज 44 : 22 **21 : 10** लेव 8 : 12; 10: 6 **21 : 18** लू 14 : 13 . 21

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मैं, प्रभु हूं।'
24 मूसा ने ये बातें हारून, उसके पुत्रों एवं
समस्त इस्राएली समाज से कहीं।

चढ़ावे की पवित्रता

22 प्रभु मूसा से बोला, 2 'तू हारून और
उसके पुत्रों से बोलना कि वे इस्राएली
समाज की पवित्र वस्तुओं से, जिन्हें इस्राएली
लोग मुझे चढ़ाते हैं, अलग रहें जिससे वे मेरे
पवित्र नाम को अपवित्र न करें। मैं प्रभु हूं।
3उनसे कहना : यदि तुम्हारी पीढ़ी से पीढ़ी में
तुम्हारा कोई वंशज अशुद्ध दशा में उन पवित्र
वस्तुओं के निकट आएगा जिनको इस्राएली
लोग मुझ प्रभु को चढ़ाते हैं, तो वह व्यक्ति मेरे
सम्मुख से नष्ट किया जाएगा। मैं प्रभु हूं।
4हारून के वंश का कोई व्यक्ति, जो कुष्ठ-
जैसे रोग से पीड़ित अथवा स्राव-ग्रस्त है, जब
तक वह शुद्ध न हो जाए तब तक पवित्र वस्तुएं
नहीं खाएगा। जो शव के कारण अथवा मनुष्य
के वीर्यपात के कारण अशुद्ध होता है, उसका
स्पर्श करने वाला 5अथवा वह व्यक्ति जो उस
रेंगनेवाले जीव-जन्तु का स्पर्श करेगा, जिसके
कारण मनुष्य अशुद्ध होता है, अथवा जो
व्यक्ति उस मनुष्य का स्पर्श करेगा जिससे वह
अशुद्ध हो सकता है, चाहे उसकी अशुद्धता
किसी भी प्रकार की क्यों न हो—6तो जो व्यक्ति
इनमें से किसी का भी स्पर्श करेगा, वह सन्ध्या
तक अशुद्ध रहेगा। जब तक वह जल में स्नान
नहीं करेगा तब तक पवित्र वस्तुओं को नहीं
खाएगा। 7सूर्यास्त होने पर वह शुद्ध हो जाएगा।
तत्पश्चात् वह इन पवित्र वस्तुओं को खा
सकेगा; क्योंकि ये उसका आहार हैं। 8वह हिंस्र
पशु के द्वारा फाड़े गए पशु अथवा मृत पशु की
लोथ का मांस खाकर स्वयं को अशुद्ध नहीं
करेगा। मैं प्रभु हूं। 9इसलिए वे मेरे आदेश का
पालन करेंगे। ऐसा न हो कि वे उसको अपवित्र
करके पाप का भार स्वयं वहन करें और मर
जाएं। उनको पवित्र करने वाला मैं, प्रभु हूं।
10 'जो व्यक्ति पुरोहित* नहीं है, वह पवित्र
वस्तुएं नहीं खाएगा। पुरोहित का अतिथि
अथवा उसका मजदूर भी पवित्र वस्तु नहीं
खाएगा। 11किन्तु यदि पुरोहित किसी व्यक्ति
को रुपयों से खरीदकर अपनी सम्पत्ति बना ले,
तो वह गुलाम उसको खा सकेगा। पुरोहित के
परिवार में उत्पन्न गुलाम उसके भोजन को खा
सकते हैं। 12यदि पुरोहित की पुत्री का विवाह
उस व्यक्ति से हुआ है, जो पुरोहित नहीं है, तो
वह अर्पण की पवित्र वस्तुएं नहीं खाएगी।
13किन्तु यदि पुरोहित की पुत्री परित्यक्ता
अथवा विधवा है, उसकी सन्तान नहीं है, और
वह कन्या के सदृश अपने पिता के घर लौट
आई है, तो वह अपने पिता का भोजन खा
सकती है। कोई अपुरोहित उसको नहीं खाएगा।
14यदि कोई व्यक्ति अनजाने पवित्र वस्तु खा
ले, तो वह उसके मूल्य का पांचवां भाग उसमें
जोड़ेगा और पुरोहित को पवित्र वस्तु देगा।
15जो पवित्र वस्तुएं इस्राएली लोग प्रभु को
अर्पित करते हैं, उन्हें पुरोहित अपवित्र न करें,
16और वे उन पवित्र वस्तुओं को खाकर उन
लोगों को भी अधर्म का भार वहन करने वाले
और दोषी न बनाएं; क्योंकि उनको पवित्र
करनेवाला मैं, प्रभु हूं।'
17 प्रभु मूसा से बोला, 18'हारून, उसके
पुत्रों एवं समस्त इस्राएली समाज से बोलना।
तू उनसे यह कहना : जब इस्राएल के वंशज
अथवा उनके मध्य में निवास करने वाले
प्रवासी अपनी मन्नत हेतु अथवा प्रभु को
अग्नि-बलि के रूप में स्वेच्छा-बलि के हेतु
चढ़ावा चढ़ाएंगे 19तो इसको ग्राह्य बनाने के
लिए तुम निष्कलंक बछड़ा, मेढ़ा, अथवा
बकरा चढ़ाना। 20जिन पशुओं में शारीरिक दोष
होगा, उनको मत चढ़ाना क्योंकि उन्हें ग्रहण
नहीं किया जाएगा। 21जब कोई व्यक्ति मन्नत में
अथवा स्वेच्छा-बलि के हेतु गाय-बैल या
भेड़-बकरियों में से सहभागिता-बलि का पशु
प्रभु को चढ़ाएगा, तब ग्राह्य बनने के लिए पशु
निष्कलंक होना चाहिए। उसके शरीर पर कोई

---

* अथवा 'दूसरे परिवार, कुल का व्यक्ति'

22 : 20 व्य 17 : 1 ; मला 1 : 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दोष नहीं होना चाहिए। [22]अन्धा, विकलांग,
विकृत अंगवाला, फोड़ा-फुन्सी, खाज-खुजली
वाला पशु प्रभु को मत चढ़ाना। इनको प्रभु के
लिए वेदी पर अग्नि में अर्पित नहीं करना।
[23]जिस बैल अथवा मेमने का कोई अंग बड़ा
या छोटा है, उसको स्वेच्छा-बलि के रूप में
चढ़ा सकते हो। परन्तु मन्नत में उसको ग्रहण
नहीं किया जाएगा। [24]कुचले, दबे, टूटे अथवा
कटे अण्डकोष वाला पशु प्रभु को मत चढ़ाना,
और न अपने देश में ही उसको बलि करना।
[25]विदेशी व्यक्ति से प्राप्त ऐसे पशु अपने
परमेश्वर के आहार के रूप में मत चढ़ाना।
उनके शरीर पर दोष है, वे विकृत हैं, इसलिए
ग्रहण नहीं किए जाएंगे।'

26 प्रभु मूसा से बोला, [27]'जब बछड़ा, मेमना
अथवा बकरी का बच्चा उत्पन्न होगा, तब वह
सात दिन तक अपनी मां के साथ रहेगा। उसके
पश्चात् आठवें दिन से वह प्रभु को अग्नि में
अर्पित चढ़ावे के रूप में ग्राह्य होगा। [28]तुम गाय
अथवा भेड़ को उसके बच्चे के साथ एक ही
दिन वध मत करना। [29]जब तुम स्तुतिबलि में
प्रभु के लिए पशु वध करोगे तब उसको इस
प्रकार वध करना कि तुम ग्राह्य हो सको।
[30]बलि-पशु का मांस उसी दिन खाया जाएगा।
तुम उसमें से कुछ भी सबेरे तक नहीं छोड़ना।
मैं प्रभु हूं।

31 'तुम मेरी आज्ञाओं का पालन करना और
उनको व्यवहार में लाना। मैं प्रभु हूं। [32]तुम मेरे
पवित्र नाम को अपवित्र मत करना; क्योंकि मैं
इस्राएली समाज के मध्य में पवित्र माना
जाऊंगा। तुम्हें पवित्र करनेवाला मैं, प्रभु हूं।
[33]तुम्हारा परमेश्वर होने के लिए मैंने तुम्हें मिस्र
देश से बाहर निकाला है। मैं प्रभु हूं।'

निर्धारित पर्व

23 प्रभु मूसा से बोला, [2]'इस्राएली समाज
से बोलना, तू उनसे यह कहना : प्रभु के
निर्धारित पर्व तुम पवित्र समारोह के हेतु
आयोजित करोगे। वे मेरे पर्व ये हैं : [3]छः दिन
तक तो कार्य किया जाएगा; किन्तु सातवां दिन
परम विश्राम-दिवस, पवित्र समारोह का दिन
है। तुम उस दिन कोई कार्य मत करना। वह
तुम्हारे सब निवास स्थानों में प्रभु के हेतु
विश्राम-दिवस माना जाएगा।

4 'ये प्रभु के निर्धारित पर्व, पवित्र समारोह
हैं, जिन्हें तुम उनके नियत समय पर आयोजित
करोगे : [5]पहले महीने के चौदहवें दिन सन्ध्या
समय प्रभु का पास्का (फसह) पर्व मनाना;
[6]और इसी महीने के पन्द्रहवें दिन प्रभु के लिए
बेखमीर रोटी का यात्रा-पर्व मनाया जाएगा।
तुम सात दिन तक बेखमीर रोटी खाना। [7]तुम
पहले दिन पवित्र समारोह आयोजित करना।
उस दिन किसी भी प्रकार का कठोर परिश्रम
मत करना। [8]तुम प्रभु को सात दिन तक अग्नि
में चढ़ावा चढ़ाना। सातवां दिन पवित्र समारोह
का दिन है। उस दिन किसी भी प्रकार का कठोर
परिश्रम मत करना।'

9 प्रभु मूसा से बोला, [10]'इस्राएली समाज
से कहना, तू उनसे यह कहना : जब तुम उस
देश में प्रवेश करोगे जो मैं तुम्हें दे रहा हूं और
उसकी फसल काटोगे, तब फसल के प्रथम
फल का एक पूला पुरोहित के पास लाना।
[11]पुरोहित पूले को प्रभु के सम्मुख लहराएगा
ताकि तुम ग्रहण किए जाओ। वह विश्राम-
दिवस के दूसरे दिन उसको लहराएगा। [12]जिस
दिन तुम पूला लहराओगे, उस दिन प्रभु को
अग्नि-बलि में एक वर्ष का एक निष्कलंक
मेमना चढ़ाना। [13]उसके साथ अन्न-बलि में
तेल सम्मिश्रित दो किलो मैदा प्रभु की सुखद
सुगन्ध के हेतु अग्नि में अर्पित किया जाएगा।
इसके अतिरिक्त उसके साथ दो लिटर अंगूररस
पेय-बलि में चढ़ाया जाएगा। [14]जब तक तुम
अपने परमेश्वर के पास चढ़ावा न लाओगे, तब
तक प्रथम फसल की रोटी या बालों के भुने
अथवा कच्चे दाने मत खाना। यह तुम्हारे समस्त
निवास-स्थानों में तुम्हारी पीढ़ी से पीढ़ी तक
स्थायी संविधि है।

---

22 : 28 नि 23 : 19 **22 : 32** यश 6 : 3 ; मत 6 : 9 **23 : 1-44** नि 23 : 14-17; 34 : 22-24 ; व्य 16 : 17
23 : 3 नि 20 : 9 **23 : 5** नि 12 : 6 ; गण 28 : 16 **23 : 11** नि 29 : 24

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
15 'तुम विश्राम-दिवस के दूसरे दिन से,
जिस दिन तुम लहर-बलि के पूले लाओगे उस
दिन से गणना करना: वे पूरे सात सप्ताह होंगे।
16सातवें विश्राम-दिवस के दूसरे दिन को
मिलाकर पचास दिन होंगे। तब तुम प्रभु को नव
अन्न की अन्न-बलि चढ़ाना। 17तुम अपने
निवास-स्थानों से लहर-बलि के लिए दो
किलो मैदा की दो रोटियां लाओगे। वे प्रभु के
लिए प्रथम फल के रूप में खमीर के साथ बनाई
जाएंगी। 18तुम रोटियों के साथ एक-एक वर्ष
के सात निष्कलंक मेमने, एक बछड़ा, और दो
मेढ़े चढ़ाना। ये लोगों की अन्न-बलि तथा पेय-
बलि के साथ प्रभु के लिए अग्नि-बलि होंगे
तथा अग्नि में अर्पित सुखद सुगन्ध बन जाएंगे।
19तुम पापबलि में एक बकरा तथा सहभागिता-
बलि में एक-एक वर्ष के दो मेमने चढ़ाना।
20पुरोहित उनको प्रभु के सम्मुख प्रथम फल
की रोटियों के साथ लहर-बलि के लिए
लहराएगा। वह रोटियों के साथ उन दो मेमनों
को भी लहराएगा। वे प्रभु के लिए पवित्र माने
जाएंगे, और पुरोहित का भाग होंगे। 21तुम उसी
दिन घोषणा करना और पवित्र समारोह का
आयोजन करना। तुम किसी प्रकार का कठोर
परिश्रम मत करना। यह तुम्हारे समस्त
निवास-स्थानों में पीढ़ी से पीढ़ी तक स्थायी
संविधि है।

22 'जब तुम अपनी भूमि की फसल काटोगे
तब खेतों को पूरा का पूरा मत काटना और न
फसल की कटाई के पश्चात् सिल्ला बीनना।
तुम उनको निर्धन और प्रवासी लोगों के लिए
छोड़ देना। मैं प्रभु, तुम्हारा परमेश्वर हूं।'

23 प्रभु मूसा से बोला, 24'तू इस्राएली समाज
से यह कहना : तुम सातवें महीने के प्रथम दिन
परम विश्राम-दिवस मनाना। इस स्मरण दिवस
की, पवित्र समारोह की घोषणा नरसिंगे के स्वर
से करना। 25तुम किसी प्रकर का कठोर परिश्रम
मत करना। तुम प्रभु को अग्नि में अर्पित बलि
चढ़ाना।'

26 प्रभु मूसा से बोला, 27'इस सातवें महीने
के दसवें दिन प्रायश्चित्त दिवस है। वह तुम्हारे
लिए पवित्र समारोह का समय होगा। उस दिन
तुम स्वयं को उपवास के द्वारा पीड़ित करना
और प्रभु को अग्नि में अर्पित बलि चढ़ाना।
28तुम इस दिन किसी प्रकार का कार्य नहीं
करना; क्योंकि यह प्रभु परमेश्वर के सम्मुख
तुम्हारा प्रायश्चित्त करने के लिए प्रायश्चित्त
दिवस है। 29जो व्यक्ति इस दिन स्वयं को
उपवास के द्वारा पीड़ित नहीं करेगा, वह अपने
लोगों में से नष्ट किया जाएगा। 30जो व्यक्ति
इस दिन किसी प्रकार का कार्य करेगा, उस
व्यक्ति को मैं उसके लोगों के मध्य से मिटा
डालूंगा। 31 तुम किसी प्रकार का कार्य मत
करना। यह तुम्हारे समस्त निवास-स्थानों में
पीढ़ी से पीढ़ी तक स्थायी संविधि है। 32वह
तुम्हारे लिए परम विश्राम-दिवस होगा। उस
दिन तुम स्वयं को उपवास के द्वारा पीड़ित
करना। तुम उस महीने के नवें दिन की सन्ध्या
से दूसरे दिन की सन्ध्या तक विश्राम-दिवस
मनाना।'

33 प्रभु मूसा से बोला, 34'तू इस्राएली समाज
से बोलना : इस सातवें महीने के पन्द्रहवें दिन
से सात दिन तक प्रभु के लिए मण्डप-पर्व
मनाना। 35प्रथम दिन पवित्र समारोह आयोजित
करना। उस दिन तुम किसी प्रकार का कठोर
परिश्रम मत करना। 36तुम सात दिन तक प्रभु
को अग्नि में अर्पित बलि चढ़ाना। आठवें दिन
पवित्र समारोह आयोजित करना, और प्रभु को
अग्नि में अर्पित बलि चढ़ाना। यह गम्भीर
समारोह है। अतः उस दिन तुम किसी प्रकार
का कठोर परिश्रम मत करना।

37 'ये प्रभु के निर्धारित पर्व हैं, जिनमें
पवित्र समारोह के आयोजन की घोषणा करना।
ये पर्व प्रभु को अग्नि में अर्पित बलि चढ़ाने,
अग्नि-बलि, अन्न-बलि, पशु-बलि और पेय-
बलि उनके नियत दिन पर अर्पित करने के लिए
हैं। 38ये प्रभु का विश्राम-दिवस मनाने के

---

23 : 15 नि 34 : 22 ; व्य 16 : 9 **23 : 22** लेव 19 : 9 ; व्य 24 : 19 **23 : 24** गण 10 : 10 ; 29 : 1 **23 : 27** लेव 16 : 30 ; गण 29 : 7 **23 : 34** व्य 16 : 13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अतिरिक्त हैं; तथा तुम्हारी समस्त भेंट, मन्नत और स्वेच्छा-बलि के अतिरिक्त हैं, जो तुम प्रभु को देते हो।

39 'सातवें महीने के पन्द्रहवें दिन, जब तुम भूमि की फसल एकत्र करोगे तब प्रभु के लिए सात दिन तक पर्व मनाना। पहला दिन परम विश्राम-दिवस होगा; आठवां दिन भी परम विश्राम-दिवस होगा। 40प्रथम दिन तुम सर्वोत्तम वृक्ष के फल, खजूर वृक्ष की शाखाएं, पत्तेदार पेड़ों की डालें और झरनों के भिंसा वृक्ष की शाखाएं लेकर अपने प्रभु परमेश्वर के सम्मुख सात दिन तक आनन्द मनाना। 41तुम प्रतिवर्ष सात दिन तक प्रभु के हेतु उस यात्रा-पर्व को मनाना। यह तुम्हारी पीढ़ी से पीढ़ी तक स्थायी संविधि है। तुम उसको सातवें महीने में मनाना। 42तुम सात दिन तक मण्डपों में निवास करोगे। इस्राएल के सब मूल निवासी मण्डपों में निवास करेंगे, 43जिससे तुम्हारी पीढ़ी दर पीढ़ी को ज्ञात हो जाए कि जब मैंने इस्राएली लोगों को मिस्र देश से बाहर निकाला था तब उनको मण्डपों में निवास कराया था। मैं प्रभु, तुम्हारा परमेश्वर हूं।'

44 इस प्रकार मूसा ने इस्राएली समाज को प्रभु के निर्धारित पर्व बताए।

दीपाधार को सजाना

24 प्रभु मूसा से बोला, 2'इस्राएली समाज को आदेश दे कि दीप-प्रज्वलन के लिए पेरकर निकाला गया जैतून का शुद्ध तेल लाएं जिससे एक दीप निरन्तर जलता रहे। 3हारून उसको मिलन-शिविर में अन्त:पट के बाहर सन्ध्या से सबेरे तक प्रभु के सम्मुख निरन्तर सजाकर रखेगा। यह तुम्हारी पीढ़ी से पीढ़ी तक स्थायी संविधि होगी। 4वह शुद्ध स्वर्ण के दीपाधार पर प्रभु के सम्मुख दीपकों को निरन्तर सजाकर रखेगा।

भेंट की रोटियां

5 'तुम मैदा लेना और उसकी बारह रोटियां बनाना। प्रत्येक रोटी दो किलो मैदा की बनाई जाएगी। 6तुम उनको दो पंक्तियों में प्रभु के सम्मुख शुद्ध स्वर्ण की मेज पर रखना। प्रत्येक पंक्ति में छ: रोटियां होंगी। 7तुम प्रत्येक पंक्ति के साथ शुद्ध लोबान रखना जिससे वह रोटियों सहित स्मारक भाग बनकर प्रभु को अग्नि में अर्पित हो जाए। 8हारून प्रत्येक विश्राम-दिवस पर इस्राएली समाज की ओर से शाश्वत विधान के रूप में प्रभु के सम्मुख नित्य नयी रोटियां क्रम से रखा करेगा। 9ये रोटियां हारून और उसके पुत्रों की होंगी। वे उनको पवित्र-स्थान में खाएंगे; क्योंकि प्रभु को अग्नि में अर्पित बलि में से यह उनका परम पवित्र भाग है। इस पर उनका स्थायी अधिकार है।'

ईशनिन्दा तथा क्षति-पूर्ति का नियम

10 एक बार किसी इस्राएली स्त्री का पुत्र जिसका पिता मिस्र का रहने वाला था, इस्राएली समाज के मध्य गया। वहां पड़ाव में वह तथा एक इस्राएली पुरुष परस्पर झगड़ने लगे। 11इस्राएली स्त्री के पुत्र ने प्रभु के नाम की निन्दा की और अपशब्द कहे। लोग उसको मूसा के पास लाए। उसकी मां का नाम शलोमीत था, जो दानवंशीय दिब्री की पुत्री थी। 12उन लोगों ने इस्राएली स्त्री के पुत्र को उस समय तक हवालात में रखा जब तक प्रभु का वचन उनको स्पष्ट ज्ञात नहीं हो गया।

13 प्रभु मूसा से बोला, 14'ईश-निन्दक को पड़ाव से बाहर निकालो; और जिन्होंने निन्दा सुनी है, वे उसके सिर पर हाथ रखें, और सारी मण्डली उसको पत्थरों से मारे। 15तू इस्राएली समाज से यह भी बोलना: जो व्यक्ति अपने परमेश्वर को अपशब्द कहेगा, वह अपने पाप का भार स्वयं वहन करेगा। 16प्रभु-नाम के निन्दक को मृत्युदण्ड दिया जाएगा। सब मण्डली उसको पत्थरों से मारेगी। जब कोई व्यक्ति, चाहे वह प्रवासी हो अथवा देशी, प्रभु-नाम की निन्दा करेगा तब उसे मृत्युदण्ड दिया जाएगा। 17जो मनुष्य किसी व्यक्ति की हत्या करेगा, उसे मृत्यु-दण्ड दिया जाएगा। 18पशु की हत्या करने वाला व्यक्ति उसकी क्षतिपूर्ति

---

23 : 39 नि 23 : 16 **24 : 2** नि 27 : 20 **24 : 5** नि 25 : 30 **24 : 9** मत 12 : 4 **24 : 17** नि 21 : 12

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

करेगा : पशु के बदले पशु। [19]यदि कोई मनुष्य अपने किसी देश-भाई अथवा बहिन का अंग-भंग करेगा, तो उसके साथ भी वैसा किया जाएगा: [20]अस्थि-भंग के बदले अस्थि-भंग, आंख के बदले आंख, दांत के बदले दांत। जैसा उसने दूसरे मनुष्य का अंग-भंग किया है, वैसा उसका किया जाएगा। [21]पशु की हत्या करने वाला व्यक्ति उसकी क्षतिपूर्ति करेगा ; किन्तु मनुष्य की हत्या करने वाले व्यक्ति को मृत्यु-दण्ड दिया जाएगा। [22]प्रवासी तथा देशी व्यक्ति के लिए एक ही न्याय-सिद्धान्त होगा; क्योंकि मैं प्रभु, तुम्हारा परमेश्वर हूं।'

23 मूसा ने इस्राएली समाज से ये बातें कहीं। वे ईश-निन्दक को पड़ाव के बाहर ले गए। वहां उन्होंने उसे पत्थरों से मार डाला। इस प्रकार जैसा प्रभु ने मूसा को आदेश दिया था वैसा ही इस्राएलियों ने किया।

सातवां विश्राम वर्ष : जुबली वर्ष

25 प्रभु मूसा से सीनय पर्वत पर बोला, [2]'तू इस्राएली समाज से बोलना; तू उनसे यह कहना: जब तुम उस देश में प्रवेश करोगे जो मैं तुम्हें दे रहा हूं, तब उस देश की भूमि भी प्रभु के लिए विश्राम करेगी। [3]तुम छः वर्ष तक अपने खेत में बुवाई करना, छः वर्ष तक अपने अंगूर के उद्यान की काट-छांट करना और उसकी उपज एकत्र करना। [4]किन्तु सातवें वर्ष में भूमि को परम विश्राम प्राप्त होगा : प्रभु का विश्राम-वर्ष। तुम उस वर्ष न तो अपने खेत की बुवाई करोगे और न अपने अंगूर-उद्यान की काट-छांट। [5]जो कुछ तुम्हारे कटे हुए खेत में अपने आप उगे उसको मत काटना, और न अनछटी अंगूर की बेलों के अंगूर तोड़ना; क्योंकि यह भूमि के लिए परम विश्राम का वर्ष होगा। [6]परन्तु भूमि अपने विश्राम-वर्ष में तुम्हारी, तुम्हारे सेवक-सेविकाओं, मजदूरों और तुम्हारे मध्य में निवास करने वाले प्रवासी व्यक्तियों की भोजन-व्यवस्था करेगी। [7]भूमि की समस्त उपज तुम्हारे पालतू पशुओं एवं देश के जंगली पशुओं के लिए आहार होगी।

8 'तुम सात विश्राम-वर्ष अर्थात् सातगुना सात वर्ष गिनना। सात विश्राम-वर्ष का यह काल उनचास वर्ष होगा। [9]तब तुम सातवें महीने के दसवें दिन सब स्थानों पर नरसिंगा फूंकना। प्रायश्चित दिवस पर तुम अपने देश के सब स्थानों पर नरसिंगा फूंकना। [10]तुम पचासवें वर्ष को पवित्र मानना, और देश के समस्त निवासियों की स्वतन्त्रता की घोषणा करना। यह "जुबली वर्ष" * कहलाएगा। इस वर्ष प्रत्येक व्यक्ति अपनी पैतृक सम्पत्ति पुनः प्राप्त करेगा। हर एक मनुष्य अपने परिवार में लौट आएगा। [11]तुम्हारे लिए पचासवां वर्ष जुबली वर्ष होगा। तुम उस वर्ष बुवाई नहीं करोगे, और जो कुछ अपने आप उगेगा, उसको नहीं काटोगे, और न अनछटी अंगूर की बेलों के अंगूर तोड़ोगे; [12]क्योंकि वह जुबली वर्ष होगा। वह तुम्हारे लिए पवित्र वर्ष होगा। जो खेतों में उपज होगी, तुम उसी को खाना।

13 'इस जुबली वर्ष में प्रत्येक व्यक्ति अपनी पैतृक सम्पत्ति पुनः प्राप्त करेगा। [14]यदि तुम अपने किसी देश-भाई अथवा बहिन को कुछ बेचोगे अथवा उसके हाथ से कुछ खरीदोगे, तो एक दूसरे पर अन्धेर मत करना। [15]पिछले जुबली वर्ष के पश्चात् जितने वर्ष व्यतीत हुए हैं, उनकी गणना के अनुसार तुम अपने देश-भाई अथवा बहिन से खरीदोगे; फसल के शेष वर्षों की गणना के अनुसार वह तुम्हें बेचेगा। [16]यदि अधिक वर्ष शेष हैं, तो तुम मूल्य में वृद्धि करना; पर यदि कम वर्ष शेष हैं, तो मूल्य घटा देना; क्योंकि जो वह बेचता है, वह फसलों की गणना के अनुसार बेचता है। [17]तुम एक दूसरे पर अन्धेर मत करना; वरन् अपने परमेश्वर से डरना ; क्योंकि मैं प्रभु, तुम्हारा परमेश्वर हूं।

18 'तुम मेरी संविधियों को मानना, मेरे न्याय-सिद्धान्तों का पालन करना और उनको

---

* अर्थात 'मेढ़े का नरसिंगा' या मेढ़े के नरसिंगें का नाद, जिससे जयन्ती- वर्ष आरम्भ होता है।

24 : 19 नि 21 : 24; व्य 19 : 21; मत 5 : 38 **24 : 22** नि 12 : 49 ; गण 15 : 16 **25 : 2** नि 23 : 10 **25 : 10** यश 61 : 1-3 ; यिर 34 : 8 ; लू 4 : 19 ; गल 5 : 1 **25 : 14** मी 2 : 2 ; यश 5 : 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

व्यवहार में लाना जिससे तुम देश में निश्चिन्त
निवास कर सको। [19]भूमि तुम्हें अपना फल
देगी और उसको भर पेट खाकर तुम देश में
निश्चिन्त निवास करोगे। [20]यदि तुम यह कहोगे,
''जब हम सातवें वर्ष भूमि पर न बुवाई करेंगे
और न उसकी फसल एकत्र करेंगे, तब हम
क्या खाएंगे ?' [21]तो मैं छठे वर्ष तुम पर अपनी
आशिष प्रेषित करूंगा जिससे भूमि की उपज
तीन वर्ष के लिए पर्याप्त होगी।* [22]इसलिए जब
तुम आठवें वर्ष में बुवाई करोगे तब पुरानी उपज
में से ही खाओगे। तुम नौवें वर्ष की नई फसल
आने तक पुरानी उपज को ही खाओगे। [23]भूमि
को स्थायी रूप से नहीं बेचा जाएगा; क्योंकि
भूमि मेरी है। मेरे यहां तुम प्रवासी और अतिथि
हो। [24]समस्त देश में, जहां तुम्हारा अधिकार है,
भूमि को मूल्य देकर मुक्त कर देना।

25 'यदि तुम्हारा जाति-भाई अथवा बहिन
दरिद्र हो जाए और वह अपनी पैतृक सम्पत्ति
में से कुछ बेच दे, तो उसका निकट कुटुम्बी
आएगा और जो उस व्यक्ति ने बेचा था, उसको
मूल्य देकर मुक्त करा लेगा। [26]यदि किसी व्यक्ति
के लिए मुक्त करनेवाला कुटुम्बी न हो, परन्तु
स्वयं समृद्ध हो जाए और अपनी भूमि को मुक्त
करने के लिए उसे पर्याप्त धन प्राप्त हो जाए
[27]तो वह उस वर्ष से गणना करेगा, जिस वर्ष
उसने उसको बेचा था, और जिस व्यक्ति को
उसने बेचा था, उसे शेष वर्षों का मूल्य देगा।
तब उसे सम्पत्ति पुनः प्राप्त हो जाएगी। [28]यदि
उसके हाथ में अपनी सम्पत्ति पुनः प्राप्त करने
के लिए पर्याप्त धन न हो, तो वह सम्पत्ति
खरीदने वाले के हाथ में जुबली वर्ष तक रहेगी।
जुबली वर्ष में सम्पत्ति स्वयं मुक्त हो जाएगी
और बेचनेवाले को पुनः प्राप्त होगी।

29 'यदि कोई मनुष्य परकोटावाले नगर का
निवासयोग्य मकान बेचेगा तो वह उसको
विक्रय-दिन के पश्चात् पूरे एक वर्ष की अवधि
में मूल्य देकर मुक्त करा सकेगा; क्योंकि मूल्य
देकर मुक्त कराने का अधिकार पूरे एक वर्ष की
अवधि तक होगा। [30]यदि मकान पूरे एक वर्ष
तक मूल्य देकर मुक्त नहीं किया जाएगा, तो
परकोटावाले नगर का निवास-योग्य मकान
पीढ़ी से पीढ़ी तक उस मनुष्य के स्थायी
अधिकार में हो जाएगा, जिसने उसको खरीदा
था- वह जुबली वर्ष में भी मुक्त नहीं किया
जाएगा। [31]उन गांवों के, जिनके चारों ओर
परकोटा नहीं होता, उनके मकानों की गणना
देश के खेतों में की जाएगी। उनको मूल्य देकर
अवश्य ही मुक्त किया जाएगा। वे जुबली वर्ष
में मुक्त किए जाएंगे। [32]फिर भी जिन नगरों
पर लेवी-वंश का अधिकार है, उनमें स्थित
मकानों को लेवीय जन किसी भी समय मूल्य
देकर मुक्त कर सकते हैं। [33]यदि कोई लेवीय
जन मूल्य देकर मुक्त करने के अपने अधिकार
को प्रयुक्त नहीं करेगा तो उसके अधिकृत नगर
में स्थित मकान, जो बेचा गया है, जुबली वर्ष
में मुक्त हो जाएगा; क्योंकि इस्राएली समाज के
मध्य में लेवीय नगरों के मकानों पर उनका
अधिकार है। [34]उनके नगरों की सार्वजनिक
भूमि पर खेत नहीं बेचे जाएंगे; क्योंकि उन पर
लेवीय लोगों का स्थायी अधिकार है।

35 'यदि तुम्हारा जाति-भाई अथवा बहिन
दरिद्र हो जाए, और वह अपना हाथ तुम्हारे
सम्मुख फैलाए तो तुम उसको संभालना। वह
प्रवासी अथवा अस्थायी प्रवासी के समान
तुम्हारे साथ निवास करेगा। [36]उससे ब्याज
अथवा अधिक धन मत लेना, वरन् अपने
परमेश्वर से डरना, जिससे तुम्हारा जाति-भाई
अथवा बहिन भी तुम्हारे साथ जीवित रहे।
[37]तुम उसको ब्याज पर रुपया नहीं देना, और
न लाभ कमाने के उद्देश्य से भोजन-वस्तु। [38]मैं
प्रभु, तुम्हारा परमेश्वर हूं। मैंने तुमको मिस्र
देश से इसलिए बाहर निकाला है कि तुम्हें
कनान देश प्रदान करूं और तुम्हारा परमेश्वर
होऊं।

---

* अन्य प्रामाणिक संस्करणों के अनुसार, 'भूमि तीन वर्ष के लिए उपज उत्पन्न करेगी।'

25 : 23 भज 39 : 12; 119 : 19; 1 इत 29 : 15 ; 1 पत 2 : 11 **25 : 25** रूत 2 : 20; 3 : 2; यिर 32 : 7 यहो 21 : 2 ; यहेज 48 : 13 **25 : 35** व्य 15 : 7 **25 : 36** नि 22 : 25; व्य 23 : 19

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

39 'यदि तुम्हारे सम्मुख तुम्हारे जाति-भाई
अथवा बहिनें दरिद्र हो जाएं, और वे अपने
आपको तुम्हारे हाथ में बेच दें, तो तुम उनसे
दास-दासियों के समान सेवा मत कराना। 40वे
तुम्हारे साथ मजदूर अथवा अस्थायी प्रवासी के
रूप में रहेंगे। वे जुबली-वर्ष तक तुम्हारी सेवा
करेंगे। 41तत्पश्चात् वे तुम्हारे पास से चले
जाएंगे—वे अपने बच्चों के साथ अपने कुटुम्ब
में लौट जाएंगे और अपने पूर्वजों की सम्पत्ति
पुनः प्राप्त करेंगे; 42क्योंकि वे मेरे सेवक हैं।
मैंने उनको मिस्र देश से बाहर निकाला है।
उनको दास-रूप में नहीं बेचा जाएगा। 43उन
पर कठोरता से शासन मत करना; वरन् अपने
परमेश्वर से डरना। 44यदि तुम्हें दास-दासियों
की आवश्यकता है तो अपने आस-पास
निवास करने वाली जातियों में से दास-दासियां
खरीदना। 45तुम्हारे साथ निवास करने वाले
अस्थायी प्रवासियों तथा उनके कुटुम्बियों की
सन्तान में से, जो तुम्हारे साथ रहते हैं और
जिनका जन्म तुम्हारे ही देश में हुआ है, दास-
दासियां खरीद सकते हो। वे तुम्हारी सम्पत्ति
होंगे। 46तुम उन्हें अपने पश्चात् अपनी संतान
को वसीयत के रूप में सौंप सकते हो कि वे
तुम्हारी संतान की स्थायी सम्पत्ति बनें। तुम
उनको दास-दासियां बना सकते हो। किन्तु
अपने इस्राएली भाई-बहिनों पर, एक व्यक्ति
दूसरे व्यक्ति पर कठोरता से शासन नहीं करेगा।
47 'यदि तुम्हारे साथ रहने वाला कोई
प्रवासी अथवा अस्थायी प्रवासी व्यक्ति धनी
हो जाए परन्तु तुम्हारा जाति-भाई अथवा बहिन
दरिद्र, और वह अपने आपको उस प्रवासी
अथवा अस्थायी प्रवासी व्यक्ति या प्रवासी के
कुटुम्ब के किसी सदस्य के हाथ में बेच दे, 48तो
उसके विक्रय के पश्चात् उसे मूल्य देकर मुक्त
किया जा सकेगा। उसके भाइयों में से कोई भी
भाई मूल्य देकर उसे मुक्त कर सकता है
49अथवा उसका चाचा या चचेरा भाई मूल्य
देकर मुक्त कर सकता है। उसके परिवार में
उसका निकट सम्बन्धी भी मूल्य देकर उसे
मुक्त कर सकता है। उसके हाथ में धन आने
पर वह मूल्य देकर अपने आपको मुक्त कर
सकता है। 50वह अपने खरीदने वाले के साथ
अपने विक्रय वर्ष से जुबली वर्ष तक गणना
करेगा। उसकी मुक्ति का मूल्य वर्षों की गणना
के अनुसार होगा। वह अपने स्वामी के साथ
जितने समय तक रहा उसका मूल्य मजदूर के
समय के समान मानकर निर्धारित किया
जाएगा। 51यदि जुबली वर्ष के आगमन में अभी
अनेक वर्ष शेष हैं, तो वह उनकी गणना के
अनुसार अपने विक्रय-मूल्य में से धनराशि
मुक्ति-मूल्य में लौटाएगा। 52यदि जुबली वर्ष
के आगमन में अभी कुछ वर्ष ही शेष हैं तो वह
अपने स्वामी के साथ गणना करेगा। जितने वर्ष
शेष हैं, उनके अनुसार वह अपना मुक्ति-मूल्य
लौटाएगा। 53जैसे मजदूर वार्षिक मजदूरी पर
रखा जाता है वैसे ही उसके साथ किया जाएगा।
तुम्हारी आंखों के सामने उसका स्वामी उस पर
कठोरता से शासन नहीं कर सकेगा। 54किन्तु
यदि वह इन उपायों से भी मूल्य देकर मुक्त नहीं
होगा तो जुबली वर्ष में उसको मुक्त किया
जाएगा। उसके साथ उसकी सन्तान भी मुक्त
होगी; 55क्योंकि मेरे लिए ही इस्राएली लोग
सेवक हैं। वे मेरे सेवक हैं। मैंने ही उनको मिस्र
देश से बाहर निकाला है। मैं प्रभु, तुम्हारा
परमेश्वर हूं।

आज्ञापालन का फल

26 'तुम अपने लिए प्रतिमा न बनाना, और
न मूर्ति और न पूजा-स्तम्भ खड़ा
करना। तुम अपने देश में चित्रित पाषाण भी
स्थापित न करना, जिससे उनकी पूजा की जाए;
क्योंकि मैं प्रभु, तुम्हारा परमेश्वर हूं। 2तुम मेरे
विश्राम -दिवसों का पालन करना और मेरे
पवित्र-स्थान के प्रति श्रद्धा रखना। मैं प्रभु हूं।
3 'यदि तुम मेरी संविधि पर चलोगे, मेरी
आज्ञाओं का पालन करोगे और उनको व्यवहार
में लाओगे 4तो मैं तुम्हारे लिए समय पर वर्षा

---

25 : 39 नि 21 : 2 ; व्य 15 : 12 ; यिर 34 : 14 **26 : 1** नि 20 : 4 ; लेव 19 : 4 ; व्य 4 : 16 ; 5 : 8 ; यहेज 8 : 12 **26 : 2** लेव 19 : 30 **26 : 3-13** व्य 7 : 12-26 ; 28 : 1-14

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रदान करूंगा, जिससे भूमि अपनी उपज
उपजाएगी और मैदान के वृक्ष फल देंगे। 5तुम
अंगूर के संचयकाल तक दंवरी करते रहोगे,
और बुवाई के समय तक अंगूर का संचय। तुम
रोटी खाकर तृप्त होगे और निश्चिन्त होकर
अपने देश में निवास करोगे। 6मैं देश को शान्ति
प्रदान करूंगा, और तुम निर्भय सो सकोगे; तुम्हें
कोई नहीं डराएगा। मैं तुम्हारे देश में हिंस्र
पशुओं को नहीं रहने दूंगा। कोई जाति तुम्हारे
देश पर तलवार नहीं चलाएगी। 7तुम अपने
शत्रुओं का पीछा करोगे, और वे तुम्हारी
तलवार के कारण तुम्हारे सम्मुख गिरेंगे।
8तुम्हारे पांच मनुष्य सौ शत्रुओं का, और सौ
मनुष्य दस हजार शत्रुओं का पीछा करेंगे; और
वे तम्हारी तलवार के कारण तुम्हारे सम्मुख
गिरेंगे। 9मैं तुम्हारी ओर उन्मुख होऊंगा। तुम्हें
फलवन्त एवं असंख्य बनाऊंगा; और तुम्हारे
साथ अपने विधान को सुदृढ़ करूंगा। 10तुम
पुराना संचित अनाज खाओगे, और नया अनाज
रखने के लिए पुराना अनाज हटाओगे। 11मैं तुम्हारे
मध्य में निवास करूंगा, और मेरा प्राण तुमसे
घृणा नहीं करेगा। 12मैं तुम्हारे मध्य विचरण
करूंगा। मैं तुम्हारा परमेश्वर होऊंगा, और तुम
मेरे लोग। 13मैं प्रभु, तुम्हारा परमेश्वर हूं। मैंने
ही तुम्हें मिस्र देश से बाहर निकाला है जिससे
तुम उनके गुलाम न बने रहो। मैंने तुम्हारे जूए
के बन्धन तोड़े, और तुम्हें सीधा खड़ा किया है।

आज्ञा-उल्लंघन के परिणाम

14 'परन्तु यदि तुम मेरी बात नहीं सुनोगे,
और इन सब आज्ञाओं का पालन नहीं करोगे;
15यदि तुम मेरी संविधियों की अवहेलना
करोगे; यदि तुम्हारे प्राण मेरे न्याय-सिद्धान्तों से
घृणा करेंगे जिससे तुम मेरी आज्ञाओं का पालन
न करो और मेरे विधान को तोड़ो, 16तो मैं तुम्हारे
साथ यह व्यवहार करूंगा : तुम पर आतंक
ढाहूंगा, तुम्हें क्षय रोग और ऐसे ज्वर से पीड़ित
करूंगा जिसके कारण आंखें धंस जातीं और
प्राण मुरझा जाते हैं। तुम्हारा बीज बोना व्यर्थ
होगा; क्योंकि तुम्हारे शत्रु ही उनको खाएंगे।
17मैं तुमसे विमुख होऊंगा, जिससे तुम अपने
शत्रुओं के सम्मुख हार जाओगे। जिनसे घृणा
करते हो, वे ही तुम पर शासन करेंगे। तुम्हारा
पीछा करने वाला कोई न होगा, फिर भी तुम
भागते जाओगे। 18यदि इन विपत्तियों के होने
पर भी तुम मेरी बात नहीं सुनोगे, तो मैं तुम्हारे
पाप के कारण तुम्हें सात गुना ताड़ित करूंगा।
19तुम्हारे बल के गर्व को चूर-चूर करूंगा।
तुम्हारे आकाश को लोहे के समान सख्त तथा
तुम्हारी भूमि को पीतल के सदृश कठोर बना
दूंगा और वर्षा नहीं होगी। 20तब भूमि पर तुम्हारा
सम्पूर्ण परिश्रम व्यर्थ हो जाएगा; क्योंकि भूमि
अपनी उपज न उपजाएगी और न मैदान के
वृक्षों में फल लगेंगे।

21 'यदि तुम मेरे विरुद्ध चलते रहोगे और
मेरी बात पर ध्यान नहीं दोगे, तो तुम्हारे पाप से
सात गुना महामारी तुम पर भेजूंगा। 22मैं तुम्हारे
विरुद्ध मैदान के हिंस्र पशुओं को छोड़ूंगा, जो
तुम्हारे बच्चों को तुम्हारे पास से उठाकर ले
जाएंगे, और तुम्हारे पालतू पशुओं को फाड़
डालेंगे। वे तुम्हें इतनी अधिक संख्या में नष्ट
करेंगे कि तुम्हारे मार्ग निर्जन हो जाएंगे।

23 'यदि इन ताड़नाओं से भी तुम मेरी ओर
नहीं लौटोगे और मेरे विरुद्ध चलते रहोगे 24तो
मैं भी तुम्हारे विरुद्ध चलूंगा। मैं स्वयं तुम पर
तुम्हारे पाप के कारण सात गुना प्रहार करूंगा।
25मैं तुम पर शुत्र का आक्रमण कराऊंगा* जो
तुमसे विधान-भंग का प्रतिशोध लेगा। यदि तुम
अपने नगरों में एकत्र होगे तो मैं तुम पर
महामारियां भेजूंगा और तुम शत्रुओं के हाथ में
पड़ जाओगे। 26मैं तुम्हारे जीवन का आधार
चूर-चूर कर दूंगा। दस स्त्रियां एक ही तन्दूर पर
रोटियां बनाएंगी, और वे तुम्हें रोटी तौल-
तौलकर देंगी। तुम रोटियां खाओगे, पर तृप्त
नहीं होगे।

* मूल में 'तलवार लाऊंगा'

26 : 5 व्य 11 : 15 ; यहेज 34 : 25 ; आमो 9 : 13 **26 : 11** यहेज 37 : 26 ; यो 1 : 14 **26 : 12** 2 कुर 6 : 16 ; प्रक 21 : 3 **26 : 14-45** व्य 28 : 16-68 **26 : 19** यिर 14 : 4 **26 : 20** व्य 11 : 17 **26 : 22** यहेज 14 : 15 ; शोक 1 : 4 **26 : 25** यहेज 6 : 3 ; 21 : 3 ; आमो 4 : 10 **26 : 26** भज 105 : 16 ; यहेज 4 : 16

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

27 'यदि इस पर भी तुम मेरी बात नहीं
सुनोगे, और मेरे विरुद्ध चलते रहोगे, 28तो मैं
क्रोध में भर कर तुम्हारे विरुद्ध चलूंगा। मैं स्वयं
क्रोध में भर कर तुम्हारे पाप के कारण तुम्हें सात
गुना ताड़ित करूंगा। 29तुम अपने पुत्रों का मांस
खाओगे; अपनी पुत्रियों का मांस खाओगे।
30मैं तुम्हारे पहाड़ी शिखर के पूजा-गृहों को
गिरा दूंगा, तुम्हारी धूप-वेदियों* को नष्ट कर
दूंगा। तुम्हारे देवताओं की ध्वस्त मूर्तियों पर
तुम्हारे शव फेंकूंगा। मेरा प्राण तुमसे घृणा
करेगा। 31 मैं तुम्हारे नगर उजाड़ दूंगा, तुम्हारे
पवित्र-स्थानों को निर्जन बना दूंगा। मैं तुम्हारी
बलि की सुखद सुगन्ध नहीं सूंघूंगा। 32मैं तुम्हारे
देश को इतना निर्जन कर दूंगा कि उसमें बसने
वाले तुम्हारे शत्रु आश्चर्य करेंगे। 33 मैं तुम्हें
अनेक राष्ट्रों में तितर-बितर करूंगा और
तुम्हारे विरुद्ध स्वयं मैं म्यान से तलवार
निकालूंगा। तुम्हारा देश निर्जन हो जाएगा।
तुम्हारे नगर उजाड़ हो जाएंगे।

34 'जब तक तुम अपने शत्रुओं के देश में
रहोगे और तुम्हारी जन्मभूमि निर्जन रहेगी, तब
तक वह अपने विश्राम वर्षों का आनन्द-पूर्वक
पालन करेगी। भूमि विश्राम करेगी और विश्राम
वर्षों का आनन्दपूर्वक पालन करेगी। 35जितने
दिन तक वह निर्जन रहेगी, वह विश्राम करेगी।
जब तुम उस पर निवास करते थे तब उसको
तुम्हारे विश्राम दिवसों में यह विश्राम नहीं मिला
था। 36तुममें से बचे हुए व्यक्तियों के हृदय में
जो तुम्हारे शत्रुओं के देश में होंगे, कायरता
उत्पन्न करूंगा। सूखे पत्तों के खड़कने का स्वर
ही उनको भगा देगा। वे ऐसे भागेंगे, जैसे कोई
व्यक्ति तलवार से बचने के लिए भागता है।
उनका पीछा करने वाला न होने पर भी वे गिर-
गिर पड़ेंगे। 37वे एक दूसरे पर लड़खड़ाकर
गिरेंगे मानो तलवार से बचने के लिए भाग रहे
हों—यद्यपि उनका पीछा करने वाला कोई भी
न होगा। तुममें शक्ति नहीं रह जाएगी कि तुम
अपने शत्रुओं के सम्मुख खड़े भी हो सको।
38तुम उन राष्ट्रों में नष्ट हो जाओगे। तुम्हारे
शत्रुओं की भूमि तुम्हें चट कर जाएगी। 39शत्रु-
देश में बचे हुए व्यक्तियों का उनके अधर्म के
कारण क्रमशः क्षय होगा। उनके पूर्वजों के
अधर्म के कारण उन्हीं के समान उनका भी क्षय
होगा।

40 'यदि वे अपने अधर्म को और पूर्वजों के
अधर्म को स्वीकारते हैं, जो उन्होंने मेरे विरुद्ध
विश्वासघात करके और मेरे विरुद्ध चलकर
किया था, 41जिसके कारण मैं उनके विरुद्ध
चला था और उन्हें शत्रुओं के देश में ले आया
था; यदि वे अपने कठोर हृदय **को विनम्र करेंगे,
अपने अधर्म के दण्ड को स्वीकार करेंगे 42तो
मैं याकूब, इसहाक और अब्राहम के साथ
स्थापित किये गये अपने विधान को स्मरण
करूंगा, मैं तुम्हारी भूमि को स्मरण करूंगा।
43किन्तु पहले भूमि उनके द्वारा निर्जन छोड़ी
जाएगी। जब तक भूमि उनके न रहने से निर्जन
रहेगी, वह विश्राम वर्षों का आनन्दपूर्वक पालन
करेगी। वे अपने अधर्म के दण्ड को स्वीकार
करेंगे; क्योंकि उन्होंने मेरे न्याय-सिद्धान्तों की
अवहेलना की है, उनके प्राणों ने मेरी संविधियों
से घृणा की है। 44यह होने पर भी जब वे अपने
शत्रुओं के देश में रहेंगे, मैं उनको नहीं
ठुकराऊंगा, और न उनसे इतनी घृणा करूंगा
कि उन्हें समूल नष्ट कर दूं, उनके साथ स्थापित
अपने विधान को तोड़ दूं; क्योंकि मैं प्रभु,
उनका परमेश्वर हूं। 45किन्तु मैं उनके पूर्वजों
के साथ स्थापित अपने विधान को स्मरण
करूंगा, जिनको मैं विभिन्न जातियों की आंखों
के सामने मिस्र देश से बाहर निकाल लाया था
कि मैं उनका परमेश्वर होऊं। मैं प्रभु हूं।'

46 जो संविधि, न्याय-सिद्धान्त और व्यवस्था
प्रभु ने, मूसा के माध्यम से, अपने तथा इस्राएली
समाज के मध्य सीनय पर्वत पर स्थापित की,
वे ये ही हैं।

* अथवा "सूर्य स्तंभ" ** अथवा 'खतना रहित हृदय'

26 : 29 यहेज 5 : 10 ; शोक 2 : 20 **26 : 30** भज 78 : 58-64 **26 : 31** यिर 22: 5 **26 : 34** 2 इत 36 : 21; यहेज 21 : 12 **26 : 40** 1 रा 8 : 33 ; यिर 3 : 12 **26 : 41** यिर 9 : 25 ; 4 : 4 ; यहेज 44 : 7 ; रोम 2 : 29 **26 : 42** उत 17 : 7; 26 : 3; 28 : 13 **26 : 44** व्य 4 : 31 **26 : 45** रोम 11: 28-29; शोक 3 : 21

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अर्पण के नियम

27 प्रभु मूसा से बोला, 2'इस्राएली समाज
से बोलना ; तू उनसे यह कहना : यदि
किसी ने विशेष मन्नत में किसी व्यक्ति को
अर्पित किया है, तो तुम प्रभु के लिए उसका
मूल्य इस प्रकार आंकना : 3यदि वह पुरुष है
और उसकी आयु बीस वर्ष से साठ वर्ष तक
है, तो पवित्र स्थान की तौल के अनुसार उसका
मूल्य चांदी के पचास सिक्के होंगे। 4परन्तु यदि
वह स्त्री है तो तुम उसका मूल्य तीस सिक्के
आंकना। 5यदि उसकी आयु पाँच वर्ष से बीस
वर्ष तक है. तो लड़के का मूल्य बीस सिक्के,
और लड़की का मूल्य दस सिक्के आंकना।
6यदि उसकी आयु छः माह से पांच वर्ष तक
है, तो तुम लड़के का मूल्य चांदी के पांच
सिक्के तथा लड़की का मूल्य चांदी के तीन
सिक्के आंकना। 7परन्तु यदि उसकी आयु साठ
वर्ष अथवा उससे अधिक है तो तुम पुरुष का
मूल्य पन्द्रह सिक्के तथा स्त्री का मूल्य दस
सिक्के आंकना। 8यदि मन्नत मानने वाला व्यक्ति
इतना दरिद्र है कि वह तुम्हारे द्वारा आंके गए
मूल्य को चुका नहीं सकता है, तो तुम उस
व्यक्ति को पुरोहित के सम्मुख प्रस्तुत करना,
और पुरोहित उसका मूल्य आंकेगा। पुरोहित
मन्नत माननेवाले व्यक्ति की आर्थिक स्थिति के
अनुसार उसका मूल्यांकन करेगा।
9 'यदि मन्नत में पशु चढ़ाया गया है जैसे तुम
मुझ-प्रभु को चढ़ावे में चढ़ाते हो, तो मुझ को
चढ़ाए गए ऐसे सब पशु पवित्र माने जाएंगे।
10मन्नत चढ़ाने वाला व्यक्ति उसको नहीं
बदलेगा, और न उसकी अदला-बदली करेगा:
बुरे के बदले अच्छा या अच्छे के बदले बुरा।
फिर भी यदि वह दूसरे पशु से अपने पशु को
बदलेगा, तो वह पशु तथा जिसके साथ उसको
बदला गया है, दोनों पवित्र माने जाएंगे। 11यदि
वह अशुद्ध पशु है, जिसको प्रभु को चढ़ावे में
नहीं चढ़ाया जाता है, तो मन्नत माननेवाला
व्यक्ति ऐसे पशु को पुरोहित के सम्मुख प्रस्तुत
करेगा। 12पुरोहित उसका मूल्यांकन करेगा कि
वह अच्छा पशु है अथवा बुरा। जैसा मूल्यांकन
पुरोहित करेगा, वैसा ही माना जाएगा। 13यदि
मन्नत मानने वाला व्यक्ति उसको मूल्य देकर
मुक्त करना चाहेगा तो वह मूल्यांकन का
पांचवां भाग उसमें जोड़कर देगा।
14 'यदि कोई व्यक्ति अपने घर की मन्नत
मानता है कि उसका घर मुझ-प्रभु के लिए
पवित्र हो, तो पुरोहित उसका मूल्यांकन करेगा
कि वह अच्छा घर है अथवा बुरा। जैसा
मूल्यांकन पुरोहित करेगा, वैसा ही माना
जाएगा। 15यदि मन्नत माननेवाला व्यक्ति अपने
घर को मूल्य देकर मुक्त करना चाहेगा तो वह
मूल्यांकन का पांचवां भाग उसमें जोड़कर
चांदी के सिक्के देगा। तब घर उसका हो
जाएगा।
16 'यदि कोई व्यक्ति मुझ-प्रभु से अपने
पैतृक खेत की मन्नत मानेगा तो तुम उसके बीज
के अनुसार उसका मूल्यांकन करना। बुवाई में
जितना बीज लगता है, अर्थात् सौ किलो* जौ
के बीज का मूल्यांकन चांदी के पचास सिक्के
होगा। 17यदि वह जुबली वर्ष में अपने खेत की
मन्नत मानेगा तो तुम्हारे मूल्यांकन के अनुसार
ही उसका मूल्य निर्धारित होगा। 18किन्तु यदि
वह जुबली वर्ष के पश्चात् अपने खेत की मन्नत
मानेगा, तो जितने वर्ष आगामी जुबली के शेष
रहेंगे, उनके अनुसर पुरोहित खेत का मूल्यांकन
करेगा, और तुम्हारे मूल्यांकन में से कटौती की
जाएगी। 19यदि खेत की मन्नत माननेवाला
व्यक्ति मूल्य देकर उसको मुक्त करना चाहेगा,
तो वह मूल्यांकन का पांचवां भाग उसमें
जोड़कर चांदी के सिक्के देगा ; तब खेत उसी
का रहेगा। 20यदि वह मूल्य देकर खेत को
मुक्त नहीं करना चाहेगा, अथवा यदि वह अपना
खेत दूसरे मनुष्य को बेच देगा तो खेत पुनः
मुक्त नहीं किया जा सकेगा। 21जब जुबली
वर्ष में खेत मुक्त किया जाएगा, तब वह पूर्ण-
समर्पित खेत के सदृश प्रभु के लिए पवित्र माना

---

* मूल में "एक होमर"

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
जाएगा। उस पर पुरोहित का अधिकार होगा।
22यदि मन्नत माननेवाला व्यक्ति प्रभु से ऐसे
खेत की मन्नत मानेगा, जो उसकी पैतृक सम्पत्ति
नहीं है, वरन् जिसे उसने खरीदा है, 23तो जुबली
वर्ष आने में जितने वर्ष शेष होंगे, उनके अनुसार
पुरोहित उस खेत का मूल्यांकन करेगा। वह
व्यक्ति उस मूल्य को प्रभु की पवित्र वस्तु के
सदृश उसी दिन देगा। 24जुबली वर्ष में खेत उस
व्यक्ति को पुनः प्राप्त हो जाएगा, जिससे उसने
खरीदा था, जिसकी वह पैतृक भूमि थी।
25प्रत्येक मूल्यांकन पवित्र-स्थान की तौल में
होगा। चांदी का एक सिक्का प्रायः बारह ग्राम
का होगा।

26 'पशुओं के पहिलौठों की, जो मुझ-प्रभु
के होते हैं, कोई भी व्यक्ति मन्नत नहीं मानेगा।
चाहे बैल का पहिलौठा हो, अथवा भेड़ का,
वह मुझ-प्रभु का है। 27यदि वह अशुद्ध पशु है
तो मन्नत माननेवाला व्यक्ति तुम्हारे मूल्यांकन
के अनुसार उसको छुड़ा लेगा, पर मूल्यांकन
का पांचवां भाग उसमें जोड़ेगा। यदि मूल्य
देकर पशु मुक्त नहीं किया जाएगा तो वह
तुम्हारे मूल्यांकन के अनुसार बेचा जाएगा।

28 'अर्पित की हुई कोई भी वस्तु, जिसे तुम
मुझ-प्रभु को पूर्णतः अर्पित करते हो, चाहे वह
मनुष्य हो, पशु हो, अथवा पैतृक खेत हो, बेची
नहीं जाएगी और न मूल्य देकर मुक्त की
जाएगी। प्रत्येक पूर्ण-समर्पित वस्तु मुझ-प्रभु
के लिए परम पवित्र है। 29कोई भी पूर्ण-समर्पित
व्यक्ति जिसे मनुष्यों में से पूर्णतः नष्ट किया
जाना चाहिए, छुड़ाया नहीं जाएगा, वरन्
उसका वध किया जाएगा।

30 'भूमि की उपज का दशमांश, चाहे वह
भूमि का बीज हो, अथवा वृक्ष का फल, मुझ-
प्रभु का ही है। वह मुझ-प्रभु के लिए पवित्र है।
31यदि कोई मनुष्य अपने किसी दशमांश को
मूल्य देकर मुक्त करना चाहेगा, तो वह मूल्य
का पांचवां भाग उसमें जोड़कर उसको छुड़ा
लेगा। 32भेड़-बकरी, गाय-बैल का दशमांश,
चरवाहे की लाठी की गणना के अनुसार प्रत्येक
दसवां पशु मुझ-प्रभु के लिए पवित्र है।
33उनके अच्छे-बुरे की जांच नहीं की जाएगी
और न ही उनकी अदला-बदली की जाएगी।
यदि कोई उसको बदलेगा तो वह पशु तथा
जिसके साथ उसको बदला गया है, दोनों पवित्र
माने जाएंगे। यह दसवां पशु मूल्य देकर मुक्त
नहीं किया जाएगा।'

34 जो आज्ञाएं प्रभु ने मूसा को सीनय पर्वत
पर इस्राएली समाज के लिए दीं, वे ये ही हैं।

---

27 : 25 नि 30 : 13 **27 : 26** नि 13 : 2 **27 : 28** यहो 6 : 17 ; गण 18 : 14 **27 : 30** गण 18 : 21 ; व्य 14 : 22 – 29

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जन-गणना ग्रंथ

पुस्तक परिचय

मिस्र देश से 'निर्गमन' कर इस्राएली लोग सीधे सीनय पर्वत तक पहुँच गये। अब उन्हें सीनय पर्वत से प्रस्थान कर उस देश की पूर्वी सीमा पर पहुँचना था, जिसको देने की प्रतिज्ञा प्रभु परमेश्वर ने उनसे की थी। लेकिन प्रस्थान के पश्चात् उन्हें उस "प्रतिज्ञाबद्ध देश" (अर्थात् कनान देश) तक पहुँचने में प्राय: चालीस वर्ष लगे। इन्हीं चालीस वर्षों में घटी घटनाओं का इतिहास जन-गणना ग्रंथ में वर्णित है।

पुस्तक का नामकरण एक विशेष घटना के कारण हुआ है। मूसा ने सीनय पर्वत से प्रस्थान करने के पूर्व इस्राएली कौम की जन-गणना की थी। इस प्रथम जन-गणना के पश्चात्, सम्भवत: एक पीढ़ी समाप्त होने के पश्चात्, यर्दन नदी की पूर्व दिशा में स्थित मोआब देश पहुँचने पर इस्राएलियों की दूसरी बार जन-गणना की गयी थी। जनगणना वास्तव में प्रस्तुत ग्रंथ की प्रमुख विषय-वस्तु बन गयी है।

इन दोनों जनगणनाओं के मध्य की अवधि में इस्राएली लोग कनान देश की दक्षिणी सीमा पर स्थित "कादेश बर्नेअ" के मरूद्यान तक पहुँचे थे। किन्तु वे वहाँ से कनान देश में प्रवेश नहीं कर सके। वे अनेक वर्षों तक भटकते रहे। अन्तत: वे मोआब देश पहुँचे। इस्राएली समुदाय का एक कुल और एक आधा कुल वहाँ, यर्दन नदी के पूर्वी तट के क्षेत्र में ही बस गये। शेष समुदाय यर्दन नदी को पार कर कनान देश में प्रवेश करने का प्रयत्न करने लगा।

जन-गणना ग्रंथ में एक ऐसी कौम का वर्णन हुआ है जो संकट की घड़ी में निरुत्साहित और भयभीत हो जाती थी। वह कठिनाई का सामना नहीं कर पाती थी। लोग ऐसे अवसर पर मूसा के विरुद्ध, जिनको परमेश्वर ने उनका नेता नियुक्त किया था, विद्रोह कर देते थे। किन्तु सम्पूर्ण ग्रंथ में जगह-जगह परमेश्वर का सत्य-प्रेम प्रकट किया गया है: वह अपने निज लोगों की मानवीय दुर्बलता और उनके आज्ञा-उल्लंघन के बावजूद निरंतर उनकी देखभाल करता है। दूसरी ओर हम मूसा के विषय में पढ़ते हैं कि यद्यपि वह कभी-कभी अधीर और हतोत्साहित हो जाते हैं, फिर भी परमेश्वर और इस्राएलियों के प्रति उनकी निष्ठा में कमी नहीं आती।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

1.	सीनय पर्वत से प्रस्थान की तैयारी	1 : 1 — 9 : 23
	(क) प्रथम जनगणना	1 : 1 — 4 : 49
	(ख) भिन्न-भिन्न विधि-विधान और नियम	5 : 1 — 8 : 26
	(ग) दूसरा पास्का (फसह) का पर्व	9 : 1 - 23
2.	सीनय पर्वत से मोआब देश तक	10 : 1— 21 : 35
3.	मोआब देश में घटी घटनाएँ	22 : 1— 32 : 42
4.	मिस्र देश से मोआब देश तक की यात्रा का सारांश	33 : 1- 49
5.	यर्दन नदी को पार करने के पूर्व दिये गये निर्देश	33: 50 — 36 :13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जन-गणना

1 जब इस्राएली लोग मिस्र देश से निकल
आए तब दूसरे वर्ष के दूसरे महीने के पहले
दिन प्रभु सीनय के निर्जन प्रदेश में मिलन-
शिविर में मूसा से बोला, 2'तू इस्राएली मंडली
के सब लोगों की गणना कर: उनके गोत्रों और
उनके पूर्वजों के परिवारों में, नामों की संख्या
के अनुसार, प्रत्येक पुरुष को, हरएक सिर को,
गिनना। 3तू और हारून इस्राएली समाज के
तरुणों को गिनना। जो बीस वर्ष तथा इससे
अधिक आयु के हैं, जो युद्ध में जाने के योग्य
हैं, उनके दल के अनुसार गणना करना।
4प्रत्येक कुल से एक पुरुष, पूर्वजों के हर-एक
परिवार का एक मुखिया, तुम्हारे साथ होगा।
5जो व्यक्ति तुम्हारी सहायता करेंगे, उनके नाम
ये हैं : रूबेन कुल के शदेऊर का पुत्र एलीसूर;
6शिमोन कुल के सूरीशद्दय का पुत्र शलूमीएल;
7यहूदा कुल के अम्मीनादब का पुत्र नहशोन;
8इस्साकार कुल के सूआर का पुत्र नतनेल;
9जबूलून कुल के हेलोन का पुत्र एलीआब;
10यूसुफ के पुत्र एफ्रइम गोत्र के अम्मीहूद का
पुत्र एलीशामा; यूसुफ के दूसरे पुत्र मनश्शे गोत्र
के पदासूर का पुत्र गम्लीएल; 11बिन्यामिन कुल
के गिद्ओनी का पुत्र अबीदन; 12दान कुल के
अम्मीशद्दय का पुत्र अहीएजर; 13आशेर कुल
के ओक्रन का पुत्र पगईएल; 14गाद कुल के
दूएल का पुत्र एलयासप और 15नफ्ताली कुल
के एनन का पुत्र अहीर।' 16ये इस्राएली मंडली
के चुने हुए व्यक्ति, अपने पूर्वजों के कुलों के
अगुवे, इस्राएल के विभिन्न गोत्रों* के मुखिया
थे।

17 मूसा और हारून ने इन व्यक्तियों को
लिया, जिन्हें नामांकित किया गया था 18और
दूसरे महीने के पहले दिन उन्होंने समस्त
इस्राएली मंडली को एकत्र किया। लोगों ने
अपने गोत्रों और पूर्वजों के परिवारों में नामों की
संख्या के अनुसार बीस वर्ष तथा इससे अधिक
आयु के प्रत्येक व्यक्ति की, जो युद्ध में जाने
के योग्य था, हर एक सिर की, गणना करवाई,
19जैसी प्रभु ने मूसा को आज्ञा दी थी। इस प्रकार
मूसा और हारून ने सीनय के निर्जन प्रदेश में
उनकी गणना की।

20 इस्राएल के ज्येष्ठ पुत्र रूबेन के वंशजों
की संख्या, उनकी पीढ़ी के गोत्रों और पूर्वजों
के परिवारों में, नामों की गिनती के अनुसार,
हरएक सिर, प्रत्येक पुरुष, जो बीस वर्ष तथा
इससे अधिक आयु का था और युद्ध में जाने
के योग्य था, यह थी : 21छियालीस हजार पांच
सौ।

22 शिमोन-कुल के वंशजों की संख्या,
उनकी पीढ़ी के गोत्रों और पूर्वजों के परिवारों
में, नामों की गिनती के अनुसार, हरएक सिर,
प्रत्येक पुरुष, जो बीस वर्ष तथा इससे अधिक
आयु का था और युद्ध में जाने के योग्य था, यह
थी : 23उनसठ हजार तीन सौ।

24 गाद-कुल के वंशजों की संख्या, उनकी
पीढ़ी के गोत्रों और पूर्वजों के परिवारों में-
उनके नामों की गिनती के अनुसार, हरएक
सिर, प्रत्येक पुरुष, जो बीस वर्ष तथा इससे
अधिक आयु का था और युद्ध में जाने के योग्य
था, यह थी : 25पैंतालीस हजार छः सौ पचास।

26 यहूदा-कुल के वंशजों की संख्या,
उनकी पीढ़ी के गोत्रों और पूर्वजों के परिवारों
में, उनके नामों की गिनती के अनुसार, हरएक
सिर, प्रत्येक पुरुष, जो बीस वर्ष तथा इससे
अधिक आयु का था और युद्ध में जाने के योग्य
था, यह थी : 27चौहत्तर हजार छः सौ।

28 इस्साकार-कुल के वंशजों की संख्या,
उनकी पीढ़ी के गोत्रों और पूर्वजों के परिवारों
में, उनके नामों की गिनती के अनुसार, हर एक
सिर, प्रत्येक पुरुष, जो बीस वर्ष तथा इससे
अधिक आयु का था और युद्ध में जाने के योग्य
था, यह थी: 29चौवन हजार चार सौ।

30 जबूलून-कुल के वंशजों की संख्या,
उनकी पीढ़ी के गोत्रों और पूर्वजों के परिवारों
में, उनके नामों की गिनती के अनुसार, हरएक

---

* शब्दशः, 'हजारों'।

1 : 2 गण 26 : 2; 2 शम 24 : 2 **1 : 7** रूत 4 : 20; लू 3 : 32; मत 1 : 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सिर, प्रत्येक पुरुष, जो बीस वर्ष तथा इससे अधिक आयु का था और युद्ध में जाने के योग्य था, यह थी: 31सत्तावन हजार चार सौ।

32 यूसुफ के पुत्र एफ्रइम के गोत्र के वंशजों की संख्या, उनकी पीढ़ी के गोत्रों और पूर्वजों के परिवारों में, उनके नामों की गिनती के अनुसार, हरएक सिर, प्रत्येक पुरुष, जो बीस वर्ष तथा इससे अधिक आयु का था, और युद्ध में जाने के योग्य था, यह थी: 33चालीस हजार पांच सौ।

34 मनश्शे-गोत्र के वंशजों की संख्या, उनकी पीढ़ी के गोत्रों और पूर्वजों में, उनके नामों की गिनती के अनुसार, हरएक सिर, प्रत्येक पुरुष, जो बीस वर्ष तथा इससे अधिक आयु का था और युद्ध में जाने के योग्य था, यह थी: 35बत्तीस हजार दो सौ।

36 बिन्यामिन-कुल के वंशजों की संख्या, उनकी पीढ़ी केगोत्रों और पूर्वजों के परिवारों में, उनके नामों की गिनती केअनुसार, हरएक सिर, प्रत्येक पुरुष, जो बीस वर्ष तथा इससे अधिक आयु का था और युद्ध में जाने के योग्य था, यह थी: 37पैंतीस हजार चार सौ।

38 दान-कुल के वंशजों की संख्या, उनकी पीढ़ी के गोत्रों और परिवारों में, उनके नामों की गिनती के अनुसार, हरएक सिर, प्रत्येक पुरुष, जो बीस वर्ष तथा इससे अधिक आयु का था और युद्ध में जाने केयोग्य था, यह थी: 39बासठ हजार सात सौ।

40 आशेर-कुल के वंशजों की संख्या, उनकी पीढ़ी के गोत्रों और पूर्वजों के परिवारों में, उनके नामों की गिनती के अनुसार, हरएक सिर, प्रत्येक पुरुष, जो बीस वर्ष तथा इससे अधिक आयु का था और युद्ध में जाने के योग्य था, यह थी : 41एकतालीस हजार पांच सौ।

42 नफ्ताली-कुल के वंशजों की संख्या, उनकी पीढ़ी के गोत्रों और पूर्वजों के परिवारों में, उनके नामों की गिनती के अनुसार, हरएक सिर, प्रत्येक पुरुष, जो बीस वर्ष तथा इससे अधिक आयु का था और युद्ध में जाने के योग्य था, यह थी: 43तिरपन हजार चार सौ।

44 इन्हीं लोगों की गणना मूसा तथा हारून ने इस्राएल के बारह अगुवों की सहायता से की, जो अपने पूर्वजों के परिवार के प्रतिनिधि थे। 45इस प्रकार समस्त इस्राएलियों की संख्या, अर्थात् उनके पूर्वजों के परिवारों में सब पुरुषों की संख्या, जो बीस वर्ष तथा इससे अधिक आयु के थे और युद्ध में जाने के योग्य थे, 46छः लाख तीन हजार पांच सौ पचास थी।

साक्षी-शिविर की देखभाल हेतु उप-पुरोहितों (लेवियों) की नियुक्ति

47 किन्तु अन्य इस्राएली कुलों के साथ लेवी कुल के वंशजों की गणना, उनके पितृ-कुल के अनुसार, नहीं की गई; 48क्योंकि प्रभु मूसा से बोला था, 49'केवल लेवी कुल की गणना मत करना। तू इस्राएली समाज के मध्य उनकी जनगणना नहीं करना। 50तू साक्षी-शिविर, उसके सब उपकरण, तथा उसमें जो कुछ है, उन सब का प्रबन्ध करने के लिए लेवियों को नियुक्त करना। वे शिविर तथा उसके सब उपकरण ढोया करेंगे। वे ही उसकी देखभाल करेंगे। वे शिविर के चारों ओर अपना पड़ाव डाला करेंगे। 51जब शिविर का प्रस्थान होगा तब लेवीय ही उसको उखाड़ेंगे। जब शिविर को खड़ा किया जाएगा तब वे उसको खड़ा करेंगे। जो व्यक्ति लेवी कुल का नहीं है, यदि वह उसके निकट आएगा, उसको मृत्यु-दण्ड दिया जाएगा। 52अन्य इस्राएली अपने-अपने दल-बल के अनुसार पड़ाव डालेंगे। प्रत्येक दल का अपना पड़ाव और अपनी ध्वजा होगी। 53परन्तु लेवीय ही साक्षी-शिविर के चारों ओर पड़ाव डालेंगे, जिससे इस्राएलियों की मंडली पर मेरा प्रकोप न हो। लेवीय साक्षी-शिविर का उत्तरदायित्व संभालेंगे।' 54इस्राएलियों ने ऐसा ही किया। जैसी प्रभु ने मूसा को आज्ञा दी थी, उसी के अनुसार उन्होंने कार्य किया।

---

1 : 46 नि 12 : 37 **1 : 47** गण 2 : 33 **1 : 50** नि 25 : 28; यहेज 48 : 8-14; गण 3 : 7 23; 4 : 15-33
1 : 52 नि 40 : 36-38 **1 : 53** गण 18 : 3 - 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पड़ाव और इस्राएल के विभिन्न दलों के नेता

2 प्रभु मूसा और हारून से बोला, 2'इस्राएली
अपने-अपने दल की ध्वजा तथा अपने
पूर्वजों के परिवार के ध्वज-चिह्नों के साथ
पड़ाव डालेंगे। वे मिलन-शिविर के सम्मुख
चारों ओर पड़ाव डालेंगे। 3पूर्व में, सूर्योदय की
दिशा में अपने दल-बल सहित पड़ाव डालने
वाला दल यहूदा होगा, जो अपनी ध्वजा के
साथ पड़ाव डालेगा। यहूदा वंशीय दल का नेता
अम्मीनादब का पुत्र नहशोन होगा। 4उसके दल
में गिने हुए पुरुषों की संख्या चौहत्तर हजार छः
सौ है। 5उसके बाजू में पड़ाव डालने वाला
इस्साकार का कुल होगा। इस्साकार वंशीय दल
का नेता सूआर का पुत्र नतनेल होगा। 6उसके
दल में गिने हुए पुरुषों की संख्या चौवन हजार
चार सौ है। 7उसके पीछे जबूलून का कुल
होगा। जबूलून वंशीय दल का नेता हेलोन का
पुत्र एलीआब होगा। 8उसके दल में गिने हुए
पुरुषों की संख्या सत्तावन हजार चार सौ है।
9इस प्रकार यहूदा के पड़ाव में दल-बल के
अनुसार पुरुषों की कुल संख्या एक लाख
छियासी हजार चार सौ है। ये पहले क्रम में
प्रस्थान करेंगे।

10 'दक्षिण दिशा में अपने दल-बल सहित,
ध्वजा के साथ रूबेन का पड़ाव होगा। रूबेन
वंशीय दल का नेता शदेऊर का पुत्र एलीसूर
होगा। 11उसके दल में गिने हुए पुरुषों की
संख्या छियालीस हजार पांच सौ है। 12उसके
बाजू में पड़ाव डालने वाला शिमोन का कुल
होगा। शिमोन वंशीय दल का नेता सूरीशद्दय
का पुत्र शलूमीएल होगा। 13उसके दल में गिने
हुए पुरुषों की संख्या उनसठ हजार तीन सौ है।
14उसके पीछे गाद का कुल होगा। गाद वंशीय
दल का नेता रूएल का पुत्र एलयासप होगा।
15उसके दल में गिने हुए पुरुषों की संख्या
पैंतालीस हजार छः सौ पचास है। 16इस प्रकार
रूबेन के पड़ाव में दल-बल के अनुसार पुरुषों
की कुल संख्या एक लाख इक्यावन हजार चार
सौ पचास है। वे दूसरे क्रम में प्रस्थान करेंगे।

17 'तब मिलन-शिविर प्रस्थान करेगा।
उसके साथ लेवियों का दल होगा, जिसका
पड़ाव दूसरे पड़ावों के मध्य में होगा। जिस
क्रम में वे पड़ाव डालेंगे, उसी क्रम में प्रस्थान
करेंगे : प्रत्येक दल अपनी ध्वजा के साथ अपने
स्थान पर चलेगा।

18 'पश्चिम दिशा में अपने दल-बल
सहित, ध्वजा के साथ एफ्रइम का पड़ाव होगा।
एफ्रइम वंशीय दल का नेता अम्मीहूद का पुत्र
एलीशामा होगा। 19उसके दल में गिने हुए
पुरुषों की संख्या चालीस हजार पांच सौ है।
20उसके बाजू में मनश्शे का गोत्र होगा। मनश्शे
वंशीय दल का नेता पदासूर का पुत्र गम्लीएल
होगा। 21उसके दल में गिने हुए पुरुषों की
संख्या बत्तीस हजार दो सौ है। 22उसके पीछे
बिन्यामिन का कुल होगा। बिन्यामिन वंशीय
दल का नेता गिद्ओनी का पुत्र अबीदान होगा।
23उसके दल में गिने हुए पुरुषों की संख्या
पैंतीस हजार चार सौ है। 24इस प्रकार एफ्रइम
के पड़ाव में दल-बल के अनुसार पुरुषों की
कुल संख्या एक लाख आठ हजार एक सौ है।
वे तीसरे क्रम में प्रस्थान करेंगे।

25 'उत्तर दिशा में अपने दल-बल सहित,
ध्वजा के साथ दान का पड़ाव होगा। दान
वंशीय दल का नेता अम्मीशद्दय का पुत्र अही-
एजर होगा। 26उसके दल में गिने हुए पुरुषों की
संख्या बासठ हजार सात सौ है। 27उसके बाजू
में पड़ाव डालने वाला आशेर का दल होगा।
आशेर वंशीय दल का नेता ओक्रन का पुत्र
पगईएल होगा। 28उसके दल में गिने हुए पुरुषों
की संख्या इकतालीस हजार पांच सौ है।
29उसके पीछे नफ्ताली का दल होगा। नफ्ताली
वंशीय दल का नेता एनन का पुत्र अहीर होगा।
30उसके दल में गिने हुए पुरुषों की संख्या
तिरपन हजार चार सौ है। 31इस प्रकार दान के
पड़ाव में अपने-अपने दल-बल के अनुसार+
पुरुषों की कुल संख्या एक लाख सत्तावन हजार
छः सौ है। वे अपनी-अपनी ध्वजा के साथ सब
से अन्त में प्रस्थान करेंगे।'

+ मूल में, 'अपनी-अपनी ध्वजा के साथ'।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

32 ये अपने पूर्वजों के परिवार के अनुसार गिने हुए इस्राएली पुरुष हैं। जो पुरुष पड़ावों में अपने-अपने दलों में थे, उनकी कुल संख्या छः लाख तीन हजार पांच सौ पचास थी। [33]किन्तु जैसी आज्ञा प्रभु ने मूसा को दी थी, उसके अनुसार इस्राएली समाज के मध्य लेवी कुल के वंशजों की गणना नहीं की गई।

34 इस्राएली लोगों ने मूसा को दी गई प्रभु की सब आज्ञाओं के अनुसार कार्य किया। वे अपने गोत्र तथा पूर्वजों के परिवार के अनुसार अपने-अपने दल में ध्वजा के साथ पड़ाव डालते तथा प्रस्थान करते थे।

लेवी कुल के पुरुषों की जनगणना तथा धार्मिक कर्म-काण्ड

3 जब प्रभु ने मूसा से सीनय पर्वत पर वार्तालाप किया था, उस समय हारून* के वंश में ये व्यक्ति थे। [2]ये हारून के पुत्रों के नाम हैं : नादब, ज्येष्ठ पुत्र, तथा अबीहू, एलआजर और ईतामर। [3]ये ही हारून के पुत्रों के नाम हैं, जो अभ्यंजित पुरोहित थे, और जिनको पुरोहित का कार्य करने के लिए अभिषिक्त किया गया था। [4]किन्तु जब नादब और अबीहू ने सीनय के निर्जन प्रदेश में प्रभु के सम्मुख अपवित्र अग्नि चढ़ाई तब वे मर गए। उनके कोई सन्तान न थी। अतः केवल एलआजर और ईतामर अपने पिता हारून के जीवनकाल में पुरोहित का कार्य करते रहे।

5 प्रभु मूसा से बोला, [6]'लेवी कुल के पुरुषों को मेरे सेवा-कार्य के लिए समीप लाओ, और उन्हें पुरोहित हारून के सम्मुख प्रस्तुत करो कि वे उसकी सहायता करें। [7]जब वे पवित्र निवास-स्थान में सहायता करेंगे, तब उनका यह कार्य होगा: वे मिलन-शिविर के सम्मुख हारून तथा समस्त इस्राएली मंडली का उत्तर-दायित्व संभालेंगे। [8]जब वे पवित्र निवास-स्थान में सेवा करेंगे तब वे मिलन-शिविर के समस्त उपकरणों की देखभाल करेंगे, और इस्राएली समाज का उत्तरदायित्व संभालेंगे। [9]तू हारून तथा उसके पुत्रों के हाथ में लेवी कुल को सौंप देना। वे इस्राएली समाज में हारून को पूर्णतः सौंपे गए हैं। [10]तू हारून और उसके पुत्रों को नियुक्त करना, और वे अपनी पुरोहिताई का दायित्व संभालेंगे। परन्तु यदि कोई अपुरोहित व्यक्ति** शिविर में सेवा-कार्य के लिए आएगा तो उसको मृत्यु-दण्ड दिया जाएगा।'

11 प्रभु मूसा से बोला, [12]'देख, मैंने इस्राएली समाज में से समस्त पहिलौठे के स्थान पर लेवियों को लिया है। इसलिए लेवीय मेरे होंगे; [13]क्योंकि सब पहिलौठे मेरे हैं। जिस दिन मैंने मिस्र देश में सब पहिलौठों का वध किया था, उसी दिन इस्राएल में सब पहिलौठों को, चाहे मनुष्य के हों अथवा पशुओं के, अपने लिए पवित्र किया था। वे मेरे होंगे; मैं प्रभु हूं।'

14 प्रभु सीनय के निर्जन प्रदेश में मूसा से बोला, [15]'तू लेवी कुल के पुरुषों की, उनके पूर्वजों के परिवारों और गोत्रों के अनुसार, गणना करना। तू एक माह तथा इससे अधिक आयु के प्रत्येक बालक अथवा पुरुष की गणना करना।' [16]अतः मूसा ने प्रभु के वचन के अनुसार, उसकी आज्ञा के अनुसार लेवी कुल के पुरुषों की गणना की। [17]ये लेवी के पुत्रों के नाम हैं : गेर्शोन, कहात और मरारी। [18]ये गेर्शोन के पुत्रों के नाम हैं, जिनसे उनके गोत्र चलेः लिब्नी तथा शिमई। [19]ये कहात के पुत्र हैं, जिनसे उनके गोत्र चले : अम्राम, यिस्हार, हेब्रोन और उज्जीएल। [20]ये मरारी के पुत्र हैं, जिनसे उनके गोत्र चले : महली और मूशी। ये अपने पूर्वजों के परिवारों के अनुसार लेवीय गोत्र हैं।

21 गेर्शोन के लिब्नी तथा शिमई नामक गोत्र थे। ये ही गेर्शोन वंशीय गोत्र थे। [22]एक माह तथा इससे अधिक आयु के बालकों अथवा पुरुषों की संख्या, उनकी गणना के अनुसार

* मूल में, 'और मूसा'। ** अर्थात्—"जो पुरोहित नहीं है।"

3 : 2 नि 6 : 23; गण 26 : 60 **3 : 4** लेव 10 : 1-2 **3 : 6** गण 8 : 6 **3 : 7** गण 1 : 50 ; 8 : 19 **3 : 13** नि 13 : 2 **3 : 17** नि 6 : 16

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
सात हजार पांच सौ थी। [23]गेर्शोन वंशीय गोत्र पवित्र निवास-स्थान के पीछे, पश्चिम दिशा में पड़ाव डाला करते थे। [24]गेर्शोन वंशीय पूर्वजों के परिवार का नेता लाएल का पुत्र एलयासप था। [25]मिलन शिविर में गेर्शोन वंशीय पुरुषों को यह दायित्व सौंपा गया था : वे निवास-स्थान, आच्छादन सहित तम्बू, मिलन-शिविर के द्वार का परदा, [26]आंगन के परदे, निवास-स्थान तथा वेदी के चारों ओर के आंगन के द्वार का परदा, और उनकी रस्सियों से सम्बन्धित समस्त सेवाकार्य करते थे।

27 कहात के अम्राम, यिस्हार, हेब्रोन तथा उज्जीएल नामक गोत्र थे। ये ही कहात वंशीय गोत्र थे। [28]एक माह तथा इससे अधिक आयु के बालकों अथवा पुरुषों की संख्या, उनकी गणना के अनुसार आठ हजार छ: सौ थी। ये पवित्र-स्थान का उत्तरदायित्व संभाले हुए थे। [29]कहात वंशीय गोत्र पवित्र निवास-स्थान की दक्षिण दिशा में पड़ाव डाला करते थे। [30]कहात वंशीय पूर्वजों के परिवार का नेता उज्जीएल का पुत्र एलीसापन था। [31]उन्हें यह दायित्व सौंपा गया था : वे मंजूषा, मेज, दीपाधार, वेदियों, पवित्र-स्थान की अन्य वस्तुओं जिनको पुरोहित के सेवा-कार्य में प्रयुक्त किया जाता है, और अन्त:पट से सम्बन्धित समस्त सेवा-कार्य करते थे। [32]लेवीय नेताओं का अगुआ पुरोहित हारून का पुत्र एलआजर था। जो व्यक्ति पवित्र-स्थान की देखभाल करते थे, वह उनका निरीक्षक था।

33 मरारी के महली और मूशी नामक गोत्र थे। ये ही मरारी वंशीय गोत्र थे। [34]एक माह तथा इससे अधिक आयु के बालकों अथवा पुरुषों की संख्या, उनकी गणना के अनुसार, छ: हजार दो सौ थी। [35]मरारी वंशीय पूर्वजों के परिवार का नेता अबीहायिल का पुत्र सूरीएल था। वे पवित्र निवास-स्थान की उत्तर दिशा में पड़ाव डाला करते थे। [36]उनका निर्धारित उत्तरदायित्व यह था : वे निवास-स्थान के तख्तों, छड़ों, खम्भों, आधार-पीठिकाओं तथा उनकी अन्य वस्तुओं से सम्बन्धित सेवा-कार्य करते थे। [37]ये आंगन के चारों ओर के खम्भों, उनकी आधार-पीठिकाओं, खूंटों और रस्सियों की भी देखभाल करते थे।

38 निवास-स्थान के सम्मुख, पूर्व दिशा में, मिलन-शिविर की सूर्योदय की दिशा में पड़ाव डालने वाले मूसा, हारून और उसके पुत्र थे। उनका यह दायित्व था कि वे इस्राएली समाज के हेतु पवित्र-स्थान के भीतर के धार्मिक कार्य सम्पन्न करें। जो अपुरोहित व्यक्ति सेवा-कार्य के लिए मिलन-शिविर में आता, उसे मृत्यु-दण्ड दिया जाता था। [39]समस्त लेवी कुल के वंशजों की संख्या, जिनकी प्रभु के वचन के अनुसार मूसा और हारून ने उनके गोत्र के क्रम से एक माह तथा इससे अधिक आयु के बालकों अथवा पुरुषों की गणना की थी, बाईस हजार थी।

पहिलौठों का विमोचन

40 प्रभु ने मूसा से कहा, 'इस्राएली समाज के एक माह तथा इससे अधिक आयु के सब पहिलौठों की, उनके नामानुसार, गणना कर। [41]तू इस्राएली समाज के सब पहिलौठे पुत्रों के स्थान पर लेवी वंशजों को और इस्राएलियों के पशुओं के पहिलौठे नर बच्चों के बदले में लेवियों के पशुओं को मेरे लिए लेना; मैं प्रभु हूं।' [42]जैसी आज्ञा प्रभु ने मूसा को दी थी, उसी के अनुसार मूसा ने इस्राएली समाज के सब पहिलौठों की गणना की। [43]समस्त पहिलौठे, जो एक माह अथवा इससे अधिक आयु के बालक अथवा पुरुष थे, जिनकी गणना नामानुसार की गई थी, बाईस हज़ार दो सौ तिहत्तर थे।

44 प्रभु मूसा से बोला, [45]तू इस्राएली समाज के सब पहिलौठे पुत्रों के स्थान पर लेवी के वंशजों को, उनके पशुओं के बदले में लेवियों के पशुओं को लेना। लेवीय मेरे होंगे। मैं प्रभु हूं। [46]लेवीय पुरुषों की संख्या से जो इस्राएली समाज के दो सौ तिहत्तर पहिलौठे पुत्र अधिक हैं, उनके विमोचन के लिए [47]तू प्रति व्यक्ति

3 : 25 गण 4 : 24-26 **3 : 31** नि 25 : 10-31 **3 : 45** गण 3 : 12

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

के लिए चांदी के पांच सिक्के लेना। ये पवित्र-
स्थान की तौल के अनुसार हों, अर्थात् एक
सिक्के में प्रायः बारह ग्राम हो। 48तू उस राशि
को, जिससे अतिरिक्त पहिलौठे पुत्रों का
विमोचन किया जाएगा, हारून और उसके पुत्रों
को दे देना।' 49जो अतिरिक्त थे, जिनका लेवियों
द्वारा विमोचन नहीं किया गया था, उनसे मूसा
ने विमोचन की राशि ली। 50पवित्र-स्थान की
तौल के अनुसार मूसा ने इस्राएली समाज के
पहिलौठे पुत्रों से एक हजार तीन सौ पैंसठ
सिक्के लिए। 51उन्होंने प्रभु के वचन के अनुसार,
उसकी आज्ञा के अनुसार यह विमोचन-राशि
हारून और उसके पुत्रों को दे दी।

लेवियों (उपपुरोहितों) के निर्धारित कार्य

4 प्रभु मूसा और हारून से बोला, 2'तुम लेवी
कुल के मध्य कहात वंशीय सब पुरुषों
की, उनके गोत्रों तथा उनके पूर्वजों के परिवारों
के अनुसार, गणना करना, 3जो तीस वर्ष से
पचास वर्ष तक की आयु के हैं, जो मिलन-
शिविर के आन्तरिक कार्यों को करने के लिए
सेवा-दल में भरती हो सकते हैं।

4 'मिलन-शिविर की परम पवित्र वस्तुओं
से सम्बन्धित ये सेवा-कार्य कहात वंशियों के
सेवा-कार्य हैं : 5जब पड़ाव प्रस्थान करेगा तब
हारून तथा उसके पुत्र मिलन-शिविर के भीतर
जाकर अन्तःपट उतारेंगे, और उससे साक्षी-
मंजूषा को ढक देंगे। 6वे उसके ऊपर सूंस के
चमड़े का आच्छादन डाल देंगे, और आच्छादन
के ऊपर पूरा नीला वस्त्र फैलाएंगे। तत्पश्चात्
वे मंजूषा में डण्डे लगाएंगे। 7वे भेंट की रोटी
की मेज पर पूरा नीला वस्त्र बिछाएँगे, और उस
पर परात तथा धूपदान एवं पेयार्पण की
सुराहियाँ और चषक रखेंगे। निरन्तर अर्पित की
जाने वाली रोटी भी मेज पर रखी जाएगी। 8वे
उन वस्तुओं पर लोहित रंग का वस्त्र फैला देंगे,
और उनको सूंस के चमड़े के आच्छादन से ढक
देंगे। तत्पश्चात् वे मेज में डण्डे लगाएंगे। 9वे
नीला वस्त्र लेंगे और उससे प्रकाशवान दीपाधार,
उसके दीपक, गुलतराश, गुलदान तथा तेल के
सब पात्र, जिनके द्वारा दीपकों में तेल डाला
जाता है, ढक देंगे। 10वे दीपाधार तथा उसके
सब सामान को सूंस के चमड़े के आच्छादन में
रख देंगे। तत्पश्चात् उसको वाहक-खम्भे पर
रखेंगे। 11वे स्वर्णवेदी पर नीला वस्त्र बिछाएंगे
और उसको सूंस के चमड़े के आच्छादन से
ढक देंगे। तत्पश्चात् वे उसमें डण्डे लगाएंगे।
12वे पवित्र-स्थान के सेवा-कार्य में प्रयुक्त
होने वाले समस्त पात्रों को लेकर नीले वस्त्र में
रख देंगे और उनको सूंस के चमड़े के आच्छादन
से ढक देंगे। तत्पश्चात् उसको वाहक-खम्भे
पर रखेंगे। 13वे वेदी की सब राख उठाकर उस
पर लोहित रंग का वस्त्र बिछाएंगे। 14वे वेदी
के समस्त पात्र, जो सेवा-कार्य में प्रयुक्त होते
हैं, अंगीठियाँ, कांटे, कटोरे और फावड़ियाँ
उस लोहित रंग के वस्त्र पर रखेंगे। तत्पश्चात्
वे उसके ऊपर सूंस के चमड़े का आच्छादन
बिछाएंगे। वे वेदी में डण्डे लगाएंगे। 15जब पड़ाव
के प्रस्थान के समय हारून और उसके पुत्र
पवित्र-स्थान तथा उसके सब सामान को ढक
देंगे, तब कहात वंशीय पुरुष उसको उठाने के
लिए आएंगे। किन्तु वे पवित्र वस्तुओं का स्पर्श
नहीं करेंगे, अन्यथा वे मर जाएंगे। मिलन-
शिविर की ये ही वस्तुएँ कहात वंशीय पुरुष
ढोकर ले जाएंगे।

16 'पुरोहित हारून के पुत्र एलआजर पर
दीप-प्रज्वलन के लिए तेल, सुगन्धित धूप-
द्रव्य, निरन्तर अर्पित की जाने वाली अन्न-बलि
और अभ्यंजन-तेल का दायित्व होगा। वह
निवास-स्थान तथा उसके समस्त उपकरणों
का, पवित्र-स्थान एवं उसके भीतर के सब
पात्रों का निरीक्षण करेगा।'

17 प्रभु मूसा और हारून से बोला, 18'तुम
लेवी के वंशजों के मध्य से कहाती वंश के
गोत्रों को नष्ट मत होने देना। 19तुम उनके साथ
ऐसा व्यवहार करना जिससे जब वे परम पवित्र
वस्तुओं के निकट आएंगे तब वे नहीं मरेंगे वरन्
जीवित रहेंगे : हारून और उसके पुत्र भीतर
जाएँगे और वे प्रत्येक व्यक्ति को उसका सेवा-

---

4 : 5 नि 26 : 31

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कार्य तथा भार सौंपेंगे। [20]परन्तु कहात-वंशीय
पुरुष पवित्र वस्तुओं के दर्शन हेतु एक क्षण के
लिए भी भीतर नहीं आएँगे : अन्यथा वे मर
जाएंगे।'

21 प्रभु मूसा से बोला, [22]'तू गेर्शोन वंशीय
पुरुषों की भी, उनके गोत्रों तथा उनके पूर्वजों
के परिवारों के अनुसार, गणना कर। [23]तू तीस
वर्ष से पचास वर्ष तक की आयु के पुरुषों को
गिनना, जो मिलन-शिविर के आन्तरिक कार्यों
को करने के लिए सेवा-दल में भरती हो सकते
हैं।

24 'गेर्शोन वंशीय गोत्रों के ये कार्य हैं,
जिन्हें वे करेंगे और जिन का भार वे वहन
करेंगे : [25]वे निवास-स्थान के परदे, आच्छादन
सहित मिलन-शिविर, उसके ऊपर का सूंस के
चमड़े का आच्छादन, मिलन-शिविर के द्वार
का परदा, [26]आंगन के परदे, निवास-स्थान
तथा वेदी के चारों ओर के आंगन के द्वार का
परदा, उनकी रस्सियाँ, और इन सबसे सम्बन्धित
सेवा-कार्य की अन्य वस्तुएँ वहन करेंगे। जो
कार्य इनसे होते हैं, वे उन कार्यों को भी करेंगे।
[27]गेर्शोन वंशियों के समस्त कार्य, जिन्हें वे
करेंगे तथा जिन वस्तुओं का भार वे वहन करेंगे,
हारून तथा उसके पुत्रों के आदेशानुसार किए
जाएंगे। जो वस्तुएं वे वहन करेंगे, उनका
दायित्व तू उन्हें सौंपना। [28]मिलन-शिविर में
गेर्शोन वंशीय गोत्रों का यही सेवा-कार्य है।
उनके कार्य का निरीक्षण पुरोहित हारून का पुत्र
ईतामर करेगा।

29 'तू मरारी वंशीय पुरुषों को, उनके गोत्रों
एवं पूर्वजों के परिवारों के अनुसार, गिनना।
[30]तू तीस वर्ष से पचास वर्ष तक की आयु के
पुरुषों को गिनना, जो मिलन-शिविर के
आन्तरिक कार्यों को करने के लिए सेवा-दल
में भरती हो सकते हैं। [31]जो वाहन-सेवा वे
मिलन-शिविर में करेंगे, वह यह है : वे
निवास-स्थान के तख्तों, छड़ों, खम्भों, आधार-
पीठिकाओं, [32]आंगन के चारों ओर के खम्भों,
उनकी आधार-पीठिकाओं, खूंटों और रस्सियों
तथा इनसे सम्बन्धित सेवा-कार्य की अन्य
वस्तुओं को ढोकर ले जाएंगे। जो वस्तुएँ उन्हें
वहन करना है, उनको नाम के साथ निर्धारित
करना। [33]पुरोहित हारून के पुत्र ईतामर के
निरीक्षण में मरारी वंशीय गोत्रों का मिलन-
शिविर में यही समस्त सेवा-कार्य है।'

34 मूसा, हारून और इस्राएली मंडली के
नेताओं ने कहात वंशीय पुरुषों को, उनके गोत्रों
तथा पूर्वजों के परिवारों के अनुसार, गिना,
[35]जो तीस वर्ष से पचास वर्ष तक की आयु के
थे, जो मिलन-शिविर के आन्तरिक कार्यों को
करने के लिए सेवा-दल में भरती हो सकते थे।
[36]उनके गोत्रानुसार पुरुषों की संख्या दो हजार
सात सौ पचास थी। [37]मिलन-शिविर में सेवा-
कार्य करने वाले कहात वंशीय गोत्रों की
संख्या, जिनको मूसा के माध्यम से सुनाये गये
प्रभु-कथन के अनुसार मूसा और हारून ने
गिना था, यही थी।

38 गेर्शोन वंशीय पुरुषों की संख्या, उनके
गोत्रों तथा पूर्वजों के परिवारों के अनुसार, [39]जो
तीस वर्ष से पचास वर्ष तक की आयु के थे,
जो मिलन-शिविर के कार्यों को करने के लिए
सेवा-दल में भरती हो सकते थे—[40]उनकी
संख्या, गोत्रों तथा पूर्वजों के परिवारों के
अनुसार, दो हजार छः सौ तीस थी। [41]मिलन-
शिविर में सेवा-कार्य करने वाले गेर्शोन वंशीय
गोत्रों की संख्या, जिनको प्रभु के कथन के
अनुसार मूसा और हारून ने गिना था, यही थी।

42 मरारी वंशीय पुरुषों की संख्या, उनके
गोत्रों तथा पूर्वजों के परिवारों के अनुसार, [43]जो
तीस वर्ष से पचास वर्ष तक की आयु के थे,
जो मिलन-शिविर के आन्तरिक कार्यों को
करने के लिए सेवा-दल में भरती हो सकते
थे—[44]उनकी संख्या गोत्रानुसार तीन हजार दो
सौ थी। [45]ये मरारी वंशीय गोत्र के पुरुष हैं,
जिनको मूसा के माध्यम से सुनाये गये प्रभु-
कथन के अनुसार मूसा और हारून ने गिना था।

46 लेवी कुल के सब पुरुष जिनको मूसा,
हारून तथा इस्राएल के नेताओं ने, उनके गोत्रों

---

4 : 34 गण 3 : 19

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तथा पूर्वजों के परिवारों के अनुसार, गिना था, [47]जो तीस वर्ष से पचास वर्ष तक की आयु के थे, जो मिलन-शिविर के आन्तरिक कार्यों को करने के हेतु सेवा-दल में भरती हो सकते थे, वस्तुओं का भार वहन कर सकते थे, [48]जिनको गिना गया था, वे आठ हजार पांच सौ अस्सी थे। [49]प्रत्येक व्यक्ति कार्य करने अथवा भार वहन करने के लिए प्रभु के कथन के अनुसार मूसा के द्वारा नियुक्त किया गया। जो आज्ञा प्रभु ने मूसा को दी थी, उसके अनुसार मूसा ने उनको गिना।

अशुद्ध व्यक्तियों का पड़ाव से निष्कासन

5 प्रभु मूसा से बोला, [2]'तू इस्राएली समाज को आदेश दे कि वे सब कुष्ठरोगियों-जैसे चर्मरोगियों, स्रावग्रस्त व्यक्तियों और शव-स्पर्श के द्वारा अशुद्ध हुए व्यक्तियों को पड़ाव से बाहर निकाल दें। [3]तुम अशुद्ध स्त्री-पुरुष, दोनों को, पड़ाव से बाहर निकालोगे, जिससे वे अपने पड़ाव को, जिसमें मैं निवास करता हूं अशुद्ध न करें।' [4]इस्राएली लोगों ने ऐसा ही किया। उन्होंने उनको पड़ाव से बाहर निकाल दिया। जैसा प्रभु मूसा से बोला था, वैसा ही इस्राएली समाज ने किया।

क्षति-पूर्ति का नियम

5 प्रभु मूसा से बोला, [6]'तू इस्राएली समाज से यह कहना : यदि स्त्री अथवा पुरुष किसी के प्रति* पाप करता है और इस प्रकार प्रभु के प्रति विश्वास-भंग करता है और दोषी सिद्ध होता है, [7]तो जो पाप उसने किया है, वह उसको स्वीकार करेगा। वह अपने दोष की क्षतिपूर्ति करेगा, और उसमें पांचवां भाग जोड़कर उस व्यक्ति को देगा, जिसकी उसने क्षति की थी। [8]यदि उस व्यक्ति का कोई निकट सम्बन्धी नहीं है जिसको क्षति-पूर्ति की वस्तु दी जाए, तो वह क्षतिपूर्ति प्रायश्चित-बलि के मेढ़े के साथ, जिसके द्वारा उसके लिए प्रायश्चित किया जाता है, प्रभु को अर्पित की जाएगी और वह पुरोहित को प्राप्त होगा। [9]प्रत्येक चढ़ावा, इस्राएली समाज की हरएक पवित्र वस्तु जिसको वे पुरोहित के निकट लाते हैं, उसकी होगी। [10]प्रत्येक व्यक्ति की पवित्र की हुई वस्तुएं पुरोहित की होंगी। जो वस्तु पुरोहित को दी जाएगी, उस पर उसका अधिकार होगा।'

सतीत्व की परीक्षा

11 प्रभु मूसा से बोला, [12]'इस्राएली समाज से बोलना, तू उनसे यह कहना : यदि किसी पुरुष की पत्नी पथभ्रष्ट हो जाती है, और वह उसके साथ विश्वासघात करती है; [13]यदि वह पर-पुरुष के साथ सहवास करती है, किन्तु यह बात उसके पति की आंखों से छिपी रहती है; यद्यपि वह भ्रष्ट हो गई, तो भी पकडी नहीं गई; उसके विरुद्ध कोई गवाह नहीं है, क्योंकि संभोग करते हुए वह पकड़ी नहीं गई; [14]यदि पति में ईर्ष्या की भावना जागती है, और वह अपनी पत्नी के प्रति, जिसने स्वयं को भ्रष्ट कर लिया है, ईर्ष्यालु हो जाता है, अथवा यदि पति में ईर्ष्या की भावना जागती है और वह अपनी पत्नी के प्रति, जिसने स्वयं को भ्रष्ट नहीं किया, ईर्ष्यालु हो जाता है [15]तो वह अपनी पत्नी को पुरोहित के पास लाएगा। वह उसके लिए आवश्यक चढ़ावे के रूप में एक किलो जौ का मैदा भी लाएगा। वह मैदे पर तेल नहीं उण्डेलेगा और न उसपर लोबान डालेगा; क्योंकि वह ईर्ष्या की अन्न-बलि है, अधर्म का स्मरण दिलानेवाली स्मरण-बलि है।

16 'पुरोहित उस स्त्री को मुझ-प्रभु के सम्मुख खड़ा करने के लिए ले जाएगा। [17]तब पुरोहित मिट्टी के पात्र में पवित्र जल लेगा। तत्पश्चात् वह निवास-स्थान के फर्श से कुछ धूल उठाकर जल में डालेगा। [18]पुरोहित स्त्री को मुझ-प्रभु के सम्मुख खड़ा करेगा, और उसके सिर के बाल बिखरा देगा। वह उसकी हथेली पर स्मरण-बलि, ईर्ष्या की अन्न-बलि रखेगा। किन्तु वह अपने हाथ में अभिशाप-दायक कड़ुवा जल लिए रहेगा। [19]तब पुरोहित उसे यह शपथ खिलाएगा और स्त्री से कहेगा,

* अथवा, "जैसा मानव से हुआ करता है,"।

5 : 2 लेव 13 : 46, गण 12 : 14; व्य 23 : 10 **5 : 3** 2 कुर 6 : 16; प्रक 21 : 3 , 27 **5 : 6** लेव 6 : 2-3

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

''यदि पर-पुरुष ने तुम्हारे साथ सहवास नहीं किया, जब तक तुम अपने पति के अधीन थीं, यदि तुमने पथभ्रष्ट होकर अपने को अशुद्ध नहीं किया, तो तुम इस अभिशाप-दायक कड़ुवा जल के प्रभाव से मुक्त रहो।
20किन्तु यदि तुम अपने पति के अधीन होते हुए भी पथभ्रष्ट हुईं, तुमने अपने को अशुद्ध किया, और अपने पति के अतिरिक्त परपुरुष के साथ सहवास किया
21तो (पुरोहित स्त्री को अभिशाप की शपथ दिलाए और वह उससे कहे) प्रभु तुमको तुम्हारे लोगों के मध्य घृणास्पद बनाए। लोग तुम्हारा नाम लेकर शाप दें। प्रभु तुम्हारी जाँघ को सड़ाए, और शरीर को फुलाए।
22यह अभिशाप-दायक जल तुम्हारी अंतड़ियों में जाकर तुम्हारे पेट को फुलाए और तुम्हारी जांघ को सड़ाए।'' तब स्त्री कहेगी, ''ऐसा ही हो! ऐसा ही हो!''

23 'पुरोहित अभिशाप के ये शब्द पुस्तक में लिखेगा। फिर वह कड़ुवा जल में उन को घोल देगा।
24जब वह स्त्री को अभिशाप-दायक कड़ुवा जल पिलाएगा, तब अभिशाप का वह जल स्त्री के उदर में जाएगा और असहनीय पीड़ा+ उत्पन्न करेगा।
25पुरोहित स्त्री के हाथ से ईर्ष्या की अन्न-बलि ले लेगा। वह बलि को मुझ-प्रभु के सम्मुख लहराएगा, और फिर उसको वेदी के निकट लाएगा।
26पुरोहित स्मरणीय भाग के रूप में मुट्ठी भर अन्न-बलि लेगा, और उसको वेदी के ऊपर जलाएगा। तत्पश्चात् वह यह जल स्त्री को पिलाएगा।
27जब वह स्त्री को जल पिला चुकेगा, यदि स्त्री ने अपने को अशुद्ध किया है, अपने पति के प्रति विश्वासघात किया है, तब अभिशाप-दायक जल उसके उदर में असहनीय पीड़ा उत्पन्न करेगा। उसका पेट फूल जाएगा, उसकी जांघ सड़ जाएगी। वह अपने लोगों के मध्य घृणास्पद बन जाएगी।
28परन्तु यदि स्त्री ने अपने को अशुद्ध नहीं किया है, वरन् शुद्ध है तो वह कड़ुवा जल के प्रभाव से मुक्त रहेगी और गर्भधारण कर सकेगी।

29 'पति की ईर्ष्या की यह व्यवस्था है: यदि कोई पत्नी अपने पति के अधीन होते हुए पथभ्रष्ट होगी और अपने को अशुद्ध करेगी,
30अथवा यदि किसी पति में ईर्ष्या की भावना जाग्रत हो और वह अपनी पत्नी के प्रति ईर्ष्यालु हो जाए, तो वह पत्नी को प्रभु के सम्मुख खड़ा करेगा। पुरोहित इस व्यवस्था को स्त्री पर लागू करेगा।
31पति अधर्म से मुक्त रहेगा, किन्तु पत्नी अपने अधर्म का भार स्वयं वहन करेगी।'

समर्पण-व्रतधारी की व्यवस्था

6 प्रभु मूसा से बोला,
2'इस्राएली समाज से बोलना; तू उनसे यह कहना: जब स्त्री अथवा पुरुष विशेष व्रत, प्रभु के लिए स्वयं को समर्पित करने हेतु ''समर्पण-व्रतधारी''* का व्रत लेगा
3तब वह मदिरा तथा अंगूर के रस से अपने को अलग रखेगा। वह अंगूर अथवा मदिरा का सिरका नहीं पीएगा। वह अंगूर का रस भी नहीं पीएगा और न ताजा अथवा सूखा अंगूर ही खाएगा।
4वह समर्पण-व्रत की अवधि में अंगूर की लता, बीज अथवा छिलके से बनी कोई भी वस्तु नहीं खाएगा।

5 'समर्पण-व्रत की अवधि में उसके सिर पर उस्तुरा नहीं फेरा जाएगा। जिस अवधि के लिए उसने स्वयं को प्रभु के हेतु समर्पित किया है, जब तक वह अवधि पूर्ण न हो जाए तब तक वह पवित्र रहेगा। वह अपने सिर के केश बढ़ने देगा।

6 'मुझ-प्रभु के हेतु समर्पण-व्रत की अवधि में वह किसी शव के निकट नहीं जाएगा।
7यदि उसके पिता, माता, भाई अथवा बहिन की मृत्यु हो जाए, तो वह उनके शव के निकट जाकर अपने को अशुद्ध नहीं करेगा; क्योंकि मुझ-परमेश्वर के लिए उसके समर्पण का चिह्न उसके सिर के केश हैं।
8वह समर्पण-व्रत की सम्पूर्ण अवधि में मुझ-प्रभु के हेतु पवित्र रहेगा।

+ शब्दशः, 'कड़वाहट'। * मूल में 'नाजीर', प्रभु की सेवा के लिए अलग किया हुआ व्यक्ति

6 : 3 शास 13 : 5; 1 शम 1 : 11; लू 1 : 15

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

9 'यदि किसी व्यक्ति की उसके निकट अचानक ही मृत्यु हो जाए और उसके सिर के समर्पित केश अशुद्ध हो जाएँ, तो वह शुद्धीकरण दिवस पर उनको मुड़वा लेगा। वह सातवें दिन उनको मुड़वाएगा। [10]वह आठवें दिन दो पण्डुक अथवा कबूतर के दो बच्चे मिलन-शिविर के द्वार पर पुरोहित के पास लाएगा। [11]पुरोहित एक पण्डुक अथवा कबूतर का बच्चा पाप-बलि के लिए, और दूसरा अग्नि-बलि के लिए अर्पित करेगा। इस प्रकार वह उस व्यक्ति के लिए प्रायश्चित्त करेगा; क्योंकि शव के कारण उससे पाप हुआ है। वह उसी दिन अपने सिर को पुन: पवित्र करेगा [12]और मुझ-प्रभु के हेतु समर्पण-व्रत की अवधि के लिए स्वयं को अलग करेगा। वह दोषबलि के लिए एक-वर्षीय मेमना लाएगा। उसके समर्पण-व्रत की अवधि के आरम्भिक दिन व्यर्थ हो जाएंगे; क्योंकि उसका समर्पण-व्रत अशुद्ध हो गया था।

13 'समर्पण-व्रतधारी व्यक्ति की यह व्यवस्था है : जब उसके समर्पण-व्रत की अवधि पूर्ण होगी, तब उसे मिलन-शिविर के द्वार पर लाया जाएगा। [14]वह मुझ-प्रभु को अपना चढ़ावा चढ़ाएगा; अग्नि-बलि के लिए एक एक-वर्षीय निष्कलंक मादा मेमना, और पाप-बलि के लिए एक एक-वर्षीय निष्कलंक मादा मेमना, सहभागिता-बलि के लिए एक निष्कलंक मेढ़ा, [15]टोकरी-भर बेखमीर रोटियाँ, तेल सम्मिश्रित मैदे की चपातियाँ, तेल से चुपड़ी हुई पूड़ियाँ, अन्न-बलि तथा पेय-बलि। [16]पुरोहित प्रभु के सम्मुख टोकरी चढ़ाएगा। वह उसकी पाप-बलि तथा अग्नि-बलि अर्पित करेगा। [17]वह सहभागिता-बलि में टोकरी-भर बेखमीर रोटियों के साथ मेढ़े की बलि प्रभु को चढ़ाएगा। इसके अतिरिक्त पुरोहित अन्न-बलि तथा पेय-बलि भी अर्पित करेगा। [18]समर्पण-व्रतधारी व्यक्ति मिलन-शिविर के द्वार पर अपना समर्पित सिर मुड़वाएगा। तत्पश्चात् वह अपने समर्पित सिर के केश उठाएगा और उनको सहभागिता-बलि के नीचे की अग्नि में डाल देगा। [19]समपर्ण-व्रतधारी व्यक्ति के सिर के समर्पित केश मुड़ाने के पश्चात् पुरोहित मेढ़े का उबला हुआ कंधा, टोकरी की एक बेखमीर रोटी और बेखमीर पूड़ी लेगा और उनको उसके हाथ पर रखेगा। [20]पुरोहित उनको लहर-बलि के रूप में मुझ-प्रभु के सम्मुख लहराएगा। बलि-पशु के लहराए गए वक्ष के मांस तथा अर्पित जाँघ के मांस के साथ वे भी पुरोहित का पवित्र भाग होंगी। इसके पश्चात् समर्पण-व्रतधारी व्यक्ति अंगूर का रस पी सकता है।

21 'जो समर्पण-व्रत लेता है, उस व्रतधारी की यही व्यवस्था है। अपनी आर्थिक स्थिति के अनुसार जो चढ़ावा वह प्रभु को चढ़ा सकता है, उसके अतिरिक्त वह समर्पण-व्रत सम्बन्धी चढ़ावे भी चढ़ाएगा। जो व्रत वह लेता है, उसके अनुसार अपने समर्पण-व्रत की व्यवस्था के अनुरूप वह कार्य करेगा।'

पुरोहित का आशिष वचन

22 प्रभु मुसा से बोला, [23]'तू हारून और उसके पुत्रों से यह कहना, तुम इस प्रकार इस्राएली समाज को आशिष देना। तुम उनसे कहना :

24 ''प्रभु तुम्हें आशिष दे,
और तुम्हारी रक्षा करे;
[25] प्रभु अपने मुख का प्रकाश तुम पर
प्रकाशित करे,
और तुम पर अनुग्रह करे;
[26] प्रभु तुम्हारी ओर उन्मुख हो,
और तुम्हें शांति प्रदान करे।''

27 'इस रीति से वे मेरा नाम इस्राएली समाज में प्रतिष्ठित करेंगे
और मैं उनको आशिष दूंगा।'

प्रतिष्ठा-भेंट

7 जिस दिन मूसा ने निवास-स्थान को खड़ा किया, उसको तथा उसके समस्त उपकरणों को अभ्यंजित एवं पवित्र किया और वेदी को भी उसके समस्त पात्रों के साथ अभ्यंजित एवं

---

6 : 13-21 प्रे 21 : 23-24 **6 : 25** भज 67 : 1; यो 1 : 17 **6 : 26** भज 21 : 6 लू 2 : 14; यो 14 : 27; रो 15 : 13; 2 थिस 3 : 16 **6 : 27** व्य 28 : 10; प्रव 50 : 20 **7 : 1** नि 40 : 17

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पवित्र किया [2]उस दिन इस्राएल के नेताओं ने चढ़ावा चढ़ाया। ये अपने पूर्वजों के परिवारों के मुखिया, कुलों के नेता थे, जो जनगणना के लिए नियुक्त किए गए थे। [3]वे प्रभु के सम्मुख अपना चढ़ावा लाए : छतवाली छह गाड़ियाँ और बारह बैल। दो नेताओं की ओर से एक गाड़ी तथा प्रत्येक नेता की ओर से एक बैल। उन्होंने उनको निवास-स्थान के सम्मुख चढ़ाया। [4]प्रभु ने मूसा से कहा, [5]'यह चढ़ावा उनके हाथ से ग्रहण कर जिससे वह मिलन-शिविर के सेवा-कार्यों में प्रयुक्त किया जाए। यह लेवी वंशीय प्रत्येक व्यक्ति के सेवा-कार्य के अनुसार उसको दे देना।' [6]अत: मूसा ने गाड़ियाँ तथा बैल ग्रहण किए और उन्हें लेवी वंशियों को सौंप दिया। [7]उन्होंने दो गाड़ी तथा चार बैल गेर्शोनियों के सेवा-कार्य के अनुसार उनको दिए। [8]चार गाड़ी तथा आठ बैल मरारियों के सेवा-कार्य के अनुसार उनको दिए। ये पुरोहित हारून के पुत्र ईतामर के अधीन कार्य करते थे। [9]किन्तु मूसा ने कहात वंशियों को कुछ नहीं दिया; क्योंकि उनका पवित्र वस्तुओं से सम्बन्धित यह सेवा-कार्य था कि वे उनको अपने कन्धों पर वहन किया करें।

10 जिस दिन वेदी को अभ्यंजित किया गया, उस दिन नेताओं ने "प्रतिष्ठा-भेंट" चढ़ाई। नेताओं ने वेदी के सम्मुख अपना-अपना चढ़ावा चढ़ाया। [11]प्रभु ने मूसा से कहा, 'प्रत्येक दिन एक नेता वेदी की प्रतिष्ठा-भेंट के हेतु अपना चढ़ावा चढ़ाएगा।'

12 पहले दिन चढ़ावा चढ़ानेवाला व्यक्ति यहूदा कुल के अम्मीनादब का पुत्र नहशोन था। [13]यह उसका चढ़ावा था : चांदी का एक परात, जिसका भार पवित्र-स्थान की तौल के अनुसार डेढ़ किलो था, और आठ सौ ग्राम चांदी की एक चिलमची—दोनों पात्रों में अन्न-बलि के लिए तेल सम्मिश्रित मैदा भरा था—; [14]धूप से भरा एक सौ बीस ग्राम का स्वर्ण-धूपदान; [15]अग्नि-बलि के लिए एक बछड़ा, एक मेढ़ा और एक एक-वर्षीय मेमना; [16]पाप-बलि के लिए एक बकरा; [17]और सहभागिता-बलि के लिए दो बैल, पांच मेढ़े, पांच बकरे और एक-एक वर्ष के पांच मेमने। अम्मीनादब के पुत्र नहशोन का यही चढ़ावा था।

18 दूसरे दिन इस्साकार कुल के नेता, सूआर के पुत्र नतनेल ने चढ़ावा चढ़ाया। [19]उसने अपने चढ़ावे में यह चढ़ाया : चांदी का एक परात, जिसका भार पवित्र-स्थान की तौल के अनुसार डेढ़ किलो था, और आठ सौ ग्राम चांदी की एक चिलमची—दोनों पात्रों में अन्न-बलि के लिए तेल सम्मिश्रित मैदा भरा था—; [20]धूप से भरा एक सौ बीस ग्राम का एक स्वर्ण-धूपदान; [21]अग्नि-बलि के लिए एक बछड़ा, एक मेढ़ा और एक एक-वर्षीय मेमना; [22]पाप-बलि के लिए एक बकरा; [23]सहभागिता-बलि के लिए दो बैल, पांच मेढ़े, पांच बकरे और एक-एक वर्ष के पांच मेमने। सूआर के पुत्र नतनेल का यही चढ़ावा था।

24 तीसरे दिन जबूलून वंशियों के नेता, हेलोन के पुत्र एलीआब ने [25]अपना चढ़ावा चढ़ाया : चांदी का एक परात, जिसका भार पवित्र-स्थान की तौल के अनुसार डेढ़ किलो था, और आठ सौ ग्राम चांदी की एक चिलमची—दोनों पात्रों में अन्न-बलि के लिए तेल सम्मिश्रित मैदा भरा था—; [26]धूप से भरा एक सौ बीस ग्राम का एक स्वर्ण-धूपदान; [27]अग्नि-बलि के लिए एक बछड़ा, एक मेढ़ा और एक एक-वर्षीय मेमना; [28]पाप-बलि के लिए एक बकरा; [29]सहभागिता-बलि के लिए दो बैल, पांच मेढ़े, पांच बकरे और एक-एक वर्ष के पांच मेमने। हेलोन के पुत्र एलीआब का यही चढ़ावा था।

30 चौथे दिन रूबेन वंशियों के नेता, शदेऊर के पुत्र एलीसूर ने [31]अपना चढ़ावा चढ़ाया : चांदी का एक परात, जिसका भार पवित्र-स्थान की तौल के अनुसार डेढ़ किलो था, और आठ सौ ग्राम चांदी की एक चिलमची—दोनों पात्रों में अन्न-बलि के लिए तेल सम्मिश्रित मैदा भरा था—; [32]धूप से भरा एक सौ बीस ग्राम का एक स्वर्ण-धूपदान; [33]अग्नि-बलि के लिए एक बछड़ा, एक मेढ़ा और एक एक-वर्षीय मेमना;

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

34पाप-बलि के लिए एक बकरा; 35सह-
भागिता-बलि के लिए दो बैल, पांच मेढ़े, पांच
बकरे और एक-एक वर्ष के पांच मेमने।
शदेऊर के पुत्र एलीसूर का यही चढ़ावा
था।

36 पांचवें दिन शिमोन वंशियों के नेता,
सूरीशद्दय के पुत्र शलूमीएल ने 37अपना चढ़ावा
चढ़ाया : चांदी का एक परात, जिसका भार
पवित्र-स्थान की तौल के अनुसार डेढ़ किलो
था, और आठ सौ ग्राम चांदी की एक
चिलमची—दोनों पात्रों में अन्न-बलि के लिए
तेल सम्मिश्रित मैदा भरा था—; 38धूप से भरा
एक सौ बीस ग्राम का एक स्वर्ण-धूपदान;
39अग्नि-बलि के लिए एक बछड़ा, एक मेढ़ा
और एक एक-वर्षीय मेमना, 40पाप-बलि के
लिए एक बकरा, 41सहभागिता-बलि के लिए
दो बैल, पांच मेढ़े, पांच बकरे और एक-एक
वर्ष के पांच मेमने। सूरीशद्दय के पुत्र शलूमीएल
का यही चढ़ावा था।

42 छठे दिन गाद वंशियों के नेता, दूएल के
पुत्र एलयासप ने 43अपना चढ़ावा चढ़ाया :
चांदी का एक परात, जिसका भार पवित्र-स्थान
की तौल के अनुसार डेढ़ किलो था, और आठ
सौ ग्राम चांदी की एक चिलमची—दोनों पात्रों
में अन्न-बलि के लिए तेल सम्मिश्रित मैदा भरा
था—; 44धूप से भरा एक सौ बीस ग्राम का एक
स्वर्ण-धूपदान; 45अग्नि-बलि के लिए एक
बछड़ा, एक मेढ़ा और एक एक-वर्षीय मेमना;
46पाप-बलि के लिए एक बकरा; 47सहभागिता-
बलि के लिए दो बैल, पांच मेढ़े, पांच बकरे
और एक-एक वर्ष के पांच मेमने। दूएल के पुत्र
एलयासप का यही चढ़ावा था।

48 सातवें दिन एफ्रइम वंशियों के नेता,
अम्मीहूद के पुत्र एलीशामा ने 49अपना चढ़ावा
चढ़ाया : चांदी का एक परात, जिसका भार
पवित्र-स्थान की तौल के अनुसार डेढ़ किलो
था, और आठ सौ ग्राम चांदी की एक
चिलमची—दोनों पात्रों में अन्न-बलि के लिए
तेल सम्मिश्रित मैदा भरा था—; 50धूप से भरा
एक सौ बीस ग्राम का एक स्वर्ण-धूपदान;
51अग्नि-बलि के लिए एक बछड़ा, एक मेढ़ा
और एक एक-वर्षीय मेमना; 52पाप-बलि के
लिए एक बकरा; 53सहभागिता-बलि के लिए
दो बैल, पांच मेढ़े, पांच बकरे और एक-एक
वर्ष के पांच मेमने। अम्मीहूद के पुत्र एलीशामा
का यही चढ़ावा था।

54 आठवें दिन मनश्शे वंशियों के नेता,
पदासूर के पुत्र गम्लीएल ने 55अपना चढ़ावा
चढ़ाया : चांदी का एक परात, जिसका भार
पवित्र-स्थान की तौल के अनुसार डेढ़ किलो
था, और आठ सौ ग्राम चांदी की एक
चिलमची—दोनों पात्रों में अन्न-बलि के लिए
तेल सम्मिश्रित मैदा भरा था—; 56धूप से भरा
एक सौ बीस ग्राम का एक स्वर्ण-धूपदान;
57अग्नि-बलि के लिए एक बछड़ा, एक मेढ़ा
और एक एक-वर्षीय मेमना; 58पाप-बलि के
लिए एक बकरा; 59सहभागिता-बलि के लिए
दो बैल, पांच मेढ़े, पांच बकरे और एक-एक
वर्ष के पांच मेमने। पदासूर के पुत्र गम्लीएल
का यही चढ़ावा था।

60 नौवें दिन बिन्यामिन वंशियों के नेता,
गिद्ओनी के पुत्र अबीदन ने 61अपना चढ़ावा
चढ़ाया : चांदी का एक परात, जिसका भार
पवित्र-स्थान की तौल के अनुसार डेढ़ किलो
था, और आठ सौ ग्राम चांदी की एक
चिलमची—दोनों पात्रों में अन्न-बलि के लिए
तेल सम्मिश्रि मैदा भरा था—; 62धूप से भरा
एक सौ बीस ग्राम का एक स्वर्ण-धूपदान;
63अग्नि-बलि के लिए एक बछड़ा, एक मेढ़ा
और एक एक-वर्षीय मेमना; 64पाप-बलि के
लिए एक बकरा; 65सहभागिता-बलि के लिए
दो बैल, पांच मेढ़े, पांच बकरे और एक-एक
वर्ष के पांच मेमने। गिद्ओनी के पुत्र अबीदन
का यही चढ़ावा था।

66 दसवें दिन दान वंशियों के नेता,
अम्मीशद्दय के पुत्र अहीएजर ने 67अपना चढ़ावा
चढ़ाया : चांदी का एक परात, जिसका भार
पवित्र-स्थान की तौल के अनुसार डेढ़ किलो
था, और आठ सौ ग्राम चांदी की एक
चिलमची—दोनों पात्रों में अन्न-बलि के लिए

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तेल सम्मिश्रित मैदा भरा था—; 68धूप से भरा
एक सौ बीस ग्राम का एक स्वर्ण-धूपदान;
69अग्नि-बलि के लिए एक बछड़ा, एक मेढ़ा
और एक एक-वर्षीय मेमना; 70पाप-बलि के
लिए एक बकरा, 71सहभागिता-बलि के लिए
दो बैल, पांच मेढ़े, पांच बकरे और एक-एक
वर्ष के पांच मेमने। अम्मीशद्दय के पुत्र
अहीएजर का यही चढ़ावा था।
72 ग्यारहवें दिन आशेर वंशियों के नेता,
ओक्रन के पुत्र पगईएल ने 73अपना चढ़ावा
चढ़ाया : चांदी का एक परात, जिसका भार
पवित्र-स्थान की तौल के अनुसार डेढ़ किलो
था, और आठ सौ ग्राम चांदी की एक
चिलमची—दोनों पात्रों में अन्न-बलि के लिए
तेल सम्मिश्रित मैदा भरा था—; 74धूप से भरा
एक सौ बीस ग्राम का एक स्वर्ण-धूपदान;
75अग्नि-बलि के लिए एक बछड़ा, एक मेढ़ा
और एक एक-वर्षीय मेमना; 76पाप-बलि के
लिए एक बकरा, 77सहभागिता बलि के लिए
दो बैल, पांच मेढ़े, पांच बकरे और एक-एक
वर्ष के पांच मेमने। ओक्रन के पुत्र पगईएल का
यही चढ़ावा था।
78 बारहवें दिन नफ्ताली वंशियों के नेता,
एनन के पुत्र अहीर ने 79अपना चढ़ावा चढ़ाया:
चांदी का एक परात, जिसका भार पवित्र-स्थान
की तौल के अनुसार डेढ़ किलो था, और आठ
सौ ग्राम चांदी की एक चिलमची—दोनों पात्रों
में अन्न-बलि के लिए तेल सम्मिश्रित मैदा भरा
था—; 80धूप से भरा एक सौ बीस ग्राम का एक
स्वर्ण-धूपदान; 81अग्नि-बलि के लिए एक
बछड़ा, एक मेढ़ा, और एक एक-वर्षीय
मेमना; 82पाप-बलि के लिए एक बकरा,
83सहभागिता-बलि के लिए दो बैल, पांच
मेढ़े, पांच बकरे और एक-एक वर्ष के पांच
मेमने। एनन के पुत्र अहीर का यही चढ़ावा था।
84 जिस दिन वेदी को अभ्यंजित किया
गया, उस दिन इस्राएल के नेताओं की ओर से
वेदी के लिए यही 'प्रतिष्ठा भेंट' चढ़ाई गई :
चांदी के बारह परात, चांदी की बारह चिलमची,
बारह स्वर्ण-धूपदान। 85प्रत्येक परात का भार
डेढ़ किलो, हरएक चिलमची का भार आठ सौ
ग्राम था। इस प्रकार चांदी के समस्त पात्रों का
भार पवित्र-स्थान की तौल के अनुसार सत्ताईस
किलो छः सौ ग्राम था। 86पवित्र-स्थान की तौल
के अनुसार प्रत्येक धूपदान का भार एक सौ
बीस ग्राम था। धूप से भरे बारह स्वर्ण-धूपदान
थे। इस प्रकार धूपदानों का स्वर्ण-भार एक
किलो चार सौ चालीस ग्राम था। 87अग्नि-बलि
के लिए अन्न-बलि के साथ कुल बारह बैल,
बारह मेढ़े, एक-एक वर्ष के बारह मेमने, तथा
पाप-बलि के लिए बारह बकरे। 88सहभागिता-
बलि के लिए कुल चौबीस बैल, साठ मेढ़े,
साठ बकरे, एक-एक वर्ष के साठ मेमने। वेदी
के अभ्यंजन के पश्चात् वेदी के लिए चढ़ाई गई
'प्रतिष्ठा भेंट' यही थी।
89 मूसा प्रभु से वार्तालाप करने के लिए
मिलन-शिविर में गए। वहाँ उन्होंने दया-
आसन के ऊपर साक्षी-मंजूषा पर स्थापित
दोनों करूबों के मध्य से यह वाणी सुनी, जो
उनसे बात कर रही थी।

हारून दीपकों को जलाता है

8 प्रभु मूसा से बोला, 2'हारून से यह कहना,
''जब तू सात दीपकों को जलाएगा तब
उनको इस प्रकार जलाना कि उनका प्रकाश
दीपाधार के सामने की ओर पड़े।'' ' 3हारून
ने ऐसा ही किया। जैसी आज्ञा प्रभु ने मूसा को
दी थी, उसके अनुसार हारून ने दीपाधार के
सामने की ओर प्रकाश देने के लिए दीपक
जलाए। 4दीपाधार सोना ढालकर बनाया गया
था। उसकी कारीगरी इस प्रकार थी : वह अपने
आधार से फूलों तक ढाल कर बनाया गया था।
जैसा ढांचा प्रभु ने मूसा को दिखाया, उसी के
अनुरूप उन्होंने दीपाधार बनाया था।

लेवी वंशियों का पवित्र किया जाना

5 प्रभु मूसा से बोला, 6'तू इस्राएली समाज
के मध्य से लेवी वंशियों को ले और उन्हें शुद्ध
कर। 7तू उनको शुद्ध करने के उद्देश्य से यह
कार्य करना: उन पर पाप-विशुद्धीकरण का

8 : 1-4 नि 25 : 31-40; 37 : 17-24; लेव 24 : 1-2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जल छिड़कना। तत्पश्चात् वे अपने सम्पूर्ण
शरीर पर उस्तरा फिराएंगे, अपने वस्त्र धोएंगे,
और इस प्रकार स्वयं को शुद्ध करेंगे। 8तब वे
बछड़ा लेंगे, तथा उसके साथ अन्न-बलि के
लिए तेल सम्मिश्रित मैदा। तू पाप-बलि के
लिए एक और बछड़ा लेना। 9सब लेवी वंशियों
को मिलन-शिविर के सम्मुख प्रस्तुत करना।
इनके अतिरिक्त तू समस्त इस्राएली मंडली को
भी एकत्र करना। 10जब तू लेवियों को मुझ-
प्रभु के सम्मुख प्रस्तुत करेगा तब समस्त
इस्राएली समाज लेवियों पर अपने हाथ रखेंगे।
11हारून इस्राएली समाज की ओर से लहर-
बलि के रूप में लेवियों को मुझ-प्रभु के सम्मुख
चढ़ाएगा* जिससे वे मेरी सेवा करने के योग्य
बन सकें। 12लेवीय पुरुष अपने हाथ बछड़ों के
सिरों पर रखेंगे। तू लेवियों के प्रायश्चित्त के हेतु
एक बछड़ा पाप-बलि में तथा दूसरा बछड़ा
अग्नि-बलि में प्रभु को अर्पित करना।
13तत्पश्चात् तू लेवियों को हारून एवं उनके
पुत्रों के सम्मुख खड़ा करना और उनको लहर-
बलि के रूप में मुझ-प्रभु को चढ़ाना।

14 'इस प्रकार तू लेवी के वंशजों को
इस्राएली समाज के मध्य से अलग करेगा और
वे मेरे होंगे। 15तू लेवियों को शुद्ध करके लहर-
बलि के रूप में चढ़ाएगा, उसके पश्चात् ही वे
सेवा-कार्य के हेतु मिलन-शिविर में प्रवेश
करेंगे। 16वे इस्राएली समाज के मध्य से मुझे
पुनः दे दिए गए हैं। इस्राएल के सब पहिलौठे
ज्येष्ठ पुत्रों के स्थान पर उनको मैंने अपने लिए
स्वीकार किया है। 17इस्राएल के सब पहिलौठे,
चाहे मनुष्य के हों अथवा पशु के, मेरे ही हैं।
मैंने उनको उसी दिन अपने लिए पवित्र किया,
जिस दिन मैंने मिस्र देश में सब पहिलौठों का
वध किया था। 18मैंने अपनी सेवा के लिए
इस्राएलियों के समस्त ज्येष्ठ पुत्रों के स्थान पर
लेवियों को लिये है। 19मैंने लेवियों को इस्राएली
समाज की ओर से भेंट-स्वरूप हारून और
उसके पुत्रों को प्रदान किया है कि वे इस्राएलियों
के लिए मिलन-शिविर में सेवा कार्य करें तथा
उनके लिए प्रायश्चित करें, जिससे यदि इस्राएली
लोग पवित्र-स्थान के निकट आएँ तो उन पर
महामारी न आए।'

20 मूसा, हारून और समस्त इस्राएली
मंडली ने लेवियों के साथ ऐसा ही किया।
लेवियों से सम्बन्धित जो आज्ञाएँ प्रभु ने मूसा
को दी थीं, उन्हीं के अनुसार इस्राएलियों ने
लेवियों से व्यवहार किया। 21लेवियों ने स्वयं
को पाप से शुद्ध किया। उन्होंने अपने वस्त्र
धोए। हारून ने उनको लहर-बलि के रूप में
प्रभु के सम्मुख चढ़ाया और उनकी शुद्धि के
उद्देश्य से उनके लिए प्रायश्चित किया। 22इसके
पश्चात् लेवियों ने सेवा-कार्य के हेतु मिलन-
शिविर में प्रवेश किया। वे हारून एवं उसके
पुत्रों के सम्मुख प्रस्तुत रहकर सेवा-कार्य करने
लगे। लेवियों से सम्बन्धित जो आज्ञा प्रभु ने
मूसा को दी थी, उसी के अनुसार उन्होंने उनके
साथ व्यवहार किया।

लेवियों (उपपुरोहितों) का सेवा-काल

23 प्रभु मूसा से बोला, 24'यह लेवियों के
लिए नियम है : जो पच्चीस वर्ष अथवा इससे
अधिक आयु के हैं, वे मिलन-शिविर के
आन्तरिक कार्यों को करने के लिए सेवा-दल
में प्रवेश करेंगे। 25किन्तु वे पचास वर्ष की आयु
में सेवा-मुक्त हो जाएँगे। इसके आगे वे सेवा-
कार्य नहीं करेंगे। 26यद्यपि वे मिलन-शिविर में
अपने भाइयों के दायित्व-पालन में सहायता
कर सकते हैं, किन्तु वे स्वयं कोई सेवा-कार्य
नहीं करेंगे। तू लेवियों को इस नियम के
अनुसार उत्तरदायित्व सौंपना।'

पास्का (फसह) की प्रथा

9 जब इस्राएली मिस्र देश से निकल आए,
तब दूसरे वर्ष के पहले महीने में प्रभु सीनय
के निर्जन प्रदेश में मूसा से बोला, 2'इस्राएली
समाज पास्का पर्व को उसके निर्धारित समय

* शब्दशः "लहराएगा"

8 : 7 लेव 14 : 8-9; यहेज 36 : 25 8 : 14 गण 3 : 45 8 : 15 नि 29 : 24 8 : 17 नि 13 : 2 9 : 1-5 नि 12 : 1-13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पर मनाएगा। [3]तुम उसको उसके निर्धारित
समय पर, इस महीने के चौदहवें दिन,
सन्ध्या समय मनाओगे। तुम उसको उसकी
समस्त संविधि तथा सब नियमों के अनुसार
मनाओगे।' [4]अत: मूसा इस्राएली लोगों से
बोले कि वे पास्का का पर्व मनाएँ। [5]तब लोगों
ने सीनय के निर्जन प्रदेश में पहले महीने के
चौदहवें दिन, सन्ध्या के समय, पास्का का पर्व
मनाया। जो आज्ञाएँ प्रभु ने मूसा को दी थीं,
उन्हीं के अनुसार इस्राएली समाज ने किया।
[6]किन्तु वहाँ ऐसे भी मनुष्य थे जो शव के स्पर्श
के कारण अशुद्ध हो गए थे। इसलिए वे उस
दिन पास्का का पर्व नहीं मना सके। वे उसी दिन
मूसा तथा हारून के सामने आए। [7]उन मनुष्यों
ने मूसा से कहा, 'शव को स्पर्श करने के कारण
हम अशुद्ध हो गए हैं। किन्तु इस्राएली समाज
के साथ निर्धारित समय पर प्रभु को चढ़ावा
चढ़ाने से हमें क्यों वंचित किया गया?' [8]मूसा
उनसे बोले, 'ठहरो! मैं यह सुनूंगा कि प्रभु
तुम्हारे लिए क्या आज्ञा देता है।'
9 प्रभु मूसा से बोला, [10]'इस्राएली समाज
से बोलना : यदि तुममें से कोई व्यक्ति अथवा
तुम्हारे वंश का कोई मनुष्य शव को स्पर्श करने
के कारण अशुद्ध हो गया है, अथवा दूर यात्रा
पर है, तो वह भी प्रभु के हेतु पास्का का पर्व
मनाएगा। [11]ऐसे मनुष्य दूसरे महीने के चौदहवें
दिन, सन्ध्या के समय उसको मनाएंगे। वे
पास्का के बलि-पशु के मांस को बेखमीर रोटी
एवं कड़ुए साग-पात के साथ खाएंगे। [12]वे उसमें
से कुछ भी सबेरे तक नहीं छोड़ेंगे, और न
बलि-पशु की कोई हड्डी तोड़ेंगे। वे पास्का की
समस्त संविधि के अनुसार उसको मनाएँगे।
[13]किन्तु वह व्यक्ति जो शुद्ध है और यात्रा पर
नहीं है, फिर भी पास्का का पर्व नहीं मनाता है,
तो वह अपने लोगों से नष्ट किया जाएगा;
क्योंकि उसने प्रभु का चढ़ावा उसके निर्धारित
समय पर नहीं चढ़ाया। वह अपने पाप का भार
स्वयं वहन करेगा। [14]यदि तुम्हारे साथ कोई
प्रवासी व्यक्ति निवास करता है, और वह मुझ-
प्रभु के हेतु पास्का का पर्व मनाना चाहता है तो
वह पास्का की संविधि एवं नियमों के अनुसार
ही ऐसा करेगा। देशी तथा प्रवासी, दोनों के
लिए एक ही संविधि होगी।'

निवास-स्थान के ऊपर मेघ

15 जिस दिन प्रभु का निवास-स्थान खड़ा
किया गया, उस दिन उसको, साक्षी के तम्बू
को, एक मेघ ने आच्छादित कर लिया। वह
सन्ध्या के समय निवास-स्थान के ऊपर अग्नि
के सदृश दिखाई दिया और वह सबेरे तक
दिखाई देता रहा। [16]ऐसा निरन्तर होता रहा :
दिन के समय मेघ उसको आच्छादित कर लेता
था, और रात के समय अग्नि के दर्शन होते थे।
[17]जब तम्बू के ऊपर से मेघ उठा लिया जाता
था तब इस्राएली प्रस्थान करते थे। जिस स्थान
पर मेघ ठहर जाता था, वहाँ इस्राएली पड़ाव
डालते थे। [18]इस प्रकार प्रभु के आदेश के
अनुसार इस्राएली प्रस्थान करते थे। वे प्रभु के
आदेश के अनुसार पड़ाव भी डालते थे। जितने
दिन तक मेघ निवास-स्थान के ऊपर ठहरा
रहता था, उतने दिन तक वे पड़ाव डाले रहते
थे। [19]यदि मेघ निवास-स्थान के ऊपर अनेक
दिन तक ठहरा रहता था, तो इस्राएली प्रभु के
आदेश का पालन करते और प्रस्थान नहीं करते
थे। [20]कभी मेघ कुछ दिन तक निवास-स्थान
के ऊपर ठहरता था। तब वे प्रभु के आदेश के
अनुसार पड़ाव डालते, और प्रभु के आदेश के
अनुसार ही प्रस्थान करते। [21]कभी-कभी मेघ
सबेरे से सन्ध्या तक छाया रहता था। जब वह
सबेरे ऊपर उठ जाता, तब इस्राएली प्रस्थान
करते। यदि वह एक दिन और एक रात छाया
रहता तो जब वह ऊपर उठता था, तब ही वे
प्रस्थान करते थे। [22]यदि मेघ दो दिन अथवा
महीना या वर्ष भर निवास-स्थान के ऊपर ठहरा
रहता था, तो इस्राएली भी पड़ाव डालकर पड़े
रहते थे। वे प्रस्थान नहीं करते थे। जब मेघ
ऊपर उठा लिया जाता था तब ही वे प्रस्थान
करते थे। [23]वे प्रभु के आदेश के अनुसार पड़ाव
डालते और प्रभु के आदेश के अनुसार ही

9 : 11 2 इति 30 : 2 **9 : 12** नि 12 : 46 : यो 19 : 36 **9 : 22** नि 40 : 36

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रस्थान करते थे। प्रभु मूसा के द्वारा आज्ञा-
आदेश देता था, और इस्राएली प्रभु के उन
आदेशों का पालन करते थे।

रजत तुरही

10 प्रभु मूसा से बोला, 2'चांदी की दो तुरहियाँ
बना। उनको ढालकर बनाना। तू उनको
मण्डली का आह्वान करने तथा पड़ाव के
प्रस्थान करने के लिए प्रयुक्त करना। 3जब दोनों
तुरहियाँ एक-साथ फूंकी जाएंगी तब समस्त
इस्राएली मंडली तेरे पास, मिलन-शिविर के
द्वार पर एकत्र होगी। 4किन्तु यदि एक तुरही
फूंकी जाएगी तब इस्राएल के विभिन्न गोत्रों के
मुखिया-नेतागण तेरे पास एकत्र होंगे। 5जब तुम
संकट-सूचना के लिए फूंकोगे, तब पूर्व दिशा
के पड़ाव प्रस्थान करेंगे। 6जब दूसरी बार संकट-
सूचना के लिए फूंकोगे तब दक्षिण दिशा के
पड़ाव प्रस्थान करेंगे। जब-जब उन्हें प्रस्थान
करना होगा तब-तब संकट-सूचना के लिए
तुरहियों को फूंका जाएगा। 7किन्तु जब धर्मसभा
को एकत्र करना होगा तब उनको फूंका तो
जाएगा, पर संकट-सूचना के लिए नहीं।
8हारून के पुत्र, अर्थात् पुरोहित, तुरहियों को
फूंकेंगे। तुरहियों का यह प्रयोग तम्हारे लिए
पीढ़ी से पीढ़ी तक स्थायी संविधि होगा। 9जब
तुम अपने देश के बैरी के विरुद्ध, जो तुम्हें
सताता है, युद्ध करने को जाओगे, तब तुरहियों
को फूंककर संकट-सूचना देना। इस प्रकार
मैं-प्रभु तुम्हारा परमेश्वर, तुम्हें स्मरण करूंगा
और तुम्हारे शत्रुओं से तुम्हारी रक्षा करूंगा।
10तुम अपने आनन्द-दिवसों पर, निर्धारित
पर्वों पर तथा प्रत्येक महीने के प्रथम दिन,
अग्नि-बलि एवं सहभागिता-बलि चढ़ाते समय
तुरहियां फूंकना। ये मुझ-परमेश्वर के सम्मुख
तुम्हारा स्मरण कराएंगी। मैं प्रभु तुम्हारा परमेश्वर
हूं।'

सीनय के निर्जन प्रदेश से इस्राएलियों का प्रस्थान

11 दूसरे वर्ष के दूसरे महीने के बीसवें दिन
साक्षी-शिविर के ऊपर से मेघ उठा लिया गया;
12और इस्राएलियों ने सीनय के निर्जन प्रदेश से
अपने-अपने क्रम में प्रस्थान किया। पारन के
निर्जन प्रदेश पर मेघ ठहर गया। 13मूसा को दिए
गए प्रभु के आदेश के अनुसार उन्होंने पहली
बार प्रस्थान किया। 14सर्वप्रथम दल-बल सहित
यहूदा वंशीय पड़ाव की ध्वजा का प्रस्थान
हुआ। उनके दल का सेनापति अम्मीनादब का
पुत्र नहशोन था। 15इस्साकार वंशीय कुल के
दल का सेनापति सूआर का पुत्र नतनेल था।
16जबूलून वंशीय कुल के दल का सेनापति
हेलोन का पुत्र एलीअब था।

17 जब निवास-स्थान उतारा गया, तब
उसके वाहक गेर्शोन वंशीय एवं मरारी वंशीय
लोगों ने प्रस्थान किया। 18दल-बल सहित रूबेन
वंशीय पड़ाव की ध्वजा का प्रस्थान हुआ।
उनके दल का सेनापति शदेऊर का पुत्र एलीसूर
था। 19शिमोन वंशीय कुल के दल का सेनापति
सूरीशद्दय का पुत्र शलूमीएल था। 20गाद वंशीय
कुल के दल का सेनापति दूएल का पुत्र
एलयासप था।

21उसके पश्चात् कहाती लोगों ने पवित्र
वस्तुएं उठाईं और प्रस्थान किया। (अगले
विश्राम-स्थल पर उनके आगमन के पूर्व ही
निवास-स्थान को खड़ा कर दिया गया।)
22दल-बल सहित एफ्रइम वंशीय पड़ाव की
ध्वजा का प्रस्थान हुआ। उनके दल का
सेनापति अम्मीहूद का पुत्र एलीशामा था।
23मनश्शे वंशीय गोत्र के दल का सेनापति
पदासूर का पुत्र गम्लीएल था। 24बिन्यामिन
वंशीय कुल के दल का सेनापति गिद्ओनी का
पुत्र अबीदन था।

25 अन्त में, पीछे की ओर से समस्त पड़ाव
की रक्षा करनेवाले दान वंशियों के पड़ाव की
ध्वजा ने दल-बल सहित प्रस्थान किया। उनके
दल का सेनापति अम्मीशद्दय का पुत्र अहीएजर
था। 26आशेर वंशीय कुल के दल का सेनापति
ओक्रन का पुत्र पगईएल था। 27नफ्ताली वंशीय
कुल के दल का सेनापति एनन का पुत्र अहीर
था। 28जब-जब इस्राएल वंशियों ने अपने-

---

10 : 2 1 थिस 4 : 16; 1 कुर 15 : 52 **10 : 3** योए 2 : 15 **10 : 5** 1 शम 4 : 5 **10 : 8** गण 31 : 6; यहो 6: 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अपने दल के साथ प्रस्थान किया, तब-तब
उनका प्रस्थान-क्रम यही था।
29 मूसा ने अपने ससुर होबाब से, जो
मिद्यानी रऊएल का पुत्र था, कहा, 'हम उस
स्थान की ओर प्रस्थान कर रहे हैं, जिसके
विषय में प्रभु ने कहा है, ''मैं उसको तुम्हें
दूंगा।'' आप भी हमारे साथ चलिए। हम आप
की भलाई करेंगे; क्योंकि प्रभु ने इस्राएल की
भलाई करने का वचन दिया है।' [30]होबाब ने
उनसे कहा, 'मैं नहीं जाऊँगा। मैं अपने देश तथा
अपने कुटुम्बियों के पास लौट जाऊँगा।'
[31]मूसा ने कहा, 'कृपया, आप हमें मत छोड़िए;
क्योंकि आप जानते हैं कि हमें निर्जन प्रदेश में
कहां-कहां पड़ाव डालना चाहिए। आप हमारा
मार्ग-दर्शन कीजिए।* [32]यदि आप हमारे साथ
जाएंगे, तो जो भलाई प्रभु हमारे साथ करेगा,
वह हम आपके साथ करेंगे।'
33 अत: उन लोगों ने प्रभु के पर्वत से
प्रस्थान किया, और तीन दिन के मार्ग की दूरी
तय की। तीन दिन की इस यात्रा में प्रभु के
विधान की मंजूषा उनके लिए विश्राम-स्थल
ढूंढ़ने के अभिप्राय से उनके आगे-आगे गई।
[34]जब-जब वे पड़ाव से प्रस्थान करते, तब-
तब प्रभु का मेघ उन पर दिन के समय छाया
रहता था।
35 जब मंजूषा प्रस्थान करती तब मूसा
कहते,

'प्रभु! उठ, जिससे तेरे शत्रु तितर-बितर हो
जाएँ!
तुझसे बैर करने वाले तेरे सम्मुख से भाग
जाएं!'

36 जब मंजूषा विश्राम करती तब वह कहते,

'प्रभु! लौट आ,
इस्राएल के हजारों-हजार लोगों के पास!'

प्रभु भोजन की व्यवस्था करता है

11 लोग शिकायत करने लगे। उन्होंने प्रभु
को भला-बुरा कहा। प्रभु ने यह सुना।
उसका क्रोध भड़क उठा। प्रभु की आग उनके
मध्य प्रज्वलित हो गई और उसने पड़ाव के
कुछ बाहरी क्षेत्रों को भस्म कर दिया। [2]लोगों
ने मूसा की दुहाई दी। मूसा ने प्रभु से प्रार्थना
की। तब आग बुझ गई। [3]उस स्थान का नाम
तबएराह** रखा गया; क्योंकि प्रभु की आग
उनके मध्य में प्रज्वलित हुई थी।
4 जो कुली-कबारी इस्राएलियों के साथ थे,
वे स्वादिष्ट भोजन के लिए लालायित थे।
इस्राएली भी रोदन करने लगे। उन्होंने कहा,
'कौन हमें खाने को मांस देगा? [5]हमें वे मछलियां
याद हैं जो मिस्र देश में हम मुफ्त खाया करते
थे। हमें खीरे, खरबूजे, गन्दने, प्याज और
लहसून भी याद हैं। [6]अब, हम ''मन्ना'' खाते-
खाते ऊब गए हैं। यहाँ ''मन्ना'' के अतिरिक्त
कुछ भी भोजन-वस्तु दिखाई नहीं देती।'
7 'मन्ना' धनिए के बीज के समान था।
उसका रंग-रूप मोती के रंग-रूप के सदृश
था। [8]लोग इधर-उधर जाकर उसको एकत्र
करते, फिर चक्की में उसको पीसते अथवा
ओखली में कूटते थे। तत्पश्चात् उसको तसले
में उबालते और उसकी रोटियाँ बनाते थे।
उसका स्वाद तेल में बने हुए पूए के स्वाद के
समान था। [9]जब रात को पड़ाव पर ओस गिरती
थी, तब उसके साथ 'मन्ना' भी गिरता था।
10 मूसा ने लोगों का रोदन सुना। परिवार
का प्रत्येक व्यक्ति अपने तम्बू के द्वार पर रो रहा
था। प्रभु का क्रोध बहुत भड़क उठा। मूसा को
यह बुरा लगा। [11]उन्होंने प्रभु से कहा, 'तूने क्यों
अपने सेवक के साथ बुरा व्यवहार किया? मैंने
क्यों तेरी कृपा-दृष्टि प्राप्त नहीं की? तूने क्यों
इन सब लोगों का भार मुझ पर डाला? [12]क्या
मैंने इन लोगों को गर्भ में धारण किया था? क्या
मैंने इन्हें जन्म दिया है कि तू मुझसे कहता है,
''जैसे पोषक-पिता+ शिशु को गोद में ले जाता
है वैसे ही तू इन लोगों को उस देश में उठाकर
ले जा, जिसको प्रदान करने की शपथ मैंने इनके

---

* मूल में, ''आप हमारे लिए आंखों का कार्य करेंगे।'' ** अर्थात् प्रज्वलित होना। + अथवा, ''दाई''।

10 : 29 नि 2 : 18 **10 :34** नि 13 : 21 **10 : 35** भज 68 : 1-2; यश 33 : 3 **11 : 1** व्य 9: 22 **11 : 4** 1 कुर 10 : 6 **11 : 7** नि 16 : 31 **11 : 9** नि 16 : 13-15 **11 : 11** नि 32 : 11

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पूर्वजों से खायी है।'' [13]मैं इन सब लोगों को
खिलाने के लिए मांस कहां से लाऊँ ? ये मेरे
सम्मुख रो-रोकर कह रहे हैं, "हमें खाने के
लिए मांस दीजिए।'' [14]मैं अकेला इन सब
लोगों का भार वहन करने में असमर्थ हूं। यह
भार मेरे लिए बहुत भारी है। [15]यदि तू मुझसे
ऐसा व्यवहार करेगा, तो मुझपर कृपा कर, और
अविलम्ब मेरा वध कर दे जिससे मुझे अपनी
दुर्दशा अपनी आंखों से देखनी न पड़े।'

16 प्रभु मूसा से बोला, 'मेरे लिए इस्राएल
के सत्तर धर्मवृद्ध एकत्र कर जिनको तू जानता
है कि वे लोगों के धर्मवृद्ध और पदाधिकारी हैं।
तू उनको मिलन-शिविर में ला। वहाँ वे तेरे
साथ खड़े हों। [17]मैं उतरकर वहाँ तुझसे बात
करूंगा। जो आत्मा तुझ में है, उसमें से कुछ
लेकर उन लोगों में डालूंगा। तब वे तेरे साथ
लोगों का भार वहन करेंगे, और तू अकेला
उसको नहीं वहन करेगा। [18]तू लोगों से यह
कह : कल के लिए स्वयं को शुद्ध करो। तुम
कल मांस खाओगे, क्योंकि तुमने प्रभु को
अपना रोदन सुनाया है और यह कहा है, "कौन
हमें मांस खाने को देगा ? हमारी दशा मिस्र देश
में इससे अच्छी थी।'' अतः प्रभु तुम्हें मांस
प्रदान करेगा, और तुम खाओगे। [19]तुम एक
दिन नहीं, दो नहीं, पांच नहीं, दस नहीं, बीस
दिन नहीं, [20]वरन् महीने भर खाओगे, जब तक
वह तुम्हारी नाक से बाहर न निकलने लगे, और
तुम्हें उससे घृणा न हो जाए; क्योंकि तुमने प्रभु
को जो तुम्हारे मध्य में है, अस्वीकार किया,
उसके सम्मुख रोदन किया और कहा, "हम
मिस्र देश से क्यों निकल आए ?'' ' [21]किन्तु
मूसा ने कहा, 'ये पैदल चलने वाले लोग जिनके
मध्य मैं हूं, छः लाख हैं, फिर भी तूने कहा, "मैं
इन्हें इतना मांस प्रदान करूंगा, कि ये महीने भर
उसको खाते रहेंगे !'' [22]क्या उनके लिए गाय-
बैल, भेड़-बकरी का वध किया जाएगा ताकि
उनको पर्याप्त हो ? क्या उनके लिए समुद्र की
समस्त मछलियाँ पकड़ी जाएंगी ताकि उनको
पर्याप्त हो ?' [23]प्रभु ने मूसा से कहा, 'क्या मेरा
भुजबल घट गया है ?* अब तू देखेगा कि मेरा
वचन तेरे लिए सिद्ध होता है अथवा नहीं।'

धर्मवृद्धों का नबूबत करना

24 मूसा मिलन-शिविर से बाहर गए और
उन्होंने लोगों से प्रभु के वचन कहे। मूसा ने
उनके सत्तर धर्मवृद्धों को एकत्र किया, और
उन्हें तम्बू के चारों ओर खड़ा कर दिया। [25]तब
प्रभु मेघ में उतरा। उसने मूसा से वार्तालाप
किया और जो आत्मा मूसा पर था उसमें से कुछ
लेकर उसने उन सत्तर धर्मवृद्धों पर उण्डेल
दिया। जब आत्मा धर्मवृद्धों पर ठहर गया तब
वे नबूवत करने लगे। परन्तु उन्होंने उस दिन के
बाद फिर कभी नबूवत नहीं की।

26 दो मनुष्य पड़ाव में रह गए थे। उनमें एक
का नाम एल्दाद और दूसरे का नाम मेदाद था।
आत्मा उन पर भी ठहरा। जिनके नाम सत्तर
पुरुषों के साथ लिखे गए थे, उनमें ये भी थे,
किन्तु वे तम्बू के पास नहीं गए थे। अतः उन्होंने
पड़ाव में ही नबूवत की। [27]एक किशोर लड़का
दौड़कर मूसा के पास गया। उसने मूसा से कहा,
'एल्दाद और मेदाद पड़ाव में नबूवत कर रहे
हैं।' [28]मूसा के निजी सेवक तथा उनके मनोनीत
व्यक्तियों में से एक, नून के पुत्र यहोशुआ+ ने
कहा, 'हे मेरे स्वामी मूसा, उनको नबूवत करने
से रोक दीजिए।' [29]किन्तु मूसा ने यहोशुआ से
कहा, 'क्या तुम मेरे कारण उनसे ईर्ष्या कर रहे
हो ? भला होता कि प्रभु के सब लोग नबी होते,
और प्रभु अपना आत्मा उन पर उण्डेलता!'
[30]मूसा तथा इस्राएल के सत्तर धर्मवृद्ध पड़ाव
को लौट गए।

प्रभु मांस के लिए बटेरें भेजता है

31 तब प्रभु की ओर से पवन बहने लगा।
वह अपने साथ समुद्र से बटेरें बहा ले आया,
और पड़ाव पर उनको गिरा दिया। बटेरें पड़ाव
के चारों ओर इधर-उधर एक दिन के मार्ग की

* मूल में, "क्या प्रभु का हाथ छोटा हो गया है ?" + अथवा, "यहोशू"

11 : 14 नि 18 : 18 11 : 15 1 रा 19 : 4 11 : 17 2 रा 2 : 5 11 : 22 यो 6 : 9 11 : 23 यश 50 : 2, यहेज 12 : 25

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दूरी तक, भूमि की सतह पर दो-दो हाथ ऊंचाई
तक उड़ती रहीं। 32लोग दिन-भर, रात-भर
और दूसरे दिन भी सबेरे उठकर बटेरें एकत्र
करते रहे। जिसने कम बटेरें एकत्र कीं, वे भी
सौ से कम नहीं थीं।* तत्पश्चात् उन्होंने उनको
पड़ाव के चारों ओर सूखने के लिए फैला
दिया। 33मांस अभी उनके दांतों के मध्य फंसा
ही था, वे उसको चबा ही न पाए थे कि प्रभु
का क्रोध उनके प्रति भड़क उठा। प्रभु ने उन्हें
एक व्यापक महामारी से मार डाला। 34उस स्थान
का नाम 'किब्रोत-हत्तावा'** रखा गया; क्योंकि
वहाँ उन्होंने उन लोगों को गाड़ा था, जो
स्वादिष्ट भोजन के लिए लालायित थे।
35 लोगों ने किब्रोत-हत्तावा से हसेरोत की
ओर प्रस्थान किया। वे हसेरोत में रहे।

मिर्याम+ और हारून का विद्रोह करना

12 मूसा ने कूशी++ जाति की एक स्त्री से
विवाह किया। अत: मिर्याम और हारून
उस कूशी जाति की स्त्री के कारण, जिससे मूसा
ने विवाह किया था, मूसा के विरोध में बोलने
लगे। 2उन्होंने कहा, 'क्या प्रभु केवल मूसा के
द्वारा ही बोला? क्या वह हमारे द्वारा भी नहीं
बोला?' प्रभु ने यह सुना। 3पृथ्वी पर रहने वाले
सब मनुष्यों में मूसा सर्वाधिक विनम्र थे। 4प्रभु
ने अचानक मूसा, हारून और मिर्याम से कहा,
'तुम तीनों मिलन-शिविर के पास आओ।' वे
तीनों पास आए। 5तब प्रभु मेघ-स्तम्भ में उतरा
और तम्बू के द्वार पर खड़ा हो गया। उसने
हारून और मिर्याम को बुलाया। वे दोनों उसके
पास आए। 6प्रभु ने कहा, 'मेरे वचन सुनो :
यदि तुम्हारे मध्य कोई नबी है, तो मैं-प्रभु दर्शन
के माध्यम से उस पर स्वयं को प्रकट करता हूं,
मैं स्वप्न में उससे वार्तालाप करता हूं। 7किन्तु
मेरे सेवक मूसा के साथ ऐसा नहीं होता। वह
मेरे सम्पूर्ण परिवार में† विश्वासयोग्य है। 8मैं
उससे पहेलियों में नहीं, वरन् स्पष्ट शब्दों में
आमने-सामने बात करता हूं। वह मेरा, अपने
प्रभु का, स्वरूप निहारता है। तब तुम मेरे सेवक
मूसा के विरोध में बोलते समय क्यों नहीं डरे?'
9 हारून और मिर्याम के प्रति प्रभु का क्रोध
भड़क उठा। प्रभु चला गया। 10जब मेघ तम्बू
के ऊपर से हट गया, तब मिर्याम कोढ़+ से बर्फ
के समान सफेद हो गई! हारून ने मिर्याम की
ओर दृष्टि की तो देखा कि वह कोढ़िन हो गई
है। 11हारून ने मूसा से कहा, 'हे मेरे स्वामी!
हमारे मूर्खतापूर्ण कार्य के लिए, हमारे पाप के
लिए हमें दण्डित मत कीजिए††! 12कृपया,
मिर्याम को उस मृतजात शिशु के समान न होने
दीजिए जिसका आधा शरीर गला हुआ होता है,
जब वह अपनी मां के पेट से बाहर आता है।'
13तब मूसा ने प्रभु की दुहाई दी, 'हे परमेश्वर,
कृपाकर मिर्याम को शुद्ध कर दे।' 14प्रभु ने मूसा
से कहा, 'यदि उसके पिता ने उसके मुख पर
थूक दिया हो, तो क्या उसको सात दिन तक
अपना मुंह नहीं छिपाना चाहिए? वह सात दिन
तक पड़ाव के बाहर बन्द रहेगी। उसके बाद
वह पड़ाव के भीतर आ सकेगी।' 15अत: मिर्याम
सात दिन तक पड़ाव के बाहर बन्द रही। जब
तक वह पड़ाव के भीतर पुन: न आ गई तब तक
लोगों ने प्रस्थान नहीं किया। 16उसके पश्चात्
लोगों ने हसेरोत से प्रस्थान किया और पारन के
निर्जन प्रदेश में पड़ाव डाला।

बारह गुप्तचरों का कनान देश जाना

13 प्रभु मूसा से बोला, 2'तू पुरुषों को भेज
ताकि वे कनान देश का भेद लें जिसे मैं
इस्राएली समाज को दे रहा हूं। उनके पूर्वजों
के प्रत्येक कुल से एक-एक व्यक्ति को भेजना
जो उनका नेता है।' 3अत: मूसा ने प्रभु के
आदेश के अनुसार उन्हें पारन के निर्जन प्रदेश
से भेज दिया। ये सब पुरुष इस्राएली समाज के
नेता थे। 4उन के नाम ये हैं : रूबेन के कुल से
जक्कूर का पुत्र शम्मूअ; 5शिमोन के कुल से

---

*मूल में 'दस होमर' ** अर्थात् "लालसा की कबरें" + अथवा, "मरियम" ++ अथवा 'इथिओपिआई' † अथवा 'परिवार पर नियुक्त होकर'। + श्वेत दाग अथवा कोई चर्मरोग। †† मूल में, "हम पर पाप मत डालिए।"

11 : 25 2 रा 2 : 15; 1 शम 10 : 5-6 **11 : 34** 1 कुर 10 : 6 **12 : 2** नि 25 : 20 **12 : 3** नि 3 : 11; 4 : 10; मत 5 : 5; 1 तिम 1 : 15; प्रव 45 : 5 **12 : 7** इब्र 3 : 25 **12 : 8** नि 33 : 11; व्य 34 : 10; 1 कुर 13:10; 1 कुर 13 : 12 **12 : 10** व्य 24 : 9;2 इत 26 : 19 **12 : 14** गण 5 : 2-3 **13 : 2** व्य 1 : 22

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

होरी का पुत्र शापट; [6]यहूदा के कुल से यपून्ने का पुत्र कालेब; [7]इस्साकार के कुल से योसप का पुत्र इग्आल [8]एफ्रइम के गोत्र से नून का पुत्र होशे; [9]बिन्यामिन के कुल से रापू का पुत्र पल्टी, [10]जबूलून के कुल से सोदी का पुत्र गद्दीएल; [11]यूसुफ के कुल से (अर्थात् मनश्शे के गोत्र में से) सूसी का पुत्र गद्दी; [12]दान के कुल से गमल्ली का पुत्र अम्मीएल; [13]आशेर के कुल से मीखाएल का पुत्र सतूर; [14]नफ्ताली के कुल से वोप्सी का पुत्र नह्बी; [15]गाद के कुल से माकी का पुत्र गऊएल। [16]ये ही उन पुरुषों के नाम हैं, जिन्हें मूसा ने कनान देश का भेद लेने के लिए भेजा था। मूसा ने नून के पुत्र** होशे का नाम यहोशुअ रखा।

17 मूसा ने उन्हें कनान देश का भेद लेने के लिए भेजा और उनसे कहा, 'यहाँ से नेगेब होकर पहाड़ी प्रदेश में जाओ, [18]और उस देश को देखो कि वह कैसा है। उसमें निवास करने वाले लोग बलवान् हैं अथवा दुर्बल; वे संख्या में थोड़े हैं, अथवा बहुत। [19]जिस देश पर वे निवास करते हैं, वह अच्छा है अथवा बुरा। जिन नगरों में वे निवास करते हैं, वे पड़ाव हैं अथवा गढ़। [20]देश समृद्ध है अथवा दरिद्र? वहाँ पेड़-पौधे हैं अथवा नहीं? तुम-सब साहसी बनो! तुम उस देश के कुछ फल भी लाना।' वे दिन प्रथम पके अंगूरों के दिन थे।

21 गुप्तचर चले गए। उन्होंने सिन के निर्जन प्रदेश से, हमात घाटी के प्रवेश-द्वार के निकट रहोब नगर तक पूरे देश का भेद ले लिया। [22]वे नेगेब क्षेत्र से होकर गए और उन्होंने हेब्रोन नगर में प्रवेश किया। वहाँ ऊंचे-ऊंचे अनक के वंशज अहीमन, शेशय और तलमय रहते थे। (हेब्रोन नगर मिस्र के सोअन नगर से सात वर्ष पूर्व बसा था।) [23]वे एश्कोल की घाटी तक गए। वहाँ उन्होंने अंगूर का एक गुच्छा शाखा-सहित तोड़ा और दो व्यक्ति उसको एक डण्डे पर लाद कर ले गए। वे अनार और अंजीर के कुछ फल भी ले गए। [24]जो गुच्छा इस्राएली वहाँ से काट कर ले गए थे, उसके कारण उस स्थान का नाम 'एश्कोल+ की घाटी' पड़ा।

25 गुप्तचर चालीस दिन के बाद कनान देश का भेद लेकर लौटे। [26]वे पारन के निर्जन प्रदेश में गए और कादेश में मूसा, हारून तथा समस्त इस्राएलियों की मंडली के पास आए। उन्होंने उन लोगों को तथा समस्त इस्राएली मंडली को समाचार दिया और उन्हें उस देश के फल दिखाए। [27]उन्होंने मूसा को वृत्तान्त सुनाया। उन्होंने कहा, 'जिस देश में आपने हमें भेजा था, उसमें हम गए। निस्संदेह उसमें दूध और शहद की नदियाँ बहती हैं। देखिए, ये उस देश के फल हैं। [28]परन्तु उस देश में रहने वाले लोग बलवान हैं। उसके नगर सुदृढ़ और बहुत बड़े हैं। इसके अतिरिक्त हमने वहां ऊंचे-ऊंचे अनक के वंशज भी देखे। [29]अमालेक जाति नेगेब प्रदेश में निवास करती है। हित्ती, यबूसी और अमोरी जातियाँ पहाड़ी प्रदेश में रहती हैं। कनानी जाति समुद्र तट तथा यर्दन नदी के किनारे निवास करती है।'

30 किन्तु कालेब ने मूसा के सम्मुख लोगों को शान्त किया। उसने कहा, 'आओ, हम उस देश पर तुरन्त चढ़ाई करें और उसको अपने अधिकार में कर लें; क्योंकि हम उस पर विजय पाने में समर्थ हैं।' [31]तब जो गुप्तचर उसके साथ भेजे गए थे, उन्होंने कहा, 'हम उन लोगों के विरुद्ध चढ़ाई करने में असमर्थ हैं; क्योंकि वे हम से अधिक शक्तिवान हैं।' [32]जो लोग कनान देश का भेद लेने गए थे, उन्होंने इस्राएली समाज को उस देश का झूठा++ विवरण भी दिया। उन्होंने कहा, 'जिस देश का भेद लेने हम गए थे, वह एक ऐसा देश है जो अपने निवासियों को खा जाता है। वे सब मनुष्य, जिन्हें हमने देखा है, ऊंचे कद के हैं। [33]वहाँ हमने दानवों को भी देखा है (अनक के वंशज, जो दानवों से निकले हैं)। उन्हें देखकर हम तो अपनी दृष्टि में टिड्डों के सदृश दिखाई दिए, और ऐसे ही उनकी दृष्टि में भी।'

** अथवा "बेन-नून" + अर्थात्, 'गुच्छा'। ++ अथवा, 'निन्दात्मक'।

13 : 33 उत 6 : 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इस्राएलियों का प्रभु के प्रति विद्रोह करना

14 तब समस्त इस्राएली मंडली उच्च स्वर में भय से चिल्ला उठी। लोग रात-भर रोते रहे। 2सब इस्राएली मूसा और हारून के विरुद्ध बक-बक करने लगे। उन्होंने मूसा और हारून से कहा, 'भला होता कि हम मिस्र देश में मर जाते! अथवा इसी निर्जन प्रदेश में मर जाते! 3क्यों प्रभु हमें उस देश में ले जाना चाहता है? क्या तलवार से मार डालने के लिए? वे हमारी पत्नियों और बच्चों को हम से लूट लेंगे। यह हमारे लिए अच्छा है कि हम मिस्र देश को लौट जाएँ।'

4 उन्होंने आपस में कहा, 'आओ, हम किसी व्यक्ति को नेता चुन लें और मिस्र देश लौट जाएँ।' 5मूसा और हारून समस्त इस्राएली मंडली की धर्म-सभा के सम्मुख मुंह के बल गिर पड़े। 6यहोशुअ बेन-नून तथा कालेब बेन-यपून्ने* ने, जो कनान देश का भेद लेने वालों में से थे, अपने वस्त्र फाड़कर 7समस्त इस्राएली मंडली से कहा, 'जिस देश का भेद लेने के लिए हम गए थे, वह अत्यन्त उपजाऊ देश है। 8यदि प्रभु हम पर प्रसन्न होगा तो वह हमें उस देश में प्रवेश कराएगा। वह हमें उस देश को प्रदान करेगा जहाँ दूध और शहद की नदियाँ बहती हैं। 9किन्तु शर्त यह है कि तुम, प्रभु के विरुद्ध विद्रोह मत करो। तुम उस देश के लोगों से मत डरो; क्योंकि वे तो हमारे लिए मात्र रोटी सदृश हैं और हम उनको आसानी से निगल सकते हैं। उन पर से संरक्षण की छाया हट चुकी है और प्रभु हमारे साथ है। उन लोगों से मत डरो।' 10किन्तु सारी मंडली उनको पत्थरों से मार डालने के लिए चिल्लाने लगी। तब सहसा प्रभु का तेज समस्त इस्राएली समाज को मिलन-शिविर पर दिखाई दिया। 11प्रभु ने मूसा से कहा, 'ये लोग कब तक मेरा तिरस्कार करते रहेंगे? जो अद्‌भुत कार्य मैंने इनके मध्य किए, उनको देखकर भी ये कब तक मुझ पर विश्वास नहीं करेंगे? 12मैं महामारी के द्वारा इनको मार डालूंगा, और इनको उत्तराधिकार से वंचित करूँगा। किन्तु मैं तुझे एक ऐसे राष्ट्र का पिता बनाऊंगा जो इन इस्राएलियों से अधिक महान और बलवान राष्ट्र होगा।'

मूसा का निवेदन

13 परन्तु मूसा ने प्रभु से कहा, 'तब तो मिस्र निवासी इस्राएलियों के विनाश की यह बात सुनेंगे; क्योंकि तू अपने सामर्थ्य से इन लोगों को मिस्र निवासियों के मध्य से निकाल लाया है। 14वे इस देश के निवासियों को बताएंगे। हे प्रभु! राष्ट्रों ने सुना है कि तू इन लोगों के मध्य में है; क्योंकि तूने, हे प्रभु, इन्हें प्रत्यक्ष दर्शन दिया है। तेरा मेघ-इन के ऊपर छाया रहता है। तू दिन के समय मेघ-स्तम्भ में, और रात के समय अग्नि-स्तम्भ में इनके आगे-आगे जाता है। 15यदि तू इन लोगों को पूर्णत: मार डालेगा तो जिन राष्ट्रों ने तेरी कीर्ति सुनी है, वे यह कहेंगे, 16"जिस देश को प्रदान करने की प्रभु ने शपथ खाई थी, उसमें वह उन लोगों को न पहुँचा सका; इसलिए उसने उनका निर्जन प्रदेश में वध कर डाला।" 17अब, कृपाकर, स्वामी, अपने महान् सामर्थ्य को दिखा। तूने कहा था कि 18"प्रभु विलम्ब-क्रोधी, अत्यन्त करुणामय, अधर्म और अपराध को क्षमा करनेवाला है। किन्तु वह दोषी को किसी भी प्रकार निर्दोष सिद्ध न करेगा। वह पूर्वजों के अधर्म का दण्ड तीसरी और चौथी पीढ़ी तक उनकी संतान को देता रहता है।" 19कृपाकर, तू अपनी महान् करुणा के अनुरूप, जैसे तू इनको मिस्र देश से लेकर आज तक क्षमा करता आया है, वैसे ही इन लोगों के अधर्म को क्षमा कर।'

इस्राएल को दण्ड मिलना

20 प्रभु ने कहा, 'तेरे निवेदन के अनुसार, मैं उन्हें क्षमा करता हूं। 21यह सच है कि मैं जीवित हूं, और समस्त सृष्टि मुझ-प्रभु की

---

* अथवा, "नून के पुत्र यहोशुअ तथा यपून्ने के पुत्र कालेब"

14 : 4 प्रे 7 : 39 14 : 9 इब्र 3 : 16 14 : 12 नि 32 : 10 14 : 18 नि 34 : 7; व्य 5 : 9 14 : 21 यश 6 : 3; हब 3 : 3

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

महिमा से परिपूर्ण होगी। [22]अत: वे सब व्यक्ति
जिन्होंने मेरी महिमा के दर्शन किए, मेरे उन
अद्भुत कार्यों को देखा जिनको मैंने मिस्र देश
तथा निर्जन प्रदेश में किया, फिर भी जिन्होंने
दस बार मुझे कसौटी पर कसा और मेरी वाणी
नहीं सुनी, [23]वे उस देश को नहीं देख सकेंगे
जिसको प्रदान करने की शपथ मैंने उनके
पूर्वजों से खाई थी। मेरा तिरस्कार करने वाला
कोई भी व्यक्ति उस देश को नहीं देख सकेगा।
[24-25]परन्तु मैं अपने सेवक कालेब को, जिसमें
भिन्न आत्मा है और जिसने पूर्णत: मेरा अनुसरण
किया है, उस देश में ले जाऊंगा, जहाँ वह गया
था। उसके वंशज उस देश पर अधिकार करेंगे,
जिसकी घाटियों में अमालेकी तथा कनानी
जातियाँ निवास करती हैं। पर तुम कल लौटो
और अकाबा की खाड़ी* के मार्ग से निर्जन
प्रदेश की ओर जाओ।'

26 प्रभु मूसा और हारून से बोला, [27]'कब
तक यह दुष्ट मंडली मेरे विरुद्ध बक-बक
करती रहेगी? इस्राएली समाज की बक-बक,
उनका मेरे विरुद्ध बक-बक करना, मैंने सुना
है। [28]उनसे यह कहना : "प्रभु कहता है: मेरे
जीवन की सौगन्ध! जो बात तुमने मुझे सुनाकर
कही है, वही मैं तुम्हारे साथ करूँगा। [29]तुम्हारे
शव इस निर्जन प्रदेश में पड़े रहेंगे। तुम्हारे वे
सब पुरुष जिनकी गणना की गई थी; जो बीस
वर्ष के तथा इससे अधिक आयु के हैं; और
जिन्होंने मेरे विरुद्ध बक-बक की है; [30]उनमें
से यपून्ने के पुत्र कालेब तथा नून के पुत्र
यहोशुअ को छोड़ कोई भी व्यक्ति उस देश में
प्रवेश नहीं करेगा, जिसमें तुम्हें बसाने की मैंने
शपथ खाई है। [31]तुम्हारे बच्चों को, जिनके
विषय में तुमने कहा था कि वे लूट लिये जाएंगे,
मैं उस देश में लाऊंगा। वे उस देश को जानेंगे,
जिसका तुमने तिरस्कार किया है। [32]परन्तु तुम्हारे
शव इस निर्जन प्रदेश में पड़े रहेंगे। [33]जब तक
तुम्हारे शव निर्जन प्रदेश में पूर्णत: मिट्टी में न
मिल जाएंगे तब तक, चालीस वर्ष तक, तुम्हारे
बच्चे निर्जन प्रदेश में चरवाहे बने रहेंगे और
तुम्हारे विश्वासघात का दण्ड भोगेंगे। [34]जितने
दिन तक तुमने उस देश का भेद लिया, अर्थात्
चालीस दिन तक, उनकी संख्या के अनुसार,
दिन पीछे एक वर्ष, तुम चालीस वर्ष तक अपने
अधर्म का भार वहन करते रहोगे। इस प्रकार
तुम मेरी अप्रसन्नता को जानोगे। [35]मैं-प्रभु ने
यह कहा है! मैं इस दुष्ट मंडली के साथ, जो
मेरे विरोध में एकत्र हुई है, निश्चय ऐसा ही
करूंगा। इस निर्जन प्रदेश में उनका सम्पूर्ण
विनाश होगा। यहीं वे मर-मिटेंगे।"'

दस झूठे भेदियों की मृत्यु

36 जिन गुप्तचरों को मूसा ने कनान देश का
भेद लेने के लिए भेजा था, और जिन्होंने उस
देश का झूठा विवरण प्रस्तुत करके इस्राएली
मंडली को मूसा के विरुद्ध भड़काया था, [37]वे
लोग, कनान देश की बुराई कर, असत्य
समाचार लाए थे। अत: वे प्रभु के सम्मुख
महामारी से मर गए। [38]किन्तु कनान देश का
भेद लेने के लिए गए हुए गुप्तचरों में से
यहोशुअ बेन-नून और कालेब बेन-यपून्ने
जीवित रहे।

इस्राएलियों की पराजय

39 जब मूसा ने ये सब बातें इस्राएली लोगों
से कहीं, तब उन्होंने बहुत शोक मनाया। [40]वे
सबेरे उठे और आक्रमण के उद्देश्य से पहाड़ी
क्षेत्र के उच्च स्थल पर चढ़ गए। वे कह रहे थे,
'हम तैयार हैं। हम उस स्थान पर आक्रमण
करेंगे, जिसके विषय में प्रभु ने कहा है। हम
स्वीकार करते हैं कि हमने पाप किया है।'
[41]परन्तु मूसा ने कहा, 'तुम प्रभु की आज्ञा का
उल्लंघन क्यों कर रहे हो? यह अभियान
सफल न होगा। [42]तुम मत चढ़ो! ऐसा न हो कि
तुम अपने शत्रुओं के सम्मुख धराशायी हो
जाओ; क्योंकि प्रभु तुम्हारे मध्य नहीं है।
[43]अमोलेकी और कनानी जातियाँ तुम्हारे

---

* अथवा, 'लाल सागर, नड सागर'

14 : 22 व्य 1 : 34 **14 : 23** इब्र 3 : 18 **14 : 24** यहो 14 :9-12 **14 : 28** इब्र 3 : 17 **14 : 33** प्रे 7 : 36
14 : 42 व्य 1 : 42

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सामने हैं, और तुम तलवार से मृत्यु के घाट उतार दिए जाओगे। तुमने प्रभु का अनुसरण करने से मुंह मोड़ लिया है। अतः प्रभु तुम्हारे साथ नहीं होगा।' [44]यद्यपि प्रभु के विधान की मंजूषा और मूसा पड़ाव से नहीं हटे, तो भी उन्होंने आक्रमण के उद्देश्य से पहाड़ी क्षेत्र के उच्च स्थल पर चढ़ने की धृष्टता की। [45]तब उस पहाड़ी क्षेत्र में रहने वाले अमालेकी और कनानी लोगों ने उन पर आक्रमण कर दिया। उन्होंने इस्राएलियों को पराजित कर दिया और होर्मा नगर तक उनका पीछा किया।

बलि सम्बन्धी नियम

15 प्रभु मूसा से बोला, [2]'इस्राएली समाज से यह कहना : जब तुम उस देश में पहुँचोगे, जहाँ तुम बसोगे, और जिस को मैं प्रदान करूंगा, [3]तब मुझ-प्रभु के लिए, मन्नत में अथवा स्वेच्छा से या निर्धारित पर्वों पर, प्रभु को अग्नि में अर्पित सुखद सुगन्ध के लिए अपने भेड़-बकरी, गाय-बैल में से कोई पशु अग्नि में चढ़ाना। तुम उसे अग्नि-बलि अथवा अन्य प्रकार की पशु-बलि में चढ़ाना। [4]चढ़ावा चढ़ाने वाला व्यक्ति मुझ-प्रभु को उसमें अर्पित प्रत्येक मेमने के साथ एक किलो* मैदा, जो दो लिटर** तेल से सम्मिश्रित होगा, अन्न-बलि में चढ़ाएगा। [5]वह पेय-बलि में, दो लिटर अंगूर का रस चढ़ाएगा। [6]तुम अपनी उस अग्नि-बलि अथवा अन्य प्रकार की पशु-बलि में अर्पित हर-एक मेढ़े के साथ दो किलो मैदा जो अढ़ाई लिटर तेल से सम्मिश्रित होगा, अग्नि-बलि में चढ़ाना। [7]तुम पेयबलि में अढ़ाई लिटर अंगूर का रस चढ़ाना। यह प्रभु के लिए सुखद सुगन्ध होगी। [8]जब तुम मुझ-प्रभु को मन्नत में अथवा सहभागिता-बलि में या अग्नि-बलि में बछड़ा चढ़ाओगे, [9]तब अपनी अग्नि-बलि अथवा अन्य प्रकार की पशु-बलि में अर्पित उस बछड़े के साथ अढ़ाई किलो मैदा, जो साढ़े तीन लिटर तेल से सम्मिश्रित होगा, अन्न-बलि में चढ़ाना, [10]तुम पेय-बलि में साढ़े तीन लिटर अंगूर-रस चढ़ाना। यह प्रभु को अग्नि में अर्पित सुखद सुगन्ध है।

11 'प्रत्येक बछड़े, प्रत्येक मेढ़े अथवा बकरी या भेड़ के प्रत्येक बच्चे के साथ ऐसा ही किया जाएगा। [12]चढ़ावों में चढ़ाए जाने वाले पशुओं की संख्या के अनुसार, प्रत्येक पशु के साथ इसी मात्रा में तुम वस्तुएँ चढ़ाना+। [13]हरएक देशी व्यक्ति प्रभु को अग्नि में अर्पित सुखद सुगन्ध चढ़ाने के लिए ये कार्य इसी पद्धति से करेगा। [14]यदि तुम्हारे साथ कोई प्रवासी व्यक्ति निवास करता है अथवा कोई अन्य जाति का व्यक्ति तुम्हारे मध्य अनेक पीढ़ियों से रहता चला आ रहा है और वह प्रभु को अग्नि में सुखद सुगन्ध में चढ़ावा चढ़ाना चाहता है, तो वह वैसा ही करेगा, जैसा तुम करोगे। [15]तुम्हारी धर्मसभा में तुम्हारे लिए तथा तुम्हारे मध्य निवास करने वाले प्रवासी व्यक्ति के लिए एक ही संविधि होगी। यह तुम्हारी पीढ़ी से पीढ़ी तक स्थायी संविधि होगी। प्रभु की दृष्टि में तुम और प्रवासी दोनों समान हैं। [16]तुम्हारे लिए तथा तुम्हारे मध्य निवास करने वाले प्रवासी के लिए एक ही व्यवस्था और एक ही न्याय-सिद्धान्त होंगे।'

17 प्रभु मूसा से बोला, [18]'इस्राएली समाज से यह कहना : जब तुम उस देश में पहुँचोगे जहाँ मैं तुम्हें ले जा रहा हूं, [19]और जब तुम उस देश की रोटी खाओगे तब प्रभु को भेंट चढ़ाना। [20]तुम जौ के आटे की प्रथम रोटी भेंट में चढ़ाना। जैसे तुम खलियान में से भेंट चढ़ाओगे वैसे ही उसको भी चढ़ाना। [21]तुम जौ के आटे की प्रथम रोटी पीढ़ी से पीढ़ी तक प्रभु को अर्पित किया करना।

22 'किन्तु यदि तुम भूल करो, और इन आज्ञाओं का पालन न करो जो मुझ-प्रभु ने मूसा से कही हैं, [23]—उन सब आज्ञाओं का उल्लंघन करोगे, जो मैंने मूसा के द्वारा दी हैं, जिस दिन

---

* मूल में, एपा का दसवां अंश ** मूल में चौथाई हीन। + मूल में, प्रत्येक के साथ ऐसा ही करना।

14 : 44 भज 44 : 9 **14 : 45** शास 1 : 17 **15 : 15** नि 12 : 49; लेव 24 : 22; गण 9 : 14 **15 : 17-21** नि 34 : 26; लेव 23 : 14

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मैंने तुम्हें आज्ञा दी उस दिन से लेकर पीढ़ी से
पीढ़ी तक—,24तो यदि उनमें से किसी आज्ञा
का उल्लंघन अनजाने में हो जाए और उसका
पता मंडली को न हो, तो सम्पूर्ण मंडली
अग्नि-बलि में एक बछड़ा चढ़ाएगी। यह प्रभु
के लिए सुखद सुगन्ध होगी। मंडली उसके
साथ आदेशानुसार अन्न-बलि और पेय-बलि
चढ़ाएगी, और पाप-बलि में एक बकरा भी।
25पुरोहित समस्त इस्राएली मंडली के लिए
प्रायश्चित्त करेगा, और वे क्षमा प्राप्त करेंगे,
क्योंकि यह अनजाने में की गई एक भूल थी।
वे प्रभु को अग्नि में अर्पित करने के लिए
चढ़ावा लाए। उन्होंने अपनी भूल के लिए
मुझ-प्रभु के सम्मुख पाप-बलि भी चढ़ाई।
26अतएव समस्त इस्राएली मंडली तथा उसके
मध्य निवास करने वाले सब प्रवासी व्यक्ति
क्षमा प्राप्त करेंगे, क्योंकि सब लोग इस भूल में
सम्मिलित थे।

27 'यदि कोई व्यक्ति अनजाने में पाप
करता है तो वह पाप-बलि में एक-वर्षीय
बकरी चढ़ाएगा। 28पुरोहित उस व्यक्ति के
लिए जिसने भूल की है, जिसने अनजाने में पाप
किया है, प्रायश्चित्त करेगा, और उसे क्षमा
प्राप्त होगी। 29अनजाने में भूल करने वाले
व्यक्ति के लिए, इस्राएल के देशी एवं उनके
मध्य निवास करने वाले प्रवासी के लिए तुम
एक ही व्यवस्था रखना। 30यदि कोई व्यक्ति,
चाहे वह देशी हो अथवा प्रवासी, जान-बूझकर
पाप करता है, तो वह मुझ-प्रभु की निन्दा करता
है। वह अपने लोगों में से नष्ट किया जाएगा।
31उसने मुझ-प्रभु के वचन का तिरस्कार किया
है, उसने मेरी आज्ञा का उल्लंघन किया है।
ऐसा व्यक्ति अपने लोगों में से अवश्य नष्ट किया
जाएगा। उसका अधर्म उसी पर होगा।'

विश्राम-दिवस को न मानने का दण्ड

32 जब इस्राएली निर्जन प्रदेश में थे तब
उनको एक मनुष्य विश्राम-दिवस पर लकड़ी
बीनता हुआ मिला। 33जिन लोगों ने उसे लकड़ी
बीनते हुए पकड़ा था, वे उसे मूसा, हारून
और सम्पूर्ण इस्राएली मंडली के पास लाए।
34उन्होंने उसे हवालात में बन्द रखा; क्योंकि
यह बात स्पष्ट नहीं हुई थी कि उसके साथ क्या
करना चाहिए। 35प्रभु ने मूसा से कहा, 'इस
व्यक्ति को मृत्यु-दण्ड दिया जाएगा। समस्त
मंडली पड़ाव के बाहर पत्थर मारकर इसका
वध करेगी।' 36अत: समस्त मंडली उसको
पड़ाव के बाहर ले गई, और पत्थर मार-मारकर
उसको मार डाला; जैसी आज्ञा प्रभु ने मूसा को
दी थी।

वस्त्रों के किनारों पर फुंदना लगाना

37 प्रभु ने मूसा से कहा, 38'इस्राएली समाज
से बोलना; तू उनसे कहना कि वे पीढ़ी से पीढ़ी
तक अपने वस्त्रों के कोनों पर फुंदना लगाया
करें, और प्रत्येक कोने के फुंदने पर एक नीला
फीता। 39ये तुम्हारे लिए ऐसे फुंदने बनेंगे,
जिनको देखकर तुम मुझ-प्रभु की आज्ञाओं का
स्मरण तथा उनका पालन कर सकोगे। तब तुम
अपने हृदय और आंखों का अनुसरण करके
व्यभिचारिणी के सदृश विश्वासघात नहीं
करोगे, जैसा तुम अब तक करते आए हो।
40अत: तुम मेरी सब आज्ञाओं को स्मरण
रखना, और उनका पालन करना। अपने
परमेश्वर के लिए पवित्र बनना। 41मैं प्रभु, तुम्हारा
परमेश्वर, हूं। मैंने तुम्हें मिस्र देश से बाहर
निकाला है कि तुम्हारा परमेश्वर होऊं। मैं प्रभु,
तुम्हारा परमेश्वर हूं।'

कोरह, दातन और अबीराम का विद्रोह

16 लेवी के वंशज, कहात के पोते और
यिसहार के पुत्र कोरह ने धृष्टता की।
उसने एलीआब के दोनों पुत्रों दातन तथा
अबीराम को एवं रूबेन के वंशज पेलत के पुत्र
ओन को अपने साथ लिया 2और उन्होंने
इस्राएलियों के दो सौ पचास व्यक्तियों के
साथ, जो मंडली के नेता, धर्मसंसद के चुने हुए
व्यक्ति तथा विख्यात् पुरुष थे, मूसा के विरुद्ध
विद्रोह कर दिया। 3वे मूसा और हारून के विरोध

---

15 : 27 लेव 4 : 27-28 15 : 34 लेव 24 : 12 15 : 38 व्य 22 : 12; मत 9 : 20; 23 : 5 16 : 1 यहू 11; प्रव 45 : 18 – 20 16 : 3 भज 106 : 16

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

में एकत्र हुए। उन्होंने उनसे कहा, 'बहुत हो चुका! अब बस करो! समस्त मंडली, सब व्यक्ति पवित्र हैं। उनके मध्य प्रभु है। तब आप अपने को प्रभु की धर्मसभा से ऊपर क्यों समझते हैं?' [4]मूसा यह सुनकर अपने मुंह के बल गिर पड़े। [5]वह कोरह तथा उसके दल के लोगों से बोले, 'प्रात: काल प्रभु यह प्रकट कर देगा कि कौन व्यक्ति उसका है और कौन व्यक्ति पवित्र है। वह उसे अपने समीप बुला लेगा। जिस व्यक्ति को वह चुनेगा, उसे अपने पास आने देगा। [6]एक काम करो : कोरह तथा उसके दल के सब लोग धूपदान लें। [7]वे उनमें अग्नि रखें, और कल प्रभु के सम्मुख उनपर धूप डालें। जिस व्यक्ति को प्रभु चुनेगा, वही पवित्र माना जाएगा। ओ लेवी के वंशजो! बहुत हो चुका! अब बस करो!' [8]फिर मूसा ने कोरह से कहा, 'लेवी के वंशजो, मेरी बात सुनो। [9]क्या यह छोटी बात है कि इस्राएल के परमेश्वर ने इस्राएली मंडली से तुम्हें चुन कर अलग किया कि तुम उसके समीप आकर उसके निवास-स्थान में सेवा-कार्य करो, मंडली के सम्मुख खड़े होकर उसका उत्तरदायित्व संभालो? [10]क्या यह भी छोटी बात है कि उसने तुम्हें, और तुम्हारे साथ लेवी-वंशीय तुम्हारे सब भाइयों को अपने समीप आने दिया? और अब तुम पुरोहित-पद भी प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहे हो? [11]इसलिए, तुम और तुम्हारे दल के सब लोगों ने हारून के विरुद्ध नहीं, प्रभु के विरुद्ध विद्रोह किया है। हारून क्या है कि तुम उसके विरुद्ध बक-बक करते हो?'

12 मूसा ने एलीआब के पुत्र दातन और अबीराम को बुलाने के लिए किसी को उनके पास भेजा। पर उन्होंने कहा, 'हम नहीं आएंगे! [13]क्या यह छोटी बात है कि आप हमें दूध और शहद की नदियों के देश से इसलिए बाहर निकाल लाए कि हमें निर्जन प्रदेश में मार डालें! अब क्या आप शासक बनकर हम पर शासन भी करना चाहते हैं? [14]इसके अतिरिक्त आप हमें दूध और शहद की नदियों के देश में भी नहीं ले गए, और न हमें खेत और अंगूर-वाटिकाएँ प्रदान कीं कि हम उनपर अधिकार करें। अब क्या आप हम लोगों की आंखों में धूल झोंकना चाहते हैं? हम नहीं आएंगे!'

15 मूसा को बड़ा क्रोध आया। उन्होंने प्रभु से कहा, 'उनकी भेंटों की ओर ध्यान मत देना। मैंने घूस में उनसे एक गधा भी नहीं लिया और न उनमें से किसी का अनिष्ट ही किया।' [16]फिर मूसा ने कोरह से कहा, 'तुम, तुम्हारे दल के सब लोग और हारून कल प्रभु के सम्मुख उपस्थित हों। [17]तुम में से प्रत्येक व्यक्ति अपना धूपदान ले और उस पर धूप रखे। तत्पश्चात् सब व्यक्ति अपना-अपना धूपदान, अर्थात् दो सौ पचास धूपदान, प्रभु के सम्मुख प्रस्तुत करें। तुम भी और हारून भी अपना-अपना धूपदान प्रस्तुत करें।' [18]अत: हरएक व्यक्ति ने अपना धूपदान लिया। उन्होंने उनमें अग्नि रखी, और उन पर धूप डाली। तत्पश्चात् वे मूसा और हारून के साथ मिलन-शिविर के द्वार पर खड़े हो गए। [19]कोरह ने समस्त मंडली को मूसा तथा हारून के विरुद्ध मिलन-शिविर के द्वार पर एकत्र कर लिया। तब प्रभु का तेज समस्त मण्डली को दिखाई दिया।

20 प्रभु मूसा और हारून से बोला, [21]'तुम मंडली के इस जन-समुदाय के मध्य से अलग हो जाओ ताकि मैं इन्हें क्षण भर में भस्म कर दूं।' [22]किन्तु मूसा और हारून अपने मुंह के बल गिरकर प्रभु से कहने लगे, 'हे परमेश्वर, समस्त प्राणियों की आत्माओं के ईश्वर! एक मनुष्य के पाप करने पर क्या तू समस्त मंडली पर क्रोध करेगा?' [23]तब प्रभु मूसा से बोला, [24]'तू जन-समुदाय से बोल कि वे कोरह, दातन और अबीराम के निवास-स्थान के चारों ओर से हट जाएं।'

25 मूसा उठे। वह दातन और अबीराम के पास गए। उनके पीछे-पीछे इस्राएल के धर्मवृद्ध भी गए। [26]मूसा जन-समुदाय से बोले, 'तुम इन दुर्जनों के तम्बुओं के पास से दूर हो जाओ। इनकी किसी वस्तु का स्पर्श भी मत

---

16 : 5 2 तिम 2 : 19 ; लेव 10 : 3 **16 : 15** 1 शम 12 : 3 **16 : 22** उत 18 : 23; अय्य 12 : 10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

करो; अन्यथा इनके पाप के कारण तुम्हारा भी
सर्वनाश हो जाएगा।' 27अत: लोग कोरह, दातन
और अबीराम के निवास-स्थान के चारों ओर
से हट गए। दातन और अबीराम भी बाहर
निकल आए। वे अपनी पत्नी, पुत्रों तथा
शिशुओं के साथ तम्बुओं के द्वार पर खड़े हो
गए। 28मूसा ने कहा, 'प्रभु ने ही मुझे इन सब
कार्यों को करने के लिए भेजा है, और मैं अपनी
इच्छा से यह नहीं करता हूं। तुम यह बात इस
प्रकार जानोगे : 29यदि अन्य मनुष्यों की मृत्यु
के सदृश इन लोगों की स्वाभाविक मृत्यु होगी,
यदि अन्य मनुष्यों के दण्ड के सदृश इन्हें भी
दण्ड दिया जाएगा, तो समझना कि प्रभु ने मुझे
नहीं भेजा है। 30परन्तु यदि प्रभु कोई नई बात
उत्पन्न करे, यदि धरती अपना मुंह खोले और
इन लोगों को इनकी अपनी समस्त वस्तुओं के
साथ निगल जाए और ये जीवित ही अधोलोक
में उतर जाएँ, तो तुम जान लेना कि इन मनुष्यों
ने प्रभु का तिरस्कार किया है।'

31 जैसे ही मूसा ने ये बातें कहना समाप्त
किया, उन लोगों के नीचे की भूमि फट गई।
32धरती ने अपना मुंह खोला, और वह उन्हें,
उनके परिवार को, उन सब लोगों को, जो
कोरह के थे, और उनकी समस्त सम्पत्ति को,
निगल गई। 33वे अपनी समस्त वस्तुओं के
साथ जीवित ही अधोलोक में उतर गए! धरती
ने उनको ढक लिया! इस प्रकार वे धर्मसभा के
मध्य से नष्ट हो गए। 34जो इस्राएली लोग उनके
चारों ओर थे, वे उनकी चिल्लाहट सुनकर भाग
गये। वे कह रहे थे, 'ऐसा न हो कि धरती हमें
भी निगल जाए।' 35तब प्रभु के पास से अग्नि
निकली और उसने धूप चढ़ाने वाले दो सौ
पचास व्यक्तियों को भस्म कर दिया।

36* प्रभु मूसा से बोला, 37'पुरोहित हारून
के पुत्र एलआजर से कह कि वह ज्वाला में से
धूपदानों को निकाल ले और अग्नि को यहाँ-
वहाँ छितरा दे; 38क्योंकि ये धूपदान, इन पापियों
के धूपदान, उनके जीवन-विनाश से पवित्र हो
गए हैं। अत: वेदी के आवरण के लिए उनको
ठोंक-पीटकर उनके पत्तर बनाए जाएँ। उन
लोगों ने उनको मुझ-प्रभु के सम्मुख प्रस्तुत
किया था। इसलिए वे पवित्र हो गए। वे
इस्राएली समाज के लिए एक चिह्न होंगे।'
39तब पुरोहित एलआजर ने पीतल के उन
धूपदानों को निकाला, जिनको अग्नि में भस्म
होने वाले मनुष्यों ने तैयार किया था। वेदी के
आवरण के लिए उनको ठोंक-पीटकर पत्तर
बनाया गया 40ताकि वे इस्राएली समाज के
लिए स्मारक-चिह्न बनें, जिससे कोई अपुरोहित
व्यक्ति, जो हारून के वंश का नहीं है, धूप
चढ़ाने के अभिप्राय से प्रभु के सम्मुख नहीं
आए, और कोरह तथा उसके दल के सदृश नष्ट
न हो, जैसा प्रभु ने मूसा के द्वारा एलआजर से
कहा था।

41 दूसरे दिन समस्त इस्राएली मंडली मूसा
और हारून के विरुद्ध बक-बक करने लगी।
उन्होंने कहा, 'आपने प्रभु के लोगों को मार
डाला।' 42जब मंडली मूसा और हारून के
विरुद्ध इकट्ठी हो रही थी, तब दोनों ने मिलन-
शिविर की ओर मुख किया। उन्होंने देखा कि
मेघ ने उसको आच्छादित कर लिया है, और
प्रभु का तेज दिखाई दे रहा है। 43मूसा और हारून
मिलन-शिविर के सामने आए। 44तब प्रभु मूसा
से बोला, 45'मंडली के इस जन-समुदाय के
मध्य से अलग हो जाओ, ताकि मैं इन्हें क्षण भर
में भस्म कर दूं।' परन्तु मूसा और हारून मुंह
के बल गिर पड़े। 46मूसा ने हारून से कहा,
'तुम धूपदान लो, और वेदी की अग्नि उस पर
रखो, और तब धूप डालो। उसको लेकर तुरन्त
जन-समुदाय के पास जाओ, और उनके लिए
प्रायश्चित्त करो, क्योंकि प्रभु का क्रोध उसके
सम्मुख से चल पड़ा है। महामारी फैलने लगी
है।' 47मूसा के आदेश के अनुसार हारून ने
धूपदान लिया और वह दौड़कर धर्मसभा के
मध्य पहुँचा। लोगों में सचमुच महामारी आरंभ
हो चुकी थी। हारून ने धूप चढ़ाया और उनके

---

* इब्रानी में अध्याय 17 : 1

16 : 28 यो 5 : 37 **16 : 44-48** प्रज्ञा 18 : 20 - 25

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लिए प्रायश्चित्त किया। [48]वह मृत और जीवित
मनुष्यों के मध्य खड़ा हो गया। तब महामारी
रुक गई। [49]जो मनुष्य कोरह-काण्ड में मर
चुके थे, उनके अतिरिक्त इस महामारी में मरने
वालों की संख्या चौदह हजार सात सौ थी।
[50]जब महामारी रुक गई तब हारून मूसा के
पास मिलन-शिविर के द्वार पर लौट आया।

हारून की लाठी

17 *प्रभु मूसा से बोला, [2]'तू इस्राएली समाज
से बोल और उनके पूर्वजों के परिवार
के अनुसार बारह लाठियाँ ले, अर्थात् प्रत्येक
परिवार के अनुसार उस परिवार के मुखिया से
एक लाठी ले। तू प्रत्येक मुखिया का नाम
उसकी लाठी पर लिखना। [3]हारून का नाम
लेवी की लाठी पर लिखना। उनके पूर्वजों के
प्रत्येक परिवार के मुखिया के पास एक-एक
लाठी होगी। [4]तू उनको मिलन-शिविर में,
साक्षी की पट्टियों के सम्मुख, जहाँ मैं तुम लोगों
से भेंट करता हूं, जमा कर देना। [5]जिस व्यक्ति
को मैं चुनूंगा, उसकी लाठी में अंकुर निकल
आएंगे। इस प्रकार मैं इस्राएलियों की बक-
बक, जिसे वे तुम्हारे विरुद्ध करते हैं, अपने
ऊपर से दूर करूंगा।' [6]मूसा इस्राएली समाज
से ऐसा ही बोले। उनके मुखियों ने अपने-
अपने परिवार की लाठी मूसा को दे दी।
मुखियों ने अपने पूर्वजों के परिवार के अनुसार
एक-एक लाठी, अर्थात् कुल बारह लाठियाँ
दीं। उन लाठियों के मध्य हारून की लाठी भी
थी। [7]मूसा ने उस लाठियों को साक्षी के तम्बू
में प्रभु के सम्मुख जमा कर दिया।

8 दूसरे दिन मूसा साक्षी के तम्बू में आए।
उन्होंने देखा कि हारून की लाठी में जो लेवी-
परिवार के लिए थी, अंकुर निकल आए। उसमें
कलियाँ खिलीं, फूल फूले और पके बादाम भी
लग गए। [9]मूसा सब लाठियों को प्रभु के
सम्मुख से उठाकर इस्राएलियों के पास ले गए।
उन्होंने उन्हें देखा और अपनी-अपनी लाठी ले
ली। [10]प्रभु ने मूसा से कहा, 'तू हारून की लाठी
को साक्षी की पट्टियों के सम्मुख पुनः रख दे
ताकि वह विद्रोहियों के लिए चिह्न हेतु सुरक्षित
रहे, और तू मेरे विरुद्ध उनकी बक-बक को
समाप्त कर दे; ऐसा न हो कि वे मर जाएँ।'
[11]मूसा ने ऐसा ही किया। जो आज्ञा प्रभु ने उन्हें
दी थी, उसी के अनुसार उन्होंने किया।

12 इस्राएली लोगों ने मूसा से कहा,
'देखिए, हमारे प्राण निकल रहे हैं। हम मर रहे
हैं। हम-सब नष्ट हो रहे हैं। [13]प्रभु के निवास-
स्थान के निकट आने वाले प्रत्येक व्यक्ति की
मृत्यु हो जाती है। क्या हम सब के सब मर
जाएंगे?'

पुरोहितों एवं लेवियों का प्रबन्ध

18 तब प्रभु ने हारून से कहा, 'तू और तेरे
साथ तेरे पुत्र तथा तेरे पूर्वजों का परिवार
पवित्र-स्थान से सम्बन्धित अधर्म को स्वयं
वहन करेंगे। तू और तेरे साथ तेरे पुत्र अपने
पुरोहित-कर्म से सम्बन्धित अधर्म को स्वयं
वहन करेंगे। [2]तू अपने साथ अपने पैतृक लेवी-
कुल के भाइयों को भी लाना, कि वे तेरे साथ
रहें। जब तू और तेरे पुत्र साक्षी के तम्बू के
सम्मुख होंगे तब वे तेरी सहायता करेंगे। [3]वे तेरी
सहायता तथा तम्बू की देखभाल करेंगे। किन्तु
वे पवित्र-स्थान के पात्रों एवं वेदी के निकट
नहीं आएंगे; अन्यथा तुम और वे मर जाएंगे।
[4]वे मिलन-शिविर के समस्त सेवा-कार्य करने
के लिए तुम्हारे साथ रहेंगे और तम्बू की
देखभाल करेंगे। जो व्यक्ति लेवी-कुल का
नहीं है, वह तुम्हारे समीप नहीं आएगा। [5]किन्तु
तुम लोग पवित्र-स्थान तथा वेदी के समस्त
सेवा-कार्य का दायित्व संभालोगे जिससे
इस्राएली समाज पर मेरा क्रोध पुनः न भड़के।
[6]देखो, मैंने तुम्हारे भाई, लेवियों को इस्राएली
समाज के मध्य से लिया है। वे मुझ-प्रभु को
अर्पित किए गए हैं। मैंने उन्हें तुम्हें दिया है कि
वे मिलन-शिविर के सेवा-कार्यों को करें।

---

* इब्रानी में अध्याय 17 : 16

16 : 44-48 प्रज्ञा 18 : 20-25 **17 : 4** नि 25 : 22 **17 : 10** इब्र 9 : 4 **18 : 1** इब्र 7 : 25-28 **18 : 3** गण 3 : 25; 4 : 15

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

[7]किन्तु तू और तेरे साथ तेरे पुत्र वेदी से सम्बन्धित तथा अन्त:-पट के पीछे पुरोहितीय कार्यों का दायित्व सम्भालेंगे। तुम सेवा-कार्य करोगे। मैं तुम्हें पुरोहितीय कार्य दान-स्वरूप प्रदान करता हूं। समीप आने वाले अपुरोहित व्यक्ति को मृत्यु-दण्ड दिया जाएगा।'

8 प्रभु हारून से फिर बोला, 'मुझे चढ़ाई गई भेंटों का शेष भाग, इस्राएली समाज की समस्त पवित्र की हुई वस्तुएँ, मैंने तुझे प्रदान की हैं। मैंने उनको तेरा भाग और तेरे पुत्रों का स्थायी देय-भाग निर्धारित करके प्रदान किया है। [9]यह परम पवित्र वस्तुओं में से बची, अग्नि में नहीं जलाई गई वस्तु, तेरी होगी : उनके समस्त चढ़ावे, उनकी सब अन्न-बलि, समस्त पाप-बलि और सब दोष-बलि, जो वे मुझे देते हैं, तेरे और तेरे पुत्रों के लिए परम पवित्र होगी। [10]तुम उसको परम पवित्र स्थान में खाना, उसको केवल पुरुष खा सकते हैं। वह तेरे लिए पवित्र हैं। [11]यह भी तेरा है: इस्राएली समाज की समस्त लहर-बलि में अर्पित की गई भेंटों के शेष भाग। मैंने उनको तुझे और तेरे साथ तेरे पुत्रों और पुत्रियों को स्थायी देय-भाग के रूप में प्रदान किया है। तेरे घर का प्रत्येक शुद्ध व्यक्ति उनको खा सकता है। [12]ताजा सर्वोत्तम तेल, ताजा सर्वोत्तम अंगूर का रस और अन्न, उनकी पहली उपज, जो वे मुझ-प्रभु को चढ़ाते हैं, वह मैं तुझे प्रदान करता हूं। [13]उनके देश के सब प्रथम फल, जो वे मुझ-प्रभु के पास लाते हैं, तेरे ही होंगे। तेरे घर के सब शुद्ध व्यक्ति ही उनको खा सकते हैं। [14]इस्राएल में पूर्ण-समर्पित सब वस्तुएँ तेरी ही होंगी। [15]मनुष्य अथवा पशु की प्रत्येक पहिलौठी सन्तान, जिसे वे मुझ-प्रभु को चढ़ाते हैं, तेरी ही होगी। तू मनुष्य की पहिलौठी सन्तान को मूल्य लेकर मुक्त कर देना। इसी प्रकार अशुद्ध पशुओं के पहिलौठे बच्चों को भी मूल्य लेकर छोड़ देना। [16]मनुष्य की छुड़ायी जाने वाली संतान को तू एक माह की आयु में निर्धारित मूल्य पर छोड़ना। तू उसका विमोचन-मूल्य* पवित्र स्थान की तौल के अनुसार पांच चांदी के सिक्के निश्चित करना। (एक सिक्के में प्राय: बारह ग्राम चांदी होती है।) [17]किन्तु तू गाय, भेड़ अथवा बकरी के पहिलौठे बच्चों को मत छोड़ना। वे पवित्र हैं। तू उनका रक्त वेदी पर छिड़कना और उनकी चर्बी मुझ-प्रभु को अग्नि में अर्पित सुखद सुगन्ध के रूप में जलाना। [18]परन्तु उनका मांस तेरा भाग होगा, जैसे लहराए हुए वक्ष और दाहिनी जांघ का मांस तेरे लिए होता है। [19]जो पवित्र भेंट इस्राएली लोग मुझ-प्रभु को अर्पित करेंगे, वह मैं तुझे और तेरे साथ तेरे पुत्र-पुत्रियों को स्थायी देय-भाग के रूप में प्रदान करता हूं। यह तेरे और तेरे साथ तेरे वंशजों के लिए मुझ-प्रभु के सम्मुख अलंघनीय** स्थायी विधान है।' [20]प्रभु ने हारून से आगे कहा, 'इस्राएलियों के देश में तेरी पैतृक-सम्पत्ति नहीं होगी, और न उनके साथ तुझे कोई भाग मिलेगा। इस्राएली समाज में मैं ही तेरा भाग और पैतृक-सम्पत्ति हूं।

21 'देखो, जो सेवा-कार्य लेवी के वंशज मिलन-शिविर में करते हैं, उनकी सेवा के बदले में मैंने उन्हें इस्राएल में समस्त भेंटों का दशमांश पैतृक-सम्पत्ति के लिए प्रदान किया है। [22]अब से इस्राएली लोग मिलन-शिविर के समीप नहीं आएंगे। ऐसा न हो कि वे पाप वहन करें और मर जाएँ। [23]किन्तु लेवीय लोग मिलन-शिविर के सेवा-कार्यों को करेंगे, और अपने अधर्म को भी स्वयं वहन करेंगे। यह तुम्हारी पीढ़ी से पीढ़ी तक स्थायी संविधि है। इस्राएली समाज में उनकी पैतृक सम्पत्ति नहीं होगी। [24]जो वस्तु दशमांश के रूप में इस्राएली समाज मुझ-प्रभु को अर्पित करता है, उसे मैंने लेवियों को प्रदान किया है कि वह उनकी पैतृक सम्पत्ति हो। इसलिए मैंने उनसे कहा है कि इस्राएली समाज के मध्य उनकी पैतृक सम्पत्ति नहीं होगी।'

25 प्रभु मूसा से बोला, [26]' इसके अतिरिक्त

---

* अथवा, 'छुटकारा-मूल्य' ** शब्दश: ''नमक का''

18 : 14 लेव 27 : 28 **18 : 19** 2 इति 13 : 5 **18 : 21** लेव 27 : 30; व्य 14 : 22-29

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तू लेवियों से यह कहना : "जो दशमांश मैंने इस्राएली समाज में तुम्हारी पैतृक सम्पत्ति के लिए प्रदान किया है, जब तुम उसको इस्राएली लोगों से लोगे तब उसका कुछ अंश, अर्थात् दशमांश का दशमांश, मुझ-प्रभु को अर्पित करना। 27तुम्हारी यह भेंट खलियान के अन्न अथवा अंगूर के रस-कुण्ड के नए रस के सदृश मानी जाएगी। 28अत: तुम भी अपने समस्त दशमांश में से, जो तुम इस्राएली समाज से लोगे, मुझ-प्रभु को भेंट में अर्पित करना, और मेरी यह भेंट पुरोहित हारून को दे देना। 29तुम्हें प्राप्त समस्त भेंटों में से तुम मुझ-प्रभु को निर्धारित भेंट अर्पित करना, उनका सर्वोत्तम भाग, पवित्र अंश अर्पित करना।" 30इसलिए तुम लेवियों से कहना, "जब तुम उसका सर्वोत्तम भाग अर्पित कर दोगे तब उसका शेष भाग तुम्हारे लिए खलियान के अन्न, अथवा अंगूर के रस-कुण्ड के रस के सदृश माना जाएगा। 31तुम और तुम्हारा परिवार उसको सब स्थानों में खा सकते हैं; क्योंकि यह मिलन-शिविर में किए गए तुम्हारे सेवा-कार्यों का पुरस्कार है। 32जब तुम उसका सर्वोत्तम भाग भेंट में अर्पित करोगे तब उसके कारण तुम्हें पाप वहन नहीं करना पड़ेगा। तुम इस्राएली समाज की पवित्र की हुई वस्तुओं को अपवित्र मत करना; अन्यथा तुम मर जाओगे।" '

विशुद्धीकरण

19 प्रभु मूसा और हारून से बोला, 2'यह व्यवस्था की संविधि है, जिसके पालन की आज्ञा मैं-प्रभु ने दी है: तू इस्राएली समाज से बोल कि वे तेरे पास एक निष्कलंक लाल कलोर लाएँ, जिस में कोई दोष न हो, और जो जुए में कभी जोती न गई हो। 3तू उसे पुरोहित एलआजर को दे देना। तत्पश्चात् वह पड़ाव के बाहर लाई जाएगी, और पुरोहित के सम्मुख उसका वध किया जाएगा। 4एलआजर अपनी उंगलियों में उसका कुछ रक्त लेगा, और उसको मिलन-शिविर के सामने की ओर सात बार छिड़क देगा। 5तब एलआजर की उपस्थिति में कलोर को जलाया जाएगा। उसका चमड़ा, मांस, रक्त और गोबर जलाये जाएंगे। 6पुरोहित देवदार की लकड़ी, जूफा और लोहित रंग का वस्त्र लेगा, और कलोर को जलाने वाली अग्नि में उनको डाल देगा। 7उसके बाद पुरोहित अपने वस्त्र धोएगा और जल में स्नान करेगा। तब वह पड़ाव में आएगा, किन्तु वह सन्ध्या समय तक अशुद्ध रहेगा। 8कलोर को जलाने वाला व्यक्ति भी जल में अपने वस्त्र धोएगा और स्नान करेगा। वह भी सन्ध्या समय तक अशुद्ध रहेगा। 9एक शुद्ध व्यक्ति कलोर की राख को एकत्र करेगा, और उसको पड़ाव के बाहर शुद्ध स्थान में जमा कर देगा। वह इस्राएली मंडली के विशुद्धीकरण जल के लिए पाप-निवारण के हेतु रखी जाएगी। 10कलोर की राख एकत्र करनेवाला व्यक्ति भी अपने वस्त्र धोएगा। वह भी सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। यह इस्राएली समाज तथा उनके मध्य रहनेवाले प्रवासी के लिए स्थायी संविधि होगी।

11 'किसी भी मनुष्य के शव का स्पर्श करनेवाला व्यक्ति सात दिन तक अशुद्ध रहेगा। 12वह तीसरे दिन और सातवें दिन विशुद्धीकरण जल से स्वयं को शुद्ध करेगा। इस प्रकार वह शुद्ध होगा। किन्तु यदि वह तीसरे दिन और सातवें दिन स्वयं को शुद्ध नहीं करेगा तो वह शुद्ध नहीं होगा। 13मृत व्यक्ति को, किसी भी मनुष्य के शव को स्पर्श करनेवाला व्यक्ति जो स्वयं को शुद्ध नहीं करता, प्रभु के निवास-स्थान को अपवित्र करता है। ऐसा व्यक्ति इस्राएली समाज में से नष्ट किया जाएगा। उस पर विशुद्धीकरण का जल नहीं छिड़का गया था, इसलिए वह अशुद्ध है, उसकी अशुद्धता अब तक उसमें है।

14 'जब किसी मनुष्य की मृत्यु तम्बू में होती हो, तब उसकी यह व्यवस्था है : उस तम्बू में प्रवेश करने वाला प्रत्येक व्यक्ति अथवा वे सब व्यक्ति जो तम्बू के भीतर हैं, सात दिन तक अशुद्ध रहेंगे। 15हरएक खुला पात्र, जिस पर ढक्कन नहीं लगा होगा, अशुद्ध हो जाएगा।

19 : 3 इब्र 13 : 11 19 : 9 इब्र 9 : 13; गण 31 : 23 19 : 11 लेव 21 : 1

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

16जो मैदान में तलवार से मारे गए अथवा
स्वाभाविक मृत्यु से मरे हुए व्यक्ति को या
किसी मनुष्य की अस्थि को, अथवा कबर को
स्पर्श करेगा, वह सात दिन अशुद्ध रहेगा।
17ऐसे अशुद्ध व्यक्ति के लिए अग्नि-पाप-
बलि की राख लेना और पात्र में झरने का जल
डालकर उसको मिला देना। 18तब कोई शुद्ध
व्यक्ति जूफा लेगा और उसको जल में डुबाकर
तम्बू पर, उसकी सब वस्तुओं पर और उन
मनुष्य पर जो वहाँ थे, जल छिड़क देगा। वह
उस मनुष्य पर भी जल छिड़क देगा, जिसने
मृतक की अस्थि को, तलवार से मारे गए या
स्वाभाविक मृत्यु से मरे हुए व्यक्ति को अथवा
कबर को स्पर्श किया है। 19वह शुद्ध व्यक्ति
तीसरे दिन और सातवें दिन अशुद्ध मनुष्य पर
जल छिड़केगा। इस प्रकार वह उन्हें सातवें दिन
शुद्ध करेगा। वे अपने वस्त्र धोएंगे और जल से
स्नान करेंगे। तब वे सन्ध्या तक शुद्ध हो जाएंगे।
20 'किन्तु जो व्यक्ति अशुद्ध है, यदि वह
स्वयं को शुद्ध नहीं करेगा तो ऐसा व्यक्ति
धर्मसभा के मध्य से नष्ट किया जाएगा, क्योंकि
उसने प्रभु के पवित्र-स्थान को अपवित्र किया
है। उस पर विशुद्धीकरण का जल नहीं छिड़का
गया. इसलिए वह अशुद्ध है। 21यह उनके लिए
स्थायी संविधि होगी। जो व्यक्ति विशुद्धीकरण
का जल छिड़कता है, वह अपने वस्त्र धोएगा।
विशुद्धीकरण-जल को स्पर्श करनेवाला व्यक्ति
सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। 22जिस-जिस वस्तु
को वह अशुद्ध व्यक्ति स्पर्श करेगा, वह भी
अशुद्ध हो जाएगी। जो प्राणी उस वस्तु को स्पर्श
करेगा, वह भी सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा।'

चट्टान से पानी का फूटना

20 पहले महीने में इस्राएली समाज, समस्त
इस्राएली मंडली, सीन के निर्जन प्रदेश
में पहुँची। वे लोग कादेश मरूद्यान में ठहर गए।
वहाँ मिर्याम की मृत्यु हो गई; और उसे वहीं
गाड़ा गया।
2वहाँ इस्राएली मंडली के लिए जल
उपलब्ध नहीं था। अत: वे मूसा और हारून के
विरुद्ध इकट्ठे हो गए। 3वे मूसा से विवाद करने
लगे। उन्होंने कहा, 'भला होता कि हम उस
समय मर गए होते जब प्रभु के सम्मुख हमारे
भाई-बहिनों के प्राण निकले थे। 4आप क्यों
प्रभु के धर्मसमुदाय को इस निर्जन प्रदेश में ले
आए? क्या इसलिए कि हम और हमारे पशु
यहाँ मर जाएँ? 5आपने क्यों हमें मिस्र देश से
बाहर निकाला? क्या इस बुरे स्थान में लाने के
लिए? यह स्थान अन्न, अंजीर, अंगूर और
अनार का स्थान नहीं है। यहाँ पीने के लिए पानी
भी उपलब्ध नहीं है।' 6अत: मूसा और हारून
धर्मसभा के सम्मुख से निकलकर मिलन-
शिविर के द्वार पर आए। वे अपने मुंह के बल
गिरे। तब उन्हें प्रभु की महिमा* दिखाई दी।
7प्रभु मूसा से बोला, 8'लाठी ले! तू अपने साथ
अपने भाई हारून तथा इस्राएली मंडली को
एकत्र कर, और उनकी आंखों के सामने चट्टान
को आदेश दे कि वह अपना जल प्रदान करे।
इस प्रकार तू उनके लिए चट्टान से जल बाहर
निकालेगा, और मंडली के जनसमुदाय तथा
उनके पशुओं को पानी पिलाएगा।' 9मूसा ने
प्रभु के सम्मुख से लाठी उठा ली, जैसी आज्ञा
प्रभु ने उनको दी थी।
10 मूसा और हारून ने चट्टान के सामने
धर्मसभा को एकत्र किया, और मूसा ने कहा,
'अरे विद्रोहियो, मेरी बात सुनो! क्या हम इस
चट्टान से तुम्हारे लिए पानी बाहर निकालें?'
11मूसा ने अपना हाथ ऊपर उठाया और अपनी
लाठी से दो बार चट्टान पर प्रहार किया। तब
अपार जल बाहर फूट कर निकल पड़ा!
इस्राएली जनसमुदाय और उनके पशुओं ने
पानी पिया। 12परन्तु प्रभु ने मूसा और हारून से
कहा, 'तुम दोनों ने मुझ पर विश्वास नहीं
किया! मुझे इस्राएली समाज की दृष्टि में पवित्र
सिद्ध नहीं किया, इसलिए तुम इस धर्मसभा को

---

* अथवा, 'तेज'

20 : 1-13 नि 17 : 1-7; व्य 8 :15 **20 : 8** नह 9 : 15; भज 78 : 15-16; 105 : 41; यश 43 : 20 **20 : 11** व्य 8 : 15; यो 7 : 38; 19 : 34; 1 कुर 10 : 4; प्रज्ञा 11 : 4 **20 : 12** गण 27 : 14 व्य 3 : 26, भज 106 : 32-23

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उस देश में नहीं ले जा सकोगे जिसे मैंने उन्हें प्रदान किया है।' 13यह मरीबा का जल-स्रोत है, जहाँ इस्राएली समाज ने प्रभु से विवाद किया था, और प्रभु ने उनके मध्य अपने को पवित्र सिद्ध किया था।

एदोम के राजा का अनुमति न देना

14 मूसा ने कादेश मरूद्यान से एदोम देश के राजा के पास दूत भेजे और कहा, 'आपके भाई-बन्धु इस्राएली यों कहते हैं : आप उन सब कष्टों को जानते ही हैं, जो हमने झेले हैं। 15हमारे पूर्वज मिस्र देश गए, और हमने उस देश में दीर्घकाल तक निवास किया। परन्तु मिस्र देश के निवासियों ने हमारे पूर्वजों तथा हमारे साथ बुरा व्यवहार किया। 16तब हमने प्रभु की दुहाई दी, और उसने हमारी पुकार सुनी। उसने एक दूत भेजा और हमें मिस्र देश से बाहर निकाल लाया। अब देखिए, हम कादेश नगर में हैं, जो आपके राज्य-क्षेत्र के सीमान्त पर है। 17अत: कृपया हमें अपने देश में से होकर जाने दीजिए। हम आपके खेतों अथवा अंगूर के उद्यानों से होकर नहीं जाएंगे, और न आपके कुओं का पानी ही पीएंगे। हम केवल राजमार्ग पर जाएंगे। जब तक हम आपके राज्य-क्षेत्र को पार नहीं कर लेंगे, तब तक न दाहिने हाथ की ओर मुड़ेंगे और न बाएं हाथ की ओर।' 18किन्तु एदोमियों ने उनसे कहा, 'तुम हमारे देश से होकर मत जाना। ऐसा न हो कि हम तुम्हारे विरुद्ध तलवार लेकर बाहर निकलें।' 19इस्राएली समाज ने उनसे कहा, 'हम राजमार्ग पर से ही जाएंगे। यदि हम और हमारे पशु आपका पानी पीएंगे, तो हम उसका मूल्य चुका देंगे। हम कोई बड़ी बात नहीं मांग रहे हैं। हमें केवल पैदल ही निकल जाने दीजिए।' 20एदोमियों ने कहा, 'तुम यहाँ से होकर नहीं जा सकते।' एदोमी अनेक पुरुषों को लेकर शक्तिशाली सेना के साथ उनके विरुद्ध निकल आए। 21इस प्रकार एदोमियों ने इस्राएलियों को अपने राज्य-क्षेत्र से होकर जाने की अनुमति नहीं दी। अत: इस्राएली उनकी ओर से मुड़ कर दूसरे मार्ग से चले गए।

पुरोहित हारून की मृत्यु

22 इस्राएलियों ने कादेश मरूद्यान से प्रस्थान किया। समस्त इस्राएली मंडली होर पर्वत के निकट आई। 23प्रभु ने एदोम देश की सीमा पर होर पर्वत पर मूसा और हारून से कहा, 24'हारून अपने मृत पूर्वजों में जाकर मिल जाएगा। वह उस देश में प्रवेश नहीं करेगा, जिसे मैंने इस्राएली समाज को प्रदान किया है, क्योंकि तुम लोगों ने मरीबा के जल-स्रोत पर मेरे आदेश के प्रति विद्रोह किया था। 25तू हारून और उसके पुत्र एलआजर को लेकर होर पर्वत पर चढ़। 26वहाँ हारून की पोशाक उतारना, और उसे उसके पुत्र एलआजर को पहना देना। हारून अपने मृत पूर्वजों में जाकर मिल जाएगा, वहाँ उसकी मृत्यु हो जाएगी।' 27प्रभु की आज्ञा के अनुसार मूसा ने ऐसा ही किया। वे मण्डली के देखते-देखते होर पर्वत पर चढ़ गए। 28मूसा ने हारून की पोशाक उतार ली और उसके पुत्र एलआजर को पहना दी। तब वहीं पहाड़ के शिखर पर हारून की मृत्यु हो गई। मूसा और एलेआजर पहाड़ से नीचे उतर आए। 29जब मंडली ने देखा कि हारून का देहान्त हो गया तब समस्त इस्राएली परिवार ने उसके लिए तीस दिन तक शोक मनाया।

कनानियों का आक्रमण

21 जब अराद के कनानी राजा ने, जो नेगेब में रहता था, सुना कि इस्राएली अतारीम के मार्ग से आ रहे हैं, तब उसने इस्राएलियों के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया और उनमें से कुछ व्यक्तियों को बन्दी बना लिया। 2इस्राएलियों ने प्रभु से यह मन्नत मानी और कहा, 'यदि तू इन लोगों को हमारे हाथ में दे देगा, तो हम इनके नगरों को पूर्णत: ध्वस्त+ कर देंगे।' 3प्रभु ने इस्राएलियों की वाणी सुनी। उसने कनानियों

+ शब्दश:, 'बलि के रूप में पूर्णत: अर्पित'।

20 : 13 भज 95 : 8 **20 : 14** शास 11 : 17 **20 : 28** नि 29 : 29; गण 33 : 38; व्य 10 : 6 **21 : 1** गण 33 : 40; शास 1 : 16

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

को उनके हाथ में सौंप दिया। अतः इस्राएलियों
ने उनको एवं उनके नगरों को पूर्णतः ध्वस्त कर
दिया। इस कारण उस स्थान का नाम 'होर्मा*'
पड़ा।

आग्नेय सर्प

4 उन्होंने होर पर्वत से प्रस्थान किया। वे
एदोम देश के किनारे-किनारे जाने के लिए
अकाबा की खाड़ी के मार्ग पर चल पड़े। मार्ग
में चलते-चलते लोग अधीर हो गए। 5वे
परमेश्वर और मूसा के विरुद्ध बोलने लगे,
'आप हमें मिस्र देश से निकालकर इस निर्जन-
प्रदेश में क्यों लाए? क्या हमें मारने के लिए?
यहाँ न रोटी है और न पानी। हम इस रोटी से,
जिससे तृप्ति नहीं होती, ऊब गए हैं।' 6तब प्रभु
ने लोगों के मध्य आग्नेय सर्प भेजे जिन्होंने
उनको डस लिया। अतः अनेक इस्राएली मर
गए। 7लोग मूसा के पास आए। उन्होंने कहा,
'हमने प्रभु के और आपके विरुद्ध बोलकर पाप
किया है। प्रभु से प्रार्थना कीजिए कि वह हमारे
मध्य से सर्पों को दूर करे।' मूसा ने लोगों के
लिए प्रभु से प्रार्थना की। 8प्रभु ने मूसा से कहा,
'एक आग्नेय सर्प बना और उसको एक खम्भे
पर लटका। जब सर्प से डसा हुआ व्यक्ति
उसको देखेगा, तब वह बच जाएगा।' 9अतः
मूसा ने पीतल का एक सर्प बनाया और उसको
एक खम्भे पर लटका दिया। यदि आग्नेय सर्प
किसी मनुष्य को काटता था तो वह पीतल के
सर्प को देखता और बच जाता था।

मोआब देश के किनारे-किनारे जाना

10 इस्राएलियों ने प्रस्थान किया। उन्होंने
ओबोत में पड़ाव डाला। 11तब ओबोत से प्रस्थान
कर मोआब के सम्मुख, पूर्व की ओर निर्जन
प्रदेश के इय्ये-अबारीम में पड़ाव डाला।
12उन्होंने वहाँ से प्रस्थान किया, और जेरेद की
घाटी में पड़ाव डाला। 13उन्होंने वहाँ से प्रस्थान
किया, और अर्नोन नदी के उस पार पड़ाव
डाला। अर्नोन नदी उस निर्जन प्रदेश में है,
जिसका फैलाव एमोरी देश की सीमा से
आरम्भ होता है। अर्नोन नदी मोआब और
एमोरी राज्यों के मध्य, मोआब की सीमा है।
14इसलिए 'प्रभु के युद्ध' नामक पुस्तक में यह
कहा गया है:

''सूफा क्षेत्र में वाहेब नगर,
तथा अर्नोन नदी की घाटियाँ,
15और घाटियों की वह ढाल
जो आर नगर की ओर फैली है,
जो मोआब की सीमा पर झुकी है।''

16 वहाँ से वे बेअर तक गए। यह एक कुआं
है, जिसके विषय में प्रभु ने मूसा से कहा था,
'लोगों को एकत्र कर! मैं उन्हें पानी दूंगा।'
17तब इस्राएलियों ने यह गीत गाया :

'ओ कुएं, फूट पड़!
लोगो! उस कुएं का गीत गाओ,
18जिसको अधिकारियों ने खोदा था,
जिसको लोगों के नेताओं ने अपने-अपने
राजदण्ड से,
अपनी-अपनी सोंटी से खोदा था।'

तत्पश्चात् वे निर्जन प्रदेश से मत्तानाह गए,
19मत्तानाह से नहलीएल, और नहलीएल से
बामोत। 20वे बामोत से उस घाटी की ओर गए,
जो मोआब के क्षेत्र में है, और जो पिस्गा के
उस शिखर की ओर है जो मरुस्थल की ओर
झुका है।**

राजा सीहोन को पराजित करना

21 इस्राएलियों ने एमोरी राजा सीहोन के
पास दूत भेजे और कहा, 22'हमें अपने देश से
होकर जाने दीजिए। हम आपके खेतों और
अंगूर उद्यानों की ओर नहीं देखेंगे। आपके
कुओं का पानी भी नहीं पीएंगे। जब तक हम
आपकी सीमा से पार नहीं हो जाएंगे, तब तक
हम राजमार्ग पर चलते जाएंगे।' 23किन्तु सीहोन
ने इस्राएलियों को अपनी सीमा से होकर जाने
की अनुमति नहीं दी, वरन् उसने अपनी प्रजा
के लोगों को एकत्र किया, और इस्राएलियों का

---

* अर्थात् ''ध्वन्स,'' विनाश।'' ** मूल में अस्पष्ट

21 : 4 व्य 2 :1 **21 : 6** व्य 8 : 15; 1 कुर 10 : 9 **21 : 9** 2 रा 18 : 4; यो 3 : 14-15; 19 : 37 प्रज्ञा 16 : 5
21 : 16 यो 4 : 10 **21 : 21** व्य 2 : 26; शास 11 : 19

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सामना करने के लिए निर्जन प्रदेश में गया। वह
याहस में आया और उसने इस्राएलियों से युद्ध
किया। 24इस्राएलियों ने तलवार की नोक से
उसे बेध दिया और उसके देश पर, अर्नोन नदी
से यब्बोक नदी तक, अम्मोनियों की सीमा तक,
अधिकार कर लिया। अम्मोनियों की राज्य-
सीमा यजेर थी।* 25इस्राएलियों ने इन सब
नगरों पर अधिकार कर लिया। वे एमोरियों के
सब नगरों में, हेश्बोन और उसके गांवों में,
बस गए। 26हेश्बोन एमोरियों के राजा सीहोन
का नगर था। यह वही सीहोन था, जिसने
मोआब के प्रथम +राजा से युद्ध कर उसके हाथ
से उसका सारा देश, अर्नोन नदी तक, छीन
लिया था। 27इसलिए गाथा गानेवाले कहते
हैं :

'हेश्बोन में आओ!
राजा सीहोन का नगर बसे,
वह स्थापित किया जाए!
28क्योंकि हेश्बोन से आग निकली,
राजा सीहोन के नगर से ज्वाला निकली!
उसने मोआब के आर नगर को भस्म कर
दिया,
अर्नोन के पहाड़ी शिखर के पूजागृहों को
निगल लिया।
29ओ मोआब, धिक्कार है तुझे!
ओ कमोश देवता के लोगो, तुम मर-मिटे!
उसने अपने पुत्रों को फरारी,
और पुत्रियों को एमोरी राजा सीहोन की
बन्दिनी बना दिया।
30हेश्बोन ने उनके बच्चों को दीबोन तक,
उनकी स्त्रियों को नोपह तक,
उनके पुरुषों को मैद्बा तक मार डाला।++

31 इस प्रकार इस्राएली एमोरियो के देश में
बस गए। 32मूसा ने यजेर का भेद लेने के लिए
दूत भेजे। इस्राएलियों ने उनके गांवों पर
अधिकार कर लिया, और जो एमोरी वहाँ रहते
थे, उन्हें निकाल दिया।

बाशान के राजा ओग को पराजित करना

33 तत्पश्चात् वे आगे बढ़े और बाशान के
मार्ग की ओर गए। बाशान का राजा ओग
उनका सामना करने को निकला। वह एद्रेई में
उनसे युद्ध करने के लिए आया। 34प्रभु ने मूसा
से कहा, 'उससे मत डर! मैंने उसको, उसकी
सब प्रजा को तथा उसके देश को तेरे हाथ में
सौंप दिया है। जैसा तूने एमोरियों के राजा
सीहोन के साथ, जो हेश्बोन में रहता था, किया
था, वैसे ही उसके साथ करना।' 35अत:
इस्राएलियों ने उसका, उसके पुत्रों तथा उसके
लोगों का इस प्रकार वध किया कि उसका एक
भी व्यक्ति जीवित नहीं बचा। उन्होंने उसके
देश पर अधिकार कर लिया।

बिल्आम को राजा बालाक का सन्देश

22 इस्राएलियों ने प्रस्थान किया, और
मोआब के मैदानों में यर्दन नदी के उस
पार, यरीहो नगर के सम्मुख पड़ाव डाला। 2जो
कुछ इस्राएलियों ने एमोरियों से किया था,
उसको सिप्पोर के पुत्र बालाक ने देखा।
3मोआब देश में इन लोगों के कारण बहुत
आतंक छा गया; क्योंकि इस्राएली संख्या में
बहुत थे। मोआब देश के निवासी इस्राएलियों
से डर गए। 4उन्होंने मिद्यान के धर्मवृद्धों से
कहा, 'अब यह दल हमारे आस-पास के सब
लोगों को ऐसे खा जाएगा जैसे बैल मैदान की
घास खा जाता है!' उस समय सिप्पोर का पुत्र
बालाक मोआब का राजा था। 5उसने बओर के
पुत्र बिल्आम को बुलाने के लिए उसके पास
पतोर नगर को दूत भेजे, जो फरात नदी के
निकट, अमाव देश में है। उसने कहा, 'देखो,
ये लोग मिस्र देश से आए हैं। इन्होंने धरती की
सतह को ढक लिया है, और अब ये मेरे देश
के सम्मुख ही बस गए हैं। 6अब कृपाकर, तुम
आओ और मेरे हेतु इन लोगों को श्राप दो;
क्योंकि ये मुझसे अधिक शक्तिशाली हैं। तब
कदाचित् मैं इन्हें पराजित कर सकूंगा, और

* इब्रानी में केवल "अज" (सुदृढ़) + अथवा, "पुराने या भूतकालीन" ++ मूल में अस्पष्ट,
21 : 24 भज 135 : 10; 136 : 19 **21 : 28** यिर 48 : 45-46 **21 : 34** व्य 3 : 2; भज 136 : 20 **22 : 1** गण
33 : 48 **22 : 5** मी 6 : 5; 2 पत 2 : 15-16 यहू 11, प्रक 2 : 14 **22 : 6** व्य 23 : 4, यहो 24:9; नह 13 : 2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अपने देश से बाहर निकाल सकूंगा। यह मैं
जानता हूं, जिस व्यक्ति को तुम आशिष देते हो,
वह आशिष से परिपूर्ण हो जाता है, और
जिस व्यक्ति को श्राप देते हो, वह श्रापित होता
है।'
7 मोआब के धर्मवृद्ध तथा मिद्यान के
धर्मवृद्ध बिल्आम को देने के लिए भविष्यवाणी
का उपहार लेकर चले गए। वे बिल्आम के पास
आए, और उसे राजा बालाक का सन्देश दिया।
8उसने उनसे कहा, 'यहाँ आज रात ठहरो।
जैसा प्रभु मुझसे बोलेगा वैसा मैं तुम्हें उत्तर
दूंगा।' अतः मोआब के अधिकारी बिल्आम के
पास ठहर गए। 9परमेश्वर बिल्आम के पास
आया। उसने पूछा, 'तेरे साथ ये मनुष्य कौन
हैं?' 10बिल्आम ने परमेश्वर से कहा, 'मोआब
के राजा, सिप्पोर के पुत्र बालाक ने मेरे पास यह
सन्देश भेजा है : 11देखो, ये लोग मिस्र देश से
आए हैं। इन्होंने धरती की सतह को ढक लिया
है। अब कृपाकर आओ; और मेरे हेतु इन लोगों
को श्राप दो; तब कदाचित् मैं इनसे युद्ध कर
सकूंगा, और इन्हें अपने देश से बाहर निकाल
सकूंगा।' 12परमेश्वर ने बिल्आम से कहा, 'तू
बालाक के लोगों के साथ नहीं जाएगा, और
उन लोगों को श्राप नहीं देगा; क्योंकि वे मेरी
आशिष पाए हुए लोग हैं।' 13बिल्आम सबेरे
उठा। उसने बालाक के अधिकारियों से कहा,
'तुम अपने देश लौट जाओ, क्योंकि प्रभु ने मुझे
तुम्हारे साथ जाने की अनुमति नहीं दी।'
14मोआब के अधिकारी उठकर चले गए। वे
बालाक के पास आए। उन्होंने कहा, 'बिल्आम
ने हमारे साथ आना अस्वीकार कर दिया।'
15 बालाक ने पुनः अधिकारियों को भेजा,
जो पहले अधिकारियों से अधिक प्रतिष्ठित
और संख्या में अधिक थे। 16वे बिल्आम के
पास आए। उन्होंने उससे कहा, 'सिप्पोर के पुत्र
राजा बालाक यों कहते हैं : कृपया मेरे पास
आना अस्वीकार मत करो। 17मैं तुम्हारा
अत्यधिक सम्मान करूंगा। जो कुछ तुम मुझसे
कहोगे, मैं वही करूंगा। कृपाकर आओ और
मेरे हेतु इन लोगों को श्राप दो।' 18 बिल्आम
ने बालाक के सेवकों से कहा, 'चाहे बालाक
सोना-चांदी से भरा अपना घर मुझे प्रदान करे,
तो भी मैं अपने प्रभु परमेश्वर की आज्ञा का
उल्लंघन नहीं कर सकता। उससे अधिक
अथवा कम नहीं कर सकता हूं। 19परन्तु कृपया
आप आज की रात भी ठहरिए जिससे मैं जान
सकूं कि प्रभु मुझसे और क्या कहेगा।'
20परमेश्वर बिल्आम के पास रात में आया।
उसने उससे कहा, 'यदि ये मनुष्य तुझे बुलाने
के लिए आए हैं तो उठ, और उनके साथ
जा। किन्तु जो बात मैं तुझसे कहूंगा, तू उसी के
अनुसार करना।'
21 अतः बिल्आम सबेरे उठा। उसने अपनी
गदही की काठी कसी, और मोआब के
अधिकारियों के साथ गया।

प्रभु का दूत और बिल्आम की गदही

22 बिल्आम के जाने के कारण परमेश्वर
का क्रोध भड़क उठा। प्रभु का दूत उसका
विरोध करने के लिए मार्ग में अड़कर खड़ा हो
गया। बिल्आम अपनी गदही पर सवार था,
और उसके दो सेवक उसके साथ थे। 23गदही
ने देखा कि प्रभु का दूत मार्ग के मध्य में अपने
हाथ में नंगी तलवार लिये हुए खड़ा है। अतः
गदही मार्ग से हटकर मैदान में चली गई।
बिल्आम ने गदही को मार्ग पर लौटाने के लिए
मारा। 24तब प्रभु का दूत अंगूर के उद्यानों की
मध्यवर्ती तंग गली में, जिसके दोनों ओर बाड़े
की दीवार थी, खड़ा हो गया। 25जब गदही ने
प्रभु के दूत को देखा, तब वह दीवार से सट गई
और उसने बिल्आम का पैर दीवार से दबा
दिया। अतः उसने उसको फिर मारा। 26प्रभु का
दूत पुनः आगे बढ़कर ऐसे तंग स्थान में खड़ा
हो गया, जहाँ न दाहिनी ओर मार्ग था, और न
बाईं ओर। 27जब गदही ने प्रभु के दूत को देखा
तब वह बिल्आम के नीचे बैठ गई। बिल्आम
का क्रोध भड़क उठा। उसने छड़ी से गदही को
मारा। 28तब प्रभु ने गदही का मुंह खोल दिया।
उसने बिल्आम से कहा, 'मैंने आपके साथ क्या

22 : 28 2 पत 2 : 16

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

किया है कि आपने मुझे तीन बार मारा?'
29बिल्आम ने गदही से कहा, 'तूने मुझे हंसी का
पात्र बनाया है। यदि मेरे हाथ में तलवार होती
तो मैं अब तक तेरा वध कर चुका होता।'
30गदही ने बिल्आम से पूछा, 'क्या मैं आपकी
वही गदही नहीं हूं, जिस पर आप अपने बचपन
से आज तक सवारी करते आए हैं? क्या मैं
आपके साथ ऐसा व्यवहार करने की आदी हूं?'
उसने कहा, 'नहीं!'
31 तब प्रभु ने बिल्आम की आंखें खोल दीं।
उसने देखा कि प्रभु का दूत मार्ग के मध्य में
अपने हाथ में नंगी तलवार लिये खड़ा है। अत:
वह झुक गया। उसने मुंह के बल गिरकर
उसका अभिवादन किया। 32प्रभु के दूत ने
उससे कहा, 'तूने क्यों अपनी गदही को तीन
बार मारा? देख, मैं स्वयं तेरा विरोध करने के
लिए आया हूं; क्योंकि मेरे सम्मुख तेरा मार्ग
उलटा हो गया है। 33गदही मुझे देखकर तीन
बार मेरे सम्मुख से हट गई। यदि वह मेरे
सम्मुख से नहीं हटती तो मैं निश्चय ही तेरा वध
कर डालता, पर उसको जीवित छोड़ देता।'
34बिल्आम ने प्रभु के दूत से कहा, 'मैंने पाप
किया। मैं नहीं जानता था कि तू मेरा सामना
करने के लिए मार्ग के मध्य खड़ा है। अब, यदि
यह तेरी दृष्टि में बुरा है तो मैं लौट जाऊंगा।'
35प्रभु के दूत ने बिल्आम से कहा, 'तू इन
मनुष्यों के साथ जा; किन्तु जो शब्द मैं तुझ से
कहूंगा, तू वही कहना।' अत: बिल्आम
बालाक के अधिकारियों के साथ चला गया।

राजा बालाक और बिल्आम

36 राजा बालाक ने सुना कि बिल्आम आ
रहा है। इसलिए वह उससे भेंट करने के लिए
मोआब के उस नगर को गया जो अर्नोन नदी
की सीमा पर है तथा जो देश के सीमान्त पर
स्थित है। 37राजा बालाक ने बिल्आम से कहा,
'क्या मैंने तुम्हें बुलाने के लिए दूत नहीं भेजे थे?
तब तुम मेरे पास क्यों नहीं आए? क्या तुम
सोचते हो कि मैं तुम्हें उचित सम्मान नहीं दे
सकता हूं?' 38बिल्आम ने बालाक से कहा,
'देखिए, मैं आपके पास आ गया हूं। परन्तु अब
मैं क्या कह सकता हूं? जो शब्द परमेश्वर मेरे
मुंह में डालेगा, उसको ही मैं बोलूंगा।' 39इसके
पश्चात् बिल्आम राजा बालाक के साथ गया।
वे किर्यत-हूसोत नगर गए। 40बालाक ने बैलों
और भेड़ों की बलि चढ़ायी और बिल्आम तथा
अधिकारियों को, जो उसके साथ थे, बलि का
मांस भेजा। 41दूसरे दिन सबेरे बालाक बिल्आम
को लेकर बामोत-बअल पर चढ़ा, जहाँ से वह
निकटवर्ती इस्राएली लोगों को देख सकता था।

23 बिल्आम ने राजा बालाक से कहा,
'यहाँ मेरे लिए सात वेदियाँ बनाइए,
और यहीं मेरे लिए सात बैल और सात मेढ़ों का
प्रबन्ध कीजिए।' 2बालाक ने बिल्आम के
वचन के अनुसार किया। बालाक और बिल्आम
ने प्रत्येक वेदी पर एक बैल तथा एक मेढ़ा
चढ़ाया। 3बिल्आम ने राजा बालाक से कहा,
'आप अपनी अग्नि-बलि के निकट खड़े
रहिए। मैं जाऊँगा; कदाचित् प्रभु मुझसे मिलने
के लिए आए। जो कुछ वह मुझे दिखाएगा उसे
मैं आपको बताऊँगा।' बिल्आम मुंडी पहाड़ी*
पर चला गया।

बिल्आम का इस्राएलियों को आशिष देना

4 परमेश्वर बिल्आम से मिला। बिल्आम ने
उससे कहा, 'मैंने सात वेदियाँ तैयार की हैं,
और प्रत्येक वेदी पर एक बैल तथा एक मेढ़ा
चढ़ाया है।' 5अत: प्रभु ने बिल्आम के मुंह में
शब्द डाला और कहा, 'बालाक के पास लौट
जा। तू उससे यों कहना।' 6बिल्आम बालाक
के पास लौट आया। बालाक और मोआब के
अधिकारी उसकी अग्नि-बलि के निकट खड़े
थे। 7बिल्आम ने अपनी गाथा गाना आरम्भ
किया। उसने गाया :

'बालाक ने, मोआब के राजा ने
मुझे सीरिया देश से,
पूर्वी पहाड़ियों से बुलाया :
"आओ, मेरे लिए याकूब को श्राप दो,

---

* मूल में अस्पष्ट। दूसरा भावार्थ, "एकांत स्थल में"।

22 : 38 1 रा 22 : 14; यिर 1 : 9

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आओ, इस्राएल की भर्त्सना करो।''
8मैं उसको कैसे श्राप दूं
जिसको परमेश्वर ने श्राप नहीं दिया?
मैं उसकी कैसे भर्त्सना करूं
जिसकी प्रभु ने भर्त्सना नहीं की?
9 चट्टानों के शिखर पर से,
मैंने उसे देखा है,
पहाड़ियों से
मैंने उसका अवलोकन किया है :
देखो, लोग अलग बसे हैं,
अन्य राष्ट्रों के साथ उनकी गणना नहीं की
गई!
10याकूब के असंख्य वंशजों को कौन गिन
सकता है?
कौन गणना कर सकता है इस्राएल के
करोड़ों की?
भला हो कि मेरी मृत्यु निष्कपट व्यक्ति के
सदृश हो!
मेरा अन्त उन लोगों के समान हो।'
11 राजा बालाक ने बिल्आम से कहा, 'यह
तुमने मेरे साथ क्या किया? मैं तुम्हें अपने
शत्रुओं को श्राप देने के लिए लाया था, परन्तु
तुमने उनपर आशिषों की वर्षा कर दी!'
12बिल्आम ने उत्तर दिया 'जो कुछ प्रभु मेरे मुंह
में डालता है क्या उसे बोलने का मुझे ध्यान नहीं
रखना चाहिए?'
13 बालाक ने उससे कहा, 'आओ, मेरे
साथ दूसरे स्थान को चलो जहाँ से तुम उन्हें देख
सकते हो। यहाँ से तुम निकटवर्ती लोगों को ही
देख सकते हो, उन सबको नहीं। तुम वहाँ से
मेरे लिए उन्हें श्राप देना।' 14अत: वह उसे
सोपीम नामक मैदान में, पिस्गा की चोटी पर
ले गया। उसने वहाँ सात वेदियां बनाईं और
प्रत्येक वेदी पर एक बैल और एक मेढ़ा
चढ़ाया। 15बिल्आम ने बालाक से कहा, 'आप
यहाँ अपनी अग्नि-बलि के निकट खड़े रहिए,
तब तक मैं प्रभु से वहाँ भेंट करूंगा।' 16प्रभु
बिल्आम से मिला। उसने उसके मुंह में शब्द
डाला और उससे कहा, 'बालाक के पास लौट
जा। तू उससे यों कहना।' 17बिल्आम बालाक
के पास आया। बालाक अपनी अग्नि-बलि के
निकट खड़ा था। उसके साथ मोआब के
अधिकारी थे। बालाक ने उससे पूछा, 'प्रभु क्या
बोला?'
18 बिल्आम ने अपनी गाथा गाना आरम्भ
किया। उसने गाया,
'ओ बालाक उठ, और मेरी बात सुन!
ओ सिप्पोर के पुत्र, मेरी बात पर कान दे;
19परमेश्वर मनुष्य नहीं है कि वह झूठ
बोले,
और न वह मनुष्य का पुत्र है कि पश्चात्ताप
करे!
जो उसने कहा, क्या वह उसको न करे?
जो वह बोले, क्या वह उसको पूर्ण न करे?
20देखो, आशिष ही देने का आदेश मुझे
मिला है :
परमेश्वर आशिष दे चुका है,
और मैं उसको रद्द नहीं कर सकता!
21उसने याकूब में बुराई नहीं देखी,
और न इस्राएल में कष्ट देखा।
उनका प्रभु परमेश्वर उनके साथ है;
वह उनका राजा है।
उनमें राजा का जय-जयकार होता है।
22परमेश्वर ने उन्हें मिस्र देश से बाहर
निकाला है :
उनमें जंगली सांड़ के सदृश बल है।
23याकूब पर कोई मन्त्र नहीं चल सकता,
इस्राएल के विरुद्ध सगुन का विचार नहीं हो
सकता।
अब याकूब के विषय में यह कहा जाएगा,
''परमेश्वर ने इस्राएल में कैसा आश्चर्यपूर्ण
कार्य किया!
24देखो, इस्राएली लोगों को!
वे सिंहनी के सदृश उठ रहे हैं।
वे सिंह के समान स्वयं को ऊंचा उठा रहे
हैं।

---

23 : 9 व्य 33 : 28 23 : 10 उत 15 : 5 23 : 19 1 शम 15 : 29; मला 3 : 6; रोम 11 : 29; तीत 1 : 2; याक 1 : 17; इब्र 6 : 18 23 : 22 मत 2 : 15 23 : 24 उत 49 : 9

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जब तक सिंह अपने शिकार को नहीं खाता
और अपने अहेर का रक्त नहीं पीता तब तक
वह नहीं लेटता है।'' '
25 राजा बालाक ने बिल्आम से कहा, 'अच्छा!
तुम न तो उन्हें श्राप दो, और न आशिष ही।'
26किन्तु बिल्आम ने बालाक को उत्तर दिया,
'क्या मैंने आपसे यह नहीं कहा था, ''जो कुछ
प्रभु मुझसे कहेगा, वही मैं करूंगा''?' 27बालाक
ने बिल्आम से कहा, 'आओ, मैं तुम्हें दूसरे
स्थान पर ले जाऊँगा। सम्भवत: यह परमेश्वर
की दृष्टि में उचित प्रतीत हो कि तुम वहाँ से मेरे
लिए उन्हें श्राप दो।' 28अत: बालाक बिल्आम
को पओर की चोटी पर ले गया, जो मरुस्थल
की ओर झुकी है। 29बिल्आम ने बालाक से
कहा, 'यहाँ मेरे लिए सात वेदियाँ बनाइए, और
यहीं मेरे लिए सात बैल और सात मेढ़ों का
प्रबन्ध कीजिए।' 30बालाक ने बिल्आम के
कथनानुसार किया। उसने प्रत्येक वेदी पर एक
बैल तथा एक मेढ़ा चढ़ाया।

24 जब बिल्आम ने देखा कि प्रभु की दृष्टि
में यह भला है कि इस्राएलियों को
आशिष प्राप्त हो, तब वह पहले के समान सगुन
विचारने के लिए नहीं गया, वरन् वह निर्जन
प्रदेश की ओर मुड़ा। 2बिल्आम ने आंखें ऊपर
उठाईं तो उसने इस्राएलियों को अपने-अपने
कुल के अनुसार बसे हुए देखा। परमेश्वर का
आत्मा बिल्आम पर उतरा, 3और उसने अपनी
गाथा गाना आरम्भ किया। उसने यह गाया,
'बओर के पुत्र, बिल्आम की यह वाणी है,
यह वाणी उस व्यक्ति की है, जो द्रष्टा है।*
4यह परमेश्वर के वचन सुनने वाले व्यक्ति
की वाणी है,
जो सर्वशक्तिमान के दर्शन को देखनेवाला
दर्शी है;
जो गिरता है, जिसकी आंखें खुली रहती हैं:
5ओ याकूब, तेरे तम्बू कितने मनोहर हैं!
ओ इस्राएल, तेरे शिविर कितने सुन्दर हैं।
6वे दूर-दूर फैली हुई घाटियों के समान,
या नदी के तट के उद्यानों के सदृश,
अथवा प्रभु के द्वारा रोपे गए अगर-वृक्ष के
समान,
या जलाशय के निकट के देवदार के सदृश
हैं।
7याकूब की बालटियों से जल बहेगा,
और उसका बीज जलाशय में अंकुरित
होगा।
उसका राजा, अगग से अधिक महान होगा,
उसका राज्य उन्नत होगा।
8परमेश्वर उसे मिस्र देश से बाहर निकाल
रहा है;
वह उसके लिए जंगली सांड के बल के
समान है।
वह उसके बैरी राष्ट्रों को खा जाएगा,
और उनकी हड्डियों को चूर-चूर करेगा,
और तीरों से उनको बेधेगा।**
9वह घात लगाकर बैठता है,
वह सिंह के सदृश,
अथवा सिंहनी के समान लेटता है।
कौन उसको उठा सकता है?
ओ याकूब, तुझे आशिष देने वाला स्वयं
आशिष प्राप्त करे।
किन्तु तुझे श्राप देनेवाला
स्वयं श्रापित हो।'

बिल्आम की नबूवत

10 तब राजा बालाक का क्रोध बिल्आम के
प्रति भड़क उठा। उसने अपने हाथ पर हाथ
मारकर बिल्आम से कहा, 'मैंने अपने शत्रुओं
को श्राप देने के लिए तुम्हें बुलाया था। किन्तु
देखो, तुमने उन्हें तीन बार आशिष दी। 11अब,
तुम अपने स्थान को भाग जाओ। मैंने कहा था,
''मैं निश्चय ही तुम्हें सम्मानित करूँगा।''
किन्तु प्रभु ने तुम्हें सम्मानित होने से वंचित कर
दिया।' 12बिल्आम ने राजा बालाक से कहा,
'जिन दूतों को आपने मेरे पास भेजा था, क्या
मैंने उनसे यह नहीं कहा था, 13''चाहे बालाक
सोना-चांदी से भरा अपना घर प्रदान करें तो भी

* अथवा, 'जिसकी आंखें बंद हैं' अथवा 'जिसकी आंखें सूक्ष्म हैं'। ** मूल में अस्पष्ट

24 : 7 उत 49 : 10; यश 9 : 7 **24 : 9** उत 12 : 3 ; 49 : 9

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मैं प्रभु की आज्ञा का उल्लंघन नहीं करूंगा और
अपनी इच्छा के अनुसार भला अथवा बुरा
नहीं करूंगा। जो कुछ प्रभु बोलेगा, वही मैं
बोलूंगा।'' 14अब, देखिए, मैं अपने भाई-
बन्धुओं के पास जा रहा हूं। आइए, मैं आपको
बता दूं कि ये इस्राएली लोग आपकी प्रजा के
साथ आनेवाले दिनों में क्या करेंगे।'

15बिल्आम ने अपनी गाथा गाना आरम्भ
किया। उसने यह गाया;

'बओर के पुत्र, बिल्आम की यह वाणी है,
यह वाणी उस व्यक्ति की है जो द्रष्टा है;
16यह परमेश्वर के शब्द सुननेवाले व्यक्ति
की वाणी है,
जो सर्वोच्च के ज्ञान को जाननेवाला ज्ञानी है,
जो सर्वशक्तिमान के दर्शन को देखनेवाला
दर्शी है,
जो गिरता है, जिसकी आंखें खुली रहती
हैं :
17मैं उसको देखता हूं, पर अभी नहीं;
मैं उस पर दृष्टिपात करता हूं, किन्तु निकट
से नहीं:
याकूब में से एक तारे का उदय होगा,
इस्राएल में से एक राजदण्ड उठेगा।
वह मोआब देश के सामन्तों को कुचलेगा,
शेत के पुत्रों को धूल-धूसरित करेगा,
18उसका शत्रु एदोम उसके अधीन हो जाएगा,
सेईर का यह देश उसका गुलाम बन जाएगा।
पर इस्राएल अपनी शक्ति का प्रदर्शन करेगा।
19अपने शत्रुओं पर याकूब राज्य करेगा;
वह नगरों के बचे हुओं को नष्ट करेगा।'

20 तब बिल्आम ने अमालेकी राष्ट्र को
देखा। उसने अपनी गाथा गाना आरम्भ किया।
उसने यह गाया,

'राष्ट्रों में अमालेक प्रथम था,
पर अन्त में वह नष्ट हो जाएगा!'

21 तब उसने केनी राष्ट्र को देखा। उसने अपनी
गाथा गाना आरम्भ किया। उसने यह गाया,

'ओ काइन!
तेरा निवास-स्थान दृढ़ है,
तेरा घोंसला चट्टान पर स्थित है!
22फिर भी तेरा घोंसला* उजड़ जाएगा;
तू कब तक अश्शूर का बंदी रहेगा?'

23 तब उसने अपनी एक और गाथा गाना
आरम्भ किया। उसने यह गाया,

'जब परमेश्वर यह कार्य करेगा
तब कौन जीवित रहेगा?
24कित्तीम+ द्वीप से जलयान आएंगे
जो अश्शूर तथा एबर को पीड़ित करेंगे;
अन्ततः वह भी नष्ट हो जाएगा।'

25 तब बिल्आम उठा। वह अपने स्थान को
लौट गया। राजा बालाक भी अपने मार्ग पर
चला गया।

इस्राएलियों का पओर के बअल देवता की पूजा करना

25 जब इस्राएली शिट्टीम नगर में बस गए,
तब वे मोआबी लड़कियों के साथ
व्यभिचार करने लगे। 2लड़कियों ने इस्राएलियों
को अपने देवताओं के बलिभोज में आमन्त्रित
किया। इस्राएलियों ने बलि-भोज खाया और
उनके देवताओं की झुककर वन्दना की। 3इस
प्रकार इस्राएली पओर के बअल देवता की
पूजा के दासत्व में फंस गए। अतः प्रभु का
क्रोध इस्राएलियों के विरुद्ध भड़क उठा। 4प्रभु
ने मूसा से कहा, 'इस्राएलियों के सब मुखियों
को ले, और मुझ-प्रभु के सम्मुख उन्हें धूप में
लटका दे, जिससे मेरी क्रोधाग्नि इस्राएल से
लौटकर दूर हो जाए।' 5मूसा ने इस्राएलियों के
शासकों से कहा, 'तुम अपने उन सब पुरुषों का
वध करो जो पओर के बअल देवता की पूजा
के दासत्व में फंस गए हैं।'

6 जब इस्राएली समाज मिलन-शिविर के
द्वार पर शोक मना रहा था, एक इस्राएली पुरुष
आया। वह मूसा तथा समस्त मंडली की आंखों
के सामने अपने परिवार में एक मिद्यानी स्त्री को

* मूल में 'काइन' + अथवा, 'कुप्रुस, साइप्रस'

24 : 17 प्रक 22 : 16 ; उत 49 : 10 ; मत 2 : 2 24 : 24 उत 11 : 14; दान 11 : 30 25 : 1 प्रक 2 : 14
25 : 3 भज 106 : 29-30

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ले आया। 7जब पुरोहित हारून के पौत्र और
एलआजर के पुत्र पीनहास ने यह देखा, तब वह
मंडली के मध्य से उठा। उसने अपने हाथ में
एक भाला लिया 8और वह इस्राएली पुरुष के
पीछे-पीछे शयन-कक्ष में गया। वहां उसने
दोनों को, इस्राएली पुरुष तथा मिद्यानी स्त्री के
शरीर** को भाले से बेध दिया। इस प्रकार
महामारी, जो इस्राएली समाज में फैल गई थी,
रुक गई। 9फिर भी महामारी में मारे गए लोगों
की संख्या चौबीस हजार थी।
10 प्रभु मूसा से बोला, 11'पुरोहित हारून के
पौत्र और एलआजर के पुत्र पीनहास ने
इस्राएली समाज पर से मेरे प्रकोप को लौटाकर
दूर किया है। उन लोगों में वही एकमात्र ऐसा
व्यक्ति है जिसमें मेरी ईर्ष्या के समान ईर्ष्या है।
इसलिए मैंने अपनी ईर्ष्यावश इस्राएलियों का
अन्त नहीं किया। 12तू उनसे कहना, "देखो,
मैं उसे शान्ति का अपना विधान प्रदान करता
हूं। 13यह उसके लिए और उसके पश्चात्
उसके वंशजों के लिए स्थायी पुरोहित-पद का
विधान होगा; क्योंकि उसने अपने परमेश्वर के
हेतु उत्साह दिखाया था, और इस्राएली लोगों
के लिए प्रायश्चित किया था।"'
14 उस वध किए गए इस्राएली पुरुष का
नाम जिम्री था जिसका वध मिद्यानी स्त्री के
साथ किया गया था। वह सालू का पुत्र
और शिमोनी पितृ-कुल के एक परिवार का
मुखिया था। 15वध की गई मिद्यानी स्त्री का
नाम कोज्बी था। वह सूर की पुत्री थी, जो
मिद्यानी पितृ-कुल के एक गोत्र का मुखिया
था।
16 प्रभु मूसा से बोला, 17'मिद्यानियों को
सता, उन्हें मार; 18क्योंकि उन्होंने पओर के
विषय में छल-कपट करके तुम्हें सताया था।
उन्होंने अपनी जाति-बहिन, अर्थात् मिद्यान के
मुखिया की पुत्री कोज्बी के विषय में छल-
कपट किया था, जिसका वध पओर की पूजा
के कारण फैली महामारी के दिन किया गया
था।'

मोआब देश में इस्राएलियों की जन-गणना

26 इस महामारी के पश्चात् प्रभु ने मूसा
और पुरोहित हारून के पुत्र एलआजर
से कहा, 2'तुम इस्राएली मंडली के सब पुरुषों
की, जो बीस वर्ष तथा इससे अधिक आयु के
हैं, इस्राएल के उन सब लोगों की, जो युद्ध में
जाने के योग्य हैं, गणना उनके पूर्वजों के
परिवार के अनुसार करो।' 3अतः मूसा और
पुरोहित एलआजर मोआब के मैदान में, यर्दन
नदी के तट पर यरीहो नगर के सामने इस्राएलियों
से बोले, 4'बीस वर्ष तथा इससे अधिक आयु
के पुरुषों की गणना करो।' जैसी आज्ञा प्रभु ने
मूसा को दी थी।
ये मिस्र देश से बाहर निकले हुए इस्राएली
थे :
5 इस्राएल का ज्येष्ठ पुत्र रूबेन; रूबेन के
पुत्र : हनोक, जिससे हनोकीय गोत्र निकला;
पल्लू जिससे पल्लुआयी गोत्र निकला; 6हेस्रोन,
जिससे हेस्रोनीय गोत्र निकला, कर्मी जिससे
कर्मीय गोत्र निकला। 7ये रूबेनियों के गोत्र थे,
जिनमें पुरुषों की संख्या तैंतालीस हजार सात
सौ तीस थी। 8ये पल्लू के पुत्र थे : एलीअब,...।
9ये एलीअब के पुत्र थे : नमूएल, दातन और
अबीरम। ये इस्राएली समाज द्वारा चुने हुए
पुरुष थे, जिन्होंने मूसा और हारून से झगड़ा
किया था। वे कोरह के दल के थे जिन्होंने प्रभु
से वाद-विवाद किया था। 10जब आग ने दो सौ
पचास मनुष्यों को भस्म किया तब धरती ने मुंह
खोलकर कोरह और उसके दल-बल को
निगल लिया और वे मर गए। वे चेतावनी-चिह्न
बन गए! 11फिर भी कोरह के पुत्र नहीं मरे थे।
12 ये अपने-अपने गोत्र के अनुसार शिमोन
के पुत्र थे : नमूएल, जिससे नमूएलीय गोत्र
निकला; यामीन, जिससे यामीनीय गोत्र निकला;

** अथवा "जाँघ का जोड़"

25 : 9 1 कुर 10 : 8 **25 : 11** व्य 4 : 24 **25 : 13** व्य 33 : 8-11; यहेज 44 : 15; प्रव 45 : 23-26 **26 : 2** गण 1 : 2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

याकीन जिससे याकीनीय गोत्र निकला; 13जारह, जिससे जारहीय गोत्र निकला; शाऊल जिससे शाऊलीय गोत्र निकला। 14ये शिमोनियों के गोत्र थे, जिनमें पुरुषों की संख्या बाईस हजार दो सौ थी।

15 ये अपने-अपने गोत्र के अनुसार गाद के पुत्र थे : सपोन जिससे सपोनीय गोत्र निकला; हग्गी, जिससे हग्गीय गोत्र निकला; शूनी, जिससे शूनीय गोत्र निकला; 16आज्नी, जिससे आज्नीय गोत्र निकला; एरी, जिससे एरीय गोत्र निकला; 17अरोद, जिससे अरोदीय गोत्र निकला; अरएली, जिससे अरएलीय गोत्र निकला। 18ये गाद के पुत्रों के गोत्र थे, जिनमें पुरुषों की संख्या चालीस हजार पांच सौ थी।

19 यहूदा के पुत्र एर और ओनन थे। एर और ओनन की मृत्यु कनान देश में हुई। 20यहूदा के पुत्रों के भी गोत्र निकले : शेला, जिससे शेलीय गोत्र निकला; पेरेस, जिससे पेरेसीय गोत्र निकला; जेरह, जिससे जेरहीय गोत्र निकला। 21ये पेरेस के पुत्र थे : हेस्रोन, जिससे हेस्रोनीय गोत्र निकला; हामूल, जिससे हामूलीय गोत्र निकला। 22ये यहूदा के गोत्र थे, जिनमें पुरुषों की संख्या छिहत्तर हजार पांच सौ थी।

23 ये अपने-अपने गोत्र के अनुसार इस्साकार के पुत्र थे : तोला, जिससे तोलीय गोत्र निकला; पूवा, जिससे पूवीय गोत्र निकला; 24याशूब, जिससे याशूबीय गोत्र निकला; शिम्रोन, जिससे शिम्रोनीय गोत्र निकला। 25ये इस्साकार के गोत्र थे, जिनमें पुरुषों की संख्या चौंसठ हजार तीन सौ थी।

26 ये अपने-अपने गोत्र के अनुसार जबूलून के पुत्र थे : सेरद, जिससे सेरदीय गोत्र निकला; एलोन, जिससे एलोनीय गोत्र निकला; यहलएल, जिससे यहलएलीय गोत्र निकला। 27ये जबूलूनियों के गोत्र थे, जिनमें पुरुषों की संख्या साठ हजार पांच सौ थी।

28 ये अपने-अपने गोत्र के अनुसार यूसुफ के पुत्र थेः मनश्शे और एफ्रइम। 29ये मनश्शे के पुत्र थेः माकीर, जिससे माकीरीय गोत्र निकला। माकीर ने गिलआद को उत्पन्न किया। गिलआद से गिलआदीय गोत्र निकला। 30ये गिलआद के पुत्र थे : ईआजर, जिससे ईआजरीय गोत्र निकला; हेलक, जिससे हेलकीय गोत्र निकला; 31असरीएल, जिससे असरीएलीय गोत्र निकला; शेकम, जिससे शेकमीय गोत्र निकला; 32शमीदा, जिससे शमीदीय गोत्र निकला; हेपर जिससे हेपरीय गोत्र निकला। 33हेपर के पुत्र सलापहद को पुत्र नहीं वरन् पुत्रियाँ हुईं। ये उसकी पुत्रियों के नाम हैं : महला, नोआ, हाग्ला, मिल्का और तीर्सा। 34ये मनश्शे के गोत्र थे, जिनमें पुरुषों की संख्या बावन हजार सात सौ थी।

35 ये अपने-अपने गोत्र के अनुसार एफ्रइम के पुत्र थे : शूतेलह, जिससे शूतेलहीय गोत्र निकला; बेकर, जिससे बेकरीय गोत्र निकला; तहन, जिससे तहनीय गोत्र निकला; 36ये शूतेलह के पुत्र थे : एरन, जिससे एरनीय गोत्र निकला। 37ये एफ्रइम के पुत्रों के गोत्र थे, जिनमें पुरुषों की संख्या बत्तीस हजार पांच सौ थी। ये ही अपने-अपने गोत्र के अनुसार यूसुफ के पुत्र थे।

38 ये अपने-अपने गोत्र के अनुसार बिन्यामिन के पुत्र थे : बेला, जिससे बेलीय गोत्र निकला; अश्बेल, जिससे अश्बेलीय गोत्र निकला; अहीरम, जिससे अहीरमीय गोत्र निकला; 39शपूपम, जिससे शपूपमीय गोत्र निकला; हूपम, जिससे हूपमीय गोत्र निकला। 40बेला के पुत्र अर्द और नामन थे। अर्द से अर्दीय गोत्र निकला, और नामन से नामनीय गोत्र निकला। 41ये ही अपने-अपने गोत्र के अनुसार बिन्यामिन के पुत्र थे, जिनमें पुरुषों की संख्या पैंतालीस हजार छः सौ थी।

42 ये अपने-अपने गोत्र के अनुसार दान के पुत्र थेः शूहम, जिससे शूहमीय गोत्र निकला। ये ही अपने-अपने गोत्र के अनुसार दान के गोत्र थे। 43शूहमीय गोत्र में पुरुषों की संख्या चौंसठ हजार चार सौ थी।

44 ये अपने-अपने गोत्र के अनुसार आशेर के पुत्र थे : यिम्ना, जिससे यिम्नीय गोत्र निकला। यिश्वी, जिससे यिश्वीय गोत्र निकला;

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बरीआ, जिससे बरीआयी गोत्र निकला। 45ये
बरीआ के पुत्र थे : हेबर, जिससे हेबरीय गोत्र
निकला; मल्कीएल, जिससे मल्कीएलीय गोत्र
निकला। 46आशेर की पुत्री का नाम सारह था।
47ये आशेर के पुत्रों के गोत्र थे, जिनमें पुरुषों
की संख्या तिर्पन हजार चार सौ थी।

48 ये अपने-अपने गोत्र के अनुसार नफ्ताली
के पुत्र थे : यहसएल, जिससे यहसएलीय गोत्र
निकला; गूनी, जिससे गूनीय गोत्र निकला;
49येसर, जिससे येसरीय गोत्र निकला; शिल्लेम,
जिससे शिल्लेमीय गोत्र निकला। 50ये ही अपने-
अपने गोत्र के अनुसार नफ्ताली के गोत्र थे,
जिनमें पुरुषों की संख्या पैंतालीस हजार चार
सौ थी।

51 यह इस्राएली पुरुषों की कुल संख्या थी:
छः लाख एक हजार सात सौ तीस।

चिट्ठी डालकर भूमि का आबंटन करना

52 प्रभु मूसा से बोला, 53'इन्हीं लोगों में,
इनके नामों की गणना के अनुसार, भूमि का
आबंटन पैतृक-सम्पत्ति के लिए किया जाएगा।
54तू बड़े कुल को बड़ा पैतृक भूमि-भाग, और
छोटे कुल को छोटा पैतृक भूमि-भाग देना।
प्रत्येक कुल को, उसके व्यक्तियों की संख्या
के अनुसार पैतृक भूमि-भाग दिया जाएगा।
55किन्तु भूमि का आबंटन चिट्ठी डालकर किया
जाएगा। वे अपने-अपने पितृ-कुल के नामानुसार
भूमि पर अधिकार करेंगे। 56उनका भूमि-भाग
बड़े और छोटे कुल के मध्य में चिट्ठी डालकर
बांटा जाएगा।

लेवी कुल

57 ये अपने-अपने गोत्र के अनुसार, जिनकी
गणना की गई, लेवी के वंशज हैं : गेर्शोन,
जिससे गेर्शोनीय गोत्र निकला; कहात, जिससे
कहातीय गोत्र निकला; मरारी, जिससे मरारीय
गोत्र निकला। 58ये लेवी के गोत्र हैं : लिब्नीय
गोत्र, हेब्रोनीय गोत्र, महलीय गोत्र, मूशीय गोत्र
और कोरहीय गोत्र। कहात ने अमराम को
उत्पन्न किया था। 59अमराम की पत्नी का नाम
योकेबद था, जो लेवी की पुत्री थी। वह मिस्र
देश में लेवी को उत्पन्न हुई थी। उसने अमराम
से हारून और मूसा को तथा उनकी बहिन
मिर्याम को जन्म दिया था। 60हारून से नादब,
अबीहू, एलआजर और ईतामर नामक पुत्र
उत्पन्न हुए थे। 61किन्तु जब नादब और अबीहू
ने प्रभु के सम्मुख अपवित्र अग्नि चढ़ाई, तब
वे मर गए थे। 62लेवीय पुरुषों की संख्या जो
एक महीने तथा इससे अधिक आयु के थे, तेईस
हजार थी। उनकी गणना अन्य इस्राएली पुरुषों
के साथ नहीं की गई थी, क्योंकि इस्राएली
समाज के मध्य में उन्हें पैतृक भूमि-भाग नहीं
दिया गया था।

कालेब और यहोशुअ का जीवित रहना

63 मूसा और पुरोहित एलआजर ने मोआब
के मैदान में, यर्दन नदी के तट पर यरीहो नगर
के सामने इस्राएली पुरुषों की गणना की थी।
उनके द्वारा गिने हुए पुरुषों की संख्या यही थी।
64परन्तु इस गणना में एक भी पुरुष ऐसा नहीं
गिना गया, जिसको उस गणना में गिना गया था,
जो मूसा और पुरोहित हारून ने सीनय के निर्जन
प्रदेश में की थी; 65क्योंकि प्रभु ने उनके विषय
में कहा था, 'वे निर्जन प्रदेश में मर जाएंगे।'
उनमें यपून्ने के पुत्र कालेब तथा नून के पुत्र
यहोशुअ को छोड़कर एक भी व्यक्ति नहीं बचा
था।

सलापहद की पुत्रियों की मांग

27 तब सलापहद की पुत्रियाँ आगे आईं।
यह हेपर का पुत्र, गिलाद का पोता और
मनश्शे के पुत्र माकीर का परपोता था। वह
यूसुफ के पुत्र मनश्शे के गोत्र का था। ये उसकी
पुत्रियों के नाम हैं: महला, नोआ, हाग्ला,
मिल्का और तीर्सा। 2वे मूसा, पुरोहित एलआजर,
नेताओं और समस्त मंडली के सम्मुख मिलन-
शिविर के द्वार पर एकत्र हुईं। 3उन्होंने कहा,
'हमारे पिता की मृत्यु निर्जन प्रदेश में हुई थी।
वह कोरह के दल में प्रभु के विरुद्ध एकत्र होने
वाले लोगों के दल में नहीं थे। परन्तु वह अपने

---

26 : 51 गण 1 : 46 **26 : 55** गण 34 : 13; यहो 14 : 2 **26 : 57** नि 6 : 16-23 **26 : 61** लेव 10 : 2; गण 3 : 4 **26 : 65** गण 14 : 28 **27 : 1** गण 36 : 1. 11; यहो 17 : 3

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पाप के कारण मरे थे। उनको कोई पुत्र नहीं
हुआ था। 4तब क्यों हमारे पिता का नाम उनके
गोत्र में से मिट जाए? क्या इसलिए कि उनका
कोई पुत्र नहीं है? हमें भी हमारे चाचाओं की
भूमि के मध्य में पैतृक भूमि-भाग दीजिए।'
5 मूसा ने उनका मुकद्दमा प्रभु के सम्मुख
प्रस्तुत किया। 6प्रभु ने मूसा से कहा, 7'सला-
पहद की पुत्रियाँ न्यायोचित बात कहती हैं। तू
उन्हें उनके चाचाओं के साथ पैतृक भूमि-भाग
दे दे। उनके पिता की पैतृक भूमि उनको
हस्तान्तरित कर दे। 8तू इस्राएलियों से बोलना,
"यदि किसी मनुष्य की मृत्यु होती है, और
उसका कोई पुत्र नहीं है, तो तुम उसकी पैतृक
भूमि उसकी पुत्री को हस्तान्तरित कर देना।
9यदि उसकी पुत्री नहीं है तो उसकी पैतृक भूमि
उसके भाइयों को दे देना। 10यदि उसके भाई
भी नहीं हैं तो उसकी पैतृक भूमि उसके
चाचाओं को दे देना। 11किन्तु यदि उसका कोई
चाचा नहीं है, तो उसकी पैतृक भूमि उसके
सम्बन्धी को, जो उसके गोत्र में उसके सबसे
अधिक निकट होगा, दे देना; और वह निकट
सम्बन्धी उस पर अधिकार करेगा। यह इस्राएली
समाज में न्याय-सिद्धान्त की संविधि होगी;
यही मैं-प्रभु ने मूसा को आज्ञा दी है।" '

मूसा का यहोशुअ को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त करना

12 प्रभु ने मूसा से कहा, 'इस अबारीम
पहाड़ पर चढ़, और उस देश को देख जो मैंने
इस्राएलियों को दिया है। 13जब तू उसको देख
लेगा तब अपने भाई हारून के सदृश अपने मृत
पूर्वजों में जाकर मिल जाएगा; 14क्योंकि तुम
दोनों ने सीन के निर्जन प्रदेश में मंडली के
विवाद के समय मेरे आदेश के प्रति विद्रोह
किया था, और उनकी दृष्टि में मुझे जलाशय के
निकट पवित्र सिद्ध नहीं किया था।' (यह
कादेश का मरीबा नामक जलाशय सीन के
निर्जन प्रदेश में है।)

15 मूसा प्रभु से बोले, 16'प्रभु, समस्त प्राणियों
की आत्माओं के परमेश्वर, तू इस्राएली मंडली
के ऊपर किसी व्यक्ति को नियुक्त कर 17ताकि
वह उनके आने और जाने में उनका मार्गदर्शन
कर सके, और प्रभु की मंडली ऐसी भेड़ों के
समान न हो जिनका कोई चरवाहा नहीं होता!'
18प्रभु ने मूसा से कहा, 'तू नून के पुत्र यहोशुअ
को, जिसमें आत्मा की प्रेरणा है, ले, और उस
पर अपना हाथ रख। 19तत्पश्चात् उसे पुरोहित
एलआजर तथा समस्त मंडली के सम्मुख खड़ा
करना और उसे उनकी आंखों के सामने अपना
उत्तराधिकारी नियुक्त करना। 20तू उसे अपनी
कुछ सत्ता भी प्रदान करना, जिससे समस्त
इस्राएली मंडली उसकी आज्ञा का पालन करे।
21वह पुरोहित एलआजर के सम्मुख खड़ा
हुआ करेगा, जो प्रभु के सम्मुख ऊरीम की
न्याय-विधि के द्वारा उसके लिए मेरी इच्छा
पूछा करेगा। उसके आदेश के अनुसार समस्त
मंडली, समस्त इस्राएली लोग उसके मार्गदर्शन
में बाहर जाएंगे और उसी के मार्गदर्शन में
लौटेंगे।'
22 मूसा ने वही किया, जैसा प्रभु ने उनसे
कहा था। उन्होंने यहोशुअ को लिया और उसे
पुरोहित एलआजर तथा समस्त मंडली के
सम्मुख खड़ा किया। 23तत्पश्चात् उस पर अपने
हाथ रखे और उसे अपना उत्तराधिकारी नियुक्त
किया, जैसी प्रभु ने उनको आज्ञा दी थी।

दैनिक भेंट

28 प्रभु मूसा से बोला, 2'तू इस्राएली समाज
को यह आज्ञा देना, उनसे कहना, "तुम
मेरा चढ़ावा, अग्नि में अर्पित मेरा आहार, मेरी
सुखद सुगन्ध निर्धारित समय पर चढ़ाने का
ध्यान रखना।" 3तू उनसे यह भी कहना, यह
अग्नि में अर्पित चढ़ावा है, जो तुम प्रभु को
चढ़ाओगे : एक-एक वर्षीय दो निष्कलंक
मेमने प्रतिदिन निरन्तर अग्नि-बलि के रूप में
चढ़ाना। 4तुम एक मेमना सबेरे चढ़ाना, और

---

27 : 7 गण 36 : 2 **27 : 12** व्य 3 : 27; 32 : 49 **27 : 17** 1 रा 22 : 17; यहेज 34 : 5, मत 9 : 36 **27 : 18** नि 24 : 13 **27 : 20** 2 रा 2 : 15 व्य 34 : 9; यहो 1 : 15 **27 : 21** नि 28 : 30; 1 शम 28 : 6 **27 : 23** व्य 31 : 23 **28 : 3** नि 29 : 38; यहेज 46 : 13-15

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दूसरा मेमना सन्ध्या समय चढ़ाना। [5]इसके
अतिरिक्त पेर कर निकाले गये दो लिटर तेल-
सम्मिश्रित एक किलो मैदा अन्न-बलि में
अर्पित करना। [6]यह निरन्तर अग्नि-बलि है,
जिसको सीनय पर्वत पर सुखद सुगन्ध के हेतु
मुझ-प्रभु के लिए अग्नि में अर्पित बलि के रूप
में निश्चित किया गया था। [7]उसकी पेय-बलि
में प्रत्येक मेमने के साथ दो लिटर अंगूर का रस
होगा। तुम मुझ-प्रभु को अंगूर के रस की पेय-
बलि पवित्र स्थान में चढ़ाना। [8]तुम दूसरा मेमना
सन्ध्या समय चढ़ाना। सबेरे चढ़ाई गई अन्न-
बलि के सदृश, उसकी पेय-बलि के समान
सुखद सुगन्ध के हेतु मुझ-प्रभु के लिए अग्नि
में अर्पित बलि के रूप में उसको चढ़ाना।

साप्ताहिक तथा मासिक भेंट

9 'तुम विश्राम दिवस पर एक-एक वर्षीय
दो निष्कलंक मेमने, अन्न-बलि के लिए तेल-
सम्मिश्रित दो किलो मैदा, और उसकी पेय-
बलि चढ़ाना। [10]यह निरन्तर अग्नि-बलि तथा
उसकी पेय-बलि के अतिरिक्त प्रत्येक विश्राम
दिवस की अग्नि-बलि है।

11 'तुम प्रत्येक महीने के प्रथम दिन मुझ-
प्रभु के लिए यह अग्नि-बलि चढ़ाना : दो
बछड़े, एक मेढ़ा, एक-एक वर्षीय सात
निष्कलंक मेमने। [12]प्रत्येक बछड़े के साथ
अन्न-बलि के लिए तेल-सम्मिश्रित अढ़ाई
किलो मैदा; मेढ़े के साथ अन्न-बलि के लिए
तेल-सम्मिश्रित दो किलो मैदा, [13]और प्रत्येक
मेमने के साथ अन्न-बलि के रूप में तेल-
सम्मिश्रित एक किलो मैदा। इन्हें सखद सुगन्ध
की अग्नि-बलि के हेतु प्रभु के लिए अग्नि में
अर्पित बलि के रूप में चढ़ाना। [14]इनके साथ
चढ़ाई जाने-वाली पेय-बलि इस प्रकार है:
प्रत्येक बछड़े के साथ साढ़े तीन लिटर अंगूर
का रस; मेढ़े के साथ अढ़ाई लिटर अंगूर का
रस, और प्रत्येक मेमने के साथ दो लिटर अंगूर
का रस। यह मासिक अग्निबलि है, वर्ष के
प्रत्येक महीने के लिए है। [15]प्रभु के लिए पाप-
बलि में एक बकरा भी चढ़ाना। यह निरन्तर
अग्नि-बलि तथा उसकी पेय-बलि के अतिरिक्त
चढ़ाया जाएगा।

निर्धारित पर्वों के समय भेंट चढ़ाना

16 'पहिले महीने के चौदहवें दिन प्रभु का
पास्का (फसह) पर्व है। [17] इसी महीने के
पन्द्रहवें दिन यात्रा-पर्व है। सात दिन तक
बेखमीर रोटी खाई जाएगी। [18] पहले दिन पवित्र
समारोह आयोजित किया जाएगा। तुम उस
दिन किसी भी प्रकार का कठोर परिश्रम मत
करना; [19]वरन् मुझ-प्रभु को अग्नि-बलि अर्थात्
अग्नि में यह चढ़ावा चढ़ाना : दो बछड़े, एक
मेढ़ा और एक-एक वर्षीय सात मेमने। ध्यान
देना कि ये निष्कलंक हों। [20]तुम उनके साथ
चढ़ाई जानेवाली अन्न-बलि में प्रत्येक बछड़े
के साथ अढ़ाई किलो, मेढ़े के साथ दो किलो
[21]और हरएक मेमने के साथ एक किलो
तेल- समिश्रित मैदा चढ़ाना। [22]अपने प्रायश्चित्त
के लिए पाप-बलि में एक बकरा भी चढ़ाना।
[23]तुम सबेरे की अग्नि-बलि के अतिरिक्त जो
निरन्तर अग्नि-बलि है, इन्हें चढ़ाना। [24]तुम सात
दिन तक इस रीति से प्रति दिन प्रभु के लिए
सुखद सुगन्ध, अग्नि में अर्पित आहार चढ़ाना।
यह निरन्तर अग्नि-बलि तथा उसकी पेय-
बलि के अतिरिक्त चढ़ाया जाएगा। [25]तुम सातवें
दिन पवित्र समारोह आयोजित करना। उस दिन
किसी भी प्रकार का कठोर परिश्रम मत करना।

26 'प्रथम फल के दिन, जब तुम सप्त-
सप्ताह पर्व पर नव अन्न की अन्न-बलि
चढ़ाओगे, तब पवित्र समारोह आयोजित
करना। उस दिन किसी भी प्रकार का कठोर
परिश्रम मत करना; [27]वरन् मुझ-प्रभु को यह
अग्नि-बलि, सुखद सुगन्ध चढ़ाना: दो बछड़े,
एक मेढ़ा और एक-एक वर्षीय सात मेमने।
[28]तुम उनके साथ चढ़ाई जानेवाली अन्न-बलि
में प्रत्येक बछड़े के साथ अढ़ाई किलो, मेढ़े के
साथ दो किलो [29]तथा हरएक मेमने के साथ
एक किलो तेल-सम्मिश्रित मैदा चढ़ाना। [30]अपने

---

28 : 10 मत 12 : 5 **28 :11** यश 1 :13 **28: 16** नि 12:6; लेव 23 : 5; व्य 16 : 1, यहेज 45 : 21 **28 : 26** नि 23 : 16; 34 : 22; लेव 23 : 15; व्य 16:10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रायश्चित्त के लिए एक बकरा भी चढ़ाना।
31तुम, निरन्तर अग्नि-बलि और उसकी अन्न-
बलि के अतिरिक्त इन्हें इनकी पेय-बलि के
साथ चढ़ाना। ध्यान देना कि वे निष्कलंक हों।

29 'तुम सातवें महीने के पहले दिन एक
पवित्र समारोह आयोजित करना। तुम
किसी भी प्रकार का कठोर परिश्रम मत करना।
यह तुम्हारे लिए नरसिंघा फूंकने का दिन है।
2तुम मुझ-प्रभु को यह अग्नि-बलि, सुखद
सुगन्ध अर्पित करना: एक बछड़ा, एक मेढ़ा
और एक-एक वर्षीय सात निष्कलंक मेमने।
3उनके साथ चढ़ाई जानेवाली अन्न-बलि में:
बछड़े के साथ अढ़ाई किलो, मेढ़े के साथ दो
किलो 4तथा हरएक मेमने के साथ एक किलो
तेल-सम्मिश्रित मैदा चढ़ाना। 5अपने प्रायश्चित
के लिए पाप-बलि में एक बकरा भी चढ़ाना।
6तुम नव चन्द्र+ की अग्नि-बलि तथा उसकी
अन्न-बलि, निरन्तर अग्नि-बलि और उसकी
अन्न-बलि तथा इन सबकी पेय-बलि
आदेशानुसार अर्पित करने के अतिरिक्त, इसे
भी सुखद सुगन्ध, प्रभु को अग्नि में अर्पित बलि
के रूप में चढ़ाना।

7 'तुम इस सातवें महीने के दसवें दिन एक
पवित्र समारोह आयोजित करना। उस दिन तुम
स्वयं को उपवास के द्वारा पीड़ित करना, और
किसी भी प्रकार का कठोर परिश्रम मत करना;
8वरन् तुम प्रभु को यह अग्नि-बलि, सुखद
सुगन्ध अर्पित करना : एक बछड़ा, एक मेढ़ा,
एक-एक वर्षीय सात मेमने। ये सब निष्कलंक
हों। 9तुम उनके साथ चढ़ाई जाने वाली अन्न-
बलि में: बछड़े के साथ अढ़ाई किलो, मेढ़े के
साथ दो किलो 10तथा हरएक मेमने के साथ
एक किलो तेल-सम्मिश्रित मैदा चढ़ाना।
11पाप-बलि के लिए एक बकरा भी चढ़ाना।
यह प्रायश्चित्त की पाप-बलि, निरन्तर अग्नि-
बलि तथा उसकी अन्न-बलि और इन सबकी
पेय-बलि के अतिरिक्त, चढ़ाया जाएगा।

12 'तुम सातवें महीने के पन्द्रहवें दिन
पवित्र समारोह आयोजित करना। उस दिन
किसी भी प्रकार का कठोर परिश्रम मत करना।
तुम सात दिन तक प्रभु के लिए पर्व मनाना।
13तुम प्रभु को यह अग्नि-बलि, अग्नि में
अर्पित सुखद सुगन्ध चढ़ाना : तेरह बछड़े, दो
मेढ़े और एक-एक वर्षीय चौदह मेमने। ये
निष्कलंक हों। 14तुम उनके साथ चढ़ाई
जानेवाली अन्न-बलि में: प्रत्येक बछड़े के साथ
अढ़ाई किलो, हरएक मेढ़े के साथ दो किलो,
15और प्रत्येक मेमने के साथ एक किलो तेल-
सम्मिश्रित मैदा, 16तथा पाप-बलि के लिए एक
बकरा भी चढ़ाना। यह निरन्तर अग्नि-बलि,
उसकी अन्न-बलि तथा पेय-बलि के अतिरिक्त,
चढ़ाया जाएगा।

17 'दूसरे दिन बारह बछड़े, दो मेढ़े और
एक-एक वर्षीय चौदह निष्कलंक मेमने चढ़ाना।
18इनके अतिरिक्त बछड़ों, मेढ़ों और मेमनों के
साथ, उनकी संख्या के अनुरूप, आदेश के
अनुसार, अन्न-बलि और पेय-बलि चढ़ाना।
19पाप-बलि के लिए एक बकरा भी चढ़ाना।
ये निरन्तर अग्नि-बलि, उसकी अन्न-बलि
और पेय-बलि के अतिरिक्त चढ़ाए जाएंगे।

20 'तीसरे दिन ग्यारह बछड़े, दो मेढ़े, और
एक-एक वर्षीय चौदह निष्कलंक मेमने चढ़ाना।
21इनके अतिरिक्त बछड़ों, मेढ़ों और मेमनों के
साथ, उनकी संख्या के अनुरूप आदेश के
अनुसार, अन्न-बलि और पेय-बलि चढ़ाना।
22पाप-बलि के लिए एक बकरा भी चढ़ाना।
यह निरन्तर अग्नि-बलि, उसकी अन्न-बलि
और पेय-बलि के अतिरिक्त, चढ़ाया जाएगा।

23 'चौथे दिन दस बछड़े, दो मेढ़े और
एक-एक वर्षीय चौदह निष्कलंक मेमने चढ़ाना।
24इनके अतिरिक्त बछड़ों, मेढ़ों और मेमनों के
साथ, उनकी संख्या के अनुरूप आदेश के
अनुसार अन्न-बलि और पेय-बलि चढ़ाना।
25पाप-बलि के लिए एक बकरा भी चढ़ाना।

+ अर्थात् ''अमावस्या''

29 : 1 लेव 23 : 24 **29 : 7** लेव 16 : 29 ; 23 : 27 **29 : 12** नि 23 : 16; 34 : 22; लेव 23 : 33;
व्य 16 : 13; यहेज 45 : 25; यो 7 : 2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यह निरन्तर अग्नि-बलि, उसकी अन्न-बलि
और पेय-बलि के अतिरिक्त, चढ़ाया जाएगा।
26 'पांचवें दिन नौ बछड़े, दो मेढ़े और
एक-एक वर्षीय चौदह निष्कलंक मेमने चढ़ाना।
27इनके अतिरिक्त, बछड़ों, मेढ़ों और मेमनों
के साथ, उनकी संख्या के अनुरूप आदेश के
अनुसार, अन्न-बलि और पेय-बलि चढ़ाना।
28पाप-बलि के लिए एक बकरा भी चढ़ाना।
यह निरन्तर अग्नि-बलि, उसकी अन्न-बलि
और पेय-बलि के अतिरिक्त, चढ़ाया जाएगा।
29 'छठे दिन आठ बछड़े, दो मेढ़े और
एक-एक वर्षीय चौदह निष्कलंक मेमने चढ़ाना।
30इनके अतिरिक्त बछड़ों, मेढ़ों और मेमनों के
साथ, उनकी संख्या के अनुरूप आदेश के
अनुसार, अन्न-बलि और पेय-बलि चढ़ाना।
31पाप-बलि के लिए एक बकरा भी चढ़ाना।
यह निरन्तर अग्नि-बलि, उसकी अन्न-बलि
और पेय-बलि के अतिरिक्त, चढ़ाया जाएगा।
32 'सातवें दिन सात बछड़े, दो मेढ़े और
एक-एक वर्षीय चौदह निष्कलंक मेमने चढ़ाना।
33इनके अतिरिक्त बछड़ों, मेढ़ों और मेमनों के
साथ, उनकी संख्या के अनुरूप आदेश के
अनुसार, अन्न-बलि और पेय-बलि चढ़ाना।
34पाप-बलि के लिए एक बकरा भी चढ़ाना।
यह निरन्तर अग्नि-बलि, उसकी अन्न-बलि
और पेय-बलि के अतिरिक्त चढ़ाया जाएगा।
35 'आठवें दिन एक महा धर्मसमारोह
आयोजित होगा। तुम उस दिन किसी भी प्रकार
का कठोर परिश्रम मत करना; 36वरन् मुझ-प्रभु
को यह अग्नि-बलि, अग्नि में अर्पित सुखद
सुगन्ध चढ़ाना : एक बछड़ा, एक मेढ़ा, और
एक-एक वर्षीय सात नष्कलंक मेमने। 37इनके
अतिरिक्त बछड़े, मेढ़े और मेमनों के साथ,
उनकी संख्या के अनुरूप आदेश के अनुसार,
अन्न-बलि और पेय-बलि चढ़ाना। 38पाप-बलि
के लिए एक बकरा भी चढ़ाना। यह निरन्तर
अग्नि-बलि, उसकी अन्न-बलि और पेय-
बलि के अतिरिक्त, चढ़ाया जाएगा।
39 'अपनी मन्नतों और स्वेच्छा-बलियों के
अतिरिक्त, तुम मुझ-प्रभु को निर्धारित पर्वों पर
अपनी अग्नि-बलि, अन्न-बलि, पेय-बलि
और सहभागिता-बलि में ये ही चढ़ावे
चढ़ाना।'
40* जो आज्ञाएं प्रभु ने मूसा को दी थीं, वे
सब मूसा ने इस्राएली समाज से कह दीं।

स्त्रियों के मन्नत-व्रत मानने के नियम

30 मूसा इस्राएली कुलों के मुखियों से
बोले। उन्होंने कहा, 'जो आज्ञा प्रभु ने
दी है, वह यह है :
2 'यदि कोई पुरुष प्रभु के लिए मन्नत मानता
है, अथवा शपथ खाकर व्रत लेता है** तो वह
अपना वचन भंग नहीं करेगा; वरन् अपने मुंह
से निकले प्रत्येक शब्द के अनुसार कार्य
करेगा। 3यदि कोई स्त्री अपनी किशोरावस्था
में, अपने पिता के घर में रहते हुए प्रभु के लिए
मन्नत मानती है अथवा व्रत लेती है, 4और उसका
पिता उसकी मन्नत को, और लिये गये व्रत को
सुनता है, पर उससे कुछ नहीं कहता है, तो सब
मन्नतों और लिये गये सब व्रतों का पालन करना
अनिवार्य होगा। 5किन्तु जिस दिन उसका पिता
उसके विषय में सुनता है, यदि वह उसी दिन
उसका विरोध करता है, तो उस स्त्री की सब
मन्नतों और लिये गये सब व्रतों का पालन करना
अनिवार्य नहीं होगा। प्रभु उसे क्षमा करेगा;
क्योंकि उसके पिता ने उसकी मन्नतों और व्रतों
का विरोध किया था। 6यदि वह मन्नत अथवा
बिना सोच-विचारकर लिये गये व्रत की
अवधि में किसी पुरुष से विवाह करती है 7और
उसका पति उसकी मन्नत और व्रत को सुनता
है पर जिस दिन उसने सुना, उसी दिन वह
उससे कुछ नहीं कहता, तो सब मन्नतों और
लिये गये सब व्रतों का पालन अनिवार्य होगा।
8किन्तु जिस दिन उसका पति उसके विषय में
सुनता है, यदि वह उसी दिन उसको अनुमति

---

* मूल में अध्याय 30 : 1, ** शब्दशः, 'स्वयं को बंधन से बांधने के लिए शपथ खाता है'।

29 : 35 लेव 23 : 36; यो 7 : 37 **30 : 2** लेव 27 : 2; व्य 23 : 21; शास 11 : 30-35; भज 56 : 12; सभ 5 : 4; मत 5 : 33; भज 50 : 14

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नहीं देता, तो वह उसकी मन्नत अथवा बिना
सोच-विचार कर लिये गये व्रत को रद्द कर देता
है। प्रभु उसे क्षमा करेगा।
9 'किसी विधवा अथवा परित्यक्ता स्त्री के
लिए उसकी अपनी सब मन्नतों और व्रतों का
पालन अनिवार्य होगा।
10 'यदि कोई स्त्री अपने पति के घर में
मन्नत मानती है अथवा शपथ खाकर व्रत लेती
है, 11और उसका पति उसको सुनकर भी कुछ
नहीं कहता, उसका विरोध नहीं करता, तो
उसके लिए सब मन्नतों और लिये गये व्रतों का
पालन अनिवार्य होगा। 12परन्तु जिस दिन उसका
पति उनके विषय में सुनता है, यदि वह उसी
दिन उनको पूर्णतः रद्द कर देता है, तो मन्नत
अथवा व्रत के सम्बन्ध में उसके मुंह से निकले
हुए शब्दों का पालन अनिवार्य नहीं होगा।
उसके पति ने उनको रद्द कर दिया है; अतः प्रभु
उसे क्षमा करेगा।
13 'प्रत्येक मन्नत अथवा स्वयं को उपवास
के द्वारा पीड़ित करने की प्रत्येक बंधनकारी
शपथ का समर्थन उसका पति कर सकता है या
वह उसको रद्द भी कर सकता है। 14यदि उसका
पति अगले दिनों में उससे कुछ नहीं कहता है,
तो वह उसकी मन्नतों तथा लिये गये व्रतों का
समर्थन करता है। जिस दिन उसके पति ने
उनके विषय में सुना था, उसी दिन उसने उससे
कुछ नहीं कहा; इस लिए उसने उनका समर्थन
किया। 15यदि वह सुनने के दिन के पश्चात्
उनको पूर्णतः रद्द करता है, तो वह अपनी पत्नी
के अधर्म का भार स्वयं वहन करेगा।'
16 पति और पत्नी के आपसी सम्बन्ध के
विषय में, पिता और उसकी किशोरी पुत्री के
आपसी सम्बन्ध के विषय में, जो उसके घर में
रहती है, ये संविधियां हैं, जिनकी आज्ञा प्रभु
ने मूसा को दी थी।

मिद्यानियों से प्रतिशोध लेना

31 प्रभु मूसा से बोला, 2'तू मिद्यानियों से
इस्राएली समाज का पूरा-पूरा बदला
ले। इसके पश्चात् तू अपने मृत पूर्वजों में जाकर
मिल जाएगा।' 3मूसा इस्राएली लोगों से बोले,
'तुम अपने में से कुछ पुरुषों को युद्ध के लिए
सशस्त्र करो, जिससे वे मिद्यानियों से प्रभु का
प्रतिशोध लें। 4प्रत्येक इस्राएली कुल में से
एक-एक हजार पुरुष युद्ध के लिए भेजे
जाएंगे।'
5 इस प्रकार इस्राएल के विभिन्न गोत्रों में से
बारह हजार, अर्थात्, प्रत्येक कुल में से एक
हजार, युद्ध के लिए सशस्त्र पुरुष मूसा को सौंप
दिए गए। 6मूसा ने प्रत्येक कुल के इन हजार-
हजार पुरुषों को युद्ध में भेज दिया। इनके साथ
पुरोहित एलआजर का पुत्र पीनहास था। उसके
हाथ में पवित्र-स्थान के पात्र और संकट की
सूचना देने के लिए तुरहियाँ थीं।
7 जो आज्ञा प्रभु ने मूसा को दी थी, उसके
अनुसार इस्राएलियों ने मिद्यानियों के विरुद्ध
युद्ध छेड़ दिया। उन्होंने सब पुरुषों को मार
डाला। 8उन्होंने उन घात किए गए पुरुषों के
साथ मिद्यानियों के इन पांच राजाओं को भी
मार डालाः एवी, रेकम, सूर, हूर और रेबा।
उन्होंने बओर के पुत्र बिल्आम को भी तलवार
से मार डाला। 9इस्राएली लोगों ने मिद्यान देश
की स्त्रियों और उनके बच्चों को बन्दी बना
लिया। उन्होंने उनके सब पशुओं, रेवड़ों और
उनकी समस्त सम्पत्ति को लूट लिया। 10जिन
नगरों में वे निवास करते थे, उनको तथा उनके
शिविरों को आग से जला डाला। 11तत्पश्चात्
वे समस्त लूट के माल और बन्दी बनाए हुए
मनुष्यों तथा पशुओं को लेकर चले गए। 12वे
बन्दियों, पकड़े गए पशुओं और लूट के माल
को लेकर लौटे। वे यर्दन नदी के तट पर यरीहो
के सम्मुख, मोआब के मैदान में डाले गए
पड़ाव में आए और मूसा, पुरोहित एलआजर
और समस्त इस्राएली मंडली के पास गए।
13 मूसा, पुरोहित एलआजर और इस्राएली
मंडली के अगुए उनसे मिलने के लिए पड़ाव
से बाहर निकले। 14मूसा सैनिक-अधिकारियों
पर, सहस्र-नायकों और शत-नायकों पर
नाराज हुए जो युद्ध-अभियान से लौटे थे।

---

31 : 15 व्य 20 : 13-14; 21 : 10; यहो 6 : 21; 1 शम 15 : 9

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

15मूसा ने उनसे कहा, 'क्या तुमने सब स्त्रियों
को जीवित छोड़ दिया है? 16देखो, इन्हीं स्त्रियों
ने बिल्आम की सम्मति से पओर के मामले में
प्रभु के विरुद्ध विश्वासघात करवाया था।
इसलिए प्रभु की मण्डली में महामारी फैली
थी। 17अत: अब इन बच्चों में जो लड़के हैं,
उन्हें तथा उन सब स्त्रियों को, जो पुरुषों के
साथ सहवास कर चुकी हैं, मार डालो। 18परन्तु
जिन लड़कियों ने पुरुषों के साथ सहवास नहीं
किया है, उन्हें अपने लिए जीवित छोड़ दो।
19तुम सात दिन तक पड़ाव के बाहर रहो।
शत्रुओं का वध करनेवाले अथवा मृतक को
स्पर्श करने वाले सब व्यक्ति, तथा तुम्हारे बन्दी
तीसरे और सातवें दिन अपने को शुद्ध करेंगे।
20तुम प्रत्येक वस्त्र, हरएक चर्मवस्त्र, बकरी के
बाल से बनाई गई प्रत्येक वस्तु, और लकड़ी
की सब वस्तुओं को शुद्ध करना।'

21पुरोहित एलआजर ने युद्ध में गए हुए
सैनिकों से कहा, 'यह व्यवस्था की संविधि है
जिसकी आज्ञा प्रभु ने मूसा को दी है: 22तुम
केवल सोना, चांदी, पीतल, लोहा, रांगा और
सीसा, 23अर्थात् तुम उन धातु-वस्तुओं को
आग में डालो, जो उसमें भस्म नहीं होतीं। इस
प्रकार वे शुद्ध हो जाएंगी। फिर भी वे
विशुद्धीकरण के जल से शुद्ध की जाएंगी।
किन्तु जो वस्तुएं आग में जल जाती हैं, उन्हें
तुम जल में डुबाना।

24 'तुम सातवें दिन अपने वस्त्र धोना। तब
तुम शुद्ध हो जाओगे। उसके पश्चात् ही तुम
पड़ाव में प्रवेश कर सकोगे।'

लूट के माल का वितरण

25 प्रभु ने मूसा से कहा, 26 'तू, पुरोहित
एलआजर तथा इस्राएली मंडली के परिवारों के
मुखियों के साथ लूट के माल और युद्ध में
पकड़े गए कैदियों एवं पशुओं की गणना करके
27लूट के माल को दो भागों में विभाजित
करना। तत्पश्चात् एक-एक भाग मण्डली तथा
उन योद्धाओं में बांट देना जो युद्ध में सम्मिलित
हुए थे। 28तू मुझ-प्रभु की भेंट* के लिए उन
सैनिकों से, जो युद्ध-अभियान में गए थे, प्रति
पांच सौ कैदियों, बैलों, गधों और भेड़ों पीछे
एक-एक प्राणी अलग रख लेना। 29ये उनके
आधे भाग में से लिये जाएंगे और मुझ-प्रभु की
भेंट स्वरूप पुरोहित एलआजर को दिए जाएंगे।
30तू इस्राएली लोगों के आधे भाग में से प्रति
पचास कैदियों, बैलों, गधों और भेड़ों, अर्थात्
सब पशुओं में से एक-एक लेना और उन्हें
लेवियों को दे देना, जो मुझ-प्रभु के निवास-
स्थान का उत्तरदायित्व संभाले हुए हैं।' 31जैसी
प्रभु ने मूसा को आज्ञा दी थी, उसी के अनुसार
मूसा तथा पुरोहित एलआजर ने किया।

32 जो वस्तुएं सैनिकों ने लूट में से ली थीं,
उनके अतिरिक्त पकड़े गए पशुओं और मनुष्यों
की संख्या इस प्रकार थी : छ: लाख पचहत्तर
हजार भेड़ें, 33बहत्तर हजार गाय-बैल, 34इकसठ
हजार गधे, 35और मनुष्यों में सब मिलाकर
बत्तीस हजार कन्याएँ भी थीं, जिन्होंने कभी
पुरुष के साथ सहवास नहीं किया था।

36 जो सैनिक युद्ध में गए थे, उनके आधे
भाग में पशुओं और मनुष्यों की यह संख्या थी:
तीन लाख सैंतीस हजार पांच सौ भेड़ें। 37इन
भेड़ों से प्रभु की भेंट के लिए छ: सौ पचहत्तर
भेड़ें थीं। 38छत्तीस हजार गाय-बैल थे, जिनमें
से प्रभु की भेंट के लिए बहत्तर गाय-बैल थे।
39तीस हजार पांच सौ गधे थे, जिनमें से प्रभु
की भेंट के लिए इकसठ गधे थे। 40सोलह हजार
कन्याएँ, जिनमें से प्रभु की भेंट के लिए बत्तीस
कन्याएँ थीं। 41मूसा ने प्रभु के लिए अलग की
गई भेंट पुरोहित एलआजर को दे दी, जैसी
आज्ञा प्रभु ने मूसा को दी थी।

42 यह इस्राएली लोगों का आधा भाग था,
जिसको मूसा ने सैनिकों के भाग से अलग
किया था : 43इस्राएली मंडली के आधे भाग
में तीन लाख सैंतीस हजार पांच सौ भेड़ें थीं।
44छत्तीस हजार गाय-बैल, 45और तीस हजार
पांच सौ गधे थे। 46उनमें सोलह हजार कन्याएं

* मूल में "कर"

31 : 16 गण 25 : 2; प्रक 2 : 14 **31 : 19** गण 19 : 11 **31 : 27** 1 शम 30 : 4-24

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

थीं। [47]मूसा ने इस्राएली लोगों के आधेभाग में
से प्रति पचास मनुष्यों और पशुओं में से एक-
एक को निकाल लिया, और उन्हें प्रभु के निवास-
स्थान का उत्तरदायित्व संभालनेवाले लेवियों
को दे दिया, जैसी प्रभु ने मूसा को आज्ञा दी थी।

48 तब सैनिक-अधिकारी, सहस्त्र-नायक
और शत-नायक, मूसा के पास आए। [49]उन्होंने
मूसा से कहा, 'हम, आपके सेवकों ने, अपने
अधीन सैनिकों की गणना की और उनमें से
एक भी व्यक्ति युद्ध में नहीं मारा गया। [50]जो
सोने के आभूषण हमें प्राप्त हुए हैं, बाजूबन्द,
कड़े, अंगूठियाँ, बालियाँ और हार, उन्हें हम
प्रभु के सम्मुख अपने प्रायश्चित हेतु प्रभु-
अर्पित चढ़ावे में चढ़ाने के लिए लाए हैं।'
[51]मूसा और पुरोहित एलआजर ने उनसे यह
सोना अर्थात् सब आभूषण ग्रहण किए। [52]यह
भेंट का सोना जो सहस्र-नायकों और शत-
नायकों ने प्रभु को चढ़ाया था, तौल में एक सौ
एक्यानबे किलो था।

53 प्रत्येक सैनिक ने अपना-अपना लूट का
माल ले लिया था। [54]किन्तु मूसा और पुरोहित
एलआजर ने सहस्र-नायकों और शत-नायकों
से सोना ग्रहण किया, और वे उसको लेकर
मिलन-शिविर में आए कि वह प्रभु के सम्मुख
इस्राएली समाज के लिए स्मृति-चिह्न बने, और
प्रभु इस्राएलियों की रक्षा करे।

यर्दन नदी के पूर्वीय क्षेत्र का आबंटन

32 गाद और रूबेन के वंशजों के पास
असंख्य पशु थे। उन्होंने यजेर और
गिल्आद के भूमि-भागों को देखा। यह पशुओं
के योग्य चरागाह था। [2]अत: गाद और रूबेन
के वंशज आए। उन्होंने मूसा, पुरोहित एलआजर
और इस्राएली मंडली के अगुओं से कहा,
[3]'अटारोत, दीबोन, यजेर, निम्राह, हेश्बोन,
एलआलेह, सबाम, नबो और बओन के [4]ये
भूमि-भाग, जिनके निवासियों को प्रभु ने
इस्राएली मंडली के सम्मुख पराजित किया था,
पशुओं के योग्य चरागाह हैं। हम, आपके
सेवकों के पास पशु हैं।' [5]उन्होंने आगे कहा,
'यदि हम पर आपकी कृपादृष्टि हो तो ये भूमि-
भाग हमें, आपके सेवकों को, पैतृक अधिकार
के लिए प्रदान किए जाएं। हमें यर्दन नदी के
उस पार मत ले जाइए।'

6 मूसा ने गाद और रूबेन के वंशजों से
कहा, 'तुम्हारे भाई-बन्धु तो युद्ध में जाएंगे और
तुम यहाँ आराम से बैठे रहोगे? [7]जो देश प्रभु
ने इस्राएलियों को दिया है, वहाँ जाने से उनके
हृदय को निरुत्साह क्यों करते हो? [8]जब मैंने
तुम्हारे बाप-दादा को कादेश-बर्नेअ से इस देश
को देखने के लिए भेजा था, तब उन्होंने भी ऐसा
ही किया था। [9]वे एश्कोल घाटी पर चढ़े और
इस देश को देखा। परन्तु जो देश प्रभु ने
इस्राएलियों को दिया है, वहाँ जाने से उनके
हृदय को उन्होंने निरुत्साह किया था। [10]इसलिए
उस दिन प्रभु का क्रोध भड़क उठा और उसने
शपथ खाई, [11]"निस्सन्देह, जो व्यक्ति मिस्र
देश से निकल आए हैं, उनमें बीस वर्ष के तथा
इससे अधिक आयु के व्यक्ति उस देश को नहीं
देख सकेंगे, जिसको देने की शपथ मैंने
अब्राहम, इसहाक और याकूब से खायी थी;
क्योंकि उन्होंने मेरा अनुसरण पूर्णतया नहीं
किया। [12]केवल कनिज्जी यपून्ने का पुत्र कालेब
और नून का पुत्र यहोशुअ उसको देखेंगे;
क्योंकि उन्होंने मेरा, अपने प्रभु का, अनुसरण
पूर्णतया किया है।" [13]प्रभु का क्रोध इस्राएल
के प्रति भड़क उठा था। जब तक वह पीढ़ी नष्ट
नहीं हो गई, जिसने प्रभु की दृष्टि में बुरा कर्म
किया था, तब तक, चालीस वर्ष तक वह उन्हें
निर्जन प्रदेश में भटकाता रहा। [14] अब तुम, जो
पापियों की सन्तान हो, इस्राएल के प्रति प्रभु का
क्रोध और अधिक भड़काने के लिए अपने
बाप-दादा के स्थान पर उठ खड़े हुए हो।
[15]यदि तुम प्रभु का अनुसरण करना छोड़ दोगे,
तो वह इस्राएल को निर्जन प्रदेश में पुन: छोड़
देगा। इस प्रकार तुम इन सब लोगों को नष्ट
कराओगे।'

---

31 : 50 नि 30 : 12. 16; शास 8 : 25 **32 : 1** गण 21 : 32; यहो 13 : 25 **32 : 8** गण 13 : 17-33 **32 : 11** गण 14 : 24

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

16 तब वे मूसा के निकट आए, और कहा,
'हम यहाँ अपनी भेड़-बकरियों के लिए
पशुशाला और अपने बच्चों के लिए नगरों का
निर्माण करेंगे। 17किन्तु जब तक हम अपने
इस्राएली भाई-बन्धुओं को उनके स्थान पर
नहीं ले जाएंगे, तब तक हम स्वयं शस्त्र उठाकर
उनके आगे-आगे उनका नेतृत्व करेंगे। इस देश
के निवासियों के कारण हमारे बच्चे किलाबन्द
नगरों में रहेंगे। 18जब तक इस्राएली समाज के
प्रत्येक व्यक्ति का भूमि पर पैतृक अधिकार
नहीं हो जाएगा, तब तक हम अपने घर नहीं
लौटेंगे। 19हम उनके साथ यर्दन नदी के दूसरे
तट पर अथवा उस पार की भूमि पर पैतृक
अधिकार नहीं करेंगे; क्योंकि हमें इसी ओर,
यर्दन की पूर्व दिशा में पैतृक अधिकार में भूमि
प्राप्त हो चुकी है।'

20 मूसा ने उनसे कहा, 'यदि तुम अपने इस
वचन के अनुसार कार्य करोगे, यदि तुम युद्ध
के लिए प्रभु के सम्मुख आगे-आगे जाने के
लिए शस्त्र उठाओगे 21और तुम्हारा प्रत्येक
सशस्त्र व्यक्ति प्रभु के सम्मुख यर्दन नदी के
उस पार जाएगा, और तब तक नहीं लौट
आएगा जब तक प्रभु हमारे हरएक शत्रु को
अपने सामने से नहीं भगा दे 22और देश प्रभु के
सम्मुख हमारे अधीन नहीं हो जाए; तब ही तुम
प्रभु तथा इस्राएल के प्रति कर्तव्य-मुक्त हो
जाओगे, और प्रभु के सम्मुख इस भूमि पर
तुम्हारा पैतृक अधिकार होगा। 23परन्तु यदि तुम
ऐसा न करोगे, तो प्रभु के प्रति पाप करोगे। इस
बात को जान लो, तुम्हारा पाप तुम्हें ढूंढ़
निकालेगा। 24अपने बच्चों के लिए नगरों का
निर्माण करो, अपने पशुओं के लिए पशु-
शालाएँ बनाओ। किन्तु जो वचन तुम्हारे मुंह से
निकले हैं, उन्हें पूरा करो।'

25 गाद और रूबेन के वंशजों ने मूसा से
कहा, 'जैसी आज्ञा हमारे स्वामी देंगे वैसा ही
हम, आपके सेवक, करेंगे। 26हमारे बच्चे, स्त्रियाँ,
रेवड़ और पशु यहाँ गिलआद के नगरों में रहेंगे।
27किन्तु हम, आपके सेवक, युद्ध के लिए
सशस्त्र व्यक्ति अपने स्वामी के आदेश के
अनुसार प्रभु के सम्मुख लड़ने के लिए यर्दन
नदी के उस पार जाएंगे।'

28 मूसा ने उनके विषय में पुरोहित
एलआजर, यहोशुअ बेन-नून और इस्राएली
कुलों के परिवारों के मुखियों को आदेश दिया।
29मूसा ने उनसे कहा, 'यदि गाद और रूबेन के
वंशज, प्रभु के सम्मुख लड़ाई के लिए उनका
प्रत्येक सशस्त्र व्यक्ति, तुम्हारे साथ यर्दन नदी
के उस पार जाएंगे और वह देश तुम्हारे अधीन
हो जाएगा, तो तुम उन्हें पैतृक अधिकार के हेतु
गिलआद प्रदेश दे देना। 30किन्तु यदि वे तुम्हारे
साथ सशस्त्र होकर उस पार नहीं जाएंगे, तो
तुम्हारे मध्य कनान देश में ही उनका पैतृक
भूमि-भाग होगा।'

31गाद और रूबेन के वंशजों ने उत्तर दिया,
'जैसा प्रभु ने हमसे, आपके सेवकों से, कहा
है वैसा ही हम करेंगे। 32हम सशस्त्र होकर प्रभु
के सम्मुख उस पार, कनान देश में जाएंगे।
किन्तु आप हमें हमारी पैतृक भूमि यर्दन नदी
के इस पार ही दीजिए।' 33अतः मूसा ने गाद
और रूबेन के वंशजों तथा यूसुफ के पुत्र मनश्शे
के आधे वंशजों को ये देश और नगर दिए :
अमोरी जाति के राजा सीहोन का राज्य, बाशान
के राजा ओग का राज्य, उनकी सीमान्तर्गत
भूमि और नगर तथा उनके देश के चारों ओर
के गांव।

34 तब गाद के वंशजों ने दीबोन, अटारोत,
अरोएर, 35अट्रोत-शोपन, यजेर, यागबहाह,
36बेत-निम्राह और बेत-हारन नामक किलाबन्द
नगरों का निर्माण किया। उन्होंने भेड़-बकरियों
के लिए पशु-शालाएँ भी बनाईं। 37रूबेन के
वंशजों ने हेश्बोन, एलआले, किर्याताइम,
38नबो, बअल-सओन (इनके नाम बदल दिए
गए) और सिब्माह नगर बसाए। जिन नगरों का
उन्होंने निर्माण किया, उनके उन्होंने नए नाम
रखे।

39 मनश्शे के पुत्र माकीर के वंशज
गिलआद प्रदेश में गए, और उसको जीत

32 : 20 व्य 3 : 18 **32 : 23** व्य 28 : 45 **32 : 28-32** यहो 1 : 12-15

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लिया। उन्होंने एमोरी जाति को, जो वहाँ रहती
थी, निकाल दिया। 40तब मूसा ने मनश्शे के पुत्र
माकीर के वंशजों को गिलआद प्रदेश दे दिया;
और वे उसमें रहने लगे। 41मनश्शे का पुत्र याईर
गया, और उसने उनके गांवों को जीत लिया।
उसने उनका हब्बोत-याईर नाम रखा। 42नोबह
भी गया, और उसने कनात और उसके गांवों
को जीत लिया। उसने उसका नाम अपने नाम
पर नोबह रखा।

यात्रा के पड़ाव स्थल

33 जब इस्राएली लोग मूसा और हारून के
नेतृत्व में दल-बल सहित मिस्र देश से
निकले, तब उन्होंने इन स्थानों पर पड़ाव
डाला। 2उनके पड़ावों के अनुसार प्रभु के
आदेश से मूसा ने उनके प्रस्थान करने के स्थानों
का नाम लिख लिया। ये उनके प्रस्थान-स्थल
के अनुसार पड़ाव-स्थल हैं।

3 उन्होंने पहिले महीने में रामसेस नगर से
प्रस्थान किया। इस्राएली लोग पहिले महीने के
पन्द्रहवें दिन, अर्थात् पास्का-पर्व के दूसरे दिन,
मिस्र निवासियों के देखते-देखते अपूर्व सफलता
के साथ निकल गए। 4तब मिस्र निवासी अपने
पहिलौठों को, जिन्हें प्रभु ने उनके मध्य मार
डाला था, गाड़ने में लगे थे। प्रभु ने उनके
देवताओं का भी न्याय किया था।

5 इस्राएली लोगों ने रामसेस से प्रस्थान
किया, और सूक्कोत नगर में पड़ाव डाला।
6उन्होंने सूक्कोत से प्रस्थान किया, और एताम
में, जो निर्जन प्रदेश के सीमान्त पर है, पड़ाव
डाला। 7उन्होंने एताम से प्रस्थान किया, और
पी-हहीरोत की ओर मुड़ गए, जो बअल-
सफोन की पूर्व दिशा में है। तत्पश्चात् उन्होंने
मिग्दोल के सम्मुख पड़ाव डाला। 8उन्होंने पी-
हहीरोत से प्रस्थान किया। वे समुद्र को पार कर
निर्जन प्रदेश में आए। उन्होंने इताम के निर्जन
प्रदेश में तीन दिन के मार्ग की दूरी चलने के
पश्चात् मारा में पड़ाव डाला। 9उन्होंने मारा से
प्रस्थान किया। वे एलीम में आए। एलीम में
बारह झरने और सत्तर खजूर के वृक्ष थे। उन्होंने
वहाँ पड़ाव डाला। 10उन्होंने एलीम से प्रस्थान
किया, और लाल सागर के तट पर पड़ाव
डाला। 11उन्होंने लाल सागर से प्रस्थान किया
और सीन के निर्जन प्रदेश में पड़ाव डाला।
12उन्होंने सीन के निर्जन प्रदेश से प्रस्थान किया
और दोपकाह में पड़ाव डाला। 13उन्होंने दोपकाह
से प्रस्थान किया, और आलूश में पड़ाव डाला।
14उन्होंने आलूश से प्रस्थान किया, और
रपीदिम में पड़ाव डाला। वहां लोगों के लिए
पीने का पानी नहीं था। 15उन्होंने रपीदिम से
प्रस्थान किया, और सीनय के निर्जन प्रदेश में
पड़ाव डाला। 16उन्होंने सीनय के निर्जन प्रदेश
से प्रस्थान किया, और किब्रोत-हत्तावाह में
पड़ाव डाला। 17उन्होंने किब्रोत-हत्तावाह से
प्रस्थान किया, और हसेरोत में पड़ाव डाला।
18उन्होंने हसेरोत से प्रस्थान किया और रितमाह
में पड़ाव डाला। 19उन्होंने रितमाह से प्रस्थान
किया, और रिम्मोन-पारस में पड़ाव डाला।
20उन्होंने रिम्मोन-पारस से प्रस्थान किया और
लिबनाह में पड़ाव डाला। 21उन्होंने लिबनाह
से प्रस्थान किया और रिस्साह में पड़ाव डाला।
22उन्होंने रिस्साह से प्रस्थान किया, और
कहेलाताह में पड़ाव डाला। 23उन्होंने कहेलाताह
से प्रस्थान किया, और शापर पर्वत पर पड़ाव
डाला। 24उन्होंने शापर पर्वत से प्रस्थान किया,
और हरादाह में पड़ाव डाला। 25उन्होंने हरादाह
से प्रस्थान किया, और मकहेलोत में पड़ाव
डाला। 26उन्होंने मकहेलोत से प्रस्थान किया,
और ताहत में पड़ाव डाला। 27उन्होंने ताहत से
प्रस्थान किया और तारह में पड़ाव डाला।
28उन्होंने तारह से प्रस्थान किया, और मितकाह
में पड़ाव डाला। 29उन्होंने मितकाह से प्रस्थान
किया, और हशमोनाह में पड़ाव डाला।
30उन्होंने हशमोनाह से प्रस्थान किया, और
मोसेरोत में पड़ाव डाला। 31उन्होंने मोसेरोत से
प्रस्थान किया, और बने-याकन में पड़ाव
डाला। 32उन्होंने बने-याकन से प्रस्थान किया,

---

32 : 41 व्य 3 : 14; शास 10 : 4 **33 : 3** नि 14 : 8 **33 : 5** नि 12 : 37 **33 : 6** नि 13 : 20 **33 : 11** नि 16 : 1; 17 : 1 **33 : 14** नि 19 : 2 **33 : 38** गण 20 : 25; व्य 10 : 6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और होर-हग्गिदगाद में पड़ाव डाला। 33उन्होंने
होर-हग्गिदगाद से प्रस्थान किया और याटबाताह
में पड़ाव डाला। 34उन्होंने याटबाताह से प्रस्थान
किया, और अबरोनाह में पड़ाव डाला। 35उन्होंने
अबरोनाह से प्रस्थान किया, और एस्योन-
गेबेर में पड़ाव डाला। 36उन्होंने एस्योन-गेबेर
से प्रस्थान किया, और सीन (अर्थात् कादेश)
के निर्जन प्रदेश में पड़ाव डाला। 37उन्होंने कादेश
से प्रस्थान किया, और होर पर्वत पर जो एदोम
देश के सीमान्त पर है, पड़ाव डाला।

38 प्रभु के आदेश के अनुसार पुरोहित
हारून होर पर्वत पर गया, और मिस्र देश से
इस्राएली समाज के निकलने के चालीसवें वर्ष
के पांचवें महीने के पहले दिन वहाँ उसकी
मृत्यु हुई। 39जब होर पर्वत पर हारून की मृत्यु
हुई तब वह एक सौ तेईस वर्ष का था।

40 जब इस्राएली आए तब कनानी जाति के
राजा अराद ने, जो कनान देश के नेगेब प्रदेश
में रहता था, उनके विषय में सुना। 41उन्होंने होर
पर्वत से प्रस्थान किया, और सलमोनाह में
पड़ाव डाला। 42उन्होंने सलमोनाह से प्रस्थान
किया, और पूनोन में पड़ाव डाला। 43उन्होंने
पूनोन से प्रस्थान किया, और ओबोत में पड़ाव
डाला। 44उन्होंने ओबोत से प्रस्थान किया,
और मोआब की सीमान्तर्गत इय्ये-अबारीम में
पड़ाव डाला। 45उन्होंने इय्यीम से प्रस्थान किया,
और दीबोन-गाद में पड़ाव डाला। 46उन्होंने
दीबोन-गाद से प्रस्थान किया, और अलमोन-
दिबलाताइम में पड़ाव डाला। 47उन्होंने
अलमोन-दिबलाताइम से प्रस्थान किया और
नबो के सम्मुख, अबारीम की पहाड़ियों पर
पड़ाव डाला। 48उन्होंने अबारीम की पहाड़ियों
से प्रस्थान किया, और मोआब के मैदान में,
यर्दन नदी के तट पर, यरीहो के सम्मुख पड़ाव
डाला। 49उन्होंने यर्दन नदी के तट पर बेत-
यशिमोत से मोआब के मैदान के आबेल-
शिट्टीम तक, पड़ाव डाला।

प्रतिज्ञाबद्ध देश का आबंटन और उसकी सीमाएँ

50 प्रभु मोआब के मैदान में, यर्दन नदी के
तट पर यरीहो के सम्मुख, मूसा से बोला,
51'इस्राएली समाज से यह कहना : जब तुम
यर्दन नदी को पार कर कनान देश में प्रवेश
करोगे, 52तब उस देश के समस्त निवासियों को
अपने सम्मुख से निकाल देना। उनके सब
चित्रित पाषाणों और प्रतिमाओं को तोड़ डालना।
पहाड़ी शिखरों के पूजागृहों को ध्वस्त कर देना।
53उसके पश्चात् तुम उस देश पर अधिकार कर
उसमें बस जाना; क्योंकि उस पर अधिकार
करने के लिए मैंने उसको तुम्हें प्रदान किया है।
54तुम चिट्ठी डालकर उस देश को अपने-अपने
गोत्रों में पैतृक अधिकार के लिए बांट लेना।
तुम बड़े कुल को बड़ा पैतृक भूमि-भाग, और
छोटे कुल को छोटा पैतृक भूमि-भाग देना।
जिस स्थान के लिए जिस व्यक्ति के नाम की
चिट्ठी निकलेगी, वह स्थान उसका होगा। तुम
अपने-अपने पैतृक कुल के अनुसार भूमि पर
पैतृक अधिकार करोगे। 55पर यदि तुम उस देश
के निवासियों को अपने सम्मुख से नहीं निका-
लोगे, तो वे तुम्हारी आंखों में किरकिरी के
सदृश और पसलियों में कांटे के समान चुभेंगे।
जहाँ तुम निवास करोगे, वहां वे तुम्हें तंग
करेंगे। 56तब मैं तुम्हारे साथ वैसा ही व्यवहार
करूंगा, जैसा उनके साथ करना चाहता था।'

34 प्रभु मूसा से बोला, 2'तू इस्राएली समाज
को यह आदेश दे ; तू उनसे कहना :
जब तुम कनान देश में पहुंचोगे तब तुम्हारे क्षेत्र
की सीमा, जो तुम पैतृक अधिकार में प्राप्त
करोगे, यह होगी। कनान देश की सीमाएं इस
प्रकार निर्धारित हैं :

3 'तुम्हारे देश का दक्षिणी भाग एदोम की
सीमाओं पर, सीन के निर्जन प्रदेश से आरम्भ
होगा। तुम्हारी दक्षिणी सीमा, पूर्व में, मृत
सागर† के सीमान्त से आरम्भ होगी 4और वह

---

† अथवा, "लवण सागर"

33 : 40 गण 21 : 1 **33 : 48** यहो 2 : 1; व्य 7 : 1 **33 : 52** नि 23 : 24; व्य 7 : 2-5 **33 : 54** गण 26 : 53
34 : 3 यहो 15 : 1; यहेज 47 : 13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
अकरब्बीम की ऊंचाई की ओर, दक्षिणी दिशा
में मुड़ जाएगी। वह सीन को पार करती हुई
दक्षिण में कादेश-बर्नेअ में समाप्त हो जाएगी।
वहाँ से वह हसर-अद्दार की ओर जाएगी, और
असमोन को पार करेगी। 5तुम्हारी सीमा-रेखा
असमोन से मिस्र की बरसाती नदी* की ओर
जाएगी, और भूमध्यसागर में समाप्त होगी।

6 'तुम्हारी पश्चिमी सीमा महासागर** का
समुद्रतट होगी। यह तुम्हारी पश्चिमी सीमा
होगी।

7 'यह तुम्हारी उत्तरी सीमा होगी : तुम
महासागर से होर पर्वत तक एक रेखा खींचना।
8तत्पश्चात् होर पर्वत से हमात-घाटी के
प्रवेश-द्वार तक एक रेखा खींचना। यह सीमा-
रेखा सदाद पर समाप्त होगी। 9वहाँ से वह
जिफ्रोन तक जाएगी, और हजर-एनन पर
समाप्त होगी। यह तुम्हारी उत्तरी सीमा होगी।

10 'तुम अपनी पूर्वी सीमा हजर-एनन से
शपाम तक निर्धारित करना। 11सीमा-रेखा शपाम
से आइन की पूर्वी दिशा में रिबलाह की ओर
जाएगी। वहाँ से सीमा-रेखा नीचे की ओर
उतरकर किन्नेरेत सागर+ के पूर्वीय तट पर
पहुँचेगी। 12अब सीमा-रेखा यर्दन नदी की
ओर उतरेगी, और उसकी समाप्ति मृत-सागर
में होगी।

'यही तुम्हारा देश होगा, और ये ही उसके
चारों ओर की सीमाएँ होंगी।'

13 मूसा ने इस्राएली समाज को आदेश
दिया, 'यह वह देश है, जिसको तुम चिट्ठी
डालकर पैतृक-अधिकार में प्राप्त करोगे, जिसे
नौ कुलों तथा आधे गोत्र को देने की आज्ञा प्रभु
ने दी है; 14क्योंकि रूबेन के वंशजों, गाद के
वंशजों और मनश्शे के आधे वंशजों को अपने-
अपने पितृ-कुल के अनुसार पैतृक-अधिकार
में भूमि प्राप्त हो चुकी है। 15इन दो कुलों और
आधे गोत्र ने अपना-अपना पैतृक भूमि-भाग
यर्दन नदी के इस पार, यरीहो के सम्मुख, पूर्व
में सूर्योदय की दिशा में, प्राप्त कर लिया है।'

16 प्रभु मूसा से बोला, 17'ये उन पुरुषों के
नाम हैं, जो तुम लोगों के लिए पैतृक अधिकार
हेतु भूमि का आबंटन करेंगे: पुरोहित एलआजर
और नून का पुत्र यहोशुअ। 18तू पैतृक अधिकार
हेतु भूमि का आबंटन करने के लिए प्रत्येक
कुल से उसका अगुआ लेना। 19ये उन अगुओं
के नाम हैं :

यहूदा कुल से यपून्ने का पुत्र कालेब;

20 शिमोन वंशियों के कुल से अम्मीहूद का
पुत्र शमूएल;

21 बिन्यामिन के कुल से किसलोन का पुत्र
एलीदाद;

22 दान वंशियों के कुल का अगुआ याग्ली
का पुत्र बूक्की;

23 यूसुफ के वंशजों में, मनश्शे वंशियों के
गोत्र का अगुआ, एपोद का पुत्र हन्नीएल;

24 एफ्रइम वंशियों के गोत्र का अगुआ,
शिफ्टान का पुत्र कमूएल;

25 जबूलून वंशियों के कुल का अगुआ,
पर्नाख का पुत्र एलीसापन;

26 इस्साकार वंशियों के कुल का अगुआ,
अज्जान का पुत्र पल्टीएल;

27 आशेर वंशियों के कुल का अगुआ,
शलोमी का पुत्र अहीहूद;

28 नफ्ताली वंशियों के कुल का अगुआ,
अम्मीहूद का पुत्र पदहएल;

29 ये ही पुरुष हैं जिन्हें प्रभु ने इस्राएली
समाज में पैतृक अधिकार हेतु कनान देश की
भूमि का आबंटन करने के लिए आज्ञा दी।

लेवीय नगर

35 प्रभु मोआब के मैदान में, यर्दन नदी के
तट पर यरीहो के सम्मुख, मूसा से
बोला, 2'तू इस्राएली समाज को आदेश दे कि
वे अपनी पैतृक अधिकार की भूमि में से
लेवियों को निवास के लिए नगर प्रदान करें।
तुम लेवियों को उन नगरों के आस-पास

---

* अथवा, ''मिस्र की वादी'' या ''घाटी'' ** अर्थात् ''भूमध्यसागर'' + अर्थात् ''गलील की झील''

34 : 13 यहो 14 : 2; गण 26 : 52-56 **35 : 2** लेव 25 : 32-33, गण 18 : 20-24; यहो 21 : 2, यहेज 48 : 13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

चरागाह की भूमि भी देना। 3नगर उनके निवास के लिए होंगे; और चरागाह की भूमि उनके पालतू पशुओं, पशुधन और उनके समस्त जानवरों के लिए होगी। 4नगरों के चरागाह की जो भूमि तुम लेवियों को दोगे, वह नगर के परकोटे के बाहर, चारों ओर चार सौ पचास मीटर* होगी।

5 'नगर के बाहर, पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण में नौ सौ मीटर इस प्रकार नापना कि नगर वर्गाकार क्षेत्र के मध्य में पड़े। यह भूमि उनके नगरों का चरागाह होगी। 6जो नगर तुम लेवियों को दोगे, वे छः शरण-नगर होंगे, जहाँ तुम हत्यारे को भाग जाने की अनुमति दोगे। तुम उन्हें इन नगरों के अतिरिक्त बयालीस नगर और देना। 7इस प्रकार अपने-अपने चरागाह सहित नगर जो तुम लेवियों को दोगे, अड़तालीस होंगे। 8तुम इस्राएली समाज की पैतृक अधिकार की भूमि में से नगर दोगे। अत: बड़े कुलों की भूमि से अधिक नगर लेना, और छोटे कुलों में से कम। प्रत्येक कुल अपनी पैतृक भूमि के अनुपात के अनुसार लेवियों को नगर देगा।'

शरण-नगर

9 प्रभु मूसा से बोला, 10'तू इस्राएली समाज से यह कहना : जब तुम यर्दन नदी को पार कर कनान देश में प्रवेश करोगे, 11तब अपने लिए ऐसे नगर निश्चित करना जो शरण-नगर होंगे, जहाँ वे हत्यारे भाग कर शरण लेंगे, जिन्होंने बिना किसी अभिप्राय के+ हत्या की होगी। 12ये नगर प्रतिशोधी से बचने के लिए तुम्हारे शरण-स्थल होंगे कि जब तक हत्यारा न्याय के लिए इस्राएली मंडली के सम्मुख खड़ा नहीं होता तब तक उसका वध नहीं होगा। 13जो नगर तुम दोगे, वे तुम्हारे छः शरण-नगर होंगे। 14तुम शरण-नगर के लिए तीन नगर यर्दन नदी के इस पार देना और तीन नगर कनान देश के भीतर। 15ये छः नगर इस्राएलियों, विदेशियों तथा उनके मध्य में निवास करने वाले प्रवासियों के लिए शरण-स्थल होंगे कि बिना किसी अभिप्राय से किसी मनुष्य की हत्या करने वाला व्यक्ति वहाँ भाग कर शरण ले सके।

16 'किन्तु यदि उसने लोहे की वस्तु से उस मनुष्य पर ऐसा प्रहार किया कि वह मर गया है, तो प्रहार करनेवाला मनुष्य हत्यारा है। हत्यारे को मृत्यु-दण्ड दिया जाएगा। 17यदि वह अपने हाथ के पत्थर से, जिससे मारने से मृत्यु हो सकती है, उस मनुष्य पर प्रहार करता है; और वह मर जाता है तो प्रहार करनेवाला हत्यारा है। हत्यारे को मृत्यु-दण्ड दिया जाएगा। 18अथवा यदि वह अपने हाथ की लकड़ी से, जिससे मारने से मृत्यु हो सकती है, उस मनुष्य पर प्रहार करता है, और वह मर जाता है तो प्रहार करने वाला हत्यारा है। हत्यारे को मृत्यु-दण्ड दिया जाएगा। 19रक्त का प्रतिशोधी स्वयं हत्यारे का वध करेगा। जब भी वह उससे मिलेगा, वह उसको मृत्युदण्ड देगा।

20 'उसी तरह यदि उसने घृणावश उस मनुष्य को छुरा मारा** है, अथवा घात लगाकर उस पर घातक अस्त्र फेंका है, जिससे वह मर गया है, 21अथवा उसने शत्रुतावश उस पर हाथ से ऐसा प्रहार किया है कि वह मर गया है, तो प्रहार करने वाले व्यक्ति को मृत्यु-दण्ड दिया जाएगा। वह हत्यारा है। जब भी वह रक्त के प्रतिशोधी से मिलेगा, प्रतिशोधी उसका वध कर देगा।

22 'किन्तु यदि उसने शत्रुतावश नहीं वरन् संयोगवश छुरा मारा है, अथवा बिना घात लगाए उस पर घातक अस्त्र फेंका है, 23अथवा ऐसा पत्थर मारा, जिससे मारने से मृत्यु हो सकती है, परन्तु उसे न देख कर, उस पर पत्थर फेंका जिससे वह मर गया, यद्यपि वह उसका शत्रु नहीं था और न ही वह उसको हानि पहुँचाना चाहता था, 24तो इस्राएली मंडली न्याय के इन सिद्धान्तों के अनुसार प्रहार करने वाले व्यक्ति और रक्त-प्रतिशोधी के मध्य न्याय करेगी: 25मंडली रक्त-प्रतिशोधी के हाथ से हत्यारे को मुक्त करेगी। मंडली उसे उस

* मूल में, 'एक हजार हाथ'। + अथवा, ''अनजाने में''। ** अथवा ''मारना-पीटना''

35 : 6 व्य 4 : 41 **35 : 10** व्य 19 : 2 यहो 20 : 2 **35 : 11** नि 21 : 13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शरण-नगर वापस भेज देगी, जहाँ वह भाग
गया था। वह तब तक उसमें निवास करेगा, जब
तक महापुरोहित की मृत्यु न हो जाए, जिसका
पवित्र तेल से अभ्यंजन किया गया है। 26किन्तु
यदि हत्यारा उस शरण-नगर की सीमा के बाहर
कभी जाएगा, जहाँ उसने भागकर शरण ली है,
27और रक्त का प्रतिशोधी उसको शरण-नगर
की सीमा के बाहर पाएगा और प्रतिशोधी
उसकी हत्या करेगा, तो उस पर उसके रक्त का
दोष नहीं लगेगा; 28क्योंकि जब तक महापुरोहित
की मृत्यु न हो जाए तब तक हत्यारे को अपने
शरण-नगर के भीतर ही निवास करना चाहिए।
महापुरोहित की मृत्यु के पश्चात् हत्यारा अपनी
पैतृक भूमि को लौट सकता है।

गवाही और विमोचन के नियम

29 'ये बातें तुम्हारी पीढ़ी से पीढ़ी तक,
तुम्हारे निवास-स्थानों में तुम्हारे लिए न्याय-
सिद्धान्त की संविधि होंगी। 30किसी की हत्या
करने वाले व्यक्ति को गवाहों की गवाही के
आधार पर मृत्यु-दण्ड दिया जाएगा। किन्तु
एक गवाह की गवाही के आधार पर किसी
व्यक्ति को मृत्यु-दण्ड नहीं दिया जाएगा।
31तुम हत्यारे से, जिसको मृत्यु-दण्ड सुनाया
गया है, उसके प्राण के विमोचन के हेतु उद्धार
का शुल्क नहीं लेना। उसे निश्चय ही मृत्यु-
दण्ड दिया जाएगा। 32तुम उस व्यक्ति से भी
उद्धार का शुल्क मत लेना, जिसने शरण-नगर
में भाग कर शरण ली है, और जो महापुरोहित
की मृत्यु के पूर्व ही अपनी भूमि को लौटकर
वहाँ निवास करना चाहता है। 33जिस देश में
तुम रहते हो, उसको दूषित मत करना; क्योंकि
हत्या का रक्त देश को दूषित करता है, और
देश के लिए किसी भी प्रकार प्रायश्चित नहीं
किया जा सकता है, केवल उस व्यक्ति के
रक्त से जिसने हत्या की है। 34जिस देश में
तुम रहते हो, और जिसके मध्य मैं निवास
करता हूं, उसको तुम अशुद्ध मत करना क्योंकि
मैं-प्रभु इस्राएली समाज के मध्य निवास
करता हूं।'

उत्तराधिकारिणी कन्या के विवाह का नियम

36 यूसुफ के वंशजों में से गिलआद के
वंश के विभिन्न परिवारों के मुखिया
मूसा के पास आए। गिलआद माकीर का पुत्र
और मनश्शे का पोता था। उन्होंने मूसा और
इस्राएली समाज के परिवारों के मुखियों के
सम्मुख कहा, 2'हे हमारे स्वामी, प्रभु ने आपको
आज्ञा दी थी कि आप यह देश चिट्ठी डालकर
पैतृक अधिकार के लिए इस्राएलियों को दे दें।
प्रभु ने आपको यह भी आज्ञा दी थी कि आप
हमारे भाई सलापहद की पैतृक भूमि उसकी
पुत्रियों को सौंप दें। 3किन्तु यदि वे इस्राएली
कुलों के अन्य पुत्रों से विवाह करेंगी, तो उनकी
पैतृक भूमि हमारे कुल की पैतृक भूमि से अलग
की जाएगी, और वह उस कुल में सम्मिलित
की जाएगी, जिसमें उनका विवाह होगा। इस
प्रकार हमारा पैतृक भूमि-भाग कम हो जाएगा।
4जब इस्राएलियों का जुबली वर्ष आएगा, तब
सलापहद की पुत्रियों की पैतृक भूमि उस कुल
की पैतृक भूमि में सम्मिलित कर ली जाएगी,
जिसमें उनका विवाह होगा। उनकी पैतृक
भूमि हमारे पिता के कुल की पैतृक भूमि में से
अलग की जाएगी।'

5 मूसा ने प्रभु की आज्ञा के अनुसार
इस्राएली समाज को आदेश दिया, 'यूसुफ-
वंशीय कुल न्यायोचित बात कहता है। 6प्रभु ने
सलापहद की पुत्रियों के सम्बन्ध में यह आज्ञा
दी है : जो पुरुष उनकी दृष्टि में अच्छे हैं, वे
उनसे विवाह करें; किन्तु वे अपने पिता के कुल
के गोत्र में ही विवाह करेंगी। 7इस्राएली समाज
की पैतृक भूमि एक कुल से दूसरे कुल में
हस्तान्तरित नहीं होगी। प्रत्येक इस्राएली व्यक्ति
अपनी पैतृक कुल की भूमि से सम्बद्ध रहेगा।
8प्रत्येक कन्या, जो किसी भी इस्राएली कुल में
पैतृक भूमि की उत्तराधिकारिणी होगी, वह
अपने पिता के कुल के ही गोत्र के पुरुष की
पत्नी बनेगी, जिससे प्रत्येक इस्राएली पुरुष

---

35 : 30 व्य 17 : 6; 19 : 15 35 : 33 उत 9 : 6 35 : 34 नि 29 : 45-46 36 : 2 गण 27 : 7 36 : 4 लेव 25 : 1

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अपने पूर्वजों की भूमि का उत्तराधिकारी बना
रहे। [9]इस कारण पैतृक भूमि एक कुल से दूसरे
कुल में हस्तान्तरित नहीं होगी। प्रत्येक इस्राएली
कुल अपनी पैतृक भूमि से सम्बद्ध रहेगा।'
10 जैसी आज्ञा प्रभु ने मूसा को दी थी, वैसा
ही सलापहद की पुत्रियों ने किया। [11]इसलिए
सलापहद की पुत्रियों ने, अर्थात् महला, तीर्सा,
हाग्ला, मिल्का और नोआ ने अपने चाचाओं के
पुत्रों से विवाह कर लिया। [12]उनका विवाह
यूसुफ के पुत्र मनश्शे-वंशीय गोत्र में हुआ,
और इस प्रकार उनकी पैतृक भूमि उनके पिता
के गोत्र के कुल में ही बनी रही।
13 जो आज्ञाएं और न्याय-सिद्धान्त प्रभु ने
मूसा के द्वारा इस्राएली समाज को मोआब के
मैदान में, यर्दन नदी के किनारे यरीहो के
सम्मुख दिए, वे ये ही हैं।

व्यवस्था-विवरण

पुस्तक परिचय

व्यवस्था-विवरण ग्रंथ पवित्र बाइबिल के आरंभिक **"पंचग्रंथ"** की पांचवीं पुस्तक है। उसे मूसा के उपदेशों, भाषणों तथा वार्ताओं एवं निर्देशों के "विवरण" (व्य 17 : 18) के रूप में प्रस्तुत किया गया है। ग्रंथकार के अनुसार मूसा ने ये प्रवचन इस्राएलियों को उस समय दिये थे, जब वे निर्जन प्रदेश की लम्बी यात्रा के पश्चात् मोआब देश में डेरा डाले हुए थे, और कनान देश पर कब्जा करने के लिए उस में प्रवेश करने वाले थे।

व्यवस्था-विवरण में अनेक महत्वपूर्ण बातें संकलित हैं :

(1) मूसा बीते चालीस वर्षों में घटित महान घटनाओं को स्मरण करते हैं, और इस्राएलियों को याद दिलाते हैं कि परमेश्वर किस प्रकार निर्जन प्रदेश में उनका मार्गदर्शन करता रहा। अतः उन्हें परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी तथा निष्ठावान होना चाहिए।

(2) मूसा दस आज्ञाओं का पुनरावलोकन करते हैं, और पहली आज्ञा के अर्थ पर विशेष जोर डालते हैं। वह इस्राएलियों का आवाहन करते हैं कि वे केवल प्रभु परमेश्वर की आराधना-भक्ति करें।

तत्पश्चात् वह अन्य विधि-निषेध के नियमों का पुनरीक्षण करते हैं, जिनसे इस्राएलियों का जीवन शासित होगा, जब वे कनान देश में बस जायेंगे। वे एक ही व्यवस्था के अधीन एकीकृत आराधना-समूह होंगे।

व्यवस्था-विवरण की यह केन्द्रीय आचार-संहिता (अध्य. 12-26) राजा योशियाह के राज्यकाल में धर्मसुधारों का आधार बनी (2 रा 22 : 8)।

(3) मूसा इस्राएलियों को उस विधान का भी स्मरण दिलाते हैं, जो परमेश्वर ने उनके साथ स्थापित किया है। मूसा इस्राएलियों को आदेश देते हैं कि वे विधान के अनुबन्धों का पालन प्रतिबद्धता से करें।

(4) यहोशुअ को यह दायित्व सौंपा जाता है कि वह मूसा के पश्चात् परमेश्वर के निज लोगों का नेतृत्व करे।

परमेश्वर के सत्य-प्रेम के सम्बन्ध में गीत गाने तथा इस्राएली समाज को अंतिम आशीर्वाद देने के पश्चात् मूसा का निधन हो जाता है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

व्यवस्था-विवरण ग्रंथ का केन्द्रीय विचार यह है कि परमेश्वर अपने चुने हुए इस्राएली लोगों से प्रेम करता है। वे इसके योग्य नहीं थे; फिर भी उसने उन्हें बचाया और उन्हें आशिष दी। इस्राएली कौम को यह स्मरण रखना होगा और उन्हें भी अपने प्रभु परमेश्वर से प्रेम करना और उसकी आज्ञा का पालन करना होगा, ताकि वे जीवित रहें और परमेश्वर की आशिष उन पर निरंतर बरसती रहे। पुस्तक का यह दृष्टिकोण अगले "ऐतिहासिक ग्रन्थों" (अर्थात् यहोशुअ, शासक, 1-2 शमूएल तथा 1-2 राजा) की रचना-शैली में भी दिखाई देगा।

व्यवस्था-विवरण ग्रंथ के अध्याय 6 के पद 4-6 अत्यन्त महत्वपूर्ण माने जाते हैं। ये इस्राएलियों की दैनिक प्रार्थना के आरंभिक शब्द हैं और भक्तिमय सदाचरण पर जोर देते हैं : "अपने प्रभु परमेश्वर को अपने सम्पूर्ण हृदय और अपनी सम्पूर्ण शक्ति से प्रेम करना"।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

मूसा का पहला प्रवचन	1 : 1—4 : 49
मूसा का दूसरा प्रवचन	5 : 1—26 : 19
(क) दस आज्ञाएं	5 : 1—10 : 22
(ख) व्यवस्था के अन्य नियम और चेतावनियां	11 : 1—26 : 19
कनान देश में प्रवेश करने के निर्देश	27 : 1—28 : 68
मूसा का तीसरा प्रवचन : विधान (वाचा) का पुनरीक्षण	29 : 1—30 : 20
मूसा के अंतिम वचन	31 : 1—33 : 29
मूसा की मृत्यु	34 : 1-12

मूसा इस्राएलियों को प्रभु की प्रतिज्ञा का स्मरण कराते हैं

1 जो बातें मूसा ने समस्त इस्राएली समाज से
यर्दन नदी के उस पार के निर्जन प्रदेश में
कहीं, वे ये हैं। वह स्थान सूफ के सम्मुख
अराबाह में, पारन और तोफल, लाबान, हसेरोत
और दी-जाहब के मध्य में है। 2होरेब+ पर्वत
से कादेश-बर्नेअ तक की यात्रा सेईर पर्वत के
मार्ग से होकर ग्यारह दिन की है। 3जो बातें
इस्राएली समाज से कहने की आज्ञा प्रभु ने मूसा
को दी थी, उसके अनुसार मूसा ने वे बातें उनसे
चालीसवें वर्ष के ग्यारहवें महीने के पहले दिन
कहीं। 4जब मूसा ने एमोरी जाति के राजा
सीहोन को, जो हेश्बोन में रहता था, और
बाशान के राजा ओग को, जो अश्तारोत तथा
एद्रेई में रहता था, पराजित किया, तब उसके
पश्चात् 5मोआब देश में, यर्दन नदी के उस पार
उन्होंने स्वयं इस व्यवस्था की व्याख्या करना
आरम्भ किया। मूसा ने कहा :
6 'हमारा प्रभु परमेश्वर होरेब पर्वत पर
हमसे बोला था। उसने कहा था, "तुम इस
पर्वत पर पर्याप्त समय तक ठहर चुके हो।
7अत: आगे बढ़ो। तुम प्रस्थान करो; और
एमोरी जाति के पहाड़ी प्रदेश में, और अराबाह
में निवास करनेवालों के पास, पर्वतीय क्षेत्र
में, निचले मैदान में, नेगेब प्रदेश में और समुद्र-
तट पर, कनानी जाति के देश और लबानोन में,
महानदी तक, अर्थात् फरात नदी तक जाओ।
8देखो, मैंने तुम्हारे सम्मुख यह देश प्रस्तुत
किया है। जो देश देने की शपथ, मैं-प्रभु ने
तुम्हारे पूर्वज अब्राहम, इसहाक और याकूब से
खाई थी कि मैं उन्हें तथा उनके पश्चात् उनके
वंशजों को वह देश दूंगा, उसमें जाओ और उस
पर अधिकार करो।"

शासकों की नियुक्ति

9 'उस समय मैंने तुमसे कहा था, "मैं

+ अर्थात् 'सीनय'।

1 : 4 गण 21 : 24 **1 : 8** उत 12 : 7; 15 : 18 ; 28 : 13 **1 : 9** नि 18 : 18 ; गण 11 : 14

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अकेला तुम्हारा भार नहीं संभाल सकता। [10]तुम्हारे प्रभु परमेश्वर ने तुम्हें असंख्य बना दिया है। देखो, आज तुम आकाश के तारों के समान असंख्य हो। [11]तुम्हारे पूर्वजों का प्रभु परमेश्वर अपने वचन के अनुसार तुम्हें हजार गुना और बढ़ाए तथा तुम्हें आशिष दे। [12]मैं कैसे अकेले तुम्हारे बोझ को, तुम्हारे भार को वहन कर सकता हूं, तुम्हारे झगड़ों को सह सकता हूं? [13]अत: तुम अपने-अपने कुल में से बुद्धिमान, समझदार और अनुभवी व्यक्ति चुनो। मैं उन्हें तुम्हारे नेता नियुक्त करूंगा।'' [14]तुमने मुझे यह उत्तर दिया था, ''जो बात आपने हमसे कही है, उसको करना अच्छा है।'' [15]इसलिए मैंने तुम्हारे कुलों के मुखिया, बुद्धिमान और अनुभवी व्यक्ति लिये और उन्हें तुम्हारे ऊपर नेता नियुक्त किये : हजार-हजार, सौ-सौ, पचास-पचास और दस-दस के समूह पर नायक, और तुम्हारे कुलों के लिए शास्त्री* भी नियुक्त किये। [16]मैंने उस समय तुम्हारे शासकों को आदेश दिया था, ''तुम अपने भाई-बहिनों का मुकदमा निष्पक्ष रूप से सुनना, तथा उनके मध्य अथवा किसी सजातीय व्यक्ति और प्रवासी व्यक्ति के मध्य धार्मिकता से न्याय करना। [17]तुम मुंह देख कर न्याय मत करना। बड़े और छोटे मनुष्य का मुकदमा समान भाव से सुनना। तुम किसी भी व्यक्ति से मत डरना; क्योंकि न्याय परमेश्वर का है। यदि तुम्हें कोई मुकदमा कठिन प्रतीत हो, तो तुम उसको मेरे पास लाना। मैं उसको सुनूंगा।'' [18]जो-जो कार्य तुम्हें करने थे, उन सबको करने का आदेश मैंने उस समय तुम्हें दिया था।

गुप्तचरों का कादेश-बर्नेअ भेजा जाना

19 'हमने होरेब पर्वत से प्रस्थान किया, और हम उस विशाल तथा भयानक निर्जन प्रदेश में गए, जो तुमने देखा है। जैसी आज्ञा हमारे प्रभु परमेश्वर ने दी थी, उसके अनुसार हम एमोरी पहाड़ी प्रदेश के मार्ग से होते हुए कादेश-बर्नेअ के मरूद्यान तक आए। [20]मैंने तुमसे कहा था, ''तुम एमोरी पहाड़ी प्रदेश तक आ गए हो। उसको हमारा प्रभु परमेश्वर हमें दे रहा है। [21]देखो, तुम्हारे प्रभु परमेश्वर ने तुम्हारे सम्मुख यह देश प्रस्तुत किया है। जाओ, और अपने पूर्वजों के प्रभु परमेश्वर के वचन के अनुसार उस पर अधिकार कर लो। मत डरो, और न निराश हो।'' [22]तब तुम-सब मेरे पास आए थे। तुमने कहा था, ''हम अपने आगे कुछ पुरुषों को भेज दें। वे हमारे लिए उस देश की छान-बीन करें, और लौटकर हमें उस मार्ग की सूचना दें जिससे हमें वहां जाना चाहिए। वे हमें उन नगरों का पता दें जिनमें हमें प्रवेश करना होगा।'' [23]यह बात मुझे अपनी दृष्टि में भली लगी थी। अत: मैंने प्रत्येक कुल से एक पुरुष, अर्थात् तुममें से बारह पुरुष लिये। [24]वे आगे बढ़े और पहाड़ी प्रदेश पर चढ़ गए। उन्होंने एश्कोल की घाटी में प्रवेश किया, और उस देश का भेद ले लिया। [25]वे अपने-अपने हाथ में उस देश के फल लेकर हमारे पास लौटे थे। वे हमारे पास यह सूचना भी लाए थे। उन्होंने कहा था, ''जो देश हमारा प्रभु परमेश्वर हमें दे रहा है, वह अच्छा है।'' [26]किन्तु तुमने वहां जाना अस्वीकार कर दिया। तुमने अपने प्रभु परमेश्वर के वचन से विद्रोह किया। [27]तुमने अपने तम्बुओं में बक-बक की और कहा, ''प्रभु हमसे बैर करता है, इसलिए वह हमें मिस्र देश से निकालकर लाया है कि एमोरी जाति के हाथ में हमें सौंप दे, और इस प्रकार हमें नष्ट कर दे। [28]हम कहां जा रहे हैं? स्वयं हमारे भाइयों ने हमारा हृदय निरुत्साह कर दिया है। वे कहते हैं, 'वहां के लोग हमसे अधिक ऊंचे और अधिक बलवान हैं। उनके नगर विशाल हैं, जिनके गगन-चुम्बी परकोटे हैं। इसके अतिरिक्त हमने वहां दानव+ के वंशजों को भी देखा है।'''

---

* मूल शब्द का अर्थ, 'लिपिक' है जो शासकों, मुखियों के साथ रहकर उनकी कार्यवाही को लिपिबद्ध करते थे।
+ मूल में ''अनक'', देखिए, गणना 13 : 33

1 : 10 उत 15 : 5 **1 : 17** लेव 19 : 15; नीति 24 : 23; नि 18 : 26 **1 : 21** गण 13 : 30 ; यहो 1 : 9 **1 : 26** इब्र 3 : 16 **1 : 28** गण 13 : 33 ; उत 6 : 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

[29]तब मैंने तुमसे कहा था, "तुम उनसे मत डरो, और न आतंकित हो। [30]तुम्हारा प्रभु परमेश्वर, जो तुम्हारे आगे-आगे चलता है, स्वयं तुम्हारे लिए युद्ध करेगा; जैसा उसने तुम्हारी आंखों के सामने मिस्र देश में किया था। [31]तुमने निर्जन प्रदेश में भी यही देखा था कि जैसे मनुष्य अपने बच्चे को गोद में उठाकर ले जाता है, वैसे ही तुम्हारा प्रभु परमेश्वर तुम्हें ले गया। जब तक तुम इस स्थान पर नहीं पहुंच गए, तब तक वह तुम्हें उन सब मार्गों पर उठाकर ले गया जिन पर तुम गए थे। [32]इस वचन के होते हुए भी तुमने अपने प्रभु परमेश्वर पर विश्वास नहीं किया था, [33]जो मार्ग में तुम्हारे आगे-आगे गया था कि तुम्हारे लिए तम्बू गाड़ने के लिए स्थान ढूंढ़े। वह रात में अग्नि तथा दिन में मेघ में होकर तुम्हें वह मार्ग दिखाता रहा, जिस पर तुम्हें चलना चाहिए।"

इस्राएल का दण्डित होना

34 'प्रभु ने तुम्हारी बातें सुनी थीं, और वह क्रुद्ध हुआ था। तब उसने शपथ खाई, [35]"जो देश तुम्हारे पूर्वजों को प्रदान करने की शपथ मैंने खाई है, उस उत्तम देश को इस बुरी पीढ़ी का एक भी व्यक्ति नहीं देख सकेगा ; [36]केवल यपून्ने का पुत्र कालेब उसको देखेगा। जिस देश की भूमि पर उसने पैर रखे हैं, वह मैं उसे तथा उसके वंशजों को प्रदान करूंगा; क्योंकि उसने मुझ-प्रभु का पूर्णतः अनुसरण किया है।" [37]प्रभु तुम्हारे कारण मुझ पर भी क्रुद्ध हुआ था। उसने कहा था, "तू भी वहां नहीं जा सकेगा; [38]वरन् तेरा सेवक* नून का पुत्र यहोशुअ वहां प्रवेश करेगा। तू उसको प्रोत्साहन देना; क्योंकि उसके द्वारा ही इस्राएली उस देश को अपने पैतृक अधिकार में करेंगे। [39]इसके अतिरिक्त तुम्हारे छोटे-छोटे बच्चे, जिनके विषय में तुमने कहा था कि वे लूट लिये जाएंगे और तुम्हारे वे बालक, जो अभी भली-बुरी बातों को नहीं जानते, वे वहां प्रवेश करेंगे। मैं उन्हें ही उस देश को प्रदान करूंगा, और वे उस पर अधिकार करेंगे। [40]पर तुम, लौटो और अकाबा की खाड़ी के मार्ग से निर्जन प्रदेश की ओर प्रस्थान करो।"

इस्राएलियों की पराजय

41 'तब तुमने मुझे यह उत्तर दिया था, "हमने प्रभु के प्रति पाप किया है। हम पहाड़ी प्रदेश पर चढ़ेंगे, और युद्ध करेंगे ; जैसी प्रभु ने हमें आज्ञा दी है।" अतः सब मनुष्यों ने अपने-अपने अस्त्र-शस्त्र बांध लिये। उन्होंने सोचा था कि पहाड़ी प्रदेश पर चढ़ना सरल कार्य है। [42]परन्तु प्रभु ने मुझ से कहा, "तू उनसे यह कह: पहाड़ी प्रदेश पर मत चढ़ो, और न युद्ध ही करो; क्योंकि मैं तुम्हारे मध्य नहीं हूं। ऐसा न हो कि तुम अपने शत्रुओं से पराजित हो जाओ।" [43]मैंने तुमसे कहा, परन्तु तुमने मेरी बात नहीं सुनी। तुमने प्रभु के वचन से विद्रोह किया। तुम ढीठ बन गए, और पहाड़ी प्रदेश पर चढ़ गए। [44]तब उस पहाड़ी प्रदेश में निवास करनेवाले एमोरी जाति के लोग तुम्हारा सामना करने के लिए निकल आए। उन्होंने मधुमक्खी के सदृश तुम्हारा पीछा किया, और सेईर देश के होर्मा नगर तक तुम्हें खदेड़ दिया। [45]तुम लौटे थे। तुम प्रभु के सम्मुख रोए थे। परन्तु प्रभु ने तुम्हारी बात नहीं सुनी, और न तुम्हारी ओर ध्यान ही दिया। [46]अतः तुम्हें कादेश मरूद्यान में अनेक दिन तक रहना पड़ा। वस्तुतः तुमने बहुत-बहुत दिन तक वहां निवास किया।

एसाव और मोआब से इस्राएलियों के सम्बन्ध

2 'तत्पश्चात् हम मुड़े थे। हमने अकाबा की खाड़ी के मार्ग से निर्जन प्रदेश की ओर प्रस्थान किया था, जैसा प्रभु मुझ से बोला था। हम अनेक दिन तक सेईर पर्वत के चारों ओर घूमते रहे। [2]तब प्रभु ने मुझसे कहा, [3]"तुम इस पहाड़ी प्रदेश के चारों ओर पर्याप्त समय तक घूम चुके। अब तुम उत्तर की ओर बढ़ो। [4]तू लोगों

---

* मूल इब्रानी मुहावरा, "जो तेरे सम्मुख खड़ा रहता है।"

1 : 32 नि 19 : 4; यश 63 : 16 ; हो 11 : 3 ; प्रे 13 : 18 **1 : 33** नि 13 : 21 ; गण 10 : 33 **1 : 35** गण 14 : 22; भज 95 : 11 ; इब्र 3 : 18 **1 : 37** गण 20 : 12 ; व्य 3 : 26 ; 4 : 21 ; 34 : 4 **1 : 40** गण 14 : 25 **1 : 43** गण 14 : 44-45 **1 : 44** भज 118 : 12 **2 : 1** गण 21 : 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

को यह आदेश दे : अब तुम सेईर-निवासियों,
अर्थात् अपने भाई-बन्धु एसाव वंशियों की
सीमा से होकर जाओगे। वे तुमसे डर जाएंगे।
किन्तु तुम अत्यन्त सावधान रहना। 5उन्हें युद्ध
के लिए मत उकसाना; क्योंकि मैं तुम्हें उनकी
भूमि का एक टुकड़ा भी नहीं दूंगा; नहीं, पैर का
तलवा रखने तक के लिए भी भूमि नहीं दूंगा।
मैंने एसाव को सेईर पर्वत पैतृक अधिकार के
लिए प्रदान किया है। 6तुम रुपया देकर उनसे
भोजन-सामग्री खरीदना और तब तुम खाना।
इसी प्रकार तुम रुपया देकर उनसे पेय-जल
खरीदना और तब तुम पीना। 7मैंने, तुम्हारे प्रभु
परमेश्वर ने तुम्हारे हाथों से किए गए सब कार्यों
पर आशिष दी है। मैं इस विशाल निर्जन प्रदेश
में यात्रा के समय तुम्हारी देख-भाल करता
आया हूं। मैं तुम्हारा प्रभु-परमेश्वर, इन चालीस
वर्षों की अवधि में तुम्हारे साथ रहा हूं, और
तुम्हें किसी वस्तु का अभाव नहीं हुआ।''
8अत: हम सेईर-निवासियों, अपने भाई-बन्धु
एसाव वंशियों से दूर, अराबाह, ऐलोत और
एस्योन-गेबर के मार्ग से दूर चले गए थे।

'हम आगे बढ़े थे। हमने मोआब के निर्जन
प्रदेश की ओर प्रस्थान किया था। 9तब प्रभु ने
मुझसे कहा था, ''मोआब को मत सताना, और
न युद्ध के लिए उकसाना; क्योंकि मैं तुझे
अधिकार करने के लिए उसकी भूमि का एक
टुकड़ा भी नहीं दूंगा। मैंने लोट के वंशजों को
आर नगर पैतृक-अधिकार के लिए प्रदान
किया है।'' 10(इनके पहले एमी जाति के लोग
वहां रहते थे। वे बलवान और संख्या में बहुत
थे। वे अनक वंशियों के सदृश कद में ऊंचे थे।
11वे अनक वंशियों के समान रपाई नाम से
विख्यात् हैं, किन्तु मोआबी जाति के लोग उन्हें
एमी कहते हैं। 12इनके पहले होरी जाति के
लोग सेईर में रहते थे, परन्तु एसाव वंशियों ने
उन्हें निकाल दिया। उन्होंने वहां उनको नष्ट
कर दिया, और उनके स्थान पर स्वयं बस गए;
जैसा इस्राएली समाज ने अपने अधिकृत देश
में किया जिसको प्रभु ने उन्हें प्रदान किया
था।) 13प्रभु ने कहा था, ''अब उठो, और जेरद
नदी को पार करो।'' अतएव हमने जेरद नदी
पार की थी।

यर्दन नदी के उस पार पहुंचना

14'जब हमने कादेश-बर्नेअ मरूद्यान से
प्रस्थान किया था, तब से जेरद नदी को पार
करने तक अड़तालीस वर्ष व्यतीत हुए हैं। इस
प्रकार सम्पूर्ण एक पीढ़ी, अर्थात् युद्ध के योग्य
पुरुष, हमारे पड़ाव के मध्य से समाप्त हो चुके
हैं; जैसी शपथ प्रभु ने उनसे खायी थी। 15जब
तक वे सब समाप्त नहीं हो गए तब तक प्रभु
का हाथ पड़ाव के मध्य से उनको समाप्त करने
के लिए उनके विरुद्ध उठा रहा। 16जब युद्ध के
योग्य सब पुरुष समाप्त हो गए और इस्राएली
लोगों के मध्य मर गए, 17तब प्रभु मुझसे बोला
था, 18''तू आज आर नगर के निकट मोआब
की सीमा पार करना। 19जब तू अम्मोन वंशियों
की सीमा पर पहुंचेगा तब उन्हें मत सताना, और
न युद्ध के लिए उन्हें उकसाना; क्योंकि मैं तुझे
अधिकार करने के लिए अम्मोन वंशियों की
भूमि का एक टुकड़ा भी नहीं दूंगा। मैंने लोट
के वंशजों को उसे पैतृक-अधिकार के लिए
प्रदान किया है।'' 20(वह भी रपाई देश के नाम
से विख्यात है। इनके पहले रपाई जाति के लोग
वहां रहते थे, किन्तु अम्मोन वंशीय उन्हें
जम्जूम्मी कहते हैं। 21वे बलवान और संख्या
में बहुत थे। वे अनक वंशियों के सदृश कद में
ऊंचे थे। किन्तु प्रभु ने अम्मोनियों के सामने ही
उन्हें नष्ट कर दिया। उन्होंने उन्हें निकाल दिया,
और वे उनके स्थान पर स्वयं बस गए। 22ऐसा
ही प्रभु ने सेईर-निवासी एसाव वंशियों के लिए
किया था। उसने उनके सामने ही होरी जाति को
नष्ट कर दिया। उन्होंने उन्हें निकाल दिया, और
वे उनके स्थान पर स्वयं बस गए; और आज
तक बसे हुए हैं। 23इसी प्रकार गांवों में रहने
वाली अव्वी जाति के लोगों को, जो गाजा तक
फैले थे, कप्तोर देश से बाहर निकले हुए

---

2 : 5 उत 36 : 8 **2 : 7** व्य 8 : 2; नह 9 : 19–21 **2 : 9** उत 19 : 36 **2 : 10** उत 14 : 5; व्य 1 : 28 **2 : 14** गण 14 : 33 **2 : 19** उत 19 : 38 **2 : 23** यहो 13 : 3

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कप्तोरी* लोगों ने नष्ट कर दिया, और स्वयं
उनके स्थान पर बस गए।) 24 "उठो। प्रस्थान
करो। अर्नोन नदी को पार करो। देखो, मैंने
हेश्बोन के राजा, और एमोरी जातीय सीहोन
को तथा उसके देश को तुम्हारे हाथ में सौंप
दिया है। उस पर अधिकार करना आरम्भ करो।
उसे युद्ध के लिए उकसाओ। 25 मैं आज आकाश
के नीचे रहने वाले सब लोगों में तुम्हारा आतंक
और भय उत्पन्न करूंगा। वे तुम्हारे आगमन की
सूचना सुनकर कांपने लगेंगे; वे तुम्हारे कारण
आतंकित होंगे।"

राजा सीहोन को पराजित करना

26 'अत: मैंने कदेमोत के निर्जन प्रदेश से
हेश्बोन के राजा सीहोन के पास दूत भेजे थे।
उनके द्वारा यह शान्ति-सन्देश कहा था, 27 "मुझे
अपने देश में से जाने दीजिए। मैं सड़क-सड़क
चला जाऊंगा; मैं न दाहिनी ओर न बायीं ओर
मुड़ूंगा। 28 आप रुपया लेकर मुझे भोजन-
सामग्री बेचना, और तब मैं खाऊंगा। इसी
प्रकार आप रुपया लेकर मुझे पेय-जल देना,
और तब मैं पीऊंगा। मुझे पैदल ही जाने दीजिए,
29 जैसा सेईर-निवासी एसाव वंशियों और
आर-निवासी मोआब वंशियों ने मेरे साथ
किया है। मैं यर्दन नदी पार कर उस देश में
पहुंचना चाहता हूं, जो हमारा प्रभु परमेश्वर हमें
प्रदान कर रहा है।" 30 किन्तु हेश्बोन के राजा
सीहोन ने हमें अपने पास से होकर नहीं जाने
दिया, क्योंकि तुम्हारे प्रभु परमेश्वर ने उसकी
आत्मा को कठोर, और हृदय को हठीला बना
दिया था, जिससे वह उसे तुम्हारे हाथ में सौंप
दे, जैसे वह आज भी है। 31 प्रभु ने मुझसे कहा
था, "देख, मैंने सीहोन और उसका देश तुझे
प्रदान करना आरम्भ कर दिया है। तू भी उस
पर अधिकार करना आरम्भ कर जिससे तू
उसको अधिकृत कर सके।" 32 तब सीहोन अपने
सब सैनिकों के साथ हमारा सामना करने,
हमसे याहस में युद्ध करने के लिए निकल आया
था। 33 परन्तु हमारे प्रभु परमेश्वर ने उसे हमें
सौंप दिया, और हमने उसे, उसके पुत्रों और
उसके सब सैनिकों को पराजित कर दिया।
34 हमने उस समय उसके सब नगरों पर
अधिकार कर लिया और एक-एक पुरुष, स्त्री,
बच्चे और नगर को अर्पित समझकर पूर्णत:
नष्ट कर दिया। हमने पालतू पशुओं के
अतिरिक्त कुछ भी जीवित नहीं छोड़ा। 35 जो
नगर हमने अधिकार में किए थे, उनकी लूट के
साथ हमने इन पशुओं को अपने लिए लूटा था।
36 अरोएर नगर से जो अर्नोन घाटी के छोर पर
है, और उस नगर से, जो घाटी में स्थित है,
गिलआद तक एक भी नगर हमारी पहुंच से
बाहर नहीं था। हमारे प्रभु परमेस्वर ने सब नगर
हमें सौंप दिए थे। 37 तुम केवल अम्मोन वंशियों
के देश के निकट, अर्थात् यब्बोक नदी के
समस्त तटीय प्रदेश, पहाड़ी क्षेत्र के नगरों तथा
अपने प्रभु परमेश्वर द्वारा वर्जित स्थानों के
निकट नहीं गए थे।

बाशान के राजा ओग को पराजित करना

3 'हम आगे बढ़े थे, और बाशान के मार्ग की
ओर गए थे। तब बाशान का राजा ओग
अपने सब सैनिकों के साथ हमारा सामना
करने, हमसे एद्रेई में युद्ध करने के लिए निकल
आया। 2 परन्तु प्रभु ने मुझसे यह कहा था,
"उससे मत डर क्योंकि मैंने उसे, उसके सब
सैनिकों को तथा उसके देश को तेरे हाथ में दे
दिया है। जैसा तूने एमोरियों के राजा सीहोन के
साथ, जो हेश्बोन में रहता था, किया था, वैसा
ही उसके साथ करना।" 3 अत: हमारे प्रभु
परमेश्वर ने बाशान के राजा ओग को तथा
उसके सब सैनिकों को भी हमारे हाथ सौंप
दिया। हमने उसको इस प्रकार मारा कि उसका
एक भी व्यक्ति जीवित नहीं बचा। 4 हमने उस
समय उसके सब नगर ले लिये थे। एक भी नगर
ऐसा नहीं बचा था जिसको हमने उनसे नहीं
लिया था: साठ नगर, अर्गोब का समस्त क्षेत्र,

* अर्थात्, "पलिश्ती" देखिए, यहोशुअ 13 : 2

2 : 27 गण 21 : 21 ; शास 11 : 19 **2 : 30** नि 4 : 21 **2 : 34** लेव 27 : 28 ; यहो 6 : 17 ; 7 : 11 **3 : 1-11** गण 21 : 33-35

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बाशान में ओग का राज्य ही हमने ले लिया था।
5 ये सब किलाबन्द नगर थे। इनके ऊंचे-ऊंचे
परकोटे, द्वार और अर्गलाएं थीं। इन नगरों के
अतिरिक्त अनेक गांव थे, जिनमें परकोटे नहीं
थे। 6 जैसा हमने हेश्बोन के राजा सीहोन को
नष्ट किया था वैसा ही उनको पूर्णत: नष्ट कर
दिया; पुरुष, स्त्री और बच्चे सहित एक-एक
नगर को अर्पित समझकर पूर्णत: नष्ट कर
दिया। 7 परन्तु हमने पशुओं और नगरों की लूट
को अपने लिए लूट लिया। 8 हमने उस समय
एमोरी जाति के दो राजाओं के हाथ से उनके
देश छीन लिये थे, जो यर्दन नदी के उस पार
थे, जिनकी सीमा अर्नोन घाटी से हेर्मोन पर्वत
तक थी। 9 (सीदोनी-जाति के लोग हर्मोन को
सीर्योन कहते हैं, पर एमोरी जाति के लोग
उसको सनीर कहते हैं।) 10 पठार के सब नगर,
सम्पूर्ण गिलआद, तथा ओग के बाशान राज्य के
नगर—सल्काह और एद्रई—तक समस्त बाशान
हमने ले लिया था। 11 (बाशान का राजा ओग
रपाई जाति का अन्तिम जीवित व्यक्ति था।
उसकी शव-पेटिका लोह-पाषण की थी। वह
अम्मोनियों के रब्बाह नगर में अब तक
विद्यमान है। मानक माप के अनुसार वह प्राय:
चार मीटर लम्बी और डेढ़ मीटर चौड़ी थी।)

यर्दन नदी के पूर्वीय क्षेत्र का आबंटन

12 'उस समय जब हमने इस देश पर
अधिकार किया था, तब मैंने रूबेन वंशियों और
गाद वंशियों को अरोएर नगर, जो अर्नोन घाटी
के छोर पर स्थित है, और नगरों सहित
गिलआद का आधा पहाड़ी प्रदेश दिया था।
13 मैंने मनश्शे गोत्र के आधे वंशजों को, शेष
गिलआद प्रदेश और सम्पूर्ण बाशान—ओग का
राज्य—अर्थात् अर्गोब का समस्त क्षेत्र दिया
था। (बाशान का यह सम्पूर्ण क्षेत्र रपाई देश
कहलाता है। 14 मनश्शे के पुत्र याईर ने अर्गोब
का समस्त क्षेत्र, अर्थात् गशूरी और मआकाती
राज्यों की सीमा तक बाशान देश लिया था और
अपने नाम पर इन गांवों का नाम हव्वोत-याईर
रखा, जैसा आज तक है।) 15 मैंने माकीर को
गिलआद प्रदेश प्रदान किया था। 16 मैंने रूबेन
वंशियों और गाद वंशियों को गिलआद प्रदेश
से अर्नोन नदी तक का क्षेत्र दिया था। अर्नोन
घाटी का मध्य क्षेत्र उनकी सीमा थी, और
अम्मोनियों की सीमा, यब्बोक नदी तक थी।
17 अराबाह क्षेत्र और यर्दन नदी भी, किन्नेरेत की
झील से अराबाह के सागर (मृत सागर) तक,
अर्थात् पूर्व दिशा में पिसगाह के ढालों के नीचे
तक सीमा बनाते थे।

18 'मैंने उस समय तुम्हें यह आदेश दिया
था : "तुम्हारे प्रभु परमेश्वर ने तुम्हें अधिकार
करने के लिए यह देश प्रदान किया है। तुम्हारे
समस्त शूरवीर, सशस्त्र पुरुष, अपने इस्राएली
भाई-बन्धुओं के आगे उस पार जाएंगे। 19 किन्तु
तुम्हारी पत्नी, शिशु और पालतू पशु (मैं जानता
हूं कि तुम्हारे पास असंख्य पशु हैं) उन नगरों
में जिनको मैंने तुम्हें दिया है, उस समय तक
रहेंगे, 20 जब तक प्रभु तुम्हारे भाई-बन्धुओं को
भी तुम्हारे समान शान्ति-स्थल नहीं प्रदान
करेगा और वे उस प्रदेश को अपने अधिकार
में नहीं कर लेंगे जो तुम्हारा प्रभु परमेश्वर उन्हें
यर्दन नदी के उस पार प्रदान कर रहा है।
तत्पश्चात् तुम में से प्रत्येक व्यक्ति अपने-
अपने अधिकार-क्षेत्र को, जो मैंने उसे प्रदान
किया है, लौट आएगा।" 21 मैंने उस समय
यहोशुअ को यह आदेश दिया था, "जो कुछ
प्रभु तुम्हारे परमेश्वर ने इन दो राजाओं के साथ
किया है, उसको स्वयं तेरी आंखों ने देखा है।
वह ऐसा ही कार्य उन सब राज्यों के साथ भी
करेगा, जहां तू जा रहा है। 22 तू उनसे मत डरना,
क्योंकि तू नहीं, वरन् तेरा प्रभु परमेश्वर तेरे लिए
युद्ध करेगा।"

मूसा कनान में प्रवेश नहीं करेंगे

23 'मैंने उस समय प्रभु से यह अनुनय-
विनय की थी : 24 "हे स्वामी, हे प्रभु! तूने
अपने सेवक को अपनी महानता, अपना
भुजबल दिखाना आरम्भ ही किया है। तेरे

---

3 : 12 गण 32 : 33-38 **3 : 17** गण 34 : 11 **3 : 18-20** यहो 1 : 12-15 **3 : 23-27** गण 27 : 12-14; व्य 32 : 48-52 **3 : 24** व्य 11 : 2 ; नि 15 : 11 ; भज 86 : 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अतिरिक्त, आकाश अथवा पृथ्वी पर और कौन
ईश्वर है, जो तेरे सामर्थ्यपूर्ण कार्यों के सदृश
कार्य कर सके? 25कृपाकर मुझे उस पार जाने
दे, यर्दन नदी के उस पार के उत्तम देश, उस
उत्तम पहाड़ी प्रदेश, और लबानोन के दर्शन कर
लेने दे।'' 26परन्तु प्रभु तुम्हारे कारण मेरे प्रति
क्रोध में आपे से बाहर हो गया था। उसने मेरी
प्रार्थना अनसुनी कर दी। प्रभु ने कहा था,
''बहुत हो चुका! इस विषय पर मुझसे और
बात मत कर। 27तू पिस्गाह के शिखर पर चढ़।
वहां से तू अपनी आंखें उत्तर-दक्षिण, पूर्व-
पश्चिम की ओर उठाना, और स्वयं अपनी
आंखों से देखना; क्योंकि तू इस यर्दन नदी के
उस पार नहीं जा सकेगा। 28किन्तु तू यहोशुअ
को आदेश दे, उसको प्रोत्साहन दे, उसको
शक्तिशाली बना; क्योंकि वही इन लोगों के
आगे-आगे उस पार जाएगा, और उसके कारण
ही ये उस देश को अपने पैतृक अधिकार में
करेंगे, जिसका तू केवल दर्शन करेगा।''
29अत: हम बेत-पओर के सम्मुख घाटी में
ठहर गए थे।

मूसा का आज्ञापालन के हेतु उपदेश देना

4 'अब, ओ इस्राएल, जो संविधि और न्याय-
सिद्धान्त पालन करने के लिए आज मैं
तुम्हें सिखाऊंगा, उनको तुम सुनना, जिससे तुम
ज़ीवित रह सको और उस देश में प्रवेश कर उस
पर अधिकार कर सको, जो तुम्हारे पूर्वजों का
प्रभु परमेश्वर तुम्हें दे रहा है। 2जो आज्ञाएं मैं
तुम्हें सुनाऊंगा, उनमें न एक शब्द बढ़ाना और
न उनमें से एक शब्द घटाना; वरन् तुम अपने
प्रभु परमेश्वर की उन आज्ञाओं का पालन
करना, जो मैं तुम्हें सुनाऊंगा। 3जो कार्य प्रभु ने
बअल-पओर में किया, उसको तुम्हारी आंखों
ने देखा है। तुम्हारे प्रभु परमेश्वर ने उन सब
मनुष्यों को तुम्हारे मध्य से नष्ट कर दिया था,
जो पओर के बअल देवता का अनुसरण करने
लगे थे। 4परन्तु तुम, अपने प्रभु परमेश्वर से
सम्बद्ध रहनेवाले, सबके सब, आज तक
जीवित हो। 5देखो, जैसी मेरे प्रभु परमेश्वर ने
मुझे आज्ञा दी थी, उसके अनुसार मैंने तुम्हें
संविधि और न्याय-सिद्धान्त सिखाए हैं जिससे
तुम उनका उस देश में पालन कर सको,
जिसको अपने अधिकार में करने के लिए वहां
प्रवेश कर रहे हो। 6तुम उनका पालन करना
और उनके अनुसार कार्य करना, क्योंकि इनके
द्वारा ही दूसरी जातियों की दृष्टि में तुम्हारी बुद्धि
और समझ प्रकट होगी। जब वे इन संविधियों
के विषय में सुनेंगी तब कहेंगी, ''निस्सन्देह,
इस महान् राष्ट्र के लोग बुद्धिमान और
समझदार हैं।'' 7ऐसा कौन महान् राष्ट्र है,
जिसका ईश्वर उसके समीप रहता है, जैसा
हमारा प्रभु परमेश्वर हमारे समीप रहता है?
जब-जब हम उसे पुकारते हैं, वह हमारी
प्रार्थना सुनता है। 8ऐसा कौन महान् राष्ट्र है
जिस की संविधि और न्याय-सिद्धान्त इस
व्यवस्था के सदृश धार्मिक हैं, जिसको मैं आज
तुम्हारे सम्मुख प्रस्तुत कर रहा हूं?

मूसा का होरेब पर्वत का अनुभव स्मरण कराना

9 'तुम सावधान रहना! अपने प्रति सतर्क
रहना! ऐसा न हो कि जो बातें तुम्हारी आंखों
ने देखी हैं, उनको तुम भूल जाओ। ऐसा न हो
कि वे जीवन भर के लिए तुम्हारे हृदय से दूर
हो जाएं। वरन् तुम उन्हें अपने पुत्र-पुत्रियों और
पौत्र-पौत्रियों को बताना। 10जिस दिन तुम अपने
प्रभु परमेश्वर के सम्मुख होरेब पर्वत पर खड़े
थे तब प्रभु ने मुझसे यह कहा था, ''लोगों को
मेरे पास एकत्र कर कि मैं उन्हें अपनी बात सुना
सकूं, जिससे वे पृथ्वी पर जीवन-भर मेरी
भक्ति करना सीखें और अपनी सन्तान को भी
यह बात सिखाएं।'' 11अत: तुम निकट आए,
और पहाड़ के नीचे खड़े हो गए। तब पहाड़
अग्नि से जल उठा। अग्नि आकाश को स्पर्श
करने लगी। धुएं, मेघ और सघन अन्धकार से
पहाड़ आच्छादित हो गया। 12तत्पश्चात् प्रभु

---

4 : 1 यहेज 20 : 11; रोम 10 : 5 **4 : 2** प्रक 22 : 18 **4 : 3** गण 25 : 1-9 **4 : 6** अय्य 28 : 28 ; भज 19 : 7 ; नीति 1 : 7; प्रव 1 : 14-17 **4 : 7** 1रा 8 : 27 ; भज 145 : 18 ; यिर 29 : 13 ; यहेज 48 : 35 ; यो 1 : 14 **4 : 9** नीति 4 : 20-23; योए 1 : 3 **4 : 10** नि 19 : 16 ; इब्र 12 : 18

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अग्नि के मध्य में से तुमसे बोला था। तुमने उसके शब्दों का स्वर तो सुना था, पर कोई आकृति नहीं देखी थी। केवल स्वर सुनाई दिया था। 13प्रभु ने अपना विधान अर्थात् दस आज्ञाएं तुम पर घोषित की थीं और उनका पालन करने का आदेश उसने तुम्हें दिया था। उसने उनको पत्थर की दो पट्टियों पर लिखा था। 14प्रभु ने उस समय मुझे आज्ञा दी थी कि मैं तुम्हें संविधि और न्याय-सिद्धान्त सिखाऊं, जिससे तुम उनके अनुसार उस देश में आचरण कर सको जिसको तुम अपने अधिकार में करने के लिए वहां प्रवेश कर रहे हो।

मूर्ति-पूजा के विरुद्ध चेतावनी

15 'तुम अत्यन्त सावधान रहना; क्योंकि जिस दिन प्रभु ने होरेब पर्वत पर अग्नि के मध्य में से तुमसे वार्तालाप किया था, तब तुमने कोई आकृति नहीं देखी थी। 16सावधान! ऐसा न हो कि तुम भ्रष्ट हो जाओ, और अपने लिए कोई मूर्ति, कोई आकृति, किसी की समानता में कोई प्रतिमा बनाओ : चाहे नर या नारी की समानता में, 17या पृथ्वी के किसी पशु की अथवा आकाश में उड़नेवाले किसी पंखधारी पक्षी की समानता में, 18अथवा भूमि पर रेंगनेवाले किसी जीव-जन्तु की या पृथ्वी के नीचे जल में तैरनेवाली किसी मछली की समानता में। 19सावधान! ऐसा न हो कि जब तुम आकाश की ओर अपनी आंखें उठाओ और सूर्य, चन्द्रमा और तारों को, आकाश की समस्त सेना को देखो, तब उनकी ओर खिंच जाओ, और उनकी वन्दना करो, उनकी सेवा करो। तुम्हारे प्रभु परमेश्वर ने आकाश के नीचे की समस्त जातियों में उनको बांट दिया है। 20किन्तु प्रभु ने तुम्हें चुना, और भट्ठी की अग्नि से, मिस्र देश से वह तुम्हें बाहर निकाल लाया है कि तुम उसके निज लोग और उसकी निज सम्पत्ति बनो; जैसे आज भी हो। 21इसके अतिरिक्त प्रभु तुम्हारे कारण मुझसे भी क्रुद्ध हुआ था। उसने शपथ खाई थी कि मैं यर्दन नदी के उस पार नहीं जा सकूंगा, मैं उस उत्तम देश में प्रवेश नहीं कर पाऊंगा, जिसको तुम्हारा प्रभु परमेश्वर तुम्हें पैतृक अधिकार के लिए प्रदान कर रहा है। 22मेरी मृत्यु इसी देश में होगी। मैं यर्दन नदी के उस पार नहीं जाऊंगा। किन्तु तुम उस पार ज़ाओगे, और उस उत्तम देश पर अधिकार करोगे। 23तुम सावधन रहना। ऐसा न हो कि तुम अपने प्रभु परमेश्वर के विधान को, जिसे उसने तुम्हारे साथ स्थापित किया है, भूल जाओ, और किसी की आकृति के अनुरूप कोई मूर्ति बनाओ, जिसको तुम्हारे प्रभु परमेश्वर ने मना किया है, 24क्योंकि तुम्हारा प्रभु परमेश्वर भस्मकारी आग है, वह ईर्ष्यालु परमेश्वर है।

25 'जब तुम्हें पुत्र-पुत्रियां तथा पौत्र-पौत्रियां उत्पन्न होंगे, और उस देश में रहते-रहते तुम पुराने हो चुके होगे, तब यदि किसी की आकृति के अनुरूप कोई मूर्ति बनाकर भ्रष्ट कार्य करोगे, जो कार्य तुम्हारे प्रभु परमेश्वर की दृष्टि में बुरा है, उसको करोगे, और इस प्रकार उसे चिढ़ाओगे, 26तो मैं आज आकाश और पृथ्वी को तुम्हारे विरुद्ध साक्षी देने के लिए बुलाता हूं: तुम उस देश में अविलम्ब मिट जाओगे जहां तुम यर्दन नदी को पार कर अधिकार करने के लिए जा रहे हो। तुम उस पर अधिक दिन तक जीवित नहीं रह सकोगे, वरन् पूर्णतः मिट जाओगे। 27प्रभु तुम्हें विभिन्न जातियों में तितर-बितर कर देगा। जहां प्रभु तुम्हें ले जाएगा, उन राष्ट्रों के मध्य तुम अल्प संख्या में रह जाओगे। 28वहां तुम मनुष्य के हाथ से बनाए गए लकड़ी और पत्थर के ऐसे देवताओं की सेवा करोगे, जो न देख सकते, न सुन सकते, न खा सकते और न सूंघ सकते हैं। 29किन्तु वहां से ही तुम अपने प्रभु परमेश्वर की खोज करोगे। यदि तुम अपने सम्पूर्ण हृदय से,

---

4 : 13 नि 31 : 18 ; 34 : 28 **4 : 14** व्य 12 : 1 **4 : 15** प्रे 17 : 24 –29 **4 : 16** रोम 1 : 23 ; नि 20 : 4; लेव 26 : 1 ; व्य 5 : 8 **4 : 19** व्य 17 : 3 ; प्रज्ञा 13 : 2 **4 : 20** नि 19 : 5; व्य 7 : 6 ; 14 : 2 ; 26 : 18 ; तीत 2 : 14 ; 1 पत 2 : 9 **4 : 21** गण 20 : 12 **4 : 24** नि 24 : 17 ; यश 33 : 14 ; सप 1 : 18 ; इब्र 12 : 29 ; 2 कुर 11 : 2 **4 : 26** व्य 30 : 18–19; यश 1 : 2 **4 : 27** 2 रा 17 : 18; 25 : 11 **4 : 28** व्य 28 : 36 **4 : 29** : 2 इति 15 : 4 ; यश 55 : 6 ; हो 5 : 15 ; यिर 29 : 12 ; मत 7 : 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अपने सम्पूर्ण प्राण से उसकी खोज करोगे, तो
तुम उसे प्राप्त भी कर सकोगे। 30जब तुम
संकटग्रस्त होगे, और आनेवाले दिनों में इन
बातों की याद जो मैंने कही हैं तुम्हें आ घेरेगी+,
तब तुम अपने प्रभु परमेश्वर की ओर लौटोगे,
और उसका स्वर सुनोगे; 31क्योंकि तुम्हारा प्रभु
परमेश्वर दयालु परमेश्वर है। वह तुम्हें निस्सहाय
नहीं छोड़ेगा, तुम्हें नष्ट नहीं करेगा; जो विधान
उसने तुम्हारे पूर्वजों से शपथ खाकर स्थापित
किया था उसको वह नहीं भूलेगा।

32 'अतः बीते हुए युगों के विषय में, जो
तुम्हारे सम्मुख उस दिन से व्यतीत हुए हैं जब
परमेश्वर ने मनुष्य को पृथ्वी पर रचा था, यह
प्रश्न पूछो : क्या आकाश के एक सीमान्त से
दूसरे सीमान्त तक कभी ऐसी महान् घटना घटी
है ? क्या कभी ऐसी कोई बात सुनी गई है ?
33क्या अन्य लोगों ने अग्नि के मध्य से जीवन्त
परमेश्वर को बोलते हुए सुना है जैसा तुमने
सुना, और फिर भी जीवित रहे ? 34जैसा तुम्हारे
प्रभु परमेश्वर ने मिस्र देश में तुम्हारी आंखों के
सम्मुख किया था, क्या वैसा किसी अन्य ईश्वर
ने आकर परीक्षाओं, चिह्नों, आश्चर्यपूर्ण कर्मों,
युद्ध, भुजबल, महा आतंकमय कार्यों और
उद्धार के हेतु फैले हुए हाथों से किसी राष्ट्र को
अपने लिए, दूसरे राष्ट्रों के मध्य से चुनने का
साहसिक कार्य किया है ?

35 'ओ इस्राएली समाज ! यह तुझे इसलिए
दिखाया गया था कि तुझे ज्ञात हो जाए कि प्रभु
ही परमेश्वर है; उसके अतिरिक्त दूसरा ईश्वर
नहीं है। 36उसने तुझे ताड़ित करने के लिए
आकाश से अपनी वाणी सुनाई थी, और पृथ्वी
पर अपनी महान् अग्नि दिखाई थी। तूने स्वयं
अग्नि के मध्य से उसके वचन सुने थे। 37उसने
तेरे पूर्वजों से प्रेम किया था, इसलिए उसने
उनके पश्चात् उनके वंशजों को चुना, और
अपनी उपस्थिति से, अपने महान् सामर्थ्य से
वह तुझे मिस्र देश से निकाल लाया 38कि तुझसे
अधिक महान् और शक्तिशाली राष्ट्रों को तेरे
सम्मुख से निकालकर उनके स्थान में तुझे
स्थापित करे, पैतृक-अधिकार के लिए उनका
देश तुझे प्रदान करे ; जैसा आज भी है। 39अतः
आज तू यह बात जान ले, और उसको अपने
हृदय में बिठा ले कि ऊपर आकाश में और नीचे
पृथ्वी पर प्रभु ही परमेश्वर है ; उसके अतिरिक्त
दूसरा ईश्वर नहीं है। 40इसलिए तू उसकी
संविधियों और आज्ञाओं का पालन करना,
जिनका आदेश आज मैं तुझे दे रहा हूं, जिससे
तेरा और तेरे पश्चात् तेरी सन्तान का भला हो,
और तू उस देश में दीर्घ जीवन व्यतीत करे,
जिसको तेरा प्रभु परमेश्वर सदा के लिए तुझे
प्रदान कर रहा है।'

यर्दन नदी की पूर्व दिशा में शरण-नगर

41 तत्पश्चात् मूसा ने यर्दन नदी के उस पार,
पूर्व दिशा में तीन नगर पृथक किए 42कि वहां
हत्यारा भाग कर जाए, जिसने बिना अभिप्राय
तथा बिना पूर्व घृणा के अपने भाई-बन्धु की
हत्या की होगी। वह इन नगरों में से किसी एक
नगर में भागकर अपने प्राण बचा सकेगा :
43रूबेन वंशियों के लिए पठारी क्षेत्र के निर्जन
प्रदेश में स्थित बेसर, गाद वंशियों के लिए
गिलआद प्रदेश में स्थित रामोत, और मनश्शे
वंशियों के लिए बाशान प्रदेश में स्थित गोलान।

व्यवस्था के पुनः उल्लेख की भूमिका

44 जो व्यवस्था मूसा ने इस्राएली समाज के
सम्मुख स्थापित की थी, वह यही है। 45ये साक्षी,
संविधि और न्याय-सिद्धान्त मूसा ने इस्राएली
लोगों से उस समय कहे थे, जब वे मिस्र देश
से निकल आए थे, 46 और यर्दन नदी के पार,
बेत-पओर के सम्मुख घाटी में, अर्थात् एमोरी
जाति के राजा सीहोन, जो हेश्बोन नगर में रहता
था, के देश में थे। जब मूसा और इस्राएली मिस्र
देश से निकल आए थे तब उन्होंने राजा सीहोन

+ अथवा, 'आनेवाले दिनों में ये विपत्तियां तुम्हें आ घेरेंगी।'

4 : 30 यिर 23 : 20 ; हो 3 : 5 **4 : 31** नि 34 : 6 **4 : 34** भज 40 : 5 ; यिर 32 : 21 **4 : 35** व्य 32 : 39 ; यश 44 : 6 ; 45 : 5 ; मक 12 : 29, 32 **4 : 36** नि 19 : 19 ; 1 रा 8 : 23 ; 2 इति 20 : 6 **4 : 40** यश 65 : 20 ; जक 8 : 4 **4 : 41** गण 35 : 6 **4 : 43** यहो 20 : 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

को पराजित किया। [47]उन्होंने उसके देश एवं
बाशान के राजा ओग के देश पर भी अधिकार
कर लिया। ये एमोरी जाति के दोनों राजा यर्दन
नदी के उस पार, पूर्व दिशा में रहते थे। [48]उन्होंने
अरोएर नगर से, जो अर्नोन घाटी के छोर पर है,
सीर्योन पर्वत (अर्थात् हेर्मोन) तक और
[49]यर्दन नदी के पूर्वीय तट के समस्त अराबाह
क्षेत्र से अराबाह सागर तक, अर्थात् पिस्गाह के
ढालों के नीचे तक, समस्त देश पर अधिकार
कर लिया था।

दस आज्ञाएं

5 मूसा ने समस्त इस्राएली समाज को
बुलाया, और उनसे यह कहा, 'ओ इस्राएल!
जो संविधियाँ और न्याय-सिद्धान्त आज मैं
तुम्हारे कान में डाल रहा हूं, उनको सुनो। तुम
उन्हें सीखना, और उनको व्यवहार में लाने के
लिए सदा तत्पर रहना। [2] हमारे प्रभु परमेश्वर
ने होरेब पर्वत पर हमारे साथ एक विधान
स्थापित किया था। [3]प्रभु ने यह विधान हमारे
पूर्वजों के साथ नहीं, वरन् हमारे साथ, हम
सबके साथ जो यहां हैं और आज तक जीवित
हैं, स्थापित किया। [4]प्रभु ने पहाड़ पर तुमसे
आमने-सामने अग्नि के मध्य से वार्तालाप
किया था। [5]उस समय मैं प्रभु का वचन तुम पर
घोषित करने के लिए तुम्हारे और प्रभु के मध्य
खड़ा था; क्योंकि तुम अग्नि के कारण डर गए
थे, और पहाड़ पर नहीं चढ़े थे। तब प्रभु ने कहा
था :

6 'मैं प्रभु, तेरा परमेश्वर हूं, जो तुझे मिस्र
देश से, दासत्व के घर से बाहर निकाल लाया।
[7]तू मेरे अतिरिक्त किसी और को ईश्वर नहीं
मानना।

8 'तू अपने लिए कोई मूर्ति न बनाना और
न किसी प्राणी अथवा वस्तु की आकृति बनाना,
जो ऊपर आकाश में, अथवा नीचे धरती पर या
धरती के नीचे जल में है। [9]तू झुककर उनकी
वन्दना न करना, और न उनकी सेवा करना ;
क्योंकि मैं, तुम्हारा प्रभु परमेश्वर, ईर्ष्यालु ईश्वर
हूं। जो मुझसे घृणा करते हैं, उनके अधर्म का
दण्ड मैं तीसरी और चौथी पीढ़ी तक उनकी
संतान को देता रहता हूं ; [10]परन्तु मुझसे प्रेम
करनेवाले और मेरी आज्ञा का पालन करनेवाले
व्यक्तियों पर मैं हजार पीढ़ियों तक करुणा
करता हूं।

11 'तू अपने प्रभु परमेश्वर का नाम व्यर्थ न
लेना; क्योंकि जो व्यक्ति प्रभु का नाम व्यर्थ
लेगा, उसे प्रभु निर्दोष घोषित नहीं करेगा।

12 'विश्राम दिवस को मानना, और उसको
पवित्र रखना; जैसी तेरे प्रभु परमेश्वर ने तुझे
आज्ञा दी है। [13]तू छः दिन तक परिश्रम करना,
अपने सब कार्य करना, [14]किन्तु सातवां दिन तेरे
प्रभु परमेश्वर का विश्राम दिवस है। इसलिए तू,
तेरे पुत्र-पुत्री, सेवक-सेविका, तेरे बैल, तेरे
गधे, तेरे पशु, तेरे नगरों में रहने वाले प्रवासी
व्यक्ति उस दिन कोई कार्य नहीं करेंगे जिससे
तेरा सेवक और सेविका तेरे समान विश्राम कर
सकें। [15]तू स्मरण रखना कि मिस्र देश में तू भी
सेवक था, और तेरा प्रभु परमेश्वर तुझे वहां से
अपने भुजबल और उद्धार के हेतु फैले हुए
हाथों से बाहर निकाल लाया था। इस कारण तेरे
प्रभु परमेश्वर ने तुझे विश्राम दिवस का पालन
करने की आज्ञा दी है।

16 'अपने माता-पिता का आदर कर, जैसी
तेरे प्रभु परमेश्वर ने तुझे आज्ञा दी है, जिससे
तेरी आयु दीर्घ हो सके, और उस भूमि पर तेरा
भला हो जिसे तेरा प्रभु परमेश्वर तुझे प्रदान कर
रहा है।

17 'तू हत्या न करना।

18 'तू व्यभिचार न करना।

19 'तू चोरी न करना।

20 'तू अपने पड़ोसी के विरुद्ध मिथ्या साक्षी
न देना।

---

5 : 6-21 नि 20 : 2-17 **5 : 9** नि 34 : 7 **5 : 11** नि 20 : 7 ; लेव 19 : 12 **5 : 12** नि 31 : 12-14 **5 : 13** नि 23 : 12 **5 : 16** व्य 27 : 16 ; मत 15 : 4 ; 19 : 19 ; इफ 6 : 2-3; प्रव 3 : 1-16 **5 : 17** उत 9 : 6 ; लेव 24 : 17 ; मत 5 : 21 **5 : 18** लू 18 : 20 ; रोम 7 : 2 ; याक 2 : 11 **5 : 19** लेव 19 : 11 ; रोम 13 : 9 **5 : 20** नि 23 : 1 ; मत 19 : 18

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

21 'तू अपने पड़ोसी की पत्नी का लालच
न करना। तू अपने पड़ोसी के घर, उसके खेत,
सेवक-सेविका, बैल-गधे तथा उसकी किसी
भी वस्तु का लोभ न करना।

परमेश्वर की उपस्थिति से इस्राएली समाज का डरना

22 'प्रभु ने ये ही वचन पहाड़ पर तुम्हारी
समस्त धर्म-महासभा से कहे थे। वह अग्नि के
मध्य, मेघ और सघन अन्धकार में से उच्च स्वर
में बोला था। तत्पश्चात् उसने कुछ नहीं कहा
वरन् उन्हें पत्थर की दो पट्टियों पर लिखा और
उनको मुझे दे दिया। 23जब पहाड़ अग्नि से जल
रहा था, और तुमने अन्धकार के मध्य से स्वर
सुना था, तब तुम सब, तुम्हारे समस्त कुलों के
मुखिया और धर्मवृद्ध मेरे पास आए थे। 24तुमने
कहा था, ''देखिए, हमारे प्रभु परमेश्वर ने हमें
अपनी महिमा और महानता के दर्शन कराए हैं।
हमने अग्नि के मध्य से उसका स्वर भी सुना
है। आज हमने देखा कि परमेश्वर मनुष्य से
बोला, और मनुष्य फिर भी जीवित रहा !*
25अत: अब हम क्यों मर जाएं? यह भयंकर
अग्नि हमें भस्म कर देगी। यदि हम अपने प्रभु
परमेश्वर का स्वर पुनः सुनेंगे, तो हम निश्चय
ही मर जाएंगे। 26समस्त प्राणियों में वह कौन
प्राणी है, जिसने अग्नि के मध्य से जीवन्त
परमेश्वर का स्वर सुना, उसको वार्तालाप करते
हुए सुना, जैसे हमने सुना, और वह फिर भी
जीवित रहा? 27इसलिए आप ही समीप जाइए।
जो बातें हमारा प्रभु परमेश्वर आपसे कहेगा,
उनको आप ही सुनिए। आप ही हमें वे सब बातें
बताना, जो हमारा प्रभु परमेश्वर आपको
बताएगा। हम उन्हें सुनेंगे, और उनके अनुसार
कार्य करेंगे।''

28 'जब तुमने मुझसे ये बातें कहीं, तब प्रभु
ने उन्हें सुन लिया। प्रभु ने मुझसे कहा था, ''मैंने
इन लोगों की बातें सुन ली हैं, जो उन्होंने तुझसे
कही हैं। जो कुछ ये बोले अच्छा ही बोले।
29भला होता कि उनका हृदय सदा ऐसा ही
रहता। वे मुझसे डरते और मेरी भक्ति करते।
वे मेरी सब आज्ञाओं का पालन करते, जिससे
उनका और उनकी सन्तान का सदा भला होता!
30 जा और उनसे यह कह, 'अपने-अपने तम्बू
को लौट जाओ,' 31परन्तु तू यहां मेरे पास खड़ा
रह, और मैं तुझको सब आज्ञाएं, संविधियां
और न्याय-सिद्धान्त बताऊंगा, जो तू उन्हें
सिखाएगा जिससे वे उस देश में, जो मैं उन्हें उस
पर अधिकार करने के लिए प्रदान कर रहा हूं,
उनके अनुसार कार्य कर सकें।'' 32तुम उनका
पालन करना, और उनके अनुसार कार्य करना;
जैसी तुम्हारे प्रभु परमेश्वर ने तुम्हें आज्ञा दी है।
तुम न दाहिनी ओर मुड़ना और न बायीं ओर।
33जिस मार्ग पर चलने की आज्ञा तुम्हारे प्रभु
परमेश्वर ने दी है, तुम उस पर चलना। तब तुम
जीवित रहोगे, तुम्हारा भला होगा, और जिस
देश पर तुम अधिकार करने जा रहे हो, उसमें
तुम बहुत दिन तक जीवित रह सकोगे।

प्रमुख आज्ञा

6 'जो आज्ञाएं, संविधियां और न्याय-सिद्धान्त
तुम्हें सिखाने के लिए तुम्हारे प्रभु परमेश्वर
ने मुझे आज्ञा दी थी, वे ये ही हैं। तुम उस देश
में इनके अनुसार कार्य करना, जिसको तुम
अपने अधिकार में करने के लिए वहां जा रहे
हो। 2 यदि तुम और तुम्हारे पुत्र-पुत्रियां तथा
पौत्र-पौत्रियां अपने प्रभु परमेश्वर की जीवन-
भर भक्ति करेंगे, यदि तुम उसकी सब संविधियों
और आज्ञाओं का पालन करोगे, जिनका आदेश
आज मैं तुम्हें दे रहा हूं, तो तुम्हारे पुत्र-पुत्रियों
और पौत्र-पौत्रियों की आयु लम्बी होगी।
3अतः ओ इस्राएल, इन्हें सुन, और इनका
पालन करने के लिए सदा तत्पर रह! इससे तेरा
भला होगा और जैसा तेरे पूर्वजों का प्रभु
परमेश्वर तुझसे बोला था, उसके अनुसार तू दूध
और शहद की नदियोंवाले देश में असंख्य हो
जाएगा।

* अथवा, ''परमेश्वर मनुष्य से वार्तालाप करता है, और मनुष्य फिर भी जीवित रहता है।''

5 : 21 रोम 7 : 7 ; 13 : 9 **5 : 22 -27** नि 20 : 18-21 **5 : 27** इब्र 12 : 19 **6 : 2** नि 20 : 20 ; यहो 24 : 14; यिर 32 : 39 ; भज 111 : 10 **6 : 3** लू 11 : 28

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

4 'ओ इस्राएल, सुन! हमारा प्रभु परमेश्वर,
एक ही प्रभु है।* 5तू प्रभु, अपने परमेश्वर को
अपने सम्पूर्ण हृदय, सम्पूर्ण प्राण और अपनी
सम्पूर्ण शक्ति से प्रेम करना। 6ये वचन, जो
आज मैं तुझे आदेश-रूप में सुना रहा हूं, तेरे
हृदय पर अंकित रहें। 7तू इन्हें अपने बच्चों के
हृदय में बैठा देना। जब तू अपने घर में बैठता
है, अथवा मार्ग पर चलता है, जब तू लेटता है
अथवा उठता है, तब तू इन्हीं की चर्चा करना।
8तू इनको चिह्न स्वरूप अपने हाथ पर बांधना।
ये तेरी दोनों आंखों के मध्य शिरोबंद+ होंगे। 9तू
इन्हें अपने घर की चौखट के बाजुओं और नगर
के प्रवेश-द्वारों पर लिखना।

आज्ञा-उल्लंघन की चेतावनी

10 'जब तेरा प्रभु परमेश्वर तुझे उस देश में
लाएगा, जिसकी शपथ उसने तेरे पूर्वजों,
अब्राहम, इसहाक, और याकूब से खाई थी कि
वह तुझे उसे प्रदान करेगा ; इसके साथ-साथ
जब वह तुझे ये प्रदान करेगा : बड़े और अच्छे
नगर, जिनको तूने नहीं बनाया; 11अच्छी-अच्छी
वस्तुओं से भरे हुए घर, जिनको तूने नहीं भरा;
खोदे गए कुएं, जिनको तूने नहीं खोदा; अंगूर
के उद्यान और जैतून के वृक्ष, जिनको तूने नहीं
लगाया; और जब तू इन वस्तुओं को खाकर
तृप्त होगा, 12तब तू सावधान रहना! ऐसा न हो
कि तू उस प्रभु को भूल जाए जो तुझे मिस्र देश
से, दासत्व के घर से बाहर निकाल लाया है।
13तू अपने प्रभु परमेश्वर से डरना और उसकी
भक्ति करना। तू उसकी सेवा करना, और
उसके नाम की शपथ खाना। 14तू दूसरे देवताओं
का, उन जातियों के देवताओं का, जो तुम्हारे
चारों ओर हैं, अनुसरण मत करना ; 15क्योंकि
तेरे मध्य निवास करने वाला तेरा प्रभु परमेश्वर,
एक ईर्ष्यालु ईश्वर है। ऐसा न हो कि तेरे प्रभु
परमेश्वर का क्रोध तेरे विरुद्ध भड़क उठे, और
वह तुझे धरती की सतह से मिटा डाले।

16 'तू अपने प्रभु परमेश्वर को मत परखना,
जैसा तूने उसे मस्सा में परखा था। 17तू अपने
प्रभु परमेश्वर की आज्ञाओं, साक्षियों और
संविधियों का सावधानी से पालन करना, जैसी
उसने तुझे आज्ञा दी है। 18जो कार्य प्रभु की दृष्टि
में उचित और भला है, उसी को करना, जिससे
तेरा भला हो और तू उस उत्तम देश में प्रवेश कर
उसको अपने अधिकार में कर सके, जिसकी
शपथ प्रभु ने तेरे पूर्वजों से खाई थी 19कि वह
तेरे सम्मुख से तेरे समस्त शत्रुओं को बाहर
निकाल कर तुझे प्रदान करेगा; जैसा प्रभु बोला
था।

20 'जब भविष्य में तेरी संतान तुझसे पूछेगी,
"इन साक्षियों, संविधियों, न्याय-सिद्धान्तों
का, जिनकी आज्ञा हमारे प्रभु परमेश्वर ने हमें
दी है, क्या अर्थ है?" 21तब तू अपनी संतान
से कहना, "हम मिस्र देश में फरओ के गुलाम
थे; और प्रभु अपने भुजबल से हमें मिस्र देश
से बाहर निकाल लाया था। 22प्रभु ने हमारी
आंखों के सामने, समस्त मिस्र देश के विरुद्ध,
फरओ तथा उसके परिवार के विरुद्ध महान
और आतंकमय चिह्न दिखाए और आश्चर्यपूर्ण
कार्य किए थे। 23उसने हमें वहां से बाहर
निकाला था कि वह हमें उस देश में ले आए
जिसकी शपथ उसने हमारे पूर्वजों से खाई थी
कि वह उसको हमें प्रदान करेगा। 24प्रभु ने हमें
आज्ञा दी है कि हम इन संविधियों के अनुसार
कार्य करें, अपने प्रभु परमेश्वर से डरें और
उसकी भक्ति करें। तब सदा हमारा भला होगा,
और हम जीवित रहेंगे, जैसा आज भी हम हैं।
25हमारे लिए धार्मिकता से जीवन व्यतीत करने
का यह अर्थ है : अपने प्रभु परमेश्वर के सम्मुख
इन समस्त आज्ञाओं का पालन करना और
इनके अनुसार कार्य करना, जैसी उसने हमें
आज्ञा दी है।

---

* अथवा, "प्रभु, हमारा परमेश्वर, प्रभु, एक ही है।" या, "हमारा परमेश्वर, प्रभु, एक ही प्रभु है।" अथवा "प्रभु हमारा परमेश्वर है, प्रभु एक ही है।" या, "प्रभु, केवल प्रभु, हमारा परमेश्वर है।" + अथवा, "टीका", "मोहरा"

6 : 4 1 रा 8 : 60 ; 2 रा 19 : 15 ; जक 14 : 9; मक 12 : 29 **6 : 5** व्य 30 : 6 ; 2 रा 23 : 25 ; हो 6 : 6 ; मत 22 : 37 ; 1 यो 4 : 10 ; 5 : 3 **6 : 6** यश 51 : 7; यिर 31 : 33 **6 : 8** नि 13 : 9 **6 : 9** व्य 11 : 20 **6 : 10** यहो 24 : 13 **6 : 13** लू 4 : 8 ; मत 4 : 10 **6 : 16** नि 17 : 1- 7 ; मत 4 : 7

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रभु के पवित्र लोग

7 'जब तेरा प्रभु परमेश्वर तुझको उस देश में
पहुंचा देगा, जिस पर अधिकार करने के
लिए तू वहां जा रहा है, तब वह अनेक राष्ट्रों
को भगा देगा। वह तुझसे अधिक महान और
शक्तिशाली सात जातियों को-हित्ती, गिर्गाशी,
एमोरी, कनानी, परिज्जी, हिव्वी और यबूसी
को, तेरे सम्मुख से निकाल देगा। 2जब तेरा प्रभु
परमेश्वर उनको तेरे हाथ में सौंप देगा, और तू
उन्हें पराजित करेगा, तब तू उन्हें निषिद्ध
समझकर पूर्णतः नष्ट कर देना। उनके साथ
सन्धि मत करना और न उन पर दया करना। 3तू
उनसे विवाह-सम्बन्ध स्थापित नहीं करना : न
उनके पुत्र के लिए अपनी पुत्री देना, और न
अपने पुत्र के लिए उनकी पुत्री लेना ; 4क्योंकि
उनकी पुत्रियां तेरे पुत्रों को प्रभु का अनुसरण
करने से विमुख कर देंगी, और उनसे दूसरे
देवताओं की पूजा करवाएंगी। तब तेरे प्रति प्रभु
का क्रोध भड़क उठेगा, और वह तुझे अविलम्ब
नष्ट कर देगा। 5तू उनके साथ ऐसा व्यवहार
करना : उनकी वेदियों को तोड़ डालना। उनके
स्तम्भों को गिरा देना। उनके अशेरा देवी के
खम्भों को काटकर गिरा देना। उनकी मूर्तियों
को आग में जला देना ; 6क्योंकि तू अपने प्रभु
परमेश्वर की पवित्र प्रजा है। तेरे प्रभु परमेश्वर
ने तुझको अपनी प्रजा, अपनी निज सम्पत्ति
बनाने के लिए पृथ्वी की समस्त जातियों में से
तुझको चुना है।

7 'यदि प्रभु ने तेरी कामना की, और तुझे
चुना तो इसका कारण यह नहीं है कि तू अन्य
जातियों की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली था।*
तू तो अन्य जातियों में अत्यन्त दुर्बल+ था। 8नहीं,
प्रभु तुझसे प्रेम करता है, इस कारण उसने तुझे
चुना है। वह अपनी उस शपथ का पालन कर
रहा है, जो उसने तेरे पूर्वजों से खायी थी।
इसलिए प्रभु ने अपने भुजबल के द्वारा तुझे मिस्र
देश से बाहर निकाला था। उसने तुझे दासत्व
के घर से, मिस्र देश के राजा फरओ के हाथ
से मुक्त किया था। 9अतः तू जान ले कि तेरा
प्रभु परमेश्वर ही परमेश्वर है। वह विश्वस्त
परमेश्वर है। वह विधान का पालन करने वाला
है। जो लोग उससे प्रेम करते हैं और उसकी
आज्ञाओं का पालन करते हैं, उन पर वह हजार
पीढ़ियों तक करुणा करता है। 10किन्तु जो लोग
उससे घृणा करते हैं, उन्हीं से वह प्रतिशोध लेता
है और उनको नष्ट कर देता है। जो व्यक्ति
उससे घृणा करता है, उसी व्यक्ति से प्रतिशोध
लेने में वह विलम्ब नहीं करेगा। 11इसलिए ओ
इस्राएल, तू प्रभु की समस्त आज्ञाओं, संविधियों
और आदेशों का पालन करना, जिनको व्यवहार
में लाने की आज्ञा मैं आज तुझे दे रहा हूं।

आज्ञापालन का फल

12 'यदि तू इन आदेशों को सुनेगा, उनका
पालन करेगा और उनको व्यवहार में लाएगा,
तो तेरा प्रभु परमेश्वर तेरे प्रति अपने विधान का
पालन करेगा, और तुझ पर करुणा करता रहेगा;
जिसकी शपथ उसने तेरे पूर्वजों से खाई थी।
13वह तुझसे प्रेम करेगा, तुझे आशिष देगा, और
तुझको शक्तिशाली बनाएगा। जिस देश को देने
की शपथ उसने तेरे पूर्वजों से खाई है, उस देश
में वह तेरी देह के फल पर, तेरी भूमि की उपज
पर, तेरे अन्न पर, तेरे अंगूर के रस पर और तेरे
तेल पर आशिष देगा। वह तेरे पालतू पशुओं
और भेड़-बकरियों के बच्चों को बढ़ाएगा।
14दूसरी जातियों से अधिक तुझे आशिष प्राप्त
होगी। तेरा कोई पुरुष या स्त्री अथवा पालतू पशु
निस्सन्तान नहीं होगा। 15प्रभु तेरे मध्य से समस्त
रोग दूर करेगा। वह मिस्र देश की सब बुरी
महामारियां, जिनको तू जानता है, तुझ पर नहीं
डालेगा; वरन् वह उन्हें तुझसे बैर करने वाली

* अथवा "अधिक संख्या में" + अथवा, "अल्प संख्यक"

7 : 1 प्रे 13 : 19 **7 : 2** यहो 6 : 17 ; नि 23 : 32 **7 : 3** 1 रा 11 : 2 ; एज्रा 9 : 2 **7 : 5** नि 23 : 24 ; 34 : 13 ; व्य 12 : 3 **7 : 6** नि 19 : 5 ; लेव 19 : 2 ; यिर 2 : 3 ; आमो 3 : 2 ; तीत 2 : 24 ; 1 पत 2 : 9 **7 : 7** यो 15 : 16 ; 1 कुर 1 :26-29 **7 : 8** 1 यो 4 : 10.19 **7 : 9** यश 49 : 7 ; 1 थिस 5 : 24: 2 तिम 2 : 13; 1 यो 1 : 9 **7 : 10** व्य 24 : 16; 2 रा 14 : 6; यिर 31: 30 ; यहेज 18 : 20 **7 : 13** लू 1 : 72; यो 14 : 21 **7 : 15** नि 15 : 26

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जातियों पर डालेगा। 16ओ इस्राएल, तू समस्त
जातियों को, जिन्हें तेरा प्रभु परमेश्वर तुझे दे
रहा है, पूर्णत: समाप्त कर देना, उन पर दया-
दृष्टि मत करना, और न उनके देवताओं की
पूजा करना, क्योंकि तेरा यह कार्य तेरे लिए
जाल बन जाएगा!

विश्वास की आवश्यकता

17 'यदि तू अपने हृदय में कहेगा, ''ये राष्ट्र
मुझसे अधिक शक्तिशाली हैं। मैं इन्हें किस
प्रकार निकाल सकूंगा?'' 18तो तू उनसे मत
डरना। तू केवल यह स्मरण रखना कि तेरे प्रभु
परमेश्वर ने फरओ और समस्त मिस्र देश से
कैसा व्यवहार किया था: 19बड़ी-बड़ी परीक्षाएं,
जिनको तूने अपनी आंखों से देखा, चिह्न,
आश्चर्यपूर्ण कार्य, भुजबल और उद्धार के हेतु
बढ़ाए हुए हाथ, जिनके द्वारा तेरा प्रभु परमेश्वर
तुझे बाहर निकाल लाया था। तेरा प्रभु परमेश्वर
इन जातियों से जिनसे तू डरता है, ऐसा ही
व्यवहार करेगा। 20इसके अतिरिक्त तेरा प्रभु
परमेश्वर उन पर बर्रें भेजेगा, जिससे बचे हुए
और तेरे सम्मुख से भागकर छिपे हुए लोग भी
नष्ट हो जाएं।

21 'तू उनसे भयभीत मत होना; क्योंकि तेरा
प्रभु परमेश्वर, महान और आतंकमय परमेश्वर,
तेरे मध्य उपस्थित है। 22तेरा प्रभु परमेश्वर इन
जातियों को तेरे सम्मुख से थोड़ा-थोड़ा करके
निकाल देगा। तू उनका अविलम्ब विनाश मत
करना, ऐसा न हो कि वन-पशु बढ़कर तेरी
हानि करें। 23तेरा प्रभु परमेश्वर इन जातियों को
तुझे सौंप देगा, और उन्हें अत्यन्त भयभीत
करेगा, जब तक वे नष्ट न हो जाएं। 24वह उनके
राजाओं को तेरे हाथ में सौंप देगा, और तू उनका
नाम आकाश के नीचे से मिटा डालेगा। जब
तक तू उनको नष्ट नहीं कर देगा तब तक कोई
भी मनुष्य तेरे सम्मुख नहीं खड़ा हो सकेगा।

25 'तू उनके देवताओं की मूर्तियां आग में
जला डालना। मूर्तियों पर मढ़े हुए सोना-चांदी
का लालच मत करना, और न उसको लेना।
ऐसा न हो कि तू मूर्तियों के फन्दे में फंस जाए,
क्योंकि यह तेरे प्रभु परमेश्वर के लिए घृणित
बात है। 26तू अपने घर में कोई भी घृणित मूर्ति
नहीं लाएगा, अन्यथा तू भी उसके समान
निषिद्ध बनेगा। तू उसको पूर्णत: अशुद्ध और
घृणित वस्तु समझना; क्योंकि वह निषिद्ध वस्तु
है।

8 'समस्त आज्ञाओं के अनुसार, जिनका
आदेश मैं तुझे आज दे रहा हूँ, कार्य करने
के लिए तू तत्पर रहना, जिससे तू जीवित रहे
और अधिक शक्तिशाली बने, और उस देश में
जाकर उसको अपने अधिकार में करे, जिसको
प्रदान करने की शपथ प्रभु ने तेरे पूर्वजों से खाई
थी। 2तू उन सब मार्गों को स्मरण करना, जिन
पर तेरा प्रभु परमेश्वर तुझे चालीस वर्ष तक
निर्जन प्रदेश में ले गया, जिससे वह तुझे पीड़ित
करे और यह जानने के लिए तेरी परीक्षा ले, कि
तेरे हृदय में क्या है, और कि तू उसकी आज्ञाओं
का पालन करेगा अथवा नहीं। 3उसने तुझे पीड़ित
किया, तुझे भूख का अनुभव कराया। पर उसने
तुझे ''मन्ना'' भी खिलाया, जिसको तू नहीं
जानता था, और न तेरे पूर्वज ही जानते थे, ताकि
तू जान ले कि मनुष्य केवल रोटी से जीवित नहीं
रहता; किन्तु वह प्रभु के मुंह से निकले हुए
प्रत्येक वचन से जीवित रहता है। 4इन चालीस
वर्षों में तेरे वस्त्र फटकर तेरे शरीर पर से नहीं
गिरे, और न तेरे पैरों में छाले ही पड़े! 5फिर भी
तू अपने हृदय में यह बात जान ले कि जैसे पिता
अपने पुत्र को ताड़ित करता है, वैसे ही तेरा प्रभु
परमेश्वर तुझे ताड़ित करता है। 6इसलिए तू अपने
प्रभु परमेश्वर के मार्ग पर चल और उसके प्रति
भक्तिभाव रख। तू उसकी आज्ञाओं का पालन
करना; 7क्योंकि तेरा प्रभु परमेश्वर तुझे ऐसे
उत्तम देश में ला रहा है, जहां नदियां जल से
सदा परिपूर्ण रहती हैं; जो झरनों का देश है, जहां
गहरे गर्त के जलस्रोत घाटियों और पहाड़ियों

---

7 : 16 भज 106 : 36 **7 : 20** नि 23 : 28; यहो 24 : 12; प्रज्ञा 12 : 8 **7 : 22** नि 23 : 29 **8 : 2** हो 2 : 14; आमो 2 : 10 **8 : 3** नि 16 : 2; भज 78 : 25; 104 : 27; मत 4 : 4; यो 4 : 34; 6 : 27 **8 : 4** व्य 29 : 5 **8 : 5** 2 शम 7 : 14; नीति 3 : 12; 1 कुर 11 : 32; प्रज्ञा 11 : 9-10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

से निकल आते हैं। 8वह गेहूं, जौ, अंगूर, अंजीर,
और अनारों का देश है। वह जैतून और शहद
का देश है। 9उस देश में तू भर पेट रोटी खाएगा।
उस देश में तुझे किसी वस्तु का अभाव न
होगा। उस देश के पहाड़ों-चट्टानों में लोहा है।
तू उस देश की पहाड़ियों में से तांबा खोदकर
निकाल सकता है। 10तू खा-पीकर तृप्त रहेगा।
तू उस उत्तम देश के कारण जो तेरे प्रभु परमेश्वर
ने तुझे दिया है, प्रभु को धन्य-धन्य कहेगा।

प्रभु को मत भूलना

11 'सावधान! ऐसा न हो कि तू अपने प्रभु
परमेश्वर की आज्ञाओं, न्याय-सिद्धान्तों और
संविधियों को भूल जाए, जिनका आदेश आज
मैं तुझे दे रहा हूं और तू उनका पालन न करे।
12ऐसा न हो कि जब तू खा-पीकर तृप्त हो जाए
और अच्छे-अच्छे मकान बनाकर उनमें रहने
लगे, 13जब तेरे गाय-बैल, भेड़-बकरियां
असंख्य हो जाएं, तेरी सोना-चांदी भी बढ़
जाए, तेरे पास जो कुछ है, उसकी बढ़ोत्तरी हो
जाए, 14तब तेरे हृदय में अहंकार आ जाए, और
तू अपने प्रभु परमेश्वर को भूल जाए। ओ
इस्राएल! मत भूलना कि प्रभु परमेश्वर ने तुझे
मिस्र देश से, दासत्व के घर से निकाला है।
15उसने विशाल और भयानक निर्जन प्रदेश में,
आग्नेय सर्प, बिच्छुओं और प्यासी भूमि के देश
में तेरा मार्गदर्शन किया है। जहां जल नहीं था
वहां उसने तेरे लिए कड़ी चट्टान में से जल
निकाला था। 16उसने निर्जन प्रदेश में तुझे
''मन्ना'' खिलाया था जिसको तेरे पूर्वज नहीं
जानते थे। उसने तुझे पीड़ित किया, तुझे कसौटी
पर कसा था, कि अन्त में तेरा भला करे।
17सावधान! ऐसा न हो कि तू अपने हृदय में
कहे, ''मैंने अपनी शक्ति से, अपने भुजबल से
यह सम्पत्ति अर्जित की है।'' 18तू अपने प्रभु
परमेश्वर का स्मरण रखना; क्योंकि प्रभु परमेश्वर
ही सम्पत्ति अर्जित करने के लिए तुझे शक्ति
देता है, जिससे वह अपने विधान को, जिसकी
शपथ उसने तेरे पूर्वजों से खाई थी, पूरा करे,
जैसा आज भी है। 19पर यदि तू अपने प्रभु
परमेश्वर को भूल जाएगा, और दूसरे देवताओं
का अनुसरण करेगा, उनकी पूजा और वन्दना
करेगा, तो मैं आज तुझे गम्भीर चेतावनी देता हूं
कि तू निश्चय ही नष्ट हो जाएगा। 20उन राष्ट्रों
के समान, जिनको प्रभु ने तेरे सामने नष्ट किया
था, तू भी नष्ट हो जाएगा, क्योंकि तूने अपने
प्रभु परमेश्वर की वाणी नहीं सुनी थी।

प्रभु कनानी जातियों को पराजित करेगा

9 'ओ इस्राएल, सुन! आज तू अपने से
अधिक महान और शक्तिशाली राष्ट्रों को
निकालने के लिए यर्दन नदी पार करेगा। तू
विशाल और गगन-चुम्बी परकोटे वाले नगरों
को, 2दानव के वंशजों, बड़े-बड़े और ऊंचे-
ऊंचे कद के लोगों को पराजित करेगा, जिन्हें
तू जानता है, और जिनके विषय में तूने यह सुना
है, ''इन दानव वंशियों के सामने कौन खड़ा हो
सकता है?'' 3अत: आज तू यह जान ले कि तेरा
प्रभु परमेश्वर तेरे आगे-आगे भस्मकारी आग
के रूप में जाएगा। वह उन्हें नष्ट करेगा, और
उन्हें तेरे अधीन कर देगा। प्रभु के वचन के
अनुसार तू उन्हें निकाल देगा, और उन्हें
अविलम्ब नष्ट कर डालेगा।

4 'जब तेरा प्रभु परमेश्वर उन्हें तेरे सम्मुख
से निकाल देगा तब तू अपने हृदय में यह मत
कहना, ''मेरी धार्मिकता के कारण इस देश पर
अधिकार करने के लिए प्रभु मुझे लाया है।''
नहीं, इन राष्ट्रों की दुष्टता के कारण प्रभु इन्हें
तेरे सामने से बाहर निकाल रहा है। 5तू अपनी
धार्मिकता अथवा अपने हृदय की निष्कपटता
के कारण उनके देश पर अधिकार करने नहीं
जा रहा है। किन्तु इन राष्ट्रों की दुष्टता के कारण
तेरा प्रभु परमेश्वर उन्हें तेरे सम्मुख से निकाल
रहा है, जिससे प्रभु अपने वचन को, जिसकी
शपथ उसने तेरे पूर्वज अब्राहम, इसहाक और
याकूब से खाई थी, पूरा करे। 6तू यह बात जान
ले कि तेरी धार्मिकता के कारण प्रभु परमेश्वर
तेरे अधिकार में यह उत्तम देश तुझे नहीं प्रदान

---

8 : 12 हो 13 : 6 **8 : 15** यिर 2 : 6 ; गण 21 : 6 **8 : 17** शास 7 : 2 ; आमो 6 : 13; यो 15 : 5; 1 कुर 1 : 29; 4 : 7 **9 : 1** व्य 1 : 28 **9 : 2** गण 13 : 33 **9 : 3** यहो 3 : 11; इब्र 12 : 29 **9 : 5** तीत 3 : 5; इफ 2 : 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कर रहा है; क्योंकि तू ऐंठी गरदन वाली प्रजा
है।

होरेब पर्वत पर इस्राएल का विद्रोह करना

7 'स्मरण रखना और कभी मत भूलना कि
तुमने निर्जन प्रदेश में अपने प्रभु परमेश्वर को
क्रोधित किया था। जिस दिन से तुम मिस्र देश
से बाहर निकले हो, और इस स्थान पर पहुंचे
हो, तुम प्रभु से विद्रोह करते रहे हो। 8तुमने होरेब
पर्वत पर प्रभु को क्रोधित किया था, और वह
क्रुद्ध होकर तुम्हें नष्ट करना चाहता था। 9जब
मैं पत्थर की पट्टियां, उस विधान की पट्टियां,
जो प्रभु ने तुम्हारे साथ स्थापित किया, ग्रहण
करने के लिए पहाड़ पर चढ़ा था, तब मैं
चालीस दिन और चालीस रात तक पहाड़ पर
रहा। मैंने न रोटी खायी और न पानी पिया।
10प्रभु ने मुझे अपने हाथ से* लिखी हुई पत्थर
की दो पट्टियां दीं। उन पर प्रभु के वे सब वचन
लिखे हुए थे, जो उसने सभा के दिन पहाड़ पर
अग्नि के मध्य से तुमसे कहे थे। 11प्रभु ने चालीस
दिन और चालीस रात के अन्त में पत्थर की दो
पट्टियां, विधान की पट्टियां मुझे दीं। 12तब प्रभु
ने मुझसे कहा, ''उठ और यहां से अविलम्ब
नीचे जा; क्योंकि तेरे लोग, जिनको तू मिस्र देश
से बाहर निकाल लाया है, भ्रष्ट हो गए हैं। वे
उस मार्ग से शीघ्र ही भटक गए हैं, जिस पर
चलने की आज्ञा मैंने उनको दी है। उन्होंने एक
मूर्ति बनाई है।''

13 'प्रभु ने मुझसे आगे कहा, ''मैंने इन
लोगों को देखा है, ये ऐंठी गरदन के लोग हैं।
14मुझे छोड़ दे कि मैं उनको नष्ट करूं और
आकाश के नीचे से उनका नाम मिटा डालूं।
किन्तु मैं तुझे उनसे अधिक शक्तिशाली और
महान राष्ट्र बनाऊंगा।'' 15अत: मैं लौट पड़ा
और पहाड़ से नीचे उतर आया। पहाड़ आग में
दहक रहा था। विधान की दोनों पट्टियां मेरे
हाथों में थीं। 16मैंने तुम्हें देखा : तुम अपने प्रभु
परमेश्वर के विरुद्ध पाप कर रहे थे। तुमने
बछड़े की एक मूर्ति बनाई थी। तुम उस मार्ग
से शीघ्र ही भटक गए थे, जिस पर चलने की
आज्ञा प्रभु ने तुम्हें दी थी। 17तब मैंने दोनों पट्टियां
पकड़ीं, और अपने दोनों हाथों से उन्हें फेंक
दिया। तुम्हारी आंखों के सामने मैंने उनके
टुकड़े-टुकड़े कर दिए। 18मैं पहले के समान
चालीस दिन और चालीस रात प्रभु के सम्मुख
पड़ा रहा। मैंने न रोटी खाई, और न पानी पिया,
क्योंकि जो कार्य प्रभु की दृष्टि में बुरा था,
उसको करके तुमने पाप किया था और इस
प्रकार तुमने प्रभु को चिढ़ाया था। 19 मैं उसके
क्रोध के कारण, उसके प्रचण्ड प्रकोप के कारण
कांपने लगा। प्रभु तुमसे इतना क्रुद्ध था कि वह
तुम्हें नष्ट करने को तत्पर हो गया। किन्तु प्रभु
ने उस समय भी मेरी बात सुनी। 20प्रभु हारून
से इतना कुद्ध था कि वह उसको नष्ट करने को
तत्पर हो गया। मैंने उस समय हारून के लिए
भी प्रार्थना की। 21मैंने तुम्हारी पापमय वस्तु,
बछड़े की मूर्ति, जिसको तुमने बनाया था, ली
और उसको आग में फेंक दिया, उसके टुकड़े-
टुकड़े कर दिए। मैंने उसको अच्छे से पीसा जब
तक वह पिसकर चूर्ण न हो गई। तब मैंने उसके
चूर्ण को पहाड़ से नीचे बहने वाली नदी में फेंक
दिया।

22 'तुमने तबएराह, मस्सा और किबरोत-
हत्तावाह में भी प्रभु को क्रोधित किया था।
23जब प्रभु ने तुम्हें कादेश-बर्नेअ के मरूद्यान
से यह कहकर भेजा था, ''आक्रमण करो और
उस देश पर अधिकार कर लो, जिसको मैंने
तुम्हें प्रदान किया है,'' तब भी तुमने अपने प्रभु
परमेश्वर के वचन से विद्रोह किया था। तुमने
उस पर विश्वास नहीं किया, और न उसकी
वाणी सुनी। 24जिस दिन से मैं तुम्हें जानता हूं
उस दिन से तुम प्रभु के प्रति विद्रोह कर रहे हो।

25 'अत: मैं प्रभु के सम्मुख चालीस दिन
और चालीस रात पड़ा रहा, क्योंकि प्रभु ने कहा
था कि वह तुम्हें नष्ट कर देगा। 26मैंने प्रभु से

---

* शब्दश:, 'परमेश्वर की उंगली से'।

9 : 8-21 नि 32 : 7-20 **9 : 9** नि 24 : 18 **9 : 13** 2 रा 17 : 14 ; यिर 7 : 26 ; 17 : 23; बारू 2 : 30 **9 : 19** इब्र 12 : 21 **9 : 22** गण 11 : 3 **9 : 23** भज 78 : 22 **9 : 26** नि 32 : 11

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रार्थना की, "हे प्रभु, तू अपने निज लोगों को,
अपनी निज सम्पत्ति को, नष्ट मत कर। उसको
तूने अपने महान सामर्थ्य से मुक्त किया है।
उसको तूने अपने भुजबल के द्वारा मिस्र देश से
बाहर निकाला है। 27अपने सेवक अब्राहम,
इसहाक और याकूब को स्मरण कर। इन लोगों
के हठ, दुष्टता और पाप पर ध्यान मत दे।
28ऐसा न हो कि मिस्र देश के निवासी, जहां से
तूने इन्हें निकाला है, यह कहें : 'प्रभु इन्हें उस
देश में नहीं पहुंचा सका, जिसके विषय में वह
इनसे बोला था। निस्सन्देह प्रभु इनसे घृणा
करता है। सच पूछो तो निर्जन प्रदेश में इनका
वध करने के लिए उसने इन्हें मिस्र देश से
निकाला था।' 29प्रभु, ये तेरे निज लोग, तेरी
निज सम्पत्ति हैं। तू अपने महान सामर्थ्य से,
उद्धार के हेतु फैले हुए अपने हाथों से इन्हें बाहर
निकाल लाया है।"

विधान की नई पट्टियां

10 'उस समय प्रभु ने मुझसे कहा था, "तू
प्रथम पट्टियों के समान पत्थर की दो
पट्टियां कटवा और पहाड़ पर चढ़कर मेरे पास
आ। तू लकड़ी की एक मंजूषा बना। 2मैं उन
पर वे ही शब्द लिखूंगा जो प्रथम पट्टियों पर
लिखे थे और जिनको तूने टुकड़े-टुकड़े कर
दिया है। तू उनको मंजूषा में रख देना।" 3अतः
मैंने बबूल की लकड़ी की एक मंजूषा बनाई,
और प्रथम पट्टियों के समान पत्थर की दो
पट्टियां कटवायीं। मैं पहाड़ पर चढ़ा। दोनों
पट्टियां मेरे हाथ में थीं। 4प्रभु ने प्रथम लेख के
समान, दस आज्ञाएं+ पट्टियों पर लिख दीं, जो
उसने सभा के दिन पहाड़ पर अग्नि के मध्य से
तुमसे कही थीं। उसके बाद प्रभु ने उनको मुझे
दे दिया। 5मैं लौटा और पहाड़ से नीचे उतर
गया। मैंने उन पट्टियों को उस मंजूषा में, जिसे
मैंने बनाया था, रख दिया। वे तब से वहीं हैं,
जैसी प्रभु ने मुझे आज्ञा दी थी। 6(इस्राएली लोगों
ने याकन वंशियों के कुओं से मोसेराह की ओर
प्रस्थान किया। वहां हारून की मृत्यु हुई, और
वहीं उसे गाड़ा गया। उसका पुत्र एलआजर
उसके स्थान पर पुरोहित का कार्य करने लगा।
7वहां से उन्होंने गूदगोदाह की ओर प्रस्थान
किया, और गूदगोदाह से योट-बाताह की ओर
गए, जो जल-सरिताओं की भूमि है। 8उस समय
प्रभु ने लेवी कुल को पृथक किया कि वे प्रभु
की विधान-मंजूषा को वहन करें। वे प्रभु के
सम्मुख प्रस्तुत रहकर उसकी सेवा करें और
उसके नाम से आशिष दें, जैसा वे आज भी
करते हैं। 9इसलिए लेवी कुल के वंशजों को
अपने भाई-बन्धुओं के साथ कोई निज भूमि-
भाग अथवा पैतृक-सम्पत्ति नहीं मिली है, वरन्
प्रभु ही उनकी पैतृक-सम्पत्ति है, जैसा तुम्हारा
प्रभु परमेश्वर ने उन्हें वचन दिया था।)

प्रभु की शर्त

10 'मैं पहले के समान पहाड़ पर चालीस
दिन और चालीस रात रहा। उस समय भी प्रभु
ने मेरी बात सुनी, और तुम्हें नष्ट करने की इच्छा
त्याग दी। 11प्रभु ने मुझसे कहा था, "उठ, और
इन लोगों के आगे-आगे मार्ग-दर्शन कर,
जिससे वे उस देश में प्रवेश करें और उस पर
अधिकार करें। उस देश को प्रदान करने की
शपथ मैंने इनके पूर्वजों से खाई है।"

12 'अब, ओ इस्राएल, तेरा प्रभु परमेश्वर
तुझ से क्या चाहता है? केवल यह कि तू अपने
प्रभु परमेश्वर की भक्ति करे* उसके सब मार्गों
पर चले और उससे प्रेम करे; तू अपने सम्पूर्ण
हृदय और सम्पूर्ण प्राण से अपने प्रभु परमेश्वर
की सेवा करे, 13और उसकी सब आज्ञाओं तथा
संविधियों का पालन करे, जिसका आदेश मैं
तेरी भलाई के लिए आज तुझे दे रहा हूं।

14 'देखो यह आकाश, उच्च आकाश, और
पृथ्वी तथा उसमें जो कुछ है, वह सब तुम्हारे
प्रभु परमेश्वर ही का है। 15फिर भी प्रभु ने
तुम्हारे ही पूर्वजों के प्रति प्रेम की कामना की,
और उनके पश्चात् उनके वंशजों को, अर्थात्

+ शब्दशः, 'वचन' * अथवा, 'भय माने'

10 : 1 नि 34 : 1 ; 25 : 10 **10 : 6** गण 20 : 28 **10 : 9** गण 18 : 20 **10 : 10** नि 34 : 28 **10 : 12** व्य 6 : 5
10 : 14 1 रा 8 : 27 ; भज 24 : 1 ; यश 66 : 1-2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तुम्हीं को अन्य जातियों में से चुना, जैसा आज भी है। [16]अत: अपने हृदय को विनम्र बनाओ*, और हठीले न बने रहो [17]क्योंकि तुम्हारा प्रभु परमेश्वर समस्त देवताओं का परमेश्वर है। वह समस्त स्वामियों का स्वामी है। वह महान, बलवान और आतंकमय परमेश्वर है। वह किसी का पक्षपात नहीं करता, और न किसी से घूस ही लेता है। [18]वह पितृहीन और विधवा का न्याय करता है। वह तुम्हारे देश में रहने वाले प्रवासी व्यक्ति से प्रेम करता है, उसको भोजन-वस्त्र देता है। [19]अत: प्रवासी व्यक्ति से प्रेम करो, क्योंकि तुम भी मिस्र देश में प्रवासी थे।

20 'तू प्रभु परमेश्वर की भक्ति करना। तू उसकी आराधना करना, और उससे ही सम्बद्ध रहना। तू केवल उसके नाम की शपथ खाना। [21]वही तेरे लिए आराध्य है। वह तेरा परमेश्वर है, जिसने तेरे लिए महान और आतंकमय कार्य किए हैं, जिनको तूने अपनी आंखों से देखा है। [22]जब तेरे पूर्वज मिस्र देश गए, तब वे केवल सत्तर प्राणी थे; किन्तु अब तेरे प्रभु परमेश्वर ने तुझे आकाश के तारों के समान असंख्य बना दिया है। तू अपने प्रभु परमेश्वर से प्रेम करना, तथा उसके द्वारा सौंपे गये दायित्वों और उसके आदेशों, उसकी संविधियों और आज्ञाओं का सदा पालन करना।+

प्रभु की महानता

11 'तुम आज इस बात को समझ लो कि तुम्हारे बच्चों ने नहीं, वरन् तुमने शिक्षा++ प्राप्त की है। [2]यह केवल तुम जानते हो, और केवल तुमने अपने प्रभु परमेश्वर की महानता, भुजबल, उद्धार के हेतु फैले हुए हाथ, [3]चिह्न और उसके आश्चर्यपूर्ण कार्यों को देखा है। यह सब प्रभु ने मिस्र देश में, मिस्र देश के राजा तथा उसके देश के साथ किया था; [4]ये आश्चर्यपूर्ण कार्य उसने मिस्र देश की सेना, उसके अश्वों और रथों के साथ किये थे। जब वे तुम्हारा पीछा कर रहे थे तब उसने उन्हें लाल सागर के जल में डुबो दिया था। प्रभु ने उनको ऐसा मिटा डाला कि आज तक उनका चिह्न दिखाई नहीं दिया। [5]यह तुम्हारे बच्चे नहीं, बल्कि तुम जानते हो कि इस स्थान पर पहुंचने के पूर्व प्रभु परमेश्वर ने तुम्हारे साथ निर्जन प्रदेश में कैसा व्यवहार किया था। [6]उसने रूबेन के वंशज एलीआब के पुत्र दातन और अबीरम के साथ क्या किया था। तुम्हें मालूम है कि इस्राएली समाज के मध्य धरती ने अपना मुंह खोला और वह दातन और अबीरम को, उनके परिवार को, उनके तम्बुओं को तथा उनके समस्त अनुचरों को निगल गई। [7]तुमने स्वयं अपनी आंखों से प्रभु द्वारा किए गए इन सब महान कार्यों को देखा है।

प्रतिज्ञाएं और चेतावनियां

8 'तुम उन समस्त आज्ञाओं का पालन करना, जिनका आदेश मैं आज तुम्हें दे रहा हूं, जिससे तुम शक्तिशाली बनो, और उस देश में प्रवेश कर उस पर अधिकार कर सको, जहाँ तुम अधिकार करने के लिए जा रहे हो। [9]प्रभु की आज्ञाओं का पालन करने से उस देश में तुम्हारी आयु लम्बी होगी। प्रभु ने शपथ खाई थी कि वह दूध और शहद की नदियों वाला देश तुम्हारे पूर्वजों और उनके वंशजों को प्रदान करेगा।

10 'जिस देश पर अधिकार करने के लिए तुम वहां प्रवेश कर रहे हो, वह मिस्र देश के समान नहीं है, जहां से तुम बाहर निकले हो। मिस्र देश वनस्पति के बगीचे के समान है, जहां तुम बीज बोते थे, और स्वयं अपने पैरों से रहट चलाकर उसको सींचते थे। [11]परन्तु जिस देश पर तुम अधिकार करने के लिए जा रहे हो, वह पहाड़ियों और घाटियों का देश है। वह आकाश की वर्षा के द्वारा सींचा जाता है। [12]तुम्हारा प्रभु परमेश्वर उस देश की देखभाल करता है।

---

* मूल में 'का खतना करो' + मूल में 11 : 1 ++अथवा, 'ताड़ना'।

10 : 16 यिर 4 : 4 ; रोम 2 : 29 **10 : 17** प्रक 17 : 14 ; 1 तिम 6 : 15 ; 2 इत 19 : 7 ; अय्य 34 : 19 ; प्रे 10 : 34 ; रोम 2 : 11 ; गल 2 : 6 ; इफ 6 : 9 ; कुल 3 : 25 ; 1 पत 1 : 17 ; प्रज्ञा 6 : 7 **10 : 18** प्रव 35 : 12-15 , 17 **10 : 19** नि 22 : 21 ; लेव 19 : 34 **10 : 22** उत 46 : 27 ; 15 : 5 ; प्रे 7 : 14 **11 : 4** नि 14 : 28 **11 : 6** गण 16 : 31-32 **11 : 11** नह 9 : 25

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तुम्हारे प्रभु परमेश्वर की आंखें वर्ष के आरम्भ से वर्ष के अन्त तक उस पर लगी रहती हैं।

13 'यदि तुम मेरी आज्ञाओं को निश्चय ही मानोगे, जिनका आदेश आज मैं तुम्हें दे रहा हूं, और अपने प्रभु परमेश्वर से प्रेम करोगे, अपने सम्पूर्ण हृदय और सम्पूर्ण प्राण से उसकी सेवा करोगे, [14]तो वह निर्धारित समय पर तुम्हारे देश को शरद-कालीन और वसन्त-कालीन वर्षा प्रदान करेगा। तब तुम अनाज, अंगूर का रस और तेल एकत्र कर सकोगे। [15]वह तुम्हारे पशुओं के लिए मैदान में घास उपजाएगा। तुम भोजन वस्तु खाकर तृप्त होगे। [16]पर तुम सावधान रहना! ऐसा न हो कि तुम्हारा हृदय धोखा खाए और तुम पथभ्रष्ट हो जाओ और दूसरे देवताओं की पूजा करो, झुककर उनकी वन्दना करो। [17]ऐसा न हो कि प्रभु का क्रोध तुम्हारे प्रति भड़क उठे और वह आकाश के झरोखे बन्द कर दे, जिससे वर्षा न हो और भूमि अपनी उपज न दे और तुम उस उत्तम देश में अविलम्ब मिट जाओ जिसको प्रभु तुम्हें दे रहा है।

18 'अत: तुम मेरे इन शब्दों को अपने हृदय और प्राण में धारण करना! उन्हें चिह्न-स्वरूप अपने हाथ पर बांधना। वे तुम्हारी दोनों आंखों के मध्य शिरोबंद होंगे। [19]तुम उन्हें अपने बच्चों को सिखाना। जब तुम अपने घर में बैठते हो, अथवा मार्ग पर चलते हो, जब तुम लेटते हो अथवा उठते हो, तब तुम, इन्हीं आज्ञाओं की चर्चा करना। [20]तुम उन्हें अपने घर की चौखट के बाजुओं और नगर के प्रवेश-द्वारों पर लिखना। [21]तब तुम्हारी और तुम्हारे पुत्र-पुत्रियों की आयु उस देश में लम्बी होगी जिसके लिए प्रभु ने तुम्हारे पूर्वजों से शपथ खाई थी कि जब तक पृथ्वी के ऊपर आकाश स्थिर है तब तक उस देश पर उनका अधिकार होगा।

22 'यदि तुम इन सब आज्ञाओं का निश्चय ही पालन करोगे, जिनका आदेश आज मैं तुम्हें दे रहा हूं, उनको व्यवहार में लाओगे, अपने प्रभु परमेश्वर से प्रेम करोगे, उसके मार्ग पर चलोगे, और उससे सम्बद्ध रहोगे, [23]तो प्रभु तुम्हारे सामने से इन जातियों को निकाल देगा; तुम अपने से अधिक महान और शक्तिशाली राष्ट्रों को निकाल दोगे। [24]जिस-जिस स्थान पर तुम्हारा पैर पड़ेगा, वह तुम्हारा होगा। तुम्हारी सीमा निर्जन प्रदेश से लबानोन, और फरात नदी से पश्चिमी सागर तक होगी। [25]कोई भी मनुष्य तुम्हारे सम्मुख नहीं खड़ा हो सकेगा। जिस देश में तुम्हारे पैर पड़ेंगे, उसको तुम्हारा प्रभु परमेश्वर तुम्हारे प्रति भय और आतंक से आतंकित करेगा; जैसा उसने तुम्हें वचन दिया है।

26 'देखो, आज मैं तुम्हारे सम्मुख आशिष और श्राप रखता हूं : [27]यदि तुम अपने प्रभु परमेश्वर की आज्ञाओं को सुनोगे, जिनका आदेश आज मैं तुम्हें दे रहा हूं, तो परमेश्वर से तुम्हें आशिष प्राप्त होगी। [28]किन्तु यदि तुम अपने प्रभु परमेश्वर की आज्ञाओं को नहीं सुनोगे, और उस मार्ग से भटक जाओगे, जिस पर चलने का आदेश आज मैं तुम्हें दे रहा हूं, और उन देवताओं का अनुसरण करोगे, जिन्हें तुम नहीं जानते हो, तो तुम्हें परमेश्वर श्राप देगा! [29]जब तुम्हारा प्रभु परमेश्वर तुमको उस देश में पहुंचा देगा, जिस पर अधिकार करने के लिए तुम वहां जा रहे हो, तब गरिज्जीम पर्वत से आशिष और एबल पर्वत से श्राप के वचन सुनाना। [30]ये पहाड़ जैसा तुम जानते हो, यर्दन नदी के उस पार, पश्चिमी मार्ग पर, कनानी जाति के देश में, जो अराबाह में रहती है, गिलगाल के सम्मुख, ''मोरे के बांज वृक्ष'' के निकट हैं। [31]तुम्हें यर्दन नदी को पार करना होगा कि तुम उस देश में प्रवेश कर उस पर अधिकार कर सको, जो तुम्हारा प्रभु परमेश्वर तुम्हें दे रहा है। जब तुम उस पर अधिकार कर लोगे और उस में बस जाओगे [32]तब प्रभु परमेश्वर की समस्त संविधियों और आदेशों का पालन करना, और उनके अनुसार कार्य करना, जो आज मैं तुम्हारे सम्मुख प्रस्तुत कर रहा हूं।

---

11 : 14 लेव 26 : 4; व्य 28 : 12 ; यिर 5 : 24 ; योए 2 : 23 **11 : 18** व्य 6 : 6; मत 23 : 5 **11 : 21** नीति 3 : 2 **11 : 24** यहो 1 : 3-**11 : 26** व्य 30 : 1,15 **11 : 29** व्य 27 : 12; यहो 8 : 33

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आराधना-स्थल केवल एक है

12 'ये संविधियां और आदेश हैं। इनका
तुम पालन करोगे और इनके अनुसार
तुम उस देश में कार्य करोगे, जो तुम्हारे पूर्वजों
के प्रभु परमेश्वर ने तुम्हें प्रदान किया है कि जब
तक तुम पृथ्वी पर जीवित हो तब तक उस पर
अधिकार करो। 2तुम उच्च पहाड़ों-पहाड़ियों
पर स्थित तथा हरे वृक्षों के नीचे की सब पूजा-
वेदियों को पूर्णत: ध्वस्त कर देना, जहां वे राष्ट्र
जिन्हें तुम निकालोगे, अपने देवताओं की पूजा
करते हैं। 3तुम उनकी वेदियों को तोड़ डालना।
उनके पूजा-स्तम्भों को गिरा देना। अशेरा देवी
के खम्भों को आग में जला देना। तुम उनके
देवताओं की मूर्तियों को काटकर गिरा देना,
और उस स्थान से उनका नाम मिटा डालना।
4जैसा वे हर स्थान पर पूजा-स्थल बनाते हैं,
वैसा तुम अपने प्रभु परमेश्वर के लिए मत
बनाना। 5किन्तु तुम अपने प्रभु परमेश्वर को
उस स्थान में ढूंढ़ना जिसको वह स्वयं तुम्हारे
सब कुलों की भूमि-भाग में से चुनेगा और वहां
अपने नाम को प्रतिष्ठित करेगा तथा अपना
निवास-स्थान बनाएगा। 6वहीं तुम जाना और
अपनी अग्नि-बलि और पशु-बलि, अपना
दशमांश तथा भेंट जिसको तुम चढ़ाते हो,
मन्नत-बलि, स्वेच्छा-बलि और गाय-बैल
तथा भेड़-बकरी का पहलौठा बच्चा ले जाया
करना। 7तुम वहीं अपने प्रभु परमेश्वर के
सम्मुख भोजन करना। तुम अपने समस्त
परिवार के साथ अपने उद्यम के लिए आनन्द
मनाना, जिस पर तुम्हारे प्रभु परमेश्वर ने
आशिष दी है।

8 'जैसा आज हम कार्य कर रहे हैं, वैसा तुम
मत करना : प्रत्येक व्यक्ति वही कार्य कर रहा
है, जो उसकी दृष्टि में उचित है। 9तुम अब तक
विश्राम-स्थल पर, अपनी पैतृक-भूमि पर, जो
तुम्हारा प्रभु परमेश्वर तुम्हें दे रहा है, नहीं पहुँचे
हो। 10जब तुम यर्दन नदी को पार कर लोगे,
और उस देश में बस जाओगे, जो पैतृक
अधिकार के लिए तुम्हारा प्रभु परमेश्वर तुम्हें
दे रहा है, जब वह तुम्हारे चहुंओर के शत्रुओं
से तुम्हें विश्राम देगा कि तुम सुरक्षित रूप से
निवास कर सको, 11तब तुम उस स्थान पर,
जिसको तुम्हारा प्रभु परमेश्वर चुनेगा और
अपने नाम को वहां प्रतिष्ठित करेगा, ये सब
वस्तुएं लाना, जिनका आदेश मैंने तुम्हें दिया है:
तुम्हारी अग्नि-बलि और पशु-बलि, तुम्हारा
दशमांश तथा भेंट जिसको तुम चढ़ाते हो, और
तुम्हारी समस्त मन्नत-बलि, जिसकी मन्नत तुम
प्रभु से मानते हो। 12तुम अपने प्रभु परमेश्वर के
सम्मुख अपने पुत्र- पुत्रियों, सेवक-सेविकाओं
तथा तुम्हारे नगर के भीतर रहनेवाले लेवी जन
के साथ आनन्द मनाना, क्योंकि तुम्हारे साथ
लेवी का कोई अंश अथवा पैतृक सम्पत्ति नहीं
है।

13 'तू सावधान रहना। ऐसा न हो कि जो-
जो स्थान तू देखे वहीं अग्नि-बलि चढ़ा दे।
14जो स्थान प्रभु तेरे समस्त कुलों के भूमि-
भागों में से चुनेगा, तू वहीं अग्नि-बलि चढ़ाना,
और वहीं वे सब कार्य करना जिनका आदेश
मैं तुझे दे रहा हूं।

15 'फिर भी तू अपने किसी भी नगर में पशु
मार कर अपनी इच्छा और प्रभु परमेश्वर द्वारा
दी गई आशिष के अनुसार मांस खा सकता है।
शुद्ध और अशुद्ध मनुष्य उसको खा सकते हैं,
जैसे चिकारे या हरिण का मांस। 16केवल इतना
कि तू उसका रक्त मत खाना, वरन् उसको जल
के सदृश भूमि पर उण्डेल देना। 17तू अपने नगर
के भीतर अपने अन्न, अंगूर के रस, अथवा तेल
के दशमांश को, या गाय-बैल, भेड़-बकरी के
पहलौठे पशु को, अथवा मन्नत-बलि को
जिसकी मन्नत तू मानता है, या स्वेच्छा-बलि
को, अथवा भेंट को जिसको तू चढ़ाता है, नहीं
खाएगा। 18परन्तु तू, तेरे पुत्र-पुत्री, सेवक-
सेविका और तेरे नगर के भीतर रहनेवाला लेवी
जन उनको तेरे प्रभु परमेश्वर के सम्मुख उस
स्थान में खाएगा, जिसको तेरा प्रभु परमेश्वर

---

12 : 2 2 रा 16 : 4; 17 : 10; **12 : 5** 1 रा 8 : 29 **12 : 6** व्य 14 : 22 **12: 8** शास 17 : 6 **12 : 16** उत 9 : 4; लेव 7 : 26 ; व्य 15 : 23

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

स्वयं चुनेगा। तू अपने समस्त उद्यम के लिए प्रभु परमेश्वर के सम्मुख आनन्द मनाना। [19]तू सावधान रहना! जितने दिन तक तू अपने देश में है, लेंवी जन को मत भूलना।

20 'जब तेरा प्रभु परमेश्वर अपने वचन के अनुसार तेरी सीमा को बढ़ाएगा, और तू कहेगा, ''मैं मांस खाऊँगा'', क्योंकि तू मांस की इच्छा करता है, तो तू जितना चाहे, उतना मांस खा सकता है। [21]यदि वह स्थान तुझसे दूर होगा, जिसको तेरा प्रभु परमेश्वर अपना नाम वहाँ प्रतिष्ठित करने के लिए चुनेगा, तो प्रभु द्वारा दिए गए गाय-बैल, भेड़-बकरी में से किसी भी पशु को मार सकता है, जैसा आदेश मैंने तुझे दिया है। तू अपने नगर के भीतर अपनी इच्छानुसार उसको खा सकता है। [22]जैसे चिकारा और हरिण खाया जाता है, वैसे तू उसको भी खा सकता है। शुद्ध और अशुद्ध दोनों व्यक्ति उसको खा सकते हैं। [23]केवल दृढ़ निश्चय करना कि तू उसको रक्त के साथ नहीं खाएगा; क्योंकि रक्त ही प्राण है। अत: तू मांस के साथ प्राण नहीं खाएगा। [24]तू उसको नहीं खाना वरन् तू उसको भूमि पर जल के सदृश उण्डेल देना। [25]तू उसको नहीं खाना, जिससे तू प्रभु की दृष्टि में उचित कार्य कर सके, और तेरा तथा तेरे पश्चात् तेरी सन्तान का भला हो। [26]किन्तु तू अपनी देय पवित्र वस्तुओं तथा मन्नत-बलि को लेकर उस स्थान में जाना, जिसको प्रभु चुनेगा, [27]और वहाँ अपने प्रभु परमेश्वर की वेदी पर अग्नि-बलि, मांस और रक्त अर्पित करना। बलि-पशुओं का रक्त तेरे प्रभु परमेश्वर की वेदी पर उण्डेला जाएगा, परन्तु मांस को तू खा सकता है। [28]तू सावधान होकर इन बातों को सुन, जिनका आदेश मैं तुझे दे रहा हूं, जिससे तू अपने प्रभु परमेश्वर की दृष्टि में भला और उचित कार्य कर सके, और तेरा तथा तेरे पश्चात् तेरी सन्तान का सदा भला हो।

मूर्ति-पूजा के विरुद्ध चेतावनी

29 'जब तेरा प्रभु परमेश्वर तेरे सामने उन जातियों का संहार करेगा, जिनको तू निकालने के लिए वहाँ जा रहा है, और जब तू उनको निकालकर उनके देश में बस जाएगा, [30]तब तू सावधान रहना। ऐसा न हो कि उनके नष्ट होने के पश्चात् तू जाल में फंस जाए और उनका अनुसरण करने लगे। ऐसा न हो कि उनके देवताओं के विषय में यह पूछताछ करने लगे, ''ये जातियाँ अपने देवताओं की किस प्रकार आराधना करती थीं? मैं भी वैसी आराधना करूँगा।'' [31]परन्तु तू अपने प्रभु परमेश्वर के लिए ऐसा कार्य मत करना; क्योंकि उन्होंने अपने देवताओं के लिए वे सब घृणित कार्य किए थे जिनसे प्रभु घृणा करता है। वे अपने देवताओं के लिए अपने पुत्र-पुत्रियों को भी अग्नि में जलाते हैं!

32 'जिन बातों का आदेश मैं तुम्हें देता हूं, उन सब का तुम पालन करना; उनके अनुसार कार्य करना। तुम उनमें न कुछ जोड़ना, और न उनमें से कुछ घटाना।*

13 'यदि तेरे मध्य में किसी नबी अथवा स्वप्न-द्रष्टा का जन्म हो, वह तुझे चिह्न अथवा आश्चर्यपूर्ण कार्य दिखाए [2]और जिस चिह्न अथवा आश्चर्यपूर्ण कार्य के विषय में वह बोला था, वह सच प्रमाणित हो जाए, और तब वह कहे, ''आओ, हम दूसरे देवताओं का अनुसरण करें'', जिनको तू नहीं जानता है, और ''आओ, हम उनकी आराधना करें'', [3]तो तू उस नबी अथवा स्वप्न-द्रष्टा की बातों को मत सुनना; क्योंकि तेरा प्रभु परमेश्वर यह जानने के लिए तेरी परीक्षा ले रहा है, कि क्या तू अपने सम्पूर्ण हृदय से, सम्पूर्ण प्राण से अपने प्रभु परमेश्वर को प्रेम करता है। [4]तू केवल अपने प्रभु परमेश्वर का अनुसरण करना, उसकी भक्ति करना, उसकी आज्ञाओं का पालन करना, और उसकी वाणी को सुनना। तू उसकी आराधना करना, और उससे सम्बद्ध रहना।

* मूल में अध्याय 13 : 1

12 : 23 लेव 17 : 11 **12 : 29** नि 23 : 24; गण 33 : 52 **12 : 31** लेव 18 : 21; 2 रा 17:15 **12 : 32** व्य 4 : 2; प्रक 22 : 18 **13 : 2** यिर 23 : 11; 28 : 9; मत 7 : 22

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

5किन्तु उस नबी अथवा स्वप्न-द्रष्टा को मृत्यु-
दण्ड देना; क्योंकि उसने तुझे उस प्रभु परमेश्वर
से विमुख करने वाले वचन कहे थे, जिसने तुझे
मिस्त्र देश से बाहर निकाला और तुझे दासत्व
के घर से मुक्त किया है। उस नबी अथवा
स्वप्न-द्रष्टा ने तुझे उस मार्ग से खींचा था, जिस
पर चलने की आज्ञा तेरे प्रभु परमेश्वर ने तुझे दी
है। तू अपने मध्य से इस बुराई को अवश्य दूर
करना।

6 'यदि तेरा सगा भाई, अथवा तेरा पुत्र, या
पुत्री अथवा तेरी प्राण-प्रिय पत्नी या तेरा अंतरंग
मित्र तुझे गुप्त रूप से फुसलाए और कहे,
''आओ, हम चलें और दूसरे देवताओं की पूजा
करें'', जिनको न तू जानता है और न तेरे पूर्वज
ही जानते थे, 7चाहे वे तेरे चहुंओर और निकट
रहनेवाली जातियों के देवता हों, अथवा पृथ्वी
के एक सीमान्त से दूसरे सीमान्त तक दूर रहने
वाली जातियों के हों, 8तो तू उसकी बात नहीं
मानना, और न उसकी बात सुनना। उस पर
दया-दृष्टि मत करना और न उसको जीवित
छोड़ना। तू उसके अपराध को मत छिपाना,
9वरन् तू निश्चय ही उसका वध करना। उसको
मार डालने के लिए तेरा ही हाथ सर्वप्रथम उठे
और तेरे पश्चात् दूसरे लोगों का हाथ। 10तू पत्थरों
से मार-मारकर उसका वध करना, क्योंकि
उसने तुझे तेरे उस प्रभु परमेश्वर से अलग करने
का प्रयत्न किया था, जो तुझे मिस्त्र देश से,
दासत्व के घर से, बाहर निकाल लाया है।
11समस्त इस्त्राएली इस घटना के विषय में
सुनेंगे, और भयभीत होंगे। वे ऐसा बुरा कर्म तेरे
मध्य पुनः नहीं करेंगे।

12 'यदि तू अपने किसी नगर में, जिसको
तेरा प्रभु परमेश्वर तुझे वहाँ निवास करने के
लिए दे रहा है, यह बात सुने 13कि तेरे मध्य से
ही अधम पुरुष निकले हैं; और उन्होंने यह
कहकर नगर-वासियों को पथ-भ्रष्ट किया है,
''आओ, हम चलें और दूसरे देवताओं की पूजा
करें,'' जिन्हें तू नहीं जानता था, 14तो तू पूछताछ
करना, जांच-पड़ताल करना और सावधानी से
प्रश्न करना। यदि यह बात सच और पक्की हो
कि तेरे मध्य में ऐसा घृणित कार्य किया गया है,
15तो उस नगर के निवासियों को तलवार से
निश्चय ही मार डालना। उन सबको जो उसमें
हैं, और उसके पशुओं को निषिद्ध समझकर
तलवार से पूर्णतः नष्ट कर डालना। 16तू उसकी
सब लूट उसके चौक के मध्य में एकत्र करना,
और अपने प्रभु परमेश्वर के लिए पूर्ण अग्नि-
बलि के रूप में उस नगर को और उसकी
समस्त लूट को आग में जला डालना। वह सदा
के लिए खण्डहर हो जाएगा; उसको पुनः
आबाद नहीं किया जाएगा। 17कोई भी निषिद्ध
वस्तु तेरे हाथ नहीं लगनी चाहिए, जिससे प्रभु
अपनी क्रोधाग्नि को शान्त करे, तुझ पर दया
करे, और तरस खाकर तुझको शक्तिशाली
बनाए; जैसी उसने तेरे पूर्वजों से शपथ खाई थी।
18पर यह तब होगा जब तू अपने प्रभु परमेश्वर
की वाणी को सुनेगा, उसकी उन सब आज्ञाओं
का पालन करेगा, जिनके अनुसार कार्य करने
का आदेश मैं आज तुझे दे रहा हूं; और जो कार्य
तेरे प्रभु परमेश्वर की दृष्टि में उचित है, उसी को
तू करेगा।

मृत्यु-शोक की निषिद्ध प्रथा

14 'तुम अपने प्रभु परमेश्वर की संतान हो!
इसलिए तुम मृत व्यक्ति के प्रति शोक
प्रकट करने के लिए अपने शरीर पर घाव मत
करना, और न भौहों के बाल मुंड़ाना। 2तुम+
अपने प्रभु परमेश्वर की पवित्र प्रजा हो। प्रभु ने
तुम्हें अपनी प्रजा, अपनी निज सम्पत्ति बनाने के
लिए पृथ्वी की समस्त जातियों में से तुम्हें चुना
है।

शुद्ध और अशुद्ध पशु

3 'तुम कोई घृणित वस्तु मत खाना। 4जो पशु
तुम खा सकते हो, वे ये हैं: बैल, भेड़, बकरा,
5लाल हरिण, चिकारा, मृग*, जंगली बकरा,

+ मूल में 'तू'। * इब्रानी में ''यहमूर'' नामक वन-पशु।

13 : 5 1 कुर 5 : 13 **13 : 13** 2 कुर 6 : 15 **13 : 15** यहो 6 : 17 **14 : 1** 1 यो 3 : 1; लेव 19 : 28; 1 थिस 4 : 13 **14 : 2** नि 19 : 5; तीत 2 : 14; 1 पत 2 : 9 **14 : 4** लेव 11 : 2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

साकिन, कुरंग और पहाड़ी भेड़। 6पशुओं में से
सब चिरे और फटे खुरवाले तथा पागुर करने
वाले पशुओं को तुम खा सकते हो। 7फिर भी
तुम पागुर करने वाले अथवा फटे खुरवाले
पशुओं में से इन पशुओं को नहीं खाना : ऊंट,
खरगोश, और चट्टानी बिज्जू। वे पागुर तो करते
हैं, परन्तु उनके खुर चिरे हुए नहीं होते। अत:
वे तुम्हारे लिए अशुद्ध हैं। 8सूअर चिरे खुरवाला
पशु तो है, परन्तु वह पागुर नहीं करता। अत:
वह तुम्हारे लिए अशुद्ध है। तुम इनके मांस को
नहीं खाना। इनकी लोथ को स्पर्श भी मत
करना।

9 'तुम जल-जन्तुओं में से इन जन्तुओं को
खा सकते हो : प्रत्येक पंखवाला और चोईं-
वाला जल-जन्तु तुम खा सकते हो। 10परन्तु जिस
जल-जन्तु के पंख अथवा चोईं नहीं हैं, तुम
उसको मत खाना। वह तुम्हारे लिए अशुद्ध है।

11 'तुम सब शुद्ध पक्षी खा सकते हो।
12किन्तु जो पक्षी तुम नहीं खाओगे, वे ये हैं:
गरुड़, हड़फोड़, कुरर, 13बाज, सब प्रकार की
चील, 14सब प्रकार के कौए, 15शुतुर-मुर्ग, रात-
शिकरा, जल-कुक्कुट, सब प्रकार के शिकरे,
16उल्लू, बुज्जा, जलमुर्गी, 17जलसिंह, गिद्ध,
जल-कौवा, 18लगलग और सब प्रकार के
बगुले, हुदहुद और चमगादड़। 19सब पंखवाले
कीड़े तुम्हारे लिए अशुद्ध हैं। वे नहीं खाए
जाएंगे। 20पर तुम सब पंखवाले शुद्ध पक्षी खा
सकते हो।

21 'तुम किसी भी पशु की लोथ का मांस
मत खाना। तुम उसको अपने नगर-द्वार के
भीतर रहनेवाले प्रवासी को दे देना, कि वह
उसको खा ले, अथवा उसे विदेशी को बेच
देना, क्योंकि तुम अपने प्रभु परमेश्वर के लिए
पवित्र लोग हो।

'तू बकरी के बच्चे को उसकी मां के दूध में
मत पकाना।'

दशमांश देना

22 'तू प्रतिवर्ष खेत में बीज से होने वाली
उपज का दशमांश लेना। 23तब अपने प्रभु
परमेश्वर के सम्मुख उस स्थान में, जिसको वह
अपना नाम प्रतिष्ठित करने के लिए चुनेगा, तू
अपने अन्न, अंगूर के रस और तेल का दशमांश
तथा गाय-बैल और भेड़-बकरी के पहिलौठे
का मांस खाना, जिससे तू अपने प्रभु परमेश्वर
की सदा भक्ति करना* सीखेगा। 24जब तेरा
प्रभु परमेश्वर तुझे आशिष देगा, पर यदि उस
स्थान का मार्ग तेरे लिए बहुत लम्बा होगा,
जिससे तू अपना दशमांश वहां नहीं ले जा
सकेगा, क्योंकि वह स्थान, जिसको तेरे प्रभु
परमेश्वर अपना नाम स्थापित करने के लिए
चुनेगा, तुझ से बहुत दूर है, 25तब तू उसको
रुपयों में बेच देना, और रुपयों को हाथ में लेकर
उस स्थान को जाना जिसको तेरा प्रभु परमेश्वर
चुनेगा। 26वहाँ तू अपनी इच्छा के अनुसार
किसी भी वस्तु पर रुपया व्यय कर सकता है:
गाय-बैल, भेड़-बकरी, अंगूर का रस और
मदिरा, जिस किसी में तेरी रुचि हो। तू वहां
अपने प्रभु परमेश्वर के सम्मुख उसको खाना,
और अपने परिवार के साथ आनन्द मनाना।
27लेवीय जन जो तेरे नगर-द्वार के भीतर रहता
है, उसको तू मत भूलना, क्योंकि तेरे साथ
उसका कोई अंश अथवा पैतृक सम्पत्ति नहीं है।

28 'तू प्रत्येक तीसरे वर्ष के अन्त में उस वर्ष
की समस्त उपज का दशमांश लेना और अपने
नगर में उसको जमा कर देना। 29तब लेवीय
जन, क्योंकि तेरे साथ उसका कोई अंश अथवा
पैतृक सम्पत्ति नहीं है, तथा प्रवासी, पितृहीन
और विधवा, जो तेरे नगर के भीतर रहते हैं,
आएंगे और उसको खाकर तृप्त होंगे। तेरे इस
कार्य के कारण तेरा प्रभु परमेश्वर तेरे सब
काम-धन्धों पर आशिष देगा।

ऋण-मुक्ति का नियम

15 'तू प्रत्येक सातवें वर्ष के अन्त में अपने
कर्जदारों को उनके कर्ज से मुक्त कर
देना। 2ऋण से मुक्ति का नियम इस प्रकार
होगा: हरएक ऋणदाता उस ऋण को छोड़

* अथवा, 'भय मानना'

14 : 21 नि 22 : 31; 23 : 19 14 : 22 लेव 27 : 30 14 : 27 गण 18 : 20 14 : 29 लू 14 : 12; 2 कुर 9 : 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

देगा, जो उसने अपने पड़ोसी को दिया है। वह अपने पड़ोसी से अथवा भाई-बन्धु से उसको बलपूर्वक वसूल नहीं करेगा; क्योंकि प्रभु की ओर से ऋण-मुक्ति की घोषणा हो चुकी है। [3]तू विदेशी से अपना ऋण बलपूर्वक वसूल कर सकता है, परन्तु जो ऋण तेरे भाई-बन्धु पर है, उसको तू छोड़ देना। [4]तेरे मध्य कोई दरिद्र नहीं रहेगा। (क्योंकि तेरा प्रभु परमेश्वर उस देश में निश्चय ही तुझे आशिष देगा, जो वह तुझे पैतृक-अधिकार के लिए प्रदान कर रहा है) [5]यह तभी होगा यदि तू अपने प्रभु परमेश्वर की वाणी ध्यानपूर्वक सुनेगा, समस्त आज्ञाओं के अनुसार, जिनका आदेश आज मैं तुझे दे रहा हूं, कार्य करने के लिए तत्पर रहेगा। [6]जैसे तेरे प्रभु परमेश्वर ने तुझे वचन दिया है, वह तुझे आशिष देगा, और तू धन-सम्पन्न होकर अनेक जातियों-राष्ट्रों को ऋण देगा, पर स्वयं तू ऋण नहीं लेगा। तू अनेक राष्ट्रों पर राज्य करेगा, पर वे तुझ पर राज्य नहीं करेंगे।

7 जो देश तेरा प्रभु परमेश्वर तुझे दे रहा है, यदि तेरे उस देश के किसी नगर में तेरे भाई-बन्धुओं में कोई गरीब है, तो तू अपने गरीब भाई-बहिन के प्रति अपना हृदय कठोर मत करना, और न अपनी मुट्ठी बन्द रखना; [8]वरन् तू उसके लिए अपनी मुट्ठी खोल देना। जिस वस्तु का उसको अभाव हो, उसकी पूर्ति के लिए तू अवश्य उधार देना। [9]तू सावधान रहना। ऐसा न हो कि यह अधम विचार तेरे हृदय में आए, "सातवां वर्ष, ऋण-मुक्ति का वर्ष निकट है", और तू अपने गरीब भाई-बहिन को अनुदार दृष्टि से देखने लगे, और उसे कुछ न दे। वह तेरे विरुद्ध प्रभु की दुहाई दे सकता है, और यह तेरे लिए एक पाप-कर्म होगा। [10]तू उसे अवश्य उधार देना। जब तू उसे उधार देगा तब तेरे हृदय को बुरा न लगे, क्योंकि इसी बात के कारण तेरा प्रभु परमेश्वर तेरे सब कार्यों पर, तेरे सब उद्यम पर आशिष देगा। [11]निस्सन्देह तेरे देश में गरीब कभी समाप्त नहीं होंगे। इसलिए मैं तुझे आज्ञा देता हूं : तू अपने देश में अपने भाई-बहिन, दुःखी और दरिद्र को मुक्त हस्त से उधार देना।

गुलामों से उचित व्यवहार करना

12 'यदि तेरा भाई-बन्धु, इब्रानी स्त्री अथवा पुरुष, तेरे हाथ बेचा जाए तो वह छः वर्ष तक तेरी सेवा करेगा। तू सातवें वर्ष उसे स्वतन्त्र कर देना और अपने पास से जाने देना। [13]जब तू उसे स्वतन्त्र करके अपने पास से जाने देगा तब उसे खाली हाथ मत जाने देना; [14]वरन् उसे अपनी भेड़-बकरियों, खलिहान और अंगूर के रस-कुण्ड में से उदार हृदय से देना। जैसी तेरे प्रभु परमेश्वर ने तुझे आशिष दी है, उसके अनुसार उसे देना। [15]स्मरण रखना कि तू भी मिस्र देश में गुलाम था, और तेरे प्रभु परमेश्वर ने तुझे मुक्त किया था। इसलिए आज मैं तुझे यह आदेश दे रहा हूं।

16 'पर यदि वह तुझसे कहता है, "मैं आपके पास से नहीं जाऊंगा", क्योंकि वह तुझसे और तेरे परिवार से प्रेम करने लगा है, और वह तेरे साथ सुखी है, [17]तो तू एक सूआ लेना, और उसका कान अपने घर के द्वार पर लगाकर सूए से छेद देना। तब वह सदा तेरा गुलाम बना रहेगा। तू ऐसा ही गुलाम स्त्री के साथ करना।

18 'जब तू उसे स्वतन्त्र करके जाने देगा तब उसकी यह स्वतंत्रता तुझे कठिन न जान पड़े; क्योंकि उसने दो मजदूर के बराबर छः वर्ष तक तेरी सेवा की है। तेरा प्रभु परमेश्वर तेरे सब कार्यों पर तुझे आशिष देगा।

समस्त पहिलौठों का अर्पण

19 'तू अपनी गायों, भेड़-बकरियों के समस्त पहिलौठे नर बच्चे अपने प्रभु परमेश्वर को अर्पित करना। गायों के पहिलौठे बछड़े से कोई काम मत लेना, और न भेड़-बकरियों के पहिलौठे का ऊन कतरना। [20]तू प्रति वर्ष अपने परिवार के साथ अपने प्रभु परमेश्वर के सम्मुख उस स्थान में अर्पित पशु का मांस खाना,

---

15 : 7 1 यो 3 : 17 **15 : 8** लेव 25 : 35 **15 : 11** मत 26 : 11; यो 12 : 8 **15 : 12** नि 21 : 2; यिर 34 : 14 **15 : 19** नि 13 : 12

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जिसको प्रभु चुनेगा। 21यदि उसमें किसी प्रकार
का कलंक है, यदि वह लंगड़ा है, अथवा अंधा
है, या उसमें अन्य प्रकार का गंभीर दोष है, तो
उसको अपने प्रभु परमेश्वर के लिए बलि मत
करना। 22तू उस पशु के मांस को अपने नगर-
द्वार के भीतर खाना। जैसे तू चिकारे और हरिण
का मांस खाता है वैसे ही शुद्ध और अशुद्ध
मनुष्य दोनों उसका मांस खाएंगे। 23तू केवल
उसका रक्त मत खाना, वरन् उसको जल के
सदृश भूमि पर उण्डेल देना।

तीन विशिष्ट यात्रा-पर्व

पास्का (फसह) का पर्व

16 'तू आबीब महीने को मानना और अपने
प्रभु परमेश्वर के लिए पास्का का पर्व
मनाना, क्योंकि आबीब महीने में तेरा प्रभु
परमेश्वर तुझे रात के समय मिस्र देश से बाहर
निकाल लाया था। 2तू अपनी भेड़-बकरी, गाय-
बैल में से पास्का के पशु को अपने प्रभु
परमेश्वर के लिए उस स्थान में बलि करना,
जिसको प्रभु स्वयं चुनेगा और अपने नाम को
वहां प्रतिष्ठित करेगा। 3तू उस पशु-बलि के
साथ खमीरी रोटी मत खाना। तू सात दिन तक
उसके साथ बेखमीर रोटी, "दुःख की रोटी"
खाना, क्योंकि तू मिस्र देश से हड़बड़ी में*
निकला था। इस प्रकार तू अपने जीवन भर उस
दिन को स्मरण रखेगा, जब तू मिस्र देश से
बाहर निकला था। 4सात दिन तक समस्त देश
में तेरे पास खमीर न दिखाई दे। जिस पशु को
तू पहले दिन की सन्ध्या समय बलि करेगा,
उसका मांस सबेरे तक नहीं छोड़ना। 5तू अपने
किसी भी नगर में, जो तेरा प्रभु परमेश्वर तुझे
दे रहा है, पास्का के पशु को बलि नहीं करेगा;
6वरन् तू पास्का के पशु को सन्ध्या समय, ठीक
सूर्यास्त के समय जब तू मिस्र देश से बाहर
निकला था, उस स्थान में बलि करना, जिसको
तेरा प्रभु परमेश्वर चुनेगा और अपने नाम को
वहां प्रतिष्ठित करेगा। 7तू उसी स्थान में, जिसको
तेरा प्रभु परमेश्वर स्वयं चुनेगा, मांस को पकाना
और खाना। फिर सबेरे तू लौटकर अपने तम्बू
में चले जाना। 8तू छः दिन तक बेखमीर रोटी
खाना, और सातवें दिन अपने प्रभु परमेश्वर के
लिए एक गम्भीर समारोह आयोजित करना।
उस दिन तू कोई काम मत करना।

सप्त सप्ताह का पर्व (फसल-कटाई का पर्व)

9 'तू सात सप्ताह गिनना। जिस दिन तू खड़ी
फसल पर हंसिया चलाएगा, उस दिन से सात
सप्ताह की गणना आरम्भ करना। 10जो आशिष
तेरे प्रभु परमेश्वर ने तुझे दी है, उसके अनुपात
के अनुसार अपने हाथ से स्वेच्छा-बलि चढ़ाना
और अपने प्रभु परमेश्वर के लिए सप्त-सप्ताह
का पर्व मनाना। 11तू अपने पुत्र-पुत्रियों, सेवक-
सेविकाओं, तथा तेरे नगर में रहने वाले लेवीय
जन, तेरे मध्य में रहने वाले प्रवासियों, पितृहीनों,
और विधवाओं के साथ, अपने प्रभु परमेश्वर
के सम्मुख उस स्थान में आनन्द मनाना,
जिसको तेरा प्रभु परमेश्वर स्वयं चुनेगा और
अपने नाम को वहां प्रतिष्ठित करेगा। 12स्मरण
रखना कि तू भी मिस्र देश में गुलाम था। तू इन
संविधियों का पालन करना, और इनके अनुसार
कार्य करना।

मण्डप-पर्व

13 'जब तू अपने खलिहान तथा अंगूर के
रस-कुण्ड में उपज एकत्र करेगा, तब सात दिन
तक मण्डप-पर्व मनाना। 14तू अपने पुत्र-पुत्रियों,
सेवक-सेविकाओं, तथा तेरे नगर में रहने वाले
लेवीय जन, प्रवासियों, पितृहीनों और विधवाओं
के साथ पर्व में आनन्द मनाना। 15तू अपने प्रभु
परमेश्वर के लिए उस स्थान में सात दिन तक
पर्व मनाना, जिसको तेरा प्रभु चुनेगा। तेरा प्रभु
परमेश्वर तेरी समस्त उपज पर, तेरे सब कामों
पर आशिष देगा, जिससे तू आनन्दमग्न हो
जाएगा।

16 'तेरे परिवार के सब पुरुष वर्ष में तीन बार
अपने प्रभु परमेश्वर के सम्मुख उस स्थान में

---

* अथवा, 'शीघ्रता से'।

15 : 23 उत 9 : 4 ; लेव 7 : 26 16 : 1 नि 12 : 2 ; लेव 23 : 5 ; गण 28 : 19 16 : 9 नि 23 : 16 ; लेव 23 : 15 ; गण 28 : 26 16 : 13 लेव 23 : 34; गण 29 : 12

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उपस्थित होंगे, जिसको वह स्वयं चुनेगा :
बेखमीर रोटी के पर्व पर, सप्त-सप्ताह के पर्व
पर, और मण्डप-पर्व पर। वे खाली हाथ प्रभु
को अपना मुंह नहीं दिखाएंगे। 17तेरे परिवार
का प्रत्येक व्यक्ति अपने सामर्थ्य के अनुरूप,
तथा जो आशिष तेरे प्रभु परमेश्वर ने तुझे दी है,
उसके अनुसार भेंट अर्पित करेगा।

न्याय और प्रशासन

18 'तू प्रत्येक कुल में शासक और शास्त्री
चुनना और उन्हें हर नगर पर, जिसको तेरा प्रभु
परमेश्वर तुझे दे रहा है, नियुक्त करना। वे
जनता का धार्मिकता से न्याय करेंगे। 19तू न्याय
को भ्रष्ट मत करना। तू पक्षपात नहीं करना। तू
घूस मत लेना ; क्योंकि घूस बुद्धिमान व्यक्ति
की आंख को बन्द कर देती है। वह धार्मिकों
के न्याय-पक्ष को उलट देती है। 20तू न्याय,
केवल न्याय का अनुसरण करना, जिससे तू उस
देश में, जिसको तेरा प्रभु परमेश्वर तुझे दे रहा
है, जीवित रहे और उस पर अधिकार करे।

21 'जो वेदी तू अपने प्रभु परमेश्वर के लिए
बनाएगा, उसके पास अशेरा देवी के खंभे के
रूप में कोई पेड़ मत लगाना। 22तू पूजा के लिए
कोई स्तम्भ मत खड़ा करना। उससे तेरा प्रभु
परमेश्वर घृणा करता है।

17 'तू अपने प्रभु परमेश्वर के लिए ऐसे
बैल अथवा भेड़ की बलि मत करना,
जिसमें किसी प्रकार का कलंक या बुराई है;
क्योंकि यह तेरे प्रभु-परमेश्वर की दृष्टि में
घृणित है।

2 'यदि तेरे किसी नगर में, जिसको तेरा प्रभु
परमेश्वर तुझे दे रहा है, तेरे मध्य ऐसी स्त्री या
पुरुष पाया जाएगा, जिसने तेरे प्रभु परमेश्वर के
विधान का उल्लंघन करके उसकी दृष्टि में बुरा
कार्य किया है, 3उसने दूसरे देवतओं की पूजा
की है, और उनकी अथवा सूर्य, चन्द्रमा या
आकाश की सेना में से किसी की वन्दना की
है, जिसकी आज्ञा मैंने नहीं दी है, 4यदि यह बात
तुझे बताई जाएगी और तू उसको सुनेगा, तो
सावधानी से पूछताछ करना। यदि यह बात सच
और पक्की होगी कि इस्राएली समाज में ऐसा
घृणित कार्य किया गया है 5तो तू उस स्त्री या
पुरुष को जिसने ऐसा घृणित कार्य किया है
पकड़कर अपने नगर-द्वार पर लाना। तब तू उस
स्त्री या पुरुष को पत्थरों से मार डालना।

6 'जिस व्यक्ति पर मृत्यु-दण्ड का आरोप
है, उसे दो अथवा तीन व्यक्तियों की गवाही के
आधार पर मृत्यु-दण्ड दिया जाएगा। एक गवाह
की गवाही के आधार पर किसी को मृत्यु-दण्ड
नहीं दिया जाएगा। 7उसको मार डालने के लिए
गवाहों का हाथ ही पहले उठेगा, और उसके
बाद दूसरे सब लोगों का हाथ। यों तू अपने मध्य
से इस बुराई को अवश्य दूर करना।

8 'यदि तेरे सम्मुख हत्या, कानूनी विवाद,
प्रहार अथवा तेरे नगर का कोई भी मुकदमा
प्रस्तुत हो और वह तुझे अत्यन्त कठिन जान
पड़े, तो तू उस स्थान को जाना जो तेरा प्रभु
परमेश्वर चुनेगा। 9तू लेवीय पुरोहितों और उस
समय के शासक के पास जाना। वे जांच-
पड़ताल करेंगे, और तेरे लिए न्याय-निर्णय
करेंगे। 10तू उसी न्याय के अनुसार कार्य करना,
जो वे उस स्थान से जिसको तेरा प्रभु चुनेगा,
तेरे लिए निर्णय करेंगे। जो आदेश वे तुझे देंगे,
उनको व्यवहार में लाने के लिए तत्पर रहना।
11जो आदेश वे तुझे देंगे, जो न्याय-निर्णय वे
तुझ पर घोषित करेंगे, उनके अनुसार ही तू कार्य
करना। जो निर्णय वे तुझे घोषित करेंगे, उससे
न दाहिनी ओर और न बायीं ओर मुड़ना। 12जो
व्यक्ति ढिठाई करके तेरे प्रभु परमेश्वर की सेवा
में प्रस्तुत पुरोहित की अथवा उस शासक की
आज्ञा का उल्लंघन करेगा, उसे निश्चय ही
मृत्यु-दण्ड दिया जाएगा। यों तू इस्राएल से इस
बुराई को अवश्य दूर करना। 13सब लोग इसके
विषय में सुनेंगे और भयभीत होंगे, और फिर
ढिठाई नहीं करेंगे।

---

16 : 17 2 कुर 8 : 12 **16 : 19** नि 23 : 8; लेव 19 : 15 **16 : 21** नि 34 : 13 ; लेव 26 : 1 **17 : 3** नि 22 : 20 **17 : 6** गण 35 : 30 ; मत 18 : 16 , 2 कुर 13 : 1 ; 1 तिम 5 : 19 ; इब्र 10 : 28 **17 : 7** 1 कुर 5 : 13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

राजाओं के सम्बन्ध में आदेश

14 'जब तू उस देश में प्रवेश करेगा, जो तेरा
प्रभु परमेश्वर तुझे दे रहा है, उस पर अधिकार
करेगा और उस में निवास करने लगेगा, और
तू यह कहेगा, ''मैं अपने चारों ओर के राष्ट्रों
के समान अपने ऊपर एक राजा प्रतिष्ठित
करूंगा,'' 15तब तू निश्चय ही उस व्यक्ति को
अपने ऊपर राजा प्रतिष्ठित करना, जिसे तेरा
प्रभु परमेश्वर चुनेगा। तू अपने जाति-भाइयों में
से ही किसी को अपने ऊपर राजा प्रतिष्ठित
करना। तू किसी विदेशी को, जो तेरा जाति-
भाई नहीं है, प्रतिष्ठित मत करना। 16राजा अपने
पास अधिक घोड़े नहीं रखेगा, और न घोड़ों का
आयात करने के लिए अपने लोगों को मिस्र देश
भेजेगा कि उसके पास और घोड़े हो जाएं;
क्योंकि प्रभु ने तुझ से कहा है, ''तू इस मार्ग से
फिर कभी नहीं लौटेगा।'' 17राजा अनेक पत्नियां
नहीं रखेगा, ऐसा न हो कि उसका हृदय भटक
जाए। वह धनवान बनने के लिए सोना, चांदी
भी नहीं इकट्ठा करेगा।

18 ''जब वह अपने राज्य के सिंहासन पर
बैठेगा तब इस व्यवस्था की पुस्तक से, अपने
लिए एक पुस्तक में नकल* कर लेगा। व्यवस्था
की पुस्तक लेवीय पुरोहितों के पास होगी।
19प्रतिलिपि उसके पास रहेगी और वह जीवन-
भर उसको पढ़ा करेगा। उससे वह अपने प्रभु
परमेश्वर की भक्ति करना सीखेगा। वह इस
व्यवस्था के वचनों का और इन संविधियों का
पालन करेगा। वह उनके अनुसार कार्य करेगा।
20तब उसका हृदय समाज के अन्य सदस्यों को
तुच्छ नहीं समझेगा और वह इन आज्ञाओं से न
दाहिनी ओर न बायीं ओर मुड़ेगा। यदि वह ऐसा
कार्य करेगा तो वह और उसके वंशज इस्राएली
राष्ट्र में बहुत वर्ष तक राज्य करते रहेंगे।

लेवीय पुरोहितों का भाग

18 'लेवीय पुरोहितों का, अर्थात् समस्त
लेवी कुल का, शेष इस्राएली कुलों के
साथ कोई भाग अथवा पैतृक भूमि-भाग नहीं
होगा। वे प्रभु को अग्नि में अर्पित बलि तथा
उसका देय-भाग खाया करेंगे। 2उनका अपने
भाई-बन्धुओं के मध्य कोई पैतृक भूमि-भाग
नहीं होगा। प्रभु ही उनका पैतृक भूमि-भाग है,
जैसे प्रभु ने उन्हें वचन दिया था। 3जो लोग बैल
अथवा भेड़ की बलि चढ़ाते हैं, उनकी बलि में
से पुरोहितों का न्यायोचित भाग यह है। वे लोग
पुरोहित को बलि-पशु का कंधा, दोनों गाल
और जांघ के जोड़ का मांस देंगे। 4तू अपनी
उपज का प्रथम अन्न, अंगूर का प्रथम रस और
तेल का प्रथम भाग और भेड़ का सबसे पहले
काटा गया ऊन उसे देना ; 5क्योंकि तेरे प्रभु
परमेश्वर ने, अपने सम्मुख प्रस्तुत रहने और
अपने नाम से सेवा करने के लिए, सब कुलों
में से उसको और उसके वंशजों को सदा के
लिए चुना है।

6 'यदि कोई लेवीय जन इस्राएल के किसी
भी नगर से, जहां वह प्रवास करता है, उस
स्थान में आता है (जब उसकी इच्छा हो, वह
आ सकता है) जिसको प्रभु चुनेगा, 7तो वह
अपने लेवीय भाइयों के समान, जो वहां प्रभु के
सम्मुख उपस्थित रहकर सेवा-कार्य करते हैं,
अपने प्रभु परमेश्वर के नाम से सेवा-कार्य कर
सकता है। 8अपने पूर्वजों की पैतृक सम्पत्ति
बेचकर जो आमदनी उसकी होगी, उसके
अतिरिक्त वह उनके साथ समान भोजन-अंश
प्राप्त करेगा।

अन्य जातियों की प्रथाओं के विरुद्ध चेतावनी

9 'जब तू उस देश में प्रवेश करेगा, जो तेरा
प्रभु परमेश्वर तुझे दे रहा है, तब उन राष्ट्रों की
घृणित प्रथाओं को मत सीखना। 10तेरे मध्य ऐसा
व्यक्ति नहीं पाया जाएगा, जो अग्नि में अपने
पुत्र या पुत्री को चढ़ाता है, जो शकुन विचारता
है, भविष्य बताता है, शुभ-अशुभ मुहूर्त
निकालता है, जो जादूगर है, 11जो सम्मोहिनी
विद्या जानता है, जो ओझा है, जो भूत-प्रेत को

* अथवा, 'इस व्यवस्था का विवरण'।

17 : 14 हो 13 : 9 ; 1 शम 8 : 11-18 **17 : 16** 1 रा 10 : 28 ; नि 13 : 17 ; गण 14 : 3 **17 : 17** 1 रा 11 : 3; 10 : 21 **18 : 2** गण 18 : 20; यहेज 44 : 28 **18 : 10** लेव 19 : 26

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बुलाता है, जो मृतकों को जगाता है। [12]ऐसे कार्य करने वाले व्यक्ति से प्रभु घृणा करता है। ये घृणित प्रथाएं हैं। इन्हीं घृणित प्रथाओं के कारण तेरा प्रभु परमेश्वर इस देश में बसने वाली जातियों को तेरे सामने से निकाल रहा है। [13]तू अपने प्रभु परमेश्वर के सम्मुख निर्दोष बने रहना। [14]इन जातियों ने, जिन्हें तू निकाल रहा है, शकुन विचारने वालों और भविष्य बताने वालों की बातें सुनी थीं, परन्तु तेरे प्रभु परमेश्वर ने तुझे यह कार्य नहीं करने दिया।

प्रभु मूसा के समान एक नबी भेजेगा

15 'तेरा प्रभु परमेश्वर तेरे मध्य से, तेरे जाति-भाइयों में से मेरे समान एक नबी को तेरे लिए उत्पन्न करेगा। तू उसकी बातें सुनना। [16]यह तूने सभा के दिन होरेब पर्वत पर अपने प्रभु परमेश्वर से मांगा था। तूने कहा था, ''भला हो कि मैं अपने प्रभु परमेश्वर की वाणी फिर न सुनूं, और यह विशाल अग्नि फिर न देखूं, अन्यथा मैं मर जाऊंगा।'' [17]तब प्रभु ने मुझ से कहा था, ''जो कुछ ये बोले, अच्छा ही बोले। [18]मैं इनके जाति-भाइयों के मध्य से इनके लिए तेरे समान एक नबी को उत्पन्न करूंगा। मैं अपने वचन उसके मुंह में डालूंगा। जो आज्ञा मैं उसे दूंगा, वही वह उन्हें बताएगा। [19]जो मनुष्य मेरे उन वचनों को, जो वह मेरे नाम से बोलेगा, नहीं सुनेगा, उससे मैं लेखा लूंगा। [20]परन्तु जो नबी ढिठाई से मेरे नाम से ऐसे वचन कहेगा जिनको बोलने की आज्ञा मैंने नहीं दी है, अथवा जो दूसरे देवताओं के नाम से बोलेगा, उस नबी का वध किया जाएगा।'' [21]यदि तू अपने हृदय में यह प्रश्न पूछे, ''जो वचन प्रभु ने नहीं कहा है, उसको हम किस प्रकार जानेंगे?'' [22]तो उसकी यह पहचान है: जब नबी प्रभु के नाम से बोलता है, और वचन के अनुसार कार्य नहीं होता, अर्थात् उसका वचन सत्य प्रमाणित नहीं होता है, तब उस वचन को प्रभु ने नहीं कहा था, वरन् नबी ने ढिठाई से उसको कहा था। तू उससे मत डरना।

शरण-नगर

19 'जब तेरा प्रभु परमेश्वर उन जातियों का संहार कर देगा, जिनका देश तेरा प्रभु परमेश्वर तुझे दे रहा है, और जब तू उनको निकाल कर उनके नगरों में, उनके घरों में बस जाएगा, [2]तब तू उस देश में, जिस पर अधिकार करने के लिए उसको तेरा प्रभु परमेश्वर तुझे प्रदान कर रहा है; तीन नगर पृथक रखना। [3]तू सड़क तैयार करना, और उस देश के क्षेत्र को, जो तेरा प्रभु परमेश्वर तुझे पैतृक-अधिकार के लिए प्रदान कर रहा है, तीन भागों में विभाजित करना, जिससे कोई भी हत्यारा वहां भाग कर शरण ले सके। [4]इस विधि से हत्यारा वहां भाग कर अपने प्राण बचा सकता है:

'यदि कोई व्यक्ति बिना अभिप्राय के अपने पड़ोसी की हत्या करता है, जिस के प्रति पहले उसकी शत्रुता नहीं थी, [5](उदाहरण के लिए, वह अपने भाई-बन्धु के साथ लकड़ी काटने के लिए जंगल जाता है। वह पेड़ काटने के लिए अपने हाथ से कुल्हाड़ी चलाता है। तब कुल्हाड़ी बेंट से निकलकर उसके पड़ोसी को लग जाती है और वह मर जाता है।) तो वह इन नगरों में से किसी एक नगर में भाग कर शरण ले सकता है, और अपने प्राण बचा सकता है। [6]ऐसा न हो कि रक्त-प्रतिशोधी क्रोधाग्नि में जलता हुआ हत्यारे का पीछा करे, और सड़क की लम्बाई के कारण उसको पकड़ ले, और उस पर प्राणघातक प्रहार करे, यद्यपि वह न्याय की दृष्टि से मृत्यु-दण्ड के योग्य नहीं है, क्योंकि उसके पड़ोसी के प्रति पहले उसकी शत्रुता नहीं थी।

7 'इसलिए मैं तुझे आदेश देता हूँ: तू तीन नगर पृथक रखना। [8]यदि तेरा प्रभु परमेश्वर तेरे देश की सीमा बढ़ाएगा, जिसकी शपथ उसने तेरे पूर्वजों से खाई थी, और तुझे यह सारा देश

---

18 : 13 मत 5 : 48 **18 : 15** मत 17 : 5; 21 : 11; यो 1 : 17; 4 : 19; 7 : 40; प्रे 3 : 22; 7 : 37 **18 : 28** नि 4 : 12; यो 1 : 21; 12 : 49 **18 : 19** यहेज 3 : 19 ; 33 : 9 **18 : 20** व्य 13 : 5; यिर 14 : 14 **18 : 22** 1 रा 22 : 28 ; यिर 28 : : 9 ; यहेज 33 : 33 **19 : 2** यहो 20 : 2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रदान कर देगा, जिसको देने का वचन उसने तेरे
पूर्वजों को दिया था, [9](यदि तू इन सब आज्ञाओं
का पालन करेगा जिनका आदेश आज मैं तुझे
दे रहा हूँ, और उनके अनुसार कार्य करेगा,
अपने प्रभु परमेश्वर से प्रेम करेगा, और उसके
मार्ग पर चलेगा) तो तू इन तीन नगरों के
अतिरिक्त और तीन नगर पृथक करना। [10]इस
प्रकार निर्दोष व्यक्ति का रक्त तेरे उस देश में
नहीं बहेगा, जिसको पैतृक-अधिकार के लिए
तेरा प्रभु परमेश्वर तुझे प्रदान कर रहा है।
अन्यथा उसके रक्त का दोष तुझ पर लगेगा।
11 'यदि कोई व्यक्ति अपने पड़ोसी के प्रति
बैर-भाव रखता है, और घात लगाकर उस पर
ऐसा प्राणघातक प्रहार करता है कि वह मर
जाता है, तथा हत्यारा इन नगरों में से किसी नगर
में भाग कर शरण लेता है, [12]तो उसके नगर के
धर्मवृद्ध किसी को भेजकर वहां से उसको
लाएंगे और रक्त-प्रतिशोधी के हाथ में उसे
सौंप देंगे। रक्त-प्रतिशोधी उसका वध करेगा।
[13]तू उस पर दया-दृष्टि मत करना, वरन्
इस्राएल से निर्दोष के रक्त का दोष दूर करना,
जिससे तेरा भला होगा।

सीमांकन

14 'जब तू उस देश में पैतृक-भूमि प्राप्त
करेगा, जिस पर अधिकार करने के लिए तेरा
प्रभु परमेश्वर तुझे प्रदान कर रहा है, तब तू
उस भूमि पर अपने पड़ोसी का वह सीमा-चिह्न
मत हटाना, जिसको तेरे पूर्वजों ने अंकित
किया था।

गवाही के नियम

15 'किसी मनुष्य के विरुद्ध उसके कुकर्म
अथवा पाप के विषय में, चाहे उसने किसी भी
प्रकार का पाप क्यों न किया हो, केवल एक
व्यक्ति की गवाही प्रमाणित नहीं मानी जाएगी,
वरन् दो या तीन व्यक्तियों की गवाही के आधार
पर अभियोग प्रमाणित माना जाएगा। [16]यदि कोई
व्यक्ति विद्वेष से किसी व्यक्ति के विरुद्ध साक्षी
देगा कि उसने प्रभु से विद्रोह किया है, [17] तो
वादी और प्रतिवादी, प्रभु के सम्मुख, उस समय
के पुरोहितों और शासकों के सम्मुख प्रस्तुत
होंगे। [18]शासक सावधानी से पूछताछ करेंगे।
यदि गवाह झूठा सिद्ध होगा, कि उसने अपने
भाई-बन्धु के विरुद्ध झूठी गवाही दी है, [19]तो
तू उसके साथ वैसा ही व्यवहार करना, जैसा
वह अपने भाई-बन्धु के साथ करना चाहता
था। यों तू इस बुराई को अपने मध्य से दूर
करना। [20]दूसरे लोग इसके विषय में सुनेंगे,
और भयभीत होंगे, और ऐसा बुरा कर्म तेरे मध्य
में फिर नहीं करेंगे। [21]तू उस पर दया-दृष्टि मत
करना, वरन् प्राण के बदले प्राण, आंख के
बदले आंख, दांत के बदले दांत, हाथ के बदले
हाथ, पैर के बदले पैर का दण्ड देना।

युद्ध के नियम

20 'जब तू अपने शत्रुओं से युद्ध करने को
जाएगा और घोड़े, रथ तथा अपनी सेना
से बड़ी शत्रु-सेना देखेगा, तब तू उनसे मत
डरना; क्योंकि मिस्र देश से तुझे निकालने वाला
तेरा प्रभु परमेश्वर तेरे साथ है। [2]जब तू युद्ध-
भूमि के निकट पहुँचेगा तब पुरोहित सामने
आएगा, और सैनिकों से यह कहेगा, [3]''ओ
इस्राएलियो, सुनो! तुम अपने शत्रुओं से युद्ध
करने के लिए आज यहां आए हो। तुम्हारा
मनोबल कम न हो। उनका सामना करने से तुम
मत डरो, व्याकुल मत हो, उनसे आतंकित न
हो; [4]क्योंकि तुम्हारा प्रभु परमेश्वर तुम्हारे
शत्रुओं से युद्ध करने और तुम्हें विजय प्रदान
करने के लिए तुम्हारे साथ-साथ चलता है।''
5 'उसके बाद शास्त्री सैनिकों से कहेंगे,
''ऐसा कौन व्यक्ति है, जिसने नया घर बनाया,
पर उसका गृह-प्रवेश नहीं हुआ? वह अपने घर
लौट जाए। ऐसा न हो कि वह युद्ध में मर जाए,
और दूसरा व्यक्ति गृह-प्रवेश करे। [6]ऐसा कौन
व्यक्ति है, जिसने अंगूर-उद्यान लगाया, पर
उसके प्रथम फलों का आनन्द नहीं लिया? वह

---

19 : 11 नि 21 : 12; गण 35 : 16 **19 : 14** व्य 27 : 17 **19 : 15** गण 35 : 30; मत 18 : 16; यो 8 : 17; 19 : 31 ; 2 कुर 13 : 1; 1 तिम 5 : 19; इब्र 10 : 28 **19 : 16** नि 20 : 16; लेव 19 : 16; व्य 5 : 20 **19 : 21** नि 21 : 23; लेव 24 : 20; मत 5 : 38 **20 : 4** नि 33 : 14; यहो 23 : 10 **20 : 5** 1 मक 3 : 56

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अपने घर लौट जाए। ऐसा न हो कि वह युद्ध में मर जाए, और दूसरा व्यक्ति उन फलों का आनन्द ले।
7ऐसा कौन व्यक्ति है, जिसने किसी कन्या से सगाई की, पर उससे विवाह नहीं किया? वह अपने घर लौट जाए। ऐसा न हो कि वह युद्ध में मर जाए, और दूसरा व्यक्ति उस कन्या से विवाह कर ले।''

8 'शास्त्री सैनिकों से आगे यह कहेंगे, ''ऐसा कौन डरपोक व्यक्ति है, जिसका मनोबल कम हो गया है? वह अपने घर लौट जाए। ऐसा न हो कि उसके हृदय के समान उसके सैनिक भाई-बन्धुओं का हृदय भी निरुत्साह हो जाए।''

9 'जब शास्त्री सैनिकों से बोलना समाप्त करेंगे तब सैनिकों के ऊपर सेनापति नियुक्त किए जाएंगे।

10 'जब तू नगर पर चढ़ाई करने के लिए उसके निकट पहुँचेगा तब पहले उसके समक्ष
शांति का प्रस्ताव रखना।
11यदि वह तेरा शांति-प्रस्ताव स्वीकार कर लेता है और अपने द्वार तेरे लिए खोल देता है, तो उसके सब निवासी तेरी बेगार करेंगे, तेरी सेवा करेंगे।
12पर यदि वह तेरे साथ शांति स्थापित नहीं करता है, वरन् तेरे साथ युद्ध करता है तो तू उस नगर को घेर लेना।
13तेरा प्रभु परमेश्वर उसको तेरे हाथ में सौंप देगा। तू उसके सब पुरुषों को तलवार से मार डालना।
14किन्तु स्त्रियों, बच्चों, पशुओं और नगर की सब वस्तुओं को, लूट के सब माल को अपने लिए लूट लेना। तू अपने शत्रु की लूट का उपभोग करना, जो तेरे प्रभु परमेश्वर ने तुझे दी है।
15तू ऐसा ही उन नगरों के साथ भी करना, जो तुझ से बहुत दूर हैं, जो इन जातियों के नगर नहीं हैं।
16किन्तु तू इन जातियों के नगरों में, जिनको पैतृक-अधिकार के लिए तेरा प्रभु परमेश्वर तुझे प्रदान कर रहा है, किसी भी प्राणी को जीवित मत छोड़ना:
17हित्ती, एमोरी, कनानी, परिज्जी, हिव्वी और यबूसी जातियों को पूर्णतः नष्ट कर डालना, जैसी तेरे प्रभु परमेश्वर ने तुझे आज्ञा दी है।
18तब वे लोग अपनी उन घृणित-प्रथाओं को तुझे नहीं सिखा सकेंगे, जिनका पालन वे अपने देवताओं के लिए करते हैं, और तू अपने प्रभु परमेश्वर के प्रति पाप नहीं करेगा।

19 'जब तू नगर को जीतने के लिए उस पर चढ़ाई करेगा, और उसकी घेराबन्दी किए हुए अनेक दिन बीत जाएंगे, तब उसके पेड़ों पर कुल्हाड़ी चलाकर उन्हें नष्ट मत करना। तू उनको मत काटना, वरन् उनके फल खाना। क्या मैदान के पेड़ मनुष्य हैं कि तेरे द्वारा उनकी भी घेराबन्दी की जाए?
20केवल वे पेड़, जिनको तू जानता है कि उनके फल आहार के योग्य नहीं हैं, नष्ट कर दना। तू उनको काट डालना, और उनकी लकड़ी से उस नगर के विरुद्ध जिसने तेरे साथ युद्ध छेड़ रखा है, घेराबन्दी के लिए परकोटा बनाना, जब तक उसका पतन न हो जाए।

अज्ञात हत्यारे के अपराध का निर्णय

21 'यदि तुझे उस देश के मैदान में, जिस पर अधिकार करने के लिए उसको तेरा प्रभु परमेश्वर तुझे प्रदान कर रहा है, किसी व्यक्ति की पड़ी हुई लाश मिले, तथा इस बात का पता न चले कि उसको किसने मारा है,
2तो तेरे धर्मवृद्ध तथा शासक वहाँ जाएंगे। वे लाश और उसके चारों ओर के नगरों के मध्य की दूरी नापेंगे।
3जो नगर लाश के निकटतम होगा, उसके धर्मवृद्ध एक ऐसी लाल कलोर लेंगे, जिससे अब तक काम नहीं लिया गया है, जो जूए में अब तक जोती नहीं गई है।
4तत्पश्चात् उस नगर के धर्मवृद्ध लाल कलोर को बारहमासी नदी की ऐसी घाटी में ले जाएंगे, जो न कभी जोती गई और न कभी बोई गई है। वहाँ वे घाटी में लाल कलोर की गर्दन तोड़ देंगे।
5तब लेवी वंश के पुरोहित पास आएंगे, क्योंकि तेरे प्रभु परमेश्वर ने उन्हें अपनी सेवा करने तथा अपने नाम से आशिष देने के लिए चुना है। उनके कथन के अनुसार ही विवाद और प्रहार के सब मुकद्दमों का निर्णय होगा।
6जो नगर लाश के निकटतम होगा, उसके समस्त धर्मवृद्ध लाल कलोर के ऊपर, जिसकी गर्दन घाटी में तोड़ी

---

20 : 8 शास 7 : 3 **21 : 6** गण 19 : 2; भज 73 : 13; मत 27 : 24

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गई है, अपने-अपने हाथ धोएंगे। 7वे ये शब्द
कहेंगे, "हमने यह हत्या नहीं की है, और न
हमने हत्या करते हुए हत्यारे को देखा है। 8हे
प्रभु, अपने निज लोग, इस्राएल को, जिसे तूने
मिस्र देश की गुलामी से मुक्त किया है, क्षमा
कर। निर्दोष व्यक्ति के रक्त का दोष अपने निज
लोग, इस्राएल पर मत लगा।" इस प्रकार हत्या
का दोष उन्हें क्षमा कर दिया जाएगा। 9जब तू
प्रभु की दृष्टि में निष्कपट हृदय से कार्य करेगा
तब ही अपने मध्य से निर्दोष व्यक्ति के रक्त
का दोष दूर कर सकेगा।

युद्ध में पकड़ी गई स्त्री के साथ विवाह

10 'जब तू अपने शत्रुओं से युद्ध करने को
जाएगा, और तेरा प्रभु परमेश्वर उन्हें तेरे हाथ
में सौंप देगा और तू उन्हें बन्दी बना लेगा, 11तब
यदि तुझे बन्दियों में कोई सुन्दर स्त्री दिखाई
देगी, और तू उसकी कामना करेगा, उसे अपनी
पत्नी बनाना चाहेगा, 12तो तू उसे अपने घर
लाना। वह अपना सिर मुंड़ाएगी और नाखून
काटेगी। 13वह अपने ऊपर से बन्दी की पोशाक
भी उतार देगी। वह तेरे घर में रहेगी, और एक
महीने तक माता-पिता के लिए शोक मनाएगी।
इसके पश्चात् तू उसके पास जा सकेगा। तू
उसका पति होगा, और वह तेरी पत्नी होगी।
14पर यदि तुझको उससे सुख नहीं मिलेगा तो
तू उसे उसकी इच्छानुसार जाने देगा। तू उसे
रुपयों के लिए कदापि मत बेचना। तूने उसे
पत्नी के रूप में भोगा है, इसलिए उसको
बेचकर लाभ नहीं कमाना।

ज्येष्ठ पुत्र के विशिष्ट अधिकार

15 'यदि किसी पुरुष की दो स्त्रियां हों, एक
उसको प्रिय हो, पर दूसरी अप्रिय और दोनों
स्त्रियों से उसके पुत्र उत्पन्न हों, परन्तु यदि ज्येष्ठ
पुत्र अप्रिय स्त्री से उत्पन्न हो, 16तो जिस दिन
वह अपनी सम्पत्ति पैतृक अधिकार के लिए
अपने पुत्रों में वितरित करेगा, तब वह अपनी
अप्रिय स्त्री के ज्येष्ठ पुत्र की अपेक्षा अपनी प्रिय
स्त्री के पुत्र को ज्येष्ठ नहीं मान सकेगा; 17वरन्
वह अपनी अप्रिय स्त्री के पुत्र को कुल सम्पत्ति
में से दुगुना भाग देकर उसके ज्येष्ठ पुत्र होने के
विशिष्ट अधिकार को स्वीकार करेगा, क्योंकि
वह ही उसके पौरुष का प्रथम फल है। उसको
ही ज्येष्ठ पुत्र होने का विशिष्ट अधिकार प्राप्त है।

अनाज्ञाकारी पुत्र

18 'यदि किसी मनुष्य का पुत्र हठीला और
विद्रोही है, और वह अपने पिता तथा अपनी
माता की बात नहीं सुनता है, उनके ताड़ित करने
पर भी वह उनकी बात नहीं मानता है, 19तो उसके
माता-पिता उसको पकड़ कर उस स्थान के
धर्मवृद्धों के पास, नगर के प्रवेश-द्वार पर
लाएंगे। 20वे नगर के धर्मवृद्धों से कहेंगे,
"हमारा यह पुत्र हठीला और विद्रोही है। यह
हमारी बात नहीं सुनता है। यह अपव्ययी और
शराबी है।" 21तब नगर के सब मनुष्य पत्थरों
से मार कर उसका वध करेंगे। इस प्रकार तू इस
बुराई को अपने मध्य से दूर करना। समस्त
इस्राएली इस दण्ड को सुनकर भयभीत होंगे।

विभिन्न नियम

22 'यदि किसी मनुष्य ने ऐसा पाप किया है,
जो न्याय की दृष्टि से मृत्यु-दण्ड के योग्य है,
और उस मनुष्य को मृत्यु-दण्ड दिया गया है,
उसको वृक्ष से लटका दिया गया है, 23तो उसकी
लाश रात भर वृक्ष पर नहीं लटकती रहेगी। तू
उसी दिन उसको अवश्य गाड़ देना; क्योंकि
फांसी का दण्ड पाया हुआ व्यक्ति परमेश्वर के
द्वारा शापित है। तू उस देश की भूमि को,
जिसको पैतृक अधिकार के लिए तेरा प्रभु
परमेश्वर तुझे दे रहा है, अशुद्ध मत करना।

22 'यदि तू अपने भाई-बन्धु के बैल अथवा
भेड़ को भटकता हुआ देखे तो अनदेखा
मत करना। तू सहायता करने से मुंह मत
मोड़ना, वरन् उसको अपने भाई-बन्धु के पास
लौटाकर अवश्य ले जाना। 2यदि तेरा भाई-
बन्धु तेरे घर के समीप नहीं रहता है, या तू उसे

---

21 : 8 यिर 26 : 15 **21 : 15** उत 29 : 33; 1 शम 1 : 8 **21 : 18** नि 20 : 12; 21 : 15; लेव 20 : 9; नीति 23 : 22 ; इफ 6 : 1 **21 : 22** प्रे 5 : 30; 10 : 39 **21 : 23** यहो 8 : 29; यो 19 : 31; गल 3 : 13 **22 : 1** नि 23 : 4; मत 7 : 12

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नहीं जानता है तो तू उस पशु को अपने घर ले आना। जब तक तेरा भाई-बन्धु उसको न खोज लेगा, तब तक वह तेरे पास रहेगा। तत्पश्चात् तू उसे पशु लौटा देना। [3]ऐसा ही तू उसके गधे के साथ, उसके वस्त्र के साथ व्यवहार करना। वस्तुतः तू ऐसा ही अपने भाई-बन्धु की सब खोई हुई वस्तुओं के साथ करना, जो तुझे मिली हैं। तू सहायता करने से मुंह मत मोड़ना। [4]तू अपने भाई-बन्धु के गधे अथवा बैल को मार्ग पर गिरा हुआ देख कर अनदेखा मत करना। तू सहायता करने से मुंह मत मोड़ना वरन् अपने भाई-बन्धु की सहायता करना कि वह अपने पशुओं को उठा सके।

5 'पुरुष के वस्त्र को स्त्री नहीं पहनेगी और न स्त्री के वस्त्र को पुरुष पहनेगा, क्योंकि ऐसा कार्य करने वाले सब व्यक्ति प्रभु परमेश्वर की दृष्टि में घृणित हैं।

6 'यदि मार्ग में भूमि अथवा वृक्ष पर अचानक तुझे चिड़िया का घोंसला मिले, जिसमें चिड़िया के बच्चे अथवा अण्डे हों और चिड़िया बच्चों अथवा अण्डों पर बैठी हो तो तू बच्चों के साथ उनकी मां को मत पकड़ना। [7]तू बच्चों को अपने लिए पकड़ सकता है, पर उनकी मां को अवश्य छोड़ देना, जिससे तेरा भला हो, और तू दीर्घ जीवन व्यतीत करे।

8 'जब तू नया मकान बनाएगा तब उसकी छत के लिए एक मुंडेर भी बनाना। ऐसा न हो कि कोई व्यक्ति छत पर से नीचे गिर पड़े और उसकी हत्या का दोष तुझ पर* लगे।

9 'तू अपने अंगूर के उद्यान में दो जाति के बीज न बोना। ऐसा न हो कि जो बीज तूने बोए थे, वे और अंगूर उद्यान की फसल, यह सब उपज पवित्र-स्थान के लिए जब्त कर ली जाए।

10 'तू जूए में बैल और गधे को एक-साथ मत जोतना।

11 'तू सूती-ऊनी धागे के सम्मिश्रण से बुने हुए बस्त्र मत पहनना।

12 ' जो चादर तू ओढ़ता है उसके चारों कोनों पर फुंदने लगाना।

कौमार्य का नियम

13 'यदि कोई पुरुष किसी स्त्री से विवाह करे, और उससे सहवास करने के पश्चात् उसको ठुकरा दे, [14]यदि वह उस पर दुराचार का अभियोग लगाए, और यह कहते हुए उसे बदनाम करे कि "मैंने इस स्त्री से विवाह किया था। जब मैंने इससे सहवास किया तब इसमें कुंआरेपन के चिह्न नहीं पाए," [15]तो उस कन्या के माता-पिता उसके कुंआरेपन के चिह्न लेंगे, और नगर के धर्मवृद्धों के पास नगर-द्वार पर उनको लाएंगे। [16]कन्या का पिता धर्मवृद्धों से यह कहेगा, "मैंने अपनी पुत्री को इस पुरुष के लिए विवाह में प्रदान किया था, और अब इसने उसको ठुकरा दिया है। [17]यह उस पर दुराचार का अभियोग लगाकर मुझसे कहता है, 'मैंने तुम्हारी लड़की में कुंआरेपन के चिह्न नहीं पाए।' परन्तु ये मेरी पुत्री के कुंआरेपन के चिह्न हैं।" कन्या के माता-पिता नगर के धर्मवृद्धों के सम्मुख उसकी चादर फैलाएंगे। [18]तब नगर के धर्मवृद्ध उस पुरुष को पकड़कर कोड़े लगाएंगे। [19]वे उसको चांदी के सौ सिक्के का अर्थदण्ड भी देंगे क्योंकि उसने एक इस्राएली कुंवारी कन्या को बदनाम किया है। धर्मवृद्ध यह रुपया कन्या के पिता को दे देंगे। वह उस पुरुष की पत्नी सदा बनी रहेगी। वह आजीवन उसको त्याग नहीं सकेगा।

20 'पर यदि यह बात सच है कि कन्या के कुंआरेपन के चिह्न नहीं पाए गए, [21]तो वे कन्या को उसके पिता के घर के द्वार पर लाएंगे, और उसके नगर के लोग पत्थरों से मार कर उसका वध करेंगे, क्योंकि उसने अपने पिता के घर में वेश्या के सदृश कार्य किया है और इस्राएली समाज में मूर्खतापूर्ण कार्य किया है। यों तू इस बुराई को अपने मध्य से दूर करना।

व्यभिचार

22 'यदि कोई पुरुष दूसरे पुरुष की पत्नी के साथ सहवास करता हुआ पकड़ा जाएगा, तो

---

* अक्षरशः 'घर पर'।

22 : 9 लेव 19 : 19 22: 12 गण 15 : 38

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दूसरे की पत्नी के साथ सहवास करने वाले तथा
उस स्त्री दोनों को मृत्यु-दण्ड दिया जाएगा। यों
तू इस्राएल के मध्य से इस बुराई को दूर करना।
23 'यदि कोई पुरुष किसी कुंवारी लड़की
को नगर में पाकर उससे सहवास करता है, यदि
उस लड़की की सगाई हो चुकी है [24]तो तुम उन
दोनों को निकालकर नगर के प्रवेश-द्वार पर
लाना, और पत्थर मार कर उन दोनों का वध
करना, क्योंकि लड़की ने नगर में होते हुए भी
सहायता के लिए किसी को नहीं पुकारा, और
पुरुष ने अपने भाई-बन्धु की होने वाली पत्नी
का शीलभंग किया है। यों तू इस बुराई को
अपने मध्य से दूर करना।
25 'किन्तु यदि कोई पुरुष निर्जन मैदान
में ऐसी लड़की से मिलता है, जिसकी सगाई
हो चुकी है और वह उसको पकड़कर उसके
साथ बलात्कार करता है, तो केवल उसी पुरुष
को मृत्यु-दण्ड दिया जाएगा जिसने उसके साथ
सहवास किया है। [26]तू उस लड़की के साथ
कुछ मत करना। उसने मृत्यु-दण्ड के योग्य
कोई पाप नहीं किया है, क्योंकि जैसे कोई
व्यक्ति आक्रमण कर अपने पड़ोसी की हत्या
करता है वैसा ही बलात्कार का यह मामला है।
[27]वह निर्जन मैदान में उस लड़की से मिला,
जिसकी सगाई हो चुकी थी। लड़की ने
सहायता के लिए पुकारा, पर उसको बचाने
वाला वहाँ कोई न था।
28 'यदि कोई पुरुष ऐसी कुंवारी लड़की
से मिलता है, जिसकी सगाई नहीं हुई है, और
वह उसको पकड़कर उसके साथ सहवास
करता है, और दोनों पकड़े जाते हैं, [29]तो लड़की
से सहवास करने वाला पुरुष उसके पिता को
चाँदी के पचास सिक्के देगा, और वह लड़की
उस पुरुष की पत्नी होगी, क्योंकि उसने
उसका शीलभंग किया है। वह आजीवन
उसको त्याग नहीं सकेगा।
30 *'कोई भी पुरुष अपनी सौतेली माँ से
विवाह नहीं करेगा, और न अपने पिता की
चादर, जो उसकी सौतेली मां ने ओढ़ी है,
हटाएगा।**

धर्मसभा से बहिष्कृत लोग

23 'जिस पुरुष के अण्ड-कोष कुचल
गए हैं, अथवा जिनका लिंग काट दिया
गया है, वह प्रभु की धर्मसभा में प्रवेश नहीं
करेगा।
2 'दोगला व्यक्ति प्रभु की धर्मसभा में प्रवेश
नहीं करेगा: उसकी दसवीं पीढ़ी तक के वंशज
भी प्रभु की धर्मसभा में प्रवेश नहीं करेंगे।
3 'अम्मोनी अथवा मोआबी जाति के लोग
प्रभु की धर्मसभा में प्रवेश नहीं करेंगे: उनकी
दसवीं पीढ़ी तक के वंशज भी प्रभु की
धर्मसभा में कदापि प्रवेश नहीं करेंगे; [4]क्योंकि
जब तू मिस्र देश से निकला था तब वे मार्ग में
तेरे पास रोटी और पेय-जल लेकर नहीं आए
थे। उन्होंने तुझे श्राप देने के लिए मेसोपोटामिया
देश के पतोर नगर के बओर के पुत्र बिलआम
को किराये पर बुलाया था। [5]परन्तु तेरा प्रभु
परमेश्वर बिलआम की बात सुनने को इच्छुक
नहीं था। अत: उसने तेरे लिए श्राप को आशिष
में बदल दिया, क्योंकि तेरा प्रभु परमेश्वर तुझसे
प्रेम करता था। [6]तू आजीवन इनके कल्याण
और समृद्धि की इच्छा कभी मत करना।
7 'तू एदोमी जाति के व्यक्ति से घृणा मत
करना, क्योंकि वह तेरा भाई है। तू मिस्र
निवासी से भी घृणा मत करना, क्योंकि तू उसके
देश में प्रवासी था। [8]इनके बच्चे, जो तीसरी
पीढ़ी में उत्पन्न होंगे, वे प्रभु की धर्मसभा में
प्रवेश कर सकेंगे।

युद्ध-शिविर में शुद्धता की आवश्यकता

9 'जब तू अपने शत्रुओं से युद्ध करने जाएगा
और पड़ाव डालेगा, तब सब प्रकार की बुराई
से अपने को दूर रखना। [10]यदि तेरे मध्य ऐसा
व्यक्ति है जो रात में स्वाभाविक वीर्यपात के
कारण अशुद्ध हो गया है तो वह पड़ाव के बाहर

* मूल में अध्याय 23 :1 ** 'चादर ओढ़ना' इब्रानी में विवाह का प्रतीक है।

22 : 28 नि 22 : 16,17 **22 : 30** लेव 18 : 8; व्य 27 : 20 ; रूत 3 : 9; यहेज 16 : 8 **23 : 1** यश 56 : 3-8
23 : 3 नह 13 : 1-2 **23 : 4** गण 22 : 5-6 **23 :10** लेव 12 : 16

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जाएगा। वह पड़ाव के भीतर नहीं आएगा। [11]वह सन्ध्या के समय स्नान करेगा। तत्पश्चात् सूर्यास्त होने पर वह पड़ाव के भीतर प्रवेश कर सकेगा।

13 'तू पंड़ाव के बाहर एक शौच-स्थान बनाना, और शौच के लिए वहीं जाया करना। [13]तू अपने अस्त्र-शस्त्रों में फावड़ा भी रखना। जब तू शौच करने पड़ाव के बाहर जाएगा तब फावड़े से मिट्टी खोदना और अपने मल को ढांप देना। [14]तेरा प्रभु परमेश्वर तेरी रक्षा करने, और तेरे शत्रुओं को तेरे हाथ में सौंप देने के लिए तेरे पड़ाव के मध्य चलता-फिरता है। इसलिए तेरा पड़ाव निश्चय ही स्वच्छ* रहे। ऐसा न हो कि वह तेरे मध्य अशोभनीय वस्तु देखे, और तेरे साथ न जाकर लौट जाए।

विभिन्न नियम

15 'जो गुलाम अपने स्वामी के पास से भाग कर तेरी शरण में आएगा, उसे उसके स्वामी के पास लौटने के लिए विवश मत करना। [16]वह तेरे साथ, तेरे मध्य रहेगा। जो स्थान तेरे नगरों में वह चुनेगा, जो स्थान उसे पसन्द होगा, वह वहीं निवास करेगा। तू उस पर अत्याचार मत करना।

17 'इस्राएली कन्याएं देवदासी के रूप में व्यभिचार नहीं करेंगी। इस्राएली पुरुष भी पूजागृहों में पुरुष-गमन नहीं कराएंगे। [18]तू मन्नत के चढ़ावे के लिए अपने प्रभु परमेश्वर के गृह में वेश्या-वृत्ति की कमाई अथवा पुरुष-गमन की आमदनी मत लाना; क्योंकि ये दोनों प्रभु परमेश्वर की दृष्टि में घृणास्पद हैं।

19 'तू अपने भाई-बन्धु को ब्याज पर ऋण मत देना, चाहे वह रुपया हो, भोजन-वस्तु हो, अथवा ब्याज पर दी जाने वाली कोई भी वस्तु हो। [20]तू विदेशी को ब्याज पर ऋण दे सकता है, पर अपने भाई-बन्धु को ब्याज पर ऋण मत देना। तब तेरा प्रभु परमेश्वर उस देश में, जिस पर अधिकार करने के लिए तू वहाँ जा रहा है, तेरे सब काम-धन्धों पर आशिष प्रदान करेगा।

21 'जब तू अपने प्रभु परमेश्वर के लिए मन्नत मानेगा तब उसको पूर्ण करने में विलम्ब मत करना, क्योंकि तेरा प्रभु परमेश्वर निश्चय ही तुझ से लेखा लेगा। यदि तू उसको पूर्ण नहीं करेगा तो तेरे लिए यह पाप होगा। [22]यदि तू मन्नत नहीं मानेगा तो तेरे लिए यह पाप नहीं होगा। [23]जो शब्द तेरे मुंह से निकलते हैं, उनको पूर्ण करने के लिए सावधान रहना। जो मन्नत स्वेच्छा से, अपने मुंह से, तूने प्रभु परमेश्वर के लिए मानी है, उसको अवश्य पूर्ण करना।

24 'जब तू अपने पड़ोसी के अंगूर-उद्यान में जाएगा, तब वहाँ जितनी खाने की इच्छा हो, उतनी मात्रा में पेट-भर अंगूर खा सकता है, किन्तु अपनी टोकरी में एक भी अंगूर मत रखना। [25]जब तू अपने पड़ोसी के खड़ी फसल के खेत में जाएगा, तब अपने हाथ से बालें तोड़ सकता है, परन्तु तू अपने पड़ोसी की खड़ी फसल पर हंसिया मत चलाना।

तलाक का नियम

24 'जब कोई पुरुष किसी स्त्री को स्वीकार करेगा और उससे विवाह करेगा, तब यदि वह उसमें कुछ अशोभनीय बात पाएगा, और इस कारण वह स्त्री उसका पति-प्रेम नहीं प्राप्त करेगी, तो पुरुष एक त्यागपत्र लिखेगा और उसको स्त्री के हाथ में रख कर उसे अपने घर से भेज देगा। वह स्त्री उसके घर से चली जाएगी। [2]यदि वह जाकर दूसरे पुरुष की पत्नी बनेगी, [3]और उसका यह दूसरा पति भी उससे घृणा करेगा, यदि वह एक त्याग-पत्र लिखेगा और उसको स्त्री के हाथ में रखकर उसे अपने घर से भेज देगा, अथवा इस दूसरे पति की मृत्यु हो जाएगी, जिसने उससे विवाह किया था, [4]तो उसका पहला पति जिसने उसे अपने घर से भेज दिया था, पुन: उस स्त्री को अपनी पत्नी नहीं बना सकेगा। उसके अशुद्ध हो जाने के पश्चात् वह उसे स्वीकार नहीं करेगा, क्योंकि यह प्रभु

---

* अथवा 'पवित्र'।

23 : 17 लेव 19 : 29 **23 : 18** हो 4 : 14 **23 : 19** लेव 25 : 36 ; नि 22 : 26 **23 : 21** गण 30: 1-16; मत 5 : 33 ; सभ 5 : 4-5 **23 : 24** मत 12 : 1 **24 : 1** मत 5 : 31; 19 : 7

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

की दृष्टि में घृणास्पद कार्य है। इस प्रकार तू अपने उस देश को, जिस पर अधिकार करने के लिए उसको तेरा प्रभु परमेश्वर तुझे प्रदान कर रहा है, पाप में संभागी मत करना।

विभिन्न नियम

5 'यदि किसी पुरुष ने नई-नई शादी की है, तो नव-विवाहित पुरुष सेना के साथ युद्ध में नहीं जाएगा। उसपर किसी प्रकार का सैन्य-दायित्व नहीं डाला जाएगा।

'वह घर पर एक वर्ष तक अन्य सामाजिक दायित्वों से भी मुक्त रहेगा और अपनी पत्नी के साथ, जिससे उसने विवाह किया है, आनन्द मनाएगा।

6 'ऋणदाता ऋण लेने वाले से गिरवी में चक्की अथवा चक्की का पाट नहीं लेगा, क्योंकि ऐसा करना मानो उसके प्राणों को गिरवी में रखना है!

7 'यदि कोई मनुष्य इस्राएली समाज में से अपने किसी भाई-बन्धु का अपहरण करता हुआ पकड़ा जाएगा, और यदि वह उसके साथ गुलाम का व्यवहार करेगा अथवा उसको बेच देगा, तो ऐसे अपहरणकर्त्ता को मृत्यु-दण्ड दिया जाएगा। यों तू अपने मध्य से इस बुराई को दूर करना।

8 'कुष्ठ रोग लग जाने पर अत्यन्त सावधान रहना! जो निर्देश लेवीय पुरोहित तुझे देंगे, तू उनका पूर्णतः पालन करना और उनके अनुसार कार्य करना। जैसा मैंने लेवीय पुरोहितों को आदेश दिया था, वैसा ही तू उसका पालन करना, और उसके अनुसार कार्य करना।
9जब तू मिस्र देश से निकलकर आ रहा था, तब मार्ग में जो व्यवहार मिर्याम के साथ तेरे प्रभु परमेश्वर ने किया था, उसको स्मरण करना!

10 'जब तू अपने पड़ोसी को गिरवी के बदले में उधार देगा, तब उससे गिरवी की वस्तु छीनने के लिए उसके घर में प्रवेश मत करना।
11तू घर के बाहर खड़ा रहेगा, और वह मनुष्य, जिसको तूने उधार दिया है, गिरवी की वस्तु बाहर लाकर तुझे देगा।
12पर यदि वह गरीब मनुष्य है, तो तू गिरवी में रखी उसकी चादर लेकर मत सोना।
13जब सूर्यास्त होने लगेगा जब तू उसकी चादर अवश्य लौटा देना, जिससे वह रात में चादर ओढ़कर सो सके, और तुझे आशिष दे। तेरे प्रभु परमेश्वर की दृष्टि में तेरा यह कार्य धार्मिक माना जाएगा।

14 'तू निर्धन और गरीब मजदूर पर अत्याचार मत करना, चाहे वह तेरा जातीय भाई-बन्धु हो या तेरे देश के नगरों में निवास करने वाले प्रवासियों में से कोई हो।
15तू सूर्यास्त के पूर्व उसकी मजदूरी प्रतिदिन चुका दिया करना (क्योंकि वह निर्धन व्यक्ति है और अपनी मजदूरी के लिए विकल रहता है)। ऐसा न हो कि वह तेरे विरुद्ध प्रभु की दुहाई दे और यह तेरे लिए एक पाप सिद्ध हो।

16 'पुत्र के पाप के लिए पिता को मृत्यु-दण्ड नहीं दिया जाएगा, और न पिता के पाप के लिए पुत्र को। प्रत्येक व्यक्ति को उसके ही पाप के लिए मृत्यु-दण्ड दिया जाएगा।

17 'तू प्रवासी अथवा पितृहीन व्यक्ति के मुकदमों में न्याय को भ्रष्ट मत करना। ऋण के बदले में विधवा के वस्त्र गिरवी में मत रखना।
18किन्तु स्मरण रखना कि तू भी मिस्र देश में गुलाम था, और तेरे प्रभु परमेश्वर ने तुझे वहां से मुक्त किया है। इसलिए यह कार्य करने के लिये आज मैं तुझे आदेश दे रहा हूँ।

19 ' जब तू अपनी भूमि की फसल काटेगा और खेत में एक पूला भूल कर आ आएगा, तब तू उसको लाने के लिए लौटकर मत जाना। उसको प्रवासी, पितृहीन और विधवा के लिए छोड़ देना। तब तेरा प्रभु परमेश्वर तेरे सब काम-धन्धों पर आशिष देगा।
20जब तू अपने जैतून वृक्ष के फल को झाड़कर तोड़ेगा, तब एक बार तोड़ लेने के पश्चात् उसकी शाखाओं को दूसरी बार मत झाड़ना। उसके फल प्रवासी,

---

24 : 7 नि 21 : 16; 1 कुर 5 : 13 **24 : 8** लेव 13 : 2; 14 : 2 **24 : 9** गण 12 : 10 **24 : 13** नि 22 : 26; अय्य 22 : 6; आमो 2 : 8 **24 : 14** नीति 14 : 31; मला 3 : 5 **24 : 15** लेव 19 : 13; याक 5 : 4 **24 : 16** 2 रा 14 : 6; यिर 31 : 29-30; यहेज 18 : 20 **24 : 17** नि 22 : 21-22 **24 :19** लेव 23 : 22 ; रूत 2 : 2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पितृहीन और विधवा के लिए छोड़ देना। [21]जब तू अपने अंगूर-उद्यान के अंगूर तोड़ेगा, तब दूसरी बार उसके फल मत बीनना। उनको प्रवासी, पितृहीन और विधवा के लिए छोड़ देना। [22] स्मरण रखना कि तू भी मिस्र देश में गुलाम था। इसलिए यह कार्य करने के लिए आज मैं तुझे आदेश दे रहा हूँ।

25 'यदि दो मनुष्यों के मध्य झगड़ा हो, तो वे न्यायालय में जाएंगे, क्योंकि न्यायाधीश ही उनका न्याय करेंगे। वे निर्दोष व्यक्ति को निर्दोष, और दोषी व्यक्ति को दोषी घोषित करेंगे। [2]यदि दोषी व्यक्ति कोड़े खाने के योग्य ठहराया गया है, तो न्यायाधीश उसे भूमि पर लिटा देगा, और अपनी उपस्थिति में उसके दोष के अनुसार कोड़े लगवाएगा। [3]वह उसको चालीस कोड़े लगा सकता है, पर इससे अधिक नहीं, क्योंकि यदि इससे अधिक उसको कोड़ों की मार पड़ेगी तो तेरा यह भाई-बन्धु तेरी दृष्टि में अपमानित होगा।

4 'दंवरी करते हुए बैल का मुंह न बांधना।

विधवा विवाह और परिवार

5 'यदि परिवार के सब भाई एक साथ रहते हैं, उनमें से एक भाई की, जो निस्सन्तान है, मृत्यु हो जाती है, तो उसकी विधवा स्त्री का विवाह परिवार से बाहर के पुरुष से नहीं किया जाए। पर उसके मृत पति का सगा भाई उसके पास जाएगा और नियोग-विधि* के अनुसार उससे विवाह करेगा। [6]तब जो पहिलौठा पुत्र उस स्त्री से उत्पन्न होगा, उससे ही मृत भाई का वंश चलेगा। इस प्रकार इस्राएल में से उसका नाम नहीं मिटेगा। [7]परन्तु यदि वह अपने मृतक भाई की विधवा को स्वीकार करने को इच्छुक नहीं है तो मृत भाई की विधवा नगर-द्वार पर धर्मवृद्धों के पास जाएगी, और उनसे यह कहेगी, ''मेरे देवर ने इस्राएल में अपने मृत भाई का वंश चलाने से इन्कार कर दिया है। वह मुझसे नियोग-विधि से विवाह करने को इच्छुक नहीं है।'' [8]अत: नगर के धर्मवृद्ध उसके देवर को बुलाएंगे और उससे इस विषय पर बातचीत करेंगे। यदि वह उनके सम्मुख प्रस्तुत होकर यह कहेगा, ''मुझे इसको स्वीकार करने की इच्छा नहीं है'' [9]तो उसकी भाभी धर्मवृद्धों की आंखों के सामने उसके समीप आएगी। वह उसके पैरों से जूती उतार लेगी और उसके मुंह पर थूकेगी। तत्पश्चात् वह यह कहेगी, ''ऐसा ही व्यवहार उस पुरुष के साथ किया जाएगा जो अपने मृत भाई का घर नहीं बसाएगा।'' [10]इस्राएल में उस पुरुष के परिवार का यह नाम रखा जाएगा : जूती उतारे हुए पुरुष का परिवार।

विविध प्रकार के नियम

11 'जब दो पुरुष एक दूसरे से मार-पीट करेंगे और उनमें से एक की पत्नी दूसरे पुरुष के हाथ से, जो उसके पति को मार रहा है, अपने पति को बचाने के लिए निकट आएगी, और अपना हाथ बढ़ाकर दूसरे पुरुष के अण्डकोष को बलपूर्वक दबा देगी [12]तब तू उसके हाथ को काट देना। तू उस पर दया-दृष्टि मत करना।

13 'तू अपनी थैली में दो प्रकार के बाट, एक बड़ा तथा दूसरा छोटा, मत रखना। [14]तू अपने घर में दो प्रकार की माप, एक बड़ी तथा दूसरी छोटी, नहीं रखना। [15]तेरे बाट तथा माप पूरे-पूरे और ठीक-ठीक होने चाहिए, जिससे उस देश में तेरी आयु दीर्घ हो सके जिसको तेरा प्रभु परमेश्वर तुझे प्रदान कर रहा है। [16]जो व्यक्ति इस प्रकार के कार्य करता है, नाप-तौल में बेईमानी करता है, वह तेरे प्रभु परमेश्वर की दृष्टि में घृणास्पद है।

अमालेकी जाति को नष्ट करने का आदेश

17 'स्मरण रखना कि जब तुम मिस्र देश से निकल कर जा रहे थे, तब अमालेकी जाति ने मार्ग में तुमसे कैसा व्यवहार किया था। [18]अमालेकी जाति के लोग मार्ग में तुम्हें मिले थे। जब तुम आगे बढ़ गए थे तब उन्होंने तुम पर पीछे से

---

* अर्थात् पुत्रहीन विधवा भाभी से विवाह करने की प्रथा।

25 : 3 2 कुर 11 : 24 **25 : 4** 1 कुर 9 : 9; 1 तिम 5 : 18 **25 : 5** लू 20 : 28; उत 38 : 8 **25 : 9** रूत 4 : 7
25 : 13 लेव 19 : 35; नीति 11 : 1; आमो 8 : 5 ; मी 6 : 11 **25 : 17** नि 17 : 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आक्रमण किया था और पिछड़ गए लोगों को
मार डाला था। जब तुम यात्रा के कारण कमजोर
और थके-मांदे थे, तब वे परमेश्वर से नहीं डरे!
19इसलिए जब तुम्हारा प्रभु परमेश्वर तुम्हारे
चारों ओर के शत्रुओं से छुड़ाकर तुम्हें उस देश
में शान्ति-चैन देगा, जो वह पैतृक-अधिकार
के लिए तुम्हें प्रदान कर रहा है, तब तुम आकाश
के नीचे से अमालेकी जाति की स्मृति मिटा
डालना। तुम यह बात मत भूलना!

प्रथम फल और दशमांश चढ़ाने की विधि

26 'जब तू उस देश में प्रवेश करेगा, जो
तेरा प्रभु परमेश्वर तुझे पैतृक अधिकार
के लिए दे रहा है, और उस पर अधिकार कर
उस में बस जाएगा, 2तब तू भूमि की समस्त
प्रथम फसल में से कुछ उपज लेना, जो तूने उस
देश में उत्पन्न की है जिसको तेरे प्रभु परमेश्वर
ने तुझे दिया है। तू उसको एक टोकरी में रखना,
और उस स्थान को जाना, जिसको तेरा प्रभु
परमेश्वर चुनेगा और वहां अपना नाम प्रतिष्ठित
करेगा। 3जो पुरोहित उस समय वहां सेवा
करता होगा, तू उसके पास जाकर यह कहना,
''आज मैं अपने प्रभु परमेश्वर के सामने यह
घोषित करता हूँ कि जिस देश को देने की शपथ
प्रभु ने हमारे पूर्वजों से खाई थी, उसमें मैं पहुंच
गया हूँ।'' 4तब पुरोहित तेरे हाथ से टोकरी
लेगा, और उसको तेरे प्रभु परमेश्वर की वेदी
के सम्मुख रख देगा।

5 'तू अपने प्रभु परमेश्वर के सामने इस बात
की घोषणा करना : ''यहां-वहां भटकने वाला
अरामी जाति का पुरुष मेरा पिता था। वह मिस्र
देश जाकर वहां प्रवास करने लगा था। वह
अल्पसंख्यक था। किन्तु वह वहां महान,
बलवान और बहुसंख्यक राष्ट्र बन गया। 6अतः
मिस्र निवासी हमारे साथ बुरा व्यवहार करने
लगे। उन्होंने हमें दुःख दिया, हमसे कठोर
बेगार* करवाई। 7तब हमने अपने पूर्वजों के
प्रभु परमेश्वर की दुहाई दी। उसने हमारी पुकार
सुनी, और हमारे कष्ट, हमारे कठोर परिश्रम
और हम पर किए जाने वाले अत्याचार को
देखा। 8प्रभु ने चिह्नों, आश्चर्यपूर्ण कर्मों,
भुजबल, महा-आतंकमय कार्यों और उद्धार के
हेतु बढ़ाए गए अपने हाथों से हमें मिस्र देश से
बाहर निकाल लिया। 9उसने हमें इस स्थान पर
पहुंचाया, और हमें यह देश प्रदान किया जहां
दूध और शहद की नदियां बहती हैं। 10अब हे
प्रभु देख! जो देश तूने मुझे प्रदान किया है,
उसकी भूमि की उपज का प्रथम फल मैं तेरे
पास लाया हूँ।'' इतना कह कर तू अपने चढ़ावे
को प्रभु परमेश्वर के सम्मुख रख देना, और
अपने प्रभु परमेश्वर की वन्दना करना। 11उसके
बाद अपनी समस्त अच्छी वस्तुओं के लिए जो
तेरे प्रभु परमेश्वर ने तुझे दी हैं, अपने परिवार,
लेवीय जन और तेरे मध्य रहने वाले प्रवासी के
साथ तू आनन्द मनाना।

12 'जब तू तीसरे वर्ष, अर्थात् दशमांश वर्ष
में, अपनी उपज का समस्त दशमांश लेवीय
जन, प्रवासी, पितृहीन और विधवा को चुका
देगा कि वे तेरे नगर में भर पेट भोजन करें 13तब
तू अपने परमेश्वर के सामने यह घोषित करना:
''मैंने अपने घर में से पवित्र अंश को निकाल
लिया। जो आज्ञाएं तूने मुझे दी हैं, उनके
अनुसार मैंने वह अंश लेवीय जन, प्रवासी,
पितृहीन और विधवा को दे दिया। इस प्रकार
मैंने तेरी आज्ञाओं का उल्लघंन नहीं किया और
न मैं उनको भूला ही हूँ। 14जब मैं शोक मना
रहा था तब मैंने दशमांश में से नहीं खाया। जब
मैं अशुद्ध स्थिति में था तब मैंने उसको चढ़ावे
के लिए निकालकर नहीं रखा। मैंने उसमें से
कुछ भी अंश मृत व्यक्ति को अर्पित नहीं
किया। इस प्रकार मैंने अपने प्रभु परमेश्वर की
वाणी सुनी। जो आज्ञाएं तूने मुझे दी थीं, उसके
अनुसार मैंने कार्य किया। 15तू अपने पवित्र
निवास स्थान से, स्वर्ग से हम पर दृष्टि कर।
अपने निज लोग इस्राएलियों को, इस देश की

---

* अथवा 'गुलामी'।

25 : 19 1 शम 15 : 3 **26 : 2** नि 23 : 19; गण 18 : 13 **26 : 5-9** व्य 6 : 21-23; यहो 24 : 2-13 **26 : 5** व्य 10 : 22; भज 105 : 12 **26 : 14** हो 9 : 4 **26 : 15** भज 11 : 4; 1 रा 8 : 43

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भूमि को, जो तूने हमें दी है, दूध और शहद की नदियों वाले हमारे इस देश को, जो तूने हमारे पूर्वजों से खायी हुई शपथ के अनुसार हमें प्रदान किया है आशिष दे।''

परमेश्वर के पवित्र लोग

16 'ओ इस्राएल! आज तेरा प्रभु परमेश्वर तुझे आज्ञा दे रहा है कि तू इन संविधियों और न्याय-सिद्धान्तों को व्यवहार में लाना। तू इनका पालन करना, और अपने सम्पूर्ण हृदय, सम्पूर्ण प्राण से इनके अनुसार आचरण करना। [17]तूने आज प्रभु के विषय में यह घोषित किया है* कि वह तेरा परमेश्वर है, और तू उसके मार्ग पर चलेगा, उसकी संविधियों, आज्ञाओं और न्याय-सिद्धान्तों का पालन करेगा, उसकी वाणी को सुनेगा। [18]प्रभु ने आज तेरे विषय में यह घोषित किया है+ कि तू उसके वचन के अनुसार उसकी प्रजा, उसकी निज सम्पत्ति है, और तू उसकी समस्त आज्ञाओं का पालन करेगा। [19]जिन राष्ट्रों को उसने रचा है, उनके मध्य वह तुझे सर्वोच्च आसन पर प्रतिष्ठित करेगा जिससे उसकी स्तुति, प्रसिद्धि और सम्मान हो। जैसा प्रभु परमेश्वर ने कहा है उसके अनुसार तू उसकी पवित्र प्रजा बनेगा।'

जनता के लिए व्यवस्था का प्रदर्शन

27 इस्राएल के धर्मवृद्धों के साथ मूसा ने लोगों को यह आज्ञा दी, 'जो आदेश आज मैं तुम्हें दे रहा हूँ, उन सब का तुम पालन करना। [2]जिस दिन तुम यर्दन नदी को पार कर उस देश में प्रवेश करोगे, जो तुम्हारा प्रभु परमेश्वर तुम्हें प्रदान कर रहा है, तब तुम ऊँचे-ऊँचे पत्थर गाड़ना, और उनको चूने से पोत देना। [3]नदी को पार करने के पश्चात् जब तुम उस देश में प्रवेश करोगे, जो तुम्हारा प्रभु परमेश्वर तुम्हें प्रदान कर रहा है, जो दूध और शहद की नदियों वाला देश है और जिसके विषय में प्रभु परमेश्वर ने तुम्हारे पूर्वजों से कहा था, तब तुम उन पत्थरों पर इस व्यवस्था की सब बातों को लिखना। [4]जब तुम यर्दन नदी को पार कर लोगे तब उन पत्थरों को एबल पर्वत पर गाड़ना, और उनको चूने से पोत देना, जैसा आदेश आज मैं तुम्हें दे रहा हूँ। [5]वहाँ तुम अपने प्रभु परमेश्वर के लिए पत्थरों की एक वेदी बनाना, किन्तु पत्थरों को लोहे के औजार से तराश कर मत बनाना। [6]तुम अपने प्रभु परमेश्वर के लिए अनगढ़े पत्थरों की एक वेदी बनाना और उस पर ही अपने प्रभु परमेश्वर के लिए सब अग्नि-बलि चढ़ाना। [7]तुम सहभागिता-बलि-पशु की बलि वहीं करना, और वहीं उसको खाना। इस प्रकार अपने प्रभु परमेश्वर के सम्मुख आनन्द मनाना।

8 'तुम खड़ा किये गये पत्थरों पर इस व्यवस्था की सब बातें स्पष्ट शब्दों में लिखना।'

9 मूसा और लेवीय पुरोहित सब इस्राएलियों से बोले, 'इस्राएलियो, शान्त रहो और यह बात सुनो। आज तुम अपने प्रभु परमेश्वर के निज लोग बन गए। [10]इसलिए तुम अपने प्रभु परमेश्वर की वाणी सुनना और उसकी सब आज्ञाओं और संविधियों के अनुसार कार्य करना, जैसा आदेश आज मैं तुम्हें दे रहा हूं।'

अभिशाप-वचन

11 उसी दिन मूसा ने लोगों को यह आदेश दिया, [12]'जब तुम यर्दन नदी को पार कर लोगे तब इन कुलों के व्यक्ति इस्राएली समाज को आशिष देने के लिए गरिज्जीम पर्वत पर खड़े होंगे : शिमोन, लेवी, यहूदा, इस्साकार, यूसुफ और बिन्यामिन। [13]परन्तु इन कुलों के व्यक्ति इस्राएली समाज को शाप देने के लिए एबल पर्वत पर खड़े होंगे: रूबेन, गाद, आशेर, जबूलून, दान और नफ्ताली। [14]लेवी वंश के व्यक्ति समस्त इस्राएली समाज से उच्च स्वर में यह कहेंगे:

15 ''जो व्यक्ति खोदकर अथवा गढ़कर मूर्ति बनाता है, और गुप्त स्थान में उसको प्रतिष्ठित करता है, वह शापित है। ऐसे कारीगर

---

* अथवा 'आज तुझे प्रभु से यह आश्वासन मिला है'। + अथवा, 'आज प्रभु को तुझसे यह आश्वासन मिला है'।

26 : 18 नि 19 : 5; व्य 7 : 6 **27 : 4** यहो 8 : 30 **27 : 5** नि 20 : 25 **27 : 12** व्य 11 : 29; लू 6 : 20-26 **27 : 14** यहो 8 : 33 **27 : 15** नि 20 : 4; लेव 19 : 4; व्य 4 : 16

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

का यह हस्तकार्य प्रभु की दृष्टि में घृणित है।'' सब लोग प्रत्युत्तर में कहेंगे, ''ऐसा ही हो!''
16 ''अपने माता-पिता का अनादर करने वाला व्यक्ति शापित है।'' सब लोग प्रत्युत्तर में कहेंगे, ''ऐसा ही हो!''
17 ''अपने पड़ोसी की भूमि-सीमा का चिह्न हटानेवाला व्यक्ति शापित है।'' सब लोग प्रत्युत्तर में कहेंगे, ''ऐसा ही हो!''
18 ''अन्धे को मार्ग से भटकाने वाला व्यक्ति शापित है।'' सब लोग प्रत्युत्तर में कहेंगे, ''ऐसा ही हो!''
19 ''प्रवासी, पितृहीन और विधवा के न्याय को भ्रष्ट करने वाला व्यक्ति शापित है।'' सब लोग प्रत्युत्तर में कहेंगे, ''ऐसा ही हो!''
20 ''अपनी सौतेली मां के साथ सहवास करनेवाला, और उस पर से अपने पिता की चादर हटाने वाला व्यक्ति शापित है।'' सब लोग प्रत्युत्तर में कहेंगे, ''ऐसा ही हो!''
21 ''पशुगमन करनेवाला व्यक्ति शापित है।'' सब लोग प्रत्युत्तर में कहेंगे, ''ऐसा ही हो!''
22 ''अपनी सगी अथवा सौतेली बहिन के साथ सहवास करनेवाला व्यक्ति शापित है।'' सब लोग प्रत्युत्तर में कहेंगे, ''ऐसा ही हो!''
23 ''अपनी सास के साथ सहवास करनेवाला व्यक्ति शापित है।'' सब लोग प्रत्युत्तर में कहेंगे, ''ऐसा ही हो!''
24 ''अपने पड़ोसी पर गुप्त स्थान में छिपकर प्रहार करनेवाला व्यक्ति शापित है।'' सब लोग प्रत्युत्तर में कहेंगे, ''ऐसा ही हो!''
25 ''निर्दोष मनुष्य की हत्या करने के लिए घूस लेनेवाला व्यक्ति शापित है।'' सब लोग प्रत्युत्तर में कहेंगे, ''ऐसा ही हो!''
26 ''जो व्यक्ति इस व्यवस्था के वचनों के अनुसार आचरण नहीं करता और इस प्रकार उसको पूरा नहीं करता, वह शापित है।'' सब लोग प्रत्युत्तर में कहेंगे, ''ऐसा ही हो!''

आज्ञापालन के फल

28 'परन्तु यदि तू अपने प्रभु परमेश्वर की
वाणी ध्यानपूर्वक सुनेगा, उन समस्त
आज्ञाओं के अनुसार कार्य करने को तत्पर
रहेगा, जिनका आदेश आज मैं तुझे दे रहा हूं,
तो तेरा प्रभु परमेश्वर तुझ को पृथ्वी के समस्त
राष्ट्रों के मध्य सर्वोच्च स्थान पर प्रतिष्ठित करेगा।
2यदि तू अपने प्रभु परमेश्वर की वाणी सुनेगा
तो ये आशिषें तेरे पास आकर तुझको पकड़
लेंगी। 3तू नगर में आशिष प्राप्त करेगा। तू गांव
में आशिष प्राप्त करेगा। 4तेरी देह के फल पर,
तेरी भूमि की उपज पर, तेरे पालतू पशुओं और
भेड़-बकरियों के बच्चों पर आशिष होगी।
5तेरी टोकरी और आटा गूंधने के पात्र पर
आशिष होगी। 6तेरे आगमन पर आशिष होगी,
तेरे प्रस्थान पर आशिष होगी।
7 'प्रभु आक्रमण करनेवाले तेरे शत्रुओं को
तेरे सम्मुख पराजित करेगा। वे एक ओर से तुझ
पर चढ़ाई करेंगे, पर तेरे सम्मुख से सात ओर
भागेंगे। 8प्रभु आशिष को आदेश देगा कि वह
तेरे खत्तों और सब उद्यमों में तेरे साथ जाए। जो
देश तेरा प्रभु परमेश्वर तुझे दे रहा है, उसमें वह
तुझे आशिष देगा।
9 'यदि तू अपने प्रभु परमेश्वर की आज्ञाओं
का पालन करेगा, और उसके मार्ग पर चलेगा
तो जैसी उसने तुझ से शपथ खाई है, उसके
अनुसार वह तुझको अपने लिए पवित्र लोग के
रूप में प्रतिष्ठित करेगा। 10पृथ्वी के समस्त लोग
यह देखेंगे कि तू प्रभु के स्वामित्व और संरक्षण
में है।* अतः वे तुझ से डरेंगे। 11जिस देश को
देने की शपथ प्रभु ने तेरे पूर्वजों से खाई थी, उस
देश में वह तेरी देह के फल, तेरे पशुओं के
बच्चों, और भूमि की उपज को समृद्ध करेगा।
12समय पर तेरे खेतों पर वर्षा करने के लिए,
तेरे सब काम-धन्धों पर आशिष देने के लिए

* मूल मुहावरा, 'प्रभु का नाम तुझ पर अंकित है।''

27 : 16 नि 20 : 12 27 : 18 लेव 19 : 14 27 : 19 नि 22 : 21 27 : 20 लेव 18 : 8; व्य 22 : 30 27 : 25 नि 23 : 7; भज 15 : 5 27 : 26 गल 3 : 10 28 : 1 लेव 26 : 3 28 : 10 यिर 14 : 9; यो 13 : 34-35 28 : 12 व्य 11 : 14

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रभु आकाश के अपने उत्तम भण्डार-गृहों को खोल देगा। तब तू अनेक राष्ट्रों को ऋण देगा, पर तू स्वयं ऋण नहीं लेगा।
13प्रभु तुझ को उच्च आसन पर प्रतिष्ठित करेगा, निम्न स्थान पर नहीं। तू क्रमश: ऊँचा ही उठता जाएगा, और नीचे की ओर नहीं आएगा। किन्तु तुझे ये आशिषें तब प्राप्त होंगी जब तू अपने प्रभु परमेश्वर की आज्ञाओं को सुनेगा, जिनका पालन करने, और जिनके अनुसार कार्य करने का आदेश आज मैं तुझे दे रहा हूं,
14और जब तू दूसरे देवताओं का अनुसरण करने और उनकी पूजा करने के लिए मेरे इन वचनों से, जिनका पालन करने का आदेश आज मैं तुझे दे रहा हूं, विमुख नहीं होगा, इनसे न दाएँ मुड़ेगा और न बाएँ।

आज्ञा उल्लंघन के गम्भीर परिणाम

15 'परन्तु यदि तू अपने प्रभु परमेश्वर की वाणी नहीं सुनेगा, उसकी उन समस्त आज्ञाओं और संविधियों के अनुसार, जिनका आदेश आज मैं तुझे दे रहा हूं, कार्य करने को तत्पर नहीं होगा, तो ये अभिशाप तेरे पास आकर तुझ को पकड़ लेंगे।
16तू नगर में शापित होगा। तू गांव में शापित होगा।
17तेरी टोकरी और आटा गूंधने के पात्र पर अभिशाप पड़ेगा।
18तेरी देह के फल, तेरी भूमि की उपज, पालतू पशुओं और भेड़-बकरियों के बच्चों पर अभिशाप पड़ेगा।
19तेरे आगमन पर अभिशाप पड़ेगा, तेरे प्रस्थान पर अभिशाप पड़ेगा।

20 'जब तक तू नष्ट नहीं हो जाएगा, अविलम्ब मिट नहीं जाएगा तब तक प्रभु तेरे बुरे कार्यों के कारण, तेरे समस्त उद्यमों पर अभिशाप, उलझन और विफलता भेजेगा, क्योंकि तूने प्रभु को छोड़ दिया है।
21जब तक तू उस देश से, जिस पर अधिकार करने के लिए तू वहां जा रहा है, पूर्णत: समाप्त नहीं हो जाएगा तब तक प्रभु तुझको महामारी से मारता रहेगा।
22प्रभु तुझको क्षय, ज्वर, जलन, ताप, अकाल, फफूंदी और पूर्वी वायु के झोंकों से मारेगा। जब तक तू मिट नहीं जाएगा तब तक ये तेरा पीछा करते रहेंगे।
23तेरे सिर के ऊपर का आकाश पीतल जैसा सख्त हो जाएगा। तेरे पैरों के नीचे की भूमि लोहा जैसे कठोर बन जाएगी। न आकाश से वर्षा होगी और न भूमि पर उपज।
24प्रभु तेरे देश पर होने वाली वर्षा को धूल और रेत-कण में बदल देगा। जब तक तू नष्ट नहीं हो जाएगा तब तक वह आकाश से तुझ पर बरसती रहेगी।

25 'प्रभु तेरे शत्रुओं के द्वारा तुझको पराजित करेगा। तू एक ओर से उन पर चढ़ाई करेगा, पर उनके सम्मुख से सात ओर भागेगा। तू पृथ्वी के समस्त राज्यों के लिए वीभत्स हौआ बन जाएगा।
26तेरी लोथ आकाश के पक्षियों और भूमि के जंगली पशुओं का आहार बनेगी। उनको डराकर भगानेवाला कोई न होगा।
27प्रभु तुझ को मिस्री फोड़ों से, बवासीर, दाद और खुजली से ऐसा पीड़ित करेगा कि तू उनसे स्वस्थ नहीं हो सकेगा।
28प्रभु तुझ पर पागलपन, अन्धापन और मति-भ्रम भेजेगा।
29जैसे अन्धा व्यक्ति अन्धकार में टटोलता है वैसे तू दोपहर में टटोलेगा। तू अपने किसी काम में सफल नहीं होगा। अन्य राष्ट्र तुझ पर निरन्तर दमन करते और तुझको लूटते रहेंगे। तुझको बचानेवाला कोई न होगा।
30तू कुंआरी कन्या से सगाई करेगा, पर दूसरा व्यक्ति उससे विवाह करेगा। तू मकान बनाएगा, पर स्वयं उसमें निवास नहीं कर सकेगा। तू अंगूर का उद्यान लगाएगा, पर उसके फलों का आनन्द नहीं ले पाएगा।
31तेरी आंखों के सामने तेरा बैल काटा जाएगा, पर तू उसका मांस नहीं खा सकेगा। तेरे सम्मुख से तेरा गधा लूट लिया जाएगा, और तुझे नहीं लौटाया जाएगा। तेरी भेड़ तेरे शत्रुओं को दे दी जाएगी। तुझको बचानेवाला कोई न होगा।
32तेरे पुत्र और पुत्रियाँ दूसरी जाति के हाथ में सौंप दिए जाएंगे। तेरी आंखें दिन भर उनकी प्रतीक्षा करते-करते थक जाएंगी। उनको रोकने की शक्ति तेरे हाथ में नहीं होगी।
33ऐसे लोग जिन्हें तू नहीं जानता है, तेरी भूमि की उपज, तेरे परिश्रम का फल खाएँगे। तुझ पर निरन्तर दमन होता रहेगा, तू कुचला जाता रहेगा।
34जो विनाश तेरी आंखें देखेंगी, उससे तू पागल हो

---

28 : 15 लेव 26 : 14 **28 : 25** यिर 24 : 9 **28 : 30** यिर 8 : 10; आमो 5 : 11

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जाएगा। 35प्रभु तेरे पैर के तलवे से सिर की चोटी तक, घुटनों और पैरों में कष्टदायक फोड़ों से तुझको पीड़ित करेगा, जिनसे तू स्वस्थ नहीं हो सकेगा।

36 'प्रभु तुझ को और तेरे राजा को, जिसे तूने अपने ऊपर प्रतिष्ठित किया है, ऐसे देश में ले जाएगा, जिसको न तू जानता है और न तेरे पूर्वज जानते थे। वहाँ तू पराए देवताओं की, लकड़ी और पत्थर की मूर्तियों की पूजा करेगा। 37जहाँ प्रभु तुझे ले जाएगा, वहाँ के लोगों के मध्य तू हौआ, कहावत, और लोकोक्ति बन जाएगा। 38तू खेत में बहुत बीज बोएगा, किन्तु थोड़ी फसल ही एकत्र कर पाएगा, क्योंकि टिड्डियां उसको चट कर जाएंगी। 39तू अंगूर के उद्यान लगाएगा, उनमें परिश्रम करेगा, पर न तू अंगूर-रस पी सकेगा, और न अंगूर के फल एकत्र कर सकेगा, क्योंकि कीड़ा उनको खा जाएगा। 40तू अपनी राज्य-सीमा के भीतर जैतून के पेड़ लगाएगा, पर जैतून के तेल का उपयोग नहीं कर पाएगा क्योंकि वे झड़ जाएंगे। 41तू पुत्र और पुत्रियां उत्पन्न करेगा, किन्तु वे तेरे नहीं रहेंगे, क्योंकि वे युद्ध में बन्दी बनकर चले जाएंगे। 42तेरे सब वृक्षों और भूमि की उपज पर कीड़े-मकोड़े लग जाएंगे। 43तेरे मध्य रहनेवाला प्रवासी तुझ से अधिक ऊंचा उठता जाएगा और तू गिरता जाएगा। 44तू उसको उधार नहीं देगा, वरन् वह तुझको उधार देगा। वह उच्च आसन पर प्रतिष्ठित होगा, और तू निम्न स्थान पर! 45जब तक तू नष्ट नहीं हो जाएगा, तब तक ये अभिशाप तुझ पर आकर तेरा पीछा करेंगे, तुझे पकड़े रहेंगे, क्योंकि तूने अपने प्रभु परमेश्वर की वाणी नहीं सुनी, उसकी आज्ञाओं और संविधियों का पालन नहीं किया, जिनका उसने तुझे आदेश दिया था। 46ये अभिशाप चेतावनी-चिह्न तथा आश्चर्यपूर्ण कार्य के रूप में तेरे और तेरे वंश पर सदा रहेंगे।

47 'आशिषों की प्रचुरता होने पर भी तूने आनन्दपूर्वक और भले हृदय से अपने प्रभु परमेश्वर की सेवा नहीं की। 48इसलिए तू भूखा, प्यासा, नंगा रहकर, हर प्रकार के अभाव में अपने शत्रुओं की सेवा करेगा, जिन्हें प्रभु तेरे विरुद्ध भेजेगा। जब तक वह तुझे नष्ट नहीं कर देगा, तब तक तेरी गर्दन पर लोहे का जुआ रखा रहेगा। 49प्रभु दूर से, पृथ्वी के सीमान्त से, एक राष्ट्र को तेरे विरुद्ध बाज की गति के सदृश वेगपूर्वक लाएगा। तू उस राष्ट्र की भाषा नहीं समझेगा। 50उस राष्ट्र के लोगों के कठोर चेहरे होंगे, जो न बूढ़ों का सम्मान करेंगे, और न बच्चों पर दया। 51जब तक तू नष्ट नहीं हो जाएगा, तब तक वे तेरे पशुओं के बच्चों और तेरी भूमि की उपज को खाते रहेंगे। जब तक वे तुझको मिटा नहीं देंगे, तब तक वे तेरे लिए अन्न, अंगूर का रस, तेल, तेरे पालतू पशुओं और भेड़-बकरियों के बच्चे नहीं छोड़ेंगे। 52वे तेरे समस्त नगरों में तुझे घेर लेंगे। जिन ऊंची और मजबूत प्राचीरों पर तुझे भरोसा है, उन्हें वे समस्त देश में ढाह देंगे। जो नगर तेरे प्रभु परमेश्वर ने तुझे दिये हैं, उनमें समस्त देश में वे तुझको घेर लेंगे। 53उस घेराबन्दी की घोर विपत्ति में, जो तेरे शत्रु तुझ पर ढाहेंगे, तू अपनी देह के फल को, प्रभु परमेश्वर द्वारा दिए गए अपने पुत्र-पुत्रियों के मांस को खाएगा। 54तेरा अत्यन्त कोमल और सुकुमार पुरुष भी अपने भाई, अपनी प्राणप्रिय पत्नी और अपने बचे हुए बच्चों पर क्रूर दृष्टि डालेगा। 55वह उनमें से किसी को भी अपने बच्चों का मांस, जो वह खाएगा, नहीं देगा; क्योंकि उस घेराबन्दी की घोर विपत्ति में, जो तेरे शत्रु तेरे समस्त नगरों में तुझ पर ढाहेंगे, उसके पास कुछ भी भोजन-वस्तु नहीं होगी। 56तेरी अत्यन्त कोमल और सुकुमार स्त्री, जो अपनी कोमलता और सुकुमारता के कारण धरती पर पैर रखते हुए डरती है, अपने प्राणप्रिय पति, पुत्र और पुत्री पर क्रूर दृष्टि डालेगी। 57वह अपनी आंवल झिल्ली और अपने उत्पन्न किए हुए बच्चों को उनसे छिपाकर रखेगी, जिससे वह भोजन-वस्तु के

---

28 : 36 2 रा 17 : 4 **28 : 49** यिर 5 : 15; 1 कुर 14 : 21; बारू 4 : 15 **28 : 53** 2 रा 6 : 28–29; यिर 19 : 9; शोक 4 : 10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अभाव में घेराबन्दी और विपत्ति के समय, जो तेरे शत्रु तेरे समस्त नगरों में तुझ पर ढाहेंगे, उनको खा सके।

58 'यदि तू इस पुस्तक में लिखित व्यवस्था के सब वचनों का पालन नहीं करेगा, उनके अनुसार कार्य नहीं करेगा, और अपने प्रभु परमेश्वर के महिमामय और आतंकपूर्ण नाम से नहीं डरेगा 59तो प्रभु तुझ पर और तेरे वंश पर असाधारण महामारियाँ ढाहेगा। वह भयंकर और दीर्घ महामारियों से, असाध्य और दीर्घ रोगों से तुझ को पीड़ित करेगा। 60वह मिस्रदेश के समस्त रोग, जिनसे तू डरता है, तुझ पर पुनः लगाएगा, और ये रोग तुझ से चिपके रहेंगे। 61इनके अतिरिक्त सब प्रकार की बीमारी, महामारी, जिसका उल्लेख व्यवस्था की इस पुस्तक में नहीं हुआ है, प्रभु तुझ पर डालेगा, जब तक तू नष्ट नहीं हो जाएगा। 62यद्यपि तेरे लोग आकाश के तारों के समान असंख्य हैं, पर वे मुट्ठी भर शेष रह जाएंगे, क्योंकि तूने अपने प्रभु परमेश्वर की वाणी नहीं सुनी। 63जैसे प्रभु तेरे लोगों की भलाई करने और उनकी जनसंख्या बढ़ाने में हर्षित होता था, वैसे ही वह उनको मिटाने में, नष्ट करने में हर्षित होगा। जिस भूमि पर तू अधिकार करने जा रहा है, उस पर से तू उखाड़ दिया जाएगा। 64प्रभु तुझको पृथ्वी के एक सीमांत से दूसरे सीमांत तक, पृथ्वी की विभिन्न जातियों में तितर-बितर कर देगा। वहाँ तू उन पराए देवताओं की लकड़ी और पत्थर की मूर्तियों की पूजा करेगा जिन्हें न तू जानता है और न तेरे पूर्वज जानते थे। 65उन राष्ट्रों में तुझे आराम नहीं मिलेगा, और न पैर रखने के लिए विश्राम-स्थल! प्रभु वहाँ तुझे कांपता हुआ हृदय, धुंधली आंखें और क्षीण प्राण प्रदान करेगा। 66तेरा जीवन कच्चे धागे से बन्धा तेरे सामने सन्देह में लटकता रहेगा। तू रात और दिन भय से कांपता रहेगा। तुझे अपने जीवन की सुरक्षा पर भरोसा नहीं होगा। 67जो दृश्य तेरी आंखें देखेंगी, जो भय तेरा हृदय अनुभव करेगा, उसके कारण तू सबेरे कहेगा, ''काश! सन्ध्या होती'' और सन्ध्या के समय कहेगा, ''काश! सबेरा होता।'' 68प्रभु तुझ को जलयानों में मिस्र देश वापस ले जाएगा, यद्यपि मैंने कहा था कि तू फिर कभी उस मार्ग पर नहीं लौटेगा। वहाँ तू स्वयं को गुलाम स्त्री-पुरुष के रूप में अपने शत्रुओं के हाथ बेचना चाहेगा, किन्तु तुझे खरीदने वाला कोई नहीं होगा।'

मोआब देश में पुनःस्थापित प्रभु का विधान

29 *जो विधान प्रभु ने इस्राएली समाज के साथ होरेब पर्वत पर स्थापित किया था, उसके अतिरिक्त प्रभु ने मूसा को आदेश दिया कि वह इस्राएली समाज के साथ मोआब देश में एक विधान स्थापित करे। उस विधान के ये शब्द हैं :

2 मूसा ने समस्त इस्राएली समाज को बुलाया, और उनसे यह कहा, 'जो व्यवहार प्रभु ने मिस्र देश में तुम्हारी आंखों के सामने फरओ तथा उसके सारे कर्मचारियों के साथ, उसके समस्त देश के साथ किया था, वह तुमने देखा है। 3तुम्हारी आंखों ने परीक्षा के महान कार्यों को, चिह्नों और महान आश्चर्यपूर्ण कामों को, देखा है। 4परन्तु आज तक प्रभु ने तुम्हें समझने के लिए हृदय, देखने के लिए आंखें और सुनने के लिए कान नहीं दिए हैं। 5मैं निर्जन प्रदेश में चालीस वर्ष तक तुम्हारा नेतृत्व करता रहा। तब तुम्हारे वस्त्र फटकर तुम्हारे शरीर पर से नहीं गिरे, और न तुम्हारे जूते फटकर तुम्हारे पैरों से अलग हुए। 6तुम रोटी नहीं खा सके, अंगूर का रस और शराब नहीं पी सके। इसका कारण यह है कि तुम इस बात को जान सको कि प्रभु ही तुम्हारा परमेश्वर है। 7जब तुम इस स्थान पर पहुँचे, तब हेश्बोन का राजा सीहोन और बाशान का राजा ओग हमारे साथ युद्ध करने को आए। परन्तु हमने उन्हें पराजित किया। 8हमने उनका देश ले लिया, और पैतृक अधिकार के

---

* मूल में, अध्याय 28 : 69

28 : 67 अय्य 7 : 4 **28 : 68** हो 8 : 13 **29 : 4** रोम 11 : 8; यो 12 : 37 **29 : 7** गण 21 : 23 **29 : 8** गण 32: 33

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लिए उसे रूबेन तथा गाद कुल और मनश्शे के
आधे गोत्र को दे दिया। 9इसलिए तुम इस विधान
के वचनों का पालन करो, और उनके अनुसार
कार्य करो, जिससे तुम अपने समस्त कार्यों को
सफलतापूर्वक सम्पन्न कर सकोगे।

10 'ओ इस्राएल! आज तेरे कुलों के
मुखिया, धर्मवृद्ध और शास्त्री, समस्त इस्राएली
पुरुष, 11उनके बच्चे, उनकी स्त्रियाँ और पड़ाव
के प्रवासी मजदूर जो उनके लिए जलाऊ लकड़ी
काटते और पानी भरते हैं, अपने प्रभु परमेश्वर
के सम्मुख खड़े हैं। 12तेरा प्रभु परमेश्वर तेरे
साथ विधान स्थापित करेगा। वह आज अपने
और तेरे मध्य शपथ खाएगा, और तू इस विधान
में सम्मिलित होगा, 13जिससे वह आज तुझको
अपने निज लोग के रूप में प्रतिष्ठित कर सके,
और जैसा उसने तुझ से कहा था, जैसी शपथ
उसने तेरे पूर्वजों से, अब्राहम, इसहाक और
याकूब से खाई थी, उसके अनुसार तेरा पर-
मेश्वर बन सके। 14जो व्यक्ति आज यहाँ खड़े
हैं, मैं केवल उनके साथ यह विधान स्थापित
नहीं कर रहा हूं, केवल उनसे यह शपथ नहीं
खा रहा हूं, 15वरन् जो व्यक्ति आज हमारे साथ
प्रभु परमेश्वर के सम्मुख खड़ा है, और जो
हमारे साथ आज यहाँ नहीं है, उन दोनों के साथ
ही यह विधान स्थापित किया जा रहा है।

16 'तुम जानते ही हो कि हमने मिस्र देश
में किस प्रकार जीवन व्यतीत किया था। यात्रा
के दौरान हम विभिन्न राष्ट्रों के मध्य से कैसे
निकले थे। 17तुमने उनके पास घृणित मूर्तियाँ,
लकड़ी-पत्थर सोना-चांदी की मूर्तियाँ देखी
थीं। 18इसलिए सावधान! तुम्हारे मध्य ऐसा
पुरुष, स्त्री, गोत्र अथवा कुल नहीं होना चाहिए
जिसका हृदय आज हमारे प्रभु परमेश्वर की
ओर से बदल जाए, और वह जाकर अन्य राष्ट्रों
के देवताओं की पूजा करने लगे। तुम्हारे बीच
ऐसी जड़ नहीं रहनी चाहिए, जिससे विषैले
और कड़ुए फल उत्पन्न होते हैं। 19यदि कोई
व्यक्ति इस शपथपूर्ण व्यवस्था के वचन सुनने
के पश्चात् मन ही मन अपने को सौभाग्यशाली
मानता है, और यह कहता है, "यद्यपि मैं अपने
हृदय के हठ के अनुसार चलूंगा, तो भी मेरा
कुशल-मंगल होगा", तो ऐसा विचार गेहूं के
साथ घुन को भी पीस डालता है। 20प्रभु उसको
क्षमा करने को तैयार भी नहीं होगा, वरन् प्रभु
का क्रोध और उसकी ईर्ष्या-भावना उस व्यक्ति
के प्रति भड़क उठेगी। इस पुस्तक में लिखित
समस्त अभिशाप उस पर पड़ेंगे और प्रभु
आकाश के नीचे से उसका नाम मिटा डालेगा।
21व्यवस्था की प्रस्तुत पुस्तक में लिखित
विधान के समस्त अभिशापों के अनुसार प्रभु
इस्राएल के सब कुलों में से उस व्यक्ति को
उसके विनाश के लिए अलग करेगा। 22आगामी
पीढ़ी के लोग, तुम्हारे बच्चे जो तुम्हारे पश्चात्
उत्पन्न होंगे, और विदेशी जो दूर देश से आएंगे,
इस देश की विपत्तियों तथा प्रभु के द्वारा फैलाई
बीमारियों को देखकर आश्चर्य से यह कहेंगे,
23"इस देश की भूमि गन्धक और नमक से भर
गई है। यह झुलस गई है। इसमें कुछ भी बोया
नहीं जा सकता। इस भूमि में कुछ भी उत्पन्न
नहीं होगा। इसमें घास भी नहीं उग सकती है।
यह सदोम, गमोरा, अदमा और सबोईम के
समान उलट-पुलट गई है, जिन्हें प्रभु ने अपनी
क्रोधाग्नि में उलट-पुलट दिया था।" 24सारे राष्ट्र
पूछेंगे, "प्रभु ने क्यों इस देश के साथ ऐसा
व्यवहार किया? प्रभु की यह भयंकर क्रोधाग्नि
क्यों भड़क उठी?"

25 तब लोग कहेंगे, "जब प्रभु उन्हें मिस्र
देश से निकाल कर लाया था तब उसने उनके
साथ एक विधान स्थापित किया था। उन्होंने
प्रभु के, अपने पूर्वजों के परमेश्वर के इस
विधान को त्याग दिया, 26और जाकर अजनबी
देवताओं की पूजा और वन्दना करने लगे। वे
इन देवताओं को न जानते थे, और न प्रभु ने
उनके भाग में ये देवता दिए थे। 27इस कारण
प्रभु का क्रोध इस देश के प्रति भड़क उठा, और
उसने इस पुस्तक में लिखित समस्त अभिशाप
उस पर डाल दिए। 28प्रभु ने अपनी भयंकर
क्रोधाग्नि, रोष और प्रकोप में उन्हें इस देश से

29 : 18 इब्र 12 : 15; प्रे 8 : 23 **29 : 23** उत 19 : 24 **29 : 24** 1 रा 9 : 8; यिर 22 : 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उखाड़ दिया, और दूसरे देश में फेंक दिया, जैसा वे आज भी हैं।''

29 गुप्त बातें केवल हमारा प्रभु परमेश्वर ही जानता है। पर जो बातें प्रकट की गई हैं, उन्हें हम और हमारी सन्तान सदा-सर्वदा जानेंगे, ताकि हम इस व्यवस्था के वचनों के अनुसार कार्य कर सकें।

पुनःसंस्थापन और आशिष प्राप्त करने की शर्तें

30 'ओ इस्राएल! जब तेरे साथ ये सब बातें
घटेंगी, तुझ पर ये आशिषें और अभिशाप
पड़ेंगे, जिनको मैंने तेरे सम्मुख प्रस्तुत किया है,
और जब उन राष्ट्रों में तेरे लोग अपने हृदय में
विचार करेंगे, जहाँ तेरे प्रभु परमेश्वर ने उन्हें
जाने को बाध्य किया है, 2जब तू और तेरी
सन्तान अपने प्रभु परमेश्वर की ओर लौटेंगे,
उसकी वाणी को सुनेंगे, उसकी आज्ञाओं का,
जिनका आदेश आज मैं तुझे दे रहा हूं, अपने
सम्पूर्ण हृदय से, अपने सम्पूर्ण प्राण से पालन
करेंगे, 3तब तेरा प्रभु परमेश्वर तेरे भाग्य को
बदल देगा। वह तुझ पर दया करेगा। जिन देशों
में तेरे प्रभु परमेश्वर ने तेरे लोगों को तितर-
बितर कर दिया है, वहाँ से वह उन्हें पुनः एक
स्थान पर एकत्र करेगा। 4चाहे तेरे लोग क्षितिज
तक जाने को बाध्य किए गए होंगे, फिर भी तेरा
प्रभु परमेश्वर उन्हें वहाँ से एकत्र करेगा। वहाँ
से वह उन्हें वापस लाएगा। 5तेरा प्रभु परमेश्वर
तेरे लोगों को उस देश में लाएगा जिस पर उनके
पूर्वजों का अधिकार था, ताकि वे उस पर पुनः
अधिकार करें। वह उनके पूर्वजों से अधिक
उन्हें समृद्ध और असंख्य करेगा। 6प्रभु परमेश्वर
तेरे लोगों का और उनके वंशजों का हृदय विनम्र
बनाएगा* कि वे अपने प्रभु परमेश्वर को सम्पूर्ण
हृदय से, सम्पूर्ण प्राण से प्रेम कर सकें और
जीवित रहें। 7तेरा प्रभु परमेश्वर इन अभिशापों
को तेरे शत्रुओं और बैरियों पर डालेगा, जिन्होंने
तुझे सताया था। 8तू पुनः अपने प्रभु परमेश्वर
की वाणी सुनेगा और उसकी आज्ञाओं के
अनुसार, जिनका आदेश आज मैं तुझे दे रहा हूं,
कार्य करने लगेगा। 9तेरा प्रभु परमेश्वर तेरे
समस्त काम-धन्धों, तेरी देह के फल, तेरे पालतू
पशुओं के बच्चों और तेरी भूमि की उपज को
अत्यन्त समृद्ध करेगा। 10यदि तू अपने प्रभु
परमेश्वर की वाणी सुनेगा, जो आज्ञाएँ और
संविधियाँ इस व्यवस्था की पुस्तक में लिखी
हुई हैं, उनका पालन करेगा, यदि तू सम्पूर्ण
हृदय और प्राण से अपने प्रभु परमेश्वर की ओर
लौट आएगा, तो जैसे तेरे पूर्वजों को समृद्ध
करने में प्रभु हर्षित होता था, वैसे ही वह तुझे
समृद्ध करने में हर्षित होगा।

11 'जिस आज्ञा-पालन का आदेश आज मैं
तुझे दे रहा हूं, वह न तेरी शक्ति से बाहर है,
और न तेरी पहुँच से परे है। 12यह आज्ञा आकाश
में नहीं है, कि तू कह सके, ''कौन व्यक्ति हमारे
लिए आकाश पर चढ़ेगा, और उसको उतारकर
हमारे पास लाएगा, कि हम उसको सुन सकें
और उसके अनुसार कार्य कर सकें?'' 13यह
आज्ञा समुद्र के उस पार भी नहीं है कि तू कह
सके, ''कौन व्यक्ति हमारे लिए समुद्र के उस
पार जाएगा, और उसको हमारे पास लाएगा कि
हम उसको सुन सकें और उसके अनुसार कार्य
कर सकें?'' 14इसके विपरीत प्रभु का वचन तेरे
अत्यन्त निकट है। वह तेरे मुंह में, तेरे हृदय में
है, ताकि तू उसके अनुसार कार्य कर सके।

15 'देख, मैंने आज तेरे सम्मुख जीवन और
मृत्यु, भलाई और बुराई रख दी है। 16यदि तू
अपने प्रभु परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन
करेगा, जिनका आदेश आज मैं तुझे दे रहा हूं,
यदि तू अपने प्रभु परमेश्वर से प्रेम करेगा और
उसके मार्ग पर चलेगा, यदि तू उसकी आज्ञाओं,
संविधियों और न्याय-सिद्धान्तों का पालन
करेगा, तो तू जीवित रहेगा, और असंख्य होगा।
प्रभु परमेश्वर तुझ को उस देश में, जिस पर
अधिकार करने के लिए तू वहाँ जा रहा है,
आशिष देगा। 17परन्तु यदि तेरा हृदय प्रभु की

---

* शब्दशः, 'के हृदय का खतना करेगा'।

30 : 1 लेव 26 : 40 **30 : 3** यिर 29 : 14; यहेज 34 : 13; यो 11 : 52 **30 : 4** नह 1 : 9; मत 24 : 31 **30 : 12** रोम 10 : 6 **30 : 14** मत 13 : 23; लू 8 : 21; 1 यो 2 :7.27; प्रव 51 : 26 **30 : 15** भज 1 : 6; यिर 21 : 8; रोम 6 : 23; प्रव 15 : 16-17

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ओर से बदल जाएगा, तू उसकी वाणी नहीं सुनेगा, और दूसरे देवताओं की ओर खिंचकर उनकी वन्दना और पूजा करने लगेगा, [18]तो मैं आज यह घोषित करता हूं, तू निश्चय ही पूर्णतः मिट जाएगा। तू उस भूमि पर, जहाँ तू यर्दन नदी को पार कर अधिकार करने जा रहा है, अधिक दिन जीवित नहीं रहेगा। [19]मैं आज आकाश और पृथ्वी को तेरे विरुद्ध साक्षी देने के लिए बुलाऊंगा कि मैंने तेरे सम्मुख जीवन और मृत्यु, आशिष और अभिशाप रख दिए हैं! इसलिए जीवन को चुन, जिससे तू और तेरे वंशज जीवित रहें, [20]अपने प्रभु परमेश्वर से प्रेम करें, उसकी वाणी सुनें और उससे चिपके रहें। यही तेरे जीवन का अभिप्राय है। इस पर ही तेरी दीर्घायु निर्भर है। तब तू उस भूमि पर निवास कर सकेगा, जिसकी शपथ प्रभु ने तेरे पूर्वजों से, अब्राहम, इसहाक और याकूब से खाई थी कि वह उनको प्रदान करेगा।'

मूसा का उत्तराधिकारी यहोशुअ

31 मूसा ने सब इस्राएलियों से ये बातें भी कहीं।+ [2]मूसा ने उनसे कहा, 'आज मैं एक सौ बीस वर्ष का हूँ। अब मैं आने-जाने में असमर्थ हूं। प्रभु ने मुझसे कहा है, "मूसा, तू इस यर्दन नदी को पार नहीं कर सकेगा।" [3]तुम्हारा प्रभु परमेश्वर स्वयं तुम्हारे आगे-आगे उस पार जाएगा। वह तुम्हारे सामने से उस देश में बसने वाली जातियों को नष्ट कर देगा, जिससे तुम उनके स्थान पर अधिकार कर सको। प्रभु के कथनानुसार यहोशुअ तुम्हारे आगे-आगे उस पार जाएगा। [4]जैसा व्यवहार प्रभु ने एमोरी जाति के राजाओं, सीहोन और ओग के साथ और उनके देश के साथ किया था, जैसे उसने उनको नष्ट कर दिया था, वैसा ही व्यवहार वह यर्दन नदी के उस पार की जातियों के साथ करेगा। [5]प्रभु उनको तुम्हारे हाथ में सौंप देगा। तब तुम उन समस्त आज्ञाओं के अनुसार, जिनका आदेश मैंने तुम्हें दिया है, उनके साथ व्यवहार करना। [6]साहसी और शक्तिशाली बनो! मत डरो! उनसे आतंकित मत हो! क्योंकि तुम्हारे साथ-साथ चलनेवाला तुम्हारा प्रभु परमेश्वर है। वह तुम्हें निस्सहाय नहीं छोड़ेगा। वह तुम्हें त्याग नहीं देगा।'

7 तब मूसा ने यहोशुअ को बुलाया, और सब इस्राएलियों के सामने उससे कहा, 'साहसी और शक्तिशाली बन! क्योंकि तू इन लोगों के साथ उस देश में जाएगा जिसकी शपथ प्रभु ने इनके पूर्वजों से खाई थी कि वह इनको प्रदान करेगा। तू ही इन लोगों का अधिकार उस देश पर कराएगा। [8]तेरे आगे-आगे चलनेवाला प्रभु है। वह तेरे साथ होगा। वह तुझे निस्सहाय नहीं छोड़ेगा। वह तुझे त्याग नहीं देगा। मत डर! निराश नहीं हो!'

कब व्यवस्था का पाठ करना चाहिए

9 मूसा ने इस व्यवस्था को लिख लिया और लेवीय पुरोहितों को, जो प्रभु की विधान-मंजूषा वहन करते थे, तथा इस्राएल के समस्त धर्मवृद्धों को दे दिया। [10]मूसा ने उन्हें यह आदेश दिया, 'प्रत्येक सातवें वर्ष के अन्त में, ऋण-मुक्ति-वर्ष के निर्धारित समय पर, मण्डप-पर्व के अवसर पर, [11]सब इस्राएली अपने प्रभु परमेश्वर के सम्मुख उस स्थान पर उपस्थित होंगे, जिसको वह स्वयं चुनेगा। तब तुम समस्त इस्राएलियों के सम्मुख इस व्यवस्था को इस प्रकार पढ़ना कि सब उसको सुन सकें। [12]तुम सब लोगों को, स्त्री-पुरुष, बच्चों, और अपने नगर में रहने वाले प्रवासियों को एकत्र करना जिससे वे व्यवस्था का पाठ सुन सकें, उसको सीख सकें और अपने प्रभु परमेश्वर की भक्ति करें तथा इस व्यवस्था के वचनों का पालन करने को तत्पर रहें। [13]इस प्रकार जब तक तुम उस भूमि पर जीवित रहोगे, जिस पर अधिकार करने के लिए यर्दन नदी को पार कर वहाँ जा रहे हो, तब तक तुम्हारी भावी सन्तान जो व्यवस्था को अभी नहीं जानती है, वह भी

+ पाठांतर, 'ये बातें कहकर अपना उपदेश समाप्त किया'। * अथवा, 'भय मानना'

30 : 20 उत 12 : 7 **31 : 2** गण 20 : 12 **31 : 4** गण 21 : 24 **31 : 6** यहो 1 : 5; इब्र 13 : 5 **31 : 10** व्य 15 : 1 **31 : 11** यहो 8 : 34; 2 रा 23 : 2; नह 8 : 1

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

व्यवस्था का पाठ सुन सकेगी, और अपने प्रभु
परमेश्वर की भक्ति करना सीखेगी।'

मूसा को प्रभु का अन्तिम आदेश

14 प्रभु ने मूसा से कहा, 'देख, तेरी मृत्यु का
दिन निकट है। तू यहोशुअ को बुला। उसके
पश्चात् तुम दोनों मिलन-शिविर में आना। मैं
यहोशुअ को तेरे स्थान पर नियुक्त करूंगा।'
अत: मूसा और यहोशुअ गए। उन्होंने मिलन-
शिविर में प्रवेश किया। 15तब प्रभु मेघ-स्तम्भ
में मिलन-शिविर में प्रकट हुआ। मेघ-स्तम्भ
तम्बू के द्वार पर खड़ा हो गया।

16 प्रभु ने मूसा से कहा, 'देख, तू शीघ्र अपने
मृत पूर्वजों में जाकर सो जाएगा। पर ये
इस्राएली लोग उस देश के, जहाँ ये जा रहे हैं,
अजनबी देवताओं का अनुगमन करने लगेंगे
और मेरे साथ वेश्या के सदृश विश्वासघात
करेंगे। वे मुझे त्याग देंगे। वे मेरे विधान को, जो
मैंने उनके साथ स्थापित किया है, तोड़ देंगे।
17तब उस दिन मेरा क्रोध उनके विरुद्ध भड़क
उठेगा। मैं उनको त्याग दूंगा, और उनसे विमुख
हो जाऊँगा। वे अन्य जातियों का ग्रास बन
जाएंगे। उन पर विपत्तियों और कष्टों का पहाड़
टूट पड़ेगा, जिसके कारण वे उस दिन यह
कहेंगे, ''क्या यह सच नहीं है कि ये विपत्तियां
हम पर इसलिए आ पड़ी हैं, कि हमारा
परमेश्वर हमारे मध्य नहीं है?'' 18जो कुकर्म
वे करेंगे, और दूसरे देवताओं की ओर उन्मुख
होंगे, उनके कारण मैं उस दिन निश्चय ही उनसे
विमुख होऊंगा। 19अत: अब तुम यह गीत
लिखो, और समस्त इस्राएली समाज को सिखा
दो, उनको कंठस्थ करा दो, जिससे यह गीत
इस्राएली समाज के विरुद्ध मेरे पक्ष में साक्षी दे।
20जब मैं उन्हें दूध और शहद की नदियों वाले
देश में पहुँचा दूंगा, जिसकी शपथ मैंने उनके
पूर्वजों से खाई थी, और जब वे भरपेट खाकर
तृप्त होंगे, उनकी देह पर चर्बी चढ़ जाएगी, तब
वे दूसरे देवताओं की ओर उन्मुख हो जाएंगे
और उनकी पूजा करेंगे। वे मेरा तिरस्कार
करेंगे। वे मेरे विधान को भंग करेंगे। 21जब उन
पर विपत्तियों और कष्टों का पहाड़ टूट पड़ेगा,
तब यह गीत उनके विरुद्ध साक्षी देगा! (क्योंकि
उनके वंशज भी इस गीत को कभी विस्मृत नहीं
कर सकेंगे) इस देश में, जिसको प्रदान करने
की शपथ मैंने खाई थी, उनके प्रवेश करने के
पूर्व से मैं उनकी योजनाओं को, जो ये बना रहे
हैं, जानता हूं।'

22 अत: मूसा ने उसी दिन यह गीत लिखा
और इस्राएली समाज को सिखा दिया।

23 प्रभु ने यहोशुअ बेन-नून को नियुक्त
किया, और उससे कहा, 'साहसी और शक्ति-
शाली बन! तू ही इस्राएली समाज को उस देश
में पहुँचाएगा, जिसकी शपथ मैंने उनसे खाई
है। मैं तेरे साथ रहूंगा।'

24 जब मूसा इस व्यवस्था के वचनों को,
आदि से अन्त तक पुस्तक में लिख चूके, 25तब
उन्होंने प्रभु की विधान-मंजूषा वहन करनेवाले
लेवियों को यह आदेश दिया, 26'व्यवस्था की
यह पुस्तक लो, और उसको अपने प्रभु
परमेश्वर की विधान- मंजूषा के पास रख दो।
इसको वहीं रहने देना ताकि वह तुम्हारे विरुद्ध
साक्षी दे। 27मैं जानता हूं कि तुम विद्रोही और
ऐंठी गरदन वाले लोग हो! देखो, यदि मेरे
जीवित रहते, तुम्हारे साथ रहते हुए भी तुम
आज प्रभु के विरुद्ध विद्रोह करते हो, तो मेरी
मृत्यु के पश्चात् विद्रोह क्यों न करोगे?
28जाओ, अपने कुलों के सब धर्मवृद्धों और
शास्त्रियों को मेरे पास एकत्र करो। मैं उनको
ये वचन सुनाऊंगा और उनके विरुद्ध साक्षी देने
के लिए आकाश और पृथ्वी को बुलाऊँगा।
29मैं जानता हूं, तुम मेरी मृत्यु के पश्चात्
निश्चय ही भ्रष्ट हो जाओगे। जिस मार्ग पर
चलने का मैंने तुम्हें आदेश दिया है, उससे
भटक जाओगे। आगामी दिनों में तुम पर बुराई
का आक्रमण होगा। तुम वही कार्य करोगे, जो
प्रभु की दृष्टि में बुरा है। इस प्रकार तुम अपने
व्यवहार से उसको चिढ़ाओगे।'

मूसा का गीत

30 तत्पश्चात् मूसा ने प्रस्तुत गीत के शब्द,

---

31 : 23 यहो 1 : 6 **31 : 26** यो 12 : 48

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आदि से अन्त तक समस्त इस्राएली सभा को स्पष्ट सुनाए :

32 'ओ आकाश, मेरी ओर ध्यान दे, मैं बोलूंगा;
ओ पृथ्वी, मेरे मुंह के शब्द को सुन!
2 मेरी शिक्षाएँ वर्षा के सदृश बरसें,
मेरे शब्द ओस के सदृश टपकें,
जैसे हरी घास पर रिमझिम वर्षा,
जैसे वनस्पति पर बौछार!
3 मैं प्रभु के नाम को घोषित करूंगा,
हमारे परमेश्वर की महानता को स्वीकार करो!

4 'प्रभु चट्टान है। उसका शासन-कार्य सिद्ध है;
क्योंकि उसके समस्त मार्ग न्यायपूर्ण हैं।
वह सच्चा परमेश्वर है, उसमें पक्षपात नहीं,
वह निष्पक्ष न्यायी और निष्कपट है।
5 परन्तु इस्राएलियों ने प्रभु के साथ भ्रष्ट व्यवहार किया;
वे अपने कलंक के कारण उसके पुत्र-पुत्रियां नहीं रहे।
वे विकृत और कुटिल पीढ़ी के लोग हैं।
6 ओ मूर्ख और निर्बुद्धि जाति के लोगो!
तुम प्रभु के कार्यों का यह बदला देते हो?
क्या वह तेरा पिता नहीं है,
ओ इस्राएल! जिसने तुझे अस्तित्व दिया,
जिसने तुझे बनाया, और स्थापित किया?
7 बीते हुए दिनों को स्मरण कर,
प्रत्येक पीढ़ी के वर्षों पर विचार कर;
अपने पिता से पूछ, और वह तुझ पर प्रकट करेगा;
अपने धर्मवृद्धों से पूछ, और वे तुझ को बताएंगे।
8 जब सर्वोच्च परमेश्वर ने राष्ट्रों को उनका पैतृक-अधिकार बांटा,
मानव-समूहों को अलग-अलग किया,
तब उसने ईश-पुत्रों+ की संख्या के अनुसार
विभिन्न जातियों की राज्य-सीमाएं निश्चित कर दीं।
9 पर प्रभु का निज भाग इस्राएल, उसकी अपनी प्रजा है;
उसका निर्धारित पैतृक-अधिकार याकूब है।
10 प्रभु ने उसको निर्जन प्रदेश में,
सुनसान विस्तृत मैदान में,
गरजते-चीखते पशुओं से भरे मरुस्थल में पाया था;
रक्षा के हेतु उसको घेर कर रखा;
उसकी देख-भाल की,
आंख की पुतली के सदृश
उसको संभालकर रखा।
11 जैसे गरुड़ अपने घोंसले की चौकसी करता है,
अपने बच्चों के ऊपर मंडराता है,
अपने पंख फैलाकर उनको पकड़ता है,
उनको अपने परों पर उठा लेता है,
12 वैसे प्रभु ने अकेले ही इस्राएल का नेतृत्व किया;
उसके साथ कोई विदेशी देवता नहीं था।
13 प्रभु ने उसे पृथ्वी के उच्च स्थानों की सवारी कराई,
इस्राएल ने खेतों की उपज खाई।
प्रभु ने चट्टान से शहद निकाल उसे चटाया,
कड़ी चट्टान में से तेल निकालकर उसे खिलाया।
14 गायों का दही, भेड़-बकरियों का दूध,
मेढ़े और मेमनों की चर्बी,
बाशान जाति के पशु, बकरे,
गेहूं का उत्तम आटा भी उसने उसे दिया।
ओ इस्राएल, तूने अंगूर का रक्तिम रस भी पिया था!

15 'पर तू, यशूरून*! मोटा होकर लात मारने लगा!

+ अथवा, 'ईश-दूतों'; पाठांतर, 'इस्राएल के पुत्रों'। *अर्थात् सद्धर्मी; इस्राएल की एक उपाधि।

32 : 1 यश 1 : 2 **32 : 2** अय्य 29 : 22-23; यश 55 : 10; हो 6 : 4; भज 72 : 6 **32 : 4** यश 44 : 8 **32 : 4** यश 44 : 8 **32 : 5** फिल 2 : 15 **32 : 6** यश 63 : 16 **32 : 8** प्रे 17 : 26 **32 : 9** व्य 7 : 6 **32 : 10** यिर 2 : 6; हो 9 : 10; प्रज्ञा 11 : 2 **32 : 11** नि 19 : 4 **32 : 13** यश 58 : 14; भज 81 : 16

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तू मोटा हुआ, हृष्ट-पुष्ट हुआ!
तेरी देह पर चर्बी चढ़ गई!
तब तूने परमेश्वर को छोड़ दिया,
जिसने तुझे बनाया था,
अपने उद्धार की चट्टान के साथ मूर्खतापूर्ण व्यवहार किया।
16 इस्राएली लोगों ने अजनबी देवताओं की वन्दना कर,
प्रभु को ईर्ष्यालु बनाया,
घृणित प्रथाओं का पालन कर
उसके क्रोध को भड़काया।
17 उन्होंने भूत-प्रेतों को बलि चढ़ाई,
जो ईश्वर नहीं थे,
जिन्हें वे नहीं जानते थे;
जो नए-नए देवता थे,
अभी-अभी प्रकट हुए थे,
जिनका भय उनके पूर्वजों को कभी नहीं हुआ था।
18 ओ इस्राएल! जिस "चट्टान" ने तुझे जन्म दिया,
उसको तू भूल गया!
जिस परमेश्वर ने तुझे उत्पन्न किया,
उसको तूने विस्मृत कर दिया।

19 'प्रभु ने यह देखा कि उसके पुत्र-पुत्रियों ने उसे चिढ़ाया।
अतः उसने उन्हें ठुकरा दिया।
20 उसने कहा, मैं विमुख होऊंगा।
मैं देखूंगा कि उनका क्या अन्त होता है।
यह सत्य और न्याय से जी चुरानेवाली पीढ़ी है!
इन बच्चों में निष्ठा का अभाव है।
21 जो ईश्वर नहीं है,
उसके प्रति निष्ठा प्रदर्शित कर
उन्होंने मुझमें ईर्ष्या उत्पन्न की।
उन्होंने अपने देवताओं की मूर्तियों से मुझे चिढ़ाया।
मैं ऐसे लोगों द्वारा उनमें जलन उत्पन्न करूंगा,
जो चुने हुए लोग नहीं हैं!
मैं मूर्ख राष्ट्र के द्वारा उन्हें चिढ़ाऊंगा।
22 मेरे क्रोध के कारण अग्नि जल उठी है।
वह अधोलोक के नीचे तक जलेगी।
वह पृथ्वी और उसकी उपज को भस्म कर देगी,
पर्वतों की नींव में आग लगा देगी।

23 'मैं उन पर विपत्तियों का ढेर लगा दूंगा,
मैं उन पर अपने तरकश के तीर खाली कर दूंगा।
24 अकाल उन्हें तबाह कर देगा,
घोर ताप से वे भस्म हो जाएंगे;
असाध्य महामारियां उन्हें घेर लेंगी,
मैं उनके विरुद्ध हिंसक पशु,
भूमि पर रेंगनेवाले विषैले जन्तु भेजूंगा।
25 वे युद्ध-भूमि में तलवार से निर्वंश हो जाएंगे,
वे घर के भीतर भय से आक्रांत होंगे।
युवक और युवतियाँ,
दुधमुंहा बच्चा और वृद्ध,
सब नष्ट हो जाएंगे।
26 मैंने कहा था, मैं इन्हें दूर देशों में तितर-बितर कर दूंगा।
मैं मनुष्यों के मध्य से इनका स्मृति-चिह्न मिटा डालूंगा।
27 पर मुझे शत्रुओं की चिढ़ का भय था;
ऐसा न हो कि उनके बैरियों को भ्रम हो,
और वे यह कहें,
"हमने अपने भुजबल से विजय प्राप्त की है।
प्रभु ने यह सब नहीं किया।"

28 'यह अदूरदर्शी राष्ट्र है।
इन लोगों में समझ नहीं है।
29 यदि इनमें बुद्धि होती तो ये यह बात सोचते,
अपने कार्यों के अन्त को समझते!
30 कैसे एक व्यक्ति हजार सैनिकों का पीछा कर सकता है,
कैसे दो व्यक्ति दस हजार सैनिकों को भगा सकते हैं,
यदि उनकी "चट्टान" उनको बेच न देती,

---

32 : 17 1 कुर 10 : 20 **32 : 21** रोम 10 : 19; यश 45 : 6 **32 : 25** शोक 1 : 20

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यदि प्रभु उनसे आत्म-समर्पण न कराता?
31 हमारी "चट्टान" के सदृश उनकी चट्टान
नहीं है,
चाहे हमारे शत्रु हमारे न्यायकर्त्ता क्यों न हों!
32 उनकी अंगूर की बेल
सदोम की अंगूर शाखा से,
गमोरा के अंगूर-उद्यान से निकलती है।
उनके अंगूर विषमय,
उनके अंगूर के गुच्छे कड़ुए हैं।
33 उनके अंगूर का रस सांप का जहर है।
नाग-सर्प का घातक विष है।
34 क्या इस्राएल कीमती पत्थर के समान, मुझे
प्रिय नहीं,
जिसको मैंने अपने खजाने में मुहरबन्द रखा
है?
35 प्रतिशोध लेना मेरा काम है, मैं बदला लूंगा;
उनके पैर निर्धारित समय पर फिसलेंगे।
उनके घोर संकट का दिन समीप है,
उनका सर्वनाश अविलम्ब होगा।
36 जब प्रभु देखेगा कि
उसके लोगों का भुजबल जाता रहा,
स्वाधीन और पराधीन, दोनों प्रकार के लोग
नहीं रहे,
तब वह अपने निज लोगों को निर्दोष सिद्ध
करेगा,
वह अपने सेवकों पर दया करेगा।
37 वह कहेगा, "तुम्हारे देवता कहाँ गए?
कहाँ है तुम्हारी चट्टान,
जिसकी शरण में तुम गए थे?
38 जिन्होंने तुम्हारे बलि-पशु की चर्बी खाई
थी,
जिन्होंने तुम्हारी पेय-बलि का रस पिया
था,
अब वे देवता उठें, और तुम्हारी सहायता
करें।
वे ही तुम्हारी रक्षा करें।
39 अब मुझे देखो!
मैं, हाँ मैं, वही हूं!
मेरे अतिरिक्त कोई ईश्वर नहीं है।
मैं ही प्राण लेता हूं,
मैं ही जीवन देता हूं।
मैं ही घायल करता हूं,
मैं ही स्वस्थ करता हूं।
मेरे हाथ से छुड़ानेवाला कोई नहीं है।
40 मैं आकाश की ओर अपना हाथ उठाकर यह
शपथ खाता हूं,
मैं अनन्त काल तक जीवित हूं।
41 अत: मैं अपनी तलवार की धार को तेज
करूंगा,
मैं न्याय को अपने हाथ में लूंगा,
मैं अपने बैरियों का प्रतिकार करूंगा,
मैं उनसे बदला लूंगा, जो मुझसे बैर करते
हैं।
42 मैं अपने तीरों को शत्रु-पक्ष के मृतकों और
कैदियों के रक्त से नहला दूंगा,
मेरी तलवार उनके नायकों के लम्बे-लम्बे
केशवाले सिरों का मांस खाएगी।"
43 'ओ राष्ट्रो, प्रभु के निज लोगों के साथ जय-
जयकार करो![+]
प्रभु अपने सेवकों के रक्त का प्रतिशोध
लेता है;
वह अपने बैरियों से बदला लेता है।
वह अपने निज लोगों की भूमि को उसकी
अशुद्धता से शुद्ध करता है।'[*]
44 मूसा ने यहोशुअ[**] बेन-नून के साथ
आकर इस्राएली लोगों को उच्च स्वर में इस
गीत के पद सुनाए।
45 जब मूसा लोगों को सब प्रवचन सुना
चुके 46 तब उन्होंने उनसे यह कहा, 'जो शब्द
मैं आज गम्भीर साक्षी के रूप में तुमसे कह रहा
हूं, उन्हें अपने हृदय में बैठा लो, और अपने
बच्चों को सिखाओ, जिससे वे इस व्यवस्था के

+ पाठांतर, 'ओ स्वर्गो, उसकी प्रजा के साथ जयकार करो! ओ ईश-दूतो, उसकी आराधना करो!' * अथवा "प्रायश्चित करता है।" ** मूल में, 'होशे'

32 : 35 रोम 12 : 19; इब्र 10 : 30 32 : 36 भज 135 : 14 32 : 37 यिर 2 : 28 32 : 39 यश 41 : 4; 1 शम 2 : 6 32 : 43 रोम 15 : 10; प्रक 19 : 2; 1 : 6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सब वचनों के अनुसार कार्य कर सकें।
47क्योंकि व्यवस्था के ये शब्द खोखले नहीं हैं,
वरन् ये तुम्हारा जीवन हैं। इन शब्दों के अनुसार
कार्य करने से तुम्हारी आयु उस देश में लम्बी
होगी, जहाँ तुम यर्दन नदी को पार कर अधिकार
करने के लिए जा रहे हो।'

मूसा का कनान देश के दर्शन करना

48 प्रभु मूसा से उसी दिन बोला, 49 'इस
अबारीम पहाड़ की नबो नामक चोटी पर चढ़,
जो यरीहो नगर के सम्मुख, मोआब देश में है।
वहाँ से तू कनान देश के दर्शन कर सकेगा,
जिसको मैं पैतृक अधिकार के लिए इस्राएली
समाज को प्रदान कर रहा हूं। 50जैसे तेरा भाई
हारून होर नामक पर्वत पर चढ़ा था, वहाँ
उसकी मृत्यु हुई, और वह अपने मृत पूर्वजों में
जाकर मिल गया था वैसे ही तू इस पर्वत पर
चढ़ेगा, तेरी मृत्यु होगी और तू अपने मृत पूर्वजों
में जाकर मिल जाएगा, 51क्योंकि तूने और हारून
ने सीन के निर्जन प्रदेश में, मरीबा-कादेश के
जलाशय पर इस्राएली समाज के मध्य मेरे
विश्वास को भंग किया था। तुमने इस्राएली
समाज के मध्य मुझे पवित्र सिद्ध नहीं किया था।
52तू दूर से ही उस देश के दर्शन करेगा, जिसको
मैं इस्राएली समाज को दे रहा हूं, किन्तु वहाँ
नहीं जा सकेगा।'

मूसा का इस्राएली समाज को आशीर्वाद देना

33 जो आशीर्वाद परमेश्वर के प्रियजन
मूसा ने अपनी मृत्यु के पूर्व इस्राएली
समाज को दिया था, वह यह है। 2मूसा ने
कहा,

'प्रभु सीनय पर्वत से आया,
वह सेईर देश से हम पर उदित हुआ,
वह पारन पर्वत से प्रकाशवान हुआ।
वह लाखों पवित्र प्राणियों के मध्य से
आया।
उसके दाहिने हाथ में ज्वालामय अग्नि+
थी।

3 प्रभु ने निश्चय ही सभी लोगों से प्रेम किया
था;
उसके पवित्र जन उसकी रक्षा में थे;
अतः वे उसके कदमों पर चले थे;
उसके वचनों से उन्हें मार्गदर्शन प्राप्त हुआ
था।
4 याकूब के कुलों के पैतृक अधिकार के लिए
मैंने तुम्हें एक व्यवस्था प्रदान की है।
5 जब इस्राएल के कुल एकत्र हुए थे,
इस्राएली लोगों के मुखिया जमा हुए थे,
तब प्रभु को यशूरून++ में राजा घोषित किया
गया।'

6 'रूबेन का कुल न मरे, पर वह जीवित रहे!
उसके कुल के लोग अल्प संख्यक न हों।'
7 मूसा ने यहूदा कुल के विषय में यह कहा,
'हे प्रभु, यहूदा की वाणी सुन!
उसको उसके अपने भाइयों के पास लौटा
ला।
अपने हाथों से उसके लिए संघर्ष कर,
उसके बैरियों के आक्रमण के समय उसका
सहायक बन।'
8 मूसा ने लेवी कुल के विषय में यह कहा,
'हे प्रभु,
लेवी कुल को अपना तुम्मीम,
अपने भक्त को अपना ऊरीम दे;*
जिसको तूने मस्सा स्थान पर परखा था,
जिसके साथ तूने मरीबा जलाशय पर
विवाद किया था;
9 जिसने अपने माता-पिता के विषय में कहा था,
"मैंने उनको नहीं देखा।"
लेवी ने तेरे लिए अपने भाइयों को अस्वीकार
कर दिया था,
उसने अपने बच्चों तक को नहीं पहचाना
था।
वह तेरे शब्दों को ध्यान देता था,
तेरे विधान का दृढ़ता से पालन करता था।

+ अथवा, 'अग्निमय विधि' ++ देखिए 32 : 15 पर। * देखिए नि 28 : 30 की टिप्पणी ।

32 : 48 गण 27 : 12 **32 : 51** गण 20 : 11 **33** उत 49 **33 : 2** नि 19 : 18; शास 5 : 4; हब 3 : 3 **33 : 8** नि 28 : 30 **33 : 9** मत 10 : 37; 12 : 48; नि 32 : 26

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

10 वह याकूब को तेरे न्याय-सिद्धान्त,
और इस्राएल को तेरी व्यवस्था सिखाएगा।
वह तेरे सम्मुख धूप-द्रव्य जलाएगा,
और तेरी वेदी पर सम्पूर्ण अग्नि-बलि रखेगा।
11 हे प्रभु, उसकी योग्यता को आशिषमय कर,
उसके सेवा-कार्यों को स्वीकार कर।
उसके बैरियों की,
उससे घृणा करनेवालों की कमर तोड़ दे
कि वे फिर उठ न सकें।'
12 मूसा ने बिन्यामिन कुल के विषय में यह कहा,
'यह प्रभु का प्रियजन है।
यह प्रभु के पास निरापद निवास करता है।
प्रभु इसको दिन भर घेरे रहता है।
वह इसकी दोनों पहाड़ियों के मध्य निवास करता है।'
13 मूसा ने यूसुफ कुल के विषय में यह कहा,
'प्रभु ने इसके देश को आशिष दी है।
ऊपर आकाश की सर्वोत्तम भेंट,
नीचे गहरे झरनों का जल इसे प्राप्त है,
14 सूर्य के द्वारा पकाए गए सर्वोत्तम फल,
और वह समृद्ध फसल जो मौसम के अनुसार उपजती है;
15 प्राचीन पहाड़ों का सर्वोत्तम उत्पादन,
और शाश्वत पहाड़ियों की प्रचुर वनोपज,
16 यूसुफ को पृथ्वी की श्रेष्ठतम वस्तुएँ
और उसकी परिपूर्णता उपलब्ध है,
झाड़ी+ में निवास करनेवाले प्रभु की अनुकम्पा उस पर है।
यूसुफ पर,
जो अपने भाइयों का मुकुट है,
उसके सिर पर इन आशिषों की वर्षा हो।
17 वह पहिलौठे* सांड़ के सदृश महाबलवान है।
जैसे जंगली भैंसे के सींगों में अपार शक्ति होती है,
वैसे उसमें है।
वह अपनी शक्ति रूपी सींग के द्वारा
शत्रु पक्ष के लोगों को पृथ्वी के सीमान्तों तक खदेड़ देगा।
एफ्रइम वंश के लाखों पुरुष,
मनश्शे वंश के हजारों लोग
ऐसे शक्तिशाली हैं!'
18 मूसा ने जबूलून कुल के विषय में यह कहा,
'ओ जबूलून, व्यापार के उद्देश्य से की गई जल-यात्रा में,
ओ इस्साकार, अपनी थल-यात्रा में आनन्द मना।
19 वे लोगों को पहाड़ पर आमंत्रित करेंगे,
वहाँ वे सफलता के लिए धर्ममय बलि चढ़ाएंगे।
क्योंकि वे समुद्र के प्रचुर धन से,
रेतकणों में छिपी सम्पत्ति से लाभ कमाते हैं।'
20 मूसा ने गाद कुल के विषय में यह कहा,
'धन्य है प्रभु, जो गाद का राज्यक्षेत्र बढ़ाता है।
सिंह के सदृश गाद लेटता है!
वह शिकार की बांह चीरता,
उसके सिर को फाड़ता है।
21 उसने अपने लिए देश का सर्वोत्तम भाग चुना है,
क्योंकि वहाँ उसके लिए सेनापति का भाग आरक्षित था।
वह इस्राएली कुलों का नेता बन कर आया।
उसने प्रभु के धर्म को पूरा किया,
और इस्राएली समाज से उसके न्याय-सिद्धान्तों का पालन कराया।'
22 मूसा ने दान कुल के विषय में यह कहा,
'दान सिंह का बच्चा है!
वह बाशान प्रदेश से कूदता है।'
23 मूसा ने नफ्ताली कुल के विषय में यह कहा,
'ओ नफ्ताली! तू प्रभु की अनुकम्पा से सन्तुष्ट,
और उसकी आशिषों से भरपूर है।
गन्नेसरत झील और दक्षिणी क्षेत्र पर तेरा अधिकार है।'

+ पाठांतर, 'सीनय'। * मूल में, 'उसका पहिलौठा'

33 : 16 नि 3 : 2,4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

24 मूसा ने आशेर कुल के विषय में यह कहा,
'आशेर अपने भाइयों में सर्वाधिक धन्य हो।
उस पर अन्य भाइयों की अनुकम्पा हो।
उसके क्षेत्र में जैतून तेल की नदियां बहें।
25 तेरे द्वार की सिटकनी
लोहे और पीतल की हो।
तेरी आयु के अन्त तक
तेरी शक्ति बनी रहे।

26 'यशूरून के परमेश्वर के सदृश
और कोई ईश्वर नहीं है।
वह तेरी सहायता के लिए आकाश के मध्य से,
मेघों के बीच से
गौरव में भरा, सवार होकर आता है!
27 शाश्वत परमेश्वर तेरा आश्रय है;
उसकी शाश्वत बाहें तेरा सहारा हैं।
उसने तेरे सम्मुख से तेरे शत्रुओं को निकाला है।
उसने ही तुझे यह आदेश दिया,
''उन्हें नष्ट कर दो!''
28 इस्राएल निरापद निवास करता है।
याकूब के पुत्र अन्न और अंगूर के देश में
एकान्त में शत्रुओं से सुरक्षित हैं।
वहां आकाश ओस की वर्षा करता है।
29 ओ इस्राएल, तू धन्य है!
तेरे सदृश और कौन जाति है,
जिसका प्रभु ने उद्धार किया है?
वह तेरी सहायता के लिए ढाल,
और विजय-प्राप्ति के हेतु तलवार है!
तेरे शत्रु तेरी ठकुर-सुहाती करेंगे,
पर तू उनके पहाड़ी शिखर के
पूजा-स्थलों को रौंद देगा।'

मूसा की मृत्यु

34 मूसा मोआब के मैदानों को छोड़कर
नबो पहाड़ी चोटी पर, पिस्गाह के
शिखर पर चढ़े, जो यरीहो नगर के सम्मुख है।
तब प्रभु ने उन्हें ये सब प्रदेश दिखाए: गिलआद
से दान तक का प्रदेश, 2नफ्ताली कुल का
प्रदेश, एफ्रइम तथा मनश्शे वंशीय लोगों का
प्रदेश, और भूमध्यसागर के तट तक यहूदा कुल
का समस्त प्रदेश, 3नेगेब प्रदेश, यरीहो अर्थात्
खजूर के वृक्षों के नगर की अण्डाकर घाटी से
सोअर नगर तक का समस्त प्रदेश। 4प्रभु ने उनसे
कहा, 'यही है वह देश जिसके विषय में मैंने
अब्राहम, इसहाक और याकूब से यह शपथ
खाई थी: ''मैं यह देश तुम्हारे वंशजों को
दूंगा।'' मैंने तुझे इसके दर्शन करा दिए। पर तू
स्वयं वहां नहीं जा सकेगा।'

5 यों प्रभु के वचन के अनुसार प्रभु के सेवक
मूसा की मृत्यू वहां मोआब देश में हुई। 6प्रभु
ने बेत-पओर के सम्मुख मोआब देश की घाटी
में मूसा को गाड़ दिया। परन्तु आज तक कोई
व्यक्ति नहीं जानता है कि मूसा की कबर कहां
है।

7 जब मूसा की मृत्यु हुई तब उनकी आयु
एक सौ बीस वर्ष थी। परन्तु न उनकी आंखें
धुंधली पड़ी थीं और न उनके शरीर की स्फूर्ति
कम हुई थी। 8इस्राएली समाज ने मोआब के
मैदान में मूसा के लिए तीस दिन तक शोक
मनाया। उसके बाद उसके मृत्यु-शोक और
विलाप के दिन समाप्त हुए।

9 मूसा ने अपनी मृत्यु के पूर्व यहोशुअ बेन-
नून के सिर पर हाथ रखा था, इसलिए वह बुद्धि
की आत्मा से परिपूर्ण था। इस्राएली समाज ने
उसके आदेशों को सुना, और जो आज्ञा प्रभु ने
मूसा को दी थी, उसके अनुसार कार्य किया।

10 अब तक इस्राएल में मूसा के समान नबी
उत्पन्न नहीं हुआ, जिनके साथ प्रभु आपने-
सामने वार्तालाप करता था। 11प्रभु ने मूसा के
समान और किस व्यक्ति को भेजा था कि वह
मिस्र देश में फरओ, और उसके समस्त
कर्मचारियों और मिस्र-निवासियों के सम्मुख
चिह्न और आश्चर्यपूर्ण कार्य करे? 12जो भुजबल
और शक्ति मूसा ने प्रदर्शित की, जो आतंक के
महान कार्य इस्राएली समाज के सम्मुख किए,
वैसे और किस व्यक्ति ने किए?

---

33 : 26 नि 15 : 11; भज 68 : 4; हब 3 : 8 **33 : 27** भज 90 : 1 **33 : 28** गण 23 : 9; यिर 23 : 6 **33 : 29** भज 144 : 15 **34 : 5** गण 27 : 13 **34 : 6** यहू 9 **34 : 9** गण 27 : 18 **34 : 10** व्य 18 : 15, 18; यो 1 : 17; प्रव 45 : 1-5 **34 : 11** नि 33 : 11; गण 12 : 6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यहोशुअ

पुस्तक परिचय

प्रस्तुत ग्रंथ में इस्राएली लोगों के कनान देश में प्रवेश करने और उसे अधिकार में कर लेने का वृत्तांत है। कुल-पतियों को दी गयी प्रतिज्ञा के कारण यह देश इस्राएलियों को मीरास के रूप में प्राप्त हुआ था, लेकिन उस पर पूर्ण अधिकार करने के लिए उन्हें अनेकों आक्रमण करने पड़े। इन आक्रमणों का नायक यहोशुअ था, जिसने मूसा के देहान्त के पश्चात् इस्राएलियों का नेतृत्त्व संभाला था। इस पुस्तक में निम्नलिखित विशेष घटनाओं का विवरण दिया गया है: यर्दन नदी को पार करना, यरीहो नगर का पतन, ऐ नगर का युद्ध तथा शकेम नगर में परमेश्वर एवं उसके निज लोगों के मध्य विधान (वाचा) की पुन:स्थापना।

पवित्र बाइबिल के इब्रानी संस्करण में ''व्यवस्था'' के पांच ग्रंथों के बाद आनेवाले ग्रंथ ''नबियों के ग्रंथ'' कहलाते हैं। वास्तव में यहोशुअ, शासक, 1-2 शमूएल तथा 1-2 राजा जैसे ग्रंथों में नबियों के संदेश के लिए ऐतिहासिक पृष्ठभूमि प्रस्तुत की गयी है, क्योंकि इतिहास में उनका यह संदेश सत्य प्रमाणित हो जाता है कि प्रभु का वचन सुनना और उसका पालन करना इस्राएल के लिए जीवन का मार्ग है, जैसे व्यवस्था-विवरण ग्रंथ में कहा गया है: ''हे इस्राएल, मैं ने तेरे सम्मुख जीवन और मृत्यु, आशिष और अभिशाप रख दिये हैं। इसलिए जीवन को चुन'' (व्य 30:19)। यहोशुअ ने यह स्पष्ट उत्तर दिया जो प्रस्तुत पुस्तक का विख्यात पद है:

''तुम्हें आज ही इस बात का निर्णय करना होगा कि तुम किसकी आराधना करोगे। जहाँ तक मेरा और मेरे परिवार का प्रश्न है, हम प्रभु ही की आराधना करेंगे'' (यहो 24:15)। अन्त में यह पुस्तक धर्म-युद्ध की नहीं, वरन् युद्ध-मार्ग छोड़ने की शिक्षा देती है (इब्र 4 : 8 - 11)। इसका संदेश तभी सार्थक हो जाता है, जब यहोशुअ की क्रूर निर्दय रण-नीति को जीवन-संग्राम में सहृदय सत्यनिष्ठ सेवा का प्रतीक माना जाए।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

कनान देश पर विजय	1 : 1 — 12 : 24
भूमि का आबंटन	13 : 1 — 21 : 45
(क) यर्दन नदी के पूर्व का भूमि-क्षेत्र	13 : 1 - 33
(ख) यर्दन नदी के पश्चिम का भूमि-क्षेत्र	14 : 1 — 19 : 51
(ग) शरण-नगर	20 : 1 - 9
(घ) लेवीय नगर	21 : 1 - 45
पूर्व दिशा में रहनेवाले इस्राएली कुल एवं मनश्शे गोत्र के आधे लोग अपने भूमि-भाग को लौटते हैं	22 : 1 - 34
यहोशुअ का अंतिम वक्तव्य	23 : 1 - 16
शकेम नगर में विधान की पुन:स्थापना	24 : 1 - 33

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कनान-विजय की तैयारी

1 प्रभु के सेवक मूसा की मृत्यु के पश्चात् प्रभु
ने नून के पुत्र और मूसा के धर्म-सेवक
यहोशुअ से कहा, 2‘मेरे सेवक मूसा की मृत्यु
हो गई। इसलिए अब तैयार हो, और सब
इस्राएलियों के साथ इस यर्दन नदी को पार कर
उस देश में जा जो मैं इस्राएली समाज को दे रहा
हूँ। 3मैंने मूसा को वचन दिया था। अपने वचन
के अनुसार जिस-जिस स्थान पर तुम्हारे पैर
पड़ेंगे, वह मैं तुम्हें दूंगा। 4यह तुम्हारी राज्य-
सीमा होगी: दक्षिण में मरुस्थल से उत्तर में
लबानोन की पहाड़ियों तक, पूर्व में महानदी
फरात और हित्ती जाति के समस्त देश से
पश्चिम में भूमध्यसागर तक। 5जब तक तू जीवित
है तब तक कोई भी व्यक्ति तेरा सामना नहीं कर
सकेगा। जैसे मैं मूसा के साथ था वैसे ही मैं तेरे
साथ रहूँगा। मैं तुझे निस्सहाय नहीं छोड़ूँगा। मैं
तुझे नहीं त्यागूंगा। 6शक्तिशाली और साहसी
बन! तू ही इस देश पर इस्राएलियों का
अधिकार कराएगा। इस देश को प्रदान करने की
शपथ मैंने इस्राएलियों के पूर्वजों से खाई थी।
7तू शक्तिशाली और साहसी बन! जिस व्यवस्था
का आदेश मेरे सेवक मूसा ने तुझे दिया है,
उसका पालन कर और उसके अनुसार कार्य
कर। उस व्यवस्था से न दाहिनी ओर मुड़ना,
और न बायीं ओर। तब तू जहाँ-जहाँ जाएगा,
वहाँ-वहाँ सफल होगा। 8इस व्यवस्था-ग्रन्थ
के शब्द तेरे मुंह से कभी अलग न हों। तू रात-
दिन उसका पाठ करना, ताकि तू उसमें लिखी
हुई सब बातों का पालन कर सके और उनके
अनुसार कार्य कर सके। तब तू अपने मार्ग पर
उन्नति करेगा, तू अपने कार्य में सफल होगा।
9स्मरण रख, मैंने तुझे यह आज्ञा दी है:
“शक्तिशाली और साहसी बन! भयभीत मत
हो! निराश मत हो!” जहाँ-जहाँ तू जाएगा,
वहाँ-वहाँ मैं, तेरा प्रभु परमेश्वर, तेरे साथ
रहूँगा।’
10 तब यहोशुअ ने इस्राएली समाज के
शास्त्रियों को यह आज्ञा दी, 11‘पड़ाव में जाओ,
और लोगों को यह आदेश दो, “अपने भोजन
आदि का प्रबन्ध कर लो; क्योंकि तुम्हें तीन दिन
के भीतर इस यर्दन नदी को पार करना है। तुम्हें
उस देश पर अधिकार करने के लिए प्रवेश
करना है, जिसको तुम्हारा प्रभु परमेश्वर तुम्हारे
अधिकार में प्रदान कर रहा है।” ’
12 फिर यहोशुअ ने रूबेन तथा गाद के
वंशजों और मनश्शे गोत्र के आधे वंशजों से
कहा, 13‘जो आज्ञा प्रभु के सेवक मूसा ने तुम्हें
दी थी, उसको स्मरण करो। उन्होंने कहा था;
“तुम्हारा प्रभु परमेश्वर तुम्हें एक विश्राम-
स्थल दे रहा है। वह तुम्हें यह देश प्रदान कर
रहा है।” 14तुम्हारी पत्नी, बच्चे और पशु यर्दन
नदी के इस पार की भूमि पर रहेंगे, जो मूसा ने
तुम्हें दी है। किन्तु तुम्हारे सब बलवान पुरुष
शस्त्र उठाकर अपने जाति-भाई-बन्धुओं के
आगे-आगे यर्दन नदी पार करेंगे। वे युद्ध में तब
तक उनकी सहायता करेंगे, 15जब तक प्रभु
तुम्हारे जाति-भाई-बन्धुओं को भी तुम्हारे
समान विश्राम-स्थल न दे। जब उस देश की
भूमि पर, जो प्रभु परमेश्वर तुम्हें प्रदान कर रहा
है, उनका अधिकार हो जाएगा, तब तुम अपने
अधिकार क्षेत्र में लौट आना। तुम इस भूमि
पर अधिकार करना, जो प्रभु के सेवक मूसा
ने तुम्हें यहां यर्दन नदी के पूर्वी भाग में दी
है।’
16 उन्होंने यहोशुअ को उत्तर दिया, ‘हम
आपके सब आदेशों का पालन करेंगे। जहाँ-
जहाँ आप हमें भेजेंगे, वहाँ-वहाँ हम जाएंगे।
17जिस प्रकार हम मूसा की बातें मानते थे, उसी
प्रकार आप की बातें भी मानेंगे। शर्त केवल यह
है: जैसे प्रभु परमेश्वर मूसा के साथ था वैसे वह
आप के साथ भी हो। 18जो व्यक्ति आप के
आदेश से विद्रोह करेगा, आपकी बातों को नहीं
मानेगा, आपकी आज्ञा का उल्लंघन करेगा,
उसको मृत्यु-दण्ड दिया जाएगा। केवल आप
शक्तिशाली और साहसी हों!’

---

1 : 1 नि 24 : 13; 33 : 11 **1 : 2** व्य 34 : 5 **1 : 3** व्य 11 : 24 **1: 4** उत 15 : 18 **1 : 5** नि 3 : 12; व्य 7 : 24; 31: 6; इब्र 13 : 5 **1 : 8** व्य 17 : 18 **1 : 12-15** गण 32 : 20 -22; व्य 3 : 18-20; यहो 22 : 1-6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यरीहो नगर में यहोशुअ के गुप्तचर

2 यहोशुअ बेन-नून ने शिट्टीम के पड़ाव से
दो गुप्तचर गुप्तरूप से भेजे। उसने उनसे
कहा, 'जाओ, और उस देश का, विशेषकर
यरीहो नगर का अवलोकन करो।' अत:
गुप्तचर चले गए। वे यरीहो नगर की एक वेश्या
के घर में पहुँचे। उसका नाम राहाब था। वे वहीं
ठहर गए।

2 यरीहो नगर के राजा ने यह समाचार सुना:
'आज रात इस्राएली जाति के कुछ पुरुष हमारे
देश का भेद लेने के लिए यहाँ आए हैं।' 3अत:
उसने यह सन्देश राहाब के पास भेजा, 'जो
पुरुष तेरे घर में हैं, वे सारे देश का भेद लेने के
लिए आए हैं। उन्हें बाहर निकाल!' 4किन्तु राहाब
ने दोनों गुप्तचरों को छिपा दिया। उसने राजा
के कर्मचारियों से कहा, 'यह सच है कि दो
पुरुष मेरे पास आए थे। पर मैं नहीं जानती हूँ
कि वे कहां से आए थे। 5जब अन्धेरा होने पर
नगर का प्रवेश-द्वार बन्द होने लगा तब वे चले
गए। मैं नहीं जानती हूं कि वे कहां गए। परन्तु
यदि आप अविलम्ब उनका पीछा करें तो उन्हें
मार्ग में पकड़ सकते हैं।' 6(राहाब ने गुप्तचरों
को घर की छत पर चढ़कर अलसी के डण्ठलों
के भीतर छिपा दिया था। उसने अलसी के
डण्ठल छत पर सुखाने के लिए फैलाकर रखे
थे।) 7जब राजा के कर्मचारी नगर के बाहर
निकल गए तब नगर का प्रवेश-द्वार बन्द कर
दिया गया। उन्होंने यर्दन नदी के मार्ग पर, घाट
तक गुप्तचरों की खोज-बीन की।

8 गुप्तचरों के सोने के पूर्व राहाब उनके पास
छत पर आई। 9उसने उनसे कहा, 'मैं जानती
हूं कि प्रभु ने तुम्हें हमारा यह देश दे दिया है।
हम-सब पर तुम्हारा डर छा गया है। इस देश
के निवासी तुम्हारे विचारमात्र से आतंकित हो
गए हैं; 10क्योंकि हमने सुना है कि जब तुम
लोग मिस्र देश से बाहर निकले थे तब प्रभु ने
तुम्हारे सम्मुख लाल सागर के जल को सुखा
डाला था। यर्दन नदी के उस पार के एमोरी
जाति के राजाओं-सीहोन और ओग-को भी
तुम ने पूर्णत: नष्ट कर दिया है; उनके साथ किए
गए व्यवहार के विषय में भी हमने सुना है।
11जब हमने यह खबर सुनी तब हमारा हृदय
भय से आतंकित हो गया। तुम्हारे कारण हमारे
किसी भी पुरुष में दम नहीं रहा। तुम्हारा प्रभु
परमेश्वर ही ऊपर आकाश में, और नीचे पृथ्वी
पर एक-मात्र ईश्वर है। 12अब तुम मुझसे प्रभु
की शपथ खाओ कि जैसा मैंने तुम्हारे साथ दया-
पूर्ण व्यवहार किया है, वैसा ही तुम मेरे पिता के
परिवार के साथ दयापूर्ण व्यवहार करोगे। मुझे
एक विश्वस्त चिह्न दो। 13तुम मुझे वचन दो कि
तुम मेरे पिता, माता, मेरे भाइयों और बहिनों को
तथा उनके सब कुटुम्बियों को जीवित रहने दोगे
और मृत्यु से हमारे प्राणों को बचाओगे।'

14 गुप्तचरों ने उससे कहा, 'हमारे प्राण तेरे
लिए हाजिर हैं! यदि तू हमारे इस काम का भेद
प्रकट नहीं करेगी तो जब प्रभु हमें यह देश देगा
तब हम तेरे साथ दयापूर्ण और सच्चाई से
व्यवहार करेंगे।'

15 राहाब नगर के परकोटे के भीतर रहती
थी। उसका घर परकोटे पर बना था। इसलिए
उसने गुप्तचरों को एक रस्सी के सहारे खिड़की
से नगर के बाहर उतार दिया। 16उसने उनसे
कहा, 'तुम पहाड़ी की ओर चले जाओ। अन्यथा
तुम्हें खोजनेवाले, राजा के दूत तुमको पकड़
लेंगे। जब तक वे लौट कर न आएं, तब तक,
तीन दिन तक, तुम वहां छिपे रहना। उसके बाद
तुम अपने मार्ग पर निर्विघ्न जा सकते हो'।
17गुप्तचरों ने उससे कहा, 'जो शपथ तूने हमें
खिलाई है, उसको हम इस शर्त पर पूरा करेंगे,
और शपथ-भंग का दोष हम पर नहीं लगेगा:
18देख, जब हम तेरे देश पर चढ़ाई करेंगे तब
तू इस लाल रस्सी को खिड़की से लटका देना,
जहाँ से तूने हमें उतारा है। अपने पास इसी घर
में अपने माता-पिता, भाई-बहिनों और अपने
पिता के समस्त परिवार को एकत्र कर लेना।
19यदि कोई भी व्यक्ति तेरे घर के द्वार से बाहर

---

2 : 1 इब्र 11 : 31; याक 2 : 25; मत 1 : 5 **2 : 10** नि 14 : 21; गण 21 : 24, 34 **2 : 11** व्य 4 : 39 **2 : 15** 1 शम 19 : 12; प्रे 9 : 25; 2 कुर 11 : 32

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सड़क पर जाएगा तो उसकी हत्या का दोष स्वंय
उसके माथे पर पड़ेगा, और हम निर्दोष माने
जाएंगे। परन्तु यदि तेरे साथ घर के भीतर रहने
वाले किसी व्यक्ति की हत्या होगी तो उसका
दोष हम पर होगा। 20यदि तू हमारे इस काम
का भेद प्रकट करेगी तो जो शपथ तूने हमें
खिलाई है, उसको भंग करने का दोष हम पर
नहीं लगेगा, हम निर्दोष माने जाएंगे।' 21राहाब
ने कहा, 'जैसा तुमने कहा, वैसा ही हो!' उसके
पश्चात् उसने उन्हें विदा किया, और वे चले
गए। उसने लाल रस्सी को खिड़की से लटका
दिया।

22 गुप्तचर पहाड़ी पर पहुँचे। जब तक उन्हें
खोजनेवाले, राजा के दूत लौट नहीं गए, तब
तक वे वहां तीन दिन ठहरे रहे। खोजनेवाले
दूतों ने निकलने के हरएक मार्ग पर उन्हें ढूंढ़ा,
पर वे नहीं मिले। 23तब दोनों गुप्तचर पहाड़ी
से नीचे उतरे। उन्होंने नदी पार की, और
यहोशुअ बेन-नून के पास पहुँचे। जो कुछ
उनके साथ घटित हुआ था, उस सब का
विवरण उन्होंने यहोशुअ को सुनाया। 24उन्होंने
यहोशुअ से कहा, 'प्रभु ने समस्त देश को हमारे
हाथ में सौंप दिया है। उस देश के निवासी हमारे
विचारमात्र से आतंकित हो गए हैं।'

इस्राएलियों का यर्दन नदी पार करना

3 यहोशुअ सबेरे उठा। उसने इस्राएली समाज
के साथ शिट्टीम के पड़ाव से प्रस्थान किया।
वे यर्दन नदी के तट पर पहुंचे। उन्होंने उस पार
जाने से पूर्व वहां पर पड़ाव डाला। 2शास्त्रियों
ने तीन दिन के पश्चात् समस्त पड़ाव का दौरा
किया। 3उन्होंने लोगों को यह आदेश दिया,
'जब तुम अपने प्रभु परमेश्वर की विधान-
मंजूषा को लेवीय पुरोहितों के द्वारा ले जाते हुए
देखो, तब अपने-अपने स्थान से प्रस्थान कर
उसका अनुगमन करना। 4तब तुम्हें ज्ञात होगा
कि किस दिशा में तुम्हें जाना है, क्योंकि तुम
इस ओर पहले कभी नहीं आए थे। परन्तु तुम
विधान-मंजूषा के निकट मत जाना, वरन् उससे
एक किलोमीटर *पीछे रहना।' 5यहोशुअ ने
इस्राएलियों से कहा, 'तुम अपने-आप को शुद्ध
करो, क्योंकि प्रभु कल तुम्हारे मध्य आश्चर्यपूर्ण
कार्य करेगा।' 6उसने पुरोहितों से यह कहा,
'विधान की मंजूषा उठाकर लोगों के आगे-
आगे चलो।' पुरोहित विधान की मंजूषा उठा-
कर इस्राएली समाज के आगे-आगे चलने लगे।

7 प्रभु ने यहोशुअ से कहा, 'आज मैं एक
आश्चर्यपूर्ण कार्य करूंगा। उसके कारण तू
समस्त इस्राएली समाज के सम्मुख एक महान्
पुरुष के रूप में प्रतिष्ठित हो जाएगा। तब उन्हें
ज्ञात होगा कि मैं जैसा मूसा के साथ था वैसा
ही तेरे साथ भी हूं। 8तू विधान-मंजूषा वहन
करने वाले पुरोहितों को यह आदेश दे, "जब
तुम यर्दन नदी के तट पर पहुंचोगे तब नदी में
खड़े हो जाना।"' 9यहोशुअ ने इस्राएली लोगों
से कहा, 'पास आओ, और अपने प्रभु परमेश्वर
के वचन सुनो।' 10उसने आगे कहा, 'तुम्हें आज
ज्ञात होगा कि तुम्हारे मध्य जीवित परमेश्वर है,
और वह तुम्हारे सामने से कनानी, हित्ती,
हिव्वी, परिज्जी, गिर्गाशी, एमोरी और यबूसी
जातियों को निश्चय ही खदेड़ देगा। 11देखो,
समस्त पृथ्वी के प्रभु की विधान-मंजूषा तुम्हारे
सामने यर्दन नदी को पार कर रही है। 12अब
तुम इस्राएल के प्रत्येक कुल में से एक पुरुष के
हिसाब से बारह पुरुष लो। 13देखो, जब प्रभु,
समस्त पृथ्वी के स्वामी, की विधान-मंजूषा
वहन करनेवाले पुरोहित यर्दन नदी के जल में
पैर रखेंगे, तब यर्दन नदी का जल-प्रवाह रुक
जाएगा और ऊपर से आने वाला जल एक ढेर
के रूप में खड़ा हो जाएगा।'

14-15 फसल का समय था। नदी जलमग्न
थी। इस्राएली लोगों ने नदी पार करने के लिए
अपने तम्बुओं से प्रस्थान किया। विधान की
मंजूषा वहन करनेवाले पुरोहित इस्राएलियों के
आगे थे। जब पुरोहित यर्दन नदी के तट पर
पहुँचे और उन्होंने पैर जल में डाले 16तब ऊपर
का जल-प्रवाह रुक गया, और वह बहुत दूर,

*** मूल में, 'दो हजार हाथ'।**

3 : 4 नि 19 : 12 **3 : 10** नि 34 : 9 -10 **3 : 14-16** : नि 14 : 21

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सारतन नगर के निकट आदम नगर पर, एक ढेर के रूप में खड़ा हो गया। नीचे की ओर, अराबाह सागर, अर्थात् मृत सागर, की ओर बहने वाला जल पूर्णत: सूख गया और समस्त इस्राएली समाज ने यरीहो नगर के निकट नदी पार कर ली। 17इस्राएली सूखी भूमि पर उस पार चलते गए। जब तक समस्त इस्राएली कौम ने यर्दन नदी पार नहीं कर ली तब तक प्रभु की विधान-मंजूषा वहन करनेवाले पुरोहित यर्दन नदी के मध्य सूखी भूमि पर स्थिर खड़े रहे।

बारह स्मारक-स्तम्भ

4 जब इस्राएली कौम के सब लोग यर्दन नदी को पार कर चुके तब प्रभु ने यहोशुअ से कहा, 2 'तू प्रति कुल एक पुरुष के हिसाब से सब कुलों में से बारह पुरुष चुन, 3और उन्हें यह आदेश दे: ''तुम यहां यर्दन नदी के मध्य उस स्थान से जहाँ पुरोहितों ने पैर रखे थे, बारह पत्थर लो और उन्हें अपने कन्धों पर उठाकर ले जाओ। जिस स्थान पर तुम आज रात को पड़ाव डालोगे वहां उनको रख देना।'' ' 4तब यहोशुअ ने इस्राएली समाज में से उन बारह पुरुषों को बुलाया, जिन्हें उसने प्रति कुल एक पुरुष के हिसाब से नियुक्त किया था। 5यहोशुअ ने उनसे कहा, 'तुम अपने प्रभु परमेश्वर की मंजूषा के सम्मुख यर्दन नदी के मध्य जाओ। इस्राएल के बारह कुलों की संख्या के अनुरूप प्रत्येक पुरुष एक-एक पत्थर अपने कन्धे पर रखकर ले जाएगा। 6ये तुम्हारे मध्य स्मारक-चिह्न माने जाएंगे। जब भविष्य में तुम्हारे बच्चे तुमसे यह पूछेंगे, ''इन पत्थरों का क्या अर्थ है?'' 7तब तुम उनसे कहना, ''प्रभु की विधान-मंजूषा के सम्मुख यर्दन नदी का जल-प्रवाह रुक गया था। जब प्रभु की विधान-मंजूषा ने यर्दन नदी पार की, तब उसका जल सूख गया था।'' अत: ये पत्थर इस्राएली समाज के लिए सदा-सर्वदा स्मारक-चिह्न माने जाएंगे।'

8 इस्राएली पुरुषों ने यहोशुअ के आदेश के अनुसार कार्य किया। उन्होंने इस्राएली कुलों की संख्या के अनुरूप यर्दन नदी के मध्य से बारह पत्थर उठाए, जैसा प्रभु ने यहोशुअ से कहा था। वे उनको अपने कन्धों पर रखकर उस स्थान पर ले गए, जहां उन्होंने पड़ाव डाला था। उन्होंने वहां उनको रख दिया। 9यहोशुअ ने यर्दन नदी के मध्य उस स्थान पर, जहां विधान की मंजूषा वहन करनेवाले पुरोहितों ने पैर रखे थे, बारह पत्थर प्रतिष्ठित किए (वे आज भी वहां हैं)। 10जिन कार्यों को करने की आज्ञा प्रभु ने यहोशुअ के द्वारा इस्राएली लोगों को दी थी, जब तक वे पूर्ण नहीं हो गए तब तक मंजूषा को वहन करने वाले पुरोहित यर्दन नदी के मध्य में खड़े रहे। ऐसा ही आदेश मूसा ने यहोशुअ को दिया था।

लोगों ने जल्दी-जल्दी नदी पार की। 11जब सब लोग नदी पार कर चुके तब प्रभु की विधान-मंजूषा वहन करनेवाले पुरोहित उस पार गए और वे फिर इस्राएली लोगों के आगे हो गए। 12जैसा मूसा ने रूबेन तथा गाद वंशियों और मनश्शे के आधे गोत्र से कहा था, उसके अनुसार वे हथियार बांधे शेष इस्रालियों के आगे उस पार गए। 13वे अस्त्र-शस्त्र से सज्जित चालीस हजार सैनिक थे। वे युद्ध करने के लिए प्रभु के सम्मुख यरीहो के मैदान की ओर गए। 14उस दिन प्रभु ने जो कार्य किया उसके कारण यहोशुअ इस्राएली समाज की आंखों में एक महान पुरुष के रूप में प्रतिष्ठित हो गया। जैसे इस्राएली लोग मूसा के प्रति उनके जीवन-भर श्रद्धापूर्ण भय रखे थे वैसे ही वे यहोशुअ के प्रति श्रद्धापूर्ण भय रखते रहे।

15 प्रभु ने यहोशुअ से कहा, 16'तू साक्षी-मंजूषा वहन करनेवाले पुरोहितों को आदेश दे कि वे यर्दन नदी से बाहर निकल आएं।' 17अत: यहोशुअ ने पुरोहितों को यह आदेश दिया, 'यर्दन नदी से बाहर निकल आओ।' 18जब प्रभु की विधान-मंजूषा वहन करने वाले पुरोहित यर्दन नदी के मध्य से बाहर निकल आए, और उन्होंने सूखी भूमि पर अपने पैर रखे तब यर्दन नदी का जल अपने पूर्व स्थान पर लौट आया, और पहले के समान उसके किनारों पर बहने लगा।

---

3 : 17 नि 14 : 22; 2 रा 2 : 8 **4 : 6** व्य 6 : 20

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

19 इस्राएली लोगों ने पहले महीने* की दसवीं तारीख को यर्दन नदी पार की। उसके पश्चात् उन्होंने यरीहो नगर की पूर्व दिशा में गिलगाल में पड़ाव डाला।
20जो बारह पत्थर उन्होंने यर्दन नदी से लिये थे, उनको यहोशुअ ने गिलगाल+ में प्रतिष्ठित किया।
21उसने इस्राएली समाज से यह कहा, 'जब भविष्य में तुम्हारे बच्चे तुम से यह पूछेंगे, "ये पत्थर क्या हैं ?"
22तब तुम उन्हें यह बताना: "इस यर्दन नदी को हम इस्राएलियों ने सूखी भूमि पर चल कर पार किया था।"
23तुम्हारे प्रभु परमेश्वर ने लाल सागर के साथ ऐसा ही किया था: जब तक हम उसके पार नहीं चले गए थे, तब तक उसने उसको हमारे सम्मुख सुखाए रखा था। इसी प्रकार प्रभु परमेश्वर ने यर्दन नदी के जल के साथ किया: जब तक तुमने यर्दन नदी नहीं पार कर ली, तब तक प्रभु ने उसको तुम्हारे सामने सूखी भूमि बनाए रखा।
24इस कारण पृथ्वी के सब लोगों को ज्ञात होगा कि प्रभु के हाथ में सामर्थ्य है, और तुम जीवन-भर अपने प्रभु परमेश्वर की भक्ति करते रहोगे।'

खतना और पास्का (फसह) का पर्व++

5 एमोरी जाति के राजा, यर्दन नदी के उस पार, पश्चिमी दिशा में रहते थे, और समुद्र तट पर कनानी जाति के राजा रहते थे। जब उन्होंने यह सुना कि प्रभु ने इस्राएली जाति के लिए यर्दन नदी का जल सुखा डाला और उन्होंने यर्दन नदी पार कर ली, तब उन राजाओं का हृदय भय से आतंकित हो गया। इस्राएली लोगों के कारण उनमें दम नहीं रहा।
2 उस समय प्रभु ने यहोशुअ से कहा, 'तू चकमक पत्थर की छुरियां बना और इस्राएली पुरुषों को दूसरी बार खतना वाली जाति बना।'
3अत: यहोशुअ ने चकमक पत्थर की छुरियाँ बनाईं और उनसे गिबअत-हाअरालोत नामक स्थान पर इस्राएली पुरुषों का खतना किया।
4यहोशुअ ने समस्त पुरुषों का इस कारण खतना किया: जो इस्राएली पुरुष मिस्र देश से बाहर निकले थे और जो सैनिक थे, उन सब की मृत्यु मार्ग में, निर्जन प्रदेश में, मिस्र देश से निकलने के बाद हो चुकी थी।
5यद्यपि मिस्र देश से बाहर निकलनेवाले सब पुरुषों का खतना हो चुका था, तथापि मिस्र देश से बाहर निकलने के बाद मार्ग में निर्जन प्रदेश में उत्पन्न होनेवाले बालकों का खतना नहीं हुआ था।
6 जब तक समस्त इस्राएली कौम के पुरुषों की, मिस्र देश से बाहर निकलने वाले सैनिकों की, मृत्यु नहीं हुई, तब तक वे चालीस वर्ष तक निर्जन प्रदेश में भटकते रहे, क्योंकि उन्होंने प्रभु की वाणी नहीं सुनी थी। प्रभु ने शपथ खाई कि वह उन्हें उस देश के, दूध और शहद की नदियों वाले देश के, दर्शन नहीं कराएगा, जिसको प्रदान करने की शपथ उसने उनके पूर्वजों से खाई थी।
7यहोशुअ ने उनके पुत्रों का, जिन्हें प्रभु ने उनके स्थान पर तैयार किया था, खतना किया; क्योंकि मार्ग में उनका खतना नहीं हो सकता था।
8 जब इस्राएली कौम के सब पुरुषों का खतना हो गया, तब वे पूर्णत: स्वस्थ होने तक अपने-अपने निवास-स्थान में, तम्बुओं में ठहरे रहे।
9प्रभु ने यहोशुअ से कहा, 'आज मैंने तुम्हारे ऊपर से मिस्र देश के कलंक को दूर कर दिया।' इसलिए आज भी उस स्थान का नाम गिलगाल** है।
10 जब इस्राएली गिलगाल में पड़ाव डाले हुए थे, तब उन्होंने महीने के चौदहवें दिन सन्ध्या समय यरीहो के मैदान में पास्का का पर्व मनाया।
11उन्होंने पास्का-पर्व के दूसरे दिन उस देश में उत्पन्न होने वाली यह फसल खाई: बेखमीर रोटी और अनाज के भुने हुए दाने।
12उस देश की फसल खाने के पश्चात्, दूसरे दिन 'मन्ना' का गिरना बन्द हो गया। उस दिन के बाद इस्राएली लोगों को 'मन्ना' फिर नहीं मिला। इसलिए वे उस वर्ष से कनान देश में

* अर्थात् "अप्रैल" + अर्थात् 'गोलाकार' ++ देखिए निर्गमन 12 अध्याय के शीर्षक की टिप्पणी ** अर्थात् "दूर करना"; मूल शब्द में श्लेष है: 'गोलाकार' और 'गोल करना'

4 : 23 नि 14 : 21 5 : 6 गण 14 : 28-35 5 : 10 नि 12 : 6 5 : 12 नि 16 : 35

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उत्पन्न होने वाला अन्न खाने लगे।

प्रभु का सेनाध्यक्ष

13 यहोशुअ यरीहो नगर के निकट था।
उसने आँखें उपर उठाईं तो अचानक उसे हाथ
में नंगी तलवार लिये हुए एक व्यक्ति दिखाई
दिया। वह उसके सम्मुख खड़ा था। यहोशुअ
उसके पास गया। यहोशुअ ने उससे पूछा, 'तुम
किस पक्ष के हो ? हमारे पक्ष के अथवा शत्रु-
पक्ष के ?' [14]व्यक्ति ने उत्तर दिया, 'मैं किसी भी
पक्ष का नहीं हूँ। मैं प्रभु की सेना का सेनाध्यक्ष
हूँ और अब यहाँ आया हूँ।' यहोशुअ ने तुरन्त
भूमि पर गिरकर उसकी वन्दना की और उससे
पूछा, 'स्वामी, मुझ-सेवक के लिए आपका
क्या आदेश है ?' [15]प्रभु के सेनाध्यक्ष ने कहा,
'अपने पैर से जूते उतार; क्योंकि जिस स्थान पर
तू खड़ा है, वह पवित्र है।' यहोशुअ ने ऐसा ही
किया।

यरीहो नगर का पतन

6 इस्राएलियों के कारण यरीहो नगर में
मोर्चाबन्दी कर ली गई। प्रवेश-द्वार बन्द
कर दिए गए। कोई भी व्यक्ति नगर के भीतर
न आ सकता था, और न नगर के बाहर जा
सकता था। [2]प्रभु ने यहोशुअ से कहा, 'देख, मैं
यरीहो नगर, उसके राजा और उसके योद्धाओं
को तेरे हाथ में दे रहा हूँ। [3]तू और तेरे सैनिक
दिन में एक बार पूरे नगर की परिक्रमा करेंगे।
तू छ: दिन तक ऐसा ही करना। [4]सात पुरोहित
मेढ़े के सींग से बने सात नरसिंघे लेकर विधान-
मंजूषा के आगे-आगे जाएंगे। पर तुम सातवें
दिन सात बार नगर की परिक्रमा करना और
पुरोहित नरसिंघे फूंकें। [5]वे अन्त में जोर से
नरसिंघा फूंकें। ज्यों ही तुम नरसिंघे की आवाज
सुनो त्यों ही सब लोग जोर से युद्ध का नारा
लगाएं। तब यरीहो नगर का परकोटा धंस
जाएगा, और हरएक व्यक्ति अपनी आंखों की
सीध में चढ़ जाएगा।'

6 यहोशुअ बेन-नून* ने पुरोहितों को बुलाया
और उनसे यह कहा, 'विधान-मंजूषा उठाओ।
तुम में से सात पुरोहित मेढ़े के सींग के सात
नरसिंघे उठाकर विधान-मंजूषा के आगे-आगे
जाएंगे।' [7]उसने इस्राएली लोगों से कहा, 'आगे
बढ़ो! नगर की परिक्रमा करो। अग्रगामी
सैन्यदल प्रभु की मंजूषा के सामने रहेगा।'

8 यहोशुअ के आदेश के अनुसार सात
पुरोहित आगे बढ़े। वे प्रभु के सम्मुख मेढ़े के
सींग के सात नरसिंघे उठाए हुए थे। वे नरसिंघे
फूंकने लगे। प्रभु की विधान-मंजूषा उनके पीछे
चल रही थी। [9]नरसिंघा फूंकनेवाले पुरोहितों
के आगे अग्रगामी सैन्यदल था। चन्दावल
सैन्यदल मंजूषा के पीछे चल रहा था। इस्राएली
आगे बढ़ते गए। पुरोहित नरसिंघे फूंक रहे थे।

10 यहोशुअ ने इस्राएली लोगों को यह
आदेश दिया, 'युद्ध का नारा मत लगाना। तुम्हारी
आवाज भी सुनाई नहीं देनी चाहिए। तुम्हारे मुंह
से शब्द भी नहीं निकलना चाहिए। जिस दिन
मैं तुम्हें युद्ध का नारा लगाने को कहूंगा, उस
दिन ही तुम युद्ध का नारा लगाना।' [11]इस प्रकार
यहोशुअ ने प्रभु की मंजूषा से एक बार नगर की
परिक्रमा कराई। तब वे पड़ाव में लौट आए,
और वहाँ रात व्यतीत की।

12 यहोशुअ बड़े सबेरे उठा। पुरोहितों ने
प्रभु की मंजूषा उठाई। [13] प्रभु की मंजूषा के
आगे-आगे मेढ़े के सींग के सात नरसिंघे वहन
करने वाले सात पुरोहित नरसिंघे फूंकते हुए
चले। अग्रगामी सैन्यदल उनके आगे चल रहा
था। चन्दावल सैन्यदल प्रभु की मंजूषा के पीछे
चल रहा था। नरसिंघे निरन्तर बज रहे थे। [14]वे
दूसरे दिन फिर एक बार नगर की परिक्रमा कर
पड़ाव में लौट आए। ऐसा उन्होंने छ: दिन तक
किया।

15 वे सातवें दिन पौ फटते ही उठे। उन्होंने
पूर्व ढंग से नगर की परिक्रमा की; पर उस दिन
उन्होंने सात बार नगर की परिक्रमा की। [16]जब
पुरोहितों ने सातवीं बार की परिक्रमा के समय
नरसिंघे फूंके तब यहोशुअ ने लोगों से कहा,
'युद्ध का नारा लगाओ, क्योंकि प्रभु ने तुम्हें यह

---

*अथवा 'नून के पुंत्र यहोशुअ'

5 : 13 गण 22 : 23; 1 इति 21 : 16 5 : 14 दान 12 : 1; प्रक 19 : 11-16 5 :15 नि 3 : 5

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नगर दे दिया है! [17]नगर और उसकी प्रत्येक वस्तु प्रभु को बलि के रूप में अर्पित करके पूर्णतः नष्ट कर दी जाएगी, केवल वेश्या राहाब और उसके घर के भीतर रहने वाले व्यक्ति जीवित छोड़ दिए जाएंगे, क्योंकि उसने हमारे द्वारा भेजे गए दूतों को छिपाकर रखा था। [18]तुम उन सब निषिद्ध वस्तुओं से दूर रहना, जो प्रभु के लिए पूर्णतः नष्ट की जाएंगी। ऐसा न हो कि तुम अर्पण का संकल्प करने के पश्चात्* अर्पित वस्तु ले लो, और इस्राएली पड़ाव को सर्वनाश का कारण बना दो, और उस पर संकट लाओ। [19]सोना-चाँदी तथा पीतल और लोहे के सब पात्र प्रभु के लिए पवित्र मानकर अलग किए जाएंगे और उन्हें प्रभु के कोषागार में रखा जाएगा।'

20 इस्राएली लोगों ने युद्ध का नारा लगाया। पुरोहितों ने नरसिंघे फूंके। जब उन्होंने नरसिंघे की अवाज सुनी तब जोर से युद्ध का नारा लगाया। उसी क्षण यरीहो नगर का परकोटा धंस गया। हरएक इस्राएली व्यक्ति अपनी आँखों की सीध में चढ़ गया। उन्होंने नगर पर अधिकार कर लिया। [21]उसके बाद उन्होंने तलवार से यरीहो के सब स्त्री-पुरुष, बाल-वृद्ध, बैल, भेड़ और गधों को पूर्णतः नष्ट कर दिया।

22 यहोशुअ ने उस देश का भेद लेने वाले दोनों गुप्तचरों से कहा, 'वेश्या के घर जाओ, और अपनी शपथ के अनुसार उसे तथा उसके सब सम्बन्धियों को घर से बाहर निकाल लो।' [23]तरुण गुप्तचर गए, और उन्होंने राहाब को, उसके माता-पिता, भाई-बहिनों और सगे-सम्बन्धियों को घर से बाहर निकाल लिया। वे राहाब के सब कुटुम्बियों को लाए, और उन्हें इस्राएली पड़ाव के बाहर ठहराया। [24]उन्होंने सोना-चाँदी, पीतल और लोहे के पात्रों के अतिरिक्त नगर तथा नगर की सब वस्तुओं को आग में जला डाला, और उन पात्रों तथा सोना-चांदी को प्रभु-गृह के कोषागार में रख दिया। [25]किन्तु यहोशुअ ने वेश्या राहाब को, उसके पिता के परिवार तथा सब सगे-सम्बन्धियों को जीवित छोड़ दिया, क्योंकि उसने उन दूतों को छिपाकर रखा था, जिन्हें यहोशुअ ने उसके देश का भेद लेने भेजा था। राहाब के वंशज आज भी इस्राएलियों के मध्य निवास कर रहे हैं।

26 उस समय यहोशुअ ने इस्राएली लोगों को यह शपथ दी:

'जो व्यक्ति इस यरीहो नगर का पुनः निर्माण करने का प्रयत्न करेगा, उसको प्रभु श्राप देगा।
वह अपने ज्येष्ठ पुत्र की लाश पर नगर की
नींव रखेगा,
वह अपने कनिष्ठ पुत्र की लाश पर
नगर के प्रवेश-द्वार खड़े करेगा।'

27 प्रभु यहोशुअ के साथ था, और यहोशुअ की कीर्ति समस्त देश में फैल गई।

आकन का पाप

7 सर्वनाश के इस युद्ध में लूटी गई वस्तु केवल प्रभु को अर्पित करनी थी। इस नियम को इस्राएलियों ने उद्दण्डतापूर्वक भंग किया। यहूदा कुल का आकन नामक एक मनुष्य था। वह जेरह वंशी जब्दी का पोता और कर्मी का पुत्र था। उसने प्रभु को अर्पित की जाने वाली युद्ध की लूट में से कुछ वस्तुएं ले लीं। अतः प्रभु का क्रोध इस्राएलियों के प्रति भड़क उठा।

2 यहोशुअ ने कुछ पुरुष यरीहो से ऐ नगर में भेजे, जो बेत-एल के पूर्व में, बेत-आवेन के समीप है। उसने उनसे कहा, 'जाओ, और ऐ नगर का भेद लो।' अतः वे गए और उन्होंने ऐ नगर का भेद ले लिया। [3]तत्पश्चात् वे यहोशुअ के पास लौटे। उन्होंने उससे कहा, 'सब लोगों को ऐ नगर जाने की आवश्यकता नहीं। केवल दो या तीन हजार सैनिक वहाँ जाएं और उस पर आक्रमण करें। ऐ नगर के निवासी थोड़े हैं; इसलिए सब इस्राएलियों को वहाँ जाने का कष्ट न दीजिए।' [4]इस प्रकार इस्राएलियों के तीन हजार पुरुष ऐ नगर गए, पर उन्हें ऐ नगर के

* अथवा प्राचीन यूनानी पाठानुसार, 'लालच में पड़कर' (देखिए 7 : 21)।

6 :17 लेव 27 : 28-29 **6 : 20** इब्र 11 : 30 **6 : 26** 1 रा 16 : 34 **7 : 1** प्रे 5 : 2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

निवासियों के सम्मुख से भागना पड़ा। 5ऐ नगर
के निवासियों ने उनके लगभग छत्तीस पुरुष
मार डाले। उन्हें नगर के प्रवेश-द्वार से बाहर
खदेड़ दिया। उन्होंने इस्राएली पुरुषों का
खदानों तक पीछा किया, और उन्हें ढाल पर
मारा। इस्राएलियों का जोश ठण्डा पड़ गया। वे
डर गए।

6 यहोशुअ ने पराजय का शोक प्रकट करने
के लिए अपने वस्त्र फाड़े। वह सन्ध्या होने तक
प्रभु की मंजूषा के सम्मुख भूमि पर औंधे मुंह
पड़ा रहा। ऐसा ही इस्राएलियों के धर्मवृद्धों ने
भी किया। उन्होंने दु:ख प्रकट करने के लिए
अपने सिर पर धूल डाली। 7यहोशुअ ने कहा,
'हे स्वामी! हे प्रभु, तू इस प्रजा को यर्दन नदी
के इस पार क्यों लाया? हमें एमोरी जाति के
हाथ सौंप देने के लिए? हमें नष्ट करने के लिए?
भला होता कि हम यर्दन नदी के उस पार ही
बस गए होते! यह हमारे लिए लाभदायक
होता! 8हे स्वामी, मैं क्या कह सकता हूँ?
इस्राएलियों ने युद्ध में शत्रुओं को अपनी पीठ
दिखाई है। 9कनानी जाति तथा इस देश में रहने
वाली अन्य जातियां हमारी पराजय के विषय में
सुनेंगी। वे हमें घेर लेंगी, और पृथ्वी से हमारा
नामो-निशान मिटा डालेंगी। तब तू अपने महान
नाम के लिए क्या करेगा?'

10 प्रभु ने यहोशुअ से कहा, 'उठ! तू भूमि
पर क्यों इस प्रकार औंधे मुंह पड़ा है?
11इस्राएलियों ने पाप किया है। जिस विधान का
पालन करने की आज्ञा मैंने उन्हें दी थी, उसका
उन्होंने उल्लंघन किया है। उन्होंने सर्वनाश के
इस युद्ध में अर्पित लूट में से कुछ वस्तुएं ले ली
हैं। उन्होंने चोरी की है, और वे झूठ बोले हैं।
उन्होंने उन वस्तुओं को अपने सामान में छिपा
दिया है। 12इसलिए इस्राएली अपने शत्रु का
सामना करने में असमर्थ हैं! उन्होंने अपने शत्रु
को पीठ दिखाई, क्योंकि वे स्वयं अपने
सर्वनाश का कारण बन गए हैं! जब तक तू
अपने मध्य से लूट की वस्तु को, जो मुझे अर्पित
की जानी चाहिए, दूर नहीं करेगा तब तक मैं
तेरे साथ नहीं रहूंगा। 13उठ! लोगों को शुद्ध
कर। उनसे यह कह, "कल अपने आप को
शुद्ध करो, क्योंकि इस्राएल का प्रभु परमेश्वर
यों कहता है: ओ इस्राएलियो, तुम्हारे मध्य लूट
की वस्तु है, जो मुझे अर्पित की जानी चाहिए!
जब तक तुम अपने मध्य से लूट की अर्पित
वस्तुओं को दूर नहीं करोगे, तब तक तुम अपने
शत्रुओं का सामना नहीं कर सकते हो।
14इसलिए कल सबेरे प्रत्येक कुल प्रभु की
मंजूषा के पास आएगा। जिस कुल के नाम पर
प्रभु चिट्‌ठी निकालेगा, वह अपने सब गोत्रों के
साथ प्रभु की मंजूषा के पास आएगा। जिस गोत्र
के नाम पर प्रभु चिट्‌ठी निकालेगा, वह अपने
सब परिवारों के साथ प्रभु की मंजूषा के पास
आएगा। जिस परिवार के नाम पर प्रभु चिट्‌ठी
निकालेगा, उस परिवार के सब व्यक्ति प्रभु की
मंजूषा के पास आएंगे। 15तब जिस व्यक्ति के
पास लूट की अर्पित वस्तुएं मिलेंगी, वह अपनी
सब सामग्री के साथ आग में जलाया जाएगा;
क्योंकि उसने प्रभु के विधान का उल्लंघन
किया है। उसने इस्राएली समाज के मध्य
मूर्खतापूर्ण कार्य किया है।" '

16 यहोशुअ सबेरे उठा। वह इस्राएलियों के
प्रत्येक कुल को प्रभु की मंजूषा के पास लाया।
तब चिट्‌ठी यहूदा के कुल के नाम पर निकली।
17अत: उसने यहूदा कुल के सब गोत्रों को प्रभु
की मंजूषा के सम्मुख प्रस्तुत किया। तब जेरह
के गोत्र के नाम पर चिट्ठी निकली। अत: उसने
जेरह के सब परिवारों को प्रभु की मंजूषा के
सम्मुख प्रस्तुत किया। चिट्ठी जब्दी के परिवार
के नाम पर निकली। 18उसने जब्दी परिवार के
सब व्यक्तियों को प्रभु की मंजूषा के सम्मुख
प्रस्तुत किया। तब चिट्ठी यहूदा कुल के आकन
के नाम पर निकली, जो जेरह वंशी जब्दी का
पोता और कर्मी का पुत्र था। 19यहोशुअ ने आकन
से कहा, 'मेरे पुत्र, इस्राएल के प्रभु परमेश्वर की
महिमा कर, उसकी स्तुति कर! मुझे बता कि
तूने क्या किया है? मुझ से कुछ मत छिपाना।'
20आकन ने यहोशुअ को उत्तर दिया, 'सचमुच

---

7 : 9 नि 32 : 12; गण 14 : 13 **7 : 14** 1 शम 14 : 41-42

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मैंने इस्राएल के प्रभु परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया है। देखिए, मैंने यह किया था: 21मैंने लूट में बाबुल देश का एक सुन्दर अंगरखा, दो किलो चांदी, और आधा किलो सोने की ईंट देखी थी। मैं उनको देखकर लालच में पड़ गया, और उनको चुरा लिया। ये वस्तुएँ मेरे तम्बू के भीतर भूमि में गड़ी हैं। सब वस्तुओं के नीचे चाँदी है।'

22 यहोशुअ ने दूत भेजे। वे दौड़कर आकन के तम्बू में गए। निस्सन्देह, अंगरखा उसके तम्बू के भीतर भूमि में गड़ा था। सब के नीचे चाँदी थी। 23 उन्होंने सब वस्तुएं तम्बू से बाहर निकालीं और उनको यहोशुअ तथा समस्त इस्राएली समाज के पास लाए। उन्होंने उन वस्तुओं को प्रभु की मंजूषा के सम्मुख रख दिया।

24 जेरह वंशी आकन और लूट की चांदी, अंगरखा, सोने की ईंट, तथा आकन के पुत्र, पुत्रियाँ, बैल, गधे, भेड़-बकरियाँ, तम्बू एवं जो कुछ आकन के पास था, उस सब को लेकर यहोशुअ सब इस्राएलियों के साथ आकोर की घाटी में आया। 25यहोशुअ ने आकन से कहा, 'तूने हमें संकट में क्यों डाला था? आज प्रभु भी तुझे संकट में डालेगा।' तब सब इस्राएलियों ने उसे पत्थरों से मार डाला। उन्होंने उसके परिवार के सदस्यों को पत्थरों से मार डाला और उसकी सम्पत्ति में आग लगा दी। * 26उन्होंने उसकी लाश पर पत्थरों का बड़ा ढेर लगा दिया जो आज भी वहाँ है। इस घटना के कारण उस स्थान का नाम आकोर** की घाटी पड़ा। यह नाम आज भी प्रचलित है।

इस प्रकार प्रभु की क्रोधाग्नि शान्त हुई।

ऐ नगर को नष्ट करना

8 प्रभु ने यहोशुअ से कहा, 'भयभीत मत हो! निराश मत हो! उठ! अपने साथ सब सैनिकों को ले और ऐ नगर पर आक्रमण कर। देख, मैंने ऐ नगर के राजा, उसकी प्रजा, उसके नगर और उसकी भूमि को तेरे अधिकार में सौंप दिया है। 2जैसा तूने यरीहो और उसके राजा के साथ व्यवहार किया था, वैसा ही ऐ नगर और उसके राजा के साथ करना। केवल ऐ नगर के पशुओं और सब सामान को अपने लिए लूट लेना। नगर पर पीछे से आक्रमण करने के लिए छिप कर बैठ जा।'

3 यहोशुअ तथा सब सैनिक ऐ नगर पर चढ़ाई करने लिए तैयार हुए। यहोशुअ ने तीस हजार सैनिक चुने और उन्हें रात में भेज दिया। 4उसने उन्हें यह आदेश दिया, 'देखो, तुम्हें नगर पर पीछे से आक्रमण करने के लिए घात लगाकर बैठना है। नगर से बहुत दूर मत जाना। तुम-सब आक्रमण के लिए तैयार रहना। 5मैं और मेरे साथ के सब सैनिक सामने से नगर के समीप जाएंगे। जब ऐ नगर के निवासी पहले के समान हमारा सामना करने को नगर के बाहर निकलेंगे, तब हम उनके सम्मुख से भागेंगे। 6वे हमारे पीछे-पीछे आएंगे, और हम उन्हें नगर से बहुत दूर निकाल ले जाएंगे। वे यह सोचेंगे, ''जैसे पहले ये हमारे सामने से भागे थे वैसे आज भी भाग रहे हैं।'' इस प्रकार हम उनके सामने से भागेंगे। 7तब तुम अपने छिपने के स्थान से निकलना और नगर पर अधिकार कर लेना, क्योंकि प्रभु परमेश्वर नगर को तुम्हारे अधिकार में सौंप देगा। 8जब तुम नगर को अपने अधिकार में कर लोगे तब उसमें आग लगा देना। प्रभु के वचन के अनुसार ऐसा ही करना। देखो, तुम्हारे लिए ये ही मेरे आदेश हैं।' 9यहोशुअ ने उन्हें भेज दिया। वे छिपने के स्थान पर चले गए। वे ऐ नगर के पश्चिम में, ऐ और बेत-एल के मध्य, छिपकर बैठ गए। यहोशुअ ने अपने सैनिकों के साथ रात व्यतीत की।

10 यहोशुअ बड़े सबेरे उठा। उसने सैनिकों को एकत्र किया, और इस्राएली धर्म-वृद्धों के साथ सैनिकों के आगे-आगे ऐ नगर की ओर गया। 11यहोशुअ के साथ के सब सैनिक आगे बढ़े। वे नगर के सम्मुख, उसके निकट पहुँचे।

---

* मूल में 'उन्होंने उनको आग में जला दिया और उन पर पत्थर डाले'। ** अर्थात् ''संकट''

7 : 26 हो 2 : 15 **8: 4** शा 20 : 29

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उन्होंने ऐ नगर के उत्तर में पड़ाव डाला। उनके
और ऐ नगर के मध्य एक तंग घाटी थी।
12 यहोशुअ ने पांच हजार सैनिक लिये और
उन्हें ऐ नगर के पश्चिम में, ऐ नगर और बेत-
एल के मध्य एक स्थान पर छिपाकर बैठा
दिया। 13 इस्राएली सैनिकों की स्थिति यह थी:
ऐ नगर के उत्तर में अग्रगामी सैन्यदल ने और
नगर के पश्चिम में चन्दावल सैन्यदल ने
पड़ाव डाला। यहोशुअ ने घाटी में रात व्यतीत
की।

14 जब ऐ नगर के राजा ने यहोशुअ के
सैनिकों को देखा, तब उसने अविलम्ब यह
कार्य किया: वह और उसकी प्रजा, नगर के सब
सैनिक इस्राएलियों से युद्ध करने के लिए यर्दन
की घाटी की ओर गए। वे उसी स्थान पर गए
जहाँ उन्होंने पहले युद्ध किया था। राजा नहीं
जानता था कि नगर के पीछे की ओर से उस
पर छिपकर हमला किया जाएगा। 15 यहोशुअ
और उस के साथ के सैनिकों ने हारने का बहाना
किया, और वे निर्जन प्रदेश के मार्ग की ओर
भागने लगे। 16 नगर के सब लोग उनका पीछा
करने के लिए बुलाए गए। वे यहोशुअ का पीछा
करते-करते नगर से बहुत दूर निकल गए। 17 ऐ
और बेत-एल नगर में एक भी पुरुष नहीं रहा
जो इस्राएलियों का पीछा करने नहीं गया हो।
सब पुरुष नगर को खुला, असुरक्षित छोड़कर
इस्राएलियों का पीछा करने चले गए।

18 प्रभु ने यहोशुअ से कहा, 'अपने हाथ के
भाले से ऐ नगर की ओर संकेत कर; क्योंकि
मैंने नगर को तेरे अधिकार में सौंप दिया है।'
अत: यहोशुअ ने अपने हाथ के भाले से ऐ नगर
की ओर संकेत किया। 19 जैसे ही यहोशुअ ने
अपना हाथ ऊपर उठाया, छिपकर बैठे हुए
सैनिक तुरन्त अपने स्थान से उठे, और नगर की
ओर दौड़ पड़े। उन्होंने नगर में प्रवेश किया और
उसको अपने अधिकार में कर लिया। उन्होंने
अविलम्ब नगर में आग लगा दी। 20 ऐ नगर के
सैनिकों ने पलटकर देखा कि उनके नगर से
धुआं निकलकर आकाश की ओर उठ रहा है।
उन्हें आगे-पीछे भागने का अवसर भी नहीं
मिला; क्योंकि निर्जन प्रदेश की ओर भागने
वाले इस्राएलियों ने लौटकर अपना पीछा करने
वालों पर आक्रमण कर दिया था। 21 जब यहोशुअ
और उसके साथ के इस्राएली सैनिकों ने देखा
कि छिपकर बैठे हुए सैनिकों ने ऐ नगर पर
अधिकार कर लिया, और नगर में धुआं
निकलकर आकाश की ओर उठ रहा है, तब वे
लौटे, और उन्होंने ऐ नगर के सैनिकों को मारा।
22 ऐ नगर से भी इस्राएली सैनिक उनसे लड़ने
को आ गये। इस प्रकार ऐ नगर के निवासी
इस्रालियों के मध्य घिर गए। उनके सम्मुख
इस्राएली थे, उनके पीछे इस्राएली थे।
इस्राएलियों ने उन्हें ऐसा मारा कि उनका एक
भी सैनिक न भाग सका, और न बच सका।
23 पर उन्होंने ऐ नगर के राजा को जीवित पकड़
लिया और वे उसे यहोशुअ के पास लाए।

24 जब इस्राएली निर्जन प्रदेश के मैदान में,
जहाँ ऐ नगर के सैनिकों ने उनका पीछा किया
था, उनका वध कर चुके, जब ऐ नगर का
प्रत्येक निवासी तलवार के प्रहार से भूमि पर
गिर पड़ा, तब वे ऐ नगर को लौटे। उन्होंने शेष
नगर-निवासियों को तलवार से मौत के घाट
उतार दिया। 25 ऐ नगर की समस्त जनसंख्या
बारह हजार थी। उस दिन सब स्त्री-पुरुष युद्ध
में मारे गए। 26 जिस हाथ से यहोशुअ भाला
उठाए हुए था, उसको तब तक उसने नीचे नहीं
किया जब तक ऐ नगर के निवासियों को पूर्णत:
नष्ट नहीं कर दिया गया। 27 जो आज्ञा प्रभु ने
यहोशुअ को दी थी, उस आज्ञा के वचन के
अनुसार इस्राएलियों ने पशु और नगर का सब
सामान अपने लिए लूट लिया। 28 तत्पश्चात्
यहोशुअ ने ऐ नगर में आग लगा दी, और सदा
के लिए उसको खण्डर बना दिया, जैसा वह
आज भी है। 29 उसने ऐ नगर के राजा को पेड़
से लटका दिया और उसे सन्ध्या तक लटकाए
हुए रखा। सूर्यास्त के समय यहोशुअ के आदेश
से लोगों ने उसकी लाश पेड़ से नीचे उतार ली,
और ऐ नगर के प्रवेश-द्वार पर फेंक दी। इसके

8 : 18 नि 17 : 9 8 : 29 व्य 21 : 23

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बाद उन्होंने उसकी लाश पर पत्थरों का बड़ा ढेर लगा दिया, जो आज भी वहाँ है।

एबल पर्वत पर व्यवस्था का पाठ

30 यहोशुअ ने इस्राएली समाज के प्रभु परमेश्वर के लिए एबल पर्वत पर एक वेदी निर्मित की। 31जो निर्देश वेदी के सम्बन्ध में प्रभु के सेवक मूसा ने इस्राएली समाज को दिया था, और जैसा मूसा की व्यवस्था की पुस्तक में लिखा भी है कि 'वेदी के अनगढ़े पत्थरों को लोहे के औजार से तराश कर मत बनाना' उस निर्देश के अनुसार यहोशुअ ने वेदी निर्मित की। उसके बाद इस्राएली समाज ने वेदी पर प्रभु को अग्नि-बलि अर्पित की, और सहभागिता-बलि चढ़ाई। 32यहोशुअ ने इस्राएलियों के सम्मुख वहाँ के पत्थरों पर उस व्यवस्था की प्रतिलिपि बनाई, जिसको स्वयं मूसा ने लिखा था। 33समस्त इस्राएली अपने धर्मवृद्धों, शास्त्रियों और शासकों के साथ प्रभु की मंजूषा के दोनों ओर खड़े हो गए। वे प्रभु की विधान-मंजूषा वहन करने वाले लेवीय पुरोहितों के सम्मुख खड़े थे। उनके साथ प्रवासी भी थे। आधे इस्राएली गरिज्जीम पर्वत की ढाल पर, और आधे इस्राएली एबल पर्वत की ढाल पर खड़े हो गए। ऐसा करने का आदेश प्रभु के सेवक मूसा ने उन्हें दिया था कि लेवीय पुरोहित सर्वप्रथम इस्राएली समाज को आशीर्वाद देंगे। 34यहोशुअ ने व्यवस्था के सब वचन, आशिष और आभिशाप सहित, जैसे वे व्यवस्था की पुस्तक में लिखे हुए हैं, उच्च स्वर में पढ़े। 35यहोशुअ ने मूसा के सब आदेश इस्राएली सभा के सम्मुख, स्त्रियों, बच्चों और इस्राएली समाज के मध्य रहने वाले प्रवासियों के सम्मुख उच्च स्वर में पढ़कर सुना दिए। मूसा का एक भी शब्द अपठित नहीं रहा।

गिबओनियों की चालाकी

9 इन बातों का समाचार यर्दन नदी के पश्चिमी तट के राजाओं ने सुना। वे पहाड़ियों, मैदानों और लबानोन तक भूमध्य-सागर के समस्त तटवर्ती प्रदेशों में राज्य करते थे। ये हित्ती, एमोरी, कनानी, परिज्जी, हिव्वी और यबूसी जातियों के राजा थे। 2वे एकमत होकर इस्राएली सैनिकों और यहोशुअ से युद्ध करने के लिए एकत्र हुए। 3परन्तु जब गिबओन नगर के निवासियों ने सुना कि यहोशुअ ने यरीहो और ऐ नगर के निवासियों के साथ किस प्रकार का व्यवहार किया है, 4तब उन्होंने यहोशुअ को धोखा देने का निश्चय किया। उन्होंने मार्ग के लिए भोजन-सामग्री तैयार की; अपने गधों पर फटे-पुराने बोरे, पेबन्द लगी फटी-पुरानी शराब की मशकें लादीं। 5उन्होंने पैरों में पुराने, जोड़ लगे जूते, और शरीर पर जर्जर कपड़े पहिने। जो रोटियाँ उन्होंने मार्ग के लिए लीं, वे सूखी और फफूंद लगी हुई थीं।

6 वे यहोशुअ के पास गिलगाल के पड़ाव पर गए। उन्होंने यहोशुअ तथा इस्राएली सैनिकों से कहा, 'हम दूर देश से आए हैं। अब हमारे साथ सन्धि कीजिए।' 7परन्तु इस्राएली सैनिकों ने उन हिव्वी लोगों से कहा, 'हो सकता है, तुम हमारे क्षेत्र में ही रहते हो। तब हम तुम्हारे साथ सन्धि क्यों करें?' 8उन्होंने यहोशुअ को उत्तर दिया, 'हम आपके सेवक हैं।' यहोशुअ ने उनसे पूछा, 'तुम कौन हो? कहाँ से आए हो?' 9तब उन्होंने उससे यह कहा, 'हम आपके सेवक, आपके प्रभु परमेश्वर का नाम सुनकर बहुत दूर देश से आए हैं। जो कार्य उसने मिस्र देश में किया है, उसके विषय में हमने सुना है। 10इसके अतिरिक्त यर्दन नदी की पूर्व दिशा के एमोरी जाति के दो राजाओं, हेश्बोन नगर के राजा सीहोन और अश्तारोत नगर में रहनेवाले बाशान के राजा ओग, के साथ किए गए आप के प्रभु के व्यवहार के विषय में भी हमने सुना है। 11इसलिए हमारे देश के निवासियों और वृद्धजनों ने हमसे कहा कि हम अपने हाथ में मार्ग के लिए भोजन-सामग्री लें। हम आपके पास जाएं और आपसे भेंट करें, और आपसे यह आवेदन करें, "हम आपके सेवक हैं। अब

---

8 : 31 नि 20 : 25 **8 : 32** व्य 27 : 2, 8 **8 : 33** व्य 11 : 29 **8 : 34** व्य 31 : 11 **9 : 3** यहो 10: 2; 2 शम 21: 1-2 **9 :7** नि 23 : 32; व्य 7 : 2 **9 : 10** गण 21 : 24, 33

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हमारे साथ सन्धि कीजिए।'' 12देखिए, यात्रा
के लिए यह हमारी रोटी है। जिस दिन हमने
आप से भेंट करने के लिए अपने घर से प्रस्थान
किया था तब यह गर्म और ताजा थी। पर अब,
देखिए, यह सूख गई। इसमें फफूंद लग गई।
13जब हमने इन मशकों में शराब भरी थी तब
ये नई थीं। पर अब, देखिए, ये फट गईं। हमारे
ये कपड़े और जूते लम्बी यात्रा के कारण जर्जर
हो गये।'

14 अत: इस्राएली सैनिकों ने उनका भोजन
स्वीकार किया। उन्होंने भोजन स्वीकार करने
के पूर्व प्रभु का निर्देश नहीं मांगा। 15यहोशुअ
ने उन्हें अभयदान दे दिया। उसने उनके साथ
सन्धि स्थापित कर ली कि वे जीवित रह
सकेंगे। इस्राएली मंडली के नेताओं ने शपथ
खाकर सन्धि का अनुमोदन कर दिया।

16 गिब्ओन नगर के निवासियों के साथ
संधि करने के तीन दिन पश्चात् इस्राएलियों को
पता चला कि वे उनके पड़ोसी हैं, वे उनके क्षेत्र
में ही निवास करते हैं। 17इस्राएलियों ने प्रस्थान
किया, और वे तीन दिन के पश्चात् उनके नगरों
में पहुँच गए। उनके ये नगर थे : गिब्ओन,
कपीराह, बएरोत और किर्यत-यआरीम। 18पर
इस्राएलियों ने उन पर आक्रमण नहीं किया,
क्योंकि मंडली के नेताओं ने उनसे इस्राएल के
प्रभु परमेश्वर की शपथ खाई थी। तब समस्त
मंडली ने नेताओं से शिकायत की। 19नेताओं
ने मंडली से कहा, 'हमने उनसे इस्राएल के प्रभु
परमेश्वर की शपथ खाई है। इसलिए हम उन्हें
स्पर्श भी नहीं कर सकते। 20अब हम केवल
यह कार्य कर सकते हैं कि उन्हें जीवित रहने
दें, अन्यथा जो शपथ हमने उनसे खाई थी,
उसके कारण हम पर प्रभु का क्रोध भड़क
उठेगा।' 21नेताओं ने उनसे आगे कहा, 'हम
उन्हें जीवित तो रहने दें पर वे समस्त इस्राएली
मंडली के लिए लकड़ी काटेंगे और पानी
भरेंगे।' जैसा नेताओं ने कहा वैसा ही मंडली
ने किया।

22 यहोशुअ ने गिब्ओन नगर के निवासियों
को बुलाया। वह उनसे बोला, 'तुमने हमें धोखा
क्यों दिया? तुमने हमसे यह क्यों कहा था कि
तुम हमारे क्षेत्र से बहुत दूर रहते हो, जबकि तुम
हमारे पड़ोस में ही रहते हो? 23इसलिए तुम प्रभु
की ओर से अभिशप्त हो! तुममें से कुछ व्यक्ति
मेरे परमेश्वर के भवन के निमित्त सदा सेवा
करेंगे। वे लकड़ी काटने वाले लकड़हारे, और
पानी भरनेवाले भिश्ती होंगे।' 24उन्होंने यहोशुअ
को उत्तर दिया, 'हमें, आपके सेवकों को,
निश्चयपूर्वक यह बताया गया था कि आपके
प्रभु परमेश्वर ने अपने सेवक मूसा को यह
आज्ञा दी थी कि वह समस्त देश आपको प्रदान
करें, और आपके सम्मुख से इस देश के सब
निवासियों को पूर्णत: नष्ट कर दें। हमें अपने
प्राण बचाने की चिन्ता हुई। हम आपके कारण
अत्यन्त भयभीत हो गए। इसलिए हमने आपके
साथ यह व्यवहार किया। 25देखिए, हम आपके
अधिकार में हैं। अब आपको अपनी दृष्टि में जो
कार्य भला लगे, वह हमारे साथ कीजिए।'
26अत: यहोशुअ ने यह कार्य किया: उसने उन्हें
इस्राएली लोगों के हाथ से मुक्त कर दिया, और
वे गिब्ओन निवासियों का वध नहीं कर सके।
27पर उस दिन यहोशुअ ने उन्हें प्रभु की वेदी
और इस्राएली मंडली के लिए लकड़ी काटने
वाले लकड़हारे और पानी भरने वाले भिश्ती
नियुक्त किए। जिस स्थान को प्रभु ने चुना और
जहाँ उसने अपनी वेदी प्रतिष्ठित की, वहां वे
आज तक यही सेवा करते हैं।

एमोरी जाति को पराजित करना

10 यरूशलेम के राजा अदोनी-सेदक ने
यह सुना: जिस प्रकार यहोशुअ ने
यरीहो नगर और उसके राजा के साथ व्यवहार
किया था, वैसा ही ऐ नगर और उसके राजा के
साथ किया है। उसने ऐ नगर पर अधिकार कर
उसको पूर्णत: नष्ट कर दिया है। राजा अदोनी-
सेदक ने यह भी सुना कि गिब्ओन के
निवासियों ने इस्राएलियों से अभयदान प्राप्त
कर लिया है, और वे उनके क्षेत्र में रहते हैं।
2वह बहुत डर गया; क्योंकि गिब्ओन महानगर

9: 21 व्य 29 : 11

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

था। उस पर भी राजा राज्य करता था। वह ऐ
नगर से भी बड़ा नगर था, और उसके सब पुरुष
वीर सैनिक थे। [3]अत: यरूशलेम के राजा
अदोनी-सेदक ने हेब्रोन के राजा होहम को,
यमूर्त के राजा पिर्आम को, लाकीश के राजा
यापीआ को, एग्लोन के राजा दबीर को यह
सन्देश भेजा : [4]'मेरे पास आइए, और गिब्ओन
नगर को पराजित करने में मेरी सहायता
कीजिए; क्योंकि गिब्ओन के निवासियों ने
यहोशुअ और इस्राएली लोगों से अभयदान
प्राप्त कर लिया है।' [5]ये एमोरी जाति के पांच
राजा,यरूशलेम, हेब्रोन, यमूर्त, लाकीश और
एग्लोन के राजा, एकत्र हुए; और उन्होंने अपनी
सेना के साथ गिब्ओन नगर पर आक्रमण कर
दिया। उन्होंने गिब्ओन नगर के पास पड़ाव
डाला और उसके विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया।

6 गिब्ओन के सैनिकों ने गिलगाल के
पड़ाव में यहोशुअ के पास सहायता के लिए
सन्देश भेजा : 'आप अपने सेवकों के सिर पर
से हाथ मत हटाइए। आप अविलम्ब आइए।
हमारी रक्षा कीजिए। हमारी सहायता कीजिए;
क्योंकि पहाड़ी क्षेत्र में रहने वाले एमोरी जाति
के सब राजा हमारे विरुद्ध एकत्र हुए हैं।' [7]अत:
यहोशुअ अपनी समस्त सेना, और शक्तिशाली
योद्धाओं के साथ गिलगाल से चल पड़ा। [8]प्रभु
ने यहोशुअ से कहा, 'उनसे मत डरना! मैंने
उन्हें तेरे अधिकार में कर दिया है। उनकी सेना
का एक भी पुरुष तेरे सम्मुख खड़ा नहीं हो
सकेगा।' [9]यहोशुअ गिलगाल से रात भर चलता
हुआ आया और उसने अचानक उन पर
आक्रमण कर दिया। [10]प्रभु ने इस्राएली सेना के
कारण उनमें भगदड़ मचा दी। इस्राएलियों ने
उन्हें गिब्ओन नगर में बुरी तरह से मारा।
उन्होंने उनका बेतहोरोन के पहाड़ी मार्ग तक
पीछा किया। वे उन्हें अजेकाह और मक्केदाह
नगर तक मारते गए। [11]जब एमोरी सैनिक
इस्राएलियों के सम्मुख से अजेकाह की ओर
भागते हुए बेतहोरोन की ढाल पर पहुंचे, तब
प्रभु ने आकाश से बड़े-बड़े ओले उन पर
बरसाए और वे मर गए। जितनी संख्या में
इस्राएलियों ने तलवार से उन का वध किया था,
उससे अधिक संख्या में वे ओलों से मर गए!

12 जिस दिन प्रभु ने इस्राएलियों को एमोरी
जाति पर विजय प्रदान की, उस दिन यहोशुअ
प्रभु से यों बोला। उसने इस्राएलियों के सम्मुख
यह कहा :

'ओ सूर्य, गिब्ओन के आकाश पर
अचल रह;
ओ चन्द्रमा, अय्यालोन की घाटी में
रुक जा!'

13 वस्तुत: ऐसा ही हुआ! जब तक
इस्राएली सेना ने अपने शत्रुओं को पराजित नहीं
कर दिया तब तक सूर्य अचल रहा, और चन्द्रमा
आगे नहीं बढ़ा! यह घटना 'याशर की पुस्तक'
में लिखी हुई है। उस दिन सूर्य आकाश के मध्य
ठहर गया था और वह अस्त होने के लिए पूरे
दिन तक आगे नहीं बढ़ा। [14]न उस दिन से पहले
और न उसके बाद ऐसी घटना कभी घटी जब
प्रभु ने किसी मनुष्य की इस प्रकार वाणी सुनी
और इस्राएली लोगों की ओर से युद्ध किया।

15 यहोशुअ समस्त इस्राएली सैनिकों के
साथ गिलगाल के पड़ाव को लौट गया!

16 ये पाँचों राजा भाग गए, और मक्केदाह
नगर की एक गुफा में छिप गए। [17]पर उनका
पता लग गया। यहोशुअ को इसकी सूचना दी
गई कि पांचों राजा मक्केदाह की एक गुफा में
छिपे हुए हैं। [18] यहोशुअ ने कहा, 'गुफा के
प्रवेश-द्वार पर बड़े-बड़े पत्थर लुढ़का कर रख
दो और उन पर पहरा देने के लिए वहां कुछ
सैनिक बैठा दो। [19] किन्तु तुम वहां मत ठहरो
वरन् अपने शत्रु का पीछा करो। उनके जो
सैनिक पीछे रह गए हैं, उन्हें काट डालो। शत्रु
के सैनिकों को उनके नगरों में मत प्रवेश करने
दो; क्योंकि प्रभु परमेश्वर ने उन्हें तुम्हारे
अधिकार में कर दिया है।' [20]यहोशुअ और
इस्राएली सैनिकों ने शत्रु सेना का पूर्ण संहार कर

---

10 : 10 व्य 28 : 21 **10 : 11** भज 18 : 13-14; यश 30 : 30 **10 : 12** हब 3 : 11 **10 : 13** 2 शम 1 : 18 ; प्रव 46: 4-6 **10 : 14** नि 14 : 14 ; व्य 3 : 22; 2 रा 20 : 11

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दिया और उन्हें धरती से मिटा डाला। किन्तु शत्रु सेना के कुछ बचे हुए सैनिक भाग कर अपने किलाबन्द नगरों में प्रविष्ट हो गए।
21इस्राएली सैनिक मक्केदाह के पड़ाव में यहोशुअ के पास सुरक्षित लौट आए।

किसी भी पुरुष ने इस्राएली समाज के विरुद्ध जीभ हिलाने तक का साहस नहीं किया।

22 यहोशुअ ने कहा, 'गुफा का प्रवेश-द्वार खोल दो, और उन पांचों राजाओं को गुफा से
बाहर निकालकर मेरे पास लाओ।' 23इस्राएली सैनिकों ने ऐसा ही किया। वे यरूशलेम, हेब्रोन, यमूर्त, लाकीश और एग्लोन के पांचों राजाओं को गुफा से बाहर निकालकर उसके पास लाए।
24जब वे इन राजाओं को यहोशुअ के पास लाए, तब उसने इस्राएली समाज के सब सैनिकों को बुलाया। उसने सेना-नायकों से, जो उसके साथ युद्ध करने गए थे, यह कहा, 'पास आओ, और इन राजाओं की गर्दन पर अपने पैर रखो।' सेना-नायक पास आए, और उन्होंने राजाओं की गर्दन पर अपने पैर रखे।
25यहोशुअ ने सेना-नायकों से कहा, 'भयभीत मत हो! निराश मत हो! शक्तिशाली और साहसी बनो! प्रभु तुम्हारे सब शत्रुओं के साथ, जिनसे तुम युद्ध करोगे, ऐसा ही व्यवहार
करेगा।' 26तत्पश्चात् यहोशुअ ने पांचों राजाओं को मारा, उनका वध किया, और पांच वृक्षों पर उनकी लाशें लटका दीं। लाशें सन्ध्या तक वृक्षों
से लटकती रहीं। 27यहोशुअ ने सन्ध्या के समय सेना-नायकों को आदेश दिया, और उन्होंने राजाओं की लाशें वृक्षों से उतार लीं, और उस गुफा में फेंक दीं, जहाँ वे भागकर छिप गए थे। उन्होंने गुफा के प्रवेश-द्वार पर बड़े-बड़े पत्थर रख दिए, जो आज तक वहां हैं।

28 यहोशुअ ने उसी दिन मक्केदाह नगर को पराजित कर दिया, और तलवार से उसके राजा और निवासियों को मार डाला। उसने नगर के सब प्राणियों का पूर्ण संहार कर दिया। एक प्राणी को भी जीवित नहीं छोड़ा। जैसा उसने यरीहो के राजा के साथ किया था वैसा ही मक्केदाह के राजा के साथ भी किया।

29 इसके पश्चात् यहोशुअ समस्त इस्राएलियों के साथ मक्केदाह नगर से लिब्नाह नगर की ओर बढ़ा। उसने लिब्नाह से युद्ध
किया। 30प्रभु ने लिब्नाह नगर तथा उसके राजा को इस्राएलियों के अधिकार में कर दिया। यहोशुअ ने लिब्नाह के राजा तथा उसमें रहनेवाले सब प्राणियों को तलवार से मार डाला। एक प्राणी को भी जीवित नहीं छोड़ा। जैसा उसने यरीहो के राजा के साथ किया था वैसा ही लिब्नाह के राजा के साथ भी किया।

31 तत्पश्चात् यहोशुअ समस्त इस्राएलियों के साथ लिब्नाह नगर से लाकीश नगर की ओर बढ़ा। उसने उसको घेर कर उसके विरुद्ध युद्ध
आरम्भ कर दिया। 32प्रभु ने लाकीश नगर को इस्राएलियों के अधिकार में कर दिया। यहोशुअ ने दूसरे दिन ही उस पर अधिकार कर लिया। जैसा उसने लिब्नाह में रहनेवाले सब प्राणियों को तलवार से मार डाला था वैसा ही लाकीश के साथ भी किया।

33 तब गेजर नगर का राजा होरम लाकीश की सहायता करने आया। पर यहोशुअ ने उसको तथा उसके सैनिकों को मार डाला। उसने उसका एक भी व्यक्ति जीवित नहीं छोड़ा।

34 इसके बाद यहोशुअ समस्त इस्राएलियों के साथ लाकीश नगर से एग्लोन नगर की ओर बढ़ा। उन्होंने उसको घेर कर उसके विरुद्ध युद्ध
आरम्भ कर दिया। 35उन्होंने उसी दिन उस पर अधिकार कर लिया, और उसमें रहनेवाले सब प्राणियों को तलवार से मार डाला। जैसा यहोशुअ ने लाकीश के साथ किया था वैसा ही उसने एग्लोन नगर को पूर्णतः नष्ट कर दिया।

36 तब यहोशुअ समस्त इस्राएलियों के साथ एग्लोन नगर से हेब्रोन नगर की ओर गया। उसने उसके विरुद्ध युद्ध आरम्भ कर दिया
37और उस पर अधिकार कर लिया। उसने उसके राजा तथा उसमें रहनेवाले सब प्राणियों को तलवार से मार डाला। उसको तथा उसके

10 : 24 भज 2 : 8-12; 110 : 1

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गांवों को नष्ट कर दिया। उसने उसका एक भी
प्राणी जीवित नहीं छोड़ा। जैसा उसने एग्लोन
के साथ किया था, वैसा ही उसने हेब्रोन तथा
उसमें रहनेवाले समस्त प्राणियों को पूर्णत: नष्ट
कर दिया।

38 तत्पश्चात् यहोशुअ समस्त इस्राएलियों
के साथ दबीर नगर की ओर लौटा। उसने
उसके विरुद्ध युद्ध आरम्भ कर दिया, 39और
उसके राजा को पराजित कर उस पर तथा उसके
सब गांवों पर अधिकार कर लिया। उन्होंने
उसमें रहनेवाले सब प्राणियों को तलवार से
मार डाला और नगर को पूर्णत: नष्ट कर दिया।
उसने उसका एक भी प्राणी जीवित नहीं छोड़ा।
जैसा यहोशुअ ने हेब्रोन और लिब्नाह नगर तथा
उसके राजा के साथ किया था, वैसा ही उसने
दबीर नगर तथा उसके राजा के साथ किया।

40 इस प्रकार यहोशुअ ने समस्त देश पर
विजय प्राप्त कर ली। उसने पहाड़ी राज्यों,
नेगेब प्रदेश, निचले भूमि-प्रदेश और पहाड़ियों
की तराई के प्रदेशों के राजाओं को मार डाला।
जैसी प्रभु परमेश्वर ने इस्राएलियों को आज्ञा दी
थी, उसके अनुसार उन्होंने सब प्राणियों को
पूर्णत: नष्ट कर दिया। उन्होंने उन राज्यों का एक
भी प्राणी जीवित नहीं छोड़ा। 41यहोशुअ ने दक्षिण
के कादेश-बर्नेअ नगर से समुद्र तट के गाजा
नगर तक, और गोशन प्रदेश से उत्तर के
गिबओन नगर तक, विजय प्राप्त की। 42यहोशुअ
ने इन राजाओं और राज्यों को एक ही युद्ध
अभियान के दौरान अपने अधिकार में किया
था; क्योंकि इस्राएलियों के प्रभु परमेश्वर ने
उनकी ओर से युद्ध किया था।

43 यहोशुअ समस्त इस्राएली सेना के साथ
गिलगाल के पड़ाव में लौट आया।

राजा याबीन और उसके मित्रों की पराजय

11 हासोर के राजा याबीन ने यह समाचार
सुना। उसने मादोन नगर के राजा
योबाब को, शिमरोन नगर के राजा और
अक्शाफ नगर के राजा को, 2उत्तर के पहाड़ी
क्षेत्र के राजाओं, किन्नेरेत के दक्षिण में यर्दन
नदी की घाटी के राजाओं, निचले भूमि-प्रदेश
के राजाओं और दोर नगर के निकट पश्चिमी
समुद्रतटीय राजाओं को दूत भेजे। 3उसने यर्दन
नदी के दोनों किनारों पर बसे कनानी लोगों को,
एमोरी, हित्ती, परिज्जी और पहाड़ी यबूसी
जाति के लोगों को, और मिस्पाह देश के हेर्मोन
पहाड़ की तराई में रहनेवाले हिव्वी जाति के
लोगों को भी दूत भेजे। 4अत: वे अपनी-अपनी
विशाल सेना के साथ, जिसके सैनिकों की
संख्या सागर-तट के रेतकणों के सदृश थी,
अपने नगरों से बाहर निकले। उनके साथ उनके
घोड़े और रथ थे। 5इन राजाओं ने अपनी सेनाओं
को संयुक्त किया, और इस्राएलियों से युद्ध
करने के लिए मेरोम के जलाशय पर पहुँचे।
वहाँ उन्होंने पड़ाव डाला।

6 प्रभु ने यहोशुअ से कहा, 'इनसे मत डर;
क्योंकि मैं कल, इस समय तक, इस्राएलियों के
कारण इनका वध कर चुका हूंगा। तू इनके
घोड़ों को पंगु बना देना, इनके रथों में आग लगा
देना।' 7अत: यहोशुअ ने अपने सैनिकों के
साथ याबीन की सम्मिलित सेना पर, मेरोम के
जलाशय पर अचानक आक्रमण कर दिया। वह
उन पर टूट पड़ा। 8प्रभु ने उन्हें इस्राएलियों के
अधिकार में कर दिया, और उन्होंने उत्तर दिशा
में महा सीदीन तथा मिसरपोत-मयिम तक और
पूर्व दिशा में मिस्पेह की घाटी तक उनका पीछा
किया और उन्हें मारा। जब तक शत्रु-सेना का
एक भी व्यक्ति जीवित नहीं बचा तब तक वे
उन्हें मारते रहे। 9जैसा प्रभु ने यहोशुअ से कहा
था, वैसा ही उसने किया : उसने उनके घोड़ों
के पैर के पिछले भाग की नस काटकर उन्हें पंगु
बना दिया और उनके रथों में आग लगा दी।

10 तब यहोशुअ वापस लौटा, और उसने
हासोर नगर पर अधिकार कर लिया। उसने
उसके राजा को तलवार से मार डाला। उस
समय उन राज्यों में हासोर एक प्रमुख राज्य था।
11इस्राएलियों ने हासोर नगर में रहनेवाले सब
प्राणियों को तलवार से मार डाला। उन्हें पूर्णत:
नष्ट कर दिया। एक भी प्राणी जीवित नहीं बचा।
तत्पश्चात् यहोशुअ ने नगर में आग लगा दी।
12यहोशुअ ने उन राजाओं और उनके नगरों पर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अधिकार कर लिया। जैसी आज्ञा प्रभु के सेवक
मूसा ने उसे दी थी, उसके अनुसार उसने उनके
निवासियों को तलवार से मार डाला, उन्हें
पूर्णतः नष्ट कर दिया। 13किन्तु हासोर नगर के
अतिरिक्त जिसको यहोशुअ ने आग से भस्म
कर दिया, इस्राएलियों ने उन नगरों में आग नहीं
लगाई, जो टीलों पर स्थित थे। 14इस्राएलियों
ने इन नगरों की माल-सम्पत्ति और पशुओं को
अपने लिए लूट लिया, पर मनुष्यों को तलवार
से मार डाला; उन्हें नष्ट कर दिया। उन्होंने एक
भी प्राणी जीवित नहीं छोड़ा। 15प्रभु ने अपने
सेवक मूसा को यह आज्ञा दी थी। मूसा ने यही
आज्ञा यहोशुअ को दी और यहोशुअ ने इस
आज्ञा के अनुसार कार्य किया। जो आज्ञाएँ प्रभु
ने मूसा को दी थीं, यहोशुअ ने उन सब के
अनुसार कार्य किया।

समस्त देश पर अधिकार करना

16 इस प्रकार यहोशुअ ने समस्त देश पर,
पहाड़ी क्षेत्र, समस्त नेगेब प्रदेश, गोशेन प्रदेश,
निचले भूमि-प्रदेश, यर्दन घाटी, इस्राएली क्षेत्र
के पहाड़ी भाग और उसके निचले भूमि-प्रदेश
पर अधिकार कर लिया। 17-18उसके अधिकार-
क्षेत्र की सीमा सेईर की ओर उठे हुए हालक
पर्वत से हेर्मोन पहाड़ के दक्षिण में लबानोन की
घाटी के बअल-गाद नगर तक थी। यहोशुअ
को अनेक दिन तक इन क्षेत्रों के राजाओं से युद्ध
करना पड़ा। अन्त में उसने उन राजाओं को
परास्त कर दिया, और उन्हें मार डाला, उनका
वध कर दिया। 19गिब्ओन नगर में रहने वाले
हिव्वी जाति के लोगों के अतिरिक्त किसी भी
नगर-राज्य ने इस्राएलियों से सुरक्षा का अभयदान
नहीं मांगा था। अतः युद्ध में उन्हें पराजित होना
पड़ा। 20यह प्रभु का कार्य था; क्योंकि उसने
उनका हृदय कठोर कर दिया था कि वे
इस्राएलियों से युद्ध करने के लिए अपने नगर
से बाहर निकलें, जिससे उनको पूर्णतः नष्ट
किया जा सके; उन पर दया-दृष्टि नहीं की जा
सके वरन् उन्हें धरती से मिटाया जा सके, जैसी
प्रभु ने मूसा को आज्ञा दी थी।

21 उस समय यहोशुअ आया, और उसने
हेब्रोन, दबीर और अनब नगरों के पहाड़ी क्षेत्रों
में तथा यहूदा और इस्राएल प्रदेशों के पहाड़ी
क्षेत्रों में रहनेवाले ऊंचे-ऊंचे अनक वंशियों का
सफाया कर दिया। यहोशुअ ने उनके नगरों के
साथ उन्हें पूर्णतः नष्ट कर दिया। 22तब इस्राएल
देश में अनक-वंशी नहीं रह गए। वे केवल
गाजा, गत और अश्दोद नगरों में शेष रहे।
23जैसा प्रभु मूसा से बोला था, उसके अनुसार
यहोशुअ ने समस्त देश पर अधिकार कर
लिया। उसने यह देश पैतृक अधिकार के लिए
इस्राएली समाज को दे दिया। उसने उसको
खण्डों में विभाजित किया, और प्रत्येक कुल
को एक-एक खण्ड दे दिया।

इस प्रकार युद्ध समाप्त हुआ, और देश को
शान्ति मिली।

मूसा के द्वारा पराजित राजा

12 इस्राएली सैनिकों ने यर्दन नदी के पूर्वी
क्षेत्र के राजाओं को पराजित कर यर्दन
घाटी सहित अर्नोन घाटी से हेर्मोन पर्वत तक
के राज्यों पर अपना पैतृक अधिकार कर लिया।
इस्राएलियों ने इन राजाओं को पराजित किया
था : 2हेश्बोन नगर में रहनेवाला एमोरी जाति
का राजा सीहोन। उसके राज्य की सीमा अर्नोन
घाटी के किनारे पर स्थित अरोएर नगर से, और
घाटी के मध्य-बिन्दु से अम्मोन-राज्य की
सीमा-रेखा यब्बोक नदी तक, (यह क्षेत्र आधे
गिलआद के बराबर था।) 3और यर्दन घाटी के
पूर्व में, गलील की झील से मृत सागर के पूर्व
में बेत-यशिमोत की ओर, और दक्षिण में
पिस्गाह पर्वत के ढालू मैदान तक थी।

4 उन्होंने अश्तारोत और एद्रेई नगर में
रहनेवाले रपाई जाति के अन्तिम वंशज और
बाशान के राजा ओग को भी पराजित किया था।
5उसके राज्य की सीमा के अन्तर्गत हेर्मोन
पर्वत, सलकाह, गशूरी और मअकाती राज्यों
की सीमा तक समस्त बाशान प्रदेश, आधा

---

11 : 20 नि 4 : 21; व्य 7 : 16 **11 : 21** गण 13: 22; व्य 1 : 28; यहो 15 : 13-14; शा 1 : 10 **12 : 4** गण 21 : 35; व्य 3 : 11

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गिलआद प्रदेश, और हेश्बोन के राजा सीहोन
की राज्य-सीमा तक का समस्त भूमि-प्रदेश
था। 6प्रभु के सेवक मूसा और इस्राएली लोगों
ने उन्हें पराजित कर, उनकी भूमि पैतृक-
अधिकार के लिए रूबेन तथा गाद कुल और
अर्ध मनश्शे गोत्र को प्रदान कर दी थी।

यहोशुअ के द्वारा पराजित राजा

7 यहोशुअ और इस्राएली सैनिकों ने यर्दन
नदी के पश्चिमी तट के राजाओं को, लबानोन
घाटी के बअल-गाद नगर से सेईर की ओर उठे
हुए हालक पर्वत तक के राजाओं को पराजित
किया। यहोशुअ ने उनकी भूमि शेष इस्राएली
कुलों में बांट दी और उन्हें पैतृक अधिकार में
दे दी। 8इस भूमि के अन्तर्गत यह क्षेत्र था :
पहाड़ी क्षेत्र, निचला भूमि-प्रदेश, यर्दन घाटी,
पहाड़ियों का तराई प्रदेश, मरुस्थल और नेगेब
प्रदेश। इस क्षेत्र में हित्ती, एमोरी, कनानी,
परिज्जी, हिव्वी, और यबूसी जातियाँ रहती थीं।
9यहोशुअ ने इन नगरों के राजाओं को परास्त
किया था : यरीहो, ऐ (जो बेत-एल नगर के
निकट है), 10यरूशलेम, हेब्रोन, 11यर्मूत,
लाकीश, 12एग्लोन, गेजर, 13दबीर, गेदर,
14होर्मा, अरद, 15लिब्नाह, अदुल्लाम,
16मक्केदाह, बेत-एल, 17तप्पूअह, हेफर,
18अपेक, लश्शारोन, 19मादोन, हासोर,
20शिमरोन-मरोन, अक्शाफ, 21तअनक, मगिद्दो,
22केदश, योक-नआम (कर्मेल का), 23दोर
(समुद्र तट का), गोयिम (गिलगाल का)
24और तिर्सा। इस प्रकार कुल राजा इकत्तीस
हुए।

जो राज्य बाद में पराजित किए गए

13 अब यहोशुअ वृद्ध हो गया था। उसकी
बहुत आयु हो गई थी। प्रभु ने उससे
कहा, 'तू अब वृद्ध हो गया। तेरी बहुत आयु हो
गई। पर अभी देश के अनेक भागों पर अधिकार
करना शेष है। 2ये भाग रह गए हैं: पलिश्ती
जाति का समस्त प्रदेश, गशूरी जाति का प्रदेश
(3मिस्र देश की सीमा पर शीहोर नदी से उत्तर
में एक्रोन नगर-राज्य की सीमा के अन्तर्गत का
भूमि-भाग कनानी जाति का देश माना जाता
था। पलिश्ती जाति के पांच सामन्त* गाजा,
अश्दोद, एश्कलोन, गत और एक्रोन नगरों में
रहते थे।) और दक्षिण में अव्वी जाति का
प्रदेश। 4इसके अतिरिक्त कनानी जाति का
समस्त प्रदेश, सीदोनी जाति का मआराह नगर,
एमोरी राज्य-सीमा पर अपेक नगर तक,
5गबाली जाति का प्रदेश, पूर्व में हेर्मोन पर्वत के
नीचे स्थित बअल-गाद नगर से हमात घाटी के
प्रवेश-द्वार तक का समस्त लबानोन प्रदेश।
6इस प्रदेश के अन्तर्गत सीदोनी जाति के लोग
भी आते हैं, जो लबानोन और मिस्रपोत-मइम
के बीच पहाड़ियों पर रहते हैं। मैं स्वयं उन्हें
इस्राएलियों के सम्मुख से निकाल दूंगा। जैसी
आज्ञा मैंने तुझे दी है, उसके अनुसार उनकी
भूमि को पैतृक अधिकार के लिए इस्राएलियों
के मध्य बांट देना।

7 'अब तू इस समस्त भूमि को नौ कुलों और
अर्ध मनश्शे गोत्र के पैतृक-अधिकार के लिए
विभाजित कर।'

मनश्शे, रूबेन और गाद वंशियों का भूमि-भाग

8 रूबेन और गाद के कुलों तथा मनश्शे गोत्र
के आधे लोगों को यर्दन नदी की पूर्व दिशा की
भूमि पैतृक-अधिकार में प्राप्त हुई। प्रभु के
सेवक मूसा ने उन्हें यही भूमि-भाग दिया था।
9उनकी भूमि की सीमा-रेखा अर्नोन घाटी के
किनारे स्थित अरोएर नगर से, घाटी के मध्य
स्थित नगर से आरम्भ होकर दीबोन नगर तक
मेदबा के समस्त पठार को स्पर्श करती थी।
10इस क्षेत्र में एमोरी जाति के राजा सीहोन के
सब नगर (जिसकी राजधानी हेश्बोन थी) तथा
अम्मोनी राज्य की सीमा तक की भूमि थी।
11इसके अतिरिक्त गिलआद प्रदेश, गशूरी और
मअकाती जातियों का समस्त प्रदेश, हेर्मोन
पर्वत, सलकाह नगर तक का समस्त बाशान
प्रदेश, 12ओग का राज्य, जो अश्तारोत और

---

* अथवा 'राजा, प्रभु, स्वामी'

12 : 6 गण 33 : 54 **13 : 8** गण 32 : 33; व्य 3 : 12

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

एद्रेई नगरों पर राज्य करता था, (ओग रपाई
जाति का अन्तिम राजा था)। मूसा ने इन
जातियों को पराजित कर निकाल दिया था।
13फिर भी इस्राएली लोगों ने गशूरी और
मअकाती जातियों को नहीं निकाला था।
इसलिए गशूरी और मअकाती जातियां
आज तक इस्राएली समाज के मध्य निवास
करती हैं।

14 मूसा ने केवल लेवी कुल को पैतृक-
अधिकार में भूमि नहीं दी थी। पर इस्राएल के
प्रभु परमेश्वर को अग्नि में अर्पित किए जाने
वाले चढ़ावे पर उनका स्थायी अधिकार होगा,
ऐसा प्रभु ने मूसा से कहा था।

15 मूसा ने रूबेन कुल के परिवारों को
उनकी संख्या के अनुसार पैतृक अधिकार के
लिए भूमि प्रदान की थी। 16उनकी भूमि की
सीमा-रेखा अर्नोन घाटी के किनारे स्थित
अरोएर नगर से, घाटी के मध्य स्थित नगर से,
आरम्भ होकर मेदबा के समस्त पठार को स्पर्श
करती थी। 17इसके अतिरिक्त हेश्बोन नगर
तथा पठार के ये नगर उसके अन्तर्गत थे :
दीबोन, बामोत-बअल, बेतबअल-मओन,
18याहस, कदेमोत, मेपाअत, 19किर्यातइम,
सिबमाह, घाटी के पहाड़ पर स्थित सेरेत-
हश्शहर, 20बेतपओर, पिस्गाह पहाड़ की ढाल
और बेतयशीमोत; 21इन नगरों को छोड़कर
पठार के अन्य नगर और एमोरी जाति के राजा
सीहोन के सब नगर, जिसकी राजधानी हेश्बोन
थी। मूसा ने उसको पराजित किया था। मूसा ने
मिद्यानी जाति के शासकों, एवी, रेकम, सूर, हूर
और रेबा को भी पराजित किया था। ये सीहोन
के अधीन राज्य करते और उसी देश में रहते थे।
22जिन व्यक्तियों का इस्राएलियों ने तलवार से
वध किया था, उनमें बओर का पुत्र, भविष्यवाणी
करनेवाला बिलआम भी था। 23रूबेन कुल के
क्षेत्र की सीमा यर्दन नदी थी। ये ही नगर और
गांव पैतृक अधिकार में रूबेन कुल के परिवारों
को दिए गए थे।

24 मूसा ने गाद कुल के परिवारों को उनकी
संख्या के अनुसार पैतृक-अधिकार के लिए
भूमि प्रदान की थी। 25उनकी भूमि के अन्तर्गत
यजेर नगर, गिलआद प्रदेश के समस्त नगर,
रब्बाह नगर की पूर्व दिशा में स्थित अरोएर तक
अम्मोनी जाति का आधा प्रदेश था। 26उनका
भूमि-क्षेत्र हेश्बोन नगर से रामत-मिस्पेह और
बटोनीम तक, महनइम से दबीर की सीमा तक
था। 27यर्दन नदी की घाटी में उनके क्षेत्र के
भीतर बेतहारम, बेतनिमराह, सूक्कोत, और
साफोन नगर तथा हेश्बोन के राजा सीहोन का
शेष राज्य था। उत्तर में गलील की झील तक
यर्दन नदी उनकी सीमा थी। वहाँ से सीमा-रेखा
पूर्व की ओर मुड़ जाती थी। 28ये ही नगर और
गांव पैतृक-अधिकार में गाद कुल के परिवारों
को दिए गए थे।

29 मूसा ने मनश्शे के आधे गोत्र को पैतृक-
अधिकार के लिए भूमि प्रदान की थी। यह
मनश्शे के आधे गोत्र के परिवारों की संख्या के
अनुसार बांटी गई थी। 30उनकी भूमि-सीमा के
अन्तर्गत महनइम, समस्त बाशान प्रदेश, बाशान
के राजा ओग का समस्त राज्य, याईर के सब
साठ नगर जो बाशान प्रदेश में थे। 31इसके
अतिरिक्त आधा गिलआद प्रदेश, तथा बाशान
प्रदेश में ओग के राज्य के नगर अश्तारोत और
एद्रेई थे। ये नगर मनश्शे के पुत्र माकीर के आधे
वंशजों के परिवारों को पैतृक-अधिकार में
प्रदान किए गए थे।

32 मूसा ने मोआब के मैदान में यरीहो और
यर्दन नदी के पूर्व में ये ही भूमि-क्षेत्र पैतृक-
अधिकार में वितरित किए थे। 33किन्तु मूसा ने
पैतृक-अधिकार के लिए लेवी कुल को भूमि
प्रदान नहीं की थी। इस्राएल का प्रभु परमेश्वर
ही उनकी पैतृक भूमि है, जैसा मूसा ने उनसे
कहा था।

चिट्ठी डालकर कनान देश का आबंटन करना

14 कनान देश में ये भूमि-भाग पैतृक-
अधिकार में इस्राएलियों को प्राप्त हुए,
जिन्हें पुरोहित एलआजर, यहोशुअ बेन-नून
और इस्राएली कुलों के परिवारों के मुखियों

13 : 14 गण 18 : 20 13 : 33 गण 18 : 20 ; व्य 18 : 2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ने उनके मध्य बांटा। 2जैसी आज्ञा प्रभु ने मूसा को दी थी, उसके अनुसार साढ़े नौ कुलों के क्षेत्र को चिट्ठी डालकर पैतृक-अधिकार के लिए निर्धारित किया गया। 3मूसा ने अढ़ाई कुलों को यर्दन नदी की पूर्व दिशा में पैतृक-अधिकार के लिए भूमि प्रदान की थी; किन्तु उन्होंने इस्राएली समाज के मध्य लेवी कुल को पैतृक-अधिकार के लिए भूमि प्रदान नहीं की थी। 4यूसुफ के वंशज दो गोत्रों में बंट गए थे : मनश्शे और एफ्रइम। लेवी कुल के लोगों को पैतृक-अधिकार में भूमि नहीं दी गई। पर इसके बदले में उन्हें रहने के लिए नगर तथा उनकी पशु-सम्पत्ति के लिए चरागाह दिए गए। 5जैसा प्रभु ने मूसा को आज्ञा दी थी, वैसा ही इस्राएली लोगों ने किया। उन्होंने पैतृक-अधिकार के लिए भूमि बांट ली।

6 यहूदा कुल के लोग गिलगाल में यहोशुअ के पास आए। यपून्ने के पुत्र और कनिज्जी गोत्र के कालेब ने उससे कहा, 'जो बातें प्रभु ने मेरे और तुम्हारे सम्बन्ध में अपने सेवक मूसा से कादेश-बर्नेअ नगर में की थीं, उन्हें तुम जानते हो। 7जब प्रभु के सेवक मूसा ने इस देश का भेद लेने के लिए मुझे कादेश-बर्नेअ से भेजा था, तब मैं चालीस वर्ष का था। मैं सच्चे हृदय से भेद लेकर लौटा था। 8पर जो भाई मेरे साथ गए थे, उन्होंने इस्राएली लोगों के हृदय को भय से आतंकित कर दिया था। फिर भी मैंने अपने प्रभु परमेश्वर का सच्चाई से अनुसरण किया था। 9मूसा ने उस दिन यह शपथ खाई थी, "तुमने मेरे प्रभु परमेश्वर का सच्चाई से अनुसरण किया है, इसलिए जिस भूमि-खण्ड पर तुम्हारे पैर पड़ेंगे, वह तुम्हें और तुम्हारी सन्तान को सदा के लिए पैतृक-अधिकार में अवश्य ही दिया जाएगा।" 10देखिए, प्रभु की कृपा से मैं अब तक जीवित हूं। जब प्रभु ने मूसा से ये शब्द कहे थे तब से पैंतालीस वर्ष व्यतीत हो गए। उन दिनों इस्राएली समाज निर्जन प्रदेश से गुजर रहा था। अब देखिए, मैं पचासी वर्ष का हूं। 11मैं आज भी उतना ही हट्टा-कट्टा हूं जितना उस दिन था, जब मूसा ने मुझे भेद लेने के लिए भेजा था। युद्ध के लिए, युद्ध की अन्य सेवाओं के लिए जितनी शक्ति मुझमें उस समय थी, उतनी आज भी है। 12जैसा प्रभु ने कहा था, उसके अनुसार, अब मुझे यह पहाड़ी क्षेत्र दीजिए। जब हम भेद लेकर लौटे थे, उस दिन तुमने हमारे मुंह से सुना था कि वहाँ अनक वंशी दानव रहते हैं, जिनके नगर ऊंचे-ऊंचे परकोटों से घिरे हैं। प्रभु मेरे साथ रहेगा, और मैं उन्हें वहां से निकाल दूंगा, जैसा प्रभु ने कहा भी है।'

13 यहोशुअ ने शुभ-कामना प्रकट की; और कालेब बेन-यपून्ने को पैतृक-अधिकार के लिए हेब्रोन नगर दे दिया। 14यपून्ने के पुत्र और कनिज्जी गोत्र के कालेब ने इस्राएल के प्रभु परमेश्वर का सच्चाई से अनुसरण किया था; इसलिए आज तक हेब्रोन नगर कालेब के वंशजों के पैतृक-अधिकार में है। 15इसके पूर्व हेब्रोन का नाम किर्यात-अर्बा था। अर्बा नामक व्यक्ति दानव-जाति का महान बलवान पुरुष था।

इस प्रकार युद्ध समाप्त हुआ, और देश को शान्ति मिली।

यहूदा कुल का भूमि-भाग

15 यहूदा कुल के लोगों को उनके परिवारों की संख्या के अनुसार चिट्ठी डालने पर यह भूमि-क्षेत्र प्राप्त हुआ।

दक्षिण में एदोम की सीमा तक, सीन के निर्जन प्रदेश से दक्षिण-पश्चिम में कादेश नगर+ तक। 2उनके क्षेत्र की दक्षिणी सीमा मृत सागर के छोर से, दक्षिण की ओर उन्मुख खाड़ी से आरम्भ होती थी। 3यह सीमा-रेखा अक्रबीम के चढ़ाव से आरम्भ होकर दक्षिण दिशा में सीन की ओर जाती थी। यह नेगेब क्षेत्र से, कादेश-बर्नेअ तक जाती थी। यह हेस्रोन से होते हुए अद्दार पहुँचती; और वहाँ से कर्का की ओर मुड़ जाती थी। 4यह अस्मोन को पार करती हुई,

---

+ मूल में, 'तेमान'।

14 : 2 गण 34 : 13 14 : 6 गण 14 : 24 14 : 15 उल 23 : 2; यहो 11 : 23; 15 : 13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मिस्र की बरसाती नदी के किनारे-किनारे होती
हुई भूमध्यसागर तक जाती थी। यहाँ सीमा-
रेखा समाप्त हो जाती थी। यह यहूदा-कुल के
भूमि-क्षेत्र की दक्षिणी सीमा थी।
5 यर्दन नदी के मुहाने तक मृत सागर ही
यहूदा कुल के क्षेत्र की पूर्वी सीमा थी। उत्तरी
सीमा यर्दन नदी के मुहाने पर मृत-सागर की
खाड़ी से आरम्भ होती थी। 6यह उत्तरी सीमा-
रेखा बेत-होग्लाह पहुँचती, बेत-अराबाह से
गुजरती हुई 'बोहन की शिला' पहुँचती थी
(बोहन रूबेन का पुत्र था)। 7सीमा-रेखा अकोर
की घाटी से दबीर पहुँचती और उत्तरी दिशा में
गिलगाल की ओर मुड़ती थी, जो घाटी की
दक्षिणी दिशा में स्थित अदुम्मीम के चढ़ाव के
सम्मुख है। वहाँ से सीमा-रेखा एन-शेमश के
जलाशय पर पहुँचती, और आगे बढ़कर एन-
रोगेल के जलाशय पर समाप्त हो जाती थी।
8सीमा-रेखा उसके आगे बेन-हिन्नोम की घाटी
पर चढ़कर, यबूसी पर्वत-श्रेणी के दक्षिण की
ओर जाती थी, जहाँ यरूशलेम स्थित है। वहाँ
से सीमा-रेखा पश्चिम की ओर हिन्नोम की
घाटी के सम्मुख पहाड़ के शिखर को स्पर्श
करती और रपाईम की घाटी के उत्तरी सीमान्त
में पहुँचती थी। 9सीमा-रेखा पहाड़ के शिखर
से नेपतोह के झरने पर पहुँचती और वहाँ से
एप्रोन पर्वत के निकट के नगरों को जाती थी।
वहाँ से सीमा-रेखा बालाह (अर्थात् किर्यत-
यआरीम) की ओर मुड़ जाती थी। 10वह बालाह
के पश्चिम में घूमती हुई सेईर के पहाड़ी क्षेत्र
की ओर जाती थी। उसके पश्चात् यआरीम
पहाड़ के उत्तरी भाग (अर्थात् कसालोन) को
स्पर्श करती हुई बेतशेमश पर उतर जाती थी।
वहाँ से तिम्नाह की ओर जाती थी। 11 सीमा-
रेखा एक्रोन के उत्तर में पर्वत-श्रेणी को स्पर्श
करती और शिक्रोन की ओर मुड़ जाती थी। वह
बालाह पर्वत को पार करती, और यब्नएल
पहुँचती थी। सीमा-रेखा भूमध्यसागर पर
समाप्त हो जाती थी।
12 भूमध्यसागर का तटीय क्षेत्र पश्चिमी
सीमा था।
यहूदा वंशी परिवारों की पैतृक भूमि की
यही सीमा थी।

कालेब का हेब्रोन और दबीर नगरों को पराजित करना

13 यहोशुअ को प्रभु द्वारा दिए गए वचन के
अनुसार यहोशुअ ने यहूदा-वंशी लोगों की
भूमि के मध्य कालेब बेन-यपून्ने को पैतृक-
अधिकार के लिए भूमि प्रदान की। यह भाग
अनक के पिता अर्बा का नगर हेब्रोन था।
14कालेब ने वहाँ से अनक के तीन पुत्रों, शेशय,
अहीमन और तलमय को निकाल दिया।
15तत्पश्चात् उसने वहाँ से दबीर नगर के
निवासियों पर आक्रमण किया। (इसके पूर्व
दबीर नगर को किर्यत-सेपर कहते थे)।
16कालेब ने कहा, 'जो व्यक्ति किर्यत-सेपर
नगर पर विजय प्राप्त करेगा, उसके साथ मैं
अपनी पुत्री अक्साह का विवाह करूंगा।'
17कालेब के छोटे भाई कनज के पुत्र ओतनिएल
ने किर्यत-सेपर नगर पर अधिकार कर लिया।
कालेब ने उसके साथ अपनी पुत्री अक्साह का
विवाह कर दिया। 18जब वह आई तब ओतनिएल
ने उससे कहा कि वह अपने पिता से भूमि
मांगे।* अतः वह कालेब के पास गई। जब वह
गधे पर से नीचे उतरी, तब कालेब ने उससे
पूछा, 'तुझे क्या चाहिए?' 19उसने उससे कहा,
'मुझे एक उपहार दीजिए। आपने मेरा विवाह
नेगेब के शुष्क भूमि-क्षेत्र में किया है, इसलिए
मुझे पानी के झरने भी दीजिए।' तब कालेब ने
उसे ऊपरी और निचले झरने दे दिए।

यहूदा कुल के नगर

20 यहूदा कुल के लोगों को उनके परिवारों
की संख्या के अनुसार पैतृक-अधिकार में ये
नगर प्राप्त हुए। 21यहूदा कुल के नगर, जो
दक्षिण दिशा में एदोम राज्य की सीमा की ओर
थे, ये थे: कब्सएल, एदर, यागूर, 22कीनाह,
दीमोनाह, अदआदाह, 23केदश, हासोर, इतनान,

---

* मूल में; 'तब उसने ओतनिएल से कहा कि वह उसके पिता से भूमि मांगे'

15 : 14 शा 1 : 10-15,20

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

24जीफ, टेलम, बआलोत, 25हासोर-हदताह,
करीयोत-हेसरोन (अर्थात् हासोर), 26अमाम,
शेमा, मोलादाह, 27हसर-गद्दाह, हेश्मोन, बेत-
पालट, 28हसर-शूअल, बएर-शेबा,
बिजयोत्याह, 29बालाह, ईइम, एसम, 30एल-
तोलद, कसील, होर्माह, 31सिक्लग, मद-मन्नाह,
सन-सन्नाह, 32लबाओत, शिलहीम, अइन और
रिम्मोन।

गांवों सहित समस्त नगरों की संख्या उनतीस
थी।

33 देश के निचले भूमि-प्रदेश में स्थित
नगर: एश्ताओल, सोर्आह, आश्नाह, 34जानोह,
एन-गन्नीम, तप्पूह, एनाम, 35यर्मूत, अदुल्लाम,
सोकोह, अजेकाह, 36शअरइम, अदीतइम,
गदेराह, गदे-रोतइम।

गांवों सहित समस्त नगरों की संख्या चौदह
थी।

37 ये नगर भी थे : सनान, हदाशाह,
मिग्दल-गाद, 38दिल्आन, मिस्पेह, योक्तएल,
39लाकीश, बोस्कत, एग्लोन, 40कब्बोन,
लह्माम, कित्लीश, 41गदेरोत, बेत-दागोन,
नअमाह और मक्केदाह।

गांवों सहित समस्त नगरों की संख्या सोलह
थी।

42 अन्य नगर : लिब्नाह, एतर, आशान,
43यिफ्ताह, अश्नाह, नसीब, 44कईलाह,
अक्जीब, और मारेशाह।

गांवों सहित समस्त नगरों की संख्या नौ थी।

45 इनके अतिरिक्त एक्रोन नगर और उसके
कस्बे तथा गांव, 46एक्रोन और भूमध्यसागर के
मध्य के सब नगर और कस्बे जो अश्दोद के
समीप थे।

47 अश्दोद नगर, उसके कस्बे और गांव,
गाजा नगर, उसके कस्बे और गांव; ये मिस्र की
बरसाती नदी की सीमा तथा भूमध्यसागर के तट
तक फैले थे।

48 ये पहाड़ी क्षेत्र के नगर भी थे : शामीर,
यत्तीर, शोकोह, 49दन्नाह, किर्यत-सन्नाह (अर्थात्
दबीर), 50अनाब, एश्तमोह, आनीम, 51गोशन,
होलोन और गिलोह।

गांवों सहित समस्त नगरों की संख्या ग्यारह
थी।

52ये नगर भी थे : अरब, दूमाह, एश्आन,
53यानिम, बेत-तप्पूह, अपेकाह, 54हूम्टाह,
किर्यत-अरबा (अर्थात् हेब्रोन) और सीओर।

गांवों सहित समस्त नगरों की संख्या नौ थी।

55 इनके अतिरिक्त ये नगर भी थे : माओन,
कर्मेल, जीफ, यूट्टाह, 56यिज्रएल, योकदआम,
जानोह, 57कइन, गिब्आह और तिम्नाह।

गांवों सहित समस्त नगरों की संख्या दस
थी।

58ये नगर भी थे : हलहलू, बेत-सूर, गदोर,
59मअरात, बेत-अनोत और एल-तकोन।

गांवों सहित समस्त नगरों की संख्या छः
थी।

60 गांवों सहित ये दो नगर भी थे: किर्यत-
बअल (अथवा किर्यत-यआरीम) और रब्बाह।

61 निर्जन प्रदेश में स्थित ये नगर भी थे:
बेत-अराबाह, मिद्दीन, सकाकाह, 62निब्शान,
'लवण नगर' और एनगेदी।

गांवों सहित समस्त नगरों की संख्या छः
थी।

63 यहूदा कुल के लोग यरूशलेम-निवासी
यबूसी जाति को नहीं निकाल सके। इसलिए
यबूसी जाति के लोग आज भी यरूशलेम नगर
में यहूदा के वंशजों के साथ रहते हैं।

एफ्रइम और मनश्शे गोत्रों का भूमि-भाग

16 यूसुफ के वंशजों को यरीहो नगर के
निकट, यर्दन नदी से यरीहो के जलाशय
के पूर्व में निर्जन प्रदेश तक का भूमि-क्षेत्र दिया
गया। उनके क्षेत्र की सीमा-रेखा यरीहो से
आरम्भ होकर, पहाड़ी क्षेत्र से गुजरती हुई बेत-
एल नगर तक जाती थी। 2वह बेत-एल से लूज
जाती, और वहां से अटारोत, जो अर्की जाति
की सीमा था। 3तत्पश्चात् सीमा-रेखा पश्चिम
की ओर यप्लेटी जाति की सीमा की ओर बढ़ती
और निचले बेत-होरोन तक पहुंचती थी। वहाँ
से गेजर की ओर जाती, और भूमध्य-सागर पर

15 : 63 शा 1 : 21 ; 2 शम 5 : 6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

समाप्त हो जाती थी।

4यूसुफ के पुत्र मनश्शे और एफ्रइम के वंशजों को यही भूमि-क्षेत्र पैतृक अधिकार में प्राप्त हुआ।

5 एफ्रइम गोत्र के परिवारों के भूमि-क्षेत्र की सीमा यह थी: उनकी पूर्वी सीमा उपरले बेत-होरोन तक अट्रोत-अद्दार थी। 6वहां से सीमा-रेखा भूमध्यसागर पहुंचती थी। उनकी उत्तरी सीमा पर मिक्मतात स्थित था। सीमा-रेखा पूर्व में घूमकर तअनत-शिलोह की ओर जाती थी। वह वहां से गुजरती और पूर्व में यानोहाह को चली जाती थी। 7तत्पश्चात् वह यानोहाह से अटारोत और नअरा की ओर नीचे उतरती थी। वहां से वह यरीहो पहुंचती और यर्दन नदी पर समाप्त होती थी। 8तप्पूह से सीमा-रेखा पश्चिम में कानाह बरसाती नदी की ओर जाती और भूमध्यसागर में समाप्त होती थी। यही भूमि-क्षेत्र एफ्रइम के गोत्र के परिवारों की संख्या के अनुसार पैतृक-अधिकार में दिया गया। 9इसके अतिरिक्त मनश्शे गोत्र की पैतृक-भूमि में स्थित निर्धारित कस्बे और उनके गांव भी एफ्रइम के वंशजों को दिए गए। 10उन्होंने गेजर नगर में रहने वाली कनानी जाति के लोगों को नहीं निकाला। इसलिए वे आज भी एफ्रइम के वंशजों के मध्य निवास करते हैं। पर वे बेगार करने के लिए गुलाम बना दिए गए हैं।

17 मनश्शे यूसुफ का ज्येष्ठ पुत्र था, इसलिए उसके वंशजों को भी चिट्ठी डालकर पैतृक-अधिकार के लिए भूमि प्रदान की गई। गिलआद का पिता और मनश्शे का ज्येष्ठ पुत्र माकीर एक सैनिक था ; अत: उसे गिलआद और बाशान प्रदेश प्रदान किए गए। 2मनश्शे के अन्य पुत्रों को भी उनके परिवारों के अनुसार भूमि दी गई। यूसुफ के पुत्र मनश्शे के अन्य पुत्र ये थे : अबीएजर, हेलक, अश्रीएल, शकेम, हेफर और शमीदा। ये मनश्शे गोत्र के परिवारों के मुखिया थे। 3किन्तु हेफर, गिलआद का पुत्र, माकीर का पोता और मनश्शे का परपोता था ; उस के पुत्र सलोफहद को पुत्र नहीं वरन् पुत्रियां उत्पन्न हुई थीं। उसकी पुत्रियों के ये नाम थे : महलाह, नोआह, होग्लाह, मिल्काह और तिर्साह। 4वे पुरोहित एलआजर, यहोशुअ बेन-नून और इस्राएली नेताओं के पास आईं। उन्होंने कहा, 'प्रभु ने मूसा को यह आज्ञा दी थी कि वह हमारे भाई-बन्धुओं के साथ हमें भी पैतृक-अधिकार के लिए भूमि प्रदान करें।' अत: प्रभु के वचन के अनुसार उन्हें भी उनके चाचाओं के साथ पैतृक-अधिकार के लिए भूमि प्रदान की गई। 5इस प्रकार यर्दन नदी के उस पार गिलआद और बाशान प्रदेश के अतिरिक्त मनश्शे के गोत्र को भूमि के दस भाग और प्राप्त हुए; 6क्योंकि मनश्शे के पुत्रों के साथ उसकी पुत्रियों को भी पैतृक-अधिकार में भूमि प्राप्त हुई थी। मनश्शे के शेष वंशजों को गिलआद प्रदेश पैतृक-अधिकार के लिए प्रदान किया गया।

7 मनश्शे गोत्र के भूमि-क्षेत्र की सीमा आशेर से मिक्मतात तक थी, जो शकेम के पूर्व में था। सीमा-रेखा वहां से दक्षिण में एनतप्पूह के निवासियों की ओर चली गई थी। 8यद्यपि तप्पूह प्रदेश पर मनश्शे के गोत्र का अधिकार था, पर मनश्शे की सीमा पर स्थित तप्पूह नगर एफ्रइम गोत्र के अधीन था। 9सीमा-रेखा वहां से कानाह बरसाती नदी की ओर उतर जाती थी। यद्यपि कानाह नदी के दक्षिण में स्थित नगर मनश्शे क्षेत्र के अन्तर्गत थे, तो भी उन पर एफ्रइम का अधिकार था। मनश्शे क्षेत्र की सीमा-रेखा कानाह नदी के उत्तरी तट तक जाती और भूमध्यसागर में समाप्त हो जाती थी। 10दक्षिण का देश एफ्रइम के गोत्र को, और उत्तर का देश मनश्शे को प्राप्त हुआ। उनकी सीमा-रेखा भूमध्यसागर थी। उनकी सीमा-रेखा उत्तर में आशेर क्षेत्र को, और दक्षिण में इस्साकार क्षेत्र को स्पर्श करती थी। 11इस्साकार और आशेर के भूमि-क्षेत्रों में स्थित बेतशआन और उसके गांवों, इब्लआम तथा उसके गांवों, पर भी उनका अधिकार था। इसके अतिरिक्त दोर नगर और उसके गांवों, एन-दोर नगर और

16 : 10 शा 1 : 29 17 : 4 गण 27 : 6-7

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उसके गांवों, तअनख नगर और उसके गांवों,
मगिद्दो नगर और उसके गांवों के निवासियों
पर, तथा नाफत के तीसरे भाग पर उनका
अधिकार था। 12फिर भी मनश्शे के वंशज इन
नगरों के निवासियों को निकाल न सके। अत:
कनानी जाति उस क्षेत्र में निवास करती रही।
13जब इस्राएली लोग शक्तिशाली हो गए, तब
भी उन्होंने कनानी जाति के लोगों को नहीं
निकाला। पर वे उनसे बेगार कराने लगे।
14यूसुफ के वंशज यहोशुअ से बोले, 'आपने
क्यों हमें पैतृक-अधिकार के लिए पूरे देश का
केवल एक भाग दिया? आपने क्यों एक बार
ही चिट्ठी निकाली? हमारे गोत्र में लोगों की
संख्या बहुत है; क्योंकि प्रभु ने हमें आशिष दी
है।' 15यहोशुअ ने उनसे कहा, 'यदि तुम लोगों
की संख्या बहुत है, और एफ्रइम का पहाड़ी
प्रदेश तुम्हारे लिए अपर्याप्त है तो परिज्जी और
रपाई जाति के प्रदेशों के जंगलों में जाओ, और
वहां की भूमि को खेती-योग्य बनाओ।' 16यूसुफ
के वंशजों ने कहा, 'एफ्रइम का पहाड़ी प्रदेश
हमारे लिए पर्याप्त नहीं है। मैदान में निवास
करने वाले कनानी लोगों के पास लोहे के रथ
हैं। बेत-शआन नगर और उसके गांवों तथा
यिज्रएल की घाटी में निवास करने वाले कनानी
लोगों के पास भी लोहे के रथ हैं' 17तब यहोशुअ
ने यूसुफ के पुत्र एफ्रइम और मनश्शे के वंशजों
से कहा, 'तुम लोग संख्या में बहुत हो, इसलिए
तुम्हारा गोत्र अत्यन्त बलवान है। तुम्हारे लिए
केवल एक बार चिट्ठी नहीं निकाली जानी
चाहिए। 18पहाड़ी प्रदेश पर तुम्हारा अधिकार
होगा। यद्यपि यह वन-प्रदेश है तथापि तुम
उसको साफ कर खेती-योग्य बनाना; और
उसके एक छोर से दूसरे छोर तक उस पर
अधिकार कर लेना। चाहे कनानी लोगों के पास
लोहे के रथ हों, चाहे वे तुमसे अधिक शक्तिशाली
हों, फिर भी तुम उन्हें निकाल देना।'

शेष देश का सर्वेक्षण

18 इस्राएली समाज की समस्त मंडली
शिलोह नगर में एकत्र हुई। उन्होंने वहां
मिलन-शिविर की स्थापना की। समस्त देश पर
उनका अधिकार हो चुका था। देश उनके
सम्मुख प्रस्तुत था।
2 इस्राएली समाज के सात कुल शेष थे,
जिन्हें पैतृक-अधिकार में भूमि अब तक प्राप्त
नहीं हुई थी। 3अत: यहोशुअ ने इस्राएलियों से
कहा, 'जो देश तुम्हारे प्रभु परमेश्वर ने तुम्हारे
पूर्वजों को दिया था, उसमें प्रवेश करने और उस
पर अधिकार करने के लिए, तुम कब तक सुस्त
बने रहोगे? 4तुम प्रत्येक कुल में से तीन पुरुष
चुनो। मैं उन्हें उस देश में भेजूंगा कि वे वहां
जाकर उसका सर्वेक्षण करें, और जो भूमि-
भाग उन्हें अपने कुल के लिए चाहिए, उसके
विषय में लिख लें। तत्पश्चात् वे मेरे पास
लौटेंगे। 5वे शेष देश को सात भागों में विभाजित
करेंगे। यहूदा कुल दक्षिण में अपने भूमि-भाग
पर बना रहेगा। उत्तर में यूसुफ के पुत्र एफ्रइम
और मनश्शे के लोगों की स्थिति यथावत्
रहेगी। 6तुम शेष देश के सात भागों का विवरण
लिखकर मेरे पास लाना; तब मैं यहां, प्रभु
परमेश्वर के सम्मुख चिट्ठी डालकर तुम्हारे
लिए भूमि-भाग का निर्धारण करूंगा। 7लेवी
कुल को तुम्हारे साथ पैतृक अधिकार के लिए
भूमि-भाग प्राप्त नहीं होगा; क्योंकि प्रभु की
पुरोहिताई का पद ही उनका पैतृक-अधिकार
है। गाद तथा रूबेन कुल और अर्ध-मनश्शे गोत्र
को यर्दन नदी के उस पार, पूर्व दिशा में पैतृक-
अधिकार के लिए भूमि-भाग प्राप्त हो चुका है,
जिसको प्रभु के सेवक मूसा ने उन्हें प्रदान किया
था।'
8 प्रत्येक कुल के तीन पुरुष जाने के लिए
तैयार हुए। यहोशुअ ने उन्हें, जो उस देश के
विषय में विवरण के लिए जा रहे थे, यह आदेश
दिया, 'देश का सर्वेक्षण करो और उसका
विवरण लिखकर मेरे पास लौटो। मैं यहां,
शिलोह में, प्रभु के सम्मुख चिट्ठी डालकर
तुम्हारे लिए भूमि-भाग का निर्धारण करूंगा।'
9 अत: वे गए। उन्होंने समस्त देश का भ्रमण
किया, और उसका विवरण एक पुस्तक में

17 : 12 शा 1 : 27-28

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लिख लिया। उन्होंने देश को सात भागों में
विभाजित किया, और उसके नगरों की सूची
तैयार की। तत्पश्चात् वे शिलोह के पड़ाव पर
यहोशुअ के पास आए। 10यहोशुअ ने शिलोह
में प्रभु के सम्मुख उनके लिए चिट्ठी डाली।
इस प्रकार उसने वहां इस्राएली समाज को,
उनके कुलों के अनुसार समस्त देश की भूमि,
पैतृक-अधिकार के लिए बांट दी।

बिन्यामिन के भूमि-भाग की सीमा

11 पहले क्रम में बिन्यामिन कुल के लोगों
के लिए उनके परिवारों की संख्या के अनुसार
चिट्ठी डाली गई। उन्हें पैतृक-अधिकार में
यहूदा कुल और यूसुफ कुल के मध्य का भूमि-
भाग प्राप्त हुआ। 12उत्तर में उनकी भूमि की
सीमा-रेखा यर्दन नदी से आरम्भ होती थी।
वहां से वह यरीहो के उत्तर में पर्वत-श्रेणी पर
चढ़ती, और पश्चिम की ओर मुड़कर पहाड़ी
प्रदेश से होती हुई बेत-आवन के निर्जन प्रदेश
में समाप्त होती थी। 13सीमा-रेखा वहां से दक्षिण
दिशा में लूज की ओर, लूज पर्वत-श्रेणी
(अर्थात् बेत-एल) की ओर जाती थी। वहां से
निचले बेत-होरोन के दक्षिण में स्थित पर्वत से
होते हुए अट्रोत-अद्दार पर नीचे उतर जाती
थी। 14तत्पश्चात् सीमा-रेखा दूसरी दिशा में
अग्रसर होती थी। बेत-होरोन के दक्षिण में
स्थित इस पर्वत के पश्चिमी भाग से होती हुई
सीमा-रेखा दक्षिण की ओर मुड़ जाती और
किर्यत-बअल नगर (अर्थात् किर्यत-यआरीम)
पहुँचती थी, जो यहूदा कुल के अधिकार में था।
यह बिन्यामिन की पश्चिमी सीमा थी। 15दक्षिणी
सीमा किर्यत-यआरीम नगर के छोर से आरम्भ
होती थी। वहाँ से पश्चिमी दिशा में नेप्तोह के
जलाशय की ओर जाती थी। 16सीमा-रेखा वहां
से नीचे उतर कर उस पर्वत की सीमा को स्पर्श
करती थी, जो बेन-हिन्नोम की घाटी के सम्मुख
है, जो रपाई घाटी के उत्तरी किनारे पर है।
तत्पश्चात् सीमा-रेखा हिन्नोम की घाटी में
उतरती, यबूसी पर्वत-श्रेणी के दक्षिणी किनारे
को स्पर्श करती हुई एन-रोगेल जलाशय पर
नीचे उतर जाती थी। 17वह वहां से मुड़ती और
उत्तर दिशा में एन-शेमश की ओर अग्रसर
होती, और अदुम्मीम के चढ़ाव के सामने स्थित
गलीलोत की ओर चली जाती थी। वहां से वह
'बोहन की शिला' पर उतर जाती थी। (बोहन
रूबेन का पुत्र था।) 18वह वहां से बेत-अराबाह
पर्वत-श्रेणी के उत्तर से गुजरती हुई यर्दन नदी
की घाटी में उतर जाती थी। 19सीमा-रेखा बेत-
होग्लाह पर्वत-श्रेणी के उत्तर से जाती, और मृत
सागर की उत्तरी खाड़ी पर, यर्दन नदी के
दक्षिणी मुहाने पर समाप्त होती थी। यह दक्षिणी
सीमा थी। 20यर्दन नदी पूर्वी सीमा थी।

बिन्यामिन कुल को उसके परिवारों की
संख्या के अनुसार पैतृक-अधिकार के लिए
यही भूमि-भाग प्राप्त हुआ, और उसकी ये ही
सीमाएं थीं।

21 बिन्यामिन कुल के परिवारों को ये नगर
प्राप्त हुए: यरीहो, बेत-होग्लाह, एमक-कसीस,
22बेत-अराबाह, समारइम, बेत-एल, 23अव्वीम
पराह, ओप्राह, 24कफर-अम्मोनी, ओफनी और
गेबा। गाँवों सहित नगरों की संख्या बारह थी।
25ये नगर भी थे: गिब्ओन, रामाह, बएरोत,
26मिस्पेह, कपीराह, मोसाह, 27रेकम, यिर्फएल,
तर्अलाह, 28सेलाह, एलफ, यबूस (अर्थात्
यरूशलेम), गिबअत और किर्यत। गांवों सहित
इन नगरों की संख्या चौदह थी।

बिन्यामिन कुल के लोगों को उनके परिवारों
की संख्या के अनुसार पैतृक-अधिकार में यह
भूमि-भाग प्राप्त हुआ।

शिमोन का भूमि-भाग

19 दूसरे क्रम में शिमोन-कुल के लोगों के
लिए, उनके परिवारों की संख्या के
अनुसार चिट्ठी डाली गई। तब जो भूमि उन्हें
पैतृक-अधिकार में प्राप्त हुई, वह यहूदा कुल
की पैतृक भूमि के मध्य थी। 2उनके पैतृक भूमि-
भाग में ये नगर स्थित थे: बएरशेबा, शेबा,
मोलादाह, 3हसर-शूआल, बालाह, एसम,
4एलतोलद, बतूल, होर्मा, 5सिक्लग, बेत-
मर्काबोत, हसर-सूसाह, 6बेत-लबाओत और

19 : 2 1 इति 4 : 28

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शारुहन।

गाँवों सहित नगरों की संख्या तेरह थी।

7 इनके अतिरिक्त ये नगर भी थे: अइन, रिम्मोन, एतर और आशन।

गाँवों सहित इन नगरों की संख्या चार थी।
8इनके अन्तर्गत वे सब गांव भी थे जो इन नगरों
के चारों ओर, तथा बअलत-बएर और नेगेब प्रदेश के रामाह नगर तक फैले थे।

यही भूमि-भाग शिमोन कुल के लोगों को, उनके परिवारों की संख्या के अनुसार पैतृक-
अधिकर में प्राप्त हुआ। 9जो भूमि-भाग शिमोन
कुल को पैतृक-अधिकार में प्राप्त हुआ, वह यहूदा कुल के भूमि-भाग का एक भाग था। यहूदा कुल का भूमि-भाग उनकी आवश्यकता से अधिक था। इसलिए शिमोन कुल को यहूदा-कुल के भूमि-भाग के मध्य पैतृक-अधिकार में भूमि प्राप्त हुई।

जबूलून का भूमि-भाग

10 तीसरे क्रम में जबूलन कुल के लोगों के लिए,उनके परिवारों की संख्या के अनुसार चिट्ठी डाली गयी। जो भूमि उन्हें पैतृक-अधिकार में प्राप्त हुई, उसकी सीमा-रेखा
सारीद नगर तक गई थी। 11वह वहां से पश्चिमी
दिशा में मरअलाह को जाती थी। वह आगे बढ़कर दब्बशत को स्पर्श करती, और उस नदी को स्पर्श करती, जो याक्नअम की पूर्व दिशा
में बहती थी। 12सारीद की दूसरी ओर, सीमा-
रेखा पूर्व दिशा में किस्लोत-ताबोर की सीमा तक जाती थी। वहां से दाबरत और दाबरत से
यापीअ की ओर चढ़ जाती थी। 13सीमा-रेखा
वहां से पूर्व दिशा में गत्त-हेफर की ओर, अत्ताह-कासीन की ओर चढ़ती थी। तत्पश्चात् वह रिम्मोन की ओर जाते हुए, नेआह की दिशा
में मुड़ जाती थी। 14उत्तर में सीमा-रेखा हन्नातोन
की ओर इफ्तह-एल की घाटी में समाप्त होती
थी। 15इस सीमा-रेखा के अन्तर्गत ये नगर थे:
कट्टात, नहलाल, शिमरोन, इद्अलाह और बेतलेहम। गांवों सहित नगरों की संख्या बारह
थी। 16जबूलून कुल के लोगों को उनके
परिवारों की संख्या के अनुसार पैतृक-अधिकार के लिए यही भूमि-भाग प्राप्त हुआ। इसमें उपर्युक्त नगर और गांव स्थित थे।

इस्साकार का भूमि-भाग

17 चौथे क्रम में इस्साकार कुल के लोगों के लिए उनके परिवारों की संख्या के अनुसार
चिट्ठी डाली गई। 18उनकी सीमा के अन्तर्गत
ये नगर थे: यिज्रएल, कसुल्लोत, शूनेम,
19हफारइम, शीओन, अनाहरत, 20रब्बीत,
किश्योन, एबस, 21 रेमत, एन-गन्नीम, एन-
हद्दाह और बेत-पस्सेस। 22सीमा-रेखा इन नगरों
को भी स्पर्श करती थी: ताबोर, शहसूमाह और बेतशेमस। तत्पश्चात् यर्दन नदी पर समाप्त हो जाती थी। इसके अन्तर्गत गांवों सहित सोलह
नगर थे। 23इस्साकार कुल के लोगों को, उनके
परिवारों की संख्या के अनुसार पैतृक-अधिकार के लिए यही भूमि-भाग प्राप्त हुआ। इसमें उपर्युक्त नगर और गाँव स्थित थे।

आशेर का भूमि-भाग

24 पांचवें क्रम में आशेर कुल के लोगों के लिए उनके परिवारों की संख्या के अनुसार
चिट्ठी डाली गई। 25उनकी सीमा के अन्तर्गत
ये नगर थे : हेल्कत, हली, बेटन, अक्शाफ,
26अल्लाम-मेलक, अम्आद, और मिश्आल।
सीमा-रेखा पश्चिम में कर्मेल और शीहोर-
लिब्नात को स्पर्श करती थी। 27तब वह पूर्व
दिशा में अग्रसर होती, और बेत-दागोन की ओर जाती थी। वह जबूलून की सीमा तथा इफ्तह-एल की घाटी को स्पर्श करती और उत्तर की ओर बेत-एमक तथा नईएल की ओर
बढ़ती थी। वह उत्तरी दिशा मे काबूल, 28एब्रोन,
रहोब, हम्मोन, काना और महा सीदोन तक
जाती थी। 29तत्पश्चात् सीमा-रेखा रामाह की
ओर मुड़ कर किलाबुन्द सोर* नगर की ओर चली जाती थी। वह वहां से होसाह की ओर मुड़ती थी, और भूमध्यसागर में समाप्त होती
थी। 30इस सीमा-रेखा के अन्तर्गत गांवों सहित
बाईस नगर थे: महलेब, अक्जीब, उम्माह+,
अपेक, रहोब, आदि। 31आशेर कुल के लोगों

* अथवा 'तीरुस'। + अथवा, 'अक्को'।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

को, उनके परिवारों की संख्या के अनुसार पैतृक-अधिकार के लिए यही भूमि-भाग प्राप्त हुआ। इसमें उपर्युक्त नगर और गांव स्थित थे।

नफ्ताली का भूमि-भाग

32 छठे क्रम में नफ्ताली कुल के लोगों के
लिए उनके परिवारों की संख्या के अनुसार
चिट्‌ठी डाली गई। 33उनकी सीमा-रेखा हेलप,
सअनन्नीम के बांज वृक्ष के सीमा-चिह्न,
अदामी-नेकब, यब्नएल से होकर लक्कूम तक
जाती थी, और यर्दन नदी पर समाप्त होती थी।
34तत्पश्चात् वह पश्चिमी दिशा में अजनोत-
ताबोर की ओर मुड़ जाती थी। वहां से हूकोक
को जाती थी। वह दक्षिण में जबूलून की सीमा
को, पश्चिम में आशेर की सीमा को, और यर्दन
नदी के तट पर पूर्व दिशा में यहूदा की सीमा
को स्पर्श करती थी। 35ये किलाबन्द नगर
नफ्ताली के भूमि-भाग में थे : सिद्दीम, सेर,
हम्मत, रक्कत, किन्नेरेत, 36अदामाह, रामाह,
हासोर, 37केदश, एद्रेई, एन-हासोर, 38यिर्ओन,
मिग्दल-एल, होरेम, बेत-अनत और बेतशेमश।
गांवों सहित नगरों की संख्या उन्नीस थी।
39नफ्ताली कुल के लोगों को उनके परिवारों
की संख्या के अनुसार पैतृक-अधिकार के लिए
यही भूमि-भाग प्राप्त हुआ। इसमें उपर्युक्त
नगर और गांव स्थित थे।

दान का भूमि-भाग

40 सातवें क्रम में दान कुल के लोगों के
लिए उनके परिवारों की संख्या के अनुसार
चिट्‌ठी डाली गई। 41उनके भूमि-भाग की
सीमा-रेखा के अन्तर्गत ये नगर थे : सोर्आह,
एश्ताओल, ईरशामश, 42शअलब्बीन,
अय्यालोन, यित्लाह, 43एलोन, तिम्नाह, एक्रोन,
44एलतकेह, गिब्बातोन, बअलात, 45यहूद, बने-
बरक, गत-रिम्मोन, 46मे-यर्कोन और रक्कोन।
याफा के सामने का क्षेत्र उनकी सीमा के
अन्तर्गत था। 47जब दान के वंशजों के हाथ से
पैतृक-अधिकार की भूमि निकल गई, तब उन्होंने
लेशम पर आक्रमण कर दिया। उन्होंने लेशम
को युद्ध में पराजित कर उस पर अधिकार कर
लिया। उन्होंने तलवार से लेशम के नागरिकों
को मार डाला। उन्होंने नगर को अपने अधिकार
में कर लिया, और वे स्वयं वहां बस गए।
उन्होंने अपने कुलपति दान के नाम पर लेशम
का नाम 'दान' रखा था। 48दान कुल के लोगों
को, उनके परिवारों की संख्या के अनुसार
पैतृक-अधिकार के लिए यही भूमि-भाग प्राप्त
हुआ। इसमें उपर्युक्त नगर और गाँव स्थित थे।

यहोशुअ का भूमि-भाग

49 जब इस्राएली लोगों ने पैतृक-अधिकार
के लिए देश की भूमि का आबंटन-कार्य
समाप्त किया, तब उन्होंने अपने साथ यहोशुअ
बेन-नून को भी पैतृक-अधिकार के लिए
भूमि-भाग दिया। 50उन्होंने प्रभु के वचन के
अनुसार उसे वही नगर दिया, जो उसने मांगा
था : एफ्रइम के पहाड़ी प्रदेश में स्थित तिम्नत-
सेराह नगर। यहोशुअ ने उसका पुन: निर्माण
किया और वहां बस गया।

51 पुरोहित एलआजर, यहोशुअ बेन-नून
और इस्राएली कुलों के परिवारों के मुखियों ने
शिलोह में प्रभु के सम्मुख मिलन-शिविर के
द्वार पर चिट्‌ठी डालकर ये ही भूमि-भाग
पैतृक-अधिकार के लिए इस्राएली कुलों के
मध्य बांटे।

इस प्रकार उन्होंने भूमि का आबंटन-कार्य समाप्त किया।

शरण-नगर

20 प्रभु यहोशुअ से बोला, 2'तू इस्राएली
समाज से यह कहना: ''शरण-नगरों
को निश्चित करो, जिनके विषय में मैंने मूसा
के द्वारा तुमसे कहा था, 3जिससे हत्यारा, जिसने
बिना किसी अभिप्राय के अथवा अनजाने में
हत्या की है, वहां भाग कर शरण ले सके। ये
नगर रक्त-प्रतिशोधी से बचने के लिए तुम्हारे
शरण-नगर होंगे। 4हत्यारा किसी भी शरण-
नगर में भाग कर जाएगा। वह उस नगर के
प्रवेश-द्वार पर खड़ा होगा, और उस नगर के
धर्मवृद्धों को स्पष्ट स्वर में बताएगा कि उससे
किस स्थिति में हत्या हुई है। तब धर्मवृद्ध उसे

19 : 42 शा 1 : 35 **19 : 47** शा 18 : 29 **20 : 2** गण 35 : 6-14; व्य 4 : 41-43

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नगर के भीतर ले जाएंगे और उसे रहने के लिए
जगह देंगे। वह उनके साथ रहेगा। 5यदि रक्त-
प्रतिशोधी उसका पीछा करता हुआ वहां
आएगा तो धर्मवृद्ध हत्यारे को उसके हाथ में
नहीं सौंपेंगे; क्योंकि उसने अनजाने में अपने
पड़ोसी की हत्या की है, पड़ोसी के प्रति पहले
से उसकी घृणा नहीं थी। 6जब तक वह न्याय
के लिए मंडली के सम्मुख खड़ा नहीं होगा,
और जब तक उस समय के महापुरोहित की
मृत्यु न होगी, तब तक वह नगर में रहेगा।
तत्पश्चात् हत्यारा अपने नगर को, जहां से वह
भागकर आया है, अपने घर लौट जाएग।'' '

7 अत: उन्होंने नफ्ताली के पहाड़ी प्रदेश में
गलील के केदश नगर को एफ्रइम के पहाड़ी
प्रदेश के शकेम नगर को और यहूदा के पहाड़ी
प्रदेश में स्थित किर्यत-अर्बा (अर्थात् हेब्रोन)
नगर को शरण-नगर निश्चित किया। 8उन्होंने
यर्दन नदी के पूर्व में, निर्जन प्रदेश में यरीहो के
पूर्व में पठार पर स्थित बेसर नगर को, जो रूबेन
कुल के भूमि-भाग में था गिलआद के रामोत
को, जो गाद कुल के भूमि-भाग में था, और
बाशान प्रदेश के गोलान नगर को, जो मनश्शे
गोत्र के भूमि-भाग में था, निश्चित किया।

9 ये नगर समस्त इस्राएली लोगों तथा उनके
मध्य निवास करने वाले प्रवासियों के लिए
निश्चित किये गये जिससे हत्यारा, जिसने बिना
अभिप्राय के हत्या की है, वहां भाग कर शरण
ले सके। जब तक वह न्याय के लिए उसी
शरण-नगर में मंडली के सम्मुख खड़ा नहीं
होगा तब तक वह नगर में रहकर रक्त-
प्रतिशोधी के हाथ से अपने प्राण बचाएगा।

लेवीय नगर

21 लेवी कुल के परिवारों के मुखिया
पुरोहित एलआजर, यहोशुअ बेन-नून
और समस्त इस्राएली कुलों के परिवारों के
मुखियों के पास आए। 2 वे कनान देश में स्थित
शिलोह नगर में उनसे यह बोले, 'प्रभु ने मूसा
के द्वारा यह आज्ञा दी थी कि हमारे निवास के
लिए हमें नगर प्रदान किए जाएं। इसके
अतिरिक्त हमारे पशुओं के लिए उन नगरों के
आस-पास चरागाह की भूमि भी दी जाए।'
3अत: प्रभु के वचन के अनुसार इस्राएली लोगों
ने पैतृक-अधिकार में प्राप्त अपने भूमि-भाग
में से लेवी कुल को ये नगर और उनके आस-
पास की चरागाह की भूमि दी :

4 पहले क्रम में कहात गोत्र के नाम पर
चिट्ठी निकली। लेवीय पुरोहित जो पुरोहित
हारून के वंशज थे उन्हें यहूदा, शिमोन और
बिन्यामिन कुल के तेरह नगर प्राप्त हुए।
5कहात गोत्र के शेष पुरोहितों को एफ्रइम गोत्र,
दान कुल और अर्ध गनश्शे गोत्र के दस नगर
प्राप्त हुए।

6 दूसरे क्रम में गेर्शोन गोत्र के नाम पर चिट्ठी
निकली। अत: गेर्शोन गोत्र के पुरोहितों को
इस्साकार, आशेर और नफ्ताली कुलों के, तथा
बाशान प्रदेश में निवास करने वाले अर्ध मनश्शे
गोत्र के तेरह नगर प्राप्त हुए।

7 मरारी गोत्र के पुरोहितों को, उनके
परिवारों की संख्या के अनुसार रूबेन, गाद और
जबूलून कुलों के बारह नगर प्राप्त हुए।

8 जो आज्ञा प्रभु ने मूसा के द्वारा दी थी,
उसके अनुसार इस्राएली लोगों ने लेवीय
पुरोहितों को ये ही नगर और उनकी चरागाह-
भूमि दी थी। उन्होंने यह कार्य चिट्ठी डालकर
किया था।

9 ये यहूदा और शिमोन कुल के नगरों के
नाम हैं, जो 10कहाती गोत्र के हारून के वंशजों
को, जो लेवीय पुरोहित थे, प्रदान किये गये।
पहले क्रम में उनके नाम पर चिट्ठी निकली
थी। 11इस्राएलियों ने उन्हें ये नगर दिये :
किर्यत-अर्बा (अर्बा अनक का पिता था)
जिसको हेब्रोन नगर भी कहते हैं। यह यहूदा
के पहाड़ी प्रदेश में स्थित है। इसके अतिरिक्त
नगर के आसपास की चरागाह-भूमि भी दी।
12किन्तु इस्राएलियों ने किर्यत-अर्बा नगर के
खेत और उसके गांव कालेब बेन-यपून्ने को
पैतृक-अधिकार के लिए प्रदान किये थे।

13 इस्राएलियों ने पुरोहित हारून के वंशजों

21 : 1-42 गण 35 : 1-8; 1 इति 6 : 54-81

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

को ये नगर दिए : हेब्रोन (हत्यारे के लिए निश्चित किया गया शरण-नगर) और उसकी चरागाह की समस्त भूमि; लिब्नाह, [14]यत्तिर, एश्तमोअ, [15]होलोन, दबीर, [16]अइन, यूट्टाह और बेत-शेमश। इन नगरों के साथ उनकी चरागाह की समस्त भूमि भी दी। उन्होंने यहूदा और शिमोन कुलों के भूमि-भाग से नौ नगर दिए।

17 उन्होंने तीसरे कुल बिन्यामिन के ये नगर दिए : गिब्ओन, गेबा, [18]अनातोत और अल्मोन, चरागाह की भूमि सहित कुल चार नगर। [19]इस प्रकार हारून के वंशज पुरोहितों को चरागाह-भूमि के साथ कुल तेरह नगर दिए गए।

20 लेवी कुल के कहाती गोत्र के शेष पुरोहितों को एफ्रइम गोत्र के नगर प्राप्त हुए। [21]उन्हें चरागाह की समस्त भूमि के साथ ये नगर दिए गए : शकेम (हत्यारे के लिए निश्चित किया गया शरण-नगर) जो एफ्रइम के पहाड़ी प्रदेश में था; गेजर, [22]किब्सइम और बेतहोरोन; चरागाह-भूमि सहित कुल चार नगर। [23]उन्हें दान कुल के ये नगर दिए गए : एलतके, गिब्तोन, [24]अय्यालोन और गत-रिम्मोन; चरागाह-भूमि सहित कुल चार नगर। [25]उन्हें अर्ध मनश्शे गोत्र के ये नगर दिए गए : तअनख और गत-रिम्मोन; चरागाह-भूमि सहित कुल दो नगर। [26]इस प्रकार शेष कहाती गोत्र को चरागाह-भूमि के साथ कुल दस नगर दिए गए।

27 लेवी कुल के गेर्शोन गोत्र के पुरोहितों को अर्ध मनश्शे गोत्र के ये नगर दिए गए : बाशान-प्रदेश में स्थित गोलान (हत्यारे के लिए निश्चित किया गया शरण-नगर) और बएश्तराह; चरागाह-भूमि सहित कुल दो नगर। [28]उन्हें इस्साकार कुल के ये नगर प्राप्त हुए: किश्योन, दाबरत, [29]यर्मूत और एन-गन्नीम; चरागाह-भूमि सहित कुल चार नगर। [30]उन्हें आशेर कुल के ये नगर प्राप्त हुए : मिश्आल, अबदोन, [31]हेलकात और रहोब; चरागाह-भूमि सहित कुल चार नगर। [32]उन्हें नफ्ताली कुल के ये नगर प्राप्त हुए : गलील प्रदेश में स्थित केदश (हत्यारे के लिए निश्चित किया गया शरण-नगर), हम्मोतदोर और कर्तान; चरागाह-भूमि सहित कुल तीन नगर। [33]इस प्रकार गेर्शोन गोत्र को चरागाह-भूमि के साथ कुल तेरह नगर प्राप्त हुए।

34 लेवी कुल के शेष गोत्र मरारी के पुरोहितों को जबूलून कुल के ये नगर प्राप्त हुए: योक्नआम, कर्ताह, [35]दिम्नाह, और नहलाल; चरागाह-भूमि सहित कुल चार नगर। [36]उन्हें रूबेन कुल के ये नगर प्राप्त हुए : बेसर, याहस, [37]कदेमोत और मेफाअत; चरागाह-भूमि सहित कुल चार नगर। [38]उन्हें गाद कुल के ये नगर प्राप्त हुए: गिलआद प्रदेश में स्थित रामोत (हत्यारे के लिए निश्चित किया गया शरण-नगर), महनइम, [39] हेश्बोन और यजेर; चरागाह-भूमि सहित कुल चार नगर। [40]इस प्रकार लेवी कुल के शेष गोत्र, अर्थात् मरारी के अनेक परिवारों को कुल बारह नगर दिए गए।

41 जो नगर इस्राएली कुलों के नगरों में से, चरागाह-भूमि सहित लेवीय पुरोहितों को दिए गए, वे कुल अड़तालीस थे। [42]इन नगरों में से प्रत्येक नगर के चारों ओर चरागाह की भूमि थी।

कनान देश पर इस्राएलियों का पूर्ण अधिकार

43 यों प्रभु ने इस्राएली समाज को समस्त कनान देश दे दिया, जिसको प्रदान करने की शपथ उसने उनके पूर्वजों से खाई थी। उन्होंने उस पर अधिकार किया, और वे वहां बस गए। [44]जो शपथ प्रभु ने उनके पूर्वजों से खाई थी, उसके अनुसार उसने उनके चारों ओर शान्ति स्थापित की। प्रभु ने उनके सब शत्रुओं को उनके अधिकार में कर दिया था, इसलिए उनका एक भी शत्रु उनके सम्मुख खड़ा न हो सका। [45]प्रभु ने इस्राएली वंशजों की भलाई करने की प्रतिज्ञा की थी। इस प्रकार उसने समस्त अच्छे कामों को पूर्णतः पूरा किया। एक भी कार्य शेष नहीं रहा।

यर्दन नदी के तट पर वेदी की स्थापना

22 तब यहोशुअ ने रूबेन और गाद कुल के तथा अर्ध मनश्शे गोत्र के लोगों को बुलाया। [2]उसने उनसे कहा, 'जो आज्ञाएं प्रभु के सेवक मूसा ने तुम्हें दी थीं, तुमने उन सब

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

का पालन किया। जो-जो आदेश मैंने तुम्हें
दिए, उनको भी तुमने सुना। 3तुमने इतने दिन
तक, आज तक, अपने जाति-भाई-बहिनों को
अकेला नहीं छोड़ा, वरन् अपने प्रभु परमेश्वर
की आज्ञाओं का तत्परता से पालन किया।
4अब प्रभु परमेश्वर ने अपने वचन के अनुसार
तुम्हारे जाति-भाई-बहिनों को शान्ति प्रदान की
है। अत: अपने निवास-स्थान को, अपने
पैतृक-अधिकार के भूमि-भाग को लौट जाओ।
वह प्रभु के सेवक मूसा ने तुम्हें यर्दन नदी के
उस पार दिया है। 5प्रभु के सेवक मूसा ने तुम्हें
आज्ञाएं और व्यवस्था दी हैं। तुम उनका पालन
करना, और उनके अनुसार कार्य करना। अपने
प्रभु परमेश्वर से प्रेम करना। उसके मार्ग पर
चलना। उसकी आज्ञाओं का पालन करना।
उससे सदा सम्बद्ध रहना। अपने सम्पूर्ण हृदय
से और अपने सम्पूर्ण प्राण से उसकी सेवा
करना।' 6तत्पश्चात् यहोशुअ ने उन्हें आशीर्वाद
देकर उनके पैतुक भूमि-भाग को भेज दिया।
वे अपने निवास-स्थान की ओर चले गए।

7 मूसा ने मनश्शे गोत्र के आधे लोगों को
पैतृक-अधिकार के लिए बाशान प्रदेश में
भूमि-भाग दिया था। परन्तु यहोशुअ ने मनश्शे
गोत्र के शेष आधे लोगों को उनके जाति-भाई-
बहिनों के साथ यर्दन नदी की पश्चिम दिशा में
पैतृक अधिकार के लिए भूमि-भाग दिया था।
जब यहोशुअ ने उन्हें आशीर्वाद देकर उनके
निवास-स्थान की ओर भेजा 8तब उसने उनसे
कहा, 'तुम प्रचुर धन-सम्पत्ति, असंख्य पशु,
सोना-चांदी, पीतल, लोहा और कपड़े-लत्ते के
साथ अपने निवास-स्थान को लौट रहे हो। यह
तुमने अपने शत्रुओं से लूटा है। इस लूट के माल
को अपने जाति-भाई-बहिनों में भी बांटना।'
9अत: रूबेन और गाद कुल के तथा अर्ध मनश्शे
गोत्र के लोग अपने-अपने भूमि-भाग को
लौटे। उन्होंने शेष इस्राएली लोगों को कनान
देश के शिलोह नगर पर छोड़ा, और गिलआद
प्रदेश की ओर, अपने प्रदेश की ओर बढ़े,
जिसको उन्होंने मूसा के द्वारा दिए गए प्रभु के
वचन के अनुसार पैतृक-अधिकार में प्राप्त
किया था।

10 जब रूबेन और गाद कुल के तथा अर्ध
मनश्शे गोत्र के लोग यर्दन नदी के तट पर स्थित
गलीलोत नगर में पहुँचे, जो कनान देश की
सीमा के अन्तर्गत था, तब उन्होंने वहां एक
भव्य और विशाल वेदी निर्मित की। 11शेष
इस्राएली लोगों ने यह सुना : 'देखो, रूबेन और
गाद कुल के तथा अर्ध मनश्शे गोत्र के लोगों
ने कनान देश की सीमा पर, यर्दन नदी के उस
पार हमारे क्षेत्र के सामने गलीलोत में एक वेदी
निर्मित की है।' 12जब शेष इस्राएली लोगों ने
यह सुना तब समस्त इस्राएली मंडली उनसे
युद्ध करने के लिए शिलोह में एकत्र हुई।

13 इस्राएली लोगों ने पुरोहित एलआजर के
पुत्र पीनहास को रूबेन और गाद कुल के तथा
अर्ध मनश्शे गोत्र के लोगों के पास गिलआद
प्रदेश में भेजा। 14पीनहास के साथ दस मुखिया
भी गए। ये प्रत्येक कुल के प्रतिनिधि तथा
इस्राएली गोत्रों के परिवारों के मुखिया थे। 15ये
गिलआद प्रदेश में आए। उन्होंने रूबेन और
गाद कुल के तथा अर्ध मनश्शे गोत्र के लोगों
से कहा, 16'प्रभु की समस्त मंडली यह कहती
है: ''क्यों तुमने इस्राएल के परमेश्वर के प्रति
यह विश्वासघात किया और प्रभु का अनुसरण
करना छोड़ दिया? आज तुमने यह वेदी बनाकर
प्रभु के प्रति विद्रोह किया है। 17क्या हमने पओर
नगर में कम अधर्म किया था? उस अधर्म के
कारण प्रभु की मंडली के ऊपर महामारी आई
थी। हम आज भी उस अधर्म से शुद्ध नहीं हो
पाए हैं। 18 आज तुमने प्रभु का अनुसरण करना
छोड़ दिया, और उससे विमुख हो गए! यदि
आज तुम प्रभु से विद्रोह करोगे तो कल वह
समस्त इस्राएली मंडली से क्रुद्ध होगा। 19अत:
यदि तुम्हारे पैतृक-अधिकार की भूमि अशुद्ध
है, तो तुम प्रभु की निज भूमि में आ जाओ, जहां
उसके निवास-स्थान का शिविर है। हमारे मध्य
पैतृक-अधिकार के लिए भूमि प्राप्त कर लो।
पहले से ही प्रभु परमेश्वर की एक वेदी है। अब

22 : 2 गण 32 : 20; यहो 1 : 16-17 **22 : 16** व्य 12 : 5 **22 : 17** गण 25: 3-4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

एक और वेदी बनाकर प्रभु के प्रति विद्रोह मत करो और यों हमें भी विद्रोही मत बनाओ। [20]जेरह के पुत्र आकन की घटना स्मरण करो। उसने प्रभु के लिए अर्पित लूट की सामग्री के विषय में विश्वास-भंग किया था, और समस्त इस्राएली मंडली के प्रति प्रभु का क्रोध भड़क उठा था। अपने अधर्म के कारण न केवल वह नष्ट हुआ था, वरन् उसके साथ अन्य लोग भी।'' '

21 रूबेन और गाद कुल के तथा अर्ध मनश्शे गोत्र के लोगों ने इस्राएली मुखियों को उत्तर दिया, [22] 'परमेश्वर परम शक्तिमान है! *प्रभु ही परमेश्वर है! परमेश्वर परम शक्तिमान है! प्रभु ही परमेश्वर है। केवल वह जानता है कि हमने ऐसा क्यों किया। अब तुम भी इस्राएल में यह जान लो! यदि हमने यह कार्य विद्रोह की भावना से अथवा प्रभु के प्रति विश्वास-भंग करने के उद्देश्य से किया है तो आज तुम हमें जीवित मत रहने देना। [23]यदि हमने प्रभु का अनुसरण छोड़ने के लिए इस वेदी का निर्माण किया है, अथवा वेदी पर अग्नि-बलि, अन्न-बलि, अथवा सहभागिता-बलि चढ़ाने के लिए उसका निर्माण किया है तो स्वयं प्रभु हमसे प्रतिशोध ले! [24]पर नहीं; हमने यह कार्य विशेष कारण से किया है। हम चिन्तित हैं कि भविष्य में तुम्हारे वंशज हमारे वंशजों से यह कहेंगे, ''इस्राएल के प्रभु परमेश्वर से तुम्हारा क्या काम? [25]प्रभु ने हमारे और तुम्हारे—रूबेन तथा गाद के—मध्य यर्दन नदी की सीमा निर्धारित की है। प्रभु के साथ तुम्हारा कोई साझा नहीं है।'' इस प्रकार तुम्हारे वंशज हमारे वंशजों के हृदय से प्रभु की भक्ति समाप्त कर देंगे। [26]अतः हमने कहा, आओ, हम अग्नि-बलि अथवा बलि-पशु चढ़ाने के लिए नहीं, [27]वरन् हमारे तथा तुम्हारे, एवं हमारी तथा तुम्हारी आगामी पीढ़ियों के मध्य साक्षी-चिह्न के लिए एक वेदी निर्मित करें कि हम भी अग्नि-बलि, बलि-पशु तथा सहभागिता-बलि के द्वारा प्रभु के सम्मुख उसकी सेवा करते हैं और उसी की आराधना करते हैं। अतः तुम्हारे वंशज हमारे वंशजों से यह नहीं कह सकेंगे कि प्रभु के साथ हमारा कोई साझा नहीं है। [28]हमने सोचा था कि यदि यह बात हमसे या भविष्य में हमारे वंशजों से कभी कही जाएगी, तो हम यह कह सकेंगे, '' इस वेदी को देखिए, जो प्रभु की वेदी के नमूने पर हमारे पूर्वजों ने निर्मित की थी। इसका निर्माण अग्नि-बलि अथवा बलि-पशु चढ़ाने के लिए नहीं, वरन् हमारे और तुम्हारे मध्य साक्षी-चिह्न के लिए किया गया है।'' [29] प्रभु क्षमा करे! हम प्रभु के प्रति विद्रोह कदापि नहीं करेंगे। अपने प्रभु परमेश्वर की वेदी के अतिरिक्त, जो प्रभु के निवास-स्थान के शिविर के सम्मुख स्थित है, एक और वेदी का निर्माण नहीं करेंगे कि उस पर अपनी अग्नि-बलि, अन्न-बलि अथवा बलि-पशु चढ़ाएं। हम ऐसा कार्य करके प्रभु का अनुसरण करना नहीं छोड़ेंगे।'

30 पुरोहित पीनहास और मंडली के नेताओं ने, इस्राएली गोत्रों के परिवारों के मुखियों ने, रूबेन और गाद कुल के तथा अर्ध मनश्शे गोत्र के लोगों की यह बात सुनी और उन्हें अपनी दृष्टि में अच्छी लगी। [31]पुरोहित एलआजर के पुत्र पीनहास ने रूबेन और गाद कुल के तथा अर्ध मनश्शे गोत्र के लोगों से कहा, 'तुमने प्रभु से विश्वासघात नहीं किया। इसलिए अब हमें ज्ञात हुआ कि प्रभु निश्चय ही हमारे मध्य उपस्थित है। तुमने इस्राएली समाज को प्रभु के हाथों दण्डित होने से बचा लिया।'

32 पीनहास तथा नेतागण रूबेन और गाद कुल के लोगों के पास से गिलआद प्रदेश से लौटे। वे शेष इस्राएली समाज के पास कनान देश में आए। उन्होंने सब समाचार उन्हें सुनाया। [33]यह समाचार इस्राएली समाज को अपनी दृष्टि में अच्छा लगा। उन्होंने परमेश्वर की स्तुति की। उन्होंने रूबेन और गाद कुल के विरुद्ध युद्ध करने तथा उनके प्रदेश को, जहां वे रहते थे, नष्ट करने का विचार त्याग दिया।

---

22 : 20 यहो 7 : 1.5 **22 : 22** व्य 10 : 17; दान 2 : 47; 2 इति 11 : 31 * अथवा, 'ईश्वरों का ईश्वर है'

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

34रूबेन और गाद कुल के लोगों ने उस वेदी का नाम 'साक्षी' रखा। उन्होंने कहा, 'यह वेदी हमारे बीच इस बात की साक्षी है कि प्रभु ही परमेश्वर है।'

यहोशुअ का आदेश

23 बहुत समय बीत गया। प्रभु ने इस्राएली समाज को उसके आस-पास के शत्रुओं से शान्ति प्रदान की। यहोशुअ वृद्ध हो गया था। उसकी बहुत आयु हो गई थी। 2यहोशुअ ने समस्त इस्राएलियों को, उनके धर्मवृद्धों, मुखियों, शासकों और शास्त्रियों को बुलाया। उसने उनसे कहा, 'अब मैं वृद्ध हो गया हूँ। मेरी बहुत आयु हो गई। 3जो व्यवहार प्रभु परमेश्वर ने तुम्हारे कारण इन जातियों के साथ किया है, वह तुमने स्वयं देखा है। स्वयं प्रभु परमेश्वर ने तुम्हारे लिए इनसे युद्ध किया। 4देखो, मैं उन समस्त जातियों की भूमि को जिन्हें मैं यर्दन नदी से पश्चिम में भूमध्य-सागर तक नष्ट कर चुका हूँ या जो बच गए हैं, तुम्हारे पैतृक-अधिकार के लिए सब कुलों में बांट चुका हूँ। 5जो जातियाँ बच गई हैं, उन्हें प्रभु परमेश्वर पीछे हटा देगा, तुम्हारी आंखों के सामने से निकाल देगा, और तुम उनकी भूमि पर अधिकार कर लोगे, जैसा प्रभु परमेश्वर ने तुमसे कहा है। 6अत: तुम मूसा की व्यवस्था की पुस्तक में लिखी आज्ञाओं का दृढ़तापूर्वक पालन करो, उनके अनुसार कार्य करो। न उससे बाईं ओर मुड़ना और न दाईं ओर। 7तुम इन जातियों में, जो तुम्हारे मध्य शेष रह गई हैं, मत मिलना-जुलना। उनके देवताओं का नाम मत लेना। उन देवताओं के नाम की शपथ भी नहीं खाना। उनकी पूजा मत करना, और न झुककर उन की वन्दना करना। 8वरन् जैसा आज तक तुम अपने प्रभु परमेश्वर से सम्बद्ध रहे हो वैसा ही भविष्य में रहना। 9प्रभु ने तुम्हारे सम्मुख से बड़ी और शक्तिशाली जातियों को निकाला। आज तक कोई जाति तुम्हारे सम्मुख खड़ी नहीं रह सकी। 10तुम्हारा एक सैनिक शत्रुपक्ष के हजार सैनिकों को भगा सकता है; क्योंकि प्रभु परमेश्वर तुम्हारे लिए उनसे युद्ध करता है, जैसा उसने तुमसे कहा है। 11इसलिए अपने प्रभु परमेश्वर से प्रेम करने के लिए सदा तत्पर रहो! 12यदि तुम प्रभु से विमुख हो जाओगे, और अपने मध्य निवास करने वाली इन शेष जातियों में घुल-मिल जाओगे, इनसे विवाह-सम्बन्ध स्थापित करोगे, उनकी कन्याओं से तुम विवाह करोगे और वे तुम्हारी कन्याओं से 13तो तुम निश्चय जान लो कि प्रभु परमेश्वर तुम्हारे सम्मुख से इन जातियों को फिर नहीं निकालेगा। जब तक तुम इस उत्तम देश में, जो प्रभु परमेश्वर ने तुम्हें प्रदान किया है, नष्ट नहीं हो जाओगे, तब तक वे तुम्हारे लिए जाल और फन्दा बनी रहेंगी। वे तुम्हारी आँखों में किरकिरी के सदृश और पसलियों में कांटे के समान चुभेंगी।

14 'देखो, अब मैं मृत्यु के उस मार्ग पर हूँ, जिस पर सब को चलना है। तुम सब अपने हृदय से, अपने अन्त:करण से जानते हो कि जिन अच्छे कामों को तुम्हारे लिए करने की प्रतिज्ञा प्रभु परमेश्वर ने की थी, उसने उन सब को पूर्ण किया। एक भी कार्य शेष नहीं रहा। 15परन्तु जैसा प्रभु परमेश्वर के वचन के अनुसार तुम्हारे हितार्थ सब भले कार्य सम्पन्न हुए, वैसा ही तुम्हारे अनिष्ट के लिए भी बुरे कार्य पूर्ण होंगे। जो देश प्रभु परमेश्वर ने तुम्हें दिया है, जब तक तुम उस पर नष्ट नहीं हो जाओगे तब तक वह तुम पर विपत्तियां ढाहता रहेगा। 16यदि तुम अपने प्रभु परमेश्वर के विधान को भंग करोगे, जिसका पालन करने की आज्ञा उसने तुम्हें दी थी, और दूसरे देवताओं का अनुसरण कर उनकी पूजा करोगे, झुक कर उनकी वन्दना करोगे, तो तुम्हारे प्रति प्रभु का क्रोध भड़क उठेगा, और तुम इस उत्तम देश में, जिसको उसने तुम्हें प्रदान किया है, अविलम्ब नष्ट हो जाओगे।'

यहोशुअ का अन्तिम आदेश

24 यहोशुअ ने शकेम नगर में इस्राएली कुलों के सब लोगों को एकत्र किया। उसने इस्राएलियों के धर्मवृद्धों, मुखियों,

23 : 7 नि 23 : 13 23 : 10 व्य 32 : 30 ; 3 : 22 23 :11 व्य 6 : 5 23 : 13 शा 2 : 3 23 : 15 व्य 28 : 63

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शासकों और शास्त्रियों को बुलाया। वे परमेश्वर
के सम्मुख प्रस्तुत हुए। 2यहोशुअ ने सब लोगों
से कहा, 'सुनो, इस्राएल का प्रभु परमेश्वर यों
कहता है : ''प्राचीन काल में तुम्हारे पूर्वज
फरात नदी की दूसरी ओर रहते थे। वे अन्य
देवताओं की पूजा करते थे। उन पूर्वजों में से
एक तेरह था, जो अब्राहम और नाहोर का पिता
था। 3तब मैंने तुम्हारे पूर्वज अब्राहम को फरात
नदी की दूसरी ओर से निकाला और उसको
समस्त कनान देश में भ्रमण कराया। मैंने उसके
वंश को असंख्य बनाया। मैंने उसे इसहाक
दिया। 4मैंने इसहाक को याकूब और एसाव
दिए। मैंने ही एसाव को पैतृक अधिकार के
लिए सेईर पहाड़ी प्रदेश प्रदान किया। पर
याकूब और उसके पुत्र मिस्र देश चले गए।
5मैंने मूसा और हारून को भेजा। जो विनाशक
कार्य मैंने मिस्र देश में किए, उनके द्वारा उस देश
को नष्ट कर दिया, और उसके पश्चात् तुम्हें
वहां से बाहर निकाल लिया। 6मैंने तुम्हारे पूर्वजों
को मिस्र देश से बाहर निकाला। वे मिस्र देश
से निकलकर लाल सागर पर पहुंचे। मिस्र
निवासियों ने रथों और अश्वारोहियों के साथ
लाल सागर तक उनका पीछा किया। 7तब तुम्हारे
पूर्वजों ने मेरी दुहाई दी। मैंने उनके और मिस्र
निवासियों के मध्य अन्धकार का आवरण डाल
दिया। मेरे आदेश से सागर का जल उन पर चढ़
गया, और उसने उन्हें अपने भीतर समा लिया।
जो कार्य मैंने मिस्र निवासियों के साथ किया,
वह तुमने स्वयं अपनी आंखों से देखा है। तुम
बहुत समय तक निर्जन प्रदेश में निवास करते
रहे।

8 'तब मैं तुम्हें यर्दन नदी की पूर्व दिशा में
रहनेवाली एमोरी जाति के देश में लाया। उन्होंने
तुमसे युद्ध किया। मैंने उन्हें तुम्हारे हाथ में दे
दिया। तुमने उनके देश पर अधिकार कर
लिया। इस प्रकार मैंने एमोरी जाति को तुम्हारे
सामने नष्ट कर दिया।

9 'तत्पश्चात् मोआब का राजा, सिप्पोर का
पुत्र बालाक, तुमसे युद्ध करने के लिए तैयार
हुआ। उसने बओर के पुत्र बिलआम को बुलाया
कि वह तुम्हें अभिशाप दे। 10परन्तु मैंने बिलआम
की प्रार्थना नहीं सुनी। अत: उसने तुम्हें
आशीर्वाद दिया। इस प्रकार मैंने बालाक के
हाथ से तुम्हें मुक्त किया।

11 'इसके पश्चात् तुमने यर्दन नदी पार की।
तुम यरीहो नगर आए। यरीहो नगर के निवासियों
ने तथा एमोरी, परिज्जी, कनानी, हित्ती, गिर्गाशी,
हिव्वी और यबूसी जातियों ने भी तुमसे युद्ध
किया। परन्तु मैंने उन सब को तुम्हारे हाथ में
दे दिया।

12 'तब मैंने तुम्हारे आगे-आगे बर्रों का
आतंक भेजा, जिन्होंने एमोरी जाति के दो
राजाओं को तुम्हारे सामने से निकाल दिया। यह
तुमने अपनी तलवार या धनुष के बल पर नहीं
किया था। 13मैंने तुम्हें ऐसा देश दिया, जिसकी
भूमि पर तुमने परिश्रम नहीं किया। मैंने तुम्हें
ऐसे नगर दिए, जिनका निर्माण तुमने नहीं
किया, पर तुम उनमें निवास करते हो। तुम ऐसे
अंगूर के उद्यान और जैतून के वृक्षों के फल
खाते हो, जिनको तुमने नहीं लगाया।

14 'इसलिए हे इस्राएलियो, अब प्रभु की
भक्ति करो।+ निष्कपट भाव और सच्चाई से
उसकी सेवा करो। जिन देवताओं की आराधना
तुम्हारे पूर्वज मसोपोतामिया और मिस्र देश में
करते थे, उन्हें भूल जाओ और केवल प्रभु की
आराधना करो। 15यदि प्रभु की आराधना करना
तुम्हें अपनी दृष्टि में बुरा लगता है तो तुम्हें आज
ही इस बात का निर्णय करना होगा कि तुम
किसकी आराधना करोगे : क्या उन देवताओं
की आराधना करोगे, जिनकी आराधना तुम्हारे
पूर्वज मसोपोतामिया में करते थे? या एमोरी
जाति के देवताओं की आराधना करोगे जिसके
देश में तुम निवास कर रहे हो? जहां तक मेरा
और मेरे परिवार का प्रश्न है, हम प्रभु ही की

+ अथवा 'प्रभु के प्रति भय-भाव रखो'

24 : 2 उत 11 : 26; 12 : 1 **24 : 4** उत 36 : 8 ; व्य 2 : 5 ; 34 : 5 नि 3 : 10 **24 : 8** गण 21 : 21,33
24 : 9 गण 22 : 5 **24 : 12** नि 23 : 28 ; व्य 7 : 20 **24 : 13**व्य 6 : 10 **24 : 14** उत 35 : 2; यहेज 20 : 7

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आराधना करेंगे।'
16 इस्राएली लोगों ने उत्तर दिया 'प्रभु हमें
क्षमा करे!' उन्होंने कहा, 'प्रभु को त्याग कर
अन्य देवताओं की आराधना करने का विचार
हम कभी नहीं करेंगे। 17हमारा प्रभु परमेश्वर
ही हमें तथा हमारे पूर्वजों को मिस्र देश से,
दासत्व के घर से बाहर निकाल लाया है। उसने
हमारी आंखों के सामने कितने आश्चर्यपूर्ण
कार्य करके अद्‌भुत चिह्न दिखाए। जिस-
जिस मार्ग पर हम चले, जिन-जिन जातियों के
देशों में से हम गुजरे, उन सब में प्रभु ने ही
हमारी रक्षा की। 18प्रभु ने ही सब जातियों को,
इस देश में रहनेवाली एमोरी जाति को हमारे
सामने से निकाला है। हम भी प्रभु की आराधना
करेंगे; क्योंकि वह हमारा परमेश्वर है।'
19 यहोशुअ ने लोगों से कहा, 'तुम प्रभु की
आराधना नहीं कर सकते; क्योंकि वह पवित्र
परमेश्वर है। वह ईर्ष्यालु परमेश्वर है। वह
तुम्हारे अपराधों और पापों को नहीं क्षमा करेगा।
20यदि तुम प्रभु को त्यागकर अन्य जातियों के
देवताओं की आराधना करोगे तो वह तुमसे
विमुख हो जाएगा। वह तुम्हारी भलाई करने के
पश्चात् भी तुम्हारा अनिष्ट कर सकता है। तुम्हें
पूर्णत: नष्ट कर सकता है।' 21पर इस्राएली लोगों
ने यहोशुअ से कहा, 'नहीं, नहीं! हम प्रभु ही
की आराधना करेंगे।' 22यहोशुअ ने कहा, 'तुम
स्वयं इस बात के गवाह हो कि तुमने ही प्रभु
की आराधना करने का निर्णय किया है।'
उन्होंने कहा, 'हम गवाह हैं!' 23यहोशुअ ने कहा,
'तब तुम अन्य जातियों के देवताओं की मूर्तियां,
जो तुम्हारे मध्य स्थापित हैं, हटा दो; और
इस्राएल के प्रभु परमेश्वर की ओर अपना हृदय
लगाओ।' 24लोगों ने यहोशुअ से कहा 'हम
अपने प्रभु परमेश्वर की आराधना करेंगे, और
उसकी वाणी को सुनेंगे।' 25अत: यहोशुअ ने
उस दिन इस्राएली लोगों के लिए एक विधान
स्थापित किया। उसने वहां शकेम में, संविधियों
और न्यास-सिद्धान्त निश्चित किए। 26 उसने
ये बातें परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक में
लिखीं। तत्पश्चात् उसने एक बड़ा पत्थर
उठाया, और उसको प्रभु के निवास-स्थान में
बांज वृक्ष के नीचे प्रतिष्ठित किया। 27यहोशुअ
ने सब लोगों से कहा, 'देखो! यह पत्थर हमारा
गवाह है। जो बातें प्रभु ने हमसे कही हैं, उन
सब को इस पत्थर ने सुना है। इसलिए यदि तुम
अपने प्रभु परमेश्वर को धोखा दोगे तो यह
पत्थर तुम्हारे विरुद्ध साक्षी देगा।' 28उसके बाद
यहोशुअ ने सब लोगों को विदा कर दिया।
प्रत्येक व्यक्ति अपने पैतृक भूमि-भाग को लौट
गया।

यहोशुअ और एलआजर की मृत्यु

29 इन घटनाओं के पश्चात् प्रभु के सेवक
यहोशुअ बेन-नून की एक सौ दस वर्ष की उम्र
में मृत्यु हुई। 30उन्होंने उसके शव को उसके
पैतृक भूमि-भाग तिम्नत-सेराह नगर में गाड़ा,
जो एफ्रइम पहाड़ी प्रदेश में गाश पर्वत के उत्तर
में स्थित है।

31 जब तक यहोशुअ जीवित रहा, इस्राएली
लोग प्रभु की आराधना करते रहे। वे उसकी
मृत्यु के पश्चात् भी प्रभु की आराधना करते
रहे। उस समय तक इस्राएली धर्मवृद्ध जीवित
थे। उन्हें उन सब आश्चर्यपूर्ण कार्यों की स्मृति
थी जो प्रभु ने इस्राएली समाज के लिए किए
थे।

32 यूसुफ की अस्थियां इस्राएली लोग मिस्र
देश से ले आए थे। उनको उन्होंने शकेम नगर
के उस भूमि-भाग में गाड़ दिया जो याकूब ने
शकेम के पिता हमोर के पुत्रों से चांदी के सौ
सिक्कों में खरीदा था। इस भूमि-भाग पर यूसुफ
के वंशजों का पैतृक-अधिकार था।

33 हारून के पुत्र एलआजर की मृत्यु हो
गई। उन्होंने उसके शव को एलआजर के पुत्र
पीनहास के नगर गिबहा में गाड़ा, जो उसे
एफ्रइम पहाड़ी प्रदेश में दिया गया था।

---

24 : 19 लेव 19 : 2 **24 : 25** नि 15 : 25 **24 : 26** उत 12 : 6; शा 9 : 6 **24 : 30** यहो 19: 50 **24 : 32** उत 50 : 25 ; नि 13 : 19 ; प्रे 7 : 16 ; उत 33 : 19

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शासक ग्रंथ

पुस्तक-परिचय

कनान देश में आक्रामक प्रवेश के बाद तथा इस्राएली राजवंश की स्थापना के पूर्व का "मध्यकाल" इस्राएली समाज के लिए अंधकार युग था। विभिन्न कुलों में एकीकृत शासन-प्रणाली स्थापित नहीं हो पायी थी। विभिन्न कुलों का परस्पर संबंध धार्मिक आधार पर किसी न किसी जनजातीय संगठन के रूप में उभड़ रहा था। अतः इस्राएली समाज में अव्यवस्था फैली हुई थी।

इस्राएली लोगों पर बाहर के लुटेरे हमला किया करते थे। वे उनके खेतों में आग लगा देते थे और धन-सम्पत्ति को लूट लेते थे। इस विषम स्थिति में अनेक इस्राएली अगुए नियुक्त हुए जिन्होंने न केवल अपने कुल के लोगों पर न्यायोचित शासन किया, बल्कि सेना-नायकों के रूप में विदेशी आक्रमणों से सम्पूर्ण कुल-संघ की रक्षा की। इस प्रकार ये सेना-नायक भी थे एवं न्यायी-शासक भी। इन वीर कुल-नायकों में शिमशोन सर्वाधिक विख्यात है, जिसका उल्लेख वीर-गाथा की शैली में प्रस्तुत ग्रंथ के 13-16 अध्यायों में हुआ है। ऐसे ही शासकों से सम्बन्धित अनेक घटनाएं शासक ग्रंथ में उल्लिखित हैं।

प्रस्तुत पुस्तक की प्रमुख शिक्षा यह है कि बारह इस्राएली कुल अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए प्रभु परमेश्वर पर पूर्णतः निर्भर रहे। दूसरी ओर जब-जब उनका भरोसा परमेश्वर से हटा तब-तब विपत्तियों का पहाड़ उन पर टूट पड़ा। किन्तु एक बात और : जब इस्राएली लोगों ने परमेश्वर पर भरोसा नहीं किया, तब भी परमेश्वर उनके पश्चात्ताप करने पर तथा उसके पास लौट आने पर उनकी रक्षा करता था।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

यहोशुअ की मृत्यु तक की घटनाएं	1 : 1—2 : 10
इस्राएली कुलों के बारह शासक	2 : 11 — 16 : 31
अन्य घटनाएं	17 : 1—21 : 25
(क) दान-कुल का स्थानान्तरण	17 : 1—18 : 31
(ख) बिन्यामिन-कुल का दुराचरण	19 : 1—21 : 25

यहूदा और शिमोन की विजय

1 इस्राएली लोगों ने यहोशुअ की मृत्यु के पश्चात् प्रभु से यह पूछा : 'हममें से कौन कुल सर्वप्रथम कनान देश के निवासियों पर चढ़ाई करेगा, और उनसे युद्ध करेगा?' [2]प्रभु ने उत्तर दिया, 'यहूदा कुल चढ़ाई करेगा। देखो, मैंने कनान देश को उसके अधिकार में कर दिया है।' [3]अतः यहूदा के वंशजों ने अपने जाति-भाई शिमोन के वंशजों से कहा, 'हमारे साथ उस भमि-भाग पर चढ़ाई करो, जो हमारे लिए निर्धारित किया गया है। हम और तुम मिलकर कनानी लोगों से युद्ध करेंगे। इसके बाद हम तुम्हारे साथ तुम्हारे भूमि-भाग में जाएंगे, जो तुम्हारे लिए निर्धारित किया गया है।' अतः शिमोन के वंशज उनके साथ गए।

4 यहूदा के वंशजों ने कनान देश पर चढ़ाई

---

1 : 1 नि 33 : 7 1 : 2 शा 20 : 18

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कर दी। प्रभु ने कनानी और परिज्जी जातियों को उनके अधिकार में कर दिया। यहूदा के वंशजों ने उनके दस हजार सैनिकों को बेजक के क्षेत्र में पराजित किया। 5उन्हें बेजक क्षेत्र में राजा अदोनी-बेजक मिला। उन्होंने उससे भी युद्ध किया और यों कनानी तथा परिज्जी जातियों को पराजित कर दिया। 6अदोनी-बेजक भागा। परन्तु उन्होंने उसका पीछा किया और उसको पकड़ लिया। उन्होंने उसके हाथ-पैर के अंगूठे काट डाले। 7अदोनी-बेजक ने कहा, 'सत्तर राजा, जिनके हाथ-पैर के अंगूठे मैंने काट दिए थे मेरी भोजन की मेज के नीचे की जूठन खाते थे। जैसा मैंने किया था वैसा ही प्रतिफल ईश्वर ने मुझे दिया।' वे उसको यरूशलेम नगर लाए, और वहां उसका देहान्त हो गया।

यरूशलेम और हेब्रोन पर अधिकार

8 यहूदा के वंशजों ने यरूशलेम नगर पर आक्रमण किया और उसको अपने अधिकार में कर लिया। उन्होंने उसके निवासियों को तलवार से मौत के घाट उतारा और नगर में आग लगा दी। 9तत्पश्चात् यहूदा के वंशज कनानी जाति के उन लोगों से युद्ध करने गए, जो पहाड़ी क्षेत्र, नेगेब प्रदेश और निचले भूमि-प्रदेश में निवास करते थे। 10वे उन कनानियों से भी युद्ध करने गए, जो हेब्रोन नगर में रहते थे। (हेब्रोन का नाम पहले किर्यत-अर्बा था) उन्होंने वहां शेशय, अहीमन और तलमय को पराजित कर दिया।

दबीर नगर पर विजय

11 वे वहां से दबीर नगर के निवासियों से युद्ध करने गए। दबीर का नाम पहले किर्यत-सेपर था। 12कालेब ने कहा, 'जो व्यक्ति किर्यत-सेपर पर आक्रमण करेगा और उसको अपने अधिकार में करेगा, उसके साथ मैं अपनी पुत्री अक्साह का विवाह कर दूंगा।' 13कालेब के छोटे भाई कनज के पुत्र ओतनीएल ने किर्यत-सेपर पर अधिकार कर लिया। कालेब ने उसके साथ अपनी पुत्री का विवाह कर दिया। 14जब वह आई तब ओतनीएल ने उससे कहा कि वह अपने पिता से भूमि मांगे।* अत: वह कालेब के पास गई। जब वह गधे पर से नीचे उतरी तब कालेब ने उससे पूछा, 'तुझे क्या चाहिए?' 15उसने उससे कहा, 'मुझे एक उपहार दीजिए। आपने मेरा विवाह नेगेब के शुष्क भूमि-क्षेत्र में किया है, इसलिए मुझे पानी के झरने भी दीजिए।' तब कालेब ने उसे उपरले और निचले झरने दे दिए।

यहूदा और बिन्यामिन कुलों की अन्य विजय

16 मूसा का ससुर होबाब केनी जाति का था। उसके वंशज यहूदा-वंशीय लोगों के साथ खजूर के नगर से यहूदा के निर्जन प्रदेश में गए। यह अराद नगर के निकट नेगेब प्रदेश में है। वे वहाँ के निवासियों के साथ** रहने लगे।

17 यहूदा के वंशज अपने जाति-भाई शिमोन के वंशजों के साथ गए। उन्होंने सफत नगर में निवास करने वाले कनानी लोगों को पराजित किया और नगर को पूर्णत: नष्ट कर दिया। इसलिए उस नगर का नाम 'होर्माह'+ पड़ा। 18यहूदा के वंशजों ने गाजा नगर और उसके क्षेत्र की भूमि, अश्कलोन नगर और उसके क्षेत्र की भूमि, तथा एक्रोन नगर और उसके क्षेत्र की भूमि को भी अपने अधिकार में कर लिया। 19प्रभु यहूदा के वंशजों के साथ था। अतएव उन्होंने समस्त पहाड़ी प्रदेश पर अधिकार कर लिया। वे मैदान में रहने वालों को नहीं निकाल सके; क्योंकि उनके पास लोहे के रथ थे। 20उन्होंने हेब्रोन नगर कालेब को दे दिया, जैसा मूसा ने कहा था। कालेब ने अनक के तीनों पुत्रों को उस नगर से निकाल दिया। 21बिन्यामिन के वंशजों ने यरूशलेम में रहने-वाली यबूसी जाति को नहीं निकाला। इसलिए यबूसी जाति के लोग बिन्यामिन के वंशजों के

* मूल में 'उसने ओतनीएल से कहा'। देखिए यहो 15 : 15 की टिप्पणी। ** प्राचीन यूनानी अनुवाद के अनुसार : 'अमालेकी जाति के मध्य'। + अर्थात् ''पूर्णत: नष्ट करना''

1 : 8 यहो 15 : 63 ; 2 शम 5 : 6 **1 : 10** यहो 14 : 15 **1 : 11** यहो 15 : 25 **1 : 13** शा 3 : 9 **1 : 16** गण 10 : 29-32 **1 : 17** गण 21 : 3 **1 : 20** यहो 15 : 14 **1 : 21** यहो 15 : 63; 18 : 28; 2 शम 5 : 6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

साथ यरूशलेम नगर में आज भी रहते हैं।

यूसुफ-कुल की विजय

22 यूसुफ के वंशजों ने बेत-एल नगर पर
चढ़ाई की। प्रभु उनके साथ था। 23यूसुफ के
वंशजों ने बेत-एल का भेद लेने के लिए
गुप्तचर भेजे। बेत-एल नगर का नाम पहले
लूज था। 24गुप्तचरों ने नगर से बाहर निकलते
हुए एक मनुष्य को देखा। उन्होंने उससे कहा,
'हमें नगर में प्रवेश करने का मार्ग दिखाओ। तब
हम तुम्हारे साथ दयापूर्ण व्यवहार करेंगे।'
25अत: उसने उन्हें नगर में प्रवेश करने का मार्ग
दिखा दिया। यूसुफ के वंशजों ने तलवार से
बेत-एल के निवासियों को मार डाला, पर उस
मनुष्य और उसके परिवार को छोड़ दिया।
26वह मनुष्य हित्ती जाति के देश में चला गया।
उसने वहाँ एक नगर बसाया, और उसका नाम
लूज रखा। उस नगर का आज भी यही नाम है।

मनश्शे और एफ्रइम की अन्य विजय

27 मनश्शे गोत्र के लोगों ने इन नगरों और
इनके आसपास के गांवों के निवासियों को नहीं
निकाला था : बेत-शआन, तअनख, दोर,
इब्लआम और मगिद्दो। इसलिए कनानी उन
नगरों और गांवों में निवास करते रहे। 28जब
इस्राएली राष्ट्र शक्तिशाली हो गया तब वे
कनानी लोगों से बेगार करवाने लगे। फिर भी
उन्होंने उन्हें पूर्णत: वहां से नहीं निकाला।
29 एफ्रइम गोत्र के लोगों ने गेजर नगर में
रहने वाले कनानी लोगों को नहीं निकाला था।
अत: वे उनके मध्य गेजर में निवास करते रहे।

अन्य कुलों के कार्य

30 जबूलून के वंशजों ने किट्रोन नगर और
नहलोल नगर के निवासियों को नहीं निकाला
था। अत: कनानी उनके मध्य निवास करते रहे,
और उनकी बेगार करते रहे।
31आशेर के वंशजों ने इन नगरों के निवासियों
को नहीं निकाला था: अक्को, सीदोन, अहलाब,
अक्जीब, हेलबाह, अपीक और रहोब। 32आशेर
के वंशजों ने उन नगरों के निवासी कनानी लोगों
को नहीं निकाला था, इसलिए वे कनानी लोगों
के मध्य निवास करते रहे।
33 नफ्ताली के वंशजों ने बेत-शेमश नगर
और बेत-अनात नगर के निवासियों को नहीं
निकाला था : इसलिए वे उन नगरों के निवासी
कनानी लोगों के मध्य निवास करते रहे। फिर
भी बेत-शेमश और बेत-अनात नगर के
निवासी उनकी बेगार करते थे।
34 एमोरी जाति के लोगों ने दान के वंशजों
को पहाड़ी प्रदेश की ओर भगा दिया, और उन्हें
मैदान में, नीचे उतरने नहीं दिया। 35अत: एमोरी
लोग हर-हेरस, अय्यालोन और शअलबीम नगर
में निवास करते रहे। परन्तु जब यूसुफ के वंशजों
ने उन्हें दबाया तब वे उनकी बेगार करने लगे।
36 एमोरी राज्य की सीमा अक्रबीम के
चढ़ाव से आरम्भ होती थी। वह सेला से
निकलकर ऊपर की ओर जाती थी।

प्रभु का दूत

2 प्रभु का दूत गिलगाल से बोकीम नामक
स्थान गया। उसने समस्त इस्राएली समाज
से कहा, 'मैं तुम्हें मिस्र देश से बाहर निकाल
कर इस देश में लाया, जिसको देने की शपथ
मैंने तुम्हारे पूर्वजों से खाई थी। मैंने उनसे यह
कहा था : "मैं अपना विधान, जो मैंने तुम्हारे
साथ स्थापित किया है, कभी भंग नहीं करूंगा;
2और तुम इस देश के निवासियों के साथ सन्धि
स्थापित मत करना। वरन् उनकी वेदियों को
तोड़ डालना।" किन्तु तुमने मेरी वाणी नहीं
सुनी। यह तुमने क्या किया? 3इसलिए, अब मैं
यह कहता हूँ: मैं तुम्हारे लिए इस देश के
निवासियों को नहीं निकालूँगा। वे तुम्हारे बैरी
हो जाएंगे। उनके देवता तुम्हारे लिए फन्दा बन
जाएंगे।' 4जब प्रभु के दूत ने ये बातें समस्त
इस्राएली समाज से कहीं तब वे उँचे स्वर में रोने
लगे। 5उन्होंने उस स्थान का नाम 'बोकीम'*
रखा, और वहां प्रभु के लिए बलि चढ़ाई।

---

* अर्थात् 'रोनेवाले'

1 : 23 यहो 7 : 2; उत 28 : 19 **1 : 27** यहो 17 : 11 **1 : 29** यहो 16 : 10; 1 रा 9 : 16 **1 : 36** गण 34: 4 **2 : 2** नि 34 : 12-13; व्य 7 : 2-5

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यहोशुअ की मृत्यु

6 यहोशुअ ने लोगों को भेज दिया। प्रत्येक इस्राएली कुल भूमि पर पैतृक-अधिकार करने के लिए अपने-अपने भूमि-भाग को चला गया। [7]इस्राएली लोग यहोशुअ के जीवनभर, तथा उसके पश्चात् धर्मवृद्धों के जीवनभर, प्रभु की सेवा करते रहे। इन धर्मवृद्धों ने प्रभु के उन सब महान् कार्यों को देखा था, जो प्रभु ने इस्राएलियों के हितार्थ किए थे। [8]तब प्रभु के सेवक, यहोशुअ बेन-नून की मृत्यु एक सौ दस वर्ष की उम्र में हुई। [9]उन्होंने उसके शव को उसके पैतृक भूमि-भाग के तिम्नत-हरेस नगर में गाड़ा, जो एफ्रइम प्रदेश में, गाश पर्वत के उत्तर में स्थित है। [10]यहोशुअ की समकालीन पीढ़ी भी अपने मृत पूर्वजों में जाकर मिल गई। उनके पश्चात् नई पीढ़ी का उदय हुआ। यह पीढ़ी न प्रभु को जानती थी, और न उसके आश्चर्यपूर्ण कार्यों को जो उसने इस्राएलियों के हितार्थ किए थे।

इस्राएलियों का स्वधर्म-त्याग

11 इस्राएली लोगों ने वही किया जो प्रभु की दृष्टि में बुरा है। वे बअल देवताओं की सेवा करने लगे। [12]उन्होंने अपने पूर्वजों के प्रभु परमेश्वर को त्याग दिया, जो उन्हें मिस्र देश से निकाल लाया था। वे अपने चारों ओर की जातियों के देवताओं का अनुसरण करने लगे। उन्होंने उन देवताओं की झुककर वंदना की। इस प्रकार उन्होंने प्रभु को चिढ़ाया। [13]उन्होंने प्रभु को त्यागकर बअल देवता तथा अशेराह देवी की आराधना की। [14]अत: इस्राएलियों के प्रति प्रभु का क्रोध भड़क उठा। प्रभु ने उन्हें लुटेरों के हाथ सौंप दिया, जिन्होंने इस्राएलियों को लूटा। उसने उन्हें उनके चारों ओर के शत्रुओं के हाथ बेच दिया, जिसके कारण वे अपने शत्रुओं का सामना नहीं कर सके। [15]जब-जब वे युद्ध के लिए बाहर निकलते थे तब-तब प्रभु का हाथ उनका अनिष्ट करने के लिए उठ जाता था। ऐसा ही प्रभु ने कहा था। उसने उनसे यही शपथ खाई थी। वे बड़े संकट में पड़ गए।

16 तब प्रभु ने इस्राएलियों के लिए शासक** नियुक्त किए, जिन्होंने उन्हें लुटेरों के हाथ से मुक्त किया। [17]किन्तु इस्राएलियों ने शासकों की बात भी नहीं सुनी। उन्होंने अन्य जातियों के देवताओं का अनुसरण कर वेश्या के सदृश प्रभु के प्रति विश्वासघात किया। उन्होंने उन देवताओं की झुककर वंदना की। जिस मार्ग पर उनके पूर्वज चले थे, उससे वे शीघ्र ही भटक गए। जैसा उनके पूर्वजों ने प्रभु की आज्ञाओं का पालन किया था वैसा उन्होंने नहीं किया। [18]जब प्रभु इस्राएलियों के लिए शासक नियुक्त करता था तब प्रभु उस शासक के साथ रहता था। प्रभु शासक के जीवनभर इस्राएलियों को उनके शत्रुओं के हाथ से मुक्त रखता था। जब वे अत्याचारी के अत्याचार तथा शत्रुओं के दबाव के कारण कराहते थे, तब प्रभु दया से द्रवित हो जाता था। [19]किन्तु उस शासक की मृत्यु के बाद इस्राएली प्रभु से विमुख हो जाते थे। वे अपने पूर्वजों की अपेक्षा अधिक बुरा व्यवहार करते थे। वे अन्य जातियों के देवताओं का अनुसरण करते थे। उनकी पूजा-आराधना करते थे। वे झुककर उनकी वंदना करते थे। उन्होंने अपनी बुरी प्रथाओं का, पूर्वजों के हठधर्म के मार्ग का, त्याग नहीं किया। [20]अत: प्रभु का क्रोध इस्राएलियों के प्रति भड़क उठा। उसने कहा, 'जिस विधान का पालन करने के लिए मैंने इस राष्ट्र के पूर्वजों को आदेश दिया था, मेरे उस विधान को उन्होंने भंग किया है। इन्होंने मेरी वाणी नहीं सुनी। [21]इसलिए जिन जातियों को यहोशुअ अपनी मृत्यु के समय छोड़ गया था, उनमें से एक जाति को भी मैं इनके लिए नहीं निकालूंगा, [22]जिससे मैं उन

---

* इस्राएली राष्ट्र में राजा की प्रथा आरम्भ होने के पूर्व परमेश्वर के द्वारा चुने हुए वीर, साहसी, बुद्धिमान और परमेश्वर-भक्त लोग राज्य करते थे; इन्हें इब्रानी में "शोफेट", अर्थात् "प्रशासक", "शासक", अथवा "न्यायी" कहते थे।

2 : 6-9 यहो 24 : 28-31 **2 : 9** यहो 19 : 49-50 **2 : 15** व्य 28 : 15-68 **2 : 17** लेव 17 : 7 **2 : 22** व्य 7 : 22

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जातियों के द्वारा इस्राएलियों को कसौटी पर
कस सकूं कि वे अपने पूर्वजों के समान मेरे मार्ग
पर चलने को तत्पर हैं अथवा नहीं।' 23अत:
प्रभु ने उन जातियों को तुरन्त नहीं निकाला
जिन्हें उसने छोड़ दिया था और यहोशुअ के
हाथ में नहीं सौंपा था।

3 प्रभु ने इन जातियों को छोड़ दिया था,
जिससे इनके द्वारा इस्राएलियों की उस
पीढ़ी की परीक्षा ली जा सके, जिसे कनान के
किसी भी युद्ध का व्यावहारिक ज्ञान नहीं था।
2यह इस्राएल की पीढ़ियों के हित में था कि वे
युद्ध का ज्ञान प्राप्त करें। कम से कम वे
इस्राएली लोग युद्ध-कला को सीखें जिन्हें
पहले से युद्ध का व्यावहारिक ज्ञान नहीं था।
3प्रभु ने इन जातियों को छोड़ दिया था :
पलिश्ती जाति के पांच नगर-राज्य, समस्त
कनानी जाति, सीदोनी जाति, और हिव्वी
जाति, जो बअल-हेर्मोन पहाड़ से हमात के
प्रवेश-मार्ग तक लबानोन पहाड़ पर रहती थी।
4इन्हें इस्राएलियों की परीक्षा लेने के लिए छोड़ा
गया था जिससे यह ज्ञात हो सके कि क्या
इस्राएली प्रभु की उन आज्ञाओं का पालन करेंगे
अथवा नहीं, जो प्रभु ने मूसा के द्वारा इस्राएलियों
के पूर्वजों को दी थीं। 5अत: इस्राएली लोग
कनानी, हित्ती, एमोरी, परिज्जी, हिव्वी और
यबूसी जातियों के मध्य बस गए। 6उन्होंने उन
की पुत्रियों से विवाह किया, और उनके पुत्रों
के साथ अपनी पुत्रियों का विवाह किया।
इस्राएली उन जातियों के देवताओं की सेवा भी
करने लगे।

शासक ओतनीएल

7 इस्राएलियों ने वही कार्य किया जो प्रभु
की दृष्टि में बुरा था। वे अपने प्रभु परमेश्वर को
भूल गए, और बअल देवता तथा अशेराह देवी
की पूजा-आराधना करने गये। 8प्रभु का क्रोध
इस्राएलियों के प्रति भड़क उठा। उसने उन्हें
मसोपोतामिया के राजा कूशन-रिश्आतइम के
हाथ बेच दिया। इस्राएलियों ने आठ वर्ष तक
कूशन-रिश्आतइम की गुलामी की। 9तब उन्होंने
प्रभु की दुहाई दी। प्रभु ने इस्राएलियों के लिए
एक उद्धारकर्ता नियुक्त किया, जिसने उनको
छुड़ाया। वह कालेब के छोटे भाई कनज का
पुत्र ओतनीएल था। 10प्रभु का आत्मा उस पर
उतरा। उसने इस्राएलियों पर शासन किया। वह
मसोपोतामिया के राजा कूशन-रिश्आतइम से
युद्ध करने बाहर निकला। प्रभु ने राजा को
उसके हाथ में सौंप दिया। कूशन-रिश्आतइम
शासक ओतनीएल के अधीन हो गया। 11इस
प्रकार इस्राएलियों के देश में चालीस वर्ष तक
शान्ति रही। तब कनज के पुत्र ओतनीएल की मृत्यु
हो गई।

एहूद का नेतृत्व

12 इस्राएलियों ने पुन: वही कार्य किया जो
प्रभु की दृष्टि में बुरा था। प्रभु ने मोआब के राजा
एग्लोन को इस्राएलियों के विरुद्ध शक्तिशाली
बनाया; क्योंकि इस्राएलियों ने प्रभु की दृष्टि में
बुरा कार्य किया था। 13एग्लोन ने अपने पास
अम्मोन जाति और अमालेक जाति को एकत्र
किया, और वह इस्राएलियों से युद्ध करने गया।
उसने इस्राएलियों को पराजित कर दिया, और
खजूर के नगर पर अधिकार कर लिया।
14इस्राएलियों ने अठारह वर्ष तक मोआब के
राजा एग्लोन की गुलामी की। 15तब उन्होंने
प्रभु की दुहाई दी। प्रभु ने इस्राएलियों के लिए
एक उद्धारकर्ता नियुक्त किया। वह बिन्यामिन
कुल के गेरा का पुत्र एहूद था। वह बाएं हाथ
से काम करता था। इस्राएलियों ने उसके हाथ
से मोआब के राजा एग्लोन को कुछ भेंट भेजी।
16एहूद ने एक दोधारी तलवार बनायी थी, जो
प्राय: आधा मीटर लम्बी थी। उसने उसको
अपने कपड़े के नीचे दाहिनी जांघ पर लटका
लिया। 17तत्पश्चात् उसने मोआब के राजा
एग्लोन को भेंट चढ़ाई। एग्लोन बड़ा मोटा था।
18जब एहूद भेंट चढ़ा चुका तब उसने भेंट वहन
करने वाले इस्राएली पुरुषों को भेज दिया,
19परन्तु वह गिलगाल की प्रतिमाओं के पास
स्वयं लौट आया। उसने राजा से कहा, 'मेरे पास
आप के लिए गुप्त सन्देश है।' राजा ने आदेश

3 : 7 शा 2 : 11 3 :19 यहो 4 : 20

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दिया, 'हमें एकांत चाहिए।' अतः उसके सब
दरबारी उसके पास से बाहर चले गए। 20एहूद
उसके निकट आया। राजा अपने हवादार
उपरले कक्ष में अकेला बैठा था। एहूद ने कहा,
'मेरे पास आपके लिए परमेश्वर का एक गुप्त
सन्देश है।' अतः राजा अपने आसन से उठा।
21एहूद ने अपना बायां हाथ बढ़ाया। उसने
दाहिनी जांघ पर लटकती तलवार खींची, और
उसके पेट में भोंक दी। 22तलवार की धार के
साथ उसकी मूठ भी पेट के भीतर चली गई।
धार के ऊपर चर्बी लग गई। इस कारण उसने
उसके पेट से तलवार बाहर नहीं निकाली। मल
निकल पड़ा। 23एहूद ने कक्ष के द्वार बन्द कर
दिए, उनमें ताला* लगा दिया और वह खिड़की
से बाहर निकला।

24जब एहूद निकल गया, तब राजा के सेवक
आए। उन्होंने देखा कि हवादार उपरले कक्ष के
द्वारों पर ताला लगा है। उन्होंने कहा, 'महाराज
हवादार कक्ष के शौचालय में गए हैं।' 25अतएव
वे जब तक थक नहीं गए तब तक प्रतीक्षा करते
रहे। पर जब राजा ने उपरले कक्ष के द्वार नहीं
खोले तब उन्होंने चाबी ली और द्वार खोले।
उनका स्वामी भूमि पर मृत पड़ा था।

26 जब तक सेवक प्रतीक्षा करते रहे तब
तक एहूद भाग निकला। वह गिलगाल की
प्रतिमाओं से गुजरा। उसने सईराह में आश्रय
लिया। 27जब वह इस्राएली क्षेत्र में पहुंच गया
तब उसने एफ्रइम पहाड़ी में नरसिंघा फूंका।
इस्राएली उसके साथ पहाड़ी प्रदेश से नीचे
उतरे। वह उनके आगे-आगे था। 28उसने
इस्राएलियों से कहा, 'मेरे पीछे-पीछे आओ।
प्रभु ने तुम्हारे शत्रु मोआबियों को तुम्हारे हाथ
में सौंप दिया है।' वे एहूद के पीछे गए। उन्होंने
यर्दन नदी के घाटों पर, जो मोआब देश की ओर
थे, अधिकार कर लिया, और एक भी मोआबी
पुरुष को वहाँ से बचकर जाने नहीं दिया।

29 उन्होंने उस समय मोआबी सेना के दस
हजार बलिष्ठ और शक्तिवान सैनिक मार
डाले। एक भी सैनिक भाग न सका। 30मोआबी
जाति के लोग उस दिन से इस्राएलियों के वश
में हो गए। इस प्रकार इस्राएलियों के देश में
अस्सी वर्ष तक शांति रही।

शमगर का अंकुश

31 एहूद के पश्चात् अनात का पुत्र शमगर
शासक हुआ। उसने हलवाहा के अंकुश से
पलिश्ती सेना के छः सौ सैनिकों का वध किया
था। वह भी इस्राएलियों का उद्धारकर्ता था।

दबोराह और बारक

4 इस्राएलियों ने एहूद की मृत्यु के बाद पुनः
वही कार्य किया, जो प्रभु की दृष्टि में बुरा
था। 2अतः प्रभु ने उन्हें कनानी जाति के राजा
याबीन के हाथ में बेच दिया। याबीन हासोर
नगर में राज्य करता था। उसका सेनापति
सीसरा था, जो हरोशेत-ह-गोइम में रहता था।
3उसके पास लोहे के नौ सौ रथ थे। उसने बीस
वर्ष तक निर्दयतापूर्वक इस्राएलियों पर अत्याचार
किया। तब इस्राएलियों ने प्रभु की दुहाई दी।

4लप्पीदोत की पत्नी दबोराह** नामक एक
महिला थी। वह नबिया थी और उस समय
इस्राएलियों पर शासन कर रही थी। 5वह एक
खजूर वृक्ष के नीचे बैठती थी। "दबोराह का
खजूर" एफ्रइम पहाड़ी प्रदेश के बेत-एल और
रामाह नगरों के मध्य स्थित था। इस्राएली न्याय
के लिए उसके पास आते थे।

6 दबोराह ने अबीनोअम के पुत्र बारक के
पास नफ्ताली प्रदेश के केदश नगर में दूत भेजा,
और बारक को बुलाया। दबोराह ने बारक से
कहा, 'इस्राएल का प्रभु परमेश्वर तुझे यह आज्ञा
देता है : "जा, और ताबोर पर्वत पर अपने
लोगों को एकत्र कर। तू नफ्ताली और जबूलून
कुल के दस हजार पुरुष लेना। 7मैं तेरा सामना
करने के लिए याबीन के सेनापति सीसरा को,
उसके रथ और सेना के साथ, किशोन नदी के
तट पर खींचकर लाऊंगा। तब मैं उसे तेरे हाथ
में सौंप दूंगा।" ' 8बारक ने दबोराह को उत्तर
दिया, 'यदि आप मेरे साथ जाएंगी तो मैं

---

* मूल अस्पष्ट। ** अर्थात्, 'मधु-मक्खी'।

4 : 4 नि 15 : 20; 2 रा 22 : 14 **4 : 6** इब्र 11 : 32

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जाऊँगा। यदि आप मेरे साथ नहीं जाएंगी तो मैं भी नहीं जाऊंगा' [9]दबोराह ने कहा, 'मैं निश्चय ही तेरे साथ जाऊंगी। किन्तु जिस अभियान पर तू जा रहा है, उसकी सफलता का श्रेय तुझे नहीं मिलेगा; क्योंकि प्रभु उस सेनापति सीसरा को एक स्त्री के हाथ में बेच देगा।' तब दबोरा तैयार हुई। वह बारक के साथ केदश नगर गई।
[10]बारक ने जबूलून और नफ्ताली कुल के लोगों को केदश नगर में बुलाया।.दस हजार पुरुष उसके पीछे गए। दबोराह भी साथ गई।

हेबर

11 केनी जाति के हेबर नामक पुरुष ने अन्य केनी-वंशजों से संबंध-विच्छेद कर लिया था। वह मूसा के ससुर होबाब के पुत्रों के गोत्र से भी अलग हो गया था। उसने केदश के समीप स-अन्नीम के बांजवृक्ष के पास पड़ाव डाला था।

सीसरा की पराजय

12 जब सीसरा को सूचित किया गया कि अबीनोअम का पुत्र बारक ताबोर पर्वत गया है,
[13]तब उसने हरोशेत-ह-गोइम नगर से लोहे के नौ सौ रथ और अपने सब सैनिक किशोन नदी के तट पर बुलाए।

14 दबोराह ने बारक से कहा, 'उठ! आज वह दिन है, जब प्रभु तेरे हाथ में सीसरा को सौंप देगा। निस्सन्देह प्रभु तेरे आगे-आगे युद्ध करने आया है।' अत: बारक ताबोर पर्वत से नीचे उतरा। उसके पीछे-पीछे दस हजार सैनिक
उतरे। [15]प्रभु ने सीसरा को, उसके रथ और उसकी सेना को, बारक के सम्मुख भयाक्रांत कर दिया। सीसरा रथ से नीचे उतरा और पैदल
ही भाग गया। [16]बारक ने हरोशेत-ह-गोइम तक सीसरा के रथों और उसकी सेना का पीछा किया। सीसरा की समस्त सेना तलवार से मार डाली गई। एक भी सैनिक नहीं बचा।

17 सीसरा पैदल भागता हुआ केनी जाति के हेबर की पत्नी याएल के तम्बू पर पहुँचा। हासोर नगर के राजा याबीन और हेबर के
परिवार के मध्य मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध थे। [18]याएल सीसरा से भेंट करने के लिए तम्बू से बाहर निकली। उसने सीसरा से कहा, 'तम्बू के भीतर आइए, स्वामी। भीतर आइए। मत डरिए।' अत: सीसरा उसके पास तम्बू के भीतर आया।
याएल ने उसे कम्बल ओढ़ा दिया। [19]सीसरा ने उससे कहा, 'मुझे पीने के लिए थोड़ा पानी दो। मुझे प्यास लगी है।' याएल ने दूध का मशक खोल कर उसे दूध पिलाया, और फिर उसे
कम्बल ओढ़ा दिया। [20]सीसरा ने उससे कहा, 'तम्बू के द्वार पर खड़ी रहना। यदि कोई व्यक्ति आएगा और तुमसे यह पूछेगा, "यहाँ कोई पुरुष है?" तो तुम कहना, "कोई नहीं है।"'
[21]किन्तु हेबर की पत्नी याएल ने तम्बू की एक खूंटी ली, और हाथ में हथौड़ा लिया। वह धीमे कदमों से उसके पास गई। सीसरा थकावट के कारण गहरी नींद में सो रहा था। याएल ने उसकी कनपटी में खूंटी ठोंक दी। खूंटी कनपटी से पार होकर भूमि में धंस गई। सीसरा तत्काल मर गया।

22 बारक सीसरा का पीछा करते हुए वहाँ आया। याएल उससे भेंट करने को तम्बू के बाहर निकली। उसने बारक से कहा, 'तम्बू के भीतर आइए। जिस व्यक्ति को आप ढूंढ़ रहे हैं, उसे मैं आपको दिखाऊंगी।' बारक उसके तम्बू के भीतर गया। वहाँ सीसरा मृत पड़ा था। उसकी कनपटी में तम्बू की खूंटी गढ़ी हुई थी।

23 इस प्रकार परमेश्वर ने उस दिन कनानी जाति के राजा याबीन को इस्राएलियों के सामने
नीचा दिखाया। [24]जब तक इस्राएलियों ने कनानी राजा याबीन का सर्वनाश नहीं कर दिया, तब तक वे उसे अधिकाधिक दबाते रहे।

दबोराह और बारक का गीत

5 उसी दिन दबोराह ने अबीनोअम के पुत्र बारक के साथ यह गीत गाया :

2 'इस्राएल के योद्धाओं ने केश बिखराए,*
लोग स्वेच्छा से युद्ध में गए,
प्रभु को धन्य कहो!

* अथवा, '(समर्पण भाव से) केश नहीं कटवाए।'

4 : 15 भज 83 : 9-10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

3 'ओ राजाओ, सुनो! ओ शासको, ध्यान दो!
मैं प्रभु के लिए गीत गाऊंगा* ।
इस्राएल के प्रभु परमेश्वर के लिए वाद्‌य
बजाऊंगा** ।
4 'प्रभु, जब तू सेईर देश से बाहर निकला,
जब तूने एदोम के मैदान से प्रस्थान किया,
तब भूमि कांपने लगी,
और आकाश बरसने लगा,
मेघ जल बरसाने लगे।
5 इस्राएल के प्रभु परमेश्वर के सम्मुख,
सीनय पर्वत के प्रभु के सामने,
पर्वत कंपित हो गए!
6 'अनात के पुत्र शमगर के दिनों में,
याएल के दिनों में
राजमार्गों पर कारवों का जाना बन्द हो गया
था।
तब यात्री पगडंडियों से जाते थे।
7 जब तक तू, ओ दबोराह,
इस्राएली देश में माता के रूप में नहीं उठी
तब तक इस्राएली गांव निर्जन पड़े रहे।
8 जब नए देवता चुने गए,
तब नगर के प्रवेश-द्वार पर युद्ध आ गया।
इस्राएली सेना के चालीस हजार सैनिकों के
पास क्या ढाल और भाले दिखाई दिए?
9 मेरा हृदय इस्राएली सेना-नायकों को अर्पित
है,
जो लोगों के मध्य से स्वेच्छा से युद्ध में गए।
प्रभु को धन्य कहो!
10 ओ सफेद गदहियों पर सवारी करनेवालो!
कीमती कालीनों पर विराजनेवालो!
ओ राजमार्ग के पथिको!
इस बात पर विचार करो।
11 पनघट पर पानी भरनेवाली स्त्रियां+
उच्च स्वर में गीत गाती हैं;
वे प्रभु की विजय के गीत गाती हैं;
इस्राएली ग्रामीणों की विजय के गीत गाती
हैं।
तब प्रभु के लोग
नगर के प्रवेश-द्वारों पर गए।
12 'जाग, जाग, ओ दबोराह!
जाग, जाग!
गीत गा!
उठ, बारक!
ओ अबीनोअम के पुत्र,
अपने युद्ध बन्दियों को प्रदर्शित कर!
13 कुलीन वर्ग के शेष लोग नीचे उतर गए,
प्रभु के लोग उसकी ओर से शक्तिशाली
शत्रु से युद्ध करने के लिए नीचे उतरे।
14 एफ्रइम पहाड़ी प्रदेश से वे घाटी में आए++।
ओ बिन्यामिन के कुल,
तेरे पीछे तेरे सम्बन्धी गए।
माकीर गोत्र से सेना-नायक,
शास्त्रियों की लाठी वहन करनेवाले
जबूलून कुल के लोग नीचे उतरे।
15 इस्साकार के शासक दबोराह के साथ आए;
इस्साकार बारक के प्रति निष्ठावान था।
वे उसके पीछे घाटी में उतर पड़े।
किन्तु रूबेन कुल के गोत्र
अपने-अपने हृदय टटोलते रह गये।
16 क्यों तू भेड़शालाओं के मध्य बैठा था?
क्या चरवाहों का बांसुरी-वादन सुनने के
लिए?
रूबेन कुल के गोत्र
सोच-विचार करते रहे।
17 गिलआद-कुल यर्दन नदी के उस पार रह
गया।
क्यों दान के वंशज दूर जलयानों में लगे
रहते हैं?
आशेर कुल समुद्र तट पर निश्चल बैठा है।
वह अपने बन्दरगाहों में शांति से निवास
कर रहा है।
18 पर जबूलून कुल के लोगों ने,
अपने प्राण को संकट में डालकर
मृत्यु का सामना किया।

---

* अथवा 'गाऊंगी' ** अथवा 'बजाऊंगी' + मूल अस्पष्ट ++ मूल में, 'जिसकी जड़ अमालेक में है'।

5 : 4 व्य 33 : 2 ; भज 68 : 7-8 **5 : 5** नि 19 : 18 **5 : 6** यश 33 : 8 **5 : 8** 1 शम 13 : 19-22 **5 : 14** गण 32 : 39

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नफ्ताली कुल के वंशजों ने भी
ऊंचे मैदानी टीलों पर यही किया।

19 'राजा आए।
उन्होंने युद्ध किया।
तब कनान के राजाओं ने तअनख पर
मगिद्दो के जलाशय पर युद्ध किया;
पर उन्हें लूट में चांदी हाथ न लगी।
20आकाश में से नक्षत्रों ने युद्ध किया।
उन्होंने सीसरा के विरुद्ध
अपनी कक्षा में से युद्ध किया।
21कीशोन की प्रचण्ड धारा ने,
सतत प्रवाहित प्रचण्ड धारा ने,
कीशोन की प्रचण्ड धारा ने उन्हें बहा दिया।
ओ मेरे प्राण, साहस से आगे बढ़!
22अब घोड़ों के खुरों की टाप का स्वर उच्च हुआ;
उसके जंगी घोड़ों के सरपट दौड़ने से
यह स्वर हुआ।
23प्रभु का दूत यह कहता है :
"मेरोज नगर को शाप दो!
उसके निवासियों को
निश्चय ही शाप दो!
क्योंकि वे प्रभु की सहायता करने,
शक्तिशाली शत्रु के विरुद्ध
प्रभु की सहायता करने नहीं आए।"

24 'केनीय हेबर की पत्नी याएल
सब स्त्रियों में धन्य है!
तम्बुओं में निवास करनेवाली स्त्री-जाति
में याएल सर्वाधिक धन्य है!
25 सीसरा ने पानी मांगा,
उसने दूध दिया।
वह राजसी पात्र में दही लाई।
26याएल ने तम्बू की खूंटी पर हाथ रखा;
उसने दाहिने हाथ से लोहार का हथौड़ा उठाया;
और सीसरा पर प्रहार किया।
उसने सीसरा का सिर कुचल दिया।
उसकी कनपटी को फोड़ दिया।
कनपटी को आरपार छेद दिया।
27 सीसरा के घुटने लड़खड़ाए!
वह गिर पड़ा।
वह याएल के पैरों पर निश्चल पड़ा था!
जहाँ वह लड़खड़ाया
वहीं मरकर गिर पड़ा।

28 'सीसरा की मां ने खिड़की से झांका,
उसने चिलमन से बाहर निहारा :
"सीसरा के रथ के आने में देर क्यों हो रही है?
उसके रथों के टापने की आवाज को
विलम्ब क्यों हो रहा है?"
29तब उसकी सर्वाधिक बुद्धिमती सखी ने उसे उत्तर दिया,
नहीं, उसने स्वयं अपने-आप को उत्तर दिया :
30 "निस्सन्देह वे लूट के माल को एकत्र कर,
आपस में बांट रहे हैं,
प्रत्येक पुरुष को एक या दो कन्याएँ;
लूट के रंगीन वस्त्र,
रंगीन, बेल-बूटेदार वस्त्र सीसरा को मिलेंगे ;
मेरे गले के लिए लूट में
बेल-बूटेदार दो रूमाल मिलेंगे।"

31 'यों, हे प्रभु, तेरे सब शत्रु मर-मिटें!
पर तेरे मित्र शक्ति के साथ उगते हुए सूर्य के सदृश हों!'

इस्राएलियों के देश में चालीस वर्ष तक शान्ति रही।

शासक गिद्ओन

6 इस्राएलियों ने वही कार्य किया जो प्रभु की दृष्टि में बुरा था। अत: प्रभु ने उन्हें सात वर्ष के लिए मिद्यानी जाति के हाथ में सौंप दिया। 2मिद्यानियों की शक्ति इस्राएलियों पर छा गयी। इस्राएलियों ने मिद्यानियों के कारण पहाड़ों पर अपने लिए गड्ढे, गुफाएँ और गढ़ बना लिये। 3जब इस्राएली बीज बोते, तब मिद्यानी, अमालेकी और पूर्व के लोग आते और उन पर आक्रमण करते थे। 4वे इस्राएली लोगों के विरुद्ध पड़ाव डालते और गाजा नगर तक

5 : 20 यहो 10 : 11 5 : 24 लू 1: 42 5 : 31 2 शम 23 : 4 ; मत 13 : 43; प्रक 1 : 16 6 : 2 1 शम 13 : 6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उनके खेतों की उपज नष्ट कर देते थे। वे
इस्राएलियों के लिए भोजन-वस्तु, भेड़, बैल
और गधा भी नहीं छोड़ते थे। 5वे अपने पशुओं
और तम्बुओं के साथ चढ़ाई करते थे। वे टिड्डी
दल के समान असंख्य होते थे। उनके सैनिकों
और ऊंटों की गणना नहीं की जा सकती थी।
जब वे आते, तब देश को उजाड़ देते थे।
6मिद्यानियों के कारण इस्राएलियों की बड़ी
दुर्दशा हो गई। तब इस्राएलियों ने प्रभु की दुहाई
दी।

7 जब इस्राएलियों ने मिद्यानियों के कारण
प्रभु की दुहाई दी 8तब प्रभु ने इस्राएलियों के
पास एक नबी भेजा। नबी ने उनसे कहा,
'इस्राएल का प्रभु परमेश्वर यों कहता है: "मैं
तुम्हें मिस्र देश से लाया। मैंने ही तुम्हें दासत्व
के घर से बाहर निकाला। 9मैंने ही तुम्हें मिस्र
देश के निवासियों के हाथ से मुक्त किया। मैंने
तुम्हें उनके हाथ से मुक्त किया, जो तुम पर
अत्याचार करते थे। मैंने तुम्हारे सम्मुख से उन्हें
उनके देश से निकाल दिया और उनका वह देश
तुम्हें दे दिया। 10तब मैंने तुमसे यह कहा था :
मैं तुम्हारा प्रभु परमेश्वर हूं। तुम एमोरी जाति
के देवताओं की, जिनके देश में निवास करोगे,
पूजा मत करना। पर तुमने मेरी वाणी नहीं
सुनी।" '

11 प्रभु का दूत आया। वह ओप्राह नगर के
एक बांज वृक्ष के नीचे बैठ गया। यह
अबीएजरी गोत्र के योआश का वृक्ष था। उस
समय उसका पुत्र गिद्ओन अंगूर पेरने के
कोल्हू में गेहूं साफ कर रहा था कि गेहूं को
मिद्यानियों की दृष्टि से छिपाया जा सके। 12प्रभु
के दूत ने उसे दर्शन दिया। उसने गिद्ओन से
कहा, 'ओ महाबली योद्धा, प्रभु तेरे साथ है।'
13गिद्ओन ने उससे कहा, 'स्वामी, यदि प्रभु
हमारे साथ है तो ये संकट हम पर क्यों आए?
कहां गए प्रभु के आश्चर्यपूर्ण कार्य, जिनकी
चर्चा हमारे बड़े-बूढ़े लोग हमसे करते हैं? वे
हमसे कहते हैं : "निस्सन्देह, प्रभु ही हमें मिस्र
देश से लाया है।" पर अब प्रभु ने हमें त्याग
दिया, और मिद्यानियों के हाथ सौंप दिया है।'
14प्रभु उसकी ओर उन्मुख हुआ। उसने कहा,
'अपनी इसी शक्ति के आधार पर जा और
इस्राएलियों को मिद्यानियों के हाथ से मुक्त
कर। निस्सन्देह मैं तुझे भेज रहा हूं।' 15पर
गिद्ओन ने उससे कहा, 'स्वामी, मैं कैसे
इस्राएलियों को मुक्त कर सकता हूं? मेरा वंश
मनश्शे गोत्र में सबसे दुर्बल है। मैं अपने परिवार
में सबसे छोटा हूं।' 16प्रभु ने उससे कहा, 'मैं
तेरे साथ रहूंगा, और तू मिद्यानियों को इस
प्रकार मार डालेगा मानो वे केवल एक मनुष्य
हों!' 17गिद्ओन ने उससे कहा, 'यदि तेरी
कृपादृष्टि मुझपर हो तो मुझे कोई चिह्न दिखा,
जिससे यह प्रकट हो कि तू ही मुझ से वार्तालाप
कर रहा है। 18जब तक मैं लौटकर न आऊं, तब
तक तू यहाँ से मत जाना। मैं तेरे लिए अपनी भेंट
लाऊंगा और उसको तेरे सम्मुख परोसूंगा।' उसने
कहा, 'जब तक तू लौटकर नहीं आएगा तब
तक मैं यहीं ठहरूंगा।' 19अत: गिद्ओन घर में
आया। उसने बकरी का एक बच्चा काटा और
दस किलो आटे की बेखमीर रोटियाँ बनाईं।
तत्पश्चात् वह मांस को टोकरी में, और शोरबा
को एक बर्तन में रखकर बांज वृक्ष के नीचे
गया। जब वह निकट पहुंचा* 20तब परमेश्वर
के दूत ने उससे कहा, 'मांस और बेखमीर
रोटियाँ ले और उन्हें इस चट्टान पर रख दे।
तत्पश्चात् शोरबे को उस पर उण्डेल दे।'
गिद्ओन ने ऐसा ही किया। 21तब प्रभु के दूत
ने अपने हाथ की लाठी को मांस और बेखमीर
रोटी की ओर बढ़ाया, और लाठी के छोर से
उन्हें स्पर्श किया। उसी क्षण चट्टान से आग
निकली, और उसने मांस तथा बेखमीर रोटी को
भस्म कर दिया। प्रभु का दूत भी गिद्ओन की
दृष्टि से ओझल हो गया। 22तब गिद्ओन को
अनुभव हुआ कि वह प्रभु का दूत था। गिद्ओन

* अथवा, 'परोसने या चढ़ाने आया'।

6 : 11 यहो 17 : 2 **6 : 12** उत 16 : 7-13; शास 13 : 3; लू 1 : 11,28 **6 : 14** नि 3 : 10-12 **6 : 17** नि 4 : 1
6 :21 लेव 9 : 24; 2 इति 7 : 1

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ने कहा, 'हाय! हे मेरे स्वामी, हे प्रभु! मैंने प्रभु
के दूत को साक्षात देखा!' 23प्रभु ने उससे कहा,
'तेरा कल्याण हो! मत डर! तू मेरे दर्शन के
कारण नहीं मरेगा!' 24गिद्ओन ने वहाँ प्रभु के
लिए एक वेदी निर्मित की और उसका यह नाम
रखा: 'प्रभु कल्याण करता है'।* यह वेदी आज
भी ओप्राह नगर में स्थित है, जिस पर
अबीएजरी गोत्र का अधिकार है।

25 प्रभु ने उसी रात को गिद्ओन से कहा,
'अपने पिता के सेवकों में से दस सेवक और
सात-वर्षीय एक साँड़ ले+। अपने पिता के
बअल देवता की वेदी को तोड़ डाल, और वेदी
के समीप अशेराह देवी के लकड़ी के खंभों को
काट डाल। 26तत्पश्चात् अपने प्रभु परमेश्वर
के लिए यहाँ, चट्टान के उच्च शिखर पर
निर्धारित विधि के अनुसार एक वेदी बना।
उसके बाद सांड़ को अशेराह देवी के खंभों के
साथ, जिन्हें तू काटेगा, अग्नि-बलि के रूप में
अर्पित कर।' 27अत: गिद्ओन ने अपने सेवकों
में से दस सेवक लिये, और वैसा ही किया,
जैसा प्रभु ने उससे कहा था। वह अपने पिता
और नगर के लोगों से डरता था। इसलिए उसने
यह काम दिन में नहीं किया, वरन् रात में किया।

28 बड़े सबेरे नगर के लोग उठे। उन्होंने
देखा कि किसी ने बअल देवता की वेदी को
तोड़-फोड़ दिया है। वेदी के समीप अशेराह
देवी के खंभों को काट डाला है। नवनिर्मित
वेदी पर सांड़ की अग्नि-बलि चढ़ाई गई है।
29उन्होंने एक-दूसरे से पूछा 'यह कार्य किसने
किया है?' उन्होंने खोज-बीन, जांच-पड़ताल
की। तब उन्हें किसी ने बताया, 'योआश के पुत्र
गिद्ओन ने यह कार्य किया है।' 30अत: नगर
के लोगों ने योआश से कहा, 'अपने पुत्र को
बाहर निकालो। उसका वध किया जाएगा,
क्योंकि उसने बअल देवता की वेदी को तोड़ा
है। वेदी के समीप अशेराह देवी के खंभों को
काटा है।' 31योआश ने अपने आस-पास खड़े
हुए लोगों से कहा, 'क्या तुम बअल देवता के
लिए बहस ही करते रहोगे, या उसकी रक्षा भी
करोगे? जो व्यक्ति उसके लिए बहस करेगा,
उसे सबेरे तक मृत्यु दण्ड दे दिया जाएगा। यदि
बअल देवता ईश्वर है, तो वह अपने पक्ष में
स्वयं बहस करे; क्योंकि उसकी वेदी तोड़ी गई
है।' 32अत: उस दिन से गिद्ओन का नाम
यरूब-बअल पड़ा; अर्थात् 'बअल उससे स्वयं
बहस करे!' क्योंकि गिद्ओन ने उसकी वेदी
तोड़ी थी।

33 इस घटना के पश्चात् मिद्यानी, अमालेकी
और पूर्व के निवासी परस्पर एकत्र हुए। उन्होंने
यर्दन नदी पार की और यिज्रएल घाटी में पड़ाव
डाला। 34प्रभु का आत्मा गिद्ओन पर उतरा।
गिद्ओन ने नरसिंघा फूंका, और अबीएजर
गोत्र के पुरुष उसका अनुसरण करने के लिए
बुलाए गए। 35उसने समस्त मनश्शे गोत्र को दूत
भेजे, और वे उसका अनुसरण करने के लिए
बुलाए गए। उसने आशेर, जबूलून और नफ्ताली
कुलों को भी दूत भेजे। वे उससे भेंट करने को
गए।

36 तब गिद्ओन ने परमेश्वर से कहा, 'यदि
तू मेरे द्वारा इस्राएलियों को मुक्त करेगा, जैसा
तू ने कहा है, 37तो देख मैं ऊन की कतरन
खलियान में रखूंगा। यदि ओस केवल ऊन की
कतरन पर पड़ेगी, और शेष भूमि सूखी रहेगी
तो मुझे ज्ञात हो जाएगा कि तू मेरे द्वारा
इस्राएलियों को मुक्त करेगा, जैसा तूने कहा
है।' 38ऐसा ही हुआ। वह दूसरे दिन सबेरे उठा।
उसने ऊन की कतरन को दबाया और उसमें से
ओस निचोड़ी। तब उससे इतना पानी निकला
कि कटोरा भर गया। 39गिद्ओन ने परमेश्वर से
कहा, 'तेरा क्रोध मेरे प्रति न भड़क उठे!
कृपाकर, मुझे एक बार और बोलने की अनुमति
दे। मुझे एक बार और ऊन की कतरन को
परखने दे: इस बार केवल ऊन की कतरन सूखी
रहे, और सारी भूमि पर ओस गिरे।' 40परमेश्वर
ने उस रात ऐसा ही किया। केवल ऊन की
कतरन सूखी थी। पर सब भूमि पर ओस गिरी।

* अथवा "प्रभु शान्ति है।" + मूल में, 'अपने पिता के बछड़े को, अर्थात् सात-वर्षीय उस दूसरे सांड को ले।'

6 : 25 नि 34 : 13 6 : 31 1 रा 18 : 27

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गिद्ओन की विजय

7 तब यरूब-बअल (अर्थात् गिद्ओन)
और उसके साथ के सब लोग सबेरे उठे।
उन्होंने हरोद के जलाशय पर पड़ाव डाला।
मिद्यानियों का पड़ाव उनके उत्तर में, मोरे
पहाड़ी के पास, घाटी में था।
2 प्रभु ने गिद्ओन से कहा, 'तेरे साथ
आवश्यकता से अधिक लोग हैं। इस कारण मैं
मिद्यानियों को उनके हाथ में नहीं सौंप
सकता। अन्यथा इस्राएली डींग मारेंगे कि
उन्होंने अपने ही बल से स्वयं को मुक्त किया
है। 3अत: अब तू सेना में यह घोषणा कर :
"जो पुरुष युद्ध के कारण भयभीत और
आतंकित है, वह घर लौट आए।" ' गिद्ओन
ने उनको परखा*। तत्पश्चात् बाईस हजार पुरुष
लौट गए, और दस हजार शेष रहे।
4 प्रभु ने गिद्ओन से कहा, 'अब भी लोग
अधिक हैं। उन्हें जलाशय के पास, नीचे ले जा।
मैं वहाँ तेरे लिए उन्हें छांटूंगा। जिस पुरुष के
विषय में मैं तुझ से कहूंगा, "यह पुरुष तेरे साथ
जाएगा", तो वह तेरे साथ जाएगा। किन्तु जिस
पुरुष के विषय में मैं तुझसे कहूंगा, "यह
व्यक्ति तेरे साथ नहीं जाएगा", तो वह तेरे साथ
नहीं जाएगा।' 5अत: गिद्ओन इस्राएली लोगों
को जलाशय के पास, नीचे ले गया। प्रभु ने
गिद्ओन से कहा, 'जो पुरुष कुत्ते के समान
चपड़-चपड़ करते हुए जीभ से पानी पिएगा,
उसे तू अलग करना। ऐसा ही उन पुरुषों के साथ
करना, जो चुल्लु में पानी लेकर पानी पीने के
लिए घुटनों के बल झुकेंगे।' 6चपड़-चपड़ करते
हुए पानी पीने वाले पुरुषों की संख्या तीन सौ
थी। पर शेष पुरुष पानी पीने के लिए घुटनों के
बल झुके थे। 7प्रभु ने गिद्ओन से कहा, 'मैं इन
तीन सौ पुरुषों के द्वारा, चपड़-चपड़ कर पानी
पीनेवालों के द्वारा तुम्हें मुक्त करूंगा। तुम्हारे
हाथ में मिद्यानियों को सौंप दूंगा। शेष सब
पुरुष अपने-अपने घर लौट जाएँ।' 8अत:
गिद्ओन ने लोगों के हाथ से घड़े और नरसिंघे
ले लिये। उसने तीन सौ पुरुषों को रोक लिया,
और शेष इस्राएली लोगों को अपने-अपने तम्बू
में भेज दिया। मिद्यानियों का पड़ाव गिद्ओन
के पड़ाव के नीचे, घाटी में था।
9 प्रभु ने उसी रात गिद्ओन से कहा, 'उठ
और उतर कर मिद्यानियों के पड़ाव पर जा;
क्योंकि मैंने उसको तेरे हाथ में सौंप दिया है।
10यदि तू नीचे उतरने से डरता है तो अपने सेवक
पूराह को पड़ाव पर, नीचे ले जा। 11वहाँ तू उनकी
बातचीत सुनना कि वे क्या बातें करते हैं। तब
तेरे हाथ मजबूत होंगे, और तू नीचे उतर कर
उनके पड़ाव पर आक्रमण कर सकेगा।'
अतएव गिद्ओन अपने सेवक पूराह के साथ
पड़ाव के सशस्त्र सैनिकों की सीमा-चौकी में
गया। 12मिद्यानी, अमालेकी और पूर्व के निवासी
असंख्य टिड्डी दल के सदृश घाटी में पड़ाव डाले
हुए थे। उनके ऊंट, समुद्र तट के रेतकणों के
समान असंख्य थे। 13जब गिद्ओन वहां आया
तब एक सैनिक अपने साथी को स्वप्न सुना रहा
था। वह कह रहा था, 'मैंने एक सपना देखा।
जौ की एक रोटी हमारे मिद्यानी पड़ाव पर
लुढ़कती हुई आई। वह तम्बू तक आई। तब
उसने तम्बू को ऐसी टक्कर मारी कि वह गिर
पड़ा। उसने तम्बू को उलट दिया। तम्बू
उखड़कर भूमि पर गिर पड़ा।' 14उसके साथी
ने उत्तर दिया, 'यह रोटी, इस्राएली गिद्ओन
बेन-योआश की तलवार के अतिरिक्त
कुछ नहीं है। ईश्वर ने मिद्यानियों को, उसके
समस्त पड़ाव को गिद्ओन के हाथ में सौंप
दिया है।'
15 जब गिद्ओन ने स्वप्न की बातें और
उसका अर्थ सुना तब भूमि पर झुककर प्रभु की
वन्दना की। वह इस्राएली-पड़ाव को लौट
गया। उसने इस्राएलियों से कहा, 'उठो! प्रभु
ने मिद्यानी पड़ाव को तुम्हारे हाथ में सौंप दिया
है।' 16उसने तीन सौ पुरुषों को तीन दल में
विभक्त किया। प्रत्येक पुरुष के हाथ में एक
नरसिंघा और एक खाली घड़ा दिया। हर घड़े

* मूल में, 'और गिलआद पर्वत से चला जाए।'

7 : 2 व्य 8 : 17; 20 : 8; 1 कुर 1 : 29 **7 : 3** व्य 20 : 8 ; 1 मक 3 : 56

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

के भीतर एक मशाल थी। 17गिद्ओन ने उनसे
कहा, 'मुझे देखो। जैसा मैं करूंगा वैसा ही तुम
करना। जब मैं पड़ाव की सीमा-चौकी पर
पहुँचूंगा, तब जैसा मैं करूंगा वैसी ही तुम
करना। 18मैं और मेरे साथ के सब पुरुष अपने-
अपने नरसिंघे फूंकेंगे, तब तुम भी पड़ाव के
चारों ओर नरसिंघा फूंकना और यह जयघोष
करना, "प्रभु के लिए! गिद्ओन के लिए!" '
19 पड़ाव की सीमा-चौकी पर रात के दूसरे
पहर के आरम्भ में पहरेदार नियुक्त हुए ही थे
कि गिद्ओन और उसके साथ एक सौ पुरुष
वहाँ पहुँच गए। उन्होंने नरसिंघे फूंके और हाथ
में रखे घड़ों को फोड़ दिया। 20तीनों दलों ने
नरसिंघे फूंके और घड़ों को फोड़ दिया। उन्होंने
बाएं हाथ में मशाल ली और दाहिने हाथ में
फूंकने के लिए नरसिंघा। वे चिल्लाने लगे,
'प्रभु के लिए, गिद्ओन के लिए तलवार!'
21सब पुरुष पड़ाव के चारों ओर अपने-अपने
स्थान पर खड़े हो गए। सारा पड़ाव जागा।
मिद्यानी सैनिक इस्राएलियों को देखकर चिल्लाते
हुए भागने लगे। 22जब इस्राएलियों ने एक साथ
तीन सौ नरसिंघे फूंके तब प्रभु ने मिद्यानी
सैनिकों की तलवार उन्हीं के साथियों पर,
समस्त मिद्यानी पड़ाव पर चला दी। वे सरेराह
की ओर बेत-शिट्टाह तक और टब्बात के पास
आबेल-महोलाह की सीमा तक भाग गए।
23अत: नफ्ताली, आशेर, मनश्शे वंशीय समस्त
इस्राएली सैनिक बुलाए गए, और उन्होंने
मिद्यानियों का पीछा किया।
24 गिद्ओल ने समस्त एफ्रइम पहाड़ी प्रदेश
में दूतों के हाथ यह सन्देह भेजा, 'मिद्यानियों
का सामना करने के लिए पहाड़ी से नीचे उतरो,
और बेतबाराह तक के समस्त जलाशयों पर,
तथा यर्दन नदी पर अधिकार कर लो।' अत:
एफ्रइम गोत्र के सारे पुरुष गिद्ओन की पुकार
पर एकत्र हो गए। उन्होंने बेतबाराह तक समस्त
जलाशयों पर, तथा यर्दन नदी पर अधिकार कर
लिया। 25उन्होंने मिद्यानियों का पीछा कर
उनके दो सामन्तों, ओरेब और जएब को,
पकड़ लिया। तत्पश्चात् उन्होंने ओरेब की
चट्टान पर ओरेब को, और जएब नाम अंगूर
पेरने के कोल्हू में जएब का वध कर दिया। वे
ओरेब और जएब के सिर काटकर यर्दन नदी
के उस पार गिद्ओन के पास ले गए।

8 एफ्रइम गोत्र के पुरुषों ने गिद्ओन से
कहा, 'आपने हमारे साथ यह कैसा
व्यवहार किया? जब आप मिद्यानियों से युद्ध
करने गए तब आपने हमें क्यों नहीं बुलाया?'
उन्होंने जोरदार शब्दों में उसकी भर्त्सना की।
2गिद्ओन ने उनसे कहा, 'सच पूछो तो जो
कार्य तुमने किया है, उसकी तुलना में मैंने किया
ही क्या है? क्या अबीएजर गोत्र की अंगूर की
सारी फसल एफ्रइम गोत्र के बिनाई के लिए
छोड़ दिए गए अंगूर के दानों के बराबर होती
है? कदापि नहीं! 3परमेश्वर ने मिद्यानी सामन्तों,
ओरेब और जएब, को तुम्हारे हाथों में सौंपा।
तुम्हारे इस महान् कार्य की तुलना में मैं क्या कर
सका?' जब गिद्ओन ने ये शब्द कहे तब
उसके विरुद्ध उनका क्रोध शान्त हो गया।

मिद्यानी राजाओं का वध

4 गिद्ओन और उसके साथ तीन सौ पुरुष
यर्दन नदी के तट पर आए। उन्होंने नदी को पार
किया। वे थके-मांदे और भूखे थे। 5गिद्ओन
ने सूक्कोत नगर के निवासियों से कहा,
'कृपाकर, मेरे पीछे आने वाले इन लोगों को
कुछ भोजन दो। ये लोग थक गए हैं। मैं मिद्यानी
राजाओं, जेबह और सल्मून्ना, का पीछा कर रहा
हूं।' 6पर सूक्कोत नगर के नेताओं ने कहा,
'क्या जेबह और सल्मून्ना आपके हाथ में आ
गए हैं जिससे हम आपकी सेना को भोजन दें?'
7तब गिद्ओन ने कहा, 'ठीक! जब प्रभु जेबह
और सल्मून्ना को मेरे हाथ में सौंप देगा, तब मैं
लौटूंगा और निर्जन प्रदेश के कांटों और कंटीली
झाड़ियों के साथ तुम्हारे शरीर को रौंदूंगा।'
8गिद्ओन वहाँ से पनूएल नगर गया। उसने
पनूएल के निवासियों से ये ही बातें कहीं। पर
उन्होंने भी उसे वैसा ही उत्तर दिया जैसा
सूक्कोत के नेताओं ने उत्तर दिया था। 9अत: उसने

7 : 22 1 शम 14 : 20 7 : 25 भज 83 : 11; यश 10 : 26

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पनूएल के निवासियों से कहा, 'जब मैं
सकुशल लौटूंगा, तब इस मीनार को ध्वस्त कर
दूंगा।'
10 मिद्यानी राजा जेबह और सल्मून्ना अपनी
सेना के साथ कर्कोर नाम स्थान में थे। उनकी
सेना में पन्द्रह हजार सैनिक थे। ये पूर्व के
निवासियों की समस्त सेना में से बच गए थे।
युद्ध में एक लाख बीस हजार सैनिक मारे गए
थे। [11]गिद्‌ओन नोबह और योगबहाह नगरों
की पूर्व दिशा में कारवां के मार्ग से गया। उसने
मिद्यानी सेना पर आक्रमण कर दिया। उस
समय सेना निश्चिन्त थी। [12]जेबह और सल्मून्ना
भागे। गिद्‌ओन ने उनका पीछा किया और दोनों
मिद्यानी राजाओं को पकड़ लिया। उसने
समस्त सेना में भगदड़ मचा दी।
13 योआश का पुत्र गिद्‌ओन युद्ध के
पश्चात् हेरस की चढ़ाई के मार्ग से लौटा।
[14]उसने सूक्कोत नगर के एक युवक को पकड़ा
और उससे पूछताछ की। युवक ने गिद्‌ओन के
लिए सूक्कोत नगर के नेताओं और धर्मवृद्धों के
सभी नाम लिखे जो कुल सतहत्तर पुरुष थे।
[15]तब गिद्‌ओन सूक्कोत नगर के निवासियों के
पास आया। उसने उनसे कहा, 'देखो, ये हैं
जेबह और सल्मून्ना, जिनके विषय में तुमने मुझे
ताना मारा था, और कहा था, "क्या जेबह और
सल्मून्ना आपके हाथ में आ गए हैं, जिससे हम
आपके थके-मांदे सैनिकों को भोजन दें?" '
[16]गिद्‌ओन ने नगर के धर्मवृद्धों को पकड़ा।
उसने निर्जन प्रदेश के कांटे और कटीली
झाड़ियाँ लीं, और उनसे सूक्कोत नगर के
निवासियों को पाठ सिखाया। [17]उसने पनूएल
नगर की मीनार ध्वस्त कर दी और नगर के
पुरुषों का वध कर दिया।
18 गिद्‌ओन ने जेबह और सल्मून्ना से पूछा,
'जिन मनुष्यों का वध तुमने ताबोर नगर में
किया था, वे किसके समान थे?' उन्होंने उत्तर
दिया, 'वे तुम्हारे समान थे। उनमें प्रत्येक पुरुष
राजपुत्र के सदृश था।' [19]गिद्‌ओन ने कहा, 'वे
मेरे सगे भाई थे। प्रभु के जीवन की सौगंध! यदि
तुमने उन्हें जीवित छोड़ दिया होता तो मैं
तुम्हारा वध न करता।' [20]उसने अपने ज्येष्ठ पुत्र
येतर से कहा, 'उठ, और इनका वध कर!' पर
लड़के ने अपनी तलवार नहीं खींची। वह डर
गया था, क्योंकि वह उस समय लड़का ही था।
[21]तब जेबह और सल्मून्ना ने गिद्‌ओन से कहा,
'तुम स्वयं उठो और हमारा वध करो! क्योंकि
पुरुषों का काम करने के लिए पौरुष चाहिए!'
अतः गिद्‌ओन उठा, और उसने जेबह और
सल्मून्ना का वध कर दिया। उसने उनके ऊंटों
के गले से चन्द्रहार उतार लिये।

गिद्‌ओन के शेष कार्य

22 इस्राएलियों ने गिद्‌ओन से कहा, 'आपने
हमें मिद्यानियों के हाथ से मुक्त किया है।
इसलिए आप हम पर राज्य कीजिए, आपके
पश्चात् आपके पुत्र-पौत्र भी वंशानुगत राज्य
करें!' [23]गिद्‌ओन ने उनसे कहा, 'मैं तुम पर
राज्य नहीं करूंगा, और न मेरे पुत्र-पौत्र तुम पर
राज्य करेंगे। केवल प्रभु ही तुम पर राज्य
करेगा।' [24]गिद्‌ओन ने उनसे आगे कहा, 'मैं
तुमसे एक निवेदन करता हूं, प्रत्येक व्यक्ति
अपनी लूट में से कानों की बालियाँ मुझे दे।'
(मिद्यानी इश्माएल के वंशज थे। वे कानों में
सोने की बालियाँ पहनते थे।) [25]उन्होंने कहा,
'हम निश्चय ही अपनी लूट में से कानों की
बालियाँ देंगे।' उन्होंने एक चादर फैला दी। तब
प्रत्येक व्यक्ति ने अपनी लूट में से कानों की
बालियाँ निकालीं और उन्हें चादर पर डाल
दिया। [26]जो सोने की बालियाँ गिद्‌ओन ने प्राप्त
कीं उनमें प्रायः बीस किलो सोना था। इस सोने
के अतिरिक्त उसे चन्द्रहारों और कर्णफूलों का
सोना, मिद्यानी राजाओं के बैंगनीरंग के राजसी
वस्त्रों में जड़ित सोना, तथा मिद्यानी राजाओं के
ऊंटों के गले की जंजीरों का सोना प्राप्त हुआ।
[27]गिद्‌ओन ने इस सोने से 'एपोद' की मूर्ति
बनायी और उसको अपने नगर ओप्राह में खड़ा
कर दिया। फलतः सब इस्राएलियों ने वहाँ
एपोद का अनुसरण कर प्रभु के प्रति वेश्या के
सदृश विश्वासघात किया। गिद्‌ओन और

---

8 : 21 भज 83 :11 **8 : 23** 1 शम 8 : 12 **8 : 27** शा 17 : 5; 1 शम 14 : 18

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उसके परिवार के लिए एपोद एक फन्दा बन गया।

28 यों मिद्यानी जाति के लोग इस्राएलियों के वश में हो गए। उन्होंने अपना सिर फिर नहीं उठाया। इस प्रकार गिद्‌ओन के जीवन काल में इस्राएलियों के देश में चालीस वर्ष तक शान्ति रही।

गिद्‌ओन की मृत्यु

29 यरूब्बअल (अर्थात् योआश का पुत्र गिद्‌ओन) जाकर अपने घर में रहने लगा। [30]गिद्‌ओन के सत्तर जवान पुत्र थे। ये उसकी अपनी सन्तान थी, क्योंकि उसकी अनेक पत्नियां थीं। [31]शकेम नगर में रहनेवाली उसकी रखेल को एक पुत्र उत्पन्न हुआ। गिद्‌ओन ने उसका नाम अबीमेलक रखा। [32]तब योआश के पुत्र गिद्‌ओन का पकी आयु में देहान्त हो गया। उसे अबीएजर गोत्र के ओप्राह नगर में उसके पिता योआश की कबर में गाड़ा गया।

इस्राएलियों का पथ-भ्रष्ट होना

33 गिद्‌ओन की मृत्यु के पश्चात् इस्राएली लोग पुन: भटक गए। वे लौटकर बअल देवता का अनुसरण करने लगे और यों प्रभु के प्रति वेश्या के सदृश विश्वासघात करने लगे। उन्होंने बअल-बरीत को अपना ईश्वर स्वीकार कर लिया। [34]इस्राएली अपने प्रभु परमेश्वर को भूल गए, जिसने उन्हें उनके चारों ओर के शत्रुओं के हाथ से मुक्त किया था। [35]जो भले कार्य यरूब्बअल (अर्थात् गिद्‌ओन) ने इस्राएलियों के हितार्थ किए थे, उसके बदले में उन्होंने यरूब्बअल के परिवार के साथ प्रेमपूर्ण व्यवहार नहीं किया।

अबीमेलक का राजा बनना

9 यरूब्बअल का पुत्र अबीमेलक अपने मामाओं के पास शकेम नगर को गया। वह अपने मामाओं तथा नाना के गोत्र के सब लोगों से बोला, [2]'कृपया, आप शकेम नगर के सब प्रमुख नागरिकों से यह प्रश्न पूछिए : "कौन-सी बात तुम्हारे लिए लाभदायक है : यरूब्बअल के सत्तर पुत्रों का तुम पर शासन करना अथवा एक पुत्र का शासन करना?" आप यह भी स्मरण रखिए कि मैं आप ही का रक्त और मांस हूं।' [3]उसके मामाओं ने उसकी ओर से ये बातें शकेम नगर के सब प्रमुख नागरिकों से पूछीं। प्रमुख नागरिकों ने अबीमेलक का अनुसरण करने का निश्चय किया। उन्होंने कहा, 'अबीमेलक हमारा ही भाई है।' [4]अत: प्रमुख नागरिकों ने अबीमेलक को बअल-बरीत के मन्दिर से चांदी के सत्तर सिक्के दिए। उसने इन सिक्कों से निकम्मों और गुण्डों को भाड़े पर लिया। ये उसके पीछे-पीछे गए। [5]वह अपने पिता के घर, ओप्राह नगर को गया। उसने वहाँ अपने भाइयों, यरूब्बअल के सत्तर पुत्रों, का एक ही पत्थर पर वध कर दिया। किन्तु यरूब्बअल का सबसे छोटा पुत्र योताम बच गया, क्योंकि वह छिप गया था। [6]तत्पश्चात् शकेम नगर तथा बेत-मिल्लो नगर के सब प्रमुख नागरिक एकत्र हुए। वे शकेम के बड़े पत्थर के निकट बांज वृक्ष के पास गए, और उन्होंने अबीमेलक को राजा घोषित कर दिया।

वृक्षों का दृष्टांत

7 जब यह समाचार योताम को मिला तब वह गरिज्जीम पर्वत पर गया। वह शिखर पर खड़ा हुआ। उसने उच्च स्वर में पुकार कर उनसे कहा, 'ओ शकेम नगर के प्रमुख नागरिको! मेरी बात सुनो, जिससे परमेश्वर भी तुम्हारी बात सुने। [8]एक बार पेड़ अपने लिए राजा अभिषिक्त करने के लिए निकले। उन्होंने जैतून के वृक्ष से कहा, "हम पर राज्य कीजिए।" [9]परन्तु जैतून के वृक्ष ने उनसे कहा, "क्या मैं अपने तेल को त्याग दूं जिससे देवताओं और मनुष्यों का सम्मान किया जाता है, और जाकर पेड़ों पर राज्य करूं? कदापि नहीं।" [10]तब उन्होंने अंजीर के वृक्ष से कहा, "आप आइए, और हम पर राज्य कीजिए।" [11]किन्तु अंजीर के वृक्ष ने उनसे कहा, "क्या मैं अपनी मिठास को, अपने उत्तम फ़लों को त्याग दूं और जाकर पेड़ों पर राज्य करूं? कदापि नहीं।" [12]इसके बाद पेड़ों ने अंगूर की बेल से कहा, "आप आइए, और

9 : 5 2 रा 10 : 17; मत 2 : 16,20 **9 : 8** 2 रा 14 : 9 **9 : 9** भज 104 : 15

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हम पर राज्य कीजिए।'' 13अंगूर की बेल ने उनसे कहा, ''क्या मैं अपने रस को त्याग दूं जो देवताओं और मनुष्यों को आनन्द देता है, और जाकर पेड़ों पर राज्य करूं? कदापि नहीं।'' 14अन्त में सब पेड़ों ने कांटेदार झाड़ी से कहा, ''तू आ, और हम पर राज्य कर।'' 15कांटेदार झाड़ी ने उनसे कहा, ''यदि तुम सचमुच मुझे अपने ऊपर राजा अभिषिक्त कर रहे हो तो आओ, मेरी छाया में आश्रय लो। यदि नहीं, तो मुझ कांटेदार झाड़ी से आग निकले और लबानोन प्रदेश के देवदार वृक्षों को भस्म कर दे।''

16 'अब यदि तुमने अबीमेलक को सच्चाई और निष्कपट हृदय से राजा अभिषिक्त किया है, यदि तुमने यरूब्बअल के परिवार से सद्व्यवहार किया है, यदि तुमने उसके कामों के अनुरूप उसके साथ व्यवहार किया है, (17मेरे पिता ने तुम्हारे लिए युद्ध किया था, अपने प्राण संकट में डाला था, और तुम्हें मिद्यानी जाति के हाथ से मुक्त किया था। 18पर आज, तुमने मेरे पिता के परिवार के विरुद्ध विद्रोह कर दिया है। उसके सत्तर पुत्रों का एक पत्थर पर वध कर दिया; और उसकी गुलाम रखेल के पुत्र अबीमेलक को शकेम नगर के प्रमुख नागरिकों के ऊपर राजा अभिषिक्त किया; क्योंकि वह तुम्हारा भाई है।) 19यदि तुमने आज यरूब्बअल और उसके परिवार के साथ सच्चाई और निष्कपट हृदय से व्यवहार किया है, तो अबीमेलक के साथ आनन्द मनाओ; और वह भी तुम्हारे साथ आनन्द करे। 20यदि नहीं, तो अबीमेलक से आग निकले और शकेम और बेत-मिल्लो के प्रमुख नागरिकों को भस्म कर दे। शकेम और बेत-मिल्लो के प्रमुख नागरिकों से आग निकले और अबीमेलक को भस्म कर दे।' 21यह कहकर योताम भागा, और वह बएर नगर की ओर चला गया। वह अपने भाई अबीमेलक के भय के कारण वहीं रहने लगा।

अबीमेलक का पतन

22 अबीमेलक ने तीन वर्ष तक इस्राएलियों पर शासन किया। 23तब परमेश्वर ने अबीमेलक और शकेम नगर के प्रमुख नागरिकों के मध्य दुर्भावना की आत्मा भेजी। अत: शकेम नगर के प्रमुख नागरिक अबीमेलक से विश्वासघात करने लगे। 24 इसका यह कारण था कि यरूब्बअल के सत्तर पुत्रों के साथ की गई हिंसा का फल अवश्य मिलना चाहिए। हत्या का दोष उनके भाई अबीमेलक के सिर पर, जिसने उनका वध किया था, तथा शकेम नगर के लोगों पर था, जिन्होंने अबीमेलक के भाइयों का वध करने में उसके हाथ मजबूत किए थे। 25शकेम नगर के प्रमुख नागरिकों ने अबीमेलक को तंग करने के लिए पहाड़ की चोटियों पर छापामारों को बिठा दिया। छापामार उस मार्ग से आने-जानेवालों को लूटते थे। यह बात अबीमेलक को बताई गई।

26 तब एबद का पुत्र गअल अपने भाई-बन्धुओं के साथ शकेम नगर में आया। शकेम नगर के प्रमुख नागरिकों ने उस पर भरोसा किया। 27वे खेतों में गए। उन्होंने अंगूर के उद्यानों के अंगूर तोड़े, उन्हें रौंद कर उनका रस निकाला और उत्सव मनाया। वे अपने देवता के मन्दिर में गए। उन्होंने वहां खाया-पीया, और अबीमेलक की निन्दा की। 28एबद के पुत्र गअल ने कहा, 'अबीमेलक कौन है? शकेम के निवासी हम कौन हैं, जो अबीमेलक की सेवा करें? क्या यह सच नहीं है कि यरूब्बअल के पुत्र और उसके मुख्य शासनाधिकारी जबूल ने शकेम के नगर-पिता हमोर के लोगों की सेवा की थी? तब हम क्यों उसकी सेवा करें? 29यदि ये लोग मेरे हाथ में होते तो मैं अबीमेलक से पिण्ड छुड़ा लेता। मैं अबीमेलक से कहता, ''अपने सैनिकों की संख्या बढ़ा ले, और नगर से बाहर निकल!'' '

30 जब नगर के शासक जबूल ने एबद के पुत्र गअल के ये शब्द सुने, तब उसका क्रोध भड़क उठा। 31उसने अबीमेलक के पास अरुमाह नगर में दूत भेजे। उसने कहा, 'देखिए गअल बेन-एबद और उसके भाई-बन्धु शकेम

---

9 : 13 नीति 31 : 6; सम 9 : 7; प्रव 31 : 27 **9 : 23** 1 शम 16 : 14

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नगर में आए हुए हैं। वे नगर को आपके विरुद्ध
भड़का रहे हैं। [32]अब आप और आपके साथ
के लोग रात को आएँ और खेतों में घात
लगाकर बैठ जाएं। [33]तत्पश्चात् सबेरे, सूर्योदय
के समय उठिए और नगर पर धावा बोल
दीजिए। जब गअल और उसके साथ के लोग
आपका सामना करने को बाहर निकलेंगे तब
स्थिति के अनुसार आप उनके साथ व्यवहार
कीजिए।'

34 अत: अबीमेलक और उसके साथ के
लोग रात को उठे और चार दलों में विभक्त हो,
शकेम नगर के विरुद्ध घात लगाकर बैठ गए।
[35]एबद का पुत्र गअल बाहर निकला। वह नगर
के प्रवेश-द्वार पर खड़ा हो गया। अबीमेलक
और उसके साथ के लोग घात के स्थान से उठे।
[36]जब गअल ने उन लोगों को देखा तब उसने
जबूल से कहा, 'देखो, लोग पहाड़ की चोटी
से नीचे उतर रहे हैं।' जबूल ने उससे कहा, 'यह
पहाड़ियों की छाया है, जो तुम्हें मनुष्यों के
समान दिखाई दे रही है।' [37]गअल ने फिर कहा,
'देखो, लोग पहाड़ी-चौक के मध्य भाग+ से
नीचे आ रहे हैं। एक दल शकुन बांज वृक्ष के
मार्ग से आ रहा है।' [38]तब जबूल ने उससे कहा,
'अब तेरा वह मुंह कहां है, जिससे तूने कहा था,
''अबीमेलक कौन है कि हम उसकी सेवा
करें?'' क्या तूने इन्हीं लोगों को तुच्छ नहीं
समझा था? अब बाहर निकल और इन से युद्ध
कर।' [39]गअल शकेम नगर के प्रमुख नागरिकों
के आगे-आगे नगर से बाहर निकला, और
उसने अबीमेलक से युद्ध किया। [40]परन्तु
अबीमेलक ने उसका पीछा किया। वह उसके
सम्मुख से भागा। उसके अनेक साथी घायल
होकर नगर के प्रवेश-द्वार पर गिर पड़े। [41]तब
अबीमेलक अरुमाह नगर को लौट गया।*
जबूल ने गअल और उसके भाई-बन्धुओं को
शकेम नगर से निकाल दिया। उसने उन्हें वहाँ
रहने नहीं दिया।

42 लोग दूसरे दिन खेतों में गए। यह बात
अबीमेलक को बताई गई। [43]अबीमेलक ने अपने
सैनिक लिये। उसने उन्हें तीन दल में विभाजित
किया, और वह खेतों में घात लगाकर बैठ
गया। उसने देखा कि लोग नगर से बाहर निकल
रहे हैं। वह उठा और उसने उनको मार डाला।
[44]अबीमेलक और उसके साथ के दल ने धावा
बोल दिया। वे नगर के प्रवेश-द्वार पर खड़े हो
गए। शेष दो दलों ने उन लोगों पर धावा बोल
दिया, जो खेतों में थे और उन्हें मार डाला।
[45]अबीमेलक नगर के रहनेवालों से दिनभर
युद्ध करता रहा। उसने नगर पर अधिकार कर
लिया। जो लोग नगर में थे, उसने उनका वध
कर दिया। उसने नगर को खण्डहर बना दिया।
उसने भूमि को अनुपजाऊ करने के लिए उस
पर नमक बिखेर दिया।

46 जब मिग्दल-शकेम नगर के सब प्रमुख
नागरिकों ने यह सुना, तब वे एलबरीत मन्दिर
के तहखानों में घुस गए। [47]अबीमेलक को यह
बात बताई गई कि मिग्दल-शकेम नगर के सब
प्रमुख नागरिक एकत्र हुए हैं। [48]अत: अबीमेलक
अपने सब लोगों के साथ सल्मोन पर्वत पर
चढ़ा। उसने अपने हाथ में एक कुल्हाड़ी ली,
और पेड़ की एक शाखा काटी। अबीमेलक ने
उसको उठाया, और अपने कन्धे पर रखा। तब
उसने अपने साथ के लोगों से कहा, ''जैसा
तुमने मुझे करते हुए देखा है, वैसा ही तुम
अविलम्ब करो।' [49]अत: प्रत्येक व्यक्ति ने भी
एक-एक शाखा काटी, और वे सब अबीमेलक
के पीछे गए। उन्होंने तहखाने के ऊपर शाखाओं
का ढेर लगा दिया। तत्पश्चात् उन्होंने तहखाने
में आग लगा दी। इस प्रकार मिग्दल-शकेम
नगर के सब मनुष्य, प्राय: एक हजार स्त्री-
पुरुष मर गए।

50 इसके बाद अबीमेलक तेबेस नगर को
गया। उसने उसको घेर लिया, और उस पर
अधिकार कर लिया। [51]किन्तु नगर के मध्य
एक सुदृढ़ मीनार थी। नगर के सब स्त्री-पुरुष,
प्रमुख नागरिक भागकर वहाँ छिप गए। वे
मीनार की छत पर चढ़ गए। [52]अबीमेलक मीनार
के पास आया। उसने वहाँ युद्ध किया। वह

+ शब्दश:, 'देश की नाभी' * मूल में ''रहने लगा।''

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मीनार में आग लगाने के लिए उसके द्वार के समीप आया। [53]तभी एक स्त्री ने अबीमेलक के सिर पर चक्की का पाट फेंका, और उसकी खोपड़ी को पीस दिया। [54]अबीमेलक ने अपने शस्त्र-वाहक युवक को अविलम्ब बुलाया, और उससे कहा, 'ऐसा न हो कि लोग मेरे विषय में यह कहें, ''अबीमेलक का वध एक स्त्री ने किया'', इसलिए तू अपनी तलवार खींच और मुझे मार डाल।' तब अबीमेलक के शस्त्र-वाहक युवक ने उसके शरीर में तलवार बेध दी, और अबीमेलक मर गया।

55 जब इस्राएली लोगों ने देखा कि अबीमेलक मर गया तब वे अपने-अपने स्थान को लौट गए। [56]इस प्रकार परमेश्वर ने अबीमेलक की बुराई का बदला लिया, जो उसने अपने सत्तर भाइयों का वध करके अपने पिता के प्रति की थी। [57]इसके अतिरिक्त जो बुराई शकेम नगर के लोगों ने की थी, उसको भी परमेश्वर ने उन्हीं के सिर लौटा दिया! यरूब्बअल के पुत्र योताम का श्राप भी उन पर पड़ा।

शासक तोला

10 अबीमेलक के पश्चात् इस्राएलियों को मुक्त करने के लिए तोला उत्पन्न हुआ। वह पूआ का पुत्र और दोदो का पौत्र था। वह इस्साकार कुल का था। वह एफ्रइम पहाड़ी प्रदेश के शामीर नगर में रहता था। [2]उसने तेईस वर्ष तक इस्राएलियों पर शासन किया। तत्पश्चात् उसकी मृत्यु हो गई। उसे शामीर नगर में गाड़ा गया।

शासक याईर

3 तोला के पश्चात् याईर उत्पन्न हुआ। वह गिलआद प्रदेश का रहने वाला था। उसने बाईस वर्ष तक इस्राएलियों पर शासन किया। [4]उसके तीस पुत्र थे, जो तीस गधों पर सवारी करते थे। उसके पुत्रों के पास तीस नगर थे, जिन्हें आज भी हव्बोत-याईर कहा जाता है। ये नगर गिलआद प्रदेश में हैं। [5]याईर की मृत्यु हुई। उसे कामोन नगर में गाड़ा गया।

इस्राएलियों पर अत्याचार

6 इस्राएलियों ने फिर वही कार्य किया जो प्रभु की दृष्टि में बुरा था। इस्राएली लोग सीरिया, सीदोन, मोआब, अम्मोन, और पलिश्ती जातियों के देवी-देवताओं, बअल तथा अशेराह की पूजा-आराधना करने लगे। उन्होंने प्रभु को त्याग दिया, और उसकी आराधना नहीं की। [7]अत: प्रभु का क्रोध इस्राएलियों के प्रति भड़क उठा। उसने उन्हें पलिश्ती तथा अम्मोनी जातियों के हाथ में बेच दिया। [8]पलिश्ती और अम्मोनी जातियाँ उस वर्ष से इस्राएलियों को रौंदने और उन पर अत्याचार करने लगीं। उन्होंने यर्दन नदी के उस पार गिलआद प्रदेश के एमोरी जाति के प्रदेश में रहनेवाले समस्त इस्राएलियों पर अठारह वर्ष तक अत्याचार किया। [9]अम्मोनी जाति ने यर्दन नदी पार कर यहूदा, और बिन्यामिन कुल के, तथा एफ्रइम गोत्र के लोगों से युद्ध किया। अत: इस्राएली बड़े संकट में थे।

10 तब इस्राएलियों ने प्रभु की दुहाई दी। उन्होंने कहा, 'हे प्रभु, हमने तेरे विरुद्ध पाप किया; क्योंकि हमने तुझे, अपने परमेश्वर को, त्याग दिया और बअल देवता की पूजा की।' [11]प्रभु ने इस्राएली लोगों को उत्तर दिया, 'क्या मैंने तुम्हें मिस्री, एमोरी, अम्मोनी और पलिश्ती जातियों के हाथ से मुक्त नहीं किया था? [12]जब सीदोनी, अमालेकी और माओनी* जातियों ने तुम पर अत्याचार किया और तुमने मेरी दुहाई दी, तब मैंने तुम्हें उनके हाथ से मुक्त नहीं किया था? [13]फिर भी तुमने मुझे त्याग कर अन्य देवताओं की पूजा की। इसलिए अब मैं तुम्हें फिर मुक्त नहीं करूँगा। [14]जाओ, जिन देवताओं को तुमने चुना है, उनकी दुहाई दो। वे ही इस संकट के समय तुम्हें मुक्त करें।' [15]इस्राएलियों ने प्रभु से कहा, 'हमने पाप किया है! अब जो कार्य तेरी दृष्टि में उचित हो वही हमारे साथ कर। हम विनती करते हैं, कृपया, आज हमारा

* अर्थात् 'मिद्यानी'

9 : 54 1 शम 31 : 4 **10 : 14** यिर 11 : 12

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उद्धार कर।' [16]इस्राएलियों ने अपने मध्य में
स्थापित अन्य देशों के देवी-देवताओं की
मूर्तियां हटा दीं, और वे प्रभु की आराधना करने
लगे। प्रभु का प्राण इस्राएलियों के कष्ट के
कारण अधीर हुआ!
17 अम्मोनी लोगों ने सेना संगठित की।
उन्होंने गिलआद प्रदेश में पड़ाव डाला।
इस्राएली एकत्र हुए। उन्होंने मिस्पाह नगर में
पड़ाव डाला। [18]गिलआद के नेताओं ने परस्पर
कहा, 'कौन पुरुष अम्मोनी जाति से युद्ध करना
आरम्भ करेगा? वही पुरुष गिलआद के
निवासियों का नेता होगा!'

यिफ्ताह का इस्राएलियों को मुक्त करना

11 गिलआद प्रदेश का रहनेवाला यिफ्ताह
एक महाबली योद्धा था। लेकिन वह
वेश्या का पुत्र था। यिफ्ताह का पिता गिलआद
था। [2]गिलआद को अपनी पत्नी से भी अनेक
पुत्र हुए। जब उसकी पत्नी के ये पुत्र बड़े हुए,
तब उन्होंने यिफ्ताह को निकाल दिया। उन्होंने
उससे कहा, 'तू हमारे पितृकुल में उत्तराधिकारी
नहीं बन सकता; क्योंकि तू किसी दूसरी स्त्री
का पुत्र है।' [3]अतः यिफ्ताह अपने भाइयों के
पास से भाग गया, और टोब प्रदेश में रहने
लगा। यिफ्ताह के पास गुंडे एकत्र हो गए। वे
उसके साथ छापा मारते थे।
4 कुछ समय के पश्चात् अम्मोनी जाति ने
इस्राएलियों के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया। [5]जब
अम्मोनियों ने इस्राएलियों के विरुद्ध युद्ध छेड़ा,
तब गिलआद प्रदेश के धर्मवृद्ध यिफ्ताह को
टोब प्रदेश से लाने के लिए वहाँ गए। [6]उन्होंने
यिफ्ताह से कहा, 'चल; हमारा सेनानायक बन,
जिससे हम अम्मोनी जाति से युद्ध कर सकें।'
[7]यिफ्ताह गिलआद प्रदेश के धर्मवृद्धों से बोला,
'क्या आप मुझ से घृणा नहीं करते? क्या आपने
ही मुझे पितृकुल से बाहर नहीं निकाला? अब,
जब आप संकट में हैं, तब क्यों मेरे पास आए?'
[8]गिलआद प्रदेश के धर्मवृद्धों ने यिफ्ताह से
कहा, 'इसीलिए तो हम तेरे पास आए हैं। हमारे
साथ चल। अम्मोनी जाति से युद्ध कर। केवल
हमारा नेता नहीं वरन् गिलआद प्रदेश के समस्त
निवासियों का नेता बन।' [9]यिफ्ताह ने गिलआद
प्रदेश के धर्मवृद्धों से कहा, 'मेरी यह शर्त है:
यदि आप मुझे अम्मोनियों से युद्ध करने के लिए
वापस ले जाएंगे, और प्रभु उन्हें मुझे सौंप देगा,
तो मैं आप सबका नेता होऊंगा।' [10]गिलआद
प्रदेश के धर्मवृद्धों ने यिफ्ताह से कहा, 'प्रभु
हमारी इस बात का साक्षी होगा। निश्चय हम
तेरी शर्त के अनुसार कार्य करेंगे।' [11] अतः
यिफ्ताह गिलआद प्रदेश के धर्मवृद्धों के साथ
गया। लोगों ने उसे अपना नेता और सेनानायक
नियुक्त किया। यिफ्ताह ने मिस्पाह नगर में प्रभु
के सम्मुख सब शर्तें दुहरा दीं।
12 यिफ्ताह ने अम्मोनियो के राजा के पास
दूतों के हाथ से यह सन्देश भेजा: 'इस्राएलियों
ने क्या अपराध किया है कि आप मेरे देश से
युद्ध करने के लिए आए हैं?' [13]अम्मोनियो के
राजा ने यिफ्ताह के दूतों को उत्तर दिया, 'जब
इस्राएली मिस्र देश से आ रहे थे, तब उन्होंने
मेरा देश, अर्नोन नदी से यब्बोक नदी और यर्दन
नदी तक का भूमि-क्षेत्र, छीन लिया था। अब
यह भूमि-क्षेत्र मुझे शान्तिपूर्वक लौटा दो।'
[14]यिफ्ताह ने अम्मोनियों के राजा के पास दूतों
को फिर भेजा। [15]उसने राजा को यह सन्देश
भेजा: 'यिफ्ताह यों कहता है: इस्राएलियों ने
न तो मोआब देश और न अम्मोनियो का देश
छीना था। [16]परन्तु जब वे मिस्र देश से चले, तब
निर्जन प्रदेश से होकर लालसागर तक गए, और
कादेश नगर में आए। [17]तब इस्राएलियों ने एदोम
के राजा के पास दूतों के हाथ यह सन्देश
भेजा: "कृपया, हमें अपने देश में होकर जाने
दीजिए।" परन्तु एदोम के राजा ने हमारी बात
नहीं सुनी। इस्राएलियों ने मोआब के राजा के
पास भी सन्देश भेजा। किन्तु उसने स्वीकृति
नहीं दी। इसलिए इस्राएली कादेश नगर में ठहर
गए। [18]इसके बाद इस्राएली निर्जन प्रदेश में
आगे बढ़े। वे एदोम देश तथा मोआब देश की
परिक्रमा करते हुए मोआब देश की पूर्व दिशा
में पहुँचे। उन्होंने अर्नोन नदी की दूसरी ओर

11 : 17 गण 20 : 14 11 : 18 गण 21 : 4 11 : 19 गण 21 : 21; व्य 2 : 26

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पड़ाव डाला। उन्होंने मोआब देश की सीमा में प्रवेश नहीं किया था, क्योंकि अर्नोन नदी मोआब देश की सीमा थी। [19]तत्पश्चात् इस्राएलियों ने एमोरी जाति के राजा तथा हेश्बोन नगर के राजा सीहोन को दूतों के हाथ सन्देश भेजा। उन्होंने कहा, "हम आपके देश से होकर अपने गन्तव्य स्थान पर जाना चाहते हैं। आप हमें जाने दीजिए।" [20]किन्तु सीहोन ने इस्राएलियों को अपनी राज्य-सीमा से होकर जाने नहीं दिया। उसने उनका विश्वास नहीं किया। सीहोन ने अपने सैनिकों को एकत्र किया, और याहस नगर में पड़ाव डाला। उसने इस्राएलियों से युद्ध किया। [21]किन्तु इस्राएलियों के प्रभु परमेश्वर ने सीहोन तथा उसके समस्त सैनिकों को इस्राएलियों के हाथ में सौंप दिया। इस्राएलियों ने उन्हें पराजित कर दिया। उन्होंने एमोरी जाति के देश पर अधिकार कर लिया, जो उस क्षेत्र में निवास करती थी। [22]इस प्रकार इस्राएलियों ने एमोरी जाति के समस्त भूमि-क्षेत्र पर अर्नोन नदी से यब्बोक नदी तक, निर्जन प्रदेश से यर्दन नदी तक, अधिकार कर लिया। [23]इस्राएलियों के प्रभु परमेश्वर ने अपने निज लोग इस्राएलियों के सम्मुख से एमोरी जाति को निकाल दिया। अब क्या आप हमें—इस्राएलियों को— निकाल सकेंगे? [24]जो भूमि आपका देवता कमोश आपको देता है, क्या आपका अधिकार उस भूमि पर नहीं है? इसी प्रकार जो भूमि हमारा प्रभु परमेश्वर अन्य जातियों को हमारे सम्मुख से निकालकर हमें देता है, हम उस भूमि पर अधिकार करेंगे। [25]क्या आप मोआब के राजा, सिप्पोर के पुत्र बालाक से श्रेष्ठ हैं? क्या उसने इस्राएलियों के अधिकारों को कभी चुनौती दी थी? क्या उसने इस्राएलियों से कभी युद्ध किया था? [26]जब इस्राएली तीन सौ वर्ष तक हेश्बोन नगर और उसके गांवों में, अरोएर नगर और उसके गांवों में तथा अर्नोन नदी के किनारे के समस्त नगरों में निवास करते रहे, तब आपने इस अवधि में उन नगरों और गांवों को मुक्त क्यों नहीं किया? [27]अत: मैंने आपके प्रति पाप नहीं किया, वरन् आपने युद्ध छेड़ कर मेरे प्रति बुरा व्यवहार किया है। प्रभु, जो न्यायाधीश है, आज इस्राएलियों और अम्मोनियों के मध्य न्याय करे।' [28]किन्तु जो सन्देश यिफ्ताह ने अम्मोनी जाति के राजा को भेजा, उसने उस पर ध्यान नहीं दिया।

29 प्रभु का आत्मा यिफ्ताह पर उतरा। यिफ्ताह ने गिलआद प्रदेश और मनश्शे की राज्य-सीमा पार की। तत्पश्चात् वह गिलआद प्रदेश के मिस्पाह नगर में आया। उसने गिलआद के मिस्पाह नगर से अम्मोनियों की सीमा पार की। [30]यिफ्ताह ने प्रभु से यह मन्नत मानी। उसने कहा, 'यदि तू अम्मोनियों को मेरे हाथ में सौंप देगा, [31]तो जब मैं अम्मोनियों के पास से सकुशल लौटूंगा तब जो मुझ से भेंट करने के लिए घर के द्वार से सब से पहले बाहर निकलेगा, वह प्रभु का होगा। मैं उसे अग्नि-बलि के रूप में अर्पित करूंगा।' [32]तब यिफ्ताह अम्मोनियों से युद्ध करने के लिए उनकी सीमा में गया। प्रभु ने अम्मोनियों को उसके हाथ में सौंप दिया। [33]यिफ्ताह ने उन्हें अरोएर नगर से मिन्नीत नगर की सीमा तक बीस नगरों में, तथा आबेल-करामीम तक मारा, उनका भयंकर संहार किया। इस प्रकार अम्मोनी लोग इस्राएलियों के वश में हो गए।

यिफ्ताह की मन्नत

34 यिफ्ताह अपने घर मिस्पाह में आया। उसकी पुत्री उसका स्वागत करने के लिए बाहर निकली। वह खंजरी की ताल पर नाच रही थी। वह यिफ्ताह की इकलौती बेटी थी। इसके अतिरिक्त उसका न पुत्र था, न पुत्री। [35]जब यिफ्ताह ने उसे देखा तब शोक प्रकट करने के लिए उसने अपने वस्त्र फाड़े और यह कहा, 'आह! मेरी बेटी, तूने मेरी कमर तोड़ दी! तू भी मेरी महा विपत्ति का कारण बन गई! मैंने प्रभु को वचन दिया है, और मैं उस वचन को वापस नहीं ले सकता।' [36]यिफ्ताह की पुत्री ने

---

11 : 25 गण 22 : 2 **11 : 31** लेव 27 : 2; मी 6 : 7; उत 22 : 12 **11 : 34** नि 15 : 20; 1 शम 18 : 6
11 : 36 गण 30 : 2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उससे कहा, 'पिताजी, जो वचन आपने प्रभु को दिया है, जो शब्द आपके मुंह से निकले हैं, उनके अनुसार आप मेरे साथ कीजिए; क्योंकि प्रभु ने अम्मोनी शत्रुओं से आपका प्रतिशोध लिया है।'
37उसने अपने पिता से कहा, 'केवल मेरी यह अन्तिम इच्छा पूरी की जाए: मुझे दो महीने तक जीवित रहने दीजिए जिससे मैं अपनी सहेलियों के साथ पहाड़ों पर जाकर भ्रमण करूं, और अपने कुंआरेपन के लिए विलाप करूं।'
38यिफ्ताह ने कहा, 'जाओ!' उसने अपनी पुत्री को दो महीने के लिए भेज दिया। वह अपनी सहेलियों के साथ चली गई। उसने अपने कुंआरेपन के लिए पहाड़ों पर विलाप किया।
39दो महीने के अन्त में वह अपने पिता के पास लौट आई। जो मन्नत उसके पिता ने मानी थी उसके अनुसार उसने उसके साथ किया। उसकी पुत्री ने पुरुष के साथ कभी सम्भोग नहीं किया था। अतः इस्राएली समाज में यह प्रथा प्रचलित है :
40इस्राएली कन्याएँ बाहर जाकर गिलआद निवासी यिफ्ताह की पुत्री के लिए वर्ष में चार दिन विलाप करती हैं।

एफ्रइम गोत्र से विवाद

12 एफ्रइम गोत्र के पुरुषों ने सेना संगठित की। वे यर्दन नदी पार कर सफोन नगर में आए। उन्होंने यिफ्ताह से कहा, 'जब तुमने अम्मोनियो से युद्ध करने के लिए नदी पार की, तब अपने साथ चलने के लिए हमें क्यों नहीं बुलाया? हम तुम्हें और तुम्हारे घर को आग में जला देंगे।'
2यिफ्ताह ने उनसे कहा, 'जब मेरा और मेरे सम्बन्धियों का अम्मोनियो से बड़ा झगड़ा हुआ और मैंने सहायता के लिए तुम्हारी दुहाई दी, तब तुमने हमें अम्मोनियों के हाथ से मुक्त नहीं किया।
3जब मैंने देखा कि मुझे बचानेवाला कोई नहीं है, तब मैं अपने प्राण हथेली पर रखकर अम्मोनियों की सीमा में अकेला चला गया। प्रभु ने उन्हें मेरे हाथ में सौंप दिया। इसलिए आज तुम मुझसे लड़ाई-झगड़ा करने क्यों आए हो?'
4तत्पश्चात् यिफ्ताह ने गिलआद प्रदेश के सब सैनिकों को एकत्र किया, और एफ्रइम की सेना से युद्ध छेड़ दिया। गिलआद के सैनिकों ने एफ्रइम के सैनिकों को मार डाला। एफ्रइम के सैनिक कहते थे, 'ओ गिलआद के रहनेवालो, तुम एफ्रइम प्रदेश और मनश्शे प्रदेश के मध्य निवास करनेवाले एफ्रइम गोत्र के भगोड़े हो!'
5गिलआद के सैनिकों ने एफ्रइम की सेना से यर्दन नदी के घाट छीन लिये। जब एफ्रइम प्रदेश का युद्ध से भागा हुआ कोई सैनिक उनसे कहता था, 'मुझे नदी के उस पार जाने दीजिए,' तब गिलआद के सैनिक उससे पूछते थे, 'क्या तुम एफ्रइम के रहनेवाले हो?' यदि वह उत्तर देता, "नहीं"
6तो वे उससे यह कहते, 'शिब्बोलेत* शब्द का उच्चारण करो।' वह उच्चारण करता "सिब्बोलेत", क्योंकि वह उस शब्द का शुद्ध उच्चारण नहीं कर सकता था। तब वे उसको पकड़ते और यर्दन नदी के घाट पर उसका वध कर देते। इस प्रकार उस समय बयालीस हजार एफ्रइमी सैनिक मारे गए।
7 गिलआद प्रदेश के रहनेवाले यिफ्ताह ने छः वर्ष तक इस्राएलियों पर शासन किया। तत्पश्चात् उसकी मृत्यु हो गई। उसे गिलआद प्रदेश में उसके ही नगर में गाड़ा गया।

शासक इब्सान

8 यिफ्ताह के पश्चात् बेतलेहम नगर का रहनेवाला इब्सान इस्राएलियों पर शासन करने लगा।
9उसके तीस पुत्र और तीस पुत्रियाँ थीं। उसने अपने गोत्र के बाहर अपनी पुत्रियों का विवाह किया और अन्य गोत्र की तीस बहुएं अपने पुत्रों के लिए ले आया। इब्सान ने सात वर्ष तक इस्राएलियों पर शासन किया।
10तत्पश्चात् उसकी मृत्यु हो गई, और उसे बेतलेहम नगर में गाड़ा गया।

शासक एलोन

11 इब्सान के पश्चात् जबूलून कुल का एलोन इस्राएलियों पर शासन करने लगा। उसने दस वर्ष तक इस्राएलियों पर शासन किया।

---

* अर्थात् 'गेहूं की बालें'।

11 : 40 2 इत 35 : 25 12 : 1 शा 8 : 1

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

12तत्पश्चात् जबूलून कुल के एलोन की मृत्यु
हो गई। उसे जबूलून प्रदेश के अय्यालोन नगर
में गाड़ा गया।

शासक अब्दोन

13 एलोन के पश्चात् पिर्आतोन नगर का
निवासी हिल्लेल का पुत्र अब्दोन इस्राएलियों
पर शासन करने लगा। 14उसके चालीस पुत्र
और तीस पौत्र थे, जो सत्तर गधों पर सवारी
करते थे। अब्दोन ने आठ वर्ष तक इस्राएलियों
पर शासन किया। 15तत्पश्चात् पिर्आतोन नगर
के निवासी हिल्लेल के पुत्र अब्दोन की मृत्यु
हो गई। उसे एफ्रइम प्रदेश के पिर्आतोन नगर
में, जो अमालेकी जाति के पहाड़ी प्रदेश में
स्थित है, गाड़ा गया।

महानायक शिमशोन का जन्म

13 इस्राएली लोगों ने प्रभु की दृष्टि में फिर
बुरा कार्य किया। अत: प्रभु ने उन्हें
चालीस वर्ष के लिए पलिश्ती जाति के हाथ में
सौंप दिया।

2 सोर्आह नगर में रहनेवाला एक मनुष्य था।
वह दान कुल का था। उसका नाम मानोह था।
उसकी पत्नी बांझ थी। उसको सन्तान उत्पन्न
नहीं हुई थी। 3एक दिन प्रभु के दूत ने उसकी
पत्नी को दर्शन दिया। दूत ने उससे कहा, 'देख,
तू बांझ है, और तुझे सन्तान उत्पन्न नहीं हुई है।
किन्तु अब तू गर्भवती होगी, और एक पुत्र को
जन्म देगी। 4इसलिए अब तू सावधान हो!
अंगूर का रस अथवा शराब मत पीना। अशुद्ध
खाद्य वस्तु मत खाना। 5देख, तू गर्भवती होगी,
और एक पुत्र को जन्म देगी। उसके सिर पर
उस्तरा नहीं फेरना; क्योंकि बालक जन्म से ही
परमेश्वर को समर्पित नाजीर* होगा। वह
इस्राएलियों को पलिश्ती जाति के हाथ से मुक्त
करना आरम्भ करेगा।' 6तब पत्नी अपने पति
के पास आई। उसने यह कहा, 'परमेश्वर का
एक प्रियजन मेरे पास आया था। परमेश्वर के
दूत के सदृश उसका तेज था; अत्यन्त आतंकमय
तेज था! मैंने उससे नहीं पूछा कि वह कहाँ से
आया है। उसने मुझे अपना नाम भी नहीं
बताया। 7परन्तु उसने मुझ से कहा, "देख, तू
गर्भवती होगी, और एक पुत्र को जन्म देगी।
अब तू अंगूर का रस अथवा शराब मत पीना।
अशुद्ध खाद्य-वस्तु मत खाना; क्योंकि बालक
जन्म से अपनी मृत्यु के दिन तक परमेश्वर को
समर्पित नाजीर होगा।" '

8 तब मानोह ने प्रभु से यह निवेदन किया,
'हे स्वामी परमेश्वर, अपने जिस प्रियजन को
तूने भेजा था, वह कृपाकर, हमारे पास फिर
आए। वह हमें सिखाए कि जो बालक उत्पन्न
होगा, उसका पालन-पोषण हमें किस प्रकार
करना चाहिए।' 9परमेश्वर ने मानोह की वाणी
सुनी। जब मानोह की पत्नी खेत में बैठी थी,
तब परमेश्वर का दूत उसके पास आया। उस
समय उसका पति मानोह उसके साथ नहीं था।
10वह अविलम्ब दौड़कर अपने पति के पास
गई। उसने अपने पति को यह बताया, 'जो
मनुष्य उस दिन मेरे पास आया था, वह मुझे
फिर दिखाई दिया है।' 11मानोह उठा, और
अपनी पत्नी के पीछे-पीछे गया। वह उस
मनुष्य के पास आया। उसने उससे कहा, 'क्या
आप ही वह मनुष्य हैं, जिसने मेरी पत्नी से बातें
की थीं?' उसने कहा, 'हाँ, मैं वही हूं।'
12मानोह ने पूछा, 'जब आपकी बात सच सिद्ध
होगी तब बालक की जीवन-चर्या कैसी होगी?
वह कैसा कार्य करेगा?' 13प्रभु के दूत ने मानोह
से कहा, 'जो-जो बातें मैंने इस स्त्री से कही हैं,
उनके प्रति यह सावधान रहे। 14यह अंगूर से
बननेवाली कोई भी वस्तु नहीं खाएगी। यह
अंगूर का रस अथवा शराब नहीं पीएगी। यह
अशुद्ध खाद्य-वस्तु नहीं खाएगी। जो आज्ञाएँ
मैंने इसे दी हैं, उनका पालन यह स्त्री
करेगी।'

15 मानोह ने प्रभु के दूत से कहा, 'हमें
अनुमति दीजिए, कि हम आप को रोक सकें,
और बकरी के बच्चे का मांस पकाकर आपके
सम्मुख परोस सकें।' 16प्रभु के दूत ने मानोह

---

* अथवा, 'समर्पण-व्रतधारी'।

13 : 3 उत 18 : 1-15; 1 शम 1; लू 1 : 5-25 **13 : 5** गण 6 : 5

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

से कहा, 'यदि तू मुझे रोक लेगा तो भी मैं तेरा
भोजन नहीं खा सकूंगा। परन्तु यदि तू अग्नि-
बलि तैयार करना चाहता है तो उसे प्रभु को
अर्पित कर।' (मानोह नहीं जानता था कि वह
मनुष्य प्रभु का दूत है।) 17मानोह ने प्रभु के दूत
से पूछा, 'आप का नाम क्या है जिससे जब
आपकी बात सच होगी तब हम आपका
सम्मान कर सकें?'

18 प्रभु के दूत ने उत्तर दिया, 'तूने मेरा नाम
क्यों पूछा? मेरा नाम ''अद्‌भुत'' है।' 19मानोह
ने बकरी का बच्चा और अन्न-बलि ली।
तत्पश्चात् उसने उन्हें चट्टान पर प्रभु को, जो
अद्‌भुत कार्य करता है, अर्पित किया। 20जब
अग्नि की लपट वेदी से निकलकर आकाश की
ओर उठी, तब प्रभु का दूत उस वेदी की लपट
में होकर ऊपर चला गया। मानोह और उसकी
पत्नी यह देखते रहे। उन्होंने भय से भूमि पर
गिरकर वन्दना की।

21 इसके पश्चात् प्रभु के दूत ने मानोह और
उसकी पत्नी को फिर दर्शन नहीं दिया। तब
मानोह को ज्ञात हुआ कि वह प्रभु का दूत था।
22उसने अपनी पत्नी से कहा, 'हम निश्चय ही
मर जाएंगे, क्योंकि हमने परमेश्वर को देखा
है!' 23उसकी पत्नी ने उससे कहा, 'यदि प्रभु
हमारा वध करना चाहता तो वह हमारे हाथ से
अग्नि-बलि और अन्न-बलि ग्रहण नहीं करता।
वह हमें इन घटनाओं के दर्शन नहीं कराता। वह
इस समय ऐसी बातें भी हमें नहीं सुनाता।'

24 मानोह की पत्नी ने एक बालक को जन्म
दिया, और उसका नाम शिमशोन रखा। बालक
बड़ा हुआ। प्रभु ने उसे आशिष दी।

25 तब प्रभु का आत्मा उसे सोर्आह नगर
और एश्ताओल नगर के मध्य महनेह-दान में
उत्प्रेरित करने लगा।

शिमशोन और तिम्नाह नगर की स्त्री

14 शिमशोन तिम्नाह नगर गया। उसने
वहां पलिश्ती जाति की एक लड़की
देखी। 2वह तिम्नाह से वापस आया। उसने
अपने माता-पिता को यह बात बताई। उसने
कहा, 'मैंने तिम्नाह नगर में पलिश्ती जाति की
एक लड़की देखी है। अब आप लोग उसके
साथ मेरा विवाह करा दीजिए।' 3किन्तु शिमशोन
के माता-पिता ने उससे कहा, 'क्या तेरे नाते-
रिश्तेदारों में या हमारी इस्राएली जाति में
लड़कियों की कमी है, कि तू पलिश्ती जाति की
लड़की से विवाह करना चाहता है?' शिमशोन
ने अपने पिता से कहा; 'उस लड़की से ही मेरा
विवाह करा दीजिए, क्योंकि वह मुझे अच्छी
लगती है।' 4शिमशोन के माता-पिता नहीं
जानते थे कि यह बात प्रभु की ओर से है;
क्योंकि प्रभु पलिश्ती जाति को उभाड़ने के लिए
अवसर ढूंढ़ रहा था। उस समय पलिश्ती
इस्राएलियों पर शासन करते थे।

5 शिमशोन अपने माता-पिता के साथ
तिम्नाह नगर गया। वह तिम्नाह के अंगूर-
उद्यान में पहुँचा। उसने एक जवान सिंह को
देखा जो दहाड़ता हुआ उस पर आक्रमण करने
के लिए आ रहा था। 6तब प्रभु का आत्मा
वेगपूर्वक शिमशोन पर उतरा। अत: उसने
बकरी के बच्चे के समान सिंह को चीर दिया,
यद्यपि उसके हाथ में शस्त्र नहीं था। जो कार्य
उसने किया उसके विषय में उसने अपने माता-
पिता को नहीं बताया। 7वह उस कन्या के पास
गया, और उससे बातचीत की। वह शिमशोन
को अच्छी लगी। 8कुछ दिन पश्चात् वह कन्या
से विवाह करने के लिए तिम्नाह नगर लौटा।
वह सिंह की लोथ देखने के लिए मार्ग से मुड़ा।
सिंह की लोथ पर मधु-मक्खियों ने छत्ता बना
लिया था। छत्ते में शहद था। 9शिमशोन ने छत्ते
में से कुछ शहद अपनी हथेली पर निकाला,
और वह उसको खाते हुए लौटा। वह अपने
माता-पिता के पास आया। उसने उन्हें शहद
दिया। उन्होंने भी शहद खाया। परन्तु शिमशोन
ने उन्हें यह नहीं बताया कि उसने सिंह की लोथ
पर बनाए गए छत्ते में से यह शहद निकाला है।

10 शिमशोन का पिता उस स्त्री के घर गया।

---

13 : 17 उत 32 : 30; नि 3 : 14; प्रक 19 : 12 **13 : 20** लेव 9 : 24; यहेज 1 : 28 **13 : 22** नि 33 : 20
13 : 24 इब्र 11 : 32 **14 : 1** उत 38 : 13 **14 : 3** उत 24 : 3-4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शिमशोन ने विवाह-भोज दिया। युवक ऐसा ही
करते थे।
11 जब पलिश्ती लोगों ने शिमशोन को
देखा, तब वे उसके साथ रहने के लिए तीस
पुरुष ले आए।
12 शिमशोन ने उनसे कहा, 'मैं
तुमसे एक पहेली बुझाता हूं। यदि तुम विवाह-
भोज की सात दिनों की अवधि में उसका अर्थ
मुझे बता दोगे, उसको बूझ लोगे तो मैं तुम्हें तीस
कमीज और उत्सव के तीस वस्त्र दूंगा।
13 परन्तु
यदि तुम मुझे नहीं बता सकोगे कि वह क्या है
तो तुम मुझे तीस कमीज और उत्सव के तीस
वस्त्र देना।' उन्होंने शिमशोन से कहा, 'पहेली
बुझाओ। हम उसको सुनेंगे।'
14 शिमशोन ने उनसे
यह कहा :

'खाने वाले में से खाद्य वस्तु
और शक्तिमान में से मधुर वस्तु निकली।'

वे तीन दिन तक पहेली को न बूझ सके।
15 उन्होंने चौथे दिन शिमशोन की पत्नी से कहा,
'तू अपने पति को फुसला जिससे वह हमें
पहेली का अर्थ बता दे; अन्यथा हम तुझे और
तेरे पिता के घर को आग से जला देंगे। क्या तू
ने हमें लूटने के लिए यहाँ बुलाया था?'
16 शिमशोन की पत्नी उसके सम्मुख रोई। पत्नी
ने कहा, 'आप मुझ से प्रेम नहीं करते, केवल
घृणा करते हैं। आपने मेरे देशवासियों से पहेली
बुझाई पर उसका अर्थ मुझे नहीं बताया।'
शिमशोन ने उससे कहा, 'जब मैंने पहेली का
अर्थ अपने पिता को, अपनी मां को नहीं बताया
तब तुझे कैसे बता दूं?,'
17 शिमशोन की पत्नी
सातवें दिन तक, जिस दिन विवाह-भोज
समाप्त हुआ, उसके सम्मुख रोती रही। जब
पत्नी ने शिमशोन पर बहुत दबाव डाला तब
उसने सातवें दिन उसे पहेली का अर्थ बता
दिया। अतः शिमशोन की पत्नी ने अपने देश
के लोगों को पहेली का अर्थ बता दिया।
18 तिम्नाह नगर के निवासियों ने सातवें दिन,
सूर्यास्त के पूर्व शिमशोन से कहा:

'मधु से अधिक मधुर और क्या वस्तु है?
सिंह से अधिक शक्तिमान और कौन प्राणी
है?'

पर शिमशोन ने कहा,

'यदि तुम मेरी कलोर को हल में न जोतते,
तो मेरी पहेली का अर्थ बूझ न पाते!'

19 तब प्रभु का आत्मा वेगपूर्वक शिमशोन
पर उतरा, और वह अश्कलोन को चला गया।
उसने अश्कलोन नगर के तीस पुरुषों का वध
कर दिया। उसने उनके वस्त्र उतार लिये, और
उनको उत्सव के वस्त्र के रूप में उन लोगों को
दे दिया, जिन्होंने पहेली का अर्थ बताया था।
तत्पश्चात् वह क्रोध में भरा हुआ अपने पिता
के घर चला गया।
20 शिमशोन की पत्नी
उसके मित्र को, जो उसका वर-सखा था, दे दी
गई।

15 कुछ दिन के पश्चात्, गेहूं की फसल के
समय शिमशोन ने बकरी का एक बच्चा
लिया, और वह अपनी पत्नी से भेंट करने के
लिए गया। उसने अपने ससुर से कहा, 'मैं
अपनी पत्नी के पास कमरे में जाऊंगा।' परन्तु
उसके ससुर ने उसे जाने नहीं दिया।
2 उसके ससुर
ने कहा, 'मुझे पूर्ण निश्चय हो गया था कि तुम
वास्तव में अपनी पत्नी से घृणा करने लगे हो।
इसलिए मैंने उसे तुम्हारे वर-सखा को दे दिया।
उसकी छोटी बहिन उससे अधिक सुन्दर है।
अतः उसके बदले में उसकी छोटी बहिन को
ले लो।'
3 शिमशोन ने उन लोगों से कहा, 'यदि
मैं पलिश्तियों का अनिष्ट करूंगा तो इस बार मैं
निर्दोष ठहरूंगा।'
4 शिमशोन निर्जन प्रदेश गया।
उसने तीन सौ सियार पकड़े। उसने दो-दो
सियारों की पूंछ परस्पर बांध दी। तत्पश्चात्
उसने मशालें लीं, और बन्धी हुई पूंछों के मध्य
एक-एक मशाल रख दी।
5 इसके बाद उसने
मशालों में आग लगा दी, और सियारों को
पलिश्तियों की खड़ी फसल में छोड़ दिया। इस
प्रकार शिमशोन ने पूलों के ढेर, खड़ी फसल,
अंगूर तथा जैतून के उद्यान जला दिए।
6 पलिश्ती लोगों ने पूछा, 'यह कार्य किसने
किया है?' उन्हें उत्तर मिला, 'शिमशोन ने,
जिसने तिम्नाह नगर के रहनेवाले की पुत्री से
विवाह किया था। किन्तु उसके ससुर ने उसकी

---

14 : 12 1 रा 10 : 1; यहेज 17 : 2 **14 : 17** लू 11 : 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पत्नी ले ली, और उसके वर-सखा को दे दी'
अत: पलिश्ती शिमशोन के ससुर के घर पर चढ़
आए, और उन्होंने उसकी पत्नी और उसके
ससुर को आग में जला दिया। 7शिमशोन ने उनसे
कहा, 'तुमने यह कार्य किया, इसलिए मैं शपथ
खाता हूं कि जब तक तुम से बदला नहीं ले लूंगा
तब तक चैन से नहीं बैठूंगा।' 8वह उन पर टूट
बड़ा। उसने उनकी लाशों का ढेर लगा दिया।
उसने उनका भयानक संहार किया। उसके बाद
वह ऐटाम की चट्टान की ओर चला गया, और
वहाँ एक गुफा में रहने लगा।

लेही नगर की घटना

9 पलिश्तियों ने यहूदा प्रदेश में पड़ाव
डाला। उन्होंने लेही नगर पर आक्रमण कर
दिया। 10यहूदा प्रदेश के लोगों ने पूछा, 'आपने
हम पर क्यों आक्रमण किया?' उन्होंने उत्तर
दिया, 'हम शिमशोन को पकड़ने के लिए आए
हैं। जैसा उसने हमारे साथ व्यवहार किया है
वैसा ही हम उसके साथ व्यवहार करेंगे।'
11अत: यहूदा प्रदेश के तीन हजार सैनिक
ऐटाम की चट्टान की गुफा को गए। उन्होंने
शिमशोन से कहा, 'क्या तुम यह नहीं जानते कि
पलिश्ती हम पर राज्य करते हैं? तब तुमने हमारे
प्रति यह कार्य क्यों किया?' शिमशोन ने उनसे
कहा, 'जैसा उन्होंने मेरे साथ किया था वैसा
ही मैंने उनके साथ किया।' 12यहूदा प्रदेश के
सैनिकों ने शिमशोन से कहा, 'हम तुम्हें पकड़ने
के लिए आए हैं। हम तुम्हें पलिश्तियों के हाथ
में सौंप देंगे।' शिमशोन ने उनसे कहा, 'मुझसे
शपथ खाओ कि तुम स्वयं मुझ पर प्रहार नहीं
करोगे।' 13उन्होंने उससे कहा, 'नहीं, हम तुम्हें
केवल बांधकर पलिश्तियों के हाथ में सौंप
देंगे। हम तुम्हारी हत्या नहीं करेंगे।' अत:
उन्होंने शिमशोन को दो नई रस्सियों से बांधा,
और उसे चट्टान से ले आए।

14 जब शिमशोन लेही नगर पहुंचा तब
पलिश्ती विजय के नारे लगाते हुए उससे भेंट
करने के लिए आए। तब प्रभु का आत्मा
वेगपूर्वक शिमशोन पर उतरा। उसकी बाहों पर
बंधी रस्सियां आग से जले हुए सन के रेशों के
समान हो गईं। उसके हाथों के बन्धन मानो गल
कर टूट गए। 15तब उसे गधे के जबड़े की ताजा
हड्डी मिली। उसने हाथ बढ़ाकर उसको उठा
लिया, और उसी हड्डी से एक हजार पलिश्ती
सैनिक मार डाले। 16शिमशोन ने यह कहा :

'गधे की हड्डी से ढेरों-ढेर मनुष्य,
गधे की हड्डी से मैंने मारे हजार पुरुष।'

17 जब वह यह कह चुका तब उसने गधे
की हड्डी अपने हाथ से फेंक दी। अत: उस
स्थान का नाम रामत-लेही* पड़ा।

18 शिमशोन को बड़ी प्यास लगी। उसने
प्रभु को पुकारा। उसने कहा, 'तूने अपने सेवक
के हाथ में यह महान् विजय प्रदान की है। अब
क्या मैं प्यास से मर जाऊंगा, और बेखतना
पलिश्तियों के हाथ में पड़ जाऊंगा?'

19 तब परमेश्वर ने भूमि में ओखली-सा
एक गड्ढा कर दिया (यह गड्ढा लेही में है),
और उसमें से पानी फूट कर निकल पड़ा। जब
शिमशोन ने पानी पिया तब मानो उसका प्राण
लौट आया और वह पुनर्जीवित हो गया।
इसलिए उस झरने का नाम 'एन-हक्कोर'**
पड़ा। वह आज भी लेही नगर में है।

20 शिमशोन ने पलिश्तियों के समय में बीस
वर्ष तक इस्राएलियों पर शासन किया।

शिमशोन गाजा नगर में

16 शिमशोन गाजा नगर गया। उसने वहां
एक वेश्या देखी। वह उसके पास गया।
2गाजा नगर के रहने वालों को यह समाचार
मिला, 'शिमशोन आया है।' उन्होंने घेराबन्दी
कर ली। वे रात भर नगर के प्रवेश-द्वार पर घात
लगाकर बैठे रहे। उन्होंने रात में कार्यवाही नहीं
की। वे यह कहते थे, 'हम सबेरा होने तक
प्रतीक्षा करेंगे। तब शिमशोन का वध करेंगे।'
3परन्तु शिमशोन आधी रात तक शय्या पर लेटा
रहा। वह आधी रात को शय्या पर से उठा।
उसने नगर के प्रवेश-द्वार के पल्लों और
बाजुओं को पकड़ा और छड़ के साथ सब को
उखाड़ लिया। उसने उन्हें अपने कंधों पर रखा,

* अर्थात्, "लेही (जबड़ा) की ऊंचाई" **अर्थात् "पुकारने वाले का झरना" अथवा "तीतर का झरना"

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और उनको पहाड़ी की चोटी पर ले गया, जो हेब्रोन नगर के सम्मुख है।

शिमशोन और दलीलाह

4 इस घटना के पश्चात् शिमशोन सोरेक घाटी की एक स्त्री से प्रेम करने लगा। उसका नाम दलीलाह+ था। [5]तब पलिश्ती जाति के सामंत दलीलाह के पास आए। उन्होंने उससे कहा, 'शिमशोन को फुसलाओ। तुम पता लगाओ कि उसकी महाशक्ति का स्रोत कहां है। हम उसे किस प्रकार वश में कर सकते हैं, ताकि उसे बांध कर शक्तिहीन कर सकें। हममें से प्रत्येक सामंत तुम्हें चांदी के ग्यारह सौ सिक्के देगा।'

6 अत: दलीलाह ने शिमशोन से पूछा, 'कृपाकर मुझे बताओ कि तुम्हारी महाशक्ति का स्रोत कहां है? तुम्हें किस प्रकार वश में किया जा सकता है, ताकि तुम्हें बांध कर शक्तिहीन कर सकें?' [7]शिमशोन ने उससे कहा, 'यदि पलिश्ती मुझे सात ताजा तांतों से बांधें, जो सुखाई नहीं गई हैं, तो मैं शक्तिहीन हो जाऊंगा। मैं साधारण आदमी के समान बन जाऊंगा।'

8 तब पलिश्ती सामंतों ने दलीलाह को सात ताजा तांतें, जो सुखाई नहीं गई थीं, लाकर दीं। दलीलाह ने शिमशोन को उनसे बांध दिया। [9]घात लगानेवाले घर के भीतरी कमरे में बैठे थे। उसने शिमशोन से कहा, 'शिमशोन! पलिश्तियों ने तुम पर हमला कर दिया।' तब शिमशोन ने तांतों को तड़तड़ाकर तोड़ दिया, जैसा सन का रेशा आंच लगने से टूट जाता है। इस प्रकार उसकी शक्ति का भेद न खुला।

10 दलीलाह ने शिमशोन से कहा, 'तुमने मुझे धोखा दिया, मुझ से झूठ बोला। अब मुझे सच-सच बताओ कि तुम्हें किस वस्तु से बांधा जा सकता है।' [11]शिमशोन ने उस से कहा, 'यदि पलिश्ती मुझे नई रस्सी से बांधें, जो अब तक काम में नहीं लाई गई है, तो मैं शक्तिहीन हो जाऊंगा। मैं साधारण आदमी के समान बन जाऊंगा।' [12]अत: दलीलाह ने नई रस्सियां लीं, और उनसे शिमशोन को बांध दिया। घात लगाने वाले उसके घर के भीतरी कमरे में बैठे थे। उसने शिमशोन से कहा, 'शिमशोन! पलिश्तियों ने तुम पर हमला कर दिया।' तब शिमशोन ने बांहों पर बन्धी रस्सियों को धागे के समान तोड़ दिया!

13 दलीलाह ने शिमशोन से कहा, 'तुमने अब तक मुझे धोखा दिया, मुझ से झूठ बोला। कृपाकार मुझे बताओ कि तुम्हें किस वस्तु से बांधा जा सकता है।' शिमशोन ने उससे कहा, 'यदि तू मेरे सिर की सात लटें ताने में बुने, और उन्हें खूंटी में जकड़ दे तो मैं शक्तिहीन हो जाऊंगा। मैं साधारण आदमी के समान हो जाऊंगा।' [14]अत: जब शिमशोन सो रहा था तब दलीलाह ने उसके सिर की सात लटें निकालीं और उन्हें ताने में बुन दिया। फिर उसने उनको खूंटी से जकड़ दिया। तत्पश्चात् उसने शिमशोन से कहा, 'शिमशोन! पलिश्तियों ने तुम पर हमला कर दिया।' वह नींद से जाग उठा। उसने करघे को ताने और खूंटी के साथ उखाड़ दिया।

15 दलीलाह ने शिमशोन से कहा, 'तुम यह बात कैसे कह सकते हो: "मैं तुम से प्रेम करता हूं!" जब कि तुम्हारा हृदय मुझ में नहीं लगता? तुमने मुझे तीन बार धोखा दिया। तुमने मुझे नहीं बताया कि तुम्हारी महाशक्ति का स्रोत कहां है।' [16]दलीलाह प्रतिदिन उससे प्रश्न पूछती रही। उसने प्रश्न पूछ-पूछ कर उस पर दबाव डाला। यहां तक कि शिमशोन का नाक में दम आ गया। [17]अत: उसने अपने हृदय का सारा भेद दलीलाह पर प्रकट कर दिया। शिमशोन ने उससे कहा, 'मेरे सिर पर उस्तरा कभी नहीं फिरा, क्योंकि मैं मां के गर्भ से ही परमेश्वर को समर्पित नाज़ीर हूं। यदि मेरे सिर के बाल मूँड़े जाएंगे तो मेरी शक्ति मुझ में से निकल जाएगी। मैं शक्तिहीन हो जाऊंगा। मैं साधारण आदमी के समान हो जाऊंगा।'

18 जब दलीलाह ने देखा कि शिमशोन ने अपने हृदय का सारा भेद उस पर प्रकट कर दिया है, तब उसने यह सन्देश भेजकर पलिश्तियों के सामंतों को बुलाया, 'आप इस बार और

+ अर्थात् "मुखबिर" या "भेद की सूचना देने वाली"

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आइए, क्योंकि शिमशोन ने अपने हृदय का
सारा भेद मुझ पर प्रकट कर दिया है।' अत:
पलिश्ती सामंत उसके पास आए। वे अपने हाथ
में चांदी के सिक्के भी लाए।

19 दलीलाह ने शिमशोन को अपने घुटनों
पर सुला दिया। तब उसने एक मनुष्य को
बुलाया, जिसने शिमशोन के सिर की सात लटें
मूंड़ दीं। दलीलाह ने उसे बांध दिया।* शिमशोन
की शक्ति उसमें से निकल गई।20तब दलीलाह
ने कहा, 'शिमशोन! पलिश्तियों ने तुम पर
हमला कर दिया।' वह नींद से जागा। उसने
सोचा, 'मैं पहले के समान बाहर निकलूंगा,
और बन्धन-मुक्त हो जाऊंगा।' पर वह नहीं
जानता था कि प्रभु उसके पास से चला गया है।
21पलिश्तियों ने शिमशोन को पकड़ लिया और
उसकी आंखें निकाल लीं। वे उसे गाजा नगर
ले गए। वहां उन्होंने शिमशोन को पीतल की
जंजीरों से बांध दिया। शिमशोन बन्दीगृह में
चक्की पीसता था। 22उसके सिर के बाल, जो
मूंड़ दिए गए थे, अब पुन: बढ़ने लगे।

शिमशोन की मृत्यु

23 पलिश्ती सामंत अपने देवता दागोन को
महाबलि चढ़ाने और आनन्द मनाने के लिए
एकत्र हुए। वे यह कहते थे,

'हमारे देवता ने,
हमारे हाथों में दिया है
शिमशोन, शुत्र हमारा'

24 जब पलिश्ती लोगों ने शिमशोन को देखा
तब वे अपने देवता की स्तुति में यह गीत गाने
लगे :

'हमारे देवता ने,
हमारे हाथों में दिया है
शिमशोन, शत्रु हमारा;
हमारे देश को उजाड़नेवाला,
अनेक मनुष्यों का हत्यारा!'

25जब वे प्रसन्नचित थे तब उन्होंने कहा,
'शिमशोन को बुलाओ। वह हमारा मनोरंजन
करेगा।' अत: उन्होंने शिमशोन को बन्दीगृह से
बुला लिया। शिमशोन ने उनका मनोरंजन
किया। तत्पश्चात् उन्होंने शिमशोन को भवन
के खंभों के मध्य खड़ा कर दिया। 26शिमशोन
ने उस लड़के से, जो उसका हाथ पकड़े हुए था,
यह कहा, 'मुझे उन खंभों को स्पर्श करने दे
जिन पर यह भवन खड़ा है, ताकि मैं टिक
सकूं।' 27भवन स्त्री-पुरुषों से भरा था। वहां
सब पलिश्ती सामंत थे। जब शिमशोन उनका
मनोरंजन कर रहा था तब भवन की छत से तीन
हजार स्त्री-पुरुष उसे देख रहे थे।

28 शिमशोन ने प्रभु को पुकारा। उसने कहा,
'हे स्वामी, हे प्रभु, कृपया, मुझे स्मरण कर! हे
परमेश्वर, मुझे केवल इस बार और बल दे कि
मैं पलिश्तियों से अपनी दोनों आंखों का बदला
एक ही बार ले लूं।' 29तब शिमशोन ने मध्यवर्ती
खंभों को, जिन पर भवन खड़ा था, कसकर
पकड़ लिया। उसने सम्पूर्ण भार दाहिने हाथ से
एक खंभे पर, और बाएं हाथ से दूसरे खंभे पर
डाल दिया। 30शिमशोन ने कहा, 'मैं भी
पलिश्तियों के साथ मर जाऊं!' इतना कहकर
उसने अपनी सम्पूर्ण शक्ति से खम्भों को धकेल
दिया। तब भवन सामन्तों पर, उसमें बैठे सब
लोगों पर गिर पड़ा। इस प्रकार शिमशोन ने
अपनी मृत्यु के समय उससे अधिक संख्या में
पलिश्तियों को मार डाला, जितनी संख्या में
अपने जीवन काल में उसने मारे थे।

31 उसके भाई और परिवार के अन्य लोग
आए। वे उसके शव को उठाकर ले गए। उन्होंने
शिमशोन के शव को सोआह और एश्ताओल
नगरों के मध्य उसके पिता मानोह की कबर में
गाड़ दिया।

शिमशोन ने बीस वर्ष तक इस्राएलियों पर
शासन किया था।

मीकाह का पूजापाठ करना

17 एफ्रइम पहाड़ी प्रदेश में एक मनुष्य
रहता था। उसका नाम मीकाह था।
2उसने अपनी मां से कहा, 'जो चांदी के ग्यारह
सौ सिक्के तुम्हारे पास से चोरी चले गए थे,
जिनके विषय में तुमने अपशब्द कहे थे, और
मुझे भी सुनाकर कहा था, वे मेरे पास हैं। मैंने

* अथवा ''उसे कष्ट देने लगी।'' प्राचीन अनुवाद के अनुसार, 'शिमशोन शक्तिहीन होने लगा'।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उन्हें चुराया था।' उसकी मां ने कहा, 'मेरे पुत्र,
प्रभु तुझे आशिष दे।' 3मीकाह ने चांदी के
ग्यारह सौ सिक्के अपनी मां को लौटा दिए।
उसकी मां ने कहा, 'मैं अपने हाथ से अपने पुत्र
के लिए चांदी के ये सिक्के प्रभु को चढ़ाने का
संकल्प करती हूं, ताकि इनसे एक मूर्ति, चांदी
की ढली-गढ़ी प्रतिमा बनाई जाए। इसलिए,
पुत्र, अब मैं चांदी के ये सिक्के तुझे वापस
करती हूं।'

4 जब मीकाह ने चांदी के सिक्के अपनी मां
को लौटाए तब उसकी मां ने उनमें से चांदी के
दो सौ सिक्के सुनार को दे दिए। सुनार ने उनसे
एक मूर्ति, चांदी की ढली-गढ़ी प्रतिमा, बनाई।
यह मूर्ति मीकाह के घर में रखी गई। 5मीकाह
के घर में एक देव-स्थान था। उसने एपोद और
गृह-देवता की मूर्तियां बनाईं, और अपने एक
पुत्र को पुरोहित-पद पर प्रतिष्ठित कर दिया।
पुत्र उसका पुरोहित हो गया। 6उन दिनों में
इस्राएली समाज में राजा की प्रथा नहीं थी। हर
एक व्यक्ति वही कार्य करता था, जो उसकी
दृष्टि में उचित प्रतीत होता था।

7 यहूदा प्रदेश के बेतलेहम नगर का
रहनेवाला एक युवक था। वह यहूदा के गोत्रों
में से था। वस्तुत: वह लेवी वंश का था, और
प्रवासी के रूप में वहां रहता था। 8उसने निवास-
स्थान प्राप्त करने के लिए यहूदा प्रदेश के
बेतलेहम नगर से प्रस्थान किया। वह यात्रा
करते हुए एफ्रइम पहाड़ी प्रदेश में मीकाह के
घर पर पहुंचा। 9मीकाह ने उससे पूछा, 'आप
कहां से आ रहे हैं?' उसने मीकाह को उत्तर
दिया, 'मैं यहूदा प्रदेश के बेतलेहम नगर का
रहनेवाला लेवी वंश का हूं। मैं निवास-स्थान
प्राप्त करने के लिए यात्रा कर रहा हूं।'
10मीकाह ने उससे कहा, 'मेरे साथ रहिए। मेरे
आदरणीय पिता और पुरोहित बनिए। मैं
प्रतिवर्ष आपको चांदी के दस सिक्के, एक
जोड़ी वस्त्र और भोजन-वस्तु दूंगा।' 11लेवीय
पुरुष मीकाह के साथ रहने के लिए सहमत हो
गया। वह मीकाह के पुत्रों के सदृश बन गया।
12मीकाह ने लेवी कुल के युवक को पुरोहित
के पद पर प्रतिष्ठित किया। युवक उसका
पुरोहित हो गया। वह मीकाह के घर में रहने
लगा। 13मीकाह ने कहा, 'अब मुझे ज्ञात हुआ
कि प्रभु मेरी भलाई करेगा; क्योंकि लेवी कुल
का व्यक्ति मेरा पुरोहित बना।'

मीकाह और दान-कुल

18 उन दिनों में इस्राएली समाज में राजा
की प्रथा न थी। उन्हीं दिनों में दान-
कुल के लोग निवास के लिए भूमि की खोज
में थे; क्योंकि अब तक उन्हें इस्राएली कुलों के
मध्य पैतृक अधिकार के लिए भूमि प्राप्त नहीं
हुई थी। 2अत: दान कुल के लोगों ने अपने
समस्त कुल में से पांच योग्य पुरुषों को सोर्आह
नगर तथा एश्ताओल नगर से देश का भेद लेने
और उसकी छान-बीन करने के लिए भेजा।
उन्होंने उन पुरुषों से कहा, 'जाओ, और देश
की छान-बीन करो।' वे पांच पुरुष एफ्रइम
पहाड़ी प्रदेश में मीकाह के घर आए। उन्होंने
वहां रात व्यतीत की। 3जब वे मीकाह के घर
के निकट थे तब उन्होंने लेवीय युवक की
आवाज पहचान ली। वे उस ओर मुड़ आए।
उन्होंने उससे पूछा, 'कौन व्यक्ति आपको यहां
लाया? आप यहां क्या कर रहे हैं? यहां आपका
क्या काम है?' 4लेवीय ने उनसे कहा, 'मीकाह
ने मेरे साथ इस प्रकार का व्यवहार किया: मैं
उनका पुरोहित हूं। वह मुझे वेतन देते हैं।'
5उन्होंने लेवीय से कहा, 'कृपया, परमेश्वर से
एक बात पूछिए जिससे हमें पता चले: जिस
यात्रा पर हम जा रहे हैं, क्या वह सफल
होगी?' 6पुरोहित ने उनसे कहा, 'शान्ति से
जाओ। जो यात्रा आप कर रहे हैं, उस पर प्रभु
की कृपा-दृष्टि है।'

7 अत: वे पांच पुरुष चले गए। वे लइश नगर
में आए। उन्होंने उसमें रहने वाले लोगों को
देखा कि वे सीदोनी जाति के समान निश्चिन्तता
से निवास करते हैं। वे शान्तिपूर्वक तथा निश्चिन्त

---

17 : 5 उत 31 : 19 **17 : 6** शा 21 : 25 ; व्य 12 : 8 ; 33 : 8 **17 : 7** नि 12 : 48 **18 : 1** यहो 19 : 47
18 : 7 शा 18 : 27-28

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
ढंग से रहते है। उन्हें पृथ्वी की किसी भी वस्तु
का अभाव नहीं है। वे सीदोन देश से दूर रहते
हैं। सीरिया देश से भी+ उनका सम्बन्ध नहीं है।
8 जब वे पांच पुरुष अपने भाई-बन्धुओं के
पास सोर्आह और एश्ताओल वापस आए तब
उनके भाई-बन्धुओं ने उनसे पूछा, 'तुम क्या
समाचार लाए?' 9उन्होंने कहा, 'उठो! हम उन
पर चढ़ाई करेंगे। हमने देश को देख लिया। वह
बहुत अच्छा देश है। क्या आप लोग कुछ नहीं
करेंगे? वहां जाने और उस देश पर अधिकार
करने में आलस्य मत कीजिए। 10जब आप वहां
जाएंगे तब आपको निश्चिन्त ढंग से निवास
करने वाले लोग मिलेंगे। उनका देश विस्तृत है।
प्रभु ने निश्चय ही उस देश को आप के हाथ
में सौंप दिया है। वह ऐसा स्थान है जहां पृथ्वी
की किसी भी वस्तु का अभाव नहीं है।'
11 अत: दान कुल के छ: सौ शस्त्रधारी
सैनिकों ने सोर्आह और एश्ताओल नगरों से
प्रस्थान किया। 12वे वहां से चले। उन्होंने यहूदा
प्रदेश के किर्यत-यआरीम नगर में पड़ाव
डाला। इसलिए आज भी उस स्थान को
महनेह-दान* कहते हैं। यह किर्यत-यआरीम
की पश्चिम दिशा में है। 13वे वहां से एफ्रइम
पहाडी़ प्रदेश में पहुंचे। वे मीकाह के घर पर
आए। 14जो पांच पुरुष लइश नगर का भेद लेने
गए थे, उन्होंने अपने भाई-बन्धुओं से यह कहा
था, 'क्या आप जानते हैं कि इन घरों में एपोद,
गृह-देवता की मूर्तियां और चांदी की ढली-
गढ़ी प्रतिमा हैं? अब सोचिए कि हमें ऐसी
स्थिति में क्या करना चाहिए।' 15वे वहां से मुड़
गए और लेवीय युवक के निवास-स्थान में
आए, जो मीकाह के घर में था। उन्होंने उससे
उसका हाल-चाल पूछा। 16दान कुल के छ: सौ
शस्त्रधारी सैनिक प्रवेश-द्वार पर खड़े थे।
17पांच पुरुष, जो लइश नगर का भेद लेने गए
थे, मीकाह के घर में घुस गए। उन्होंने चांदी की
ढली-गढ़ी प्रतिमा, एपोद और गृह-देवता की
मूर्तियां उठा लीं। पुरोहित छ: सौ शस्त्रधारी
सैनिकों के साथ प्रवेश-द्वार पर खड़ा था।
18जब ये पांच पुरुष मीकाह के घर में घुस गए
और इन्होंने चांदी की ढली-गढ़ी प्रतिमा,
एपोद, और गृह-देवता की मूर्तियां उठा लीं तब
पुरोहित ने उनसे कहा, 'यह आप क्या कर रहे
हैं?' 19उन्होंने उससे कहा, 'आप चुप रहिए,
अपने मुंह पर हाथ रखिए। आप हमारे साथ
चलिए। हमारे आदरणीय पिता और पुरोहित
बनिए। इन दोनों में क्या श्रेष्ठ है: एक व्यक्ति
के परिवार का पुरोहित बनना अथवा इस्राएलियों
के एक कुल और गोत्र का पुरोहित बनना?'
20पुरोहित का हृदय प्रसन्न हो गया। उसने
एपोद, गृह-देवता की मूर्तियां और चांदी की
प्रतिमा ले लीं, और लोगों के मध्य आ गया।
21 जिस मार्ग से वे आए थे, वे उस ओर
लौटे। उन्होंने बच्चों, पशुओं और सामान को
अपने आगे कर लिया। 22जब वे मीकाह के घर
से दूर चले गए तब मीकाह ने अपने घर के
आसपास के घरों में रहनेवाले पड़ोसियों को
एकत्र किया। वे दान कुल के लोगों का पीछा
कर उनके निकट पहुंच गए। 23उन्होंने दान कुल
के लोगों को पुकारा। दान कुल के लोगों ने पीछे
की ओर मुख किया और उनसे पूछा, 'तुम्हें क्या
हुआ, जो दल-बल के साथ आ रहे हो?'
24मीकाह ने कहा, 'तुमने मेरे देवता की मूर्तियां
ले लीं, जिन्हें मैंने बनाया था। तुम मेरे पुरोहित
को भी लिये जा रहे हो। अब मेरे पास क्या
बचा? फिर तुम मुझसे पूछते हो कि मुझे क्या
हुआ।' 25दान कुल के लोगों ने उससे कहा,
'धीरे बोलो! तुम्हारी आवाज हमारे लोगों को
सुनाई न दे। अन्यथा उग्र स्वभाव के पुरुष तुम
पर टूट पड़ेंगे, और तुम तथा तुम्हारे परिवार के
सदस्य अपने प्राणों से हाथ धो बैठेंगे।' 26यों
दान कुल के लोग अपने मार्ग पर चले गए।
मीकाह ने देखा कि वे उससे अधिक शक्तिशाली
हैं। इस कारण वह अपने घर की ओर मुड़ा,
और लौट गया।

लइश नगर का पुनर्निर्माण

27 दान कुल के लोग मीकाह की मूर्तियां
जिन्हें उसने बनाया था, तथा उसके पुरोहित को

+ मूल में, 'किसी मानव से भी।' * अर्थात् 'दान का पड़ाव'

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लेकर लइश नगर में आए। वहां के निवासी शान्तिपूर्वक और निश्चिन्त ढंग से रहने वाले थे। उन्होंने उनको तलवार से मार डाला, और नगर को आग से जला दिया। [28]उस नगर को बचानेवाला कोई न था, क्योंकि वह सीदोन देश से दूर था। इसके अतिरिक्त उसका सीरिया देश से सम्बन्ध भी नहीं था। वह बेत-रहोब की घाटी में था। अत: दान कुल के लोगों ने नगर का पुनर्निर्माण किया, और वे उसमें बस गए। [29]उन्होंने इस्राएल* के पुत्र और अपने कुलपति दान के नाम पर उसका नाम दान नगर रखा। पहले इस नगर का नाम लइश था। [30]दान कुल के लोगों ने अपने उपयोग के लिये उस चांदी की मूर्ति को प्रतिष्ठित किया। जिस दिन देश-वासियों का निष्कासन** हुआ, उस दिन तक गेर्शोम का पुत्र, मूसा का पौत्र योनातन तथा उसके बाद उसके पुत्र दान कुल के पुरोहित रहे। [31]उन्होंने मीकाह की मूर्ति, जिसको उसने बनाया था, अपने उपयोग के लिए प्रतिष्ठित की। जिस दिन तक परमेश्वर का गृह शिलोह नगर में रहा, उतने दिन तक यह मूर्ति प्रतिष्ठित रही।

लेवीय पुरोहित और उसकी रखेल

19 यह उन दिनों की बात है जब इस्राएली समाज में राजा की प्रथा न थी। लेवी कुल का एक मनुष्य था। वह एफ्रइम पहाड़ी प्रदेश से सुदूर क्षेत्र में प्रवास करता था। उसने यहूदा प्रदेश के बेतलेहम नगर की एक स्त्री को रखेल के रूप में रख लिया था। [2]एक दिन उसकी रखेल उससे नाराज हो गई। अत: वह उसको छोड़कर यहूदा प्रदेश के बेतलेहम नगर में अपने पिता के घर चली गई। वहां वह चार महीने तक रही। [3]तब उसके पति ने उसे मनाने का निश्चय किया। वह उसे वापस लाने के लिए उसके घर गया। उसके साथ एक सेवक और दो गधे थे। वह अपनी रखेल के पिता के घर पहुंचा। जब उसके पिता ने उसे देखा तब वह उससे भेंट करने को आनन्दपूर्वक आया। [4]लड़की के पिता ने, उसके ससुर ने उसका आदर-सत्कार किया। वह तीन दिन तक अपने ससुर के साथ रहा। अत: उन्होंने खाया- पिया और वह वहाँ टिक गया। [5]चौथे दिन वे सबेरे उठे। वह जाने के लिए तैयार हुआ। लड़की के पिता ने अपने दामाद से कहा, 'रोटी का एक टुकड़ा खाकर अपने हृदय को तरोताजा करो। उसके बाद चले जाना।' [6]अत: दोनों पुरुष बैठ गए। उन्होंने एक साथ खाया-पिया। लड़की के पिता ने लेवीय युवक से निवेदन किया, 'आज की रात यहीं व्यतीत करो और आनन्द मनाओ।' [7]जब लेवीय पुरुष जाने को तैयार हुआ तब उसके ससुर ने अनुनय-विनय की। इस कारण वह ठहर गया और उसने वहां रात व्यतीत की। [8]लेवीय पुरुष पांचवें दिन जाने के लिए सबेरे उठा। लड़की के पिता ने उससे कहा, 'पहले अपने हृदय को तरोताजा कर लो; दिन ढलने तक ठहर जाओ।' अत: दोनों ने भोजन किया। [9]जब लेवीय पुरुष अपनी रखेल और सेवक के साथ जाने को तैयार हुआ तब लड़की के पिता, उसके ससुर ने, उससे कहा, 'देखो, सूर्यास्त हो रहा है। दिन ढल रहा है। अब रात यहीं व्यतीत करो। देखो, दिन ढलने पर है। रात यहीं व्यतीत करो और आनन्द मनाओ। यात्रा पर जाने के लिए कल सबेरे उठना, और अपने घर चले जाना।'

10 परन्तु लेवीय पुरुष वहां रात व्यतीत करने को सहमत न हुआ। उसने तैयारी की और चला गया। वह यबूस नगर (अर्थात् यरूशलेम) के सामने पहुंचा। उसके साथ जीन कसे हुए दो गधे, उसकी रखेल और उसका सेवक था। [11]जब वे यबूस नगर के पास पहुंचे तब दिन बहुत ढल चुका था। उसके सेवक ने उससे कहा, 'स्वामी, आइए। हम मार्ग को छोड़कर इस यबूस नगर में प्रवेश करें, और इसी नगर में रात व्यतीत करें।' [12]पर उसके स्वामी ने उससे कहा, 'हम विदेशियों के नगर में, ऐसे नगर में, जहां इस्राएली नहीं रहते, प्रवेश नहीं करेंगे। आओ, हम गिबआह नगर की ओर

*अर्थात् 'याकूब' ** अथवा, 'गुलाम बन कर देश से निष्कासित हुए।'
19 : 10 यहो 18 : 28

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बढ़ते जाएं।' [13]उसने अपने सेवक से आगे कहा, 'चलो, हम गिबआह अथवा रामाह में से किसी एक में, पहुंचने का प्रयत्न करें, और उसमें ही रात व्यतीत करें।' [14]अत: वे आगे बढ़ गए। वे अपने मार्ग पर चलते गए। जब वे बिन्यामिन क्षेत्र के गिबआह नगर के निकट पहुंचे तब सूर्यास्त हो गया था। [15]वे नगर में प्रवेश करने और वहां रात व्यतीत करने के लिए उस ओर मुड़ गए। लेवीय पुरुष ने नगर में प्रवेश किया। किन्तु नगर का कोई भी व्यक्ति उन्हें रात व्यतीत करने के लिए अपने घर नहीं ले गया। इस लिए लेवीय पुरुष नगर-चौक में बैठ गया।

16 एक बूढ़ा मनुष्य सन्ध्या समय अपने खेत के काम को समाप्त कर घर लौट रहा था। वह एफ्रइम पहाड़ी प्रदेश का रहने वाला था। पर वह गिबआह नगर में प्रवास कर रहा था। उस स्थान के रहनेवाले लोग बिन्यामिन कुल के थे।

17 बूढ़े मनुष्य ने अपनी आंखें ऊपर उठाईं। उसने नगर-चौक में एक यात्री को देखा। बूढ़े मनुष्य ने उससे पूछा, 'तुम कहां से आए हो और कहां जा रहे हो?' [18-19]यात्री ने उसको उत्तर दिया, 'हम यहूदा प्रदेश के बेतलेहम नगर से एफ्रइम पहाड़ी प्रदेश के सुदूर क्षेत्र को जा रहे हैं। मैं, आपका सेवक, वहीं का रहनेवाला हूं। मैं यहूदा प्रदेश के बेतलेहम नगर गया था। अब मैं अपने घर* जा रहा हूं। हमारे गधों के लिए हमारे पास पुआल तथा चारा है। मेरे लिए और आपकी इस सेविका, मेरी स्त्री के लिए तथा हमारे साथ यात्रा करने वाले इस सेवक के लिए पर्याप्त भोजन और अंगूर का रस है। इस प्रकार हमारे पास किसी वस्तु का अभाव नहीं है। तो भी नगर का कोई भी व्यक्ति मुझे रात व्यतीत करने के लिए अपने घर नहीं ले गया।' [20]बूढ़े ने कहा, 'तुम्हारा स्वागत है! तुम्हारे सब अभावों को दूर करने का दायित्व मुझ पर है। तुम चौक में रात व्यतीत मत करो।' [21]यों बूढ़ा उसे अपने घर ले आया। उसने पुआल और चारा सान कर गधों को दिया। यात्रियों ने अपने पैर धोए, और खाया-पिया।

22 जब वे आनन्द मना रहे थे तब नगर के गुण्डों-बदमाशों ने घर को घेर लिया। वे दरवाजे को जोर-जोर से खटखटाने लगे। उन्होंने घर के स्वामी, बूढ़े मनुष्य से कहा, 'उस पुरुष को घर से बाहर निकालो, जो तुम्हारे घर में आया है। हम उससे सम्भोग करेंगे।' [23]घर का स्वामी उनके पास बाहर आया। उसने उनसे कहा, 'नहीं, नहीं, मेरे भाइयो। मेरे घर में आए हुए इस पुरुष के साथ दुराचार मत करो। यह मूर्खतापूर्ण कार्य मत करो। [24]देखो, मेरी एक कुंआरी कन्या है, और इस पुरुष की एक रखेल हैं। मुझे उन्हें बाहर निकालने दो। तुम उन्हें भ्रष्ट करो। जो कार्य तुम्हारी दृष्टि में उचित लगे, वह उनके साथ करो। पर कृपाकर, इस पुरुष के साथ यह मूर्खतापूर्ण कार्य मत करो।' [25]किन्तु वे उसकी बात सुनने को तैयार नहीं हुए। लेवीय पुरुष ने अपनी रखेल को पकड़ा और उसे उनके पास बाहर लाया। उन्होंने रखेल के साथ बलात्कार किया। वे रात भर, सबेरा होने तक उसके साथ दुर्व्यवहार करते रहे। उन्होंने पौ फटने पर उसे भेज दिया।

[26]लेवीय पुरष की रखेल सबेरा होने के पहले आई, और बूढ़े मनुष्य के घर के द्वार पर जहां उसका स्वामी ठहरा हुआ था, गिर पड़ी। वह सूर्य का प्रकाश फैलने तक वहाँ पड़ी रही। [27]उसका स्वामी सबेरे उठा। उसने घर का द्वार खोला। वह अपनी यात्रा पर जाने के लिए घर से बाहर निकला। तब उसने अपनी रखेल को देखा जो घर के द्वार पर पड़ी थी। उसके हाथ देहरी पर थे। [28]लेवीय पुरुष ने उसे पुकारा, 'उठो। अब हमें चलना चाहिए।' पर उसे उत्तर नहीं मिला। तब उसने उसको अपने गधे पर रखा और अपने घर की ओर चला गया।

29 वह अपने घर आया। उसने एक छुरा लिया। उसने अपनी रखेल के शव को उठाया और उसके अंग-अंग काट दिए। उसने उसके बारह टुकड़े किए और उनको समस्त इस्राएली

* मूल में, 'प्रभु के घर'।

19 : 22 उत 19 : 4 ; हो 9 : 9 ; 10 : 9 **19 : 29** 1 शम 11 : 7

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कुलों के क्षेत्रों में भेज दिया। 30उसने दूतों को
यह आदेश दियाः 'तुम सब इस्राएलियों से यों
कहना, "जिस दिन इस्राएली मिस्र देश से
बाहर निकले थे उस दिन से आज तक क्या
किसी व्यक्ति ने ऐसी घटना देखी है? अतः इस
घटना पर सोचिए, विचार-विमर्श कीजिए,
और फिर बोलिए।" ' तब देखनेवालों ने यह
कहा, 'इस्राएलियों के मिस्र देश से बाहर
निकलने के बाद आज तक ऐसी घटना कभी
नहीं घटी, और न देखी गई।* '

बिन्यामिनियों से युद्ध

20 अतः दान प्रदेश से बएर-शेबा तक तथा
गिलआद प्रदेश में रहनेवाले सब
इस्राएली युद्ध के लिए बाहर निकले। समस्त
इस्राएली मंडली संगठित होकर प्रभु के सम्मुख
मिस्पाह में एकत्र हुई। 2इस्राएली समाज के
स्तंभ, अर्थात् इस्राएली कुलों के नेतागण
परमेश्वर के निज लोगों की इस धर्मसभा में
उपस्थित थे। ये तलवार चलानेवाले चार लाख
पैदल सैनिक थे। 3(बिन्यामिन कुल के लोगों
ने सुना कि इस्राएली मिस्पाह गए हैं।)
इस्राएलियों ने लेवीय पुरुष से पूछा, 'हमें
बताइए कि यह कुकर्म कैसे हुआ?' 4जिस स्त्री
की हत्या की गई थी, उसके पति ने उत्तर दिया,
'मैं और मेरी रखेल रात व्यतीत करने के लिए
बिन्यामिन प्रदेश के गिबआह नगर में आए थे।
5तब गिबआह के प्रमुख नागरिकों ने मुझ पर
हमला कर दिया। उन्होंने रात में घर को घेर
लिया, जहां मैं ठहरा था। वे मेरी हत्या करना
चाहते थे। उन्होंने मेरी रखेल को भ्रष्ट किया,
और वह मर गई। 6मैंने अपनी रखेल के शव
को लेकर उसके टुकड़े-टुकड़े किए, और
इस्राएलियों के समस्त पैतृक भूमि-प्रदेशों में
भेज दिया, क्योंकि गिबआह के नागरिकों ने
इस्राएली समाज में व्यभिचार और मूर्खतापूर्ण
कार्य किया था। 7आप सब इस्राएली लोग यहां
एकत्र हुए हैं। अब आप अपनी सलाह और
सम्मति दीजिए।'

8 तब सब लोग खड़े हो गए। उन्होंने
सर्वसम्मति से कहा, 'हममें से कोई भी व्यक्ति
अपने तम्बू में नहीं जाएगा, और न अपने घर
को लौटेगा। 9अब हम गिबआह के नागरिकों
के साथ यह व्यवहार करेंगे : हम चिट्ठी
डालकर चुनाव करेंगे। 10हम प्रत्येक इस्राएली
कुल के सौ पुरुषों में से दस, हजार में से सौ,
और दस हजार में से एक हजार पुरुष चुनेंगे।
ये सेना की भोजन-व्यवस्था करेंगे। ये उन
लोगों के लिए भोजन लाएंगे जो बिन्यामिन
प्रदेश के गिबआह में जाकर उसके नागरिकों
को उनके मूर्खतापूर्ण कार्य का बदला देंगे, जो
उन्होंने इस्राएली समाज में किया है।' 11इस
प्रकार समस्त इस्राएली लोग संगठित होकर
उस नगर के विरुद्ध एकत्र हो गए।

12 इस्राएली कुलों ने बिन्यामिन कुल के
लोगों को दूतों के हाथ से यह सन्देश भेजा, 'यह
कैसा कुकर्म तुम्हारे मध्य किया गया? 13अब
तुम गिबआह नगर के गुण्डों-बदमाशों को
हमारे हाथ में सौंप दो। हम उन्हें मृत्युदण्ड देंगे
और इस प्रकार इस्राएली समाज से इस बुराई
को दूर करेंगे।' परन्तु बिन्यामिन कुल के लोगों
ने अपने जाति-भाई इस्राएलियों की बात नहीं
स्वीकार की। 14वे इस्राएलियों से युद्ध करने के
लिए अपने नगरों से बाहर निकले, और
गिबआह नगर में एकत्र हुए। 15उस दिन उन्होंने
भिन्न-भिन्न नगरों से आए हुए बिन्यामिन कुल
के लोगों की हाजिरी ली तो वे सब तलवार
चलानेवाले छब्बीस हजार सैनिक निकले।
इनके अतिरिक्त गिबआह नगर के निवासी भी
थे। 16इस सेना में सात सौ ऐसे चुने हुए सैनिक
थे, जो बाएं हाथ से युद्ध करते थे। वे गोफन से
पत्थर मारने में इतने निपुण थे कि बाल-भर भी
न चूकते थे। 17इस्राएलियों ने भी बिन्यामिनियों
को छोड़कर अपने सैनिकों की हाजिरी ली। वे
सब तलवार चलानेवाले चार लाख सैनिक
निकले। ये सब अनुभवी सैनिक थे।

18 इस्राएली उठे, और वे बेत-एल गए।

---

* प्राचीन अनुवादों के अनुसार

20 : 18 शा 1 : 2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उन्होंने परमेश्वर से पूछा, 'हममें से किस कुल
को सर्वप्रथम बिन्यामिनियों से युद्ध करने के
लिए जाना चाहिए?' प्रभु ने कहा, 'यहूदा कुल
सर्वप्रथम जाएगा।'
19 इस्राएली सबेरे उठे। उन्होंने गिबआह
नगर के सामने पड़ाव डाला। 20वे बिन्यामिनियों
से युद्ध करने को बाहर निकले। उन्होंने
गिबआह नगर के विरुद्ध युद्ध की व्यूह-रचना
की। 21बिन्यामिनी सैनिक युद्ध के लिए गिबआह
नगर से बाहर निकले। उन्होंने उसी दिन
इस्राएलियों के बाईस हजार सैनिकों को
धराशायी कर दिया। 22किन्तु इस्राएलियों ने
पुन: साहस किया। उन्होंने उसी स्थान पर युद्ध
की व्यूह-रचना की, जहां पहले दिन की थी।
23 इस्राएली प्रभु के पास गए। वे सन्ध्या
समय तक उसके सम्मुख रोते रहे। उन्होंने प्रभु
से पूछा, 'क्या हम अपने जाति-भाई
बिन्यामिनियों से युद्ध करने के लिए फिर
जाएं?' प्रभु ने कहा, 'उन पर चढ़ाई करो।'
24अत: इस्राएली दूसरे दिन बिन्यामिनियों
के सपीप गए। 25बिन्यामिनी सैनिक उनका
सामना करने के लिए गिबआह नगर से बाहर
निकले। उन्होंने दूसरे दिन भी इस्राएलियों के
अठारह हजार सैनिकों को धराशायी कर दिया।
ये धराशायी पुरुष तलवार चलानेवाले सैनिक
थे। 26तब सब इस्राएली लोग, समस्त सेना
बेत-एल गई। वे प्रभु के सम्मुख आए। वे वहां
प्रभु के सम्मुख बैठ गए। वे रोए। उन्होंने सन्ध्या
समय तक उपवास किया, और प्रभु के सम्मुख
अग्नि-बलि और सहभागिता-बलि अर्पित
की। 27-28उन दिनों में परमेश्वर के विधान की
मंजूषा वहां थी और हारून का पौत्र तथा
एलआजर का पुत्र पीनहास प्रभु के सम्मुख
उपस्थित रहकर सेवा करता था। इस्राएली
लोगों ने प्रभु से पूछा, 'क्या हम अपने जाति-
भाई बिन्यामिनियों से युद्ध करने के लिए फिर
जाएं अथवा युद्ध बन्द कर दें?' प्रभु ने उत्तर
दिया, 'चढ़ाई करो; क्योंकि मैं कल उन्हें
तुम्हारे हाथ में सौंप दूंगा।'
29 इस्राएलियों ने गिबआह नगर के चारों
ओर सैनिकों को घात में बैठा दिया। 30वे तीसरे
दिन भी बिन्यामिनियों से युद्ध करने के लिए
गए। उन्होंने पहले के समान गिबआह नगर के
विरुद्ध युद्ध की व्यूह-रचना की। 31तब
बिन्यामिनी सैनिक इस्राएलियों का सामना
करने के लिए नगर से बाहर निकले। इस्राएली
उन्हें नगर से दूर खींच ले गए। बिन्यामिनियों
ने पहले के समान इस्राएली सैनिकों को दो
पहाड़ी मार्गों पर धराशायी करना और उनका
संहार करना आरम्भ किया। उनमें एक पहाड़ी
मार्ग बेत-एल की ओर जाता है, और दूसरा
गिबओन को। उन्होंने मैदान में प्राय: तीस
इस्राएली सैनिक मारे। 32बिन्यामिनियों ने कहा,
'इस्राएली पहले के समान पराजित होकर
हमारे सम्मुख से भाग रहे हैं।' इस्राएली
सैनिकों ने कहा था, 'आओ, हम भाग जाएं;
और बिन्यामिनी सैनिकों को नगर से दूर,
पहाड़ी मार्गों पर खींचकर ले जाएं।'
33 तब इस्राएली सेना का प्रमुख दल अपने
स्थान से उठा, और उसने बअल-तामर नगर में
युद्ध की व्यूह-रचना की। घात में बैठे हुए
सैनिक, जो गाबा नगर की पश्चिमी दिशा में बैठे
थे, अपने स्थान से निकल पड़े। 34इस प्रकार
समस्त इस्राएलियों के दस हजार चुने हुए
सैनिक गिबआह नगर के सम्मुख आए। घमासान
युद्ध हुआ। बिन्यामिनी सैनिक नहीं जानते थे
कि संकट उनके सन्निकट है। 35प्रभु ने इस्राएलियों
के लिए बिन्यामिनियों को पराजित कर दिया।
इस्राएलियों ने उस दिन बिन्यामिनियों के
पच्चीस हजार एक सौ सैनिकों का संहार
किया। ये तलवार चलानेवाले सैनिक थे।
36बिन्यामिनियों ने देखा कि वे पराजित हो गए।
इस्राएलियों ने युद्ध-भूमि बिन्यामिनियों के
लिए छोड़ दी, क्योंकि उन्हें घात में बैठे हुए
सैनिकों पर भरोसा था, जिनको उन्होंने गिबआह
नगर के चारों ओर बैठाया था। 37घात में बैठे
हुये सैनिक अविलम्ब निकले। उन्होंने गिबआह
नगर पर धावा बोल दिया। वे नगर में फैल गए।

---

20 : 28 गण 25 : 7 20 : 29 यहो 8 : 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उन्होंने नगर में रहनेवालों को तलवार से मार
डाला। 38 इस्राएली सेना के प्रमुख दल और
घात लगाने वाले दल के मध्य यह संकेत-
चिह्न निश्चित किया गया था: 'जब घात
लगानेवाला दल नगर से धुएं का बादल
उड़ाएगा, 39तब इस्राएली सेना का प्रमुख दल
युद्ध-भूमि में लौट आएगा।' अब तक बिन्यामिनी
सैनिकों ने प्रायः तीस इस्राएली सैनिकों को
धराशायी कर दिया था, और वे उनका संहार
करना आरम्भ कर चुके थे। उन्होंने कहा,
'पहले युद्ध के समान इस बार भी इस्राएली
पराजित हो रहे हैं।' 40उसी समय संकेत-चिह्न,
धुएं का खम्भा नगर से ऊपर उठने लगा।
बिन्यामिनियों ने मुड़कर पीछे देखा कि सारे
नगर से धुआं आकाश की ओर उठ रहा है।
41तब इस्राएली सैनिकों ने लौटकर अपना
पीछा करनेवालों पर आक्रमण कर दिया।
बिन्यामिनी सैनिक आतंकित हो गए, क्योंकि
उन्होंने देखा कि संकट उनके सन्निकट है!
42अतः वे इस्राएलियों के सम्मुख पीठ दिखाकर
निर्जन प्रदेश के मार्ग की ओर भागने लगे।
इस्राएली सेना के प्रमुख दल ने उनको दबाया।
नगर से इस्राएली निकले, और उन्होंने पीछे से
उनका संहार किया। 43उन्होंने बिन्यामिनियों
के टुकड़े-टुकड़े कर दिए। उन्होंने नोहाह नगर
से पूर्व दिशा में गाबा नगर तक उनका पीछा
किया, और उन्हें रौंद डाला। 44बिन्यामिनियों
के अठारह हजार सैनिक मारे गए। ये सब
शूरवीर योद्धा थे। 45शेष बिन्यामिनी सैनिक
मुड़े और वे निर्जन प्रदेश की दिशा में रिम्मोन
की चट्टान की ओर भागे। इस्राएलियों ने उनमें
से पांच हजार सैनिकों को पहाड़ी मार्गों पर
चुन-चुनकर मार डाला। तत्पश्चात् उन्होंने
बिन्यामिनियों का गिदोम नगर तक पीछा किया
और उनके दो हजार सैनिकों का संहार कर
दिया। 46इस प्रकार उस दिन बिन्यामिनियों के
पच्चीस हजार सैनिक मारे गए। ये तलवार
चलानेवाले सैनिक और शूरवीर योद्धा थे।
47किन्तु छः सौ बिन्यामिनी सैनिक मुड़े और
निर्जन प्रदेश की दिशा में रिम्मोन की चट्टान
की ओर भाग गए। उन्होंने चार महीने तक
रिम्मोन की चट्टान में निवास किया।
48 तब इस्राएली बिन्यामिनियों का पीछा
करना छोड़ कर उनके नगरों की ओर लौटे।
उन्होंने नगर में रहनेवाले सब पुरुषों और
पशुओं का, और जो कुछ भी उन्हें मिला, उन
सब का तलवार से संहार कर दिया। जो-जो
नगर उन्हें मिला उसमें उन्होंने आग लगा दी।

बिन्यामिनियों के लिए पत्नियों की व्यवस्था

21 इस्राएली पुरुषों ने मिस्पाह में यह शपथ
खाई: 'हममें से कोई भी पिता अपनी
पुत्री का विवाह बिन्यामिन कुल में नहीं
करेगा।' 2तत्पश्चात् वे बेत-एल में आए। वे
वहां परमेश्वर के सम्मुख सन्ध्या समय तक बैठे
रहे। वे उच्च स्वर में फूट-फूट कर रोए।
3उन्होंने कहा, "हे इस्राएलियों के प्रभु परमेश्वर,
हमारे इस्राएली समाज में यह घटना क्यों घटी,
कि आज हमारे कुलों में से एक कुल समाप्त
हो गया?' 4वे दूसरे दिन सबेरे उठे। उन्होंने वहां
एक वेदी बनाई, और अग्नि-बलि तथा
सहभागिता-बलि चढ़ाई। 5उन्होंने पूछा,
'इस्राएली कुलों में से कौन कुल यहां प्रभु के
पास धर्मसभा में नहीं आया है?' अभिशाप की
यह महाशपथ घोषित की गई थी कि जो कुल
प्रभु के पास मिस्पाह में नहीं आएगा, उसे
निश्चय ही मृत्यु-दण्ड दिया जाएगा। 6परन्तु
इस्राएलियों में अपने जाति-भाई बिन्यामिनियों
के प्रति दया उत्पन्न हुई। उन्होंने कहा, 'आज
इस्राएली कुलों में से एक कुल कट गया।
7इसके अतिरिक्त हमने प्रभु की शपथ खाई है
कि हम अपनी पुत्रियों का विवाह बिन्यामिनियों
से नहीं करेंगे। अब हम क्या करें? जो
बिन्यामिनी पुरुष बच गए हैं, उनके लिए
स्त्रियां कैसे प्राप्त करें?'
8 उन्होंने फिर पूछा, 'इस्राएली कुलों में से
कौन कुल प्रभु के पास मिस्पाह नहीं आया?'
ज्ञात हुआ कि गिलआद प्रदेश के याबेश नगर
से कोई भी व्यक्ति धर्मसभा के लिए शिविर में
नहीं आया है; 9क्योंकि लोगों की हाजिरी ली
गई थी। गिलआद प्रदेश के याबेश नगर का एक

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

निवासी भी वहां उपस्थित नहीं था। 10अत:
इस्राएली मंडली ने अपने बारह हजार शूरवीर
सैनिकों को वहां भेजा, और उन्हें यह आदेश
दिया, 'जाओ, और गिलआद प्रदेश के याबेश
नगर के निवासियों को, स्त्रियों और बच्चों को
भी, तलवार से नष्ट कर दो। 11तुम्हें यह कार्य
करना होगा : तुम प्रत्येक पुरुष को, तथा उस
स्त्री को जो पुरुष के साथ सहवास कर चुकी
है, पूर्णत: नष्ट कर देना ; किन्तु कन्याओं को
जीवित छोड़ देना।* उन्होंने ऐसा ही किया।
12उन्हें गिलआद प्रदेश के याबेश नगर के
निवासियों में चार सौ कुंआरी कन्याएं मिलीं,
जिन्होंने पुरुष के साथ कभी सहवास नहीं
किया था। वे उन्हें शिलोह के पड़ाव में, जो
कनान देश में है, ले आए।

13 इस्राएली मण्डली ने रिम्मोन की चट्टान
में रहनेवाले बिन्यामिनियों के पास सन्देश भेजा
और उनके साथ शान्ति स्थापित की।
14बिन्यामिनी तत्काल लौट आए। इस्राएलियों
ने उन्हें गिलआद प्रदेश के याबेश नगर की
कन्याएं दे दीं, जिन्हें सैनिकों ने जीवित छोड़
दिया था। पर ये कन्याएं उनके लिए पर्याप्त नहीं
थीं।

15 लोगों को बिन्यामिन कुल पर दया आ
गई, क्योंकि प्रभु ने इस्राएली कुलों में दरार कर
दी थी। 16इस्राएली मंडली के धर्मवृद्धों ने कहा,
'हम शेष बिन्यामिनियों के लिए स्त्रियाँ प्राप्त
करने के लिए क्या करें, क्योंकि बिन्यामिन कुल
की स्त्रियों का नामोनिशान मिट गया है।'
17उन्होंने आगे कहा, 'हम बिन्यामिन कुल के
शेष लोगों की रक्षा किस प्रकार करें? ऐसा न
हो कि इस्राएली समाज में से बिन्यामिन कुल
मिट जाए। 18हम अपनी पुत्रियों का विवाह
उनके साथ नहीं कर सकते है।' इस्राएलियों ने
यह शपथ खाई थी, 'अपनी पुत्री का विवाह
बिन्यामिनी पुरुष के साथ करनेवाला व्यक्ति
अभिशप्त है!' 19धर्मवृद्धों ने फिर कहा, 'सुनो,
शिलोह में प्रभु का यात्रा-पर्व प्रतिवर्ष मनाया
जाता है।' (शिलोह नगर बेत-एल के उत्तर में,
और बेत-एल नगर से शकेम नगर को जानेवाले
पहाड़ी मार्ग की पूर्व दिशा में तथा लबोनाह के
दक्षिण में स्थित है।) 20धर्मवृद्धों ने बिन्यामिनी
पुरुषों को यह निर्देश दिया, 'जाओ, और
अंगूर-उद्यान में घात लगाकर बैठो। 21देखते रहो!
जब शिलोह नगर की कन्याएं समूह-नृत्य में
नृत्य करने के लिए बाहर निकलेंगी तब तुम
अंगूर-उद्यान से बाहर निकलना। प्रत्येक पुरुष
शिलोह की कन्याओं में किसी कन्या को पकड़
कर उसे अपनी पत्नी बना ले। इसके बाद तुम
अपने बिन्यामिन प्रदेश को चले जाना। 22यदि
उन कन्याओं के पिता अथवा भाई हमसे
शिकायत करने आएंगे तो हम उनसे यह कहेंगे,
''हम पर कृपा कीजिए, और कन्याएं उन्हें दे
दीजिए। हमने युद्ध में प्रत्येक बिन्यामिनी
पुरुष के लिए स्त्री नहीं ली थी। आप लोगों ने
भी उन्हें ये कन्याएं नहीं दी थीं। यदि आप ऐसा
करते तो अपनी शपथ भी तोड़ते और दोषी
ठहरते।'' '

23 शेष बिन्यामिनी पुरुषों ने ऐसा ही किया।
जिन नर्तकियों का उन्होंने अपहरण किया था,
उनमें से उन्होंने अपनी संख्या के अनुसार
अपनी-अपनी पत्नी चुन ली। तत्पश्चात् वे
अपने पैतृक भूमि-क्षेत्र को लौट गए। उन्होंने
अपने नगरों का पुनर्निर्माण किया, और उनमें
बस गए।

24 उसी समय इस्राएली लोग भी वहां से
अपने-अपने कुल और गोत्र को चले गए।
प्रत्येक कुल शिलोह से अपने पैतृक भूमि-क्षेत्र
को लौट गया।

25 उन दिनों में इस्राएली समाज में राजा की
प्रथा न थी। हरएक व्यक्ति वही कार्य करता था
जो उसकी दृष्टि में उचित प्रतीत होता था।

---

* प्राचीन अनुवादों के अनुसार।

21 : 11 गण 31 : 17 21 : 25 शा 17 : 6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रूत

पुस्तक परिचय

भारतीय परिवेश में वस्तुतः इस लघु पुस्तिका का शीर्षक ''एक आदर्श सास, एक आदर्श बहू की कहानी'' होना चाहिए। शासक ग्रंथ का युग अनेक लड़ाइयों और लूट-मार, रक्त-पात का युग था। फिर भी ऐसे अशान्त युग में रूत का इतिहास हमें पढ़ने को मिलता है। रूत मोआबी कौम की स्त्री थी, किन्तु उसका विवाह इस्राएली कौम के एक पुरुष के साथ हुआ था। जब उसके पति की मृत्यु होती है, तब वह अपनी इस्राएली सास के प्रति जो निष्ठा और प्रेम प्रकट करती है, वह वस्तुतः एक आदर्श है। इसी सद्व्यवहार में इस्राएलियों के परमेश्वर के प्रति उसकी भक्ति भी प्रकट होती है। वह अपनी सास के साथ इस्राएल देश को लौटती है, और अन्ततः उसका विवाह उसके पूर्व पति के एक रिश्तेदार से होता है और यों वह इस्राएल के महानतम राजा दाऊद की पर-दादी बनती है। प्रभु येशु की वंशावली में उसका नाम भी सम्मिलित है।

शासक ग्रंथ में हमें यह बताया गया था कि जब-जब इस्राएली लोग अपने परमेश्वर से विमुख होते थे, तब-तब उन पर संकट और विनाश के बादल छा जाते थे। किन्तु रूत की कहानी परमेश्वर के सर्वव्यापी प्रेम की अभिव्यक्ति है कि परमेश्वर गैर-यहूदी कौम से भी प्रेम करता है, और जब कोई गैर-यहूदी व्यक्ति परमेश्वर की ओर उन्मुख हो जाता है तो उस पर भी परमेश्वर आशिष की वर्षा करता है।

यहूदियों के धर्मशास्त्र में यह पुस्तिका **''पंचलेख''** (अर्थात् रूत, श्रेष्ठगीत, सभोपदेशक, शोकगीत तथा एस्तर) में सम्मिलित है। इसका पठन सप्तसप्ताह पर्व के लिए निर्धारित था।

विषय -वस्तु की रूपरेखा

सास और बहू स्वदेश—बेतलेहम नगर लौटती हैं	**1 : 1-22**
रूत और बोअज का मिलन	**2 : 1—3 : 18**
रूत और बोअज का विवाह	**4 : 1-22**

सास और बहू

1 जब शासक* इस्राएलियों पर शासन करते
थे तब उनके देश में अकाल पड़ा। एक
इस्राएली पुरुष यहूदा प्रदेश के बेतलेहम नगर
से मोआब देश में प्रवास करने के लिए चला
गया। उसके साथ उसकी पत्नी और दो पुत्र भी
गए। 2 उस पुरुष का नाम एलीमेलक, और
उसकी पत्नी का नाम नाओमी था। उसके पुत्रों
के नाम थे—महलोन और किलयोन। वे
एप्राता-वंशज थे और यहूदा प्रदेश के बेतलेहम
नगर के निवासी थे। वे मोआब देश आए और
वहां रहने लगे।

3 कुछ समय बाद नाओमी के पति एलीमेलक
की मृत्यु हो गई, और वह अपने दोनों पुत्रों के

* अथवा ''प्रशासक'', ''न्यायी'' (देखिए शासक 2 : 16 की टिप्पणी)

1 : 1 मी 5 : 2; 1 इत 4 : 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

साथ रह गई। 4उसके पुत्रों ने मोआबी जाति की
स्त्रियों से विवाह कर लिया। उनमें से
एक का नाम ओर्पा और दूसरी का नाम रूत
था।

नाओमी और उसके पुत्र प्राय: दस वर्ष वहां
रहे। 5तत्पश्चात् नाओमी के दोनों पुत्रों, महलोन
और किलयोन, की मृत्यु हो गई। यों वह अपने
पति और दोनों पुत्रों से वंचित हो गई।

6 नाओमी ने मोआब देश में यह सुना कि
प्रभु ने अपने लोगों की सुधि ली है, और स्वदेश
में अच्छी फसल हुई है। इसलिए वह अपनी
दोनों बहुओं के साथ मोआब देश से स्वदेश
लौटने के लिए तैयारी करने लगी। 7वह और
उसकी दोनों बहुएं उस स्थान से बाहर निकलीं,
जहां वे रहती थीं। उन्होंने यहूदा प्रदेश लौटने
के लिए मार्ग पकड़ा। 8नाओमी ने अपनी दोनों
बहुओं से कहा, 'अब तुम अपने-अपने मायके
को लौट जाओ। जैसे तुमने मृत पति के साथ
तथा मेरे साथ सद्व्यवहार किया है, वैसे प्रभु
तुमसे सद्व्यवहार करे। 9प्रभु तुम्हें यह वरदान
दे कि तुम पुन: विवाह कर सको और पति के
घर में आश्रय प्राप्त करो।' नाओमी ने उनका
चुम्बन लिया। उसकी बहुएं छाती पीट-पीट-
कर रोने लगीं। 10उन्होंने उससे कहा, 'नहीं!
हम आपके साथ आपकी जाति के लोगों के
पास वापस जाएंगी।' 11नाओमी ने कहा, 'मेरी
पुत्रियो, लौट जाओ। तुम मेरे साथ क्यों चलोगी?
क्या मेरे गर्भ से अब भी पुत्र उत्पन्न होंगे कि वे
तुम्हारे पति बन सकें? 12लौट जाओ, मेरी पुत्रियो,
चली जाओ। अब मैं बूढ़ी हो चुकी हूं, और
विवाह नहीं कर सकती। यदि मैं तुमसे यह
कहती कि मुझे गर्भ-धारण की आशा है, और
यदि आज रात ही मुझे पति प्राप्त हो जाए, और
मैं पुत्रों को जन्म दूं 13तो क्या तुम उनके बड़े
होने तक प्रतीक्षा करोगी? उस समय तक
तुम विवाह नहीं करोगी? कदापि नहीं, मेरी
पुत्रियो! मैं तुम्हारे कारण बड़ी दु:खी हूं कि प्रभु
का कृपापूर्ण हाथ मुझ पर से उठ गया।' 14बहुएं
जोर-जोर से फिर रोने लगीं। ओर्पा ने अपनी
सास का चुम्बन लिया, और अपने लोगों के
पास लौट गई। पर रूत अपनी सास से चिपकी
रही।

15 नाओमी ने फिर कहा, 'देख, तेरी जेठानी
अपने लोगों के पास, अपने देवताओं के पास
लौट गई है। अब तू भी अपनी जेठानी के पीछे-
पीछे लौट जा।' 16रूत ने कहा, 'आप मुझसे
विनती मत कीजिए कि मैं आपको छोड़ दूं,
आपके पीछे-पीछे न आऊं और लौट जाऊं।

जहां-जहां आप जाएंगी,
वहां-वहां मैं भी जाऊंगी।
जहां आप रहेंगी, वहां मैं भी रहूंगी।
आपके लोग, मेरे लोग होंगे।
आपका परमेश्वर मेरा परमेश्वर होगा।
17 जहां आप अन्तिम सांस लेंगी,
वहां मैं भी मरकर दफन हूंगी।

यदि मृत्यु भी हमें एक-दूसरे से अलग करे
तो प्रभु मेरे साथ कठोर व्यवहार करे, नहीं,
उससे भी अधिक बुरा व्यवहार करे।'

18 जब नाओमी ने देखा कि रूत उसके साथ
जाने के अपने निश्चय पर दृढ़ है, तब वह और
कुछ न बोली।

19 वे दोनों चलते-चलते बेतलेहम नगर में
आईं। जब उन्होंने बेतलेहम नगर में प्रवेश
किया तब उनके कारण पूरे नगर में हलचल मच
गई। स्त्रियों ने पूछा, 'क्या यह नाओमी है?'
20नाओमी ने उनसे कहा, 'कृपाकर, अब मुझे
"नाओमी"* मत कहो, बल्कि मुझे "मारा"**
कहो; क्योंकि सर्वशक्तिमान प्रभु ने मुझे बहुत
दु:ख दिया है। 21मैं हरी-भरी गृहस्थी के साथ
परदेश गई थी, पर प्रभु मुझे खाली हाथ स्वदेश

---

* नाओमी का अर्थ 'सुखी' ** अर्थात् 'दु:खी'

1:11 उत 38:11; व्य 25:5 **1:16** 2 शम 15:21 **1:20** नि 15:23 **1:21** अय्य 1:21

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लौटा लाया। जब प्रभु ने ही मुझे दुखिया बनाया है; सर्वशक्तिमान प्रभु ने मुझ पर विपत्ति ढाही है, तब क्यों तुम मुझे नाओमी कहती हो?'

22यों नाओमी अपनी मोआबी बहू रूत के साथ मोआब देश से लौटी। जौ की फसल की कटनी के आरम्भिक दिन थे, जब नाओमी और रूत ने बेतलेहम नगर में प्रवेश किया।

रूत और बोअज

2 नाओमी के पति का एक रिश्तेदार था। उसका नाम बोअज था। उसके पास अपार धन-सम्पत्ति थी। वह एलीमेलक के परिवार का था।

2 मोआबी रूत ने नाओमी से कहा, 'खेत में सिला बीनने के लिए मुझे जाने दीजिए। जो फसल काटनेवाला मुझ पर कृपा-दृष्टि करेगा, उसके पीछे-पीछे मैं सिला बीनूंगी।' नाओमी ने उससे कहा, 'जा, मेरी पुत्री!' 3अत: रूत चली गई। वह फसल काटनेवाले के पीछे-पीछे सिला बीनने के लिए खेत में आई। संयोगवश रूत खेत के उस भाग में सिला बीनने लगी जो एलीमेलक के सम्बन्धी बोअज का था।

4 बोअज बेतलेहम नगर से आया। उसने फसल काटनेवालों से कहा, 'प्रभु तुम्हारे साथ हो!' उन्होंने उत्तर दिया, 'प्रभु आपको आशिष दे।' 5बोअज ने रूत को देखा तो अपने उस सेवक से पूछा, जो फसल काटनेवालों से काम करा रहा था, 'यह किस परिवार की लड़की है?' 6सेवक ने उत्तर दिया, 'यह मोआब देश की लड़की है। यह नाओमी के साथ मोआब देश से आई है। 7इसने मुझसे पूछा था, "कृपाकर मुझे फसल काटनेवालों के पीछे-पीछे सिला बीनने, और पूलों के आसपास की बालें बटोरने की अनुमति दीजिए।" इसलिए यह खेत में आई, और सबेरे से अब तक निरन्तर काम में जुटी है। इसने क्षण भर भी आराम नहीं किया।

8 बोअज ने रूत से कहा, 'सुनो,+ अब तुम्हें दूसरे व्यक्ति के खेत में जाकर सिला बीनने की आवश्यकता नहीं। तुम मेरे इस खेत को छोड़कर मत जाना। तुम भी मेरी सेविकाओं के साथ रहना। 9जिस-जिस खेत में वे फसल काटेंगी, तुम उनपर दृष्टि रखना, और उनके पीछे-पीछे जाना। मैंने अपने सेवकों को आदेश दे दिया है कि वे तुम्हें स्पर्श न करें। जब तुम्हें प्यास लगेगी तब घड़ों के पास चली जाना। जो पानी सेवक घड़ों में भरेंगे, तुम उसको पीना।' 10रूत ने मुंह के बल गिरकर साष्टांग प्रणाम किया। उसने बोअज से पूछा, 'आपने क्यों मुझपर कृपादृष्टि की, मुझपर ध्यान दिया? मैं परदेशिनी हूं।' 11बोअज ने उसे उत्तर दिया, 'जो व्यवहार तुमने अपने पति की मृत्यु के पश्चात् अपनी सास के साथ किया है, वह सब मुझे बताया गया है। मुझे मालूम हुआ है कि तुम अपने माता-पिता और मातृभूमि को छोड़ कर ऐसे लोगों के साथ रहने के लिए आई हो, जिन्हें तुम पहले कभी जानती भी नहीं थीं। 12प्रभु तुम्हारे कार्य का पुरस्कार तुम्हें दे। इस्राएलियों का प्रभु परमेश्वर, जिसकी छत्रछाया में तुम आई हो, तुम्हें पूर्ण प्रतिफल दे।' 13रूत ने कहा, 'मेरे स्वामी, यद्यपि मैं आपकी किसी भी सेविका के बराबर नहीं हूं तो भी मैंने आपकी कृपा-दृष्टि प्राप्त की। आपने मुझे दिलासा दिया। आपने मुझसे सान्त्वनापूर्ण शब्द कहे।'

14 बोअज ने भोजन के समय रूत से कहा, 'यहां आओ। यह रोटी लो; और इसको सिरके में डुबाकर खाओ।' अत: रूत फसल काटनेवालों के पास बैठ गई। बोअज ने उसे जौ के भुने हुए दाने दिए। उसने पेट भर खाया। उसके पास कुछ बच भी गया। 15जब वह सिला बीनने को उठी तब बोअज ने अपने सेवकों को यह

+ मूल में "मेरी पुत्री"

2 : 1 लेव 19 : 9 ; व्य 24 : 19 2 : 4 भज 129 : 7 2 : 12 भज 17 : 8; 91 : 1

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आदेश दिया, 'पूलों के बीच भी रूत को सिला
बीनने देना और उसका अनिष्ट मत करना।
16उसके लिए पूलों में से भी दाने नोचकर गिरा
देना, जिससे वह उन्हें भी बीन सके। उसे मत
डांटना।'

17 रूत सन्ध्या तक खेत में सिला बीनती
रही। उसके बाद उसने बीना हुआ जौ फटका।
जौ प्रायः दस किलो* निकला! 18उसने उसको
उठाया और वह नगर में आई। उसने बीना हुआ
अनाज अपनी सास को दिखाया। जो भोजन पेट
भर खाने के पश्चात् बच गया था, वह भी उसने
अपनी सास को दे दिया। 19सास ने उससे पूछा,
'आज तूने कहां सिला बीना? तू कहां काम
करती रही? तुझ पर ध्यान देनेवाले व्यक्ति को
प्रभु आशिष दे।' तब रूत ने अपनी सास को
बताया कि वह किस व्यक्ति के खेत में काम
करती रही। उसने कहा, 'उस व्यक्ति का
नाम, जिसके खेत में आज मैंने काम किया,
बोअज है।' 20 नाओमी ने अपनी बहू से कहा,
'जीवितों और मृतकों दोनों पर करुणा करनेवाला
प्रभु, बोअज को आशिष दे।' नाओमी ने आगे
कहा, 'बोअज हमारा सम्बन्धी है। वह हमारे
निकट कुटुम्बियों में से एक है, जिन पर हमारी
देखभाल करने का दायित्व है।' 21रूत ने कहा,
'उसने मुझ से यह भी कहा, "जब तक मेरे
सेवक सब फसल न काट लें तब तक तुम उनके
साथ काम में लगी रहना।"' 22नाओमी ने रूत
से कहा, 'मेरी पुत्री, यह तेरे लिए अच्छा है कि
तू बोअज की सेविकाओं के साथ उसके खेत
में जाए। यदि तू दूसरे व्यक्ति के खेत में जाएगी
तो वे तुझे स्पर्श कर सकते हैं।' 23यों रूत बोअज
की सेविकाओं के साथ काम में लग गई। वह
जौ और गेहूं की फसल की कटनी तक सिला
बीनती रही। वह अपनी सास के साथ ही रहती
थी।

बोअज की सज्जनता

3 उसकी सास नाओमी ने रूत से कहा, 'मेरी
पुत्री, यह मेरा कर्तव्य है कि मैं तेरे लिए पति
का आश्रय खोजूं, जिससे तेरा भला हो।
2बोअज जिसकी सेविकाओं के साथ तू काम
करती है, हमारा कुटुम्बी है। देख, वह आज
रात को खलियान में जौ की ओसाई करेगा। 3तू
स्नान कर, सिर में तेल डाल और साफ-सुथरे
वस्त्र पहिन। इसके बाद तू खलियान में जाना।
परन्तु जब तक बोअज खाना-पीना समाप्त नहीं
कर लेगा तब तक तू स्वयं को उस पर प्रकट
मत करना। 4जब वह सोने के लिए लेटेगा तब
तू उस स्थान को देख लेना, जहां वह सोता है।
उसके बाद तू जाना और उसके पैरों की चादर
उठाकर वहां लेट जाना। तब वह तुझे बताएगा
कि तुझे क्या करना चाहिए।'

5 रूत ने नाओमी से कहा, 'जो आप कहती
हैं, वह मैं करूंगी।'

6 रूत खलियान में गई। उसने अपनी सास
के आदेश के अनुसार कार्य किया। 7बोअज खा-
पी चुका था। उसका हृदय आनन्दमग्न था। वह
सोने के लिए अनाज के ढेर के किनारे आया।
रूत चुपचाप आई। वह बोअज के पैरों की
चादर उठाकर वहीं लेट गई। 8आधी रात को
बोअज चौंक पड़ा। उसने पलटकर देखा कि
उसके पैरों के पास एक स्त्री लेटी हुई है। 9उसने
पूछा, 'तुम कौन हो?' रूत ने उत्तर दिया, 'मैं
आपकी सेविका रूत हूं। कृपाकर, अपनी चादर
मुझे ओढ़ा दीजिए, क्योंकि आप हमारे निकट
कुटुम्बी हैं।' 10बोअज ने कहा, 'मेरी पुत्री, प्रभु
तुम्हें आशिष दे। तुमने अपनी सास के लिये
करुणामय कार्य किया था। अब तुम्हारा यह
कार्य उससे श्रेष्ठ है; क्योंकि तुमने विवाह के
लिए किसी जवान पुरुष को, धनी अथवा गरीब
को, नहीं चुना। 11मेरी पुत्री, तुम मत डरो। जो

* मूल में " एक एपा"

2 : 20 लेवी 25 : 25 ; रूत 4 : 4 3 : 9 व्य 22 : 30 3 : 10 रूत 1 : 10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कुछ तुमने मुझसे कहा है, वह सब मैं तुम्हारे लिए करूंगा। नगर के सब लोग जानते हैं कि तुम चरित्रवान और परिश्रमी हो। 12देखो, यह सच है कि मैं तुम्हारा निकट कुटुम्बी हूं। फिर भी एक और पुरुष है जो तुम्हारा निकटतर सम्बन्धी है। 13इसलिए आज रात ठहर जाओ। यदि वह सबेरे तुम्हारा निकटतम कुटुम्बी होने का दायित्व पूरा करता है तो ठीक है। वह तुमसे विवाह करे। परन्तु यदि वह तुम्हारा निकटतम कुटुम्बी होने के दायित्व को पूरा करने के लिए तत्पर नहीं होगा तो मैं जीवन्त प्रभु की शपथ खाता हूं कि मैं तुम्हारा निकट कुटुम्बी होने का दायित्व पूरा करूंगा। अब तुम यहां सबेरे तक सोती रहो।' 14अत: रूत सबेरे तक उसके पैरों के पास सोती रही। जब इतना प्रकाश नहीं फैला था कि एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को पहचान सके तभी वह उठ गई। बोअज ने कहा, 'किसी को मालूम नहीं होना चाहिए कि खलियान में कोई स्त्री आई थी।'

15 तब बोअज ने कहा, 'तुम अपनी चादर फैलाओ, और उसको पकड़ी रहो।' रूत ने ऐसा ही किया। वह चादर को पकड़ी रही। बोअज ने प्राय: पच्चीस किलो जौ उसकी चादर में उण्डेल दिया और उसके सिर पर रख दिया। तत्पश्चात् रूत नगर को चली गई। 16वह अपनी सास के पास आई। सास ने उससे पूछा, 'क्या हुआ, मेरी पुत्री?' तब जो कुछ बोअज ने उसके लिए किया था, वह उसने अपनी सास को बताया। 17 रूत ने कहा, 'यह पच्चीस किलो जौ भी मुझे दिया है। उसने कहा था, "तुम्हें खाली हाथ अपनी सास के पास नहीं जाना चाहिए।" ' 18नाओमी ने कहा, 'मेरी पुत्री, जब तक तुझे इस बात का पता न चले कि इसका परिणाम क्या होगा, तब तक तू चुपचाप रह। आज जब तक बोअज सब बातें निपटा नहीं लेगा तब तक चैन से नहीं बैठेगा।'

रूत और बोअज का विवाह

4 बोअज नगर के प्रवेश-द्वार पर गया। वह वहां बैठ गया। उसी समय एलीमेलक का निकटतम कुटुम्बी जिसके विषय में बोअज ने चर्चा की थी, वहां से गुजरा। बोअज ने उससे कहा, 'यहां आइए, महाशय। यहां बैठिए।' अत: वह अपना मार्ग छोड़कर वहां बैठ गया। 2बोअज ने नगर के दस वृद्ध बुलाए और उनसे कहा, 'आप भी यहां बैठिए।' वे सब बैठ गए। 3उसके पश्चात् बोअज ने एलीमेलक के निकटतम कुटुम्बी से कहा, 'नाओमी मोआब देश से लौट आई है। वह हमारे भाई एलीमेलक का भूमि-भाग बेचना चाहती है। 4इसलिए मैंने निश्चय किया कि मैं आपके कानों में यह बात डाल दूं और आपसे कहूं कि आप यहां बैठे हुए लोगों के सामने, इन वृद्ध पुरुषों के सम्मुख भूमि को खरीद लीजिए। यदि आप भूमि को छुड़ाना चाहते हैं तो आप उसको छुड़ा लीजिए। यदि उसको छुड़ाना नहीं चाहते हैं तो मुझे बता दीजिए जिससे मुझे मालूम हो जाए। भूमि को खरीदने का प्रथम अधिकार आपका है। आप एलीमेलक के निकटतम कुटुम्बी हैं। आपके पश्चात् मेरा अधिकार है।' उसने कहा, 'मैं भूमि को छुड़ाऊंगा।' 5तब बोअज ने कहा, 'जिस दिन आप भूमि को नाओमी के हाथ से खरीदेंगे, उस दिन मोआबी विधवा रूत आपकी पत्नी बन जाएगी, जिससे पैतृक भूमि पर मृतक के परिवार का अधिकार बना रहे।' 6निकटतम कुटुम्बी ने कहा, 'ऐसी स्थिति में मैं भूमि-भाग को नहीं छुड़ा सकता। ऐसा करने से मैं स्वयं अपनी पैतृक भूमि को क्षति पहुंचाऊंगा। भूमि छुड़ाने का मेरा अधिकार आप ले लीजिए। मैं नाओमी की भूमि को नहीं छुड़ा सकता।'

7 पुराने समय में इस्राएली समाज में यह प्रथा थी। जब व्यक्ति भूमि को बेचता अथवा अदला-बदली करता था, तब वह इस कार्य पर

---

4 : 4 लेव 25 : 25 4 : 7 व्य 25 : 9

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मुहर लगाने के लिए अपने पैर से जूता उतार कर दूसरे को देता था। इस्राएलियों में व्यापार को प्रमाणित करने की यही रीति थी।

8 जब एलीमेलक के निकटतम कुटुम्बी ने बोअज से यह कहा : "आप ही भूमि खरीद लीजिए" तब उसने अपने पैर से जूता उतार कर बोअज को दे दिया। [9]बोअज ने वृद्ध पुरुषों तथा सब लोगों से कहा, 'आज आपलोग इस बात के गवाह हैं कि मैंने एलीमेलक तथा किलयोन और महलोन की समस्त सम्पत्ति नाओमी के हाथ से खरीद ली। [10]इसके अतिरिक्त मैं महलोन की विधवा, मोआबी रूत को पत्नी के रूप में स्वीकार करता हूं, जिससे मृतक का नाम उसकी पैतृक सम्पत्ति पर कायम रहे, और मृतक का नाम उसके भाइयों के मध्य से तथा उसके नगर के सभा-स्थल से लुप्त न हो जाए। आज आप इस बात के गवाह हैं।' [11]नगर के द्वार पर बैठे हुए सब लोगों ने कहा, 'हम गवाह हैं।'

वृद्धों ने यह आशिष दी :

'प्रभु तुम्हारे घर में प्रवेश करनेवाली इस स्त्री
को राहेल और लेआ के सदृश बनाए,
जिन्होंने इस्राएल का घर बसाया था।
तुम एप्राता में धन-सम्पत्ति से समृद्ध हो, और
बेतलेहम नगर में विख्यात।
[12]तुम्हारे वंश के कारण, जिन्हें प्रभु
इस युवती के माध्यम से तुम्हें देगा,
तुम्हारा घर पेरेस के समान बने
जिसे तामार ने यहूदा से जन्म दिया था।'

13 इस प्रकार बोअज ने रूत से विवाह कर लिया। वह उसकी पत्नी बन गई।

बोअज ने रूत से सहवास किया। प्रभु की कृपा से वह गर्भवती हुई, और उसने एक बालक को जन्म दिया। [14]स्त्रियों ने नाओमी से कहा, 'प्रभु धन्य है! उसने तुझे निकटतम कुटुम्बी, अर्थात् एक पोता प्रदान किया। बालक इस्राएली राष्ट्र में विख्यात हो। [15]बालक तेरे प्राण को संजीव करने वाला, तेरे बुढ़ापे की लाठी हो, क्योंकि उसको तेरी बहू ने जन्म दिया है। वह तुझे प्यार करती है, और तेरे लिए सात पुत्रों से भी बढ़कर है।'

[16]नाओमी ने बालक को उठाया, और उसको अपनी छाती से चिपका लिया। वह स्वयं उसका पालन-पोषण करने लगी। [17]पड़ोसिनों ने बालक का नाम 'ओबेद' रखा। उन्होंने कहा, 'नाओमी को एक पुत्र उत्पन्न हुआ है।'

यह बालक यिशय का पिता तथा दाऊद का दादा बना।

राजा दाऊद की वंशावली

18 ये पेरेस के वंशज थे: हेस्रोन का पिता पेरेस था, [19]और हेस्रोन राम का पिता। राम अम्मीनादब का पिता था; [20]और अम्मीनादब नहशोन का पिता। नहशोन सल्मोन का पिता था, [21]और सल्मोन बोअज का पिता। बोअज ओबेद का पिता था, [22]और ओबेद यिशय का पिता। यिशय दाऊद का पिता था।

---

4 : 11 उत 35 : 19. 23-26 **4 : 12** उत 38 : 29 **4 : 13** उत 29 : 31 **4 : 14** लू 1 : 58 **4 : 15** 1 शम 1 : 8
4 : 18 1 इत 2 : 4; मत 1 : 3

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शमूएल : पहला भाग

पुस्तक परिचय

प्रस्तुत पुस्तक में इस्राएली कौम के इतिहास के उस संक्रान्ति काल का वर्णन हुआ है, जब इस्राएली समाज "शासकों" के अधिकार से निकल कर राजतन्त्र में प्रवेश करता है। यह परिवर्तन इस्राएली कौम में अनेक उत्थान-पतन का कारण बनता है! यह परिवर्तन तीन इस्राएली युग-पुरुषों के चारों ओर घूमता है: 1. अंतिम महान शासक तथा नबी शमूएल; 2. सेना-नायक शाऊल, जो इस्राएलियों का पहला राजा हुआ; और 3. उसका प्रतिद्वन्द्वी दाऊद। दाऊद के आरंभिक कार्यों का सम्बन्ध नबी शमूएल एवं राजा शाऊल से है। वीरता और सहृदयता के इन्हीं कार्यों ने लोगों की दृष्टि में दाऊद को राज्य-सिंहासन पर बैठने योग्य प्रमाणित किया। यद्यपि दाऊद दक्षिणी कुल यहूदा का था, तथापि उसने अपने प्रति उत्तरी कुलों की निष्ठा भी जीत ली, यहाँ तक कि राजकुमार योनातन से उसकी घनिष्ठ मित्रता थी।

प्रस्तुत ग्रंथ की विषयवस्तु "पुराना विधान" के अन्य ऐतिहासिक ग्रंथों के सदृश है। उनमें यह धार्मिक दृष्टिकोण प्रतिपादित हुआ है: यदि समाज अथवा व्यक्ति परमेश्वर के प्रति आस्थावान रहा, तो वह सफल होगा। इसके विपरीत परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करने पर वह विनष्ट हो जाएगा। यह अध्याय 2:30 में स्पष्ट बताया गया है। प्रभु परमेश्वर अपने प्रियजन पुरोहित एली से कहता है: "मैं अपने आदर करने वालों का आदर करूंगा, और मुझे तुच्छ समझने वालों को तुच्छ समझूँगा"।

प्रस्तुत ग्रंथ में राजतंत्र के सम्बन्ध में जनता की संमिश्रित भावनाओं को लिपिबद्ध किया गया है—पक्ष और विपक्ष दोनों! राजतंत्र की स्थापना के पूर्व इस्राएली लोग यह विश्वास करते थे कि परमेश्वर ही इस्राएल के कुल-राज्य का वास्तविक राजा है। किन्तु अब इस्राएलियों के अनुरोध पर परमेश्वर उनके लिए एक राजा चुनता है। परन्तु महत्त्वपूर्ण बात यह है कि प्रस्तुत ग्रन्थ के अध्याय 12:13-15 के अनुसार राजा एवं इस्राएली प्रजा दोनों ही परमेश्वर के अधीन माने जाते थे। परमेश्वर के नियम-कानून अर्थात् व्यवस्था के अनुसार समस्त प्रजा को, चाहे कोई धनी हो अथवा निर्धन, पूर्ण अधिकार प्राप्त थे। इन अधिकारों में राजा हस्तक्षेप नहीं कर सकता था। व्यवस्था के प्रति अपनी अवज्ञा के कारण ही राजा शाऊल नबी शमूएल ही दृष्टि में अयोग्य ठहरा।

विषय वस्तु की रूपरेखा

इस्राएली राष्ट्र का शासक शमूएल	**1 : 1 — 7 : 17**
शाऊल का अभिषेक	**8 : 1 — 10 : 27**
राजा शाऊल के शासन-काल के प्रथम वर्ष	**11 : 1 — 15 : 35**
राजा शाऊल और दाऊद	**16 : 1 — 30 : 31**
राजा शाऊल और उसके पुत्रों की मृत्यु	**31 : 1-13**

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शमूएल का जन्म

1 एफ्रइम पहाड़ी प्रदेश के सूफ क्षेत्र में रामाह*
नामक एक नगर था। उस नगर में एक
मनुष्य रहता था। उसका नाम एलकानाह था।
उसके पिता का नाम यरोहाम, और दादा का
नाम एलीहू था। उसका परदादा तोहू था, जो
एफ्रइम प्रदेश के निवासी सूफ का पुत्र था।
2एलकानाह की दो पत्नियाँ थीं: उनमें से पहली
का नाम हन्नाह था, और दूसरी का नाम पनिन्नाह
था। पनिन्नाह को सन्तान उत्पन्न हुई। पर हन्नाह
को कोई सन्तान उत्पन्न नहीं हुई।
3 एलकानाह स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु की
वन्दना करने तथा उसको बलि चढ़ाने के लिए
अपने नगर से शिलोह को प्रतिवर्ष जाता था।
शिलोह में एली के दो पुत्र, होफ्नी और
पीनहास, प्रभु के पुरोहित थे। 4जब एलकानाह
बलि चढ़ाता तब वह अपनी पत्नी पनिन्नाह और
उसके पुत्रों-पुत्रियों को बलि-पशु के मांस के
अनेक टुकड़े देता था। 5यद्यपि वह हन्नाह से प्रेम
करता था तो भी वह उसे बलि-पशु के माँस का
केवल एक टुकड़ा देता था; क्योंकि प्रभु ने
हन्नाह को संतान नहीं दी थी+ । 6हन्नाह की सौत
उसे बुरी तरह चिढ़ाती, ताना मारती थी कि प्रभु
ने उसे कोई सन्तान नहीं दी। 7वह प्रतिवर्ष ऐसा
ही करती थी; जब-जब वे प्रभु-गृह को जाते
तब-तब पनिन्नाह हन्नाह को चिढ़ाती थी।
हन्नाह रोती, और भोजन नहीं करती। 8उसका
पति एलकानाह उससे पूछता, 'हन्नाह, तुम क्यों
रो रही हो ? तुमने भोजन क्यों नहीं किया ? क्यों
तुम्हारा हृदय दुःखी है ? क्या मैं तुम्हारे लिए दस
पुत्रों से बढ़कर नहीं हूँ ?'
9 किसी दिन जब वे शिलोह में खा-पी चुके
तब हन्नाह उठी, और वह प्रभु के सम्मुख खड़ी
हो गई। पुरोहित एली प्रभु के मन्दिर की चौखट
के बाजू में अपने आसन पर बैठा था। 10 हन्नाह
घोर दुःख में डूबी हुई थी।
उसने प्रभु से प्रार्थना की और वह फूट-फूट
कर रोने लगी। 11उसने प्रभु से यह स्पष्ट मन्नत
मानी, 'हे स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु, यदि तू
अपनी सेविका के दुःख पर निश्चय ही दृष्टि
करेगा, मेरी सुधि लेगा, अपनी सेविका को नहीं
भूलेगा, और मुझे, अपनी सेविका को एक पुत्र
प्रदान करेगा तो मैं उसे जीवन भर के लिए तुझ-
प्रभु की सेवा में अर्पित कर दूंगी। उसके सिर
पर उस्तरा कभी नहीं फेरा जाएगा।'
12 हन्नाह प्रभु के सम्मुख बहुत समय से
प्रार्थना कर रही थी। एली उसके ओंठों को
ध्यान से देख रहा था । 13 हन्नाह हृदय में बात
कर रही थी। केवल उसके ओंठ हिल रहे थे,
पर उसकी आवाज सुनाई नहीं दे रही थी। अतः
एली ने समझा कि वह नशे में है। 14एली ने
उससे कहा, 'तुम कब तक नशे में रहोगी ?
जाओ और नशा उतरने दो।' 15हन्नाह ने उत्तर
दिया, 'नहीं, मेरे स्वामी, मैं ऐसी स्त्री हूँ, जिसके
दिन कठिनाई से बीत रहे हैं। न मैंने अंगूर का
रस पीया है,और न शराब। मैं प्रभु के सम्मुख
अपने प्राण को उण्डेल रही थी। 16कृपया मुझे,
अपनी सेविका को ओछी स्त्री मत समझिए।
मैं अपने दुःख और चिढ़ की अधिकता के
कारण अब तक बात करती रही।' 17एली ने
कहा, 'शान्ति से जाओ ! जो मांग तुमने इस्राएल
के परमेश्वर से की है, वह तुम्हें प्रदान करे।'
18हन्नाह ने कहा, 'मुझ पर, आपकी सेविका
पर, आपकी कृपा-दृष्टि बनी रहे !' यह कहकर
वह अपनी राह चली गई। वह भोजन-कक्ष में
आई। उसने अपने पति के साथ भोजन किया।
उस दिन के बाद उसने फिर कभी मुंह नहीं
लटकाया।
19 वे सबेरे सोकर उठे। उन्होंने प्रभु के
सम्मुख झुककर वन्दना की। उसके बाद वे
रामाह नगर में अपने घर लौट गए।
एलकानाह ने अपनी पत्नी हन्नाह से सहवास

---

* अथवा, 'रामातइम' +अथवा, "वह हन्नाह को दुगुना टुकड़ा देता था, क्योंकि वह हन्नाह से प्रेम करता था, यद्यपि प्रभु ने..."।

1 : 4 व्य 12 : 18 1 : 6 उत 16 : 4-5 1 : 7 नि 23 : 14 1 : 8 रूत 4 : 15 1 : 11 गण 6 : 5; शास 13 : 5; 16 : 17; लू 1 : 48

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

किया। प्रभु ने हन्नाह की सुधि ली। 20 वह गर्भवती
हुई, और यथासमय उसने एक पुत्र को जन्म
दिया। उसने अपने पुत्र का नाम 'शमूएल'*
रखा। वह कहती थी, 'क्योंकि मैंने इसको प्रभु
से माँगा था।'

21 एलकानाह अपने परिवार के साथ प्रभु
को वार्षिक बलि चढ़ाने तथा अपनी मन्नत पूरी
करने के लिए शिलोह गया। 22 परन्तु हन्नाह नहीं
गई। उसने अपने पति से कहा, 'जब बच्चा दूध
पीना छोड़ देगा, तब मैं उसको लाऊंगी कि वह
प्रभु के सम्मुख उपस्थित हो सके, और वहाँ
सदा के लिए रहे।'+ 23 उसके पति एलकानाह
ने उससे कहा, 'जो कार्य तुम्हारी दृष्टि में उचित
प्रतीत हो, वही करो। जब तक तुम बच्चे का दूध
नहीं छुड़ा दोगी तब तक यहीं ठहरना।। प्रभु
तुम्हारे वचन को पूर्ण करे!**' अत: हन्नाह घर
पर ठहर गई। जब तक बालक ने दूध पीना नहीं
छोड़ा तब तक वह उसको दूध पिलाती रही।

24 जब हन्नाह ने बालक का दूध छुड़ाया तब
वह उसको लेकर शिलोह गई। वह अपने साथ
तीन वर्षीय एक बछड़ा, दस किलो आटा और
एक कुप्पा अंगूर का रस ले गई। वह बालक को
शिलोह में प्रभु -गृह में लाई। उस समय वह
लड़का ही था।

25 बछड़े की बलि करने के बाद बालक
पुरोहित एली के पास लाया गया। 26 हन्नाह ने
कहा, 'हे मेरे स्वामी, आपके जीवन की
सौगन्ध! मेरे स्वामी, मैं वही स्त्री हूँ जिसने यहाँ,
आपके पास खड़ी होकर प्रभु से प्रार्थना की थी।
27 मैंने इस बालक के लिए प्रार्थना की थी। जो
मांग मैंने प्रभु से की थी, वह उसने पूर्ण की।
28 इसलिए मैं इसे प्रभु को अर्पित करती हूँ कि
जब तक यह जीवित रहेगा, तब तक प्रभु को
समर्पित रहेगा।' तब हन्नाह ने++ वहाँ प्रभु की
वंदना की।

हन्नाह का स्तुति -गान

2 हन्नाह ने प्रार्थना की और कहा:
'मेरा हृदय प्रभु में फूला नहीं समा रहा है।
मेरे परमेश्वर के कारण मेरा सिर* ऊँचा हुआ
है।
अब अपने शत्रुओं के प्रति मेरा मुंह खुल गया
है;
अपने उद्धारकर्ता के कारण मैं आनन्द मनाती
हूँ।

2 'प्रभु के सदृश कोई पवित्र नहीं है।
निस्सन्देह उसके अतिरिक्त कोई नहीं है।
हमारे परमेश्वर जैसी कोई चट्टान नहीं है।
3 अब गर्व के बोल मत बोलो।
तुम्हारे मुंह से धृष्ट वचन न निकलें;
क्योंकि प्रभु सर्वज्ञ परमेश्वर है,
वही कर्मों को तौलता है।
4 शक्तिशाली योद्धाओं के धनुष टूट गए,
पर निर्बल शक्ति-सम्पन्न हो गए।
5 भर पेट भोजन करने वालों को
अब रोटी के लिए मजदूरी करनी पड़ी;
किन्तु भूखों को लूट के कारण भूख से छुट्टी
मिल गई।
बांझ स्त्री ने सात बार जन्म दिया,
पर अनेक पुत्रों की माता उजड़ गई!

6 'प्रभु ही प्राण लेने वाला,
और वही प्राण देने वाला है!
वही अधोलोक में ले जाने वाला,
और वही मृतक को जिलाने वाला है।
7 प्रभु ही व्यक्ति को निर्धन बनाने वाला,
और वही धनवान बनाने वाला है;
वही गिराने वाला,
और वही उठाने वाला है।
8 वह दुर्बलों को धूल से उठाकर खड़ा करता
है,

---

* ध्वनि साम्य के आधार पर इब्रानी "शअल" (मांगना) अथवा "शाऊल" (मांगा हुआ) और "मे एल" (ईश्वर से); यद्यपि शब्द की व्युत्पत्ति की दृष्टि से हन्नाह का कथन शुद्ध नहीं है। + कुमरान के प्राचीन पाठ के अनुसार, 'मैं उसे सदा के लिए नाजीर के रूप में अर्पित करूंगी' ** अथवा, "अपने वचन को" ++ अथवा, "उन्होंने" * शब्दश: "सींग"

2 : 1-10 लू 1 : 46-55; यश 61 :10 2 : 5 भज 113 : 9; यश 54 : 1 2 : 6 व्य 32 : 39; प्रज्ञा 16 : 13; तोब 13 : 2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दरिद्रों को राख के ढेर से निकालकर उठाता
है।
वह उन्हें शासकों के साथ बैठाता है;
वह उन्हें सम्मानित आसन का उत्तराधिकारी
बनाता है;
क्योंकि पृथ्वी के आधार-स्तम्भ प्रभु के ही
हैं,
इन पर ही उसने जगत को खड़ा किया है।

9 'अपने भक्तों के कदमों की रक्षा प्रभु करता
है;
किन्तु अन्धकार में दुर्जन चुप किए जाएंगे;
क्योंकि मनुष्य केवल अपने बाहु-बल से
प्रबल नहीं होता है।
10प्रभु के विरोधी टुकड़े-टुकड़े कर दिए
जाएंगे;
सर्वोच्च प्रभु आकाश से उन पर गरजेगा।
वह पृथ्वी के सीमांतों तक न्याय करेगा;
वह अपने राजा को शक्ति प्रदान करेगा,
और अपने अभिषिक्त का सिर ऊँचा
उठाएगा।'

11 तत्पश्चात् हन्नाह * अपने घर रामाह नगर
चली गई। बालक शमूएल पुरोहित एली की
उपस्थिति में प्रभु की सेवा करने लगा।

पुरोहित एली के परिवार के विरुद्ध नबूवत

12 एली के पुत्र बदमाश और गुण्डे थे। उन्हें
प्रभु का अनुभव** नहीं था। 13आराधकों के
सम्बन्ध में पुरोहित की यह प्रथा थी: जब कोई
व्यक्ति पशु की बलि करता तब पुरोहित का
सेवक अपने हाथ में त्रिशूल लेकर आ जाता
था। 14जब मांस कड़ाही, देगची, हण्डा अथवा
हण्डी में पकने लगता तब सेवक त्रिशूल को
उस में चुभोता था। जो मांस त्रिशूल में लग
जाता, वह पुरोहित ले लेता था। शिलोह में आने
वाले हरएक इस्राएली के साथ ऐसा ही व्यवहार
किया जाता था। 15इसके अतिरिक्त पुरोहित
का सेवक चर्बी जलाने के पूर्व बलि चढ़ाने वाले
व्यक्ति के पास आता, और उससे यह कहता
था, 'भूंजने के लिए पुरोहित का मांस दो। वह
तुमसे पका हुआ मांस नहीं, वरन् कच्चा मांस
लेंगे।' 16यदि बलि चढ़ाने वाला व्यक्ति उसको
यह उत्तर देता, 'पहले उन्हें चर्बी जला लेने दो।
उसके बाद जितना मांस लेने की इच्छा हो,
उतना ले लेना', तो सेवक उससे कहता था,
'नहीं! मुझे अभी कच्चा मांस दो। यदि तुम नहीं
दोगे तो मैं उसको बल-पूर्वक ले लूंगा।' 17युवा
पुरोहितों का यह पाप प्रभु की दृष्टि में अत्यन्त
गंभीर था, क्योंकि वे प्रभु की भेंट का तिरस्कार
करते थे।

18 बालक शमूएल प्रभु के सम्मुख सेवा
करता था। वह कमर में सूती लुंगी+ पहनता था।
19उसकी माँ उसके लिए प्रति वर्ष एक छोटा
लबादा बनाती थी। जब वह अपने पति के साथ
वार्षिक बलि चढ़ाने के लिए शिलोह जाती तब
उसको शमूएल के पास ले जाती थी। 20पुरोहित
एली एलकानाह और उसकी पत्नी हन्नाह को
आशीर्वाद देता, और यह कहता था, 'जो पुत्र
इस स्त्री ने प्रभु को अर्पित किया है, उसके
स्थान पर प्रभु तुम्हें इस स्त्री के द्वारा संतति प्रदान
करे।' उसके बाद वे अपने घर चले जाते थे।

21 प्रभु ने हन्नाह की सुधि ली। उसका गर्भ
खुल गया। उसने तीन पुत्रों और दो पुत्रियों को
जन्म दिया। बालक शमूएल प्रभु के पवित्र
स्थान में बड़ा हुआ।

22 अब एली बहुत वृद्ध हो गया था। वह
सुना करता था कि उसके पुत्र इस्राएलियों के
साथ दुर्व्यवहार करते हैं। वे मिलन-शिविर के
प्रवेश-द्वार में सेवा करने वाली स्त्रियों से
सम्भोग करते हैं। 23अत: उसने अपने पुत्रों से
कहा, 'तुम ये काम क्यों कर रहे हो? मैं तुम्हारे
कुकर्मों के विषय में लोगों से सुन रहा हूँ।
24नहीं, मेरे पुत्रो! जिन बातों को प्रभु के लोग
सर्वत्र फैला रहे हैं, और जिन्हें मैं सुन रहा हूँ,
वे अच्छी नहीं हैं। 25यदि एक व्यक्ति दूसरे
व्यक्ति के प्रति अपराध करता है, तो परमेश्वर
उसके लिए हस्तक्षेप करता है। परन्तु यदि
व्यक्ति स्वयं प्रभु के प्रति पाप करेगा तो कौन

---

* मूल में 'एलकानाह'। **अथवा, 'नहीं जानते थे'। + अथवा, "एपोद"

2 : 10 भज 89 : 25 2 : 13 लेव 7 : 28-36

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उसकी क्षमा के लिए प्रार्थना कर सकता है?' पुत्रों ने अपने पिता की बातों पर कान नहीं दिया; क्योंकि यह प्रभु की इच्छा थी कि वे मर जाएं।

26 बालक शमूएल बड़ा होता जा रहा था; न केवल कद में, वरन् प्रभु और लोगों की कृपा-दृष्टि में भी।

27 एक दिन परमेश्वर का एक प्रियजन एली के पास आया। उसने एली से कहा, 'प्रभु ने यह कहा है: "जब तेरा पितृ-कुल मिस्र देश में फरओ राजाओं का गुलाम था तब मैंने उस पर स्वयं को प्रकट किया था। 28 मैंने इस्राएल के सब कुलों में से तेरे पितृ-कुल को चुना था कि वह मेरा पुरोहित बने, मेरी वेदी के निकट आए, सुगंधित धूप-द्रव्य जलाए, और मेरे एपोद को वहन करे।+ जो अग्नि-बलि इस्राएली मुझे चढ़ाते थे, वह सब मैं तेरे पितृ-कुल को दे देता था। 29 तब तू क्यों मेरी बलि और भेंटों को, जिनको चढ़ाने की आज्ञा मैंने इस्राएलियों को दी है, लोलुप दृष्टि से देखता है? तू अपने पुत्रों को मुझसे अधिक आदरणीय समझता है जिससे वे मेरे इस्राएली लोगों की प्रत्येक भेंट का सर्वोत्तम अंश खाकर स्वयं को पुष्ट करें?" 30 इसलिए इस्राएल के प्रभु परमेश्वर की यह घोषणा है: "यद्यपि मैंने निस्सन्देह यह कहा था कि तेरा पितृ-कुल सदा मेरे सम्मुख रह कर मेरी सेवा करेगा, और मेरा कृपा-पात्र बनेगा, तथापि अब मुझ -प्रभु की यह गंभीर घोषणा है: मेरी यह बात मुझ से दूर हो! मैं अपने आदर करने वालों का आदर करूंगा, और मुझे तुच्छ समझने वालों को तुच्छ समझूंगा। 31 देख वे दिन आ रहे हैं, जब मैं तेरी संतति को, तेरे पितृ-कुल के आधार-स्तम्भ को तोड़ दूंगा। फलतः तेरे परिवार में वृद्ध पुरुष नहीं रह जाएगा। 32 तब तू अपनी दुर्दशा में इस्राएलियों की समृद्धि जो मैं उन पर बरसाऊंगा ईर्ष्या की दृष्टि से देखेगा*। तेरे परिवार में कोई वृद्ध पुरुष कभी नहीं होगा! 33 मैं तुम में से एक पुरुष को अपनी वेदी के सम्मुख से न हटाकर जीवित रखूंगा, जिससे रो-रोकर उसकी आंखें धंस जाएं, और उसके प्राण मुरझा जाएं। तेरे परिवार के समस्त सदस्य तलवार से मृत्यु के घाट उतार दिए जाएंगे। 34 जो घटना तेरे दोनों पुत्रों, होफ्नी और पीनहास, के साथ घटेगी, वह तेरे लिए एक संकेत-चिह्न होगा। घटना यह है कि तेरे दोनों पुत्रों की मृत्यु एक ही दिन होगी। 35 मैं अपने लिए एक विश्वसनीय पुरोहित नियुक्त करूंगा, जो मेरे हृदय और प्राण की इच्छा के अनुसार कार्य करेगा। मैं उसके लिए सुदृढ़ घर का निर्माण करूंगा। वह मेरे अभिषिक्त के सम्मुख सदा रहकर उसकी सेवा करेगा, और उसका कृपा-पात्र बनेगा। 36 तेरे परिवार के बचे हुए पुरुष उसके पास जाएंगे और चांदी के एक सिक्के के लिए, रोटी के एक टुकड़े के लिए भूमि पर झुककर उसका अभिवादन करेंगे। वे कहेंगे: 'कृपाकर, हमें पुरोहित के किसी भी सेवा-कार्य के लिए भरती कर लीजिए जिससे हम रोटी का एक टुकड़ा खा सकें।' " '

शमूएल को प्रभु का दर्शन

3 बालक शमूएल एली की उपस्थिति में प्रभु की सेवा करता था। उन दिनों में प्रभु का वचन दुर्लभ था। प्रभु का दर्शन कम ही मिलता था। 2 एली की आखें धुंधली पड़ने लगी थीं। अब वह स्पष्ट देख नहीं सकता था।

एक दिन वह अपने स्थान में सो रहा था। 3 परमेश्वर का दीपक अभी बुझा नहीं था। शमूएल प्रभु के मन्दिर में, जहाँ परमेश्वर की मंजूषा थी, सो रहा था। 4 तब प्रभु ने शमूएल को पुकारा, 'शमूएल! शमूएल!!' उसने उत्तर दिया, 'आज्ञा दीजिए, मैं प्रस्तुत हूँ।' 5 वह दौड़कर एली के पास गया। उसने एली से पूछा, 'आपने मुझे बुलाया? आज्ञा दीजिए, मैं प्रस्तुत हूँ।' एली ने शमूएल से कहा, 'मैंने तुझे नहीं बुलाया। जा! फिर सो जा!' अतः शमूएल जाकर सो

+ अथवा 'पहिना करे"। * मूल अस्पष्ट।

2 : 26 लू 2 : 40,52; प्रव 46 : 13 **2 : 28** नि 28 : 1; लेव 7 : 35-36 **2 : 31** 1 शम 4: 11 **2 : 33** 1 शम 22 : 16-19 **2 : 35** 1 रा 2 : 35; इब्र 2 : 17 **3 : 3** लेव 24: 3

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गया। 6प्रभु ने पुन: पुकारा, 'शमूएल!' शमूएल
उठा। वह एली के पास गया। उसने पूछा,
'आपने मुझे बुलाया? आज्ञा दीजिए, मैं प्रस्तुत
हूँ।' पर एली ने कहा, 'पुत्र, मैंने तुझे नहीं
बुलाया। जा! फिर सो जा!' 7शमूएल को प्रभु
का अनुभव अब तक नहीं हुआ था। प्रभु का
वचन अब तक उस पर प्रकट नहीं किया गया
था। 8प्रभु ने तीसरी बार शमूएल को पुन:
पुकारा। शमूएल उठा। वह एली के पास गया।
उसने पूछा, 'आपने मुझे बुलाया? आज्ञा
दीजिए, मैं प्रस्तुत हूँ।' अब एली की समझ में
आया कि इस लड़के को प्रभु बुला रहा है।
9अत: एली ने शमूएल से कहा, 'जा! फिर सो
जा! यदि वह तुझे फिर बुलाएगा तो तू यह
कहना: "प्रभु, बोल; तेरा सेवक, मैं सुन रहा
हूँ।" ' अत: शमूएल चला गया। वह अपने
स्थान में सो गया।

10 तब प्रभु आ खड़ा हुआ। उसने पहले के
समान शमूएल को पुकारा, 'शमूएल! शमूएल!!'
शमूएल ने उत्तर दिया, 'प्रभु, बोल! मैं, तेरा
सेवक, सुन रहा हूँ।' 11प्रभु ने शमूएल से कहा, 'मैं
इस्राएल में ऐसा कार्य करने वाला हूँ, कि उसके
विषय में जो भी सुनेगा उसका कलेजा दहल
जाएगा*। 12उस दिन मैं उन सब बातों को
आरम्भ से अन्त तक पूर्ण करूंगा, जो मैंने एली
के परिवार के विषय में कही हैं। 13तू उसे यह
बात बताएगा+ कि मैं उसके परिवार को स्थाई
रूप से दण्डित कर रहा हूँ; क्योंकि वह अपने
पुत्रों के अधर्म को जानता था कि वे परमेश्वर
की निन्दा कर रहे हैं, फिर भी उसने उन्हें नहीं
रोका! 14इसलिए मैं एली के परिवार के
सम्बन्ध में यह शपथ खाता हूं कि उस के
परिवार के अधर्म का प्रायश्चित न बलि और
न भेंटों के चढ़ाने से कभी हो सकेगा।'

15 शमूएल सबेरे तक लेटा रहा। तत्पश्चात्
उसने प्रभु-गृह के द्वार खोले। शमूएल एली को
दर्शन के विषय में बताने से डर रहा था। 16एली
ने शमूएल को बुलाया। उसने शमूएल से कहा,
'मेरे पुत्र, शमूएल!' शमूएल ने उत्तर दिया,
'आज्ञा दीजिए, मैं प्रस्तुत हूं।' 17एली ने पूछा,
'उसने तुझ से क्या बात कही? वह मुझ से मत
छिपा। जो बातें उसने तुझ से कही हैं, यदि तू
उनमें से एक बात भी मुझ से छिपाएगा, तो
परमेश्वर तेरे साथ कठोर से कठोर व्यवहार
करे!' 18अत: शमूएल ने सब बातें उसको बता
दीं; और उससे कुछ नहीं छिपाया। एली ने
कहा, 'वह प्रभु है! जो उसकी दृष्टि में उचित
है, वही वह करे!'

19 शमूएल और बड़ा हुआ। प्रभु उसके
साथ था। जो बातें उसने शमूएल से कही थीं,
उसने उन्हें पूरा किया; एक भी निष्फल नहीं
हुई। 20दान प्रदेश से बएर-शेबा तक रहने वाले
समस्त इस्राएलियों को ज्ञात हो गया कि
शमूएल प्रभु के नबी के रूप में मान्य ठहरा है।
21प्रभु ने शमूएल को शिलोह में पुन: दर्शन
दिया, क्योंकि प्रभु अपने सन्देश के माध्यम से
शमूएल पर स्यवं को शिलोह में प्रकट करता
था।

4 शमूएल की चर्चा समस्त इस्राएली देश में
फैल गई। उस समय एली बहुत वृद्ध हो गया
था। उसके पुत्र अपने ही मार्ग पर चल रहे थे।
पर उनका मार्ग प्रभु की दृष्टि में कुमार्ग था।**

मंजूषा पर पलिश्तियों का कब्जा

उन्हीं दिनों में यह घटना घटी। पलिश्ती सेना
इस्राएलियों से युद्ध करने के लिए एकत्र हुई।
अत: इस्राएली पलिश्तियों का सामना करने के
लिए नगर से बाहर निकले। उन्होंने एबन-एजर
में पड़ाव डाला और पलिश्ती सेना ने अपेक में
पड़ाव डाला। 2पलिश्तियों ने इस्राएलियों के
विरुद्ध युद्ध की व्यूह-रचना की। घमासान युद्ध
होने लगा। पर इस्राएली पलिश्तियों से हार
गए। पलिश्तियों ने इस्राएलियों के चार हजार
सैनिकों को युद्ध-भूमि में मार डाला। 3जब
इस्राएली सेना पड़ाव में आई तब इस्राएली
धर्मवृद्धों ने यह कहा, 'प्रभु ने हमें आज
पलिश्तियों से क्यों पराजित करवाया? आओ,

---

* शब्दश: "सुननेवालों के दोनों कान झनझना जाएंगे" + मूल में, "मैं उसे बताऊंगा" ** यूनानी पाठ के अनुसार।

3 : 18 अय्य 1 : 21

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हम शिलोह से प्रभु के विधान की मंजूषा ले आएं, जिससे प्रभु हमारे मध्य आए, और हमें हमारे शत्रुओं के पंजे से मुक्त करे।' 4अत: उन्होंने लोगों को शिलोह भेजा। वे वहां से करूबों पर विराजने वाले, स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु की विधान-मंजूषा ले आए। एली के दोनों पुत्र, होफ्नी और पीनहास परमेश्वर की विधान-मंजूषा के साथ वहां थे।

5 जब प्रभु की विधान-मंजूषा पड़ाव में पहुँची तब इस्राएलियों ने इतने जोर से महा जयघोष किया कि पृथ्वी गूंज उठी। 6पलिश्तियों ने इस्राएलियों के जयघोष की आवाज सुनी। उन्होंने कहा, 'इब्रानियों के पड़ाव में होने वाले इस महा जयघोष का कारण क्या है?' उन्हें मालूम हुआ कि प्रभु की मंजूषा पड़ाव में आ गई है। 7पलिश्ती भयभीत हो गए। उन्होंने कहा, 'उनके पड़ाव में उनके देवता आ गए हैं!' उन्होंने कहा, 'हाय! अब क्या होगा? पहले ऐसा कभी नहीं हुआ था। 8हाय! अब क्या होगा? कौन हमें इन महाबली देवताओं के हाथ से छुड़ा सकेगा? ये वे ही देवता हैं, जिन्होंने सब प्रकार की महामारियों और अपने वचनों* से मिस्र निवासियों को नष्ट कर दिया था। 9ओ पलिश्तियो! साहस करो! पौरुष दिखाओ! अन्यथा, जैसे इब्रानी तुम्हारे गुलाम हैं, वैसे तुम भी उनके गुलाम बन जाओगे। पुरुष के समान व्यवहार करो, युद्ध करो!'

10 अत: पलिश्ती सेना ने पुन: युद्ध किया, और इस्राएली पराजित हो गए। हर एक इस्राएली सैनिक अपने-अपने तम्बू को भाग गया। उस दिन इस्राएलियों का महा संहार किया गया। उनके तीस हजार पैदल-सैनिक मारे गए। 11पलिश्तियों ने परमेश्वर की मंजूषा छीन ली। एली के दोनों पुत्र, होफ्नी और पीनहास भी मार डाले गए।

12 बिन्यामिन कुल का एक सैनिक युद्ध भूमि से भागा। वह उसी दिन शिलोह पहुंचा। उसके वस्त्र फटे हुए थे। सिर पर धूल थी। 13जब वह आया तब एली द्वार के पास अपने आसन पर बैठा हुआ था। उसका हृदय परमेश्वर की मंजूषा के लिए विकल था। जब सैनिक ने नगर में प्रवेश किया, और नगर-वासियों को युद्ध का समाचार सुनाया तब सारा नगर चिल्ला उठा। 14एली ने चिल्लाने की आवाज सुनी। उसने पूछा, 'इस होहल्ला, चिल्लाहट का कारण क्या है?' सैनिक एली के पास तुरन्त आया। उसने एली को युद्ध का समाचार सुनाया। 15उस समय एली की उम्र अट्ठानबे वर्ष थी। उसकी आंखें धुंधली पड़ गई थीं। वह देख नहीं सकता था। 16सैनिक ने एली से कहा, 'मैं ही युद्ध-भूमि से आनेवाला व्यक्ति हूँ। मैं आज ही युद्ध-भूमि से भाग कर आया हूँ।' एली ने पूछा, 'पुत्र, युद्ध का क्या समाचार है?' 17समाचार लाने वाले व्यक्ति ने उत्तर दिया, 'इस्राएली पलिश्तियों के सम्मुख से भाग गए हैं। इस्राएली सेना का महा संहार हुआ है। आप के दोनों पुत्र, होफ्नी और पीनहास भी मारे गए हैं। पलिश्तियों ने परमेश्वर की मंजूषा छीन ली है।' 18ज्यों ही उसने परमेश्वर की मंजूषा का उल्लेख किया, त्योंही एली अपने आसन से पीछे की ओर द्वार के पास, लुढ़क गया। उसकी गर्दन टूट गई, और तत्काल उसकी मृत्यु हो गई, क्योंकि वह बूढ़ा आदमी था। उसका शरीर भारी-भरकम था। उसने चालीस वर्ष तक इस्राएलियों पर शासन किया था।

19 एली की बहू, पीनहास की पत्नी गर्भवती थी। उसका प्रसव-काल निकट था। जब उसने यह समाचार सुना कि परमेश्वर की मंजूषा छीन ली गई है और उसके ससुर तथा पति की मृत्यु हो गई, तब उसे प्रसव-पीड़ा होने लगी। वह पीड़ा से नीचे झुक गई, और उसको बच्चा हो गया। 20उसके आस-पास स्त्रियां थीं। वे उसकी मृत्यु के समय उससे बोलीं, 'मत डरो। तुम्हें पुत्र हुआ है।' परन्तु उसने न उत्तर दिया, और न ध्यान। 21उसने पुत्र का नाम ईकाबोद+

* मूल में, 'निर्जन प्रदेश में' + अर्थात्, "कहां वह महिमा?"

4 : 4 नि 25 : 22 4 : 20 उत 35 : 17

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रखा। उसने कहा, 'इस्राएल से प्रभु की महिमा उठ गई!' (क्योंकि परमेश्वर की मंजूषा को पलिश्तियों ने छीन लिया था, और उसके ससुर तथा पति की मृत्यु हो गई थी।)
22उसने कहा,
'इस्राएल से प्रभु की महिमा उठ गई; क्योंकि परमेश्वर की मंजूषा छीन ली गई!'

पलिश्तियों के देश में मंजूषा

5 पलिश्तियों ने परमेश्वर की मंजूषा पर कब्जा कर लिया। वे मंजूषा को एबन-एजर नगर से अश्दोद नगर ले गए।
2तत्पश्चात्
उन्होंने परमेश्वर की मंजूषा को उठाया, और उसको दागोन देवता के मन्दिर में पहुंचा दिया। उन्होंने मंजूषा को दागोन की मूर्ति के समीप खड़ा कर दिया।
3दूसरे दिन सबेरे अश्दोद नगर
के रहने वाले सोकर उठे। वे दागोन देवता के मन्दिर में गए। तब उन्होंने देखा कि दागोन देवता की मूर्ति प्रभु की मंजूषा के सामने औंधे मुंह भूमि पर पड़ी हुई है। अतः उन्होंने मूर्ति को उठाया, और उसे उसके स्थान पर फिर खड़ा कर दिया।
4अगले दिन सबेरे वे सोकर उठे।
उन्होंने देखा कि दागोन देवता की मूर्ति प्रभु की मंजूषा के सामने औंधे मुंह भूमि पर पड़ी हुई है। उसका सिर तथा दोनों हाथ कटे हुए देहरी पर पड़े हैं। मूर्ति का धड़ ही शेष रह गया है।
5इस कारण दागोन देवता के पुरोहित तथा
उसके मन्दिर में प्रवेश करने वाले उसकी देहरी पर आज तक अपने पैर नहीं रखते।

6 प्रभु का हाथ अश्दोद नगर के रहने वालों पर विकट रूप से उठा! प्रभु ने अश्दोद तथा उसके आस-पास के क्षेत्र में रहनेवालों को प्लेग की गिल्टियों से आतंकित तथा पीड़ित कर दिया।+
7जब अश्दोद के रहने वालों ने यह
देखा तब उन्होंने कहा, 'इस्राएल के परमेश्वर की मंजूषा हमारे साथ नहीं रहना चाहिए; क्योंकि उसका हाथ हमारे तथा हमारे दागोन देवता पर विकट रूप से उठा है।'
8अतः उन्होंने
दूत भेजे और पलिश्तियों के सामंतों को एकत्र किया। उन्होंने उनसे पूछा, 'हमें इस्राएल के परमेश्वर की मंजूषा के साथ क्या करना चाहिए?' सामंतों ने उत्तर दिया, 'इस्राएल के परमेश्वर की मंजूषा को गत नगर भेज दो।' अतः वे इस्राएल के परमेश्वर की मंजूषा को गत नगर ले गए।
9परन्तु मंजूषा को गत नगर में लाने
के बाद ही प्रभु का हाथ नगर पर उठा। नगर में बड़ी घबराहट फैल गई। प्रभु ने नगर के बच्चों से बूढ़ों तक सब को प्लेग-रोग से पीड़ित कर दिया। उनके शरीर में गिल्टियां निकल आईं।
10इसलिए गत नगर के रहनेवालों ने परमेश्वर
की मंजूषा एक्रोन नगर भेज दी। परन्तु जब परमेश्वर की मंजूषा एक्रोन नगर में आई, तब एक्रोन नगर के रहने वाले चिल्लाने लगे, 'वे हमें और हमारे लोगों को मार डालने के लिए इस्राएल के परमेश्वर की मंजूषा को हमारे पास लाए हैं।'
11अतः उन्होंने दूत भेजे, और
पलिश्तियों के सामंतों को एकत्र किया। उन्होंने कहा, 'आप लोग इस्राएल के परमेश्वर की मंजूषा को भेज दीजिए। यह अच्छा हो कि वह अपने स्थान को लौट जाए, और उसके कारण हम और हमारे लोग न मरें।' समस्त नगर में मृत्यु-भय फैल गया था। वहां परमेश्वर का हाथ विकट रूप से उठा था।
12जिन लोगों की
मृत्यु नहीं हुई थी, वे गिल्टियों से पीड़ित थे। नगर की दुहाई स्वर्ग तक पहुंची।

मंजूषा की वापसी

6 प्रभु की मंजूषा सात महीने तक पलिश्ती देश में रही।
2पलिश्ती लोगों ने अपने पुरोहित
और भविष्यवाणी करनेवालों को बुलाया। उन्होंने उनसे पूछा, 'हमें प्रभु की मंजूषा के साथ क्या करना चाहिए? हमें उसके साथ, उसके स्थान को क्या भेजना चाहिए?'
3उन्होंने
कहा, 'यदि तुम इस्राएल के परमेश्वर की मंजूषा भेजोगे, तो उसको खाली मत भेजना। तुम्हें उसके परमेश्वर को दोष-बलि निश्चय ही चढ़ानी होगी। तब तुम रोग-मुक्त होगे, और तुम्हें ज्ञात होगा कि उसका हाथ तुम्हारे ऊपर से क्यों नहीं हटा था।'
4पलिश्तियों ने पूछा, 'हमें
उसको दोष-बलि में क्या चढ़ाना चाहिए?' उन्होंने कहा, 'पलिश्तियों के सामंतों की संख्या

+ शब्दशः: "मारा" 5 : 3 शास 16 : 23

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

के अनुसार सोने की पांच गिल्टियां, और सोने
के पांच चूहे चढ़ाना चाहिए, क्योंकि जिस प्लेग
से तुम पीड़ित थे, उसी प्लेग से सामंत भी
पीड़ित थे। [5]तुम देश को उजाड़ने वाले चूहे तथा
अपनी गिल्टियों की मूर्तियां बनाओ और इस
प्रकार इस्राएल के परमेश्वर की महिमा करो।
कदाचित् वह तुम पर से, तुम्हारे देवताओं तथा
तुम्हारे देश पर से अपना विनाशक हाथ हटा ले।
[6]जैसा मिस्र देश के निवासियों तथा फरओ ने
अपना हृदय कठोर कर लिया था वैसा तुम
अपना हृदय कठोर क्यों करते हो? जब
इस्राएलियों के परमेश्वर ने उन्हें उपहास का
पात्र बना दिया तब क्या उन्होंने इस्राएलियों को
नहीं जाने दिया था? क्या इस्राएली मिस्र देश से
नहीं चले गए थे? [7]अब तुम एक नई गाड़ी
बनाओ। दो दुधारू गायें लो, जो अब तक गाड़ी
में नहीं जोती गई हैं। उनको गाड़ी में जोतो।
उनके बच्चों को उनके पास से दूर कर उनकी
गोशाला में ले जाओ। [8]तत्पश्चात् प्रभु की मंजूषा
लो, और उसको उस गाड़ी में रखो। जो सोने की
मूर्तियां तुम दोष-बलि के रूप में उनके
परमेश्वर को चढ़ा रहे हो, उनको एक संदूक
में रखो और उसको मंजूषा के पास रख दो। तब
गाड़ी को भेज दो। उसको स्वयं मार्ग पर जाने
दो। [9]किन्तु उस पर दृष्टि रखो! यदि वह अपने
देश की सीमा बेतशेमश के मार्ग की ओर
जायेगी, तो हम जान लेंगे कि इस्राएल के
परमेश्वर ने ही यह बड़ा अनिष्ट किया है। पर
यदि गाड़ी उस ओर नहीं जाएगी तो हम समझ
लेंगे कि उसके हाथ ने हम पर प्लेग का
प्रहार नहीं किया था; वरन् संयोगवश प्लेग
फैला था।'

10 पलिश्ती लोगों ने ऐसा ही किया। उन्होंने
दो दुधारू गायें लीं। उनको गाड़ी में जोता, और
उनके बच्चों को गोशाला में बन्द कर दिया।
[11]तत्पश्चात् उन्होंने प्रभु की मंजूषा और संदूक
को गाड़ी में रखा, जिसके भीतर चूहों और
गिल्टियों की सोने की मूर्तियां थीं। [12]गायें सीधे
बेतशेमश के मार्ग पर चली गईं। वे रंभाती हुई
जा रही थीं। वे मार्ग की न दाहिनी ओर मुड़ीं
और न बायीं ओर। पलिश्ती सामंत बेतशेमश
की सीमा तक उनके पीछे-पीछे गए।

13 बेतशेमश नगर के लोग घाटी में गेहूँ की
फसल काट रहे थे। जब उन्होंने अपनी आंखें
ऊपर उठाईं तब मंजूषा को देखा। वे उसके
दर्शन करने के लिए आनन्दपूर्वक गए। [14]गाड़ी
ने बेतशेमश नगर के यहोशुअ नामक व्यक्ति के
खेत में प्रवेश किया। वह वहां रुक गई। वहां
एक बड़ा पत्थर था। उन्होंने गाड़ी की लकड़ी
को चीरा, और दोनों पशु अग्नि-बलि के रूप
में प्रभु को अर्पित किये। [15]उपपुरोहित लेवियों
ने प्रभु की मंजूषा तथा संदूक को गाड़ी से
उतारा। संदूक मंजूषा के पास रखा था। उसके
भीतर सोने की वस्तुएं थीं। उप-पुरोहित लेवियों
ने मंजूषा और संदूक को बड़े पत्थर पर रख
दिया। बेतशेमश नगर के लोगों ने उसी दिन प्रभु
को अग्नि-बलि अर्पित की, और बलि-पशु
वध किए। [16]पलिश्तियों के पांचों सामंत यह
देखकर, उसी दिन एक्रोन नगर को लौट गये।

17 इन नगरों की ओर से प्रभु को दोष-बलि
के रूप में गिल्टियों की सोने की मूर्तियां चढ़ाई
गई थीं। प्रत्येक नगर की ओर से एक मूर्त्ति
चढ़ाई गई : अश्दोद, गाजा, अश्कलोन, गत
और एक्रोन। [18]इनके अतिरिक्त, पलिश्तियों के
पांच सामंतों के अधीन सब किलाबन्द नगरों
और बिना परकोटे वाले गांवों की ओर से,
उनकी कुल संख्या के अनुसार, चूहों की सोने
की मूर्तियां चढ़ाई गई थीं। जिस बड़े पत्थर पर
उपपुरोहित लेवियों ने प्रभु की मंजूषा उतारकर
रखी थी, वह आज भी बेतशेमश नगर के
यहोशुअ के खेत में साक्षी दे रहा है।

19बेतशेमश के निवासी प्रभु की मंजूषा
देखकर आनन्दित हुए थे। परन्तु यकोनीआह
के पुत्र आनन्दित नहीं हुए। अत: प्रभु ने उनमें
से सत्तर पुरुषों को मार डाला।* लोगों ने शोक
मनाया; क्योंकि प्रभु ने उनके मध्य महासंहार

---

* प्राचीन पाठों के आधार पर।

6 : 5 यहो 7 : 19; यो 9 : 24 **6 : 7** गण 19 : 2 **6 : 20** 2 शम 6 : 9; मल 3 : 2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

किया था। [20]बेतशेमश के निवासियों ने कहा,
'प्रभु के सम्मुख, इस पवित्र परमेश्वर के सामने
कौन खड़ा हो सकता है? अब हम उसकी
मंजूषा को अपने पास से कहां भेजें?' [21]अत:
उन्होंने किर्यत-यआरीम नगर के निवासियों
को दूतों के हाथ यह संदेश भेजा: 'पलिश्तियों
ने प्रभु की मंजूषा लौटा दी है। आओ, और
उसको अपने नगर में ले जाओ।'

7 किर्यत-यआरीम नगर के लोग आए। वे
प्रभु की मजूषा उठाकर चले गए। वे
उसको लेकर अबीनादब के घर में लाए, जो
पहाड़ी पर स्थित था। उन्होंने प्रभु की मंजूषा का
उत्तरदायित्व संभालने के लिए उसके पुत्र
एलआजर को पुरोहित पद पर प्रतिष्ठित किया।

शमूएल का इस्राएलियों पर शासन करना

2 मंजूषा किर्यत-यआरीम नगर में बहुत
समय तक, प्राय: बीस वर्ष तक रही। इस्राएल
के सब कुल प्रभु के दर्शन के लिए तरसने लगे।
[3]तब शमूएल ने इस्राएल के कुलों से यह कहा,
'यदि तुम हृदय से प्रभु की ओर लौट रहे हो तो
दूसरी जातियों के देवताओं की मूर्तियां, और
अशेराह देवी की मूर्तियां अपने मध्य से दूर
करो। अपने हृदय को प्रभु की ओर स्थिर रखो!
केवल उसी की आराधना करो। तब वह तुम्हें
पलिश्तियों के हाथ से मुक्त करेगा।' [4]अत:
इस्राएलियों ने बअल देवता तथा अशेराह देवी
की मूर्तियां अपने मध्य से दूर कर दीं, और वे
केवल प्रभु की आराधना करने लगे।

5 शमूएल ने इस्राएल के कुलों से फिर कहा,
'सब इस्राएली मिस्पाह में एकत्र हों। मैं तुम्हारे
लिए प्रभु से प्रार्थना करूंगा।' [6]अत: वे मिस्पाह
में एकत्र हुए। उन्होंने पानी भरा और उसको
प्रभु के सम्मुख उण्डेला। उन्होंने उस दिन
उपवास किया। उन्होंने वहां यह स्वीकार
किया, 'हमने प्रभु के विरुद्ध पाप किया है।' इस
प्रकार शमूएल मिस्पाह में इस्राएलियों पर
शासन करने लगा।

7 पलिश्तियों के सामंतों ने सुना कि
इस्राएली मिस्पाह में एकत्र हुए हैं। इसलिए वे
इस्राएलियों से युद्ध करने को गए। इस्राएलियों
ने यह सुना। वे पलिश्तियों से डर गए। [8]उन्होंने
शमूएल से कहा, 'आप हमारे लिए हमारे
प्रभु परमेश्वर की दुहाई देना बन्द मत
कीजिए, जिससे वह हमें पलिश्तियों के हाथ
से बचाए।' [9]अत: शमूएल ने दूध पीता मेमना
लिया, और उसको पूर्ण अग्नि-बलि के रूप में
प्रभु को चढ़ाया। शमूएल ने इस्राएलियों के
लिए प्रभु की दुहाई दी। प्रभु ने उसकी दुहाई का
उत्तर दिया। [10]शमूएल अग्नि-बलि चढ़ा रहा
था कि पलिश्ती सेना इस्राएलियों से युद्ध करने
के लिए पास आ गई। तब प्रभु ने उस दिन
पलिश्तियों के विरुद्ध घोर गर्जन किया और
उन्हें भयाक्रान्त कर दिया। वे उस दिन इस्राएलियों
से पूर्णत: पराजित हो गए। [11]इस्राएली सैनिकों
ने मिस्पाह से बाहर निकलकर पलिश्ती सेना
का पीछा किया। उन्होंने पलिश्तियों को बेत-
कार नगर के निकट तक मारा।

12 शमूएल ने एक पत्थर लिया, और उसको
मिस्पाह और यशाना नगर के मध्य प्रतिष्ठित
किया। उसने उसका नाम 'एबन-एजर'* रखा।
उसने कहा, 'प्रभु ने इस स्थान तक हमारी
सहायता की।' [13]इस प्रकार पलिश्ती दब गए।
उन्होंने इस्राएलियों की सीमा में फिर कभी
प्रवेश नहीं किया। जब तक शमूएल जीवित रहा
तब तक प्रभु का हाथ पलिश्तियों के विरुद्ध
उठा रहा। [14]एक्रोन से गत तक जो नगर
पलिश्तियों ने इस्राएलियों से छीन लिये थे, वे
इस्राएलियों को लौटा दिए गए। यों इस्राएलियों
ने अपने सीमा-क्षेत्र को पलिश्तियों के हाथ से
मुक्त कर लिया। इस्राएलियों और एमोरी जाति
के मध्य भी शान्ति थी।

15 शमूएल ने अपने जीवन-पर्यन्त
इस्राएलियों पर शासन किया। [16]वह प्रतिवर्ष
बेत-एल, गिलगाल और मिस्पाह का दौरा

---

* अर्थात्, "सहायता का पत्थर"

7 : 2 2 शम 6 : 4; 1 इति 13 : 5–7 **7: 3** शास 2 : 13. **7 : 5** 1 शम 10 : 17 **7 : 8** नि 17 : 6–13 **7 : 9** प्रव 46 : 16–18

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

करता था। वह इन स्थानों में इस्राएलियों का
न्याय करता था। [17]तत्पश्चात् वह रामाह नगर
को लौट जाता था; क्योंकि रामाह में उसका घर
था। वह रामाह में भी इस्राएलियों का न्याय
करता था। उसने वहां प्रभु के लिए एक वेदी
बनाई थी।

इस्राएलियों द्वारा राजा की मांग

8 जब शमूएल वृद्ध हो गया तब उसने अपने
पुत्रों को इस्राएलियों का शासक नियुक्त
किया। [2]उसके ज्येष्ठ पुत्र का नाम योएल और
कनिष्ठ का नाम अबिय्याह था। ये बएरशेबा
नगर में शासक थे। [3]परन्तु शमूएल के पुत्र अपने
पिता के मार्ग पर नहीं चले। वे पैसा कमाने के
लिए अनुचित तरीका अपनाते थे। वे घूस लेकर
न्याय को भ्रष्ट करते थे।

4 इस्राएलियों के सब धर्मवृद्ध एकत्र हुए।
वे रामाह नगर में शमूएल के पास आए।
[5]उन्होंने शमूएल से कहा, 'देखिए, आप अब
वृद्ध हो गए हैं। आपके पुत्र भी आपके मार्ग पर
नहीं चल रहे हैं। इसलिए अन्य राष्ट्रों के समान,
आप हमारे लिए भी राजा नियुक्त कीजिए।'
[6]जब उन्होंने कहा 'हम पर शासन करने के
लिए हमें राजा दीजिए', तब शमूएल को उनकी
यह बात बुरी लगी। अतः शमूएल ने प्रभु से
प्रार्थना की। [7]प्रभु ने शमूएल से कहा, 'जो बात
इस्राएली लोग तुझसे कहते हैं, उसको तू सुन।
उन्होंने तुझे नहीं, बल्कि मुझे अस्वीकार किया
है कि मैं उन पर राज्य न करूं। [8]जिस दिन से
मैं उन्हें मिस्र देश से निकाल लाया, उस दिन
से आज तक वे अपने सब कर्मों से मेरा त्याग
करते और अन्य देवी-देवताओं की पूजा-
आराधना करते रहे हैं। ऐसा ही व्यवहार वे तेरे
साथ भी कर रहे हैं। [9]अब तू उनकी बात सुन।
तू उन्हें गम्भीरता से सावधान कर। जो राजा उन
पर राज्य करेगा, उसके संवैधानिक अधिकार
भी उन्हें बता दे।'

10 शमूएल ने प्रभु के ये वचन उन लोगों से
कहे, जो उससे राजा की मांग कर रहे थे।
[11]शमूएल ने कहा, 'जो राजा तुम पर राज्य
करेगा, उसके संवैधानिक अधिकार ये होंगे :
वह तुम्हारे पुत्रों को तुमसे छीन लेगा, और उन्हें
अपने रथों का सारथी, और अपना घुड़सवार
नियुक्त करेगा। वे उसके रथ के आगे-आगे
दौड़ेंगे। [12]वह अपने लिए हजार-हजार, और
पचास-पचास सैनिकों पर उन्हें सेनानायक
नियुक्त करेगा। वह तुम्हारे पुत्रों से अपने खेत
जुतवाएगा। वे उसकी फसल काटेंगे। वह
उनसे अपने लिए युद्ध के हथियार और अपने
रथों का सामान बनवाएगा। [13]वह तुम्हारी पुत्रियों
को भी छीन लेगा कि वे उसकी इत्रफरोश,
रसोइया और नानबाई बनें! [14]वह तुम्हारे खेतों,
अंगूर के उद्यानों और जैतून के बागों की फसल
का उत्तम भाग हथियाकर अपने सेवकों को
देगा। [15]वह तुम्हारे अनाज का, अंगूर की
फसल का दसवां भाग लेगा, और उसको अपने
अधिकारियों और सेवकों को दे देगा। [16]वह
तुम्हारे सेवक-सेविकाओं को तथा उत्तम गाय-
बैलों और गधों को छीन लेगा, और उनसे
अपना काम कराएगा। [17]वह तुम्हारी भेड़-
बकरियों का भी दसवां अंश लेगा। तुम उसके
गुलाम बन जाओगे। [18]उस दिन तुम अपने राजा
के कारण, जिसे तुमने अपने लिए चुना है, दुहाई
दोगे! किन्तु प्रभु, उस दिन तुम्हें उत्तर नहीं
देगा।'

19 इस्राएली लोगों ने शमूएल की बात सुनना
अस्वीकार कर दिया। उन्होंने कहा, 'नहीं, हमें
राजा ही चाहिए, [20]जिससे हम भी अन्य राष्ट्रों
के समान बन सकें। हमारा राजा हम पर शासन
करेगा। वह युद्ध के समय हमारे आगे-आगे
जाएगा, और हमारे लिए युद्ध करेगा।' [21]शमूएल
ने लोगों की ये बातें सुनीं और उन्हें प्रभु के कानों
में कह दीं। [22]प्रभु ने शमूएल से कहा, 'तू उनकी
बात सुन, और उनके लिए एक राजा नियुक्त
कर दे।' अतः शमूएल ने इस्राएली लोगों से
कहा, 'प्रत्येक व्यक्ति अपने नगर को लौट
जाए।'

---

8 : 5 व्य 17 : 14; प्रे 13 : 21 8 : 7 शास 8 : 23 8 : 12 2 शम 15 : 1; 1 रा 9 : 15 8 : 14 1 रा 21 : 7 8 : 18
नीति 1 : 25; मी 3 : 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शाऊल का राजा-पद पर चुनाव

9 बिन्यामिन प्रदेश के गिबआह नगर में* एक मनुष्य रहता था। उसका नाम कीश था। ये उसके पुरखों के नाम हैं : अबीएल, सरोर, बकारत और अपीअह। कीश बिन्यामिन कुल का था। उसके पास अपार धन-सम्पत्ति थी। 2कीश का एक पुत्र था। उसका नाम शाऊल था। वह सुन्दर और जवान था। समस्त इस्राएली समाज में उससे अधिक सुन्दर पुरुष कोई नहीं था। वह इतना लम्बा था कि दूसरे लोग उसके कन्धे तक ही पहुंचते थे।

3 एक दिन शाऊल के पिता की गदहियां खो गईं। कीश ने अपने पुत्र शाऊल से कहा, 'सेवकों में से किसी एक को अपने साथ ले। तैयार हो और जाकर गदहियों को ढूंढ़।' 4अत: शाऊल और उसका सेवक गए। उन्होंने एफ्रइम पहाड़ी प्रदेश को पार किया। वे शालीशा प्रदेश से भी गुजरे। किन्तु उन्हें गदहियां नहीं मिलीं। तत्पश्चात् वे शालीम प्रदेश से हो कर गए। गदहियां वहां भी नहीं थीं। वे बिन्यामिन प्रदेश से गुजरे। उन्हें वहां गदहियां नहीं मिलीं।

5 वे सूफ प्रदेश में आए। शाऊल ने अपने सेवक से, जो उसके साथ था, यह कहा, 'चलो, हम लौट जाएं। ऐसा न हो कि पिताजी गदहियों की चिन्ता करना छोड़ दें और हमारी चिन्ता करने लगें।' 6सेवक ने उससे कहा, 'देखिए, इस नगर में परमेश्वर का एक प्रियजन है। वह आदरणीय पुरुष है। जो बात वह कहता है, वह सच सिद्ध होती है। आइए, हम वहां चलें। जिस मार्ग पर हम जा रहे हैं, शायद वह उसके फल के विषय में हमें बता सके।' 7शाऊल ने अपने सेवक से कहा, 'यदि हम जाएंगे तो उस मनुष्य के पास क्या ले चलेंगे? हमारी थैलियों में रोटियां समाप्त हो गई हैं। परमेश्वर के प्रियजन के पास ले जाने के लिए हमारे पास उपहार भी नहीं है। हमारे पास क्या है?' 8सेवक ने शाऊल को पुन: उत्तर दिया। उसने कहा, 'देखिए, मेरे हाथ में चांदी के सिक्के का चौथाई हिस्सा है। हमारे मार्ग के फल को बताने के लिए मैं परमेश्वर के प्रियजन को यह सिक्का दे दूंगा।' 9(प्राचीन काल में इस्राएली देश में यह प्रथा थी : जब कोई व्यक्ति परमेश्वर से कुछ बात पूछने जाता था, तब वह कहता था, 'आओ, हम द्रष्टा के पास चलें।' जिस मनुष्य को आजकल नबी कहते हैं, उसे प्राचीन काल में द्रष्टा कहते थे) 10शाऊल ने अपने सेवक से कहा, 'तुमने ठीक कहा! आओ, चलें!' अत: वे नगर में गए, जहां परमेश्वर का प्रियजन रहता था।

11 जब वे पहाड़ी नगर पर चढ़ रहे थे तब उन्हें कुछ लड़कियां मिलीं, जो पानी भरने के लिए नगर के बाहर निकली थीं। उन्होंने लड़कियों से पूछा, 'क्या द्रष्टा यहां रहते हैं?' 12लड़कियों ने उत्तर दिया, 'हां, यहीं रहते हैं। देखिए, वह आपके आगे जा रहे हैं। शीघ्रता कीजिए। वह अभी-अभी नगर में आए हैं। आज पहाड़ी शिखर की वेदी पर लोगों की ओर से पशु-बलि चढ़ाई जाएगी। 13वह बलि-पशु का मांस खाने के लिए पहाड़ी शिखर की वेदी को जाएंगे। पर जैसे ही आप लोग नगर में प्रवेश करेंगे, उनके प्रस्थान के पहले ही, आपको वह मिल जाएंगे। जब तक वह पहाड़ी शिखर पर नहीं पहुंचेंगे तब तक लोग बलि-पशु का मांस नहीं खाएंगे। पहिले वह बलि-पशु के मांस के लिए परमेश्वर से आशिष मांगते हैं। उसके बाद आमन्त्रित लोग भोजन करते हैं। अब आप पहाड़ी पर चढ़ जाइए। वह आपको अभी मिल जाएंगे।'

14 अत: वे नगर की ओर गए। जब वे नगर के प्रवेश-द्वार में प्रवेश कर रहे थे तब शमूएल पहाड़ी शिखर की वेदी को जाने के लिए उनकी ही ओर आ रहा था। 15नगर में शाऊल के आने के एक दिन पूर्व प्रभु ने शमूएल के कान में यह बात डाल दी थी: 16'कल, इसी समय मैं

---

* देखिए 10 : 26 पर।

9 : 2 1 शम 10 : 23; 16 : 12; 2 शम 14 : 25 9 : 7 गण 22 : 7; 2 रा 5 : 15 9 : 11 उत 24 : 11; नि 2 : 16
9 : 16 नि 3 : 7

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बिन्यामिन प्रदेश के एक पुरुष को तेरे पास
भेजूंगा। तू मेरे निज लोग इस्राएलियों पर शासन
करने के लिए अगुए+ के रूप में उसका अभिषेक
करना। वह मेरे निज लोग इस्राएलियों को
पलिश्तियों के हाथ से बचाएगा। मैंने अपने
निज लोग इस्राएलियों की विपत्ति देखी है।
उनकी दुहाई मुझ तक पहुंची है।' 17जब शमूएल
ने शाऊल को देखा तब प्रभु ने शमूएल को
बताया, 'देख, जिस पुरुष के विषय में मैंने
तुझसे कहा था, वह यही है। यह पुरुष मेरे लोगों
पर शासन करेगा।' 18शाऊल नगर के प्रवेश-
द्वार पर शमूएल के समीप आया। उसने पूछा,
'कृपया, मुझे बताइए कि द्रष्टा का घर कहां
है?' 19शमूएल ने शाऊल को उत्तर दिया, 'मैं
ही द्रष्टा हूँ। तुम मुझसे पहले पहाड़ी शिखर की
वेदी को जाओ। आज तुम लोग मेरे साथ
भोजन करना। जो कुछ तुम्हारे हृदय में है, वह
मैं तुम पर प्रकट करूंगा। तब मैं तुम्हें सबेरे विदा
कर दूंगा। 20जहाँ तक गदहियों का प्रश्न है, जो
तीन दिन पूर्व खो गई थीं, उनके लिए चिन्तित
मत हो; क्योंकि वे मिल गई हैं। इस्राएल की
समस्त सम्पत्ति* किसके लिए है? क्या वह
तुम्हारे लिए और तुम्हारे पैतृक-कुल के लिए
नहीं है?' 21शाऊल ने उत्तर दिया, 'क्या मैं
इस्राएल के कुलों में सबसे छोटे बिन्यामिन
कुल का नहीं हूँ? क्या मेरा गोत्र बिन्यामिन कुल
के सब गोत्रों में नगण्य नहीं है? तब आपने
मुझसे ऐसे शब्द क्यों कहे?'

22 शमूएल ने शाऊल और उसके सेवक को
अपने साथ लिया। वह उन्हें भोजन-कक्ष में ले
गया। उसने उन्हें अतिथियों के सम्मुख, जो
संख्या में तीस थे, मुख्य आसन दिया। 23शमूएल
ने रसोइए से कहा, 'मांस का वह हिस्सा लाओ,
जिसके विषय में मैंने तुमसे कहा था कि उसको
अलग रख देना।' 24अत: रसोइए ने बलि-पशु
की जांघ और उसकी पूंछ ली, और उनको
शाऊल के सामने परोस दिया। शमूएल ने
शाऊल से कहा, 'यह अलग रखा हुआ मांस
तुम्हारे सामने परोस दिया गया। अब खाओ!
यह निर्धारित समय तक तुम्हारे लिए ही रखा
था। मैंने लोगों को आमन्त्रित किया है कि तुम
उनके साथ खाओ।' अत: शाऊल ने उस दिन
शमूएल के साथ भोजन किया।

25 वे पहाड़ी शिखर की वेदी से उतरे, और
नगर में आए। मकान की छत पर शाऊल के
लिए बिस्तर बिछाया गया। शाऊल उस पर लेटा
और सो गया। 26शमूएल ने पौ फटने पर शाऊल
को पुकारा, जो छत पर सो रहा था, 'उठो; मैं
तुम्हें विदा करूंगा।' अत: शाऊल उठा। वह
और शमूएल बाहर सड़क पर निकल आए।
27जब वे नगर की बाहरी सीमा की ओर उतर
रहे थे तब शमूएल ने शाऊल से कहा, 'अपने
सेवक से कहो कि वह हमारे आगे-आगे जाए।
जब वह आगे बढ़ जाएगा तब तुम एक क्षण के
लिए रुक जाना, जिससे मैं परमेश्वर का वचन
तुम्हें सुना सकूं।'

10 शमूएल ने तेल की एक कुप्पी ली।
उसने तेल को शाऊल के सिर पर
उण्डेला। तत्पश्चात् उसने उसका चुम्बन लिया
और कहा, 'प्रभु ने अपने निज लोग इस्राएलियों
के अगुए के रूप में तुम्हारा अभिषेक किया है।
तुम प्रभु के निज लोगों पर शासन करोगे। तुम
उन्हें उनके चारों ओर के शत्रुओं के हाथ से
बचाओगे। प्रभु ने अपनी निज सम्पत्ति पर
शासन करने के लिए अगुए के रूप में तुम्हारा
अभिषेक किया है, इस बात का तुम्हारे लिए ये
चिह्न होंगे : 2जब तुम मेरे पास से आज चले
जाओगे तब तुम्हें बिन्यामिन क्षेत्र की सीमा में
स्थित सेलसह में राहेल की कबर के पास दो
मनुष्य मिलेंगे। वे तुमसे यह कहेंगे : "जिन
गदहियों की खोज में आप निकले थे, वे मिल
गयी हैं। पर आपके पिताजी गदहियों की चिन्ता
करना छोड़, अब आपकी चिन्ता करने लगे हैं।
वह कहते हैं : 'अब मैं अपने पुत्र के लिए क्या
करूं!' " 3जब तुम वहां से और आगे बढ़ोगे,
और ताबोर के बांज वृक्ष के पास पहुंचोगे तब

+ अथवा, 'प्रमुख, नेता'। * अथवा, 'अभिलाषा'।
9 : 17 यो 1 : 33

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तुम्हें वहां तीन मनुष्य मिलेंगे, जो बेत-एल की
ओर परमेश्वर के पास जा रहे होंगे। उनमें से
एक मनुष्य बकरी के तीन बच्चे, दूसरा तीन
रोटियां और तीसरा अंगूर के रस से भरा एक
कुप्पा ले जा रहा होगा। [4]वे तुम्हारा हाल-चाल
पूछेंगे, और तुम्हें दो रोटी देंगे। तुम रोटियों को
उनके हाथ से ले लेना। [5]उसके बाद तुम
गिबअत-एलोहीम नामक स्थान पर पहुंचोगे,
जहां पलिश्तियों का प्रशासक रहता है। जब तुम
नगर में प्रवेश करोगे तब तुम्हें वहां पहाड़ी
शिखर की वेदी से नबियों का एक दल उतरता
हुआ मिलेगा। वे सितार, डफ, बांसुरी और
वीणा बजाते होंगे। वे नबूवत+ कर रहे होंगे।
[6]तब प्रभु का आत्मा अति वेग से तुम पर
उतरेगा, और तुम भी उनके साथ नबूवत करने
लगोगे। तुम एक नया आदमी बन जाओगे।
[7]जब तुम्हारे विषय में ये चिह्न पूरे हो जाएंगे तब
परिस्थिति के अनुसार कार्य करना, क्योंकि
परमेश्वर तुम्हारे साथ है। [8]तुम मुझसे पहले
गिलगाल जाना। देखो, मैं वहां तुम्हारे पास
अग्नि-बलि और सहभागिता-बलि चढ़ाने के
लिए आऊंगा। तुम सात दिन तक प्रतीक्षा
करना। तत्पश्चात् मैं आऊंगा, और तुम्हें
बताऊंगा कि तुम्हें क्या करना होगा।'
9 जब शाऊल ने शमूएल के पास से जाने
के लिए पीठ फेरी, तब परमेश्वर ने उसके हृदय
को परिवर्तित कर दिया। ये सब चिह्न उसी दिन
घटे। [10]वहां से शाऊल और उसका सेवक
गिबआह में आए। उन्हें नबियों का एक दल
मिला। तब प्रभु का आत्मा वेगपूर्वक शाऊल पर
उतरा, और वह उनके मध्य नबूवत करने लगा।
[11]जो लोग शाऊल को पहले से जानते थे, जब
उन्होंने उसे नबियों के साथ नबूवत करते हुए
देखा तब वे परस्पर यह कहने लगे, 'कीश के
पुत्र को यह क्या हुआ? क्या नबियों में शाऊल
भी एक नबी है?' [12]उनमें से एक व्यक्ति ने
पूछा, 'इन लोगों का पिता कौन है?' इस कारण
यह कहावत प्रचलित हो गई: 'क्या नबियों में
शाऊल भी एक नबी है?' [13]जब शाऊल ने
नबूवत करना समाप्त किया तब वह घर में
आया।* [14]शाऊल के चाचा ने उससे तथा
सेवक से पूछा, 'तुम लोग कहां गए थे?'
शाऊल ने कहा, 'गदहियां ढूंढ़ने। जब हमने
देखा कि वे नहीं मिल रही हैं तब हम शमूएल
के पास गए।' [15]शाऊल के चाचा ने पूछा, 'मुझे
बताओ कि शमूएल ने तुमसे क्या कहा?'
[16]शाऊल ने अपने चाचा से कहा, 'शमूएल ने
स्पष्ट शब्दों में बताया कि गदहियां मिल गई
हैं।' किन्तु जो बात शमूएल ने उसके राजा बनने
के विषय में कही थी, वह उसने अपने चाचा
को नहीं बताई।

शाऊल का अभिषेक

17 शमूएल ने समस्त इस्राएली लोगों को
मिस्पाह में प्रभु के सम्मुख बुलाया। [18]उसने
इस्राएलियों से कहा, 'इस्राएलियों का प्रभु
परमेश्वर यों कहता है: "मैंने तुम्हें मिस्र देश
से बाहर निकाला। मैंने तुम्हें मिस्र निवासियों
के हाथ से, और उन सब राज्यों के हाथ से मुक्त
किया जो तुम पर अत्याचार कर रहे थे।"
[19]परन्तु आज तुमने अपने परमेश्वर को
अस्वीकार किया है। वह तुम्हारी विपत्तियों
और कष्टों से तुम्हें बचाने वाला, तुम्हारा
उद्धारकर्ता है। परन्तु तुम यह कहते हो: "नहीं,
हमारे लिए राजा ही नियुक्त कीजिए।" इसलिए
अब तुम अपने कुल और गोत्र के क्रम में प्रभु
के सम्मुख उपस्थित हो जाओ।'
20 शमूएल ने इस्राएल के सब कुलों को प्रभु
के सम्मुख प्रस्तुत किया। तब चिट्‌ठी बिन्यामिन
कुल के नाम पर निकली। [21]तत्पश्चात् वह
बिन्यामिन कुल के सब गोत्रों को समीप लाया।
चिट्‌ठी मट्री गोत्र के नाम पर निकली। अन्त में
उसने मट्री गोत्र के सब पुरुषों को प्रभु के
सम्मुख प्रस्तुत किया। तब कीश के पुत्र शाऊल
के नाम पर चिट्‌ठी निकली। पर जब उन्होंने
उसे ढूंढ़ा, तब वह नहीं मिला। [22]उन्होंने प्रभु
से फिर पूछा, 'क्या वह यहां आया है?' प्रभु ने

+ अथवा, 'प्रलाप' (देखिए 18 : 10; 1 रा 18 : 29) * अथवा, "पहाड़ी शिखर की वेदी"
10 : 6 गण 11 : 25 **10 : 10-12** 1 शम 19 : 23-24 **10 : 20** यहो 7 : 14; प्रे 1 : 14

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
उत्तर दिया, 'देखो, उसने स्वयं को सामान में
छिपा लिया है।' 23अत: वे दौड़ कर गए। वे
शाऊल को वहां से ले आए। जब शाऊल लोगों
के मध्य खड़ा हुआ तब वह सब लोगों से लम्बा
निकला। लोग उसके कन्धों तक पहुंचते थे।
24शमूएल ने लोगों से कहा, 'जिस व्यक्ति को
प्रभु ने चुना, उसे तुमने देख लिया कि सब लोगों
में उसके समान दूसरा कोई भी नहीं है।' लोगों
ने जय-जयकार किया, 'राजा चिरायु हो!'
25 शमूएल ने लोगों को राजा के अधिकार
और कर्तव्य के विषय में बताया। उसने राजा
के अधिकारों और कर्तव्यों को एक पुस्तक में
लिखा, और पुस्तक को प्रभु के सम्मुख रख
दिया। अन्त में शमूएल ने लोगों को उनके घर
विदा किया। 26शाऊल भी गिबआह नगर में
अपने घर गया। जिन शक्तिशाली पुरुषों के
हृदय को परमेश्वर ने स्पर्श किया था, वे भी
उसके साथ गए। 27परन्तु कुछ बदमाश लोगों
ने कहा, 'यह आदमी किस प्रकार हमें शत्रुओं
के हाथ से बचा सकता है?' अत: उन्होंने
शाऊल का तिरस्कार किया, और उसको भेंट
नहीं चढ़ाई। किन्तु शाऊल चुप रहा।*

राजा शाऊल की पहली विजय

11 अम्मोनी जाति के राजा नाहश ने याबेश-
गिलआद नगर पर चढ़ाई कर दी। उसने
नगर को घेर लिया। याबेश नगर के सब
नागरिकों ने नाहश से कहा, 'हमारे साथ सन्धि
कीजिए। हम आपकी गुलामी करेंगे।' 2किन्तु
अम्मोनी जाति के राजा नाहश ने उनसे कहा,
'मैं इस शर्त पर तुमसे सन्धि करूंगा। मैं तुममें
से प्रत्येक व्यक्ति की दाहिनी आंख निकालूंगा।
इस प्रकार मैं समस्त इस्राएली जाति को
अपमानित करूंगा।' 3याबेश नगर के धर्मवृद्धों
ने उससे निवेदन किया, 'हमें सात दिन की
मुहलत दीजिए। हम इस्राएल देश की समस्त
सीमा में अपने दूतों को भेजेंगे। यदि हमें
बचानेवाला नहीं आएगा तो हम आपको
आत्म-समर्पण कर देंगे।'
4 दूत शाऊल के नगर, गिबआह में आए।
उन्होंने लोगों को यह समाचार सुनाया। लोग
चिल्ला-चिल्लाकर रोने लगे। 5शाऊल बैलों
के पीछे-पीछे खेत से आ रहा था। उसने पूछा,
'लोगों को क्या हुआ? वे क्यों रो रहे हैं?' अत:
लोगों ने उसे याबेश नगर के दूतों का समाचार
सुनाया। 6जब शाऊल ने ये बातें सुनीं तब
उसकी क्रोधाग्नि भभक उठी। प्रभु का आत्मा
अति वेग से उस पर उतरा। 7उसने दो बैल लिये
और उनके टुकड़े किए। तत्पश्चात् उसने
टुकड़ों को दूतों के हाथ से इस्राएल देश की
समस्त सीमा में भेज दिया। उसने यह सन्देश
भी भेजा, ''जो व्यक्ति शाऊल और शमूएल के
पीछे नहीं आएगा, उसके बैलों के साथ ऐसा ही
व्यवहार किया जाएगा।' प्रभु का भय लोगों पर
छा गया। वे संगठित हुए, और सब एक होकर
अपने-अपने नगर से बाहर निकले। 8शाऊल
ने बेजक नगर में उनकी हाजिरी ली। इस्राएल
प्रदेश के पुरुषों की संख्या तीन लाख और
यहूदा प्रदेश के पुरुषों की संख्या तीस हजार
निकली। 9शाऊल ने आगन्तुक दूतों से कहा,
'तुम याबेश-गिलआद के नागरिकों से यह
कहना: ''कल, दोपहर तक तुम्हें मदद पहुंच
जाएगी।'''
दूत याबेश नगर में आए। उन्होंने लोगों को
शाऊल का सन्देश बताया, तो वे आनन्दित हो
गए। 10याबेश के नागरिकों ने नाहश से कहा,
'कल हम आपको आत्म-समर्पण कर देंगे।
तब जो कार्य आपकी दृष्टि में उचित लगे, वह
हमारे साथ कर सकते हैं।'
11 दूसरे दिन शाऊल ने अपनी सेना को तीन
दल में विभाजित किया। वे रात के अन्तिम पहर
में अम्मोनी पड़ाव में घुस गए और दोपहर तक
अम्मोनी सैनिकों का सफाया कर दिया। जो
शेष बचे, वे इस प्रकार तितर-बितर हो गए कि
उनमें से दो सैनिक भी एक साथ नहीं रहे।

* अथवा, 'एक महीने के पश्चात्....।' एक प्राचीन पाठ के अनुसार 'अम्मोनी जाति के राजा नाहश द्वारा आतंकित इस्राएलियों में से सात हजार शरणार्थी याबेश नगर में आए थे।,

10 : 24 1 रा 1 : 39 **10 : 25** 1 शम 8 : 11 **11 : 6** शास 3 : 10 **11 : 7** शास 19 : 29

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

12 लोगों ने शमूएल से कहा, 'कहां हैं वे
लोग, जिन्होंने यह कहा था, "क्या शाऊल हम
पर राज्य करेगा?" उनको हमारे हाथ में सौंप
दो। हम उनको मृत्यु-दण्ड देंगे।' 13परन्तु शाऊल
ने कहा, 'नहीं, आज किसी भी व्यक्ति को
मृत्यु-दण्ड नहीं देंगे, क्योंकि आज प्रभु ने
इस्राएल को विजय प्रदान की है।' 14शमूएल
ने लोगों से कहा, 'आओ, हम-सब गिलगाल
चलें, और वहां राजा की प्रथा का पुन: समर्थन
करें।' 15अत: सब लोग गिलगाल गए। उन्होंने
गिलगाल में प्रभु के सम्मुख शाऊल को अपना
राजा स्वीकार किया। वहां उन्होंने प्रभु के
सम्मुख सहभागिता-बलि अर्पित की। शाऊल
और सब इस्राएली लोगों ने आनन्द मनाया।

शमूएल का भाषण

12 शमूएल ने समस्त इस्राएलियों से कहा,
'देखो, जो बातें तुमने मुझसे कहीं
उनको मैंने सुना और तुम्हारे लिए राजा का
अभिषेक किया। 2अब, राजा ही तुम्हारे आगे-
आगे चलकर तुम्हारा नेतृत्व करेगा। मैं अब
बूढ़ा हो गया। मेरे सिर के बाल पक गए। देखो,
मेरे पुत्र तुम्हारे साथ हैं। मैंने बचपन से आज
तक तुम्हारे आगे-आगे चलकर तुम्हारा नेतृत्व
किया। 3मैं तुम्हारे सामने प्रस्तुत हूं: प्रभु और
उसके अभिषिक्त राजा के सम्मुख साक्षी दो।
मैंने किस व्यक्ति का बैल लिया? मैंने किस
व्यक्ति का गधा लिया? मैंने किस व्यक्ति का
दमन अथवा उस पर अत्याचार किया? क्या मैंने
कभी किसी के हाथ से घूस ली? यदि तुम्हारी
साक्षी सच होगी तो मैं उसको तुम्हें लौटा दूंगा।'
4लोगों ने कहा, 'आपने न हमारा दमन किया
और न हम पर अत्याचार किया। आपने किसी
भी व्यक्ति के हाथ से घूस नहीं ली।' 5शमूएल
ने कहा, 'प्रभु तुम्हारा साक्षी है! आज प्रभु का
अभिषिक्त राजा साक्षी है कि तुमने मेरे हाथ में
कुछ भी नहीं पाया।' उन्होंने कहा, 'प्रभु साक्षी
है!'

6 शमूएल ने लोगों से फिर कहा, 'प्रभु साक्षी
है! प्रभु ने ही मूसा और हारून को नेता नियुक्त
किया था, और तुम्हारे पूर्वजों को मिस्र देश से
बाहर निकाला था। 7अब तुम यहां खड़े रहो।
मैं प्रभु के सम्मुख तुम्हारे साथ बहस करूंगा,
और तुम्हें प्रभु के उन उद्धार के कार्यों का स्मरण
कराऊंगा, जो उसने तुम्हारे और तुम्हारे पूर्वजों
के लिए किए थे। 8जब याकूब और उनके पुत्र
मिस्र देश में आए और मिस्र निवासियों ने
तुम्हारे पूर्वजों पर अत्याचार किया, तब उन्होंने
प्रभु की दुहाई दी। अत: प्रभु ने मूसा और हारून
को भेजा। उन्होंने तुम्हारे पूर्वजों को मिस्र देश
से बाहर निकाला और उन्हें इस स्थान में
बसाया। 9परन्तु वे अपने प्रभु परमेश्वर को भूल
गए। इसलिए उसने उन्हें हासोर के राजा याबीन
के सेनापति सीसरा, पलिश्ती सेना और मोआब
के राजा के हाथ बेच दिया। उन्होंने उनसे युद्ध
किया। 10उन्होंने प्रभु की दुहाई दी, और यह
कहा, "हमने पाप किया, क्योंकि हमने तुझ प्रभु
को त्यागकर बअल देवता और अशेराह देवी
की सेवा की। अब प्रभु, हमारे शत्रुओं के हाथ
से हमें मुक्त कर। हम तेरी सेवा करेंगे।"
11अत: प्रभु ने यरूब्बअल, बारक, यिफ्ताह
और मुझ-शमूएल को भेजा। उन्होंने तुम्हारे
चहुंओर के शत्रुओं के हाथ से तुम्हें मुक्त किया,
और तुम सुरक्षित रूप से निवास करने लगे।

12 'पर जब तुमने अम्मोनी जाति के राजा
नाहश को देखा कि वह तुम पर चढ़ाई करने के
लिए आ रहा है तब तुमने मुझसे कहा, "नहीं,
हम पर केवल राजा ही राज्य करेगा," जब कि
तुम्हारा प्रभु परमेश्वर ही तुम्हारा राजा था।
13अब देखो, यह है राजा, जिसको तुमने चुना
है, जिसकी तुमने मांग की थी। देखो, प्रभु ने
तुम पर राजा नियुक्त कर दिया। 14यदि तुम प्रभु
के प्रति भक्ति-भाव रखोगे, उसकी सेवा
करोगे, उसकी वाणी सुनोगे, और उसकी
आज्ञाओं-आदेशों के प्रति विद्रोह नहीं करोगे,

---

11 : 13 2 शम 19 : 22 **12 : 2** गण 27 : 17 **12 : 3** गण 16 : 15; प्रव 46 : 19 **12 : 6** नि 6 : 26 **12 : 8** नि 2 : 23 **12 : 9** शास 4 : 2; 3 : 12 **12 : 11** शास 4 : 6; 7 : 1; 11 : 29 **12 : 12** 1 शम 8 : 19 **12 : 14** यहो 24 : 14

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यदि तुम और तुम पर राज्य करने वाला राजा
अपने प्रभु परमेश्वर का अनुसरण करोगे, तो
तुम सब का कल्याण होगा। 15परन्तु यदि तुम
प्रभु की वाणी नहीं सुनोगे, उसकी आज्ञाओं-
आदेशों के प्रति विद्रोह करोगे, तो प्रभु का हाथ
तुम्हारे और तुम्हारे राजा के विरुद्ध उठेगा।
16 'अब तुम यहां खड़े रहो! इस महान्
कार्य को देखो, जिसको प्रभु तुम्हारी आंखों के
सामने सम्पन्न करेगा। 17क्या आजकल गेहूं की
फसल का मौसम नहीं है?* पर मैं प्रभु को
पुकारूंगा, और वह मेघों का गर्जन और वर्षा
करेगा। तब तुम्हें ज्ञात होगा, तुम स्वयं देखोगे
कि तुमने अपने लिए राजा की मांग करके प्रभु
की दृष्टि में कितना बड़ा दुष्कर्म किया है।'
18तब शमूएल ने प्रभु को पुकारा, और प्रभु ने
उस दिन मेघों का गर्जन और वर्षा की। अत:
सब लोग प्रभु और शमूएल से बहुत डर गए।
19लोगों ने शमूएल से कहा, 'अपने प्रभु
परमेश्वर से हमारे लिए, अपने सेवकों के
लिए,प्रार्थना कीजिए जिससे हम मर न जाएं।
निस्सन्देह हमने अपने सब पापों के अतिरिक्त
एक और दुष्कर्म किया,और अपने लिए राजा
की मांग की।'
20 शमूएल ने लोगों से कहा, 'मत डरो!
यद्यपि तुमने यह दुष्कर्म किया है, तथापि तुम
प्रभु का अनुसरण करना मत छोड़ना, उसके
मार्ग से मत भटकना। अब तुम सम्पूर्ण हृदय से
प्रभु की आराधना करना। 21निस्सार देवी-
देवताओं की मूर्त्तियों का अनुसरण मत करना।
वे किसी को लाभ नहीं पहुंचा सकतीं और न
बचा सकती हैं; क्योंकि वे निस्सार मूर्त्तियां हैं!
22प्रभु अपने महान् नाम के कारण अपने लोगों
का त्याग नहीं करेगा; क्योंकि प्रभु ने अपनी
इच्छा से तुम्हें अपने निज लोग बनाया है।
23जहां तक मेरा प्रश्न है : प्रभु ऐसा न करे कि
मैं तुम्हारे लिए प्रार्थना करना छोड़ दूँ, और इस
प्रकार प्रभु के प्रति पाप करूं! मैं तुम्हें सच्चे और
सीधे मार्ग की शिक्षा देता रहूंगा। 24केवल प्रभु
की भक्ति करो और सम्पूर्ण हृदय से उसकी
सेवा करो। देखो,उसने तुम्हारे लिए कितने
महान् कार्य किए हैं! 25पर यदि तुम दुष्कर्म
करते ही रहोगे तो तुम्हारा और तुम्हारे राजा का
सर्वनाश हो जाएगा।'

पलिश्ती जाति से युद्ध की तैयारी

13 जब शाऊल ....** वर्ष का था तब उसने
इस्राएलियों पर राज्य करना आरम्भ
किया। उसने बारह वर्षों तक राज्य किया।
2 शाऊल ने इस्राएलियों में से तीन हजार
पुरुषों को चुना। उनमें से दो हजार पुरुष
मिकमाश नगर और बेत-एल पहाड़ी नगर में
उसके साथ थे और एक हजार पुरुष बिन्यामिन
प्रदेश के गेबा+ नगर में उसके पुत्र योनातन के
साथ थे। उसने शेष पुरुषों को उनके घर भेज
दिया।
3 योनातन ने गिबआह नगर के पलिश्ती
प्रशासक को मार डाला। पलिश्तियों ने यह सुना
कि इब्रानियों ने विद्रोह कर दिया है।++ शाऊल
ने समस्त देश में विद्रोह का नरसिंगा बजाने का
आदेश दिया। 4समस्त इस्राएलियों ने यह सुना:
शाऊल ने पलिश्ती प्रशासक को मार डाला,
और इस्राएलियों के लिए पलिश्तियों की शत्रुता
मोल ली है। अत: लोगों को आह्वान किया गया
कि वे शाऊल का अनुसरण करने के लिए
गिलगाल में एकत्र हों।
5 पलिश्ती इस्राएलियों से युद्ध करने के
लिए एकत्र हुए। उनके पास तीस हजार रथ,
और छः हजार घुड़सवार थे। पैदल सैनिक तो
समुद्रतट के रेत-कणों के सदृश असंख्य थे।
उन्होंने बेत-आवेन की पूर्व दिशा से चढ़ाई की,
और मिकमाश में पड़ाव डाला। 6इस्राएलियों
पर दबाव पड़ने लगा। जब उन्होंने देखा कि वे
संकट में पड़ गए हैं तब वे गुफाओं और
कन्दराओं में, चट्टानों, तलघरों और गड्ढों में
छिप गए। 7अनेक इस्राएली यर्दन नदी को पार
कर गाद और गिलआद प्रदेश में चले गए।
परन्तु शाऊल गिलगाल में ही रहा। उसका

* इस मौसम में वर्षा नहीं होती। ** मूल पाठ में संख्या छूट गई है। + मूल में गिबआह। ++मूल में अस्पष्ट

12 : 22 यिर 14 : 21 12 : 23 1 कुर 9 : 16; कुल 1 : 9

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अनुसरण करने वाले सब लोग घबराये हुए थे।
8 वह शमूएल द्वारा निश्चित समय तक
अर्थात् सात दिन तक ठहरा रहा। किन्तु शमूएल
गिलगाल में नहीं आया। लोग शाऊल को
छोड़कर बिखरने लगे। 9तब शाऊल ने आदेश
दिया, 'मेरे पास अग्नि-बलि तथा सहभागिता-
बलि लाओ।' अत: उसने अग्नि-बलि चढ़ाई।
10उसने अग्नि-बलि चढ़ाना समाप्त ही किया
कि शमूएल आया। शाऊल उससे भेंट करने
तथा उसका अभिवादन करने के लिए बाहर
गया। 11शमूएल ने कहा, 'तुमने यह क्या
किया?' परन्तु शाऊल ने उत्तर दिया, 'मैंने देखा
कि लोग मुझे छोड़कर बिखरने लगे हैं, और
आप निश्चित अवधि में नहीं आए। उधर
पलिश्ती सेना मिकमाश में एकत्र हो रही थी
12अत: मैंने यह सोचा : अब पलिश्ती गिलगाल
में उतरकर मुझ पर आक्रमण करेंगे, और मैंने
भेंट द्वारा प्रभु को शान्त करने के लिए कुछ नहीं
किया है। ऐसी स्थिति में मैं अग्नि-बलि चढ़ाने
को विवश हो गया।' 13शमूएल ने शाऊल से
कहा, 'तुमने मूर्खतापूर्ण कार्य किया है। जिस
आज्ञा का पालन करने को तुम्हारे प्रभु परमेश्वर
ने कहा था उसका तुमने पालन नहीं किया।
अन्यथा प्रभु इस्राएलियों पर सदा के लिए
तुम्हारा राज्य स्थिर कर देता। 14अब तुम्हारा
राज्य स्थिर नहीं रहेगा। प्रभु ने अपने हृदय के
अनुरूप एक पुरुष को खोज लिया है। उसने
अपने लोगों पर शासन करने के लिए अगुए के
रूप में उसे नियुक्त कर लिया है; क्योंकि तुमने
उस आज्ञा का पालन नहीं किया, जो प्रभु ने तुम्हें
दी थी।' 15तत्पश्चात् शमूएल उठा। वह गिलगाल
से अपने मार्ग पर चला गया।
शाऊल ने अपने अनुचरों की गणना की। वे
छ: सौ पुरुष निकले। 16शाऊल, उसका पुत्र
योनातन और उसके अनुचर बिन्यामिन प्रदेश
के गेबा में ठहरे रहे। परन्तु पलिश्ती मिकमाश
में पड़ाव डाले रहे। 17तब छापामार सैनिकों के
तीन दल पलिश्ती पड़ाव से बाहर निकले। एक
दल शूअल देश की ओर मुड़ा और उसने
ओफ्राह नगर का मार्ग पकड़ा। 18दूसरा दल
बेत-होरोन नगर के मार्ग की ओर मुड़ा। तीसरा
दल उस पहाड़ी की ओर गया, जो निर्जन प्रदेश
की ओर सबोईम घाटी पर प्रलम्ब के रूप में
खड़ी है।
19 समस्त इस्राएल देश में लोहार उपलब्ध
नहीं थे; क्योंकि पलिश्ती नहीं चाहते थे कि
इब्रानी भी तलवार और भाले बनाएं। 20इसलिए
इस्राएली अपने हल की फाल, फावड़ा, कुल्हाड़ी
या हंसुए की धार तेज कराने के लिए पलिश्तियों
के पास जाते थे। 21हल की फाल अथवा फावड़ा
की धार बनाने का मूल्य चांदी के सिक्के का
दो-तिहाई हिस्सा था। किन्तु कुल्हाड़ी की धार
तेज कराने अथवा अंकुश की नोक ठीक कराने
के लिए चांदी के सिक्के का एक तिहाई हिस्सा
देना पड़ता था। 22इस कारण मिकमाश के युद्ध
के दिन शाऊल और योनातन की सेना के किसी
भी सैनिक के हाथ में तलवार या भाला उपलब्ध
नहीं हुआ। निस्सन्देह शाऊल और उसके पुत्र
योनातन को ये हथियार उपलब्ध थे।

युद्ध में योनातन की वीरता

23 पलिश्ती सेना की चौकी के सैनिक
मिकमाश के दर्रे की ओर निकल गए।

14 एक दिन शाऊल के पुत्र योनातन ने
अपने शस्त्रवाहक से कहा जो उसके
शस्त्र उठाकर चलता था, 'आओ, हम पलिश्ती
चौकी के पास चलें, जो इस दर्रे के उस पार
है।' उसने यह बात अपने पिता को नहीं बताई।
2शाऊल गेबा नगर की बाह्य सीमा पर अनार के
पेड़ के नीचे बैठा था। यह पेड़ खलियान में था।
शाऊल के साथ छ: सौ सैनिक थे। 3उसके साथ
अहीयाह भी था जो एपोद को उठाए हुए था।
अहीयाह, शीलोह में प्रभु के पुरोहित एली के
पुत्र पीनहास का पौत्र और ईकाबोद के भाई
अहीटूब का पुत्र था। वे लोग नहीं जानते थे कि
योनातन दर्रे की ओर चला गया है।
4 जिस दर्रे को पारकर योनातन पलिश्ती
चौकी के पास जाना चाहता था, उसके दोनों
ओर एक-एक नुकीली चट्टान थी। एक ओर

13 : 8 1 शम 10 : 8 13 : 14 प्रे 13 : 22

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

की चट्टान का नाम बोसेस, और दूसरी ओर की
चट्टान का नाम सेनेह था। 5एक चट्टान का मुख
उत्तर में मिकमाश की ओर और दूसरी चट्टान
का मुख दक्षिण में गेबा की ओर था। 6योनातन
ने अपने शस्त्रवाहक से कहा, 'आओ, हम इन
बेखतना पलिश्तियों की चौकी के पास चलें।
कदाचित् प्रभु हमारे लिए कार्य करे; क्योंकि
हमें विजय प्रदान करने से प्रभु को कोई नहीं
रोक सकता है, फिर चाहे हम संख्या में बहुत
हों अथवा कम।' 7शस्त्रवाहक ने उससे कहा,
'आपका हृदय जो चाहता है, वह कीजिए।
जहां तक मेरा प्रश्न है, मैं हृदय से आपके साथ
हूँ।' 8योनातन ने कहा, 'देखो, हम उस पार
पलिश्ती सैनिकों के पास चलते हैं। हम उन पर
स्वयं को प्रकट कर देंगे। 9यदि वे हम से यह
कहेंगे : "रुक जाओ! जब तक हम तुम्हारे पास
न पहुंच जाएं, तुम वहीं ठहरे रहो।" तो हम
अपने स्थान पर खड़े रहेंगे, और ऊपर चढ़कर
उनके पास नहीं जाएंगे। 10यदि वे यह कहेंगे:
"हमारे पास, ऊपर आओ!" तो हम ऊपर
चढ़कर उनके पास चले जाएंगे। यह हमारे लिए
प्रभु का चिह्न होगा कि प्रभु ने उन्हें हमारे हाथ
में सौंप दिया है।' 11अत: दोनों ने स्वयं को
पलिश्ती चौकी के सैनिकों पर प्रकट कर दिया।
पलिश्ती सैनिकों ने कहा, 'देखो, इब्रानी चूहे
अपने बिलों से बाहर निकल रहे हैं, जहां वे
छिपे हुए थे।' 12चौकी के सैनिकों ने योनातन
और उसके शस्त्रवाहक को पुकारा, 'ऊपर
चढ़कर हमारे पास आओ। हम तुम्हें एक बात
बताएंगे।'* योनातन ने अपने शस्त्रवाहक से
कहा, 'मेरे पीछे-पीछे ऊपर चढ़ो। प्रभु ने उन्हें
इस्राएल के हाथ में सौंप दिया है।' 13योनातन
अपने हाथ-पैर के सहारे ऊपर चढ़ गया।
उसके पीछे-पीछे उसका शस्त्रवाहक भी चढ़
गया। तब चौकी के सैनिक योनातन के सामने
गिरते गए, और शस्त्रवाहक उनको मौत के घाट
उतारता गया। 14योनातन और उसके शस्त्रवाहक
ने यह पहला नरसंहार किया था। इस आधे बीघे
भूमि के रक्षा-क्षेत्र में बीस सैनिक मारे गए।**
15पलिश्ती पड़ाव और गांवों के समस्त लोगों
में आतंक छा गया। चौकी के सैनिक और
छापामार सैनिक आतंक के कारण थरथर
कांपने लगे। पृथ्वी कांप उठी। वस्तुत: यह
परमेश्वर का आतंक था।

16 बिन्यामिन प्रदेश के गेबा नगर में रहने
वाले शाऊल के पहरेदारों ने देखा कि पलिश्ती
पड़ाव इधर-उधर बिखर रहा है। 17शाऊल ने
अपने साथ के सैनिकों से कहा, 'हाजिरी लो,
और देखो कि हमारे पास से कौन व्यक्ति वहां
गया है।' अत: उन्होंने हाजिरी ली। तब उन्हें
पता चला कि योनातन और उसका शस्त्रवाहक
नहीं हैं। 18शाऊल ने पुरोहित अहीयाह को आदेश
दिया, 'परमेश्वर की मंजूषा+ यहां लाओ।' उस
समय परमेश्वर की मंजूषा इस्राएलियों के पास
थी। 19जिस समय शाऊल पुरोहित से बात कर
रहा था, उस समय पलिश्ती पड़ाव में होहल्ला
बढ़ता ही जा रहा था। शाऊल ने पुरोहित से
कहा, 'अपने हाथ समेट लो, और चिट्ठी मत
निकालो।' 20तत्पश्चात् शाऊल और उसके
साथ के सैनिकों ने युद्ध का नारा लगाया। वे
युद्ध-भूमि में आए। उन्होंने देखा कि पलिश्ती
सैनिक एक-दूसरे पर तलवार चला रहे हैं।
बड़ी घबराहट फैली हुई है। 21इब्रानी सैनिक
जो पहले पलिश्ती सेना में भरती हो गए थे, और
उनके साथ पड़ाव में आए थे, वे शाऊल और
योनातन के साथ के इस्राएली सैनिकों से मिल
गए। 22इसी प्रकार जब एफ्रइम पहाड़ी प्रदेश में
छिपे हुए इस्राएली सैनिकों ने सुना कि पलिश्ती
सेना भाग रही है, तब उन्होंने उनका पीछा
किया, और युद्ध में सम्मिलित हो गए। 23यों उस
दिन प्रभु ने इस्राएलियों को विजय प्रदान की।
युद्ध का क्षेत्र बेत-आवेन नगर के उस पार तक
हो गया।

शाऊल के साथ कुल दस हजार सैनिक थे।
युद्ध एफ्रइम पहाड़ी प्रदेश में फैल गया था।
24शाऊल ने उस दिन उतावली में एक मन्नत

* अथवा, 'एक चीज दिखाएंगे।' ** मूल में अस्पष्ट + अथवा प्राचीन अनुवाद के अनुसार "एपोद". देखिए 23 : 9 पर।

14 : 6 शास 7 : 4 14 : 18 1 शम 2 : 28

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मानी। उसने अपने सैनिकों को एक महाशपथ
दी। उसने कहा, 'सन्ध्या के पूर्व, तथा जब तक
मैं अपने शत्रुओं से बदला न ले लूँ, उसके पहले
भोजन करने वाला व्यक्ति अभिशप्त होगा।'
अत: किसी भी सैनिक ने मुंह में दाना भी नहीं
डाला। 25मैदान में मधु के छत्ते पड़े थे। 26सैनिक
मधु के छत्तों के पास आए। यद्यपि मधु-
मक्खियां उड़ गई थीं तो भी किसी ने शपथ के
भय के कारण अपने मुंह में मधु नहीं डाला।++
27योनातन ने अपने पिता की शपथ को, जो
उसने सैनिकों को दी थी, नहीं सुना था। उसने
अपने हाथ के डण्डे के सिरे को आगे बढ़ाया,
और उसको मधु के छत्ते में डुबाया। उसके बाद
उसने थोड़ा मधु अपने हाथ से मुंह में डाला।
तब उसके शरीर में शक्ति आ गई+। 28एक सैनिक
उससे बोला, 'तुम्हारे पिता ने लोगों को कड़ी
शपथ दी थी, और यह कहा था : "जो व्यक्ति
आज भोजन करेगा, वह अभिशप्त होगा।"
इसलिए सैनिक इतने थके-मांदे, अशक्त हैं।'
29योनातन ने कहा, 'मेरे पिता ने इस शपथ के
द्वारा देश को विपत्ति में डाला है। देखो, मैंने यह
मधु थोड़ा-सा चखा, पर मेरे शरीर में शक्ति आ
गई। 30कितना अच्छा होता, यदि आज हमारे
सैनिकों ने अपने शत्रुओं की लूटी हुई वस्तुओं
में से मुक्त भाव से खाया होता तो हम पलिश्ती
सेना का और अधिक संहार करते!'

31 उन्होंने उस दिन पलिश्ती सैनिकों का
मिकमाश नगर से अय्यालोन नगर तक संहार
किया। परन्तु वे बहुत थके-मांदे थे। 32अत: वे
पलिश्तियों की लूट पर टूट पड़े। उन्होंने भेड़,
बैल और बछड़े लिये और उनका वहीं, भूमि
पर वध किया। तत्पश्चात् वे रक्त-सहित
उनका मांस खाने लगे। 33लोगों ने शाऊल को
बताया, 'सैनिक रक्तसहित मांस खा रहे हैं,
और इस प्रकार प्रभु के प्रति पाप कर रहे हैं।'
शाऊल ने कहा, 'तुमने विश्वासघात किया! मेरे
पास यहां एक बड़ा पत्थर लुढ़का लाओ।'
34शाऊल ने आगे कहा, 'तुम सेना के मध्य,
इधर-उधर जाकर सैनिकों से यह कहो :
"प्रत्येक व्यक्ति अपना बैल अथवा भेड़ यहां
लाए। इस पत्थर पर उसका वध करे और तब
उसका मांस खाए। तुम रक्त-सहित पशु का
मांस खाकर प्रभु के प्रति पाप मत करो।" ' इस
प्रकार सेना का प्रत्येक व्यक्ति उसी रात को
अपना बैल अपने साथ लाया और वहां उसका
वध किया। 35शाऊल ने प्रभु के लिए एक वेदी
का निर्माण किया। यही प्रथम वेदी थी, जो
उसने प्रभु के लिए निर्मित की थी।

36 शाऊल ने कहा, 'आओ, हम रात में ही
पलिश्तियों का पीछा करें, और सबेरे का
प्रकाश होने तक उनको लूट लें। हम उनके एक
भी सैनिक को जीवित नहीं छोड़ेंगे।' इस्राएली
सैनिकों ने उससे कहा, 'जो कार्य आपकी दृष्टि
में उचित है, वह कीजिए।' किन्तु पुरोहित ने
कहा, 'आओ, हम पहले परमेश्वर के समीप
आएं।' 37शाऊल ने परमेश्वर से पूछा, 'क्या मैं
पलिश्ती सेना का पीछा करूं? क्या तू उनको
इस्राएल के हाथ में सौंप देगा?' परन्तु प्रभु ने
उस दिन उसको उत्तर नहीं दिया। 38शाऊल ने
कहा, 'ओ समाज के स्तम्भ, इस्राएली नेताओ!
यहां आओ। तुम जानो और देखो कि यह पाप
आज कैसे हुआ? 39इस्राएल को विजय प्रदान
करने वाले जीवन्त प्रभु की सौगन्ध! जिस
व्यक्ति ने पाप किया है, यदि वह मेरा पुत्र
योनातन ही क्यों न हो, उसको निश्चय ही
मृत्यु-दण्ड दिया जाएगा।' उनमें से किसी भी
व्यक्ति ने उसको उत्तर नहीं दिया। 40तब शाऊल
ने सब इस्राएलियों से कहा, 'तुम-सब एक
ओर तथा मैं और मेरा पुत्र दूसरी ओर रहेंगे।'
लोगों ने शाऊल को उत्तर दिया, 'जो कार्य
आपकी दृष्टि में उचित है, वह कीजिए।'
41शाऊल ने प्रार्थना की, 'इस्राएल के प्रभु
परमेश्वर, क्यों तूने आज अपने सेवक को उत्तर
नहीं दिया? हे इस्राएल के प्रभु परमेश्वर, यदि
मैं अथवा मेरा पुत्र दोषी है तो "ऊरीम" चिट्ठी
निकाल। यदि तेरे लोग इस्राएली दोषी हैं, तो

++ पद 24-26 प्राचीन पाठों के आधार पर। + मूल में यह रूपक है "उसकी आंखें चमक उठीं।"

14 : 32 उत 9 : 4 **14 : 41** गण 27 : 21

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

''तुम्मीम'' चिट्ठी निकाल।' तब चिट्ठी
योनातन और शाऊल के नाम पर निकली।
इस्राएली लोग बच गए। 42शाऊल ने आदेश
दिया, 'मेरे और मेरे पुत्र योनातन के नाम पर
चिट्ठी डालो।' तब योनातन के नाम पर
चिट्ठी निकली। 43शाऊल ने योनातन से
पूछा,'मुझे बताओ। तुमने क्या किया है?'
योनातन ने उसको बताया, 'मैंने अपने हाथ के
डण्डे के सिरे से थोड़ा-सा मधु चखा था। मैं
मरने को प्रस्तुत हूँ।' 44शाऊल ने कहा, 'परमेश्वर
मेरे साथ ऐसा ही व्यवहार करे; नहीं, इससे
अधिक कठोर व्यवहार करे! योनातन, तुम्हें
निश्चय ही मृत्यु-दण्ड दिया जाएगा।' 45परन्तु
इस्राएली सैनिकों ने शाऊल से कहा, 'क्या
योनातन को मृत्यु-दण्ड दिया जाएगा, जिसने
इस्राएली राष्ट्र के लिए यह महा विजय प्राप्त
की है? यह कदापि नहीं होगा। जीवन्त प्रभु की
सौगन्ध! उसके सिर का एक बाल भी भूमि पर
नहीं गिरेगा। उसने परमेश्वर की सहायता से
आज यह कार्य सम्पन्न किया है।' अत:
सैनिकों ने योनातन को छुड़ा लिया और उसको
मृत्यु-दण्ड नहीं दिया गया।

46 शाऊल ने पलिश्ती सेना का पीछा करने
का विचार त्याग दिया। पलिश्ती अपने स्थान
को लौट गए।

शाऊल का शासन

47 शाऊल ने इस्राएलियों पर अपने राज्य
को सुदृढ़ किया। उसने अपने चारों ओर के इन
शत्रु-राष्ट्रों से युद्ध किया : मोआब, अम्मोन,
एदोम, पलिश्ती—और सोबाह के राजा से।
जहां भी शाऊल गया,वह विजयी हुआ।
48उसने वीरतापूर्ण कार्य किये। उसने अमालेकी
जाति को पराजित किया,और उसके लुटेरे
हाथों से इस्राएली राष्ट्र को मुक्त किया।

49 शाऊल के पुत्र ये थे : योनातन, इश्बी,
मल्कीशूअ। उसकी दो पुत्रियां भी थीं, जिनके
ये नाम थे : बड़ी पुत्री का नाम मेरब और छोटी
पुत्री का नाम मीकल। 50शाऊल की पत्नी का
नाम अहीनोअम था। वह अहीमास की पुत्री
थी। शाऊल के सेनापति का नाम अब्नेर था, जो
उसके चाचा नेर का पुत्र था। 51शाऊल का पिता
कीश, और अब्नेर का पिता नेर, ये दोनों
अबीएल के पुत्र थे।

52 शाऊल अपने जीवन-भर पलिश्तियों से
भीषण युद्ध करता रहा। जब वह किसी बलवान
अथवा साहसी पुरुष को देखता तब वह उसको
अपनी सेना में भरती कर लेता था।

आज्ञा-उल्लंघन और दण्ड

15 शमूएल ने शाऊल से कहा, 'प्रभु ने मुझे
भेजा था कि मैं तुम्हें प्रभु के निज लोग
इस्राएलियों का राजा अभिषिक्त करूँ। अब
तुम प्रभु के ये वचन सुनो। 2स्वर्गिक सेनाओं का
प्रभु यों कहता है : जब इस्राएली मिस्र देश से
निकले थे, तब अमालेकी जाति ने मार्ग में
इस्राएलियों का विरोध किया था। उसके इस
व्यवहार के लिए मैं उसको दण्ड दूंगा। 3अब,
जा और अमालेकी जाति को नष्ट कर दे।
उसकी समस्त माल-सम्पत्ति निषिद्ध समझकर
पूर्णत: नष्ट कर देना। स्त्री-पुरुष, बाल-वृद्ध,
दूध पीने वाले बच्चे,गाय-बैल, भेड़-बकरी,
ऊँट-गधे, इन सब का वध कर देना। इनमें से
किसी को जीवित मत रहने देना।'

4 शाऊल ने अपने सैनिकों को बुलाया।
उसने टलाईम स्थान में उनकी हाजिरी ली।
उनमें दो लाख पैदल सैनिक, और यहूदा प्रदेश
के दस हजार सैनिक थे। 5शाऊल अमालेकियों
के एक नगर में आया। वह नहर के तट पर घात
लगाकर बैठ गया। 6शाऊल ने केनी जाति के
लोगों से कहा, 'जाओ,अमालेकियों के मध्य से
निकल जाओ। यहां से चले जाओ। ऐसा न हो
कि मैं अमालेकियों के साथ तुम्हारा भी अन्त
कर दूँ। जब इस्राएली मिस्र देश से बाहर निकले
थे तब तुमने उनके साथ प्रेमपूर्ण व्यवहार किया
था।' अत: केनी अमालेकियों के मध्य से
निकलकर चले गए। 7शाऊल ने अबीलाह से
शूर तक, जो मिस्र देश की पूर्वीय सीमा पर
है,अमालेकियों को पराजित किया। 8उसने
अमालेकी राजा अगग को जीवित पकड़ लिया,

14 : 49 1 शम 31 : 2; 1 इति 10 : 2 **15 : 2** नि 17 : 8 ; व्य 25 : 17 **15 : 3** यहो 6 : 17

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और शेष सब अमालेकियों को तलवार से
पूर्णतः नष्ट कर दिया। 9शाऊल के सैनिकों ने
अगग को, तथा उसकी अच्छी-अच्छी भेड़-
बकरियों, गाय-बैलों, मोटे-मोटे पशुओं और
मेमनों को तथा जो कुछ भी अच्छी वस्तु थी,
उसको बचा लिया। उन्होंने उनको पूर्णतः नष्ट
नहीं किया। परन्तु जो बेकार और अनुपयोगी
वस्तुएँ और प्राणी थे, उनको उन्होंने पूर्णतः नष्ट
कर दिया।

10 शमूएल ने प्रभु का यह वचन सुना :
11'मुझे दुःख है कि मैंने शाऊल को राजा
बनाया; क्योंकि उसने मेरा अनुसरण करने से
मुंह मोड़ लिया है। उसने मेरे वचनों के अनुसार
कार्य नहीं किया है।' शमूएल क्रुद्ध हुआ। वह
रात भर प्रभु की दुहाई देता रहा। 12वह सबेरे
शाऊल से भेंट करने के लिए उठा। परन्तु
शमूएल को यह बताया गया : 'शाऊल कर्मेल
नगर को गए थे। उन्होंने वहां एक विजय-
स्तम्भ स्थापित किया है। वह वहाँ से मुड़कर
आगे बढ़ गए और अब गिलगाल की ओर चले
गए हैं।' 13शमूएल शाऊल के पास आया।
शाऊल ने उससे कहा, 'प्रभु आपको आशिष दे!
मैंने प्रभु के वचन के अनुसार कार्य किया है।'
14शमूएल ने पूछा, 'तब मेरे कानों को भेड़-बकरियों
का मिमियाना क्यों सुनाई दे रहा है? जो गाय-
बैलों का रंभाना मैं सुन रहा हूँ, उसका क्या अर्थ
है?' 15शाऊल ने उत्तर दिया, 'मेरे सैनिक उनको
अमालेकियों के पास से लाए हैं। उन्होंने तुम्हारे
प्रभु परमेश्वर को बलि चढ़ाने के लिए अच्छी
भेड़-बकरियों और गाय-बैलों को बचा लिया।
हमने शेष पशुओं को पूर्णतः नष्ट कर दिया।'
16शमूएल ने शाऊल से कहा, 'रुक जाओ। जो
बात प्रभु ने कल रात मुझसे कही है, वह मैं तुम्हें
बताऊंगा।' शाऊल ने उससे कहा, 'बताइए।'

17 शमूएल ने कहा, 'यद्यपि तुम स्वयं
अपनी दृष्टि में छोटे हो, तथापि क्या तुम
इस्राएली कुलों के नेता नहीं हो? प्रभु ने तुम्हें
इस्राएली लोगों पर राजा अभिषिक्त किया।
18प्रभु ने तुम्हें एक विशेष कार्य करने के लिए
भेजा था। उसने कहा था, "जा, और पापी
अमालेकियों को पूर्णतः नष्ट कर दे! उनसे युद्ध
करता रह, जब तक वे समाप्त नहीं हो जाते!"
19तब क्यों तूने प्रभु की आज्ञा नहीं मानी? क्यों
तू लूट पर झपट्टा मार कर टूट पड़ा? जो कार्य
प्रभु की दृष्टि में बुरा है, वह तूने क्यों किया?'
20शाऊल ने शमूएल को उत्तर दिया, 'मैंने प्रभु
की आज्ञा मानी है। जिस विशेष कार्य को करने
के लिए प्रभु ने मुझे भेजा था, उसको करने के
लिए मैं गया था। मैं अमालेकी राजा अगग को
पकड़कर ले आया हूँ। मैंने अमालेकी जाति को
पूर्णतः नष्ट कर दिया है। 21किन्तु सैनिकों ने
तुम्हारे प्रभु परमेश्वर को गिलगाल में बलि
चढ़ाने के उद्देश्य से लूट में से भेड़-बकरियां,
गाय-बैल और वे सर्वोत्तम वस्तुएं ले लीं,
जिनको प्रभु के नाम पर अर्पित कर पूर्णतः नष्ट
करना था।' 22किन्तु शमूएल ने यह कहा :
'जैसे प्रभु अपनी आज्ञा का पालन किये जाने
पर प्रसन्न होता है,
क्या वैसे वह अग्नि-बलि और पशुओं की
बलि से प्रसन्न होता है?
देख, प्रभु की आज्ञा मानना
पशु की बलि चढ़ाने से श्रेष्ठ है!
उसकी बात पर ध्यान देना
मेढ़े की चर्बी चढ़ाने से उत्तम है।
23विद्रोह करना
सगुन विचारने के तुल्य पाप करना है।
हठधर्मी होना
मूर्त्ति-पूजा के सदृश+ कुकर्म करना है।
तूने प्रभु के वचन को सुनने से इन्कार किया,
अतः प्रभु भी तुझे राजा मानने से इन्कार
करता है।'

24 शाऊल ने शमूएल से कहा, 'मैंने पाप
किया है। मैंने प्रभु की आज्ञा का, आपके वचन
का, उल्लंघन किया। मैं सैनिकों से डर गया था।

+ अथवा "गृहदेवताओं से शकुन विचारने के सदृश"

15 : 11 उत 6 : 6 15 : 22 भज 50 : 8-9; यश 1 : 11; आमो 5 : 21,24; हो 6 : 6; मी 6 : 6; इब्र 10 : 6; मक 12 : 33

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इसलिए मैंने उनकी बात सुनी। 25 अब, कृपाकर
मेरे पाप को क्षमा कीजिए। आप मेरे साथ वापस
चलिए। मैं प्रभु की आराधना करूँगा।' 26 शमूएल
ने शाऊल से कहा, 'मैं तुम्हारे साथ वापस नहीं
जाऊंगा। तुमने प्रभु के वचन को मानने से
इनकार किया है। इसलिए प्रभु ने भी तुम्हें
इस्राएलियों के राजा के रूप में अस्वीकार किया
है।' 27 शमूएल वहां से जाने के लिए मुड़ा।
शाऊल ने उसके वस्त्र का छोर पकड़ लिया।
वस्त्र फट गया। 28 शमूएल ने उससे कहा, 'आज
प्रभु ने इस्राएली राज्य को फाड़कर तेरे हाथ से
अलग कर दिया, और उसको तेरे पड़ोसी के
हाथ में सौंप दिया। तेरा पड़ोसी तुझसे श्रेष्ठ है।
29 इसके अतिरिक्त इस्राएल का महिमामय
परमेश्वर झूठ नहीं बोलता, और न अपने वचन
से मुंह मोड़ता है। वह मनुष्य नहीं है कि अपने
वचन से मुंह मोड़े।' 30 शाऊल ने कहा, 'यद्यपि
मैंने पाप किया है तथापि, कृपाकर, अब आप
मेरे लोगों के धर्मवृद्धों तथा इस्राएली राष्ट्र के
सम्मुख मेरा आदर कीजिए। मेरे साथ वापस
चलिए कि मैं आपके प्रभु परमेश्वर की
आराधना कर सकूं।' 31 अत: शमूएल शाऊल
के पीछे-पीछे लौटा, और शाऊल ने प्रभु की
आराधना की।

32 शमूएल ने आदेश दिया, 'अमालेकी राजा
अगग को मेरे पास लाओ।' अगग अनिच्छा से
उसके पास आया। अगग ने कहा, 'निस्सन्देह
मृत्यु कड़वी होती है!+' 33 शमूएल ने कहा :

'जैसे तेरी तलवार ने
माताओं को निस्सन्तान किया,
वैसे स्त्री-समाज में
तेरी मां भी निस्सन्तान होगी।'

तब शमूएल ने गिलगाल में प्रभु के सम्मुख
अगग के टुकड़े-टुकड़े कर दिए।

34 शमूएल वहां से रामाह नगर को गया।
शाऊल भी अपने घर ''शाऊल के गिबआह
नगर'' को गया। 35 शमूएल ने अपनी मृत्यु के
दिन तक, फिर कभी शाऊल का मुंह नहीं देखा।
वह शाऊल के लिए शोक करता रहा। प्रभु
दुखित था कि उसने शाऊल को इस्राएलियों का
राजा बनाया।

दाऊद का अभिषेक

16 प्रभु ने शमूएल से कहा, 'जब मैंने
शाऊल को इस्राएलियों के राजा के रूप
में अस्वीकार कर दिया है, तब तू कब तक
शाऊल के लिए शोक करता रहेगा? कुप्पी में*
तेल भर और चल। मैं तुझे बेतलेहम नगर के
रहने वाले यिशय के पास भेजूंगा। मैंने उसके
पुत्रों में से एक को अपने लिए राजा निश्चित
किया है।' 2 शमूएल ने उत्तर दिया, 'मैं कैसे जा
सकता हूँ? यदि शाऊल यह सुनेगा तो वह मुझे
मार डालेगा।' परन्तु प्रभु ने कहा, 'तू अपने
साथ एक लाल कलोर लेना और यह कहना :
''मैं प्रभु को इसकी बलि चढ़ाने के लिए आया
हूँ।'' 3 तू बलि के लिए यिशय को निमन्त्रण
देना। तब जो कार्य तुझे करना होगा, वह मैं तुझे
बताऊंगा। जिस व्यक्ति का नाम मैं तुझे
बताऊंगा तू उसको मेरे लिए अभिषिक्त
करना।' 4 शमूएल ने प्रभु के आदेश के अनुसार
कार्य किया। वह बेतलेहम नगर में आया। नगर
के धर्मवृद्ध डर से कांपने लगे। वे शमूएल से
भेंट करने आए। उन्होंने पूछा, 'हे द्रष्टा! क्या
आप मित्रभाव से आए हैं?' 5 शमूएल ने उत्तर
दिया, 'हां, मित्रभाव से। मैं प्रभु के लिए बलि
चढ़ाने आया हूँ। तुम अपने आप को शुद्ध करो,
और बलि चढ़ाने के लिए मेरे साथ चलो।' यों
शमूएल ने यिशय और उसके पुत्रों को शुद्ध
किया और उन्हें बलि-भोज के लिए निमन्त्रित
किया।

6 वे आए। शमूएल ने यिशय के पुत्र
एलीअब को देखा। शमूएल ने हृदय में कहा,
'निस्सन्देह! प्रभु के सम्मुख उसका अभिषिक्त

+ अथवा, ''आत्मविश्वास के साथ उसके पास आया। अगग ने कहा, ''निस्संदेह, मृत्यु की संभावना टल गयी है।''
* मूल में ''सींग''

15 : 26 1 शम 2 : 30; 1 रा 11 : 11 **15 : 27** 1 रा 11 : 30 **15 : 29** गण 23 : 19 **16 : 1** रूत 4 : 17; यश 11 : 1 **16 : 7** भज 147 : 10; यश 55 : 8; अय्य 10 : 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

राजा खड़ा है।' 7परन्तु प्रभु ने शमूएल से कहा,
'तू उसके बाहरी रूप-रंग और ऊंचे कद पर
ध्यान मत दे। मैंने उसे अस्वीकार किया है।
जिस दृष्टि से मनुष्य देखता है, उस दृष्टि से मैं
नहीं देखता। मनुष्य व्यक्ति के बाहरी रूप-रंग
को देखता है, पर मैं उसके हृदय को देखता
हूँ।' 8तत्पश्चात् यिशय ने अबीनादब को बुलाया।
उसने उसे शमूएल के सामने भेजा। शमूएल ने
कहा, 'प्रभु ने इसे भी नहीं चुना है।' 9यिशय
ने शम्माह को भेजा। शमूएल ने कहा, 'प्रभु ने
इसे भी नहीं चुना है।' 10इस प्रकार यिशय ने
अपने सात पुत्रों को शमूएल के सामने भेजा।
परन्तु शमूएल ने यिशय से कहा, 'प्रभु ने इन्हें
नहीं चुना है।' 11तब शमूएल ने यिशय से पूछा,
'क्या तुम्हारे सब पुत्र यहां हैं?' यिशय ने उत्तर
दिया, 'सबसे छोटा पुत्र अभी शेष है। पर,
देखिए, वह भेड़-बकरियों की देख-भाल कर
रहा है।' शमूएल ने यिशय से कहा, 'किसी को
भेजकर उसको बुलाओ। जब तक वह नहीं
आएगा तब तक हम भोजन के लिए नहीं बैठेंगे'
12अत: यिशय ने किसी को भेजा और उस पुत्र
को भीतर बुलाया। उससे किशोरावस्था की
ललाई झलकती थी। उसकी आंखें आकर्षक
थीं। वह देखने में सुन्दर था। प्रभु ने शमूएल से
कहा, 'उठ! इसे अभिषिक्त कर। यह वही
है।' 13तब शमूएल ने कुप्पी का तेल लिया,
और उससे भाइयों के मध्य में दाऊद का
अभिषेक किया। प्रभु का आत्मा अतिवेग से
दाऊद पर उतरा, और उस दिन से वह उसमें
निवास करने लगा। शमूएल उठा। वह रामाह
नगर को चला गया।

सितार-वादक दाऊद

14 प्रभु का आत्मा शाऊल को छोड़कर
चला गया। तब प्रभु की ओर से एक बुरी आत्मा
शाऊल में समा गई। 15शाऊल के सेवकों ने
उससे कहा, 'देखिए, परमेश्वर की ओर से एक
बुरी आत्मा आपको सता रही है। 16अब, स्वामी,
अपने सेवकों को आदेश दीजिए। हम, जो
आपकी सेवा में उपस्थित हैं, एक ऐसे मनुष्य
को ढूँढ़ेंगे, जो सितार बजाना जानता है। जब
परमेश्वर की ओर से बुरी आत्मा आप पर
उतरेगी, तब वह अपने हाथ से सितार बजाएगा,
और आप स्वस्थ हो जाएंगे।' 17शाऊल ने अपने
सेवकों को यह आदेश दिया, 'मेरे लिए एक
अच्छे सितार-वादक का प्रबन्ध करो, और उसे
मेरे पास लाओ।' 18युवकों में से एक ने उसे
उत्तर दिया, 'मैंने बेतलेहम नगर के रहने वाले
यिशय के एक पुत्र को देखा है। वह सितार
बजाना जानता है। वह साहसी है। वह योद्धा
है। वह बात करने में कुशल है। उसका रूप-
रंग सुन्दर है। इसके अतिरिक्त, प्रभु उसके साथ
है।' 19अत: शाऊल ने यिशय के पास दूतों को
यह कहने के लिए भेजा, 'तुम अपने पुत्र दाऊद
को, जो भेड़-बकरियों के साथ है, मेरे पास
भेजो।' 20यिशय ने पांच रोटियां, अंगूर के रस
से भरी एक मशक तथा बकरी का एक बच्चा
लिया, और उनको अपने पुत्र दाऊद के द्वारा
शाऊल के पास भेज दिया। 21दाऊद शाऊल के
पास आया। वह उसकी सेवा करने लगा।
शाऊल उससे बहुत प्रेम करता था। दाऊद
उसका शस्त्रवाहक बन गया। 22शाऊल ने यिशय
को दूत के हाथ यह सन्देश भेजा, 'दाऊद को
मेरी सेवा करने दो। उसे मेरी कृपा-दृष्टि प्राप्त
है।' 23जब परमेश्वर की ओर से बुरी आत्मा
शाऊल पर उतरती थी, तब दाऊद सितार लेता
और उसको अपने हाथ से बजाता था। यों
शाऊल को आराम मिलता और वह स्वस्थ हो
जाता था और बुरी आत्मा उसको छोड़कर चली
जाती थी।

दाऊद और गोलयत

17 पलिश्तियों ने युद्ध के लिए अपने
सैन्यदल एकत्र किए। वे यहूदा प्रदेश
के सोकोह नगर में, एकत्र हुए। उन्होंने एफस-
दम्मीम क्षेत्र में सोकोह और अजेकाह नगर के
मध्य पड़ाव डाला। 2अत: शाऊल और इस्राएल
देश के समस्त सैनिक एकत्र हुए। उन्होंने
एलाह घाटी में पड़ाव डाला। उन्होंने पलिश्तियों
का सामना करने के लिए युद्ध की व्यूह-रचना

---

16 : 12 1 शम 9 : 2; 2 शम 14 : 25 **16 : 13** शास 11 : 29; 1 शम 10 : 6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

की। [3]पलिश्ती सैनिक पहाड़ की एक ओर खड़े थे, और इस्राएली सैनिक पहाड़ की दूसरी ओर। उनके मध्य एक घाटी थी।

4 तब पलिश्ती पड़ाव से एक पराक्रमी योद्धा निकला। उसका नाम गोलयत था। वह गत नगर का रहने वाला था। उसकी ऊँचाई प्राय: तीन मीटर* थी। [5]उसके सिर पर पीतल का शिरस्त्राण था। वह शरीर पर पीतल का कवच पहिने हुए था। कवच का भार सत्तावन किलो था। [6]उसके पैरों में भी पीतल का कवच था। उसके कन्धों के मध्य पीतल का नेजा बंधा था। [7]उसके भाले का डण्डा करघे के डण्डे के समान था। भाले के लोहे के फल का भार प्राय: सात किलो था। गोलयत का ढालवाहक उसके आगे-आगे चल रहा था।

8 गोलयत इस्राएली सैनिकों की पंक्तियों के सम्मुख खड़ा हुआ। उसने उन्हें पुकारा, 'तुमने युद्ध की व्यूह-रचना क्यों की? क्या मैं पलिश्ती सैनिक नहीं हूं? क्या तुम शाऊल के गुलाम नहीं हो? तुम अपने में से एक योद्धा को चुनो। वह पहाड़ से उतरकर मेरे पास आए। [9]यदि वह मुझसे लड़ सकेगा, और मुझे मार देगा, तो हम-पलिश्ती तुम्हारे गुलाम बन जाएंगे। परन्तु यदि मैं उसको पराजित कर उसे मार डालूंगा, तो तुम हमारे गुलाम बन जाओगे और हमारी गुलामी करोगे।' [10]पलिश्ती योद्धा ने आगे कहा, 'मैं आज इस्राएली सैनिकों को चुनौती देता हूँ। तुम मुझे अपना एक योद्धा दो। हम द्वन्द्वयुद्ध करेंगे।' [11]जब शाऊल और इस्राएल देश के सैनिकों ने पलिश्ती योद्धा की ये बातें सुनीं, तब वे हिम्मत हार गए। वे बहुत डर गए।

12 दाऊद यिशय का पुत्र था। यिशय यहूदा प्रदेश के बेतलेहम नगर का रहने वाला था। वह एप्रताह जिले का निवासी था। यिशय के आठ पुत्र थे। वह शाऊल के राज्य-काल तक बहुत वृद्ध हो गया था। [13]यिशय के तीन बड़े पुत्र शाऊल के साथ युद्ध में गए थे। उसके उन तीन पुत्रों के नाम, जो युद्ध में गए थे, ये हैं: ज्येष्ठ पुत्र एलीअब, उसके बाद का अबीनादब, और तीसरा पुत्र शम्माह। [14]दाऊद सबसे छोटा पुत्र था। उसके तीन बड़े भाई शाऊल के पीछे-पीछे युद्ध में गए थे। [15]दाऊद बेतलेहम नगर में अपने पिता की भेड़-बकरियों की देखभाल करने के लिए शाऊल के पास से लौटकर आता था। [16]पलिश्ती योद्धा चालीस दिन तक, सबेरे और शाम को, इस्राएली सेना के सम्मुख आता और खड़ा हो जाता था।

17 एक दिन यिशय ने अपने पुत्र दाऊद से कहा, 'अपने भाइयों के लिए यह दस किलो भुना हुआ अनाज और ये दस रोटियां ले, और तुरन्त उनके पड़ाव में जा। [18]उनके सहस्रपति के लिए पनीर की ये दस टिकियां भी ले जा। अपने भाइयों से उनका कुशल-क्षेम पूछना, और उनकी कुशलता का प्रमाण-चिह्न लाना। [19]वे शाऊल और समस्त इस्राएलियों के साथ एलाह घाटी में पलिश्तियों से युद्ध कर रहे हैं।'

20 अत: दाऊद सबेरे उठा। उसने भेड़-बकरियां रखवाले के पास छोड़ीं। उसने सामान उठाया और चला गया, जैसा उसके पिता यिशय ने आदेश दिया था। वह पड़ाव में आया। उस समय सेना युद्ध-भूमि की ओर जा रही थी। सैनिक युद्ध के नारे लगा रहे थे।

21 इस्राएली और पलिश्ती सेनाएं युद्ध के लिए एक-दूसरे के सामने पंक्तिबद्ध खड़ी हो गईं। [22]दाऊद सामान के रखवाले के हाथ में अपनी वस्तुएं छोड़कर युद्ध-भूमि की ओर दौड़ा। वह युद्ध-भूमि में पहुँचा। उसने अपने भाइयों से उनका कुशल-क्षेम पूछा। [23]जब वह उनसे बात कर रहा था तब गत नगर का रहने वाला पलिश्ती योद्धा, जिसका नाम गोलयत था, पलिश्ती सेना के पड़ाव से निकल कर आया। वह पहले के समान बोलने लगा। दाऊद ने उसकी बातें सुनीं।

24 जब इस्राएली सैनिकों ने पलिश्ती योद्धा को देखा, तब वे सब उसके सामने से भाग गए।

*अर्थात्, ''छ: हाथ एक बीता'' अथवा ''साढ़े नौ फुट''

17 : 4 2 शम 21 : 19 **17 : 12** रूत 4 : 22

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रखा। उसने दाऊद को उसके पिता के घर
लौटने नहीं दिया। 3तब योनातन ने दाऊद से
एक सन्धि की कि वह उससे अपने प्राण के
समान प्रेम करेगा। 4जो लबादा योनातन पहिने
हुए था, उसने उसको उतार दिया,और दाऊद
को दे दिया। इसके अतिरिक्त उसने अपना
बख्तर, अपनी तलवार, अपना धनुष और
कमरबन्द भी दे दिया। 5जहाँ-जहाँ शाऊल ने
दाऊद को भेजा, वहां-वहां दाऊद सफल
हुआ। अतः शाऊल ने उसे अनुभवी सैनिकों के
ऊपर नियुक्त कर दिया। लोगों की तथा शाऊल
के कर्मचारियों की कृपा-दृष्टि दाऊद पर थी।

दाऊद से शाऊल की ईर्ष्या

6 वे घर आ रहे थे। दाऊद पलिश्ती योद्धा
का वध करने के पश्चात् लौट रहा था। तब
स्त्रियां राजा शाऊल का स्वागत करने के लिए
इस्राएली राज्य के सब नगरों से बाहर निकलीं।
वे मंगलगीत गा रही थीं। संगीत के वाद्य-यन्त्रों
के साथ, खंजरी बजाती हुई नाच रही थीं। 7वे
नृत्य करती हुई गा-गा कर एक-दूसरे से यह
कह रही थीं :

'शाऊल ने मारा हजारों को,
पर दाऊद ने मारा लाखों को!'

8 यह गीत सुनकर शाऊल बहुत क्रुद्ध हुआ।
यह बात उसकी दृष्टि में बुरी लगी। उसने कहा,
'ये स्त्रियां दाऊद को लाख शत्रु मारने का श्रेय
दे रही हैं; और मुझे केवल हजार शत्रुओं का।
अब दाऊद क्या पाने का प्रयत्न करेगा? केवल
मेरा राज्य!' 9उस दिन के बाद शाऊल दाऊद
को ईर्ष्या की दृष्टि से देखने लगा।

10 दूसरे दिन परमेश्वर की ओर से एक बुरी
आत्मा शाऊल पर वेगपूर्वक उतरी। वह घर के
भीतर प्रलाप करने लगा। दाऊद प्रति दिन के
समान सितार बजा रहा था। शाऊल के हाथ में
भाला था। 11उसने हृदय में कहा, 'मैं दाऊद
को दीवार में बेध दूंगा।' अतः उसने भाला
फेंका। परन्तु दाऊद उससे दो बार बच निकला।
12शाऊल दाऊद से डरने लगा। प्रभु दाऊद
के साथ था। प्रभु शाऊल को छोड़कर चला गया
था। 13अतः शाऊल ने दाऊद को अपने पास
से दूर हटा दिया। उसने दाऊद को एक हजार
सैनिकों के ऊपर सेनापति नियुक्त कर दिया।
वह सेना के आगे-आगे आने-जाने लगा।
14दाऊद अपने सब कामों में सफल हुआ,
क्योंकि प्रभु उसके साथ था। 15जब शाऊल ने
देखा कि दाऊद बहुत सफल हुआ तब वह भय
से आतंकित हो गया। 16 परन्तु इस्राएल प्रदेश
और यहूदा प्रदेश की सब जनता दाऊद से प्रेम
करती थी, क्योंकि वह युद्ध में उनके आगे-
आगे जाता और उनका मार्ग-दर्शन करता था।

17 एक दिन शाऊल ने दाऊद से कहा,
'देखो, यह मेरी बड़ी पुत्री मेरब है। मैं इसका
विवाह तुम्हारे साथ कर दूंगा। पर शर्त यह है
कि तुम्हें मेरे लिए शौर्य का प्रदर्शन करना होगा
कि तुम शूरवीर हो। तुम्हें प्रभु के युद्ध लड़ने
होंगे।' शाऊल हृदय में यह कहता था, 'अच्छा
हो कि दाऊद पलिश्तियों के हाथ से मारा
जाए,मेरे हाथ से नहीं।' 18दाऊद ने शाऊल को
उत्तर दिया,'महाराज, मैं कौन हूं, और मेरी
हस्ती क्या है? इस्राएली समाज में मेरे पिता का
परिवार इतना कुलीन नहीं है कि मैं राजा का
दामाद बनूं।'

19 जब दाऊद के साथ शाऊल की पुत्री
मेरब के विवाह का समय आया, तब शाऊल
ने उसका विवाह महोलाह नगर के रहने वाले
अद्रीएल के साथ कर दिया।

20 शाऊल की दूसरी पुत्री मीकल दाऊद से
प्रेम करने लगी। लोगों ने यह बात शाऊल को
बताई। उसे अपनी दृष्टि में यह बात उचित
प्रतीत हुई। 21शाऊल ने विचार किया, 'मैं
दाऊद के साथ मीकल का विवाह कर दूंगा।
परन्तु वह दाऊद के लिए एक फन्दा बन जाएगी
और पलिश्ती उस पर प्रहार करने के लिए हाथ
उठाएंगे।'अतः उसने दाऊद से दूसरी बार यह
कहा,'तुम मेरे दामाद बनोगे।' 22शाऊल ने अपने
कर्मचारियों को यह आदेश दिया, 'तुम दाऊद

18 : 6 नि 15 : 20; शास 5 : 1-2 18 : 7 1 शम 21 : 11; 29 : 5 18 : 10 1 शम 16 : 14; 19 : 9 18 : 17 1 शम 17 : 25 18 : 19 2 शम 21 : 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

से एकान्त में बातचीत करो। उससे यह कहो,
''राजा तुमसे प्रसन्न हैं। उसके सब कर्मचारी
तुमसे प्रेम करते हैं। अब तुम राजा के दामाद बन
जाओ।''' 23शाऊल के कर्मचारियों ने दाऊद
के कानों में ये बातें कहीं। दाऊद ने उत्तर दिया,
'क्या तुम अपनी दृष्टि में इस बात को साधारण
समझते हो कि मैं गरीब और मामूली आदमी
होकर भी राजा का दामाद बनूं?' 24अत:
कर्मचारियों ने शाऊल को बताया, 'दाऊद ये
बातें कहता है।' 25शाऊल ने कहा, 'तुम यों
दाऊद से कहना, ''राजा को दहेज में कुछ नहीं
चाहिए। उसे केवल सौ पलिश्तियों के लिंग की
खलड़ी चाहिए। राजा अपने पलिश्ती शत्रुओं से
बदला लेना चाहता है।''' शाऊल ने यह उपाय
किया था कि दाऊद पलिश्तियों के हाथ से मारा
जाए। 26शाऊल के कर्मचारियों ने दाऊद को ये
बातें बताईं। दाऊद को अपनी दृष्टि में यह बात
उचित प्रतीत हुई कि वह राजा का दामाद बने।

समय अभी पूरा नहीं हुआ था 27कि दाऊद
तैयार हो गया। वह अपने सैनिकों के साथ
गया। उसने दो सौ पलिश्ती पुरुषों को मार
डाला। वह उनके लिंग की खलड़ी काटकर ले
आया। उसने उनको राजा के सम्मुख गिना। वे
संख्या में पूरी थीं। उसने उनको राजा को दिया
कि वह उसका दामाद बने। शाऊल ने अपनी
पुत्री मीकल का विवाह दाऊद से कर दिया।

28 शाऊल ने देखा कि प्रभु दाऊद के साथ
है। इस्राएल के सब कुल उससे प्रेम करते हैं।
29अत: वह दाऊद से और अधिक डरने लगा।
शाऊल दाऊद से सदा शत्रुता करता रहा।

30 पलिश्ती सामन्त युद्ध के लिए निकलते
थे, पर जब-जब वे युद्ध के लिए आते थे, तब-
तब दाऊद शाऊल के दरबारियों से अधिक
सफलता प्राप्त करता था। अत: उसका बड़ा
नाम हो गया।

शाऊल का प्राणघातक आक्रमण

19 शाऊल ने अपने पुत्र योनातन तथा अन्य
कर्मचारियों से दाऊद की हत्या करने
की चर्चा की। परन्तु शाऊल का पुत्र योनातन
दाऊद से अत्यन्त प्रसन्न था। 2उसने दाऊद को
यह बताया, 'मेरे पिता अवसर की खोज में हैं
कि वह तुम्हारी हत्या कर दें। अब तुम सबेरे
सावधान रहना। गुप्त स्थान में रहना। वहां स्वयं
को छिपाकर रखना। 3मैं पिता के साथ बाहर
जाऊँगा। मैं उनके साथ खेत में रहूंगा, जहां तुम
छिपे होगे। मैं उनसे तुम्हारी चर्चा करूंगा। यदि
मुझे कोई बात ज्ञात होगी तो तुम्हें बताऊंगा।'
4योनातन ने अपने पिता शाऊल से दाऊद के
विषय में भली बातें कहीं। योनातन ने कहा,
'महाराज, अपने सेवक दाऊद के प्रति पाप न
करें! उसने आपके प्रति पाप नहीं किया है।
उसके सब कार्यों से आप का बहुत हित हुआ
है। 5उसने अपने प्राण को हथेली पर रखकर
पलिश्तियों का वध किया था। यों प्रभु ने समस्त
इस्राएली जाति को एक महान विजय प्रदान
की। आपने स्वयं उसको देखा, और आनन्द
मनाया था। तब आप क्यों निर्दोष व्यक्ति के
प्रति पाप करना चाहते हैं? क्यों आप दाऊद की
अकारण हत्या करना चाहते हैं?' 6शाऊल ने
योनातन की बात सुनी। उसने शपथ खाई,
'जीवन्त प्रभु की सौगन्ध! मैं दाऊद की हत्या
नहीं करूंगा।' 7अत: योनातन ने दाऊद को
बुलाया। उसने दाऊद को ये सब बातें बताईं।
वह दाऊद को शाऊल के पास ले आया। दाऊद
पहले के समान शाऊल के साथ रहने लगा।

8 इस्राएलियों और पलिश्तियों में पुन: युद्ध
छिड़ गया। दाऊद युद्ध करने गया। वह
पलिश्तियों से लड़ा। उसने उनका महासंहार
किया। अत: वे उसके सामने से भाग गए।

9 तब प्रभु की ओर से एक बुरी आत्मा
शाऊल पर उतरी। वह अपने महल में बैठा था।
उसका भाला उसके हाथ में था। दाऊद हाथ से
सितार बजा रहा था। 10शाऊल ने भाले से
दाऊद को दीवार में बेधने का प्रयत्न किया।
परन्तु वह शाऊल के वार से बच गया। भाला
दीवार में धंस गया। दाऊद भागा और बचकर
निकल गया।

11 शाऊल ने दाऊद पर नजर रखने के लिए

---

18 : 25 उत 34 : 12 **19 : 9** 1 शम 16 : 14; 18 : 10 **19 : 11** भज 59

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उसी रात उसके घर दूत भेजे कि वे सबेरे उसकी
हत्या कर दें। किन्तु दाऊद की पत्नी मीकल
ने उसे यह बात बता दी। मीकल ने कहा,
'यदि तुम आज रात भाग कर अपने प्राण की
रक्षा नहीं करोगे तो कल तुम्हारी हत्या कर दी
जाएगी।' 12अत: मीकल ने दाऊद को खिड़की
से नीचे उतार दिया। वह चला गया। यों वह
भागकर बच गया।

13 मीकल ने गृह-देवता की एक मूर्ति ली।
उसने उसको पलंग पर लिटा दिया। उसने
बकरियों के बालों की बनी हुई एक जाली
उसके सिर पर लगा दी, और उसको चादर से
ढक दिया।

14 शाऊल ने दाऊद को बन्दी बनाने के लिए
दूत भेजे। मीकल ने कहा, 'वह बीमार है।'
15तब शाऊल ने दाऊद को देखने के लिए दूत
भेजे। उसने दूतों को यह आदेश दिया, 'उसे
पलंग सहित मेरे पास ले आओ। मैं उसका वध
करूंगा।' 16दूतों ने दाऊद के घर में प्रवेश
किया। उन्होंने देखा कि पलंग पर गृह-देवता
की एक मूर्ति है। उसके सिर पर बकरियों के
बाल की एक जाली लगी हुई है! 17शाऊल ने
मीकल से पूछा, 'तूने मुझे ऐसा धोखा क्यों
दिया ? मेरे शत्रु को क्यों जाने दिया कि वह
बचकर निकल जाए ?' मीकल ने शाऊल को
उत्तर दिया, 'दाऊद ने मुझसे कहा : ''मुझे जाने
दे, अन्यथा मैं तुझे मार डालूंगा!'' '

18 दाऊद भागा, और वह बच गया। वह
रामाह नगर में शमूएल के पास आया। जो कुछ
शाऊल ने उसके साथ किया था, वह उसने
शमूएल को बता दिया। तब दाऊद और शमूएल
रामाह के नायोत मुहल्ले को चले गए, और
वहां रहने लगे। 19किसी ने शाऊल को यह बात
बताई, 'देखिए, दाऊद रामाह नगर के नायोत
मुहल्ले में है।' 20शाऊल ने दाऊद को बन्दी
बनाने के लिए दूत भेजे। पर जब दूत वहां आए
तब उन्होंने नबियों की सभा देखी। नबी नबूवत
कर रहे थे। उन्होंने नबियों के मध्य शमूएल को
खड़े हुए देखा। तब परमेश्वर का आत्मा शाऊल
के दूतों पर उतरा, और वे भी नबूवत करने लगे।
21लोगों ने यह बात शाऊल को बताई। तब
उसने और दूत भेजे। पर वे भी नबूवत करने
लगे। शाऊल ने फिर तीसरी बार दूत भेजे। वे
भी नबूवत करने लगे। 22अत: वह स्वयं रामाह
नगर गया। वह खलियान के कुंएं पर पहुंचा, जो
नंगे टीले* पर था। उसने किसी से पूछा,
'शमूएल और दाऊद कहां हैं ?' उसने उत्तर
दिया, 'देखिए, वे रामाह नगर के नायोत मुहल्ले
में हैं।' 23अत: वह वहां से रामाह नगर के
नायोत मुहल्ले को गया। तब परमेश्वर का
आत्मा शाऊल पर भी उतरा और वह भी नबूवत
करने लगा। जब तक वह रामाह नगर के नायोत
मुहल्ले में नहीं पहुंचा तब तक वह मार्ग में
चलते-चलते नबूवत करता रहा। 24वह शमूएल
के सम्मुख भी नबूवत करता रहा। उसने अपने
वस्त्र उतार दिए। वह दिन-भर और रात-भर
वहीं नग्न पड़ा रहा। इस कारण लोगों में यह
कहावत प्रचलित है : 'क्या नबियों में शाऊल
भी एक नबी है ?'

दाऊद और योनातन की मित्रता

20 दाऊद रामाह नगर के नायोत मुहल्ले से
भागा। वह योनातन के सम्मुख पहुंचा।
उसने योनातन से कहा, 'मैंने क्या किया है ? मेरा
दोष क्या है ? तुम्हारे पिता की दृष्टि में मेरा पाप
क्या है कि वह मेरे प्राण की खोज में हैं ?'
2योनातन ने उससे कहा, 'नहीं, तुम ऐसा क्यों
सोचते हो ? वह तुम्हारी हत्या नहीं कर सकते।
देखो, मेरे पिता बिना मुझे बताए, कोई काम
नहीं करते; फिर चाहे वह बड़ा काम हो अथवा
छोटा। तब मेरे पिता मुझसे यह बात क्यों
छिपाएंगे ? नहीं, तुम्हारी यह बात सच नहीं है !'
3दाऊद ने शपथ खाई। उसने कहा, 'तुम्हारे
पिता यह बात अच्छी तरह जानते हैं कि मैंने
तुम्हारी कृपा-दृष्टि प्राप्त की है। वह यह सोचते
हैं : योनातन को निश्चय ही इस बात का पता
नहीं चलना चाहिए। अन्यथा उसे दुःख होगा।

* अथवा 'सेकू में है।'

19 : 13 उत 31 : 19; शास 17 : 5 19 : 23 1 शम 10 : 10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जैसे यह सच है कि प्रभु जीवित है और तुम
जीवित हो, वैसे ही मेरी बात भी सच है : मेरे
और मृत्यु के बीच केवल एक कदम का अन्तर
रह गया है।'
4 योनातन ने दाऊद से कहा, 'जो तुम
कहोगे, वह मैं तुम्हारे लिए करूंगा।' 5दाऊद
ने योनातन से कहा, 'देखो, कल नवचन्द्र का
पर्व है। मुझे भोजन के लिए राजा के साथ बैठना
ही पड़ेगा। अतः मुझे जाने दो। मैं तीसरे दिन
की सन्ध्या तक मैदान में छिपा रहूंगा । 6यदि
तुम्हारे पिता मुझे अनुपस्थित पाएंगे तो तुम
कहना : "दाऊद ने अविलम्ब बेतलेहम नगर
जाने के लिए आग्रहपूर्वक अनुमति मांगी थी।
उसके गोत्र के सब सदस्य वहां, उसके नगर में
वार्षिक बलि चढ़ाएंगे" 7यदि तुम्हारे पिता यह
उत्तर देंगे : "अच्छा!" तो तुम्हारे इस सेवक
का भला होगा। परन्तु यदि वह तुम्हारी बात
सुनकर नाराज होंगे, तो तुम जान लेना कि वह
मेरा अनिष्ट करने का निश्चय कर चुके हैं।
8इसलिए अब अपने इस सेवक पर कृपा करो:
तुमने प्रभु के नाम में मुझे विवश किया कि मैं
तुम्हारे साथ सन्धि स्थापित करूं। यदि मैं दोषी
हूँ तो स्वयं तुम मुझे मार डालो। मुझे अपने
पिता के पास क्यों ले जाना जाहते हो?'
9योनातन ने कहा, 'नहीं, तुम ऐसा क्यों सोचते
हो? यदि मुझे पता होता कि मेरे पिता तुम्हारा
अनिष्ट करने का निश्चय कर चुके हैं, तो क्या
मैं तुम्हें यह बात नहीं बताता?' 10तब दाऊद ने
योनातन से कहा, 'मान लो, यदि तुम्हारे पिता
कड़ा उत्तर देंगे तो कौन मुझे यह बात बताएगा?'
11योनातन ने दाऊद से कहा, 'चलो, हम मैदान
की ओर जाएंगे।' अतः वे दोनों मैदान की ओर
गए।
12 योनातन ने दाऊद से कहा, 'इस्राएल का
प्रभु परमेश्वर साक्षी है! मैं कल या परसों इसी
समय अपने पिता के हृदय की थाह लूंगा। यदि
उनके हृदय में तुम्हारे प्रति सद्भावना होगी तो
मैं किसी को भेजकर तुम्हें यह बात बता दूंगा।
13परन्तु यदि मेरे पिता तुम्हारा अनिष्ट करना
चाहेंगे, और मैं तुम्हें यह बात नहीं बताउंगा,
तुम्हें सकुशल नहीं जाने दूंगा, तो प्रभु मेरे साथ
कठोर से कठोर व्यवहार करे। अब, जैसे प्रभु
मेरे पिता के साथ था, वैसा ही वह तुम्हारे साथ
हो। 14यदि मैं जीवित रहा तो मेरे साथ प्रभु का
प्रेमपूर्ण व्यवहार करना। यदि मैं मर गया 15तो
तुम मेरे परिवार से प्रेमपूर्ण दृष्टि कभी मत
हटाना! जब प्रभु तुम्हारे प्रत्येक शत्रु का नाम
धरती की सतह से मिटा देगा 16तब योनातन का
नाम शाऊल के परिवार से मत मिटाना। प्रभु
तुम्हारे प्रत्येक शत्रु से बदला ले!' 17योनातन ने
अपने प्रेम का वास्ता देकर दाऊद को पुनः
शपथ खिलाई, क्योंकि वह उसे अपने प्राण के
सदृश प्रेम करता था।
18 योनातन ने दाऊद से कहा, 'कल
नवचन्द्र का पर्व है। तुम अनुपस्थित रहोगे।
तुम्हारा आसन खाली रहेगा। 19तीसरे दिन तुम्हारी
अनुपस्थिति पर अधिक ध्यान दिया जाएगा।
इसलिए तुम उसी स्थान को चले जाना जहां तुम
उस घटना के दिन छिपे थे। तुम वहां पत्थर के
ढेर के पास रहना। 20मैं तीसरे दिन उस ओर
तीन तीर छोड़ूंगा, मानो मैं उन्हें निशाने पर चला
रहा हूँ। 21तत्पश्चात् मैं एक लड़के को भेजूंगा।
मैं उससे यह कहूंगा, "जा, तीर को ढूंढ़!"
परन्तु यदि मैं यह कहूंगा, "देख, तीर इस ओर
है। उसको उठा," तो तुम आ जाना। जैसे यह
बात सच है कि प्रभु जीवित है, वैसे ही तुम
निस्सन्देह सुरक्षित होगे, और खतरे की कोई
बात नहीं होगी। 22परन्तु यदि मैं लड़के से यह
बात कहूंगा, "देख, तीर तेरे आगे है," तो तुम
चले जाना। तुम समझ लेना कि प्रभु तुम्हें भेजना
चाहता है। 23जो बातें मैंने और तुमने कही हैं,
देखो, उनके विषय में प्रभु मेरा और तुम्हारा
साक्षी सदा रहेगा।'
24 अतः दाऊद मैदान में छिप गया। जब
नवचन्द्र का पर्व आया तब राजा भोजन करने
के लिए बैठा। 25वह दीवार के पास के आसन

---

20 : 5 गण 10 : 10; 28 : 11, 2 रा 4 : 23; यश 1 : 13 **20 : 15** 2 शम 9 : 1; 21 : 8 **20 : 17** 1 शम 18 : 1; 19 : 2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

3 दाऊद वहां से मोआब देश के मिस्पाह
नगर में गया। उसने मोआब देश के राजा से यह
कहा, 'जब तक मुझे परमेश्वर की इच्छा ज्ञात
न हो जाए कि वह मुझसे क्या कराएगा तब तक
आप, कृपा कर, मेरे माता-पिता को यहां ठहरने
की अनुमति दीजिए।' 4अत: दाऊद ने अपने
माता-पिता को मोआब देश के राजा के पास
छोड़ा। जब तक दाऊद गढ़ में रहा तब तक वे
उसके साथ रहे। 5नबी गाद ने दाऊद से कहा,
'गढ़ में मत रहो। जाओ! यहूदा प्रदेश में चले
जाओ।' इसलिए दाऊद वहां से चला गया। वह
हेरेत के जंगल में आया।

6 शाऊल ने सुना कि दाऊद और उसके
साथियों का पता चल गया है। उस समय
शाऊल गिबआह में था। वह एक टीले पर,
झाऊ के पेड़ के नीचे बैठा था। उसका भाला
उसके हाथ में था। उसके सेवक उसके आस-
पास खड़े थे। 7उसने आस-पास खड़े हुए
अपने सेवकों से कहा, 'ओ बिन्यामिन कुल के
लोगो, मेरी बात सुनो! क्या यिशय का पुत्र तुम
सबको खेत और अंगूर के उद्यान देगा? क्या वह
तुम सब को हजार-हजार और सौ-सौ सैनिकों
के ऊपर अधिकारी नियुक्त करेगा? 8तब तुम
सबने मेरे विरुद्ध षड्यन्त्र क्यों रचा है? जब मेरे
पुत्र ने यिशय के पुत्र के साथ सांठ-गांठ की तब
किसी ने मुझ पर यह भेद प्रकट नहीं किया। जब
मेरे पुत्र ने मेरे सेवक को मेरे प्रति भड़काया, उसे
मेरे लिए घात में बैठाया, तब तुममें किसी ने मुझे
इस बात की खबर नहीं दी। किसी को मेरे लिए
दु:ख नहीं हुआ।' 9एदोम देश के रहने वाले
दोएग ने, जो शाऊल के सेवकों के साथ खड़ा
था, यह उत्तर दिया, 'मैंने यिशय के पुत्र को
देखा था। वह नोब नगर में अहीटूब के पुत्र
अहीमेलक के पास आया था। 10अहीमेलक ने
दाऊद के लिए प्रभु से पूछा था। उसने उसे
भोजन-सामग्री दी। इसके अतिरिक्त उसने
दाऊद को पलिश्ती योद्धा गोलयत की तलवार
भी दी'

11 अत: राजा ने अहीटूब के पुत्र पुरोहित
अहीमेलक को, तथा उसके गोत्र के सब पुरोहितों
को जो नोब नगर में थे, दूत भेजकर बुलाया।
वे सब राजा के पास आए। 12शाऊल ने
कहा, 'अहीटूब के पुत्र, मेरी बात सुनो।' उसने
उत्तर दिया, 'महाराज, मैं प्रस्तुत हूँ।' 13शाऊल
ने उससे पूछा, 'क्यों तुमने और यिशय के पुत्र
ने मेरे विरुद्ध षड्यन्त्र रचा है? क्यों तुमने यिशय
के पुत्र को रोटी और तलवार दी? उसके लिए
प्रभु से पूछा? क्यों उसने मेरे विरोध में विद्रोह
किया? वह आज क्यों घात लगाकर बैठा है?'
14अहीमेलक ने राजा को उत्तर दिया, 'महाराज,
आपके सब कर्मचारियों में कौन व्यक्ति दाऊद
के समान वफादार है? वह महाराज के दामाद
हैं। वह आपके अंगरक्षकों के नायक हैं। वह
आपके राज-परिवार के सम्मानित व्यक्ति हैं।
15क्या मैंने आज पहली बार उनके लिए
परमेश्वर से पूछा है? नहीं! महाराज, मुझ पर,
अपने सेवक पर तथा मेरे पिता के परिवार के
सब पुरोहितों पर अभियोग मत लगाइए।
महाराज, मैं इस विषय में थोड़ा-बहुत भी नहीं
जानता हूं।' 16राजा ने कहा, 'अहीमेलक, तुम्हें
तथा तुम्हारे पिता के गोत्र के सब पुरोहितों को
मृत्यु-दण्ड दिया जाएगा।' 17जो अंगरक्षक राजा
के आस-पास खड़े थे, उन्हें राजा ने आदेश
दिया, 'आगे बढ़ो, और प्रभु के पुरोहितों का
वध करो। इन्होंने भी दाऊद के हाथ मजबूत
किए हैं। ये जानते थे कि दाऊद भाग गया है।
फिर भी इन्होंने मुझ पर यह भेद प्रकट नहीं
किया।' परन्तु राजा के सेवकों ने प्रभु के
पुरोहितों का वध करने के लिए अपना हाथ
उठाना अस्वीकार कर दिया। 18तब राजा ने
दोएग से कहा, 'तुम आगे बढ़ो और पुरोहितों
पर टूट पड़ो।' अत: एदोम देश का रहनेवाला
दोएग आगे बढ़ा। वह पुरोहितों पर टूट पड़ा।
उसने उस दिन पचासी व्यक्तियों की हत्या की।
वे पुरोहित की पोशाक पहिने हुए थे। 19शाऊल
ने पुरोहितों के नगर, नोब नगर को तलवार से
नष्ट कर दिया। उसने नगर के स्त्री-पुरुष,
बालक-बालिकाओं, दूध पीनेवाले शिशुओं

22 : 9 1 शम 21 : 7; भज 52 22 : 18 1 शम 2 : 31

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

को, गाय-बैल, गधों, भेड़-बकरियों को तलवार
से मौत के घाट उतार दिया।
20 परन्तु अहीटूब का पौत्र और अहीमेलक
का पुत्र निकल भागा। उसका नाम एबयातर
था। वह दाऊद के पास पहुंचा। [21]एबयातर ने
दाऊद को बताया कि शाऊल ने प्रभु के
पुरोहितों का वध कर दिया है। [22]दाऊद ने
एबयातर से कहा, 'जब एदोम देश का रहने
वाला दोएग वहां था तब मैं उस दिन समझ गया
था कि वह निश्चय ही यह बात शाऊल को
बताएगा। मैं तुम्हारे गोत्र के व्यक्तियों की मृत्यु
का कारण हूँ। [23]मेरे साथ रहो। मत डरो। जो
मेरे प्राण का खोजी है, वह तुम्हारे प्राण का
भी खोजी है। तुम मेरे साथ रहने से सुरक्षित
रहोगे।'

दाऊद कईलाह नगर में

23 लोगों ने दाऊद को यह बताया, 'देखिए,
पलिश्ती सैनिक कईलाह नगर के
निवासियों से युद्ध कर रहे हैं। वे उनके
खलियानों को लूट रहे हैं।' [2]अत: दाऊद ने प्रभु
से यह पूछा 'क्या मैं जाऊँ और इन पलिश्तियों
पर आक्रमण करूं?' प्रभु ने दाऊद को उत्तर
दिया, 'जा, और पलिश्तियों पर आक्रमण कर।
कईलाह नगर को बचा' [3]किन्तु दाऊद के सैनिकों
ने उससे कहा, 'देखिए! हम यहां यहूदा प्रदेश
में रहते हुए भी पलिश्ती सैनिकों से डरते हैं।
अब यदि हम कईलाह नगर जाकर पलिश्ती
सेना से युद्ध करेंगे तो क्या हमें और अधिक डर
नहीं लगेगा?' [4]दाऊद ने प्रभु से फिर पूछा। प्रभु
ने उसे उत्तर दिया, 'उठ! कईलाह नगर को जा!
मैं पलिश्ती सैनिकों को तेरे हाथ में सौंप दूंगा'
[5]तब दाऊद और उसके सैनिक कईलाह नगर
को गए। उन्होंने पलिश्ती सैनिकों से युद्ध
किया।. दाऊद ने उनके पशुओं को हांक लिया।
उसने पलिश्तियों का महासंहार किया। यों
दाऊद ने कईलाह नगर के निवासियों को बचा
लिया । [6]अब, अहीमेलक के पुत्र पुरोहित
एबयातर ने जब दाऊद की शरण ली तब वह
हाथ में एपोद लेकर कईलाह नगर को गया।

7 किसी ने शाऊल को बताया कि दाऊद
कईलाह नगर में आया है। शाऊल ने कहा,
'परमेश्वर ने दाऊद को मेरे हाथ में सौंपा है।
उसने ऐसे नगर में प्रवेश किया है जिसमें द्वार
और अर्गलाएं हैं।. वह स्वयं पिंजड़े में बन्द हो
गया!' [8]शाऊल ने सब सैनिकों को युद्ध के लिए
बुलाया। उसने कईलाह नगर जाकर दाऊद और
उसके सैनिकों को घेरने के लिए अपने सैनिक
एकत्र किये। [9]दाऊद जानता था कि शाऊल
उसका अनिष्ट करने के लिए योजना बना रहा
है। उसने पुरोहित एबयातर से कहा, 'एपोद को
यहां लाओ।' [10]तब दाऊद ने कहा, 'हे इस्राएल
के प्रभु परमेश्वर, तेरे सेवक ने निस्सन्देह यह
समाचार सुना है कि शाऊल कईलाह नगर में
प्रवेश करने की तैयारी कर रहा है। वह मेरे
कारण इस नगर को नष्ट करना चाहता है।
[11]क्या कईलाह के नागरिक मुझे उसके हाथ में
सौंप देंगे? जैसा तेरे सेवक ने सुना है, क्या
शाऊल आएगा? हे इस्राएल के प्रभु परमेश्वर,
कृपाकर, अपने सेवक को यह बात बता।' प्रभु
ने कहा, 'शाऊल आएगा।' [12]तब दाऊद ने
पूछा, 'क्या कईलाह के नागरिक मुझे और मेरे
सैनिकों को शाऊल के हाथ में सौंप देंगे?' प्रभु
ने कहा, 'वे तुझे सौंप देंगे।' [13]अत: दाऊद और
उसके छ: सौ सैनिक उठे और वे कईलाह नगर
से बाहर चले गए। जहां वे जा सकते थे वहां
वे चले गए। जब किसी ने शाऊल को यह बात
बताई कि दाऊद कईलाह नगर से भाग गया, तब
उसने आक्रमण का विचार त्याग दिया।

दाऊद का निवास-स्थान : किला

14 दाऊद निर्जन प्रदेश के किलों में रहने
लगा। उसने पहाड़ों पर जीफ के निर्जन प्रदेश
में निवास किया। शाऊल प्रतिदिन उसकी खोज
करता था। परन्तु प्रभु ने दाऊद को शाऊल के
हाथ में नहीं सौंपा [15]दाऊद ने देखा कि शाऊल
उसके प्राण की खोज में निकला है। उस समय
वह जीफ के निर्जन प्रदेश के होर्शाह नगर में
था। [16]शाऊल का पुत्र योनातन उठा। वह
होर्शाह नगर में दाऊद के पास गया। उसने प्रभु

---

23 : 6 1 शम 22 : 20; 2 : 28

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

के नाम से उसके हाथ मजबूत किए। 17योनातन
ने उससे कहा, 'मत डरो! मेरे पिता का हाथ तुम
तक नहीं पहुंच सकेगा। तुम ही इस्राएली राष्ट्र
पर राज्य करोगे। मैं तुमसे पद में गौण रहूंगा।
मेरे पिता शाऊल भी यह बात जानते हैं।'
18दोनों ने प्रभु के सम्मुख एक सन्धि की।
दाऊद होर्शाह में रह गया। पर योनातन अपने
घर लौट गया।

19 जीफ के निवासी गिबआह नगर में
शाऊल के पास गए। उन्होंने उसे सूचित किया:
'दाऊद हमारे साथ होर्शाह के किलों में छिपा
है। वह यशीमोन के दक्षिण में हकीलाह पहाड़ी
पर है।. 20अब, महाराज, जब आपकी आने की
इच्छा हो, आइए। हम दाऊद को आपके हाथ
में सौंप देंगे।' 21शाऊल ने कहा, 'प्रभु तुम्हें
आशिष दे! तुमने मेरे प्रति सहानुभूति प्रकट की
है। 22जाओ, और पता लगाओ। तुम उस स्थान
को ध्यान से देखो, जो उसका अड्डा है। उन
व्यक्तियों को पहचानो, जिन्होंने उसको देखा
है। मुझे बताया गया है कि वह बहुत चतुर है।
23इसलिए, तुम ध्यान से उन सब गुप्त स्थानों
को देखो जहां वह छिपता है। तब तुम निश्चित
खबर लेकर मेरे पास आना। मैं तुम्हारे साथ
चलूंगा। यदि वह तुम्हारे प्रदेश में होगा तो मैं
यहूदा के हजारों गोत्रों में उसे खोज निकालूंगा'
24अत: जीफ के निवासी उठे। वे शाऊल के
पहले जीफ के निर्जन प्रदेश को चले गए।

दाऊद और उसके सैनिक माओन के निर्जन
प्रदेश में थे। यह इलाका यशीमोन के दक्षिण में
अराबाह में है। 25शाऊल और उसके सैनिक
दाऊद की खोज में वहां गए। लोगों ने दाऊद
को यह बात बता दी। अत: वह माओन प्रदेश
के महा खड्ड में उतर गया, और वहां रहने लगा।
शाऊल ने यह खबर सुनी। उसने माओन निर्जन
प्रदेश में दाऊद का पीछा किया। 26शाऊल और
उसके सैनिक पहाड़ की एक ओर गए, और
दाऊद तथा उसके सैनिक पहाड़ की दूसरी
ओर। शाऊल और उसके सैनिक दाऊद तथा
उसके सैनिकों पर पीछे से हमला कर उन्हें
पकड़ना चाहते थे। दाऊद शाऊल के समीप से
दूर जाने के लिए जल्दी कर रहा था। 27तब एक
दूत शाऊल के पास आया। उसने कहा,
'महाराज, अविलम्ब चलिए। पलिश्ती सेना ने
देश पर आक्रमण कर दिया है।' 28अत: शाऊल
ने दाऊद का पीछा करना छोड़ दिया, और वह
लौट गया। वह पलिश्ती सेना का सामना करने
चला गया। इस कारण उस स्थान का नाम
'विभाजन+ का खड्ड' पड़ गया।

29* दाऊद वहां से एनगदी के किलों में चढ़
गया और उनमें रहने लगा।

एनगदी की घटना

24 जब शाऊल पलिश्तियों का सामना
करने के पश्चात् लौटा, तब उसे यह
समाचार मिला, 'दाऊद एनगदी के निर्जन प्रदेश
में है।' 2अत: शाऊल ने तीन हजार सैनिक
लिये। ये समस्त इस्राएली सेना से चुने गए थे।
तत्पश्चात् वह दाऊद और उसके सैनिकों की
खोज में उस क्षेत्र में गया जो 'जंगली बकरों की
चट्टान' के पूर्व दिशा में है। 3वह मार्ग में भेड़शाला
के पास पहुंचा। वहां एक गुफा थी। शाऊल
शौच करने के लिए उस गुफा में गया। दाऊद
और उसके सैनिक गुफा के भीतरी भागों में बैठे
थे। 4दाऊद के सैनिकों ने उससे कहा, 'जिस
दिन के विषय में प्रभु ने यह कहा था: "मैं तेरे
शत्रु को तेरे हाथ में सौंप दूंगा। तब जो तेरी दृष्टि
में उचित लगे, तू उसके साथ वही करना" वह
दिन आज आ गया है।' अत: दाऊद उठा। उसने
शाऊल के लबादे का छोर चुपचाप काट लिया।
5परन्तु बाद में दाऊद के हृदय ने उसे फटकारा
कि उसने क्यों शाऊल के लबादे का छोर काटा।
6दाऊद ने अपने सैनिकों से कहा, 'प्रभु मुझे यह
कार्य करने से रोके कि मैं अपने स्वामी के साथ
ऐसा व्यवहार करूं! मैं प्रभु के अभिषिक्त राजा
पर हाथ नहीं उठाऊंगा। शाऊल प्रभु के
अभिषिक्त राजा हैं।' 7दाऊद ने इन शब्दों के
द्वारा अपने सैनिकों का हृदय कायल कर दिया

+ अथवा 'अनिश्चय' * मूल में अध्याय 24 : 1

23 : 18 1 शम 18 : 3; 20 : 26 **23 : 19** भज 54 **24 : 1-22** 1 शम 26 : 1-25 **24 : 3** भज 57 ; 142

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और उन्हें शाऊल पर आक्रमण करने नहीं
दिया। शाऊल शौच-क्रिया से निवृत हो गुफा
से बाहर निकला, और अपने मार्ग पर चला
गया।
8 उसके जाने के बाद दाऊद भी उठा। वह
गुफा से बाहर आया। उसने शाऊल को पीछे से
पुकारा, 'ओ मेरे स्वामी, महाराज!' शाऊल ने
मुड़कर पीछे देखा। दाऊद ने भूमि की ओर
झुककर उसका अभिवादन किया। 9दाऊद ने
शाऊल से कहा, 'आप उन लोगों की बात क्यों
सुनते हैं जो यह कहते हैं : "दाऊद आपका
अनिष्ट करना चाहता है"? 10आज आपने स्वयं
अपनी आँखों से यह देखा कि प्रभु ने गुफा में
आपको मेरे हाथ में सौंप दिया था। मेरे सैनिकों
ने मुझसे कहा भी था कि मैं आपका वध कर
दूं। परन्तु मैंने आपको छोड़ दिया। मैंने उनसे
कहा, "मैं अपने स्वामी पर हाथ नहीं उठाऊंगा;
क्योंकि वह प्रभु के अभिषिक्त राजा हैं"। 11हे
मेरे पिता, मेरे हाथ में अपने लबादे के छोर को
देखिए। मैंने केवल आपके लबादे के छोर को
काट लिया। परन्तु मैंने आपका वध नहीं किया।
आप इस बात को समझिए, कि आपके प्रति मेरे
हृदय में बुराई और विश्वासघात की दुर्भावना
नहीं है। मैंने आपके प्रति पाप नहीं किया। फिर
भी आप मेरे प्राण लेने के लिए घात लगाते हैं।
12प्रभु मेरे और आपके मध्य न्याय करे! प्रभु
आप से मेरा प्रतिशोध ले। परन्तु मेरा हाथ आप
पर कभी नहीं उठेगा 13जैसी प्राचीन काल की
यह कहावत है : "दुर्जन व्यक्ति से दुष्टता का
जन्म होता है।" मेरा हाथ आप पर कभी नहीं
उठेगा। 14इस्राएल का राजा किस व्यक्ति के
पीछे आया है? महाराज, आप किस व्यक्ति का
पीछा कर रहे हैं? मात्र मरे कुत्ते का, एक पिस्सू
का! 15इसलिए प्रभु न्यायाधीश हो। वह मेरे और
आपके मध्य न्याय करे। वह अपने हाथ में मेरा
मुकदमा ले। मेरी ओर से लड़े और मेरे पक्ष में
निर्णय दे। मुझे आपके हाथ से मुक्त करे।'
16जब दाऊद शाऊल से ये बातें कह चुका
तब शाऊल ने पूछा, 'मेरे पुत्र, दाऊद, क्या यह
तेरी आवाज हैं?' शाऊल जोर-जोर से रोने
लगा। 17उसने दाऊद से कहा, 'तू मुझसे
अधिक धार्मिक है। तूने बुराई का बदला भलाई
से दिया। पर मैंने भलाई के बदले में तुझे बुराई
लौटाई। 18आज तूने प्रकट कर दिया कि तूने मेरे
साथ भलाई की है। जब प्रभु ने मुझको तेरे हाथ
में सौंप दिया था तब तूने मेरा वध नहीं किया।
19जब कोई व्यक्ति अपने शत्रु को पाता है तब
क्या वह उसे सुरक्षित जाने देता है? जो व्यवहार
आज तूने मेरे साथ किया है, प्रभु उसके बदले
में तेरा भला करे। 20अब, मैं जानता हूँ कि तू
निश्चय ही राजा बनेगा। इस्राएल का राज्य तेरे
ही हाथ में स्थिर होगा। 21मेरे पुत्र, दाऊद! तू
प्रभु के नाम में यह शपथ खा कि तू मेरे बाद
मेरे वंशजों को नष्ट नहीं करेगा। मेरे पितृकुल
में से मेरा नाम नहीं मिटाएगा।' 22अत: दाऊद
ने शाऊल से शपथ खाई। तब शाऊल अपने घर
चला गया तथा दाऊद और उसके सैनिक किले
में चढ़ गए।

शमूएल का देहान्त

25 शमूएल की मृत्यु हो गयी। सब इस्राएली
एकत्र हुए। उन्होंने शमूएल के लिए
शोक किया। तत्पश्चात् उन्होंने उसे उसके घर,
रामाह नगर में गाड़ दिया।
दाऊद उठा! वह माओन* के निर्जन प्रदेश
में चला गया।

दाऊद और अबीगइल

2माओन में एक मनुष्य रहता था। उसका
व्यापार कर्मेल क्षेत्र में था। वह बहुत धनी था।
उसके पास तीन हजार भेड़ें और एक हजार
बकरियां थीं। वह कर्मेल में अपनी भेड़ों का
ऊन कतरवा रहा था। 3उस मनुष्य का नाम
नाबाल, और उसकी पत्नी का नाम अबीगइल
था। अबीगइल बुद्धिमती और सुन्दर थी। पर
उसका पति उजड्ड स्वभाव का था और वह
अशिष्ट व्यवहार करता था। वह कालेब के वंश
का था।

* मूल में, 'पारन'
24 : 15 2 शम 9 : 8 25 :1 1 शम 28 : 3

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

4 दाऊद ने निर्जन प्रदेश में सुना कि नाबाल
अपनी भेड़ों का ऊन कतर रहा है। 5अत: उसने
अपने दस सैनिकों को वहां भेजा। दाऊद ने
सैनिकों से कहा, 'कर्मेल क्षेत्र में जाओ। तुम
नाबाल के पास जाना। मेरे नाम से उसका
कुशल-क्षेम पूछना। 6तब तुम उससे, मेरे भाई
से, यों कहना+: ''आपका कल्याण हो! आपके
परिवार का कल्याण हो! जो कुछ आपका है,
सबका कल्याण हो! 7मैंने सुना है कि आप ऊन
कतरवा रहे हैं। देखिए, आपके चरवाहे हमारे
साथ थे। हमने उनका कोई अनिष्ट नहीं किया।
जब तक वे कर्मेल क्षेत्र में रहे, उन्होंने एक भेड़
भी नहीं खोई। 8आप अपने सेवकों से पूछिए।
वे आपको यह बात बताएंगे। अत: आप मेरे
सैनिकों पर कृपा-दृष्टि कीजिए। ये आनन्द के
पर्व पर आए हैं। जो भी आपके पास है, वह
आप हमें, अपने सेवकों को, और अपने पुत्र-
तुल्य दाऊद को दे दीजिए।'' '

9 जब दाऊद के सैनिक नाबाल के पास आए
तब उन्होंने उससे दाऊद के नाम से ये बातें कहीं
और उसके उत्तर की प्रतीक्षा करने लगे।
10नाबाल ने दाऊद के सैनिकों को उत्तर दिया,
'यह दाऊद कौन है? यह यिशय का पुत्र कौन
है? आजकल अनेक सेवक अपने मालिक के
पास से भाग जाते हैं। 11क्या मैं रोटी, अंगूर का
रस++ और पशुओं का मांस, जिन्हें मैंने अपने
ऊन कतरने वालों के लिए मारा है, ऐसे
आदमियों को दे दूं, जिनके विषय में मैं नहीं
जानता कि वे कहां से आए हैं?' 12यह उत्तर
सुनकर दाऊद के सैनिक अपने मार्ग की ओर
लौटे। वे वापस आ गए। उन्होंने दाऊद को ये
सब बातें बताईं। 13दाऊद ने अपने सैनिकों को
आदेश दिया, 'प्रत्येक सैनिक अपनी तलवार
बाँध ले!' अत: हर एक सैनिक ने अपनी
तलवार बांध ली। दाऊद ने भी अपनी तलवार
बाँध ली। प्राय: चार सौ सैनिक दाऊद के पीछे-
पीछे गए। दो सौ सैनिक सामान के पास रह
गए।

14 एक सेवक ने नाबाल की पत्नी को यह
बात बताई। उसने कहा, 'दाऊद ने हमारे स्वामी
को नमस्कार करने के लिए निर्जन प्रदेश से दूत
भेजे थे। परन्तु स्वामी उन पर बरस पड़े। 15वे
लोग हमारे साथ अच्छा व्यवहार करते थे। जब
हम उनके पड़ोस के क्षेत्र में थे, और मैदान में
भेड़ चरा रहे थे तब उन्होंने हमारा कभी अनिष्ट
नहीं किया। हमने एक भेड़ भी नहीं खोई।
16जब तक हम उनके पड़ोस के क्षेत्र में भेड़ों
को चराते रहे, तब तक वे दीवार बनकर दिन-
रात हमारी रक्षा करते रहे। 17अब इस बात को
समझिए, और देखिए कि क्या करना चाहिए।
दाऊद और उसके सैनिक हमारे स्वामी तथा
उनके समस्त परिवार का अनिष्ट करने का
निश्चय कर चुके हैं। उधर हमारे स्वामी का
स्वभाव ऐसा है कि कोई उनसे बात भी नहीं कर
सकता।'

18 अबीगइल ने अविलम्ब दो सौ रोटी,
अंगूर के रस से भरी हुई दो मशकें, पांच भेड़ों
का पका हुआ मांस, प्राय: पन्द्रह किलो भुना
हुआ अनाज, एक सौ गुच्छे किशमिश, और
अंजीर के दो सौ सूखे फल लिये। उसने उनको
गधों पर लादा। 19उसने अपने सेवकों से कहा,
'तुम मुझसे आगे जाओ। मैं तुम्हारे पीछे
आऊंगी।' अबीगइल ने यह बात अपने पति
नाबाल को नहीं बताई।

20 अबीगइल गधे पर बैठी हुई पर्वत-
स्कन्ध की आड़ में उतर रही थी। दाऊद और
उसके सैनिक उसकी ओर पहाड़ से नीचे उतर
रहे थे। वह उनसे मार्ग में मिली। 21दाऊद यह
निश्चय कर चुका था: 'मैंने निर्जन प्रदेश में इस
आदमी की धन-सम्पत्ति की व्यर्थ रक्षा की। इस
आदमी की एक भेड़ भी नहीं खोई। पर इसने
मुझे भलाई का बदला बुराई से दिया। 22अब यदि
मैं सबेरे तक उसके परिवार का एक पुरुष भी
जीवित रहने दूं, तो परमेश्वर दाऊद के साथ*
वही व्यवहार करे वरन् इससे अधिक कठोर
व्यवहार करे।' 23अबीगइल ने दाऊद को देखा।

+ अथवा, उससे यों कहना, ''चिरंजीव'' ++ मूल में, 'पानी'। * मूल में, 'दाऊद के शत्रुओं के साथ'

25 : 4 2 शम 13 : 23

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वह तुरन्त गधे से नीचे उतरी और दाऊद के
सामने मुंह के बल गिरी। उसने भूमि की ओर
झुककर दाऊद का अभिवादन किया। 24वह
दाऊद के पैरों पर गिर पड़ी। उसने कहा,
'स्वामी, मेरा ही दोष है । कृपया, अपनी इस
सेविका को अनुमति दीजिए कि वह आपके
कान में कुछ बातें डाल सके। कृपया, अपनी
सेविका की बातें सुनिए। 25स्वामी, मेरे उजड्ड
पति नाबाल की बात पर ध्यान मत दीजिए।
जैसा उनका नाम है, वैसे ही वह है। उजड्ड*
उनका नाम है, और उजड्डता उनका स्वभाव है।
स्वामी, जिन सैनिकों को आपने भेजा था, उन्हें
मैंने, आपकी सेविका ने नहीं देखा। 26अब, प्रभु
के जीवन की सौगन्ध। स्वामी, आपके प्राण की
सौगन्ध! प्रभु ने ही आपको हत्या के दोष से
बचाया। आपको अपने हाथ से बदला लेने से
रोका। प्रभु आपके सब शत्रुओं को, आपकी
बुराई की ताक में रहनेवालों को, नाबाल के
समान बना दे। 27अब, यह उपहार, जो आपकी
सेविका अपने स्वामी के लिए लाई है, आपके
कदमों पर चलनेवाले अपने सैनिकों को दे
दीजिए। 28कृपया, अपनी सेविका का अपराध
क्षमा कीजिए। प्रभु निश्चय ही आपको, मेरे
स्वामी को स्थायी राजवंश प्रदान करेगा ;
क्योंकि आप प्रभु के लिए युद्ध कर रहे हैं।
आपके जीवन-भर आपमें बुराई नहीं मिलेगी।
29यदि आपके शत्रु आपका पीछा करने के लिए
उठेंगे, वे आपके प्राण की ताक में रहेंगे, तो प्रभु
परमेश्वर जीवन के बस्ते में आपके प्राण को
बांधकर अपनी सुरक्षा में रखेगा। वह आपके
शत्रुओं के प्राण गोफन में रखकर फेंक देगा।
30आपके लिए जिन भले कार्यों को करने की
प्रतिज्ञा प्रभु ने आपसे की है, उनको जब वह
समाप्त कर लेगा, और जब वह इस्राएली राष्ट्र
पर शासन करने के लिए आपको अगुए के रूप
में नियुक्त कर देगा, 31तब स्वामी, आपको
दु:ख अथवा मानसिक पीड़ा नहीं होगी कि
आपने बिना कारण किसी का खून बहाया
अथवा स्वयं बदला लिया। जब प्रभु आपके
साथ भलाई करेगा, तब स्वामी, अपनी इस
सेविका को भी स्मरण करना।'

32 दाऊद ने अबीगइल से कहा, 'इस्राएल
का प्रभु परमेश्वर धन्य है जिसने आज मुझसे
मिलने के लिए तुम्हें भेजा! 33तुम्हारी समझबूझ
धन्य है। तुम धन्य हो! तुमने मझे आज हत्या
के दोष से बचा लिया। तुमने मुझे स्वयं अपने
हाथ से बदला लेने से रोका। 34 जैसे यह सच
है कि इस्राएल का प्रभु परमेश्वर, जिसने मुझे
तुम्हारा अनिष्ट करने से रोका, जीवित है; वैसे
ही मेरी यह बात सच है : यदि तुमने शीघ्रता न
की होती, और तुम मेरे पास न आती, तो सबेरे
तक नाबाल के परिवार का एक पुरुष भी
जीवित नहीं बचता।' 35यह कह कर दाऊद ने
उसके हाथ से उपहार ग्रहण किए। ये उपहार
वह दाऊद के लिए लाई थी। दाऊद ने उससे
कहा, 'अपने घर सकुशल चली जाओ। मैंने
तुम्हारी बात मान ली और तुम्हारा निवेदन
स्वीकार कर लिया।'

36 अबीगइल नाबाल के पास लौटी। उसने
देखा कि उसका पति घर में भव्य भोज कर रहा
है, जैसे राजकीय भोज हो। उसका हृदय
आनन्दमग्न है। वह नशे में चूर है। अत:
अबीगइल ने उसे सबेरे तक कोई भी बात नहीं
बतायी। 37सबेरे नाबाल का नशा उतरा।
अबीगइल ने उसे दाऊद की बातें बताईं। यह
सुनकर नाबाल के हृदय की गति रुक गई! वह
स्तंभित रह गया। 38प्रभु ने दस दिन के पश्चात्
ही नाबाल पर प्रहार किया, और वह मर गया।

39 जब दाऊद ने सुना कि नाबाल का देहान्त
हो गया, तब उसने कहा, 'धन्य है प्रभु! नाबाल
ने मेरा अपमान किया था। उसका प्रतिशोध
स्वयं प्रभु ने उससे लिया, और मुझे, अपने सेवक
को बुराई करने से रोका। प्रभु ने नाबाल की
बुराई का फल उसी के सिर पर डाल दिया।'
तत्पश्चात् दाऊद ने अबीगइल के पास दूत भेजे
कि वे उससे दाऊद के साथ विवाह करने के

---

* मूल इब्रानी शब्द 'नाबाल' का अर्थ 'मूर्ख, अथवा उजड्ड, निर्बुद्धि' है, जो परमेश्वर और मनुष्य का आदर नहीं करता।

25 : 29 भज 66 : 9 ; यश 4 : 3; प्रक 3 : 5

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लिए बातचीत करें। [40]दाऊद के सेवक कर्मेल
में अबीगइल के पास आए। उन्होंने अबीगइल
से कहा, 'दाऊद ने हमें आपके पास भेजा है
कि हम आपको उनकी पत्नी के रूप में ले
जाएं।' [41]अबीगइल उठी। उसने झुककर उनका
अभिवादन किया और कहा, 'मैं आपकी
सेविका हूं। अपने स्वामी दाऊद के सेवकों के
पैर धोने के लिए यह दासी प्रस्तुत है।'
[42]अबीगइल ने शीघ्रता से तैयारी की और जाने
के लिए गधे पर सवार हो गई। उसके साथ
उसकी पांच सेविकाएं भी गईं। अबीगइल
दाऊद के दूतों के पीछे-पीछे चली गई और
दाऊद की पत्नी बन गई।

43 दाऊद ने यिज्रएल नगर की कन्या
अहीनोअम से भी विवाह किया। दोनों उसकी
पत्नी बन गईं। [44]शाऊल ने अपनी पुत्री मीकल,
जो दाऊद की पत्नी थी, लइश के पुत्र पल्टी को
दे दी थी। पल्टी गल्लीम नगर का निवासी था।

जीफ क्षेत्र की घटना

26 जीफ के निवासी गिबआह नगर में
शाऊल के पास आए। उन्होंने कहा,
'दाऊद हकीलाह पहाड़ी पर छिपा है। यह
पहाड़ी यशीमोन क्षेत्र के पूर्व में है।' [2]अत: शाऊल
तैयार हुआ। उसने समस्त इस्राएली सेना से तीन
हजार सैनिक चुने। तत्पश्चात् वह जीफ के
निर्जन प्रदेश में दाऊद की खोज में निकला।
[3]उसने हकीलाह पहाड़ी पर पड़ाव डाला। यह
यशीमोन क्षेत्र की पूर्व दिशा में सड़क के किनारे
है। उस समय दाऊद निर्जन प्रदेश में रहता था।
जब दाऊद ने देखा कि शाऊल उसका पीछा
करने के लिए निर्जन प्रदेश में आ रहा है, [4]तब
उसने गुप्तचर भेजे। उसे निश्चित रूप से पता
चल गया कि शाऊल आया है। [5]अत: दाऊद
उठा। वह उस स्थान पर पहुंचा जहां शाऊल ने
पड़ाव डाला था। दाऊद ने उस स्थान को देखा
जहाँ शाऊल और उसका सेनापति अब्नेर बेन-
नेर सो रहे थे। शाऊल पड़ाव के कनात के भीतर
सो रहा था। सैनिक उसके चारों ओर पड़ाव
डाले हुए थे।

6 दाऊद ने हित्ती जाति के सैनिक अहीमेलक
से तथा अबीशय से, जो सरूयाह का पुत्र और
योआब का भाई था, यह पूछा : 'मेरे साथ कौन
शाऊल के पड़ाव में जाएगा?' अबीशय ने उत्तर
दिया, 'मैं आपके साथ जाऊंगा।' [7]अत: दाऊद
और अबीशय रात में शाऊल की सेना के पास
आए। उन्होंने देखा कि शाऊल कनात के भीतर
सो रहा है। उसका भाला उसके सिरहाने पर
भूमि में गड़ा है। अब्नेर और सैनिक उसके चारों
ओर सो रहे हैं। [8]अबीशय ने दाऊद से कहा,
'आज परमेश्वर ने आपके शत्रु को आपके हाथ
में सौंप दिया है। अब मुझे अनुमति दीजिए कि
मैं भाले के एक वार से उसको भूमि में बेध दूं।
मुझे उस पर दूसरी बार प्रहार करने की
आवश्यकता नहीं पड़ेगी।' [9]दाऊद ने अबीशय
से कहा, 'शाऊल का वध मत करो। कौन
व्यक्ति प्रभु के अभिषिक्त राजा पर हाथ उठा
कर निर्दोष रह सकता है?' [10] दाऊद ने आगे
कहा, 'जीवन्त प्रभु की सौगन्ध! प्रभु स्वयं उसे
मारेगा। या ऐसा दिन आएगा कि वह स्वयं मर
जाएगा। अथवा वह युद्ध में जाएगा, और
उसका सफाया हो जाएगा। [11]प्रभु ने मुझे मना
किया है कि मैं उसके अभिषिक्त राजा पर हाथ
उठाऊं। अब तुम इसके सिरहाने का भाला और
पानी की सुराही उठा लो। उसके बाद हम यहां
से चले जाएंगे।' [12]दाऊद ने शाऊल के सिरहाने
से भाला और पानी की सुराही उठा ली और वे
वहां से चले गए। किसी ने उन्हें जाते हुए नहीं
देखा। किसी को पता नहीं चला। कोई जागा भी
नहीं। वे गाढ़ी नींद में सो रहे थे। प्रभु ने उन्हें
गहरी नींद में सुला दिया था।

13 दाऊद घाटी की दूसरी ओर चला गया।
वह पर्याप्त दूरी पर पहाड़ की चोटी पर खड़ा
हुआ। शाऊल के पड़ाव और उसके मध्य बड़ा
अन्तर था। [14]दाऊद ने शाऊल के सैनिकों, और
नेर के पुत्र अब्नेर को पुकारा, 'अब्नेर, क्या तुम
मुझे उत्तर नहीं दोगे?' अब्नेर ने पूछा, 'यह

---

25 : 44 1 शम 18 : 27; 2 शम 3 : 14 **26 : 1-25** 1 शम 24 : 1-22 **26 : 1** भज 54 **26 : 12** उत 2 : 21; 15 : 12

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पुकारनेवाला कौन है ?*' 15दाऊद ने अब्नेर से
कहा, 'तुम कैसे आदमी हो ? क्या इस्राएल में
तुम्हारे समान और कोई लापरवाह व्यक्ति है ?
क्यों तुमने अपने स्वामी महाराज पर पहरा नहीं
दिया ? एक आदमी तुम्हारे स्वामी का वध करने
आया था। 16यह काम, जो तुमने किया, अच्छा
नहीं है। जीवन्त प्रभु की सौगन्ध! तुम लोग
मृत्यु-दण्ड के पात्र हो। तुमने अपने स्वामी,
प्रभु के अभिषिक्त राजा पर पहरा नहीं दिया।
अब देखो, महाराज का भाला कहां है ? उनके
सिरहाने की पानी की सुराही कहां है ?'

17 शाऊल ने दाऊद की आवाज पहचान
ली। उसने पूछा, 'मेरे पुत्र दाऊद, क्या यह तेरी
आवाज है ?' दाऊद ने उत्तर दिया, 'हां महाराज,
मेरे स्वामी, यह मेरी आवाज है।' 18दाऊद ने
आगे कहा, 'मेरे स्वामी, आप क्यों अपने सेवक
का पीछा कर रहे हैं ? मैंने आपका क्या किया
है ? मेरे हाथ से आपका कौन-सा दुष्कर्म हुआ
है ? 19अब, महाराज, मेरे स्वामी, अपने सेवक
की यह बात ध्यान से सुनें : यदि प्रभु ने आपको
मेरे विरुद्ध उकसाया है, तो प्रभु एक भेंट
स्वीकार करे। परन्तु यदि उकसाने वाले निरे
मनुष्य हैं, तो वे प्रभु के सम्मुख अभिशप्त हों!
उन्होंने मुझे आज निकाल दिया है जिससे मैं
प्रभु की पैतृक-सम्पत्ति का हिस्सेदार न बनूं।
उन्होंने मुझसे कहा, "जा, अन्य देशों के
देवताओं की पूजा-आराधना कर!" 20अब, प्रभु
की उपस्थिति से दूर अन्य देश की भूमि पर मेरा
रक्त न बहाया जाए। इस्राएली राष्ट्र का राजा
मेरे प्राण की खोज में निकला है, जैसे शिकारी
पहाड़ों पर तीतर का शिकार करता है।'

21 शाऊल ने कहा, 'मैंने पाप किया है।
दाऊद, मेरे पुत्र, लौट आ! अब मैं तेरा अनिष्ट
कभी नहीं करूंगा। तूने आज अपनी दृष्टि में मेरे
प्राण को बहुमूल्य समझा। देख, मैंने आज बहुत
मूर्खतापूर्ण कार्य किया। मैंने बड़ी भूल की।'
22दाऊद ने कहा, 'महाराज, यह आपका भाला
है। आपकी सेना का एक सैनिक यहां आए और
भाला ले जाए। 23प्रभु प्रत्येक मनुष्य को उसकी
धार्मिकता और सच्चाई का फल देता है। प्रभु
ने आज आपको मेरे हाथ में सौंप दिया था।
परन्तु मैंने प्रभु के अभिषिक्त राजा पर हाथ नहीं
उठाया। 24देखिए, जैसे आज मेरी दृष्टि में
आपका प्राण बहुमूल्य था, वैसे ही प्रभु की
दृष्टि में मेरा प्राण बहुमूल्य हो। प्रभु मुझे सब
दु:ख-तकलीफ से बचाए।' 25शाऊल ने दाऊद
से कहा, 'मेरे पुत्र, दाऊद, तू धन्य है। तू महान
कार्य करेगा, और उनमें सफल भी होगा।'
तत्पश्चात् दाऊद अपने मार्ग पर चला गया और
शाऊल अपने स्थान को लौट आया।

दाऊद पलिश्ती राजा के दरबार में

27 दाऊद ने अपने हृदय में कहा, 'एक दिन
शाऊल के हाथ से मेरा वध अवश्य
होगा। इसलिए मेरा हित इस बात में है कि मैं
पलिश्ती देश को भाग जाऊं। तब शाऊल
इस्राएली राष्ट्र की सीमा के भीतर मेरी खोज
करना बन्द कर देगा। मैं उसके हाथ से बच
निकलूंगा।' 2अत: दाऊद उठा। वह अपने छ:
सौ सैनिकों के साथ माओक के पुत्र आकीश
के पास चला गया। आकीश गत नगर का राजा
था। 3दाऊद आकीश के साथ गत नगर में रहने
लगा। उसके साथ उसके सैनिक तथा उसका
परिवार, उसकी दो पत्नियां, यिज्रएल नगर की
अहीनोअम, और कर्मेल की रहनेवाली, नाबाल
की विधवा अबीगइल थीं। 4शाऊल को यह
खबर मिली कि दाऊद गत नगर को भाग गया।
उसके बाद शाऊल ने दाऊद की खोज फिर
नहीं की।

5 दाऊद ने आकीश से कहा, 'यदि आपकी
कृपादृष्टि मुझपर है तो कृपया, मुझे देहात की
किसी बस्ती में जगह दे दीजिए। मैं वहां रहूंगा।
मैं आपका सेवक, आपके साथ राजधानी में
क्यों रहूं ?' 6अत: उस दिन आकीश ने दाऊद
को सिक्लग क्षेत्र दे दिया। इस कारण आज भी
सिक्लग पर यहूदा प्रदेश के राजाओं का
अधिकार है। 7दाऊद पलिश्ती देश के देहात में

---

* मूल में, 'तू कौन है जो राजा को पुकार रहा है ?'

26 : 19 व्य 4 : 20-28; भज 120 : 5 **26 : 23** भज 7 : 8 ; 18 : 20 **27 : 2** 1 शम 21 : 10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

एक साल और चार महीने तक रहा।
8 दाऊद और उसके सैनिक युद्ध के लिए
निकलते थे। उन्होंने गशूरी, गिर्जी और अमालेकी
जाति के निवासियों पर छापे मारे। ये लोग
प्राचीन काल से इस क्षेत्र के मूल निवासी थे।
यह क्षेत्र शूर से मिस्र देश तक फैला हुआ था।
9दाऊद ने इस क्षेत्र को नष्ट कर दिया। उसने
किसी भी पुरुष-स्त्री को जीवित नहीं छोड़ा।
उसने भेड़-बकरियां, गाय-बैल, गधे, ऊंट
और वस्त्र लूट लिये। वह लूट के बाद आकीश
के पास आता था 10 और आकीश उससे पूछता
था, 'तुमने आज कहां छापा मारा?' दाऊद उत्तर
देता, 'यहूदा प्रदेश के नेगेब क्षेत्र पर।' अथवा,
'यर्हमएली गोत्र के नेगेब क्षेत्र पर!' अथवा,
'केनी गोत्र के नेगेब क्षेत्र पर।' 11दाऊद किसी
पुरुष-स्त्री को जीवित गत नगर नहीं लाता था।
वह यह सोचता था, 'ऐसा न हो कि वह पुरुष
या स्त्री हमारे विरुद्ध आकीश को यह बताए,
'दाऊद ने हमारे साथ ऐसा व्यवहार किया है।'
जब तक दाऊद पलिश्ती क्षेत्र में रहा, उसकी
यही युद्ध-नीति रही। 12आकीश ने दाऊद पर
भरोसा किया। उसका यह विचार था, 'दाऊद
ने अपने जाति-भाइयों, इस्राएलियों में स्वयं को
अत्यन्त अप्रिय बना लिया है। इसलिए अब वह
मेरा सेवक सदा बना रहेगा।'

28 उन्हीं दिनों पलिश्ती सामन्तों ने
इस्राएलियों से युद्ध करने के लिए
अपने सैन्यदल एकत्र किए। आकीश ने दाऊद
से कहा, 'तुम यह बात निश्चित समझ लो कि
तुम तथा तुम्हारे सैनिक सेना में मेरे साथ
युद्ध में जाएंगे।' 2दाऊद ने आकीश से कहा,
'जैसी आपकी आज्ञा! उस स्थिति में जो कार्य
आपका सेवक कर सकता है, वह आप जान
लेंगे।' आकीश ने दाऊद से कहा, 'बहुत
अच्छा! मैं तुम्हें अपना स्थायी अंगरक्षक
नियुक्त करता हूं।'

शाऊल और मृतक जगानेवाली स्त्री

3 शमूएल की मृत्यु हो चुकी थी। सब
इस्राएलियों ने उसके लिए शोक मनाया था।
उन्होंने उसको उसके ही नगर रामाह में गाड़ा
था। शाऊल ने भूत-प्रेत बुलानेवालों और मृतक
जगानेवालों को देश से निकाल दिया था।
4 पलिश्ती सैनिक एकत्र हुए। वे आए।
उन्होंने शूनम नगर में पड़ाव डाला। शाऊल ने
सब इस्राएली सैनिकों को एकत्र किया। उन्होंने
गिल्बोअ में पड़ाव डाला। 5जब शाऊल ने
पलिश्ती सेना के पड़ाव को देखा, तब वह डर
गया। उसका हृदय बहुत धड़कने लगा। 6उसने
प्रभु से पूछा। पर प्रभु ने उसे उत्तर नहीं दिया,
न स्वप्न में, न ऊरीम के माध्यम से और न नबी
के द्वारा। 7शाऊल ने अपने कर्मचारियों को
आदेश दिया, 'मेरे लिए मृतक जगानेवाली स्त्री
को ढूंढ़ो। मैं उसके पास पूछने के लिए
जाऊंगा।' उसके कर्मचारियों ने उसे बताया,
'महाराज, एनदोर नगर में मृतकों को जगानेवाली
एक स्त्री रहती है।'
8 अतः शाऊल ने भेष बदला। उसने राजसी
वस्त्र उतारकर दूसरे वस्त्र पहिने और वह दो
सेवकों के साथ एनदोर नगर को गया। शाऊल
उस स्त्री के पास रात में आया। उसने कहा,
'मृतक के माध्यम से मुझे भविष्य की बातें
बताओ। जिस मृतक का नाम मैं तुम्हें बताऊंगा,
उसे बुलाओ।' 9स्त्री ने उससे कहा, 'जैसा
व्यवहार शाऊल ने भूत-प्रेत बुलानेवालों और
मृतक जगानेवालों के साथ किया है, उसको
तुम जानते ही हो। उसने उन्हें देश से निकाल
दिया है। तब तुम मेरे प्राण के लिए क्यों जाल
बिछा रहे हो? मेरे वध के लिए?' 10शाऊल ने
प्रभु के नाम से शपथ खाई, 'जीवन्त प्रभु की
सौगन्ध! तुम्हारे इस कार्य के लिए तुम्हें दण्ड
नहीं मिलेगा।' 11तब स्त्री ने पूछा, 'मैं तुम्हारे
लिए किस मृतक को बुलाऊं?' शाऊल ने उत्तर
दिया, 'मेरे लिए शमूएल को बुलाओ।' 12जब
स्त्री ने शमूएल को देखा, तब वह अत्यन्त उच्च
स्वर से चीख पड़ी। उसने शाऊल से कहा,
'आपने मुझे क्यों धोखा दिया? आप ही शाऊल

28 : 3 1 शम 25 : लेव 20 : 27 ; व्य 18 : 10 **28 : 6** 1 शम 14 : 37 ; गण 27 : 21 **28 : 8** व्य 18 : 11 ; 1 इति 10 : 13 **28 : 11** प्रव 46 : 20

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हैं।' 13राजा शाऊल ने कहा, 'मत डरो! तुम्हें
क्या दिखाई दे रहा है?' स्त्री ने शाऊल से कहा,
'मैं एक देवता को धरती से ऊपर आते हुए देख
रही हूं।' 14शाऊल ने स्त्री से पूछा, 'वह कैसा
दिखाई दे रहा है?' स्त्री ने उत्तर दिया, 'एक बूढ़ा
आदमी ऊपर आ रहा है। वह लबादा ओढ़े हुए
है।' शाऊल समझ गया कि वह शमूएल है।
उसने भूमि की ओर सिर झुकाया, और उसका
अभिवादन किया।

15 शमूएल ने शाऊल से पूछा, 'तूने क्यों
मेरी शान्ति भंग की? तूने मुझे क्यों जगाया?'
शाऊल ने उत्तर दिया, 'मैं बड़े संकट में हूं।
पलिश्ती मुझसे युद्ध कर रहे हैं। परमेश्वर ने
मुझसे मुंह मोड़ लिया है। अब वह मुझे उत्तर
नहीं देता, न नबियों के द्वारा, और न स्वप्न में।
इसलिए मैंने आपको बुलाया है। आप मुझे
बताइए कि मुझे क्या करना चाहिए।' 16शमूएल
ने कहा, 'जब प्रभु ने तुझसे मुंह मोड़ लिया है
और वह तेरे जाति-भाई के साथ हो गया है,+
तब तू मुझसे अपने विषय में क्यों पूछता है?
17जैसा प्रभु ने मेरे द्वारा कहा था वैसा ही उसने
तेरे साथ किया। उसने तेरे हाथ से राज्य-सत्ता
छीन ली है और तेरे जाति-भाई दाऊद को दे
दी है। 18तूने प्रभु की आज्ञा नहीं मानी। तूने
अमालेकी जाति के प्रति प्रभु के भयंकर क्रोध
को चरितार्थ नहीं किया। इसलिए आज प्रभु ने
तेरे साथ यह व्यवहार किया है। 19इसके अतिरिक्त
प्रभु तुझे और समस्त इस्राएली राष्ट्र को
पलिश्तियों के हाथ में सौंप देगा। तू और तेरे पुत्र
कल मेरे साथ अधोलोक में होंगे। प्रभु इस्राएली
सेना को भी पलिश्तियों के हाथ में सौंप देगा।'

20 शाऊल भूमि पर चारों खाने चित गिर
पड़ा। वह शमूएल की बातें सुनकर अत्यन्त
भयभीत हो गया। उसने पूरे दिन और पूरी रात
भोजन नहीं किया था। इसलिए उसमें बल नहीं
रह गया था। 21वह स्त्री शाऊल के पास गई।
उसने उसे आतंकित देखा तो वह उससे बोली,
'महाराज, मैंने, आपकी सेविका ने, आपकी
बात सुनी थी। मैंने अपने प्राण हथेली पर
रखकर आपकी बात सुनी, जो आपने मुझसे
कही थी। 22अब, महाराज, अपनी सेविका की
बात सुनिए। कृपया मुझे अनुमति दीजिए कि मैं
आपको कुछ भोजन परोसूं और आप उसको
खाएं। तब आपको कुछ बल प्राप्त होगा, और
आप अपने मार्ग पर जा सकेंगे।' 23किन्तु शाऊल
ने अस्वीकार कर दिया। शाऊल ने कहा, 'मैं
नहीं खाऊंगा।' किन्तु उसके सेवकों और उस
स्त्री ने उस पर दबाव डाला। तब शाऊल ने
उनकी बात सुनी। वह भूमि से उठा, और सोफे
पर बैठ गया। 24स्त्री के घर में एक मोटा बछड़ा
था। उसने अविलम्ब उसको काटा। तब उसने
आटा लिया तथा उसको गूंधा और उससे
बेखमीर रोटियां बनाईं। 25तत्पश्चात् उसने
शाऊल और उसके सेवकों के सम्मुख भोजन
परोसा। शाऊल और उसके सेवकों ने भोजन
किया। इसके बाद वे उठे और उसी रात को
वहां से चले गए।

दाऊद पर पलिश्तियों का सन्देह

29 पलिश्ती सामन्तों ने अपने सैन्य-दल
अपेक में एकत्र किए। इस्राएली सैनिक
यिज्रएल के झरने के समीप पड़ाव डाले हुए थे।
2पलिश्ती सामन्त सौ-सौ सैनिक-दल और
हजार-हजार सैनिक दल में पड़ाव से नकल रहे
थे। सेना के अन्त-भाग में आकीश के साथ
दाऊद और उसके सैनिक निकले। 3पलिश्ती
सेना-नायकों ने पूछा, 'ये इब्रानी सैनिक यहां
क्या कर रहे हैं?' आकीश ने सेना-नायकों को
उत्तर दिया, 'यह दाऊद है, इस्राएलियों के राजा
शाऊल का सेवक! यह एक-दो वर्ष से मेरे
साथ है। जब से यह शाऊल को छोड़कर मेरे
पास आ गया है, तब से आज तक मैंने इसमें
सन्देह की कोई बात नहीं पाई।' 4परन्तु पलिश्ती
सेना-नायक आकीश से नाराज हो गए। उन्होंने
उससे कहा, 'आप इस आदमी को वापस भेज
दीजिए। जो स्थान आपने इसके लिए निर्धारित
किया है, यह वहां लौट जाए। यह हमारे साथ

+ मूल अस्पष्ट।

28 : 17 1 शम 15 : 28 **28 : 18** 1 शम 15 : 9

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

युद्ध-भूमि में नहीं जाएगा। ऐसा न हो कि यह युद्ध आरम्भ होने पर हमारा विरोधी बन जाए। यह किस आधार पर अपने स्वामी को स्वीकार्य होगा? क्या हमारे सैनिकों के सिर काट कर? अवश्य! [5]क्या यह वही दाऊद नहीं है जिसके विषय में इब्रानी लोग नाचते हुए यह गीत गाते हैं :

''शाऊल ने मारा हजारों को,
पर दाऊद ने मारा लाखों को''?'

6 आकीश ने दाऊद को बुलाया। उसने दाऊद से कहा, 'जीवन्त प्रभु की सौगन्ध! तुम निष्ठावान हो। मेरी दृष्टि में यह उचित प्रतीत होता है कि तुम पड़ाव में मेरे साथ आओ-जाओ। जब से तुम मेरे पास आए हो तब से आज तक मैंने तुममें कोई बुराई नहीं पाई। फिर भी तुम पलिश्ती सामन्तों की दृष्टि में संदिग्ध हो। [7]अत: अब तुम लौट जाओ। कृपया, शान्ति से जाओ। ऐसा न हो कि तुम पलिश्ती सामन्तों की दृष्टि में कुछ अनुचित कार्य कर बैठो।

8 दाऊद ने आकीश से पूछा, 'परन्तु मैंने क्या किया है? जबसे मैं आपकी सेवा में उपस्थित हुआ हूं, तबसे आज तक आपने मुझमें क्या दोष पाया है कि मैं जाकर अपने स्वामी महाराज के शत्रुओं से युद्ध न कर सकूं?' [9]आकीश ने उत्तर दिया, 'मैं जानता हूं कि तुम मेरी दृष्टि में भले हो! परमेश्वर के दूत के सदृश निर्दोष हो! फिर भी पलिश्ती सेना-नायकों का यह आदेश है: ''यह हमारे साथ युद्ध-भूमि में नहीं जाएगा।'' [10]इसलिए अब तुम और तुम्हारे साथ आए हुए सैनिक बड़े सबेरे सोकर उठें, और जो स्थान मैंने तुम्हारे लिए निर्धारित किया है वहां पौ फटते ही चले जाएं।'

11 अत: दाऊद और उसके सैनिक बड़े सबेरे उठे। उन्होंने पलिश्ती देश लौटने के लिए सबेरे ही प्रस्थान कर दिया। पलिश्ती सैनिक यिज्रएल की ओर चले गए।

दाऊद की अमालेकियों पर विजय

30 दाऊद और उसके सैनिक तीसरे दिन सिक्लग नगर पहुंचे। पर उनके पहुंचने के पूर्व अमालेकी सेना ने नेगेब और सिक्लग पर धावा कर दिया। उन्होंने सिक्लग नगर को नष्ट कर उसमें आग लगा दी। [2]उन्होंने स्त्रियों को, छोटे-बड़े सब लोगों को बन्दी बना लिया। उन्होंने सिक्लग के किसी प्राणी की हत्या नहीं की। परन्तु उन्हें बंदी बनाकर अपने मार्ग पर चले गए। [3]जब दाऊद और उसके सैनिक सिक्लग में आए, तब उन्होंने देखा कि नगर आग से भस्म हो चुका है। उनकी पत्नियां, पुत्र-पुत्रियां, सब बन्दी बनाकर ले जाए जा चुके हैं। [4]दाऊद और उसके साथ के सैनिक उच्च स्वर में रो पड़े। वे इतना रोए कि उनमें रोने की शक्ति नहीं रही! [5]दाऊद की दोनों पत्नियां, यिज्रएल की रहने वाली अहीनोअम और कर्मेल की रहनेवाली नाबाल की विधवा अबीगइल, भी बन्दी बना ली गई थीं। [6]दाऊद अत्यन्त संकट में था। उसके लोग उसे पत्थरों से मार डालने का विचार कर रहे थे। उनके हृदय में कटुता उत्पन्न हो गई थी; क्योंकि प्रत्येक सैनिक का पुत्र अथवा पुत्री बन्दी बना ली गई थी। दाऊद ने प्रभु परमेश्वर से साहस प्राप्त किया।

7 दाऊद ने अहीमेलक के पुत्र, पुरोहित एबयातर से कहा, 'मेरे पास एपोद लाओ!' अत: एबयातर दाऊद के पास एपोद ले आया। [8]तब दाऊद ने प्रभु से पूछा, 'क्या मैं छापामार दल का पीछा करूं? क्या मैं उसको जाकर पकड़ूं?' प्रभु ने उसे उत्तर दिया, 'पीछा कर। तू उसको निश्चय ही जाकर पकड़ लेगा। तू निश्चय ही बन्दियों को मुक्त करेगा।' [9-10]अत: दाऊद और उसके छ: सौ सैनिकों ने प्रस्थान किया। वे बसोर की बरसाती नदी तक पहुंचे। यहां दो सौ सैनिक रुक गए। ये थक गए थे, और बसोर नदी को पार करने में असमर्थ थे। किन्तु दाऊद और उसके शेष चार सौ सैनिक पीछा करते रहे।

11सैनिकों को मैदान में एक मिस्री लड़का मिला। वे उसे दाऊद के पास लाए। उन्होंने उसे रोटी दी। मिस्र निवासी ने रोटी खाई। उन्होंने

29 : 5 1 शम 18 : 7; 21 : 11 29 : 9 2 शम 14 : 17 30 : 5 1 शम 25 : 42

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उसे पीने के लिए पानी दिया। उसने पानी पिया।
12इसके अतिरिक्त उन्होंने उसे अंजीर का सूखा
फल और किशमिश के दो गुच्छे दिए। जब
उसने यह-सब खाया तब उसके प्राण पुनः
संजीव हुए। उसे पूरे तीन दिन और तीन रात से
न खाने को भोजन मिला था, और न पीने को
पानी। 13दाऊद ने उससे पूछा,'तुम किसके
लड़के हो? कहां के रहने वाले हो?' उसने उत्तर
दिया, 'मैं मिस्री हूँ। मैं अमालेकी जाति के एक
आदमी का गुलाम हूँ। आज से तीन दिन पहले
मैं बीमार पड़ गया था, तो मेरा मालिक मुझे
छोड़कर चला गया। 14हमने करेती राज्य, यहूदा
प्रदेश और कालेब प्रदेश के नेगेब क्षेत्रों में छापा
मारा था। हमने सिक्लग नगर को आग से
जलाया है।' 15दाऊद ने उससे पूछा, 'क्या तुम
मुझे छापामार दल के पास ले चलोगे?' उसने
उत्तर दिया, 'परमेश्वर के नाम से शपथ खाइए
कि आप मेरा वध नहीं करेंगे। आप मुझे मेरे
मालिक के हाथ में नहीं सौंपेंगे। तब मैं आपको
छापामार दल के पास ले चलूंगा'।

16 मिस्री लड़का उन्हें छापामार दल के पास
ले गया। वहां उन्होंने देखा कि वे मैदान में
बिखरे हुए हैं। वे खा-पी रहे हैं। वे नाच-गा रहे
हैं; क्योंकि उन्होंने पलिश्ती देश और यहूदा
प्रदेश में बहुत माल लूटा था। 17दाऊद ने उन
पर आक्रमण कर दिया। उसने उन्हें सन्ध्या से
लेकर दूसरे दिन की शाम तक मारा। चार सौ
युवकों को छोड़कर, जो ऊंट पर सवार हो कर
भाग गए, एक भी मनुष्य जीवित नहीं बचा!
18जिन्हें अमालेकियों ने बन्दी बनाया था, उन्हें
दाऊद ने मुक्त कर दिया। दाऊद ने अपनी दोनों
पत्नियों को भी मुक्त कर दिया। 19उसने कुछ
भी नहीं खोया। बड़ी-छोटी वस्तु, पुत्र या
पुत्रियां, जो भी लूट लिया गया था, वह सब
कुछ दाऊद वापस ले आया। 20सैनिकों ने
अमालेकियों की भेड़-बकरियां, गाय-बैल
छीन लिये, और उनको दाऊद के सम्मुख हांक
कर ले आए। उन्होंने कहा, 'यह दाऊद की लूट
का माल है!'

21 दाऊद उन दो सौ सैनिकों के पास पहुंचा,
जो इतने थक गए थे कि वे दाऊद का अनुसरण
न कर सके और जिन्हें दाऊद ने बसोन नदी पर
छोड़ दिया था। वे सैनिक दाऊद तथा उसके
साथ के सैनिकों से भेंट करने के लिए निकले।
जब वे दाऊद और उसके सैनिकों के समीप
पहुंचे, तब दाऊद ने उनका कुशल-क्षेम पूछा।
22परन्तु जो आवारे और गुण्डे दाऊद के
साथ गए थे, उन्होंने उत्तर दिया, 'ये हमारे साथ
नहीं गए थे। इसलिए हम इन्हें लूट के माल में
से कुछ नहीं देंगे, जिसको हमने छुड़ाया है।
हां, ये अपने-अपने स्त्री-बच्चों को ले सकते
हैं।'

23 परन्तु दाऊद ने कहा, 'भाइयो, जो माल
प्रभु ने हमें दिया है, उसका बंटवारा तुम इस
प्रकार नहीं कर सकते। प्रभु ने हमारी रक्षा की।
जो छापामार दल हमें लूटने आया था, उसको
प्रभु ने हमारे हाथ में सौंप दिया। 24इस विषय
में कौन व्यक्ति तुम्हारी बात सुनेगा?

जैसा हिस्सा युद्ध-भूमि में जाने वाले का
है
वैसा ही हिस्सा सामान के पास रहने वाले
का है
दोनों को बराबर-बराबर हिस्सा मिलेगा।'

25दाऊद ने उस दिन से यह संविधि और नियम
बना दिया। वह आज भी इस्राएली राष्ट्र में
प्रचलित है।

26 जब दाऊद सिक्लग में आया तब उसने
यहूदा प्रदेश के धर्मवृद्धों को, अपने मित्रों को
लूट का कुछ माल भेजा। उसने यह सन्देश
भेजा, 'यह आपके लिए उपहार है। यह प्रभु के
शत्रुओं से लूटे गए माल में से आपका हिस्सा
है।' 27दाऊद ने निम्नलिखित नगरों के धर्मवृद्धों
को लूट का माल भेजा: बेत-एल, नेगेब क्षेत्र
का रामोत, यत्तीर, 28अरोएर, सिफ्मोत,
एश्तमोअ, 29राकल, यर्हमएली जाति और
केनी जाति के नगर, 30होर्मा, बोर-आशन, अतख
और 31हेब्रोन। उन सब नगरों के धर्मवृद्धों को
भी दाऊद ने उपहार भेजा जहां वह और उसके

---

30 : 24 गण 31 : 27

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सैनिक प्राय: जाते थे।

शाऊल और उसके पुत्रों की मृत्यु

31 पलिश्तियों ने इस्राएलियों से युद्ध छेड़ दिया। इस्राएली सैनिक पलिश्तियों के सामने से भागे। पर वे गिलबोअ पहाड़ पर मर-मरकर धराशायी हो गए। [2]पलिश्ती सैनिकों ने शाऊल और उसके पुत्रों का पीछा किया। उन्होंने शाऊल के पुत्रों, योनातन, अबीनादब और मल्कीशूअ को मार डाला। [3]शाऊल के समीप घमासान युद्ध होने लगा। धनुर्धारी सैनिकों ने उसे पा लिया। शाऊल धनुर्धारियों की मार से बहुत घायल हो गया।

4 शाऊल ने अपने शस्त्रवाहक से कहा, 'अपनी तलवार निकाल। उसको मेरे शरीर पर भोंक दे। ऐसा न हो कि ये बेखतना पलिश्ती आएं, मेरे शरीर पर अपनी तलवार भोंकें, और फिर मेरा मजाक-उड़ाएं!' परन्तु उसका शस्त्रवाहक बहुत डर गया। उसने शाऊल का आदेश नहीं माना। अत: शाऊल ने अपनी तलवार निकाली, और स्वयं उस पर गिर पड़ा। [5]जब शाऊल के शस्त्रवाहक ने देखा कि शाऊल ने आत्महत्या कर ली, तब वह भी अपनी तलवार पर गिर पड़ा और मर गया। [6]यों उस दिन शाऊल, उसके तीन पुत्र और उसका शस्त्रवाहक एक ही दिन मर गए। [7]जब घाटी की दूसरी ओर तथा यर्दन नदी के उस पार के इस्राएली लोगों ने देखा कि इस्राएली सेना भाग गई, और शाऊल तथा उसके पुत्र युद्ध में मर गए तब वे नगर छोड़कर भाग गए। पलिश्ती आए, और वे उन नगरों में रहने लगे।

8 दूसरे दिन पलिश्ती सैनिक मृत इस्राएली सैनिकों के शस्त्र-वस्त्र उतारने के लिए आए। उन्हें गिलबोअ पहाड़ पर शाऊल और उसके तीन पुत्रों की लाशें पड़ी हुई मिलीं। [9]उन्होंने शाऊल का सिर काट लिया, और उसके शस्त्र उतार लिये। उसके बाद उन्होंने समस्त पलिश्ती देश में दूतों को भेजा कि वे मूर्ति-प्रतिष्ठान के स्थानों में तथा जन-साधारण को विजय का सन्देश सुनाएं। [10]उन्होंने शाऊल के शस्त्र अशेराह देवी के मन्दिर में रख दिए। उन्होंने उसकी लाश बेतशान नगर की शहरपनाह पर लटका दी।

11 जब याबेश-गिल्आद के निवासियों ने सुना कि पलिश्ती सैनिकों ने शाऊल के साथ कैसा व्यवहार किया है, [12]तब सब योद्धा उठे। वे रात भर चलते हुए बेतशान पहुंचे। उन्होंने शहरपनाह से शाऊल और उसके तीनों पुत्रों की लाशें उतार लीं और याबेश नगर को लौट आए, और वहां लाशें जला दीं। [13]उन्होंने राख में से मृतकों की अस्थियां निकालीं, और उनको याबेश नगर में झाऊ वृक्ष के नीचे गाड़ दिया। उन्होंने शोक प्रकट करने के लिए सात दिन तक उपवास किया।

---

31 : 1-13 2 शम 1 : 6-10; 1 इति 10 : 1-12 31 : 4 शास 9 : 54; 1 शम 26 : 9 31 : 12 1 शम 11 : 1-11; 2 शम 2 : 5 31 : 13 उत 50 : 10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शमूएल : दूसरा भाग

पुस्तक परिचय

शमूएल नामक ग्रन्थ के दूसरे भाग में दाऊद का जीवन-चरित्र प्रस्तुत किया गया है। आरम्भ में दाऊद अभिषिक्त राजा के रूप में केवल इस्राएल देश के दक्षिणी कुल-क्षेत्र यहूदा पर राज्य करता है (अध्याय 1-4)। तत्पश्चात् वह लगभग 1000 ईसवी पूर्व से राजधानी यरूशलेम में सम्पूर्ण देश पर राज्य करने लगता है। उसका राज्य इस्राएल देश के उत्तरी कुल-क्षेत्रों पर भी स्थापित हो जाता है। (अध्याय 5-24)। प्रस्तुत पुस्तक में राजा दाऊद के उन कार्यों का विस्तार से उल्लेख किया गया है, जो उसने अपने राज्य की सीमा को बढ़ाने तथा अपनी स्थिति को मजबूत करने के लिए किये थे। उसे भीतरी शत्रुओं एवं बाहरी आक्रमणों का सामना करना पड़ा था। वास्तव में, वह अविराम युद्ध करने वाले राजा के रूप में हमें दिखाई देता है। उसकी अनिच्छा होने पर भी, उसके हाथ शत्रुओं के रक्त से सने हुए हैं।

दूसरी ओर हमें उसके चरित्र का एक विशेष गुण भी दिखाई देता है कि वह परमेश्वर पर अटूट विश्वास करता है। भजनकार के रूप में परमेश्वर के प्रति उसकी भक्ति अनुपम है। इसलिए वह एक विनम्र, स्वतंत्र, पूर्ण मानव-पुत्र जैसा व्यवहार करता है। उसकी प्रजा उसके प्रति निष्ठा रखती है।

यों तो प्रस्तुत ग्रन्थ में उसे कठोर एवं अपनी इच्छाओं की पूर्त्ति हेतु पाप करते हुए दिखाया गया है। वह महत्वाकांक्षी भी है; फिर भी जब प्रभु का नबी नातान दाऊद के पाप के लिए उसको प्रताड़ित करता है, तब राजा दाऊद अपने पापों को साहसपूर्वक अंगीकार करता है, और परमेश्वर के दण्ड को दीनतापूर्वक स्वीकार करता है। अपने परिवार में ही उसे राजकुमारों के आपसी कलह का शिकार बनना पड़ा। युवराज सुलेमान के राज्यारोहण तक उत्तराधिकार सम्बन्धी संघर्ष का सजीव चित्रण प्राचीनतम विश्व साहित्य में अनन्य है।

इस्राएली कौम पर राजा दाऊद के जीवन एवं उसकी उपलब्धियों का इतना अधिक प्रभाव पड़ा था कि इस्राएली कौम के प्राचीन इतिहास के अंतिम वर्षों में जब उन पर राष्ट्रीय संकट आया, तब उन्होंने परमेश्वर से यह इच्छा प्रकट की कि वह उन्हें ऐसा मुक्तिदाता भेजे जो दाऊद के वंश का हो। दाऊद का वंशज दाऊद के समान ही महान अभिषिक्त राजा होगा।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

यहूदा कुल-क्षेत्र पर राजा दाऊद का राज्य	**1 : 1 — 4 : 12**
समस्त इस्राएल देश पर राजा दाऊद का राज्य	**5 : 1 — 24 : 25**
(क) आरंभिक राज्यकाल	**5 : 1 — 10 : 19**
(ख) दाऊद और सुंदरी बतशेबा	**11 : 1 — 12 : 25**
(ग) संकट और दुःख-तकलीफ	**12 : 26 — 20 : 26**
(घ) राजा दाऊद के जीवन के अंतिम वर्ष	**21 : 1 — 24 : 25**

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दाऊद को शाऊल का मृत्यु-समाचार मिलना

1 राजा शाऊल की मृत्यु के पश्चात् दाऊद अमालेकियों का संहार करके लौटा। वह दो दिन तक सिक्लग नगर में रहा। [2]तीसरे दिन एक मनुष्य शाऊल के शिविर से आया। वह मृत्यु-शोक प्रकट करने के लिए फटे वस्त्र पहिने हुए था और अपने सिर पर धूल डाले हुए था। वह दाऊद के पास आया। उसने भूमि पर गिरकर दाऊद का अभिवादन किया। [3]दाऊद ने उससे पूछा, 'तुम कहां से आये हो?' उसने उसको उत्तर दिया, 'मैं इस्राएली पड़ाव से भाग कर आया हूं।' [4]दाऊद ने उससे कहा, 'वहां क्या हुआ? मुझे बताओ।' उसने कहा, 'इस्राएली सैनिक युद्ध-भूमि से भाग गए हैं। अनेक सैनिक युद्ध में मारे गए हैं। राजा शाऊल और उनका पुत्र योनातन भी मारे गए हैं।' [5]दाऊद ने संदेशवाहक सैनिक से पूछा, 'यह बात तुम्हें कैसे पता चली कि शाऊल और उनका पुत्र योनातन मर गए हैं?' [6]संदेशवाहक सैनिक ने कहा, 'संयोग से उस समय मैं गिलबोअ पहाड़ पर था। मैंने देखा कि शाऊल अपने भाले से टिक कर खड़े हैं, और रथों तथा घोड़ों पर सवार शत्रु-सैनिक उन्हें दबा रहे हैं। [7]शाऊल पीछे की ओर मुड़े। उन्होंने मुझे देखा। तब उन्होंने मुझे पुकारा। मैंने कहा, "आज्ञा, महाराज!" [8]उन्होंने मुझसे पूछा, "तुम कौन हो?" मैंने उन्हें बताया, "मैं अमालेकी सैनिक हूँ।" [9]तब उन्होंने मुझे यह आदेश दिया, "मेरे पास खड़े हो, और मेरा वध करो। मुझे चक्कर आ रहा है, यद्यपि अब तक मेरे भीतर प्राण शेष हैं।" [10]अत: मैं उनके पास खड़ा हुआ और मैंने उनका वध कर दिया। मैं निश्चित रूप से जानता था कि वह भूमि पर गिर जाने के पश्चात् नहीं बचेंगे। मैंने उनका मुकुट, और बाजूबन्द उतार लिया; और स्वामी, मैं उनको आपके पास ले आया हूं।'

11 तब दाऊद ने अपने कपड़ों को कसकर पकड़ा, और मृत्यु-शोक प्रकट करने के लिए उनको फाड़ दिया। ऐसा ही उसके साथियों ने भी किया। [12]उन्होंने शाऊल, उसके पुत्र योनातन और प्रभु के निज लोग, इस्राएली परिवार के लिए सन्ध्या तक शोक मनाया। वे रोते रहे। उन्होंने उपवास किया; क्योंकि शाऊल, योनातन और इस्राएली सैनिक तलवार से मारे गए थे।

13 दाऊद ने सन्देशवाहक सैनिक से पूछा, 'तुम कहां के रहने वाले हो?' उसने उत्तर दिया, 'मैं एक प्रवासी का पुत्र हूं। मैं अमालेकी जाति का हूं।' [14]दाऊद ने उससे कहा, 'तुमने प्रभु के अभिषिक्त राजा का वध करने के लिए उस पर हाथ उठाया, और तुम नहीं डरे?' [15]दाऊद ने एक सैनिक को बुलाया, 'यहाँ आओ।' तब उसने यह आदेश दिया, 'तुम इस पर टूट पड़ो।' अत: सैनिक ने उस अमालेकी पर वार किया, और वह मर गया। [16]दाऊद ने मृतक से कहा, 'तेरे रक्त का दोष तेरे ही सिर पर पड़े; क्योंकि तेरे ओंठों ने स्वयं तेरे विरुद्ध साक्षी दी है: तूने यह कहा था, "मैंने ही प्रभु के अभिषिक्त राजा को मार डाला है।"'

दाऊद का शोक गीत

17 तब दाऊद ने शाऊल और उसके पुत्र योनातन की मृत्यु पर यह शोक-गीत गाया। [18]उसने यह 'धनुष-गीत' यहूदा प्रदेश के निवासियों को सिखाने के लिए सुनाया। यह गीत 'याशर की पुस्तक' में लिखा हुआ है। गीत इस प्रकार है :

19 'ओ इस्राएल, पहाड़ी शिखरों पर
तेरे शिरोमणि का वध कर दिया गया!
योद्धा कैसे धराशायी हो गए?
20 गत नगर में यह बात न बताना;
अश्कलोन की सड़कों पर इसे न फैलाना।
अन्यथा पलिश्ती महिलाएं आनन्द मनाएंगी;
बेखतना जाति की कन्याएं फूले न समाएंगी।
21 'ओ गिलबोअ पहाड़ियो!
तुम पर ओस न गिरे, वर्षा न हो।
ओ मैदानो, तुम विश्वासघाती हो+ !
योद्धाओं की ढालें अशुद्ध हो गईं।

+ मूल अस्पष्ट।
1 : 1 शम 30 : 18 1 : 6 1 शम 31 : 1-4; 1 इति 10 : 1-3 1 : 14 1 शम 24 : 6 1 : 18 यहो 10 : 13
1 : 19 1 मक 9 : 21 1 : 20 मी 1 : 10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शाऊल की ढाल तेल से अभिसिंचित नहीं
हुई;
22यह योद्धाओं की चर्बी से
मृतकों के रक्त से रंजित हो गई।
योनातन के धुनष ने पीठ नहीं दिखाई;
शाऊल की तलवार खाली हाथ नहीं लौटी।
23 'शाऊल और योनातन, जो प्रिय एवं
प्रीतिकर थे;
वे जीवन और मृत्यु में
कभी अलग नहीं हुए।
वे बाज से अधिक वेगवान थे;
वे सिंह से अधिक बलवान थे।
24 'ओ इस्राएल प्रदेश की महिलाओ!
शाऊल के लिए रोओ,
जो तुम्हें लाल रंग के सुन्दर वस्त्र पहिनाता
था,
जो तुम्हारे वस्त्रों के ऊपर सोने के गहने
धारण कराता था।
25 'युद्ध भूमि में योद्धा कैसे धराशायी हो गए?
ओ योनातन, तेरी मृत्यु से मैं मरणासन्न हो
गया!*
26ओ मेरे भाई योनातन, मैं तेरे लिए कितना दुः
खी हूं।
तू मुझे कितना प्रिय था!
मेरे प्रति तेरा प्रेम अद्भुत था!
वह स्त्री के प्रेम से बढ़कर था।
27 'योद्धा कैसे धराशायी हो गए?
कैसे युद्ध के शस्त्र नष्ट हो गए?'

दाऊद का यहूदा प्रदेश का राजा बनना

2 इसके पश्चात् दाऊद ने प्रभु से यह पूछा,
'क्या मैं यहूदा प्रदेश के किसी नगर में जा
सकता हूं?' प्रभु ने उसको उत्तर दिया, 'जा।'
दाऊद ने फिर पूछा, 'मैं किस नगर में जाऊँ?'
प्रभु ने कहा, 'हेब्रोन नगर को जा।' 2अतः दाऊद
अपनी दोनों पत्नियों— यिज्रएल नगर की
अहीनोअम और कर्मेल निवासी नाबाल की
विधवा अबीगइल—के साथ वहां चला गया।
3वह अपने प्रत्येक साथी को भी उसके पूरे
परिवार के साथ ले गया। वे हेब्रोन के गांवों में
रहने लगे।
4तब यहूदा प्रदेश के निवासी वहां आए।
उन्होंने दाऊद को यहूदा-पितृकुल का राजा
अभिषिक्त किया।
उन्होंने दाऊद को यह बताया, 'याबेश-
गिलआद नगर के नागरिकों ने शाऊल को
दफना दिया है।' 5अतः दाऊद ने याबेश-
गिलआद के नागरिकों के पास दूतों के हाथ यह
सन्देश भेजा : 'तुमने अपने स्वामी शाऊल के
साथ दयापूर्ण व्यवहार किया। तुमने उनको
दफनाया। अतः प्रभु तुम्हारे इस कार्य के लिए
तुम्हें आशिष दे। 6अब प्रभु तुम्हारे साथ भी
दयापूर्ण तथा सच्चा व्यवहार करे। तुमने यह
भला कार्य किया, इसलिए मैं भी तुम्हारे साथ
भलाई करूंगा 7तुम्हारे हाथ मजबूत हों! तुम
शूरवीर बनो! तुम्हारे स्वामी शाऊल मर गए हैं,
और अब यहूदा के वंशजों ने मुझे अपना राजा
अभिषिक्त किया है।'

दाऊद का शाऊल के राज-परिवार से युद्ध

8 शाऊल के सेनापति अब्नेर बेन-नेर ने
शाऊल के पुत्र ईशबोशेत को अपने साथ लिया।
उसने यर्दन नदी पार की, और उसे महनइम
नगर ले गया। 9वहां अब्नेर ने उसे गिलआद,
अशूरी, यिज्रएल, एफ्रइम, बिन्यामिन और
समस्त इस्राएल प्रदेश का राजा बना दिया।
10जब शाऊल का पुत्र ईशबोशेत इस्राएल देश
पर राज्य करने लगा, तब वह चालीस वर्ष का
था। उसने दो वर्ष तक राज्य किया। किन्तु
यहूदा के वंशजों ने दाऊद का अनुसरण किया।
11दाऊद ने हेब्रोन नगर में यहूदा के वंशजों पर
साढ़े सात वर्ष तक राज्य किया।
12 नेर का पुत्र अब्नेर तथा शाऊल के पुत्र
ईशबोशेत के दरबारी महनइम नगर से निकल
कर गिबओन नगर को गए। 13सरूयाह का पुत्र
योआब और दाऊद के दरबारी भी अपने नगर
से बाहर निकले और उनसे गिबओन के
जलाशय पर मिले। अब्नेर तथा ईशबोशेत के

* मूल में, ''पहाड़ी शिखरों पर तेरा वध कर दिया गया।''

2 : 2 1 शम 25 : 42-43 **2 : 4** 1 शम 16 : 13; 31 : 11

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दरबारी जलाशय की एक ओर तथा योआब
और दाऊद के दरबारी जलाशय की दूसरी ओर
बैठ गए। 14अब्नेर ने योआब से कहा, 'हमारे
और तुम्हारे सैनिक उठें, और हमारे सम्मुख
द्वन्द्वयुद्ध का खेल प्रदर्शित करें।' अत: योआब
ने आदेश दिया, 'सैनिको, उठो!' 15अत: वे
उठे। उनकी गणना की गई: ईशबोशेत की ओर
से बिन्यामिन कुल के बारह सैनिक, और दाऊद
के दरबारियों में से बारह। 16प्रत्येक सैनिक ने
अपने विपक्षी का सिर पकड़ा, और उसकी
पसली में अपनी तलवार भोंक दी। यों वे एक-
साथ भूमि पर गिर पड़े। इस कारण उस स्थान
का नाम हेल्कत-हस्सूरीम'* पड़ गया। वह
गिबओन में है।

17 उस दिन घमासान युद्ध हुआ। अब्नेर
और इस्राएली सैनिक दाऊद के दरबारियों के
सम्मुख हार गए।

18 सरूयाह के तीन पुत्र—योआब, अबीशय
और असाएल—वहां थे। असाएल जंगली
चिकारा के समान तेज दौड़ने वाला था।
19उसने अब्नेर का पीछा किया। जब वह अब्नेर
के पीछे दौड़ा, तब असाएल मार्ग की न दाहिनी
ओर मुड़ा और न बाईं ओर। 20अब्नेर ने पीछे
मुड़कर देखा। उसने पूछा, 'असाएल, क्या तुम
हो?' असाएल ने उत्तर दिया, 'हां, मैं हूं।'
21अब्नेर ने उससे कहा, 'तुम अपने दाहिने
अथवा बाएं हाथ पर मुड़कर किसी अन्य
सैनिक को पकड़ लो, और उसके शस्त्र छीन
लो।' परन्तु असाएल ने उसका पीछा करना
नहीं छोड़ा। 22अब्नेर ने असाएल से फिर कहा,
'मेरा पीछा करना छोड़ दो। मैं तुम पर वार कर
तुम्हें धराशायी करना नहीं चाहता। मैं तुम्हारे
भाई योआब को अपना मुंह कैसे दिखा
सकूंगा?' 23परन्तु असाएल ने वापस लौटना
स्वीकार नहीं किया। अत: अब्नेर ने उसके पेट
में भाले का कुन्दा मारा। भाला उसके पार हो
गया। वह वहीं भूमि पर गिर पड़ा, और तत्काल
मर गया। जिस स्थान पर असाएल गिरकर मरा,
वहां पहुँचकर लोग खड़े रह गए।

24तब योआब और अबीशय ने अब्नेर का
पीछा किया। वे सूर्यास्त के समय अम्माह की
पहाड़ी पर पहुंचे। यह घाटी की पूर्व दिशा में
कीअह के मार्ग पर है।** 25बिन्यामिन कुल के
लोग अब्नेर के नेतृत्व में एकत्र हो गए। उन्होंने
एक दल बना लिया। वे अम्माह पहाड़ी के
शिखर पर खड़े हो गए। 26अब्नेर ने योआब को
पुकारा, और उससे यह कहा, 'क्या तलवार
सदा चलती रहगी? क्या तुम नहीं जानते हो कि
इसका अन्त बुरा होगा? तुम कब तक अपने
सैनिकों को आज्ञा नहीं दोगे कि वे अपने जाति-
भाइयों का पीछा करना छोड़ दें और लौट
जाएं?' 27योआब ने कहा, 'जीवन्त परमेश्वर
की सौगन्ध! यदि तुमने यह न कहा होता, तो
निस्सन्देह मेरे ये सैनिक अपने जाति-भाइयों
का पीछा सबेरे तक करते।' 28अत: योआब ने
नरसिंघा फूंका और सब सैनिक रुक गए।
उन्होंने इस्राएलियों का पीछा नहीं किया और
न उनसे फिर युद्ध ही किया।

29अब्नेर और उसके सैनिक रात भर
अराबाह मैदान में चलते रहे। उन्होंने यर्दन नदी
पार की। वे दोपहर तक चलते रहे तत्पश्चात्
उन्होंने महनइम नगर में प्रवेश किया।

30 योआब ने अब्नेर का पीछा करना छोड़
दिया। उसने अपने सब लोगों को एकत्र किया।
जब उसने उनकी हाजिरी ली, तब पता चला कि
असाएल के अतिरिक्त दाऊद के सैनिकों में से
उन्नीस सैनिक लापता हैं। 31किन्तु दाऊद के
सैनिकों ने अब्नेर के तीन सौ साठ बिन्यामिनी
सैनिक मार डाले थे। 32उन्होंने असाएल का
शव उठाया, और उसको उसके पिता की कबर
में, जो बेतलेहम नगर में थी, गाड़ दिया।
योआब और उसके सैनिक रात भर चलते रहे।
जब वे हेब्रोन नगर में पहुँचे तब सूर्योदय हुआ।

3 शाऊल के राज-परिवार तथा दाऊद के
राज-परिवार के मध्य बहुत समय तक युद्ध
जारी रहा। दाऊद अधिकाधिक शक्तिशाली
बनता गया और शाऊल का राज-परिवार धीरे-
धीरे शक्तिहीन होता गया।

* अथात् ''तलवार की धार का मैदान'', अथवा ''पसलियों का मैदान''। ** मूल में अस्पष्ट

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दाऊद के पुत्र

2 ये पुत्र दाऊद को हेब्रोन नगर में उत्पन्न हुए
थे : ज्येष्ठ पुत्र अम्नोन था, जो यिज्रएल नगर
की रहनेवाली अहीनोअम से उत्पन्न हुआ था।
3दूसरा पुत्र किलआब था, जो कर्मेल के नाबाल
की विधवा अबीगइल से उत्पन्न हुआ था।
तीसरा पुत्र अबशालोम था, जो गशूर नगर के
राजा तल्मय की पुत्री माकाह से उत्पन्न हुआ
था।4चौथा पुत्र अदोनियाह, हग्गीत से; पांचवाँ
पुत्र शफटयाह, अबीटल से और 5छठा पुत्र
यित्राम, एग्लाह नामक दाऊद की पत्नी से
उत्पन्न हुआ था। ये ही पुत्र दाऊद को हेब्रोन
नगर में उत्पन्न हुए थे।

सेनापति अब्नेर का सन्धि-प्रस्ताव

6 जब शाऊल के राज-परिवार तथा दाऊद
के राज-परिवार के मध्य युद्ध जारी था, तब यह
घटना घटी। अब्नेर शाऊल के राज-परिवार में
प्रमुख शक्तिशाली व्यक्ति बन गया था।7शाऊल
की एक रखेल थी। उसका नाम रिस्पाह था।
वह अय्याह की पुत्री थी। अब्नेर ने उसको रख
लिया। ईशबोशेत ने अब्नेर से कहा, 'आपने मेरे
पिता की रखेल से सम्भोग क्यों किया?'
8अब्नेर ईशबोशेत के ये शब्द सुनकर भड़क
उठा। उसने कहा, 'क्या मैं यहूदा की दहलीज
का कुत्ता हूं? आज तक मैं तुम्हारे पिता शाऊल
के राज-परिवार के प्रति, उनके भाइयों और
मित्रों के प्रति प्रेमपूर्ण व्यवहार करता रहा। तुम्हें
दाऊद के हाथ में पड़ने नहीं दिया। फिर भी
आज तुमने एक स्त्री के विषय में मुझ पर दोष
लगाया। 9-10अब जो शपथ प्रभु परमेश्वर ने
दाऊद से खाई थी, कि वह शाऊल के राज-
परिवार से राज्य-सत्ता वापस ले लेगा, और
इस्राएल एवं यहूदा प्रदेश पर, दान नगर से
बएर-सेबा तक, दाऊद की राज्य-सत्ता स्थापित
करेगा—यदि मैं परमेश्वर की इस शपथ को
पूरा न करूं, तो परमेश्वर मुझ-अब्नेर से कठोर
से कठोर व्यवहार करे।' 11ईशबोशेत अब्नेर से
डर गया। वह उसे पलट कर एक शब्द भी न
बोल सका।

12 अब्नेर ने दूतों के हाथ दाऊद को हेब्रोन
नगर में यह सन्देश भेजा, 'यह देश किसका है?
मेरे साथ सन्धि स्थापित करो। तब मैं सब
इस्राएली लोगों को तुम्हारी ओर मोड़ने में तुम्हें
सहयोग दूंगा।' 13दाऊद ने कहा, 'बहुत अच्छा!
मैं तुम्हारे साथ सन्धि स्थापित करूंगा; पर तुमसे
एक बात कहना चाहता हूं। जब तुम मुझसे
मिलने आओगे, तब शाऊल की पुत्री मीकल
को लाना। अन्यथा तुम मेरे दर्शन नहीं कर
सकोगे।' 14तत्पश्चात् दाऊद ने शाऊल के पुत्र
ईशबोशेत को दूतों के हाथ यह सन्देश भेजा,
'मेरी पत्नी मीकल मुझे लौटा दीजिए। मैंने उसे
सौ पलिश्ती सैनिकों के लिंग की खलड़ी के
बदले में प्राप्त किया था।' 15अत: ईशबोशेत ने
दूत भेजे। उन्होंने मीकल के पति पल्टीएल
बेन-लाइश से मीकल को छीन लिया। 16पर
मीकल का पति उसके साथ चला। वह बहूरीम
नगर तक मीकल के पीछे-पीछे रोते हुए गया।
किन्तु जब अब्नेर ने उससे कहा, 'अब लौट
जाओ' तब वह लौट गया।

17 अब्नेर ने इस्राएल प्रदेश के धर्म-वृद्धों
से विचार-विमर्श किया। उसने कहा, 'तुम
बहुत समय से इस बात का प्रयत्न कर रहे हो
कि दाऊद तुम्हारा राजा बने। 18प्रभु ने दाऊद
के विषय में यह कहा है, "मैं अपने सेवक
दाऊद के द्वारा अपने निज लोग इस्राएलियों को
पलिश्ती जाति के हाथ से, उनके समस्त शत्रुओं
के हाथ से, मुक्त करूंगा।" अब तुम यह कार्य
पूरा करो।' 19अब्नेर ने बिन्यामिन कुल के
वंशजों से भी ये ही बातें कहीं। इस प्रकार जो
निर्णय इस्राएलियों तथा बिन्यामिन कुल के
लोगों को अपनी दृष्टि में उचित लगा, उसको
बताने के लिए अब्नेर दाऊद के पास हेब्रोन नगर
गया।

20 अब्नेर हेब्रोन नगर में दाऊद के पास
पहुंचा। उसके साथ बीस सैनिक थे। दाऊद ने
अब्नेर तथा उसके साथी सैनिकों को भोज
दिया।

21भोज के बाद अब्नेर ने दाऊद से कहा,

---

3 : 2 1 इति 3 : 1 **3 : 7** 2 शम 21 : 8,10 **3 : 10** 1 शम 15 : 28 **3 : 14** 1 शम 18 : 27

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
‘अब मैं जाऊंगा। मैं जाकर समस्त इस्राएली
सैनिकों को अपने स्वामी, अपने राजा के पास
एकत्र करूंगा। वे आपके साथ सन्धि करेंगे।
तब आप अपनी इच्छा के अनुसार सब पर राज्य
कर सकेंगे।’ दाऊद ने अब्नेर को विदा किया
और वह सकुशल लौट गया।

सेनापति अब्नेर की हत्या

22 योआब तथा दाऊद के सैनिक छापा मार
कर लौटे। वे अपने साथ लूट का बहुत माल भी
लाए। उस समय अब्नेर दाऊद के साथ हेब्रोन
नगर में नहीं था। दाऊद ने उसे विदा कर दिया
था, और वह सकुशल चला गया था। [23]जब
योआब और उसके साथ के सैनिक आए, तब
लोगों ने योआब को बताया, ‘अब्नेर बेन-नेर
राजा दाऊद के पास आया था। राजा ने उसे
भोज दिया था और अब उसको सकुशल विदा
कर दिया है।*’ [24]योआब राजा दाऊद के पास
गया। उसने कहा, ‘यह आपने क्या किया!
अब्नेर आपके पास आया और आपने उसे
सकुशल जाने दिया। क्यों? [25]क्या आप अब्नेर
बेन-नेर को नहीं जानते हैं? वह आपको धोखा
देने, आपके आक्रमण की योजनाओं का पता
लगाने के लिए आया था। वह यह बात जानने
के लिए आया था कि आप क्या कर रहे हैं।’

26 योआब दाऊद के दरबार से बाहर
निकला। उसने अब्नेर के पीछे दूत भेजे। दूत
अब्बेर को सीराह के जल-कुण्ड के पास से
वापस ले आए। दाऊद को इस बात का पता
नहीं चला। [27]अब्नेर हेब्रोन नगर को लौटा।
योआब उससे एकान्त में बात करने के लिए
उसे फाटक की पौर में ले गया। वहां योआब
ने अपने भाई असाएल के रक्त का प्रतिशोध
लेने के लिए अब्नेर के पेट में वार किया। अब्नेर
तत्काल मर गया। [28]कुछ समय पश्चात् दाऊद
ने यह सुना। उसने कहा, ‘मैं और मेरा राज्य
अब्नेर बेन-नेर की हत्या के लिए प्रभु की दृष्टि
में सदा निर्दोष रहेंगे। [29]इस हत्या का दोष
योआब और उसके समस्त पितृकुल के सिर पर
पड़े। योआब का पितृकुल स्राव रोग से मुक्त
न हो। उसके पितृकुल में कोढ़ी हों, बैसाखी के
सहारे चलनेवाले लंगड़े हों। उसके कुल के
पुरुष तलवार से मारे जाएं। उसका पितृकुल
रोटी के अभाव में भूखा मर जाए।’ [30]योआब
और उसके भाई अबीशय ने अब्नेर का वध
किया था; क्योंकि अब्नेर ने उनके भाई
असाएल को गिबओन के युद्ध में मार डाला
था।

31 राजा दाऊद ने योआब और उसके साथ
के सब सैनिकों को यह आदेश दिया, ‘मृत्यु-
शोक प्रकट करने के लिए अपने वस्त्र फाड़ो,
कमर में टाट के वस्त्र पहिनो, और अब्नेर के
शव के सम्मुक शोक मनाओ।’ दाऊद अर्थी के
पीछे-पीछे गया। [32]उन्होंने अब्नेर को हेब्रोन
नगर में दफनाया। राजा दाऊद अब्नेर की कबर
पर फूट-फूटकर रोया। सब लोग भी रोए।
[33]राजा दाऊद ने अब्नेर के लिए यह शोक-गीत
गाया :

‘क्या अब्नेर को मूर्ख के सदृश मरना था?
[34]ओ अब्नेर, तेरे हाथ नहीं बंधे थे,
न तेरे पैरों में बेड़ियां पड़ी थीं;
फिर भी तू धराशायी हो गया,
जैसे कोई व्यक्ति धोखेबाज मनुष्यों के
सम्मुख होता है!’

तब लोग उसके लिए फिर रोने लगे।

35 अभी दिन का समय था। लोग दाऊद को
भोजन कराने के लिए आए। परन्तु दाऊद ने यह
शपथ खाई, ‘यदि मैं सूर्यास्त के पहले भोजन
अथवा अन्य वस्तु खाऊं तो परमेश्वर मेरे साथ
अपनी इच्छा के अनुसार कठोर व्यवहार करे।’
[36]सब लोगों ने इस बात पर ध्यान दिया। उन्हें
यह बात पसन्द आई। जो कुछ राजा दाऊद ने
किया, वह सब लोगों को भला लगा। [37]उस
दिन सब लोगों को, समस्त इस्राएलियों को
ज्ञात हुआ कि अब्नेर बेन-नेर की हत्या में राजा
का हाथ नहीं है।

38 राजा दाऊद ने अपने दरबारियों से कहा,

---

* मूल में, “उसने उसे विदा किया और वह सकुशल चला गया”

3 : 27 2 शम 20 : 10 **3 : 30** 2 शम 2 : 23

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'तुम जानते हो कि आज इस्राएली राष्ट्र में एक
सामन्त, एक महापुरुष मर गया। 39यद्यपि मैं
अभिषिक्त राजा हूँ, तो भी आज मैं कमजोर हूँ।
ये लोग, सरूयाह के पुत्र कठोर हैं। ये मेरे वश
के बाहर हैं। प्रभु ही बुराई करनेवाले को उसकी
बुराई के अनुसार बदला दे!'

ईशबोशेत की हत्या

4 जब शाऊल के पुत्र ईशबोशेत ने सुना कि
हेब्रोन नगर में अब्नेर मर गया, तब उसके
हाथ-पैर ढीले पड़ गए। समस्त इस्राएल प्रदेश
आतंकित हो गया। 2ईशबोशेत के पास दो
सैनिक थे जो छापामार दल के नेता थे। एक का
नाम बानाह और दूसरे का नाम रेकाब था। वे
बेरोत नगर के रहने वाले बिन्यामिन कुल के
रिम्मोन नामक व्यक्ति के पुत्र थे। बेरोत की
गणना बिन्यामिन कुल के क्षेत्र में की जाती है।
3बेरोत नगर के निवासी गित्तइम नगर को भाग
गए थे। वे वहां आज भी प्रवासी के रूप में
निवास करते हैं।

4 शाऊल के पुत्र योनातन का एक पुत्र था।
वह दोनों पैरों से लगड़ा हो गया था। जब
यिज्रएल नगर से शाऊल और योनातन की मृत्यु
का समाचार आया, तब वह पांच वर्ष का था।
उसकी धाय ने उसे उठाया, और वह भागी।
परन्तु धाय के उतावली से भागने के कारण
बालक भूमि पर गिर गया, और उसके पैर टूट
गए। उसका नाम मफीबोशेत था।

5 एक दिन बेरोत नगर निवासी रिम्मोन के
दोनों पुत्रों, रेकाब और बानाह, ने प्रस्थान
किया। वे तेज धूप के समय ईशबोशेत के महल
में आए। वह दोपहर को आराम कर रहा था।
6द्वार-रक्षिका गेहूं बीन रही थी। वह ऊंघने
लगी, और तब सो गई। रेकाब और उसका भाई
बानाह चुपचाप भीतर घुस गए।* 7वे महल के
भीतर आए। ईशबोशेत अपने शयन-कक्ष में
पलंग पर सो रहा था। उन्होंने उस पर प्रहार
किया, और उसे मार डाला। उन्होंने उसका सिर
काट लिया। वे उसका सिर लेकर चले गए। वे
अराबाह के मार्ग पर रात भर चलते रहे। 8वे हेब्रोन
नगर में दाऊद के पास ईशबोशेत का सिर ले
गए। उन्होंने राजा दाऊद से यह कहा, 'महाराज,
आपके प्राण की ताक में रहनेवाले, आपके शत्रु
शाऊल के पुत्र ईशबोशेत का सिर प्रस्तुत है।
आज हमारे स्वामी, महाराज के लिए प्रभु ने
शाऊल और उसके वंश से बदला ले लिया।'
9दाऊद ने बेरोत-वासी रिम्मोन के पुत्रों रेकाब
और उसके भाई बानाह को यह उत्तर दिया, 'मेरे
प्राण को सब विपत्तियों से मुक्त करनेवाले
जीवन्त प्रभु की सौगन्ध! 10मुझे किसी ने बताया,
"महाराज शाऊल मर गए!" वह सोचता था
कि उसने मुझे शुभ सन्देश सुनाया है। परन्तु मैंने
उसको पकड़ा और सिक्लग नगर में उसका
वध कर दिया। मैंने उसके शुभ सन्देश का
उसको यह "पुरस्कार" दिया। 11अब यदि डाकू
किसी धार्मिक व्यक्ति की उसके घर में, उसके
पलंग पर हत्या कर दें, तो मैं उनको कितना
अधिक "पुरस्कार" दूंगा! क्या मैं उस धार्मिक
व्यक्ति के रक्त का प्रतिशोध तुमसे नहीं लूंगा?
क्या मैं तुम्हें धरती से मिटा नहीं डालूंगा?'
12अतः दाऊद ने सैनिकों को आदेश दिया, और
उन्होंने रेकाब और बानाह का वध कर दिया।
उनके हाथ-पैर काट डाले और उनके शव
हेब्रोन के जल-कुण्ड के पास लटका दिए।
उन्होंने ईशबोशेत के सिर को उठाया, और
उसको हेब्रोन नगर में अब्नेर की कबर में गाड़
दिया।

इस्राएल देश का राजा दाऊद

5 तब इस्राएल के सब कुलों के लोग हेब्रोन
नगर में दाऊद के पास आए। उन्होंने कहा,
'सुनिए, हम आप की ही हड्डी और मांस हैं!
2पहले भी, जब शाऊल हमारे राजा थे, आप ही
इस्राएली सेना को युद्ध में ले जाने और वापस
लाने में उसका नेतृत्व करते थे। प्रभु ने आप से
कहा है, "तू मेरे निज लोग, इस्राएलियों का
मेषपाल होगा। तू ही इस्राएली राष्ट्र का अगुआ
होगा।"' 3अतः इस्राएली कुलों के सब धर्मवृद्ध

* मूल में सम्पूर्ण पद 6 अस्पष्ट।

3 : 39 भज 28 : 4 4 : 4 2 शम 9 : 3 4 : 10 2 शम 1 : 2 5 : 1 उत 29 : 14 5 : 2 1 शम 16 : 1; 18 : 13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हेब्रोन नगर में राजा दाऊद के पास आए। राजा दाऊद ने उनके साथ हेब्रोन नगर में प्रभु के सम्मुख सन्धि की। उन्होंने दाऊद को इस्राएली प्रदेश का भी राजा बनाने के लिए उसका अभिषेक किया। [4]जब दाऊद ने राज्य करना आरम्भ किया तब वह तीस वर्ष का था। उसने चालीस वर्ष तक राज्य किया। [5]उसने हेब्रोन नगर में यहूदा प्रदेश पर साढ़े सात वर्ष तथा यरूशलेम नगर में समस्त इस्राएल प्रदेश तथा यहूदा प्रदेश पर तैंतीस वर्ष तक राज्य किया।

सियोन पर अधिकार करना

6 राजा दाऊद ने अपने सैनिकों के साथ यबूसी जाति के विरुद्ध यरूशलेम नगर पर आक्रमण कर दिया। यबूसी यरूशलेम नगर के मूल निवासी थे। उन्होंने दाऊद से एक बार कहा था, 'तुम यहां प्रवेश नहीं कर सकते। हमारे अन्धे और लंगड़े व्यक्ति भी तुम्हें प्रवेश नहीं करने देंगे।' वे यह सोचते थे, 'दाऊद यहां कभी प्रवेश नहीं कर सकेगा।' [7]किन्तु दाऊद ने सियोन गढ़ पर अधिकार कर लिया। वह आज दाऊदपुर* कहलाता है। [8]उस दिन दाऊद ने यह कहा, 'जो व्यक्ति यबूसियों पर आक्रमण करेगा, वह पानी की सुरंग के मार्ग से गढ़ पर चढ़ेगा।** दाऊद इन लंगड़ों और अंधों से हृदय से घृणा करता है!'+ इसलिए यह कहावत प्रचलित है: 'अन्धे और लंगड़े व्यक्ति मन्दिर में प्रवेश नहीं कर सकते।' [9]दाऊद सियोन गढ़ में रहने लगा। उसने उसका नाम दाऊदपुर रखा। उसने उसके चारों ओर एक परकोटा बनाया++, जो मिल्लो से भीतर की ओर गया था। [10]दाऊद क्रमशः महान् होता गया। स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु परमेश्वर उसके साथ था।

राजा दाऊद को मान्यता प्राप्त होना

11 सोर देश के राजा हीराम ने दाऊद के पास दूत, तथा देवदार की लकड़ी, बढ़ई और राजमिस्त्री भेजे। उन्होंने दाऊद के लिए एक महल बनाया। [12]तब दाऊद को ज्ञात हुआ कि प्रभु ने उसे इस्राएल देश पर राजा के रूप में सुदृढ़ कर दिया है, और अपने निज लोग इस्राएलियों के हितार्थ उसके राज्य को उन्नत किया है।

दाऊद के अन्य पुत्र-पुत्रियां

13 हेब्रोन नगर से आने के पश्चात् दाऊद ने यरूशलेम नगर में अनेक स्त्रियों को अपनी पत्नी तथा रखेल बनाया, जिनसे अन्य पुत्र और पुत्रियां उत्पन्न हुईं। [14]जो पुत्र-पुत्रियां यरूशलेम में उत्पन्न हुए थे, उनके ये नाम हैं : शम्मूअ, शोबाब, नातान, सुलेमान, [15]यिभहार, एलीशूअ, नेपेग, यापीअ, [16]एलीशामा, एल्यादा और एलीपेलेट।

पलिश्तियों की पराजय

17 जब पलिश्ती सेना ने यह सुना कि सम्पूर्ण इस्राएल देश पर राजा के रूप में दाऊद का अभिषेक किया गया है, तब वे दाऊद की खोज में निकले। दाऊद ने यह सुना। वह गढ़ के भीतर चला गया। [18]पलिश्ती सैनिक आए। वे रपाईम घाटी में फैल गए। [19]दाऊद ने प्रभु से पूछा, 'क्या मैं पलिश्तियों पर आक्रमण करूं? क्या तू उन्हें मेरे हाथ में सौंप देगा?' प्रभु ने दाऊद से कहा, 'आक्रमण कर। मैं निश्चय ही पलिश्तियों को तेरे हाथ में सौंप दूंगा।' [20]अतः दाऊद बअल-परासीम में आया। वहां उसने पलिश्तियों को पराजित कर दिया। तब दाऊद ने यह कहा, 'जैसे जल बांध को तोड़ देता है, वैसे ही प्रभु ने मेरे सम्मुख मेरे शत्रुओं की व्यूह-रचना तोड़ दी।' इस कारण उस स्थान का नाम 'बअल-परासीम'** पड़ गया। [21]पलिश्ती सैनिक अपने देवताओं की मूर्तियां वहीं छोड़ कर भाग गए। अतः दाऊद और उसके सैनिक उनको उठाकर ले आए।

22 पलिश्ती सेना ने पुनः आक्रमण किया। सैनिक रपाईम घाटी में फैल गए। [23]दाऊद ने प्रभु से पूछा। प्रभु ने उससे कहा, 'तू सामने से आक्रमण मत करना; बल्कि उनके पीछे से उन्हें

* अथवा, 'दाऊद-नगर' ** मूल में अस्पष्ट + अथवा 'इन लंगड़ों और अंधों पर चढ़ेगा, जो दाऊद से घृणा करते'। ++ अथवा, 'नगर बनवाया'। ** 'तोड़नेवाला स्वामी'

5 : 3 1 इति 11 : 3 **5 : 5** 1 इति 3 : 4 **5 : 6** शास 1 : 21; यहो 15 : 63 **5 : 8** 1 इति 11 : 6; लेव 21 : 18
5 : 11 1 इति 14 : 1 **5 : 14-25** 1 इति 14 : 3-16

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

घेरना, और मोखा वृक्षों के सामने से उन पर
हमला करना। [24]जब तू मोखा वृक्षों के शिखरों
पर पग-ध्वनि सुनेगा, तब तू अविलम्ब आगे
बढ़ना; क्योंकि उस समय प्रभु पलिश्ती सैन्य-
दल का संहार करने के लिए तेरे आगे-आगे
जाएगा।' [25]जैसा प्रभु ने दाऊद को आदेश दिया
था, उसने वैसा ही किया। उसने गिब्बोन नगर
से गेजेर नगर तक पलिश्तियों का संहार किया।

मंजूषा की वापसी

6 दाऊद ने इस्राएली राष्ट्र के तीस हजार
सैनिक फिर एकत्र किए। [2]वह अपने सब
सैनिकों के साथ यहूदा प्रदेश के बालाह नगर
को गया कि वे वहां से परमेश्वर की मंजूषा
लाएं। उसको 'करूबों पर विराजने वाले
स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु की मंजूषा' के नाम से
पुकारा जाता है। [3]उन्होंने परमेश्वर की मंजूषा
को एक नई गाड़ी पर चढ़ाया और अबीनादब
के घर से बाहर निकाला। उसका घर एक
पहाड़ी टीले पर था। अबीनादब के पुत्र ऊज्जाह
और अह्यो नई गाड़ी को हांक रहे थे। [4]ऊज्जाह
परमेश्वर की मंजूषा की बगल में और अह्यो
उसके आगे चल रहा था।+ [5]दाऊद और इस्राएल
के सब कुलों के लोग प्रभु के सम्मुख वीणा,
सारंगी, डफ, डमरू और झांझ की ताल पर पूरे
उत्साह से नाच-गा रहे थे।

6 जब वे नाकोन नामक किसान के खलियान
पर पहुंचे, तब बैलों को ठोकर लगी। अत:
ऊज्जाह ने परमेश्वर की मंजूषा की ओर अपना
हाथ बढ़ाया, और उसको पकड़ लिया। [7]ऊज्जाह
के प्रति प्रभु का क्रोध भड़क उठा। परमेश्वर ने
उसकी इस असावधानी के कारण++ वहीं उस
पर प्रहार किया, और वह परमेश्वर की मंजूषा
के पास ही मर गया। [8]दाऊद को क्रोध आया;
क्योंकि प्रभु इस प्रकार ऊज्जाह पर टूट पड़ा था।
इस कारण उस स्थान को आज भी पेरस-
ऊज्जाह* कहा जाता है। [9]उस दिन दाऊद प्रभु
से डर गया। उसने कहा, 'प्रभु की मंजूषा कैसे
मेरे पास आ सकती है?' [10]अत: उसने निश्चय
किया कि वह प्रभु की मंजूषा को दाऊदपुर में
नहीं ले जाएगा। वह उसको गत नगर के
निवासी ओबेद-एदोम के घर में ले गया।

[11]प्रभु की मंजूषा गत नगर के निवासी
ओबेद-एदोम के घर में तीन महीने तक रही।
प्रभु ने ओबेद-एदोम तथा उसके समस्त
परिवार को आशिष दी। [12]किसी ने यह बात
राजा दाऊद को बताई, 'प्रभु परमेश्वर ने अपनी
मंजूषा के कारण ओबेद-एदोम के परिवार,
तथा उसके पास जो कुछ है, उस पर आशिष
की है।' अत: दाऊद गया। वह आनन्द के साथ
परमेश्वर की मंजूषा ओबेद-एदोम के घर से
दाऊदपुर में ले आया। [13]जब प्रभु की मंजूषा
उठाने वाले छ: कदम आगे चल चुके, तब
दाऊद ने एक बैल और मोटी भेड़ की बलि
चढ़ाई। [14]दाऊद ने प्रभु के सम्मुख पूरे उत्साह
से नृत्य किया। वह कमर में सूती लुंगी** पहिने
हुए था। [15]इस प्रकार दाऊद और इस्राएल के
सब कुलों के लोग जय-जयकार करते और
नरसिंघा फूंकते हुए प्रभु की मंजूषा ले आए।

16 जब प्रभु की मंजूषा ने दाऊदपुर में प्रवेश
किया, तब शाऊल की पुत्री मीकल ने खिड़की
से झांका। उसने देखा कि राजा दाऊद प्रभु के
सम्मुख उछल-कूद रहा है, नाच रहा है। उसने
अपने हृदय में दाऊद का तिरस्कार किया। [17]वे
प्रभु की मंजूषा को भीतर लाए। दाऊद ने उसके
लिए एक तम्बू गाड़ा था। उन्होंने उसको तम्बू
के भीतर उसके निर्धारित स्थान पर प्रतिष्ठित
कर दिया। दाऊद ने प्रभु के सम्मुख अग्नि-
बलि और सहभागिता-बलि अर्पित की। [18]जब
वह अग्नि-बलि और सहभागिता-बलि चढ़ा
चुका, तब उसने स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु के
नाम से लोगों को आशिष दी। [19]उसने सब लोगों
को, इस्राएली समाज के हर पुरुष और स्त्री को

+ पद 3-4 यूनानी पाठानुवाद के अनुसार। ++ पाठभेद, 'क्योंकि उसने मंजूषा की ओर हाथ बढ़ाया'। * अर्थात् ''ऊज्जाह पर टूट पड़ना'' ** मूल में, ''एपोद''

5 : 24 2 रा 7 : 6 **6 : 2** 1 इति 13 : 5; उत 25 : 21; भज 132 **6 : 3** 1 शम 7 : 1-2 **6 : 5** भज 150 **6 : 7** 1 शम 6 : 19; गण 4 : 15 **6 : 9** लू 1 : 43; 5 : 8 **6 : 11** 1 इति 26 : 4-5; लू 1 : 56 **6 : 12-19** 1 इति 15 : 1-16 : 3 **6 : 14** भज 30 : 11; 1 शम 2 : 18 **6 : 17** 1 रा 8 : 5 **6 : 19-20** 1 इति 16 : 43

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

एक रोटी, खजूर और किशमिश की रोटी बांटी। तब सब लोग अपने-अपने घर चले गए।

20 दाऊद अपने परिवार को आशिष देने के लिए महल को लौटा। शाऊल की पुत्री मीकल उससे भेंट करने के लिए महल से बाहर निकली। उसने कहा, 'आज इस्राएल देश के महाराज ने स्वयं को कितना सम्मानित किया! जैसे गंवार व्यक्ति निर्लज्ज होकर अपने को नंगा करता है, वैसे ही आपने अपने सेवकों की दासियों के सामने स्वयं को नंगा किया!' 21दाऊद ने मीकल से कहा, 'मैं लोगों के लिए नहीं, वरन् प्रभु के लिए नाच रहा था। जीवन्त प्रभु की सौगन्ध! मैं प्रभु के सम्मुख पुनः नाचूंगा, जिसने तुम्हारे पिता और उसके राज-परिवार के व्यक्तियों की अपेक्षा मुझे चुना और अपने निज लोगों पर, इस्राएल देश का अगुआ नियुक्त किया है। 22मैं प्रभु के लिए इससे अधिक निम्न आचरण करूंगा। मैं तुम्हारी+ दृष्टि में भले ही नीच ठहरूं; किन्तु जिन दासियों का तुमने उल्लेख किया है, वे मेरा सम्मान करेंगी।' 23अतः शाऊल की पुत्री मीकल को मृत्यु के दिन तक सन्तान नहीं हुई!

प्रभु का दाऊद के लिए राजवंश स्थापित करना

7 राजा दाऊद अपने महल में रहने लगा। प्रभु ने उसके चारों ओर के शत्रुओं से उसे शान्ति प्रदान की। 2एक दिन राजा दाऊद ने नबी नातान से यह कहा, 'देखिए, मैं तो देवदार के महल में रहता हूं, परन्तु परमेश्वर की मंजूषा तम्बू के भीतर पड़ी है।' 3नातान ने राजा से कहा, 'जाइए; जो कुछ आपके हृदय में है, उसको आप कर डालिए; क्योंकि प्रभु आपके साथ है।'

4 उसी रात को प्रभु का यह सन्देश नातान को सुनाई दिया: 5'जा, और मेरे सेवक दाऊद से यह कह, "प्रभु यों कहता है : क्या तू मेरे निवास के लिए भवन बनाएगा? 6जिस दिन मैंने इस्राएली समाज को मिस्र देश से बाहर निकाला, उस दिन से आज तक मैं भवन में नहीं रहा। मैं तम्बू और शिविरों में यात्रा करता रहा। 7जहां-जहां मैंने इस्राएली समाज के साथ यात्रा की, क्या मैंने इस्राएलियों के शासकों से, जिन्हें मैंने ही अपने निज लोग, इस्राएलियों की देख-भाल के लिए++ नियुक्त किया था, कभी यह कहा था 'तुमने मेरे लिए देवदार का भवन क्यों नहीं बनाया?' " 8अतः अब तू मेरे सेवक दाऊद से यों कहना : "स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु यों कहता है : मैंने तुझे चरागाह से निकाला। भेड़-बकरियों के पीछे जाने से रोका कि तुझे अपने निज लोग इस्राएलियों का अगुआ बनाऊं। 9जहां-जहां तू गया, मैं तेरे साथ रहा। मैंने तेरे शत्रुओं को नष्ट किया। अब मैं तेरे नाम को पृथ्वी के महान् नामों के सदृश महान् करूंगा। 10मैं अपने निज लोग इस्राएलियों के लिए एक स्थान निर्धारित करूंगा। मैं उन्हें वहां बसाऊंगा जिससे वे अपने स्थान में निवास करेंगे, और उन्हें फिर नहीं सताया जाएगा। दुर्जन उन्हें फिर दुःख नहीं देंगे, जैसे वे पहले करते थे, 11जब मैंने अपने निज लोग, इस्राएलियों के लिए शासक नियुक्त किए थे। मैं तेरे सब शत्रुओं से तुझे शान्ति प्रदान करूंगा। इसके अतिरिक्त मैं-प्रभु तुझ पर यह बात प्रकट करता हूं : मैं-प्रभु तुझे 'भवन'* बनाऊंगा। 12जब तेरी आयु पूरी हो जाएगी, और तू अपने मृत पूर्वजों के साथ सो जाएगा, तब मैं तेरे पश्चात् तेरे वंश को, तेरी देह के फल को उत्तराधिकारी नियुक्त करूंगा, और उसके राज्य को सुदृढ़ बनाऊंगा। 13वह मेरे नाम के निवास के लिए भवन बनाएगा। मैं उसके राज्य-सिंहासन को सदा-सर्वदा के लिए सुदृढ़ कर दूंगा। 14मैं उसका पिता होऊंगा, और वह मेरा पुत्र होगा। यदि वह अधर्म करेगा तो मैं मनुष्यों के समान उसे छड़ी

+ मूल में, 'अपनी'। ++ शब्दशः 'चराने के लिए'। * मूल श्लेष शब्द के दो अर्थ हैं : भवन और राजवंश।

7 : 1-29 1 इति 17 : 1-27 **7 : 1** व्य 12 : 10; प्रे 7 : 46 **7 : 6** 1 रा 8 : 16, 27 ; यश 66 : 1 **7 : 8** भज 78 : 70-72; 1 शम 16 : 11; यहेज 34 : 23 **7 : 9** उत 12 : 2 **7 : 10** भज 80 : 8 **7 : 12** 1 रा 8 : 18-20; प्रे 2 : 30; 13 : 36; भज 132 : 11; यश 11 : 1; मी 5 : 2 **7 : 13** 1 रा 5 : 5 **7 : 14** इब्रा 1 : 5; 1 इति 22 : 10; भज 2 : 7; 89 : 28-37; 2 कुर 6 : 18

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

से दण्ड दूंगा, आदमियों के सदृश उसे कोड़े से
मारूंगा। 15परन्तु जैसे मैंने तेरे पूर्ववर्ती राजा
शाऊल के प्रति करुणा करना छोड़ दिया था,
वैसे मैं उसके प्रति नहीं करूंगा। 16तेरा वंश और
तेरा राज्य मेरे सम्मुख सदा स्थिर रहेंगे। तेरा
सिंहासन सर्वदा अटल रहेगा।" ' 17नातान ने
ये बातें तथा यह दर्शन दाऊद को बताया।

18 तब राजा दाऊद तम्बू के भीतर गया और
प्रभु के सम्मुख बैठ गया। उसने यह प्रार्थना की,
'हे प्रभु, हे स्वामी! मैं क्या हूं और मेरे वंश का
महत्व क्या है, कि तूने मुझे इतना ऊँचा उठाया?
19फिर भी यह तेरी दृष्टि में कितनी छोटी बात
है। हे प्रभु, हे स्वामी! तूने अपने सेवक के वंश
को सुदूर भविष्य के लिए भी वचन दिया। काश
यह मनुष्यों के लिए शिक्षा का कारण बने!* हे
प्रभु,हे स्वामी! 20दाऊद तुझसे और क्या कह
सकता है? तू अपने सेवक को जानता है। हे
प्रभु, हे स्वामी! 21अपने वचन के कारण, और
अपने हृदय के अनुरूप, तूने अपने सेवक को
यह बताया,और यह महाकार्य किया। 22इसलिए
हे प्रभु, हे स्वामी, तू महान् है! तेरे समान और
कोई ईश्वर नहीं है। तेरे अतिरिक्त और कोई
परमेश्वर नहीं है। यह हमने स्वयं अपने कानों
से सुना है। 23तेरे निज लोग, इस्राएली राष्ट्र के
समान पृथ्वी पर और कौन राष्ट्र है? हे
परमेश्वर, तू स्वयं उनको मुक्त करने के लिए
गया था। तूने स्वयं एक नाम धारण किया था।
तूने उनके हितार्थ महान् और आतंकपूर्ण कार्य
किए थे। तूने अपने निज लोगों के सम्मुख से,
जिन्हें तूने अपने लिए मिस्र देश से मुक्त किया
था,अनेक राष्ट्रों और उनके देवताओं को
भगाया था। 24तूने अपने लोग इस्राएलियों को
स्थापित किया कि वे युगानुयुग तेरे ही निज
लोग बने रहें। हे प्रभु, तू उनका परमेश्वर बन
गया। 25अब हे प्रभु परमेश्वर, जो वचन तूने
अपने सेवक और उसके वंश के विषय में कहा
है, उसको सदा पूरा करता रह। अपने वचन के
अनुसार कार्य कर। 26अतः लोग तेरे नाम का
गुणगान करेंगे। वे यह कहेंगे, "स्वर्गिक सेनाओं
का प्रभु ही इस्राएलियों का परमेश्वर है।" तब
तेरे सेवक दाऊद का वंश तेरे सम्मुख बना
रहेगा। 27हे स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु, हे इस्राएल
के परमेश्वर, तूने अपने सेवक दाऊद के कानों
में यह बात प्रकट की है, "मैं तुझे स्वयं
'भवन' बनाऊंगा!" अतः तेरे सेवक को साहस
प्राप्त हुआ, और उसने तुझ से यह प्रार्थना
की। 28प्रभु, हे स्वामी, तू ही परमेश्वर है। तेरे
वचन सत्य हैं। तूने अपने सेवक के साथ यह
भलाई करने की प्रतिज्ञा की है। 29इसलिए अब
तू प्रसन्न हो और अपने सेवक के परिवार को
आशिष दे, जिससे वह तेरे सम्मुख सदा बना
रहे। हे प्रभु, हे स्वामी, तूने यही वचन दिया है।
तेरी आशिष से तेरे सेवक का वंश सदा,
आशिषमय रहेगा।'

दाऊद का राज्य-विस्तार

8 इसके पश्चात् दाऊद ने पलिश्तियों को
पराजित किया और उन्हें अपने अधीन कर
लिया। उसने पलिश्तियों के हाथ से मेतग-
अम्माह नगर को छीन लिया। 2दाऊद ने मोआब
राज्य को भी पराजित किया। उसने बन्दी
सैनिकों को भूमि पर लिटाया। सैनिकों को
डोरी से नापा। दो डोरी सैनिक मार डाले,और
उनके बाद एक डोरी सैनिक छोड़ दिए। इस
प्रकार मोआबी लोग दाऊद के अधीन हो गए।
वे दाऊद को कर देने लगे।

3 जब रहोब का पुत्र और सोबाह राज्य का
राजा हदद-एजेर फरात नदी के समीप अपना
राज्य-विस्तार+ करने गया, तब दाऊद ने उसे
पराजित कर दिया। 4दाऊद ने उससे सत्रह सौ
घुड़सवार,और बीस हजार पैदल सैनिक छीन
लिये। उसने रथ के सब घोड़ों के घुटने के पीछे
की नस काटकर उन्हें पंगु बना दिया। परन्तु
अपने सौ रथों के लिए घोड़े बचा लिये।
5दमिश्क की सीरियाई सेना सोबाह के राजा

---

* मूल में अस्पष्ट + अथवा, "अपना विजय-स्तम्भ पुनःस्थापित"।

7 : 15 1 शम 13 : 13-14 **7 : 16** लू 1 : 32-33; 2 शम 23 : 5 **7 : 23** व्य 4 : 7 , 35 **7 : 24** व्य 26 : 18
7 : 28 यो 17 : 17 **8 : 1-14** 1 इति 18 : 1-13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हदद-एजेर की सहायता के लिए आई। दाऊद
ने उसके बाईस हजार सैनिकों का संहार कर
दिया। 6उसने दमिश्क के अराम नगर में अपने
प्रशासक नियुक्त किए। यों सीरिया देश के लोग
दाऊद के अधीन हो गए। वे दाऊद को कर देने
लगे। जहां-जहां दाऊद गया, प्रभु ने उसे विजय
प्रदान की। 7जो सोने की ढालें हदद-एजेर के
सेवक उठाकर ले गए थे, उनको दाऊद ने छीन
लिया, और यरूशलेम ले गया। 8राजा दाऊद
हदद-एजेर के बेटह और बेरोतइ नगरों से प्रचुर
मात्रा में कांस्य धातु छीनकर ले गया।

9 हमात राज्य के राजा तोई ने यह सुना कि
दाऊद ने हदद-एजेर की समस्त सेना को
पराजित कर दिया। 10अत: तोई ने अपने पुत्र
योराम को राजा दाऊद के पास उसका कुशल-
क्षेम पूछने और उसे बधाई देने के लिए भेजा;
क्योंकि दाऊद ने हदद-एजेर से युद्ध कर उसे
पराजित किया था। हदद-एजेर की तोई से
शत्रुता थी। योराम अपने साथ सोना, चांदी और
पीतल के पात्र लाया। 11राजा दाऊद ने इन पात्रों
को भी प्रभु को अर्पित कर दिया। जिन राष्ट्रों
को उसने अपने अधीन किया था, उनकी
सोना-चांदी को भी उसने प्रभु को अर्पित कर
दिया। 12उसने एदोमी, मोआबी, अम्मोनी,
पलिश्ती और अमालेकी राष्ट्र से तथा रहोब के
पुत्र और सोबाह के राजा हदद-एजेर की लूट
में से सोना, चांदी और पीतल छीना, और प्रभु
को अर्पित किया।

13 उसने लवण घाटी में अठारह हजार
एदोमी सैनिकों का संहार किया। इस प्रकार
दाऊद ने ख्याति अर्जित की। 14उसने समस्त
एदोम राज्य की सीमा में प्रशासक नियुक्त
किए। तत्पश्चात् वह लौट गया। सब एदोमी
लोग दाऊद के अधीन हो गए। जहां-जहां
दाऊद गया, प्रभु ने उसे विजय प्रदान की।

दाऊद के उच्च पदाधिकारी

15 यों दाऊद समस्त इस्राएल देश पर राज्य
करने लगा। वह जनता पर न्याय और धार्मिकता
से शासन करता था। 16सरूयाह का पुत्र योआब
सेनापति था। अहीलूद का पुत्र यहोशाफट
राज-सचिव था। 17सादोक और एबयातर
पुरोहित थे। (एबयातर अहीमेलक का पुत्र
और अहीटूब का पौत्र था*)। सरायाह महा-
सहायक था। 18यहोयादा का पुत्र बनायाह
दाऊद के अंगरक्षकों का नायक था। ये
अंगरक्षक करेत और पलेत नगरों के निवासी
थे। दाऊद के पुत्र पुरोहित थे।

मपीबोशेत पर दाऊद की करुणा

9 एक दिन दाऊद ने पूछा, 'क्या शाऊल के
परिवार में अब तक कोई जीवित है? मैं
योनातन के कारण उससे प्रेमपूर्ण व्यवहार
करना चाहता हूं।' 2शाऊल के परिवार में एक
सेवक था। उसका नाम सीबा था। दाऊद के
सेवकों ने उसे दाऊद के पास बुलाया। राजा
दाऊद ने उससे पूछा, 'क्या तुम सीबा हो?'
उसने कहा, 'हां, महाराज, मैं आपका सेवक
सीबा हूं।' 3राजा दाऊद ने फिर पूछा, 'क्या
शाऊल के परिवार में अब तक कोई बचा है?
मैं उस पर परमेश्वर की करुणा प्रकट करना
चाहता हूँ।' सीबा ने राजा से कहा, 'राजकुमार
योनातन का एक पुत्र अब तक जीवित है। वह
दोनों पैर से लंगड़ा है।' 4राजा ने उससे पूछा,
'वह कहां है?' सीबा ने राजा से कहा, 'वह
माकीर बेन-अम्मीएल के घर में लो-दबार
नगर में है।' 5अत: राजा दाऊद ने दूत को भेजा।
दूत योनातन के पुत्र को माकीर के घर से लो-
दबार नगर से ले आया।

6 शाऊल का पौत्र और योनातन का पुत्र
मपीबोशेत दाऊद के पास आया। उसने मुंह के
बल गिर कर दाऊद का अभिवादन किया।
दाऊद ने कहा, 'मपीबोशेत!' वह बोला,
'महाराज, आपका सेवक प्रस्तुत है।' 7दाऊद
ने उससे कहा, 'मत डरो। मैं तुम्हारे पिता
योनातन के कारण तुम्हारे साथ प्रेमपूर्ण व्यवहार

* मूल में, "सादोक अहीटूब का पुत्र था"।

8 : 13 2 रा 14 : 7; भज 60 **8 : 15-18** 2 शम 20 : 23-26; 1 इति 18 : 14-17 **9 : 1** 1 शम 20 : 14; 2 शम 21 : 1-14 **9 : 2** 2 शम 16 : 1; 19 : 17 **9 : 3** मत 5 : 44-45; 2 शम 4 : 4 **9 : 4** 2 शम 17 : 27

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

करना चाहता हूं। मैं तुम्हारे दादा शाऊल की
समस्त भूमि तुम्हें लौटा दूंगा। अब तुम मेरे साथ
सदा भोजन करोगे।' 8मपीबोशेत ने पुन:
अभिवादन किया। उसने कहा, 'महाराज,
आपके सेवक का क्या महत्व है कि आप मुझ
जैसे मरे कुत्ते की ओर ध्यान दें?'

9 तब दाऊद ने शाऊल के सेवक सीबा को
बुलाया। उसने सीबा से कहा, 'जो कुछ शाऊल
और उसके परिवार की सम्पत्ति है, वह सब मैं
तुम्हारे स्वामी के पौत्र मपीबोशेत को प्रदान
करता हूं। 10तुम, तुम्हारे पुत्र और तुम्हारे सेवक
उसके लिए भूमि को जोतेंगे, और भूमि की
उपज उसके पास लाएंगे, जिससे तुम्हारे स्वामी
के पौत्र के परिवार को भोजन प्राप्त हो। परन्तु
तुम्हारे स्वामी का पौत्र मपीबोशेत मेरे साथ सदा
भोजन करेगा।' सीबा के पन्द्रह पुत्र और बीस
सेवक थे। 11सीबा ने राजा दाऊद से कहा, 'जो
आदेश महाराज ने अपने सेवक को दिए हैं, वह
उनके अनुसार कार्य करेगा।' इस प्रकार
मपीबोशेत दाऊद के राजकुमारों के सदृश
उसके साथ भोजन करने लगा। 12मपीबोशेत का
एक छोटा पुत्र था। उसका नाम मीका था। सीबा
के घर में रहने वाले सब व्यक्ति मपीबोशेत के
सेवक बन गए। 13मपीबोशेत यरूशलेम नगर
में रहने लगा; क्योंकि वह राजा के साथ सदा
भोजन करता था। वह दोनों पैर से लंगड़ा था।

अम्मोन और सीरिया राज्यों की पराजय

10 इस घटना के पश्चात् अम्मोनी जाति के
राजा नाहश की मृत्यु हो गई। उसके
स्थान पर उसका पुत्र हानून राज्य करने लगा।
2दाऊद ने यह सोचा, 'जैसे हानून के पिता ने
मुझसे प्रेमपूर्ण व्यवहार किया था, वैसे ही मैं
उसके साथ करूंगा।' अत: दाऊद ने उसके
पिता की मृत्यु के विषय में अपने दरबारियों के
हाथ संवेदना-सन्देश भेजा। दाऊद के दरबारी
अम्मोन देश में आए। 3अम्मोनियों के सामन्तों
ने अपने स्वामी हानून से यह कहा, 'दाऊद ने
आपके पास संवेदना प्रकट करने वाले भेजे।
इस कारण क्या आप यह सोचते हैं कि वह
आपके पिता के प्रति सम्मान प्रकट कर रहा है?
कदापि नहीं। उसने नगर की खोज-बीन करने,
उसका भेद लेने और नगर को उलट-पुलट
करने के लिए आपके पास अपने सेवक भेजे
हैं।' 4अत: हानून ने दाऊद के दरबारियों को
पकड़ा। प्रत्येक दरबारी की आधी दाढ़ी मूंड़
दी। उनके वस्त्र नितम्ब तक आधे काट दिए।
तत्पश्चात् उन्हें भेज दिया। 5दाऊद को यह
समाचार मिला। उसने दरबारियों से भेंट करने
के लिए दूत भेजे; क्योंकि वे अत्यन्त लज्जित
थे। राजा दाऊद ने कहा, 'जब तक तुम्हारी दाढ़ी
फिर न बढ़ जाए, तब तक तुम यरीहो नगर में
ठहरे रहो। उसके बाद आना।'

6 अम्मोनियों ने देखा कि उन्होंने दाऊद की
शत्रुता मोल ले ली है। अत: उन्होंने दूत भेजे
और बेत-रहोब और सोबाह राज्यों के बीस
हजार सीरियाई सैनिक, माकाह देश के राजा
तथा उसके एक हजार सैनिक और टोब राज्य
के बारह हजार सैनिक किराए पर बुला लिये।
7दाऊद ने यह सुना। उसने सेना और योद्धाओं
के साथ सेनापति योआब को भेजा। 8अम्मोनी
सैनिक नगर के बाहर निकले। उन्होंने नगर के
प्रवेश-द्वार पर युद्ध की व्यूह-रचना की।
सोबाह और रहोब राज्यों के सीरियाई सैनिक
तथा टोब और माकाह राज्यों के सैनिक नगर
के बाहर मैदान में थे।

9 योआब ने देखा कि उसे सामने और पीछे,
दोनों ओर से युद्ध करना होगा। अत: उसने
इस्राएली सेना के चुनिन्दे सैनिकों में से कुछ
सैनिक चुने। तत्पश्चात् योआब ने उन्हें सीरियाई
सेना का सामना करने के लिए नियुक्त किया।
10उसने शेष सैनिक अपने भाई अबीशय के
हाथ में सौंप दिए, और उन्हें अम्मोनी सैनिकों
का सामना करने के लिए नियुक्त कर दिया।
11उसने अबीशय से कहा, 'यदि सीरियाई
मुझसे अधिक शक्तिशाली सिद्ध होंगे तो तुम
मेरी सहायता करने के लिए आना। यदि
अम्मोनी सैनिक तुमसे अधिक शक्तिशाली
सिद्ध होंगे तो मैं आकर तुम्हारी सहायता

---

9 : 12 1 इति 8 : 34 10 : 1-19 1 इति 19 : 1-19 10 : 4 यश 20 : 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
करूंगा।[12]शक्तिशाली बनो! हम अपनी जनता और अपने परमेश्वर के नगरों के लिए युद्ध करें। प्रभु वही करे, जो उसकी दृष्टि में उचित है।'

13 योआब और उसके साथ के सैनिक सीरियाई सेना से युद्ध करने के लिए उसके समीप आए। पर सीरियाई सैनिक उनके सामने से भागने लगे।[14]जब अम्मोनी सैनिकों ने देखा कि सीरियाई सैनिक भाग गए तब वे भी योआब के भाई अबीशय के सामने से भाग गए, और अपने नगर के भीतर चले गए। योआब अम्मोनियों से युद्ध कर लौटा और यरूशलेम नगर में आया।

15जब सीरियाई सैनिकों ने देखा कि इस्राएली सेना ने उन्हें हरा दिया, तब वे युद्ध के लिए पुनः एकत्र हो गए।[16]हदद-एजेर ने दूत भेजे, और जो सीरियाई सैनिक फरात नदी के उस पार थे, उन्हें बुला लिया। वे हेलाम नगर में आए। हदद-एजेर की सेना का सेनापति शोबख था। वह उनके आगे-आगे था।[17]दाऊद को यह समाचार मिला। उसने समस्त इस्राएली सेना एकत्र की। तब उसने यर्दन नदी को पार किया। वह हेलाम नगर में आया। सीरियाई सेना ने दाऊद का सामना करने के लिए युद्ध की व्यूह-रचना की। उन्होंने दाऊद से युद्ध किया।[18]परन्तु सीरियाई सेना इस्राएली सेना के सामने से भाग गई। दाऊद ने सीरियाई सेना के सात सौ सारथी, और चालीस हजार घुड़सवार मार डाले। उसने उनके सेनापति शोबख को घायल कर दिया। वह वहीं मर गया।[19]जब हदद-एजेर के अधीन राजाओं ने देखा कि वे इस्राएलियों के सम्मुख हार गए, तब उन्होंने इस्राएलियों के साथ शान्ति स्थापित कर ली। वे इस्राएलियों के अधीन हो गए। सीरियाई सेना अम्मोनी सेना की पुनः सहायता करने से डरने लगी।

11 राजा वसन्त की वर्षा के बाद युद्ध पर जाया करते थे। अतः दाऊद ने इसी समय योआब और उसके साथ अपने सब कर्मचारियों और समस्त इस्राएली सेना को युद्ध पर भेज दिया। उन्होंने अम्मोन देश को उजाड़ दिया, और रब्बाह नगर को घेर लिया। दाऊद यरूशलेम नगर में ही रह गया था।

दाऊद और सुन्दरी बतशेबा

2 एक दिन दोपहर के बाद दाऊद अपने पलंग से उठा। वह राजमहल की छत पर टहलने लगा। तब उसने छत से एक स्त्री को देखा। स्त्री नहा रही थी। वह देखने में अत्यन्त सुन्दर थी।[3]दाऊद ने एक सेवक को भेजा, और स्त्री के विषय में पूछताछ की। किसी ने बताया, 'यह एलीआम की पुत्री और हित्ती जाति के ऊरियाह की पत्नी बतशेबा है।'[4]अतः दाऊद ने दूत भेजे, और उसे बुलाया। वह मासिक धर्म के पश्चात् नहाने से शुद्ध हुई थी। वह दाऊद के पास आई। दाऊद ने उसके साथ सहवास किया। तब वह अपने घर लौट गई।[5]वह गर्भवती हो गई। उसने दाऊद को सन्देश भेजा और उसे यह बताया, 'मैं गर्भवती हूं।'

6 अतः दाऊद ने योआब के पास पड़ाव में यह खबर भेजी, 'ऊरियाह हित्ती को मेरे पास भेजो।' योआब ने ऊरियाह को दाऊद के पास भेज दिया।[7]ऊरियाह दाऊद के पास आया। दाऊद ने उससे योआब तथा सेना का कुशल-मंगल और युद्ध का समाचार पूछा।[8]तत्पश्चात् दाऊद ने ऊरियाह से कहा, 'अब तुम अपने घर जाओ। हाथ-पैर धोओ।' ऊरियाह राजमहल से बाहर निकला। उसके पीछे-पीछे राजा की ओर से व्यंजन भेजे गए,[9]परन्तु ऊरियाह अपने स्वामी के सेवकों के साथ राज-महल के द्वार पर ही सो गया। वह अपने घर नहीं गया।[10]सेवकों ने दाऊद को यह बात बताई। उन्होंने कहा, 'ऊरियाह अपने घर नहीं गया।' तब दाऊद ने ऊरियाह से पूछा, 'तुम अभी सफर से आये हो। फिर भी तुम अपने घर नहीं गए?'[11]ऊरियाह ने दाऊद को उत्तर दिया, 'महाराज, मंजूषा तथा इस्राएल और यहूदा प्रदेशों के

11 : 1 1 इति 20 : 1 **11 : 2** अय्य 31 : 1; मत 5 : 28 ; याक 1 : 13-15 **11 : 4** लेव 15 : 19 **11 : 5** लेव 20 : 10 **11 : 11** 1 शम 21 : 5; 2 शम 7 : 2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सैनिक झोपड़ियों में निवास कर रहे हैं। मेरे
स्वामी योआब और उनके सेवक खुले मैदान
में पड़ाव डाले हुए हैं। ऐसी स्थिति में मैं अपने
घर जाऊं? खाऊं-पीऊं और अपनी पत्नी के
साथ सोऊं? जीवन्त प्रभु की सौगन्ध! मैं यह
कार्य कदापि नहीं करूंगा।' [12]दाऊद ने ऊरियाह
से कहा, 'तुम आज भी यहां ठहर जाओ। मैं
कल तुम्हें भेज दूंगा।' अत: ऊरियाह उस दिन
तथा दूसरे दिन भी यरूशलेम नगर में ठहर गया।
[13]दाऊद ने उसे भोजन के लिए निमन्त्रण दिया।
उसने दाऊद के साथ भोजन किया। दाऊद ने
उसको शराब पिलाई। वह सन्ध्या को राजमहल
से बाहर निकला, और अपने स्वामी के सेवकों
के पास खाट पर सो गया। वह अपने घर नहीं
गया।

14 दाऊद ने सबेरे योआब को एक पत्र
लिखा और उसको ऊरियाह के हाथ से भेजा।
[15]दाऊद ने पत्र में यह लिखा था : 'जहाँ
घमासान युद्ध हो रहा है, वहां सेना की अगली
पंक्ति में ऊरियाह को भेज देना। तत्पश्चात्
तुम्हारे सैनिक उसके पास से पीछे हट जाएं,
जिससे शत्रु उस पर प्रहार करें और वह मर
जाए।'

16 योआब उस समय रब्बाह नगर को घेरे
हुए था। वह जानता था कि किस स्थान पर शत्रु
के बलवान सैनिक हैं। अत: उसने ऊरियाह को
वहां भेज दिया। [17]तब उस नगर के सैनिक
बाहर निकले, और योआब से युद्ध करने लगे।
अनेक सैनिक धराशायी हो गए। उनमें दाऊद
के कुछ सैनिक थे। ऊरियाह हित्ती भी मारा
गया। [18]योआब ने दाऊद को सन्देश भेजा, और
उसे युद्ध के सब समाचार बताए। [19]योआब ने
दूत को यह आदेश दिया था, 'जब तुम महाराज
को युद्ध का समाचार सुना दोगे [20]तब यह सम्भव
है कि तुम्हारी बातें सुनकर महाराज का क्रोध
भड़क उठे। कदाचित् वह तुमसे यह कहें :
"तुम युद्ध करने के लिए नगर के इतने समीप
क्यों गए थे? क्या तुम यह बात नहीं जानते कि
वे परकोटा से वार करते हैं? [21]यरूब-बअल+
के पुत्र अबीमेलक का वध किसने किया था?
एक स्त्री ने! उसने तेबेस नगर के परकोटा से
चक्की का उपरला पाट अबीमेलक पर फेंका
था, और वह वहीं मर गया था। तुम परकोटा
के इतने समीप क्यों गए थे?" तब तुम यह
कहना, "महाराज आपका सेवक ऊरियाह
हित्ती भी मर गया।" '

22 अत: दूत चला गया। वह दाऊद के पास
आया। जो समाचार योआब ने उसके हाथ भेजा
था, वह उसने दाऊद को दिया।* दाऊद योआब
से क्रुद्ध हुआ। उसने दूत से कहा, 'तुम युद्ध के
लिए नगर के इतने समीप क्यों गए थे? क्या तुम
यह बात नहीं जानते थे कि वे परकोटा से वार
करते हैं? यरूब-बअल के पुत्र अबीमेलक का
वध किसने किया था? एक स्त्री ने! उसने तेबेस
नगर के परकोटा से चक्की का उपरला पाट
अबीमेलक पर फेंका था, और वह वहीं मर
गया था। तुम परकोटा के इतने समीप क्यों गए
थे?' [23]दूत ने दाऊद से कहा, 'महाराज, शत्रु
सेना के सैनिक हम पर प्रबल हो गए। वे नगर
से निकल कर मैदान में हमारे समीप आ गए।
परन्तु हमने उन्हें नगर के प्रवेश-द्वार तक धकेल
दिया। [24]तब उनके धनुष-धारियों ने परकोटा
से आपके सैनिकों पर तीर चलाए। महाराज के
कुछ सैनिक मारे गए। आपका सेवक ऊरियाह
हित्ती भी मारा गया।' [25]दाऊद ने दूत से कहा,
'तुम योआब से यह कहना, "तुम इस बात के
कारण चिन्तित मत हो, क्योंकि तलवार कभी
एक का वध करती है, कभी दूसरे का। नई
शक्ति से नगर पर हमला करो, और उसको
खंडहर बना दो।" इस प्रकार सेनापति का
उत्साह बढ़ाना।'

26 जब ऊरियाह की पत्नी बतशेबा ने यह
सुना कि उसका पति मर गया, तब वह अपने
पति के लिए शोक मनाने लगी। [27]शोक-दिवस
समाप्त होने पर, दाऊद ने उसके पास दूत भेजे,
और उसे अपने महल में रख लिया। वह उसकी

+ मूल में, "यरूब-बेशेत"। * पद के शेष वाक्य यूनानी पाठानुवाद से।

11 : 21 शास 9 : 53

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

स्त्री बन गई। उसने एक पुत्र को जन्म दिया। प्रभु को अपनी दृष्टि में दाऊद का यह कार्य बुरा लगा।

नातान की दाऊद को ताड़ना

12 तब प्रभु ने नबी नातान को दाऊद के पास भेजा। वह दाऊद के पास आया। उसने दाऊद से कहा, 'एक नगर में दो मनुष्य रहते थे। एक धनी था, और दूसरा गरीब। 2धनी के पास बहुत भेड़-बकरियां और गाय-बैल थे। 3किन्तु गरीब के पास केवल एक छोटी-सी भेड़ थी। उसने उसको खरीदा था। वह उसका पालन करने लगा। भेड़ उसके बच्चों के साथ बड़ी होने लगी। वह उसके साथ ही रोटी खाती थी। उसके प्याले में पानी पीती थी। उसकी गोद में सोती थी। वह उसके लिए बेटी के समान थी।

4 'एक दिन धनी मनुष्य के पास एक यात्री आया। किन्तु धनी मनुष्य उस पथिक को, जो उसके पास आया था, भोजन के लिए अपने रेवड़ में से पशु देने को तैयार न था। अत: उसने गरीब की भेड़ छीन ली, और अपने यहां आए हुए यात्री के लिए उसका मांस पकाया।' 5यह सुनकर दाऊद का क्रोध उस धनी मनुष्य के प्रति बहुत भड़क उठा। उसने नातान से कहा, 'जीवन्त प्रभु की सौगन्ध! यह अन्याय करनेवाला मनुष्य निश्चय ही मृत्यु-दण्ड के योग्य है। 6उसे चार गुना भेड़ लौटाना होगा; क्योंकि उसने यह अन्यायपूर्ण कार्य किया है। उसने गरीब पर दया नहीं की।'

7 नातान ने दाऊद से कहा, 'महाराज, आप ही वह धनी मनुष्य हैं। इस्राएल का प्रभु परमेश्वर यों कहता है, ''मैंने तुझे इस्राएल देश का राजा अभिषिक्त किया। मैंने तुझे शाऊल के हाथ से मुक्त किया। 8मैंने तुझे तेरे स्वामी का राजभवन दिया। तेरी गोद में तेरे स्वामी की पत्नियां डालीं। मैंने तुझे इस्राएल और यहूदा प्रदेश की समस्त प्रजा+ दी। यदि यह कम था तो मैं तुझे और देता। 9पर तूने मुझ-प्रभु के वचन का तिरस्कार क्यों किया? जो कार्य मेरी दृष्टि में बुरा है, उसको तूने क्यों किया? तूने तलवार से ऊरियाह हित्ती की हत्या करवा दी, और उसकी पत्नी को छीनकर अपनी पत्नी बना लिया। तूने अम्मोनी सैनिकों की तलवार से ऊरियाह का वध कर दिया। 10तेरे इस कार्य के फलस्वरूप अब तलवार तेरे परिवार से कभी दूर न होगी। तूने मेरा तिरस्कार किया, और ऊरियाह हित्ती की पत्नी को छीनकर उसे अपनी पत्नी बनाया।'' 11प्रभु यों कहता है, ''मैं तेरे ही परिवार से तेरे विरुद्ध बुराई उत्पन्न करूंगा। मैं तेरी आंखों के सामने तेरी पत्नियां तेरे जाति-भाई को दे दूंगा। वह सूरज के प्रकाश में खुले-आम तेरी पत्नियों के साथ सहवास करेगा। 12तूने यह कुकर्म छिपकर किया। परन्तु मैं समस्त इस्राएली समाज के सम्मुख, सूरज के प्रकाश में यह कार्य करवाऊंगा।'''

13 दाऊद ने नातान से कहा, 'मैंने प्रभु के विरुद्ध पाप किया।' नातान ने दाऊद को उत्तर दिया, 'प्रभु ने भी आपके पाप को क्षमा किया। अब आप पाप के कारण नहीं मरेंगे। 14किन्तु आपने इस कार्य के द्वारा प्रभु* का घोर अपमान किया है। इसलिए जो पुत्र आपको उत्पन्न हुआ है, वह अवश्य ही मर जाएगा।' 15नातान अपने घर चला गया।

प्रभु ने उस बालक पर, जो ऊरियाह की पत्नी ने दाऊद से जन्म दिया था, प्रहार किया, और वह बीमार हो गया। 16दाऊद ने बालक के लिए परमेश्वर से अनुनय-विनय की। उसने उपवास किया। वह महल में आया। वह रात भर भूमि पर पड़ा रहा। 17उसके परिवार के बड़े-बूढ़े उसे भूमि पर से उठाने के लिए आए। पर वह नहीं उठा। उसने उनके साथ भोजन नहीं किया। 18सातवें दिन बालक की मृत्यु हो गई। दरबारी दाऊद को यह बताने से डरे कि बालक की मृत्यु हो गई। वे यह सोचते थे, 'जब बालक

+ अथवा 'घर'। * मूल में, ''प्रभु के शत्रुओं''।

12 : 1 2 शम 14 : 5; भज 51; मत 21 : 33-45 **12 : 6** नि 22 : 1; लू 19 : 8 **12 : 12** 2 शम 16 : 22 **12 : 13** 1 शम 15 : 24; 2 शम 24 : 10; भज 51 : 4 **12 : 14** यहेज 18 : 14

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जीवित था और हमने महाराज से कहा था, तब
उन्होंने हमारी बात नहीं सुनी। अब हम उनसे
यह बात कैसे कह सकते हैं कि बालक मर
गया? यह बात सुनकर वह अपना अनिष्ट कर
लेंगे।' 19परन्तु जब दाऊद ने यह देखा कि
उसके दरबारी आपस में धीरे-धीरे बातें कर रहे
हैं, तब उसने समझ लिया कि बालक की मृत्यु
हो गई। उसने अपने दरबारियों से पूछा, 'क्या
बालक मर गया?' उन्होंने कहा, 'हां, महाराज,
वह मर गया।' 20दाऊद भूमि पर से उठा। उसने
स्नान किया। तेल लगाया। अपने वस्त्र बदले।
तत्पश्चात् वह प्रभु के शिविर में गया। वहां
उसने झुककर प्रभु की आराधना की। उसके
बाद वह अपने महल को लौटा। उसने भोजन
मांगा। सेवकों ने उसके सम्मुख भोजन परोस
दिया। 21उसके दरबारियों ने उससे पूछा,
'महाराज, यह आपने क्या किया? जब तक
बालक जीवित रहा, आपने उपवास किया।
आप उसके लिए रोए। परन्तु जब बालक मर
गया, आप भूमि पर से उठे। आपने भोजन
किया।' 22दाऊद ने कहा, 'जब तक बालक
जीवित रहा, मैंने उपवास किया। मैं रोया। मैं
यह सोचता था, "कौन जाने प्रभु मुझ पर कृपा
करे, और बालक बच जाए।" 23अब वह मर
गया। तब मैं क्यों उपवास करूं? क्या मैं उसे
वापस ला सकता हूं? अब मैं उसके पास
जाऊंगा; परन्तु वह मेरे पास नहीं लौटेगा।'

24 दाऊद ने अपनी पत्नी बतशेबा को
सान्त्वना दी। तब दाऊद उसके पास गया।
उसने उसके साथ सहवास किया। फलतः
बतशेबा ने एक पुत्र को जन्म दिया। दाऊद ने
उसका नाम सुलेमान रखा। प्रभु ने बालक से
प्रेम किया 25और उसने अपना यह प्रेमभाव
नबी नातान के द्वारा प्रकट किया। नातान ने प्रभु
के वचन के अनुसार उसका नाम यदीद्याह*
रखा।

रब्बाह नगर का पतन

26 योआब ने अम्मोनियों के रब्बाह नगर पर
आक्रमण कर दिया, और जल-आपूर्त्ति करने
वाले राज-किले पर अधिकार कर लिया।
27योआब ने दाऊद को दूतों के हाथ यह सन्देश
भेजा, 'मैंने रब्बाह नगर पर आक्रमण किया,
और नगर की जल-आपूर्त्ति करने वाले किले
पर अधिकार कर लिया है। 28अब आप शेष
सेना को एकत्र कीजिए। आप नगर के विरुद्ध
पड़ाव डालिए, और उस पर अधिकार कीजिए।
ऐसा न हो कि मैं नगर पर अधिकार कर लूँ, और
नगर को मेरे नाम से पुकारा जाए।' 29अतः दाऊद
ने समस्त सेना एकत्र की। वह रब्बाह नगर को
गया। उसने नगर पर आक्रमण किया और उस
पर अधिकार कर लिया। 30उसने अम्मोनी देवता
मिल्कोम के सिर के सोने का मुकुट उतार
लिया। उसको दाऊद के सिर पर रखा गया।
उसका वजन लगभग पैंतीस किलो था। उसमें
एक मणि जड़ा हुआ था। दाऊद नगर से लूट
का बहुत माल ले गया। 31वह नगर के रहने
वालों को भी ले गया, और उन्हें आरों, लोहे की
गैंतियों और कुल्हाड़ियों तथा ईंट के भट्ठों के
काम पर नियुक्त किया। उसने ऐसा ही व्यवहार
अम्मोनी जाति के अन्य नगरों के साथ भी
किया। तत्पश्चात् दाऊद तथा समस्त सेना
यरूशलेम लौट गई।

अम्नोन का दुष्कर्म

13 इसके पश्चात् ये घटनाएं घटीं: दाऊद
के पुत्र अबशालोम की एक सुन्दर
बहिन थी। उसका नाम तामार था। दाऊद का
पुत्र अम्नोन उससे प्रेम करने लगा। 2वह ऐसा
मोहित हुआ कि वह अपनी सौतेली बहिन
तामार के प्रेम में बीमार हो गया। तामार कुआंरी
थी। अतः उसके साथ कुछ करना अम्नोन को
असम्भव लगा। 3अम्नोन का एक मित्र था।
उसका नाम योनादब था। वह दाऊद के भाई
शिमआह का पुत्र था। वह बड़ा धूर्त था। 4उसने
अम्नोन से कहा, 'राजकुमार, आप दिन प्रतिदिन
दुबले होते जा रहे हैं। क्यों? क्या आप मुझे नहीं
बताएंगे?' अम्नोन ने उससे कहा, 'मैं अपने

---

* अर्थात् 'प्रभु का प्रिय'

12 : 23 अय्य 7 : 9 **12 : 26** 1 इति 20 : 1

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सौतेले भाई अबशालोम की बहिन तामार से
प्रेम करता हूँ।' 5योनादब ने उससे कहा, 'आप
अपने पलंग पर लेट जाइए और बीमार होने का
बहाना कीजिए। जब आपके पिता आपको
देखने के लिए आएंगे, तब आप उनसे यह
कहना, "कृपाकर मेरी बहिन तामार को मेरे
पास आने दीजिए। वह मुझे भोजन कराए। वह
मेरी आंखों के सामने भोजन बनाए। मैं उसे
देखता रहूं और उसके हाथ से भोजन खाऊं।"'
6अत: अम्नोन पलंग पर लेट गया। उसने बीमार
होने का बहाना किया। राजा दाऊद उसे देखने
के लिए आया। अम्नोन ने राजा से कहा,
'कृपाकर, मेरी बहिन तामार को मेरे पास
आने दीजिए। वह मेरी आंखों के सामने दो
रोटी बनाए और मुझे अपने हाथ से भोजन
खिलाए।'

7 अत: दाऊद ने महल में तामार के पास यह
आदेश भेजा, 'अपने भाई अम्नोन के महल में
जाओ। वहां उसके लिए भोजन तैयार करना।'
8अत: तामार अपने भाई अम्नोन के महल में
गई। वह पलंग पर लेटा हुआ था। तामार ने
आटा लिया और उसको गूंधा। तब उसने
अम्नोन की आंखों के सामने रोटियां बनाईं।
9उसने थाली ली, और उसके सम्मुख भोजन
परोसा। किन्तु अम्नोन ने खाने से इन्कार कर
दिया। अम्नोन ने आदेश दिया, 'मेरे पास से सब
लोगों को कमरे से बाहर निकाल दो।' अत:
उसके पास से सब लोग बाहर चले गए।
10अम्नोन ने तामार से कहा, 'भोजन मेरे कमरे
में ला। मैं तेरे हाथ से भोजन खाऊंगा।' तामार
रोटियां लेकर अपने भाई अम्नोन के कमरे में
आई। 11वह उसके पलंग के समीप रोटियां ले
गई कि वह उनको खाए। किन्तु उसने तामार
को पकड़ लिया। उसने तामार से कहा, 'बहिन,
मेरे पास सो।' 12तामार ने उससे कहा, 'मेरे
भाई, मेरे साथ बलात्कार मत कर। ऐसा काम
इस्राएली राष्ट्र में कभी किसी ने नहीं किया।
यह मूर्खतापूर्ण कार्य मत कर। 13मैं अपना काला
मुंह लेकर कहां जाऊंगी? तू इस्राएली राष्ट्र में
मूर्ख व्यक्ति माना जाएगा। तू कृपाकर, महाराज
से बात कर। वह मुझे तेरे हाथ में सौंपना
अस्वीकार नहीं करेंगे।' 14परन्तु अम्नोन ने तामार
की बात नहीं सुनी। वह तामार से बलिष्ठ था।
अत: उसने तामार को विवश कर उसके साथ
बलात्कार किया।

15इसके बाद अम्नोन को तामार से अत्यधिक
घृणा हो गई। जितना वह पहले तामार से प्रेम
करता था, उससे अधिक घृणा अब उससे हो
गई। अम्नोन ने उससे कहा, 'उठ और यहां से
जा।' 16वह उससे बोली, 'नहीं मेरे भाई, मुझे
मत भेज। जो कुकर्म तूने पहले मेरे साथ किया
है, उससे बड़ा कुकर्म यह है कि मुझे निकाल
रहा है।' किन्तु उसने तामार की बात नहीं सुनी।
17उसने अपनी सेवा में तैनात सेवक को
बुलाया। उसने उसे यह आदेश दिया, 'मेरे पास
से इस औरत को बाहर निकाल दो। इसे
निकालने के बाद दरवाजे में चिटकनी लगा
देना।' 18तामार बाहोंवाला लम्बा कुरता पहिने
हुए थी। पुराने समय में कुँआरी राजकन्याएं
ऐसी ही पोशाक पहिनती थीं। सेवा में तैनात
सेवक ने तामार को बाहर निकाल दिया। उसने
उसे निकालने के बाद दरवाजे में चिटकनी लगा
दी।

19 तब तामार ने शोक प्रकट करने के लिए
अपने सिर पर राख डाली। अपना बाहोंवाला
कुरता, जिसको वह पहिने हुए थी, फाड़ दिया।
उसने अपना हाथ सिर पर रखा, और उच्च स्वर
में रोती हुई चली गई।

20 तामार के भाई अबशालोम ने उससे
पूछा, 'क्या तेरा सौतेला भाई अम्नोन तेरे साथ
रहा है? मेरी बहिन, अब चुप हो जा। वह तेरा
भाई है। इस बात को हृदय में मत रख।' पर
तामार को सान्त्वना प्राप्त नहीं हुई। वह दु:खी
परित्यक्ता स्त्री के समान अपने भाई अबशालोम
के महल में रहने लगी।

21 राजा दाऊद ने ये बातें सुनीं। वह अत्यन्त

---

13 : 12 उत 34 : 7; शास 20 : 6 13 : 13 उत 20 : 12; यिर 29 : 23 13 : 14 व्य 22 : 25; 27 : 22 13 : 19 यिर 2 : 37; एस 4 : 1

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

क्रुद्ध हुआ। किन्तु उसने अपने पुत्र अम्नोन को
दण्ड नहीं दिया। अम्नोन उसका ज्येष्ठ पुत्र था,
और दाऊद उससे प्रेम करता था। 22अबशालोम
ने भी अम्नोन से भला-बुरा कुछ नहीं कहा। पर
वह अम्नोन से घृणा करने लगा; क्योंकि
अम्नोन ने उसकी बहिन तामार से बलात्कार
किया था।

अबशालोम का बदला

23 दो वर्ष के बाद यह घटना घटी :
अबशालोम ने एफ्रइम प्रदेश के निकट बअल-
हासोर पहाड़ी क्षेत्र में भेड़ों का ऊन काटा।
उसने सब राजकुमारों को निमन्त्रण दिया।
24वह राजा दाऊद के पास आया। उसने
कहा, 'महाराज, मैंने, आपके सेवक ने, भेड़ों का
ऊन काटा है। अत: कृपाकर, महाराज, आप
और आपके समस्त दरबारी इस सेवक के साथ
चलें।' 25परन्तु राजा दाऊद ने अबशालोम से
यह कहा, 'नहीं, मेरे पुत्र, हम सब नहीं जाएंगे।
अन्यथा हम तेरे लिए भार बन जाएंगे।'
अबशालोम ने उससे आग्रह किया। परन्तु
दाऊद ने जाने से इन्कार कर दिया। फिर भी
उसने उसे आशीर्वाद दिया। 26तब अबशालोम
ने कहा, 'यदि आप नहीं आएंगे तो, कृपाकर,
मेरे भाई अम्नोन को हमारे साथ जाने दीजिए।'
राजा दाऊद ने उससे कहा, 'उसे तेरे साथ क्यों
जाना चाहिए?' 27किन्तु अबशालोम ने उस पर
दबाव डाला। अत: उसने अम्नोन तथा अन्य
राजकुमारों को उसके साथ भेज दिया।

28अबशालोम ने राजभोज तैयार किया।
उसने अपने सेवकों को यह आदेश दिया,
'ध्यान से मेरी बात सुनो। जब अम्नोन शराब
पीकर मदहोश हो जाएगा, और जब मैं तुम से
यह कहूँगा : "अम्नोन पर वार करो," तब तुम
उसे मार डालना। मत डरना। मैंने तुम्हें इस बात
का आदेश दिया है। साहसी बनो! शूरवीर
बनो!' 29जैसा आदेश अबशालोम ने अपने
सेवकों को दिया था, उन्होंने अम्नोन के साथ
वैसा ही किया। अन्य राजकुमार भोज से उठे।
वे अपने-अपने खच्चर पर सवार हुए और भाग
गए।

30जब राजकुमार मार्ग में थे तब यह उड़ती
खबर दाऊद तक पहुंची : 'अबशालोम ने सब
राजकुमारों को मार डाला है। एक भी राजकुमार
नहीं बचा।' 31राजा दाऊद तुरन्त उठा। उसने
शोक प्रकट करने के लिए अपने वस्त्र फाड़े।
वह भूमि पर लेट गया। उसके साथ सब
दरबारियों ने भी अपने वस्त्र फाड़े। 32दाऊद के
भाई शिम्आह के पुत्र योनादब ने कहा, 'मेरे
स्वामी यह न सोचें कि उन्होंने सब राजकुमारों
को मार डाला है। महाराज, केवल अम्नोन ही
मारे गए हैं। जिस दिन अम्नोन ने अबशालोम
की बहिन तामार से बलात्कार किया था, उसी
दिन से अबशालोम की आज्ञा से इस बात का
निश्चय कर लिया गया था। 33इसलिए अब
महाराज मेरे स्वामी, अपने हृदय में यह बात न
रखें कि सब राजकुमार मारे गए हैं। केवल
अम्नोन ही मारे गए हैं।'

34 अबशालोम भाग गया। पहरे पर तैनात
प्रहरी ने आँख उठाकर ऊपर देखा। उसने यह
देखा कि एक विशाल समुदाय होरोनइम मार्ग
से पहाड़ की ढाल पर उतर रहा है। प्रहरी राजा
के पास आया। उसने राजा को यह बताया। उसने
कहा, 'महाराज, मैंने लोगों को होरोनइम मार्ग
से पहाड़ की ढाल पर उतरते हुए देखा है।'
35योनादब ने राजा से यह कहा, 'महाराज, आपके
सेवक ने जैसा कहा था वैसा ही हुआ। देखिए,
राजकुमार आ गए।' 36अभी उसकी बात समाप्त
नहीं हुई थी कि राजकुमार आ गए। वे जोर-
जोर से रोने लगे। राजा और उसके दरबारी भी
फूट-फूट कर रोने लगे।

37 अबशालोम भाग कर गशूर के राजा
अम्मीहूद के पुत्र तलमइ के पास चला गया।
दाऊद अपने पुत्र के लिए दिन-प्रतिदिन शोक
मनाता रहा। 38अबशालोम गशूर में तीन वर्ष
तक रहा। 39दाऊद अबशालोम के पास जाने के
लिए विकल था। अम्नोन की मृत्यु से उत्पन्न
उसका दु:ख अब शान्त हो गया था।

---

13 : 23 1 शम 25 : 4 **23 : 31** 2 शम 1 : 11 **13 : 37** 2 शम 3 : 3

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अबशालोम की वापसी

14 सरूयाह का पुत्र योआब ताड़ गया कि
राजा दाऊद का हृदय अबशालोम में
लगा है। 2अत: उसने तकोआह नगर में एक
दूत भेजा, और वहां से एक बुद्धिमती स्त्री को
बुलाया। योआब ने उससे यह कहा, 'तुम मृतक
के लिए शोक मनानेवाली स्त्री बनो और मातमी
वस्त्र पहिन लो। तुम तेल लगाकर बनाव-
श्रृंगार मत करना, वरन् ऐसी स्त्री का अभिनय
करना जो कई दिन से मृतक के लिए शोक मना
रही है। 3तुम महाराज के पास जाना, और उनसे
ये बातें कहना।' योआब ने उसको सब बातें
सिखा दीं।
4 तकोआह नगर की स्त्री राजा दाऊद के
पास गई। उसने सिर झुकाकर अभिवादन
किया। वह बोली, 'महाराज की दुहाई!' 5राजा
ने उससे पूछा, 'क्या बात है?' स्त्री ने उत्तर
दिया, 'महाराज, मैं विधवा हूँ। मेरा पति मर
गया है। 6आपकी सेविका के दो पुत्र थे। एक
दिन वे खेत में परस्पर लड़ने लगे। वहां उन्हें
छुड़ानेवाला कोई न था। मेरे एक पुत्र ने दूसरे
पुत्र पर वार किया, और उसको मार डाला।
7अब सारा गोत्र आपकी सेविका के विरुद्ध
खड़ा हो गया है। मेरे गोत्र के लोग मुझसे यह
कह रहे हैं, "अपने भाई पर वार करने वाले को
हमारे सुपुर्द करो। जिस भाई की उसने हत्या की
है, उसके प्राण के बदले में हम उसकी हत्या
करेंगे।" महाराज, यों वे उत्तराधिकारी को भी
समाप्त कर देंगे। महाराज, मेरे बचे हुए एकमात्र
दीपक को भी वे बुझाना चाहते हैं, जिससे मेरे
पति का नाम और उसका वंश धरती पर से मिट
जाए।'
8 राजा दाऊद ने स्त्री से कहा, 'तुम अपने
घर जाओ। मैं स्वयं तुम्हारे मामले के सम्बन्ध
में आदेश दूंगा।' 9तकोआह नगर की स्त्री ने
राजा से कहा, 'महाराज, हे स्वामी! इस अधर्म
का दोष मुझ पर, और मेरे पैतृक कुल पर ही
लगे। महाराज और उनका सिंहासन निर्दोष
माना जाए।' 10राजा दाऊद ने उससे कहा, 'जो
तुम्हें धमकाएगा, उसको मेरे पास लाना। तब
वह तुम्हें कभी स्पर्श भी नहीं करेगा।' 11स्त्री
बोली, 'महाराज अपने प्रभु परमेश्वर के नाम
की शपथ खाएं कि रक्त-प्रतिशोधी बदला नहीं
लेगा, और मेरा पुत्र धरती पर से नहीं मिटेगा।'
दाऊद ने कहा, 'जीवन्त प्रभु की सौगन्ध!
तुम्हारे पुत्र के सिर का बाल भी भूमि पर नहीं
गिरेगा।'
12 तब स्त्री ने कहा, 'महाराज, अपनी
सेविका को अनुमति दीजिए कि वह आपसे,
अपने स्वामी से एक बात कह सके।' दाऊद ने
कहा, 'बोलो।' 13स्त्री ने कहा, 'महाराज, आपने
परमेश्वर के निज लोगों के विरुद्ध षड्यन्त्र क्यों
रचा? यदि महाराज देश से निकाले गए व्यक्ति
को वापस नहीं लाते हैं, तो आप अपने इस
निर्णय से स्वयं को दोषी सिद्ध करते हैं। 14हम
सबको एक न एक दिन मरना ही है। हम भूमि
पर उण्डेले गए जल के समान हैं जिसको फिर
एकत्र नहीं किया जा सकता है; और न
परमेश्वर शव को खड़ा करता है।* अब महाराज
ऐसी योजना बनाएं कि निर्वासित व्यक्ति उनसे
दूर न रहे, वह देश-निकाला हुआ न रहे। 15मैं
महाराज से ये ही बातें कहने के लिए आई थी;
क्योंकि लोगों ने मुझे डरा दिया था। आपकी
सेविका ने यह सोचा था कि मैं महाराज से ये
बातें कहूंगी। कदाचित महाराज अपनी सेविका
के कथन के अनुसार कार्य करें। 16मुझे निश्चय
था कि महाराज अपनी सेविका की प्रार्थना
सुनेंगे और मुझे उस व्यक्ति के हाथ से मुक्त
करेंगे जो मुझे और मेरे पुत्र को धरती से
मिटाकर परमेश्वर की मीरास से, इस्राएली राष्ट्र
से वंचित करना चाहता है; 17मैंने यह भी सोचा
था कि महाराज के, मेरे स्वामी के वचन से मुझे
शान्ति मिलेगी, क्योंकि महाराज भले और बुरे
में भेद करने वाले परमेश्वर के दूत के सदृश हैं।

---

* मूल में अस्पष्ट। अन्य अनुवाद, "तौभी परमेश्वर प्राण नहीं लेता," अथवा "परन्तु परमेश्वर की यह इच्छा नहीं है"।

14 : 2 1 शम 25 : 3; आमो 1 : 1 **14 : 4** 2 रा 6 : 26 **14 : 7** गण 36 : 19 **14 : 14** अय्य 14 : 7-12; भज 88 : 5 **14 : 17** उत 3 : 5

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रभु परमेश्वर आपके साथ हो!'
18 तब राजा दाऊद ने स्त्री से यह कहा, 'मैं
तुमसे एक बात पूछ रहा हूं। तुम उसको मुझसे
मत छिपाना।' स्त्री ने कहा,'महाराज, मेरे
स्वामी, बोलिए।' 19राजा ने पूछा, 'क्या तुम्हारी
इन सब बातों में योआब का हाथ है?' स्त्री ने
उत्तर दिया, 'मेरे स्वामी, महाराज की सौगन्ध!
जो कुछ महाराज ने कहा, उसके एक अक्षर को
भी मैं अस्वीकार नहीं कर सकती। महाराज का
कथन अक्षरशः सच है। आपके सेवक योआब
ने मुझे यह कार्य करने का आदेश दिया था।
उन्होंने मुझे ये सब बातें सिखाई थीं। 20आपके
सेवक योआब ने बात छिपाने के लिए+ इस ढंग
से कार्य किया है। परन्तु महाराज में परमेश्वर
के दूत की बुद्धि के सदृश बुद्धि है। देश में घटने
वाली सब बातों को महाराज जानते हैं।'
21 तब राजा दाऊद ने योआब से कहा,
'सुनो, मैं तुम्हारी बात स्वीकार करता हूं।
जाओ! युवक अबशालोम को वापस लाओ।'
22योआब भूमि पर मुंह के बल गिरा। उसने
राजा का अभिवादन किया। उसे धन्य! धन्य!
कहा। योआब ने कहा, 'हे मेरे स्वामी, महाराज!
आज आपके सेवक को ज्ञात हुआ कि मैंने
आपकी कृपा-दृष्टि प्राप्त की है। महाराज ने
अपने सेवक की विनती स्वीकार की।'
23तत्पश्चात् योआब तैयार हुआ। वह गशूर
नगर को गया, और वहां से अबशालोम को
यरूशलेम नगर में ले आया। 24परन्तु राजा दाऊद
ने कहा, 'वह अपने महल में चला जाए, और
मुझे अपना मुंह न दिखाए।' अतः अबशालोम
अपने महल में अलग रहने लगा। वह राजा के
दर्शन न कर सका।
25 समस्त इस्राएली राष्ट्र में अबशालोम
अपनी सुन्दरता के लिए अत्यन्त प्रसिद्ध था।
उसके समान और कोई सुन्दर न था। उसमें नख
से शिख तक कुछ दोष न था। 26वह वर्ष के
अन्त में अपने सिर के बाल कटवाता था। जब
सिर पर बाल का भार बढ़ने लगता था तब वह
उसको कटवाता था। उसने अपने सिर के बाल
कटवाए। उसने उनको तौला। वे राजा की तौल
के अनुसार लगभग सवा दो किलो निकले!
27 अबशालोम को तीन पुत्र और एक पुत्री
उत्पन्न हुई। पुत्री का नाम तामार था। वह देखने
में सुन्दर थी।
28 अबशालोम दो वर्ष तक यरूशलेम नगर
में रहा। किन्तु वह राजा के दर्शन नहीं कर
सका। 29तब अबशालोम ने योआब के पास
सन्देश भेजा और उसे बुलाया। वह योआब को
राजा के पास भेजना चाहता था। पर योआब
उसके पास नहीं आया। अबशालोम ने दूसरी
बार सन्देश भेजा। तब भी वह आने को तैयार
नहीं हुआ। 30अतः अबशालोम ने अपने सेवकों
को आदेश दिया, 'देखो, मेरे खेत के पास ही
योआब का एक खेत है। उसमें जौ की फसल
खड़ी है। जाओ, और उसमें आग लगा दो।'
अतः अबशालोम के सेवकों ने योआब के खेत
में आग लगा दी। 31तब योआब उठा। वह
अबशालोम के पास उसके महल में आया।
उसने अबशालोम से पूछा, 'तुम्हारे सेवकों ने
मेरे खेत में आग क्यों लगाई?' 32अबशालोम
ने योआब को उत्तर दिया, 'देखिए, मैंने आपके
पास यह सन्देश भेजा था : "आप यहां आइए।
मैं आपको राजा के पास भेजना चाहता हूं कि
आप राजा से यह बात कहें : मैं गशूर नगर से
यहां क्यों आया हूँ? मेरा वहीं रहना अधिक
अच्छा होता।" अब मुझे राजा के दर्शन करने
दीजिए। यदि मैंने अपराध किया है, तो वह मुझे
मार डालें।' 33योआब राजा के पास गया। उसने
राजा को यह बात बताई। अतः राजा ने
अबशालोम को बुलाया। अबशालोम राजा के
पास आया। वह उसके सम्मुख भूमि पर मुंह के
बल गिरा, और उसका अभिवादन किया। राजा
ने अबशालोम को चूमा।

अबशालोम का विद्रोह

15 इस घटना के पश्चात् अबशालोम ने
रथ, घोड़े और आगे-आगे दौड़ने वाले

+ अथवा,'स्थिति बदलने के लिए'।
14 : 27 2 शम 18 : 18 **14 : 30** शास 15 : 5

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पचास धावक अपने पास रख लिये।2वह सबेरे
उठता, और नगर के प्रवेश-द्वार पर एक ओर
खड़ा हो जाता। जब किसी मनुष्य के पास
मुकदमा होता, और वह राजा के पास न्याय-
निर्णय के लिए जाता था तब अबशालोम उसे
बुलाता, और उससे यह पूछता, 'तुम किस नगर
के रहने वाले हो?' वह उत्तर देता, 'आपका
सेवक इस्राएल के अमुक कुल का है।'
3अबशालोम उससे कहता, 'देखो, तुम्हारा
मुकदमा उचित और न्याय-संगत है। परन्तु
राजा की ओर से तुम्हारी बात को सुनने वाला
कोई नहीं है।'4अबशालोम आगे कहता, 'काश!
मैं इस देश का न्यायकर्त्ता नियुक्त होता। तब
जिस व्यक्ति के पास मुकदमा अथवा वाद-
विवाद होता तो वह मेरे पस आता और मैं
उसका निष्पक्ष न्याय करता।'5जब कोई मनुष्य
उसके समीप आता और भूमि पर गिरकर
साष्टांग प्रणाम करता, तब वह अपना हाथ
बढ़ाकर उसे रोक लेता और उसका चुम्बन लेता
था। 6जितने इस्राएली राजा के पास न्याय के
लिए आते थे, अबशालोम उनके साथ यही
व्यवहार करता था। यों अबशालोम ने इस्राएलियों
को बहका कर उनका हृदय अपनी ओर कर
लिया।

7 इस प्रकार चार वर्ष बीत गए। तब
अबशालोम ने राजा दाऊद से कहा, 'कृपाकर
मुझे हेब्रोन नगर जाने दीजिए। मैंने हेब्रोन नगर
में प्रभु की मन्नत मानी थी। मैं वहां अपनी मन्नत
पूरी करूंगा। 8जब मैं, आपका सेवक, सीरिया
देश के गशूर नगर में था तब मैंने यह मन्नत मानी
थी, "यदि प्रभु मुझे यरूशलेम वापस ले जाएगा
तो मैं हेब्रोन नगर में बलि चढ़ाऊंगा, और प्रभु
की आराधना करूंगा।"' 9राजा ने उससे कहा,
'सकुशल जाओ।' अतः वह तैयार हुआ और
हेब्रोन नगर को चला गया।

10 अबशालोम ने इस्राएल के सब कुलों के
पास गुप्तचर भेजे। उसने उनके द्वारा यह सन्देश
भेजा, जैसे ही तुम 'नरसिंघे का स्वर सुनो, तुम
यह कहना : "अबशालोम हेब्रोन नगर में राजा
है!"' 11अबशालोम के साथ दो सौ पुरुष
यरूशलेम नगर से गए थे। ये अतिथि थे। ये
निष्कपट हृदय से गए। इन्हें इस सम्बन्ध में कुछ
भी मालूम नहीं था। 12जब अबशालोम बलि
चढ़ा रहा था तब उसने अहीतोफल को उसके
नगर, गिलोह से बुलाया। अहीतोफल दाऊद
का मन्त्री था। वह गिलोह नगर में रहता था।
इस प्रकार षड्यन्त्र बल पकड़ता गया।
अबशालोम के सहयोगियों की संख्या बढ़ती
गई।

13एक सन्देश-वाहक दाऊद के पास आया।
उसने दाऊद को यह बताया, 'इस्राएल प्रदेश के
लोग अबशालोम का अनुसरण करने लगे
हैं।' 14अतः दाऊद ने अपने दरबारियों को जो
उसके साथ यरूशलेम में थे, यह आदेश
दिया,'तैयार हो जाओ, हम अविलम्ब भाग
चलें। अन्यथा हम अबशालोम के आने पर भाग
न सकेंगे। शीघ्र चलो। ऐसा न हो कि वह
अचानक हमें आ घेरे, हमारा अनिष्ट करे और
नगरवासियों को तलवार से मौत के घाट
उतारे।' 15दरबारियों ने राजा से कहा, 'महाराज,
हमारे स्वामी, हम आपके निर्णय के अनुसार
कार्य करेंगे। हम प्रस्तुत हैं।' 16अतः राजा दाऊद
महल के बाहर निकला। उसके साथ उसका
राजपरिवार था। उसने महल की देखभाल
करने के लिए दस रखेल छोड़ दीं। 17राजा बाहर
निकला। उसके साथ सब लोग निकले। राजा
अन्तिम मकान के सम्मुख रुका। 18उसके सब
दरबारी उसके समीप खड़े हो गए। करेत और
पलेत के रहने वाले अंगरक्षक, इत्तय, और गत
नगर के रहने वाले छः सौ सैनिक, जो इत्तय के
साथ आए थे, राजा के सामने से गुजरे। 19राजा
ने गत नगर के रहने वाले इत्तय से पूछा, 'तुम
हमारे साथ क्यों जा रहे हो? लौट जाओ। नए
राजा के साथ रहो। तुम विदेशी हो। इसके
अतिरिक्त तुम अपने देश से निर्वासित हो।
20तुम कल ही आए थे। क्या मैं आज ही तुम्हें

---

15 : 1 1 रा 1 : 5 15 : 2 2 शम 19 : 43 15 : 8 2 शम 13 : 38 15 : 12 2 शम 16 : 23 15 : 16 2 शम 16 : 21; 20 : 3 15 : 18 2 शम 8 : 18

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अपने साथ भटकने के लिए ले जाऊँ; जब कि
मैं स्वयं नहीं जानता हूँ कि मैं कहां जा रहा हूँ ?
लौट जाओ, और अपने साथ अपने देश-
वासियों को भी ले जाओ। प्रभु की करुणा और
सच्चाई तुम्हारे साथ रहे।' 21किन्तु इत्तय ने राजा
को यह उत्तर दिया, 'जीवन्त प्रभु की सौगन्ध!
महाराज, मेरे स्वामी की सौगन्ध! महाराज,
आप जिस स्थान में रहेंगे, आपका यह सेवक
भी वहां रहेगा। वह जीवन में, और मृत्यु में
अपने महाराज, स्वामी का साथ देगा।' 22तब
दाऊद ने इत्तय से कहा, 'अच्छा, जाओ।' अत:
वह अपने सब लोगों और बाल-बच्चों के साथ
आगे बढ़ गया। 23समस्त देश उच्च स्वर में रो
पड़ा। राजा दाऊद किद्रोन घाटी में खड़ा था,
और सब लोग उसके सामने से गुजरते हुए
निर्जन प्रदेश की ओर चले गए।

24तब पुरोहित एबयातर आया। उसके
पश्चात् सादोक भी आया। सादोक के साथ
उपपुरोहित लेवीय थे, जो परमेश्वर के विधान
की मंजूषा उठाए हुए थे। जब तक सब लोग
नगर से गुजर नहीं गए तब तक वे परमेश्वर की
मंजूषा एबयातर के पास रखे रहे। 25राजा ने
सादोक को आदेश दिया,'परमेश्वर की मंजूषा
को नगर में वापस ले जाओ। यदि मैं प्रभु की
कृपा-दृष्टि प्राप्त करूंगा तो वह मुझे इस नगर
में वापस लाएगा और मुझे अपनी मंजूषा और
उसके निवास-स्थान के फिर दर्शन कराएगा।
26पर यदि प्रभु यों कहेगा : ''मैं तुझसे प्रसन्न
नहीं हूं'' तो भी मैं उसकी इच्छा को स्वीकार
करूंगा। जो उसकी दृष्टि में भला लगे, वही मेरे
साथ करे।' 27राजा ने पुरोहित सादोक से यह
भी कहा, 'तुम और एबयातर अपने पुत्रों के
साथ सकुशल नगर को लौट जाओ। तुम अपने
पुत्र अहीमास को,तथा एबयातर के पुत्र योनातन
को लेकर जाना। 28जब तक तुम्हारी ओर से
मुझे समाचार नहीं मिलेगा, और मुझे सब बातें
ज्ञात नहीं होंगी, तब तक मैं निर्जन प्रदेश के
मैदान में ठहरा रहूंगा।' 29अत: सादोक और
एबयातर परमेश्वर की मंजूषा को यरूशलेम
नगर वापस ले गए। वे वहीं रह गए।

30 दाऊद जैतून पहाड़ पर चढ़ने लगा। वह
रो रहा था। वह नंगे पैर था। उसका सिर ढका
था। जो लोग उसके साथ थे, वे भी अपना सिर
ढांपे हुए थे। वे रोते हुए पहाड़ पर चढ़ रहे थे।
31दाऊद को यह समाचार मिला :
'षड्यन्त्रकारियों में अहीतोफल भी है।' दाऊद
ने कहा, 'हे प्रभु, अहीतोफल की सम्मति को
मूर्खतापूर्ण सम्मति में बदल दे।'

32 जब दाऊद पर्वत के शिखर पर पहुंचा,
जहां परमेश्वर की आराधना की जाती थी, तब
दाऊद का मित्र हूशय जो अर्की जाति का था,
उससे भेंट करने के लिए आया। उसका
अंगरखा फटा हुआ था। उसके सिर पर धूल
थी। 33दाऊद ने उससे कहा, 'यदि तुम मेरे साथ
जाओगे तो मेरे लिए भार बन जाओगे। 34परन्तु
यदि तुम यरूशलेम नगर लौट जाओ,और
अबशालोम से यह कहो, ''महाराज, मैं आपका
सेवक बनना चाहता हूं। जैसे मैं पहले आपके
पिता का सेवक था वैसे अब मैं आपका सेवक
बनना चाहता हूं'', तो तुम मेरे लिए अहीतोफल
की सम्मति निष्फल कर दोगे। 35वहां पुरोहित
सादोक और एबयातर भी तुम्हारे साथ होंगे। जो
बातें तुम राज-महल में सुनोगे उन्हें तुम पुरोहित
सादोक और एबयातर को बता देना। 36देखो,
वहां उनके साथ उनके दो पुत्र भी हैं : सादोक
का पुत्र अहीमास, और एबयातर का पुत्र
योनातन। जो बातें तुम सुनोगे, उनको इन्हीं के
हाथ मुझे पहुंचा देना।' 37अत: दाऊद के मित्र
हूशय ने यरूशलेम नगर में प्रवेश किया। उस
समय अबशालोम भी नगर में प्रवेश कर रहा
था।

16 दाऊद पर्वत के शिखर को पार कर कुछ
दूर गया था कि मपीबोशेत का सेवक
सीबा दाऊद से भेंट करने के लिए आया। वह
अपने साथ जीन कसे हुए दो गधे, दो सौ
रोटियां, किशमिश के एक सौ गुच्छे, एक सौ
ग्रीष्मकालीन फल और अंगूर के रस से भरी
एक मशक लाया था। 2राजा दाऊद ने सीबा से

---

15 : 30 लू 19 : 20; 22 : 39; एस 6 : 11; यिर 14 : 3 **15 : 31** 2 शम 17 : 14 **16 : 1** 2 शम 9 : 9-10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पूछा, 'इनसे तुम्हारा क्या प्रयोजन है?' सीबा ने
उत्तर दिया, 'गधे तो राज-परिवार की सवारी
के लिए, रोटियां और ग्रीष्मकालीन फल
दरबारियों के लिए और अंगूर का रस निर्जन
प्रदेश में थके मांदे लोगों केपीने के लिए है।'
3राजा ने पूछा, 'तुम्हारे स्वामी का पुत्र कहां है?'
सीबा ने राजा को बताया, 'वह यरूशलेम में
ठहर गए हैं। उन्होंने यह कहा है: "आज
इस्राएल के वंशज मेरे दादा का राज्य मुझे लौटा
देंगे।" ' 4राजा ने सीबा से कहा, 'जो कुछ
मपीबोशेत का है, वह आज से तुम्हारा है।'
सीबा बोला, 'महाराज, मैं भूमि पर झुककर
आपका अभिवादन करता हूं। हे मेरे स्वामी, मैं
आपकी कृपादृष्टि सदा प्राप्त करता रहूं।'

5 राजा दाऊद बहूरीम तक ही पहुंचा था
कि वहां से शाऊल के गोत्र का एक व्यक्ति
निकला। उसका नाम शिमई था। वह गेरा
नामक व्यक्ति का पुत्र था। वह गाली देता
हुआ आया। 6वह राजा दाऊद और उसके
दरबारियों पर पत्थर फेंकने लगा। पर राजा की
दाईं तथा बाईं ओर सैनिक और महायोद्धा थे।
7शिमई ने गाली देकर यों कहा, 'ओ हत्यारे!
ओ गुण्डे! भाग जा, निकल जा! 8प्रभु ने शाऊल
के परिवार के सब रक्तपात का बदला तुझसे
लिया है। तू उसके स्थान पर राज्य कर रहा
है, परन्तु प्रभु ने तेरे पुत्र अबशालोम के हाथ
में राज्य को सौंप दिया। देख, तू स्वयं अपनी
बुराई के जाल में कैसा फंस गया; क्योंकि तू
हत्यारा है!'

9 सरूयाह के पुत्र अबीशय ने राजा से कहा,
'यह मरा हुआ कुत्ता मेरे स्वामी, महाराज को
अपशब्द क्यों कह रहा है? मुझे अनुमति दीजिए
कि मैं उसके पास जाकर उसके सिर को धड़
से अलग कर दूं।' 10राजा ने कहा, 'सरूयाह
के पुत्रो, यह मेरा और तुम्हारा काम नहीं है।
उसे गाली देने दो। यदि प्रभु ने उससे यों कहा,
"दाऊद को अपशब्द कह!" तो किसको
यह पूछने का अधिकार है, "तूने ऐसा क्यों
कहा?" ' 11दाऊद ने अबीशय तथा अपने सब
दरबारियों से कहा, 'देखो, मेरे पौरुष का फल,
स्वयं मेरा पुत्र मेरा प्राण लेना चाहता है। तब यह
बिन्यामिन कुल का व्यक्ति कितना अधिक मेरा
प्राण लेने पर तुला हो सकता है। इसे छोड़ दो।
अपशब्द कहने दो; क्योंकि प्रभु ने इसे ऐसा
करने को कहा है। 12कदाचित् प्रभु मेरी दुर्दशा
पर दृष्टि करे। आज जो अपशब्द मुझे कहे गए,
उनके बदले में प्रभु मेरी भलाई करे।' 13तत्पश्चात्
दाऊद और उसके साथ के लोग अपने मार्ग पर
चले गए। शिमई उसे गाली देता तथा पत्थर और
धूल फेंकता हुआ अपने सामने के पहाड़ की
बगल से निकल गया।

14 राजा दाऊद और उसके साथ के लोग
थके-मांदे यर्दन नदी के तट पर आए। वहां
उसने विश्राम किया।

15 अबशालोम और इस्राएल प्रदेश की सेना
ने यरूशलेम में प्रवेश किया। अहीतोफल
उसके साथ था। 16अर्की जाति का हूशय, जो
दाऊद का मित्र था, अबशालोम के पास आया।
उसने अबशालोम से यह कहा, 'महाराज
चिरायु हों! महाराज चिरायु हों!' 17अबशालोम
ने हूशय से पूछा, 'क्या अपने मित्र के प्रति
आपकी यही निष्ठा है? आप अपने मित्र के
साथ क्यों नहीं गए?' 18हूशय ने अबशालोम
को उत्तर दिया, 'महाराज, यह बात नहीं है।
जिस व्यक्ति को प्रभु ने, उसके निज लोगों ने,
समस्त इस्राएली राष्ट्र ने चुना है, उसके साथ
मैं हूं, और उसी के साथ मैं रहूंगा। 19इसके
अतिरिक्त, मुझे किसकी सेवा करनी चाहिए?
अपने मित्र के पुत्र की न? जैसे मैंने आपके
पिता की सेवा की वैसे ही मैं आपकी सेवा
करूंगा।'

20 अबशालोम ने अहीतोफल से पूछा,
'आप लोग सलाह दीजिए। अब हमें क्या करना
चाहिए?' 21अहीतोफल ने अबशालोम से कहा,
'जो रखेल तुम्हारा पिता राजमहल की देख-
भाल करने के लिए छोड़ गया है, तुम उनके
साथ सहवास करो। यह बात समस्त इस्राएली
राष्ट्र सुनेगा कि तुमने अपने पिता की घृणा मोल

---

16 : 3 2 शम 19 : 27 16 : 10 2 शम 19 : 22 16 : 21 2 शम 12 : 11; 15 : 16

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
ले ली। तब तुम्हारे साथियों के हाथ मजबूत
होंगे।' 22अत: सेवकों ने अबशालोम के लिए
महल की छत पर एक तम्बू ताना। अबशालोम
ने समस्त इस्राएली राष्ट्र की आंखों के सामने
अपने पिता की रखेलों के साथ सहवास किया।
उन दिनों में अहीतोफल का परामर्श ऐसा वचन
माना जाता था मानो वह परमेश्वर से पूछा गया
है। दाऊद और अबशालोम दोनों अहीतोफल
के परामर्श को इतना महत्वपूर्ण मानते थे।
17 अहीतोफल ने अबशालोम से कहा,
'मुझे सेना में से बारह हजार सैनिक
चुनने की अनुमति दो। मैं आज रात ही तैयार
होकर दाऊद का पीछा करूंगा। 2जब तक वह
थका-मांदा और उत्साह-हीन है, मैं उस पर
हमला करूंगा। उसे भय से आतंकित कर दूंगा।
उसके साथ के लोग भाग जाएंगे। राजा अकेला
रह जाएगा। तब मैं उस पर वार करूंगा। 3जैसे
दुल्हिन अपने दूल्हे के पास घर लौटती है वैसे
मैं दाऊद के सब लोगों को तुम्हारे पास वापस
ले आऊंगा। तुम तो केवल एक मनुष्य का प्राण
लेना चाहते हो। शेष सब लोगों को शान्ति प्राप्त
होगी।' 4यह विचार अबशालोम और सब
इस्राएली धर्मवृद्धों को उचित लगा।
5 अबशालोम ने कहा, 'अर्की हूशय को भी
बुलाओ। हम उसकी भी सलाह सुनें। वह क्या
कहता है?' 6हूशय अबशालोम के पास आया।
अबशालोम ने उससे कहा, 'अहीतोफल ने ये
बातें कही हैं। क्या हमें उनके विचार के अनुसार
कार्य करना चाहिए? यदि नहीं तो तुम बोलो,
हमें क्या करना चाहिए?' 7हूशय ने अबशालोम
को उत्तर दिया, 'जो सलाह इस बार अहीतोफल
ने दी, वह अच्छी नहीं है।' 8हूशय ने समझाया,
'आप यह जानते हैं कि आपके पिता तथा उनके
सैनिक महायोद्धा हैं। वे उस रीछनी के समान
खूंखार हैं जिसके बच्चे छीन लिये गए हैं।
आपके पिता अनुभवी सैनिक हैं। वह सैनिकों
के साथ रात व्यतीत नहीं करते। 9वह इस समय
भी किसी गड्ढे में अथवा अन्य स्थान में छिपे
होंगे। अब यदि आक्रमण के आरम्भ में ही
हमारी सेना के सैनिक हताहत होंगे तो सुनने
वाले यही कहेंगे, "अबशालोम के पक्षवाले
सैनिकों का संहार हो गया।" 10तब शेर-दिल
वीर सैनिक भी भय से आतंकित हो जाएगा।
समस्त इस्राएली राष्ट्र यह बात जानता है कि
आपके पिता महाबली हैं। उनके पक्ष के सैनिक
वीर योद्धा हैं। 11इसलिए मेरी यह सलाह है :
दान प्रदेश से बएर-शेबा नगर तक के सब
इस्राएली सैनिक, समुद्र के रेतकणों के सदृश
असंख्य सैनिक, आपके सम्मुख एकत्र किये
जाएं, और आप स्वयं उनके साथ युद्ध में जाएं।
12जिस स्थान पर हम आपके पिता को पाएंगे, वहीं
हम उन पर आक्रमण कर देंगे। जैसे ओस भूमि
पर गिरती है वैसे ही हम उन पर टूट पड़ेंगे। तब
न वह और न उनके पक्ष का एक सैनिक भी
बचेगा। 13यदि वह किसी नगर में शरण लेंगे,
तब सब इस्राएली सैनिक उस नगर में रस्से ले
जाएंगे। हम इन रस्सों से नगर को घाटी में
घसीट लेंगे, और वहां एक पत्थर भी ढूंढ़ने पर
नहीं मिलेगा।' 14अबशालोम तथा सब इस्राएली
सैनिकों ने कहा, 'अर्की हूशय की सलाह
अहीतोफल की सलाह से उत्तम है।' प्रभु ने यह
निश्चय किया था कि वह अहीतोफल की
अच्छी सलाह को निष्फल कर देगा जिससे
अबशालोम पर ही विपत्ति आए।
15 हूशय ने पुरोहित सादोक और एबयातर
से कहा, 'अहीतोफल ने अबशालोम और
इस्राएली धर्मवृद्धों को इस प्रकार की सलाह दी
थी और मैंने यह सलाह दी है। 16अब आप
लोग महाराज दाऊद के पास अविलम्ब समाचार
भेजिए। उन्हें यह बात बता दीजिए, "आप
निर्जन प्रदेश के मैदान में आज की रात व्यतीत
न कीजिए। वरन् अतिशीघ्र नदी के पार चले
जाइए। अन्यथा, महाराज, आप तथा आपके
साथ के सब सैनिक रौंद दिए जाएंगे।"'
17योनातन और अहीमास एन-रोगेल के
जलाशय के तट पर ठहरे हुए थे। एक सेविका
उनके पास जाती, और उन्हें समाचार बताती
थी। वे राजा दाऊद के पास जाते, और उसे

17 : 14 2 शम 15 : 31 **17 : 17** 2 शम 15 : 27; 1 रा 1 : 9

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

समाचार देते थे। वे यरूशलेम नगर में इस प्रकार
प्रवेश करते थे कि उन्हें कोई न देख सके।
[18]किन्तु एक बार एक लड़के ने उन्हें देख
लिया। उसने अबशालोम को सूचित कर दिया।
अतः योनातन और अहीमास अविलम्ब चले
गए। वे बहूरीम निवासी एक मनुष्य के घर नें
आए। उसके आंगन में एक कुआं था। वे उसके
भीतर उतर गए। [19]उस मनुष्य की पत्नी ने एक
चादर ली। उसने चादर को कुएं के मुंह पर
फैला दिया। तत्पश्चात् दला हुआ अनाज चादर
के ऊपर बिखेर दिया, जिससे किसी को उनका
पता न चले।

20 अबशालोम के सेवक उस स्त्री के पास
घर में आए। उन्होंने उससे पूछा, "अहीमास
और योनातन कहां हैं?' स्त्री ने उन्हें उत्तर दिया,
'वे नदी की ओर गए हैं।' सेवकों ने उन्हें खोजा
पर वे नहीं मिले। तब सेवक यरूशलेम को लौट
गए।

21 उनके जाने के पश्चात् अहीमास और
योनातन कुएँ से बाहर निकले और वहां से चले
गए। उन्होंने दाऊद को समाचार दिया। उन्होंने
उससे कहा, 'महाराज, तैयारी कीजिए। नदी
को अविलम्ब पार कीजिए। अहीतोफल ने
आपके विरुद्ध यह सम्मति दी है।' [22]अतः दाऊद
तथा उसके साथ की समस्त सेना तैयार हुई।
उन्होंने यर्दन नदी को पार किया। सबेरा होते-
होते सेना का एक भी सैनिक वहां नहीं रहा।
सब सैनिक यर्दन नदी के उस पार चले गए।

23 जब अहीतोफल ने यह देखा कि उसकी
सलाह के अनुसार कार्य नहीं किया गया, तब
उसने अपने गधे पर काठी कसी और अपने घर,
अपने नगर को चला गया। वहां उसने अपने घर
की व्यवस्था की। उसके बाद उसने फांसी लगा
कर आत्महत्या कर ली। उसको उसके पिता
की कबर में गाड़ा गया।

दाऊद महनइम नगर में

24 दाऊद महनइम नगर में आया। उधर
अबशालोम और उसके साथ इस्राएली सैनिकों
ने यर्दन नदी पार की। [25]अबशालोम ने योआब
के स्थान पर अमासा को सेनापति नियुक्त
किया। यह अमासा यिश्माएली वंश के यित्रा
नामक व्यक्ति का पुत्र था। इसने अबीगल से
विवाह किया था जो नाहश की पुत्री थी। वह
योआब की मां सरूयाह की बहिन थी।
[26]इस्राएली सेना और अबशालोम ने गिलआद
प्रदेश में पड़ाव डाला।

27 जब दाऊद महनइम नगर में आया तब
अम्मोनी राज्य की राजधानी रब्बाह से नाहश
का पुत्र शोबी, लो-दबार से आमीएल का पुत्र
माकीर और रोगलीम नगर से गिलआद प्रदेश
का रहने वाला बर्जिल्लय भी आ पहुंचे। [28-29]वे
दाऊद और उसके साथ के सैनिकों के भोजन
के लिए ये वस्तुएं लाए : शय्या, बर्तन, मिट्टी
के पात्र, गेहूं, जौ, मैदा, सूखे दाने, सेम, मसूर,
शहद, दही, पनीर और भेड़-बकरी। वे यह
सोचते थे, 'ये लोग निर्जन प्रदेश में भूखे-प्यासे
और थके-मांदे हैं।'

अबशोलोम की मृत्यु

18 दाऊद ने अपने साथ के सैनिकों की
गणना की। उसने हजार-हजार, और
सौ-सौ सैनिकों के दल पर सहस्त्रपति और
शतपति नियुक्त किए। [2]तत्पश्चात् उसने समस्त
सेना को तीन दलों में विभाजित किया। एक
दल का नायक योआब था। दूसरे दल का
नायक सरूयाह का पुत्र और योआब का भाई
अबीशय था। तीसरे दल का नायक गत निवासी
इत्तय था। राजा दाऊद ने सैनिकों से कहा, 'मैं
भी तुम्हारे साथ जाऊंगा।' [3]सैनिकों ने कहा,
'महाराज, आप नगर के बाहर नहीं जाएंगे। यदि
हमें भागना पड़ेगा तो शत्रु हमारी ओर ध्यान
नहीं देंगे। सेना के आधे सैनिक वीरगति प्राप्त
करेंगे, तो भी वे हमारी ओर ध्यान नहीं देंगे।
परन्तु महाराज, आप दस हजार सैनिकों के
बराबर हैं। इसलिए, अच्छा यह होगा कि आप
नगर में ठहर कर यहां से हमें सहायता भेजें।'
[4]राजा ने उनसे कहा, 'जो तुम्हें अपनी दृष्टि में
उचित प्रतीत होता है, वही मैं करूंगा। अतः
वह नगर के प्रवेश-द्वार के पास खड़ा हो गया,

---

17 : 19 यहो 2 : 6 17 : 23 मत 27 : 5 17 : 27 2 शम 19 : 32; 1 रा 2 : 7

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और समस्त सेना सौ-सौ और हजार-हजार के
दल में नगर से बाहर निकल गई। 5राजा ने
योआब, अबीशय और इत्तय को यह आदेश
दिया, 'मेरे लिए युवा अबशालोम के साथ
दयापूर्ण व्यवहार करना।' अबशालोम के
सम्बन्ध में सेनापतियों को दिया गया राजा का
यह आदेश समस्त सेना ने सुना।

6 यों दाऊद के सैनिक इस्राएली सेना का
सामना करने के लिए युद्ध-भूमि में आए। युद्ध
एफ्रइम के वन प्रदेश में हुआ। 7वहां इस्राएली
सेना दाऊद के सैनिकों से पराजित हो गई। उस
दिन महासंहार हुआ। लगभग बीस हजार
सैनिक मारे गए। 8युद्ध-अग्नि समस्त वन प्रदेश
में फैल गई। उस दिन जितनी संख्या में तलवार
से सैनिक मारे गए उससे अधिक संख्या में
सैनिकों को सघन वन ने निगल लिया।

9 संयोग से अबशालोम और दाऊद के
सैनिकों का आमना-सामना हो गया। अबशालोम
खच्चर पर सवार था। खच्चर एक बड़े बांज वृक्ष
की शाखाओं के नीचे से गुजर रहा था। उसी
समय अबशालोम का सिर बांज वृक्ष में फंस
गया। खच्चर उसके नीचे से निकल गया।
अबशालोम अधर में टंग गया। 10एक सैनिक
ने यह दृश्य देखा। उसने योआब को बताया,
'मैंने बांज वृक्ष से लटकते हुए राजकुमार
अबशालोम को देखा है।' 11योआब ने समाचार
लाने वाले व्यक्ति से पूछा, 'क्या कहा! तुमने
उसे देखा है? तुमने उसे वहीं क्यों नहीं मार
डाला? मैं तुझे इस कार्य के लिए प्रसन्नता से चांदी
के दस सिक्के और एक कमरबन्द देता।'
12उसने योआब को उत्तर दिया, 'आप मेरे हाथ
पर चांदी के हजार सिक्के क्यों न रख दें, मैं
राजकुमार पर अपना हाथ नहीं उठाऊंगा। जो
आदेश महाराज ने आपको, अबीशय और इत्तय
को दिया है, वह हमने भी सुना है : "मेरे लिए
युवक अबशालोम की रक्षा करना।" 13इसके
अतिरिक्त यदि मैं विश्वासघात करता तो अपने
प्राण को संकट में डालता। महाराज से कोई
बात छिपी नहीं रह सकती। तब आप भी मुझसे
किनारा कर लेते।' 14योआब ने कहा, 'मैं तुम्हारे
साथ इस प्रकार समय बर्बाद नहीं करूंगा।'
अतः उसने अपने हाथ में तीन बरछियां लीं,
और अबशालोम के हृदय में भोंक दीं, जो बांज
वृक्ष पर टंगा था और अब तक जीवित था।
15योआब के दस शस्त्रवाहक जवानों ने
अबशालोम को घेर लिया। उन्होंने उस पर वार
किया, और उसको मार डाला।

16तब योआब ने नरसिंगा फूंका और अपनी
सेना को रोक दिया। उसके सैनिकों ने इस्राएली
सेना का पीछा करना छोड़ दिया और वे लौट
आए। 17उन्होंने अबशालोम का शव उठाया, और
उसको जंगल के एक बड़े गड्ढे में फेंक दिया।
तत्पश्चात् शव के ऊपर पत्थरों का विशाल ढेर
खड़ा कर दिया। इस्राएली सैनिक अपने-अपने
घर को भाग गए। 18जब अबशालोम जीवित था
तब उसने अपने लिए एक स्तम्भ खड़ा कराया
था। यह स्तम्भ राजघाटी में है। अबशालोम का
यह विचार था, 'मेरे नाम को जीवित करने
वाला मेरा कोई पुत्र नहीं है।' अतः उसने स्तम्भ
का नाम अपने नाम पर रखा। आज तक उसको
'अबशालोम का स्तम्भ' कहते हैं।

19 सादोक के पुत्र अहीमास ने योआब से
कहा, 'मैं दौड़कर महाराज के पास यह
समाचार ले जाऊंगा कि प्रभु ने उन्हें उनके
शत्रुओं के हाथ से मुक्त कर दिया।' 20योआब
ने उससे कहा, 'आज तुम शुभ समाचार मत ले
जाओ। तुम दूसरे दिन शुभ समाचार ले जाना।
आज तुम शुभ समाचार निश्चय ही मत ले जाना;
क्योंकि आज राजकुमार की मृत्यु हुई है।'
21तब योआब ने इथियोपिया देश* के एक गुलाम
को आदेश दिया, 'जो कुछ तुमने देखा है, वह
जाकर राजा को बताओ।' गुलाम ने झुककर
योआब का अभिवादन किया, और दौड़ पड़ा।
22सादोक के पुत्र अहीमास ने पुनः कहा, 'चाहे
कुछ भी हो, मैं तो इथियोपियाई गुलाम के पीछे
दौड़कर जाऊंगा।' योआब ने समझाया, 'मेरे

* अथवा, 'कूश देश'

18 : 9 2 शम 14 : 26 **18 : 17** यहो 7 : 26 **18 : 18** उत 14 : 17; 2 शम 14 : 27

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पुत्र, तुम दौड़कर क्यों जाना चाहते हो? तुम्हें
इस समाचार के लिए कोई पुरस्कार नहीं
मिलेगा।' 23उसने कहा, 'चाहे कुछ भी हो, मैं
तो दौड़कर जाऊंगा।' योआब ने उससे कहा,
'तो दौड़ो!' अत: अहीमास दौड़ पड़ा। वह
मैदान के मार्ग से गुजरा और इथियोपियाई
गुलाम से आगे निकल गया।

24 दाऊद दो प्रवेश-द्वारों के मध्य बैठा था।
प्रहरी परकोटा से लगे हुए द्वार की छत पर था।
उसने अपनी आंखें ऊपर उठाईं। उसने देखा कि
एक मनुष्य अकेला दौड़ता हुआ आ रहा है।
25प्रहरी ने पुकार कर राजा को सूचना दी। राजा
ने कहा, 'यदि वह अकेला है तो उसके मुंह में
शुभ समाचार होगा।' वह दौड़ता हुआ और
समीप आया। 26प्रहरी ने देखा कि एक और
मनुष्य दौड़कर आ रहा है। प्रहरी ने द्वार की ओर
मुख किया, और पुकारा, 'महाराज, एक और
मनुष्य अकेला दौड़ता हुआ आ रहा है।' राजा
ने कहा, 'यह भी शुभ समाचार लानेवाला है।'
27प्रहरी ने कहा, 'महाराज, मैं पहले दौड़नेवाले
की दौड़ को पहचान सकता हूं। सादोक का पुत्र
अहीमास इस प्रकार दौड़ता है।' राजा ने कहा,
'वह अच्छा आदमी है। वह शुभ सन्देश लेकर
आता है।' 28अहीमास राजा के पास पहुँचा।
उसने राजा से कहा, 'महाराज, सब कुशल है!'
तब उसने भूमि पर मुंह के बल गिरकर राजा का
अभिवादन किया। उसने कहा, 'आपका प्रभु
परमेश्वर धन्य है! उसने मेरे स्वामी, महाराज
के विरुद्ध हाथ उठानेवाले मनुष्य के हाथ काट
डाले हैं।' 29महाराज ने उससे पूछा, 'युवा
अबशालोम तो सकुशल है न?' अहीमास ने
उत्तर दिया, 'जब योआब ने मुझे, आपके सेवक
को भेजा तब मैंने बड़ी भीड़ देखी थी। पर
महाराज, मैं नहीं जानता कि वहाँ क्या था।'
30राजा ने आदेश दिया, 'सामने से हट जाओ।
वहाँ खड़े हो जाओ।' अत: वह हटकर खड़ा
हो गया।

31 तब इथियोपियाई गुलाम आया। उसने
कहा, 'मेरे स्वामी, महाराज के लिए शुभ सन्देश
लाया हूं। आज प्रभु ने आपको आपके विरुद्ध
उठनेवालों के हाथ से मुक्त कर दिया।' 32राजा
ने गुलाम से पूछा, 'युवा अबशालोम तो
सकुशल है न?' गुलाम ने उत्तर दिया, 'मेरे
स्वामी, महाराज के शत्रुओं और आपका अनिष्ट
करनेवाले सब विरोधियों का अन्त उस युवक
के अन्त के समान हो!' 33राजा इस धक्के से
हिल उठा। वह द्वार के ऊपर बने हुए कमरे में
चला गया और वहाँ रोने लगा। उसने रोते हुए
कहा, 'ओ मेरे बेटे अबशालोम! मेरे बेटे! मेरे
बेटे अबशालोम! काश, तेरे बदले मुझे मौत
आई होती। ओ मेरे बेटे अबशालोम, मेरे बेटे!'

दाऊद का यरूशलेम को लौटना

19 किसी ने योआब को यह बात बताई,
'महाराज अबशालोम के लिए रो रहे
हैं। वह उसके लिए शोक मना रहे हैं।' 2अत:
युद्ध में प्राप्त विजय उस दिन सेना के लिए
शोक में बदल गई। सैनिकों ने सुना, 'महाराज
अपने पुत्र के लिए दु:खी हैं।' 3अत: उस दिन
सैनिकों ने नगर में ऐसे मुंह चुराकर प्रवेश किया
जैसे युद्ध से भागकर आए हुए भगोड़े मुंह चुराते
हैं। 4राजा मुंह ढककर उच्च स्वर में चिल्लाता
रहा, 'ओ मेरे बेटे अबशालोम! मेरे बेटे
अबशालोम! मेरे बेटे!'' 5तब योआब राजा के
पास महल में आया। उसने कहा, 'महाराज,
आज आपने अपने सैनिकों का मुंह शर्म से
काला कर दिया, जिन्होंने आज आपके प्राण,
आपके पुत्र-पुत्रियों के प्राण, आपकी पत्नियों
और रखैलों के प्राण बचाए। 6आप उनसे प्रेम
करते हैं, जो आप से घृणा करते हैं। पर आप
उनसे घृणा करते हैं, जो आपसे प्रेम करते हैं।
आज आपने यह बात स्पष्ट कर दी कि आपके
लिए सेना-नायकों और सैनिकों का कोई
महत्व नहीं है। आज मुझे ज्ञात हुआ कि यदि
अबशालोम आज जीवित होता और हम सब
मर गए होते तो आप प्रसन्न होते। 7अब आप
उठिए! महल से बाहर निकलिए और अपने
सैनिकों से सहृदयता से बात कीजिए। प्रभु की
सौगन्ध! यदि आप महल से बाहर नहीं

18 : 24 2 रा 9 : 17 18 :27 1 रा 1 : 42 19 : 4 2 शम 15 : 30

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

निकलेंगे तो आज रात आपके साथ एक भी सैनिक नहीं रह जाएगा। बचपन से आज तक आप पर जितनी विपत्तियाँ आई हैं, उन सबसे यह विपत्ति आपके लिए असहनीय होगी।'
8अत: राजा उठा। उसने नगर-द्वार पर अपना आसन ग्रहण किया। सैनिकों को यह समाचार मिला, 'महाराज, नगर-द्वार पर विराजमान हैं।' अत: सैनिक राजा के सम्मुख एकत्र हुए।

इस्राएली सैनिक अपने-अपने घर को भाग
गए थे। 9इस्राएल प्रदेश के सब कुल लड़-
झगड़ रहे थे। वे यह कहते थे, 'राजा दाऊद ने हमें शत्रुओं के हाथ से मुक्त किया था। उन्होंने हमें पलिश्ती जाति के हाथ से छुड़ाया था। अब वह अबशालोम के कारण देश से भाग गए।
10किन्तु अब अबशालोम, जिनको हमने अपना राजा अभिषिक्त किया था, युद्ध में मारे गए। अब हम राजा दाऊद को लौटा लाने के विषय में चुप क्यों हैं?'

11 राजा दाऊद ने पुरोहित सादोक और एबयातर को यह सन्देश भेजा, 'यहूदा प्रदेश के धर्मवृद्धों से यह कहो : "तुम राजा को उसके राजमहल में वापस लाने में सबसे पीछे क्यों रहना चाहते हो? इस्राएल प्रदेश से राजा के पास
सन्देश आ गया है। 12तुम तो मेरे भाई-बन्धु हो। तुम मेरी ही हड्डी और मांस हो। तब तुम मुझे, अपने राजा को, वापस बुलाने में सबसे पीछे
क्यों रहना चाहते हो?" 13तुम अमासा से यह कहना, "क्या तू मेरी ही हड्डी और मांस नहीं है? यदि अब मैं तुझे योआब के स्थान पर सेनापति नहीं नियुक्त करूँ तो परमेश्वर मुझे
कठोर से कठोर दण्ड दे।" ' 14यों दाऊद ने यहूदा प्रदेश के सब लोगों का हृदय अपनी ओर खींच लिया। उन्होंने एक मत होकर राजा दाऊद के पास सन्देश भेजा, 'कृपया, आप तथा
आपके सब सेवक लौट आइए।' 15अत: राजा दाऊद लौटा। वह यर्दन नदी के तट पर पहुँचा। यहूदा प्रदेश के निवासी राजा से भेंट करने, और उसको यर्दन नदी के इस पार लाने के लिए गिलगाल नगर में आए।

शिमई का स्पष्टीकरण

16 बिन्यामिन कुल के गेरा के पुत्र शिमई ने जो बहूरीम नगर में रहता था, अविलम्ब तैयारी की। वह यहूदा प्रदेश के लोगों के साथ राजा
दाऊद से भेंट करने आया। 17उसके साथ
बिन्यामिन कुल के एक हजार पुरुष थे। शाऊल के राजपरिवार का सेवक सीबा भी अपने पन्द्रह पुत्रों और बीस सेवकों के साथ, राजा दाऊद से
पहले यर्दन नदी पर पहुँच गया। 18वे राजा की
दृष्टि में भला कार्य करने के उद्देश्य से, राजपरिवार को नदी पार करा रहे थे। जब राजा नदी को पार करने लगा तब गेरा का पुत्र शिमई
राजा के पैरों पर गिरा। 19उसने राजा से कहा,
'स्वामी, मुझ पर अधर्म का अभियोग मत लगाना। जिस दिन महाराज, मेरे स्वामी यरूशलेम से जा रहे थे तब मैंने, आपके सेवक ने जो अपराध किया था, उसका आप स्मरण नहीं कीजिए। कृपया उसकी ओर ध्यान भी मत
दीजिए। 20आपका सेवक, मैं यह स्वीकार करता हूं कि मैंने पाप किया था। महाराज, देखिए, मैं यूसुफ कुल का पहला व्यक्ति हूं, जो अपने महाराज और स्वामी से भेंट करने के
लिए आया।' 21सरूयाह के पुत्र अबीशय ने उत्तर दिया, 'शिमई ने प्रभु के अभिषिक्त राजा को अपशब्द कहे थे, इसलिए उसे इस अपराध के बदले में निश्चय ही मृत्यु-दण्ड मिलना
चाहिए।' 22दाऊद ने कहा, 'सरूयाह के पुत्रो, मेरे और तुम्हारे विचारों में अन्तर है। आज तुम मेरे विरोधी मत बनो। आज क्या इस्राएल में किसी को मृत्यु-दण्ड दिया जा सकता है? आज मैं निश्चयपूर्वक जानता हूं कि मैं इस्राएल
का राजा हूं।' 23तत्पश्चात् राजा दाऊद ने शिमई ने कहा, 'तुम्हें मृत्यु-दण्ड नहीं दिया जाएगा।' राजा ने उससे शपथ खाई।

मपीबोशेत का स्पष्टीकरण

24 राजा शाऊल का पौत्र मपीबोशेत राजा दाऊद से भेंट करने के लिए आया। जिस दिन

---

19 : 13 2 शम 17 : 25 **19 : 16** 2 शम 16 : 5 **19 : 21** 2 शम 16 : 10 **19 : 22** 1 शम 11 : 13 **19 : 23** 1 रा 2 : 8-9 **19 : 24** 2 शम 9 : 6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

राजा दाऊद ने यरूशलेम से प्रस्थान किया था,
उस दिन से आज तक, जब राजा सकुशल लौट
आया, उसने अपने हाथ-पैर की सफाई नहीं
की थी। उसने न अपनी दाढ़ी बनाई थी, और
न अपने वस्त्र धोए थे। 25जब वह यरूशलेम
नगर से नीचे उतरकर राजा से मिलने आया, तब
राजा ने उससे पूछा, 'मपीबोशेत, तू मेरे साथ
क्यों नहीं गया था?' 26उसने बताया, 'महाराज,
मेरे सेवक ने मुझे धोखा दिया था। मैंने अपने
सेवक को यह आदेश दिया था कि मेरे लिए गधे
पर काठी कस। मैं उस पर सवार होकर राजा
के साथ जाऊंगा। महाराज, आप जानते हैं कि
मैं आपका सेवक लंगड़ा हूं। 27परन्तु मेरे सेवक
ने महाराज से, मेरे स्वामी से, मेरी चुगली की।
महाराज, मेरे स्वामी, आप परमेश्वर के दूत के
सदृश हैं। जो कार्य आपको अपनी दृष्टि में भला
लगे, वही मेरे साथ कीजिए। 28मेरे पिता के
परिवार के सब पुरुष, मेरे स्वामी के हाथ से
मृत्यु-दण्ड पाने के योग्य थे। परन्तु महाराज ने
मुझे, अपने सेवक को अपनी मेज पर भोजन
करने का सम्मान प्रदान किया था। तब इससे
अधिक मुझे क्या न्यायोचित अधिकार चाहिए
कि मैं महाराज की दुहाई दूं?' 29राजा ने उससे
कहा, 'तू ये बातें फिर क्यों कह रहा है? मैंने यह
निश्चय किया है: तू और सीबा अपनी भू-
सम्पत्ति को परस्पर बांट लो।' 30परन्तु मपीबोशेत
ने राजा से कहा, 'सीबा ही सब भू-सम्पत्ति ले
ले; क्योंकि महाराज मेरे स्वामी राजमहल में
सकुशल लौट आए हैं।'

बर्जिल्लय का स्पष्टीकरण

31 गिलआद प्रदेश का रहने वाला बर्जिल्लय
रोगलीम नगर से आया। वह राजा को यर्दन नदी
पार कराने के लिए यर्दन नदी के उस पार आया।
32बर्जिल्लय बहुत वृद्ध था। उसकी उम्र अस्सी
वर्ष की थी। जब राजा दाऊद महनइम नगर में
था, तब बर्जिल्लय ने उसकी भोजन-व्यवस्था
की थी; क्योंकि वह अत्यन्त समृद्ध था। 33राजा
ने बर्जिल्लय से कहा, 'आप मेरे साथ नदी के
उस पार चलिए। मैं आपकी वृद्धावस्था के लिए
यरूशलेम में अपने साथ आपकी भोजन-
व्यवस्था करूँगा।' 34बर्जिल्लय ने राजा को
उत्तर दिया, 'मुझे अब कितने दिन और जीवित
रहना है कि मैं महाराज के साथ यरूशलेम
जाऊँ? 35आज मैं अस्सी वर्ष का हूं। क्या मैं इस
उम्र में भले और बुरे की पहचान कर सकता हूं?
अब क्या मुझमें खाने-पीने की रुचि रह गई है?
अब क्या मैं गायक-गायिकाओं का मधुर गीत
सुन सकता हूं? ऐसी स्थिति में आपका यह
सेवक अपने स्वामी पर, महाराज पर भार क्यों
बने? 36आपका यह सेवक महाराज के साथ
यर्दन नदी के उस पार तक जाएगा। महाराज
मुझे इतना बड़ा पुरस्कार क्यों देना चाहते हैं?
37अपने सेवक को लौटने की अनुमति दीजिए
कि वह अपने ही नगर में मरे और अपने माता-
पिता की कबर के पास गाड़ा जाए। हाँ, यह
आपका सेवक, किमहाम आपकी सेवा में
प्रस्तुत है। महाराज इसे अपने साथ जाने की
अनुमति दीजिए। तब आपकी दृष्टि में जो भला
हो वही इसके साथ कीजिए।' 38राजा ने उत्तर
दिया, 'किमहाम मेरे साथ जाएगा। जो आपकी
दृष्टि में उचित है, वही मैं इसके लिए करूँगा।
इसके अतिरिक्त जो कुछ आप मुझसे मांगेंगे,
वह मैं आपके लिए करूंगा।' 39तत्पश्चात् सब
लोगों ने यर्दन नदी पार की। राजा दाऊद भी उस
पार गया। राजा ने बर्जिल्लय का चुम्बन लिया,
और उसे आशीर्वाद दिया। तब बर्जिल्लय
अपने निवास-स्थान को लौट गया।

40 राजा दाऊद ने नदी पार करने के बाद
गिलगाल नगर में प्रवेश किया। किमहाम भी
उसके साथ गया। यहूदा प्रदेश की सब जनता
तथा इस्राएल की आधी जनता राजा के साथ
गई। 41तब इस्राएल के लोग राजा के पास
आए। उन्होंने राजा से यह कहा, 'यहूदा प्रदेश
के हमारे जाति-भाई आपको चुराकर क्यों ले
गए? क्यों वे आपको, आपके राज-परिवार
और आपके सैनिकों को यर्दन नदी के पार ले
आए?' 42यहूदा प्रदेश के सब निवासियों ने
इस्राएल प्रदेश के निवासियों से कहा, 'महाराज

19 : 27 2 शम 16 : 3 19 : 32 2 शम 17 : 27 19 : 43 1 रा 11 : 30

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हमारे निकटतम सम्बन्धी हैं। तब तुम लोग इस
बात के कारण क्यों नाराज हो? क्या हमने
महाराज का कुछ खाया-पिया है? या उन्होंने
हमें कुछ दान दिया है?' 43इस्राएल प्रदेश के
निवासियों ने यहूदा प्रदेश के निवासियों को
उत्तर दिया, 'महाराज के राज्य में हमारे दस भाग
हैं। इसके अतिरिक्त हम दस कुल तुमसे+ बड़े
हैं। फिर तुमने हमारा तिरस्कार क्यों किया?
अपने राजा को वापस लाने के लिए क्या
सर्वप्रथम हमने बात नहीं की थी?' परन्तु यहूदा
प्रदेश के निवासियों का तर्क इस्राएल प्रदेश के
निवासियों के तर्क से अधिक प्रभावपूर्ण था।

शेबा का विद्रोह

20 संयोग से वहां एक गुण्डा था। उसका
नाम शेबा था। वह बिकरी नामक
मनुष्य का पुत्र था। वह बिन्यामिन कुल का था।
शेबा ने विद्रोह का नरसिंगा फूंका। उसने कहा:

'दाऊद के राज्य में हमारा कोई भाग नहीं;
यिशय के पुत्र की सत्ता में हमारा पैतृक
अधिकार नहीं।
ओ इस्राएल प्रदेश की जनता,
अपने घर लौट चल!'

2 अत: इस्राएल प्रदेश के सब लोगों ने
दाऊद का अनुगमन करना छोड़ दिया। वे
बिकरी के पुत्र शेबा के अनुयायी बन गए।
किन्तु यहूदा प्रदेश के लोग, यर्दन नदी से
यरूशलेम तक, अपने राजा से अलग नहीं हुए।

3 दाऊद यरूशलेम के अपने महल में
आया। राजा ने अपनी दस रखेलों को, जिन्हें
वह महल की देख-भाल के लिए छोड़ गया
था, पहरे में अलग महल में रखा। यद्यपि वह
उनकी भोजन-व्यवस्था करता रहा, तथापि
उसने उनके साथ फिर सहवास नहीं किया। वे
मृत्युपर्यन्त अपने महल में कैद रहीं। वे विधवा
के सदृश जीवन व्यतीत करती रहीं।

4 राजा दाऊद ने सेनापति अमासा से कहा,
'तुम यहूदा प्रदेश के सैनिकों को तीन दिन के
अन्दर मेरे पास बुलाओ। तुम भी यहाँ उपस्थित
रहना।' 5अत: अमासा यहूदा प्रदेश के सैनिकों
को बुलाने के लिए गया। किन्तु वह निश्चित
अवधि से अधिक समय तक वहाँ ठहर गया।
6दाऊद ने अबीशय से कहा, 'अब बिकरी का
पुत्र शेबा, अबशालोम से अधिक हमारी हानि
करेगा। तुम हमारे अंगरक्षक लेकर शेबा का
पीछा करो। ऐसा न हो कि वह किलाबन्द नगरों
में पहुँच जाए, और हमसे बच निकले।'
7अबीशय के पीछे-पीछे योआब, करेती और
पलेती जाति के अंगरक्षक तथा सब महा योद्धा
निकले। वे शेबा का पीछा करने के लिए
यरूशलेम नगर से बाहर आए। 8जब वे गिबओन
नगर के 'महा पत्थर' के समीप पहुंचे तब
अमासा उनके सामने आया। योआब सैनिक
की वर्दी पहिने हुए था। उसकी तलवार म्यान
में थी। वह उसके कमरबन्द में बंधी थी। जब
योआब आगे बढ़ा तब तलवार नीचे गिर गई।
9योआब ने अमासा से पूछा, 'मेरे भाई, तुम
सकुशल तो हो?' उसने अमासा का चुम्बन लेने
के लिए उसकी दाढ़ी अपने दाहिने हाथ से
पकड़ी। 10अमासा ने उस तलवार पर ध्यान
नहीं दिया जो योआब के बाएँ हाथ में थी।
योआब ने तलवार को उसके पेट में भोंक दिया।
उसकी अंतड़ियां बाहर निकलकर भूमि पर गिर
पड़ीं। उस पर दूसरी बार प्रहार करने की
आवश्यकता नहीं हुई। अमासा तत्काल मर
गया। योआब अपने भाई अबीशय के साथ
बिकरी के पुत्र शेबा का पीछा करने के लिए
आगे बढ़ा।

11 योआब का एक सैनिक अमासा के शव
के पास खड़ा हो गया। उसने आह्वान किया,
'जो योआब को पसन्द करता है, जो दाऊद के
पक्ष में है, वह योआब के पीछे आए।' 12अमासा
खून में लथपथ राजमार्ग के मध्य में पड़ा था।
लोग शव को देखकर खड़े हो गए। जब सैनिक
ने यह देखा कि लोग खड़े हो गए हैं तब वह
शव को राजमार्ग से हटाकर खेत में ले गया।
वहाँ उसने उसके ऊपर एक कपड़ा डाल दिया।

+ मूल में "दाऊद में"।

20 : 1 1 रा 12 : 16; 2 इति 10 : 16 20 : 3 2 शम 16 : 22 20 : 9 2 शम 3 : 27

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

13जब शव राजमार्ग से हटा दिया गया तब सब सैनिक बिकरी के पुत्र शेबा का पीछा करने के लिए योआब के पीछे चले गए।
14 शेबा इस्राएल के सब कुलों के भू-क्षेत्रों से गुजरता हुआ बेत-माकाह के आबेल नगर में आया। बिकरी-पक्ष के सब लोग एकत्र हुए। वे शेबा के पीछे नगर में चले गए।
15तब योआब के सैनिक आए। उन्होंने बेत-माकाह के आबेल नगर में शेबा को घेर लिया। उन्होंने नगर के विरुद्ध मोर्चाबन्दी कर ली। उन्होंने नगर के परकोटा से सटाकर मिट्टी का ढेर खड़ा कर दिया। योआब के सैनिक परकोटा को तोड़ रहे थे। वे उसको गिराने का प्रयत्न कर रहे थे।
16तब एक बुद्धिमती स्त्री ने नगर की ओर से सैनिकों को पुकारा, 'सुनो! सुनो! कृपाकर आप योआब से यह बात कहिए कि वह मेरे इतने समीप आएं कि मैं उनसे बात कर सकूं।'
17अत: योआब उसके समीप आया। उस स्त्री ने पूछा, 'क्या आप योआब हैं?' वह बोला, 'हां मैं ही हूँ।' स्त्री ने उससे कहा, 'कृपया, अपनी सेविका की बात सुनिए।' योआब बोला, 'मैं तुम्हारी बात सुन रहा हूँ।'
18स्त्री ने कहा, 'प्राचीन काल में लोग यह कहते थे, ''यदि सलाह लेनी है तो आबेल नगर को जाओ।'' इस प्रकार वे अपने झगड़ों का निपटारा कर लेते थे।
19हम इस्राएल प्रदेश के शान्तिप्रिय और विश्वसनीय लोग हैं। आप हमारे इस नगर को, जो इस्राएल प्रदेश का महानगर है, नष्ट करने का प्रयत्न कर रहे हैं। आप प्रभु की मीरास को क्यों निगलना चाहते हैं?'
20योआब ने उत्तर दिया, 'प्रभु क्षमा करे कि मैं ऐसा कार्य करूं! मैं इस नगर को नष्ट करूं और प्रभु की मीरास को निगलूं।
21बात ऐसी नहीं है। एफ्रइम पहाड़ी इलाके का एक मनुष्य है। उसका नाम शेबा बेन-बिकरी है। उसने राजा दाऊद से विद्रोह किया है। तुम लोग उसको मेरे हाथ में सौंप दो तब मैं नगर से लौट जाऊंगा।' स्त्री ने योआब से कहा, 'उसका सिर परकोटा से आपके पास फेंक दिया जाएगा।'
22तत्पश्चात् स्त्री नगर निवासियों के पास गई। उसने बुद्धिमत्तापूर्वक उन्हें समझाया। अत: उन्होंने बिकरी के पुत्र शेबा का सिर काट लिया, और उसको परकोटा से योआब के पास फेंक दिया। योआब ने नरसिंगा फूंका और सैनिकों ने नगर की घेराबन्दी उठा ली। वे अपने-अपने घर को लौट गए। योआब राजा दाऊद के पास यरूशलेम को लौट गया।

दाऊद के उच्च पदाधिकारी

23 योआब समस्त इस्राली सेना का सेनापति था। यहोयादा का पुत्र बनायाह करेती और पलेती अंगरक्षकों का नायक था।
24बेगार करने वालों का अधिकारी अदोराम था। अहीलूद का पुत्र यहोशाफट राज-सचिव था।
25शबा महा सहायक था। सादोक और एबयातर पुरोहित थे।
26 याइर नगर का रहने वाला ईरा भी दाऊद का पुरोहित था।

गिबओनी लोगों की मांग स्वीकार करना

21 दाऊद के राज्य-काल में लगातार तीन वर्ष तक अकाल पड़ा। दाऊद ने प्रभु से इसका कारण पूछा। प्रभु ने कहा, 'शाऊल और उसके राज-परिवार पर हत्या का दोष है, क्योंकि उसने गिबओनी जाति के लोगों का वध किया था।'
2अत: राजा दाऊद ने गिबओनी लोगों को बुलाया। गिबओनी लोग इस्राएली जाति के नहीं थे। वे एमोरी जाति के बचे हुए वंशज थे। यद्यपि इस्राएलियों ने उनसे शपथ खाई थी कि वे उन्हें नहीं मारेंगे, तो भी शाऊल ने इस्राएल और यहूदा प्रदेश की जनता के प्रति अपने धार्मिक उत्साह के कारण इनको नष्ट करने का प्रयत्न किया था।
3दाऊद ने गिबओनी लोगों से पूछा, 'मैं तुम्हारे कल्याण के लिए क्या कर सकता हूँ? मैं किस प्रकार प्रायश्चित्त करूँ कि तुम लोग प्रभु की मीरास, इस्राएली राष्ट्र को आशिष दो?'
4गिबओनी लोगों ने कहा, 'यह हमारे और शाऊल तथा उनके परिवार के मध्य सोना अथवा चाँदी की प्रश्न नहीं है। हम इस्राएली जाति के किसी व्यक्ति का वध भी नहीं चाहते हैं।' दाऊद ने फिर पूछा, 'तब तुम

20 : 23-26 2 शम 8 : 15-18; 1 इति 18:14-17 21 : 2 यहो 9 : 3

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मुझसे क्या कहते हो? मैं तुम्हारे लिए क्या
करूं?' 5उन्होंने राजा को उत्तर दिया, 'जिस
व्यक्ति ने हमारा महासंहार किया, जिसने हमें
मिटा डालने के लिए षड्यन्त्र रचा कि इस्राएल
देश की सीमा के भीतर हमारा अस्तित्व ही न
रहे, 6उस व्यक्ति के सात पुत्र हमें सौंप दिए
जाएं। हम प्रभु के पर्वत पर, गिबओन में प्रभु
के सम्मुख उन्हें फांसी पर लटकाएंगे।' राजा ने
कहा, 'मैं निश्चय ही उनको तुम्हारे हाथ में सौंप
दूंगा।'

7 किन्तु राजा दाऊद ने प्रभु की सौगन्ध के
कारण, जो उसने और शाऊल के पुत्र योनातन
ने एक-दूसरे से खाई थी, शाऊल के पौत्र और
योनातन के पुत्र मपीबोशेत को बचा लिया।
8राजा दाऊद ने ये पुत्र लिये : अय्याह की पुत्री
रिस्पाह के दो पुत्र, अर्मोनी और मपीबोशेत,
जिनको रिस्पाह ने शाऊल से जन्म दिया था;
शाऊल की पुत्री मेरब के पांच पुत्र, जिनको
उसने महोलाह नगर के अद्रीएल बेन-बर्जिल्लय
से जन्म दिया। 9दाऊद ने इन्हें गिबओनी लोगों
के हाथ में सौंप दिया और उन्होंने पहाड़ पर प्रभु
के सम्मुख इन्हें फांसी पर लटका दिया। ये सातों
एक साथ मर गए। ये फसल के प्रारम्भिक दिनों
में, जौ की फसल के आरम्भ में मार डाले गए।

10 अय्याह की पुत्री रिस्पाह ने मृत्यु-शोक
प्रकट करने के लिए टाट का वस्त्र लिया और
उसको एक चट्टान पर फैला दिया। वह फसल
के आरम्भ से तब तक शवों के पास बैठी रही
जब तक आकाश से उनपर वर्षा नहीं हुई। उसने
दिन के समय शवों पर आकाश के पक्षियों को
बैठने नहीं दिया। वह रात के समय जंगल के
जानवरों को उनके पास फटकने नहीं देती थी।
11शाऊल की रखेल रिस्पाह के इस कार्य की
सूचना दाऊद को मिली। 12वह याबेश-गिलआद
नगर के कब्रिस्तान पर गया। उसने नगर के पंचों
के हाथ से शाऊल और उसके पुत्र योनातन की
अस्थियां लीं। जिस दिन पलिश्ती सेना ने
गिलबोअ में शाऊल को पराजित किया था,
और उसे तथा योनातन को बेत-शान के चौक
में लटका दिया था, तब ये पंच उनके शव को
वहां से चुरा लाए थे। 13दाऊद वहाँ से शाऊल
और उसके पुत्र योनातन की अस्थियां ले गया।
तत्पश्चात् उन्होंने फांसी पर लटकाए गए सातों
पुत्रों की अस्थियाँ एकत्र कीं, 14 और उनको
शाऊल और योनातन की अस्थियों के साथ
बिन्यामिन-कुल के क्षेत्र में स्थित सेला नगर में,
शाऊल के पिता कीश की कबर में गाड़ दिया।
राजा दाऊद के आदेश के अनुसार सब कार्य
किया गया। तत्पश्चात् परमेश्वर ने देश के
लिए+ की गई प्रार्थना सुनी।

अबीशय की वीरता

15 पलिश्तियों से इस्राएलियों का पुनः युद्ध
छिड़ गया। दाउद अपने अंगरक्षकों के साथ
युद्ध-भूमि में गया। वे पलिश्तियों से युद्ध करने
लगे। दाऊद थक गया। 16तब बनोब* उठा।
वह रपाई दानव का वंशज था। उसके भाले का
वजन लगभग साढ़े तीन किलो था। वह अपनी
कमर में नई तलवार बांधे हुए था। उसका
उद्देश्य दाऊद का वध करना था। 17परन्तु सरूयाह
का पुत्र अबीशय राजा दाऊद की सहायता करने
के लिए पहुंच गया। वह पलिश्ती पर टूट पड़ा।
अबीशय ने उसको मार डाला। तब दाऊद के
सैनिकों ने उसे शपथ दिलायी, 'आप हमारे
साथ युद्ध पर अब नहीं जाएंगे। ऐसा न हो कि
इस्राएली राष्ट्र का दीपक बुझ जाए।'

दानवों का वध

18 इस घटना के कुछ समय पश्चात् गोब
नगर में पलिश्तियों से फिर युद्ध छिड़ गया। इस
युद्ध में हूशाह के रहने वाले सिब्बकय ने सफ
को मार डाला, जो रपाई दानव का वंशज था।

19 गोब नगर में पलिश्तियों के साथ फिर
युद्ध होने लगा। इस युद्ध में बेतलेहम नगर के
निवासी, याइर** के पुत्र एलहानन ने गत नगर
के गोलयत का वध किया। गोलयत के भाले

+ अर्थात्, ''वर्षा के लिए''। * अथवा ''यिश्बी-बनोब'' * अथवा, 'यारयोरगीम'

21 : 7 1 शम 20 : 15,42 **21 : 8** 2 शम 3 : 7 ; 1 शम 18 : 19 **21 : 12** 1 शम 31 : 11-13 **21 : 18-22** 1 इतं 20 : 4-8 **21 : 19** 1 शम 17

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

का डण्डा करघे के समान था। [20]गत नगर में
फिर युद्ध आरम्भ हुआ। वहाँ एक भीमकाय
पुरुष था। उसके हाथ में छः-छः अंगुलियां,
और पैरों में छः-छः अंगुलियां थीं। इस प्रकार
उसके हाथ-पैर में चौबीस अंगुलियां थीं। वह
भी रपाई दानव का वंशज था। [21] जब उसने
इस्राएली जाति को चुनौती दी तब दाऊद के
भाई शिमआ के पुत्र योनातन** ने उसे मार
डाला। [22] ये चार महायोद्धा गत नगर की रपाई
जाति के दानवों के वंशज थे। दाऊद और उसके
अंगरक्षकों ने अपने हाथ से उन्हें मौत के घाट
उतार दिया।

दाऊद का मुक्ति-गान

22 जिस दिन प्रभु ने दाऊद को उसके सब
शत्रुओं के हाथ से और शाऊल के हाथ
से मुक्त किया, उस दिन दाऊद ने प्रभु को
सम्बोधित करते हुए यह गीत गाया:

2 'प्रभु मेरी चट्टान, मेरा शरण-स्थल और मेरा
मुक्तिदाता है!
3 वह मेरा परमेश्वर, मेरी चट्टान है;
मैं उसकी शरण में आता हूँ।
वह मेरी ढाल, मेरा शक्तिशाली उद्धारकर्ता,
मेरा गढ़, मेरा आश्रय-स्थल है।
प्रभु, हिंसा से तू मुझे बचाता है।
4 मैं प्रभु को पुकारता हूं, जो सर्वथा स्तुति के
योग्य है।
मैं अपने शत्रुओं से मुक्त हुआ हूँ।

5 'मृत्यु की तरंगों ने मुझे लपेट लिया;
विनाश की प्रचंड धारा ने मुझ पर आक्रमण
किया।
6 मृतक-लोक के पाश-बन्धन ने मुझे उलझाया;
मृत्यु का फन्दा मेरे सम्मुख आया।

7 'मैंने संकट में प्रभु को पुकारा;
मैंने अपने परमेश्वर की दुहाई दी।
उसने अपने मन्दिर से मेरी वाणी सुनी;
मेरी दुहाई उसके कानों में पहुँची।

8 'तब धरती में कम्पन हुआ, वह डोल उठी;
आकाश के आधार-स्तम्भ कांप उठे,
वे हिल गए;
क्योंकि प्रभु अत्यन्त क्रुद्ध था।
9 उसके नथनों से धुआं निकलने लगा;
और उसके मुंह से भस्म करने वाली अग्नि,
उससे दहकते अंगारे निकल पड़े।
10 वह स्वर्ग को झुकाकर नीचे उतर आया।
उसके चरणों-तले गहन अन्धकार था।
11 वह करूब पर सवार हो, उड़ गया;
वह पवन के पंखों पर वेगपूर्वक उतरा।
12 उसने अन्धकार को अपने चारों ओर ओढ़
लिया;
गगन के काले मेघ उसका वितान थे।
13 उसके सम्मुख के आलोक से दहकते अंगारे
फूट पड़े!
14 प्रभु आकाश में गरजने लगा,
सर्वोच्च परमेश्वर ने नाद किया।
15 उसने बाण छोड़े, और शत्रुओं को छिन्न-
भिन्न कर दिया।
विद्युत की चमक ने उनमें भगदड़ मचा दी।
16 तब प्रभु की डांट से
उसकी नासिका के श्वास के धमाके से
सागर के स्रोत दिखाई दिए;
पृथ्वी की नींव प्रकट हुई।

17 'उसने उच्च स्थान से अपना हाथ बढ़ाया,
और मुझे थाम लिया;
उसने मुझे गहरे जल से ऊपर खींच लिया।
18 उसने मेरे शक्तिवान शत्रु से
मुझसे बैर करने वालों से मुझे मुक्त
किया।
19 वे संकट-काल में मुझ पर चढ़ आए,
पर प्रभु मेरा सहारा था।
20 प्रभु ने मुझे खुले स्थान में पहुंचाया;

** अथवा, 'यहोनातान'

22 : 2-51 भज 18 : 2-50 **22 : 2** व्य 32 : 4; 1 शम 2 : 2 **22 : 3** लू 1 : 69 **22 : 8** शास 5 : 4
22 : 10-18 भज 144 : 5-7

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उसने मुझे मुक्त किया,
क्योंकि वह मुझसे प्रसन्न था।

21 'प्रभु मे मेरी धार्मिकता के अनुसार मुझे फल दिया;
मेरे हाथों की शुद्धता के अनुरूप मुझे पुरस्कृत किया।
22मैं प्रभु के मार्गों पर चलता रहा,
मैं दुष्टतावश अपने परमेश्‍वर से पृथक नहीं हुआ।
23उसके समस्त न्याय-सिद्धान्त मेरे सम्मुख रहे,
मैंने उसकी संविधियों से मुंह नहीं मोड़ा।
24मैं उसके सम्मुख निर्दोष रहा,
मैंने अपने को अपराधों से बचाए रखा।
25अत: प्रभु ने मेरी धार्मिकता के अनुसार,
अपनी दृष्टि में मेरे निष्कलंक आचरण के अनुरूप
मुझे पुरस्कृत किया।

26 'भक्त जन के साथ तू भक्त है;
और निर्दोष के साथ तू निर्दोष है।
27सिद्ध के लिए तू सिद्ध है;
पर कुटिल के लिए तू कुटिल है।
28तू विनम्र लोगों का उद्धार करता है;
किन्तु अहंकार से चढ़ी आंखों को नीचा।
29प्रभु, तू ही मेरा दीपक है;
हे मेरे प्रभु, तू मेरे अन्धकार को
आलोकित करता है।
30तेरे सहारे मैं सेना को कुचल सकता हूँ;
मैं अपने परमेश्‍वर की सहायता से प्राचीर लांघ सकता हूँ।
31इसी परमेश्‍वर का मार्ग सीधा है,
प्रभु की प्रतिज्ञा कसौटी-सिद्ध है।
वह अपने सब शरणागतों की ढाल है।

32 'प्रभु के अतिरिक्त और कौन परमेश्‍वर है?
हमारे परमेश्‍वर के अतिरिक्त और कौन चट्टान है?
33यही परमेश्‍वर मुझे शक्ति-सम्पन्न करता है;
वह मेरे मार्ग को कन्टकहीन बनाता है।
34वह मेरे पैरों को हरिनी के पैरों जैसी गति देता है;
वह मेरे पर्वतीय गढ़ों में मुझे दृढ़ करता है।
35वह युद्ध के लिए मेरे हाथों को प्रशिक्षित करता है;
मैं अपनी बाहों से पीतल के धनुष को मोड़ सकता हूँ।
36तूने अपने उद्धार की ढाल मुझे दी है।
तेरे अनुग्रह ने मुझे महान बनाया है।
37मेरे पग आगे बढ़ाने के लिए
तूने मेरा मार्ग प्रशस्त किया था;
अत: मेरे पैर नहीं फिसले थे।
38मैंने अपने शत्रुओं का पीछा किया, और उन्हें दबा दिया।
जब तक मैंने उन्हें नष्ट नहीं कर दिया,
तब तक मैं नहीं लौटा।
39मैंने उन्हें समाप्त कर दिया।
मैंने उन्हें ऐसा मारा कि वे फिर उठ न सके।
वे मेरे पैरों पर गिर पड़े।
40तूने मुझे युद्ध के लिए शक्ति-सम्पन्न किया था;
तूने आक्रमणकारियों को मेरे सम्मुख झुका दिया था।
41तूने मेरे शत्रुओं को विवश किया कि वे पीठ दिखाकर भागें;
मैंने उन्हें नष्ट कर दिया,
जो मुझसे बैर करते थे।
42उन्होंने दुहाई दी,
पर उन्हें बचाने वाला कोई न था;
उन्होंने प्रभु को पुकारा,
पर प्रभु ने भी उन्हें उत्तर नहीं दिया।
43मैंने उन्हें कूट-कूटकर भूमि की धूल जैसा बना दिया;
मैंने उन्हें पथ की कीच के सदृश रौंद दिया।

44 'तूने मुझे जातियों के संघर्ष से छुड़ाया;
तूने मुझे राष्ट्रों का अध्यक्ष बनाया;

22 : 31 व्य 32 : 4; भज 12 : 6 **22 : 34** हब 3 : 19

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उन जातियों ने मेरी सेवा की, जिन्हें मैं जानता
भी न था।
45 जैसे ही उन्होंने मेरा नाम सुना,
मेरे आदेशों का पालन किया।
विदेशी झुककर अभिवादन करते हुए
मेरे सम्मुख आए।
46 विदेशी हताश हो गए;
वे अपने किलों से कांपते हुए निकले।

47 'प्रभु जीवित है;
धन्य है मेरी चट्टान!
मेरे उद्धार की चट्टान,
मेरे परमेश्वर की स्तुति हो!
48 वह ऐसा परमेश्वर है,
जिसने मेरे लिए प्रतिशोध लिया,
जिसने कौमों को मेरे अधीन कर दिया।
49 प्रभु ने मेरे शत्रुओं से मुझे मुक्त किया,
उसने मेरे बैरियों की अपेक्षा
मुझे उन्नत किया।
उसने हिंसक व्यक्तियों से मुझे छुड़ाया।

50 'इस कारण, प्रभु, मैं राष्ट्रों में तेरा गुणगान
करूंगा,
मैं तेरे नाम का स्तुतिगान करूंगा।
51 तू अपने राजा को महान विजय प्रदान करता
है;
तू अपने अभिषिक्त पर,
दाऊद और उसके वंश पर
युग-युगान्त करुणा करता है।'

दाऊद के अन्तिम वचन

23 ये दाऊद के अन्तिम वचन हैं:
'यिशय के पुत्र दाऊद की वाणी,
परमेश्वर द्वारा उच्च स्थान पर प्रतिष्ठित किए
गए व्यक्ति की वाणी;
याकूब के परमेश्वर के अभिषिक्त,
इस्राएली राष्ट्र के प्रिय गायक की वाणी।
2 'प्रभु का आत्मा मेरे द्वारा बोलता है।
उसका शब्द मेरी जीभ पर विराजमान है।
3 इस्राएल का परमेश्वर बोला,
''इस्राएल की चट्टान'' ने मुझसे यह कहा:
''मनुष्यों पर न्यायपूर्वक राज्य करने वाला,
परमेश्वर की भक्ति करते हुए शासन करने
वाला शासक
4 मानो सूर्योदय का प्रकाश है,
मेघ -रहित प्रातःकालीन सूर्य का आलोक
है।
वह वर्षा के सदृश है, जो भूमि पर घास
उगाती है।''

5 'मेरा परिवार निस्सन्देह परमेश्वर के विश्वास
में सुदृढ़ है।
परमेश्वर ने मेरे साथ स्थायी विधान स्थापित
किया है,
जो सब प्रकार से व्यवस्थित और अटल है।
वह मेरे सब कल्याणप्रद कार्यों को,
मेरी सब इच्छाओं को निस्सन्देह पूर्ण करेगा।
6 पर अधम व्यक्ति उन निकम्मी कंटीली
झाड़ियों के समान हैं,
जिन्हें हाथों से एकत्र नहीं कर सकते।
7 जिन्हें कोई भी हाथ से स्पर्श नहीं करता;
किन्तु उन्हें लोहे की छड़ से,
भाले की नोक से
उठाकर आग में झोंक देते हैं।'

दाऊद के महायोद्धा

8 ये दाऊद के महायोद्धाओं के नाम हैं:
तहकमोन का रहने वाला योशेब-बशेबेत। वह
तीन महायोद्धाओं का नायक था। उसने आठ
सौ सैनिकों से एक साथ युद्ध किया था और
उन्हें कुल्हाड़ी से मार डाला था। 9 उसके बाद
एलआजर था। वह अहोही गोत्र के दोदो का
पुत्र था। वह तीन महायोद्धाओं में से एक था।
वह पस-दम्मीन में+ दाऊद के साथ था, जब
पलिश्ती सेना वहाँ युद्ध के लिए एकत्र हुई थी,

+ मूल में 'ललकारने में',
22 : 50 रोम 15 : 9 23 : 1 1 रा 2 : 1-9 23 : 2 2 पत 1 : 21 23 : 5 2 शम 7 : 11-16; यश 55 : 3
23 :8-39 1 इति 11 : 10-41

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

और इस्राएली सैनिक पीछे हट गए थे। [10]किन्तु
वह युद्ध में डटा रहा, उसने पलिश्तियों को
इतना मारा कि उसका हाथ थक गया और ऐंठ
कर तलवार से चिपक गया। उस दिन प्रभु ने
उसे महाविजय प्रदान की। यद्यपि इस्राएली
सैनिक उसके पास वापस आए, तथापि वे
केवल मरे हुए पलिश्तियों को लूटने के लिए
आए थे।

11 उसके बाद हरार नगर के रहने वाले आगे
का पुत्र शम्मा था। एक बार पलिश्ती सेना लही
में युद्ध के लिए एकत्र हुई। वहाँ मसूर का एक
खेत था। इस्राएली सैनिक पलिश्ती सेना से
डरकर भागे। [12]किन्तु शम्मा खेत के मध्य में
खड़ा हो गया। उसने खेत की रक्षा की। उसने
पलिश्तियों को मारा। प्रभु ने उसे महाविजय
प्रदान की।

13 तीस योद्धाओं में से तीन महायोद्धा
फसल की कटनी के आरम्भिक दिनों में
निकले। वे दाऊद के पास अदूल्लाम गुफा में
आए। पलिश्ती सैन्य-दल रपाईम घाटी में
पड़ाव डाले हुए था। [14]उस समय दाऊद गढ़
में था। पलिश्तियों की रक्षक-सेना बेतलेहम में
थी। [15]दाऊद ने उत्कण्ठा से कहा, 'कौन मुझे
बेतलेहम के प्रवेश-द्वार के कुएं से पीने के लिए
पानी लाकर देगा?' [16]तब ये तीन महायोद्धा
पलिश्ती पड़ाव को चीर कर बेतलेहम के
प्रवेश-द्वार के कुएं पर पहुंचे। उन्होंने कुएं से
पानी खींचा। वे पानी लेकर दाऊद के पास
आए। परन्तु दाऊद ने पानी पीने से इन्कार कर
दिया। उसने पानी को प्रभु के सम्मुख उण्डेल
दिया। [17]उसने कहा, 'प्रभु मुझसे यह कार्य
कदापि न कराए। यह उन मनुष्यों का रक्त है
जो अपने प्राण को हथेली पर रखकर गए थे।'
अतः उसने उस पानी को नहीं पिया। उन तीन
महायोद्धाओं ने ऐसे ही कार्य किए थे।

18 सरूयाह का पुत्र और योआब का भाई
अबीशय तीस योद्धाओं का नायक था। एक
बार उसने केवल भाले से शत्रु सेना के तीन सौ
सैनिकों से युद्ध किया और उन्हें मार डाला था।
इस प्रकार तीस योद्धाओं *में अपना नाम प्रसिद्ध
किया था। [19]वह तीस योद्धाओं में सबसे
अधिक प्रसिद्ध था। वह उनका नायक बन गया
था। परन्तु वह तीन महायोद्धाओं के बराबर
नहीं था।

20 यहोयादा का पुत्र बनायाह महाबली
पुरुष था। वह कबसएल नगर का रहने वाला
था। उसने बड़े-बड़े काम किए थे। उसने
मोआब देश के दो महाबलवान योद्धाओं **का
वध किया था। एक दिन, जब बर्फ गिर रही थी,
वह एक गड्ढे में उतरा। उसने वहाँ एक सिंह को
मार डाला। [21]उसने एक दैत्याकार मिस्री योद्धा
को भी मारा था। मिस्री के हाथ में भाला था।
परन्तु बनायाह हाथ में मात्र डण्डा लेकर उसके
पास गया। उसने मिस्री के हाथ से भाला छीन
लिया, और उसी भाले से उसका वध कर दिया।

22 बनायाह ने ये कार्य किए थे, और इस
प्रकार तीस योद्धाओं में अपना नाम प्रसिद्ध
किया था। [23] वह तीस योद्धाओं में प्रसिद्ध था,
परन्तु तीन महायोद्धाओं के बराबर नहीं था।
दाऊद ने उसे अपने अंगरक्षकों का नायक
नियुक्त किया था।

24 योआब का भाई असाहएल तीस योद्धाओं
में से एक था। शेष योद्धाओं के नाम हैं:
बेतलेहम के दोदो का पुत्र एलहानन; [25]हरोद-
वासी शम्मा; हरोद-वासी एलीका; [26]पल्टी
वंशीय हेलस; तकोअ निवासी इक्केस का पुत्र
ईरा; [27]अनातोत-वासी अबीएजर; हूशाह-वासी
मबून्नय; [28]अहोह-वासी सलमोन; नटाफाह-
वासी महरई; [29]नटाफाह-वासी बानाह का पुत्र
हेलेद; बिन्यामिन क्षेत्र के गिबआह नगर के
रीबय का पुत्र इत्तय; [30]पिर्आतोन नगर का
बनायाह; बरसाती नदी गाअश के तट पर रहने
वाला हिद्दय; [31]बेत-अराबाह का अबी-
अलबोन; बहूरिम का अजमावेत; [32]शालबोन का
एलयहबा; गिमसो का याशेन+; [33]हरार के शम्मा
का पुत्र योनातन; हरार के शारर का पुत्र अहीम;

* मूल में 'तीन महायोद्धाओं', ** अथवा, ''अरिएल के दो पुत्रों'', + मूल में, 'याशेन के पुत्र'।

23 : 13 1 शम 22 : 1; 2 शम 5: 18

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

34 बेत-मअकाह के अहसबय का पुत्र एलीपेलट;
गिलो के अहीतोफल का पुत्र एलीआम;
35 कर्मेल का हेस्रो; अरब का पारय, 36 सोबा
के नातन का पुत्र इगआल; गाद का बानी; 37
अम्मोन जाति का सेलक; बएरोत नगर का
नहरय। यह सरूयाह के पुत्र योआब का शस्त्र-
वाहक था। 38 यत्तिर नगर का ईरा; यत्तिर नगर
का गारेब; 39 हित्ती जाति का ऊरियाह। कुल
सैंतीस योद्धा।

इस्राएल और यहूदा प्रदेशों की जनगणना

24 प्रभु का क्रोध इस्राएलियों के विरुद्ध
फिर भड़क उठा। उसने इस्राएलियों के
प्रति दाऊद को भड़काया। उसने कहा, 'जा,
और इस्राएल तथा यहूदा प्रदेशों की जनगणना
कर।' 2 अतः राजा दाऊद ने योआब तथा अपने
साथ के सेना-नायकों को यह आदेश दिया,
'समस्त इस्राएली कुलों के क्षेत्रों में, दान नगर
से बएर-शेबा नगर तक फैल जाओ, और
इस्राएली प्रजा के पुरुषों ++की गणना करो। मैं
पुरुषों की संख्या जानना चाहता हूं।' 3 योआब
ने राजा से कहा, 'प्रभु, आपका परमेश्वर प्रजा
के पुरुषों की आबादी को सौगुना बढ़ाए। मेरे
स्वामी, महाराज स्वयं अपनी आंखों से इस
बढ़ोत्तरी को देखें। पर महाराज, मेरे स्वामी, इस
कार्य में आपकी रुचि क्यों है?' 4 किन्तु राजा ने
योआब और सेना-नायकों को बाध्य किया कि
वे उसके आदेश का पालन करें। अतः योआब
और सेना-नायक इस्राएली पुरुषों की गणना
करने के लिए राजा के दरबार से बाहर निकले।
5 उन्होंने यर्दन नदी पार की, और जनगणना
का कार्य अरोएर नगर से तथा उस नगर से
आरम्भ किया, जो घाटी के मध्य में स्थित है।
तब वे गाद प्रदेश तथा याजेर नगर की ओर बढ़े।
6 वहाँ से वे गिलआद नगर तथा हित्ती राज्य के
कादेश नगर में आए। तत्पश्चात् वे दान नगर में
आए। वे दान से आगे बढ़े और चक्कर लगाते
हुए सीदोन राज्य की ओर गए। 7 वे सोर के
किले में आए। वे हिव्वी और कनानी जातियों
के सब नगरों में गए। तत्पश्चात् वे यहूदा प्रदेश
के नेगब क्षेत्र में स्थित बएर-शेबा नगर को गए।
8 समस्त देश का भ्रमण करने के बाद वे नौ
महीने बीस दिन के पश्चात् यरूशलेम को
लौटे। 9 योआब ने राजा दाऊद को पुरुषों की
संख्या बताई। इस्राएल प्रदेश में आठ लाख
सशक्त पुरुष थे जो तलवार चला सकते थे।
यहूदा प्रदेश में पांच लाख पुरुष थे।
10 युद्ध-सेवा के योग्य पुरुषों की जनगणना
करने के बाद दाऊद के हृदय ने उसे इस कार्य
के लिए फटकारा। अतः उसने प्रभु से कहा,
'मैंने यह कार्य कर महापाप किया। प्रभु,
कृपाकर, अपने सेवक पर से यह अधर्म का
बोझ दूर कर। मैं बड़ी मूर्खता का कार्य कर
बैठा' 11 परन्तु जब दाऊद दूसरे दिन सबेरे उठा
तब प्रभु का यह वचन नबी गाद को, दाऊद के
द्रष्टा को मिला, 12 'जा, और दाऊद से यह कह,
"प्रभु यों कहता है: मैं तेरे सम्मुख तीन प्रस्ताव
रखता हूँ। तू उनमें से एक चुन। मैं उसके
अनुसार तेरे साथ व्यवहार करूंगा।" '
13 अतः गाद दाऊद के पास आया। उसने
यह बात दाऊद को बताई। उसने दाऊद से
कहा, 'क्या आप चाहते हैं कि आपके देश में
तीन वर्ष तक अकाल पड़े? या आप तीन महीने
तक अपने बैरियों के कारण, जो आपका पीछा
करेंगे, भागते रहें? अथवा क्या आप पसन्द
करेंगे कि आपके देश पर तीन दिन तक
महामारी का प्रकोप हो? अब आप सोच-
विचार कर निर्णय दीजिए कि मैं लौट कर
अपने भेजने वाले को उत्तर दूं।' 14 दाऊद ने
गाद को उत्तर दिया, 'मैं बड़े संकट में हूँ।
आओ, हम प्रभु के हाथ से मारे जाएं। वह
महादयालु है। परन्तु मैं मनुष्य के हाथ में नहीं
पड़ना चाहता।' 15 इस प्रकार दाऊद ने महामारी
के प्रकोप को चुना।
गेहूँ की फसल का समय था।+ प्रभु ने इस्राएल
देश पर महामारी भेजी। महामारी सबेरे से
आरम्भ हुई और निर्धारित समय तक फैली

++ शब्दश: 'लोगों' + इस पद का आरम्भ यूनानी पाठ के अनुसार
24 : 1-25 1 इति 21: 1-27 24: 1 नि 32 : 32 24 : 10 1 शम 24 : 5 24 : 11 1 शम 22 : 5

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
रही। दान नगर से बएरशेबा क्षेत्र तक बसे हुए
लोगों में से सत्तर हजार व्यक्ति मर गए।
16स्वर्गदूत ने यरूशलेम नगर के वासियों को
नष्ट करने के लिए उसकी ओर हाथ उठाया।
परन्तु उस क्षण ही प्रभु यह विपत्ति देखकर
दु:खी हुआ। उसने लोगों का संहार करने वाले
दूत से कहा, 'बस! यह पर्याप्त है। अपना हाथ
रोक ले।' उस समय प्रभु का दूत यबूसी जाति
के अरौनाह नामक व्यक्ति के खलियान के पास
पहुंचा था। 17जब दाऊद ने लोगों का संहार
करने वाले दूत को देखा, तब उसने प्रभु से यह
कहा, 'प्रभु, देख, पाप मैंने किया। मैंने ही
दुष्कर्म किया। पर ये भेड़ें? इन्होंने क्या किया?
प्रभु, मैं विनती करता हूँ: मुझ पर और मेरे
परिवार पर अपना हाथ उठा।'

18 उसी दिन गाद दाऊद के पास आया।
उसने दाऊद से कहा, 'जाइए और यबूसी
अरौनाह के खलियान में प्रभु के लिए एक वेदी
प्रतिष्ठित कीजिए।' 19यह आज्ञा प्रभु ने गाद को
दी थी। दाऊद गाद के आदेश के अनुसार गया।
20अरौनाह ने टीले से नीचे देखा। उसने देखा
कि राजा और उसके राज-कर्मचारी उसकी
ओर आ रहे हैं। वह खलियान से बाहर
निकला। वह भूमि पर मुंह के बल गिरा, और
राजा का अभिवादन किया। 21 अरौनाह ने पूछा,
'महाराज, मेरे स्वामी ने अपने सेवक के पास
आने की कृपा क्यों की?' दाऊद ने बताया, 'मैं
तुम्हारा खलियान खरीदने के लिए आया हूं। मैं
यहां प्रभु के लिए एक वेदी बनाऊंगा, जिससे
महामारी लोगों को छोड़ दे।' 22अरौनाह ने दाऊद
से कहा, 'महाराज, मेरे स्वामी, जो आपकी
दृष्टि में उचित है, वह ले लीजिए और बलि
चढ़ाइए। देखिए, बलि के लिए यहाँ बैल हैं।
अग्नि की लकड़ी के लिए दंवरी के औजार
तथा बैलों का जूआ भी है। 23महाराज, मैं यह
सब आपकी सेवा में प्रस्तुत करता हूँ।' अरौनाह
ने राजा दाऊद से आगे कहा, 'आपका प्रभु
परमेश्वर आपको, और आपकी बलि को
स्वीकार करे।' 24परन्तु राजा दाऊद ने अरौनाह
से कहा, 'नहीं, मैं ये वस्तुएं तुमसे रुपए देकर
ही खरीदूंगा। मैं अपने प्रभु परमेश्वर को ऐसी
अग्नि-बलि नहीं चढ़ाऊंगा जिसका मैंने मूल्य
नहीं चुकाया।' अत: दाऊद ने चांदी के पचास
सिक्कों* में खलियान और बैलों को खरीद
लिया 25और वहां प्रभु के लिए एक वेदी निर्मित
की। उसके बाद दाऊद ने अग्नि-बलि तथा
सहभागिता-बलि चढ़ाई। प्रभु ने देश के लिए
की गई प्रार्थना सुनी और महामारी इस्राएल देश
से दूर हो गई।

---

* मूल में 'पचास शेकल', लगभग छः सौ ग्राम।

24 : 16 नि 12 : 23; 2 रा 19 : 35 **24 : 18** 1 इति 21 : 18-28 **24 : 22** 1 रा 19 : 21; 1 शाम 6 : 14
24 : 24 उत 14 : 23 **24 : 25** 1 रा 8 : 5; 2 शम 21 : 14

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

राजाओं का वृत्तांत : पहला भाग

पुस्तक-परिचय

जो इस्राएली राजतंत्र नबी शमूएल के समय लगभग 1050 ई० पू० से आरम्भ हुआ था, उसका अगला ऐतिहासिक विवरण प्रस्तुत ग्रन्थ के पहले एवं दूसरे भाग में हम पढ़ते हैं।

प्रस्तुत ग्रन्थ को हम तीन खण्डों में बाँट सकते हैं :

(1) सुलेमान उत्तरी एवं दक्षिणी प्रदेशों के संयुक्त राज्य का राजा नियुक्त होता है। उसके पिता दाऊद की मृत्यु।

(2) राजा सुलेमान के राज्य का विवरण तथा उसके उपलब्धियों का वृतांत। राजधानी यरूशलेम में एकमात्र प्रभु-मन्दिर के निर्माण का यहां विस्तृत उल्लेख हुआ है। राजा की बुद्धिमता की प्रशंसा की गयी है।

(3) इस खण्ड के आरम्भ में बताया जाता है कि इस्राएल देश के उत्तरी प्रदेश (इस्राएल) तथा दक्षिणी प्रदेश (यहूदा) किस प्रकार दो स्वतंत्र राज्यों में विभाजित हो गए। इसके बाद दोनों प्रतिस्पर्द्धी राज्यों में ईसवी पूर्व 850 तक हुए राजाओं का क्रमबद्ध वृत्तांत है।

राज़ाओं के वृत्तांत की दोनों पुस्तकों में एक ही धार्मिक दृष्टिकोण पर जोर दिया गया है। राजा की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि वह परमेश्वर के प्रति निष्ठावान था। इसी निष्ठा पर ही उसके राज्य की समृद्धि निर्भर करती थी। निषिद्ध निस्सार मूर्ति-पूजा एवं परमेश्वर की आज्ञा के उल्लंघन का परिणाम है राष्ट्रीय विनाश! उत्तरी राज्य इस्राएल हर बार इस परीक्षा में असफल रहा, जबकि दक्षिणी राज्य यहूदा के दाऊद-वंशी राजा परमेश्वर के प्रति अधिक निष्ठावान थे—यद्यपि अपनी प्रजा के साथ वे भी परमेश्वर की आज्ञाओं का उल्लंघन करते हैं।

राजाओं के वृत्तांत के पहले भाग में मुख्य स्थान प्रभु के नबियों को ही दिया गया है, जो साहस के साथ परमेश्वर की ओर से राजा-सहित जनता को चेतावनी देते हैं कि यदि वे परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करेंगे एवं मूर्ति-पूजा में संलग्न होंगे, तो परमेश्वर उन्हें दण्ड देगा। अध्याय 18 में नबी एलियाह एवं बअल देवता के नबियों में भिड़ंत की विख्यात् घटना का उल्लेख है।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

संयुक्त राज्य का परिरक्षण	**1 : 1—2 : 46**
राजा दाऊद के राज्य का अन्त	**1 : 1 — 2 : 12**
सुलेमान का सिंहासन पर आरोहण	**2 : 13-46**
राजा सुलेमान का राज्य :	**3 : 1—11 : 43**
आरम्भिक वर्ष	**3 : 1—4 : 34**
मन्दिर का निर्माण	**5 : 1—8 : 66**
अन्तिम वर्ष	**9 : 1—11 : 43**
विभाजित राज्य	**12 : 1—22 : 53**
(क) पृथक् राज्य इस्राएल की स्थापना के लिए उत्तर कुलों का विद्रोह	**12 : 1 —14 : 20**
(ख) यहूदा तथा इस्राएल प्रदेश के राजा	**14 : 21—16 : 34**
(ग) नबी एलियाह का वृत्तांत	**17 : 1—19 : 21**
(घ) इस्राएल प्रदेश का राजा अहाब	**20 : 1—22 : 40**
(च) यहूदा प्रदेश का राजा यहोशाफाट तथा इस्राएल प्रदेश का राजा अहज्याह	**22 : 41-53**

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कुँवारी कन्या अबीशग और वृद्ध दाऊद

1 दाऊद वृद्ध था। उसकी आयु पक चुकी थी।
यद्यपि सेवक उसको कपड़े ओढ़ाते थे तो
भी वह गरमाता न था। 2अत: दाऊद के दरबारियों
ने उससे यह निवेदन किया, 'महाराज, हमारे
स्वामी, हमें अनुमति दीजिए कि महाराज के
लिए एक कुंवारी कन्या ढूंढ़ें। वह महाराज के
सम्मुख उपस्थित रहेगी और आपकी परिचर्या
करेगी। वह आपकी छाती पर लेटेगी, जिससे
हमारे स्वामी, महाराज गरम होंगे।' 3अत: उन्होंने
इस्राएली देश की समस्त सीमा में एक सुन्दर
कन्या की खोज की। उन्हें अबीशग मिली। वह
शूनेम नगर की रहने वाली थी। वे उसे राजा के
पास लाए। 4कन्या बहुत सुन्दर थी। वह राजा
की परिचारिका बन गई। उसने राजा की
देखभाल की। परन्तु राजा दाऊद ने उसके साथ
सम्भोग नहीं किया।

राजकुमार अदोनियाह का विद्रोह

5 रानी हग्गीत का पुत्र अदोनियाह
महत्वाकांक्षी था। उसने सोचा, 'अब मैं ही
राजा बनूंगा।' अत: उसने एक रथ और
घुड़सवार तथा आगे-आगे दौड़नेवाले पचास
सैनिक तैयार किए। 6उसके पिता ने जीवन-भर
उसके कार्यों में हस्तक्षेप नहीं किया था। पिता
ने यह भी नहीं पूछा था, 'तू ऐसा कार्य क्यों
करता है?' वह बहुत सुन्दर भी था। अबशालोम
के बाद उसका जन्म हुआ था। 7उसने योआब
बेन-सरूयाह और पुरोहित एबयातर से विचार-
विमर्श किया। उन्होंने अदोनियाह का अनुसरण
किया और उसकी सहायता की। 8किन्तु ये व्यक्ति
अदोनियाह के साथ नहीं गए : पुरोहित
सादोक, बनायाह बेन-यहोयादा, नबी नातान,
शिमई, रेई तथा दाऊद के योद्धा।

9 एक दिन अदोनियाह ने एन-रोगेल झरने
के निकट "सरकवां पत्थर"* पर भेड़, बैल
और हृष्ट-पुष्ट पशु बलि किए। उसने अपने
सब भाइयों, राजकुमारों, तथा यहूदा प्रदेश के
समस्त राजकर्मचारियों को बलि-भोज के लिए
निमन्त्रित किया। 10परन्तु उसने नबी नातान,
बनायाह तथा योद्धाओं को एवं अपने भाई
सुलेमान को निमन्त्रित नहीं किया।

11 नबी नातान ने सुलेमान की मां बतशेबा
से कहा, 'क्या आपने यह नहीं सुना कि रानी
हग्गीत का पुत्र अदोनियाह राजा बन गया है,
और हमारे स्वामी दाऊद यह बात नहीं जानते
हैं? 12मैं आपको यह सलाह देता हूँ : अब आप
अपने प्राण तथा अपने पुत्र सुलेमान के प्राण
बचाइए। 13आप अविलम्ब महाराज दाऊद के
पास जाइए। आप उनसे यह कहिए, "क्या मेरे
स्वामी, महाराज ने मुझसे अपनी सेविका से,
यह शपथ नहीं खाई थी : 'मेरे पश्चात् तुम्हारा
पुत्र सुलेमान राज्य करेगा। वह मेरे सिंहासन पर
बैठेगा।' तब अदोनियाह क्यों राजा बन गया?"
14जब आप महाराज से बात कर रही होंगी,
तभी मैं आपके पीछे भीतर आ जाऊंगा, और
आपकी बातों का समर्थन करूंगा।'

15अत: बतशेबा राजा के पास, उसके
शयन-कक्ष में गई। राजा बहुत वृद्ध था। शूनेम
नगर की अबीशग उसकी देखभाल करती थी।
16बतशेबा ने सिर झुकाया। उसने भूमि पर
लेटकर राजा को साष्टांग प्रणाम किया। राजा ने
उससे पूछा, 'तुम्हें क्या चाहिए?' 17बतशेबा ने
उसे उत्तर दिया, 'मेरे स्वामी, आपने मुझसे,
अपनी सेविका से, प्रभु परमेश्वर की शपथ खाई
थी और यह कहा था : "मेरे पश्चात् तुम्हारा
पुत्र सुलेमान राज्य करेगा। वह मेरे सिंहासन पर
बैठेगा।" 18अब देखिए, अदोनियाह राजा बन
गया है। महाराज, मेरे स्वामी यह बात नहीं
जानते हैं। 19अदोनियाह ने अनेक बैलों, हृष्ट-
पुष्ट पशुओं और भेड़ों की बलि की है, और
राजकुमारों, पुरोहित एबयातर और सेनापति
योआब को निमन्त्रित किया है। परन्तु उसने
आपके सेवक सुलेमान को नहीं बुलाया।
20महाराज, मेरे स्वामी, समस्त इस्राएली राष्ट्र
की आंखें आप पर लगी हैं। कृपाकर, आप उन्हें
बता दीजिए कि आपके पश्चात् आपके सिंहासन

---

* मूल में, 'जोहलेत'। यरूशलेम के दक्षिण-पूर्व में।

1 : 5 2 शम 3 : 4; 15 : 1 1 : 11 2 शम 12 : 24

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पर कौन बैठेगा। 21अन्यथा जब महाराज, मेरे
स्वामी अपने मृत पूर्वजों के साथ सो जाएंगे
तब मैं और मेरा पुत्र सुलेमान अपराधी गिने
जाएंगे।'

22 वह राजा से बात कर रही थी कि नबी
नातान आया। 23राजा को यह बताया गया,
'नबी नातान आए हैं।'' नातान राजा के सम्मुख
उपस्थित हुआ। उसने भूमि पर मुंह के बल
गिरकर राजा का अभिवादन किया। 24नातान ने
कहा, 'महाराज, मेरे स्वामी, क्या आपने यह
घोषणा की है: ''मेरे पश्चात् अदोनियाह राज्य
करेगा। वह मेरे सिंहासन पर बैठेगा?'' 25वह
आज नीचे घाटी में गया है। उसने अनेक बैलों,
हृष्ट-पुष्ट पशुओं और भेड़ों की बलि की है,
और राजकुमारों, सेनापति योआब और पुरोहित
एबयातर को निमन्त्रित किया है। देखिए, वे
उसके साथ खा-पी रहे हैं। वे यह भी कह रहे
हैं' ''महाराज अदोनियाह अमर हों!'' 26परन्तु
अदोनियाह ने मुझे—आपके सेवक को, पुरोहित
सादोक को, बनायाह बेन-यहोयादा को, और
आपके सेवक सुलेमान को नहीं बुलाया।
27क्या यह मेरे स्वामी, महाराज की अनुमति से
हुआ है? परन्तु आपने यह बात मुझ पर, अपने
सेवक पर नहीं प्रकट की कि मेरे स्वामी,
महाराज के पश्चात् सिंहासन पर कौन बैठेगा?'

सुलेमान का राजा बनना

28 तब राजा दाऊद ने उत्तर दिया, 'मेरे पास
बतशेबा को बुलाओ।' अत: बतशेबा राजा के
सम्मुख प्रस्तुत हुई। वह राजा के पास खड़ी हो
गई। 29राजा ने यह शपथ खाई: 'जीवन्त प्रभु
की सौगन्ध, जिसने बैरियों से मेरे प्राण को
बचाया था। 30मैंने इस्राएली राष्ट्र के प्रभु
परमेश्वर के नाम से तुमसे यह शपथ खाई थी
कि मेरे पश्चात् तुम्हारा पुत्र सुलेमान राज्य
करेगा। वह मेरे बदले मेरे सिंहासन पर बैठेगा।
मैं आज ही यह कार्य करूंगा।' 31बतशेबा ने
सिर झुकाया। उसने भूमि पर मुंह के बल
गिरकर राजा का अभिवादन किया, और यह
कहा, 'मेरे स्वामी, महाराज दाऊद युग-युग
जीवित रहें!'

32 तब राजा दाऊद ने कहा, 'पुरोहित
सादोक, नबी नातान और बनायाह बेन-
यहोयादा को मेरे पास बुलाओ।' अत: वे राजा
के सम्मुख आए। 33राजा ने उनसे कहा, 'तुम
लोग मेरे अंग-रक्षकों को अपने साथ लो। मेरे
पुत्र सुलेमान को मेरे निजी खच्चर पर बैठाओ,
और उसे गीहोन झरने की घाटी में* नीचे ले
जाओ। 34वहां पुरोहित सादोक और नबी
नातान सुलेमान को इस्राएली राष्ट्र का राजा
अभिषिक्त करेंगे। तत्पश्चात् तुम लोग नरसिंगा
फूंकना, और कहना, ''महाराज सुलेमान अमर
हों!'' 35उसके बाद तुम उसके पीछे-पीछे
यहां, पहाड़ पर आना। वह यहां आकर मेरे
सिंहासन पर बैठेगा, और मेरे स्थान पर राज्य
करेगा। मैंने उसको इस्राएल और यहूदा प्रदेशों
पर शासक नियुक्त किया है।' 36बनायाह बेन-
यहोयादा ने राजा को उत्तर दिया, 'ऐसा ही हो!
हमारे स्वामी महाराज का परमेश्वर भी यह
कहे: ''तथास्तु!'' 37जैसे प्रभु परमेश्वर हमारे
स्वामी महाराज के साथ था वैसे ही वह
सुलेमान के साथ हो! वह उसके सिंहासन को
हमारे स्वामी महाराज दाऊद के सिंहासन से
अधिक महान् बनाए।'

38 तब पुरोहित सादोक, नबी नातान,
बनायाह बेन-यहोयादा और करेत तथा पलेत
नगर के रहने वाले अंगरक्षक नीचे गए। उन्होंने
सुलेमान को राजा दाऊद के खच्चर पर बैठाया,
और उसे गीहोन झरने की घाटी में ले गए।
39पुरोहित सादोक ने शिविर में से तेल से भरा
सींग निकाला, और तेल से सुलेमान का
अभिषेक किया। उसके बाद उन्होंने नरसिंगा
फूंका। सब जनता ने कहा, 'राजा सुलेमान
अमर हों!' 40तब सब लोग उसके पीछे-पीछे
फिर ऊपर आ गए। वे बांसुरी बजा रहे थे। वे
अत्यन्त आनन्दित थे। वे जय-जयकार कर रहे
थे। उनकी आवाज से आकाश फट गया था।

---

* अर्थात् किद्रोन घाटी में, नगर के निकट पूर्व में।

1 : 34 1 शम 10 : 1; 2 रा 11 : 12; मक 11 : 7

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

41 तब तक अदोनियाह और उसके अतिथि
भोजन समाप्त कर चुके थे। उन्होंने यह आवाज
सुनी। योआब ने नरसिंगे का स्वर सुना। वह
बोला, 'नगर में यह कैसा शोर हो रहा है?'
42वह बोल ही रहा था कि पुरोहित एबयातर का
पुत्र योनातन आ पहुंचा। अदोनियाह ने कहा,
'आओ-आओ! तुम भले पुरुष हो; अत:
समाचार भी भला लाए होगे।' 43योनातन ने
अदोनियाह को उत्तर दिया, 'जी नहीं! हमारे
स्वामी, महाराज दाऊद ने राजकुमार सुलेमान
को राजा बना दिया! 44महाराज ने उनके साथ
पुरोहित सादोक, नबी नातान, और बनायाह
बेन-यहोयादा और करेत तथा पलेत नगर के
रहने वाले अंगरक्षकों को भेजा है। उन्होंने
सुलेमान को राजा के खच्चर पर बैठाया।
45पुरोहित सादोक और नबी नातान ने गीहोन
झरने की घाटी में उनका अभिषेक किया। वहां
से वे आनन्द मनाते हुए ऊपर गये हैं। इस कारण
नगर में शोर-गुल हो रहा है। जो आवाज आप
लोग सुन रहे हैं, वह वही है। 46राजकुमार
सुलेमान सिंहासन पर विराजमान है। 47और
सुनो: राजदरबारी हमारे स्वामी, महाराज दाऊद
के पास आए, और उन्हें इन शब्दों में बधाई दी:
"परमेश्वर सुलेमान का नाम आपके नाम से भी
अधिक प्रसिद्ध करे! उनके सिंहासन को
आपके सिंहासन से अधिक महान् करे।" यह
सुनकर महाराज दाऊद ने शय्या पर ही प्रभु की
वन्दना की। 48महाराज ने कहा, "इस्राएली
राष्ट्र का प्रभु परमेश्वर धन्य है! उसने मुझे यह
अवसर प्रदान किया कि मैं आज अपनी आंखों
से अपने वंशज को अपने सिंहासन पर विराजते
हुए देख सका!"'

49 अदोनियाह के सब अतिथि भयभीत हो
गए। वे उठे, और अपने-अपने मार्ग पर चले
गए। 50अदोनियाह भी सुलेमान से डर गया।
वह उठा। उसने प्राण-रक्षा के लिए वेदी के
सींग पकड़ लिये। 51यह बात सुलेमान को
बताई गई: 'राजकुमार अदोनियाह महाराज
सुलेमान से डरते हैं। उन्होंने वेदी के सींग पकड़
लिये हैं। वह यह कह रहे हैं, "महाराज
सुलेमान पहले मुझसे शपथ खाएं कि वह
मेरा, अपने सेवक का तलवार से वध नहीं
करेंगे।"' 52सुलेमान ने कहा, 'यदि वह अपने
आचरण से भला पुरुष सिद्ध होगा तो उसके
सिर का एक बाल भी भूमि पर नहीं गिरेगा परन्तु
यदि उसमें बुराई पाई गई तो उसे मृत्यु-दण्ड
दिया जाएगा।' 53अत: राजा सुलेमान ने सैनिक
भेजे। उन्होंने वेदी से अदोनियाह को नीचे उतारा।
अदोनियाह आया। उसने भूमि पर गिरकर राजा
सुलेमान का अभिवादन किया। सुलेमान ने
उससे कहा, 'अपने महल में जाओ।'

सुलेमान को दाऊद का आदेश

2 जब दाऊद का मृत्यु-समय समीप आया
तब उसने अपने पुत्र सुलेमान को यह
आदेश दिया, 2 'देख, अब मैं मृत्यु के उस मार्ग
पर हूं जिस पर सब को चलना है। तू
शक्तिशाली बन! अपना पौरुष दिखा। 3जो
दायित्व प्रभु परमेश्वर ने तुझे सौंपा है, उसको
पूरा करना। तू उसके मार्ग पर चलना। तू उसकी
संविधियों, आज्ञाओं, न्याय-सिद्धान्तों और
साक्षियों को मानना, जैसा वे मूसा की व्यवस्था-
पुस्तक में लिखे हुए हैं। तब जो कार्य तू करेगा,
जिस कार्य को तू अपने हाथ में लेगा, उसमें तू
सफल होगा। 4इस प्रकार प्रभु अपने वचन को,
जो उसने मुझसे कहा था, पूर्ण करेगा। उसने यह
कहा था: "यदि तेरे पुत्र अपने आचरण के प्रति
सावधान रहेंगे, अपने सम्पूर्ण हृदय और प्राण
से मेरे सम्मुख निष्ठा-पूर्वक चलते रहेंगे, तो
इस्राएल के सिंहासन पर बैठने के लिए तेरे वंश
में पुरुष का अभाव न होगा।"

5 'जो व्यवहार योआब बेन-सरूयाह ने मेरे
साथ किया, उसको तू जानता है। उसने
इस्राएली सेना के दो नायकों—अब्नेर बेन-नेर
और अमासा बेन-येतर—के साथ क्या किया
था? उसने दोनों की हत्या की। यों हिंसात्मक
रक्त-रंजित कार्य से शान्ति भंग की।+ उसने

---

1 : 42 2 शम 18 : 27 **1 : 50** 1 रा 2 : 28; नि 21 : 14 **2 : 2** यहो 23 : 14 **2 : 3** व्य 17 : 19; 29 : 9 **2 : 4** 2 शम 7 : 12 **2 : 5** 2 शम 3 : 27; 20 : 10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उस रक्त से, अपने कमर-बन्द पर और अपने
जूतों पर दाग लगाया। 6तू अपनी बुद्धि के अनुसार
कार्य करना। उस वृद्ध योआब को शान्ति से
मृतक-लोक में उतरने मत देना। 7परन्तु गिलआद
प्रदेश के रहने वाले बर्जिल्लइ के पुत्रों के साथ
प्रेमपूर्ण व्यवहार करना। उन्हें अपनी मेज पर
भोजन करने वालों में सम्मिलित करना; क्योंकि
जब मैं तेरे भाई अबशालोम के सम्मुख से भागा
था, तब उन्होंने मेरी सहायता की थी। 8देख, तेरे
साथ शिमई बेन-गेरा है, जो बिन्यामिन प्रदेश
के बहूरीम का रहने वाला है। जिस दिन मैं
महनइम नगर गया था, उस दिन उसने खूब
गालियां दी थीं। यह सच है कि जब वह यर्दन
नदी पर मुझसे भेंट करने आया तब मैंने प्रभु की
शपथ खाकर यह कहा था, "मैं तलवार से तेरा
वध नहीं करूंगा।" 9परन्तु अब तू उसे निर्दोष
मत मानना। तू स्वयं बुद्धिमान है। तू स्वयं
जानता है कि तुझे उसके साथ कैसा व्यवहार
करना चाहिए। उस वृद्ध को रक्त-रंजित
दण्डित कर मृतक लोक में उतार देना।'

दाऊद की मृत्यु

10 तत्पश्चात् दाऊद अपने मृत पूर्वजों के
साथ सो गया। उसे दाऊद-पुर में गाड़ा गया।
11दाऊद ने इस्राएलियों पर चालीस वर्ष तक
राज्य किया। उसने सात वर्ष तक हेब्रोन नगर
में, और तैंतीस वर्ष तक राजधानी यरूशलेम में
राज्य किया था।

12 सुलेमान अपने पिता के सिंहासन पर
बैठा। उसका राज्य बहुत दृढ़ हो गया।

अदोनियाह की हत्या

13 रानी हग्गीत का पुत्र अदोनियाह सुलेमान
की माता बतशेबा के पास आया। उसने उसके
सम्मुख झुककर अभिवादन किया। बतशेबा ने
पूछा, 'क्या तू मित्र के रूप में आया है?' उसने
उत्तर दिया, 'हां, मित्र के रूप में।' 14उसने आगे
कहा, 'मैं आपसे एक निवेदन करना चाहता
हूं।' बतशेबा ने कहा, 'बोल।' 15अदोनियाह ने
कहा, 'आप जानती हैं कि यह राज्य मुझे
मिलना चाहिए था। सब इस्राएली मुझपर आशा
लगाए हुए थे कि मैं ही राज्य करूंगा। परन्तु
राज्य का पासा पलट गया, और राज्य मेरे भाई
को मिल गया; क्योंकि यह प्रभु की इच्छा थी।
16अब मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं।
कृपया, आप इनकार न कीजिए।' बतशेबा ने
उससे कहा, 'बोल।' 17अदोनियाह ने कहा,
'कृपया, आप राजा सुलेमान से बोलिए कि वह
मुझे शूनेम की अबीशग को प्रदान कर दें, कि
मैं उसे अपनी पत्नी बना लूं। वह आपको कभी
इनकार नहीं करेंगे।' 18बतशेबा ने कहा, 'अच्छा!
मैं तेरे विषय में राजा से बात करूंगी।'

19 अत: बतशेबा राजा सुलेमान से
अदोनियाह के विषय में बात करने के लिए
आई। राजा सुलेमान उससे भेंट करने के लिए
सिंहासन से उठा। सुलेमान ने झुककर उसका
अभिवादन किया। तत्पश्चात् वह अपने सिंहासन
पर बैठा। राजमाता के लिए आसन लाया गया।
वह आसन पर राजा की दाहिनी ओर बैठ गई।
20बतशेबा ने कहा, 'मैं तुझसे एक छोटी-सी
वस्तु मांगने आई हूं। तू उससे इनकार मत
करना।' राजा सुलेमान ने उत्तर दिया, 'मेरी मां,
मांग। मैं इनकार नहीं करूंगा।'

21 बतशेबा ने कहा, 'तेरा भाई अदोनियाह
शूनेम की अबीशग को अपनी पत्नी बनाना
चाहता है। अत: वह उसको दे दी जाए।'
22राजा सुलेमान ने अपनी मां को उत्तर दिया,
'वाह! तूने अदोनियाह के लिए केवल अबीशग
को क्यों मांगा? उसके लिए राज्य भी मांग!
क्योंकि वह तो मेरा बड़ा भाई है न! पुरोहित
एबयातर और योआब बेन-सरूयाह उसके पक्ष
में हैं न!' 23तब राजा सुलेमान ने प्रभु की यह
शपथ खाई, 'यदि अदोनियाह को अपनी इस
बात का मूल्य प्राण से न चुकाना पड़े तो
परमेश्वर मेरे साथ यही व्यवहार करे, वरन्
इससे अधिक कठोर दण्ड मुझे दे। 24जिस प्रभु

+ शब्दश:, 'शान्ति के समय युद्ध का रक्त बहाया'।

2 : 7 2 शम 17 : 27 2 : 8 2 शम 16 : 15; 19 : 16-23 2 : 11 2 शम 5 : 4 2 : 12 1 इति 29 : 23 2 : 17 1 राजा 1 : 3-4 2 : 22 2 शम 3 : 7; 16 : 22 2 : 23 नि 21 : 14

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ने मुझे मेरे पिता के सिंहासन पर बैठाया, मुझे दृढ़ बनाया, जिसने अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार मेरे पिता के लिए राजवंश की स्थापना की, उस जीवन्त प्रभु की सौगन्ध! आज ही अदोनियाह को मृत्यु-दण्ड दिया जाएगा।' 25अत: राजा सुलेमान ने बनायाह बेन-यहोयादा को अदोनियाह पर प्रहार करने का आदेश दिया। उसने उस पर प्रहार किया और अदोनियाह मर गया।

पुरोहित एबयातर और सेनापति योआब का अन्त

26 राजा ने पुरोहित एबयातर से कहा, 'तुम अनातोत नगर में अपनी जागीर को चले जाओ। तुम मृत्य-दण्ड के योग्य हो! किन्तु मैं इस समय तुम्हें मृत्यु-दण्ड नहीं दूंगा, क्योंकि तुम मेरे पिता दाऊद के सामने प्रभु परमेश्वर की मंजूषा उठाकर चलते थे। तुमने मेरे पिता के साथ उनकी दु:ख-तकलीफों को भोगा है।' 27तब सुलेमान ने एबयातर को प्रभु के पुरोहित-पद से हटा दिया। इस प्रकार प्रभु का यह वचन पूरा हुआ, जो उसने शिलोह में एली के परिवार के सम्बन्ध में कहा था।

28 यह समाचार योआब तक पहुंचा। वह प्रभु के शिविर की ओर भागा। उसने प्राण-रक्षा के लिए वेदी के सींग पकड़ लिये। यद्यपि योआब ने अबशालोम का पक्ष नहीं लिया था, तथापि उसने अदोनियाह का पक्ष लिया था। 29राजा सुलेमान को यह बात बताई गई, 'योआब प्रभु के शिविर को भाग गए हैं। वह वेदी के पास खड़े हैं।' सुलेमान ने बनायाह बेन-यहोयादा को आदेश दिया, 'जाओ, उसे मार डालो।' 30अत: बनायाह प्रभु के शिविर में आया। उसने योआब से कहा, 'महाराज यों कहते हैं : "बाहर निकल।"' परन्तु उसने कहा, 'नहीं। मैं यहीं मरूंगा!' तब बनायाह राजा के पास यह उत्तर लाया : 'योआब ने यों कहा। उसने मुझे इस प्रकार उत्तर दिया है।' 31राजा ने उससे कहा, 'जैसा वह बोला, वैसा ही उसके साथ करो : उसे मार कर गाड़ दो। यों जो रक्त योआब ने अकारण बहाया था, उसके दोष से मुझे और मेरे पिता के परिवार को मुक्त करो। 32प्रभु उसके रक्त का दोष उसी के सिर पर डालेगा। उसने दो निर्दोष व्यक्तियों को मार डाला था, जो उससे अधिक धार्मिक और भले थे : इस्राएल प्रदेश का सेनापति अब्नेर बेन-नेर, और यहूदा प्रदेश का सेनापति अमासा बेन-येतर। योआब ने तलवार से उनकी हत्या की थी, और मेरे पिता दाऊद को पता नहीं चला था। 33अत: उनकी हत्या का दोष योआब और उसके वंशजों के सिर पर सदा लगा रहेगा। परन्तु दाऊद, उनके वंशज, उनका राजवंश और उनका सिंहासन प्रभु से सदासर्वदा शान्ति प्राप्त करते रहेंगे।' 34अत: बनायाह बेन-यहोयादा पुन: गया। उसने योआब पर प्रहार किया, और उसे मार डाला। योआब को निर्जन प्रदेश की सीमा पर उसके मकान में गाड़ा गया। 35तत्पश्चात् राजा ने योआब के स्थान पर बनायाह बेन-यहोयादा को सेनापति तथा एबयातर के स्थान पर सादोक को पुरोहित नियुक्त किया।

शिमई का आज्ञा-उल्लंघन और मृत्यु

36 राजा ने दूत भेजा, और शिमई को बुलाया। उसने शिमई से यह कहा, 'तुम यरूशलेम नगर में अपने लिए एक मकान बनाओ। तुम वहीं रहना, और वहां से बाहर मत निकलना। 37जिस दिन तुम नगर से बाहर निकलोगे, और किद्रोन की घाटी को पार करोगे, उसी दिन तुम्हें निश्चय ही मृत्यु-दण्ड मिलेगा। तुम यह बात अच्छी तरह से जान लो। तुम्हारी हत्या का दोष तुम्हारे ही सिर पर पड़ेगा।' 38शिमई ने राजा को उत्तर दिया, 'आपकी बात ठीक है, महाराज मेरे स्वामी! जैसा आपने कहा है, वैसे ही आपका सेवक करेगा।' अत: शिमई यरूशलेम नगर में बहुत दिनों तक निवास करता रहा।

39 तीन वर्ष व्यतीत होने पर यह घटना घटी। शिमई के दो गुलाम गत नगर के राजा आकीश

---

2 : 26 2 शम 15 : 24; 1 शम 22 : 20; सिर 1 : 1 **2 : 27** 1 शम 2 : 31 **2 : 27** **2 : 28** नि 21 : 14

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बेन–माकाह के पास भाग गए। यह बात शिमई
को बताई गई, 'देखिए, आपके गुलाम गत नगर
में हैं।' 40शिमई तैयार हुआ। उसने गधे पर
काठी कसी, और गुलामों को ढूंढ़ने के लिए
आकीश के पास गत नगर की ओर गया। वह
गत नगर पहुंचा। वह वहां से अपने गुलामों को
ले आया। 41सुलेमान को बताया गया कि शिमई
यरूशलेम से गत नगर गया था, और अब वहां
से लौट आया है। 42राजा ने दूत भेजा, और
शिमई को बुलाया। उसने उससे कहा, 'क्या
मैंने तुम्हें प्रभु की शपथ नहीं दी थी ? क्या मैंने
तुम्हें यह गम्भीर चेतावनी नहीं दी थी: ''जिस
दिन तुम नगर से बाहर निकलोगे, कहीं
जाओगे, तो तुम्हें निश्चय ही मृत्यु–दण्ड दिया
जाएगा। तुम यह बात अच्छी तरह से जान लो !''
तुमने मुझसे कहा था, ''आपकी बात ठीक है।
मैं आपकी आज्ञा का पालन करूंगा।'' 43तब
तुमने प्रभु की सौगन्ध को पूरा क्यों नहीं किया ?
जो आज्ञा मैंने तुम्हें दी थी, उसका पालन क्यों
नहीं किया ?' 44राजा ने शिमई से यह भी कहा,
'जो दुष्कर्म तुमने मेरे पिता दाऊद के साथ किए
थे, उन सबको तुम अपने हृदय में जानते हो।
अत: प्रभु तुम्हारे दुष्कर्मों का फल तुम्हारे ही
सिर पर डालेगा। 45परन्तु वह मुझे, राजा सुलेमान
को आशिष देगा, और प्रभु के सामने दाऊद का
सिंहासन सदा–सर्वदा सुदृढ़ बना रहेगा।'
46तत्पश्चात् राजा ने बनायाह बेन–यहोयादा
को आदेश दिया। बनायाह महल से बाहर
निकला। उसने शिमई पर प्रहार किया और
शिमई मर गया। इस प्रकार राजसत्ता सुलेमान
के हाथ में सुदृढ़ हो गई।

सुलेमान का विवाह

3 सुलेमान मिस्र देश के राजा फरओ* का
दामाद बन गया। उसने फरओ की पुत्री से
विवाह कर लिया। वह उसे दाऊद–पुर में
लाया। जब तक उसने अपने महल और प्रभु के
भवन का, तथा यरूशलेम के चारों ओर के
परकोटे का निर्माण–कार्य समाप्त नहीं कर
लिया, तब तक फरओ की पुत्री को वहीं रखा।
2उस समय तक प्रभु–नाम की महिमा के लिए
मन्दिर नहीं बना था। इसलिए लोग पहाड़ी
शिखर की वेदियों पर बलि चढ़ाते थे।

बुद्धि के लिए प्रार्थना

3 सुलेमान को प्रभु से प्रेम था। वह अपने
पिता दाऊद की संविधियों पर चलता था। परन्तु
वह भी पहाड़ी शिखर की वेदी पर पशु–बलि
चढ़ाता था और सुगन्धित धूप–द्रव्य जलाता
था। 4एक दिन राजा सुलेमान पशु–बलि चढ़ाने
के लिए गिबओन नगर गया; क्योंकि वहां
पहाड़ी शिखर की महावेदी थी। सुलेमान ने उस
महावेदी पर एक हजार अग्नि–बलि चढ़ाई।
5प्रभु परमेश्वर ने वहां रात के समय स्वप्न में
सुलेमान को दर्शन दिया। परमेश्वर ने कहा,
'मांग, मैं तुझे क्या दूं ?' 6सुलेमान ने उत्तर दिया,
'तू अपने सेवक, मेरे पिता दाऊद पर बड़ी
करुणा करता रहा; क्योंकि वह तेरे सम्मुख
सच्चाई, धार्मिकता और सरल हृदय से चलते
थे। तूने उन पर सबसे बड़ी करुणा यह की, कि
उनको एक पुत्र प्रदान किया जो आज उनके
सिंहासन पर बैठा है। 7हे मेरे प्रभु परमेश्वर,
यद्यपि मैं अबोध बालक हूं, मैं सेना का नेतृत्व
करना नहीं जानता, तथापि तूने अपने सेवक
को, मुझको, मेरे पिता दाऊद के स्थान पर राजा
नियुक्त किया है। 8मैं, तेरा सेवक, तेरे निज
लोगों के मध्य में हूं, जिनको तूने चुना है, जो
संख्या में बहुत हैं, जिनकी गणना नहीं की जा
सकती। 9अत: तू अपने सेवक को ऐसा हृदय
प्रदान कर कि वह प्रजा की बात सुने, उनका
न्याय करे; वह भले और बुरे को परख सके।
प्रभु, तेरी इस महाप्रजा पर कौन शासन कर
सकता है ?'

10 प्रभु परमेश्वर को अपनी दृष्टि में यह
बात अच्छी लगी कि सुलेमान ने उससे यह
मांगा। 11परमेश्वर ने उससे कहा, 'तूने अपने

---

*अथवा, 'फिरौन'।

3 : 1 1 रा 9 : 16 3 : 4–15 2 इत 1 : 3–13 3 : 5 गण 12 : 6; अय्य 33 : 15; मत 1 : 20; प्रज्ञा 9 : 1–18
3 : 9 नीति 2 : 3–9; याक 1 : 5

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लिए दीर्घायु नहीं मांगी। तूने धन-सम्पत्ति नहीं
मांगी। तूने अपने शत्रुओं के प्राण नहीं मांगे।
वरन् तूने यह मांगा : न्याय करने के लिए
विवेक! 12इसलिए मैं तेरे निवेदन के अनुसार
कार्य करूंगा। देख, मैं तुझे बुद्धि और विवेक
से परिपूर्ण हृदय प्रदान करता हूं। तुझसे पहले
और तेरे बाद तेरे समान बुद्धिमान राजा कोई
नहीं होगा। 13इसके अतिरिक्त जो तूने नहीं
मांगा, वह भी मैं तुझे देता हूं : धन-सम्पत्ति और
वैभव! तेरे जीवन-काल में कोई भी राजा तेरे
समान समृद्ध और वैभवशाली नहीं होगा।
14जैसे तेरा पिता दाऊद मेरे मार्गों पर चलता था
वैसे ही यदि तू भी चलेगा, मेरी संविधियों और
आज्ञाओं का पालन करेगा तो तुझे दीर्घायु प्रदान
करूंगा।'

15 तब सुलेमान नींद से जाग गया। उसे ज्ञात
हुआ कि यह स्वप्न था! सुलेमान यरूशलेम
नगर में आया। वह प्रभु की विधान-मंजूषा के
सम्मुख खड़ा हुआ। उसने अग्नि-बलि और
सहभागिता-बलि चढ़ाई, और अपने सब
कर्मचारियों को भोज दिया।

सुलेमान का न्याय

16 एक दिन राजा सुलेमान के पास दो
स्त्रियां आईं। वे वेश्याएं थीं। वे उसके सम्मुख
खड़ी हो गईं। 17उनमें से एक स्त्री ने कहा, 'हे
स्वामी, मैं और यह स्त्री एक ही मकान में रहती
हैं। जब यह मेरे साथ मकान में थी, तब मैंने एक
पुत्र को जन्म दिया। 18मेरे प्रसव के तीन दिन
के पश्चात् इस स्त्री ने भी एक पुत्र को जन्म
दिया। हम एक साथ थीं। हमारे अतिरिक्त
मकान में कोई नहीं था। केवल हम दोनों ही
मकान में थीं। 19एक रात इस स्त्री का पुत्र मर
गया; क्योंकि यह उसके ऊपर सो गई थी।
20यह आधी रात को उठी। इसने मेरे पास से
मेरा पुत्र उठा लिया, और उसको अपनी छाती
पर सुला लिया। उस समय मैं, आपकी
सेविका, सो रही थी। इसने अपने मृत पुत्र को
मेरी छाती पर डाल दिया। 21मैं सबेरे अपने पुत्र
को दूध पिलाने के लिए उठी। मैंने देखा कि वह
मरा पड़ा है! किन्तु मैंने उसको ध्यान से देखा।
वह मेरा पुत्र नहीं था, जिसको मैंने जन्म दिया
था।'

22 दूसरी स्त्री ने कहा, 'जीवित बच्चा मेरा
ही पुत्र है। मृत बच्चा तेरा पुत्र है।' पहली स्त्री
ने कहा, 'नहीं, मृत बच्चा तेरा पुत्र है। जीवित
बच्चा मेरा पुत्र है।' इस प्रकार वे राजा के
सम्मुख बोलती रहीं।

23 राजा ने सोचा, 'एक स्त्री कहती है :
''यह जीवित बच्चा मेरा पुत्र है और मृत बच्चा
तेरा पुत्र है।'' दूसरी कहती है, 'नहीं, मृत बच्चा
ही तेरा पुत्र है। जीवित बच्चा तो मेरा पुत्र है।'''
24तब राजा ने कहा, 'मेरे पास एक तलवार लाओ'
राजा के सम्मुख तलवार प्रस्तुत की गई। 25राजा
ने आदेश दिया, 'जीवित बच्चे के दो टुकड़े
करो; और आधा भाग पहली स्त्री को और शेष
भाग दूसरी स्त्री को दे दो।' 26जिस स्त्री का पुत्र
जीवित था, उसका हृदय अपने पुत्र के प्रति
वात्सल्य से भर गया। उसने राजा से कहा, 'हे
स्वामी, जीवित बच्चा इसको ही दे दीजिए।
कृपया, बच्चे का वध मत कीजिए।' किन्तु
दूसरी स्त्री ने कहा, 'यह बच्चा न मुझे मिलेगा
और न तुझे। महाराज, इसके दो टुकड़े कर
दीजिए।' 27राजा ने निर्णय दिया। उसने कहा,
'जीवित बच्चा पहली स्त्री को दे दो। उसका
वध मत करो। पहली स्त्री ही उसकी मां है।'

28 राजा के इस न्याय-निर्णय का समाचार
सब इस्राएली लोगों ने सुना। वे राजा के प्रति
भय से भर गए। उन्होंने देखा कि न्याय करने
के लिए परमेश्वर की बुद्धि राजा में निवास
करती है।

सुलेमान के पदाधिकारी

4 राजा सुलेमान समस्त इस्राएल देश का
राजा था। 2ये उसके उच्च पदाधिकारी थे:
पंचांग अधिकारी : पुरोहित सादोक का
पुत्र अजर्याह;
3महासहायक : अहिय्याह बेन-शीशा;*

* मूल में, 'पुरोहित : सादोक का पुत्र अजर्याह; महासहायक : शीशा के पुत्र एलीहोरेप और अहिय्याह'।

3 : 12 सभ 1 : 16; प्रव 47 : 14 3 : 13 मत 6 : 33 3 : 14 नीति 3 : 2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

राज-सचिव:, यहोशाफट बेन-अहीलूद;
4सेनापति : बनायाह बेन- यहोयादा;
पुरोहित : सादोक और एबयातर;
5क्षेत्रीय प्रशासकों का निरीक्षक : अजर्याह
बेन-नातन;
राजा का मित्र+: जाबूद बेन-नातन;
6राजभवन का महाप्रबन्धक:अहीशार;
बेगार करने वालों का निरीक्षक : अदोनीराम
बेन-अबदा।

7 समस्त इस्राएल देश में सुलेमान के बारह
क्षेत्रीय प्रशासक थे। वे राजा तथा राजपरिवार
के भोजन की व्यवस्था करते थे। प्रत्येक क्षेत्रीय
प्रशासक को वर्ष में एक महीने की भोजन-
व्यवस्था करनी पड़ती थी। 8ये उनके तथा उनके
क्षेत्र के नाम हैं :

एफ्रइम पहाड़ी क्षेत्र में बेन-हूर था।
9 माकस, शालबीम, बेत-शेमश, एलोन
और बेत-हानन नगरों के क्षेत्र में बेन-देकर था।
10 अरूबोत में बेन-हेसद। वह सोकोह
और हेफेर के सम्पूर्ण क्षेत्र का भी प्रशासक था।
11 दोर जिले में बेन-अबीनादब था,
जिसकी पत्नी टाफत सुलेमान की पुत्री थी।
12 तानख और मगिद्दो, सारतान की एक
ओर समस्त बेत-शआन तथा आबेल- महोलाह
तक के क्षेत्र, और यिज्रएल के नीचे बेत-शआन
से योकमाअम तक के क्षेत्र का प्रशासक बाना
बेन-अहीलूद था।
13 रामोत-गिलआद क्षेत्र में बेन-गेबेर था।
उसके अधीन मनश्शे के पुत्र याईर के नाम पर
बसे हुए गांव भी थे, जो गिलआद प्रदेश में थे।
इनके अतिरिक्त उसके अधिकार में अर्गोब क्षेत्र
भी था, जो बाशान प्रदेश में था। इस क्षेत्र में
परकोटे वाले साठ महानगर थे, जिनके द्वार की
अर्गलाएं कांस्य धातु की थीं।
14 महनइम में अहीनादब बेन-इद्दो था।
15 नफ्ताली क्षेत्र में अहीमास था। उसने
भी सुलेमान की पुत्री बासमत से विवाह किया
था।
16 आशेर और आलोत पहाड़ी क्षेत्र में बाना
बेन-हूशाय था।
17 इस्साकार क्षेत्र में यहोशाफट बेन-पारुह
था।
18 बिन्यामिन क्षेत्र में शिमई बेन-एला था।
19 गिलआद क्षेत्र में गेबर बेन-ऊरी था। यह
देश एमोरी जाति के राजा सीहोन और बाशान
के राजा ओग का था।

इनके अतिरिक्त देश के सब प्रशासकों के
ऊपर एक महाप्रशासक था।

20 यहूदा और इस्राएल प्रदेशों की जनसंख्या
समुद्र के तट के रेत-कणों के समान असंख्य
थी। वे खाते-पीते और आनन्द मनाते थे। 21*
सुलेमान फरात नदी से पलिश्ती देश तक तथा
मिस्र देश की सीमा तक आने वाले समस्त
राज्यों पर शासन करता था। ये राज्य उसको कर
देते थे। ये उसके जीवन-भर उसके अधीन बने
रहे।

22 यह सुलेमान के प्रतिदिन का राजसी
भोजन था : तीन हजार किलो मैदा; छः हजार
किलो आटा; 23दस हृष्ट-पुष्ट बैलों का मांस,
चरागाह के बीस बैलों का मांस, सौ भेड़ों का
मांस। इनके अतिरिक्त हरिण, चिकारे, यखमूर,
और मोटे-ताजे पक्षियों का मांस। 24सुलेमान
फरात नदी की पश्चिमी दिशा के समस्त क्षेत्र
का, तिप्साह से गाजा तक के भूमि-क्षेत्र का,
जितने राज्य फरात नदी के पश्चिम में थे, उन
सब का सम्राट था। उसके साम्राज्य में चारों ओर
शान्ति थी। 25सुलेमान के राज्य-काल में यहूदा
और इस्राएल प्रदेशों के मध्य शान्ति बनी रही।
दान नगर से बएर-शेबा नगर तक की सीमा के
अन्तर्गत रहने वाला प्रत्येक नागरिक सुख-
समृद्धि का जीवन व्यतीत करता था++।

26 सुलेमान के पास उसके रथों के लिए
अश्व-शालाओं में चालीस हजार घोड़े थे।
अश्वारोही सैनिकों के लिए बारह हजार घोड़े
थे।

+ मूल में 'और पुरोहित'। * मूल में अध्याय 5 : 1 ++ अक्षरशः "हर आदमी अपने अंगूर-उद्यान में अपने अंजीर-वृक्ष के नीचे निश्चिन्त बैठा था"।

4 : 3 2 शम 8 : 16; 20 : 23 **4 : 21** उत 15 : 18; 2 इति 9 : 26 **4 : 26** 1 रा 10 : 26

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

27 क्षेत्रीय प्रशासक प्रत्येक माह, अपनी-अपनी पारी में, राजा सुलेमान तथा उसके साथ उसकी मेज पर खाने वालों की भोजन-व्यवस्था करते थे। वे किसी भी भोजन-वस्तु का अभाव नहीं होने देते थे। 28वे अपने-अपने दायित्व के अनुसार, जहां आवश्यकता होती थी वहां घोड़ों और वेगवान अश्वों के लिए जौ और चारे की व्यवस्था भी करते थे।

सुलेमान की ख्याति

29 परमेश्वर ने सुलेमान को असीमित बुद्धि और अपार समझ दी थी। उसने सुलेमान को विस्तृत समुद्र-तट के सदृश विशाल हृदय दिया था। 30सुलेमान का ज्ञान पूर्व के देशों और मिस्र देश के लोगों के ज्ञान से श्रेष्ठ था। 31वह सब मनुष्यों से अधिक बुद्धिमान था। वह एज्राह के रहने वाले एतान और माहोल के पुत्रों हेमान, कालकोल और दरदा से अधिक बुद्धिमान था। उसका नाम चारों ओर के राष्ट्रों में फैल गया था। 32उसने तीन हजार नीति-वचन कहे थे, और एक हजार पांच गीतों की रचना की थी। 33वह लबानोन देश में पैदा होने वाले देवदार के वृक्ष से लेकर दीवार में उगने वाले जूफा पौधे तक के विषय में चर्चा कर सकता था। उसे पशु-पक्षियों, रेंगनेवाले जन्तुओं और मछलियों का भी ज्ञान था। 34अनेक देशों से लोग सुलेमान की ज्ञान-चर्चा सुनने के लिए आते थे। उसे विश्व के राजाओं से, जिन्होंने उसकी ज्ञान-चर्चा सुनी थी, उपहार प्राप्त होते थे।

मन्दिर निर्माण की तैयारी

5 जब सोर देश के राजा हीराम ने यह सुना कि लोगों ने सुलेमान को उसके पिता के स्थान पर राजा अभिषिक्त किया है, तब उसने उसके पास राजदूत भेजे; क्योंकि वह दाऊद के जीवन भर उसका मित्र था। 2सुलेमान ने हीराम को यह सन्देश भेजा, 3'आप जानते हैं कि मेरे पिता अपने प्रभु परमेश्वर के नाम पर एक भवन नहीं बना सके थे। जब तक प्रभु ने उनके शत्रुओं को उनके चरणों के नीचे नहीं दबा दिया, तब तक वह युद्ध के कारण अपने शत्रुओं से सदा घिरे रहे। 4अब मेरे प्रभु परमेश्वर ने मुझे चारों ओर शान्ति प्रदान की है। मेरा न कोई विरोधी है, और न मुझे किसी आक्रमण की आशंका है। 5प्रभु परमेश्वर ने मेरे पिता दाऊद से यह कहा था, "तेरा पुत्र, जिसे मैं तेरे स्थान पर सिंहासन पर बैठाऊंगा मेरे नाम पर भवन बनाएगा।" अत: मैं अपने प्रभु परमेश्वर के नाम पर एक भवन बनाना चाहता हूं। 6अब आप आदेश दीजिए कि लबानोन प्रदेश के देवदार के वृक्ष मेरे लिए काटे जाएं। मेरे सेवक भी आपके सेवकों के साथ पेड़ काटेंगे। जो मजदूरी आप अपने सेवकों के लिए निश्‍चित करेंगे, वह मैं आपके सेवकों को दूंगा। आप जानते हैं कि हमारे मध्य में सीदोनियों के समान लकड़ी काटने वाले मजदूर नहीं हैं।'

7 जब हीराम ने सुलेमान के ये शब्द सुने तब वह अत्यन्त आनन्दित हुआ। उसने कहा, 'धन्य है प्रभु, आज जिसने इस महान राष्ट्र पर शासन करने के लिए दाऊद को ऐसा बुद्धिमान पुत्र प्रदान किया।' 8हीराम ने सुलेमान को यह सन्देश भेजा: 'तुम्हारे द्वारा भेजे गए सन्देश को मैंने सुना। जो इच्छा तुमने देवदार और सनोवर वृक्षों के सम्बन्ध में प्रकट की है, उसको मैं पूर्ण करूंगा। 9मेरे सेवक वृक्षों के लट्ठे लबानोन से समुद्र-तट पर पहुँचा देंगे। मैं उनका बेड़ा बना दूंगा। जिस स्थान पर तुम उन्हें चाहोगे, मैं उन्हें समुद्र मार्ग से वहां भेज दूंगा। तब मैं उनको खोल दूंगा। वहां तुम उनको उठा लेना। इस कार्य के बदले में मेरी यह मांग पूरी करना : मेरे राज्य-परिवार के लिए भोजन-व्यवस्था।' 10इस प्रकार हीराम ने सुलेमान की इच्छा के अनुसार देवदार और सनोवर वृक्ष की लकड़ी भेजी। 11सुलेमान ने उसके राज-परिवार के लिए दो हजार टन गेहूं और नब्बे लाख लिटर जैतून का शुद्ध तेल भेजा। सुलेमान हीराम को यह प्रतिवर्ष भेजा करता था। 12प्रभु ने अपने वचन के अनुसार सुलेमान को बुद्धि प्रदान की। इस

4 : 31 भज 89 4 : 32 नीति 1 : 1; सभ 12 : 9; श्रेष्ठ 1 : 1 5 : 1 2 शम 5 : 1; 5 : 2-11 2 इति 2 : 3-16
5 : 5 2 इति 2 : 1; 2 शम 7 : 12-13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रकार हीराम और सुलेमान के मध्य शान्ति बनी रही। उन दोनों ने परस्पर सन्धि स्थापित की।

मन्दिर का निर्माण

13 राजा सुलेमान ने समस्त इस्राएल देश से
बेगार करने वाले एकत्र किए। बेगार करने वाले
पुरुषों की संख्या तीस हजार थी। 14वह उन्हें
प्रतिमास दस हजार के हिसाब से लबानोन
भेजता था। वे एक माह लबानोन में, और दो
माह घर में रहते थे। अदोनीराम बेगार करने
वालों का निरीक्षक था। 15सुलेमान के पास
बोझा ढोने वाले सत्तर हजार और पहाड़ी प्रदेश
में पत्थर खोदने वाले अस्सी हजार मजदूर थे।
16सुलेमान के पास काम का निरीक्षण करने
वाले तीन हजार तीन सौ अधिकारी थे। ये
मजदूरों से काम करवाते थे। 17उन्होंने राजा के
आदेश से बड़े-बड़े कीमती पत्थर खोदकर
निकाले। वह भवन की नींव गढ़े हुए पत्थरों पर
डालना चाहता था। 18इस प्रकार सुलेमान और
हीराम के कारीगरों तथा गबाल के निवासियों
ने भवन का निर्माण करने के लिए पत्थर काटे,
उनको गढ़ा और लकड़ियां तैयार कीं।

6 इस्राएली लोगों के मिस्र देश से बाहर
निकलने के चार सौ अस्सी वर्ष व्यतीत हो
चुके थे। इस्राएली राष्ट्र पर सुलेमान के राज्य-
काल का चौथा वर्ष था। इस वर्ष के दूसरे महीने
में, अर्थात् ज़िव महीने में, राजा सुलेमान ने प्रभु
के लिए भवन का निर्माण-कार्य आरम्भ किया।
2जो भवन राजा सुलेमान ने प्रभु के लिए बनाया,
वह सत्ताइस मीटर लम्बा, नौ मीटर चौड़ा और
साढ़े तेरह मीटर ऊंचा* था। 3मन्दिर के मध्य
भाग के सम्मुख की ड्योढ़ी नौ मीटर चौड़ी थी।
यह मन्दिर की चौड़ाई के बराबर थी। ड्योढ़ी
मन्दिर के सम्मुख साढ़े चार मीटर लम्बी थी।
4सुलेमान ने भवन में जालीदार खिड़कियां भी
बनाईं। 5उसने मध्यभाग और पवित्र अन्तर्गृह
के चारों ओर, भवन की दीवार पर छत बनाई।
उसने चारों ओर तोरण-पथ बनाए। 6निचला
तोरण-पथ सवा दो मीटर चौड़ा था। मध्यवर्ती
तोरण-पथ दो मीटर सत्तर सेंटीमीटर चौड़ा था।
उपरला तोरण-पथ तीन मीटर और पन्द्रह
सेंटीमीटर चौड़ा था। उसने मुख्य दीवार की
बाहरी ओर, उसके चारों ओर सलामी छज्जे
बनाए थे, जिससे भार सम्भालनेवाली बल्लियों
को भवन की दीवारों में घुसाया न जाए।

7 भवन के निर्माण में गढ़े हुए पत्थरों को
प्रयुक्त किया गया। वे पत्थर खदानों में ही
काट-छांट लिये गए थे। अतः निर्माण के समय
लोहे के किसी औजार की, न हथौड़े की और
न छेनी की आवाज भवन में सुनाई दी।

8 निचले तोरण-पथ का प्रवेश-द्वार भवन
की दाहिनी ओर के कोने में था। इस प्रवेश-
द्वार पर एक जीना था, जो मध्यवर्ती तोरण-पथ
को तथा मध्यवर्ती तोरण-पथ से उपरले तोरण-
पथ को जाता था।

9-10 यों सुलेमान ने भवन का निर्माण
किया। उसने निर्माण-कार्य समाप्त किया।
सुलेमान ने समस्त भवन पर सवा दो मीटर
ऊंचा छज्जा बनाया था। उसने भवन को देवदार
के स्तम्भों से जकड़ दिया था। देवदार की
बल्लियों और तख्तों से उसकी छत तान दी
गयी थी।

11 प्रभु का यह वचन सुलेमान के पास
पहुंचा, 12 'जिस भवन का निर्माण तू कर रहा
है, उसके विषय में मेरा यह वचन है : यदि तू
मेरी संविधियों के अनुसार चलेगा, मेरे न्याय-
सिद्धांतों के अनुसार न्याय करेगा, मेरी सब
आज्ञाओं को मानेगा, और उनके अनुसार
आचरण करेगा, तो मैं अपने उस वचन को पूर्ण
करूंगा, जो मैंने तेरे विषय में तेरे पिता दाऊद
को दिया था। 13मैं इस्राएली राष्ट्र के मध्य
निवास करूंगा। मैं अपने निज लोग इस्राएलियों
का परित्याग नहीं करूंगा।'

14 यों सुलेमान ने भवन का निर्माण किया।
उसने निर्माण-कार्य समाप्त किया। 15उसने भवन

* मूल में, 'साठ हाथ लम्बा , बीस हाथ चौड़ा और तीस हाथ ऊंचा'

5 : 15-16 2 इत 2 : 2, 18 6 : 1-28 2 इति 3 : 1-13; प्रे 7 : 47 6 : 2 यहेज 41 : 1 6 : 13 नि 25 : 8; यहेज 37 : 26-28; 2 कुर 6 : 16; प्रक 21 : 3

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

की भीतरी दीवारों पर देवदार के तख्ते मढ़वा दिए। उसने भवन के फर्श से छत की कड़ियों तक देवदार की लकड़ी से दीवारों को मढ़ दिया। उसने भवन के फर्श को सनोवर के तख्तों से मढ़ा। 16उसने भवन के सबसे भीतरी भाग में देवदार के तख्तों से एक कक्ष निर्मित किया। यह फर्श के छत की कड़ियों तक नौ मीटर ऊंचा था। उसने इस कक्ष को, पवित्र अन्तर्गृह 'परम पवित्र स्थान,' बनाया। 17पवित्र अन्तर्गृह के सम्मुख मध्यभाग अठारह मीटर लम्बा था। 18भवन के भीतर, देवदार पर नक्काशी की गई थी। उस पर बौंड़ियां और खिले हुए फूल काढ़े गए थे। सब ओर देवदार दिखाई देता था। एक भी पत्थर नजर नहीं आता था।

19 सुलेमान ने प्रभु की विधान-मंजूषा को प्रतिष्ठित करने के लिए भवन के आन्तरिक भाग में पवित्र अन्तर्गृह निर्मित किया। 20यह पवित्र अन्तर्गृह नौ मीटर चौड़ा, नौ मीटर लम्बा और नौ मीटर ऊंचा था। उसने पवित्र अन्तर्गृह को शुद्ध सोने से मढ़ा। उसने देवदार की लकड़ी की एक वेदी भी बनाई। 21सुलेमान ने भवन के भीतरी भाग को शुद्ध सोने से मढ़ा। उसने पवित्र अन्तर्गृह के सम्मुख सोने की सांकलें लगाईं और एक परदा टांग दिया। 22उसने पवित्र अन्तर्गृह की सम्पूर्ण वेदी को भी सोने से मढ़ा। उसने सम्पूर्ण भवन को शुद्ध सोने से मढ़ कर भवन का निर्माण-कार्य पूर्ण किया।

23 सुलेमान ने पवित्र अन्तर्गृह में जंगली जैतून वृक्ष की लकड़ी के दो करूब बनाए। प्रत्येक करूब की ऊंचाई साढ़े चार मीटर थी। 24करूबों के प्रत्येक पंख की लम्बाई सवा दो मीटर थी। एक पंख के सिरे से दूसरे पंख के सिरे तक की लम्बाई साढ़े चार मीटर थी। 25दूसरा करूब भी साढ़े चार मीटर ऊंचा था। दोनों करूब एक ही नाप और एक ही आकार के थे। 26जैसे एक करूब की ऊंचाई साढ़े चार मीटर थी वैसे ही दूसरे करूब की ऊंचाई साढ़े चार मीटर थी। 27सुलेमान ने करूबों को भवन के पवित्र अन्तर्गृह में प्रतिष्ठित किया। करूबों के पंख यों फैले हुए थे कि एक करूब का पंख एक ओर दीवार को स्पर्श करता था, और दूसरे करूब का पंख दूसरी ओर दीवार को स्पर्श करता था। दोनों करूबों के दूसरे पंख कक्ष के मध्य में एक दूसरे को स्पर्श करते थे। 28उसने करूबों को सोने से मढ़ा।

29 सुलेमान ने भवन की सब दीवारों पर, पवित्र अन्तर्गृह और मध्यभाग की दीवारों पर करूबों, खजूर के वृक्षों और खिले हुए फूलों की आकृतियां खोदकर बनाईं। 30उसने पवित्र अन्तर्गृह और मध्यभाग के फर्श को सोने से मढ़ा।

31 उसने पवित्र अन्तर्गृह के प्रवेश-द्वार के लिए जंगली जैतून वृक्ष की लकड़ी के दो किवाड़ बनाए। चौखट के बाजू पंच-कोणीय थे। 32किवाड़ जंगली जैतून वृक्ष की लकड़ी के थे। उसने उनपर करूबों, खजूर के वृक्षों और खिले हुए फूलों की आकृतियां खोदकर बनाईं, और उनको सोने से मढ़ा, उसने करूबों और खजूर के वृक्षों पर सोने की परत मढ़ दी।

33 उसने मध्यभाग के प्रवेश-द्वार के लिए जंगली जैतून के वृक्ष की लकड़ी के, चौखट के बाजू बनाए। ये वर्गाकार थे। 34उसने सनोवर की लकड़ी के दो किवाड़ बनाए। प्रत्येक किवाड़ के दो पल्ले थे, जो मोड़ने पर दोहरे बन सकते थे। 35उसने किवाड़ों पर करूबों, खजूर के वृक्षों और खिले हुए फूलों की आकृतियां खोदकर बनाईं। उसने किवाड़ों पर सोना मढ़ा तथा खोदी गई आकृतियों पर सोने की परत मढ़ दी।

36 उसने आन्तरिक आंगन की दीवार को गढ़े हुए पत्थरों के तीन रद्दों से तथा देवदार के शहतीरों की एक परत से बनाया।

37 सुलेमान के राज्य-काल के चौथे वर्ष के ज़िव महीने में प्रभु के भवन की नींव डाली गई थी। 38उसके राज्य-काल के ग्यारहवें वर्ष के आठवें महीने में, अर्थात् बूल महीने में, भवन का समस्त निर्माण-कार्य विस्तृत निर्देश और ब्यौरे के अनुसार समाप्त हुआ। मन्दिर के

6 : 16 नि 26 : 33 **6 : 22** नि 30 : 1 **6 : 23** नि 25 : 20

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

निर्माण-कार्य में सात वर्ष लगे।

सुलेमान के महल

7 सुलेमान ने अपना महल भी बनाया। उसके
निर्माण-कार्य में तेरह वर्ष लगे। 2उसने
लबानोन-वन का भवन बनाया। उसकी लम्बाई
पैंतालीस मीटर, चौड़ाई साढ़े बाईस मीटर और
ऊंचाई साढ़े तेरह मीटर थी। उसमें देवदार के
खम्भों की चार पंक्तियां थीं। खम्भों के ऊपर
देवदार के शहतीर रखे गए थे। 3भवन की छत
देवदार की लकड़ी की थी। वह शहतीरों के
ऊपर थी। शहतीर खम्भों का आधार लिये हुए
थे। उनकी संख्या पैंतालीस थी। प्रत्येक पंक्ति
में पन्द्रह शहतीर थे। 4खिड़कियों के चौखटों
की तीन पंक्तियां थीं। तीन-तीन खिड़कियां
आपने-सामने लगी थीं। 5सब दरवाजों और
खिड़कियों के चौखटे वर्गाकार थे। तीन-तीन
खिड़कियां आपने-सामने लगी थीं।

6 उसने खम्भों वाला एक बरामदा बनाया।
उसकी लम्बाई साढ़े बाईस मीटर, और चौड़ाई
साढ़े तेरह मीटर थी। बरामदे के सम्मुख
स्तंभावलि तथा एक छज्जा था।

7 उसने एक न्याय-भवन भी बनाया। भवन
में सिंहासन था। वहां वह न्याय करता था।
उसने उसमें फर्श से शहतीरों तक देवदार के
तख्ते लगाए।

8 न्याय-भवन के पीछे वाला महल भी,
जिसमें वह रहता था, उसी ढंग से बना था।
सुलेमान ने इसी महल के सदृश एक महल
फ़रओ की पुत्री के लिए बनाया था, जिससे
उसने विवाह किया था।

9 यह सब भवन नींव से छत तक और प्रभु-
भवन के आंगन से बड़े आंगन तक, बहुमूल्य
पत्थरों के बने थे। इन पत्थरों को नाप के
अनुसार काटा गया था। उनको आमने-सामने
आरों से काटा-छांटा गया था। 10कीमती पत्थरों
की नींव डाली गई थी। ये पत्थर विशाल
आकार के थे। इनकी लम्बाई-चौड़ाई साढ़े चार
और साढ़े तीन मीटर थी। 11इन पत्थरों के ऊपर
कीमती पत्थर और देवदार की लकड़ी थी।
पत्थरों को नाप के अनुसार काटा गया था।
12बड़े आंगन के चारों ओर एक दीवार थी,
जिसमें गढ़े हुए पत्थरों के तीन रद्दों और
देवदार के शहतीरों की एक परत थी; जैसा
प्रभु-भवन के भीतर के आंगन में तथा भवन की
ड्योढ़ी में था।

13 राजा सुलेमान ने दूत भेजकर सोर देश
से हीराम को बुलाया। 14वह एक विधवा का
पुत्र था। विधवा नफ्ताली कुल की थी। हीराम
का पिता सोर देश का निवासी था। वह कांस्य
धातु का कारीगर था। हीराम भी बुद्धिमान,
समझदार और निपुण कारीगर था। वह कांस्य+
धातु पर सब प्रकार की कारीगरी कर सकता
था। वह राजा सुलेमान के पास आया, और
उसने उसका सब कार्य किया।

15 हीराम ने कांस्य के दो स्तम्भ ढाले। एक
स्तम्भ प्रायः आठ मीटर ऊंचा था। उसकी
परिधि प्रायः साढ़े पांच मीटर थी। वह भीतर से
खोखला था। उसकी धातु की मोटाई आठ
सेंटीमीटर थी। ऐसा ही दूसरा स्तम्भ था।
16उसने स्तम्भों के सिरों पर बैठाने के लिए ठोस
तांबे के दो स्तम्भ-शीर्ष बनाए। प्रत्येक स्तम्भ-
शीर्ष की ऊंचाई सवा दो मीटर थी। 17तत्पश्चात्
उसने प्रत्येक स्तम्भ-शीर्ष के लिए चौखाने की
सात जालियां और सांकलदार सात झालरें
बनाईं। 18उसने अनार बनाए। उसने स्तम्भ-
शीर्ष को ढकने के लिए अनारों की एक जाली
चारों ओर दो कतारों में लगायी। ऐसा ही उसने
दूसरे स्तम्भ-शीर्ष के लिए किया। 19ड्योढ़ी के
स्तम्भ-शीर्ष सोसन पुष्प के आकार के थे।
उनकी ऊँचाई प्रायः दो मीटर थी। 20दोनों स्तम्भ-
शीर्षों के ऊपर, उस गोलाकार गठन के ऊपर,
जो जाली के ऊपर थी, दो सौ अनार थे। ये दोनों
स्तम्भ-शीर्षों के चारों ओर कतारों में लगाए गए
थे। 21तत्पश्चात् उसने मन्दिर की ड्योढ़ी में
स्तम्भ खड़े किए। उसने दक्षिण दिशा में एक
स्तम्भ खड़ा किया, और उसका नाम 'याकीन'*

+ अथवा, 'पीतल' * अर्थात् "वह स्थिर रखेगा"

7 : 8 1 रा 3 : 1 7 : 14 नि 31 : 3 7 : 15-21 2 इति 3 : 15-17

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रखा। तब उसने उत्तर दिशा में एक स्तम्भ खड़ा
किया, और उसका नाम 'बोअज'** रखा।
22स्तम्भों के शीर्ष सोसन-पुष्प के आकार के
थे। इस प्रकार स्तम्भों का निर्माण-कार्य पूर्ण
हुआ।

23 तत्पश्चात् हीराम ने ढली हुई धातु का
एक हौज बनाया। वह गोलाकार था। वह एक
किनारे से दूसरे किनारे तक साढ़े चार मीटर
चौड़ा था और सवा दो मीटर ऊंचा था। उसकी
सम्पूर्ण परिधि साढ़े तेरह मीटर थी। 24हौज के
किनारे के नीचे, उसकी बाहरी ओर, उसकी
सम्पूर्ण परिधि में बौंड़ियां बनी हुई थीं। ये दो
कतारों में थीं। जब हौज को ढाला गया था तब
उसके साथ इन्हें भी ढाला गया था। 25हौज बारह
बैलों पर स्थित था। तीन बैलों के मुंह उत्तर की
ओर, तीन बैलों के मुंह पश्चिम की ओर, तीन
बैलों के मुंह दक्षिण की ओर, और तीन बैलों
के मुंह पूर्व की ओर थे। हौज उन पर रखा गया
था। बैलों का पिछला भाग भीतर की ओर था।
26हौज की धातु की मोटाई प्राय: आठ सेंटीमीटर
थी। उसका किनारा कटोरे के किनारे के समान,
सोसन-पुष्प के आकार का था। उसमें प्राय:
नब्बे हजार लिटर पानी समाता था।

27 हीराम ने कांस्य के दस ठेले बनाए।
प्रत्येक ठेले की लम्बाई एक मीटर और अस्सी
सेंटीमीटर थी। उसकी चौड़ाई एक मीटर और
अस्सी सेंटीमीटर, तथा ऊंचाई एक मीटर और
पैंतीस सेंटीमीटर थी। 28ठेलों की बनावट यह
थी : उनमें दिल्ले+ थे, जो चौखटों में लगाए गए
थे। 29चौखटों के दिल्लों पर सिंह, बैल और
करूबों की आकृतियां अंकित थीं। चौखटों पर,
सिंह, बैल और करूबों की आकृतियों के ऊपर
और नीचे चक्राकार झालरें बनी हुई थीं।
30प्रत्येक ठेले में कांस्य धातु के चार पहिए थे।
उनमें कांस्य की धुरियां थीं। कंडाल रखने के
लिए चार आधार और ठीहे थे जो धातु ढालकर
बनाए गए थे। इनके कोनों पर चक्राकार झालरें
बनी हुई थीं। 31कंडाल का मुंह कंगनी के भीतर
था, जो ऊपर की ओर पैंतालीस सेंटीमीटर
निकली हुई थी। कंडाल का मुंह खम्भे के
समान गोलाकार था। वह लगभग सत्तर सेंटीमीटर
गहरा था। उसके मुंह पर नक्काशी की गयी थी।
ठेले के दिल्ले गोल नहीं, वरन् चौकोर थे।
32दिल्लों के नीचे चार पहिए थे। पहियों की
धुरियां ठेले के साथ जुड़ी हुई थीं। प्रत्येक पहिए
की ऊंचाई प्राय: सत्तर सेंटीमीटर थी। 33पहियों
की बनावट रथ के पहियों के समान थी। उनकी
धुरियां, पुट्ठियां, आरे और नाभियां धातु को
ढालकर बनाई गई थीं! 34ठेले के चारों कोनों
पर चार ठीहे थे। ठीहे और ठेले धातु के एक
ही टुकड़े से बनाए गए थे। उनमें जोड़ नहीं था।
35ठेले के ऊपर, उसके चारों ओर लगभग तेईस
सेंटीमीटर की गोलाई थी। ठेले के सिर की टेकें
और दिल्ले धातु के एक ही टुकड़े से बनाए गए
थे। वे ठेले से जोड़े नहीं गए थे।

36 हीराम ने दिल्लों पर, जहां-जहां खाली
स्थान था, करूबों, सिंहों और खजूर वृक्षों की
आकृति अंकित की। तत्पश्चात् उसके चारों
ओर चक्राकार झालरें बना दीं। 37हीराम ने इसी
बनावट के अनुरूप दस ठेले बनाए थे। उन सब
का एक ही सांचा, एक ही नाप और एक ही
आकार था।

38 हीराम ने पीतल के दस कण्डाल बनाए।
प्रत्येक कण्डाल में एक हजार आठ सौ लिटर
पानी समाता था। प्रत्येक कण्डाल प्राय: दो
मीटर गहरा था। हरएक ठेले के लिए कण्डाल
था। 39उसने भवन की एक ओर पांच ठेले और
उसकी दूसरी ओर शेष पांच ठेले रखे। उसने
हौज को भवन की दक्षिण-पूर्व दिशा में रखा।

मन्दिर के पवित्र पात्र तथा अन्य वस्तुएं

40 हीराम ने राख उठाने के पात्र, फावड़ियां
और रक्त छिड़कने के लिए पात्र भी बनाए। इस
प्रकार हीराम ने सब कार्य समाप्त किया। जो
कार्य प्रभु के भवन के लिए करने का आदेश
राजा सुलेमान ने उसे दिया था, उसने उसको
पूर्ण किया : 41दो स्तम्भ, स्तम्भों के शिखर पर

** अर्थात् "उसमें दृढ़ता है" + अथवा "पटरियां"

7 : 23-26 2 इति 4 : 2-5 **7 : 3-51** 2 इति 4 : 6—5 : 1 **7 : 38** नि 30 : 17

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दो गोलाकार स्तम्भ-शीर्ष, इन दो स्तम्भ-शीर्षों
को सजाने के लिए दो जालियां, [42]दोनों जालियों
के लिए चार-चार सौ अनार। स्तम्भ-शीर्षों को
सजाने के लिए प्रत्येक जाली की कतार में दो
सौ अनार थे। [43]हीराम ने दस ठेले और उनके
ऊपर दस कण्डाल, [44-45]एक हौज, और उसको
सहारा देने वाले धातु के बारह बैल, राख उठाने
के पात्र, फावड़ियां, और रक्त छिड़कने के लिए
पात्र बनाए थे।

यह सब सामग्री, जिसको हीराम ने प्रभु
के भवन के लिए राजा सुलेमान के आदेश
से बनाया, झिलमिलाते पीतल की थी।
[46]सुलेमान ने उनको यर्दन के मैदान में ढाला
था। ढलाईघर सूक्कोत और सारतान नगरों के
मध्य में था।

47 सुलेमान ने ये सब पात्र उनके निर्धारित
स्थान पर रख दिए। उनके बनाने में इतनी
अधिक कांस्य धातु लगी थी कि सुलेमान ने
उनको नहीं तोला। अतः कांस्य धातु की तौल
ज्ञात नहीं हो सकी।

48 सुलेमान ने प्रभु के भवन की ये वस्तुएं
भी बनाई थीं : स्वर्ण वेदी और स्वर्ण मेज, जिस
पर 'प्रभु-भेंट की रोटी' रखी जाती थी; [49]शुद्ध
सोने के दीपाधार—पांच दीपाधार पवित्र अन्तर्गृह
की दाहिनी ओर, और पांच दीपाधार उसकी
बाईं ओर थे—; सोने के पुष्प, दीपक और
चिमटे; [50]शुद्ध सोने के तसले, कैंचियां, रक्त
छिड़कने के लिए पात्र, धूपदान और करछे;
और पवित्र अन्तर्गृह—परम पवित्र स्थान—के
दरवाजों तथा मध्यभाग के दरवाजों के कब्जे।
उसने ये भी सोने के बनाए थे।

51 यों राजा सुलेमान ने प्रभु के भवन का
निर्माण-कार्य समाप्त किया। तत्पश्चात् वह
अपने पिता दाऊद के द्वारा अर्पित की गई
वस्तुएं—सोना, चांदी तथा अमूल्य पात्र—प्रभु
के भवन में ले गया। उसने उनको भवन के
भण्डारगृहों में रख दिया।

मन्दिर में विधान-मंजूषा की प्रतिष्ठा

8 सुलेमान ने दाऊदपुर से, जिसको सियोन
कहते हैं, प्रभु की विधान-मंजूषा को लाने
के लिए इस्राएली राष्ट्र के सब धर्मवृद्धों को
यरूशलेम में बुलाया। ये धर्मवृद्ध कुलाधिपति
और इस्राएली पितृकुलों के मुखिया थे। [2]सब
इस्राएली पुरुष राजा सुलेमान के पास, वर्ष के
सातवें महीने में, अर्थात् एतानीम महीने में,
यात्रा-पर्व के अवसर पर एकत्र हुए। [3]जब सब
इस्राएली धर्मवृद्ध आ गए तब पुरोहितों ने प्रभु
की मंजूषा को उठाया। [4]वे प्रभु की मंजूषा के
साथ मिलन-शिविर तथा उसके भीतर के सब
पवित्र पात्र ले गए। उन्हें उठाने वाले व्यक्ति
केवल पुरोहित और उपपुरोहित* थे। [5]राजा
सुलेमान तथा उसके समीप एकत्र हुआ समस्त
इस्राएली आराधकों का समूह मंजूषा के
सम्मुख खड़ा हुआ। उन्होंने इतनी अधिक भेड़ों
और बैलों की बलि चढ़ाई कि उनकी गणना
नहीं की जा सकती। बलि-पशु असंख्य थे।
[6]तत्पश्चात् पुरोहित प्रभु की विधान-मंजूषा
को उसके स्थान पर, मन्दिर के पवित्र
अन्तर्गृह—परम पवित्र स्थान—में, करूबों के
पंखों के नीचे लाए। [7]करूब मंजूषा के स्थान
के ऊपर अपने पंख फैलाए हुए थे। यों वे मंजूषा
और उसके डण्डों को ऊपर से आच्छादित
करते थे। [8-9]डण्डे लम्बे थे। उनके सिर अन्तर्गृह
के सम्मुख के पवित्र स्थान से दिखाई देते थे,
किन्तु वे बाहर से नहीं दिखाई देते थे। मंजूषा
के भीतर पत्थर की दो पट्टियों के अतिरिक्त
कुछ नहीं था। मूसा ने ये पत्थर की पट्टियां होरेब
पर्वत पर मंजूषा के भीतर रखी थीं। ये प्रभु के
विधान की पट्टियां थीं। जब इस्राएली मिस्र देश
से बाहर निकले थे तब प्रभु ने उनके साथ
विधान स्थापित किया था। वे आज भी वहां हैं।

10 पुरोहित पवित्र स्थान से बाहर निकल
गए। तब प्रभु के भवन में मेघ भर आया। [11]मेघ
के कारण पुरोहित सेवा-कार्यों को सम्पन्न

---

* अथवा 'लेवीय'

7 : 48 नि 25 : 30 7 : 51 2 शम 8 : 11; 1 इति 18 : 11 8 : 1-6 प्रक 11 : 19 8 : 1 2 शम 6 : 17 8 : 3 गण 4 : 15 8 : 9 व्य 10 : 5; नि 40 : 20 8 : 10-11 2 इति 5 : 13-14; नि 40 : 34-35; प्रक 15 : 8; यहेज 43 : 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

करने में असमर्थ थे। वे वहां खड़े नहीं रह सके;
क्योंकि प्रभु का तेज प्रभु के भवन में भर गया
था। 12तब सुलेमान ने कहा, 'हे प्रभु, तूने आकाश
में सूर्य को स्थित किया;* पर अपने निवास-
स्थान के लिए सघन अन्धकार को चुना! 13मैंने
तेरे लिए एक भव्य+ भवन बनाया; ऐसा स्थान
बनाया कि तू उसमें सदा-सर्वदा निवास
करे।'

भवन का अर्पण

14 समस्त इस्राएली आराधकों का समूह**
खड़ा था। राजा सुलेमान उनकी ओर उन्मुख
हुआ। उसने आराधकों को यह आशिष दी।
15उसने कहा, 'इस्राएली राष्ट्र का प्रभु परमेश्वर
धन्य है। जो वचन उसने मेरे पिता दाऊद को
अपने मुंह से दिया था, उसको अब उसने अपने
हाथ से पूरा किया। 16उसने यह कहा था,
"जिस दिन मैंने अपने निज लोग इस्राएलियों
को मिस्र देश से बाहर निकाला, उस दिन से
आज तक मैंने इस्राएली कुलों का कोई भी नगर
नहीं चुना कि मैं एक भवन बनाऊं और वहां मेरा
नाम प्रतिष्ठित हो। परन्तु मैंने अपने निज लोगों
पर शासन करने के लिए दाऊद को चुना।"
17मेरे पिता दाऊद की यह हार्दिक इच्छा थी कि
वह इस्राएली राष्ट्र के प्रभु परमेश्वर के नाम की
महिमा के लिए एक भवन बनाएं; 18परन्तु प्रभु
ने मेरे पिता दाऊद से यह कहा, "तूने मेरे नाम
की महिमा के लिए भवन बनाने की हार्दिक
इच्छा की। तेरे हृदय की यह इच्छा उत्तम है।
19फिर भी तू यह भवन नहीं बना सकेगा। तेरा
पुत्र, जो तुझ से उत्पन्न होने वाला है, वह मेरे
नाम की महिमा के लिए भवन का निर्माण
करेगा।" 20प्रभु ने अपने वचन को इस प्रकार
पूरा किया : मैंने अपने पिता दाऊद का स्थान
ग्रहण किया। मैं इस्राएली राष्ट्र के सिंहासन पर
बैठा, जैसा प्रभु ने कहा था। मैंने इस्राएली राष्ट्र
के प्रभु परमेश्वर के नाम की महिमा के लिए
भवन का निर्माण किया। 21मैंने वहां, भवन
में मंजूषा के लिए स्थान भी निर्धारित
कर दिया है। मंजूषा में प्रभु के विधान
की पट्टियां हैं। जब प्रभु ने हमारे पूर्वजों को
मिस्र देश से बाहर निकाला था, तब उसने
हमारे पूर्वजों के साथ यह विधान स्थापित
किया था।'

22 राजा सुलेमान प्रभु की वेदी के सम्मुख
खड़ा हुआ। उसने समस्त इस्राएली आराधकों
के सामने आकाश की ओर अपने हाथ फैलाए,
23और यह कहा, 'हे इस्राएली राष्ट्र के प्रभु
परमेश्वर! तेरे समान न ऊपर आकाश में, और
न नीचे पृथ्वी पर कोई ईश्वर है। अपने सेवकों
के प्रति, जो अपने सम्पूर्ण हृदय से तेरे सम्मुख
निष्ठापूर्वक चलते हैं, तू अपने विधान का
पालन करता है। तू उन पर करुणा करता है।
24तूने मेरे पिता दाऊद को जो वचन दिया था
उसको पूरा किया। जो बात तूने अपने मुंह से
कही थी, उसको तूने अपने हाथ से आज पूर्ण
किया। 25हे इस्राएली राष्ट्र के प्रभु परमेश्वर!
तूने मेरे पिता को यह वचन दिया था, और उससे
यह कहा था, "यदि तेरे पुत्र अपने आचरण के
प्रति सावधान रहेंगे, जैसा तू मेरे सम्मुख
निष्ठापूर्वक चलता है, वैसा वे भी चलेंगे, तो
मैं इस्राएल के सिंहासन पर बैठने के लिए तेरे
वंश में पुरुष का अभाव न होने दूंगा।" हे प्रभु,
अपने इस वचन को पूर्ण कर। 26हे इस्राएली
राष्ट्र के परमेश्वर, अब अपने सेवक, मेरे पिता
दाऊद को दिए गए अपने वचन को सच
प्रमाणित कर।

27'हे परमेश्वर, क्या तू पृथ्वी पर रह सकता
है? देख, ऊंचे से ऊंचा आकाश भी तुझे नहीं
समा सकता। तब तू मेरे इस भवन में, जिसको
मैंने बनाया है, कैसे समाएगा? 28हे मेरे प्रभु
परमेश्वर, अपने सेवक की प्रार्थना और उसकी
विनती पर कृपा-दृष्टि कर। जो दुहाई और

---

* प्राचीन यूनानी अनुवाद के अनुसार। + अथवा, 'राजसी'। **अथवा, 'धर्मसभा'

8 : 12 भज 18 : 11; 97 : 2 **8 : 12-50** 2 इति 6 : 1-19 **8 : 13** भज 132 : 14; यो 4 : 21-23; प्रे 6 : 14
8 : 16 व्य 12 : 11 **8 : 23** व्य 7 : 9 **8 : 27** 2 इति 2 : 6; यश 66 : 1; यिर 23 : 24; यो 1 : 14; प्रे 7 : 49;
17 : 24

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रार्थना आज तेरा सेवक तेरे सम्मुख प्रस्तुत कर
रहा है, उसको तू सुन। 29इस भवन की ओर,
जिसके विषय में तूने यह कहा था, "मेरा नाम
वहाँ प्रतिष्ठित होगा", तेरी आंखें दिन-रात
खुली रहें। इस स्थान के संबंध में तेरा सेवक
जो प्रार्थना कर रहा है, उसको तू सुन।
30 'जब मैं, तेरा सेवक और तेरे निज लोग
इस्राएली इस स्थान में प्रार्थना करेंगे, तब तू
उनकी विनती को सुनना। अपने निवास-
स्थान, स्वर्ग से तू उनकी प्रार्थना सुनना। प्रभु,
तू उनकी प्रार्थना सुनकर उन्हें क्षमा कर देना।
31 'जब कोई मनुष्य अपने पड़ोसी के
विरुद्ध अपराध करेगा, और पड़ोसी उसको
शपथ देगा और वह तेरे इस भवन की वेदी के
सम्मुख शपथ खाएगा 32तब तू स्वर्ग से उनका
मुकदमा सुनना, और कार्य करना। प्रभु, अपने
सेवकों का न्याय करना; दुर्जन को दुर्जन घोषित
करना, और उसके आचरण का फल उसके
सिर पर लौटाना। परन्तु सज्जन को सज्जन सिद्ध
करना, और उसकी सज्जनता के अनुरूप* उसे
फल देना।
33 'जब तेरे निज लोग इस्राएली तेरे विरुद्ध
पाप करेंगे, और पाप के कारण अपने शत्रु से
हार जाएंगे, तब यदि वे तेरी ओर लौटेंगे, तेरे
नाम का गुणगान करेंगे, तुझसे प्रार्थना करेंगे,
और इस भवन में तुझसे विनती करेंगे 34तो तू
स्वर्ग से उनकी प्रार्थना सुनना। अपने निज लोग
इस्राएलियों के पाप क्षमा करना; और उनके देश
में, जो तूने उनके पूर्वजों को दिया था, उन्हें
लौटा लाना।
35 'जब वे तेरे विरुद्ध पाप करेंगे, और तू
आकाश के झरोखे बन्द कर देगा, और उनके
देश में वर्षा नहीं होगी, तब यदि वे इस भवन
की ओर मुख कर प्रार्थना करेंगे, तेरे नाम का
गुणगान करेंगे, जब तू उनको दण्ड दे चुका
होगा, और वे पाप को छोड़कर तेरी ओर
लौटेंगे, 36तो तू स्वर्ग से उनकी प्रार्थना सुनना।
अपने सेवकों, अपने निज लोग इस्राएलियों के
पाप क्षमा करना। जिस सन्मार्ग पर उन्हें चलना
चाहिए अपने उस सन्मार्ग की शिक्षा उनको
देना। यह देश तूने अपने निज लोगों को पैतृक-
अधिकार के लिए दिया है। अतः प्रभु, तू इस
देश को वर्षा प्रदान करना।
37 'जब इस देश में अकाल पड़ेगा,
महामारी फैलेगी, फसल में गेरुआ कीड़ा
लगेगा, पाला पड़ेगा, टिड्डी-दल का आक्रमण
होगा अथवा फसल में कीड़े लगेंगे; जब उनके
शत्रु उनको किसी नगर में घेर लेंगे, अथवा
महामारी या रोग का उन पर हमला होगा, 38तब
यदि तेरे निज लोग इस्राएली सामूहिक रूप से
अथवा कोई भी मनुष्य निजी रूप से अपने हृदय
में पश्चात्ताप करेगा, और इस भवन की ओर
अपने हाथ फैलाएगा और तुझसे प्रार्थना तथा
विनती करेगा, 39तो तू उसे क्षमा कर अपने
निवास-स्थान स्वर्ग से उसकी प्रार्थना सुनना
और कार्य करना। प्रत्येक मनुष्य को, जिसका
हृदय तू जानता है, उसके कार्य के अनुरूप फल
देना। प्रभु, केवल तू मनुष्य के हृदय को जानता
है। 40इस प्रकार वे जीवन-भर तेरी भक्ति करते
हुए इस देश में निवास करेंगे, जो तूने हमारे
पूर्वजों को दिया है।
41 'जब कोई विदेशी, जो तेरे निज लोग
इस्राएली जाति का नहीं है, तेरे नाम के कारण
दूर देश से आएगा 42(क्योंकि मनुष्य तेरे नाम,
तेरे सामर्थी हाथ और उद्धार के हेतु फैली हुई
तेरी भुजाओं के विषय में सुनेंगे), जब वह इस
भवन में आकर तुझसे प्रार्थना करेगा, 43तब तू
अपने निवास-स्थान स्वर्ग से उसकी प्रार्थना
सुनना। जिस कार्य के लिए विदेशी तुझे
पुकारेंगे, तू उस कार्य को करना। इस प्रकार तेरे
निज लोग इस्राएलियों के समान पृथ्वी के सब
लोग भी तेरे नाम को जानेंगे, और तेरी भक्ति
करेंगे। उनको ज्ञात होगा कि यह भवन जो मैंने
निर्मित किया है, तेरे नाम को समर्पित है।

* अथवा, 'धार्मिक को उसकी धार्मिकता के अनुरूप'।

8 : 29 व्य 12 : 11; यहेज 48 : 35 **8 : 30** भज 123 : 1; 130 : 4; मत 6 : 12 **8 : 33** व्य 28 : 25 **8 : 41** यश 2 : 2-5; जक 8 : 22; प्रे 8 : 27

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

44 'जब तेरे निज लोग अपने शत्रु से युद्ध
करने के लिए नगर से बाहर निकलेंगे और उस
मार्ग पर जाएंगे जिस पर तू उन्हें भेजेगा, तब
यदि वे उस नगर की ओर जिसको तूने चुना है,
और उस भवन की ओर, जो मैंने तेरे नाम की
महिमा के लिए निर्मित किया है, तुझ-प्रभु से
प्रार्थना करेंगे, 45तो तू स्वर्ग से उनकी प्रार्थना
और विनती सुनना, और उनको विजय प्रदान
करना।

46 'जब वे तेरे विरुद्ध पाप करेंगे (ऐसा
कौन मनुष्य है, जिसने कभी पाप नहीं किया?)
और तू उनसे क्रुद्ध होगा, उन्हें शत्रुओं के हाथ
सौंप देगा कि वे उन्हें बन्दी बनाकर दूर अथवा
समीप के, अपने देश में ले जाएं; 47तब यदि वे
बन्दी-देश में होश में आएंगे, पश्चात्ताप करेंगे
और अपने विजेताओं के देश में तुझसे विनती
करेंगे, और यह कहेंगे, "हमने पाप किया;
हमने अधर्म और दुष्कर्म किया"; 48यदि वे
अपने शत्रुओं के देश में, जो उन्हें बन्दी बनाकर
ले गए थे, सम्पूर्ण हृदय और सम्पूर्ण प्राण से
पश्चात्ताप करेंगे, और इस देश की ओर जो तूने
उनके पूर्वजों को दिया है, इस नगर की ओर,
जिसको तूने चुना है, और इस भवन की ओर
जो मैंने तेरे नाम की महिमा के लिए निर्मित
किया है, मुख करके तुझसे प्रार्थना करेंगे; 49तो
तू अपने निवास-स्थान, स्वर्ग से उनकी प्रार्थना
और विनती को सुनना और उनका न्याय
करना। 50तू उनके पाप और अपराध, जो
उन्होंने तेरे विरुद्ध किए थे,क्षमा करना। उन्हें
बन्दी बनाने वालों के हृदय में उनके प्रति दया
उत्पन्न करना कि वे उनके प्रति दया करें ।
51प्रभु, वे तेरे निज लोग हैं, तेरी निज सम्पत्ति
हैं। तूने उन्हें मिस्र देश से, भट्टी की अग्नि से
बाहर निकाला था। 52हे प्रभु, अपने सेवक और
अपने निज लोग इस्राएलियों की विनती की
ओर तेरी आंखें सदा खुली रहें। जब-जब वे
तुझे पुकारें, तू उनकी ओर कान दे। 53हे प्रभु
परमेश्वर, तूने उन्हें अपनी निज सम्पत्ति बनाने
के लिए पृथ्वी के सब राष्ट्रों में से अलग किया
है। जब तूने हमारे पूर्वजों को मिस्र देश से बाहर
निकाला था तब तूने अपने सेवक मूसा के मुंह
से यह बात कही थी।'

54 सुलेमान प्रभु की वेदी के सम्मुख घुटने
टेके हुए था। उसके हाथ आकाश की ओर फैले
हुए थे। जब वह प्रभु से प्रार्थना और विनती कर
चुका, तब वह उठा। 55वह खड़ा हुआ। उसने
उच्च स्वर में इस्राएली आराधकों को+ यह
आशीर्वाद दिया, 56 'प्रभु धन्य है! उसने अपने
वचन के अनुसार अपने निज लोग इस्राएलियों
को एक विश्राम-स्थल प्रदान किया। जो-जो
वचन उसने अपने सेवक मूसा से कहे थे,उनमें
से एक वचन भी निष्फल नहीं हुआ। 57जैसे हमारा
प्रभु परमेश्वर हमारे पूर्वजों के साथ था, वैसे ही
वह हमारे साथ रहे। वह हमें न छोड़े और न
हमारा त्याग करे। 58वह हमारे हृदय को अपनी
ओर प्रवृत करे जिससे हम उसके मार्ग पर चलें।
जो आज्ञाएं, संविधियां और न्याय-सिद्धान्त
उसने हमारे पूर्वजों को दिए थे, हम उनका
पालन करें। 59प्रभु के सम्मुख प्रस्तुत मेरी
प्रार्थना और विनती के शब्द, रात-दिन हमारे
प्रभु परमेश्वर के समीप उपस्थित रहें। वह
हमारी दिन-प्रतिदिन की आवश्यकता के अनुसार
अपने सेवक और अपने निज लोग इस्राएलियों
का न्याय करे; 60जिससे पृथ्वी के सब लोगों को
मालूम हो कि प्रभु ही परमेश्वर है, और उसके
अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है। 61ओ
इस्राएलियो, जैसा आज तुमने किया है, वैसा ही
सदा करना । अपने प्रभु परमेश्वर को अपना
हृदय पूर्णतः समर्पित करना, सदा उसकी
संविधियों के अनुसार आचरण करना और
उसकी आज्ञाओं का पालन करना।'

62 तत्पश्चात् राजा तथा उसके साथ सब
इस्राएलियों ने प्रभु के सम्मुख पशुओं की बलि
अर्पित की। 63राजा सुलेमान ने सहभागिता-

+ अथवा, 'समस्त धर्मसभा को'

8 : 46 नीति 20 : 9; सभ 7 : 20; रोम 3 : 23; 1 यो 1 : 8 **8 : 47** व्य 28 : 64; 9 : 5 **8 : 51** व्य 9 : 26 **8 : 56** व्य 12 : 10; यहो 21 : 45 **8 : 57** व्य 31 : 6 **8 : 58** यिर 31 : 33 **8 : 62-66** 2 इति 7 : 4-10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बलि में प्रभु को बाईस हजार बैल, और एक
लाख बीस हजार भेड़ें चढ़ाईं। इस प्रकार राजा
और इस्राएली लोगों ने प्रभु के भवन को प्रभु
की महिमा के लिए अर्पित किया। 64उसी दिन
राजा ने मध्यवर्ती आंगन को भी प्रभु की महिमा
के लिए अर्पित किया। यह प्रभु-भवन के
सामने था। प्रभु के सम्मुख की कांस्य वेदी छोटी
थी। उस पर अग्नि-बलि, अन्न-बलि और
सहभागिता-बलियों की चर्बी चढ़ाना सम्भव न
था। इसलिए राजा ने मध्यवर्ती आंगन में
अग्नि-बलि, अन्न-बलि और सहभागिता-
बलियों की चर्बी चढ़ाई।

65 सुलेमान ने उस समय प्रभु परमेश्वर के
सम्मुख सात दिन तक यात्रा-पर्व मनाया। उसने
एक विशाल भोज का आयोजन किया।* पर्व
में विशाल जनसमूह** उपस्थित हुआ। हमात
घाटी की सीमा से मिस्र देश की बरसाती नदी
तक के समस्त इस्राएली एकत्र हुए। 66उसने
आठवें दिन लोगों को विदा किया। लोगों ने
राजा के लिए शुभ कामना प्रकट की और
अपने-अपने घर को लौट गए। उनके हृदय
आनन्द और हर्ष से भरे हुए थे कि प्रभु ने अपने
सेवक दाऊद और अपने निज लोग इस्राएलियों
के लिए कितने भले कार्य किये हैं।

राजा सुलेमान को प्रभु का दूसरा दर्शन

9 जब सुलेमान प्रभु का भवन, राजमहल
तथा वे भवन, जिनको वह बनाना चाहता
था, बना चुका, 2तब प्रभु ने सुलेमान को दुबारा
दर्शन दिया, जैसा उसने गिबओन में उसे दर्शन
दिया था। 3प्रभु ने उससे कहा, 'जो प्रार्थना तूने
मुझसे की है, जो विनती तूने मेरे सम्मुख प्रस्तुत
की है, उसको मैंने सुना। मैंने उस भवन को,
जिसको तूने बनाया है, पवित्र कर दिया। मैंने
सदा-सर्वदा के लिए वहां अपना नाम प्रतिष्ठित
किया है। मेरी आंखें और मेरा हृदय सब समय
उस भवन पर लगे रहेंगे। 4जैसे तेरा पिता दाऊद
सच्चे और सरल हृदय से मेरे सम्मुख चलता था,
वैसे ही यदि तू चलेगा, मेरी आज्ञाओं, संविधियों
और न्याय-सिद्धान्तों का पालन करेगा 5तो मैं
इस्राएल देश पर तेरा राज्य-सिंहासन सदा सुदृढ़
रखूंगा। यह मैंने तेरे पिता दाऊद से कहा था।
मैंने उसे यह वचन दिया था, "इस्राएल के
सिंहासन पर बैठने के लिए तेरे वंश में पुरुष का
अभाव न होगा।" 6परन्तु यदि तुम और तुम्हारी
सन्तान मेरा अनुसरण करना छोड़ दोगे, जो
आज्ञाएं और संविधियां मैंने तुम्हारे सम्मुख रखी
हैं, उनका पालन नहीं करोगे, और अन्य देशों
के देवताओं का अनुसरण करोगे, उनकी सेवा
करोगे, उनकी आराधना करोगे, 7तो मैं
इस्राएलियों को इस देश से, जो मैंने उन्हें प्रदान
किया है, निकाल दूंगा। जिस भवन को मैंने
अपने नाम के लिए पवित्र किया है, उसको
अपनी आंखों के सामने से दूर कर दूंगा।
इस्राएली विश्व की जातियों के मध्य निन्दा और
उपहास के पात्र बन जाएंगे। 8यह भवन मलबा
का ढेर हो जाएगा। यहां से गुजरने वाले राहगीर
आश्चर्य करेंगे। वे दांत तले अंगुली दबाकर
पूछेंगे, "प्रभु ने इस देश तथा इस भवन के साथ
यह व्यवहार क्यों किया?" 9लोग उन्हें यह
बताएंगे, "क्योंकि इस्राएलियों ने अपने प्रभु
परमेश्वर को त्याग दिया था, जो उनके पूर्वजों
को मिस्र देश से निकालकर लाया था। उन्होंने
अन्य देशों के देवताओं को ग्रहण कर लिया था,
उनकी आराधना की और उनकी सेवा की। इस
कारण प्रभु ने उन पर यह विपत्ति का पहाड़
ढाहा है।"'

सुलेमान का अन्य निर्माण-कार्य

10 सुलेमान को दो भवन, प्रभु का मन्दिर
तथा राजमहल, बनाने में बीस वर्ष लगे। 11सोर
देश के राजा हीराम ने सुलेमान की आवश्यकता
के अनुसार देवदार तथा सनोवर की लकड़ी
और सोना भेजा। इसके बदले में राजा सुलेमान
ने उसे गलील प्रदेश के बीस नगर प्रदान किए।
12परन्तु जब हीराम सोर देश से नगरों को देखने

* मूल अस्पष्ट। ** अथवा, "धर्मसभा"।

8 : 65 लेव 23 : 34 9 : 1-9 2 इति 7 : 11-22 9 : 2 1 रा 3 : 5 9 : 5 1 रा 2 : 4 9 : 7 यिर 7 : 14; व्य 28 : 37 9 : 8 व्य 29 : 24 9 : 10-28 2 इति 8 : 8-18

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
के लिए आया, जो उसे सुलेमान ने दिए थे, तब वे उसे पसन्द नहीं आए। [13]उसने पूछा, 'भाई, ये कैसे नगर तुमने मुझे दिए?' अत: उन नगरों के क्षेत्र का नाम "काबूल"* पड़ा, जो आज भी है। [14]हीराम ने राजा सुलेमान को लगभग चार हजार किलो सोना भेजा था।

15 जिन नगरों में भवन-निर्माण के लिए राजा सुलेमान ने लोगों से बेगार कराया था, उनका यह विवरण है :

प्रभु का मन्दिर, सुलेमान का राजमहल, मिल्लो, यरूशलेम का परकोटा, हासोर, मगिद्दो, गेजेर [16](मिस्र देश के राजा फरओ ने गेजेर नगर पर आक्रमण कर, उस पर अधिकार कर लिया था। तत्पश्चात् उसने नगर में आग लगा दी, और नगर में रहने वाले कनानियों का वध कर दिया। उसने यह नगर अपनी पुत्री को, जिसका विवाह सुलेमान से हुआ, दहेज में दिया था। [17]अत: सुलेमान ने गेजेर नगर का पुन: निर्माण किया।), निचला बेत-होरोन, [18]बालात, यहूदा प्रदेश के निर्जन क्षेत्र का तामार, [19]सुलेमान के सब भण्डारगृह, रथों और अश्वशालाओं के समस्त नगर। इनके अतिरिक्त सुलेमान ने अपनी इच्छा से अपने राज्य-क्षेत्र में, यरूशलेम नगर तथा लबानोन प्रदेश में अनेक भवन निर्मित किये थे। [20]एमोरी, हित्ती, परिज्जी, हिव्वी और यबूसी जाति के बचे हुए लोग, जो इस्राएली जाति के नहीं थे, [21]जिन्हें इस्राएली पूर्णत: नष्ट नहीं कर सके थे, और जिनके वंशज देश में बच गए थे, सुलेमान ने इन जातियों के लोगों से भवन-निर्माण के कार्य में गुलाम के सदृश बेगार कराई। वे आज भी इस्राएलियों की बेगार करते हैं। [22]सुलेमान ने इस्राएलियों से गुलामी नहीं कराई। वे सुलेमान की सेना में सैनिक, सेवक, सेना-नायक, सेनापति, सारथी और घुड़सवार सैनिक थे।

23 सुलेमान के भवन-निर्माण के कार्य का प्रबन्ध करनेवाले अधिकारियों की संख्या साढ़े पांच सौ थी। ये कार्य करने वाले कारीगरों के कार्य का निरीक्षण करते थे।

24 सुलेमान फरओ की पुत्री को, अपनी पत्नी को, दाऊदपुर से उस महल में ले गया जिसको उसने उसके लिए बनाया था। तत्पश्चात् उसने मिल्लो का निर्माण किया।

25 सुलेमान ने प्रभु के लिए एक वेदी बनाई थी। वह उस वेदी पर वर्ष में तीन बार अग्नि-बलि और सहभागिता-बलि बढ़ाता था। वह प्रभु के सम्मुख सुगन्धित धूप जलाता था। इस प्रकार सुलेमान ने निर्माण-कार्य समाप्त किया।

सुलेमान का जहाजी बेड़ा

26 राजा सुलेमान ने एस्योन-गेबेर के बन्दरगाह में एक जहाजी बेड़ा बनाया। यह बन्दरगाह अकाबा की खाड़ी+ के तट पर स्थित एलोत नगर के समीप एदोम देश में था। [27]हीराम ने जहाजी बेड़े में अपने सेवकों को, जो नाविक थे और समुद्र-मार्ग से परिचित थे, सुलेमान के सेवकों के साथ भेजा। [28]वे ओपीर देश गए और वहां से प्राय: चौदह हजार किलो सोना लेकर लौटे। उन्होंने यह सोना राजा सुलेमान को दे दिया।

शबा देश की रानी का आगमन

10 शबा देश की रानी ने प्रभु का नाम तथा सुलेमान की कीर्ति सुनी। वह पहेलियों से सुलेमान की परीक्षा करने के लिए आई। [2]उसने यरूशलेम नगर में प्रवेश किया। उसके साथ असंख्य सेवक-सेविकाएं और बहुमूल्य उपहार थे। मसाले, प्रचुर-मात्रा में सोना और मणि-मुक्ता ऊँटों पर लदे हुए थे। वह सुलेमान के पास पहुंची। उसने अपने मन की सब बातें सुलेमान से कहीं। [3]सुलेमान ने उसकी सब पहेलियों को हल कर दिया। राजा से एक पहेली भी नहीं छिपी थी, जिसको वह न बूझ सका। [4]जब शबा देश की रानी ने यह सब देखा : सुलेमान की बुद्धि, उसका नव-निर्मित महल, [5]दस्तरख्वान* पर परोसा गया राजसी

---

* अर्थात् 'अनुपजाऊ देश' + अथवा, 'लाल सागर' * भोजन के लिए भूमि पर बिछाया जाने वाला कपड़ा। इस्राएली भूमि पर बैठकर भोजन करते थे।

9 : 25 नि 23 : 17 10 : 1-29 2 इति 9 : 1-28 10 : 1 भज 72 : 10; यश 60 : 6; मत 12 : 42

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भोजन, उसके उच्चाधिकारियों के आसन,
परिचारिकों की सेवा और उनकी पोशाक,
उसके साकी और अग्नि-बलि, जो वह प्रभु के
भवन में चढ़ाता था, तब वह आश्चर्य से स्तब्ध
रह गई! [6]उसने राजा सुलेमान से कहा, 'जो
बातें आपके विषय में, आपकी बुद्धि के विषय
में मैंने अपने देश में सुनी थीं, वे सच निकलीं।
[7] मैंने उन बातों को सुनकर उन पर विश्वास
नहीं किया था। पर जब मैं यहाँ आई, और स्वयं
अपनी आंखों से देखा तब मुझे विश्वास करना
पड़ा। निस्सन्देह आपके और आपकी बुद्धि के
विषय में मुझे आधा ही बताया गया था।
आपकी बुद्धि, आपका वैभव तो उससे कहीं
अधिक है, जितना मैंने सुना था। [8]सौभाग्यशाली
हैं आपकी स्त्रियां!** सौभाग्यशाली हैं आपके
ये दरबारी, जो आपकी सेवा में सदा प्रस्तुत रहते
और आपकी बुद्धिमत्तापूर्ण बातें सुनते हैं।
[9]धन्य है आपका प्रभु परमेश्वर जिसने प्रसन्न
होकर आपको इस्राएली राष्ट्र का सिंहासन
प्रदान किया। प्रभु ने इस्राएली राष्ट्र से सदा प्रेम
किया है। उसने अपने इस प्रेम के कारण
आपको राजा बनाया जिससे आप न्याय और
धर्म के कार्य करें।' [10]तत्पश्चात् उसने राजा
सुलेमान को लगभग चार हजार किलो सोना,
अत्यधिक मात्रा में मसाले और मणि-मुक्ता
उपहार में दिए। जितनी मात्रा में शबा देश की
रानी ने राजा सुलेमान को मसाले उपहार में
दिए, उतनी मात्रा में मसाले फिर कभी इस्राएल
देश में नहीं आए!

11 इसके अतिरिक्त हीराम का जहाजी
बेड़ा, जो ओपीर देश से सोना लाया था, वह
वहां से अत्यधिक मात्रा में चन्दन की लकड़ी
और मणि-मुक्ता भी लाया था। [12]राजा सुलेमान
ने चन्दन की लकड़ी से प्रभु के भवन और
राजमहल के लिए आसन और संगीतकारों के
लिए सितार और सारंगियां बनाईं। इतनी मात्रा
में चन्दन की लकड़ी फिर कभी देश में नहीं
आई, और न आज तक दिखाई दी।

13 जो कुछ भी शबा देश की रानी ने राजा
सुलेमान से मांगा, वह राजा सुलेमान ने उसकी
इच्छा के अनुसार उसे दिया। इसके अतिरिक्त
राजा सुलेमान ने अपने सामर्थ्य के अनुसार शबा
देश की रानी को उपहार भी दिए। उसके बाद
वह विदा हुई। वह अपने सेवक-सेविकाओं के
साथ अपने देश को लौट गई।

राजा सुलेमान का वैभव और कीर्ति

14 राजा सुलेमान को प्रतिवर्ष प्राय: बाईस
हजार किलो सोना प्राप्त होता था। [15]इसके
अतिरिक्त उसे देशी व्यवसायियों और विदेशी
व्यापारियों से कर के रूप में तथा अरब देश के
राजाओं और भिन्न-भिन्न प्रदेशों के शासकों से
भेंट के रूप में सोना प्राप्त होता था।

16 राजा सुलेमान ने दो सौ आदम-कद ढालें
बनाईं और उनको सोने की परत से मढ़ा।
प्रत्येक ढाल में प्राय: सात किलो सोना लगा।
[17]उसने तीन सौ छोटी ढालें भी बनाईं और
उनको सोने की परत से मढ़ा। प्रत्येक ढाल में
एक किलो सात सौ ग्राम सोना लगा। राजा
सुलेमान ने उनको लबानोन-वन के भवन में
रख दिया।

18 राजा सुलेमान ने हाथीदांत का एक भव्य
सिंहासन भी बनाया, और उसको शुद्ध सोने की
परत से मढ़ा। [19]सिंहासन पर चढ़ने के लिए छ:
सोपान थे। सिंहासन के पीछे बछड़े के सिर की
आकृति* थी। बैठने के स्थान के दोनों ओर दो
हत्थे थे, और हत्थों के समीप खड़े हुए दो सिंहों
की आकृति थी। [20]प्रत्येक सोपान के दोनों ओर
खड़े हुए दो सिंह थे। इस प्रकार छ: सोपानों पर
बारह सिंह थे। ऐसा सिंहासन किसी राज्य में
कभी नहीं बना।

21 राजा सुलेमान के सब पेय-पात्र सोने के
थे। लबानोन-वन के भवन के सब पात्र भी शुद्ध
सोने के थे। वहां एक भी पात्र चांदी का नहीं
था। सुलेमान के राज्यकाल में चांदी का कुछ भी
मूल्य नहीं था।

22 राजा सुलेमान के पास समुद्र में हीराम

** मूल में, 'पुरुष'। *मूल में, 'गोल सिर' अथवा 'चंदोवा'।

10 : 23 मत 6 : 29

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

के जहाजी बेड़े के साथ तर्शीशी+ जलयानों का
एक बेड़ा था। जहाजी बेड़े के जलयान प्रति
तीन वर्ष में एक बार आते, और विदेश से सोना,
चांदी, हाथी-दांत, बन्दर और मोर लाते थे।
23 इस प्रकार राजा सुलेमान धन-सम्पत्ति
और बुद्धि-विवेक में पृथ्वी के सब राजाओं से
श्रेष्ठ था। 24पृथ्वी के समस्त राजा उसकी
बुद्धिमत्तापूर्ण बातें सुनने के लिए उसके दरबार
में आने का प्रयत्न करते थे। यह बुद्धि परमेश्वर
ने उसे प्रदान की थी। 25आगन्तुक राजा अपने
साथ ये उपहार लाते थे : सोना-चांदी के पात्र,
वस्त्र, गन्धरस, मसाले, घोड़े, और खच्चर।
ऐसा प्रति वर्ष होता था। 26सुलेमान ने रथ और
घोड़े एकत्र किए। उसके पास एक हजार चार
सौ रथ और बारह हजार अश्व थे। उसने कुछ
रथ और घोड़े रथ-शाला के नगरों में तथा शेष
अपने पास यरूशलेम नगर में रखे।
27 राजा सुलेमान ने यरूशलेम नगर में चांदी
को पत्थर के समान मूल्यहीन बना दिया।
उसके पास देवदार की कीमती लकड़ी इतनी
अधिक हो गई जितने शफेलाह प्रदेश में गूलर
के वृक्ष हैं!
28 राजा सुलेमान के घोड़ों का आयात मिस्र
देश और कोए देश से होता था। राजा के
व्यापारी कोए देश से घोड़े खरीदते थे। 29वे मिस्र
देश से रथों का आयात करते थे। प्रत्येक रथ का
मूल्य चांदी के छ: सौ सिक्के, और घोड़े का
मूल्य चांदी के डेढ़ सौ सिक्के था। इसी प्रकार
राजा के व्यापारी घोड़ों का निर्यात करते थे।
समस्त हित्ती राजा और सीरिया देश के सब
राजा उनसे घोड़े खरीदते थे।

सुलेमान का पतन

11 राजा सुलेमान अनेक विजातीय औरतों
का प्रेमी था। उसने न केवल फरओ की
पुत्री से विवाह किया था, वरन् मोआबी,
अम्मोनी, एदोमी, सीदोनी और हित्ती जाति की
कन्याओं से भी विवाह किया था। 2इस्राएल के
प्रभु परमेश्वर ने इन जातियों के विषय में यह
आज्ञा दी थी, 'तुम इन जातियों से विवाह-
सम्बन्ध स्थापित नहीं करना और न ये जातियां
तुमसे विवाह-सम्बन्ध स्थापित करेंगी, क्योंकि
इनकी पुत्रियाँ अपने देवताओं की ओर तुम्हें
निश्चय ही उन्मुख कर देंगी।' परन्तु सुलेमान
उनके प्रेम में डूब गया। 3उसकी सात सौ पत्नियाँ
थीं, जो राजकन्याएँ थीं। इनके अतिरिक्त तीन
सौ रखेलें थीं। सुलेमान की पत्नियों ने प्रभु की
ओर से उसका हृदय विमुख कर दिया। 4उसकी
वृद्धावस्था के समय उसकी पत्नियों ने उसका
हृदय अन्य देवताओं की ओर उन्मुख कर
दिया। जैसा सुलेमान के पिता दाऊद का हृदय
प्रभु परमेश्वर के प्रति पूर्णत: सच्चा था वैसा
उसका हृदय नहीं रहा। 5वह सीदोनी जाति की
देवी अशेराह तथा अम्मोनी जाति के घृणित
देवता मिल्कोम की पूजा करने लगा। 6अत:
सुलेमान ने वह कार्य किया जो प्रभु की दृष्टि में
बुरा था। जैसा उसके पिता दाऊद ने प्रभु का
पूर्णत: अनुसरण किया था वैसा उसने नहीं
किया। 7उसने यरूशलेम की पश्चिमी दिशा में
एक पहाड़ पर मोआब जाति के घृणित देवता
कमोश तथा अम्मोन जाति के घृणित देवता
मोलेक के लिए एक वेदी निर्मित की। 8उसने
ऐसा ही कार्य अपनी सब विजातीय पत्नियों के
लिए किया। ये पत्नियां अपने-अपने राष्ट्रीय
देवता को बलि चढ़ातीं और सुगन्धित धूप
जलाती थीं।
9 प्रभु सुलेमान से क्रुद्ध हो गया; क्योंकि
सुलेमान का हृदय इस्राएली राष्ट्र के प्रभु
परमेश्वर से, जिसने उसे दो बार दर्शन दिए थे,
विमुख हो गया था। 10प्रभु ने उसे आज्ञा दी थी,
'तू अन्य जाति के देवताओं का अनुसरण मत
करना।' परन्तु उसने प्रभु की आज्ञा का पालन
नहीं किया। 11अत: प्रभु ने सुलेमान से यह
कहा, 'तेरी भावना बदल गई। तूने मेरे विधान
और मेरी संविधियों का पालन नहीं किया,
जिनकी आज्ञा मैंने तुझे दी थी। इस कारण मैं
तेरे हाथ से तेरे राज्य को छीन लूंगा, और उसको

+ अर्थात् तर्शीश (बहुत दूर, अथवा स्पेन देश तक) जानेवाले।

10 : 26 1 रा 4 : 26 **10 : 27** व्य 17 : 17 **11 : 2** नि 34 : 16; व्य 7 : 3 **11 : 4** व्य 17 : 17 **11 : 5** शास 2 : 13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तेरे सेवक के हाथ में सौंप दूंगा। 12फिर भी, मैं
यह कार्य तेरे पिता दाऊद के कारण तेरे जीवन-
काल में नहीं करूंगा। वरन् मैं तेरे पुत्र के हाथ
से उसका राज्य छीनूंगा। 13एक बात और : मैं
तेरा सम्पूर्ण राज्य नहीं छीनूंगा। मैं अपने सेवक
दाऊद और अपने चुने हुए नगर यरूशलेम के
कारण, तेरे पुत्र को एक कुल पर राज्य करने
दूंगा।'

14 प्रभु ने सुलेमान का एक विरोधी उत्पन्न
किया। उसका नाम हदद था। वह एदोम
राजवंश का था। 15जब दाऊद एदोम देश में था
और उसका सेनापति योआब मृतकों को कबर
में गाड़ने के लिए गया, तब सेनापति योआब ने
एदोम देश के समस्त पुरुषों और बालकों को
मार डाला था। 16योआब और इस्राएली सेना
वहां छ: महीने रही। जब तक उन्होंने एदोम के
प्रत्येक पुरुष और बालक का वध नहीं कर
दिया, वे वहीं रहे। 17पर हदद भाग गया। वह
उस समय छोटा बालक था। वह अपने पिता के
एदोमी सेवकों के साथ मिस्र देश की ओर गया।
18उन्होंने मिद्यान देश से प्रस्थान किया। वे परान
देश में आए। उन्होंने वहाँ से कुछ लोगों को
अपने साथ लिया, और वे मिस्र देश के राजा
फरओ के पास पहुँचे। फरओ ने हदद को
मकान, भोजन-व्यवस्था और भूमि प्रदान की।
19हदद ने राजा फरओ की बहुत कृपा-दृष्टि
प्राप्त की। उसने हदद का विवाह अपनी
पटरानी तहपनेस की बहिन अर्थात् अपनी
साली से कर दिया। 20हदद की पत्नी ने एक
पुत्र को जन्म दिया। उसका नाम गनूबत रखा
गया। रानी तहपनेस ने फरओ के महल में
उसका पालन-पोषण किया। वह फरओ के
पुत्रों के साथ फरओ के महल में रहता था।

21 एक दिन हदद ने मिस्र देश में सुना कि
दाऊद अपने मृत पूर्वजों के साथ चिरनिद्रा में सो
गया और सेनापति योआब की भी मृत्यु हो गई।
तब हदद ने फरओ से यह कहा, 'कृपया, मुझे
जाने की अनुमति दीजिए। मैं स्वदेश जाऊंगा।'
22फरओ ने उससे कहा, 'मेरे पास तुम्हें किस
वस्तु का अभाव है जिससे तुम अपने देश जाना
चाहते हो?' हदद ने उत्तर दिया, 'मुझे किसी
वस्तु का अभाव नहीं है। परन्तु महाराज, मुझे
अवश्य जाने दीजिए।' तत्पश्चात् हदद ने
इस्राएली राष्ट्र की इस प्रकार हानि की : वह
इस्राएली राष्ट्र को दबाता रहा और एदोम देश
पर राज्य करता रहा।*

23 परमेश्वर ने सुलेमान का एक और
विरोधी उत्पन्न किया। उसका नाम रजोन बेन-
एलयादा था। वह अपने स्वामी हदद-एजेर के
पास से, जो सोबा राज्य का राजा था, भाग गया।
24उसने अपने पास सैनिक एकत्र किए और वह
उनका नायक बन गया। वह लूटमार करता था।
जब दाऊद ने उसके कुछ लोगों को मार डाला,
तब रजोन दमिश्क नगर गया। उसने उसपर
अधिकार कर लिया और वहाँ रहने लगा। वह
दमिश्क नगर का राजा बन गया। 25रजोन
सुलेमान के राज्य काल की सम्पूर्ण अवधि में
इस्राएली राष्ट्र का विरोधी बना रहा।

यारोबआम का विद्रोह

26 यारोबआम नबाट का पुत्र था। नबाट
एफ्रइम क्षेत्र का रहनेवाला था। यारोबआम का
जन्म सरेदाह नगर में हुआ था। उसकी मां का
नाम सरूआह था। वह विधवा थी। यारोबआम
सुलेमान का सेवक था, परन्तु उसने सुलेमान के
विरुद्ध विद्रोह कर दिया। 27यह उसके विद्रोह
का विवरण है:

राजा सुलेमान मिल्लो का निर्माण कर अपने
पिता दाऊद के नगर की दीवार की दरार को भर
रहा था। 28यह पुरुष यारोबआम अत्यन्त
शक्तिशाली था। सुलेमान ने युवक यारोबआम
को देखा कि वह मेहनत करनेवाला है। अतः
उसने यारोबआम को यूसुफ कुल-क्षेत्र में बेगार
करनेवालों का निरीक्षक नियुक्त कर दिया।

29 एक समय जब यारोबआम यरूशलेम
नगर से बाहर निकल रहा था, तब शिलोह नगर
के नबी अहियाह ने मार्ग में उससे भेंट की। नबी

---

* पद 25 से स्थानान्तरित किया गया।

11 : 15 2 शम 8 : 14 **11 : 23** 2 शम 8 : 3 **11 : 24** 2 शम 10 : 16

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

एक नया अंगरखा पहिने हुए था। दोनों व्यक्ति
खुले मैदान में अकेले थे। 30अहियाह ने अपना
नया अंगरखा उतारा और उसने उसके बारह
टुकड़े किए। 31उसने यारोबआम से यह कहा,
'तू ये दस टुकड़े ले, क्योंकि इस्राएली राष्ट्र का
प्रभु परमेश्वर यों कहता है : "देख, मैं सुलेमान
के हाथ से उसका राज्य छीन कर उसके टुकड़े
करूंगा। मैं उसके दस टुकड़े, इस्राएली राष्ट्र के
दस कुलों पर राज्य करने का अधिकार, तुझे
दूंगा। 32मैं अपने सेवक दाऊद और यरूशलेम
नगर के कारण, जिसको मैंने इस्राएली कुलों के
भूमि-क्षेत्रों में से चुना है, सुलेमान को एक कुल
पर राज्य करने दूंगा। 33सुलेमान ने मुझे त्याग
दिया है। वह सीदोनी जाति की देवी अशेराह,
मोआबी जाति के देवता कमोश और अम्मोनी
जाति के देवता मिल्कोम की पूजा करने लगा
है। वह मेरे मार्ग पर नहीं चल रहा है। जो कार्य
मेरी दृष्टि में उचित है, वह उसको नहीं करता
है। वह मेरी संविधियों और न्याय-सिद्धान्तों
का पालन नहीं करता है, जैसा उसका पिता
दाऊद करता था। 34फिर भी मैं उसके हाथ से
सम्पूर्ण राज्य नहीं छीनूंगा; क्योंकि मैंने उसे
जीवन भर के लिए शासक नियुक्त किया था।
मैं यह कृपा अपने सेवक दाऊद के कारण
करूंगा, जिसको मैंने चुना था, और जिसने मेरी
संविधियों और आज्ञाओं का पालन किया था।
35मैं सुलेमान के पुत्र के हाथ से दस कुलों पर
राज्य करने का अधिकार वापस ले लूंगा, और
वह तुझे सौंप दूंगा। 36मैं उसे एक कुल पर राज्य
करने दूंगा, जिससे मेरे सेवक दाऊद का वंश-
दीपक यरूशलेम नगर में, जिसको मैंने अपने
नाम के प्रतिष्ठापन के लिए चुना है, मेरे सम्मुख
सदा जलता रहे। 37मैं तुझे मनोनीत करूंगा,
और तू अपने समस्त इच्छित क्षेत्रों पर राज्य
करेगा। तू इस्राएल प्रदेश का राजा बनेगा।
38यदि तू मेरी सब आज्ञाओं को सुनेगा, मेरे मार्ग
पर चलेगा, जो कार्य मेरी दृष्टि में उचित है,
उसको करेगा, और जैसा मेरा सेवक दाऊद मेरी
संविधियों और आज्ञाओं का पालन करता था,
वैसा ही तू करेगा, तो मैं तेरे साथ रहूंगा। जैसा
मैंने दाऊद के लिए राज-वंश का निर्माण किया
था वैसा ही तेरे लिए करूंगा। मैं तुझे इस्राएली
राष्ट्र दे दूंगा। 39यों मैं दाऊद के वंशजों को
पीड़ित करूंगा, पर सदा नहीं।" '

40 अत: सुलेमान ने यारोबआम की हत्या
करने का प्रयत्न किया। किन्तु यारोबआम मिस्र
देश के राजा शीशक के पास भाग गया। वह
सुलेमान की मृत्यु तक मिस्र देश में रहा।

सुलेमान की मृत्यु

41 सुलेमान के शेष कार्यों का विवरण, तथा
उसके समस्त बुद्धिमत्तापूर्ण कार्यों का विवरण,
'सुलेमान का इतिहास-ग्रन्थ' में लिखा हुआ
है। 42सुलेमान ने समस्त इस्राएल देश पर
चालीस वर्ष तक राज्य किया। उसकी राजधानी
यरूशलेम नगर थी। 43तत्पश्चात् वह अपने मृत
पूर्वजों के साथ सो गया। वह अपने पिता दाऊद
के नगर में गाड़ा गया। उसके स्थान पर उसका
पुत्र रहबआम राज्य करने लगा।

खण्डित इस्राएली राष्ट्र

12 सब इस्राएली कुल के लोग रहबआम
को राजा बनाने के लिए शकेम नगर को
गए। अत: रहबआम भी शकेम नगर गया।
2यारोबआम बेन-नबाट ने सुलेमान की मृत्यु
की खबर सुनी। वह अब तक मिस्र देश में था,
जहाँ उसने राजा सुलेमान के सम्मुख से भाग
कर शरण ली थी। वह मिस्र देश में बस गया
था। 3इस्राएली लोगों ने उसके पास दूत भेजा,
और उसको वहाँ से वापस बुलाया। तब वह
और समस्त इस्राएली धर्मसभा रहबआम के
पास गए। उन्होंने उससे यह कहा, 4'आपके
पिता ने हमारे कन्धे पर भारी जूआ रखा था। वह
हमसे कठोर सेवा लेते थे। अब कृपाकर, आप
हमारे इस भारी जूए को, कठोर सेवा के भार
को, हलका कीजिए। तब हम आपकी सेवा
करेंगे।' 5रहबआम ने उन्हें उत्तर दिया, 'तुम
अभी जाओ। तीन दिन के पश्चात् तुम लौटकर

---

11 : 31 2 शम 19 : 43; 1 रा 12 : 16 **11 : 36** 1 रा 15 : 4; 2 रा 8 : 19; भज 132 : 17 **11 : 42** 2 इति 9 : 30
12 : 1-19 2 इति 10 : 1-19

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मेरे पास आना।' अतः लोग चले गए।

6 रहबआम ने धर्मवृद्धों से विचार-विमर्श किया। जब राजा सुलेमान जीवित था, उन दिनों में ये धर्मवृद्ध उसकी परिचर्या करते थे। रहबआम ने पूछा, 'आप मुझे क्या सलाह देते हैं? मैं इन लोगों को क्या उत्तर दूं?' 7उन्होंने उससे कहा, 'यदि आप आज जनता के सेवक बन जाएंगे और लोगों की सेवा करेंगे, उनसे मधुर वचन बोलेंगे, तो वे जीवन-भर आपके सेवक बने रहेंगे।' 8पर रहबआम ने धर्मवृद्धों की सलाह, जो उन्होंने उसे दी थी, अस्वीकार कर दी। तब उसने उन युवकों से विचार-विमर्श किया, जो उसके साथ बड़े हुए थे और उसकी परिचर्या करते थे। 9रहबआम ने उनसे पूछा, 'तुम मुझे क्या सलाह देते हो? मैं उन लोगों को क्या उत्तर दूं? उन्होंने मुझसे निवेदन किया है कि मैं उस जूए के भार को हलका कर दूँ, जो उनके कन्धे पर मेरे पिता ने रखा था।' 10उसके जवान साथी उससे बोले, 'जिन लोगों ने आपसे यह कहा है: "आपके पिता ने हमारे कन्धे पर भारी जुआ रखा था। आप इस भार को हलका कीजिए," आप उनसे यों बोलिए, "यदि मेरे पिता सेर थे तो मैं सवा सेर हूं! 11मेरे पिता ने तुम्हारे कन्धे पर भारी जूआ रखा था तो मैं उससे भी भारी जूआ तुम्हारे कन्धे पर रखूंगा। मेरा पिता तुम्हें चाबुक से मारता था तो मैं तुम्हें हण्टर से मारूंगा।" '

12 राजा रहबआम ने कहा था : 'तीन दिन पश्चात् लौटकर मेरे पास आना।' अतः तीन दिन पश्चात् यारोबआम और सब इस्राएली जनता राजा रहबआम के पास आए। 13राजा ने जनता को कठोर उत्तर दिया। उसने धर्मवृद्धों की सलाह ठुकरा दी। 14जैसी सलाह उसके जवान साथियों ने उसे दी थी, उसी के अनुसार उसने लोगों से कहा, 'मेरे पिता ने तुम्हारे कन्धे पर भारी जूआ रखा था, मैं उससे भी भारी जूआ तुम्हारे कन्धे पर रखूंगा। मेरा पिता तुम्हें चाबुक से मारता था, पर मैं तुम्हें हण्टर से मारूंगा।' 15यों राजा ने जनता का निवेदन नहीं सुना। वस्तुतः प्रभु ने यह पूर्व-निर्धारित कर दिया था जिससे वह अपने वचन को, जो उसने शिलोह के नबी अहियाह के माध्यम से यारोबआम बेन-नबाट से कहा था, पूर्ण कर सके।

16 जब इस्राएली जनता ने देखा कि राजा ने उसकी बात नहीं सुनी तब लोगों ने राजा को यह उत्तर दिया:

'दाऊद के राज्य में हमारा क्या भाग?
यिशय के पुत्र की सत्ता में हमारा पैतृक
अधिकार नहीं।
ओ इस्राएली जाति! लौट जा अपने शिविर
को!
अरे दाऊद, अब सम्भाल अपने घर
को।'

इस पर सब इस्राएली लोग अपने-अपने घर चले गए।

17 रहबआम केवल उन इस्राएलियों पर राज्य करने लगा जो यहूदा प्रदेश में रहते थे। 18तब राजा रहबआम ने इस्राएलियों के पास अदोराम को भेजा। वह बेगार करने वालों का निरीक्षक था। परन्तु इस्राएलियों ने उसे पत्थर मार-मार कर मार डाला। अतः राजा रहबआम अपने रथ पर तुरन्त चढ़ा और यरूशलेम नगर को भाग गया। 19इस प्रकार इस्राएली लोगों ने दाऊद के राजपरिवार से विद्रोह कर दिया। वे आज भी विद्रोही हैं।

20 जब इस्राएलियों ने सुना कि यारोबआम लौट आया है, तब उन्होंने दूत भेजा और उसे धर्मसभा में बुलाया। तत्पश्चात् उन्होंने उसे समस्त इस्राएल प्रदेश का राजा अभिषिक्त कर दिया। केवल यहूदा कुल के लोग दाऊद के राज-परिवार का अनुसरण करते रहे। इनके अतिरिक्त इस्राएल के किसी कुल ने उनका अनुसरण नहीं किया।

21 सुलेमान का पुत्र रहबआम यरूशलेम नगर में आया। उसने यहूदा कुल तथा बिन्यामिन कुल के पुरुषों को एकत्र किया। ये एक लाख अस्सी हजार चुने हुए योद्धा थे। रहबआम इस्राएल कुल के लोगों से युद्ध कर अपना राज्य

---

12 : 15 1 रा 11 : 29 12 : 16 2 शम 20 : 1 12 : 18 1 रा 4 : 6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वापस लेना चाहता था। 22परन्तु परमेश्वर का
यह सन्देश 'परमेश्वर के जन' शमायाह को
मिला : 23'सुलेमान के पुत्र और यहूदा-प्रदेश
के राजा रहबआम से तथा यहूदा कुल-क्षेत्र
और बिन्यामिन कुल-क्षेत्र में रहनेवाले सब
इस्राएलियों से यह कह : 24''प्रभु यों कहता
है : आक्रमण मत करो। अपने ही भाई इस्राएल
प्रदेश के लोगों से युद्ध मत करो। प्रत्येक व्यक्ति
अपने घर को लौट जाए; क्योंकि इस्राएली राष्ट्र
का यह विभाजन मेरी इच्छा से हुआ है।'''
अत: लोगों ने प्रभु की वाणी सुनी। वे प्रभु के
आदेश के अनुसार लौट गए।

यारोबआम का पाप

25 यारोबआम ने एफ्रइम पहाड़ी पर शकेम
नगर को पुन: निर्मित किया और वहाँ रहने
लगा। तत्पश्चात वह वहाँ से निकला। उसने
पनूएल नगर का पुन: निर्माण किया।

26 यारोबआम ने अपने हृदय में कहा,
'स्थिति ऐसी है कि राज्य दाऊद के राजपरिवार
की ओर लौट सकता है। 27यदि ये लोग यरूशलेम
नगर में प्रभु के भवन में बलि चढ़ाने के लिए
जाएंगे तो इनका हृदय अपने स्वामी, यहूदा
प्रदेश के राजा रहबआम की ओर उन्मुख हो
जाएगा। ये मेरा वध कर देंगे, और यहूदा प्रदेश
के राजा रहबआम की ओर लौट जाएंगे।'
28अत: राजा यारोबआम ने सोच-विचार किया।
तत्पश्चात् उसने बछड़े की दो स्वर्ण प्रतिमाएं
बनाईं, और लोगों से यह कहा, 'ओ इस्राएल
प्रदेश के नागरिको! तुम बहुत बार यरूशलेम
जा चुके हो। अब देखो! यह है तुम्हारा ईश्वर,
जिसने तुम्हें मिस्र देश से बाहर निकाला था।'
29यारोबआम ने बछड़े की एक प्रतिमा बेत-
एल नगर में और दूसरी प्रतिमा दान नगर में
प्रतिष्ठित की। 30यारोबआम का यह कार्य पाप
था। इस्राएल प्रदेश के लोग प्रतिमा की पूजा
करने बेत-एल नगर गए। वे दूसरी प्रतिमा की
पूजा करने के लिए दान नगर भी गए।
31यारोबआम ने पहाड़ी शिखरों पर वेदियाँ*
बनाईं। उसने सामान्य लोगों के मध्य से ऐसे
व्यक्ति चुने जो लेवी कुल के नहीं थे। उसने
उनको वेदियों के पुरोहित नियुक्त किया।
32यारोबआम ने आठवें महीने के पन्द्रहवें दिन
एक यात्रा पर्व प्रतिष्ठित किया, जैसा यहूदा प्रदेश
में मनाया जाता था। तत्पश्चात् उसने वेदी पर
बलि चढ़ाई। ऐसा ही उसने बेत-एल नगर में
किया। उसने स्वनिर्मित बछड़े की प्रतिमाओं
को बलि चढ़ाई। उसने बेत-एल में पहाड़ी
शिखर की वेदियों के लिए, जिनको उसने
निर्मित किया था, पुरोहित नियुक्त किए। 33वह
आठवें महीने के पन्द्रहवें दिन बेत-एल की
वेदी पर बलि चढ़ाने गया, जिसको उसने
बनाया था। माह और दिन भी उसने अपनी
इच्छा के अनुसार निश्चित किए। उसने इस्राएल
प्रदेश के लोगों के लिए एक यात्रा-पर्व प्रतिष्ठित
किया। वह वेदी पर सुगन्धित धूप-द्रव्य जलाने
के लिए गया।

'परमेश्वर का जन' और राजा यारोबआम

13 जब यारोबआम बेत-एल की वेदी पर
सुगन्धित धूप-द्रव्य जलाने के लिए
खड़ा था, तब प्रभु के वचन से उत्प्रेरित होकर
यहूदा प्रदेश से 'परमेश्वर का एक जन' वहाँ
आया। 2उसने प्रभु के वचन की प्रेरणा से वेदी
के विरोध में पुकार कर कहा, 'ओ वेदी, ओ
वेदी! प्रभु यों कहता है : ''देख, दाऊद के वंश
में एक पुत्र उत्पन्न होगा। उसका नाम योशियाह
होगा। जो पहाड़ी शिखर की वेदी के पुरोहित
तेरे लिए सुगन्धित धूप-द्रव्य जलाते हैं, वह
उनको तुझ पर बलि करेगा, और मनुष्यों की
अस्थियाँ तुझ पर जलाई जाएंगी।''' 3उसने उसी
दिन एक चिह्न भी दिया। उसने कहा, 'जो वचन
प्रभु ने कहा है, उसका यह चिह्न है : देख, यह
वेदी फट जाएगी, और उस पर रखी हुई राख
फेंक दी जाएगी।' 4जब राजा यारोबआम ने
परमेश्वर के जन की पुकार सुनी, जो उसने

---

* अथवा, 'पूजागृह'।

12 : 22-24 2 इति 11 : 1-4 **12 : 28** हो 8 : 4-7; नि 32 : 4 **12 : 32** लेव 23 : 33; आमो 7 : 13 **13 : 2** 2 रा 23 : 15

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बेत-एल की वेदी के विरोध में कही थी, तब उसने वेदी के ऊपर से अपना हाथ बढ़ाकर उसकी ओर संकेत किया और कहा, 'उसे पकड़ो।' जिस हाथ से उसने परमेश्वर के जन की ओर संकेत किया था, उसको लकवा मार गया। वह उसको अपनी ओर मोड़ नहीं सका।
5वेदी फट गई, और उसकी राख बिखर गई। यही चिह्न परमेश्वर के जन ने प्रभु के वचन की प्रेरणा से दिया था।
6अत: राजा ने परमेश्वर के जन से कहा, 'कृपाकर, तुम अपने प्रभु परमेश्वर को शान्त करो और उससे मेरे लिए निवेदन करो कि मेरा हाथ ज्यों का त्यों हो जाए।' परमेश्वर के जन ने प्रभु से निवेदन किया, और राजा का हाथ ज्यों का त्यों हो गया। जैसे वह पहले था, वैसा ही वह फिर हो गया।
7राजा ने परमेश्वर के जन से कहा, 'मेरे साथ महल में चलो। वहाँ खाना-पीना और आराम करना। मैं तुम्हें उपहार भी दूंगा।'
8परमेश्वर के जन ने राजा को उत्तर दिया, 'यदि आप मुझे अपना आधा महल देंगे तो भी मैं आपके साथ नहीं जाऊंगा। मैं इस स्थान में न रोटी खा सकता हूं, और न पानी पी सकता हूं।
9प्रभु ने अपने वचन के द्वारा मुझे यह आज्ञा दी है : ''तू वहाँ न रोटी खाना और न पानी पीना। जिस मार्ग से तू बेत-एल जाएगा, उस मार्ग से भी मत लौटना।'' '
10अत: वह अन्य मार्ग से चला गया। जिस मार्ग से वह बेत-एल आया था, वह उस मार्ग से नहीं लौटा।

परमेश्वर का जन और नबी

11 बेत-एल नगर में एक वृद्ध नबी रहता था। उसके पुत्र आए। जो कार्य परमेश्वर के जन ने उस दिन बेत-एल में किया था, वह उन्होंने अपने पिता को बताया। उन्होंने परमेश्वर के जन की बातें भी बताईं, जो उसने राजा से कही थीं।
12उनके पिता ने उनसे पूछा, 'वह किस मार्ग से गया है?' यहूदा प्रदेश से आनेवाला परमेश्वर का जन जिस मार्ग से गया था, वह उन्होंने अपने पिता को दिखाया।
13उसने अपने पुत्रों से कहा, 'मेरे लिए गधे पर जीन कसो।' पुत्रों ने उसके लिए गधे पर जीन कसी और वह उस पर सवार हुआ।
14उसने परमेश्वर के जन का पीछा किया। परमेश्वर का जन बांज वृक्ष के नीचे बैठा था। वह उससे मिला। वृद्ध नबी ने उससे पूछा, 'क्या तुम ही परमेश्वर के जन हो? क्या तुम ही यहूदा प्रदेश से आए हो?' उसने उत्तर दिया, ''हाँ, मैं ही हूं।'
15तब वृद्ध नबी ने उससे कहा, 'मेरे साथ घर चलो और भोजन करो।'
16परमेश्वर के जन ने कहा: ''मैं आपके नगर को लौट नहीं सकता और न आपके साथ आपके घर में प्रवेश कर सकता हूं। मैं इस स्थान में आपके साथ न रोटी खाऊंगा, और न पानी पीऊंगा।
17प्रभु ने अपने वचन के द्वारा मुझ से यह कहा है 'तू वहां न रोटी खाना और न पानी पीना। जिस मार्ग से तू बेत-एल जाएगा, उस मार्ग से भी मत लौटना।'''
18तब वृद्ध नबी ने उससे कहा, 'जैसे तुम नबी हो, वैसे मैं भी हूं।' फिर वृद्ध नबी ने उससे यह झूठ कहा, 'प्रभु के दूत ने प्रभु के वचन के द्वारा मुझ से यह कहा है : ''तू उसे अपने साथ अपने घर में लौटा ला जिससे वह रोटी खाए और पानी पीए।'' '

19 इस प्रकार परमेश्वर का जन उसके साथ लौटा, उसने उसके साथ रोटी खाई और पानी पिया।

20 जब वे दस्तरख्वान पर बैठे थे तब प्रभु का वचन वृद्ध नबी को, जो उसे लौटा लाया था, सुनाई दिया।
21उसने यहूदा प्रदेश से आनेवाले परमेश्वर के जन को सम्बोधित करके कहा, 'प्रभु यों कहता है : ''तूने मेरे वचन के प्रति विद्रोह किया। जो आज्ञा मैंने, तेरे प्रभु परमेश्वर ने तुझे दी थी, उसका तूने पालन नहीं किया।
22तू नगर को लौट आया। तूने इस स्थान में रोटी खाई और पानी पिया। मैंने तुझ से कहा था कि तू यहाँ न रोटी खाना और न पानी पीना। अत: तेरा शव तेरे पूर्वजों के कब्रिस्तान को लौटकर नहीं जा सकेगा।'''

23 परमेश्वर के जन ने भोजन समाप्त किया। तत्पश्चात् वृद्ध नबी ने उसके लिए गधे

13 : 8 गण 22 : 18 13 : 18 गल 1 : 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पर जीन कसी और परमेश्वर के जन ने वहाँ से
प्रस्थान किया।

24 जब परमेश्वर का जन जा रहा था तब
उसे मार्ग में एक सिंह मिला। सिंह ने उसको
मार डाला। उसका शव मार्ग पर लावारिस पड़ा
रहा। शव के समीप गधा खड़ा था। सिंह भी
उसके पास खड़ा था। 25राहगीर वहाँ से गुजरे।
उन्होंने देखा कि एक शव मार्ग पर लावारिस
पड़ा है। शव के समीप सिंह खड़ा है। वे नगर
में आए जहाँ वृद्ध नबी रहता था। राहगीरों ने
यह बात लोगों को बताई। 26जब नबी ने, जो
परमेश्वर के जन को मार्ग से लौटा लाया था,
यह बात सुनी तब उसने कहा, 'वह परमेश्वर
का जन है। उसने प्रभु के आदेश से विद्रोह
किया था। अत: प्रभु ने उसको सिंह के हवाले
कर दिया, जिसने उसको चीर-फाड़ दिया,
और उसको मार डाला। ऐसा ही प्रभु ने उससे
कहा था।' 27नबी ने अपने पुत्रों से कहा, 'मेरे
लिए गधे पर जीन कसो।' पुत्रों ने उसके लिए
गधे पर जीन कसी और 28वह गया। उसको
शव मार्ग पर लावारिस पड़ा हुआ मिला। गधा
और सिंह शव के समीप खड़े हुए थे। सिंह ने
शव को नहीं खाया था, और न गधे का वध
किया था। 29नबी ने परमेश्वर के जन का शव
उठाया, और उसको गधे पर रखा। वह प्रथा के
अनुसार मृतक के लिए शोक मनाने और शव
को कबर में गाड़ने के लिए उसको नगर में ले
गया। 30उसने शव अपनी कबर में रखा। लोग
छाती पीट-पीट कर शोक मनाने लगे। वे यह
कह रहे थे, 'हाय! हमारे भाई!' 31उसका शव
कबर में गाड़ने के पश्चात् नबी ने अपने पुत्रों
से कहा, 'जब मेरी मृत्यु हो तब इसी कबर में,
जहाँ परमेश्वर का जन गाड़ा गया है, मुझे भी
गाड़ना। मेरी अस्थियों को उसकी अस्थियों के
समीप दफनाना। 32परमेश्वर के जन का कथन
जो उसने प्रभु के वचन की प्रेरणा से बेत-एल
की वेदी के विरोध में, और सामरी प्रदेश के
पहाड़ी शिखर की सब वेदियों के विरोध में
कहा था, वह अवश्य पूर्ण होगा।'

33 इस घटना के पश्चात् भी यारोबआम
अपने बुरे मार्ग से नहीं लौटा। उसने सामान्य
लोगों के मध्य से व्यक्तियों को चुना, और
उनको पहाड़ी शिखर की वेदियों के पुरोहित
नियुक्त कर दिया। जो व्यक्ति पुरोहित-कार्य
के लिए स्वयं को प्रस्तुत करता था, वह उसको
पहाड़ी शिखर की वेदी का पुरोहित नियुक्त कर
देता था। 34यारोबआम का यह कार्य उसके वंश
के लिए पाप का कारण बन गया। इस कारण
उसका वंश लुप्त हो गया, पृथ्वी की सतह से
उसका नाम मिट गया।

यारोबआम के विरुद्ध नबी अहियाह की नबूवत

14 उस समय यारोबआम का पुत्र अबियाह
बीमार पड़ा। 2यारोबआम ने अपनी पत्नी
से यह कहा, 'उठो और भेष बदलो जिससे
लोग तुम्हें पहिचान न सकें कि तुम मेरी पत्नी
हो। तब तुम शिलोह नगर जाना। वहाँ नबी
अहियाह रहते हैं। उन्होंने मुझसे कहा था कि
मैं इस्राएली लोगों पर राज्य करूंगा। 3तुम अपने
साथ दस रोटियां, कुछ किशमिश और एक
मर्तबान में शहद लेकर उनके पास जाना। वह
तुम्हें हमारे लड़के के विषय में बताएंगे कि उस
का हाल क्या होगा।'

4 यारोबआम की पत्नी ने ऐसा ही किया।
वह तैयार हुई और शिलोह नगर को गई। उसने
अहियाह के घर में प्रवेश किया। आयु अधिक
हो जाने के कारण अहियाह की आंखों की
ज्योति मन्द पड़ गई थी। अब अहियाह देख
नहीं सकता था। 5प्रभु ने अहियाह से कहा,
'देख, यारोबआम की पत्नी अपने पुत्र के
स्वास्थ्य के विषय में तुझसे पूछ-ताछ करने के
लिए आ रही है। उसका पुत्र बीमार है। तू उससे
अमुक-अमुक बातें कहना।'

जब वह आई तब उसने दूसरी स्त्री होने का
बहाना किया। 6परन्तु जब वह प्रवेश-द्वार पर
पहुंची, अहियाह ने उसके कदमों की आवाज
सुन ली। अहियाह ने कहा, 'आओ, यारोबआम
की पत्नी, भीतर आओ।' और उससे पूछा,
'तुमने क्यों दूसरी स्त्री होने का बहाना किया?

---

13 : 30 यिर 22 : 18 **13 : 32** 2 रा 23 : 16 **14 : 2** 1 रा 11 : 32 **14 : 3** 1 शम 9 : 7

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मुझे तुम्हारे लिए एक अप्रिय सन्देश प्राप्त हुआ
है। 7जाओ, और यारोबआम से यह कहो:
इस्राएली राष्ट्र का प्रभु परमेश्वर यों कहता है,
''मैंने तुझे समाज में उन्नत किया। मैंने तुझे
अपने निज लोग इस्राएलियों का अगुआ
बनाया। 8मैंने दाऊद के परिवार से राज्य छीना,
और वह तुझे प्रदान किया। फिर भी तूने मेरे
सेवक दाऊद के समान आचरण नहीं किया।
मेरा सेवक दाऊद मेरी सब आज्ञाओं का पालन
करता था। वह सम्पूर्ण हृदय से मेरा अनुसरण
करता था। जो कार्य मेरी दृष्टि में उचित है, वह
उसी कार्य को करता था। 9किन्तु तूने दुष्कर्म
करने में अपने पूर्वजों को भी पछाड़ दिया। तूने
अपने लिए अन्य देवताओं की प्रतिमाएं प्रतिष्ठित
कीं, धातु की मूर्तियाँ ढालीं। यों तूने मुझे
चिढ़ाया, और मुझ से अपना मुंह मोड़ लिया।
10इसी कारण मैं यारोबआम के परिवार पर
विपत्ति का पहाड़ ढाहूंगा। मैं इस्राएल प्रदेश में
यारोबआम के हरएक सेवक और गुलाम को,
उसके प्रत्येक पुरुष को, नष्ट कर दूंगा। जैसे
व्यक्ति गोबर के कण्डे को जलाकर राख कर
देता है वैसे ही मैं यारोबआम के वंश को पूर्णत:
नष्ट कर दूंगा। 11यारोबआम के पक्ष का व्यक्ति,
जो नगर में मारा जाएगा, उसका शव कुत्ते
खाएंगे। और जो खुले मैदान में मारा जाएगा,
उसका शव आकाश के पक्षी खाएँगे।'' यह प्रभु
की वाणी है। 12अब तुम उठो, और अपने घर
जाओ। जिस क्षण तुम नगर में प्रवेश करोगी,
उसी क्षण तुम्हारा लड़का मर जाएगा। 13समस्त
इस्राएल प्रदेश उसके लिए शोक मनाएगा। तब
उसको कबर में गाड़ना। यारोबआम के परिवार
का केवल यही पुत्र धार्मिक विधि के अनुसार
कबर में गाड़ा जाएगा, अन्य नहीं; क्योंकि
इस्राएली राष्ट्र के प्रभु परमेश्वर ने यारोबआम
के परिवार में केवल इसी में अच्छाई पाई है।
14इसके अतिरिक्त प्रभु अपने लिए एक अन्य
व्यक्ति को इस्राएलियों का राजा नियुक्त
करेगा। यह राजा यारोबआम के वंश को लुप्त
कर देगा। यह आज होगा; तो कल क्या होगा?
15जैसे नरकुल पानी की मार से कांपता है वैसे
इस्राएल प्रदेश परमेश्वर की मार से कांपेगा।
वह इस्राएलियों को इस हरी-भरी उपजाऊ
भूमि से उखाड़ देगा, जो उसने उनके पूर्वजों
को प्रदान की थी। वह उन्हें फरात नदी के
उस पार बिखेर देगा, क्योंकि उन्होंने अशेराह
देवी के खम्भों की प्रतिष्ठा कर उनकी पूजा
की और इस प्रकार प्रभु को चिढ़ाया।
16यारोबआम के पापों के कारण, जो स्वयं
यारोबआम ने किये, और इस्राएल प्रदेश की
जनता से कराए, प्रभु इस्राएल प्रदेश को त्याग
देगा।'

17 तब यारोबआम की पत्नी उठी। उसने
वहाँ से प्रस्थान किया। वह तिर्साह नगर में
आई। जब वह अपने महल की ड्योढ़ी पर
पहुँची, उसी क्षण उसका लड़का मर गया।
18लोगों ने उसको कबर में गाड़ा। सम्पूर्ण
इस्राएल प्रदेश की जनता ने उसके लिए शोक
मनाया। ऐसा ही प्रभु ने अपने सेवक नबी
अहियाह के माध्यम से कहा था।

19 यारोबआम के शेष कार्यों का विवरण,
उसके युद्धों का, उसके राज्य-काल का विवरण,
'इस्राएल प्रदेश के राजाओं का इतिहास-ग्रंथ'
में लिखा हुआ है। 20यारोबआम ने बाईस वर्ष
तक राज्य किया। तत्पश्चात् वह अपने मृत
पूर्वजों के साथ सो गया। उसके स्थान पर
उसका पुत्र नादाब राज्य करने लगा।

यहूदा प्रदेश पर रहबआम का राज्य

21 यहूदा प्रदेश में सुलेमान का पुत्र रहबआम
राज्य करता था। जब उसने राज्य करना आरम्भ
किया, तब उसकी आयु इकतालीस वर्ष की
थी। उसने राजधानी यरूशलेम में सत्रह वर्ष
तक राज्य किया। प्रभु ने अपने नाम को प्रतिष्ठित
करने के लिए इस्राएल के समस्त कुलों के
भूमि-क्षेत्रों से इस यरूशलेम नगर को चुना था।
रहबआम की मां का नाम नामाह था। वह
अम्मोन देश की थी।

22 जो कार्य प्रभु की दृष्टि में बुरा था वही
कार्य यहूदा प्रदेश के निवासियों ने किया।

---

14 : 10 1 रा 15 : 29 **14 : 11** 1 रा 21 : 24

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उन्होंने अपने पापमय आचरण से प्रभु की ईर्ष्या
को भड़काया। उन्होंने अपने पूर्वजों से अधिक
दुष्कर्म किए। 23उन्होंने हरएक पहाड़ी शिखर
पर और हरे-भरे वृक्ष के नीचे वेदियां, पूजा-
स्तम्भ और लकड़ी के खम्भे प्रतिष्ठित किए।
24प्रदेश में पूजा-गृहों में पुरुषगमन करवाने
वाले सेवक भी थे। ये उन जातियों के घृणित
कार्यों का अनुसरण करते थे, जिनको प्रभु ने
इस्राएलियों के सम्मुख से निकाल दिया था।
25 रहबआम के राज्य-काल के पांचवें वर्ष
मिस्र देश के राजा शीशक ने यरूशलेम नगर पर
चढ़ाई की। 26उसने प्रभु के भवन का और
राजमहल का खजाना लूट लिया। वह सब
कीमती वस्तुएँ ले गया। जो सोने की ढालें राजा
सुलेमान ने बनाई थीं, वह उनको भी ले गया।
27राजा रहबआम ने सोने की ढालों के स्थान पर
पीतल की ढालें बनाईं, और उनको मुख्य
द्वारपालों के हाथ में सौंप दिया। ये राजमहल
के प्रवेश-द्वारों पर पहरा देते थे। 28जब राजा
रहबआम प्रभु के भवन को जाता था तब
द्वारपाल उनको उठा कर ले जाते थे। वहां से
लौटकर वे उनको शस्त्रागार में रख देते थे।
29 रहबआम के शेष कार्यों का विवरण,
उसके सब कार्यों का विवरण, 'यहूदा प्रदेश के
राजाओं का इतिहास-ग्रंथ' में लिखा हुआ है।
30रहबआम और यारोबआम के मध्य निरन्तर
युद्ध होते रहे। 31रहबआम अपने मृत पूर्वजों के
साथ सो गया। वह दाऊदपुर में अपने पूर्वजों के
कब्रिस्तान में गाड़ा गया। उसकी मां का नाम
नामाह था। वह अम्मोनी देश की थी। रहबआम
के स्थान पर उसका पुत्र अबियाम राज्य करने
लगा।

यहूदा प्रदेश पर अबियाम का राज्य

15 इस्राएल प्रदेश के राजा यारोबआम
बेन-नबाट के राज्य-काल के अठारहवें
वर्ष में अबियाम यहूदा प्रदेश का राजा बना।
2उसने तीन वर्ष तक राजधानी यरूशलेम में
राज्य किया। उसकी मां का नाम माकाह था।
वह अबशालोम की पुत्री थी। 3जो पाप अबियाम
के पिता ने उसके पहले किये वे ही उसने भी
किये। जैसे उसके पूर्वज दाऊद का हृदय प्रभु
परमेश्वर के प्रति सच्चा था वैसे अबियाम का
हृदय नहीं था। 4फिर भी उसके प्रभु परमेश्वर
ने दाऊद के कारण उसे यरूशलेम में वंश-
दीपक प्रदान किया। उसके पश्चात् उसके पुत्रों
को सिंहासन पर बैठाया, और यरूशलेम को
सुरक्षित रखा। 5जो कार्य प्रभु की दृष्टि में उचित
था, वह दाऊद ने किया था। उसने अपने
जीवन-भर उन आज्ञाओं का उल्लंघन नहीं
किया था, जो प्रभु ने उसे दी थीं। हां, उसने
हित्ती जाति के ऊरियाह के विषय में एक बार
आज्ञा-उल्लंघन किया था।
6-7 रहबआम और यारोबआम के मध्य
निरन्तर युद्ध होते रहे। अबियाम और यारोबआम
के मध्य भी युद्ध हुआ। अबियाम के शेष कार्यों
का विवरण, उसके सब कार्यों का विवरण,
'यहूदा प्रदेश के राजाओं का इतिहास-ग्रंथ' में
लिखा हुआ है। 8अबियाम अपने मृत पूर्वजों के
साथ सो गया। लोगों ने उसे दाऊदपुर में गाड़ा।
उसके स्थान पर उसका पुत्र आसा राज्य करने
लगा।

यहूदा प्रदेश पर आसा का राज्य

9 इस्राएल प्रदेश के राजा यारोबआम के
राज्य-काल के बीसवें वर्ष में आसा ने यहूदा
प्रदेश में राज्य करना आरम्भ किया। 10उसने
इकतालीस वर्ष तक यरूशलेम नगर में राज्य
किया। उसकी दादी का नाम माकाह था। वह
अबशालोम की पुत्री थी। 11जैसा उसके पूर्वज
दाऊद ने किया था, वैसा ही उसने वही कार्य
किया, जो प्रभु की दृष्टि में उचित था। 12उसने
पूजा-गृहों से सम्बद्ध पुरुषगमन करवाने वाले
सेवकों को अपने प्रदेश से निकाल दिया। जो
मूर्तियाँ उसके पूर्वजों ने प्रतिष्ठित की थीं, उनको
उसने हटा दिया। 13राजा आसा ने अपनी दादी

---

14 : 23 व्य 12 : 2; 2 रा 17 : 9 **14 : 24** व्य 23 : 17 **14 : 25-31** 2 इति 12 : 1-16 **14 : 26** 1 रा 10 : 17
15 : 4 1 रा 11 : 36 **15 : 5** 2 शम 11 **15 : 7** 2 इति 13 : 2 **15 : 8-12** 2 इति 14 : 1-5 **15 : 13-22** 2 इति
15 : 16—16 : 6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

माकाह को भी राजमाता के पद से हटा दिया, क्योंकि उसने अशेराह देवी की एक घृणित प्रतिमा बनाई थी। राजा आसा ने अशेराह की प्रतिमा तोड़ दी और उसको किद्रोन घाटी में आग में जला दिया। [14]यद्यपि उसने पहाड़ी शिखर की वेदियां नहीं तोड़ीं तो भी जीवन भर उसका हृदय प्रभु के प्रति सच्चा रहा। [15]जो सोना-चांदी तथा कीमती पात्र उसके पिता ने तथा स्वयं उसने प्रभु को अर्पित किए थे, उन सब को उसने प्रभु के भवन में रख दिया।

आसा और बेन-हदद के मध्य सन्धि

16 आसा और इस्राएल देश के राजा बाशा के मध्य उनके जीवन भर युद्ध होता रहा। [17]एक बार इस्राएल प्रदेश के राजा बाशा ने यहूदा प्रदेश पर आक्रमण किया और रामाह नगर की किलाबन्दी कर दी, जिससे यहूदा प्रदेश के राजा आसा के आगमन का मार्ग अवरुद्ध हो गया। [18]तब आसा ने प्रभु के भवन और अपने राजमहल के खजाने का शेष सोना-चांदी निकाला, और उसको अपने सेवकों के हाथ में सौंपा। तत्पश्चात् उसने उनको बेन-हदद के पास भेज दिया। बेन-हदद सीरिया देश का राजा था। वह दमिश्क नगर में रहता था। वह हेजयोन का पोता और टबरिम्मोन का पुत्र था। [19]आसा ने यह सन्देश बेन-हदद के पास भेजा, 'जैसे मेरे पिता और आपके पिता के मध्य सन्धि थी वैसे ही, आइए, मैं और आप सन्धि करें। मैं आपकी सेवा में सोना-चांदी का उपहार भेज रहा हूं। कृपया, आप इस्राएल प्रदेश के राजा बाशा से सन्धि-विच्छेद कर लीजिए, जिससे वह मेरे पास से पीछे हट जाए।'

20 बेन-हदद ने राजा आसा की बात सुनी और इस्राएल प्रदेश के नगरों पर आक्रमण करने के लिए अपने सेनापति भेजे। सेनापतियों ने इस्राएल प्रदेश के इयोन, दान, आबेल-बेत-माकाह, समस्त किन्नरोत जिला और नफ्ताली कुल का भूमि-क्षेत्र जीत लिया। [21]जब बाशा ने यह समाचार सुना तब उसने तत्काल रामाह की किलाबन्दी का कार्य रोक दिया, और तिर्साह नगर को लौट गया।

22 राजा आसा ने समस्त यहूदा प्रदेश में अनिवार्य सैनिक सेवा की घोषणा कर दी। एक भी व्यक्ति नहीं छोड़ा गया। जिन पत्थरों और लकड़ियों से बाशा रामाह की किलाबन्दी कर रहा था, उनको यहूदा प्रदेश के लोग ढोकर ले गए। राजा आसा ने उन पत्थरों और लकड़ियों से बिन्यामिन कुल के भूमिक्षेत्र के गेबा नगर और मिस्पाह नगर की किलाबन्दी की।

23 आसा के शेष कार्यों का विवरण, उसके वीरतापूर्ण कार्यों का, उसके सब कार्यों का तथा उसके द्वारा निर्मित नगरों का विवरण, 'यहूदा प्रदेश के राजाओं का इतिहास-ग्रंथ' में लिखा हुआ है। वृद्धावस्था में उसके पैरों में रोग हो गया था। [24]वह अपने मृत पूर्वजों के साथ सो गया। वह अपने पूर्वज दाऊद के नगर में गाड़ा गया। उसके स्थान पर उसका पुत्र यहोशाफट राज्य करने लगा।

इस्राएल प्रदेश पर नादाब का राज्य

25 यहूदा प्रदेश के राजा आसा के राज्यकाल के दूसरे वर्ष यारोबआम के पुत्र नादाब ने इस्राएल प्रदेश में राज्य करना आरम्भ किया। उसने इस्राएल प्रदेश पर दो वर्ष तक राज्य किया। [26]उसने वही कार्य किया, जो प्रभु की दृष्टि में बुरा था। उसने अपने पिता के आचरण का अनुसरण किया। उसने भी इस्राएल प्रदेश की जनता से पाप कराया, जैसा उसके पिता ने कराया था।

27 बाशा बेन-अबियाह ने, जो इस्साकार के कुल का था, नादाब के विरुद्ध षड्‍यंत्र रचा। जब नादाब अपने इस्राएली सैनिकों के साथ पलिश्ती देश के एक नगर गिब्बतोन को घेरे हुए था, तब बाशा ने नादाब की हत्या कर दी। [28]बाशा बेन-अहियाब ने, यहूदा प्रदेश के राजा आसा के राज्य-काल के तीसरे वर्ष में, नादाब का वध किया था। तब वह उसके स्थान पर राज्य करने लगा। [29]जैसे ही वह राजा बना, उसने यारोबआम के वंश के सब लोगों को मार डाला। प्रभु के वचन के अनुसार, जो उसने

---

15 : 18 1 रा 20 : 1-5 15 : 23 2 इति 16 : 12 15 : 24 2 इति 17 : 1 15 : 29 1 रा 14 : 10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
अपने सेवक, शिलोह-वासी नबी अहियाह के
माध्यम से कहा था, बाशा ने यारोबआम के वंश
का एक भी प्राणी जीवित नहीं छोड़ा। उसने
सब प्राणियों को मौत के घाट उतार दिया।
30यह संहार यारोबआम के पाप-कर्म के कारण
हुआ था। यह पाप उसने स्वयं किया था, और
इस्राएल प्रदेश की जनता से कराया था। इस
प्रकार उसने इस्राएली राष्ट्र के प्रभु परमेश्वर को
चिढ़ाया था।
31 नादाब के शेष कार्यों का विवरण, उसके
सब कार्यों का विवरण, 'इस्राएल प्रदेश के
राजाओं का इतिहास-ग्रंथ' में लिखा हुआ है।
32आसा और इस्राएल प्रदेश के राजा बाशा के
मध्य, उनके जीवन भर युद्ध हुआ था।

इस्राएल प्रदेश पर बाशा का राज्य

33 यहूदा प्रदेश के राजा आसा के राज्यकाल
के तीसरे वर्ष में बाशा बेन-अहियाह तिर्साह
नगर में इस्राएल प्रदेश पर राज्य करने लगा।
उसने चौबीस वर्ष तक राज्य किया। 34उसने वह
कार्य किया, जो प्रभु की दृष्टि में बुरा था। वह
यारोबआम के मार्ग पर चला। उसने भी
इस्राएल प्रदेश की जनता से पाप कराया, जैसा
यारोबआम ने कराया था।

16 तब हनानी के पुत्र येहू ने बाशा के
विरुद्ध प्रभु का यह वचन सुना : 2'बाशा,
मैंने तुझे धूल से उठाकर आकाश तक उन्नत
किया। मैंने तुझे अपने निज लोग इस्राएलियों
का अगुआ बनाया, फिर भी तू यारोबआम के
मार्ग पर चला। तूने मेरे निज लोग इस्राएलियों
से पाप कराया, और इस प्रकार उनके पाप के
द्वारा मुझे चिढ़ाया। 3अत: देख, बाशा! मैं तुझे
और तेरे परिवार को जड़ से उखाड़ दूंगा। जैसा
व्यवहार मैंने यारोबआम बेन-नबाट के परिवार
के साथ किया था, वैसा ही तेरे परिवार के साथ
करूंगा। 4तेरे पक्ष का व्यक्ति जो नगर में मारा
जाएगा, उसका शव कुत्ते खाएंगे; और जो
युद्ध-भूमि में मारा जाएगा, उसका शव आकाश
के पक्षी खाएंगे।'
5 बाशा के शेष कार्यों का विवरण, उसके
सब कार्यों का तथा उसके वीरतापूर्ण कार्यों का
विवरण, 'इस्राएल प्रदेश के राजाओं का
इतिहास-ग्रंथ' में लिखा हुआ है। 6बाशा अपने
मृत पूर्वजों के साथ सो गया। वह तिर्साह नगर
में गाड़ा गया। उसके स्थान पर उसका पुत्र
एलाह राज्य करने लगा।
7 इसके अतिरिक्त प्रभु का वचन नबी येहू
बेन-हनानी को बाशा और उसके परिवार के
विरुद्ध प्राप्त हुआ था। उसके दो कारण थे :
पहला, बाशा ने प्रभु की दृष्टि में दुष्कर्म किए
थे। उसने अपने इन कार्यों से प्रभु को चिढ़ाया
था। वह यारोबआम के परिवार के सदृश बन
गया था। दूसरा, उसने यारोबआम के परिवार
को नष्ट किया था।

इस्राएल प्रदेश पर एलाह का राज्य

8 यहूदा प्रदेश के राजा आसा के राज्यकाल
के छब्बीसवें वर्ष में एलाह बेन-बाशा, तिर्साह
नगर में, इस्राएल प्रदेश पर राज्य करने लगा।
उसने दो वर्ष तक राज्य किया। 9जिम्री उसका
एक उच्चाधिकारी था। वह आधी रथ-सेना का
सेनापति था। उसने एलाह के विरुद्ध षड्यन्त्र
रचा। एलाह का गृह-प्रबन्धक अर्सा नामक
एक व्यक्ति था। एक दिन एलाह ने तिर्साह नगर
में अर्सा के घर में शराब पी। वह बेसुध हो गया।
10तब जिम्री आया। उसने एलाह पर प्रहार
किया, और उसकी हत्या कर दी। यह घटना
यहूदा प्रदेश के राजा आसा के राज्य-काल के
सत्ताईसवें वर्ष में घटी। जिम्री एलाह के स्थान
पर राज्य करने लगा।
11 जब जिम्री राज्य करने लगा और जब
वह सिंहासन पर बैठा, तब उसने बाशा के वंश
को नष्ट कर दिया। उसने उसके निकट सम्बन्धियों
और मित्र-परिवार के किसी भी पुरुष अथवा
पुत्र को जीवित नहीं छोड़ा। 12जिम्री ने बाशा
के वंश को मिटा डाला, जैसा प्रभु ने बाशा के
विरुद्ध नबी येहू के माध्यम से कहा था। 13बाशा
और उसके पुत्र एलाह के पाप के कारण उनका
यह सर्वनाश हुआ। न केवल उन्होंने स्वयं पाप
किया था, वरन् इस्राएल प्रदेश की जनता से भी

---

16 : 2 1 रा 14 : 7 16 : 4 1 रा 14 : 11 16 : 9 यश 5 : 11 16 : 11 1 शम 25 : 24

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पाप कराया था और निष्प्राण मूर्तियों की पूजा कर इस्राएली राष्ट्र के प्रभु परमेश्वर को चिढ़ाया था।
14एलाह के शेष कार्यों का विवरण, उसके सब कार्यों का विवरण, 'इस्राएल प्रदेश के राजाओं का इतिहास-ग्रंथ' में लिखा हुआ है।

इस्राएल प्रदेश पर जिम्री का राज्य

15 यहूदा प्रदेश के राजा आसा के राज्य-
काल के सत्ताईसवें वर्ष में जिम्री ने तिर्साह नगर में सात दिन तक राज्य किया। उस समय इस्राएल प्रदेश की सेना पलिश्ती नगर गिब्बतोन
को घेरे हुई थी। 16इस्राएली सैनिकों ने यह
सुना, 'जिम्री ने षड्यन्त्र रच कर राजा की हत्या कर दी।' अत: इस्राएल प्रदेश के सैनिकों ने उसी दिन पड़ाव में सेनापति ओम्री को इस्राएल प्रदेश का राजा घोषित कर दिया।
17ओम्री और उसके साथ समस्त इस्राएल
प्रदेश के सैनिकों ने गिब्बतोन नगर से प्रस्थान किया। उन्होंने तिर्साह नगर को घेर लिया।
18जब जिम्री को पता चला कि नगर पर
शत्रुओं का अधिकार हो गया है, तब वह राजमहल की गढ़ी में आया। उसने राजमहल में आग लगा दी और यों आग में जल कर
आत्महत्या कर ली। 19यह सर्वनाश उसके पाप
के कारण हुआ। उसने प्रभु की दृष्टि में दुष्कर्म किए थे। वह यारोबआम के मार्ग पर चला। उसने स्वयं पाप किया, और इस्राएली जनता से भी पाप कराया।
20 जिम्री के शेष कार्यों का विवरण, उसके
द्वारा रचे गए षड्यंत्र का विवरण, 'इस्राएल प्रदेश के राजाओं का इतिहास-ग्रंथ' में लिखा हुआ है।

इस्राएल प्रदेश पर ओम्री का राज्य

21 तब इस्राएल प्रदेश की जनता दो दलों में
विभक्त हो गई। एक दल ने तिबनी बेन-गीनत का अनुसरण किया। यह दल तिबनी को राजा बनाना चाहता था। दूसरे दल ने ओम्री का
अनुसरण किया। 22किन्तु ओम्री के अनुगामी
तिबनी के अनुगामियों पर प्रबल हो गए। तिबनी को अपने प्राण से हाथ धोना पड़ा।
ओम्री राजा बन गया। 23यहूदा प्रदेश के राजा
आसा के राज्य-काल के इक्कीसवें वर्ष में ओम्री ने इस्राएलियों पर राज्य करना आरम्भ किया। उसने कुल बारह वर्ष तक राज्य किया। इनमें से छ: वर्ष उसने तिर्साह नगर में राज्य
किया। 24 उसने सत्तर किलो चांदी देकर शेमर
से सामरी पहाड़ी को खरीदा और पहाड़ी पर किलाबन्दी की। वहाँ उसने एक नगर बसाया, और उस नगर का नाम सामरी पहाड़ी के मालिक शेमर के नाम पर 'सामरी'* रखा।
25 जो कार्य प्रभु की दृष्टि में बुरा था, ओम्री
ने वही किया। वस्तुत: उसने दुष्कर्म करने में अपने पूर्ववर्ती राजाओं को मात दे दी। 26वह
यारोबआम बेन-नबाट के मार्ग पर चला। उसने स्वयं पाप किया, और इस्राएल प्रदेश की जनता से भी पाप कराया, और निष्प्राण मूर्तियों की पूजा कर इस्राएली राष्ट्र के प्रभु परमेश्वर को चिढ़ाया।
27 ओम्री के शेष कार्यों का विवरण, उसके
सब वीरतापूर्ण कार्यों का विवरण, 'इस्राएल प्रदेश के राजाओं का इतिहास-ग्रंथ' में लिखा
हुआ है। 28ओम्री अपने मृत पूर्वजों के साथ
सो गया। वह सामरी नगर में गाड़ा गया। उसके स्थान पर उसका पुत्र अहाब राज्य करने लगा।

इस्राएल प्रदेश पर अहाब का राज्य

29 यहूदा प्रदेश के राजा आसा के राज्यकाल
के अड़तीसवें वर्ष में अहाब बेन-ओम्री ने इस्राएल प्रदेश पर राज्य करना आरम्भ किया। उसने सामरी नगर में इस्राएल प्रदेश की जनता पर बाईस वर्ष तक राज्य किया।
30 अहाब ने प्रभु की दृष्टि में बुरा कार्य
किया। वस्तुत: उसने दुष्कर्म करने में अपने
पूर्ववर्ती राजाओं को मात दे दी। 31उसके लिए
यारोबआम बेन-नबाट के पापमय मार्ग पर चलना सरल कार्य था। उसने सीदोनी राजा एतबअल की पुत्री ईजेबेल से विवाह किया। वह बअल देवता के मन्दिर में गया। वहां उसने
उसकी आराधना और पूजा की। 32उसने सामरी

* अथवा, 'शोमरोन'

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नगर में बअल देवता के लिए एक मन्दिर
बनाया, और उस मन्दिर में एक वेदी की
स्थापना की।
33 अहाब ने अशेराह देवी की पूजा के खम्भे
भी बनाए। वस्तुत: उसने इस्राएली राष्ट्र के प्रभु
परमेश्वर को अपने दुष्कर्मों से इतना चिढ़ाया,
जितना उसके पूर्व इस्राएल प्रदेश के किसी भी
राजा ने नहीं चिढ़ाया था। 34उसके राज्य-काल
में बेत-एल नगर के निवासी हीएल ने यरीहो
नगर का पुन: निर्माण किया। उसने यरीहो नगर
की नींव में अपने पहलौठे पुत्र अबीराम को
जिन्दा गाड़ा! नगर-द्वार खड़ा करते समय उसने
अपने सबसे छोटे पुत्र सगूब को जिन्दा गाड़ा।
यह प्रभु के वचन के अनुसार हुआ जैसा उसने
यहोशुअ बेन-नून के माध्यम से कहा था।

अहाब और नबी एलियाह का आख्यान

17 गिलआद प्रदेश में तिश्बे नामक एक
नगर था। इस नगर के रहनेवाले एलियाह
ने अहाब से कहा, 'जिस इस्राएली राष्ट्र के प्रभु
परमेश्वर के सम्मुख मैं सेवारत रहता हूं, उस
जीवंत प्रभु की सौगन्ध! जब तक मैं नहीं
कहूंगा, तब तक इन वर्षों में न ओस गिरेगी और
न वर्षा होगी।'
2 प्रभु का यह वचन एलियाह को सुनाई
दिया, 3 'तू यहाँ से प्रस्थान कर, और पूर्व की
ओर जा। यर्दन नदी की पूर्व दिशा में करीत
नामक एक घाटी है। वहाँ तू जा और अज्ञातवास
कर। 4तू घाटी की बरसाती नदी से पानी पीना।
मैंने कौवों को आदेश दिया है कि वे तुझे वहाँ
रोटी पहुँचा देंगे।' 5अत: एलियाह चले गए।
उन्होंने प्रभु के वचन के अनुसार कार्य किया।
वह यर्दन नदी की पूर्व दिशा में स्थित करीत
घाटी में रहने लगे। 6कौवे सबेरे और शाम उनके
पास मांस और रोटी पहुँचाया करते थे। वह
घाटी की बरसाती नदी का पानी पीते थे।

सारफत नगर की विधवा और नबी एलियाह

7 देश में वर्षा नहीं हुई। अत: कुछ समय
पश्चात् बरसाती नदी का पानी सूख गया। 8तब
प्रभु का यह बचन एलियाह को सुनाई दिया।
9 'उठ, और सीदोन राज्य के सारफत नगर को
जा। वहाँ तू रहना। मैंने यह प्रबन्ध किया है कि
एक विधवा वहाँ तुझे भोजन खिलाएगी।'
10अत: एलियाह उठे और सारफत नगर को
गए। जब वह नगर के प्रवेश-द्वार पर पहुंचे तब
उन्होंने देखा कि एक विधवा लकड़ी बीन रही
है। एलियाह ने उसे पुकारा। वह उससे बोले,
'कृपाकर, मुझे एक छोटे बर्तन में पानी दीजिए।
मैं पानी पीऊंगा।' 11जब विधवा पानी लेने जाने
लगी तब एलियाह ने उसे पुकार कर कहा,
'कृपाकर, अपने साथ रोटी का एक टुकड़ा भी
लाना।' 12वह बोली, 'आपके जीवंत प्रभु
परमेश्वर की सौगन्ध! मेरे घर में पका हुआ
भोजन नहीं है। घड़े में मुट्ठी भर आटा, और
कुप्पी में नाममात्र को तेल है। मैं दो-एक
लकड़ी बीन रही हूं। मैं घर जाकर अपने लिए
और अपने पुत्र के लिए रोटी बनाऊंगी। तब हम
खाएंगे। इसके बाद तो भूख से मरना ही है।'
13एलियाह ने उससे कहा, 'मत डरो! घर
जाओ। जैसा तुमने कहा है, वैसा ही करो। पर
पहले मेरे लिए उस आटे से एक छोटी रोटी
बनाना और उसको मेरे पास लाना। उसके
पश्चात् तुम अपने लिए और अपने पुत्र के लिए
रोटी बनाना। 14इस्राएली राष्ट्र का प्रभु परमेश्वर
यों कहता है : "जिस दिन तक मैं भूमि पर वर्षा
नहीं करूंगा, उस दिन तक घड़े का आटा
समाप्त नहीं होगा और कुप्पी का तेल नहीं
चुकेगा।"' 15अत: वह गई। उसने एलियाह के
कथन के अनुसार कार्य किया। नबी, विधवा
और उसका पुत्र अनेक दिन तक खाते रहे। 16न
घड़े का आटा समाप्त हुआ और न कुप्पी का
तेल चुका, जैसा प्रभु ने एलियाह के माध्यम से
कहा था।
17 इस घटना के पश्चात् घर की विधवा-
स्वामिनी का पुत्र बीमार पड़ा। रोग अत्यन्त बढ़
गया और विधवा के पुत्र ने दम तोड़ दिया।
18विधवा ने एलियाह से कहा, 'परमेश्वर के

---

16 : 33 नि 34 : 13 **16 : 34** यहो 6 : 26 **17 : 1** याक 5 : 17; प्रक 11 : 6 **17 : 9** लू 4 : 26; 2 रा 4 : 1-7 **17 :18** मत 8 : 29; लू 4 : 34; यो 2 : 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जन, मैंने आपका क्या अपराध किया था ? क्या आप मेरे घर में इसलिए आए थे कि परमेश्वर मेरे अधर्म का स्मरण कराए और इस कारण मेरे पुत्र का देहान्त हो जाए।' [19]एलियाह ने उससे कहा, 'मुझे अपना पुत्र दो।' एलियाह ने विधवा की गोद से उसको ले लिया, और उसको उपरले कक्ष में ले गए, जहाँ वह ठहरे हुए थे। उन्होंने मृत बालक को अपने बिस्तर पर लिटा दिया। [20]तब एलियाह ने उच्च स्वर में प्रभु को पुकारा, 'हे प्रभु परमेश्वर, क्या तू विधवा के पुत्र को मारकर इस विधवा पर भी विपत्ति ढाहेगा जिसके साथ मैं ठहरा हूं ?' [21]एलियाह तीन बार बालक पर लेटे। उन्होंने पुनः प्रभु को पुकारा, 'हे मेरे प्रभु परमेश्वर, इस बालक का प्राण लौट आए।' [22]प्रभु ने एलियाह की पुकार सुनी और बालक का प्राण उसमें लौट आया। वह जीवित हो गया। [23]एलियाह बालक को लेकर उपरले कक्ष से नीचे उतरे। वह घर में आए। उन्होंने बालक को उसकी मां के हाथ में सौंप दिया। एलियाह ने कहा, 'देखो, तुम्हारा पुत्र जीवित हो गया।' [24]स्त्री ने एलियाह को उत्तर दिया, 'अब मैं जान गई कि आप निश्चय ही परमेश्वर के जन हैं। आपके मुख का प्रभु-वचन सत्य है।'

एलियाह की वापसी

18 अनेक दिन बीत गए। अकाल के तीसरे वर्ष एलियाह को प्रभु का यह वचन सुनाई दिया, 'जा, और राजा अहाब के सम्मुख स्वयं को प्रकट कर। मैं भूमि पर वर्षा करूंगा।' [2]अतएव एलियाह राजा अहाब के सम्मुख स्वयं को प्रकट करने के लिए गए। उस समय सामरी नगर में भयंकर अकाल था। [3]अहाब ने ओबद्याह को बुलाया। ओबदयाह राजमहल का गृह-प्रबन्धक था। वह प्रभु का बड़ा भक्त था। [4]एक बार रानी ईजेबेल प्रभु के नबियों का वध कर रही थी। तब ओबद्याह सौ नबियों को लेकर भाग गया था। उसने गुफाओं में बारी-बारी से पचास-पचास नबियों को छिपाकर रखा और वहाँ नबियों के लिए भोजन और जल की व्यवस्था की।

5 राजा अहाब ने ओबद्याह से कहा, 'आओ, हम दोनों देश के समस्त जल-स्रोतों और घाटियों को जाएं। कदाचित हमें वहाँ चारा-पानी मिले, और हम घोड़ों तथा खच्चरों को मरने से बचा सकें। यों हम कुछ पशुओं को नहीं खोएंगे।' [6]उन्होंने देश का भ्रमण करने के लिए उसको दो भागों में बांटा। अहाब स्वयं एक मार्ग पर गया, और ओबद्याह दूसरे मार्ग पर गया।

7 जब ओबद्याह मार्ग पर था, तब अचानक एलियाह की उससे भेंट हुई। ओबद्याह ने एलियाह को पहचान लिया। वह मुंह के बल गिरा और उनका अभिवादन किया। ओबद्याह ने पूछा, 'क्या आप मेरे स्वामी एलियाह हैं ?' [8]एलियाह ने उसे उत्तर दिया, 'हां, मैं हूं। अब तुम जाओ, और अपने महाराज से यह कहो, "एलियाह आ गए।"' [9]परन्तु ओबद्याह ने कहा, 'स्वामी, मैंने क्या अपराध किया है कि आप मुझे, अपने सेवक को महाराज अहाब के हाथ में सौंपना चाहते हैं ? मेरा वध क्यों करवाना चाहते हैं ? [10]आपके जीवंत प्रभु परमेश्वर की सौगन्ध ! मैं यह सच कह रहा हूं। पृथ्वी का कोई राष्ट्र, कोई राज्य नहीं बचा, जहाँ आपको महाराज ने नहीं ढूंढ़ा। जब उन राष्ट्रों अथवा राज्यों ने यह कहा, "एलियाह यहाँ नहीं है," तब महाराज ने उन्हें शपथ खिलाई और उनके मुख से यह कहलवाया कि उन्होंने सचमुच आपको नहीं देखा है। [11]अब आप मुझसे कह रहे हैं कि मैं जाऊं और अपने महाराज से यह कहूं कि आप आ गए। [12]स्वामी, जैसे ही मैं आपके पास से प्रस्थान करूंगा, प्रभु का आत्मा आपको अनजान स्थान में ले जाएगा, जिस को मैं नहीं जानता। जब मैं महाराज अहाब के पास पहुँचूंगा, उनको आपके विषय में बताऊंगा और आप उन्हें नहीं मिलेंगे, तब क्या वह मुझे जीवित छोड़ देंगे ? आप का यह सेवक बचपन से ही प्रभु का भक्त है। [13]स्वामी, क्या किसी ने आपको यह बात नहीं बताई ? जब रानी

---

17 : 21 2 रा 4 : 34; प्रे 20 : 10 **17 : 22** लू 7 : 14 **18 : 12** 2 रा 2 : 16; यहेज 3 : 12,14; प्रे 8 : 39

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ईजेबेल प्रभु के नबियों की हत्या कर रही थी, तब मैंने प्रभु के सौ नबियों को बचाया था। मैंने उन्हें गुफाओं में बारी-बारी से पचास-पचास की संख्या में छिपाकर रखा था। मैंने उनके लिए भोजन और जल की व्यवस्था की थी।
14अब आप मुझ से यह कह रहे हैं, ''जाओ, और अपने महाराज से यह कहो, 'एलियाह आ गए।' '' वह मुझे जीवित नहीं छोड़ेंगे।'
15तब एलियाह ने कहा, 'जिस स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु के सम्मुख में सेवारत रहता हूं, उस जीवंत प्रभु की सौगन्ध! मैं आज ही अहाब के सम्मुख प्रकट होऊंगा।'
16अत: ओबद्याह चला गया। वह राजा अहाब से मिला। उसने एलियाह के विषय में उसको बताया। अहाब एलियाह से भेंट करने के लिए गया।

17 जब अहाब ने एलियाह को देखा तब वह एलियाह से बोला, 'ओ इस्राएल प्रदेश का संकट उत्पन्न करनेवाले एलियाह, तुम्हीं हो न?'
18एलियाह ने उत्तर दिया, 'हाँ, मैं हूं। पर इस्राएल प्रदेश का संकट उत्पन्न करनेवाला मैं नहीं हूं। वरन् तुमने और तुम्हारे पितृ-कुल ने संकट उत्पन्न किया है; क्योंकि तुमने प्रभु की आज्ञाओं को त्याग दिया, और बअल देवता का अनुसरण किया।
19अब तुम समस्त इस्राएल प्रदेश की जनता को एकत्र करो, और उनको मेरे पास कर्मेल पहाड़ पर भेजो। तुम रानी ईजेबेल के साथ राजसी भोजन करनेवाले अशेराह देवी के चार सौ और बअल देवता के साढ़े चार सौ नबियों को भी भेजना।'

कर्मेल पहाड़ की घटना

20 अहाब ने समस्त इस्राएल प्रदेश के लोगों को कर्मेल पहाड़ पर भेजा। उसने नबियों को भी कर्मेल पहाड़ पर एकत्र किया।
21एलियाह लोगों के समीप आए। एलियाह ने उनसे कहा, 'तुम कब तक दो नावों में पैर रखे रहोगे? यदि प्रभु ही ईश्वर है, तो उसका अनुसरण करो। यदि बअल देवता ईश्वर है, तो उसका अनुसरण करो।' लोगों ने एलियाह को उत्तर नहीं दिया।
22एलियाह ने लोगों से फिर कहा, 'मैं, केवल मैं, प्रभु का नबी, जीवित बचा हूं। बअल देवता के साढ़े चार सौ नबी यहां हैं।
23मुझे और इन नबियों को दो बैल दो। वे स्वयं एक बैल को चुनें। वे उसके टुकड़े-टुकड़े करें, और उन टुकड़ों को लकड़ी के ऊपर रखें। वे लकड़ी में आग नहीं सुलगाएंगे। मैं भी दूसरे बैल के साथ ऐसा ही करूंगा, और उसके टुकड़ों को लकड़ी के ऊपर रखूंगा। मैं भी लकड़ी में आग नहीं सुलगाऊंगा।
24तत्पश्चात् वे अपने ईश्वर के नाम की दुहाई दें। मैं भी प्रभु के नाम की दुहाई दूंगा। जो ईश्वर अग्नि के माध्यम से उत्तर देगा, वही सच्चा ईश्वर है।' सब लोगों ने उत्तर दिया, 'यह उत्तम बात है।'
25एलियाह ने बअल देवता के नबियों से कहा, 'तुम एक बैल को स्वयं चुन लो। तुम पहले बलि तैयार करो, क्योंकि तुम बहुत हो। तुम अपने ईश्वर के नाम की दुहाई दो। पर लकड़ी में आग मत सुलगाना।'
26लोगों ने बअल देवता के नबियों को बैल दिया। नबियों ने उसको पकड़ा और उसकी बलि तैयार की। वे सबेरे से दोपहर तक बअल देवता के नाम की दुहाई देते रहे। वे यह कह रहे थे, 'हे बअल देवता, हमें उत्तर दे!' पर आवाज नहीं हुई। किसी ने उत्तर नहीं दिया। जो वेदी उन्होंने बनाई थी, उसके चारों ओर वे नाचते-कूदते रहे।
27एलियाह ने दोपहर को उनकी हंसी उड़ाई और यह कहा, 'और जोर से पुकारो। वह तो ईश्वर है, मनन-चिन्तन कर रहा होगा, अथवा नित्यक्रिया में लगा होगा। सम्भवत: वह यात्रा पर गया है। कदाचित वह सो रहा है, उसको जगाना चाहिए।'
28अत: वे जोर-जोर से पुकारने लगे। वे अपनी प्रथा के अनुसार अपना शरीर तलवार और बर्छी से गोदने लगे। उनके शरीर से रक्त बहने लगा।
29दोपहर बीत गया। वे संध्या समय तक, भेंट-बलि के अर्पण के समय तक प्रलाप करते रहे। तब भी आवाज नहीं हुई। किसी ने उत्तर नहीं दिया। किसी ने उन पर ध्यान नहीं दिया।

30 एलियाह ने सब लोगों से कहा, 'मेरे समीप आओ।' सब लोग उनके समीप आए।

---

18 : 29 नि 29 : 39

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रभु की जो वेदी तोड़ दी गई थी, उसको
एलियाह ने पुन: निर्मित किया। 31एलियाह ने
याकूब के बारह पुत्रों के कुलों की संख्या के
अनुसार बारह पत्थर लिये। उसी याकूब को
प्रभु का यह वचन सुनाई दिया था, 'अब से तेरा
नाम इस्राएल होगा।' 32एलियाह ने इन पत्थरों
से प्रभु के नाम में एक वेदी निर्मित की। उन्होंने
वेदी के चारों ओर एक गड्ढा खोदा जो आधा
मीटर गहरा था*। 33तब एलियाह ने लकड़ियाँ
वेदी पर सजायीं। उन्होंने बैल की बलि की।
उसके टुकड़े-टुकड़े किए, और उनको लकड़ियों
पर रखा। एलियाह ने कहा, 'चार घड़ों को पानी
से भरो, और उसको अग्नि-बलि तथा लकड़ियों
पर उण्डेल दो।' लोगों ने ऐसा ही किया।
34एलियाह ने फिर कहा, 'ऐसा ही दूसरी बार
करो।' उन्होंने दूसरी बार भी किया। एलियाह
ने फिर कहा, 'ऐसा ही तीसरी बार करो।'
उन्होंने तीसरी बार भी किया। 35पानी वेदी के
चारों ओर बहने लगा। गड्ढा भी पानी से भर
गया।

36 सन्ध्या समय, भेंट-बलि के अर्पण के
समय, नबी एलियाह वेदी के समीप आए।
उन्होंने कहा, 'हे अब्राहम, इसहाक और
याकूब के प्रभु परमेश्वर, आज यह सच्चाई सब
लोगों को ज्ञात हो जाए कि इस्राएली राष्ट्र का
परमेश्वर केवल तू है, और मैं तेरा सेवक हूं।
ये लोग जान लें कि जो कुछ मैंने किया है, वह
सब तेरे आदेश से किया है। 37उत्तर दे, हे प्रभु;
मुझे उत्तर दे जिससे इन लोगों को मालूम हो
जाए कि प्रभु, केवल तू परमेश्वर है, और तू ही
उनके हृदय को बदलता है।' 38तब प्रभु की
अग्नि बरस पड़ी। उसने अग्नि-बलि की
लकड़ियों को, पत्थरों और धूल को भस्म कर
दिया। उसने गड्ढे के पानी को सुखा दिया।
39जब लोगों ने यह देखा तब उन्होंने मुंह के बल
गिरकर प्रभु की वंदना की। वे पुकारने लगे,
'निस्सन्देह, प्रभु ही ईश्वर है! प्रभु ही ईश्वर
है!' 40एलियाह ने लोगों से कहा, 'बअल
देवता के नबियों को पकड़ो। उनमें से एक नबी
को भी भागने न देना।' लोगों ने नबियों को
पकड़ लिया। एलियाह उनको कीशोन नदी पर
ले गए, और वहाँ उनका वध कर दिया।

41 एलियाह ने राजा अहाब से कहा, "अब
आप जाइए, अपना उपवास तोड़िए, और
भोजन कीजिए। मुझे मूसलाधार वर्षा होने का
गर्जन-स्वर सुनाई दे रहा है।' 42अत: अहाब
भोजन के लिए चला गया। एलियाह कर्मेल
पहाड़ के शिखर पर चढ़े। वह भूमि की ओर
झुके और उन्होंने दोनों घुटनों के मध्य अपना
मुख स्थित किया। 43फिर उन्होंने अपने सेवक
से कहा, 'अब तू जा, और समुद्र की ओर
देख।' सेवक गया। उसने समुद्र की ओर देखा।
वह लौटा। उसने कहा, 'वहां कुछ भी नहीं
है।' एलियाह ने कहा, 'तू सात बार जा।' 44जब
वह सातवीं बार लौटा तब उसने एलियाह को
बताया, 'आदमी की मुट्ठी के समान गोल बादल
का एक टुकड़ा समुद्र से ऊपर उठ रहा है।'
एलियाह ने कहा, 'तू जा और अहाब से यह
कह, "आप रथ को तैयार कर तुरन्त नीचे
उतरिए। अन्यथा मूसलाधार वर्षा आपको मार्ग
में रोक लेगी।"' 45कुछ क्षण पश्चात् सघन मेघ
और तूफान से आकाश में अंधकार छा गया।
तब भीषण वर्षा होने लगी। अहाब रथ पर
सवार हो यिज्रएल घाटी को चला गया।

46 प्रभु का बल एलियाह में था। एलियाह
ने अपनी कमर कसी, और वह अहाब के
आगे-आगे दौड़ते हुए यिज्रएल घाटी में
पहुंचे।

नबी एलियाह को प्रभु का दर्शन

19 जो कार्य एलियाह ने किया था, उसकी
सूचना राजा अहाब ने ईजेबेल को दी।
उसने बताया कि एलियाह ने बअल देवता के
सब नबियों को तलवार से मौत के घाट उतार
दिया। 2अत: ईजेबेल ने एलियाह के पास एक
दूत के हाथ से सन्देश भेजा, 'जैसे तूने मेरे
नबियों के प्राण लिये, वैसे ही यदि मैं कल इस

---

* मूल में, "जिसमें छ: किलो बीज समा सकता था"

18 : 31 उत 32 : 28; 35 : 10 **18 : 38** लेव 9 : 24; शास 6 : 21 **18 : 42** याक 5 : 17 **18 : 46** 2 रा 3 : 15

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

समय तक तेरा प्राण न लूं, तो देवता मेरे साथ
कठोरतम व्यवहार करें।' 3एलियाह डर गए।
वह उठे और प्राण बचा कर भागे। वह यहूदा
प्रदेश के बएर-शेबा नगर में आए। वहाँ उन्होंने
अपने सेवक को छोड़ दिया, 4और स्वयं निर्जन
प्रदेश की ओर चले गए। उन्होंने एक दिन का
मार्ग पार किया। वह झाऊ वृक्ष के नीचे बैठ
गए। उन्होंने प्रभु से अपनी मृत्यु मांगी। उन्होंने
कहा, 'प्रभु, अब बहुत हो गया! तू मेरे प्राण ले
ले। मैं अपने पूर्वजों से गया-बीता हूं।' 5तब वह
झाऊ वृक्ष के नीचे लेट गए। उन्हें नींद आ गई।
अचानक एक स्वर्गदूत ने उनका स्पर्श किया।
उसने एलियाह से कहा, 'उठ! भोजन कर।'
6एलियाह ने चारों ओर देखा। उनके सिरहाने
पर गर्म तन्दूर पर सेंकी हुई रोटी और पानी से
भरा हुआ एक घड़ा था। एलियाह ने रोटी खाई,
और पानी पिया। तत्पश्चात् वह फिर लेट गए।
7प्रभु का दूत दूसरी बार आया। उसने एलियाह
का पुन: स्पर्श किया। वह बोला, 'उठ, भोजन
कर, क्योंकि तुझे बहुत दूर जाना है।' 8अत:
एलियाह उठे। उन्होंने खाया-पिया। वह इस
भोजन से बल प्राप्त कर चालीस दिन और
चालीस रात चलते रहे, और परमेश्वर के पर्वत
होरेब पर पहुंचे। 9वहाँ वह एक गुफा में आए,
और वहीं ठहर गए।

तब प्रभु का वचन एलियाह को सुनाई दिया।
प्रभु ने उनसे पूछा, 'एलियाह, तू यहाँ क्या कर
रहा है?' 10एलियाह ने उत्तर दिया, 'स्वर्गिक
सेनाओं के प्रभु परमेश्वर, मैं तेरे लिए धर्मोत्साह
से भरा हूं। इस्राएल प्रदेश की जनता ने तेरे
विधान को भुला दिया। तेरी वेदियों को तोड़
दिया। तेरे नबियों को तलवार से मौत के घाट
उतार दिया। मैं, केवल मैं बचा हूं! लोग मेरे
प्राण की भी खोज में हैं।' 11प्रभु ने कहा, 'गुफा
से बाहर निकल, और मुझ-प्रभु के सम्मुख
पहाड़ पर खड़ा हो।'

तब प्रभु वहां से गुजरा। एक महाशक्तिशाली
पवन बहा*। उसने पहाड़ को फाड़ दिया। प्रभु
के सम्मुख की चट्टानों के टुकड़े-टुकड़े कर
दिये। पर प्रभु पवन+ में नहीं था। पवन के
पश्चात् भूडोल हुआ। पर प्रभु भूडोल में नहीं
था। 12भूडोल के पश्चात् आग धधकने लगी।
पर प्रभु आग में नहीं था। आग के पश्चात् एक
शान्त मद्धिम स्वर सुनाई दिया। 13जब एलियाह
ने इस स्वर को सुना, तब उन्होंने अपनी चादर
से मुख को ढक दिया। वह गुफा से बाहर
निकले, और उसके द्वार पर खड़े हो गए।
उनको एक आवाज़ सुनाई दी। आवाज ने पूछा,
'एलियाह, तू यहाँ क्या कर रहा है?' 14एलियाह
ने उत्तर दिया, 'स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु परमेश्वर,
मैं तेरे लिए धर्मोत्साह से भरा हूं। इस्राएली
जनता ने तेरे विधान को भुला दिया। तेरी वेदियों
को तोड़ दिया। तेरे नबियों को तलवार से मौत
के घाट उतार दिया। मैं, केवल मैं, बचा हूं।
लोग मेरे प्राण की भी खोज में हैं।' 15प्रभु ने
उनसे कहा, 'तू दमिश्क जाने के लिए निर्जन
प्रदेश के मार्ग को लौट जा। जब तू वहाँ
पहुंचेगा, तब हजाएल को सीरिया देश का राजा
अभिषिक्त करना। 16तू निमशी के पुत्र येहू को
इस्राएल प्रदेश का राजा अभिषिक्त करना।
इसके अतिरिक्त तू आबेल-महोलाह निवासी
शाफट के पुत्र एलीशा को अपने स्थान पर नबी
अभिषिक्त करना। 17जो व्यक्ति हजाएल की
तलवार से बच जाएंगे, उनका वध येहू करेगा;
और जो व्यक्ति येहू की तलवार से बच जाएंगे,
उनका वध एलीशा करेगा। 18इस्राएल प्रदेश के
लोगों में जिन सात हजार व्यक्तियों ने बअल
देवता की मूर्ति के सम्मुख घुटने नहीं टेके, और
न मूर्ति का चुम्बन लिया, उनको मैं शेष रहने
दूंगा।'

एलियाह का उत्तराधिकारी एलीशा

19 अत: एलियाह ने वहाँ से प्रस्थान किया।

---

* अथवा, 'प्रचण्ड आंधी चली'। +अथवा, 'आंधी'।

19 : 4 गण 11 : 15; उत 21 : 14-21; योना 4 : 3-8 **19 : 8** नि 24 : 18; मत 4 : 2; 17 : 3 **19 : 9** नि 33 : 21
19 : 10 रोम 11 : 3 **19 : 12** नि 19 : 16 नि 3 : 6; यश 6 : 2 **19 : 15** 2 रा : 12-13 **19 : 16** 2 रा 9 : 1
19 : 18 रोम 11 : 4 **19 : 19** 2 रा 2 : 13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उन्हें एलीशा बेन-शाफट मिला। वह हल जोत
रहा था। उसके आगे बारह जोड़ी बैल हल में
जुते हुए थे। वह स्वयं बैल की बारहवीं जोड़ी
के साथ था। एलियाह उसके पास से गुजरे।
उन्होंने अपनी चादर उसके ऊपर फेंक दी।
[20]एलीशा अपने बैल छोड़कर एलियाह के
पीछे भागा। उसने कहा, 'कृपा कर मुझे अपने
माता-पिता का विदा-चुम्बन तो लेने दीजिए।
उसके बाद मैं आपका अनुसरण करूंगा।'
एलियाह ने कहा, 'अच्छा, लौट जा! मैं तुझे
नहीं रोक रहा हूं।' [21]अत: एलीशा लौट आया।
उसने हलों से बैलों को अलग किया, और फिर
उनकी बलि की। तत्पश्चात् उसने हलों की
लकड़ी से उनका मांस पकाया, और उसको
लोगों में बांट दिया। लोगों ने मांस खाया। इसके
बाद एलीशा उठा, और एलियाह के पीछे चला
गया। वह एलियाह की सेवा करने लगा।

अहाब की सीरिया देश पर विजय

20 सीरिया देश के राजा बेन-हदद ने
अपनी समस्त सेना एकत्र की। उसके
साथ बत्तीस राजा तथा घोड़े और रथ थे। बेन-
हदद ने सामरी नगर पर आक्रमण कर दिया।
उसने उसको घेर लिया, और युद्ध छेड़ दिया।
2 बेन-हदद ने इस्राएल प्रदेश के राजा
अहाब के पास नगर में दूतों को भेजा। उसने
अहाब को यह सन्देश भेजा, 'बेन-हदद यों
कहता है : [3]तुम्हारा सोना-चांदी मेरा है। हां,
तुम अपनी स्त्रियों और बच्चों को अपने पास
रख सकते हो।*' [4]इस्राएल प्रदेश के राजा ने
उत्तर दिया, 'महाराज, मेरे स्वामी, जैसी आपकी
इच्छा! मैं आपका हूं, और जो कुछ मेरे पास है,
वह भी आपका है।'
5 दूत फिर लौट कर आए। उन्होंने कहा,
'बेन-हदद यों कहता है : मैं तुम्हें यह आदेश
भेज रहा हूं। अपने सोना-चांदी और स्त्रियों-
बच्चों को अविलम्ब मेरे हाथ में सौंप दो। [6]मैं
कल, इसी समय अपने सेवकों को तुम्हारे पास
भेजूंगा। वे तुम्हारे महल और तुम्हारे दरबारियों
के मकानों की तलाशी लेंगे। जो वस्तु तुम्हारी
दृष्टि में प्रिय है, वे उसको अपने अधिकार में
कर लेंगे और उसको छीन लेंगे।'
7 तब इस्राएल प्रदेश के राजा ने अपने प्रदेश
के सब धर्मवृद्धों को बुलाया। उसने उनसे यह
कहा, 'आप इस बात पर विचार कीजिए। आप
इस बात पर ध्यान दीजिए। यह व्यक्ति, बेन-
हदद, हमसे झगड़ा मोल लेना चाहता है। उसने
सन्देश भेजा है कि वह मेरा सोना-चांदी, मेरी
स्त्रियां और बच्चे मुझसे छीन लेगा। मैं उसकी
मांग को ठुकरा नहीं सकता।' [8]धर्मवृद्धों ने और
सब लोगों ने कहा, 'आप उसकी बात को
मत सुनिए। आप उसकी मांग से सहमत मत
होइए।' [9]अत: अहाब ने बेन-हदद के दूतों को
उत्तर दिया, 'तुम मेरे स्वामी महाराज से यह
कहना : जो मांग आपने अपने सेवक से पहले
की थी, उसकी पूर्ती मैं करूंगा। परन्तु इस दूसरी
मांग को पूर्ण करने में मैं असमर्थ हूं।' इस उत्तर
के साथ दूत लौट गए।
10 बेन-हदद ने अहाब के पास यह सन्देश
भेजा, 'सौगन्ध है मुझे : यदि मेरी विशाल सेना,
जो मेरे पीछे आ रही है, तेरे सामरी नगर को पैरों
से न रौंदे** तो मेरे देवता मुझसे कठोरतम
व्यवहार करें।' [11]किन्तु इस्राएल प्रदेश के राजा
ने उत्तर दिया, 'तुम बेन-हदद को यह कहावत
स्मरण कराना : "जो गरजते हैं, वे बरसते
नहीं!"' [12]जब यह सन्देश बेन-हदद को
मिला, तब वह अन्य राजाओं के साथ खेमे में
शराब पी रहा था। उसने अपने सेवकों को
आदेश दिया, 'आक्रमण करो।' सैनिकों ने नगर
पर आक्रमण कर दिया।
13 तब एक नबी इस्राएल प्रदेश के राजा
अहाब के पास आया। उसने कहा, 'प्रभु यों
कहता है : क्या तूने यह विशाल सेना देखी है ?
आज मैं इसको तेरे हाथ में सौंप दूंगा। तब तुझे
ज्ञात होगा कि निश्चय ही मैं प्रभु हूं।' [14]अहाब

---

* मूल में, 'तुम्हारी सुन्दर स्त्रियां और बच्चे भी मेरे हैं!'। ** शब्दश: 'यदि सामरी नगर में इतनी धूल बचे कि उससे मेरे पीछे आनेवाले लोगों की मुट्ठी भर जाए'।

19 : 20 लू 9 : 61 19 : 21 2 रा 3 : 11

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ने पूछा, 'किसके द्वारा यह कार्य संभव होगा?' नबी ने बताया, 'प्रभु यों कहता है : जिलाधीशों के सेवकों के द्वारा।'' अहाब ने फिर पूछा, 'युद्ध कौन आरम्भ करेगा?' नबी बोला, 'तू।'

15 अत: अहाब ने जिलाधीशों के सेवकों की गणना की। वे कुल दो सौ बत्तीस थे। तत्पश्चात् उसने समस्त इस्राएली सैनिकों की गणना की। वे कुल सात हजार थे। 16अहाब के ये सैनिक दोपहर को नगर से बाहर निकले। उस समय बेन-हदद अपने सहायक बत्तीस राजाओं के साथ खेमे में शराब पी रहा था। वह बेसुध था। 17पहले जिलाधीशों के सेवक नगर से बाहर निकले। बेन-हदद को सन्देश भेजा गया। उसे बताया गया, 'कुछ मनुष्य सामरी नगर से बाहर निकल रहे हैं।' 18बेन-हदद ने आदेश दिया, 'यदि वे शान्ति के लिए नगर से बाहर निकल रहे हैं, तो उन्हें जीवित पकड़ लेना। यदि वे युद्ध के लिए नगर से बाहर निकल रहे हैं, तब भी उन्हें जीवित पकड़ लेना।'

19 जिलाधीशों के सेवक नगर से बाहर निकले। उनके पीछे सेना निकली। 20उनमें से प्रत्येक व्यक्ति ने अपने सामने के शत्रु को मार डाला। सीरियाई सेना भागी। इस्राएली सैनिकों ने उनका पीछा किया। परन्तु सीरिया देश का राजा बेन-हदद घोड़े पर सवार हो, अन्य घुड़सवार सैनिकों के साथ भाग गया। 21तब इस्राएल प्रदेश का राजा निकला। उसने घोड़ों और रथों पर अधिकार कर लिया। वह सीरियाई सैनिकों पर टूट पड़ा। उसने महासंहार किया।

22 तब वही नबी इस्राएल प्रदेश के राजा के पास फिर आया। नबी ने राजा से कहा, 'शक्ति संचित कीजिए। जो कार्य आप करेंगे, उस पर विचार कीजिए। उस पर ध्यान दीजिए। सीरिया का राजा वसंत ऋतु में आप पर फिर आक्रमण करेगा।'

23 सीरिया के राजा के दरबारियों ने उसको यह परामर्श दिया, 'महाराज, इस्राएलियों का ईश्वर पहाड़ों का ईश्वर है। इसलिए वे पहाड़ी क्षेत्र में हमपर प्रबल होते हैं। इस बार यदि हम उनसे मैदान में युद्ध करें, तो उन्हें निश्चय ही पराजित कर देंगे। 24आप यह कार्य कीजिए : राजाओं को सेनाध्यक्ष के पद से हटा दीजिए, और उनके स्थान पर सेनापतियों को नियुक्त कीजिए। 25जो सेना पराजित हो गई है, उसी सेना के सदृश एक नई सेना तैयार कीजिए। पहले के समान घोड़े और रथ एकत्र कीजिए। हम इस बार इस्राएलियों से मैदान में युद्ध करेंगे, और उन्हें निश्चय ही पराजित करेंगे।' बेन-हदद ने उनकी बात सुनी, और वैसा ही किया।

26 बेन-हदद ने वसन्त ऋतु में सीरियाई सेना एकत्र की। वह इस्राएलियों से युद्ध करने के लिए अपेक नगर को गया। 27इस्राएली सैनिक भी एकत्र हुए। उन्होंने युद्ध की व्यूह-रचना की, और वे उनका मुकाबला करने के लिए चले। इस्राएली सैनिकों ने सीरियाई सैनिकों के सम्मुख पड़ाव डाला। वे बकरी के बच्चों के दो छोटे झुण्डों के समान दिखाई दे रहे थे। किन्तु सीरियाई सैनिकों से सारा मैदान भर गया था।

28 परमेश्वर का वही जन समीप आया। उसने इस्राएल प्रदेश के राजा से यह कहा, 'प्रभु यह कहता है : सीरियाई लोगों ने यह कहा है, ''प्रभु पहाड़ों का ईश्वर है, वह घाटियों का ईश्वर नहीं है।'' इसलिए मैं इस विशाल सेना को तेरे हाथ में सौंप दूंगा। तब तुझे ज्ञात होगा कि मैं निश्चय ही प्रभु हूं।' 29वे सात दिन तक एक-दूसरे के सम्मुख पड़ाव डाले पड़े रहे। सातवें दिन युद्ध आरम्भ हुआ। इस्राएली सैनिक सीरियाई सेना पर टूट पड़े। उन्होंने उसी दिन एक लाख पैदल सैनिकों का वध कर दिया। 30शेष सत्ताईस हजार सैनिक अपेक नगर की ओर भागे। नगर का परकोटा उनपर गिर पड़ा। बेन-हदद भी भागा। वह किले के भीतरी कक्ष में घुस गया।

31 बेन-हदद के दरबारियों ने उससे कहा, 'महाराज, हमने सुना है कि इस्राएल कुल के राजा वास्तव में दयालु होते हैं। आइए, हम पश्चात्ताप प्रकट करने के लिए अपनी कमर में टाट और सिर पर रस्सी बाँधें, और यहां से निकलकर इस्राएली राजा के पास जाएं। शायद

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वह आपकी जान बख्श दे।' 32अत: दरबारियों
ने अपनी कमर में टाट, और सिर पर रस्सी
बाँधी। वे इस्राएल प्रदेश के राजा अहाब के पास
आए। उन्होंने कहा, 'आपके सेवक बेन-हदद
ने निवेदन किया है : "कृपया आप मेरे प्राण
बख्श दें।" ' अहाब ने पूछा, 'क्या वह अब तक
जीवित हैं? वह मेरे भाई हैं।' 33बेन-हदद के
दरबारी शुभ अवसर की ताक में थे। उन्होंने
अविलम्ब इस अवसर से लाभ उठाया। उन्होंने
कहा, "हां आपके भाई बेन-हदद जीवित
हैं।' अहाब ने आदेश दिया, 'जाओ, उन्हें
लाओ।' बेन- हदद किले से बाहर निकला,
और उसके पास आया। अहाब ने उसे अपने रथ
पर बैठाया। 34बेन-हदद ने उससे कहा, 'जो
नगर मेरे पिता ने आपके पिता के हाथ से छीने
थे, उन्हें मैं आपको लौटा दूंगा। जैसे मेरे पिता
ने अपना माल बेचने के लिए सामरी नगर में
व्यापार केन्द्र स्थापित किए थे, वैसे आप भी
दमिश्क नगर में व्यापार केन्द्र स्थापित कर
सकते हैं।' अहाब ने कहा, 'मैं सन्धि की इन्हीं
शर्तों के आधार पर तुम्हें छोड़ता हूं।' अहाब ने
बेन-हदद से सन्धि स्थापित की, और उसे मुक्त
कर दिया।

नबी-संघ के एक नबी की चेतावनी

35 नबी-संघ में एक नबी था। उसने प्रभु के
वचन की प्रेरणा से अपने साथी से यह कहा,
'कृपया मुझ पर प्रहार कर।' किन्तु साथी ने नबी
पर प्रहार करने से इनकार कर दिया। 36नबी ने
उससे कहा, 'तूने प्रभु की वाणी नहीं सुनी।
इसलिए देख, जब तू मेरे पास से जाएगा, तब
मार्ग में एक सिंह तुझ पर प्रहार करेगा।' ऐसा
ही हुआ। जब नबी का साथी उसके पास से
चला गया, तब मार्ग में उसको एक सिंह मिला।
सिंह ने उस पर प्रहार किया।

37 उस नबी को एक और मनुष्य मिला।
उसने उससे भी कहा, 'कृपाकर मुझ पर प्रहार
करो।' उस मनुष्य ने तत्काल उस पर प्रहार
किया। और उसको बुरी तरह से घायल कर
दिया। 38नबी ने आंखों पर पट्टी बांधी और
अपना रूप बदल लिया। वह गया और मार्ग में
खड़ा होकर राजा की प्रतीक्षा करने लगा।
39राजा वहां से गुजरा। उसने राजा की दुहाई दी,
'महाराज, मैं आपका सेवक, युद्ध भूमि में गया
था। वहां आपका एक सैनिक शत्रु-सेना के एक
सैनिक को मेरे पास लाया। उसने मुझसे कहा,
"इस आदमी पर पहरा देना। यदि यह भाग
जाएगा तो मैं इसके प्राण के बदले में तुम्हारा
प्राण लूंगा। अथवा तुम्हें पैंतीस किलो चांदी
देनी पड़ेगी।" 40महाराज, मैं आपका सेवक
यहां-वहां व्यस्त था। अत: वह आदमी भाग
गया।' इस्राएल प्रदेश के राजा ने कहा, 'यही
तुम्हारा न्याय है। तुमने स्वयं अपना फैसला
सुनाया।' 41नबी ने अविलम्ब अपनी आंखों पर
से पट्टी हटाई। इस्राएल प्रदेश के राजा ने उसको
पहचाना कि वह नबी-संघ का एक नबी है।
42नबी ने राजा से कहा, 'प्रभु यों कहता है :
जिस व्यक्ति का पूर्ण संहार करने के लिए मैंने
उसको तेरे हाथ में सौंपा था, तूने उसको मुक्त
कर दिया। इसलिए मैं उसके प्राण के बदले में
तेरा प्राण लूंगा। उसकी जनता के बदले में तेरी
जनता का संहार करूंगा।'

43 इस्राएल प्रदेश का राजा उदास हो गया।
वह अप्रसन्न भाव में डूबा हुआ अपने महल को
लौटा। वह सामरी नगर में आया।

जनता का अधिकार और राजा

21 *यिज्रएल निवासी नाबोत के पास
अंगूर का एक उद्यान था। यह उद्यान
सामरी नगर के राजा अहाब के उस महल के
समीप था, जो यिज्रएल नगर में था। 2अहाब ने
नाबोत से कहा, 'तुम अपना अंगूर का उद्यान
मुझे दे दो। मैं वहां अपने लिए साग-भाजी का
बाग लगाऊंगा; क्योंकि तुम्हारा अंगूर-उद्यान
मेरे महल के समीप है। मैं तुम्हें उसके बदले
में उससे अच्छा अंगूर का उद्यान दूंगा। अथवा
यदि तुम्हें अपनी दृष्टि में यह बात उचित प्रतीत
होगी तो मैं तुम्हें उसका मूल्य चांदी के सिक्के

* मूल में 'इन घटनाओं के पश्चात् यह घटना घटी'।

20 : 35 2 रा 2 : 3 20 : 36 1 रा 13 : 24 20 : 39 2 शम 12 : 1; 2 शम 14 : 5-7 21 : 2 यश 5 : 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

में चुका सकता हूँ।' 3नाबोत ने अहाब को उत्तर दिया, 'प्रभु मुझे क्षमा करे। मैं अपने पूर्वजों की पैतृक भूमि आपको नहीं दूंगा।' 4अहाब उदास और अप्रसन्न हो गया; क्योंकि यिज्रएल-निवासी नाबोत ने उससे यह कहा था, 'मैं अपने पूर्वजों की पैतृक भूमि आपको नहीं दूंगा।' अहाब अपने महल में आया। वह अपने पलंग पर लेट गया। उसने अपना मुंह ढक लिया। उसने भोजन नहीं किया। 5तब उसकी पत्नी ईजेबेल उसके पास आई। ईजेबेल ने उससे पूछा, 'आप इतने उदास क्यों हैं ? आपने भोजन क्यों नहीं किया ?' 6अहाब ने उसको बताया, 'मैंने यिज्रएल-निवासी नाबोत से उसके अंगूर-उद्यान के विषय में बात की थी। मैंने उससे कहा, ''तुम चांदी के सिक्के के बदले में अपना अंगूर का उद्यान मुझे दे दो। अथवा यदि तुम इस बात से प्रसन्न हो तो मैं तुम्हें उसके बदले में दूसरा अंगूर उद्यान दे दूंगा।'' परन्तु उसने मुझे यह उत्तर दिया, ''मैं आपको अपना अंगूर-उद्यान नहीं दूंगा।'' ' 7उसकी पत्नी ईजेबेल ने उससे कहा, 'क्या आप अब इस्राएल प्रदेश पर राज्य नहीं करते ? उठिए, और भोजन कीजिए। हृदय की उदासी को दूर कीजिए। मैं आपको यिज्रएल-निवासी नाबोत का अंगूर-उद्यान भेंट करूंगी।'

8 ईजेबेल ने राजा अहाब के नाम में पत्र लिखे। उसने उन पर अहाब की मुहर लगाई। तत्पश्चात् ईजेबेल ने पत्रों को नाबोत के नगर में रहने वाले धर्मवृद्धों और अभिजात वर्ग के लोगों के पास भेजा। 9उसने पत्रों में यह लिखा था, 'आप सामूहिक उपवास की घोषणा कीजिए। आप नाबोत को जनता के मध्य में उच्चासन पर बैठाना। 10उसके सम्मुख दो गुण्डों को बैठाना। ये नाबोत के विरुद्ध गवाही देंगे, और यह कहेंगे, ''तुमने परमेश्वर और राजा को अपशब्द कहे थे।'' तब आप नाबोत को नगर से बाहर निकालना, उसको पत्थरों से मारना और उसका वध कर देना।'

11 नाबोत के नगर में रहने वाले धर्मवृद्धों और अभिजात वर्ग के लोगों ने ईजेबेल के आदेश के अनुसार किया। जैसा ईजेबेल द्वारा भेजे गये पत्रों में लिखा था, 12उन्होंने सामूहिक उपवास की घोषणा की। उन्होंने नाबोत को जनता के मध्य में उच्चासन पर बैठाया। 13तब दो गुण्डे आए। वे नाबोत के सम्मुख बैठ गए। गुण्डों ने जनता की उपस्थिति में नाबोत के विरुद्ध साक्षी दी। उन्होंने कहा, 'नाबोत ने परमेश्वर और राजा को अपशब्द कहे थे।' अत: धर्मवृद्ध और अभिजात वर्ग के लोग नाबोत को पकड़ कर नगर के बाहर ले गए। उन्होंने उसको पत्थरों से मारा, और उसका वध कर दिया। 14तत्पश्चात् उन्होंने ईजेबेल को यह खबर भेजी, 'नाबोत पर पथराव किया गया और वह मर गया।'

15 जब ईजेबेल ने सुना कि नाबोत पर पथराव किया गया और वह मर गया, तब उसने अहाब से कहा, 'उठिए, यिज्रएल-निवासी नाबोत के अंगूर-उद्यान पर अधिकार कीजिए। इस उद्यान को उसने चांदी के सिक्के के बदले में आपको देने से इनकार किया था। अब नाबोत जीवित नहीं है, वह मर गया।' 16जब अहाब ने सुना कि नाबोत मर गया,तब वह पलंग से उठा। वह नाबोत के अंगूर-उद्यान पर कब्जा करने के लिए गया।

17 प्रभु का यह वचन तिश्बे नगर के एलीयाह ने सुना। 18प्रभु ने कहा, 'उठ और इस्राएल प्रदेश के राजा अहाब से मिलने को जा, जिसकी राजधानी सामरी नगर है। देख, वह इस समय नाबोत के अंगूर-उद्यान में है। वह उस पर कब्जा करने के लिए गया है। 19तू उससे यह कहना : ''प्रभु यों कहता है : तूने हत्या की, और कब्जा किया।'' तू उससे यह भी कहना : ''प्रभु यों कहता है : जिस स्थान पर कुत्तों ने नाबोत का रक्त चाटा है, उसी स्थान पर वे तेरा रक्त भी चाटेंगे।'' '

20 अहाब ने एलियाह से कहा, 'ओ मेरे शत्रु ! तू मुझसे फिर मिलने आ गया ?' एलियाह ने उत्तर दिया, 'मैं आपसे इसलिए मिलने आय

---

21 : 10 गण 35 : 30; नि 22 : 28; लेव 24 : 14 **21 : 19** 2 शम 12 : 9; 2 रा 9 : 26

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हूं, क्योंकि आपने प्रभु की दृष्टि में दुष्कर्म किया
है, और अपनी आत्मा को बेच दिया है। 21प्रभु
आप पर विपत्ति का पहाड़ ढाहेगा। वह आपको
जड़ से उखाड़ देगा। वह इस्राएल प्रदेश में
आपके परिवार के हर एक सेवक और गुलाम
को, उसके प्रत्येक पुरुष को, नष्ट कर देगा।
22जैसा व्यवहार उसने यारोबआम बेन-नबाट
के साथ, बाशा बेन-अहियाह के साथ किया
था, वैसा ही वह आपके साथ करेगा; क्योंकि
आपने अपने व्यवहार से प्रभु को चिढ़ाया है।
आपने इस्राएली जनता से पाप कराया है।
23ईजेबेल के विषय में प्रभु ने यह कहा है:
"कुत्ते यिज्रएल के खेत में ईजेबेल का शव
खाएंगे।" 24आपके पक्ष का व्यक्ति, जो नगर
में मारा जाएगा, उसका शव कुत्ते खाएंगे; और
जो युद्ध-भूमि में मारा जाएगा, उसका शव
आकाश के पक्षी खाएंगे।'

25 अहाब के समान, जिसको उसकी पत्नी
ईजेबेल ने बहकाया था, अन्य कोई व्यक्ति नहीं
था, जिसने प्रभु की दृष्टि में दुष्कर्म किया और
अपनी आत्मा को बेच दिया। 26उसने एमोरी
जाति के सदृश, जिसको प्रभु ने देश में से
इस्राएली जाति के लिए निकाला था, मूर्तियों
का अनुसरण कर अत्यन्त घृणित कर्म किया
था।

27 जब अहाब ने ये वचन सुने तब उसने
पश्चात्ताप प्रकट करने के लिए अपने वस्त्र
फाड़े। उसने अपने शरीर पर टाट धारण किया।
वह उपवास करने लगा। वह टाट-पट्टी पर
सोता था। वह ग्लानि से सिर झुकाकर चलता-
फिरता था।

28 प्रभु का यह वचन तिश्बे नगर के
एलियाह को सुनाई दिया। 29प्रभु ने कहा, 'क्या
तूने अहाब को देखा? उसने मेरे सम्मुख सिर
झुका लिया है। मैं उसकी इस विनम्रता के
कारण यह विपत्ति उसके जीवन-काल में नहीं
ढाहूंगा, वरन् उसके पुत्र के जीवन काल में,
उसके वंश पर ढाहूंगा।'

नबी मीकायाह की नबूवत

22 सीरिया और इस्राएल के मध्य युद्ध
नहीं हुआ। वे तीन वर्ष तक शान्त बैठे
रहे। 2तीसरे वर्ष यहूदा प्रदेश का राजा यहोशाफट
इस्राएल प्रदेश के राजा अहाब के पास आया।
3इस्राएल प्रदेश के राजा ने अपने दरबारियों
से यह कहा, 'क्या आप लोग जानते हैं कि
रामोत-गिलआद नगर हमारा है? परन्तु हम
अब तक चुप हैं। हमने उसको सीरिया के राजा
के हाथ से पुन: प्राप्त नहीं किया।' 4उसने
यहोशाफट से पूछा, 'क्या आप रामोत-गिलआद
नगर से युद्ध करने के लिए मेरे साथ चलेंगे?'
यहोशाफट ने इस्राएल प्रदेश के राजा को उत्तर
दिया, 'जो मेरा है, वह आपका है : मैं, मेरी
सेना, मेरे रथ।'

5 यहोशाफट ने इस्राएल प्रदेश के राजा से
कहा, 'आइए, पहले हम प्रभु का वचन प्राप्त
करें।' 6अत: इस्राएल प्रदेश के राजा ने नबियों
को एकत्र किया। वे कुल चार सौ थे। राजा ने
उनसे पूछा, 'क्या मुझे रामोत-गिलआद नगर से
युद्ध करने के लिए जाना चाहिए? अथवा मुझे
युद्ध नहीं करना चाहिए?' नबियों ने कहा,
'आप आक्रमण कीजिए। प्रभु उसको महाराज
के हाथ में सौंप देगा।' 7किन्तु यहोशाफट ने
कहा, 'क्या यहां प्रभु का कोई नबी नहीं है,
जिससे हम प्रभु का वचन प्राप्त करें?' 8इस्राएल
प्रदेश के राजा ने यहोशाफट को बताया, 'यहां
एक आदमी है। उससे हम प्रभु का वचन प्राप्त
कर सकते हैं। उसका नाम मीकायाह बेन-
यिम्लाह है। पर मैं उससे घृणा करता हूँ; क्योंकि
वह मेरे विषय में कभी शुभ नबूवत नहीं करता,
वरन् सदा अशुभ ही कहता है।' यहोशाफट ने
कहा, 'महाराज, ऐसा मत बोलिए।'

9 इस्राएल प्रदेश के राजा ने एक खोजा-
अधिकारी को बुलाया और उससे कहा,
'मीकायाह बेन-यिम्लाह को अविलम्ब
लाओ।'

10 इस्राएल प्रदेश का राजा अहाब और

---

21 : 21 1 रा 14 : 10 **21 : 23** 2 रा 9 : 36 **21 : 25** 1 रा 16 : 30; 11 : 1; उत 3 : 12 **21 : 29** 2 शम 12 : 13-15; 2 रा 9 : 25 **22 : 1-35** 2 इति 18 : 1-34 **22 : 4** 2 रा 3 : 7 **22 : 7** 2 रा 3 : 11

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यहूदा प्रदेश का राजा यहोशाफट अपने-अपने
सिंहासन पर विराजमान थे। वे राजसी वेशभूषा
में थे और वे सामरी नगर के प्रवेश-द्वार के
सामने मैदान में बैठे हुए थे। सब नबी उनके
सम्मुख नबूवत कर रहे थे। 11नबी सिदकियाह
बेन-कनानाह ने लोहे के सींग बनाए, और यह
कहा, 'प्रभु यों कहता है : जब तक सीरिया देश
की सेना पूर्णत: नष्ट नहीं हो जाएगी, तू उनको
ऐसे ही सामर्थी सींगों से मारता रहेगा।' 12अन्य
नबी ऐसी ही नबूवत कर रहे थे। वे कह रहे थे,
'महाराज, रामोत-गिलआद नगर पर चढ़ाई
कीजिए, और विजय प्राप्त कीजिए। प्रभु नगर
को आपके हाथ में सौंप देगा।'

13 जो दूत मीकायाह को बुलाने गया था,
उसने मीकायाह से कहा, 'सब नबी एक-स्वर
में महाराज के लिए शुभ नबूवत कर रहे हैं।
आपका वचन भी उन्हीं के समान शुभ हो।
कृपया आप शुभ ही बोलिए।' 14किन्तु मीकायाह
ने कहा, 'जीवन्त प्रभु की सौगन्ध! जो वचन
प्रभु मुझसे कहेगा, वही मैं बोलूंगा।'

15 मीकायाह राजा अहाब के पास आया।
राजा ने उससे पूछा, 'मीकायाह, क्या मुझे
रामोत-गिलआद नगर से युद्ध करने के लिए
जाना चाहिए? अथवा मुझे युद्ध नहीं करना
चाहिए?' मीकायाह ने उसको उत्तर दिया,
'आप चढ़ाई कीजिए, और विजय प्राप्त कीजिए।
प्रभु उसको महाराज के हाथ में सौंप देगा।'
16राजा ने उससे कहा, 'मैं तुम्हें कितनी बार
शपथ दूं कि तुम मुझसे प्रभु के नाम में सच के
अतिरिक्त कुछ मत बोला करो?' 17तब
मीकायाह ने कहा :

'मैंने इस्राएली राष्ट्र को पहाड़ों पर तितर-
बितर देखा,
जैसे बिना चरवाहे का रेवड़!
प्रभु मुझसे बोला, "इनका कोई स्वामी नहीं;
प्रत्येक व्यक्ति अपने घर को सकुशल लौट
जाए+।" '

18 इस्राएल प्रदेश के राजा ने यहोशाफट से
कहा, 'मैंने आपसे नहीं कहा था कि यह मेरे
विषय में कभी शुभ नबूवत नहीं करता? यह
सदा अशुभ ही कहता है।' 19मीकायाह ने आगे
कहा, 'अब प्रभु का वचन सुनिए। मैंने प्रभु को
सिंहासन पर विराजमान देखा। उसके समीप
स्वर्ग की समस्त सेना उसकी दाहिनी और बाईं
ओर खड़ी थी। 20प्रभु ने पूछा, "कौन व्यक्ति
अहाब को फुसलाएगा और उसे रामोत गिलआद
ले जाएगा कि वह वहाँ मार डाला जाए?" तब
किसी ने कुछ कहा, किसी ने कुछ। 21अन्त में
एक आत्मा भीड़ में से बाहर निकली। वह प्रभु
के सम्मुख खड़ी हुई। उसने कहा, "मैं अहाब
को फुसलाऊंगी।" 22प्रभु ने उससे पूछा,
"कैसे?" उसने बताया, "मैं जाऊंगी, और
अहाब के सब नबियों के मुंह से झूठी नबूवत
कराऊंगी।" प्रभु ने उससे कहा, "तुझे अहाब
को फुसलाना है। तू अपने कार्य में सफल
होगी। अब जा, और अपना काम कर।"
23महाराज, प्रभु ने आपके इन सब नबियों के
मुंह में झूठ बोलनेवाली आत्मा बैठाई है।
वास्तव में प्रभु ने आपके विषय में अशुभ वचन
कहे हैं।'

24 तब नबी सिदकियाह बेन-कनायाह
मीकायाह के समीप आया। उसने उसके गाल
पर थप्पड़ मारा, और उससे पूछा, 'क्यों? प्रभु
का आत्मा मुझे छोड़ कर तुझसे वार्तालाप करने
के लिए किस प्रकार गया?' 25मीकायाह ने उत्तर
दिया, 'तू इस सच्चाई के दर्शन उस दिन करेगा,
जिस दिन तू प्राण बचाने के लिए इस कमरे से
उस कमरे में छिपता फिरेगा।' 26यह सुनकर
इस्राएल प्रदेश के राजा ने आदेश दिया,
'मीकायाह को पकड़ो और इसे नगर के अध्यक्ष
आमोन और राजकुमार योआश के पास ले
जाओ। 27तुम उनसे कहना, "महाराज ने यों
कहा है : तुम इस आदमी को कारागार में बन्द
रखो। जब तक मैं युद्ध से सकुशल लौट न आऊं

+ अर्थात् 'युद्ध-भूमि को न जाए'।

22 : 14 गण 22 : 38; यिर 1 : 7; यहेज 2 : 7; प्रे 4 : 19 **22 : 17** मत 9 : 36; गण 27 : 17 **22 : 19** यश 6 : 1; दान 7 : 9-10; अय्य 1 : 6; 2 : 1

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तब तक तुम इसे बस इतना भोजन देना कि यह
जीवित रह सके।'' [28]मीकायाह ने कहा, 'यदि
आप युद्ध से सकुशल लौट आएंगे तो आप
समझना, मेरे मुंह से प्रभु ने अपना वचन नहीं
कहा था।' मीकायाह ने उपस्थित लोगों से
कहा, 'आप सब लोग भी सुन लीजिए।'

29 किन्तु इस्राएल के राजा अहाब और
यहूदा प्रदेश के राजा यहोशाफट ने रामोत-
गिलआद नगर पर चढ़ाई कर दी। [30]अहाब ने
यहोशाफट से कहा, 'मैं भेष बदल कर युद्ध-
भूमि में जाऊंगा। पर आप राजसी पोशाक पहिने
रहिए।' अत: इस्राएल प्रदेश के राजा अहाब ने
भेष बदला और वह युद्ध-भूमि में गया।
[31]सीरिया के राजा ने अपनी रथ-सेना के बत्तीस
सेना-नायकों को यह आदेश दिया था, 'तुम
इस्राएली सेना के छोटे-बड़े सैन्य-अधिकारियों
से युद्ध मत करना, केवल इस्राएल प्रदेश के
राजा से करना!' [32]अत: जब रथों के सेना-
नायकों ने यहोशाफट को देखा, तब उन्होंने
कहा, 'यह निश्चय ही इस्राएल प्रदेश का राजा
है।' वे उससे युद्ध करने के लिए उसकी ओर
मुड़े। यहोशाफट ने युद्ध का आह्वान दिया।
[33]सेना-नायकों ने पहचाना कि वह इस्राएल
प्रदेश का राजा नहीं है। अत: उन्होंने उसका
पीछा करना छोड़ दिया, और वे लौट गए।

34 किन्तु एक सैनिक ने अपना धनुष खींचा
और एक तीर चलाया। वह नहीं जानता था कि
उसने किसकी ओर तीर चलाया है। यह तीर
इस्राएल प्रदेश के राजा के कवच और कमरबन्द
के मध्य में धंस गया। राजा ने अपने सारथी से
कहा, 'रथ को मोड़ो। मुझे युद्ध-भूमि से बाहर
ले चलो। मैं घायल हो गया।'

35 उस दिन घमासान युद्ध हुआ। सैनिकों
ने राजा को सीरियाई सेना की ओर मुख किए
हुए रथ पर खड़ा रखा। सन्ध्या समय उसकी
मृत्यु हो गई। रक्त घाव से निकल कर रथ के
पेंदे में बहता रहा। [36]सूर्यास्त के समय पड़ाव
में यह आवाज सुनाई दी, 'प्रत्येक सैनिक अपने
नगर को, अपने देश को लौट जाए।'

37 इस प्रकार राजा अहाब की मृत्यु हो गई।
सैनिक उसे सामरी नगर में लाए। उन्होंने उसे
सामरी नगर में गाड़ा। [38]तत्पश्चात् उन्होंने सामरी
नगर के जल-कुण्ड में राजा के रथ को धोया।
तब कुत्तों ने राजा के रक्त को चाटा। उसी कुण्ड
में वेश्याओं ने स्नान किया था। इस प्रकार प्रभु
का वचन पूरा हुआ।

39 अहाब के शेष कार्यों का विवरण, उसके
सब कार्यों का, उसके द्वारा निर्मित हाथीदांत के
महल और उसके द्वारा बसाए गए नगरों का
विवरण, 'इस्राएल प्रदेश के राजाओं का
इतिहास-ग्रन्थ' में लिखा हुआ है। [40]अहाब अपने
मृत पूर्वजों के साथ सो गया। उसके स्थान पर
उसका पुत्र अहज्याह राज्य करने लगा।

यहूदा प्रदेश पर यहोशाफट का राज्य

41 इस्राएल के राजा अहाब के राज्य-काल
के चौथे वर्ष में आसा का पुत्र यहोशाफट यहूदा
प्रदेश पर राज्य करने लगा। [42]जब उसने राज्य
करना आरम्भ किया तब वह पैंतीस वर्ष का था।
वह राजधानी यरूशलेम में पच्चीस वर्ष तक
राज्य करता रहा। उसकी माता का नाम
अजूबाह बत-शिलही था।

43 यहोशाफट ने अपने पिता आसा के मार्ग
का अनुसरण किया। उसने अपने पिता का मार्ग
नहीं छोड़ा। उसने वही कार्य किया, जो प्रभु की
दृष्टि में उचित था। फिर भी पहाड़ी शिखर की
वेदियां नहीं तोड़ी गईं। लोग इन वेदियों पर
बलि चढ़ाते और सुगन्धित धूप-द्रव्य जलाते
रहे। [44]यहोशाफट ने इस्राएल प्रदेश के राजा से
सन्धि स्थापित की थी।

45 यहोशाफट के शेष कार्यों का विवरण,
उसके वीरतापूर्ण कार्यों और युद्धों का विवरण,
'यहूदा प्रदेश के राजाओं का इतिहास-ग्रन्थ' में
लिखा हुआ है।

46 जो पूजागृहों से सम्बद्ध पुरुष-गमन
करवाने वाले सेवक उसके पिता आसा के
राज्य-काल में बच गए थे, उसने उनको अपने
प्रदेश से निकाल दिया।

47 एदोम देश में कोई राजा नहीं था।

---

22 : 38 1 रा 21 : 19 **22 : 39** आमो 3 : 15 **22 : 41-43** 2 इति 20 : 31-33

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यहोशाफट का एक प्रतिनिधि ही वहां राज्य
करता था। 48यहोशाफट ने ओपीर देश से सोना
लाने के लिए तर्शीश का एक जहाजी बेड़ा
बनाया था। परन्तु उसके नाविक ओपीर देश
नहीं जा सके; क्योंकि जलयान एस्योन-गेबेर
बन्दरगाह में डूब गए। 49तब अहज्याह बेन-
अहाब ने यहोशाफट के सम्मुख यह प्रस्ताव
रखा, 'मेरे नाविक आपके नाविकों के साथ
जहाजी बेड़े में जाएं।' परन्तु यहोशाफट सहमत
नहीं हुआ।

50 यहोशाफट अपने मृत पूर्वजों के साथ सो
गया। उसे उसके पूर्वजों के साथ, उसके पूर्वज
दाऊद के नगर में गाड़ा गया। उसके स्थान पर
उसका पुत्र योराम राज्य करने लगा।

22 : 48-49 2 इति 20 : 35-37 **22 : 50** 2 इति 21 :1

इस्राएल प्रदेश पर अहज्याह का राज्य

51 यहूदा प्रदेश के राजा यहोशाफट के
राज्य-काल के सत्रहवें वर्ष अहज्याह बेन-
अहाब ने सामरी नगर में इस्राएल प्रदेश पर राज्य
करना आरम्भ किया। उसने इस्राएल प्रदेश पर
दो वर्ष तक राज्य किया। 52जो कार्य प्रभु की
दृष्टि में बुरा था, उसने वही किया। उसने अपने
पिता और माता का अनुसरण किया। वह
यारोबआम बेन-नबाट के मार्ग पर चला,
जिसने इस्राएल प्रदेश की जनता से पाप कराया
था। 53उसने बअल देवता की आराधना की,
उसकी पूजा की, और यों इस्राएली राष्ट्र के प्रभु
परमेश्वर को चिढ़ाया, जैसा उसके पिता ने
किया था।

राजाओं का वृतांत : दूसरा भाग

पुस्तक परिचय

इस्राएल तथा यहूदा प्रदेशों के "**राजाओं का वृत्तांत : पहला भाग**" जहां समाप्त होता है, वहाँ से "दूसरा भाग" आरम्भ होता है। "**राजाओं का वृतांत : दूसरा भाग**" निम्नलिखित दो खण्डों में विभाजित किया जा सकता है :

(1) सन् 850 ईसवी पूर्व से सन् 721 ईसवी पूर्व तक की अवधि में इस्राएल तथा यहूदा प्रदेश में जो राजा हुए, उनका विवरण। असीरिया देश की विस्तारवादी नीति से उत्तरी राज्य इस्राएल कमजोर होता गया और सन् 721 ईसवी पूर्व राजधानी सामरी नगर का पतन हुआ। इसी पतन के साथ उत्तरी राज्य का विनाश हुआ और विदेशियों के आवागमन के कारण वहां एक मिश्रित आबादी बढ़ने लगी।

(2) दूसरे खण्ड में सन् 721 ईसवी पूर्व से लेकर दक्षिणी राज्य यहूदा के शेष राजाओं का विवरण मिलता है। यद्यपि धार्मिक राजा योशियाह के शासन-काल में धर्मसुधार का जन-आंदोलन गतिशील था, तथापि असीरियाई महानगर नीनवे की पराजय के बाद बेबीलोनी महाशक्ति का उदय हुआ। बेबीलोन देश के सम्राट नबूकदनेस्सर ने यहूदा प्रदेश पर भी आक्रमण किया और सन् 586 ईसवी पूर्व राजधानी यरूशलेम को खण्डहर बना दिया। इस दुःखद अन्त के फलस्वरूप इस्राएली राष्ट्र अपनी स्वतंत्रता खो बैठा और प्रमुख नागरिकों को देश से निष्कासित होना पड़ा।

प्रस्तुत ग्रन्थ का अन्त सम्राट नबूकदनेस्सर द्वारा यहूदा प्रदेश पर गदल्याह को प्रशासक नियुक्त करने एवं बेबीलोन के कारागार से यहूदा प्रदेश के बन्दी राजा यहोयाकीन को मुक्त करने से होता है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वृत्तांत लिखते समय ग्रन्थकार यह लिखना नहीं भूलते कि इस्राएल राज्य तथा यहूदा राज्य का पतन तथा इस्राएली कौम के बन्दी होने का कारण परमेश्वर के प्रति अनिष्ठा एवं उसकी आज्ञा का उल्लंघन था। यरूशलेम के पवित्र मन्दिर के विध्वंस तथा अधिकांश इस्राएलियों के बन्दी बनकर बेबीलोन जाने से इस्राएली इतिहास में अत्यंत महत्वपूर्ण मोड़ आया, जिसका प्रभाव इस्राएली कौम के भविष्य के इतिहास पर पड़ा।

प्रस्तुत ग्रन्थ के प्रमुख नबी एलीशा हैं जो नबी एलियाह के शिष्य थे। दोनों ने उत्तरी राज्य में धर्मसेवा की। दक्षिणी राज्य में नबी यशायाह ने नबूबत की।

विषयवस्तु की रूपरेखा

(1) विभाजित यहूदा तथा इस्राएल राज्य	1 : 1—17 : 41
(क) नबी एलीशा	1 : 1— 8 : 15
(ख) यहूदा तथा इस्राएल राज्यों के राजा	8 : 16—17 : 4
(ग) राजधानी सामरी नगर का पतन	17 : 5—41
(2) यहूदा राज्य के शेष राजा :	18 : 1—25 : 30
(क) राजा हिजकियाह से राजा योशियाह तक	18 : 1—21 : 26
(ख) योशियाह का राज्य-काल	22 : 1—23 : 30
(ग) यहूदा राज्य के अन्तिम राजा	23 : 31—24 : 20
(घ) राजधानी यरूशलेम का पतन	25 : 1—30

अहज्याह की मृत्यु

1 राजा अहाब की मृत्यु के पश्चात् मोआब
जाति ने इस्राएली राज्य के विरुद्ध विद्रोह
कर दिया।
2 एक दिन अहाब का पुत्र राजा अहज्याह
सामरी नगर में अपने उपरले कक्ष की जालीदार
खिड़की से नीचे गिर गया। वह गम्भीर रूप से
घायल हो गया। उसने दूत भेजे। उसने उन्हें यह
आदेश दिया, 'जाओ, और एक्रोन नगर-राज्य
के देवता बअल-जबूल* से यह पूछो : क्या मैं
अपनी इस बीमारी से बचूंगा अथवा नहीं?'
3 प्रभु का दूत तिश्बे नगर के नबी एलियाह
से बोला, 'उठ, और सामरी राजा के दूतों से
मिलने के लिए जा। तू उनसे यह कहना : ''क्या
इस्राएली राष्ट्र का अपना परमेश्वर नहीं है जो
तुम एक्रोन नगर के देवता बअल-जबूल के
पास पूछने के लिए जा रहे हो? 4इसलिए प्रभु
तुम्हारे महाराज से यों कहता है: जिस पलंग पर
तू पड़ा है, वहां से तू नीचे नहीं उतरेगा। तू
निश्चय ही मरेगा!'' ' अतः एलियाह गए।
5 दूत राजा के पास लौटे। राजा ने उनसे
कहा, 'यह क्या? तुम लौट आए?' 6 दूतों ने
राजा को बताया, 'एक मनुष्य हमसे मिलने के
लिए आया। उसने हमसे यह कहा, ''जाओ,
महाराज के पास लौटो, जिन्होंने तुम्हें भेजा है।
तुम उनसे यह कहना, 'प्रभु यों कहता है : क्या
इस्राएली राष्ट्र का अपना परमेश्वर नहीं है जो
तू एक्रोन नगर के देवता बअल-जबूल के पास
पूछने के लिए दूतों को भेज रहा है? इसलिए
जिस पलंग पर तू पड़ा है, वहां से तू नीचे नहीं
उतरेगा। तू निश्चय ही मरेगा।' '' ' 7राजा ने
उनसे पूछा, 'जो मनुष्य तुमसे मिलने के लिए
आया था, और जिसने तुमसे ये बातें कहीं, वह
कैसा था?' 8उन्होंने राजा को उत्तर दिया, 'वह
रोएंदार वस्त्र पहिने हुए था। उसकी कमर
में चमड़े का पटुका बन्धा था।' राजा ने
कहा, 'निस्सन्देह, वह तिश्बे नगर का एलियाह
था।'
9 राजा ने एलियाह के पास पचास सैनिकों
तथा उनके सेना-नायक को भेजा। सेना-

* अथवा, ''बअल-जबूब''

1 : 1 2 रा 3 : 5 1 : 8 जक 13 : 4; मत 3 : 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नायक गया। उस समय एलियाह पहाड़ की
चोटी पर बैठे हुए थे। सेना-नायक ने एलियाह
को पुकारा, 'ओ परमेश्वर के जन! महाराज ने
यह कहा है: "नीचे उतरो!"' 10परन्तु एलियाह
ने सेना-नायक को यह उत्तर दिया, 'यदि मैं
परमेश्वर का जन हूं, तो आकाश से आग बरसे
और तुझे तथा तेरे पचास सैनिकों को भस्म कर
दे!' तत्काल आकाश से आग बरसने लगी और
आग ने सेना-नायक और उसके पचास सैनिकों
को भस्म कर दिया।

11 राजा ने एलियाह के पास पुनः पचास
सैनिकों और उनके सेना-नायक को भेजा।
सेना-नायक गया। उसने एलियाह को पुकारा,
'ओ परमेश्वर के जन! महाराज यों कहते हैं:
"अविलम्ब नीचे उतरो!"' 12परन्तु एलियाह
ने सेना-नायक को यह उत्तर दिया, 'यदि मैं
परमेश्वर का जन हूं तो आकाश से आग बरसे
और तुझे तथा तेरे पचास सैनिकों को भस्म कर
दे!' तत्काल आकाश से परमेश्वर की आग
बरसने लगी और आग ने सेना-नायक और
पचास सैनिकों को भस्म कर दिया।

13 राजा ने एलियाह के पास पुनः पचास
सैनिकों के तीसरे दल को तथा उनके सेना-
नायक को भेजा। तीसरा सेना-नायक पहाड़ पर
चढ़ा। वह एलियाह के समीप आया। उसने
एलियाह के सम्मुख घुटने टेके, और उनसे यह
निवेदन किया, "हे परमेश्वर के जन! कृपाकर,
मेरे प्राण को और अपने पचास सेवकों के प्राण
को अपनी दृष्टि में तुच्छ मत समझिए। 14देखिए,
आकाश से आग बरसी थी। उसने दो सेना-
नायकों और उनके पचास-पचास सैनिकों के
दल को भस्म कर दिया था। अब, कृपाकर, मेरे
प्राण को अपनी दृष्टि में तुच्छ मत समझिए।'
15तब प्रभु के दूत ने एलियाह से कहा, 'सेना-
नायक के साथ नीचे उतर। उससे मत डर।'
अतः एलियाह उठे। वह सेना-नायक के साथ
नीचे उतरे, और राजा के पास गए। 16उन्होंने
राजा को बताया, 'प्रभु यों कहता है: क्या प्रभु
का वचन पूछने के लिए इस्राएली राष्ट्र का
अपना परमेश्वर नहीं है, जो तूने एक्रोन नगर के
देवता बअल-जबूल के पास दूतों को भेजा?
इसलिए जिस पलंग पर तू पड़ा है, वहाँ से तू
नीचे नहीं उतरेगा। तू निश्चय ही मरेगा।"'

17 यों प्रभु के वचन के अनुसार, जैसा
एलियाह ने कहा था, राजा अहज्याह की मृत्यु
हो गई। अहज्याह के कोई पुत्र नहीं था।
इसलिए उसके स्थान पर उसका भाई यहोराम*
राज्य करने लगा। वह यहूदा प्रदेश के राजा
योराम+ के राज्यकाल के दूसरे वर्ष में सिंहासन
पर बैठा था। योराम यहोशाफट का पुत्र था।

18 अहज्याह के शेष कार्यों का विवरण
'इस्राएल प्रदेश के राजाओं का इतिहास-ग्रन्थ'
में लिखा हुआ है।

एलियाह का स्वर्गारोहण

2 प्रभु एलियाह को बवण्डर के द्वारा स्वर्ग
में उठाने वाला था। एलियाह और एलीशा
ने गिलगाल नगर से प्रस्थान किया। 2एलियाह
ने एलीशा से कहा, 'प्रभु मुझे बेत-एल नगर को
भेज रहा है, इसलिए तू यहीं ठहर।' पर एलीशा
ने उत्तर दिया, 'जीवन्त प्रभु की सौगन्ध! आपके
जीवन की सौगन्ध! मैं आपको कदापि अकेला
नहीं छोड़ूंगा।' अतः वे बेत-एल नगर को गए।
3बेत-एल नगर के नबियों का दल नगर से
बाहर निकला। वे नबी एलीशा के पास आए।
उन्होंने एलीशा से पूछा, 'क्या तुम यह बात
जानते हो कि आज प्रभु तुम्हारे गुरु को तुम्हारे
पास से ऊपर उठाएगा?' 'हां, मैं जानता हूं;'
एलीशा ने कहा, 'पर कृपया, चुप रहो।'

4 फिर एलियाह ने एलीशा से कहा, 'प्रभु
मुझे यरीहो नगर को भेज रहा है, इसलिए तू
यहीं ठहर।' पर एलीशा ने उत्तर दिया, 'जीवन्त
प्रभु की सौगन्ध! आपके जीवन की सौगन्ध!
मैं आपको कदापि अकेला नहीं छोड़ूंगा।' अतः
वे यरीहो नगर में आए। 5यरीहो नगर के नबियों
का दल एलीशा के पास आया। नबियों ने
उससे पूछा, 'क्या तुम यह बात जानते हो कि

---
* अथवा, 'योराम'; + अथवा, 'यहोराम'
1 : 10 लू 9 : 54; प्रक 11 : 5, 20 : 9

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आज प्रभु तुम्हारे गुरु को तुम्हारे पास से ऊपर उठाएगा ?' 'हां, मैं जानता हूं;' एलीशा ने कहा, 'पर, कृपया, चुप रहो।'

6 तब एलियाह ने एलीशा से कहा, 'प्रभु मुझे यर्दन नदी के तट पर भेज रहा है, इसलिए तू यहीं ठहर।' पर एलीशा ने उत्तर दिया, 'जीवन्त प्रभु की सौगन्ध! आपके जीवन की सौगन्ध! मैं आपको कदापि अकेला नहीं छोड़ूंगा।' अतः वे दोनों गए। 7नबियों के दल के पचास नबी भी उनके साथ गए। एलियाह और एलीशा यर्दन नदी के तट पर खड़े थे। नबी-दल उनसे कुछ दूर खड़ा था। 8तब एलियाह ने अपनी चादर ली। उन्होंने चादर को ऐंठा और यर्दन नदी के जल पर प्रहार किया। तब जल इधर और उधर दो भागों में बंट गया। वे सूखी भूमि से होकर उस पार जाने लगे। 9जब वे नदी पार कर चुके तब एलियाह ने एलीशा से कहा, 'इसके पहले कि मैं तेरे पास से अलग किया जाऊं, तू मुझसे वर मांग। बोल, मैं तेरे लिए क्या करूं ?' एलीशा ने उत्तर दिया, 'कृपया, मुझे यह वर दीजिए कि मैं आपका उत्तराधिकारी बनूं, और आपके अधिकार और शक्ति का दो गुना भाग मुझे प्राप्त हो।** ' 10एलियाह ने कहा, 'तूने कठिन मांग की। फिर भी, जब मैं तेरे पास से अलग किया जाऊंगा, तब, यदि तू मुझे देख सकेगा तो तेरी मांग पूरी होगी। पर यदि तू मुझे नहीं देख सकेगा तो वह पूरी नहीं होगी।' 11वे चलते-चलते बातें कर रहे थे। सहसा एक अग्निमय रथ और अग्निमय अश्वों ने उन्हें अलग कर दिया। एलियाह बवण्डर पर सवार होकर स्वर्ग को जाने लगे। 12एलीशा यह देखता रहा। वह रो-रोकर पुकारता रहा, 'ओ मेरे पिता! ओ मेरे पिता! ओ इस्राएली राष्ट्र के सारथी! ओ हमारे अश्वारोही!+ ' उसके पश्चात् एलियाह उसकी आंखों से ओझल हो गए।

नबी एलियाह का उत्तराधिकारी : नबी एलीशा

एलीशा ने शोक प्रकट करने के लिए अपना अंगरखा पकड़ा, और उसको दो टुकड़ों में फाड़ दिया। 13उन्होंने एलियाह की चादर उठा ली, जो उनके ऊपर से नीचे गिर गई थी। वह यर्दन नदी की ओर लौटे, और उसके तट पर खड़े हो गए। 14उन्होंने एलियाह की चादर ली, और उससे यर्दन नदी के जल पर प्रहार किया। उन्होंने यह कहा, 'एलियाह का प्रभु परमेश्वर कहां है ?' जब एलीशा ने जल पर प्रहार किया, तब जल इधर और उधर दो भागों में बंट गया। एलीशा उस पार चले गए।

15 यरीहो नगर के नबियों का दल दूर खड़े-खड़े एलीशा को देख रहा था। उन्होंने कहा, 'एलियाह की आत्मा एलीशा पर ठहर गई है।' वे एलीशा से भेंट करने के लिए आए। उन्होंने भूमि पर गिरकर एलीशा को साष्टांग प्रणाम किया। 16उन्होंने एलीशा से कहा, 'हमारे पास, पचास महाबली सेवक हैं। आप अनुमति दीजिए कि वे जाएं, और आपके गुरु की खोज करें। यह सम्भव है कि प्रभु का आत्मा उनको उठाकर ले गया है और उसने उनको किसी पहाड़ पर अथवा घाटी में फेंक दिया हो।' एलीशा ने कहा, 'सेवकों को मत भेजो।' 17परन्तु उन्होंने एलीशा पर इतना दबाव डाला कि वह विवश हो गए। एलीशा ने कहा, 'अच्छा, सेवकों को भेज दो।' अतः नबियों ने पचास सेवक भेजे, जिन्होंने तीन दिन तक एलियाह को ढूंढ़ा; पर वह उनको नहीं मिले। 18तब वे पचास सेवक एलीशा के पास लौट आए। उस समय एलीशा यरीहो नगर में ठहरे हुए थे। एलीशा उनसे बोले, 'मैंने तुमसे कहा था न, कि मत जाओ।'

एलीशा के दो आश्चर्यपूर्ण कार्य

19 नगर के लोगों ने एलीशा को यह बताया, 'जैसा हमारे गुरु देख रहे हैं, निस्सन्देह, इस नगर की स्थिति उत्तम है। परन्तु पानी खराब है जिसके कारण यहां गर्भपात हो जाता है।' 20एलीशा ने आदेश दिया, 'मेरे पास एक नया

** शब्दश: "आपकी आत्मा का दुगुना भाग मुझे प्राप्त हो।" + शब्दश:, 'इस्राएल का रथ और उसके घुड़सवार'

2 : 8 नि 14 : 21; यहो 3 : 16 **2 : 9** व्य 21 : 17 **2 : 11** 2 रा 6 : 17; प्रक 11 : 12 **2 : 12** 2 रा 13 : 4; प्रव 48 : 9,12 **2 : 16** 1 रा 18 : 12; प्रे 8 : 39 **2 : 17** मला 4 : 5

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

चषक* लाओ, और उसमें कुछ नमक डालो।'
वे एलीशा के पास चषक लाए। 21एलीशा पानी
के झरने के पास गए। उन्होंने झरने में नमक
फेंका और यह कहा, 'प्रभु यों कहता है: मैंने
इस पानी को शुद्ध कर दिया। अब इससे न
किसी की मृत्यु होगी और न किसी का
गर्भपात।' 22अत: एलीशा के वचन के अनुसार
पानी शुद्ध हो गया। वह आज तक शुद्ध है।
23 वहां से एलीशा बेत-एल नगर को गए।
जब वह पहाड़ी मार्ग पर चढ़ रहे थे तब छोटे-
छोटे लड़के नगर से बाहर निकले। वे एलीशा
को चिढ़ाने लगे। उन्होंने पुकारा, 'ओ गंजे,
ऊपर चढ़ जा! ओ गंजे, ऊपर चढ़ जा!'
24एलीशा पीछे मुड़े। उन्होंने लड़कों को देखा,
और प्रभु के नाम से उन्हें शाप दिया। उसी क्षण
जंगल से दो रीछनियां निकलीं और उन्होंने
बयालीस लड़कों को चीर-फाड़ दिया।
25 वहां से एलीशा कर्मेल पहाड़ को गए।
उसके पश्चात् वह वहां से सामरी नगर को लौट
आए।

इस्राएल प्रदेश पर यहोराम का राज्य

3 यहूदा प्रदेश के राजा यहोशाफट के
राज्यकाल के अठारहवें वर्ष अहाब का पुत्र
यहोराम** सामरी नगर में इस्राएल प्रदेश पर
राज्य करने लगा। उसने बारह वर्ष तक राज्य
किया। 2जो कार्य प्रभु की दृष्टि में बुरा था,
उसने वही किया। परन्तु जैसा उसके पिता और
उसकी माता ने किया था वैसा उसने नहीं
किया। जो स्तम्भ बअल देवता के लिए उसके
पिता ने प्रतिष्ठित किया था, उसको यहोराम ने
गिरा दिया। 3फिर भी जो पाप यारोबआम बेन
नबाट ने इस्राएल प्रदेश की जनता से कराया था,
उसी पाप से यहोराम भी चिपका रहा। वह
उससे अलग नहीं हुआ।

एलीशा की विजय-वाणी

4 मोआब देश का राजा मेशा चारणभूमि का
मालिक+ था। वह इस्राएल प्रदेश के राजा को
वार्षिक कर के रूप में एक लाख मेमने, और
एक लाख मेढ़ों का ऊन देता था। 5परन्तु जब
अहाब की मृत्यु हो गई, तब उसने इस्राएल
प्रदेश के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। 6उसी दिन
राजा यहोराम सामरी नगर से बाहर निकला।
उसने समस्त इस्राएल प्रदेश के सैनिकों को
एकत्र किया और युद्ध की तैयारी की। 7तत्पश्चात्
उसने यहूदा प्रदेश के राजा यहोशाफट को यह
सन्देश भेजा, 'मोआब देश के राजा ने मेरे
विरुद्ध विद्रोह कर दिया है। क्या आप मोआब
देश से युद्ध करने के लिए मेरे साथ चलेंगे?'
यहूदा प्रदेश के राजा ने उत्तर भेजा, 'निस्सन्देह,
मैं आपके साथ जाऊंगा। जो मेरा है, वह
आपका है—मैं, मेरी सेना, मेरे रथ।' 8फिर उसने
पूछा, 'हम किस मार्ग से चढ़ाई करेंगे?'
यहोराम ने बताया, 'एदोम देश के निर्जन-मार्ग
से।'
9 यों इस्राएल प्रदेश के राजा, यहूदा प्रदेश
के राजा और एदोम देश के राजा ने प्रस्थान
किया। वे सात दिन तक चक्करदार मार्ग पर
चलते रहे। तब उनके पास सेना, और वाहनों
में जुते पशुओं के लिए पानी नहीं रहा।
10इस्राएल प्रदेश के राजा ने कहा, 'आह! ऐसा
दिखाई देता है कि प्रभु ने हम-तीन राजाओं को
मोआबी राजा के हाथ में सौंपने के लिए यहां
बुलाया है।' 11यहोशाफट ने पूछा, 'क्या यहां
प्रभु का नबी नहीं है, जिसके माध्यम से हम प्रभु
से पूछ सकें?' इस्राएल प्रदेश के एक राज-
कर्मचारी ने बताया, 'यहां एलीशा बेन-शाफ़ट
हैं। वह नबी एलियाह के निजी सेवक++ थे।'
12यहोशाफट ने कहा, 'प्रभु का वचन एलीशा
के साथ है।' अत: इस्राएल प्रदेश का राजा,
यहूदा प्रदेश का राजा और एदोम देश का राजा
एलीशा के पास गए।
13 एलीशा ने इस्राएल प्रदेश के राजा से
कहा, 'मेरा आपसे क्या काम? आप अपने पिता
के नबियों के पास, अपनी मां के नबियों के पास

---

* अथवा, 'कटोरा' ** अथवा, 'योराम', एकरूपता के लिए इस्राएल प्रदेश के राजा का नाम 'यहोराम' ही लिखा जाएगा।
\+ अथवा, ''झुंड के झुंड का चरवाहा'' ++ शब्दश:, 'एलियाह के हाथ धुलाया करते'।

2 : 21 नि 15 : 25 **3 : 7** 1 रा 22 : 4 **3 : 11** 1 रा 22 : 7; आमो 3 : 7

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जाइए।' इस्राएल प्रदेश के राजा ने कहा, 'नहीं, ऐसा मत कहो। प्रभु ने ही हम-तीन राजाओं को मोआब देश के राजा के हाथ में सौंपने के लिए यहां बुलाया है।' 14एलीशा ने कहा, 'जिस स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु की सेवा मैं करता हूं, उस जीवन्त प्रभु की सौगन्ध! यदि मैं यहूदा प्रदेश के राजा यहोशाफट की उपस्थिति का सम्मान न करता तो मैं आंख उठाकर भी आपकी ओर न देखता, मैं आपका मुंह भी न देखता। 15खैर, अब मेरे पास वीणा बजाने वाले को लाओ।' जब वीणा-वादक ने वीणा बजाई, तब प्रभु की शक्ति एलीशा पर उतरी। 16एलीशा ने का, 'प्रभु यों कहता है: "मैं इस घाटी को जलाशयों से भर दूंगा।" 17प्रभु यों कहता है : "तुम न वर्षा को देखोगे, और न हवा को। यह घाटी पानी से भर जाएगी। तब तुम, तुम्हारे सैनिक और तुम्हारे वाहन-पशु पानी पीएंगे।" 18प्रभु की दृष्टि में यह साधारण बात है। वह मोआब देश को तुम्हारे हाथ में सौंप देगा, 19और तुम सब किलाबन्द नगरों को, और सब प्रमुख नगरों को ध्वस्त कर दोगे। तुम उसके समस्त उत्तम वृक्षों को काट दोगे। तुम उसके झरनों को पूर दोगे। तुम उसके उपजाऊ खेतों में पत्थर बिखेर कर उनको अनुपजाऊ बना दोगे।'

20 दूसरे दिन सबेरे, बलि-अर्पण के समय, एदोम देश की दिशा से पानी उमड़ा और सारा देश पानी से भर गया।

21 मोआब देश के लोगों ने सुना कि राजा उनसे युद्ध करने के लिए आए हैं। अत: छोटे से बड़े तक, सब पुरुष, जो शस्त्र धारण कर सकते थे, बुलाए गए। वे सीमा-चौकी पर नियुक्त किए गए। 22वे सबेरे सोकर उठे। सूर्य की किरणें जल पर पड़ीं। मोआबी सैनिकों को जल दूर से रक्त के समान दिखाई दिया। 23उन्होंने कहा, 'यह खून है! राजाओं ने निश्चय ही आपस में युद्ध किया, और एक-दूसरे का वध कर दिया। मोआबियो! अब लूट पर टूट पड़ो!' 24जब वे इस्राएली सेना के शिविर के समीप आए तब इस्राएली सैनिक उठे, और उन्होंने मोआबियों पर आक्रमण कर दिया। मोआबी सैनिक उनके सम्मुख से भागे। इस्राएली सैनिक आगे बढ़ते गए, और मोआबियों को काटते गए। 25उन्होंने उनके नगरों को खण्डहर कर दिया। प्रत्येक इस्राएली सैनिक ने उनके उपजाऊ खेतों पर एक-एक पत्थर फेंका, और उनको पत्थरों से पाट दिया। उन्होंने पानी के झरनों को पूर दिया। उनके उत्तम वृक्ष काट डाले। अन्त में राजधानी कीर-हरेशेत ही शेष रही। पर उनको भी गोफन चलाने वाले इस्राएली सैनिकों ने घेर लिया, और नष्ट कर दिया।

26 जब मोआब के राजा ने देखा कि वह युद्ध हार रहा है तब उसने अपने साथ सात सौ तलवारधारी सैनिक लिये और शत्रु-सेना को चीरता हुआ एदोम देश के राजा तक पहुंचने का प्रयत्न करने लगा। परन्तु वह पहुंच न सका। 27तत्पश्चात् उसने युवराज को लिया, जो उसके स्थान पर राज्य करने वाला था, और नगर के परकोटे पर उसको अग्नि-बलि के रूप में चढ़ाया। तब इस्राएली सेना पर बड़ा प्रकोप हुआ। वे मोआब के राजा के पास से पीछे हट गए, और अपने देश को लौट गए।

विधवा का तेल-पात्र

4 एक बार नबी-संघ के किसी नबी की विधवा ने एलीशा की दुहाई दी। विधवा ने कहा, 'आपके सेवक, मेरे पति की मृत्यु हो गई है। आप जानते हैं कि मेरे पति प्रभु की कितनी भक्ति करते थे। अब, सूदखोर मेरे दो पुत्रों को लेने और उनको गुलाम बनाने के लिए आया है।' 2एलीशा ने उससे पूछा, 'तुम्हारे लिए क्या करूं? मुझे बताओ, तुम्हारे घर में क्या है?' विधवा ने कहा, 'आपकी सेविका के पास, तेल की एक कुप्पी के अतिरिक्त कुछ नहीं है।' 3एलीशा ने कहा, 'जाओ, और अपने सब पड़ोसियों के बर्तन मांगो। वे बर्तन खाली हों और कम न हों। 4तत्पश्चात् तुम अपने पुत्रों के साथ घर में आना। घर का द्वार भीतर से बन्द

3 : 15 1 शम 10 : 5

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

करना। उसके बाद उन सब बर्तनों में तेल
उण्डेलना। जब एक बर्तन तेल से भर जाए तब
उसको अलग रख देना। ऐसा ही सब बर्तनों के
साथ करना।'
5 विधवा एलीशा के पास से घर चली गई।
उसने पुत्रों के भीतर आने के बाद द्वार बन्द कर
लिया। पुत्र उसके पास बर्तन लाते गए, और वह
उनमें तेल उण्डेलती गई। 6जब सब बर्तन तेल
से भर गए तब उसने अपने एक पुत्र से कहा,
'मेरे पास और बर्तन ला।' पुत्र ने कहा, 'अब
और बर्तन नहीं हैं।' तेल बहना तत्काल बन्द
हो गया।
7 विधवा परमेश्वर के जन एलीशा के पास
आई। उसने उनको यह सब बताया। एलीशा ने
कहा, 'जाओ, तेल को बेच दो, और उससे
अपना कर्ज चुका दो। बचे हुए तेल से तुम्हारा
और तुम्हारे पुत्रों का जीवन-निर्वाह हो सकता
है।'

एलीशा और शूनेम वासी महिला

8 एक दिन एलीशा शूनेम नगर से गुजरे।
वहां एक धनवान महिला रहती थी। उसने
एलीशा को भोजन के लिए विवश किया। इस
घटना के बाद जब-जब एलीशा उस मार्ग से
गुजरते थे, वह भोजन करने के लिए वहां रुक
जाते थे। 9एक दिन महिला ने अपने पति से
कहा, 'देखो, मैं जानती हूं कि यह व्यक्ति जो
हमारे पास निरन्तर आया करते हैं, परमेश्वर के
पवित्र जन हैं। 10क्यों न हम उनके लिए अपने
मकान की छत पर एक छोटी बरसाती* बना दें।
हम वहां उनके लिए एक पलंग, एक मेज, एक
कुर्सी और एक दीया रख देंगे। जब-जब वह
हमारे पास आएंगे, वह उसमें ठहरेंगे।'
11 एक दिन एलीशा वहां आए। वह
बरसाती में गए और वहां लेट गए। 12एलीशा
ने अपने सेवक गेहजी से कहा, 'महिला को
बुला।' सेवक ने शूनेमवासी महिला को बुलाया।
वह आई और एलीशा के सम्मुख खड़ी हो
गई। 13एलीशा ने अपने सेवक से कहा, 'इनसे
कह : देखो, तुमने हमारी सुविधा के लिए इतनी
चिन्ता की। अब तुम्हारे लिए क्या करना
चाहिए? क्या तुम चाहती हो कि तुम्हारे लिए
महाराज अथवा सेनापति से सिफारिश की
जाए?' शूनेमवासी महिला बोली, 'मैं अपने
निज लोगों के मध्य रहते हुए सन्तुष्ट हूँ।'
14एलीशा ने अपने सेवक से पूछा, 'इस महिला
के लिए क्या करना चाहिए?' गेहजी ने बताया,
'इसको पुत्र नहीं हुआ और इसका पति भी वृद्ध
है।' 15एलीशा ने कहा, 'महिला को बुला।'
गेहजी ने उसको फिर बुलाया। वह आई और
द्वार पर खड़ी हो गई। 16एलीशा ने कहा, 'अगले
वर्ष इसी समय तुम्हारी गोद में एक पुत्र
खेलेगा।' पर महिला ने कहा, 'नहीं, नहीं, मेरे
स्वामी, ओ परमेश्वर के जन! कृपया, अपनी
सेविका से झूठ मत बोलिए!'
17 जैसा एलीशा ने कहा था, वैसा ही हुआ।
शूनेमवासी महिला गर्भवती हुई। अगले वर्ष
नियत समय पर उसको पुत्र उत्पन्न हुआ।
18 शूनेमवासी महिला का पुत्र बड़ा हुआ।
एक दिन वह अपने पिता के पास गया, जो
फसल काटने वालों के साथ था। 19उसने अपने
पिता से कहा, 'पिताजी, मेरा सिर! आह, मेरा
सिर!' पिता ने अपने सेवक से कहा, 'इसे
इसकी मां के पास ले जाओ।' 20सेवक ने बालक
को उठाया, और उसको उसकी मां के पास ले
गया। बालक दोपहर तक अपनी मां की गोद
में बैठा रहा। तत्पश्चात् वह मर गया। 21बालक
की मां एलीशा की बरसाती में गई। उसने उनके
पलंग पर बालक को लिटा दिया। तत्पश्चात्
वह कमरे से बाहर निकली और द्वार बन्द कर
दिया। 22उसने अपने पति को बुलाया, और
उससे कहा, 'एक सेवक और एक गधे को मेरे
पास भेजिए, जिससे मैं शीघ्र ही परमेश्वर के
जन के पास जाऊं और तुरन्त लौट सकूं।'
23उसके पति ने कहा, 'तुम आज ही उनके पास
क्यों जाना चाहती हो? आज न नवचन्द्र पर्व है,
और न विश्राम-दिवस।' परन्तु उसने कहा,

---

* मकान की खुली छत पर बनाया गया छोटा कमरा

4 : 5 1 रा 17 : 12 **4 : 16** उत 18 : 10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'कल्याण ही होगा।' [24]वह गधे पर सवार हुई। उसने अपने सेवक को आदेश दिया, 'हांक! तेज चल! जब तक मैं तुझे धीरे हांकने को न कहूंगी तब तक तू धीरे मत हांकना।' [25]यों वह चली गई। वह कर्मेल पर्वत पर परमेश्वर के जन एलीशा के पास पहुंची।

जब परमेश्वर के जन एलीशा ने उसे दूर से देखा तब उन्होंने अपने सेवक गेहजी से कहा, 'देख, शूनेमवासी महिला आ रही है। [26]तू उससे भेंट करने के लिए दौड़ कर जा। तू उससे यह पूछना, "तुम सकुशल तो हो? तुम्हारे पति सकुशल हैं? तुम्हारा पुत्र सकुशल है?"' शूनेमवासी महिला ने कहा, 'सब सकुशल है।' [27]वह कर्मेल पर्वत पर पहुंची। उसने परमेश्वर के जन एलीशा के पैर पकड़ लिये। गेहजी उसको बलपूर्वक हटाने लगा। परन्तु परमेश्वर के जन एलीशा ने गेहजी से कहा, 'इनको छोड़ दे। इनके प्राण व्याकुल हैं। किन्तु प्रभु ने मुझसे यह बात छिपा रखी है। उसने मुझ पर प्रकट नहीं किया।' [28]शूनेमवासी महिला ने कहा, 'क्या मैंने स्वामी से पुत्र मांगा था? क्या मैंने यह नहीं कहा था, "मुझे धोखा मत दीजिए"?' [29]एलीशा ने गेहजी से कहा, 'तू तुरन्त तैयार हो। अपने हाथ में मेरी सोंटी ले, और अविलम्ब जा। यदि मार्ग में तुझे कोई परिचित व्यक्ति मिलेगा, तो तू उसका कुशल-मंगल पूछने के लिए मत रुकना। यदि मार्ग में कोई व्यक्ति तेरा कुशल-मंगल पूछेगा तो तू उत्तर देने के लिए मत रुकना। तू बालक के मुख पर मेरी सोंटी रख देना।' [30]बालक की मां ने कहा, 'जीवन्त प्रभु की सौगन्ध! आपके प्राण की सौगन्ध! मैं आपको नहीं छोड़ूंगी आप मेरे साथ चलिए।' अत: एलीशा उठे और उसके साथ गए।

31 गेहजी एलीशा और बालक की मां से पहले चला गया। उसने बालक के मुख पर सोंटी रखी। किन्तु न कोई आवाज सुनाई दी, और न जीवन का कोई लक्षण दिखाई दिया। अत: वह एलीशा से मिलने के लिए लौटा। उसने एलीशा को बताया, 'बालक जीवित नहीं हुआ।'

32 एलीशा ने घर में प्रवेश किया। उन्होंने देखा कि बालक मर गया है और उनके पलंग पर पड़ा है। [33]वह कमरे में आए। उन्होंने भीतर से द्वार बन्द कर लिया। तत्पश्चात् उन्होंने प्रभु से प्रार्थना की। [34]तब वह पलंग पर चढ़े, और बालक पर यों लेट गए कि उनका मुंह बालक के मुंह पर, उनकी आंखें बालक की आंखों पर और उनकी हथेली बालक के हथेली पर हो गई। वह बालक के शरीर पर पसर गए। बालक का शरीर गर्म होने लगा। [35]एलीशा उठे। उन्होंने पलंग से उतरकर कमरे में एक बार चहलकदमी की। वह पलंग पर पुन: चढ़े, और बालक के शरीर पर पसर गए। तब बालक ने सात बार छींका, और अपनी आँखें खोल दीं। [36]एलीशा ने गेहजी को बुलाया। उन्होंने उससे कहा, 'बालक की मां को बुला।' गेहजी ने उसे बुलाया। वह एलीशा के पास आई। एलीशा ने कहा, 'अपने पुत्र को उठा ले।' [37]बालक की मां कमरे के भीतर गई, और एलीशा के पैरों पर गिर पड़ी। उसने भूमि पर लेटकर उनको साष्टांग प्रणाम किया। तत्पश्चात् उसने अपने पुत्र को उठाया, और कमरे से बाहर चली गई।

विष को अमृत बनाना

38 एलीशा गिलगाल नगर को लौट गए। उस समय देश में अकाल था। एक दिन नबियों का दल एलीशा के सम्मुख बैठा था। एलीशा ने अपने सेवक से कहा, 'चूल्हे पर हण्डा चढ़ा, और नबियों के लिए भोजन तैयार कर।' [39]अत: एक सेवक साग-भाजी तोड़ने के लिए खेत में गया। वहां उसे एक बनैली लता मिली। उसने उससे गोद भर इंद्रायन तोड़ लिये। वह नहीं जानता था कि ये फल क्या हैं। वह लौटा। उसने उनको काटा, और हण्डे में डाल दिया। [40]सेवकों ने नबियों के खाने के लिए भोजन परोसा। जब नबियों ने साग खाया तब वे चिल्ला पड़े, 'ओ परमेश्वर के जन! हण्डे में मौत है!' वे भोजन न खा सके। [41]एलीशा ने कहा, 'आटा लाओ।' एलीशा ने हण्डे में आटा

---

4 : 29 लू 10 : 4 **4 : 33** मत 6 : 6 **4 : 34** प्रे 20 : 10 **4 : 35** 1 रा 17 : 21

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
फेंका और यह कहा, 'अब लोगों को भोजन
परोसो, और उनको खाने दो।' अब हण्डे में
कोई हानिकारक वस्तु नहीं रह गई थी।

बीस रोटी और सौ मेहमान

42 एक दिन एक किसान बअल-शालीशा
गांव से आया। वह परमेश्वर के जन के पास
प्रथम उपज की जौ की बीस रोटियां, और
अपनी हथेली में हरी बालें लाया था। एलीशा
ने अपने सेवक से कहा, 'लोगों को यह परोस
दे। वे इसको खाएं।' 43परन्तु एलीशा के सेवक
ने कहा, 'मैं सौ आदमियों के सामने इतना थोड़ा
भोजन कैसे परोस सकता हूं?' एलीशा ने अपने
कथन को दुहराया, 'लोगों को खाने के लिए
यह परोस दे। प्रभु यों कहता है : "लोगों के
खाने के पश्चात् भी यह बच जाएगा।"'
44अत: सेवक ने लोगों के सामने उसको परोस
दिया। लोगों ने उसको खाया। वह खाने के बाद
भी बच गया, जैसा प्रभु ने कहा था।

कुष्ठरोगी नामान और नबी एलीशा

5 नामान सीरिया देश के राजा का सेनापति
था। वह अपने स्वामी की दृष्टि में महान्
पुरुष था। उस पर राजा की विशेष कृपा थी;
क्योंकि प्रभु ने उसके माध्यम से सीरिया देश को
विजय प्रदान की थी। नामान महाबली था;
किन्तु वह कुष्ठ-रोगी था।

2 सीरिया देश के सैनिक इस्राएल प्रदेश पर
छापा मारते थे। एक बार वे छापा के दौरान
इस्राएल प्रदेश से एक छोटी लड़की को पकड़
कर ले गए। वह नामान की पत्नी की सेवा करने
लगी। 3एक दिन उसने अपनी मालकिन से
कहा, 'भला होता कि हमारे मालिक सामरी
नगर में रहने वाले नबी के सम्मुख जाते। नबी
मालिक को उनके कुष्ठ-रोग से स्वस्थ कर
सकते हैं।' 4अत: नामान अपने स्वामी, राजा के
पास गया। उसने राजा को बताया कि इस्राएल
प्रदेश की लड़की यह बात कहती है। 5सीरिया
देश के राजा ने कहा, 'तुम अभी चले जाओ। मैं
इस्राएल प्रदेश के राजा को एक पत्र भेज दूंगा'।
अत: नामान ने प्रस्थान किया। वह अपने
साथ लगभग तीन सौ पचास किलो चांदी, सत्तर
किलो सोना और दस जोड़ी राजसी वस्त्र ले
गया। 6वह इस्राएल प्रदेश के राजा के पास पत्र
लाया, जिसमें यह लिखा था, 'जब यह पत्र
तुम्हारे पास पहुंचेगा, तब तुम समझ लेना कि
मैंने अपने सेवक नामान को तुम्हारे पास भेजा
है। तुम उसे उसके कुष्ठ-रोग से स्वस्थ कर
देना।' 7जब इस्राएल प्रदेश के राजा ने यह पत्र
पढ़ा, तब उसने संकट और घृणा को प्रकट
करने के लिए अपने वस्त्र फाड़े और यह कहा,
'क्या मैं ईश्वर हूं, जो प्राण लेता और प्राण देता
है! देखो, इस आदमी ने मेरे पास सन्देश भेजा
है कि मैं इस मनुष्य को उसके कोढ़ से स्वस्थ
करूं! इसकी बात सुनो, ध्यान दो, और देखो
कि सीरिया देश का राजा किस प्रकार मुझसे
युद्ध करने का बहाना ढूंढ़ रहा है।'

8 जब परमेश्वर के जन एलीशा ने सुना कि
इस्राएल प्रदेश के राजा ने अपने वस्त्र फाड़
दिये, तब उन्होंने राजा को यह सन्देश भेजा :
'महाराज, आपने अपने वस्त्र क्यों फाड़े?
सेनापति को मेरे पास आने दीजिए। तब उसे
अनुभव होगा कि इस्राएल प्रदेश में एक नबी
है।' 9अत: नामान अपने घोड़ों और रथों के
साथ आया। वह एलीशा के घर के द्वार पर खड़ा
हो गया। 10एलीशा ने सन्देशवाहक के मुंह से
उसको यह सन्देश भेजा, 'जाओ, यर्दन नदी के
जल में सात बार स्नान करो। तुम्हारी त्वचा
पहले-जैसी हो जाएगी, और तुम शुद्ध हो
जाओगे।' 11परन्तु नामान नाराज हुआ। उसने
कहा, 'मैं यह सोचता था कि नबी घर से बाहर
निकलेगा। वह मेरे पास खड़ा होगा। वह अपने
प्रभु परमेश्वर के नाम का आह्वान करेगा। वह
मेरे शरीर के दागों पर अपना हाथ फेरेगा, और
कुष्ठ-रोग से मुझे स्वस्थ करेगा। 12क्या दमिश्क
नगर की अबाना और फरपर नदियों का जल
इस्राएल प्रदेश के सम्पूर्ण जल से उत्तम नहीं है?
क्या मैं उन नदियों में स्नान करके शुद्ध नहीं हो
सकता?' नामान मुड़ा और क्रोध में उफनता
हुआ चला गया।

4 : 44 मत 14 : 20; 15 : 37 **5 : 1** लू 4 : 27 **5 : 7** उत 30 : 2;1 शम 2 : 6 **5 : 10** यो 9 : 7

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

13 नामान के कर्मचारी उसके समीप आए।
उन्होंने नामान से कहा, 'हमारे पिता, यदि नबी
ने आपको कोई बड़ा काम करने को कहा होता
तो क्या आप उसको नहीं करते? उनका यह
कथन, "स्नान करो और शुद्ध हो जाओ।"
कितना सहज है।' 14अत: नामान यर्दन नदी के
तट पर गया। वहां उसने परमेश्वर के जन
एलीशा के कथन के अनुसार, यर्दन नदी के जल
में सात बार डुबकी लगाई। तब उसकी त्वचा
पुन: शिशु की त्वचा के समान चिकनी हो गई,
और वह शुद्ध हो गया।

15 तब नामान अपने दल-बल के साथ
परमेश्वर के जन एलीशा के पास लौटा। वह
उनके सम्मुख खड़ा हुआ और उसने यह कहा,
'अब मुझे अनुभव हुआ कि इस्राएल प्रदेश के
अतिरिक्त पृथ्वी के किसी भी देश में परमेश्वर
नहीं है। अत: अब अपने सेवक की ओर से यह
भेंट स्वीकार कीजिए।' 16परन्तु एलीशा ने कहा,
'जीवन्त परमेश्वर की सौगन्ध, जिसकी सेवा
मैं करता हूं! मैं कुछ भी भेंट स्वीकार नहीं
करूंगा।' नामान ने बहुत अनुनय-विनय की,
किन्तु एलीशा ने अस्वीकार कर दिया। 17अन्त
में नामान ने कहा, 'यदि आप भेंट स्वीकार नहीं
करते तो मुझे दो खच्चरों पर यहां की मिट्टी ले
जाने दीजिए। अब से मैं, आपका सेवक, प्रभु
परमेश्वर के अतिरिक्त अन्य देवता को अग्नि-
बलि अथवा पशु-बलि अर्पित नहीं करूंगा।
18मेरे इस कार्य के लिए प्रभु अपने सेवक को
क्षमा करे: जब मेरे महाराज रिम्मोन देवता के
मन्दिर में जाएंगे और वहां मेरे हाथों का सहारा
लेकर उसको साष्टांग प्रणाम करेंगे, तब मुझे भी
रिम्मोन देवता के मन्दिर में साष्टांग प्रणाम
करना पड़ेगा। प्रभु अपने सेवक को उसके इस
कार्य के लिए क्षमा करे।' 19एलीशा ने उससे
कहा, 'सकुशल चले जाओ।'

जब नामान उससे कुछ दूर चला गया 20तब
परमेश्वर के जन एलीशा के सेवक गेहजी ने
यह सोचा, 'मेरे गुरु ने इस सीरियाई नामान को
यों ही छोड़ दिया। जो भेंट वह लाया था,
उसको उन्होंने उसके हाथ से स्वीकार नहीं
किया। जीवन्त प्रभु की सौगन्ध! मैं उसके पीछे
दौड़कर जाऊंगा, और उससे कुछ भेंट लूंगा।'
21अत: गेहजी ने नामान का पीछा किया। जब
नामान ने देखा कि कोई व्यक्ति उसके पीछे
दौड़ता हुआ आ रहा है, तब वह अपने रथ से
नीचे उतरा। वह गेहजी से मिला। उसने उससे
पूछा, 'सब सकुशल है?' 22गेहजी ने कहा,
'सब सकुशल है। मेरे गुरुजी ने आप से यह
कहने के लिए मुझे भेजा है, "अभी-अभी मेरे
पास एफ्रइम पहाड़ी प्रदेश से नबी-संघ के दो
युवा नबी आए हैं। कृपया, पैंतीस किलो चांदी,
और दो जोड़े राजसी वस्त्र दीजिए।" '

23 नामान ने कहा, 'अवश्य! पैंतीस किलो
ही क्यों, सत्तर किलो ले जाओ।' नामान ने उस
पर दबाव डाला कि वह सत्तर किलो चांदी ले
ले। अत: नामान ने दो बोरों में सत्तर किलो
चांदी, और दो जोड़े राजसी वस्त्र रखे, और
उनको अपने दो सेवकों पर लाद दिया। वे
उनको लादकर गेहजी के आगे-आगे ले गए।

24 गेहजी पहाड़ी पर पहुंचा। उसने सेवकों
के हाथ से बोरे और वस्त्र ले लिये, और उनको
अपने घर में रख दिया। उसके बाद उसने
सेवकों को भेज दिया। सेवक चले गए।

25 गेहजी भीतर गया और अपने गुरु के
सम्मुख खड़ा हुआ। एलीशा ने उससे पूछा,
'गेहजी, तू कहां गया था?' उसने उत्तर दिया,
'आपका सेवक कहीं नहीं गया था।' 26एलीशा
ने उससे कहा, 'सेनापति तुझसे भेंट करने के
लिए रथ से उतरा था। क्या यह बात मेरे हृदय
से छिपी है? यह सच है कि अब तेरे पास
रुपया-पैसा हो गया, और तू उससे बाग-
बगीचे, जैतून के कुंज, अंगूर-उद्यान, भेड़-
बकरी, गाय-बैल, दास-दासियां खरीद सकता
है। 27किन्तु नामान का कुष्ठ-रोग तुझे और तेरे
वंशजों को सदा लगा रहेगा।'

गेहजी उसी क्षण बर्फ के समान सफेद कोढ़ी
हो गया। वह एलीशा के सम्मुख से बाहर चला
गया।

5 : 14 मत 3 : 13-15; लू 4 : 27 5 : 27 नि 4 : 6; लेव 13 : 3; गण 12 : 10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कुल्हाड़ी की फाल का पानी पर तैरना

6 एक दिन नबियों के दल ने एलीशा से कहा,
'यह स्थान, जहां हम आपकी छत्र-छाया
में निवास कर रहे हैं, हमारे लिए पर्याप्त नहीं
है। 2अत: आइए, हम यर्दन नदी के तट पर
चलें। वहां हममें से प्रत्येक व्यक्ति एक-एक
बल्ली काटेगा, और वहां हम अपनी झोपड़ियां
बनाएंगे।' एलीशा ने कहा, 'जाओ।' 3परन्तु एक
नबी ने निवेदन किया, 'कृपया, आप अपने
शिष्यों के साथ, हमारे साथ, चलिए।' एलीशा
बोले, 'मैं तुम्हारे साथ चलूंगा।' 4वह नबियों के
साथ गए। वे यर्दन नदी के तट पर आए। उन्होंने
पेड़ काटना आरम्भ किया। 5जब एक नबी बल्ली
को काटकर गिरा रहा था, तब अचानक उसकी
कुल्हाड़ी की फाल बेंट से निकलकर यर्दन नदी
के पानी में गिर गई। वह चिल्लाया, 'ओह!
गुरुजी, यह कुल्हाड़ी उधार की थी।' 6परमेश्वर
के जन एलीशा ने पूछा, 'किस स्थान पर
कुल्हाड़ी गिरी है?' नबी ने एलीशा को स्थान
दिखाया। एलीशा ने लकड़ी का एक टुकड़ा
काटा, और उसको उस स्थान पर फेंक दिया,
और यों फाल के लोहे को पानी पर तैरा दिया।
7तब एलीशा ने कहा, 'उसको उठा लो।' नबी
ने अपना हाथ बढ़ाया, और उसको उठा लिया।

एलीशा और सीरियाई सेना

8 एक बार सीरिया देश का राजा इस्राएल
प्रदेश के राजा से युद्ध कर रहा था। उसने अपने
दरबारियों से विचार-विमर्श किया। उसने
कहा, 'हम अमुक-अमुक स्थान पर धावा
करेंगे।' 9परन्तु परमेश्वर के जन एलीशा ने
इस्राएल के राजा को सावधान कर दिया।
उन्होंने यह सन्देश भेजा, 'सावधान! आप इस
स्थान से मत गुजरना। यहां सीरियाई सैनिक
घात में बैठे हैं।' 10अत: इस्राएल के राजा ने उस
स्थान में सैनिक भेज दिए, जिसके विषय में
परमेश्वर के जन एलीशा ने उसको बताया था।
यों एलीशा राजा को सावधान करते थे। राजा
ने अनेक बार वहां युद्ध में अपने प्राण बचाए।
11 इस बात से सीरिया देश के राजा का हृदय
बहुत बेचैन हो गया। उसने अपने दरबारियों को
बुलाया। उसने दरबारियों से कहा, 'क्या तुम
मुझे उस आदमी का नाम नहीं बताओगे, जिसने
इस्राएल प्रदेश के राजा के लिए मेरे साथ
विश्वासघात किया है?' 12एक दरबारी ने कहा,
'महाराज, हमारे स्वामी, हममें से किसी ने भी
विश्वासघात नहीं किया। परन्तु इस्राएल प्रदेश
में एलीशा नामक एक नबी है। वह इस्राएल
प्रदेश के राजा को वे तमाम बातें भी बता देता
है, जो आप अपने शयनागार में कहते हैं!'
13राजा ने आदेश दिया, 'जाओ, और देखो कि
वह इस समय कहां है। मैं सैनिक भेजकर
उसको पकड़ूंगा।' तब उसको बताया गया कि
नबी एलीशा दोतान नगर में हैं। 14अत: सीरियाई
राजा ने वहां घोड़ों और रथों के अतिरिक्त एक
विशाल सेना भी भेजी। वे रात के समय आए,
और उन्होंने दोतान नगर को घेर लिया।

15 परमेश्वर के जन एलीशा प्रात:काल
सोकर उठे। वह बाहर निकले। उन्होंने देखा
कि घोड़ों, और रथों के साथ सेना ने नगर को
चारों ओर से घेर लिया है। एलीशा के सेवक
ने उनसे कहा, 'हाय! गुरुजी, अब हम क्या
करें?' 16एलीशा ने कहा, 'तू मत डर! जो हमारे
साथ हैं, वे उनसे अधिक हैं जो शत्रु-सेना के
साथ हैं।' 17तब एलीशा ने यह प्रार्थना की, 'हे
प्रभु, इस युवक की आंखों को खोल दे, और
यह देखने लगे।' अत: प्रभु ने एलीशा के सेवक
की आंखें खोल दीं और उसने देखा कि एलीशा
के चारों ओर अग्निमय अश्व और रथ हैं जिनसे
पहाड़ भर गया है।

18 सीरियाई सेना एलीशा के पास पहुंची।
एलीशा ने प्रभु से यह प्रार्थना की, 'प्रभु सीरियाई
राष्ट्र के इन सैनिकों पर प्रहार कर, और इन्हें
अन्धा कर दे।' अत: प्रभु ने एलीशा की प्रार्थना
के अनुसार उन पर प्रहार किया, और उन्हें अन्धा
कर दिया। 19तब एलीशा ने उनसे कहा, 'यह
मार्ग नहीं है। यह नगर नहीं है। मेरे पीछे आओ।
जिस आदमी को तुम ढूंढ़ रहे हो, मैं तुम्हें उसके
पास ले जाऊंगा।' एलीशा उनको सामरी नगर

---

6 : 17 2 रा 2 : 11; 7 : 6 **6 : 18** उत 19 : 11; प्रे 13 : 9

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ले गए।

20 जैसे ही उन्होंने सामरी नगर में प्रवेश किया, एलीशा ने यह प्रार्थना की, 'हे प्रभु, इन सैनिकों की आंखों को खोल दे, और ये देखने लगें।' अतः प्रभु ने उनकी आंखें खोल दीं, और वे देखने लगे। उन्होंने देखा कि वे सामरी नगर के मध्य में हैं। 21इस्राएल के राजा ने सीरियाई सैनिकों को देखा। उसने एलीशा से पूछा, 'पिता, क्या मैं इनका वध कर दूं?' 22एलीशा ने उत्तर दिया, 'नहीं, आप इनका वध मत करना। क्या आप उन सैनिकों का वध करते हैं, जिनको आप तलवार और धनुष के बल पर बन्दी बनाते हैं? इनके सम्मुख जल और रोटी परोसो, ताकि ये खाएं-पीएं और अपने महाराज के पास लौट जाएं।' 23अतः इस्राएल के राजा ने सीरियाई सैनिकों के लिए भव्य भोज का आयोजन किया। उन्होंने खाया-पीया। तत्पश्चात् इस्राएल प्रदेश के राजा ने उनको विदा कर दिया। वे अपने राजा के पास लौट गए। इस घटना के बाद सीरियाई सेना के छापामार सैनिकों ने फिर इस्राएल प्रदेश पर छापा नहीं मारा।

सामरी नगर की घेराबन्दी और एलीशा

24 कुछ समय पश्चात् सीरिया देश के राजा बेन-हदद ने अपनी समस्त सेना को युद्ध के लिए तैयार किया, और सामरी नगर पर आक्रमण कर दिया। उसने सामरी नगर की घेराबन्दी कर ली। 25घेराबन्दी के कारण नगर में भयंकर अकाल फैल गया। यहां तक कि सामरी नगर में एक गधे के सिर की कीमत चांदी के अस्सी सिक्के, और आधा-लीटर कबूतर की बीट की कीमत चांदी के पांच सिक्के हो गई!

26 एक दिन इस्राएल प्रदेश का राजा नगर के परकोटे पर से गुजर रहा था। तब एक स्त्री ने उसकी दुहाई दी, 'ओ महाराज, हमारे मालिक, हमारी सहायता कीजिए।' 27राजा ने कहा, 'जब प्रभु ही तुम्हारी सहायता नहीं कर रहा है, तब मैं कहां से तुम्हारी सहायता करूं? क्या खलियान से, अथवा अंगूर पेरने के कोल्हू से?' 28राजा ने फिर उससे पूछा, 'तुम्हें क्या कष्ट है?' उसने बताया, 'इस स्त्री ने मुझसे कहा, "अपना बच्चा मुझे दो, ताकि हम आज उसको खाएं। कल हम-दोनों मेरा बच्चा खाएंगे।" 29इसलिए मैंने और इस स्त्री ने मेरे बच्चे का मांस पकाया, और हमने उसको खाया। दूसरे दिन मैंने इससे कहा, "अब तुम मुझे अपना बच्चा दो, ताकि हम-दोनों उसको खाएं।" परन्तु इस स्त्री ने अपने बच्चे को छिपा लिया।' 30जब राजा ने स्त्री के ये शब्द सुने तब उसने दुःख और चिन्ता प्रकट करने के लिए तत्काल अपने वस्त्र फाड़ दिये। वह नगर के परकोटे पर चल रहा था। लोगों ने देखा कि महाराज शोक और पश्चात्ताप प्रकट करने के लिए शरीर पर टाट का वस्त्र पहिने हुए हैं! 31राजा ने कहा, 'यदि मैं आज एलीशा बेन-शाफट का सिर उसके धड़ से अलग नहीं करूंगा तो परमेश्वर मेरे साथ भी यही व्यवहार करे, वरन् वह इससे भी अधिक कठोर व्यवहार करे!'

32 उस समय एलीशा अपने घर के भीतर बैठे थे। धर्मवृद्ध भी उनके साथ बैठे थे। इस्राएल प्रदेश के राजा ने अपने दरबार से एक दूत भेजा। परन्तु उसके आगमन के पूर्व एलीशा ने धर्मवृद्धों को बताया, 'क्या तुम जानते हो, इस हत्यारे राजा ने मेरा सिर धड़ से अलग करने के लिए एक दूत को भेजा है? देखो, जब दूत आएगा, तब तुम द्वार बन्द कर देना, और द्वार को बलपूर्वक बन्द रखना। सुनो, निश्चय ही उसके पीछे यह उसके स्वामी के पैरों की आवाज है।' 33अभी एलीशा धर्मवृद्धों से बात कर ही रहे थे कि इस्राएल प्रदेश का राजा उनके पास पहुंच गया। राजा ने कहा, 'प्रभु ने इस विपत्ति को भेजा है। अब मैं प्रभु से क्या आशा करूं?'

7 एलीशा ने कहा, 'प्रभु का वचन सुनिए। प्रभु यों कहता है: कल इसी समय सामरी नगर के प्रवेश-द्वार पर तीन किलो मैदा चांदी

6 : 29 व्य 28 : 57 6 : 30 1 रा 21 : 27

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

के एक सिक्के में बिकेगा। छः किलो जौ का
भाव चांदी का एक सिक्का हो जाएगा।'
2सेना-नायक ने जिसके हाथ के सहारे राजा
खड़ा था, परमेश्वर के जन से यह कहा, 'यदि
स्वयं प्रभु आकाश में झरोखे बनाए तो भी क्या
यह सम्भव है ?' एलीशा ने सेना-नायक को
उत्तर दिया, 'तुम स्वयं अपनी आंखों से यह
देखोगे; परन्तु तुम उस अन्न को खा नहीं
सकोगे।'

चार कुष्ठ-रोगी

3 सामरी नगर के प्रवेश-द्वार पर चार कुष्ठ-
रोगी रहते थे। उन्होंने एक-दूसरे से यह कहा,
'हम मौत आने तक यहां क्यों बैठे रहें ? 4यदि
हम यह कहेंगे, ''आओ हम नगर में प्रवेश
करें'' तो नगर में अकाल फैला है, और हम
वहां मर जाएंगे। परन्तु यदि हम यहां बैठे रहेंगे,
तो यहां भी हम भूख से मर जाएंगे। इसलिए,
आओ, चलें। हम सीरियाई सेना के पड़ाव पर
जाएंगे। यदि वे हमें जीवित छोड़ देंगे तो हम
जीवित रहेंगे। यदि वे हमें मार डालेंगे, तो हम
मर जाएंगे।' 5अतः वे सीरियाई सेना के पड़ाव
पर जाने के लिए सन्ध्या समय उठे। परन्तु जब
वे पड़ाव की सीमा पर पहुंचे तब उन्होंने देखा
कि पड़ाव में एक भी सैनिक नहीं है! 6इसका
कारण यह था : प्रभु ने सीरियाई सेना को रथों
और घोड़ों का स्वर, विशाल सेना का स्वर
सुनाया। उसको सुनकर सीरियाई सैनिकों ने
परस्पर यह कहा, 'देखो, इस्राएल के राजा ने
हम पर चढ़ाई करने के लिए हित्ती और मिस्र
देश के राजाओं की सेना को भाड़े पर बुलाया
है।' 7अतः वे सन्ध्या समय भाग गए। वे अपने
तम्बू, घोड़े और गधे छोड़ गए। वे पड़ाव को
जैसा का तैसा छोड़ अपने प्राण बचाकर भाग
गए। 8जब वे कुष्ठ-रोगी पड़ाव की सीमा पर
पहुंचे तब उन्होंने एक तम्बू में प्रवेश किया।
उन्होंने खाया-पीया, और वे वहां से सोना-
चांदी, तथा कपड़े उठाकर चले गए। उन्होंने
उनको छिपा दिया। तत्पश्चात् वे फिर लौटे।
उन्होंने दूसरे तम्बू में प्रवेश किया। उन्होंने वहां
की सभी वस्तुएं उठा लीं और वे चले गए।
उन्होंने उनको भी छिपा दिया।

9 तब उन्होंने आपस में कहा, 'हम अच्छा
काम नहीं कर रहे हैं। आज शुभ-सन्देश सुनाने
का दिन है। यदि हम चुप रहेंगे, और सबेरे के
प्रकाश के लिए ठहरे रहेंगे तो हमें अपने अधर्म
का फल भुगतना पड़ेगा। इसलिए, आओ, हम
चलें और राजा को यह बात बताएं।' 10अतः
वे सामरी नगर के प्रवेश द्वार पर आए। उन्होंने
द्वारपालों को पुकारा, 'हम सीरियाई सेना के
पड़ाव पर गए थे। वहां एक भी सैनिक नहीं है।
हमने वहां किसी आदमी की आवाज भी नहीं
सुनी। वहां केवल बन्धे हुए घोड़े और गधे हैं।
तम्बू जैसे के तैसे खड़े हैं।' 11द्वारपालों ने तत्काल
आवाज दी, और समाचार राजमहल में सुना
दिया।

12 राजा रात में उठा। उसने अपने दरबारियों
से कहा, 'जो षड्यन्त्र सीरियाई सैनिकों ने
हमारे विरुद्ध रचा है, वह मैं तुम्हें बताता हूँ :
वे जानते हैं कि हम भूखे हैं। इसलिए वे पड़ाव
से निकलकर मैदान में छिप गए हैं। वे यह सोच
रहे हैं : ''जब इस्राएली सैनिक नगर से बाहर
निकलेंगे, तब हम उनको जीवित पकड़ लेंगे,
और उनके नगर में घुस जाएंगे।''

13 एक दरबारी ने यह सलाह दी, 'महाराज,
बचे हुए घोड़ों में से पांच घोड़ों के साथ
सैनिक-दल भेजिए। यदि वे बच जाएंगे तो शेष
जीवित इस्राएली सैनिकों के समान जीवित
रहेंगे। यदि वे मर जाएंगे तो उनका भी वही हाल
होगा, जो तमाम इस्राएलियों का हुआ है, जो
मर चुके हैं। आइए; हम उनको भेजें और
सच्चाई का पता लगाएं।' 14अतः उन्होंने दो
घुड़सवार सैनिकों को चुना, और राजा ने उनको
सीरियाई सेना के पीछे भेजा। राजा ने उनको यह
आदेश दिया, 'जाओ और देखो कि क्या स्थिति
है।'

15 घुड़सवार सैनिक सीरियाई सेना के
पीछे-पीछे यर्दन नदी के तट तक गए। उन्होंने
देखा कि समस्त मार्ग वस्त्रों और अस्त्र-शस्त्र

---

7 : 2 उत 7 : 11; 8 : 2; मला 3 : 10 **7 : 3** लेव 13 : 46; लू 17 : 12

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

से भरा है, जिनको सीरियाई सैनिक जल्दी में फेंक गए थे। घुड़सवार सैनिक लौटे, और उन्होंने राजा को बताया।

16 तब लोग नगर से बाहर निकले। उन्होंने सीरियाई पड़ाव को लूट लिया। यों तीन किलो मैदा, चांदी के एक सिक्के में तथा छः किलो जौ चांदी के एक सिक्के के भाव से बिकने लगा, जैसा प्रभु ने कहा था।

17 इस्राएल के राजा ने सेना-नायक को, जिसके हाथ का सहारा वह लेता था, नगर के प्रवेश-द्वार पर नियुक्त किया। किन्तु लोगों ने प्रवेश-द्वार पर उसे कुचल दिया, और वह मर गया। ऐसा ही परमेश्वर के जन एलीशा ने उससे कहा था, जब वह राजा के साथ उनके पास आया था। 18परमेश्वर के जन एलीशा ने यह नबूवत की थी: 'कल इसी समय सामरी नगर के प्रवेश-द्वार पर तीन किलो मैदा चांदी के एक सिक्के में तथा छः किलो जौ चांदी के एक सिक्के के भाव से बिकेगा।' 19परन्तु सेना-नायक ने यह उत्तर दिया था, 'यदि स्वयं प्रभु आकाश में झरोखे बनाए तो भी क्या यह बात सम्भव है?' तब एलीशा ने यह कहा, 'तुम स्वयं अपनी आंखों से यह देखोगे, पर तुम अन्न को नहीं खा सकोगे।' 20उसके साथ यही हुआ। लोगों ने उसे प्रवेश-द्वार पर कुचल दिया, और वह मर गया।

शूनेमवासी महिला की पैतृक सम्पत्ति की वापसी

8 जिस महिला के मृत पुत्र को एलीशा ने पुनर्जीवित किया था, उसको एलीशा ने यह सलाह दी, "तैयार रहो, और अपने परिवार के साथ यहां से चली जाओ। जिस देश में तुम प्रवास कर सकती हो, वहाँ प्रवास करो; क्योंकि प्रभु ने अकाल को आमन्त्रित किया है। इस देश में सात वर्ष तक अकाल पड़ेगा।' 2अतः शूनेमवासी महिला तत्पर हुई। जैसा परमेश्वर के जन एलीशा ने उससे कहा था, वैसा ही उसने किया। वह अपने परिवार के साथ पलिश्ती देश को चली गई। वह वहां सात वर्ष तक प्रवास करती रही।

3 वह सात वर्ष के बाद पलिश्ती देश से लौटी। वह राजा के पास आई। उसने अपने घर और भूमि के लिए राजा की दुहाई दी। 4उस समय राजा परमेश्वर के जन एलीशा के सेवक गेहजी से वार्तालाप कर रहा था। वह उससे यह कह रहा था, 'मुझे बताओ: एलीशा ने कौन-कौन से महान् कार्य किए हैं।' 5जब गेहजी राजा को बता रहा था कि एलीशा ने किस प्रकार मृत बालक को पुनर्जीवित किया था तब ही शूनेमवासी महिला ने, जिसके मृत पुत्र को एलीशा ने पुनर्जीवित किया था, अपने घर और भूमि के लिए राजा की दुहाई दी। गेहजी ने कहा, 'महाराज, मेरे स्वामी, यही वह महिला है! यही है वह बालक, जिसको एलीशा ने पुनर्जीवित किया था।' 6राजा ने महिला से पूछताछ की कि क्या एलीशा ने उसके पुत्र को जीवित किया था। महिला ने सब बता दिया। राजा ने उसके लिए एक अधिकारी नियुक्त किया और उस अधिकारी को यह आदेश दिया: 'जो कुछ इसका है, वह सब इसको वापस दिलाओ। इसके अतिरिक्त, जिस दिन इसने हमारे देश को छोड़ा था, उस दिन से आज तक इसके खेतों में जो फसल उत्पन्न हुई है, वह भी इसको दिलाओ।'

एलीशा की नबूवत और हजाएल का सीरिया देश का राजा बनना

7 एलीशा दमिश्क नगर में आए। सीरिया देश का राजा बेन-हदद बीमार था। उसको यह बताया गया, 'परमेश्वर का जन यहां आया है।' 8राजा ने हजाएल से कहा, 'तुम अपने हाथ में उपहार लो, और परमेश्वर के जन से भेंट करने के लिए जाओ। उसके माध्यम से प्रभु से यह पूछना, "क्या मैं इस बीमारी से मुक्त हूंगा?" 9अतः हजाएल एलीशा से भेंट करने के लिए गया। वह अपने साथ चालीस ऊंटों पर दमिश्क नगर की सब प्रकार की उत्तम वस्तुएं उपहार में ले गया।

हजाएल एलीशा के पास पहुंचा। वह उनके सम्मुख खड़ा हुआ। उसने कहा, 'आपके पुत्र,

---
8 : 1 2 रा 4 : 35

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
सीरिया देश के महाराज बेन-हदद ने मुझे
आपके पास यह पूछने के लिए भेजा है: "क्या
मैं इस बीमारी से मुक्त हूंगा?"' 10एलीशा ने
उसको उत्तर दिया, 'जा, अपने महाराज से यह
कहना: "आप निश्चय ही बीमारी से मुक्त
होंगे।" परन्तु प्रभु ने मुझ पर प्रकट किया है
कि वह निश्चय ही मरेगा।' 11तत्पश्चात् परमेश्वर
के जन एलीशा का मुख कठोर हो गया। उनकी
दृष्टि ध्यान-केन्द्रित हो गई।* सहसा वह रो
पड़े। 12हजाएल ने पूछा, 'स्वामी, आप क्यों रो
रहे हैं?' एलीशा ने कहा, 'जो अनिष्ट तू
इस्राएली राष्ट्र के साथ करेगा, उसको मैं जानता
हूं। तू उनके गढ़ों में आग लगाएगा। तू उनके
युवकों को तलवार से मौत के घाट उतारेगा।
उनके बच्चों को पत्थर पर पटक-पटक कर
टुकड़े-टुकड़े करेगा। उनकी गर्भवती स्त्रियों के
पेट चीरेगा।' 13हजाएल ने पूछा, 'स्वामी, मैं
आपका सेवक तुच्छ कुत्ता हूं। क्या मैं ऐसा बड़ा
काम कर सकूंगा?' एलीशा ने उत्तर दिया, 'प्रभु
ने मुझ पर प्रकट किया है कि तू सीरिया देश का
राजा बनेगा।'

14 तब हजाएल ने एलीशा से विदा ली। वह
अपने महाराज बेन-हदद के पास आया। बेन-
हदद ने उससे पूछा, 'एलीशा ने तुमसे क्या
कहा?' हजाएल ने उत्तर दिया, 'उन्होंने मुझे
बताया कि आप निश्चय ही इस बीमारी से मुक्त
होंगे।' 15किन्तु दूसरे दिन हजाएल ने एक
कम्बल लिया। उसने उसको पानी में डुबोया।
तत्पश्चात् उसने कम्बल को बेन-हदद के मुख
पर ओढ़ा कर उसका गला घोंट दिया, जिससे
उसकी मृत्यु हो गई।

हजाएल उसके स्थान पर राज्य करने लगा।

यहूदा प्रदेश के राजा योराम का राज्य

16 इस्राएल प्रदेश के राजा यहोराम बेन-
अहाब के राज्य-काल के पांचवें वर्ष राजा
यहोशाफट का पुत्र योराम यहूदा प्रदेश पर राज्य
करने लगा। 17जब वह राजा बना तब उसकी
उम्र बत्तीस वर्ष थी। उसने आठ वर्ष तक
राजधानी यरूशलेम में राज्य किया। 18वह
इस्राएल प्रदेश के राजाओं के मार्ग पर चला।
जैसा अहाब के राज-परिवार ने किया था वैसा
ही उसने भी किया; क्योंकि अहाब की पुत्री++
उसकी पत्नी थी। जो कार्य प्रभु की दृष्टि में बुरा
था, उसने वही किया। 19फिर भी प्रभु ने अपने
सेवक दाऊद के कारण यहूदा प्रदेश को नष्ट
नहीं किया; क्योंकि उसने दाऊद को वचन
दिया था कि तेरा और तेरे वंश का दीपक कभी
नहीं बुझेगा।

20 योराम के राज्य-काल में एदोम राज्य ने
यहूदा राज्य से विद्रोह कर दिया और अपना
राजा नियुक्त कर लिया। 21योराम अपने समस्त
रथों के साथ साईर नगर से गुजरा। एदोमी
सैनिकों ने उसको घेर लिया। तब योराम और
उसके सारथी रात में उठे और उन्होंने एदोमी
सैनिकों का वध कर दिया। किन्तु योराम के
अन्य सैनिक अपने-अपने घर भाग गए। 22इस
कारण एदोम राज्य आज भी यहूदा राज्य से
विद्रोह किये हुए है। उन्हीं दिनों में लिब्ना राज्य
ने भी विद्रोह कर दिया।

23 योराम के शेष कार्यों का विवरण 'यहूदा
प्रदेश के राजाओं का इतिहास-ग्रन्थ' में लिखा
हुआ है। 24योराम अपने मृत पूर्वजों के साथ सो
गया। उसे उसके पूर्वजों के मध्य दाऊदपुर में
गाड़ा गया। उसके स्थान पर उसका पुत्र
अहज्याह राज्य करने लगा।

यहूदा प्रदेश पर अहज्याह का राज्य

25 इस्राएल प्रदेश के राजा योराम बेन-
अहाब के राज्य-काल के बारहवें वर्ष अहज्याह
बेन-योराम यहूदा प्रदेश में राज्य करने लगा।
26जब उसने राज्य करना आरम्भ किया, तब
वह बाईस वर्ष का था। उसने राजधानी
यरूशलेम में केवल एक वर्ष तक राज्य किया।
उसकी मां का नाम अतल्याह था। वह इस्राएल
प्रदेश के राजा ओम्री की पौत्री थी। 27जैसा

---

* मूल में अस्पष्ट ++ अर्थात् अतल्याह।

8 : 8 2 रा 1 : 2 **8 : 12** 2 रा 15 : 16; आमो 1 : 13 **8 : 13** 1 रा 19 : 15 **8 : 17–24** 2 इत 21 : 5–10, 20
8 : 19 2 शम 7 : 13, 1 रा 11 : 36 **8 : 20** उत 27 : 40

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अहाब के राज-परिवार ने किया था वैसा अहज्याह ने किया। वह अहाब के राज-परिवार के मार्ग पर चला; क्योंकि वह अहाब के राज-परिवार का दामाद था। जो कार्य प्रभु की दृष्टि में बुरा था, उसने वही किया।

28 अहज्याह इस्राएल प्रदेश के राजा योराम बेन-अहाब के साथ सीरिया देश के राजा हजाएल से युद्ध करने रामोत-गिलआद नगर को गया। वहां सीरियाई सैनिकों ने यहोराम को घायल कर दिया। 29राजा यहोराम घावों की मरहम पट्टी करवाने के लिए यिज्रएल नगर को लौटा। ये घाव उसको सीरिया के राजा हजाएल से युद्ध करते समय रामोत-गिलआद में लगे थे। वह गम्भीर रूप से घायल था। अत: यहूदा प्रदेश का राजा अहज्याह बेन-योराम उसको देखने के लिए यिज्रएल नगर गया।

इस्राएल प्रदेश का अभिषिक्त राजा येहू

9 एलीशा ने नबी-संघ में से एक नबी को बुलाया। उन्होंने उससे यह कहा, 'तुम जाने के लिए तैयार हो जाओ। अपने हाथ में तेल की यह कुप्पी लो, और रामोत-गिलआद नगर को जाओ। 2जब तुम वहां पहुंचोगे तब तुम निम्शी के पौत्र और यहोशाफट के पुत्र येहू का पता लगाना। तुम उसके पास जाना, और उससे निवेदन करना कि वह अपने साथियों के मध्य से उठे। तुम उसको भीतर के कमरे में ले जाना। 3तत्पश्चात् तेल की कुप्पी लेना, और उसके सिर पर तेल को उण्डेल देना। तुम यह कहना, ''प्रभु यों कहता है : मैं तुझे इस्राएल का राजा अभिषिक्त करता हूँ।'' इसके बाद तुम द्वार खोलना, और भाग आना। वहां मत रुकना।'

4 अत: युवा नबी रामोत-गिलआद नगर को गया। 5जब वह आया, तब उसने देखा कि अनेक सेनापति बैठे हुए हैं। युवा नबी ने येहू को पुकारा, 'सेनापति जी, मैं आपके लिए एक सन्देश लाया हूँ।' येहू ने पूछा, 'हममें से किसके लिए?' नबी ने बताया, 'आपके लिए, सेनापति जी।' 6येहू उठा। वह घर के भीतर गया। युवा नबी ने उसके सिर पर तेल उण्डेला, और उससे यह कहा, 'इस्राएल का प्रभु परमेश्वर यों कहता है : मैं तुझको अपने निज लोग इस्राएलियों का राजा अभिषिक्त करता हूँ। 7तू अपने स्वामी अहाब के राज-परिवार का वध करेगा, और यों, मैं ईजेबेल से अपने सेवक नबियों और अपने सब भक्तों की हत्या का बदला लूंगा। 8अहाब का समस्त राज-परिवार नष्ट हो जाएगा। मैं इस्राएल प्रदेश से अहाब परिवार के प्रत्येक सदस्य को, चाहे वह स्वतन्त्र हो अथवा गुलाम, काट दूंगा। 9मैं अहाब के राज-परिवार को यारोबआम बेन-नबाट, और बाशा बेन-अहियाह के राज-परिवार के सदृश बना दूंगा। 10कुत्ते यिज्रएल नगर की सीमा में ईजेबेल का मांस खाएंगे। उसको दफनाने वाला भी कोई नहीं होगा।' इतना कहकर उसने द्वार खोला, और भाग गया।

11 येहू कमरे से बाहर निकला। वह अपने स्वामी के दरबारियों के पास आया। उन्होंने उससे पूछा, 'सब सकुशल है?' येहू ने उनसे कहा, 'तुम उस आदमी को जानते हो। तुम यह भी जानते हो कि वह किस प्रकार बकवास करता है।' 12परन्तु दरबारियों ने उसे विवश किया, 'यह झूठ है। अब हमें सच बात बताओ।' येहू बोला, 'उसने मुझसे जोभी कहा, वह यह है : ''प्रभु यों कहता है : मैं तुझको इस्राएलियों का राजा अभिषिक्त करता हूं।'' ' 13तत्काल हरएक व्यक्ति ने अपना अंगरखा उतार कर येहू को बैठाने के लिए उसे सीढ़ियों पर ही बिछा दिया। उन्होंने नरसिंगा फूंका, और यह जयघोष किया, 'येहू राजा है!'

14यों निम्शी के पौत्र और यहोशाफट के पुत्र येहू ने यहोराम के विरुद्ध षड्यन्त्र रचा। (इस समय यहोराम अपनी समस्त इस्राएली सेना के साथ सीरिया के राजा हजाएल से रामोत-गिलआद नगर की रक्षा कर रहा था। 15परन्तु जब वह सीरियाई राजा हजाएल से लड़ते समय सीरियाई सैनिकों के हाथ से घायल हुआ, तब

---

8 : 24-29 2 इति 22 : 1-6 9 : 1-10 . 36 2 इति 22 : 7-9 9 : 3 1 रा 19 : 16 9 : 7 1 रा 21 : 15 9 : 8 1 रा 14 : 10 9 : 9 1 रा 16 : 3 9 : 10 1 रा 21 : 23

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वह अपने घावों का इलाज करवाने के लिए
यिज्रएल नगर को लौट गया।) अत: येहू ने
कहा, 'यदि तुम-सब की यही इच्छा है, तो अब
किसी भी व्यक्ति को नगर से बचकर भागने मत
देना। ऐसा ने हो कि वह यिज्रएल नगर जाकर
सब बातें बता दे।' 16तत्पश्चात् येहू अपने रथ
पर चढ़ा। वह यिज्रएल नगर को गया; क्योंकि
यहोराम वहां घायल पड़ा था। यहूदा प्रदेश का
राजा अहज्याह भी यहोराम को देखने के लिए
आया था।

यहोराम का वध

17 पहरेदार यिज्रएल नगर की मीनार पर
खड़ा था। जब येहू आ रहा था तब पहरेदार ने
येहू के दल-बल को देखा। उसने राजा यहोराम
को बताया, 'मुझे एक दल दिखाई दे रहा है।'
यहोराम ने आदेश दिया, 'एक घुड़सवार को
बुलाओ, और उसको दल से भेंट करने के लिए
भेजो। वह उनसे यह पूछेगा, "क्या सब
कुशल-मंगल है?" ' 18अत: एक घुड़सवार
गया। उसने येहू से भेंट की। उसने कहा,
'महाराज यों कहते हैं, "क्या सब कुशल-
मंगल है?" ' येहू ने कहा, 'तुम्हें कुशल-मंगल
से क्या लेना-देना? मुड़ो और मेरे पीछे-पीछे
आओ।' पहरेदार ने राजा को बताया, 'महाराज,
सन्देशवाहक घुड़सवार उन तक तो पहुंच गया;
परन्तु वह वापस नहीं आ रहा है।' 19तब राजा
यहोराम ने दूसरा घुड़सवार भेजा। वह उनके
पास आया। उसने पूछा, 'महाराज ने यों कहा
है, "क्या सब कुशल-मंगल है?" ' येहू ने
उत्तर दिया,'तुम्हें कुशल-मंगल से क्या लेना-
देना? मुड़ो और मेरे पीछे-पीछे आओ।'
20पहरेदार ने पुन: खबर दी,'घुड़सवार उन तक
तो पहुंच गया; परन्तु वह वापस नहीं आ रहा
है। घोड़े की चाल से ऐसा दिखाई दे रहा है जैसा
येहू बेन-निम्शी घोड़े पर सवार हैं; क्योंकि वह
घोड़े को बड़ा तेज दौड़ाते हैं।'

21 यहोराम ने आदेश दिया, 'मेरा रथ
जोतो।' उसके सेवकों ने उसका रथ जोता।
अत: इस्राएल प्रदेश का राजा यहोराम, और
यहूदा प्रदेश का राजा अहज्याह अपने-अपने
रथ पर सवार हुए। वे येहू से मिलने के लिए
गए। वे येहू से यिज्रएल-वासी नाबोत की पैतृक
भूमि पर मिले। 22यहोराम ने येहू को देखा। वह
उससे बोला, 'येहू, सब कुशल-मंगल तो है?'
येहू ने उत्तर दिया, 'जब तक तुम्हारी माता
ईजेबेल के द्वारा संचालित पूजा-स्थानों से
संबंधित वेश्यालय उपस्थित हैं और देश में
इतना जादू-टोना होता है, तब तक कुशल-
मंगल का प्रश्न ही नहीं उठता।' 23यहोराम ने
लगाम रोकी, और वह भागा। उसने अहज्याह
से कहा, 'अहज्याह, देश-द्रोह!' 24येहू ने पूरी
शक्ति से धनुष की प्रत्यंचा कान तक खींची,
और यहोराम के कन्धों के मध्य में तीर मारा।
तीर उसके हृदय में घुस गया। यहोराम रथ पर
लुढ़क गया। 25येहू ने अपने अंगरक्षक बिद्कर
से कहा, 'उसके शव को उठाओ,और यिज्रएल-
वासी नाबोत की भूमि पर फेंक दो। स्मरण
करो: जब मैं और तुम यहोराम के पिता अहाब
के पीछे घोड़ों पर सवार होकर साथ-साथ चल
रहे थे, तब प्रभु ने अहाब के विरुद्ध यह दण्ड
की घोषणा की थी: 26 "मैं-प्रभु यों कहता
हूं: मैंने निश्चय ही नाबोत और उसके पुत्रों के
रक्त पर दृष्टि की है। मैं इसी भूमि पर तुझ से
इस हत्या का बदला लूंगा।" अत: अब तुम
उसका शव उठाओ, और प्रभु के वचन के
अनुसार उसको इस भूमि पर फेंक दो।'

अहज्याह का वध

27 जब यहूदा प्रदेश के राजा अहज्याह ने
यह देखा तब वह बेत-हग्गान नगर की ओर
भागा। येहू ने उसका पीछा किया। येहू ने अपने
सैनिकों को आदेश दिया, 'इसको भी तीर से
मारो।' जब अहज्याह यिब्लआम नगर के
समीप गूर नामक चढ़ाई पर चढ़ रहा था, तब
येहू के सैनिकों ने रथ में ही तीर से उसे बेध
दिया। वह मगिद्दो नगर की ओर भागा, और
वहां उसकी मृत्यु हो गई। 28उसके सेवक उसके
शव को रथ में यरूशलेम नगर ले गए। उन्होंने
उसे उसके पूर्वजों के साथ दाऊदपुर में, उसकी

---

9 : 26 1 रा 21 : 19

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कबर में गाड़ दिया।
29 यहोराम बेन-अहाब के राज्य-काल के
ग्यारहवें वर्ष अहज्याह ने यहूदा प्रदेश पर राज्य
करना आरम्भ किया था।

ईजेबेल की हत्या

30 येहू यिज्रएल नगर में आया। ईजेबेल ने
यह समाचार सुना। उसने अपनी आंखों में
काजल लगाया और अपने सिर के बालों को
संवारा। तत्पश्चात् उसने खिड़की से नीचे
झांका। 31 उसी समय येहू ने महल के प्रवेश-
द्वार पर कदम रखा। ईजेबेल ने पुकारा, 'अपने
स्वामी की हत्या करने वाले ओ जिम्री! सब
कुशल-मंगल तो है?' 32 येहू ने खिड़की की
ओर अपना मुंह उठाया। उसने पूछा, 'मेरे पक्ष
में कौन है? कौन है मेरे पक्ष में?' दो-तीन
खोजों ने झांककर उसको देखा। 33 येहू ने आदेश
दिया, 'उसको नीचे फेंक दो।' अत: उन्होंने
ईजेबेल को उठाकर नीचे फेंक दिया। उसके
रक्त के छींटे दीवार पर और घोड़ों पर लग गए।
घोड़ों ने उसके शरीर को रौंद डाला। 34 तब येहू
महल के भीतर आया और उसने खाया-पीया।
तत्पश्चात् उसने अपने सेवकों को आदेश
दिया, 'जाओ, उस अभिशप्त स्त्री को देखो।
उसको दफना देना; क्योंकि वह राजा की बेटी
है।'
35 सेवक उसको गाड़ने के लिए चले गए।
परन्तु उनको ईजेबेल की खोपड़ी, पैर, और
हथेली के अतिरिक्त कुछ नहीं मिला। 36 सेवक
लौटे। उन्होंने येहू को यह बताया। येहू ने कहा,
'प्रभु का यह वचन है, जो उसने अपने सेवक,
तिश्बे नगर के रहने वाले एलियाह से कहा
था: "यिज्रएल नगर की सीमा में कुत्ते ईजेबेल
का मांस खाएंगे। 37 ईजेबेल का शव यिज्रएल
के सीमा-क्षेत्र के खेत में गोबर की तरह पड़ा
रहेगा। उसको देखकर कोई व्यक्ति यह नहीं
कहेगा, 'यह ईजेबेल है'!"'

अहाब के राज-परिवार का संहार

10 अहाब के सत्तर पुत्र थे, जो सामरी नगर
में रहते थे। येहू ने पत्र लिखकर उन्हें
नगर-प्रशासकों, धर्मवृद्धों और अहाब के पुत्रों
के अभिभावकों के पास भेज दिया। 2 उसने पत्रों
में यह लिखा: 'तुम्हारे साथ तुम्हारे स्वामी के
पुत्र हैं। तुम्हारे पास रथ और घोड़े हैं। किला-
बन्द नगर भी हैं। तुम्हारे पास शस्त्र हैं। इसलिए
जब यह पत्र तुम्हारे पास पहुंचेगा, 3 तुम तत्काल
अपने स्वामी के पुत्रों में से श्रेष्ठ और सर्वथा
योग्य पुत्र को चुनो, और उसको उसके पिता
के सिंहासन पर बैठा दो। तुम अपने स्वामी के
राज-परिवार की रक्षा के लिए युद्ध करो।' 4 वे
येहू का पत्र पढ़कर अत्यन्त भयभीत हो गए।
उन्होंने कहा, 'जब दो राजा उसके सम्मुख खड़े
नहीं रह सके तो हम उसके सम्मुख कैसे टिक
सकेंगे?' 5 अत: राज-महल के प्रबन्धक, नगर-
प्रशासक, धर्मवृद्धों और राजकुमारों के
अभिभावकों ने येहू को यह उत्तर भेजा: 'हम
आपके सेवक हैं। हम आपके प्रत्येक आदेश के
अनुसार कार्य करेंगे। हम किसी भी व्यक्ति को
राजा नहीं बनाएंगे। अब जो कार्य आपकी दृष्टि
में उचित है, वह कीजिए।' 6 येहू ने उनको दूसरा
पत्र लिखा। उसने इस पत्र में यह लिखा: 'यदि
तुम मेरे पक्ष में हो, यदि तुम मेरे आदेश का
पालन करने को तैयार हो, तो अपने भूतपूर्व
स्वामी के पुत्रों के सिर धड़ से अलग करो, और
उनको लेकर कल, इसी समय यिज्रएल नगर
पहुंच जाओ।"
उस समय राजकुमार, जो संख्या में सत्तर थे,
नगर के प्रमुख व्यक्तियों के यहां रहते थे। ये
व्यक्ति राजपुत्रों का पालन-पोषण कर रहे थे।
7 जब येहू का पत्र उनके पास पहुंचा तब उन्होंने
सत्तर राजकुमारों को पकड़ा, और उनका वध
कर दिया। उन्होंने उनके सिर काटकर टोकरियों
में रखा, और उनको येहू के पास यिज्रएल नगर
भेज दिया।
8 सन्देशवाहक येहू के पास आया। उसने
येहू को बताया, 'महाराज, वे राजकुमारों के
सिर लाए हैं।' येहू ने कहा, 'उनको दो ढेर में
नगर के प्रवेश-द्वार पर रख दो, और सबेरे तक
वहीं रहने दो।' 9 सबेरे येहू महल से बाहर

---

9 : 36 1 रा 21 : 23

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

निकला। वह ढेरों के पास खड़ा हुआ। उसने लोगों से यह कहा, 'तुम निरपराध हो। मैंने ही अपने स्वामी के विरुद्ध षड्यन्त्र रचा और उसकी हत्या की। पर किसने इनको मारा ?[10]तुम इस बात को समझ लो : प्रभु के मुख से निकला हुआ शब्द, जो उसने अहाब के राज-परिवार के विषय में कहा था, वह अक्षरशः पूर्ण हुआ है। जो कुछ प्रभु ने अपने सेवक एलियाह से कहा था, वही उसने किया है।' [11]येहू ने यिज्रएल नगर में रहने वाले अहाब के राज-परिवार के शेष सदस्यों का भी वध कर दिया। उसने वहां अहाब के प्रमुख व्यक्तियों, उनके घनिष्ठ मित्रों, और पुरोहितों को भी मार डाला। उसने उनमें से एक भी व्यक्ति को जीवित नहीं छोड़ा।

12 तब येहू तैयार हुआ। वह सामरी नगर को गया। जब वह मार्ग में चरवाहों की सराय में था, [13]तब उसको यहूदा प्रदेश के राजा अहज्याह के कुटुम्बी मिले। येहू ने उनसे पूछा, 'तुम कौन हो ?' उन्होंने बताया, 'हम अहज्याह के कुटुम्बी हैं। हम महाराज और राजमाता के पुत्रों का कुशल-मंगल पूछने के लिए आए हैं।' [14]येहू ने अपने सैनिकों को आदेश दिया, 'इन्हें जीवित पकड़ लो।' सैनिकों ने तत्काल उनको बन्दी बना लिया। वे बयालीस पुरुष थे। येहू के सैनिकों ने चरवाहों की सराय के गड्ढे में उनका वध कर दिया। येहू ने उनमें से किसी को भी जीवित नहीं छोड़ा।

15 येहू ने वहां से प्रस्थान किया। उसको यहोनादब बेन-रेकाब मिला, जो उससे भेंट करने के लिए आ रहा था। येहू ने उसका अभिवादन किया। येहू ने पूछा, 'जैसा मेरा हृदय तुम्हारे प्रति निष्कपट है, क्या वैसा ही तुम्हारा हृदय मेरे प्रति है ?' यहोनादब ने उत्तर दिया, 'हां, है।' येहू ने कहा, 'यदि तुम्हारा हृदय निष्कपट है, तो मुझे अपना हाथ दो।' यहोनादब ने अपना हाथ उसके हाथ में दिया। येहू ने उसको अपने साथ रथ पर चढ़ा लिया। [16]येहू ने उससे कहा, 'मेरे साथ चलो, और प्रभु के लिए मेरा धर्मोत्साह देखो।' यहोनादब उसके साथ रथ पर चढ़कर गया।

17 येहू सामरी नगर में आया। उसने सामरी नगर में रहने वाले अहाब के राजवंश के शेष सदस्यों को मार डाला। उसने प्रभु के वचन के अनुसार, जो प्रभु ने एलियाह से का था, अहाब के राज-वंश को मिटा दिया।

बअल देवता की पूजा की समाप्ति

18 येहू ने अपनी समस्त प्रजा को एकत्र किया। उसने लोगों से कहा, 'राजा अहाब ने बअल देवता की कम सेवा की थी। किन्तु मैं, येहू, उसकी बहुत सेवा करूंगा। [19]अब, तुम बअल देवता के सब नबियों, सेवकों और पुरोहितों को बुलाओ, और उन्हें मेरे पास लाओ। एक भी व्यक्ति छूटने न पाए। मैं बअल देवता के लिए महाबलि चढ़ाऊंगा। जो व्यक्ति इस बलि-महोत्सव में उपस्थित नहीं होगा, उसको मृत्यु-दण्ड दिया जाएगा।' येहू ने छल-कपट से यह घोषणा की थी। वह बअल देवता के सेवकों का पूर्ण संहार करना चाहता था। [20]येहू ने आदेश दिया, 'बअल देवता के लिए पवित्र समारोह आयोजित करो।' समारोह की घोषणा की गई। [21]येहू ने समस्त इस्राएल में दूत भेजे और बअल देवता के सब सेवकों को बुला लिया। एक भी सेवक ऐसा नहीं बचा जो समारोह में नहीं गया। उन्होंने बअल देवता के मन्दिर में प्रवेश किया। मन्दिर एक कोने से दूसरे कोने तक खचाखच भर गया। [22]येहू ने वस्त्र की व्यवस्था करने वाले अधिकारी से कहा, 'बअल देवता के सब सेवकों के लिए भण्डारगृह से पोशाकें निकालकर लाओ।' अधिकारी सेवकों के लिए भण्डार-गृह से पोशाकें निकालकर लाया। [23]येहू यहोनादब बेन-रेकाब के साथ बअल देवता के मन्दिर में गया। उसने बअल देवता के सेवकों से कहा, 'देखो, तुम्हारे मध्य में प्रभु के सेवक तो नहीं हैं ? उनको ढूंढ़ कर बाहर निकाल दो। यहां केवल बअल देवता के सेवक रहने चाहिए।' [24]तत्पश्चात् वह पशु-बलि और अग्नि-बलि चढ़ाने के लिए भीतर गया।

10 : 11 हो 1 : 4 10 : 15 यिर 35 : 6 10 : 21 1 रा 16 : 32

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

येहू ने मन्दिर के बाहर अस्सी सैनिकों को नियुक्त किया। उसने उनको यह आदेश दिया, 'मैं तुम्हारे हाथ में इन लोगों को सौंप रहा हूँ। जो सैनिक इनमें से किसी एक व्यक्ति को भी भागने देगा, वह अपने प्राणों से हाथ धोएगा।'
25जब येहू ने अग्नि-बलि चढ़ाना समाप्त किया तब उसने अंगरक्षकों और सेना-नायकों को आदेश दिया, 'भीतर जाओ, और बअल देवता के सेवकों का वध करो। सावधान! एक भी आदमी बचकर भाग न सके।' अत: उन्होंने तलवार से उनको मौत के घाट उतार दिया, और उनके शव बाहर फेंक दिए। तत्पश्चात् वे बअल देवता के मन्दिर के भीतरी कक्ष में घुसे
26और वहाँ से बअल देवता का स्तम्भ उठाकर
बाहर लाए, और उसको जला दिया। 27उन्होंने
बअल देवता की वेदी और मन्दिर को ध्वस्त कर दिया। उन्होंने मन्दिर को शौचालय बना दिया। वह आज भी शौचालय है।

28 यों येहू ने इस्राएल प्रदेश से बअल देवता
की पूजा को मिटा दिया। 29किन्तु जैसे यारोबआम
बेन-नबाट ने इस्राएली जनता से पाप करवाया था, वैसे येहू ने भी करवाया था। वह पाप-मार्ग पर चलता रहा। बेत-एल नगर और दान नगर में सोने के बछड़े की मूर्तियां प्रतिष्ठित रहीं।

30 प्रभु ने येहू से कहा, 'जो कार्य मेरी दृष्टि में उचित है, वह तूने भली-भांति पूर्ण किया। तूने मेरे हृदय के अनुरूप ही अहाब के राज-परिवार के साथ व्यवहार किया। अत: तेरे वंशज चौथी पीढ़ी तक इस्राएल के सिंहासन पर बैठेंगे।'

31 परन्तु येहू अपने सम्पूर्ण हृदय से इस्राएली राष्ट्र के प्रभु परमेश्वर की व्यवस्था पर नहीं चला। उसने सावधानी से उसका पालन नहीं किया। जैसे यारोबआम ने इस्राएली जनता से पाप कराए थे वैसे ही येहू ने भी किया। वह यारोबआम के पाप-मार्ग से विमुख नहीं हुआ।

32 उन दिनों में प्रभु ने इस्राएली राज्य की सीमा को घटाना आरम्भ किया। हजाएल ने इस्राएलियों को उनकी राज्य-सीमा में स्थान-स्थान पर पराजित किया और इन भूमि-क्षेत्रों
पर अधिकार कर लिया : 33यर्दन नदी से पूर्व
की ओर समस्त गिलआद क्षेत्र, गाद क्षेत्र, रूबेन क्षेत्र, मनश्शे क्षेत्र, अर्थात् अरोएर नगर से, जो अर्नोन नदी की घाटी के समीप है, गिलआद और बाशान तक समस्त क्षेत्र।

34 येहू के शेष कार्यों का विवरण, उसके समस्त कार्यों का और उसके समस्त वीरता-पूर्ण कार्यों का विवरण, 'इस्राएल प्रदेश के राजाओं का इतिहास-ग्रन्थ' में लिखा हुआ है।
35येहू अपने मृत पूर्वजों के साथ सो गया। उसे
सामरी नगर में गाड़ा गया। उसका पुत्र यहोआहाज
उसके स्थान पर राज्य करने लगा। 36येहू ने
राजधानी सामरी नगर में इस्राएल प्रदेश पर अट्ठाईस वर्ष तक राज्य किया था।

राजमाता अतल्याह का यहूदा प्रदेश के सिंहासन पर बैठना

11 जब अहज्याह की माता अतल्याह ने देखा कि उसके पुत्र की हत्या कर दी गई, तब वह उठी, और उसने यहूदा में राज-परिवार के सब सहस्यों का संहार कर दिया।
2किन्तु राजा योराम की पुत्री यहोशाबा ने, जो
अहज्याह की बहिन थी, अपने भतीजे योआश का अन्य राजकुमारों के मध्य से, जिनकी हत्या की जानेवाली थी, अपहरण कर लिया। उसने योआश और उसकी धाय को शयनागार में छिपा दिया। यों उसने अतल्याह की दृष्टि से उसको छिपा दिया। अत: योआश का वध नहीं
हुआ। 3योआश प्रभु के भवन में अपनी फूफी
के साथ छ: वर्ष तक छिपा रहा। इस अवधि में अतल्याह यहूदा प्रदेश पर राज्य करती रही।

पुरोहित यहोयादा का विद्रोह

4 सातवें वर्ष में पुरोहित यहोयादा ने दूत भेजकर कारी जाति के सैनिकों और अंगरक्षकों के शतपतियों को बुलाया। पुरोहित यहोयादा ने उन्हें प्रभु के भवन में आने दिया। उसने उनसे सन्धि की। उसने प्रभु के भवन में उनको शपथ दिलाई। तत्पश्चात् उसने उनको राजपुत्र दिखाया।

---

10 : 29 1 रा 12 : 28 **11 : 1-20** 2 इति 22 : 10-23 : 21

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

5पुरोहित यहोयादा ने उनको आदेश दिया,
'तुम्हें यह काम करना होगा : तुममें से जो
सैनिक विश्राम-दिवस पर कार्यरत रहते हैं,
उनके एक-तिहाई सैनिक राजमहल पर पहरा
देंगे। 6शेष सैनिक प्रभु के भवन पर विशेष रूप
से पहरा देंगे : एक तिहाई भवन के सूर दरवाजे
पर, और एक तिहाई अंगरक्षकों के पीछे दरवाजे
पर पहरा देंगे। 7तुम्हारे दो दल, जो विश्राम-
दिवस पर छुट्‌टी पर रहते हैं, प्रभु के भवन में
राजकुमार पर पहरा देंगे। 8तुम राजकुमार को
चारों ओर से घेरे रहोगे : प्रत्येक सैनिक सशस्त्र
होगा। जो व्यक्ति सेना-पंक्ति के समीप
आएगा, उसको तत्काल मौत के घाट उतार
देना। जहां-कहीं राजकुमार जाए अथवा लौटकर
वहां से आए, तुम उसके साथ रहना।'

9 शतपतियों ने पुरोहित यहोयादा के आदेश
के अनुसार कार्य किया। वे अपने सब सैनिकों
को, जो विश्राम-दिवस पर कार्यरत थे और जो
विश्राम-दिवस पर छुट्टी पर थे, लेकर पुरोहित
यहोयादा के पास आए। 10यहोयादा ने उनको
राजा दाऊद के भाले और ढाल सौंप दिए। ये
शस्त्र प्रभु के भवन में सुरक्षित रखे हुए थे।
11पहरेदार अपने हाथ में शस्त्र थामकर मन्दिर
के दक्षिणी कोने से उत्तरी कोने तक, मन्दिर तथा
वेदी को घेर कर खड़े हो गए। 12तत्पश्चात्
यहोयादा ने राजकुमार योआश को बाहर
निकाला। उसने राजकुमार के सिर पर मुकुट
रखा, उसको साक्षी-पत्र सौंपा और उसका
अभिषेक किया। जनता ने ताली बजाकर जय-
जयकार किया। उन्होंने कहा, 'राजा चिरायु
हो!'

13 रानी अतल्याह ने अंगरक्षकों और जनता
की आवाज सुनी। वह प्रभु के भवन में लोगों
के पास गई। 14उसने देखा, राजा प्रथा के
अनुसार मंच पर खड़ा है। शतपति और तुरही-
वादक भी राजा के समीप खड़े हैं। आम जनता*
आनन्द मना रही है। वे नरसिंगे फूंक रहे हैं।
अतल्याह ने आतंक प्रकट करने के लिए अपने
राजसी वस्त्र फाड़ दिए और वह चिल्लाई, 'यह
राज-द्रोह है!' 15पुरोहित यहोयादा ने शतपतियों
को, जो सेनापति नियुक्त किए गए थे, यह
आदेश दिया, 'सेना-पंक्ति के मध्य से अतल्याह
को बाहर निकालो। जो व्यक्ति उसका पक्ष ले,
उसको तलवार से मौत के घाट उतार दो।'
पुरोहित यहोयादा यह सोचता था कि प्रभु के
भवन में उसकी हत्या नहीं होनी चाहिए।
16अत: शतपतियों ने रानी अतल्याह को
पकड़ा। वे उसको अश्व-द्वार से राजमहल में
ले गए, और वहां उसका वध कर दिया।

17 तत्पश्चात् पुरोहित यहोयादा ने प्रभु और
राजा तथा लोगों के मध्य विधान की धर्मविधि
सम्पन्न की, जिससे लोग प्रभु के निज लोग
बनें। उसने राजा और प्रजा के मध्य भी सन्धि
स्थापित की।

18 इसके बाद समस्त जनता बअल देवता
के मन्दिर में आई। उन्होंने मन्दिर को खण्डहर
बना दिया। उन्होंने उसकी वेदियों और मूर्तियों
के टुकड़े-टुकड़े कर दिये। उन्होंने वेदियों के
सम्मुख ही बअल देवता के पुरोहित मत्तान का
वध किया। उसके पश्चात् पुरोहित यहोयादा ने
प्रभु के भवन के लिए पहरेदार नियुक्त किये।

19 पुरोहित यहोयादा ने शतपतियों, कारी
जाति के सैनिकों, अंगरक्षकों और समस्त जनता
को अपने साथ लिया। वे राजा को प्रभु के
मन्दिर से बाहर लाए। वे उसके साथ-साथ
अंगरक्षकों के द्वार से होते हुए राजमहल में गए।
राजा सिंहासन पर विराजमान हुआ और
20समस्त जनता ने आनन्द मनाया। नगर में
शान्ति थी।

इस प्रकार अतल्याह को राजमहल में
तलवार से मौत के घाट उतारा गया।

यहूदा प्रदेश पर योआश का राज्य

21 ** जब योआश+ ने राज्य करना अरम्भ
किया तब वह सात वर्ष का था।

---

* शब्दश:, 'देश के सब लोग' ** मूल में अध्याय 12 : 1 + अथवा, 'यहोआश'; एकरूपता के लिए यहूदा प्रदेश के राजा का नाम 'योआश' ही लिखा जाएगा।

11 : 10 2 शम 8 : 7 **11 : 17** 1 शम 10 : 25; 2 शम 5 : 3 **11 : 21-12 : 14** 2 इति 24 : 1-14

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

12 येहू के राज्य-काल के सातवें वर्ष में
योआश ने राज्य करना आरम्भ किया।
वह राजधानी यरूशलेम में चालीस वर्ष तक
राज्य करता रहा। उसकी मां का नाम सिब्याह
था। वह बएर-शेबा नगर की रहने वाली थी।
2योआश ने अपने जीवन-भर वे ही कार्य किए
जो प्रभु की दृष्टि में उचित थे; क्योंकि पुरोहित
यहोयादा उसको धार्मिक शिक्षा देता था।3फिर
भी पहाड़ी शिखर की वेदियां नहीं तोड़ी गईं।
लोग पहाड़ी शिखर की वेदियों पर बलि-पशु
चढ़ाते और सुगन्धित धूप-द्रव्य जलाते रहे।
4 एक दिन योआश ने पुरोहितों को आदेश
दिया, 'जो चांदी के सिक्के पवित्र भेंट के रूप
में प्रभु के भवन में चढ़ाए जाते हैं, वे सिक्के जो
प्रत्येक व्यक्ति निर्धारित मन्दिर-कर के रूप
में,अथवा स्वेच्छा से उत्प्रेरित होकर प्रभु के
भवन में चढ़ाता है, 5वे आप लें।इसके अतिरिक्त,
आप अपने परिचित लोगों से भी चन्दा लीजिए।
जिस-जिस स्थान पर भवन की मरम्मत की
जरूरत है, वहां आप इस धन से मरम्मत
कराइए।' 6किन्तु योआश के राज्य-काल के
तेईसवें वर्ष तक भी पुरोहितों ने भवन की कोई
मरम्मत नहीं की। 7अत: राजा योआश ने
राजपुरोहित यहोयादा तथा अन्य पुरोहितों को
बुलाया। उसने उनसे पूछा, 'आप भवन की
मरम्मत क्यों नहीं कर रहे हैं? अब से आप
अपने परिचितों से स्वयं चन्दा नहीं लेंगे, परन्तु
उसको आप भवन की मरम्मत के लिए कोष
में जमा करेंगे।' 8पुरोहित इस बात पर सहमत
हो गए कि वे लोगों से चन्दा नहीं लेंगे, और न
भवन की मरम्मत ही करेंगे।
9 पुरोहित यहोयादा ने एक बक्सा लिया।
उसने उसके ढक्कन में एक छेद किया।
तत्पश्चात् उसने प्रभु के भवन के प्रवेश-द्वार की
दाहिनी ओर वेदी के समीप उसे रख दिया।
मन्दिर की ड्योढ़ी की रखवाली करने वाले
पुरोहित प्रभु के भवन में चढ़ाए जाने वाले चांदी
के सिक्कों को इस बक्से में डाल देते थे। 10जब
वे यह देखते थे कि बक्से में बहुत सिक्के भर
गए हैं,तब राजा का सचिव और महापुरोहित
आते। वे प्रभु के भवन में चढ़ाए गए सिक्कों
को गिनते, उनको थैलियों में भरते,और तब
उनको तौलते थे। 11सिक्कों की गणना और
तौल के बाद वे सिक्कों को प्रभु के भवन की
मरम्मत करवाने वाले अधिकारियों को सौंप
देते थे। अधिकारीगण उससे प्रभु के भवन के
बढ़ई, कारीगरों, 12राज-मिस्त्रियों, और संग-
तराशों की मजदूरी देते थे। वे इन्हीं सिक्कों से
प्रभु के भवन की मरम्मत के लिए इमारती
लकड़ी और तराशे हुए पत्थर खरीदते थे। इनके
अतिरिक्त मरम्मत-कार्य के अन्य खर्च थे, जो
वे चुकाते थे। 13परन्तु प्रभु के भवन में चढ़ाए
गए रुपयों से मन्दिर के लिए चांदी की
चिलमचियां, चिमटे, प्याले, तुरहियां तथा
सोना-चाँदी के अन्य पात्र नहीं बनाए गए।
14सब रुपया भवन की मरम्मत करने वाले
कारीगरों पर खर्च किया गया। 15कारीगरों की
मजदूरी चुकाने के लिए वे जिन व्यक्तियों को
रुपया सौंपते थे, उनसे हिसाब-किताब नहीं
मांगते थे; क्योंकि ये व्यक्ति ईमानदारी से काम
करते थे। 16किन्तु दोष-बलि और पाप-बलि
के रूप में चढ़ाया गया रुपया प्रभु के भवन की
मरम्मत में खर्च नहीं किया गया; क्योंकि वह
रुपया पुरोहितों का था।
17 उन्हीं दिनों में सीरिया के राजा हजाएल
ने गत नगर पर आक्रमण कर दिया। युद्ध हुआ।
उसने गत नगर पर अधिकार कर लिया। उसके
बाद वह यरूशलेम पर चढ़ाई करने के लिए
उसकी ओर मुड़ा। 18यहूदा के राजा योआश ने
अपनी अर्पण की समस्त भेंट की वस्तु और
अपने पूर्वजों—यहोशाफट, योराम और
अहज्याह—के द्वारा प्रभु को अर्पित की गई भेंट
की वस्तुएं लीं। उसने प्रभु-भवन के कोषागार
का तथा राजमहल का समस्त सोना भी
लिया,और उनको सीरिया के राजा हजाएल के
पास भेज दिया। तब हजाएल यरूशलेम से लौट
गया।
19 योआश के शेष कार्यों का,उसके समस्त

---

12 : 4 नि 30 : 13 12 : 17-21 2 इत 24 : 23-26

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कार्यों का विवरण 'यहूदा प्रदेश के राजाओं का
इतिहास-ग्रन्थ' में लिखा हुआ है।
20 एक बार योआश के दरबारियों ने उसके
विरुद्ध षड्यन्त्र रचा, और मिल्लो के भवन में
उसकी हत्या कर दी। यह भवन सिल्ला की
ढाल पर स्थित था। 21उसके दो दरबारियों —
योजाकर बेन-शिमआत और यहोजाबाद बेन-
शोमेर — ने उस पर प्राणघातक प्रहार किया
और वह मर गया। उन्होंने योआश को दाऊदपुर
में उसके पूर्वजों के कब्रिस्तान में गाड़ा।
योआश का पुत्र अमस्याह उसके स्थान पर
राज्य करने लगा।

इस्राएल प्रदेश पर यहोआहाज का राज्य

13 यहूदा प्रदेश के राजा योआश बेन-
अहज्याह के राज्य-काल के तेईसवें
वर्ष में येहू का पुत्र यहोआहाज इस्राएल प्रदेश
की राजधानी सामरी नगर में राज्य करने लगा।
उसने सत्रह वर्ष तक राज्य किया। 2जो कार्य
प्रभु की दृष्टि में बुरा था, उसने वही किया। जैसे
यारोबआम बेन-नबाट ने इस्राएली जनता से
पाप कराया था वैसे ही यहोआहाज ने भी
किया। वह यारोबआम के पाप-मार्ग से विमुख
नहीं हुआ। 3अत: प्रभु का क्रोध इस्राएली
जनता के प्रति भड़क उठा। उसने इस्राएलियों
को सीरिया देश के राजा हजाएल के हाथ में,
तथा उसके बाद हजाएल के पुत्र बेन-हदद के
हाथ में सौंप दिया। इस्राएली कुछ वर्ष तक
उनके अधीन रहे। 4तब यहोआहाज ने अनुनय-
विनय से प्रभु के क्रोध को शान्त किया और प्रभु
ने उसकी प्रार्थना सुनी। सीरिया देश का राजा
इस्राएली जनता पर अत्याचार कर रहा था। प्रभु
ने इस अत्याचार पर दृष्टि की। 5प्रभु ने इस्राएलियों
को एक उद्धारकर्ता दिया, और इस्राएली लोग
सीरिया देश के राज्य के हाथ से मुक्त हो गए।
वे पहले के समान अपने निवास-स्थानों में रहने
लगे। 6परन्तु जो पाप यारोबआम के राजवंश ने
इस्राएली जनता से कराए थे, उनसे इस्राएली
विमुख नहीं हुए। वे उसी पाप-मार्ग पर चलते
रहे। अशेराह देवी की मूर्ति सामरी नगर में
प्रतिष्ठित रही। 7यहोआहाज की सेना में केवल
पचास घुड़सवार, दस रथ और दस हजार पैदल
सैनिक रह गये थे। सीरिया देश के राजा ने
उनका संहार कर दिया था। उसने उनको
रौंदकर मिट्टी में मिला दिया था।
8 यहोआहाज के शेष कार्यों का विवरण,
उसके समस्त कार्यों का विवरण, ' इस्राएल
प्रदेश के राजाओं का इतिहास-ग्रन्थ' में लिखा
हुआ है। 9यहोआहाज अपने मृत पूर्वजों के
साथ सो गया। उसको सामरी नगर में गाड़ा
गया। उसका पुत्र यहोआश उसके स्थान पर
राज्य करने लगा।

इस्राएल प्रदेश पर यहोआश का राज्य

10 यहूदा प्रदेश के राजा योआश के राज्य-
काल के सैंतीसवें वर्ष यहोआहाज का पुत्र
यहोआश सामरी नगर में इस्राएल प्रदेश पर
राज्य करने लगा। उसने सोलह वर्ष तक राज्य
किया। 11जो कार्य प्रभु की दृष्टि में बुरा था,
उसने भी वही किया। जैसे यारोबआम बेन-
नबाट ने इस्राएली जनता से पाप कराया था, वैसे
ही यहोआश ने भी किया। वह यारोबआम के
पाप-मार्ग से विमुख नहीं हुआ। 12यहोआश के
शेष कार्यों का, उसके समस्त कार्यों का
विवरण, उसके वीरतापूर्ण कार्यों का, यहूदा प्रदेश
के राजा अमस्याह से लड़े गए युद्ध का
विवरण, 'इस्राएल प्रदेश के राजाओं का इतिहास-
ग्रन्थ' में लिखा हुआ है। 13यहोआश अपने मृत
पूर्वजों के साथ सो गया। उसको इस्राएल प्रदेश
के राजाओं के साथ सामरी नगर में गाड़ा गया।
यारोबआम उसके सिंहासन पर बैठा।

नबी एलीशा की अन्तिम नबूवत और मृत्यु

14 जिस रोग से एलीशा की मृत्यु होनी थी,
वह उनको लग गया। इस्राएल प्रदेश का राजा
यहोआश उनके पास गया। वह उनके सम्मुख
रोने लगा। उसने कहा, 'ओ मेरे पिता! ओ मेरे
पिता! ओ इस्राएली राष्ट्र के सारथी! ओ हमारे
अश्वारोही!' 15एलीशा ने उसको आदेश दिया,
'धनुष और तीर लो।' राजा ने धनुष और तीर
लिये। 16एलीशा ने इस्राएल प्रदेश के राजा को

13 : 4 2 रा 14 : 26 13 : 14 2 रा 2 : 12

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
यह आदेश दिया,'धनुष चढ़ाओ।' राजा ने
अपने हाथ से धनुष चढ़ाया। एलीशा ने राजा के
हाथ पर अपने हाथ रखे 17और यह कहा, 'पूर्व
दिशा की खिड़की खोलो।' राजा ने उसको
खोल दिया। एलीशा ने आदेश दिया, 'तीर
छोड़ो।' राजा ने तीर छोड़ा। एलीशा ने कहा,
'यह प्रभु की विजय का तीर है! सीरिया देश
पर प्रभु की विजय का तीर! तुम अपेक नगर
से सीरियाई सेना का पूर्ण संहार करोगे।'
18एलीशा ने पुनः आदेश दिया, 'एक और तीर
लो।' राजा ने तीर लिया। एलीशा ने इस्राएल
प्रदेश के राजा को यह आदेश दिया,'इससे भूमि
पर प्रहार करो।' राजा ने भूमि पर तीन बार प्रहार
किया; और तब वह रुक गया। 19परमेश्वर के
जन एलीशा उससे नाराज हुए। उन्होंने कहा,
'तुम्हें पांच-छः बार भूमि पर प्रहार करना
चाहिए था। तब तुम सीरियाई सेना का पूर्ण
संहार करते। परन्तु अब तुम सीरियाई सेना का
तीन बार ही संहार करोगे।'

20 एलीशा की मृत्यु हो गई। उनको गाड़ा
गया।

प्रत्येक वर्ष मोआब देश के लुटेरों का दल
इस्राएल प्रदेश पर आक्रमण करता था। 21एक
बार लोग किसी मुरदे को गाड़ रहे थे। सहसा
उन्होंने लुटेरों को देखा। उन्होंने मुरदे को
एलीशा की कबर में फेंक दिया। तब जैसे ही
मुरदे का स्पर्श एलीशा की अस्थियों से हुआ,
वह जीवित हो गया। वह अपने पैरों पर खड़ा
हो गया!

22 यहोआहाज के राज्य-काल के दौरान
सीरिया देश का राजा हजाएल इस्राएली राष्ट्र
पर सदा अत्याचार करता रहा। 23परन्तु प्रभु ने
इस्राएलियों पर कृपा की। उसने उन पर दया की
और वह उनकी ओर उन्मुख हुआ; क्योंकि
उसने अब्राहम, इसहाक और याकूब से विधान
स्थापित किया था। प्रभु ने उनको नष्ट नहीं
किया। अब तक उसने उनको अपने सम्मुख से
नहीं निकाला था।

24 सीरिया देश के राजा हजाएल की मृत्यु
के बाद उसका पुत्र बेन-हदद उसके स्थान पर
राज्य करने लगा। 25तब यहोआश बेन-
अहोआहाज ने हजाएल के पुत्र बेन-हदद के
हाथ से उन नगरों को पुनः प्राप्त कर लिया, जो
हजाएल ने उसके पिता यहोआहाज से युद्ध में
छीन लिये थे। यहोआश ने बेन-हदद को युद्ध
में तीन बार पराजित किया, और उससे इस्राएल
प्रदेश के नगर पुनः प्राप्त किए।

यहूदा प्रदेश पर अमस्याह का राज्य

14 इस्राएल प्रदेश के राजा यहोआश बेन-
यहोआहाज के राज्य-काल के दूसरे
वर्ष में यहूदा प्रदेश के राजा योआश का पुत्र
अमस्याह राज्य करने लगा। 2जब उसने राज्य
करना आरम्भ किया तब वह पच्चीस वर्ष का
था। उसने राजधानी यरूशलेम में उन्तीस वर्ष
तक राज्य किया। उसकी मां का नाम यहोअद्दीन
था। वह यरूशलेम नगर की थी।

3 अमस्याह ने वही किया, जो प्रभु की दृष्टि
में उचित था। फिर भी उसने अपने पूर्वज दाऊद
के समान कार्य नहीं किया। उसने अपने सब
कार्यों से अपने पिता योआश का अनुसरण
किया, 4किन्तु पहाड़ी शिखर की वेदियां नहीं
तोड़ी गईं। लोग उन पर पशु-बलि चढ़ाते और
सुगन्धित धूप-द्रव्य जलाते रहे। 5जब राज-सत्ता
अमस्याह के हाथ में दृढ़ हो गई, तब उसने
अपने पिता के हत्यारे दरबारियों का वध कर
दिया। 6परन्तु उसने प्रभु की आज्ञा के अनुसार,
जो मूसा के व्यवस्था-ग्रन्थ में लिखी है, उन
हत्यारों के पुत्रों का वध नहीं किया। प्रभु ने यह
आज्ञा दी थी : 'पुत्रों के पाप के लिए पिता को
मृत्यु-दण्ड नहीं दिया जाएगा, और न पिता के
पाप के लिए पुत्रों को मृत्यु-दण्ड दिया जाएगा।
प्रत्येक व्यक्ति को उसके ही पाप के लिए
मृत्यु-दण्ड दिया जाएगा।'

7 अमस्याह ने लवण घाटी में दस हजार
एदोमी सैनिकों को पराजित कर दिया, और
युद्ध में सेला नगर को जीत लिया। उसने सेला
का नाम योक्तएल नगर रखा। आज भी उसका
यही नाम है।

14 : 2-6 2 इत 25 : 1-4 **14 : 5** 2 राजा 12 : 20 **14 : 6** व्य 24 : 16; यहेज 18 : 4, 20 **14 : 7** 2 इत 25 : 11

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

8 तब अमस्याह ने इस्राएल प्रदेश के राजा
यहोआश के पास दूत भेजे। यहोआश येहू का
पौत्र और यहोआहाज का पुत्र था। अमस्याह ने
उसको यह सन्देश भेजा : 'आओ, हम युद्ध में
अपनी शक्ति आजमाएं।' 9इस्राएल के राजा
यहोआश ने यहूदा प्रदेश के राजा अमस्याह को
यह उत्तर भेजा : 'एक दिन लबानोन प्रदेश की
एक झड़बेरी ने लबानोन प्रदेश के देवदार को
यह सन्देश भेजा; ''अपनी पुत्री का विवाह मेरे
पुत्र के साथ कर।'' उसी क्षण एक वन-पशु
वहां से गुजरा, और उसने झड़बेरी को रौंद
डाला। 10तुमने निश्चय ही एदोमी सेना को
पराजित किया है; पर तुम्हारा हृदय गर्व से फूल
उठा है। अपनी अभूतपूर्व विजय से सन्तुष्ट
हो, और घर में ही रहो। तुम अपने अनिष्ट को
क्यों बुला रहे हो? इससे तुम्हारा पतन होगा, और
तुम्हारे साथ समस्त यहूदा प्रदेश का भी।'

11 परन्तु अमस्याह ने यहोआश की बात
नहीं मानी। अतः इस्राएल प्रदेश के राजा
यहोआश ने आक्रमण कर दिया। यहूदा प्रदेश
के बेत-शेमेश नगर में इस्राएल प्रदेश के राजा
यहोआश और यहूदा प्रदेश के राजा अमस्याह
का आपना-सामना हुआ। 12यहूदा प्रदेश का
राजा इस्राएल प्रदेश के राजा से हार गया। उसके
सैनिक अपने-अपने घर भाग गए। 13इस्राएल
प्रदेश के राजा यहोआश ने यहूदा प्रदेश के राजा
अमस्याह को, जो अहज्याह का पौत्र और
योआश का पुत्र था, बेत-शेमेश नगर में बन्दी
बना लिया। वह यरूशलेम नगर में आया। उसने
एफ्रइम प्रवेश-द्वार से कोने वाले प्रवेश-द्वार
तक, लगभग एक सौ अस्सी मीटर, यरूशलेम
की शहरपनाह तोड़ दी। 14जो सोना-चांदी और
जो पात्र उसको प्रभु-भवन में तथा राज-भवन
के कोषागारों में मिले, उसने उनको लूट लिया।
उसने राजपुत्रों* का भी अपहरण कर लिया,
और अपनी राजधानी सामरी नगर को लौट गया।

15 यहोआश के शेष कार्यों का, उसके
समस्त कार्यों का विवरण, उसके वीरतापूर्ण
कार्यों का, यहूदा प्रदेश के राजा अमस्याह से
लड़े गए युद्ध का विवरण, 'इस्राएल प्रदेश के
राजाओं का इतिहास-ग्रन्थ' में लिखा हुआ है।
16यहोआश अपने मृत पूर्वजों के साथ सो गया।
उसको इस्राएल प्रदेश के राजाओं के साथ
सामरी नगर में गाड़ा गया।

उसका पुत्र यारोबआम उसके स्थान पर
राज्य करने लगा।

17 इस्राएल प्रदेश के राजा यहोआश बेन-
यहोआहाज की मृत्यु के पश्चात् यहूदा प्रदेश
का राजा अमस्याह बेन-योआश पन्द्रह वर्ष तक
जीवित रहा। 18अमस्याह के शेष कार्यों का
विवरण आदि से अन्त तक 'यहूदा प्रदेश के
राजाओं का इतिहास-ग्रन्थ' में लिखा हुआ है।

19 लोगों ने यरूशलेम नगर में अमस्याह के
विरुद्ध षड्यन्त्र रचा। वह लाकीश नगर की
ओर भागा। षड्यन्त्रकारियों ने उसके पीछे-पीछे
लाकीश नगर में हत्यारों को भेजा, जिन्होंने वहां
उसकी हत्या कर दी। 20वे उसका शव घोड़ों
पर लाद कर यरूशलेम नगर में लाए, और उसको
उसके मृत पूर्वजों के साथ दाऊदपुर में गाड़ दिया।
21तब यहूदा प्रदेश की समस्त जनता ने
अमस्याह के पुत्र अजर्याह को चुना, और
उसको उसके पिता के स्थान पर राजा बनाया।
वह उस समय सोलह वर्ष का था। 22अजर्याह
ने अपने पिता राजा अमस्याह की मृत्यु के
पश्चात् एलोत नगर का निर्माण कर उसको
पुनः यहूदा राज्य के अधिकार में कर लिया।

इस्राएल प्रदेश पर यारोबआम द्वितीय का राज्य

23 यहूदा प्रदेश के राजा अमस्याह बेन-
योआश के राज्य-काल के पन्द्रहवें वर्ष में
इस्राएल प्रदेश का राजा यारोबआम बेन-
यहोआश सामरी नगर में राज्य करने लगा।
उसने इकतालीस वर्ष तक राज्य किया। 24परन्तु
जो कार्य प्रभु की दृष्टि में बुरा था, उसने वही
किया। जैसे यारोबआम बेन-नबाट ने इस्राएली

---

* अथवा ''बन्धक-व्यक्ति''

14 : 8-14 2 इत 25 : 17-24 **14 : 9** शास 9 : 8 **14 : 17-20** 2 इत 25 : 25-28 **14 : 21** 2 इत 26 : 1
14 : 23 आमो 1 : 1; हो 1 : 1

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जनता से पाप कराया था, वैसे उसने भी कराया। वह यारोबआम बेन-नबाट के पाप-मार्ग से विमुख नहीं हुआ।

25 यारोबआम बेन-यहोआश ने इस्राएली राज्य की सीमा, हमात घाटी की सीमा से मृत सागर तक, पुन: स्थापित कर ली। यह इस्राएली राष्ट्र के प्रभु परमेश्वर के वचन के अनुसार सम्पन्न हुआ। प्रभु ने गत-हेफेर नगर के अपने सेवक नबी योना बेन-अमित्तय के मुख से ऐसा ही कहा था। [26]प्रभु ने यह देखा था कि इस्राएली जनता की पीड़ा कितनी असहनीय है। वहां न स्वतन्त्र और न गुलाम व्यक्तियों में इस्राएली जनता की सहायता करने वाला कोई रह गया था। [27]प्रभु ने यह नहीं कहा था कि वह धरती से इस्राएली जनता का नामोनिशान मिटा देगा। अत: उसने यारोबआम बेन-यहोआश के हाथ से उनकी रक्षा की।

28 यारोबआम के शेष कार्यों का विवरण, उसके समस्त कार्यों का, उसके वीरतापूर्ण कार्यों का विवरण, 'इस्राएल प्रदेश के राजाओं का इतिहास-ग्रन्थ' में लिखा हुआ है। उसने किस प्रकार दमिश्क और हमात नगरों को जीतकर इस्राएली राज्य में* सम्मिलित किए थे, इसका भी विवरण उस ग्रन्थ में लिखा हुआ है।

29 यारोबआम अपने मृत पूर्वजों, इस्राएल प्रदेश के राजाओं के साथ सो गया। उसका पुत्र जकर्याह उसके स्थान पर राज्य करने लगा।

यहूदा प्रदेश पर अजर्याह (ऊज्जियाह) का राज्य

15 इस्राएल प्रदेश के राजा यारोबआम के राज्यकाल के सत्ताईसवें वर्ष में यहूदा प्रदेश का राजा अजर्याह बेन-अमस्याह राज्य करने लगा। [2]जब उसने राज्य करना आरम्भ किया तब वह सोलह वर्ष का था। उसने बावन वर्ष तक यरूशलेम नगर में राज्य किया। उसकी मां का नाम यकोलियाह था। वह यरूशलेम नगर की रहने वाली थी। [3]जैसे उसके पिता अमस्याह ने उन कार्यों को किया था जो प्रभु की दृष्टि में उचित थे, वैसे ही उसने भी किया। [4]फिर भी पहाड़ी शिखर की वेदियां नहीं तोड़ी गईं। लोग उन पर पशु-बलि चढ़ाते और सुगन्धित धूप-द्रव्य जलाते रहे। [5]प्रभु ने राजा को कुष्ठ-रोग से पीड़ित कर दिया। वह मृत्यु-पर्यन्त कुष्ठ-रोगी रहा। वह अलग महल में रहता था। उसका पुत्र योताम राजपरिवार की व्यवस्था करता था। योताम ही जनता पर शासन और उनका न्याय करता था। [6]अजर्याह के शेष कार्यों का विवरण, उसके समस्त कार्यों का विवरण, 'यहूदा प्रदेश के राजाओं का इतिहास-ग्रन्थ' में लिखा हुआ है। [7]अजर्याह अपने मृत पूर्वजों के साथ सो गया। उसको उसके पूर्वजों के साथ दाऊद-पुर में गाड़ा गया। उसका पुत्र योताम उसके स्थान पर राज्य करने लगा।

इस्राएल प्रदेश पर जकर्याह का राज्य

8 यहूदा प्रदेश के राजा अर्जयाह के राज्य-काल के अड़तीसवें वर्ष में जकर्याह बेन-यारोबआम ने इस्राएल प्रदेश पर सामरी नगर में छ: महीने तक राज्य किया। [9]जैसे उसके पूर्वजों ने उन कार्यों को किया था जो प्रभु की दृष्टि में बुरे थे, वैसे ही उसने भी किया। जैसे यारोबआम बेन-नबाट ने इस्राएली जनता से पाप कराए थे, वैसे उसने भी कराए। वह यारोबआम बेन-नबाट के पाप-मार्ग से विमुख नहीं हुआ।

10 शल्लूम बेन-याबेश ने उसके विरुद्ध षड्यन्त्र रचा। उसने इब्लआम नगर में** जकर्याह पर हमला किया, और उसको मार डाला। तत्पश्चात् वह उसके स्थान पर राज्य करने लगा।

11 जकर्याह के शेष कार्यों का विवरण 'इस्राएल प्रदेश के राजाओं का इतिहास-ग्रन्थ' में लिखा हुआ है। [12]यों प्रभु का यह वचन, जो उसने येहू से कहा था, पूरा हुआ: 'केवल चौथी पीढ़ी तक तेरे वंशज इस्राएल के सिंहासन पर बैठेंगे'।

---

* मूल में ''इस्राएल में यहूदा के लिए'' ** मूल में, 'जनता के सामने'।

14 : 25 योना 1 : 1 15 : 2-3 2 इत 26 : 3-4 15 : 5-7 2 इत 26 : 20-23 15 : 5 लेव 13 : 46 15 : 7 यश 6 : 1; मी 1 : 1 15 : 12 2 रा 10 : 30

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इस्राएल प्रदेश पर शल्लूम का राज्य

13 यहूदा प्रदेश के राजा ऊज्जियाह+ के राज्य-काल के उन्तालीसवें वर्ष में शल्लूम बेन-याबेश ने राज्य करना आरम्भ किया। उसने केवल एक महीने तक सामरी नगर में राज्य किया। 14तब मनहेम बेन-गादी ने तिर्साह नगर से उस पर चढ़ाई की। मनहेम सामरी नगर में आया। उसने वहीं शल्लूम पर हमला किया, और उसको मार डाला। तत्पश्चात् वह उसके स्थान पर राज्य करने लगा।

15शल्लूम के शेष कार्यों का विवरण, उसके षड्यन्त्र का विवरण, 'इस्राएल प्रदेश के राजाओं का इतिहास-ग्रन्थ' में लिखा हुआ है।

16 तब मनहेम ने तप्पूह++ नगर पर आक्रमण किया। उसने नगर को तथा नगर निवासियों को नष्ट कर दिया। उसने तिर्साह नगर से तप्पूह नगर की सीमाओं तक समस्त क्षेत्र को उजाड़ दिया। लोगों ने तप्पूह नगर का प्रवेश-द्वार उसके लिए नहीं खोला था। इसलिए उसने उसको नष्ट कर दिया। उसने नगर की गर्भवती स्त्रियों के पेट चीर दिए।

इस्राएल प्रदेश पर मनहेम का राज्य

17 यहूदा प्रदेश के राजा अजर्याह के राज्य-काल के उनतालीसवें वर्ष में मनहेम बेन-गादी ने इस्राएल प्रदेश पर राज्य करना आरम्भ किया। उसने राजधानी सामरी नगर में दस वर्ष तक राज्य किया। 18जो कार्य प्रभु की दृष्टि में बुरा था, उसने वही किया। जैसे यारोबआम बेन-नबाट ने इस्राएली जनता से पाप-कर्म कराए थे, वैसे ही उसने भी कराए। वह अपने जीवन भर यारोबआम के पाप-मार्ग से विमुख नहीं हुआ।

19 मनहेम के राज्य-काल में असीरिया देश के राजा पूल** ने इस्राएल प्रदेश पर चढ़ाई की। मनहेम ने पूल को लगभग पैंतीस हजार किलो चांदी दी, ताकि राजा पूल उसके हाथ में राजसत्ता को दृढ़ करने में उसकी सहायता करे। 20मनहेम ने पूल को यह चांदी देने के लिए इस्राएल प्रदेश के सब धनी-मानी लोगों पर कर लगाया; प्रत्येक व्यक्ति को आधा किलो चांदी देनी पड़ी। अत: असीरिया देश का राजा पूल इस्राएल प्रदेश में नहीं ठहरा। वह अपने देश को लौट गया।

21 मनहेम के शेष कार्यों का विवरण, उसके सब कार्यों का विवरण, 'इस्राएल प्रदेश के राजाओं का इतिहास-ग्रन्थ' में लिखा हुआ है। 22मनहेम अपने मृत पूर्वजों के साथ सो गया। उसका पुत्र पकहयाह उसके स्थान पर राज्य करने लगा।

इस्राएल प्रदेश पर पकहयाह का राज्य

23 यहूदा प्रदेश के राजा अजर्याह के राज्यकाल के पचासवें वर्ष में पकहयाह बेन-मनहेम इस्राएल प्रदेश पर सामरी नगर में राज्य करने लगा। उसने दो वर्ष तक राज्य किया। 24जो कार्य प्रभु की दृष्टि में बुरा था, उसने वही किया। जैसे यारोबआम बेन-नबाट ने इस्राएली जनता से पाप-कर्म कराए थे, वैसा ही उसने भी कराए। वह यारोबआम के पाप-मार्ग से विमुख नहीं हुआ। 25पेकह बेन-रमलयाह ने, जो उसका सेना-नायक था, उसके विरुद्ध षड्यन्त्र रचा। उसने गिलआद क्षेत्र के पचास सैनिकों के साथ++ सामरी नगर में पकहयाह पर हमला किया, और राजमहल की गढ़ी में उसको मार डाला। वह उसके स्थान पर राज्य करने लगा।

26 पकहयाह के शेष कार्यों का विवरण, उसके सब कार्यों का विवरण, 'इस्राएल प्रदेश के राजाओं का इतिहास-ग्रन्थ' में लिखा हुआ है।

इस्राएल प्रदेश पर पेकह का राज्य

27 यहूदा प्रदेश के राजा अजर्याह के राज्यकाल के बावनवें वर्ष में पेकह बेन-रमलयाह ने इस्राएल प्रदेश पर सामरी नगर में राज्य करना आरम्भ किया। उसने बीस वर्ष तक राज्य किया। 28जो कार्य प्रभु की दृष्टि में बुरा था, उसने वही किया। जैसे यारोबआम बेन-नबाट ने इस्राएली जनता से पाप-कर्म कराए थे,

---

+ अर्थात् 'अजर्याह', जो अपने दीर्घ शासनकाल के कारण अधिकतर 'ऊज्जियाह' (मेरा सामर्थ्य प्रभु ही है) कहलाता है।
++ मूल में, 'तिप्सह'। ** अर्थात् 'तिग्लत-पलेसेर'। ++ मूल में, 'अर्गोब तथा अर्ये की सहायता से'। संदिग्ध पाठ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वैसे उसने भी कराए। वह यारोबआम के पाप-
मार्ग से विमुख नहीं हुआ।
29 इस्राएल के राजा पेकह के राज्य-काल
में असीरिया देश के राजा तिग्लत-पलेसेर ने
आक्रमण किया। उसने इन नगरों और प्रदेशों
पर कब्जा कर लिया : इय्योन, आबेल बेत-
माकाह, यानोह, केदेश, हासोर, गिलआद,
तथा गलील और नफ्ताली का समस्त प्रदेश।
वह लोगों को बन्दी बनाकर असीरिया देश ले
गया।
30 तब होशे बेन-एलाह ने पेकह बेन-
रमलयाह के विरुद्ध षड्यन्त्र रचा। उसंने उस
पर हमला किया और उसको मार डाला। वह
योताम बेन-ऊज्जियाह के राज्य-काल के
बीसवें वर्ष में पेकह के स्थान पर राज्य करने
लगा।
31 पेकह के शेष कार्यों का विवरण,उसके
समस्त कार्यों का विवरण, 'इस्राएल प्रदेश के
राजाओं का इतिहास-ग्रन्थ' में लिखा हुआ है।

यहूदा प्रदेश पर योताम का राज्य

32 इस्राएल प्रदेश के राजा पेकह बेन-
रमलयाह के राज्य-काल के दूसरे वर्ष में यहूदा
प्रदेश के राजा ऊज्जियाह के पुत्र योताम ने राज्य
करना आरम्भ किया। 33जब उसने राज्य करना
आरम्भ किया तब वह पच्चीस वर्ष का था।
उसने सोलह वर्ष तक राजधानी यरूशलेम में
राज्य किया। उसकी मां का नाम यरूशा था।
वह सादोक की पुत्री थी।
34 जैसे उसके पिता ऊज्जियाह ने उन कार्यों
को किया, जो प्रभु की दृष्टि में उचित थे, वैसे
उसने भी किया। 35फिर भी पहाड़ी शिखर की
वेदियां नहीं तोड़ी गईं। लोग उन पर पशु-बलि
चढ़ाते और सुगन्धित धूप-द्रव्य जलाते रहे।
योताम ने प्रभु के भवन का ऊपरवाला द्वार
फिर से बनवाया था।
36 योताम के शेष कार्यों का विवरण, उसके
समस्त कार्यों का विवरण, 'यहूदा प्रदेश के
राजाओं का इतिहास-ग्रन्थ' में लिखा हुआ है।
37 योताम के राज्य-काल में प्रभु सीरिया के
राजा रसीन और इस्राएल प्रदेश के राजा पेकह
बेन-रमलयाह को यहूदा प्रदेश पर आक्रमण के
उद्देश्य से भेजने लगा।
38 तब योताम अपने मृत पूर्वजों के साथ सो
गया। उसको उसके पूर्वजों के साथ उसके
पूर्वज दाऊद के नगर में गाड़ा गया। उसका पुत्र
आहाज उसके स्थान पर राज्य करने लगा।

यहूदा प्रदेश पर आहाज का राज्य

16 पेकह बेन-रमलयाह के राज्य-काल
के सत्रहवें वर्ष आहाज बेन-योताम ने
यहूदा प्रदेश पर राज्य करना आरम्भ किया।
2जब आहाज ने राज्य करना आरम्भ किया तब
वह बीस वर्ष का था। उसने राजधानी यरूशलेम
में सोलह वर्ष तक राज्य किया।
उसने अपने पूर्वज दाऊद के आचरण का
अनुसरण नहीं किया। उसने वे कार्य नहीं किए
जो प्रभु परमेश्वर की दृष्टि में उचित हैं। 3वह
इस्राएल प्रदेश के राजाओं के मार्ग पर चला।
जिन जातियों को प्रभु ने इस्राएली लोगों को
बसाने के लिए कनान देश से निकाल दिया
था,उनकी घृणित प्रथा के अनुसार आहाज ने
अपने पुत्र को अग्नि में बलि के रूप में चढ़ाया।
4वह पहाड़ी शिखर की वेदियों पर,पहाड़ियों
पर तथा प्रत्येक हरे वृक्ष के नीचे पशु-बलि
चढ़ाता और सुगन्धित धूप-द्रव्य जलाता था।
5 तब सीरिया के राजा रसीन और इस्राएल
प्रदेश के राजा पेकह बेन-रमलयाह ने युद्ध के
उद्देश्य से यरूशलेम नगर पर चढ़ाई कर दी।
उन्होंने राजा आहाज को घेर तो लिया, पर वे
उसको युद्ध के लिए विवश नहीं कर सके।
6(उन्हीं दिनों में एदोम देश के राजा ने एलोत
नगर को अपने देश में फिर मिला लिया। उसने
यहूदा प्रदेश के नागरिकों को एलोत नगर से
निकाल दिया। तब एदोम देश के नागरिक
एलोत नगर में आए। वे वहां बस गए। वे आज
भी वहां रहते हैं।) 7अत: आहाज ने असीरिया
देश के राजा तिग्लत-पलेसेर के पास दूतों द्वारा

15 : 33-35 2 इत 27 : 1-3 15 : 38 2 इत 27 : 9 16 : 2-4 2 इत 28 : 1-4 16 : 3 लेव 18 : 21; व्य 12 : 31 16 : 5 यश 7 : 1; हो 5 : 8—6 : 6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यह सन्देश भेजा : 'मैं आपका सेवक और पुत्र हूँ। कृपया, आइए और सीरिया के राजा तथा इस्राएल प्रदेश के राजा के हाथ से मुझे मुक्त कीजिए। वे मुझ पर आक्रमण कर रहे हैं।' [8]आहाज ने प्रभु-भवन और राजमहल के कोषागारों में प्राप्त सोना-चांदी को निकाला, और उनको असीरिया के राजा के पास भेंट के रूप में भेज दिया।

9 असीरिया के राजा ने आहाज के सन्देश को सुना। उसने सीरिया की राजधानी दमिश्क पर आक्रमण कर दिया। उसने दमिश्क नगर पर अधिकार कर लिया। उसने राजा रसीन को मार डाला, और उसकी प्रजा को बन्दी बनाकर कीर नगर ले गया।

10 राजा आहाज असीरिया देश के राजा तिग्लत-पलेसेर से भेंट करने के लिए दमिश्क नगर को गया। उसने दमिश्क में एक वेदी देखी। उसने पुरोहित ऊरियाह के पास उस वेदी का नक्शा और विस्तृत विवरण के साथ वेदी का नमूना भेजा। [11]पुरोहित ऊरियाह ने वेदी निर्मित की। जो निर्देश राजा आहाज ने दमिश्क से भेजे थे, उनके अनुसार पुरोहित ऊरियाह ने राजा आहाज के लौटने के पूर्व ही वेदी का निर्माण कर दिया।

12 राजा आहाज दमिश्क नगर से लौटा। उसने वेदी का अवलोकन किया। वह वेदी के समीप गया और उस पर चढ़ा। [13]उसने अग्नि-बलि और अन्न-बलि जलायीं, और पेय-बलि उण्डेली। उसने सहभागिता-बलि के पशुओं का रक्त वेदी पर छिड़का। [14]उसने प्रभु के सम्मुख की कांस्य वेदी को मन्दिर के सामने से, अर्थात् अपनी नई वेदी और प्रभु-मन्दिर के बीच में से, हटा दिया और उसको अपनी वेदी के उत्तर की ओर रख दिया। [15]राजा आहाज ने पुरोहित ऊरियाह को यह आदेश दिया, 'आप इस महावेदी पर पहले के समान प्रातःकालीन अग्नि-बलि, सन्ध्याकालीन अन्न-बलि, राज अग्नि-बलि और राज अन्न-बलि तथा समस्त देशवासियों की अग्नि-बलि, अन्न-बलि और पेय-बलि चढ़ा सकते हैं। इसके अतिरिक्त आप इसी महावेदी पर अग्नि-बलि के पशु तथा अन्य बलि-पशुओं का रक्त छिड़केंगे। परन्तु मैं कांस्य वेदी का उपयोग प्रभु का उत्तर प्राप्त करने के लिए करूंगा।' + [16]पुरोहित ऊरियाह ने राजा आहाज के आदेश के अनुसार सब कार्य किए।

17 राजा आहाज ने ठेलों की चौखटों को काट दिया, और चौखटों के दिल्लों को हटा दिया। उसने कांस्य के बैलों पर से, जो हौज के नीचे थे, हौज को उतार कर पत्थर के चबूतरे पर रख दिया। [18]असीरिया के राजा के सन्तोष के लिए उसने विश्राम-दिवस पर प्रयुक्त होने वाले मण्डप को, जो प्रभु-मन्दिर के भीतर था, तथा राजा के लिए निर्मित बाहरी प्रवेश-द्वार को निकलवा दिया।

19 आहाज के शेष कार्यों का विवरण 'यहूदा प्रदेश के राजाओं का इतिहास-ग्रन्थ' में लिखा हुआ है। [20]आहाज अपने मृत पूर्वजों के साथ सो गया। उसको उसके पूर्वजों के साथ दाऊदपुर में गाड़ा गया। उसका पुत्र हिजकियाह उसके स्थान पर राज्य करने लगा।

इस्राएल प्रदेश पर होशे का राज्य

17 यहूदा प्रदेश के राजा आहाज के राज्य-काल के बारहवें वर्ष में होशे बेन-एलाह ने इस्राएल प्रदेश पर राजधानी सामरी नगर में राज्य करना आरम्भ किया। उसने नौ वर्ष तक राज्य किया। [2]जो कार्य प्रभु की दृष्टि में बुरा था, उसने वही किया। फिर भी उसने उतने बुरे कार्य नहीं किए, जितने इस्राएल प्रदेश के पूर्ववर्ती राजाओं ने किए थे।

3 असीरिया देश के राजा शलमन-एसेर ने होशे पर आक्रमण किया। होशे राजा शलमन-एसेर के अधीन हो गया। वह उसको प्रति वर्ष कर देता था।

+ मूल अस्पष्ट

16 : 14 1 रा 8 : 64; 2 इत 4 : 1 **16 : 15** नि 29 : 39 **16 : 17** 1 रा 7 : 23 **16 : 20** यश 14 : 28; 2 इति 28 : 27

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सामरी-राज्य का पतन

4 एक बार राजा होशे ने मिस्र देश के राजा
सेवे को दूत भेजे। इसके अतिरिक्त, जो कर वह
प्रति वर्ष असीरिया देश के राजा को देता था,
उसको उसने बन्द कर दिया। असीरिया देश के
राजा को होशे के इस विश्वासघात का पता
लगा। असीरिया देश के राजा ने उसको बन्दी
बना लिया, और उसको बन्दी-गृह में डाल
दिया। 5तत्पश्चात् उसने समस्त इस्राएल प्रदेश
पर चढ़ाई कर दी। वह सामरी नगर पहुंचा। वह
तीन वर्ष तक राजधानी को घेरे रहा। 6होशे के
राज्य-काल के नौवें वर्ष में असीरिया देश के
राजा ने राजधानी सामरी नगर पर अधिकार कर
लिया। वह इस्राएलियों को बन्दी बनाकर
असीरिया देश में ले गया। उसने इस्राएलियों
को हलह नगर में तथा गोजान क्षेत्र की हाबोर
नदी के तट पर, और मादय देश के नगरों में
बसाया।

पतन का कारण

7 इस पतन का कारण यह है : इस्राएलियों
ने अपने प्रभु परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया था।
प्रभु ने उन्हें मिस्र देश के राजा फरओ के पंजे
से निकाला था। किन्तु इस्राएली अन्य देवताओं
की पूजा-आराधना करने लगे थे। 8जिन जातियों
को प्रभु ने उनकी भूमि पर से इस्राएलियों के
लिए निकाल दिया था,उन्हीं जातियों की
संविधियों पर इस्राएली चलते थे। 9इस्राएल प्रदेश
के राजाओं ने तथा प्रजा ने अपने प्रभु परमेश्वर
के विरुद्ध चुपचाप ऐसे कार्य किए,जो सर्वथा
अनुचित थे। उन्होंने प्रत्येक नगर में, मीनार
वाले नगरों से लेकर किला-बन्द नगरों तक,
अपने लिए पहाड़ी शिखरों पर वेदियों का
निर्माण किया था। 10उन्होंने हरएक ऊंची पहाड़ी
पर तथा प्रत्येक हरे-भरे वृक्ष के नीचे अपने
लिए पूजा-स्तम्भ और अशेराह देवी की मूर्ति
प्रतिष्ठित की थी। 11वहां वे उन जातियों के
समान, जिन्हें प्रभु ने उनके सम्मुख से खदेड़
दिया था, पहाड़ी शिखर की वेदियों पर
सुगन्धित धूप-द्रव्य जलाया करते थे। उन्होंने
दुष्कर्म किए, और प्रभु के क्रोध को भड़काया।
12प्रभु ने उनको यह आदेश दिया था : 'तुम मूर्ति
की पूजा मत करना।' परन्तु उन्होंने मूर्ति की
पूजा की।

13 प्रभु इस्राएल और यहूदा प्रदेशों को
नबियों और द्रष्टाओं के द्वारा चेतावनी देता
रहा। प्रभु ने उनसे कहा, 'अपने कुमार्गों को
छोड़ दो, और मेरी आज्ञाओं और संविधियों का
पालन करो। जो व्यवस्था मैंने तुम्हारे पूर्वजों को
प्रदान की थी, जो व्यवस्था मैंने अपने सेवक
नबियों के हाथ से तुम्हें भेजी थी, उसके
अनुसार कार्य करो।' 14परन्तु उन्होंने नहीं सुना।
जैसे उनके पूर्वज जिद्दी थे, जिन्होंने अपने प्रभु
परमेश्वर पर विश्वास नहीं किया था, वैसे ही
वे जिद्दी थे। 15उन्होंने प्रभु की संविधियों को,
अपने पूर्वजों के साथ स्थापित प्रभु के विधान
को अस्वीकार किया और उसकी चेतावनी की
घोर उपेक्षा की। उन्होंने झूठी मूर्तियों का
अनुसरण किया, और स्वयं झूठे बन गए।
उन्होंने अपने चारों ओर की जातियों के दुष्कर्मों
का अनुकरण किया। उनके विषय में प्रभु ने
इस्राएलियों को आदेश दिया था कि उनके
समान कार्य मत करना। 16उन्होंने अपने प्रभु
परमेश्वर की सब आज्ञाओं को त्याग दिया,
और अपने लिए बछड़े की दो मूर्तियां ढालीं।
उन्होंने अशेराह देवी की मूर्ति प्रतिष्ठित की। वे
आकाश की प्राकृतिक शक्तियों की वन्दना
और बअल देवता की पूजा करने लगे। 17वे अपने
पुत्र अथवा पुत्री को अग्नि में बलि के रूप में
चढ़ाते थे। वे शकुन विचारते और जादू-टोना
करते थे। उन्होंने प्रभु की दृष्टि में दुष्कर्म करने
के लिए अपने को बेच दिया था, और यों प्रभु
के क्रोध को भड़काया था। 18अत: प्रभु
इस्राएलियों से बहुत नाराज हुआ, और उसने
उनको अपनी आंखों के सामने से हटा दिया।
केवल यहूदा कुल के वंशज शेष रहे।

19 परन्तु यहूदा के वंशजों ने भी अपने प्रभु

---

17 : 10 1 रा 14 : 23; नि 34 : 13; व्य 12 : 2 17 : 13 यश 1 : 16-20 17 : 15 यिर 2 : 5 17 : 16 1 रा 12 : 28 17 : 17 लेव 18 : 21; व्य 18 : 10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन नहीं किया।
जिन प्रथाओं का पालन इस्राएल प्रदेश की
जनता करती थी, उनको यहूदा प्रदेश की जनता
ने भी अपना लिया और वे उनके अनुसार
आचरण करते थे। 20अत: प्रभु ने इस्राएल के
सब वंशजों को अस्वीकार किया। उसने उनको
दु:ख दिया और लुटेरों के हाथ में सौंप दिया,
और अन्त में उनको अपने सम्मुख से निकाल
दिया।

21 जब प्रभु ने इस्राएल प्रदेश को दाऊद के
राजवंश से अलग किया था, तब इस्राएल प्रदेश
के निवासियों ने यारोबआम बेन-नबाट को
अपना राजा बनाया था। यारोबआम ने इस्राएल
प्रदेश की जनता को प्रभु के मार्ग से भटका
दिया, और उससे महापाप कराया। 22जिस पाप-
मार्ग पर यारोबआम चला, उस पर इस्राएल
प्रदेश की जनता भी चली। वह पाप-मार्ग से
विमुख नहीं हुई। 23अत: अन्त में प्रभु ने
इस्राएलियों को अपने सम्मुख से निकाल दिया,
जैसा उसने अपने सेवक नबियों के मुख से कहा
था। इस्राएली लोग स्वदेश से निकाल दिए गए,
और असीरिया देश में आज तक निर्वासित हैं।

सामरी प्रदेश का पुन: आबाद होना

24 असीरिया देश के राजा ने बेबीलोन,
कूत, अव्वा, हमात और सपरवइम नगरों से
लोगों को निर्वासित किया, और उनको सामरी
प्रदेश के नगरों में इस्राएलियों के स्थान पर बसा
दिया। उन्होंने सामरी प्रदेश पर कब्जा कर लिया
और वे उसके नगरों में बस गए। 25अपने निवास
के आरम्भिक दिनों में वे प्रभु की आराधना नहीं
करते थे। अत: प्रभु ने उनकी बस्तियों में सिंहों
को भेजा, जिन्होंने उनके कुछ लोगों को मार
डाला। 26असीरिया के राजा को यह समाचार
मिला, 'जिन जातियों को आपने सामरी नगरों में
ले जाकर बसाया है, वे उस देश के देवता की
प्रथा को नहीं जानते हैं। अत: उसने उनके मध्य
सिंह भेजे हैं, जो उनको मार रहे हैं। महाराज, ये
जातियां निस्सन्देह उस देश के देवता की प्रथा
से अपरिचित हैं।' 27तब असीरिया के राजा ने
असीरियों को यह आदेश दिया, 'जो पुरोहित
तुम वहां से बन्दी बनाकर लाए हो, उनमें से
किसी को वहां भेजो। वह वहां जाएगा, और
वहीं रहेगा। वह लोगों को उस देश के देवता
की प्रथा के विषय में शिक्षा देगा।' 28अत: एक
पुरोहित, जिसको वे सामरी नगर से बन्दी
बनाकर ले गए थे, बेत-एल नगर में गया और
वहां रहने लगा। वह लोगों को सिखाता था कि
उन्हें किस प्रकार प्रभु की आराधना करनी
चाहिए।

29 फिर भी सामरी नगरों में बसी हुई
जातियां अपने-अपने राष्ट्रीय देवता की मूर्तियां
बनातीं, और उनको पहाड़ी शिखर की वेदियों
के आराधना-गृहों में प्रतिष्ठित करती थीं। इन
आराधना-गृहों को सामरी लोगों ने निर्मित
किया था। प्रत्येक जाति ने अपने नगर में अपने
राष्ट्रीय देवता की मूर्ति प्रतिष्ठित की। 30बेबीलोनी
लोगों ने सूक्कोत-बनोत देवता की, कूती लोगों
ने नेर्गल देवता की, हमाती लोगों ने असीमा
देवता की, 31अव्वी लोगों ने निब्हज और
तरताक देवताओं की मूर्तियां प्रतिष्ठित कीं।
सपरवइम नगर के देवता अद्र-मेलेक और
अन-मेलेक थे। सपरवइमी लोग इन देवताओं
के लिए अपने बच्चों को अग्नि में चढ़ाते थे।
32ये जातियां प्रभु की भी आराधना करती थीं।
उन्होंने अनेक वर्ग के पुरुषों को पहाड़ी शिखर
की वेदियों के पुरोहित नियुक्त किए थे, जो
उनके लिए आराधना-गृहों में बलि चढ़ाते थे।
33ये जातियां प्रभु की आराधना करती तो थीं,
पर वे अपने देश की प्रथा के अनुसार, जहां से
वे निर्वासित हुई थीं, अपने-अपने राष्ट्रीय देवता
की पूजा भी करती थीं। 34वे आज भी प्राचीन
रीति-रिवाजों का पालन करती हैं।

सामरी लोग+ प्रभु का भय नहीं मानते थे।
वे उन संविधियों, न्याय-सिद्धान्तों, व्यवस्था
और आज्ञाओं का पालन नहीं करते थे, जिन्हें
प्रभु ने याकूब के वंशजों को प्रदान किया था।

+ मूल में, 'वे'

17 : 21 1 रा 12 : 20 **17 : 29** यो 4 : 18 **17 : 34** उत 32 : 28

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

याकूब का नाम उसने 'इस्राएल' रखा था।
35प्रभु ने याकूब के वंशजों के साथ यह विधान
स्थापित किया था और उनको यह आज्ञा दी
थी,' तुम अन्य देवताओं की पूजा मत करना।
तुम झुककर उनकी वन्दना मत करना। उनकी
सेवा मत करना, और न उनके लिए बलि
चढ़ाना। 36किन्तु तुम केवल प्रभु की आराधना
करना, जिसने तुमको अपने महासामर्थ्य से
और उद्धार के लिए फैली हुई भुजाओं से मिस्र
देश से बाहर निकाला था। तुम केवल उसकी
वन्दना करना, और उसके लिए ही बलि
चढ़ाना। 37जो संविधियां, न्याय-सिद्धान्त,
व्यवस्था और आज्ञाएं उसने तुम्हारे लिए लिखी
हैं, उनका पालन करने में सदा तत्पर रहना। तुम
अन्य देवताओं की पूजा कदापि मत करना।
38जो विधान प्रभु ने तुम्हारे साथ स्थापित किया
है, उसको मत भूलना। तुम अन्य देवताओं की
पूजा कभी मत करना। 39परन्तु तुम अपने प्रभु
परमेश्वर की आराधना करना; और वह तुम्हारे
शत्रुओं के हाथ से तुम्हें मुक्त करेगा।' 40फिर
भी उन्होंने ये बातें नहीं सुनीं। वे अपने प्राचीन
रीति-रिवाजों का पालन करते रहे।
41 ये जातियां एक ओर तो प्रभु की
आराधना करती थीं, और दूसरी ओर अपने
राष्ट्रीय देवताओं की मूर्तियों की पूजा भी। ऐसा
ही उनकी सन्तान भी करती रही। पीढ़ी से पीढ़ी
यह होता रहा। जैसा उनके पूर्वजों ने किया था
वैसा ही आज भी उनके वंशज करते हैं।

यहूदा प्रदेश पर हिजकियाह का राज्य

18 इस्राएल प्रदेश के राजा होशे बेन-
एलाह के राज्य-काल के तीसरे वर्ष में
हिजकियाह बेन-आहाज ने यहूदा प्रदेश पर
राज्य करना आरम्भ किया। 2जब उसने राज्य
करना आरम्भ किया, तब वह पच्चीस वर्ष का
था। उसने उनतीस वर्ष तक राजधानी यरूशलेम
में राज्य किया। उसकी मां का नाम अबीयाह
था। वह जकरयाह की पुत्री थी।
3 हिजकियाह ने अपने पूर्वज दाऊद के
समान वे ही कार्य किए जो प्रभु की दृष्टि में
उचित थे। 4उसने पहाड़ी शिखर की वेदियां
हटा दीं। पूजा-स्तम्भ तोड़ दिए। अशेराह देवी
की मूर्ति ध्वस्त कर दी। जो पीतल का सर्प मूसा
ने बनाया था, और जिसके सम्मुख अब तक
इस्राएली सुगन्धित धूप-द्रव्य जलाते आ रहे थे,
उसको भी हिजकियाह ने टुकड़े-टुकड़े कर
दिया। पीतल के सर्प का नाम नहूश्तान था।
5 हिजकियाह ने इस्राएली राष्ट्र के प्रभु
परमेश्वर पर भरोसा किया। यहूदा प्रदेश में
हिजकियाह के समान राजा नहीं हुआ : न
उसके पहले और न उसके बाद। 6वह प्रभु से
चिपका रहा। उसने प्रभु का अनुसरण करना
नहीं छोड़ा। जो आज्ञाएं प्रभु ने मूसा को दी थीं,
वह उनका पालन करता रहा। 7प्रभु उसके साथ
था। जब-जब वह युद्ध पर निकलता, प्रभु उसे
सफलता प्रदान करता था। उसने असीरिया के
राजा के विरुद्ध विद्रोह कर दिया था। वह उसके
अधीन नहीं रहा। 8उसने पलिश्ती देश पर, गाजा
नगर और उसकी सीमाओं तक, मीनारवाले तथा
किलाबन्द नगरों पर अधिकार कर लिया था।
9 राजा हिजकियाह के राज्य-काल के चौथे
वर्ष में, (जो इस्राएल प्रदेश के राजा होशे बेन-
एलाह के राज्य-काल का सातवां वर्ष था)
असीरिया देश के राजा शलमन-एसेर ने
राजधानी सामरी नगर पर आक्रमण किया।
उसने उसको घेर लिया। 10वह तीन वर्ष तक
उसको घेरे रहा। तत्पश्चात् उसने सामरी प्रदेश
पर अधिकार कर लिया। यह घटना राजा
हिजकियाह के राज्य-काल के छठे वर्ष में
घटी। (यह इस्राएल प्रदेश के राजा होशे बेन-
एलाह के राज्य-काल का नौवां वर्ष था)
11असीरिया देश का राजा इस्राएलियों को बन्दी
बनाकर असीरिया देश में ले गया। उसने
इस्राएलियों को हलह नगर में तथा गोजान क्षेत्र
की हाबोर नदी के तट पर और मादय देश के
नगरों में बसाया। 12सामरी राज्य के पतन का
कारण यह है : उसने अपने प्रभु परमेश्वर की

17 : 35 नि 20 : 5 17 : 36 व्य 6 : 13 17 : 41 यो 4 : 22 18 : 1-3 2 इत 29 : 1-2 18 : 4 गण 21 : 9
18 : 5 मत 27 : 43; 2 रा 23 : 25 18 : 9 2 रा 17 : 3

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वाणी को नहीं सुना, और उसके विधान का उल्लंघन किया। जो आज्ञाएं प्रभु ने अपने सेवक मूसा को दी थीं, इस्राएली लोगों ने न उनको सुना, और न उनके अनुसार कार्य किया।

राजा सनहेरिब का आक्रमण

13 राजा हिजकियाह के राज्य-काल के चौदहवें वर्ष में असीरिया के राजा सनहेरिब ने यहूदा प्रदेश पर आक्रमण किया। उसने यहूदा प्रदेश के सब किलाबन्द नगरों पर अधिकार कर लिया। 14यहूदा प्रदेश के राजा हिजकियाह ने असीरिया देश के राजा के पास लाकीश नगर में यह सन्देश भेजा : 'मुझसे अपराध हुआ। कृपया मेरे देश से लौट जाइए। जो भी अर्थ-भार आप मुझ पर डालेंगे, मैं उसको वहन करूंगा।' अतः असीरिया के राजा ने यहूदा प्रदेश के राजा से दण्ड के रूप में दस हजार किलो चांदी और एक हजार किलो सोना मांगा। 15राजा हिजकियाह ने प्रभु-भवन और राजमहल के कोषागारों में उपलब्ध सब सोना-चांदी असीरिया के राजा को दे दिया। 16जो सोने की परतें उसने प्रभु-मन्दिर के दरवाजों और स्तम्भों पर मढ़ी थीं, उनको उसने खुरचकर निकाल लिया, और असीरिया के राजा को भेज दिया।

17 असीरिया के राजा ने लाकीश नगर से मुख्य सेनापति, मुख्य खोजा और मुख्य साकी को विशाल सेना के साथ राजा हिजकियाह के पास यरूशलेम नगर में भेजा। वे गए। उन्होंने यरूशलेम नगर में प्रवेश किया। वे उपरले जलकुण्ड की नहर के समीप रुक गए। यह धोबी-खेत को जानेवाले राजमार्ग पर स्थित है। 18उन्होंने राजा को पुकारा। तब राजमहल का गृह-प्रबन्धक एलयाकीम बेन-हिलकियाह बाहर निकला। उसके साथ महासहायक शेबनाह और राज-सचिव योआह बेन-आसाफ था।

19 मुख्य साकी ने उनसे कहा, 'जाओ, और हिजकियाह से यह कहो : असीरिया देश के महाराज यों कहते हैं : किस आधार पर तुम यह भरोसा करने लगे हो? 20तुम सोचते हो कि युद्ध के लिए शक्ति और युद्ध-कौशल नहीं, वरन् किसी के मुंह के शब्द ही पर्याप्त हैं। तुमने किस पर भरोसा करके मुझसे विद्रोह किया है? 21मिस्र देश पर? मिस्र देश क्या है? एक टूटा हुआ सरकण्डा! जो व्यक्ति उस पर टिकता है, वह उस व्यक्ति के हाथ में चुभता है, और उसको छेद देता है। मिस्र देश का राजा फरओ अपने भरोसा करने वालों के साथ ऐसा ही व्यवहार करता है। 22पर यदि तुम मुझसे यह कहोगे, "हमने अपने प्रभु परमेश्वर पर भरोसा किया," तो मैं तुमसे यह कहता हूँ : क्या यह वही प्रभु परमेश्वर नहीं है, जिसके पहाड़ी शिखर के आराधना-गृह तथा वेदियां हिजकियाह ने हटा दी हैं, और जिसके लिए हिजकियाह ने यहूदा प्रदेश और यरूशलेम के निवासियों को यह आदेश दिया है, "तुम यरूशलेम की वेदी के सम्मुख ही आराधना करना?"

23 'अब तुम असीरिया के महाराज, मेरे स्वामी के साथ एक शर्त बदो : मैं तुम्हें दो हजार घोड़े दूंगा, अगर तुम इन घोड़ों पर सवारी करने के लिए सवार ढूंढ़ सको! 24क्या तुम मिस्र देश के रथों और घुड़सवारों के बल पर मेरे महाराज के छोटे से छोटे सेनानायक को पीठ दिखाने के लिए विवश कर सकते हो? 25इसके अतिरिक्त, क्या मैं बिना प्रभु की इच्छा के इस स्थान को नष्ट करने आया हूँ? कदापि नहीं। प्रभु ने मुझसे कहा, "जा, इस प्रदेश पर चढ़ाई कर, और इसको नष्ट कर दे।" '

26 एलयाकीम बेन-हिलकियाह, शेबनाह और योआह ने मुख्य साकी से निवेदन किया, 'आप, कृपया, हमसे, अपने सेवकों से अरामी भाषा में बात कीजिए। हम इस भाषा को समझते हैं। इन लोगों के सामने जो परकोटे पर बैठे हैं, हमसे इब्रानी भाषा* में बात मत कीजिए।' 27मुख्य साकी ने उत्तर दिया, 'क्या

---

* मूल में, 'यहूदी भाषा'।

18 : 13-19 : 37 2 इत 32 : 1-21; यश 36 : 1—37 : 38 **18 : 17** यश 7 : 3 **18 : 21** यश 30 : 1-7; यहेज 29 : 6-7

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मेरे स्वामी ने केवल तुम्हारे स्वामी से, और
तुमसे ये बातें कहने के लिए भेजा है ? क्या मुझे
परकोटे पर बैठे इन लोगों से बात करने के लिए
नहीं भेजा है, जो तुम्हारे साथ अपना मल
खाएंगे, और अपना मूत्र पिएंगे ?'
28 तब मुख्य साकी खड़ा हुआ। उसने
इब्रानी भाषा में उच्च स्वर में पुकार कर यह
कहा, 'ओ लोगो ! असीरिया देश के महाराज
के ये वचन सुनो ! 29महाराज यों कहते हैं: तुम
हिजकियाह के भुलावे में मत आओ। वह तुम्हें
मेरे हाथ से बचा नहीं सकेगा। 30हिजकियाह
तुम्हें प्रभु पर भरोसा करने को कहेगा, और
बोलेगा, "प्रभु निश्चय ही हमें बचाएगा और
यह नगर असीरिया के राजा के हाथ में नहीं
पड़ेगा।" तुम उसकी बात पर विश्वास मत
करना। 31तुम हिजकियाह की बात मत सुनो!
असीरिया देश के महाराज यह कहते हैं : मुझसे
समझौता करो। हरएक व्यक्ति नगर से निकलकर
मेरे पास आए, और आत्म-समर्पण करे। तब
तुम-सब अपने अंगूर-उद्यान का, अपने अंजीर
वृक्ष का फल खा सकोगे, और अपने कुएं का
पानी पी सकोगे। 32इसके बाद मैं आऊंगा, और
तुम्हें एक ऐसे देश में ले जाऊंगा, जो तुम्हारे ही
देश के समान हरा-भरा है। वह अन्न और
अंगूर-रस का देश है। रोटी और अंगूर-उद्यान
का देश है, जैतून के तेल और शहद का देश है।
तब तुम भूख से नहीं मरोगे, वरन् जीवित
रहोगे। तुम हिजकियाह की बात मत सुनना।
उसकी इस बात के भुलावे में न आना कि प्रभु
तुम्हें बचाएगा। 33ओ लोगो ! क्या कभी किसी
शहर का इष्ट देवता अपने देश को असीरिया देश
के महाराज के हाथ से बचा सका है ? 34हमात
राज्य और अरपाद राज्य के इष्ट देवता कहां
गए ? सपरवइम, हेना, और इव्वा नगरों के इष्ट
देवता कहां गए ? सामरी नगर के इष्ट देवता कहां
गए ? क्या वे मेरे हाथ से सामरी नगर को बचा
सके ? 35किस देश के कौन-से देवता ने अपने
देश को मेरे हाथ से बचाया है ? तब क्या तुम्हारा
प्रभु यरूशलेम नगर को मेरे हाथ से बचा
सकेगा ?'
36 लोग चुप रहे। उन्होंने मुख्य साकी को
एक शब्द भी नहीं कहा; क्योंकि राजा हिजकियाह
का यह आदेश था : 'उसको उत्तर मत देना।'
37 तब राजमहल का गृह-प्रबन्धक
एलयाकीम, महासहायक शेबनाह और राज-
सचिव योआह बेन-आसाफ ने शोक प्रदर्शित
करने के लिए अपने वस्त्र फाड़े, और वे राजा
हिजकियाह के पास लौटे। उन्होंने मुख्य साकी
की बातें उसको बताईं।

नबी यशायाह

19 जब राजा हिजकियाह ने यह सुना तब
उसने पश्चात्ताप और शोक प्रकट करने
के लिए तत्काल अपने वस्त्र फाड़ दिए। उसके
बाद उसने अपने शरीर पर टाट के वस्त्र लपेटे
और वह प्रभु के भवन में गया। 2उसने गृह-
प्रबन्धक एलयाकीम, महासहायक शेबनाह
और वृद्ध पुरोहितों को नबी यशायाह बेन-
आमोत्स के पास भेजा। ये भी टाट के वस्त्र
लपेटे हुए थे। 3उन्होंने नबी यशायाह से कहा,
'महाराज हिजकियाह यों कहते हैं : हमारे लिए
आज का दिन संकट, दण्ड और अपमान का
दिन है। बच्चे के जन्म का समय तो पूरा हुआ,
किन्तु जच्चा में शक्ति नहीं रही कि वह उसको
जन्म दे सके ! ऐसी है हमारी दयनीय स्थिति।
4सम्भवत: आपके प्रभु परमेश्वर ने मुख्य साकी
के शब्द सुने हैं, जिसको असीरिया के राजा ने
जीवित परमेश्वर का मजाक उड़ाने के लिए
भेजा था। अब आपका प्रभु परमेश्वर उन शब्दों
को झूठा सिद्ध करे। कृपया, जो व्यक्ति शेष रह
गए हैं, उनके लिए प्रार्थना कीजिए।'
5 राजा हिजकियाह के ये दरबारी नबी
यशायाह के पास आए। 6नबी यशायाह ने उनसे
यह कहा, 'अपने स्वामी से कहो, "प्रभु यों
कहता है : जो शब्द तुमने सुने हैं, और जिनके
द्वारा असीरिया के राजा के निजी सेवकों ने मेरी
निन्दा की है, उनके कारण मत डर। 7देख, मैं
असीरिया के राजा के भीतर भय की आत्मा भेज
रहा हूँ। वह अचानक एक खबर सुनेगा, और

19 : 6 यश 10 : 5-19

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तत्काल अपने देश को लौट जाएगा। मैं
उसके देश में ही तलवार से उसका पतन
कराऊंगा।'' '

मुख्य साकी की वापसी

8 मुख्य साकी यरूशलेम से लौटा। उसने
सुना कि उसके महाराज लाकीश नगर से चले
गये हैं। उसने अपने महाराज को लिबनाह नगर
से युद्ध करते हुए पाया। 9उसी समय असीरिया
के राजा ने इथियोपिया देश* के राजा तिरहाकाह
के विषय में यह खबर सुनी, 'महाराज, वह
आपसे युद्ध करने के लिए निकला है।' अतएव
उसने राजा हिजकियाह के पास दूतों को फिर
भेजा, और यह सन्देश दिया :

सनहेरिब का पत्र

10 'तुम यहूदा प्रदेश के राजा हिजकियाह
से यों कहना, ''तुम अपने परमेश्वर के धोखे
में मत आना, जिस पर तुमने भरोसा किया है
और जिसने तुम्हें यह वचन दिया है कि
यरूशलेस नगर असीरिया देश के राजा के हाथ
में नहीं आएगा। 11तुमने यह सुना ही होगा कि
असीरिया के राजाओं ने अनेक देशों के साथ
क्या किया है। उन्होंने वहां के निवासियों का
पूर्ण संहार कर दिया है। तब क्या तुम मेरे हाथ
से बच सकोगे? 12जिन नगर-राज्यों को, गोजान,
हारान, रेसेफ को, तलेस्सार राजधानी में
रहनेवाले बेत-एदेन जाति के लोगों को जब मेरे
पूर्वजों ने नष्ट किया था, तब क्या उनके इष्ट
देवता उनको मेरे पूर्वजों के हाथ से बचा सके
थे? 13कहां गए हमात, अरपाद, सपरवइम,
हेना और इव्वा नगर-राज्यों के राजा?'' '

14 हिजकियाह ने दूतों के हाथ से पत्र लिया,
और उसको पढ़ा। तब वह प्रभु के भवन को
गया। उसने प्रभु के सम्मुख पत्र को रखा।
15हिजकियाह ने प्रभु के सम्मुख यह प्रार्थना
की। उसने कहा, 'हे इस्राएल के प्रभु परमेश्वर!
तू करूबों पर विराजमान है। केवल तू ही पृथ्वी
के समस्त राज्यों का परमेश्वर है। तूने ही पृथ्वी
और आकाश को बनाया है। 16मेरी ओर अपना
कान दे,
हे प्रभु, मेरी प्रार्थना को सुन;
अपनी आंखों को खोल।
हे प्रभु, मेरी विपत्ति पर ध्यान दे।
सनहेरिब के सन्देश को सुन,
जो उसने तुझ, जीवित परमेश्वर का मजाक
उड़ाने के लिए भेजा है।

17 'प्रभु, यह सच है कि असीरिया देश के
राजाओं ने अनेक जातियों और उनके राज्यों को
उजाड़ दिया है; 18उनके इष्ट-देवताओं की मूर्तियां
आग में झोंक दी हैं। प्रभु, ये मूर्तियां सच्चा ईश्वर
नहीं थीं। वे केवल मनुष्य के हाथ की रचना,
लकड़ी और पत्थर की मूर्तियां थीं। इसलिए वे
नष्ट हो गईं। 19अब, हे हमारे प्रभु परमेश्वर!
कृपया, हमें सनहेरिब के हाथ से बचा जिससे
पृथ्वी के सब राज्यों को ज्ञात हो जाए कि केवल
तू ही सच्चा प्रभु परमेश्वर है।

प्रभु का आश्वासन

20 तब नबी यशायाह बेन-आमोत्स ने राजा
हिजकियाह को यह संदेश भेजा, 'इस्राएल का
प्रभु-परमेश्वर यों कहता है: मैंने असीरिया के
राजा सनहेरिब के विषय में तेरी प्रार्थना सुनी।
21उसके सम्बन्ध में मेरा यह वचन है :
''ओ सनहेरिब!
सियोन पर्वत की नगरी एक कुंआरी बेटी है;
वह तुझे तुच्छ समझती है,
वह तेरा मजाक उड़ाती है।
तेरे पीठ पीछे
कन्या नगरी यरूशलेम
मुंह बिचकाती है।
22 ''तूने किस की ओर व्यंग्य-बाण छोड़े थे?
किसको गाली दी थी?
किसके विरुद्ध आवाज उठाई थी?
अहंकार से किसको आंखें दिखाई थीं?
क्या मुझे, इस्राएल के पवित्र परमेश्वर को?
23तूने सन्देशवाहकों के द्वारा मुझ-स्वामी का
उपहास किया।
तूने यह कहा, 'मैंने अपने अनेक रथों पर

---

* अथवा, 'सूडान'; मूल में 'कूश'

19 : 15 नि 25 : 22 **19 : 18** यश 40 : 20; यिर 10 : 1-16

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पहाड़ों की ऊंचाई नाप ली है ;
मैं लबानोन की चोटी को चूम चुका हूं।
मैं लबानोन के जंगलों के
ऊंचे-से-ऊंचे देवदार वृक्षों को,
उसके सुन्दर-से-सुन्दर सनोवर वृक्षों को
काट चुका हूं!
मैं लबानोन के दूरस्थ कोनों में
उसके वन-प्रान्तर में प्रवेश कर चुका हूं।
24मैंने कुएं खोदे थे,
मैं विदेश के घाट-घाट का पानी पी चुका हूं;
मैंने ही खड़े-खड़े मिस्र देश की समस्त
सरिताओं को
सुखा दिया था।'
25 ''ओ सनहेरिब!
क्या तूने यह नहीं सुना?
पूर्वकाल में मैंने उसकी योजना बनाई थी;
बहुत पहले से मैं उसको निर्धारित कर चुका
था;
और अब उसको कार्यरूप में परिणत कर
रहा हूं।
उस योजना में तेरा कार्य केवल यह था कि
तू किलाबन्द नगरों को खण्डहर के ढेरों
में बदल दे!
26उनके निवासी, जिनके हाथों में बल नहीं था,
पराजित और निराश थे।
वे मैदान के पौधों के सदृश,
कोमल घास के समान थे;
वे मकान की छत की घास के समान थे,
जो पल्लवित होने के पूर्व ही सूख जाती है!

27 ''मैं तेरा उठना, तेरा बैठना,
तेरा आना-जाना जानता हूं;
मेरे प्रति क्रोध से तेरा उबलना,
मैं यह भी जानता हूं।
28तू मुझसे क्रुद्ध हुआ,
तेरी गर्वोक्ति मेरे कानों में पड़ी;
इसलिए मैं तेरी नाक में नकेल डालूंगा,
और तेरे मुंह में अपनी लगाम!
जिस मार्ग से तू आया था,
उसी से मैं तुझे वापस भेजूंगा।''

29 'ओ हिजकियाह! तेरे लिए यह चिह्न
होगा : इस वर्ष तू अपने-आप उगने वाली
जंगली साग-पात खाएगा। दूसरे वर्ष इससे जो
उत्पन्न होगा, वह खाएगा। तीसरे वर्ष जो तू
बोएगा, उसको काटेगा। तू अंगूर-बेल लगाएगा,
और उसका फल खाएगा। 30यहूदा-कुल के
अवशिष्ट वंशज भूमि में फिर जड़ पकड़ेंगे,
और फलेंगे-फूलेंगे। 31यरूशलेम से बचे हुए
यहूदा कुल के वंशज, और सियोन पर्वत से भाग
कर बचे हुए लोगों का दल बाहर निकलेगा।
प्रभु का धर्मोत्साह यह कार्य सम्पन्न करेगा।

32 'प्रभु असीरिया देश के राजा के विषय
में यों कहता है : सनहेरिब इस नगर में प्रवेश
नहीं करेगा। वह यहां तीर भी नहीं चलाएगा।
वह ढाल के साथ इसका सामना भी नहीं
करेगा। वह इसके विरुद्ध मोर्चाबन्दी भी नहीं
करेगा। 33जिस मार्ग से वह आया है, उसी मार्ग
से वह लौट जाएगा। मैं, प्रभु, कहता हूँ : वह
इस नगर में प्रवेश नहीं करेगा। 34मैं अपने लिए,
अपने सेवक दाऊद के कारण इस नगर की रक्षा
करूंगा, और इसको बचाऊंगा।'

35 उस रात प्रभु का एक दूत बाहर निकला।
वह असीरियाई सेना के पड़ाव में गया, और
वहाँ एक लाख पचासी हजार सैनिकों का वध
कर दिया। जब सबेरा हुआ, तब लोगों ने देखा
कि शव पड़े हैं! 36अत: असीरिया देश के राजा
सनहेरिब ने प्रस्थान किया, और नीनवे नगर को
लौट गया। वह वहीं रहने लगा।

37 एक दिन वह अपने गृह-देवता निसरोख
के मन्दिर में पूजा कर रहा था। तब उसके पुत्रों
ने—अद्रमेलेक और सर-एसेर ने—तलवार से
उसकी हत्या कर दी और वे अराराट देश को
भाग गए। उसका पुत्र एसर-हद्दोन उसके स्थान
पर राज्य करने लगा।

हिजकियाह का बीमार पड़ना

20 इन्हीं दिनों में राजा हिजकियाह इतना
बीमार पड़ा कि वह मृत्यु के समीप
पहुंच गया। तब नबी यशायाह बेन-आमोत्स

19 : 27 भज 139 : 1 **19 : 29** यश 7 : 11 **19 : 31** यश 9 : 7 **19 : 34** हो 1 : 7 **19 : 35** 2 शम 24 : 15

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उसके पास आए। उन्होंने उससे कहा, 'प्रभु यों
कहता है : मृत्यु के पूर्व अपने परिवार की
समुचित व्यवस्था कर ले; क्योंकि निश्चय ही
तेरी मृत्यु होगी। तू नहीं बचेगा।'
2 हिजकियाह ने दीवार की ओर अपना मुख
किया, और प्रभु से यह प्रार्थना की, 3'हे प्रभु,
स्मरण कर कि मैं सच्चाई और सम्पूर्ण हृदय से
तेरे सम्मुख तेरे मार्ग पर चलता रहा। मैंने उन्हीं
कार्यों को किया है, जो तेरी दृष्टि में उचित
हैं।' यह कहकर हिजकियाह फूट-फूटकर रोने
लगा।
4 अभी नबी यशायाह राजमहल के मध्यवर्ती
आंगन से बाहर नहीं निकले थे। उसी समय
उन्होंने प्रभु का यह वचन सुना, 5'लौट, और
मेरे निज लोगों के अगुए, राजा हिजकियाह से
यह कह : "तेरे पूर्वज दाऊद का प्रभु परमेश्वर
यों कहता है : मैंने तेरी प्रार्थना सुनी, और तेरे
आंसू देखे। देख, मैं तुझे स्वस्थ करूंगा। तू
तीसरे दिन मेरे भवन को जाएगा। 6मैं तेरी आयु
को पन्द्रह वर्ष और लम्बी कर रहा हूँ। मैं
असीरिया के राजा के हाथ से तुझको और इस
नगर को बचाऊंगा। मैं अपने लिए, अपने
सेवक दाऊद के कारण इस नगर की रक्षा
करूंगा।" '
7 यशायाह ने हिजकियाह के सेवकों से
कहा, 'अंजीर की पुलटिस लाओ।' वे ले
आए। उन्होंने पुलटिस को फोड़े पर लगाया
और हिजकियाह स्वस्थ हो गया।
8 हिजकियाह ने यशायाह से पूछा, 'प्रभु मुझे
स्वस्थ करेगा, और मैं तीसरे दिन प्रभु के भवन
में जा सकूंगा, इस बात का क्या चिह्न है?'
9यशायाह ने बताया, 'जो वचन प्रभु ने आपको
दिया है, वह उसको पूरा करेगा। उस ने आपको
यह चिह्न दिया है। बताओ : क्या छाया दस
अंश आगे जाएगी अथवा दस अंश पीछे?'
10हिजकियाह ने उत्तर दिया, 'छाया के लिए
दस अंश आगे बढ़ना सरल है। इसलिए मैं
चाहता हूँ कि छाया दस अंश पीछे जाए।'
11नबी यशायाह ने प्रभु को पुकारा, और प्रभु ने
राजा आहाज की धूप-घड़ी की छाया को, जो
दस अंश बढ़ चुकी थी, पीछे की ओर लौटा
दिया।

बेबीलोन के दूतों का आगमन

12 इन्हीं दिनों में बेबीलोन के राजा मरोदख-
बलअदान ने, जो बलअदान का पुत्र था, पत्रों
और उपहारों के साथ हिजकियाह के पास दूत
भेजे। उसने सुना था कि हिजकियाह बीमार
था। 13हिजकियाह दूतों को देखकर आनन्दित
हुआ। उसने उनको अपना सब कोष
दिखाया : चांदी, सोना, मसाले, कीमती
तेल, और अस्त्र-शस्त्र। वस्तुतः उसने अपने
भण्डार-गृहों में उपलब्ध सब-कुछ दूतों को
दिखाया। उसके महल और राज्य में ऐसा
कुछ न रहा, जिसको हिजकियाह ने उन्हें न
दिखाया हो।
14 नबी यशायाह राजा हिजकियाह के पास
गए। उन्होंने उससे पूछा, 'ये लोग आपके पास
किस देश से आए थे? उन्होंने आपसे क्या
कहा?' हिजकियाह ने कहा, 'ये दूर देश
बेबीलोन से आए थे।' 15नबी यशायाह ने फिर
पूछा, 'इन्होंने आपके महल में क्या-क्या
देखा?' हिजकियाह ने उत्तर दिया, 'सब-कुछ
जो मेरे महल में है, वह उन्होंने देखा। मेरे
भण्डार-गृहों में एक भी ऐसी वस्तु नहीं रही,
जो मैंने उनको नहीं दिखाई।'
16 यशायाह ने हिजकियाह से कहा, 'प्रभु
का वचन सुनो : 17देख, वह समय आ रहा है,
जब तेरे महल का सब माल-असबाब, आज के
दिन तक तेरे पूर्वजों द्वारा एकत्र की गई समस्त
धन-सम्पत्ति बेबीलोन देश को चली जायेगी।
प्रभु कहता है : कुछ नहीं बचेगा! 18तुझसे उत्पन्न
तेरे अनेक पुत्र बन्दी बनाकर ले जाए जाएंगे।
वे बेबीलोन के राजा के महल में खोजा
बनेंगे।' 19हिजकियाह ने यशायाह से कहा,
'प्रभु का यह वचन, जो तुमने मुझसे कहा,
अच्छा है!' वह यह सोचता था, 'अगर मेरे
जीवन-काल में शान्ति और सुरक्षा बनी रहती
है, तो क्या बुरा है!'

---

20 : 1-21 2 इत 32 : 24-33; यश 38 : 1—39 : 8 **20 : 17** 2 रा 24 : 13 **20 : 18** 2 रा 24 : 12; दान 1 : 3

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हिजकियाह की मृत्यु

20 हिजकियाह ने जलकुण्ड और नहर
बनाकर नगर के भीतर जल पहुंचाया था।
इसका विवरण, तथा उसके शेष कार्यों और
वीरतापूर्ण कार्यों का विवरण, 'यहूदा प्रदेश के
राजाओं का इतिहास-ग्रन्थ' में लिखा हुआ है।
21 हिजकियाह अपने मृत पूर्वजों के साथ सो
गया। उसके स्थान पर उसका पुत्र मनश्शे राज्य
करने लगा।

यहूदा प्रदेश पर मनश्शे का राज्य

21 जब मनश्शे ने राज्य करना आरम्भ
किया तब वह बारह वर्ष का था। उसने
पचपन वर्ष तक राजधानी यरूशलेम में राज्य
किया। उसकी मां का नाम हेप्सी-बाह था।
2 जो कार्य प्रभु की दृष्टि में बुरा था, मनश्शे
ने वही किया। जिन जातियों को प्रभु ने
इस्राएलियों को बसाने के लिए कनान देश से
निकाल दिया था, उनकी घृणित प्रथाओं को
मनश्शे ने पुनः आरम्भ किया। 3 उसके पिता
हिजकियाह ने पहाड़ी शिखर की वेदियां तोड़
दी थीं। मनश्शे ने उनको पुनः निर्मित किया।
उसने बअल देवता के लिए वेदियां बनाईं और
अशेराह देवी की पूजा के खम्भे खड़े किये जैसा
इस्राएल प्रदेश के राजा अहाब ने किया था।
मनश्शे आकाश की प्राकृतिक शक्तियों की
वन्दना और पूजा करता था। 4 उसने प्रभु के
भवन में अनेक वेदियों का निर्माण किया,
जबकि अपने भवन के विषय में प्रभु ने यह
कहा था, ''मैं यरूशलेम में अपने नाम की
प्रतिष्ठा करूंगा।'' 5 मनश्शे ने प्रभु के भवन के
दो आंगनों में आकाश की सब प्राकृतिक
शक्तियों की पूजा के लिए वेदियां बनाईं।
6 उसने अग्नि में अपने पुत्र की बलि चढ़ाई। वह
सगुनियों, भविष्यफल बताने वालों, प्रेत-
साधकों और जादू-टोना करने वालों से सम्बन्ध
रखता था। उसने प्रभु की दृष्टि में और अधिक
दुष्कर्म किये, और प्रभु के क्रोध को भड़काया।
7 मनश्शे ने अशेराह देवी की मूर्ति बनाई
और उसको प्रभु के भवन में प्रतिष्ठित किया।
अपने भवन के निषय में प्रभु ने दाऊद और
उसके पुत्र सुलेमान से यह कहा था, 'मैंने
इस्राएल के समस्त कुलों के भूमि-क्षेत्रों में से
यरूशलेम नगर को और इस भवन को चुना है।
मैं यहां सदा-सर्वदा के लिए अपने नाम की
प्रतिष्ठा करूंगा। 8 मैंने इस्राएलियों को आज्ञाएं
दी थीं, अपने सेवक मूसा के द्वारा उनको
व्यवस्था प्रदान की थी। मैंने कहा था : यदि वे
उनके अनुसार कार्य करने को तत्पर रहेंगे तो मैं
उनके पूर्वजों की भूमि से उनके पैर नहीं
उखाड़ूंगा, और उनको भटकने नहीं दूंगा।'
9 परन्तु इस्राएलियों ने नहीं सुना। मनश्शे ने
उनको पथ-भ्रष्ट किया। इसलिए जिन जातियों
को प्रभु ने इस्राएलियों के सम्मुख मिटाया था,
उनसे अधिक दुष्कर्म इस्राएलियों ने किये।
10 प्रभु ने अपने सेवक नबियों से यह कहा,
'यहूदा प्रदेश के राजा मनश्शे ने ये घृणित कार्य
किये। 11 एमोरी जाति के लोगों ने मनश्शे से
पहले जो घृणित कर्म किये थे, उनसे अधिक
मनश्शे ने किये। उसने अपनी मूर्तियों के द्वारा
यहूदा प्रदेश से पाप कराया। 12 इसलिए मैं,
इस्राएली राष्ट्र का प्रभु परमेश्वर, यह कहता
हूं : मैं यरूशलेम नगर और यहूदा प्रदेश पर
ऐसी विपत्ति ढाहूंगा, कि सुनने वाले के कान
झनझना जाएंगे। 13 मैं सामरी प्रदेश की नापने
की डोरी से, अहाब के राजमहल के साहुल से
यरूशलेम का पत्थर-पत्थर नापूंगा। जैसे मनुष्य
थाली को पोंछता और पोंछकर उलट देता है,
वैसे ही मैं यरूशलेम को पोंछकर उलट दूंगा।
14 मैं अपने निज लोगों के शेष बचे लोगों को
त्याग दूंगा। मैं उन्हें शत्रुओं के हाथ में सौंप
दूंगा। वे शत्रुओं के हाथ में शिकार और लूट का
माल बन जाएंगे। 15 उन्होंने उन कार्यों को किया
है, जो मेरी दृष्टि में बुरे हैं। जिस दिन से उनके
पूर्वज मिस्र देश से बाहर निकले हैं, उस दिन
से आज तक, ये लोग मेरी क्रोधाग्नि को
भड़काते ही रहे हैं!'

---

20 : 20 यश 22 : 11; यो 9 : 7 21 : 1-9 2 इत 33 : 1-9 21 : 2 यिर 15 : 4 21 : 4 2 शम 7 : 13 21 : 7
1 रा 9 : 3 21 : 8 व्य 17 : 3; 18 : 9 21 : 13 यश 34 : 11; शोक 2 : 8 ; आमो 7 : 7-8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

16 मनश्शे ने यहूदा प्रदेश से पाप-कर्म कराए थे। उसने वे काम किये थे, जो प्रभु की दृष्टि में बुरे हैं। इसके अतिरिक्त मनश्शे ने बड़ी संख्या में निर्दोष लोगों का रक्त बहाया था। उसने यरूशलेम के एक छोर से दूसरे छोर तक निर्दोष रक्त की नदी बहाई थी!

17 मनश्शे के शेष कार्यों का विवरण, उसके सब कार्यों का, और उसने जो पाप-कार्य किये थे, उनका विवरण, 'यहूदा प्रदेश के राजाओं का इतिहास-ग्रन्थ' में लिखा हुआ है। 18मनश्शे अपने मृत पूर्वजों के साथ सो गया। उसको उसके राजमहल के उद्यान में गाड़ा गया। यह उद्यान ऊज्जा में है।

मनश्शे का पुत्र आमोन उसके स्थान पर राज्य करने लगा।

यहूदा प्रदेश पर आमोन का राज्य

19 जब आमोन ने राज्य करना आरम्भ किया तब वह बाईस वर्ष का था। उसने राजधानी यरूशलेम में दो वर्ष तक राज्य किया। उसकी मां का नाम मशूल्लेमेत था। वह योट्बाह नगर के रहने वाले हारूस की पुत्री थी।

20 जैसे उसके पिता मनश्शे ने किया था, वैसे ही आमोन ने भी उन्हीं कार्यों को किया जो प्रभु की दृष्टि में अनुचित हैं। 21जिस पाप-मार्ग पर उसका पिता चला था, उस पर वह भी चला। जिन मूर्तियों की वन्दना और पूजा उसके पिता ने की थी, उनकी वन्दना और पूजा आमोन ने भी की। 22आमोन ने अपने पूर्वजों के प्रभु परमेश्वर को त्याग दिया। वह प्रभु-मार्ग पर नहीं चला।

23 राजा आमोन के दरबारियों ने उसके विरुद्ध षड्यन्त्र रचा, और उसके राजमहल में उसकी हत्या कर दी। 24परन्तु यहूदा प्रदेश की जनता ने राजा आमोन के षड्यन्त्रकारियों का वध कर दिया। आम जनता ने उसके पुत्र योशियाह को उसके स्थान पर राजा बनाया।

25 राजा आमोन के शेष कार्यों का विवरण 'यहूदा प्रदेश के राजाओं का इतिहास-ग्रन्थ' में लिखा हुआ है। 26राजा आमोन को उसकी कबर में, जो ऊज्जा के उद्यान में थी, गाड़ा गया। उसका पुत्र योशियाह उसके स्थान पर राज्य करने लगा।

यहूदा प्रदेश पर योशियाह का राज्य

22 जब योशियाह ने राज्य करना आरम्भ किया तब वह आठ वर्ष का था। उसने राजधानी यरूशलेम में इकतीस वर्ष तक राज्य किया। उसकी मां का नाम यदीदाह था। वह बोस्कत नगर में रहने वाले अदायाह की पुत्री थी। 2योशियाह ने वे कार्य किए जो प्रभु की दृष्टि में उचित हैं। वह अपने पूर्वज दाऊद के मार्ग पर चला। वह उससे तिल मात्र भी अलग नहीं हुआ।

3 राजा योशियाह के राज्य-काल के अठारहवें वर्ष की यह घटना है। योशियाह ने अपने महासहायक शाफान को प्रभु के भवन में भेजा। शाफान के पिता का नाम असल्याह और दादा का नाम मशूल्लाम था। योशियाह ने उसको यह आदेश दिया, 4 'महापुरोहित हिल्कियाह के पास जाओ। तुम उससे यह कहना कि वह प्रभु-भवन में चढ़ाई गई उस चांदी को गला दे, जिसको द्वारपालों ने आराधकों से एकत्र किया है। 5तत्पश्चात् वह प्रभु-भवन की मरम्मत करवाने वाले अधिकारियों के हाथ में उसको सौंप दे, ताकि वे प्रभु-भवन की मरम्मत करने वाले 6बढ़इयों, कारीगरों और मिस्त्रियों की मजदूरी चुका दें। इसके अतिरिक्त वे इस चांदी से भवन की मरम्मत के लिए इमारती लकड़ी और तराशे पत्थर भी खरीद सकेंगे। 7परन्तु अधिकारीगण से, जिनके हाथ में यह चांदी सौंपी जाएगी, किसी प्रकार का हिसाब-किताब नहीं मांगा जाएगा; क्योंकि वे ईमानदारी से अपना काम कर रहे हैं।'

व्यवस्था-ग्रन्थ का प्राप्त होना

8 महापुरोहित हिल्कियाह ने महासहायक शाफान को यह बताया, 'मुझे प्रभु-भवन में "व्यवस्था-ग्रन्थ" मिला है।' हिल्कियाह ने

---

21 : 16 मी 3 : 9-12 **21 : 18-24** 2 इत 33 : 20-25 **22 : 1** 2 इत 34 : 1; यिर 3 : 6; सफ 1 : 1 **22 : 3-7** 2 इत 34 : 8-12 **22 : 8** व्य 31 : 24

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
व्यवस्था-ग्रन्थ शाफान को दिया। शाफान ने
उसको पढ़ा। 9वह राजा योशियाह के पास
लौटा और उसको अपने कार्य का विवरण
दिया। उसने कहा, 'महाराज, आपके सेवकों
ने, प्रभु-भवन में उपलब्ध चांदी को गलाया
और प्रभु-भवन की मरम्मत करवाने वाले
अधिकारियों के हाथ में उसको सौंप दिया है।'
10उसके बाद महासहायक शाफान ने राजा
योशियाह को बताया, 'महापुरोहित हिल्कियाह
ने मुझे यह पुस्तक दी है।' उसने राजा के
सम्मुख पुस्तक को पढ़ा।

11 जब राजा ने नवप्राप्त व्यवस्था-ग्रन्थ के
ये वचन सुने, तब उसने पश्चात्ताप प्रकट करने
के लिए तत्काल अपने वस्त्र फाड़ दिये।
12उसने पुरोहित हिल्कियाह, अहीकाम बेन-
शाफान, अकबोर बेन-मीकायाह, महासहायक
शाफान और अपने राजमन्त्री असायाह को यह
आदेश दिया, 13'तुम लोग जाओ, और मेरी
ओर से तथा जनता की ओर से एवं समस्त
यहूदा प्रदेश की ओर से इस धर्मपुस्तक के
वचनों का अर्थ प्रभु से ज्ञात करो। प्रभु की
महाक्रोधाग्नि हमारे प्रति भड़क उठी है;
क्योंकि हमारे पूर्वजों ने इस धर्म-पुस्तक के
आदेशों का पालन नहीं किया। उन्होंने हमारे
निमित्त लिखे गए प्रभु के आदेशों के अनुसार
कार्य नहीं किया।'

14 पुरोहित हिल्कियाह, अहीकाम, अकबोर,
शाफान और असायाह तुरन्त नबिया हूल्दाह के
पास गए। वह हर्हस के पौत्र और तिक्वाह के
पुत्र शल्लूम की पत्नी थी। उसका पति पुरोहितों
की पोशाक का प्रबन्धक था। वह यरूशलेम की
नई बस्ती में रहती थी। उन्होंने उससे बात की।
15तब वह उनसे बोली, 'इस्राएल का प्रभु
परमेश्वर यों कहता है : जिस व्यक्ति ने तुम्हें
मेरे पास भेजा है, उससे यह कहो : 16प्रभु यों
कहता है, देख मैं इस स्थान पर, इसके सब
निवासियों पर विपत्ति ढाहूंगा। इस पुस्तक की
जो बातें यहूदा प्रदेश के राजा ने पढ़ी हैं, उनको
मैं पूर्ण करूंगा। 17इन लोगों ने मुझे त्याग दिया
है, और अन्य जातियों के देवताओं की मूर्तियों
के सम्मुख सुगन्धित धूप-द्रव्य जलाया है।
इन्होंने अपने हाथों से देवताओं की मूर्तियां
बनाकर मेरे क्रोध को भड़काया है। अत: मेरी
क्रोधाग्नि इस स्थान के प्रति भड़केगी, और वह
कभी नहीं बुझेगी। 18परन्तु यहूदा प्रदेश के राजा
से, जिसने तुम्हें मेरी इच्छा जानने के लिए भेजा
है, यह कहना, इस्राएल का प्रभु परमेश्वर यों
कहता है : जो वचन तूने धर्मपुस्तक से सुने हैं,
उनके विषय में मेरी यह वाणी है। 19तूने हृदय
से पश्चात्ताप किया। तूने मेरे सम्मुख, अपने प्रभु
के सम्मुख, स्वयं को विनम्र बनाया। तूने यह
सुना कि मैंने इस स्थान के विरुद्ध, इसके
निवासियों के विरुद्ध यह कहा है, कि मैं उनको
घृणा और उपहास का पात्र बना दूंगा। तब तूने
पश्चात्ताप प्रकट करने के लिए अपने वस्त्र
फाड़े, और मेरे सम्मुख रोया। सुन, मैं-प्रभु, यह
कहता हूँ : मैंने तेरी प्रार्थना सुनी। 20इसीलिए,
मैं तुझे तेरे पूर्वजों के साथ सुलाऊंगा। तू शान्ति
से अपनी कबर में सोएगा। जो विपत्ति मैं इस
स्थान पर तथा इसके निवासियों पर ढाहूंगा, वह
तू अपनी आंखों से नहीं देखेगा।' राजा
योशियाह के दरबारी लौटे और उन्होंने राजा
को यह सन्देश दिया।

राजा योशियाह के सुधार

23 राजा योशियाह ने दूत भेजे, और यहूदा
प्रदेश तथा राजधानी यरूशलेम के सब
धर्मवृद्धों को अपने पास बुलाया। 2तत्पश्चात् वह
प्रभु के भवन को गया। वह यहूदा प्रदेश के सब
पुरुषों, यरूशलेम नगर के समस्त निवासियों,
पुरोहितों और नबियों को, छोटे-बड़े सबको
अर्थात् पूरी जनता को अपने साथ ले गया।
उसने उनके सामने प्रभु के भवन में पाई गई
विधान की पुस्तक को पूरा पढ़ा। 3तब राजा
योशियाह मंच पर खड़ा हुआ। उसने प्रभु के
साथ यह विधान स्थापित किया, कि वह प्रभु का
अनुसरण करेगा, अपने सम्पूर्ण हृदय और
सम्पूर्ण प्राण से उसकी आज्ञाओं, साक्षियों तथा
संविधियों का पालन करेगा। वह इस विधान

---

23 : 4-20 2 इत 34 : 3-7 23 : 4 2 रा 21 : 3

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

की पुस्तक में लिखे गए वचनों पर दृढ़ रहेगा। समस्त जनता ने भी प्रतिज्ञा की, कि वह विधान का पालन करेगी।

4 राजा ने महापुरोहित हिल्कियाह, उपपुरोहितों और द्वारपालों को आदेश दिया कि वे उन सब पात्रों को प्रभु के मन्दिर से बाहर निकाल दें जो बअल देवता, अशेराह देवी तथा आकाश की प्राकृतिक शक्तियों के लिए बनाए गए थे। तत्पश्चात् उसने उनको यरूशलेम नगर के बाहर किद्रोन घाटी में जला दिया, और वह उनकी राख बेत-एल की वेदी को ले गया।
5उसने पूजा-पाठ करने वाले पुरोहितों को निकाल दिया। इन्हें यहूदा प्रदेश के राजाओं ने अपने नगरों की, तथा यरूशलेम के चारों ओर पहाड़ी शिखरों की वेदियों पर सुगन्धित धूप-द्रव्य जलाने के लिए नियुक्त किया था। इनके अतिरिक्त योशियाह ने बअल देवता, सूर्य, चन्द्र, तथा नक्षत्रों को और आकाश की समस्त प्राकृतिक शक्तियों को सुगन्धित धूप-द्रव्य जलाने वालों को भी हटा दिया।
6उसने अशेराह देवी की मूर्ति प्रभु-भवन से बाहर निकाली। वह उसको यरूशलेम नगर के बाहर, किद्रोन घाटी में ले गया, और वहां उसने उसको जला दिया। उसने उसको पीसकर बुकनी बना दिया, और जन-साधारण की कबरों पर बिखेर दिया।
7प्रभु के भवन में पुरुष-गमन कराने वालों के कोठें थे, जहां स्त्रियां भी अशेराह देवी के लिए बुनाई का काम करती थीं। राजा योशियाह ने उन कोठों को ध्वस्त कर दिया।

8 राजा योशियाह यहूदा प्रदेश के नगरों से सब पुरोहितों को लाया। उसने गेबा नगर से बएर-शेबा नगर तक, पहाड़ी-शिखर की वेदियों को, जहां पुरोहित सुगन्धित धूप-द्रव्य जलाते थे, अशुद्ध कर दिया। नगर के महापौर यहोशुअ के दरवाजे के सम्मुख बनी अज-देवताओं+ की वेदी को उसने तोड़ दिया। यह नगर के प्रवेश-द्वार की बाईं ओर थी।

9 पहाड़ी शिखर की वेदियों के ये पुरोहित यरूशलेम में प्रभु की वेदी के समीप नहीं जा सकते थे। फिर भी वे अन्य पुरोहितों, अपने जाति-भाइयों के साथ बेखमीर रोटी खाते थे।

10 राजा योशियाह ने बेन-हिन्नोम घाटी के अग्निकुण्ड को अशुद्ध किया, ताकि वहां जनता अग्निदेवता मोलेक के लिए अपने पुत्र-पुत्री को बलि रूप में न चढ़ा सके।
11यहूदा प्रदेश के राजाओं ने प्रभु-भवन के प्रवेश-द्वार पर — अर्थात् राज-भवन के भण्डारी खोजा नतन-मेलेक के कमरे के समीप, जो ग्रीष्म-भवन* कहलाता था — सूर्य देवता के लिए अश्व-मूर्तियां प्रतिष्ठित की थीं। राजा योशियाह ने उनको हटा दिया और सूर्य देवता के रथों को आग में भस्म कर दिया।

12 यहूदा के राजाओं ने आहाज के राजभवन के उपरले कक्ष की छत पर वेदियां बनाई थीं। मनश्शे ने भी प्रभु-भवन के दो आंगनों में वेदियां निर्मित की थीं। राजा योशियाह ने उनको तोड़ा, उनकी बुकनी बनाई, और बुकनी को किद्रोन घाटी में फेंक दिया।

13 राजा सुलेमान ने यरूशलेम के पूर्व में तथा जैतून पर्वत** के दक्षिण में घृणित देवी-देवताओं के लिए, पहाड़ी शिखर की वेदियां बनाई थीं। घृणित देवी-देवता ये थे : सीदोनी जाति की राष्ट्रीय देवी अशेराह, मोआबी जाति का राष्ट्रीय देवता कमोश, और अम्मोनी जाति का राष्ट्रीय देवता मिल्कोम। राजा योशियाह ने इनकी वेदियों को अशुद्ध कर दिया।
14उसने पूजा-स्तम्भों को तोड़ दिया। अशेराह देवी की मूर्तियों को काट दिया और मृत मनुष्यों की हड्डियों से उनके स्थानों को पूर दिया।

15 यारोबआम बेन-नबाट ने बेत-एल की वेदी के समीप, पहाड़ी शिखर की वेदी बनाई थी और यों इस्राएली जनता से पाप कराया था। राजा योशियाह ने बेत-एल की इस वेदी को, तथा पहाड़ी शिखर की वेदी को तोड़ दिया।

+ पाठसुधार * मूल में अस्पष्ट ** शब्दश:, ''मशहीत (अर्थात् विनाशक) पर्वत''

23 : 7 1 रा 14 : 24; व्य 23 : 18-19 **23 : 9** व्य 18 : 6-8 **23 : 10** यिर 19 : 6; लेव 18 : 21 **23 : 12** यिर 19 : 13; सफ 1 : 5; 2 रा 21 : 5 **23 : 13** 1 रा 11 : 7 **23 : 15** 1 रा 12 : 33

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उसके पत्थरों को टुकड़े-टुकड़े कर दिया।
उसने उनको चूर्ण-चूर्ण कर दिया। उसने
अशेराह-देवी के लकड़ी के खम्भों को जला
दिया।
16 राजा योशियाह वहां से मुड़ा। उसने
पहाड़ पर कबरें देखीं। उसने सेवक भेजकर
कबरों में से अस्थियां निकालीं। तत्पश्चात्
उसने अस्थियों को वेदी पर जलाया, और
उसको अशुद्ध कर दिया। इस प्रकार प्रभु का
वचन पूर्ण हुआ। जब राजा यारोबआम पर्व के
समय वेदी के समीप खड़ा था,तब परमेश्वर के
जन ने इस वेदी के सम्बन्ध में ये ही वचन कहे
थे। जाते समय योशियाह ने परमेश्वर के उस
जन की कबर देखी, जिसने नबूवत की थी।
17तब उसने पूछा, 'यह समाधि, जो मैं देख रहा
हूं, किसकी है?' नगर के लोगों ने उसको
बताया, 'यह परमेश्वर के जन की कबर है। वह
यहूदा प्रदेश से यहां आए थे। उन्होंने बेत-एल
की वेदी के सम्बन्ध में वे ही बातें कहीं थीं, जो
आपने अभी की हैं।' 18अत: योशियाह ने कहा,
'उसको वहीं रहने दो। कोई भी व्यक्ति उसकी
अस्थियों को नहीं हटाएगा।' इस प्रकार सेवकों
ने उसकी अस्थियों को छोड़ दिया। यहूदा प्रदेश
के इस नबी की अस्थियों के अतिरिक्त उन्होंने
उस नबी की भी अस्थियां छोड़ दीं, जो सामरी
प्रदेश से आया था।
19 योशियाह ने पहाड़ी शिखर की वेदियों
के पूजागृह हटा दिए, जिनको इस्राएल प्रदेश के
राजाओं ने सामरी नगरों में बनाए थे और जिनसे
उन्होंने प्रभु की क्रोधाग्नि भड़काई थी। उसने
उनके साथ भी वही किया, जो उसने बेत-एल
में किया था। 20उसने पहाड़ी शिखर की वेदियों
के पुरोहितों को, जो वहां थे, उन्हीं वेदियों पर
वध कर दिया! उसने मृत मनुष्यों की अस्थियां
वेदियों पर जलाईं।
तत्पश्चात् योशियाह यरूशलेम को लौटा।

पास्का (फसह) का पर्व मनाना

21 राजा योशियाह ने समस्त जनता को यह
आदेश दिया, 'जैसा इस विधान की पुस्तक में
लिखा है, वैसा ही तुम अपने प्रभु परमेश्वर के
सम्मान में पास्का का पर्व मनाओ।' 22शासकों
के समय में, जिन्होंने इस्राएली कुलों पर शासन
किया था, तथा इस्राएल प्रदेश और यहूदा प्रदेश
के राजाओं के राज्य-काल में ऐसा पास्का पर्व
नहीं मनाया गया था। 23राजा योशियाह के राज्य-
काल के अठारहवें वर्ष प्रभु के सम्मान में यह
पास्का-पर्व यरूशलेम में मनाया गया।

अन्य सुधार

24 योशियाह ने प्रेत-साधकों, जादू-टोना
करने वालों, गृह-देवताओं और देवी-देवताओं
की मूर्तियों को तथा उन सब घृणित वस्तुओं
को हटा दिया, जो यहूदा प्रदेश और यरूशलेम
में दिखाई देती थीं, ताकि वह उस पुस्तक
में लिखी हुई व्यवस्था के वचनों को पूर्ण कर
सके, जो पुरोहित हिल्कियाह ने प्रभु के भवन
में पाई थी। 25योशियाह के पूर्व ऐसा कोई राजा
नहीं हुआ था, जो योशियाह के समान सम्पूर्ण
हृदय, सम्पूर्ण प्राण, और सम्पूर्ण शक्ति से मूसा
की संपूर्ण व्यवस्था के अनुसार प्रभु की ओर
लौटा। योशियाह के पश्चात् भी ऐसा राजा नहीं
हुआ।

प्रभु का क्रोध भड़कता रहा

26 राजा मनश्शे ने अपने उकसाने वाले
कार्यों से प्रभु को चिढ़ाया था। इसलिए उस की
क्रोधाग्नि यहूदा प्रदेश के प्रति भड़क उठी थी।
प्रभु की यह महाक्रोधाग्नि राजा योशियाह के
धार्मिक सुधारों के बावजूद नहीं बुझी। 27प्रभु
ने कहा, 'जैसे मैंने इस्राएल प्रदेश को अपने
सम्मुख से हटा दिया है, वैसे यहूदा प्रदेश को
भी हटा दूंगा। जिस यरूशलेम नगर को मैंने
चुना था, उसको मैं त्याग दूंगा। जिस भवन के
विषय में मैंने यह कहा था कि मैं वहां अपना
नाम प्रतिष्ठित करूंगा उसको भी मैं त्याग
दूंगा।'
28 योशियाह के शेष कार्यों का विवरण,
उसके सब कार्यों का विवरण, 'यहूदा प्रदेश के
राजाओं का इतिहास-ग्रन्थ' में लिखा हुआ है।
29उसके राज्य-काल में यह घटना घटी थी :

---

23 : 16 1 रा 13 : 2 **23 : 21-23** 2 इत 35 : 1-19 **23 : 26** यिर 15 : 4 **23 : 29** नहू 3 : 9; जक 12 : 11

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मिस्र देश का राजा फरओ नको असीरिया देश
के राजा की सहायता करने गया। वह फरात
नदी की ओर बढ़ा। राजा योशियाह उसका
सामना करने गया। जब फरओ नको ने उसे
देखा, तो उसका मगिद्दो नगर में वध कर दिया।
30राजा योशियाह के सेवकों ने उसका शव रथ
में रखा, और उसको मगिद्दो से यरूशलेम नगर
ले गए। वहां उन्होंने उसकी कबर में उसको
गाड़ दिया। यहूदा प्रदेश की जनता ने योशियाह
के पुत्र यहोआहाज को चुना, और उसका
अभिषेक किया। उन्होंने उसके पिता के स्थान
पर उसको राजा बनाया।

यहूदा प्रदेश पर यहोआहाज का राज्य

31 जब यहोआहाज ने राज्य करना आरम्भ
किया तब वह तेईस वर्ष का था। उसने राजधानी
यरूशलेम में तीन महीने तक राज्य किया।
उसकी मां का नाम हमूटल था। वह लिब्नाह
नगर के यिर्मयाह की पुत्री थी। 32जैसे उसके
पूर्वजों ने प्रभु की दृष्टि में बुरे कार्य किए थे,
वैसे ही उसने भी किए। 33जब वह यरूशलेम
में राज्य कर रहा था, तब फरओ नको ने हमात
क्षेत्र के रिब्लाह नगर में उसको बुलाया और
वहां उसे बन्दी बना लिया। फरओ नको ने
उसके देश पर जुर्माना किया कि वह नको
को तीन हजार पांच सौ किलो चांदी और
पैंतीस किलो सोना दे। 34राजा नको ने यहो-
आहाज के भाई एलयाकीम को उसके पिता
योशियाह के स्थान पर राजा बनाया। उसने
एलयाकीम का नाम 'यहोयाकीम' रखा। वह
यहोआहाज को मिस्र देश ले गया। यहोआहाज
मिस्र देश गया, और वहां उसकी मृत्यु हो
गई।

35 यहोयाकीम ने फरओ को सोना-चांदी
दिया। उसने,फरओ के आदेश के अनुसार,
जुर्माना भरने के लिए जनता पर कर लगाया।
वह फरओ नको को देने के लिए प्रत्येक व्यक्ति
से उसकी आमदनी के अनुसार कर के रूप में
सोना-चांदी लेता था।

यहूदा प्रदेश पर यहोयाकीम का राज्य

36 जब यहोयाकीम ने राज्य करना आरम्भ
किया तब वह पच्चीस वर्ष का था। उसने
राजधानी यरूशलेम में ग्यारह वर्ष तक राज्य
किया। उसकी मां का नाम जबीदा था। वह
रूमा नगर के पदायाह की पुत्री थी। 37जैसे उसके
पूर्वजों ने प्रभु की दृष्टि में अनुचित कार्य किए
थे, वैसे उसने भी किए।

24 यहोयाकीम के राज्य-काल में बेबीलोन
के राजा नबूकद-नेस्सर ने उस पर
आक्रमण किया। फलतः वह तीन वर्ष तक
उसके अधीन रहा। तत्पश्चात् उसने उससे
सम्बन्ध-विच्छेद कर लिया और उससे विद्रोह
कर दिया। 2प्रभु ने अपने वचन के अनुसार, जो
उसने अपने सेवक नबियों के मुख से कहा था,
यहोयाकीम के विरुद्ध तथा यहूदा प्रदेश को
नष्ट करने के लिए कसदी, सीरियाई, मोआबी
और अम्मोनी जाति के लुटेरों को भेजा।
3निस्सन्देह यहूदा प्रदेश पर यह विपत्ति प्रभु के
आदेश से आई थी। प्रभु ने निश्चय कर लिया
था कि वह यहूदा प्रदेश के निवासियों को
अपनी दृष्टि से दूर कर देगा, क्योंकि राजा
मनश्शे ने पाप-कर्म तथा अन्य दुष्कर्म किए थे।
4इनके अतिरिक्त मनश्शे ने बड़ी संख्या में
निर्दोष लोगों का रक्त बहाया था। उसने
यरूशलेम के एक छोर से दूसरे छोर तक निर्दोष
रक्त की नदी बहाई थी। प्रभु ने उसको क्षमा
नहीं किया था।

5 यहोयाकीम के शेष कार्यों का विवरण,
उसके सब कार्यों का विवरण, 'यहूदा प्रदेश के
राजाओं का इतिहास-ग्रन्थ' में लिखा हुआ है।
6यहोयाकीम अपने मृत पूर्वजों के साथ सो
गया। उसका पुत्र यहोयाकीन उसके स्थान पर
राज्य करने लगा।

7 मिस्र देश का राजा युद्ध के लिए फिर
अपने देश से बाहर नहीं निकला; क्योंकि
बेबीलोन के राजा ने फरात नदी से मिस्र की
घाटी तक, जो कुछ मिस्र देश के राजा के

---

23 : 30-34 2 इत 36 : 1-4 **23 : 34** यिर 22 : 11 **23 : 36—24 : 6** 2 इत 36 : 5-8 **23 : 36** यिर 22 : 18-19 **24 : 1** हब 1 : 6; यिर 25 : 1; दान 1 : 1

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अधिकार में था, सब उससे छीन लिया था।

यहूदा प्रदेश पर यहोयाकीन का राज्य

8 जब यहोयाकीन राजा बना तब वह
अठारह वर्ष का था। उसने तीन माह तक
राजधानी यरूशलेम में राज्य किया। उसकी मां
का नाम नहूश्ता था। वह यरूशलेम के निवासी
एलनातान की पुत्री थी। 9जैसे उसके पिता ने
प्रभु की दृष्टि में बुरा कार्य किया था, उसने भी
वही किया।

यहूदा प्रदेश से प्रथम निष्कासन

10 उस समय बेबीलोन के राजा नबूकद-
नेस्सर के सैनिकों ने यरूशलेम पर चढ़ाई की,
और नगर को घेर लिया। 11जब नबूकद-नेस्सर
के सैनिक नगर को घेरे हुए थे, तब उसने स्वयं
नगर पर आक्रमण कर दिया। 12अत: यहूदा प्रदेश
के राजा यहोयाकीन, उसकी मां, उसके
दरबारियों, राजकुमारों और राजमहल के खोजों
ने बेबीलोन के राजा के सम्मुख आत्मसमर्पण
कर दिया। बेबीलोन के राजा ने अपने राज्यकाल
के आठवें वर्ष में +यहोयाकीन को बन्दी बनाया।
13जैसा प्रभु ने कहा था, बेबीलोन का राजा
प्रभु-मन्दिर तथा राजमहल का सारा खजाना
लूटकर ले गया। वह प्रभु-मन्दिर के सोने के
पात्र, जिनको इस्राएली राष्ट्र के राजा सुलेमान
ने बनाया था, टुकड़े-टुकड़े कर ले गया।

14 बेबीलोन का राजा यरूशलेम के सब
निवासियों, राजकुमारों और महाबली सैनिकों
को बन्दी बनाकर ले गया। ये संख्या में कुल दस
हजार बन्दी थे। इनमें कारीगर और लोहार भी
थे। नगर में दीन-दरिद्रों को छोड़ और कोई
नहीं बचा!

15 बेबीलोन का राजा इन लोगों को भी
बन्दी बनाकर यरूशलेम से बेबीलोन ले गया
था: यहोयाकीन, उसकी मां, उसकी रानियां,
उसके उच्चाधिकारी और नगर के प्रमुख व्यक्ति।

16 बेबीलोन का राजा बन्दियों को बेबीलोन
में लाया। बन्दियों में सात हजार शक्तिशाली
सैनिक, एक हजार कारीगर और लोहार थे। ये
सब बलवान और युद्ध के सर्वथा योग्य थे।

17 बेबीलोन के राजा ने यहोयाकीन के
चाचा मत्तन्याह को उसके स्थान पर राजा
नियुक्त किया। उसने मत्तन्याह का नाम बदल
दिया, और उसका नाम सिद्‌कियाह रखा।

यहूदा प्रदेश पर सिद्‌कियाह का राज्य

18 जब सिद्‌कियाह राजा बना तब वह
इक्कीस वर्ष का था। उसने ग्यारह वर्ष तक
राजधानी यरूशलेम में राज्य किया। उसकी मां
का नाम हमूटल था। वह लिब्नाह नगर के
यिर्मयाह की पुत्री थी। 19जैसे यहोयाकीन ने
प्रभु की दृष्टि में बुरा कार्य किया था, वैसे उसने
भी किया।

यरूशलेम नगर का पतन

20 यरूशलेम नगर और यहूदा प्रदेश ने प्रभु
को इतना क्रुद्ध किया कि अन्त में प्रभु ने अपने
सम्मुख से उनको दूर कर दिया।

25 सिद्‌कियाह ने बेबीलोन के राजा के
विरुद्ध विद्रोह कर दिया। उसके
राज्यकाल के नौवें वर्ष के दसवें महीने के दसवें
दिन बेबीलोन के राजा नबूकद-नेस्सर ने अपनी
सम्पूर्ण सेना के साथ यरूशलेम नगर पर चढ़ाई
कर दी, और उसको घेर लिया। नबूकद-नेस्सर
के सैनिकों ने नगर के चारों ओर पहरा देने के
लिए मीनार बनाई। 2इस प्रकार सिद्‌कियाह के
राज्य-काल के ग्यारहवें वर्ष तक नगर घिरा
रहा। 3ग्यारहवें वर्ष के चौथे महीने के नौवें दिन
जब नगर में भयंकर अकाल था, और आम
जनता को भोजन नहीं मिल रहा था, 4तब
शहरपनाह में दरार की गई। जब यहूदा प्रदेश
के राजा सिद्‌कियाह ने यह देखा, तब उसने
और उसके सशस्त्र अंगरक्षकों ने नगर को छोड़
दिया। वे रात में दो दीवारों के मध्यवर्ती दरवाजे
के मार्ग से निकल गए।* यह दरवाजा राज-

+ अर्थात् 597 ई० पू०   * मूल में अस्पष्ट।

24 : 8-17 2 इत 36 : 9 -10 **24 : 10** यिर 24 : 1; 52 : 28 **24 : 13** 2 रा 20 : 17 **24 : 15** यहेज 1 : 2; 17 : 12 **24 : 17** यिर 37 : 1 **24 : 18—25 : 21** 2 इत 36 : 11-21; यिर 52 : 1-27 **24 : 20** यहेज 17 : 15 **25 : 1** यिर 34 : 2; 39 : 1; यहेज 24 : 1; शोक 1 : 1 **25 : 4** यहेज 33 : 21.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उद्यान के समीप था। यद्यपि कसदी सैनिक नगर
को चारों ओर से घेरे हुए थे, तो भी वे यर्दन नदी
की सूखी घाटी की ओर निकल गए। [5]परन्तु
कसदी सेना ने राजा का पीछा किया। उन्होंने
राजा को यरीहो नगर के मैदानी इलाके में पकड़
लिया। राजा सिद्‌कियाह के सैनिक उससे
अलग होकर तितर-बितर हो गए। [6]कसदी
सैनिकों ने राजा को बन्दी बनाया। वे उसको
रिब्लाह नगर में बेबीलोन के राजा के पास
लाए। वहां उसको दण्ड दिया गया। [7]कसदी
सैनिकों ने सिद्‌कियाह की आंखों के सामने
उसके पुत्रों का वध किया। उन्होंने सिद्‌कियाह
की आंखें फोड़ दीं, और उसको जंजीरों से
बाँधकर बेबीलोन ले गए।

यहूदा प्रदेश से द्वितीय निष्कासन

8 बेबीलोन देश के राजा नबूकद-नेस्सर के
राज्य-काल का उन्नीसवां वर्ष ++था। इस वर्ष
के पांचवें महीने के सातवें दिन नबूकद-नेस्सर
का एक दरबारी नबूजरादान यरूशलेम नगर में
आया। यह राजा के अंगरक्षकों का नायक था।
[9]उसने प्रभु-भवन, राजमहल और यरूशलेम
के मकानों में आग लगा दी। उसने यरूशलेम
के सब बड़े मकान जला दिए। [10]अंगरक्षकों के
नायक के साथ सेना थी। सेना ने यरूशलेम के
चारों ओर की दीवारें तोड़ दीं। [11]जो लोग नगर
में बच गए थे, तथा जो भगोड़े बेबीलोन के राजा
के पास भाग गए थे, उनको तथा नगर के शेष
कारीगरों को + अंगरक्षकों का नायक नबूजरादान
बन्दी बनाकर ले गया। [12]उसने देश के दीन-
दरिद्रों को छोड़ दिया जिससे वे अंगूर-उद्यान
और खेतों में मजदूरी करें।

13 कसदी सैनिकों ने प्रभु-भवन के पीतल
के स्तम्भ, ठेलों और हौज को टुकड़े-टुकड़े
किया, और उनका पीतल बेबीलोन ले गए।
[14]वे राख उठाने के पीतल के पात्र, फावड़ियां,
चिमटे, धूपदान और प्रभु-मन्दिर के कामों में
प्रयुक्त होने वाले पीतल के सब पात्र, [15]करछे
तथा रक्त छिड़कने के पात्र भी ले गए।
अंगरक्षकों का नायक सोने-चांदी के सब पात्र
ले गया। [16]वस्तुतः दो स्तम्भों, एक हौज तथा
ठेलों के पीतल का भार अतुलनीय था। राजा
सुलेमान ने उन्हें प्रभु-मन्दिर के लिए बनाया
था। [17]एक स्तम्भ की ऊंचाई प्रायः आठ मीटर
थी। उसके ऊपर पीतल का शीर्ष था। शीर्ष एक
मीटर पैंतीस सेन्टीमीटर ऊँचा था। शीर्ष के चारों
ओर जाली और अनार बने थे। जाली और
अनार भी पीतल के थे। दूसरा स्तम्भ पहले
स्तम्भ के समान था। उसके शीर्ष पर भी जाली
थी।

18 अंगरक्षकों के नायक ने मुख्य पुरोहित
सरायाह, उपपुरोहित सफन्याह तथा तीन द्वारपालों
को पकड़ा। [19]उसने नगर के एक उच्चाधिकारी
खोजा को पकड़ा। यह सैनिकों का संचालक
था। उसने राजा के पांच मन्त्रियों को भी
पकड़ा। ये उस समय नगर में उपस्थित थे।
इनके अतिरिक्त नायक ने इन व्यक्तियों को भी
पकड़ा : सेनापति का सचिव, जो नागरिकों को
युद्ध-सेवा में भरती करता था; साठ नागरिक,
जो उस समय नगर में उपस्थित थे। [20]अंगरक्षकों
के नायक नबूजरादान ने उनको पकड़कर
रिब्लाह नगर में बेबीलोन के राजा के सम्मुख
प्रस्तुत किया। [21]वहां हमात देश के रिब्लाह
नगर में बेबीलोन के राजा ने उनको कोड़े मारे,
और मृत्यु-दण्ड दिया। यों यहूदा प्रदेश के
निवासी अपने देश से निष्कासित हो गए।

बचे हुए नागरिकों का मिस्र देश भागना

22 यहूदा प्रदेश में जो लोग शेष रह गये थे,
जिनको नबूकद-नेस्सर ने छोड़ दिया था, उन
पर बेबीलोन के राजा नबूकद-नेस्सर ने गदल्याह
को प्रशासक नियुक्त किया। उसके पिता का
नाम अहीकाम और दादा का नाम शाफान था।

23जब यहूदा प्रदेश के छापामार-दलों के
सेनानायकों और सैनिकों ने सुना कि बेबीलोन
के राजा ने गदल्याह को प्रशासक नियुक्त किया

++ अर्थात् 587 ई० पू० + मूल में, 'शेष लोगों को'।

25 : 6 2 रा 23 : 33 **25 : 7** यहेज 12 : 13 **25 : 8** यिर 52 : 29; लू 19 : 43 **25 : 13** 1 रा 7 : 15 **25 : 14** 1 रा 7 : 45 **25 : 21-26** यिर 40 : 7 - 43 : 7

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

है, तब वे सेनानायक अपने सैनिकों के साथ मिस्पाह नगर में गदल्याह के पास आए। सेनानायकों के नाम ये हैं : यिश्माएल बेन-नतनयाह, योहानान बेन-कारेह, सरायाह बेन-तनहूमेत,जो नटोफाहनगर का रहने वाला था; और याजनयाह, जिसका पिता माकाह का निवासी था।

24 गदल्याह ने सेनानायकों और उनके सैनिकों को शपथपूर्वक विश्वास दिलाया, 'कसदी सेना-अधिकारियों से मत डरो। तुम यहां, अपने यहूदा प्रदेश में, निर्भयता से निवास करो। तुम बेबीलोन के राजा की सेवा करो। तब तुम्हारा भला होगा।'

25 सातवें महीने में यह घटना घटी। यिश्माएल,जिसके पिता का नाम नतनयाह और दादा का नाम एलीशामा था, और जो राजपरिवार का था,अपने दस सैनिकों के साथ आया। उसने आक्रमण कर दिया, और गदल्याह, यहूदा प्रदेश के नागरिकों और कसदियों को, जो गदल्याह केसाथमिस्पाहमेंथे, मारडाला।26अत: यहूदा प्रदेश के छोटे-बड़े सब लोग और छापामार-दलों के सेनानायक उठे, और मिस्र देश को भाग गए। वे कसदियों से डर गए थे।

यहोयाकीन की मुक्ति और सम्मान

27 यहूदा प्रदेश के राजा यहोयाकीन की कैद का सैंतीसवां वर्ष* था। इस वर्ष एबील मरोदक ने बेबीलोन पर राज्य करना आरम्भ किया। उसने इस वर्ष के बारहवें महीने के सत्ताईसवें दिन यहूदा प्रदेश के राजा यहोयाकीन को क्षमा प्रदान कर कारागार से मुक्त कर दिया। 28उसने यहोयाकीन से सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार किया। जो राजा उसके साथ बेबीलोन में थे, उनके आसनों के मध्य में एक ऊँचे स्थान पर उसने यहोयाकीन को आसन प्रदान किया। 29यहोयाकीन ने बन्दियों की पोशाक उतार दी। वह अपने शेष जीवन-भर राजा की मेज पर नियमित रूप से भोजन करता रहा। 30उसे भरण-पोषण निरन्तर मिलता रहा। जब तक वह जीवित रहा, उसे राजा की ओर से दैनिक भत्ता प्रतिदिन मिलता रहा।

* अर्तात् 561 ई० पू०

25 : 27-30 यिर 52 : 31-34

इतिहासः पहला भाग

पुस्तक परिचय

ग्रन्थ के शीर्षक ''इतिहास'' से यह बोध होता है कि यह कालानुक्रम से यहूदा राज्य का एक दरबारी ''इतिवृत'' है। परंपरागत यूनानी शीर्षक के अनुसार यह एक ''अवशिष्ट इतिहास'' अथवा इतहास का पूरक है। जिन घटनाओं का उल्लेख **शमूएल** तथा **राजाओं के वृतान्त** की पुस्तकों में हुआ है, वे ही प्रस्तुत **इतिहास** ग्रन्थों में पुन: उल्लिखित हुई हैं; किन्तु एक नये दृष्टिकोण से इनको लिखा गया है।

इतिहास ग्रन्थों में इस्राएली राजतंत्र के इतिहास को नए दृष्टिकोण से लिखने के दो मुख्य अभिप्राय थे :

(1) पुरोहिती ''इतिहासकार'' इस्राएल एवं यहूदा राज्यों के पतन की नयी व्याख्या करना चाहते हैं कि पतन के बावजूद परमेश्वर इस्राएली कौम से की गयी अपनी प्रतिज्ञा को पूरा कर रहा है; उसने अपने निज लोगों के लिए और उनके द्वारा ही एक व्यापकतर मुक्ति-विधान ठहराया है। वह अपनी इस योजना को यहूदा प्रदेश के पुनर्वासी इस्राएलियों के माध्यम से पूरा करेगा। इस आश्वासन का आधार है: राजा दाऊद तथा राजा सुलेमान की महान उपलब्धियां; यहोशाफट,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हिजकियाह तथा योशियाह जैसे योग्य राजाओं के धर्म-सुधार; तथा बचे हुए सामान्य इस्राएलियों का परमेश्वर पर पूर्ण विश्वास। ''इतिहासकार'' ने पूर्व-वर्णित घटनाओं की नये दृष्टिकोण से व्याख्या की है।

(2) दूसरा अभिप्राय: ''इतिहासकार'' प्रभावपूर्ण ढंग से यरूशलेम के मन्दिर को ऐसा प्रतिष्ठित स्थान ठहराना चाहते हैं, जहाँ परमेश्वर की सच्ची आराधना की जाती है। वह पुरोहितों और लेवीय उप-पुरोहितों के संगठन पर प्रकाश डालते हैं कि इन्हीं के माध्यम से परमेश्वर की विधिवत् आराधना सम्पन्न की जाती रही। इसी संदर्भ में यह बताया गया है कि मन्दिर का तथा समस्त धार्मिक कर्मकाण्डों का वास्तविक निर्माता राजा दाऊद था। राजा सुलेमान पिता के आदेश के अनुसार, मन्दिर के मानचित्र के अनुरूप भवन को खड़ा करता है।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

विस्तृत वंशावली तथा सूची-पत्र	1:1—9:44
राजा शाऊल की मृत्यु	10 : 1-14
राजा दाऊद का राज्य :	
(क) दु:ख-संकट तथा उपलब्धियां	11:1—22:1
(ख) मन्दिर के भवन-निर्माण की तैयारी	22:2—29:30

आदम के वंशज

1 आदम, शेत, एनोश, 2केनन, महल्लेल, यारद,
3हनोक, मथूशलह, लामेक, 4नूह, शेम,
हाम और याफत।

नूह के पुत्रों के वंशज

5 ये याफत के पुत्र थे: गोमर, मागोग,
मादय, यवन, तूबल, मेशक और तीरस। 6ये गोमर
के पुत्र थे: अशकनज, रीपत* और तोगर्मा।
7 ये यवन के पुत्र हैं: एलीशाह, तर्शीश, तथा
कित्ती और रोदानी+ लोग।
8 ये हाम के पुत्र थे : कूश, मिस्र, पूट और
कनान।
9 ये कूश के पुत्र थे: सबा, हवीला, सबता,
रमा और सब्तका।
ये रमा के पुत्र थे : शबा और ददान।
10 कूश ने निम्रोद को जन्म दिया। निम्रोद
पृथ्वी का पहला शक्तिशाली पुरुष बना।
11 मिस्र इन जातियों का पिता बना : लूदी,
अनामी, लहाबी, नप्तूही, 12पत्रूसी, कसलूही
(इससे पलिश्ती जाति निकली) और कप्तोरी।
13 कनान सीदोन और हेत जातियों का पिता
हुआ। सीदोनी कनान की ज्येष्ठ सन्तान थे।
14इनके अतिरिक्त यबूसी, एमोरी, गिर्गाशी
15हिव्वी, अर्की, सीनी, 16अर्वादी, समारी और
हमाती जातियां भी उसकी सन्तान थीं।
17 ये शेम के पुत्र थे: एलान, अश्शूर,
अर्पक्षद, लूद, सीरिया++, ऊस, हूल, गेतर और
मेशेक।
18 अर्पक्षद ने शेलह को जन्म दिया, और
शेलह ने एबर को। 19एबर के दो पुत्र उत्पन्न
हुए। पहले पुत्र का नाम पेलग** था (उसके
समय में पृथ्वी विभाजित हुई।) और उसके
भाई का नाम योक्टन था।
20 ये योक्टन के पुत्र थे: अल्मोदद, शेलप,
हसर्मावत, यारह, 21हदोराम, ऊजल, दिक्ला,
22 ऐबल, अबीमाएल, शबा, 23 ओपीर, हवीला
और योबाब। ये सब योक्टन की सन्तान थे।

अब्राहम तक शेम के वंशज

24 शेम, अर्पक्षद, शेलह, 25एबर, पेलग, रऊ,
26सरुग, नाहोर, तेरह, 27अब्राम अर्थात् अब्राहम।

यिश्माएल और कटूरा के वंशज

28 ये अब्राहम के पुत्र थे: इसहाक और
यिश्माएल।
29 यह उनकी वंशावली है: यिश्माएल का

---

* मूल में, 'दीपत' + अथवा 'दोदानी' ++ अथवा ''अराम'' ** अर्थात् ''विभाजन''

1 : 1-54 उत 5; 10; 11; 25; 36

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ज्येष्ठ पुत्र नबायोत था। उसके बाद ये पुत्र हुए:
केदार, अदबएल, मिबसाम, 30मिश्मा, दूमा,
मस्सा, हदद, तेमा, 31 यटूर, नापीश और केदमा।
ये यिशमाएल के पुत्र थे। 32 अब्राहम की रखेल
कटूरा थी। उसके ये पुत्र थे: जिम्रान, याक्षान,
मदान, मिद्यान, यिशबाक और शूह। ये याक्षान
के पुत्र थे: शबा और ददान। 33ये मिद्यान के पुत्र
थे: एपा, एपेर, हनोक, अबीदा और एल्दाआ।
ये सब कटूरा के वंशज थे।

एसाव के वंशज

34 अब्राहम से इसहाक उत्पन्न हुआ था।
इसहाक के ये पुत्र थे: एसाव और इस्राएल।
35ये एसाव के पुत्र थे: एलीपज, रूएल, यूश,
यालाम और कोरह। 36ये एलीपज के पुत्र थे:
तेमन, ओमर, सपी, गताम, कनज, तिम्ना और
अमालेक। 37 ये रूएल के पुत्र थे: नहत, जेरह,
शम्मा और मिज्जा।

38 ये सेईर के पुत्र थे: लोटन, शोबल,
सिबओन, अना, दीशोन, एसर, और दीशन।
39ये लोटन के पुत्र थे: होरी और होमाम। लोटन
की बहिन का नाम तिम्ना था। 40ये शोबल के
पुत्र थे: अल्यान, मानहत, ऐबल, शपी और
ओनम। ये सिबओन के पुत्र थे: अय्या और
अना। 41 अना का पुत्र दीशोन था। ये दीशोन
के पुत्र थे। हमरान, एशबान, यित्रान, और
करान। 42ये एसर के पुत्र थे: बिल्हान, जावन
और याकान। ये दीशन के पुत्र थे: ऊस और
अरान।

एदोम देश के आरम्भिक राजा

43 जब इस्राएल देश में राजा की प्रथा का
आरम्भ हुआ, उसके पूर्व एदोम देश में इन
राजाओं ने राज्य किया था: बेला बेन-बोर।
उसकी राजधानी का नाम दिन्हाबा था। 44बेला
की मृत्यु के बाद बोसरा नगर का योबाब बेन-
जेरह बेला के स्थान पर राज्य करने लगा।
45योबाब की मृत्यु हुई। तब तेमानी जाति के
देश का हूशम योबाब के स्थान पर राज्य करने
लगा। 46जब हूशम की मृत्यु हुई तब हदद बेन-
बदद उसके स्थान पर राज्य करने लगा। हदद
ने मोआब के मैदान में मिद्यानी सेना को
पराजित किया था। हदद की राजधानी का नाम
अबीत था। 47हदद की मृत्यु हुई। मस्रेका नगर
का सम्ला उसके स्थान पर राज्य करने लगा।
48सम्ला की मृत्यु हुई। तब शाऊल उसके स्थान
पर राज्य करने लगा। वह फरात नदी-तट के
रहोबोत नगर का रहनेवाला था। 49शाऊल की
मृत्यु हुई। तब बालहानन बेन-अकबोर उसके
स्थान पर राज्य करने लगा। 50बालहानन की
मृत्यु हुई। उसके स्थान पर हदद राज्य करने
लगा। उसकी राजधानी का नाम पाई और पत्नी
का नाम महेट-बएल था। महेट-बएल की माँ
का नाम मटरेद, और नानी का नाम मेजाहब
था।

एदोम देश के सामन्त

51 हदद की मृत्यु के बाद एदोम देश में ये
सामन्त हुए: तिम्ना, अलया, यतेत,
52आहलीबामा, एला, पीनोन, 53कनज, तेमान,
मिब्सार, 54मगदीएल और ईरम। ये एदोम देश
के सामन्त थे।

याकूब (इस्राएल) के पुत्र

2 ये इस्राएल के पुत्र थे: रूबेन, शिमोन,
लेवी, यहूदा, इस्साकार, जबूलून, 2दान,
यूसुफ, बिन्यामिन, नफ्ताली, गाद और आशेर।

यहूदा के वंशज

3 ये यहूदा के पुत्र थे: एर, ओनन, और
शेला। यहूदा के ये तीनों पुत्र बत-शूआ नामक
कनानी जाति की स्त्री से उत्पन्न हुए थे। यहूदा
का ज्येष्ठ पुत्र एर प्रभु की दृष्टि में बुरा था। इस
कारण प्रभु ने उसको मार डाला। 4यहूदा की
बहू तामार से भी उसको ये पुत्र उत्पन्न हुए थे:
पेरेस और जेरह। इस प्रकार यहूदा के कुल पाँच
पुत्र थे।

5 ये पेरेस के पुत्र थे: हेस्रोन और हामूल।
6ये जेरह के पुत्र थे: जिम्री, एतान, हेमान,
कालकोल और दारा। कुल पाँच। 7ये कर्मी के
पुत्र थे: आकार—यह इस्राएली राष्ट्र को कष्ट
देनेवाला कहलाया। इसने प्रभु को अर्पित की
जाने वाली वस्तु के विषय में आज्ञा-उल्लंघन कर

2: 1-2 उत 35 : 23-26 2 : 3-4 उत 38 : 3-7,29-30

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अपराध किया था। 8 और एतान का पुत्र अज़र्याह
था।
9 ये हेस्रोन के पुत्र थे: यरहमएल, राम और
कलूबै। 10 राम का पुत्र अम्मीनादब था, और
अम्मीनादब का पुत्र नहशोन। यह यहूदा वंशजों
का नेता था।
11 नहशोन का पुत्र सल्मा था, और सल्मा
का पुत्र बोअज। 12 बोअज का पुत्र ओबेद था,
और ओबेद का पुत्र यिशय। 13 यिशय का ज्येष्ठ
पुत्र एलीअब था। दूसरा पुत्र अबीनादब, तीसरा
पुत्र शिम्आ, 14 चौथा पुत्र नतनएल, पांचवां पुत्र
रदै, 15 छठा पुत्र ओसेम और सातवां पुत्र दाऊद
था। 16 उनकी बहिन सरुयाह और अबीगइल
थीं। सरुयाह के पुत्र ये थे: अबीशय, योआब
और असाएल। कुल तीन। 17 अबीगइल से
अमासा उत्पन्न हुआ था। अमासा का पिता येतेर
यिश्माएली वंश का था।
18 कालेब बेन-हेस्रोन की पत्नी अजूबाह
और यरीओत से पुत्र उत्पन्न हुए थे। उनके पुत्रों
के ये नाम हैं: येशेर, शोबाब और अर्दोन।
19 अजूबाह की मृत्यु के बाद कालेब ने एप्राता
से विवाह किया। उससे हूर उत्पन्न हुआ। 20 हूर
का पुत्र ऊरी था, और ऊरी का पुत्र बसलएल।
21 तत्पश्चात् हेस्रोन ने माकीर की पुत्री से
सम्भोग किया। माकीर गिलआद का पिता था।
हेस्रोन ने माकीर की पुत्री से विवाह किया। उस
समय हेस्रोन की उम्र साठ वर्ष थी। माकीर की
पुत्री ने एक पुत्र को जन्म दिया। उसका नाम
सगूब था। 22 सगूब का पुत्र याईर था। याईर के
अधीन गिलआद प्रदेश में तेईस नगर थे।
23 परन्तु गशूर और सीरिया राज्यों ने उनसे याईर
की बस्तियों, कनत नगर तथा उसके गांवों को
छीन लिया था। ये नगर कुल साठ थे। ये सब
गिलआद के पिता माकीर के वंशज थे।
24 हेस्रोन की मृत्यु के बाद कालेब ने अपने पिता
की विधवा एप्राता से सम्भोग किया।* उससे
एक पुत्र का जन्म हुआ। उसका नाम अशहूर
था। अशहूर तकोअ का पिता बना।
25 हेस्रोन के ज्येष्ठ पुत्र यरहमएल के ये पुत्र
थे: ज्येष्ठ पुत्र राम; बूनाह, ओरेन, ओसेम और
अहिय्याह। 26 यरहमएल की एक और पत्नी
थी। उसका नाम अटाराह था। वह ओनाम की
माँ थी। 27 यरहमएल के ज्येष्ठ पुत्र राम के ये
पुत्र थे: मअस, यामीन और एकेर। 28 ओनाम
के ये पुत्र थे: शम्मई और यादाअ। शम्मई के
ये पुत्र थे: नादाब और अबीशूर। 29 अबीशूर
की पत्नी का नाम अबीहाइल था। अबीशूर के
ये पुत्र उससे उत्पन्न हुए थे: अहबान और
मोलीद। 30 ये नादाब के पुत्र थे: सेलेद और
अप्पाइम। सेलेद निस्सन्तान मरा था। 31 अप्पाइम
का पुत्र यिश्ई और यिश्ई का पुत्र शेशान था।
शेशान का पुत्र अहलै था। 32 शम्मई के भाई
यादाअ के ये पुत्र थे: येतर और योनातन। येतर
निस्सन्तान मरा था। 33 योनातन के ये पुत्र थे:
पेलेत और जाजा। ये सब यरहमएल के वंशज
थे। 34 शेशान के पुत्र नहीं वरन् पुत्रियां थीं।
शेशान का एक मिस्री गुलाम था। उसका नाम
यरहाअ था। 35 शेशान ने अपनी एक पुत्री का
विवाह इस गुलाम से कर दिया। शेशान की पुत्री
ने इस गुलाम से एक पुत्र को जन्म दिया। उसका
नाम अत्तई था। 36 अत्तई का पुत्र नातान था, और
नातान का पुत्र जाबाद। 37 जाबाद का पुत्र एप्लाल
था, और एप्लाल का पुत्र ओबेद। 38 ओबेद का
पुत्र येहू था, और येहू का पुत्र अज़र्याह।
39 अज़र्याह का पुत्र हालेस था, और हालेस का
पुत्र एलआसाह। 40 एलआसाह का पुत्र सिसमई
था और सिसमई का पुत्र शल्लूम। 41 शल्लूम का
पुत्र यकमयाह था, और यकमयाह का पुत्र
एलीशामा।
42 यरहमएल के भाई कालेब के ये पुत्र थे:
ज्येष्ठ पुत्र मारेशाह। मारेशाह का पुत्र जीप था।
मारेशाह का दूसरा पुत्र हेब्रोन था। 43 ये हेब्रोन
के पुत्र थे: कोरह, तप्पूह, रेकेम और शेमअ।
44 शेमअ का पुत्र रहम था, जो योर्कआम का
पिता हुआ। रेकम का पुत्र शम्मई था। 45 शम्मई
का पुत्र माओन था, और माओन बेत-सूर का
पिता हुआ। 46 कालेब के अपनी रखेल ऐपाह
से भी ये पुत्र हुए थे: हारान, मोसा और गाजेज।

* प्राचीन यूनानी पाठानुवाद के अनुसार

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हारान गाजेज का पिता था। 47याहदई के ये पुत्र
थे: रेगेम, योताम, गेशान, पेलेट, ऐपाह और
शअप। 48कालेब की दूसरी रखेल माकाह को
उससे ये पुत्र उत्पन्न हुए थे: शेबेर और तिर्हनाह।
49माकाह को ये दो पुत्र भी हुए थे: शअप,
जिससे मदमन्नाह उत्पन्न हुआ, और शबा,
जिससे मकबेनाह तथा गिबआ उत्पन्न हुए।
कालेब की पुत्री का नाम अक्साह था। 50ये ही
कालेब के वंशज थे।
एप्राता के ज्येष्ठ पुत्र हूर के ये पुत्र थे:
शोबाल, सल्मा और हारेप। शोबाल से किर्यत-
यआरीम उत्पन्न हुआ। 51सल्मा से बेतलेहम
और हारेप से बेत-गादेर उत्पन्न हुआ। 52किर्यत-
यआरीम के पिता शोबाल के वंशज मनूहोत
नगर के आधे लोग, हारोएह थे। 53किर्यत-
यआरीम के गोत्र में ये लोग थे: यित्री, पूती,
शूमाती और मिशराई। इनसे सोर्आती और
एश्ताऊली गोत्र निकले। 54सल्मा के वंशज
बेतलेहम, नटोपाती, अटरोत-बेत-योआब, और
मनूहोत नगर के शेष आधे लोग अर्थात् सोरई।
55लिपिकों के ये गोत्र याबेस नगर में बसे हुए
थे: तिर्आती, शिम्आती और सूकाती। ये केनी
जाति के लोग थे, जो हम्मात नगर से आए थे।
रेकाब जाति का कुलपति हम्मात था।

दाऊद के पुत्र

3 ये दाऊद के पुत्र थे, जो उसको हेब्रोन नगर
में उत्पन्न हुए थे; ज्येष्ठ पुत्र अम्नोन। इसको
यिज्रएल नगर की रहनेवाली अहीनोअम ने
जन्म दिया था। दूसरा पुत्र दानिएल था। इसको
कर्मेल की रहनेवाली अबीगइल ने जन्म दिया
था। 2तीसरा पुत्र अबशालोम था। यह माकाह
का पुत्र था, जो गशूर के राजा तलमई की पुत्री
थी। चौथा पुत्र अदोनियाह था। उसकी माँ का
नाम हग्गीत था। 3पांचवां पुत्र शपट्याह था
जिसको अबीटल ने जन्म दिया था। छठा पुत्र
यित्राम था, जिसको दाऊद की पत्नी एग्लाह ने
जन्म दिया था। 4ये छः पुत्र दाऊद को हेब्रोन
नगर में उत्पन्न हुए थे। वहाँ उसने साढ़े सात वर्ष
तक राज्य किया था। दाऊद ने तैंतीस वर्ष तक
यरूशलेम में राज्य किया था। 5ये पुत्र उसको
यरूशलेम में उत्पन्न हुए थे: शिम्आ, शोबाब,
नातान और सुलेमान। इनको बतशेबा ने जन्म
दिया था, जो अम्मीएल की पुत्री थी। 6अन्य पुत्र
ये थे: यिभहार, एलीशूअ, एलीपेलेट, 7नोगह,
नेपेग, यापीअ, 8एलीशामा, एल्यादा और
एलीपेलेट। ये कुल नौ थे। ये सब दाऊद के पुत्र
थे। 9रखेलों से उत्पन्न उसके अन्य पुत्र भी थे।
दाऊद के पुत्रों की बहिन का नाम तामार था।

सुलेमान के वंशज

10सुलेमान का पुत्र रहबआम था। रहबआम
का पुत्र अबिय्याह था। अबिय्याह का पुत्र आसा
था। आसा का पुत्र यहोशाफट था। 11यहोशाफट
का पुत्र योराम था। योराम का पुत्र अहज्याह
था। अहज्याह का पुत्र योआश था। 12योआश
का पुत्र अमस्याह था। अमस्याह का पुत्र
अजर्याह था। अजर्याह का पुत्र योताम था।
13योताम का पुत्र आहाज था। आहाज का पुत्र
हिजकियाह था। हिजकियाह का पुत्र मनश्शे
था। 14मनश्शे का पुत्र आमोन था। आमोन का
पुत्र योशियाह था। 15योशियाह के पुत्र ये थे:
ज्येष्ठ पुत्र योहानान, दूसरा पुत्र यहोयाकीम,
तीसरा पुत्र सिद्‌कियाह, चौथा पुत्र शल्लूम।
16यहोयाकीम का पुत्र यकोन्याह था, और
यकोन्याह का पुत्र सिद्‌कियाह। 17बन्दी
यकोन्याह के ये पुत्र थे: शालतिएल,
18मल्कीराम, पदायाह, शेनअस्सर, यकमयाह,
होशामा और नदबयाह। 19पदायाह के ये दो पुत्र
थे: जरुब्बाबेल और शिमई। जरुब्बाबेल के ये
दो पुत्र थे: मशूल्लाम और हनन्याह । इनकी
बहिन का नाम शलोमीत था। 20इनके अतिरिक्त
ये पाँच पुत्र थे: हशूबाह, बेरेकयाह, हसदयाह
और यूशब-हेसेद। 21ये हनन्याह के पुत्र थे:
पलटयाह और यशायाह। रपायाह का पुत्र
अर्नान था, और अर्नान का पुत्र ओबद्याह।
ओबद्याह का पुत्र शकन्याह था, 22और शकन्याह
का पुत्र शामायाह। शामायाह के छः पुत्र थे :
हट्टूश, यिग्आल, बारीह, नअरयाह और शापाट।
23नहरयाह के ये तीन पुत्र थे: एलयोएनई,

3:1-9 2शम 3 : 2-5; 5 : 14-16

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हिजकियाह और अज्रीकाम। 24ये एलयोएनई
के सात पुत्र थे: होदव्याह, एलयाशीब, पलायाह,
अक्कूब, योहानान, दलायाह और अनानी।

पुनः यहूदा के वंशज

4 ये यहूदा के पुत्र थे: पेरेस, हेस्रोन, कर्मी,
हूर और शोबाल। 2शोबाल का पुत्र रआयाह
था। रआयाह का पुत्र यहत था। यहत के दो पुत्र
थे: अहूमई और लाहद। ये ही सोरआती गोत्र
में थे। 3ये ऐटाम के पुत्र थे: यिज्रएल, यिश्मा
और यिद्बाश। इनकी बहिन का नाम
हसलेलपोनी था। 4पनूएल का पुत्र गदोर था।
एजर का पुत्र हूशाह था। ये हूर के पुत्र थे: ज्येष्ठ
पुत्र एप्राता। एप्राता बेतलेहम का पिता हुआ।
5दूसरा पुत्र अश्हूर था। यह तकोअ का पिता
हुआ। अश्हूर की दो पत्नियां थीं: हेल्आह और
नअराह। 6नअराह ने उससे इन पुत्रों को जन्म
दिया: अहूज्जाम, हेपेर, तैमनी और हाअहशतारी।
ये ही नअराह के पुत्र थे। 7ये हेल्आह के पुत्र
थे: सेरेत, यिसहर और एतनान। 8कोस के ये
पुत्र थे: आनूब और सोबेबाह। उसके वंश में
हारूम के पुत्र अहरहेल के गोत्र भी हुए। 9लोग
यअबेस को उसके अन्य भाइयों की अपेक्षा
अधिक आदर-सम्मान देते थे। इसलिए उसकी
मां ने उसका नाम 'यअबेस'* रखा था। वह यह
कहती थी, 'मैंने इसको बड़ी पीड़ा से जन्म
दिया है।' 10यअबेस ने इस्राएली राष्ट्र के परमेश्वर
से यह प्रार्थना की, 'प्रभु, काश! तू मुझे आशिष
देता, और मेरी रहने की सीमा को बढ़ाता। तेरा
वरद-हस्त मुझ पर होता, तू मुझ को विपत्ति
से बचाता, और तब मेरा अनिष्ट न होता!'
परमेश्वर ने उसकी इच्छा को पूरा किया।

11शूहाह का भाई कलूब था। कलूब के पुत्र
का नाम महीर था। महीर एश्तोन का पिता
हुआ। 12एश्तोन के ये पुत्र थे: बेतरापा, पासेह
और तहिन्नाह। तहिन्नाह के पुत्र का नाम
ईरनाहाश था। ये सब रेकाह के व्यक्ति थे। 13ये
कनज के पुत्र थे: ओतनीएल और सरायाह।
ओतनीएल के ये पुत्र थे: हतत और मओनोतई।
14मओनोतई का पुत्र ओप्राह था। सरायाह का
पुत्र योआब था। योआब हराशीम** घाटी में
रहनेवालों का संस्थापक था; क्योंकि ये कारीगर
थे। 15यपुन्नेह के पुत्र कालेब के ये पुत्र थे: ईरू,
एलाह और नाहम। एलाह का पुत्र कनज था।
16यहले-लएल के ये पुत्र थे: जीप, जीपाह,
तीर्या और असरएल।

17 एज्रा के ये पुत्र थे: येतेर, मेरेद, एपेर और
यालोन। मेरेद ने फरओ की पुत्री बितियाह से
विवाह किया। बितियाह गर्भवती हुई, और
उसने मिर्याम, शम्मई और यिश्बाह को जन्म
दिया। यिश्बाह एश्तमो का पिता बना। 18उसकी
पत्नी यहूदी थी। उसने येरेद, हेबेर और
यकूतीएल को जन्म दिया। येदेर गदोर का
पिता, हेबेर सोको का पिता और यकूतीएल
जानोह का पिता बना। 19 नहम की बहिन ने
होदियाह से विवाह किया। उनके ये पुत्र थे:
दलियाह और एश्तमो।

दलियाह गर्माह नगर के रहने वाले कईलाह
का पिता हुआ। एश्तमो माकाह का रहने वाला
था।

20 ये शीमोन के पुत्र थे: अम्नोन, रिन्ना,
बेन-हानान और तिलोन। ये यिशई के पुत्र थे:
जोहेत और बेन-जोहेत। 21यहूदा के पुत्र शेलाह
के ये पुत्र थे: एर और लअदाह। एर लेकाह का
पिता हुआ, और लअदाह मारेशाह का। इनके
अतिरिक्त महीन सूती वस्त्र के कामगारों के
परिवार जो बेत-अश्बेम में रहते थे, शेलाह के
वंशज थे। 22ये भी पुत्र थे: याकीम, कोजेबा
नगर के लोग, योआश और सराप जिसने
मोआब देश पर राज्य किया, और फिर लेहेम
नगर को लौट आया था। (ये बातें बड़ी पुरानी
हैं।) 23ये कुम्हार थे। ये नटायीम और गदेराह
नगरों में रहते थे। ये राजा की सेवा में, उसके
लिए पात्र बनाते थे, और वहीं रहते थे।

शिमोन के वंशज

24 ये शिमोन के वंशज थे: नमूएल, यामीन,
यारीब, जेरह, और शाऊल। 25शाऊल का पुत्र

* अर्थात् "पीड़ा" ** अर्थात् "कारीगर"

4: 24 उत 46 ; 10; नि 6 : 15

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शल्लूम था, और शल्लूम का पुत्र मिब्साम।
मिब्साम का पुत्र मिश्मा था। 26मिश्मा का पुत्र
हम्मूएल था, और हम्मूएल का पुत्र जक्कूर।
जक्कूर का पुत्र शिमई था। 27शिमई के सोलह
पुत्र और छः पुत्रियां थीं। किन्तु उसके भाइयों
की इतनी सन्तान नहीं थी। इन सब भाइयों का
परिवार उतना अधिक विशाल नहीं हुआ
जितना यहूदा के वंशज। 28 ये इन नगरों में
निवास करते थे: बएर-शेबा, मोलादाह, हसर-
शूआल, 29बिलहाह, एसेम, तोलाद, 30बतूएल,
होरमाह, सिक्लग, 31बेत-मारकाबोत, हसर-
सूसीम, बेतबिरई और शअराइम। दाऊद के
राज्य-काल तक ये उनके नगर थे। 32ये उनके
निवास-स्थान थे: ऐटाम, अइन, रिम्मोन, तोकेन,
और आशान। ये कुल पांच नगर थे। 33इन नगरों
के चारों ओर बअल तक अनेक गांव थे। ये ही
उनके निवास-स्थान थे।

यह उनकी वंशावली है: 34मशोबाब,
यमलेक, योशाह (यह अमस्याह का पुत्र था),
35योएल, येहू (यह असीएल का प्रपौत्र,
सरायाह का पौत्र और योशिबयाह का पुत्र था),
36एल्योएनई, यअकोबाह, यशोहायाह,
असायाह, अदीएल, यसीमिएल, बनायाह,
37जीज़ा (यह सिपइ का पुत्र, अल्लोन का पौत्र,
और यदायाह का प्रपौत्र था। यदायाह शिमरी
का पुत्र और समअयाह का पौत्र था।) 38ये व्यक्ति
जिनके नाम क्रमशः उल्लिखित हैं, अपने-
अपने गोत्र के मुखिया थे। जब इनके पितृकुल
में जनसंख्या अत्यधिक बढ़ गई 39तब ये लोग
अपने पशुओं के चारे के लिए घाटी के पूर्व में
गदोर के प्रवेश-द्वार पर पहुंचे। 40वहां उन्हें अच्छा
और उपजाऊ चरागाह मिला। चरागाह की
भूमि खूब विस्तृत, निर्जन और शान्त थी;
क्योंकि वहां के मूल निवासी, जो उनसे पहले
वहां निवास करते थे, हाम के वंशज थे। 41जिन
लोगों के नाम ऊपर लिखे हुए हैं, यहूदा प्रदेश
के राजा हिजकियाह के राज्य-काल में यहाँ
आए थे। उन्होंने हाम के कुलों* और मऊनी
जाति को, जो उनको वहां मिले थे, पूर्णतः नष्ट
कर दिया। उन्होंने उनको जड़-मूल से खत्म
कर दिया, और आज तक उनका कोई अवशेष
नहीं रहा। वे उनके स्थान पर बस गए; क्योंकि
उनके पशुओं के लिए वहां चारा उपलब्ध था।
42 शिमोन कुल के पांच सौ व्यक्ति सेईर पहाड़ी
क्षेत्र की ओर गए। उनके नेता पल्टयाह,
नअरयाह, रपायाह और उज्जिएल थे। ये यिशई
के पुत्र थे। 43उन्होंने अमालेकी जाति के बचे
हुए शेष लोगों को नष्ट कर दिया। वे आज तक
वहाँ निवास करते हैं।

रूबेन के वंशज

5 ये इस्राएल के ज्येष्ठ पुत्र रूबेन के वंशज थे।
(यद्यपि रूबेन ज्येष्ठ पुत्र था; किन्तु उसने
पिता की पत्नी से बलात्कार किया था, इसलिए
उसके ज्येष्ठ पुत्र होने का जन्म-सिद्ध अधिकार
उसके छोटे भाई यूसुफ के पुत्रों को दे दिया गया
था। इस कारण रूबेन के नाम का उल्लेख
वंशावली में जन्म के क्रमानुसार नहीं किया गया
है। 2यह भी सच है कि यहूदा अपने भाइयों में
शक्तिशाली हो गया था और उसके ही वंश से
अगुवा हुआ था, तो भी ज्येष्ठ पुत्र के जन्म-सिद्ध
अधिकार पर यूसुफ का ही अधिकार था।) 3ये
इस्राएल के ज्येष्ठ पुत्र रूबेन के पुत्र थे: हानोख,
पल्लू, हेस्रोन और कर्मी। 4योएल का पुत्र
शमअयाह था, और शमअयाह का पुत्र गोग।
गोग का पुत्र शिमई था, 5और शिमई का पुत्र
मीकाह। मीकाह का पुत्र रआयाह था, और
रआयाह का पुत्र बअल। 6बअल का पुत्र बएराह
था। बेबीलोन का राजा तिग्लत-पलेसेर बएराह
को बन्दी बनाकर अपने देश ले गया था।
बएराह रूबेन के वंशजों का नेता था। 7ज़ब उसके
भाइयों की वंशावली, उनके गोत्र के क्रम के
अनुसार लिखी गई, तब उनके वंशज क्रमशः
इस प्रकार हुए: यईएल जो नेता था; जकरयाह
8और बेलअ। यहअजाज का पुत्र, शेमअ का
पौत्र और योएल का प्रपौत्र था, जो अरोएर में
निवास करता था। उसका निवास-क्षेत्र नबो

* मूल में, 'उनके तम्बुओं'

4 : 28–33 यहो 19 : 2–8 5 : 1–26 उत 46 : 9; गण 26 : 5–6 5 : 1 उत 35 : 22; 49 : 3 5 : 6 2 रा 1 : 29

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और बअल-मओन तक था। 9उसने पूर्व दिशा
में मरुस्थल के प्रवेश-द्वार तक फरात नदी की
इस ओर भी निवास किया था; क्योंकि गिलआद
प्रदेश में उनके पशुओं की संख्या बहुत बढ़ गई
थी। 10रूबेन के वंशजों ने शाऊल के राज्य-
काल में हगारई जाति से युद्ध किया था, और
उसको पराजित किया था। तत्पश्चात् वे गिलआद
प्रदेश के पूर्व में उनके निवास-स्थानों में बस
गए थे।

गाद के वंशज

11गाद के वंशज रूबेनियों के पास, बाशान
देश में रहते थे। वे सलकाह तक बसे हुए थे।
12ये गाद के वंशज थे: योएल ज्येष्ठ** था। शापाम
दूसरे स्थान पर था। इनके अतिरिक्त यअनई
और शापाट थे। ये सब बाशान देश में रहते थे।
13उनके भाई पितृकुल के अनुसार ये थे:
मीखाएल, मशुल्लाम, शेबअ, योरइ, यअकान,
जीअ और एबर थे। ये कुल सात थे। 14ये
अबीहइल के पुत्र थे, जो हूरी का पुत्र, यारोह
का पौत्र था। यारोह गिलआद का पुत्र और
मीखाएल का पौत्र था। मीखाएल यशीशई का
पुत्र, यहदो का पौत्र और बूज़ का प्रपौत्र था।
15इनके पितृकुल का प्रमुख व्यक्ति अबद्दीएल
का पुत्र, गूनी का पौत्र अही था। 16ये पितृकुल
गिलआद में बाशान और उसके नगरों में तथा
शारोन के चरागाहों में उनकी सीमाओं तक
निवास करते थे। 17यहूदा प्रदेश के राजा योताम
और इस्राएल प्रदेश के राजा यरोबआम के राज्य
कालों में इन पितृकुलों के नाम इनकी वंशावली
के अनुसार लिखे गए थे।

मनश्शे के साथ रूबेन और गाद के वंशजों का पुनः उल्लेख

18 रूबेन के वंश, गाद के वंश, और मनश्शे
के आधे गोत्र में शूरवीर सैनिक थे। ये योद्धा
ढाल उठा सकते थे, तलवार चला सकते थे और
धनुष से तीर का निशाना लगा सकते थे। ये युद्ध
में कुशल थे। ये कुल चौवालीस हजार सात सौ
साठ थे। ये सदा युद्ध सेवा के लिए तैयार रहते
थे। 19इन्होंने एक बार हगारई, यटूर, नापीस
और नोदाब जातियों पर आक्रमण किया।
20परन्तु हगारई आदि सेनाओं को इस्राएली
सैनिकों के विरुद्ध सहायता प्राप्त हुई। तब
इस्राएली सैनिकों ने परमेश्वर से प्रार्थना की।
परमेश्वर ने उनकी विनती को सुना; क्योंकि
उन्होंने परमेश्वर पर भरोसा किया था। अतः
उसने हगारई सेना तथा उसके पक्ष की अन्य
जातियों की सेनाओं को जो उसके साथ थीं,
इस्राएलियों के हाथ में सौंप दिया। 21इस्राएलियों
ने उनके पशु छीन लिये: पचास हजार ऊंट,
अढ़ाई लाख भेड़-बकरी और दो हजार गधे।
इस्राएलियों ने शत्रु सेना के एक लाख सैनिकों
को बन्दी बना लिया। 22इस युद्ध में बहुत नरसंहार
हुआ; क्योंकि यह युद्ध परमेश्वर की ओर से
हुआ था। तत्पश्चात् रूबेन के वंशज, गाद के
वंशज और मनश्शे के आधे गोत्र के लोग उनके
स्थान पर 'निष्कासन' के समय तक उनके
निवास-स्थानों में निवास करते रहे। 23मनश्शे
गोत्र के शेष आधे लोग यर्दन नदी के पूर्व में बसे
हुए थे। उनकी जनसंख्या बहुत थी। वे बाशान
से बअल-हेर्मोन, सनीर और हेर्मोन पर्वत तक
बसे हुए थे। 24उनके पितृकुल के क्रमानुसार ये
व्यक्ति उनके मुखिया थे: येपेर, यिशई, एलीएल,
अजरीएल, यिर्मयाह, होदवयाह और यहद्दीएल
थे। ये महायोद्धा थे। ये विख्यात सैनिक थे और
अपने-अपने पितृकुल के मुखिया थे। 25किन्तु
उन्होंने अपने पूर्वजों के परमेश्वर के विरुद्ध
अपराध किया। जिन जातियों को परमेश्वर ने
उनके सम्मुख नष्ट कर दिया था उन्हीं के
देवताओं का अनुसरण उन्होंने किया और यों
उन्होंने वेश्या के सदृश्य व्यवहार किया।
26अतः परमेश्वर ने असीरिया देश के राजाओं
पूल और तिग्लत-पलेसेर को उनके विरुद्ध
उभाड़ा। वे रूबेन तथा गाद के वंशजों को और
मनश्शे के आधे गोत्र के लोगों को बन्दी बनाकर
ले गए। वे उनको हलह, हाबोर तथा हारा नगर
में और गोजान नदी के तट पर ले गए, जहां वे

** अथवा 'प्रधान', 'मुख्य'

5 : 26 2 रा 17 : 6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आज भी निवास करते हैं।

लेवी के वंशज

6 *ये लेवी के पुत्र थे : गेर्शोम, कहात और
मरारी। 2कहात के ये पुत्र थे : अम्राम,
यिस्हार, हेब्रोन और ऊज्जीएल। 3अम्राम के ये
पुत्र थे : हारून, मूसा और मिर्याम। हारून के
ये पुत्र थे : नादाब, अबीहू, एलआजर और
ईतामर। 4एलआजर से पीनहास उत्पन्न हुआ,
और पीनहास से अबीशूअ। 5अबीशूअ से बूक्की,
और बूक्की से ऊज्जी उत्पन्न हुआ। 6ऊज्जी से
जरहयाह और जरहयाह से मरायोत उत्पन्न
हुआ। 7मरोयोत से अमरयाह, और अमरयाह
से अहीटूब उत्पन्न हुआ। 8अहीटूब से सादोक,
और सादोक से अहीमअस उत्पन्न हुआ।
9अहीमअस से अजर्याह और अजर्याह से
योहानान उत्पन्न हुआ। 10योहानान से अजर्याह
उत्पन्न हुआ। (जिस मन्दिर को सुलेमान ने
यरूशलेम में बनाया था, उसका पुरोहित यही
अजर्याह था।) 11अजर्याह से अमरयाह, और
अमरयाह से अहीटूब उत्पन्न हुआ। 12अहीटूब
से सादोक और सादोक से शल्लूम उत्पन्न
हुआ। 13शल्लूम से हिल्कियाह, और हिल्कियाह
से अजर्याह उत्पन्न हुआ। 14अजर्याह से सरायाह,
और सरायाह से यहोसादाक उत्पन्न हुआ।
15जब प्रभु ने नबूकदनेस्सर के माध्यम से यहूदा
प्रदेश और यरूशलेम नगर की जनता को
निष्कासित किया था, तब यहोसादाक भी अपने
देश से निष्कासित होकर गया था।

16 ये लेवी के पुत्र थे : गेर्शोम, कहात और
मरारी। 17गेर्शोम के पुत्रों के ये नाम हैं : लिब्नी
और शिमई। 18कहात के ये पुत्र थे : अम्राम,
यिसहार, हेब्रोन और ऊज्जीएल। 19मरारी के ये
पुत्र थे: महली और मूशी। ये ही लेवी के गोत्र
अपने-अपने पितृकुल के अनुसार हैं। 20गेर्शोम
का पुत्र लिब्नी था और लिब्नी का पुत्र यहत था।
यहत का पुत्र जिम्मा, 21और जिम्मा का पुत्र
योआह था। योआह का पुत्र इद्दो और इद्दो का
पुत्र जेरह था। जेरह का पुत्र यआतरई था।
22कहात का पुत्र अम्मीनादब था और अम्मीनादब
का पुत्र कोरह। कोरह का पुत्र अस्सीर; 23और
अस्सीर का पुत्र एलकाना था। एलकाना का पुत्र
एबीआसप, और एबीआसप का पुत्र अस्सीर
था। 24तहत अस्सीर का पुत्र था और तहत का
पुत्र ऊरीएल था। ऊरीएल का पुत्र उज्जियाह
और ऊज्जियाह का पुत्र शाऊल था। 25ये एलकाना
के पुत्र थे : अमासई और अहीमोत। 26अहीमोत
का पुत्र एलकाना था। एलकाना का पुत्र सोपई
और सोपई का पुत्र नहत था। 27नहत का पुत्र
एलीआब और एलीआब का पुत्र यरोहाम था।
यरोहाम का पुत्र एलकाना था। 28शमूएल के ये
पुत्र थे : ज्येष्ठ पुत्र योएल और कनिष्ठ पुत्र
अबियाह था। 29ये मरारी के वंशज़ थे : महली,
और महली का पुत्र लिब्नी। लिब्नी का पुत्र
शिमई और शिमई का पुत्र ऊज्जा। 30ऊज्जा का
पुत्र शिमआ और शिमआ का पुत्र हग्गियाह।
हग्गियाह का पुत्र असायाह था।

राजा दाऊद के गायक

31जब मंजूषा प्रभु के भवन में प्रतिष्ठित हो
गई, तब राजा दाऊद ने भजन गाने के लिए ये
गायक नियुक्त किए। 32जब तक राजा सुलेमान
के द्वारा प्रभु का भवन यरूशलेम में तैयार नहीं
हो गया, तब तक ये लोग भजन-गान के द्वारा
मिलन-शिविर के तम्बू के सम्मुख सेवा-कार्य
किया करते थे। ये अपनी-अपनी सेवा की पारी
के अनुसार भजन गाया करते थे। 33सेवक और
उनके पुत्रों के ये नाम हैं : कहाती गोत्र के
लोग : गायक हेमान—यह योएल का पुत्र और
शमूएल का पौत्र था। 34शमूएल एलकाना का
पुत्र और एलकाना यहोराम का पुत्र था।
यहोराम एलीएल का पुत्र और एलीएल तोह
का पुत्र था। 35तोह सूफ का पुत्र था और सूफ
एलकाना का पुत्र। एलकाना महत का पुत्र था,
और महत अमाशाई का। 36अमाशाई एलकाना
का पुत्र और एलकाना योएल का। योएल
अजर्याह का पुत्र था, और अजर्याह सफनयाह
का। 37सफनयाह तहत का पुत्र था और तहत

---

* मूल में 5 : 27

6 : 1-15 उत 46 : 11; नि 6 : 16-20; गण 3 : 2 **6 : 16-53** नि 6 : 16-24

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अस्सीर का पुत्र। अस्सीर एबीआसप का पुत्र
था, और एबीआसप कोरह का पुत्र था।
38कोरह यिसहार का पुत्र था और यिसहार
कहात का पुत्र। कहात लेवी का पुत्र था और
लेवी इस्राएल का पुत्र। 39हेमान का भाई आसाफ़
उसके दाहिने खड़ा हुआ करता था—आसाफ
बेरेकयाह का पुत्र था। बेरेकयाह शिमआ का
पुत्र था। 40शिमआ मीखाएल का पुत्र था और
मीखाएल बासेयाह का पुत्र। बासेयाह मलकियाह
का पुत्र था, 41और मलकियाह एत्नी का पुत्र।
एत्नी जेरह का पुत्र था, और जेरह अदायाह का
पुत्र। 42अदायाह एतान का पुत्र था और एतान
जिम्माह का पुत्र। जिम्माह शिमई का पुत्र था
43और शिमई यहत का पुत्र था। यहत गेर्शोम
का पुत्र था, और गेर्शोम लेवी का पुत्र। 44हेमान
की बायीं ओर मरारी का वंशज एतान खड़ा
हुआ करता था। एतान कीशी का पुत्र था और
कीशी अबद्दी का पुत्र था। अबद्दी मल्लूख का
पुत्र था। 45और मल्लूख हशबयाह का पुत्र था।
हशबयाह अमसयाह का पुत्र था और अमसयाह
हिलकियाह का पुत्र था 46हिलकियाह अमसी
का पुत्र था और अमसी बानी का पुत्र था। बानी
शेमेर का पुत्र था 47और शेमेर महली का पुत्र
था। महली मूशी का पुत्र था। मूशी मरारी का
पुत्र था और मरारी लेवी का। 48उनके भाई जो
लेवी के वंशज थे परमेश्वर के भवन में, उसके
निवास-स्थान में, सब सेवा-कार्यों को करने के
लिए नियुक्त किए गये थे।

49 हारून और उसके पुत्र अग्नि-बलि की
वेदी और धूप-वेदी पर बलि चढ़ाया करते थे।
इनके अतिरिक्त वे परमपवित्र स्थान के सब
कार्य करते थे। वे इस्राएली समाज की ओर से
प्रायश्चित के लिए बलि भी चढाते थे। इस
प्रकार वे उन सब कार्यों को करते थे जिनका
आदेश परमेश्वर के सेवक मूसा ने उन्हें दिया
था। 50ये हारून के वंशज थे : उसका पुत्र
एलआजर। एलआजर का पुत्र पीनहास। पीनहास
का पुत्र अबीशूअ। 51अबीशूअ का पुत्र बूकी।
बूकी का पुत्र ऊज्जी। ऊज्जी का पुत्र जरहयाह।
52जरहयाह का पुत्र मरायोत। मरायोत का पुत्र
अमरयाह। अमरयाह का पुत्र अहीटूब।
53अहीटूब का पुत्र सादोक और सादोक का पुत्र
अहीमअस।

लेवीय निवास-स्थान

54 वे निश्चित क्षेत्रीय सीमाओं के भीतर
निवास करते थे। उनके निवास-स्थानों के ये
नाम हैं : कहाती गोत्र के हारून वंशजों के नाम
पर इस शहर की चिट्ठी निकली : हेब्रोन।
55अत: उन्होंने उनको हेब्रोन नगर और उसके
चारों ओर के चरागाह -क्षेत्र दे दिये। यह नगर
यहूदा प्रदेश में था। 56किन्तु हेब्रोन नगर के खेत
और उसके गांव उन्होंने यपुन्नेह के पुत्र कालेब
को दिये। 57उन्होंने हारून के वंशजों को ये
शरण नगर दिये : हेब्रोन, लिबना और उसके
चरागाह; यत्तिर, एश्मोअ और उसके चरागाह;
58हीलेन, दबीर और उसके चरागाह; 59आशान,
बेत-शेमेश, और उनके चरागाह। 60उन्होंने हारून
के वंशजों को बिन्यामिन कुल के ये नगर भी
दिये : गेबा, आलेमेत, अनातोत और उनके
चरागाह। उनके सब गोत्रों को प्राप्त नगरों की
संख्या तेरह थी।

61 शेष कहात वंशियों को चिट्ठी डालकर
दस नगर दिये गये थे। ये नगर मनश्शे के आधे
गोत्र के नगरों में से लिये गए थे। 62गेर्शोम के
वंशजों को उनके गोत्रों के अनुसार तेरह नगर
दिये गए थे। ये नगर इस्साकार, आशेर, नफ्ताली
कुलों के और बाशान में मनश्शे के गोत्र के
नगरों में से दिये गए थे। 63मरारी के वंशजों को
उनके गोत्रों के अनुसार बारह नगर दिये गए।
ये नगर रूबेन, गाद और जबूलून कुलों के नगरों
में से लिये गए थे। 64इस प्रकार इस्राएली समाज
ने अपने लेवीय पुरोहितों को नगर और चरागाह
दिये थे। 65उन्होंने यहूदा, बिन्यामिन और शिमोन
के कुल के नगरों में से भी उनको चिट्ठी
डालकर नगर दिये थे। इन नगरों के नाम ऊपर
लिखे हैं।

66 इस्राएली समाज ने कहात वंशियों के
गोत्रों को भी एफ्रइम कुल की सीमा में स्थित

---

6 : 54-81 यहो 21 : 1-42

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नगरों में से उनको नगर दिये थे। 67उन्होंने ये
शरण नगर दिये थे : शकेम और उसके चरागाह
जो एप्रइम पहाड़ी क्षेत्र पर थे; गेजेर और उसके
चरागाह; 68योकमआम और उसके चरागाह;
बेतहोरोन और उसके चरागाह; 69अय्यालोन और
उसके चरागाह; गतरिम्मोन और उसके चरागाह।
70उन्होंने मनश्शे के आधे गोत्र का नगर आनेर
और उसके चरागाह, बिलआम और उसके
चरागाह भी कहात वंशियों के शेष गोत्रों को
दिये थे।

71 इस्राएली समाज ने मनश्शे के आधे गोत्र
के ये नगर गेर्शोम वंशियों को दिये थे। बाशान
क्षेत्र में गोलान और उसके चरागाह; अश्तारोत
और उसके चरागाह। 72उन्होंने इस्साकार कुल
के ये नगर दिये थे : केदेश और उसके चरागाह;
दबेरात और उसके चरागाह। 73रमोत और उसके
चरागाह तथा आनेम और उसके चरागाह।
74उन्होंने आशेर कुल के ये नगर दिये थे :
माशाल और उसके चरागाह; अबदोन और
उसके चरागाह; 75हूकोक और उसके चरागाह;
रहोब और उसके चरागाह। 76उन्होंने नफ्ताली
कुल के ये नगर दिये थे : गलील प्रदेश का
केदेश नगर और उसके चरागाह; हम्मोन तथा
किरयातइम और उनके चरागाह। 77शेष मरारी
वंशजों को इस्राएली समाज ने जबूलून कुल के
ये नगर दिये थे : रिम्मोनो तथा ताबोर और
उनके चरागाह। 78यर्दन नदी के उस पार यरीहो
नगर के पास, यर्दन का पूर्वी क्षेत्र उन्होंने रूबेन
कुल से लेकर उनको दिया था। इसके अतिरिक्त
निर्जन प्रदेश का बेसेर और उसके चरागाह,
यहसाह और उसके चरागाह, 79कदेमोत और
उसके चरागाह, मेपअत और उसके चरागाह
दिये। 80इस्राएली समाज ने गाद कुल के ये नगर
दिये : गिलआद प्रदेश का रामोत और उसके
चरागाह, महनइम और उसके चरागाह, 81हेशबोन
और उसके चरागाह तथा याजेर और उसके चरागाह।

इस्साकार के वंशज

7 इस्साकार के ये चार पुत्र थे : तोला, पूआह,
याशूब और शिमरोन।
2 तोला के ये पुत्र थे : ऊज्जी, रपायाह,
यरीएल, यहमई, यिबशाम, और शेमूएल। ये
अपने पिता तोला के पितृकुल के मुखिया थे।
ये बड़े योद्धा थे। दाऊद के राज्यकाल में इनके
कुल में बाईस हजार छः सौ व्यक्ति थे।

3 ऊज्जी का पुत्र यिजरयाह था। यिजरयाह
के ये पुत्र थे : मीखाएल, ओबद्याह, योएल और
यिश्शियाह। ये पांचों मुखिया थे। 4इनके पास
अपने-अपने वंश और पितृ-कुल के अनुसार
सैनिकों के दल थे। सैनिकों की संख्या छत्तीस
हजार थी; क्योंकि उनके अनेक स्त्रियां और पुत्र
थे। 5उनके भाई, जो इस्साकार कुल के थे,
सत्तासी हजार थे। ये सब शूर-वीर सैनिक थे।
इनकी गणना इनके वंश के क्रम में की गई थी।

बिन्यामिन के वंशज

6 बिन्यामिन के तीन पुत्र थे : बेला, बेकेर
और यदीअएल। 7बेला के पांच पुत्र थे :
एस्बोन, ऊज्जी, ऊज्जीएल, यरीमोत और ईरी।
ये अपने पितृ-कुल के मुखिया थे। ये बड़े योद्धा
थे। इनके वंश में बाईस हजार चौंतीस सैनिक
थे, जिनकी गणना उनके वंश के क्रम में की
गई थी।

8 ये बेकेर के पुत्र थे : जमीराह, योआश,
एलीएजेर, एली-ओएनई, ओमरी, येरमोत,
अबियाह, अनातोत और आलेमत। ये ही बेकेर
के पुत्र थे। 9ये अपने पितृकुल के मुखिया थे।
ये बड़े योद्धा थे। इनके वंश में बीस हजार दो
सौ सैनिक थे, जिनकी गणना उनके वंश के
क्रम में की गई थी। 10यदीअएल का पुत्र
बिलहान था। ये बिलहान के पुत्र थे : यऊश,
बिन्यामिन, एहूद, कनअनाह, जेतान, तरशीश
और अहीशाहर। 11ये ही यदीअएल के पौत्र थे।
ये अपने पितृकुल के मुखिया थे। ये बड़े
योद्धा थे। इनके वंश में सत्रह हजार दो सौ
सैनिक थे, जो युद्ध-सेवा के लिए सदा तत्पर
रहते थे।

दान .... और नफ्ताली के वंशज

12 दान* के दो पुत्र थे : शूप्पिम और
हूप्पिम। अहेर का एकलौता पुत्र हूशिम था।

* मूल में, 'ईर', वंशावलियों में 'जबूलून' के वंशजों का कहीं उल्लेख नहीं हुआ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

[13]ये नफ्ताली के पुत्र थे : यहसीएल, गूनी, येसेर और शल्लूम। ये बिल्हाह के पौत्र थे।

पुनः मनश्शे के वंशज

14 ये मनश्शे के पुत्र थे : असरीएल, जिसको मनश्शे की रखेल ने जो सीरिया देश की थी, जन्म दिया था। (उसने माकीर को भी जन्म दिया था, जो बाद में गिलआद का पिता बना। [15]माकीर ने शूप्पिम और हूप्पिम की शादी कर दी। उसकी बहिन का नाम माकाह था।) दूसरे पुत्र का नाम सलापहाद था। सलापहाद को केवल पुत्रियां हुईं। [16]माकीर की पत्नी माकाह ने एक पुत्र को जन्म दिया। उसने उसका नाम पेरेश रखा। उसके भाई का नाम शेरेश था। शेरेश के दो पुत्र हुए : ऊलाम और राकेम। [17]ऊलाम का पुत्र बदान था। मनश्शे के पौत्र,और माकीर के पुत्र गिलआद के ये ही वंशज थे। [16]उसकी बहिन का नाम हम्मोलेकेत था। उसके पुत्रों के ये नाम हैं : ईशहोद, अबीएजेर और महलाह। [19]ये शमीदा के पुत्र थे : अह्यान, शेकेम, लिकही और अनीआम।

एफ्रइम के वंशज

20 एफ्रइम के ये वंशज थे : एफ्रइम का पुत्र शूतेलह और शूतेलह का पुत्र बेरेद था। बेरेद का पुत्र तहत और तहत का पुत्र एलआदाह था। एलआदाह का पुत्र तहत, [21]और तहत का पुत्र जाबाद था। जाबाद का पुत्र शूतेलह और शूतेलह के पुत्र एजेर और एलआद थे। गत नगर के निवासियों ने इनका वध किया था, क्योंकि ये उनके पशुओं का अपहरण करने गए थे। [22]उनका पिता एफ्रइम उनके लिए बहुत दिन तक शोक मनाता रहा। तब उनके भाई उसको सान्त्वना देने के लिए आए। [23]एफ्रइम ने अपनी पत्नी से सम्भोग किया। तब उसने एक पुत्र को जन्म दिया। एफ्रइम ने अपने इस पुत्र का नाम बेरीआ* रखा; क्योंकि उसके परिवार पर विपत्ति आई थी। [24]उसकी पुत्री का नाम शेएराह था। उसने उपरला बेत-होरोन और निचला बेत-होरोन दोनों नगरों को पुनः निर्मित किया था। इसके अतिरिक्त उसने उजेन-शेएराह नगर को भी पुनः निर्मित किया। [25]उसके पुत्र का नाम रेपह था। रेपह का पुत्र रेशेफ था। रेशेफ का पुत्र तेलह था और तेलह का पुत्र तहन था। [26]तहन का पुत्र लअदान और लअदान का पुत्र अम्मीहूद था। अम्मीहूद का पुत्र एलीशामा और [27]एलीशामा का पुत्र नून था। नून का पुत्र यहोशुअ था। [28]इनकी पैतृक भूमि और निवास-स्थान ये थे : बेतएल, और उसके कस्बे; बेतएल की पूर्व दिशा में नअरान नगर और पश्चिमी दिशा में गेजेर और उसके कस्बे; शकेम और उसके कस्बे तथा सीमांत पर अय्याह और उसके कस्बे। [29]इनके अतिरिक्त मनश्शे गोत्र की सीमाओं के समीप बेतशआन और उसके कस्बे, तअनख और उसके कस्बे, मगिद्दो और उसके कस्बे तथा दोर और उसके कस्बे थे। इन नगरों और कस्बों में इस्राएल के पुत्र यूसुफ के वंशज निवास करते थे।

आशेर के वंशज

30 ये आशेर के पुत्र थे: यिम्ना, यिश्वा, यिश्बी और बरीआ। इनकी बहिन का नाम सेरह था। [31]बरीआ के ये पुत्र थे : हेबर और मल्कीएल। मल्कीएल बाद में बिरजायत का पिता बना। [32]हेबर के ये पुत्र थे : यपलेट, शोमेर, और होताम। इनकी बहिन का नाम शुआ था। [33]यपलेट के ये पुत्र थे : पासक, बिमहाल और आशवात। ये ही यपलेट के पुत्र थे। [34]उसके भाई शेमेर के ये पुत्र थे : अही, रोहगाह, यहूब्बाह और अराम। [35]उसके भाई हेलेम के ये पुत्र थे : सोपह, यिमना, शेलेष और आमाल। [36]सोपह के ये पुत्र थे : सुह, हरनेपेर, शुआल, बेरी, यिमराह, [37]बेशेर, होद, शम्मा, शिलशाह, यितरान और बेएरा। [38]येतेर के ये पुत्र थे : यपुन्नेह, पिसपाह और आरा। [39]ये ऊल्ला के पुत्र थे : आरह, हन्नीएल और रिसया। [40]ये सब आशेर के वंशज और अपने पितृ-कुलों के मुखिया थे। ये हट्टे-कट्टे लड़ाकू सैनिक थे। ये अगुओं के भी मुखिया थे। जब इनकी वंशक्रम के अनुसार युद्ध-सेवा के लिए गणना की गई, तब इनकी संख्या छब्बीस हजार थी।

* अर्थात् 'विपत्ति'

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पुनः बिन्यामिन के वंशज

8 बिन्यामिन का ज्येष्ठ पुत्र बेला था। दूसरा पुत्र अश्बेल, तीसरा अहरह, 2चौथा नोहाह और पांचवां रापा। 3बेला के ये पुत्र थे : अद्दार, गेरा, अबीहूद, 4अबीशूअ, नामान, अहोह, 5गेरा, शपूपान और हूराम। 6-7ये एहूद के पुत्र थे: नामान, अहिय्याह और गेरा। ये गेबा नगर के रहने वालों के पितृकुलों के मुखिया थे। इन्हें बन्दी बनाकर मानाहत नगर को निष्कासित किया गया था। गेरा को हेगलाम भी कहते हैं। यह बाद में ऊज्जा और अहीहूद का पिता बना। 8जब शहरइम ने अपनी पत्नियों को, होशीम और बअरा को, निकाल दिया था तब उन्होंने उससे मोआब देश में पुत्रों को जन्म दिया था। 9शहरइम को अपनी पत्नी होदेश से भी ये पुत्र हुए थे : योबाब, सिबयाह, मेशा, मलकाम, 10यऊस, साकयाह और मिरमाह। ये अपने-अपने पितृकुल के मुखिया थे। 11शहरइम को अपनी पत्नी होशीम से ये पुत्र हुए थे: अबीटूब और एलपाअल। 12एलपाअल के ये पुत्र थे : एबेर, मिशआम और शामेद। शामेद ने ओनो और लोद नगरों तथा उनके कस्बों का निर्माण किया था। 13बरीआह और शेमअ उन पितृ-कुलों के मुखिया थे जो अय्यालोन नगर में रहते थे। इन्होंने गत नगर के निवासियों को युद्ध के मैदान से भगाया था। 14शाशाक और येरमोत इनके भाई थे* । 15ये बरीआह के पुत्र थे : जबदयाह, अराद, एदेर, 16मीखाएल, यिशपाह, और योहा। 17एलपाअल के ये पुत्र थे : जबदयाह, मशूल्लाम, हिजकी, हेबेर, 18यिशमरई, यिजलीआह और योबाब। 19शिमई के ये पुत्र थे : याकीम, जिकरी, जबदी, 20एलीएनई, सिल्लतई, एलीएल, 21अदायाह, बरायाह और शिमरात। 22ये शाशाक के पुत्र थे : यिशपान, एबेर, एलीएल, 23अबदोन, जिकरी, हानान, 24हननयाह, ऐलाम, अनतोतिय्याह, 25यिपदयाह और पनूएल। 26ये यरोहाम के पुत्र थे : शमशरई, शहरयाह, अतलयाह, 27यअरेशयाह, एलिय्याह और जिकरी। 28ये अपने-अपने वंश के अनुसार पितृ-कुलों के मुखिया थे, प्रमुख व्यक्ति थे। ये यरूशलेम नगर में रहते थे।

29 गिबओन का पिता यईएल गिबओन नगर में रहता था। उसकी पत्नी का नाम माकाह था। 30उसके पुत्रों के ये नाम हैं : ज्येष्ठ अबदोन, सूर, कीश, बअल, नेर+, नादाब, 31गदोर, अहियो, जेकेर, 32और मिकलोत। मिकलोत बाद में शिमआह का पिता बना। ये भी अपने भाई-बन्धुओं के साथ, चचेरे भाई-बन्धुओं के सम्मुख यरूशलेम नगर में रहते थे।

33 नेर का पुत्र कीश, और कीश का पुत्र शाऊल था। शाऊल के पुत्र योनातन, मलकीशूअ, अबीनादब, और एशबअल थे। 34योनातन का पुत्र मरीब-बअल था। मरीब-बअल का पुत्र मीकाह था। 35ये मीकाह के पुत्र थे : पीतोन, मेलेक, तअरेअ, और आहाज। 36आहाज का पुत्र यहोअद्दाह था। ये यहोअद्दाह के पुत्र थे : आलेमेत, अजमावेत और जिमरी। जिमरी का पुत्र मोसा था। 37मोसा का पुत्र बिनआ और बिनआ का पुत्र रापा था। रापा का पुत्र एलआसा, और एलआसा का पुत्र आसेल था। 38आसेल के छः पुत्र थे। उनके नाम इस प्रकार हैं : अजरीकाम, बोकरू, यिश्माएल, शहरयाह, ओबद्याह और हनान। ये सब आसेल के पुत्र थे। 39उसका भाई एसेक था। उसके ये पुत्र थे : ज्येष्ठ पुत्र ऊलाम, दूसरा यऊश और तीसरा एलीपेलेट। 40ऊलाम के डेढ़ सौ पुत्र-प्रपौत्र थे। ये बड़े लड़ाकू सैनिक थे। ये धनुषधारी थे।

ये ही बिन्यामिन के वंशज थे।

इस्राएली जाति का तीर्थनगर : यरूशलेम

9 वंश-क्रमानुसार समस्त इस्राएली कुलों की गणना हुई। गणना का विवरण 'इस्राएल प्रदेश और यहूदा प्रदेश के राजाओं का इतिहास-ग्रन्थ' में लिखा हुआ है। वे प्रभु के प्रति अपने विश्वासघात के कारण बन्दी होकर बेबीलोन

* मूल में अस्पष्ट. + यूनानी पाठानुवाद के अनुसार।

8 : 33 1 शम 14 : 51

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

देश को निष्कासित हुए थे। [2]निष्कासन से
लौटने के बाद जो लोग सर्वप्रथम अपने पैतृक
नगरों में, अपने पैतृक भूमि-क्षेत्रों में पुन:
बसे, वे ये थे : इस्राएल प्रदेश के नागरिक,
पुरोहित, लेवीय उपपुरोहित और यरूशलेम
मन्दिर के सेवक*। [3]यहूदा-प्रदेश, बिन्यामिन
कुल, एफ्रइम और मनश्शे गोत्रों के कुछ लोग
भी यरूशलेम नगर में बस गए। [4]उनके नाम इस
प्रकार हैं: यहूदा के पुत्र पेरेस के वंशज
अम्मीहूद का पुत्र ऊतई। अम्मीहूद ओमरी का
पुत्र था, और ओमरी इमरी का पुत्र। इमरी बानी
का पुत्र था।

5 शीलोनी वंश से ज्येष्ठ पुत्र असायाह, और
उसके पुत्र। [6]जेरह वंश से यऊएल और उसके
चचेरे भाई-बन्धु जिनकी संख्या छ: सौ नब्बे
थी। [7]बिन्यामिन कुल से ये व्यक्ति थे:
सल्लू—यह मशूल्लाम का पुत्र, होदवयाह का
पौत्र और हस्सनूआह का प्रपौत्र था—;
[8]यिबनायाह, जो यरोहाम का पुत्र था; एलाह,
जो ऊज्जी का पुत्र और मिकरी का पौत्र था;
मशूल्लाम, जो शपटयाह का पुत्र, रऊएल का
पौत्र और यिबनिय्याह का प्रपौत्र था। [9]इनके चचेरे
भाई-बन्धु भी थे, जो अपने वंश-क्रमानुसार
संख्या में नौ सौ छप्पन थे। ये सब अपने-अपने
पितृ-कुल के मुखिया थे।

पुरोहित

10 ये पुरोहित थे : यदायाह, यहोयारीब,
याकीन [11]और अजर्याह। अजर्याह परमेश्वर के
मन्दिर का प्रशासक था। वह हिलकिय्याह का
पुत्र था। हिलकिय्याह मशूल्लाम का पुत्र और
मशूल्लाम सादोक का पुत्र था। सादोक मरायोत
का पुत्र और मरायोत अहीटूब का पुत्र था।
[12]अन्य पुरोहित अदायाह था, जो यरोहाम का
पुत्र था। यरोहाम पशहूर का पुत्र और पशहूर
मलकियाह का पुत्र था। मलकियाह मअसई
का पुत्र और मअसई अदीएल का पुत्र था।
अदीएल यहजेराह का पुत्र, और यहजेराह
मशूल्लाम का पुत्र था। मशूल्लाम मशिल्लेमीत
का पुत्र, और मशिल्लेमीत इम्मेर का पुत्र था।
[13]इनके चचेरे भाई-बन्धु भी थे, जो अपने
वंश-क्रमानुसार संख्या में सत्रह सौ आठ थे।
ये परमेश्वर के मन्दिर-कार्य के लिए सर्वथा
योग्य थे।

उप-पुरोहित

14 ये उप-पुरोहित थे : मरारी वंश का
शमायाह, जो हश्शूब का पुत्र, अजरीकाम का
पौत्र और हशबयाह का प्रपौत्र था। [15]इसके
अतिरिक्त बकबक्कर, हेरेश और गालाल थे।
आसाफ के वंश से मत्तन्याह था, जो मीका का
पुत्र, और जिकरी का पौत्र था। [16]ये भी उप-
पुरोहित थे : ओबद्याह, जो शमायाह का
पुत्र, गालाल का पौत्र और यदूतून का प्रपौत्र था;
बेरेकयाह, जो आसा का पुत्र और एलकानाह
का पौत्र था। एलकानाह नटोपाती लोगों के
कस्बों में रहता था।

मन्दिर के द्वारपाल

17 मन्दिर के द्वारपाल ये थे : शल्लूम,
अक्कूब, टलमोन और अहीमान तथा उनके
चचेरे भाई-बन्धु। शल्लूम मुख्य द्वारपाल था।
[18]शल्लूम पूर्व दिशा में राज-द्वार पर अब तक
नियुक्त था। ये उप-पुरोहितों के शिविर के
द्वारपाल थे : [19]शल्लूम, जो कोरे का पुत्र,
एबयासाफ का पौत्र और कोरह का प्रपौत्र था।
उसके ही गोत्र के, कोरह-वंशीय चचेरे भाई-
बन्धु भी शिविर के कर्म-काण्डों का दायित्व
संभालते थे। जैसे उनके पूर्वज प्रभु के शिविर
का दायित्व संभालते थे, शिविर के प्रवेश-द्वार
के द्वारपाल थे, वैसे ही ये तम्बू के आंगन के
द्वारपाल थे। [20]प्राचीन काल में एलआजर का
पुत्र पीनहास उनका शासक था। प्रभु उसके
साथ था। [21]मिलन-शिविर के प्रवेश-द्वार का
द्वारपाल मशेलेम्याह का पुत्र जकर्याह था। [22]ये
सब द्वारपाल, जिन्हें आंगन के द्वारपाल के रूप
में चुना गया था, कुल दो सौ बारह थे। इनकी
गणना वंश-क्रमानुसार इनके अपने-अपने गांव
में की गई थी। दाऊद और द्रष्टा शमूएल ने

---

* शब्दश: 'प्रदत्त, कर्मकर'।

9 : 2 एज्रा 2 : 70; नह 7 : 73 **9 : 3-17** नह 11 : 4-19

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उनको नियुक्त किया था, क्योंकि वे ईमानदार थे। 23अत: वे और उनके बाद उनके पुत्र बारी-बारी से प्रभु-मन्दिर में शिविर के द्वारों पर पहरा देते थे। वे प्रहरी थे। 24द्वारपाल शिविर की चारों दिशाओं में, पूर्व-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण, में नियुक्त थे। 25उनके चचेरे भाई-बन्धुओं को, जो गांवों-कस्बों में रहते थे, सात दिन तक उनके साथ पहरा देने के लिए समय-समय पर आना पड़ता था। 26चार मुख्य द्वारपाल लेवीय उप-पुरोहित थे। वे परमेश्वर के भवन के भण्डार-गृहों और कक्षों पर पहरा देते थे। 27वे मन्दिर के चारों ओर दिन-रात पहरा देते थे; क्योंकि पहरा देने का दायित्व उनको ही सौंपा गया था। वे प्रतिदिन सबेरे उसका द्वार खोलते थे।

मन्दिर के अन्य सेवक

28 उप-पुरोहितों में से कुछ व्यक्ति मन्दिर के सेवा-कार्यों में प्रयुक्त होने वाले पात्रों की देख-भाल करते थे। जब पात्र भण्डार-गृह से बाहर निकाले जाते अथवा सेवा-कार्य के बाद भण्डार-गृह के भीतर रखे जाते थे, तब उनको गिनते थे। 29कुछ सेवक मन्दिर के लकड़ी के सामान, समस्त पवित्र पात्रों, मैदा, अंगूर के रस, तेल, लोबान और सुगन्धित धूप-द्रव्यों की देख-भाल करते थे। 30पुरोहितों के अन्य वंशज सुगन्धित धूप-द्रव्यों का मसाला तैयार करते थे। 31कोरह वंशीय उप-पुरोहित शल्लूम का ज्येष्ठ पुत्र मत्तित्याह तवे पर रोटियां बनाता था। वह ईमानदार था। 32उसके चचेरे भाई-बन्धु, जो कोहातवंशीय थे, 'भेंट की रोटी' तैयार करते थे। वे प्रत्येक विश्राम-दिवस पर यह कार्य करते थे।

33 अपने-अपने पितृकुल के वंश-क्रमानुसार मन्दिर के गायक ये थे। ये मन्दिर के कमरों में रहते थे। ये मन्दिर की अन्य सेवाओं से मुक्त थे। ये मन्दिर की गान-सेवा में रात-दिन संलग्न रहते थे। 34ये अपने-अपने वंश के अनुसार लेवीय पितृकुलों के मुखिया थे, ये प्रमुख व्यक्ति थे। ये यरूशलेम नगर में रहते थे।

शाऊल की वंशावली

35 गिबओन नगर को बसाने वाला यईएल गिबओन नगर में रहता था। उसकी पत्नी का नाम माकाह था। 36उसके ज्येष्ठ पुत्र का नाम अबदोन था। अन्य पुत्रों के ये नाम हैं : सूर, कीश, बअल, नेर, नादाब, 37गदोर, अहयो, जकर्याह और मिकलोत। 38मिकलोत के पुत्र का नाम शिमआम था। ये अपने चचेरे भाई-बन्धुओं के साथ यरूशलेम नगर में अपने अन्य चचेरे भाई-बन्धुओं के सामने रहते थे। 39नेर के पुत्र का नाम भी कीश था, और कीश के पुत्र का नाम शाऊल। ये शाऊल के पुत्र थे : योनातन, मलकीशूअ, अबीनादब और एशबअल। 40योनातन का पुत्र मरीब-बअल था, और मरीब-बअल का पुत्र मीकाह। 41ये मीकाह के पुत्र थे : पीतोन, मेलेक, तहरेअ और आहाज। 42आहाज के पुत्र का नाम यराह था। यराह के ये पुत्र थे : आलेमेत, अजमेवेत और जिमरी। जिमरी के पुत्र का नाम मोसा था। 43मोसा के पुत्र का नाम बिनआ था। बिनआ का पुत्र रपायाह, और रपायाह का पुत्र एलआसा था। एलआसा का पुत्र आसेल था। 44आसेल के छ: पुत्र थे। ये उनके नाम हैं : अजरीकाम, बोकरु, यिश्माएल, शअरयाह, ओबद्याह और हानान। ये आसेल के पुत्र थे।

शाऊल की मृत्यु

10 पलिश्ती सेना ने इस्राएली सेना से युद्ध किया। इस्राएली सैनिक पलिश्ती सेना के सम्मुख से भागे। पर वे गिलबोअ पहाड़ पर मारे गए। 2पलिश्ती सैनिकों ने शाऊल और उसके पुत्रों का पीछा किया, और उन्होंने शाऊल के पुत्रों—योनातन, अबीनादब, और मलकीशूअ—का वध कर दिया। 3शाऊल के साथ भारी युद्ध होता रहा। तब धनुषधारी सैनिकों ने उसे खोज लिया। उन्होंने उसको घायल कर दिया। 4शाऊल ने अपने शस्त्रवाहक सेवक को यह आदेश दिया, 'अपनी तलवार निकाल और मेरे शरीर में भोंक दे! ऐसा न हो कि ये बेखतना सैनिक मेरे पास आएं, और मेरा

---

10 : 1-12 1 शम 31 : 1-13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मजाक उड़ाएं।' परन्तु शस्त्रवाहक सेवक ने
इनकार कर दिया; क्योंकि वह बहुत डर गया
था। अत: शाऊल ने अपनी तलवार ली, और
वह स्वयं उस पर गिर पड़ा। 5जब शस्त्रवाहक
सैनिक ने यह देखा कि शाऊल ने आत्महत्या
कर ली, तब वह भी अपनी तलवार पर गिर
पड़ा, और मर गया। 6इस प्रकार शाऊल, उसके
तीन पुत्र और उसके परिवार के सब सदस्य एक
साथ मर गए। 7जब घाटी के इस्राएली सैनिकों
ने देखा कि सेना भाग गई तथा शाऊल और
उसके पुत्र मर गए, तब उन्होंने अपने नगरों को
छोड़ दिया, और वे भी भाग गए। तब पलिश्ती
आए, और वे उन नगरों में बस गये।

8 दूसरे दिन पलिश्ती सैनिक मृत इस्राएली
सैनिकों को लूटने के लिए आए। उन्हें गिलबोआ
पहाड़ पर शाऊल और उसके पुत्रों के शव पड़े
हुए मिले। 9पलिश्ती सैनिकों ने शाऊल के
वस्त्र उतार लिये। वे उसके शस्त्र और सिर को
लेकर चले गए। उन्होंने यह शुभ सन्देश अपने
देवताओं की मूर्तियों और जनता को सुनाने के
लिए समस्त देश में सन्देश-वाहक भेजे।
10पलिश्ती सैनिकों ने शाऊल के शस्त्र अपने
देवताओं के मन्दिर में रख दिए, और शाऊल
की खोपड़ी को दागोन देवता के मन्दिर में
लटका दिया।

11 जो व्यवहार पलिश्तियों ने शाऊल के
साथ किया था, उसको याबेश-गिलआद नगर
के निवासियों ने सुना। 12तब उनके साहसी
पुरुष उठे। वे गए। उन्होंने शाऊल, तथा उसके
पुत्रों के शव उठाए, और उनको याबेश नगर ले
गए। तत्पश्चात् उन्होंने शाऊल और उसके
पुत्रों की अस्थियां याबेश नगर में बांज वृक्ष के
नीचे गाड़ दीं। उन्होंने सात दिन तक उपवास
किया।

13 शाऊल की मृत्यु उसके विश्वासघात के
कारण हुई थी। उसने प्रभु के प्रति विश्वासघात
किया था। उसने प्रभु के वचन का पालन नहीं
किया था। उसने मार्ग-दर्शन के लिए मृतकों
को जगाने वाली स्त्री से पूछताछ भी की थी।
14उसने मार्ग-दर्शन के लिए प्रभु से नहीं पूछा
था। अत: प्रभु ने उसका वध कर दिया, और
उसका राज्य दाऊद बेन-यिशय को सौंप दिया।

इस्राएली देश का राजा दाऊद

11 तब इस्राएल कुल के सब लोग हेब्रोन
नगर में दाऊद के पास एकत्र हुए।
उन्होंने दाऊद से कहा, 'सुनिए, हम आपकी ही
हड्डी और मांस हैं! 2पहले भी, जब शाऊल
हमारे राजा थे, आप ही इस्राएली सेना को युद्ध
में ले जाने और वापस लाने में उनका नेतृत्व
करते थे। प्रभु परमेश्वर ने आपसे कहा था, "तू
मेरे निज लोग, इस्राएलियों का मेषपाल होगा।
तू ही इस्राएली राष्ट्र का अगुआ होगा।" 3अत:
इस्राएली समाज के सब धर्मवृद्ध हेब्रोन नगर में
राजा दाऊद के पास आए। राजा दाऊद ने उनके
साथ हेब्रोन नगर में प्रभु के सम्मुख सन्धि की।
उन्होंने दाऊद को इस्राएल देश का राजा बनाने
के लिए उसका अभिषेक किया, जैसा कि प्रभु
ने शमूएल के माध्यम से कहा था।

4 दाऊद ने समस्त इस्राएली राष्ट्र की सेना
के साथ यरूशलेम पर आक्रमण किया।
यरूशलेम का नाम यबूस था। वहां के मूल
निवासी यबूसी थे। 5यबूस के निवासियों ने
दाऊद से कहा, 'तुम यहां प्रवेश नहीं कर
सकते।' फिर भी दाऊद ने सियोन गढ़ पर
अधिकार कर लिया। वह आज दाऊद-पुर
कहलाता है। 6उस दिन दाऊद ने यह कहा था,
'जो व्यक्ति यबूसियों पर सर्वप्रथम प्रहार
करेगा, वह मेरी सेना का नायक और सेनापति
होगा।' योआब बेन-सरूयाह ने सबसे पहले
आक्रमण किया। अत: वह इस्राएली सेना का
नायक बन गया। 7तत्पश्चात् दाऊद सियोन गढ़
में रहने लगा। अत: उस गढ़ का नाम दाऊद-
पुर पड़ गया। 8उसने नगर के चारों ओर एक
परकोटा बनाया, जो मिल्लो से भीतर की ओर
चक्कर लगाता हुआ गया था। योआब ने शेष
नगर को पुन: निर्मित किया। 9यों दाऊद निरन्तर
महान् होता गया। स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु
उसके साथ था।

---

10 : 13 1 शम 13 : 13; लेव 19 : 31; 1 शम 28 : 7 **11 : 1-3** 2 शम 5 : 1-3 **11 : 4-9** 2 शम 5 : 6-10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दाऊद के महायोद्धा

10 ये दाऊद के महायोद्धा थे। इन्होंने
इस्राएल राज्य की स्थापना में उसको प्रबल
सहयोग दिया था। उन्होंने सम्पूर्ण इस्राएली
राष्ट्र की सेना के साथ उसे राजा बनाने में
सहयोग दिया था, जैसा कि प्रभु ने इस्राएली
राष्ट्र के सम्बन्ध में कहा था। 11दाऊद के
महायोद्धाओं के सम्बन्ध में विवरण यह है :
योशोबआम, यह हकमोनी था। यह तीन
महायोद्धाओं का नायक था। इसने एकसाथ
तीन सौ शत्रु सैनिकों को अपने भाले से मारा
था।

12 उसके बाद तीन महायोद्धाओं में एलआजर
बेन-दोदो था। यह अहोही था 13एक बार जब
पलिश्ती सेना पस-दम्मीम नगर में युद्ध के लिए
एकत्र हुई थी, तब यह दाऊद के साथ था। वहां
एक खेत था जो जौ की फसल से भरा था। युद्ध
होने पर इस्राएली सैनिक पलिश्ती सेना से
डरकर भागे। 14किन्तु एलआजार खेत के मध्य
में खड़ा हो गया। उसने खेत की रक्षा की। उसने
पलिश्तियों को मारा। उस दिन प्रभु ने इस्राएलियों
की रक्षा की और उन्हें वहां विजय प्रदान की।

15 एक बार पलिश्ती सेना रपाईम घाटी में
पड़ाव डाले हुए थी। तीस योद्धाओं में से तीन
महायोद्धा निकले। वे दाऊद के पास अदुल्लाम
गुफा में आए, जहां दाऊद ने आश्रय लिया था।
16उस समय दाऊद गढ़ में था। पलिश्तियों की
रक्षक सेना बेतलेहम में थी। 17दाऊद ने उत्कण्ठा
से कहा, 'कौन मुझे बेतलेहम के प्रवेश-द्वार के
कुएं से पीने के लिए पानी लाकर देगा?' 18तब
ये तीन महायोद्धा पलिश्ती पड़ाव को चीरकर
बेतलेहम के प्रवेश-द्वार पर पहुंचे। उन्होंने कुएं
से पानी खींचा। वे पानी लेकर दाऊद के पास
आए। परन्तु दाऊद ने पानी पीने से इनकार कर
दिया। उसने पानी को प्रभु के नाम पर अर्पण
कर उण्डेल दिया। 19उसने कहा, 'प्रभु मुझसे
यह कार्य कदापि न कराए। मैं इन लोगों का
जीवन-रक्त नहीं पिऊंगा। ये अपने प्राण को
दांव पर लगाकर यह पानी लाए हैं।' अत: उसने
उस पानी को नहीं पिया। उन तीन महायोद्धाओं
ने ऐसे ही कार्य किए थे।

20 योआब का भाई अबीशय तीस* योद्धाओं
का नायक था। एक बार उसने केवल भाले से
शत्रु सेना के तीन सौ सैनिकों से युद्ध किया और
उन्हें मार डाला था। इस प्रकार तीस योद्धाओं
में अपना नाम प्रसिद्ध किया था। 21वस्तुत: वह
तीस योद्धाओं में सबसे अधिक प्रसिद्ध था। वह
उनका नायक बन गया था। परन्तु वह तीन
महायोद्धाओं के बराबर नहीं था।

22 बनायाह बेन-यहोयादा महाबली पुरुष
था। वह कबसएल नगर का रहने वाला था।
उसने बड़े-बड़े काम किए थे। उसने मोआब
देश के दो महाबलवान योद्धाओं का वध किया
था। एक दिन, जब बर्फ गिर रही थी, वह एक
गड्ढे में उतरा। उसने वहां एक सिंह को मार
डाला। 23उसने एक दैत्याकार मिस्री योद्धा को
भी मारा था। उस मिस्री की ऊंचाई सवा दो
मीटर थी। मिस्री के हाथ में करघे के डण्डे के
समान एक भाला था। परन्तु बनायाह हाथ में
मात्र डण्डा लेकर उसके पास गया। उसने मिस्री
के हाथ से भाला छीन लिया, और उसी भाले
से उसका वध कर दिया। 24बनायाह बेन-
यहोयादा ने ये कार्य किए थे, और इस प्रकार
तीस योद्धाओं में अपना नाम प्रसिद्ध किया था।
25यद्यपि वह तीस योद्धाओं में प्रसिद्ध था,
तथापि वह तीन महायोद्धाओं के बराबर नहीं
था। दाऊद ने उसे अपने अंगरक्षकों का नायक
नियुक्त किया था।

26 दाऊद के सैन्य-दलों में ये योद्धा थे :
योआब का भाई असाहएल, बेतलेहम का
एलहानन बेन-दोदो; 27हरोद-वासी शम्मोत,
पलोन नगर का हेलेस, 28तकोअ-निवासी ईरा
बेन-इक्केस; अनातोत-वासी अबीएजर;
29हूशाह-वासी सिब-बकई; अहोह-वासी
ईलई; 30नटाफाह-वासी महरई; नटाफाह-वासी
हेलेद बेन-बानाह। 31बिन्यामिन क्षेत्र के गिबआह

---

* मूल में 'तीन'।

11 : 10-47 2 शम 23 : 8-39

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नगर का इत्तय बेन-रीबय; पिर्आतोन नगर का
बनायाह; 32बरसाती नदी गाअश के तट पर
रहने वाला हूरई; अराबाह का रहने वाला
अबीएल; 33बहारुम का अजमावेत; शअलबोन
का एलीयहबा; 34गिजोन का हाशेम; हरार का
योनातन बेन-शागेह; 35हरार का अहीआम बेन-
शाकर; एलीपल बेन-ऊर; 36मकेराह का रहने
वाला हेपेर; पलोन का अहिय्याह; 37कर्मेल का
हेस्रो; नअरई बेन-एजबई; 38नातान का भाई
योएल; मिबहार बेन-हगरी, 39अम्मोन जाति
का सेलेक; बएरोत नगर का गहरई-यह
योआब बेन-सरूयाह का शस्त्रवाहक था।
40यत्तिर नगर का ईरा; यित्तर नगर का गारेब;
41हित्ती जाति का ऊरियाह; जाबाद बेन-
अहलई; 42रूबेन वंश का अदीना बेन-
शीजा—यह रूबेन वंशजों का मुखिया था।
इसके साथ अन्य तीस योद्धा थे—; 43हानान
बेन-मअकाह; मेतेन का योशापाट; 44अशतरात
नगर का ऊजिय्याह; अरोएर नगर के रहने वाले
होताम के पुत्र शामा और यइएल; 45यदीएल
बेन-शिमरी; उसका भाई योहा जो तीज नगर
में रहता था; 46महवीम नगर का एलीएल;
यरीबई और योशवयाह जो एलनाअम के पुत्र
थे; मोआबी जाति का यितमाह; 47एलीएल;
ओबेद और मसोबायाह का याशीएल।

सिक्लग नगर में दाऊद के सहायक

12 जब सिक्लग नगर में दाऊद शाऊल
बेन-कीश के कारण मुक्त रूप से
विचरण नहीं कर सकता था, तब ये व्यक्ति
उसके पास आए थे। जिन योद्धाओं ने युद्ध में
उसकी सहायता की थी, उनमें ये भी थे। 2ये
धनुर्धारी योद्धा थे। ये दाएं-बाएं हाथ से गोफन
का पत्थर और तीर चला सकते थे। ये
बिन्यामिन कुल के तथा शाऊल के चचेरे भाई-
बन्धु थे। 3इनका नेता अहीएजेर था। उसके बाद
योआश था। ये दोनों गिबआह नगर के
शमाआह के पुत्र थे। इनके अतिरिक्त एजीएल
और पेलेत थे, जो अजमावेत के पुत्र थे;
बराकाह; अनातोत नगर का येहू; 4गिबओन नगर
का यिश्मयाह। यह तीस योद्धाओं में महाबलवान
था, और वह उनका अगुआ था। शेष ये थे :
यिर्मयाह, यहजीएल, योहानान; गदेरा नगर का
योजाबाद, 5एलूजई, यरीमोत, बअलयाह,
शमरयाह, हरूपा नगर का शपटयाह;
6एलकानाह, यिश्शियाह, अजरएल, योएजेर
और याशोबआम। ये कोरह वंशीय थे। 7इनके
साथ गदोर-वासी यहोराम के पुत्र योएलाह
तथा जबदयाह भी थे।

8 गाद कुल के योद्धा अपने भाई-बन्धुओं
का पक्ष छोड़कर दाऊद के पास निर्जन प्रदेश
के गढ़ में आए। ये बलवान और अनुभवी योद्धा
थे। ये ढाल और भाले में विशेषज्ञ थे। इनके मुंह
सिंह के सदृश खूंखार थे। ये चिकारे के समान
पहाड़ों पर वेग से दौड़ सकते थे। 9इनके नाम
ये हैं: एजेर, जो नायक था, दूसरा ओबद्याह,
तीसरा एलीआब, 10चौथा मिशमन्नाह, पांचवां
यिर्मयाह, 11छठा अत्तई, सातवां एलीएल
12आठवां योहानान, नौवां एलजाबाद, 13दसवां
यिर्मयाह, और ग्यारहवां मकबन्नई। 14ये गाद
कुल के योद्धा सेना में नायक थे। जो छोटा
योद्धा था, वह सौ सैनिकों के दल का नायक
था; और जो बड़ा योद्धा था, वह हजार सैनिकों
के दल का नायक था। 15इन्हीं योद्धाओं ने वर्ष
के प्रथम महीने में यर्दन नदी पार की थी। उस
समय यर्दन नदी में बाढ़ आई हुई थी, और
उसके सब तट बाढ़ में डूब गये थे । उन्होंने
नदी पार कर पूर्व से पश्चिम तक घाटी के
निवासियों से युद्ध किया था।

16 बिन्यामिन और यहूदा कुल के कुछ
योद्धा दाऊद के पास गढ़ में आए। 17दाऊद उनसे
भेंट करने के लिए गढ़ के बाहर निकला। उसने
योद्धाओं से यह कहा, 'यदि तुम लोग मैत्रीभाव
से मेरी सहायता करने के लिए आए हो, तो मैं
मुक्त हृदय से तुम्हारा स्वागत करता हूँ। मेरे हाथ
निष्कलंक हैं। मैंने कोई अपराध नहीं किया।
फिर भी यदि तुम मेरे साथ विश्वासघात कर
मुझे मेरे बैरियों के हाथ में सौंपने के लिए आए
हो तो हमारे पूर्वजों का परमेश्वर इस अन्याय

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
को देखे, और तुम्हें दण्ड दे।' [18]तब आत्मा तीस योद्धाओं के नायक अमासई पर उतरा*। अमासई ने कहा,

'ओ दाऊद,
ओ बेन-यिशय!
हम तुम्हारे हैं,
हम तेरे साथ हैं!
तेरी जय, जय+!
जय तेरे सहायकों की!
क्योंकि परमेश्वर तेरा सहायक है।'

तब दाऊद ने उनको अपने पक्ष में स्वीकार किया, और उनको अपने सैन्य दलों का नायक बनाया।

19जब दाऊद पलिश्ती सेना के साथ शाऊल से युद्ध करने आया था, तब मनश्शे गोत्र के कुछ योद्धा आकर उससे मिल गए थे। (दाऊद युद्ध में पलिश्तियों की सहायता नहीं कर सका था; क्योंकि पलिश्ती सामन्तों ने परस्पर सम्मति की, और उसे युद्ध से भेज दिया था। उन्होंने कहा, 'यह हमारे सिर कटवाकर अपने स्वामी शाऊल से मिल जाएगा।') [20]जब दाऊद सिक्लग नगर को गया तब मनश्शे गोत्र के ये योद्धा आकर उससे मिल गए: अदनह, योजाबाद, यदीअएल, मीखाएल, योजाबाद, एलीहू और सिल्लतई। ये मनश्शे गोत्र के हजार-हजार सैनिक दल के नायक थे। [21]इन्होंने लुटेरे आक्रमणकारियों के विरुद्ध दाऊद की सहायता की थी। ये महाशक्तिशाली योद्धा थे। ये सेनापति थे।

22 यों दिन-प्रतिदिन सैनिक दाऊद की सहायता करने के लिए उसके पास आते गए और उसके पक्ष में होते गए। अन्त में दाऊद के पास परमेश्वर की सेना के सदृश एक विशाल सेना हो गई।

23 जो सशस्त्र सैनिक प्रभु के वचन के अनुसार शाऊल का राज्य छीनकर दाऊद को सौंपने के लिए उसके पास हेब्रोन नगर में आए थे, उनकी संख्या, उनके कुल और अगुओं के नाम इस प्रकार हैं: [24]यहूदा कुल के सैन्य दल में ढाल और भाला धारी थे। इनकी संख्या छ: हजार आठ सौ थी। [25]शिमोन कुल के सैनिक महाशक्ति शाली और अनुभवी थे। इनकी संख्या सात हजार एक सौ थी। [26]लेवी कुल के सैनिकों की संख्या चार हजार छ: सौ थी। [27]यहोयादा हारून वंशजों का सेनानायक था। उसके साथ तीन हजार सात सौ सैनिक थे। [28]सादोक युवा था, पर वह शक्तिशाली था। उसके साथ उसके पितृकुल के बाईस सेनानायक थे। [29]बिन्यामिन कुल के सैनिकों की संख्या तीन हजार थी। ये शाऊल के चचेरे भाई-बन्धु थे। इन सैनिकों में से अनेक सैनिक शाऊल के राज-परिवार के प्रति निष्ठावान बने रहे। [30]एफ्रइम गोत्र के बीस हजार आठ सौ सैनिक थे। ये भी शक्तिशाली थे। ये अपने पितृकुल के प्रसिद्ध सैनिक थे। [31]मनश्शे के अर्धगोत्र के अठारह हजार सैनिक थे। इनका नाम मनोनीत किया गया था, और ये दाऊद को राजा बनाने के लिए आए थे। [32]इस्साकार कुल के दो सौ अगुए थे, और उनके अधीन उनके भाई-बन्धु थे। वे अगुए समय को पहचानते थे। ये जानते थे कि इस्राएली राष्ट्र को क्या करना चाहिए। [33]जबूलून कुल के युद्ध के लिए सदा तत्पर पचास हजार सैनिक थे। ये युद्ध के अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित थे। ये साहस और सच्चे हृदय से दाऊद की सहायता करने आए थे। [34]नफ्ताली कुल के एक हजार सेनानायक थे, जिनके साथ ढाल और भाले से लैस सैंतीस हजार सैनिक थे। [35]दान कुल में अट्ठाईस हजार छ: सौ सैनिक थे, जो युद्ध के लिए अस्त्र-शस्त्र से लैस थे। [36]अशेर कुल के चालीस हजार अनुभवी सैनिकों का सैन्य-दल युद्ध के लिए तैयार था। [37]इनके अतिरिक्त रूबेन और गाद कुलों तथा यर्दन नदी के पूर्व में बसे हुए शेष अर्ध-मनश्शे गोत्र के एक लाख बीस हजार सैनिक थे, जो युद्ध के सब प्रकार के शस्त्रों से लैस थे।

38 ये सब सैनिक जो युद्ध के लिए तत्पर थे, हेब्रोन नगर में आए। वे पूर्ण हृदय और दृढ़ निश्चय के साथ दाऊद को समस्त इस्राएली

* शब्दश: 'लपेट लिया'. + शब्दश:, ' शान्ति, शान्ति''।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

राष्ट्र का राजा बनाना चाहते थे। शेष इस्राएली
भी दाऊद को राजा बनाने के लिए पूर्ण सहमत
थे। 39 वे हेब्रोन नगर में दाऊद के साथ तीन दिन
तक रहे। वे खाते-पीते और आनन्द मनाते रहे।
उनके भाई-बन्धुओं ने उनके लिए भोजन का
प्रबन्ध किया था। 40 उनके पड़ोसी भी, इस्साकार,
जबूलून और नफ्ताली जैसे दूर के कुल-क्षेत्रों
के लोग, गधों, ऊँटों, बैलों और खच्चरों पर
भोजन-वस्तु लाए। वे प्रचुर मात्रा में आटा,
सूखे अंजीर फल, किशमिश, अंगूर रस, तेल,
बैल और भेड़-बकरियां भी लाए; क्योंकि
इस्राएली राष्ट्र में आनन्द व्याप्त था।

मंजूषा की वापसी के लिए दाऊद का प्रयत्न

13 दाऊद ने हजार-हजार और सौ-सौ
व्यक्तियों के नेताओं से, वस्तुतः प्रत्येक
नायक से विचार-विमर्श किया। 2 दाऊद ने
इस्राएली राष्ट्र की सम्पूर्ण धर्मसभा से यह कहा,
'यदि यह कार्य आपको अच्छा लगे, और यदि
हमारे प्रभु परमेश्वर की यह इच्छा हो, तो आओ
हम एक आदेश जारी करें, और समस्त
इस्राएली राष्ट्र में शेष रह गए अपने भाई-
बन्धुओं को, और उनके साथ पुरोहितों और
उप-पुरोहितों को निमन्त्रण भेजें कि वे हमारे
पास एकत्र हों। वे चरागाह के नगरों में रहते हैं।
3 तब हम-सब जाएंगे और परमेश्वर की मंजूषा
को अपने पास ले आएंगे। हमने राजा शाऊल
के राज्य-काल में मंजूषा की ओर ध्यान नहीं
दिया था।' 4 समस्त धर्मसभा यह कार्य करने को
सहमत हो गई; क्योंकि लोगों को अपनी दृष्टि
में यह कार्य उचित लगा था।
5 अतः दाऊद ने किर्यत-यहारीम नगर से
परमेश्वर की मंजूषा लाने के लिए इस्राएली
कुलों के सब पुरुषों को एकत्र किया। उसने
मिस्र देश की सीमा शीहोर नदी से हमात घाटी
के प्रवेश-द्वार तक के भूमि-क्षेत्रों में रहने वाले
सब इस्राएलियों को इकट्ठा किया। 6 तत्पश्चात्
दाऊद और सब इस्राएली पुरुष यहूदा प्रदेश के
बहलाह नगर को, किर्यत-यहारीम नगर को
गए कि वहां से परमेश्वर की मंजूषा को लाएं।
उसको करूबों पर विराजने वाले प्रभु की
मंजूषा के नाम से पुकारा जाता है। 7 उन्होंने
परमेश्वर की मंजूषा को एक नई गाड़ी पर
चढ़ाया, और अबीनादब के घर से बाहर
निकाला। ऊज्जा और अह्यो गाड़ी को हांक रहे
थे। 8 दाऊद और सब इस्राएली परमेश्वर के
सम्मुख वीणा, सारंगी, डफ, झांझ और तुरहियों
की ताल पर पूरे उत्साह से नाच रहे थे।
9 जब वे कीदोन नाम किसान के खलिहान
पर पहुंचे, तब बैलों को ठोकर लगी। अतः
ऊज्जा ने मंजूषा को पकड़ने के लिए अपना हाथ
बढ़ाया और उसको पकड़ लिया। 10 ऊज्जा के
प्रति प्रभु का क्रोध भड़क उठा। उसने उस पर
प्रहार किया, और वह परमेश्वर के सम्मुख मर
गया; क्योंकि उसने हाथ बढ़ाकर मंजूषा को
पकड़ा था। 11 दाऊद को क्रोध आया; क्योंकि
प्रभु ऊज्जा पर टूट पड़ा था। इस कारण उस स्थान
को आज भी पेरस-ऊज्जाह *कहा जाता है।
12 उस दिन दाऊद परमेश्वर से डर गया।
उसने कहा, 'मैं कैसे परमेश्वर की मंजूषा को
अपने पास रख सकता हूँ?' 13 अतः वह मंजूषा
को अपने पास दाऊद-पुर में नहीं ले गया।
उसने गत-निवासी ओबेद-एदोम के घर में
मंजूषा को प्रतिष्ठित कर दिया। 14 परमेश्वर की
मंजूषा ओबेद-एदोम के घर में तीन महीने तक
रही। प्रभु ने ओबेद-एदोम के परिवार पर तथा
उसके पास जो कुछ था, उस पर आशिष दी।

राजा दाऊद को मान्यता प्राप्त होना

14 सोर देश के राजा हीराम ने दाऊद के पास
दूत तथा देवदार की लकड़ी, बढ़ई और
राजमिस्त्री भेजे। उन्होंने दाऊद के लिए एक महल
बनाया। 2 तब दाऊद को ज्ञात हुआ कि प्रभु ने
उसे इस्राएल देश पर राजा के रूप में सुदृढ़ कर
दिया है, और अपने निज लोग इस्राएलियों के
हितार्थ उसके राज्य को उन्नत किया है।

---

* अर्थात् "ऊज्जा पर टूट पड़ा"

13 : 1-14 2 शम 6 : 1-11 **13: 5** 1 शम 7 : 1 **13 : 6** नि 25 : 22 **13: 12** 2 मक 7 : 19 **13 : 14** 1 इस 26 : 5 **14: 1-2** 2 शम 5 : 11-12

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दाऊद के अन्य पुत्र

3 दाऊद ने यरूशलेम नगर में और भी
स्त्रियों को अपनी पत्नी बनाया, जिनसे अन्य
पुत्र और पुत्रियां उत्पन्न हुए। 4जो पुत्र और
पुत्रियां यरूशलेम नगर में दाऊद को उत्पन्न हुए
थे, उनके ये नाम हैं: शम्मूअ, शोबाब, नातान,
सुलेमान, 5यिभहार, एलीशूअ, एलपेलेट,
6नोगह, नेपेग, यापीअ, 7एलीशामा, बएलयादा
और एलीपेलेट।

पलिश्तियों की पराजय

8 जब पलिश्ती सेना ने यह सुना कि सम्पूर्ण
इस्राएल देश पर राजा के रूप में दाऊद का
अभिषेक किया गया है, तब पलिश्ती सैनिक
दाऊद की खोज में निकले। दाऊद ने यह सुना।
वह उनका सामना करने के लिए नगर से बाहर
आया। 9पलिश्ती सैनिक आए। उन्होंने रपाईम
घाटी में हमला किया। 10दाऊद ने परमेश्वर से
पूछा, 'क्या मैं पलिश्तियों पर आक्रमण करूं?
क्या तू उन्हें मेरे हाथ में सौंप देगा?' प्रभु ने
दाऊद से कहा, 'आक्रमण कर। मैं पलिश्तियों
को तेरे हाथ में सौंप दूंगा।' 11अत: दाऊद बअल-
परासीम में आया। वहां उसने पलिश्तियों को
पराजित कर दिया। तब दाऊद ने यह कहा,
'जैसे जल बांध को तोड़ देता है, वैसे ही प्रभु
ने मेरे हाथ से मेरे शत्रुओं को तोड़ दिया।' इस
कारण उस स्थान का नाम 'बअल-परासीम'*
पड़ गया। 12पलिश्ती सैनिक अपने देवताओं
की मूर्तियां वहीं छोड़ गए। दाऊद ने उनको
जलाने का आदेश दिया।

13 पलिश्ती सेना ने घाटी में पुन: हमला
किया। 14जब दाऊद ने परमेश्वर से पुन: पूछा
तब परमेश्वर ने उससे कहा, 'तू उनके पीछे-
पीछे मत जाना। तू उनको घेर, और मोखा वृक्षों
के सामने से उन पर हमला कर। 15जब तू मोखा
वृक्षों के शिखरों पर-पग ध्वनि सुनेगा तब तू
युद्ध के लिए बाहर निकलना; उस समय
मैं—तेरा परमेश्वर—पलिश्ती सैन्यदल का
संहार करने के लिए तुझसे पहले जा चुका हूंगा।
' 16जैसा परमेश्वर ने दाऊद को आदेश दिया
था, उसने वैसा ही किया। उसने गिब्ओन नगर
से गेजेर नगर तक पलिश्तियों का संहार किया।
17दाऊद का नाम सब देशों में फैल गया। प्रभु
ने सब राष्ट्रों के हृदय में उसका डर बैठा दिया।

मंजूषा की वापसी

15 दाऊद ने दाऊद-पुर में अपने लिए
भवन बनाए। उसने परमेश्वर की मंजूषा
के लिए एक स्थान भी तैयार किया। उसने
मंजूषा के लिए वहां एक तम्बू गाड़ा। 2तत्पश्चात्
दाऊद ने यह आदेश दिया, 'केवल लेवी कुल
के उप-पुरोहित परमेश्वर की मंजूषा को वहन
करेंगे; क्योंकि स्वयं प्रभु ने अपनी मंजूषा को
वहन करने के लिए तथा स्थायी रूप से अपनी
सेवा करने के लिए लेवी कुल के उप-पुरोहितों
को चुना था।'

3 दाऊद ने प्रभु की मंजूषा को वापस लाने,
और उसको उस स्थान पर प्रतिष्ठित करने के
लिए, जिसको उसने मंजूषा के लिए तैयार
किया था, समस्त इस्राएलियों की धर्मसभा
यरूशलेम नगर में बुलाई। 4 तत्पश्चत् दाऊद ने
हारून वंश के पुरोहितों तथा लेवी कुल के
उपपुरोहितों को एकत्र किया: 5कहात गोत्र से
अगुआ ऊरीएल। इसके साथ इसके एक सौ
बीस चचेरे भाई-बन्धु थे। 6मरारी गोत्र से अगुआ
असायाह। इसके साथ इसके दो सौ बीस चचेरे
भाई-बन्धु थे। 7गेर्शोम गोत्र से अगुआ योएल।
इसके साथ इसके एक सौ तीस चचेरे भाई-
बन्धु थे। 8एलीसापान गोत्र से अगुआ शमअयाह।
इसके साथ इसके दो सौ चचेरे भाई-बन्धु थे।
9हेब्रोन गोत्र से अगुआ एलीएल। इसके साथ
इसके अस्सी चचेरे भाई-बन्धु थे। 10ऊज्जीएल
गोत्र से अगुआ अम्मीनादब। इसके साथ इसके
एक सौ बारह चचेरे भाई-बन्धु थे।

11 तब दाऊद ने पुरोहित सादोक और
पुरोहित एबयातार तथा ये उप-पुरोहित बुलाए:

---

* अर्थात् "तोड़नेवाला स्वामी"

14: 3-7 1 इति 3 : 5-8; 2 शम : 14-16 **14 : 8-16** 2 शम 5 : 17-25 **15 : 1—16:** 3 2 शम 6 : 12-19
15 : 2 गण 4 : 2 ; व्य 10 : 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ऊरीएल, असायाह, योएल, शमअयाह, एलीएल
और अम्मीनादब। 12दाऊद ने उनसे यह कहा,
'आप लोग लेवी पितृकुल के अगुए हैं। आप
अपने आपको तथा अपने चचेरे भाई-बन्धुओं
को शुद्ध करें। आप-सब इस्राएल के प्रभु
परमेश्वर की मंजूषा को उठाकर उस स्थान पर
लाएंगे जिसको मैंने मंजूषा के लिए तैयार किया
है। 13हमारा प्रभु परमेश्वर पहली बार हम पर
इसलिए टूट पड़ा था; क्योंकि आप लोग उसकी
मंजूषा को उठाकर नहीं लाए थे। इसके
अतिरिक्त हमने विधि के अनुसार कार्य नहीं
किया था और उसकी उपेक्षा की थी।' 14अत:
पुरोहितों और उप-पुरोहितों ने इस्राएली राष्ट्र के
प्रभु परमेश्वर की मंजूषा को उठाकर लाने के
लिए स्वयं को शुद्ध किया। 15पुरोहित-
उपपुरोहितों ने मंजूषा के डण्डों को अपने कन्धों
पर रखा और उसको उठाकर ले गए। ऐसा ही
प्रभु ने मूसा के माध्यम से आदेश दिया था।

गायक और वादक

16 दाऊद ने उप-पुरोहितों के अगुओं को
यह आदेश दिया कि वे अपने चचेरे भाई-
बन्धुओं को गायक और वादक के पद पर
नियुक्त करें। ये संगीतकार सारंगी, वीणा और
झांझ बजाएंगे और उच्च स्वर में आनन्दपूर्वक
गाएंगे। 17अत: उप-पुरोहितों के अगुओं ने इन
व्यक्तियों को नियुक्त किया: हेमान बेन-
योएल, और उसका भाई आसाफ बेन-बेरेकयाह;
मरारी गोत्र के एतान बेन-कुशायाह। 18इनके साथ
इनके चचेरे भाई-बन्धु भी थे जो उनके
सहायक थे। उनके नाम इस प्रकार हैं: जकर्याह,
यअजीएल, शमीरमोट, यहीएल, ऊन्नी,
एलीआब, बनायाह, मअसेयाह, मत्तित्याह,
एलीपलेहू और मिकनेयाह तथा ओबेद-एदोम
और यीईएल, जो द्वारपाल थे। 19इन व्यक्तियों
के ये कार्य थे: गायक हेमान, आसाफ और
एतान कांस्य की झांझ पर राग-रागनियां गाएंगे-
बजाएंगे। 20जकर्याह, अजीएल, शमीरामोट
और यहीएल, ऊन्नी, एलीआब, मअसेयाह
और बनायाह सारंगी पर अलामोत राग बजाएंगे।
21मत्तित्याह, एलीपलेहू, मिकनेयाह, ओबेद-
एदोम, यीईएल और अजजियाह वीणा पर
शमीनीत राग बजाएंगे। 22इन सब गायकों और
वादकों का अगुआ कननयाह था। वह राग-
रागिनियों का जानकार था। अत: वह संगीत का
निर्देशन करेगा। 23बेरेकयाह और एलकानाह
मंजूषा के प्रहरी होंगे। 24ये पुरोहित परमेश्वर
की मंजूषा के सम्मुख तुरहियां बजाएंगे:
शबनयाह, योशापाट, नटनएल, अमासई,
जकर्याह, बनायाह और एलीएजेर। ओबेद-
एदोम और यहियाह भी मंजूषा के प्रहरी होंगे।

25 अत: दाऊद, इस्राएलियों के धर्मवृद्ध
और सेनानायक ओबेद-एदोम के घर गए कि
वे वहां से प्रभु की विधान-मंजूषा आनन्दपूर्वक
लाएं। 26प्रभु परमेश्वर ने अपनी मंजूषा के
वाहक उप-पुरोहितों की सहायता की। अत:
उन्होंने सात बैल और सात मेढ़ों की बलि
चढ़ाई। 27दाऊद, मंजूषा के वाहक उप-पुरोहित,
गायक तथा गायक-वादकों का अगुआ
कननयाह, ये सब सन वस्त्र के बने अंगरखे
पहिने हुए थे। दाऊद ने सन वस्त्र का बना एपोद
धारण किया था।

28 यों सब इस्राएली प्रभु की विधान-
मंजूषा को उठाकर ले चले। वे जय-जयकार
कर रहे थे। वे नरसिंगे और तुरहियां फूंक रहे
थे। वे झांझ बजा रहे थे। वे सारंगी और वीणा
पर राग-रागिनियां बजा रहे थे।

29 जब प्रभु की विधान-मंजूषा ने दाऊदपुर
में प्रवेश किया, तब शाऊल की पुत्री मीकल ने
खिड़की से झांका। उसने देखा कि राजा दाऊद
प्रभु के सम्मुख उछल-कूद रहा है, नाच रहा है।
उसने अपने हृदय में दाऊद का तिरस्कार किया।

16 वे परमेश्वर की मंजूषा भीतर लाए।
उन्होंने मंजूषा को तम्बू के मध्य में
प्रतिष्ठित किया। यह तम्बू दाऊद ने मंजूषा के
लिए गाड़ा था। तत्पश्चात् उन्होंने परमेश्वर के
सम्मुख अग्नि-बलि और सहभागिता-बलि
चढ़ाई। 2अग्नि-बलि और सहभागिता-बलि
चढ़ाने के बाद दाऊद ने उपस्थित लोगों को प्रभु

15 : 15 नि 25 : 14

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

के नाम से आशिष दी। 3उसने सब इस्राएलियों
को, प्रत्येक स्त्री-पुरुष को, रोटी का एक
टुकड़ा, मांस की एक बोटी तथा किशमिश की
एक टिकिया वितरित की।
4 इसके अतिरिक्त दाऊद ने उप-पुरोहितों
में से कुछ व्यक्तियों को धर्म-सेवकों के रूप
में नियुक्त किया। ये प्रभु की मंजूषा के सम्मुख
उपस्थित रहते थे। इनका कार्य यह था:
इस्राएली राष्ट्र के प्रभु परमेश्वर का स्मरण,
सराहना और स्तुति करना। 5आसाफ उनका
अगुआ था। ये आसाफ के सहायक थे:
जकर्याह, येईएल, शमीरामोट, यहीएल,
मत्तित्याह, एलीआब, बनायाह, ओबेद-एदोम
और यईएल। ये सारंगी और वीणा बजाते थे।
आसाफ झांझ बजाता था। 6बनायाह और
यहीएल परमेश्वर की विधान-मंजूषा के
सम्मुख तुरही निरन्तर बजाने के लिए नियुक्त
किए गए।

दाऊद का स्तुति-गान

7 उसी दिन दाऊद ने सर्वप्रथम आसाफ और
उसके चचेरे भाई-बन्धुओं को नियुक्त किया
कि वे प्रभु के अद्‌भुत कार्यों के उपलक्ष्य में यह
स्तुति-गान करें:

8 'प्रभु की सराहना करो,
उसका नाम घोषित करो;
सब जातियों में उसके कार्य प्रकट करो!
9उसके लिए गाओ, उसकी स्तुति गाओ;
उसके समस्त अद्‌भुत कार्यों का वर्णन करो!
10 तुम उसके पवित्र नाम पर गौरव करो;
प्रभु-खोजियों के हृदय आनन्दित हों!
11 प्रभु को, उसके सामर्थ्य को खोजो,
उसके मुख को निरन्तर खोजते रहो!
12 उसके अद्‌भुत कार्यों को,
जो उसने किए हैं,
उसके चमत्कारों को,
उसके मुंह से निकले न्याय-निर्णयों को
स्मरण करो,
13ओ प्रभु के सेवक इस्राएल के वंशजो!
ओ प्रभु के मनोनीत याकूब के पुत्रो!

14 'वही प्रभु हमारा परमेश्वर है;
समस्त पृथ्वी पर उसके न्याय-सिद्धान्त
व्याप्त हैं।
15 तुम उसके विधान को सदा स्मरण रखो;
उस वचन को, जो उसने हजार पीढ़ियों को
दिया है।
16 उस विधान को कभी नहीं भूलना
जो उसने अब्राहम के साथ स्थापित किया
था;
उस शपथ को जो उसने इसहाक के साथ
खाई थी।
17 उसने याकूब के लिए संविधि,
इस्राएल के लिए शाश्वत विधान निश्चित
किया था।
18 उसने यह कहा था, "मैं तुझे कनान देश दूँगा;
वह तुम्हारा पैतृक भूमि-भाग होगा!"

19 'जब वे संख्या में नगण्य थे,
बहुत कम थे,
जब वे वहाँ प्रवासी थे;
20जब वे एक राष्ट्र से दूसरे राष्ट्र को,
एक राज्य से दूसरे राज्य में भटकते-फिरते
थे:
21 तब प्रभु ने किसी व्यक्ति को उन पर
अत्याचार नहीं करने दिया;
उसने उनके कारण राजाओं को भी डांटा:
22 "मेरे अभिषिक्तों को स्पर्श मत करना;
मेरे नबियों का अनिष्ट न करना।"

23 'हे पृथ्वी के लोगो, प्रभु के लिए गाओ!
दिन-प्रतिदिन उसके उद्धार का सन्देश
सुनाओ।
24 राष्ट्रों में उसकी महिमा का,
समस्त जातियों में उसके अद्‌भुत कार्यों का
वर्णन करो।
25 प्रभु महान है;
वह स्तुति के अत्यन्त योग्य है;
वह समस्त देवताओं से अधिक भक्ति के
योग्य है!

16 : 8-22 भज 105 : 1-15 16 : 21 उत 20 : 3 16 : 23-33 भज 96 : 1-13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

26 अन्य जातियों के देवतागण मात्र मूर्तियां हैं;
पर प्रभु ने स्वर्ग को निर्मित किया है।
27 उसके सम्मुख यश और प्रताप हैं;
उसके निवास-स्थान में शक्ति और सुख-
आनन्द हैं।

28 'हे अन्य जातियों के कुलो, प्रभु का गुणगान
करो!
प्रभु की महिमा और शक्ति का गुणगान
करो!
29 प्रभु के नाम की महिमा का गुणगान करो!
भेंट लेकर उसके आंगनों में प्रवेश करो।
पवित्र भव्यता से उसकी आराधना करो;
30 हे पृथ्वी के लोगो, उसके सम्मुख कांपते
रहो।
उसने संसार को स्थिर और अटल बनाया है।
31 स्वर्ग आनन्दित और पृथ्वी हर्षित हो,
लोग राष्ट्रों में यह कहें, "प्रभु ही राज्य करता
है!"
32 सागर और उसकी परिपूर्णता गर्जन करे।
धरती और जो कुछ उसमें है, वह प्रफुल्लित
हो!
33 वन के समस्त वृक्ष
प्रभु के सम्मुख जय-जयकार करेंगे।
वह पृथ्वी का न्याय करने को आएगा।
34 प्रभु की सराहना करो,
क्योंकि प्रभु भला है,
उसकी करुणा सदा बनी रहती है।

35 'यह भी कहो:
"हे हमारे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर, हमारा
उद्धार कर!
हम विभिन्न राष्ट्रों में तितर-बितर हैं;
वहाँ से हमें एक स्थान पर एकत्र कर,
हमारी रक्षा कर,
ताकि हम तेरे पवित्र नाम का गुणगान करें,
तेरी स्तुति से आनन्दित हों।
36 प्रभु, इस्राएल का परमेश्वर,
अनादि काल से युग-युगान्त धन्य है!" '
तब सब लोगों ने यह कहा, 'आमेन!' और प्रभु
की स्तुति की।

उप-पुरोहित

37 दाऊद आसाफ और उसके भाई-
बन्धुओं को प्रभु की विधान-मंजूषा के सम्मुख
छोड़कर चला गया कि वे नियमित रूप से
प्रतिदिन मंजूषा के सामने निरन्तर धर्म-सेवा
करते रहें। 38 इनके अतिरिक्त वहाँ ओबेद-
एदोम और उसके अड़सठ चचेरे भाई-बन्धु भी
थे। ओबेद-एदोम बेन-यदूतून और होसाह
प्रहरी थे। 39 दाऊद पुरोहित सादोक और उसके
भाइयों को जो पुरोहित थे प्रभु के शिविर में
छोड़ गया। यह शिविर गिबओन के पहाड़ी
शिखर पर था। 40 इन पुरोहितों का यह कार्य था:
प्रभु की लिखित व्यवस्था, जिसका पालन करने
का आदेश उसने इस्राएली राष्ट्र को दिया था,
उसके अनुसार प्रभु को अग्नि-बलि की वेदी
पर प्रातः और सन्ध्या समय, प्रतिदिन अग्नि-
बलि चढ़ाना। 41 उनके साथ हेमान और यदूतून
तथा वे गायक थे, जो चुने गए तथा इस कार्य
के लिए नाम लेकर नियुक्त किए गए थे, जिससे
वे प्रभु की सराहना करें; क्योंकि उसकी करुणा
शाश्वत है! 42 हेमान और यदूतून के पास बजाने
के लिए तुरहियां और झांझ थे। इनके अतिरिक्त
पवित्र राग बजाने के लिए अन्य वाद्य यन्त्र भी
थे। यदूतून के पुत्र द्वार पर नियुक्त थे।
43 तत्पश्चात् सब लोग अपने-अपने घर
चले गए। दाऊद भी अपने परिवार को आशिष
देने के लिए अपने घर गया।

दाऊद को परमेश्वर का आश्वासन

17 दाऊद अपने महल में रहने लगा। उसने
एक दिन नबी नातान से यह कहा,
'देखिए मैं तो देवदार के महल में रहता हूं, परन्तु
प्रभु की विधान-मंजूषा तम्बू में परदों के मध्य
पड़ी है!' 2 तब नातान ने दाऊद से कहा, ' जो
कुछ आपके हृदय में है, उसको कर डालिए;
क्योंकि परमेश्वर आपके साथ है।'
3 उसी रात को प्रभु का यह वचन नातान को
सुनाई दिया: 4 'जा, और मेरे सेवक दाऊद से

16 : 34 भज 106 : 1,47-48; 118 : 1 16 : 43 2 शम 6 : 19-20 17 : 1-27 2 शम 7 : 1-29

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यह कह, ''प्रभु यों कहता है: क्या तू मेरे निवास
के लिए भवन बनाएगा? [5]जिस दिन से मैं
इस्राएलियों को बाहर निकाल लाया, उस दिन
से आज तक मैं भवन में नहीं रहा। मैं एक तम्बू
से दूसरे तम्बू में, एक निवास-स्थान से दूसरे
निवास-स्थान में यात्रा करता रहा। [6]जहाँ-जहाँ
मैंने इस्राएली लोगों के साथ यात्रा की, क्या मैंने
उनके शासकों से, जिन्हें मैंने ही अपने निज
लोग इस्राएलियों की देखभाल के लिए नियुक्त
किया था, कभी यह कहा था, 'तुमने मेरे लिए
देवदार का भवन क्यों नहीं बनवाया?''' [7]अत:
अब तू मेरे सेवक दाऊद से यों कहना, ''स्वर्गिक
सेनाओं का प्रभु यों कहता है: मैंने तुझे चरागाह
से निकाला। तुझे भेड़-बकरियों के पीछे जाने
से रोका कि तुझे अपने निज लोग इस्राएलियों
का अगुआ बनाऊं। [8]जहां-जहां तू गया, मैं तेरे
साथ रहा। मैंने तेरे शत्रुओं को नष्ट किया। अब
मैं तेरे नाम को पृथ्वी के महान् नामों के सदृश
महान् करूंगा। [9]मैं अपने निज लोग इस्राएलियों
के लिए एक स्थान निर्धारित करूंगा। मैं उन्हें
वहां बसाऊंगा जिससे वे अपने स्थान में निवास
करेंगे और उन्हें फिर नहीं सताया जायेगा।
कुटिल व्यक्ति फिर उन्हें दु:ख नहीं देंगे, जैसे
वे उन दिनों में करते थे, [10]जब मैंने अपने निज
लोग इस्राएलियों के लिए शासक नियुक्त
किए थे। मैं तेरे सब शत्रुओं को तेरे अधीन
कर दूंगा। इसके अतिरिक्त मैं तुझ पर यह बात
प्रकट करता हूं: मैं-प्रभु तुझे स्वयं 'भवन'
बनाऊंगा। [11]जब तेरी आयु पूरी हो जाएगी और
तू अपने मृत पूर्वजों के पास जाएगा, तब मैं तेरे
पश्चात् तेरे एक वंशज को, तेरे एक पुत्र को
उत्तराधिकारी नियुक्त करूंगा, और उसके राज्य
को सुदृढ़ बनाऊंगा। [12]वह मेरे लिए भवन
बनाएगा। मैं उसके राजसिंहासन को सदा-
सर्वदा के लिए सुदृढ़ कर दूंगा। [13]मैं उसका
पिता होऊंगा और वह मेरा पुत्र होगा। जैसे मैंने
तेरे पूर्ववर्ती राजा शाऊल के प्रति करुणा करना
छोड़ दिया था, वैसे मैं उसके प्रति नहीं करूंगा।
[14]मैं उसको अपने भवन में, अपने राज्य में
सुदृढ़ करूंगा और उसका राज्य सदा-सर्वदा
स्थिर रहेगा।'' '

15 नातान ने ये सब बातें तथा यह दर्शन राजा
दाऊद को बताया।

16 तब दाऊद तम्बू के भीतर गया। वह प्रभु
के सम्मुख बैठ गया। उसने यह प्रार्थना की, 'हे
प्रभु परमेश्वर, मैं और मेरे वंश का महत्व क्या
है कि तूने मुझे इतना ऊंचा उठाया? [17]फिर भी
यह तेरी दृष्टि में कितनी छोटी बात है। हे
परमेश्वर, तूने अपने सेवक के वंश को सुदूर
भविष्य के लिए भी वचन दिया। इस प्रकार तूने
मुझे महान् मनुष्य माना*! [18]हे प्रभु परमेश्वर,
दाऊद तुझ से और क्या कह सकता है? तूने
अपने सेवक को सम्मान दिया। तू अपने सेवक
को जानता है। [19]हे प्रभु, अपने सेवक के कारण
और अपने हृदय के अनुरूप, तूने अपनी
महानता बताने के लिए यह महान् कार्य किया।
[20] हे प्रभु, तेरे समान और कोई ईश्वर नहीं है।
तेरे अतिरिक्त और कोई परमेश्वर नहीं है। यह
हमने स्वयं अपने कानों से सुना है। [21]तेरे निज
लोग, इस्राएली राष्ट्र के समान, पृथ्वी पर और
कौन राष्ट्र है? हे परमेश्वर, तू स्वयं उनको
गुलामी से मुक्त करने के लिए आया था,
जिससे वे तेरी प्रजा बनें। तूने महान् और
आतंकपूर्ण कार्यों द्वारा स्वयं एक नाम धारण
किया। तूने अपने निज लोगों के सम्मुख से,
जिन्हें तूने अपने लिए मिस्र देश से मुक्त किया
था, अनेक राष्ट्रों को भगाया था। [22]तूने अपने
लोग इस्राएलियों को स्थापित किया कि वे
युगानुयुग तेरे ही निज लोग बने रहें। हे प्रभु, तू
उनका परमेश्वर बन गया। [23]अब हे प्रभु, जो
वचन तूने अपने सेवक और उसके वंश के
विषय में कहा है, उसको सदा के लिए सत्य
प्रमाणित कर। अपने वचन के अनुसार कार्य
कर। [24]प्रभु, अपने नाम को स्थापित कर, कि
लोग सदा-सर्वदा उसका गुणगान करें। तब
लोग यह कहेंगे, ''स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु,

---

* मूल में अस्पष्ट

17: 13 2 कुर 6 : 18; इब्र 1 : 5

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इस्राएल का परमेश्वर इस्राएलियों के लिए ही
परमेश्वर है'' तब तेरे सेवक दाऊद का वंश तेरे
सम्मुख बना रहेगा। 25 हे मेरे परमेश्वर, तूने
अपने सेवक के कानों में यह बात प्रकट की है
कि तू मुझे स्वयं ''भवन'' बनाएगा। अत: तेरे
सेवक को साहस प्राप्त हुआ और उसने तुझसे
यह प्रार्थना की। 26अब हे प्रभु, तू ही परमेश्वर
है, तूने अपने सेवक के साथ यह भलाई करने
की प्रतिज्ञा की है। 27 अब तू प्रसन्न हुआ और
तूने अपने सेवक के परिवार को आशिष दी है,
जिससे वह तेरे सम्मुख सदा बना रहे। हे प्रभु,
जिस पर तू आशिष करता है, वह सदा
आशिषमय बना रहता है।'

दाऊद का राज्य-विस्तार

18 इसके पश्चात् दाऊद ने पलिश्तियों को
पराजित किया, और उन्हें अपने अधीन
कर लिया। उसने पलिश्तियों के हाथ से गत
नगर तथा उसके गाँव छीन लिये।

2 दाऊद ने मोआब राज्य को भी पराजित
किया। अत: मोआबी लोग दाऊद के अधीन हो
गए। वे दाऊद को कर देने लगे।

3 जब सोबाह राज्य का राजा हदद-एजेर
फरात नदी के समीप, हमात नगर की ओर,
अपना राज्य-विस्तार+ करने गया, तब दाऊद ने
उसे पराजित किया। 4 दाऊद ने उससे एक
हजार रथ, सात हजार घुड़सवार और बीस
हजार पैदल सैनिक छीन लिये। उसने रथ के
सब घोड़ों के घुटने के पीछे की नस काटकर
उन्हें पंगु बना दिया। परन्तु अपने सौ रथों के
लिए घोड़े बचा लिये। 5 दमिश्क की सीरियाई
सेना सोबाह के राजा हदद-एजेर की सहायता
के लिए आई। दाऊद ने उसके बाईस हजार
सैनिकों का संहार कर दिया। 6उसने दमिश्क
के अराम नगर में अपने प्रशासक नियुक्त किए।
यों सीरिया देश के लोग दाऊद के अधीन हो
गए। वे दाऊद को कर देने लगे। जहाँ-जहाँ
दाऊद गया, प्रभु ने उसे विजय प्रदान की। 7जो
सोने की ढालें हदद-एजेर के सेवक उठाकर ले
जाते थे, उनको दाऊद ने छीन लिया और
यरूशलेम ले गया। 8दाऊद हदद-एजेर के
नगरों—टिबहत और कून—से बहुत मात्रा में
कांस्य-धातु छीन कर ले गया। इसी कांस्य-
धातु से सुलेमान ने प्रभु-भवन का हौज, स्तम्भ
और पात्र बनाए।

9 हमात राज्य के राजा तोई ने सुना कि दाऊद
ने सोबाह राज्य के राजा हदद-एजेर की समस्त
सेना को पराजित कर दिया। 10अत: तोई ने
अपने पुत्र हदोराम को राजा दाऊद के पास
उसका कुशल-क्षेम पूछने और उसे बधाई देने
के लिए भेजा; क्योंकि दाऊद ने हदद-एजेर से
युद्ध कर उसे पराजित किया था। हदद-एजेर
की तोई से शत्रुता थी। तोई ने हदोराम के हाथ
सब प्रकार के सोना, चाँदी और पीतल के पात्र
भेजे। 11राजा दाऊद ने इन पात्रों को भी प्रभु को
अर्पित कर दिया। जिन राष्ट्रों—एदोम, मोआब,
अम्मोन, पलिश्ती और अमालेक—से उसने
सोना-चाँदी छीना था, उसको उसने प्रभु को
अर्पित किया था।

12 अबीशय बेन-सरूयाह ने लवण घाटी में
अठारह हजार एदोमी सैनिकों का संहार किया।
13उसने एदोम राज्य में प्रशासक नियुक्त
किया। सब एदोमी लोग दाऊद के अधीन हो
गए। जहाँ-जहाँ दाऊद गया, प्रभु ने उसे विजय
प्रदान की।

दाऊद के उच्च पदाधिकारी

14 यों दाऊद समस्त इस्राएल देश पर राज्य
करने लगा। वह अपनी जनता पर न्याय और
धार्मिकता से शासन करता था। 15योआब बेन-
सरूयाह सेनापति था। यहोशाफट बेन-अहीलूद
राज-सचिव था। 16सादोक बेन-अहीटूब और
अहीमेलेक बेन-एबयातार पुरोहित थे। शवशा
महासहायक था। 17बनायाह बेन-यहोयादा
दाऊद के अंगरक्षकों का नायक था। वे
अंगरक्षक करेत और पलेत नगरों के रहनेवाले
थे। दाऊद के पुत्र राज्य सेना में उच्चाधिकारी
थे।

+ अथवा, 'अपना विजय-स्तम्भ स्थापित'

18 : 1-13 2 शम 8 : 1-14 18 : 8 2 इत 4 : 12-16 18 : 3-17 2 शम 8 : 15-18

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अम्मोन और सीरिया राज्यों की पराजय

19 इसके पश्चात् अम्मोनी जाति के राजा नाहाश की मृत्यु हो गई। उसके स्थान पर उसका पुत्र हानून राज्य करने लगा। 2 दाऊद ने यह सोचा, 'जैसे हानून के पिता नाहाश ने मुझसे प्रेमपूर्ण व्यवहार किया था, वैसे ही मैं हानून के साथ करूंगा।' अत: दाऊद ने उसके पिता की मृत्यु के विषय में अपने दरबारियों के हाथ संवेदना-संदेश भेजा। दाऊद के दरबारी हानून को सांत्वना देने के लिए अम्मोन देश में आए। 3परन्तु अम्मोन देश के सामन्तों ने अपने स्वामी हानून से यह कहा, 'दाऊद ने आपके पास संवेदना प्रकट करने वाले भेजे। इस कारण क्या आप यह सोचते हैं कि वह आपके पिता के प्रति सम्मान प्रकट कर रहा है? कदापि नहीं। उसने खोजबीन करने, उलट-पुलट करने और देश का भेद लेने के लिए उनको आपके पास भेजा है।' 4अत: हानून ने दाऊद के दरबारियों को पकड़ा। उसने दरबारियों के बाल मूंड़ लिये। इनके वस्त्र कमर तक आधे काट दिए। तत्पश्चात् उन्हें विदा कर दिया। 5दाऊद को यह समाचार सुनाया गया। उसने दरबारियों से भेंट करने के लिए दूत भेजे; क्योंकि वे अत्यन्त लज्जित थे। राजा दाऊद ने आदेश दिया,'जब तक तुम्हारी दाढ़ी फिर न बढ़ जाए, तब तक तुम यरीहो नगर में ठहरे रहो। उसके बाद आना।'

6 अम्मोनियों ने देखा कि उन्होंने दाऊद की शत्रुता मोल ली है। अत: हानून और अम्मोनियों ने दूत भेजे। उन्होंने प्राय: पैंतीस हजार किलो चांदी से मसोपोतामिया, अराम-माकाह और सोबाह देशों से रथ और घुड़सवार किराए पर बुलाए। 7उन्होंने माकाह देश के राजा को, उसकी सेना तथा बत्तीस हजार रथों के साथ, किराए पर बुलाया। माकाह देश का राजा आया। उसने मेदबा नगर के सम्मुख पड़ाव डाला। अम्मोनी सैनिक अपने-अपने नगर से निकल कर एकत्र हुए। वे युद्ध के लिए आए। 8दाऊद ने यह सुना। उसने सेना और योद्धाओं के साथ सेनापति योआब को भेजा। 9अम्मोनी सैनिक नगर से बाहर निकले। उन्होंने नगर के प्रवेश-द्वार पर युद्ध की व्यूह-रचना की। जो राजा युद्ध के लिए आए थे, वे नगर के बाहर मैदान में थे।

10 योआब ने देखा कि उसे सामने और पीछे, दोनों ओर युद्ध करना होगा। अत: उसने इस्राएली सेना के चुनिन्दे सैनिकों में से कुछ सैनिक चुने। तत्पश्चात् योआब ने उन्हें सीरियाई सेना का सामना करने के लिए नियुक्त किया। 11उसने शेष सैनिक अपने भाई अबीशय के हाथ में सौंप दिये, और उन्हें अम्मोनी सैनिकों का सामना करने के लिए नियुक्त कर दिया। 12उसने अबीशय से कहा, 'यदि सीरियाई सैनिक मुझसे अधिक शक्तिशाली सिद्ध होंगे, तो मेरी सहायता करने के लिए आना। यदि अम्मोनी सैनिक तुमसे अधिक शक्तिशाली सिद्ध होंगे, तो मैं आऊंगा और तुम्हारी सहायता करूंगा। 13शक्तिशाली बनो! हम अपनी जनता और अपने परमेश्वर के नगरों के लिए युद्ध करें। प्रभु वही करे, जो उसकी दृष्टि में उचित है।'

14 योआब और उसके साथ के सैनिक सीरियाई सेना से युद्ध करने के लिए उनके समीप आए। पर सीरियाई सैनिक उनके सामने से भागने लगे। 15जब अम्मोनी सैनिकों ने देखा कि सीरियाई सैनिक भाग गए, तब वे भी योआब के भाई अबीशय के सामने से भाग गए और अपने नगर के भीतर चले गए। योआब यरूशलेम नगर में आया।

16 जब सीरियाई सैनिकों ने देखा कि इस्राएली सेना ने उन्हें हरा दिया, तब उन्होंने दूत भेजे, और जो सीरियाई सैनिक फरात नदी के उस पार थे, उन्हें बुलाया। उनके साथ हदद-एजेर की सेना के सेनापति शोपख को भी बुलाया। वह उनके आगे-आगे था। 17दाऊद को यह समाचार मिला। उसने समस्त इस्राएली सेना एकत्र की। तब उसने यर्दन नदी को पार किया। वह उनके समीप आया, और उनके विरुद्ध अपनी सेना को खड़ा कर दिया। दाऊद ने सीरियाई सेना का सामना करने के लिए युद्ध

---

19 : 1-19 2 शम 10 : 1-19

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

की व्यूह-रचना की। उन्होंने दाऊद से युद्ध
किया। 18परन्तु सीरियाई सेना इस्राएली सेना के
सामने से भाग गई। दाऊद ने सीरियाई सेना के
सात हजार सारथी, और चालीस हजार सैनिक
मार डाले। उसने उनकी सेना के सेनापति
शोपख को भी मार डाला। 19जब हदद-एजेर
के अधीन राजाओं ने देखा कि वे इस्राएली सेना
से हार गए, तब उन्होंने दाऊद के साथ शान्ति
स्थापित की। वे दाऊद के अधीन हो गए।
सीरियाई सेना अम्मोनी सेना की सहायता करने
को फिर कभी तैयार नहीं हुई।

20 राजा वसन्त की वर्षा के बाद युद्ध पर
जाते थे। योआब सेना के साथ युद्ध पर
गया। उसने अम्मोन देश को उजाड़ डाला। वह
रब्बाह नगर के समीप आया। उसने नगर को
घेर लिया। दाऊद यरूशलेम नगर में ही रह गया
था। योआब ने रब्बाह नगर-निवासियों का वध
कर दिया, और नगर को खण्डहर बना दिया।

2 दाऊद ने अम्मोनी देवता मिल्कोम के सिर
से सोने का मुकुट उतार लिया, और उसको
दाऊद के सिर पर रखा। दाऊद को पता चला
कि मुकुट का वजन लगभग पैंतीस किलो है!
उसमें एक मणि जड़ा हुआ था। दाऊद नगर से
लूट का बहुत माल ले गया। 3 वह नगर के
रहनेवालों को भी ले गया, और उन्हें आरों,
लोहे की गैंतियों और कुल्हाड़ियों के काम पर
नियुक्त किया। उसने ऐसा ही व्यवहार अम्मोनी
राज्य के अन्य नगरों के साथ भी किया।
तत्पश्चात् दाऊद तथा समस्त सेना यरूशलेम
नगर को लौट गई।

दानवों का वध

4 इस घटना के पश्चात् गेजेर नगर में
पलिश्तियों से युद्ध छिड़ गया। इस युद्ध में
हूशाह के रहने वाले सिब्बकय ने सिप्पई को
मार डाला, जो रपाई दानव का वंशज था। इस
प्रकार पलिश्ती राज्य दाऊद के अधीन हो गया।

5 कुछ समय पश्चात् पलिश्तियों के साथ
फिर युद्ध होने लगा। इस युद्ध में एलहानान
बेन-याइर ने गत नगर के गोलयत के भाई
लहमी का वध कर दिया। उसके भाले का
डण्डा करघे के डण्डे के समान था।

6 गत नगर में फिर युद्ध आरम्भ हुआ। वहाँ
एक भीमकाय पुरुष था। उसके हाथ में छः-
छः अंगुलियां और पैरों में छः-छः अंगुलियां
थीं। इस प्रकार उसके हाथ-पैर में चौबीस
अंगुलियां थीं। वह भी रपाई दानव का वंशज
था। 7जब उसने इस्राएली जाति को चुनौती दी,
तब दाऊद के भाई शिमआ के पुत्र योनातन ने
उसे मार डाला। 8ये गत नगर की रपाई जाति के
दानवों के वंशज थे। दाऊद और उसके सेवकों
ने अपने हाथ से उन्हें मौत के घाट उतार दिया।

इस्राएली राज्य के युवकों की जनगणना

21 शैतान ने इस्राएली राष्ट्र को परखा।
उसने दाऊद को भड़काया कि वह
इस्राएली जाति के बीस वर्ष से अधिक आयु के
पुरुषों की जनगणना* करे। 2अतः दाऊद ने
योआब तथा सेनानायकों को यह आदेश दिया,
'जाओ, बएर-शेबा से दान नगर तक, युद्ध-
सेवा के योग्य समस्त इस्राएली पुरुषों की
गणना करो। मेरे पास उनकी रपट लाओ। मैं
उनकी संख्या जानना चाहता हूं।' 3किन्तु योआब
ने कहा, 'प्रभु अपनी प्रजा की आबादी को सौ
गुना बढ़ाए। मेरे स्वामी, महाराज, क्या वे सब-
के-सब आपके सेवक नहीं हैं? तब मेरे स्वामी,
आप यह काम क्यों करना चाहते हैं? आप
इस्राएली राष्ट्र को प्रभु की दृष्टि में क्यों दोषी
बनाना चाहते हैं?' 4किन्तु योआब राजा दाऊद
का आदेश मानने को बाध्य हुआ। अतः योआब
चला गया। उसने समस्त इस्राएली देश का
भ्रमण किया। तत्पश्चात् वह यरूशलेम नगर
को लौटा। 5योआब ने दाऊद को पुरुषों की
संख्या बताई। समस्त इस्राएल प्रदेश में ग्यारह
लाख पुरुष, और यहूदा प्रदेश में चार लाख
सत्तर हजार पुरुष थे। इनकी आयु बीस वर्ष से

---

* भावानुवाद। मूल में केवल 'इस्राएल की जनगणना'

20 : 3 2 शम 11 : 1; 12 : 26-31 **20 : 4-8** 2 शम 21 : 18-22 **20 : 5** 1 शम 17 : 4-7 **21 : 1-27** 2 शम 24 : 1-25

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अधिक थी। ये तलवार चला सकते थे।
6 योआब ने युद्ध-सेवा के योग्य पुरुषों की
गणना में लेवी और बिन्यामिन कुलों के वंशजों
को सम्मिलित नहीं किया; क्योंकि योआब की
दृष्टि में राजा का यह आदेश घृणास्पद था।
7 परमेश्वर को अपनी दृष्टि में दाऊद का यह
कार्य बुरा लगा। उसने इस्राएलियों को दण्ड+
दिया। 8दाऊद ने परमेश्वर से कहा, 'मैंने यह
कार्य कर महापाप किया। अब, प्रभु कृपाकर
अपने सेवक पर से यह अधर्म का बोझ दूर कर।
मैं बड़ी मूर्खता का कार्य कर बैठा।' 9प्रभु ने
दाऊद के द्रष्टा गाद से यह कहा, 10'जा, और
दाऊद से यह कह: "प्रभु यों कहता है: मैं तेरे
सम्मुख तीन प्रस्ताव रखता हूं। तू उनमें से एक
चुन। मैं उसके अनुसार तेरे साथ व्यवहार
करूंगा।"' 11 अत: गाद दाऊद के पास आया।
उसने दाऊद से कहा, 'प्रभु यों कहता है: "जो
तू बनना चाहता है, इनमें से चुन ले: 12तीन वर्ष
तक अकाल; अथवा तीन महीने तक तेरे बैरियों
के द्वारा तेरा विनाश, अर्थात् तीन महीने तक तेरे
शत्रुओं की तलवार तुझ पर चलती रहेगी;
अथवा तीन दिन मुझ-प्रभु की तलवार का
चलना, अर्थात् तेरे देश पर तीन दिन तक
महामारी का प्रकोप—जब तक मेरा दूत समस्त
इस्राएली देश का महाविनाश न करे।" महाराज,
आप निर्णय कीजिए कि मैं लौटकर अपने
भेजने वाले को क्या उत्तर दूं।' 13दाऊद ने गाद
से कहा, 'मैं बड़े संकट में हूँ। मैं प्रभु के हाथ
से मारा जाना पसन्द करता हूँ; क्योंकि प्रभु
महादयालु है। परन्तु मैं मनुष्य के हाथ में नहीं
पड़ना चाहता।'
14 प्रभु ने इस्राएल देश पर महामारी भेजी।
अत: इस्राएल देश के सत्तर हजार व्यक्ति मर
गए। 15 परमेश्वर ने यरूशलेम नगर को नष्ट
करने के लिए वहाँ दूत भेजा। जब दूत
यरूशलेम को नष्ट करने वाला था तब प्रभु ने
यह देखा। वह उनकी विपत्ति देखकर पछताया।
उसने लोगों का संहार करने वाले दूत से कहा,
'बस! यह पर्याप्त है। अपना हाथ रोक ले।'
उस समय प्रभु का दूत यबूसी जाति के ओर्नान
नामक व्यक्ति के खलियान के पास खड़ा था।
16दाऊद ने अपनी आंखें ऊपर उठाईं। उसने यह
देखा, 'लोगों का संहार करनेवाला दूत आकाश
और पृथ्वी के मध्य खड़ा है। उसके हाथ में
तलवार है, जो यरूशलेम नगर से ऊपर उठी हुई
है।' तब दाऊद और धर्मवृद्धों ने पश्चात्ताप
प्रकट करने के लिए टाट के वस्त्र पहिने। वे मुँह
के बल भूमि पर गिरे। 17दाऊद ने परमेश्वर से
कहा, 'प्रभु, मैंने ही जनगणना करने का आदेश
दिया था। पाप मैंने किया। मैंने ही दुष्कर्म
किया। पर ये भेड़ें? इन्होंने क्या किया? हे प्रभु
परमेश्वर, मैं विनती करता हूँ: मुझ पर और मेरे
परिवार पर अपना हाथ उठा। पर प्रभु, मेरी
जनता पर महामारी मत भेज।'
18 प्रभु के दूत ने गाद को आदेश दिया कि
वह दाऊद के पास जाए, और उससे कहे कि
वह यबूसी ओर्नान के खलियान पर प्रभु के
लिए एक वेदी प्रतिष्ठित करे। 19प्रभु के नाम में
गाद ने दाऊद से कहा। दाऊद गाद के कथन के
अनुसार गया। 20उस समय ओर्नान गेहूं दांव
रहा था। उसके साथ उसके चार पुत्र थे। वह
पीछे मुड़ा। उसने दूत को देखा। उसके चारों
पुत्र छिप गए।
21 दाऊद ओर्नान के पास आया। ओर्नान ने
दाऊद को देखा। वह खलियान से बाहर
निकला। वह भूमि पर मुंह के बल गिरा और
उसने दाऊद का अभिवादन किया। 22दाऊद ने
ओर्नान से कहा, 'मुझे खलियान की यह भूमि
दो। मैं इस पर प्रभु के लिए एक वेदी बनाऊंगा,
जिससे महामारी लोगों को छोड़ दे। तुम भूमि
के पूरे दाम में यह भूमि मुझे दो।' 23ओर्नान ने
दाऊद से कहा, 'महाराज, मेरे स्वामी, भूमि को
ले लीजिए। जो आपकी दृष्टि में उचित है, वह
उस पर बनाइए। देखिए, मैं बलि के लिए बैल,
अग्नि की लकड़ी के लिए दंवरी के औजार,
और अन्न-बलि के लिए गेहूँ दूंगा। महाराज,
मैं यह सब आपकी सेवा में प्रस्तुत करता
हूँ।' 24किन्तु राजा दाऊद ने ओर्नान से कहा,

+ शब्दश: 'मारा'

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'नहीं, मैं ये वस्तुएं रुपये देकर ही तुमसे खरीदूंगा। जो तुम्हारा है, वह मैं प्रभु के लिए नहीं लूंगा। मैं ऐसी अग्नि-बलि नहीं चढ़ाऊंगा, जिसका मैंने मूल्य नहीं चुकाया है।' [25]अत: दाऊद ने भूमि के लिए ओर्नान को सात किलो सोना चुकाया। [26]दाऊद ने वहां प्रभु के लिए वेदी निर्मित की, और अग्नि-बलि तथा सहभागिता-बलि तैयार की। उसने प्रभु को पुकारा, और प्रभु ने अग्नि-बलि की वेदी पर आकाश से अग्नि की वर्षा कर दाऊद को उत्तर दिया। [27]प्रभु ने दूत को आदेश दिया, और दूत ने म्यान में तलवार रख ली।

मन्दिर का निर्माण -स्थल

28 जब दाऊद ने देखा कि प्रभु ने यबूसी ओर्नान के खलियान में उसको उत्तर दिया, तब उसने उसी समय वहां बलि चढ़ाई। [29]प्रभु का शिविर, जो मूसा ने निर्जन प्रदेश में बनाया था, और अग्नि-बलि की वेदी दोनों उस समय गिब्ओन के पहाड़ी शिखर पर थे। [30]परन्तु दाऊद प्रभु की इच्छा जानने के लिए उसके सम्मुख नहीं जा सका; क्योंकि वह प्रभु के दूत की तलवार से भयभीत था।

22 दाऊद ने कहा, 'इस स्थान पर प्रभु परमेश्वर का भवन होगा, और यहीं इस्राएली राष्ट्र के लिए अग्नि-बलि की वेदी भी बनेगी।'

मन्दिर-निर्माण की तैयारी

2 इस्राएल देश में विदेशी मजदूर थे। दाऊद ने उनको एकत्र होने का आदेश दिया। तत्पश्चात् उसने परमेश्वर का भवन बनाने के लिए पत्थरों को काटने-छांटने के उद्देश्य से शिल्पकार नियुक्त किए। [3]फिर दाऊद ने फाटकों के किवाड़ों के लिए कीले और अंकुड़े बनाने के लिए बहुत लोहा, और अत्यधिक मात्रा में पीतल इकट्ठा किया। [4]उसने देवदार के असंख्य लट्ठे भी एकत्र किए। सीदोन और सोर देशों के व्यापारी दाऊद के पास अपार मात्रा में देवदार की इमारती लकड़ी लाए।

5 दाऊद यह सोचता था, 'मेरा पुत्र सुलेमान अभी किशोर है। उसे अनुभव नहीं है। जो भवन प्रभु के लिए बनाया जाएगा, उसको अत्यन्त विशाल होना चाहिए ताकि समस्त देशों में उसका नाम और भव्यता की चर्चा हो। अत: मैं भवन-निर्माण की तैयारी करूंगा।' यह सोचकर दाऊद ने अपनी मृत्यु के पूर्व अत्यधिक मात्रा में इमारती साज-सामान एकत्र कर लिया।

6 एक दिन दाऊद ने अपने पुत्र सुलेमान को बुलाया, और उसको इस्राएली राष्ट्र के प्रभु परमेश्वर के लिए भवन बनाने का आदेश दिया। [7]दाऊद ने सुलेमान से यह कहा, 'मेरे पुत्र, मेरी हार्दिक इच्छा थी कि मैं अपने प्रभु परमेश्वर के नाम की प्रतिष्ठा के लिए एक भवन बनाऊँ। [8]परन्तु प्रभु का यह वचन मैंने सुना है: "तूने बहुत रक्त बहाया है। तूने बड़ी-बड़ी लड़ाइयां लड़ीं। अत: तू मेरे नाम पर भवन नहीं बनाएगा। तूने मेरे सम्मुख धरती पर बहुत रक्त बहाया है। [9]देख, तुझे एक पुत्र उत्पन्न होगा। वह शान्ति-प्रिय होगा। मैं उसके चहुंओर के शत्रुओं से उसको मुक्त रखूंगा और शान्ति प्रदान करूंगा। उसका नाम सुलेमान होगा। मैं उसके शासनकाल में इस्राएली राष्ट्र को शान्ति* और चैन प्रदान करूंगा। [10]वह मेरे नाम पर एक भवन बनाएगा। वह मेरा पुत्र होगा, और मैं उसका पिता। मैं इस्राएल देश में उसके राज्य-सिंहासन को सदा-सर्वदा के लिए सुदृढ़ कर दूंगा।"

11 'अब, मेरे पुत्र, प्रभु तेरे साथ हो! जैसा उसने तेरे विषय में कहा है, वैसा ही तू अपने प्रभु परमेश्वर के लिए भवन बनाने में सफल हो! [12]प्रभु तुझे समझ और बुद्धि प्रदान करे। इस प्रकार जब तेरा प्रभु परमेश्वर तुझे इस्राएली राष्ट्र का शासक नियुक्त करेगा, तब तू उसकी व्यवस्था का पालन कर सके। [13]जो संविधियां और न्याय-सिद्धान्त प्रभु ने इस्राएली राष्ट्र के लिए मूसा को दिए थे, यदि तू उनका पालन करने में तत्पर रहेगा तो तू फूलेगा-फलेगा।

---

* मूल इब्रानी में 'शलोमो' (सुलेमान) और 'शालोम' (शान्ति)

21 : 26 1 रा 18 : 38 **22 : 7** 2 शम 7 : 2 **22 : 13** यहो 1 : 7; व्य 31 : 23

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शक्तिशाली और साहसी बन! भयभीत मत हो!
निराश मत हो! 14 मैंने दु:ख-तकलीफ सहकर
प्रभु के भवन के लिए पैंतीस लाख किलो सोना
और साढ़े तीन करोड़ किलो चांदी** तथा इतना
पीतल और लोहा इकट्ठा किया है, कि उसको
तोला नहीं जा सकता है! मैंने भवन के लिए
इमारती लकड़ी और पत्थर भी इकट्ठा किया
है। तू इनको और इकट्ठा करना। 15तेरे पास
असंख्य कारीगर हैं: शिल्पकार, राज, बढ़ई,
तथा सब प्रकार की पच्ची-कारीगरी करने वाले
अगणित कारीगर; 16सोने, चांदी, पीतल और
लोहे का कार्य करने वाले कुशल सुनार। उठ!
कार्य आरम्भ कर! प्रभु तेरे साथ हो!'

17 दाऊद ने इस्राएली राष्ट्र के उच्चाधिकारियों
को आदश दिया कि वे उसके पुत्र सुलेमान की
सहायता करें। दाऊद ने कहा, 18 'क्या प्रभु
परमेश्वर तुम्हारे साथ नहीं है? क्या उसने
तुम्हारे चारों ओर शान्ति प्रदान नहीं की है?
उसने इस देश के निवासियों को मेरे हाथ में
सौंप दिया है। सारा देश प्रभु के सम्मुख उसके
निज लोग इस्राएलियों के अधीन हो गया है।
19अत: अब तुम अपने प्रभु परमेश्वर की ओर
अपना प्राण और हृदय केन्द्रित करो, और
उसकी खोज करो। उठो, और प्रभु परमेश्वर के
पवित्र स्थान का निर्माण करो, ताकि प्रभु के नाम
की प्रतिष्ठा के लिए निर्मित भवन में प्रभु की
विधान-मंजूषा और परमेश्वर के पवित्र पात्र
रखे जा सकें।'

23 दाऊद वृद्ध हो गया था। वस्तुत: उसकी
आयु पूर्ण हो चुकी थी। अत: उसने
अपने पुत्र सुलेमान को इस्राएल देश का राजा
नियुक्त किया।

पुरोहितों और उप-पुरोहितों के कर्तव्य-कर्म

2 दाऊद ने इस्राएली राष्ट्र के सब नेताओं,
पुरोहितों और लेवीय उप-पुरोहितों को एकत्र
किया। 3तीस वर्ष तथा उससे अधिक आयु के
उप-पुरोहितों की गणना की गई। इनकी कुल
संख्या अड़तीस हजार थी। 4दाऊद ने आदेश
दिया, 'इनमें से चौबीस हजार उप-पुरोहित
प्रभु-भवन के सेवा-कार्यों को करेंगे; छ: हजार
अधिकारी तथा शासक, 5चार हजार द्वारपाल
और चार हजार गायक होंगे। ये गायक प्रभु की
स्तुति के लिए बनाए गए मेरे वाद्ययन्त्रों पर प्रभु
की स्तुति गाएंगे।' 6तत्पश्चात् दाऊद ने कुलपति
लेवी के वंशजों—गेर्शोम, कहात और मरारी—के
दलों में उनको संगठित किया।

7 गेर्शोम के ये पुत्र थे: लदान और शिमई।
8लदान के तीन पुत्र थे: यहीएल, जो ज्येष्ठ था;
जेताम और योएल। 9शिमई के तीन पुत्र थे;
शलोमोत, हजीएल और हारान। ये लदान-
पितृकुल के मुखिया थे। 10 शिमई के चार पुत्र
थे: यहत, जीजा+, यऊश और बरीआह। 11यहत
ज्येष्ठ था। दूसरे स्थान पर जीजा था। यऊश और
बरीआह के अधिक पुत्र नहीं थे। उनके पितृ-
कुलों को एक ही पितृ-कुल के अन्तर्गत गिना
गया।

12 कहात के चार पुत्र थे: अम्राम, यिसहार,
हेब्रोन और ऊज्जीएल। 13अम्राम के दो पुत्र थे:
हारून और मूसा। हारून को दूसरे व्यक्तियों से
अलग किया गया था ताकि वह महापवित्र
वस्तुओं को प्रभु के लिए अर्पित करे। वह और
उसके वंशज प्रभु के सम्मुख सदा-सर्वदा धूप-
द्रव्य जलाएं, प्रभु की सेवा करें, और उसके नाम
से आराधकों को आशीर्वाद दें।

14 परमेश्वर के जन मूसा के वंशजों को
लेवी कुल के अन्तर्गत गिना गया। 15मूसा के
ये पुत्र थे: गेर्शोम और एलीएजेर। 16गेर्शोम के
पुत्रों में शबूएल ज्येष्ठ था। 17 एलीएजेर के पुत्रों
में रहबयाह ज्येष्ठ था। यद्यपि एलीएजेर के और
पुत्र नहीं थे, तथापि रहबयाह के अनेक पुत्र थे।
18यिसहार के पुत्रों में शलोमीत ज्येष्ठ था।
19हेब्रोन के चार पुत्र थे: ज्येष्ठ यरियाह, और
उसके बाद क्रमश: अमरयाह, यहजीएल और
यकमआम। 20ये ऊज्जीएल के दो पुत्र थे: ज्येष्ठ
मीकाह और यिश्शियाह।

21 मरारी के ये पुत्र थे: महली और मूशी।

** मूल में, 'एक लाख किक्कार सोना और दस लाख किक्कार चांदी'। + मूल में, 'जीना'

23 : 1 1 रा 1 : 33 23 : 13 नि 28 : 1

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

महली के ये पुत्र थे: एलआजर और कीश।
22जब एलआजर की मृत्यु हुई तब उसके पुत्र
नहीं वरन् पुत्रियां थीं। कीश के पुत्रों ने, जो
उनके चचेरे भाई-बन्धु थे, उनके साथ विवाह
किया। 23 मूशी के तीन पुत्र थे: महली, एदेर
और यरेमोत।

24 लेवीय पितृकुलों के परिवार के ये ही
मुखिया थे। इनकी आयु बीस वर्ष तथा इससे
अधिक थी। इनका नाम पंजीकृत किया गया
था। इन्हें प्रभु-भवन के सेवा-कार्यों का दायित्व
सौंपा गया था। 25दाऊद ने यह कहा था,
'इस्राएली राष्ट्र के प्रभु परमेश्वर ने अपने निज
लोगों को, हमें, युद्ध से विश्राम प्रदान किया है।
प्रभु यरूशलेम नगर में सदा के लिए निवास
करता है। 26 अत: अब लेवीय उप-पुरोहितों
को प्रभु के शिविर, तथा उसकी आराधना में
प्रयुक्त होने वाली वस्तुओं को ढोने की
आवश्यकता नहीं रही।' (27दाऊद के अन्तिम
आदेश से बीस वर्ष तथा उससे अधिक आयु के
लेवी कुल के पुरुषों की गणना की गई।)
28'अब ये मन्दिर में प्रभु की आराधना के लिए
हारून के वंशजों—पुरोहितों—की सहायता
करेंगे। ये भवन के आंगनों और कक्षों का
दायित्व संभालेंगे। पवित्र पात्रों को धोएंगे।
वस्तुत: ये परमेश्वर के भवन के सब सेवा-
कार्य करेंगे। 29ये इन कार्यों में भी सहायता
करेंगे: भेंट की रोटी तैयार करना; अन्न-बलि
का आटा पीसना; बेखमीर रोटी की पपड़ियां,
भुंजे हुए अन्न की भेंट, तेल मिश्रित भेंट, आदि
की देख-भाल करना। इनके अतिरिक्त लेवीय
उपपुरोहित मन्दिर की वस्तुओं को नापने और
तोलने का कार्य करेंगे। 30वे प्रतिदिन प्रात: और
संध्या समय प्रभु के सम्मुख खड़े होकर प्रभु की
सराहना और स्तुति करेंगे। 31इसके अतिरिक्त
जब विश्राम-दिवस पर, नवचन्द्र पर्व पर तथा
अन्य पर्वों पर अन्न-बलि चढ़ायी जाएगी, तब
जितने उप-पुरोहितों की आवश्यकता पड़ेगी
उतने उप-पुरोहित प्रभु के सम्मुख नियमित
रूप से उपस्थित होंगे।

32 'इस प्रकार वे मिलन-शिविर तथा
पवित्र-स्थान का दायित्व संभालेंगे। वे मन्दिर
में प्रभु की आराधना में पुरोहितों की, अपने
चचेरे भाई-बन्धुओं, हारून के वंशजों की
सहायता करेंगे।'

पुरोहितों के दल

24 हारून के वंशजों के दल इस प्रकार थे।
हारून के ये पुत्र थे: नादाब, अबीहू,
एलआजर और ईतामार। 2नादाब और अबीहू
की मृत्यु उनके पिता के पूर्व हो गई थी। उनके
कोई पुत्र न था। इसलिए एलआजर और
ईतामार पुरोहित के पद पर नियुक्त हुए।
3एलआजर के वंशज सादोक और ईतामार के
वंशज अहीमेलेक की सहायता से दाऊद ने
पुरोहित के सेवा-कार्यों को सम्पन्न करने के
लिए हारून के वंशजों का पुन: संगठन किया।
4एलआजर के वंशजों में ईतामार के वंशजों की
अपेक्षा अधिक संख्या में अगुए थे। उनको दलों
में इस प्रकार बांटा गया: एलआजर वंश के
पितृकुलों के सोलह और ईतामार वंश के आठ
अगुए नियुक्त किये गए। 5दाऊद ने चिट्ठी डालकर
उनको दलों में संगठित किया था। सबका ऐसा
ही निर्वाचन किया गया था, क्योंकि एलआजर
और ईतामार दोनों के वंशजों में पवित्र-स्थान
के अधिकारी तथा परमेश्वर के अधिकारी थे।
6लेवी कुल के उप-पुरोहित लिपिक शमयाह
बेन-नतनएल ने राजा एवं दरबारियों के सम्मुख,
पुरोहित सादोक एवं अहीमेलेक बेन-अबीयातार
के सम्मुख तथा पुरोहितों और उप-पुरोहितों के
पितृकुलों के अगुओं के सम्मुख उनके नाम
लिखे। एलआजर वंश से एक पुरोहित-परिवार
तथा ईतामार के वंश से एक पुरोहित-परिवार
चुना गया।

7 पहली चिट्ठी यहोयारीब के नाम पर तथा
दूसरी चिट्ठी यदयाह के नाम पर निकली।
8तीसरी हारीम के नाम पर और चौथी सोरीन
के नाम पर निकली। 9पांचवीं मलकियाह के
तथा छठी मिय्यामीन के नाम पर निकली।
10सातवीं हक्कीस के तथा आठवीं अबिय्याह

23 : 26 व्य 10 : 8 23 : 32 गण 3 : 6 24 : 1 लेव 10 : 1; गण 3 : 2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

के नाम पर निकली। 11नौवीं येशुअ के तथा
दसवीं शकनायाह के नाम पर निकली।
12ग्यारहवीं एलयाशीब के तथा बारहवीं याकीम
के नाम पर निकली। 13तेरहवीं हूप्पाह के तथा
चौदहवीं येशेबआब के नाम पर निकली।
14पन्द्रहवीं बिलगाह के तथा सोलहवीं इम्मेर
के नाम पर निकली। 15सत्रहवीं हेजीर के तथा
अठारहवीं हप्पिस्सेस के नाम पर निकली।
16उन्नीसवीं पतहयाह के तथा बीसवीं यहेजकेल
के नाम पर निकली 17इक्कीसवीं याकीन के
तथा बाईसवीं गामूल के नाम पर निकली।
18तेईसवीं दलायाह के और चौबीसवीं मअजयाह
के नाम पर निकली। 19पुरोहित के सेवा-कार्यों
को सम्पन्न करने के लिए उनका दल-विभाजन
यही था। वे इसी क्रम में प्रभु के भवन में प्रवेश
करते थे। जो प्रथा उनके पूर्वज पुरोहित हारून
ने स्थापित की थी और जिसको मानने का
आदेश इस्राएल के प्रभु परमेश्वर ने उसको
दिया था, वह यही थी।
20 लेवी-कुल के शेष उप-पुरोहित ये थे।
अम्राम के पुत्रों में से शूबाएल। शूबाएल के
पुत्रों में से यहदयाह। 21रहबयाह के पुत्रों में से
ज्येष्ठ पुत्र यिश्शियाह चुना गया। 22यिसहार के
वंश में से शलोमोत, शलोमोत के पुत्रों में से
यहत। 23हेब्रोन के पुत्रों में से ज्येष्ठ पुत्र
यरिय्याह, दूसरा अमरयाह, तीसरा यहजीएल,
चौथा यकमआम। 24ऊज्जीएल के पुत्रों में से
मीकाह। मीकाह के पुत्रों में से शामीर ।
25मीकाह का भाई यिश्शियाह था। यिश्शियाह
के पुत्रों में से जकर्याह। 26मरारी के ये पुत्र थे:
महली और मूशी। यअजियाह के ये पुत्र थे:
बनो*-27वह मरारी के पुत्रों में नहीं वरन्
यअजियाह का ही पुत्र था—; उसके अन्य पुत्र
थे: शोहाम, जक्कूर और इबरी। 28महली के
पुत्रों में से एलआजर । किन्तु एलआजर का
कोई पुत्र नहीं हुआ। 29कीश के पुत्रों में से
यरहमएल। 30मूशी के ये पुत्र थे: महली, एदेर
और यरीमोत। अपने-अपने पितृकुल के अनुसार
लेवी कुल के ये ही वंशज थे। 31इन्होंने भी,
हारून-वंशीय अपने चचेरे भाई-बन्धुओं के
समान, राजा दाऊद, पुरोहित सादोक,
अहीमेलेक, पुरोहितों और उप-पुरोहितों के
पितृकुलों के अगुओं के सम्मुख चिट्ठी डालकर
नाम निकाले। इस प्रकार ज्येष्ठ और कनिष्ठ पुत्रों
ने पितृकुलों के नाम चुनने के लिए साथ ही साथ
चिट्ठियां डालीं।

संगीतकारों के विभिन्न दल

25 दाऊद और उच्चाधिकारियों ने+ आसाफ,
हेमान और यदूतून के कुछ पुत्रों को
विशेष सेवा-कार्यों के लिए नियुक्त किया।
इनका कार्य वीणा, सारंगी और झांझ बजाते हुए
नबूवत करना था। जो व्यक्ति मन्दिर में यह
सेवा-कार्य करते थे, उनके नाम इस प्रकार हैं:
2आसाफ के पुत्र: जक्कूर, योसेप, नतन्याह
और अशरएलाह। आसाफ के ये पुत्र आसाफ
के ही निर्देशन में सेवा-कार्य करते थे। आसाफ
राजा के अधीन नबूवत करता था। 3ये यदूतून
के पुत्र थे: गदलयाह, सरी, यशायाह, शिमई,
हशबयाह और मत्तित्याह। ये छः पुत्र अपने
पिता यदूतून के अधीन सेवा-कार्य करते थे।
यदूतून प्रभु की सराहना और स्तुति में आराधना
के अवसर पर वीणा बजाता और नबूवत करता
था। 4हेमान के ये पुत्र थे: बुक्कियाह, मत्तन्याह,
ऊज्जीएल, शबूएल, यरीमोत, हनन्याह, हनानी,
एलीआताह, गिद्दलती, रोममतीएजेर,
योशबकाशाह, मल्लोती, होतीर और महजीओत।
5ये ही हेमान के पुत्र थे। हेमान राजा का द्रष्टा
था और उसे परमेश्वर के वचन के अनुसार ये
पुत्र प्राप्त हुए थे कि वे परमेश्वर की महिमा को
उन्नत और समृद्ध करें। परमेश्वर ने हेमान को
चौदह पुत्र और तीन पुत्रियां प्रदान की थीं। 6ये
सब अपने पिता के निर्देशन में प्रभु के भवन में
आराधना के समय झांझ, सारंगी और वीणा
बजाते थे। आसाफ, यदूतून और हेमान राजा
के अधीन सेवा-कार्य करते थे। 7उनके साथ
उनके चचेरे भाई-बहिन भी थे जो प्रभु के लिए
गीत गाने में प्रशिक्षित थे। वे कुशल गायक
थे। उनकी कुल संख्या दो सौ अट्ठासी थी।

* इस नाम का अर्थ 'इसका पुत्र' है, इसलिए अगले पद में इसका स्पष्टीकरण हुआ। + शब्दशः, 'सेनानायकों ने'।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
8उन्होंने, छोटे-बड़े, गुरु-शिष्य ने सेवा-कार्य
की अपनी बारी निश्चित करने के लिए चिट्ठी
निकाली।
9 आसाफ के परिवार में पहली चिट्ठी योसेप
के नाम पर निकली। दूसरी चिट्ठी गदलयाह के
नाम पर निकली। वह और उसके भाई तथा
उसके पुत्र कुल मिलाकर बारह जन थे।
10तीसरी चिट्ठी जक्कूर के नाम पर निकली।
वह और उसके पुत्र और भाई कुल मिलाकर
बारह जन थे। 11चौथी चिट्ठी यिस्री के नाम पर
निकली। उसके पुत्र और भाई कुल मिलाकर
बारह जन थे। 12पांचवीं चिट्ठी नतनयाह के नाम
पर निकली। उसके पुत्र और भाई कुल
मिलाकर बारह जन थे। 13छठी चिट्ठी बूक्कियाह
के नाम पर निकली। इसके पुत्र और भाई कुल
मिलाकर बारह जन थे। 14सातवीं चिट्ठी
यसरएलाह के नाम पर निकली। उसके पुत्र
और भाई कुल मिलाकर बारह जन थे।
15आठवीं चिट्ठी यशायाह के नाम पर निकली।
उसके पुत्र और भाई कुल मिलाकर बारह जन
थे। 16नौवीं चिट्ठी मत्तन्याह के नाम पर
निकली। उसके पुत्र और भाई कुल मिलाकर
बारह जन थे। 17दसवीं चिट्ठी शिमई के नाम पर
निकली। उसके पुत्र और भाई कुल मिलाकर
बारह जन थे। 18ग्यारहवीं चिट्ठी अजरएल के
नाम पर निकली। उसके पुत्र और भाई कुल
मिलाकर बारह जन थे। 19बारहवीं चिट्ठी
हशबयाह के नाम पर निकली। उसके पुत्र और
भाई कुल मिलाकर बारह जन थे। 20तेरहवीं चिट्ठी
शूबाएल के नाम पर निकली। उसके पुत्र और
भाई कुल मिलाकर बारह जन थे। 21चौदहवीं
चिट्ठी मत्तित्याह के नाम पर निकली। उसके पुत्र
और भाई कुल मिलाकर बारह जन थे।
22पन्द्रहवीं चिट्ठी यरेमोत के नाम पर निकली।
उसके पुत्र और भाई कुल मिलाकर बारह जन
थे। 23सोलहवीं चिट्ठी हनन्याह के नाम पर
निकली। उसके पुत्र और भाई कुल मिलाकर
बारह जन थे। 24सत्रहवीं चिट्ठी योशबकशह के
नाम पर निकली। उसके पुत्र और भाई कुल
मिलाकर बारह जन थे। 25अठारहवीं चिट्ठी
हनानी के नाम पर निकली। उसके पुत्र और
भाई कुल मिलाकर बारह जन थे। 26उन्नीसवीं
चिट्ठी मल्लोती के नाम पर निकली। उसके पुत्र
और भाई कुल मिलाकर बारह जन थे।
27बीसवीं चिट्ठी एलियातह के नाम पर निकली।
उसके पुत्र और भाई कुल मिलाकर बारह जन
थे। 28इक्कीसवीं चिट्ठी होतीर के नाम पर
निकली। उसके पुत्र और भाई कुल मिलाकर
बारह जन थे। 29बाईसवीं चिट्ठी गिद्दलती के
नाम पर निकली। उसके पुत्र और भाई कुल
मिलाकर बारह जन थे। 30तेईसवीं चिट्ठी
महजीओत के नाम पर निकली। उसके पुत्र
और भाई कुल मिलाकर बारह जन थे।
31चौबीसवीं चिट्ठी रोममतीएजेर के नाम पर
निकली। उसके पुत्र और भाई कुल मिलाकर
बारह जन थे।

द्वारपालों के दल

26 मन्दिर के द्वारपालों के दलों के नाम इस
प्रकार थे: कोरह के वंश में से:
मशेलेम्याह जो कोरे का पुत्र और एबयासाफ
का पौत्र था। 2मशेलेम्याह के ये पुत्र थे: जकर्याह
जो ज्येष्ठ पुत्र था; दूसरा पुत्र यदीअएल, तीसरा
पुत्र जबद्याह, चौथा यातनीएल, 3पांचवां एलाम,
छठा यहोहानान और सातवां एलहोएनई। 4
ओबेद-एदोम के भी पुत्र हुए थे। उनके नाम
इस प्रकार हैं: ज्येष्ठ पुत्र शमअयाह, दूसरा पुत्र
यहोजाबाद, तीसरा योआह, चौथा साकार,
पांचवां नतनएल, 5छठा अम्मीएल, सातवां
इस्साकार और आठवां पऊल्लतई। इस प्रकार
परमेश्वर ने उसे आशिष दी थी। 6ओबेद-एदोम
के पुत्र शमअयाह के भी पुत्र उत्पन्न हुए थे। वे
अत्यन्त शक्तिशाली पुरुष थे। अतः वे अपने
पितृकुलों के शासक थे। 7उनके नाम इस प्रकार
थे: ओतनी, रपाएल, ओबेद, एलजाबाद तथा
एलजाबाद के भाई एलीहू और समक्याह । ये
दोनों भी शक्तिशाली पुरुष थे। 8ये सब पुत्र,
तथा उनके पुत्र, और उनके चचेरे भाई-बन्धु
ओबद-एदोम के परिवार के सदस्य थे। ये

26 : 5 2 शम 6 : 11

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शक्तिशाली पुरुष थे और मन्दिर के सेवा-कार्य
के लिए सर्वथा उपयुक्त थे। इनकी कुल संख्या
बासठ थी। 9मशेलेम्याह के पुत्रों और भाइयों
की संख्या अठारह थी। ये भी शक्तिशाली पुरुष
थे।

10 मरारी के वंशज होसाह के भी पुत्र थे:
शिमरी, जो अगुआ था। (यद्यपि वह ज्येष्ठ पुत्र
नहीं था, तो भी उसके पिता ने उसको अगुआ
बना दिया था।) 11दूसरा पुत्र हिल्किय्याह था,
तीसरा टबल्याह और चौथा जकर्याह था।
होसाह के पुत्र और भाई कुल मिलाकर तेरह
जन थे।

12 पितृकुलों के अगुओं से ही द्वारपालों के
दल संगठित किये गए थे। ये अपने चचेरे भाई-
बन्धुओं के साथ प्रभु के भवन में सेवा-कार्य
करते थे। 13उन्होंने सेवा-कार्य के लिए चिट्ठी
डालकर द्वारों का चुनाव किया था। छोटे-बड़े,
एक परिवार के बाद दूसरे परिवार ने चिट्ठी
निकाली थी। 14पूर्वी द्वार के लिए चिट्ठी शेलेम्याह
के नाम पर निकली। उन्होंने उसके पुत्र
जकर्याह के नाम पर भी चिट्ठी निकाली
(जकर्याह बुद्धिमान मन्त्री था।)। उसे उत्तरी
द्वार सौंपा गया। 15दक्षिणी द्वार के लिए ओबेद-
एदोम के नाम पर चिट्ठी निकली। उसके पुत्रों
को भण्डार-गृह सौंपा गया। 16होसाह +के नाम
पर चिट्ठी निकली, और उसको पश्चिमी द्वार
सौंपा गया । पश्चिमी द्वार के साथ उसको
शल्लेकेत नामक द्वार का भी दायित्व सौंपा गया।
यह द्वार चढ़ाई वाले मार्ग पर था। द्वारपालों के
समान ये पहरेदार भी थे: 17पूर्वी द्वार पर छ:
लेवीय पहरेदार थे, जो प्रतिदिन पहरा देते थे।
उत्तरी द्वार पर चार थे। वे भी प्रतिदिन पहरा देते
थे। दक्षिणी द्वार पर चार पहरेदार नियुक्त थे, जो
प्रतिदिन पहरा देते थे। दोनों भण्डारगृहों के दो-
दो पहरेदार थे। 18पश्चिमी-द्वार के स्तम्भों वाले
बरामदे के मार्ग के लिए चार पहरेदार थे। दो
पहरेदार स्तम्भावलि के लिए थे। 19कोरह तथा
मरारी वंशजों के ये ही दल थे, जो द्वारपाल और
पहरेदार थे।

उप-पुरोहितों के अन्य कार्य

20 इनके चचेरे भाई-बन्धु*, जो लेवी कुल
के और उप-पुरोहित थे, परमेश्वर के भवन के
कोषों तथा भवन में चढ़ाई गई वस्तुओं के
कोषागारों का दायित्व संभालते थे। 21लदान के
वंशज—अर्थात् गेर्शोन का पितृकुल, जिसका
मुखिया लदान का पुत्र यहीएल** था— 22
जेताम तथा उसका भाई योएल प्रभु-भवन के
कोषागारों के अधिकारी थे। 23अम्राम, यिसहार,
हेब्रोन और ऊज्जीएल के वंशजों पर 24शबूएल
नियुक्त किया गया था। यह मूसा के पुत्र गेर्शोम
के वंश का था। यह कोषागारों का मुख्य
अधिकारी था। 25उसके भाई एलीएजेर के
वंशज ये थे: एलीएजेर का पुत्र रहबयाह,
रहबयाह का पुत्र यशायाह, यशायाह का पुत्र
योराम, योराम का पुत्र जिकरी, जिकरी का पुत्र
शलोमोत। 26शलोमोत और उसके भाई उस
अर्पित कोषागार के अधिकारी थे, जिसको
राजा दाऊद ने, पितृकुलों के नेताओं, सहस्र
सैनिकों के नायकों, सौ सैनिकों के नायकों और
सेनापतियों ने प्रभु को अर्पित किया था। 27जो
युद्ध उन्होंने जीते थे, उनकी लूट में से उन्होंने
प्रभु के भवन की मरम्मत-कार्य के लिए भेंट
अर्पित की थी। 28इनके अतिरिक्त जो भेंटें द्रष्टा
शमूएल, शाऊल बेन-कीश, अबनेर बेन-नेर,
योआब बेन-सरूयाह ने अर्पित की थी, उनके
भी वे अधिकारी थे। वस्तुत: शलोमोत और
उसके भाई समस्त अर्पित भेंटों के अधिकारी
थे।

लिपिक और न्यायाधीश

29 यिसहार के वंश में से कनन्याह तथा
उसके पुत्रों को इस्राएली राज्य के राज-काज
को संभालने के लिए नियुक्त किया गया। ये
लिपिक और न्यायाधीश थे। 30 हेब्रोन के वंश
के हशबयाह तथा उसके चचेरे भाई-बन्धु जो
शक्तिशाली थे, और जिनकी कुल संख्या सत्रह
सौ थी, यर्दन नदी के पश्चिमी क्षेत्र में इस्राएली
राज्य का प्रशासन-कार्य संभालते थे। उनके
दायित्व के अन्तर्गत धार्मिक तथा राजकीय

+ मूल में, ''शूप्पिम और होसाह'' * मूल में 'अहिय्याह' ** मूल में अस्पष्ट

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कार्य से सम्बन्धित सब कार्य थे। 31 हेब्रोन के
वंशजों में यरियाह मुखिया था। (दाऊद के
राज्य-काल के चालीसवें वर्ष हेब्रोन वंशजों के
पारिवारिक इतिहास की खोज की गई थी।
तब महाशक्तिशाली पुरुषों के नामों का पता
चला। ये गिलआद क्षेत्र के गेजेर नगर के
थे।) 32 उसके चचेरे भाई-बन्धु भी शक्तिशाली
थे। उनकी संख्या दो हजार सात सौ थी। वे
अपने पितृकुलों के मुखिया थे। राजा दाऊद ने
धार्मिक तथा राजकीय कार्यों के लिए उन्हें
रूबेन और गाद कुलों तथा अर्ध-मनश्शे गोत्र
के लोगों पर नियुक्त किया था।

दाऊद के उच्चाधिकारी

27 इस्राएली राज्य के उच्चाधिकारियों की
नाम-सूची: ये अधिकारी पितृकुलों के
मुखिया, सहस्त्र सैनिकों के नायक , सौ सैनिकों
के नायक और प्रशासक थे, जो समस्त
राजकीय कार्यों के लिए मास-प्रति-मास पूरे
वर्ष अपने-अपने विभाग के अनुसार आया -
जाया करते थे। प्रत्येक विभाग में चौबीस हजार
व्यक्ति थे।

2 पहले माह के पहले विभाग का अध्यक्ष
याशोबआम बेन-जबदीएल था। उसके विभाग
में चौबीस हजार कर्मचारी थे। 3 वह पेरेस के
वंश का था। वह पहले महीने में मन्दिर के सभी
नायकों का प्रधान था। 4 दूसरे माह के विभाग
का अध्यक्ष एलआजर बेन-दोदई था+। वह
अहोह नगर का रहने वाला था। उसके विभाग
में चौबीस हजार कर्मचारी थे। 5 तीसरे माह में
तीसरे विभाग का अध्यक्ष सेनापति बनायाह था,
जो पुरोहित यहोयादा का पुत्र था। उसके
विभाग में चौबीस हजार कर्मचारी थे। 6 यह वही
बनायाह था जो तीस योद्धाओं में एक था और
उन्हीं तीस योद्धाओं का नायक था। उसका पुत्र
अम्मीजाबाद उसके विभाग में सम्मिलित था।
7 चौथे माह के चौथे विभाग का अध्यक्ष
असाएल था। यह योआब का भाई था। उसके
विभाग में चौबीस हजार कर्मचारी थे। उसके
बाद उसका पुत्र जबद्याह अध्यक्ष हुआ। 8 पांचवें
माह के पांचवें विभाग का अध्यक्ष शम्हूत था।
वह यिजराह नगर का रहने वाला था। उसके
विभाग में चौबीस हजार कर्मचारी थे। 9 छठे
माह के छठे विभाग का अध्यक्ष ईराह था, जो
तकोअ नगर के रहने वाले इक्केश का पुत्र था।
उसके विभाग में चौबीस हजार कर्मचारी थे।
10 सातवें माह के सातवें विभाग का अध्यक्ष
पलोन नगर का हेलेस था। वह एफ्रइम गोत्र का
था। उसके विभाग में चौबीस हजार कर्मचारी
थे। 11 आठवें माह के आठवें विभाग का
अध्यक्ष सिब्बकई था। वह हूशाह नगर का
रहनेवाला था, और जराह वंश का था। उसके
विभाग में चौबीस हजार कर्मचारी थे। 12 नौवें
माह के नौवें विभाग का अध्यक्ष अबीएजर था।
वह अनातोत नगर का रहने वाला था। वह
बिन्यामिन कुल का था । उसके विभाग में
चौबीस हजार कर्मचारी थे। 13 दसवें माह के
दसवें विभाग का अध्यक्ष महरई था। वह
नटाफाह नगर का रहनेवाला था। वह जराह वंश
का था। उसके विभाग में चौबीस हजार
कर्मचारी थे। 14 ग्यारहवें माह के ग्यारहवें विभाग
का अध्यक्ष बनायाह था। वह पिर्आतोन नगर
का रहने वाला था। वह एफ्रइम गोत्र का था।
उसके विभाग में चौबीस हजार कर्मचारी थे।
15 बारहवें माह के बारहवें विभाग का अध्यक्ष
हेलदई था। वह नटाफाह नगर का रहने वाला
था। वह ओतनीएल वंश का था । उसके विभाग
में चौबीस हजार कर्मचारी थे।

16 ये व्यक्ति इस्राएली राष्ट्र के विभिन्न कुलों
के लिए प्रशासक थे: रूबेन कुल के लिए
एलीएजर बेन-जिकरी। शिमोन कुल के लिए
शफटयाह बेन-मअकाह। 17 लेवी कुल के लिए
अशबयाह बेन-कमूएल। हारून के वंशजों के
लिए सादोक। 18 यहूदा कुल के लिए एलीहू।
यह दाऊद का भाई था। इस्साकार कुल के लिए
ओमरी बेन-मीखाएल। 19 जबूलून कुल के लिए
यिशमयाह बेन-ओबद्याह। नफ्ताली कुल के

+ पाठसुधार, मूल में ये शब्द भी मिलते हैं ''और उसके विभाग का अगुआ मिक्लोत''

27 : 7 2 शम 2 : 18-23

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लिए यहीमोत बेन-अजरीएल।
20एफ्रइम गोत्र के लिए होशेअ बेन-अजज्या। मनश्शे के अर्ध-गोत्र के लिए योएल बेन-पदायाह।
21गिलआद क्षेत्र में बसे शेष अर्ध-मनश्शे गोत्र के लिए यिद्दो बेन-जकर्याह। बिन्यामिन कुल के लिए यअसीएल बेन-अब्नेर।
22दान कुल के लिए अजराएल बेन-यरोहाम। इस्राएली राष्ट्र के कुलों के ये ही मुखिया थे।

23 दाऊद ने उन युवकों की गणना नहीं की थी जिनकी आयु बीस वर्ष से कम थी। प्रभु ने वचन दिया कि वह इस्राएली राष्ट्र की आबादी को आकाश के तारों के समान असंख्य बनाएगा।
24यद्यपि योआब बेन-सरूयाह ने युवकों की गणना का कार्य आरम्भ किया था, परन्तु वह उसको पूरा न कर सका। उसके इस कार्य के कारण इस्राएली राष्ट्र पर विपत्ति आ पड़ी। अत: यह जनसंख्या राजा दाऊद के इतिहास-ग्रन्थ में नहीं लिखी गई।

25 राज-भण्डारगृहों का अध्यक्ष अजमावेत बेन-अदीएल था। गांवों, नगरों और किलों के भण्डार-गृहों का अध्यक्ष योनातन बेन-ऊज्जियाह था।
26जो भूमि को जोतने और अनाज को बोने का काम करते थे, उनका अधिकारी एजरी बेन-कलूब था।
27अंगूर उद्यानों में काम करनेवालों का अधिकारी शिमई था। वह रामाह नगर का रहने वाला था। अंगूर-उद्यानों की फसल को सुरागारों के लिए सुरक्षित रखने वालों का अधिकारी जब्दी था, जो शपेम नगर का रहने वाला था।
28शपेलाह मैदान के जैतून और गूलर वृक्षों का वन-निरीक्षक बअल-हानान था, जो गेदेर नगर का निवासी था। तेल-भण्डार गृहों का अधिकारी योआश था।
29शारोन चरागाहों के पशुओं का अधिकारी शिटरई था। यह शारोन का रहने वाला था। जो पशु घाटी के चरागाह में थे, उनका अधिकारी शापाट बेन-अदलाय था।
30ऊंटों का अधिकारी ओबील, और गदहों का अधिकारी येहदयाह था। ओबील यिश्माएली जाति का था। येहदयाह मेरोनोत नगर का निवासी था। भेड़-बकरियों का अधिकारी याजीज था, जो हगर नगर का निवासी था।
31ये व्यक्ति राजा दाऊद की सब प्रकार की धन-सम्पत्ति के अधिकारी थे।

32 दाऊद का भतीजा योनातन मन्त्री था। वह समझदार था। वह राजा का सचिव था। वह और हकमोन नगर का निवासी+ यहीएल राजपुत्रों के शिक्षक थे।
33अहीतोपेल राजमन्त्री था। अर्की का निवासी हूशई राज-मित्र था।
34अहीतोपेल की मृत्यु के बाद यहोयादा बेन-बनायाह और एबयातर मन्त्री नियुक्त किए गए थे। योआब राजा का सेनापति था।

सुलेमान को मन्दिर- निर्माण की योजना सौंपना

28 दाऊद ने यरूशलेम नगर में इस्राएली राष्ट्र के सब उच्चाधिकारियों को एकत्र किया। ये विभिन्न कुलों के मुखिया, राजा की शासकीय सेवा में संलग्न विभिन्न विभागों के अध्यक्ष, हजार-हजार सैनिक दलों के नायक, सौ-सौ सैनिक दलों के नायक, राजकीय धन-सम्पत्ति के कोषाध्यक्ष, राजा और राजपुत्रों की पशु-शालाओं के अधिकारी थे। इनके अतिरिक्त खोजा, योद्धा और सशक्त सैनिक यरूशलेम नगर में एकत्र हुए।
2तब राजा दाऊद खड़ा हुआ। उसने कहा, 'ओ मेरे भाइयो, मेरे निज लोगो! मेरी यह हार्दिक इच्छा थी कि मैं अपने परमेश्वर के चरणों की चौकी के लिए, प्रभु की विधान-मंजूषा के लिए एक भवन बनाऊं, जहां वह प्रतिष्ठित की जा सके। मैंने भवन-निर्माण के लिए तैयारी कर ली है।
3परन्तु परमेश्वर ने मुझसे यह कहा, "तू मेरे नाम की प्रतिष्ठा के लिए भवन नहीं बनाएगा; क्योंकि तू युद्ध करने वाला सैनिक था। तूने रक्त बहाया है।"
4इस्राएली राष्ट्र के प्रभु परमेश्वर ने मेरे पिता के समस्त परिवारों में से मुझे चुना और मुझे सदा-सर्वदा के लिए इस्राएल देश का राजा बनाया। उसके प्रशासक के रूप में इस्राएली कुलों में से यहूदा कुल को चुना, और यहूदा कुल के सब परिवारों में से मेरे पिता को। वह मुझसे प्रसन्न

+ शब्दश: 'किसी हकमोनी का पुत्र'

27 : 23 उत 15 : 5 27 : 24 2 शम 24 : 15 28 : 2 2 शम 7 : 2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हुआ, और उसने समस्त इस्राएल देश का राजा
बनाने के लिए मेरे पिता के पुत्रों में से मुझे चुना।
5प्रभु ने मुझे अनेक पुत्र दिए। उसने मेरे सब पुत्रों
में से सुलेमान को चुना कि वह प्रभु के राज-
सिंहासन पर बैठे; क्योंकि इस्राएल देश पर प्रभु
का ही राज्य है। 6प्रभु ने मुझसे कहा, "तेरा पुत्र
सुलेमान मेरे भवन और आंगनों का निर्माण
करेगा; क्योंकि मैंने उसको अपना पुत्र बनाने के
लिए चुना है। मैं उसका पिता बनूंगा। 7यदि वह
मेरी आज्ञाओं और न्याय-सिद्धान्तों का
दृढ़तापूर्वक पालन करेगा, जैसा वह आजकल
कर रहा है, तो मैं उसके राज्य को सदा सुदृढ़
रखूंगा।" 8इसलिए अब समस्त इस्राएली राष्ट्र
के सम्मुख, प्रभु की धर्मसभा के सम्मुख, अपने
परमेश्वर को सुनाते हुए मैं तुम्हें यह आदेश दे
रहा हूँ: प्रभु परमेश्वर की समस्त आज्ञाओं की
ओर ध्यान दो, और उनका पालन करो। तब तुम
इस उत्तम देश पर अधिकार कर सकोगे, और
इसको अपने बाद स्थायी पैतृक-भूमि के रूप
में अपनी सन्तान के लिए छोड़ जाओगे।

9 'ओ मेरे पुत्र सुलेमान, अपने पिता के
परमेश्वर का अनुभव कर,* और अपने सम्पूर्ण
हृदय और प्रसन्न चित्त से उसकी सेवा कर। प्रभु
हृदय को परखता है। वह हर एक योजना और
विचार को जानता है। यदि तू उसको खोजेगा
तो वह तुझको प्राप्त होगा। परन्तु यदि तू उसको
त्याग देगा, तो वह तुझे सदा के लिए त्याग देगा।
10अब ध्यान दे! प्रभु ने तुझे चुना है ताकि तू
पवित्र स्थान के लिए एक भवन का निर्माण
करे। शक्तिशाली बन, और यह निर्माण-कार्य
आरम्भ कर!'

11 दाऊद ने अपने पुत्र सुलेमान को भवन
की ड्योढ़ी, भवन-कक्षों, भण्डार-गृहों, उपरले
कक्षों, अन्तर्गृहों, और दया-आसन के कक्ष का
नमूना दिया। 12इनके अतिरिक्त उसके मस्तिष्क
में प्रभु-भवन के आंगनों, चहुंओर के कक्षों,
प्रभु-भवन के भण्डार-गृहों तथा प्रभु को
अर्पित भेंटों के लिए निर्मित भण्डार-गृहों का
नमूना था। यह भी उसने सुलेमान को बताया।
13उसने सुलेमान को पुरोहितों और उप-
पुरोहितों के विभिन्न दलों, प्रभु-भवन की
आराधना-व्यवस्था के विषय में भी बताया।
उसने प्रभु-आराधना में प्रयुक्त होने वाले पात्रों
के विषय में बताया। 14उसने हरएक आराधना
में प्रयुक्त होने वाले समस्त स्वर्ण-पात्रों के
स्वर्ण की मात्रा निर्धारित की। इसी प्रकार
प्रत्येक आराधना में प्रयुक्त होने वाले सब चांदी
के पात्रों की चांदी की मात्रा निर्धारित की।
15उसने बताया कि स्वर्ण दीपाधारों और उनके
दीपकों में कितना सोना लगेगा। इसी प्रकार
चांदी के दीपाधारों और उनके दीपकों में
कितनी चांदी लगेगी। यह मात्रा प्रत्येक दीपक
के आराधना में प्रयोग के आधार पर निर्धारित
की गई। 16दाऊद ने निम्नलिखित वस्तुओं में
लगने वाले सोने और चांदी की मात्रा भी
निर्धारित की : भेंट की रोटी की स्वर्ण-मेजों का
सोना, और चांदी की मेजों की चांदी; 17कांटों,
कटोरों और प्यालों का शुद्ध सोना;स्वर्ण-
कटोरियों का सोना; चांदी की कटोरियों की
चांदी; 18शुद्ध सोने की धूप-वेदी का सोना।
दाऊद ने प्रभु की विधान-मंजूषा के ऊपर पंख
फैलाए हुए करूबों के स्वर्ण-रथ के नमूने में
लगने वाले सोने की मात्रा भी निर्धारित की।
19दाऊद ने कहा, 'यह स्वयं प्रभु ने अपने हाथ
से लिखकर निर्धारित किया था। मैंने सिर्फ इस
निर्धारण के अनुसार कार्य किया ।'

20 तब दाऊद ने अपने पुत्र सुलेमान से यह
कहा, 'शक्तिशाली बन! साहस कर ! और
निर्माण-कार्य कर। मत डर, और न निराश हो।
प्रभु परमेश्वर, मेरा परमेश्वर तेरे साथ है। जब
तक प्रभु की आराधना के लिए भवन-निर्माण
का कार्य समाप्त नहीं होगा, वह तुझे नहीं
छोड़ेगा और न ही तेरा त्याग करेगा। 21देख,
पुरोहितों और उप-पुरोहितों के ये विभिन्न दल
हैं, जो भवन में परमेश्वर के आराधना-कार्य
को सम्पन्न करेंगे। इनके अतिरिक्त निर्माण-
कार्य में दक्ष प्रत्येक व्यक्ति सब कार्यों में
प्रसन्नतापूर्वक तुझे सहयोग देगा। सब शासकीय

* अथवा, 'परमेश्वर को जान', या 'परमेश्वर का ज्ञान प्राप्त कर'

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कर्मचारी तथा समस्त जनता तेरे आदेशों का
पालन करेगी।'

प्रभु-भवन के लिए भेंट

29 राजा दाऊद ने समस्त धर्मसभा से यह
कहा, 'मेरे पुत्र सुलेमान को ही परमेश्वर
ने चुना है। परन्तु सुलेमान अभी किशोर है। उसे
इस प्रकार के काम का अनुभव नहीं है। प्रभु-
भवन का निर्माण-कार्य भारी है। यह भवन
मनुष्य के लिए नहीं वरन् प्रभु परमेश्वर के लिए
बनेगा। 2मैंने अपने सामर्थ्य के अनुसार अपने
परमेश्वर के भवन के लिए सोना-चांदी,
लोहा-पीतल, इमारती लकड़ी, मणि-मुक्ता,
संगमरमर आदि इकट्ठा कर दिया है: स्वर्ण-
पात्रों के लिए सोना, चांदी के पात्रों के लिए
चांदी, कांस्य-पात्रों के लिए कांस्य, लोहे की
वस्तुओं के लिए लोहा, लकड़ी की वस्तुओं के
लिए इमारती लकड़ी; इनके अतिरिक्त सुलेमानी
पत्थर, जड़ने के लिए मणि, पच्चीकारी के लिए
विभिन्न रंगों के नग, सब प्रकार का मणि-मुक्ता
और संगमरमर भी एकत्र किया है। 3प्रभु के
भवन में मेरी गहरी रुचि है, अपने परमेश्वर के
भवन के प्रति मेरी अत्यधिक श्रद्धा है। मेरे पास
सोना-चांदी का निजी कोष है। मैंने पवित्र
मन्दिर के लिए जो कुछ एकत्र किया है, इसके
अतिरिक्त मैं यह निजी कोष अपने प्रभु
परमेश्वर के भवन-निर्माण के लिए अर्पित
करता हूँ। 4सोना- चांदी की मात्रा यह है: एक
लाख किलो सोना-अर्थात् ओपीर* का विशिष्ट
सोना; अढ़ाई लाख किलो शुद्ध चांदी। यह
भवन की दीवार को मढ़ने के लिए है। 5कुशल
कारीगरों के द्वारा तैयार की जाने वाली सोना-
चांदी की वस्तुओं के लिए मैं अपने कोष का
समस्त सोना-चांदी देता हूँ। अब कौन व्यक्ति
आज खुले हाथ से प्रभु को भेंट अर्पित करेगा?'
6 तब पितृकुलों के नेताओं, कुलों के
प्रशासकों, हजार-हजार सैनिकों के नायकों,
सौ-सौ सैनिकों के नायकों तथा शासकीय
अधिकारियों ने स्वेच्छा से भेंट चढ़ाई। 7उन्होंने
परमेश्वर के भवन के सेवा-कार्य के लिए पौने
दो लाख किलो सोना, दस हजार स्वर्ण मुद्राएं,
साढ़े तीन लाख किलो चांदी, छ: लाख किलो
कांस्य तथा पैंतीस लाख किलो लोहा चढ़ाया।
8जिन लोगों के पास मणि-मुक्ता थे, उन्होंने
उनको प्रभु-भवन के कोषागार के अधिकारी
गर्शोन वंशज यहीएल के हाथ में सौंप दिया।
9लोगों ने स्वेच्छा से चढ़ाई गई भेंट के लिए
आनन्द मनाया; क्योंकि उन्होंने मुक्त हृदय से
प्रभु को भेंट चढ़ाई थी। राजा दाऊद ने भी बहुत
आनन्द मनाया।

दाऊद का धन्यवाद प्रकट करना

10 तब दाऊद ने समस्त धर्मसभा के सम्मुख
प्रभु को धन्यवाद दिया। दाऊद ने कहा, 'हे प्रभु,
हमारे पूर्वज इस्राएल के प्रभु परमेश्वर! तू युग-
युगान्त धन्य है। 11तू महान्, शक्तिशाली,
महिमामय और प्रतापी है। तू ही विजय का
स्रोत है। स्वर्ग और पृथ्वी की प्रत्येक वस्तु तेरी
ही है। हे प्रभु, राज्य तेरा ही है। तू सबके ऊपर
उन्नत और सर्वोच्च है। 12धन-वैभव और महिमा
का स्रोत तू ही है। तू सब पर राज्य करता है।
शक्ति और सामर्थ्य तेरे ही हाथ में हैं। सबको
महान बनाना और शक्ति देना तेरे हाथ में है।
13अब हे हमारे परमेश्वर, हम तुझे धन्यवाद देते
और तेरे महिमामय नाम की स्तुति करते हैं।
14 'पर प्रभु, मैं कौन हूँ और मेरी जनता
क्या है कि हम यों स्वेच्छा से तुझे भेंट चढ़ाने
में समर्थ हो सकें? क्योंकि सब वस्तुओं का
स्रोत तू ही है। हमने तुझे तेरी ही वस्तु अर्पित
की है। 15हम अपने पूर्वजों के समान तेरे
सम्मुख विदेशी और प्रवासी हैं। पृथ्वी पर
हमारी आयु छाया के समान है। हमारा यहां
स्थायी निवास-स्थान नहीं है।** 16हे हमारे प्रभु
परमेश्वर, यह सब भेंट, जो हमने तेरे पवित्र
नाम की प्रतिष्ठा के लिए, तेरे भवन के निर्माण
के लिए एकत्र की है, वह हमें तेरे ही हाथ से

* अरब देश के दक्षिण-पूर्वी क्षेत्र अथवा भारत के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र (सोपारा?) में ** अथवा, 'हमारी यहां कोई आशा नहीं है'।

29 : 1 1 इत 22 : 5 29 : 11 मत 6 : 13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्राप्त हुई थी। यह सब तेरा ही है। 17हे मेरे
परमेश्वर ! मैं जानता हूं, तू हृदय को परखता है।
तू निष्कपट हृदय के व्यक्ति से प्रसन्न होता है।
मैं निष्कपट हृदय से यह सब भेंट स्वेच्छापूर्वक
तुझे अर्पित करता हूँ। अब मैंने तेरे निज लोगों
को भी देखा जिन्होंने आनन्दपूर्वक स्वेच्छा से
तुझे भेंट चढ़ाई। 18हमारे पूर्वजों के, अब्राहम,
इसहाक और इस्राएल के प्रभु परमेश्वर ! अपने
निज लोगों के हृदय में ऐसे ही विचार और
भावना सदा-सर्वदा बनाए रख, और अपनी
ओर उनके हृदय को उन्मुख कर। 19मेरे पुत्र
सुलेमान को यह वरदान दे: वह सम्पूर्ण हृदय
से तेरी आज्ञाओं, साक्षियों, संविधियों का
पालन करे और उनके अनुसार आचरण करे।
इस प्रकार वह इस भवन को बना सके जिसके
लिए मैंने तैयारी की है। '

20 दाऊद समस्त धर्मसभा की ओर उन्मुख
हुआ। उसने कहा, 'अपने प्रभु परमेश्वर को
धन्य कहो !' तब धर्मसभा ने अपने पूर्वजों के
प्रभु परमेश्वर को धन्य कहा। उन्होंने अपना
सिर झुकाया, और प्रभु की आराधना की।
उन्होंने राजा को साष्टांग प्रणाम किया। 21दूसरे
दिन धर्मसभा ने प्रभु को बलि चढ़ाई। उन्होंने
प्रभु को बलि में एक हजार बैल, एक हजार मेढ़े
और एक हजार मेमने चढ़ाए। इनके साथ
उन्होंने इनकी पेय-बलि भी चढाई। उन्होंने
समस्त इस्राएली राष्ट्र के लिए बहुत-सी अन्य
बलियां चढ़ायीं। उस दिन उन्होंने प्रभु के
सम्मुख अत्यधिक आनन्द के साथ बलि-भोज
को खाया-पिया।

22 उन्होंने दाऊद के पुत्र सुलेमान को दूसरी
बार राजा घोषित किया। उन्होंने सुलेमान को
प्रभु के अगुए के रूप में अभिषिक्त किया और
पुरोहित के रूप में सादोक का अभिषेक किया।

23 तब सुलेमान अपने पिता दाऊद के स्थान
पर प्रभु के सिंहासन पर राजा के रूप में बैठा।
वह फूला-फला। समस्त इस्राएली राष्ट्र ने
उसके आदेशों का पालन किया। 24 राजकीय
अधिकारियों और योद्धा-सैनिकों ने और राजा
दाऊद के अन्य पुत्रों ने राजा सुलेमान के प्रति
राज्य-भक्ति की शपथ खाई। 25प्रभु ने सुलेमान
को समस्त इस्राएली राष्ट्र की दृष्टि में महान
बनाया। उसे ऐसा राज-वैभव प्रदान किया जैसा
इस्राएल देश में उसके पूर्व किसी राजा को नहीं
प्राप्त हुआ था।

राजा दाऊद की मृत्यु

26 इस प्रकार दाऊद बेन-यिशय ने समस्त
इस्राएल देश पर राज्य किया। 27उसने कुल
चालीस वर्ष तक इस्राएल देश पर राज्य किया।
राज्य-काल के दौरान उसकी राजधानी सात
वर्ष तक हेब्रोन नगर में थी, और तैंतीस वर्ष
यरूशलेम नगर में। 28तत्पश्चात् परिपक्व आयु
में, पूर्ण आयु में उसकी मृत्यु हुई। वह पूर्ण धन-
वैभव भोग कर मरा। उसके स्थान पर उसका
पुत्र सुलेमान राज्य करने लगा।

29 राजा दाऊद के कार्यों का वर्णन, आदि
से अन्त तक निम्नलिखित इतिहास- ग्रन्थों में
लिखा हुआ है: द्रष्टा शमूएल का इतिहास-
ग्रन्थ, नबी नातान का इतिहास-ग्रन्थ और द्रष्टा
गाद का इतिहास-ग्रन्थ। 30इन ग्रन्थों में उसके
राज्य का विस्तृत विवरण, उसके शौर्य का
वर्णन, और उन सब घटनाओं का उल्लेख हुआ
है, जो दाऊद के साथ और इस्राएल देश तथा
विश्व के अन्य देशों में घटी थीं।

---

29 : 23 1 रा 2 : 12 **29 : 27** 2 शम 5 : 4-5

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इतिहासः दूसरा भाग

पुस्तक परिचय

इतिहास ग्रन्थ का पहला भाग राजा दाऊद की मृत्यु के विवरण के साथ समाप्त होता है। इतिहास ग्रन्थ का दूसरा भाग सुलेमान के शासन से आरम्भ होता है, और दरबारी इतिवृत्त के रूप में वह यहूदा राज्य के अंतिम राजा सिदकियाह के शासन तक जारी रहता है। जब राजा सुलेमान का पुत्र रहबआम राज-गद्दी पर बैठ गया, तब इस्राएल देश के उत्तर में रहने वाले समस्त कुलों ने यारोबआम के नेतृत्व में विद्रोह कर दिया, जिसके कारण उत्तरी राज्य "इस्राएल" की स्थापना हुई। इसका विवरण प्रस्तुत ग्रन्थ भाग के दसवें अध्याय में हुआ है। शेष विषय-सामग्री में केवल यहूदा प्रदेश अर्थात् दक्षिणी राज्य के दाऊद वंशी राजाओं का वृतान्त लिखा गया है। पुस्तक के अन्त में सन् 586 ईसवी पूर्व में हुए यरूशलेम के पतन का संक्षिप्त वर्णन है, लेकिन देश-निष्कासन से वापसी की अप्रत्याशित घोषणा के साथ ही पुस्तक समाप्त होती है। इस प्रकार पुरोहिती "इतिहासकार" ने, जो **"राजाओं का वृत्तान्तः पहला और दूसरा भाग "** की विषय-सामग्री को नये दृष्टिकोण से लिख रहे थे, मानव-इतिहास में परमेश्वर के चमत्कारिक हस्तक्षेप के लिए एक अन्तिम प्रमाण प्रस्तुत किया।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

राजा सुलेमान का राज्य	1 : 1 — 9 : 31
(क) आरंभिक वर्ष	1 : 1 - 17
(ख) मंदिर का निर्माण	2 : 1 — 7 : 10
(ग) अन्तिम वर्ष	7 : 11 — 9 : 31
उत्तरी कुलों का विद्रोह	10 : 1 - 19
यहूदा प्रदेश के शेष राजा	11 : 1 — 36 : 12
यरूशलेम का पतन	36 : 13 - 23

राजा सुलेमान को परमेश्वर का अद्‌भुत दान

1 दाऊद के पुत्र सुलेमान ने अपने राज्य को
स्थिर कर लिया। प्रभु परमेश्वर उसके
साथ था। प्रभु ने उसको बहुत उन्नत किया।
2 राजा सुलेमान ने समस्त इस्राएली जनता
से, सेना के सहस्रपतियों, शतपतियों और
प्रशासकों से, तथा इस्राएल के पितृकुलों के सब
नेताओं से बात की। 3तब वह, और उसके साथ
समस्त आराधकों का समूह* पहाड़ी शिखर के
आराधना-स्थल पर गया। यह गिबओन में था।
यहीं पर परमेश्वर का मिलन-शिविर था, जो
प्रभु के सेवक मूसा ने निर्जन प्रदेश में बनाया
था। 4(किन्तु राजा दाऊद ने यरूशलेम नगर में
उसके लिए एक तम्बू गाड़ा था। अतः वह
परमेश्वर की मंजूषा को किर्यत-यआरीम नगर
से यरूशलेम नगर में ले आया, और उसको उस
स्थान में रखा जो उसने उसके लिए तैयार किया
था।) 5गिबओन के पहाड़ी शिखर में प्रभु के
शिविर के सम्मुख पीतल की वेदी थी, जो
बसलेल ने बनाई थी। बसलेल के पिता का नाम
ऊरी और दादा का नाम हूर था।
राजा सुलेमान और आराधकों के समूह ने

* अथवा, 'धर्मसभा'

1 : 3-13 1 रा 3 — **4 : 4-15** **1 : 4** 2 शम 6 : 2 **1 : 5** नि 27 : 1; 31 : 2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रभु की इच्छा जानने के लिए आराधना की।
6राजा सुलेमान मिलन-शिविर की पीतल की
वेदी के पास प्रभु के सम्मुख गया। उसने वेदी
पर अग्नि-बलि में एक हजार पशु चढ़ाए।
7परमेश्वर ने वहां रात के समय सुलेमान को
दर्शन दिया। परमेश्वर ने उससे कहा, 'बोल, मैं
तुझे क्या दूं ?' 8सुलेमान ने परमेश्वर को उत्तर
दिया, 'तूने मेरे पिता दाऊद पर बड़ी करुणा की,
और उसके बाद मुझे उसके स्थान पर राजा
नियुक्त किया। 9हे प्रभु परमेश्वर, तूने मेरे पिता
दाऊद को वचन दिया था। आज तेरा वह वचन
पूरा हो; क्योंकि जिन लोगों पर तूने मुझे राजा
बनाया है, वे संख्या में पृथ्वी के धूलकणों के
सदृश असंख्य हैं ! 10प्रभु, तेरी इस महाप्रजा पर
कौन शासन कर सकता है ? अत: प्रभु, मुझे तेरे
निज लोगों का नेतृत्व करने के लिए बुद्धि और
समझ प्रदान कर।'

11 परमेश्वर ने सुलेमान को उत्तर दिया, 'तेरे
हृदय में यह सुन्दर विचार था। इसलिए तूने
मुझसे धन-सम्पत्ति, वैभव, मान-सम्मान नहीं
मांगा। तूने अपने शत्रुओं के प्राण नहीं मांगे। तूने
अपने लिए दीर्घायु नहीं मांगी, वरन् तूने मेरे
निज लोगों पर राज्य करने के लिए बुद्धि और
समझ मांगी, जिन पर मैंने तुझको राजा नियुक्त
किया है। 12अत: देख, मैं तुझको बुद्धि और
समझ प्रदान करता हूँ। इनके अतिरिक्त मैं
तुझको धन-सम्पत्ति, वैभव और मान-सम्मान
भी प्रदान करता हूँ। तुझसे पहले और तेरे बाद
धन-वैभव और मान-सम्मान में तेरे समान
समृद्ध और वैभवशाली कोई राजा नहीं होगा।'

13 अत: राजा सुलेमान गिबओन की पहाड़ी
शिखर के आराधना-स्थल से लौटा, जहां
मिलन-शिविर था। वह यरूशलेम गया, और
इस्राएलियों पर राज्य करने लगा।

राजा सुलेमान की सैन्य-शक्ति

14 राजा सुलेमान ने रथ और घोड़े* एकत्र
किए। उसके पास एक हजार चार सौ रथ और
बारह हजार घोड़े थे। उसने कुछ रथ और घोड़े
रथ-शाला के नगरों में तथ शेष अपने पास
यरूशलेम नगर में रखे।

15 राजा सुलेमान ने यरूशलेम नगर में
सोना-चांदी को पत्थर के समान मूल्यहीन बना
दिया। उसके पास देवदार की कीमती लकड़ी
इतनी अधिक हो गई जितने शफेलाह प्रदेश में
गूलर के वृक्ष हैं !

16 राजा सुलेमान के घोड़ों का आयात मिस्र
देश और कोए देश से होता था। राजा के
व्यापारी कोए देश से घोड़े खरीदते थे। 17वे मिस्र
देश से रथों का आयात करते थे। प्रत्येक रथ का
मूल्य चांदी के छ: सौ सिक्के और घोड़े का
मूल्य चांदी के डेढ़ सौ सिक्के था। इसी प्रकार
राजा के व्यापारी घोड़ों का निर्यात करते थे।
समस्त हित्ती राजा और सीरिया देश के सब
राजा घोड़े खरीदते थे।

मन्दिर - निर्माण की तैयारी

2 **अब राजा सुलेमान ने प्रभु के नाम पर
एक मन्दिर तथा अपने लिए एक महल
बनाने का निश्चय किया। 2उसने बोझा ढोने के
लिए सत्तर हजार मजदूर और पहाड़ी प्रदेश में
पत्थर खोदने के लिए अस्सी हजार मजदूर
नियुक्त किए।

उसने मजदूरों के काम का निरीक्षण करने के
लिए तीन हजार छ: सौ निरीक्षक नियुक्त किए।
3इसके पश्चात् उसने सोर के राजा हूराम को
यह सन्देश भेजा: 'जैसा आपने मेरे पिता दाऊद
के साथ व्यवहार किया, और उनको अपने लिए
एक महल बनाने के लिए देवदार की लकड़ी
भेजी थी, वैसा ही कृपया, मेरे साथ भी
कीजिए। 4देखिए, मैं अपने प्रभु परमेश्वर के
नाम पर एक मन्दिर बनाना चाहता हूँ। मैं उसको
इस कार्य के लिए अर्पित करूंगा कि उसमें
इस्राएली जाति की स्थायी धर्म-प्रथा के अनुसार
हमारे प्रभु परमेश्वर के सम्मुख सुगन्धित धूप-
द्रव्य जलाए जाएं, निरन्तर भेंट की रोटियां

---

* अथवा, 'घुड़सवर सैनिक' ** मूल में अध्याय 1 : 18

1 : 12 मत 6 : 33 **1 : 14-17** 1 रा 10 : 26-29 **1 : 14** 2 रा 5 : 2-11 **1 : 15** व्य 17 : 17 **2 : 1** 1 रा 5 : 5 **2 : 2** 1 रा 5 : 15-16 **2 : 3-16** 1 रा 5 : 2-11

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अर्पित की जाएं, और प्रतिदिन सबेरे और शाम तथा पवित्र विश्राम-दिवसों, नवचन्द्र-दिवसों और निर्धारित पर्वों पर अग्नि-बलि चढ़ाई जाए। [5]हमारा प्रभु परमेश्वर सब देवताओं से महान् है। अत: जो भवन मैं उसके लिए बनाना चाहता हूँ, वह सबसे बड़ा होगा। [6]किन्तु कौन उसके लिए घर बना सकता है, जबकि आकाश, उच्चतम विशाल आकाश में भी वह समा नहीं सकता? फिर मेरी हस्ती है ही क्या कि मैं उसके निवास के लिए घर बनाऊं? मैं तो केवल एक ऐसा स्थान बनाना चाहता हूँ जहां उसके सम्मुख सुगन्धित धूप-द्रव्य जलाए जाएं। [7]अब आप, कृपया, मेरे पास एक कुशल कारीगर भेजिए, जो सोने, चांदी, पीतल और लोहे के काम में निपुण हो, जो बैंगनी, लाल और नीले वस्त्रों पर कसीदा काढ़ना जानता हो, जो नक्काशी का काम भी जानता हो, और जो मेरे प्रशिक्षित कारीगरों के साथ काम कर सके। मेरे पास यहूदा प्रदेश और यरूशलेम में प्रशिक्षित कारीगर हैं। इन्हें मेरे पिता दाऊद ने प्रशिक्षित किया था। [8]मुझे लबानोन प्रदेश से देवदार, सनोवर और चन्दन की लकड़ी भी भेजिए। मैं जानता हूँ कि आपके सेवक लबानोन के पेड़ काटने में निपुण हैं। मेरे सेवक आप के सेवकों के साथ पेड़ काटेंगे; [9]क्योंकि मुझे प्रचुर मात्रा में इमारती लकड़ी चाहिए। जो भवन मैं बनाने जा रहा हूँ, वह विशाल और भव्य होगा। [10]मैं लकड़ी काटने वाले आपके सेवकों के लिए दो हजार टन गेहूं, दो हजार टन जौ, नौ लाख लिटर अंगूर का रस और नौ लाख लिटर तेल दूंगा।'

11सोर के राजा हूराम ने राजा सुलेमान को उत्तर भेजा। उसने पत्र में यों लिखा, 'प्रभु अपने निज लोगों से प्रेम करता है। इसलिए उसने आपको उनका राजा नियुक्त किया है।' [12]राजा हूराम ने यह भी लिखा, 'इस्राएली राष्ट्र का प्रभु परमेश्वर धन्य है, जिसने आकाश और पृथ्वी की रचना की है, जिसने राजा दाऊद को ऐसा बुद्धिमान पुत्र प्रदान किया है, जो बुद्धि-विवेक से परिपूर्ण प्रभु के लिए एक मन्दिर और अपने लिए महल बनाएगा।

13 'मैंने आपके पास एक कुशल कारीगर भेजा है। वह समझदार है। उसका नाम है हूराम-अबी। [14]उसकी मां दान कुल की वंशज थी और पिता सोर-देश का निवासी था। वह, सोने, चांदी, पीतल, लोहे, पत्थर और लकड़ी पर नक्काशी कर सकता है। वह बैंगनी, नीले और लाल वस्त्रों पर कसीदा काढ़ सकता है। वह सब प्रकार के खुदाई के काम जानता है और जो भी काम उसको बताया जाए, वह उसको कर सकता है। वह आपके पिता और मेरे स्वामी दाऊद के प्रशिक्षित कारीगरों के साथ काम करेगा। [15]अब आप गेहूँ, जौ, तेल और अंगूर-रस, जिनके विषय में आपने कहा है, मेरे कर्मचारियों के लिए भेज दें। [16]हम आपकी आवश्यकता के अनुसार लबानोन प्रदेश में लकड़ी काटेंगे, और लकड़ी के लट्ठों का बड़ा बेड़ा समुद्र के मार्ग से याफा बन्दरगाह तक पहुंचा देंगे। आप वहाँ से यरूशलेम नगर ले जाना।'

जन-गणना

17 राजा सुलेमान के पिता दाऊद ने सर्वप्रथम अपनी प्रजा की जनगणना की थी। उसके पश्चात् उसके पुत्र सुलेमान ने समस्त इस्राएल देश में रहनेवाले विजातीय प्रवासियों की गणना की। वे एक लाख तिरपन हजार छ: सौ निकले। [18] उनमें से उसने सत्तर हजार को बोझा ढोने का काम दिया, अस्सी हजार को पहाड़ी क्षेत्र में पत्थर फोड़ने का काम दिया, और तीन हजार छ: सौ को निरीक्षक नियुक्त किया, जो मजदूरों से काम कराते थे।

मन्दिर का निर्माण

3 राजा सुलेमान ने मोरियाह पहाड़ पर यरूशलेम नगर में प्रभु का भवन बनाना आरम्भ किया। उसने उसी स्थान पर भवन-निर्माण का कार्य आरम्भ किया जो उसके पिता दाऊद ने दर्शन में आदेश पाकर निश्चित किया था। इस स्थान पर यबूसी जाति के ओर्नान

2 : 6 1 रा 8 : 27 3 : 1-13 1 रा 6 : 1-28

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नामक मनुष्य का खलियान था।
2 राजा सुलेमान ने अपने राज्य के चौथे वर्ष
के दूसरे महीने में निर्माण-कार्य आरम्भ किया।
3उसने परमेश्वर के भवन की लम्बाई-चौड़ाई
यह रखी: पुरानी नाप के अनुसार भवन सत्ताईस
मीटर लम्बा, और नौ मीटर चौड़ा था। 4भवन
के मध्यभाग के सामने की ड्योढ़ी नौ मीटर
चौड़ी थी। यह भवन की चौड़ाई के बराबर थी।
उसकी ऊंचाई चौवन मीटर थी। उसने उसके
भीतरी भाग को शुद्ध सोने से मढ़ा। 5मध्य-भाग
की छत को उसने सनोवर की लकड़ी से पाट
दिया और उसके पश्चात् उसने इस सनोवर की
लकड़ी पर शुद्ध सोना मढ़ा, और उस पर
खजूर-वृक्षों और जंजीरों-झालरों के चित्र
अंकित किए। 6उसने मन्दिर को मणियों से
सजाया। जो सोना भवन में लगा, वह परवइम
देश का था। 7उसने भवन को सोने से मढ़
दिया—उसकी कड़ियों, ड्योढ़ियों, दीवारों
और द्वारों पर सोना मढ़ दिया। उसने दीवारों
पर करूबों के चित्र खुदवाए।
8 फिर उसने भवन के परम पवित्र स्थान
को बनाया। उसकी लम्बाई भवन की चौड़ाई
के बराबर नौ मीटर थी। उसने उसको बीस
हजार किलो शुद्ध सोने से मढ़ दिया। 9सोने की
कीलों का तौल आधा किलो था। उसने उपरले
कक्षों को भी सोने से मढ़ दिया।
10 परम पवित्र स्थान में उसने लकड़ी के
दो करूब रखे, और उनको सोने से मढ़ दिया।
11उन करूबों के पंख फैले हुए थे, और उनकी
लम्बाई नौ मीटर थी। उनमें से पहले करूब
का फैला हुआ पंख सवा दो मीटर लम्बा था,
और वह मन्दिर की दीवार को स्पर्श करता था।
उसका दूसरा भाग भी सवा दो मीटर लम्बा था,
और वह दूसरे करूब के पंख को स्पर्श करता
था। 12दूसरे करूब का भी पंख सवा दो मीटर
लम्बा था, और वह मन्दिर की दीवार को स्पर्श
करता था। उसका दूसरा पंख भी सवा दो मीटर
लम्बा था, और पहले करूब के पंख को स्पर्श
करता था। 13उन करूबों के पंख नौ मीटर तक
फैले हुए थे। वे अपने पैरों के बल खड़े थे, और
उनका मुख मध्य-भाग की ओर था। 14राजा ने
मध्यवर्ती परदे को नीले, बैंगनी और लाल रंग
के सूती वस्त्रों से बनाया, और परदे पर करूबों
के चित्र काढ़ दिए।
15भवन के सामने उसने दो स्तम्भ बनवाए।
प्रत्येक स्तम्भ पन्द्रह मीटर पचहत्तर सेंटीमीटर
ऊंचा था। प्रत्येक स्तम्भ के ऊपर एक शीर्ष था,
जिसकी ऊंचाई सवा दो मीटर थी।
16 फिर उसने सांकलदार झालरें बनाईं
और उनको स्तम्भों के शीर्ष पर लगा दिया।
उसने सौ अनार बनाए, और उनको झालरों में
लगा दिया। 17उसने मन्दिर के सामने दो स्तम्भ
खड़े किये। उसने दक्षिण दिशा में एक स्तम्भ
खड़ा किया, और उसका नाम 'याकीन'* रखा।
तब उसने उत्तर दिशा में एक स्तम्भ खड़ा
किया, और उसका नाम 'बोअज**' रखा।

4 उसने पीतल की एक वेदी बनाई। वह नौ
मीटर चौड़ी और नौ मीटर लम्बी थी। वह
साढ़े चार मीटर ऊंची थी।
2 तत्पश्चात् उसने ढली हुई धातु का एक
हौज बनाया। वह गोलाकार था। वह एक
किनारे से दूसरे किनारे तक साढ़े चार मीटर
चौड़ा था। वह सवा दो मीटर ऊंचा था।
उसकी सम्पूर्ण परिधि साढ़े तेरह मीटर थी।
3हौज के किनारे के नीचे, उसकी बाहरी ओर,
उसकी सम्पूर्ण परिधि में बछड़ों की आकृतियां
बनी थीं। ये दो कतारों में थीं। जब हौज को
ढाला गया था तब उसके साथ इन्हें भी ढाला
गया था। 4हौज बारह बैलों पर स्थित था। तीन
बैलों के मुंह उत्तर की ओर, तीन बैलों के मुंह
पश्चिम की ओर, तीन बैलों के मुंह दक्षिण की
ओर, और तीन बैलों के मुंह पूर्व की ओर थे।
हौज उन पर रखा गया था। बैलों का पिछला
भाग भीतर की ओर था। 5हौज की धातु की
मोटाई प्रायः आठ सेंटीमीटर थी। उसका
किनारा,कटोरे के किनारे के समान, सोसन-

---

* अर्थात् 'वह स्थिर रखेगा'; ** अर्थात् 'उसमें दृढ़ता है।'

3 : 14 नि 26 : 31 3: 15-17 1 रा 7 : 15-21 4 : 1 नि 27: 1 4: 2-5 1 रा 7 : 23-26

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पुष्प के आकार का था। उसमें प्राय: एक लाख
पैंतीस हजार लिटर पानी समाता था।
6 उसने धोने के काम के लिए दस कण्डाल
भी बनाए। उसने भवन की दक्षिण दिशा में पांच
कण्डाल, और उत्तर दिशा में पांच कण्डाल
रखे। अग्नि-बलि में चढ़ाई जाने वाली प्रत्येक
वस्तु को बलि के पूर्व कण्डाल के पानी में धोया
जाता था। हौज के पानी में पुरोहित स्नान करते
थे।
7 उसने निर्देश के अनुसार सोने के दस
दीपाधार बनाए, और उनको मन्दिर में रख
दिया : पांच दाहिनी ओर और पांच बायीं ओर।
8उसने दस मेजें भी बनवायीं और उनको
मन्दिर में रख दिया: पांच दाहिनी ओर और पांच
बायीं ओर। इनके अतिरिक्त उसने रक्त छिड़कने
के लिए सोने के सौ पात्र भी बनवाए।
9 उसने पुरोहितों का आंगन, बड़ा आंगन,
तथा आंगन के दरवाजे भी बनवाए, और उन
दरवाजों को पीतल से मढ़ दिया। 10उसने हौज
को भवन की दाहिनी ओर, दक्षिण-पूर्व दिशा
में रखा।
11हूराम-अबी ने राख उठाने के पात्र,
फावड़ियां और चिलमचियां बनाईं। इस प्रकार
हूराम ने काम पूरा किया। उसने राजा सुलेमान
के आदेश के अनुसार प्रभु के भवन के लिए
ये-ये वस्तुएं बनाई थीं : 12दो स्तम्भ; स्तम्भों
के शिखर पर दो गोलाकार स्तम्भ-शीर्ष;
स्तम्भ-शीर्षों को ढकने के लिए दो जालियां;
13दोनों जालियों के लिए चार सौ अनार। उसने
स्तम्भ-शीर्षों को ढकने के लिए अनारों की
जालियां चारों ओर दो कतारों में लगायी थीं।
14उसने आधार स्तम्भ भी बनाए। उन आधारों
पर कण्डाल, 15एक हौज और उसके किनारे,
नीचे की ओर बारह बैल। 16यह सब सामग्री—
राख उठाने के पात्र, फावड़ियां, कांटे तथा अन्य
सब पात्र जिनको हूराम-अबी ने प्रभु के भवन
के लिए राजा सुलेमान के आदेश से बनाया,
झिलमिलाते पीतल की थी। 17राजा सुलेमान ने
उनको यर्दन के मैदान में ढाला था। ढलाई-घर
सुक्कोत और सारतान नगरों के मध्य में था।
18राजा सुलेमान ने यह सब सामग्री इतनी
अधिक मात्रा में बनाई थी, कि उसने पीतल की
तौल का हिसाब नहीं रखा।
19 राजा सुलेमान ने परमेश्वर के भवन की
ये वस्तुएं भी बनाईं: स्वर्ण वेदी और मेज,
जिसपर 'प्रभु-भेंट की रोटी' रखी जाती थी;
20शुद्ध सोने के दीपाधार और उनके शुद्ध सोने
के दीये, जो निर्धारित निर्देश के अनुसार पवित्र
अन्तर्गृह में निरन्तर जलते रहते थे; 21पुष्प, दीपक
और चिमटे—ये भी कुन्दन के थे; 22कैंचियां,
रक्त छिड़कने के पात्र, धूपदान और करछे—ये
शुद्ध सोने के थे; परमपवित्र स्थान के दरवाजों
तथा मध्यभाग के दरवाजों के कब्जे—ये भी
सोने के थे।

5 यों राजा सुलेमान ने प्रभु के भवन का
निर्माण-कार्य समाप्त किया। तत्पश्चात्
वह अपने पिता दाऊद के द्वारा अर्पित की गई
वस्तुएं भवन में ले गया। उसने सोना, चांदी तथा
अमूल्य पात्र भवन के भण्डार-गृहों में रख
दिये।

मन्दिर में विधान-मंजूषा की प्रतिष्ठा

2 राजा सुलेमान ने इस्राएल के धर्मवृद्धों
को, कुलों के नेताओं को, इस्राएलियों के
पितृकुलों के अगुओं को यरूशलेम में एकत्र
किया। प्रभु की विधान-मंजूषा उस समय
सियोन नगर अर्थात् दाऊद-पुर में थी। राजा
सुलेमान मंजूषा को वहाँ से लाना चाहता था।
3सब इस्राएली पुरुष राजा के पास एकत्र हुए।
सातवें महीने का पर्व मनाया जा रहा था।
4 जब इस्राएल के सब धर्मवृद्ध आए, तब
लेवीय कुल के उप-पुरोहितों ने मंजूषा को
उठाया, 5और वे मंजूषा, मिलन शिविर का
तम्बू, तथा शिविर के पवित्र पात्र ऊपर ले गए।
पुरोहित और उप-पुरोहित उनको लाए। 6तब
राजा सुलेमान और उसके सम्मुख एकत्र हुए
आराधकों ने असंख्य भेड़ें और बछड़े बलि
किए। उनकी संख्या इतनी अधिक थी कि
उनको गिना न जा सका। 7 पुरोहितों ने प्रभु की

4 : 6-5 : 1 1 रा 7 : 38-51 5 : 2 2 शम 6 : 12

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
विधान-मंजूषा उसके उचित स्थान पर रख दी।
उन्होंने भीतरी कक्ष में, पवित्र अन्तर्गृह के
करूबों के पंखों के नीचे मंजूषा को रख दिया।
8 मंजूषा के स्थान के ऊपर करूबों के पंख फैले
हुए थे, और ऐसा प्रतीत होता था कि करूबों
ने मंजूषा और उसके डण्डों पर छाया कर रखी
है। 9डण्डे इतने लम्बे थे कि उनके सिर अन्तर्गृह
के सम्मूख पवित्र स्थान से दिखाई देते थे। किन्तु
वे बाहर से नहीं दिखाई देते थे। वे आज तक
वहीं हैं। 10मंजूषा में पत्थर की दो पट्टियों के
अतिरिक्त और कुछ नहीं था। मूसा ने होरेब
पर्वत पर उनको मंजूषा में रखा था। जब
इस्राएली लोग मिस्र देश की गुलामी से मुक्त
हो मिस्र देश से बाहर निकले थे, तब प्रभु ने
होरेब पर्वत पर उनके साथ विधान स्थापित
किया था।

11 जो पुरोहित भवन में उपस्थित थे, उन्होंने
बिना श्रेणियों का विचार किए, स्वयं को शुद्ध
किया था। 12लेवीय कुल के गायक, आसाफ,
हेमान, यदूतून, उनके पुत्र और नाते-रिश्तेदार
सूती-मलमल की पोशाक पहिने हुए और
हाथों में वाद्य-यन्त्र—झांझ, सारंगियां और
वीणा—लिये हुए वेदी के पूर्व में खड़े थे। उनके
साथ तुरही बजाने वाले एक सौ बीस पुरोहित
भी थे। 13जब आराधक प्रभु की स्तुति और
धन्यवाद में गीत गाते थे, तब उनके स्वर में स्वर
मिलाकर ये गायक भी गाते और तुरही बजाने
वाले पुरोहित तुरही बजाते थे। इस प्रकार गीत
और संगीत में ताल-मेल बैठाना गायकों और
इन पुरोहितों का काम था।

अतः जब पुरोहित पवित्र स्थान से बाहर
निकले, और जब तुरही और झांझ तथा अन्य
वाद्य-यन्त्रों पर प्रभु की स्तुति में यह गीत गूंजाः

'क्योंकि प्रभु भला है,
और उसकी करुणा सदा की है,'

तब भवन, प्रभु का भवन एक मेघ से भर गया।
14मेघ के कारण पुरोहित सेवा-कार्य न कर
सके; वे वहां खड़े नहीं रह सके; क्योंकि प्रभु
का तेज* परमेश्वर के भवन में भर गया था।

6 तब राजा सुलेमान ने कहा, 'हे प्रभु, तूने यह
कहा था, कि तू सघन अन्धकार में निवास
करेगा। 2किन्तु मैंने तेरे लिए एक भव्य भवन
बनाया; ऐसा स्थान बनाया कि तू उसमें सदा-
सर्वदा निवास करे।'

भवन का अर्पण

3 समस्त इस्राएली आराधकों का समूह+
खड़ा था। राजा सुलेमान उनकी ओर उन्मुख
हुआ। उसने आराधकों को यह आशिष दी।
4उसने कहा 'इस्राएली राष्ट्र का प्रभु परमेश्वर
धन्य है। जो वचन उसने मेरे पिता दाऊद को
अपने मुंह से दिया था, उसको अब उसने अपने
हाथ से पूरा किया। 5उसने यह कहा था, "जिस
दिन मैंने अपने निज लोग इस्राएलियों को मिस्र
देश से बाहर निकाला, उस दिन से आज तक
मैंने इस्राएली कुलों का कोई भी नगर नहीं चुना
कि मैं एक भवन बनाऊं और वहां मेरा नाम
प्रतिष्ठित हो। मैंने अपने निज लोग इस्राएलियों
पर शासन करने के लिए भी किसी व्यक्ति को
नहीं चुना। 6किन्तु मैंने यरूशलेम में अपना नाम
प्रतिष्ठित करने के लिए उसको चुना। मैंने
अपने निज लोग इस्राएलियों पर शासन करने
के लिए दाऊद को चुना।" 7मेरे पिता दाऊद की
यह हार्दिक इच्छा थी कि वह इस्राएली राष्ट्र के
प्रभु परमेश्वर के नाम की महिमा के लिए एक
भवन बनाए। 8परन्तु प्रभु ने मेरे पिता दाऊद से
यह कहा, "तूने मेरे नाम की महिमा के लिए
भवन बनाने की हार्दिक इच्छा की। तेरे हृदय की
यह इच्छा उत्तम है। 9फिर भी तू यह भवन नहीं
बना सकेगा। तेरा पुत्र, जो तुझसे उत्पन्न होने
वाला है, वह मेरे नाम की महिमा के लिए भवन
का निर्माण करेगा।" 10प्रभु ने अपने वचन को
इस प्रकार पूरा किया : मैंने अपने पिता दाऊद
का स्थान ग्रहण किया। मैं इस्राएली राष्ट्र के
सिंहासन पर बैठा, जैसा प्रभु ने कहा था। मैंने

---

* अथवा, 'महिमा' + अथवा, 'धर्मसभा'।

5 : 10 व्य 10 : 5 **5 : 13-14** 1 रा 8 : 10-11 **5 : 13** 1 इति 16 : 34; भज 136 : 1 **5 : 14** नि 40 : 35
6 : 1-39 1 रा 8 : 12-50 **6 : 7** 2 शम 7 : 2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इस्राएली राष्ट्र के प्रभु परमेश्वर के नाम की महिमा के लिए भवन का निर्माण किया। [11]मैंने वहां भवन में मंजूषा भी रख दी, जिसमें प्रभु के उस विधान की पट्टियां हैं, जो उसने इस्राएलियों से स्थापित किया था।'

12 तत्पश्चात् राजा सुलेमान प्रभु की वेदी के सम्मुख खड़ा हुआ। उसने समस्त इस्राएली आराधकों के सम्मुख आकाश की ओर अपने हाथ फैलाए। [13]राजा सुलेमान ने पीतल का एक मंच बनाया था। वह सवा दो मीटर लम्बा, सवा दो मीटर चौड़ा और एक मीटर पैंतीस सेंटीमीटर ऊंचा था। उसने उसको आंगन में रखा था। वह मंच पर खड़ा हुआ।

राजा सुलेमान ने समस्त इस्राएली धर्मसभा की उपस्थिति में घुटने टेके और आकाश की ओर हाथ फैलाकर यह प्रार्थना की। [14]उसने कहा, 'हे इस्राएली राष्ट्र के प्रभु परमेश्वर, तेरे समान न ऊपर आकाश में और न नीचे पृथ्वी पर कोई ईश्वर है। अपने सेवकों के प्रति, जो अपने सम्पूर्ण हृदय से तेरे सम्मुख निष्ठापूर्वक चलते हैं, तू अपने विधान का पालन करता है; तू उन पर करुणा करता है। [15]तूने अपने सेवक मेरे पिता दाऊद को जो वचन दिया था, उसको पूरा किया। जो बात तूने अपने मुंह से कही थी, उसको तूने अपने हाथ से आज पूर्ण किया।

16 'हे इस्राएली राष्ट्र के प्रभु परमेश्वर, तूने अपने सेवक, मेरे पिता दाऊद को यह वचन दिया था, और उससे यह कहा था, ''यदि तेरे पुत्र, अपने आचरण के प्रति सावधान रहेंगे, जैसा तू मेरे सम्मुख निष्ठापूर्वक चलता है वैसा वे भी मेरी व्यवस्था पर चलेंगे, तो मैं इस्राएल के सिंहासन पर बैठने के लिए तेरे वंश में पुरुष का अभाव न होने दूंगा।'' हे प्रभु, अपने इस वचन को पूर्ण कर। [17]हे इस्राएली राष्ट्र के प्रभु परमेश्वर, अब अपने सेवक दाऊद को दिए गये अपने वचन को सच प्रमाणित कर।

18 'हे परमेश्वर, क्या तू मानव के साथ पृथ्वी पर रह सकता है? देख, ऊंचे से ऊंचा आकाश भी तुझे नहीं समा सकता। तब तू मेरे इस भवन में जिसको मैंने बनाया है, कैसे समाएगा? [19]हे मेरे प्रभु परमेश्वर, अपने सेवक की प्रार्थना और उसकी विनती पर ध्यान दे। जो दुहाई और प्रार्थना आज तेरा सेवक तेरे सम्मुख प्रस्तुत कर रहा है, उसको तू सुन। [20]इस भवन की ओर, जिसके विषय में तूने यह कहा था, ''मेरा नाम वहां प्रतिष्ठित होगा,'' तेरी आंखें रात-दिन खुली रहें। इस स्थान के सम्बन्ध में तेरा सेवक, जो प्रार्थना कर रहा है, उसको तू सुन।

21 'जब मैं, तेरा सेवक, और तेरे निज लोग इस्राएली इस स्थान में प्रार्थना करेंगे, तब तू उनकी विनती को सुनना। अपने निवास-स्थान, स्वर्ग से तू उनकी प्रार्थना सुनना। प्रभु, तू उनकी प्रार्थना सुनकर उन्हें क्षमा कर देना।

22 'जब कोई मनुष्य अपने पड़ोसी के विरुद्ध अपराध करेगा, और पड़ोसी उसको शपथ देगा, और वह तेरे इस भवन की वेदी के सम्मुख शपथ खाएगा [23]तब तू स्वर्ग से उनका मुकदमा सुनना और कार्य करना। प्रभु, अपने सेवकों का न्याय करना। दुर्जन को दुर्जन घोषित करना और उसके आचरण का फल उसके सिर पर लौटाना। परन्तु सज्जन को सज्जन सिद्ध करना, और उसकी सज्जनता के अनुरूप उसे फल देना।

24 'जब तेरे निज लोग इस्राएली तेरे विरुद्ध पाप करेंगे, और पाप के कारण अपने शत्रु से हार जाएंगे, तब यदि वे तेरी ओर लौटेंगे, तेरे नाम का गुणगान करेंगे, तुझसे प्रार्थना करेंगे, और इस भवन में तुझसे विनती करेंगे [25]तो तू स्वर्ग से उनकी प्रार्थना सुनना। अपने निज लोग इस्राएलियों के पाप क्षमा करना, और उनके देश में, जो तूने उनके पूर्वजों को और उनके पूर्वजों के बाद उनको दिया था, उन्हें लौटा लाना।

26 'जब वे तेरे विरुद्ध पाप करेंगे और तू आकाश के झरोखे बन्द कर देगा और उनके देश में वर्षा नहीं होगी, तब यदि वे इस भवन की ओर मुख कर प्रार्थना करेंगे, तेरे नाम का गुणगान करेंगे, जब तू उनको दण्ड दे चुका होगा और वे पाप को छोड़कर तेरी ओर लौटेंगे,

---

6 : 16 1 रा 2 : 4 **6 : 18** 2 इत 2 : 6 **6 : 20** व्य 12 : 11

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

27तो तू स्वर्ग में उनकी प्रार्थना सुनना और अपने
सेवकों, अपने निज लोग इस्राएलियों के पाप
क्षमा करना। जिस सद्मार्ग पर उन्हें चलना
चाहिए,उस सद्मार्ग की शिक्षा उनको देना।
प्रभु, यह देश तूने अपने निज लोगों को पैतृक
अधिकार के लिए प्रदान किया है। अत: तू इस
देश को वर्षा प्रदान करना।

28 'जब इस देश में अकाल पड़ेगा,
महामारी फैलेगी, फसल में गेरुआ कीड़ा लगेगा,
पाला पड़ेगा, टिड्डी-दल का आक्रमण होगा
अथवा फसल में कीड़े लगेंगे; जब उनके शत्रु
उनको किसी नगर में घेर लेंगे अथवा विपत्ति
या रोग का उन पर हमला होगा, 29तब यदि तेरे
निज लोग इस्राएली सामूहिक रूप से अथवा
कोई भी मनुष्य निज रूप से अपनी विपत्ति में
दु:खी होकर इस भवन की ओर अपने हाथ
फैलाएगा और तुझसे प्रार्थना तथा विनती
करेगा, 30तो तू उसको क्षमा करना और अपने
निवास-स्थान, स्वर्ग से उसकी प्रार्थना सुनना
और कार्य करना। प्रत्येक मनुष्य को, जिसका
हृदय तू जानता है, उसके कार्य के अनुरूप फल
देना। प्रभु, केवल तू मनुष्य के हृदय को जानता
है। 31इस प्रकार वे जीवनभर तेरी भक्ति करते
हुए इस देश में निवास करेंगे, जो तूने हमारे
पूर्वजों को दिया है।

32 'जब कोई विदेशी, जो तेरे निज लोग
इस्राएल जाति का नहीं है, तेरे महान नाम के
कारण, तेरे सामर्थी हाथ और उद्धार के हेतु
फैली हुई भुजाओं के कारण दूर देश से आएगा
और इस भवन की ओर मुख कर प्रार्थना करेगा
33तब तू अपने निवास-स्थान, स्वर्ग से उसकी
प्रार्थना सुनना। जिस कार्य के लिए विदेशी तुझे
पुकारेगा, तू उस कार्य को करना। अत: तेरे निज
लोग इस्राएलियों के समान पृथ्वी के सब लोग
भी तेरे नाम को जानेंगे, और तेरी भक्ति करेंगे।
उनको ज्ञात होगा कि यह भवन, जो मैंने निर्मित
किया है, तेरे नाम को समर्पित है।

34 'जब तेरे निज लोग अपने शत्रु से युद्ध
करने के लिए नगर से बाहर निकलेंगे और उस
मार्ग पर जाएंगे, जिस पर तू उन्हें भेजेगा, तब
यदि वे उस नगर की ओर, जिसको तूने चुना
है, और उस भवन की ओर मुख कर, जो मैंने
तेरे नाम की महिमा के लिए निर्मित किया है,
तुझसे प्रार्थना करेंगे 35तो तू स्वर्ग से उनकी
प्रार्थना और विनती को सुनना, और उनको
विजय प्रदान करना।

36 'जब वे तेरे विरुद्ध पाप करेंगे (ऐसा
कौन मनुष्य है जिसने कभी पाप नहीं किया?)
और तू उनसे क्रुद्ध होगा, उन्हें शत्रुओं के हाथ में
सौंप देगा कि वे उन्हें बन्दी बनाकर दूर अथवा
समीप के, अपने देश में ले जाएं 37तब यदि वे
बन्दी देश में होश में आएंगे, पश्चाताप करेंगे,
और अपने निष्कासन के देश में तुझसे विनती
करेंगे, और यह कहेंगे, "हमने पाप किया,
हमने अधर्म और दुष्कर्म किया," 38यदि वे
अपने निष्कासन के देश में, जहां शत्रु उन्हें बन्दी
बनाकर ले गए थे, सम्पूर्ण हृदय और सम्पूर्ण
प्राण से पश्चात्ताप करेंगे, और इस देश की ओर
जो तूने उनके पूर्वजों को दिया है, इस नगर की
ओर, जिसको तूने चुना है, और इस भवन की
ओर, जो मैंने तेरे नाम की महिमा के लिए
निर्मित किया है, मुख करके प्रार्थना करेंगे, 39तो
तू अपने निवास-स्थान, स्वर्ग से उनकी प्रार्थना
और विनती को सुनना और उनका न्याय
करना। तू उनके पापों को जो उन्होंने तेरे विरुद्ध
किए थे, क्षमा करना। 40अब हे मेरे परमेश्वर, जो
प्रार्थना तेरे इस भवन में की जाए, उसकी ओर
तेरी आंखें सदा खुली रहें, तू उसकी ओर कान
देना।

41 'अब, हे प्रभु परमेश्वर, उठ!
तू और तेरे सामर्थ्य की मंजूषा
अपने विश्राम-स्थान को जाएं।
तेरे पुरोहित धार्मिकता से विभूषित हों,
तेरी भलाई के कारण
तेरे भक्त जय-जयकार करें।
42हे प्रभु परमेश्वर,
अपने अभिषिक्त राजा की प्रार्थना
अनसुनी मत कर;

---

6 : 41 भज 132 : 8-10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अपने सेवक दाऊद के प्रति
अपनी करुणा को स्मरण कर।'

7 जब राजा सुलेमान ने अपनी प्रार्थना समाप्त की तब आकाश से आग गिरी और उसने अग्नि-बलि तथा पशु-बलि को भस्म कर दिया, और प्रभु के तेज* से मन्दिर परिपूर्ण हो गया। 2पुरोहित प्रभु के भवन में प्रवेश न कर सके; क्योंकि प्रभु के तेज से उसका भवन भरा हुआ था।

3 जब इस्राएलियों ने देखा कि आकाश से आग गिरी और प्रभु के तेज से मन्दिर परिपूर्ण हो गया, तब उन्होंने फर्श की ओर सिर झुकाकर प्रभु की साष्टांग वन्दना की और उसकी स्तुति करते हुए यह गीत गाया,

'क्योंकि प्रभु भला है,
और उसकी करुणा सदा की है।'

4 तत्पश्चात् राजा तथा उसके साथ के सब लोगों ने प्रभु के सम्मुख पशुओं की बलि अर्पित की। 5राजा सुलेमान ने बलि में प्रभु को बाईस हजार बछड़े और एक लाख बीस हजार भेड़ें चढ़ाईं। इस प्रकार राजा और सब इस्राएली लोगों ने परमेश्वर के भवन को उस की महिमा के लिए अर्पित किया। 6पुरोहित अपने निर्धारित स्थान पर सेवा-कार्य के लिए खड़े थे। लेवीय उपपुरोहित भी अपने-अपने हाथों में वाद्य-यन्त्र लिये हुए खड़े थे। ये वाद्य-यन्त्र राजा दाऊद ने प्रभु की महिमा के लिए, उसके नाम का गुणगान करने के लिए बनाए थे। जब राजा दाऊद का यह स्तुति-गान 'प्रभु की करुणा सदा की है' होता था, तब उपपुरोहित वाद्य-यन्त्र बजाते थे।

अतः उपपुरोहितों ने वाद्य-यन्त्र बजाए। दूसरी ओर पुरोहित तुरहियां बजाते रहे। सब इस्राएली पास खड़े रहे।

7 राजा सुलेमान ने मध्यवर्ती आंगन को भी प्रभु की महिमा के लिए अर्पित किया। यह प्रभु के भवन के सम्मुख था। जो कांस्य वेदी सुलेमान ने बनाई थी, वह छोटी थी। उस पर अग्नि-बलि, अन्न-बलि और सहभागिता-बलि एक साथ चढ़ाना सम्भव न था। इसलिए राजा सुलेमान ने मध्यवर्ती आंगन में अग्नि-बलि और सहभागिता-बलि की चर्बी चढ़ाई।

8 राजा सुलेमान ने उस समय सात दिन तक यात्रा-पर्व मनाया। पर्व में हमात घाटी की सीमा से मिस्र देश की बरसाती नदी तक के इस्राएलियों का विशाल जन-समूह** एकत्र हुआ। 9आठवें दिन उन्होंने महा-धर्मसभा की; क्योंकि उन्होंने सात दिन तक वेदी का अर्पण और यात्रा-पर्व मनाया था। 10सातवें महीने की तेईस तारीख को राजा सुलेमान ने लोगों को विदा किया, और लोग अपने-अपने घर को लौट गए। उनके हृदय आनन्द और हर्ष से भरे हुए थे कि प्रभु ने अपने सेवक दाऊद और राजा सुलेमान तथा अपने निज लोग इस्राएलियों के लिए कितने भले कार्य किए हैं।

राजा सुलेमान को प्रभु का दूसरा दर्शन

11 इस प्रकार राजा सुलेमान ने प्रभु के भवन तथा अपने राजमहल का निर्माण-कार्य समाप्त किया। उसने प्रभु के भवन में तथा अपने राजमहल में अनेक निर्माण-कार्यों की योजना बनाई थी। उसने सफलतापूर्वक अपनी योजना को पूरा किया। 12प्रभु ने रात में सुलेमान को दर्शन दिया, और उससे कहा, 'मैंने तेरी प्रार्थना सुनी, मैंने इस स्थान को अपने लिए बलि-भवन के रूप में चुना है। 13जब मैं आकाश के झरोखे बन्द कर दूंगा, और इस देश में वर्षा नहीं होगी; अथवा जब मेरे आदेश से टिड्डियां इस देश की फसल चट कर जाएंगी, अथवा जब मैं अपने निज लोगों के मध्य महामारियां भेजूंगा, 14तब यदि मेरे निज लोग, जो मेरे अपने लोग हैं, जिनको मैंने अपना नाम दिया है, स्वयं को विनम्र और दीन बनाएंगे, मुझसे प्रार्थना करेंगे, और मेरे मुख का दर्शन प्राप्त करने का प्रयत्न करेंगे, और अपने बुरे आचरण को छोड़ देंगे,

---

*अथना, 'महिमा' **अथवा, 'मंडली'।

7 : 1 लेव 9 : 23-24 7 : 3 भज 136 : 1 7 : 4-10 1 रा 8 : 62-66 7 : 6 1 इति 15 : 16 7 : 11-22 1 रा 9 : 1-9

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तो मैं स्वर्ग से उनकी प्रार्थना को सुनूंगा, और
उनके पाप क्षमा कर दूंगा, मैं उनके देश को
रोग-मुक्त कर दूंगा। [15]मेरी आंखें सब समय
इस भवन पर लगी रहेंगी। जो प्रार्थना इस भवन
में की जाएगी, उसको मैं सुनूंगा। [16]मैंने इस
भवन को चुनकर पवित्र किया है। मैंने सदा-
सर्वदा के लिए यहां अपना नाम प्रतिष्ठित किया
है। मेरी आंखें और मेरा हृदय सब समय इस
भवन पर लगे रहेंगे। [17]जैसे तेरा पिता दाऊद
सच्चे और निष्कपट हृदय से मेरे सम्मुख चलता
था, वैसे ही यदि तू चलेगा, मेरी आज्ञाओं,
संविधियों और न्याय-सिद्धान्तों का पालन
करेगा [18]तो मैं इस्राएल देश पर तेरा राज-
सिंहासन सदा सुदृढ़ रखूंगा। यह मैंने तेरे पिता
दाऊद से कहा था। मैंने उसे यह वचन दिया था,
''इस्राएल पर शासन करने के लिए तेरे वंश में
पुरुष का अभाव न होगा।''

19 'परन्तु ओ इस्राएलियो, यदि तुम मेरा
अनुसरण करना छोड़ दोगे, जो आज्ञाएं और
संविधियां मैंने तुम्हारे सम्मुख रखी हैं, उनका
पालन नहीं करोगे, और अन्य देशों के देवताओं
का अनुसरण करोगे, उनकी सेवा करोगे,
उनकी आराधना करोगे, [20]तो मैं तुमको इस देश
से, जो मैंने तुम्हें प्रदान किया है, निकाल दूंगा।
जिस भवन को मैंने अपने नाम के लिए पवित्र
किया है, उसको अपनी आंखों से दूर कर दूंगा।
तुम विश्व की जातियों के मध्य निन्दा और
उपहास के पात्र बन जाओगे। [21]यह विशाल
भवन मलवा का ढेर हो जाएगा।+ यहां से गुजरने
वाले राहगीर आश्चर्य करेंगे और पूछेंगे, ''प्रभु
ने इस देश तथा इस भवन के साथ यह व्यवहार
क्यों किया?'' [22]लोग उन्हें यह बताएंगे,
''क्योंकि इस्राएलियों ने अपने प्रभु परमेश्वर
को, जो उनके पूर्वजों को मिस्र देश से निकाल
कर लाया था, त्याग दिया था, और अन्य
देवताओं को ग्रहण कर लिया था। उन्होंने
उनकी आराधना की, उनकी सेवा की। इस
कारण प्रभु ने उन पर यह विपत्ति का पहाड़
ढाहा है।''

सुलेमान के अन्य निर्माण-कार्य

6 राजा सुलेमान को प्रभु का भवन तथा
अपना महल बनाने में बीस वर्ष लगे।
[2]बीस वर्षों के पश्चात् उसने उन नगरों का पुनः
निर्माण किया जो हूराम ने सुलेमान को दिए थे।
राजा सुलेमान ने उनमें इस्राएलियों को बसा
दिया।

3 राजा सुलेमान ने सोबा प्रदेश के हमात
नगर पर आक्रमण किया और उसको अपने
अधीन कर लिया। [4]उसने निर्जन प्रदेश के
तदमोर नगर तथा हमात नगर के सब भण्डार-
गृहों का पुनः निर्माण किया। [5]उसने निचला
बेत-होरोन और उपरला बेत-होरोन का पुनः
निर्माण किया। उसने इनके प्रवेश-द्वारों,
शहरपनाहों और अर्गलाओं को बनाया और यों
नगरों को दृढ़ किया। [6]उसने बालात नगर को
बसाया। उसने अपने सब भण्डार-गृहों, रथों
और अश्वशालाओं के लिए नगर बसाए। उसने
अपने घुड़सवारों के लिए भी नगर बसाए।
इनके अतिरिक्त राजा सुलेमान ने अपनी इच्छा
से अपने राज्य-क्षेत्र में, यरूशलेम नगर तथा
लबानोन प्रदेश में अनेक भवन निर्मित किए।
[7]हित्ती, एमोरी, परिज्जी, हिव्वी और यबूसी
जाति के बचे हुए लोग, जो इस्राएली जाति के
नहीं थे, [8]जिन्हें इस्राएली पूर्णतः नष्ट नहीं कर
सके थे, और जिनके वंशज देश में बच गए थे;
राजा सुलेमान ने इन जातियों के लोगों से
भवन-निर्माण के कार्य में गुलाम के सदृश बेगार
कराई। वे आज भी इस्राएलियों की बेगार करते
हैं। [9]राजा सुलेमान ने इस्राएलियों से बेगार नहीं
कराई। वे राजा सुलेमान की सेना में सैनिक,
सेनानायक, सेनापति, सारथी और घुड़सवार
सैनिक थे। [10]राजा सुलेमान की सेवा में दो सौ
पचास उच्चाधिकारी थे जो जनता के मध्य
राज्य-कार्य चलाते थे।

11 राजा सुलेमान राजा फरओ की पुत्री को
जो उसकी पत्नी थी, दाऊद-पुर से उस महल

+ पाठ सुधार।
8 : 1-18 1 रा 9 : 10-28

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

में ले गया जिसको उसने उसके लिए बनाया था। राजा सुलेमान ने यह कहा 'मेरी पत्नी इस्राएल देश के राजा मेरे पिता दाऊद के महल में नहीं रहेगी; क्योंकि इस स्थान में प्रभु की मंजूषा ने प्रवेश किया है, और यह स्थान पवित्र है।'

12 राजा सुलेमान ने मन्दिर की ड्योढ़ी के सामने प्रभु के लिए एक वेदी बनाई थी।
उसने उस वेदी पर अग्नि-बलि चढ़ाई। 13 वह
मूसा की व्यवस्था के नियमानुसार निर्धारित पर्वों पर —विश्राम-दिवस, नवचन्द्र पर्व, तथा तीनों वार्षिक त्योहारों —बेखमीर रोटी के पर्व, सप्ताहों के पर्व और मण्डपों के पर्व—पर बलि चढ़ाया करता था। वह पर्व के निश्चित दिन
बलि चढ़ाता था। 14उसके पिता दाऊद ने
पुरोहितों और उप-पुरोहितों के सेवा-कार्य अलग-अलग बांट दिए थे। उसने अपने पिता के प्रबन्ध के अनुसार ऐसा ही किया: उसने पुरोहित- कार्य सम्पन्न करने के लिए पुरोहितों के दल बनाए,और उनकी बारी निश्चित कर दी। उसने उप-पुरोहितों का गायक-दल नियुक्त किया। ये उप-पुरोहित आराधना के समय न केवल वाद्य-यन्त्र बजाते थे, बल्कि वे दैनिक आराधना में पुरोहितों की सहायता भी करते थे। राजा सुलेमान ने मन्दिर के प्रवेश-द्वारों पर पहरा देने के लिए उप-पुरोहितों के अनेक दल बना दिए थे। इस प्रकार उप-पुरोहित द्वारपाल भी थे; क्योंकि परमेश्वर के जन दाऊद ने ऐसा ही
आदेश दिया था। 15पुरोहितों और उप-पुरोहितों
ने राजा के सब आदेशों का पूर्णतः पालन किया। यहां तक कि भण्डार-गृहों, तथा मन्दिर के कोषागार के सम्बन्ध में भी वे राजा के आदेश का पालन करते थे।

16 यों राजा सुलेमान का निर्माण-कार्य—प्रभु के भवन की नींव डालने के दिन से, उसके बनकर तैयार होने तक का समस्त कार्य—समाप्त हुआ। इस प्रकार प्रभु का भवन निर्मित हो गया।

17 प्रभु का भवन बनाने के पश्चात् राजा सुलेमान एस्योन-गेबेर के बन्दरगाह पर+ गया। यह बन्दरगाह आकाबा की खाड़ी के तट पर स्थित एलोत नगर के समीप एदोम देश में
था। 18राजा हूराम ने जहाजी बेड़े में अपने
सेवकों को, जो नाविक थे और समुद्र-मार्ग से परिचित थे, सुलेमान के सेवकों के पास भेजा। वे ओपीर देश गए और वहां से प्रायः पन्द्रह हजार किलो सोना लेकर लौटे। उन्होंने यह सोना राजा सुलेमान को दे दिया।

शबा देश की रानी का आगमन

9 शबा देश की रानी ने राजा सुलेमान की कीर्ति सुनी। उसने पहेलियों से उसकी परीक्षा करने के लिए यरूशलेम नगर को प्रस्थान किया। उसके साथ असंख्य सेवक-सेविकाएं और बहुमूल्य उपहार थे। मसाले, प्रचुर मात्रा में सोना और मणि-मुक्ता ऊंटों पर लदे हुए थे। वह राजा सुलेमान के पास पहुंची।
उसने अपने मन की सब बातें सुलेमान से कहीं।
2राजा सुलेमान ने उसकी सब पहेलियों को हल
कर दिया। राजा से एक पहेली भी नहीं छिपी
थी, जिसको वह बूझ न सका। 3जब शबा देश
की रानी ने यह सब देखा—सुलेमान की बुद्धि,
उसका नव-निर्मित महल, 4दस्तर-ख्वान* पर
परोसा गया राजसी भोजन, उसके उच्चाधिकारियों के आसन, परिचारकों की सेवा और उनकी पोशाक, उसके साकी और उनकी पोशाक, तथा अग्नि-बलि जो वह प्रभु के भवन में चढ़ाता था, तब वह आश्चर्य से
स्तब्ध रह गई। 5उसने राजा सुलेमान से कहा,
'जो बातें आपके विषय में, आपकी बुद्धि के विषय में मैंने अपने देश में सुनी थीं, वे सब सच
निकलीं। 6मैंने उन बातों को सुनकर उन पर
विश्वास नहीं किया था। पर जब मैं यहां आई, और स्वयं अपनी आंखों से देखा तब मुझे विश्वास करना पड़ा। निस्सन्देह आपकी विशाल बुद्धि के विषय में मुझे आधा ही बताया गया था। आप तो उससे कहीं अधिक महान् हैं,
जितना मैंने सुना था। 7सौभाग्य-शाली है

+ मूल में 'और समुद्र के तट पर स्थित एलोत नगर को'। * देखिए 1 राजा 10 : 5 की टिप्पणी।

8 : 13 गण 28 : 3-26; नि 23 : 14 **9 : 1-28** 1 रा 10 : 1-29 **9 : 1** मत 12 : 42

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आपकी जनता! सौभाग्यशाली हैं आपके ये
दरबारी,जो आपकी सेवा में सदा प्रस्तुत रहते
और आपकी बुद्धिमत्तापूर्ण बातें सुनते हैं!
8धन्य है आपका प्रभु परमेश्वर, जिसने आपसे
प्रसन्न होकर आपको अपने सिंहासन पर
प्रतिष्ठित किया कि आप उसकी ओर से राज्य
करें। आपके परमेश्वर ने इस्राएली राष्ट्र से प्रेम
किया है और उसे सदा बनाये रखना चाहा;
इसलिए उसने आपको उसका राजा नियुक्त
किया, ताकि आप न्याय और धर्म के कार्य
करें।'

9 तत्पश्चात् उसने राजा सुलेमान को
लगभग चार हजार किलो सोना,अत्यधिक
मात्रा में मसाले और मणि-मुक्ता उपहार में
दिये। जितनी मात्रा में शबा देश की रानी ने राजा
सुलेमान को मसाले उपहार में दिये, उतनी मात्रा
में मसाले फिर कभी इस्राएल देश में नहीं आए।

10 इसके अतिरिक्त हूराम तथा राजा
सुलेमान के सेवक, जो ओपीर देश से सोना
लाए थे, वहां से चन्दन की लकड़ी और मणि-
मुक्ता भी लाए। 11राजा सुलेमान ने चन्दन की
लकड़ी से प्रभु के भवन और राजमहल के लिए
मंच और संगीतकारों के लिए सितार और
सारंगियां बनाईं। इसके पहले ऐसी वस्तुएं
यहूदा प्रदेश में कभी नहीं देखी गई थीं।

12 जो कुछ भी शबा देश की रानी ने राजा
सुलेमान से मांगा, वह राजा सुलेमान ने उसकी
इच्छा के अनुसार उसे दिया। इसके अतिरिक्त
राजा सुलेमान ने अपने सामर्थ्य के अनुसार शबा
देश की रानी को उपहार दिये। यह उससे
अधिक था जो वह राजा सुलेमान के लिए लाई
थी। तत्पश्चात् वह विदा हुई। वह अपने
सेवक-सेविकाओं के साथ अपने देश को लौट
गई।

राजा सुलेमान का वैभव और कीर्ति

13 राजा सुलेमान को प्रति वर्ष प्रायः बाईस
हजार किलो सोना प्राप्त होता था। 14इसके
अतिरिक्त उसे देशी व्यवसायियों और विदेशी
व्यापारियों से कर के रूप में तथा अरब देश के
राजाओं और भिन्न-भिन्न प्रदेशों के शासकों से
भेंट के रूप में सोना-चांदी प्राप्त होता था।

15 राजा सुलेमान ने दो सौ आदम-कद
ढालें बनाईं और उनको सोने की परत से मढ़ा।
प्रत्येक ढाल में प्रायः सात किलो सोना लगा।
16उसने तीन सौ छोटी ढालें भी बनाईं और
उनको सोने की परत से मढ़ा। प्रत्येक ढाल में
प्रायः साढ़े तीन किलो सोना लगा। राजा
सुलेमान ने उनको लबानोन-वन के भवन में
रख दिया।

17 राजा सुलेमान ने हाथी-दांत का एक
भव्य सिंहासन भी बनाया और उसको शुद्ध
सोने से मढ़ा। 18सिंहासन पर चढ़ने के लिए छः
सोपान और सोने की एक चौकी सिंहासन से
जुड़ी थी। बैठने के स्थान के दोनों ओर दो हत्थे
थे,और हत्थों के समीप खड़े हुए दो सिंहों की
आकृति थी। 19प्रत्येक सोपान के दोनों ओर
खड़े हुए दो सिंह थे। इस प्रकार छः सोपानों पर
बारह सिंह थे। ऐसा सिंहासन किसी राज्य में
कभी नहीं बना।

20 राजा सुलेमान के सब पेय-पात्र सोने के
थे। लबानोन-वन के भवन के सब पात्र भी शुद्ध
सोने के थे। सुलेमान के राज्य-काल में चांदी
का कुछ भी मूल्य नहीं था।

21 राजा सुलेमान के जलयान हूराम के
सेवकों के साथ तर्शीश तक जाते थे। ये तर्शीशी
जलयान प्रति तीन वर्ष में एक बार आते और
विदेश से सोना, चांदी, हाथी-दांत, बन्दर और
मोर लाते थे।

22 इस प्रकार राजा सुलेमान धन-सम्पत्ति
और बुद्धि-विवेक में पृथ्वी के सब राजाओं से
श्रेष्ठ था। 23पृथ्वी के समस्त राजा उसकी
बुद्धिमत्तापूर्ण बातें सुनने के लिए उसके दरबार
में आने का प्रयत्न करते थे। यह बुद्धि परमेश्वर
ने उसे प्रदान की थी। 24आगन्तुक राजा अपने
साथ ये उपहार लाते थे : सोना-चांदी के पात्र,
वस्त्र, गन्धरस, मसाले, घोड़े और खच्चर। ऐसा
प्रतिवर्ष होता था। 25राजा सुलेमान के पास रथ
और घोड़ों के लिए चार हजार अश्वशालाएं

---

9 : 25 1 रा 4 : 26

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
थीं। उसके पास बारह हजार घोड़े थे। उसने कुछ रथ और घोड़े रथ-शाला के नगरों में तथा शेष अपने पास यरूशलेम नगर में रखे।

26 राजा सुलेमान फरात नदी से लेकर पलिश्तियों के देश तक के राजाओं पर राज्य करता था। उसके राज्य की सीमा मिस्र देश की सीमा तक फैली हुई थी।

27 राजा सुलेमान ने राजधानी यरूशलेम में चांदी को पत्थर के समान मूल्यहीन बना दिया। उसके पास देवदार की कीमती लकड़ी इतनी अधिक हो गई जितने अधिक शफेलाह प्रदेश में गूलर के वृक्ष हैं!

28 राजा सुलेमान के घोड़ों का आयात मिस्र देश तथा अन्य देशों से होता था।

राजा सुलेमान की मृत्यु

29 राजा सुलेमान के शेष कार्यों का विवरण, आदि से अन्त तक, इन पुस्तकों में लिखा हुआ है: 'नबी नातान का इतिहास-ग्रन्थ', 'शीलोह-वासी अहियाह का नबूवत-ग्रन्थ' और 'द्रष्टा इद्दो का दर्शन ग्रन्थ'। द्रष्टा इद्दो ने यारोबआम बेन-नबाट के विषय में दर्शन देखे थे।

30 राजा सुलेमान ने समस्त इस्राएल देश पर चालीस वर्ष तक राज्य किया। उसकी राजधानी
यरूशलेम नगर थी। 31तत्पश्चात् वह अपने मृत
पूर्वजों के साथ सो गया। वह अपने पिता दाऊद के नगर में गाड़ा गया। उसके स्थान पर उसका पुत्र रहबआम राज्य करने लगा।

खण्डित इस्राएली राष्ट्र

10 सब इस्राएली लोग रहबआम को राजा बनाने के लिए शकेम नगर को गए। अत: रहबआम भी शकेम नगर गया।
2यारोबआम बेन-नबाट ने सुलेमान की मृत्यु की खबर सुनी। वह अब तक मिस्र देश में था, जहां उसने राजा सुलेमान के सम्मुख से भाग कर शरण ली थी। अत: वह मिस्र देश से लौटा।
3इस्राएली लोगों ने उसके पास दूत भेजा, और उसको बुलाया। तब वह और सब इस्राएली लोग रहबआम के पास गए। उन्होंने उससे यह
कहा, 4'आपके पिता ने हमारे कन्धे पर भारी जूआ रखा था। वह हमसे कठोर सेवा लेते थे। अब कृपाकर, आप हमारे इस भारी जूए को, कठोर सेवा के भार को, हलका कीजिए। तब हम आपकी सेवा करेंगे।' 5रहबआम ने उन्हें
उत्तर दिया, 'तुम तीन दिन के पश्चात् मेरे पास लौट कर आना।' अत: लोग चले गए।

6 रहबआम ने धर्मवृद्धों से विचार-विमर्श किया। जब राजा सुलेमान जीवित था, उन दिनों में ये धर्मवृद्ध उसकी परिचर्या करते थे। रहबआम ने पूछा, 'आप मुझे क्या सलाह देते हैं? मैं इन लोगों को क्या उत्तर दूं?' 7उन्होंने उससे
कहा, 'यदि आप जनता के सेवक बन जाएंगे और उनकी सेवा करेंगे, उनसे मधुर वचन बोलेंगे, तो वे जीवन-भर आपके सेवक बने रहेंगे।' 8पर रहबआम ने धर्मवृद्धों की सलाह,
जो उन्होंने उसे दी थी, अस्वीकार कर दी। तब उसने उन युवकों से विचार-विमर्श किया, जो उसके साथ बड़े हुए थे और उसकी परिचर्या करते थे। 9रहबआम ने उनसे पूछा, 'तुम मुझे
क्या सलाह देते हो? मैं उन लोगों को क्या उत्तर दूं? उन्होंने मुझसे निवेदन किया है कि मैं जूए के भार को, जो उनके कन्धे पर मेरे पिता ने रखा है, हलका कर दूं।' 10उसके जवान साथी उससे
बोले, 'जिन लोगों ने आप से यह कहा है: "आपके पिता ने हमारे कन्धे पर भारी जूआ रखा था। आप इस भार को हलका कीजिए;" आप उनसे यों बोलिए, "यदि मेरे पिता सेर थे तो मैं सवा सेर हूँ! 11मेरे पिता ने तुम्हारे कन्धे
पर भारी जूआ रखा था, तो मैं उससे भी भारी जूआ तुम्हारे कन्धे पर रखूंगा। मेरा पिता तुम्हें चाबुक से मारता था तो मैं तुम्हें हण्टर से मारूंगा।"'

12 राजा रहबआम ने कहा था: 'तीन दिन के पश्चात् मेरे पास लौटकर आना।' अत: तीन दिन के पश्चात् यारोबआम और सब इस्राएली जनता राजा रहबआम के पास आए। 13राजा ने
जनता को कठोर उत्तर दिया। उसने धर्मवृद्धों

9 : 26 1 रा 4 : 21; उत 15 : 18 **9 : 28** व्य 17 : 16 **9 : 30-31** 1 रा 11 : 42-48 **10 : 1-16** 1 रा 12 : 1-19

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

की सलाह ठुकरा दी। 14जैसी सलाह उसके जवान साथियों ने उसे दी थी, उसी के अनुसार उसने लोगों से कहा, 'मेरे पिता ने तुम्हारे कन्धे पर भारी जूआ रखा था, मैं उससे भी भारी जूआ तुम्हारे कन्धे पर रखूंगा। मेरा पिता तुम्हें चाबुक से मारता था, मैं तुम्हें हण्टर से मारूंगा।' 15यों राजा ने जनता का निवेदन नहीं सुना। वस्तुत: प्रभु परमेश्वर ने यह पूर्व-निर्धारित कर दिया था जिससे वह अपने वचन को, जो उसने शिलोह के नबी अहीयाह के माध्यम से यारोबआम बेन-नबाट से कहा था, पूर्ण कर सके।

16 जब इस्राएली जनता ने देखा कि राजा ने उसकी बात नहीं सुनी, तब लोगों ने राजा को यह उत्तर दिया :

'दाऊद के राज्य में हमारा क्या भाग ? यिशय के पुत्र की सत्ता में हमारा पैतृक अधिकार नहीं।
ओ इस्राएली जाति, लौट जा अपने शिविर को! अरे दाऊद, अब संभाल अपने घर को।'

इस पर सब इस्राएली लोग अपने-अपने घर चले गए।

17 रहबआम केवल उन इस्राएलियों पर राज्य करने लगा जो यहूदा प्रदेश में रहते थे। 18तब राजा रहबआम ने उन इस्राएलियों के पास अदोराम को भेजा। वह बेगार करने वालों का निरीक्षक था। परन्तु इस्राएलियों ने उसे पत्थर मार-मारकर मार डाला। अत: राजा रहबआम अपने रथ पर तुरन्त चढ़ा और यरूशलेम नगर को भाग गया। 19इस प्रकार इस्राएली लोगों ने दाऊद के राजपरिवार से विद्रोह कर दिया। वे आज भी विद्रोही हैं।

11 रहबआम यरूशलेम नगर में आया। उसने यहूदा कुल और बिन्यामिन कुल के पुरुषों को एकत्र किया। वे एक लाख अस्सी हजार चुने हुए योद्धा थे। रहबआम इस्राएल लोगों से युद्ध कर अपना राज्य वापस लेना चाहता था। 2परन्तु प्रभु का यह सन्देश 'परमेश्वर के जन' शमायाह को मिला: 3'सुलेमान के पुत्र और यहूदा प्रदेश के राजा रहबआम से तथा यहूदा कुल-क्षेत्र और बिन्यामिन कुल-क्षेत्र में रहने वाले सब इस्राएलियों से यह कह : 4"प्रभु यों कहता है: आक्रमण मत करो। अपने ही भाई इस्राएल प्रदेश के लोगों से युद्ध मत करो। प्रत्येक व्यक्ति अपने घर लौट जाए; क्योंकि इस्राएली राष्ट्र का यह विभाजन मेरी इच्छा से हुआ है।"' अत: उन्होंने प्रभु की वाणी सुनी, और यारोबआम पर आक्रमण का विचार त्याग दिया और लौट गए।

रहबआम का वृत्तान्त

5 रहबआम यरूशलेम नगर में रहने लगा। उसने यहूदा प्रदेश की सुरक्षा के लिए ये नगर सुदृढ़ किए : 6बेतलहेम, एताम, तकोअ, 7बेत-सूर, सोको, अदुल्लाम, 8गत, मारेशा, जीप, 9अदोरईम, लाकीश, अजेकाह, 10सोराह, अय्यालोन और हेब्रोन। ये सब किलाबन्द नगर थे, और यहूदा तथा बिन्यामिन के कुल-क्षेत्रों में थे। 11उसने किलाबन्द नगरों को मजबूत किया, और उनमें सेनानायक नियुक्त किये। उन नगरों में उसने भोजन-वस्तु, तेल और अंगूर-रस का भण्डार सुरक्षित रखवा दिया। 12प्रत्येक नगर में ढालें और तलवारें रखीं। इस प्रकार रहबआम ने प्रत्येक नगर को अत्यन्त सुदृढ़ कर दिया। यों रहबआम यहूदा और बिन्यामिन कुल-क्षेत्रों पर राज्य करने लगा।

13 इस्राएल प्रदेश के कुल-क्षेत्रों में रहने वाले पुरोहित और लेवीय उप-पुरोहित अपने-अपने नगर को छोड़ कर रहबआम के पास आ गए। 14यारोबआम ने उन्हें प्रभु के पुरोहित-पद से निकाल दिया था। अत: वे लेवी लोग अपने खेत-खलियान और भूमि को छोड़कर यहूदा प्रदेश और यरूशलेम नगर में आ गए। 15यारोबआम ने पहाड़ी शिखरों पर वेदियां बनाईं और उनमें बछड़ों और बकरों की मूर्तियां प्रतिष्ठित कीं। इन मूर्तियों की सेवा-पूजा करने के लिए उसने अपने ही पुरोहित नियुक्त किये।

16 ये सब लोग भी, जो मन लगाकर इस्राएल के प्रभु परमेश्वर के दर्शन के खोजी

---

10 : 16 2 शम 20 :1 11 : 1-4 1 रा 12 : 22-24 11 : 14 गण 35 : 2 11 :15 1 रा 12 : 31; हो 13 : 2; लेव 17 : 7

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

थे, पुरोहितों और उप-पुरोहितों के साथ
इस्राएल प्रदेश के कुल-क्षेत्रों से निकल गए,
और वे अपने पूर्वजों के प्रभु परमेश्वर को बलि
चढ़ाने के लिए यरूशलेम नगर में आए।
17 उन्होंने यहूदा प्रदेश का राज्य सुदृढ़ किया,
और तीन वर्ष तक राजा सुलेमान के पुत्र
रहबआम के हाथ मजबूत किये; क्योंकि वे तीन
वर्ष तक राजा दाऊद और राजा सुलेमान के
बताए हुए मार्ग पर चलते रहे।

18 रहबआम ने महलत नामक एक स्त्री से
विवाह किया। वह दाऊद के पुत्र यरीमोत की
पुत्री था। उसकी मां का नाम अबीहईल था जो
एलीआब बेन-यिशय की पुत्री थी। 19 महलत
से ये पुत्र उत्पन्न हुए : यूश, शमर्याह और
जाहम।

20 रहबआम ने एक और विवाह किया।
उसकी दूसरी पत्नी का नाम माकाह था। वह
अबशालोम की पुत्री थी। उससे चार पुत्र
उत्पन्न हुए : अबियाह, अत्तै, जीजा और
शलोमीत।

21 रहबआम की अठारह रानियां और साठ
रखेल थीं। उसके अट्ठाईस बेटे और साठ
बेटियां थीं। किन्तु वह अपनी रानियों और
रखेलों से अधिक माकाह से प्रेम करता था, जो
अबशालोम की पुत्री थी। 22 वह अपनी प्रिय
पत्नी माकाह से उत्पन्न पुत्र अबियाह को राजा
बनाना चाहता था। अत: उसने अपने अन्य
पुत्रों, राजकुमारों के ऊपर उसको युवराज
नियुक्त कर दिया। 23 उसने समझ से काम
लिया, और अपने अन्य पुत्रों को यहूदा और
बिन्यामिन कुलों के क्षेत्रों के किलाबन्द नगरों
में अलग-अलग भेज दिया। उसने उनको प्रचुर
मात्रा में भोजन सामग्री दी, और उनके लिए
अनेक स्त्रियों का प्रबन्ध कर दिया।

यहूदा प्रदेश पर आक्रमण

12 जब यहूदा प्रदेश पर रहबआम का राज्य
स्थिर हो गया और वह स्वयं शक्तिशाली
हो गया, तब उसने प्रभु की व्यवस्था को त्याग
दिया। उसके साथ यहूदा प्रदेश में रहने वाले
इस्राएलियों ने भी प्रभु की व्यवस्था छोड़ दी,
और दुष्कर्म करने लगे। 2 रहबआम प्रभु के प्रति
निष्ठावान नहीं रहा। अत: उसके राज्य-काल
के पांचवें वर्ष में मिस्र देश के राजा शीशक ने
यरूशलेम नगर पर चढ़ाई कर दी। 3 शीशक की
सेना में बारह सौ रथ और साठ हजार घुड़सवार
थे। इनके अतिरिक्त उसके साथ लीबिया,
सुक्को, और इथियोपिया* देशों के असंख
सैनिक भी थे। ये उसके साथ मिस्र देश से आए
थे।

4 राजा शीशक ने एक के बाद एक यहूदा
प्रदेश के किलाबन्द नगरों पर कब्जा कर
लिया। वह यरूशलेम नगर तक आ पहुंचा।
5 शीशक के आक्रमण के कारण यहूदा प्रदेश के
सब उच्चाधिकारी यरूशलेम में एकत्र हुए। तब
नबी शमायाह राजा रहबआम और
उच्चाधिकारियों के पास आया। उसने उनसे
कहा, 'प्रभु यों कहता है: तुमने मुझे त्याग दिया
था, इसलिए मैंने भी तुम्हें त्याग दिया, और
शीशक के हाथ में छोड़ दिया।' 6 यह सुनकर
यहूदा प्रदेश के इस्राएली उच्चाधिकारियों और
राजा रहबआब ने स्वयं को विनम्र किया और
कहा, 'प्रभु धर्ममय है।'

7 जब प्रभु ने देखा कि उन्होंने स्वयं को
विनम्र किया है, तब प्रभु ने नबी शमायाह को
यह सन्देश दिया: 'उन्होंने मेरे सम्मुख स्वयं
को विनम्र किया है, अत: मैं उनको नष्ट नहीं
करूंगा। फिर भी मैं उनका पूर्णरूप से बचाव
नहीं करूंगा। मैं शीशक के माध्यम से अपनी
क्रोधाग्नि यरूशलेम पर नहीं उण्डेलूंगा; 8 किन्तु
वे शीशक के अधीन हो जाएंगे । तब उन्हें
अनुभव होगा कि मेरी सेवा और अन्य देशों के
राज्यों की सेवा में क्या अन्तर है।'

9 अत: मिस्र देश के राजा शीशक ने
यरूशलेम नगर पर चढ़ाई की। उसने प्रभु के
मन्दिर और राजमहल का खजाना लूट लिया।
वह सब कीमती वस्तुएं ले गया। जो सोने की

* अथवा 'सूदान'; मूल में 'कूश'

12 :1-16 1 रा 14 : 25-31 12 : 9 1 रा 10 : 16

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ढालें राजा सुलेमान ने बनाई थीं, वह उनको
भी ले गया। 10राजा रहबआम ने सोने की ढालों
के स्थान पर पीतल की ढालें बनायीं; और
उनको मुख्य द्वारपालों के हाथ में सौंप दिया,
जो राजमहल के प्रवेश-द्वारों पर पहरा देते थे।
11जब राजा रहबआम प्रभु के मन्दिर को जाता
था, तब द्वारपाल उनको उठा कर ले जाते थे।
वहाँ से लौटकर वे उनको शस्त्रागार में रख देते थे।
12 जब राजा रहबआम ने प्रभु के सम्मुख
स्वयं को विनम्र किया, तब उसके प्रति प्रभु का
क्रोध शान्त हो गया। प्रभु ने उसका पूर्ण विनाश
नहीं किया। इसके अतिरिक्त यहूदा प्रदेश में
परिस्थितियां अच्छी थीं।
13 राजा रहबआम ने राजधानी यरूशलेम में
स्वयं को पुन: सुदृढ़ किया, और यहूदा प्रदेश
पर राज्य करने लगा। जब उसने राज्य करना
आरम्भ किया तब उसकी आयु इकतालीस वर्ष
की थी। उसने राजधानी यरूशलेम में सत्रह वर्ष
तक राज्य किया। प्रभु ने अपने नाम को प्रतिष्ठित
करने के लिए इस्राएल के समस्त कुलों के
क्षेत्रों में से इस यरूशलेम नगर को चुना था।
रहबआम की मां का नाम नामाह था। वह
अम्मोन देश की थी।
14 जो कार्य प्रभु की दृष्टि में बुरा था, वही
उसने किया। उसने प्रभु की इच्छा जानने तथा
उसको खोजने में मन नहीं लगाया। 15रहबआम
के शेष कार्यों का विवरण, उसके सब कार्यों का
विवरण, 'नबी शमायाह का इतिहास-ग्रन्थ' में
तथा 'द्रष्टा इद्दो का इतिहास-ग्रन्थ' में लिखा
हुआ है। रहबआम तथा यारोबआम के मध्य
निरन्तर युद्ध होते रहे। 16रहबआम अपने मृत
पूर्वजों के साथ सो गया, और वह दाऊदपुर
में गाड़ा गया।
रहबआम के स्थान पर उसका पुत्र अबियाह
राज्य करने लगा।

यहूदा प्रदेश में अबियाह का राज्य

13 इस्राएल प्रदेश के राजा यारोबआम के
राज्य-काल के अठारहवें वर्ष में
अबियाह यहूदा प्रदेश का राजा बना। 2उसने
तीन वर्ष तक राजधानी यरूशलेम में राज्य
किया। उसकी माँ का नाम मीकायाह था, जो
गिबआ नगर के ऊरीएल की पुत्री थी।
3 अबियाह और यारोबआम के मध्य युद्ध
छिड़ गया। अबियाह सशक्त सैनिकों की एक
विशाल सेना लेकर युद्ध करने निकला। उसकी
सेना में चार लाख चुनिन्दे सैनिक थे।
यारोबआम ने उसका सामना करने के लिए
अपनी सेना को पंक्तिबद्ध किया। उसकी सेना
में आठ लाख चुनिन्दे सैनिक थे।
4 एफ्रइम पहाड़ी क्षेत्र में समारईम नामक
एक पहाड़ था। अबियाह उस पहाड़ पर खड़ा
हुआ और उसने राजा यारोबआम तथा इस्राएल
के समस्त कुलों के वंशजों को पुकार कर कहा,
'ओ यारोबआम तथा समस्त इस्राएलियो, मेरी
बात सुनो! 5क्या तुम्हें यह बात नहीं मालूम है
कि इस्राएली राष्ट्र के प्रभु परमेश्वर ने अलंघनीय
विधान* के माध्यम से इस्राएल देश का राज्य
दाऊद और उसके राजवंशों को सदा सर्वदा
के लिए दिया है? 6यह बात तुम जानते हो, फिर
भी राजा दाऊद के पुत्र सुलेमान के तुच्छ सेवक
यारोबआम बेन-नबाट ने अपने मालिक से
विद्रोह किया। 7उसके आस-पास चन्द गुण्डे
एकत्र हो गए। वे सुलेमान के पुत्र रहबआम
पर प्रबल हो गए; क्योंकि उस समय
रहबआम छोटा था, वह चंचल था। अत: वह
उनका सामना न कर सका।
8 'अब तुम सोचते हो कि यह राज्य
जिसको प्रभु ने दाऊद के वंश को पैतृक-
अधिकार के लिए सौंपा है, तुम हड़प लोगे;
क्योंकि तुम्हारे पास विशाल सेना है, तुम्हारे
साथ सोने के वे बछड़े हैं, जिनको यारोबआम
ने तुम्हारे लिए ईश्वर के रूप में बनाया है।
9तुमने अपने मध्य में से प्रभु के पुरोहितों को
हारून के वंशजों और लेवी वंशीय उप-
पुरोहितों—को निकाल दिया, और उनके स्थान
पर मनमाने पुरोहित नियुक्त कर लिये, जैसे

* शब्दश:, 'नमक के विधान'।
13 : 1-2 1 रा 15 : 1-2, 7

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अन्य जातियां करती हैं। जो भी आदमी
पुरोहित बनने के लिए एक बैल और सात मेढ़े
लेकर तुम्हारे पास आता है, तुम उसका
अभिषेक कर देते हो, और वह बछड़े की
मूर्तियों का पुरोहित बन जाता है, जो ईश्वर नहीं
है! 10लेकिन केवल प्रभु ही हमारा परमेश्वर है
और हमने उसको नहीं त्यागा है। प्रभु की सेवा
करने के लिए हमारे पास हारून-वंश के
पुरोहित हैं, और आराधना-कार्य में उनकी
सहायता करने वाले लेवी कुल के उप-पुरोहित
हैं। 11हारून-वंशीय ये पुरोहित प्रतिदिन सबेरे
और सन्ध्या समय प्रभु के लिए अग्नि-बलि
चढ़ाते हैं, सुगन्धित धूप-द्रव्य जलाते हैं। वे
कुन्दन की मेज पर भेंट की रोटी रखते हैं। वे
स्वर्ण दीपाधार के दीये नियमित रूप से सन्ध्या
समय जलाते हैं। इस प्रकार हम अपने प्रभु
परमेश्वर के आदेश का पालन करते हैं; किन्तु
तुमने उसका त्याग दिया। 12देखो परमेश्वर हमारा
नेता है, वह हमारे साथ है। उसके पुरोहित
हमारे साथ हैं। वे तुम्हारे विरुद्ध युद्ध की पुकार
के लिए तुरहियां फूंकने को तैयार हैं। ओ
इस्राएल के वंशजो, अपने पूर्वजों के प्रभु
परमेश्वर के विरुद्ध युद्ध मत करो; क्योंकि तुम
युद्ध में विजयी नहीं होगे।'

13 यारोबआम ने यहूदा प्रदेश की सेना के
पीछे से हमला करने के लिए अपने गुरिल्ला
सैनिकों को भेजा। उसकी सेना के सामने
यहूदा की सेना थी, और घात लगाकर हमला
करने वाले गुरिल्ला सैनिक यहूदा प्रदेश की
सेना के पीछे थे। 14यहूदा प्रदेश के सैनिकों ने
पीछे देखा तो उन्हें पता चला कि आगे और
पीछे से उन पर आक्रमण होगा। अतः उन्होंने
प्रभु की दुहाई दी, और उनके पुरोहितों ने युद्ध
की तुरहियां फूंकीं। 15यहूदा के सैनिकों ने
रणनाद किया। जब यहूदा के सैनिकों ने रणनाद
किया, उसी क्षण परमेश्वर ने यारोबआम और
उसके इस्राएली सैनिको को अबियाह और
यहूदा प्रदेश के सैनिकों के सम्मुख पराजित कर
दिया। 16इस्राएली सैनिक यहूदा प्रदेश के
सैनिकों के सम्मुख से भागे, और परमेश्वर ने
उनको यहूदा के सैनिकों के हाथ में सौंप दिया।
17अबियाह और उसके सैनिकों ने इस्राएली
सैनिकों का महासंहार किया। इस्राएली सैनिकों
के पांच लाख चुनिन्दे सैनिक मारे गए। 18उस
समय इस्राएली दब गए, और यहूदा प्रदेश के
सैनिक प्रबल हो गए; क्योंकि उन्होंने अपने
पूर्वजों के प्रभु परमेश्वर पर भरोसा किया था।

19 तब अबियाह ने यारोबआम का पीछा
किया, और उससे ये नगर छीन लिये: बेतएल
और उसके आस-पास के गांव, यशनाह और
उसके आस-पास के गांव, एप्रोन* और उसके
आस-पास के गांव।

20 जब तक अबियाह जीवित रहा,
यारोबआम अपना सिर फिर न उठा सका। वह
पुनः शक्तिशाली न बन सका। प्रभु ने उस पर
प्रहार किया और वह मर गया। 21किन्तु अबियाह
अत्यन्त शक्तिशाली हो गया। उसने चौदह
स्त्रियों से विवाह किया। उसके बाईस पुत्र
और सोलह पुत्रियां हुईं। 22अबियाह के शेष
कार्यों का विवरण, उसके आचरण और भाषणों
का विवरण 'नबी इद्दो का व्याख्या-ग्रन्थ' में
लिखा हुआ है।

14 **तत्पश्चात् अबियाह अपने मृत
पूर्वजों के साथ सो गया। लोगों ने
उसको दाऊदपुर में गाड़ा। उसके स्थान पर
उसका पुत्र आसा राज्य करने लगा।

आसा का राज्य

आसा के राज्यकाल में दस वर्ष तक देश
में शान्ति रही। 2**उसने वही कार्य किया जो
प्रभु परमेश्वर की दृष्टि में उचित था। 3उसने
अन्य जाति की वेदियां, पहाड़ी शिखर के
पूजागृह ध्वस्त कर दिए। उसने पूजा-स्तम्भ
तथा अशेराह देवी की प्रतिमा को काट दिया।
4उसने यहूदा प्रदेश के निवासियों को आदेश
दिया कि वे अपने पूर्वजों के प्रभु परमेश्वर के
दर्शन के खोजी बनें, और उसकी व्यवस्था तथा

* पाठांतर, 'एफ्रइम' ** मूल में अध्याय 13 : 23; 14 : 1

13 : 12 गण 10 : 8; प्रे 5 : 39 13 : 15 1 रा 15 : 8-12 14 :3 नि 34 : 13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आज्ञाओं का पालन करें। [5]यहूदा प्रदेश के नगरों
में पहाड़ी शिखरों पर पूजागृह तथा धूप-वेदियां
थीं। उसने सब नगरों से उनको हटा दिया। यों
उसके अधीन समस्त राज्य में शान्ति रही।
6 समस्त राज्य में शान्ति थी। अत: राजा
ने यहूदा प्रदेश में किलाबन्द नगरों का निर्माण
किया। प्रभु ने उस को शान्ति प्रदान की थी।
उसके राज्य-काल में युद्ध नहीं हुए। [7]उसने यहूदा
प्रदेश के निवासियों से कहा, 'आओ, हम
अपने नगरों का पुनर्निर्माण करें, और उनको
शहरपनाह से घेरें। उनमें किले और दरवाजे
बनाएं, दरवाजों में पल्ले और बेड़ें लगवाएं। यह
देश अब तक हमारा है; क्योंकि हम अपने प्रभु
परमेश्वर के खोजी हैं। हमने उसको खोजा,
और उसने हमें चहुंओर शान्ति प्रदान की।'
अत: उन्होंने नगरों का पुनर्निर्माण-कार्य आरम्भ
किया, और वे अपने कार्य में सफल भी हुए।
8 राजा आसा के पास यहूदा प्रदेश तथा
बिन्यामिन कुल-क्षेत्र के सैनिक थे: यहूदा
प्रदेश के तीन लाख सैनिक तथा बिन्यामिन
कुल-क्षेत्र के दो लाख अस्सी हजार सैनिक।
यहूदा प्रदेश के सैनिक ढाल और बर्छी रखते
थे, और बिन्यामिन के सैनिक फरी और धनुष
धारण करते थे। सब सैनिक सशक्त और
शूरवीर थे।

इथियोपिया देश के राजा जेरह का आक्रमण

9 इथियोपिया देश का राजा जेरह यहूदा
प्रदेश पर आक्रमण करने के लिए निकला।
उसकी सेना में दस लाख सैनिक, और तीन सौ
रथ थे। वह मारेशा नामक स्थान तक पहुंच
गया। [10]आसा उसका सामना करने के लिए
निकला। उन्होंने सापता घाटी में, मारेशा में
युद्ध के लिए पंक्ति बांधी।
11 तब राजा आसा ने प्रभु परमेश्वर की
दुहाई दी। उसने कहा, 'हे प्रभु, निर्बल की
सहायता करने वाला तेरे समान और कौन
ईश्वर है? जब बलवान और निर्बल में लड़ाई
होती है, तब तू निर्बल की सहायता करता है।*
हे प्रभु परमेश्वर, हमारी सहायता कर; क्योंकि
हमने तुझ पर भरोसा किया है। हम तेरे नाम में
ही शत्रु की इस विशाल सेना का सामना करने
के लिए आए हैं। हे प्रभु, तू ही हमारा परमेश्वर
है। कोई भी मनुष्य तुझ पर प्रबल न हो!'
12 अत: प्रभु ने राजा आसा और यहूदा
प्रदेश की सेना के सम्मुख इथियोपियाई सेना
को पराजित कर दिया। इथियोपियाई सेना सिर
पर पैर रखकर भागी। [13]किन्तु राजा आसा तथा
उसके साथ के सैनिकों ने गरार नगर तक उनका
पीछा किया। इथियोपियाई सैनिक धराशायी
होते गए, और उनका एक भी सैनिक प्राण
बचाकर न भाग सका। वे प्रभु और इसकी सेना
के सम्मुख टूट गए! यहूदा प्रदेश के सैनिकों को
अपार लूट हाथ लगी। [14]उन्होंने गरार के आस-
पास के सब नगरों को खण्डहर बना दिया;
क्योंकि प्रभु का आतंक उन पर छाया हुआ
था। उन नगरों में लूट का बहुत माल था। अत:
उन्होंने उनको लूट लिया। [15]पशु-पालन करने
वाले लोग तम्बू में रहते थे। यहूदा के सैनिकों
ने उनके तम्बू उखाड़ दिये, और असंख्य भेड़-
बकरी और ऊंट लूटकर ले गए। तब वे
राजधानी यरूशलेम को लौटे।

राजा आसा के धार्मिक-सुधार

15 तब परमेश्वर का आत्मा अजर्याह बेन-
ओदेद पर उतरा [2]और वह राजा आसा
से मिलने के लिए गया। अजर्याह ने उससे
कहा, 'महाराज आसा, यहूदा और बिन्यामिन
भूमि-क्षेत्रों के निवासियो, मेरी बात सुनो।
'जब तुम प्रभु के साथ रहोगे
तब वह तुम्हारे साथ रहेगा;
जब तुम उसको खोजोगे
तब वह तुम्हें मिलेगा।
किन्तु यदि तू उसको त्याग दोगे
तो वह तुम्हें भी त्याग देगा!
3 'बहुत समय तक इस्राएली लोग सच्चे
परमेश्वर, धर्मशिक्षक, पुरोहित और व्यवस्था
से वंचित रहे। [4]परन्तु जब-जब इस्राएली संकट

---

* शब्दश: 'जैसे तू बलवान की सहायता कर सकता है, वैसे ही निर्बल की भी'।

15 : 2 हो 3 : 5; याक 4 : 8; मत 7 : 7 15 : 4 व्य 4 : 29

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

के समय प्रभु परमेश्वर की ओर लौटे और
उन्होंने अपने परमेश्वर की खोज की, तब-तब
उन्होंने उसको पाया। 5 उन दिनों में युद्ध के
समय जनता का नेतृत्व करने वाले अगुए को
कहीं शान्ति नहीं मिलती थी; क्योंकि समस्त
देश के निवासियों में भगदड़ और अशान्ति
फैली हुई थी। 6सब खण्ड-खण्ड में बंटे हुए
थे। एक जाति दूसरी जाति पर हमला करती
थी। एक नगर दूसरे नगर पर आक्रमण करता
था। परमेश्वर ने हर प्रकार की विपत्ति से उनको
आतंकित कर रखा था। 7 किन्तु तुम साहसी
बनो! तुम्हारे हाथ मजबूत हों! परमेश्वर तुम्हारे
परिश्रम का फल तुम्हें देगा।'

8 राजा आसा नबी अजर्याह बेन-ओदेद की
ये बातें, उसकी यह नबूवत सुनकर साहस से
भर गया। उसने समस्त यहूदा प्रदेश और
बिन्यामिन-कुल-क्षेत्र से घृणित मूर्तियां हटा दीं।
उसने एफ्रइम के पहाड़ी क्षेत्र के नगरों में भी
यही किया। ये नगर उसने युद्ध में जीते थे।

प्रभु की वेदी मन्दिर की ड्योढ़ी के सामने
थी। राजा आसा ने प्रभु की इस वेदी की मरम्मत
की। 9उसने समस्त यहूदा तथा बिन्यामिन कुलों
के सब लोगों को एकत्र किया। एफ्रइम तथा
मनश्शे गोत्रों और शिमोन कुल के असंख्य
लोग इस्राएल प्रदेश को त्यागकर राजा आसा
के पास आ गए थे, और उसके राज्य में निवास
करने लगे थे; क्योंकि उन्होंने अनुभव किया
था कि प्रभु परमेश्वर राजा आसा के साथ है।
राजा आसा ने इन लोगों को भी एकत्र किया।
10ये सब आसा के राज्य-काल के पन्द्रहवें वर्ष
के तीसरे महीने में राजधानी यरूशलेम में एकत्र
हुए। 11 जो पशु उन्होंने शत्रुओं से लूटे थे, उनमें
से सात सौ बछड़ों और सात हजार भेड़ों की
बलि उसी दिन प्रभु को चढ़ाई। 12उसी दिन वे
प्रभु के साथ स्थापित विधान की धर्मविधि में
सम्मिलित हुए कि वे सम्पूर्ण हृदय और सम्पूर्ण
प्राण से अपने पूर्वजों के प्रभु परमेश्वर के
खोजी बनेंगे। 13जो व्यक्ति, फिर चाहे वह
पुरुष हो, स्त्री हो, बड़ा हो या छोटा हो,
इस्राएली राष्ट्र के प्रभु परमेश्वर की खोज नहीं
करेगा, उसका वध किया जाएगा। 14उन्होंने जय-
जयकार और अत्यन्त उच्च स्वर में, तुरहियां
तथा नरसिंगे बजाते हुए प्रभु की शपथ ली।
15इस शपथ से यहूदा प्रदेश का समस्त
जनसमुदाय अत्यन्त प्रसन्न हुआ; क्योंकि लोगों
ने मुक्त हृदय से यह शपथ खाई थी। उन्होंने
सम्पूर्ण हृदय से प्रभु को ढूंढ़ा था और वह
उनको प्राप्त हुआ था। प्रभु ने उनके चारों ओर
के शत्रुओं से उन्हें विश्राम दिया।

16 राजा आसा ने अपनी दादी माकाह को
भी राजमाता के पद से हटा दिया; क्योंकि उसने
अशेराह देवी की एक घृणित प्रतिमा बनाई थी।
राजा आसा ने अशेराह की प्रतिमा तोड़ दी,
उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिये, और उसको
किद्रोन घाटी में आग में जला दिया। 17यद्यपि
उसने पहाड़ी शिखर की वेदियां अपने राज्य से
नहीं हटाईं, तो भी जीवन-भर उसका हृदय प्रभु
के प्रति सच्चा रहा। 18जो सोना-चांदी तथा
कीमती पात्र उसके पिता ने तथा स्वयं उसने
परमेश्वर को अर्पित किए थे, उन सब को
उसने परमेश्वर के भवन में रख दिया।

19 राजा आसा के राज्य के पैंतीसवें वर्ष
तक फिर किसी से युद्ध नहीं हुआ।

आसा और बेन-हदद के मध्य सन्धि

16 आसा के राज्य के छत्तीसवें वर्ष में
इस्राएल प्रदेश के राजा बाशा ने यहूदा
प्रदेश पर आक्रमण किया, और रामाह नगर की
किलाबन्दी कर दी जिससे यहूदा प्रदेश के राजा
आसा के आवागमन का मार्ग अवरुद्ध हो गया।
2तब आसा ने प्रभु के भवन और अपने
राजमहल के खजाने का सोना-चांदी निकाला
और उसको अपने सेवकों के हाथ से बेन-हदद
के पास भेज दिया। बेन-हदद सीरिया देश का
राजा था। वह दमिश्क नगर में रहता था। 3आसा
ने यह सन्देश बेन-हदद के पास भेजा, 'जैसे
मेरे पिता और आपके पिता के मध्य सन्धि थी
वैसे ही, आइए, मैं और आप सन्धि करें। मैं
आपकी सेवा में सोना-चांदी का उपहार भेज

15 : 7 यिर 31 : 16; लू 6 : 35 15 : 16—16 : 6 1रा 15 : 13-22

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रहा हूँ। कृपया, आप इस्राएल प्रदेश के राजा
बाशा से सन्धि-विच्छेद कर लीजिए ताकि वह
मेरे पास से पीछे हट जाए।'
4 बेन-हदद ने राजा आसा की बात सुनी।
उसने इस्राएल प्रदेश के नगरों पर आक्रमण
करने के लिए अपने सेनापति भेजे। सेनापतियों
ने इस्राएल प्रदेश के इयोन, दान, आबेलमईम
नगरों और नफ्ताली कुल-क्षेत्र के भण्डार-
नगर जीत लिये। 5जब बाशा ने यह समाचार
सुना तब उसने तत्काल रामाह नगर की
किलाबन्दी का कार्य रोक दिया, और निर्माण-
कार्य बन्द कर दिया।
6 राजा आसा अपने साथ समस्त यहूदा
प्रदेश के निवासियों को ले गया। जिन पत्थरों
और लकड़ियों से राजा बाशा रामाह नगर की
किलाबन्दी कर रहा था, उनको यहूदा प्रदेश के
निवासी ढोकर ले गए। राजा आसा ने उन
पत्थरों और लकड़ियों से गेबा नगर और
मिस्पाह नगर की किलाबन्दी की।

नबी की फटकार

7 उन्हीं दिनों में यहूदा प्रदेश के राजा आसा
के पास एक द्रष्टा आया । उसका नाम हनानी
था। उसने राजा से कहा, 'महाराज, आपने
अपने प्रभु परमेश्वर पर नहीं, बल्कि सीरिया के
राजा पर भरोसा किया। इसलिए सीरिया के
राजा की सेना आपके हाथ से बच गई।
8महाराज, क्या इथियोपियाई और लीबियाई
सेनाएं कम शक्तिशाली सेनाएं थीं? क्या उनकी
विशाल सेनाओं में असंख्य रथ और घुड़सवार
नहीं थे? फिर भी आपने प्रभु पर भरोसा किया
था, और उसने उनको आपके हाथ में कर दिया
था। 9सम्पूर्ण पृथ्वी पर प्रभु की दृष्टि यहां से
वहां दौड़ती रहती है, ताकि वह अपने उन
भक्तों को अपना सामर्थ्य दिखा सके जो
निष्कलंक हृदय से प्रभु पर विश्वास करते हैं।
किन्तु महाराज, आपने यह बहुत मूर्खतापूर्ण
कार्य किया। इसलिए अब से आप निरन्तर युद्ध
में जूझते रहेंगे।'
10 यह सुनकर राजा आसा द्रष्टा से बहुत
नाराज हुआ। उसने द्रष्टा को काठ की बेड़ी से
जकड़ दिया और कारागार में डाल दिया। वह
द्रष्टा की बात सुनकर उसके प्रति क्रोधाग्नि से
धधक उठा था।
उन्हीं दिनों में राजा आसा ने जनता के कुछ
लोगों से निर्दय व्यवहार भी किया।

राजा आसा के अन्तिम दिन

11 राजा आसा के शेष कार्यों का विवरण
उसके सब कार्यों का विवरण 'यहूदा प्रदेश
तथा इस्राएल प्रदेश के राजाओं का इतिहास-
ग्रन्थ' में लिखा हुआ है। 12अपने राज्य-काल
के उन्तालीसवें वर्ष में उसके पैरों में रोग हो
गया। यह रोग बढ़कर घातक हो गया। अपनी
इस बीमारी में भी उसने प्रभु को नहीं ढूंढ़ा,
बल्कि वैद्यों से इलाज करवाया। 13यों वह अपने
राज्य-काल के इकतालीसवें वर्ष में मर गया।
आसा अपने मृत पूर्वजों के साथ सो गया।
14उसने दाऊदपुर में अपने लिए कबर खुदवायी
थी। लोगों ने उसको उसी कबर में गाड़ा।
वह एक ऐसी शव-पेटिका में लिटाया गया
था, जिसमें तरह-तरह के सुगन्धित मसाले भरे
हुए थे। इन मसालों को गन्धियों ने कुशलता-
पूर्वक तैयार किया था। राजा आसा के सम्मान
में अपार मात्रा में सुगन्धित धूप-द्रव्य जलाया
गया।

यहोशाफट का राज्य

17 राजा आसा की मृत्यु के बाद उसका पुत्र
यहोशाफट उसके स्थान पर राज्य करने
लगा। उसने इस्राएल राज्य के विरुद्ध स्वयं को
शक्तिशाली बनाया। 2 उसने यहूदा प्रदेश के
सब किलाबन्द नगरों में सैन्य-दल नियुक्त
किये। उसने समस्त यहूदा प्रदेश में सैन्य-
शिविर स्थापित किये। एफ्रइम के जिन नगरों
पर उसके पिता आसा ने कब्जा कर लिया था,
उनमें भी उसने अपनी सैनिक-चौकियां बैठा
दीं।
3 प्रभु राजा यहोशाफट के साथ था; क्योंकि
राजा यहोशाफट ने अपने पिता के राज्य-काल
के आरम्भिक दिनों के आचरण का अनुसरण

16 : 9 भज 33 : 13-15; नीति 5 : 21 16 :10 यिर 20 : 2 16 :12-14 1 रा 15: 23-24 17 : 1 1 रा 15 : 24

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

किया था। वह बअल देवता के पीछे नहीं गया,
[4]बल्कि अपने पिता के परमेश्वर का खोजी
बना। उसने इस्राएल प्रदेश की जनता के समान
नहीं, किन्तु परमेश्वर की आज्ञाओं के अनुरूप
आचरण किया। [5]अत: प्रभु ने उसके हाथ में
राज्य को सुदृढ़ किया। यहूदा राज्य की समस्त
जनता यहोशाफट को भेंट चढ़ाती थी। इसलिए
उसके पास अत्यन्त बहुमूल्य वस्तुएं एकत्र हो
गईं, और उसकी प्रतिष्ठा बढ़ गई। [6]वह
उत्साहपूर्वक प्रभु के मार्ग पर चलता था। उसने
यहूदा प्रदेश से पहाड़ी शिखर की सब वेदियां
और अशेराह देवी के पूजा-स्तम्भ हटा दिए।

धर्मशिक्षा का प्रचार-प्रसार

7 यहोशाफट ने अपने राज्य के तीसरे वर्ष
में अपनी जनता को प्रभु की व्यवस्था सिखाने
के लिए उच्चाधिकारियों को यहूदा प्रदेश के
सब नगरों में भेजा। उच्चाधिकारी ये थे :
बेन्हईल, ओबद्याह, जकर्याह, नतनएल और
मीकायाह। [8]उनके साथ ये उपपुरोहित थे :
शमायाह, नतन्याह, जबद्याह, असाहेल, शमीरा-
मोत, यहोनातन, अदोनियाह, तोबियाह और
तोब-अदोनियाह। इन उपपुरोहितों के साथ ये
पुरोहित थे : एलीशामा और यहोराम।

9 वे अपने साथ प्रभु का व्यवस्था-ग्रन्थ
लेकर समस्त यहूदा प्रदेश में भ्रमण करने लगे।
उन्होंने यहूदा प्रदेश की जनता को प्रभु की
व्यवस्था सिखाई। वे यहूदा प्रदेश के सब नगरों
में गए, और लोगों को सिखाते रहे।

10 यहूदा प्रदेश के चारों ओर के राज्यों में
प्रभु का इतना भय समा गया कि उन्होंने राजा
यहोशाफट पर आक्रमण करने, और उससे युद्ध
करने का साहस नहीं किया। [11]पलिश्ती देश के
कुछ लोगों ने तो यहोशाफट को उपहार दिये।
उन्होंने उसको कर के रूप में चांदी दी। अरब
देश के लोगों ने उसको भेंट में सात हज़ार सात
सौ मेढ़े, और सात हजार सात सौ बकरे दिए।

12 राजा यहोशाफट निरंतर शक्तिशाली
होता गया। उसने यहूदा प्रदेश में किलों और
भण्डार-गृहों का निर्माण किया। [13]यहूदा प्रदेश
के नगरों में उसके विशाल भण्डार-गृह थे।
उसने राजधानी यरूशलेम में सशक्त शूरवीर
सैनिकों की सेना रखी। [14]अपने-अपने पितृकुलों
के अनुसार उनका विवरण इस प्रकार है। यहूदा
प्रदेश से सहस्र सैनिकों के नायक ये थे:
सेनापति अदना; यह तीन लाख सैनिकों का
नायक था। [15]उपसेनापति यहोहानन; यह दो
लाख अस्सी हजार वीर सैनिकों का नायक था।
[16]उपसेनापति के पश्चात् पद-क्रम में सह-
उपसेनापति अमस्याह बेन-जिक्री था। वह दो
लाख वीर सैनिकों का नायक था। अमस्याह ने
स्वेच्छा से प्रभु की सेवा में स्वयं को अर्पित
किया था।

17 बिन्यामिन कुल-क्षेत्र के सैनिकों के
नायक ये थे : सेनापति एल्यादा— यह अत्यन्त
बलवान योद्धा था। इसके अधीन दो लाख
सैनिक थे,जो ढाल रखते थे। ये धनुषधारी
सैनिक थे। [18]उसका उपसेनापति था—
यहोजाबाद। उसके अधीन एक लाख अस्सी
हजार सैनिक थे। ये युद्ध के लिए सदा हथियार
बान्धे रहते थे।

19 ये वे सैनिक थे जो राजा यहोशाफट की
सेवा में यरूशलेम में तैनात थे। इनके अतिरिक्त
अन्य सैनिक भी थे जिनको राजा यहोशाफट ने
यहूदा प्रदेश के किलाबन्द नगरों में नियुक्त
किया था।

यहूदा और इस्राएल में सन्धि

18 यहोशाफट के पास अपार धन-सम्पत्ति
हो गई। वह अत्यन्त समृद्ध और
ऐश्वर्यशाली हो गया। उसने अहाब के राजवंश
से विवाह-सम्बन्ध स्थापित किया और उसका
समधी बन गया। [2]कुछ वर्षों के बाद वह राजा
अहाब के पास उसकी राजधानी सामरी नगर
गया। राजा अहाब ने उसके और उसके साथ
के उच्चाधिकारियों के सम्मान में असंख्य भेड़-
बकरियां और बैल काटे। उसने यहोशाफट को
उकसाया कि वह उसके साथ रामोत-गिलआद
नगर पर चढ़ाई करे। [3]इस्राएल प्रदेश के राजा
अहाब ने यहूदा प्रदेश के राजा यहोशाफट से

17 : 9 नह 8 : 7 18 : 1-34 1 रा 22 : 1-35

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कहा, 'क्या आप मेरे साथ रामोत-गिलआद
नगर को चलेंगे?' यहोशाफट ने उत्तर दिया,
'जो मेरा है, वह आप का है : मैं और मेरी सेना।
हम युद्ध में आप से कन्धे से कन्धा मिलाकर
शत्रु से लड़ेंगे'।

नबी मीकायाह की नबूवत

4 यहोशाफट ने इस्राएल प्रदेश के राजा
अहाब से कहा, 'आइए, पहले हम प्रभु का
वचन प्राप्त करें।' 5अत: इस्राएल प्रदेश के राजा
अहाब ने नबियों को एकत्र किया। वे कुल चार
सौ थे। राजा अहाब ने उनसे पूछा, 'क्या हमें
रामोत-गिलआद नगर से युद्ध करने के लिए
जाना चाहिए? अथवा मुझे युद्ध नहीं करना
चाहिए?' नबियों ने कहा, 'आप आक्रमण
कीजिए। परमेश्वर उसको महाराज के हाथ में
सौंप देगा।' 6किन्तु यहोशाफट ने पूछा, 'क्या
यहां प्रभु का कोई नबी नहीं है, जिससे हम प्रभु
का वचन प्राप्त करें?' 7इस्राएल प्रदेश के राजा
ने यहोशाफट को बताया, 'यहां एक आदमी है।
उससे हम प्रभु का वचन प्राप्त कर सकते हैं।
उसका नाम मीकायाह बेन-यिम्लाह है। पर मैं
उससे घृणा करता हूँ! क्योंकि वह मेरे विषय में
कभी शुभ नबूवत नहीं करता, वरन् सदा अशुभ
ही कहता है।' यहोशाफट ने कहा, 'महाराज,
ऐसा मत बोलिए।'

8 इस्राएल प्रदेश के राजा ने एक खोजा-
अधिकारी को बुलाया, और उससे कहा,
'मीकायाह बेन-यिम्लाह को अविलम्ब
लाओ।'

9 इस्राएल प्रदेश का राजा अहाब और यहूदा
प्रदेश का राजा यहोशाफट अपने-अपने सिंहासन
पर विराजमान थे। वे राजसी वेशभूषा में थे और
सामरी नगर के प्रवेश-द्वार के सामने मैदान में
बैठे हुए थे। सब नबी उनके सम्मुख नबूवत कर
रहे थे। 10नबी सिद्किया‍ह बेन-कनानाह ने
लोहे के सींग बनाए, और यह कहा, 'प्रभु यों
कहता है : जब तक सीरिया देश की सेना पूर्णत:
नष्ट नहीं हो जाएगी, तू उनको ऐसे ही सामर्थी
सींगों से मारता रहेगा।' 11सब नबी ऐसी ही
नबूवत कर रहे थे। वे कह रहे थे, 'महाराज,
रामोत-गिलआद नगर पर चढ़ाई कीजिए, और
विजय प्राप्त कीजिए। प्रभु नगर को आपके
हाथ में सौंप देगा।'

12 जो दूत मीकायाह को बुलाने गया था,
उसने मीकायाह से कहा, 'सब नबी एक-स्वर
में महाराज के लिए शुभ नबूवत कर रहे हैं।
आपका वचन भी उन्हीं के समान शुभ हो।
कृपया, आप शुभ ही बोलिए।' 13किन्तु
मीकायाह ने कहा, 'जीवन्त प्रभु की सौगन्ध!
जो वचन परमेश्वर मुझसे कहेगा, वही मैं
बोलूंगा।'

14 मीकायाह अहाब के पास आया। राजा
ने उससे पूछा, 'मीकायाह, क्या हमें रामोत-
गिलआद नगर से युद्ध करने के लिए जाना
चाहिए? अथवा मुझे युद्ध नहीं करना चाहिए?'
मीकायाह ने उसको उत्तर दिया, 'हां, हां! आप
चढ़ाई कीजिए, और विजय प्राप्त कीजिए।
नगर आप के हाथ में सौंप दिया जाएगा।'
15राजा ने उससे कहा, 'मैं तुम्हें कितनी बार
शपथ दूं कि तुम मुझसे प्रभु के नाम में सच के
अतिरिक्त कुछ मत बोला करो?' 16तब
मीकायाह ने कहा :

'मैंने इस्राएली राष्ट्र को पहाड़ों पर तितर-
बितर होते देखा,
जैसे बिना चरवाहे का रेवड़!
प्रभु मुझसे बोला, "इनका कोई स्वामी नहीं,
प्रत्येक व्यक्ति अपने घर को सकुशल लौट
जाए।"'

17 इस्राएल प्रदेश के राजा ने यहोशाफट से
कहा, 'मैंने आपसे नहीं कहा था कि यह मेरे
विषय में कभी शुभ नबूवत नहीं करता? यह
सदा अशुभ ही कहता है।' 18मीकायाह ने आगे
कहा, 'अब प्रभु का वचन सुनिए। मैंने प्रभु को
सिंहासन पर विराजमान देखा। उसके समीप
स्वर्ग की समस्त सेना उसकी दाहिनी तथा बाईं
ओर खड़ी थी। 19प्रभु ने पूछा, "कौन व्यक्ति
अहाब को फुसलाएगा और उसे रामोत-
गिलआद ले जाएगा कि वह वहां मार डाला

18 : 16 गण 27 : 17; यहेज 34 : 5; मत 9 : 36

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जाए ?'' तब किसी ने कुछ कहा, किसी ने कुछ। 20अन्त में एक आत्मा भीड़ में से बाहर निकली। वह प्रभु के सम्मुख खड़ी हुई। उसने कहा, ''मैं अहाब को फुसलाऊंगी।'' 21प्रभु ने उससे पूछा, ''कैसे ?'' उसने बताया, ''मैं जाऊंगी और अहाब के सब नबियों के मुंह से झूठी नबूवत कराऊंगी।'' प्रभु ने उससे कहा, ''तुझे अहाब को फुसलाना है। तू अपने कार्य में सफल होगी। जा, और अपना काम कर।'' 22महाराज, प्रभु ने आपके इन नबियों के मुंह में झूठ बोलने वाली आत्मा बैठाई है। वास्तव में प्रभु ने आपके विषय में अशुभ वचन कहे हैं।'

23 तब नबी सिद्‌कियाह बेन-कनानाह मीकायाह के पास आया। उसने उसके गाल पर थप्पड़ मारा, और उससे पूछा, 'क्यों ? प्रभु का आत्मा मुझे त्यागकर तुझसे वार्तालाप करने के लिए कैसे आया ?' 24मीकायाह ने उत्तर दिया, 'तू इस सच्चाई के दर्शन उस दिन करेगा, जिस दिन तू प्राण बचाने के लिए इस कमरे से उस कमरे में छिपता फिरेगा।' 25यह सुनकर इस्राएल प्रदेश के राजा ने आदेश दिया, 'मीकायाह को पकड़ो और इसे नगर के अध्यक्ष आमोन और राजकुमार योआश के पास ले जाओ। 26तुम उनसे कहना, ''महाराज ने यों कहा है : तुम इस आदमी को कारागार में बन्द रखो। जब तक मैं युद्ध से सकुशल न लौट आऊं तब तक तुम इसे बस इतना भोजन देना कि यह जीवित रह सके।'' 27मीकायाह ने कहा, 'यदि आप सकुशल लौट आएंगे तो आप समझना, मेरे मुंह से प्रभु ने अपना वचन नहीं कहा था।' मीकायाह ने उपस्थित लोगों से कहा, 'आप लोग भी सुन लीजिए।'

28 किन्तु इस्राएल के राजा अहाब और यहूदा प्रदेश के राजा यहोशाफट ने रामोत-गिलआद नगर पर चढ़ाई कर दी। 29अहाब ने यहोशाफट से कहा, 'मैं भेष बदलकर युद्धभूमि में जाऊंगा। पर आप अपनी राजसी पोशाक पहिने रहिए।' अत: इस्राएल प्रदेश के राजा अहाब ने भेष बदला और वे युद्धभूमि में गये। 30सीरिया देश के राजा ने अपने रथ-सेना के सेना-नायकों को यह आदेश दिया था, 'तुम इस्राएली सेना के छोटे-बड़े सैन्य-अधिकारियों से युद्ध मत करना, केवल इस्राएल प्रदेश के राजा से युद्ध करना।' 31अत: जब रथों के सेना-नायकों ने यहोशाफट को देखा तब उन्होंने कहा, 'यह निश्चय ही इस्राएल प्रदेश का राजा है।' वे उससे युद्ध करने के लिए उसकी ओर मुड़े। अत: यहोशाफट ने परमेश्वर को सहायता के लिए पुकारा, और प्रभु परमेश्वर ने उसकी सहायता की। परमेश्वर ने रथ के सेना-नायकों को उसके पास से हटा दिया। 32सेना-नायकों ने पहचाना कि वह इस्राएल प्रदेश का राजा नहीं है। अत: उन्होंने उसका पीछा करना छोड़ दिया, और वे लौट गए।

33 किन्तु एक सैनिक ने अपना धनुष खींचा और एक तीर चलाया। वह नहीं जानता था कि उसने किसकी ओर तीर चलाया है। यह तीर इस्राएल प्रदेश के राजा के कवच और कमरबन्ध के मध्य धंस गया। राजा ने अपने सारथी से कहा, 'रथ को मोड़ो। मुझे युद्ध-भूमि से बाहर ले चलो। मैं घायल हो गया।'

34 उस दिन घमासान युद्ध हुआ। इस्राएल प्रदेश का राजा सन्ध्या तक सीरियाई सेना की ओर मुख किये रथ पर खड़ा रहा। सूर्यास्त के समय उसकी मृत्यु हो गई।

यहोशाफट को नबी की फटकार

19 यहूदा प्रदेश का राजा यहोशाफट सकुशल अपने घर यरूशलेम को लौट गया। 2तब द्रष्टा येहू बेन-हनानी उससे भेंट करने को निकला। उसने राजा से कहा, 'महाराज, क्या आपको चाहिए था कि आप दुष्कर्मी की सहायता करें ? आप प्रभु के प्रेम का तिरस्कार करने वालों से प्रेम करते हैं। महाराज, आपने ठीक नहीं किया। आपके इसी कार्य के कारण प्रभु का क्रोध आप पर भड़का। 3फिर भी प्रभु ने आप में कुछ अच्छाई पाई; क्योंकि आपने यहूदा प्रदेश में अशेराह देवी के पूजा-स्तम्भ नष्ट कर दिए, और परमेश्वर को खोजने

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

में अपना मन लगाया है।'

यहोशाफट और सामाजिक न्याय

4 यहूदा प्रदेश का राजा यहोशाफट राजधानी
यरूशलेम में रहता था। उसने बएरशेबा नगर से
एफ्रइम के पहाड़ी क्षेत्र तक समस्त प्रदेश में दौरा
किया, और इन क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को
उसके पूर्वजों के प्रभु परमेश्वर की ओर वापस
ले आया। 5 उसने यहूदा प्रदेश के हर एक
किलाबन्द नगर में एक प्रशासक नियुक्त
किया। 6 उसने प्रशासकों से कहा, 'न्याय करने
के पूर्व यह सोचो कि तुम न्याय किसके लिए
करते हो; क्योंकि तुम मनुष्य के लिए नहीं,
बल्कि प्रभु के लिए न्याय करोगे। न्याय करते
समय प्रभु तुम्हारे साथ होगा। 7 इसलिए, तुममें
प्रभु का भय हो। जो भी प्रशासनिक काम करो,
उसको सोच-समझकर करो; क्योंकि हमारा
प्रभु परमेश्वर न तो अन्यायी है, और न
पक्षपाती, और न वह घूसखोर है।'

8 राजा यहोशाफट ने यरूशलेम में भी लेवी
वंश के उपपुरोहितों, पुरोहितों और इस्राएल के
पितृकुलों के अध्यक्षों को नियुक्त किया कि
प्रभु की ओर से न्याय करें और जनसाधारण के
मुकद्दमों का निपटारा करें। उनका न्यायालय
यरूशलेम में था। 9 राजा यहोशाफट ने यह
आदेश दिया, 'तुम प्रभु से डरते हुए, सच्चाई से
और निष्कपट हृदय से जनता का न्याय करना।
10 जब कभी नगरों में रहने वाले तुम्हारे भाई-
बन्धु तुम्हारे पास हत्या, धर्म-व्यवस्था, आज्ञा,
संविधि अथवा धर्म-प्रथाओं के सम्बन्ध में
कोई मुकद्दमा लाएंगे, तो तुम उनको समझाना
कि वे प्रभु के सम्मुख दोषी न बनें, और तुम पर
तथा तुम्हारे भाई-बन्धुओं पर प्रभु का क्रोध न
भड़के। तुम ऐसा ही करना; तब तुम निर्दोष
रहोगे। 11 और सुनो, महापुरोहित अमर्याह प्रभु
की आराधना सम्बन्धी सब मुकद्दमों का निर्णय
करेंगे। वह तुम्हारे प्रमुख न्यायाधीश होंगे। राजा
से सम्बन्धित सब राजकीय मामलों का निपटारा
यहूदा कुल के प्रशासक जबद्याह बेन-
यिश्माएल करेंगे। वह राजकीय मुकद्दमों में
तुम्हारे प्रमुख न्यायाधीश होंगे। लेवी वंश के
उप-पुरोहित तुम्हारी सहायता करने वाले मुन्शी
होंगे। अत: साहस और धैर्य से न्याय करो।
निष्कपट मनुष्य के साथ प्रभु हो।'

यहोशाफट का प्रभु पर अटूट विश्वास

20 इसके कुछ समय पश्चात् मोआब और
अम्मोन की सेनाओं ने राजा यहोशाफट
पर आक्रमण करने के लिए प्रस्थान किया।
उनके साथ मऊनी जाति* के भी कुछ सैनिक
थे। 2 तब कुछ लोग यहोशाफट के पास आए,
और उन्होंने कहा, 'महाराज, समुद्र के उस पार
से, एदोम देश की एक विशाल सेना आप पर
आक्रमण करने के लिए आ रही है। और
देखिए, वे हस्सोन-तामर नगर में पहुंच गए
हैं।' (हस्सोन-तामर को एनगदी भी कहते
हैं।) 3 यह खबर सुनकर यहोशाफट डर गया,
और उसने प्रभु की इच्छा जानने का प्रयत्न
किया। उसने समस्त यहूदा प्रदेश में सामूहिक
उपवास की घोषणा कर दी। 4 समस्त यहूदा प्रदेश
के निवासी प्रभु की सहायता पाने के लिए एकत्र
हुए। वे यहूदा प्रदेश के सब नगरों से प्रभु की
इच्छा जानने के लिए आए।

5 राजा यहोशाफट प्रभु के भवन में नए
आंगन के सामने समस्त यहूदा प्रदेश तथा
यरूशलेम की धर्मसभा के मध्य खड़ा हुआ,
और उसने प्रभु से यों प्रार्थना की, 6 'हे हमारे
पूर्वजों के प्रभु परमेश्वर, क्या तू स्वर्ग में ईश्वर
नहीं है? क्या तू सब जातियों के राज्यों पर
शासन नहीं करता है? हे हमारे परमेश्वर, तेरे ही
हाथ में सम्पूर्ण शक्ति और सामर्थ्य है, जिसके
कारण कोई भी तेरा सामना नहीं कर सकता है।
7 क्या तूने ही अपने निज लोग इस्राएलियों को
इस देश में बसाने के लिए यहां रहने वाली
जातियों को नहीं निकाला था? और उनको
निकालने के बाद क्या तूने यह देश अपने मित्र

---

* एदोम देश की सेईर नामक पहाड़ी के निवासी; मूल में 'अम्मोनी'।

19 : 6 व्य 1 : 17 **19 : 7** व्य 10 : 17 **19 : 8** व्य 17 : 9-13 **20 : 4** यिर 36 : 9; योए 1 : 14 **20 : 6** व्य 4 : 39 **20 : 7** यश 41 : 8; याक 2 : 23

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अब्राहम के वंशजों को सदा के लिए नहीं दिया
था ? 8वे इस देश में बस गए। उन्होंने तेरे नाम
की महिमा के लिए एक पवित्र स्थान बनाया,
और यह घोषणा की, 9 ''हे परमेश्वर,तेरा नाम
इस भवन में प्रतिष्ठित है। अत: जब हम पर
अनिष्ट का बादल छाएगा, जब हम पर शत्रु की
तलवार का प्रहार होगा, हम पर महामारी और
अकाल की छाया पड़ेगी, अथवा जब तू हमें
न्यायपूर्ण दण्ड देगा, तब हम तेरे इस भवन में
तेरे सम्मुख खड़े होंगे, और अपने संकट में तेरी
दुहाई देंगे। तब प्रभु, तू हमारी प्रार्थना सुनेगा,
और हमें बचाएगा।'' 10प्रभु, जब तेरे निज लोग
इस्राएली मिस्र देश से निकलकर यहां आ रहे
थे,तब तूने उन्हें अम्मोन, मोआब और सेईर के
पहाड़ी देश पर आक्रमण करने नहीं दिया।
अत: वे उनसे दूर रहे, और उनका विनाश नहीं
किया। 11अब वे ही हमारी भलाई का कैसा
बदला हमें दे रहे हैं ? तूने हमें यह देश पैतृक
अधिकार के लिए दिया है; किन्तु वे हमारे इस
पैतृक अधिकार से हमें वंचित करने के लिए आ
रहे हैं। 12हे हमारे परमेश्वर,क्या तू उनको दण्ड
नहीं देगा ? हम उनके असंख्य सैनिकों के
सम्मुख, जो हम पर आक्रमण कर रहे हैं,
असमर्थ हैं। हम किंकर्तव्यविमूढ़ हो गए हैं,
किन्तु प्रभु, हमारी आंखे तुझ पर लगी हैं।'

प्रभु का आश्वासन

13 यहूदा प्रदेश के सब लोग अपने बच्चों,
स्त्रियों और पुत्र-पुत्रियों के साथ प्रभु के
सम्मुख भवन में खड़े थे। 14उसी समय प्रभु का
आत्मा यहजीएल नामक एक उपपुरोहित पर
उतरा, और वह नबूवत करने लगा। यहजीएल
के पिता का नाम जकर्याह,दादा का नाम
बनायाह,और परदादा का नाम यईएल था,जो
मत्तन्याह का पुत्र था। यहजीएल आसाफ के
वंश का था। वह धर्मसभा के मध्य में खड़ा था।
15उसने कहा, ' ओ यहूदा प्रदेश के निवासियो
तथा यरूशलेम के रहने वालो, और महाराज
यहोशाफट,आप-सब प्रभु का सन्देश सुनिए:
प्रभु आप से यों कहता है, ''इस विशाल सेना
से मत डरो, और न ही तुम्हारा हृदय कांपे;
क्योंकि यह युद्ध तुम्हारे और उनके बीच में नहीं
बल्कि उनके और मुझ-परमेश्वर के बीच है।
16 कल तुम उनका सामना करने के लिए
प्रस्थान करना। देखो, वे सीस की चढ़ाई पर
चढ़कर तुम पर आक्रमण करेंगे। वे तुम्हें घाटी
के छोर पर यरूएल के निर्जन प्रदेश के पूर्व में
मिलेंगे। 17इस युद्ध में तुम्हें हथियार उठाने की
आवश्यकता नहीं पड़ेगी। ओ यहूदा प्रदेश के
निवासियो तथा यरूशलेम के रहने वालो, तुम
पंक्ति बांध कर वहीं खड़े रहना। तब तुम
देखना,मैं-प्रभु तुम्हारा किस प्रकार उद्धार
करता हूँ।'' इसलिए मत डरो,और न ही तुम्हारा
हृदय भय से कांपे। कल तुम उनका सामना
करने के लिए प्रस्थान करना। देखो, प्रभु तुम्हारे
साथ होगा।'

18 यह नबूवत सुनकर यहोशाफट ने भूमि
की ओर सिर झुकाया। उसका मुंह धरती की
ओर था। यहूदा प्रदेश के समस्त निवासी तथा
यरूशलेम के सब रहने वाले लोग प्रभु की स्तुति
करते हुए उसके सम्मुख दण्डवत् करने लगे।
19कुछ कहात-वंशीय तथा कोरह-वंशीय
उपपुरोहित खड़े होकर उच्च स्वर में इस्राएली
राष्ट्र के प्रभु परमेश्वर की स्तुति गाने लगे।

यहोशाफट का शत्रु-सेना पर आक्रमण

20 दूसरे दिन सबेरे यहोशाफट के सैनिक
उठे,और वे तकोअ के निर्जन प्रदेश की ओर
गए। वे प्रस्थान कर ही रहे थे कि यहोशाफट
उनके मध्य में खड़ा हुआ,और उसने उनसे
कहा,'ओ यहूदा प्रदेश के निवासियो, ओ
यरूशलेम के रहने वालो, मेरी बात सुनो: अपने
प्रभु परमेश्वर पर विश्वास करो,तब तुम दृढ़
रह सकोगे; प्रभु के नबियों पर भरोसा रखो,तब
तुम सफल होगे।' 21तब उसने लोगों से विचार-
विमर्श किया,और कुछ गायकों को नियुक्त
किया कि वे पवित्र वस्त्र पहिन कर प्रभु का
स्तुति-गान करें,और जब सेना प्रस्थान करे तब
वे उसके आगे-आगे यह गाएं :

''प्रभु की स्तुति करो,

20 : 10 व्य 2 : 4 20 : 20 यश 7 : 9 20 : 21 भज 136 : 1

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

क्योंकि उसकी करुणा सदा की है।''

22 जब उन्होंने अपने प्रभु परमेश्वर का इस प्रकार स्तुति-गान किया, तब प्रभु ने यहूदा प्रदेश पर आक्रमण करने वाले अम्मोनी, मोआबी और सेईर के पहाड़ी देश के सैनिकों पर घात लगाकर प्रहार करने वालों को बैठा दिया। अत: वे बुरी तरह पराजित हो गए। उनमें फूट पड़ गई।
23अम्मोन और मोआब की सेनाओं ने सेईर के पहाड़ी देश के निवासियों पर हमला कर दिया, और उनको पूर्णत: नष्ट कर दिया। जब वे सेईर के निवासियों का पूर्ण संहार कर चुके, तब वे सब आपस में ही लड़ने-झगड़ने लगे, और एक-दूसरे का अन्त कर दिया।

24 यहूदा प्रदेश की सेना निर्जन प्रदेश की चौकी पर पहुंची। वहां से उन्होंने रेतकणों के सदृश शत्रु-सेना के असंख्य सैनिकों की भीड़ को देखा। आश्चर्य! उन्होंने देखा कि भूमि पर लाशों का ढेर लगा है। शत्रु-सेना का एक भी सैनिक जीवित नहीं बचा था।

25 यहोशाफट अपने सैनिकों के साथ उनको लूटने के लिए उनके शिविरों के पास आया। उन्हें बड़ी संख्या में पशु,बहुमूल्य सामान, वस्त्र और कीमती वस्तुएं मिलीं। उन्हें लूट का इतना माल मिला कि वे उसको ढोने में असमर्थ हो गए। शत्रु-सेना का लूट का माल इतना अधिक था कि वे तीन दिन तक उसको लूटते रहे।

26 चौथे दिन वे एक घाटी में एकत्र हुए और वहां उन्होंने विजय-प्राप्ति के लिए प्रभु को धन्यवाद दिया, और स्तुति-बलि चढ़ाई। तब से उस घाटी का नाम 'बराका' अर्थात् 'धन्यवाद' पड़ गया, और घाटी का यही नाम आज तक है।

27 तत्पश्चात् यहूदा प्रदेश और यरूशलेम का प्रत्येक सैनिक लौटा। उनके आगे-आगे यहोशाफट था। वे आनन्द के साथ लौटे; क्योंकि प्रभु ने उनके शत्रुओं के ऊपर उनको आनन्दमय विजय प्रदान की थी।
28वे यरूशलेम में आए, और सारंगी,वीणा और तुरही बजाते हुए प्रभु के भवन में गए।

29 जब आस-पास के देशों के राजाओं और उनकी जनता ने सुना कि इस्राएली राष्ट्र की ओर से उनके प्रभु ने उनके शत्रुओं से युद्ध किया,और शत्रुओं को पराजित किया, तब सब राज्यों पर परमेश्वर का भय छा गया।
30इस प्रकार यहोशाफट के राज्य में शान्ति और चैन फैल गया; क्योंकि परमेश्वर ने उसके चारों ओर के शत्रुओं से उसको विश्राम दिया था।

यहोशाफट के जीवन के अन्तिम दिन

31 इस प्रकार यहोशाफट ने यहूदा प्रदेश पर राज्य किया। जब उसने राज्य करना आरम्भ किया तब वह पैंतीस वर्ष का था। वह राजधानी यरूशलेम में पच्चीस वर्ष तक राज्य करता रहा। उसकी माता का नाम अजूबाह बत-शिलही* था।

32 यहोशाफट ने अपने पिता आसा के मार्ग का अनुसरण किया। उसने अपने पिता का मार्ग नहीं छोड़ा। उसनें वही कार्य किया जो प्रभु की दृष्टि में उचित था।
33फिर भी पहाड़ी-शिखर की वेदियां ध्वस्त नहीं की गईं। यहूदा प्रदेश के लोगों ने अपने पूर्वजों के परमेश्वर की ओर अपना मन नहीं लगाया।

34 यहोशाफट के शेष कार्यों का विवरण, वस्तुत: आदि से अन्त तक, उसके सब कार्यों का विवरण 'येहू बेन-हनानी के वृत्तान्त' में लिखा हुआ है, जिसका उल्लेख 'इस्राएल के राजाओं का इतिहास-ग्रन्थ' में हुआ है।

35 यहूदा प्रदेश के राजा यहोशाफट ने इस्राएल प्रदेश के राजा अहज्याह से भी सम्बन्ध स्थापित किया। राजा अहज्याह दुष्कर्मी था।
36यहोशाफट ने उसके साथ मिलकर जहाजी-बेड़ा बनाया। यह जहाजी-बेड़ा तर्शीश तक जाने वाला था। उन्होंने एसयोन-गेबेर बन्दरगाह में जलयान बनाए।
37किन्तु यहोशाफट के विरुद्ध मारेशा नगर के निवासी एलीआजर बेन-दोदावाहु ने यह नबूवत की, 'आपने दुष्कर्मी अहज्याह से सम्बन्ध स्थापित किया,अत: प्रभु वह सब डुबा देगा, जो आपने बनाया है।' अत:

---

* अर्थात् 'शिलही की पुत्री'

20: 31-33 1 रा 22 : 41-43 **20 : 35-37** 1 रा 22 : 48-49

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उसके जलयान समुद्र में डूब गए, और वे
तर्शीश तक न जा सके।

21 यहोशाफट अपने मृत पूर्वजों के साथ
सो गया। उसे उसके पूर्वजों के साथ
दाऊदपुर में गाड़ा गया। उसके स्थान पर उसका
पुत्र योराम+ राज्य करने लगा।

योराम का राज्य

2 योराम के छः भाई थे। राजा यहोशाफट
के अन्य पुत्रों के ये नाम हैं : अजर्याह,
यहीएल, जकर्याह, अजर्याह, मीखाएल और
शपत्याह। ये सब यहूदा प्रदेश के राजा यहोशाफट
के पुत्र थे। 3उसने अपने इन पुत्रों को अपार
धन-सम्पत्ति, सोना-चांदी तथा बहुमूल्य वस्तुएं
दी थीं। उसने उन्हें यहूदा प्रदेश के किलाबन्द
नगर भी दिये थे। किन्तु उसने योराम को अपना
राज्य दिया था; क्योंकि वह उसका ज्येष्ठ पुत्र
था।

4 जब योराम अपने पिता के सिंहासन पर
बैठा, और जब उसकी राजसत्ता जम गई, तब
उसने अपने सब भाइयों तथा देश** के कुछ
उच्चाधिकारियों का तलवार से वध कर दिया।
5जब योराम राजा बना तब उसकी उम्र बत्तीस
वर्ष की थी। उसने आठ वर्ष तक राजधानी
यरूशलेम में राज्य किया। 6 वह इस्राएल प्रदेश
के राजाओं के मार्ग पर चला। जैसा अहाब के
राजपरिवार ने किया था, वैसा ही उसने भी
किया; क्योंकि अहाब की पुत्री उसकी पत्नी
थी। जो कार्य प्रभु की दृष्टि में बुरा है उसने वही
किया। 7फिर भी प्रभु ने योराम को, जो दाऊद
का वंशज था, नष्ट नहीं किया; क्योंकि प्रभु ने
दाऊद के साथ विधान का सम्बन्ध स्थापित
किया था। उसने दाऊद को वचन दिया था कि
तेरे और तेरे वंश का दीपक कभी नहीं बुझेगा।

एदोम देश का विद्रोह

8 योराम के राज्य-काल में एदोम राज्य ने
यहूदा राज्य से विद्रोह कर दिया और उसने
अपना राजा नियुक्त कर लिया। 9योराम ने अपने
सेना-नायकों तथा समस्त रथों के साथ प्रस्थान
किया। एदोमी सैनिकों ने उसको घेर लिया।
तब योराम और उसके सारथी रात में उठे और
उन्होंने एदोमी सैनिकों का वध कर दिया,
जिन्होंने उनको घेर लिया था। 10किन्तु एदोम
राज्य आज भी यहूदा राज्य से विद्रोह किये हुए
है। उन्हीं दिनों में लिबना राज्य ने भी विद्रोह
कर दिया; क्योंकि योराम ने अपने पूर्वजों के
प्रभु परमेश्वर को त्याग दिया था।

नबी एलियाह का पत्र

11 इसके अतिरिक्त राजा योराम ने यहूदा
प्रदेश के पहाड़ी शिखरों पर पूजागृह बनाए थे।
उसके इन्हीं दुष्कर्मों के कारण राजधानी यरूशलेम
के निवासी तथा यहूदा प्रदेश की सब जनता प्रभु
के प्रति विश्वासघाती हो गई और वह प्रभु के
मार्ग से भटक गई। 12नबी एलियाह ने योराम
के इन कार्यों के सम्बन्ध में उसको एक पत्र
भेजा। पत्र में यह लिखा था, 'महाराज, आपके
पूर्वज दाऊद का प्रभु परमेश्वर यों कहता है :
''तूने न तो अपने पिता यहोशाफट के सदृश
आचरण किया और न ही यहूदा प्रदेश के राजा
आसा के आचरण के सदृश। 13किन्तु तूने इस्राएल
प्रदेश के राजाओं के आचरण का अनुसरण
किया, और यहूदा प्रदेश की जनता तथा
यरूशलेम के निवासियों को मुझसे विश्वास-
घात करने के लिए बहकाया। ऐसा ही विश्वास-
घात करने के लिए अहाब के राजपरिवार के
लोगों ने इस्राएल प्रदेश की जनता को बहकाया
था। तूने अपने ही पिता के पुत्रों की, अपने सगे
भाइयों की हत्या की, जो तुझ से अच्छे थे।
14इसलिए, देख, प्रभु तेरी समस्त प्रजा पर, तेरे
बच्चों और तेरी स्त्रियों पर, तथा तेरी समस्त
धन-सम्पत्ति पर एक महामारी भेजेगा। 15तू स्वयं
अंतड़ियों के रोग से बहुत पीड़ित होगा, और
उस रोग के कारण धीरे-धीरे तेरी सब अंतड़ियां
बाहर निकल आएंगी''।'

अन्य देशों का विद्रोह

16 प्रभु ने योराम के विरुद्ध पलिश्तियों को
तथा इथियोपिया देश के समीप रहने वाले

+ मूल में, 'यहोराम'। ** मूल में, 'इस्राएल'।

21 : 1 1 रा 22 : 50 21 : 5-10 2 रा 8 : 17-22 21 : 7 1 रा 11 : 36 21 : 8 उत 27 : 40

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अरबियों को विद्रोह के लिए उभाड़ा। 17उन्होंने
यहूदा प्रदेश पर आक्रमण कर दिया। वे यहूदा
प्रदेश के निवासियों पर टूट पड़े और राजभवन
की समस्त धन-सम्पत्ति को लूट लिया। वे राजा
योराम के पुत्रों और रानियों को बन्दी बनाकर
ले गए। उसके पास उसका सबसे छोटा पुत्र
अहज्याह* ही रह गया, शेष सब पुत्र बन्दी
बनकर चले गए।

18 इतना ही नहीं, इसके बाद प्रभु ने उसको
अंतड़ियों के असाध्य रोग से पीड़ित कर दिया।
19धीरे-धीरे दो वर्ष के बाद उस असाध्य रोग
के कारण उसकी अंतड़ियां बाहर आ गईं, और
वह घोर पीड़ा सहते-सहते मर गया। उसकी
प्रजा ने उसके सम्मान में सुगन्धित आग नहीं
जलायी, जैसी उसके पूर्वजों के लिए जलायी
थी।

20 जब योराम बत्तीस वर्ष का था तब से
उसने राज्य करना आरम्भ किया था और उसने
आठ वर्ष तक राजधानी यरूशलेम में राज्य
किया। उसके मरने पर किसी ने शोक नहीं
मनाया। उसको दाऊदपुर में गाड़ा गया, किन्तु
राजाओं के कब्रिस्तान में नहीं।

अहज्याह का राज्य

22 राजा योराम की मृत्यु के बाद यरूशलेम
के निवासियों ने उसके स्थान पर उसके
सबसे छोटे पुत्र अहज्याह को राजा बनाया;
क्योंकि राजा योराम के बड़े पुत्रों का वध उस
दल ने कर दिया, जो अरबी सैनिकों के साथ
शिविर में घुस आया था। यों अहज्याह बेन-
योराम यहूदा प्रदेश पर राज्य करने लगा। 2जब
उसने राज्य करना आरम्भ किया तब वह
बाईस** वर्ष का था। उसने राजधानी यरूशलेम
में केवल एक वर्ष तक राज्य किया। उसकी मां
का नाम अतल्याह था। वह इस्राएल प्रदेश के
राजा ओम्री की पोती थी। 3जैसा अहाब के
राज-परिवार ने किया था, वैसा ही अहज्याह
ने भी किया। वह अहाब के राज-परिवार के
मार्ग पर चला; क्योंकि उसको परामर्श देने
वाली उसकी मां थी। अपनी मां के कारण ही
उसने दुराचरण किया। 4जो कार्य प्रभु की दृष्टि
में बुरा था, उसने वही किया। उसके पिता के
मरने के बाद अहाब के राज-परिवार के लोग
ही उसको सलाह देते थे। अत: उसका पतन हो
गया। 5यहां तक कि उनके परामर्श के अनुसार
वह इस्राएल प्रदेश के राजा यहोराम बेन-
अहाब के साथ सीरिया देश के राजा हजाएल
से युद्ध करने रामोत-गिलआद नगर को गया।
वहां सीरियाई सैनिकों ने यहोराम को घायल
कर दिया। 6राजा यहोराम घावों की मरहमपट्टी
करवाने के लिए यिज्रएल नगर को लौटा। ये
घाव उसको सीरिया के राजा हजाएल से, युद्ध
करते समय रोमात-गिलआद में लगे थे। वह
गम्भीर रूप से घायल था। अत: यहूदा प्रदेश का
राजा अहज्याह बेन-योराम उसको देखने के
लिए यिज्रएल नगर गया।

7 परमेश्वर यह निश्चित कर चुका था कि
जब अहज्याह इस्राएल प्रदेश के राजा यहोराम
के पास आएगा, तब उसका यह आगमन उसके
पतन का कारण बनेगा। प्रभु ने येहू बेन-निम्शी
को अहाब के राज-परिवार का वध करने के
लिए अभिषिक्त किया था। अहज्याह वहां
आया। वह यहोराम के साथ येहू से मिलने
गया। 8जब येहू प्रभु के आदेश के अनुसार
अहाब के राज-परिवार को दण्ड दे रहा था, तब
उसको यहूदा प्रदेश के उच्चाधिकारी तथा
अहज्याह के भाइयों के पुत्र मिले, जो राजा
अहज्याह की सेवा-टहल करते थे। येहू ने
उनका वध कर दिया। 9तब येहू ने अहज्याह की
तलाश की। अहज्याह सामरी नगर में छिपा
हुआ था। सैनिकों ने उसको पकड़ लिया। वह
येहू के सामने पेश किया गया। येहू ने उसका
वध करवा दिया। सेवकों ने उसका शव सम्मान
के साथ गाड़ा, क्योंकि वे कहते थे, 'यह
यहोशाफट का नाती है, जिसने सम्पूर्ण हृदय से
प्रभु को खोजा था।' अहज्याह के परिवार में
कोई ऐसा व्यक्ति नहीं था, जो राज्य कर सके।

---

* मूल में, 'यहोआहाज'। ** मूल में 'बयालीस'।

21 : 20 2 रा 8 : 17-24 22 : 1-6 2 रा 8 : 24-29 22 : 7-9 2 रा 9 : 1—10 : 36

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

राजमाता अतल्याह का सिंहासन पर बैठना

10 जब अहज्याह की माता अतल्याह ने देखा कि उसके पुत्र की हत्या कर दी गई, तब वह उठी, और उसने यहूदा के राज-परिवार के सब सदस्यों का संहार कर दिया। [11]किन्तु राजा योराम की पुत्री यहोशाबा ने अहज्याह के पुत्र योआश का अन्य राजकुमारों के मध्य से, जिनकी हत्या की जाने वाली थी, अपहरण कर लिया। उसने योआश और उसकी धाय को शयनागार में छिपा दिया। यों यहोशाबा ने अतल्याह की दृष्टि से योआश को छिपा दिया, और अतल्याह उसका वध न कर सकी। यहोशाबा राजा योराम की पुत्री, पुरोहित यहोयादा की पत्नी और राजा अहज्याह की बहिन थी। [12]योआश परमेश्वर के भवन में अपने लोगों के यहां छः वर्ष तक छिपा रहा। इस अवधि में अतल्याह यहूदा प्रदेश पर राज्य करती रही

पुरोहित यहोयादा का विद्रोह

23 रानी अतल्याह के शासन के सातवें वर्ष में पुरोहित यहोयादा ने साहस किया और सेना के इन शतपतियों से सन्धि की : अजर्याह बेन-यरोहाम, यिश्माएल बेन-यहोहानान, अजर्याह बेन-ओबेद, मासेयाह बेन-अदायाह और एलीशाफट बेन-जिक्री। [2]ये शतपति यहूदा प्रदेश के सब नगरों में गए, और वहाँ से उन्होंने लेवी-वंश के उपपुरोहितों और इस्राएल के पितृकुलों के मुखियों को एकत्र किया और उनको लेकर यरूशलेम में आए। [3]उप-पुरोहितों और मुखियों के समूह ने परमेश्वर के भवन में राजपुत्र योआश से सन्धि की। तत्पश्चात् पुरोहित यहोयादा ने उनसे कहा, 'देखो, यह है राजपुत्र! इसको राज्य करना चाहिए, जैसा कि प्रभु ने दाऊद के राजवंशियों के सम्बन्ध में वचन दिया है। [4]तुम्हें यह काम करना होगा: तुममें से जो पुरोहित और उप-पुरोहित विश्राम-दिवस पर कार्यरत रहते हैं, उनमें से एक-तिहाई द्वार पर पहरा देंगे। [5]एक-तिहाई राजमहल पर पहरा देंगे। एक-तिहाई नींव-द्वार पर पहरा देंगे। शेष सब लोग प्रभु-भवन के आंगनों में जमा हो जाएंगे। [6]पुरोहितों और सेवा-कार्य करनेवाले उप-पुरोहितों के अतिरिक्त कोई भी व्यक्ति प्रभु के भवन में प्रवेश न करने पाए! पुरोहित और उप-पुरोहित प्रभु की दृष्टि में पवित्र हैं, इसलिए वे उसके भवन में प्रवेश कर सकेंगे, किन्तु शेष सब लोग प्रभु के भवन के संबंध में नियमों का पालन करेंगे। [7]उप-पुरोहित राजकुमार को चारों ओर से घेरे रहेंगे। प्रत्येक उप-पुरोहित के हाथ में शस्त्र होगा। जो भी व्यक्ति भवन के भीतर प्रवेश करेगा, उसको तत्काल मौत के घाट उतार देना। जहाँ-कहीं राजकुमार जाए अथवा लौट कर वहाँ से आए, तुम उसके साथ रहना।'

8 उप-पुरोहितों और यहूदा प्रदेश के निवासियों ने पुरोहित यहोयादा के आदेश के अनुसार कार्य किया। प्रत्येक दल के उप-पुरोहित, जो विश्राम-दिवस पर कार्यरत थे अथवा जो विश्राम-दिवस पर छुट्टी पर थे, पुरोहित यहोयादा के पास लाये गये; क्योंकि पुरोहित यहोयादा ने अब तक कार्यरत दल को विदा नहीं किया था। [9]यहोयादा ने उनके नायकों को राजा दाऊद के भाले, फरी और ढाल सौंप दिये। ये शस्त्र परमेश्वर के भवन में सुरक्षित रखे हुए थे। [10]उसने सब लोगों के हाथों में शस्त्र दे दिये और उनको मन्दिर के दक्षिणी कोने से उत्तरी कोने तक, मन्दिर तथा वेदी के आस-पास राजकुमार योआश के पहरेदारों के रूप में खड़ा कर दिया। [11]उसके बाद पुरोहित यहोयादा राजकुमार को बाहर लाया। उसने राजकुमार के सिर पर मुकुट रखा और उसको साक्षी-पत्र सौंपा। पुरोहित यहोयादा और उसके पुत्रों ने राजकुमार का अभिषेक किया, और उसको राजा घोषित कर दिया। समस्त जन-समूह ने जय-जयकार किया, और कहा, 'राजा चिरायु हो!'

12 रानी अतल्याह ने लोगों के जय-जयकार, गुणगान और आने-जाने की आवाज सुनी। वह प्रभु के भवन में लोगों के पास गई।

---

22 : 10-23 : 21 2 रा 11 : 1-20 23 : 3 2 शम 7 : 12

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

13उसने देखा, प्रवेश-द्वार पर राजा राजकीय
मंच पर खड़ा है। शतपति और तुरही-वादक
भी राजा के समीप खड़े हैं। आम जनता आनन्द
मना रही है। वे नरसिंगे फूंक रहे हैं। गायक
अपने हाथों में वाद्य-यन्त्र लिये हुए समारोह का
संचालन कर रहे हैं। अतल्याह ने अपने राजसी
वस्त्र फाड़ दिये, और वह चिल्लाई, 'यह राज-
द्रोह है!' 14पुरोहित यहोयादा ने शतपतियों को,
जो सेनापति नियुक्त किये गए थे, यह आदेश
दिया, 'सेना-पंक्ति के मध्य से अतल्याह को
बाहर निकालो। जो व्यक्ति उसका पक्ष ले,
उसको तलवार से मौत के घाट उतार दो।'
पुरोहित यहोयादा ने यह कहा, 'प्रभु के भवन
में उसकी हत्या नहीं होनी चाहिए।' 15अत:
शतपतियों ने रानी अतल्याह को पकड़ा। वे
उसको अश्व-द्वार से होकर राजमहल में ले
गए, और वहाँ उसका वध कर दिया।

16 तत्पश्चात् पुरोहित यहोयादा ने प्रभु और
प्रजा तथा राजा के मध्य विधान की धर्मविधि
सम्पन्न की, जिससे वे प्रभु के निज लोग बन
सकें। 17इसके बाद सब लोग बअल देवता के
पूजागृह को गए। उन्होंने उसे खण्डहर बना
दिया। उन्होंने उसकी वेदियों और मूर्तियों के
टुकड़े-टुकड़े कर दिये। उन्होंने वेदियों के
सम्मुख ही बअल देवता के पुरोहित मत्तान का
वध कर दिया। 18तत्पश्चात् पुरोहित यहोयादा
ने प्रभु के भवन के लिए पहरेदार नियुक्त किये।
ये पहरेदार लेवी-कुल के पुरोहितों तथा उप-
पुरोहितों के निर्देशन में सेवा-कार्य करते थे।
लेवी-कुल के पुरोहितों तथा उप-पुरोहितों को
राजा दाऊद ने प्रभु के भवन में सेवा-कार्य का
दायित्व सौंपा था कि वे प्रभु को अग्नि-बलि
चढ़ाएं; जैसा कि मूसा की व्यवस्था में लिखा
है। राजा दाऊद के आदेश के अनुसार वे
आराधना के समय स्तुति गाते तथा आनन्द-
उल्लास प्रकट करते थे। 19पुरोहित यहोयादा ने
प्रभु-भवन के प्रवेश-द्वारों पर भी पहरेदार
नियुक्त किये, जिससे कोई भी मनुष्य अशुद्ध
दशा में प्रवेश न कर सके।

20 पुरोहित यहोयादा ने शतपतियों, समाज
के प्रतिष्ठित व्यक्तियों, जनता के शासकों तथा
प्रदेश की सब जनता को अपने साथ लिया और
वे राजा को प्रभु के भवन से बाहर लाए। वे राजा
के साथ-साथ उपरले द्वार से होते हुए राजमहल
में आए। उन्होंने राजा को सिंहासन पर बैठाया।
21इस प्रकार समस्त जनता ने आनन्द मनाया।
नगर में शान्ति छा गई, क्योंकि रानी अतल्याह
को तलवार से मौत के घाट उतार दिया गया था।

योआश का राज्य

24 जब योआश ने राज्य करना आरम्भ
किया तब वह सात वर्ष का था। वह
राजधानी यरूशलेम में चालीस वर्ष तक राज्य
करता रहा। उसकी मां का नाम सिब्याह था।
वह बएर-शेबा नगर की रहनेवाली थी।
2योआश ने पुरोहित यहोयादा के जीवन-भर वे
ही कार्य किये जो प्रभु की दृष्टि में उचित थे।
3यहोयादा ने दो कन्याओं से उसका विवाह
करवाया, जिनसे उसके पुत्र और पुत्रियां उत्पन्न
हुईं।

4 इसके पश्चात् राजा योआश ने प्रभु के
मन्दिर की मरम्मत करने का निश्चय किया।
5अत: उसने पुरोहितों और उप-पुरोहितों को
एकत्र किया, और उनसे यह कहा, 'आप लोग
प्रतिवर्ष यहूदा प्रदेश के सब नगरों में जाइए,
और अपने परमेश्वर के भवन की मरम्मत के
लिए इस्राएली लोगों से वार्षिक चन्दा लीजिए।
देखिए, यह काम शीघ्र समाप्त होना चाहिए।'
किन्तु उप-पुरोहितों ने काम समाप्त करने में
शीघ्रता नहीं की। 6अत: राजा योआश ने महा-
पुरोहित यहोयादा को बुलाया, और उससे
कहा, 'आप जानते हैं, कि प्रभु के सेवक मूसा
ने साक्षी-पत्र के शिविर* के लिए इस्राएली
धर्म-मण्डली पर कर लगाया था। तब आपने
उप-पुरोहितों को यह कर इकट्ठा करने के लिए
यहूदा प्रदेश के नगरों और यरूशलेम में क्यों
नहीं भेजा, और उन पर दबाव क्यों नहीं डाला

* अथवा, ''विधान के तम्बू''।

24 : 1-14 2 रा 11 : 21—12 : 14 **24 : 6** नि 30 : 12-16

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
कि वे यह चन्दा वसूल करें?' [7]रानी अतल्याह
के पुत्रों ने परमेश्वर के भवन को क्षति पहुँचाई
थी। उन्होंने प्रभु को अर्पित सब वस्तुएँ प्रभु-
भवन से हटा कर बअल देवता को चढ़ा दी थीं।
8 अत: राजा योआश के आदेश से एक
बक्सा बनाया गया। उन्होंने उसको प्रभु के
भवन के प्रवेश-द्वार के बाहर रख दिया।
[9]तत्पश्चात् समस्त यहूदा प्रदेश तथा यरूशलेम
नगर में यह राजाज्ञा सुनाई गई कि जो कर प्रभु
के सेवक मूसा ने निर्जन प्रदेश में इस्राएली
समाज पर लगाया था, वह समस्त इस्राएलियों
को प्रभु के लिए नियमित रूप से चुकाना होगा।
[10]सब अधिकारी तथा सब लोग आनन्द और
हर्ष से कर चुकाने लगे। वे कर का रुपया लाते
और बक्से में डाल देते थे। और यों सबने अपना
कर चुका दिया। [11]जब उप-पुरोहित देखते कि
बक्से में बहुत सिक्के जमा हो गए हैं, तब वे
बक्सा उठाकर राजा के उच्चाधिकारियों के पास
उसको पहुँचा देते थे। तब राजा का सचिव तथा
महापुरोहित का उच्चाधिकारी आते और वे
बक्से को खाली करके उसके स्थान पर रख देते
थे। वे प्रतिदिन ऐसा ही करते थे; और इस
प्रकार उन्होंने अपार मात्रा में रुपया एकत्र कर
लिया।

12 राजा योआश तथा पुरोहित यहोयादा ने
यह रुपया प्रभु के भवन की मरम्मत करवानेवाले
अधिकारियों को सौंप दिया। अधिकारियों ने
मरम्मत करनेवाले राज-मिस्त्रियों, बढ़इयों
तथा लोहे और पीतल के कारीगरों को मजदूरी
पर नियुक्त किया। [13]यों कारीगर मजदूरी लेकर
काम करते गए, और प्रभु के भवन की मरम्मत
होने लगी।

अन्त में मरम्मत का काम समाप्त हुआ और
परमेश्वर का भवन पहले-जैसा सुदृढ़ हो गया।
14 जब उन्होंने काम पूरा कर लिया तब वे
बचा हुआ रुपया राजा योआश और पुरोहित
यहोयादा के पास लाए। बचे हुए सिक्कों से प्रभु
के भवन के लिए पवित्र पात्र खरीदे गए:
आराधना-कार्य के पात्र, अग्नि-बलि के पात्र,
सुगन्धित धूप-बलि के पात्र तथा सोना-चांदी
के अन्य पात्र। जब तक पुरोहित यहोयादा
जीवित रहा तब तक प्रभु के भवन में नियमित
रूप से अग्नि-बलि चढ़ाई जाती रही।

पुरोहित यहोयादा की मृत्यु

15 यहोयादा वृद्धावस्था में तथा दीर्घायु
भोगकर मरा। मृत्यु के समय उसकी आयु एक
सौ तीस वर्ष थी। [16]उसने इस्राएली राष्ट्र तथा
परमेश्वर एवं उसके भवन के लिए सत्कर्म
किये थे, इसलिए उसको दाऊदपुर में राजाओं
की कब्रों के मध्य गाड़ा गया।

योआश का पतन

17 पुरोहित यहोयादा की मृत्यु के बाद
यहूदा प्रदेश के उच्चाधिकारी राजा योआश के
पास आए। उन्होंने भूमि पर लेटकर राजा को
साष्टांग प्रणाम किया। राजा ने उनकी बातें मान
लीं। [18]यहूदा प्रदेश के लोग अपने पूर्वजों के
प्रभु परमेश्वर का भवन छोड़कर अशेराह देवी
तथा मूर्तियों की पूजा करने लगे। उनके इस
अपराध के कारण प्रभु का क्रोध यहूदा प्रदेश
तथा राजधानी यरूशलेम के निवासियों पर
भड़क उठा। [19]फिर भी वह उनको अपनी ओर
उन्मुख करने के लिए उनके मध्य नबियों को
भेजता रहा। नबियों ने उनको समझाया; किन्तु
उन्होंने नबियों की चेतावनी पर ध्यान नहीं
दिया।

जकर्याह की हत्या

20 पुरोहित यहोयादा का एक पुत्र
था—जकर्याह। परमेश्वर का आत्मा उस पर
उतरा और वह एक ऊंचे स्थान पर खड़ा होकर
लोगों से कहने लगा, 'परमेश्वर यों कहता है:
तुम मेरी आज्ञाओं का उल्लंघन क्यों करते हो?
इस कारण तुम्हारा कोई भी काम सफल नहीं
होता है। तुमने मुझ-प्रभु को छोड़ दिया,
इसलिए मैंने भी तुमको छोड़ दिया।' [21]किन्तु
उन लोगों ने जकर्याह के विरुद्ध षड्यन्त्र रचा,
और राजा के आदेश से उसको प्रभु-भवन के
आंगन में पत्थर मार-मार कर मार डाला।
[22]जकर्याह के पिता यहोयादा ने राजा योआश

24 : 21 मत 23 : 35

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

के साथ भलाई की थी। किन्तु राजा योआश इस
भलाई को भूल गया; और उसके पुत्र की हत्या
कर दी। जब जकर्याह का प्राण निकल रहा था
तब उसने यह कहा, 'प्रभु यह देखे और इसका
प्रतिशोध करे।'
23 उसी वर्ष के अन्त में सीरिया देश की
सेना ने राजा योआश पर आक्रमण कर दिया।
सैनिक यहूदा प्रदेश तथा राजधानी यरूशलेम
पर चढ़ आए। उन्होंने नगरवासियों के मध्य से
योआश के उच्चाधिकारियों का पूर्ण संहार कर
दिया, और उनको लूट लिया। उन्होंने लूट का
सारा माल अपने राजा के पास राजधानी
दमिश्क को भेज दिया।
24 सीरिया की सेना में थोड़े ही सैनिक थे।
लेकिन प्रभु ने उनके हाथ में राजा योआश की
विशाल सेना सौंप दी! क्योंकि राजा योआश के
सैनिकों, उच्चाधिकारियों ने अपने पूर्वजों के
प्रभु परमेश्वर को त्याग दिया था। इस प्रकार
प्रभु ने सीरिया के सैनिकों के हाथ से राजा
योआश को दण्ड दिया।

योआश की मृत्यु

25 सीरिया के सैनिक राजा योआश को
बहुत घायल करके लौट गए। योआश के
दरबारी पुरोहित यहोयादा के पुत्र के खून का
बदला योआश से लेना चाहते थे। अत: उन्होंने
उसके विरुद्ध षड्‍यन्त्र रचा, और जब वह पलंग
पर लेटा हुआ था तब उसकी हत्या कर दी।
राजा योआश मर गया। उसको दाऊदपुर में
गाड़ा गया, किन्तु उसके शव को राजाओं के
कब्रिस्तान में नहीं दफनाया गया। [26]जिन्होंने
उसके विरुद्ध षड्‍यन्त्र रचा था, उनके नाम इस
प्रकार हैं: अम्मोन देश की रहनेवाली शिम्हत
का पुत्र जाबाद और मोआब देश की रहनेवाली
शिम्रित का पुत्र यहोजाबाद।
27 राजा योआश के पुत्रों का विवरण, उसके
विरुद्ध की गई नबूवतों का वर्णन तथा परमेश्वर
के भवन के पुनर्निर्माण का इतिहास 'राजाओं
का इतिहास-ग्रन्थ' की व्याख्या-पुस्तक में
लिखा हुआ है।
योआश का पुत्र अमस्याह उसके स्थान पर
राज्य करने लगा।

अमस्याह का राज्य

25 जब अमस्याह ने राज्य करना आरम्भ
किया तब वह पच्चीस वर्ष का था।
उसने राजधानी यरूशलेम में उनतीस वर्ष तक
राज्य किया। उसकी मां का नाम यहोअद्दीन था।
वह यरूशलेम नगर की थी।
2 राजा अमस्याह ने वही किया, जो प्रभु की
दृष्टि में उचित था। किन्तु उसका हृदय पूर्णत:
निर्दोष नहीं था। [3]जब राज्य-सत्ता उसके हाथ
में दृढ़ हो गई, तब उसने उन दरबारियों का वध
करवा दिया, जिन्होंने उसके पिता की हत्या की
थी। [4]प्रभु की आज्ञा के अनुसार, जो मूसा के
व्यवस्था-ग्रन्थ में लिखी है, उसने उन हत्यारों
के पुत्रों का वध नहीं किया। प्रभु ने यह आज्ञा
दी थी : 'पुत्रों के पाप के लिए पिता को मृत्यु-
दण्ड नहीं दिया जाएगा, और न पिता के पाप
के लिए पुत्रों को मृत्यु-दण्ड दिया जाएगा।
प्रत्येक व्यक्ति को उसके ही पाप के लिए
मृत्यु-दण्ड दिया जाएगा।'

अमस्याह का सेईर पर आक्रमण

5 राजा अमस्याह ने यहूदा प्रदेश के
निवासियों को एकत्र किया और उन्हें पितृ-
कुल के अनुसार सेना के सहस्रपतियों और
शतपतियों के अधीन समस्त यहूदा प्रदेश तथा
बिन्यामिन कुल-क्षेत्र में नियुक्त किया। [6]उसने
यहूदा प्रदेश के निवासियों में से उन युवकों को
एकत्र किया था, जो बीस वर्ष और उससे ऊपर
के थे। उसने देखा कि चुने हुए युवकों की
संख्या तीन लाख है। वे युद्ध के लिए सर्वथा
उपयुक्त हैं और भाले तथा ढाल को संभाल
सकते हैं। उसने इस्राएल प्रदेश के राजा से साढ़े
तीन हजार किलो चांदी के बदले में एक लाख
सशक्त सैनिकों को मजदूरी पर बुलाया। ये
शूरवीर योद्धा थे।
7 तब परमेश्वर का एक भक्त-जन आया।
उसने राजा से कहा, 'महाराज! आप अपने
साथ इस्राएली सेना को मत ले जाइए; क्योंकि

---

24 : 23-26 2 रा 12 : 17-18, 20-21 **24 : 24** व्य 32 : 30 **25 : 1-4** 2 रा 14 : 2-6 **25 : 4** व्य 24 : 16

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
प्रभु न तो इस्राएलियों के साथ है, और न इन
एफ्रइमियों के साथ। 8महाराज, यदि आप सोचते
हैं कि आप इस रीति से युद्ध के लिए
शक्तिशाली हो जाएंगे, तो यह आपकी भूल है।
परमेश्वर आपको शत्रु के सामने पराजित करवा
देगा; क्योंकि जय और पराजय प्रदान करना
परमेश्वर के हाथ है।' 9राजा अमस्याह ने कहा,
'लेकिन मेरी साढ़े तीन हजार किलो चांदी का
क्या होगा, जो मैंने इस्राएली सेना के बदले में
दी है?' परमेश्वर के भक्त-जन ने उत्तर दिया,
'प्रभु सामर्थी है, और वह आपको इससे भी
अधिक धन देगा।' 10अत: राजा अमस्याह ने
एफ्रइम कुल-क्षेत्र से आए सैनिकों को विदा
कर दिया कि वे अपने-अपने घर लौट जाएँ।
एफ्रइम के सैनिक यहूदा प्रदेश के सैनिकों से
बहुत नाराज हुए। वे क्रोध में भरे हुए घर की
ओर लौटे।

11 राजा अमस्याह ने साहस किया। उसने
अकेले ही अपने सैनिकों का नेतृत्व किया। वह
लवण घाटी में आया, और वहाँ उसने सेईर के
दस हजार सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया।
12यहूदा प्रदेश के सैनिकों ने सेईर के दस हजार
सैनिकों को जीवित पकड़ लिया। वे उनको
पकड़कर चट्टान की चोटी पर ले गए और वहां
से उनको नीचे फेंक दिया। सेईर के सैनिकों के
शरीर टुकड़े-टुकड़े हो गए।

13 एफ्रइम के सैनिक, जिनको राजा अमस्याह
ने अपने साथ युद्ध में नहीं आने दिया था, और
वापस भेज दिया था, यहूदा प्रदेश के नगरों पर
टूट पड़े। उन्होंने सामरी नगर से बेत-होरोन
नगर तक तीन हजार लोगों को मार डाला, और
बहुत माल लूट लिया।

14 एदोमी सैनिकों का संहार करने के बाद
राजा अमस्याह लौटा। वह अपने साथ सेईर
निवासियों के देवी-देवताओं की मूर्तियां लाया
था। उसने इन देवी-देवताओं को अपना ईश्वर
स्वीकार कर लिया, और इनकी मूर्तियाँ प्रतिष्ठित
कर उनकी पूजा-उपासना करने लगा। वह
मूर्तियों के सम्मुख बलि भी चढ़ाने लगा।
15अत: प्रभु अमस्याह से क्रुद्ध हो गया और
उसके पास एक नबी भेजा। नबी ने अमस्याह
से कहा, 'महाराज, आपने उस जाति के
देवताओं की शरण क्यों ली, जिन्होंने अपनी
जाति को आपके हाथ से नहीं बचाया था?'
16नबी यह बोल ही रहा था कि राजा अमस्याह
ने उससे कहा, 'तुझको किसने मेरा सलाहकार
नियुक्त किया है? चुप रह! तू क्यों मरना चाहता
है?' नबी चुप हो गया; किन्तु उसने कहा, 'मैं
जानता हूं, परमेश्वर ने आपको नष्ट करने का
निश्चय कर लिया है; क्योंकि आपने मेरी
सलाह नहीं सुनी और मुझे चुप करा दिया।'

17 तब यहूदा प्रदेश के राजा अमस्याह ने
अपने सलाहकारों से सलाह की और इस्राएल
प्रदेश के राजा यहोआश के पास दूत भेजे।
यहोआश येहू का पौत्र और यहोआहाज का पुत्र
था। अमस्याह ने उसको यह सन्देश भेजा:
'आओ, हम युद्ध में अपनी शक्ति आजमाएँ।'
18इस्राएल प्रदेश के राजा यहोआश ने यहूदा
प्रदेश के राजा अमस्याह को यह उत्तर दिया,
'एक दिन लबानोन प्रदेश की एक झड़बेरी ने
लबानोन प्रदेश के देवदार को यह सन्देश भेजा,
''अपनी पुत्री का विवाह मेरे पुत्र के साथ
करो।'' उसी क्षण एक वनपशु वहाँ से गुजरा
और उसने झड़बेरी को रौंद डाला। 19तुम सोचते
हो, ''मैंने एदोमी सेना को पराजित किया है।''
इस कारण तुम्हारा हृदय गर्व से फूल उठा है।
अपनी अभूतपूर्व विजय से सन्तुष्ट हो, और घर
में ही रहो। तुम अपने अनिष्ट को क्यों बुला रहे
हो? इससे तुम्हारा पतन होगा, और तुम्हारे साथ
समस्त यहूदा प्रदेश का भी।'

20 परन्तु अमस्याह ने यहोआश की बात
नहीं मानी; क्योंकि परमेश्वर ने यह निश्चय कर
लिया था कि वह अमस्याह और उसके सैनिकों
को उनके शत्रुओं के हाथ में सौंप देगा, क्योंकि
वे एदोम के देवी-देवताओं की शरण में चले
गए थे। 21अत: इस्राएल प्रदेश के राजा यहोआश
ने चढ़ाई कर दी। यहूदा प्रदेश के बेत-शेमश
नगर में इस्राएल प्रदेश के राजा यहोआश और

25 : 11 2 रा 14 : 7 25 : 17-24 2 रा 14 : 8-14

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यहूदा प्रदेश के राजा अमस्याह का आमना-
सामना हुआ। 22यहूदा प्रदेश का राजा इस्राएल
प्रदेश के राजा से हार गया। उसके सैनिक
अपने-अपने घर भाग गए। 23इस्राएल प्रदेश के
राजा यहोआश ने यहूदा प्रदेश के राजा अमस्याह
को, जो अहज्याह का पौत्र और योआश का पुत्र
था, बेत-शेमश नगर में बन्दी बना लिया। वह
उसे यरूशलेम नगर ले गया। उसने एफ्रइम
प्रवेश-द्वार से कोनेवाले प्रवेश-द्वार तक,
लगभग एक सौ अस्सी मीटर यरूशलेम की
शहरपनाह तोड़ दी। 24जो सोना-चांदी और जो
पात्र उसको परमेश्वर के भवन में, ओबेद एदोम
के पास तथा राजमहल के कोषागारों में मिले,
उसने उनको लूट लिया। उसने राजपुत्रों* का
भी अपहरण कर लिया, और अपनी राजधानी
सामरी नगर को लौट गया।

25 इस्राएल प्रदेश के राजा यहोआश बेन-
यहोआहाज की मृत्यु के पश्चात् यहूदा प्रदेश
का राजा अमस्याह बेन-योआश पन्द्रह वर्ष तक
जीवित रहा। 26अमस्याह के शेष कार्यों का
विवरण, आदि से अन्त तक 'यहूदा प्रदेश और
इस्राएल प्रदेश के राजाओं का इतिहास-ग्रन्थ'
में लिखा हुआ है। 27जब से अमस्याह प्रभु से
विमुख हुआ था, लोगों ने यरूशलेम नगर में
उसके विरुद्ध षड्यंत्र रचा था। अत: वह
लाकीश नगर की ओर भागा। षड्यंत्रकारियों ने
उसके पीछे-पीछे लाकीश नगर में हत्यारों को
भेजा, जिन्होंने वहाँ उसकी हत्या कर दी। 28वे
उसका शव घोड़ों पर लाद कर यरूशलेम नगर
में लाए, और उसके मृत पूर्वजों के साथ
दाऊदपुर में गाड़ दिया।

उज्जियाह (अजर्याह) का राज्य

26 तब यहूदा प्रदेश की समस्त जनता ने
अमस्याह के पुत्र उज्जियाह को चुना,
और उसको उसके पिता के स्थान पर राजा
बनाया। वह उस समय सोलह वर्ष का था।
2उज्जियाह ने अपने पिता राजा अमस्याह की
मृत्यु के पश्चात् एलोत नगर का निर्माण कर
उसको यहूदा प्रदेश के अधिकार में पुन: कर
लिया। 3जब उसने राज्य करना आरम्भ किया
तब वह सोलह वर्ष का था। उसने बावन वर्ष
तक राजधानी यरूशलेम में राज्य किया।
उसकी मां का नाम यकोलियाह था। वह
यरूशलेम की रहने वाली थी। 4जैसे उसके पिता
अमस्याह ने उन कार्यों को किया था जो प्रभु
की दृष्टि में उचित थे, वैसे ही उसने भी किया।
5नबी जकर्याह उसको परमेश्वर की भक्ति
करना सिखाता था। नबी जकर्याह के समय में
वह परमेश्वर की बातों में ध्यान लगाता था,
और परमेश्वर की इच्छा जानने का प्रयत्न करता
था। जब तक वह प्रभु की इच्छा के अनुरूप
आचरण करता रहा, तब तक प्रभु ने उसके
हरएक कार्य को सफल बनाया।

उज्जियाह का राज्य-विस्तार

6 तब उज्जियाह ने पलिश्ती नगर-राज्यों पर
आक्रमण किया। उसने गत, यब्ने और अशदोद
नगर-राज्यों की शहरपनाह गिरा दी, और
अशदोद की सीमा में तथा पलिश्ती क्षेत्र के
अन्य स्थानों में अपने नगर बसाए। 7परमेश्वर
ने न केवल पलिश्तियों के विरुद्ध उसकी
सहायता की, वरन् गूर्बअल-वासी अरबियों
और मऊनियों के विरुद्ध भी सहायता की।
8अम्मोन देश के निवासी राजा उज्जियाह को
कर देने लगे। वह अत्यन्त शक्तिशाली हो गया।
उसकी कीर्ति मिस्र देश की सीमा तक फैल
गई। 9इसके अतिरिक्त उसने चौकसी के लिए
यरूशलेम के कोण-द्वार पर, घाटी-द्वार पर
और शहरपनाह के मोड़ पर मीनारें बनाईं, और
उनको सुदृढ़ किया। 10इसी प्रकार उसने निर्जन
प्रदेश में भी मीनारें बनाईं।

राजा उज्जियाह खेती-किसानी पसन्द करता
था। उसके पहाड़ी क्षेत्रों और उपजाऊ भूमिक्षेत्र
में अनेक किसान और अंगूर-उद्यान के माली
थे, जो अंगूर-रस निकालते थे। उसके पास
शफेलाह के चरागाह तथा मैदानी इलाके में
विशाल रेवड़ थे, जिनके लिए उसने वहां कुएँ

* अथवा, 'उन सब लोगों को, जो बन्धक के रूप में थे'

25 : 25-28 2 रा 14 : 17-20 **26 : 1-4** 2 रा 14 : 21-22; 15 : 2-3

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

खुदवाए थे।
11 उज्जियाह के पास एक विशाल सेना थी।
उसके सैनिक युद्ध के लिए सर्वथा उपयुक्त थे।
सेना का विभाजन दलों में गिनती के अनुसार
होता था। सेना का संचालन राजसचिव यीएल,
प्रशासक मासेयाह और राज-सेनापति हनन्याह
करते थे। सेना पंक्तिबद्ध और दलों में विभाजित
होकर युद्ध में जाती थी। 12प्रत्येक पितृकुल से
सशक्त और शूरवीर योद्धा चुने गए थे। उनकी
संख्या दो हजार छ: सौ थी। 13उनके नियन्त्रण
में तीन लाख साढ़े सात हजार सैनिक थे। यह
मुख्य कुमुक दल था, जो शत्रु के आक्रमण के
समय राजा की सहायता पूरी शक्ति और बल
से करता था।
14 राजा उज्जियाह ने अपनी समस्त सेना के
लिए ढालें, भाले, शिरस्त्राण, कवच, धनुष और
गोफन तथा चिकने पत्थर तैयार करवाए थे।
15यरूशलेम में उसने पत्थर तथा तीर फेंकने
वाले यन्त्र बनवाए थे। इन यन्त्रों का आविष्कार
उसके कुशल सेवकों ने किया था। ये यन्त्र
यरूशलेम की मीनार तथा शहरपनाह के मोड़
की गुम्मट में रखे गए थे।
राजा उज्जियाह को प्रभु परमेश्वर की
अद्‌भुत सहायता प्राप्त हुई थी। अत: वह
शक्तिशाली बन गया, और दूर-दूर के देशों तक
उसकी कीर्ति फैल गई।
16 किन्तु जब वह शक्तिशाली हो गया, तब
उसका हृदय घमण्ड से भर गया। उसका हृदय
प्रभु परमेश्वर के प्रति निष्कपट नहीं रहा। एक
दिन उसने प्रभु के मन्दिर में धूप-वेदी पर धूप
जलाने के लिए प्रवेश किया। 17उसी समय उसके
पीछे-पीछे पुरोहित अजर्याह गया। पुरोहित
अजर्याह के साथ प्रभु के अस्सी पुरोहित थे जो
शूरवीर भी थे। 18वे राजा उज्जियाह के सम्मुख
खड़े हो गए। उन्होंने कहा, 'महाराज, यह
आपका काम नहीं है कि आप प्रभु के लिए
सुगन्धित धूप-बलि जलाएँ। धूप जलाने के
लिए हारून-वंशीय पुरोहित प्रभु को अर्पित
किए गए हैं। यह अधिकार उनका है। आप
पवित्र-स्थान से बाहर चले जाइए। आपने
अनुचित काम किया है; प्रभु परमेश्वर की ओर
से आपको इस कार्य का अच्छा फल नहीं
मिलेगा।'
19 राजा उज्जियाह यह सुनकर अत्यन्त क्रुद्ध
हुआ। उसके हाथ में धूप जलाने का धूपदान
था। वह उससे धूप जलानेवाला था। जब वह
पुरोहितों पर नाराज हुआ, उसी समय उसके
माथे पर कोढ़ के दाग फूट पड़े। प्रभु के भवन
में धूप-वेदी के समीप पुरोहितों के सम्मुख यह
घटना घटी। 20महापुरोहित अजर्याह और सब
पुरोहितों ने देखा कि राजा उज्जियाह के माथे पर
कोढ़ हो गया है। प्रभु ने उस पर प्रहार किया
था। उन्होंने उसको तुरन्त वहां से निकाल दिया।
सच पूछो तो वह स्वयं तुरन्त वहां से चला गया।
21राजा उज्जियाह मृत्युपर्यन्त कुष्ठ-रोगी रहा।
वह अलग महल में रहता था। उसको प्रभु के
भवन से अलग कर दिया गया था। उसका पुत्र
योताम राजपरिवार की व्यवस्था करता था।
वही जनता पर शासन और उसका न्याय करता
था।
22 उज्जियाह के शेष कार्यों का विवरण,
उसके समस्त कार्यों का विवरण आदि से अन्त
तक नबी यशायाह बेन-आमोत्स ने लिखा है।
23राजा उज्जियाह अपने मृत पूर्वजों के साथ सो
गया। उसको उसके पूर्वजों के पास राजाओं के
कब्रिस्तान के खेत में ही गाड़ा गया; क्योंकि
लोग कहते थे कि वह कोढ़ी है। उसका पुत्र
योताम उसके स्थान पर राज्य करने लगा।

योताम का राज्य

27 जब योताम ने राज्य करना आरम्भ
किया तब वह पच्चीस वर्ष का था।
उसने सोलह वर्ष तक राजधानी यरूशलेम में
राज्य किया। उसकी मां का नाम यरूशा था।
वह सादोक की पुत्री थी। 2जैसे उसके पिता
उज्जियाह ने उन कार्यों को किया जो प्रभु की
दृष्टि में उचित थे, वैसे उसने भी किया। पर

26 : 18 नि 30 : 7 **26 : 19** गण 12 : 10 **26 : 20-23** 2 रा 15 : 5-7 **26 : 21** लेव 13 : 46 **26 : 23** यश 6 : 1 **27 : 1-3** 2 रा 15 : 33-35

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उसने प्रभु के मन्दिर में प्रवेश करने की अनधिकृत चेष्टा नहीं की। किन्तु जनता भ्रष्ट आचरण करती रही।

3 योताम ने प्रभु के भवन का ऊपरवाला द्वार फिर से बनवाया। उसने ओपेल की शहर-पनाह पर भी बहुत निर्माण-कार्य किए। 4उसने यहूदा प्रदेश के पहाड़ी इलाके में नगर बसाए, और सघन पहाड़ियों पर गढ़ और चौकसी की मीनारें बनाईं। 5उसने अम्मोन देश के राजा से युद्ध भी किया था, और उसके सैनिकों पर विजय प्राप्त की थी। उसी वर्ष अम्मोनियों ने भेंट और कर के रूप में उसको साढ़े तीन हजार किलो चांदी, एक हजार टन गेहूं और एक हजार टन जौ दिया था। दूसरे और तीसरे वर्ष भी उन्होंने इतनी ही मात्रा में चांदी, गेहूं और जौ कर के रूप में उसको दिया था।

6 योताम प्रभु परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप आचरण करता था; अतः वह अत्यन्त शक्तिशाली हो गया। 7उसके शेष कार्यों का विवरण, उसके युद्ध और आचरण का वर्णन 'यहूदा प्रदेश तथा इस्राएल प्रदेश के राजाओं का इतिहास-ग्रन्थ' में लिखा हुआ है। 8जब उसने राज्य करना आरम्भ किया था तब वह पच्चीस वर्ष का था। उसने सोलह वर्ष तक राजधानी यरूशलेम में राज्य किया। 9तब योताम अपने मृत पूर्वजों के साथ सो गया। उसको उसके पूर्वजों के साथ दाऊदपुर में गाड़ा गया। उसका पुत्र आहाज उसके स्थान पर राज्य करने लगा।

आहाज का राज्य

28 जब आहाज ने राज्य करना आरम्भ किया तब वह बीस वर्ष का था। उसने सोलह वर्ष तक राजधानी यरूशलेम में राज्य किया। उसने अपने पूर्वज दाऊद के आचरण का अनुसरण नहीं किया। उसने वे कार्य नहीं किये जो प्रभु की दृष्टि में उचित हैं। 2वह इस्राएल प्रदेश के राजाओं के मार्ग पर चला। उसने बअल देवता की मूर्तियाँ भी बनाईं। 3जिन जातियों को प्रभु ने इस्राएली लोगों को बसाने के लिए कनान देश से निकाल दिया था, उनकी घृणित प्रथा के अनुसार वह हिन्नोम की घाटी में सुगन्धित धूप-द्रव्य जलाता था, और उसने अपने पुत्रों को अग्नि में बलि के रूप में भी चढ़ाया। 4वह पहाड़ी शिखर की वेदियों पर, पहाड़ियों पर तथा प्रत्येक हरे वृक्ष के नीचे पशु-बलि चढ़ाता और सुगन्धित धूप-द्रव्य जलाता था।

5 अतः आहाज के प्रभु परमेश्वर ने उसको सीरिया के राजा के हाथ में सौंप दिया। सीरिया के राजा ने उसको पराजित कर दिया, और उसके राज्य के हजारों निवासियों को बन्दी बनाकर राजधानी दमिश्क में ले गया। प्रभु परमेश्वर ने उसको इस्राएल प्रदेश के राजा के हाथ में भी सौंप दिया, जिसने उसकी सेना का महासंहार किया, और उसको परास्त कर दिया। 6इस्राएल प्रदेश के राजा पेकह बेन-रमलयाह ने यहूदा प्रदेश में एक दिन में ही एक लाख बीस हजार सैनिकों का वध कर दिया। ये सब सशक्त योद्धा थे। इन्होंने अपने पूर्वजों के प्रभु परमेश्वर को त्याग दिया था, इसलिए ये मौत के घाट उतार दिये गए। 7एफ्रइम-निवासी जिक्री नामक एक शूरवीर योद्धा था। उसने राजपुत्र मासेयाह, राजमहल के सेना-नायक अज्रीकाम और एलकाना को मार डाला। एलकाना राजा आहाज का दाहिना हाथ था।

8 इस्राएली सैनिक अपने जाति-बन्धुओं के स्त्री-पुरुषों और पुत्र-पुत्रियों को बन्दी बनाकर सामरी नगर ले गए। बन्दियों की संख्या दो लाख थी। वे अपने जाति भाई-बन्धुओं की धन-सम्पत्ति भी लूटकर ले गए। 9उनके मध्य वहाँ प्रभु का एक नबी था। उसका नाम ओबेद* था। जब इस्राएली प्रदेश के सैनिक सामरी नगर में पहुंचे, तब वह उनसे मिलने के लिए गया। नबी ओबेद ने उनसे कहा, 'यह सच है कि तुम्हारा प्रभु परमेश्वर यहूदा प्रदेश के निवासियों से क्रुद्ध था; और इसलिए उसने तुम्हारे हाथ में उनको सौंप दिया। किन्तु तुमने निर्दयता से

---

* अथवा, 'ओदेद'

27 : 9 2 रा 15 : 38 **28 : 1–4** 2 रा 16 : 2–4 **28 : 3** लेव 18 : 21 **28 : 5** यश 7 : 1; 2 रा 16 : 5

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उनका महासंहार किया। उनकी करुण चीत्कार परमेश्‍वर के पास स्वर्ग तक पहुँची है। [10]और अब तुम यहूदा प्रदेश और यरूशलेम के स्त्री-पुरुषों को गुलाम बनाकर अपने अधीन रखना चाहते हो। यह अपराध करके क्या तुम अपने प्रभु परमेश्‍वर की दृष्टि में अपने विरुद्ध पाप नहीं कर रहे हो? [11]अब तुम मेरी बात सुनो, और अपने जाति भाई-बन्धुओं को, जिन्हें तुमने बन्दी बना लिया है, वापस यहूदा प्रदेश भेज दो; क्योंकि प्रभु की भयंकर क्रोधाग्नि तुम पर भड़कनेवाली है।'

12 वहाँ एफ्रइम कुल-क्षेत्र के कुछ अगुए थे। उनके नाम इस प्रकार हैं: अजर्याह बेन-योहानान, बेरेक्याह बेन-मशिल्लेमोत, यहिजकियाह बेन-शल्लूम, और अमासा बेन-हद्लै। ये अगुए युद्ध से लौटनेवाले इस्राएली सैनिकों के सम्मुख खड़े हो गए। [13]उन्होंने उनसे कहा, 'तुम इन बन्दियों को हमारे प्रदेश में यहाँ मत लाओ। तुम्हारे इस कार्य के कारण हम प्रभु के प्रति दोषी ठहरेंगे। हम प्रभु के प्रति अपराधी और दोषी हैं ही। उनमें एक और अपराध जुड़ जाएगा। हम प्रभु के प्रति महाअपराध कर चुके हैं; और उसकी क्रोधाग्नि हम इस्राएलियों पर भड़की हुई है।' [14]अत: सशस्त्र सैनिकों ने उच्चाधिकारियों और जनता के सामने अपने बन्दियों को छोड़ दिया। उन्होंने लूट भी वहीं छोड़ दी। [15]एफ्रइम कुल-क्षेत्र के अगुए, जिनके नाम ऊपर लिखे हुए हैं, उठे, और उन्होंने बन्दियों को संभाला। उनमें अनेक बन्दी नंगे थे। उनको अगुओं ने लूट के माल से वस्त्र पहिनाए। उन्होंने न केवल कपड़े पहिनाए, वरन् पैरों में जूते भी पहिनाए। उनको खाने को भोजन दिया, और पीने को पानी। उनके सिर पर तेल मला। कमजोर और बीमारों को गधे पर बैठाया, और सब बन्दी जनों को उनके जाति भाई-बन्धुओं के पास खजूर वृक्षों के नगर यरीहो पहुंचा दिया। तत्पश्‍चात् अगुए सामरी नगर को लौट गए।

16 उस समय राजा आहाज ने सहायता के लिए असीरिया देश के राजा के पास दूत भेजे; [17]क्योंकि एदोमी सैनिकों ने यहूदा प्रदेश पर पुन: आक्रमण कर उसको पराजित कर दिया था, और वे यहूदा प्रदेश के अनेक निवासियों को बन्दी बनाकर ले गए थे। [18]पलिश्तियों ने भी शफेलाह के चरागाह, और यहूदा के दक्षिण क्षेत्र नेगेब के नगरों पर चढ़ाई कर इनको अपने अधिकार में कर लिया था, और वहां वे बस गए थे। नेगेब क्षेत्र के नगरों के नाम इस प्रकार हैं: बेतशमेश, अय्यालोन, गदेरोत, सोको और उसके गांव, तिम्ना और उसके गांव, तथा गिमजो और उसके गांव। [19]यहूदा प्रदेश** के राजा आहाज के कारण प्रभु ने यहूदा प्रदेश का पतन किया था; क्योंकि आहाज ने यहूदा प्रदेश के साथ मनमाना व्यवहार किया था और प्रभु के साथ विश्‍वासघात किया था। [20]तब असीरिया देश के राजा तिग्लत-पलेसेर ने उस पर आक्रमण किया; और वह उसको सुदृढ़ करने के बदले उसे सताने लगा। [21]आहाज ने प्रभु के भवन और राजमहल के कोषागारों की सोना-चांदी को निकाला, और असीरिया के राजा को भेंट के रूप में दे दिया। तो भी उसकी इस भेंट से उसको सहायता प्राप्त न हुई।

22 अपने संकट के दिनों में यही राजा आहाज प्रभु के प्रति और अधिक विश्‍वासघात करने लगा। [23]सीरिया के राष्ट्रीय देवताओं ने उसको पराजित किया था, अत: वह दमिश्क की वेदियों पर उनको बलि चढ़ाने लगा। वह यह सोचता था, 'सीरिया के राजाओं के देवताओं ने युद्ध में उनकी सहायता की थी; अब यदि मैं उनको बलि चढ़ाऊंगा तो वे मेरी भी सहायता करेंगे।' किन्तु सीरिया के ये देवता आहाज और समस्त इस्राएलियों के विनाश का कारण बन गए। [24]राजा आहाज ने परमेश्‍वर के भवन के सब पात्रों को इकट्ठा किया, और उसके बाद उन पात्रों के टुकड़े-टुकड़े कर दिये। उसने प्रभु के भवन के द्वार बन्द कर दिये,

---

** अथवा, 'इस्राएल'

28 : 15 लू 10 : 29-37

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और यरूशलेम नगर के कोने-कोने में स्वयं
वेदियां बनवाईं। [25]उसने यहूदा प्रदेश के सब
नगरों में अन्य देवी-देवताओं को अग्नि-बलि
चढ़ाने के लिए वेदियां निर्मित कीं, और यों
अपने पूर्वजों के प्रभु परमेश्वर का क्रोध
भड़काया। [26]आहाज के शेष कार्यों का विवरण,
उसके आचरण का वर्णन आरम्भ से अन्त तक
'यहूदा और इस्राएल प्रदेशों के राजाओं का
इतिहास-ग्रन्थ' में लिखा हुआ है। [27]तब आहाज
अपने मृत पूर्वजों के साथ सो गया। उसको
यरूशलेम नगर में गाड़ा गया; परन्तु उसका शव
इस्राएल के राजाओं के कब्रिस्तान में नहीं
दफनाया गया। उसका पुत्र हिजकियाह उसके
स्थान पर राज्य करने लगा।

राजा हिजकियाह का राज्य

29 जब हिजकियाह ने राज्य करना आरम्भ
किया तब वह पच्चीस वर्ष का था।
उसने उनतीस वर्ष तक राजधानी यरूशलेम में
राज्य किया। उसकी मां का नाम अबीयाह था।
वह जकर्याह की पुत्री थी। [2]राजा हिजकियाह
ने अपने पूर्वज दाऊद के समान वे ही कार्य किये
जो प्रभु की दृष्टि में उचित थे।

3 अपने शासन-काल के प्रथम वर्ष के
पहिले महीने में उसने प्रभु के भवन के सब द्वार
खोल दिये, और उनकी मरम्मत करवा दी।
[4]वह प्रभु के भवन के भीतर पुरोहितों और उप-
पुरोहितों को लाया, और उनको पूर्व दिशा के
चौक में इकट्ठा किया। [5]राजा हिजकियाह ने
उनसे कहा, 'ओ लेवी-वंशजो, मेरी बात सुनो।
अब तुम स्वयं को तथा अपने पूर्वजों के प्रभु
परमेश्वर के भवन को शुद्ध करो, और पवित्र
स्थान से गन्दगी को दूर करो। [6]हमारे बाप-
दादों ने प्रभु के विरुद्ध विश्वासघात किया था।
उन्होंने उन्हीं कार्यों को किया था जो प्रभु
परमेश्वर की दृष्टि में अनुचित थे। उन्होंने
उसको छोड़ दिया था। वे प्रभु से विमुख हो गए
थे। वे उसके निवास-स्थान से पीठ फेरकर
चले गए थे। [7]उन्होंने प्रभु के भवन की ड्योढ़ी
के द्वार बन्द कर दिये थे। उन्होंने उसके दीपक
बुझा दिये थे। वे इस्राएली राष्ट्र के परमेश्वर के
पवित्र स्थान में उसके लिए न सुगन्धित धूप-
द्रव्य जलाते थे, और न उसको अग्नि-बलि
अर्पित करते थे। [8]अतः प्रभु का क्रोध यहूदा
प्रदेश तथा राजधानी यरूशलेम पर बरस पड़ा।
प्रभु ने हमें अन्य जातियों की दृष्टि में घृणा का
कारण बना दिया। वे हमें देखकर व्यंग्य से
ताली बजाते हैं, और हमारी शोचनीय दशा पर
आश्चर्य करते हैं। यह तुम स्वयं अपनी आंखों
से देख रहे हो। [9]हमारे बाप-दादों को शत्रुओं
ने तलवार से मौत के घाट उतार दिया था। वे
हमारे पुत्र, पुत्रियों और पत्नियों को बन्दी
बनाकर ले गए। [10]अब यह मेरी हार्दिक इच्छा
है कि मैं इस्राएल के प्रभु परमेश्वर के साथ
विधान की धर्मविधि सम्पन्न करूं, जिससे
उसकी क्रोधाग्नि हमसे दूर हो जाए। [11]ओ मेरे
पुत्रो, अपना कर्तव्यकर्म करने में आलस्य मत
करो; क्योंकि प्रभु ने तुम्हें इसलिए चुना है कि
तुम इस भवन में उसके सम्मुख सेवा-कार्य के
लिए खड़े हो उसकी सेवा करो, उसके धर्म-
सेवक बनो और उसके लिए सुगन्धित धूप-
द्रव्य जलाया करो।'

12 राजा हिजकियाह का यह प्रबोधन
सुनकर निम्नलिखित उप-पुरोहितों ने स्वयं को
सेवा के लिए तैयार किया : कहात के वंश में
से महत बेन-अमासै, योएल बेन-अजर्याह;
मरारी के वंश में से कीश बेन-अब्दी, अजर्याह
बेन-यहल्लेलेल; गेर्शोन के वंश में से योआह
बेन-जिम्मा, एदेन बेन-योआह। [13]एलीसापान
के वंशजों में से शिम्री और यूएल; आसाफ
वंशजों में से जकर्याह और मत्तन्याह। [14]हेमान
के वंशजों में से यहूएल और शिमई। यदूतून
के वंशजों में से शमायाह और उज्जीएल। [15]इन
लेवीय उप-पुरोहितों ने अपने भाई-बन्धुओं
को एकत्र किया, और स्वयं को शुद्ध किया।
तत्पश्चात् वे राजा हिजकियाह के आदेश के
अनुसार प्रभु के भवन को साफ और शुद्ध करने
के लिए उसके भीतर गए। प्रभु ने राजा
हिजकियाह को यह कार्य करने का आदेश

28 : 27 यश 14 : 28; 2 रा 16 : 20 **29 : 1-2** 2 रा 18 : 1-3 **29 : 8** व्य 28 : 25

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दिया था। 16पुरोहित प्रभु के भवन के अन्तर्गृह की सफाई करने के लिए भवन के भीतरी कक्षों में गए। उन्हें वहाँ जितनी अशुद्ध वस्तुएं तथा गन्दगी मिलीं, वे उन-सब को उठाकर प्रभु के भवन के आंगन में ले गए। आंगन से उप-पुरोहितों ने गन्दगी को उठाया और वे उसको किद्रोन की बरसाती नदी के तट पर ले गए।

17 उन्होंने प्रभु के भवन की सफाई के कार्य का आरम्भ हिजकियाह के शासन-काल के प्रथम वर्ष के पहिले महीने से किया था। वे उस महीने की आठवीं तारीख को प्रभु के भवन की ड्योढ़ी में पहुंचे। उसके पश्चात् उन्होंने प्रभु के भवन को आठ दिन में स्वच्छ किया; और यों उस महीने की सोलहवीं तारीख को साफ-सफाई का काम पूरा हुआ। 18प्रभु के भवन को शुद्ध करने के बाद वे राजा हिजकियाह के पास उसके राजमहल में आए। उन्होंने उससे कहा, 'महाराज, हमने प्रभु के भवन को पूर्णत: शुद्ध कर दिया: अग्नि-बलि की वेदी और उसके सब पात्र, भेंट की रोटी की मेज, और उसके सब पात्र। 19महाराज, हमने उन पात्रों की भी सफाई कर दी है जो राजा आहाज ने अपने राज्य-काल में प्रभु के प्रति विश्वासघात करके फेंक दिये थे। हमने उन पात्रों को ठीक कर दिया है। अब वे भी शुद्ध हो गए हैं। चलकर देखिए, वे प्रभु की वेदी के सामने रखे हुए हैं।'

20 दूसरे दिन बड़े सबेरे राजा हिजकियाह तैयार हुआ। उसने नगर के उच्चाधिकारियों को एकत्र किया, और प्रभु के भवन में गया। 21वे राज्य, पवित्र-स्थान और यहूदा प्रदेश के हेतु पाप-बलि में चढ़ाने के लिए सात बछड़े, सात मेढ़े, सात मेमने और सात बकरे लाए थे। राजा हिजकियाह ने हारून-वंशीय पुरोहितों को आदेश दिया कि वे प्रभु की वेदी पर उनकी बलि चढ़ाएं। 22अत: उन्होंने बछड़ों का वध किया। पुरोहितों ने उनका खून लेकर वेदी पर छिड़क दिया। इसी प्रकार उन्होंने मेढ़ों का भी वध किया, और उनका भी खून वेदी पर छिड़का। इसके पश्चात् उन्होंने मेमनों का वध किया, और उनका खून वेदी पर छिड़का। 23अन्त में पाप-बलि में चढ़ाने के लिए बकरे राजा और आराधकों की धर्मसभा के पास लाए गए। राजा और आराधकों ने उन पर अपने हाथ रखे। 24तब पुरोहितों ने उनका वध किया, और उनके रक्त से वेदी पर पाप-बलि अर्पित की, जिससे समस्त इस्राएली राष्ट्र के पाप का प्रायश्चित् हो जाए। राजा ने यह आदेश दिया था कि अग्नि-बलि और पाप-बलि न केवल यहूदा प्रदेश की जनता के लिए वरन् समस्त इस्राएली राष्ट्र के लिए अर्पित की जाए।

25 जैसा कि राजा दाऊद, राजा दाऊद के द्रष्टा गाद तथा नबी नातान ने आदेश दिया था कि प्रभु के भवन में उप-पुरोहित स्तुति-गान के लिए नियुक्त किये जायेंगे और उनके हाथों में वाद्य-यन्त्र—झांझ, सारंगी और वीणा—रहेंगे, वैसा राजा हिजकियाह ने किया; क्योंकि स्वयं परमेश्वर ने इस प्रथा का आदेश अपने नबियों के माध्यम से दिया था। 26उप-पुरोहित, राजा दाऊद के द्वारा आविष्कृत वाद्य-यन्त्रों को हाथ में लेकर खड़े हो गए। पुरोहितों के हाथ में तुरहियाँ थीं। 27तब राजा हिजकियाह ने आदेश दिया कि प्रभु की वेदी पर अग्नि-बलि चढ़ाई जाए। जब अग्नि-बलि चढ़ाई जाने लगी, तब प्रभु की स्तुति में गीत आरम्भ हुआ। स्तुति-गान के साथ-साथ वाद्य-यन्त्र भी बजने लगे, और उनके साथ तुरहियां। इन वाद्य-यन्त्रों का अविष्कार इस्राएली राष्ट्र के राजा दाऊद ने किया था। 28जब तक अग्नि-बलि चढ़ाने का कार्य समाप्त न हो गया, तब तक आराधकों की समस्त धर्मसभा प्रभु के सम्मुख सिर झुकाए रही, गायक गीत गाते और तुरही बजाने वाले तुरही बजाते रहे। 29जब अग्नि-बलि चढ़ाई जा चुकी, तब राजा और उसके साथ उपस्थित सब लोगों ने प्रभु के सम्मुख सिर झुकाया और आराधना की। 30इसके पश्चात् राजा हिजकियाह और उसके उच्चाधिकारियों ने उप-पुरोहितों को आदेश दिया कि वे राजा दाऊद तथा द्रष्टा आसाफ के रचे हुए गीतों से प्रभु का स्तुति-गान करें। अत: उप-पुरोहितों ने हर्ष और उल्लास से स्तुति-गान गाए, और राजा तथा उसके साथ

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उपस्थित आराधकों ने प्रभु के सम्मुख सिर
झुकाकर आराधना की।
31 राजा हिजकियाह ने आराधकों की
धर्मसभा से कहा, 'तुमने प्रभु के लिए स्वयं को
अर्पित कर दिया। अब समीप आओ, और प्रभु
के भवन में बलि-पशु तथा स्तुति-बलि चढ़ाने
के लिए बलि-सामग्री लाओ; और जिनके
हृदय में अग्नि-बलि चढ़ाने की इच्छा है, वे
अग्नि-बलि लाएँ।' अतः आराधक बलि-पशु
तथा स्तुति-बलि में चढ़ाने के लिए सामग्री ले
आए। जिनके हृदय में अग्नि-बलि चढ़ाने की
इच्छा हुई, वे अग्नि-बलि ले आए।
32आराधकों द्वारा अग्नि-बलि में चढ़ाए गए पशुओं की
संख्या इस प्रकार थी : सत्तर बछड़े, सौ मेढ़े,
और दो सौ मेमने। ये सब पशु प्रभु को अग्नि-
बलि में चढ़ाए गए।
33और जिन पशुओं को
प्रभु के लिए अर्पित किया गया, उनकी संख्या
इस प्रकार थी : छह सौ बछड़े और तीन हजार
भेड़ें।
34किन्तु बलि-पशुओं की खाल उतारने
के लिए पुरोहितों की संख्या कम पड़ गई। अतः
उनके भाई-बन्धु उप-पुरोहितों ने काम पूरा
करने में उनकी सहायता की। अन्य पुरोहितों ने
भी काम पूरा करने के लिए स्वयं को शुद्ध
किया। स्वयं को शुद्ध करने का उत्साह उप-
पुरोहितों में पुरोहितों की अपेक्षा अधिक था।
35इसके अतिरिक्त अग्नि-बलि में चढ़ाए
जाने वाले पशुओं की संख्या बहुत थी।
सहभागिता-बलि* में चढ़ाए गए पशुओं की
चर्बी भी बहुत थी। अग्नि-बलि में पेय-बलि
भी चढ़ाई गई थी। इस प्रकार प्रभु के भवन में
आराधना की पुनः प्रतिष्ठा हुई।
36यह कार्य
एकाएक हुआ था, क्योंकि परमेश्वर ने अपने
निज लोगों के लिए उसे सम्पन्न किया था; अतः
राजा हिजकियाह तथा सब लोगों ने आनन्द
मनाया।

पास्का (फसह) का पर्व

30 राजा हिजकियाह ने इस्राएल तथा
यहूदा प्रदेशों के निवासियों के पास
सन्देश-वाहक भेजे। उसने एफ्रइम तथा मनश्शे
गोत्र के क्षेत्रों में रहनेवाले अपने जाति-बन्धुओं
को भी पत्र लिखे कि वे इस्राएली राष्ट्र के प्रभु
परमेश्वर के लिए पास्का का पर्व मनाने के
उद्देश्य से यरूशलेम नगर में स्थित प्रभु-भवन
में आएं;
2क्योंकि राजा ने, उच्चाधिकारियों तथा
यरूशलेम की धर्मसभा ने, परस्पर परामर्श के
पश्चात् यह निश्चय किया है कि पास्का का पर्व
वर्ष के दूसरे महीने में मनाया जाये।
3इससे पहले
इस्राएली राष्ट्र के लोग पास्का का पर्व नहीं मना
सके थे; क्योंकि पुरोहितों ने पर्याप्त संख्या में
स्वयं को शुद्ध नहीं किया था, और न इस्राएली
लोग यरूशलेम में एकत्र हो सके थे।
4राजा
हिजकियाह और यरूशलेम की धर्मसभा को
यह योजना पसन्द आई।
5अतः उन्होंने समस्त
इस्राएल देश में—बएरशेबा से दान नगर
तक—यह राजाज्ञा घोषित की कि समस्त
इस्राएली समाज यरूशलेम में आए, और सब
लोग इस्राएली राष्ट्र के प्रभु परमेश्वर के लिए
पास्का का पर्व मनाएँ; क्योंकि उन्होंने धर्म-
व्यवस्था के अनुसार विशाल संख्या में उसको
नहीं मनाया था।
6 अतः सन्देशवाहक राजा हिजकियाह तथा
उसके उच्चाधिकारियों के पत्र लेकर समस्त
इस्राएल और यहूदा प्रदेशों में गए। राजा
हिजकियाह ने पत्र में यह लिखा था : 'ओ
इस्राएली राष्ट्र के लोगो, तुम जो असीरिया देश
के राजाओं के हाथ से बच गए हो, अपने
पूर्वजों, अब्राहम, इसहाक और इस्राएल के प्रभु
परमेश्वर के पास लौटो, ताकि वह तुम्हारी ओर
पुनः लौटे।
7तुम्हारे पूर्वजों और जाति भाई-
बन्धुओं ने अपने प्रभु परमेश्वर के प्रति
विश्वासघात किया था। तुम उनके समान
आचरण मत करो अन्यथा, जैसा तुम देख रहे
हो, कि उसने उनको उजाड़ दिया था, वैसा वह
तुम्हें भी उजाड़ देगा।
8तुम्हारे पूर्वज ऐंठी
गरदनवाले लोग थे। तुम उनके समान हठीले
मत बनो; किन्तु अपने प्रभु परमेश्वर के सम्मुख

* अथवा 'शांति-बलि'

29 : 31 लेव 7 : 12 **30 : 2** गण 9 : 10 **30 : 3** नि 12 : 6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

विनम्र बनो; और उसके पवित्र स्थान में आओ,
जिसको उसने सदा-सर्वदा के लिए पवित्र
किया है। अपने प्रभु परमेश्वर की आराधना
और सेवा करो, ताकि उसकी क्रोधाग्नि तुमसे
दूर हो जाए।
9 'यदि तुम प्रभु की ओर लौटोगे तो जिन्होंने
तुम्हारे भाई-बन्धुओं और तुम्हारी सन्तान को
गुलाम बनाया है, उनके हृदय को प्रभु करुणामय
बनाएगा, और वे उन पर दया करेंगे। वे उनको
स्वतन्त्र कर देंगे, और तुम्हारे भाई-बन्धु तथा
तुम्हारी सन्तान इस देश को लौट आएगी।
तुम्हारा प्रभु परमेश्वर कृपालु और करुणामय
है। यदि तुम उसकी ओर उन्मुख होगे तो वह
तुमसे कभी विमुख नहीं होगा।'
10 अत: सन्देशवाहक एफ्रइम तथा मनश्शे
के एक नगर से दूसरे नगर में पत्र देते हुए
जबूलून के भूमि-क्षेत्र तक गए। किन्तु वहां के
इस्राएली लोगों ने उनका मजाक उड़ाया;
उनकी हंसी की। उनकी बातों को हंसी में उड़ा
दिया। 11केवल आशेर, मनश्शे और जबूलून के
कुछ लोगों ने अपने हृदय को विनम्र किया और
वे प्रभु के सम्मुख यरूशलेम में आए। 12यहूदा
प्रदेश में भी परमेश्वर ने अपना सामर्थ्य प्रकट
किया और निवासियों को एकमत किया कि वे
राजा हिजकियाह और उसके उच्चाधिकारियों
की राजाज्ञा को मानें, जो उन्होंने प्रभु की वाणी
के अनुसार दी थी।
13 वर्ष के दूसरे महीने में, बेखमीर रोटी का
पर्व मनाने के लिए अधिक संख्या में लोग
यरूशलेम में आए। इस प्रकार यरूशलेम में
आराधकों की एक अत्यन्त विशाल धर्मसभा
एकत्र हो गई। 14लोगों ने यरूशलेम नगर के
मोड़ों और चौकों पर स्थापित अन्य देवताओं
की वेदियों को हटा दिया। जो वेदियां सुगन्धित
धूप-बलि जलाने के लिए स्थापित की गई थीं,
उनको किद्रोन की घाटी में फेंक दिया।
15उन्होंने दूसरे महीने की चौदहवीं तारीख को
पास्का-पर्व के मेमने का वध किया। यह देख
कर पुरोहित और उप-पुरोहित लज्जित हुए।
उन्होंने स्वयं को शुद्ध किया, और प्रभु के भवन
में अग्नि-बलि चढ़ाई। 16तत्पश्चात् वे परमेश्वर
के जन मूसा की व्यवस्था के अनुसार अपने-
अपने नियत स्थान पर खड़े हो गए। पुरोहितों
ने उप-पुरोहितों के हाथ से रक्त लिया, और
उसको छिड़का।
17 आराधकों की सभा में ऐसे बहुत लोग
थे जिन्होंने स्वयं को शुद्ध नहीं किया था। अत:
अशुद्ध लोगों की ओर से उप-पुरोहितों ने
पास्का का मेमना वध किया और उसका मांस
प्रभु को चढ़ा कर पवित्र किया। 18विशाल जन-
समूह में एफ्रइम, मनश्शे, इस्साकार और
जबूलून के क्षेत्रों के बहुत लोग थे, जिन्होंने
अपने को शुद्ध नहीं किया था। धर्म-व्यवस्था
के निषेध करने पर भी उन्होंने अशुद्ध दशा में
पास्का के मेमने का मांस खाया। राजा हिजकियाह
ने उनकी क्षमा के लिए प्रभु से इन शब्दों में
प्रार्थना की: 'प्रभु भला है, वह उस व्यक्ति के
अपराध क्षमा करे 19जो अपने पूर्वजों के प्रभु
परमेश्वर को खोजने में मन लगाता है, चाहे वह
पवित्र-स्थान की धर्मविधि के अनुसार अशुद्ध
क्यों न हो।' 20प्रभु ने राजा हिजकियाह की
प्रार्थना सुनी, और सब लोगों को स्वस्थ कर
दिया।
21 इस्राएली राष्ट्र के लोगों ने जो यरूशलेम
में उपस्थित थे, बड़े आनन्द-उत्साह के साथ
सात दिन तक बेखमीर रोटी का पर्व मनाया।
उप-पुरोहित तथा पुरोहित प्रतिदिन प्रभु की
स्तुति गाते थे। वे जोर-शोर से प्रभु का स्तुति-
गान करते थे। 22उप-पुरोहित प्रभु की आराधना
के समय कुशलतापूर्वक वाद्य-यन्त्र बजाते थे।
अत: राजा हिजकियाह ने उनको प्रोत्साहन के
शब्द कहे। सब लोग सात दिन तक पर्व-भोज
खाते रहे। उन्होंने सहभागिता-बलि के पशु का
वध किया, और अपने पूर्वजों के प्रभु परमेश्वर
को धन्यवाद दिया।
23 सात दिन की समाप्ति पर आराधकों की
धर्मसभा ने परस्पर विचार-विमर्श कर यह
निश्चय किया कि पर्व सात दिन और मनाया

---
30 : 9 1 रा 8 : 50

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जाए। अतः उन लोगों ने और सात दिन तक आनन्द-उल्लास से पर्व मनाया। [24]यहूदा प्रदेश के राजा हिजकियाह ने बलि चढ़ाने के लिए धर्मसभा को एक हजार बछड़े और सात हजार भेड़ें दी थीं। उसके उच्चाधिकारियों ने धर्मसभा को एक हजार बछड़े और दस हजार भेड़ें दी थीं। बहुत बड़ी संख्या में पुरोहितों ने स्वयं को शुद्ध किया। [25]इस प्रकार समस्त धर्मसभा ने, यहूदा प्रदेश के आराधकों ने, पुरोहितों और उप-पुरोहितों ने, इस्राएल प्रदेश से आए आराधकों ने तथा उनके साथ आए विदेशियों ने और यहूदा प्रदेश में रहनेवाले विदेशियों ने आनन्द मनाया। [26]यरूशलेम में चारों ओर हर्ष ही हर्ष था। इस्राएल देश के राजा दाऊद के पुत्र सुलेमान के समय के बाद ऐसा आनन्द यरूशलेम में कभी नहीं मनाया गया था।

27 अन्त में पुरोहित और उप-पुरोहित उठे, और उन्होंने सब लोगों को आशिष दी। उनके आशिष के वचन तथा उनकी प्रार्थना को प्रभु परमेश्वर ने स्वर्ग में अपने पवित्र निवास-स्थान से सुना।

इस्राएलियों का धर्म-उत्साह

31 पर्व के समाप्त होने के पश्चात् सब इस्राएली, जो उस समय यरूशलेम में उपस्थित थे, यहूदा प्रदेश के नगरों में गए। उन्होंने यहूदा और बिन्यामिन कुल-क्षेत्रों तथा एफ्रइम और मनश्शे गोत्र के क्षेत्रों में प्रतिष्ठित अशेराह देवी के पूजा-स्तम्भ, देवताओं की मूर्तियाँ, पहाड़ी शिखर की वेदियां तथा अन्य वेदियां ध्वस्त कर दीं। उन्होंने स्तम्भों के टुकड़े-टुकड़े कर दिए, मूर्तियों को काट दिया, मन्दिर और वेदियों को नष्ट कर दिया। तब इस्राएली राष्ट्र का प्रत्येक व्यक्ति अपने नगर को, अपने भूमि-क्षेत्र को लौट गया।

पुरोहितों एवं उप-पुरोहितों की पुनर्व्यवस्था

2 राजा हिजकियाह ने पुरोहितों और उप-पुरोहितों को उनके सेवा-कार्य के अनुसार विभिन्न दलों में विभक्त कर दिया। उसने प्रत्येक पुरोहित और उप-पुरोहित को उसके सेवा-कार्य के अनुसार अग्नि-बलि, सहभागिता-बलि और धन्यवाद-बलि चढ़ाने, स्तुति-गान गाने तथा प्रभु के शिविर के द्वारों पर पहरा देने के लिए नियुक्त किया।

3 राजा अपनी सम्पत्ति से सबेरे-शाम की अग्नि-बलि, विश्राम-दिवस की अग्नि-बलि, नवचन्द्रपर्व की अग्नि-बलि तथा प्रभु की व्यवस्था में लिखित निर्धारित पर्वों की अग्नि-बलि देता था। [4]उसने यरूशलेम के निवासियों को आदेश दिया कि वे पुरोहितों और उप-पुरोहितों को उनका निर्धारित अंश दिया करें, ताकि उनका पूर्ण ध्यान प्रभु की व्यवस्था पर लगा रहे। [5]जैसे ही राजाज्ञा यरूशलेम के नागरिकों को मालूम हुई, वैसे ही सब इस्राएली प्रचुर मात्रा में अन्न, अंगूर, तेल, शहद तथा खेत की सब प्रकार की फसल की प्रथम उपज पुरोहितों और उप-पुरोहितों को देने लगे। वे सब वस्तुओं का दशमांश प्रचुर मात्रा में लाए। [6]इस्राएल प्रदेश तथा यहूदा प्रदेश के लोग, जो यहूदा प्रदेश के नगरों के ही निवासी थे, गाय-बैल तथा भेड़-बकरियों का दशमांश लाए। वे उन वस्तुओं का भी दशमांश लाए, जिनको उन्होंने अपने प्रभु परमेश्वर के लिए अर्पित किया था। उन्होंने पुरोहितों और उप-पुरोहितों के सामने ढेर लगा दिया। [7]उन्होंने ढेर लगाने का कार्य वर्ष के तीसरे महीने में आरम्भ किया था, और समाप्त किया सातवें महीने में! [8]जब राजा हिजकियाह और उच्चाधिकारी आए, और उन्होंने ढेरों को देखा, तब उन्होंने प्रभु और उसके निज लोग इस्राएलियों को धन्यवाद दिया। [9]राजा हिजकियाह ने उन ढेरों के विषय में पुरोहितों और उप-पुरोहितों से पूछा। [10]सादोक-वंशीय महापुरोहित अजर्याह ने उसको बताया, 'महाराज, जबसे लोग प्रभु के भवन में भेंट लाने लगे हैं, तबसे हमें पर्याप्त भोजन प्राप्त होने लगा है। सच तो यह है कि वे इतनी अधिक भेंट चढ़ाते हैं, कि भरपेट खाने के बाद भी अत्यधिक बच जाता है। प्रभु ने अपने निज लोग इस्राएलियों पर आशिष की

31 : 3 गण 28 : 1; यहेज 45 : 17 31 : 6 व्य 14 : 28

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वर्षा की है। उसके कारण ही हमारे पास यह
ढेर बच गया है।'
11 अत: राजा हिजकियाह ने आदेश दिया
कि प्रभु के भवन में भण्डारगृह बनाए जाएं।
सेवकों ने भण्डारगृह तैयार कर दिये। 12इस्राएली
लोग सच्चाई से प्रभु को दशमांश तथा उसके
लिए अलग की गई पवित्र वस्तुएँ भेंट में चढ़ाने
लगे। इस भेंट की देखभाल करनेवाला मुख्य
अधिकारी कोनन्याह था। वह लेवीय उप-
पुरोहित था। उसका सहायक उसका भाई
शिमई था। 13कोनन्याह और उसके भाई की
सहायता करने के लिए राजा हिजकियाह तथा
परमेश्वर के भवन के मुख्य अधिकारी महा-
पुरोहित अजर्याह ने निम्नलिखित प्रबन्धकों को
नियुक्त किया था: यहीएल, अजज्याह, नहत,
असाहेल, यरीमोत, योजाबाद, एलीएल,
यिस्मक्याह, महत और बनायाह। 14परमेश्वर
को अर्पित स्वेच्छा-बलि का प्रबन्ध करनेवाला
अधिकारी कोरे बेन-यिम्नाह था। वह लेवीय
उप-पुरोहित था, और पूर्वी दरवाजे का द्वारपाल
था। वह प्रभु के लिए सुरक्षित भेंट तथा परम
पवित्र भेंट बांटता था। 15उसके अधीन एदेन,
मिन्यामिन, येशूअ, शमायाह, अमर्याह, और
शकन्याह थे। ये सच्चाई से पुरोहितों के नगरों
में भेंट बांटने में उसकी सहायता करते थे। वे
वहां अपने भाई-बन्धुओं में, छोटे-बड़े सबको,
विभिन्न दलों के अनुसार भेंट बांटते थे। 16वे उन
पुरोहितों को उनका निर्धारित अंश नहीं देते थे*,
जिनका नाम पुरुषों की वंशावली में लिखा था,
जिनकी आयु तीन वर्ष से ऊपर थी, जो प्रतिदिन
सेवा-कार्य के लिए प्रभु के भवन में प्रवेश करते
थे, और अपने-अपने दल की पारी के अनुसार
अपना-अपना सेवा-कार्य करते थे। 17पुरोहितों
की नामावली उनके पितृकुलों के अनुसार
तैयार की गई थी और उप-पुरोहितों की
नामावली उनके सेवा-कार्य तथा दल के
अनुसार। उप-पुरोहितों की आयु बीस वर्ष तथा
उससे ऊपर होती थी। 18पुरोहितों की नामावली
में उनके शिशु, पत्नी, पुत्र और पुत्री आदि सब
का उल्लेख रहता था। वे सच्चाई से अपने को
पवित्र रखते थे।
19 हारून-वंशीय पुरोहितों को उनका अंश
देने के लिए अनेक नगरों में विशेष व्यक्तियों
को उनके नाम से अंकित कर नियुक्त किया
गया था। हारून-वंशीय पुरोहित अपने-अपने
नगर के चारागाहों में रहते थे। ये व्यक्ति
हारून-वंशीय परिवारों के पुरोहितों तथा सब
लेवीय उप-पुरोहितों को, जिनके नाम नामावली
में लिखे गए थे, उनका निर्धारित अंश देते थे।
20 राजा हिजकियाह ने समस्त यहूदा प्रदेश
में ये कार्य किये। उसने ऐसे कार्य किये जो
अपने प्रभु परमेश्वर की दृष्टि में उत्तम, उचित
और धर्ममय थे। 21उसने जो भी कार्य अपने
हाथ में लिया, उसको पूर्ण हृदय से किया।
उसने मन लगाकर परमेश्वर के भवन में
आराधना का प्रबन्ध किया, परमेश्वर की
व्यवस्था और उसकी आज्ञाओं के अनुरूप
परमेश्वर की खोज की और वह उसमें सफल
भी हुआ।

राजा सनहेरिब का आक्रमण

32 राजा हिजकियाह ने प्रभु के भवन में
आराधना का प्रबन्ध किया। उसने
अपने कार्यों से प्रभु के प्रति विश्वास प्रकट
किया। इन कार्यों के पश्चात् असीरिया के राजा
सनहेरिब ने यहूदा प्रदेश पर आक्रमण कर
दिया। उसने यहूदा प्रदेश के सब किलाबन्द
नगरों को घेर लिया। वह सोचता था कि वह
उन गढ़वाले नगरों को जीत लेगा। 2जब राजा
हिजकियाह ने देखा कि सनहेरिब समीप आ
गया है, और उसका इरादा यरूशलेम पर चढ़ाई
करने का है, 3तब उसने अपने अधिकारियों
और योद्धाओं के साथ मिलकर एक योजना
बनाई कि नगर की बाहरी सीमा के जल-स्रोतों
का मुंह बन्द कर दिया जाए। उन्होंने राजा
हिजकियाह की इस योजना को पूर्ण करने में
सहायता की। 4अपार संख्या में लोग एकत्र हो

* अथवा, 'वे उन पुरुषों को भी देते थे'
32 : 1 2 रा 18 : 13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गए। उन्होंने प्रदेश में बहनेवाली बरसाती
नदियों और झरनों का मुंह बन्द कर दिया। वे
कहते थे, 'असीरिया का राजा हमारे नगर में
अगर प्रवेश करेगा, तो उसको एक बूंद पानी भी
नहीं मिलना चाहिए।' 5नगर की शहरपनाह
जगह-जगह ध्वस्त हो गई थी। राजा हिजकियाह
ने दृढ़ निश्चय के साथ उसकी मरम्मत की। उस
पर उसने स्थान-स्थान पर पहरा देने के लिए
मीनारें बनाईं। उसने शहरपनाह की बाहरी ओर
एक और दीवार बनाई। उसने दाऊद-पुर में
मिल्लो के गढ़ को सुदृढ़ किया। उसने प्रचुर
मात्रा में शस्त्र और ढालें बनवाईं। 6उसने जनता
के ऊपर युद्धाध्यक्ष नियुक्त किये और उनके
द्वारा नगरवासियों को अपने पास चौक में, जो
नगर के प्रवेश-द्वार पर था, एकत्र किया। उसने
लोगों का मनोबल उठाते हुए कहा,
7'शक्तिशाली और साहसी बनो! असीरिया के
राजा से मत डरो, निर्भय हो! जो विशाल
सैनिक-समूह उसके साथ है, उससे तुम्हारा
मन न घबराए, क्योंकि जो हमारे साथ है, वह
उसके साथ के सैनिक-समूह से महान है।
8असीरिया के राजा का सामर्थ्य मानवीय है,
किन्तु हमारे साथ है स्वयं हमारा प्रभु परमेश्वर!
वह हमारी सहायता करेगा; वह हमारी ओर से
युद्ध करेगा!' राजा हिजकियाह की ये बातें
सुनकर लोगों में आत्मविश्वास जागा।

9 असीरिया देश का राजा सनहेरिब अपनी
सेना के साथ लाकीश नगर को घेरे हुए था।
उसने अपने दूतों को यहूदा प्रदेश के राजा
हिजकियाह तथा यहूदा प्रदेश के निवासियों के
पास, जो उस समय यरूशलेम में थे, यह सन्देश
भेजा, 10'असीरिया देश के महाराज सनहेरिब
यों कहते हैं: किस आधार पर तुम भरोसा करने
लगे हो और अब तक घिरे हुए यरूशलेम में
आराम से बैठे हुए हो? 11क्या हिजकियाह तुम्हें
नहीं बहका रहा है? वह तुमसे कहता है,
''हमारा प्रभु परमेश्वर हमें असीरिया के राजा
के पंजे से छुड़ाएगा!'' यह कहकर वह तुम्हें
अकाल के मुंह में डाल रहा है। तुम प्यास से
मर जाओगे। 12क्या यह वही प्रभु परमेश्वर नहीं
है, जिसकी पहाड़ी शिखर की वेदियां तथा
अन्य वेदियां इसी हिजकियाह ने हटा दी हैं,
और जिसके लिए हिजकियाह ने यहूदा प्रदेश
और यरूशलेम के निवासियों को यह आदेश
दिया है: ''तुम यरूशलेम की एक ही वेदी के
सम्मुख वन्दना करना और उसी एक ही वेदी
के सम्मुख सुगन्धित धूप-बलि जलाना?''
13जो मैंने और मेरे पूर्वजों ने विश्व के अन्य
देशों के निवासियों के साथ किया है, क्या तुम
नहीं जानते? क्या उन देशों के देवी-देवता उन
देशों के निवासियों को मेरे पंजे से छुड़ा सके
थे? 14जिन कौमों-जातियों को मेरे पूर्वजों ने
पूर्णत: नष्ट किया था, उनका कौन-सा राष्ट्रीय
देवी-देवता अपने लोगों को मेरे पंजे से छुड़ा
सका था? तो क्या तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें मेरे
पंजे से छुड़ा सकेगा? 15इसलिए हिजकियाह
की बातों के बहकावे में मत आओ; और न इस
प्रकार धोखा खाओ; क्योंकि किसी भी राष्ट्र या
राज्य का राष्ट्रीय देवी-देवता अपने लोगों को
मेरे पंजे से नहीं छुड़ा सका है। तब तुम्हारे
परमेश्वर की क्या हस्ती कि वह तुम्हें मेरे पंजे
से छुड़ा सके?'

16 इससे भी अधिक निन्दात्मक शब्द
सनहेरिब के दूतों ने प्रभु परमेश्वर तथा उसके
सेवक हिजकियाह के विरुद्ध कहे। 17सनहेरिब
ने इस्राएली राष्ट्र के प्रभु परमेश्वर की निन्दा
करते हुए पत्र भी लिखे। उस ने प्रभु परमेश्वर
के विरुद्ध ये बातें लिखी थीं, ''जैसे विश्व की
अन्य कौमों और देशों के राष्ट्रीय देवी-देवता
अपने निज लोगों को मेरे पंजे से नहीं छुड़ा
सके, वैसे ही हिजकियाह का परमेश्वर भी
अपने निज लोगों को मेरे पंजे से नहीं छुड़ा
सकेगा।'' 18यरूशलेम नगर के निवासी
शहरपनाह पर बैठे-बैठे ये बातें सुन रहे थे।
सनहेरिब के दूतों ने उनकी इब्रानी बोली में ही
उच्च स्वर में उनको डराया-धमकाया, ताकि वे
उनसे डर जाएं और आतंकित हो जाएं, और
सनहेरिब के सैनिक उनके डर के कारण नगर

32 : 5 यश 22 : 9-10 **32 : 8** व्य 20 : 1. 4; यश 31 : 3 **32 : 9-21** 2 रा 18 : 17-19 : 37; यश 36 : 36

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पर कब्जा कर लें। [19]दूत यरूशलेम के परमेश्वर के विषय में ऐसे शब्दों का प्रयोग कर रहे थे, जिनका प्रयोग वे पृथ्वी के अन्य देशों के उन देवी-देवताओं के विषय में करते थे, जो केवल मिट्टी के पुतले, मनुष्य के हाथों की रचना हैं!

20 तब इस विपत्ति के कारण राजा हिजकियाह
तथा नबी यशायाह बेन-आमोत्स ने परमेश्वर
की दुहाई दी। [21]प्रभु ने उनकी प्रार्थना सुनी,
और अपने दूत को भेजा। दूत ने असीरिया के राजा के शिविर में उसके शक्तिशाली योद्धाओं, सेनापतियों और उच्चाधिकारियों का वध कर दिया। अत: वह पराजय की लज्जा में डूबा हुआ अपने देश को लौट गया। एक दिन जब वह अपने इष्ट देवता के मन्दिर में पूजा कर रहा था, तब उसके पुत्रों ने ही तलवार से उसकी हत्या
कर दी। [22]इस प्रकार प्रभु ने हिजकियाह और
यरूशलेम के निवासियों को असीरिया के राजा सनहेरिब के पंजे से तथा इस्राएलियों के सब शत्रुओं के हाथ से बचाया, और उनको चारों
ओर शान्ति प्रदान की। [23]अनेक देशों के राजा
यरूशलेम में प्रभु के सम्मुख भेंट लाए और यहूदा प्रदेश के राजा हिजकियाह के लिए बहुमूल्य उपहार। उस समय से हिजकियाह सब राष्ट्रों की दृष्टि में महान माना जाने लगा।

हिजकियाह का बीमार पड़ना

24 इन्हीं दिनों राजा हिजकियाह इतना
बीमार पड़ा कि मृत्यु के समीप पहुंच गया। उसने प्रभु से प्रार्थना की, और प्रभु ने उसकी प्रार्थना सुनी। प्रभु ने उसको एक चिह्न दिया।
[25]किन्तु राजा हिजकियाह ने प्रभु के उपकार का
बदला न चुकाया, क्योंकि उसका हृदय गर्व से फूल उठा था। अत: प्रभु का क्रोध उस पर, यहूदा प्रदेश और यरूशलेम के निवासियों पर
भड़क उठा। [26]किन्तु राजा अपने अहंकार के
लिए पछताया। उसने प्रभु के सम्मुख स्वयं को विनम्र किया। उसके साथ यरूशलेम के निवासी भी दीन बने। अत: प्रभु का क्रोध राजा हिजकियाह के समय में उन पर नहीं भड़का।
27 राजा हिजकियाह अत्यन्त समृद्ध और
वैभवशाली था। उसने चांदी, सोना, मणि, मसाले, ढाल तथा सब प्रकार के बहुमूल्य पात्रों
के लिए भण्डारगृह बनाए थे। [28]अन्न, अंगूररस
और तेल के भी भण्डारगृह थे। उसने गाय-बैल तथा भेड़-बकरियों के लिए पशुशालाएँ बनाई
थीं। [29]उसने नगर भी बसाए, और गाय-बैल
तथा भेड़-बकरियों का अपार पशुधन इकट्ठा कर लिया। परमेश्वर ने उसे विपुल धन-
सम्पत्ति दी थी। [30]इसी हिजकियाह ने गीहोन
जलस्रोत के उपरले उद्गम-स्थान को बन्दकर उसको नीचे की ओर दाऊदपुर के पश्चिमी भाग में बहाया था। वह अपने हर काम में
सफल होता था। [31]एक बार बेबीलोन के
उच्चाधिकारियों ने उसके प्रदेश में हुए एक आश्चर्यपूर्ण कार्य के विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिए राजदूत भेजे। तब परमेश्वर ने उसको उसकी स्वतंत्र इच्छा पर छोड़ दिया ताकि वह अपनी जांच करे, और अपने हृदय की बातों को स्वयं जान ले।

हिजकियाह की मृत्यु

32 राजा हिजकियाह के शेष कार्यों का
विवरण तथा उसके सत्कार्यों का वर्णन निम्नलिखित पुस्तकों में लिखा है : 'नबी यशायाह बेन-आमोत्स का ईश्वरीय दर्शन-ग्रंथ' तथा 'इस्राएल तथा यहूदा प्रदेशों के
राजाओं का इतिहास-ग्रंथ'। [33]हिजकियाह अपने
मृत पूर्वजों के साथ सो गया। उन्होंने उसको दाऊद के वंशजों के कब्रिस्तान के चढ़ाव पर गाड़ा। यहूदा प्रदेश तथा यरूशलेम के सब निवासियों ने उसकी मृत्यु पर उसके प्रति सम्मान प्रकट किया। उसके स्थान पर उसका पुत्र मनश्शे राज्य करने लगा।

मनश्शे का राज्य

33 जब मनश्शे ने राज्य करना आरम्भ
किया तब वह बारह वर्ष का था। उसने पचपन वर्ष तक राजधानी यरूशलेम में राज्य
किया। [2]जो कार्य प्रभु की दृष्टि में बुरा था,
मनश्शे ने वही किया। जिन जातियों को प्रभु ने इस्राएलियों को बसाने के लिए कनान देश से

32 : 24-33 2 रा 20 : 1-12 33 : 1-9 2 रा 21 : 1-9 33 : 2 यिर 15 : 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

निकाल दिया था, उनकी घृणित प्रथाओं को
मनश्शे ने पुनः आरम्भ किया। [3]उसके पिता
हिजकियाह ने पहाड़ी शिखर की वेदियां तोड़
दी थीं। परन्तु मनश्शे ने उनको पुनः निर्मित
किया। उसने बअल देवता के लिए वेदियां
बनाईं और अशेराह देवी के लिए खम्भे खड़े
किये। वह आकाश की प्राकृतिक शक्तियों की
वंदना और पूजा करता था। [4]उसने प्रभु के भवन
में अनेक वेदियों का निर्माण किया, जब कि
अपने भवन के विषय में प्रभु ने यह कहा था,
'मैं यरूशलेम में सदा-सर्वदा के लिए अपना
नाम प्रतिष्ठित करूँगा।' [5]मनश्शे ने प्रभु के भवन
के दो आंगनों में आकाश की सब प्राकृतिक
शक्तियों की पूजा के लिए वेदियां बनाईं।
[6]उसने बेन-हिन्नोम की घाटी में अपने पुत्र की
बलि चढ़ाई। वह सगुनियों, भविष्य-फल
बतानेवालों, प्रेतसाधकों और जादू-टोना
करनेवालों से सम्बन्ध रखता था। उसने प्रभु
की दृष्टि में और अधिक दुष्कर्म किये और प्रभु
के क्रोध को भड़काया।

7 मनश्शे ने एक मूर्ति बनाई, और उस को
परमेश्वर के भवन में प्रतिष्ठित किया। अपने
भवन के विषय में परमेश्वर ने दाऊद और
उसके पुत्र सुलेमान से यह कहा था, 'मैंने
इस्राएल के समस्त कुल-क्षेत्रों में से यरूशलेम
नगर को और इस भवन को चुना है। मैं यहाँ
सदा-सर्वदा के लिए अपने नाम की प्रतिष्ठा
करूँगा। [8]मैंने इस्राएल को आज्ञाएँ दी थीं और
अपने सेवक मूसा के द्वारा उनको समस्त
व्यवस्था, संविधियां तथा न्याय-सिद्धान्त दिये
थे। मैंने कहा था : यदि वे उनके अनुसार कार्य
करने को तत्पर रहेंगे तो मैं उस भूमि से उनके
पैर नहीं उखाड़ूंगा और उनको भटकने नहीं
दूंगा, जो मैंने उनके पूर्वजों को दी थी।' [9]मनश्शे
ने यहूदा प्रदेश और यरूशलेम के निवासियों
को पथ-भ्रष्ट किया। इसलिए जिन जातियों को
प्रभु ने इस्राएलियों के सम्मुख नष्ट किया था,
उनसे अधिक दुष्कर्म इस्राएलियों ने किये।

10 प्रभु ने मनश्शे और उसकी जनता को
अपने नबियों के माध्यम से* समझाया; किन्तु
उन्होंने प्रभु की बात नहीं सुनी। [11]अतः प्रभु ने
असीरिया देश की सेना और उसके सेनापतियों
से उन पर आक्रमण करवाया। उन्होंने मनश्शे
को नकेल से बांधा, और पीतल की जंजीरों से
उसको जकड़ा और उसको बेबीलोन देश ले
गए। [12]जब वह बेबीलोन में बन्दी था, तब
उसने अपने संकट में अपने प्रभु-परमेश्वर की
कृपा के लिए विनती की। उसने अपने पूर्वजों
के परमेश्वर के सम्मुख स्वयं को अत्यधिक
विनम्र और दीन किया। [13]उसने परमेश्वर से
प्रार्थना की और परमेश्वर ने उसकी विनती
स्वीकार की। उसने उसकी प्रार्थना सुनी; और
उसको पुनः यरूशलेम में ले आया, और उसका
राज्य लौटा दिया। तब मनश्शे को ज्ञात हुआ कि
प्रभु ही परमेश्वर है।

14 इसके पश्चात् उसने एक शहरपनाह
बनाई। यह दाऊदपुर की बाहरी सीमा थी, और
गीहोन के पश्चिम में, घाटी में मत्स्य-द्वार तक
जाती थी। इस प्रकार उसने ओपेल को घेर दिया
और उसको बहुत ऊंचा कर दिया। उसने यहूदा
प्रदेश के सब किलाबंद नगरों में सेनापति
नियुक्त किये। [15]उसने प्रभु के भवन में प्रतिष्ठित
विदेशी देवी-देवताओं की मूर्तियां हटा दीं।
यरूशलेम में स्थान-स्थान पर तथा जिस
पहाड़ पर प्रभु का भवन स्थित है, उस पर उसने
वेदियाँ बनाई थीं। उसने इन सब वेदियों को
तोड़ दिया, और उनके टुकड़ों को यरूशलेम
नगर के बाहर फेंक दिया। [16]उसने प्रभु की वेदी
की मरम्मत की, और उस पर प्रभु की
सहभागिता-बलि तथा धन्यवाद-बलि चढ़ाई।
उसने यहूदा प्रदेश के सब निवासियों को
आदेश दिया कि इस्राएली राष्ट्र के प्रभु
परमेश्वर की आराधना करो। [17]फिर भी लोग
पहाड़ी शिखर की वेदियों पर बलि चढ़ाते थे;
किन्तु वे केवल अपने प्रभु परमेश्वर को बलि
चढ़ाते थे।

---

* 2 राजा 21 : 10 के आधार पर

33 : 11 यहेज 19 : 9

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

18 मनश्शे के शेष कार्यों का विवरण, परमेश्वर से की गई उसकी प्रार्थना, और द्रष्टाओं के वे सब सन्देश, जो उन्होंने इस्राएली राष्ट्र के प्रभु परमेश्वर के नाम में उस को सुनाए थे, इन-सब का विवरण, 'इस्राएल देश के राजाओं का इतिहास-ग्रंथ' में लिखा हुआ है।
19 'द्रष्टाओं का इतिहास-ग्रंथ' में भी मनश्शे का उल्लेख हुआ है: उसकी प्रार्थना; और परमेश्वर ने उसकी विनती, अनुनय-विनय कैसे स्वीकार किया; उसके पाप-कर्म तथा प्रभु के विरुद्ध उसका विश्वासघात; उन जगहों का वर्णन जहाँ मनश्शे ने पहाड़ी शिखर के मन्दिर बनाए थे, जहाँ अशेराह के खम्भे तथा मूर्तियाँ प्रतिष्ठित की थीं। इसी ग्रंथ में लिखा है कि उसने प्रभु के सम्मुख स्वयं को विनम्र किया था।

20 मनश्शे अपने मृत पूर्वजों के साथ सो गया। उसको उसके राजमहल में गाड़ा गया। उसका पुत्र आमोन उसके स्थान पर राज्य करने लगा।

आमोन का राज्य

21 जब आमोन ने राज्य करना आरम्भ किया
तब वह बाईस वर्ष का था। उसने राजधानी
यरूशलेम में दो वर्ष तक राज्य किया। 22जैसे
उसके पिता मनश्शे ने किया था, वैसे ही आमोन
ने भी उन्हीं कार्यों को किया, जो प्रभु की दृष्टि
में अनुचित थे। जिन मूर्तियों की वंदना और
पूजा उसके पिता ने की थी, उनकी पूजा और
वंदना आमोन ने भी की। 23यद्यपि उसके पिता
मनश्शे ने प्रभु के सम्मुख स्वयं को विनम्र किया
था, किन्तु आमोन ने ऐसा नहीं किया, बल्कि
अधिकाधिक दुष्कर्म किये। 24अत: उस के
दरबारियों ने उसके विरुद्ध षड्यंत्र रचा, और
उसके राजमहल में उसकी हत्या कर दी।
25परन्तु यहूदा प्रदेश की जनता ने राजा आमोन
के षड्यंत्रकारियों का वध कर दिया। जनता ने
उसके पुत्र योशियाह को उसके स्थान पर राजा
बनाया।

योशियाह का राज्य

34 जब योशियाह ने राज्य करना आरम्भ
किया तब वह आठ वर्ष का था। उसने
राजधानी यरूशलेम में इकतीस वर्ष तक राज्य
किया। 2योशियाह ने वे कार्य किये जो प्रभु की
दृष्टि में उचित थे। वह अपने पूर्वज दाऊद के
मार्ग पर चला। वह उससे लेशमात्र भी अलग
नहीं हुआ। 3जब वह किशोर ही था, और उसके
राज्य का आठवां वर्ष था, तब से अपने पूर्वज
दाऊद के परमेश्वर की खोज में लग गया था,
और अपने राज्य के बारहवें वर्ष में उसने यहूदा
प्रदेश तथा राजधानी यरूशलेम को शुद्ध करने
के लिए पहाड़ी शिखरों की वेदियां, अशेराह
देवी के खम्भे और गढ़ी एवं ढली मूर्तियों को
हटा दिया। 4योशियाह की उपस्थिति में बअल
देवता की वेदियां ध्वस्त कर दी गईं। उनके
ऊपर सूर्य की विशाल प्रतिमाएँ* थीं। उनको
उसने काट दिया। उसने अशेराह देवी के खम्भों
के टुकड़े-टुकड़े कर दिये तथा गढ़ी एवं ढली
मूर्तियाँ पीस कर बुकनी बना दीं, और उन लोगों
की कबरों पर बिखेर दिया, जो उनकी पूजा
करते थे। 5उसने उनके पुरोहितों की हड्डियां उन
वेदियों पर जलाईं, और उनको अशुद्ध कर
दिया। इस प्रकार योशियाह ने यहूदा प्रदेश तथा
राजधानी यरूशलेम को शुद्ध किया।

6-7 मनश्शे तथा एफ्रइम गोत्र और शिमोन तथा दूर नफ्तली कुल के आबाद नगरों, तथा उजाड़ पड़े नगरों में भी अशेराह देवी के खम्भे और वेदियां थीं। राजा योशियाह ने वेदियां ध्वस्त कर दीं और अशेराह देवी के खम्भों और मूर्तियों को पीसकर बुकनी बना दिया। उसने समस्त इस्राएल देश में सूर्य की प्रतिमाओं के टुकड़े-टुकड़े कर दिये। तत्पश्चात्, वह यरूशलेम नगर को लौटा।

8 राजा योशियाह के राज्य-काल के अठारहवें वर्ष की यह घटना है। वह यहूदा प्रदेश तथा प्रभु के भवन को शुद्ध कर चुका था। उसने शाफान

---

* अथवा, 'सूर्य-देवता के स्तम्भ' अथवा 'धूप-वेदियाँ'

33 : 20-25 2 रा 21 : 18-24 **34 : 1-2** 2 रा 22 : 1-2; यिर 3 : 6 **34 : 3-7** 2 रा 23 : 4-20 **34 : 5** 1 रा 13 : 2 **34 : 8-12** 2 रा 22 : 3-7

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
बेन-असल्याह, नगर के प्रशासक मासेयाह
तथा लिपिक योआह बेन-योआहाज को भेजा
कि वे उसके प्रभु परमेश्वर के भवन की मरम्मत
करें। 9वे महापुरोहित हिल्कियाह के पास
आए, और उसको चांदी के सिक्के दिये। यह
चांदी परमेश्वर के भवन में चढ़ाई गई थी, और
उपपुरोहितों ने, जो आंगन के द्वारपाल थे,
मनश्शे तथा एफ्रइम गोत्र के क्षेत्रों और समस्त
इस्राएल प्रदेश के बचे हुए लोगों से और यहूदा
प्रदेश, बिन्यामिन कुल-क्षेत्र में रहनेवालों तथा
यरूशलेम के निवासियों से उसे एकत्र किया
था। 10उन्होंने प्रभु के भवन की मरम्मत करवाने
वाले अधिकारियों के हाथ में चांदी के सिक्के
सौंप दिये। अधिकारी प्रभु के भवन में मरम्मत
तथा जीर्णोद्धार करनेवालों की मजदूरी चुका
देते थे। 11वे बढ़इयों और कारीगरों को सिक्के
देते थे, जिससे ये बढ़ई और कारीगर मन्दिर की
मरम्मत के लिए इमारती लकड़ी और तराशे
पत्थर खरीद लें। वे भवन की बल्लियां भी
खरीद लें, जिनकी ओर यहूदा प्रदेश के राजाओं
ने ध्यान नहीं दिया था, और वे सड़ गई थीं।

12 मजदूरों ने ईमानदारी से काम किया।
उनके काम की निगरानी करनेवाले अधिकारियों
के नाम इस प्रकार हैं: मरारी- वंशीय उपपुरोहित
यहत और ओबद्याह, कहात-वंशीय मशल्लूम
और जकर्याह। अन्य उपपुरोहित, जो वाद्ययंत्र
बजानेवाले कुशल कलाकार थे, 13वे बोझा और
भार उठानेवालों के निरीक्षक थे। वे सब प्रकार
का काम करनेवाले मजदूरों के कार्य का
संचालन करते थे। कुछ उपपुरोहित लिपिक,
अफसर और द्वारपाल थे।

14 जब वे प्रभु के भवन में चढ़ाए गए चांदी
के सिक्कों को भवन से बाहर ला रहे थे, तब
पुरोहित हिल्कियाह को प्रभु का "व्यवस्था-
ग्रंथ" मिला, जो प्रभु ने मूसा के माध्यम से
इस्राएलियों को दिया था। 15हिल्कियाह ने
महासहायक शाफान से कहा, 'मुझे प्रभु के
भवन में "व्यवस्था-ग्रंथ" मिला है।'
हिल्कियाह ने "व्यवस्था-ग्रन्थ" शाफान को
दिया। 16शाफान ग्रन्थ लेकर राजा योशियाह के
पास लौटा, और उसको अपने कार्य का विवरण
दिया। उसने कहा, 'महाराज, आपने अपने
सेवकों को जो कार्य सौंपा है, वे उसको
ईमानदारी से कर रहे हैं। 17आपके सेवकों ने
प्रभु के भवन में उपलब्ध चांदी को बक्सों से
उण्डेला, और प्रभु-भवन की मरम्मत करने
वाले निरीक्षकों और मजदूरों के हाथ में सौंप
दिया।' 18तत्पश्चात् महासहायक शाफान ने
राजा योशियाह को बताया, 'पुरोहित हिल्कियाह
ने मुझे यह पुस्तक दी है।' उसने राजा के
सम्मुख पुस्तक को पढ़ा।

19 जब राजा योशियाह ने नव-प्राप्त
व्यवस्था-ग्रन्थ के ये वचन सुने, तब उसने
पश्चात्ताप प्रकट करने के लिए तत्काल अपने
वस्त्र फाड़ दिये। 20उसने पुरोहित हिल्कियाह,
अहीकाम बेन-शाफान, अबदोन, बेन-मीकाह,
महासहायक शाफान और अपने राज-मंत्री
असायाह को यह आदेश दिया, 21'तुम लोग
जाओ, और मेरी ओर से, इस्राएल और यहूदा
प्रदेशों के बचे हुए लोगों की ओर से, इस धर्म-
पुस्तक के वचनों का अर्थ प्रभु से ज्ञात करो।
प्रभु की महा-क्रोधाग्नि हमारे प्रति भड़क उठी
है; क्योंकि हमारे पूर्वजों ने प्रभु का वचन नहीं
माना। उन्होंने धर्म-पुस्तक में लिखे गए प्रभु के
आदेशों के अनुसार कार्य नहीं किया।'

22 पुरोहित हिल्कियाह तथा अन्य
उच्चाधिकारी, जिनको राजा योशियाह ने भेजा
था, नबिया हूल्दाह के पास गए। वह हस्रा के
पौत्र और तोखत के पुत्र शल्लूम की पत्नी थी।
उसका पति पुरोहितों की पोशाक का प्रबन्धक
था। वह यरूशलेम की नई बस्ती में रहती थी।
उन्होंने उससे बात की। 23तब वह उनसे बोली,
'इस्राएली राष्ट्र का प्रभु परमेश्वर यों कहता
है : जिस व्यक्ति ने तुम्हें मेरे पास भेजा है, उससे
यह कहो : 24प्रभु यों कहता है, "देख, मैं इस
स्थान पर, इसके सब निवासियों पर विपत्ति
ढाहूंगा। इस पुस्तक के जो अभिशाप-वचन
यहूदा प्रदेश के राजा के सम्मुख पढ़े गए हैं,
उनको मैं पूर्ण करूंगा। 25इन लोगों ने मुझे त्याग
दिया और अन्य जातियों के देवताओं की

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मूर्तियों के सम्मुख सुगंधित धूप-द्रव्य जलाया। इन्होंने अपने हाथों से देवताओं की मूर्तियां बनाकर मेरे क्रोध को भड़काया है। अत: मेरी क्रोधाग्नि इस स्थान के प्रति भड़केगी, और वह कभी नहीं बुझेगी।'' 26परन्तु यहूदा प्रदेश के राजा से, जिसने तुम्हें मेरी इच्छा जानने के लिए भेजा है, यह कहना: इस्राएली राष्ट्र का प्रभु परमेश्वर यों कहता है : जो वचन तूने धर्म-पुस्तक से सुने हैं, उनके विषय में मेरी यह वाणी है। 27तूने हृदय से पश्चात्ताप किया। तूने मेरे सम्मुख, अपने परमेश्वर के सम्मुख, स्वयं को विनम्र बनाया। तूने इस स्थान के विरुद्ध, इसके निवासियों के विरुद्ध मेरी वाणी सुनी और मेरे सम्मुख स्वयं को दीन बनाया। तूने पश्चात्ताप प्रकट करने के लिए अपने वस्त्र फाड़े, और मेरे सम्मुख रोया। सुन, मैं-प्रभु यह कहता हूं : मैंने तेरी प्रार्थना सुनी। 28इसलिए मैं तुझे तेरे पूर्वजों के साथ सुलाऊंगा। तू शान्ति से अपनी कबर में सोएगा। जो विपत्ति मैं इस स्थान पर तथा इसके निवासियों पर ढाहूंगा, वह तू अपनी आंखों से नहीं देखेगा।'

राजा योशियाह के दरबारी लौटे। उन्होंने राजा को यह सन्देश दिया।

राजा योशियाह के सुधार

29 राजा योशियाह ने दूत भेजे, और यहूदा प्रदेश तथा राजधानी यरूशलेम के सब धर्मवृद्धों को अपने पास बुलाया। 30तत्पश्चात् वह प्रभु के भवन को गया। वह यहूदा प्रदेश के सब पुरुषों, यरूशलेम नगर के समस्त निवासियों, पुरोहितों और उप-पुरोहितों, छोटे-बड़े सब को, पूरी जनता को अपने साथ ले गया। उसने उनके सामने प्रभु के भवन में पाई गई विधान की पुस्तक को पूरा पढ़ा। 31तब योशियाह मंच पर खड़ा हुआ। उसने प्रभु के साथ विधान की धर्मविधि सम्पन्न की कि वह प्रभु का अनुसरण करेगा, अपने सम्पूर्ण हृदय और सम्पूर्ण प्राण से उसकी आज्ञाओं, साक्षियों, तथा संविधियों का पालन करेगा। वह इस विधान की पुस्तक में लिखे गए वचनों पर दृढ़ रहेगा। 32उसने यरूशलेम तथा बिन्यामिन कुल-क्षेत्र के निवासियों से भी प्रतिज्ञा कराई कि वे विधान का पालन करेंगे। यरूशलेम के निवासियों ने अपने पूर्वजों के परमेश्वर के विधान का अनुसरण किया। 33राजा योशियाह ने समस्त इस्राएल देश की सीमा से घृणित मूर्तियों और वेदियों को हटा दिया। उसने इस्राएल देश के निवासियों से प्रभु परमेश्वर की आराधना कराई। उसके जीवनकाल में इस्राएली अपने पूर्वजों के प्रभु परमेश्वर से विमुख नहीं हुए, और वे उसका अनुसरण करते रहे।

एकता के लिए पास्का (फसह) का पर्व मनाना

35 राजा योशियाह ने प्रभु के लिए यरूशलेम नगर में पास्का का पर्व मनाया। उन्होंने वर्ष के प्रथम महीने की चौदहवीं तारीख को पास्का-पर्व के मेमने का वध किया। 2उसने पुरोहितों को उन के पदों पर नियुक्त किया। उसने उन्हें उत्साहित किया कि वे प्रभु के भवन के सेवा-कार्यों को करें। 3लेवीय उपपुरोहित सब इस्राएलियों को धार्मिक शिक्षा देते थे। वे प्रभु के लिए अर्पित और पवित्र माने जाते थे। राजा योशियाह ने उनसे कहा, 'पवित्र मंजूषा को प्रभु के भवन में रखो, जिसे इस्राएल के राजा दाऊद के पुत्र सुलेमान ने बनाया था; अब तुम्हें उसको कंधों पर रखकर ढोने की आवश्यकता नहीं है। अब तुम निश्चिन्त होकर प्रभु परमेश्वर तथा उसके निज लोग इस्राएलियों की सेवा करो। 4तुम अपने पितृकुल तथा अपने-अपने दल के अनुसार सेवा के लिए स्वयं को तैयार करो। ऐसा ही निर्देश इस्राएल देश के राजा दाऊद तथा उसके पुत्र राजा सुलेमान ने लिखित रूप में दिया था। 5भवन में तुम्हारे जाति भाई-बन्धु अर्थात् साधारण जन निर्धारित स्थान पर अपने-अपने पितृकुल के दल के अनुसार खड़े होते हैं। हर एक दल के लिए एक उपपुरोहित नियुक्त है। तुम अपने-अपने दल के साथ खड़े हो। 6प्रभु के आदेश का पालन करने के लिए पास्का का पर्व मनाओ। पास्का-

---

35 :1-19 2 रा 23 : 21-23 35 : 4 2 इति 8 : 14 35 : 6 व्य 12 : 18-19

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पर्व के मेमने का वध करो, और यों अपने को शुद्ध कर अपने जाति भाई-बन्धु साधारण जनों को प्रभु के लिए तैयार करो। यही आज्ञा प्रभु ने मूसा के माध्यम से दी थी।'

7 राजा योशियाह ने साधारण जनों को, जो उस समय उपस्थित थे, पास्का-पर्व के उपलक्ष्य में तीस हजार भेड़-बकरियों के बच्चे तथा तीन हजार बछड़े दिये। ये उसने अपनी निजी पशुशाला से दिये थे। [8]उसके उच्चाधिकारियों ने भी स्वयं अपनी इच्छा से जनता को, पुरोहितों को और उप-पुरोहितों को बलि-पशु दिये। परमेश्वर के भवन के मुख्य अधिकारी हिल्कियाह, जकर्याह और यहीएल ने पास्का-पर्व में चढ़ाने के लिए पुरोहितों और उप-पुरोहितों को भेड़ों और बकरियों के दो हजार छः सौ बच्चे और तीन सौ बछड़े दिये। [9]उपपुरोहितों के मुखिया कोनन्याह तथा उसके दो भाइयों शमायाह और नतनेल ने, हसब्याह, यीएल और योजाबाद ने अपने उपपुरोहितों को पास्का-पर्व में चढ़ाने के लिए भेड़ों और बकरियों के पांच हजार बच्चे और पांच सौ बछड़े दिए।

10 इस प्रकार आराधना की तैयारी पूर्ण हुई। राजा के आदेश के अनुसार पुरोहित अपने निर्धारित स्थान पर और उपपुरोहित अपने-अपने दल में खड़े हुए। [11]तब उन्होंने पास्का-पर्व के मेमने का वध किया। पुरोहित पशु का वध करनेवालों के हाथ से रक्त लेते, और उस को वेदी पर छिड़क देते थे। उपपुरोहित वध किये गए पशु की खाल उतारते थे। [12]उन्होंने अग्नि-बलि में चढ़ाए जाने वाले पशुओं को अलग कर दिया, और पितृकुलों के अनुसार भिन्न-भिन्न दलों में उनको बांट दिया, ताकि जनसाधारण उनको प्रभु के लिए चढ़ा दे; जैसा मूसा के व्यवस्था-ग्रंथ में लिखा है। उन्होंने बछड़ों के साथ भी ऐसा ही किया। [13]प्रभु के आदेश के अनुसार उन्होंने अग्नि पर पास्का-पर्व के मेमने का मांस भूना, और अन्य पवित्र अर्पित वस्तुएँ हंडियों, हण्डों और तवों पर पकाईं। तत्पश्चात् उन्होंने तुरन्त उनको जन-साधारण में ले जाकर बांट दिया। [14]उसके बाद उन्होंने अपने लिए तथा पुरोहितों के लिए पवित्र बलि-पशु का मांस भूना तथा अन्य अर्पित वस्तुएं पकाईं; क्योंकि हारून-वंशीय पुरोहित रात तक अग्निबलि के पशु तथा चर्बी चढ़ाते रहे। अतः उपपुरोहितों ने अपने लिए तथा हारून-वंशीय पुरोहितों के लिए प्रबन्ध किया। [15]राजा दाऊद, आसाफ, हेमान और राज-द्रष्टा यदूतून के निर्देश के अनुसार आसाफ-वंशीय गायक निर्धारित स्थान पर उपस्थित थे। हर एक द्वारपाल अपने द्वार पर उपस्थित था। उनको अपना कार्य बीच में छोड़ने की आवश्यकता नहीं पड़ी; क्योंकि उनके सहयोगी उपपुरोहितों ने उनके लिए बलि-भोज का प्रबन्ध कर दिया।

16 यों राजा योशियाह के आदेश के अनुसार उसी दिन प्रभु की आराधना की तैयारी पूर्ण हुई कि उस दिन पास्का का पर्व तथा प्रभु की वेदी पर अग्नि-बलि चढ़ाई जा सके। [17]उपस्थित इस्राएलियों ने उसी दिन पास्का का पर्व मनाया तथा वे सात दिन तक बेखमीर रोटी का पर्व मनाते रहे। [18]इस उत्साह से नबी शमूएल के समय से अब तक पास्का-पर्व नहीं मनाया गया था। जिस प्रकार योशियाह, पुरोहितों, उपपुरोहितों, यहूदा तथा इस्राएल प्रदेशों के निवासियों ने, जो यरूशलेम में उपस्थित थे, और यरूशलेम के रहनेवालों ने पास्का का पर्व मनाया, उस प्रकार इस्राएल देश के राजाओं ने कभी नहीं मनाया था। [19]राजा योशियाह के राज्य-काल के अठारहवें वर्ष में पास्का का पर्व मनाया गया था।

राजा योशियाह का दुःखद अन्त

20 जब राजा योशियाह भवन की मरम्मत तथा आराधना की तैयारी कर चुका, तब मिस्र देश के राजा नको ने फरात नदी के पास कर्कमीश नगर पर चढ़ाई कर दी। योशियाह राजा नको का सामना करने के लिए गया। [21]राजा नको ने राजा योशियाह के पास अपना दूत भेजा, और उससे कहा, 'ओ यहूदा प्रदेश

35 : 8 2 कुर 9 : 7 35 : 13 नि 12 : 8 35 : 15 1 इति 25 : 1

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

के महाराज, हमें एक-दूसरे से क्या लेना-देना?
मैं आज आप पर आक्रमण करने नहीं आ रहा
हूं। मैं तो उस कुल के साथ युद्ध करने आया
हूं जिस के साथ मेरी शत्रुता है। परमेश्वर ने मुझे
शीघ्रता करने का आदेश दिया है। परमेश्वर मेरे
साथ है। आप परमेश्वर का विरोध मत कीजिए;
अन्यथा वह आपको नष्ट कर देगा।'
22 फिर भी राजा योशियाह उससे विमुख
नहीं हुआ। उसने युद्ध करने के लिए भेष
बदला। परमेश्वर ने नको के द्वारा उसे चेतावनी
दी थी; किन्तु उसने नको की बात नहीं मानी।
वह मगिद्दो के मैदान में उससे युद्ध करने को
गया। 23धनुर्धारियों ने राजा योशियाह की ओर
तीर छोड़े और वह घायल हो गया। उसने अपने
सेवकों से कहा, 'मैं बुरी तरह घायल हो गया।
मुझे यहां से ले चलो।' 24अत: उसके सेवकों
ने उसे रथ से उतारा, और दूसरे रथ पर चढ़ा कर
ले गए। वे उसको यरूशलेम नगर में लाए। वहां
उसका देहान्त हो गया। वह अपने पूर्वजों के
कब्रिस्तान में गाड़ा गया। समस्त यहूदा प्रदेश
तथा यरूशलेम के निवासियों ने उसके लिए
शोक मनाया। 25नबी यिर्मयाह ने भी राजा
योशियाह की स्मृति में एक शोक गीत रचा था।
आज भी लोक गायक और गायिकाएं अपने
शोकगीतों में योशियाह का उल्लेख करते हैं।
योशियाह के सम्बन्ध में शोकगीत गाना वास्तव
में एक प्रथा बन गया है। ये शोकगीत "विलाप
गीत" की पुस्तक में लिखे हुए हैं। 26योशियाह
के शेष कार्यों का विवरण, और प्रभु की
व्यवस्था के अनुसार किये गए उसके सत्कार्यों
का विवरण, 27आरम्भ से अन्त तक उसके सब
कार्यों का विवरण, 'इस्राएल तथा यहूदा प्रदेशों
के राजाओं का इतिहास-ग्रंथ' में लिखा हुआ
है।

यहोआहाज का राज्य

36 यहूदा प्रदेश की जनता ने योशियाह के
पुत्र यहोआहाज को चुना और उन्होंने
यरूशलेम में उसके पिता के स्थान पर उसको
राजा बनाया। 2जब यहोआहाज ने राज्य करना
आरम्भ किया तब वह तेईस वर्ष का था। उसने
राजधानी यरूशलेम में तीन महीने तक राज्य
किया। 3तब मिस्र के राजा नको ने यरूशलेम
में उसको राजगद्दी से उतार दिया, और उसके
देश पर जुर्माना किया कि वह साढ़े तीन हजार
किलो चांदी और पैंतीस किलो सोना देगा।
4मिस्र देश के राजा ने यहोआहाज के भाई
एलयाकीम को उसके स्थान पर यहूदा प्रदेश
तथा यरूशलेम का राजा बनाया। उसने
एलयाकीम का नाम बदल कर "यहोयाकीम"
रखा। किन्तु नको उसके भाई यहोआहाज को
बन्दी बना कर मिस्र देश ले गया।

यहोयाकीम का राज्य

5 जब यहोयाकीम ने राज्य करना आरम्भ
किया तब वह पच्चीस वर्ष का था। उसने
राजधानी यरूशलेम में ग्यारह वर्ष तक राज्य
किया। उसने अपने प्रभु परमेश्वर की दृष्टि में
दुष्कर्म किये। 6उसके राज्यकाल में बेबीलोन
के राजा नबूकदनेस्सर ने उस पर आक्रमण
किया, और उसको जंजीरों में जकड़कर अपने
देश की राजधानी बेबीलोन ले गया। 7राजा
नबूकदनेस्सर प्रभु के भवन के कुछ पात्र भी ले
गया, और उनको अपने महल में रख दिया।
8यहोयाकीम के शेष कार्यों का विवरण,
वस्तुत: उसके सब घृणित कार्यों का विवरण,
उस पर आरोपित समस्त बुरे कार्यों का विवरण
'इस्राएल तथा यहूदा प्रदेशों के राजाओं का
इतिहास-ग्रंथ' में लिखा हुआ है। उसका पुत्र
यहोयाकीन उसके स्थान पर राज्य करने लगा।

यहोयाकीन का राज्य

9 जब यहोयाकीन राजा बना तब वह
अठारह* वर्ष का था। उसने तीन महीने और
दस दिन तक राजधानी यरूशलेम में राज्य
किया। उसने प्रभु की दृष्टि में दुष्कर्म किए।
10वसन्त के दिनों में बेबीलोन के राजा
नबूकदनेस्सर ने अपने सैनिक भेजे और उसको
बेबीलोन में ले आया। इसके अतिरिक्त वह प्रभु

---

* मूल में, 'आठ वर्ष'

36 : 1-4 2 रा 23 : 30-34 36 : 5-8 2 रा 23 : 36—24 : 6 36 : 9-10 2 रा 24 : 8-17

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
के भवन के समस्त बहुमूल्य पात्र बेबीलोन ले गया। उसने उसके भाई सिद्‌कियाह को यहूदा प्रदेश तथा यरूशलेम का राजा बनाया।

सिद्‌कियाह का राज्य

11 जब सिद्‌कियाह राजा बना तब वह
इक्कीस वर्ष का था। उसने ग्यारह वर्ष तक
राजधानी यरूशलेम में राज्य किया। 12उसने
अपने प्रभु परमेश्वर की दृष्टि में दुष्कर्म किए।
प्रभु ने नबी यिर्मयाह के माध्यम से उस को
सन्देश दिया था। किन्तु उसने स्वयं को विनम्र
नहीं किया। 13राजा नबूकदनेस्सर ने उसको
परमेश्वर की शपथ दी थी कि वह उससे विद्रोह
नहीं करेगा। तो भी उसने परमेश्वर की शपथ
की उपेक्षा की और राजा नबूकदनेस्सर से
विद्रोह किया। उसने इस्राएली राष्ट्र के प्रभु
परमेश्वर के प्रति अपने हृदय को कठोर बना
लिया था। हठ से उसकी गर्दन ऐंठ गई थी, और
वह प्रभु से विमुख हो गया था। 14यहाँ तक कि
प्रमुख पुरोहित और जनता के प्रतिष्ठित लोग भी
विभिन्न जातियों की घृणित प्रथाओं को मानने
लगे थे, और यों प्रभु के प्रति बहुत विश्वासघात
करते थे। प्रभु परमेश्वर ने अपनी उपस्थिति से
यरूशलेम में अपने भवन को पवित्र किया था,
किन्तु उन्होंने उसको अपवित्र कर दिया।

15 फिर भी उनके पूर्वजों का प्रभु परमेश्वर
अपने निज लोगों तथा अपने निवास-स्थान पर
दयापूर्ण दृष्टि करता रहा। इसलिए वह उनको
समझाने के लिए निरन्तर अपने सन्देश-वाहक
भेजता रहा। 16किन्तु वे परमेश्वर के सन्देश-
वाहकों का मजाक उड़ाते रहे। उन्होंने परमेश्वर
के सन्देश को तुच्छ समझा; उसके नबियों की
हंसी की। तब अन्त में प्रभु की क्रोधाग्नि अपने
निज लोगों पर भड़क उठी; और उसको बुझाने
का किसी में सामर्थ्य न था: कोई इलाज न रह
गया।

यरूशलेम का विनाश

17 अत: प्रभु ने अपने निज लोगों के विरुद्ध
कसदी कौम के राजा को बुलाया, जिसने उनके
युवकों को पवित्र स्थान में तलवार से मौत के
घाट उतार दिया। राजा ने किसी पर दया नहीं
की, न बच्चों पर न कन्याओं पर, न प्रौढ़ों पर
न वृद्धों पर। प्रभु ने उन सबको कसदी कौम के
राजा के हाथ में सौंप दिया। 18वह परमेश्वर के
भवन के सब छोटे-बड़े पात्र, प्रभु-भवन का
सम्पूर्ण कोष, यहूदा प्रदेश के राजा और उसके
उच्चाधिकारियों का खजाना लूट कर बेबीलोन
ले गया। 19उसके सैनिकों ने परमेश्वर के भवन
में आग लगा दी। उन्होंने यरूशलेम की
शहरपनाह तोड़ दी। उन्होंने यरूशलेम नगर के
सब महलों को आग में भस्म कर दिया और
उसके बहुमूल्य पात्रों को नष्ट कर दिया। 20जो
तलवार की मार से बच गए थे, वह उनको बन्दी
बना कर बेबीलोन ले गया। जब तक फारस
राज्य की स्थापना न हुई वे कसदी कौम के
राजाओं के गुलाम बने रहे। 21यह सब इसलिए
हुआ, क्योंकि प्रभु ने अपने नबी यिर्मयाह के
माध्यम से ऐसा ही कहा था। विश्राम-कालों का
पालन न करने के कारण अब इस्राएल देश को
विश्राम मिला। सत्तर वर्ष तक देश उजाड़ पड़ा
रहा, और उसने विश्राम मनाया।

यहूदियों की वापसी

22 फारस देश के सम्राट कुस्रू* के राज्यकाल
का प्रथम वर्ष था। उस वर्ष प्रभु ने नबी यिर्मयाह
के मुख से कहे गए अपने वचन को पूरा करने
के लिए सम्राट कुस्रू के हृदय को उत्प्रेरित किया
कि वह अपने समस्त साम्राज्य में यह घोषणा
करे, और उसको लिपिबद्ध कर ले: 23' फारस
देश के सम्राट कुस्रू का यह आदेश है: स्वर्ग के
परमेश्वर, प्रभु ने पृथ्वी के समस्त राज्य मुझे
प्रदान किये और मुझे यह आज्ञा दी कि मैं यहूदा
प्रदेश के यरूशलेम नगर में उसके लिए एक
भवन बनाऊं। उसके निज लोगों में से जो कोई
भी तुम्हारे मध्य निवास कर रहे हैं, वे यरूशलेम
नगर को जाएं। उनके साथ प्रभु परमेश्वर हो।'

---

* अथवा, 'साइरस'

36 : 11-21 2 रा 24 : 18—25 : 21 **36 : 13** यिर 52 : 3; यहेज 17 : 11-20 **36 : 15** इब्र 1 : 1 **36 : 16** मत 23 : 34-36 **36 : 17** शोक 5 : 11-14, **36 : 22-23** एज्रा 1 : 1-3 **36 : 22** यिर 29 : 10; यश 44 : 28

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

एज्रा

पुस्तक-परिचय

एज्रा तथा नहेम्याह ग्रन्थ पिछले दो "इतिहास ग्रन्थों" के ही शेष भाग हैं। चारों ग्रन्थ पुरोहिती "इतिहासकार" की शैली में लिखे गये हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ में बेबीलोन देश की गुलामी से मुक्त कुछ यहूदियों की वापसी, यरूशलेम नगर में इन लौटे हुए यहूदियों के पुनर्वास तथा यरूशलेम के मन्दिर में यहूदी आराधना के पुनः आरम्भ होने का विवरण है। पुस्तक की विशेषता यह है कि इसमें अरामी भाषा में सरकारी दस्तावेज़ों का उल्लेख हुआ है। समस्त विवरण को निम्नलिखित घटनाक्रम में लिखा गया है:

(1) सन् 538 ईसवी पूर्व से फारस देश के सम्राट कुस्रू के आदेश से बेबीलोन महानगर के आसपास बसे यहूदियों का प्रथम झुण्ड यरूशलेम नगर लौटता है। इन स्वदेश लौटनेवाले यहूदियों की सूची।

(2) अनेक विघ्न-बाधाओं के बावजूद मन्दिर का पुनः निर्माण और सन् 515 ईसवी पूर्व में उसका प्रतिष्ठापन। इस प्रकार यरूशलेम नगर में परमेश्वर की आराधना का पुनः आरम्भ हुआ।

(3) शास्त्री और पुरोहित एज्रा के नेतृत्व में कुछ वर्ष पश्चात् (सन् 428 ई० पू० ?) यहूदियों का दूसरा समूह स्वदेश लौटता है। शास्त्री एज्रा परमेश्वर की व्यवस्था के ज्ञानी थे। वह लौटे हुए यहूदियों को संगठित करते एवं इस्राएल की आध्यात्मिक विरासत की सुरक्षा-हेतु तथा यहूदियों के धार्मिक एवं समाजिक जीवन को पुनः संगठित करने के लिए लोगों की सहायता करते हैं। उनकी धर्मनीति से न केवल यह प्रतिफल हुआ कि "यहूदीत्व" की अपनी अलग पहचान होने लगी, वरन् इससे संकीर्ण सांप्रदायिक विचारधारा का पोषण भी हुआ।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

निष्कासन के पश्चात् लौटे हुए यहूदियों की सूची	1 : 1 — 2: 70
मन्दिर का पुनः निर्माण एवं प्रतिष्ठापन	3 : 1 — 6 : 22
शास्त्री एज्रा का अन्य यहूदियों के साथ यरूशलेम में आगमन	7 : 1 — 10 : 44

सम्राट कुस्रू की घोषणा: यहूदियों की वापसी

1 फारस देश के सम्राट कुस्रू के राज्यकाल
का प्रथम वर्ष था। उस वर्ष प्रभु ने नबी
यिर्मयाह के मुंह से कहे गये अपने वचन को
पूरा करने के लिए सम्राट कुस्रू के हृदय को
उत्प्रेरित किया कि वह अपने समस्त साम्राज्य
में यह घोषणा करे, और उसको लिपिबद्ध कर
ले:
2 'फारस देश के सम्राट कुस्रू का यह आदेश
है: स्वर्ग के परमेश्वर, प्रभु ने पृथ्वी के समस्त
देश मुझे प्रदान किये और मुझे यह आज्ञा दी
कि मैं यहूदा प्रदेश के यरूशलेम नगर में उसके
लिए एक भवन बनाऊं। 3उसके निज लोगों में
से जो कोई भी तुम्हारे मध्य में निवास कर रहे
हैं, उनके साथ परमेश्वर हो। वे यहूदा प्रदेश
के यरूशलेम नगर में जाएं, और इस्राएल के
प्रभु परमेश्वर के भवन का पुनर्निमाण करें—यही
परमेश्वर है, और यह यरूशलेम में निवास
करता है। 4इस्राएली कौम के बचे हुए लोग,
जहां-जहां निवास करते हैं, वहां रहने वाले
अन्य जाति के लोगों का भी सहयोग प्राप्त
करेंगे। उस स्थान के निवासी चांदी, सोना,

1 : 1 2 इति 36 : 22; यिर 25 : 12, एज्रा 5 : 13; 6 : 3 1 : 2 यश 44 : 28; 45: 1

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

माल-असबाब और पशुओं से उनकी सहायता करेंगे। इनके अतिरिक्त वे स्वेच्छा से परमेश्वर के भवन के लिए, जो यरूशलेम में है, भेंट चढ़ाएंगे।'

5 यहूदा और बिन्यामिन पितृ-कुलों के मुखिया, लेवी कुल के पुरोहित और उप-पुरोहित तथा वे सब लोग यहूदा प्रदेश जाने के लिए तैयार हुए जिनके हृदय को प्रभु परमेश्वर ने यरूशलेम नगर में स्थित अपने भवन के पुनर्निर्माण के लिए उत्प्रेरित किया था। [6]उनके पड़ोसियों ने चांदी के पात्रों, सोना, माल-असबाब, पशु और कीमती वस्तुओं से उनकी सहायता की। इनके अतिरिक्त उन्होंने स्वेच्छा से भेंट भी चढ़ाई। [7]सम्राट कुस्रू ने उन पवित्र पात्रों को निकाला, जिनको राजा नबूकदनेस्सर यरूशलेम के प्रभु-भवन से लूटकर ले गया था, और उनको अपने देवताओं के मन्दिर में रख दिया था। [8]उनको सम्राट कुस्रू ने खजांची मित्रदात के हाथ से निकलवाया। मित्रदात ने उनको गिनकर यहूदा प्रदेश के नेता शेशबस्सर को सौंप दिया। [9]उनकी संख्या इस प्रकार थी: सोने के तीस परात, चांदी के एक हजार परात, उन्तीस छुरी, [10]सोने के तीस कटोरे, मध्यम आकार के चांदी के चार सौ दस कटोरे तथा अन्य प्रकार के एक हजार पात्र। [11]सोने-चांदी के सब पात्रों की संख्या पांच हजार चार सौ थी। जब निष्कासित यहूदी* बेबीलोन देश से यरूशलेम को लौटे, तब यहूदियों का नेता शेशबस्सर उन पात्रों को लाया।

स्वदेश लौटने वाले यहूदियों की सूची

2 जिन यहूदियों को बेबीलोन देश का राजा नबूकदनेस्सर बन्दी बनाकर बेबीलोन ले गया था, उन में से साम्राज्य के अधीन यहूदा प्रदेश के ये लोग निष्कासन-मुक्त हो स्वदेश लौटे। वे यरूशलेम तथा यहूदा प्रदेश के अपने-अपने नगर को गये। [2]जरूब्बाबेल, येशुअ, नहेम्याह, सरायाह, रेलायाह, मोरदकय, बिलशान, मिस्पार, बिग्वई, रहूम और बानाह ने उनका नेतृत्व किया।

इस्राएली कौम में गोत्र के अनुसार लौटने वाले पुरुषों की संख्या इस प्रकार थी: [3]परओश के वंशज दो हजार एक सौ बहत्तर, [4]शपत्याह के वंशज तीन सौ बहत्तर, [5]आरह के वंशज सात सौ पचहत्तर, [6]पहत-मोआब के पुत्र येशुअ और योआब के वंशज दो हजार आठ सौ बारह, [7]एलाम के वंशज बारह सौ चौवन, [8]जत्तू के वंशज नौ सौ पैंतालीस, [9]जक्कई के वंशज सात सौ साठ, [10]बानी के वंशज छः सौ बयालीस, [11]बेबई के वंशज छः सौ तेईस, [12]अजगाद के वंशज बारह सौ बाईस, [13]अदोनीकाम के वंशज छः सौ छियासठ, [14]बिग्वई के वंशज दो हजार छप्पन, [15]आदीन के वंशज चार सौ चौवन, [16]हिजकियाह अर्थात् आतेर के वंशज अट्ठानबे, [17]बेसई के वंशज तीन सौ तेईस, [18]योरा के वंशज एक सौ बारह, [19]हाशूम के वंशज दो सौ तेईस, [20]गिब्बार के वंशज पंचानबे, [21]बेतलेहम नगर के रहने वाले एक सौ तेईस, [22]नत्तोपा नगर के पुरुष छप्पन, [23]अनातोत नगर के पुरुष एक सौ अट्ठाईस, [24]अजमावेत के रहने वाले बयालीस, [25]किर्यत-यआरीम, कपीरा और बेअरोत नगरों के रहने वाले सात सौ तैंतालीस, [26]रामाह और गेबा नगरों के रहने वाले छः सौ इक्कीस, [27]मिकमास नगर के पुरुष एक सौ बाईस, [28]बेतएल और ऐ नगरों के पुरुष दो सौ तेईस, [29]नबो नगर के रहने वाले बावन, [30]मग्बीस नगर के रहने वाले एक सौ छप्पन, [31]दूसरे एलाम नगर के रहने वाले बारह सौ चौवन, [32]हारीम नगर के रहने वाले तीन सौ बीस, [33]लोद, हादीद और ओनो नगरों के रहने वाले सात सौ पचीस, [34]यरीहो नगर के रहने वाले तीन सौ पैंतालीस, [35]सनाआ नगर के रहने वाले तीन हजार छः सौ तीस।

36 पुरोहित: येशुअ के घराने के यदायाह के वंशज नौ सौ तिहत्तर, [37]इम्मेर के वंशज एक हजार बावन, [38]पशहूर के वंशज बारह सौ

---

* अथवा, 'यहूदा प्रदेश के इस्राएली' और व्यापक अर्थ में 'इस्राएली लोग'

1 : 7 2 रा 25 : 13 2 : 1 -70 नहः 6-73

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सैंतालीस, [39]हारीम के वंशज एक हजार सत्रह।
40 उपपुरोहित: येशुअ और कदमीएल के
वंशज, अर्थात् होदव्याह के वंशज, चौहत्तर।
41 मन्दिर के गायक: आसाफ के वंशज
एक सौ अट्ठाईस।
42 मन्दिर के द्वारपाल: शल्लूम, आतेर,
तल्मोन, अक्कूब, हतीता और शोबई के वंशज
एक सौ उनतालीस।
43-54 मन्दिर के सेवक: सीहा, हसूपा,
तब्बाओत, केरोस, सीअहा, पादोन, लबाना,
हगबा, अक्कूब, हागाब, शमलई, हानान,
गिद्देल, गहर, रायाह, रसीन, नकोदा, गज्जाम,
उज्जा, पासेह, बेसई, अस्ना, मूनीम, नपीसीम,
बकबूक, हकूपा, हर्हूर, बसलूत, महीदा, हर्शा,
बर्कोस, सीसरा, तेमह, नसीह और हतीपा के
वंशज थे।
55-57 सुलेमान के राजकीय नौकर-
चाकरों के वंशज: सोतई, हस्सोपेरेत, परूदा,
याला, दर्कोन, गिद्देल, शपत्याह, हत्तील,
पोकरेत-हसबायीम, और आमी के वंशज थे।
58 इस प्रकार मन्दिर के सेवकों की और
सुलेमान के राजकीय नौकर-चाकरों के
वंशजों की संख्या तीन सौ बानबे थी।
59 ये पुरुष तेल-मेलह, तेल-हर्शा, करूब,
अद्दान और इम्मेर नगरों से आए थे, पर वे अपने
पितृकुलों अथवा पूर्वजों के नाम न बता सके
कि वे इस्राएली कौम के हैं: [60]दलायाह, तोबियाह
और नकोदा के वंशज। ये सब मिलकर छः
सौ बावन थे। [61]ये पुरोहितों के वंशज थे:
हबायाह, हक्कोस और बर्जिल्लई के वंशज
(बर्जिल्लई ने गिलआद नगर के निवासी बर्जिल्लई
की पुत्री से विवाह किया था, और उसका नाम
अपना लिया था)। [62]इन लोगों ने वंशावली के
सूचीपत्र में अपना-अपना नाम ढूंढ़ा, पर वह न
मिला। अत: उन्हें अशुद्ध घोषित किया गया,
और वे पुरोहित-पद से हटा दिए गए।
[63]राज्यपाल ने उनसे कहा, ''जब तक पुरोहित
ऊरीम और तुम्मीम के माध्यम से परमेश्वर की
इच्छा न जान ले, तब तक आप लोग मन्दिर का
परम पवित्र भोजन नहीं खाएंगे।'
64 समस्त इस्राएली जनसमुदाय* की संख्या
बयालीस हजार तीन सौ साठ थी। [65]इनके
अतिरिक्त उनके नौकर-चाकरों की संख्या
सात हजार तीन सौ सैंतीस तथा मन्दिर के
गायक-गायिकाओं की संख्या दो सौ थी।
[66]उनके पास सात सौ छत्तीस घोड़े, दो सौ
पैंतीस खच्चर, [67]चार सौ पैंतीस ऊंट, और छः
हजार सात सौ बीस गधे थे।
68 इस्राएली पितृकुलों के मुखिया प्रभु के
भवन में आये, जो यरूशलेम में है। उन्होंने
परमेश्वर के भवन का उसके पूर्व स्थान में
निर्माण करने के लिए स्वेच्छा से भेंट चढ़ाई।
[69]उन्होंने अपने-अपने सामर्थ्य के अनुसार
इकसठ हजार स्वर्ण-मुद्राएं, पांच हजार चान्दी
के सिक्के और पुरोहितों के लिए एक सौ
पोशाकें भवन के कोष में दीं।
70 पुरोहित, उपपुरोहित और अन्य कुछ
लोग यरूशलेम नगर और उसके आस-पास के
इलाके में रहने लगे। मन्दिर के गायक, द्वारपाल
और सेवक अपनी-अपनी बस्ती में बस गए।
इस प्रकार सब इस्राएली अपने-अपने नगरों में
रहने लगे।

परमेश्वर की आराधना की पुनः प्रतिष्ठा

3 कुलपति इस्राएल के वंशज अपने-अपने
नगर में बस चुके थे। जब सातवां महीना
आया तब सब इस्राएली संगठित होकर
यरूशलेम में एकत्र हुए। [2]उस समय येशुअ
बेन-योसादाक अपने सहयोगी पुरोहितों के
साथ तथा जरूब्बाबेल बेन-शालतिएल अपने
भाई-बन्धुओं के साथ तैयार हुए। उन्होंने
परमेश्वर के भक्त-जन मूसा की व्यवस्था के
अनुसार वेदी पर अग्नि-बलि चढ़ाने के लिए
इस्राएल के परमेश्वर की वेदी बनाई। [3]उन्होंने
वेदी को उसी स्थान पर तैयार किया जहां वह
पहले थी।
वे इस देश में निवास करने वाले सामरी

---
* अथवा, 'धर्मसभा'।

2:61 1 रा 2 : 7 2 : 63 गण 27 : 21 3 :2 नि 27 : 1

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
लोगों से+ डरते थे। वे प्रातः और सन्ध्या समय
वेदी पर प्रभु को अग्नि-बलि चढ़ाने लगे।
4उन्होंने व्यवस्था के अनुसार मण्डपों का पर्व
मनाया और, नित्य, प्रति दिन के लिए निर्धारित
अग्नि-बलि चढ़ाई। 5इसके पश्चात् वे निरन्तर
अग्नि-बलि, नवचन्द्र पर्व की बलि, निर्धारित
प्रभु-पर्वों पर चढ़ाई जाने वाली बलि, और प्रभु
को स्वेच्छा से चढ़ाई जाने वाली बलि अर्पित
करने लगे। 6उन्होंने सातवें महीने के प्रथम दिन
से प्रभु को अग्नि-बलि चढ़ाना आरम्भ किया;
पर प्रभु के मन्दिर की नींव अब तक नहीं डाली
गई थी। 7अत: उन्होंने शिल्पकारों और बढ़इयों
को रुपया दिया। उन्होंने सीदोन तथा सोर देश
के निवासियों को खाने-पीने की सामग्री और
तेल दिया ताकि वे देवदार की लकड़ी को
लबानोन देश से समुद्रतट तक, याफा नगर तक
पहुंचा दें, जैसा फारस के सम्राट कुस्रू ने उन्हें
अधिकार प्रदान किया था।

8 यरूशलेम में परमेश्वर के भवन में
वापस लौटने के दूसरे वर्ष के दूसरे महीने
में जरूब्बाबेल बेन-शालतीएल तथा येशुअ
बेन-योसादाक ने अपने भाई-बन्धुओं, सहयोगी
पुरोहितों, उपपुरोहितों और उन सब इस्राएलियों
के साथ, जो निष्कासन से यरूशलेम वापस
आए थे, भवन के पुनर्निर्माण का कार्य आरम्भ
किया।

उन्होंने बीस वर्ष से अधिक आयु के लेवीय
उपपुरोहितों को प्रभु-भवन के निरीक्षण-कार्य
का दायित्व सौंपा। 9येशुअ, उसके पुत्र और
भाई-बन्धु तथा कदमीएल और उसके पुत्र, जो
यहूदा कुल* के वंशज थे, ये सब परमेश्वर के
भवन में कार्य करने वाले मजदूरों के कामों का
निरीक्षण करते थे। उनके साथ हेनादाद के
वंशज और उप-पुरोहित भी थे, जो उनके
भाई-बन्धु और सन्तान थे।

10 जब कारीगरों ने प्रभु के मन्दिर की नींव
डाली, तब पुरोहित अपने पुरोहितीय परिधान
पहिनकर तथा हाथ में तुरहियां लेकर आए।
उनके साथ आसाफ के वंशज उपपुरोहित झांझ
लेकर आए। तब उन्होंने इस्राएल देश के राजा
दाऊद के निर्देशन के अनुसार प्रभु की स्तुति
की। 11उन्होंने उत्तर-प्रत्युत्तर की पद्धति पर
प्रभु को धन्यवाद देते हुए उसकी स्तुति में यह
गीत गाया:

'प्रभु भला है;

वह इस्राएल पर सदा करुणा करता है।'

इन शब्दों में उन्होंने प्रभु की स्तुति की। उसी
समय प्रभु के भवन की नींव डाली गई। तब
उपस्थित लोगों ने उच्च स्वर में जय-जयकार
किया। 12यद्यपि जब प्रभु के भवन की नींव
डाली गई तब अनेक लोगों ने हर्ष से जय-
जयकार किया था, तथापि उस समय अनेक
पुरोहित, उपपुरोहित, पितृकुलों के मुखिया
और वृद्ध लोग, जिन्होंने पुराना भवन देखा था,
शोक से रो पड़े। 13जय-जयकार और रोने का
स्वर दोनों मिल गए। लोग अन्तर न जान सके
कि यह रोने का स्वर है, अथवा जय-जयकार
का; क्योंकि लोग अत्यन्त उच्च स्वर में जय-
जयकार कर रहे थे तथा रो रहे थे। उनकी
आवाज बहुत दूर तक सुनाई दे रही थी।

प्रभु -भवन के निर्माण में विघ्न

4 जब यहूदा और बिन्यामिन कुलों के बैरी
सामरियों** ने सुना कि स्वदेश लौटे हुए
निष्कासित लोग इस्राएली कौम के परमेश्वर,
'प्रभु' के लिए एक मन्दिर बना रहे हैं, 2तब वे
जरूब्बाबेल और पितृकुलों के मुखियों के पास
गए, और उनसे निवेदन किया, 'अपने साथ
हमें भी मन्दिर बनाने दीजिए; क्योंकि हम भी
आपके समान आपके परमेश्वर की आराधना
करते हैं। हम असीरिया के राजा एसर्हद्दोन
के समय से, जिसने हमें इस देश में बसाया है,
आपके परमेश्वर को बलि चढ़ाते आ रहे हैं।'

3 जरूब्बाबेल, येशुअ तथा इस्राएली कौम
के पितृकुलों के शेष मुखियों ने उनसे कहा,

+ शब्दश: 'देश-देश के लोगों से' * अथवा पाठसुधार, ''होदव्याह'' ** मूल में 'शत्रु', वर्ण-संकर जाति।

3 : 4 नि 23 : 16; गण 29 : 12 **3:5** नि 29 : 38; गण 28 : 3 **3 : 7** 2 इति 2 : 10 **3 : 10** 1 इति 15 : 27
3 : 11 2 इति 7 : 3; भज 136 : 1 **3:12** हग्ग 2 : 3; तोब 14 : 5 **4 : 2** 2 रा 17 : 24

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
'अपने परमेश्वर के लिए भवन-निर्माण के कार्य में, हमें आपका सहयोग नहीं चाहिए। हम अकेले ही इस्राएली कौम के परमेश्वर, 'प्रभु' के लिए मन्दिर बनाएंगे जैसा हमें फारस के सम्राट, महाराज कुस्रू ने आदेश दिया है।'

4 तब उस देश के रहनेवाले सामरी लोग यहूदा प्रदेश की जनता को निर्माण-कार्य के प्रति निराश करने लगे। उन्होंने जनता को डराया-धमकाया भी। [5]उन्होंने जरूब्बाबेल, येशुअ तथा पितृकुलों के मुखियों के उद्देश्य को विफल करने के लिए फारस के क्षत्रपों** को घूस दी। अत: फारस के सम्राट कुस्रू के शासन-काल में प्रभु का भवन पुन: निर्मित न हो सका, और फारस के सम्राट दारा के शासन-काल तक निर्माण-कार्य रुका रहा।

6 सम्राट क्षयर्ष के शासन-काल में, उसके सिंहासन-आरूढ़ होने पर, सामरियों ने यहूदा प्रदेश तथा यरूशलेम नगर के निवासियों के विरुद्ध एक अभियोग-पत्र लिखा।

7 फारस के सम्राट अर्तक्षत्र प्रथम के शासन-काल में बिशलाम, मित्रदात और ताबेल तथा उनके सहयोगियों ने राजा अर्तक्षत्र को अभियोग-पत्र लिखा। पत्र अरामी भाषा+ में था, और उसकी लिपि भी अरामी थी। [8]वस्तुत: यरूशलेम के विरुद्ध यह पत्र सम्राट अर्तक्षत्र को राजमंत्री रहूम ने लिखवाया था, और लिपिक शिमशई ने उसको लिखा था। [9]इनके अतिरिक्त अभियोग-पत्र लिखने में ये लोग भी सम्मिलित थे: न्यायाधीश, राजदूत, उच्चाधिकारी, फारसी नागरिक, एरेक देश के, बेबीलोन के और शूशन अर्थात् एलाम देश के रहनेवाले। [10]इनके अतिरिक्त अभियोग-पत्र लिखने में उन कौमों के लोग भी शामिल थे, जिनको महान् तथा गौरवशाली राजा ओस्नप्पर ने उनके देशों से निष्कासित कर सामरी प्रदेश के नगरों में तथा फरात नदी के पश्चिम क्षेत्र के शेष प्रदेशों में बसाया था।

11 जो अभियोग-पत्र भेजा गया, उसकी प्रतिलिपि यह है:

'महाराज अर्तक्षत्र की सेवा में, फरात नदी के पश्चिम क्षेत्र के निवासी, आपके सेवक शुभकामनाएं भेज रहे हैं।

12 'महाराज को यह मालूम हो कि जो यहूदी आपके देश से हमारी ओर आए थे, वे यरूशलेम नगर को चले गए हैं और वे उस विद्रोही तथा दुष्ट नगर का पुनर्निर्माण कर रहे हैं। वे नींवें खोद चुके हैं, और शहरपनाह की दीवारें खड़ी होने लगी हैं। [13]महाराज को मालूम हो कि यदि यह नगर पुन: निर्मित हो जाएगा और शहरपनाह की दीवारें फिर खड़ी हो जाएंगी, तो ये यहूदी महाराज को उपहार, कर और चुंगी न देंगे। इस से राजस्व की हानि होगी। [14]हम महाराज का नमक खाते हैं, और हम महाराज का अनादर होते हुए देख नहीं सकते। अत: हम महाराज को यह पत्र भेज रहे हैं, और आपको सूचित कर रहे हैं। [15]आप अपने पूर्वजों के इतिहास-ग्रन्थों में इस नगर के विषय में खोजबीन कीजिए। तब आपको मालूम होगा कि यह नगर प्राचीन काल से ही विद्रोही रहा है। इसने सदा राजाओं और प्रदेशों को नुकसान पहुंचाया है। पुराने समय से ही इस नगर में बलवे होते आए हैं। इसी कारण यह नगर खंडहर कर दिया गया था। [16]हम महाराज को इस बात की चेतावनी दे रहे हैं कि यदि यह नगर पुन: निर्मित किया गया, और इसकी शहरनाह की दीवारें फिर खड़ी की गईं, तो फरात नदी के पश्चिम का प्रदेश आपके हाथ से निकल जाएगा।'

17 सम्राट अर्तक्षत्र ने उनको यह उत्तर भेजा:

'राजमंत्री रहूम, लिपिक शिमशई और सामरी प्रदेश में निवास करने वाले तुम्हारे सहयोगियों को, तथा फरात नदी के पश्चिम क्षेत्र के शेष प्रदेश में रहने वाली जनता को

** अथवा, 'सलाहकारों'। + अथवा, 'अनुवाद'; एज्रा-ग्रन्थ के अगले पद 4 : 8 से 6 : 8 तक अरामी भाषा में ही लिपिबद्ध हुए हैं।

4 : 6 एस्तर 1 : 1

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

महाराज की ओर से आशीर्वाद।
18 'जो पत्र तुमने मुझे भेजा था, वह स्पष्ट
रूप से मुझे पढ़कर सुनाया गया।* 19मैंने राजाज्ञा
प्रसारित की, और मेरे पूर्वजों के इतिहास-
ग्रन्थों में यरूशलेम नगर के विषय में खोज-
बीन की गयी। तब इस बात का पता चला कि
यह नगर प्राचीन काल से राजाओं के विरुद्ध
विद्रोह करता आया है। इसमें सदा बलवा और
विश्वासघात होते आए हैं। 20यरूशलेम में
शक्तिशाली राजा भी हुए हैं, जिन्होंने फरात
नदी के समस्त पश्चिमी प्रदेश पर राज्य भी
किया है। उनको उपहार, कर और चुंगी दी
जाती थी। 21अत: मैं यह आज्ञा देता हूँ कि ये
लोग अपना निर्माण-कार्य अविलम्ब रोक दें,
और जब तक मैं पुन: राजाज्ञा प्रसारित न करूं,
इस नगर का पुन: निर्माण न किया जाए.
22सावधान! इस मामले में कोई ढील न देना,
और महाराज के हितों को क्षति पहुंचाने वाले
कार्य को आगे न बढ़ने देना।'
23 जब सम्राट अर्तक्षत्र के पत्र की
प्रतिलिपि रहूम, लिपिक शिमशई और उनके
सहयोगियों को पढ़कर सुनाई गई, तब वे
तुरन्त यरूशलेम के यहूदियों के पास गए;
और उन्होंने बलपूर्वक और शक्ति प्रयोग से
उनका निर्माण-कार्य रोक दिया। 24 इस प्रकार
यरूशलेम में परमेश्वर के भवन का निर्माण-
कार्य रुक गया और फारस के सम्राट दारा के
शासन-काल के दूसरे वर्ष तक रुका रहा।

नबी हग्गय और जकर्याह

5 तब हग्गय और जकर्याह बेन-इद्दो नामक
नबियों ने यरूशलेम और यहूदा प्रदेश के
यहूदियों को इस्राएली कौम के परमेश्वर के
नाम से, जो उनका प्रभु था, सन्देश दिया।
2अत: जरूब्बाबेल बेन-शालतिएल और येशुअ
बेन-योसादाक उत्साहित हुए और उन्होंने
यरूशलेम में परमेश्वर के भवन को पुन: निर्मित
करना आरम्भ किया। उनके साथ परमेश्वर के
नबी थे। वे उनकी सहायता कर रहे थे।

3 उसी समय फरात नदी के पश्चिम क्षेत्र का
राज्यपाल तत्तनई, शत्तबोर्जनई तथा उनके
सहयोगी उनके पास आए, और उनसे यों कहा,
'किस की अनुमति से तुम यह मन्दिर और
शहरपनाह बना रहे हो?' 4उन्होंने उनसे यह
भी पूछा, 'यह मन्दिर बनाने वालों के नाम
क्या-क्या हैं?' 5किन्तु परमेश्वर की कृपा-
दृष्टि यहूदी धर्म-वृद्धों पर थी, अत: राज्यपाल
तत्तनई, शत्तबोर्जनई तथा उनके सहयोगियों ने
यहूदियों को प्रभु का भवन बनाने से नहीं रोका।
पर उन्होंने फारस के सम्राट को इस बात की
सूचना दी। और दारा ने पत्र भेजकर उन्हें इस
सम्बन्ध में उत्तर दिया।
6 फरात नदी के पश्चिम क्षेत्र के राज्यपाल
तत्तनई, शत्तबोर्जनई तथा उस क्षेत्र के उसके
सहयोगी राजदूतों ने सम्राट दारा को जो
पत्र लिखा, उसकी प्रतिलिपि यह है। 7उन्होंने
सम्राट दारा को प्रतिवेदन भेजा था, जिसमें यह
लिखा था:
'महाराज दारा का कुशल-मंगल हो!
8 'महाराज को ज्ञात हो कि हम यहूदा प्रदेश
और महान परमेश्वर के मन्दिर में गए थे। यह
मन्दिर बड़े-बड़े पत्थरों से बन रहा है। उसकी
शहरपनाह की दीवारों में इमारती लकड़ी की
चुनाई की गई है। वे यह काम बड़ी मुस्तैदी से
कर रहे हैं, और उनके हाथ से यह सफल भी
हो रहा है। 9हमने उन धर्म-वृद्धों से इस सम्बन्ध
में पूछताछ की। हमने उनसे यह प्रश्न पूछा था
: ''किस की अनुमति से तुम यह मन्दिर और
यह शहरपनाह बना रहे हो?'' 10हमने आपकी
सूचना के लिए उनके नाम भी पूछे ताकि उनके
नेताओं के नाम लिख सकें। 11तब उन्होंने हमें
यह उत्तर दिया, 'हम आकाश और पृथ्वी के
सृष्टिकर्ता परमेश्वर के सेवक हैं। यह भवन
जिसको आज हम फिर बना रहे हैं, बहुत पहले
बना था। इसको इस्राएल देश के एक महान
राजा ने बनाकर तैयार किया था। 12किन्तु हमारे
पूर्वजों ने स्वर्ग के परमेश्वर को अपने आचरण

---

* अथवा, 'उसका अनुवाद मुझे सुनाया गया।'

4 : 19 2 रा 18 : 7; 24 : 1 **5 : 1** हग्ग 1 : 1 : 1; जक 1 : 1 **5 : 2** हग्ग 1 : 14; जक 4 : 9 **5 : 12** 2 इति 36 : 16

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

से क्रुद्ध किया, अत: उसने बेबीलोन देश के
राजा, कसदी कौम के नबूकदनेस्सर के हाथ
में उनको सौंप दिया। राजा नबूकदनेस्सर ने इस
भवन को ध्वस्त कर दिया, और हमारे पूर्वजों
को बन्दी बनाकर बेबीलोन देश ले गया।
13बेबीलोन देश के सम्राट कुस्रू ने अपने
शासन-काल के प्रथम वर्ष में राजाज्ञा प्रसारित
की थी कि परमेश्वर का यह भवन पुन: निर्मित
किया जाए। 14सम्राट कुस्रू ने उन सोने-चांदी
के पात्रों को बेबीलोन के मन्दिर से निकाला,
जिनको राजा नबूकदनेस्सर यरूशलेम नगर में
स्थित परमेश्वर के मन्दिर से लूटकर ले गया
था, और उनको बेबीलोन के मन्दिर में रख
दिया था। सम्राट ने उनको शेशबस्सर के हाथ
में सौंप दिया, और शेशबस्सर को उसने
राज्यपाल भी बनाया। 15सम्राट कुस्रू ने राज्यपाल
शेशबस्सर से कहा था, ''इन पात्रों को ले
जाओ, और इनको यरूशलेम के मन्दिर में रखो
तथा परमेश्वर का भवन अपने पूर्व-स्थान पर
पुन: बनाया जाए।''
16 'अत: राज्यपाल शेशबस्सर यरूशलेम
में आए, और उन्होंने यरूशलेम में परमेश्वर के
भवन की नींव डाली। उस समय से अब तक
उसका निर्माण हो रहा है; वह अभी पूरा तैयार
नहीं हुआ है।
17 'अत: यदि महाराज उचित समझें तो
वहां बेबीलोन में राजकीय पुरा-लेखों में
खोजबीन की जाए और यह देखा जाए कि क्या
वास्तव में सम्राट कुस्रू ने यरूशलेम में परमेश्वर
के भवन का पुनर्निर्माण करने की राजाज्ञा
प्रसारित की थी। तत्पश्चात् महाराज इस
मामले में अपनी इच्छा हमें सूचित करें।'

सम्राट दारा का आदेश

6 तब सम्राट दारा ने एक आज्ञा प्रसारित
की। अत: बेबीलोन देश के पुरालेखागार
में खोजबीन की गई, जहां प्राचीन दस्तावेज
सुरक्षित रखे गए थे। 2मादय प्रदेश की राजधानी
एकबतना में एक कुण्डलपत्र मिला जिस पर
यह लिखा था: 'एक अभिलेख—3सम्राट कुस्रू
ने अपने शासन-काल के प्रथम वर्ष में यरूशलेम
नगर में स्थित परमेश्वर के भवन के सम्बन्ध
में यह राजाज्ञा प्रसारित की: जहां बलि-पशु
चढ़ाए जाते थे, जहां अग्नि-बलि लाई जाती
थी+, वहां, उसी स्थान पर भवन का पुनर्निर्माण
किया जाए। उसकी ऊंचाई सत्ताईस मीटर*
होगी, और चौड़ाई सत्ताईस मीटर। 4उसमें बड़े-
बड़े पत्थरों की तीन परतें होंगी, और एक परत
लकड़ी की होगी। निर्माण-कार्य का खर्चा
सरकारी खजाने से दिया जाएगा। 5राजा
नबूकदनेस्सर यरूशलेम नगर में स्थित परमेश्वर
के भवन से स्वर्ण-पात्र निकाल कर बेबीलोन
नगर ले गए थे। ये पात्र लौटा दिए जाएं और
उन्हें यरूशलेम नगर के मन्दिर में वापस लाया
जाए, और प्रत्येक पात्र को उसके उचित स्थान
में रख दिया जाए। तुम्हें परमेश्वर के भवन में
इन पात्रों को रखना होगा।'
6 अत: सम्राट दारा ने यह राजाज्ञा प्रसारित
की: 'फरात नदी के पश्चिम प्रदेश के राज्यपाल
तत्तनई और शत्तबोर्जनई तथा तुम्हारे सहयोगी
राजदूत जो तुम्हारे प्रदेश में हैं, यहूदियों से
दूर रहें। 7परमेश्वर के भवन के निर्माण-कार्य
को चलने दो। यहूदियों के राज्यपाल तथा
यहूदी समाज के धर्मवृद्धों को परमेश्वर के
भवन को उसके पूर्व-स्थान पर बनाने दो।
8परमेश्वर का भवन पुन: बनाने वाले यहूदी
समाज के धर्मवृद्धों के सम्बन्ध में मैं तुम्हें यह
आदेश देता हूँ: भवन निर्माण-कार्य का पूरा
व्यय फरात नदी के पश्चिम प्रदेश के राजस्व-
कोष से, सरकारी खजाने से अविलम्ब दिया
जाए। 9इसके अतिरिक्त और भी आवश्यक
वस्तुएं—जैसे स्वर्ग के परमेश्वर को चढ़ाई
जाने वाली अग्नि-बलि के लिए बछड़े, मेढ़े
और भेड़ें तथा यरूशलेम के पुरोहितों की मांग
के अनुसार गेहूँ, नमक, अंगूर-रस और तेल
उनको प्रतिदिन दिए जाएं। इस कार्य में एक
दिन की भी भूल-चूक न हो, 10ताकि पुरोहित

+ मूल में, 'उसकी नींव दृढ़ता से डाली जाए' * मूल में, ''साठ हाथ''

5 : 13 एज्रा 1 : 1 6 : 3 1 रा 6 : 2 6 : 4 1 रा 6 : 36

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नियमित रूप से स्वर्ग के परमेश्वर को सुगंधित बलि चढ़ा सकें, और मेरे तथा मेरे राजकुमारों के जीवन के लिए प्रार्थना कर सकें।

11 'मैं यह राजाज्ञा भी प्रसारित करता हूँ: जो व्यक्ति मेरी इस आज्ञा का उल्लंघन करेगा, उसके घर की छत से एक बल्ली निकाल कर उसके पेट में भोंकी जाएगी, और उसके घर को मलवों का ढेर बना दिया जाएगा।
12परमेश्वर, जिसने अपने नाम को वहां प्रतिष्ठित किया है, उस राजा को, उस कौम को तहस-नहस कर दे जो मेरी आज्ञा को बदलेगा, अथवा यरूशलेम में स्थित परमेशवर के भवन को नष्ट करने के लिए उसकी ओर हाथ बढ़ाएगा। मैं-दारा यह राजाज्ञा प्रसारित करता हूं। इसका पूरी तरह पालन किया जाए!'

13 तब फरात नदी के पश्चिम क्षेत्र के राज्यपाल तत्तनई और शत्तबोर्जनई तथा उनके सहयोगियों ने सम्राट दारा की आज्ञा का पूर्ण पालन किया। उन्होंने वैसा ही किया जैसा सम्राट दारा ने उन्हें लिखित आदेश भेजा था।

मन्दिर का प्रतिष्ठापन

14 नबी हग्गय तथा जकर्याह बेन-इद्दो की उत्साहवर्धक नबूवत से प्रेरणा प्राप्त कर यहूदी समाज के धर्मवृद्धों ने प्रभु का भवन बनाया, और यों वे अपने कार्य में सफल हुए। उन्होंने इस्राएली कौम के परमेश्वर की आज्ञा से तथा फारस देश के सम्राट कुस्रू, दारा और अर्तक्षत्र के आदेशों के अनुसार प्रभु के भवन का निर्माण-कार्य पूरा किया। 15यह भवन सम्राट दारा के राज्य-काल के छठे वर्ष के अदार महीने के तीसरे दिन बनकर तैयार हुआ।

16 तब इस्राएलियों, पुरोहितों, उपपुरोहितों और निष्कासन से लौटे हुए सब लोगों ने परमेश्वर के भवन का प्रतिष्ठापन- पर्व आनन्द-उल्लास से मनाया। 17उन्होंने इस प्रतिष्ठापन-पर्व पर परमेश्वर को एक सौ बछड़े, दो सौ मेंढ़े, चार सौ मेमने चढ़ाए। इनके अतिरिक्त उन्होंने पाप-बलि में इस्राएली कौम के बारह कुलों की संख्या के अनुरूप बारह बकरे भी चढ़ाए। 18उन्होंने यरूशलेम में निर्मित परमेश्वर के भवन में आराधना-कार्य सम्पन्न करने के लिए पुरोहितों की पारी और उपपुरोहितों के दल की व्यवस्था की, जैसा मूसा के ग्रन्थ में लिखा हुआ है।

19निष्कासन से लौटे हुए यहूदियों ने प्रथम महीने के चौदहवें दिन पास्का (फसह) पर्व मनाया। 20पुरोहितों ने उपपुरोहितों के साथ स्वयं को शुद्ध किया। वे सब के सब शुद्ध थे। अत: उन्होंने अपने लिए, अपने सहयोगी पुरोहितों के लिए तथा निष्कासन से लौटे हुए इस्राएलियों के लिए पास्का-पर्व का मेमना बलि किया। 21तब निष्कासन से लौटे हुए इस्राएलियों ने उसका मांस खाया। उनके साथ* उन लोगों ने भी खाया, जिन्होंने इस्राएली कौम के परमेश्वर 'प्रभु' की आराधना करने के लिए उस देश की जातियों की अशुद्धता से स्वयं को बचा कर रखा था।

22 उन्होंने सात दिन तक बेखमीर रोटी का पर्व आनन्द-उल्लास से मनाया; क्योंकि प्रभु ने उन्हें आनंदित किया था, और असीरिया के सम्राट का हृदय उनकी ओर उन्मुख किया था। असीरिया के सम्राट ने इस्राएली कौम के परमेश्वर के भवन के निर्माण में उनकी सहायता की थी।

शास्त्री और पुरोहित एज्रा का आगमन

7 इन घटनाओं के पश्चात् फारस के सम्राट अर्तक्षत्र के शासन-काल में एज्रा नामक व्यक्ति बेबीलोन देश से यरूशलेम नगर को गया। एज्रा की वंशावली इस प्रकार है: वह सरायाह का पुत्र और अजर्याह का पौत्र था। अजर्याह हिल्कियाह का पुत्र था, और
2हिल्कियाह शल्लूम का, और शल्लूम सादोक का पुत्र था। सादोक का पिता अहीतूब था, और
3अहीतूब का पिता अमर्याह, अमर्याह का पिता अजर्याह, और अजर्याह का पिता मरायोत था।
4मरायोत जरह्याह का पुत्र था, और जरह्याह

---

* अथवा, 'उनके समाज में सम्मिलित होकर'

6 : 16 2 इति 7 : 5 6 : 19 नि 12 : 6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ऊज्जी का पुत्र था, और ऊज्जी बुक्की का,
5बुक्की अबीशू का,अबीशू पीनहास का,और
पीनहास एलआजर का, और एलआजर
महापुरोहित हारून का पुत्र था।

6 एज्रा एक शास्त्री था। वह मूसा की
व्यवस्था का विशेषज्ञ था, जो इस्राएली कौम
के प्रभु परमेश्वर ने प्रदान की थी। उसने सम्राट
से जो मांगा, वह सब सम्राट ने उसको प्रदान
किया; क्योंकि प्रभु परमेश्वर की कृपा-दृष्टि
उस पर थी।

7 एज्रा के अतिरिक्त कुछ इस्राएली, कुछ
पुरोहित और उप-पुरोहित, गायक, द्वारपाल
और मन्दिर-सेवक भी सम्राट अर्तक्षत्र के
राज्य-काल के सातवें+ वर्ष में बेबीलोन से
यरूशलेम नगर को गए। 8उसी वर्ष के पांचवें
महीने में एज्रा यरूशलेम नगर में पहुंचा। 9उसने
उस वर्ष के पहले महीने की पहली तारीख को
बेबीलोन से प्रस्थान किया था, और वह पांचवें
महीने की पहली तारीख को यरूशलेम नगर
पहुंचा था; क्योंकि प्रभु परमेश्वर की कृपा-
दृष्टि* उस पर थी। 10एज्रा ने प्रभु की व्यवस्था
के अध्ययन में मन लगाया था। वह उसके
अनुसार आचरण भी करता था। वह इस्राएलियों
को प्रभु की संविधियां और न्याय-सिद्धान्त
सिखाता था।

11 यह सम्राट अर्तक्षत्र के पत्र की
प्रतिलिपि है। यह पत्र उसने एज्रा को दिया था।
एज्रा पुरोहित और शास्त्री था। जो आज्ञाएं और
संविधियां प्रभु ने इस्राएली कौम को दी थीं,
वह उनका पंडित था।

12 पत्र इस प्रकार था: 'महाराजाधिराज
अर्तक्षत्र का पत्र स्वर्ग के परमेश्वर की
व्यवस्था के शास्त्री और पुरोहित एज्रा के नाम।
13मैं यह राजाज्ञा प्रसारित करता हूँ: यदि मेरे
राज्य के कोई भी इस्राएली व्यक्ति, पुरोहित
और उप-पुरोहित स्वेच्छा से यरूशलेम जाना
चाहेंगे, तो वे तुम्हारे साथ जा सकते हैं। 14तुम्हें
महाराज और उनके सात मंत्रियों की ओर से
यहूदा प्रदेश और यरूशलेम नगर में भेजा जा
रहा है, ताकि तुम अपने परमेश्वर की व्यवस्था
के अनुसार, जिसके तुम विशेषज्ञ हो, वहां की
स्थिति की जांच-पड़ताल कर सको। 15इसके
अतिरिक्त जो सोना और चांदी महाराज और
उनके मंत्रीमण्डल ने यरूशलेम में निवास
करनेवाले इस्राएली कौम के परमेश्वर को
स्वेच्छा से चढ़ाई है, उसको ले जा सकोगे।
16तुम उस सोना-चांदी को भी ले जा सकोगे,
जो तुम बेबीलोन प्रदेश में प्राप्त करोगे।
इस्राएली लोग और पुरोहित मन्नत के रूप में
स्वेच्छा से परमेश्वर के भवन के लिए, जो
यरूशलेम में है, भेंट चढ़ाएंगे। तुम उनको भी
ले जा सकते हो। 17इस धन से तुम निष्ठापूर्वक
बछड़े, मेढ़े और मेमने खरीदना, और इनके
साथ चढ़ाने के लिए अन्नबलि और पेयबलि
की सामग्री भी खरीदना। तत्पश्चात् तुम
यरूशलेम में स्थित परमेश्वर के भवन की वेदी
पर उनको अर्पित करना। 18शेष सोना और
चांदी का उपयोग, जैसा तुम्हें और तुम्हारे
जाति-भाइयों को उचित लगे, अपने परमेश्वर
की इच्छा के अनुसार कर सकते हो।

19 'तुम्हारे परमेश्वर के भवन में उपयोग
के लिए पात्र दिए गए हैं। तुम उनको यरूशलेम
के परमेश्वर के सम्मुख सौंप देना। 20इनके
अतिरिक्त परमेश्वर के भवन के लिए जो तुम्हें
आवश्यक प्रतीत हो, वह भी दे देना और
उसका व्यय राजकोष से ले लेना।

21 'मैं—सम्राट अर्तक्षत्र—फरात नदी के
पश्चिम क्षेत्र के सब खजांचियों को यह आदेश
देता हूं: स्वर्ग के परमेश्वर की व्यवस्था के
शास्त्री और पुरोहित एज्रा जो कुछ तुमसे
मांगेंगे, वह पूर्णत: उन्हें दिया जाये। 22वह इस
सीमा तक मांग सकते हैं: साढ़े तीन हजार
किलो चांदी, दस हजार किलो गेहूँ, साढ़े चार
हजार लिटर अंगूर-रस, साढ़े चार हजार लिटर
तेल**, और असीमित मात्रा में नमक। 23इनके
अतिरिक्त स्वर्ग के परमेश्वर ने अपने भवन की

---

* अथवा, 'परमेश्वर का वरदहस्त' अथवा, 'परमेश्वर का हाथ उस पर था।' + अथवा पाठसुधार: ''सैंतीसवें''
** मूल में, ''सौ किक्कार चांदी, सौ कोर गेहूँ, सौ बत अंगूर-रस, सौ बत तेल''

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आवश्यकताओं के सम्बन्ध में जो भी आज्ञा दी है, वह स्वर्ग के परमेश्वर के भवन के लिए अवश्य पूर्णत: पूरी की जाए। ऐसा न हो कि उसका क्रोध सम्राट के राज्य और उसके राजपुत्रों पर भड़क उठे!

24 'हम तुम्हें यह भी सूचित करते हैं कि परमेश्वर के भवन के किसी भी पुरोहित, उप-पुरोहित, गायक, द्वारपाल, सेवक तथा अन्य नौकर-चाकरों पर किसी भी प्रकार का कर न लगाया जाये, और न ही उनसे राजकीय उपहार या चुंगी ली जाए।

25 'और तुम एज्रा, तुम्हें परमेश्वर ने बुद्धि प्रदान की है। तुम इसी बुद्धि के अनुसार न्यायाधीश और सचिव नियुक्त करना। ये व्यक्ति तुम्हारे परमेश्वर की व्यवस्था के जानकार होने चाहिये। यदि ये उसको नहीं जानते होंगे, तो तुम उनको सिखाना; क्योंकि ये फरात नदी के पश्चिम समस्त प्रदेश में रहने
वाले लोगों के शासक होंगे।
26जो व्यक्ति तुम्हारे परमेश्वर की व्यवस्था तथा सम्राट के कानून का उल्लंघन करेगा, उसे कठोर दण्ड दिया जाएगा; उसे मृत्यु-दण्ड, अथवा देश-निष्कासन, अथवा सम्पत्ति की जब्ती, अथवा कैद की सजा दी जाएगी।'

एज्रा का परमेश्वर की स्तुति करना

27 हे हमारे पूर्वजों के प्रभु परमेश्वर,
तू धन्य है!
तूने यरूशलेम में स्थित
अपने इस भवन की साज-सज्जा के लिए
सम्राट के हृदय में इच्छा उत्पन्न की।
28प्रभु, तूने सम्राट और उसकी मंत्री-परिषद
के समक्ष,
सम्राट के शक्तिशाली अधिकारियों के
सम्मुख
मुझ पर करुणा की वर्षा की।
मुझे बल प्राप्त हुआ,
क्योंकि, हे प्रभु, मेरे परमेश्वर,
तेरा वरदहस्त मुझ पर था।
तेरी ही कृपा से मैं
अपने साथ यरूशलेम जाने के लिए
इस्राएली जाति के प्रमुख व्यक्तियों को
एकत्र कर सका।

एज्रा के सहयोगी

8 सम्राट अर्तक्षत्र के शासन-काल में मेरे साथ बेबीलोन देश से यरूशलेम नगर जाने वाले इस्राएलियों की तथा उनके पितृकुलों के मुखियों की वंशावली इस प्रकार है :

2 पीनहास के वंश में से गेर्शोम, ईतामार के वंश में से दानिएल, दाऊद के वंश में से हत्तूस
3जो शकन्याह का पौत्र था। परओश के वंश में से जकर्याह। उसके साथ पंजीकृत डेढ़ सौ पुरुष थे।

4 पहत-मोआब के वंश में से एल्यहोनई बेन-जरह्याह। उसके साथ दो सौ पुरुष।
5सत्तू के वंश में से शकन्याह बेन-यहजीएल। उसके साथ तीन सौ पुरुष थे।
6आदीन के वंश में से एबेद बेन-योनातान। उसके साथ पचास पुरुष थे।
7एलाम के वंश में से यशायाह बेन-अतल्याह। उसके साथ सत्तर पुरुष थे।
8शपत्याह के वंश में से जबद्याह बेन-मीखाएल। उसके साथ अस्सी पुरुष थे।
9योआब के वंश में से ओबद्याह बेन-यहीएल। उसके साथ दो सौ अठारह पुरुष थे।
10बानी के वंश में से शलोमीत बेन-योसिप्याह। उसके साथ एक सौ साठ पुरुष थे।
11बेबई के वंश में से जकर्याह बेन-बेबई। उसके साथ अट्ठाईस पुरुष थे।
12अजगाद के वंश में से योहानान बेन-हक्कातान। उसके साथ एक सौ दस पुरुष थे।

13 अदोनीकाम के वंश में से ये पुरुष बाद में गए थे : एलीपेलेत, यीएल और समायाह। इनके साथ साठ पुरुष थे।
14बिग्वई के वंश में से ऊतई और जक्कूर। उनके साथ सत्तर पुरुष थे।

15 मैंने इनको अहवा नगर जानेवाली नहर के तट पर एकत्र किया। हम वहां तीन दिन तक ठहरे रहे। जब मैंने लोगों तथा पुरोहितों का निरीक्षण किया, तब मुझे लेवी वंश का एक भी उप-पुरोहित नहीं मिला।
16अत: मैंने एलीएजेर, अरीएल, शमायाह, एलनातान, यारीब, एलनातान, नातान, जकर्याह, और मशुल्लाम

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नामक प्रमुख व्यक्तियों को तथा योयारीब और
एलनातान नामक विद्वानों को बुलाया। 17मैंने
उन्हें कासिप्या नगर में इद्दो नामक मुखिया के
पास भेजा। मैंने उन्हें समझाया कि वे इद्दो से
तथा कासिप्या नगर में रहने वाले उसके भाई-
बंधुओं से, जो मंदिर-सेवक थे,यह निवेदन
करें कि 'आप हमें परमेश्वर के भवन के लिए
परिचारक भेजिए।'

18-19 परमेश्वर की कृपा-दृष्टि* हम पर
थी। अत: वे हमारे पास शेरेब्याह, हशब्याह
और यशायाह को ले आए। शेरेब्याह एक
बुद्धिमान पुरुष था। वह इस्राएल के परपोते
और लेवी के पोते महली के वंश में से था।
उसके साथ उसके पुत्र और जाति-भाई थे। ये
सब अठारह पुरुष थे। यशायाह मरारी के वंश
में से था। उसके साथ उसके पुत्र और जाति-
भाई थे। ये सब बीस पुरुष थे। 20इनके अतिरिक्त
वे मन्दिर की सेवा के लिए दो सौ बीस
परिचारक ले आए। इन परिचारकों की प्रथा
दाऊद तथा उसके उच्च पदाधिकारियों ने लेवी
वंश के उप-पुरोहितों की सेवा-सहायता के
लिए आरम्भ की थी। इन सब के नाम लिखे हुए
थे।

21 तब मैंने अहवा नदी के तट पर सामूहिक
उपवास की घोषणा की ताकि हम परमेश्वर के
सम्मुख विनम्र बनें, और उससे स्वयं की, अपने
बच्चों की तथा सम्पत्ति की रक्षा के लिए निर्विघ्न
यात्रा की मांग करें। 22यात्रा के दौरान शत्रुओं
से अपनी रक्षा के लिए सम्राट से सिपाहियों का
दल और घुड़सवार मांगना मुझे अच्छा नहीं
लगा; क्योंकि हमने सम्राट से यह कहा
था,'परमेश्वर का वरदहस्त उसके भक्तों पर
रहता है, पर उसका क्रोध उन लोगों पर भड़क
उठता है, जो उसको छोड़ देते हैं।' 23अत: हमने
सामूहिक उपवास किया, और यात्रा में सुरक्षा के
लिए परमेश्वर से प्रार्थना की, और उसने हमारी
प्रार्थना सुनी।

24 मैंने प्रमुख पुरोहितों में से बारह पुरोहित
चुने: शेरेब्याह, हशब्याह, और उनके दस जाति-
भाई। 25तब मैंने उनके सम्मुख चान्दी, सोना,
पात्र, तथा सम्राट और उनके मंत्री-परिषद,
सामन्तों और इस्राएली जनता द्वारा परमेश्वर के
भवन के लिए चढ़ाई गई भेंटों को 26तौलकर
उन्हें उन बारह पुरोहितों के हाथ में सौंप दिया:
बाईस हजार किलो चान्दी, साढ़े तीन हजार
किलो चान्दी के पात्र, 27साढ़े तीन हजार किलो
सोना, हजार स्वर्ण-मुद्राओं के मूल्य के बीस
कटोरे, और सोने के समान ही कीमती एवं
चमकने वाले पीतल के दो पात्र। 28मैंने उनसे
यह कहा, 'तुम प्रभु के लिए पवित्र हो। ये पात्र
भी पवित्र हैं। यह सोना और चान्दी तुम्हारे
पूर्वजों के प्रभु परमेश्वर को स्वेच्छा से चढ़ायी
गई भेंट है। 29तुम इनको सम्भालकर रखो। तुम
यरूशलेम में मुख्य पुरोहितों, उप-पुरोहितों
और इस्राएल के पितृकुलों के मुखियों के
सामने प्रभु-भवन के कोषागारों में यह सब
तौलकर दे देना।'

30 अत: पुरोहितों और उप-पुरोहितों ने
सोना, चान्दी और पात्रों को यरूशलेम में अपने
परमेश्वर के भवन में ले जाने के लिए उनको
तौलकर ले लिया।

31 हमने यरूशलेम के लिए पहले महीने
की बारहवीं तारीख को अहवा नदी के तट से
प्रस्थान किया। परमेश्वर की कृपा-दृष्टि हम
पर थी. उसने मार्ग में शत्रुओं के हाथ से तथा
लुटेरों से हमारी रक्षा की।

32 हम यरूशलेम नगर पहुंचे। हमने वहां
तीन दिन तक विश्राम किया। 33चौथे दिन हमने
परमेश्वर के भवन में पुरोहित मेरेमोत बेन-
ऊरीयाह को चान्दी, सोना और पात्र तौलकर
सौंप दिए। उस समय उसके साथ एलआजर
बेन-पीनहास था। इनके अतिरिक्त उनके साथ
दो उप-पुरोहित थे: योजाबाद बेन-येशुअ, और
नोअद्याह बेन-बिन्नूई।

34 उन्होंने सबको गिना और तौला तथा
उसी समय सबका विवरण भी लिख दिया।

35 तब गुलामी से मुक्त हुए, निष्कासन से
लौटे हुए इस्राएली लोगों ने अपने परमेश्वर को

* अथवा, 'परमेश्वर का वरदहस्त'

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अग्नि-बलि में ये पशु चढ़ाए : इस्राएल के
बारह कुलों की ओर से बारह बछड़े, छियानबे
मेढ़े, और सतहत्तर मेमने। उन्होंने पाप-बलि में
बारह बकरे अर्पित किए। यह सब प्रभु के लिए
अग्नि-बलि था।

36 एज्रा तथा उसके सहयोगियों ने सम्राट
का आज्ञा-पत्र फरात नही के पश्चिम क्षेत्र के
राज्यपालों तथा सम्राट के क्षत्रपों को सौंप
दिया। इस प्रकार उन्होंने इस्राएली कौम की
मदद की तथा परमेश्वर के भवन की देखरेख
में सहायता की।

यहूदी जाति का शुद्धीकरण

9 जब ये कार्य हो चुके तब एक दिन
पदाधिकारी मेरे पास आए, और उन्होंने
मुझसे यह कहा, 'इस्राएली जनता, पुरोहितों
तथा उप-पुरोहितों ने इस प्रदेश की विधर्मी
जातियों की घृणित प्रथाओं से स्वयं को मुक्त
नहीं किया है। वे कनानी, हित्ती, परिज्जी,
यबूसी, अम्मोनी, मोआबी, मिस्री और एमोरी
जातियों 2की कन्याओं से स्वयं विवाह करते,
और अपने पुत्रों का भी विवाह कराते हैं। इस
प्रकार हमारी पवित्र जाति इस देश की अन्य
जातियों से मिलकर भ्रष्ट हो गई है। इस
विश्वासघात के कार्य में पदाधिकारी और
जनता के मुखिया सबसे आगे हैं।'

3 यह सुनकर मैंने शोक प्रकट करने के लिए
अपने वस्त्र और चादर फाड़ दी, अपने सिर और
दाढ़ी के बाल नोचे, और मैं आतंकित-सा बैठ
गया। 4तब इस्राएली कौम के परमेश्वर की
धर्म-व्यवस्था* से श्रद्धा-भक्ति करने वाले
लोग मेरे चारों ओर एकत्र हो गए; क्योंकि
उन्होंने निष्कासन से लौटे यहूदियों के
विश्वासघात की खबर सुनी थी। मैं सन्ध्या-
बलि के समय तक आतंकित-सा बैठा रहा। 5मैं
सन्ध्या-बलि के समय उपवास की स्थिति से
उठा। मेरे वस्त्र और चादर फटी हुई थी। मैंने
घुटने टेके, और अपने प्रभु परमेश्वर की ओर
हाथ फैलाकर यह कहा :

एज्रा की प्रार्थना

6 'हे मेरे परमेश्वर,
मैं तेरी ओर अपनी आंखें नहीं उठा सकता,
मैं लज्जित हूं;
हमारे अपराधों का ढेर लग गया है,
हमारे दुष्कर्म आकाश को छूने लगे हैं।
7हमारे पूर्वजों के समय से आज तक
हम घोर दुष्कर्म करते आए हैं;
अपने इन्हीं दुष्कर्मों के कारण
हम, हमारे राजा और हमारे पुरोहित
विदेशी राजाओं के हाथ में पड़ गए।
हमें तलवार से मौत के घाट उतारा गया,
हमारी सम्पत्ति को लूटा गया,
हमें गुलाम बनाकर निष्कासित किया गया,
हमारी दयनीय दशा की गई, जो आज तक
है।
8अब थोड़े समय के लिए,
हमारे प्रभु परमेश्वर, तूने हम पर कृपा-
दृष्टि की।
हमारी कौम के कुछ लोगों को शेष रखा,
इस पवित्र स्थान में हमें टिकने का सहारा
दिया।
हे परमेश्वर, तूने हमारी आंखों में आशा की
किरण जगा दी।
गुलामी की दशा में हमारे जीवन को कुछ
विश्राम दिया।
9हम गुलाम हैं,
पर गुलामी में भी, हे परमेश्वर, तूने हमें नहीं
छोड़ा,
वरन् फारस के सम्राट के सम्मुख
तूने हम पर करुणा की,
और हमें गुलामी से कुछ समय के लिए
मुक्त किया
ताकि हम तेरे भवन को पुनः खड़ा कर
सकें,
उसके खण्डहरों की मरम्मत कर सकें।
हे परमेश्वर, तूने हमें यहूदा प्रदेश और
यरूशलेम में

---

* शब्दश: 'वचनों'

9 : 1 नह 9 : 2; मला 2 : 10 9 : 2 व्य 7 : 1 9 : 4 यश 66 : 2 9 : 8 यश 4 : 3

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
हमारे सिर के ऊपर एक छत प्रदान की।
10-11 'हे प्रभु परमेश्वर,
तेरी समस्त कृपा के बाद
अब हम अपने आचरण के लिए
क्या सफाई पेश कर सकते हैं?
तेरे सेवक नबियों ने
जो तेरी आज्ञाएं हमें दी थीं,
उनका हमने उल्लंघन किया।
नबियों ने हमसे कहा था :
''जिस देश पर अधिकार करने के लिए,
तुम उसमें प्रवेश कर रहे हो,
वह अशुद्ध देश है;
उसमें निवास करने वाली जातियों ने
उसे एक छोर से दूसरे छोर तक
अपनी घृणित प्रथाओं से पूर्णत: भर दिया है।
12अत: तुम उन जातियों से विवाह-सम्बन्ध स्थापित न करना :
न अपनी पुत्रियों का विवाह
उनके पुत्रों से करना,
और न ही अपने पुत्रों का विवाह
उनकी पुत्रियों से करना।
उनकी सुख-समृद्धि की कामना मत करना।
तब तुम शक्तिशाली बनोगे,
उस देश की उत्तमोत्तम वस्तुओं का उपभोग करोगे,
और अपने बाद अपनी सन्तान को उसे पैतृक-अधिकार में छोड़ जाओगे।''
13'हमारे दुष्कर्मों,
हमारे बड़े-बड़े अधर्म के कामों के कारण
हम पर विपत्तियां आयीं,
पर तूने हमारे अपराधों की तुलना में
हमें कम ही दण्ड दिया,
और हमारी कौम के कुछ लोगों को
नष्ट होने से बचा लिया।
14अब हम क्या पुन:
तेरी आज्ञाओं का उल्लंघन करें;
और घृणित प्रथाओं को मानने वाली
जातियों के साथ
विवाह-सम्बन्ध स्थापित करें?
तब क्या तू हम से क्रुद्ध न होगा,
और हमें जड़-मूल से नष्ट नहीं कर देगा,
कि हमारी कौम का कोई चिह्न शेष न रहे,
एक भी इस्राएली तेरे दण्ड से भाग न सके?
15हे इस्राएल के प्रभु परमेश्वर,
तू निस्सन्देह न्याय करने वाला ईश्वर है।
हम मुक्त हुई इस्राएली कौम के बचे हुए लोग हैं,
जैसे आज भी हम जीवित रह गए हैं।
यद्यपि दुष्कर्म के कारण
कोई भी व्यक्ति तेरे सम्मुख खड़ा नहीं हो सकता है,
तथापि, प्रभु, हम अपराधी होकर भी
तेरे सामने उपस्थित हैं।'

एज्रा की प्रार्थना का प्रभाव

10 जब एज्रा परमेश्वर के भवन के सामने
रोता हुआ, मुंह के बल गिरकर प्रार्थना
कर रहा था और अपनी जाति की ओर से पाप
स्वीकार कर रहा था, तब उसके आस-पास
इस्राएली पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों की बड़ी
भीड़ इकट्ठी हो गई। वे भी छाती पीट-पीट
कर रोने लगे।
2 एलाम वंश के शकन्याह बेन-यहीएल ने
एज्रा से कहा, 'हमने अपने परमेश्वर के विरुद्ध
विश्वासघात किया, और इस देश में रहने वाली
विदेशी जातियों की कन्याओं से विवाह किया।
पर इस अपराध के बावजूद इस्राएली कौम के
बचने की अब भी आशा शेष है।
3इसलिए आइए,
हम अपने परमेश्वर से प्रतिज्ञा करें* और आपके
तथा परमेश्वर की आज्ञा के प्रति श्रद्धा-भक्ति
रखने वालों के परामर्श के अनुसार इन विदेशी
पत्नियों और उनकी सन्तान को अपने समाज
से निकाल दें। यह कार्य व्यवस्था के अनुसार
किया जाए।
4अब आप उठिए, क्योंकि यह
काम केवल आप ही का है, पर हम आपके
साथ हैं। शक्तिशाली बनिए, और इस कार्य को

* अथवा, 'विधान की धर्मविधि संपन्न करें, समझौता करें'।
9 : 11 लेव 18 : 25; यहेज 26 : 17 9 : 12 व्य 7 : 3

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
पूरा कीजिए।'
5 तब एज्रा उठा। उसने इस्राएलियों के
प्रमुख पुरोहितों, उपपुरोहितों और समस्त
इस्राएली जनता को यह शपथ खिलाई कि वे
विदेशी पत्नियों और उनकी सन्तान को त्याग
देंगे।

उन्होंने शपथ ली कि वे ऐसा ही करेंगे।
6 उसके बाद एज्रा परमेश्वर के भवन के
सामने से उठकर योहानान बेन-एल्याशीब के
कमरे में गया, और उसने वहां बिना खाए-पीए
रात बिताई; क्योंकि वह निष्कासन से लौटे
इस्राएलियों के विश्वासघात के लिए शोक मना
रहा था।
7 यहूदा प्रदेश और यरूशलेम नगर में रहने
वाले निष्कासन से लौटे इस्राएलियों को सूचित
किया गया कि वे यरूशलेम में एकत्र हों। 8यदि
कोई व्यक्ति तीन दिन के भीतर यरूशलेम में
नहीं पहुंचेगा, तो अधिकारियों और धर्मवृद्धों
के आदेश से उसकी समस्त सम्पत्ति जब्त कर
ली जाएगी, और उसको निष्कासन से लौटे हुए
यहूदियों के धर्म-समाज+ से बहिष्कृत कर
दिया जाएगा।
9 अत: यहूदा और बिन्यामिन कुलों के सब
पुरुष तीन दिन की अवधि में यरूशलेम में
एकत्र हो गए। यह नौवां महीना और महीने की
बीसवीं तारीख थी। सब लोग परमेश्वर के
भवन के सामने चौक में बैठे हुए थे। घनघोर
वर्षा हो रही थी। प्रस्तुत मामले के डर के कारण
तथा मूसलाधार वर्षा के कारण सब कांप रहे थे।
10तब पुरोहित एज्रा खड़ा हुआ और उसने
उपस्थित लोगों से कहा, 'तुमने अन्य जातियों
की स्त्रियों से विवाह कर अपराध किया है;
और यों इस्राएली कौम के दोष को बढ़ाया है।
11इसलिए अब तुम अपने पूर्वजों के प्रभु
परमेश्वर से अपना पाप स्वीकार करो, और
उसकी इच्छा के अनुसार कार्य करो। स्वयं को
इस देश में रहने वाली जातियों से अलग करो।
जिन विदेशी कन्याओं से तुमने विवाह किया है,
उनसे सम्बन्ध-विच्छेद कर लो।'
12 समस्त धर्म-सभा ने उच्चस्वर में एज्रा
को उत्तर दिया, 'ठीक है। जैसा आपने कहा है,
हम वैसा ही करेंगे। 13यहां बहुत लोग हैं। इस
समय भारी वर्षा हो रही है। हम बाहर खुले में
खड़े नहीं रह सकते। फिर यह काम एक या दो
दिन का नहीं है; क्योंकि हमने इस मामले में
बड़ा गंभीर अपराध किया है। 14अत: समस्त
धर्म-सभा की ओर से हमारे पदाधिकारी ही
कार्य करें। प्रत्येक नगर के वे पुरुष जिन्होंने
विदेशी जातियों की कन्याओं से विवाह किया
है निश्चित समय पर आएं। उनके साथ प्रत्येक
नगर के न्यायाधीश और धर्मवृद्ध भी आएं। यह
कार्य तब तक किया जाए, जब तक इस सम्बन्ध
में परमेश्वर का भड़का हुआ क्रोध हमसे दूर न
हो जाए।'
15 मशुल्लाम और उपपुरोहित शब्बतई ने
उनके प्रस्ताव का अनुमोदन किया,किन्तु
योनातान बेन-असाहेल तथा यहजयाह बेन
तिकवा ने प्रस्ताव का विरोध किया।
16 निष्कासन से लौटे हुए इस्राएलियों ने
प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। पुरोहित एज्रा
ने प्रत्येक पितृकुल के मुखिया के परिवार में से
पुरुषों को चुना, और प्रत्येक को उसके नाम से
नियुक्त कर दिया। ये चुने हुए पुरुष दसवें महीने
की पहली तारीख को मामले की जांच करने के
लिए बैठे, 17और उन्होंने पहले महीने की
पहली तारीख तक उन सब पुरुषों के मामले का
फैसला कर दिया जिन्होंने विदेशी जातियों की
स्त्रियों से विवाह किया था।
18 पुरोहितीय परिवार के ये पुरुष थे,
जिन्होंने विदेशी जातियों की स्त्रियों से विवाह
किया था: येशुअ बेन-योसादाक के पुत्र
मासेयाह, एलीआजर, यारीब और गदल्याह,
और येशुअ के भाई। 19उन्होंने वचन दिया कि
वे अपनी पत्नियों को त्याग देंगे। उन्होंने दोष-
बलि में अपने दोष के प्रायश्चित के लिए एक
मेढ़ा चढ़ाया।

+ अथवा, 'धर्मसभा'।

10 : 11 यिर 13 : 16; मला 2 : 2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

20 पुरोहित इम्मेर के पुत्रों में से हनानी और
जबद्याह। 21पुरोहित हारीम के पुत्रों में से
मासेयाह, एलीयाह, शमायाह, यहीएल और
उज्जियाह। 22पुरोहित पशहूर के पुत्रों में से
एल्योएनई, मासेयाह, यिशमाएल, नतनएल,
योजाबाद और एलासा।

23 उपपुरोहितों में से इन पुरुषों ने विदेशी
जातियों की स्त्रियों से विवाह किया था:
योजाबाद, शिमई, केलायाह (जो कलीता
कहलाता है), पतहयाह, यहूदा और एलीआजर।

24 प्रभु-भवन के गायकों में से एल्याशीब
ने, और द्वारपालों में से शल्लूम, तेलेम और ऊरी
ने ऐसा विवाह किया था।

25 इस्राएली जनता में से इन पुरुषों ने
विदेशी जातियों की स्त्रियों से विवाह किया
था: परोश के पुत्र रम्याह, यज्जियाह, मल्कियाह,
मियामीन, एलआजर, मल्कियाह और बनायाह।
26एलाम के पुत्र मत्तन्याह, जकर्याह, यहीएल,
अब्दी, येरेमोत और एलीयाह, 27सत्तू के पुत्र
एल्योएनई, एल्याशीब, मत्तन्याह, येरेमोत,
जाबाद और अजीजा। 28बेबई के पुत्र यहोहानान,
हनन्याह, जब्बई और अत्तलई। 29बानी के पुत्र
मशुल्लाम, मल्लूक, अदायाह, याशूब, शेआल
और यामोत। 30पहतमोआब के पुत्र अदना,
कलाल, बनायाह, मासेयाह, मत्तन्याह, बसलेल,
बिन्नूई और मनश्शे। 31हारीम के पुत्र एलीआजर,
यिश्शियाह, मल्कियाह, शमायाह, शिमोन,
32बिन्यामिन, मल्लूक और शमर्याह। 33हाशूम
के पुत्र मत्तनई, मत्तत्ता, जाबाद, एलीपेलेत,
यरेमई, मनश्शे और शिमई। 34बानी के पुत्र
मादई, अम्राम, ऊएल, 35बनायाह, बेदयाह,
कलूही, 36वन्याह, मेरेमोत, एल्याशीब,
37मत्तन्याह, मत्तनई, यासू। 38बिन्नूई के पुत्र
शिमई, 39शेलेम्याह, नातान, अदायाह,
40मक्नदबई, शाशई, शारई, 41अजरेल,
शेलेम्याह, शेमर्याह, 42शल्लूम, अमर्याह और
योसेप। 43नबो के पुत्र यीएल, मत्तित्याह,
जाबाद, जबीना, यद्दई, योएल और बनायाह।

44 इन सब पुरुषों ने विदेशी जातियों की
स्त्रियों से विवाह किया था। उन्होंने अपनी
पत्नियों और उनसे उत्पन्न सन्तान को त्याग
दिया।

नहेम्याह

पुस्तक परिचय

प्रस्तुत पुस्तक की अधिकांश सामग्री प्रशासक नहेम्याह के व्यक्तिगत कार्य-विवरण से ली गयी है। इसे हम तीन खंडों में बांट सकते हैं :

(1) फारस के सम्राट अर्तक्षत्र प्रथम (सन् 464-423 ई० पू०) ने नहेम्याह को यहूदा प्रदेश का प्रशासक नियुक्त किया। वह यरूशलेम आया और उसके नेतृत्व में यरूशलेम की ध्वस्त शहरपनाह का पुन:निर्माण आरम्भ हुआ। वह यहूदियों के सामाजिक और धार्मिक सुधार भी करता है।

(2) पुस्तक के दूसरे खण्ड में शास्त्री एज्रा द्वारा समाज के सम्मुख धर्म-व्यवस्था के पठन-पाठन एवं समाज द्वारा किये गये सामूहिक पापांगीकार का उल्लेख हुआ है। इस प्रसंग को संभवत: इस पुस्तक के अंत में (अथवा एज्रा-ग्रंथ के साथ) पढ़ना चाहिए, क्योंकि पुस्तक के वर्तमान रूप में घटनाक्रम अस्पष्ट है।

(3) तीसरे खण्ड में यहूदा प्रदेश के प्रशासक के पद पर किये गये नहेम्याह के अन्य कार्यों का उल्लेख है। सन् 433 ईसवी पूर्व में नहेम्याह फारस देश की राजधानी शूशनगढ़ को लौट जाता है और थोड़े समय के बाद सम्राट अर्तक्षत्र उसे पुन: प्रशासक नियुक्त करता है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रस्तुत पुस्तक में नहेम्याह का एक विशेष गुण देखने को मिलता है, कि वह परमेश्वर पर पूर्ण हृदय से विश्वास करता है और सहायता हेतु बार-बार उससे प्रार्थना करता है। फिर भी वह तन-मन-धन से गरीब जनता की सेवा करता है।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

प्रशासक नहेम्याह का प्रथम कार्यकाल :	1:1 — 7 : 73
नहेम्याह का यरूशलेम में आगमन	1:1 — 2 : 20
यरूशलेम की शहरपनाह का पुनःनिर्माण	3:1 — 7 : 73
व्यवस्था का पाठ तथा विधान की पुनः स्थापना	8:1 —10 : 31
नहेम्याह के अन्य कार्य	11:1 — 13 : 31

नहेम्याह का आत्म-चरित्र

1 नहेम्याह बेन-हकल्याह का आत्म-चरित्र:
मैं बीसवें वर्ष के किसलेव महीने में
राजधानी शूशनगढ़ में था। 2तब हनानी नामक
मेरा एक भाई-बन्धु तथा उसके साथ कई अन्य
लोग यहूदा प्रदेश से आए। मैंने उनसे यरूशलेम
नगर तथा निष्कासन से लौटे हुए यहूदियों के
विषय में, जो जीवित बच गए थे, पूछताछ की।
3उन्होंने मुझे यह बताया, 'निष्कासन से लौटे
हुए यहूदी जो जीवित हैं, यहूदा प्रदेश में बड़े
संकट और शोचनीय स्थिति में हैं। यरूशलेम
की शहरपनाह गिरी हुई है; उसके प्रवेश-द्वार
जले हुए पड़े हैं।'

4 मैं यह शब्द सुनते ही भूमि पर बैठ गया,
और रोने लगा। मैंने अपनी कौम के लिए
अनेक दिन तक विलाप किया। मैं स्वर्ग के
परमेश्वर के सम्मुख उपवास और प्रार्थना करता
रहा।

नहेम्याह की प्रार्थना

5 मैंने कहा,
'हे स्वर्ग के प्रभु परमेश्वर,
महान और भक्तियोग्य परमेश्वर,
तू उन भक्तों के लिए
अपना विधान पूर्ण करता है,
उन पर करुणा करता है,
जो तुझसे प्रेम करते,
और तेरी आज्ञाओं का पालन करते हैं।
6 प्रभु, तू मेरी ओर कान लगा,
अपनी आंखों को खोल
और मेरी प्रार्थना को,
अपने सेवक के निवेदन को, सुन
जो मैं तेरे सेवकों, इस्राएली लोगों के लिए
अब दिन-रात कर रहा हूँ।
प्रभु, हमने तेरे विरुद्ध पाप किया है,
मैं इस्राएली कौम के इस पाप को स्वीकार
करता हूँ।
निस्सन्देह मैंने और मेरे पितृकुल ने पाप
किया है।
7 हमने तेरे प्रति अत्यन्त बुरा व्यवहार किया
है;
क्योंकि जो आज्ञाएं, संविधियां और न्याय-
सिद्धान्त,
तूने अपने सेवक मूसा को प्रदान किए
थे,
उनके अनुरूप हमने आचरण नहीं किया।
8 प्रभु, स्मरण कर अपना यह वचन;
तूने अपने सेवक मूसा से यह कहा था:
''यदि तुम मेरे प्रति विश्वासघात करोगे
तो मैं तुम्हें अन्य कौमों में बिखेर दूंगा;
9 पर यदि तुम मेरी ओर लौटोगे,
मेरी आज्ञाओं का पालन करोगे,
उनके अनुरूप आचरण करोगे
तो मैं आकाश के कोने-कोने से
तुम्हारे बिखरे हुए लोगों को
उस स्थान पर एकत्र करूंगा,
जिसे मैं अपने नाम को प्रतिष्ठित करने के
लिए चुनूंगा।''
10 'प्रभु, ये तेरे सेवक हैं,

1 : 5 व्य 7 : 9 1 : 8 लेव 26 : 33 1 : 9 व्य 30 : 4 1 : 10 व्य 9 : 29

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तेरे निज लोग हैं;
इनको तूने अपने बड़े सामर्थ्य से,
अपने भुजबल से मुक्त किया है।
11हे प्रभु, अपने इस सेवक की प्रार्थना पर,
अपने इन सेवकों की विनती पर ध्यान दे;
क्योंकि ये प्रसन्नतापूर्वक तेरे नाम की
आराधना करते हैं।
आज अपने सेवक को सफलता प्रदान कर,
ताकि सम्राट अर्तक्षत्र मुझ पर कृपादृष्टि
करे।'

यरूशलेम-प्रस्थान का निवेदन

2 मैं सम्राट अर्तक्षत्र का साकी †था। सम्राट
अर्तक्षत्र के शासन-काल के बीसवें वर्ष के
नीसान महीने की बात है: शराब सम्राट के
सम्मुख थी। मैंने शराब का चषक ++उठाकर
उसको दिया। अब तक मैं उसके सम्मुख कभी
उदास-मुख नहीं हुआ था। 2सम्राट ने मुझसे
पूछा, "तुम्हारा चेहरा उदास क्यों है? क्या
बीमार हो? निस्सन्देह यह मानसिक पीड़ा ही
है।' मैं यह सुनकर बहुत डर गया। 3मैंने सम्राट
से कहा, 'महाराज, सदा-सर्वदा जीवित रहें!
महाराज, क्षमा करें; मैं उदास क्यों न होऊंगा
जब कि मेरे पूर्वजों की कबरों का नगर उजाड़
पड़ा है, उसके प्रवेश-द्वार आग से जले हुए पड़े
हैं?' 4सम्राट ने मुझ से कहा, 'तुम क्या चाहते
हो?' मैंने मन ही मन स्वर्गिक परमेश्वर से
प्रार्थना की। 5तब मैंने सम्राट से यह निवेदन
किया, 'यदि महाराज को यह उचित लगे, और
मुझ पर महाराज की कृपा-दृष्टि हो तो आप
मुझे अपने पूर्वजों की कबरों के नगर को भेज
दें ताकि मैं उसका पुनः निर्माण कर सकूं।'
6सम्राट ने मुझसे कहा (सम्राज्ञी वहीं उसके
पास बैठी थी), 'तुम्हें वहां कितना समय
लगेगा, और तुम कब लौटोगे?' मैंने उसे एक
निश्चित समय बताया, तो सम्राट मुझे
प्रसन्नतापूर्वक भेजने को सहमत हो गया। 7मैंने
सम्राट से आगे कहा, 'यदि महाराज को यह
उचित लगे, तो मुझे फरात नदी के पश्चिम क्षेत्र
के राज्यपालों के नाम आदेश-पत्र दिए जाएं
ताकि वे मुझे यहूदा प्रदेश जाने के लिए अपने
प्रदेशों से गुजरने दें। 8इनके अतिरिक्त मुझे
राजकीय वन के अधीक्षक आसाफ के नाम भी
एक पत्र दिया जाए। इसमें मेरे लिए इमारती
लकड़ी की व्यवस्था करने का आदेश लिखा
हो, जिससे मैं यरूशलेम में मंदिर के निकटवर्ती
गढ़ के प्रवेश-द्वार, शहरपनाह और अपने रहने
के लिए मकान बनवा सकूँ।' सम्राट ने मेरे
निवेदन को स्वीकार कर लिया; क्योंकि परमेश्वर
की कृपा-दृष्टि* मुझ पर थी।

यहूदा प्रदेश में आगमन

9 मैं फरात नदी के पश्चिम क्षेत्र के
राज्यपालों के पास पहुंचा, और मैंने उनको
सम्राट के पत्र दिए। सम्राट ने मेरे साथ
सेनाधिकारी और घुड़सवार भी भेज दिए थे।
10जब होरोन नगर निवासी सनबल्लत तथा
प्रशासक तोबियाह ने, जो अम्मोनी कौम का
था, यह सुना कि इस्राएलियों का कल्याण
चाहने वाला कोई व्यक्ति यहूदा प्रदेश में आया
है, तब उन्हें बहुत बुरा लगा।

शहरपनाह का निरीक्षण और यहूदियों को प्रबोधन

11 मैं यरूशलेम नगर में आया और वहां
तीन दिन तक रहा। 12मैं रात को उठा। मेरे पास
कुछ सेवक थे। मैंने अपने आगमन का
अभिप्राय किसी को नहीं बताया था कि
परमेश्वर ने यरूशलेम के हित के लिए मेरे हृदय
में कौन-सी इच्छा उत्पन्न की है। मेरे साथ
अपनी सवारी के पशु के अतिरिक्त अन्य पशु
नहीं थे। 13मैं उसी रात को घाटी-द्वार से
निकला और 'सियार-कूप' से गुजरता हुआ
'कूड़ा-फाटक' पर पहुंचा। वहां मैंने यरूशलेम
की शहरपनाह को देखा, जो गिरा दी गई थी।
मैंने उसके प्रवेश-द्वारों का निरीक्षण किया जो
आग में जला दिए गए थे।
14 वहां से मैं 'झरना-द्वार' और 'राजकुण्ड'
गया। पर वहां से मेरी सवारी के पशु का गुजरना

---

†राजा को शराब, पानी पिलानवाला ++प्याला * अथवा 'परमेश्वर ने मेरे सिर पर अपना हाथ रखा था।' अथवा 'वरदहस्त'
2 : 3 2 रा 25 : 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

असम्भव था। [15]अत: मैं रात के समय घाटी से होता हुआ ऊपर चढ़ गया, और वहां शहरपनाह का निरीक्षण किया। वहां से मैं पीछे घूमा और घाटी-द्वार के भीतर आ गया, और यों डेरे पर लौट आया। [16]अधिकारियों को पता नहीं चला कि मैं कहां गया था, और क्या कर रहा था। मैंने अब तक यहूदी जनता, पुरोहितों, प्रतिष्ठित नागरिकों, अधिकारियों तथा उन लोगों को अपने आगमन का अभिप्राय नहीं बताया था, जो यरूशलेम का पुनर्निर्माण-कार्य करने वाले थे। [17]तब मैंने उनसे कहा, 'तुम सब देख रहे हो कि हमारी कौम कैसी दुर्दशा में है। यरूशलेम नगर खण्डहर हो गया है, उसके प्रवेश-द्वार जला दिए गए हैं। आओ, हम-सब यरूशलेम की शहरपनाह को फिर से खड़ा करें ताकि हमारी कौम का और अधिक अपमान न हो।' [18]तत्पश्चात् मैंने उनको बताया कि परमेश्वर ने मुझ पर अपना हाथ रखा तो मुझे सम्राट की कृपा-दृष्टि प्राप्त हुई। मैंने सम्राट की वे बातें भी उन्हें बताईं, जो उसने मुझसे कही थीं। लोगों ने उत्तर दिया, 'हम तैयार हैं, हम बनाएंगे।' अत: उन्होंने यह सत्कर्म करने को कमर बांध ली।

विरोध

19 पर जब होरोनी सनबल्लत, तथा अम्मोनी प्रशासक तोबियाह और अरबी प्रशासक गेशेम ने यह सुना, तब वे हमारा मजाक उड़ाने लगे। उन्होंने हमारी निन्दा की और कहा, 'यह तुम लोग क्या कर रहे हो? क्या सम्राट के विरुद्ध विद्रोह करोगे?' [20]मैंने उन्हें उत्तर दिया, 'स्वर्गिक परमेश्वर हमारे कार्य को सफल करेगा। हम, उसके सेवक, तैयार हैं, और नगर का पुनर्निर्माण करेंगे। पर यरूशलेम के निर्माण में न तुम्हारा कोई भाग होगा, न अधिकार और न कोई स्मारक-चिह्न।'

शहरपनाह का पुन:निर्माण

3 महापुरोहित एल्याशीब अपने सहयोगी पुरोहितों के साथ शहरपनाह की मरम्मत करने को तैयार हुआ। उन्होंने 'मेष-द्वार' को बनाया। उन्होंने उसकी प्रतिष्ठा कर उसमें दरवाजे लगाए। तत्पश्चात् उन्होंने शहरपनाह की 'हम्मेआ-बुर्ज' तथा 'हननेल-बुर्ज' तक प्रतिष्ठा की, और उसको बनाया। [2]उससे आगे का निर्माण-कार्य यरीहो नगर के निवासियों ने किया, और इनसे आगे का कार्य जक्कूर बेन-इम्री ने समाप्त किया।

3 हस्सनाह के पुत्रों ने 'मत्स्य-द्वार' बनाया। उन्होंने उसमें उसकी कड़ियां, दरवाजे, अर्गलाएं और छड़ें लगायीं। [4]उनके आगे ऊरीया के पुत्र और हक्कोस के पौत्र मेरेमोत ने शहरपनाह की मरम्मत की। उसके आगे बेरेक्या के पुत्र और मशेज-बएल के पौत्र मशुल्लाम ने शहरपनाह की मरम्मत की। उसके आगे सादोक बेन-बाना ने मरम्मत की। [5]तकोअ नगर के निवासियों ने उसके आगे शहरपनाह की मरम्मत की; पर प्रभु के इस कार्य में तकोअ नगर के धनी प्रतिष्ठित नागरिकों ने हाथ नहीं बंटाया।

6 योयादा बेन-पासेआह और मशुल्लाम बेन-बसोदयाह ने 'प्राचीन-द्वार' की मरम्मत की। उन्होंने उसकी कड़ियां, दरवाजे, अर्गलाएं और छड़ें लगायीं। [7]'प्राचीन-द्वार' से आगे की शहरपनाह की मरम्मत इन लोगों ने की: गिबओन नगर के मलत्याह, मेरोनोत नगर के यादोन तथा गिबओन और मिस्पाह नगरों की जनता जो फरात नदी के पश्चिम क्षेत्र के राज्यपालों के अधिकार-क्षेत्र में आती थी। [8]उनके आगे की शहरपनाह की मरम्मत उजीएल बेन-हर्हयाह ने की। उजीएल एक सुनार था। उसके आगे हनन्याह ने मरम्मत की, जो गंधियों के समाज का मुखिया था। उन्होंने 'चौड़ी-दीवार' नामक स्थान तक यरूशलेम नगर की मरम्मत की। [9]उनसे आगे रफायाह बेन-हूर ने मरम्मत की। रफायाह यरूशलेम के आधे इलाके का प्रशासक था। [10]उसके आगे यदायाह बेन-हरूमप ने अपने मकान के सामने के भाग की मरम्मत की। और उसके आगे हत्तूश बेन-हशब्नयाह ने मरम्मत की। [11]एक दूसरे भाग में मल्कियाह बेन-हारीम और हश्शूब बेन-

3 : 1 यिर 31 : 38

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
पहत्मोआब ने शहरपनाह की मरम्मत की।
उन्होंने 'तन्दूर बुर्ज' की भी मरम्मत की।
12इनसे आगे शल्लूम बेन-हल्लोहेश ने अपनी
पुत्रियों के सहयोग से मरम्मत की। शल्लूम
यरूशलेम के दूसरे आधे इलाके का प्रशासक
था।

13 शहरपनाह के 'घाटी-द्वार' की मरम्मत
हानून ने तथा जानोह नगर के नागरिकों ने की।
उन्होंने उसको बनाया और उसमें उसके
दरवाजे, अर्गलाएं और छड़ें लगायीं। इसके
अतिरिक्त उन्होंने शहरपनाह की चार सौ
पचास मीटर तक, 'कूड़ा-पाटक' तक, मरम्मत
की।

14 मल्कियाह बेन-रेकाब ने 'कूड़ा-
फाटक' का मरम्मत की। मल्कियाह बेथक्केरेम
जिले का प्रशासक था। उसने 'कूड़ा-फाटक'
को बनाया, और उसमें उसके दरवाजे,
अर्गलाएं और छड़ें लगायीं।

15 शल्लूम बेन-कोल्होजे मिस्पाह जिले
का प्रशासक था। उसने 'झरना-द्वार' की
मरम्मत की। उसने उसको फिर बनाया और
उसमें दरवाजे, अर्गलाएं और छड़ें लगायीं
और उस पर छतरी डाली। उसने शहरपनाह के
'शिलोह कुण्ड' की दीवार भी बनाई। यह
दीवार राज-उद्यान के पास थी, और दाऊदपुर
के नीचे की ओर जाने वाली सीढ़ियों तक जाती
थी। 16उसके आगे नहेम्याह बेन-अजबूक ने
शहरपनाह के उस हिस्से की मरम्मत की जो
दाऊद की कबर के सामने से आरम्भ होकर
'कृत्रिम जलकुण्ड' और 'महायोद्धा भवन'
तक फैला है। नहेम्याह बेतसूर जिले के आधे
इलाके का प्रशासक था।

17 नहेम्याह के आगे लेवी वंशजों ने
शहरपनाह की मरम्मत की : रहूम बेन-बानी;
उससे आगे कीला जिले के आधे इलाके के
प्रशासक हशब्याह ने अपने जिले की ओर से
मरम्मत की। 18उसके आगे उसके इन लेवीय
भाइयों ने मरम्मत की : बिन्नूई बेन-हेनादाद;
यह कीला जिले के दूसरे आधे भाग का
प्रशासक था। 19उस से आगे एजेर बेन-येशुअ
ने मरम्मत की। यह मिस्पाह नगर का प्रशासक
था। इसने शहरपनाह के उस हिस्से की मरम्मत
की जो मोड़ के पास के शस्त्रागार के चढ़ाव
के सामने है। 20उसके आगे बारूक बेन-जब्बई
ने एक दूसरे स्थान पर, मोड़ से महापुरोहित
एल्याशीब के मकान के दरवाजे तक, शहरपनाह
की मरम्मत की। 21उसके आगे ऊरीया के पुत्र
और हक्कोस के पौत्र मेरेमोत ने एक दूसरे भाग
की मरम्मत की, अर्थात् एल्याशीब के मकान
के दरवाजे से लेकर एल्याशीब के मकान के
अन्त तक। 22उसके बाद यरूशलेम के आसपास
के इलाके में रहनेवाले पुरोहितों ने शहरपनाह
की मरम्मत की। 23उनके बाद बिन्यामिन और
हश्शूब ने अपने मकान के सामने के भाग की
मरम्मत की। उनके बाद मसेयाह के पुत्र तथा
अनन्याह के पौत्र अजर्याह ने अपने घर के पास
मरम्मत की। 24उसके आगे बिन्नूई बेन-
हेनादाद ने अजर्याह के मकान से लेकर
शहरपनाह के मोड़ तक, उसके कोने तक एक
और भाग की मरम्मत की। 25पालाल बेन-
ऊजय ने मोड़ के सामने के भाग की तथा
पहरेदार की चौकी की, जो राजमहल के
उपरले कक्ष से आगे निकली हुई है, मरम्मत
की। उसके बाद आगे पदायाह बेन-परओश
ने 26तथा ओपेल नामक टीले पर रहने वाले
मन्दिर-सेवकों ने पूर्व दिशा में 'जल-द्वार' तक
तथा सामने निकली मीनार की मरम्मत की।
27उनके आगे तकोअ नगर के लोगों ने उस
स्थान तक की मरम्मत की, जो आगे निकली हुई
मीनार के सामने ओपेल की दीवार तक है।

28 'अश्व-द्वार' के आगे पुरोहितों ने
अपने-अपने मकान के आगे के भाग की
मरम्मत की। 29उनके आगे सादोक बेन-इम्मेर
ने अपने मकान के सामने के भाग की मरम्मत
की। उसके आगे समयाह बेन-शकन्याह ने
मरम्मत की। समयाह 'पूर्वी द्वार' का द्वारपाल
था। 30इसके आगे हनन्याह बेन-शेलेम्याह
ने और सालाप के छठे पुत्र हानून ने एक और
भाग की मरम्मत की। उनके आगे मशुल्लाम
बेन-बेरेक्याह ने अपनी कोठरी के सामने के

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भाग की मरम्मत की। 31उसके आगे मन्दिर-
सेवकों के आवासगृह और व्यापारियों के
निवास-स्थान तक 'निरीक्षण-द्वार' के सामने,
कोने के ऊपर वाले कमरे तक सुनार मल्कियाह
ने मरम्मत की। 32कोने के ऊपरवाले कमरे से
'मेष-द्वार' तक सुनारों और व्यापारियों ने
मरम्मत की।

यहूदी मजदूरों द्वारा शहरपनाह की रक्षा

4 †जब सनबल्लत ने सुना कि हम
शहरपनाह को बना रहे हैं, तब वह नाराज
हुआ और आपे से बाहर हो गया। उसने
यहूदियों की खिल्ली उड़ाई। 2उसने अपने
जाति-भाई-बन्धुओं तथा सामरी सेना के
सम्मुख यह कहा, 'ये शक्तिहीन यहूदी क्या कर
रहे हैं ? क्या ये अपने बल पर पुनर्निर्माण करने
में सफल होंगे ? क्या ये फिर चढ़ावा चढ़ाएंगे ?
क्या ये एक दिन में काम समाप्त कर लेंगे ? क्या
ये मलवों में दबे हुए बेकाम पत्थरों को निकाल
कर उन्हें शहरपनाह की दीवार में फिर लगाएंगे ?'
3अम्मोन देश का तोबियाह उसके साथ था।
उसने कहा, 'जो पत्थर की दीवार ये लोग बना
रहे हैं, उस पर अगर गीदड़ भी चढ़ जाए तो वह
उसको गिरा देगा।'

4 मैंने यह प्रार्थना की,

'हे हमारे परमेश्वर, उनकी बातें सुन!
वे हमारी निन्दा करते हैं।
उनके ये व्यंग-बाण स्वयं उनको ही बेधें।
वे अपने देश से निष्कासित हो जाएं,
और उन्हें निष्कासित करने वाला देश
उनको लूट ले।
5उनके दुष्कर्म को मत भूलना,
अपनी आंखों के सामने से
उनके पाप को ओझल मत होने देना;
क्योंकि उन्होंने तेरे सेवक निर्माताओं के
सामने
तुझे क्रोध के लिए भड़काया है।*'

6 इसके बाद भी हमने शहरपनाह का
निर्माणकार्य जारी रखा, और समस्त शहर-
पनाह आधी ऊंचाई तक जुड़ गई; क्योंकि
निर्माण-कार्य में लोगों का मन लगा रहा।

7** जब सनबल्लत और तोबियाह ने तथा
अरबी और अम्मोनी कौम के लोगों ने और
अशदोद के पलिश्ती लोगों ने सुना कि यरूशलेम
की शहरपनाह का मरम्मत-कार्य निरन्तर हो
रहा है, उसकी दरारें भरी जा रही हैं, तो वे
अत्यन्त क्रुद्ध हुए। 8उन्होंने मिलकर षड्यन्त्र
रचा, और यरूशलेम पर आक्रमण करने और
नगर में उपद्रव करने का निश्चय किया। 9अत:
हमने अपने परमेश्वर से प्रार्थना की, और
शत्रुओं के संभावित हमले से बचने के लिए
चौबीस घण्टों के लिए पहरेदार बैठा दिए।

10 यहूदियों ने कहा, 'बोझ ढोने वालों का
बल घटने लगा; पर मलवा अभी बहुत बचा है !
शहरपनाह अब हम नहीं उठा सकते।'

11 हमें घेरनेवाले शत्रुओं ने मन में सोचा,
'जब तक हम उनके बीच में घुस कर उनको
मार नहीं डालेंगे, और यों निर्माण-कार्य रोक
नहीं देंगे, तब तक उनकी दृष्टि हम पर नहीं
पड़ेगी, उनको पता भी न चलेगा।'

12 पर उनके बीच रहनेवाले यहूदी हमारे
पास आकर हमें बार-बार सावधान करते थे कि
'हमारे शत्रु, जहां-जहां वे रहते हैं, वहां से हम
पर आक्रमण करेंगे।'

13 अत: मैंने लोगों को तलवारें, भाले और
धनुष दिए, और उन्हें उनके पितृ-कुलों के
अनुसार शहरपनाह के पीछे सबसे नीचे के खुले
स्थानों में बैठा दिया। 14तब मैं उनको भयभीत
देखकर उठा, और प्रतिष्ठित नागरिकों,
अधिकारियों और अन्य लोगों से कहा, 'अपने
शत्रुओं से मत डरो। प्रभु को स्मरण रखो, वह
महान और आतंकमय है, और तब अपने भाई-
बन्धुओं, पुत्र-पुत्रियों, पत्नियों और घरों की
रक्षा के लिए युद्ध करो।'

15 जब हमारे शत्रुओं ने सुना कि उनका
षड्यन्त्र हमें ज्ञात हो गया है, और परमेश्वर ने
उनकी योजनाओं पर पानी फेर दिया है, तब

† मूल में, अध्याय 3 : 33 * पाठांतर, 'निर्माताओं का उनके मुंह पर अपमान किया है।' ** मूल में, अध्याय 4 : 1
4 : 5 यिर 18 : 23

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उन्होंने आक्रमण का विचार छोड़ दिया और
हम शहरपनाह के अपने-अपने काम पर लौट
गए। [16]उस दिन से मैंने अपने सेवकों में उनका
काम बांट दिया : आधे सेवक निर्माण-कार्य में
लगे रहे, और आधे सेवक भाले, ढाल, धनुष
और कवच धारण किए रहे। नेतागण उन
समस्त यहूदियों के साथ थे, [17]जो शहरपनाह
पर काम कर रहे थे। बोझ ढोनेवाले एक हाथ
से काम करते थे और दूसरे हाथ में शस्त्र लिये
रहते थे। [18]काम करनेवाले यहूदी काम करते
समय अपनी कमर में तलवार कसे रहते थे।
नरसिंगा फूंकनेवाला, जो युद्ध की सूचना देता
था, मेरे साथ-साथ रहता था। [19]मैंने प्रतिष्ठित
नागरिकों, अधिकारियों और अन्य लोगों से यह
कहा था, 'काम बड़ा और फैला हुआ है। हम
शहरपनाह पर इधर-उधर फैले हुए हैं, एक-
दूसरे से अलग और दूर हैं। [20]अत: जिस स्थान
पर तुम नरसिंगे की ध्वनि सुनो तो वहां से हमारे
पास एकत्र हो जाना। हमारा परमेश्वर हमारी
ओर से लड़ेगा।'

21 इस प्रकार हम निर्माण-कार्य करते रहे।
आधे सेवक पौ फटने से तारों के निकलने तक
भाले लिये रहते थे। [22]उस समय मैंने लोगों को
यह आदेश भी दिया, 'प्रत्येक यहूदी अपने
सेवक के साथ यरूशलेम में ही रात बिताएगा।
इस प्रकार वे दिन में हमारे लिए शहरपनाह पर
कारीगर का काम करेंगे, और रात में रक्षकों
का।' [23]यों हम-सब — मैं, मेरे रिश्तेदार, मेरे
सेवक, मेरे अंग-रक्षक — इतने सावधान और
व्यस्त थे कि हमें कपड़े बदलने के लिए भी
समय नहीं मिलता था। हर क्षण, हर समय हर
व्यक्ति अपने हाथ में हथियार लिये रहता था।

धनी वर्ग और अधिकारियों के द्वारा जनता का शोषण

5 तब पुरुषों और उनकी पत्नियों ने धनी
यहूदी-भाइयों के विरुद्ध कड़ा विरोध
किया। [2]उनमें से कुछ लोगों ने यह कहा,
'हमारे अनेक पुत्र और पुत्रियां हैं। इसलिए हमें
इस अकाल में अनाज मिलना चाहिए ताकि हम
उसको खाकर जीवित रहें।' [3]कुछ अन्य लोगों
ने यह भी कहा, 'इस अकाल में अनाज पाने के
लिए हम अपने खेतों, अंगूर-उद्यानों और
मकानों को धनवान यहूदी-भाइयों के पास
गिरवी रख रहे हैं।' [4]कुछ ऐसे भी लोग थे
जिन्होंने यह कहा, 'महाराज को अपने खेतों
और अंगूर-उद्यानों का कर देने के लिए हमने
महाजन यहूदी-भाइयों से कर्ज लिया है। [5]हम
तो उन धनी यहूदी-भाइयों के ही रक्त-मांस हैं
और हमारे बाल-बच्चे उनके ही बाल-बच्चों के
समान हैं। फिर भी हम विवश किए जा रहे हैं
कि अपने बाल-बच्चों को उनके पास गुलाम
बनाकर रखें। सच पूछो तो हमारी अनेक
कन्याएँ उनकी गुलाम बन भी चुकी हैं। हम यह
शोषण रोकने में असमर्थ हैं; क्योंकि हमारे
खेत और अंगूर-उद्यान उनके हाथों में जा चुके
हैं।'

6 जब मैंने जनता का यह विरोध देखा और
उनके ये शब्द सुने, तब धनी वर्ग के प्रति मेरा
क्रोध भड़क उठा। [7]मैंने अपने हृदय में सोच-
विचार किया, और तब प्रतिष्ठित नागरिकों तथा
सरकारी अफसरों पर दोषारोपण किया। मैंने
उनसे कहा, 'तुम अपने जाति-भाई-बहिनों से
ही ब्याज खा रहे हो!'

मैंने शोषण करनेवाले इन यहूदियों के
विरुद्ध एक बड़ी आम-सभा की, [8]और उनसे
कहा, 'हमने अपने सामर्थ्य के अनुसार अपने
यहूदी भाई-बहिनों को, जो अन्य कौमों के
पास गुलाम के रूप में बिके हुए थे, मूल्य
चुकाकर उन्हें मुक्त किया। पर आज तुम अपने
भाई-बहिनों को बेच रहे हो जिससे हम उनको
फिर मूल्य चुकाकर वापस करें?' वे चुप रहे,
और कुछ न कह सके। [9]मैंने उनसे फिर कहा,
'यह काम, जो तुम कर रहे हो, ठीक नहीं है।
तुम्हें तो परमेश्वर का भय मानकर ऐसा
आचरण करना चाहिए था ताकि अन्य कौमें,
जो हमारी शत्रु हैं, हमारा मज़ाक न उड़ाएं।
[10]मैं, मेरे रिश्तेदार और मेरे सेवक उन्हें रुपया
और अनाज उधार देते हैं। अत: अब, हम

5 : 5 नि 21 : 7 5 : 7 नि 22 : 25

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उनको ऋण से मुक्त भी कर दें। [11]आज ही तुम उनके खेत, अंगूर-उद्यान, जैतून के बाग और मकान, वापस करो। जो तुम ब्याज के तौर पर उनसे रुपया-पैसा, अनाज, अंगूर-रस और तेल लेते हो, उसको माफ कर दो।'

12 शोषण करनेवाले धनी यहूदियों और सरकारी अफसरों ने कहा, 'हम उन्हें वापस दे देंगे, और आगे उनसे कुछ न लेंगे। जैसा आप कहते हैं, वैसा ही हम करेंगे।' मैंने पुरोहितों को तत्काल बुलाया, और उन लोगों को यह शपथ खिलाई कि वे अपने वचन के अनुसार कार्य करेंगे। [13]फिर मैंने अपना पल्ला झाड़कर कहा, 'जो व्यक्ति इस वचन का पालन नहीं करेगा, उसको परमेश्वर इसी प्रकार झाड़ेगा। परमेश्वर उस व्यक्ति को उसके मकान, और उसकी धन-सम्पत्ति से झाड़ देगा, और उसको सब वस्तुओं से वंचित कर देगा।' आम-सभा में उपस्थित सब लोगों ने कहा, 'आमेन, ऐसा ही हो!' सभा ने परमेश्वर की स्तुति की।

धनी यहूदियों और सरकारी अफसरों ने अपने वचन को पूरा किया।

नहेम्याह : एक उदार प्रशासक

14 इसके अतिरिक्त जिस दिन से मैं यहूदा प्रदेश का राज्यपाल नियुक्त किया गया, उस दिन से सम्राट अर्तक्षत्र के शासन-काल के बीसवें वर्ष से बत्तीसवें वर्ष तक अर्थात् बारह वर्ष तक मैंने और मेरे रिश्तेदारों ने राज्यपाल का भत्ता, जो अन्न के रूप में दिया जाता था, ग्रहण नहीं किया। [15]मुझसे पहले के राज्यपालों ने जनता पर भारी बोझ डाला था। वे जनता से प्रति व्यक्ति कर के रूप में चांदी के चालीस सिक्कों के अतिरिक्त भोजन-वस्तु और अंगूररस भी लेते थे। इतना ही नहीं, उनके सरकारी कर्मचारी भी जनता पर अधिकार जताया करते थे। परन्तु मैं ऐसा नहीं करता था, क्योंकि मैं परमेश्वर से डरता था। [16]मैं शहरपनाह के निर्माण-कार्य में लगा रहा, और मैंने भूमि भी नहीं खरीदी। मेरे सेवक भी निर्माण-कार्य में हाथ बंटाने के लिए वहां एकत्र होते थे। [17]मेरे साथ दस्तरख्वान* पर एक सौ पचास यहूदी और सरकारी अफसर भोजन करते थे। इनके अतिरिक्त आसपास रहनेवाली कौमों के लोग भी मेरे साथ भोजन करते थे, जब वे हमसे मिलने आते थे। [18]प्रतिदिन के भोजन में एक बैल, छ: मोटी-ताजी भेड़ों और बकरियों का मांस पकाया जाता था। मेरे लिए चिड़ियों का मांस भी तैयार किया जाता था। इनके अतिरिक्त हर दसवें दिन जितने अंगूर-रस की जरूरत पड़ती थी, उतने का प्रबन्ध मैं ही करता था। इतना व्यय होने पर भी मैंने राज्यपाल का भत्ता ग्रहण नहीं किया; क्योंकि जनता पर बेगार का बोझ भारी था।

19 हे मेरे परमेश्वर, जो काम मैंने इन लोगों के लिए किया है, उसको तू मेरी भलाई के लिए स्मरण रखना।

विरोधियों का षड्यन्त्र

6 जब सनबल्लत, तोबियाह और अरब-निवासी गेशेम तथा हमारे अन्य शत्रुओं को खबर मिली कि मैंने शहरपनाह बना ली है, और कोई दरार नहीं बची है (यद्यपि अब तक मैंने प्रवेश-द्वारों में दरवाजे नहीं लगाए थे), [2]तब सनबल्लत और गेशेम ने मुझे यह सन्देश भेजा, 'आइए, हम ओनो घाटी के हक्केपीरीम गांव में भेंट करें।' मैं जानता था कि उनका उद्देश्य मुझे हानि पहुँचाने का है। [3]अतएव मैंने दूतों के हाथ से यह उत्तर भेजा, 'मैं एक महत्वपूर्ण काम में व्यस्त हूं। अत: मैं नहीं आ सकता। यदि मैं अपना यह काम छोड़कर तुमसे भेंट करने जाऊंगा, तो मेरा यह महत्वपूर्ण काम रुक जाएगा।' [4]उन्होंने चार बार मुझे अपना यही सन्देश भेजा, और मैंने भी उन्हें यही उत्तर दिया। [5]तब सनबल्लत ने पांचवीं बार अपने सेवक को भेजा। उसके हाथ में एक खुली चिट्ठी थी। [6]उसमें यह लिखा था : 'आसपास की कौमों में इस बात की चर्चा हो रही है, और गेशेम भी यह कह रहे हैं, कि आप और यहूदी

* अर्थात् भूमि पर बिछाई जानेवाली चादर, जिस पर बैठकर भोजन करते थे।

5 : 12 यिर 34 : 8-9 5 : 13 प्रे 13 : 51

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कौम विद्रोह करने का षड्यन्त्र रच रहे हैं, क्योंकि आप इसी उद्देश्य से शहरपनाह का निर्माण कर रहे हैं। मुझे खबर मिली है कि आप यहूदी कौम के राजा भी बनना चाहते हैं।
7आपने अपने विषय में यरूशलेम में प्रचार करने के लिए नबियों को नियुक्त किया है, जो यह घोषित करते हैं, "यहूदा प्रदेश में एक राजा उदित हुआ है।" इन बातों की खबर महाराज अर्तक्षत्र को अवश्य मिलेगी। इसीलिए आप आइए, हम परस्पर परामर्श करेंगे।'

8 तब मैंने सनबल्लत को यह उत्तर भेजा : 'ये बातें जो तुम कह रहे हो, कभी नहीं हुईं। ये तुम्हारी मनगढ़न्त बातें हैं।'
9वस्तुत: वे हमें डराना चाहते थे। वे यह सोचते थे : 'डर के मारे उनके हाथ-पैर ठण्डे पड़ जायेंगे और निर्माण-कार्य बन्द हो जाएगा।' पर, हे परमेश्वर, तू मेरे हाथ मजबूत कर!*

मैं दुगुने उत्साह से काम करने लगा

10 मैं नबी शमायाह के घर गया। वह दलायाह का पुत्र और महेतबेल का पौत्र था। वह घर के भीतर एकान्तवास कर+ रहा था। उसने मुझसे कहा, 'आइए, हम परमेश्वर के गृह में, मन्दिर के अन्दर मिलें। तब हम मन्दिर के द्वार भीतर से बन्द कर लेंगे; क्योंकि आपके शत्रु आपकी हत्या करने के लिए आ रहे हैं। वे रात के समय आपकी हत्या करेंगे।'
11किन्तु मैंने कहा, 'क्या मुझ-जैसे व्यक्ति का इस प्रकार भागना उचित है? क्या मुझ-जैसे व्यक्ति को अपना प्राण बचाने के लिए मन्दिर में प्रवेश करना चाहिए? कदापि नहीं! मैं मन्दिर में नहीं जाऊंगा।'

12 तब बात मेरी समझ में आई कि परमेश्वर ने शमायाह को नबूवत के लिए नहीं भेजा था। तोबियाह और सनबल्लत ने उसको रुपयों से खरीद लिया था, इसलिए उसने मेरे विरुद्ध झूठी नबूवत की।
13वह इसलिए खरीदा गया कि वह मुझे भयभीत करे, जिससे मैं मन्दिर में प्रवेश करूं, और यों परमेश्वर के प्रति पाप करूं। तब वे मेरा मजाक उड़ाने के लिए मुझे अपमानजनक नाम देते।

14 हे मेरे परमेश्वर, तोबियाह और सनबल्लत के इन दुष्कर्मों को मत भूलना। इनके अतिरिक्त नबिया नोअद्याह तथा अन्य नबियों को भी मत भूलना। ये मुझे डराना चाहते थे।

15 इस प्रकार एलूल महीने के पचीसवें दिन को अर्थात् बावन दिन में शहरपनाह बनकर तैयार हो गई।
16हमारे आसपास रहनेवाली कौमें, हमारे सब शत्रु यह सुनकर भयभीत हो गए। वे स्वयं को अपनी नजर में तुच्छ समझने लगे। उन्हें मालूम हो गया कि हमारे परमेश्वर की सहायता से ही यह निर्माण-कार्य पूरा हुआ है।

17 उन दिनों में यहूदा प्रदेश के धनी यहूदियों ने तोबियाह को अनेक पत्र लिखे, और तोबियाह ने उनको उनके पत्रों के उत्तर भी दिए।
18इसका कारण यह था : यहूदा प्रदेश के अनेक यहूदियों ने तोबियाह को सहयोग देने की प्रतिज्ञा की थी; क्योंकि वह शकन्याह बेन-आरह का दामाद था, और उसके पुत्र यहोहानान ने मशुल्लाम बेन-बेरेक्याह की पुत्री से विवाह किया था।
19वे मेरी उपस्थिति में उसके भले कामों की चर्चा करते थे, और मेरी बातों की खबर उसको देते थे। तोबियाह मुझे डराने के लिए चिट्ठियाँ भेजा करता था।

नगर की रक्षा का प्रबंध

7 शहरपनाह का निर्माण हो चुका था, और मैं उसके प्रवेश-द्वारों में दरवाजे भी लगा चुका था। द्वारपालों, मन्दिर के गायकों और उप-पुरोहितों की नियुक्ति की जा चुकी थी।
2अब मैंने अपने भाई हनानी और राजगढ़ के प्रशासक हनन्याह के हाथ में यरूशलेम नगर का प्रबन्ध सौंप दिया। हनन्याह अनेक लोगों से कहीं अधिक विश्वसनीय और परमेश्वर-भक्त व्यक्ति था।
3मैंने उन्हें आदेश दिया, 'जब तक धूप तेज न हो जाए तब तक यरूशलेम नगर के प्रवेश-द्वार मत खोलना, और जब पहरेदार

---

* कुछ अन्य अनुवादों में, 'पर मैं अपने हाथ मजबूत करूंगा!' +अथवा, 'बंद, रुका हुआ'।

6 :14 यिर 23 : 11; यहेज 13 : 17 **6 : 16** भज 126 : 2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पहरा देते होंगे तब ही उनको बन्द करना तथा
उनकी अर्गलाएँ लगा देना। यरूशलेम के
निवासियों में से ही पहरेदार नियुक्त करना। वे
अपने-अपने घर के सामने पहरा देंगे।'

4 नगर बड़ा और फैला हुआ था, पर उसमें
रहनेवाले लोग कम थे। अब तक रहने के लिए
मकान नहीं बने थे।

5 तब परमेश्वर ने मेरे हृदय में यह विचार
उत्पन्न किया कि मैं प्रतिष्ठित नागरिकों, सरकारी
अफसरों और जनता की गणना उनके वंश-
क्रम में तैयार करूं। मुझे उन लोगों का
वंशावली-विवरण-पत्र मिल गया, जो निष्कासन
से लौटने वालों में पहले लौट आए थे। उसमें
मुझे यों लिखा हुआ मिला :

स्वदेश लौटने वाले यहूदियों की सूची

6 'जिन यहूदियों को बेबीलोन देश का राजा
नबूकदनेस्सर बन्दी बनाकर बेबीलोन ले गया
था, उनमें से साम्राज्य के अधीन यहूदा प्रदेश के
ये लोग निष्कासन-मुक्त हो स्वदेश लौटे। वे
यरूशलेम तथा यहूदा प्रदेश के अपने-अपने
नगर को गए। [7]जरूब्बाबेल, येशुअ, नहेम्याह,
अजर्याह, राम्या, नहमानी, मोरदकय, बिलशान,
मिसपेरेत, बिग्वई, नहूम और बानाह ने उनका
नेतृत्व किया।

इस्राएली कौम में गोत्र के अनुसार पुरुषों की
संख्या इस प्रकार थी : [8]परओश के वंशज दो
हजार एक सौ बहत्तर, [9]शपत्याह के वंशज तीन
सौ बहत्तर, [10]आरह के वंशज छः सौ बावन,
[11]पहत्मोआब के पुत्र येशुअ और योआब के
वंशज दो हजार आठ सौ अठारह, [12]एलाम के
वंशज बारह सौ चौवन, [13]जत्तू के वंशज आठ
सौ पैंतालीस, [14]जक्कई के वंशज सात सौ
साठ, [15]बिन्नूई के वंशज छः सौ अड़तालीस,
[16]बेबई के वंशज छः सौ अट्ठाईस। [17]अजगाद
के वंशज दो हजार तीन सौ बाईस, [18]अदोनीकाम
के वंशज छः सौ सड़सठ, [19]बिग्वई के वंशज
दो हजार सड़सठ, [20]आदीन के वंशज छः सौ
पचपन, [21]हिजकियाह के अर्थात् आतेर के
वंशज अट्ठानबे, [22]हाशूम के वंशज तीन सौ
अट्ठाईस, [23]बेसई के वंशज तीन सौ चौबीस,
[24]हारीप के वंशज एक सौ बारह, [25]गिबओन
के रहनेवाले पंचानबे पुरुष, [26]बेतलेहम और
नतोपाह नगरों के निवासी एक सौ अठासी,
[27]अनातोत नगर के रहनेवाले एक सौ अट्ठाईस,
[28]बेत-अज्मावेत के रहनेवाले बयालीस पुरुष,
[29]किर्यत-यआरीम, कपीरा और बेअरोत नगरों
के रहनेवाले सात सौ तैंतालीस, [30]रामाह और
गेबा नगरों के रहनेवाले छः सौ इक्कीस,
[31]मिकमास नगर के रहनेवाले एक सौ बाईस,
[32] बेतएल और ऐ नगरों के रहनेवाले एक सौ
तेईस पुरुष, [33]नबो नगर के रहनेवाले बावन
पुरुष, [34]दूसरे एलाम नगर के रहनेवाले बारह
सौ चौवन, [35]हारीम नगर के रहनेवाले तीन सौ
बीस, [36] यरीहो नगर के रहनेवाले तीन सौ
पैंतालीस पुरुष, [37]लोद, हादीद और ओनी
नगरों के रहनेवाले सात सौ इक्कीस, [38]सनाआ
नगर के रहनेवाले तीन हजार नौ सौ तीस।

39 पुरोहित : येशुअ के घराने के यदायाह
के वंशज नौ सौ तिहत्तर, [40]इम्मेर के वंशज एक
हजार बावन, [41]पशहूर के वंशज बारह सौ
सैंतालीस, [42]हारीम के वंशज एक हजार सत्रह।

43 उपपुरोहित : येशुअ, अर्थात् होदव्याह
के वंशजों में कदमिएल के वंशज चौहत्तर।

44 मन्दिर के गायक: आसाफ के वंशज एक
सौ अड़तालीस।

45 मन्दिर के द्वारपाल : शल्लूम, आतेर,
तल्मोन, अक्कूब, हतीता, शोबई के वंशज। ये
सब मिलकर एक सौ अड़तीस थे।

46-56 मन्दिर के सेवक : सीहा, हसूपा,
तब्बाओत, केरोस, सीअहा, पादोन, लबाना,
हगबा, शलमई, हानान, गिद्देल, गहर, रायाह,
रसीन, नकोदा, गज्जाम, उज्जा, पासेह, बेसई,
मूनीम, नपीसीम, बकबूक, हकूपा, हर्हूर,
बसलीत, महीदा, हर्शा, बर्कोस, सीसरा, तेमह,
नसीह और हतीपा के वंशज थे।

57-59 सुलेमान के राजकीय नौकर-
चाकरों के वंशज : सोतई, सोपेरेत, परीदा,
याला, दर्कोन, गिद्देल, शपत्याह, हत्तील,

---

7 : 6-73 एज्रा 2 : 1-70

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पोकरेत-हसबायीम और आमीन के वंशज थे।
60 इस प्रकार मन्दिर के सेवकों की और
सुलेमान के राजकीय नौकर-चाकरों के वंशजों
की संख्या तीन सौ बानबे थी।
61 ये पुरुष तेल्मेलह, तेलहर्शा, करूब,
अद्दोन और इम्मेर नगरों से आए थे, पर वे
अपने पितृकुलों अथवा पूर्वजों के नाम न बता
सके कि वे इस्राएली कौम के हैं : 62दलायाह,
तोबियाह और नकोदा के वंशज : ये सब
मिलकर छ: सौ बयालीस थे। 63ये पुरोहित के
वंशज थे : हबायाह, हक्कोस और बर्जिल्लई
के वंशज (बर्जिल्लई ने गिलआद नगर के
निवासी बर्जिल्लई की पुत्री से विवाह किया था
और उनका नाम अपना लिया था)। 64इन लोगों
ने वंशावली के सूचीपत्र में अपना-अपना नाम
ढूंढ़ा, पर वह न मिला। अत: उन्हें अशुद्ध
घोषित किया गया, और वे पुरोहित-पद से हटा
दिए गए। 65राज्यपाल ने उनसे कहा,'जब तक
पुरोहित ऊरीम और तुम्मीम के माध्यम से
परमेश्वर की इच्छा न जान ले तब तक आप
लोग मन्दिर का परम पवित्र भोजन नहीं खा
सकेंगे।'
66 समस्त इस्राएली जन-समुदाय की
संख्या बयालीस हजार तीन सौ साठ थी।
67इनके अतिरिक्त उनके नौकर-चाकरों की
संख्या सात हजार तीन सौ सैंतीस तथा मन्दिर
के गायक-गायिकाओं की संख्या दो सौ
पैंतालीस थी। 68उनके पास सात सौ छत्तीस
घोड़े, दो सौ पैंतालीस खच्चर, 69चार सौ पैंतीस
ऊंट, और छ: हजार सात सौ बीस गधे थे।

पितृकुलों के मुखियों की भेंट

70 इस्राएली पितृकुलों के मुखियों ने
निर्माण-कार्य के लिए भेंट चढ़ाई। राज्यपाल
ने एक हजार स्वर्ण मुद्राएं, पचास पात्र और
पुरोहितों के लिए पांच सौ तीस पोशाकें
मन्दिर के कोष में दीं। 71इस्राएली पितृकुलों
के कुछ मुखियों ने निर्माण-कार्य के लिए
बीस हजार स्वर्ण मुद्राएँ, और दो हजार दो सौ
चांदी के सिक्के मन्दिर के कोष में दिए। 72जो
भेंट शेष इस्राएली जनता ने चढ़ाई, वह इस
प्रकार थी: बीस हजार स्वर्ण मुद्राएँ, दो हजार
चांदी के सिक्के और पुरोहितों के लिए सड़सठ
पोशाकें।
73 इस प्रकार पुरोहित, उपपुरोहित और
अन्य कुछ लोग यरूशलेम नगर में रहने
लगे।* मन्दिर के द्वारपाल, गायक और सेवक
अपनी-अपनी बस्ती में बस गए। सब इस्राएली
अपने-अपने नगरों में रहने लगे।

एज्रा द्वारा व्यवस्था-ग्रन्थ का पाठ

जब सातवां महीना आरम्भ हुआ तब तक
इस्राएली लोग अपने-अपने पैतृक नगर में बस
चुके थे।
8 वे संगठित होकर 'जल-द्वार' के सम्मुख
चौक में एकत्र हुए। उन्होंने शास्त्री एज्रा से
निवेदन किया कि वह मूसा के व्यवस्था-ग्रन्थ
को लाए जो प्रभु ने इस्राएली कौम को प्रदान
किया है।
2 अत: पुरोहित एज्रा ने सातवें महीने के
प्रथम दिन धर्म-सभा के सम्मुख व्यवस्था-
ग्रन्थ प्रस्तुत किया। इस धर्म-सभा में स्त्री-
पुरुष तथा वे सब लोग उपस्थित थे जो पाठ को
सुनकर समझ सकते थे। 3उसने जल-द्वार के
सम्मुख चौक में स्त्री-पुरुषों तथा उन सब लोगों
के सामने व्यवस्था-ग्रन्थ को पढ़ना आरम्भ
किया जो सुन कर समझ सकते थे। एज्रा सबेरे
से दोपहर तक उसको पढ़ता रहा। सब लोगों
के कान व्यवस्था-ग्रन्थ के पाठ की ओर लगे
थे।
4 शास्त्री एज्रा लकड़ी के मंच पर खड़ा था।
यह मंच इसी उद्देश्य से बनाया गया था। एज्रा
की दाहिनी ओर मत्तित्याह, शेमा, अनायाह,
ऊरियाह, हिल्कियाह और मासेयाह थे, और
बायीं ओर पदायाह, मीशाएल, मल्कियाह,
हाशूम, हश्बद्दाना, जकर्याह और मशुल्लाम
थे।
5 एज्रा ने सबके सामने व्यवस्था-ग्रन्थ को

* मूल अस्पष्ट।

7 : 65 नि 28 : 30 **8 : 4** लू 4 : 17

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

खोला, क्योंकि वह लोगों से ऊँचे स्थान पर
खड़ा था। जब एज्रा ने व्यवस्था-ग्रन्थ को
खोला, तब सब लोग खड़े हो गए। 6एज्रा ने
महान प्रभु परमेश्वर को धन्य कहा, और उसके
उत्तर में सब लोग आकाश की ओर हाथ
उठाकर बोले, 'आमेन! आमेन!' उन्होंने सिर
झुकाया, और भूमि पर साष्टांग लेट कर प्रभु की
वन्दना की। 7उपपुरोहित येशुअ, बानी, शेरेब्याह,
यामीन, अक्कूब, शब्बतई, होदियाह, मासेयाह,
कलीता, अजर्याह, योजाबाद, हानान और
पलायाह ने लोगों को धर्म-व्यवस्था की बातें
समझाने में सहायता की। लोग अपने-अपने
स्थान पर खड़े रहे। 8उन्होंने ग्रन्थ से, परमेश्वर
की व्यवस्था से स्पष्ट स्वर में पाठ पढ़ा** और
उसकी व्याख्या की। लोगों ने पाठ को समझ
लिया।

9 जब लोगों ने व्यवस्था के शब्द सुने तब
वे रोने लगे। राज्यपाल नहेम्याह, पुरोहित एवं
शास्त्री एज्रा तथा समाज के धर्म-शिक्षक
उपपुरोहितों ने समस्त इस्राएली जन-समूह से
कहा, 'आज का दिन हमारे प्रभु परमेश्वर के
लिए पवित्र है; इसलिए शोक मत मनाओ, और
न रोओ।' 10फिर उसने उनसे कहा, 'अब
जाओ, अच्छे से अच्छा भोजन खाओ, और मधु
तथा मीठा रस पीओ। उन गरीबों को भोजन
खिलाओ, जिनके घर में चूल्हा भी नहीं जलता
है, क्योंकि आज का दिन हमारे प्रभु के लिए
पवित्र है। उदास मत हो; क्योंकि प्रभु का
आनन्द तुम्हारी शक्ति है।'

11 उपपुरोहितों ने यह कहकर लोगों को
चुप कराया, 'शान्त रहो, उदास मत हो, क्योंकि
आज का दिन पवित्र है।' 12अत: लोग घर लौट
गए। उन्होंने खाया-पीया, और गरीब लोगों को
भोजन खिलाया। यों उन्होंने बड़ा आनन्द
मनाया; क्योंकि जो बात उनसे कही गई थी,
उसको उन्होंने समझ लिया था।

मण्डपों का पर्व

13 दूसरे दिन समस्त इस्राएली पितृकुलों के
मुखिया व्यवस्था-ग्रन्थ के वचनों का अध्ययन
करने के लिए पुरोहितों और उपपुरोहितों के
साथ शास्त्री एज्रा के पास आए। 14वहाँ उन्हें
व्यवस्था-ग्रन्थ में यह लिखा हुआ मिला : 'प्रभु
ने मूसा के द्वारा इस्राएली कौम को यह आज्ञा
दी थी कि वे सातवें महीने के पर्व के अवसर
पर मण्डपों में रहेंगे। 15वे यरूशलेम और सब
नगरों में यह घोषणा घोषित करेंगे :
"पहाड़ों-पहाड़ियों पर जाओ और वहाँ से
जैतून वृक्षों, जंगली जैतून वृक्षों, मेहंदी, खजूर
और पत्तेवाले वृक्षों से शाखाएँ काटकर लाओ,
और उनसे मण्डप बनाओ, जैसा कि व्यवस्था-
ग्रन्थ में लिखा है।" '

16 अत: सब लोग अपने घर से निकलकर
पहाड़ियों पर गए, और वहाँ से शाखाएँ ले
आए। उन्होंने शाखाओं से अपने घर की छत
पर, अपने घर के आंगनों में, परमेश्वर के भवन
के आंगनों में, 'जल-द्वार' के चौक में, 'एफ्रइम
द्वार' के चौक में मण्डप बनाए। 17इस प्रकार
समस्त धर्मसभा ने, अर्थात् उन सब लोगों ने,
जो निष्कासन से लौटे थे, मण्डप बनाए और वे
उनमें पर्व मनाने के लिए रहने लगे। यहोशुअ
बेन-नून के समय से अब तक इस्राएलियों ने
इस प्रकार पर्व नहीं मनाया था। अत: लोगों ने
खूब उत्साह से यह पर्व मनाया।

18 पर्व के पहले दिन से अन्तिम दिन
तक एज्रा ने परमेश्वर के व्यवस्था-ग्रन्थ का
पाठ किया। लोगों ने सात दिन तक पर्व मनाया,
और धर्म-विधि के अनुसार उन्होंने पर्व के
आठवें दिन धर्म-महासम्मेलन का आयोजन
किया।

एज्रा का इस्राएली समाज की ओर से पाप स्वीकार करना

9 इसी महीने के चौबीसवें दिन इस्राएली
समाज ने सामूहिक उपवास किया। उन्होंने
प्रायश्चित प्रकट करने के लिए टाट के वस्त्र
पहिने और सिर पर राख डाली, और वे एक
स्थान पर एकत्र हुए। 2उन्होंने उस देश की अन्य

** अथवा 'पाठ का अनुवाद कर सुनाया'।

8 : 6 1 कुर 14 : 16 8 : 8 प्रे 8 : 30-35 8 : 10 लू 11 : 41 8 : 14 लेव 23 : 33 9 : 2 एज्रा 10 : 11

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जातियों से स्वयं को अलग किया, और खड़े
होकर अपने पूर्वजों के अधर्म और अपने
पापों को स्वीकार किया। [3]उन्होंने अपने-अपने
स्थान पर खड़े होकर प्रभु परमेश्वर के व्यवस्था-
ग्रन्थ का पाठ एक पहर तक किया। दिन के
दूसरे पहर तक वे पाप स्वीकार करते और प्रभु
परमेश्वर की आराधना करते रहे।

4 उपपुरोहित येशुअ, बानी, कदमीएल,
शबन्याह, बुन्नी, शेरेब्याह, बानी और केनानी
'लेवियों की सीढ़ी' पर खड़े हुए, और उन्होंने
उच्च स्वर में प्रभु परमेश्वर की दुहाई दी।
[5]तत्पश्चात् उपपुरोहित येशुअ, कदमीएल,
बानी, हशबन्याह, शेरेब्याह, होदियाह, शबन्याह
और पतहयाह ने कहा, 'खड़े हो, और अपने
प्रभु परमेश्वर को अनादि काल से अनंत काल
तक धन्य कहो:

हे प्रभु, तेरे महिमामय नाम को
जो सब प्रकार की प्रशंसा और स्तुति से परे है,
हम धन्य कहते हैं।'

6 एज्रा ने कहा,

'प्रभु, केवल तू ही प्रभु है!
तूने ही आकाश को,
सर्वोच्च आकाश को,
नक्षत्रों और तारों को बनाया है।
तूने पृथ्वी और सागर को,
तथा उनमें जो कुछ है,
उन-सब को रचा है।
तू उनका पालन-पोषण भी करता है।
प्रभु, स्वर्ग की सेना तेरी वन्दना करती है।

7 'प्रभु परमेश्वर, तूने ही अब्राहम को
चुना था, और उनको कसदी कौम के नगर ऊर
से निकालकर एक नया नाम "अब्राहम"
प्रदान किया था। [8]तूने उनके हृदय को अपने
प्रति विश्वासी पाया था, अतः उनसे विधान
स्थापित किया, कि तू उनके वंशजों को
कनानी, हित्ती, एमोरी, परिज्जी, यबूसी और
गिर्गाशी कौमों का देश प्रदान करेगा। प्रभु,
तूने अपना यह वचन पूरा किया; क्योंकि तू धर्मी
है।

9 'प्रभु, तूने मिस्र देश में हमारे पूर्वजों के
दु:ख-कष्ट देखे थे; तूने लाल-सागर के तट पर
उनको दुहाई सुनी थी। [10]और तब तूने फरओ,
और उसके कर्मचारियों, तथा मिस्र देश के
निवासियों के विरुद्ध आश्चर्यपूर्ण कार्य किए
और चिह्न दिखाए थे; क्योंकि तू जानता था कि
उन्होंने हमारे पूर्वजों से असभ्य व्यवहार किया
था। यों तूने अपना नाम प्रतिष्ठित किया, जो
आज तक प्रतिष्ठित है।

11 'तूने हमारे पूर्वजों के सामने लाल सागर
को दो भागों में विभक्त किया, और वे सागर
के मध्य से गुजरकर सूखी भूमि पर पहुँच गए।
पर तूने उनका पीछा करनेवालों को सागर की
अतल गहराई में फेंक दिया, जैसे पत्थर को
कोई महासागर में फेंकता है!

12 'तू दिन के समय उनकी अगुवाई मेघ-
स्तम्भ के रूप में करता था; रात के समय
अग्नि-स्तम्भ के द्वारा तू उनका मार्ग आलोकित
करता था, जिससे वे सही मार्ग को पहचानकर
उस पर चल सकें।

13 'प्रभु, तू सीनय पर्वत पर उतरा था, और
तूने हमारे पूर्वजों से स्वर्ग से वार्तालाप किया
था। तब तूने उन्हें उचित न्याय-सिद्धान्त, सच्चे
धर्म-नियम, भली सविधियां और अच्छी आज्ञाएँ
प्रदान की थीं। [14]तूने उन पर अपने पवित्र
विश्राम-दिवस का ज्ञान प्रकट किया था कि वे
उसको मानें; तूने उनको आदेश दिया था कि जो
आज्ञाएं, संविधियां और व्यवस्था तूने अपने
सेवक मूसा के द्वारा उन्हें सौंपी हैं, वे उनका
पालन करें।

15 'तूने उनकी भूख मिटाने के लिए
आकाश से रोटी बरसाई थी; और उनकी प्यास
बुझाने के लिए तूने चट्टान से पानी बहाया था!
तूने उनसे कहा था, कि वे जाएं, और उस देश
पर कब्जा कर लें, जिसको देने की प्रतिज्ञा तूने
उनसे की थी।

16 'पर तेरे सेवक मूसा के समकालीन
लोगों ने, हमारे पूर्वजों ने तेरे प्रति ढिठाई की;
उन्होंने अपनी गरदन टेढ़ी कर ली, और तेरी

9 : 7 उत 11 : 31 **9 : 11** नि 14 : 21-29 **9 : 12** नि 13 : 21 **9 : 14** नि 20 : 8 **9 : 15** नि 16 : 14; 17 : 1-7

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
आज्ञाओं का पालन नहीं किया।
17उन्होंने तेरी आज्ञाओं की अवहेलना की; जो आश्चर्यपूर्ण कार्य तूने उनके मध्य किए थे, उन्होंने उनकी उपेक्षा कर दी। वे ढीठ बन गए, उन्होंने तेरे नेतृत्व के प्रति विद्रोह कर दिया; और मिस्र की गुलामी में लौटने के उद्देश्य से एक नेता को नियुक्त किया। पर परमेश्वर, तू तो सदा क्षमाशील है, अनुग्राही और दयालु, विलम्ब से क्रोध करनेवाला और करुणासागर है। तूने उनको नहीं त्यागा।
18उन्होंने अपने लिए बछड़े की मूर्ति ढाली, और कहा, "यह है हमारा ईश्वर, जो हमें मिस्र देश से छुड़ाकर लाया है।" और यों तेरी निन्दा की।

19 'फिर भी तूने अपने अपार दयामय स्वभाव के कारण उन्हें निर्जन प्रदेश में नहीं त्यागा। जो मेघ-स्तम्भ दिन में उनका मार्ग-दर्शन करता था, और जो अग्नि-स्तम्भ रात में उनका मार्ग आलोकित करता था कि वे सही मार्ग पहचान कर उस पर चल सकें, तूने दोनों को उनसे दूर नहीं किया।
20तूने उन्हें सिखाने के लिए अपना सद् आत्मा उन्हें दिया। तूने उनके मुंह से अपना 'मन्ना' नहीं छीना, और उनकी प्यास बुझाने के लिए तू उन्हें पानी देता रहा।
21तू चालीस वर्ष तक निर्जन प्रदेश में उन्हें खिलाता-पिलाता रहा। उन्हें किसी वस्तु का अभाव नहीं हुआ। न तो उनके कपड़े फटे, और न उनके पैर सूजे।

22 'तूने मार्ग में अनेक राज्य और जातियां उनके वश में कीं, और सीमावर्ती राष्ट्रों पर उनका अधिकार कर दिया। अतः उन्होंने हेश्बोन देश के राजा सीहोन और बाशान देश के राजा ओग को पराजित कर उनके देशों पर अधिकार कर लिया।

23 'निस्सन्देह तूने अपने वचन के अनुसार आकाश के तारों के सदृश उनके वंश को असंख्य बनाया; और जिस देश के विषय में उनके पूर्वजों से तूने कहा था कि वे उसमें प्रवेश कर उस पर अधिकार करेंगे, तूने उनको उस देश में पहुँचा दिया।
24उनके वंशजों ने वहां प्रवेश किया, और उस पर अधिकार कर लिया। तूने निस्सन्देह उस देश के निवासी कनानियों को उनके अधीन कर दिया। तूने उस देश के राजाओं और प्रजा को उनके हाथ में सौंप दिया कि वे उनके साथ मनचाहा व्यवहार करें।
25उन्होंने कनान देश के किलाबंद नगरों पर, और उपजाऊ भूमि पर कब्जा कर लिया; उन्होंने उनके मकानों पर अधिकार कर लिया, जो धन-धान्य से भरे थे, जहाँ खुदे हुए हौद, अंगूर और जैतून के उद्यान थे; जहाँ असंख्य फलदायक वृक्ष थे। अतः उन्हें खाने के लिए भरपूर भोजन मिला, और वे खा-खाकर मुटा गए। वे तेरी अपार भलाई के कारण मजा करने लगे।

26 'फिर भी उन्होंने तेरे धर्म-नियमों का उल्लंघन किया; और उन्होंने तेरे प्रति विद्रोह किया। उन्होंने तेरी व्यवस्था को कूड़े में डाल दिया, और उन नबियों को मार डाला जो उन्हें सावधान करते थे, और तेरे पास लौटने का सन्देश देते थे। यों उन्होंने तेरी घोर निन्दा की।
27अतः तूने हमारे पूर्वजों को उनके शत्रुओं के हाथ में सौंप दिया, जिन्होंने उनको दुःख-कष्ट दिए। पर संकट के समय उन्होंने तुझे पुकारा, और तूने स्वर्ग में उनकी पुकार सुनी। तूने अपने अपार दयामय स्वभाव के कारण उनको छुड़ानेवाले मुक्तिदाता भेजे, जिन्होंने शत्रुओं के हाथ से उनको छुड़ाया।
28जब उनको बाहरी शत्रु से चैन मिलता था, वे तेरे प्रति फिर दुष्कर्म करते थे; इसलिए तू उनको उनके शत्रुओं के हाथ में छोड़ देता था कि उनके शत्रु उन पर शासन करें। पर जब वे तेरी ओर लौटते, और तेरी दुहाई देते थे तब तू स्वर्ग से उनकी दुहाई सुनता था; अनेक बार तूने अपने दयामय स्वभाव के कारण उनके शत्रुओं के हाथ से उन्हें मुक्त किया था।
29तूने उन्हें चेतावनी दी थी कि वे तेरी धर्म-व्यवस्था की ओर उन्मुख हों। पर उन्होंने तेरे प्रति धृष्ट व्यवहार किया, और तेरी

---

9 : 17 गण 14 : 4; नि 34 : 6 **9 : 18** नि 32 : 1-4 **9 : 21** व्य 8 : 4 **9 : 25** व्य 6 : 11; 32:15 **9 : 29** लेव 18 : 5

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आज्ञाओं का पालन नहीं किया। जिन न्याय-सिद्धान्तों का पालन करने से मनुष्य को जीवन प्राप्त होता है, उनका उल्लंघन कर उन्होंने पाप किया। उन न्याय-सिद्धान्तों के विरुद्ध हठवादी रुख अपनाया :* उनको मानने से इन्कार कर दिया।

30 'तू अनेक वर्षों तक उनकी हठधर्मिता को सहता रहा; तूने अपने आत्मा के द्वारा, अपने नबियों के माध्यम से उनको चेतावनी दी; फिर भी उन्होंने उन पर कान नहीं दिया। इसलिए तूने अनेक देशों की कौमों के हाथों में उनको सौंप
दिया। 31फिर भी तूने अपने अपार करुणामय स्वभाव के कारण उनका पूर्ण संहार नहीं किया, और न ही उनको त्यागा; क्योंकि तू कृपालु और दयालु परमेश्वर है।

32 'अब हे हमारे परमेश्वर, तू महान, शक्तिशाली और आतंकमय परमेश्वर, अपने विधान का पालन करनेवाला, और करुणा सागर है! जो महा संकट के बादल हम पर, हमारे राजाओं, शासकों, पुरोहितों, नबियों और पूर्वजों पर, तेरे समस्त निज लोगों पर असीरियाई राजाओं के समय से आज तक हम पर बरसते
आए हैं, उन्हें अपनी दृष्टि में कम न जान! 33तो
भी हम पर जो कष्ट आए हैं, उनके विषय में तेरा व्यवहार न्यायसंगत ही था। तूने हमारे साथ सत्य के अनुरूप व्यवहार किया, फिर भी हम
दुष्टतापूर्ण व्यवहार करते रहे। 34हमारे राजाओं,
शासकों, पुरोहितों और हमारे पूर्वजों ने तेरी व्यवस्था का पालन नहीं किया; जो आज्ञाएं और चेतावनियां तूने उनको दी थीं, उन पर उन्होंने
ध्यान नहीं दिया। 35जो उपजाऊ विस्तृत देश
तूने अपनी अपार भलाई के कारण उन्हें प्रदान किया था, उनके सम्मुख प्रस्तुत किया था, उन्होंने उसमें, अपने राज्य में भी तेरी सेवा नहीं की; वे अपने दुष्कर्मों को छोड़कर तेरी ओर उन्मुख नहीं हुए।

36 'देख, हम आज तक दूसरों के गुलाम हैं। उस देश में हम गुलाम हैं, जो तूने हमारे पूर्वजों को उसका धन-धान्य, उसका फल उपभोग
करने के लिए दिया था। 37उसकी सर्वोत्तम उपज
उन विदेशी राजाओं को प्राप्त हो रही है, जिनको तूने हमारे पाप के दण्डस्वरूप हम पर नियुक्त किया है। वे अपनी इच्छा के अनुसार हमारे शरीर और पशुओं पर अधिकार जताते हैं। प्रभु, हम बड़े संकट में हैं!

प्रसंविदा के हस्ताक्षरकर्ता

38** 'इन सब बातों के कारण हम तेरे साथ सुदृढ़ व्यवस्थान स्थापित करते हैं।*** हम उसको लिख देते हैं; और उस पर हमारे शासक, उपपुरोहित और पुरोहित हस्ताक्षर करेंगे+।'

10 जिन व्यक्तियों ने हस्ताक्षर किए, वे ये हैं : राज्यपाल नहेम्याह बेन-हकल्याह और सिदकियाह।

2 ये पुरोहित थे, जिन्होंने हस्ताक्षर किए :
सरायाह, अजर्याह, यिर्मयाह, 3पशहूर, अमर्याह,
मल्कियाह, 4हत्तूश, शबन्याह, मल्लूक, 5हारीम,
मेरेमोत, ओबद्याह, 6दानिएल, गिन्नतोन,
बारूक, 7मशुल्लाम, अबियाह, मियामीन,
8माज्याह, बिलगई और शमायाह।

9 उपपुरोहितों के नाम, जिन्होंने हस्ताक्षर किए : येशुअ बेन-आजन्याह, हेनादाद के
वंशजों में से बिन्नई और कदमिएल, 10तथा
उनके भाई-बन्धु शबन्याह, होदियाह, कलीता,
पलायाह, हानान, 11मीका, रहोब, हशब्याह,
12जक्कूर, शेरेब्याह, शबन्याह, 13होदियाह, बानी
और बनीनू।

14 जनता के अगुओं के नाम, जिन्होंने हस्ताक्षर किए : परोश, पहत-मोआब, एलाम,
जत्तू, बानी, 15बुन्नी, अजगाद, बेबई,
16अदोनियाह, बिग्वई, आदीन, 17आतेर,
हिजकियाह, अज्जूर, 18होदियाह, हाशूम, बेसई,
19हारीफ, अनातोत, नोबई, 20मग्पीआश,
मशुल्लाम, हेजीर, 21मशेजबेल, सादोक, यद्दू,
22पलत्याह, हानान, अनायाह, 23होशे, हनन्याह,

* शब्दशः, 'अपना कन्धा हटाते और अपनी गरदन टेढ़ी करते' ** मूल में 10 : 1 *** अथवा 'दृढ़ प्रतिज्ञा की विधि संपन्न करते हैं' + अथवा, 'अपनी मुहर लगाएंगे'।

9 : 30 2 रा 17 : 13-18

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हश्शूब, [24]हल्लोहेश, पिल्हा, शोबेक, [25]रहूम, हशब्ना, मासेयाह, [26]अहियाह, हानान, आनान, [27]मल्लूक, हारीम और बाना।

इस्राएली समाज द्वारा शपथ लेना

28 जिन लोगों ने हस्ताक्षर नहीं किए थे, अर्थात् शेष पुरोहित, उपपुरोहित, मन्दिर के द्वारपाल, गायक और सेवक एवं वे सब पुरुष जिन्होंने उस देश के गैर-इस्राएली कौमों से स्वयं को अलग कर लिया था और परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति निष्ठावान हो गए थे, तथा उनकी पत्नियां, पुत्र-पुत्रियां, जिन्हें बुद्धि और समझ थी, [29]इन सबने अपने प्रतिष्ठित जाति-भाइयों के साथ यह शपथ खाई : 'हम परमेश्वर की व्यवस्था के अनुसार आचरण करेंगे, जो उसने अपने सेवक मूसा को प्रदान की थी। हम अपने स्वामी प्रभु की सब आज्ञाओं, उसके न्याय-सिद्धान्तों और संविधियों का पालन करेंगे, और उनके अनुरूप कार्य करेंगे। [30]हम इस देश में रहनेवाली कौमों से विवाह सम्बन्ध स्थापित नहीं करेंगे। हम न उनको अपनी पुत्रियाँ देंगे, और न अपने पुत्रों के लिए उनकी पुत्रियाँ लेंगे। [31]यदि इन कौमों के व्यापारी विश्राम-दिवस पर बेचने के लिए सामान, अथवा अन्न लाएंगे, तो हम विश्राम-दिवस पर, पवित्र दिन पर, उसको नहीं खरीदेंगे।

'हम हर सातवें वर्ष खेती योग्य भूमि पर फसल नहीं उगाएंगे, और अपने कर्जदारों का ऋण माफ कर देंगे।

32 'हम प्रतिज्ञा करते हैं कि हम अपने परमेश्वर के भवन की सेवा में प्रतिवर्ष चांदी का एक तिहाई सिक्का* देंगे। [33]यह धनराशि "अर्पण की रोटी", नित्य अन्न-बलि, नित्य अग्नि-बलि, विश्राम-दिवस, नवचन्द्र पर्व, निर्धारित त्योहार, पवित्र अर्पण, इस्राएली कौम के प्रायश्चित के लिए की जानेवाली पाप-बलि, तथा हमारे परमेश्वर के भवन के सब कार्यों में व्यय की जाएगी।

34 'इसी प्रकार हम—पुरोहित, उपपुरोहित और जनता—चिट्ठी डालकर यह निश्चय करते हैं : इस्राएल के समस्त पितृकुल प्रतिवर्ष अपने नियत समय पर प्रभु परमेश्वर की वेदी पर अग्नि प्रज्वलित करने के लिए लकड़ी लाएंगे; जैसा वेदी की अग्नि के विषय में व्यवस्था-ग्रन्थ में लिखा है।

35 'हम यह भी प्रतिज्ञा करते हैं कि हम खेतों की प्रथम उपज, और अपने प्रत्येक वृक्ष का प्रथम फल प्रति वर्ष प्रभु के भवन में अर्पित करेंगे। [36]इसके अतिरिक्त हम अपने पहिलौठे पुत्रों अथवा अपने पशुओं के पहिलौठों को, बछड़ों और मेमनों को, व्यवस्था के अनुसार अपने परमेश्वर के भवन में परमेश्वर के सेवक-पुरोहितों के पास लाएंगे, और उन्हें अर्पित करेंगे। [37]हम यह भी प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने गूंधे हुए आटे का प्रथम अंश, अपनी भेंटें, प्रत्येक वृक्ष का प्रथम फल, अंगूर-रस और तेल का प्रथम भाग, अपने परमेश्वर के भवन के कक्षों में पुरोहितों को देंगे। हम अपने खेतों की फसल का दशमांश उपपुरोहित को देंगे; क्योंकि उपपुरोहित ही हमारे सब नगरों में यह दशमांश एकत्र करते हैं। [38]जब उपपुरोहित दशमांश एकत्र करेंगे, उस समय हारून वंश का एक पुरोहित वहाँ उपस्थित रहेगा। उपपुरोहित इस दशमांश का दसवां अंश अपने परमेश्वर के भवन के कक्षों में, भण्डारगृह में जमा करेंगे। [39]इस्राएली लोग तथा लेवी कुल के उपपुरोहित अन्न, अंगूर-रस और तेल की भेंट कक्षों के उस स्थान में लाएंगे जहाँ पवित्र स्थान के पात्र रखे जाते हैं, और जहाँ सेवक-पुरोहितों, द्वारपालों और गायकों के कक्ष हैं।

'हम शपथ लेते हैं कि हम परमेश्वर के भवन की उपेक्षा नहीं करेंगे।

'यदि हम अपनी शपथ के अनुसार कार्य नहीं करेंगे तो हम शापित हों।'

---

* मूल में "शेकल"

10 : 30 व्य 7 : 3 10 : 31 नि 23 : 10; लेव 25 : 4; व्य 15 : 1 10 : 32 नि 30 : 11 10 : 33 लेव 24 : 5
10 : 35 नि 23 : 19; व्य 26 : 2 10 : 36 नि 13 : 2 10 : 38 गण 18 : 26

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यरूशलेम नगर का पुनः बसाया जाना

11 अब तक केवल इस्राएली समाज के
मुखिया यरूशलेम नगर में रहते थे।
अतः शेष इस्राएलियों ने चिट्ठी डालकर यह
निश्चय किया कि उनके समाज का प्रत्येक
दसवां व्यक्ति पवित्र नगर+ यरूशलेम में बसेगा,
और शेष नौ व्यक्ति यहूदा प्रदेश के किसी भी
नगर में रह सकते हैं। 2जिन व्यक्तियों ने स्वेच्छा
से यरूशलेम नगर में बसना स्वीकार किया,
उनको जनता ने आशीर्वाद दिया।
3 यरूशलेम में रहने वाले यहूदा प्रदेश के
मुखियों के नाम इस प्रकार हैं। (यहूदा प्रदेश
के अन्य नगरों में शेष इस्राएली—अर्थात्
जनता, पुरोहित, उपपुरोहित, मन्दिर के सेवक
और सुलेमान के राजकीय नौकर-चाकरों के
वंशज अपनी-अपनी निज भूमि पर रहते थे)।
4यरूशलेम में यहूदा कुल और बिन्यामिन कुल
के कुछ लोग रहते थे।
यहूदा कुल के पुरुषों के नाम ये हैं : अतायाह
बेन-उज्जियाह। इसकी वंशावली इस प्रकार
है : इसका पिता उज्जियाह था, जो जकर्याह का
पुत्र, और अमर्याह का पौत्र था। अमर्याह का
पिता शपत्याह और उसका दादा महललेल था।
ये सब पुरुष पेरेस के वंशज थे। 5मासेयाह बेन-
बारूक। इसकी वंशावली इस प्रकार है : इसका
पिता बारूक था, जो कोल्होजे का पुत्र और
हजायाह का पौत्र था। हजायाह का पिता
अदायाह, और उसके दादा योयारीब का पिता
जकर्याह और उसका दादा शीलोई था। 6पेरेस
के वंशज, जो यरूशलेम में रहते थे, चार सौ
अड़सठ थे, और ये शूरवीर पुरुष थे।
7 बिन्यामिन के पुरुषों के नाम : सल्लू बेन-
मशुल्लाम। इसकी वंशावली इस प्रकार है :
इसका पिता मशुल्लाम था, जो योएद का पुत्र
और पदायाह का पौत्र था। पदायाह का पिता
कोलायाह और उसका दादा मासेयाह था।
मासेयाह का पिता इतीएल और उसका दादा
यशायाह था। 8सल्लू के योद्धा* भाइयों को
मिलाकर बिन्यामिन कुल के पुरुषों की संख्या
नौ सौ अट्ठाईस थी। 9इनका नायक योएल बेन-
जिक्री था। उसका सहायक यहूदा बेन-
हस्सनूआ था, जो नगर की देखभाल करने में
उसकी सहायता करता था।

यरूशलेम में बसे हुए पुरोहितों के नाम

10 पुरोहितों के नाम : यदायाह बेन-
योयारीब और याकीन। 11परमेश्वर के भवन
का मुख्य पुरोहित सरायाह था। सरायाह की
वंशावली इस प्रकार है : सरायाह का पिता
हिल्कियाह और उसका दादा मशुल्लाम था।
मशुल्लाम का पिता सादोक, और सादोक का
पिता मरायोत था जो अहीतूब का पुत्र था।
12मन्दिर के कार्यों में यदायाह और याकीन की
सहायता करनेवाले उनके भाई-बन्धुओं की
संख्या आठ सौ बाइस थी।
पुरोहित अदायाह बेन-यरोहाम। इसकी
वंशावली इस प्रकार है: अदायाह यरोहाम का
पुत्र, और पलल्याह का पौत्र था। पलल्याह का
पिता अम्सी था, जो जकर्याह का पुत्र था।
जकर्याह का पिता पशहूर था, जो मल्कियाह
का पुत्र था। 13इसके साथ भाई-बन्धु थे जो
अपने-अपने पितृकुल के मुखिया थे। ये
मिलकर दो सौ बयालीस थे।
पुरोहित अमशई बेन-अजरेल। इसकी
वंशावली इस प्रकार है : अमशई का पिता
अजरेल था, और उसका दादा अहजई था।
अहजई का पिता मशिल्लेमोत था, और
मशिल्लेमोत का पिता इम्मेर था। 14अमशई के
साथ उसके भाई-बन्धु थे जो बड़े योग्य थे।**
उनकी संख्या एक सौ अट्ठाईस थी। उनका
अध्यक्ष जब्दीएल बेन-हग्गदोलीम था।

यरूशलेम में बसे हुए उपपुरोहितों के नाम

15 लेवी कुल के उपपुरोहित : शमायाह
बेन-हश्शूब। इस की वंशावली इस प्रकार है :
शमायाह का पिता हश्शूब था, और उसका दादा
अज्रीकाम था। अज्रीकाम का पिता हशब्याह
था, जो बुन्नी का पुत्र था।

+ शब्दशः 'पवित्र स्थान के नगर में' * अथवा, 'गब्बई और सल्लई' ** अथवा, 'योद्धा'

11 : 3-22 1 इत 9 : 2-34

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

16 उपपुरोहितों के मुखियों में से शब्बतई
और योजाबाद थे। ये परमेश्वर के भवन के
बाहरी कामों का दायित्व सम्भालते थे।
17 मत्तन्याह बेन-मीका। इस की वंशावली
इस प्रकार है। मत्तन्याह का पिता मीका और
उसका दादा जब्दी था। जब्दी आसाफ का पुत्र
था। मत्तन्याह भजन-कीर्तन करने वालों का
अगुआ था। वह आराधना के समय भजन-
कीर्तन आरम्भ करता था। उसके भाई-बन्धुओं
में बकबुक्याह उसका सहायक था।
अब्दा बेन-शम्मूअ। इसकी वंशावली इस
प्रकार है: अब्दा के पिता का नाम शम्मूअ, दादा
का नाम गालाल और परदादा का नाम यदूतून
था। 18यों पवित्र नगर में रहनेवाले उपपुरोहितों
की संख्या दो सौ चौरासी थी।

मन्दिर के द्वारपाल

19 द्वारपाल ये थे : अक्कूब और तल्मोन।
इनके साथ इनके भाई-बन्धु भी थे, जो द्वार पर
पहरा देते थे। इनकी संख्या एक सौ बहत्तर थी।
20 यहूदा प्रदेश के अन्य नगरों में शेष
इस्राएली जनता, पुरोहित, और उपपुरोहित
अपनी-अपनी निज पैतृक भूमि पर रहते थे।
21पर मन्दिर के सेवक ओपेल टीले पर रहते थे।
सीहा और गिश्पा उनके अध्यक्ष थे।
22 यरूशलेम में रहनेवाले उपपुरोहितों का
अध्यक्ष उज्जी था। वह बानी का पुत्र, और
हशब्याह का पौत्र था। हशब्याह का पिता
मत्तन्याह और दादा मीका था। उज्जी बेन-
बानी आसाफ के वंशजों में से एक था, जो
परमेश्वर के भवन में गायकों का सेवा-कार्य
करते थे। 23उनको राजा दाऊद की ओर से
एक आदेश दिया गया था कि हर दिन की
आवश्यकता के अनुसार प्रत्येक गायक को
क्या गाना चाहिए।
24 इस्राएली कौम का प्रतिनिधि, जो फारस
सम्राट के दरबार में सम्राट को उनके सम्बन्ध
में सलाह-परामर्श देता था, पतहयाह बेन-
मशेजबेल था। यह यहूदा कुल के जेरह के वंश
का था।

नगर और गांवों में बसे हुए इस्राएली

25 लोग देहातों में भी रहने लगे*। यहूदा
कुल के कुछ लोग किर्यतर्बा नगर और उसके
गांवों में, कुछ दीबोन नगर और उसके गांवों में,
कुछ यकब्सएल नगर और उसके गांवों में,
रहते थे। 26फिर कुछ लोग येशुअ, मोलादा,
बेल्पेलेत, 27हसर्शूआल, तथा बएर-शेबा नगर
और उसके गांवों में रहते थे। 28कुछ सिकलग,
तथा मकोना नगर तथा उसके गांवों में, 29एन-
रिम्मोन, सोरा, यर्मूत, 30जानोह तथा अदुल्लाम
नगरों और उनके गांवों में, लाकीश और उसके
खेतों में, अजेका और उसके गांवों में रहते थे।
इस प्रकार यहूदा कुल के लोग बएरशेबा से
हिन्नोम घाटी तक डेरा डालकर बस गए थे।
31 बिन्यामिन कुल के लोग गेबा नगर से
लेकर मिकमश, अय्या तथा बेतएल और उसके
गांवों में, 32अनातोत, नोब, अनन्याह, 33हासोर,
रामाह, गित्तईम; 34हादीद, सबोईम, नबल्लत,
35लोद, ओनो, और कारीगरों की घाटी तक
बस गए थे।
36 यहूदा प्रदेश के उपपुरोहितों के कुछ दल
बिन्यामिन कुल के भूमि-क्षेत्रों में बस गए थे।

निष्कासन से लौटे हुए पुरोहितों और उपपुरोहितों की सूची

12 ये पुरोहित और उपपुरोहित जरूब्बाबेल
बेन-शालतीएल और येशुअ के साथ
निष्कासन से लौटे थे :
सरायाह, यिर्मयाह, एज्रा, 2अमर्याह, मल्लूक,
हत्तूश, 3शकन्याह, रहूम, मेरेमोत, 4इद्दो,
गिन्नतोई, अबियाह, 5मीयामीन, मद्याह,
बिलगा, 6शमायाह, योआरीब, यदायाह, 7सल्लू,
आमोक, हिल्कियाह और यदायाह।
येशुअ के दिनों में ये ही व्यक्ति पुरोहितों
और अपने भाई-बन्धुओं के मुखिया थे।
8 उपपुरोहित : येशुअ, बिन्नूई, कदमीएल,
शेरेब्याह, यहूदा और मत्तन्याह। मत्तन्याह अपने
भाई-बन्धुओं के साथ आराधना के समय
भजन-कीर्तन का दायित्व सम्भालता था, 9और
उस समय उनके भाई बकबुक्याह और उन्नो

* शब्दश: 'गांव और उनके खेतों में'।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उनके सामने अपना कार्य सम्पन्न करने के लिए
खड़े रहते थे।
10 येशुअ से योयाकीम उत्पन्न हुआ, और
योयाकीम से एल्याशीब और एल्याशीब से
योयादा, 11और योयादा से योनातान, और
योनातान से यद्दू उत्पन्न हुआ था।
12 योयाकीम के दिनों में पुरोहिती परिवार
के ये व्यक्ति मुखिया थे : सरायाह परिवार का
मरायाह, यिर्मयाह परिवार का हनन्याह, 13एज्रा
परिवार का मशुल्लाम, अमर्याह परिवार का
यहोहानान, 14मल्लूकी परिवार का योनातान,
शबन्याह परिवार का योसेप, 15हारीम परिवार
का अदना, मरायोत परिवार का हेलकई,
16इद्दो परिवार का जकर्याह, गिन्नतोन परिवार
का मशुल्लाम, 17अबियाह परिवार का जिकूरी,
मिन्यामीन परिवार का...,* मोअद्याह परिवार
का पिलतई, 18बिलगा परिवार का शम्मूआ,
शमायाह परिवार का यहोनातान, 19योयारीब
परिवार का मत्तनई, यदायाह परिवार का उज्जी,
20सल्लई परिवार का कल्लई, आमोक परिवार
का एबेर, 21हिल्कियाह परिवार का हशब्याह,
और यदायाह परिवार का नतनेल मुखिया था।
22 एल्याशीब, योयादा, योहानान और यद्दू
के दिनों में लेवीय पितृकुलों के मुखियों के नाम
लिखे गए थे। फारस के सम्राट दारा के राज्य-
काल में पुरोहितों के भी नाम लिखे गए।
23एल्याशीब के पुत्र योहानान के दिनों तक
'इतिहास-ग्रन्थ' में लेवी वंश के पितृकुलों के
मुखियों के नाम दर्ज किए गए। 24लेवी वंशजों
के मुखिया ये थे : हशब्याह, शेरेब्याह, और
येशुअ बेन-कदमीएल। उनके साथ उनके भाई
थे जो आराधना में स्तुति और भजन-कीर्तन
गाते समय परमेश्वर के जन दाऊद के आदेश
के अनुसार निर्धारित दलों में बंटकर उनके
सम्मुख खड़े रहते थे।
25 मत्तन्याह, बकबुक्याह, ओबद्याह,
मशुल्लाम, तल्मोन और अक्कूब द्वारपाल थे।
ये मन्दिर के द्वारों के समीप बने भण्डार-गृहों
पर पहरा देते थे। 26ये येशुअ के पुत्र और
योसादाक के पौत्र योयाकीम, तथा राज्यपाल
नहेम्याह एवं पुरोहित और शास्त्री एज्रा के
समय में थे।

यरूशलेम की शहरपनाह की प्रतिष्ठा

27 जब यरूशलेम की शहरपनाह की प्रतिष्ठा
का समय आया, तब जगह-जगह उपपुरोहितों
को ढूंढ़ा गया, ताकि उनको यरूशलेम में लाया
जाए और शहरपनाह की प्रतिष्ठा का पर्व
आनन्द-उल्लास से परमेश्वर को धन्यवाद देते
हुए, झांझ, सारंगी, और वीणा के साथ गीत-
भजन गाते हुए मनाया जाए। 28उपपुरोहितों के
अतिरिक्त यरूशलेम के चारों ओर के क्षेत्र से,
तथा नतोपतियों के गांवों से, 29बेत-गिलगाल
नगर से, गेबा और अज्मावेत के क्षेत्रों से भी
गायक एकत्र हुए; क्योंकि गायकों ने यरूशलेम
के आसपास के क्षेत्रों में अपनी-अपनी बस्ती
बसा ली थी।
30 तब पुरोहितों और उपपुरोहितों ने स्वयं
को शुद्ध किया। तत्पश्चात् उन्होंने उपस्थित
लोगों को, द्वारों और शहरपनाह को शुद्ध
किया।
31 इसके बाद मैंने यहूदा कुल के दो नेताओं
को शहरपनाह के ऊपर भेजा, और उनके नेतृत्व
में दो दलों में बड़े जुलूस निकाले, जो स्तुति गाते
हुए धूमधाम से चल रहे थे। एक जुलूस
शहरपनाह के ऊपर से दाहिनी ओर 'कूड़ा-
फाटक' की ओर गया, 32और उसके पीछे-
पीछे ये लोग गए : होशयाह, यहूदा प्रदेश के
आधे शासक, 33अजर्याह, एज्रा, मशुल्लाम,
34यहूदा, बिन्यामिन, शमायाह और यिर्मयाह।
35जुलूस में ये पुरोहित तुरहियाँ बजा रहे थे :
उनमें जकर्याह भी था। जकर्याह योनातान का
पुत्र और शमायाह का पौत्र था। शमायाह का
पिता मत्तन्याह और दादा मीकायाह था।
मीकायाह जक्कूर का पुत्र और आसाफ का
पौत्र था।
36 जकर्याह के भाई-बन्धु जो पुरोहित

---

* मूल में नाम लुप्त।

12 : 36 1 इति 23 : 5 **12 : 45** 1 इति 25 : 1

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

थे— शमायाह, अजरेल, मिललई, गिललई,
माए, नतनेल, यहूदा और हनानी— परमेश्वर
के जन दाऊद के वाद्य-यन्त्र बजा रहे थे। उनके
आगे-आगे शास्त्री एज्रा चल रहा था।
37 जुलूस 'झरना-द्वार' पर पहुँचा। वहाँ से
वह दाऊदपुर की सीढ़ी पर चढ़ा, जहाँ शहरपनाह
का चढ़ाव था, और दाऊद-भवन के पूर्व में
स्थित 'जल-द्वार' पर पहुँचा।
38 दूसरा जुलूस बायीं ओर गया। लोग
भजन-कीर्तन गा रहे थे। मैं शेष आधे लोगों के
साथ जुलूस के पीछे गया। जुलूस शहरपनाह के
ऊपर से होकर 'तन्दूर-बुर्ज' से निकलता हुआ
शहरपनाह के उस भाग पर पहुँचा जहाँ
शहरपनाह चौड़ी है। 39वहाँ से जुलूस 'एफ्रइम-
द्वार', 'प्राचीन-द्वार', 'मत्स्य-द्वार', हननेल-
बुर्ज और हम्मेआ-बुर्ज से निकलते हुए 'मेष-
द्वार' पर पहुँचा और वहाँ से 'निरीक्षण-द्वार' पर
जाकर रुक गया।
40 अब स्तुतिगान करनेवाले दोनों जुलूस
परमेश्वर के भवन में आकर खड़े हो गए। मैं
और मेरे साथ के आधे शासक भी वहाँ थे।
41पुरोहित एल्याकीम, मसियाह, मिन्यामीन,
मीकायाह, एल्योएनई, जकर्याह और हनन्याह
तुरहियां लिये हुए वहां खड़े थे। 42इनके अतिरिक्त
मासेयाह, शमायाह, एलआजर, उज्जी,
यहोहानान, मल्कियाह, एलाम और एजेर भी
थे। गायकों ने यिज्रहयाह के निर्देशन में गाना
आरम्भ किया।
43 उस समय लोगों ने बड़ी-बड़ी बलि
चढ़ाई, और आनन्द मनाया; क्योंकि परमेश्वर
ने उन्हें बहुत आनन्द मनाने का अवसर प्रदान
किया था। स्त्रियों और बच्चों ने भी आनन्द
मनाया। यरूशलेम का आनन्द-स्वर दूर-दूर
तक सुनाई दे रहा था।

जनता और पुरोहितों-उपपुरोहितों का सम्बन्ध

44 उसी दिन भण्डार-गृहों के संरक्षकों की
नियुक्ति की गई। इन भण्डार-गृहों में मन्दिर में
चढ़ाई गई भेंट, उपज का प्रथम फल और
दशमांश रहता था। इनके अतिरिक्त पुरोहितों
और उपपुरोहितों के नियत भाग भी रहते थे, जो
नगर के खेतों से एकत्र किए जाते थे। यह धर्म-
व्यवस्था के अनुसार निर्धारित कर दिया गया
था। यहूदा प्रदेश की जनता परमेश्वर की सेवा
करनेवाले पुरोहितों और उपपुरोहितों से प्रसन्न
थी। 45पुरोहित और उपपुरोहित परमेश्वर की
आराधना सम्पन्न करते थे। वे शुद्धीकरण की
विधि भी सम्पन्न करते थे। गायक और द्वारपाल
भी दाऊद और उसके पुत्र सुलेमान के आदेश
के अनुसार अपना-अपना नियत कार्य सम्पन्न
करते थे। 46प्राचीन काल में दाऊद और आसाफ
के समय में गायक-मण्डल निर्देशक हुआ
करते थे और परमेश्वर की आराधना में भजन-
कीर्तन, स्तुतिगान गाए जाते थे। 47जरूब्बाबेल
और नहेम्याह के दिनों में सब इस्राएली-
आराधक गायकों और द्वारपालों को प्रतिदिन
निश्चित अंश देते थे और भेंट में से उपपुरोहितों
के लिए उनका अंश अलग कर देते थे, और
फिर उपपुरोहित अपने इस अंश में से पुरोहितों*
के निर्धारित अंश को निकालकर अलग रख देते
थे।

नहेम्याह के सुधार

13 उसी दिन लोगों के सम्मुख मूसा के
व्यवस्था-ग्रन्थ में से पाठ किया गया।
उसमें यह लिखा हुआ मिला : 'तुम अम्मोनी
और मोआबी कौम के किसी भी व्यक्ति को
परमेश्वर की धर्म-सभा में कभी प्रवेश नहीं
करने देना; 2क्योंकि इस्राएलियों के निर्गमन के
समय उन्होंने इस्राएलियों को खाना-पीना नहीं,
बल्कि बालाम के द्वारा अभिशाप दिया था
जिसको उन्होंने दक्षिणा देकर बुलवाया था।
फिर भी हमारे परमेश्वर ने बालाम के इस शाप
को वरदान में बदल दिया।' 3जब लोगों ने
व्यवस्था का यह आदेश सुना, तब उन्होंने
अविलम्ब इस्राएली समाज से उन सब को
बहिष्कृत कर दिया जो वर्ण-संकर+ जाति के
थे।

---
* मूल में, 'हारून के वंशज' + अथवा विदेशी, मिली-जुली जातियों या कौमों की सन्तान।

13 : 2 गण 22 : 5; व्य 23 : 5

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

4 पुरोहित एल्याशीब हमारे परमेश्वर के भवन के भण्डार-गृहों का प्रबन्धक नियुक्त किया गया था, और वह तोबियाह का सम्बन्धी था।
5उसने तोबियाह के लिए एक बड़े कमरे का प्रबन्ध किया। इस कमरे में पहले अन्न-बलि का सामान, लोबान, मन्दिर के पात्र, उपपुरोहितों, गायकों और द्वारपालों के लिए नियत किया गया अन्न, अंगूर-रस और तेल का दशमांश तथा पुरोहितों की भेंटें रखी जाती थीं।
6 जिस समय तोबियाह के लिए यह व्यवस्था की गई थी, उस समय मैं यरूशलेम में नहीं था। मैं बेबीलोन के सम्राट अर्तक्षत्र के शासन-काल के बत्तीसवें वर्ष में उसके पास चला गया था। कुछ दिनों के बाद मैंने उससे छुट्टी मांगी,
7और मैं यरूशलेम को लौटा। तब मुझे एल्याशीब के कुकर्म का पता चला कि उसने परमेश्वर के भवन के आंगनों में तोबियाह के लिए एक कमरे का प्रबन्ध किया है।
8यह प्रबन्ध मुझे अनुचित लगा, और मैंने तोबियाह के सब बर्तन-भांड़े उस कमरे से बाहर फेंक दिए।
9मैंने आदेश दिया कि कमरे को साफ किया जाए। तब लोगों ने कमरों की सफाई की। तत्पश्चात् मैंने परमेश्वर के भवन के पात्र, अन्नबलि का सामान और लोबान उनमें फिर से रख दिया।

प्रशासकों द्वारा उपपुरोहितों का शोषण

10 फिर मुझे मालूम हुआ कि उपपुरोहितों को उनका दशमांश नहीं दिया जा रहा है। इसलिए सेवा करनेवाले उपपुरोहित और गायक अपने-अपने खेत को भाग गए हैं।
11 अत: मैंने प्रशासकों को डांटकर पूछा, 'उपपुरोहितों और गायकों ने परमेश्वर के भवन को क्यों छोड़ा?' मैंने उपपुरोहितों और गायकों को फिर एकत्र किया, और उनके पहले के स्थान पर उन्हें पुन: नियुक्त किया।
12उस समय से यहूदा-प्रदेश के सब इस्राएली अन्न, अंगूर-रस और तेल का दशमांश भण्डार-गृह में लाने लगे।
13मैंने भण्डारगृहों की सामग्री के उचित वितरण के लिए पुरोहित शेलेम्याह, शास्त्री सादोक और उपपुरोहित पदायाह को निरीक्षक नियुक्त किया। उनका सहायक हानान था, जो मत्तन्याह का पौत्र और जक्कूर का पुत्र था। ये ईमानदार माने जाते थे। इनका कार्य अपने सहकर्मी भाइयों में दशमांश को वितरित करना था।
14 हे मेरे परमेश्वर! मेरा यह कार्य मेरी भलाई के लिए स्मरण रखना। जो सत्कार्य मैंने तेरे भवन के लिए, तेरे भवन की सेवा के लिए किए हैं, उनको मत भूलना।

विश्राम-दिवस की अवहेलना

15 उन्हीं दिनों में मैंने यहूदा प्रदेश में देखा कि किसान विश्राम-दिवस पर रस-कुण्डों में अंगूर को रौंद कर उसका रस निकालते हैं। वे विश्राम-दिवस पर खेतों से अनाज के पूले लाते और उनको गधों पर लादते हैं। इसी प्रकार वे अंगूर-रस, अंगूर के गुच्छे, अंजीर के फल आदि सब प्रकार के बोझ विश्राम-दिवस पर ढो-ढोकर यरूशलेम में लाते हैं। विश्राम-दिवस पर वे भोजन-सामग्री बेचते हैं। मैंने उनको चेतावनी दी।
16सोर देश के कुछ व्यापारी नगर में रहते थे, और वे मछली तथा अन्य प्रकार का सामान यहूदा प्रदेश तथा यरूशलेम में लाते और विश्राम-दिवस पर लोगों को बेचते थे।
17अत: मैंने यहूदा प्रदेश के प्रतिष्ठित लोगों को फटकारा और उनसे कहा, 'तुम विश्राम-दिवस पर अनुचित कार्य करते हो, और पवित्र दिवस को अपवित्र करते हो।
18तुम्हारे पूर्वजों ने भी ऐसा ही किया था, और हमारे परमेश्वर ने हम पर और इस नगर पर अनेक विपत्तियाँ ढाही थीं। अब तुम विश्राम-दिवस को अपवित्र कर परमेश्वर का कोप इस्राएली कौम पर और अधिक भड़का रहे हो।'
19 अत: मैंने आदेश दिया कि जब विश्राम-दिवस आरम्भ होने के पूर्व अन्धेरा होने लगे, तब यरूशलेम के प्रवेश-द्वारों को बन्द कर दिया जाए, और जब तक विश्राम-दिवस समाप्त न हो जाए तब तक उनको न खोला जाए। मैंने अपने निजी सेवक प्रवेश-द्वारों पर

13 : 12 मला 3 : 10 13 : 15 नि 20 : 10; यिर 17 : 21

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नियुक्त किए और उन्हें आदेश दिया कि माल-असबाब का कोई भी बोझ विश्राम-दिवस पर शहर के भीतर नहीं आएगा। [20]अत: व्यापारी और सब प्रकार का सामान बेचने वाले यरूशलेम नगर के बाहर ठहरने लगे। उन्होंने एक-दो बार शहरपनाह के बाहर भी रात में डेरा डाला। [21]मैंने उनको चेतावनी दी, 'तुम लोग शहरपनाह के बाहर डेरा क्यों डालते हो? अगर तुमने फिर ऐसा किया तो मैं तुम्हें सजा दूंगा।' अत: वे उस समय से फिर विश्राम-दिवस पर अपना माल बेचने नहीं आए।

22 तत्पश्चात् मैंने उपपुरोहितों को आदेश दिया कि वे अपने को शुद्ध करें और प्रवेश-द्वारों पर पहरा देने के लिए वहां जाएं, जिससे विश्राम-दिवस की पवित्रता भंग न हो।

हे परमेश्वर, मेरी भलाई के लिए यह कार्य भी स्मरण रखना; और अपने अत्यन्त करुणामय स्वभाव के अनुरूप मुझ पर दया करना।

अन्तर्जातीय विवाह

23 उन्हीं दिनों में मैंने ऐसे अनेक यहूदी देखे जिन्होंने गैर-यहूदी कौम, अर्थात् अश्दोदी, अम्मोनी और मोआबी कौमों की कन्याओं से विवाह किया था। [24]उनके आधे बच्चे अश्दोदी भाषा बोलते थे। वे यहूदा प्रदेश की मातृ-भाषा नहीं जानते थे। प्रत्येक अपनी कौम की भाषा बोलता था।

25 तब मैंने उन्हें डांटा और उन्हें कटु शब्द कहे। मैंने कुछ को मारा-पीटा और उनके बाल नोचे। मैंने परमेश्वर के नाम पर उन्हें यह शपथ दी : 'तुम गैर-यहूदी कौमों के पुत्रों से अपनी पुत्रियों का विवाह नहीं करोगे, और न अपना और न अपने पुत्रों का विवाह उनकी पुत्रियों से करोगे। [26]क्या तुम्हें याद नहीं है कि इस्राएल देश के राजा सुलेमान ने गैरयहूदी कौम की स्त्रियों के कारण पाप किया था? विश्व के अनेक राष्ट्रों में राजा सुलेमान जैसा राजा नहीं हुआ है। परमेश्वर भी उसको प्यार करता था, और उसको समस्त इस्राएल देश का राजा भी बनाया था। पर राजा सुलेमान को ऐसी ही विदेशी कौमों की स्त्रियों ने पाप में डाला था। [27]क्या हम तुम्हारी बात सुनें और ऐसा महा दुष्कर्म करें? क्या हम विदेशी कौमों की कन्याओं से विवाह कर अपने परमेश्वर के प्रति ऐसा विश्वासघात करेंगे? कदापि नहीं।'

28 महापुरोहित एल्याशीब के पुत्र योयादा का एक पुत्र होरोन-निवासी सनबल्लत का दामाद था। मैंने योयादा के पुत्र को यरूशलेम से निकाल दिया।

29 हे मेरे परमेश्वर, पुरोहितों ने भी पवित्र पुरोहित-पद को अपवित्र कर दिया, उन्होंने पुरोहितों और उपपुरोहितों के विधान को तोड़ा; उनका यह दुष्कर्म मत भूलना!

30 इस प्रकार मैंने पुरोहितों और उपपुरोहितों को विदेशी सम्पर्क से शुद्ध किया। मैंने उनकी सेवा-बारी पुन: निश्चित की और हर एक को उसका काम सौंप दिया। [31]मैंने लकड़ी की भेंट तथा फसल के प्रथम फल की भेंट चढ़ाने का समय भी नियत कर दिया।

हे मेरे परमेश्वर, मेरी भलाई के लिए मुझे मत भूलना!

---

13 : 26 1 रा 11 : 1; 2 शम 12 : 24

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

एस्तर
पुस्तक परिचय

प्रस्तुत पुस्तिका में प्रमुख नायिका रानी एस्तर है, जिसके जीवन में कुछ ऐसी घटनाएँ घटीं जिनसे उसके अदभुत साहस तथा अपनी यहूदी कौम के प्रति उसकी निष्ठा प्रकट होती है। वह अपने जातीय भाई-बहिनों को उनके शत्रुओं के हाथ से किस प्रकार बचाती है, इन्हीं सब बातों का उल्लेख प्रस्तुत लघु ग्रन्थ में हुआ है। सम्राट क्षयर्ष के शीत महल में भोज के समय ये घटनाएं घटती हैं। वास्तव में, ग्रन्थकार यहूदियों के वसन्तोत्सव "पूरीम" की स्थापना का कारण तथा अर्थ बताना चाहता है। उस पर्व के अवसर पर "एस्तर के कुण्डलपत्र" से यह कथा सुनायी जाती थी। ध्यान देने योग्य बात है कि इस कथा का यूनानी पाठ अधिक विस्तृत है और उसका धार्मिक पक्ष अधिक स्पष्ट किया गया है— जबकि इब्रानी पाठ में परमेश्वर के नाम का कहीं भी उल्लेख नहीं हुआ है!

और एक बात: एस्तर ग्रंथ में (पश्चिमोत्तर) भारतवर्ष को फारसी साम्राज्य के "एक सौ सत्ताईस प्रदेशों" में से एक गिना गया है।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

एस्तर का रानी बनना	1 : 1 — 2 : 23
हामान का षड्यन्त्र	3 : 1 — 5: 14
पासा पलट गया	6 : 1 — 7 : 10
यहूदियों का प्रतिरोध और प्रतिशोध	8 : 1 — 10 : 3

सम्राट क्षयर्ष और पटरानी वशती

1 सम्राट क्षयर्ष भारतवर्ष से इथियोपिआ देश
तक एक सौ सत्ताईस प्रदेशों पर राज्य
करता था। उसके राज्यकाल में यह घटना घटी:
2 सम्राट क्षयर्ष के साम्राज्य की राजधानी
शूशनगढ़ थी। वहां सिंहासन पर बैठ कर वह
राज्य कर रहा था। 3उसने अपने शासन के
तीसरे वर्ष अपने सब उच्चाधिकारियों, दरबारियों,
फारस और मादय देशों के सेनापतियों, और
अपने प्रदेशों के सामन्तों तथा राज्यपालों को
अपने महल में भोज दिया। 4भोज-उत्सव एक
सौ अस्सी दिन तक मनाया गया। उस अवधि
में उसने अतिथियों को अपना राजकीय वैभव
दिखाया और अपनी प्रभुता की शान-शौकत
प्रदर्शित की।
5 एक सौ अस्सी दिन के पश्चात् सम्राट
क्षयर्ष ने अपने महल के उद्यान के मण्डप में
राजधानी शूशन के समस्त निवासियों
को—छोटे-बड़े सब को—भोज दिया। यह
भोज-उत्सव सात दिन तक चलता रहा।
6 भोज-स्थल पर चांदी की छड़ों में और
संगमर्मर के खम्भों में बैंगनी रंग के पतले सूत
की डोरियों पर सफेद सूती परदे टंगे थे और
नीले रंग की झालरें लटक रही थीं। लाल,
सफेद, पीले, और काले संगमर्मर के फर्श पर
सोने और चांदी के आसन रखे थे। 7अतिथियों
को सोने के चषक* में शराब पिलाई गई। ये
चषक भिन्न-भिन्न प्रकार के थे। सम्राट की

* अथवा, 'शराब का प्याला'

1 : 1 एज्रा 4 : 6 1 : 2 नह 1 : 1; दान 8:2 1: 3 दान 5 : 1; मक 6 : 21; अन्य-प्रामाणिक ग्रन्थ एस्तर देखें।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शान-शौकत के अनुरूप शाही शराब अतिथियों
को छक कर पिलाई गई।
8 मद्यपान नियम से हो रहा था। शराब पीने
के लिए किसी को विवश नहीं किया गया;
क्योंकि सम्राट ने अपने महल के भण्डारियों को
यह आदेश दे रखा था कि अतिथियों की
इच्छानुसार उनके साथ व्यवहार किया जाए।
9 रानी वशती ने सम्राट क्षयर्ष के महल में
महिलाओं को भोज दिया था।
10 सातवें दिन, जब सम्राट क्षयर्ष शराब में
मस्त था, उसने अपने सात सेवक-
खोजों—महूमान, बिज्जता, हर्बोना, बिग्ता,
अबग्ता, जेतेर और कर्कस—को आदेश दिया
11 कि वे रानी वशती को राजमुकुट के साथ
सम्राट के सम्मुख पेश करें ताकि वह लोगों और
दरबारियों को उसकी सुन्दरता के दर्शन करा
सके; क्योंकि रानी वशती देखने में सुन्दर थी।
12 खोजों ने सम्राट का आदेश रानी वशती
को दिया, किन्तु रानी ने सम्राट के सम्मुख आना
अस्वीकार कर दिया। सम्राट नाराज हुआ।
उसके भीतर ही भीतर क्रोध भभकने लगा।
13 सम्राट की यह नीति थी कि वह विधि
और न्याय-शास्त्र के आचार्यों से परामर्श ले,
जो परंपराओं से परिचित थे। 14 ये आचार्य सम्राट
के समीप ही रहते थे। ये सम्राट के सम्मुख
किसी भी समय आ-जा सकते थे। इनका स्थान
साम्राज्य में प्रथम था। ये फारस और मादय देशों
के सात प्रशासक थे। इनके नाम थे: कर्शना,
शेतार, अदमाता, तर्शीश, मेरेस, मर्सना और
ममूकान। 15 सम्राट ने उनसे पूछा, 'मैंने खोजों
के द्वारा जो आदेश रानी वशती को भेजा था,
उसने उसकी अवहेलना की है। अत: कानून के
अनुसार उसके साथ क्या व्यवहार किया जाए?'
16 ममूकान ने सम्राट और उच्चाधिकारियों
के सम्मुख यह कहा, 'रानी वशती ने, न केवल
महाराज के प्रति अपराध किया है वरन् महाराज
के अधीन समस्त प्रदेशों के उच्चाधिकारियों
और निवासियों के प्रति भी अपराध किया है।
17 रानी के इस कार्य की चर्चा सब स्त्रियों में
फैल जाएगी, और वे भी अपने-अपने पति के
आदेश की उपेक्षा करेंगी। वे कहेंगी, "महाराज
क्षयर्ष ने रानी वशती को आदेश दिया था कि
वह उनके सम्मुख पेश हो, किन्तु वह नहीं
आई, अत: हम भी अपने पति के आदेश का
पालन नहीं करेंगी।" 18 आज ही फारस और
मादय देशों की महिलाएँ, जिन्होंने रानी वशती
के इस कार्य की चर्चा सुनी है, महाराज के
प्रशासकों से यही बात कहेंगी। इस प्रकार सब
ओर भारी उपेक्षा और क्रोध का वातावरण
निर्मित होगा। 19 यदि महाराज को यह उचित
प्रतीत हो तो वह एक राजाज्ञा प्रसारित करें, और
यह राजाज्ञा फारस और मादय देशों के विधि-
शास्त्र में लिख ली जाए ताकि यह रद्द न की जा
सके: "वशती महाराज क्षयर्ष के सम्मुख आज
से फिर कभी उपस्थित नहीं हो सकेगी।"
महाराज पटरानी का पद किसी अन्य स्त्री को,
जो उससे अच्छी हो, प्रदान करें। 20 जब महाराज
की राजाज्ञा उनके विशाल साम्राज्य के कोने-
कोने में प्रसारित की जाएगी तब सब पत्नियां
अपने-अपने पति का—चाहे वह बड़ा हो,
अथवा छोटा—आदर-सम्मान करेंगी।'
21 ममूकान की यह सलाह सम्राट और
उसके उच्चाधिकारियों को पसन्द आई। सम्राट
ने ममूकान की सलाह के अनुसार कार्य किया।
22 उसने अपने अधीन सब प्रदेशों को, उनकी
लिपि में, और वहां के निवासियों की भाषा में
राजपत्र भेजे, जिनमें यह आदेश लिखा था:
"प्रत्येक पुरुष अपने घर में स्वामी होगा, और
उसकी आज्ञा सर्वोच्च होगी।*"

एस्तर का रानी बनना

2 कुछ दिनों के पश्चात्, जब सम्राट क्षयर्ष
का क्रोध शान्त हुआ तब उसको रानी
वशती की याद आई। उसको स्मरण हुआ कि
रानी वशती ने क्या अपराध किया था, और

---

* इस पद के अन्तिम शब्दों के अर्थ के विषय में विद्वानों में मतभेद है। मूल में, "और वह अपने राष्ट्र की भाषा बोलेगा।"

1 : 22 एस 8 : 9; इफ 5 : 22-24

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उसके विरुद्ध कौन-सी राजाज्ञा प्रसारित की गई
थी। 2तब सम्राट की सेवा करने वाले दरबारियों
ने उससे यह कहा, 'महाराज के लिए देखने में
सुन्दर कुंवारी कन्याएं ढूंढ़ी जाएं। 3महाराज अपने
साम्राज्य के सब प्रदेशों में उच्चाधिकारी नियुक्त
करें जो सुन्दर कुंवारी कन्याओं को शूशनगढ़
के रनिवास में लाएंगे और उनको महाराज की
रानियों के प्रबन्धक खोजा हेगय को सौंप देंगे।
कन्याओं को श्रृंगार का सामान दिया जाए। 4तब
जो कन्या महाराज को पसन्द आएगी, वह
वशती के स्थान पर रानी बने।' सम्राट क्षयर्ष को
यह बात पसन्द आई, और उसने ऐसा ही
किया।

5 शूशनगढ़ नगर में एक यहूदी था। उसका
नाम मोरदकय था। वह बिन्यामिन कुल का था।
उसके परदादा का नाम कीश, दादा का नाम
शिमई, और पिता का नाम याईर था।

6 मोरदकय उन निष्कासित बन्दियों में से
एक था, जिनको बेबीलोन का राजा नबूकदनेस्सर
यहूदा प्रदेश के राजा यकोन्याह के साथ
यरूशलेन नगर से बन्दी बनाकर ले गया था।
7उसने अपने चाचा अबीहइल की बेटी हदस्सा
अर्थात् एस्तर को पाला-पोसा था; क्योंकि वह
अनाथ थी; न उसकी माँ थी, और न पिता। जब
उसके माता-पिता का देहान्त हो गया तब
मोरदकय ने उसको गोद लेकर अपनी पुत्री बना
लिया। वह देखने में सुन्दर थी। उसका अंग-
अंग सांचे में ढला था।

8 सम्राट क्षयर्ष का आदेश और राजाज्ञा
प्रसारित की गई। अत: अनेक कन्याएं शूशनगढ़
में हेगय को सौंपी गईं। उनमें एस्तर भी थी। वह
रनिवास के प्रबन्धक हेगय के संरक्षण में रहने
के लिए राजमहल में लाई गई। 9एस्तर को देखकर
हेगय खुश हो गया। उसने उसकेसाथ कृपापूर्ण
व्यवहार किया। उसने शीघ्र ही एस्तर को श्रृंगार
का सामान दिया। इसके अतिरिक्त उसने उसे
राजमहल की सात चुनी हुई सेविकाएं दीं तथा
उसके भोजन की व्यवस्था कर दी। तत्पश्चात्
उसने एस्तर तथा उसकी सेविकाओं को
रनिवास के सर्वोत्तम भाग में ठहरा दिया।

10 एस्तर ने अपनी जाति और वंश के
सम्बन्ध में कुछ नहीं बताया; क्योंकि मोरदकय
ने उसे आदेश दिया था कि वह अपनी जाति के
विषय में किसी को कुछ न बताए। 11मोरदकय
एस्तर का हाल-चाल जानने के लिए प्रतिदिन
रनिवास के आँगन के सामने से गुजरता था।

12 बारह महीने तक कन्याओं का रूप
संवारा गया—यह नियम था। छ: महीने तक
गन्धरस के तेल से तथा छ: महीने तक सुगन्धित
द्रव्य तथा उबटन के लेप से उनकी सौंदर्य-
सज्जा की गई। अपने श्रृंगार के लिए स्त्रियाँ उन
वस्तुओं का उपयोग करती थीं। जब बारह
महीने बीत गए तब उन्हें नियमानुसार बारी-
बारी से सम्राट क्षयर्ष के पास महल में लाया
गया। 13प्रत्येक कन्या रनिवास से जो भी वस्तु
सम्राट के महल में अपने साथ ले जाना चाहती
थी, वह उसको दी जाती थी, और यों वह सम्राट
के महल में प्रवेश करती थी। 14कन्या सम्राट
के महल में शाम को प्रवेश करती थी और सबेरे
वहाँ से निकलकर दूसरे रनिवास में चली जाती
थी। यह दूसरा रनिवास राज-खोजा शाशगज
के अधिकार में था। शाशगज सम्राट की रखेलों
की देखभाल करता था। जब कन्या सम्राट को
पसन्द आती थी, तब वह दूसरी बार उसके
महल में जाती थी। सम्राट उसको नाम लेकर
बुलाता था; अन्यथा नहीं।

15 एस्तर मोरदकय के चाचा अबीहइल की
बेटी थी। मोरदकय ने उसको गोद लिया था
और उसको अपनी बेटी की तरह पाला था।
जब उसकी बारी आई तब उसने अपनी ओर
से रनिवास से कुछ भी ले जाना अस्वीकार कर
दिया। वह केवल वे ही वस्तुएं ले गई जिनको
ले जाने की सलाह राज-खोजा हेगय ने दी थी।
जिस-जिस व्यक्ति ने एस्तर को देखा उसने
उसको पसन्द किया।

16 एस्तर को सम्राट क्षयर्ष के शासन-काल
के सातवें वर्ष के दसवें महीने, अर्थात् तेबेट
माह में, सम्राट के पास महल में लाया गया।

2:6 2 रा 24 : 14; 2 इति 36 : 10.20

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

17सम्राट ने अन्य स्त्रियों से अधिक एस्तर को
प्यार किया; और एस्तर ने सब कन्याओं से
अधिक सम्राट की कृपा-दृष्टि प्राप्त की। सम्राट
उससे यहाँ तक प्रसन्न हो गया कि उसने उसके
सिर पर राजमुकुट पहिना दिया, और उसको
वशती के स्थान पर रानी बना दिया। 18तत्पश्चात्
सम्राट ने अपने सब सामंतों और दरबारियों को
महा-भोज दिया। यह एस्तर के सम्मान में दिया
गया। सम्राट क्षयर्ष ने अपने अधीन प्रदेशों का
कर भी माफ कर दिया, और शाही उदारता के
अनुरूप उपहार लुटाए।

19 जब कन्याएं दूसरी बार एकत्र हुईं, उस
समय मोरदकय राजमहल के प्रवेश-द्वार पर
बैठा हुआ था। 20उसके आदेश के अनुसार
एस्तर ने अपनी जाति और वंश को प्रकट नहीं
किया था। एस्तर अपने चचेरे भाई की आज्ञा का
पालन करती थी; क्योंकि उसने ही उसका
पालन-पोषण किया था।

21 जिन दिनों मोरदकय राजमहल के
प्रवेश-द्वार पर बैठा करता था, सम्राट के दो
खोजे—बिगताना और तेरेश— जो द्वारपाल थे,
सम्राट क्षयर्ष से नाराज हो गए, और उन्होंने
सम्राट पर प्रहार करने का षड्यन्त्र रचा।
22मोरदकय को यह मालूम हो गया, और उसने
षड्यन्त्र की सूचना रानी एस्तर को दे दी। रानी
एस्तर ने मोरदकय के नाम से सम्राट को यह
बता दिया। 23सम्राट ने तत्काल षड्यन्त्र की
खोजबीन की, और सूचना सच निकली। दोनों
खोजे फांसी के खम्भों पर टांग दिये गए। इस
षड्यन्त्र का विवरण 'इतिहास ग्रन्थ' में सम्राट
के सम्मुख लिख लिया गया।

यहूदियों के विनाश का षड्यन्त्र

3 कुछ दिनों के पश्चात् सम्राट क्षयर्ष ने
अगाग वंश के हामान बेन-हम्मदाता की
पदोन्नति की; उसे उच्च पद दिया, और उसके
सहयोगी सामंतों में उसे उच्चासन प्रदान किया।
2अतः राजभवन के द्वारपाल, सम्राट के सब
सेवक, हामान के सम्मुख सिर झुकाकर और
भूमि पर लेटकर उसको साष्टांग प्रणाम करते थे;
क्योंकि सम्राट ने उन्हें ऐसा ही आदेश दिया था।
किन्तु मोरदकय न तो सिर झुकाकर और न
भूमि पर लेटकर उसको साष्टांग प्रणाम करता
था। 3सम्राट क्षयर्ष के सेवकों ने, जो राजमहल
के द्वारपाल थे, मोरदकय से कहा, 'तुम महाराज
के आदेश का उल्लंघन क्यों करते हो?'
4द्वारपाल हर दिन उससे यह कहते थे, किन्तु
उसने उनकी बात नहीं सुनी। मोरदकय ने उन्हें
बताया कि वह यहूदी है, और वह किसी को
सिर झुकाकर प्रणाम नहीं कर सकता।

यह देखने के लिए कि क्या मोरदकय की
यह बात हामान को स्वीकार होगी अथवा नहीं,
द्वारपालों ने उसको बता दिया कि मोरदकय
यहूदी है।

5 जब हामान ने यह देखा कि मोरदकय न
सिर झुकाकर और न भूमि पर लेटकर उसको
प्रणाम करता है, तब वह क्रोध से भर गया। 6पर
उसने केवल मोरदकय पर ही हाथ उठाना
उचित न समझा। द्वारपालों ने मोरदकय के
अन्य जाति-भाई-बन्धुओं के विषय में भी उसे
बताया था, इसलिए वह सम्राट क्षयर्ष के समस्त
साम्राज्य में बसे हुए मोरदकय के जाति-भाई-
बन्धुओं को—सब यहूदियों को नष्ट करना
चाहता था।

7 सम्राट क्षयर्ष के शासन-काल के बारहवें
वर्ष के प्रथम महीने में, अर्थात् नीसान महीने
में, हामान ने अपने सम्मुख 'पूर' — जिसका
अर्थ है 'चिट्ठी' — प्रत्येक दिन तथा प्रत्येक
महीने के नाम पर निकलवायी। शकुन विचार
करने वालों ने चिट्ठी डाली तो वह बारहवें
महीने—अदार के नाम पर और उसके तेरहवें
दिन पर* निकली।

8 तब हामान ने सम्राट क्षयर्ष से यह कहा,
'महाराज, आपके साम्राज्य के समस्त प्रदेशों के
निवासियों में एक ऐसी कौम यहाँ-वहाँ बस गई
है, जिसके रीति-रिवाज उन प्रदेशों के निवासियों
से भिन्न हैं। उस कौम के लोग महाराज के

* यूनानी पाठ के अनुसार, देखिए आगे पद 13 में।

2 : 17 भज 75 : 7 **3:2** उत 41 : 42 **3 : 5** दान 3 : 12,19 **3 :8** एज्रा 4 : 13; प्रे 16 : 20; प्रज्ञा 2 : 14-15

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नियमों का पालन नहीं करते हैं। यह महाराज के हित में न होगा कि आप उनकी उपेक्षा करते रहें। [9]अत: यदि महाराज उचित समझें तो राजाज्ञा प्रसारित की जाए, और उन्हें नष्ट कर दिया जाए। कार्य की समाप्ति पर मैं महाराज के कोषाधिकारियों के हाथ में दस हजार चान्दी के सिक्के दूंगा ताकि वे उसको महाराज के खजाने में जमा कर दें।'

10 अत: सम्राट क्षयर्ष ने अपने हाथ से मुहर अंकित करनेवाली अंगूठी उतारी, और यहूदी कौम के दुश्मन, अगाग वंश के हामान बेन-हम्मदाता को दे दी, [11]और उससे यह कहा, 'यह चान्दी और यह कौम मैंने तुम्हें दी। तुम्हें जो भला लगे, तुम उनके साथ करो।'

12 पहिले महीने की तेरहवीं तारीख को सम्राट के सचिव बुलाए गए। उन्होंने हामान के आदेश को सम्राट के क्षत्रपों, सब प्रदेशों के राज्यपालों और सब कौमों के शासकों के लिए उनकी अपनी भाषा और लिपि में लिखा। यह आदेश सम्राट क्षयर्ष के नाम से लिखा गया, और सम्राट की अंगूठी से उस पर मुहर अंकित कर दी गई। [13]आदेशपत्र साम्राज्य के सब प्रदेशों में हरकारों के द्वारा भेज दिए गए। पत्र में यह लिखा था: 'अदार नामक बारहवें महीने के तेरहवें दिन सब यहूदियों का, जवान और बूढ़ों, बच्चों और स्त्रियों का वध कर दिया जाए और उनकी धन-सम्पत्ति को लूट लिया जाए।' [14]इस आदेश-पत्र की एक-एक प्रति प्रत्येक प्रदेश में राजाज्ञा के रूप में सब लोगों में प्रसारित कर दी गई ताकि वे उस दिन के लिए तैयार रहें।

15 हरकारे सम्राट की आज्ञा से शीघ्र ही आदेश-पत्र लेकर चले गए। राजाज्ञा की घोषणा शूशन नगर में भी की गई।

तब सम्राट और हामान शराब पीने के लिए बैठे, पर शूशन नगर में घबराहट फैल गई।

मोरदकय और एस्तर में वाद-विवाद

4 जब ये बातें मेरदकय को मालूम हुईं तब उसने अपना शोक प्रकट करने के लिए अपने वस्त्र फाड़े, और शरीर पर राख डाली, तथा टाट के वस्त्र पहिनकर वह घर से बाहर निकला। वह नगर के बीच में खड़ा होकर रोता हुआ जोर-जोर से चिल्लाने लगा। [2]यहाँ तक कि वह राजमहल में प्रवेश-द्वार के सम्मुख भी पहुँचा, जबकि टाट के वस्त्र पहिनकर राजमहल के भीतर प्रवेश करना मना था।

3 साम्राज्य के प्रदेशों में, जहाँ-जहाँ सम्राट की राजाज्ञा तथा आदेश-पत्र पहुंचा, वहाँ-वहाँ यहूदी बहुत शोक करने लगे। उन्होंने सामूहिक उपवास किया, परमेश्वर के सम्मुख *विलाप किया। वे रोए। अधिकांश यहूदी टाट के वस्त्र पहिनकर राख के ढेर पर बैठे रहे।

4 रानी एस्तर की सखियों और खोजों ने इन सब बातों की खबर उसको दी। रानी को अत्यन्त दु:ख हुआ। उसने मोरदकय के लिए वस्त्र भेजे ताकि वह उनको पहिने, और टाट-वस्त्र अपने शरीर से उतार दे। किन्तु मोरदकय ने उनको स्वीकार नहीं किया।

5 तब एस्तर ने हताख नामक एक खोजे को बुलाया। सम्राट क्षयर्ष ने हताख को रानी एस्तर की सेवा में नियुक्त किया था। एस्तर ने उसको मोरदकय के पास जाने का आदेश दिया कि वह मोरदकय से पूछे कि क्या बात है, और वह ऐसा क्यों कर रहा है।

6 हताख मोरदकय के पास नगर के चौराहे पर गया। यह स्थान राजमहल के प्रवेश-द्वार के सम्मुख था। [7]मोरदकय ने हताख को सब बताया जो उसके साथ हुआ था। उसने हामान के षड्यन्त्र के विषय में भी बताया कि उसने यहूदियों के विनाश के लिए कितना धन राजकीय कोष में जमा करने का वचन दिया है। [8]शूशन नगर में बसनेवाले यहूदियों का विनाश करने के लिए जो आदेश-पत्र भेजा गया था, उसकी एक प्रति भी मोरदकय ने हताख को दी ताकि वह एस्तर को दिखा दे, और उसका विवरण भी उसको बता दे। मोरदकय ने हताख के माध्यम से एस्तर को आदेश दिया कि वह

* ये शब्द मूल अर्थ के स्पष्टीकरण के लिए जोड़ दिये गए हैं।

3 :10 उत 41 : 42; एस 8 : 2, 8 4 : 1 प्रे 14 : 14; यहो 7 : 6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अपनी कौम के भाई-बन्धुओं के प्राण बचाने के लिए सम्राट के पास जाए, और उससे अनुनय-विनय करे और उसके सम्मुख निवेदन करे।

9 हताख लौटा। उसने मोरदकय की बातें
एस्तर को बताईं। 10एस्तर ने हताख से बात की,
और उसको मोरदकय के लिए यह सन्देश
दिया: 11'महाराज के सब सेवक तथा साम्राज्य
के सब प्रदेशों के निवासी यह बात जानते हैं
कि जो स्त्री या पुरुष बिना बुलाए महल के
अन्त:पुर में प्रवेश करेगा, उसके लिए केवल
एक नियम है: प्राणदण्ड! यह नियम सब पर
लागू है और केवल वह व्यक्ति प्राणदण्ड से
बच सकता है जिसकी ओर महाराज अपने
स्वर्ण राजदण्ड से संकेत करते हैं। मैं तीस दिन
से महाराज के पास नहीं बुलाई गई हूँ।'

12 सन्देशवाहकों ने एस्तर का सन्देश
मोरदकय को दिया, 13किन्तु मोरदकय ने उनसे
कहा कि वे एस्तर के पास लौट जाएं और
उससे यह कहें:'तू अपने मन में यह मत सोच
कि तू अन्य यहूदियों की अपेक्षा राजमहल
में सुरक्षित है, और बच जाएगी। 14यदि तू
ऐसे संकट के समय में चुप रहेगी तो भी कहीं
न कहीं से यहूदियों को सहायता प्राप्त हो
जाएगी, और वे इस संकट से मुक्त हो जाएंगे,
पर तू और तेरा पितृकुल नष्ट हो जाएगा।
कौन जानता है, ऐसे ही संकट के समय अपनी
कौम को बचाने के लिए तुझे यह राजपद प्राप्त
हुआ है?'

15 मोरदकय के सन्देश के उत्तर में एस्तर
ने सन्देशवाहकों से कहा कि वे मोरदकय को
यह उत्तर दें: 16'जाओ, और शूशन नगर के सब
यहूदियों को एकत्र करो, और मेरे लिए
सामूहिक उपवास करो। तीन दिन और रात न
भोजन करना, और न पानी पीना। तुम्हारे समान
मैं भी अपनी सखियों के साथ उपवास करूंगी।
तब मैं महाराज के पास जाऊंगी, यद्यपि ऐसा
करना नियम के विरुद्ध होगा। यदि मुझे मरना
ही पड़ेगा तो मैं मर जाऊंगी।'

17 यह सन्देश सुनकर मोरदकय चला गया,
और उसने वैसा ही किया जैसा करने का आदेश
एस्तर ने दिया था।

सम्राट और हामान को एस्तर का निमन्त्रण

5 तीसरे दिन एस्तर ने अपने राजसी वस्त्र
पहिने और सम्राट क्षयर्ष के भवन के
सम्मुख महल के अन्त:पुर में उपस्थित हुई।
सम्राट महल में प्रवेश-द्वार के सामने अपने
सिंहासन पर बैठा था। 2जब उसने रानी को
अन्त:पुर में खड़े हुए देखा तब वह उससे प्रसन्न
हो गया। उसने अपने हाथ का स्वर्ण राजदण्ड
उसकी ओर बढ़ाया। एस्तर आगे बढ़ी और
उसने राजदण्ड के सिरे का स्पर्श किया।

3 सम्राट ने पूछा, 'महारानी एस्तर, क्या बात
है? आपको क्या चाहिए? आपकी हर इच्छा
पूरी की जाएगी। यदि आप मेरा आधा राज्य भी
मांगेगी, तो मैं वह आपको दूंगा।'

4 एस्तर ने कहा, 'महाराज, मैंने आज
भोजन तैयार किया है। यदि महाराज को यह
उचित प्रतीत हो, तो आप हामान को लेकर
भोजन के लिए आएं।'

5 सम्राट ने आदेश दिया, 'हामान को तुरन्त
पेश किया जाए कि हम महारानी एस्तर की
इच्छा पूरी करें।' अत: सम्राट क्षयर्ष और हामान
एस्तर द्वारा तैयार किए गए भोज में सम्मिलित
हुए।

6 जब वे शराब पी रहे थे तब सम्राट क्षयर्ष
ने एस्तर से पूछा, 'महारानी, आप क्या मांगती
हैं? आपकी मांग पूरी की जाएगी। यदि आप
मेरा आधा राज्य भी मांगेंगी तो वह आपको दे
दिया जाएगा।'

7 एस्तर ने कहा, 'महाराज, मेरी इच्छा और
मांग केवल यह है: 8यदि महाराज की मुझ पर
कृपादृष्टि हुई है, यदि महाराज उचित समझते
हैं कि मेरे निवेदन और मांग को पूरा किया जाए
तो महाराज और हामान कल फिर भोजन के
लिए आएं, जो मैं आप दोनों के लिए तैयार
करूंगी। कल मैं अपनी इच्छा प्रकट करूंगी,
जैसा महाराज ने आदेश दिया है।'

---

4 : 16 एज्रा 8 : 21; योना 3 : 4-5; मत 17 : 21 **5 : 3** मक 6 : 23

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मोरदकय के लिए फांसी का प्रबन्ध

9 उस दिन हामान आनन्द में डूबा, प्रसन्नचित्त
रानी एस्तर के महल से बाहर निकला।
मोरदकय राजमहल के प्रवेश-द्वार पर बैठा
हुआ था। जब हामान ने देखा कि मोरदकय न
तो उसके सम्मान में खड़ा हुआ और न वह
उससे डरा, तब वह मोरदकय के प्रति क्रोध से
भर गया। 10पर उसने अपने को रोका, और घर
चला गया। उसने अपने मित्रों और पत्नी जेरेश
को बुलाया। 11वे आए। हामान ने उनके सामने
अपनी धन-सम्पत्ति का वैभव प्रदर्शित किया।
उसने उन्हें बताया कि उसके कितने पुत्र हैं।
उसने यह भी बताया कि सम्राट ने उसका
कितना सम्मान किया, और उसकी पदोन्नति
की, अपने सब दरबारियों और पदाधिकारियों
में उसको सर्वोच्च पद प्रदान किया। 12हामान
ने आगे कहा, 'यहाँ तक कि महारानी एस्तर ने
भी अपने द्वारा तैयार किए गए भोज में महाराज
के साथ किसी को नहीं बुलाया, सिर्फ मुझको!
और कल भी उन्होंने मुझे ही महाराज के साथ
निमंत्रित किया है। 13पर जब मैं राजभवन के
प्रवेश-द्वार पर उस यहूदी मोरदकय को बैठा
हुआ देखता हूँ तब यह सब आदर-सम्मान
व्यर्थ लगने लगता है।'

14 तब उसकी पत्नी जेरेश और उसके मित्रों
ने यह सलाह दी, 'तुम बीस मीटर* ऊंचा फांसी
का खम्भा बनाओ, और कल सबेरे महाराज से
कहो कि वह मोरदकय को फांसी पर टांगने का
आदेश दें। इसके बाद शाम को महाराज के साथ
आनन्द से भोज में जाना।' यह सलाह हामान
को पसन्द आई। उसने फांसी का खम्भा
बनवाया।

पासा पलट गया

6 उस रात सम्राट क्षयर्ष सो न सका। उसने
'इतिहास-ग्रन्थ' लाने का आदेश दिया,
जिसमें महत्वपूर्ण घटनाओं का वर्णन लिखा
गया था। ये घटनाएँ सम्राट के सम्मुख पढ़ी गईं।
2उसमें यह घटना लिखी हुई मिली: सम्राट के
दो खोजों — बिगताना और तेरेश — ने, जो
द्वारपाल थे, उस पर प्रहार करने का षड्यन्त्र
रचा, किन्तु मोरदकय ने इसकी सूचना सम्राट
क्षयर्ष को दे दी।

3 सम्राट क्षयर्ष ने पूछा, 'इस कार्य के लिए
मोरदकय के साथ किस प्रकार का व्यवहार
किया गया? उसे कौन-सा पुरस्कार अथवा पद
दिया गया?' सम्राट के सेवकों ने जो उसकी
सेवा में उपस्थित थे, उसको बताया, 'उसके
लिए कुछ भी नहीं किया गया।'

4 इसी समय हामान राजभवन के बाहरी
आंगन में आया। वह सम्राट क्षयर्ष से यह
निवेदन करने आया था कि वह मोरदकय को
फांसी के खम्भे पर टांगने का आदेश दे, जो
उसने मोरदकय के लिए बनवाया था।

सम्राट ने अपने सेवकों से पूछा, 'आंगन में
कौन है?' 5सेवकों ने बताया, 'महाराज, आंगन
में हामान खड़े हैं।' 'हामान को भीतर आने
दो,' सम्राट ने कहा।

6 हामान अन्तःपुर में आया। सम्राट ने उससे
पूछा, 'हामान, बताओ, उस मनुष्य के साथ क्या
करना चाहिए, जिससे महाराज प्रसन्न हैं, और
जिसको सम्मान देना चाहते हैं?'

हामान ने हृदय में सोचा, 'मेरे अतिरिक्त
और कौन व्यक्ति है, जिससे महाराज प्रसन्न हैं,
और जिसको सम्मान देना चाहते हैं?' 7अतः
उसने सम्राट से कहा, 'उस व्यक्ति के लिए
जिससे महाराज प्रसन्न हैं, और जिसको सम्मान
देना चाहते हैं, 8वह राजसी पोशाक लाई जाए,
जिसको महाराज स्वयं पहनते हैं। उसकी
सवारी के लिए वह राजमुकुट धारण करनेवाला
घोड़ा लाया जाए, जिस पर महाराज स्वयं बैठते
हैं; तथा 9यह पोशाक और घोड़ा महाराज के
सर्वश्रेष्ठ उच्चाधिकारी को दिया जाए, ताकि वह
उस मनुष्य को राजसी पोशाक पहिनाए और
घोड़े पर बैठाए, जिससे महाराज प्रसन्न हैं और

---

* मूल में "पचास हाथ"

5 : 11 भज 49 : 6; 1 तिम 6 : 17 5 : 12 नीति 27 : 1 5 : 13 1 रा 21 : 4-6 6 : 1 एस 2 : 23 6 : 8 1 रा 1 : 33 6 : 9 उत 41 : 43

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जिसको सम्मानित करना चाहते हैं। तब वह उसको नगर-चौक में घुमाए, और उसके आगे-आगे यह घोषित करे: ''जिस व्यक्ति से महाराज प्रसन्न होते हैं, और जिसको सम्मान देना चाहते हैं, उसके साथ ऐसा व्यवहार किया जाता है।'' '

10 सम्राट क्षयर्ष ने हामान से कहा, 'जैसा तुमने कहा है तुम शीघ्रता से राजसी पोशाक और घोड़ा लो, और राजभवन के प्रवेश-द्वार पर बैठने वाले यहूदी मोरदकय के साथ ऐसा ही करो। जैसा-जैसा तुमने कहा है, पूर्णत: वैसा ही करना, कुछ भी मत छोड़ना।'

11 अत: हामान ने राजसी पोशाक और घोड़ा लिया। उसने मोरदकय को राजसी पोशाक पहनायी, और उसको घोड़े पर बैठाकर नगर के चौक में घुमाया। वह उसके आगे-आगे यह घोषणा करता रहा, 'जिस व्यक्ति से महाराज प्रसन्न होते हैं और जिसको सम्मान देना चाहते हैं, उसके साथ ऐसा व्यवहार किया जाता है।'

12 मोरदकय राजभवन के प्रवेश-द्वार पर लौटा, पर हामान शोक करता हुआ, सिर ढके हुए, शीघ्रता से अपने घर गया। 13उसने अपनी पत्नी जेरेश और सब मित्रों को बताया कि आज उस पर क्या बीता। 14तब उसके बुद्धिमान मित्रों और उसकी पत्नी ने उससे कहा, 'मोरदकय, जिसके सम्मुख तुम्हें पराजय का मुंह देखना पड़ा है, यदि वह यहूदी कौम का है, तो तुम उसे कभी पराजित न कर सकोगे। तुम्हें निस्सन्देह उसके सामने मुंह की खानी पड़ेगी।'

15 वे हामान से बातें कर ही रहे थे कि सम्राट के खोजे आ पहुंचे, और उसको अविलम्ब एस्तर के भोज में ले गए।

जो दूसरों के लिए गड्ढा खोदता है

7 सम्राट क्षयर्ष और हामान रानी एस्तर के भोज में सम्मिलित हुए। 2यह दूसरा दिन था। जब वे शराब पी रहे थे तब सम्राट ने एस्तर से पुन: पूछा, 'महारानी एस्तर, आप क्या मांगती हैं? आपकी मांग पूरी की जाएगी। यदि आप मेरा आधा राज्य भी मांगेंगी तो वह आपको दिया जाएगा।'

3 तब रानी एस्तर ने उत्तर दिया, 'महाराज, यदि आप मुझसे प्रसन्न हैं, और यदि आप उचित समझें तो मेरी यह विनती है कि मुझे जीवन-दान मिले। मेरे निवेदन पर मेरी कौम को भी जीवन-दान दिया जाए। 4हमारा विनाश करने के लिए, हमारा वध करने के लिए, हमारा नामोनिशान मिटा डालने के लिए मुझे और मेरी कौम को बेच दिया गया है। अगर हमें केवल गुलाम के रूप में बेचा जाता तो मैं चुप रहती। उस स्थिति में हमारी बिक्री से महाराज को हानि के स्थान पर लाभ ही होता*।'

5 सम्राट क्षयर्ष ने रानी एस्तर से पूछा, 'कौन है वह? वह कहां है, जिसने ऐसा कार्य करने का दुस्साहस किया है।' 6'वह बैरी, वह दुश्मन, यह दुष्ट हामान है!', एस्तर ने कहा। हामान सम्राट और रानी के सामने आतंकित हो गया। 7सम्राट क्रोधावेश में भोजन पर से उठ गया, और वह राजमहल के उद्यान में चला गया। किन्तु हामान वहीं ठहरा रहा और रानी एस्तर से अपने प्राणों की भीख मांगने लगा, क्योंकि उसने जान लिया था कि सम्राट ने उसका अनिष्ट करने का निश्चय कर लिया है।

8 सम्राट राजमहल के उद्यान से उस स्थान पर लौटा जहां वे शराब पी रहे थे। उसने देखा कि जिस दीवान पर एस्तर लेटी है, उस पर हामान झुका हुआ है। सम्राट ने कहा, 'क्या यह मेरे ही सामने, मेरे ही महल में महारानी पर बलात्कार करना चाहता है?' सम्राट के मुंह से ये शब्द निकलते ही खोजों ने हामान का चेहरा ढक दिया। 9सम्राट की सेवा करनेवाले खोजों में से एक खोजा — हर्बोना ने सम्राट से कहा, 'महाराज के प्राण बचाने वाले मोरदकय के लिए बीस मीटर ऊँचा फांसी-स्तम्भ हामान ने बनवाया है। वह उसके निवास-स्थान में खड़ा है।' 10सम्राट ने आदेश दिया, 'इसको उस

* मूल अस्पष्ट।

7 : 2 मक 6 : 23 **7 : 7** नीति 14 : 19 **7 : 9** नीति 11 : 5, 6, 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सलीब पर लटका दो।' अत: जो सलीब हामान ने मोरदकय के लिए बनवाई थी, उसी पर उसको लटका दिया गया। तब सम्राट का क्रोध शान्त हुआ।

रानी एस्तर का निवेदन

8 उसी दिन सम्राट क्षयर्ष ने यहूदी कौम के
शत्रु हामान की जागीर रानी एस्तर को दे
दी। एस्तर ने सम्राट को बता दिया कि मोरदकय
उसका चचेरा भाई है। अत: वह सम्राट का
उच्चाधिकारी नियुक्त हो गया। 2सम्राट ने अपनी
अंगुली से मुहर अंकित करने वाली अंगूठी
उतारी, और मोरदकय को दे दी। सम्राट ने यह
अंगूठी हामान से वापस ले ली थी। एस्तर ने
मोरदकय को हामान की जागीर का प्रबन्धक
नियुक्त किया।
3 एस्तर सम्राट के पास पुन: गई। वह उसके
पैरों पर गिर पड़ी, और आंसू बहाने लगी। उसने
सम्राट से निवेदन किया कि अगागी वंश के
हामान द्वारा सोचा गया अनिष्ट का विचार,
यहूदियों के विरुद्ध रची गयी उसकी योजना
रद्द कर दी जाए।
4 सम्राट ने एस्तर की ओर अपना स्वर्ण
राजदण्ड बढ़ाया। 5एस्तर उठी, और वह सम्राट
के सम्मुख खड़ी हुई। उसने सम्राट से कहा,
'महाराज, यदि आप मुझसे प्रसन्न हैं, और यदि
आप उचित समझें, और इस प्रस्ताव को ठीक
समझें, और यदि मैं आपको अच्छी लगती हूँ
तो जो आदेश-पत्र यहूदियों का विनाश करने
के लिए अगागी वंशीय हामान बेन-हम्मदाता
ने महाराज के लिए लिखे थे, उन पत्रों को रद्द
करने के लिए महाराज नई आज्ञा प्रसारित करें।
6मैं अपनी कौम पर आनेवाली विपत्ति को कैसे
देख सकूंगी? मैं अपने नाते-रिश्तेदारों का
सर्वनाश कैसे सहन कर सकूंगी?'
7 सम्राट क्षयर्ष ने रानी एस्तर और यहूदी
मोरदकय से कहा, 'देखो, मैंने हामान की
जागीर एस्तर को दे दी है। मेरे सेवकों ने हामान
को फांसी-स्तम्भ पर भी लटका दिया, क्योंकि
वह यहूदी कौम पर हाथ उठाना चाहता था।
8अब तुम यह कार्य करो: तुम यहूदियों के
विषय में जो उचित समझते हो, वह मेरे नाम
से लिखो। लिखने के बाद पत्र पर मेरी अंगूठी
से मुहर लगा देना; क्योंकि जो आदेश-पत्र
सम्राट के नाम से लिखा जाता है और जिस पर
सम्राट की अंगूठी की मुहर लगाई जाती है, वह
कभी रद्द नहीं हो सकता।'
9 तीसरे महीने अर्थात् सीवान महीने की
तेईसवीं तारीख थी। उसी दिन सम्राट के सचिव
बुलाए गए। उन्होंने मोरदकय के निर्देश के
अनुसार यहूदियों के सम्बन्ध में भारतवर्ष से
इथियोपिआ देश तक — एक सौ सत्ताईस
प्रदेशों के शासकों, क्षत्रपों और राज्यपालों को
राजाज्ञा लिखी। यह राजाज्ञा प्रत्येक राष्ट्र की
भाषा तथा उसकी लिपि में लिखी गई। इनके
अतिरिक्त यह राजाज्ञा यहूदियों की भाषा और
लिपि में भी लिखी गई।
10 यह राजाज्ञा सम्राट क्षयर्ष के नाम से
लिखी गई, और उस पर सम्राट क्षयर्ष की
अंगूठी की मुहर लगाई गई। तत्पश्चात् राजाज्ञा
के पत्रों को राजकीय अश्वशाला के तेज घोड़ों
पर सवार हरकारों द्वारा भेज दिया गया। ये उत्तम
नस्ल के घोड़े सम्राट की सेवा में थे।
11 इन पत्रों के द्वारा सम्राट ने सब नगरों में
रहने वाले यहूदियों को यह अनुमति दी कि वे
अपने प्राणों की रक्षा के लिए परस्पर एकत्र
होकर सुरक्षा-दल बना सकते हैं। यदि कोई
जाति अथवा प्रदेश की सशस्त्र-सेना उन पर
आक्रमण करेगी तो वे बच्चों और स्त्रियों सहित
उनको नष्ट कर सकते हैं, उनका वध और
सर्वनाश कर सकते हैं, और उनकी धन-
सम्पत्ति लूट सकते हैं। 12यह अनुमति सम्राट
क्षयर्ष के समस्त साम्राज्य में केवल एक दिन के
लिए दी गई थी: अदार नामक बारहवें महीने
के तेरहवें दिन के लिए। 13इस राजाज्ञा-पत्र की
प्रतिलिपियाँ सब प्रदेशों में भेजी गईं, और सब
लोगों को सूचित किया गया कि यहूदी उस दिन
अपने शत्रुओं से बदला लेने के लिए तैयार रहें।
14सम्राट का आदेश था कि यह राजाज्ञा जल्दी

8 : 2 एस 3 : 10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

से जल्दी सब प्रदेशों में पहुँचाई जाए। अत: हरकारे राजकीय तेज घोड़ों पर सवार हुए और द्रुतगति से चले गए। ये घोड़े सम्राट की सेवा में थे।

राजधानी शूशन में राजाज्ञा घोषित की गई।

महामंत्री मोरदकय

15 मोरदकय सम्राट के दरबार से बाहर निकला। वह नीले और सफेद रंग की राजकीय पोशाक पहिने हुए था। उसके सिर पर सोने का बड़ा मुकुट था। वह महीन और बैंजनी रंग की चादर ओढ़े हुए था। शूशन नगर के नागरिक उसको देखकर जयजयकार करने लगे। 16यहूदी लोगों पर नयी ज्योति का उदय हुआ। वे हर्षित और प्रसन्न हुए। उन्हें सम्मान प्राप्त हुआ। 17सम्राट क्षयर्ष के अधीन हरएक प्रदेश और प्रत्येक नगर में जहाँ-जहाँ राजाज्ञा और आदेश-पत्र पहुंचे, यहूदी आनन्द और उल्लास से भर गए। उन्होंने छुट्टी मनाई और खाना-पीना किया।

यहूदियों का डर अन्य जातियों पर छा गया, अत: देश के अनेक लोगों ने स्वयं को यहूदी घोषित कर दिया।

यहूदियों का प्रतिरोध और प्रतिशोध

9 अदार नामक बारहवें महीने का तेरहवां दिन आया। इस दिन सम्राट क्षयर्ष की राजाज्ञा और आदेश-पत्र के अनुसार कार्य होना था। यहूदी कौम के शत्रु आशा कर रहे थे कि वे आज यहूदियों पर अधिकार कर लेंगे।

लेकिन पासा पलट गया था, और स्वयं यहूदी अपने विरोधियों पर अधिकार जमा लेने वाले थे।

2 सम्राट क्षयर्ष के अधीन समस्त प्रदेशों के नगरों में रहने वाले यहूदी एकत्र हुए, और उन्होंने अनिष्ट करनेवालों पर आक्रमण करने के लिए दल बनाए। कोई भी शत्रु उनके सामने ठहर न सका; क्योंकि सब जातियों पर उनका भय छा गया था। 3सब प्रदेशों के शासकों, क्षत्रपों, राज्यपालों और सम्राट के उच्चाधिकारियों ने यहूदियों की सहायता की; क्योंकि मोरदकय का भय उन पर भी छाया हुआ था।

4 मोरदकय सम्राट के शाही परिवार में बड़ा प्रभावशाली व्यक्ति था। उसकी कीर्ति साम्राज्य के सब प्रदेशों में फैल गई। वह दिन-प्रतिदिन शक्तिशाली होता जा रहा था। 5अत: यहूदियों ने अपने शत्रुओं को तलवार से मौत के घाट उतार दिया। उन्होंने उनका संहार और सर्वनाश किया। उन्होंने अपने बैरियों से, जो उनसे घृणा करते थे, मनमाना व्यवहार किया। 6साम्राज्य की राजधानी शूशन में यहूदियों ने पांच सौ पुरुषों को मार डाला। 7-10उन्होंने यहूदियों के शत्रु हामान बेन-हम्मदाता के इन दस पुत्रों का वध कर दिया: पर्शन्दाता, दलफोन, अस्पाता, पोराता, अदल्या, अरीदाता, पर्मशता, अरीसय, अरीदय और वयजाता। परन्तु यहूदियों ने हामान की धन-सम्पत्ति नहीं लूटी।

11 राजधानी शूशन में यहूदियों द्वारा मारे गए लोगों की संख्या उसी दिन सम्राट क्षयर्ष को बताई गई। 12तब सम्राट ने रानी एस्तर से कहा, 'राजधानी में यहूदियों ने पाँच सौ लोगों का और हामान के दस पुत्रों का वध कर दिया। तब न मालूम उन्होंने साम्राज्य के अन्य प्रदेशों में क्या किया होगा! महारानी, अब आप का और क्या निवेदन है? वह भी स्वीकार किया जाएगा। आप और क्या मांगती हैं? आपकी मांग पूरी की जाएगी।'

13 एस्तर ने कहा, 'यदि महाराज को यह उचित प्रतीत हो, तो शूशन नगर के यहूदियों को अनुमति दी जाए कि वे आज के समान कल भी अपने शत्रुओं का वध कर सकें। हामान के दस पुत्रों के शवों को फांसी के खम्भों पर लटकाया जाए।' 14सम्राट ने आदेश दिया, 'ऐसा ही किया जाएगा।' शूशन नगर में तत्काल एक राजाज्ञा घोषित की गई, और हामान के दस पुत्रों के शवों को फांसी के खम्भों पर लटका दिया गया। 15शूशन नगर में रहने वाले यहूदियों ने अदार महीने के चौदहवें दिन भी एकत्र होकर सुरक्षा-दल बनाए, और शूशन नगर में तीन सौ पुरुषों का वध कर दिया, पर उन्होंने उनकी

---

8 : 17 भज 18 : 43; नि 15 : 16 **9 : 1** 2 शम 22 : 41

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

धन-सम्पत्ति नहीं लूटी।

पूरीम पर्व की स्थापना

16 साम्राज्य के अधीन अन्य प्रदेशों में रहने वाले यहूदियां ने सुरक्षा-दल बनाकर अपने-अपने प्राणों की रक्षा की, और अपने शत्रुओं से छुटकारा पाकर चैन की सांस ली। उन्होंने अपने पचहत्तर हजार बैरियों का, जो उनसे घृणा करते थे, वध कर दिया, पर उन्होंने उनकी धन-सम्पत्ति नहीं लूटी। 17यह कार्य उन्होंने अदार महीने के तेरहवें दिन सम्पन्न किया था। उन्होंने चौदहवें दिन विश्राम किया, और उस दिन सामूहिक भोज और आनन्द-उत्सव मनाया।

18 किन्तु शूशन नगर के यहूदियों ने तेरहवें और चौदहवें दिन एकत्र होकर सुरक्षा-दल बनाए थे और पन्द्रहवें दिन विश्राम किया था। अत: उन्होंने पन्द्रहवें दिन सामूहिक भोज और आनन्द-उत्सव मनाया। 19इसलिए गांवों में रहने वाले यहूदी, जो बिना शहरपनाह के कस्बों में रहते हैं, अदार महीने के चौदहवें दिन को आनन्द, भोज, और छुट्टी का दिन मानते हैं। वे इस दिन अपने सर्वोत्तम भोजन का कुछ अंश एक-दूसरे को भेजते हैं।

20 मोरदकय ने इन घटनाओं का विवरण लिखा, और सम्राट क्षयर्ष के अधीन, दूर और पास के प्रदेशों में रहने वाले सब यहूदियों को पत्र भेज दिए। 21उसने उन्हें आदेश दिया कि वे प्रति वर्ष अदार महीने के चौदहवें तथा पन्द्रहवें दिन उत्सव मनाएं; 22क्योंकि इन दिवसों पर यहूदियों ने अपने शत्रुओं से छुटकारा पाकर चैन की सांस ली थी। इस महीने में उनका दु:ख, सुख में ; और उनका शोक, हर्ष में बदल गया था। अत: यहूदियों को चाहिए कि वे इन दिनों को सामूहिक भोज और आनन्द-उत्सव के दिन मानें। वे इन दिनों में अपने सर्वोत्तम भोजन का कुछ अंश एक-दूसरे को भेजें तथा गरीबों को दान दें।

23 अत: यहूदी इसी प्रकार यह पर्व मनाने लगे, जिसको वे पहले मनाना आरम्भ कर चुके थे और जैसा कि मोरदकय ने उन्हें यह लिखा था: 24'अगाग वंशीय हामान बेन-हम्मदाता ने, जो यहूदियों का शत्रु था, यहूदियों का विनाश करने के लिए एक षड्यन्त्र रचा था, और "पूर" अर्थात् चिट्‌ठी डाली थी ताकि वह उनको पूर्णत: कुचल दे, उनका पूर्ण विनाश कर दे। 25पर जब एस्तर सम्राट क्षयर्ष के सम्मुख प्रस्तुत हुई तब सम्राट ने यह लिखित राजाज्ञा प्रसारित की: "जो अनिष्टकारी षड्यन्त्र हामान ने यहूदियों के विरुद्ध रचा है, उसका प्रतिफल स्वयं हामान के सिर पर पड़े। हामान और उसके पुत्र फांसी-स्तम्भों पर लटका दिए जाएं"।' 26यहूदियों ने 'पूर' शब्द के अनुसार इन दिनों का नाम 'पूरीम' रखा। इस पत्र की बातों के कारण और इसके अतिरिक्त यहूदियों ने स्वयं अपनी आंखों से जो देखा था, उसके कारण, एवं यहूदियों को जो अनुभव हुआ था, उसके कारण 27यहूदियों ने यह निश्चय किया कि वे स्वयं, तथा उनके वंशज एवं नवदीक्षित यहूदी मोरदकय के पत्रानुसार प्रति वर्ष निर्धारित दो दिनों तक पर्व मनाएंगे और पर्व मनाने में कभी नहीं चूकेंगे। 28प्रत्येक पीढ़ी में हर एक परिवार में, ये दिन सब देशों और नगरों में स्मरण किए जाएंगे, और मनाए जाएंगे। पूरीम के दिन यहूदियों में कभी भुलाए न जाएंगे, और उनके वंशजों में उनका स्मरण सदा सुरक्षित रहेगा।

29 रानी एस्तर, जो अबीहइल की पुत्री थी, तथा यहूदी मोरदकय ने पूरीम उत्सव के सम्बन्ध में दूसरा पत्र लिखा और यह पत्र लिखकर उसको प्रामाणिक ठहराया।

30 इस प्रकार मोरदकय ने सम्राट क्षयर्ष के अधीन एक सौ सत्ताईस प्रदेशों के रहने वाले यहूदियों को कल्याण और सत्यनिष्ठा की कामना करते हुए पत्र लिखे। 31उनमें यही लिखा था: निर्धारित दिनों में, जिनको यहूदी मोरदकय और रानी एस्तर ने निश्चित किया है, पूरीम का पर्व मनाया जाएगा — जैसा यहूदियों ने स्वयं के लिए तथा अपने वंश के लिए ठहराया कि वे इन दिनों में सामूहिक उपवास और शोक

9 : 19 प्रक 11 : 10; नह 8 : 10-12 9 : 22 भज 30 : 11 9 : 24 एस 3 : 7

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मनाएंगे। [32]यों रानी एस्तर ने भी 'पूरीम पर्व'
की धार्मिक विधियों को निश्चित कर दिया
और उन्हें पुस्तक में लिख लिया गया।

महान मोरदकय

10 सम्राट क्षयर्ष ने देश और समुद्रतटीय
क्षेत्रों पर कर लगाया। [2]उसके सामर्थ्य
और पराक्रम के सब कार्यों का विवरण, तथा
सम्राट द्वारा मोरदकय को प्रदान किए गए महान
पद का पूर्ण विवरण मादय और फारस के
राजाओं के इतिहास-ग्रन्थ में लिखा हुआ है।
[3]यहूदी मोरदकय का पद और स्थान सम्राट
क्षयर्ष के बाद था। वह यहूदी कौम में महान
व्यक्ति माना जाता था। यहूदी समाज उससे
प्रसन्न था। वह अपनी कौम की भलाई के काम
में जुटा रहता था, और अपने जातीय भाई-
बन्धुओं का कल्याण चाहता था।

10 : 3 नह 2 : 10; 2 मक 15 : 14

अय्यूब

पुस्तक-परिचय

प्रस्तुत काव्य-ग्रन्थ में एक धार्मिक व्यक्ति के दु:खभोग की कहानी है, जिसके माध्यम से एक शाश्वत प्रश्न उठाया गया है कि मनुष्य पर दु:ख क्यों आता है। वास्तव में यह प्राचीन लोक-कथा का प्रसंग है, और इसका नायक—अय्यूब—अनेक प्रकार से अकारण दु:ख भोगता है। प्राक्कथन गद्य में है। इसमें अय्यूब को धीर-प्रशांत व्यक्ति के रूप में दर्शाया गया है, जो हर विपत्ति में खरा उतरता है। उसके पुत्र अचानक मर जाते हैं। उसकी धन-सम्पत्ति नष्ट हो जाती है। वह स्वयं एक असाध्य रोग से पीड़ित हो जाता है। इन सब विपत्तियों में भी अय्यूब अपने मुंह से कोई पाप-वचन नहीं निकालता, परमेश्वर की निन्दा नहीं करता।

ग्रंथ के काव्य-भाग में रचयिता अय्यूब के तीन मित्रों के माध्यम से दु:ख की समस्या का समाधान संवादों के द्वारा ढूंढ़ने का प्रयत्न करता है। तीनों मित्रों का अय्यूब की विपत्तियों के सम्बन्ध में अपना-अपना दृष्टिकोण है। स्वयं अय्यूब भी अपने दु:ख के विषय में अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। इस प्रकार रचयिता के समय में (सम्भवत: छठी सदी ईसवी पूर्व) लोक-प्रचलित दु:ख-संबंधी विचारधाराओं का पता चलता है।

अय्यूब के मित्र धार्मिक परम्परा के अनुरूप धार्मिक शब्दावली में अय्यूब के दु:ख का कारण बताते हैं कि परमेश्वर मनुष्य के अच्छे कर्म का अच्छा फल तथा बुरे कर्म का बुरा फल देता है। वह सत्कर्म करने वाले को पुरस्कृत करता तथा दुष्कर्म करने वाले को दण्ड देता है। अत: अय्यूब के दु:ख का कारण उसके दुष्कर्म हैं, किन्तु अय्यूब इस दृष्टिकोण को स्वीकार नहीं करता। उसकी मान्यता यह है कि उसने ऐसे कठोर दण्ड के उपयुक्त कोई पाप अथवा दुष्कर्म नहीं किया है। वह हर दृष्टि से धार्मिक है। वह समझ नहीं पाता है कि मुझ-जैसे धार्मिक पुरुष पर परमेश्वर ने इस प्रकार के दु:ख क्यों आने दिये। वह साहस के साथ परमेश्वर को भी ललकारता है। अय्यूब असहनीय दु:ख के बावजूद परमेश्वर पर अपना विश्वास नहीं खोता। फिर भी वह चाहता है कि परमेश्वर उसके साथ न्याय करे, और उसे निर्दोष प्रमाणित करे, ताकि समाज धार्मिक व्यक्ति के रूप में उसे पुन: स्वीकार करे।

काव्य ग्रंथ के अंतिम अध्यायों में परमेश्वर स्वयं इस वाद-विवाद में हस्तक्षेप करता है। इससे ठीक पहले एलीहू नामक युवा श्रोता एकाएक मंच पर आता है और अपने ओजस्वी भाषण में सब पर अभियोग लगाता है। अचानक परमेश्वर बवण्डर में से बोल उठता है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यद्यपि परमेश्वर अय्यूब को सीधा उत्तर नहीं देता और न ही उसकी शंका का समाधान करता है, फिर भी वह अय्यूब के विश्वास का प्रतिफल देता है। वह अपने सामर्थ्य और ज्ञान का प्रकाश उस पर उदित करता है। अय्यूब विनम्रतापूर्वक यह स्वीकार करता है कि केवल परमेश्वर ही महान और बुद्धिमान है। तब वह अपने क्रोध में उच्चारित शब्दों के लिए पश्चात्ताप करता है।

प्रस्तुत काव्य ग्रंथ का अन्त भी गद्य में है। इसमें यह बताया गया है कि परमेश्वर अय्यूब का दुःख दूर करता है। जितनी धन-सम्पत्ति अय्यूब के पास पहले थी, उसका दुगुना वह अय्यूब को लौटा देता है। यों वह अय्यूब को धन-सम्पत्ति एवं वैभव से पुनः सम्पन्न कर देता है। परमेश्वर अय्यूब के मित्रों को उनकी मूर्खतापूर्ण बातों के लिए डांटता है, क्योंकि उन्होंने अय्यूब के दुःख का भेद नहीं समझा था! केवल अय्यूब ही यह समझ सका कि परम्परावादी धर्म ने परमेश्वर को जिस रूप से चित्रित किया है, परमेश्वर उससे कहीं अधिक महान है।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

प्राक्कथन	1 : 1—2 : 13
अय्यूब और उसके मित्र	3 : 1—31 : 40
(क) अय्यूब की शिकायत	3 : 1-26
(ख) प्रथम संवाद	4 : 1—14 : 22
(ग) दूसरा संवाद	15 : 1—21 : 34
(घ) तीसरा संवाद	22 : 1—27 : 23
(च) बुद्धि की प्रशंसा में	28 : 1-28
(छ) अय्यूब का अंतिम तर्क	29 :1—31:40
एलीहू का भाषण	32 : 1—37:24
प्रभु परमेश्वर का अय्यूब को उत्तर	38 : 1—42:6
उपसंहार	42 : 7-17

अय्यूब की भक्ति की परीक्षा

1 ऊत्स देश में एक मनुष्य रहता था। उसका नाम अय्यूब था। वह प्रत्येक दृष्टि से सिद्ध और निष्कपट था। वह परमेश्वर से डरता और बुराई से दूर रहता था। 2उसके सात पुत्र और तीन पुत्रियां थीं। 3उसके पास सात हजार भेड़ें, तीन हजार ऊँट, पांच सौ जोड़ी बैल, पांच सौ गदहियां और बहुत नौकर-चाकर थे। वह मनुष्य पूर्व देश के लोगों में सबसे अधिक अमीर था।

4 अय्यूब के पुत्र बारी-बारी से एक-दूसरे के घर में जाकर भोज-उत्सव में सम्मिलित हुआ करते थे। वे सन्देश भेजकर अपनी तीनों बहिनों को भी भोज-उत्सव में खाने-पीने के लिए निमन्त्रित कर लिया करते थे। 5जब भोज-उत्सव के दिन समाप्त हो जाते, तब अय्यूब सन्देश भेजता और अपने पुत्रों को बुलवाकर उनको शुद्ध करता था। वह उनकी शुद्धि के लिए सबेरे उठता और अपने सात पुत्रों की गिनती के अनुसार, सात अग्नि-बलि चढ़ाता था, क्योंकि अय्यूब सोचता था, 'यह हो सकता है कि मेरे पुत्रों ने पाप किया हो, और अपने हृदय में ईश-निन्दा की हो।' अय्यूब प्रत्येक भोज-उत्सव पर हर बार ऐसा ही किया करता था।

6 एक दिन ईश-पुत्र* प्रभु के दरबार में उपस्थित हुए। उनके साथ शैतान** भी आया। 7प्रभु ने शैतान से पूछा, 'तू कहाँ से आ रहा है ?' शैतान ने प्रभु को बताया, 'मैं पृथ्वी पर इधर-उधर घूमते-फिरते हुए यहाँ आया हूं।'

* अथवा 'स्वर्गदूत' अथवा, 'स्वर्गिक प्राणी' ** अर्थात् 'विरोधी'

1 : 1 यहेब 14 : 14; याक 5 : 11 1 : 6 1 रा 22 : 19-21; दान 7 : 10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

8 प्रभु ने शैतान से फिर पूछा, 'क्या तूने मेरे
सेवक अय्यूब पर ध्यान दिया? क्या उसके
समान सिद्ध और निष्कपट, मुझ–परमेश्वर से
डरनेवाला और बुराई से दूर रहनेवाला कोई
मनुष्य पृथ्वी पर है?'

9 शैतान ने प्रभु को उत्तर दिया, 'क्या अय्यूब
बिना मतलब आपसे डरता है? 10क्या आपने
उसकी रक्षा के लिए उसके चारों ओर, उसके
घर और उसकी हर वस्तु के चारों ओर बाड़ा
नहीं बांधा है? आपने उसके प्रत्येक कार्य को
सफल किया है, इसलिए देश में उसकी धन–
सम्पत्ति की वृद्धि हुई है। 11यदि आप उसकी
धन–सम्पत्ति नष्ट करने के उद्देश्य से उसको
हाथ लगाएँ तो वह आपके मुंह पर आपको
कोसेगा।'

12 प्रभु ने शैतान से कहा, 'अच्छा, मैं उसकी
धन–सम्पत्ति पर तुझे अधिकार देता हूं, केवल
उसके शरीर को हाथ न लगाना।' इसके बाद
शैतान प्रभु के दरबार से निकलकर चला गया।

13 एक दिन अय्यूब के पुत्र–पुत्रियां बड़े
भाई के घर में भोजन कर रहे थे, और अंगूर–
रस पी रहे थे। 14इसी समय अय्यूब के पास
उसके सेवकों में से एक किसान आया, और
उसने कहा, 'स्वामी, हम आपके खेतों में बैलों
से हल जोत रहे थे, और गदहियां उनके पास
ही चर रही थीं। 15तभी शबा देश के लुटेरे
कारवां ने आक्रमण किया और वे पशुओं को
लूटकर ले गए। उन्होंने आपके सेवकों को
तलवार से मौत के घाट उतार दिया। केवल मैं
बच गया और अब आपको खबर देने के लिए
आया हूं।'

16 किसान यह कह ही रहा था कि एक
चरवाहा आया, और उसने यह कहा, 'आकाश
से परमेश्वर की आग गिरी, और उसने भेड़–
बकरियों और सेवकों को भस्म कर दिया।
केवल मैं बच गया और अब आपको यह खबर
देने के लिए आया हूं।'

17 चरवाहा यह कह ही रहा था कि एक
महावत आया, और उसने यह कहा, 'कसदी
लुटेरों ने हमारे ऊँटों पर तीन ओर से हमला
किया, और वे उनको लूटकर ले गए। उन्होंने
महावतों को तलवार से मौत के घाट उतार
दिया। केवल मैं बच गया, और अब आपको
यह खबर देने के लिए आया हूं।'

18 महावत यह कह ही रहा था कि एक
युवक आया, और उसने यह कहा, 'आपके पुत्र
और पुत्रियाँ अपने बड़े भाई के घर में भोजन
कर रहे थे, और अंगूर–रस पी रहे थे 19कि
अचानक मरुस्थल की ओर से एक भीषण
आंधी आयी। उसने मकान के चारों ओर से
ऐसा धक्का दिया कि वह आपके जवान पुत्र–
पुत्रियों पर गिर पड़ा और वे दबकर मर गए।
केवल मैं बच गया और अब आपको यह खबर
देने के लिए आया हूं।'

20 तब अय्यूब उठा। उसने शोक प्रकट
करने के लिए अपना अंगरखा फाड़ा और
अपना सिर मुंड़ाया। वह भूमि पर गिरा, और
उसने प्रभु की साष्टांग वन्दना की। 21उसने कहा,

'मैं अपनी मां के पेट से
नंगा बाहर निकला था।
मैं नंगा ही वहाँ लौटूंगा,
जहाँ से आया था।
प्रभु ने दिया था,
प्रभु ने ले लिया।
प्रभु का नाम धन्य है।'

22 अय्यूब पर ये चारों विपत्तियाँ आईं, पर
उसने पाप नहीं किया, और न परमेश्वर पर
मूर्खतापूर्ण आरोप लगाया।

2 एक दिन फिर ईश–पुत्र प्रभु के दरबार में
उपस्थित हुए। उनके साथ शैतान भी
आया। वह प्रभु के सम्मुख उपस्थित हुआ।
2प्रभु ने उससे पूछा, 'तू कहाँ से आ रहा है?'
शैतान ने प्रभु को बताया, 'मैं पृथ्वी पर इधर–
उधर घूमते–फिरते हुए यहाँ आया हूं।'

3 प्रभु ने शैतान से फिर पूछा, 'क्या तूने मेरे
सेवक अय्यूब पर ध्यान दिया? क्या उसके
समान सिद्ध और निष्कपट, मुझ–परमेश्वर से
डरनेवाला और बुराई से दूर रहने वाला कोई

---

1 : 9-11 प्रक 12 : 10 **1 : 21** सभ 5 : 14; 1 तिम 6 : 7; प्रव 40 : 1; 11 : 14

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
मनुष्य पृथ्वी पर है? यद्यपि तूने बिना किसी
कारण से उसका नाश करने के लिए मुझे
उकसाया था तो भी वह अब तक अपने आदर्श
पर अटल है।'
4 शैतान ने प्रभु को उत्तर दिया, 'खाल के
बदले खाल, लेकिन मनुष्य अपना प्राण बचाने
के लिए सब कुछ दे सकता है। 5उस पर अपना
हाथ तो उठाइए, और उसका शरीर स्पर्श
कीजिए। तब अय्यूब आपके मुंह पर आपको
कोसेगा।'
6 प्रभु ने शैतान से कहा, 'अच्छा, मैं उसको
तेरे अधिकार में सौंपता हूं; केवल उसका प्राण
मत लेना।' 7अत: शैतान प्रभु के दरबार से
निकलकर चला गया।
शैतान ने अय्यूब को सिर से पैर तक घिनौने
फोड़ों से भर दिया। 8तब अय्यूब ने अपना शरीर
खुजाने के लिए एक ठीकरा लिया, और नगर
के बाहर राख के ढेर पर बैठ गया। 9उसकी पत्नी
ने उससे कहा, 'क्या तुम अब भी अपने आदर्श
पर अटल हो? परमेश्वर को कोसो, और मर
जाओ।'
10 अय्यूब ने कहा, 'तू एक मूर्ख स्त्री की
तरह बक रही है। क्या हम परमेश्वर के हाथ
से केवल सुख ही सुख ग्रहण करें, और दु:ख
नहीं?' अय्यूब पर ये विपत्तियाँ आईं, किन्तु
उसने पाप नहीं किया; उसने परमेश्वर को नहीं
कोसा।

अय्यूब के तीन मित्र

11 अय्यूब के तीन मित्र थे: तेमान नगर का
रहनेवाला एलीपज, शूही वंश का बिलदद और
नामाह नगर का निवासी सोपर। जब उन्होंने
सुना कि अय्यूब पर विपत्तियाँ टूट पड़ी हैं, तब
वे अपने-अपने घर से निकले। उन्होंने निश्चय
किया कि वे अय्यूब के साथ शोक प्रकट करने
और उसको शान्ति देने के लिए एक-साथ
जाएंगे।
12 तीनों मित्र गए। जब उन्होंने दूर से
अय्यूब को देखा तब वे उसको पहचान न सके।
वे फूट-फूटकर रोने लगे। उन्होंने प्रथा के
अनुसार शोक प्रकट करने के लिए अपना-
अपना बागा फाड़ा, आकाश की ओर धूल
उड़ाई, और फिर उसको अपने-अपने सिर पर
डाला।
13 वे अय्यूब के साथ भूमि पर सात दिन
और सात रात चुपचाप बैठे रहे। उनके मुंह से
सहानुभूति का एक शब्द भी न निकला; क्योंकि
उन्होंने अनुभव किया कि अय्यूब का दु:ख
अपार है।

अय्यूब अपने जन्म-दिवस को धिक्कारता है

3 इसके बाद अय्यूब ने अपना मुँह खोला
और उसने इन शब्दों में अपने जन्म-दिवस
को धिक्कारा। 2उसने कहा:
3 'जिस दिन मैं पैदा हुआ वह नष्ट हो जाए!
जिस रात को यह कहा गया
कि शिशु गर्भ में आया,
वह रात मिट जाए।
4 वह दिन अंधकारमय हो जाए!
स्वर्ग से परमेश्वर उसकी सुधि न ले,
और न प्रकाश उस पर चमके!
5 अंधकार और मृत्यु की छाया
उस पर अपना अधिकार जमायें;
काली घटाएँ उस पर छा जाएँ,
दिन की सघन रेतीली हवाएँ उसको डराएँ।
6 उस रात को—
जब मैं गर्भ में आया था,
तिमिर अंधकार घेर ले;
साल के दिनों में उसको
आनन्द का दिन न माना जाए;
महीने के दिनों में उसको गिना न जाए।
7 वह रात बांझ हो जाए,
उसमें सोहर का आनन्द-गान न सुनाई दे।
8 श्राप देनेवाले उसको श्राप दें,
लिव्यातान राक्षस को जगाने में निपुण व्यक्ति
उस रात को कोसें।
9 भोर के तारे अन्धकारमय हो जाएँ।
रात को सबेरे के प्रकाश की आशा हो,
पर उसकी आशा कभी पूरी न हो;
वह प्रातः की किरण-रूपी पलकों को न देख

2 : 9 2 रा 6 : 33 2 : 12 यश 52 : 14 3 : 3 प्रव 23 : 14

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सके।
10 क्योंकि उस रात ने मेरी मां की कोख को बन्द
नहीं किया,
और न ही मेरी आंखों के सामने से
दुःख-दर्द हटाया।
11 'मैं जन्म के समय मर क्यों न गया;
गर्भ से बाहर आते ही मेरा प्राण
क्यों न निकल गया?
12 मैं पिता के घुटनों पर क्यों रखा गया?
मुझे मां का दूध क्यों पिलाया गया?
13 यदि मैं मर गया होता
तो अब चुपचाप पड़ा रहता,
मैं चिरनिद्रा में सोता
और आराम करता—
14 पृथ्वी के राजाओं और मन्त्रियों के साथ
जिन्होंने अपनी यादगार में
खण्डहरों का पुनर्निर्माण किया था,
15 अथवा उन धनवानों के साथ
जिनके पास अपार सोना था,
जिन्होंने अपने महलों को चांदी से भर
लिया था।
16 मैं समय से पूर्व उत्पन्न मृत शिशु के समान,
गर्भपात के सदृश क्यों न हुआ,
जो प्रकाश तक नहीं देख पाता?
17 अधोलोक में दुष्ट अपनी दुष्टता से छूट जाते
हैं,
वहाँ थके-मांदे लोग विश्राम पाते हैं।
18 वहाँ बन्दी भी सुख से रहते हैं,
वहाँ उन के निरीक्षकों की कठोर आवाज
नहीं होती।
19 अधोलोक में बड़े-छोटे सब बराबर हैं;
वहाँ गुलाम अपने मालिक से मुक्त रहता
है।

जो दुःख में है, वह शीघ्र मर क्यों नहीं जाता?

20 'जो दुःख में है, उसे जीवन का प्रकाश क्यों
दिया जाता है?
जिसका पैर कबर में लटका है, उसे जीवन
क्यों मिलता है?
21 वे मृत्यु की प्रतीक्षा करते हैं, पर वह नहीं
आती;
गड़ा धन खोजनेवालों से अधिक
वे मृत्यु को खोजते हैं।
22 जब वे उसको पा लेते हैं,
तब उनके आनन्द की कोई सीमा नहीं
रहती,
वे अपनी मृत्यु से हर्षित होते हैं।
23 'जो व्यक्ति अपना मार्ग नहीं देख पाता है,
उसे प्रकाश क्यों दिखाया जाता है?
जिसके चारों ओर स्वयं परमेश्वर ने घेराबन्दी
कर दी है,
उसे रास्ता क्यों बताया जाता है?
24 मेरी आहें ही मेरा भोजन हैं,
बहते हुए जल की तरह मेरी कराहें बहती हैं।
25 जिस बात से मैं डरता था, वही मुझ पर
आयी;
जिससे मैं आतंकित था, वही मुझ पर टूट
पड़ा।
26 न मुझे सुख है, और न शान्ति;
मुझे आराम भी नहीं है;
हर क्षण मुझ पर दुःख के बादल मंडराते
हैं।'

एलीपज का तर्क : परमेश्वर न्यायकर्त्ता है

4 तब तेमान नगर के रहनेवाले एलीपज ने
कहा :
2 'अय्यूब, यदि कोई तुमसे
इस सम्बन्ध में कुछ कहे
तो क्या तुम्हें बुरा लगेगा?
पर बिना बोले कोई
कब तक चुप रह सकता है?
3 सुनो, तुमने बहुत लोगों को धर्म की बातें
सिखाईं,
और कमजोर हाथों को मजबूत बनाया।
4 तुम्हारे शब्दों ने गिरते हुए मनुष्य को सम्भाला,
और कांपते हुए घुटनों को स्थिर किया।
5 पर अब, जब तुम पर विपत्ति आई
तो तुमने धीरज छोड़ दिया!
विपत्ति ने तुम्हें छुआ
तो तुम घबरा गए!

---

3 : 14 यहेज 32 : 18-30 **3 : 16** सभ 6 : 3 **3 : 3-19** यिर 20 : 14-18 **3 : 21** प्रक 9 : 6 **4 : 5** नीति 24 : 10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

6 क्या परमेश्वर की भक्ति तुम्हारा सहारा नहीं
है?
क्या तुम्हारा आदर्श-आचरण ही तुम्हारी
आशा नहीं है?
7 'सोचो, क्या कोई निर्दोष व्यक्ति
इस प्रकार कभी नष्ट हुआ है?
क्या कभी निष्कपट व्यक्ति का सर्वनाश
हुआ है?
8 मैंने तो यह देखा है :
जो अधर्म का खेत जोतते हैं,
और दुष्कर्म का बीज बोते हैं,
वे वैसा ही फल पाते हैं।
9 वे परमेश्वर की फूंक से उड़ जाते हैं,
वे उसकी क्रोधाग्नि से भस्म हो जाते हैं।
10 शेर की दहाड़, हिंसक सिंह की गरज,
समाप्त हो जाती है;
जवान सिंह के दांत टूट जाते हैं।
11 शिकार न मिलने से
बलवान सिंह तक मर जाता है,
और सिंहनी के बच्चे
तितर-बितर हो जाते हैं।

दुःख-भोग का रहस्य

12 'मैंने गुप्त रूप से
यह बात सुनी है;
मेरे कानों में किसी ने
फुसफुसाकर यह कहा।
13 रात के दुःस्वप्नों के दौरान
जब मनुष्यों पर गहरी नींद का जाल बिछा
था,
14 तब मुझ पर भय छा गया,
मैं कांपने लगा,
मेरी हड्डी-हड्डी हिल गई।
15 उसी समय एक आत्मा
मेरे सम्मुख से गुजरी।
मेरे शरीर के रोंगटे खड़े हो गए!
16 आत्मा खड़ी थी,
पर मैं उसका चेहरा पहचान न सका,
मेरी आंखों के सामने एक आकृति थी।
चारों ओर निस्तब्धता थी;
तब मैंने यह आवाज सुनी:
17 "क्या परमेश्वर के सामने
नश्वर मनुष्य धार्मिक प्रमाणित हो सकता
है?
क्या बलवान मनुष्य अपने बनानेवाले के
सामने
पवित्र सिद्ध हो सकता है?
18 परमेश्वर अपने सेवकों पर भी
भरोसा नहीं करता;
वह अपने दूतों को भी दोषी ठहराता है।
19 तब आदमी की क्या बात,
जो मिट्टी के मकान में रहता है,
जिसकी नींव ही मिट्टी है,
जो पतंगे के समान नष्ट हो जाता है!
20 आदमी सबेरे से शाम तक मरते रहते हैं,
वे सदा के लिए नष्ट हो जाते हैं,
और कोई उन पर ध्यान भी नहीं देता!
21 यदि उनके जीवन-रूपी शिविर का खूंटा
उखाड़ लिया जाए
तो क्या वे बिना बुद्धि के
धराशायी नहीं हो जाएंगे?"

5 'अय्यूब, किसी को भी पुकारो;
—तुम्हें कोई भी व्यक्ति उत्तर नहीं देगा!
परमेश्वर के पवित्र जनों में से
तुम किसके पास जाओगे?
2 निस्सन्देह क्रोध मूर्ख मनुष्य को मार डालता
है;
और मूढ़ आदमी ईर्ष्या के कारण मर जाता
है।
3 मैंने मूर्ख मनुष्य को जड़ पकड़ते हुए देखा;
किन्तु उसके घर पर अचानक अभिशाप
पड़ा।
4 उसके पुत्र सुरक्षित नहीं रहते;
वे अदालत में रौंदे जाते हैं;
और उनको बचानेवाला कोई नहीं होता।
5 भुखमरे लोग उसकी फ़सल चट कर जाते हैं,
वे कंटीली बाड़ को भी तोड़कर
फ़सल चुरा लेते हैं,
उसकी सम्पत्ति का भूखा-प्यासा
उसके लिए जाल बिछाता है।
6 विपत्ति का जन्म मिट्टी से नहीं होता,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और न दु:ख-कष्ट भूमि से उत्पन्न होता है।
7 जैसे चिनगारियाँ सदा ऊपर ही उड़ती हैं,
वैसे ही मनुष्य दु:ख भोगने के लिए जन्म लेता है।
8 'यदि मुझ पर विपत्तियाँ आएं
तो मैं उनके निवारण के लिए
परमेश्वर को खोजूंगा,
मैं न्याय के लिए
परमेश्वर की दुहाई दूंगा;
9 क्योंकि परमेश्वर ही
बड़े-बड़े आश्चर्यपूर्ण कर्म,
अगणित भेदपूर्ण कार्य करता है।
10 वह पृथ्वी पर जल बरसाता है,
वह खेतों को सींचता है।
11 वह गिरे हुओं को उठाकर
उच्च स्थान पर प्रतिष्ठित करता है;
वह शोक करनेवालों को
निरापद स्थान पर पहुँचाता है।
12 वह धूर्तों की योजनाओं पर पानी फेर देता है,
और उन्हें सफलता हाथ नहीं लगती।
13 वह चालाक को उसकी चालाकी के जाल में फंसाता है,
कुटिल लोगों की योजनाएँ शीघ्र असफल हो जाती हैं।
14 वे दिन में अंधकार महसूस करते हैं,
दोपहर में वे रात की तरह टटोलते हैं।
15 पर परमेश्वर उनके चंगुल से अनाथों की रक्षा करता है,
वह निर्बलों को बलवानों के हाथ से बचाता है।
16 अत: गरीबों को आशा का सहारा है;
अन्यायी को मुंह बन्द करना पड़ता है।
17 'धन्य है वह मनुष्य
जिसको परमेश्वर ताड़ित करता है।
अत: ओ अय्यूब,
सर्वशक्तिमान परमेश्वर की ताड़ना को तुम स्वीकार करो।
18 यद्यपि वह घायल करता है,
तथापि वह घावों पर पट्टी भी बांधता है।
वह प्रहार करता है,
पर उसके हाथ रोगी को स्वस्थ करते हैं।
19 वह तुम्हें छ: विपत्तियों से बचाएगा,
और सातवीं विपत्ति में भी तुम्हारी कुछ हानि न होगी।
20 अकाल में वह तुम्हें मृत्यु से बचाएगा,
और युद्ध में तलवार के आघात से।
21 तुम शब्द-रूपी कोड़े की मार से बचे रहोगे,
विनाश के आगमन पर तुम भयभीत नहीं होगे;
22 बल्कि तुम विनाश और अकाल पर हँसोगे;
तुम्हें पृथ्वी के किसी भी जंगली पशु से डर नहीं लगेगा।
23 खेत में पड़े पत्थर तुमसे सन्धि करेंगे,
और वनपशु भी तुममे मैत्री करेंगे।
24 तब तुम्हें अनुभव होगा कि तुम्हारा शिविर सुरक्षित है,
तुम अपनी पशुशाला का निरीक्षण करोगे
और तुम्हारा एक भी पशु कम न मिलेगा।
25 तुम्हें यह भी ज्ञात होगा कि
तुम्हारा वंश बढ़ता जा रहा है;
तुम्हारे वंशज पृथ्वी की घास के सदृश असंख्य होंगे।
26 तुम्हें पूर्ण आयु की सुखद मृत्यु प्राप्त होगी;
जैसे अनाज पकने पर, अनाज का पूला खलियान में लाया जाता है,
वैसे ही तुम आयु पकने पर दफनाए जाओगे।
27 देखो, हमने यह ज्ञान
बहुत खोज के बाद प्राप्त किया है,
और यही सच है।
सुनो, और अपने हित के लिए इसे जानो।'

अय्यूब का एलीपज को उत्तर

6 अय्यूब ने एलीपज को उत्तर दिया। उसने कहा :
2 'काश! कोई व्यक्ति
मेरे दु:खों की गहराई नापता;

5 : 9 प्रव 43 : 32 5 : 13 1 कुर 3 : 19 5 : 17 इब्र 12 : 5 5 : 18 हो 6 : 1

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

काश! मेरी विपत्तियाँ तराजू में तौली जातीं!
3 तब मेरे कष्ट समुद्रतट की रेत से भारी होते।
एलीपज, इसी कारण मेरे मुंह से शब्द बिना सोच-विचार के निकल पड़े।
4 सर्वशक्तिमान परमेश्वर के जहर-बुझे तीरों ने मुझे बेधा है,
मेरी आत्मा उनका विष-पान कर रही है,
परमेश्वर का आतंक मेरे विरुद्ध
आक्रमण के लिए पंक्तिबद्ध खड़ा है।
5 क्या जंगली गधा घास होते हुए रेंकता है?
क्या बैल सानी खाते हुए रम्भाता है?
6 क्या स्वादहीन भोजन बिना नमक के खाया जा सकता है?
क्या अण्डे की सफेदी में स्वाद होता है?
7 मेरा भूखा प्राण जिन खाद्य वस्तुओं को स्पर्श भी नहीं करना चाहता था,
वे ही अब मेरा घृणित भोजन बन गई हैं।
8 काश! मुझे मुँह-मांगा वरदान मिलता!
काश! परमेश्वर मेरी इच्छा को पूर्ण करता!
9 काश! वह प्रसन्न होकर मुझे रौंद देता,
वह मुझ पर हाथ उठाता,
और मुझे मार डालता!
10 तब मुझे शान्ति प्राप्त होती;
मैं पीड़ा में भी आनन्दित होता;
क्योंकि मैंने पवित्र परमेश्वर के वचनों को कभी अस्वीकार नहीं किया।
11 मुझ में बल ही क्या है
कि मैं प्रभु के अनुग्रह की प्रतीक्षा करूं?
जब मेरा अन्त निश्चित है
तब मैं अपने प्राण को क्या धीरज दूं?
12 क्या मैं पत्थर-जैसा मजबूत हूं?
क्या मेरा शरीर पीतल का बना है?
13 सच पूछो तो मैं असहाय हूं,
मैं सर्वथा साधनहीन हूं।
14 'जो व्यक्ति अपने दुःखी मित्र पर करुणा नहीं करता,
वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर की भक्ति छोड़ देता है।
15 मेरे भाई-बन्धु छिछली नदी के समान विश्वासघाती हैं,
वे बरसाती नदी के समान हैं
जो ग्रीष्म ऋतु में सूख जाती है;
16 जो शीत ऋतु में बर्फ के कारण काली दिखाई देती है,
और हिमपात के कारण छिपी रहती है।
17 पर ग्रीष्म ऋतु में उसका जल सूख जाता है,
और वह अपने स्थान से लुप्त हो जाती है।
18 कारवां पानी की तलाश में
उसकी धारा की लीक पर चलते हैं,
पर वे उजाड़-खण्ड में पहुंचते हैं
और वहाँ वे प्यास से मर जाते हैं।
19 तेमा के बनजारे पानी को खोजते हैं,
शबा के काफिले नदी को प्रतीक्षा करते हैं।
20 पर वे निराश होते हैं,
क्योंकि उनकी आशा झूठी निकलती है,
वे नदी के समीप जाते हैं,
और धोखा खाते हैं।
21 मेरे मित्रो, तुम भी मेरे लिए
बरसाती नदियों के समान हो!
तुम मेरी विपत्ति देखकर डर गए!
22 क्या मैंने तुमसे कहा था,
''मुझे कुछ दो?
अपनी सम्पत्ति में से
कुछ हिस्सा मुझे उपहार में दो?''
23 क्या मैंने तुमसे निवेदन किया
कि मुझे मेरे बैरी के हाथ से मुक्त करो?
मुझे अत्याचारियों से छुड़ाओ?
24 'मित्रो, मुझे बताओ कि
मेरी भूल क्या है।
तब मैं चुप रहूंगा;
मुझे समझाओ कि
मैंने किस बात में गलती की है।
25 सीधे-सादे शब्दों में कितनी शक्ति होती है!
किन्तु तुम्हारी डांट-फटकार से क्या लाभ?
26 तुम शब्दों की बाजीगरी दिखाते हो,
तुम सोचते हो कि केवल तुम्हारे शब्द ही सच हैं,
और उसके शब्द मात्र हवा हैं,
जो निराशा में डूबा है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

27 तुम पितृहीन बच्चे पर, चिट्ठी डाल कर,
उसको गुलाम बना सकते हो;
तुम अपने मित्र तक का सौदा कर सकते
हो!
28 'कृपया, अब मेरी ओर देखो;
मैं तुमसे झूठ नहीं बोलूंगा।
29 सच्चाई की ओर लौटो, और विचार करो,
जिससे मेरे साथ अन्याय न हो।
कृपया पुन: सच्चाई से सोचो,
मैंने अपने पक्ष में जो कहा है,
वह सच है।
30 क्या मेरी जीभ छल-कपट की बातें करती
है?
क्या मेरा विवेक
भले और बुरे की पहचान नहीं कर सकता?

अय्यूब का विचार : जीवन क्षण-भंगुर और व्यर्थ है

7 'मनुष्य के जीवन की नियति क्या है?
पृथ्वी पर कठोर श्रम!
उसका जीवन मजदूर का जीवन है!
2 उसका जीवन गुलाम की तरह है,
जो दिन-भर के कठोर परिश्रम के बाद
संध्या समय बेचैनी से छाया की
प्रतीक्षा करता है।
मनुष्य का जीवन उस मजदूर के समान है,
जो दिन-भर परिश्रम करता है,
और संध्या समय अपनी मजदूरी की आशा
करता है।
3 मुझे जीवन में क्या दिया गया?
केवल निस्सार महीने!
मेरे भाग में दु:खपूर्ण लम्बी रातें आयी हैं।
4 जब मैं सोता हूं तब कहता हूं,
''मैं कब उठूंगा?''
पर रात लम्बी होती है, और कटती नहीं।
मैं प्रात: होने तक शैया पर करवटें बदलता
रहता हूं।
5 मेरा शरीर कीड़ों का घर है,
मेरी देह पर मिट्टी की परत चढ़ी है।
मेरी चमड़ी कड़ी पड़ गई है,
और वह फिर गलने लगी है।
6 मेरे जीवन का हर दिन
जुलाहे की ढरकी से अधिक
तेजी से गुजरता है;
वह बिना किसी आशा के
यों ही बीत जाता है।
7 'हे परमेश्वर, स्मरण कर
कि मेरा जीवन हवा का एक झोंका है।
मेरी आँखें अब अच्छे दिन नहीं देखेंगी।
8 मुझे देखनेवाला फिर कभी मुझे नहीं देख
सकेगा;
प्रभु, तेरी आंखें मुझ पर हैं,
पर मैं तेरे देखते-देखते खत्म हो जाऊंगा।
9 जैसे बादल छटकर लुप्त हो जाता है
वैसे ही अधोलोक में जानेवाला मृतक मिट
जाता है,
वह पृथ्वी पर वापस नहीं आता।
10 वह अपने घर को नहीं लौटता,
और न उसका निवास-स्थान उसको
पहचानता है।

परमेश्वर को चुनौती

11 'अत: मैं अपना मुंह बन्द नहीं रखूंगा;
मैं अपनी आत्मा की वेदना के कारण
बोलूंगा;
मैं अपने प्राण की कटुता के कारण,
हे परमेश्वर, तुझसे शिकायत करूंगा!
क्या मैं समुद्री राक्षस हूं
कि तू मुझे पहरे में रखता है,
जिससे मैं बन्धन-मुक्त न होऊं?
12 क्या मैं सागर हूं,
कि तूने मुझ पर पहरा बिठा दिया है
ताकि मैं अपनी मर्यादा न लांघूं?
13 जब मैं सोचता हूं
कि मुझे खाट पर आराम मिलेगा—
शय्या पर लेटने से मेरा दु:ख हल्का होगा,
14 तब तू मुझे डरावने सपनों द्वारा डराता है,
बुरे-बुरे स्वप्नों से मुझे आतंकित करता है।
15 मैं इतना भयभीत हो जाता हूं,
कि मैं अपना ही गला घोंटना चाहता हूं।

---

7 : 9-10 प्रज्ञा 2 : 1-4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मुझे ऐसे जीवन से अधिक मृत्यु की कामना
होने लगती है।
16 मुझे अपने जीवन से घृणा है;
मैं चिरकाल तक जीवित रहना नहीं चाहता।
मुझे अकेला छोड़ दे;
क्योंकि मेरा जीवन हवा का झोंका है।
17 मानव क्या है कि तू उसको इतना महत्व दे?
मनुष्य क्या है कि तू अपना हृदय उस पर
लगाए?
18 तू हर सुबह उसकी सुधि लेता है;
प्रत्येक पल तू उसको परखता है।
19 तू कब तक मुझ पर से
अपनी दृष्टि नहीं हटाएगा?
तू एक पल के लिए मुझे अकेला नहीं
छोड़ता
कि मैं अपना थूक भी निगल सकूं?
20 'ओ मनुष्य पर पहरा देनेवाले,
यदि मैं पाप करता हूं,
तो इससे तेरा क्या बिगड़ता है?
तूने अपने तीर का निशाना
मुझे क्यों बनाया है?
मैं तेरे लिए क्यों भार बन गया हूं?
21 क्या यह तेरा धर्म नहीं है
कि तू मेरे अपराध को क्षमा करे,
मेरे अधर्म को दूर करे?
मैं शीघ्र ही कबर में सो जाऊंगा;
तू मुझे ढूंढ़ेगा, पर मैं तुझे नहीं मिलूंगा!'

बिलदद का तर्क : परमेश्वर सदा न्याय करता है

8 शूही वंश के बिलदद ने अय्यूब से कहा:
2 'मित्र, तुम कब तक ये बातें कहते रहोगे?
तुम्हारे मुंह की बातें ऐसी लगती हैं,
मानो प्रचण्ड वायु बह रही है!
3 भाई, क्या परमेश्वर
न्याय को अन्याय में बदल देता है?
क्या सर्वशक्तिमान परमेश्वर,
धर्म को अधर्म में उलट देता है?
4 तुम्हारे पुत्रों ने परमेश्वर के प्रति पाप किया
था,
अतः उसने अपराध के हाथ में उन्हें सौंप
दिया।
5 यदि तुम परमेश्वर को ढूंढ़ोगे,
और सर्वशक्तिमान परमेश्वर से निवेदन
करोगे;
6 यदि तुम शुद्ध और सरल हृदय के हो,
तो निस्सन्देह वह तुम्हारे लिए जागेगा,
और तुम्हारे धर्ममय आचरण के कारण
तुम्हारे परिवार का कल्याण करेगा।
7 यद्यपि तुम्हारी आरम्भिक स्थिति साधारण थी
तथापि तुम्हारे अन्त की दशा महान होगी!
8 'अयूब, पिछले पीढ़ी के लोगों से पूछो,
और तब विचार करो
कि तुम्हारे पूर्वजों ने इस सम्बन्ध में
क्या अनुभव प्राप्त किया था?
9 हम तो कल के लोग हैं,
हमें कुछ भी अनुभव नहीं है।
पृथ्वी पर हमारी उम्र
छाया के समान ढलती है।
10 क्या तुम्हारे पूर्वज
तुम्हें शिक्षा न देंगे,
तुम्हें नहीं सिखाएँगे?
निस्सन्देहह वे तुम्हें हृदय से शिक्षा देंगे।
11 'मित्र, क्या कछार की घास
कछार के पानी के बिना उग सकती है?
क्या नरकुल बिना कीचड़ के पनप सकता
है?
12 नरकुल चाहे हरा हो,
चाहे उसको न काटा जाए
तो भी वह अन्य घास की अपेक्षा
पहले ही सूख जाता है!
13 यही हाल उन सबका होता है
जो परमेश्वर को भूल जाते हैं;
इसी प्रकार अधर्मी की आशा
धूल में मिल जाती है।
14 उसका विश्वास तन्तु मात्र होता है;
जिस पर वह भरोसा करता है,
वह मकड़ी के जाल की तरह कमजोर होता
है।
15 वह अपने घर को आधार समझता है;

7 : 17 भज 8 : 4; 144 : 3 8 : 8 प्रव 8 : 9

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पर उसका घर भी ढह जाता है!
वह उसको दृढ़ता से बांधता है,
पर घर टिक नहीं पाता!
16 अधर्मी मनुष्य उस पौधे के समान है
जो धूप में हरा-भरा हो जाता है;
उसकी शाखाएँ उद्यान में इधर-उधर फैल जाती हैं।
17 उसकी जड़ें पत्थरों के ढेर में भी घुस जाती हैं;
वह चट्टानों के मध्य पनपता है।
18 पर जब वह अपने स्थान पर
नष्ट किया जाता है,
तब उसका स्थान उसको अस्वीकार करता है :
वह कहता है, मैंने तुझे कभी देखा ही नहीं!
19 अय्यूब, देखो, यह है अधर्मी के मार्ग का मजा!
उसी मिट्टी में फिर दूसरे उत्पन्न हो जाएंगे!
20 'परमेश्वर निर्दोष व्यक्ति का त्याग नहीं करता,
और न वह दुर्जनों को सहारा देता है!
21 वह तुम्हारी गोद को खुशियों से भर देगा,
तुम्हारे ओंठों पर मुस्कुराहट खिलेगी।
22 जो लोग आज तुमसे घृणा करते हैं,
वे स्वयं लज्जा से मुंह छिपाते हुए फिरेंगे;
दुर्जन का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा।'

अय्यूब का बिलदद को उत्तर: परमेश्वर का न्याय मनुष्य की समझ से परे है

9 अय्यूब ने बिलदद को यह उत्तर दिया :
2 'मैं सचमुच यह जानता हूं
कि जो तुमने कहा है, वह सच है।
पर परमेश्वर के सम्मुख
मनुष्य किस प्रकार धार्मिक सिद्ध हो सकता है?
3 यदि मनुष्य उससे बहस करना भी चाहे
तो वह उसके हजार प्रश्नों में से
एक प्रश्न का भी उत्तर नहीं दे सकेगा।
4 परमेश्वर बुद्धिमान है,
वह सर्वशक्तिमान है,
किस मनुष्य ने हठ पूर्वक उसका विरोध किया,
और सफलता प्राप्त की?
5 वह पहाड़ों को उनके स्थानों से हटा देता है,
और लोगों को इस बात का पता भी नहीं चलता!
वह क्रोध में पहाड़ों को उलट-पुलट देता है।
6 वह पृथ्वी को उसकी नींव पर हिलाता है,
और उसके खम्भे कांपने लगते हैं।
7 वह सूर्य को आदेश देता है,
और सूर्य अपने स्थान से नहीं निकलता;
वह तारों को मुहर लगाकर बन्द कर देता है।
8 केवल परमेश्वर ने ही आकाश को
वितान की तरह फैलाया है;
अपने सागर की उत्ताल तरंगों को
वह वश में रखता है।
9 उसने ही आकाश में
सप्तर्षि, मृगशीर्ष का,
कृतिका और दक्षिण नक्षत्रों का
निर्माण किया है।
10 वह बड़े-बड़े कार्य करता है
जिनको बुद्धि समझ नहीं पाती;
वह अगणित आश्चर्यपूर्ण कार्य करता है।
11 यदि वह मेरे पास से गुजरे
तो मैं उसे देख नहीं सकता;
यदि वह मुझ से आगे चले
तो में उसको पहचान नहीं सकता।
12 यदि वह किसी से कुछ छीन ले
तो कौन उसको रोक सकेगा?
कौन उससे उत्तर मांग सकता है,
कि यह तू क्या कर रहा है?
13 'देखो, परमेश्वर का क्रोध शान्त नहीं होता;
समुद्री राक्षस रहब के सहायक उसके सम्मुख घुटने टेकते हैं।
14 फिर मैं कैसे उसे उत्तर दे सकता हूं,
क्या मैं चुनिन्दे शब्दों से
उससे बहस कर सकता हूं?
15 यद्यपि मैं निर्दोष हूं
तो भी उसको उत्तर नहीं दे सकता!

---

9 : 2 अय्य 4 : 17 9 : 7-9 बारू 3 : 34-35 9 : 9 अय्य 38 : 31; आमो 5 : 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मैं अपने मुद्दई से
केवल दया की भीख मांग सकता हूं!
16 यदि मैं उसको पुकारूँ,
और वह मुझे उत्तर दे,
तो भी मैं विश्वास नहीं करूंगा
कि वह मेरी दुहाई पर ध्यान देगा।
17 क्योंकि वह तूफान से
मेरी गर्दन तोड़ता है;
अकारण ही मुझ पर
प्रहार के बाद प्रहार करता चला जा रहा है।
18 वह मुझे सांस भी नहीं लेने देता है,
बल्कि मुझे कटुता से भर देता है।
19 'यदि तुम बलवान का सामर्थ्य देखना चाहते हो,
तो परमेश्वर को देखो!
यदि न्याय का प्रश्न है
तो कौन उससे मुकदमा लड़ सकता है?
20 यद्यपि मैं निर्दोष हूं
तो भी मेरा मुँह मुझे दोषी ठहराएगा;
यद्यपि मैं प्रत्येक दृष्टि से सिद्ध हूं,
तो भी वह मुझे कुटिल प्रमाणित कर देगा।
21 यद्यपि मैं हर दृष्टि से सिद्ध हूं,
तो भी मुझे अपनी परवाह नहीं,
मैं अपने जीवन से घृणा करता हूं।
22 सब धान-पसेरी!
इसलिए मैं यह कहता हूं :
परमेश्वर सिद्ध और असिद्ध
दोनों को नष्ट कर देता है।
23 जब महामारी अचानक फैलती है,
और निर्दोष मनुष्य भी मर जाते हैं,
तब वह निरपराधियों की
इस विपत्ति पर हँसता है!
24 परमेश्वर ने यह पृथ्वी
दुर्जनों के हाथ में सौंप दी है;
उसने न्यायाधीशों की आंखों पर
पट्टी बांध दी है
ताकि वे न्याय और अन्याय को न पहचान सकें!
यदि वह नहीं तो फिर कौन यह कार्य करता है?
25 'मेरी आयु के दिन
हरकारे से भी अधिक
तेज भाग रहे हैं!
वे दौड़ रहे हैं,
और उन्हें मेरा कल्याण
कहीं दिखाई नहीं देता।
26 वे सरकंडे की नावों की तेजी से गुजर रहे हैं,
जिस वेग से बाज
अपने शिकार पर झपटता है;
उसी वेग से मेरे दिन बीत रहे हैं।
27 यदि मैं यह सोचूं
कि मैं अपनी सब शिकायतों को भूल जाऊँगा,
मैं अपने मुख की उदासी दूर कर दूंगा,
और प्रसन्नचित्त रहूंगा,
28 तो मुझे अपने दुःख की याद आती है,
और मैं उसके कारण भयभीत हो जाता हूं;
क्योंकि मैं जानता हूं,
हे परमेश्वर
तू मुझे निर्दोष नहीं मानेगा।
29 तू मुझे दोषी ठहराएगा;
तो मैं व्यर्थ परिश्रम क्यों करूं?
30 चाहे मैं बर्फ से भी स्वयं को धो डालूं,
चाहे अपने हाथों को साबुन से साफ करूँ,
31 तो भी तू मुझे कीच के गड्ढे में फेंकेगा,
और मेरे वस्त्र भी मुझसे घृणा करने लगेंगे।
32 तू तो मेरे समान मनुष्य नहीं है,
अन्यथा मैं तुझसे बहस करता,
और हम-दोनों न्याय के लिए अदालत का दरवाजा खटखटाते!
33 हम-दोनों के बीच मध्यस्थ* भी नहीं है,
जिसका फैसला हम-दोनों को मान्य होता!
34 तब वह विपत्ति की यह छड़ी
मुझ पर से हटाता,

* पाठांतर, ''काश: हम दोनों के बीच कोई मध्यस्थ होता।''

9 : 22 सभ 9 :1-2 9 : 30 भज 51 : 7; यश 1 : 18 9 : 33 अय्य 16 : 19; 19 : 25; 33 : 23

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और परमेश्वर का आतंक मुझे भयभीत न
करता!
35 तब मैं निडर होकर
परमेश्वर से बहस करता।
मैं अपनी दृष्टि में वैसा नहीं हूं
जैसा तुम मुझे समझते हो!

अय्यूब अपनी दशा पर विलाप करता है

10 'मैं अपने जीवन से तंग आ गया हूं।
मैं निस्संकोच अपनी शिकायत पेश
करूंगा।
मैं अपने प्राण की पीड़ा व्यक्त करूंगा।
2 मैं परमेश्वर से कहूंगा :
मुझे दोषी मत ठहरा,
मुझे बता कि
तूने मेरे विरुद्ध मुकदमा क्यों किया है?
3 क्या तुझे निर्दोष पर अत्याचार करना
अच्छा लगता है?
तू अपनी ही सृष्टि से
घृणा क्यों करता है?
तू दुर्जन की योजनाओं को
सफल क्यों करता है?
4 क्या तेरी आंखें केवल मांस-पेशियां हैं?
क्या तू मनुष्यों के समान देखता है?
5 क्या तेरे दिन मनुष्य के दिन के समान हैं?
क्या तेरे वर्ष इन्सान के वर्ष के सदृश हैं
6 कि तू मेरे अधर्म की खोज-बीन करता है,
मेरे पाप की तलाश करता है?
7 यद्यपि तू जानता है
कि मैं दोषी नहीं हूं,
और तेरे हाथ से मुझे
छुड़ानेवाला कोई नहीं है?
8 तूने अपने हाथों से
मुझे गढ़ा और बनाया है;
और अब तू मुझसे मुंह मोड़कर
मुझे नष्ट कर रहा है!
9 'प्रभु, स्मरण कर कि
तूने मुझे मिट्टी से बनाया था;
अब क्या तू मुझे
मिट्टी में ही मिला देगा?
10 तूने मुझे दूध की भांति उण्डेला
और पनीर के समान जमाया था!
11 तूने मुझ पर
मांस और चर्म चढ़ाया था,
तूने मुझे अस्थियों और शिराओं से गूंथा था!
12 तब तूने मुझे जीवन
और करुणा प्रदान की;
तेरे संरक्षण में मेरी आत्मा
सुरक्षित रहती है।
13 'प्रभु, तूने ये बातें
अपने हृदय में छिपाकर रखी हैं;
मैं जानता हूं,
तेरा यही उद्देश्य था।
14 यदि मैं पाप करूं
तो तू उस पर ध्यान देगा;
मेरे अधर्म करने पर
तू मुझे निर्दोष न ठहराएगा।
15 यदि मैं दुर्जन होऊं
तो मुझे धिक्कार है!
यदि मैं धार्मिक हूं
तो भी मैं अपना सिर
उठाने का साहस नहीं कर सकता;
क्योंकि मैं अपमान की बाढ़ में डूब चुका हूं,
मैं क्षण-क्षण पीड़ा की मार सह रहा हूं!
16 यदि मैं अपना सिर ऊपर उठाऊं
तो तू सिंह की तरह मेरा शिकार करेगा;
और फिर मेरे विरुद्ध आश्चर्यपूर्ण कार्य
करेगा।
17 तू मेरे विरोध में नए-नए गवाह खड़े करता
है;
मेरे प्रति अपना क्रोध दुगुना कर लेता है;
और मेरे ऊपर विपत्तियों की सेना धावा बोल
देती है।
18 'प्रभु, तूने मुझे कोख से बाहर क्यों
निकाला?
भला होता कि मैं जन्मते ही मर जाता
और मुझे कोई नहीं देखता।
19 तब मेरा होना न होने के बराबर होता;
मैं कोख से सीधे कबर में दफन हो जाता!

10 : 4 1 शम 16 : 7 **10 : 7** प्रज्ञा 16 : 15 **10 : 9** उत 2 : 7 **10 : 10** भज 139 : 14; प्रज्ञा 7 : 1-2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

20-21 मेरी आयु के चन्द दिन और शेष हैं!
प्रभु, मुझे अकेला छोड़ दे,
ताकि मैं उस स्थान को जाने के पूर्व
कुछ आराम कर सकं,
जहाँ से मैं वापस नहीं आ सकूंगा,
जहाँ केवल अन्धकार है, महा अन्धकार है,
जहाँ मृत्यु की छाया है।
22 वह सघन अन्धकार का लोक है,
वह स्वयं घोर अन्धकार है!
उस मृत्यु के लोक में अव्यवस्था है!
वहाँ प्रकाश भी अन्धकार-सा लगता है।'

सोपर का तर्क : परमेश्वर के रहस्य मनुष्य नहीं समझ सकता

11 नामाह नगर के रहनेवाले सोपर ने अय्यूब से कहा :
2 'मित्र, तुमने अपनी निर्दोषता के पक्ष में जो ढेरों बकवास की है,
क्या उनका उत्तर नहीं देना चाहिए?
क्या बकवास करनेवाले को
निर्दोष मानना चाहिए?
3 क्या तुम्हारी बकवास
लोगों को चुप करा सकती है?
यदि तुम परमेश्वर के न्याय का मजाक उड़ाओगे
तो क्या लोग तुम्हें लज्जित नहीं करेंगे?
4 तुम यह कहते हो :
"मेरा धर्म-सिद्धान्त पवित्र है;
मैं परमेश्वर की दृष्टि में शुद्ध हूं।"
5 पर भाई मेरे,
काश! परमेश्वर स्वयं बोल सकता!
वह आप ही अपने होंठों से
तुम्हें उत्तर देता!
6 और वह तुम पर
बुद्धि* का गूढ़ रहस्य प्रकट करता।
बुद्धि की बातें मनुष्य की समझ से परे हैं।
अतः मित्र, यह जान लो कि
परमेश्वर तुम्हारे अपराध की तुलना में तुम्हें कम सजा दे रहा है!**
7 'क्या तुम परमेश्वर के गूढ़ रहस्य का पता लगा सकते हो?
क्या तुम सर्वशक्तिमान परमेश्वर की सीमा मालूम कर सकते हो?
8 परमेश्वर की सीमा स्वर्ग से ऊंची है,
तुम क्या कर सकते हो?
वह अधोलोक से अधिक गहरी है,
तुम क्या यह समझ सकते हो?
9 उसकी माप पृथ्वी से भी लम्बी है,
वह समुद्र से अधिक चौड़ी है।
10 यदि परमेश्वर सामने से गुजर कर
किसी को बन्दी बना ले,
और न्याय के लिए अदालत में बुलाए
तो उसको कौन रोक सकता है?
11 परमेश्वर पाखण्डी मनुष्यों को जानता है,
वह अधर्म देखकर उस पर ध्यान भी देता है।
12 यदि जंगली गदही से
मनुष्य का बच्चा पैदा हो सकता है,
तो मूर्ख मनुष्य को भी
सद्‌बुद्धि प्राप्त हो सकती है!
13 'यदि तुम अपना हृदय शुद्ध कर लो
तो तुम प्रार्थना के लिए
परमेश्वर की ओर हाथ उठा सकते हो!
14 यदि तुम्हारे हाथ अधर्म से रंगे हैं,
तो उनको धो डालो;
दुष्कर्म को अपने घर में टिकने मत दो।
15 तब तुम निस्सन्देह,
निष्कलंक होकर अपना मुख
परमेश्वर की ओर उठा सकोगे!
तुम सुरक्षित रहोगे, और तुम्हें किसी बात का डर न होगा।
16 तुम अपने दुःख-तकलीफ को भूल जाओगे,
जैसे पानी बहकर गुजर जाता है
वैसे दुःख की स्मृति भी बीत जाएगी।
17 तुम्हारा जीवन दोपहर के प्रकाश से अधिक प्रकाशवान होगा;
उसका अन्धकार सबेरे के उजियाले के समान होगा।

---

* अथवा प्रज्ञा। ** मूल अस्पष्ट

11 : 7 इफ 3 : 18

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

18 तब तुम में आत्म-विश्वास जागृत होगा;
क्योंकि अब भी आशा है!
परमेश्वर तुम्हारी रक्षा करेगा,
और तुम निश्चिन्त आराम करोगे।
19 तुम चादर तान कर सोओगे,
और तुम्हें कोई भयभीत नहीं करेगा;
अनेक लोग तुमसे कृपा की भीख मांगेंगे।
20 पर दुर्जनों की आंखें पथरा जाएंगी,
उनके बचाव के सब रास्ते बन्द हो जाएँगे।
उनकी आशा डूब जाएगी,
और वे अन्तिम साँस लेंगे।'

अय्यूब का सोपर को उत्तर : 'मैं निस्सन्देह धार्मिक और सिद्ध हूं!'

12 तब अय्यूब ने अपने मित्रों को उत्तर दिया :
2 'निस्सन्देह तुम मानव-जाति का प्रतिनिधित्व करते हो*,
और तुम्हारे मरने पर,
बुद्धि भी मर जाएगी!
3 पर मित्रो, तुम्हारी तरह
मुझ में भी बुद्धि है;
मैं तुमसे बुद्धि में कम नहीं हूं।
जो बातें तुमने कहीं,
उनको कौन नहीं जानता है?
4 मैं अपने दोस्तों के लिए
उपहास का पात्र बन गया हूं :
मैं परमेश्वर की वन्दना करता था,
और वह मेरी प्रार्थना सुनता भी था।
मैं धार्मिक और हर दृष्टि से सिद्ध हूं,
पर तुम्हारी नजरों में हंसी का पात्र बन गया हूं।
5 जो सुखी है, उसकी दृष्टि में दुःखी मनुष्य तुच्छ है;
जिसका पैर फिसलता है, वह अभागा समझा जाता है!
6 चोर-लुटेरे दिन दूनी रात चौगुनी
उन्नति करते हैं,
और अपने घरों में सुख-चैन की बन्सी बजाते हैं;
जो अपने आचरण से
परमेश्वर को क्रोध दिलाते हैं,
वास्तव में वे ही सुरक्षित रहते हैं,
उनका ईश्वर उनकी मुट्ठी में रहता है!
7 'पर तुम जंगल के पशुओं से
उनका अनुभव पूछो,
और वे तुम्हें सीख देंगे;
तुम आकाश के पक्षियों से पूछताछ करो,
और वे तुम्हें बताएँगे।
8 या फिर पृथ्वी के वृक्षों से पूछो,
वे तुम्हें सिखाएँगे,
सागर की मछलियां भी
तुम पर ये ही बातें प्रकट करेंगी।
9 ये सब जानते हैं कि
प्रभु ने ही अपने हाथ से
उनकी सृष्टि की है।
10 प्रभु के हाथ में
सब प्राणियों के प्राण हैं,
समन्त मनुष्यजाति का जीवन है।
11 'जैसे जीभ भोजन को उसके स्वाद से जाँचती है,
वैसे ही कान शब्दों को परखते हैं!
12 वृद्ध स्त्री-पुरुष में बुद्धि होती है;
लम्बी आयु वालों में समझ होती है!
13 'परमेश्वर ही में बुद्धि और सामर्थ्य है;
सन्मति और समझ उसमें है।
14 यदि वह किसी नगर को ध्वस्त कर दे
तो कोई भी उसका पुनर्निर्माण नहीं कर सकता।
यदि वह किसी को बन्द कर दे
तो कौन उसको खोल सकता है?
15 यदि वह वर्षा को रोक दे
तो नदियाँ सूख जाएंगी;
यदि वह आकाश के झरोखे खोल दे
तो उनमें बाढ़ आ जाएगी।
16 परमेश्वर ही में बल और बुद्धि है;
धोखा खानेवाला और धोखा देनेवाला दोनों

* शब्दश: 'तुम्हीं वे लोग हो।'
12 : 10 गण 16 : 22; दान 5 : 23

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उसी के जन हैं!
17 वह मंत्रियों को विवेकहीन कर देता है;
वह न्यायाधीशों को भी मूर्ख बनाता है।
18 वह राजाओं का अधिकार भंग करता है;
वह उनको बन्दी भी बनाता है;
और उन्हें कमर में लंगोटी बांधनी पड़ती है!
19 वह पुरोहितों को मूर्ख बना देता है;
और बलवानों को पछाड़ देता है।
20 वह विश्वास योग्य पुरुषों से
बोलने की शक्ति हर लेता है;
वह धर्मवृद्धों को विवेक से
वंचित कर देता है।
21 वह सामन्तों को घृणा का पात्र बनाता है;
वह बलवानों को निर्बल करता है।
22 वह अन्धकार के गुप्त षड्यन्त्रों को प्रकट
करता है;
वह घोर अन्धकार को प्रकाश में बदल देता
है।
23 वह राष्ट्रों को महान बनाता
और उनका नाश भी करता है;
वह कौमों की प्रगति करता
और उन्हें गुलाम भी बनाता है!
24 वह लोकनायकों की बुद्धि छीन लेता है,
और उन्हें पथहीन उजाड़-खण्डों में इधर-
उधर भटकाता है।
25 वे बिना प्रकाश के अन्धकार में
टटोलते हुए फिरते हैं;
वे शराबी के समान
लड़खड़ाते हुए चलते हैं।

13 'देखो, यह सब मैं अपनी आंखों से देख
चुका हूं;
मैंने अपने कानों से यह सुना,
और उसको समझा भी है।
2 जो तुम जानते हो, वह मैं भी जानता हूं,
मैं तुमसे कम नहीं हूँ।
3 पर मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर से ही बात
करूँगा;
मेरी इच्छा है कि मैं परमेश्वर से स्वयं अपना
मुकदमा लड़ूँ;
4 क्योंकि तुम लोग झूठे हो,
और झूठी बातें गढ़ते हो;
तुम सब निकम्मे वैद्य हो।
5 काश! तुम चुप रहते;
चुप रहने में ही तुम्हारी बुद्धिमानी थी।
6 अब तुम मेरे तर्कों को सुनो,
और मेरी दलीलों पर ध्यान दो।
7 क्या तुम परमेश्वर के पक्ष में झूठ बोलोगे?
उसके लिए कपट की बातें करोगे?
8 क्या तुम उसके प्रति पक्षपात करोगे,
उसकी ओर से मुकदमा लड़ोगे?
9 जब वह छानबीन करेगा
तो क्या यह तुम्हारे लिए अच्छा होगा?
क्या तुम उसे भी धोखा दे सकते हो
जैसे कोई व्यक्ति किसी आदमी को धोखा
देता है?
10 यदि तुम चोरी छिपे पक्षपात करोगे
तो वह अवश्य ही तुम्हें झिड़केगा।
11 क्या उसकी प्रभुता से तुम नहीं डरते,
क्या उसका भय तुम पर नहीं छाता?
12 तुम्हारी सूक्तियाँ राख के समान व्यर्थ हैं,
तुम्हारे बचाव के तर्क मिट्‍टी के हैं,
जो ढह जाती है।
13 'तुम चुप रहो, और मुझे बोलने दो;
मुझ पर जो बीतेगी, मैं उसको सह लूँगा।
14 मैं अपनी रक्षा आप कर लूंगा,
मैं अपना प्राण हथेली पर रखूँगा।
15 देखो, परमेश्वर मुझे मार डालेगा,
मेरे बचने की आशा नहीं है;
फिर भी मैं उसके सम्मुख अपने आचरण
का बचाव करूँगा।
16 मेरे बचाव का केवल एक ही उपाय है:
जो व्यक्ति पाखण्डी है, वह परमेश्वर के
सम्मुख नहीं जा सकता!
17 मेरी बातों को सावधानी से सुनो;
मेरी घोषणाओं पर ध्यान दो!
18 देखो, मैंने अपने मुकदमे की पूरी तैयारी कर
ली है;
मुझे निश्चय है कि मैं निर्दोष सिद्ध हो

13 : 5 नीति 17 : 28

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जाऊँगा।
19 वह कौन है जो मुझसे बहस कर सकेगा ?
यदि ऐसा कोई हो तो मैं चुप हो जाऊँगा,
और प्राण त्याग दूँगा।
20 'प्रभु, केवल दो बातें मेरी स्वीकार कर;
तब मैं अपने को तुझसे नहीं छिपाऊँगा।
21 तू अपना हाथ मुझ से हटा ले,
तेरा भय मुझे आतंकित न करे।
22 तब तू मुझे बुला,
और मैं तेरे प्रश्नों का उत्तर दूंगा;
अथवा मैं तुझसे प्रश्न पूछूँ
और तू मुझे उत्तर दे।
23 बता, मैंने कितने दुष्कर्म और पाप किए हैं ?
मेरे अपराध और पाप मुझ पर प्रकट कर।
24 तू अपना मुख मुझसे क्यों छिपाता है ?
तू मुझे अपना शत्रु क्यों मानता है ?
25 क्या तू उड़ते हुए पत्ते को कंप-कंपाएगा।
क्या तू सूखे भूसे का पीछा करेगा ?
26 तू मेरे विरुद्ध कड़वे आरोप रचता है,
और मुझे उन दुष्कर्मों का दण्ड भुगताता है
जो मैंने अपनी युवावस्था में किए थे!
27 तू मेरे पैरों में काठ की बेड़ी पहनाता है;
और मेरे प्रत्येक पग पर नजर रखता है।
तूने मेरे पैरों के सम्मुख सीमा-रेखा खींच
दी है
जिसको मैं पार नहीं कर सकता !
28 मै जर्जर हूँ,
और सड़ी गली वस्तु के समान नष्ट हो रहा
हूँ!
मैं कीड़ा खाया हुआ वस्त्र हूँ!

जीवन क्षण-भंगुर

14 'स्त्री से जन्मा मनुष्य
अल्पायु होता है;
उसका सारा जीवन दु:ख से भरा रहता है।
2 वह फूल के समान खिलता है,
और फिर मुरझा जाता है;
वह छाया के समान ढलता है,
और स्थिर नहीं रहता है।
3 प्रभु, ऐसे क्षण-भंगुर मनुष्य को
क्या तू जाँचता है ?
तू अपने साथ ऐसे मनुष्य को
अदालत में खड़ा करता है ?
4 काश! अशुद्ध मनुष्यजाति में
एक भी मनुष्य शुद्ध होता!
पर नहीं, एक भी मनुष्य शुद्ध नहीं है।
5 उसके जीवन के दिन निश्चित हैं,
उसकी आयु के महीने तेरे हाथ में हैं।
तूने उसकेसामने सीमा-रेखा खींच दी है
जिसको वह पार नहीं कर सकता।
6 हे प्रभु, उस पर से दृष्टि हटा,
ताकी वह प्रसन्नवदन हो सके,
और एक मजदूर के समान
दिन की समाप्ति पर
आराम कर सके।
7 'वृक्ष' को भी
अपने पुनर्जीवन की आशा है;
यदि वह काट लिया जाए
तो भी वह पुनः पनप उठेगा;
और उसमें से अंकुर फूटेंगे।
8 चाहे उसकी जड़ भूमि में
पुरानी पड़ गई हो,
उसका तना मिट्टी में सूख गया हो,
9 फिर भी पानी के छींटे पाते ही
वह पनप उठेगा;
जवान पौधे के समान
उसमें अंकुर फूटने लगेंगे।
10 परन्तु मनुष्य जब मर जाता है,
वह निष्क्रिय पड़ा रहता है।
अपनी अन्तिम साँस लेने के बाद
मनुष्य कहाँ रहता है ?
11 जैसे तालाब का पानी सूख जाता है,
जैसे नदी सूखकर लुप्त हो जाती है,
12 वैसे ही मनुष्य भूमि पर लेटने के बाद फिर
नहीं उठता;
जब तक आकाश का अन्त न होगा,
वह नहीं जागेगा;

---

13 : 26 भज 25 : 7 **13 : 27** अय्य 33 : 11 **14 :1-2** प्रज्ञा 2 : 1; प्रव 40 : 1-11; 41: 1-4 **14: 2** यश 40 : 6 **14: 4** भज 51: 5; रोम 5 : 12

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वह अपनी चिरनिद्रा से नहीं उठेगा।
13 हे प्रभु, काश!
तू मुझे अधोलोक में छिपा लेता;
और तब तक मुझे छिपाए रखता,
जब तक तेरा क्रोध शान्त न हो जाता।
भला होता कि तू मेरे लिए
निश्चित समय निर्धारित करता,
और मेरी सुधि लेता!
14 'यदि कोई मनुष्य मर जाए
तो क्या वह फिर जीवित होगा?
जब तक मुझे अन्धकार से मुक्ति नहीं मिलेगी,
मैं कठिन सेवा की पूर्ण अवधि में
प्रतीक्षा करता रहूँगा।
15 काश! तू मुझे बुलाता और मैं तुझे उत्तर देता;
क्योंकि तू अपनी रचना
देखने को इच्छुक रहता है!
16 तब तू मेरे पग-पग को गिनता;
पर तू मेरे पाप की उपेक्षा करता!
17 तू मेरे पाप की गठरी को
मुहरबन्द कर एक ओर रख देता,
और मेरे अधर्म पर परदा डाल देता।
18 'जिस प्रकार पहाड़ टूटकर गिरता है,
और वह चकनाचूर हो जाता है,
जैसे चट्टान अपने स्थान से हट जाती है,
19 जिस प्रकार जल की धारा से
पत्थर घिस जाते हैं,
बाढ़ भूमि को काटकर बहा ले जाती है,
उसी प्रकार, हे प्रभु,
तू मनुष्य की आशा को धूल में मिला देता है!
20 तू सदा उसको दबाए रखता है,
अतः वह गुजर जाता है;
तू उसका चेहरा बिगाड़ देता है,
और उसको दूर भेज देता है।
21 उसके पुत्र-पुत्रियाँ धन-दौलत से सम्मानित होते हैं,
पर वह यह नहीं जानता;
वे गरीब होकर अपमानित होते हैं,
लेकिन यह उसको अनुभव नहीं होता।
22 वह अपनी देह की ही पीड़ा
अनुभव करता है;
उसका प्राण केवल उसके लिए शोक मनाता है।'

एलीपज का आरोप

15 तेमान नगर के रहने वाले एलीपज ने कहा:
2 'क्या बुद्धिमान मनुष्य
थोथे ज्ञान के बल पर उत्तर देता है?
अथवा पूरवी वायु के सदृश
निस्सार और हानिकारक तर्क करता है?
3 क्या उसको बेकार की बातों से
अपनी सफाई देना चाहिए;
या ऐसी बातों से
जिनका कोई परिणाम नहीं निकलता?
4 तुम तो परमेश्वर का भय ही त्याग रहे हो,
और दूसरों की ईश-भक्ति में बाधा बन रहे हो।
5 तुम्हारी अधार्मिकता ही तुम्हें विवश करती है।
और तुम इस प्रकार की बातें करते हो;
तुमने धूर्त की जबान चुनी है!
6 मैं नहीं, वरन् तुम्हारा मुँह ही तुम्हें दोषी ठहराता है;
तुम्हारे ओंठ तुम्हारे विरुद्ध गवाही देते हैं।
7 'क्या तुम ही इस पृथ्वी पर सर्वप्रथम पैदा हुए हो?
क्या तुम्हारा जन्म इन पहाड़ियों से पहले हुआ है?
8 क्या तुमने परमेश्वर की विद्वत मण्डली में
बैठकर ज्ञान प्राप्त किया है?
क्या बुद्धि का ठेका केवल तुमने ले रखा है?
9 ऐसी कौन-सी बात है, जो तुम जानते हो,
और हम नहीं जानते?
तुममें ऐसी कौन-सी समझ है, जो हममें नहीं है?
10 हमारे मध्य पके बाल वाले वृद्ध और बुजुर्ग
दोनों प्रकार के आयु वाले मनुष्य हैं,

15 : 8 रोम 11 : 34

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जो तुम्हारे पिता से अधिक उम्र के हैं !
11 क्या परमेश्वर के शान्तिदायक वचन
अथवा तुमसे कहे गए कोमल वचन
तुम्हारी दृष्टि में कोई महत्व नहीं रखते ?
12 तुम्हारा हृदय तुम्हें कहाँ ले जा रहा है ?
तुम्हारी आँखें आवेश में क्यों चमक रही हैं ?
13 इसलिए कि तुम परमेश्वर के प्रति अपना क्रोध प्रकट करते हो,
और अपने मुँह से निरर्थक शब्द निकलने देते हो।
14 मनुष्य की हस्ती ही क्या है
कि वह पाप से स्वयं शुद्ध हो सके ?
जो स्त्री से उत्पन्न हुआ है,
क्या वह कभी धार्मिक बन सकता है ?
15 देखो, परमेश्वर अपने पवित्र जनों पर भी विश्वास नहीं करता,
उसकी दृष्टि में स्वर्ग भी निर्मल नहीं है;
16 तब उसके सम्मुख मनुष्य,
जो जन्म से घृणास्पद और भ्रष्ट है,
जो पाप को पानी की तरह पीता है,
कितना अशुद्ध होगा !
17 'मैं तुम्हें सन्मार्ग दिखाऊँगा,
मेरी बात सुनो;
जो दर्शन मैंने पाया है,
वह मैं तुम पर प्रकट करूँगा।
18 ये बातें बुद्धिमानों ने कही हैं;
उनके पूर्वजों ने उनसे नहीं छिपायी थीं।
19 उन्हें ही यह देश दिया गया था,
और उनके मध्य कोई विदेशी नहीं रहता था।
20 सुनो: दुर्जन जीवन-भर पीड़ा में छटपटाता है,
अत्याचारी अपनी निश्चित अल्पायु में जोर आजमाता है।
21 उसके कानों में डरावनी आवाजें गूँजती हैं;
सुख-समृद्धि के दिनों में
विनाश करने वाला उस पर टूट पड़ता है !
22 उसे विश्वास नहीं होता कि
वह घोर अन्धकार से बच निकलेगा;
उसके सिर पर तलवार लटकती रहती है !
23 वह भोजन के लिए इधर-उधर भटकता है,
और पूछता है, "रोटी कहाँ मिलेगी ?"
उसे अनुभव होता है,
कि विनाश का दिन समीप आ गया है।
24 विपदाएँ और संकट उसे भयभीत करते हैं,
युद्ध के लिए तैयार राजा की तरह
वे उसको दबोच लेते हैं।
25 क्योंकि उसने परमेश्वर के विरुद्ध हाथ उठाया था;
उसने सर्वशक्तिमान के प्रति दुस्साहस किया था।
26 उसने मोटी ढालों की आड़ लेकर,
घमण्ड से उस पर धावा बोला था।
27 उसके चेहरे पर अधर्म की चर्बी चढ़ गई थी;
उसकी देह दुष्कर्मों की चर्बी से मुटा गई थी।
28 अत: अब उसको उजाड़ नगरों में रहना पड़ रहा है;
वह उन मकानों में बस गया है,
जिनमें मनुष्य का आवास निषिद्ध है;
जो खण्डहर बनने को छोड़ दिए गए हैं।
29 वह धनवान नहीं होगा,
उसका धन उसके पास नहीं ठहरेगा;
और न वह भूमि में जड़ पकड़ पाएगा।
30 वह विनाश के अन्धकार से नहीं बच सकेगा;
लपटें उसकी टहनियों को झुलसा देंगी;
हवा उसकी कलियों को बिखेर देगी।
31 वह मिथ्या बातों में विश्वास कर
स्वयं को धोखा न दे;
क्योंकि उसका प्रतिफल मिथ्या ही होगा !
32 नियत समय के पूर्व
उसको पूरा प्रतिफल प्राप्त हो जाएगा;
उसका जीवन-वृक्ष हरा नहीं रहेगा।
33 वह अंगूर-लता की तरह
अपने कच्चे फलों को झाड़ देगा;
वह जैतून वृक्ष के समान
अपने फूलों को बिखेर देगा।
34 अधर्मियों की संगति निष्फल होती है,

15 : 14-16 अय्य 25:4-6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

घूसखोर के मकान को
आग भस्म कर देती है।
35 उन्हें अनिष्ट का गर्भ रहता है,
और वे अधर्म को जन्म देते हैं।
वे अपने अंत:करण में छल-कपट गढ़ते
हैं।'

अय्यूब का एलीपज को उत्तर: परमेश्वर का व्यवहार

16 तब अय्यूब ने उत्तर दिया:
2 'मैं ऐसी बहुत-सी बातें सुन चुका हूँ;
तुम-सब मेरा दु:ख बढ़ानेवाले शान्तिदाता
हो!
3 क्या थोथी बातों का कभी अन्त होता है?
मेरी कौन-सी बात
तुम्हें भड़काती है कि तुम मुझे उत्तर दो?
4 यदि तुम मेरे स्थान पर होते
तो मैं भी तुम्हारी तरह बातें करता।
मैं तुम्हारे विरुद्ध शब्द गढ़ता,
और तुम पर सिर हिलाता।
5 मैं अपनी थोथी बातों से तुम्हें बल प्रदान
करता,
मेरी बनावटी सांत्वना तुम्हारे दर्द को कम
करती!
6 'मेरे बोलने से मेरा दु:ख कम नहीं होता,
अगर मैं चुप रहूँ तो क्या मेरे चुप रहने से
मेरा कष्ट कम हो जाएगा?
7 निस्सन्देह परमेश्वर ने
मुझे थका दिया है;
उसने मुझसे मेरे परिवार को अलग कर दिया
है।
8 उसने मेरे शरीर को सुखा दिया है,
जो मेरे विरुद्ध साक्षी देता है,
मेरी दुर्बलता मेरे विरोध में खड़ी है;
वह मेरे मुँह पर गवाही देती है!
9 उसने अपने क्रोध में मुझे विदीर्ण कर दिया
है;
वह मुझसे घृणा करता है।
वह मुझ पर अपने दांत पीसता है;
मेरा बैरी मुझको आँखें दिखाता है।
10 लोग मुझे निगलने के लिए मुँह बाये खड़े
हैं;
वे धृष्टतापूर्वक मेरे गाल पर चांटे मारते हैं।
वे सब मेरे विरुद्ध इकट्ठे हो रहे हैं।
11 परमेश्वर ने मुझे अधर्मियों के हाथ में सौंप
दिया है;
वह दुर्जनों के पंजों में मुझे फंसाता है।
12 पहले मैं सुख-चैन से रहता था,
पर उसने मुझे तहस-नहस कर दिया।
उसने मेरी गर्दन पकड़कर
मेरे टुकड़े-टुकड़े कर दिए।
उसने मुझे तीर का निशाना बनाया है।
13 उसके तीरंदाज मुझे घेरे हुए हैं,
वह निर्दयता से मेरा हृदय चीरता है,
और मुझे छोड़ता नहीं!
वह मेरा पित्त भूमि पर बिखेर देता है।
14 वह मुझे कोंच-कोंच कर छलनी बना रहा
है,
वह मुझ पर योद्धा जैसा टूट पड़ता है।
15 मैंने टाट सी कर उसको शरीर पर ओढ़ लिया
है;
मैंने अपना सामर्थ्य धूल में मिला दिया है।
16 मेरा मुँह रोते-रोते लाल हो गया है,
और मेरी पलकों पर गहरा अन्धकार छाया
हुआ है;
17 यद्यपि मेरे हाथों से
कोई हिंसा नहीं हुई थी;
मेरी प्रार्थना पवित्र है!
18 'ओ पृथ्वी, मेरे रक्त को मत ढांपना;
मेरी दुहाई को चैन मत लेने देना।
19 देखो, अब भी स्वर्ग मेरा साक्षी है;
मेरा गवाह ऊपर है।
20 मेरे मित्र मुझसे घृणा करते हैं,
किन्तु मैं परमेश्वर के सम्मुख आँसू बहाता
हूँ,
21 ताकि मेरा गवाह परमेश्वर के सामने मेरे पक्ष
का समर्थन करे,
जैसे कोई व्यक्ति अपने पड़ोसी के पक्ष में
मुकदमा लड़ता है।

16 : 18 उत 4 : 10; प्रक 8 : 3-4 16 : 19 अय्य 19:25 16 : 21 अय्य 33 : 23

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

22 कुछ वर्ष बीतने के बाद
मैं उस मार्ग पर प्रस्थान करूँगा
जहाँ से कोई व्यक्ति वापस नहीं आता।

17 'मेरी साँस उखड़ने लगी है;
मेरे दिन पूरे हो चुके हैं;
मेरे लिए कबर तैयार है।
2 निस्सन्देह मेरे चारों ओर निंदक जमा हो गए हैं;
मेरी आँखें उनके भड़कानेवाले कामों को देखती हैं।
3 'हे प्रभु, मेरी जमानत दे,
अपने और मेरे बीच में
तू ही जामिन हो।
तेरे सिवाय और कौन व्यक्ति मेरी जमानत दे सकता है?
4 तूने मेरे मित्रों का दिमाग कुन्द कर दिया है;
इस कारण तू उनको मुझ पर प्रबल न होने देगा।
5 जो व्यक्ति झूठी चुगली खाकर,
अपने मित्रों की सम्पत्ति हड़पना चाहता है,
उसके बच्चे अन्धे हो जाते हैं!
6 'मैं लोगों की हँसी का पात्र बन गया हूँ,
मेरे मुंह पर लोग थूकते हैं।
7 दुःख के मारे मेरी आँखें धुंधला गई हैं;
मेरी देह के अंग मानो छाया बन गए हैं।
8 निष्कपट हृदय के लोग
यह देखकर चकित होते हैं;
निर्दोष व्यक्ति अधर्मी के विरुद्ध भड़क उठते हैं।
9 फिर भी धार्मिक मनुष्य अपने मार्ग पर डटा रहता है;
निर्दोष आचरण वाला मनुष्य
दिन-प्रतिदिन बलवान होता जाता है।
10 'तुम-सब एक बार फिर सामने आओ;
पर तुममें से एक भी व्यक्ति
मेरी नजर में बुद्धिमान नहीं ठहरेगा।
11 'मेरे दिन बीत चुके हैं,
मेरी योजनाएं मिट गई हैं,
मेरे हृदय की इच्छाएं मर चुकी हैं।
12 मेरे मित्रो, तुम रात को दिन बनाना चाहते हो;
तुम कहते हो, "प्रकाशा अन्धकार के समीप है!"
13 यदि मैं यह सोचूँ कि
अधोलोक मेरा निवास-स्थान होगा,
अन्धकार में मुझे अपना बिस्तर बिछाना पड़ेगा,
14 यदि मैं कबर से यह कहूँ कि
तू मेरी माँ है,
और कबर के कीड़े से बोलूं कि
तू मेरा पिता, मेरा भाई है*
15 तो भविष्य के लिए मेरी आशा कहां रही?
मेरे सौभाग्य को कौन देख पाएगा?
16 क्या मेरी आशा भी
मेरे साथ अधोलोक के सीखचों में बन्द होगी?
क्या हम दोनों मिट्टी में मिल जाएँगे?'

बिलदद का कथन: दुर्जन अवश्य नष्ट होंगे

18 शूही वंश के बिलदद ने कहा,
2 'तुम कब तक शब्दों के जाल को पकड़ते रहोगे?
पहले सोच लो, तब हम बात करेंगे।
3 तुम हमें अपनी दृष्टि में पशु क्यों समझते हो,
हम तुम्हारी नजर में मूर्ख क्यों हैं?
4 ओ अय्यूब, अपने ही क्रोध में
स्वयं को चीरने-फाड़ने वाले!
क्या तुम्हारे लिए पृथ्वी उजड़ जाएगी?
क्या चट्टान अपने स्थान से हट जाएगी?
5 'निस्सन्देह, दुर्जन का दीपक बुझ जाता है;
उसकी आग की लौ भी प्रकाश नहीं देती!
6 उसके तम्बू का प्रकाश अन्धकार में बदल जाता है;
उसके ऊपर का दीया बुझ जाता है।
7 उसके बड़े-बड़े मजबूत कदम छोटे हो जाते हैं;
उसकी योजनाएँ ही उसको मुँह के बल गिराती हैं।

---

* मूल में, 'माँ और बहिन'
18 : 5-6 अय्य 21:17

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

8 वह स्वयं अपने पैरों को जाल में फंसाता है;
वह धोखे के गड्ढे पर चलता है।
9 एक फन्दा उसकी एड़ी को पकड़ लेता है;
एक जाल उसको जकड़ लेता है।
10 उसको फंसाने के लिए
भूमि में फंदे की रस्सी छिपायी गई है,
मार्ग में एक जाल बिछाया गया है।
11 चारों ओर से आतंक उसको डराता है;
उसको दौड़ा-दौड़ा कर उसका पीछा करता है।
12 भूख से उसका बल घट गया है,
उसके पतन के लिए विपत्ति तैयार है।
13 रोग उसके शरीर को खा जाता है;
मृत्यु का पहिलौठा पुत्र उसके अंगों को चट कर जाता है।
14 जिस तम्बू पर उसको भरोसा है,
वहाँ से वह निर्वासित कर दिया जाता है;
और उसको आतंक के महाराज के सम्मुख पेश किया जाता है।
15 उसके तम्बू में उसका अपना कोई नहीं रहता;
उसके निवास-स्थान पर गन्धक बिखेर दिया जाता है।
16 उसकी जड़ें भीतर ही भीतर सूख जाती हैं;
उसकी शाखाएँ ऊपर ही ऊपर मुरझा जाती हैं;
17 पृथ्वी पर से उसकी स्मृति मिट जाती है;
बस्ती-नगर में उसका नाम लेने वाला भी नहीं रह जाता।
18 वह प्रकाश से अन्धकार में फेंक दिया जाता है;
वह संसार के बाहर खदेड़ दिया जाता है।
19 उसकी जाति में
उसका वंश अथवा संतान नहीं रह जाती;
जहाँ वह रहता है, वहाँ उसका वंशज नहीं बचता।
20 पश्चिमवासी लोग उसका यह दिन देखकर
चकित रह जाते हैं,
पूरब के लोगों के रोंगटे खड़े हो जाते हैं।
21 निश्चय ही अधर्मी का
यही पतन होता है,
जो परमेश्वर को नहीं जानता है,
उसका यही अन्त है।'

अय्यूब का अटूट विश्वास

19 अय्यूब ने अपने मित्रों को उत्तर दिया,
2 'तुम कब तक मेरे प्राण को दुःख देते रहोगे?
अपने शब्द वाणों से मुझे बेधते रहोगे?
3 दसों बार तुमने मेरी निन्दा की।
मेरे साथ अन्याय करते समय तुम्हें शर्म नहीं आती!
4 मान लो कि मैंने भूल की है,
तो मेरी यह भूल मेरे साथ ही रहेगी।
5 यदि तुम सचमुच अपने को मुझ से बड़ा समझते हो,
और मेरी दयनीय स्थिति को मेरे विरुद्ध प्रमाण के रूप में प्रस्तुत करते हो,
6 तो तुम समझ लो कि स्वयं परमेश्वर ने मेरे साथ अन्याय किया है;
मुझे अपने जाल में फंसा लिया है।
7 मैं सहायता के लिए पुकारता हूँ:
"मुझ पर अत्याचार हो रहा है!
मुझे बचाओ!"
पर मुझे कोई उत्तर नहीं देता।
मैं न्याय के लिए दुहाई देता हूँ,
पर मुझे न्याय नहीं मिलता!
8 प्रभु ने मेरे मार्ग पर बाधा खड़ी कर दी है,
अतः मैं आगे नहीं जा सकता!
उसने मेरे पथ को अन्धकारमय कर दिया है।
9 उसने मेरी प्रतिष्ठा मुझसे छीन ली है;
उसने मेरे सिर से मुकुट उतार लिया है।
10 उसने मुझे चारों ओर से तोड़ दिया है,
मैं तबाह हो गया;
उसने पेड़ के सदृश मेरी आशा उखाड़ ली है।
11 उसने मेरे विरुद्ध अपनी क्रोधाग्नि प्रज्वलित की है;
वह मुझे अपना बैरी समझता है।
12 उसके सैनिक दल सम्मिलित रूप से मुझ पर हमला करते हैं;

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वे मेरे विरुद्ध मोर्चाबन्दी करते हैं;
वे मेरे निवास-स्थान को घेरते हैं।
13 'प्रभु ने मेरे भाई-बन्धुओं को मुझसे दूर कर दिया,
मेरे जान-पहचान के लोग
मुझसे अनजान बन गए।
14 मेरे कुटुम्बियों ने मुझे छोड़ दिया,
मेरे घनिष्ठ मित्र भी मुझे भूल गए।
15 मेरे अतिथियों को मेरी याद नहीं रही,
मेरी दासियां भी मुझे अजनबी समझती हैं।
मैं उनकी दृष्टि में विदेशी बन गया हूँ।
16 जब मैं अपने सेवक को बुलाता हूं,
तब वह मुझे उत्तर तक नहीं देता!
मुझे उससे गिड़गिड़ाना पड़ता है।
17 मेरी पत्नी मेरी सांस से घृणा करती है;
मेरी गंध मेरे भाइयों को घिनौनी लगती है।
18 छोटे बच्चे भी मेरा तिरस्कार करते हैं;
जब मैं उठता हूँ तब वे मुझे चिढ़ाते हैं।
19 मेरे सब घनिष्ठ मित्र मुझसे घृणा करते हैं,
मेरे प्रियजन भी मेरे विरोधी बन गए हैं।
20 मेरे शरीर की खाल,
मेरी हड्डियों से चिपक गयी है;
मैं मृत्यु से बाल-बाल बचा हूँ।*
21 'ओ मेरे मित्रो, मुझ पर दया करो,
मुझ पर दया करो!
क्योंकि परमेश्वर ने ही मुझे रोगी बनाया है!
22 मित्रो, परमेश्वर के समान,
तुम क्यों मेरे पीछे हाथ धोकर पड़े हो;
क्या तुम्हें मेरे शरीर के रोग से सन्तोष नहीं मिला?
23 'काश! मेरे ये शब्द लिखे जाते!
काश! मेरी ये बातें पुस्तक में लिखी जातीं!
24 काश! लोहे की कलम और सीसे से वे सदा के लिए चट्टान पर अंकित की जातीं।
25 किन्तु मैं जानता हूँ कि मेरा उद्धारकर्ता जीवित है;
और वह अन्त में पृथ्वी पर खड़ा होगा।
26 चाहे मेरे शरीर से मेरी खाल उतर जाए
उसके बाद भी मैं इस देह से
परमेश्वर के दर्शन करूँगा†।
27 मेरा हृदय बेचैन है,
कि मैं अपने पक्ष में**
परमेश्वर को खड़ा हुआ देखूँ।
मेरी आँखें उसको विरोधी के रूप में नहीं,
वरन् अपने पक्षकर्त्ता के रूप में देखने को विकल हैं।
28 'यदि तुम यह सोचते हो कि
''हम अय्यूब को किस प्रकार सताएं''
अथवा ''अय्यूब अपने दु:ख का कारण स्वयं है'',
29 तो मित्रो, तुम अपने सिर पर लटकती तलवार से डरो!
क्योंकि क्रोध का परिणाम यह है:
तलवार से मौत के घाट उतरना!
तब तुम्हें ज्ञात होगा कि
निर्दोष को न्याय मिलता है!'

सोपर की दृष्टि में दुर्जन की नियति

20 नामाह नगर के रहने वाले सोपर ने कहा:
2 'अय्यूब, तुम्हारी बातें सुनकर
मेरा हृदय व्याकुल हो उठा है,
अत: मेरे विचार प्रकट होने के लिए आतुर हैं।
3 मैंने अपनी निन्दा सुनी,
तुम्हारी बातों से मेरा अपमान हुआ।
मेरी आत्मा अपनी समझ के अनुसार
तुम्हें यह उत्तर दे रही है।
4 यह नियम प्राचीन काल से,
उस समय से चला आ रहा है,
जब मनुष्य पृथ्वी पर पहले-पहल रचा गया था।
क्या तुम यह नियम नहीं जानते हो
5 कि दुर्जन की विजय अल्पकालीन होती है,
अधर्मी का आनन्द क्षणिक होता है,
6 चाहे उसकी महानता आकाश तक पहुँच जाए,

---

* अथवा, 'मेरे सब दाँत झड़ गए हैं' † मूल अस्पष्ट ** अथवा, 'अपनी आंखों से'

19 : 19 भज 41: 10; प्रव 6 : 8 **19 : 25** अय्य 16 : 19; यश 44 : 6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

चाहे उसका सिर बादलों को छूने लगे,
7 तो भी वह अपने मल-मूत्र के समान
सदा के लिए नष्ट हो जाएगा;
जिन्होंने उसको देखा था,
वे यह पूछेंगे: "वह कहां गया?"
8 वह सपने की तरह लुप्त हो जाएगा,
और उसका पता तक नहीं चलेगा;
रात में देखे गए दृश्य के समान
उसकी स्मृति भी शेष नहीं रहेगी।
9 जिन आंखों ने उस दुर्जन को देखा था,
अब वे उसे नहीं देख सकेंगी;
न ही वह स्थान उसको देख पाएगा
जहां वह रहता था।
10 अपने हाथों से उसे अपनी सम्पत्ति लौटानी
पड़ेगी,
उसके बच्चे गरीबों से भी भीख मांगेंगे।
11 अभी उसकी हड्डियों में जवानी का जोश
भरा है;
पर वह अन्त में मिट्टी में मिल जाएगा।
12 'यद्यपि बुराई दुर्जन को मीठी लगती है;
और वह उसको अपनी जीभ के नीचे
छिपाए रखता है;
13 वह बुराई को छोड़ना पसन्द नहीं करता,
वह उसको अपने पास सम्भालकर रखता
है;
14 तो भी उसका यह भोजन
पेट में जाकर जहर में बदल जाता है;
वह नाग के विष जैसा बन जाता है।
15 जो धन-सम्पत्ति उसने निगल रखी है,
उसे वह उगल देगा;
स्वयं परमेश्वर उसके पेट से उसको
निकालेगा।
16 दुर्जन सर्प का विष चूसेगा,
करैत सांप उसको डसेगा,
और वह मर जाएगा।
17 वह नदियों के,
शहद और दूध की नदियों के
दर्शन नहीं कर पाएगा।
18 उसको अपने परिश्रम के फल से
हाथ धोना पड़ेगा;
वह उसको भोग नहीं पाएगा;
उसको अपने व्यापार के लाभ से
आनन्द नहीं मिलेगा।
19 क्योंकि उसने गरीबों को पीसा था,
उसने उनको मर जाने के लिए
यों ही छोड़ दिया था।
उसने उस मकान को हड़प लिया था,
जो उसने नहीं बनाया था।
20 'उसके लालच की कोई सीमा न थी,
इसलिए वह अपनी कोई प्रिय वस्तु
नष्ट होने से बचा न सकेगा।
21 हड़प लेने के बाद वह
कुछ शेष नहीं छोड़ता था,
अत: उसकी समृद्धि अटल नहीं रहेगी।
22 सब प्रकार की सुख-सुविधा के बावजूद
संकट के बादल उस पर मंडराते रहेंगे;
सब प्रकार की विपत्तियाँ उस पर टूट
पड़ेंगी।
23 उसका पेट भरने के लिए
परमेश्वर अपनी क्रोधाग्नि उस पर भेजेगा;
और वह उसकी अंतड़ियों में उसे बरसाएगा।
24 दुर्जन लोहे के अस्त्रों से डरकर भागेगा
पीतल का बाण उसको बेधेगा।
25 वह उस बाण को
अपने पेट से खींचकर निकालेगा;
बाण की चमकदार नोक
उसके पित्ताशय को फाड़कर बाहर आएगी।
मृत्यु का आंतक उस पर छा जाएगा।
26 घोर अन्धकार उसकी
छिपी धन-सम्पत्ति पर छा जाएगा;
अपने आप जली हुई आग उसको भस्म कर
देगी;
जो कुछ उसके निवास-स्थान में बचा होगा,
वह भी जल जाएगा।
27 आकाश उसका अधर्म प्रकट करेगा,
पृथ्वी उसके विरुद्ध साक्षी देगी।
28 उसके घर की सम्पत्ति नष्ट हो जाएगी,
परमेश्वर के कोप-दिवस पर

---

20 : 8 प्रज्ञा 5 : 14 20 : 24 प्रज्ञा 5 : 17-23

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वह बह जाएगी।
29 अय्यूब, परमेश्वर ने दुर्जन की नियति
यही निश्चित की है;
उसके लिए परमेश्वर ने यही भाग
निर्धारित किया है।'

'नहीं, दुर्जन सुख-समृद्ध होते हैं,' अय्यूब का कथन

21 अय्यूब ने अपने मित्रों को उत्तर दिया,
2 'मेरी बातों को ध्यान से सुनो;
मेरा यह कथन ही तुम्हारे लिए
शान्तिदायक वचन बने।
3 पहले मेरी बातें सुनकर सह लो,
ताकि मैं अपना पक्ष प्रस्तुत कर सकूँ।
जब मैं अपनी बातें समाप्त कर लूँगा
तब तुम मेरा मजाक उड़ाना।
4 'क्या मैं किसी मनुष्य के प्रति शिकायत कर
रहा हूँ?
क्या मैं अकारण अपना धीरज खो बैठा हूँ?
5 मेरी ओर देखो, और आश्चर्य करो;
मेरी बात सुनकर दांतों तले उंगली दबाओ।
6 जब मैं विचार करता हूँ
तब मैं घबरा जाता हूँ,
मेरा शरीर थर-थर काँपने लगता है।
7 'दुर्जन क्यों जीवित रहते हैं?
उन्हें लम्बी उम्र क्यों मिलती है?
क्यों वे दिन-प्रतिदिन शक्ति-सम्पन्न होते
जाते हैं?
8 उनकी सन्तान उनके जीवन-काल में
अपने पैरों पर खड़ी हो जाती है;
उनके वंशज उनकी आंखों के सामने फूलते-
फलते हैं।
9 उनके घर खतरों से सुरक्षित रहते हैं;
परमेश्वर की विपत्ति की छड़ी
उन पर प्रहार नहीं करती।
10 उनका सांड़ अचूक रूप से
गाय को गाभिन करता है,
गाय बच्चे को जन्म देती है,
और उसका कभी गर्भपात नहीं होता है।
11 भेड़ों के झुण्ड की तरह दुर्जनों के अनेक
बच्चे होते हैं;
वे उनको बाहर भेजते हैं
और बच्चे आनन्द से नाचते-कूदते हैं।
12 दुर्जन डफ और वीणा की धुन पर गाते हैं;
वे बांसुरी की तान पर आनन्द मनाते हैं।
13 यों वे अपना जीवन सुख-समृद्धि में बिताते
हैं,
और अन्त में शान्तिपूर्वक अधोलोक में चले
जाते हैं।
14 ये ही लोग परमेश्वर से कहते हैं,
"हम से दूर हो!
हमें तेरे मार्ग का ज्ञान नहीं चाहिए।"
15 वे परस्पर यह कहते हैं:
"सर्वशक्तिमान परमेश्वर आखिर है क्या
कि हम उसकी सेवा करें?
यदि उससे प्रार्थना करें तो हमें क्या लाभ
होगा?"
16 देखो, दुर्जनों की सुख-समृद्धि
उनके ही हाथ में रहती है।
दुर्जनों के ये विचार मुझसे दूर ही रहें।
17 'कितनी बार दुर्जन का दीपक बुझता है?
कितनी बार उन पर विपत्तियाँ आती हैं?
कितनी बार परमेश्वर क्रोधावेश में उनके
हिस्से में दुःख देता है?
18 क्या दुर्जन पवन में उड़ाए गए भूसे के समान
होते हैं?
या बवण्डर में उड़ाई हुई भूसी के सदृश?
19 तुम यह कहते हो,
कि परमेश्वर दुर्जनों के अधर्म का बदला
उनकी सन्तान से लेता है।
अच्छा हो कि परमेश्वर उनके अधर्म का
बदला उनसे ही ले,
ताकि उनको अनुभव हो!
20 वे अपनी आंखों से अपने विनाश को देखें;
वे अपने ओंठों से सर्वशक्तिमान परमेश्वर
के कोप का प्याला पिएँ!
21 क्योंकि जब उनके जीवन की डोर कट गई,
तब उन्हें अपने परिवार से क्या वास्ता?
22 'क्या कोई व्यक्ति परमेश्वर को

---

21 : 7 यिर 12 : 1-3 **21 : 14** मला 3 : 14-15

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ज्ञान की बातें सिखा सकता है?
परमेश्वर तो प्रतिष्ठित लोगों का भी न्याय
करता है!
23 कोई व्यक्ति सुख-समृद्धि में
पूर्ण जीवन बिताता है
और आराम से मरता है।
24 उसकी देह हृष्ट-पुष्ट रहती है
और उसकी हड्डियों में गूदा भरा रहता है।
25 पर दूसरा व्यक्ति सुख का स्वाद लिये बिना
ही,
आत्मा में कुढ़-कुढ़ कर मर जाता है!
26 वे दोनों एक समान मिट्टी में मिल जाते हैं,
कीड़े उन्हें ढक लेते हैं।
27 'मित्रो, मैं तुम्हारे विचार जानता हूँ;
मेरे प्रति तुम्हारी अन्यायपूर्ण योजनाएँ
मुझसे छिपी हुई नहीं हैं।
28 तुम कहते हो, "गरीबों पर अन्याय करने
वाले सेठ का महल कहाँ गया?
वह निवास-स्थान कहाँ है
जहाँ दुर्जन रहता था?"
29 पर क्या तुमने कभी अनुभवी राहगीरों से
पूछा?
क्या तुम उनकी साक्षी को स्वीकार नहीं
करते?
30 सुनो, उनकी साक्षी यह है कि
दुर्जन विपत्ति के दिनों में भी बच जाता है,
प्रकोप-दिवस पर भी वह सुरक्षित रहता है।
31 कौन व्यक्ति दुर्जन के मुँह पर
उसके आचरण के लिए उसे फटकारता है?
उसके दुष्कर्मों का प्रतिफल
कौन उसको देता है?
32 जब उसका देहान्त होता है
तब शान से उसका शव
कबर तक पहुँचाया जाता है;
उसकी कबर पर पहरा दिया जाता है!
33 विशाल जनसमुदाय उसकी शव यात्रा में
सम्मिलित होता है
बड़ी भीड़ पीछे-पीछे जाती है;
उसके आगे असंख्य लोग जाते हैं।
घाटी की भूमि उसे प्रिय लगती है।
34 मित्रो, तुम अपनी खोखली बातों से मुझे कैसे
सांत्वना दोगे?
तुम्हारे उत्तरों में झूठ के सिवाय और कुछ
नहीं है!'

एलीपज का आरोप:
अय्यूब ने महापाप किया है

22 तब तेमान नगर के रहने वाले एलीपज
ने कहा:
2 'क्या कोई व्यक्ति परमेश्वर के लिए लाभप्रद
हो सकता है?
जो बुद्धिमान है, वह केवल स्वयं को लाभ
पहुँचाता है।
3 यदि तुम धार्मिक हो तो क्या इससे
सर्वशक्तिमान परमेश्वर को सुख मिलता है?
क्या तुम्हारे निर्दोष आचरण से
उसे लाभ होता है?
4 क्या वह तुम्हें इसलिए ताड़ित करता है,
और तुमसे मुकदमा लड़ता है
कि तुम उसकी भक्ति करते हो?
5 नहीं, अय्यूब, तुमने महादुष्कर्म किए हैं;
तुम्हारे अधर्म के कामों का कोई अन्त नहीं
है।
6 तुमने अपने भाई-बन्धु के बन्धक अकारण
रख लिये हैं;
तुमने नग्न व्यक्तियों के भी कपड़े उतार लिये
हैं!
7 तुमने थके-माँदे व्यक्ति को
पीने के लिए पानी भी नहीं दिया,
तुमने भूखे मनुष्य को रोटी देने से इन्कार कर
दिया।
8 तुम शक्तिशाली और प्रतिष्ठित हो।
अत: तुमने लाठी के जोर से दूसरों की भूमि
पर अधिकार कर लिया
और तुम्हारे लोग उस पर बस गए।
9 तुमने विधवाओं को खाली हाथ भगा दिया;
तुमने पितृहीन बालकों के हाथ तोड़ डाले।
10 इसीलिए तुम्हारे चारों ओर फन्दे लगे हैं;
आकस्मिक आतंक तुम्हें दबोच लेता है।

---

21 : 26 सभ 9 : 2 **22 : 2-3** अय्य 35 : 6-8 **22 : 6** नि 22 : 25-26; यहेज 18 : 12; यश 58 : 7

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

11 तुम्हारा प्रकाश अन्धकार में बदल गया है;
अत: तुम्हें दिखाई नहीं देता;
तुम विनाश की बाढ़ में डूब रहे हो!
12 निस्सन्देह परमेश्‍वर सर्वोच्च स्वर्ग में है!
सबसे ऊँचे तारों को देखो, वे कितनी दूर हैं!
13 इसलिए तुम यह कहते हो,
''परमेश्‍वर क्या जानता है!
क्या वह सघन मेघों के भीतर से
न्याय कर सकता है?
14 घने बादल उसको ढके हुए हैं,
अत: वह देख नहीं सकता।
वह आकाश-मण्डल के ऊपर चलता-
फिरता है।''
15 अय्यूब, क्या तुम पुराने मार्ग पर चलते रहोगे
जिस पर दुर्जन मनुष्य चलते हैं?
16 वे अपने नियत समय से पहले उठा लिये
गए,
उनकी नींव तक बह गई।
17 उन्होंने परमेश्‍वर से कहा था,
''हम से दूर हो!
सर्वशक्‍तिमान परमेश्‍वर हमारा क्या कर
सकता है?''
18 तो भी परमेश्‍वर ने उनके घर को
सुख-समृद्धि से भर दिया!
दुर्जनों के ये विचार मुझसे दूर ही रहें!
19 धार्मिक उनके विनाश को देखकर प्रसन्न
होते हैं;
निर्दोष व्यक्‍ति उनका मजाक उड़ाते हुए यह
कहते हैं:
20 ''निश्‍चय ही हमारे बैरियों का नाश हो गया;
और उनकी सम्पत्ति जलकर राख हो गई!''
21 'ओ अय्यूब, परमेश्‍वर से मेल-मिलाप कर
लो;
तब तुम्हें शान्ति मिलेगी;
इसी से तुम्हारी भलाई होगी।
22 उसके मुख से शिक्षा ग्रहण करो,
और उसके वचन अपने हृदय में रखो।
23 यदि तुम विनम्र भाव से सर्वशक्‍तिमान
परमेश्‍वर की ओर लौटोगे,
यदि तुम अपने निवास-स्थान से अधर्म को
दूर करोगे,
24 यदि तुम अपना सोना धूल समझोगे,
ओपीर देश का सोना भी तुम्हारी नजर में
नदी-तल का कंकड़ होगा,
25 तो स्वयं सर्वशक्‍तिमान परमेश्‍वर
तुम्हारे लिए सोना,
और तुम्हारे लिए कीमती चाँदी बन जाएगा!
26 तब तुम सर्वशक्‍तिमान परमेश्‍वर में आनन्दित
होगे;
तुम निष्कलंक होकर अपना मुख परमेश्‍वर
की ओर उठा सकोगे।
27 तुम उससे प्रार्थना करोगे,
और वह तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार करेगा।
तुम उसके लिए अपनी मन्नतें पूरी करोगे।
28 जिस बात का तुम निश्‍चय करोगे,
वह तुम्हारे द्वारा सफलतापूर्वक पूरी होगी।
तुम्हारा मार्ग प्रकाश से आलोकित होगा।
29 परमेश्‍वर घमण्डी का सिर नीचा करता है,
पर वह विनम्र मनुष्य की रक्षा करता है।
30 वह निर्दोष मनुष्य को बचाता है;
तुम अपने निष्कलंक आचरण के कारण
बचाए जाओगे।'

परमेश्‍वर के सम्मुख अपना पक्ष प्रस्तुत करने की अय्यूब की इच्छा

23 तब अय्यूब ने कहा,
2 'आज भी मेरी शिकायत कड़वी* है!
मैं कराहता हूँ, इसके बावजूद
परमेश्‍वर का दबाव** मुझ पर भारी है।
3 काश! मैं जानता कि परमेश्‍वर मुझे कहाँ
मिलेगा?
तब मैं उसके सिंहासन के समीप आता।
4 मैं उसके सम्मुख अपना मुकदमा पेश करता;
और अपनी सफाई में अनेक तर्क प्रस्तुत
करता।
5 मैं जान लेता कि वह मुझे क्या उत्तर देगा;
मैं समझ जाता कि वह मुझसे क्या कहेगा।
6 क्या वह अपने महासामर्थ्य के साथ मुझसे
मुकदमा लड़ेगा?

* अथवा ''विद्रोही''। ** मूल में, ''मेरा हाथ''

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नहीं, बल्कि वह मुझ पर ध्यान देगा।
7 निष्कपट हृदय का व्यक्ति वहाँ उससे तर्क-
वितर्क करेगा,
और मैं अपने न्यायाधीश द्वारा सदा के लिए
निर्दोष सिद्ध हो जाऊँगा।
8 'देखो, मैं पूरब की ओर जाता हूँ,
पर वह वहाँ नहीं मिलता।
मैं पश्चिम की ओर जाता हूँ,
पर वह मुझे वहाँ दिखाई नहीं देता।
9 मैं उत्तर की ओर उसे ढूंढ़ता हूँ,
तो वह मुझे दिखाई नहीं देता।
मैं दक्षिण की ओर मुड़ता हूँ
तो मैं वहाँ भी उसे नहीं देख पाता।
10 किन्तु वह मेरा मार्ग भली-भांति जानता है;
जब वह मुझे परख लेगा
तब मैं कंचन जैसा शुद्ध प्रमाणित हूँगा।
11 'मेरे पैर उसके मार्ग में स्थिर रहे;
मैं बिना भटके उसी के मार्ग पर चलता रहा।
12 मैं उसकी आज्ञा का पालन करने से
कभी विचलित नहीं हुआ;
मैंने उसके वचनों को अपने हृदय में
सदा सुरक्षित रखा।
13 किन्तु वह अपनी बात का पक्का है,
उसे कौन मोड़ सकता है?
वह अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करता
है।
14 जो कुछ उसने मेरे बारे में निश्चित कर रखा
है,
वह उसको पूरा भी करेगा।
उसके हृदय में ऐसी अनेक बातें हैं।
15 इस कारण मैं उसकी उपस्थिति से आतंकित
हूँ,
जब मैं यह सोचता हूँ
तब मैं थर-थर कांपने लगता हूँ।
16 परमेश्वर ने मेरे हृदय को दुर्बल कर दिया है;
सर्वशक्तिमान ने मुझे आतंकित कर दिया
है;
17 क्योंकि मैं चारों और अन्धकार से घिरा
हुआ हूँ;†
गहन अन्धकार ने मेरे मुख को ढक लिया
है।

अय्यूब का आरोप: 'परमेश्वर दुर्जनों को दण्ड नहीं देता!'

24 'सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने न्याय का
समय क्यों नहीं निश्चित किया?
परमेश्वर को जानने वाले मनुष्य
क्यों नहीं उसके दिनों को देख पाते हैं?
2 कुछ ऐसे भी लोग हैं
जो भूमि की सीमा घटा-बढ़ा लेते हैं;
वे दूसरों की भेड़-बकरियां छीन लेते,
और स्वयं उनको चराते हैं।
3 वे अनाथों के गधे हांक ले जाते,
वे विधवा के बैल को अपने पास बन्धक
रखते हैं।
4 वे गरीबों को मार्ग से हटाते हैं;
देश के सब गरीबों को छिपना पड़ता है।
5 देखो, गरीब मज़दूरी के लिए निकलते हैं;
वे जंगली गधों की तरह
जीविका की तलाश में यहाँ-वहाँ भटकते
हैं।
वे अपने बच्चों के भोजन के लिए
उजाड़-खण्ड में शिकार खोजते-फिरते हैं।
6 वे खेत में अपना भोज्य पदार्थ एकत्र करते
हैं;
वे धनी दुर्जन के अंगूर-उद्यान में बचे हुए
अंगूर बटोरते हैं।
7 वे रात-भर बिना वस्त्र पड़े रहते हैं;
ठण्ड के मौसम में भी,
उन्हें ओढ़ने के लिए कुछ नहीं मिलता।
8 वे पहाड़ों पर वर्षा से भींग जाते हैं;
उन्हें वर्षा से बचने के लिए कोई स्थान नहीं
मिलता;
अत: वे चट्टान से चिपट जाते हैं।
9 'कुछ ऐसे भी लोग हैं,
जो पितृहीन बालक को
मां की छाती से छीन लेते हैं;

† मूल में, "नहीं हूँ"।

23 : 10 भज 139: 1-6 24 : 3 व्य 24 : 17 24 : 7 व्य 24 : 12

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वे गरीब कर्जदार के बच्चे को
अपने पास बन्धक में रखते हैं।
10 ये गरीब नंगे, वस्त्रहीन इधर-उधर फिरते हैं;
वे भूखे-पेट पूले ढोते हैं!
11 वे धनी दुर्जन के जैतून-कुंज में तेल पेरते हैं;
वे अंगूर-रस के कुण्ड़ों में अंगूर रौंदते हैं,
पर स्वयं प्यासे रहते हैं!
12 शहर में मरने वाले गरीबों की कराहें सुनाई देती हैं;
घायल दरिद्र व्यक्तियों के प्राण दुहाई देते हैं।
तब भी परमेश्वर उनकी प्रार्थना पर ध्यान नहीं देता!
13 'कुछ ऐसे भी लोग हैं,
जो ज्योति के प्रति विद्रोह करते हैं;
वे उसके मार्गों को नहीं पहचानते हैं,
वे उसके मार्गों पर स्थिर नहीं रहते हैं।
14 दीन-हीन और गरीब की हत्या करने के लिए हत्यारा अन्धेरे में उठता है;
वह रात में चोर बन जाता है।
15 व्यभिचारी मनुष्य की आँखें
दिन डूबने की प्रतीक्षा करती हैं;
वह सोचता है,
''किसी की दृष्टि मुझ पर नहीं पड़ेगी'';
वह अपने मुँह पर नकाब डाल लेता है।
16 'ये लोग रात के अन्धेरे में
घरों में सेंध लगाते हैं;
पर वे दिन में छिपे रहते हैं।
ये ज्योति को नहीं जानते!
17 घोर अन्धकार ही उन सब के लिए
सबेरे का प्रकाश होता है;
वे गहरे अन्धकार के आतंक से प्रेम करते हैं।
18 '[मेरे मित्रो, तुम यह कहते हो]*
''विनाश की बाढ़ उन दुष्टों को तुरन्त बहा ले जाती है;
उनकी पैतृक धन-सम्पत्ति देश में
शापित मानी जाती है;
उनके अंगूर-उद्यानों में
कोई पैर भी नहीं रखता!
19 जैसे अनावृष्टि और गर्मी से
हिम-जल सूख जाता है,
वैसे ही अधोलोक पापी लोगों को सुखा डालता है!
20 नगर-चौक उन्हें भूल जाते हैं,
कोई उनका नाम भी नहीं लेता;
यों पेड़ के समान दुष्टता कट जाती है।''
21 'पर कुछ ऐसे भी लोग हैं,
जो बाँझ, निस्सन्तान स्त्री की धन-सम्पत्ति को हड़प जाते हैं;
जो किसी भी विधवा का हित नहीं करते हैं।
22 फिर भी परमेश्वर अपने सामर्थ्य से
दुष्ट बलवानों के जीवन की अवधि बढ़ाता है।
जब उन्हें जीवन का भरोसा नहीं रहता है
तब भी वे मृत्यु-शैया से उठ बैठते हैं!
23 परमेश्वर उन्हें सुरक्षित रखता,
और उन्हें सम्भालता है;
वह उनके कुमार्गों पर उनकी रक्षा करता है।
24 कुछ समय तक उनका उत्कर्ष होता है,
फिर वे नष्ट हो जाते हैं;
वे सूख जाते हैं, लोनी-साग** की तरह कुम्हला जाते हैं।
वे अनाज की बाल के समान झड़ जाते हैं।
25 जो मैंने कहा, क्या वह सच नहीं है?
कौन व्यक्ति मुझे झूठा सिद्ध कर सकता है?
कौन व्यक्ति मेरी बातों को निस्सार कह सकता है?'

बिल्दद का विश्वास:
'परमेश्वर सर्वशक्तिमान है'

25 शूही वंश के बिल्दद ने कहाः
2 'परमेश्वर ही प्रभुता करता,
और सृष्टि में अपने प्रति
भक्ति उत्पन्न करता है।
वह अपने सर्वोच्च स्वर्ग में
शान्ति का स्थापक है।

---

* मूल में यो शब्द नहीं हैं। ** मूल में, ''अन्य सब''

24 : 13 यो 3 : 19-20

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

3 क्या उसकी सेना की कोई गिनती है ?
किसके ऊपर उसका प्रकाश नहीं चमकता ?
4 तब क्या मनुष्य
उसके सम्मुख धार्मिक सिद्ध हो सकता है ?
नारी से उत्पन्न मानव
कदापि पवित्र नहीं हो सकता है !
5 देखो, चन्द्रमा भी परमेश्वर की दृष्टि में
प्रकाशहीन है;
ये तारे भी निस्तेज हैं !
6 फिर मनुष्य की क्या गिनती !
वह तो कीड़ा है !
मानव-सन्तान केंचुआ- मात्र है !'

अय्यूब का उत्तर: 'मैं परमेश्वर की महानता और प्रताप से परिचित हूँ !'

26 तब अय्यूब ने उत्तर दिया:
2 'तुमने निर्बल जन की
अच्छी सहायता की !
वाह ! तुमने कमजोर मनुष्य को खूब सम्भाला !
3 तुमने निर्बुद्धि मनुष्य को कितनी अच्छी
सलाह दी,
और उस पर उदारतापूर्वक अपना ज्ञान
बिखेरा !
4 पर तुमने किस की सहायता से ये बातें कहीं ?
किसकी प्रेरणा से
तुम्हारे मुँह से ये बातें निकलीं ?
5 'नीचे रहनेवाली प्रेतात्माएं थरथराती हैं;
समुद्र और उसके निवासी भी काँप रहे हैं।
6 परमेश्वर के सम्मुख अधोलोक नंगा पड़ा है;
विनाश-लोक** अनावृत है !
7 परमेश्वर उत्तर दिशा को शून्य में फैला देता
है;
वह पृथ्वी को निराधार लटका देता है।
8 वह जल को अपने घने बादलों में बाँध कर
रखता है;
फिर भी बादल जल के भार से नहीं फटता !
9 वह चन्द्रमा के मुख पर
मेघ का घूँघट डालता है;
वह मेघ से उसका मुँह ढक देता है।
10 जिस सीमा पर अन्धकार और प्रकाश मिलते
है;
वहाँ जल की सतह पर
उसने एक वृत खींच रखा है।
11 उसकी डांट से
स्वर्ग के स्तम्भ थरथराते हैं,
वे उसकी घुड़की से काँपने लगते हैं।
12 अपने बल से उसने समुद्र को शान्त किया
है;
उसने अपनी बुद्धि से रहब राक्षस का वध
किया है।
13 उसकी साँस से आकाश-मंडल साफ हो
जाता है,
उसने अपने हाथ से
भागते हुए सर्प को मार डाला है।
14 'मित्रो, ये सब तो
परमेश्वर के अति साधारण कार्य हैं !
हम-मनुष्य उसके महान कार्यों की एक
झलक ही देख पाते हैं;
उसके महासामर्थ्य की थाह
कौन पा सकता है ?'

अपनी निर्दोषता की शपथ

27 अय्यूब ने अपनी बात जारी रखते हुए
कहा:
2 'जीवित परमेश्वर की सौगन्ध !
मैं न्याय की दृष्टि से निर्दोष था,
फिर भी उसने मुझे दण्ड दिया !
सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने मेरे प्राण को
पीड़ित किया है !
3 जब तक मुझ में साँस है,
जब तक परमेश्वर का श्वास मेरे नथुनों में
है;
4 तब तक मेरे ओठों से झूठ नहीं निकलेगा,
और न मेरी जीभ से कपटपूर्ण वचन।
5 परमेश्वर न करे कि मैं यह कहूँ
कि तुम सच कहते हो।
मैं जीवन के अन्तिम क्षण तक
अपने आदर्श को अपने से अलग नहीं

** मूल में, "अबद्दोन'

26 : 6 नीति 15 : 11; आमो 9 : 2 26 : 12 यश 51 : 9-10,15

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

करूँगा।
6 मैं अपने धर्म को कसकर पकड़े हुए हूँ,
मैं उसको हाथ से न जाने दूंगा;
मेरा हृदय मुझे अपने पिछले जीवन के लिए
दोषी नहीं ठहराता।
7 'मेरा शत्रु दुर्जन माना जाए;
मेरा विरोधी अधार्मिक ठहरे!
8 जब परमेश्वर अधर्मी व्यक्ति का अन्त कर
देता है,
जब परमेश्वर उसका प्राण ले लेता है
तब उसके लिए आशा कहाँ शेष रही?
9 जब अधर्मी पर संकट मंडराएगा
तब क्या परमेश्वर उसकी दुहाई सुनेगा?
10 क्या वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर में सुख
प्राप्त करेगा?
क्या वह हर समय उसको पुकारेगा?
11 मेरे मित्रो, मैं तुम्हें परमेश्वर के कार्यों के
विषय में शिक्षा दूँगा;
मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर का भेद तुमसे
नहीं छिपाऊँगा।
12 सच पूछो तो तुम सब
यह भेद स्वयं अनुभव कर चुके हो!
फिर तुम ये बातें क्यों कर रहे हो?'

सोपर की दृष्टि में दुर्जनों की नियति*

13 'परमेश्वर ने दुर्जनों की यह नियति निश्चित
की है:
अत्याचारियों को सर्वशक्तिमान परमेश्वर
मीरास में यह प्रदान करता है:
14 चाहे दुर्जन की अनेक पुत्र-पुत्रियां हों,
पर वे तलवार से मौत के घाट उतारे जाते
हैं;
उसकी सन्तान को पेट-भर भोजन नसीब
नहीं होता!
15 उसके बचे हुए वंशज
महामारी का कौर बन जाते हैं;
और उनकी विधवाएँ उनके लिए शोक नहीं
मनाती हैं!
16 'चाहे दुर्जन धूलि-कण की तरह अत्यधिक
चाँदी एकत्र कर ले,
चाहे वह पहाड़ी के समान
वस्त्रों का ढेर लगा ले,
17 फिर भी उसके वस्त्रों के ढेर के कपड़े
धार्मिक व्यक्ति ही पहिनेंगे;
उसके धूलि-कण के सदृश
अत्यधिक चांदी
निष्कलंक मनुष्य आपस में बाटेंगे।
18 ' जो मकान दुर्जन बनाता है,
वह मकड़ी के जाले के समान होता है;
वह झोंपड़ी के समान होता है
जिसको खेत का रखवाला बनाता है।
19 वह शय्या पर लेटते समय
स्वयं को धनी महसूस करता है;
पर यह फिर न होगा,
क्योंकि सबेरे आँख खोलने पर
वह अपने को निर्धन पाता है।
20 'आतंक की बाढ़ में दुर्जन घिर जाता है;
रात के समय बवण्डर उसको उड़ा ले जाता
है।
21 पूरबी वायु उसको उड़ा ले जाती है,
और उसका अस्तित्व मिट जाता है,
वायु उसको उसके स्थान से बहा ले जाती
है।
22 ' यों परमेश्वर निर्दयता से
उस पर विपत्तियाँ ढाहता है;
दुर्जन उसके हाथ की पहुँच से
वेगपूर्वक भागता है।
23 लोग उस पर ताली बजाते हैं;
वे उसको उसके स्थान से
खदेड़ने के लिए सिसकाते हैं।'

सच्चा ज्ञान कहाँ और कैसे प्राप्त होता है?*

28 'चाँदी प्राप्त करने के लिए खदान
होती है;
सोने को शुद्ध करने के लिए भी एक स्थान
होता है।
2 लोहा भूमि में से निकाला जाता है,
तांबा कच्ची धातु को शुद्ध करने से मिलता
है।
3 मनुष्य अन्धकार को दूर कर,

---

* मूल में वक्ता का नाम नहीं है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
दूर-दूर तक भूमि के भीतर खोद-खोदकर
घोर अन्धकार में कच्ची धातु खोजते हैं।
4 वे मनुष्यों की बस्ती से दूर खान खोदते हैं;
पैदल चलने वाले भी उन्हें भूल जाते हैं
कि उनके पैरों के नीचे, भूमि के भीतर
वे खदान खोद रहे हैं!
वे बस्तियों में रहने वाले लोगों से दूर झूले में झूलते हुए,
अधर में लटके हुए रहते हैं।
5 यह जो भूमि है,
इसकी ऊपरी सतह से रोटी प्राप्त होती है;
पर उसका भीतरी भाग मानो आग से उलट-पुलट दिया जाता है!
6 इसके पत्थरों से नीलमणि प्राप्त होती है;
इसी स्थान में सोने के कण भी मिलते हैं।
7 'उसका मार्ग कोई शिकारी पक्षी भी नहीं जानता;
बाज की आँखों ने भी उसको नहीं देखा है।
8 उस पर हृष्ट-पुष्ट जंगली पशुओं ने भी पैर नहीं रखे हैं,
सिंह भी वहाँ से नहीं गुजरा है!
9 'मनुष्य चकमक पत्थर की चट्टान पर हाथ लगाता,
और पहाड़ों को जड़ से उखाड़ देता है!
10 वह चट्टानों को काटकर
उनमें से मार्ग निकालता है;
तब उसको सब कीमती वस्तुएँ दिखाई देती हैं!
11 वह जलधाराओं को बांध देता है,
जिससे बून्दें नहीं टपकतीं;
वह छिपी हुई वस्तुओं को बाहर प्रकाश में लाता है।
12 'किन्तु बुद्धि कहाँ प्राप्त होगी?
किस स्थान पर समझ मिलती है?
13 मनुष्य वहाँ जानेवाला मार्ग* नहीं जानता;
जीवलोक में वह नहीं मिलती।
14 महासागर कहता है,
"वह मुझ में उपलब्ध नहीं है।"
समुद्र कहता है,
"वह मेरे पास भी नहीं है।"
15 वह सोना देकर भी प्राप्त नहीं की जा सकती है,
चांदी तौलकर भी उसका मूल्य नहीं चुकाया जा सकता है!
16 उसका मूल्य न ओपीर देश के सोने से आंका जा सकता है,
और न बहुमूल्य गोमेद या नीलम मणियों से ही।
17 न सोना और न कांच
उसकी बराबरी कर सकते हैं,
और न शुद्ध सोने के आभूषणों के बदले में
उसको प्राप्त किया जा सकता है।
18 मूंगा और स्फटिक मणि
उसके सम्मुख कुछ भी नहीं हैं!
बुद्धि का मूल्य मोतियों से अधिक है।
19 इथियोपिया देश का पुखराज भी
उसकी बराबरी नहीं कर सकता है;
और न शुद्ध सोने से
उसका मूल्य कूता जा सकता है!
20 'तब बुद्धि कहाँ प्राप्त हो सकती है?
समझ किस स्थान में उपलब्ध है?
21 वह सब प्राणियों की आंखों से छिपी है;
वह आकाश के पक्षियों के लिए अगोचर है।
22 विनाश और मृत्यु यह कहते हैं,
"हमने उसके बारे में कानों से सुना भर है।"
23 'केवल परमेश्वर ही बुद्धि का मार्ग समझता है,
वह उसका स्थान जानता है।
24 क्योंकि उसकी आंखों से पृथ्वी के सीमान्त तक छिपे नहीं हैं;
वह आकाश के नीचे की प्रत्येक वस्तु पर दृष्टिपात करता है।
25 जब उसने वायु को उसका भार दिया,
और जल को नपुये में नापा;

---

* मूल में "उसका मूल्य"

28 : 12 सभ 7 : 24; प्रव 1 : 6; बारू 3 : 15 **28 : 13** बारू 3 : 29-31 **28 : 23** बारू 3 : 35-37

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

26 जब उसने वर्षा का नियम निश्चित किया,
और मेघ-गर्जन तथा बिजली का मार्ग
निर्धारित किया,
27 तब उसने बुद्धि को देखा
और उसका वर्णन किया;
उसने उसको स्थापित किया,
और उसका भेद खोज लिया।
28 परमेश्वर ने मनुष्य से कहा,
''देखो, मुझ-प्रभु की भक्ति करना ही
बुद्धिमानी है;
और बुराई से दूर रहना ही समझदारी
है!'' '

अय्यूब का बीते दिनों को याद करना

29 अय्यूब ने पुनः अपनी बात आगे बढ़ाते
हुए कहा :
2 'काश! मेरी वर्तमान दशा पिछले महीनों की
तरह होती,
उन दिनों की तरह जब परमेश्वर
मेरी रक्षा करता था;
3 जब उसका दीपक मेरे सिर के ऊपर प्रकाश
देता था,
और मैं उसकी ज्योति के प्रकाश से
अन्धकार में भी चलता था।
4 काश! मैं अपनी युवावस्था के दिनों की तरह
पुनः जीवन बिताता;
जब परमेश्वर की मित्रता मेरे घर पर थी;
5 जब सर्वशक्तिमान परमेश्वर मेरे साथ था;
जब मेरे बच्चे भी मुझे घेरे रहते थे;
6 जब मेरे पैर दूध से धोए जाते थे;
चट्टानें मेरे लिए तेल की नदियां बहाती थीं।
7 जब मैं घर से निकलकर
नगर के प्रवेश-द्वार पर आता था,
और वहाँ चौक पर अपना आसन जमाता
था,
8 तब जवान मुझे देखकर खिसक जाते,
और वृद्ध उठकर खड़े हो जाते थे।
9 सामंत भी बात करना बन्द कर देते थे,
वे अपने मुंह पर हाथ रख लेते थे।
10 मुखियों की आवाज शान्त हो जाती थी,
और उनकी जीभ तालु से चिपक जाती थी।
11 जो व्यक्ति मेरी बात सुनता,
वह मुझे धन्य कहता था;
जो मनुष्य मुझे देखता,
वह मेरा समर्थन करता था।
12 क्योंकि मैं दुहाई देनेवाले गरीब को बचाता
था,
मैं अनाथ बच्चे को छुड़ाता था,
जिसकी मदद करनेवाला कोई न था।
13 मरणासन्न व्यक्ति का आशीर्वाद मुझे मिलता
था,
निराश्रित विधवा का हृदय मेरी सहायता
पाकर
आनन्द से गाता था।
14 मैंने धर्म का वस्त्र पहना था,
और वह मुझे ढके रहा,
न्याय से परिपूर्ण मेरा आचरण
मेरी पोशाक और पगड़ी था!
15 अन्धों की मैं आँख था,
और लंगड़ों के लिए पैर!
16 मैं गरीबों के लिए उनका पिता था;
मैं अपरिचितों के मुकदमे की भी जांच-
पड़ताल करता
और उनकी सहायता करता था।
17 मैं अधार्मिक की दाढ़ें तोड़ता,
और उसके मुंह से उसका शिकार
छीन लेता था।
18 'तब मैं सोचता था कि
मेरी आयु के दिन रेत-कणों के सदृश
असंख्य होंगे;
मेरा प्राण शान्ति से
मेरे घर में ही निकलेगा;
19 मेरी जड़ें जल के झरने तक पहुँच जाएंगी,
रात भर मेरी शाखाओं पर ओस गिरेगी,
20 मेरी प्रतिष्ठा ज्यों की त्यों बनी रहेगी;
मेरी शक्ति का प्रतीक धनुष
मेरे हाथ में सदा नया बना रहेगा।

---

28 : 27 प्रव 1 : 9 **28 : 28** भज 111 : 31; नीति 1 : 7 **29 : 12** भज 72 : 12 **29 : 16** नीति 29 : 7 **29 : 19** भज 1 : 3

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

21 'तब लोग मेरी बात ध्यान से सुनते,
और मेरी प्रतीक्षा करते थे,
मेरा परामर्श जानने के लिए
चुपचाप बैठे रहते थे।
22 मेरे बोलने के बाद फिर कोई न बोलता था;
मेरी बात वर्षा की तरह उन पर बरसा करती थी।
23 वे वर्षा की तरह मेरी प्रतीक्षा करते थे;
जैसे कोई व्यक्ति वसन्त की वर्षा की बूंद के लिए
मुंह खोलता है,
वैसे ही वे मेरी बात ग्रहण करने के लिए
मुंह खोले रहते थे।
24 जब वे निराश होते थे
तब मैं हंसकर उनमें उत्साह जगाता था;
वे मेरे मुख की चमक की उपेक्षा न कर पाते थे।
25 मैं उनका अगुआ था;
मैं ही उनका मार्ग चुनता था;
जैसे सेना में राजा होता है;
अथवा शोक करनेवालों में सांत्वना देनेवाला होता है,
वैसे ही मैं उनका नेता था।

वर्तमान बदली हुई परिस्थिति

30 'पर अब वे,
जो मुझसे उम्र में छोटे हैं,
मेरी खिल्ली उड़ाते हैं,
जिनके पिताओं को मैं इस योग्य भी नहीं समझता था कि
उनको अपनी भेड़-बकरियों की चौकसी करनेवाले
कुत्तों के साथ बैठाता!
2 उनके बाहुबल से मुझे क्या लाभ होता,
क्योंकि उनका पौरुष तो खत्म हो गया है!
3 वे अभाव और अकाल के कारण
सूखी और उजाड़ भूमि चाटते हैं।
4 वे झाड़ियों के आसपास का लोनी-साग तोड़ते हैं;
वे झाऊ वृक्ष की जड़ें खाते हैं!
5 वे नागरिकों के मध्य से निकाल दिए गए हैं;
लोग उनके पीछे-पीछे "चोर....चोर" चिल्लाते हैं!
6 उन्हें चट्टानों की गुफाओं में,
भूमि के गड्ढों में,
घाटियों की संकरी गुहाओं में रहना पड़ता है।
7 वे झाड़ियों में रेंकते हैं,
वे बिच्छु पौधों के नीचे इकट्ठे बैठे रहते हैं।
8 वे मूर्ख और नीच लोगों के वंशज हैं;
उन्हें मार-मार कर देश से निकाल दिया गया है।
9 'अब मैं उन्हीं के बनाए गए
व्यंग्य गीतों का पात्र बन गया हूं।
वे मुझ पर ताना मारते हैं।
10 वे मुझसे घृणा करते हैं,
वे मुझसे दूर-दूर रहते हैं।
वे मेरे मुंह पर थूकने से भी नहीं हिचकते।
11 परमेश्वर ने मुझे शक्तिहीन और तुच्छ बना दिया है,
इसलिए वे मेरे सामने भी अपने मुंह में लगाम नहीं देते!
12 मेरी दाहिनी ओर बाजारू लोग उठते,
और मुझे भगाते हैं;
वे मुझे नष्ट करने के लिए
नाना प्रकार के उपाय रचते हैं।
13 वे मेरे जीवन-मार्ग को तोड़-फोड़ देते हैं;
वे मेरी विपत्ति को बढ़ाते हैं;
फिर भी कोई उनको रोकता नहीं!
14 वे मानो चौड़ी दरार से
मुझ पर धावा करते हैं;
वे ध्वस्त स्थानों से मुझ पर टूट पड़ते हैं।
15 आतंक ने मुझे घेर लिया है,
मेरी प्रतिष्ठा मानो हवा में उड़ गई!
मेरी सुख-समृद्धि बादल के सदृश लुप्त हो गई।
16 'अब मैं शोक सागर में डूब गया हूं;
दुःख के दिनों ने मुझे जकड़ लिया है।
17 रात मेरी हड्डियों को चूर-चूर कर देती है;
मुझे पीड़ित करनेवाला दर्द
शान्त नहीं होता।
18 वह पूरे बल से मेरा वस्त्र पकड़ लेता है;

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मेरे कुरते के गले की तरह
वह मुझे कस लेता है।
19 'परमेश्वर ने मुझे कीचड़ में फेंक दिया है;
मैं धूल और राख जैसा हो गया हूं।
20 हे परमेश्वर, मैं तेरी दुहाई देता हूं,
किन्तु तू मुझे उत्तर नहीं देता।
मैं तेरे दरबार में खड़ा हूं,
पर तू मुझ पर ध्यान नहीं देता।
21 तू मेरे प्रति निर्दयी हो गया है;
तू अपने हाथ की पूर्ण शक्ति से मुझे सताता है।
22 ओ प्रभु, तू मुझे उठाकर
वायु पर बैठा देता है;
तू मुझे हवा पर सवार कराता है,
तू मुझे आन्धी के वेग से
इधर-उधर उछालता है।
23 हां, मैं जानता हूं कि तू मुझे मृत्यु के हाथ में सौंप देगा;
तू मुझे उस घर में भेज देगा,
जो सब प्राणियों के लिए निश्चित् किया गया है।
24 इतना होने पर भी क्या मनुष्य
मलवों के ढेर में से हाथ नहीं फैलाता?*
क्या वह विपत्ति में सहायता के लिए दुहाई नहीं देता?
25 'क्या मैं उस व्यक्ति के लिए नहीं रोया जिस पर दुर्दिन आए थे?
क्या मेरा प्राण गरीबों के लिए दुःखी नहीं हुआ था?
26 किन्तु जब मैंने भलाई की बाट जोही,
तब मुझे बुराई मिली;
जब मैंने प्रकाश की प्रतीक्षा की,
तब मेरे सिर पर अन्धकार छा गया!
27 मेरा हृदय व्याकुल है,
वह क्षण भर भी शान्त नहीं होता!
मेरे दुःख के दिन समीप आ गए हैं।
28 मैं काला पड़ गया हूं,
पर सूर्य की गर्मी से नहीं,
मैं इसी दशा में इधर-उधर जाता हूं;
मैं सभा में खड़ा होता,
और सहायता के लिए दुहाई देता हूं।
29 मैं गीदड़ों का भाई-बन्धु हो गया हूं,
शुतुरमुर्ग मुझे अपना साथी समझते हैं।
30 मेरी चमड़ी काली पड़कर शरीर से झड़ रही है;
मेरी हड्डियां गर्मी से जल रही हैं।
31 मेरी वीणा का उल्लास-संगीत
शोक-संगीत में बदल गया है;
मेरी बांसुरी से रोनेवालों का स्वर निकलता है।

अय्यूब अपने तर्क को पुनः दोहराता है : "मैं धार्मिक और सिद्ध हूं!"

31 'मैंने अपनी आंखों के साथ समझौता किया है कि
मैं किसी कुंवारी को बुरी नजर से नहीं देखूंगा।
2 यदि मैं अपने इस समझौते को भंग करूं
तो स्वर्ग में विराजमान परमेश्वर
मुझे मेरे हिस्से में क्या देगा;
सर्वशक्तिमान परमेश्वर मीरास में मुझे क्या प्रदान करेगा?
3 क्या अधर्मियों पर विपत्ति नहीं आती?
क्या दुष्कर्मियों का सर्वनाश नहीं होता?
4 क्या परमेश्वर मेरे आचरण को नहीं देखता?
क्या वह मेरे प्रत्येक कदम को नहीं गिनता?
5 'यदि मैं छल-कपट के मार्ग पर चलता रहा हूं,
यदि मैंने कपटपूर्ण आचरण के लिए अविलम्ब पग उठाए हैं;
6 तो मैं धर्मतुला पर तौला जाऊं;
और परमेश्वर को ज्ञात हो कि
मैं धार्मिक और सिद्ध हूं!
7 यदि मेरे पैर सन्मार्ग से भटक गए थे
और मेरा हृदय आंखों के बताए हुए कुमार्ग पर चला था;
यदि मेरे हाथ किसी दुष्कर्म से कलंकित हुए

* मूल में अस्पष्ट
31 : 1 मत 5 : 28

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
8 तो मेरे परिश्रम का फल दूसरा व्यक्ति खाए!
मेरे खेत की सब फसल जड़-मूल से नष्ट हो
जाए!
9 'यदि मेरा हृदय पड़ोसी की पत्नी पर मोहित
हो गया था;
और मैं उसके द्वार पर घात में बैठता था
10 तो मेरी पत्नी दासी बन जाए,
वह दूसरों के लिए चक्की पीसे,
और दूसरे पुरुष उसको भ्रष्ट करें।
11 क्योंकि मेरा यह व्यवहार महा दुष्कर्म है;
इस अधर्म का कठोर दण्ड
न्यायाधीशों के द्वारा अवश्य दिया जाना
चाहिए।
12 यह एक ऐसी आग है
जो विनाश-लोक को भी भस्म कर देती है;
यह मेरी समस्त समृद्धि को जड़ से खाक
कर देती!
13 'जब मेरे नौकर अथवा नौकरानी ने मेरे
विरुद्ध मुझसे शिकायत की
और यदि मैंने उसकी शिकायत नहीं सुनी,
14 तो मैं परमेश्वर के सम्मुख क्या करूंगा
जब वह न्याय के लिए उठेगा?
जब वह मुझसे पूछताछ करेगा
तब मैं उसको क्या उत्तर दूंगा?
15 जिस परमेश्वर ने मां के गर्भ में मेरी रचना
की,
क्या उसने ही मेरे नौकर को नहीं रचा है?
क्या एक ही परमेश्वर ने हम दोनों को नहीं
गढ़ा है?
16 'यदि मैंने किसी गरीब की इच्छा पूरी नहीं
की,
यदि मैंने किसी विधवा की आशापूर्ण
आंखों को निराश किया,
17 यदि मैंने अकेले ही कभी भोजन किया,
और मेरे भोजन में अनाथ बालक सम्भागी
नहीं हुआ;
18 (क्योंकि बचपन से ही मैंने उसका लालन-
पालन
पिता के समान किया है,
मां के गर्भ से ही मैं उसका मार्ग-दर्शन
करता रहा हूं।)
19 यदि मेरी आंखों के सामने
कोई गरीब वस्त्र के अभाव में
ठण्ड के कारण मर गया
अथवा मैंने किसी गरीब को वस्त्रहीन देखा
20 और उसको अपनी भेड़ों के ऊन के वस्त्र
नहीं दिए
और उसने ठण्ड से मुक्त हो
मुझे आशीर्वाद न दिया हो,
21 अथवा यदि मैंने नगर के प्रवेश-द्वार पर
अपने सहायकों को देखकर
किसी पितृहीन व्यक्ति पर हाथ उठाया है
22 तो मेरे उस हाथ का पखौड़ा कन्धे से टूटकर
गिर पड़े,
मेरी भुजा भी जोड़ से उखड़ जाए!
23 मैं परमेश्वर के द्वारा ढाही गई विपत्तियों के
कारण आतंकित था,
इसलिए मैं यह अधर्म कर नहीं सकता था।
मैं परमेश्वर के प्रताप का सामना करने में
असमर्थ था।
24 'यदि मैंने सोना-चांदी का भरोसा किया
होता,
अथवा शुद्ध सोने को अपना आश्रय माना
होता;
25 यदि मैंने अपनी विशाल धन-सम्पत्ति के
कारण आनन्द मनाया होता,
या इस कारण कि बहुत-सा धन मेरे हाथ
लग गया है,
26 यदि मेरा हृदय चमकते हुए सूर्य को,
अथवा शान से अग्रसर होते हुए चन्द्रमा को
देखकर,
27 उन पर मोहित हुआ होता,
और मैंने उनकी पूजा की होती
28 तो मेरा यह कार्य भी अधर्म होता,
और इस अधर्म का कठोर दण्ड
न्यायाधीशों के द्वारा अवश्य दिया जाना

---

31 : 15 नीति 14 : 31; मला 2 : 10 **31 : 16-18** तोबी 4 : 7-11, 16 **31 : 24** प्रव 31 : 5-10 **31 : 26** व्य 4 : 19; यिर 8 : 2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

चाहिए;
क्योंकि मैंने सर्वोच्च परमेश्वर के प्रति
विश्वासघात किया होता।
29 'यदि मैं अपने बैरी के विनाश से आनन्दित
होता,
अथवा जब उस पर विपत्ति आती,
और मैं उसकी हंसी उड़ाता,
तो मैं शापित होऊं!
30 परन्तु मैंने उसको मृत्यु का शाप कभी नहीं
दिया;
और यों अपने मुंह से यह जघन्य पाप नहीं
किया।
31 सच तो यह है कि मेरे तम्बू में रहनेवाला
प्रत्येक व्यक्ति यह कहता है:
"कौन है वह मनुष्य
जो अय्यूब के घर का भोजन खाकर तृप्त
नहीं हुआ?"
32 मेरे कारण विदेशी को सड़क पर रात
गुजारनी नहीं पड़ती थी,
मैं राहगीर के लिए अपना द्वार सदा खुला
रखता था।
33-34 क्या मैं कभी समाज की क्रुद्ध-भीड़ के
डर से
कुटुम्बियों की घृणा के आतंक से चुप रहा
और दरवाजे के बाहर कदम न रखा,
जिससे मैं आदम के समान अपना अपराध
छिपा लूं
अथवा अपने हृदय के कोने में अधर्म ढक
लूं?
35 'काश! मेरा भी कोई हितैषी होता,
जो मेरी बात सुनता!
परमेश्वर की अदालत में
मेरी यह अर्जी है :
सर्वशक्तिान परमेश्वर मेरा न्याय करे!
काश! मेरा मुद्दई अभियोग-पत्र लिखता,
और वह मेरे पास होता!
36 तो मैं उसको छाती से लगाए हुए फिरता,
मैं उसको मुकुट की तरह सिर पर धारण
करता!
37 मैं अपने मुद्दई को अपने हर कदम का
हिसाब देता,
राजनेता के समान मैं उसके समीप आता।
38 'यदि मेरी भूमि मेरे विरुद्ध दुहाई देती,
उसकी हल-रेखाएँ मिलकर रोतीं;
39 यदि किसान को उसकी मजदूरी चुकाए
बिना
मैंने अपनी खेत की फसल खायी होती,
अथवा भूमि के मालिकों का प्राण लिया
होता
40 तो मेरे खेत में गेहूं के बदले कांटे,
जौ के बदले जंगली घास उगे!'
यहाँ अय्यूब का कथन समाप्त हुआ

युवक एलीहू के तर्क

32 अय्यूब के तीनों मित्रों ने यह देखा कि
अय्यूब अपनी दृष्टि में धार्मिक है; अत:
उन्होंने उससे तर्क-वितर्क करना छोड़ दिया,
और वे चुप हो गए। 2उनके साथ एलीहू नामक
एक युवक था। उसके पिता का नाम बारकेल
था, जो बूजी वंश और राम के कुल का था।
एलीहू का क्रोध अय्यूब के प्रति भड़क उठा;
क्योंकि उसने अपने दु:ख के लिए परमेश्वर को
दोषी और स्वयं को निर्दोष प्रमाणित किया था।
3वह अय्यूब के तीनों मित्रों से भी नाराज हुआ;
क्योंकि उन्होंने अय्यूब को दोषी तो घोषित
किया, पर अपने पक्ष में अय्यूब को उत्तर न दे
सके। 4वह उनसे उम्र में छोटा था, इसलिए वह
अब तक चुप था, और अय्यूब को उत्तर देने की
प्रतीक्षा कर रहा था। 5जब एलीहू ने देखा कि
अय्यूब के ये तीनों मित्र उसको उत्तर नहीं दे रहे
हैं, तब उसका क्रोध भड़क उठा।
6 बूजी वंश के एलीहू बेन-बारकेल ने अय्यूब
के मित्रों से यह कहा :
'आप उम्र में मुझसे बड़े हैं,
और मैं छोटा हूं।
इसलिए मैं संकोच करता रहा,
और आप लोगों पर अपना मत
प्रकट करने से हिचकिचाता रहा।
7 मैंने हृदय में सोचा,

31 : 30 मत 5 : 44

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

"जो आयु में बड़े हैं,
पहले उनको बोलने दो;
बड़े-बूढ़े ही बुद्धि की बातें सिखाएँ।"
8 पर नहीं, बुद्धि आयु से नहीं आती :
मानव में आत्मा होती है;
सर्वशक्तिमान परमेश्वर की सांस
मनुष्य को समझने की शक्ति प्रदान करती है।
9 यह बात सच नहीं है
कि केवल बड़े-बूढ़े ही बुद्धिमान होते हैं,
कि न्याय को समझने वाले वृद्ध ही होते हैं।
10 अतः मेरा आपसे निवेदन है,
मेरी बात भी सुनिए,
इस विषय पर
मुझे भी अपना मत प्रकट करने दीजिए।
11 'देखिए मैं आपकी बातों की प्रतीक्षा करता रहा;
मैंने आपके बुद्धिमत्तापूर्ण तर्क सुने,
आपने ढूंढ़-ढूंढ़ कर प्रमाण प्रस्तुत किए।
12 मैंने आप लोगों की बातें ध्यान से सुनीं,
पर किसी ने भी अय्यूब के पक्ष का खण्डन नहीं किया,
और न उनके तर्कों का उत्तर दिया।
13 आप भ्रम में मत रहिए
कि आपने बुद्धि पा ली है;
केवल परमेश्वर ही अय्यूब को
उनकी भूल बता सकता है,
मनुष्य नहीं!
14 अय्यूब ने मेरे विरुद्ध कुछ नहीं कहा,
और न मैं आप लोगों के तर्कों के समान उनको उत्तर दूंगा।'
15 एलीहू ने स्वयं से कहा,
'अय्यूब के मित्र घबरा गए हैं,
उन्हें उत्तर सूझ नहीं रहा है।
उनके पास उत्तर देने को शब्द नहीं रहे।
16 वे चुपचाप खड़े हैं,
और उत्तर नहीं दे रहे हैं।
वे चुप हैं तो क्या मैं भी चुप रहूं
और प्रतीक्षा करूं?
17 नहीं, मैं भी अय्यूब को उत्तर दूंगा;
मैं भी अपना मत प्रकट करूंगा।
18 मेरे मन में तर्क भरे पड़े हैं;
मेरी आत्मा मुझे भीतर से प्रेरित कर रही है।
19 मेरा हृदय उस शराब के समान है,
जो चर्मपात्र में बन्द है,
और जो बाहर छलकने के लिए विकल है।
वह नई शराब के कुप्पे की तरह है,
जो फटा जा रहा है!
20 हृदय की शान्ति के लिए
मुझे बोलना ही पड़ेगा;
मुझे अपने ओंठ खोलकर
अय्यूब को उत्तर देना ही होगा।
21 मैं किसी के प्रति पक्षपात नहीं करूंगा;
और न ही किसी की चापलूसी करूंगा।
22 क्योंकि मुझे चापलूसी करना नहीं आता,
अन्यथा मुझे रचनेवाला मेरा परमेश्वर तुरन्त मेरा अन्त कर देता!

अय्यूब पर एलीहू का पहला आरोप

33 'ओ अय्यूब, अब तुम मेरी बात सुनो;
मेरे सब शब्दों पर कान दो।
2 अब मैं अपना मुंह खोल रहा हूं;
मेरी जीभ शब्दों को प्रकट करने के लिए व्याकुल है।
3 मेरे शब्द मेरे हृदय की निष्कपटता व्यक्त करते हैं;
मेरे ओंठ केवल सच बोलते हैं।
4 मुझे परमेश्वर के आत्मा ने रचा है,
सर्वशक्तिमान परमेश्वर की सांस
मुझे जीवन प्रदान करती है।
5 यदि तुम उत्तर दे सकते हो, तो दो;
अपने तर्कों को क्रम से रखो,
और मेरे सम्मुख अपना पक्ष प्रस्तुत करो।
6 देखो, परमेश्वर के सामने
मैं भी तुम्हारे समान हूं;
मेरी भी रचना मिट्टी से की गई है।
7 देखो, तुम्हें मुझसे आतंकित होने की आवश्यकता नहीं;
मेरे प्रश्नों के भार से तुम दबोगे नहीं!

32 : 8 उत 41 : 38-39 **33 : 4** उत 2 : 7

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

8 'निस्सन्देह, तुमने मेरी उपस्थिति में अपने
मित्रों के सम्मुख
अपना पक्ष प्रस्तुत किया है;
मैंने तुम्हारी बातें सुनी हैं।
9 तुम यह कहते हो;
''मैं पवित्र हूं, निरापराध हूं;
मैं शुद्ध हूं, मुझमें अधर्म नहीं है।
10 देखो, परमेश्वर मेरे विरुद्ध दांव ढूंढ़ता है,
वह मुझे अपना शत्रु समझता है;
11 वह मेरे पैरों में काठ की बेड़ी पहनाता है;
वह मेरे हर कदम की निगरानी करता है।''
12 'अय्यूब, तुम्हारा यह आरोप गलत है;
मैं तुम्हें उत्तर दूंगा।
परमेश्वर मनुष्य से महान है।
13 तुम उसके विरुद्ध यह क्यों कहते हो कि
वह तुम्हारी किसी भी बात का उत्तर नहीं
देता?
14 अय्यूब, सुनो,
परमेश्वर के उत्तर देने के ढंग अनेक हैं;
कभी वह एक ढंग से उत्तर देता है
तो कभी दूसरे ढंग से;
पर मनुष्य उस पर ध्यान नहीं देता है।
15 स्वप्न में, रात के किसी दर्शन में
जब मनुष्य गहरी नींद में सोया होता है,
जब वह शय्या पर निद्रामग्न रहता है,
16 तब परमेश्वर उसके कान खोलता है,
वह उसको चेतावनी देकर ताड़ित करता है
17 जिससे वह मनुष्य को उसके कुमार्ग से लौटा
लाए
और उसको अहंकार के जाल से मुक्त
करे।
18 परमेश्वर उसके प्राण को
गड्ढे में गिरने से रोकता है;
वह तलवार के वार से उसकी जीवन-रक्षा
करता है।
19 'परमेश्वर मनुष्य को रोगी बनाता और यों
उसको ताड़ना देता है;
और मनुष्य शय्या पर दु:ख से तड़पता है।
उसकी हड्डियों में पीड़ा निरन्तर बनी रहती
है।
20 मनुष्य का जीवन इस रोग के कारण
भोजन से घृणा करने लगता है;
मनुष्य की भूख मर जाती है,
उसे स्वादिष्ट भोजन से भी अरुचि हो जाती
है।
21 मनुष्य के शरीर का मांस सूख जाता है,
और आंखों से दिखाई नहीं देता;
अदृश्य अस्थियां अब गोचर होने लगती हैं।
22 उसका प्राण कबर के समीप पहुँच जाता है,
उसका जीवन मृत्यु-दूतों के अधीन हो
जाता है।
23 पर यदि उसके लिए कोई संदेशवाहक,
कोई प्रवक्ता *मिल जाता है,
जो हजार में एक होता है;
जो मनुष्य को बताता है कि
उसके लिए उचित क्या है,
24 तो वह उस पर कृपा करता और यह कहता
है,
''इसको कबर में मत ले जाओ,
वरन् छोड़ दो;
क्योंकि मुझे इसका विमोचन-मूल्य मिल
गया है।
25 इसकी देह शिशु की देह से अधिक कोमल
हो जाए;
इसकी जवानी के दिन फिर लौट आएँ।''
26 तब मनुष्य परमेश्वर से प्रार्थना करता है,
और परमेश्वर उसको ग्रहण कर लेता है;
मनुष्य आनन्द-उल्लास से
परमेश्वर का दर्शन करता है।
परमेश्वर मनुष्य की धार्मिकता लौटा देता
है।
27 मनुष्य लोगों के सम्मुख
गीत गाता है, और यह कहता है,
''मैंने पाप किया था,

* अथवा, 'मध्यस्थ'।

33 : 9 अय्य 10 : 7 **33 : 10-11** अय्य 13 : 24, 27 **33 : 15** उत 20 : 3; 41 : 25; गण 12 : 6 **33 : 19** व्य 8 : 5 **33 : 23** अय्य 9 : 33; 16 : 19; 19 : 25; दान 9 : 21-23; जक 1 : 12 **33 : 24** रोम 3 : 24

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
मैंने उचित कार्य को अनुचित बना दिया था,
तो भी मुझे इस अधर्म का दण्ड नहीं दिया
गया।
28 परन्तु परमेश्वर ने मेरे प्राण को
कबर में जाने से बचाया;
अब मेरा जीवन ज्योति के दर्शन करेगा।''
29 'अय्यूब, देखो, परमेश्वर मनुष्य की भलाई
के लिए क्या करता है,
एक बार नहीं, वरन् बार-बार!
30 ताकि वह मनुष्य के प्राण को
कबर से वापस ले आए
और मनुष्य जीवन की ज्योति से ज्योतिर्मय
हो जाए।
31 ओ अय्यूब, ध्यान से मेरी बात सुनो!
और बीच में मुझे टोको मत,
चुप रहो, मुझे और बोलने दो।
32 यदि तुम्हें मेरे कथन के उत्तर में कुछ कहना
है तो कहो!
निस्सन्देह बोलो, क्योंकि मैं तुम्हें निर्दोष
सिद्ध करना चाहता हूं।
33 यदि तुम्हारे पास कोई उत्तर नहीं है
तो चुप रहो;
मैं तुम्हें बुद्धि का पाठ पढ़ाऊँगा।'

परमेश्वर का न्याय सच्चा है

34 एलीहू ने अय्यूब के मित्रों से कहा,
2 'ओ बुद्धिमान लोगो, मेरी बात सुनो!
ओ ज्ञानियो, मेरे तर्क ध्यान से सुनो!
3 जैसे जीभ भोजन को उसके स्वाद से जांचती
है,
वैसे ही कान शब्दों को परखते हैं।
4 आओ, हम परस्पर पता लगाएँ
कि वास्तव में न्यायोचित बात क्या है।
हम समझने-जानने का प्रयत्न करें
कि अच्छा क्या है।
5 क्योंकि अय्यूब ने यह कहा है;
''मैं धार्मिक हूं,
परमेश्वर ने मुझे दु:ख देकर
मेरे साथ अन्याय किया है।
6 मेरी धार्मिकता के बावजूद
मुझे झूठा समझा गया,
मैं निरापराध हूं।
परमेश्वर के इस अन्याय से
मुझे बड़ी चोट लगी है,
जो कभी नहीं भरेगी।''
7 अय्यूब के समान और कौन है
जो परमेश्वर की निन्दा को
पानी के समान पी जाता है,
8 जो दुष्कर्मियों का साथ देता है,
जो दुर्जनों की संगति करता है?
अय्यूब ने यह भी कहा है :
9 ''यदि मनुष्य परमेश्वर से प्रसन्न रहता है,
तो अपने इस कार्य से मनुष्य को कुछ लाभ
नहीं!''
10 'अत: ओ समझदार लोगो!
मेरी बात सुनो।
क्या परमेश्वर दुष्कर्म करता है?
क्या सर्वशक्तिमान परमेश्वर अधर्म करता
है?
कदापि नहीं!
11 वह मनुष्य के कर्म के अनुसार
उसको प्रतिफल देता है;
और प्रत्येक मनुष्य अपने आचरण के
अनुरूप फल भोगता है।
12 निस्सन्देह सच्चा परमेश्वर दुष्कर्म नहीं
करता!
सर्वशक्तिमान परमेश्वर न्याय को अन्याय
में नहीं बदलता!
13 उसको किसने पृथ्वी पर अधिकार दिया है?
सारे संसार का भार
उसके कन्धों पर किसने रखा है?
14 यदि वह मनुष्य से अपना आत्मा वापस ले
ले,
और अपनी सांस अपने में समेट ले,
15 तो सब प्राणी एक-साथ नष्ट हो जाएंगे,
और मिट्टी से बना मनुष्य मिट्टी में मिल
जाएगा।

अय्यूब पर दूसरा आरोप

16 'अय्यूब, यदि तुममें समझ है

34 : 11 नीति 24 : 12; भज 62 : 12; मत 16 : 27; रोम 2 : 6 **34 : 15** उत 3 : 19

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तो यह बात सुनो,
जो मैं कहता हूं, उस पर ध्यान दो।
17 क्या न्याय से घृणा करनेवाला
शासन कर सकता है?
जो परमेश्वर धार्मिक और शक्तिशाली है,
क्या तुम उसको दोषी ठहरा सकते हो?
18 वह राजा से कहता है, "तू नीच है।"
और कुलीन से, "तू दुर्जन है।"
19 वह सामन्तों के प्रति पक्षपात नहीं करता,
और न अमीर को गरीब से अधिक सम्मान देता है।
क्योंकि दोनों को उसने अपने हाथ से रचा है।
20 वे पल भर में मर जाते हैं;
आधी रात में मृत्यु उनको झकझोरती है,
और वे समाप्त हो जाते हैं;
शक्तिशाली व्यक्ति भी बिना हाथ लगाए उठा लिये जाते हैं।
21 'परमेश्वर की आंखें मनुष्य के आचरण पर लगी रहती हैं,
वह उसके हर कदम की निगरानी करता है।
22 कहाँ है वह अन्धकार, घोर अन्धकार
जहाँ परमेश्वर की दृष्टि से दुष्कर्मी छिप सकें?
23 उसने मनुष्य के न्याय के लिए
कोई नियत समय नहीं ठहराया है
कि मनुष्य परमेश्वर के सम्मुख कब प्रस्तुत हो।
24 'परमेश्वर बिना जांच-पड़ताल किए
शक्तिशाली को छिन्न-भिन्न करता है,
और उसके स्थान पर दूसरों को प्रतिष्ठित कर देता है।
25 वह उनके कामों को जानता है,
अतः वह रात में ही उनका तख्ता पलट देता है,
और वे समाप्त हो जाते हैं।
26 वह जनसमूह के समक्ष
शक्तिशालियों को उनके दुष्कर्मों के लिए नष्ट करता है।
27 वे उसका अनुसरण करना छोड़कर उसके
मार्ग से भटक गए थे,
वे उसके आचरण-नियमों की उपेक्षा करते थे।
28 उनके द्वारा सताए गए गरीबों की दुहाई
परमेश्वर तक पहुँची,
और उसने पीड़ितों की चीख-पुकार सुनी।
29 यदि परमेश्वर चुप रहता है
तो उसको कौन दोषी ठहरा सकता है?
जब वह अपना मुख छिपा लेता है
तब कौन उसका दर्शन पा सकता है,
वह चाहे कोई राष्ट्र हो अथवा मनुष्य?
30 वह नहीं चाहता है
कि कोई अधार्मिक राजा राज्य करे,
और प्रजा अत्याचार के जाल में फंसे।
31 'क्या किसी व्यक्ति ने
कभी परमेश्वर से यह कहा,
"मैंने तेरी ताड़ना सह ली,
अब मैं फिर बुरा कर्म नहीं करूंगा।
32 जो मैं देख नहीं पाता, वह मुझे सिखा;
यदि मैंने अधर्म किया है,
तो मैं वह पुनः नहीं करूंगा"?
33 अय्यूब! तुम परमेश्वर के निर्णय को अस्वीकार करते हो।
क्या इसलिए परमेश्वर तुम्हारे मन के अनुरूप
उस व्यक्ति को प्रतिफल देगा?
इस बात का निर्णय
तुम्हें ही करना है, मुझे नहीं।
इसलिए जो कुछ तुम जानते हो,
उसको प्रकट करो।
34 सब ज्ञानी पुरुष मुझसे यह कहेंगे,
मेरी बातें सुनने वाले बुद्धिमान भी यही कहेंगे कि
35 अय्यूब ज्ञान की बातें नहीं कहते,
उनके कथनों से नासमझ झलकती है।
36 भला होता कि अय्यूब की परीक्षा और ली जाती;
क्योंकि वह दुर्जन के समान उत्तर देते हैं।
37 वह पाप के साथ-साथ

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

परमेश्वर से विद्रोह भी करते हैं;
वह परमेश्वर का मजाक उड़ाने के लिए
ताली बजाते हैं,
और उसके विरुद्ध एक के बाद एक
अन्यायपूर्ण वचन कहते हैं।'

अय्यूब पर तीसरा आरोप

35 एलीहू ने यह भी कहा,
2 'क्या तुम इस बात को न्यायसंगत
समझते हो ?
क्या तुम यह दावा करते हो कि तुम परमेश्वर
से अधिक धार्मिक हो ?
3 तुमने पूछा कि "मुझे धार्मिकता से क्या लाभ
हुआ ?
पाप न करने से मेरी दशा बेहतर हो गई ?"
4 मैं तुम्हें और तुम्हारे साथ
तुम्हारे मित्रों को उत्तर दूंगा।
5 'अय्यूब, आकाश की ओर दृष्टि डालो; और
ध्यान से देखो;
उन बादलों को निहारो, जो तुम से अधिक
ऊंचाई पर हैं।
6 यदि तुमने पाप किया तो तुम्हारे इस कार्य से
परमेश्वर का क्या बिगड़ गया ?
यदि तुम एक के बाद एक अपराध करते
जाओ
तो तुम परमेश्वर का क्या कर लोगे ?
7 यदि तुम धार्मिक हो तो तुम उसको क्या दे
देते हो ?
अथवा तुम्हारी धार्मिकता के कारण वह
तुमसे क्या पा जाता है ?
8 अय्यूब, तुम्हारे दुष्कर्मों का सम्बन्ध तुम्हारे
जैसे ही मनुष्य से होता है;
तुम्हारी धार्मिकता का फल भी मानव को
मिलता है।
9 'अत्याचार बढ़ जाने पर मनुष्य दुहाई देते हैं,
वे बलवान के बाहुबल के कारण सहायता
के लिए पुकारते हैं।
10 पर वे यह नहीं कहते, "मेरा सृजन
करनेवाला परमेश्वर कहाँ है ?
वह हमें रात में भी गीत गाने की प्रेरणा देता
है।
11 वह हमें पृथ्वी के पशुओं से अधिक शिक्षा
देता है।
वह हमें आकाश के पक्षियों से अधिक
बुद्धि देता है।"
12 'वे दुहाई देते हैं, किन्तु परमेश्वर उनको
उत्तर नहीं देता;
बुरे लोगों के अहंकार के कारण
उनकी दुहाई व्यर्थ जाती है।
13 निस्सन्देह परमेश्वर व्यर्थ दुहाई नहीं सुनता;
सर्वशक्तिमान परमेश्वर उस पर ध्यान नहीं
देता।
14 तब तुम यह शिकायत क्यों करते हो कि तुम्हें
उसका दर्शन नहीं मिलता;
तुम्हारा मुकदमा उसके सम्मुख है,
और तुम उसकी प्रतीक्षा कर रहे हो ?
15 अय्यूब, परमेश्वर ने तुम पर क्रोध कर तुम्हें
दण्ड नहीं दिया,
उसने तुम्हारे अपराध पर अधिक ध्यान नहीं
दिया
16 तो तुम मुंह खोलकर व्यर्थ की बकवास
करने लगे,
और बेसमझ की बातें बढ़ाते जा रहे हो।'

परमेश्वर सर्वशक्तिमान और महान है

36 एलीहू ने अपनी बात जारी रखी :
2 'मेरे साथ थोड़ा धीरज रखो;
मैं तुम्हें सब समझा दूंगा।
परमेश्वर के सम्बन्ध में
मैं अभी और कुछ कहूंगा।
3 मैं दूर-दूर से ज्ञान संचित करूंगा
और अपने स्रष्टा की धार्मिकता सिद्ध करूंगा।
4 सचमुच मेरी बातें झूठ नहीं हैं,
एक सिद्ध ज्ञानी तुम्हारे सामने उपस्थित है।
5 'देखो, परमेश्वर शक्तिशाली है,
और वह किसी को तुच्छ नहीं समझता;
उसमें समझने की शक्ति अपार है।
6 वह दुर्जन को जीवित नहीं छोड़ता,
वरन् वह गरीबों को उनका हक प्रदान करता
है।

35 : 6-8 अय्य 2 : 2-3

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

7 वह धार्मिकों से अपनी आंखें नहीं फेरता,
बल्कि वह राजाओं के साथ उनको हमेशा के लिए सिंहासन पर बैठाता है,
और वे उच्च पद पर प्रतिष्ठित होते हैं।
8 यदि धार्मिक जन बेड़ियों में जकड़े हुए हैं,
और दुःख-पीड़ा के फन्दे में फंसे हुए हैं,
9 तो वह उनका दुष्कर्म, उनका अपराध प्रकट करता है,
कि उन्होंने अहंकारपूर्ण आचरण किया है।
10 परमेश्वर शिक्षा देने के लिए उनके कान खोलता है,
वह उन्हें आदेश देता है कि वे बुराई की ओर से लौटें।
11 यदि धार्मिक मनुष्य उसकी बात पर ध्यान देते
और वे उसकी सेवा करते हैं
तो वे अपनी आयु के शेष दिन, शेष वर्ष
सुख-समृद्धि में कुशलता से बिताते हैं।
12 पर यदि वे उसकी बात नहीं मानते,
तो तलवार से नष्ट हो जाते हैं,
वे बिना ज्ञान के मर जाते हैं।
13 'जो हृदय से अधर्मी होते हैं,
वे अपने मन में क्रोध को पालते हैं।
जब परमेश्वर उनको जंजीर में जकड़ता है,
तब वे दुहाई भी नहीं देते।
14 वे जवानी में ही मर जाते हैं,
उनके जीवन का अन्त लुच्चों-लफंगों के बीच होता है।
15 परमेश्वर दीन-दुःखियों का उद्धार उनके दुःखों के द्वारा करता है;
वह विपत्तियों के माध्यम से
उनके कान खोलता है।
16 ओ अय्यूब, उसने तुम्हें भी
संकट के मुंह से बाहर निकाला,
और निरापद स्थान में लाया,
संकरे नहीं, वरन् चौड़े मार्ग पर पहुँचाया;
उसने तुम्हें ऐसी मेज पर बैठाया,
जहाँ सर्वोत्तम भोजन तुम्हारे सम्मुख परोसा गया।
17 'पर अब तुम दुर्जनों के न्याय-निर्णय से भर गए हो,
तुम निर्णय और न्याय के सोच में डूबे रहते हो।*
18 सावधान! कहीं क्रोध तुम्हें
कुमार्ग पर न ले जाए!
विमोचन का भारी मूल्य
कहीं तुम्हें पथ-भ्रष्ट न कर दे!
19 क्या रोने-धोने से
तुम्हारी विपत्तियाँ दूर हो जाएंगी?
क्या तुम्हारा शारीरिक बल
तुम्हें दुःख से छुड़ा सकेगा?
20 उस मृत्यु-रात की चाह मत करो
जब लोग अपने-अपने स्थान से मिटा दिए जाते हैं।
21 सावधान! अधर्म की ओर मत मुड़ो।
क्योंकि तुमने दुःख की अपेक्षा अधर्म को अपनाया है।
22 'देखो, परमेश्वर अपनी शक्ति से
बड़े-बड़े कार्य करता है।
उसके समान और कौन शिक्षक है?
23 किसने उसकी आचरण-संहिता निश्चित् की है?
कौन उससे कह सकता है कि
तूने अनुचित कार्य किया है?
24 उसके महान कार्य की महिमा करना मत भूलना,
जिसकी प्रशंसा में लोगों ने गीत गाए हैं।
25 सब मनुष्य उसके कार्य पर दृष्टिपात करते हैं,
मानव उसको दूर से देखता है।
26 'देखो, परमेश्वर महान है,
और हम उसको जान नहीं पाते हैं।
उसकी आयु के वर्ष अनन्त हैं।
27 वह जल की बूंदें ऊपर खींचता है,
और कुहरे के रूप में वर्षा करता है।
28 मेघ उनको उण्डेलते हैं,
और मनुष्यों पर उनको बरसाते हैं।

---

* मूल में अस्पष्ट

36 : 22 यश 40 : 31; रोम 11 : 34

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

29 क्या कोई व्यक्ति
मेघों के विस्तार का अनुभव कर सकता है?
क्या कोई मनुष्य परमेश्वर के निवास-स्थान में
मेघ-गर्जन को समझ सकता है?
30 देखो, वह बिजली को
अपने चारों ओर फैलाता है,
वह समुद्र-तल को ढक देता है।
31 कौमों का न्याय
वह इन्हीं के द्वारा करता है;
वह प्रचुर मात्रा में लोगों को भोजन देता है।
32 वह अपने हाथ बिजलियों से भर लेता है,
और निशाने के स्थान पर गिरने का
उनको वह आदेश देता है।
33 मेघ-गर्जन
उसके अस्तित्व का सन्देश देता है।
वह उसका कोप व्यक्त करता है
जो अधर्म से अत्यन्त क्रुद्ध है।

37 'इस बात पर भी
मेरा हृदय काँप उठता है,
और अपने स्थान से उछल पड़ता है।
2 उसकी वाणी का गर्जन सुनो,
और सुनो उस गड़गड़ाहट को
जो उसके मुंह से निकलती है।
3 वह समस्त आकाश-मण्डल के नीचे
उसको व्याप्त कर देता है;
वह अपनी बिजली को
पृथ्वी के सीमान्तों तक चमकने देता है।
4 इसके पश्चात् उसकी वाणी का गर्जन सुनाई देता है;
वह अपनी प्रतापी आवाज में गरजता है।
जब उसकी आवाज सुनाई देती है
तब वह अपनी बिजलियों को चमकाता है।
5 परमेश्वर अपनी आवाज से
आश्चर्यपूर्ण गर्जन करता है;
वह बड़े-बड़े कार्य करता है
जिनको हम समझ नहीं पाते हैं!
6 वह हिम से कहता है,
"पृथ्वी पर बरसो।"
इसी प्रकार वह वर्षा और फुहार को भी
पृथ्वी पर बरसने का आदेश देता है।
7 वह प्रत्येक मनुष्य के हाथ को
निष्क्रिय बना देता है,
जिससे सब मनुष्य जिनको उसने रचा है,
उसके काम को पहचान सकें।
8 तब वनपशु अपनी-अपनी गुफा में चले जाते हैं,
वे वहाँ अपनी मांदों में रहते हैं।
9 दक्षिण दिशा से तूफान आता है,
और उत्तर की ओर से शीत ऋतु।
10 परमेश्वर की सांस की फूंक से बर्फ गिरता है!
विशाल जलाशय भी जम जाते हैं।
11 वह काली घटाओं को भाप से भरता है;
बादल उसकी बिजलियों को फैला देते हैं।
12 वे उसकी आबाद पृथ्वी पर
उसके आदेश का पालन करने के लिए
उसके निर्देशन में यहां-वहाँ फैल जाते हैं।
13 परमेश्वर पृथ्वी को ताड़ित करने के लिए
अथवा पृथ्वी की भलाई के लिए,
या फिर मानव जाति के प्रति
अपने प्रेम के वशीभूत
यह कार्य करता है।
14 'ओ अय्यूब, मेरी बात सुनो;
चुपचाप खड़े रहो,
और परमेश्वर के आश्चर्यपूर्ण कार्यों पर विचार करो।
15 क्या तुम जानते हो कि
परमेश्वर पृथ्वी पर किस प्रकार मेघों से वर्षा कराता है?
वह अपने बादलों की बिजली को
मानव जाति पर कैसे चमकाता है?
16 क्या तुम यह भेद जानते हो कि
परमेश्वर किस प्रकार बादलों को
अधर में सन्तुलित रखता है?
क्या तुम उस सिद्ध ज्ञानी परमेश्वर के
आश्चर्यपूर्ण कार्यों को समझ सकते हो?
17 जब देश में दक्षिणी वायु के कारण सन्नाटा

---

37 : 23 नि 33 : 20 ; मत 11 : 27; यो 1 : 18

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

छा जाता है,
तब तुम्हारे वस्त्र क्यों गर्म हो जाते हैं?
18 क्या तुम परमेश्वर के समान, आकाश-मण्डल को,
जो ढले हुए दर्पण की तरह पक्का है,
चादर के सदृश तान सकते हो?
19 अय्यूब, हमें सिखाओ कि
हमें परमेश्वर से क्या कहना चाहिए,
क्योंकि अन्धकार के कारण
हम अपने तर्क अच्छे ढंग से पेश नहीं कर सकते हैं।
20 क्या हममें से कोई व्यक्ति
उससे यह कह सकता है कि
मैं तुझसे बात करना चाहता हूं?
क्या किसी मनुष्य ने
स्वयं अपने सर्वनाश की कभी इच्छा की है?
21 'अब आकाश-मण्डल में सूर्य
प्रखर रूप से चमक रहा है,
वायु ने बहकर उसको स्वच्छ-साफ कर दिया है।
निस्सन्देह मनुष्य आकाश की धूप को नहीं देख सकता।
22 उत्तर दिशा से सुनहरी ज्योति आ रही है;
परमेश्वर भयप्रद तेज से विभूषित है।
23 सर्वशक्तिमान परमेश्वर को कौन पा सकता है?
वह अत्यन्त सामर्थी और न्यायप्रिय है।
वह पूर्ण धार्मिक है, वह अत्याचार नहीं कर सकता।
24 अतः मनुष्य उसके प्रति भयभाव रखते हैं;
पर जो मनुष्य स्वयं को अपनी दृष्टि में बुद्धिमान मानते हैं,
वह उन पर दृष्टि भी नहीं करता!'

परमेश्वर का उत्तर: 'अय्यूब, तू अज्ञान के अन्धकार में है।'

38 तब प्रभु ने अय्यूब को बवण्डर में से
उत्तर दिया। प्रभु ने कहा,
2 'वह कौन है, जो अज्ञान की बातों से
मेरी योजनाओं पर परदा डाल रहा है?
3 वीर पुरुष की तरह कमर कस कर तैयार हो;
मैं तुझसे प्रश्नोत्तर करूँगा।
4 'जब मैंने पृथ्वी की नींव डाली थी
तब तू कहाँ था?
यदि तू स्वयं को समझदार समझता है
तो तू मेरे इस प्रश्न का उत्तर दे।
5 पृथ्वी के सीमान्तों को किसने निश्चित् किया है?
डोरी से उसको किसने नापा है?
क्या तू यह जानता है?
6 उसका आधार किस पर रखा गया है?
उसके कोने का पत्थर किसने रखा है?
7 उस समय प्रभात के तारों ने गीत गाया था;
ईश-पुत्रों ने * जय-जयकार किया था।
8 'जब समुद्र गर्भ से फूट पड़ा था
तब किसने द्वार बन्द किया और उसको रोका था?
9 जब मैंने उसको बादलों का वस्त्र पहनाया था,
और उसको लपेटने के लिए
घोर-अन्धकार की पटियां बनाई थीं,
10 जब मैंने उसकी सीमाएं निश्चित की थीं,
और उसमें बेंड़ें और दरवाजे लगाए थे,
11 और समुद्र को यह आदेश दिया था,
"तू यहाँ तक आ सकेगा, इससे आगे नहीं!
तेरी उमड़नेवाली लहरें यहाँ ठहर जाएंगी।"
12 'क्या तूने कभी अपने जीवन-काल में भोर को आदेश दिया,
और उषा को उसका स्थान बताया है,
13 कि वह पृथ्वी के छोर तक फैल जाए,
और दुर्जन उसको देखकर भाग जाए?
14 तब वह ऐसी बदल जाती है
जैसे मोहर के नीचे की चिकनी मिट्टी!
वह वस्त्र के समान रंगी जाती है।
15 दुर्जनों से उनका प्रकाश छीन लिया जाता है;

---

* अथवा, "स्वर्गदूतों ने"।

38 : 1 नि 19 : 16; यहेज 1 : 4 38 : 3 अय्य 42 : 3 38 : 4 भज 104 : 5-9 38 : 7 बारू 3 : 34 38 : 10 यिर 5 : 22

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हिंसा के लिए उठे हुए हाथ तोड़ दिए जाते हैं।
16 'क्या तूने कभी समुद्र के स्रोतों में प्रवेश किया है?
क्या तूने कभी अथाह सागर की गहराई में विचरण किया है?
17 क्या कभी मृत्यु के द्वार तेरे लिए खोले गए?
क्या तूने सघन अन्धकार के दरवाजों को देखा है?
18 क्या तूने पृथ्वी के विस्तार को समझ लिया है?
अय्यूब, यदि तू इन प्रश्नों के उत्तर जानता है
तो मुझे बता।
19 जहाँ प्रकाश रहता है,
वहाँ जानेवाला मार्ग कहाँ है?
अन्धकार का निवास-स्थान कहाँ है?
20 तब तू उनको उनके स्थान पर ले जा सकेगा;
उनके घर को जानेवाले मार्ग पर
उनको ले जा सकेगा।
21 क्यों? तू तो यह सब जातना ही होगा;
क्योंकि उस समय तेरा जन्म हो चुका था!
तेरी आयु तो करोड़ों वर्ष की है न?
22 'क्या तू कभी हिम के भण्डार-गृहों में गया है?
क्या तूने कभी ओलों के भण्डारों को देखा है,
23 जिन्हें मैंने संकट-काल के लिए,
युद्ध और लड़ाई के दिनों के लिए सुरक्षित रखा है?
24 जिस स्थान से प्रकाश फैलाया जाता है,
जहाँ से पूर्वी वायु पृथ्वी पर बहायी जाती है,
वहाँ जानेवाला मार्ग कहाँ है?
क्या तू उसको जानता है?
25 'वर्षा की धाराओं के लिए
किसने रास्ते काटे हैं?
कड़कने वाली बिजली के लिए
किसने मार्ग बनाया है,
26 जिससे वे निर्जन प्रदेश में पानी बरसा सकें,
जन-रहित उजाड़-खण्ड में वर्षा कर सकें,
27 ताकि परती और उजाड़ भूमि की प्यास बुझ जाए,
और उसमें से घास उगने लगे?
28 'क्या वर्षा का कोई सांसारिक पिता है?
ओस की बूंदों को किसने उत्पन्न किया है?
29 किसके गर्भ से बर्फ जन्म लेता है?
आकाश से गिरे हुए पाले को कौन उत्पन्न करता है?
30 जल पत्थर की तरह कठोर हो जाता है,
और समुद्र की सतह जम जाती है।
31 'क्या तू कृतिका-नक्षत्र के गुच्छों को गूंथ सकता है?
क्या तू मृगशीर्ष के बन्धन खोल सकता है?
32 क्या तू मज्जरोत-नक्षत्र को*
यथा समय उदित कर सकता है?
क्या तू सप्तर्षी और उसके उपग्रहों का पथ-प्रदर्शन कर सकता है?
33 क्या तू आकाशमण्डल के न्याय-सिद्धान्तों को जानता है?
क्या तू पृथ्वी पर उन नियमों का राज्य स्थापित कर सकता है?
34 'क्या तू मेघों को आदेश दे सकता है
कि वे तुझ पर जल की वर्षा करें?
35 क्या तू बिजलियों को गिरने की आज्ञा दे सकता है?
और क्या वे तेरे आदेश का पालन कर सकती हैं?
36 किसने बादलों में बुद्धि का प्रकाश भरा है?
किसने कुहरों को समझ दी है?
37 कौन व्यक्ति बुद्धि से बादलों को गिन सकता है?
आकाश के जलपात्रों को कौन उण्डेल सकता है,
38 जब धूलि जम जाती है,
और मिट्टी के ढेले एक-दूसरे से सट जाते

* अथवा 'राशि चक्र के तारों को'

38 : 17 यश 38 :10 **38 : 23** नि 9 : 18; यहो 10 : 11; यश 30 : 30 **38 : 31** अय्य 9 : 9; आमो 5 : 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हैं?
39 'क्या तू सिंह के लिए शिकार पकड़ सकता
है
और उसके बच्चों का पेट भर सकता है,
40 जब वे अपनी मांदों में लेटे हों,
आड़ में घात लगाकर बैठे हों?
41 जब कौवे के बच्चे भूख के कारण
मुझ-परमेश्वर की दुहाई देते हैं,
जब वे भोजन की तलाश में निराहार उड़ते-
फिरते हैं,
तब कौन उनको आहार देता है?

39 'क्या तू जानता है कि
पहाड़ी बकरियां कब बच्चे देती हैं?
हिरनियाँ कब बच्चे देंगी,
क्या तू यह जानता है?
2 क्या तू जानता है कि उनका गर्भकाल कितने
महीने में पूर्ण होता है?
क्या तू उनके बियाने का समय जानता है?
3 जब वे बैठकर अपने बच्चे को जन्म देतीं
और प्रसव-पीड़ा से मुक्त हो जाती हैं,
उस समय का ज्ञान तुझे है?
4 उनके बच्चे बलवान बनते हैं;
वे खुले मैदान में बढ़ते हैं।
वे जंगल की ओर निकल जाते हैं,
और अपनी मां के पास नहीं लौटते हैं।
5 'किसने जंगली गधे को इधर -उधर फिरने
की स्वतंत्रता दी है?
किसने जंगली गधे को स्वच्छन्द स्वभाव का
बनाया है?
6 मैंने ही उसको रहने के लिए निर्जल प्रदेश
दिया है;
मैंने खारी भूमि उसके निवास-स्थान के लिए
प्रदान की है।
7 वह नगर के कोलाहल पर हँसता है;
वह हांकने वाले की आवाज नहीं सुनता है।
8 वह पहाड़ों को अपना चरागाह समझता है;
वह सब प्रकार के हरित पौधों को ढूंढ़ता-
फिरता है।
9 'क्या जंगली सांढ़ तेरी सेवा करने के लिए
तैयार होगा?
क्या वह तेरी चरनी के पास रात गुजार सकता
है?
10 क्या तू उसको रस्सी से बाँधकर उससे हल
चला सकता है?
क्या वह तेरे पीछे-पीछे
खेतों में हेंगा चला सकता है?
11 क्या तू उसकी बड़ी ताकत पर भरोसा कर
अपने सारे काम का बोझ उस पर छोड़
सकता है?
12 क्या तू उस पर विश्वास करेगा,
कि वह स्वयं खेत से घर लौट आए,
और तेरा अनाज तेरे खलियान तक पहुँचा
दे?
13 'शुतुरमुर्गी अण्डे देते समय आनन्द से अपने
पंख फुलाती है;
किन्तु क्या उसके ये पंख और डैने
अण्डों के प्रति उसके स्नेह को प्रकट करते
हैं?
14 नहीं! क्योंकि वह अण्डे भूमि पर देती है,
और उनको लावारिस छोड़ देती है;
धूलि की गर्मी ही उनको सेती है।
15 शुतुरमुर्गी ध्यान नहीं देती कि
उसके अण्डे किसी के पैरों से कुचले जा
सकते हैं;
वन-पशु के पाँव उनको रौंद सकते हैं।
16 फिर अण्डों से बच्चे निकलने पर
वह उनके साथ निर्दय व्यवहार करती है,
मानों वे उसके नहीं, वरन् किसी और के
बच्चे हैं!
अण्डे देने का कष्ट निष्फल हो सकता है,
पर उसको इस बात की चिन्ता नहीं होती।
17 वह इस प्रकार का व्यवहार क्यों करती है?
क्योंकि मुझ-परमेश्वर ने उसको निर्बुद्धि
बनाया है;
मैंने उसको समझने की शक्ति नहीं दी है।
18 जब वह सीधी होकर उड़ने के लिए अपने
पंख फैलाती है,
तब वह अपनी तीव्र गति के कारण घोड़े

38: 41 भज 147 : 9 39 : 16 शोक 4 : 3

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और उसके सवार का मजाक उड़ाती है।
19 'क्या तू घोड़े को उसकी शक्ति प्रदान करता
है?
क्या तू उसकी गर्दन को अयाल से मंडित
करता है?
20 क्या तू उसे टिड्डी की तरह उछलवा सकता
है?
उसका आतंकपूर्ण घुर्राटा डरावना होता है।
21 जब वह शस्त्रों से सज्जित शत्रु का सामना
करने के लिए निकलता है
तब वह घाटी में टाप मारता है,
और अपनी शक्ति पर हर्षित होता है।
22 वह डर पर हँसता है,
वह शत्रु से घबराता नहीं है;
वह तलवार के भय से
पीठ नहीं फेरता है।
23 उस पर तरकश के तीर बरसते हैं,
चमकते भाले और सांग उस पर खड़खड़ाते
हैं।
24 तब वह महाक्रोध के मारे
भूमि को निगलने लगता है;
जब नरसिंगे का स्वर उसके कानों में पड़ता
है।
तब वह अपनी जगह पर स्थिर खड़ा नहीं
रह सकता है।
25 जब नरसिंगा बजता है
तब वह 'हिनहिना' उठता है;
वह दूर से ही सेना-नायकों की गर्जना,
उनकी ललकार,
युद्ध की गन्ध सूँघ लेता है।
26 'क्या जब तू बाज को समझाता है
तब वह उड़ता है?
दक्षिण की ओर उड़ने के लिए,
वह अपने पंख फैलाता है?
27 क्या तेरे आदेश से
गरुड़* ऊँचा उड़ता जाता है;.
और ऊँचे स्थान पर अपना घोंसला बनाता
है?
28 वह चट्टान पर रहता है,
वह चट्टानी शिखर पर,
दृढ़ स्थान पर बसेरा करता है।
29 वहाँ से वह अपने शिकार को ताकता है,
उसकी आंखें शिकार को दूर से ही देख
लेती हैं।
30 गरुड़ के बच्चे खून पीते हैं;
जहाँ मुरदे पड़े होते हैं, वहाँ गरुड़ होता
है।'

अय्यूब का निरुत्तर हो जाना

40 प्रभु ने अय्यूब से यह भी कहा,
2 'जो व्यक्ति दूसरों के दोष ढूंढ़ता है,
क्या वह मुझ-सर्वशक्तिमान परमेश्वर का
सामना कर सकता है?
जो मुझसे वाद-विवाद करता है,
वह मेरे प्रश्न का उत्तर दे।'
3 तब अय्यूब ने प्रभु को उत्तर दिया,
4 'प्रभु, मैं एक तुच्छ मनुष्य हूँ,
मैं तुझे क्या उत्तर दे सकता हूँ?
मैंने अपने ओंठ सिल लिये हैं।
5 मैं एक बार बोल चुका हूँ
अब कोई उत्तर नहीं दूँगा।
दोबारा मैं बात को आगे नहीं बढ़ाऊँगा।'

परमेश्वर की शक्ति का प्रकाशन

6 तब प्रभु ने अय्यूब को बवण्डर में से
उत्तर दिया,
7 'वीर पुरुष की तरह कमर कसकर तैयार हो;
मैं तुझसे प्रश्न पूछूँगा, और तुझे उत्तर देना
होगा।
8 क्या तू मेरे न्याय को व्यर्थ सिद्ध करेगा?
तू स्वयं को निर्दोष ठहराकर
मुझे दोषी प्रमाणित करेगा?
9 क्या तेरा बाहुबल मेरे बराबर है?
क्या तू मेरे समान गर्जना कर सकता है?
10 'अय्यूब, अब अपने को
महिमा और प्रताप से संवार;
तू ऐश्वर्य और तेज के वस्त्र धारण कर!
11 अपने क्रोध के उबाल को बाहर निकाल;

---

* अथवा, 'गिद्ध' या 'बाज, अथवा 'उकाब'
39:30 मत 24:28; लू 17:37

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रत्येक अहंकारी पर दृष्टि डाल,
और उसको तुच्छ प्रमाणित कर।
12 हर एक घमण्डी व्यक्ति पर नजर डाल,
और उसको झुका दे;
दुर्जन जिस स्थान पर खड़े हों,
उनको वहीं कुचल दे।
13 उन्हें एक साथ मिट्टी में मिला दे;
उन्हें अतल गड्ढे में बांध दे!
14 फिर मैं भी स्वीकार कर लूँगा
कि तू अपने बल बूते पर अपना उद्धार कर सकता है।
15 'उस दरियाई घोड़े को देख;
मैंने उसको भी बनाया है,
जैसे मैंने तुझको बनाया है।
वह बैल के समान घास खाता है।
16 उसकी कमर में उसकी शक्ति होती है;
उसके पेट के पट्ठों में उसकी ताकत होती है।
17 वह अपनी पूँछ को देवदार वृक्ष की तरह कड़ी कर लेता है;
उसकी जांघों की नसें एक-दूसरे से मिली हुई हैं।
18 उसकी हड्डियां पीतल की नलियों के समान हैं,
उसकी पसलियाँ मानो लोहे की छड़ें हैं।
19 'वह मुझ-परमेश्वर की उत्कृष्ट रचना है;
उसको बनाने वाला ही हाथ में तलवार लेकर
उसके समीप जा सकता है।
20 पर्वत उसके भोजन की व्यवस्था करते हैं;
वहाँ अन्य वन-पशु भी कलोल करते हैं।
21 वह कमल के पौधों के नीचे लेटता है,
वह दलदल और नरकटों की आड़ में पड़ा रहता है।
22 कमल के पौधे उस पर छाया करते हैं;
नाले के मजनुं वृक्ष उसको घेरे रहते हैं।
23 नदी में बाढ़ आने पर भी
वह नहीं डरता;
यर्दन नदी का जल उसके मुँह तक चढ़ आता है;
तो भी वह विचलित नहीं होता।
24 जब वह सावधान हो
तब क्या कोई उसको पकड़ सकता है?
क्या उसकी नाक छेद कर
कोई व्यक्ति उसमें नथ डाल सकता है?

41

* 'क्या तू समुद्र-राक्षस लिव्यातान को
अथवा मगरमच्छ को
बंसी के काँटे से फँसाकर खींच सकता है?
या रस्सी से उसकी जीभ बाँध सकता है?
2 क्या तू उसकी नाक में नकेल लगा सकता है;
या काँटे से उसका जबड़ा छेद सकता है?
3 क्या वह अपने प्राण बचाने के लिए
तुझसे अनुनय-विनय करेगा;
अथवा तुझसे मीठी बातें बोलेगा?
4 क्या वह तेरे साथ सन्धि करेगा
जिससे तू उसको आजीवन अपना सेवक बनाए?
5 जैसे तू पक्षी से खेलता है
क्या वैसे ही तू उससे खेल सकता है?
अथवा अपनी पुत्रियों का दिल बहलाने के लिए
उसको बाँध कर रख सकता है?
6 क्या मछुए उसकी बिक्री कर सकते हैं?
क्या व्यापारी आपस में उसको बाँट सकते हैं?
7 क्या तू उसका चमड़ा बरछी से बेध सकता है;
अथवा मछुए के त्रिशूलों से
क्या तू उसका सिर फोड़ सकता है?
8 तुझमें हिम्मत है तो उसको हाथ लगा!
यह लड़ाई तुझे सदा याद रहेगी!
फिर कभी ऐसा करने का साहस तुझे न होगा।
9** निस्सन्देह मगरमच्छ को पकड़ने की आस मात्र दुराशा है;
मनुष्य उसके दर्शन मात्र से मुँह के बल गिर

---

* मूल में, अध्याय 40 : 25 ** मूल में, अध्याय 40 : 1

41 : 1 भज 74 : 14; यश 27: 1

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पड़ता है।
10 मनुष्य इतना दुस्साहसी नहीं है कि
वह उसको भड़काए?
तब कौन मनुष्य मेरे सामने खड़ा हो सकता
है?
11 क्या कभी किसी मनुष्य ने मुझे उधार दिया
है कि
मैं उसको लौटाऊँ?
आकाश के नीचे की सम्पूर्ण पृथ्वी मेरी ही
है।
12 'मैं उसके शरीर के अंगों के विषय में कुछ
न छिपाऊँगा,
उसकी महाशक्ति और शरीर की
सुन्दर बनावट के विषय में तुझे बताऊँगा।
13 क्या कोई मनुष्य
उसकी ऊपरी चमड़ी को उतार सकता है?
उसके दुहरे चर्म-कवच को कौन बेध
सकता है?
14 क्या कोई मनुष्य उसके जबड़े खोल सकता
है?
उसके दाँतों के चारों ओर आतंक रहता है।
15 उसकी पीठ ढाल-समूहों की बनी है;
मानो उनको मुहर से बन्द कर दिया गया है।
16 वे एक-दूसरे से ऐसे जुड़े हुए हैं,
कि उनके बीच से वायु भी नहीं गुजर
सकती।
17 वे आपस में मिले हुए हैं,
वे आपस में सटे हुए हैं,
कि वे अलग-अलग नहीं किए जा सकते
हैं।
18 उसकी छींक से प्रकाश चमक उठता है;
उसकी आँखें ऊषा की तरह ज्योतिर्मय
होती हैं।
19 उसके मुँह से अग्नि शिखाएँ निकलती हैं,
उसके मुँह से आग की चिन्गारियाँ छूटती
हैं।
20 जैसे खौलती हुई हांडी से,
जलते हुए नरकटों से धुआं निकलता है
वैसे ही उसके नथुनों से निकलता है।
21 उसकी सांस से कोयले सुलग जाते हैं,
उसके मुँह से आग की ज्वाला निकलती है।
22 उसकी गर्दन में शक्ति का निवास है;
उसके सामने आतंक नाचता है।
23 उसके मांस की परतें परस्पर जुड़ी हैं,
वे मजबूती से सटी हैं, और नहीं हिलतीं।
24 उसका दिल पत्थर की तरह कड़ा है;
वह चक्की के निचले पाट के समान मजबूत
है।
25 जब वह उठता है तब शक्तिशाली पुरुष भी
डर जाते हैं;
उसको देखकर उनके होश उड़ जाते हैं।
26 उस पर तलवार से वार करने पर भी
उस पर असर नहीं होता;
न भाले का, न बर्छी का और न सांग का।
27 वह लोहे को तिनका समझता है,
और पीतल को सड़ी लकड़ी।
28 तीरं से वह भागता नहीं;
गोफन से फेंके गए पत्थर उसे भूसे जैसे
लगते हैं।
29 लाठियों की मार भी उसको फूल जैसी
लगती है;
वह सांग के वार पर हँसता है।
30 उसके शरीर के निचले भाग
पैनी ठिकरियों के समान हैं;
वह कीचड़ पर मानो हेंगा फेरता है।
31 वह गहरे समुद्र को
हांडी के जल के समान मथता है;
वह नील नदी को काढ़े के समान बना देता
है।
32 वह अपने पीछे एक चमकीली लीक छोड़
जाता है;
जिसके कारण सागर सफेद दिखाई देता है।
33 उसके समान निडर प्राणी
पृथ्वी पर दूसरा कोई नहीं है।
34 वह बड़े से बड़े प्राणी का निर्भयता से सामना
करता है;
वह समस्त महाशक्तिशाली प्राणियों का
राजा है।'

41 : 11 रोम 11 : 35

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अय्यूब की स्वीकारोक्ति : 'मैं परमेश्वर का भेद न समझ सका'

42 तब अय्यूब ने प्रभु को उत्तर दिया,
2 'मैं जानता हूँ कि तू सब-कुछ कर
सकता है;
तेरी कोई भी योजना निष्फल नहीं होती।
3 तूने कहा था: "वह कौन है जो अज्ञान की
बातों से
मेरी योजनाओं पर परदा डालता है ?"
इसलिए जो बातें मैं नहीं समझता हूँ,
उनको मैंने कहा;
ऐसी अनोखी बातें मैंने कहीं,
जिनका अर्थ तक मैं नहीं जानता था।
4 तूने मुझसे कहा था,
"मेरी बात को सुन,
मैं तुझसे प्रश्न करूँगा;
और तुझे मेरे प्रश्न का उत्तर देना होगा।"
5 प्रभु, मैंने तेरे विषय में
केवल कानों से सुना था,
पर अब मेरी आँखें तुझे देखती हैं।
6 अत: मुझे अपने ऊपर ग्लानि होती है;
मैं धूलि और राख में लेट कर पश्चात्ताप
करता हूँ।'

अय्यूब का उद्धार

7 जब प्रभु अय्यूब से ये बातें कह चुका
तब वह तेमान नगर के रहने वाले एलीपज
से बोला, 'मेरा क्रोध तेरे प्रति और तेरे दोनों
मित्रों पर भड़क उठा है, क्योंकि तुमने मेरे
विषय में सच्चाई को प्रकट नहीं किया, वरन्
मेरे सेवक अय्यूब ने मेरी सच्चाई को प्रकट
किया है। 8अब तुम्हारे अपराध का यह
प्रायश्चित्त है कि तुम सात बछड़े और सात
मेढ़े लेकर मेरे सेवक अय्यूब के पास जाओ,
और अपनी ओर से मुझको अग्नि-बलि
चढ़ाओ। मेरा सेवक अय्यूब तुम्हारे लिए मुझसे
प्रार्थना करेगा, और मैं उसकी प्रार्थना स्वीकार
करूँगा। तब मैं तुम्हारी मूर्खतापूर्ण बातों के
लिए तुम्हें दण्ड न दूँगा। तुमने मेरे विषय में सच
नहीं कहा, किन्तु मेरे सेवक अय्यूब ने सच
कहा है।'

9 अत: जैसा प्रभु ने तेमान नगर के एलीपज,
शूही वंश के बिलदद और नामाह नगर के सोपर
से कहा, वैसा ही उन्होंने किया। तब प्रभु ने
अय्यूब की प्रार्थना स्वीकार की और उसके
मित्रों को दण्ड नहीं दिया।

10 जब अय्यूब अपने मित्रों की क्षमा के
लिए प्रार्थना कर चुका तब प्रभु ने उसकी स्थिति
पहले जैसी ही कर दी। उसने उसका दु:ख दूर
कर दिया। जितनी धन-सम्पत्ति अय्यूब के पास
पहले थी, उसका दुगुना प्रभु ने अय्यूब को लौटा
दिया।

11 तब अय्यूब के सब भाई-बहिन और सब
पूर्व-परिचित लोग उसके पास आए; और
उन्होंने उसके घर में उसके साथ भोजन किया।
जो विपत्ति प्रभु ने अय्यूब पर डाली थी, उसके
लिए उन्होंने अय्यूब के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित
की, और उसको सांत्वना दी। भेंट के रूप में
उन्होंने अय्यूब को एक-एक अशर्फी और सोने
की एक-एक अंगूठी दी।

12 जो आशिष प्रभु ने अय्यूब को पहले दी
थी, उससे कहीं अधिक अब दी: अय्यूब के
पास चौदह हजार भेड़-बकरियाँ, छ: हजार
ऊँट, एक हजार जोड़ी बैल, और एक हजार
गदहियाँ हो गईं। 13उसके सात पुत्र और तीन
पुत्रियाँ भी हुईं। 14उसने अपनी पुत्रियों के नाम
इस प्रकार रखे: पहली का नाम यमीमा, दूसरी
का नाम कसीआ, और तीसरी का नाम
केरेन्हप्पूक। 15उस देश में अय्यूब की पुत्रियों
के समान रूपवती और कोई कन्या न थी।
उनके पिता अय्यूब ने उनके भाइयों के साथ ही
उनको भी अपनी सम्पत्ति में हिस्सा दिया।

16 अपने दु:ख-भोग के बाद अय्यूब एक
सौ चालीस वर्ष तक जीवित रहा। उसने चार
पीढ़ियों तक अपनी संतान को देखा। 17इस प्रकार
अय्यूब अपनी दीर्घायु पूर्णत: भोगकर वृद्धावस्था
में चिर-निद्रा में सो गया।

---

42 : 2 लू 1 : 37 **42 : 4** अय्य 38 : 3 **42: 5** यश 6 : 5 **42 : 6** दान 9 : 3 **42 : 8** यहेज 14 : 20 ; याक 5 : 16; इब्र 7 : 25 **42 : 10** अय्य 1 : 1-3 **42 : 17** उत 25 : 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भजन संहिता

पुस्तक-परिचय

जैसा कि शीर्षक से स्पष्ट है, यह ग्रन्थ भजनों का संकलन है। इब्रानी शीर्षक के अनुसार इन्हें "प्रार्थनामय स्तोत्र" कहा गया है और यूनानी शीर्षक के अनुसार "संगीतमय गान"। इन भजनों के रचयिता अनेक हैं, जिन्होंने इस्राएली इतिहास के विभिन्न कालों में इनकी रचना की है। इन प्रार्थनाओं तथा गीतों का संकलन सम्पादकों ने किया है। किन्हीं भजनों के लिए उन्होंने शीर्ष-पंक्तियाँ जोड़ी हैं, जो परम्परागत भजनकार राजा दाऊद के जीवन से संबंधित हैं। भजनों के वादन तथा गायन के लिए निर्देश भी मिलते हैं और कुछ अन्य अस्पष्ट टिप्पणियाँ भी (जैसे बीच-बीच में एक शब्द "सेलाह", जो संभवतः विराम का संकेत है)। इस्राएली समाज अपनी आराधना में इन भजनों का प्रयोग करता आया है। इसलिए बहुत-से भजनों का वास्तविक संदर्भ और रचनाकाल यरूशलेम का मंदिर है: चाहे " प्रथम" (सुलेमान द्वारा निर्मित) मंदिर अथवा "द्वितीय" (निष्कासन से वापसी के बाद पुनःनिर्मित) मंदिर। इस्राएलियों ने अपने धर्मशास्त्रों में इनको सम्मिलित किया है। उन्होंने मूसा की व्यवस्था तथा नबियों के ग्रंथों के बाद "अन्य लेखों" में इनको मुख्य स्थान दिया।

इन धार्मिक कविताओं-प्रार्थनाओं को अनेक विषय-समूहों में एकत्र किया जा सकता है—जैसे स्तुतिगान, संकट से बचाव के लिए निवेदन, क्षमा-याचना, धन्यवाद के गीत एवं शत्रुओं को दण्ड हेतु की गयी विनतियाँ । कुछ गीत एवं प्रार्थनाएँ अत्यन्त वैयक्तिक, निजी अनुभवों की अभिव्यक्ति हैं, तथा अन्य गीत एवं प्रार्थनाएँ सम्पूर्ण समाज की भावनाओं की। कुछ गीत छोटे आकार के हैं, क्योंकि इन्हें टेक (स्थाई-पद) के रूप में दुहराते थे, तथा कुछ अन्य गीतों के पद इब्रानी अक्षरमाला के क्रम में विस्तृत रूप से प्रस्तुत किये गये हैं।

"नया विधान" के रचयिताओं ने प्रभु येशु के श्री-मुख से कुछ भजनों का उल्लेख किया है। अतः मसीही कलीसिया की आराधना में आरंभ से ही भजन संहिता का उपयोग किया जा रहा है। कुछ भजनों में प्रतिशोध की भावना को केवल घोर संकट का तीव्र उद्‌गार माना गया है, जो व्यक्तिगत अथवा राष्ट्रीय "शत्रु" के प्रति क्षमा-भाव मांगने का अवसर है।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

भजन संहिता के 150 भजनों को निम्नलिखित पाँच खण्डों में संकलित किया गया है। (प्रत्येक खण्ड के अन्त में एक स्तुति-वचन जोड़ा गया है):

पहला खण्ड	**भजन 1 — 41 (41 : 13)**
दूसरा खण्ड	**भजन 42 — 72 (72 : 18-20)**
तीसरा खण्ड	**भजन 73 — 89 (89 : 52)**
चौथा खण्ड	**भजन 90 — 106 (106 : 48)**
पांचवां खण्ड	**भजन 107 — 150**

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इन 150 भजनों का पाँच विषय-समूहों में वर्गीकरण किया जा सकता है:

पहला वर्ग : निवेदन

व्यक्तिगत:	3, 5, 6, 7, 13,17, 22, 25, 26, 28, 31, 35, 38, 39, 41, 42-43, 51, 54, 55, 56, 57, 59, 61, 64, 70, 71, 77, 86, 88, 94, 102, 109, 120, 130, 139, 140, 141, 142, 143
सामूहिक:	12, 36, 44, 58, 60, 74, 79, 80, 82, 83, 85, 90, 108, 123, 126, 129, 137
भरोसा:	4, 11, 16, 23, 27, 52, 62, 73, 91, 121, 131

दूसरा वर्ग: स्तुति

परमेश्वर की महिमा:	8, 29, 33, 65, 100, 104, 113, 114, 117, 147, 148, 149, 150
परमेश्वर का राज्य:	47, 93, 95, 96, 97, 98, 99, 145, 146
धन्यवाद:	9-10, 30, 32, 40, 66, 67, 75, 92, 103, 107, 111, 116, 118, 124, 138

तीसरा वर्ग: शिक्षा

धर्माचरण :	1, 14, 19, 34, 37, 49, 53, 112, 119, 127, 128
धर्म-इतिहास :	78, 105, 106, 135, 136

चौथा वर्ग: आराधना

तीर्थ:	15, 24, 50, 63, 68, 81, 115, 122, 133, 134
सियोन पर्वत:	46, 48, 76, 84, 87, 125

पांचवां वर्ग: राज्य

दाऊद वंशज (मसीह) :	2, 18, 20, 21, 45, 72, 89, 101, 110, 132, 144

कुछ भजनों का विशेष अवसर पर प्रयोग होता था। मुख्य तीर्थ-पर्वों के समय ''हल्लेल'' अर्थात् स्तुति के भजन 113-118 प्रयुक्त होते थे। भजन 136 ''महान हल्लेल'' का भजन कहलाता था।

मसीही प्रयोग में सात भनों को विशेष पश्चात्ताप की अभिव्यक्ति मानते हैं: भजन 6, 32, 38, 51, 102, 130 और 140। दैनक प्रार्थना में भजन 95 प्रायः आरंभिक आह्वान के रूप में प्रयुक्त होता है, जब कि भज 4 एवं 134 रात्रि वंदना के लिए उपयुक्त हैं प्रभात वंदना के आरंभ में भजन 51 : 15 का उल्लेख किया जाता है: ''हे स्वामी, मेरे ओंठों को खोल; तब मेरा मुंह तेरी स्तुति करेगा।'' संध्या-वंदना का आरंभ भजन 40 : 13 पर आधारित है: ''प्रभु! मेरे उद्धार के लिए कृपा कर। प्रभु! अविलम्ब मेरी सहायता कर।''

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पहला खण्ड

धार्मिक मनुष्य; अधार्मिक मनुष्य: दो अलग मार्ग

1 धन्य है वह मनुष्य
जो दुर्जनों की सम्मति पर नहीं चलता,
जो पापियों के मार्ग पर खड़ा नहीं होता,
और जो उपहास-प्रिय झुण्ड में नहीं बैठता;
2 पर उसका सुख प्रभु की व्यवस्था में है,
और वह दिन-रात उस का पाठ* करता है।
3 वह उस वृक्ष के समान है
जो नहर के तट पर रोपा गया,
जो अपनी ऋतु में फलता है,
और जिसके पत्ते मुरझाते नहीं।
जो कुछ धार्मिक मनुष्य करता है, वह सफल होता है।

4 पर अधार्मिक मनुष्य ऐसे नहीं होते!
वे भूसे के समान हैं, जिसे पवन उड़ाता है।
5 अत: न अधार्मिक मनुष्य अदालत में,
और न पापी मनुष्य धार्मिकों की मंडली में खड़े हो सकेंगे।
6 प्रभु धार्मिकों का आचरण+ जानता है।
परन्तु अधार्मिक अपने आचरण के कारण नष्ट हो जाएंगे।

प्रभु के अभिषिक्त राजा की घोषणा

2 क्यों राष्ट्र षड्यन्त्र करते हैं?
क्यों विभिन्न देश व्यर्थ जाल फैलाते हैं?
2 प्रभु और उसके अभिषिक्त राजा के विरोध में,
संसार के राजाओं ने संकल्प किया है,
शासकों ने एक साथ मन्त्रणा की है।
3 वे कहते हैं, "आओ, हम उनकी बेड़ियां तोड़ डालें,
अपने ऊपर से उनके बन्धन की रस्सियां उतार फेंकें।"
4 स्वामी, जो स्वर्ग में विराजमान है, हंसता है;
वह उनका उपहास करता है।
5 तब वह अपने क्रोध से उनको आतंकित करेगा,
वह रोष में उनसे यह कहेगा,
6 "मैंने अपने पवित्र पर्वत सियोन के सिंहासन पर
अपने राजा को प्रतिष्ठित किया है।"

7 मैं प्रभु के निश्चय की घोषणा करूंगा:
उसने मुझसे यह कहा है: "तू मेरा पुत्र है,
आज मैंने तुझे उत्पन्न किया है।
8 मुझसे मांग, और मैं राष्ट्रों को तेरी पैतृक-सम्पत्ति
और सम्पूर्ण पृथ्वी को तेरे अधिकार में कर दूंगा।
9 तू उन्हें लौह-दंड से खण्ड-खण्ड करेगा,
कुम्हार के पात्र-सदृश उन्हें चूर-चूर करेगा।"

10 अत: राजाओ, अब बुद्धिमान हो
पृथ्वी के शासको, सावधान हो!
11 भयभाव से प्रभु की सेवा करो,
कांपते हुए उसके चरण चूमो।**
12 ऐसा न हो कि प्रभु क्रुद्ध हो, और तुम मार्ग में ही नष्ट हो जाओ,
क्योंकि उसका क्रोध तुरन्त भड़कता है।
धन्य हैं वे सब, जो प्रभु की शरण में आते हैं।

सबेरे की प्रार्थना: परमेश्वर पर पूर्ण भरोसा

दाऊद का भजन, जब वह अपने पुत्र अबशालोम के पास से भागा था।

3 प्रभु, मेरे बैरी कितने बढ़ गए हैं।
मेरे विरोध में अनेक जन उठे हैं।
2 वे मेरे विषय में यह कहते हैं,
"परमेश्वर उसे विजय प्रदान नहीं करेगा।"
सेलाह***

---

* अथवा, 'मनन' + शब्दश: 'मार्ग' ** मूल में, "आनन्दित हो, कांपते हुए पुत्र को चूमो" *** इस इब्रानी शब्द के संभवत: ये अर्थ हैं: 1 विराम, 2 राग-परिवर्तन का संकेत, 3 निर्देशन, 4 कोरस अथवा स्थायी, टेक या अंतरा

1 : 3 यिर 17 : 8 **1 : 4** अय्य 21 : 18 **1 : 6** व्य 30 : 15-20; मत 7 : 13-14 **2 : 1** प्रे 4 : 25-26 **2 : 4** यश 40 : 15-17. 22-24 **2 : 7** 2 शम 7 : 14; मत 3 : 17; प्रे 13 : 33; इब्र 1 : 5; 5 : 5; 2 पत 1 : 17 **2 : 8** दान 7 : 14 **2 : 9** भज 110 : 5-6; प्रक 2 : 27; 12 : 5; 19 : 15 **2 : 12** भज 34 : 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

3 पर प्रभु, तू चारों ओर मेरी ढाल है,
मेरी महिमा है, मेरे सिर को ऊँचा उठानेवाला है।
4 मैं उच्च स्वर में तुझ-प्रभु को पुकारता हूं,
और तू अपने पवित्र पर्वत से मुझे उत्तर देता है। सेलाह
5 मैं लेटता
और निश्चिन्त सो जाता हूं,
मैं फिर सकुशल जाग उठता हूं;
क्योंकि प्रभु, तू मुझे संभालता है।
6 मैं डरता नहीं उन लाखों सैनिकों से
जो चारों ओर से मुझे घेरे हुए हैं।

7 उठ, प्रभु!
हे मेरे परमेश्वर, मुझे बचा !
तू मेरे समस्त शत्रुओं के जबड़े पर मारता है,
तू दुर्जनों के दांत तोड़ता है।
8 उद्धार प्रभु से है:
प्रभु, तू अपने निज लोगों को आशिष दे ! सेलाह

संध्या की प्रार्थना: परमेश्वर पर भरोसा करो

मुख्य वादक के लिए: तांतयुक्त वाद्य-यन्त्रों के साथ। दाऊद का भजन

4 हे मेरे संरक्षक परमेश्वर ! मेरी पुकार का मुझे उत्तर दे !
जब मैं संकट में था, तब तूने मेरी सहायता की।
अब मुझ पर अनुग्रह कर
और मेरी प्रार्थना सुन।
2 ओ मानव! कब तक तुम मेरे गौरव को अपमानित करते रहोगे ?
तुम कब तक निरर्थक बातों की अभिलाषा,
और असत्य की खोज करते रहोगे ? सेलाह
3 जान लो कि प्रभु अपने भक्त के लिए
अद्भुत कार्य करता है:+
जब मैं प्रभु को पुकारता हूँ, तब वह निस्सन्देह सुनता है।
4 कांपते रहो और पाप मत करो:++
शैया पर लेटकर हृदय में विचार करो, और शांत हो। सेलाह
5 विधि-सम्मत बलि चढ़ाओ,
और प्रभु पर भरोसा करो।

6 अनेक मनुष्य यह कहते हैं,
"काश ! हम भलाई को देख पाते।
प्रभु, अपने मुख की ज्योति हम पर प्रकाशित कर!"
7 तूने मेरे हृदय को उससे कहीं अधिक आनन्द प्रदान किया है,
जो उन्हें अंगूर और अन्न की प्रचुरता के समय होता है।
8 मैं शांतिपूर्वक लेटता, और सकुशल सोता हूँ;
क्योंकि प्रभु, तू ही मुझे सुरक्षित रखता है।

रक्षा के लिए प्रार्थना

मुख्यवादक के लिए। बांसुरियों के साथ। दाऊद का भजन।

5 प्रभु, मेरे शब्दों पर कान दे,
मेरी मौन प्रार्थना* पर विचार कर।
2 हे मेरे राजा, हे मेरे परमेश्वर,
मेरी दुहाई पर ध्यान दे,
क्योंकि मैं तुझसे ही प्रार्थना करता हूँ।
3 प्रभु, प्रातः तू मेरी पुकार सुनता है,
प्रातः मैं तेरे लिए बलि तैयार करता
और तेरी प्रतीक्षा करता हूं।

4 तू ऐसा ईश्वर है जो दुराचार से प्रसन्न नहीं होता;
तेरे साथ बुराई रह नहीं सकती।
5 तेरे सम्मुख अहंकारी खड़े न हो सकेंगे,
तू सभी कुकर्मियों से घृणा करता है।
6 तू झूठ बोलने वालों को नष्ट करता है।
प्रभु, तू हत्यारों और धूर्तों से घृणा करता है।

7 पर मैं तेरी अपार करुणा के कारण तेरे घर में प्रवेश करूँगा,
मैं तेरे पवित्र मंदिर की ओर भयभाव से वंदना करूंगा।

+ अथवा, प्रभु ने भक्त को अपने लिए पृथक कर रखा है। ++ पाठांतर 'क्रोध तो करो, पर पाप मत करो।'
* अथवा, धीमे शब्दों में की गई प्रार्थना।

3 : 7 भज 58 : 6 4 : 4 इफ 4 : 26 4 : 6 गण 6 : 26 5 : 2 भज 84 : 3 5 : 7 1 रा 8 : 29

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

8 मेरी घात में बैठे शत्रुओं के कारण,
प्रभु, अपने धर्म-पथ पर मुझे ले चल।
मेरे समक्ष अपना मार्ग सीधा बना।

9 उनके मुंह में सत्य नहीं है,
उनका हृदय विनाश है,
उनका गला खुली कबर है,
वे अपनी जीभ से ठकुर-सुहाती करते हैं।
10 परमेश्वर, उनको अपराधी घोषित कर,
उनको अपनी ही सम्मति के कारण गिरने दे,
उनके अपराधों की अधिकता के कारण उन्हें
बाहर निकाल दे;
क्योंकि उन्होंने तुझसे विद्रोह किया है।

11 पर तू अपनी शरण में आनेवालों को
आनन्दित कर।
वे सदा गाते रहें,
क्योंकि तू उनकी रक्षा करता है।
तेरे नाम के प्रेमी फूले न समाएँ।
12 प्रभु, तू धार्मिक मनुष्य को आशिष देता है,
तू ढाल के सदृश उसको अपनी कृपा से घेरे
रहता है।

संकट में दया-दृष्टि के लिए प्रार्थना

मुख्यवादक के लिए। तांतयुक्त वाद्य-यन्त्रों के साथ। शमीनीत के अनुसार**। दाउद का भजन।

6 प्रभु, क्रोध से मुझे न डांट,
तू मुझे अपने रोष से ताड़ित न कर !
2 प्रभु, मुझ पर दया कर, क्योंकि मैं दुर्बल हूँ;
प्रभु, मुझे स्वस्थ कर, क्योंकि मेरी अस्थियां
बेचैन हैं,
3 मेरा प्राण भी बहुत बेचैन है;
पर तू, हे प्रभु, कब तक ? . . .

4 प्रभु, लौट और मेरे प्राण बचा,
अपने करुण स्वभाव के कारण मुझे मुक्त
कर !
5 क्योंकि मृत्यु की स्थिति में तेरा स्मरण करना
संभव नहीं;
कौन व्यक्ति मृतक लोक में तेरी स्तुति कर
सकता है ?
6 मैं सिसकते-सिसकते थक गया;
मैं प्रति रात अपने बिछौने को आंसुओं से
भिगोता हूं,
अश्रुधारा से मेरी शैया डूब जाती है।
7 मेरी आंखें शोक से धुंधली होने लगी हैं,
मेरे बैरियों के कारण वे कमजोर हो गई हैं।

8 कुकर्मियो ! मुझसे दूर हो;
प्रभु मेरे विलाप पर ध्यान देता है।
9 प्रभु ने मेरी विनती सुनी है;
वह मेरी प्रार्थना भी स्वीकार करता है।
10 मेरे शत्रु लज्जित और बहुत बेचैन होंगे,
वे पीठ दिखाएंगे और क्षण-भर में उनका
अपयश होगा।

न्याय के लिए प्रार्थना

दाऊद का शिग्गायोन गीत जिसको उसने बिन्यामिन कुल के कूश की बातों के कारण प्रभु के सामने गाया था।

7 प्रभु, मेरे परमेश्वर ! मैं तेरी शरण में आया
हूँ;
मेरा पीछा करने वालों से मुझे बचा,
उनसे मुझे मुक्त कर।
2 ऐसा न हो कि वे सिंह के समान मुझे पकड़
लें,
मेरे टुकड़े-टुकड़े करें, और मुझे बचानेवाला
कोई न हो।
3 प्रभु मेरे परमेश्वर, यदि मैंने यह किया,
यदि मेरे हाथों से अधर्म हुआ,
4 यदि मैंने अपने मित्र से बदले में बुराई की,
अथवा अपने शत्रु को अकारण लूटा,
5 तो शत्रु मेरा पीछा करे, मुझे पकड़े,
मेरे प्राण को पैरों तले भूमि पर रौंदे,
और मेरे गौरव को मिट्टी में मिला दे।
सेलाह

6 हे प्रभु, रोष से उठ!
मेरे शत्रुओं के क्रोधोन्मद के विरुद्ध खड़ा
हो!
हे मेरे परमेश्वर*, जाग!

** अथवा संभवतः 'षड्ज में, सप्तक में' * मूल में 'मेरे लिए'

5 : 9 रोम 3 : 13 6 : 1 भज 38 : 1; यिर 10 : 24 6 : 8 मत 7 : 23

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तूने न्याय का आदेश दिया है।
7 तेरे चारों ओर विश्व की सब जातियाँ एकत्र
हों,
और उनके मध्य तू उच्चासन पर विराजे।
8 तू, प्रभु सब जातियों का न्याय करता है।
मेरी धार्मिकता के अनुसार,
प्रभु, मेरा न्याय कर;
क्योंकि मैं निर्दोष हूँ।

9 भला हो कि दुष्ट की दुष्टता नष्ट हो,
और तू धार्मिक मनुष्य को प्रतिष्ठित करे।
मन और हृदय को परखनेवाला परमेश्वर
धर्ममय है।
10 सत्यनिष्ठ को बचानेवाला उच्च परमेश्वर मेरी
ढाल है।
11 परमेश्वर सच्चा न्यायाधीश है,
वह दुर्जनों पर निरंतर क्रोध करने वाला
ईश्वर है।

12 यदि मनुष्य पश्चात्ताप न करे,
तो परमेश्वर अपनी तलवार पर सान चढ़ाएगा।
सचमुच उसने अपना धनुष चढ़ाया और तीर
से निशाना साधा है।
13 उसने अपने मारक शस्त्र तैयार किए हैं;
वह अपने तीरों को अग्नि-अस्त्र बना रहा
है।
14 देखो, दुष्ट ने गर्भ धारण किया;
उसे दुष्कर्म का गर्भ है,
और उससे झूठ का जन्म हुआ है।
15 उसने भूमि खोदी और एक गड्ढ बनाया,
पर वह स्वयं उस गड्ढे में गिरा, जिसको
उसने खोदा था।
16 उसका दुष्कर्म उसी के सिर पर लौटेगा,
उसके ही माथे पर उसकी हिंसा पड़ेगी।

17 मैं प्रभु की धार्मिकता के लिए उसका
स्तुतिगान करूंगा,
मैं सर्वोच्च प्रभु के नाम का गुणगान करूँगा।

परमेश्वर की महिमा; मानव का सम्मान

मुख्यावादक के लिए। गित्तीत के अनुसार। दाऊद का भजन।

8 हे प्रभु, हमारे स्वामी!
तेरा नाम समस्त पृथ्वी पर कितना महान है!
तेरी महिमा का स्तुतिगान* स्वर्ग पर होता है,
2 शिशुओं और बच्चों के मुख से तेरी स्तुति होती
है।
अपने बैरियों के कारण,
अपने शत्रु और प्रतिशोधी का अंत करने के
लिए
तूने एक गढ़ बनाया है।
3 जब मैं देखता हूं तेरे आकाश को, जो तेरा
हस्त-शिल्प है,
चंद्रमा एवं नक्षत्रों को जिन्हें तूने स्थापित
किया है,
4 तब मनुष्य क्या है कि तू उसका स्मरण रखे?
मानव-पुत्र क्या है कि तू उसकी सुधि ले?

5 तो भी तूने उसे ईश्वर से कुछ घटकर बनाया,
और उसे महिमा और सम्मान का मुकुट
पहनाया।
6 तू ने उसे अपने हस्त-शिल्प पर अधिकार
दिया;
तू ने सब कुछ उसके पांवों-तले कर दिया।
7 भेड़-बकरी, गाय-बैल,
और वन-पशु भी,
8 आकाश के पक्षी, सागर की मछलियां,
और वह सब कुछ जो समुद्र के मार्गों में
विचरण करता है।

9 हे प्रभु, हमारे स्वामी,
तेरा नाम समस्त पृथ्वी पर कितना महान है!

परमेश्वर के न्याय के लिए स्तुतिगान +

मुख्यावदक के लिए। मूतलब्बेन के अनुसार। दाऊद का भजन।

9 प्रभु, मैं सम्पूर्ण हृदय से तेरा गुणगान
करूंगा;
मैं तेरे अद्भुत कार्यों का वर्णन करूंगा।

---

* मूल अस्पष्ट + प्राचीन अनुवादों में भजन 9 और भजन 10 को एक ही वर्णमालात्मक भजन के रूप में जोड़ा गया है।

7 : 9 प्रक 2 : 23 **7 : 14** अय्य 15 : 35 **8 : 2** मत 21 : 16 ; 11 : 25 **8 : 4-6** इब्र 2 : 6-8 ; अय्य 7 : 17-18; भज 144 : 3 **8 : 5-6** उत 1 : 26-28; 1 कुर 15 : 27; इफ 1: 22; इब्र 2 : 8; प्रज्ञा 2 : 23; प्रव 17 : 1-4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

2 मैं तुझ में हर्षित होऊंगा, मैं प्रफुल्लित होऊंगा;
हे सर्वोच्च प्रभु, मैं तेरे नाम की स्तुति गाऊंगा।
3 मेरे शत्रुओं ने पीठ दिखाई,
वे तेरी उपस्थिति में लड़खड़ाकर गिर पड़े
और मर मिटे।
4 तूने मेरा न्याय किया, मेरे पक्ष में निर्णय दिया।
तूने सिंहासन पर बैठ कर सच्चाई से न्याय
किया।
5 तूने राष्ट्रों को डांटा, और दुर्जनों को नष्ट किया;
तूने उनका नाम सदा-सर्वदा के लिए मिटा
दिया।
6 तूने उनके नगर जड़ से उखाड़ दिए;
शत्रु अनन्त खण्डहरों में लुप्त हो गए;
उनके स्मृति-चिह्न ही मिट गए।

7 एक महानाद सुनाई पड़ा: प्रभु सिंहासन पर
युग-युगांत विराजमान है;
उसने अपना सिंहासन न्याय के लिए स्थापित
किया है।
8 वह संसार का न्याय धार्मिकता से करता है,
वह लोगों का न्याय निष्पक्षता से करता है,
9 प्रभु उत्पीड़ित व्यक्ति के लिए गढ़ है;
वह संकट में शरण-स्थल है।
10 प्रभु, तेरे नाम को जानने वाले तुझ पर भरोसा
करते हैं;
क्योंकि तू उन लोगों को नहीं छोड़ता है, जो
तुझको खोजते हैं।

11 सियोन पर विराजने वाले प्रभु का गुणगान
करो;
जाति-जाति के लोगों में उसके कार्य प्रकट
करो।
12 प्रभु पीड़ित को स्मरण रखता है।
वह उसकी आह नहीं भूलता है।
क्योंकि वह हत्या का प्रतिशोध लेने वाला
प्रभु है!

13 प्रभु, मुझ पर अनुग्रह कर।
तू ही मृत्यु-द्वार से मुझे ऊपर उठाता है।
देख मेरी पीड़ा को, जो मेरे शत्रु मुझे दे रहे
हैं।
14 तब मैं तेरे समस्त गुणों का वर्णन करूंगा,
और सियोन नगरी के द्वारों पर तेरे उद्धार से
आनन्दित होऊंगा।

15 राष्ट्र उस गड्ढे में गिर पड़े, जो उन्होंने खोदा
था,
वे स्वयं उस जाल में फंस गए, जो उन्होंने
बिछाया था।
16 प्रभु ने स्वयं को प्रकट किया,
उसने न्याय किया,
दुर्जन अपने ही कर्मों के जाल में फंस गए।
हिग्गायोन सेलाह
17 दुर्जन मृतक लोक में जाएंगे,
और परमेश्वर को भूलने वाले राष्ट्र भी।
18 दरिद्र सदा विस्मृत न रहेंगे,
और पीड़ित की आशा सदैव टूटती न रहेगी।
19 प्रभु, उठ! मनुष्य को प्रबल न होने दे,
तेरे सम्मुख राष्ट्रों का न्याय किया जाए।

20 प्रभु, उन्हें भयभीत कर,
जिससे राष्ट्र जान लें कि वे केवल मनुष्य हैं।
सेलाह

दुर्जन के पतन के लिए प्रार्थना

10 प्रभु, क्यों तू दूर खड़ा रहता है?
क्यों मेरे संकट के समय तू स्वयं को
छिपाता है?
2 अहंकारवश दुर्जन पीड़ित मनुष्य का शिकार
करते हैं;
वे स्वयं उस षड्यन्त्र में फंस जाएं, जिसे
उन्होंने रचा है।
3 दुर्जन अपनी अभिलाषा की डींग मारता है;
वह स्वयं की प्रशंसा करता, पर प्रभु की
निन्दा करता है।
4 अहंकारवश दुर्जन प्रभु को खोजता नहीं,
उसका यह विचार है, "परमेश्वर है ही
नहीं।"
5 वह सदा अपने मार्ग पर फलता-फूलता है;
तेरे न्याय-सिद्धान्त उसकी दृष्टि से दूर,
शिखर पर हैं,

9 : 8 प्रे 17 : 31 9 : 13 प्रज्ञा 16 : 13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वह अपने सब शत्रुओं पर फूत्कारता है।
6 वह अपने हृदय में यह सोचता है, ''मैं अटल
हूँ।
मैं पीढ़ी से पीढ़ी तक संकट में नहीं
पड़ूंगा।''
7 उसका मुंह कपट, शाप और अत्याचार से भरा
है;
उसकी जीभ पर अनिष्ट और अपकार हैं।
8 वह गाँवों में घात लगाकर बैठा रहता है,
वह गुप्त स्थानों में निर्दोष की हत्या करता है।
उसकी आंखें छिपे-छिपे शिकार को ताकती
हैं।
9 वह एकांत में घात लगाकर बैठता है, जैसे
सिंह झाड़ी में।
वह घात में बैठता है कि पीड़ित को दबोचे।
जब वह पीड़ित को जाल में फंसा लेता है,
तब उसे दबोचता है।
10 अभागा मनुष्य दब जाता है और झुक जाता
है,
और उसके प्रबल दबाव से गिर पड़ता है।
11 अभागा अपने हृदय में यह सोचता है,
''परमेश्वर मुझे भूल गया।
उसने अपना मुख छिपा लिया।
वह फिर कभी इधर नहीं देखेगा।''

12 हे प्रभु परमेश्वर! उठ, अपना हाथ उठा।
तू पीड़ित मनुष्य को मत भूल!
13 दुर्जन तुझ परमेश्वर का क्यों तिरस्कार करता
है?
क्यों वह अपने हृदय में सोचता है कि तू लेखा
न लेगा?
14 पर तू देखता है, निश्चय ही तूने दुःखों और
कष्टों पर ध्यान दिया है;
तू उन्हें अपने हाथ में लेगा।
अभागा मनुष्य स्वयं को तुझपर छोड़ देता है,
क्योंकि तू अनाथों का नाथ है।
15 दुर्जन और अधर्मी का बाहुबल तोड़ दे;
उनकी दुष्टता का लेखा ले,
जब तक वह लेश मात्र शेष न रहे।
16 प्रभु युग-युगांत राजा है,
उसकी धरती से राष्ट्र मिट जाएंगे।
17-18 अनाथ और दलित के न्याय के लिए,
प्रभु तू पीड़ित मनुष्य की पुकार सुनता है;
तू उनके हृदय को आश्वस्त करेगा,
तू उनकी पुकार ध्यान से सुनेगा,
जिससे मनुष्य, जो मिट्टी से रचा गया है,
फिर कभी दूसरों को भयभीत न करे।

सच्चे व्यक्ति का आश्रय-स्थल

मुख्यवादक के लिए। दाऊद का।

11 मैं प्रभु की शरण में आया हूँ।
फिर तुम मेरे प्राण से कैसे कह सकते
हो,
''पंछी, अपने पर्वत को उड़ जा!
2 देख, दुजनों ने धनुष चढ़ाया है;
उन्होंने प्रत्यंचा पर बाण रखे हैं
कि अंधकार में सत्यनिष्ठ लोगों पर छोड़ें।
3 यदि आधार ही नष्ट हो गया,
तो धार्मिक मनुष्य क्या कर सकता है?''

4 प्रभु अपने पवित्र मंदिर में है,
प्रभु का सिंहासन स्वर्ग में है,
उसकी आंखें मानव-संतान को निहारती हैं,
उसकी पलकें उनको जांचती हैं।
5 प्रभु धार्मिक और दुर्जन को परखता है,
उसकी आत्मा हिंसा-प्रिय लोगों से घृणा
करती है।
6 वह दुर्जनों पर अंगार और गंधक की वर्षा
करेगा;
झुलसाने वाली प्रचण्ड लू उन्हें झेलनी
पड़ेगी*।
7 प्रभु धर्ममय है, उसे धार्मिक कार्य प्रिय हैं;
धर्मपरायण व्यक्ति उसके मुख का दर्शन
करेंगे।

दुर्जन के विरुद्ध सहायता के लिए प्रार्थना

मुख्यवादक के लिए। शमीनीत के अनुसार। दाऊद का भजन।

12 प्रभु, रक्षा कर, क्योंकि धर्मपरायण
व्यक्ति अब नहीं रहे।
मनुष्यों के मध्य से सब विश्वासी लोग लुप्त

---

* शब्दशः 'उनके कटोरों में बांट दी जाएगी'।

10 : 7 रोम 3 : 14 11 : 4 हब 2 : 20; मत 5 : 34 11 : 6 यहेज 38 : 22-12 : 1 मी 7 : 2 12 : 2 यिर 9 : 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हो गए।
2 प्रत्येक मनुष्य अपने पड़ोसी से झूठ बोलता
है,
वे चाटुकार ओंठों से दुरंगी बातें करते हैं।

3 भला हो कि प्रभु चाटुकार ओंठों को,
और घमण्ड से बातें बोलने वाली जीभ को
काट दे।
4 वे यह कहते हैं. "हम अपनी जिह्वा के बल
पर प्रबल होंगे;
हमारे ओंठ हमारे वश में हैं; हमारा स्वामी
कौन है ?"
5 प्रभु यह कहता है, "पीड़ित लुट गए, दरिद्र
विलाप करते हैं।
इस कारण अब मैं उठूंगा;
मैं उसे सुरक्षित रखूंगा, जो सुरक्षा चाहता
है।"
6 प्रभु का वचन शुद्ध वचन है,
जैसे शुद्ध चांदी,
जो भट्टी में सात बार शोधित की गई।

7 प्रभु तू ही हमारी रक्षा कर;
हमें इस पीढ़ी से निरंतर बचाए रख।
8 जब मनुष्यों के मध्य नीचता की प्रशंसा की
जाती है,
तब नीच लोग चारों ओर अकड़ते फिरते हैं।

विपत्ति में सहायता के लिए प्रार्थना

मुख्यवादक के लिए। दाऊद का भजन।

13 कब तक, प्रभु ? क्या तू मुझे सदा भूला
रहेगा ?
कब तक तू अपना मुख मुझसे छिपाए रखेगा ?
2 कब तक मैं अपने को समझाता रहूँगा ?
मेरे हृदय में दिन भर वेदना होती है,
कब तक मेरा शत्रु मुझ पर प्रबल होता रहेगा ?

3 हे प्रभु, मेरे परमेश्वर, मुझ पर दया-दृष्टि कर,
और मुझे उत्तर दे।
मेरी आंखें आलोकित कर, जिससे मैं मृत्यु
की नींद न सोऊं।
4 ऐसा न हो कि मेरा शत्रु यह कहे, "मैं उस
पर प्रबल हुआ।"
ऐसा न हो कि मेरे बैरी आनन्दित हों, कि मैं
उखड़ गया।

5 मैंने तेरी करुणा पर भरोसा किया है,
मेरा हृदय तेरे उद्धार से आनन्द-मग्न होगा।
6 मैं प्रभु का स्तुतिगान करूंगा,
क्योंकि उसने मुझ पर उपकार किया है।

मनुष्य की मूर्खता और दुष्टता

मुख्यवादक के लिए। दाऊद का भजन।

14 मूर्ख अपने हृदय में यह कहते हैं,
"परमेश्वर है ही नहीं।"
वे भ्रष्ट हो गए हैं और घृणास्पद कार्य करते
हैं,
ऐसा कोई भी नहीं जो भलाई करता है।
2 प्रभु स्वर्ग से मनुष्यों पर दृष्टिपात करता है
यह देखने के लिए कि क्या कोई ऐसा मनुष्य
है,
जो समझ से काम लेता है,
जो परमेश्वर को खोजता है ?
3 सब मनुष्य मार्ग से भटक गए हैं,
सब एक-जैसे भ्रष्ट हो गए हैं;
ऐसा कोई भी नहीं, जो भलाई करता है;
नहीं, एक भी नहीं।
4 क्या कुकर्मी नहीं समझते,
मेरे लोगों का खून चूसने वाले कुकर्मी,*
क्या वे सब बिलकुल नासमझ हैं ?
वे मुझ-प्रभु की आराधना नहीं करते।
5 वहाँ वे अत्यन्त आतंकित हो उठे;
क्योंकि परमेश्वर धार्मिक पीढ़ी के साथ है।
6 वे पीड़ित व्यक्ति के प्रयत्न विफल करना
चाहते हैं।
परन्तु प्रभु उसका आश्रय- स्थल है।
7 भला हो कि सियोन पर्वत से इस्राएल का
उद्धार प्रकट हो।
जब प्रभु अपने निज लोगों को समृद्धि पुनः
प्रदान करेगा,

* अथवा, 'रोटी के समान खानेवाले'

12 : 6 भज 18 : 30; नीति 30 : 5 14 : 1-7 भज 53 : 1-6 14 : 1 रोम 3 : 10-12

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तब याकूब आनन्द मनाएगा, और इस्राएल
हर्षित होगा।

परमेश्वर के पर्वत के निवासी

दाऊद का भजन

15 प्रभु, तेरे शिविर में कौन ठहर सकता है?
तेरे पवित्र पर्वत पर कौन निवास कर सकता है?

2 वह मनुष्य जिसका आचरण निर्दोष है,
जो सत्कर्म करता है,
जो हृदय से सच बोलता है;
3 जो अपने मुंह से पर-निन्दा नहीं करता,
जो अपने साथी के साथ बुराई नहीं करता,
जो अपने पड़ोसी के विषय में अपवाद नहीं फैलाता है;
4 जिसकी दृष्टि में अधार्मिक मनुष्य तुच्छ है,
पर जो प्रभु के भक्तों का आदर करता है,
जो हानि उठाकर भी अपने वचन से नहीं फिरता,
5 जो अपना धन ब्याज पर नहीं देता,
जो निर्दोष मनुष्य के विरुद्ध घूस नहीं लेता।
ये कार्य करने वाला मनुष्य सदा अटल रहेगा।

प्रभु मेरा सर्वस्व

दाऊद का मिकताम।

16 हे परमेश्वर, मुझे सुरक्षित रख;
क्योंकि मैं तेरी शरण में आया हूँ।
2 मैंने प्रभु से यह कहा, "तू ही मेरा स्वामी है;
तुझसे अलग मेरी भलाई नहीं।"

3 पवित्र जन, जो धरती पर हैं, आदरणीय हैं,
उनमें ही मेरा समस्त सुख है।
4 जो व्यक्ति अन्य देवताओं का अनुसरण करते हैं,
वे अपने दुःख को बढ़ाते हैं।
मैं उन देवताओं के लिए न रक्त की पेयबलि उण्डेलूंगा,
और न उनका नाम ही अपनी जीभ पर लाऊंगा।
5 प्रभु, तू मेरा कटोरा है,
तू मेरा अंश है, जो मुझे दिया गया है।
तू ही मेरे भाग को सम्भालता है।
6 मेरे लिए माप की डोरी रमणीय स्थान में पड़ी,
निस्संदेह मेरी पैतृक सम्पति उत्तम है।

7 मैं प्रभु को धन्य कहूंगा; वह मुझे परामर्श देता है।
घोर अंधकार में भी मेरा हृदय मुझे चेतावनी देता है।
8 मैं प्रभु को निरन्तर अपने समक्ष रखता हूँ;
वह मेरी दाहिनी ओर है, इसलिए मैं अटल हूँ।
9 अतः मेरा हृदय हर्षित और प्राण उल्लसित है।
मेरा शरीर भी सुरक्षित है।
10 तूने मेरे प्राण को मृतक-लोक में नहीं छोड़ा,
और न अपने भक्त को मृत्यु का ग्रास बनने दिया।
11 तू मुझे जीवन-मार्ग दिखाता है;
तेरी उपस्थिति परमानन्द है;
तेरे दाहिने हाथ में सदा-सर्वदा स्वर्ग-सुख है।

अत्याचारी से बचने के लिए प्रार्थना

दाऊद की प्रार्थना।

17 हे प्रभु, सत्य पक्ष को सुन;
मेरी पुकार पर ध्यान दे।
मेरी प्रार्थना पर कान दे,
क्योंकि यह मेरी निष्कपट जीभ से निकली है।
2 तेरी उपस्थिति में मेरा न्याय हो,
तेरी आंखें सच्चाई को देखें।
3 यदि तू मेरे हृदय को जांचता,
यदि तू रात में मेरा निरीक्षण करता;
यदि तू मुझे परखता,
तो मुझमें तुझे कोई दुर्भाव नहीं मिलता।
मेरी वाणी मर्यादा का उल्लंघन नहीं करती।
4 जहाँ तक मेरे मानवीय कार्यों का संबंध है,
तेरे ओंठों के ही शब्द द्वारा

---

15 : 1-5 भज 24 : 3-5; यश 33 : 14-16 16 : 8-11 प्रे 2 : 25-28 16 : 10 भज 49 : 15; प्रे 13 : 35
17 : 3 अय्य 23 : 10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मैंने हिंसकों के मार्ग से स्वयं को बचाया है।
5 मेरे पग तेरे मार्गों पर दृढ़ रहे;
मेरे पैर नहीं फिसले।

6 मैं तुझे ही पुकारता हूँ;
क्योंकि हे परमेश्वर, तू मुझे उत्तर देगा;
अपना कान मेरी ओर कर, मेरे शब्दों को सुन।
7 अद्भुत रीति से अपनी करुणा प्रकट कर,
ओ शरणागतों के उद्धारकर्ता!
तू अपने भुजबल द्वारा विरोधियों से उनकी रक्षा करता है।

8 आंख की पुतली जैसे मुझे संभाल,
अपने पंखों की छाया में मुझे छिपा;
9 उन दुर्जनों से, जो मुझे लूटते हैं,
मेरे प्राणघातक शत्रुओं से, जो मुझे घेरते हैं।
10 उन्होंने अपना हृदय पत्थर बना लिया है,
वे अपने मुंह से धृष्ट वचन निकालते हैं।
11 उन्होंने पग-पग पर मेरा पीछा किया,
और अब मुझे घेर लिया है।
उन्होंने अपनी आंखें मुझ पर गड़ाई हैं
कि वे मुझे धरती पर पटक दें।
12 वे उस सिंह के सदृश हैं, जो फाड़ने को तैयार है,
वे उस युवा सिंह जैसे हैं, जो गुप्त स्थान में घात लगाए है।

13 प्रभु, उठ! उनका सामना कर;
उन्हें पराजित कर।
हे प्रभु, अपनी तलवार द्वारा दुर्जन से मुझे छुड़ा,
14 अपने हाथों द्वारा दुर्जनों से,
पृथ्वी के उन पुरुषों से, जिनका भाग इसी जीवन में है,*
मेरे प्राण को मुक्त कर।
उनके पेट तेरे दण्ड-भण्डार से भरे जाएं;
उनके पुत्रों को यथेष्ट से अधिक दण्ड मिले;
वे अपने बच्चों के लिए भी पर्याप्त दण्ड छोड़ जाएं।

15 परन्तु मैं अपनी धार्मिकता के कारण तेरे मुख का दर्शन करूंगा;
जब मैं जागूंगा तब तेरे स्वरूप को देखकर सन्तुष्ट होऊंगा।

राजा का मुक्तिगान

मुख्यवादक के लिए। प्रभु के सेवक दाऊद का भजन। (दाऊद ने प्रस्तुत गीत के शब्दों में प्रभु को उस दिन सम्बोधित किया, जब प्रभु ने दाऊद को उसके शत्रुओं के हाथ से, शाऊल के पंजे से मुक्त किया था। तब दाऊद ने यह गाया:)

18 हे प्रभु, मेरे सामर्थ्य! मैं तुझसे प्रेम करता हूँ।
2 हे प्रभु, मेरी चट्टान!
तू ही मेरा शरण-स्थल और मुक्तिदाता है।
तू मेरा परमेश्वर, मेरी चट्टान है,
मैं तेरी शरण में आया हूँ।
तू मेरी ढाल, मेरा शक्तिशाली उद्धारकर्त्ता,
मेरा गढ़ है।
3 मैं प्रभु को पुकारता हूँ, जो सर्वथा स्तुति के योग्य है।
मैं अपने शत्रुओं से मुक्त हुआ हूँ।

4 मृत्यु के पाश ने मुझे लपेट लिया।
विनाश की प्रचंड धारा ने मुझ पर आक्रमण किया,
5 मृतक-लोक के पाश-बंधन ने मुझे उलझाया,
मृत्यु का फंदा मेरे समक्ष आया।

6 मैंने संकट में प्रभु को पुकारा,
मैंने अपने परमेश्वर की दुहाई दी।
उसने अपने मंदिर से मेरी वाणी सुनी,
मेरी दुहाई उसके कानों में पहुँची।

7 तब धरती में कंपन हुआ, और वह डोल उठी;
पर्वतों की नींव कंपित होकर हिल गई;
क्योंकि प्रभु अति क्रुद्ध था।
8 उसके नथुनों से धुआं निकलने लगा,
और उसके मुख से भस्म करने वाली अग्नि;
उससे दहकते अंगारे निकल पड़े।
9 वह स्वर्ग को झुकाकर नीचे उतर आया।

---

* मूल अस्पष्ट।

17 : 8 व्य 32 : 10 ; भज 91 : 4; मत 23: 37 18 : 1-50 2 शम 22: 2-51 18 : 2 व्य 32 : 4; लू 1 : 69

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उसके चरणों तले गहन अंधकार था।
10 वह करूब* पर सवार होकर उड़ गया;
वह वेगपूर्वक पवन के पंखों पर उतरा।
11 उसने अंधकार को अपने चारों ओर ओढ़ लिया;
गगन के काले मेघ** उसका शिविर थे।
12 उसके सम्मुख प्रकाश था।
वहां ओले और दहकते अंगारे
सघन मेघों से फूट पड़े।
13 प्रभु स्वर्ग में गरज उठा;
सर्वोच्च परमेश्वर ने नाद किया:
ओले और दहकते अंगारे झरने लगे।
14 उसने अपने बाण छोड़े, और शत्रुओं को छिन्न-भिन्न कर दिया;
विद्युत की चमक से उनमें भगदड़ मचा दी।
15 तब हे प्रभु, तेरी डांट से,
तेरी नासिका के श्वास के धमाके से
समुद्रों के झरने दिखाई दिए,
पृथ्वी की नींव प्रकट हुई।

16 प्रभु ने ऊँचे स्थान से अपना हाथ बढ़ाकर मुझे थाम लिया;
उसने मुझे गहरे जल से ऊपर खींच लिया।
17 उसने मेरे शक्तिवान शत्रु से,
और मुझसे घृणा करने वालों से
मुझे मुक्त किया।
मेरे शत्रु मुझसे अधिक प्रबल थे।
18 वे संकटकाल में मुझपर चढ़ आए;
परन्तु प्रभु मेरा सहारा था।
19 प्रभु ने मुझे खुले स्थान में पहुंचाया;
उसने मुझे मुक्त किया; क्योंकि वह मुझसे प्रसन्न था।

20 प्रभु ने मेरी धार्मिकता के अनुसार मुझे फल दिया;
मेरे हाथों की शुद्धता के अनुरूप मुझे पुरस्कार दिया।
21 मैं प्रभु के मार्गों पर चलता रहा,
और दुष्टतावश अपने परमेश्वर से पृथक नहीं हुआ।
22 उसके समस्त न्याय-सिद्धान्त मेरे सम्मुख रहे;
मैंने उसकी संविधियों को अपने से अलग नहीं किया।
23 मैं उसके सम्मुख निर्दोष रहा;
मैंने अपने को अपराधों से बचाए रखा।
24 अत: प्रभु ने मेरी धार्मिकता के अनुसार,
अपनी दृष्टि में मेरे हाथों की शुद्धता के अनुरूप,
मुझे पुरस्कृत किया।

25 भक्तजन के साथ तू भक्त है,
और निर्दोष के साथ निर्दोष।
26 सिद्ध के लिए तू सिद्ध है,
पर कुटिल के लिए तू कुटिल है।
27 तू विनम्र लोगों का उद्धार करता है,
पर गर्व से चढ़ी हुई आंखों को नीचा।
28 निश्चय तू मेरे दीपक को जलाता है;
मेरा प्रभु परमेश्वर मेरे अंधकार को
ज्योतिर्मय करता है।
29 मैं तेरे सहारे सेना को कुचल सकता हूँ;
मैं अपने परमेश्वर की सहायता से प्राचीर लांघ सकता हूँ।
30 परमेश्वर का मार्ग सीधा है,
प्रभु की प्रतिज्ञा कसौटी-सिद्ध है,
वह अपने समस्त शरणागतों की ढाल है।

31 प्रभु के अतिरिक्त और कौन परमेश्वर है?
हमारे परमेश्वर को छोड़ और कौन 'चट्टान' है?
32 यही परमेश्वर मुझे शक्तिसम्पन्न करता है
मेरे मार्ग को कंटकहीन बनाता है।
33 वह मेरे पैरों को हिरनी के पैरों जैसी गति प्रदान करता है।
वह पहाड़ी गुफाओं में मुझे सुरक्षित रखता है।
34 वह युद्ध के लिए मेरे हाथों को प्रशिक्षित करता है;

* दिव्य तेज और वेग का बोध कराने वाला पंखधारी जीव। ** पाठभेद 'तथा घटा'

18 : 15 नि 15 : 8 **18: 26** नीति 3 : 34 **18 : 30** व्य 32 : 4; भज 12 : 6 **18: 33** हब 3 : 19

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अतः मेरी बाहें पीतल के धनुष को मोड़
सकती हैं।
35 तूने मुझे अपने उद्धार की ढाल दी है;
तेरे दाहिने हाथ ने मुझे सहारा दिया है;
तेरी सहायता ने मुझे महान बनाया है।
36 तूने मेरा मार्ग चौड़ा किया कि मेरे पग आगे
बढ़ें,
और मेरे पैर न फिसलें।
37 मैंने शत्रुओं का पीछा किया, और उन्हें पकड़
लिया;
मैं तब तक न लौटा, जब तक उन्हें नष्ट न कर
दिया।
38 मैंने उन्हें ऐसा मारा कि वे फिर न उठ सके;
वे मेरे पैरों पर गिर पड़े।
39 तूने मुझे युद्ध के लिए शक्ति से भर दिया।
तूने आक्रमणकारियों को मेरे सम्मुख झुका
दिया।
40 तूने मेरे शत्रुओं को विवश किया कि वे पीठ
दिखाकर भागें।
मैंने उन्हें नष्ट कर दिया, जो मुझसे घृणा करते
थे।
41 उन्होंने दुहाई दी, पर उन्हें बचाने वाला कोई
नहीं था।
उन्होंने प्रभु को पुकारा, पर प्रभु ने उन्हें उत्तर
नहीं दिया।
42 मैंने उन्हें चूर-चूर कर दिया, जैसे पवन के
सम्मुख धूल।
मैंने उन्हें पथ की कीच के समान निकाल
फेंका।

43 तूने मुझे उपद्रवी जातियों के संघर्ष से
छुड़ाया,
और मुझे राष्ट्रों का अध्यक्ष बनाया।
उन ज़ातियों ने मेरी सेवा की जिन्हें मैं जानता
भी न था।
44 जैसे ही उन्होंने मेरा नाम सुना,
उन्होंने मेरे आदेशों की पूर्ति की;
विदेशी वंदना करते हुए मेरे सम्मुख आए।
45 वे विदेशी हताश हो गए,
और अपने किलों से कांपते हुए निकले।

46 प्रभु जीवंत है, धन्य है मेरी चट्टान,
मेरे उद्धारकर्ता परमेश्वर का गुणगान हो।
47 वह प्रतिशोधी परमेश्वर है;
उसने मेरे लिए प्रतिशोध लिया;
उसने कौमों को मेरे अधीन कर दिया।
48 प्रभु , तूने मेरे शत्रुओं से मुझे मुक्त किया,
तूने मेरे विरोधियों के सम्मुख मुझे उन्नत किया;
तू ही हिंसक व्यक्तियों से मेरा उद्धार करता
है।

49 अत: हे प्रभु, मैं राष्ट्रों में तेरा गुणगान करूंगा;
मैं तेरे नाम का स्तुतिगान करूंगा।
50 तू अपने राजा को महान विजय प्रदान करता
है;
तू अपने अभिषिक्त पर, राजा दाऊद एवं
उसके वंश पर
युग-युगांत करुणा करता है।

सृष्टि-रचना और धर्म-व्यवस्था में परमेश्वर का बोध

मुख्यवादक के लिए। दाऊद का भजन।

19 आकाश परमेश्वर की महिमा का वर्णन
कर रहा है,
आकाश का मेहराब उसके हस्त-कार्य को
प्रकट करता है।
2 दिन से दिन निरन्तर वार्तालाप करता है,
और रात, रात को ज्ञान प्रदान करती है।
3 न तो वाणी है, और न शब्द ही हैं,
उनका स्वर सुना नहीं गया।
4 फिर भी उनकी आवाज समस्त पृथ्वी पर फैल
जाती है,
और पृथ्वी के सीमान्त तक उनकी ध्वनि।

परमेश्वर ने आकाश के मध्य सूर्य के लिए
एक शिविर स्थापित किया है।
5 वह ऐसे उदित होता है, जैसे दूल्हा मण्डप से
बाहर आता है।
वह वीर धावक के समान
अपनी दौड़ दौड़ने में आनन्दित होता है।

---

18 : 43 भज 2 : 8 18 : 49 रोम 15 : 9 19 : 1 रोम 1 : 19-20 19 : 4 रोम 10 : 18

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

6 आकाश का एक सीमान्त उसका उदयाचल
है,
और उसके परिभ्रमण का क्षेत्र दूसरे सीमान्त
तक है;
उसके ताप से कुछ नहीं छूटता।

7 प्रभु की व्यवस्था सिद्ध है, आत्मा को
संजीवन देनेवाली;
प्रभु की साक्षी विश्वसनीय है, बुद्धिहीन को
बुद्धि देने वाली;
8 प्रभु के आदेश न्याय-संगत हैं, हृदय को
हर्षाने वाले;
प्रभु की आज्ञा निर्मल है, आंखों को आलोकित
करने वाली;
9 प्रभु का वचन* शुद्ध है, सदा स्थिर रहने वाला;
प्रभु के न्याय-सिद्धान्त सत्य हैं, वे सर्वथा
धर्ममय हैं।
10 वे सोने से अधिक चाहने योग्य हैं;
शुद्ध सोने से भी अधिक वांछनीय हैं;
वे मधु से अधिक मधुर हैं;
मधुकोष से टपकती मधु की बूंदों से भी
अधिक मधुर हैं।
11 इनके द्वारा तेरा सेवक सावधान भी किया
जाता है;
इनका पालन करना बहुत लाभप्रद है।
12 अपनी भूलों का ज्ञान किसे हो सकता है?
तू प्रभु, मुझे गुप्त दोषों से मुक्त कर।
13 अपने सेवक को धृष्ट पाप करने से रोक;
उसे मुझ पर प्रभुत्व मत करने दे।
तब मैं निरपराध होऊंगा,
और बड़े अपराधों से मुक्त हो जाऊंगा।

14 हे प्रभु, मेरी चट्टान और मेरे उद्धारकर्ता!
मेरे मुंह के शब्द तुझे प्रिय लगें
और मेरे हृदय का ध्यान तू स्वीकार करे।

विजय के लिए प्रार्थना

मुख्यवादक के लिए। दाऊद का भजन।

20 संकट के दिन प्रभु तुझे उत्तर दे!
इस्राएल का परमेश्वर स्वयं** तेरी रक्षा
करे!
2 वह अपने पवित्र स्थान से तेरी सहायता करे!
वह सियोन पर्वत से तुझे सहारा दे।
3 वह तेरी समस्त भेंटों को स्मरण करे;
वह तेरी अग्निबलि को ग्रहण करे। सेलाह

4 वह तेरी मनोकामनाएं पूर्ण करे;
वह तेरी समस्त योजनाएं सफल करे।
5 हम तेरी विजय पर जयजयकार करें;
हम अपने परमेश्वर के नाम से ध्वजा
फहराएं।
प्रभु तेरे समस्त निवेदन स्वीकार करे!

6 अब मैं जान गया कि प्रभु अपने
अभिषिक्त राजा की सहायता करेगा;
अपने भुजबल से अर्जित महान् विजयों के
रूप में,
वह उसे अपने पवित्र स्वर्ग से उत्तर देगा।
7 कुछ लोग रथों पर, कुछ लोग अश्वों पर
अहंकार करते हैं;
परन्तु हमें अपने प्रभु परमेश्वर के नाम पर
गर्व है।
8 वे घुटने टेकेंगे और उनका पतन होगा;
किन्तु हम उठेंगे, और सीधे खड़े हो जाएंगे।

9 हे प्रभु, राजा को विजय प्रदान कर;
जब हम तुझे पुकारें तब तू हमें उत्तर दे।

शत्रु से मुक्त होने पर स्तुतिगान

मुख्यवादक के लिए। दाऊद का भजन।

21 हे प्रभु, तेरी शक्ति पर राजा हर्षित है,
तेरी विजय पर वह कितना उल्लसित है।
2 तू ने उसकी मनोकामना पूर्ण की,
तू ने उसके निवेदन की उपेक्षा नहीं की।
सेलाह

3 तू शुभ आशिषों के साथ उसके पास आता है;
तू उसके सिर पर सोने का मुकुट रखता है।
4 वह तुझ से जीवन मांगता है,
और तू उसे देता है,
युग-युगांत तक दीर्घ जीवन।

* मूल में 'भय'। ** अक्षरशः 'याकूब के परमेश्वर का नाम'
19 : 10 भज 119 : 103

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

5 तेरी सहायता से उसकी महिमा बढ़ी है,
तूने उसे ऐश्वर्य एवं तेज से विभूषित किया है।
6 निस्सन्देह तूने उसे सदा के लिए आशिष का स्रोत बनाया है।
अपनी उपस्थिति के परमानन्द से तू उसे सुखी करता है।
7 राजा प्रभु पर भरोसा करता है;
अतः वह सर्वोच्च परमेश्वर की करुणा द्वारा अटल बना रहेगा।

8 तेरा हाथ तेरे सब शत्रुओं को ढूंढ़ निकालेगा;
तेरा दाहिना हाथ तेरे बैरियों को खोज निकालेगा।
9 जब तू प्रकट होगा
तब तू उन्हें दहकता तन्दूर बना देगा।
प्रभु, तू अपने कोप में उन्हें निगल जाएगा;
और अग्नि-कुंड उन्हें भस्म कर देगा।
10 तू उनकी सन्तान को धरती से मिटा देगा,
और उनके वंश को मानव जाति के बीच से।
11 यदि वे तेरे विरुद्ध बुराई करना चाहेंगे,
यदि वे षड्यन्त्र रचेंगे, तो भी सफल न होंगे।
12 तू उन्हें पीठ दिखाने को विवश करेगा;
तू उनके मुख को अपने बाण का लक्ष्य बनाएगा।

13 हे प्रभु, अपने सामर्थ्य की महानता को प्रकट कर;
तब हम गीत गाएंगे।
तेरे पराक्रम का यशोगान करेंगे।

व्यथित व्यक्ति की पुकार : स्तुतिगान का विषय

मुख्यवादक के लिए। "प्रभात की हरिणी" के अनुसार। दाऊद का भजन।

22 मेरे परमेश्वर! हे मेरे परमेश्वर! तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?
तू मेरी सहायता क्यों नहीं करता?
तू मेरा कराहना क्यों नहीं सुनता?
2 हे मेरे परमेश्वर, मैं तुझे दिन में पुकारता हूँ,
पर तू उत्तर नहीं देता;
रात में भी मुझे शांति नहीं मिलती।
3 फिर भी तू पवित्र है;
तू इस्राएल की स्तुति में विद्यमान है।
4 तुझ पर हमारे पूर्वजों ने भरोसा किया था,
उन्होंने भरोसा किया, और तू ने उनको मुक्त किया था।
5 तुझ को ही उन्होंने पुकारा था, और वे बच गए थे।
तुझ पर ही उन्होंने भरोसा किया, और वे हताश नहीं हुए।

6 परन्तु मैं मनुष्य नहीं, कीड़ा हूँ;
मनुष्यों द्वारा उपेक्षित, लोगों द्वारा तिरस्कृत।
7 मुझे देखने वाले मेरा उपहास करते हैं,
वे ओंठ बिचकाते हैं,
सिर हिलाकर यह कहते हैं,
8 "यह प्रभु पर निर्भर रहा, वही इसे मुक्त करे।
वही इसको छुड़ाए; क्योंकि प्रभु में यह हर्षित होता है।"

9 वह तू ही था, जिसने मुझे गर्भ से निकाला;
तू ने ही मुझे मेरी माँ की गोद में सुरक्षित रखा।
10 मैं जन्म से ही तुझको सौंपा गया था,
माता के गर्भ से ही तू मेरा परमेश्वर रहा है।
11 मुझसे दूर न रह;
क्योंकि संकट निकट है,
और मेरा कोई सहायक नहीं है।
12 अनेक सांड़ों ने मुझे घेर लिया है।
बाशान के हिंस्र सांड़ों ने
मेरे चारों ओर घेरा डाला है।
13 वे भूखे, गरजते सिंह जैसे
मेरी ओर मुंह फाड़ रहे हैं।

14 मैं जल के सदृश उण्डेला गया हूँ;
मेरी अस्थियाँ जोड़ से उखड़ गई हैं;
मेरा हृदय मोम-सा बन गया है;
वह मेरी छाती के भीतर पिघल गया है।
15 मेरा कंठ+ ठीकरे के समान सूख गया है

+ मूल में 'मेरी शक्ति'

21 : 5 भज 45 : 3 **22 : 1** मत 27 : 46 **22 : 3** यश 6 : 3 **22 : 7-8** मत 27 : 39, 43; लू 23 : 35

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और मेरी जीभ तालू से चिपक गई है;
तू मुझे मृत्यु की धूल में मिला रहा है।
16 कुत्तों ने मुझे घेर लिया है;
कुकर्मियों की भीड़ ने चारों ओर घेरा डाला है;
उन्होंने मेरे हाथ-पैर बेध डाले हैं।*
17 मैं अपनी एक-एक हड्डी गिन सकता हूँ।
वे घूरते हुए मुझ पर दृष्टि डालते हैं।
18 उन्होंने मेरे कपड़े आपस में बांट लिये,
और मेरे वस्त्र पर चिट्ठी डाली।

19 परन्तु प्रभु, तू दूर न रह।
हे मेरे शक्तिशाली प्रभु,
अविलम्ब मेरी सहायता कर।
20 तलवार से मेरे प्राणों की,
कुत्ते के पंजे से मेरे इस एक ही जीवन की रक्षा कर।
21 मुझे सिंह के मुंह से,
मेरे पीड़ित प्राण को, सांड़ के सींग से बचा+।

22 मैं अपने भाई-बहिनों में तेरा नाम घोषित करूंगा।
मैं मंडली के मध्य तेरी स्तुति करूंगा;
23 प्रभु के भक्तो, उसकी स्तुति करो!
याकूब के वंशजो, उसकी स्तुति करो!
इस्राएल के वंशजो, उसकी भक्ति करो!
24 क्योंकि प्रभु ने पीड़ित व्यक्ति की पीड़ा का तिरस्कार नहीं किया,
और न उसे घृणित ही समझा;
उसने पीड़ित से अपना मुख नहीं छिपाया;
किन्तु जब पीड़ित व्यक्ति ने प्रभु की दुहाई दी,
तब उसने उसको सुना।

25 महासभा में मेरे स्तुतिगान का स्रोत तू ही है;
मैं तेरे भक्तों के समक्ष
अपने व्रत पूर्ण करूंगा।
26 विनम्र व्यक्ति भोजन कर तृप्त होंगे,
प्रभु को खोजने वाले प्रभु की स्तुति करेंगे।
उनका हृदय सदा धड़कता रहे!
27 समस्त पृथ्वी की कौमें
प्रभु का नाम स्मरण करेंगी,
और प्रभु की ओर उन्मुख होंगी;
राष्ट्रों के परिवार उसके सम्मुख आराधना करेंगे।
28 क्योंकि राज्य प्रभु का है;
और वह राष्ट्रों पर शासन करता है।

29 निश्चय धरती के समस्त अहंकारी
प्रभु के सम्मुख झुकेंगे;
वह, जो स्वयं को जीवित नहीं रख सकता,
और वे, जो मिट्टी में मिल जाते हैं,
घुटने टेकेंगे।
30 भावी सन्तान प्रभु की सेवा करेगी;
लोग भावी पीढ़ी को
स्वामी के विषय में बताएंगे;
31 उसके उद्धार की घोषणा
आगामी सन्तान से करेंगे,
कि प्रभु ने उसे पूर्ण किया है।

प्रभु मेरा चरवाहा है

दाऊद का भजन।

23 प्रभु मेरा चरवाहा** है,
मुझ-भेड़ को अभाव न होगा।
2 वह मुझे हरी-भरी भूमि पर विश्राम कराता है;
वह मुझे झरने के शांत तट पर ले जाता है;
3 वह मुझे नवजीवन देता है;
वह अपने नाम के लिए
धर्म के मार्ग पर मेरा नेतृत्व करता है।

4 यद्यपि मैं घोर अंधकारमय घाटी से गुजरता हूँ,
तो भी अनिष्ट से नहीं डरता,
क्योंकि हे प्रभु, तू मेरे साथ है।
तेरी सोंठी, तेरी लाठी मुझे सहारा देती हैं।

5 मेरे शत्रुओं की उपस्थिति में
तू मेरे लिए खाने की मेज़ लगाता है;

---

* मूल में, 'सिंह के समान' + मूल में, 'तूने उत्तर दिया' ** अथवा, ''मेषपाल''

22 : 18 मत 27 : 35; यो 19 : 24 **22 : 21** 2 तिम 4 : 17 **22 : 22** इब्र 2 : 12 **22 : 31** यश 53 : 10; इफ 2 : 7 **23: 1** यो 10 : 11 23 : 2 यहेज 34 : 14 **23: 3** प्रक 7 : 17

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तू तेल से मेरे सिर का अभ्यंजन करता है,
मेरा प्याला छलक रहा है।
6 निश्चय भलाई और करुणा
जीवन भर मेरा अनुसरण करेंगी;
और मैं प्रभु के घर में
युग-युगांत निवास करूंगा।

महिमामय राजा

दाऊद का एक भजन।

24 पृथ्वी और उसकी परिपूर्णता,
संसार और उसके निवासी —
सब प्रभु के हैं;
2 क्योंकि प्रभु ने सागरों पर उसे स्थापित किया है,
उसने सरिताओं पर उसे स्थिर किया है।

3 प्रभु के पर्वत पर कौन चढ़ सकता है?
कौन उसके पवित्र स्थान पर खड़ा हो सकता है?
4 वह जिसके हाथ निर्दोष और हृदय निर्मल है,
वह जो व्यर्थ बातों पर मन नहीं लगाता।
वह जो धोखा देने के लिए शपथ नहीं खाता।
5 वह प्रभु से आशिष पाएगा,
उसका उद्धारकर्त्ता परमेश्वर उसे निर्दोष सिद्ध करेगा।
6 ऐसे हैं वे लोग, जो प्रभु के जिज्ञासु हैं,
जो इस्राएल के परमेश्वर* के
दर्शनाभिलाषी हैं। सेलाह

7 ओ द्वारो, मस्तक उन्नत करो!
ओ स्थायी फाटको, ऊंचे हो जाओ,
जिससे महिमा का राजा प्रवेश करे।
8 यह महिमा का राजा कौन है?
प्रभु, समर्थ और पराक्रमी,
प्रभु, युद्ध में पराक्रमी।
9 ओ द्वारो, मस्तक उन्नत करो।
ओ स्थायी फाटको, ऊंचे हो जाओ,
जिससे महिमा का राजा प्रवेश करे।
10 यह महिमा का राजा कौन है?
स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु,
वही महिमा का राजा है। सेलाह

मार्ग-दर्शन, क्षमा और रक्षा के लिए प्रार्थना

दाऊद का।

25 हे प्रभु, मैं तेरा ही ध्यान करता हूँ।
2 हे मेरे परमेश्वर,
मैंने तुझ पर ही भरोसा रखा है;
मुझे लज्जित न होने देना,
मेरे शत्रु मुझ पर विजयी न होने पाएं।
3 उन्हें भी लज्जित न होने देना,
जो तेरी प्रतीक्षा करते हैं,
परन्तु वे लज्जित हों,
जो अकारण विश्वासघात करते हैं।

4 हे प्रभु, अपना मार्ग मुझे दिखा;
अपना पथ मुझे बता।
5 अपने सत्य पथ पर मुझे ले चल
और मुझे सिखा;
क्योंकि तू ही मेरा उद्धार करने वाला परमेश्वर है,
दिन भर मैं तेरी प्रतीक्षा करता हूँ।
6 हे प्रभु, अपनी अनुकंपा को,
अपनी करुणा को स्मरण कर;
क्योंकि तू उनको युग-युगांत से
प्रकट करता रहा है।
7 हे प्रभु, अपनी भलाई के कारण
मेरे यौवन के पापों और अपराधों को
स्मरण न कर;
किन्तु अपनी करुणा के अनुरूप
मेरी सुधि ले।

8 प्रभु भला और सत्यनिष्ठ है;
अतः वह पापियों को अपना मार्ग बताता है।
9 वह नम्र व्यक्ति को धर्मपथ पर चलाता है;
वह उसे अपना मार्ग सिखाता है।
10 जो प्रभु के विधान और साक्षी को मानते हैं,
उनके लिए प्रभु के समस्त मार्ग
करुणामय तथा सत्य हैं।

* मूल में, 'तेरा मुंह याकूब'।

23 : 6 भज 27 : 4 24 : 1 1 कुर 10 : 26 24 : 3-5 भज 15 : 1-5 24 : 4 मत 5 : 8 24 : 6 भज 27 : 8
24 : 7 भज 118: 19-20 ; मला 3 : 1; 1 कुर 2 : 8 25 : 1 भज 86 : 4 25 : 5 भज 86 : 11; यो 16 : 13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

11 हे प्रभु, अपने नाम के लिए,
मेरा अपराध क्षमा कर।
मेरा अपराध बहुत भारी है।
12 वह कौन है, जो प्रभु से डरता है?
उसको ही प्रभु
वह मार्ग सिखाएगा, जो उसे चुनना चाहिए।
13 वह स्वयं समृद्धि में निवास करेगा;
और देश पर उसके वंश का अधिकार होगा।
14 प्रभु अपने भक्तों पर
अपने भेद प्रकट करता है।
प्रभु उन्हें अपना विधान सिखाता है।
15 मेरे नेत्र प्रभु की ओर टकटकी बांधे हैं;
क्योंकि प्रभु ही मेरे पैरों को जाल से छुड़ाएगा।

16 प्रभु, मेरी ओर उन्मुख हो, मुझ पर कृपा कर;
क्योंकि मैं एकाकी और पीड़ित हूँ।
17 मेरे हृदय का क्लेश कितना बढ़ गया है;
मुझे संकट से मुक्त कर,
18 मेरी पीड़ा एवं दुःख को देख;
और मेरे सब पाप क्षमा कर।
19 मेरे शत्रुओं को देख;
वे कितने बढ़ गए हैं;
वे मुझसे तीव्र घृणा करते हैं।
20 मेरे प्राण की रक्षा कर,
और मेरा उद्धार कर;
मुझे लज्जित न होने दे;
क्योंकि मैं तेरी ही शरण में आया हूँ।
21 सच्चरित्रता और सत्यनिष्ठा मेरी रक्षा करें,
क्योंकि मैं तेरी ही प्रतीक्षा करता हूँ।

22 हे परमेश्वर, इस्राएल को उसके समस्त संकटों से मुक्त कर।

निर्दोषता की परख

दाऊद का।

26 हे प्रभु, मुझे निर्दोष सिद्ध कर;
क्योंकि मेरा आचरण निर्दोष रहा है;
प्रभु, तुझ पर मैंने भरोसा किया
और मैं अटल रहा।
2 मुझे परख और मेरी जाँच कर, प्रभु;
मेरे हृदय और मन को शुद्ध कर।
3 तेरी करुणा मेरी आंखों के सामने है;
मैं तेरी सच्चाई पर चलता हूँ।
4 मैं न मिथ्यावादियों के साथ बैठता हूँ,
और न कपटियों की संगति करता हूँ;
5 मैं कुकर्मियों की संगति से घृणा करता हूँ;
मैं दुर्जनों के साथ नहीं बैठूंगा।
6 मैं निर्दोषता के जल में हाथ धोकर,
प्रभु, तेरी वेदी की परिक्रमा करता हूँ;
7 मैं उच्च स्वर में धन्यवाद का गीत गाकर
तेरे अद्‌भुत कार्यों की घोषणा करता हूँ।

8 प्रभु! मैं प्रेम करता हूँ उस भवन से जो तेरा धाम है;
उस स्थान से, जो तेरी महिमा का
निवास-स्थान है।
9 मेरे प्राण को पापियों के साथ सम्मिलित न कर
और न मेरे जीवन को
रक्त-पिपासुओं के साथ;
10 जिनके हाथों में छल-प्रपंच है,
जिनके दाहिने हाथ घूस से भरे हैं।

11 पर मेरा आचरण निर्दोष है;
प्रभु, मेरा उद्धार कर, मुझ पर कृपा कर।
12 मेरे पैर समतल भूमि पर स्थित हैं;
मैं भक्तों की सभा में प्रभु को धन्य कहूंगा।

प्रभु मेरी ज्योति और मेरा सहायक है

दाऊद का।

27 प्रभु मेरी ज्योति और मेरा सहायक है;
तब मैं किससे डरूं?
प्रभु मेरा जीवन-रक्षक है;
तब मैं क्यों भयभीत होऊं?

2 जब कुकर्मी मुझे फाड़-खाने के लिए
मुझ पर आक्रमण करते हैं
तब वे—मेरे शत्रु, मेरे बैरी
लड़खड़ाकर गिर पड़ेंगे।
3 यद्यपि सेना ने मुझे घेरा है,
तोभी मेरा हृदय आतंकित न होगा;
यद्यपि मेरे विरुद्ध युद्ध छिड़ा है;
फिर भी मैं आश्वस्त रहूंगा।

26 : 1 भज 7 : 8 26 : 6 भज 73 : 13; मत 27 : 24 27 : 1 मी 7 : 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

4 मैंने केवल एक वरदान प्रभु से मांगा है:
मैं जीवन पर्यन्त प्रभु के घर में निवास करूं,
और प्रभु के सौन्दर्य को निहार सकूं;
उसके भवन में दर्शन करूं।
मैं इसी वरदान की खोज करूंगा।
5 प्रभु संकट के दिन मुझे अपने मंडप में छिपा लेगा;
वह अपने शिविर के भीतर मुझे आश्रय देगा;
वह मुझे चट्टान पर ऊंचा उठाएगा।
6 अब चारों ओर के शत्रुओं की अपेक्षा
मेरा मस्तक उन्नत होगा;
मैं प्रभु के शिविर में आनन्द-उल्लास से बलि चढ़ाऊंगा।
मैं गीत गाऊंगा;
मैं प्रभु का स्तुतिगान करूंगा।

7 प्रभु, जब मैं तुझको पुकारू
तब मेरी पुकार सुन;
मुझ पर कृपा कर और मुझे उत्तर दे।
8 तू ने कहा था: "तुम मेरे मुख की खोज करो।"
मेरा हृदय तुझ से यह कहता है,
"हे प्रभु, मैं तुझ को ही खोजता हूँ।"
9 अपना मुख मुझ से न छिपा!

क्रोध में अपने सेवक को दूर न कर।
तू ही मेरा सहायक था,
हे मेरे उद्धारकर्ता परमेश्वर!
मेरा परित्याग न कर;
मुझको मत छोड़।
10 मेरे माता-पिता भले ही मुझे छोड़ दें,
प्रभु मुझे ग्रहण करेगा।

11 प्रभु, मुझे अपना मार्ग दिखा;
उन लोगों के कारण जो मेरी घात में हैं,
मुझे समतल मार्ग पर ले चल।
12 मुझे मेरे बैरियों की इच्छा पर न छोड़;
क्योंकि झूठे गवाह मेरे विरुद्ध खड़े हुए हैं;
वे हिंसा करने की धुन में हैं।

13 मुझे विश्वास है कि
मैं जीव-लोक में
प्रभु की भलाई का दर्शन करूंगा।
14 प्रभु की प्रतीक्षा करो;
शक्तिशाली बनो;
और तुम्हारा हृदय साहसी हो;
निश्चय ही प्रभु की प्रतीक्षा करो।

सहायता के लिए प्रार्थना: प्रत्युत्तर के लिए स्तुति

दाऊद का।

28 हे प्रभु, मैं तुझको ही पुकारता हूँ;
हे मेरी चट्टान,
मेरी पुकार अनसुनी न कर;
ऐसा न हो कि तू चुप रहे,
और मैं मृतक लोक को जाने वालों के समान मृतक हो जाऊं।
2 जब मैं सहायता के लिए तुझ को पुकारूं,
जब मैं तेरे पवित्र मन्दिर के अन्तर्गृह की ओर हाथ फैलाऊं,
तब मेरी विनती सुन।

3 तू मुझे दुर्जनों और कुकर्मियों के साथ दूर न कर।
वे पड़ोसियों से शांति की बातें तो करते हैं;
पर अपने हृदय में बुराई रखते हैं।
4 उनके कामों के अनुसार,
उनके कर्मों की बुराई के अनुसार
तू उन्हें प्रतिफल दे;
उनके हाथ के कामों के अनुसार
उन्हें प्रतिफल दे;
उन्हें उनकी करनी का फल दे।
5 वे न प्रभु के कार्यों पर ध्यान देते हैं,
और न उसके हस्तकार्यों पर;
अतएव प्रभु उन्हें नष्ट कर देगा;
वह उनका पुन: निर्माण नहीं करेगा।

6 प्रभु को धन्य कहो;
क्योंकि उसने मेरी विनती सुनी है।

27 : 8 भज 105 : 4; होे 5 : 15 27 :10 यश 9 : 15 28 : 4 प्रक 22 : 12

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

7 प्रभु मेरी शक्ति और ढाल है।
उस पर ही मैं भरोसा करता हूं।
अतः मुझे सहायता मिली है।
मेरा हृदय हर्षित होता है;
और मैं अपने गीतों द्वारा
उसकी स्तुति करता हूँ।

8 प्रभु अपने निज लोगों की शक्ति है;
वह अपने अभिषिक्त राजा के लिए
उद्धार का दृढ़ आश्रय है।
9 प्रभु, अपने लोगों का उद्धार कर;
अपनी मीरास को आशिष दे;
तू उनका मेषपाल बन और उन्हें
युग-युग तक संभाल।

आंधी में प्रभु की आवाज

दाऊद का भजन।

29 ओ परमेश्वर के दूतो†
प्रभु के गुणों को स्वीकार करो;
तुम प्रभु की महिमा और शक्ति को
स्वीकार करो।
2 तुम प्रभु के नाम की महिमा को स्वीकार करो;
पवित्रता से सजकर* प्रभु की आराधना करो।

3 प्रभु की वाणी सागरों पर है;
महिमायुक्त परमेश्वर गरजन करता है;
प्रभु महासागरों पर है।
4 प्रभु की वाणी शक्तिशाली है;
प्रभु की वाणी तेजस्वी है।
5 प्रभु की वाणी देवदार के वृक्षों को उखाड़
फेंकती है;
प्रभु लबानोन के देवदारों को नष्ठ करता है।
6 वह लबानोन को बछड़े के समान
और हेर्मोन+ पर्वत को सांड़ जैसा कुदाता है।
7 प्रभु की वाणी अग्नि-ज्वाला उगलती है।
8 प्रभु की वाणी निर्जन प्रदेश को
प्रकंपित करती है;
प्रभु कादेश निर्जन प्रदेश को कंपित करता है।

9 प्रभु की वाणी बांज वृक्षों को झकझोरती है;**
और वन के वृक्षों को झाड़ देती है;
तब उसके भवन में सब पुकार उठते हैं,
''प्रभु की महिमा हो!''
10 प्रभु जल-प्रवाह पर विराजमान है;
राजाधिराज प्रभु युग-युगांत
सिंहासनारूढ़ है।
11 प्रभु अपनी प्रजा को शक्ति प्रदान करे;
प्रभु अपनी प्रजा को शान्ति का वरदान दे।

मृत्यु से मुक्त होने पर धन्यवाद का गीत

एक भजन। मंदिर-प्रतिष्ठान का गीत। दाऊद का।

30 प्रभु, मैं तेरा गुणगान करूंगा;
क्योंकि तू ने मुझे ऊपर खींचा,
और मेरे शत्रुओं को मुझपर हंसने नहीं दिया।
2 मेरे प्रभु परमेश्वर, मैंने तेरी दुहाई दी;
और तूने मुझे स्वस्थ कर दिया।
3 प्रभु, तूने मेरे प्राण को मृतक-लोक से बाहर
निकाला।
तूने मुझे जीवित रखा कि मैं फिर अधोलोक
में न जाऊं।

4 ओ भक्तगण! प्रभु की स्तुति करो।
उसके पवित्र नाम++ का जयजयकार करो।
5 प्रभु का क्रोध क्षण मात्र के लिए होता है;
पर उसकी कृपा जीवनपर्यन्त बनी रहती है।
रोदन संध्या समय आकर रात में ठहर सकता
है,
पर प्रभात के साथ उल्लास का आगमन होता
है।

6 मैंने अपनी समृद्धि के समय यह कहा,
''मैं सदा अटल रहूंगा।''
7 प्रभु, तूने अपनी कृपा से मुझे पर्वत के समान
दृढ़ किया था,
जब तूने अपना मुख छिपाया तब मैं बेचैन हो
गया था।

8 प्रभु , मैंने तुझको पुकारा;

---

† शब्दश:, 'ईश्वर के पुत्रो' * अथवा 'पवित्र परमेश्वर के दर्शन के लिए' अथवा 'पवित्र परिधान पहिनकर' + मूल में 'सिर्योन'। ** अथवा ''प्रभु की वाणी से हरिणियों का गर्भपात हो जाता है'' ++ मूल में 'स्मरण'

29 : 1 भज 96 : 7-9 29 : 3 अय्य 37 : 4-5 30 : 5 यश 54 : 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

स्वामी , तुझसे ही मैंने यह विनती की:
9 "क्या लाभ मेरी मृत्यु* से ?
यदि मैं मृतक -लोक में जाऊं
तो क्या मैं, मृत व्यक्ति** तेरी स्तुति कर सकूंगा;
क्या मैं तेरे सत्य की घोषणा कर पाऊंगा?
10 प्रभु , मेरी विनती सुन; मुझ पर अनुग्रह कर।
प्रभु, मेरी सहायता कर।"

11 तूने मेरे विलाप को हर्ष में बदल दिया;
तूने मेरा शोक-सूचक टाट उतार कर मुझे आनन्द के वस्त्र पहनाये,
12 जिससे मेरी आत्मा++ तेरी स्तुति करे, और चुप न रहे।
हे प्रभु, मेरे परमेश्वर! युग-युगांत मैं तेरा गुणगान करूंगा।

विश्वास स्वीकार करना

मुख्यवादक के लिए। दाऊद का भजन।

31 हे प्रभु , मैं तेरी शरण में आया हूँ;
मुझे कभी लज्जित न होने देना;
अपनी धार्मिकता द्वारा मुझे मुक्त कर।
2 अपने कान मेरी ओर लगा,
प्रभु, अविलंब मुझे बचा।
मेरे निमित्त आश्रय की चट्टान
और मुझे बचाने के लिए दृढ़ गढ़ बन।

3 तू ही मेरी चट्टान और मेरा गढ़ है;
अपने नाम के लिए
मुझे मार्ग दिखा और मेरा नेतृत्व कर।
4 मुझे उस जाल से बाहर निकाल
जो मेरे लिए बिछाया गया है;
तू ही मेरा आश्रयस्थल है।
5 मैं अपनी आत्मा तेरे हाथ में सौंपता हूँ;
हे प्रभु! सच्चे परमेश्वर, तू ने मेरा उद्धार किया है।

6 तू*** निस्सार मूर्तियों की पूजा करने वालों से घृणा करता है;
किन्तु प्रभु, मैं तुझ पर ही भरोसा करता हूँ।
7 मैं तेरी करुणा से हर्षित और सुखी होऊंगा;
क्योंकि तूने मेरी पीड़ा को देखा है।
तू ने मेरे प्राण के संकट को पहचाना
8 और मुझे शत्रुओं के हाथ में नहीं सौंपा;
पर तूने मुझे स्वतन्त्र घूमने दिया!

9 हे प्रभु, मुझ पर अनुग्रह कर;
क्योंकि मैं संकट में हूं।
मेरी आँखें शोक से कमजोर हो गई हैं;
मेरा प्राण और शरीर भी सूख गये हैं!
10 मेरा जीवन दु:ख में बीता;
और मेरी आयु आह भरते बीत गई।
मेरे अधर्म* के कारण मेरा बल घट गया,
और मेरी हड्डियां दिखाई देने लगीं।

11 मैं अपने शत्रुओं की दृष्टि में उपेक्षित,
पड़ोसियों के लिए तिरस्कृत,
और परिचितों के लिए भय का कारण बन गया हूं।
जो मुझे सार्वजनिक स्थान में देखते हैं,
वे तुरन्त मुझसे दूर भाग जाते हैं।
12 मैं मृतक के समान हृदय से भुला दिया गया हूँ,
मैं टूटे हुए पात्र के सदृश फेंक दिया गया हूँ।
13 मैं चारों ओर आतंक की फुसफुसाहट सुनता हूँ।
मानो उन्होंने मेरे विरुद्ध मिलकर सम्मति की है;
और मेरे प्राण लेने को षड्यन्त्र रचा है।

14 किन्तु प्रभु, मैं तुझ पर ही भरोसा करता हूँ,
मैं कहता हूँ, "तू ही मेरा परमेश्वर है।"
15 मेरा जीवनकाल तेरे हाथ में है;
मेरा पीछा करनेवालों
और शत्रुओं के हाथ से मुझे मुक्त कर।
16 अपने मुख को अपने सेवक पर प्रकाशित कर।
अपनी करुणा से मुझे बचा।
17 हे प्रभु, मुझे लज्जित न होने देना;

---

* शब्दश:, 'रक्त' * शब्दश:, 'धूल' ++ मूल में 'महिमा' *** पाठान्तर 'मैं' * अथवा, 'विपत्ति'

30 : 11 यिर 31 : 13 31 : 2 भज 71 : 2 31 : 5 लू 23 : 46; प्रे 7 : 59 31 : 13 यिर 20 : 10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

18 झूठ बोलने वाले ओंठ बन्द हो जाएं;
जो तिरस्कार एवं अहंकार में धृष्ठता से
धार्मिकों के विरुद्ध बोलते हैं।

19 अहा! तेरी भलाई कितनी अपार है;
जिसको तू ने उन लोगों के लिए रख छोड़ा
है जो तुझ से डरते हैं;
और मानव सन्तान के समक्ष उन के लिए रचा
है जो तेरी शरण में आते हैं।
20 तू उन्हें अपनी उपस्थिति की छाया में
मनुष्यों के षड्यन्त्र से छिपा लेता है;
तू अपने आश्रय में उन्हें
कलह-प्रिय जीभ से सुरक्षित रखता है।

21 हे प्रभु, तू धन्य है!
क्योंकि तूने मुझे सुदृढ़ नगर में रखकर** मुझ
पर अद्‌भुत करुणा की।
22 मैंने अपनी व्याकुलता में यह कहा था,
"मैं प्रभु की दृष्टि से दूर हो गया हूँ।"
परन्तु जब मैंने तेरी दुहाई दी
तब तू ने मेरी विनती सुनी।

23 ओ प्रभु के भक्तगण, प्रभु से प्रेम करो!
प्रभु विश्वासियों को सुरक्षित रखता है;
किन्तु अहंकार में कार्य करने वाले से वह
अत्यधिक प्रतिशोध लेता है।
24 तुम सब, जो प्रभु की प्रतीक्षा करते हो,
शक्तिशाली बनो, और तुम्हारा हृदय साहस
से भरा रहे।

क्षमा-प्राप्ति का सुख

दाऊद का एक मसकील।

32 धन्य है वह मनुष्य, जिसका अपराध
क्षमा किया गया,
और जिसका पाप ढांपा गया।
2 धन्य है वह मनुष्य जिसपर प्रभु अधर्म का
अभियोग नहीं लगाता,
और जिसके मन में कोई कपट नहीं है।

3 जब तक मैंने अपना पाप प्रकट नहीं किया,
मेरी देह दिन भर की कराह से कमजोर हो
गइ।
4 तेरा हाथ दिन-रात मुझपर भारी था;
मानो ग्रीष्म के ताप से मेरा जीवन-रस
सूख गया+। सेलाह
5 मैंने तेरे सम्मुख अपना पाप स्वीकार किया,
और अपने अधर्म को छिपाया नहीं;
मैंने कहा, "मैं प्रभु के समक्ष अपने अपराध
स्वीकार करूंगा।"
और तूने मेरे पाप और अधर्म को क्षमाकर
दिया। सेलाह

6 जब तक तू मिल सकता है,
सब भक्त तुझ से प्रार्थना करें;
क्योंकि भयंकर जल-प्रवाह उन भक्तों तक
नहीं पहुंच सकेगा।
7 तू मेरा आश्रयस्थल है;
तू संकट से मुझे सुरक्षित रखता है;
तू मुक्ति के जयघोष से मुझे घेर लेगा।
सेलाह
8 प्रभु यह कहता है:
"मैं तेरी अगुआई कर तुझे वह मार्ग सिखाऊंगा
जिस पर तुझे चलना चाहिए;
मैं तुझे परामर्श दूंगा।
मेरी आंखें तुझ पर लगी रहेंगी।"
9 इसलिए तुम अश्व अथवा खच्चर जैसे न
बनो,
जिसमें विवेक नहीं होता;
जिसे रास और लगाम से
वश में करना पड़ता है;
अन्यथा वह तुम्हारे निकट न आएगा।

10 दूर्जन को अनेक दुःख हैं;
किन्तु प्रभु पर भरोसा करने वाले को
प्रभु की करुणा घेरे रहती है।
11 ओ धार्मिको, प्रभु में आनन्दित और हर्षित
हो।
ओ सत्यनिष्ठो, जयजयकार करो।

** अथवा, 'सेना से घिरे नगर में' + मूल अस्पष्ट

31 : 20 अय्य 5 : 21 **32 : 1-2** रोम 4 : 7-8 **32 : 5** 2 शाम 12 : 13; भज 51 : 3; नीति 28 : 13:; 1 यो 1 : 9

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सृजक और संरक्षक परमेश्वर की स्तुति करना

33 ओ धार्मिको, प्रभु में आनन्दित हो।
स्तुति करना सत्यनिष्ठ व्यक्ति को शोभा देता है।
2 वीणा के साथ प्रभु की स्तुति करो;
दस तार पर प्रभु के लिए राग बजाओ।
3 उसके लिए नया गीत गाओ;
जयजयकार करते हुए कुशलता से बाजे बजाओ।

4 क्योंकि प्रभु का वचन सत्य है;
और उसके समस्त कार्य सच्चाई से सम्पन्न हुए हैं।
5 वह धार्मिकता और न्याय से प्रेम करता है;
प्रभु की करुणा से पृथ्वी पूर्ण है।
6 आकाश-मण्डल प्रभु के वचन से
और उसकी समस्त स्वर्गिक सेना,
उसके मुंह की सांस से निर्मित हुई।
7 प्रभु ने समुद्र के जल को मानो पात्र में एकत्र किया है;
उसने अतल सागरों को भण्डार में रखा है।

8 समस्त पृथ्वी प्रभु से डरे;
संसार के सब निवासी उसकी भक्ति करें।
9 क्योंकि प्रभु ने कहा, और वह हो गया;
उसने आज्ञा दी, और वह स्थित हो गया।

10 प्रभु राष्ट्रों के परमार्श को विफल कर देता है;
वह जातियों के विचारों को
व्यर्थ कर देता है।
11 प्रभु का परामर्श युग-युगांत स्थित रहता है;
उसके हृदय के विचार पीढ़ी से पीढ़ी बने रहते हैं।
12 धन्य है वह राष्ट्र जिसका परमेश्वर प्रभु है;
धन्य हैं वे लोग जिनको प्रभु ने अपनी मीरास के लिए चुना है।

13 प्रभु स्वर्ग से नीचे निहारता है;
वह समस्त मानव-जाति को देखता है;
14 वह उस स्थान से, जहां वह सिंहासन पर विराजमान है,
धरती के समस्त निवासियों पर दृष्टिपात करता है।
15 वही उन सब के हृदय को गढ़ता है;
और उनके सब कार्यों का निरीक्षण करता है।
16 राजा का उद्धार उसकी विशाल सेना से नहीं होता;
वीर पुरुष की मुक्ति उसके अपार बल से नहीं होती।
17 विजय-प्राप्ति के लिए अश्व-सेना दुराशा मात्र है;
वह अपनी बड़ी शक्ति से भी बचा नहीं सकती।

18 देखो, प्रभु की दृष्टि उन लोगों पर है
जो उससे डरते हैं;
और उन पर है
जो उसकी करुणा की प्रतीक्षा करते हैं;
19 जिससे वह उनके प्राण को मृत्यु से
मुक्त करे;
और अकाल के समय उन्हें जीवित रखे।

20 हम प्रभु की प्रतीक्षा करते हैं;
वह हमारा सहायक और हमारी ढाल है।
21 प्रभु में हमारा हृदय हर्षित होता है;
क्योंकि हम प्रभु के पवित्र नाम पर
भरोसा करते हैं।
22 प्रभु, तेरी करुणा हम पर हो;
जैसे कि हमने तुझ से आशा की है।

विपत्ति से बचने पर स्तुति करना

दाऊद का। दाऊद ने अबीमेलेक के समक्ष पागलपन का अभिनय किया। पर अबीमेलेक ने दाऊद को बाहर निकाल दिया; और वह चला गया।

34 मैं प्रभु को हर समय धन्य कहूँगा।
मैं निरन्तर उसकी स्तुति करता रहूंगा।
2 मेरा प्राण प्रभु पर गर्व करेगा;
दु:खी मनुष्य यह सुन कर सुखी होगा।
3 मेरे साथ प्रभु का गुणगान करो;
हम सब उसके नाम को उन्नत करें।

---

33 : 6 उत 1 : 6-7; यो 1 -3 **33 : 9** उत 1 : 3; भज 148 : 5 **33 : 12** भज 144 : 15; व्य 7 : 6 **33 : 16** यहूदी 9 : 7; 1 मक 3 : 19 **33 : 17** हो 1 : 7 **34** 1 शम 21 : 13-15

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

4 मैंने प्रभु को खोजा;
और उसने मुझे उत्तर दिया,
उसने मेरे सब भय से मुझे मुक्त किया।
5 प्रभु पर दृष्टि करो,
तब तुम्हारा मुख प्रकाशमय हो जाएगा;
और तुम अपने विश्वास के लिए
कभी लज्जित न होगे!
6 इस पीड़ित व्यक्ति ने प्रभु को पुकारा,
और प्रभु ने उसकी प्रार्थना सुनी;
प्रभु ने उसके सब संकटों से उसको
बचाया।
7 जो लोग प्रभु की भक्ति करते हैं,
उन्हें प्रभु का दूत चारों ओर से घेरे रहता है;
वह उन्हें मुक्त करता है।
8 परखकर देखो कि प्रभु कितना भला है।
धन्य है वह व्यक्ति जो प्रभु की शरण में
आता है।
9 ओ प्रभु के संतो! प्रभु से डरो।
जो लोग प्रभु से डरते हैं, उन्हें अभाव नहीं
होता।
10 युवा सिंहों को घटी होती और उन्हें भूख
लगती है;
पर जो लोग प्रभु को खोजते हैं,
उन्हें भली वस्तु का अभाव नहीं होता।

11 ओ पुत्र-पुत्रियो! आओ, मेरी बात सुनो;
मैं तुम्हें प्रभु की भक्ति करना सिखाऊंगा*।
12 वह कौन मनुष्य है जो जीवन की कामना
करता है;
जो दीर्घ आयु का इच्छुक है कि भलाई को
देख सके?
13 अपनी जीभ को बुराई से दूर रखो,
और ओंठों को छल-कपट से।
14 बुराई को छोड़ो, और भलाई करो;
शांति को खोजो, और उसका अनुसरण
करो।

15 प्रभु की आंखें धार्मिकों पर लगी हैं,
और उसके कान उनकी दुहाई पर।
16 प्रभु का मुख बुराई करने वालों के विरुद्ध है।
वह उनकी स्मृति को धरती से मिटा देगा।
17 जब धार्मिक मनुष्य दुहाई देते हैं तब प्रभु
सुनता है;
वह उनके संकट से उन्हें बचाता है।
18 प्रभु पश्चात्ताप करने वाले हृदय के निकट
है;
वह विदीर्ण आत्मा का उद्धार करता है।

19 धार्मिक मनुष्य के दुःख अनेक हैं;
तोभी प्रभु उन सब से उसे मुक्त करता है।
20 वह उसकी समस्त अस्थियों को सुरक्षित
रखता है;
उनमें से एक भी नहीं टूटेगी।
21 बुराई दुर्जन को नष्ट करेगी;
जो लोग धार्मिक मनुष्य से घृणा करते हैं,
वे दोषी ठहरेंगे।
22 प्रभु अपने सेवकों की आत्मा का उद्धार
करता है;
जो मनुष्य उसकी शरण में आते हैं, वे दोषी
नहीं ठहरेंगे।

शत्रुओं से मुक्त होने के लिए प्रार्थना

दाऊद का।

35 हे प्रभु, जो मनुष्य मुझ से संघर्ष करते
हैं,
उनके साथ संघर्ष कर।
जो व्यक्ति मुझ से युद्ध करते हैं,
उनके साथ युद्ध कर।
2 तू कवच और ढाल संभाल,
और मेरी सहायता के लिए उठ।
3 जो मनुष्य मेरा पीछा करते हैं,
उनके विरुद्ध बर्छी और भाला उठा।
तू मेरे प्राण से यह कह,
"मैं ही तेरा उद्धारकर्ता हूँ।"

4 जो मनुष्य मेरे प्राण के खोजी हैं,
वे लज्जित और अपमानित हों।
जो मेरी बुराई के उपाय करते हैं,
वे पीठ दिखाएं और पराजित हों।

* अथवा, 'प्रभु से डरना सिखाऊंगा'।

34 : 8 1 पत 2 : 3 **34 : 9-16** 1 पत 3 : 10-12 **34 : 18** भज 51 : 17; मत 11 : 29-30 **34 :20** यो 19 : 36

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

5 वे पवन के सन्मुख भूसा जैसे हो जाएं;
और प्रभु का दूत उन्हें हांकता जाए।
6 उनका मार्ग अंधकारमय और फिसलने वाला
बन जाए,
और प्रभु का दूत उनका पीछा करता जाए।

7 अकारण उन्होंने मेरे लिए जाल बिछाया;
अकारण ही उन्होंने मेरे निमित्त गड्ढा खोदा।
8 अकस्मात् उनका सर्वनाश हो जाए।
जो जाल उन्होंने बिछाया है, वे उसमें स्वयं
फंस जाएं,
वे उसमें गिर पड़ें और उनका सर्वनाश हो
जाए!

9 तब मेरा प्राण प्रभु में आनन्दित होगा;
उसके उद्धार से हर्षित होगा।
10 मेरी समस्त अस्थियाँ यह कहेंगी,
"हे प्रभु! तुझ जैसा और कौन है?"
तू पीड़ित व्यक्ति को महाबली से,
दु:खी और दरिद्र को लुटेरों से
मुक्त करता है।

11 मेरे विरुद्ध हिंसक गवाह खड़े होते हैं;
जो बातें मैं नहीं जानता,
वही वे मुझसे पूछते हैं।
12 वे मुझे भलाई का प्रतिफल बुराई से देते हैं;
मेरा प्राण निराशा में डूब गया है।
13 परन्तु जब वे रोगी थे,
तब मैंने पश्चात्ताप के लिए टाट ओढ़ा था।
स्वयं को भूख-प्यास से पीड़ित किया था।
मैंने नतमस्तक हो प्रार्थना की थी।
14 मेरी यह भावना थी
मानो वह मेरा आत्मीय हो,
मेरा भाई हो।
मैंने सिर झुकाकर मातृशोक जैसा विलाप
किया था।

15 किन्तु जब मैं लड़खड़ाकर गिर पड़ा
तब वे हर्षित होकर एकत्र हो गए।
वे मेरे विरुद्ध एक हो गए।
नीच व्यक्ति, जिन्हें मैं जानता ही नहीं,
निरन्तर मुझे फाड़ते रहे।
16 उन्होंने दुष्टतापूर्वक मेरा मज़ाक उड़ाया*।
वे मुझ पर दांत पीसते रहे।

17 स्वामी, तू कब तक यह देखता रहेगा?
मुझे उनके उपद्रव से,
मेरे इस एक ही जीवन को
युवा सिंहों से मुक्त कर।
18 तब मैं आराधकों की महासभा में
तेरी स्तुति करूंगा;
अपार जनसमूह में तेरा गुणगान गाऊंगा।

19 जो धूर्ततावश मेरे शत्रु बने हैं,
उन्हें मुझ पर हंसने न दे।
जो अकारण मुझसे घृणा करते हैं,
उन्हें आंखों से इशारा न करने दे।
20 वे शांति के वचन नहीं बोलते;
वरन् संसार के शांतिप्रिय लोगों के विरुद्ध
छल-कपट के उपाय सोचते हैं।
21 वे मेरे विरुद्ध अपना मुंह फाड़ते हैं;
वे यह कहते हैं, "अहा! हमारी आंखों ने
उसे देखा है।"

22 प्रभु, तूने यह देख लिया, अब चुप न रह,
हे मेरे स्वामी, मुझसे दूर न हो।
23 हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे स्वामी, जाग।
मेरे न्याय के लिए, मेरे प्रतिवाद के लिए उठ।
24 हे मेरे प्रभु परमेश्वर,
अपनी धार्मिकता के कारण
मुझे निर्दोष सिद्ध कर, उन्हें मुझ पर हंसने न
दे।
25 वे अपने आप से यह न कह सकें,
"अहा! हमारी इच्छा पूर्ण हुई।"
वे बोल न पाएं, "हमने उसे निगल लिया।"
26 जो लोग मेरी विपत्ति पर हंसते हैं,
उन्हें पूर्णत: लज्जित और अपमानित कर।
जो व्यक्ति मेरे विरुद्ध शक्ति संचित करते हैं,
उन्हें लज्जा और अनादर से ढांप दे।

---

* मूल अस्पष्ट
35 : 19 भज 69 : 4 ; यो 15 : 25

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

27 जो लोग मेरे दोष-मुक्त होने की कामना
करते हैं,
वे जयजयकार करें, वे हर्षित हों।
वे निरन्तर यह कहते रहें, "प्रभु महान है;
वह अपने सेवक के कल्याण से सुखी होता
है।"
28 तब मैं तेरी धार्मिकता का पाठ,
और तेरी स्तुति निरन्तर करता रहूंगा।

मानव की अधोगति और परमेश्वर की करुणा

मुख्यवादक के लिए। प्रभु के सेवक दाऊद का।

36 दुर्जन के हृदय में अपराध बोलता है।
उसकी आंखों में परमेश्वर का भय
है ही नहीं।
2 वह स्वयं अपनी प्रशंसा करता है,
कि उसका तिरस्कार करने के लिए
उसका अधर्म प्रकट नहीं किया जा सकता
है।
3 उसके मुख के शब्द अनिष्ट और कपट हैं;
वह बुद्धि को छोड़ चुका है;
वह भलाई नहीं करता।
4 वह अपनी शैया पर लेटे-लेटे
बुराई की योजनाएं बनाता है;
वह अपने को उस मार्ग पर ले जाता है,
जो भला नहीं है।
वह बुराई को धिक्कारता नहीं।

5 हे प्रभु, तेरी करुणा स्वर्ग तक महान है,
और तेरी सच्चाई मेघों को छूती है।
6 तेरी धार्मिकता उच्च पर्वतों के समान
महान है;
तेरे न्याय-सिद्धान्त अथाह सागर के सदृश
गहरे हैं।
प्रभु, तू मनुष्य और पशु दोनों की रक्षा करता
है।

7 हे परमेश्वर, तेरी करुणा कैसी अनमोल है।
मनुष्य तेरे पंखों की छाया में शरण लेते हैं।
8 वे तेरे घर के विभिन्न व्यंजनों से तृप्त होते हैं।
तू उन्हें अपनी सुख-सरिता से
जल पिलाता है।
9 तेरे साथ ही जीवन का स्रोत है;
तेरी ज्योति में हम ज्योति देखते हैं।

10 जो भक्त तुझे जानते हैं
उन पर तू अपनी करुणा करता रह, और
सत्यनिष्ठों पर अपनी धार्मिकता बनाए रख।
11 न अहंकारी का पैर मुझे कुचल सके;
और न दुर्जन का हाथ मुझे दूर धकेल सके।
12 वहाँ कुकर्मी धूल-धूसरित पड़े हैं;
उन पर ऐसा प्रहार हुआ है कि वे उठ नहीं
सकते।

दुर्जन की क्षणभंगुरता

दाऊद का।

37 दुर्जनों के कारण स्वयं को परेशान न
करो;
कुकर्मियों के प्रति ईर्ष्यालु न हो।
2 वे घास के सदृश अविलम्ब काटे जायेंगे।
वे हरी शाक के समान मुरझा जाएंगे।

3 प्रभु पर भरोसा रखो और भले कार्य करो;
पृथ्वी पर निवास करो और सत्य का पालन
करो।
4 तब तुम प्रभु में आनन्दित होगे;
और वह तुम्हारी मनोकामना पूर्ण करेगा।
5 अपना जीवन-मार्ग प्रभु को सौंप दो;
उस पर भरोसा करो तो वही कार्य करेगा।
6 वह तुम्हारी धार्मिकता को ज्योति के सदृश,
और तुम्हारी सच्चाई को
दोपहर की किरणों जैसे प्रकट करेगा।

7 प्रभु के समक्ष शान्त रहो,
और उत्सुकता से उसकी प्रतीक्षा करो;
उस व्यक्ति के कारण स्वयं को परेशान न
करो,
जो अपने कुमार्ग पर फलता-फूलता है,
जो बुरी युक्तियां रचता है।

8 क्रोध से दूर रहो, और रोष को त्याग दो।
स्वयं को क्षुब्ध न करो;
क्षोभ केवल बुराई की ओर ले जाता है।

---

36 : 1 रोम 3 : 18 **36 : 4** मी 2 : 1 **36 : 9** यश 12 : 3 ; जक 13 : 1; यो 4 : 14 **37 : 2** भज 90 : 6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

9 दुर्जन नष्ट किए जाएंगे;
परन्तु जो प्रभु की प्रतीक्षा करते हैं,
वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे।
10 कुछ समय पश्चात् दुष्ट नहीं रहेगा।
तुम उस स्थान को ध्यान से देखोगे;
पर वहाँ वह नहीं होगा।
11 दीन-गरीब लोग पृथ्वी के अधिकारी होंगे,
वे अपार समृद्धि में* आनन्द करेंगे।

12 धार्मिक मनुष्य के विरुद्ध दुर्जन षड्यन्त्र रचता है,
वह उस पर अपने दांत पीसता है;
13 परन्तु प्रभु उस पर हंसता है;
क्योंकि प्रभु देखता है कि
दुर्जन के दिन समीप आ गए।

14 पीड़ितों और दरिद्रों को
धूल-धूसरित करने के लिए,
सन्मार्ग पर चलने वालों को
मार डालने के लिए,
दुर्जनों ने तलवार खींची और धनुष ताने हैं।
15 पर उनकी तलवार उनके हृदय को ही बेधेगी;
उनके धनुष तोड़े जाएंगे।

16 समस्त दुर्जनों की समृद्धि से
धार्मिक मनुष्य का अल्पांश श्रेष्ठ है।
17 दुर्जन की भुजा तोड़ी जाएगी;
किन्तु प्रभु धार्मिक मनुष्य का आधार है।

18 प्रभु निर्दोष व्यक्तियों की आयु का प्रत्येक दिन जानता है,
उनकी पैतृक सम्पत्ति सदा बनी रहेगी।
19 वे संकट काल में भी लज्जित न होंगे।
वरन् अकाल में भी तृप्त रहेंगे।

20 परन्तु दुर्जन नष्ट हो जाएंगे;
प्रभु के शत्रु घास के फूल के समान हैं।
वे मिट जाएंगे—
वे धुएं में विलुप्त हो जाएंगे।

21 दुर्जन उधार लेता है पर चुकाता नहीं;
परन्तु धार्मिक मनुष्य उदार होता है;
और वह उधार देता है।
22 प्रभु से आशिष पाए हुए लोग
पृथ्वी के अधिकारी होंगे;
किन्तु वे लोग नष्ट हो जाएंगे
जिनको प्रभु ने शाप दिया है।
23 प्रभु के द्वारा मनुष्य के पग स्थिर होते हैं,
उसके आचरण से प्रभु प्रसन्न होता है।
24 यद्यपि वह गिरता है तो भी सदा पड़ा नहीं रहेगा;
क्योंकि प्रभु उसका हाथ थामता है।
25 मैं भी तरुण था, और अब वृद्ध हूँ।
मैंने यह कभी नहीं देखा,
कि प्रभु ने किसी धार्मिक को कभी त्याग दिया;
और न मैंने उसकी सन्तान को भीख मांगते पाया।
26 धार्मिक मनुष्य सदा उदार बना रहता है
और वह उधार देता है।
उसका वंश आशिष का माध्यम बनता है।

27 बुराई से दूर रहो, और भले कार्य करो;
तब तुम देश में सदा शांति से बसे रहोगे।
28 क्योंकि प्रभु न्याय से प्रेम करता है;
वह अपने भक्तों को नहीं छोड़ेगा।

धार्मिक मनुष्य सदा के लिए सुरक्षित है;
किन्तु दुर्जन का वंश नष्ट हो जाएगा।
29 धार्मिक मनुष्य पृथ्वी के अधिकारी होंगे।
वे पृथ्वी पर सदा निवास करेंगे।

30 धार्मिक मनुष्य ज्ञान का पाठ करता है।
उसकी जीभ न्याय की बातें करती है।
31 परमेश्वर की व्यवस्था उसके हृदय में है;
उसके पैर नहीं फिसलेंगे।

32 दुर्जन धार्मिक मनुष्य की घात में रहता है;
वह उसकी हत्या की खोज में रहता है।
33 किन्तु प्रभु धार्मिक मनुष्य को दुर्जन के हाथ

---

* अथवा 'पूर्ण शान्ति में'

37 : 11 मत 5 : 5 **37: 16** नीति 15 : 16 **37 : 31** व्य 6 : 6 ; यिर 31 : 33

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

में नहीं छोड़ेगा—
जब धार्मिक मनुष्य का न्याय होगा
तब प्रभु उसे दोषी नहीं ठहराएगा।

34 प्रभु की प्रतीक्षा करो।
उसके मार्ग पर चलते रहो।
वह तुम्हें उन्नत करेगा,
और तुम पृथ्वी के अधिकारी बनोगे।
तुम दुर्जनों का विनाश देखोगे।

35 मैंने एक महाबली दुर्जन को देखा था।
वह बरगद वृक्ष के समान विशाल था।
36 मैं पुन: वहाँ से निकला।
तब वह वहाँ नहीं था!
यद्यपि मैंने उसे खोजा
तोभी वह वहाँ नहीं मिला।

37 निर्दोष व्यक्ति को ध्यान में रखो,
और सत्यनिष्ठ मनुष्य पर दृष्टि करो!
शांतिप्रिय व्यक्ति का भविष्य उज्जवलवल
होता है।
38 किन्त अपराधी पूर्णत: नष्ट किए जाएंगे;
दुर्जन का भविष्य अंधकारमय है।

39 धार्मिक मनुष्यों का उद्धार प्रभु से है;
वह संकटकाल में उनका सुदृढ़ गढ़ है।
40 प्रभु धार्मिक मनुष्यों की सहायता करता और
उन्हें मुक्त करता है;
वह दुर्जनों से उन्हें छुड़ाकर उनकी रक्षा
करता है;
क्योंकि वे उसकी शरण में आते हैं।

रोगी मनुष्य की प्रार्थना

दाऊद का भजन। स्मारक-बलि के लिए।

38 प्रभु, क्रोध से मुझे मत डांट;
अपने रोष से मुझे दण्डित न कर।
2 तेरे बाणों ने मुझे बेध दिया है;
तेरा हाथ मुझ पर उठा है।

3 तेरे क्रोध ने मेरे शरीर में स्वास्थ्य नहीं
छोड़ा;
मेरे पाप के कारण मेरी देह में चैन नहीं है।
4 मैं अपने कुकर्मों में सिर तक डूब चुका हूँ;
वे बोझ के समान मेरे लिए बहुत भारी हैं।

5 मेरे घाव दुर्गन्धमय हैं;
मेरी मूर्खता के कारण वे सड़ गए हैं।
6 मैं झुक गया हूँ; धूल-धूसरित हो गया हूँ;
मैं दिन भर विलाप करता फिरता हूँ।
7 मेरी कमर में बड़ी जलन हो रही है।
मेरे शरीर में स्वास्थ्य नहीं रहा।
8 मैं सुन्न पड़ गया हूँ, कुचल गया हूँ;
अपने हृदय की पीड़ा के कारण मैं कराहता
हूँ।

9 हे स्वामी, मेरी वेदना तेरे संमुख है;
मेरी आह तुझसे छिपी नहीं है।
10 मेरा हृदय तीव्र गति से धड़कता है।
मेरी शक्ति समाप्त होने पर है।
मेरी आंखों की ज्योति भी जाती रही।
11 मेरे प्रिय मित्र और साथी
मेरे रोग के कारण मुझसे अलग हो गए।
मेरे कुटुम्बीजन दूर खड़े हैं।
12 मेरे प्राण के खोजी जाल फैलाते हैं;
मुझे हानि पहुंचानेवाले
मेरे विनाश की चर्चा करते हैं;
वे दिन भर छल-कपट की बातें सोचते हैं।

13 परन्तु मैं बहरा बन गया हूँ;
मैं कुछ सुनता ही नहीं।
मैं गूंगे के समान हूँ,
जो अपना मुंह नहीं खोलता।
14 निस्सन्देह मैं उस मनुष्य के समान हो गया
हूँ,
जो सुनता ही नहीं,
जिसके मुंह में अपने बचाव के लिए तर्क
नहीं है।

15 प्रभु, मैं तेरी ही प्रतीक्षा करता हूँ—
हे स्वामी! मेरे परमेश्वर!
तू ही मुझे उत्तर देगा।
16 मैंने कहा, ''ऐसा न हो कि वे मुझ पर हंसें;
जब मेरे पैर फिसल जाएं
तब वे मेरे विरुद्ध डींग मारें।''
17 मैं लड़खड़ाकर गिरने पर हूँ;

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मेरी पीड़ा निरन्तर मेरे साथ है।
18 मैं अपने अधर्म को स्वीकार करता हूँ;
मैं अपने पाप के लिए दुःखी हूँ।
19 जो अकारण * ही मेरे शत्रु बने,
वे शक्तिशाली हो गये हैं।
जो मुझ से व्यर्थ घृणा करते हैं,
वे कितने बढ़ गए हैं।
20 जो भलाई का प्रतिकार बुराई से करते हैं,
वे मेरे बैरी हैं—
क्योंकि मैं भलाई का अनुसरण करता हूँ।
21 हे प्रभु, मुझे मत त्याग!
हे मेरे परमेश्वर, मुझसे दूर मत हो!

22 हे स्वामी, मेरे उद्धारकर्ता
अविलंब मेरी सहायता कर।

जीवन अस्थायी है

मुख्यवादक के लिए। यदूतून के लिए । दाऊद का भजन।

39 मैंने कहा,
"मैं अपने मार्ग की चौकसी करूंगा,
जिससे मैं अपनी जीभ के कारण पाप न करूं।
जब तक दुर्जन मेरे सामने हैं,
मैं अपने मुंह में लगाम दूंगा।"

2 मैं मूक और शान्त था।
मैं भलाई के प्रति भी चुप रहा;
किन्तु मेरी पीड़ा बढ़ती गई।
3 मेरे भीतर ही भीतर मेरा हृदय उबल उठा;
मेरे सोचते-सोचते अग्नि धधकने लगी,
तब मैं पुकार उठा:
4 "हे प्रभु, मेरा अन्त मुझे बता दे।
मेरे जीवन-काल की सीमा क्या है?
मुझे बता दे कि मेरा जीवन कितना क्षणभंगुर है।
5 तूने मेरे जीवन-काल को बित्ता भर बनाया है।
मेरी आयु तेरे सम्मुख कुछ भी नहीं है।
वस्तुतः प्रत्येक मनुष्य की स्थिति श्वास मात्र है+ । सेलाह

6 निस्सन्देह मनुष्य
छाया जैसा चलता-फिरता प्राणी है।
निस्सन्देह वह व्यर्थ ही उत्तेजित है;
मनुष्य धन का ढेर तो लगाता है,
पर नहीं जानता कि कौन उसे भोगेगा।

7 "अब स्वामी, मैं किस की प्रतीक्षा करूं?
मेरी आशा तो तुझ पर लगी है।
8 मेरे समस्त अपराधों से मुझे मुक्त कर।
मुझे मूर्खों के लिए तिरस्कार का पात्र न बनने दे।
9 मैं मूक था, मैंने अपना मुंह नहीं खोला;
क्योंकि तूने ही यह किया है।
10 अब मुझ पर प्रहार मत कर;
तेरे हाथ के आघात से मैं नष्ट हो गया हूँ।

11 "तू डांट-डपट से
व्यक्ति को कुकर्म के लिए दंडित करता है—
जैसा कीड़ा वस्तुओं को खा जाता है,
तू उसकी इच्छित वस्तुओं को नष्ट कर देता है।
निस्संदेह प्रत्येक मनुष्य श्वास मात्र है। सेलाह

12 "हे प्रभु, मेरी प्रार्थना सुन,
मेरी दुहाई पर ध्यान दे।
मेरे आंसुओं के प्रति उदासीन न हो।
मैं कुछ समय के लिए तेरा अतिथि हूँ;
मैं अपने पूर्वजों के समान प्रवासी हूँ।
13 इससे पूर्व कि मैं प्रस्थान करूं और न रहूं,
मुझ पर से अपनी दृष्टि हटा ले
कि मैं प्रसन्न हो सकूं।"

मुक्ति-प्राप्ति के लिए स्तुतिगान

मुख्यवादक के लिए। दाऊद का एक भजन।

40 मैं धैर्य से प्रभु की प्रतीक्षा करता हूँ।
उसने मेरी ओर ध्यान दिया
और मेरी दुहाई सुनी है।
2 प्रभु ने मुझे अंध-कूप से,
कीच-दलदल से ऊपर खींचा है;

---

* मूल में 'जीवित' + अथवा, 'सब मनुष्य कैसे ही स्थिर क्यों न हों, तौभी व्यर्थ ठहरे हैं'।

39 : 5 अय्य 14 : 1-2 **39 : 6** 1 कुर 7 : 31; लू 12: 20 **39 : 12** भज 119 : 19 ; 1 पत 2 : 11

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उसने मेरे पैर चट्टान पर दृढ़ किए हैं;
मेरे कदमों को स्थिर किया है।
3 प्रभु ने मुझे एक नया गीत सिखाया है,
कि हम अपने परमेश्वर की स्तुति में गाएं!*
अनेक जन यह देखकर भयभीत होंगे;
और वे प्रभु पर भरोसा करेंगे।

4 धन्य है वह मनुष्य, जो प्रभु पर भरोसा करता है;
जो अभिमानियों का मुंह नहीं ताकता,
जो झूठ के उपासकों का साथ नहीं देता।
5 हे प्रभु, मेरे परमेश्वर!
तूने हमारे प्रति अपने अद्‌भुत कार्यों
और अभिप्रायों में वृद्धि की है।
यदि मैं लोगों से उनकी चर्चा करूं,
यदि मैं उनके विषय में लोगों को बताऊं,
तो मैं बताते-बताते थक जाऊंगा;
क्योंकि उनकी गिनती नहीं हो सकती।
प्रभु , तेरे तुल्य कोई नहीं है।
6 तुझे बलि और भेंट की चाह नहीं।
तूने मेरे कानों को खोला
कि मैं तेरी व्यवस्था का पालन करूं;
तुझे अग्निबलि और पापबलि की आकांक्षा नहीं।
7 अत: मैंने कहा, "देख, मैं आ गया हूँ।
पुस्तक में मेरे विषय में यह** लिखा है।
8 हे मेरे परमेश्वर! मैं तेरी इच्छा को पूर्ण कर सुखी होता हूँ।
तेरी व्यवस्था मेरे हृदय में है।"

9 मैंने आराधकों की महासभा में मुक्ति का संदेश सुनाया।
देख, मैंने अपने ओंठों को बन्द नहीं किया;
प्रभु! तू यह जानता ही है।
10 मैंने तेरी मुक्तिप्रद सहायता को अपने हृदय में गुप्त नहीं रखा;
वरन् तेरे सत्य और उद्धार को घोषित किया।
मैंने आराधकों की महासभा से
तेरी करुणा और सच्चाई को नहीं छिपाया।

11 प्रभु! मुझे अपनी दया से वंचित न कर,
तेरी करुणा और सच्चाई मुझे निरन्तर सुरक्षित रखें।
12 असंख्य बुराइयों ने मेरे विरुद्ध घेरा डाला है,
कुकर्मों ने मुझे दबा दिया है।
अत: मैं दृष्टि ऊपर उठाने में असमर्थ हूँ।
कुकर्म मेरे सिर के बालों से कहीं अधिक हैं।
मेरा हृदय हताश हो गया है।

13 प्रभु! मेरे उद्धार के लिए कृपा कर।
प्रभु, अविलम्ब मेरी सहायता कर।
14 जो मेरे प्राण की खोज में हैं,
और उसे नष्ट करना चाहते हैं,
वे पूर्णत: लज्जित हों और घबरा जाएं।
जो मेरी बुराई की कामना करते हैं,
वे पीठ दिखाएं और अपमानित हों।
15 जो मुझ से "अहा! अहा!" कहते हैं,
वे अपनी लज्जा के कारण निस्सहाय हो जाएं।

16 परन्तु वे लोग जो तेरी खोज करते हैं,
तुझ में हर्षित और आनन्दित हों।
जो तेरे उद्धार से प्रेम करते हैं,
वे निरन्तर यह कहते रहें, "प्रभु महान है।"
17 मैं पीड़ित और दरिद्र हूँ;
फिर भी तू, स्वामी, मेरी चिन्ता करता है।
तू मेरा सहायक, मेरा मुक्तिदाता है;
हे मेरे परमेश्वर, विलम्ब न कर।

रोग से मुक्त होने के लिए प्रार्थना

मुख्यवादक के लिए। दाऊद का भजन।

41 धन्य है वह मनुष्य
जो निर्बल की देखभाल करता है।
प्रभु संकट के दिन उसको मुक्त करता है।
2 प्रभु उसकी रक्षा करता
और उसको जीवित रखता है।
उसे पृथ्वी पर 'धन्य' कहा जाता है।
प्रभु, तू उसे उसके शत्रु की इच्छा पर नहीं छोड़ेगा।
3 प्रभु, तू उसे रोग-शैया पर सहारा देता है;

* अथवा, 'हमारे परमेश्वर की स्तुति का गान, ** अथवा, 'मेरे लिए आदेश'

40 :6-8 इब्र 10 : 5-9 40 : 6 1 शम 15: 22; भज 51 : 16 ; हो 6 : 6 40: 13-17 भज 70 : 1-5

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तू उसके समस्त रोगों को दूर करता है,
और उसे स्वास्थ्य पुनः प्रदान करता है।

4 मैंने कहा, "प्रभु! मुझ पर अनुग्रह कर।
मुझे स्वस्थ कर, क्योंकि मैंने तेरे विरुद्ध पाप किया है।"
5 मेरे शत्रु मेरे विषय में दुष्टता से यह कहते हैं :
"वह कब मरेगा, और कब उसका नाम मिटेगा?"
6 जो मुझे देखने आता है, वह व्यर्थ बातें बोलता है।
उसका हृदय बुराई का संग्रह करता है।
वह बाहर जाकर लोगों से कहता-फिरता है।
7 जो मुझ से घृणा करते हैं,
वे सब मिलकर मेरे विरुद्ध कानाफूसी करते हैं।
वे मेरे अनिष्ट का उपाय करते हैं।

8 वे यह कहते हैं, "असाध्य रोग ने उसे जकड़ लिया है।
जहाँ वह लेटा है, वहां से पुनः नहीं उठ सकेगा।"
9 मेरा प्रिय मित्र, जिस पर मैंने भरोसा किया था,
जिसने मेरी रोटी खाई थी,
उसी ने मेरे विरुद्ध लात उठाई है!
10 परन्तु प्रभु, तू मुझ पर कृपा कर;
मुझे उठा, जिससे मैं उनका प्रतिकार कर सकूँ।

11 तब मैं जानूंगा कि तू मुझ से प्रसन्न है;
मेरा शत्रु मेरे विरुद्ध जयघोष नहीं कर पाएगा।
12 तूने मेरी निर्दोषता के फलस्वरूप मुझे सहारा दिया है;
तूने मुझे अपने सम्मुख सदा के लिए बैठाया है।

13 इस्राएल का प्रभु परमेश्वर युग-युगान्तर धन्य है।
आमेन और आमेन!

दूसरा खण्ड

परमेश्वर के लिए तीव्र इच्छा

मुख्यवादक के लिए। कोरह वंशियों का मसकील।

42 जैसे हरिणी को बहते झरनों की चाह होती है
वैसे ही, हे परमेश्वर, मेरे प्राण को तेरी प्यास है।
2 मेरा प्राण परमेश्वर के,
जीवंत परमेश्वर के दर्शन का प्यासा है।
मैं कब जाऊंगा और परमेश्वर के मुख का दर्शन पाऊंगा?
3 रात और दिन मेरे आंसू ही मेरा आहार रहे हैं।
लोग निरन्तर मुझसे पूछते हैं,
"कहां है तेरा परमेश्वर?"

4 जब मुझे ये बातें स्मरण आती हैं
तब मेरे हृदय में तीव्र भाव उमड़ आते हैं:
मैं लोगों के साथ गया था।
मैंने उन्हें परमेश्वर के भवन तक पहुंचाया था।
जनसमूह जयजयकार और स्तुति के साथ पर्व मना रहा था।
5 ओ मेरे प्राण, तू क्यों व्याकुल है?
क्यों तू हृदय में अशांत है?
ओ मेरे प्राण, तू परमेश्वर की आशा कर;
मैं अपने उद्धार को, अपने परमेश्वर को पुनः सराहूंगा।

6 मेरे हृदय में प्राण व्याकुल है।
यर्दन और हेर्मोन प्रदेश से, मिसार पर्वत से
मैं तुझ को स्मरण करता हूँ।
7 तेरे जल-प्रपात के गर्जन से सागर सागर को पुकारता है;
तेरी लहरें-तरंगें मेरे ऊपर से गुजर चुकी हैं।
8 दिन में प्रभु अपनी करुणा भेजता है।
मैं रात में उसका गीत गाता हूँ,
और अपने जीवन के परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ।

---

41 : 9 मक 14 : 18; यो 13 : 18 **41 : 13** भज 106 : 48 **42 : 2** यो 7 : 37 **42 : 7** भज 88 : 7 ; योना 2 : 3

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

9 मैं अपने परमेश्वर,
अपनी चट्टान से यह पूछता हूँ:
"तू ने मुझे क्यों भुला दिया?
क्यों मैं शत्रु के अत्याचार के कारण
शोक-संतप्त मारा-मारा फिरता हूँ?"
10 मेरे बैरी ताना मारते हैं।
वे मानो मेरी देह पर घातक प्रहार करते हैं।
वे निरन्तर मुझ से यह पूछते हैं,
"कहां है तेरा परमेश्वर?"

11 ओ मेरे प्राण, तू क्यों व्याकुल है?
क्यों तू हृदय में अशांत है?
ओ मेरे प्राण, तू परमेश्वर की आशा कर;
मैं अपने उद्धार को, अपने परमेश्वर को
पुनः सराहूँगा।

न्याय और मुक्ति के लिए प्रार्थना

43 हे परमेश्वर, मुझे निर्दोष सिद्ध कर;
तू निर्दय राष्ट्र के विरुद्ध
मेरे पक्ष में निर्णय दे;
धोखेबाज और अन्यायी मनुष्यों से मुझे मुक्त
कर;
2 परमेश्वर, तू ही मेरा शरणस्थल है।
क्यों तूने मुझे त्याग दिया?
क्यों मैं शत्रु के अत्याचार के कारण
शोक-सन्तप्त, मारा-मारा फिरता हूं?

3 तू अपनी ज्योति और सत्य को भेज!
वे ही मेरा मार्ग-दर्शन करें;
वे मुझे तेरे पवित्र पर्वत पर,
तेरे निवास स्थान पर पहुँचाएं।
4 तब मैं परमेश्वर की वेदी पर,
अपने परमानन्द परमेश्वर के पास जाऊंगा।
हे परमेश्वर, मेरे परमेश्वर, मैं वीणा के साथ
तेरी स्तुति करूंगा।

5 ओ मेरे प्राण, तू क्यों व्याकुल है?
क्यों तू हृदय में अशान्त है?
ओ मेरे प्राण, तू परमेश्वर की आशा कर;
मैं अपने उद्धार को, अपने परमेश्वर को
पुनः सराहूंगा।

अतीत के मुक्ति-कार्य और वर्तमान संकट

मुख्यवादक के लिए। कोरह वंशियों का। एक मसकील।

44 हे परमेश्वर, हमने अपने कानों से सुना
है,
हमारे पूर्वजों ने हमें यह बताया है:
तू ने उनके समय में, प्राचीन काल में
अनेक अद्भुत कार्य किए थे।
2 तू ने राष्ट्रों को अपने हाथ से उखाड़ा,
पर हमारे पूर्वजों को स्थापित किया था;
और उनको विकसित करने के लिए
तू ने अन्य जातियों का दमन किया था।
3 हमारे पूर्वजों ने तलवार से धरती पर अधिकार
नहीं किया था,
और न अपने भुजबल से विजय प्राप्त की थी,
वरन् तेरे दाहिने हाथ ने, तेरी भुजा ने,
तेरे मुख की ज्योति ने;
क्योंकि तब तू उनसे प्रसन्न था।

4 हे परमेश्वर, तू मेरा राजा है;
तू ही इस्राएल* को विजय प्रदान करने वाला
ईश्वर है।
5 हम तेरे बल पर अपने बैरियों को पीछे धकेल
देते हैं;
हम तेरे नाम से अपने आक्रमणकारियों को
कुचल देते हैं।
6 मुझे अपने धनुष पर विश्वास नहीं है—
और न मेरी तलवार ही मुझे बचा सकती है।
7 तूने हमें हमारे शत्रुओं से बचाया है—
जो हमसे घृणा करते थे, तूने उन्हें लज्जित
किया है।
8 हम निरन्तर तुझ-परमेश्वर पर गर्व करते हैं,
हम तेरे नाम की स्तुति सदा करते रहेंगे।
सेलाह
9 अब तूने हमें त्याग दिया, और हमें नीचा
दिखाया।
तू हमारी सेना के साथ नहीं गया।
10 तूने हमें विवश किया कि हम अपने बैरी को
पीठ दिखाएं—

---

* मूल में, 'याकूब'
44 : 1 भज 78 : 3

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जो हमसे घृणा करते थे, उन्होंने हमें लूट
लिया।
11 तूने हमें आहार बनने के लिए भेड़ जैसा सौंप
दिया;
हमें अनेक राष्ट्रों में बिखेर दिया।
12 तूने अपने निज लोगों को सस्ते भाव में बेच
दिया;
तूने उनके मूल्य से लाभ नहीं कमाया।
13 तूने हमें अपने पड़ोसियों की निन्दा का पात्र
बनाया,
हमारे चारों ओर के लोगों की दृष्टि में
उपहास और तिरस्कार का पात्र!
14 तूने हमें राष्ट्रों में 'कहावत' बना दिया;
कौमें सिर हिला-हिला कर हम पर हंसती
हैं।
15 मेरा अपमान निरन्तर मेरे सामने रहता है;
लज्जा ने मेरे मुख को ढांप लिया है,
16 तिरस्कार करनेवालों और निन्दकों की वाणी
के कारण;
शत्रु और प्रतिशोधियों की उपस्थिति के
कारण।

17 यह सब हम पर बीता, फिर भी हमने तुझ
को विस्मृत नहीं किया;
तेरे विधान के प्रति विश्वासघात नहीं किया।
18 हमारा हृदय तुझसे विमुख नहीं हुआ;
हमारे पैर तेरे मार्ग से नहीं मुड़े।
19 अन्यथा तूने हमें खण्डहर* बना दिया होता,
तू ने मृत्यु की छाया में हमें आच्छादित किया
होता।

20 यदि हमने अपने परमेश्वर का नाम विस्मृत
किया होता,
और पराये देवता की ओर हाथ फैलाया
होता,
21 तो क्या परमेश्वर ने इसका पता नहीं लगा
लिया होता?
वह हृदय के भेदों को जानता है।
22 पर नहीं! हम तो तेरे कारण
निरन्तर मौत के घाट उतारे जाते हैं;
हमें वध होनेवाली भेड़ जैसा समझा गया।

23 जाग स्वामी! तू क्यों सो रहा है?
उठ! सदा के लिए हमें न त्याग।
24 तू अपना मुख क्यों छिपा रहा है?
क्या तूने हमारी पीड़ा और कष्ट को भुला
दिया है?
25 हमारे प्राण धूल में मिल गए हैं,
और पेट भूमि से चिपक गया है।
26 उठ, और हमारी सहायता कर;
अपनी करुणा के कारण हमारा उद्धार कर।

राजा के लिए विवाह गान

मुख्यवादक के लिए। शोशनीम के अनुसार। कोरह वंशियों
का। एक मसकील। प्रेम गीत।

45 मेरे हृदय में सुन्दर भाव उमड़ रहे हैं—
मैं राजा के लिए गीत गाऊंगा;
मेरी जीभ निपुण लेखक की लेखनी है।

2 आप पुरुषों में सर्वसुन्दर हैं।
आपके ओंठों से माधुर्य टपकता है।
अतः परमेश्वर ने युग-युगांत आपको
आशिष दी है।
3 ओ परम वीर! यश और प्रताप से
अपनी तलवार कमर पर धारण कीजिए।

4 आपके यश की समृद्धि हो।
सत्य और न्याय की रक्षा+ के लिए
आप सवार होइए।
आपका दाहिना हाथ आपको
आतंकपूर्ण कार्यों के लिए प्रेरित करे।
5 आपके बाण तीक्ष्ण हैं,
वे आपके शत्रुओं के हृदय को बेधते हैं,
कौमें आपके चरणों पर गिर पड़ी हैं।

6 आपका सिंहासन युग-युगान्त स्थिर है,
जो परमेश्वर ने आप को दिया** है।
आपका राजदण्ड न्याय का राजदण्ड है।

---

* शब्दशः 'गीदड़ों का स्थान' + मूल में, 'नम्रता' ** अथवा, 'हे परमेश्वर, तेरा सिंहासन'

44 : 12 यहो 24 : 12; हो 1 : 7 **44 : 10** लेव 26 : 17 ; व्य 28 : 25 **44 : 12** यश 52 : 3-4 **44 : 22** रोम 8 : 36 **45 : 4** श्रेष्ठ 5 : 10-16 **45 : 6-7** इब्र 1 : 8-9

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

7 आप धार्मिकता से प्रेम करते हैं और दुराचार से घृणा।
इसलिए परमेश्वर ने, आपके परमेश्वर ने,
आपके साथियों से आपको पृथक कर,
हर्ष के तेल से आपका अभिषेक किया है।
8 आपके वस्त्र गंधरस, अगर और तेजपात से सुगंधित हैं।
हाथी-दांत के महलों में संगीत आपको आनन्दित करता है।
9 राजकन्याएं आपकी सम्मानित महिलाओं में हैं;
आपकी दाहिनी ओर रानी,
ओपीर के कुन्दन से सजी हुई बैठी है।

10 ओ राजकन्या! सुन, विचार कर और ध्यान दे;
अपनी जाति और मायके को भूल जा।
11 तब राजा तेरे रूप की कामना करेंगे।
वह तेरे स्वामी हैं—तू उनके सामने सिर झुका।
12 ओ सोर देश की राजकन्या!
प्रजा के सम्पत्तिशाली लोग,
उपहार द्वारा तेरी अनुकंपा प्राप्त करेंगे।

13 राजकन्या ने अंत:पुर में सोलह सिंगार किया है—
उनके वस्त्रों पर सोने की कढ़ाई है;
14 वह रंगीन वस्त्रों में, महाराज, आपके पास पहुंचाई गई।
उसकी कुमारी सहेलियां उसके पीछे-पीछे आपके निकट लाई गईं।
15 उन्हें आनन्द और प्रसन्नता से पहुंचाया गया;
उन्होंने राज महल में प्रवेश किया।

16 आपके पूर्वजों के स्थान पर आपके पुत्र शासक होंगे;
आप उनको समस्त पृथ्वी पर सामन्त नियुक्त करेंगे।
17 मैं आपके नाम को समस्त पीढ़ियों में स्मरणीय बनाऊंगा;
जातियां युग-युगांत आपकी स्तुति करती रहेंगी।

परमेश्वर हमारा गढ़ और शक्ति है

मुख्यवादक के लिए। कोरह वंशियों का। अलमोत के अनुसार। एक गीत।

46 परमेश्वर हमारा गढ़ और शक्ति है;
वह संकट में उपलब्ध महा सहायक है।
2 इसलिए हम नहीं डरेंगे, चाहे पृथ्वी उलट जाए—
चाहे पर्वत सागर के पेट में डूब जाएं;
3 चाहे समुद्र-जल गरजे और उफने
और पर्वत उसकी उत्तेजना से कांप उठें!
सेलाह

4 एक सरिता है जिसकी जल-धाराएं
परमेश्वर के नगर को,
सर्वोच्च परमेश्वर के पवित्र निवासस्थान को,
हर्षित करती हैं।
5 परमेश्वर नगर के मध्य में है,
नगर टलेगा नहीं;
परमेश्वर पौ फटते ही उसकी सहायता करेगा।
6 राष्ट्र क्रोध करते हैं, राज्य विचलित होते हैं;
किन्तु परमेश्वर के शब्द बोलते ही
पृथ्वी पिघल जाती है।
7 स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु हमारे साथ है;
याकूब का परमेश्वर हमारा गढ़ है। सेलाह

8 आओ, प्रभु के महाकर्म देखो;
उसने पृथ्वी पर कैसा विस्मय उत्पन्न किया है।
9 वह पृथ्वी की सीमा तक युद्धबन्दी करता है;
वह धनुष को तोड़ता और भाले को टुकड़े-टुकड़े करता है;
वह रथों को अग्नि से भस्म करता है।

10 "शान्त हो, और जान लो कि मैं ही परमेश्वर हूँ।
मैं राष्ट्रों में सर्वोच्च हूँ;
मैं पृथ्वी पर सर्वोच्च हूँ।"
11 स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु हमारे साथ है;
याकूब का परमेश्वर हमारा गढ़ है। सेलाह

---

45 : 11 यश 62 : 5 **45 : 12** भज 72 : 10 **46 : 9** यश 2 : 4; भज 76 : 3; यहेज 39 : 9

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

परमेश्वर समस्त पृथ्वी का सम्राट है

मुख्यवादक के लिए। कोरह वंशियों का। एक भजन।

47 हे सब जातियो, आनन्द से ताली बजाओ!
ऊँचे स्वर में परमेश्वर का जयजयकार करो!
2 क्योंकि प्रभु, सर्वोच्च परमेश्वर भय योग्य है;
वह समस्त पृथ्वी का महान राजा है।
3 उसने जातियों को हमारे अधीन
और राष्ट्रों को हमारे चरणों-तले किया है।
4 उसने हमारे लिए पैतृक भूमि को,
"याकूब की शोभा" को चुना है;
वह इस्राएल* से प्रेम करता है। सेलाह

5 भक्तों के जयजयकार के समय,
तुरही की ध्वनि के समय
प्रभु परमेश्वर ऊपर गया!
6 परमेश्वर की स्तुति गाओ, स्तुति गाओ!
हमारे राजा की स्तुति गाओ, स्तुति गाओ!
7 परमेश्वर समस्त पृथ्वी का राजा है;
विशेष गीतों के साथ स्तुति गाओ!

8 परमेश्वर समस्त राज्यों पर राज्य करता है;
परमेश्वर अपने पवित्र सिंहासन पर विराजता है।
9 अब्राहम के परमेश्वर की प्रजा बनने के लिए
जाति-जाति के सामन्त एकत्र हुए हैं।
क्योंकि पृथ्वी की ढालें परमेश्वर की हैं;
वह अत्यन्त उन्नत हुआ है।

सियोन पर्वत की सौंदर्यमय महिमा

गीत। कोरह वंशियों का। भजन।

48 प्रभु महान है—
हमारा परमेश्वर अपने नगर में
अत्यन्त प्रशंसनीय है।
2 उसका पवित्र पर्वत, जिसकी उठान सुन्दर है,
समस्त पृथ्वी के हर्ष का कारण है।
सियोन पर्वत श्रेष्ठ पर्वत** है,
और वह राजाधिराज का नगर है।
3 उसके किलों में परमेश्वर ने स्वयं को सुदृढ़ सिद्ध किया है।
4 देखो राजा एकत्र हुए;
उन्होंने एक-साथ नगर पर आक्रमण किया।
5 पर वे उसे देखकर चकित रह गए;
वे आतंकित हो तुरन्त पलायन कर गए।
6 वहाँ भय ने उन्हें जकड़ लिया;
उन्हें गर्भवती स्त्री के समान पीड़ा होने लगी।
7 वे तर्शीश के जलयानों के समान हैं,
जिनको पूर्वी पवन छिन्न-भिन्न कर देता है।
8 जैसे हमने सुना था वैसा हमने देखा—
स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु के नगर में,
अपने परमेश्वर के नगर में।
परमेश्वर उसको सदा सुरक्षित रखता है।
सेलाह
9 हे परमेश्वर, हमने तेरी करुणा का ध्यान
तेरे भवन के मध्य किया है।
10 हे परमेश्वर, तेरे नाम के सदृश तेरी स्तुति भी
जगत के सीमान्तों तक होती है।
तेरा दाहिना हाथ सदा विजय प्रदान करता है।
11 सियोन पर्वत आनन्द मनाए।
तेरे न्याय के कारण
यहूदा प्रदेश के नगर हर्षित हों।

12 सियोन के चारों ओर जाओ,
उसकी परिक्रमा करो—
उसकी मीनारों की गणना करो।
13 उसके परकोटों पर ध्यान दो।
उसके गढ़ों में विचरण करो,
जिससे तुम आगामी पीढ़ी को
यह बता सको :
14 यही परमेश्वर है,
यह युग-युगान्त हमारा परमेश्वर है।
मृत्यु में भी वह हमारा नेतृत्व करेगा।

धन-सम्पत्ति पर भरोसा करना मूर्खता है

मुख्यवादक के लिए। कोरह वंशियों का। एक भजन।

49 हे सब जातियो, यह सुनो!
हे संसार के निवासियो,
2 कुलीन और अकुलीन,
धनी और निर्धन, तुम सब ध्यान दो!

*मूल में 'याकूब' ** शब्दश: 'उत्तर का सीमान्त' अथवा 'ईश्वर-निवास'।

47: 5 भज 24: 7-10; 68: 18 47: 9 भज 72 : 11 48 : 2 भज 50 : 2; शोक 2 : 15; मत 5 : 35 48 : 10 मला 1 : 11

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

3 मेरा मुंह ज्ञान की बातें उच्चारेगा;
मेरे हृदय का चिन्तन समझ से पूर्ण होगा।
4 मैं नीति के वचन पर कान दूंगा—
मैं गाते-बजाते अपनी पहेली बूझ लूंगा।

5 क्यों मैं संकटकाल में डरूं?
जब मैं अपने विरोधियों के अत्याचार से
घिर जाऊं,
6 जो अपनी सम्पत्ति पर भरोसा रखते हैं,
और अपने अपार धन पर अहंकार करते हैं,
तब क्यों मैं भयभीत होऊं?
7 निस्सन्देह मनुष्य स्वयं को
छुड़ा नहीं सकता*;
वह परमेश्वर को अपने प्राण का मूल्य
चुका नहीं सकता।
8 क्योंकि उसके प्राण के उद्धार का मूल्य
बहुत अधिक है,
यह कभी पर्याप्त नहीं हो सकता।
9 तब वह कैसे सदा जीवित रह सकता है?
कैसे वह कबर के दर्शन कभी नहीं करेगा?

10 मनुष्य देखता है कि बुद्धिमान भी मरते हैं;
मूर्ख और मूढ़ दोनों मरकर
अपना धन दूसरों के लिए छोड़ जाते हैं।
11 उनकी कबर+ ही उनका स्थायी घर है।
वह पीढ़ी-दर-पीढ़ी के लिए उनका निवास-
स्थान है,
चाहे वे अपनी भूमि-क्षेत्रों को अपने नाम से
संबोधित करें।
12 मनुष्य ऐश्वर्य में सदा नहीं रह सकता है;
वह नाशवान पशु के समान है।
13 यह उनकी नियति है जो झूठा भरोसा करते
हैं।
यह उनका अन्त है** जो अपने अंश में मगन
रहते हैं। सेलाह
14 उन्हें भेड़ों के सदृश मृतक-लोक के लिए
रखा गया है।
मृत्यु उनको चराने वाला चरवाहा होगी;
वे सीधे कबर में जाएंगे;++
उनकी देह सड़ जाएगी!
मृतक-लोक ही उनका निवास-स्थान होगा।
15 किन्तु परमेश्वर मेरे प्राण को बचाएगा,
वह निस्सन्देह अधोलोक की शक्ति से
मुझे मुक्त करेगा;
वह मुझे ग्रहण करेगा। सेलाह

16 यदि कोई व्यक्ति धनवान हो जाए,
यदि उसके घर का वैभव बढ़ जाए,
तो मत डरना।
17 जब वह मरेगा, तब अपने साथ कुछ भी नहीं
ले जा सकेगा;
उसका वैभव उसके पीछे नहीं जाएगा।
18 यद्यपि वह अपने जीवनकाल में स्वयं को
सुखी मानता है;
यद्यपि लोग उसकी प्रशंसा करते हैं, कि
वह जीवन में सफल हुआ है;
19 तोभी वह अपने मृत पूर्वजों की पीढ़ी में जा
मिलेगा
जो प्रकाश को कभी नहीं देखेंगे।
20 मनुष्य ऐश्वर्य में रहे, और समझ न रखे
तो वह नाशमान पशु के समान है।

परमेश्वर सच्चा न्यायाधीश है

आसाफ का भजन।

50 सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर ने यह
कहा है—
उसने उदयाचल से अस्ताचल तक
पृथ्वी को बुलाया है।
2 साकार सौन्दर्य-सियोन से
परमेश्वर प्रकाशमान हुआ।
3 हमारा परमेश्वर आता है;
वह शान्त नहीं रह सकता;
उसके समक्ष भस्मकारी अग्नि है
और उसके चारों ओर प्रचंड आंधी।
4 वह आकाश और पृथ्वी को बुलाता है
जिससे वह अपने निज लोगों का न्याय करे:
5 "मेरे भक्तों को मेरे निकट एकत्र करो;

* पाठान्तर, "व्यक्ति अपने भाई को छुड़ा नहीं सकता"। +मूल में, 'उनका अभ्यन्तर'। ** मूल में, 'और उनके अनुगामियों का'। ++ मूल में, 'सत्यनिष्ठ प्रातः उन पर शासन करेंगे'।

49 : 7 मत 16 : 26 **49 : 10** सभ 2 : 16 प्रव 11 : 19 **49 : 12** सभ 3 : 19 **49 :17** 1 तिम 6 : 7

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जिन्होंने बलि चढ़ाकर मुझसे विधान स्थापित
किया है।''
6 आकाश परमेश्वर की धार्मिकता को
घोषित करता है;
क्योंकि परमेश्वर स्वयं न्यायाधीश है।
सेलाह
7 ''ओ मेरे निज लोगो! सुनो, मैं तुमसे बात
करूंगा;
ओ इस्राएली प्रजा, मैं तेरे विरुद्ध साक्षी दूंगा।
मैं परमेश्वर, तेरा परमेश्वर हूँ।
8 मैं तेरी भिन्न-भिन्न बलि के लिए तेरी भर्त्सना
नहीं करता;
तेरी अग्निबलि तो मेरे समक्ष निरन्तर विद्यमान
है।
9 अब मैं तेरे घर से बैल,
और तेरी पशुशाला से बकरे
स्वीकार नहीं करूंगा।
10 क्योंकि वन का प्रत्येक प्राणी,
हजारों पर्वतों के पशु+ मेरे ही हैं।
11 आकाश** के समस्त पक्षियों को मैं जानता
हूँ;
भूमि का 'पशु धन' मेरा ही है।

12 ''यदि मैं भूखा होता तो तुझ से नहीं कहता;
क्योंकि संसार और उसकी परिपूर्णता मेरी ही
है।
13 क्या मैं बैल का मांस खाता हूँ,
और बकरे का रक्त पीता हूँ?
14 मुझे—अपने परमेश्वर को 'स्तुति बलि' चढ़ा;
और सर्वोच्च प्रभु के लिए अपने व्रत पूर्ण
कर।
15 संकटकाल में मुझे पुकार।
मैं तुझे मुक्त करूंगा, और तू मेरी महिमा
करेगा।''

16 पर परमेश्वर दुर्जन से यह कहता है :
''तुझे मेरी संविधि का पाठ करने
और अपने मुंह पर मेरा विधान लाने का
अधिकार नहीं।
17 तू अनुशासन से घृणा करता,
और मेरे वचनों को त्याग देता है।
18 यदि तू चोर को देखता है,
तो उसका साथी बन जाता है।
व्यभिचारियों के साथ तेरा संपर्क है;
19 तू ने अपना मुंह बुराई को सौंप दिया है;
तेरी जीभ छल की बातें गढ़ती है।
20 तू बैठकर अपने भाई-बहिन के विरुद्ध
बोलता है;
तू अपने सगे भाई-बहिन की निन्दा करता है।
21 ये काम तूने किए, पर मैं चुप रहा;
तूने सोचा कि मैं तेरे जैसा हूँ।
पर अब मैं तेरी भर्त्सना करता हूँ—
और तेरी आंखों के सामने
अभियोग सिद्ध करता हूँ।

22 ओ परमेश्वर को भूलने वालो!
इस बात को समझो—
ऐसा न हो कि
मैं तुम्हें सिंह के समान विदीर्ण करूं,
और तुम्हें मुक्त करने वाला कोई न हो।
23 जो मुझे 'स्तुति -बलि' चढ़ाता है,
वह मेरी महिमा करता है;
जो अपना आचरण* निर्दोष रखता है,
उसे मैं—परमेश्वर, अपने उद्धार के दर्शन
कराऊंगा।''

पाप-शुद्धि के लिए प्रार्थना

मुख्यवादक के लिए। दाऊद का भजन : जब नबी नातान दाऊद के पास आए, क्योंकि दाऊद ने परस्त्री बतशबा से व्यभिचार किया था।

51 हे परमेश्वर, तू करुणामय है;
मुझ पर कृपा कर।
मेरे अपराधों को मिटा दे,
क्योंकि तेरा अनुग्रह असीम है।
2 मेरे अधर्म से मुझे पूर्णत: धो,
मेरे पाप से मुझे शुद्ध कर।
3 मैं अपने अपराधों को जानता हूँ;
मेरा पाप निरन्तर मेरे समक्ष रहता है।
4 तेरे विरुद्ध, तेरे ही विरुद्ध मैंने पाप किया है।

+ अथवा, ''मेरे पर्वतों के हजारों पशु''। ** मूल में, 'पहाड़ों'। * मूल में, 'मार्ग'।
50 : 8 आमो 5 : 21 50 : 17 रोम 2 : 21-22 51 2 शम 12 51 : 2 यहेज 36 : 25; इब्र 9 : 14 51 : 4 रोम 3 : 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और वही किया जो तेरी दृष्टि में बुरा है।
इसलिए तू अपने निर्णय में निर्दोष,
और न्याय में निष्पक्ष है।
5 मैं अधर्म में उत्पन्न हुआ था;
और पाप में मेरी मां ने
मुझे गर्भ में धारण किया था।

6 तू अंत:करण की सच्चाई से प्रसन्न होता है;
अत: मेरे हृदय को ज्ञान की बातें सिखा।
7 जूफा की डाली से मुझे शुद्ध कर;
तब मैं पवित्र हो जाऊंगा।
मुझे धो तो मैं हिम से अधिक श्वेत बनूंगा।
8 मुझे हर्ष और आनन्द का सन्देश सुना
जिससे मेरी हड्डियां
जिन्हें तू ने चूर-चूर कर दिया है,
प्रफुल्लित हो सकें।
9 अपना मुख मेरे पापों की ओर से फेर ले;
तू मेरे समस्त अधर्म को मिटा दे।

10 हे परमेश्वर, मुझ में शुद्ध हृदय उत्पन्न कर।
तू मेरे भीतर नई और स्थिर आत्मा निर्मित
कर।
11 मुझे अपनी उपस्थिति से दूर न कर,
तू अपना पवित्र आत्मा मुझसे वापस न ले।
12 अपने उद्धार का हर्ष मुझे लौटा दे;
उदार आत्मा से मुझे सहारा दे।
13 तब मैं अपराधियों को तेरे मार्ग सिखाऊंगा,
और पापी तेरी ओर लौटेंगे।
14 हे परमेश्वर, मेरे उद्धार के परमेश्वर,
मुझे रक्तपात के दोष से * मुक्त कर,
तब मैं अपने मुंह से तेरी धार्मिकता का
जयजयकार करूंगा।

15 हे स्वामी, मेरे ओंठों को खोल;
तब मेरा मुंह तेरी स्तुति करेगा।
16 तू बलि से प्रसन्न नहीं होता;
अन्यथा मैं बलि चढ़ाता;
तू अग्निबलि की इच्छा नहीं करता।
17 विदीर्ण आत्मा की बलि परमेश्वर को
प्रिय है,
हे परमेश्वर, तू विदीर्ण और भग्न हृदय की
उपेक्षा नहीं करता।

18 कृपया तू सियोन की भलाई कर;
तू यरूशलेम नगर का परकोटा बना दे।
19 तब तू विधि-सम्मत बलिदानों से,
अग्निबलि और पूर्ण अग्निबलि से
प्रसन्न होगा।
तब लोग तेरी वेदी पर सांड़ों को चढ़ाएंगे।

दुर्जन का अहंकार निस्सार है

मुख्यवादक के लिए। दाऊद का मसकील। जब एदोम देश के दोएग ने शाऊल पर यह प्रकट किया और कहा ''दाऊद अहीमेलेक के घर में आया है।''

52 अरे अत्याचारी+, क्यों तू अपने कुकर्मों
पर अहंकार करता है?
परमेश्वर की करुणा सदा बनी रहती है।
2 सान चढ़ी छुरी के समान,
छल-कपट में निरन्तर कार्यरत
तेरी जीभ विनाश के षड्यन्त्र रचती है।
3 तुझे भलाई से अधिक बुराई,
सच बोलने की अपेक्षा झूठ प्रिय है।
सेलाह
4 अरी कपटी जीभ!
तू सब विनाशकारी बातों को प्यार करती है।

5 अरे अत्याचारी,
परमेश्वर तुझे सदा के लिए धूल में मिला
देगा,
वह तुझे पकड़ कर तेरे निवास-स्थान से
निकाल देगा;
वह तुझे जीव-लोक से उखाड़ देगा। सेलाह
6 धार्मिक यह देखकर भयभीत होंगे,
वे उसका उपहास करेंगे।
वे यह कहेंगे:
7 ''देखो, उस शक्तिमान को,
जिसने परमेश्वर को अपना गढ़ नहीं बनाया,
वरन् जिसने अपने धन-वैभव की प्रचुरता
पर भरोसा किया,

* अथवा, 'रक्तपातपूर्ण मृत्यु से'। + अथवा, ''शक्तिमान''।

51 : 12 रोम 8 : 15 **51 : 14** 2 शम 11 : 17; 12 : 9 **51 : 19** भज 4 : 5 **52** 1 शम 22 : 9-10 **52 : 1** 1 शम 21 : 7 **52 : 3** यिर 9 : 4-5

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और अपनी धन-सम्पत्ति को अपना गढ़
माना।''

8 पर मैं परमेश्वर के घर में हरे-भरे जैतून वृक्ष
के सदृश हूँ;
मैं परमेश्वर की करुणा पर सदा भरोसा
करता हूँ।
9 हे परमेश्वर, मैं सदा-सर्वदा तेरी स्तुति करता
रहूंगा;
क्योंकि तू ने यह कार्य किया है।
मैं तेरे नाम का यशोगान तेरे भक्तों के सम्मुख
करूंगा;
क्योंकि तेरा नाम उत्तम है।

मनुष्य की मूर्खता और दुष्टता

मुख्यवादक के लिए। महलत के अनुसार। दाऊद का
मसकील

53 मूर्ख अपने हृदय में यह कहते हैं:
''परमेश्वर है ही नहीं।''
वे भ्रष्ट हो गए हैं, वे अन्याय के घृणास्पद
कार्य करते हैं;
ऐसा कोई भी नहीं, जो भलाई करता है।

2 परमेश्वर स्वर्ग से मनुष्यों पर दृष्टिपात करता
है, यह देखने के लिए कि
क्या कोई ऐसा मनुष्य है
जो समझ से काम करता है,
जो परमेश्वर को खोजता है?

3 सब मनुष्य मार्ग से हट गए हैं;
सब एक-जैसे भ्रष्ट हो गए हैं;
ऐसा कोई भी नहीं जो भलाई करता है।
नहीं, एक भी नहीं।

4 क्या कुकर्मी नहीं समझते,
मेरे लोगों का खून चूसने वाले कुकर्मी,*
क्या वे बिल्कुल नासमझ हैं?
वे मुझ-परमेश्वर की आराधना नहीं करते।

5 जहां आतंक था ही नहीं
वहां वे अत्यन्त आतंकित हो उठे!
परमेश्वर ने उनकी अस्थियों को चूर-चूर
कर दिया,
उन्होंने तेरे विरुद्ध घेरा डाला था।
तू ने उन्हें लज्जित किया+;
क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें त्याग दिया था।

6 भला हो कि सियोन से इस्राएल का उद्धार
प्रकट हो!
जब परमेश्वर अपने निज लोगों को
समृद्धि पुनः प्रदान करेगा
तब याकूब आनन्द मनाएगा और इस्राएल
हर्षित होगा।

शत्रुओं से रक्षा के लिए प्रार्थना

मुख्यवादक के लिए। तांतयुक्त वाद्य-यन्त्रों के साथ। दाऊद
का मसकील। जब जीपियों ने आकर शाऊल से कहा,
''दाऊद हमारे पास छिपा है।''

54 हे परमेश्वर, अपने नाम के द्वारा मुझे
बचा;
तू अपने बल से मुझे निर्दोष सिद्ध कर।
2 हे परमेश्वर, मेरी प्रार्थना सुन;
मेरे मुंह के शब्दों पर ध्यान दे।
3 विदेशी मेरे विरुद्ध खड़े हुए हैं;
आतंकवादी मेरे प्राण के पीछे पड़े हैं;
वे परमेश्वर को अपने सम्मुख नहीं रखते हैं।
सेलाह

4 देखो, परमेश्वर मेरा सहायक है;
स्वामी मेरे प्राण का आधार है।
5 वह मेरे शत्रुओं का प्रतिकार बुराई से करेगा;
प्रभु, तू अपनी सच्चाई से उनको नष्ट कर
दे!
6 मैं तुझ को स्वेच्छा से बलि चढ़ाऊंगा;
प्रभु, मैं तेरे नाम की सराहना करूंगा—
क्योंकि वह उत्तम है।
7 तू ने प्रत्येक संकट से मुझे मुक्त किया,
और मैं ने अपने शत्रुओं पर विजयपूर्ण
दृष्टि डाली।

---

* अथवा, ''जो मेरे लोगों को खा जाते हैं जैसे वे रोटी खाते हैं''। + पाठान्तर, ''वे अधर्म करने पर तुले हुए थे; पर वे लज्जित ही हुए''।

52 : 8 भज 92 : 13; यिर 11 : 16 **53 : 1-6** भज 14 : 1-7 **53: 1-3** रोम 3 : 10-12 **54** 1 शम 26 : 1 **54 : 3** 1 शम 23 : 19

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

विश्वासघातियों से आतंकित व्यक्ति की प्रार्थना

मुख्यवादक के लिए। तांतयुक्त वाद्य-यन्त्रों के साथ। दाऊद का मसकील।

55 हे परमेश्वर, मेरी प्रार्थना पर कान दे;
मेरी विनती को अस्वीकार न कर।
2 मेरी ओर ध्यान दे, मुझे उत्तर दे;
मैं अपनी विपत्तियों से व्यथित हो विलाप करता हूँ।
3 शत्रु की धमकी और दुष्ट के दमन के कारण
मैं व्याकुल रहता हूँ।
वे मुझ पर विपत्ति ढाहते हैं,
और क्रोध में मेरे प्रति शत्रुभाव रखते हैं।

4 मेरे भीतर मेरा हृदय व्यथित है;
मृत्यु का आतंक मुझ पर छा गया है।
5 कंपन और भय मुझ में समा गये हैं,
और आतंक ने मुझे वश में कर लिया है।
6 मैंने कहा, "भला होता कि मेरे कपोत-सदृश पंख होते;
और मैं उड़ जाता और शान्ति पाता।
7 अहा! मैं दूर उड़ जाता
और निर्जन प्रदेश में निवास करता।
सेलाह
8 आंधी और अंधड़ से बचने के लिए
मैं सुरक्षित स्थान में पहुंचने की शीघ्रता करता।"
9 स्वामी, उनके प्रयत्नों को विफल कर;
उनकी जीभ को काट दे;
मैंने नगर में हिंसा और कलह देखे हैं।
10 वे दिन-रात उसके परकोटे पर चढ़कर परिक्रमा करते हैं;
उसके मध्य अनिष्ट और कष्ट हैं;
11 उसके बीच विनाश है;
अत्याचार और छल-कपट
चौक से दूर नहीं होते।

12 शत्रु ने मेरी निन्दा नहीं की है;
अन्यथा मैं सह जाता;
और न मुझ से घृणा करनेवाले ने
मेरे विरुद्ध शक्ति-प्रदर्शन किया;
अन्यथा मैं उससे छिप जाता।
13 किन्तु वह तो तू था—
मेरा समकक्ष, मेरा साथी, मेरा परम मित्र!
14 हम परस्पर मधुर वार्तालाप करते थे;
हम आराधकों के झुंड में
परमेश्वर के घर जाते थे।
15 विनाश उन पर छा जाए;
वे जीवित ही मृतक-लोक को चले जाएं;
क्योंकि बुराई उनके घर में, उनके मध्य में है।

16 मैं परमेश्वर को पुकारता हूँ;
प्रभु ही मुझे बचाएगा।
17 मैं संध्या, प्रातः और दोपहर में
दु:ख के उद्‌गार प्रकट करता, और रोता हूँ;
वह मेरी आवाज सुनेगा।
18 युद्ध में प्रभु मेरी रक्षा करेगा;
जब मेरे विरुद्ध अनेक शत्रु खड़े होंगे,
वह मेरे प्राणों का उद्धार करेगा।
19 परमेश्वर सनातन काल से सिंहासन पर विराजमान है,
मेरी प्रार्थना सुनकर वह उन्हें उत्तर देगा।
सेलाह
क्योंकि उन लोगों का न हृदय-परिवर्तन
होता है और न वे परमेश्वर से डरते हैं।

20 मेरे साथी नें अपने ही मित्रों के विरुद्ध हाथ उठाया;
उसने अपने समझौते पर आघात किया।
21 उसके मुंह की बातें मक्खन से अधिक चिकनी थीं,
पर उसके हृदय में द्वेष था।
उसके शब्द तेल की अपेक्षा कोमल थे;
फिर भी वे नंगी तलवार थे।

22 अपना भार प्रभु पर डाल दो;
वह तुम्हें सहारा देगा;
वह धार्मिक मनुष्य को
कभी विचलित न होने देगा!
23 परमेश्वर, तू उन्हें विनाश के गर्त में डालेगा;
रक्त-पिपासु और कपटी मनुष्य
आधी आयु भी व्यतीत न कर पाएंगे।
पर मैं तुझ पर ही भरोसा करूंगा।

---

55 : 7 यिर 9 : 2 **55 : 15** नीति 1 : 12 **55 : 22** 1 पत 5 : 7

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अखण्ड विश्वास की प्रार्थना

मुख्यवाददक के लिए। योतन-एलेम-रहोकीम* के अनुसार। दाऊद का मिकताम। यह उस समय का है, जब पलिश्तियों ने उसे गत नगर में पकड़ लिया था।

56 हे परमेश्वर, मुझ पर कृपा कर,
क्योंकि मनुष्य मुझे कुचलते हैं;
सैनिक दिन भर मुझे सताते हैं;
2 मेरे शत्रु दिन भर मुझे कुचलते हैं;
घमण्ड से भर कर+ मुझ से लड़ने वाले
बहुत हैं।
3 जिस समय मैं भयभीत होता हूँ,
तुझ पर ही मैं भरोसा करता हूं।
4 परमेश्वर पर, जिसके वचन की मैं प्रशंसा
करता हूं,
परमेश्वर पर मैं भरोसा करता हूं,
मैं नहीं डरूंगा;
मनुष्य मेरा क्या कर सकता है?

5 शत्रु निरन्तर मेरे कार्यों में अड़ंगा लगाते हैं** ;
उनके समस्त विचार मेरे विरुद्ध बुराई के
लिए हैं।
6 वे परस्पर एकत्र हो घात लगाते हैं,
वे मेरे पग-पग के प्रति सचेत रहते हैं, मानो
वे मेरे प्राण के लिए ठहरे हैं।
7 क्या वे बुराई करके भी बच निकलेंगे?
हे परमेश्वर, क्रोध से उनको नीचे गिरा दे।

8 तूने मेरे मारे-मारे फिरने का विवरण रखा है;
हे परमेश्वर, मेरे आंसुओं को अपने पात्र में
रखना।
निस्सन्देह वे तेरी पुस्तक में लिखे हुए हैं।
9 जिस दिन मैं तुझ को पुकारूंगा,
मेरे शत्रु तत्काल पीठ दिखाएंगे;
मैं यह जानता हूँ कि परमेश्वर मेरे पक्ष में है।
10 परमेश्वर पर, जिसके वचन की मैं प्रशंसा
करता हूँ;
प्रभु पर, जिसके वचन की मैं प्रशंसा करता
हूँ;
11 परमेश्वर पर मैं भरोसा करता हूँ;
मैं नहीं डरूंगा।
मनुष्य मेरा क्या कर सकता है?

12 हे परमेश्वर, तेरे प्रति अपने व्रतों का दायित्व
मुझ पर है;
मैं तुझ को स्तुति बलि चढ़ाऊंगा।
13 तूने मृत्यु से मेरे प्राण को मुक्त किया है।
निस्सन्देह तू ने मेरे पैरों को फिसलने से
बचाया है,
जिससे मैं जीवन-ज्योति में तुझ-परमेश्वर
के सम्मुख चलूं।

शत्रुओं से रक्षा के लिए प्रार्थना

मुख्यवादक के लिए: "नष्ट मत करो" के अनुसार। दाऊद का मिकताम जब दाऊद शाऊल के पास से गुफा में भागा था।

57 हे परमेश्वर, मुझ पर कृपा कर;
मुझ पर कृपा कर;
क्योंकि मैं तेरी ही शरण में आया हूँ।
जब तक विनाश की आंधी चली न जाए,
मैं तेरे पंखों की छाया में रहूंगा।
2 मैं सर्वोच्च परमेश्वर को पुकारता हूँ;
परमेश्वर को, जो मेरे लिए सब कुछ
पूर्ण करता है।
3 जब मुझे कुचलनेवाला मेरी निन्दा करता होगा
वह स्वर्ग से मुझे बचा लेगा; सेलाह
परमेश्वर अपनी करुणा और सत्य भेजेगा।

4 मेरा प्राण सिंहों के मध्य है;
मैं धधकती ज्वाला में सोता हूँ;
ऐसे मनुष्यों के बीच जिन के दांत भाले और
तीर हैं,
जिनकी जीभ दुधारी तलवार है।
5 हे परमेश्वर, स्वर्ग पर अपनी महानता प्रकट
कर,
समस्त पृथ्वी पर तेरी महिमा व्याप्त हो।

6 शत्रुओं ने मेरे पैरों के लिए जाल फैलाया है;
मैं झुक गया हूँ।
उन्होंने मेरे सम्मुख एक गड्ढा खोदा है;
पर वे स्वयं उसमें गिर पड़े हैं। सेलाह

* अर्थात् 'दूरस्थ बलूत वृक्षों के कबूतर' + अथवा, 'हे सर्वोच्च परमेश्वर'। ** अथवा, 'मेरे वचनों का उलटा अर्थ लगाते हैं'।

56 1 शम 21 : 13-15 56 : 11 इब्र 13 : 6 56 : 13 अय्य 33 : 30; भज 116 : 8 57 1 शम 22 : 1; 24 : 3

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

7हे परमेश्वर, मेरा हृदय तुझ में लीन है। लीन
है मेरा हृदय![+]
मैं गीत गाऊंगा, राग बजाऊंगा।
8जाग, ओ मेरे प्राण!
जागो, ओ वीणा और सितार!
मैं प्रभात को जगा दूंगा।
9ओ स्वामी, मैं देश-देश में तेरी सराहना करूँगा;
राष्ट्रों के मध्य मैं तेरी स्तुति गाऊंगा।
10तेरी करुणा स्वर्ग तक महान है;
और तेरा सत्य मेघों तक।

11 हे परमेश्वर, स्वर्ग पर अपनी महानता प्रकट
कर;
समस्त पृथ्वी पर तेरी महिमा व्याप्त हो!

न्याय-दण्ड के लिए प्रार्थना

मुख्यवादक के लिए। "नष्ट मत करो" के अनुसार। दाऊद का मिकताम।

58 ओ प्रभुत्व सम्पन्न मनुष्यो!
क्या तुम निश्चय ही सच्चाई से निर्णय
करते हो?
ओ अधिकार से मंडित लोगो!
क्या तुम सत्यनिष्ठा से न्याय करते हो?
2नहीं, तुम हृदय में अनिष्ट की योजनाएँ बनाते
हो;
देश में अपने हाथों से हिंसात्मक कार्यों को
तौलते हो!

3 मां के पेट से ही दुर्जन भटक जाते हैं;
झूठे व्यक्ति जन्म से ही पथ-भ्रष्ट होते हैं।
4 उनमें सर्प के विष जैसा विष है;
वे बहरे नाग के समान हैं
जो अपने कान बंद कर लेता है,
5 जिससे संपेरा का स्वर,
निपुण जादू-टोना करनेवाले का मन्त्र वह
सुन न सके!

6 हे परमेश्वर, उनके दांत उनके मुंह ही में तोड़
दे।
हे प्रभु, तरुण सिंहों के दन्तमूल उखाड़ ले।
7वे बहते पानी के समान विलीन हो जाएं;
वे पगडण्डी की घास के सदृश
दब कर सूख जाएं।[++]
8वे घोंघे बन जाएं,
जो रेंगते समय नष्ट हो जाता है;
वे स्त्री के गर्भपात के समान सूरज का प्रकास
न देख सकें।
9इसके पूर्व कि
कटीली झाड़ी में कांट उगें,
परमेश्वर बवंडर में
हरी अथवा सूखी झाड़ी को
उड़ा ले जाएगा*

10जब धार्मिक व्यक्ति यह प्रतिशोध देखेगा
तब वह प्रसन्न होगा;
वह दुर्जन के रक्त** में अपने पैर धोएगा।
11मनुष्य यह कहेंगे,
"निश्चय, धार्मिकों के लिए पुरस्कार है,
निस्सन्देह, परमेश्वर है, जो पृथ्वी पर
न्याय करता है।"

शत्रुओं से मुक्त होने के लिए प्रार्थना

मुख्यवादक के लिए। "नष्ट मत करो" के अनुसार। दाऊद का मिकताम। जब शाऊल ने दूतों को भेजा कि वे दाऊद का वध करने के लिए उसके घर पर पहरा दें।

59 हे मेरे परमेश्वर,
मेरे शत्रुओं से मुझे मुक्त कर;
मेरे विरुद्ध खड़े होने वालों से मेरी रक्षा कर।
2 तू कुकर्मियों से मुझे मुक्त कर;
तू रक्त-पिपासुओं से मेरी रक्षा कर।
3 वे मेरे प्राण के लिए घात लगाते हैं;
शक्तिवान मेरे विरुद्ध एकत्र होते हैं।
यद्यपि, हे प्रभु, मेरा कोई अपराध नहीं है।
मैं ने कोई पाप नहीं किया है।
4 मेरा कोई दोष नहीं, तोभी वे धावा करते हैं;
वे लड़ने को तैयार रहते हैं।
मेरी पुकार पर जाग; आ, और यह देख।

+ अथवा, 'मेरा मन स्थिर है, स्थिर है मेरा मन'। ++ मूल में 'वे शक्तिहीनों कि सदृश तीर चढ़ाएं' * अथवा, "इसके पूर्व कि तुम्हारी हंडियों में कांटों की आंच लगे, कच्चे और जलते हुए, दोनों को परमेश्वर बवंडर में उड़ा ले जाएगा।"
** अथवा, 'दुर्जन के रक्तपात से'

57 : 7-11 भज 108 : 1-5 **58 : 4** व्य 32 : 33; भज 140 : 3 **58 : 8** अय्य 3 : 16 **59 : 3** 1 शम 19 : 11

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

5 हे स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु परमेश्वर!
तू ही इस्राएल का परमेश्वर है।
समस्त राष्ट्रों को दंड देने के लिए जाग।
किसी भी विश्वासघाती कुकर्मी पर दया मत करना। सेलाह
6 वे संध्या को लौटते और कुत्ते के समान गुर्राते हैं;
वे नगर की परिक्रमा करते हैं।
7 देख, वे अपने मुंह से डकार रहे हैं।
उनके मुंह में तलवारें हैं;
वे यह कहते हैं, "कौन सुनता है?"
8 किन्तु, प्रभु, तू उन पर हंसता है;
तू समस्त राष्ट्रों का उपहास करता है।
9 हे मेरे बल, मैं तेरी स्तुति गाऊँगा;*
परमेश्वर, तू ही मेरा सुदृढ़ गढ़ है।

10 मेरा परमेश्वर अपनी करुणा के साथ मुझसे मिलेगा,
परमेश्वर की कृपा से मैं अपने शत्रुओं पर विजयपूर्ण दृष्टिपात करूंगा।
11 क्या तू उनका वध नहीं करेगा+ ?
ऐसा न हो कि मेरी प्रजा भूल जाए;
हे स्वामी, हमारी ढाल!
उन्हें अपनी सेना द्वारा छिन्न-भिन्न कर दे,
उनका पतन कर दे।
12 उनके मुंह के पाप,
उनके ओंठों के शब्दों के कारण
वे स्वयं अपने अहंकार में फंस जाएं।
शाप देने और झूठ बोलने के कारण
13 उन्हें क्रोध से भस्म कर दे;
तू उन्हें भस्म कर कि वे शेष न रहें;
जिससे मनुष्य जानें कि परमेश्वर पृथ्वी के सीमान्त तक
इस्राएली कौम पर राज्य करता है। सेलाह

14 वे संध्या को लौटते
और कुत्ते के समान गुर्राते हैं;
वे नगर की परिक्रमा करते हैं।
15 वे भोजन के लिए भटकते-फिरते हैं;
यदि वे तृप्त न हों तो गुर्राते हैं।

16 मैं तेरे सामर्थ्य के गीत गाऊंगा;
प्रात: मैं तेरी करुणा का जयजयकार करूंगा,
क्योंकि तू मेरे लिए सुदृढ़ गढ़ था;
मेरे संकट के लिए तू शरण-स्थल था।
17 हे मेरे बल, मैं तेरी स्तुति गाऊंगा;
क्योंकि, परमेश्वर, तू मेरा सुदृढ़ गढ़ है;
परमेश्वर, तू मुझ पर करुणा करता है।

शत्रु के विरुद्ध सहायता के लिए प्रार्थना

मुख्यवादक के लिए। शूशन-एदूत के अनुसार। दाऊद का मिकताम। शिक्षा के लिए : जब दाऊद अराम-नहरयिम और अराम-सोबा देश से संघर्ष कर रहा था; और जब योआब ने लौटकर लवण घाटी में बारह हजार एदोमियों को परास्त किया था।

60 हे परमेश्वर, तू ने हमें त्याग दिया;
तू ने हमें छिन्न-भिन्न कर दिया;
तू क्रोधित था;
अब हमें पुन: स्थापित कर।
2 तू ने धरती को कंपा दिया;
तू ने उसे फाड़ दिया;
अब उसकी दरारों को भर दे;
क्योंकि वह डगमगा रही है।
3 तू ने अपने निज लोगों को दुर्दिन दिखाए;
तूने हमें लड़खड़ाने वाली मदिरा पिलाई।
4 तू ने अपने भक्तों को
पलायन सूचक झण्डा दिया है
कि वे विनाश के पूर्व भाग जाएं।** सेलाह
5 तू अपने भुजबल से हमें बचा;
हमें उत्तर दे,
जिससे तेरे प्रियजन मुक्त किए जाएँ।

6 परमेश्वर ने अपनी पवित्रता में यह कहा है,
"मैं प्रसन्न होकर शकेम को विभाजित करूंगा;
और सूक्कोत घाटी को नाप दूंगा;
7 गिलआद प्रदेश मेरा है;
और मनश्शे प्रदेश भी मेरा है;

* मूल में, 'तेरी प्रतीक्षा करूंगा'। + अथवा, 'उनका वध न कर।' ** मूल में, "तूने अपने भक्तों को झण्डा दिया, कि वह सत्य के कारण फहराया जाए।"

60 2 शम 8 : 13; 1 इत 18 : 12 60 : 3 यश 51 : 17 60 : 5-12 भज 108 : 6-13 60 : 7 उत 49 : 10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

एफ्रइम प्रदेश मेरा शिरस्त्राण है;
यहूदा प्रदेश मेरा राजदण्ड है।
8 किन्तु मोआब राष्ट्र मेरी चिलमची है;
एदोम राष्ट्र मेरे पैर के नीचे होगा;
पलिश्ती राष्ट्र पर मैं जयघोष करूंगा।
9 कौन मुझे सुदृढ़ नगर में पहुंचाएगा?
कौन मुझे एदोम तक ले चलेगा?"

10 हे परमेश्वर, क्या तू ने हमारा परित्याग नहीं किया है?
हे परमेश्वर, तू हमारी सेना के साथ क्यों नहीं जाता?
11 शत्रु के विरुद्ध हमारी सहायता कर;
क्योंकि मनुष्य की सहायता व्यर्थ है।
12 परमेश्वर का साथ होने पर हम वीरता से लड़ेंगे;
क्योंकि परमेश्वर ही हमारे शत्रुओं को कुचलेगा।

परमेश्वर की रक्षा-शक्ति में पूर्ण विश्वास

मुख्यवादक के लिए। तांतयुक्त वाद्य-यंत्रों के साथ। दाऊद का।

61 हे परमेश्वर, मेरी पुकार सुन;
मेरी प्रार्थना पर ध्यान दे।
2 जब मेरा हृदय डूबने लगता है,
तब मैं पृथ्वी के सीमान्त से तुझ को पुकारता हूँ।
मुझे ऊपर उठा और चट्टान पर बैठा,+
जो मेरी अपेक्षा ऊंची है;
3 क्योंकि तू मेरा शरण-स्थल है;
शत्रु के समक्ष मेरा सुदृढ़ गढ़ है।
4 मैं युग-युगान्त तेरे शिविर में रहूँगा;
मैं तेरे पंखों के आश्रय में शरण लूंगा।
सेलाह

5 हे परमेश्वर,
तू ने मेरे व्रत स्वीकार किए हैं।
जो तेरे नाम के भक्त हैं,
तू ने उनकी मनोकामनाएँ पूर्ण की हैं।

6 राजा को दीर्घायु प्रदान कर।
उसकी आयु के वर्ष
कई पीढ़ियों के तुल्य हो जाएं।
7 वह परमेश्वर के सम्मुख
सदा सिंहासन पर रहे।
तू अपनी करुणा और सच्चाई को नियुक्त कर
कि वे उसकी रक्षा करें।

8 जैसे मैं प्रति दिन अपने व्रत पूर्ण करता हूँ,
वैसे मैं निरन्तर तेरे नाम की स्तुति गाता रहूँगा।

परमेश्वर ही एकमात्र आश्रय-स्थल है

मुख्यवादक के लिए। यदूतून के अनुसार। दाऊद का भजन।

62 मेरा प्राण शान्ति से परमेश्वर की प्रतीक्षा करता है,
मेरा उद्धार उसी से है।
2 वही मेरी चट्टान और मेरा उद्धार है,
वह मेरा गढ़ है, मैं अधिक नहीं हिलूंगा।

3 ओ शत्रुओ! तुम कब तक
एक ही मनुष्य पर आक्रमण करते रहोगे कि सब उसे मार डालो,
जैसे झुकी दीवार को, गिरती भीत को?
4 वे उसके उच्च स्थान से
उसे गिराने की सम्मति करते हैं।
वे झूठ से हर्षित होते हैं।
वे मुंह से तो आशिष देते हैं, पर हृदय से शाप।
सेलाह

5 मेरा प्राण शान्ति से परमेश्वर की प्रतीक्षा करता है,
क्योंकि मेरी आशा उसी से है।
6 वही मेरी चट्टान और मेरा उद्धार है;
वह मेरा गढ़ है, मैं नहीं हिलूगा।
7 परमेश्वर पर ही मेरा उद्धार और सम्मान आधारित है,
मेरी दृढ़ चट्टान और शरण-स्थल परमेश्वर ही है।
8 लोगो, हर समय परमेश्वर पर ही भरोसा करो।
उसके सम्मुख अपना हृदय उण्डेल दो,
परमेश्वर ही हमारे लिए शरण-स्थल है।
सेलाह

+ अथवा, 'मुझे उस चट्टान पर ले चल'।
60 : 8 2 शम 8 : 11-14 **62 : 5** मी 7 : 7 **62 : 7** यिर 3 : 23

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

9 अकुलीन मनुष्य श्वास मात्र है,
कुलीन केवल मिथ्या है;
तुला पर वे ऊपर उठ जाते हैं,
वे सब मिलकर सांस से भी हलके हैं।
10 अत्याचार पर भरोसा मत करो,
लूट-मार से न फूलो;
यदि धन-सम्पत्ति की वृद्धि होती है,
तो उस पर हृदय मत लगाओ।
11 परमेश्वर ने एक बार कहा,
मैं ने दो बार यह सुना
कि सामर्थ्य परमेश्वर का ही है।
12 और स्वामी, करुणा भी तेरी ही है;
क्योंकि तू मनुष्य को
उसके कामों के अनुसार फल देता है।

परमेश्वर प्यासी आत्मा को तृप्त करता है

दाऊद का भजन, जब वह यहूदा के निर्जन प्रदेश में था।

63 हे परमेश्वर, तू ही मेरा परमेश्वर है,
मैं प्रभात में तेरा दर्शन करने जाऊंगा।*
शुष्क और तप्त भूमि पर,
जहां जल नहीं है,
मेरा प्राण तेरे लिए प्यासा है,
मेरी देह तेरे लिए अभिलाषित है।
2 मैं पवित्र-स्थान में तुझ पर दृष्टि करता हूँ,
कि तेरे सामर्थ्य और तेरी महिमा के दर्शन
पाऊं।
3 तेरी करुणा जीवन की अपेक्षा श्रेष्ठ है;
मेरे ओंठ तेरी प्रशंसा करेंगे।
4 जब तक मैं जीवित हूँ,
तुझ को धन्य कहता रहूँगा;
मैं तेरी ओर अपने हाथ फैलाऊंगा,
और तेरे नाम से प्रार्थना करूंगा।
5 मेरा प्राण भव्य भोज के भोजन से तृप्त हुआ
है;
मैं आनन्दपूर्ण ओंठों से तेरी प्रशंसा करूंगा।
6 मैं अपनी शैया पर तुझ को स्मरण करता हूँ।
और रात्रि जागरण में तेरा ही ध्यान करता हूँ।
7 तू मेरा सहायक था;
मैं तेरे पंखों की छाया में जयजयकार करता
हूँ।
8 मेरा प्राण तुझ से जुड़ा है।
तेरा दाहिना हाथ मुझे संभालता है।
9 जो मेरे प्राण को नष्ट करने की खोज में हैं,
वे धरती के निचले स्थानों में चले जाएंगे।
10 वे तलवार की धार पर उछाले जाएंगे,
वे गीदड़ों का आहार बनेंगे।
11 किन्तु राजा परमेश्वर में हर्षित होगा;
परमेश्वर की शपथ लेने वाले
महिमा प्राप्त करेंगे;
पर झूठे लोगों का मुंह बन्द किया जाएगा।

गुप्त शत्रुओं से रक्षा के लिए प्रार्थना

मुख्यवादक के लिए । दाऊद का भजन।

64 हे परमेश्वर, संकट में** मेरी पुकार
सुन,
शत्रु के आतंक से मेरे जीवन की रक्षा कर।
2 दुर्जनों की गुप्त गोष्ठी से,
कुकर्मियों के षड्यन्त्र से मुझे छिपा।
3 उन्होंने अपनी जीभ को तलवार के समान
चोखा किया है,
उन्होंने कटु वचन-रूपी बाण संधान किया
है,
4 कि उसको गुप्त स्थानों में निर्दोष व्यक्ति पर
छोड़ें।
वे अचानक उस पर बाण छोड़कर डरते भी
नहीं हैं।
5 वे दुष्प्रयोजन को पूर्ण करने का साहस करते
हैं।
वे जाल बिछाने के लिए
छिपकर वार्तालाप करते हैं,
वे यह कहते हैं, "हमें कौन देख सकता है?"
6 उन्होंने दुष्कर्मों की योजना बनाई है,
उन्होंने सोच-समझ कर कुचक्र रचा है।
मनुष्य का अन्तःकरण और हृदय गहन-
गंभीर है!

---

* अथवा, 'मैं तुझे ढूंढ़ता रहता हूं' ** शब्दशः 'अभियोग', अथवा, 'शिकायत'

62 : 12 यिर 17 : 10; अय्य 34 : 11; मत 16 : 27; रोम 2 : 6 ; 2 तिम 4 : 14; प्रक 2 : 23; 22 : 12 **63 1** शम 23 : 14

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

7 परमेश्वर उन पर बाण छोड़ेगा;
वे अचानक घायल हो जाएंगे।
8 स्वयं उनकी जीभ उनका विनाश करेगी;
उनको देखने वाले सब लोग सिर हिलाएंगे।
9 तब सब मनुष्य भयभीत होंगे,
और परमेश्वर के कार्य को घोषित करेंगे,
और उनके व्यवहार को समझेंगे।
10 भक्त प्रभु में आनन्दित हों,
और उसकी शरण में आएं;
निष्कपट हृदय वाले सब मनुष्य प्रभु की महिमा करें।

परमेश्वर की उदारता के लिए स्तुति

मुख्यवादक के लिए। दाऊद का भजन। एक गीत।

65 हे परमेश्वर, तेरे लिए हम सियोन में समुचित* स्तुति करते हैं,
तेरे लिए हम अपने व्रत पूर्ण करते हैं।
2 हे प्रार्थना सुनने वाले!
तेरे ही पास समस्त प्राणी आएंगे+ ।
3 अधर्म के कार्य हम पर प्रबल हो गए हैं;
पर तू ही हमारे अपराधों को क्षमा करता है।
4 धन्य है वह, जिसको तू चुनता और अपने समीप आने देता है,
कि वह तेरे भवन के आंगनों में निवास करे।
हम तेरे गृह, तेरे पवित्र भवन के
उत्तम भोजन से तृप्त होंगे।

5 हे हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर,
तू हमें भयप्रद कार्यों द्वारा उत्तर देता है,
तू हमें विजय प्रदान करता है।
तू ही जगत के समस्त सीमान्तों,
और दूर सागरों के निवासियों की आशा है।
6 तूने ही अपने बाहुबल से
पर्वतों को स्थित किया है;
तू पराक्रम से विभूषित है।
7 तू सागरों के कोलाहल को,
उनकी लहरों की गर्जना को,
जातियों के उपद्रव को शान्त करता है।
8 इसलिए जगत-सीमान्तों के निवासी भी,
तेरे चिह्नों से भयभीत हो गए।
तू उदयाचल और अस्ताचल के देशों से जयजयकार कराता है।

9 तूने भूमि की सुधि ली और उसे सींचा है;
तू उसे बहुत उपजाऊ बनाता है।
तेरी नहर जल से भरी है;
तू मनुष्यों के लिए अनाज तैयार करता है;
क्योंकि इसी के लिए तू ने उसे तैयार किया है।
10 तू उसकी नालियों को जल से परिपूर्ण रखता है,
उसकी कूटक को समतल करता है,
उसे बौछारों से नरम बनाता है,
और उसके अंकुरों को बढ़ाता है।
11 तू अपने मंगलमय वरदानों से वर्ष को मुकुट पहिनाता है,
तेरे रथ-मार्गों के किनारे खेत लहलहाते हैं।
12 निर्जन प्रदेश में हरियाली फूटती है।
पहाड़ियाँ हर्ष से विभूषित हैं।
13 चराइयां भेड़-बकरियों से मानो सजी हुई हैं।
घाटियां अनाज से आच्छादित हैं।
वे मिलकर जयजयकार करतीं,
और गाती हैं।

परमेश्वर के महान कार्यों के लिए स्तुति

मुख्यवादक के लिए। एक गीत। भजन।

66 हे सब देशो!
परमेश्वर का जय-जयकार करो,
2 उसके नाम पर महिमा का गान करो,
उसके यशोगान को महिमापूर्ण बनाओ।
3 परमेश्वर से यह कहो, "तेरे कार्य कितने भयप्रद हैं।
तेरे असीम बल के कारण
तेरे शत्रु तेरे सन्मुख घुटने टेकते हैं।
4 समस्त देश तेरी आराधना करते हैं;
वे तेरी स्तुति गाते,
तेरे नाम की स्तुति गाते हैं।" सेलाह
5 आओ और परमेश्वर के कार्य देखो;

---

* अथवा, 'मौन, शान्तिमय'। + अथवा, 'अपने पापों का अंगीकार ले आएंगे'

65 : 2 यश 66 : 23 **65 : 7** भज 107 : 29; मत 8 : 26; यश 17 : 12 **65 : 9** लेव 26 : 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वह मनुष्यों के प्रति व्यवहार में भयप्रद है।
6 उसने सागर को सूखी भूमि में बदल दिया।
लोगों ने पैदल ही नदी पार की थी।
वहां हम प्रभु में हर्षित हुए थे।
7 वह अपनी शक्ति से सदा शासन करता है।
उसकी आंखें राष्ट्रों का अवलोकन करती हैं;
अत: विद्रोही गर्व से न फूलें। सेलाह

8 हे जातियो! हमारे परमेश्वर को धन्य कहो;
उसकी स्तुति के स्वर को प्रसारित करो।
9 उसने हमारे प्राणों को जीवित रखा,
और हमारे पैरों को फिसलने नहीं दिया।

10 परमेश्वर, तू ने हमें परखा।
जैसे चांदी शुद्ध की जाती है,
वैसे तू ने हमें शुद्ध किया।
11 तू ने हमें जाल में फंसाया,
हमारी कमर पर दुख का भार रखा।
12 तू ने हमारे सिर को घुड़सवारों से कुचलवाया।
हम अग्नि और जल के मध्य से गुजरे,
तो भी तू ने हमें मुक्त स्थान में पहुंचाया।
13 मैं तेरे भवन में अग्निबलि के साथ प्रवेश करूंगा;
मैं तुझ को अपनी मन्नतें चढ़ाऊंगा।
14 जब मैं संकट में था
तब उन मन्नतों को मैंने अपने ओंठों से उच्चारा था;
उनको अपने मुंह से स्वीकार किया था।
15 मेढ़ों की चर्बी के सुगंधित धुएं सहित,
मैं तुझ को मोटे पशुओं की अग्नि-बलि चढ़ाऊंगा;
बकरों के साथ मैं तुझको बैल अर्पित करूंगा।
सेलाह।

16 ओ परमेश्वर से डरने वालो!
आओ और सुनो;
मैं तुम्हें बताऊंगा कि परमेश्वर ने मेरे लिए क्या किया है।
17 मैं ने अपने मुंह से उसे पुकारा,
और मेरी जीभ ने उसका यशोगान किया।
18 यदि मैं अपने हृदय में अनिष्ट सोचता,
तो स्वामी नहीं सुनता।
19 किन्तु निस्संदेह परमेश्वर ने सुना,
उसने मेरी प्रार्थना की आवाज पर ध्यान दिया।
20 धन्य है परमेश्वर!
उसने मेरी प्रार्थना की उपेक्षा न की,
और न अपनी करुणा मुझ से पृथक की।

विश्व के राष्ट्र परमेश्वर का जयजयकार करते हैं

मुख्यवादक के लिए। तांतयुक्त वाद्य-यन्त्रों के साथ भजन। एक गीत।

67 हे परमेश्वर, हम पर कृपा कर और हमें आशिष दे।
तू अपना मुख हम पर प्रकाशित कर, सेलाह
2 जिससे धरती पर तेरा मार्ग,
और समस्त राष्ट्रों में तेरा उद्धार
समझा जा सके।
3 हे परमेश्वर, लोग तेरी सराहना करें;
सब जातियाँ तेरी सरहाना करें।
4 जातियां आनन्दित हो जयजयकार करें;
क्योंकि तू निष्पक्षता से लोगों का न्याय,
और पृथ्वी पर जातियों का मार्ग-दर्शन करता है। सेलाह
5 हे परमेश्वर, लोग तेरी सराहना करें;
सब जातियां तेरी सराहना करें।

6 धरती ने अपनी उपज प्रदान की है,
परमेश्वर, हमारा परमेश्वर
हमें आशिष देता है।

7 परमेश्वर हमें आशिष देता रहे;
संसार की समस्त जातियां
उसकी भक्ति करें।

परमेश्वर के साथ संस्थापित विधान के लिए इस्राएली प्रजा का स्तुतिगान

मुख्यवादक के लिए। दाऊद का। एक भजन। गीत।

68 परमेश्वर उठता है;
उसके शत्रु बिखर जाएँगे;
जो उससे बैर करते हैं,
वे उसके सम्मुख से भाग जाएंगे।

---

66 : 6 यहो 3 : 14-17; नि 14 : 21 67 : 1 गण 6 : 25-26 67: 7 लेव 26 : 4; भज 85 : 12 68 : 1 गण 10 : 35

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

2 जैसे धुआं उड़ाया जाता है,
वैसे ही तू उन्हें उड़ा दे;
जैसे मोम आग के सामने पिघलती है,
वैसे ही दुर्जन परमेश्वर के समक्ष
नष्ट हो जाएंगे।
3 किन्तु धार्मिक हर्षित होंगे,
वे परमेश्वर के समक्ष प्रफुल्लित होंगे,
वे आनन्द में फूले न समाएँगे।

4 परमेश्वर के लिये गीत गाओ,
उसके नाम की स्तुति गाओ।
उसका गुणगान करो,
वह मेघों पर सवार है।*
उसका नाम प्रभु है,
उसके सम्मुख उल्लसित हो।

5 परमेश्वर अपने पवित्र निवास स्थान में है;
वह अनाथ बच्चे का पिता,
और विधवाओं का रक्षक है।
6 परमेश्वर बेघर को घर में बसाता है,
वह बन्दियों को मुक्त कर उन्हें प्रसन्न करता है,
किन्तु उससे विद्रोह करने वाले उजाड़ भूमि पर बसते हैं।

7 हे परमेश्वर, जब तू अपनी प्रजा के आगे गया था,
जब तू निर्जन प्रदेश पार करता था, सेलाह
8 तब परमेश्वर, तेरी उपस्थिति से
भूमि कांपने लगी
और आकाश बरसने लगा था।
यह सीनय पर्वत भी,
परमेश्वर, इस्राएल के परमेश्वर की उपस्थिति से थर्राने लगा था।
9 परमेश्वर, तू ने मूसलाधार वर्षा की थी।
जब तेरी मीरास** निराश हुई थी,
तब तू ने ही उसे विश्वास में स्थिर किया था।
10 तेरा रेवड़ देश में बस गया;
हे परमेश्वर, तू ने अपनी भलाई के कारण,
पीड़ित प्रजा की व्यवस्था की।

11 स्वामी आज्ञा देता है;
शुभ संदेश सुनानेवाली महिलाओं का
महान दल यह घोषित करता है:
12 "सेनाओं के राजा भाग रहे हैं,
वे भाग रहे हैं।
घर पर रहने वाली स्त्रियाँ लूट को बाँटती हैं,
13 उन्हें चांदी के कबूतर के पंख,
और सोने के पैर मिले।
ओ पुरुषो,
क्या तुम भेड़शालाओं में
दुबक कर बैठे रहोगे?"

14 जब सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने
राजाओं को वहां छिन्न-भिन्न कर दिया,
तब ऐसा लगा मानो सलमोन पर्वत पर हिमपात हो रहा था।

15 ओ विशाल पर्वत, बाशान पर्वत,
ओ शिखरोंवाले पर्वत, बाशान पर्वत!
16 ओ शिखरोंवाले पर्वत,
ईर्ष्या से उस पर्वत को क्यों देखते हो,
जिस पर बसने की परमेश्वर ने इच्छा की है?
निस्सन्देह प्रभु वहां युग-युगान्त निवास करेगा।

17 परमेश्वर के रथ हजारों हैं,
हजारों-हजार है;
स्वामी सीनय पर्वत से पवित्र स्थान में आया।+
18 वह* ऊंचे स्थान पर चढ़ गया;
और बन्दियों को पकड़कर ले गया;
उसने लोगों से, विद्रोहियों से भी,
उपहार लिया।
प्रभु परमेश्वर वहां निवास करेगा।

19 धन्य है स्वामी!

* अथवा, "उसका मार्ग प्रशस्त करो, जिसकी सवारी निर्जन प्रदेश से जानेवाली है।" ** अथवा, "दाय, उत्तराधिकारी"
+ पाठांतर, "स्वामी उनके साथ है, सीनय पर्वत पवित्र स्थान में है।" * मूल में "तू"।

68 : 4 यश 57 : 14 68 : 8 नि 19 : 18 68 : 13 शास 5 : 16 68 : 17 2 रा 6 : 17 68 : 18 इफ 4 : 8
68 : 19 यश 46 : 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वह प्रति दिन हमारा भार वहन करता है;
परमेश्वर ही हमारा उद्धार है। सेलाह
20 हमारा परमेश्वर
मुक्ति प्रदान करनेवाला परमेश्वर है;
प्रभु-स्वामी के पास ही मृत्यु से मुक्ति है।

21 निस्सन्देह परमेश्वर
अपने शत्रुओं के सिरों को,
उस व्यक्ति की बालों-भरी खोपड़ी को
कुचल देगा,
जो अपने अपराधों-भरे मार्ग पर चलता है।
22 स्वामी ने कहा, "मैं उन्हें बाशान से
ले आऊंगा,
मैं उन्हें सागर की गहराइयों से
निकाल लाऊँगा,
23 जिससे तू रक्तपात के कारण उन्हें पैरों से
कुचल दे,**
जिससे तेरे कुत्तों की जीभ बैरियों से
अपना हिस्सा पा सके।"
24 हे परमेश्वर, तेरी शोभा-यात्राएँ
दिखाई देती हैं;
मेरे परमेश्वर, मेरे राजा की शोभा-यात्राएँ
पवित्र स्थान में दिखाई देती हैं:
25 गायक आगे हैं, वादक पीछे,
उनके मध्य कन्याएं डफ बजा रही हैं।
26 इस्राएल के सम्मेलन में***
अपनी-अपनी मंडली में
वे प्रभु परमेश्वर को धन्य कहते हैं।
27 वहां सब से छोटा कुल बिन्यामिन उनकी
अगुआई कर रहा है,
उनके समूह में यहूदा के शासक,
जबूलून और नफ्ताली कुल के शासक हैं।

28 हे परमेश्वर, अपने सामर्थ्य का आह्वान कर,
तू अपने सामर्थ्य को प्रदर्शित कर;
परमेश्वर, तू ने हमारे लिए
महाकार्य किया है।
29 तेरे यरूशलेम के मन्दिर के कारण,
राजा तेरे लिए भेंट ले जाएंगे।
30 नरकट में रहने वाले हिंस्र पशु को,
देश-देश के बछड़ों के साथ
सांड़ों के झुण्ड को भी डांट।
वे चांदी के कोष के साथ
आत्म-समर्पण कर रहे हैं;
जो युद्ध से प्रसन्न होते हैं
प्रभु ने उनको छिन्न-भिन्न कर दिया।
31 सामन्त मिस्र देश से आएंगे,
कूश देश के लोग परमेश्वर की ओर
अविलम्ब हाथ जोड़ेंगे।

32 ओ पृथ्वी के सब देशो! परमेश्वर के लिए
गीत गाओ;
स्वामी की स्तुति करो ! सेलाह
33 वह स्वर्ग पर, सनातन के स्वर्ग पर
सवारी करता है,
देखो, वह अपनी वाणी, शक्तिशाली वाणी
सुनाता है।
34 परमेश्वर के सामर्थ्य के लिए,
उसकी स्तुति करो!
उसका प्रताप इस्राएल पर छाया है;
उसकी शक्ति नभ-मण्डल में है।
35 परमेश्वर अपने पवित्र स्थान में भयप्रद है;
इस्राएल का परमेश्वर ही अपनी प्रजा को
शक्ति और सामर्थ्य प्रदान करता है;
परमेश्वर धन्य है!

संकट से मुक्ति की प्रार्थना

मुख्यवादक के लिए। शोशनीम के अनुसार। दाऊद का।

69 हे परमेश्वर, मुझे बचा;
क्योंकि जल प्रवाह मेरे गले तक
बढ़ आया है।
2 मैं कीच-दलदल में धंस गया हूँ;
वहाँ पैर रखने को आधार नहीं है,
मैं अथाह जल में पहुंच गया हूँ,
और जल प्रवाह मुझे डुबा रहा है।
3 मैं पुकारते पुकारते थक गया;
मेरा गला सूख गया ।
अपने परमेश्वर की प्रतीक्षा करते-करते
मेरी आंखें धुंधली हो गईं।

** पाठांतर, "पैरों को रक्त में नहला सके" *** मूल में, 'इस्राएल के सोते में से'।
68 : 23 1 रा 22 : 38 **68 : 29** यश 18 : 7 **69 : 1** भज 130 : 1

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

4 जो मुझसे अकारण घृणा करते हैं,
वे मेरे सिर के बाल से कहीं अधिक हैं;
मुझे नष्ट करनेवाले,
मुझपर मिथ्या दोष लगानेवाले
बलवान हैं।
जो मैंने छीना नहीं, क्या उसे लौटाना होगा ?

5 हे परमेश्वर,
तू मेरी मूर्खता जानता है,
मेरे अपराध तुझ से छिपे नहीं हैं।

6 हे स्वामी, स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु,
तेरी प्रतीक्षा करने वाले
मेरे कारण लज्जित न हों
हे इस्राएल के परमेश्वर,
तुझ को खोजने वाले
मेरे कारण अपमानित न हों।
7 तेरे लिए ही मैंने निन्दा का भार ढोया है;
लज्जा ने मेरा मुख ढांप रखा है।
8 अपने भाई-बहिनों के लिए
मैं अजनबी हो गया,
अपने ही सगे भाई-बहिनों के लिए परदेशी !
9 तेरे घर की धुन ने मुझे खा लिया,
जो निन्दा तेरे निन्दकों ने की,
वही मुझपर पड़ी।
10 जब मैंने उपवास से अपनी आत्मा को विनम्र
किया,*
तब वह भी मेरे लिए निन्दा बन गया।
11 जब मैंने शोकवस्त्र पहिने,
तब मैं उनके लिए एक कहावत बन गया।
12 नगर-द्वार पर बैठनेवाले मेरी चर्चा करते हैं,
और पियक्कड़ कवि मुझ पर गीत रचते हैं।

13 पर प्रभु, मेरी प्रार्थना तुझ को अर्पित है,
हे परमेश्वर, कृपा-अवसर पर
अपनी महाकरुणा के कारण मुझे उत्तर दे।
अपनी सच्ची सहायता द्वारा
14 कीच-दलदल से मुझे मुक्त कर,
कि मैं धंस न जाऊं;
मेरे बैरियों से, गहरे सागर से, मुझे मुक्त कर।
15 जल प्रवाह मुझे डुबा न सके,
अथाह जल मुझे निगलने न पाए
और न कबर अपना मुंह मुझ पर बन्द करे।

16 हे प्रभु, मुझे उत्तर दे;
क्योंकि तेरी करुणा उत्तम है।
अपनी असीम अनुकम्पा से
मेरी ओर अपना मुख कर,
17 अपने सेवक से अपना मुख न छिपा;
मुझे अविलम्ब उत्तर दे;
क्योंकि मैं संकट में हूँ।
18 मेरे निकट आ और मेरा उद्धार कर,
मेरे शत्रुओं से मुझे मुक्त कर।

19 तू मेरी निन्दा, लज्जा और अपमान को
जानता है,
तू मेरे समस्त बैरियों से परिचित है।
20 निन्दा ने मेरे हृदय को विदीर्ण कर दिया है;
मैं अत्यन्त निराश हूँ।
मैंने सहानुभूति की आशा की, पर वह न मिली;
मैंने सान्त्वना देने वालों की प्रतीक्षा की,
पर वह न मिली;
21 उन्होंने खाने के लिए मुझे विष दिया;
मेरी प्यास बुझाने के लिए मुझे पीने को
सिरका दिया।

22 उनके सम्मुख रखा हुआ भोजन फन्दा बन
जाए,
और उनकी सहभागिता-बलि एक जाल।
23 उनकी आंखें धुंधली पड़ जाएं, और वे देख
न सकें;
तू उनकी कमर को सदैव झुकाकर रख।
24 उन पर अपने कोप की वर्षा कर;
तेरा दहकता क्रोध उन्हें भस्म कर दे।
25 उनका निवास-स्थान उजाड़ हो जाए,
उनके घरों में कोई न रहे।

---

* अथवा, "मैंने उपवास से अपने प्राण को शोकित किया।"

69 : 4 यो 15 : 25; भज 35 : 19 **69 : 7** यिर 15 : 15 **69:9** भज 119 : 139; यो 2 : 17; रोम 15 : 3 **69 : 20** मत 26 : 40 **69 :21** मत 27 : 34, 48; यो 19: 29 **69:22-23** रोम 11 : 9-10 **69:24** प्रक 16 : 1 **69 : 25** प्रे 1 : 20

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

26 ऐसे मनुष्य उस व्यक्ति का पीछा करते हैं,
जिसे तू ने मारा है;
वे उन लोगों की पीड़ा की चर्चा करते हैं,
जिन्हें तू ने घात किया है।
27 वे कुकर्म पर कुकर्म करते रहें,
और तेरी धार्मिकता में प्रवेश न करें।
28 जीवन की पुस्तक से उनके नाम मिटा डाल,
उनके नाम धार्मिकों के साथ न लिखे जाएं।
29 पर मैं दु:खी और पीड़ित हूँ,
हे परमेश्वर,
अपनी सहायता से मुझे बलवान बना।

30 मैं अपने गीतों में
परमेश्वर के नाम का यशोगान करूंगा,
मैं स्तुति-गीत में उसकी प्रशंसा करूंगा।
31 यह प्रभु को बैल-बलि से अधिक,
सींग और खुर वाले बैल की बलि से भी
अधिक भाएगा।
32 पीड़ित जन इसे देखकर सुखी हों;
ओ परमेश्वर के खोजियो,
तुम्हारे हृदय को नया बल प्राप्त हो!
33 प्रभु गरीबों की आवाज सुनता है;
वह अपने बन्दीजनों से घृणा नहीं करता।

34 आकाश और पृथ्वी,
सागर और उसके समस्त जलचर,
प्रभु का यशोगान करें।
35 परमेश्वर सियोन की रक्षा करेगा,
और यहूदा प्रदेश के नगरों को फिर बसाएगा!
प्रभु के सेवक वहाँ बसकर
उस देश पर अधिकार कर लेंगे।
36 उन्हीं सेवकों के वंशज उसको उत्तराधिकार
में प्राप्त करेंगे,
जो प्रभु के नाम से प्रेम करते हैं,
वे वहाँ निवास करेंगे।

मुक्ति के लिए प्रार्थना

मुख्यवादक के लिए। दाऊद का। स्मारक-बलि के लिए।

70 हे परमेश्वर, मेरा उद्धार कर।
हे प्रभु, अविलंब मेरी सहायता कर।
2 जो मनुष्य मेरे प्राण की खोज में हैं,
वे लज्जित हों, और घबरा जाएं।
जो मेरी बुराई की कामना करते हैं,
वे पीठ दिखाएं और अपमानित हों,
3 जो मुझ से "अहा! अहा!" कहते हैं,
वे अपनी लज्जा के कारण लौट जाएं।

4 परन्तु वे सब जो तुझ को खोजते हैं,
तुझ में हर्षित और आनन्दित हों।
जो लोग तेरे उद्धार से प्रेम करते हैं,
वे निरन्तर यह कहते रहें,
"परमेश्वर महान है"।
5 मैं पीड़ित और दरिद्र हूँ;
हे परमेश्वर, शीघ्र मेरी सहायता कर।
तू ही मेरा सहायक और मुक्तिदाता है;
प्रभु, विलंब न कर।

वृद्ध मनुष्य की प्रार्थना

71 हे प्रभु, मैं तेरी शरण में आया हूँ,
मुझे कभी लज्जित न होने देना।
2 मुझे अपनी धार्मिकता द्वारा मुक्त कर,
मुझे बचा;
अपने कान मेरी ओर कर,
और मेरी सहायता कर।
3 मेरे लिए आश्रय की चट्टान बन,
और मुझे बचाने के लिए एक दृढ़ गढ़।*
क्योंकि प्रभु, तू ही मेरी चट्टान और मेरा गढ़
है।

4 हे मेरे परमेश्वर, दुर्जन के हाथ से,
अन्यायी और निर्दय पुरुष के पंजे से
मुझे मुक्त कर।
5 तू ही मेरी आशा है;
हे स्वामी, हे प्रभु, मेरे युवाकाल से
तू ही मेरा आधार है।
6 जन्म से मैं ने तेरा सहारा लिया;
वह तू ही था, जिसने मेरी माँ के गर्भ से
मुझे निकाला था।
मैं निरंतर तेरा गुणगान करूंगा।
7 मैं बहुत लोगों के लिए एक चमत्कार हूँ;

* पाठान्तर, "जिसकी आड़ में मैं निरन्तर शरण पा सकूं; जिसको तूने मेरी रक्षा के लिए ठहराया है।"

69 : 28 नि 32 : 32; प्रक 3 : 5; 13 : 8 **70 ; 1-5** भज 40 : 13-17 **71:1-3** भज 31: 1-3

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पर तू ही मेरा दृढ़ आश्रय स्थल है।
8 मेरा मुंह तेरे यशोगान से भरा है;
तेरी महिमा निरन्तर होती रहे।
9 बुढ़ापे में मुझे मत छोड़;
अब मेरी शक्ति समाप्त हो चुकी है,
मुझे मत त्याग।
10 मेरे प्राण की घात में रहने वाले
परस्पर सम्मति करते हैं।
मेरे शत्रु मेरे विषय में यह बात कहते हैं:
11 ''परमेश्वर ने उसे त्याग दिया;
उसका पीछा करो और उसे पकड़ो;
क्योंकि उसको बचाने वाला कोई नहीं है।''

12 हे परमेश्वर, मुझसे दूर मत हो;
हे मेरे परमेश्वर,
अविलम्ब मेरी सहायता कर।
13 जो मेरे प्राण के खोजी हैं,
वे लज्जित हों और नष्ट हो जाएं;
जो मेरी बुराई का प्रयत्न करते हैं,
वे निन्दा और अपमान में गड़ जाएं।
14 किन्तु मैं निरन्तर आशा करता रहूंगा,
और तेरा अधिकाधिक यशोगान करूंगा।
15 मैं दिन भर अपने मुंह से तेरी धार्मिकता की,
तेरे उद्धार के कार्यों की,
तेरे असंख्य कार्यों की चर्चा करूंगा।
16 अपने स्वामी के सामर्थ्यपूर्ण कार्यों का वर्णन
करते हुए मैं आऊंगा,
प्रभु, मैं केवल तेरी धार्मिकता को स्मरण
करूंगा।

17 हे परमेश्वर, तू मेरी युवावस्था से मुझे
सिखाता रहा है,
अब भी मैं तेरे अद्भुत कार्यों को घोषित
करता हूँ।
18 अतः बुढ़ापे में, पके बालों की उमर में भी
हे परमेश्वर, मुझे मत त्याग;
जब तक मैं आगामी पीढ़ी को
तेरे भुजबल की घोषणा न करूं,
मुझे जीवित रहने दे।
19 तेरा सामर्थ्य और तेरी धार्मिकता,
हे परमेश्वर, आकाश तक व्याप्त है।
तू ने महान् कार्य किए हैं;
हे परमेश्वर, तेरे समान और कौन ईश्वर है?
20 तू ने मुझे कई संकट दिखाए,
पर तू मुझे पुनर्जीवित करेगा,
पृथ्वी के गहरे स्थलों से मुझे फिर उबारेगा।
21 तू मेरा सम्मान बढ़ाएगा,
तू मुझे पुनः सान्त्वना देगा।

22 हे मेरे परमेश्वर, मैं वीणा के साथ
तेरे सत्य की सराहना करूंगा;
हे इस्राएल के पवित्र परमेश्वर,
मैं सितार के साथ तेरा स्तुतिगान करूंगा।
23 जब मैं तेरा स्तुतिगान करूंगा,
तब मेरे ओंठ,
मेरे प्राण जिनका तू ने उद्धार किया है,
जयजयकार करेंगे।
24 मैं भी निरन्तर तेरी धार्मिकता का पाठ
करूंगा,
क्योंकि जो लोग मेरी बुराई का प्रयत्न करते
थे,
वे लज्जित और अपमानित हुए हैं।

धार्मिक राजा का राज्य

सुलेमान का।

72 हे परमेश्वर, राजा को अपना न्याय,
राजपुत्र को अपनी धार्मिकता प्रदान कर
2 कि वह तेरी प्रजा का धार्मिकता से शासन करे,
तेरे पीड़ित लोगों का निष्पक्षता से न्याय करे।
3 पहाड़ और पहाड़ियां धार्मिकता के द्वारा लोगों
को समृद्ध बनाएं।
4 वह प्रजा के पीड़ित लोगों का न्याय करे;
वह दरिद्र की सन्तान की रक्षा करे,
और अत्याचारियों का दमन करे।

5 जब तक सूर्य और चन्द्रमा हैं,
वह पीढ़ी से पीढ़ी बना रहे।*
6 वह ठूंठी घास पर होनेवाली वर्षा के समान,
भूमि को सींचनेवाली बौछार के सदृश हो!

---

* मूल में, ''वे तुझसे डरते रहें।''

71: 18 यश 46 : 4 72 : 2 यश 11 : 2 72 : 6 हो 6 : 2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

7 उसके राज्यकाल में धार्मिक फलें-फूलें;
जब तक चन्द्रमा न टल जाए, असीम शान्ति बनी रहे।
8 वह समुद्र से समुद्र तक,
फरात नदी से पृथ्वी के सीमान्तों तक राज्य करे!
9 मरुभूमि के निवासी** उसके सामने घुटने टेकें,
उसके शत्रु धूल चाटें।
10 स्पेन देश तथा द्वीप-द्वीप के राजा उसे भेंट चढ़ाएं,
अरब और इथियोपिया देश† के राजा उपहार लाएं।
11 सब राजा उसको साष्टांग प्रणाम करें,
समस्त राष्ट्र उसकी सेवा करें।

12 वह दुहाई देनेवाले दरिद्र को,
पीड़ित और निस्सहाय व्यक्ति को मुक्त करता है।
13 वह दुर्बल और दरिद्र पर दया करता है,
वह दरिद्रों के प्राण की रक्षा करता है।
14 वह दमन और अत्याचार से
उनके प्राण का उद्धार करता है,
उसकी दृष्टि में उनका रक्त अनमोल है।

15 वह चिरंजीव हो!
अरब का स्वर्ण उसे भेंट किया जाए;
उसके लिए प्रार्थना निरन्तर की जाए;
दिन भर उसके लिए आशिष मांगी जाए।
16 देश में प्रचुर अन्न हो;
पर्वतों के शिखर पर खेत लहलहाए।
उनकी बालें लबानोन के वृक्षों के समान
और नगर के निवासी घास के समान खिलें।
17 उसका नाम सदा बना रहे;
जबतक सूर्य है, तब तक उसका वंश राज्य करे।
लोग उसके कारण स्वयं का धन्य मानें,
समस्त राष्ट्र उसको धन्य कहें।
18 इस्राएल का प्रभु परमेश्वर धन्य है,
उसने ही आश्चर्यपूर्ण कार्य किए हैं।
19 उसका महिमायुक्त नाम सदा धन्य है।
समस्त पृथ्वी उसकी महिमा से भर जाए!
आमेन और आमेन।

20 दाऊद बेन-यिशय* की प्रार्थनाएं समाप्त हुईं।

तीसरा खण्ड

दुर्जन की नियति

आसाफ का भजन।

73 निश्चय, परमेश्वर इस्राएल के लिए+,
शुद्ध हृदय वालों के लिए भला है।
2 पर मेरे पैर उखड़ चुके थे,
मेरे पग फिसलने पर थे।
3 जब मैं ने दुर्जनों का फलना-फूलना देखा,
तब मैं घमण्डी लोगों के प्रति ईर्ष्यालु हो गया।
4 दुर्जनों को मृत्यु तक कष्ट नहीं होता,
उनकी देह स्वस्थ है।
5 धार्मिक लोग दुःख में हैं, पर दुर्जन नहीं;
अन्य मनुष्यों जैसे वे विपत्ति में नहीं पड़ते।
6 अतः अहंकार उनका कण्ठहार है;
हिंसा उनका ओढ़ना है।
7 उनकी आंखों में चर्बी झलकती है,
उनके हृदय में दुष्कल्पनाएं उमड़ती हैं।
8 वे धार्मिकों का उपहास करते हैं;
वे उनसे दुष्टभाव से बातें करते हैं,
ऊंचे पर बैठकर वे अत्याचार करते हैं।
9 वे स्वर्ग के विरुद्ध अपना मुंह खोलते हैं,
पृथ्वी पर उनकी जीभ गर्व से चलती है।

10 इसलिए लोग दुर्जनों के पास आकर उनकी प्रशंसा करते हैं
और उनमें कोई त्रुटि नहीं पाते।++

** मूल में, ''खानाबदोश'' †मूल में, 'शेबा और सबा' * अथवा, ''यिशय के पुत्र दाऊद'' + पाठान्तर, 'धर्मनिष्ठ के लिए'। ++ मूल में, 'इसलिए उसकी प्रजा वहाँ लौटेगी और उनके लिए भरपूर जल निकाला जाएगा'।

72 : 8 जक 9 : 10 ; प्रव 44 : 21 **72 : 9** यश 49 : 23 **72 : 10** 1 रा 10 : 1

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

11 वे यह कहते हैं, "परमेश्वर कैसे जान
सकता है ?
क्या सर्वोच्च परमेश्वर में ज्ञान है ?"
12 ये दुर्जन व्यक्ति हैं,
तोभी सरलता से सदा संपत्ति बढ़ाते जाते हैं।
13 मैंने व्यर्थ ही अपने हृदय को शुद्ध रखा,
और अपने हाथों को निर्दोषता में धोया।
14 फिर दिन भर मैं दण्डित
और प्रति भोर को ताड़ित होता रहा।

15 यदि मैंने यह कहा होता, "मैं ऐसा
बोलूंगा,"
तो हे परमेश्वर,
मैं तेरे लोगों के प्रति विश्वासघात करता।
16 जब मैंने इस भेद पर विचार किया,
तब यह मेरी दृष्टि में कठिन कार्य दिखा;
17 किन्तु जब मैं परमेश्वर के पवित्र स्थान में
गया,
तब मैंने दुर्जनों का अन्त समझ लिया।
18 सचमुच तू ने उन्हें फिसलने वाले स्थानों पर
रखा है;
तू विनाश के लिए उन्हें गिराता है।
19 वे क्षण भर में कैसे उजड़ गए।
वे आतंक द्वारा पूर्णत: विनष्ट हो गए!
20 जैसे जागने वाला मनुष्य स्वप्न को महत्व
नहीं देता,
वैसे ही स्वामी, तू जागने पर उनके झूठे वैभव
को तुच्छ समझता है।*

21 जब मेरा मन कड़ुवा हो गया था,
मेरे हृदय में अपार पीड़ा थी।
22 मैं मूर्ख और नासमझ था,
तेरे सम्मुख मैं पशुवत था।
23 फिर भी मैं निरन्तर तेरे साथ रहा हूँ;
तू मेरे दाहिने हाथ को थामे हुए है।
24 तू अपनी सलाह से मेरा मार्ग-दर्शन करता
है;
जीवन के अन्त में तू मुझे महिमा में ग+ हण
करेगा।

25 स्वर्ग में मेरा और कौन है ?
तेरे अतिरिक्त पृथ्वी पर
मैं किसी की कामना नहीं करता।
26 मेरा शरीर और हृदय चाहे हताश हो जाएं,
पर परमेश्वर, तू सदा
मेरे हृदय का बल और भाग है।

27 जो तुझसे दूर हैं, वे मिट जाएंगे;
जो तेरे प्रति निष्ठावान नहीं हैं,
उन सब को तू नष्ट कर देगा।
28 पर मेरे लिए परमेश्वर की निकटता उत्तम है;
मैं ने प्रभु-स्वामी को अपना आश्रय स्थल
माना है;
प्रभु, मैं तेरे सब कार्यों का वर्णन करूंगा।

ध्वस्त मंदिर पर विलाप

आसाफ का मसकील।

74 हे परमेश्वर, क्यों तू ने हमें सदा के लिए
त्याग दिया ?
क्यों तेरी क्रोधाग्नि
तेरे चारागाह की भेड़ों के प्रति भड़क उठी ?
2 स्मरण कर अपनी मण्डली को,
जिसे तूने प्राचीन काल में मोल लिया था,
जिसे अपनी मीरास का कुल बनाने के लिए
मुक्त किया है
स्मरण कर सियोन पर्वत को
जहाँ तू निवास करता है।
3 शत्रु ने पवित्र स्थान को पूर्णत: नष्ट कर दिया
है।
उस लगातार होने वाले विनाश की ओर
अपने पैर बढ़ा।
4 तेरे बैरी तेरे मन्दिर में गरज रहे हैं,
उन्होंने अपने ही झण्डे
ध्वज-चिह्न के लिए गाड़े हैं।
5 उन्होंने उपरले प्रवेश-द्वार पर कुल्हाड़ी से
लकड़ी की जालियों को तोड़-फोड़ डाला;
6 तत्पश्चात् उसके समस्त नक्काशीदार काठ
को
उन्होंने कुल्हाड़ों और हथौड़ों से काट-कूट

* मूल में अस्पष्ट + अथवा, 'अपनी महिमा में'।
73 : 13 मला 3 : 14 74 : 2 यश 63: 17

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

डाला।
7 उन्होंने पवित्र स्थान में आग लगा दी,
तेरे नाम के निवास-स्थान को
भूमिसात कर अशुद्ध कर दिया।
8 उन्होंने अपने हृदय में यह कहा,
"हम इन्हें पूर्णतः पराजित करेंगे।"
उन्होंने देश में परमेश्वर के समस्त
आराधना-गृहों को जला डाला।

9 हमारे झण्डे हमें नहीं दिखाई देते;
अब कोई नबी नहीं रहा;
हमारे मध्य कोई नहीं जानता
कि हमारी यह दशा कब तक रहेगी।
10 हे परमेश्वर, कब तक बैरी
हमारी निन्दा करता रहेगा?
क्या शत्रु तेरे नाम का तिरस्कार
निरन्तर करेगा?
11 तू ने अपना हाथ, दाहिना हाथ
क्यों खींच लिया है?
तू ने उसे वक्ष में क्यों छिपा लिया है?

12 परमेश्वर, तू आदि काल से हमारा राजा है,
तू पृथ्वी के मध्य उद्धार-कार्य करने वाला
ईश्वर है।
13 तू ने अपनी शक्ति से सागर को विभाजित
किया था,
तू ने जल में मगरमच्छों के सिरों को टुकड़े-
टुकड़े किया था,
14 तू ने लिव्यातान जल-पशु के सिरों को
कुचला था,
और उसको वन प्राणियों का आहार बनने के
लिए दे दिया था।
15 तू ने चट्टान फोड़ कर झरने और स्रोत बहाए
थे,
तू ने सदा बहनेवाली जलधाराओं को भी
सुखाया था।
16 तेरा ही दिन है, और रात भी तेरी है।
तूने सूर्य और चन्द्रमा को स्थित किया है।
17 तू ने पृथ्वी के सीमान्तों को ठहराया है,
तू ने ग्रीष्म और शीत ऋतुएं बनाई हैं।

18 हे प्रभु, स्मरण कर
कि शत्रु तेरी कैसी निन्दा करता है,
मूर्ख तेरे नाम का तिरस्कार करते हैं।
19 प्रभु, अपने कपोत का प्राण
जंगली पशुओं के पंजे में मत सौंप;
अपने पीड़ित लोगों के जीवन को
सदा के लिए न भुला।
20 अपने विधान की सुधि ले;
क्योंकि देश के अन्धेरे स्थान
अत्याचार के घर बन गए हैं।
21 दमित व्यक्ति को लज्जित न होना पड़े;
पीड़ित और दरिद्र तेरे नाम का यशोगान करें।

22 हे परमेश्वर, उठ और अपना पक्ष प्रस्तुत कर।
मूर्ख द्वारा निरन्तर की जाने वाली निन्दा को
स्मरण कर।
23 अपने बैरियों की चिल्लाहट को,
अपने विरोधियों के कोलाहल को मत भूल;
कोलाहल निरन्तर उठता जा रहा है।

परमेश्वर का न्याय

मुख्यवादक के लिए। "नष्ट मत करो" के अनुसार।
आसाफ का भजन। एक गीत।

75 हे परमेश्वर, हम तेरी सराहना करते हैं।
हम तेरी स्तुति करते है;
तेरा नाम हमारे निकट है;
लोग तेरे आश्चर्यपूर्ण कार्यों का वर्णन करते
हैं।

2 परमेश्वर कहता है :
'निर्धारित समय पर, जिसे मैं ही ठहराऊंगा,
निष्पक्षता से मैं न्याय करूंगा।
3 जब पृथ्वी और उसके समस्त निवासी
डगमगाने लगते हैं,
तब मैं ही पृथ्वी के स्तम्भों को स्थिर करता
हूँ। सेलाह
4 मैं अहंकारियों से यह कहता हूँ, "अहंकार
मत करो,"
और दूर्जनों से, "घमण्ड से अपने सींग मत

74 : 9 मी 3 : 6 74 : 13 नि 14 : 21; यश 51 : 9 74 : 14 अय्य 41 : 1; भज 104 : 26 ; यश 27 : 1
75 : 3 1 शम 2 : 8 75 : 4 जक 1 : 21

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उठाओ,
5 अपने सींग ऊंचे मत उठाओ,
और गर्दन टेढ़ी कर धृष्ट वचन मत बोलो।'' '

6 न पूर्व से, न पश्चिम से,
और न निर्जन प्रदेश से उद्धार संभव है;
7 किन्तु परमेश्वर ही न्यायकर्ता है,
वह एक को नीचा करता, तो दूसरे को ऊंचा उठाता है।
8 प्रभु के हाथ में एक पात्र है,
संमिश्रित-उफनते अंगूर रस से भरा,
वह उसमें से एक घूंट उण्डेलेगा,
और पृथ्वी के समस्त दुर्जन उसे निचोड़कर तलछट तक पी जाएंगे।
9 मैं सदा आनन्द मनाऊंगा,+
मैं इस्राएल के परमेश्वर की स्तुति गाऊंगा।

10 वह समस्त दुर्जनों के निकले हुये सींग काट देगा,
किन्तु धार्मिकतों के सींग ऊंचे किए जाएंगे।

विजय प्रदान करनेवाला और न्यायकर्त्ता परमेश्वर

मुख्यवादक के लिए। तांतयुक्त वाद्य-यन्त्रों के साथ। आसाफ का भजन। एक गीत।

76 परमेश्वर ने यहूदा प्रदेश में स्वयं को प्रकट किया है;
इस्राएल में उसका नाम महान् है।
2 उसका आवास शालेम में,
उसका धाम सियोन में है।
3 वहाँ उसने जलते तीरों को,
ढाल और तलवार को,
युद्ध के शस्त्रों को नष्ट किया था। सेलाह
4 तू तेजोमय है,
पुरातन पर्वतों से अधिक ऐश्वर्यपूर्ण है।*
5 वीर हृदय स्वयं लुट गए;
वे चिर निद्रा में डूब गए;
सैनिक अपने हाथ चलाने में असमर्थ थे।
6 हे याकूब के परमेश्वर, तेरी डांट से
अश्व और अश्वारोही
दोनों गहरी नींद में सो गए।
7 तू भयावह है।
जब तेरा क्रोध भड़क उठता है
तब तेरे सम्मुख कौन खड़ा हो सकता है?
8-9 तू ने स्वर्ग से न्याय-निर्णय सुनाया;
जब परमेश्वर, तू न्याय के निमित्त,
पृथ्वी के समस्त पीड़ितों को बचाने के लिए उठा,
पृथ्वी भयभीत हुई और शान्त हो गई।
सेलाह
10 निश्चय ही मनुष्य के रोष से तेरी सराहना होगी;**
शेष रोष को तू स्वयं धारण करेगा।
11 मन्नत मानो,
और अपने प्रभु परमेश्वर के लिए उसको पूर्ण करो;
प्रभु के चारों ओर रहने वाले लोग
उस को भेंट चढ़ाएं।
प्रभु भय योग्य है;
12 वह सामन्तों के दुःसाहस को नष्ट करनेवाला है;
वह पृथ्वी के राजाओं के लिए भयावह है।

परमेश्वर के अद्भुत कार्यों का स्मरण सांत्वना देता है

मुख्यवादक के लिए। यदूतून के अनुसार। आसाफ का। एक भजन।

77 मैं उच्च स्वर में परमेश्वर की दुहाई देता हूँ;
मैं परमेश्वर की दुहाई देता हूँ
कि वह मेरी ओर ध्यान दे।
2 संकट के दिन मैं स्वामी को खोजता हूँ,
रात भर मेरे हाथ बिना थके
उसकी ओर फैले रहे;
मेरा प्राण धैर्य धारण करने में असमर्थ है।

+ मूल में, 'इसकी घोषणा करता रहूंगा' * अथवा, ''युद्ध में विजय प्राप्त करने के बाद पर्वत से उतरते समय तू ऐश्वर्यपूर्ण दिखाई देता है।'' ** अथवा ''एदोम के रोष से तू अपनी सराहना करवाएगा, और हमात के बचे हुए लोग तेरा यात्रा-पर्व मनाएंगे।''

75 : 7 1 शम 2 : 7; दान 2 : 21; लू 1 : 52 **75 : 8** अय्य 21 : 20 **76 : 5** यिर 51 : 39 **76 : 7** नहू 1 : 6 **77 : 2** भज 50 : 15; यश 26 : 16

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

3 मैं परमेश्वर का स्मरण कर विलाप करता हूँ,
ध्यान करते-करते मेरी आत्मा थक जाती है। सेलाह
4 तू मेरी पलकों को बन्द होने से रोकता है;
मैं इतना घबरा गया हूँ कि बोल नहीं पाता हूँ।
5 मैं अतीत के दिनों का,
बीते वर्षों का विचार करता हूँ।
6 मैं रात में अपने संगीत का स्मरण करता हूँ;
मैं अपने हृदय में ध्यान करता हूँ;
मेरी आत्मा परिश्रम से खोज करती है:
7 "क्या स्वामी सदा के लिए मुझे त्याग देगा?
क्या वह फिर कभी कृपा नहीं करेगा?
8 क्या उसकी करुणा सदैव के लिए मिट गई?
क्या उसकी प्रतिज्ञाएं सदा-सर्वदा को समाप्त हो गईं?
9 क्या परमेश्वर अनुग्रह करना भूल गया?
क्या उसने अपने क्रोध में
दया -द्वार बन्द कर लिया है?" सेलाह
10 मैंने यह कहा, "यही तो मेरा दुःख है,
कि सर्वोच्च प्रबु का दाहिना हाथ,
उसका सामर्थ्य बदल गया है।"
11 मैं प्रभु के कार्यों का स्मरण करूंगा;
निस्सन्देह मैं अतीत के तेरे अद्भुत कार्य स्मरण करूंगा।
12 मैं तेरे समस्त कार्यों पर मनन करूंगा;
मैं तेरे अद्भुत कार्यों का ध्यान करूंगा।
13 हे परमेश्वर, तेरा मार्ग पवित्र है;
परमेश्वर के सदृश और कौन ईश्वर महान् है?
14 अद्भुत कार्य करने वाला परमेश्वर तू ही है;
तू ने ही अपना सामर्थ्य जातियों पर प्रकट किया है।
15 तू ने अपने भुजबल से अपनी प्रजा को,
याकूब और यूसुफ की सन्तान को
मुक्त किया। सेलाह
16 हे परमेश्वर, जब सागर ने तुझे देखा,
हां, जब सागर ने तुझे देखा,
तब वह डर गया;
अथाह सागर कांप उठा।
17 मेघ जल-वृष्टि करने लगे,
आकाश गरज उठे,
तेरे बाण सर्वत्र चलने लगे।
18 तेरे गर्जन का शब्द बवण्डर में सुनाई पड़ा;
विद्युत से भूमण्डल आलोकित हो उठा;
पृथ्वी कंपित होकर डोल उठी।
19 तेरा मार्ग सागर से,
तेरा पथ महासागर से जाता था;
पर तेरे पद-चिह्नों का पता नहीं चला!
20 तू ने रेवड़ के सदृश अपनी प्रजा का
मूसा और हारून के द्वारा नेतृत्व किया था।

निष्ठाहीन पीढ़ी के प्रति परमेश्वर की निष्ठा

आसाफ का मसकील।

78 हे मेरे लोगो, मेरी शिक्षा पर कान दो;
मेरे वचनों पर ध्यान दो।
2 मैं अपना मुंह दृष्टांन्त के लिए खोलूंगा;
मैं प्राचीन काल की पहेलियां बुझाऊंगा,
3 जिन्हें हमने सुना और समझा है,
और हमारे पूर्वजों ने हमें बताया है।
4 प्रभु की स्तुति और सामर्थ्य,
और उसके महान कार्य जो उसने किए,
हम उनकी सन्तान से नहीं छिपाएंगे,
वरन् आगामी पीढ़ी को बताएंगे।
5 प्रभु ने याकूब में साक्षी स्थापित की है,
और इस्राएल में व्यवस्था नियुक्त की है।
उसने हमारे पूर्वजों को आज्ञा दी थी
कि वे अपनी सन्तान को ये बातें सिखाएं,
6 जिससे आगामी पीढ़ी,
भविष्य में उत्पन्न होने वाली सन्तान भी जान ले
और तत्पर होकर अपने पुत्र-पुत्रियों को बताए;
7 यह इसलिए हुआ कि वे परमेश्वर पर आशा रखें;
और परमेश्वर के कार्यों को न भूलें,
किन्तु उसकी आज्ञाओं का पालन करते रहें;
8 और अपने पूर्वजों जैसे,
हठीली और विद्रोही पीढ़ी न बनें;

---

77 : 5 व्य 32 : 7 ; भज 143 : 5 77 : 9 यश 49 : 15 77 : 20 यश 63 : 11-12 78 : 2 भज 49 : 4; मत 13 : 35 78 : 7 भज 105 : 45

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ऐसी पीढ़ी जिसका हृदय स्थिर न था,
जिसकी आत्मा परमेश्वर के प्रति सच्ची न
थी।

9 एफ्राइम के वंशज धनुष से सशस्त्र होने पर
भी युद्ध के समय भाग गए थे।
10 उन्होंने परमेश्वर के विधान का पालन नहीं
किया
और उसकी व्यवस्था पर चलना अस्वीकार
कर दिया।
11 वे उसके व्यवहार को,
आश्चर्यपूर्ण कर्मों को,
जिन्हें उसने संपन्न किए थे, भुला बैठे।
12 उनके पूर्वजों के सामने,
मिस्र देश में सोअन की भूमि पर
परमेश्वर ने अद्भुत कार्य किए थे।
13 परमेश्वर ने सागर को विभाजित कर
उन्हें पार कराया, और
जल को ढेर के सदृश खड़ा कर दिया था।
14 उसने दिन के समय मेघों से
और रात को अग्नि के प्रकाश द्वारा
उनका नेतृत्व किया था।
15 उसने निर्जन प्रदेश में चट्टानें फोड़कर मानो
अथाह झरनों से
प्रचुर मात्रा में उन्हें पानी पिलाया था।
16 उसने चट्टान में से जलधाराएं निकालीं और
जल को नदियों जैसा बहाया था।

17 फिर भी वे परमेश्वर के विरुद्ध पाप-पर-
पाप करते रहे,
शुष्क प्रदेश में सर्वोच्च प्रभु का विरोध
करते रहे।
18 उन्होंने अपनी अभिलाषा-पूर्ति के लिए
अपने हृदय में परमेश्वर की परीक्षा की।
19 वे परमेश्वर के विरुद्ध यह कहने लगे,
''क्या ईश्वर निर्जन-प्रदेश में
भोजन की व्यवस्था कर सकता है?
20 उसने चट्टान को मारा तो जल बहने लगा था;
जलधाराएं उमड़ने लगी थीं;
पर क्या वह रोटी भी दे सकता है?
क्या वह अपने निज लोगों के लिए
मांस का प्रबन्ध कर सकता है?''

21 अतः प्रभु यह सुनकर अत्यन्त क्रोधित हुआ,
याकूब के प्रति उसकी क्रोधाग्नि भड़क उठी,
इस्राएल के विरुद्ध उसका कोप धधकने
लगा।
22 क्योंकि उन्होंने परमेश्वर पर विश्वास नहीं
किया,
उसकी मुक्तिप्रद शक्ति पर भरोसा नहीं
किया।
23 फिर भी परमेश्वर ने
ऊंचे आकाश-मण्डल को आदेश दिया,
उसने स्वर्ग के द्वार खोल दिए,
24 और खाने के लिए उन पर मन्ना* की वर्षा
की;
परमेश्वर ने उन्हें स्वर्ग का अन्न दिया।
25 लोगों ने स्वर्गदूतों की रोटी खाई;
परमेश्वर ने उन्हें पेट भर भोजन प्रदान
किया।
26 उसने आकाश में पुरवइया बहाई,
और अपनी शक्ति से दक्खिनी वायु हांकी।
27 उसने उन पर धूलकण के समान
मांस की वर्षा,
और सागर तट के बालू के सदृश
असंख्य पक्षियों की वर्षा की।
28 उनके शिविरों के मध्य,
उनके निवासस्थान के चारों ओर पक्षियों को
गिराया।
29 वे उन्हें खाकर तृप्त हुए;
यों परमेश्वर ने उन्हें
उनकी लालसा के अनुसार भोजन दिया।
30 अभी वे अपनी लालसा को तृप्त करने भी
न पाए थे,
उनका भोजन अभी उनके मुंह में ही था,

* देखो, निर्गमन 16 : 31

78 : 11 भज 106 : 13 **78 : 12** नि 12 : 32 **78 : 13** नि 14 : 21; प्रज्ञा 16 : 1-19 : 22 **78 : 15-16** नि 17 : 6; यश 48 : 21 **78 : 21-22** गण 11 : 1 **78 : 24-25** यो 6 : 31; 1 कुर 10 : 3; प्रज्ञा 16 : 20-29 **78 : 30-31** गण 11 : 33

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

31 कि परमेश्वर की कोप उनके विरुद्ध
भड़क उठा;
उसने उनके बलवान पुरुषों को मार डाला,
इस्राएल के युवकों को उसने बिछा डाला।
32 यह होने पर भी वे पाप करते रहे;
उन्होंने परमेश्वर के आश्चर्यपूर्ण कार्यों पर
विश्वास नहीं किया।
33 इसलिए उसने उनके दिन निस्सारता में,
और वर्ष आतंक में व्यतीत कराए।
34 जब परमेश्वर ने उन्हें मारा,
तब उन्होंने उसकी खोज की,
और पश्चात्ताप कर उसको ढूंढ़ने लगे।
35 उन्होंने स्मरण किया कि परमेश्वर ही उनकी
चट्टान है,
सर्वोच्च परमेश्वर उनका उद्धारकर्ता है।
36 किन्तु उन्होंने अपने मुंह से उसको धोखा
दिया,
वे उससे झूठ बोले;
37 क्योंकि परमेश्वर के प्रति उनका हृदय
स्थिर न था,
और उसके विधान के प्रति वे सच्चे न थे।
38 परन्तु परमेश्वर दयालु है,
वह विनाश नहीं करता,
वरन् वह अधर्म को ढांपता है।
उसने बार-बार अपने क्रोध को लौटा लिया,
और अपने रोष को पुन: भड़कने नहीं दिया।
39 उसको स्मरण था कि ये तो प्राणी मात्र हैं,
पवन के सदृश हैं, जो जाकर लौटता नहीं।

40 कितनी बार उन्होंने निर्जन प्रदेश में
परमेश्वर से विद्रोह किया,
और उसको उजाड़ भूमि में उदास किया।
41 वे बार-बार परमेश्वर की परीक्षा करते थे,
और इस्राएल के पवित्र को चिढ़ाते थे।
42 उन्हें न उसके भुजबल का स्मरण रहा,
और न उस दिन का,
जब परमेश्वर ने उनको बैरियों से छुड़ाया
था;
43 जब उसने मिस्र देश में अपने चिह्न दिखाए
थे,
सोअन की भूमि पर आश्चर्यपूर्ण कर्म किए
थे।
44 परमेश्वर ने मिस्र की नदियों को रक्त में
बदल दिया था,
और मिस्र-निवासी उसका जल पी न सके।
45 परमेश्वर ने उनमें डांस भेजे,
जिन्होंने उनको काटा;
उसने मेंढक भेजे, जिन्होंने उनको सताया।
46 उसने उनकी उपज कीड़ों को,
उनके परिश्रम का फल टिड्डियों को दे
दिया।
47 उसने उनकी अंगूर की बेल ओलों से, और
गूलर के वृक्ष तुषार से नष्ट कर दिए।
48 उसने उनके पशुओं पर ओले बरसाए,
भेड़-बकरियों पर बिजली गिराई,
49 उनपर अपना प्रचंड क्रोध
रोष, कोप, संकट—
विनष्ट-करनेवाले दूतों का दल भेजा।
50 उसने अपने क्रोध का द्वार खोल दिया,
और उनके प्राणों को मृत्यु से नहीं बचाया,
वरन् उनका जीवन महामारी को सौंप दिया।
51 उसने मिस्र देश में समस्त पहिलौठों को,
हाम के शिविरों में उत्पन्न पौरुष के
प्रथम फलों को नष्ट कर दिया।
52 तत्पश्चात् परमेश्वर अपनी प्रजा को,
अपने निज लोगों को भेड़ के सदृश ले चला।
उसने निर्जन प्रदेश में रेवड़ के समान उनका
मार्गदर्शन किया।
53 वह उन्हें सुरक्षित रूप से ले गया;
अत: वे भयभीत नहीं हुए।
किन्तु उनके शत्रुओं को सागर ने निगल
लिया!
54 तब वह उन्हें अपनी पवित्र भूमि पर,
पर्वत पर ले आया
जिसको उसने अपने भुजबल से जीता था।

---

78 : 34 हो 5 : 15 **78 : 36** यश 29 : 13 **78 : 37** प्रे 8 : 21 **78 : 38** गण 14 : 20 ; यश 48 : 9 **78 : 43** नि 7 : 3 **78 : 44** नि 7 : 17 -21 **78 : 51** नि 12 : 29 **78 : 53** नि 14 : 28

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

55 उसने उनके सामने से राष्ट्रों को निकाल
दिया,
एवं भूमि को बांटकर उनकी पैतृक संपत्ति
बना दी;
उसने इस्राएल के कुलों को उनके शिविरों
में बसा दिया।
56 फिर भी उन्होंने सर्वोच्च परमेश्वर की परीक्षा
की, उससे विद्रोह किया,
और उसकी साक्षियों का पालन नहीं किया।
57 उन्होंने उससे मुंह फेर कर
अपने पूर्वजों के समान विश्वासघात किया,
वे धोखा देनेवाले धनुष के समान
दूसरी ओर मुड़ गए।
58 पहाड़ी शिखरों पर वेदियाँ स्थापित कर
उन्होंने परमेश्वर को नाराज किया;
उन्होंने मूर्तियां गढ़कर उसको ईर्ष्यालु बनाया।
59 परमेश्वर ने यह सुना तो वह रोष से भर गया।
उसने इस्राएल को पूर्णतः त्याग दिया।
60 उसने शिलोह के अपने निवासस्थान को,
मनुष्यों में स्थित अपने शिविर को
छोड़ दिया।
61 उसने अपनी मंजूषा को पराधीन,
अपने सामर्थ्य और महिमा के चिह्न को
बैरी के हाथ कर दिया।
62 उसने अपने निज लोगों को
तलवार को सौंप दिया;
अपनी मीरास पर ही उसका कोप भड़का।
63 उनके युवकों को आग ने भस्म कर दिया,
उनकी युवतियाँ विवाह के गीत न गा सकीं।
64 उनके पुरोहित तलवार से मारे गए,
उनकी विधवाएँ शोक गीत न गा सकीं।
65 तब स्वामी मानो नींद से जागा,
योद्धा के समान, जो मदिरा के कारण
ललकारता है।
66 उसने अपने बैरियों को मारकर पीछे हटा
दिया;
उन्हें सदा के लिए उसने अपमानित किया।
67 उसने यूसुफ का शिविर त्याग दिया;
उसने एफ्रइम गोत्र को नहीं चुना;
68 किन्तु यहूदा के कुल को,
सियोन पर्वत को चुना,
जिससे वह प्रेम करता है।
69 उसने गगन सदृश ऊंचा पवित्र स्थान बनाया,
और पृथ्वी के समान उसको दृढ़ किया;
उसने सदा के लिए उसको स्थापित किया।
70 उसने अपने सेवक दाऊद को चुना,
और भेड़शाला से उसे निकाल लिया।
71 मेमनों और भेड़ों की रखवाली करने से
उसे निकाल लिया,
कि वह उसकी प्रजा याकूब का
उसकी मीरास इस्राएल का मेषपाल बने।
72 दाऊद ने शुद्ध हृदय से उनकी रखवाली की,
और बुद्धिमत्ता* से उनका नेतृत्व किया।

ध्वस्त यरूशलेम का शोक गीत

आसाफ का भजन।

79 हे परमेश्वर, तेरे अधिकार क्षेत्र में
विधर्मी घुस आए हैं;
उन्होंने तेरे पवित्र भवन को
अपवित्र कर दिया है;
उन्होंने यरूशलेम को खंडहर बना दिया है।
2 उन्होंने तेरे सेवकों की लाशों को
आकाश के पक्षियों का आहार
बनने के लिए,
तेरे भक्तों का मांस पृथ्वी के पशुओं को खाने
के लिए दिया है।
3 यरूशलेम के चारों ओर
उन्होंने उनका रक्त पानी के समान बहाया है;
उन्हें मिट्टी देनेवाला कोई नहीं है।
4 हम पड़ोसी देशों की निन्दा के पात्र
बन गए हैं;
हम चारों ओर की कौमों के लिए
उपहास और तिरस्कार के पात्र हैं।

---

* शब्दशः "अपने हाथ की कुशलता"।

78 : 55 यहो 11 : 16-23 **78 : 56** शास 2 : 11-12 **78 : 60** यहो 18 : 1; यिर 7 : 12-14 **78 : 61** 1 शा 4 : 21 **78 : 70** 1 शम 16 : 12 - 13 **78 : 71** 2 शम 7 : 8 **79 : 1** शोक 1 : 10; भज 74 : 2,7 ; 2 रा 25 : 9 **79 : 2** यिर 7 : 33 **79 : 3** यिर 14 : 16 **79 : 4** भज 44 : 13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

5 हे प्रभु, कब तक?
क्या तू निरंतर क्रोध करता रहेगा?
कब तक तेरी ईर्ष्या
अग्नि जैसी जलती रहेगी?
6 उन राष्ट्रों पर, जो तुझको नहीं जानते,
उन राज्यों पर, जो तेरा नाम ही नहीं लेते,
अपना क्रोध उण्डेल।
7 उन्होंने तेरी प्रजा इस्राएल+ को
निगल लिया है,
उसके निवास स्थान को उजाड़ दिया है।
8 हमारे पूर्वजों के अधर्म को हमारे विरुद्ध
स्मरण न कर;
तेरी दया हमें शीघ्र उपलब्ध हो;
क्योंकि हमारी बहुत दुर्दशा की गई है।
9 हे हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर,
अपने नाम की महिमा के लिए
हमारी सहायता कर;
अपने नाम के निमित्त हमें मुक्त कर,
और हमारे पापों को ढांप दे।
10 क्यों राष्ट्र यह कहें, 'उनका परमेश्वर कहां
है?'
तेरे सेवकों के बहाए गए रक्त का प्रतिशोध
हमारी आंखों के सामने,
राष्ट्रों पर प्रकट किया जाए।
11 बन्दियों की कराह तेरे सन्मुख पहुंचे;
अपने महान सामर्थ्य से हमें बचा;
हम मृत्यु का ग्रास बनने को हैं।
12 हे स्वामी, जिस निन्दा द्वारा
हमारे पड़ोसियों ने तुझको निन्दित किया है,
उसका सात गुना उनके माथे पर लौटा।
13 तब हम—तेरी प्रजा और तेरे चरागाह की
भेड़ें—सदा तेरी सराहना करते रहेंगे।
हम पीढ़ी से पीढ़ी तक तेरे यश का वर्णन
करेंगे।

इस्राएली राष्ट्र की पुनः स्थापना के लिए प्रार्थना

मुख्यवादक के लिए। शोशनीम के अनुसार आसाफ का
साक्षी गीत। एक भजन।

80 हे इस्राएल के मेषपाल, सुन!
रेवड़ के समान यूसुफ का नेतृत्व
करनेवाले,
हे करूबों पर विराजनेवाले, प्रकाशवान हो!
2 एफ्रइम, बिन्यामिन और मनश्शे के सन्मुख,
अपना सामर्थ्य जाग्रत कर,
हमारे उद्धार के हेतु आ।
3 हे परमेश्वर, हमें पुनः स्थापित कर;
अपने मुख की ज्योति प्रकाशित कर
कि हम बच जाएं।

4 हे स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु परमेश्वर,
कब तक तू अपनी प्रजा की प्रार्थनाएँ
अनसुनी करता रहेगा?
5 तूने उसे आंसू की रोटी खिलाई,
और पीने को आंसू ही आंसू दिए।
6 तू हमें पड़ोसियों के लिए कलह का कारण
बनाता है,
हमारे शत्रु हमारा मनमाना उपहास करते हैं।
7 हे स्वर्गिक सेनाओं के परमेश्वर,
हमें पुनः स्थापित कर;
अपने मुख की ज्योति प्रकाशित कर
कि हम बच जाएँ!

8 तू मिस्र देश से अंगूर की एक बेल लाया,
और विजातियों को भगाकर उसे लगा दिया।
9 तूने उसके लिए भूमि तैयार की।
बेल ने जड़ पकड़ ली
और देश-भर में फैल गई।
10 पर्वत उसकी छाया से
और विशाल देवदार उसकी लताओं से
आच्छादित हुए।
11 उसने भूमध्य सागर तक अपनी शाखाएं और
फरात नदी तक अपनी टहनियाँ फैला ली
थीं।
12 तब तूने उसके बाड़े को क्यों गिरा दिया?
अब राही उसके फल को तोड़ते हैं।
13 जंगली सूअर उसे उजाड़ता है,
वन पशु उसे चरते हैं।
14 हे स्वर्गिक सेनाओं के परमेश्वर, लौट आ;
स्वर्ग से दृष्टिपात कर;

+ मूल में, 'याकूब'

80 : 1 नि 25 : 22 80 : 8 यश 5 : 1.7

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इस बेल की सुधि ले और इसकी रक्षा कर।
15 इस बेल को तूने अपने दाहिने हाथ से
रोपा था;
इस शाखा* को तूने अपने लिए
सुदृढ़ किया था।
16 वह आग में भस्म हो गई है।
वह काट डाली गई है।
शत्रु तेरे मुख की ताड़ना से नष्ट हो जाएँ।
17 पर तेरी दाहिनी ओर के कृपापात्र पर,
तेरा वरदहस्त रहे।
उस व्यक्ति पर रहे,
जिसे तूने अपनी सेवा के लिए
सबल किया है।
18 तब हम तुझ से मुंह न मोड़ेंगे;
हमें जीवन प्रदान कर,
और हम तेरा नाम लेंगे।
19 हे स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु परमेश्वर, हमें
पुनः स्थापित कर;
अपने मुख की ज्योति प्रकाशित कर,
कि हम बच जाएँ।

परमेश्वर की भलाई और इस्राएल का हठ

मुख्यवादक के लिए। गित्तीत के अनुसार। आसाफ का।

81 उच्च स्वर में परमेश्वर का गीत गाओ।
वह हमारी शक्ति है।
याकूब के परमेश्वर का जयजयकार करो।
2 गीत गाओ,
डफ और सितार के साथ मधुर वीणा
बजाओ।
3 नवचंद्र के दिन नरसिंगा बजाओ;
पूर्णिमा को, यात्रा-पर्व मनाओ।
4 यह इस्राएल के लिए संविधि है,
याकूब के परमेश्वर का आदेश है।
5 जब वह मिस्र देश से** निकला,
तब यूसुफ के कुल में यह साक्षी स्थापित की
थी।

मैंने ऐसी भाषा सुनी जिसे मैं नहीं जानता था:

6 ''मैं-प्रभु ने तेरे कंधों को भार-मुक्त कर
दिया है,
तेरे हाथ टोकरियों से मुक्त हो गए हैं।
7 तूने संकट में मुझे पुकारा, और मैंने तुझे
बचाया,
मैंने गर्जन के गुप्त स्थान से तुझे उत्तर दिया;
मैंने मरीबा के झरने पर तुझे परखा। सेलाह
8 हे मेरी प्रजा, सुन; मैं तुझे सचेत करता हूँ।
ओ इस्राएल, भला हो कि तू मेरी बात सुने!
9 तेरे मध्य में किसी पराये देवता की आराधना
न की जाए;
तू किसी अन्य ईश्वर की वन्दना न करना।
10 मैं ही प्रभु तेरा परमेश्वर हूँ,
मैंने ही तुझे मिस्र देश से निकाला था;
अपना मुंह खोल, और मैं उसे भर दूंगा।

11 ''किन्तु मेरी प्रजा ने मेरी वाणी नहीं सुनी;
इस्राएल मेरा इच्छुक न था।
12 अतः मैंने उनके हृदय के हठ पर
उन्हें छोड़ दिया
कि वे अपनी सम्मति के अनुसार चलें।
13 यदि मेरी प्रजा ने मेरी बात सुनी होती,
यदि इस्राएल मेरे मार्ग पर चलता,
14 तो मैं शीघ्र ही उनके शत्रुओं को दबा देता,
उनके बैरियों के विरुद्ध अपना हाथ उठाता।
15 प्रभु के बैरी इस्राएल को दण्डवत करते,
और उसकी नियति सदा बनी रहती।
16 ओ इस्राएल, मैं तुझे सर्वोत्तम गेहूं खिलाता,
और चट्टान के मधु से तुझे तृप्त करता।''

पक्षपातपूर्ण न्याय के लिए भर्त्सना

आसाफ का भजन।

82 परमेश्वर स्वर्ग-सभा+ में विराजमान
हुआ,
ईश-दूतों** के मध्य वह यह न्याय करता
है:
2 'कब तक तुम अन्यायपूर्ण निर्णय करते रहोगे,
कब तक तुम दुर्जनों का पक्ष लेते रहोगे?
सेलाह

---

* अथवा, 'पुत्र' ** अथवा, 'के विरुद्ध' + शब्दशः ईश्वर की सभा ** शब्दशः ''ईश्वरों''

81:3-4 लेव 23 : 24; गण 10 : 10 81 : 7 नि 17 : 7; गण 20 : 13 81 : 9-20 नि 20 : 2-3 81 : 16 भज 147 : 14 ; व्य 32 : 13-14 82 : 2 व्य 1 : 17; भज 58 : 1

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

3 असहाय और अनाथ का न्याय करो,
पीड़ित और निर्धन को निर्दोष सिद्ध करो।
4 असहाय और दरिद्र को मुक्त करो,
दुर्जन के हाथ से उन्हें छुड़ाओ।'

5 वे जानते नहीं, वे समझते नहीं,
वे अंधकार में भटक रहे हैं;
पृथ्वी के समस्त आधार डगमगाने लगे हैं।
6 मैं कहता हूँ, 'तुम ईश्वर के दूत++ हो,
तुम सब सर्वोच्च परमेश्वर के पुत्र हो!
7 तथापि तुम भी मनुष्य के समान मरोगे,
शासकों के सदृश तुम्हारा भी पतन होगा'॥

8 हे परमेश्वर, उठ और पृथ्वी का न्याय कर;
समस्त राष्ट्रों पर तेरा ही अधिकार है!

इस्राएल की विजय के लिए प्रार्थना

एक गीत। आसाफ का भजन।

83 हे परमेश्वर, अपने को शांत न रख,
तू चुप न रह,
हे परमेश्वर, तू निश्चल न बैठ।
2 देख! तेरे शत्रु गरज रहे हैं;
तेरे निंदकों ने सिर उठाया है।
3 वे तेरी प्रजा के विरुद्ध षड्यन्त्र रच रहे हैं;
उन्होंने तेरे शरणागतों के प्रति
परस्पर सम्मति की है।
4 वे यह कहते हैं, 'आओ, हम इन्हें मिटा डालें;
कि वे एक राष्ट्र के रूप में जीवित न रहें।
जिससे इस्राएल राष्ट्र का नाम सदा के लिए
विस्मृत हो जाए।'
5 वे एक हृदय होकर सम्मति कर रहे हैं;
उन्होंने तेरे विरुद्ध संधि की है—
6 एदोम के शिविर और इश्माएलियों ने,
मोआबी और हग्रियों ने,
7 गबाली, अम्मोनी और अमालेकी जाति ने,
सोर-निवासियों सहित पलिश्ती जाति ने।
8 असीरिया राज्य भी उनके साथ मिल गया है;
वे लोट-वंशियों के लिए
दाहिना हाथ बन गए हैं। सेलाह
9 उनके साथ ऐसा व्यवहार कर,
जैसा तूने मिद्यानियों के साथ किया था;
जैसा तूने किशोन नदी पर
सीसरा और याबीन के साथ किया था।
10 वे एनदोर में नष्ट किए गए थे,
वे भूमि की गंदगी बन गए थे।
11 उनके शासकों को
ओरेब एवं जएब के समान,
उनके समस्त राजपुत्रों को
जेबह और सलमूना के सदृश कर दे,
12 जिन्होंने कहा था, 'आओ,
परमेश्वर की चराइयों पर
अपना अधिकार कर लें।'

13 हे मेरे परमेश्वर, उन्हें बवडर की धूल के
सदृश,
पवन के समक्ष भूसे के समान बना दे।
14 जैसे आग जंगल को भस्म कर देती है,
जैसे ज्वाला पर्वतों को जला डालती है,
15 वैसे ही तू अपनी आंधी से उनका पीछा कर,
अपने तूफान से उन्हें भयभीत कर।
16 हे प्रभु, उनका मुख लज्जा से भर दे,
कि वे तेरे नाम को ढूंढ़ें।
17 सदा-सर्वदा के लिए उन्हें लज्जित और
भयभीत कर दे,
वे अपमानित होकर मर-मिटें।
18 वे जान लें कि तू ही जिसका नाम प्रभु है,
समस्त पृथ्वी पर सर्वोच्च है।

प्रभु-गृह की चाह

मुख्यवादक के लिए। गित्तीत के अनुसार। कोरह वंशियों का। एक भजन।

84 हे स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु,
तेरा निवास-स्थान कितना मनोहर है!
2 प्रभु के आंगनों के लिए
मेरा प्राण इच्छुक है, मूर्छित है;
मेरा हृदय, मेरा शरीर
जीवंत परमेश्वर का जय-जयकार करता है।

3 हे स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु,
मेरे राजा, मेरे परमेश्वर,

++ शब्दशः "ईश्वर"

82 : 6 यो 10 : 34 **83 : 9** शास 7 : 22; 4 : 7 **83 : 11** शास 7 : 25 **84 : 2** भज 42 : 1

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गौरैया ने भी बसेरा पा लिया;
आबाबील ने तेरी वेदियों पर घोंसला बनाया;
वहां वह अपने बच्चे रखती है।
4 धन्य हैं तेरे भवन में रहनेवाले;
वे तेरी स्तुति निरंतर करते हैं।

5 धन्य हैं वे मनुष्य, जिनकी शक्ति तू है,
जिनके हृदय में सियोन को जानेवाला
राजमार्ग अंकित है।*
6 जब वे शुष्क-प्रदेश** से होकर जाते हैं,
तब उसे हराभरा बना देते हैं,
शरत्कालीन वर्षा भी आशिषों से
उसे विभूषित करती है।
7 वे नये उत्साह से बढ़ते जाते हैं;
परमेश्वर+ उन्हें सियोन में दर्शन देगा।

8 हे प्रभु, स्वर्गिक सेनाओं के परमेश्वर,
मेरी प्रार्थना सुन;
हे इस्राएल के परमेश्वर,
मेरी बात पर कान दे। सेलाह
9 हे परमेश्वर, हमारी ढाल को देख;
अपने अभिषिक्त राजा के मुख पर
दृष्टि डाल!

10 तेरे आंगनों में एक दिन रहना
अन्यत्र हजार दिन रहने से श्रेष्ठ है।
दुष्टता के शिविर में निवास करने की अपेक्षा
अपने परमेश्वर के भवन के द्वार पर
खड़ा रहना ही मुझे प्रिय है।
11 प्रभु परमेश्वर सूर्य और ढाल है,
वह अनुग्रह और महिमा प्रदान करता है।
जो सिद्ध मार्ग पर चलते हैं,
प्रभु उनसे भली वस्तुएं नहीं रोकता।
12 हे स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु!
धन्य है वह मनुष्य,
जो तुझ पर भरोसा करता है!

परमेश्वर की दया-प्राप्ति के लिए प्रार्थना

मुख्यवादक के लिए। कोरह वंशियों का। एक भजन।

85 हे प्रभु, तू अपने देश से प्रसन्न था;
तूने इस्राएल की समृद्धि
उसे पुनः प्रदान की थी।
2 तूने अपनी प्रजा के अधर्म क्षमा किए थे;
तूने उसके समस्त पापों को ढांपा था। सेलाह
3 तूने अपने क्रोध का शमन किया था;
तूने अपनी क्रोधाग्नि शांत की थी।

4 हे हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर,
हमें पुनः समृद्ध कर,
अपना रोष हमसे दूर रख।
5 क्या तू सदा ही हमसे नाराज रहेगा?
क्या तू पीढ़ी से पीढ़ी
अपना क्रोध बनाए रखेगा?
6 क्या तू हमें पुनर्जीवित नहीं करेगा
जिससे तेरी प्रजा तुझ में आनन्दित हो?
7 हे प्रभु, हमें अपनी करुणा के दर्शन करा;
अपना उद्धार हमें प्रदान कर।

8 मुझे सुनने दो,
कि प्रभु परमेश्वर क्या कहता है?
वह अपनी प्रजा से, अपने भक्तों से, और
उनसे,
जो हृदय से उसकी ओर लौटते हैं,++
शान्तिप्रद वचन बोलेगा।
9 निश्चय प्रभु का उद्धार उन लोगों के समीप
है
जो उससे डरते हैं;
प्रभु की महिमा हमारे देश में निवास करेगी।

10 करुणा और सच्चाई आपस में मिलेंगी,
धार्मिकता एवं शान्ति परस्पर चुंबन करेंगी।
11 धरती से सच्चाई अंकुरित होगी,
और स्वर्ग से धार्मिकता दृष्टिपात करेगी।
12 सचमुच प्रभु वरदान देगा,
और हमारी धरती अपनी उपज प्रदान करेगी।
13 धार्मिकता उसके आगे-आगे चलेगी
और अपने पद-चिह्नों से* मार्ग बनाएगी।

---

* मूल में "जिनके हृदय में राजमार्ग हैं।" ** शब्दश: "बाका की घाटी"। + अथवा 'ईश्वरों का ईश्वर'। ++ मूल में, 'जिससे वे मूर्खता की ओर न लौटें"। * अथवा, 'उसके पद-चिह्नों के लिए'

85 : 10 भज 89 : 14; यो 1 : 17; यहेज 43 : 4 85 : 11 यश 45 : 8 85 : 12 भज 67 : 6 85 : 13 यश 58 : 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

परमेश्वर की सतत कृपा के लिए प्रार्थना

दाऊद की प्रार्थना।

86 हे प्रभु, मेरी बात पर कान दे और मुझे
उत्तर दे;
क्योंकि मैं पीड़ित और दरिद्र हूं।
2 मेरे प्राण की रक्षा कर; क्योंकि मैं तेरा भक्त
हूं।
मैंने तुझ पर भरोसा किया है;
अपने सेवक को बचा।
तू ही मेरा परमेश्वर है;
3 हे स्वामी, मुझ पर कृपा कर;
क्योंकि मैं दिन भर तुझको पुकारता हूं।
4 हे स्वामी, अपने सेवक के प्राण को
आनन्दित कर;
क्योंकि मैं तेरा ही ध्यान करता हूं।
5 हे स्वामी, तू भला और क्षमाशील है,
तेरी दुहाई देनेवालों के लिए
तू करुणा सागर है।
6 हे प्रभु, मेरी प्रार्थना पर ध्यान दे;
मेरी विनती की पुकार को सुन।
7 मैं अपने संकट के दिन तुझको पुकारता हूं;
क्योंकि तू मुझे उत्तर देता है।

8 हे स्वामी, देवताओं में न तुझ जैसा कोई है,
और न तेरे जैसे कार्य किसी और के हैं।
9 हे स्वामी, समस्त राष्ट्र, जिन्हें तूने रचा है,
तेरे सम्मुख आकर दण्डवत् करेंगे;
वे तेरे नाम की महिमा करेंगे।
10 तू महान है,
तू अद्‌भुत कार्यों का कर्त्ता है;
तू ही एकमात्र परमेश्वर है।

11 हे प्रभु, मुझे अपना मार्ग दिखा,
कि मैं तेरी सच्चाई पर चलूं;
मेरे हृदय को एकाग्रचित् बना
कि वह तेरे नाम से डरे।
12 हे मेरे स्वामी, मेरे परमेश्वर,
मैं सम्पूर्ण हृदय से तेरा गुणगान करूंगा;
मैं तेरे नाम की महिमा सदा करता रहूंगा।
13 तू मुझ पर अत्यधिक करुणा करता है।
तूने मृतक-लोक के गर्त से मेरे प्राण को मुक्त
किया है।
14 हे परमेश्वर, धृष्ट लोग मेरे विरुद्ध खड़े हैं;
आतंककारियों का दल
मेरे प्राण के पीछे पड़ा है;
वे तुझको अपने सम्मुख नहीं रखते हैं।
15 किन्तु तू, हे स्वामी, दयालु, कृपालु,
विलम्ब से क्रोध करनेवाला,
करुणा और सच्चाई से परिपूर्ण परमेश्वर है।
16 मेरी ओर उन्मुख हो,
मुझ पर कृपा कर,
अपने सेवक को अपना सामर्थ्य प्रदान कर;
अपनी सेविका की संतति को बचा।
17 अपनी भलाई का चिह्न प्रकट कर,
कि मेरे बैरी उसे देख कर लज्जित हों।
हे प्रभु, तू ही ने मेरी सहायता की है,
मुझे सांत्वना प्रदान की है।

यरूशलेम नगर में निवास करनेवालों का विशेषाधिकार

कोरह वंशियों का एक भजन। एक गीत।

87 यरूशलेम नगर की नींव
पवित्र पर्वत पर रखी गई है;
2 प्रभु इस्राएल के समस्त निवास-स्थानों से
अधिक
सियोन के द्वारों से प्रेम करता है।
3 ओ परमेश्वर के नगर,
तेरे विषय में प्रभु ने
ये महिमायुक्त बातें कहीं हैं: सेलाह
4 "जो राष्ट्र मुझे जानते हैं, मैं उनमें मिस्र और
बेबीलोन का उल्लेख करता हूं;
पलिश्ती और इथियोपिया और सोर को भी
देखो—
उनके संबंध में कहा जाता है:
'यह वहां उत्पन्न हुआ था।'
5 किन्तु सियोन के विषय में कहा जाएगा:
'यह अथवा वह, उसमें उत्पन्न हुआ था।'
स्वयंसर्वोच्चप्रभुनगर को सुरक्षित रखेगा।"

86: 8 नि 15 : 11 86 : 9 प्रक 15 : 4 86 : 15 नि 34 : 6 87 : 3 भज 46 : 4 87 : 5 भज 48 : 8; गल 4 : 26

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

6 प्रभु जातियों के विषय में पुस्तक में लिखेगा,
'यह वहीं उत्पन्न हुआ था।' सेलाह
7 गायक और नर्तक दोनों यह कहते हैं,
'मेरे समस्त प्रेरणा-स्रोत तुझमें हैं।'

मृत्युपाश से मुक्त होने के लिए प्रार्थना

एक गीत। कोरह वंशियों का भजन। मुख्यवादक के लिए, महलत लअन्नोत के अनुसार। एजरा वंशी हेमन का मसकील।

88 हे प्रभु, मेरे उद्धारकर्ता परमेश्वर,
मैं तेरे समक्ष दिन-रात दुहाई देता हूँ।
2 मेरी प्रार्थना तेरे सम्मुख पहुंचे;
तू मेरी विलाप-ध्वनि पर कान दे।

3 मेरा प्राण संकटों से भर गया है;
मेरा जीव मृतक-लोक के निकट
पहुंच रहा है।
4 मैं कबर में जाने वालों में गिना गया हूँ;
मैं शक्तिहीन पुरुष के समान हूँ,
5 मैं मृतकों में भी परित्यक्त जैसा हूँ,
कबर में पड़े उन वध किए हुओं के समान
हूँ,
जिनको तू कभी स्मरण नहीं करता,
जिनके सिर से तेरा हाथ उठ गया है।
6 तूने मुझे कबर के गर्त में,
अंधकारमय, गहरे स्थान में डाल दिया है।
7 तेरे क्रोध ने मुझे दबा लिया है;
अपनी समस्त लहरों से
तू मुझे डुबा रहा है। सेलाह
8 तूने मेरे परिचितों को मुझ से दूर कर दिया है,
उनके लिए मुझे घृणा का पात्र बना दिया है।
मैं बन्दी हूँ, और भाग नहीं सकता;
9 पीड़ा के कारण मेरी आंखें धुंधली पड़ रही
हैं।
हे प्रभु, मैं तुझको प्रतिदिन पुकारता हूँ,
अपने हाथ तेरी ओर फैलाता हूँ।
10 क्या तू मृतकों के लिए आश्चर्यपूर्ण कर्म
करता है?
क्या मुर्दे उठ कर तेरी स्तुति करते हैं?
सेलाह
11 क्या कबर में तेरी करुणा का,
विनाश-लोक में तेरी सच्चाई का
वर्णन हो सकता है?
12 क्या अन्धकार में तेरे आश्चर्यपूर्ण कर्मों को,
विस्मृति के गर्भ में तेरी धार्मिकता को
प्रकट किया जा सकता है?

13 प्रभु, मैं तेरी दुहाई देता हूं;
प्रातः मेरी प्रार्थना तेरे समक्ष पहुंचती है।
14 हे प्रभु, तू क्यों मुझे त्याग रहा है?
क्यों तू अपना मुख मुझसे छिपा रहा है?
15 मैं पीड़ित हूँ और बचपन से ही रोगी हूँ;
मैं मृत्यु के निकट हूँ;
मैं तेरा आतंक सहता हूँ;
मैं निस्सहाय हूँ।
16 तेरे क्रोध की लपटों ने मुझे घेर लिया है,
तेरा आतंक मुझे नष्ट कर रहा है;
17 वे जल-प्रवाह के समान मुझे निरन्तर घेरे हुए
हैं;
उन्होंने मिलकर मुझे घेर लिया है।
18 तूने मेरे प्रिय मित्र और साथी को मुझसे दूर
कर दिया है;
अब अन्धकार ही मेरा साथी है।

दाऊद के साथ परमेश्वर का विधान

एजरा-वंशी एतान का मसकील।

89 प्रभु, मैं तेरी करुणा के गीत गाता रहूँगा;
मैं अपने मुंह से तेरी सच्चाई
पीढ़ी से पीढ़ी उद्घोषित करता रहूंगा।
2 मैं यह जानता हूँ, तेरी करुणा
सदा-सर्वदा के लिए स्थित है;
तेरी सच्चाई आकाश के सदृश स्थाई है।

3 तूने यह कहा है, 'मैंने अपने मनोनीत राजा
के साथ विधान स्थापित किया है,
मैंने अपने सेवक दाऊद से यह शपथ खाई
है:
4 मैं दाऊद के वंश को युग-युगान्त
स्थिर रखूंगा,
उसके सिंहासन को पीढ़ी से पीढ़ी

---

87 : 6 यश 4 : 3; यहेज 13 : 9 **88 : 18** अय्य 17 : 13-14 **89** 1 रा 4 : 31 **89 : 3** भज 132 : 11 **89 : 4** 2 शम 7 : 8, 16; प्रे 2 : 30

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बनाए रखूंगा।' सेलाह
5 हे प्रभु, स्वर्ग तेरे आश्चर्यपूर्ण कर्मों का
गुणगान करे;
पवित्र सन्तों की सभा में
वह तेरी सच्चाई का गुणगान करे!
6 आकाश-मण्डल में प्रभु के तुल्य कौन है?
स्वर्गदूतों में* कौन प्रभु के समान हो सकता
है?
7 परमेश्वर पवित्र सन्तों की सभा में भयप्रद है,
वह अपने चारों ओर रहनेवालों में
महान और भयावह है।
8 हे प्रभु, स्वर्गिक सेनाओं के परमेश्वर,
तेरे जैसा और कौन शक्तिवान है?
हे प्रभु, तेरे चारों ओर तेरी सच्चाई है।
9 तू समुद्र के उत्पात पर शासन करता है;
उसकी उद्दण्ड लहरों को शान्त करता है।
10 तूने जल-राक्षस रहब को लाश के समान
कुचल डाला था,
अपने शत्रुओं को अपने भुजबल से छिन्न-
भिन्न किया था।
11 आकाश तेरा है, पृथ्वी भी तेरी है,
संसार और उसकी परिपूर्णता को
तूने ही स्थापित किया है।
12 तूने ही उत्तर और दक्षिण बनाए हैं;
ताबोर एवं हेर्मोन पर्वत तेरे नाम का
जयजयकार करते हैं।
13 तेरी भुजा बलवान है;
तेरा हाथ शक्तिसम्पन्न है;
तेरा दाहिना हाथ प्रबल है।
14 धार्मिकता और न्याय तेरे सिंहासन के मूल हैं;
करुणा और सच्चाई तेरे आगे-आगे चलती हैं।
15 धन्य हैं वे, जो पर्व के उल्लास को जानते हैं;
जो, हे प्रभु, तेरे मुख की ज्योति में चलते हैं;
16 जो तेरे नाम से निरन्तर आनन्दित होते हैं,
और तेरी धार्मिकता से उन्नत हो जाते हैं।
17 तू ही उनकी शक्ति की शोभा है;
तेरी कृपा से हमारा मस्तक ऊंचा होता है।
18 हमारी ढाल प्रभु की है;
हमारा राजा 'इस्राएल के पवित्र' प्रभु का है
19 तूने पूर्वकाल में अपने भक्त से दर्शन में यह
कहा था,
'मैंने शक्तिशाली पुरुष के सिर पर मुकुट रखा
है;
मैंने प्रजा में से एक पुरुष को चुना
और उसको उन्नत किया है।
20 मैंने अपने सेवक दाऊद को ढूंढ़ लिया है;
पवित्र तेल से उसका अभिषेक किया है।
21 अतः मेरा हाथ उस पर स्थित रहेगा,
मेरी भुजा उसे शक्तिवान बनाएगी।
22 शत्रु उसे पराजित न कर सकेगा,
और न कुटिल व्यक्ति उसे पीड़ा पहुँचाएंगे।
23 मैं उसके सम्मुख ही उसके बैरियों को नष्ट
करूंगा;
मैं उससे बैर करनेवालों का नाश कर दूंगा।
24 मेरी सच्चाई और करुणा उसके साथ रहेंगी;
मेरे नाम से उसका मस्तक ऊंचा होगा।
25 मैं उसके अधिकार-क्षेत्र को भूमध्य सागर
तक,
उसके भुजबल को फरात नदी तक
स्थित रखूंगा।
26 वह मुझे पुकार कर कहेगा,
"तू ही मेरा पिता,
मेरा परमेश्वर, मेरे उद्धार की चट्टान है।"
27 मैं उसे पहलौठा पुत्र,
पृथ्वी के राजाओं में सर्वोच्च बनाऊंगा।
28 मैं उसके प्रति सदा करुणा करता रहूंगा,
और मेरा विधान उसके लिए अटल रहेगा।
29 मैं उसके वंश को युगान्त तक,
उसके सिंहासन को स्वर्ग के दिन के समान
स्थायी बनाए रखूंगा।
30 यदि उसके पुत्र मेरी व्यवस्था को त्याग देंगे,
और मेरे न्याय-सिद्धान्तों के अनुसार नहीं
चलेंगे;

---

* शब्दशः "ईश्वरों के पुत्रों में"।

89 : 20 प्रे 13 : 22; 1 शम 13 : 14; 16 : 13 89 : 27 2 शम 7 : 14 ; भज 2 : 7; प्रक 1 : 5 89 : 28 यश 55 : 3

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

31 यदि वे मेरी संविधि को भंग करेंगे
और मेरी आज्ञाओं का पालन नहीं करेंगे,
32 तो मैं छड़ी से उनके अपराधों की
और कोड़ों से उनके अधर्म की सुध लूंगा।
33 परन्तु मैं उस पर से अपनी करुणा नहीं
हटाऊंगा,
और न अपनी सच्चाई को झूठा बनने दूंगा।
34 न मैं अपना विधान भंग करूंगा,
और न अपने मुंह से निकले हुए शब्दों को
बदलूंगा।
35 मैंने सदा-सर्वदा के लिए
अपनी पवित्रता की शपथ खाई है;
मैं दाऊद के प्रति झूठा नहीं बनूंगा।
36 उसका वंश सदा चलता रहेगा
उसका सिंहासन मेरे सामने सूर्य जैसा
चमकता रहेगा।
37 वह चन्द्रमा के समान सदा के लिए स्थित
होगा;
यह साक्षी आकाश में स्थिर है।'' सेलाह

38 प्रभु, अब तूने उसे त्याग दिया,
तूने उसको अस्वीकार कर दिया;
तू अपने अभिषिक्त राजा से अति क्रुद्ध है।
39 तूने अपने सेवक के साथ
अपने विधान को त्याग दिया;
तूने उसके मुकुट को भूमि पर गिराकर
अशुद्ध कर दिया।
40 तूने उसकी समस्त रक्षा-चौकियां गिरा दीं;
उसके गढ़ों को खण्डहर बना दिया।
41 मार्ग से जाने वाले उसे लूटते हैं;
वह पड़ोसियों की निन्दा का पात्र बन गया।
42 तूने उसके बैरियों का भुजबल बढ़ाया है,
उसके सब शत्रुओं को आनन्दित किया है।
43 निस्सन्देह तू ने उसकी तलवार की धार
कुन्द कर दी
और युद्ध में उसको टिकने नहीं दिया।
44 तूने उसका राजदण्ड* उसके हाथ से छीन
लिया;
और उसका सिंहासन भूमि पर गिरा दिया।
45 तूने उसके यौवन के दिन घटा दिए,
और उसे पराजय की लज्जा से गड़ जाने
दिया। सेलाह

46 हे प्रभु, कब तक?
क्या तू सदा स्वयं को छिपाए रखेगा?
कब तक तेरा क्रोध आग-जैसा जलता
रहेगा?
47 हे स्वामी, स्मरण कर,
जीवन-काल कितना अल्प है;
तूने सब मनुष्यों को नश्वर उत्पन्न किया है।
48 ऐसा कौन मनुष्य है, जो सदा जीवित रहे,
और मृत्यु को न देखे?
कौन मनुष्य मृतकलोक के हाथ से
अपने प्राण छुड़ा सकता है? सेलाह

49 हे स्वामी, कहां है तेरी प्राचीनकाल की
करुणा,
जिसकी शपथ तूने अपने सेवक दाऊद से
सच्चाईपूर्वक खाई थी?
50 हे स्वामी, अपने सेवक की निन्दा स्मरण
कर;
मैं कैसे अपने हृदय में लोगों का अपमान**
सहता हूँ।
51 हे प्रभु, तेरे शत्रुओं ने मेरी निन्दा की है;
उन्होंने तेरे अभिषिक्त राजा का
पग-पग पर अपमान किया है।

52 प्रभु युग-युगान्त धन्य है।
आमेन और आमेन!

---

* मूल में 'शुद्धता' ** मूल में 'सब महान राष्ट्रों को'
89 :37 प्रक 3 : 14

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

चौथा खण्ड

परमेश्वर शाश्वत है, पर मनुष्य क्षण-भंगुर

90 परमेश्वर के प्रिय जन मूसा की प्रार्थना।
हे स्वामी, तू पीढ़ी से पीढ़ी
हमारे लिए आश्रय-स्थल बना हुआ है।
2 पर्वतों के उत्पन्न होने के पहिले,
तेरे द्वारा संसार की सृष्टि होने के पूर्व,
युग-युगान्त से तू ही परमेश्वर है।
3 तू मनुष्य को मिट्टी में लौटा देता है;
तू यह कहता है, "ओ मानव-पुत्र, लौट
जा!"
4 तेरी दृष्टि में
हजार वर्ष भी बीते कल के समान हैं,
वे रात के एक पहर के सदृश हैं।
5 तू मनुष्यों को बहा ले जाता है;
वे मानो स्वप्न हैं,
वे घास के सदृश हैं
जो प्रातःकाल लहलहाती है:
6 वह प्रातःकाल फूलती और लहलहाती है,
किन्तु संध्या को मुर्झाकर सूख जाती है।
7 हम तेरे क्रोध से भस्म हो गए हैं;
तेरे रोष से हम भयभीत हैं।
8 तूने अपने सम्मुख हमारे अधर्म के कार्यों को,
अपने मुख की ज्योति में हमारे गुप्त पापों को
रखा है।
9 तेरे क्रोध में हमारे दिन कटते हैं;
हम अपने जीवन के वर्षों को आह भरते हुए
बिताते हैं।
10 हमारी आयु के वर्ष सत्तर हैं;
यदि वे बल के कारण अस्सी भी हो जाएं,
तोभी उनकी अवधि दुःख और कष्ट में
बीतती है।
वे अविलम्ब व्यतीत हो जाते हैं
और हमारे प्राण-पखेरू उड़ जाते हैं।
11 तेरे कितने भक्त
तेरे क्रोध की शक्ति को जान सकते हैं;
तेरे रोष को कौन अनुभव कर सकता है?
12 अतः प्रभु, हमें सिखा कि हमारी आयु के
दिन कितने कम हैं;
और यों हम बुद्धिमत्तापूर्ण मन प्राप्त करें।
13 हे प्रभु, लौट आ!
कब तक?
तू अपने सेवकों पर दया कर।
14 तू प्रातःकाल अपनी करुणा से हमें तृप्त कर,
जिससे हम जीवन भर जयजयकार करें,
और आनन्द मनाएं।
15 जितने दिन तूने हमें पीड़ित किया,
जितने वर्ष हमने दुःख भोगा
उतने ही समय तक हमें आनन्दित कर।
16 तेरे कार्य तेरे सेवकों पर,
तेरा प्रताप उनकी सन्तान पर प्रकट हो!
17 हमारे स्वामी परमेश्वर की कृपा हम पर हो;
जो कार्य हम करते हैं, उन्हें सफल कर।
निश्चय प्रभु, तू हमारे कार्यों को सफल कर।

सर्वशक्तिमान परमेश्वर हमारी रक्षा करता है

91 ओ सर्वोच्च प्रभु के आश्रय में रहने
वाले,
सर्वशक्तिमान परमेश्वर की छाया में निवास
करने वाले,
2 प्रभु से यह कह, " तू मेरा शरण-स्थल और
गढ़ है,
तू मेरा परमेश्वर है, तुझ पर मैं भरोसा करता
हूँ।"
3 वह तुझे बहेलिए के फंदे से,
घातक महामारी से छुड़ाएगा;
4 वह तुझे अपने पंखों से घेर लेगा,
तू उसके चरणों में शरण पाएगा;
उसकी सच्चाई ही ढाल और झिलम हैं।
5 तू रात के आतंक से,
और दिन में चलने वाले तीर से,
6 अन्धकार में फैलने वाली महामारी से,
और दोपहर में विनाश करनेवाले भयंकर

---

90 : 2 नीति 8 : 25 **90 : 4** 2 पत 3 : 8 **90 : 5** अय्य 20 : 8; भज 103 : 15; यश 40 : 6-8 **90 :10** प्रज्ञ 18 : 8-9 **91 : 5-6** अय्य 5 : 19-22

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रोग से
भयभीत न होगा।

7 तेरे निकट हजार लोग,
तेरी दाहिनी ओर लाख लोग गिरते हों,
पर महामारी तेरे पास नहीं आएगी।
8 तू केवल अपने नेत्रों से दृष्टि करेगा,
तू दुर्जनों के प्रतिफल को देखेगा।
9 तूने प्रभु को अपना शरण-स्थल माना है।+
सर्वोच्च प्रभु तेरा धाम है।
10 इसलिए बुराई तेरे पास पहुंच नहीं सकेगी,
महा विपत्ति तेरे शिविर के निकट
आने न पाएगी।

11 तेरे समस्त मार्गों में तेरी रक्षा हेतु,
प्रभु अपने दूतों को आज्ञा देगा।
12 वे तुझे अपने हाथों पर उठा लेंगे,
जिससे तेरे चरणों को पत्थर से ठेस न लगे।
13 तू सिंह और सांप को कुचलेगा,
तू युवा सिंह और अजगर को
पैर-तले रौंदेगा।

14 प्रभु कहता है, 'वह मुझ से प्रेम करता है,
अत: मैं उसको छुड़ाऊंगा;
वह मेरे नाम को जानता है,
इसलिए मैं उसकी रक्षा करूंगा।
15 जब वह मुझे पुकारेगा, मैं उसे उत्तर दूंगा;
संकट में मैं उसके साथ रहूंगा;
मैं उसे मुक्त करूंगा
और उसे महिमान्वित करूंगा।
16 मैं उसको दीर्घायु से तृप्त करूंगा,
और उसे अपने उद्धार का दर्शन कराऊंगा।'

परमेश्वर की भलाई के लिए स्तुतिगान

एक भजन। विश्राम दिवस के लिए गीत।

92 हे सर्वोच्च प्रभु!
भला है तेरी स्तुति करना;
भला है तेरे नाम का गुणगान करना;
2–3 दस तार के वाद्य पर, वीणा पर,
सितार के साथ राग के अनुसार,
प्रात: तेरी करुणा,
तथा रात में तेरी सच्चाई घोषित करना,
कितना भला है!
4 हे प्रभु, तूने अपने कार्यों से मुझे आनन्दित
किया है;
मैं तेरे कार्यों का जयजयकार करूंगा
जो तूने मेरे लिए किये हैं।

5 हे प्रभु, तेरे कार्य कितने महान हैं।
तेरे विचार कितने गहन-गंभीर हैं!
6 नासमझ यह नहीं जानता
और न मूर्ख यह समझता है
7 कि यद्यपि दुर्जन घास के सदृश
हरे-भरे रहते हैं,
समस्त कुकर्मी फलते-फूलते हैं,
तो भी वे सदा-सर्वदा के लिए नष्ट हो जाएंगे,
8 किन्तु प्रभु, तू युग-युगान्त उन्नत है।
9 प्रभु, तेरे शत्रु, हां तेरे शत्रु मिट जाएंगे;
समस्त कुकर्मी छिन्न-भिन्न हो जाएंगे।

10 तू ने जंगली सांड़ के सींग के सदृश
मेरा सिर ऊंचा किया है।
तूने मुझपर ताजा तेल उण्डेला है*।
11 मेरी आंखों ने अपने घातकों का पतन देखा,
मेरे कानों ने उन कुकर्मियों के विनाश को
सुना, जो मेरे विरुद्ध खड़े हुए थे।
12 धार्मिक व्यक्ति खजूर वृक्ष के समान
फलते-फूलते हैं;
वे लबानोन प्रदेश के देवदार-जैसे बढ़ते हैं।
13 वे प्रभु के गृह में रोपे गए हैं;
वे हमारे परमेश्वर के आंगनों में
फलते-फूलते हैं।
14 वे वृद्धावस्था में भी फलते हैं;
वे सदा रसमय और हरे-भरे रहते हैं,
15 जिससे वे यह घोषित कर सकें
कि प्रभु सच्चा है;
वह हमारी चट्टान है;
उसमें लेशमात्र भी अधार्मिकता नहीं है।

+ अथवा, 'हे प्रभु, तू मेरा शरण-स्थल है।'' * मूल अस्पष्ट

91 : 11-12 मत 4 6; इब्र 1 : 14 **91 : 13** लू 10 : 19; मक 16 : 18 **91 : 15** यिर 33 : 3 **92:3** भज 33 : 2
92 : 6 प्रज्ञा 13 : 1 **92 : 15** व्य 32 : 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रभु का प्रताप

93 प्रभु राज्य करता है,
वह प्रताप से विभूषित है।
प्रभु विभूषित है,
वह शक्ति का कटिबन्ध बांधे हुए है।
निश्चय पृथ्वी की नींव दृढ़ है,
वह विचलित न होगी।
2 प्रभु, तेरा सिंहासन अनादि काल से स्थिर है;
तू युग-युगान्त से है।

3 सरिताएं उमड़ रही हैं;
उनका घोर रव उमड़ रहा है;
सरिताओं का गर्जन उमड़ रहा है।
4 महासागर की प्रचण्ड लहरों से अधिक
प्रचण्ड,
ऊंचे पर विराजमान प्रभु शक्तिशाली है।

5 प्रभु, तेरी साक्षी अति विश्वसनीय है;
तेरे भवन को सदा-सर्वदा
पवित्रता ही शोभा देती है।

परमेश्वर की न्यायप्रियता

94 प्रभु प्रतिशोधी परमेश्वर है।
हे प्रतिशोधी परमेश्वर,
प्रकाशवान हो!
2 हे पृथ्वी के न्यायकर्ता, उठ!
अहंकारियों को प्रतिफल दे!
3 हे प्रभु, दुर्जन कब तक,
दुर्जन कब तक आनन्दित होते रहेंगे?

4 वे निरन्तर धृष्ट वचन बोलते हैं;
समस्त कुकर्मी डींग मारते हैं।
5 हे प्रभु, वे तेरे निज लोगों को कुचलते हैं;
तेरी मीरास को पीड़ित करते हैं।
6 वे परदेशी और विधवा की हत्या करते हैं,
वे पितृहीन बच्चों को मार डालते हैं;
7 वे यह कहते हैं, 'प्रभु नहीं देखता है;
इस्राएल का परमेश्वर नहीं समझता है।'

8 अरे नासमझ लोगो, तुम विचार करो;
अरे मूर्खो, तुम कब समझ से काम लोगे?
9 क्या कान को बनाने वाला स्वयं नहीं सुनता?
अथवा आंख का रचयिता स्वयं नहीं देखता?
10 क्या राष्ट्रों को ताड़ित करनेवाला प्रभु
उन्हें ताड़ित न करेगा?
जो प्रभु मनुष्यों को ज्ञान की बातें सिखाता है,
11 वह मनुष्यों के विचारों को जानता है;
वह यह भी जानता है कि मनुष्य श्वास मात्र
है।

12 धन्य है वह मनुष्य,
जिसको, प्रभु, तू ताड़ित करता है,
और यों उसे अपनी व्यवस्था सिखाता है।
13 तू उसे संकट के दिनों में
उस समय तक शान्ति देता है,
जब तक दुर्जन के लिए गड्ढा न खुद जाए।
14 प्रभु अपने निज लोगों को नहीं छोड़ेगा,
वह अपनी मीरास को नहीं त्यागेगा।
15 न्याय धार्मिकता की ओर लौटेगा,
और सब निष्कपट व्यक्ति
उसका अनुसरण करेंगे।

16 दुर्जन के विरुद्ध कौन मेरे पक्ष में उठेगा?
कुकर्मियों के विरोध में कौन मेरे लिए खड़ा
होगा?
17 यदि प्रभु ने मेरी सहायता न की होती,
तो मैं तत्काल मृत्यु की खामोशी में निवास
करता।
18 जब मैंने यह कहा, 'मेरे पग फिसल रहे हैं,'
तब हे प्रभु, तेरी करुणा ने मुझे सहारा दिया।
19 जब मेरे हृदय में चिन्ताएं बढ़ जाती हैं,
तब तेरे आश्वासन मेरे चित् को प्रसन्न करते
हैं।
20 क्या वे अत्याचारी राजा तुझसे सम्बद्ध हो
सकते हैं
जो संविधि की आड़ में उत्पात मचाते हैं?
21 वे भक्त के प्राण के लिए एकत्र होते हैं,
वे निर्दोष को मृत्यु-दण्ड देते हैं;
22 किन्तु प्रभु मेरे लिए शरण-स्थल है,
मेरा परमेश्वर मेरे आश्रय की चट्टान
बन गया है।

---

93 : 1 भज 96 : 10; यश 52 : 7 **94 : 9** नि 4 : 11; नीति 20 :12 **94 : 11** 1 कुर 3 : 20 **94 12** अय्य 5 : 17

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

23 वह उन पर ही उनका अनिष्ट लौटाएगा;
वह उन्हीं की बुराई के द्वारा उनको नष्ट करेगा;
निश्चय ही हमारा प्रभु परमेश्वर उनको नष्ट करेगा।

स्तुति के लिए आह्वान और प्रभु की चेतावनी

95 आओ, हम प्रभु का जय-जयकार करें;
अपने उद्धार की चट्टान का जयघोष करें।
2 गुणगान करते हुए हम उसके सम्मुख आएं;
स्तुतिगान गाते हुए उसका जयघोष करें।
3 प्रभु महान परमेश्वर है;
वह समस्त देवताओं के ऊपर महान राजा है;
4 उसके अधिकार में पृथ्वी के गहरे स्थान हैं;
पर्वतों के शिखर भी उसी के हैं।
5 जल भी उसी का है, क्योंकि उसने उसको बनाया है;
थल की रचना उसी के हाथों ने की है।

6 आओ, हम उसके चरणों पर झुकें
और उसकी आराधना करें;
अपने निर्माता प्रभु के सम्मुख घुटने टेकें।
7 वह हमारा परमेश्वर है,
और हम उसके चरागाह की रेवड़ हैं,
उसके अधिकार* की भेडें हैं।

भला होता कि आज तुम उसकी वाणी सुनते!
8 तुम अपना हृदय कठोर न करना,
जैसा तुम्हारे पूर्वजों ने उस दिन किया था
जब वे मरीबा में,
निर्जन प्रदेश के मस्सा में थे।
9 वहाँ तुम्हारे पूर्वजों ने प्रभु की परीक्षा की थी,
प्रभु के कार्यों को देख कर भी उसे परखा था।
10 वह चालीस वर्ष तक उस पीढ़ी से घृणा करता रहा।
प्रभु ने यह कहा था, 'ये हृदय के भ्रष्ट लोग हैं,
ये मेरे मार्गों को नहीं जानते हैं।'
11 अत: प्रभु ने अपने क्रोध में यह शपथ खाई,
'ये मेरे विश्राम में प्रवेश नहीं करेंगे।'

प्रभु के परमाधिकार के लिए स्तुतिगान

96 प्रभु के लिए नया गीत गाओ,
हे पृथ्वी के लोगो, प्रभु के निमित्त गाओ!
2 प्रभु के लिए गाओ, उसके नाम को धन्य कहो;
दिन-प्रतिदिन उसके उद्धार का सन्देश सुनाओ।
3 राष्ट्रों में उसकी महिमा का,
समस्त जातियों में उसके अद्‌भुत कार्यों का वर्णन करो।
4 प्रभु महान है, वह स्तुति के अत्यन्त योग्य है;
वह समस्त देवताओं से अधिक
भक्ति-योग्य है।
5 अन्य जातियों के देवतागण मात्र मूर्तियां हैं;
पर प्रभु ने स्वर्ग को निर्मित किया है।
6 उसके सम्मुख यश और प्रताप हैं;
उसके पवित्र स्थान में शक्ति और सौन्दर्य हैं।

7 हे अन्य जातियों के कुलो, प्रभु की स्तुति करो!
प्रभु की महिमा और शक्ति स्वीकार करो।
8 प्रभु के नाम की महिमा को स्वीकार करो!
भेंट लेकर उसके आंगनों में प्रवेश करो।
9 पवित्रता से सज कर+ उसकी आराधना करो;
हे पृथ्वी के लोगो, उसके सम्मुख कांपते रहो।

10 राष्ट्रों में यह कहो, 'प्रभु राज्य करता है।
निश्चय ही पृथ्वी की नींव दृढ़ है,
वह विचलित न होगी।
प्रभु लोगों का न्याय निष्पक्षता से करेगा,
11 स्वर्ग आनन्दित और पृथ्वी हर्षित हो!
सागर और उसकी परिपूर्णता
उल्लास से गर्जन करे।
12-13 धरती और जो कुछ उसमें है,

---

* अथवा 'पालन-संरक्षण' + अथवा 'पवित्र परमेश्वर के दर्शन के लिए'।

95 : 7-11 इब्र 3 : 7-11 **95 : 8** नि 17 : 7; गण 20 : 13 **95 : 11** गण 14 : 22-23; इब्र 4 : 3-5 **96 :1-13** 1 इति 16 : 23-33 **96 : 5** 1 कुर 8 : 4-5 **96:7-9** भज 29 : 1-2 **96:12** यश 55 : 12

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वह प्रफुल्लित हो।
जब प्रभु आएगा, तब वन के समस्त वृक्ष
प्रभु के सम्मुख जयजयकार करेंगे।
वह पृथ्वी का न्याय करने को आएगा।
वह धार्मिकता से संसार का,
और सच्चाई से सभी जातियों का न्याय करेगा

प्रभु का राज्य और सामर्थ्य

97 प्रभु राज्य करता है, पृथ्वी हर्षित हो;
सागर-तट के सब देश आनन्दित हों।
2 प्रभु के चारों ओर मेघ और सघन अन्धकार
है;
धार्मिकता और न्याय उसके सिंहासन के
मूल हैं।
3 उसके आगे-आगे अग्नि जाती है,
जो उसके बैरियों को चारों ओर भस्म करती
है!
4 उसकी विद्युत भू-मण्डल को प्रकाशित
करती है;
यह देखकर पृथ्वी कांप उठती है।
5 प्रभु की उपस्थिति से,
समस्त पृथ्वी के स्वामी की उपस्थिति से
पर्वत मोम सदृश पिघल जाते हैं।

6 स्वर्ग प्रभु की धार्मिकता घोषित करता है;
समस्त जातियां उसकी महिमा का दर्शन
पाती हैं।
7 समस्त मूर्तिपूजक,
निस्सार मूर्तियों पर गर्व करनेवाले
लज्जित होते हैं।
देवतागण प्रभु को दण्डवत् करते हैं।
8 हे प्रभु, तेरे न्याय के विषय में सियोन ने सुना,
और वह आनन्दित हुआ;
यहूदा प्रदेश के नगर हर्षित हैं।
9 हे प्रभु, तू ही, समस्त पृथ्वी पर सर्वोच्च है;
तू समस्त देवताओं के ऊपर अत्यन्त उन्नत
है।

10 प्रभु बुराई से घृणा करने वालों से
प्रेम करता है;*
वह अपने भक्तों के प्राणों की रक्षा करता है।
वह दुर्जनों के हाथ से उन्हें मुक्त करता है।
11 धार्मिक व्यक्ति के निमित्त ज्योति,
निष्कपट हृदय वालों के लिए आनन्द
उदय होता है।**
12 ओ धार्मिको, प्रभु में आनन्दित हो,
उसके पवित्र नाम का गुणगान करो।

परमेश्वर की सच्चाई के लिए स्तुतिगान

एक भजन।

98 प्रभु के लिए नया गीत गाओ;
क्योंकि प्रभु ने अद्भुत कार्य किए हैं!
उसके दाहिने हाथ ने
उसकी पवित्र भुजा ने विजय प्राप्त की है।
2 प्रभु ने अपना उद्धार घोषित किया है,
राष्ट्रों के सम्मुख अपनी धार्मिकता प्रकट की
है।
3 प्रभु ने इस्राएल के घराने के प्रति
अपनी करुणा और सच्चाई को
स्मरण किया है;
पृथ्वी के समस्त सीमान्तों ने
हमारे परमेश्वर के उद्धार को देखा है।

4 हे पृथ्वी के लोगो, प्रभु का जय-घोष करो;
उत्साहपूर्वक जयजयकार करो, स्तुति गाओ।
5 सितार के साथ,
दसतार सहित गीत के मधुर लय के साथ
प्रभु की स्तुति गाओ!
6 तुरही और नरसिंगे के स्वर में,
प्रभु, राजा के सम्मुख जयघोष करो!

7 सागर और उसकी परिपूर्णता,
संसार और उसके निवासी,
उल्लासपूर्वक गर्जन करें।
8 सरिताएं करतल ध्वनि करें।
पर्वत मिलकर
9 प्रभु के सम्मुख जयजयकार करें;
क्योंकि वह पृथ्वी का न्याय करने को
आ रहा है;
वह धार्मिकता से संसार का,

---

* अथवा, "ओ प्रभु से प्रेम करनेवालो, बुराई से घृणा करो!" ** अथवा, "बोया जाता है!"

97 : 7 इब्र 1 : 6 98 : 1 यश 59 : 16

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और निष्पक्षता से सब जातियों का न्याय
करेगा।

इस्राएल के प्रति प्रभु का निष्कपट व्यवहार

99 प्रभु राज्य करता है;
जातियां कांप उठें!
वह करूबों पर सवार है;
पृथ्वी डोल उठे!
2 प्रभु सियोन में महान है;
वह समस्त जातियों पर उन्नत है।
3 लोग प्रभु के महान् और भयप्रद नाम का
गुणगान करें;
वह पवित्र है!
4 हे शक्तिमान न्यायप्रिय राजा,
तूने ही निष्पक्षता की स्थापना की है;
तूने इस्राएल में न्याय और धार्मिकता का
व्यवहार किया है।
5 हमारे प्रभु परमेश्वर का गुणगान करो;
उसके चरणों की चौकी के सम्मुख
वन्दना करो।
वह पवित्र है!

6 मूसा और हारून प्रभु के पुरोहित थे;
प्रभु के नाम को पुकारने वालों में शमूएल थे;
उन्होंने प्रभु को पुकारा, और प्रभु ने उन्हें
उत्तर दिया था।
7 मेघ-स्तम्भ में से वह उनसे वार्तालाप करता
था।
उन लोगों ने प्रभु की साक्षियों,
और उन संविधियों का पालन किया था,
जिन्हें प्रभु ने उन्हें दिया था।

8 हे प्रभु, हमारे परमेश्वर,
तू उन्हें उत्तर देता था;
तू उनके लिए क्षमाशील परमेश्वर था,
पर तू उनके बुरे कामों का प्रतिशोधी भी था!
9 हमारे प्रभु परमेश्वर का गुणगान करो;
उसके पवित्र पर्वत पर जाकर
प्रभु की वन्दना करो।
क्योंकि प्रभु, हमारा परमेश्वर पवित्र है।

धन्यवाद का गीत

स्तुति-बलि का भजन।

100 पृथ्वी के लोगो,
प्रभु का जयघोष करो!
2 आनन्द से प्रभु की सेवा करो,
जयजयकार करते हुए उसके सम्मुख आओ!

3 जान लो कि प्रभु ही परमेश्वर है;
प्रभु ने ही हमें बनाया है,
और हम उसी के हैं*;
हम उसके निज लोग,
उसके चरागाह की भेड़ें हैं।

4 उसके भवन के द्वारों से
स्तुति-बलि के साथ+ प्रवेश करो;
स्तुति गाते हुए उसके आंगनों में आओ।
उसकी सराहना करो,
उसके नाम को धन्य कहो!

5 प्रभु भला है;
उसकी करुणा सदा-सर्वदा,
उसकी सच्चाई पीढ़ी से पीढ़ी बनी रहती है।

धार्मिक जीवन बिताने का संकल्प

दाऊद का। एक भजन।

101 मैं करुणा और न्याय के गीत गाऊंगा;
हे प्रभु, तेरे लिए मैं राग बजाऊंगा।
2 मैं निर्दोष आचरण पर ध्यान दूंगा,
प्रभु, तू मेरे पास कब आएगा?
मैं अपने घर के भीतर
शुद्ध हृदय से आचरण करूंगा;
3 मैं अधम बातों को
अपने नेत्रों के समक्ष नहीं रखूंगा।
मैं पथभ्रष्टों के काम से घृणा करता हूं,
मैं दुष्कर्म में लिप्त नहीं हूंगा।
4 हृदय की कुटिलता मुझ से दूर रहेगी;
मैं बुराई से अनजान रहूंगा।
5 जो व्यक्ति गुप्त रूप से
अपने पड़ोसी की निन्दा करता है,

---

* पाठान्तर, "और न हमने अपने को बनाया" + अथवा, " धन्यवाद देते हुए"

99: 1 नि 25 : 22 **99 : 3** यश 6 : 3 **99 : 7** नि 33 : 9 **100 : 5** भज 106 : 1; 1 इति 16 : 34; 2 इति 5 : 13; एज्रा 3 : 11; यिर 33 : 11 **101 : 2** 1 रा 9 : 4 **101 : 5** नीति 17 : 20

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उसको मैं नष्ट करूंगा;
जिसकी आखें घमण्ड से चढ़ी हैं
और जिसके हृदय में अहंकार है,
उसको मैं सहन नहीं करूंगा।

6 मेरी कृपादृष्टि देश के विश्वासपात्रों पर होगी,
कि वे मेरे साथ निवास करें;
जो व्यक्ति निर्दोष मार्ग पर चलता है,
वह मेरी सेवा करेगा।
7 जो व्यक्ति छल-कपट करता है,
वह मेरे घर के भीतर नहीं रह सकेगा;
जो झूठ बोलता है,
वह मेरे नेत्रों के समक्ष नहीं टिक सकेगा।

8 प्रभु के नगर से,
सब कुकर्मियों को मिटाने के लिए
मैं सबेरे-सबेरे
देश के समस्त दुर्जनों को नष्ट करूंगा।

संकट में पुकार

एक पीड़ित व्यक्ति की प्रार्थना, जब वह व्यथित हो प्रभु के सम्मुख अपना अभियोग प्रस्तुत करता है।

102 हे प्रभु, मेरी प्रार्थना सुन;
मेरी दुहाई तेरे समीप पहुँचे।
2 मेरे संकट के दिन
अपना मुख मुझ से न छिपा!
अपने कान मेरी ओर कर;
जिस समय मैं पुकारूं,
मुझे अविलम्ब उत्तर दे।
3 मेरे दिन धुएं के सदृश* लुप्त हो जाते हैं;
मेरी हड्डियाँ भट्टी जैसी धधक रही हैं।
4 मेरा हृदय घास की भांति झुलसकर
सूख गया है;
मैं भोजन करना भी भूल गया हूँ।
5 मेरी सिसकियों के स्वर के कारण
मेरी अस्थियाँ त्वचा से चिपक गई हैं।
6 मैं निर्जन प्रदेश के धनेश के सदृश हूं;
मैं खण्डहरों के उल्लू जैसा बन गया हूँ।
7 मैं जागता रहता हूँ;
मैं छत पर एकाकी गौरे के समान हो गया हूँ।
8 मेरे शत्रु दिन-भर मेरी निन्दा करते हैं;
मुझ पर हंसने वाले मेरे नाम से शाप देते हैं।
9 मैं रोटी के सदृश राख खाता हूँ,
मैं अपने पेय में आंसू मिलाता हूँ,
10 तेरे क्रोध, तेरे कोप के कारण;
क्योंकि तूने मुझे उठाकर फेंक दिया है।
11 मेरे दिन ढलती छाया के समान हैं,
मैं घास के सदृश झुलस गया हूँ।

12 प्रभु , तू सदा सिंहासनारूढ़ है;
तेरा नाम पीढ़ी से पीढ़ी तक बना रहता है।
13 तू उठेगा, और सियोन पर दया करेगा;
उस पर कृपा करने का यही समय है;
निर्धारित समय आ पहुँचा है।
14 तेरे सेवक उसके खण्डहरों को प्यार करते हैं,
उसके विनाश पर उन्हें दया आती है।
15 राष्ट्र प्रभु के नाम पर श्रद्धा रखेंगे;
पृथ्वी के समस्त राजा उसकी महिमा से भयभीत होंगे।
16 प्रभु सियोन को पुन: निर्मित करेगा,
वह अपनी महिमा में प्रकट होगा।
17 वह दीन-दु:खियों की प्रार्थना की ओर मुख करेगा;
वह उनकी प्रार्थना की उपेक्षा नहीं करेगा।

18 यह भावी पीढ़ी के लिए लिख लिया जाए,
ताकि सन्तति, जो उत्पन्न होगी,
प्रभु की स्तुति करे:
19 प्रभु ने ऊंचे पवित्र स्थान से नीचे निहारा,
उसने स्वर्ग से पृथ्वी पर दृष्टिपात किया,
20 जिससे वह बन्दियों का कराहना सुने,
मृत्यु-दण्ड पाए हुओं को स्वतन्त्र करे;
21 ताकि लोग सियोन में प्रभु के नाम का पाठ करें,
और वे यरूशलेम में उसकी स्तुति करें।
22 उस समय विजातियाँ और उनके राजा,
प्रभु की सेवा के लिए एकत्र होंगे।

23 प्रभु ने मार्ग में ही मेरे बल को घटा दिया,
मेरी आयु के दिन उसने कम कर दिए।

---

* पाठांतर, "धुएं में"

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

24 मैं यह कहता हूँ, 'हे मेरे परमेश्वर!
तेरी आयु पीढ़ी से पीढ़ी तक स्थिर है,
तू मेरी पकी आयु के पूर्व मुझे न उठा।'
25 तूने आदि में पृथ्वी की नींव डाली,
आकाश तेरे हाथों की कृति है।
26 सब नष्ट हो जाएंगे, परन्तु तू अटल है;
वे वस्त्र के सदृश जीर्ण हो जाएंगे।
तू उनको वस्त्र की भाँति बदल देता है,
27 अत: वे बदल जाते हैं;
पर तू वैसा ही है;
तेरी आयु का अन्त नहीं।
28 तेरे सेवकों की सन्तान सुरक्षित निवास करेगी,
और उसके वंशज तेरे सम्मुख स्थिर होंगे।

प्रभु के उपकारों के लिए स्तुति-गान

दाऊद का।

103 ओ मेरे प्राण, प्रभु को धन्य कह;
मेरे अन्तर का सर्वस्व
उसके पवित्र नाम को धन्य कहे!
2 ओ मेरे प्राण, उस प्रभु को धन्य कह,
और उसके समस्त उपकारों को न भूल,
3 जो तेरे सब अधर्म को क्षमा करता है,
जो तेरे समस्त रोगों को स्वस्थ करता है,
4 जो तेरे जीवन को कबर से मुक्त करता है,
जो तुझे करुणा और अनुकम्पा से सुशोभित करता है,
5 जो जीवन भर तुझे भली वस्तुओं से तृप्त करता है,
जिससे तेरा यौवन गरुड़* के सदृश गतिवान हो जाता है।

6 प्रभु समस्त दलितों के लिए,
मुक्ति और न्याय के कार्य करता है।
7 उसने मूसा पर अपने मार्ग,
और इस्राएल की सन्तान पर अपने कार्य प्रकट किए।
8 प्रभु दयालु और कृपालु है,
वह विलम्ब-क्रोधी और करुणामय है,
9 वह न सदा डांटता रहता है,
और न सदैव क्रोध करता है।
10 वह हमारे पापों के अनुसार हम से व्यवहाहर नहीं करता,
और न हमारे अधर्म के अनुसार हमें प्रतिफल देता है।
11 आकाश पृथ्वी के ऊपर जितना ऊंचा है,
उतनी ही उसकी महान करुणा उसके भक्तों पर है।
12 पूर्व पश्चिम से जितनी दूर है,
वह हमारे अपराध हमसे उतनी ही दूर करता है।
13 पिता अपने बच्चों पर जैसी दया करता है,
प्रभु भी अपने भक्तों पर वैसी ही दया करता है।
14 वह हमारी रचना जानता है,
उसे स्मरण है कि हम धूल ही हैं।

15 मनुष्य की आयु घास के समान है;
वह मैदान के फूल के सदृश खिलता है;
16 वायु उसके ऊपर से बहती है,
और वह ठहर नहीं पाता,
उसका स्थान भी उसको फिर कभी नहीं पहचानता!
17 किन्तु प्रभु की करुणा उसके भक्तों पर युग-युगान्त तक,
और उसकी धार्मिकता उनके पुत्र-पुत्रियों,
पौत्र-पौत्रियों पर बनी रहती है,
18 जो उसके विधान को पूरा करते हैं,
जो उसके आदेशों को स्मरण कर
उनका पालन भी करते हैं।

19 प्रभु ने अपना सिंहासन स्वर्ग में स्थापित किया है,
और उसकी सत्ता सब पर शासन करती है।
20 ओ प्रभु के स्वर्गदूतो,
महान शक्तिशालियो,
तुम उसका वचन सुनकर
उसके अनुसार कार्य करते हो,

* अथवा, 'बाज', या 'गिद्ध', 'उकाब'

102 : 25 -27 इब्र 1 : 10-12 102 : 26 यश 51 : 6 102 : 27 इब्र 13 : 8 103 : 8 नि 34 : 6 ; याक 5 : 11
103 : 9 यश 57 : 16 103 : 16 अय्य 7 : 10 103 : 17 नि 20 : 6 ; लू 1 : 50

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रभु को धन्य कहो!
21 प्रभु की समस्त सेना,
उसकी इच्छा को पूर्ण करने वाले समस्त सेवक,
प्रभु को धन्य कहें!
22 प्रभु की समस्त सृष्टि,
उसके राज्य के समस्त स्थानों में
प्रभु को धन्य कहे!
ओ मेरे प्राण, प्रभु को धन्य कह!

प्रभु अपनी सृष्टि की देखभाल करता है

104 ओ मेरे प्राण, प्रभु को धन्य कह!
हे प्रभु, मेरे परमेश्वर, तू अत्यन्त महान है।
तू महिमा और सम्मान से विभूषित है।
2 तू प्रकाश को वस्त्र के सदृश पहिनता है।
तूने आकाश को तम्बू के समान ताना है।
3 तूने अपने निवास-स्थान को उपरले जल पर स्थित किया है।
तू मेघों को अपना रथ बनाता है;
तू पवन के पंखों पर सवारी करता है।
4 तू पवनों को अपने दूत बनाता है,
और धधकती अग्नि को अपनी सेविका।
5 तूने पृथ्वी को उसकी नींवों पर स्थित किया है,
जिससे वह युग-युगान्त तक न डगमगाएगी।
6 तूने उसे वस्त्र की भांति महासागर से ढांप दिया है;
पर्वत के ऊपर जल ठहर गया है।
7 तेरी डांट से सागर भाग गए;
तेरे गर्जन-स्वर के कारण वे पलायन कर गए।
8 वे पर्वतों से बहते हुए घाटियों में भर गए,
उस स्थान पर, जिसे तूने उनके लिए निश्चित किया है।
9 तूने एक सीमा निर्धारित की है,
कि वे उसे न लांघ सकें,
और पृथ्वी को डुबाने के लिए न लौटें।
10 तू झरनों को घाटियों में बहाता है;
वे पहाड़ों के मध्य बहते हैं।
11 वे मैदान के समस्त पशुओं को पानी देते हैं;
जंगली गदहे अपनी प्यास बुझाते हैं।
12 उनके निकट आकाश के पक्षी निवास करते हैं।
वे शाखाओं के बीच कलरव करते हैं।
13 तू अपने उपरले कक्ष से पहाड़ों पर वर्षा करता है;
तेरे कार्यों के फल से धरती तृप्त है।

14 तू पशु के लिए घास,
और मनुष्य के लिए वनस्पति उपजाता है,
जिससे मनुष्य धरती से भोजन-वस्तु उत्पन्न करे,
15 तथा दाखरस, जो उसके हृदय को आनन्दित करता है,
एवं मुख को चमकाने के लिए तेल,
और रोटी, जो उसके हृदय को बल प्रदान करती है।
16 प्रभु के वृक्ष, जिनको उसने लगाया था,
लबानोन प्रदेश के देवदार, जल से तृप्त रहते हैं।
17 उनमें पक्षी अपने घोंसले बनाते हैं;
सनोवर के वृक्षों पर लगलग का बसेरा है।
18 जंगली बकरों के लिए ऊंचे पर्वत हैं;
चट्टानी बिज्जुओं के लिए आश्रय-स्थल हैं।
19 तूने ऋतु-ज्ञान के लिए चन्द्रमा को बनाया है;
सूर्य अपने अस्त होने का समय जानता है।
20 तू अन्धकार करता है, और रात हो जाती है,
जिसमें समस्त वन-पशु विचरने लगते हैं।
21 सिंह के बच्चे शिकार के लिए गुर्राते हैं, और
परमेश्वर से अपना आहार मांगते हैं।
22 सूर्य के उदय होते ही वे चले जाते हैं,
और अपनी मांदों में विश्राम करते हैं।
23 मनुष्य अपने काम के लिए, सन्ध्या तक
परिश्रम करने के लिए निकलता है।

---

104 : 3 आमो 9 : 6 104 : 4 इब्र 1 : 7 104 : 8 अय्य 38 : 10 104 : 12 मत 13 : 32 104 : 15 शास 9 : 13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

24 हे प्रभु, तेरे कार्य कितने अधिक हैं।
तूने उन सब कार्यों को बुद्धि से किया है;
तेरे द्वारा रचे गए जीवों से पृथ्वी परिपूर्ण है।
25 यह समुद्र कितना महान और विशाल है;
उसमें असंख्य जलचर हैं,
छोटे-बड़े जीव-जन्तु हैं।
26 वहां जलयान चलते हैं,
और लिव्यातान जल-पशु भी, जिसे
तूने उसमें क्रीड़ा करने के लिए बनाया है।

27 ये सब तेरा मुख ताकते हैं,
कि तू उन्हें यथा-समय उनका आहार प्रदान
करे।
28 जब तू उन्हें आहार प्रदान करता है,
तब वे उसको एकत्र कर लेते हैं;
जब तू अपनी मुट्ठी खोलता है,
तब वे भली वस्तुओं से तृप्त होते हैं।
29 जब तू अपना मुंह फेरता है,
तब वे आतंकित होते हैं;
जब तू उनकी सांस वापस लेता है,
तब वे मर जाते हैं, और अपनी मिट्टी को
लौट जाते हैं।
30 जब तू अपना आत्मा भेजता है,
तब वे उत्पन्न किए जाते हैं;
तू धरती की सतह को नया करता है।

31 प्रभु की महिमा सदा होती रहे;
प्रभु अपने कार्यों से आनन्दित हो।
32 वह पृथ्वी पर दृष्टिपात करता है,
और वह कांप उठती है;
वह पर्वतों को स्पर्श करता है,
और वे धुआं उगलने लगते हैं।
33 जब तक मैं जीवित हूं,
प्रभु के लिए गीत गाऊंगा;
अपने जीवन-भर मैं अपने परमेश्वर का
स्तुतिगान करूंगा।
34 मेरा मनन-चिन्तन प्रभु को प्रिय लगे,
क्योंकि मैं प्रभु में आनन्द मनाता हूं।
35 पृथ्वी से पापियों का अन्त हो जाए,
दुर्जन भविष्य में न रहें।
ओ मेरे प्राण, प्रभु को धन्य कह!
प्रभु की स्तुति करो!*

प्रभु के अद्‍भुत कार्य

105 प्रभु की सराहना करो,
उसका नाम घोषित करो;
सब जातियों में उसके कार्य प्रकट करो!
2 प्रभु के लिए गाओ, उसकी स्तुति गाओ;
उसके समस्त अद्‍भुत कार्यों का वर्णन
करो;
3 तुम उसके पवित्र नाम पर गौरव करो;
प्रभु को खोजने वालों का हृदय आनन्दित
हो।
4 प्रभु को, उसकी शक्ति को खोजो,
उसके मुख को निरन्तर खोजते रहो।
5 उसके अद्‍भुत कार्यों को, जो उसने किए
हैं,
उसके चमत्कारों को,
उसके मुंह से निकले न्याय-सिद्धान्तों को
स्मरण करो,
6 ओ प्रभु के सेवक अब्राहम के वंशजो!
ओ प्रभु के मनोनीत याकूब के पुत्र-पुत्रियो!

7 वही प्रभु हमारा परमेश्वर है;
समस्त पृथ्वी पर उसके न्याय-सिद्धान्त
सक्रिय हैं।
8 वह अपने विधान को,
उस वचन को, जिसे उसने हजार पीढ़ियों
को दिया है,
सदा स्मरण रखता है।
9 अब्राहम के साथ स्थापित अपने विधान
को,
और इसहाक के साथ खाई अपनी शपथ
को,
प्रभु याद रखता है।
10 उसने याकूब के लिए संविधि,

---

* मूल में ''हललू-याह्''

104 : 26 अय्य 41 : 1; भज 74 :14; यश 27 : 1 **105 :11-15** 1 इति 16 : 8-22 **105 : 1** यश 12 : 4 **105 : 8-9** लू 1 : 72-73 **105 : 9** उत 17 : 2 **105 : 10** उत 28 : 13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
इस्राएल के लिए शाश्‍वत विधान
निश्‍चित किया था।
11 उसने यह कहा था, 'मैं तुझे कनान देश दूंगा;
वह तुम्हारी मातृ-भूमि, मीरास बनेगा।'

12 जब वे संख्या में नगण्य थे, बहुत कम थे,
जब वे वहां प्रवासी थे,
13 जब वे एक राष्‍ट्र से दूसरे राष्‍ट्र को,
एक राज्य से दूसरे राज्य में भटकते फिरते थे,
14 तब प्रभु ने किसी भी जाति को
उन पर अत्याचार नहीं करने दिया;
उसने उनके कारण राजाओं को भी डांटा:
15 'मेरे अभिषिक्‍तों को स्पर्श मत करना;
मेरे नबियों का अनिष्‍ट न करना।'
16 जब प्रभु ने देश पर अकाल भेजा,
और रोटी के समस्त साधन तोड़ डाले,
17 तब उसने एक मनुष्य को,
यूसुफ को उनके पहले भेजा,
जो गुलाम बनने के लिए बेचा गया था।
18 उसके पैरों में बेड़ियां पहिनायी गईं;
उसकी गर्दन लोहे के सांकलों में जकड़ दी गई।
19 जब तक उसका कथन पूरा न हुआ,
तब तक प्रभु का वचन उसे कसौटी पर कसता रहा।
20 तत्पश्‍चात् राजा ने सैनिक भेजा और उसे छुड़ा लिया,
प्रजा के शासक ने उसे बन्धनमुक्‍त किया;
21 उसने उसे अपने महल का स्वामी,
और अपनी समस्त सम्पत्ति का शासक नियुक्‍त किया,
22 कि वह अपनी इच्छानुसार
उसके अधिकारियों को आदेश दे,
और उसके मंत्रियों को सलाह दे।

23 तब इस्राएल मिस्र देश में आया,
और हाम की धरती पर याकूब ने निवास किया।
24 प्रभु ने अपने निज लोगों को संख्या में खूब बढ़ाया,
और उनके बैरियों से अधिक उन्हें बलवान बनाया।
25 तब प्रभु ने मिस्र-निवासियों का हृदय फेर दिया
कि वे उसके निज लोगों से घृणा करें,
उसके सेवकों से छल-कपट करें।

26 प्रभु ने अपने सेवक मूसा को,
और हारून को जिसे उसने चुना था, भेजा।
27 दोनों ने उनके मध्य प्रभु के चिह्न दिखाए,
हाम की धरती पर चमत्कार किए।
28 प्रभु ने अन्धकार भेजा, और वहां अंधेरा कर दिया,
तोभी मिस्र-निवासियों ने उसके वचन का विरोध किया।
29 प्रभु ने उनके जल को रक्‍त में बदल दिया,
और उनकी मछलियों को मार डाला।
30 उनका देश, उनके राजाओं के महल भी,
मेंढकों से भर गए!
31 प्रभु ने कहा, और उनके समस्त देश पर
मक्खी-मच्छड़ उमड़ आए।
32 प्रभु ने उनको वर्षा के बदले ओले दिए,
उनकी धरती पर धधकती आग बरसाई।
33 प्रभु ने उनकी अंगूर लताएं और अंजीर के वृक्ष नष्‍ट कर दिए,
उनके देश के सब पेड़ उखाड़ फेंके।
34 प्रभु ने कहा, और टिड्डी दल,
एवं टिड्डियों के असंख्य बच्चे उमड़ आए,
35 जिन्होंने उनके देश की समस्त वनस्पति को खा लिया,
उनकी भूमि के फलों को काट डाला।
36 प्रभु ने उनके देश के सब पहलौठों को,
उनके पौरुष के प्रथम फलों को नष्‍ट कर दिया।

37 तब प्रभु ने सोना-चांदी के साथ
इस्राएलियों को गुलामी से बाहर निकाला,

---

105 :17 उत 45 : 5 **105 : 20** उत 41 : 14 **105 : 23** उत 46: 6 **105 :25** नि 1 : 8-14 **105 : 28** नि 10 : 21-23 **105 :36** नि 12 : 29

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उनके कुलों में एक भी दुर्बल व्यक्ति न था।
38 उनके प्रस्थान से मिस्र-निवासी आनन्दित
हुए;
क्योंकि इस्राएलियों का भय उनमें समा
गया था।
39 प्रभु ने छाया के निमित्त बादल ताना,
और रात में प्रकाश के लिए अग्नि।
40 इस्राएलियों ने भोजन मांगा,
और प्रभु ने बटेरों को पहुंचाया;
प्रभु ने उन्हें स्वर्गिक रोटी से तृप्त किया।
41 प्रभु ने चट्टान को तोड़ा, और जल बहने
लगा,
निर्जल भूमि पर नदी दौड़ पड़ी!
42 प्रभु ने अपने सेवक अब्राहम के प्रति,
अपने पवित्र वचन को स्मरण रखा।

43 अत: प्रभु अपने निज लोगों को हर्ष के साथ,
अपनी मनोनीत प्रजा को
जयजयकार सहित निकाल लाया।
44 प्रभु ने उन्हें अन्य जातियों के देश दिए;
और उन्हें अन्य लोगों के श्रम के फल पर
अधिकार दिया,
45 कि वे अंत तक प्रभु की संविधि का पालन
करें;
उसकी व्यवस्था को मानते रहें।
प्रभु की स्तुति करो!

इस्राएल का विद्रोह

106 प्रभु की स्तुति करो!
प्रभु की सराहना करो,
क्योंकि वह भला है;
क्योंकि उसकी करुणा सदा बनी रहती है।
2 कौन प्रभु के कार्यों का वर्णन कर सकता है?
कौन उसका पूर्ण गुणगान सुना सकता है?
3 धन्य हैं वे जो न्याय पर चलते हैं,
जो हर समय धार्मिक कार्य करते हैं!

4 हे प्रभु, जब तू अपने निज लोगों पर कृपा
करेगा,
तब मुझे भी स्मरण करना;
जब तू उनका उद्धार करेगा,
तब मेरी भी सुध लेना;
5 ताकि मैं तेरे चुने हुए लोगों का कल्याण देख
सकूं,
तेरे राष्ट्र के आनन्द में आनन्दित हो सकूं,
तेरी मीरास के साथ महिमा करूं।

6 प्रभु, हमने और हमारे पूर्वजों ने पाप किया,
हमने कुकर्म किया, हमने दुष्टता की।
7 जब हमारे पूर्वज मिस्र देश में थे, उन्होंने
तेरे आश्चर्यपूर्ण कर्मों को नहीं समझा,
उन्होंने तेरी अपार करुणा को स्मरण नहीं
किया,
वरन् सागर पर, लाल सागर पर विद्रोह
किया।
8 फिर भी प्रभु, तूने अपने नाम के लिए
उन्हें बचाया,
ताकि उन पर अपना सामर्थ्य प्रकट करे।
9 प्रभु, तूने लाल सागर को डांटा,
और वह सूख गया;
तू उन्हें गहरे सागर से निकाल लाया
मानो सागर शुष्क प्रदेश हो!
10 इस प्रकार तूने उनके बैरियों से उन्हें बचाया,
शत्रु के हाथ से उनको मुक्त किया।
11 जल ने उनके शत्रुओं को डुबो दिया,
उनमें एक भी शेष न रहा।
12 तब उन्होंने प्रभु के वचनों पर विश्वास
किया,
और वे स्तुतिगान गाने लगे।

13 पर वे शीघ्र ही प्रभु के कार्यों को भूल गए,
वे उसके परामर्श के लिए नहीं ठहरे।
14 उन्होंने निर्जन प्रदेश में उदर-पूर्ति की कामना
की,
और उजाड़खण्ड में परमेश्वर की परीक्षा
ली!
15 उन्होंने जो मांगा था,

105:40 नि 16:12-15 105:41 नि 17:6 105:44 यहो 11:23 106:1 1 इति 16:34 106:6 लेव 26:40; 1 रा 8:47 106:7 नि 14:11-12 106:8 यहेज 20:9 106:9 यश 63:11-13 106:12 नि 15:1-21 106:14 गण 11:4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वह परमेश्वर ने उन्हें दिया;
पर उनके मध्य महामारी भी भेज दी।
16 जब वे शिविर में मूसा के प्रति,
प्रभु के पवित्र जन हारून के प्रति ईर्ष्यालु हुए,
17 तब भूमि ने फट कर दातान को निगल लिया,
उसने अबीराम के दल को ढांप दिया।
18 उनके दल में आग लगी,
ज्वालाओं ने दुर्जनों को भस्म कर दिया।

19 उन्होंने होरेब पर्वत पर बछड़े की मूर्ति बनाई,
और उस मूर्ति की वंदना की।
20 यों उन्होंने परमेश्वर की महिमा को
घास चरने वाले बैल की मूर्ति के लिए बदल डाला।
21 वे अपने रक्षक परमेश्वर को भूल गए
जिसने मिस्र देश में महान कार्य किए थे,
22 जिसने हाम की धरती पर आश्चर्य पूर्ण कर्म,
और लाल सागर पर आतंकपूर्ण कार्य किए थे।
23 अत: प्रभु ने कहा कि वह उन्हें मार डालता,
यदि प्रभु का मनोनीत मूसा उसके सम्मुख खड़ा न होता,
और उसका कोप लौटा न देता;
निस्सन्देह, प्रभु उन्हें नष्ट कर देता।

24 इस्राएलियों ने रमणीय देश को तुच्छ जाना;
और प्रभु के वचन पर विश्वास नहीं किया।
25 वे अपने तम्बुओं में कुड़कुड़ाते रहे;
उन्होंने प्रभु की वाणी नहीं सुनी।
26 तब प्रभु ने उनके विषय में यह शपथ खाई,
कि वह उन्हें निर्जन प्रदेश में धराशायी कर देगा,
27 वह उनके वंशजों को राष्ट्रों में बिखेर देगा,
उन्हें विभिन्न देशों में तितर-बितर कर देगा।

28 वे पओर के बाल देवता पर आसक्त हो गए;
और मुरदों पर चढ़ाई गई बलि खाने लगे।
29 उन्होंने अपने व्यवहार से प्रभु को क्रोधित किया;
अत: उनके मध्य महामारी फूट पड़ी।
30 तब पीनहास ने खड़े होकर हस्तक्षेप किया,
और महामारी रुक गई।
31 उसका यह कार्य
पीढ़ी से पीढ़ी, युग-युगांत तक
उसके लिए धार्मिकता गिना गया।

32 उन्होंने मरीबा के झरने पर प्रभु को क्रोधित किया,
और उनके कारण मूसा का अनिष्ट हुआ।
33 उन्होंने मूसा के हृदय को कटु बना दिया,
अतएव मूसा कटु वचन बोले।

34 इस्राएलियों ने अन्य जातियों को नष्ट नहीं किया,
जैसा कि प्रभु ने उनसे कहा था।
35 पर वे राष्ट्रों में घुल-मिल गए,
और उन्होंने उनके कार्य भी सीख लिये।
36 वे उनकी मूर्तियों की पूजा करने लगे,
जो उनके लिए फन्दा बन गईं।
37 उन्होंने अपने पुत्र और पुत्रियां
भूत-प्रेतों को चढ़ाईं।
38 उन्होंने निर्दोष रक्त बहाया,
अपने ही पुत्र-पुत्रियों का रक्त,
जिन्हें कनान की मूर्तियों पर उन्होंने चढ़ाया;
धरती रक्त से अपवित्र हो गई।
39 वे अपने कार्यों से अशुद्ध हो गए,
उन्होंने अपने व्यवहार द्वारा
विश्वासघात किया!

40 तब अपने निज लोगों के प्रति
प्रभु का क्रोध भड़क उठा,
उसने अपनी मीरास से घृणा की।
41 उसने उन्हें राष्ट्रों के हाथ में सौंप दिया,
ताकि उनसे बैर करने वाले
उन पर शासन करें।

---

106 : 16 गण 16 : 1-3 106 : 19 नि 32 : 4 106 : 20 यिर 2 : 11, रोम 1: 23 106 : 24 गण 14 : 31 106 : 27 लेव 26 : 33 106 : 28 गण 25 : 2-3 106 : 32 गण 20 : 2-13 106 : 34 शास 2 : 2 106 : 36 2 रा 17 : 7-11 106 : 38 गण 35 : 33 106 : 40-41 शास 2 : 14

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

42 उनके शत्रुओं ने भी उनको दबाया,
वे उनके अधिकार के वश में हो गए।
43 कई बार प्रभु ने उन्हें छुड़ाया,
पर वे अपने विचारों में विद्रोही बने रहे,
अत: अपने कुकर्मों के कारण उन्हें झुकना पड़ा।

44 फिर भी जब प्रभु ने उनकी चिल्लाहट सुनी,
तब उसने उनके संकट पर ध्यान दिया।
45 प्रभु ने उनके लिए अपना विधान स्मरण किया;
वह अपनी अपार करुणा के कारण दयावान हुआ।
46 जिन्होंने उनको बन्दी बनाया था,
उन सब की दृष्टि में उन्हें दया का पात्र बना दिया।
47 हे प्रभु, हमारे परमेश्वर, हमारी रक्षा कर!
विभिन्न राष्ट्रों से हमें एक स्थान पर एकत्र कर,
ताकि हम तेरे पवित्र नाम का गुणगान करें,
तेरी स्तुति से आनन्दित हों।

48 प्रभु, इस्राएल का परमेश्वर
अनादि काल से युग-युगान्त धन्य है!
सब लोग यह कहें 'आमेन!'
प्रभु की स्तुति करो!

पांचवां खण्ड

प्रभु संकट से मुक्त करता है

107 प्रभु की सराहना करो,
क्योंकि वह भला है;
क्योंकि उसकी करुणा सदा बनी रहती है!
2 प्रभु द्वारा मुक्त किए गए लोग,
जिन्हें बैरी के हाथ से उसने मुक्त किया है,
3 जिन्हें भिन्न-भिन्न देशों से,
पूर्व और पश्चिम,
उत्तर और दक्षिण से एकत्र किया है,
वे प्रभु की सराहना करें।

4 कुछ निर्जन प्रदेश में, उजाड़ खण्ड में भटक रहे थे,
उन्हें बस्ती का मार्ग नहीं मिला था।
5 भूख और प्यास के कारण उनके प्राण मूर्छित हो गए थे।
6 तब उन्होंने अपने संकट में प्रभु की दुहाई दी,
और प्रभु ने विपत्ति से उन्हें छुड़ाया।
7 वह उन्हें सीधे मार्ग पर ले गया
कि वे बस्ती में पहुंच जाएं।
8 प्रभु की करुणा के लिए,
मानव-जाति के प्रति किए गए
उसके आश्चर्यपूर्ण कर्मों के लिए
वे उसकी सराहना करें।
9 प्रभु प्यासे प्राण को तृप्त करता है,
वह भूखे व्यक्ति को भली वस्तु से सन्तुष्ट करता है।

10 कुछ अन्धकार और मृत्यु-छाया में बैठे थे,
पीड़ा और लोहे में जकड़े थे,
11 क्योंकि उन्होंने परमेश्वर के वचनों के प्रति विद्रोह किया,
और सर्वोच्च प्रभु के परामर्श को तुच्छ समझा था।
12 अत: उनके हृदय कष्ट से दबा दिए गए;
वे गिर पड़े,
और उनका कोई सहायक न था।
13 तब उन्होंने अपने संकट में प्रभु की दुहाई दी,
और प्रभु ने विपत्ति से उन्हें बचाया;
14 वह उन्हें अन्धकार और मृत्यु-छाया से निकाल लाया;
उसने उनकी बेड़ियां तोड़ डालीं।
15 प्रभु की करुणा के लिए,
मानव-जाति के प्रति किए गए,
उसके आश्चर्यपूर्ण कर्मों के लिए
वे उसकी सराहना करें।
16 प्रभु पीतल के द्वार भी तोड़ डालता है,
वह लोहे के छड़ों को भी टुकड़े-टुकड़े करता है।

---

106 : 47-48 1 इति 16 : 35-36 **107 : 1** भज 136 : 1 ; यिर 33 :11 **107 : 9** यश 55 :1 ; लू 1: 53

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

17 कुछ अपने अपराधपूर्ण आचरण के कारण रोगी
और कुकर्मों के कारण पीड़ित थे।
18 उनको भोजन से अरुचि हो गई थी,
और वे मृत्यु-द्वार तक पहुंच चुके थे।
19 तब उन्होंने अपने संकट में प्रभु की दुहाई दी,
और प्रभु ने विपत्ति से उन्हें बचाया;
20 उसने अपना वचन भेजकर उन्हें स्वस्थ किया,
और विनाश से उनकी रक्षा की।
21 प्रभु की करुणा के लिए,
मानव-जाति के प्रति किए गए,
उसके आश्चर्यपूर्ण कर्मों के लिए,
वे उसकी सराहना करें।
22 वे स्तुति-बलि अर्पित करें
और जयजयकार सहित
उसके कार्यों का वर्णन करें।

23 कुछ जलयानों में समुद्र पर गए थे,
वे महासागर में व्यापार करते थे।
24 उन्होंने प्रभु के कार्यों को,
गहरे सागर में किए गए उसके
आश्चर्यपूर्ण कर्मों को देखा।
25 प्रभु ने आज्ञा दी, और तूफान आ गया,
जिसने लहरों को उठा दिया।
26 जलयान आकाश तक ऊंचे उठ जाते,
और फिर सागर की गहराइयों में नीचे आ जाते थे;
संकट के कारण उनके प्राण पलायन करने लगे थे।
27 वे लुढ़कते थे, शराबी के समान लड़खड़ाते थे,
और उनकी बुद्धि नष्ट हो चुकी थी!
28 तब उन्होंने अपने संकट में प्रभु की दुहाई दी,
और प्रभु ने विपत्ति से उन्हें बचाया।
29 प्रभु ने तूफान को शान्त किया,
और सागर की लहरें स्थिर हो गईं।
30 तब वे आनन्दित हुए,
क्योंकि उन्हें शान्ति मिली;
प्रभु ने उन्हें उनके बन्दरस्थान तक पहुंचा दिया,
जहां वे जाना चाहते थे।
31 प्रभु की करुणा के लिए,
मानव-जाति के प्रति किए गए
उसके आश्चर्यपूर्ण कर्मों के लिए,
वे उसकी सराहना करें।
32 वे लोगों की मण्डली में उसकी अत्यधिक प्रशंसा करें,
धर्मवृद्धों की सभा में उसकी स्तुति करें!

33 प्रभु नदियों को मरुभूमि में,
झरनों को शुष्क भूमि में,
34 वहां के निवासियों की दुष्टता के कारण
फलवन्त भूमि को लोनी मिट्टी में बदल डालता है।
35 वह मरुभूमि को जलाशय में,
निर्जल भूमि को जल के झरनों में
बदल देता है।
36 तब वह वहां भूखों को बसाता है,
और वे बसने के लिए नगर का निर्माण करते हैं।
37 वे भूमि में बीज बोते,
अंगूर के बाग लगाते,
और अधिकाधिक फल प्राप्त करते हैं।
38 प्रभु उनको आशिष देता है
कि वे बढ़ते जाएं;
वह उनके पशुओं को भी घटने नहीं देता है।
39 जब वे दमन, संकट और दु:ख के कारण
घटते और दब जाते हैं
40 तब प्रभु शासकों पर पराजय के अपमान की वर्षा करता है,
और उन्हें मार्गहीन उजाड़ खण्ड में भटकाता है।
41 किन्तु वह दरिद्र को पीड़ा से निकाल कर उन्नत करता है,

---

107 : 20 मत 8 : 8 107 : 25 योना 1 : 4 107 : 29 मत 8 : 26 107 : 33 यश 42 : 15 107 : 34 प्रव 39 : 23
107 :35 यश 41 :18

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वह उनके परिवारों को रेवड़ के सदृश
विशाल बनाता है।
42 निष्कपट व्यक्ति यह देखकर आनन्दित होते
हैं;
दुष्टता अपना मुंह बन्द रखती है।
43 जो बुद्धिमान है,
वह इन बातों पर ध्यान दे;
लोग प्रभु की करुणा पर विचार करें।

शत्रु के विरुद्ध सहायता के लिए प्रार्थना

एक गीत। दाऊद का भजन।

108 हे परमेश्वर, मेरा हृदय तुझ में लीन
है।
लीन है मेरा हृदय!
मैं गीत गाऊंगा, राग बजाऊंगा।
ओ मेरे प्राण, जाग!
2 जागो, ओ वीणा और सितार!
मैं प्रभात को जगा दूंगा!

3 हे प्रभु, देश-देश में
मैं तेरी सराहना करूंगा,
राष्ट्रों के मध्य मैं तेरी स्तुति गाऊंगा।
4 तेरी करुणा स्वर्ग तक
और तेरा सत्य मेघों तक महान है।

5 हे परमेश्वर, स्वर्ग पर अपनी महानता प्रकट
कर,
समस्त पृथ्वी पर तेरी महिमा व्याप्त हो!
6 तू अपने भुजबल से हमें बचा,
हमें उत्तर दे,
जिससे तेरे प्रियजन मुक्त किए जाएं।
7 परमेश्वर ने अपनी पवित्रता में यह कहा है,
'मैं प्रसन्न होकर शकेम को विभाजित
करूंगा,
और सूक्कोत घाटी को नाप दूंगा।
8 गिलआद प्रदेश मेरा है,
और मनश्शे प्रदेश भी मेरा है
एफ्रइम प्रदेश मेरा शिरस्त्राण है,
यहूदा प्रदेश मेरा राजदण्ड है।
9 किन्तु मोआब राष्ट्र मेरी चिलमची है;
एदोम राष्ट्र मेरे पैर के नीचे होगा;
पलिश्ती राष्ट्र पर मैं जयघोष करूंगा।'

10 कौन मुझे सुदृढ़ नगर में पहुंचायेगा?
कौन मुझे एदोम तक ले जाएगा?
11 हे परमेश्वर, क्या तूने हमारा परित्याग
नहीं किया है?
हे परमेश्वर, तू हमारी सेना के साथ क्यों
नहीं जाता?
12 शत्रु के विरुद्ध हमारी सहायता कर;
क्योंकि मनुष्य की सहायता व्यर्थ है!
13 परमेश्वर का साथ होने पर हम वीरता से
लड़ेंगे;
क्योंकि परमेश्वर ही हमारे शत्रुओं को
कुचलेगा।

प्रतिरक्षा की याचना

मुख्यवादक के लिए। दाऊद का। एक भजन।

109 मेरी स्तुति के परमेश्वर,
तू चुप न रह!
2 दुर्जन और कुटिल व्यक्ति के मुंह
मेरे विरुद्ध खुले हैं,
वे मुझ से झूठी जिह्वा से बात करते हैं।
3 घृणास्पद शब्दों से मुझे घेरते,
और अकारण मुझ पर आक्रमण करते हैं।
4 वे मेरे प्रेम के बदले
मुझ पर दोषारोपण करते हैं,
फिर भी मैं निरन्तर प्रार्थना करता हूं।
5 वे भलाई के निमित्त बुराई,
मेरे प्रेम के बदले मुझे घृणा लौटाते हैं।

6 वे यह कहते हैं,'इसके विरुद्ध किसी दुर्जन
को न्यायाधीश नियुक्त करो;
दोषारोपण करनेवाला इसके दाहिने हाथ
पर खड़ा हो।
7 जब इसका न्याय हो, तब यह दोषी ठहरे;
इसकी क्षमा-याचना पाप गिनी जाए।
8 इसके जीवन के दिन नगण्य हों;
इसका पद कोई दूसरा छीन ले!

---

107 : 42 अय्य 22: 19; 5: 16 **107 : 43** हो 14 : 9 **108 : 1-5** भज 57 : 7-11 **108 : 6-13** भज 60 : 5-12
109 : 8 प्रे 1: 20

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

9 इसके बच्चे पितृहीन
और पत्नी विधवा हो जाए!
10 इसके बच्चे मारे-मारे फिरें,
वे भीख मांगें;
वे अपने उजाड़ घरों से भी निकाल दिए
जाएं।
11 महाजन इसका सर्वस्व छीन ले,
विदेशी इसके परिश्रम के फल को लूट लें।
12 इस पर कोई करुणा न करे,
इसके पितृहीन बच्चों पर कोई दया न करे।
13 इसका वंश नष्ट हो जाए,
दूसरी पीढ़ी में इसका नाम मिट जाए।
14 इसके पूर्वजों के कुकर्म
प्रभु के समक्ष स्मरण किए जाएं;
इसकी माता का पाप न मिटाया जाए।
15 इसके पाप प्रभु के समक्ष निरन्तर रहें,
प्रभु धरती से इसकी स्मृति मिटा डाले।
16 क्योंकि इसने दया का व्यवहार करना
स्मरण न रखा,
बल्कि यह पीड़ित और दरिद्र का,
हताश व्यक्ति का पीछा करता रहा
कि उसे मार डाले।
17 इसे शाप देना प्रिय था,
अभिशाप इस पर आ पड़े!
आशिष इसे पसन्द न थी;
वह इससे दूर रहे!
18 यह वस्त्र की भांति अभिशाप धारण करता
था!
जल के सदृश अभिशाप इसके पेट में,
तेल के समान इसकी हड्डियों में समा जाए।
19 अभिशाप इसकी चादर बन जाए,
जिसको यह ओढ़ता है;
अभिशाप इसका कटिबन्ध हो जाए,
जिसको वह नित्य लपेटता है।'

20 मुझ पर दोषारोपण करने वालों को,
मेरे विरुद्ध बुरी-बुरी बातें कहने वालों को
प्रभु की ओर से यही प्रतिफल मिले।

21 किन्तु मुझ से, हे परमेश्वर, मेरे स्वामी,
अपने करुणामय नाम के अनुरूप
व्यवहार कर;
तेरी करुणा उत्तम है,
अतः मुझे मुक्त कर।
22 मैं पीड़ित हूं, दरिद्र हूं,
मेरे भीतर मेरा हृदय घायल है।
23 सन्ध्या की छाया के सदृश
मैं ढलता जाता हूं;
मैं टिड्डी की तरह उड़ा दिया गया हूं।
24 उपवास के कारण मेरे घुटने कांपते हैं,
तेल के अभाव में मेरा शरीर सूख गया है।
25 मैं लोगों के उपहास का पात्र बन गया हूं,
वे मुझे देखकर सिर हिलाते हैं।

26 हे प्रभु, मेरे परमेश्वर, मेरी सहायता कर!
अपनी करुणा के अनुरूप मुझे बचा ले।
27 उन्हें ज्ञात हो जाए, कि यह तेरा कार्य है;
हे प्रभु, तू ने ही यह किया है।
28 वे अभिशाप दें,
पर तू आशिष!
मुझ पर आक्रमण करने वाले लज्जित हों;
पर तेरे सेवक आनन्दित!
29 मुझ पर दोषारोपण करने वाले
अपमान से विभूषित हों,
वे पराजय को वस्त्र की तरह धारण करें।
30 मैं अपने मुंह से
प्रभु की अत्यधिक सराहना करूंगा;
मैं जनसमूह में उसकी स्तुति करूंगा।
31 प्रभु दरिद्र के दाहिने हाथ पर खड़ा रहता है,
ताकि वह उसको मृत्यु-दण्ड देने वालों के
हाथ से बचाए।

प्रभु राजा को राज्य प्रदान करता है

दाऊद का। एक भजन।

110 प्रभु ने मेरे स्वामी से कहा:
'जब तक मैं तेरे शत्रुओं को
तेरे चरणों की चौकी न बना दूं,
तू मेरी दाहिनी ओर बैठ।'

---

109 : 9 यिर 18 : 21 **109 : 25** मत 27 : 39 **109 :28** यश 65 : 14 **110 : 1** मत 22 : 44; 26 : 64; प्रे 2: 34-35; 1 कुर 15 : 25; इफ 1: 20-22; कुल 3: 1; इब्र 1: 13; 10 : 12; 1 पत 3 : 22

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

2 प्रभु सियोन से आपको
शक्तिशाली राजदण्ड प्रदान करता है, कि
आप अपने शत्रुओं के मध्य शासन करें।
3 जब आप युद्ध में विजय प्राप्त करते हैं,
तब आपकी प्रजा
स्वेच्छा से स्वयं को अर्पित करती है।
आप पवित्रता से सुशोभित हैं।*
उषा काल के गर्भ से
ओस की बूंद के सदृश
तरुणाई आपको प्राप्त होती है।+
4 प्रभु ने शपथ खाई है,
और वहअपना यह निश्चय नहीं बदलेगा:
'तू मलकीसेदेक के समान
सदा के लिए पुरोहित है।'

5 प्रभु आपकी दाहिनी ओर है,
वह अपने कोप के दिन राजाओं को कुचल
देगा।
6 वह राष्ट्रों का न्याय-निर्णय करेगा,
और लाशों को पाट देगा।
वह धरती के विशाल क्षेत्र में
शासकों को कुचल देगा।
7 महाराज, आप मार्ग में झरने से जल पिएंगे,
आप विजय से अपना सिर ऊंचा करेंगे।

प्रभु अपने भक्तों की देखभाल करता है

111 प्रभु की स्तुति करो!
मैं सत्यनिष्ठों के समूह में, सभा में
सम्पूर्ण हृदय से प्रभु की सराहना करूंगा।
2 प्रभु के कार्य महान हैं;
जिन्हें वे कार्य प्रिय हैं,
वे उनकी खोज करते हैं।
3 प्रभु के कार्य महिमा और सम्मान से पूर्ण हैं,
उसकी धार्मिकता सदा बनी रहती है।
4 प्रभु ने अपने आश्चर्यपूर्ण कार्यों का
एक स्मारक बनाया है;
प्रभु कृपालु और दयालु है।
5 वह अपने भक्तों को
भोजन प्रदान करता है;
वह अपना विधान सदा स्मरण रखता है।
6 प्रभु ने राष्ट्रों का उत्तराधिकार
अपने लोगों को प्रदान कर
अपने कार्यों की शक्ति उन पर प्रक्ट की है।
7 प्रभु के कार्य सच्चाई और न्याय हैं;
उसके समस्त आदेश विश्वसनीय हैं;
8 वे सदा-सर्वदा के लिए अटल हैं।
उनको सच्चाई और सहज भाव से पूर्ण
करना चाहिए।
9 प्रभु ने अपने निज लोगों केलिए उद्धार भेजा;
उसने सदैव के लिए अपना विधान स्थापित
किया।
उसका नाम पवित्र और आतंकमय है!

10 प्रभु की भक्ति करना बुद्धि का आरम्भ है;
जो उसका पालन करते हैं,
उनको उत्तम समझ प्राप्त होती है।
प्रभु की स्तुति सदा की जाएगी!

प्रभु के भक्तों की समृद्धि

112 प्रभु की स्तुति करो!
धन्य है, वह मनुष्य
जो प्रभु का भय मानता है,
जो उसकी आज्ञाओं से बहुत प्रसन्न होता है।
2 उसके वंशज पृथ्वी पर महान होंगे;
सत्यनिष्ठ व्यक्ति की पीढ़ी आशिष पाएगी।
3 उसके घर में धन-सम्पत्ति रहती है;
उसकी धार्मिकता सदा बनी रहती है।
4 सत्यनिष्ठ व्यक्ति के हेतु
अन्धकार में प्रकाश उदय होता है;
प्रभु कृपालु, दयालु और धार्मिक है।
5 जो मनुष्य दूसरों पर कृपा करता, और उधार
देता है,
जो न्यायपूर्वक प्रत्येक कार्य करता है,
उसका कल्याण होता है।
6 वह कभी विचलित न होगा,
भक्त की स्मृति सदा बनी रहेगी।

---

* पाठांतर, ''पवित्र पर्वतों पर''। + पाठांतर, ''मैंने आपको जन्म दिया''।

110 : 4 इब्र 5: 6; 6 : 20; 7 : 17,21 110 : 5 भज 2 : 5 111 : 10 अय्य 28 : 28 ; नीति 1 : 7; 9 : 10
112 : 4 यश 58 : 10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

7 वह अशुभ समाचार से नहीं डरता;
वह प्रभु पर भरोसा रखता है,
उसका हृदय अडिग रहता है।
8 उसका हृदय दृढ़ है,
जब तक वह अपने बैरियों पर
विजयपूर्ण दृष्टि न करे,
वह नहीं डरेगा।
9 उसने उदारता से दरिद्रों को दान दिया है,
उसकी धार्मिकता सदा बनी रहेगी;
सम्मान से उसका सिर ऊंचा रहता है।
10 दुर्जन यह देखकर क्रोधित होता है;
वह दांत पीसता और गल-गलकर मर जाता है।
अत: दुर्जन की इच्छा का विनाश होता है।

प्रभु गिरे हुए व्यक्ति को उठाता है

113 प्रभु की स्तुति करो!
ओ प्रभु के सेवको,स्तुति करो,
प्रभु के नाम की स्तुति करो!

2 आज से युग-युगान्त तक
प्रभु का नाम धन्य है!
3 उदयाचल से अस्ताचल तक
प्रभु के नाम की स्तुति की जाए!
4 प्रभु समस्त राष्ट्रों के ऊपर महान है,
उसकी महिमा आकाश से ऊंची है!

5 हमारे प्रभु परमेश्वर के सदृश और कौन है?
वह उच्च स्थान पर विराजमान है,
6 वह आकाश और पृथ्वी पर
दृष्टिपात के लिए सिर झुकाता है।
7 वह धूल से निर्धन को,
राख के ढेर से दरिद्र को उठाता है,
8 और वह उनको सामन्तों के साथ,
अपने निज लोगों के सामन्तों के संग बैठाता है।
9 वह बांझ स्त्री को आनन्दित मां बनाकर
घर में बसाता है।
प्रभु की स्तुति करो!

निर्गमन-काल में प्रभु के आश्चर्यपूर्ण काम

114 जब इस्राएली मिस्र देश से,
याकूब के वंशज
विदेशी भाषा-भाषियों के पास से निकल आए,
2 तब यहूदा प्रदेश प्रभु का पवित्र स्थान बन गया,
इस्राएल प्रदेश उसका राज्य हो गया।

3 सागर यह देखकर भागा,
यर्दन नदी उल्टी बहने लगी।
4 पर्वत मेढ़ों के सदृश,
और पहाड़ियाँ मेमनों के समान
उछलने लगीं!

5 ओ सागर, तुझे क्या हुआ कि तू भागा?
ओ यर्दन नदी, तू क्यों उल्टी बहने लगी?
6 ओ पर्वतो, तुम मेढ़ों के सदृश,
ओ पहाड़ियो, तुम मेमनों के समान
क्यों उछलने लगीं?

7 ओ पृथ्वी, स्वामी की उपस्थिति से,
याकूब के परमेश्वर की उपस्थिति से
कांप उठ!
8 प्रभु चट्टान को जलाशय में,
पथरीली भूमि को जलस्रोत में
बदल देता है।

परमेश्वर और मूर्तियां

115 हे प्रभु, हमारी नहीं,
हमारी नहीं,
वरन् अपने नाम की महिमा कर!
क्योंकि तू ही करुणा और सत्य से
परिपूर्ण है।
2 राष्ट्र क्यों यह कहें,
'उनका परमेश्वर कहां है?'
3 हमारा परमेश्वर स्वर्ग में है;
जो उसको पसन्द आता है,
वही कार्य वह करता है।

---

112 : 9 2 कुर 9 : 9 **113 : 7-8** 1 शम 2 : 8 ; भज 107 : 41 **113 : 9** 1 शम 2 : 5 **114 : 1** नि 12 : 51
114 : 3 नि 14 : 21; यहो 3 : 13-16 **114 : 8** नि 17 : 6 **115 : 1** यहेज 36 : 22

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

4 राष्ट्रों की मूर्तियां सोना-चांदी हैं,
वे मनुष्यों के हाथों का काम हैं!
5 उनके मुंह तो हैं, पर वे बोलतीं नहीं;
उनके आंखें हैं, किन्तु वे देख नहीं सकतीं।
6 उनके कान हैं, परन्तु वे सुन नहीं सकतीं;
उनके नाक भी हैं, लेकिन वे सूंघ नहीं सकतीं।
7 उनके हाथ तो हैं, पर वे स्पर्श नहीं कर सकतीं;
उनके पैर भी हैं, किन्तु वे चल नहीं सकतीं।
वे अपने कण्ठ से शब्द भी नहीं निकाल सकतीं।
8 जो उन्हें बनाते हैं;
वे उन्हीं मूर्तियों के सदृश निर्जीव हैं।
वे भी बेजान हैं,
जो उन पर भरोसा करते हैं।

9 ओ इस्राएली जनता, प्रभु पर भरोसा कर!
वही तेरा सहायक और तेरी ढाल है।
10 ओ हारून वंश के पुरोहितो,
प्रभु पर भरोसा करो!
वही तुम्हारा सहायक और तुम्हारी ढाल है।
11 ओ प्रभु के श्रद्धालु भक्तो,
प्रभु पर भरोसा करो।
वही तुम्हारा सहायक और तुम्हारी ढाल है।

12 प्रभु ने हमें स्मरण किया,
वह हमें आशिष देगा;
वह इस्राएली प्रजा को आशिष देगा;
वह हारून वंश के पुरोहितों को आशिष देगा;
13 प्रभु अपने श्रद्धालु भक्तों को,
बड़े-छोटे सब को आशिष देगा।

14 प्रभु तुम्हारी बढ़ती करे,
तुम्हारी और तुम्हारे पुत्र-पुत्रियों की।
15 तुम प्रभु से आशिष पाओ;
प्रभु आकाश और पृथ्वी का सृजक है।
16 स्वर्ग, प्रभु का ही स्वर्ग है,
पर उसने मनुष्य-जाति को पृथ्वी प्रदान की है।
17 मृतक प्रभु की स्तुति नहीं करते,
क्योंकि वे मृतक-लोक की खामोशी में डूब जाते हैं।
18 पर हम अब से सदा तक
प्रभु को धन्य कहेंगे।
प्रभु की स्तुति करो!

मृत्यु से बचने पर प्रभु को धन्यवाद देना

116 मैं प्रभु से प्रेम करता हूं,
क्योंकि उसने मेरी वाणी और विनती सुनी है।
2 उसने मेरी ओर ध्यान दिया है,
अत: मैं अपने जीवन-भर उसको ही पुकारूंगा।
3 मृत्यु के पाश ने मुझे लपेटा था;
मृतक-लोक के फन्दों ने मुझे फंसा लिया था;
मुझे संकट और शोक सहना पड़ा।
4 तब मैंने प्रभु को उसके नाम से पुकारा,
'हे प्रभु, तू मेरे प्राण को छुड़ा।'

5 प्रभु कृपालु और धर्ममय है;
हमारा परमेश्वर दयालु है।
6 प्रभु भोले मनुष्यों की रक्षा करता है;
मैं दुर्दशा में था, उसने मुझे बचाया।
7 ओ मेरे प्राण, अपने नीड़ को लौट आ;
क्योंकि प्रभु ने मेरा उपकार किया है।

8 तूने मेरे प्राण को मृत्यु से,
मेरी आंखों को आंसुओं से,
मेरे पैरों को गिरने से बचाया।
9 मैं जीव-लोक में
प्रभु के समक्ष चलता हूं।
10 मैंने तब भी विश्वास किया था,
जब मैंने यह सोचा था कि
मैं अत्यन्त पीड़ित हूं;
11 मैंने भयाकुल हो यह कहा था,
'सब मनुष्य झूठे हैं।'

---

115 : 4-8 भज 135 : 15.18; यिर पत्र 4-73 115 : 5 प्रक 9 : 20 115 : 8 यश 44 : 9-10 115 : 13 प्रक 19: 5 116 : 3 भज 18 : 4 116 : 10 2 कुर 4: 13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

12 जो उपकार प्रभु ने मुझ पर किए हैं,
उनका बदला किस प्रकार दूं?
13 मैं उद्धार का पात्र उठाकर
प्रभु के नाम से आराधना करूंगा;
14 प्रभु के लोगों के सम्मुख
मैं प्रभु के प्रति अपनी समस्त मन्नतें पूरी करूंगा।
15 प्रभु के संतों की मृत्यु
प्रभु की दृष्टि में मूल्यवान है।
16 हे प्रभु, मैं तेरा सेवक हूं
मैं तेरा सेवक, तेरी सेविका की संतति हूं।
तूने मेरे बंधन खोल दिए हैं।
17 मैं तुझको स्तुति-बलि चढ़ाऊंगा,
और प्रभु, तेरे नाम से आराधना करूंगा।
18-19 प्रभु की प्रजा के समक्ष,
प्रभु के घर के आंगन में,
ओ यरूशलेम, तेरे मध्य
मैं प्रभु के प्रति अपनी समस्त मन्नतें पूरी करूंगा।
प्रभु की स्तुति करो!

प्रभु की स्तुति करो

117 ओ समस्त राष्ट्रो,
प्रभु की स्तुति करो;
ओ सब जातियो,
प्रभु का गुणगान करो।
2 प्रभु ने हम पर विशेष करुणा की है;
प्रभु की सच्चाई सदा बनी रहती है।
प्रभु की स्तुति करो!

उद्धार के लिए स्तुति

118 प्रभु की सराहना करो;
क्योंकि वह भला है,
उसकी करुणा सदा बनी रहती है!

2 इस्राएली जनता यह कहे,
'प्रभु की करुणा सदा बनी रहती है।'
3 हारून वंश के पुरोहित यह कहें,
'प्रभु की करुणा सदा बनी रहती है।'
4 प्रभु की भक्ति करने वाले यह कहें,
'प्रभु की करुणा सदा बनी रहती है।'
5 संकट में मैंने प्रभु को पुकारा;
प्रभु ने मुझे उत्तर दिया,
और मुझे संकट से मुक्त किया।
6 प्रभु मेरे पक्ष में है,
मैं नहीं डरूंगा।
मनुष्य मेरा क्या कर सकता है?
7 प्रभु मेरे पक्ष में है,
वह मेरा सहायक है;
मैं अपने बैरियों पर
विजयपूर्ण दृष्टि करूंगा।
8 मनुष्य पर भरोसा करने की अपेक्षा
प्रभु की शरण लेना भला है।
9 शासकों पर भरोसा करने की अपेक्षा
प्रभु की शरण लेना भला है।

10 सब राष्ट्रों ने मुझे घेर लिया;
पर प्रभु के नाम से
मैं उनका नाश करता हूं!
11 उन्होंने मुझे घेर लिया,
निस्सन्देह घेर लिया है;
पर प्रभु के नाम से
मैं उनका नाश करता हूं!
12 उन्होंने मुझे मधुमक्खियों के सदृश घेर लिया,
वे कांटों की आग-जैसे भभक रहे हैं;*
पर प्रभु के नाम से मैं उनका नाश करता हूं!
13 मुझे गिराने के लिए
बलपूर्वक धक्का दिया गया;
किन्तु प्रभु ने मेरी सहायता की।
14 प्रभु मेरी शक्ति है;
वह मेरा गीत है;
वह मेरा उद्धार है।

15 धार्मिकों के शिविरों में
जय-जयकार और उद्धार का यह स्वर हो रहा है:

---

* 'मूल में, "बुझ रहे हैं"'।

116 : 13 1 कुर 10 : 16 **117 : 1** रोम 15 : 11 **118 : 11** 1 इति 16 : 34 **118 : 6** इब्र 13 : 6 **118 : 14** नि 15 : 12 ; यश 12 : 2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'प्रभु का दाहिना हाथ वीरता से कार्य करता
है,
16 प्रभु का दाहिना हाथ उन्नत हुआ है,
प्रभु का दाहिना हाथ वीरता से कार्य करता
है!'
17 मैं मरूंगा नहीं, वरन् जीवित रहूंगा,
मैं प्रभु के कार्यों का वर्णन करूंगा।
18 प्रभु ने मुझे बहुत ताड़ित किया,
पर उसने मुझे मृत्यु को नहीं सौंपा।
19 मेरे लिए धर्म के द्वार खोलो;
मैं उनमें प्रवेश कर प्रभु की सराहना
करूंगा।

20 यह प्रभु का द्वार है;
इससे धार्मिक प्रवेश करेंगे।

21 प्रभु, मैं तेरी सराहना करता हूं;
क्योंकि तूने मुझे उत्तर दिया है,
तू मेरा उद्धार है।
22 जिस पत्थर को भवन निर्माताओं ने रद्द
किया,
वह कोने की नींव का पत्थर** बन गया।
23 यह कार्य प्रभु का है,
और यह हमारी दृष्टि में अद्भुत है।
24 आज का यह दिन प्रभु ने बनाया है;
हम उसमें मग्न और आनन्दित हों।
25 हे प्रभु, हम तुझ से विनती करते हैं,
हमें बचा;
हे प्रभु, हम तुझ से विनती करते हैं,
हमें सफलता प्रदान कर।

26 प्रभु के नाम से आनेवाला व्यक्ति धन्य है।
हम तुम्हें प्रभु-गृह में से धन्य कहते हैं!
27 प्रभु ही परमेश्वर है,
उसने हमें प्रकाश दिया है।
वेदी के कंगूरों तक
शोभा-यात्रा को बंदनवार से सजाओ।+
28 तू ही मेरा परमेश्वर है,
मैं तेरी सराहना करता हूं;
तू मेरा परमेश्वर है,
मैं तेरा गुणगान करूंगा।

29 प्रभु की सराहना करो,
क्योंकि वह भला है;
क्योंकि उसकी करुणा सदा बनी रहती है।

परमेश्वर की व्यवस्था उत्तम है

(आलेफ)*

119 धन्य हैं वे जिनका आचरण निर्दोष
है,
जो प्रभु की व्यवस्था पर चलते हैं,
2 धन्य हैं वे जो प्रभु की साक्षियां मानते हैं,
जो अपने सम्पूर्ण हृदय से प्रभु की खोज
करते हैं,
3 जो अन्याय नहीं करते
वरन् प्रभु के मार्ग पर चलते हैं।
4 प्रभु, तूने अपने आदेश प्रदान किए हैं
कि उत्साहपूर्वक उनका पालन किया जाए।
5 भला हो कि तेरी संविधियों का पालन करने
के लिए
मेरा आचरण दृढ़ हो जाए।
6 प्रभु, जब मैं तेरी सब आज्ञाओं पर ध्यान करता
रहूंगा,
तब मैं लज्जित नहीं होऊंगा।
7 जब मैं तेरे धर्ममय न्याय-सिद्धान्तों को
सीखूंगा,
तब निष्कपट हृदय से तेरी सराहना करूंगा।
8 मैं तेरी संविधियों का पालन करूंगा
प्रभु, तू मुझे कदापि मत त्यागना!
(बेथ)
9 जवान व्यक्ति अपना आचरण
किस प्रकार शुद्ध रख सकता है?
प्रभु, तेरे वचन का पालन करके।
10 मैं अपने सम्पूर्ण हृदय से तुझको खोजता हूं;
मुझे अपनी आज्ञाओं से विमुख न होने देना!

** अथवा, 'मेहराब की केन्द्र-शिला' + अथवा, ''यात्रा-बलिपशु को रस्सी से बांधकर वेदी के कंगूरों (सींग) तक ले जाओ।'' * इस भजन के आठ-आठ पद इब्रानी वर्णमाला के एक ही अक्षर से आरम्भ होते हैं।

118 : 22-23 मत 21 : 42; लू 20: 17; प्रे 4 : 11; इफ 2: 20; 1 पत 2: 7; यश 28: 16 **118 : 25-26** मत 21 : 9; 23 : 39; यो 12 : 13 **119 : 2** व्य 4 : 29

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

11 मैंने तेरे वचन अपने हृदय में धारण किए हैं,
कि मैं तेरे विरुद्ध पाप न करूं।
12 हे प्रभु, तू धन्य है;
तू मुझे अपनी संविधियाँ सिखा।
13 तेरे समस्त न्याय-सिद्धान्तों का
मैं अपने मुंह से वर्णन करूंगा।
14 मैं तेरी साक्षियों के मार्ग से हर्षित होता हूं,
जैसे मैं सब प्रकार के धन-धान्य से प्रसन्न
होता हूं।
15 मैं तेरे आदेशों का पाठ करूंगा,
मैं तेरे मार्गों की ओर दृष्टि करूंगा।
16 मैं तेरी संविधियों से प्रसन्न रहूंगा;
मैं तेरे वचन को नहीं भूलूंगा।

(गीमेल)

17 प्रभु, अपने सेवक का उपकार कर,
कि मैं जीवित रहूं
और तेरे वचन का पालन कर सकूं।
18 तू मेरी आंखें खोल
कि मैं तेरी व्यवस्था की अद्‌भुत बातें देख
सकूं।
19 मैं पृथ्वी पर प्रवासी हूं;
प्रभु, मुझ से अपनी आज्ञाएं न छिपा।
20 हर समय तेरे न्याय-सिद्धान्त की अभिलाषा
करते-करते
मेरा प्राण डूब चुका है।
21 तू अभिमानियों और शापितों को डांटता है,
वे तेरी आज्ञाओं से भटक जाते हैं।
22 उनकी निन्दा और अपमान मुझ से दूर कर,
क्योंकि मैं तेरी साक्षियों को मानता हूं।
23 चाहे शासक भी बैठकर मेरे विरुद्ध बातें करें,
तो भी मैं, तेरा यह सेवक,
तेरी संविधियों का पाठ करूंगा।
24 तेरी साक्षियां मेरा आनन्द हैं,
वे मुझे परामर्श देती हैं।

(दालेथ)

25 मेरे प्राण धूल में मिल गए;
प्रभु, तू अपने वचन के अनुसार
मुझे पुनर्जीवित कर!
26 जब मैंने अपने आचरण की चर्चा की,
तब तूने मुझे उत्तर दिया;
मुझे अपनी संविधियां सिखा।
27 प्रभु, तू अपने आदेशों का मार्ग समझा;
मैं तेरे आश्चर्यपूर्ण कार्यों का ध्यान करूंगा।
28 वेदना के कारण मेरा प्राण पिघलने लगा है।
तू अपने वचन के अनुसार मुझे
बलवान बना।
29 प्रभु, असत्य का मार्ग मुझ से दूर कर;
मुझ पर कृपा कर अपनी व्यवस्था सिखा।
30 मैंने सत्य का मार्ग चुना है,
मैंने तेरे न्याय-सिद्धान्त
अपने सम्मुख रखे हैं।
31 हे प्रभु, मैं तेरी साक्षियों से चिपका हूं;
मुझे लज्जित न होने देना।
32 जब तू मेरे हृदय को विशाल बनाएगा,
तब मैं तेरी आज्ञाओं के मार्ग पर दौड़ूंगा।

(हे)

33 हे प्रभु, मुझे अपनी संविधियों का मार्ग
सिखा;
मैं अन्त तक उसे मानता रहूंगा।
34 मुझे समझ दे कि मैं तेरी व्यवस्था को मानूं
और पूर्ण हृदय से उसका पालन करूं।
35 अपनी आज्ञाओं के पथ पर मुझे चला,
क्योंकि मैं उसमें आनन्दित होता हूं।
36 प्रभु, मेरे हृदय को लालच की ओर नहीं,
किन्तु अपनी साक्षियों की ओर झुका।
37 व्यर्थ वस्तुओं की ओर से मेरी आंखें हटा;
मुझे अपने मार्ग के लिए जीवन दे।
38 तेरे भक्तों के लिए तेरी जो प्रतिज्ञा है,
उसे अपने सेवक के लिए भी पुष्ट कर।
39 मेरी निंदा दूर कर, उससे मैं डरता हूं;
तेरे न्याय-सिद्धान्त उत्तम हैं।
40 मैं तेरे आदेशों की अभिलाषा करता हूं;
मुझे अपनी धार्मिकता से पुनर्जीवित कर।

(वाव)

41 हे प्रभु, तेरी करुणा,
तेरी प्रतिज्ञा के अनुसार तेरा उद्धार
मुझे प्राप्त हो।
42 तब मैं अपने निन्दकों को उत्तर दे सकूंगा,
मैं तेरे वचन पर भरोसा करता हूं।
43 मेरे मुंह से सत्य का वचन कदापि मत छीन,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

क्योंकि मैं तेरे न्याय-सिद्धान्तों की आशा
करता हूं।
44 मैं तेरी व्यवस्था का निरन्तर,
युग-युगांत पालन करता रहूंगा,
45 मैं स्वतंत्रता में जीवन व्यतीत करूंगा;
क्योंकि मैंने तेरे आदेशों की खोज की है।
46 मैं राजाओं के समक्ष तेरी साक्षियों की चर्चा
करूंगा;
मैं लज्जित नहीं हूंगा।
47 मैं तेरी आज्ञाओं से हर्षित होता हूं;
उनसे मैं प्रेम करता हूं।
48 मैं तेरी आज्ञाओं की ओर
अपने हाथ फैलाता हूं;
उनसे मैं प्रेम करता हूं;
मैं तेरी संविधियों का पाठ करूँगा।

(ज़ायिन)

49 प्रभु, अपने सेवक से की गई प्रतिज्ञा को
स्मरण कर,
जिसके द्वारा तूने मुझे आशा प्रदान की थी।
50 मेरी विपत्ति में मेरी यही सांत्वना है,
कि तेरा वचन मुझे पुनर्जीवित करता है।
51 यद्यपि अभिमानी व्यक्ति
मेरा अधिकाधिक उपहास करते हैं,
तो भी मैं तेरी व्यवस्था से विमुख नहीं होता।
52 प्रभु, जब मैं अतीत के
तेरे न्याय-सिद्धान्त स्मरण करता हूं,
तब मैं स्वयं को दिलासा देता हूं।
53 जो दुर्जन व्यक्ति तेरी व्यवस्था को त्याग देते
हैं,
उनके कारण मैं क्रोधाग्नि से भस्म होने
लगता हूं।
54 मेरे प्रवास के देश में
तेरी संविधियां मेरे गीत बनी हैं।
55 प्रभु, मैं रात में तेरा नाम स्मरण करता हूं,
मैं तेरी व्यवस्था का पालन करता हूं।
56 यह आशिष मुझे प्राप्त हुई,
क्योंकि मैंने तेरे आदेश माने थे।

(खेथ)

57 प्रभु, तू मेरा सब-कुछ है!
मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि मैं तेरे वचनों का
पालन करूंगा।
58 मैं तेरी कृपा के लिए सम्पूर्ण हृदय से
गिड़गिड़ाता हूं,
प्रभु, अपनी कृपा के अनुसार मुझ पर
अनुग्रह कर।
59 जब मैं अपने आचरण पर विचार करता हूं,
तब अपने पैर तेरी साक्षियों की ओर मोड़ता
हूं।
60 मैं विलम्ब नहीं करता,
वरन् तेरी आज्ञा-पालन के लिए शीघ्रता
करता हूं।
61 यद्यपि दुर्जनों के फंदे मुझे फंसाते हैं,
तो भी मैं तेरी व्यवस्था नहीं भूलता हूं।
62 तेरे धर्ममय न्याय-सिद्धान्तों के कारण
आधी रात को उठकर
मैं तेरी सराहना करता हूं।
63 मैं उन सब का साथी हूं जो तेरे भक्त है,
जो तेरे आदेशों का पालन करते हैं।
64 हे प्रभु, पृथ्वी तेरी करुणा से परिपूर्ण है,
प्रभु, मुझे अपनी संविधियां सिखा।

(टेथ)

65 हे प्रभु, अपने वचन के अनुसार
तूने अपने सेवक के साथ भलाई की है।
66 मुझे विवेक और समझ की बातें सिखा;
क्योंकि मैं तेरी आज्ञाओं पर
विश्वास करता हूं।
67 पीड़ित होने के पूर्व मैं भटक गया था,
परन्तु अब मैं तेरे वचनों का पालन करता
हूं।
68 तू भला है, और भलाई करता है,
मुझे अपनी संविधियां सिखा।
69 अभिमानी व्यक्ति मुझे झूठ से पोतते हैं,
किन्तु मैं सम्पूर्ण हृदय से तेरे आदेशों को
मानता हूं।
70 उनकी आंखों पर परदा पड़ गया है
परन्तु मैं तेरी व्यवस्था से हर्षित हूं।
71 मेरे लिए यह अच्छा था कि मैं पीड़ित हुआ,
जिससे मैं तेरी संविधियां सीख सकूं।
72 सोने-चांदी के लाखों टुकड़ों की अपेक्षा
तेरे मुंह की व्यवस्था मेरे लिए उत्तम है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(योध)
73 तेरे हाथों ने मुझे बनाया, और आकार दिया;
अब मुझे समझ दे कि मैं तेरी आज्ञाओं को सीखूं।
74 जो तुझसे डरते हैं, वे मुझे देखकर आनन्दित होंगे,
क्योंकि मैंने तेरे वचन की आशा की है।
75 प्रभु, मैं जानता हूं कि तेरे न्याय-सिद्धान्त धार्मिक हैं,
और तूने मुझे सच्चाई से पीड़ित किया है।
76 मेरी यह विनती है कि
जो प्रतिज्ञा तूने अपने सेवक से की थी,
उसके अनुसार तेरी करुणा मुझे सांत्वना दे।
77 तेरी असीम अनुकंपा मुझ पर हो
जिससे मैं जीवित रहूं;
क्योंकि तेरी व्यवस्था मेरा हर्ष है।
78 अभिमानी व्यक्ति लज्जित हों;
उन्होंने झूठ बोलकर मुझे ऐंठा है;
पर मैं तेरे आदेशों का पाठ करूंगा।
79 जो तुझसे डरते हैं, वे मेरे पास आएं,
जिससे वे तेरी साक्षियों को जान सकें।
80 मैं निर्दोष हृदय से संविधि का पालन करूं,
ताकि मुझे लज्जित न होना पड़े।

(काफ)
81 मेरा प्राण तेरे उद्धार को प्राप्त करने के लिए व्याकुल है;
मैं तेरे वचन की आशा करता हूं।
82 मेरी आंखें तेरी प्रतिज्ञा-पूर्ति के लिए बेचैन हैं;
मैं यह पूछता हूं: 'तू कब मुझे सांत्वना देगा?'
83 मैं धुएं से धुंधलायी मशक के समान जर्जर हो गया हूं;
तब भी मैं तेरी संविधियां नहीं भूला हूं।
84 तेरे सेवक की आयु के कितने दिन शेष हैं?
प्रभु, तू मेरा पीछा करने वालों का कब न्याय करेगा?
85 अभिमानियों ने मेरे पतन के लिए गड्ढे खोदे हैं;
वे तेरी व्यवस्था के अनुरूप आचरण नहीं करते हैं।
86 तेरी समस्त आज्ञाएं विश्वसनीय हैं,
वे झूठ-मूठ मेरा पीछा करते हैं,
प्रभु, मेरी सहायता कर!
87 उन्होंने मुझे धरती से लगभग मिटा ही डाला था;
परन्तु मैंने तेरे आदेशों को नहीं छोड़ा।
88 प्रभु, अपनी करुणा के कारण मुझे पुनर्जीवित कर,
ताकि मैं तेरी साक्षियों का पालन कर सकूं।

(लामेध)
89 हे प्रभु, सदा-सर्वदा के लिए
तेरा वचन आकाश में स्थिर रहे।
90 तेरी सच्चाई पीढ़ी से पीढ़ी तक है;
तूने पृथ्वी को स्थिर किया, वह खड़ी है।
91 आकाश और पृथ्वी तेरे निर्णय से आज भी स्थित हैं;
क्योंकि वे तेरे सेवक हैं।
92 यदि तेरी व्यवस्था मेरा हर्ष न होती
तो मैं विपत्ति में मर गया होता।
93 मैं तेरे आदेश कभी नहीं भूलूंगा;
क्योंकि उन्हीं के द्वारा तूने मुझे जीवित किया है।
94 प्रभु, मैं तेरा हूं, मेरी रक्षा कर;
क्योंकि मैंने तेरे आदेशों की खोज की है।
95 मुझे नष्ट करने के लिए दुर्जन घात लगाते हैं,
किन्तु मैं तेरी साक्षियों पर विचार करता हूं।
96 मैंने समस्त पूर्णताओं को सीमाबद्ध देखा है,
पर तेरी आज्ञा अत्यंत असीम है।

(मेम)
97 मैं तेरी व्यवस्था से कितना प्रेम करता हूं!
दिन-भर मैं उसका पाठ करता हूं।
98 तेरी आज्ञा मेरे शत्रुओं से अधिक
मुझे बुद्धिमान बनाती है,
क्योंकि वह सदा मेरे साथ है।
99 मेरे सब शिक्षकों की अपेक्षा
मुझ में अधिक समझ है;
क्योंकि तेरी साक्षियां मेरा दैनिक पाठ हैं।
100 मैं वृद्धों से अधिक विचार करता हूं,
क्योंकि मैं तेरे आदेश मानता हूं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

101 मैं अपने पैरों को हरेक कुपथ से रोकता हूं,
जिससे तेरे वचन का पालन करूं।
102 मैं तेरे न्याय-सिद्धान्तों से नहीं हटता हूं,
क्योंकि तूने मुझे सिखाया है।
103 तेरे वचन मेरी जीभ को कितने स्वादिष्ट
लगते हैं!
वे मेरे मुंह में मधु से अधिक मीठे हैं।
104 तेरे आदेशों द्वारा मैं विचार करता हूं;
अतः मैं प्रत्येक असत्य पथ से घृणा करता
हूं।

(नून)

105 तेरा वचन मेरे पैर के लिए दीपक,
और मेरे पथ की ज्योति है।
106 तेरे धर्ममय न्याय-सिद्धान्तों के पालन हेतु
मैंने शपथ खाकर संकल्प किया है।
107 मैं अत्यन्त पीड़ित हूं,
हे प्रभु, अपने वचन के अनुसार मुझे
पुनर्जीवित कर।
108 प्रभु, मैं विनती करता हूं,
मेरे मुंह की वंदना-बलि ग्रहण कर,
और मुझे अपने न्याय-सिद्धान्त सिखा।
109 मेरा प्राण निरन्तर हथेली पर रहता है,
फिर भी मैं तेरी व्यवस्था नहीं भूलता हूं।
110 दुर्जनों ने मेरे लिए जाल बिछा रखा है,
परन्तु मैं तेरे आदेशों से नहीं भटकता हूं।
111 मैंने तेरी साक्षियां सदा के लिए
उत्तराधिकार में ग्रहण की हैं;
वे मेरे हृदय का हर्ष हैं।
112 तेरी संविधियां पूर्ण करने को
सदैव के लिए, अन्त तक
मैं अपना हृदय अर्पित करता हूं।

(सामेख)

113 मैं दुचित व्यक्ति से घृणा करता हूं,
पर मैं तेरी व्यवस्था से प्रेम करता हूं।
114 तू मेरी आड़ और ढाल है;
मैं तेरे वचन की आशा करता हूं;
115 दुष्कर्मियो, मुझसे दूर हटो।
मैं अपने परमेश्वर की आज्ञाएं मानूंगा।
116 प्रभु, अपने वचन के अनुसार मुझे संभाल
ताकि मैं जीवित रहूं,
मुझे लज्जित न होने देना;
क्योंकि मैंने तेरी आशा की है।
117 प्रभु, मुझे सहारा दे कि मैं बच सकूं,
और तेरी संविधियों पर निरन्तर दृष्टि करता
रहूं।
118 जो मनुष्य तेरी संविधियों से भटक जाते हैं,
उनको तू धिक्कारता है;
क्योंकि उनकी चतुराई व्यर्थ है।
119 तू पृथ्वी के सब दुर्जनों को धातु के मैल के
समान धोता है;
अतः मैं तेरी साक्षियों से प्रेम करता हूं।
120 प्रभु, तेरे भय से मेरा शरीर कांपता है;
तेरे न्याय-सिद्धान्तों से मैं डरता हूं।

(अयिन)

121 मैंने न्याय और धार्मिकता के कार्य किये
हैं;
प्रभु, मुझे अत्याचारियों के हाथ मत सौंप।
122 अपने सेवक की भलाई के लिए
तू स्वयं जमानत दे;
अभिमानी मुझ पर अत्याचार न करने पाएं।
123 मेरी आंखें तेरे उद्धार के लिए,
तेरी धर्ममय प्रतिज्ञा-पूर्ति के लिए बेचैन हैं।
124 अपनी करुणा के अनुसार
अपने सेवक के साथ व्यवहार कर,
प्रभु, मुझे अपनी संविधियां सिखा।
125 मैं तेरा सेवक हूं;
मुझे समझ प्रदान कर;
जिससे मैं तेरी साक्षियों का अनुभव कर
सकूं।
126 प्रभु, हस्तक्षेप करने का यह समय है;
क्योंकि तेरी व्यवस्था का उल्लंघन किया
गया है।
127 इसलिए मैं स्वर्ण अथवा कुन्दन से अधिक
तेरी आज्ञाओं से प्रेम करता हूं।
128 तेरे समस्त आदेशों के अनुरूप
अपने आचरण को ढालता हूं;
मैं प्रत्येक असत्य पथ से घृणा करता हूं।

(पे)

---

119 : 108 इब्र 13 : 15 **119 : 119** यहेज 22 : 18

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

129 तेरी साक्षियां अद्‌भुत हैं:
इसलिए मैं उनको मानता हूं।
130 तेरे वचनों के उद्‌घाटन से प्रकाश होता है,
उससे बुद्धिहीन बुद्धि पाते हैं।
131 मैं तेरे वचन का प्यासा हूं;
क्योंकि मैं तेरी आज्ञाओं की अभिलाषा करता हूं।
132 जैसे तू अपने नाम के भक्तों के लिए करता है,
वैसे ही तू मेरी ओर उन्मुख हो और मुझ पर कृपा कर।
133 अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार मेरे पग स्थिर कर;
अधर्म को मुझ पर अधिकार न करने दे।
134 मनुष्य के अत्याचारों से मेरा उद्धार कर,
ताकि मैं तेरे आदेशों का पालन कर सकूं।
135 प्रभु, अपने मुख की ज्योति
अपने सेवक पर प्रकाशित कर;
तू मुझे अपनी संविधियां सिखा।
136 मेरी आंखें आंसुओं की धाराएं प्रवाहित करती हैं;
क्योंकि लोग तेरी व्यवस्था का पालन नहीं करते हैं।

(साधे)

137 हे प्रभु, तू धार्मिक है,
और तेरे न्याय-सिद्धान्त सत्यनिष्ठ हैं।
138 धार्मिकता से, परिपूर्ण सच्चाई से
तूने अपनी साक्षियां नियुक्त की हैं।
139 मेरी धुन ही मुझे नष्ट कर रही है;
क्योंकि मेरे बैरी तेरे वचन भूल जाते हैं।
140 तेरी प्रतिज्ञा अत्यन्त शोधित है,
तेरा सेवक उससे प्रेम करता है।
141 मैं छोटा और तुच्छ हूं,
तोभी मैं तेरे आदेशों को नहीं भूलता हूं।
142 तेरी धार्मिकता सदा के लिए धार्मिक है,
और तेरी व्यवस्था सत्य है।
143 यद्यपि मैं संकट में हूं, व्यथित हूं,
तो भी तेरी आज्ञाएं मेरा हर्ष हैं।
144 तेरी साक्षियां सदा के लिए धर्ममय हैं,
मुझे समझ दे कि मैं जीवित रहूं।

(क्रोफ)

145 मैं अपने सम्पूर्ण हृदय से तुझे पुकारता हूं,
हे प्रभु, मुझे उत्तर दे;
मैं तेरी संविधियां मानूंगा।
146 मैं तुझको पुकारता हूं; मुझे बचा,
जिससे मैं तेरी साक्षियों का पालन कर सकूं।
147 मैं प्रात:काल उठता और तेरी दुहाई देता हूं;
मैं तेरे वचनों की आशा करता हूं।
148 मेरी आंखें रात्रि-जागरण के पूर्व खुल गईं,
ताकि मैं तेरी प्रतिज्ञा का ध्यान कर सकूं।
149 अपनी करुणा के अनुसार मेरी पुकार सुन;
हे प्रभु, अपने न्याय-सिद्धान्त के अनुरूप मुझे पुनर्जीवित कर।
150 मेरा पीछा करनेवाले निकट आ गये हैं;
उन्होंने षड्‌यन्त्र रचा है;
वे तेरी व्यवस्था से दूर हैं।
151 किन्तु प्रभु, तू निकट है,
तेरी सब आज्ञाएं सत्य हैं।
152 बहुत दिनों से
मैं तेरी साक्षियों के द्वारा
यह अनुभव कर चुका हूं,
कि तूने उनको स्थायी रूप से स्थापित किया है।

(रेश)

153 प्रभु, मेरी पीड़ा को देख और मुझे छुड़ा;
क्योंकि मैं तेरी व्यवस्था को भूला नहीं हूं।
154 मेरे पक्ष में निर्णय दे और मुझे मुक्त कर;
अपनी प्रतिज्ञा के अनुरूप
मुझे पुनर्जीवित कर!
155 मुक्ति दुर्जनों से दूर है;
क्योंकि दुर्जन तेरी संविधियों को नहीं खोजते।
156 हे प्रभु, तेरी अनुकंपा महान है;
तू अपने न्याय-सिद्धान्त के अनुरूप
मुझे पुनर्जीवित कर।
157 मेरा पीछा करनेवाले लोग तथा मेरे बैरी अनेक हैं,

---

119 : 136 एज्रा 9 : 3

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तो भी मैं तेरी साक्षियों से नहीं हटता।
158 मैं विश्वासघातकों को देखकर उनसे घृणा
करता हूं;
क्योंकि वे तेरे वचनों का पालन नहीं करते।
159 देख, मैं तेरे आदेशों से कितना प्रेम करता हूं।
हे प्रभु, अपनी करुणा के कारण मुझे
पुनर्जीवित कर।
160 सत्य तेरे वचन का सारांश है;
तेरे धर्ममय न्याय-निर्णय शाश्वत हैं।

(शीन)

161 शासक अकारण मेरा पीछा करते हैं,
परन्तु मेरा हृदय तेरे वचनों से डरता है।
162 जैसे बड़ी लूट पाने वाला व्यक्ति
हर्षित होता है,
वैसे मैं भी तेरे वचनों से हर्षित होता हूं।
163 झूठ से मुझे घृणा है,
मैं उसका तिरस्कार करता हूं;
किन्तु मैं तेरी व्यवस्था से प्रेम करता हूं।
164 तेरे धर्ममय न्याय-सिद्धान्तों के कारण
मैं दिन में सात बार तेरी स्तुति करता हूं।
165 प्रभु, तेरी व्यवस्था के प्रेमियों को
अपार शांति मिलती है,
उन्हें कोई बाधा नहीं होती।
166 हे प्रभु, मैं तेरे उद्धार की आशा करता हूं;
मैं तेरी आज्ञाएं पूर्ण करता हूं।
167 मेरा प्राण तेरी साक्षियों का पालन करता है,
मैं उनसे बहुत प्रेम करता हूं।
168 मैं तेरे आदेशों और साक्षियों का पालन
करता हूं;
मेरा समस्त आचरण तेरे सम्मुख प्रस्तुत है।

(ताव)

169 हे प्रभु, मेरी पुकार तेरे सम्मुख पहुंचे;
तू अपने वचन के अनुसार मुझे समझ दे।
170 मेरी विनती तेरे सम्मुख पहुंचे;
अपने वचन के अनुसार मुझे छुड़ा।
171 मेरे ओंठ निरन्तर तेरा स्तुतिगान करेंगे,
कि तू मुझे अपनी संविधियां सिखाता है।
172 मैं तेरे वचन के गीत गाऊंगा,
क्योंकि तेरी समस्त आज्ञाएं धर्ममय हैं।
173 प्रभु, तेरा हाथ मेरी सहायता के लिए तत्पर
रहे;
क्योंकि मैंने तेरे आदेशों को अपने लिए
चुना है।
174 हे प्रभु, मैं तेरे उद्धार की अभिलाषा करता
हूं;
क्योंकि तेरी व्यवस्था मेरा हर्ष है।
175 प्रभु, मैं जीवित रहूं
जिससे मैं तेरी स्तुति कर सकूं।
तेरे न्याय-सिद्धान्त मेरी सहायता करें।
176 मैं भेड़ के समान मार्ग से भटक गया हूं;
प्रभु, अपने सेवक को ढूंढ़;
क्योंकि मैं तेरी आज्ञाओं को स्मरण रखता
हूं।

छल-कपट से मुक्त रहने की प्रार्थना

यात्रा-गीत।

120 अपने संकट में
मैंने प्रभु को पुकारा कि वह मुझे
उत्तर दे:
2 'हे प्रभु, झूठे ओंठों से,
कपटी जिह्वा से मेरी रक्षा कर।'

3 अरी, छलनेवाली जीभ, परमेश्वर तुझे क्या
दण्ड दे?
वह तेरे साथ और क्या करे?
4 तू मानो योद्धा का पैना तीर है;
तू झाऊ वृक्ष का दहकता अंगारा है।

5 धिक्कार है मुझे,
कि मैं मेशेक जाति के मध्य
प्रवास कर रहा हूं,
केदार जाति के शिविरों में
निवास कर रहा हूं।
6 बहुत समय तक मैं इन जातियों में रह चुका;
ये शांति से घृणा करती हैं।
7 मैं शान्ति चाहता हूं;
पर जब मैं शान्ति के वचन कहता हूं,
तब ये युद्ध का उपक्रम करती हैं।

---

119 : 176 यश 53 : 6 ; लू 15 : 4 ; यहेज 34 : 6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रभु हमारा रक्षक है

यात्रा-गीत।

121 मैं अपनी आंखें पर्वतों की ओर उठाता हूं।
क्या मुझे वहां से सहायता प्राप्त होती है?
2 मुझे प्रभु से सहायता प्राप्त होती है,
जो आकाश और पृथ्वी का सृजक है।

3 वह तेरे पैर फिसलने न देगा,
वह तेरा रक्षक है, वह नहीं ऊंघेगा।
4 देखो, इस्राएल का रक्षक
न ऊंघेगा, न सोएगा।

5 प्रभु तेरा रक्षक है,
प्रभु तेरे दाहिनें हाथ पर तेरी आड़ है।
6 न दिन में सूर्य
और न रात में चन्द्रमा तेरी हानि करेंगे।

7 प्रभु समस्त बुराई से तेरी रक्षा करेगा।
वह तेरे प्राण की रक्षा करेगा।
8 तेरे बाहर जाने और लौटने में
अब से सदा तक प्रभु तेरी रक्षा करेगा।

यरूशलेम की शान्ति के लिए प्रार्थना

यात्रा-गीत। दाउद का।

122 जब यात्रियों ने मुझसे कहा,
'आओ, हम प्रभु के घर चलें,'
तब मैं आनन्दित हुआ!
2 ओ यरूशलेम, तेरे द्वारों पर
हम खड़े हैं!

3 यरूशलेम उस नगर के सदृश बना है,
जो एकता के बंधनों में बंधा है,
4 जहां विभिन्न कुल, प्रभु के कुल,
इस्राएल की साक्षी के अनुसार,
प्रभु के नाम की सराहना के लिए जाते हैं।
5 वहां न्याय के लिए सिंहासन,
दाऊद के वंश के सिंहासन स्थित हैं।

6 यरूशलेम की शान्ति के लिए प्रार्थना करो:
'ओ यरूशलेम! तुझ से प्रेम करनेवाले
फलें-फूलें!
7 तेरी दीवारों के भीतर शान्ति,
और तेरे गढ़ों में सुरक्षा बनी रहे।'
8 अपने भाई-बहिनों और साथियों के लिए
मैं यह कहूंगा, 'तुझ में शान्ति बनी रहे।'
9 अपने प्रभु परमेश्वर के घर के निमित्त
मैं तेरी भलाई की खोज करूंगा।

अनुग्रह के लिए प्रार्थना

यात्रा-गीत।

123 प्रभु, मैं अपनी आंखें तेरी ओर उठाता हूं;
प्रभु, तू स्वर्ग में विराजमान है!
2 जैसे सेवक की आंखें स्वामी के हाथ पर,
जैसे सेविका की आंखें स्वामिनी के हाथ
पर, लगी रहती हैं,
वैसे ही हमारी आंखें अपने प्रभु परमेश्वर
की ओर लगी रहती हैं,
जब तक वह हम पर कृपा न करे।

3 हे प्रभु, हम पर कृपा कर,
हम पर कृपा कर;
क्योंकि हम तिरस्कार से तृप्त हो चुके हैं!
4 धनवानों के उपहास से,
अहंकारियों के तिरस्कार से
हमारे प्राण तृप्त हो चुके हैं।

शत्रुओं से छुटकारा पाने पर स्तुति करना

यात्रा गीत। दाऊद का।

124 इस्राएली राष्ट्र यह कहे:
'यदि प्रभु हमारे पक्ष में न होता,
2 यदि प्रभु हमारे पक्ष में न होता,
जब शत्रु हमारे विरुद्ध खड़े हुए थे,
3 जब उनका क्रोध हमारे प्रति भड़का था,
तब उन्होंने जीवित ही हमें निगल लिया
होता।
4 बाढ़ हमें बहा ले गयी होती,
और जल-धाराओं ने हमें डुबा दिया होता,
5 और उफनता जल
हमारे गले तक चढ़ आता।'

---

121 : 1 यिर 3 : 23 121 : 6 यश 49 : 10 121 : 8 व्य 28 : 6 122 : 3 इफ 2 : 19-22 122 : 5 व्य 17 : 8-9; 1 रा 7 : 7 122 : 7 भज 48 : 13 123 : 3 नह 4 : 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

6 प्रभु धन्य है!
उसने हमें शत्रुओं का शिकार
बनने नहीं दिया!
7 बहेलियों के जाल से छूटे पक्षी के सदृश
हमारे प्राण बच गए;
उनका जाल फट गया; और हम मुक्त हो गए!
8 हमारी सहायता प्रभु के नाम में है;
वह आकाश और पृथ्वी का सृजक है।

प्रभु अपने भक्तों के चारों ओर है

यात्रा-गीत।

125 प्रभु पर भरोसा करने वाले
सियोन पर्वत के सदृश हैं,
जो टलता नहीं, वरन् सदा स्थिर है।
2 जैसे यरूशलेम के चारों ओर पर्वत हैं,
वैसे ही प्रभु अपने निज लोगों के चारों ओर
है,
अब से सदा-सर्वदा तक।
3 दुर्जनों का राजदण्ड
धार्मिकों की भूमि पर टिका न रहेगा,
ऐसा न हो कि भक्त
अन्याय की ओर अपने हाथ बढ़ाएं।
4 हे प्रभु, भले मनुष्यों की,
निष्कपट हृदय वालों की भलाई कर।
5 किन्तु जो कुटिल मार्गों की ओर मुड़ते हैं,
उन्हें प्रभु कुकर्मियों के साथ निकाल देगा।
इस्राएल को शान्ति मिले!

स्वदेश की ओर लौटना

यात्रा- गीत।

126 जब प्रभु सियोन को गुलामी से
वापस ले आया*
तब हमें अपनी आंखों पर विश्वास नहीं
हुआ;
हमें प्रभु का यह कार्य स्वप्न लगा!
2 हमारा मुंह हंसी से भरा था,
हमारी जिह्वा जयजयकार कर रही थी।
तब विजातीय राष्ट्रों ने कहा,
'प्रभु ने इनके लिए महान कार्य किए हैं।'
3 प्रभु ने हमारे लिए महान कार्य किए हैं;
हम सुखी हैं।
4 जैसे सूखे क्षेत्र की नदियां
बरसात में जल से भर जाती हैं,
वैसे ही, हे प्रभु, हमारी समृद्धि पुनः हमें
लौटा दे।
5 जो बीज को आंसुओं के साथ बोते हैं,
वे फसल को जयजयकार करते हुए काटेंगे।
6 बोने के लिए बीज ले जानेवाला किसान
यदि रोता हुआ जाएगा,
तो भी वह अपने पूलों के साथ
जयजयकार करता हुआ घर लौटेगा।

प्रभु ही सफलता प्रदान करता है

यात्रा-गीत। सुलेमान का।

127 यदि प्रभु घर को न बनाए,
तो उसे बनानेवाले व्यक्ति
व्यर्थ परिश्रम करते हैं;
यदि प्रभु नगर की रक्षा न करे,
तो पहरेदार व्यर्थ जागते हैं।
2 तुम व्यर्थ ही तड़के उठते,
और देर से सोते हो,
तुम व्यर्थ ही कठोर परिश्रम की
रोटी खाते हो,
क्योंकि प्रभु ही अपने प्रियजनों को नींद
प्रदान करता है।
3 देखो, बालक-बालिका प्रभु का उपहार+ हैं,
गर्भ का फल प्रभु का एक दान है।
4 युवावस्था में उत्पन्न पुत्र
योद्धा के हाथ में तीर के सदृश होते हैं।
5 वह पिता धन्य है,
जिसने अपने तरकश को उनसे भर लिया है।
जब वह अपने शत्रु से अदालत में बात करेगा।
तब वह पराजित न होगा।

प्रभु के भक्त की नियति

यात्रा-गीत।

128 ओ प्रभु के भक्त!
तू धन्य है,

---

* अथवा, "जब प्रभु ने सियोन को पुनः समृद्धि दी।" + शब्दशः 'विरासत'

125 : 5 गल 6 : 16 126 : 5 यो 12 : 24 127 : 1 यो 15 : 5

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तू प्रभु के मार्ग पर चलता है!
2 तू अपने हाथ के परिश्रम का फल खाएगा;
तू सुखी होगा, तेरा भला होगा।

3 तेरे घर की जनानी ड्योढ़ी में
तेरी पत्नी फलवन्त अंगूर-बेल के सदृश बनेगी;
तेरी चौकी के चारों ओर
जैतून के अंकुरों के समान तेरे बाल-बच्चे होंगे।
4 देखो, जो व्यक्ति प्रभु का भक्त है,
वह यह आशिष पाएगा।

5 प्रभु सियोन से तुझे आशिष दे!
तू अपनी आयु के समस्त दिन
यरूशलेम की समृद्धि भोगे।
तुझे दीर्घ आयु प्राप्त हो
6 और तू अपने पुत्र-पौत्रादि को देखे!
इस्राएल को शान्ति मिले!

राष्ट्र की विजय के लिए प्रार्थना

यात्रा-गीत।

129 'शत्रुओं ने मेरे बचपन से मुझे अत्यन्त कष्ट पहुंचाया,'
इस्राएली राष्ट्र यह कहे:
2 'शत्रुओं ने मेरे बचपन से मुझे अत्यन्त कष्ट पहुंचाया;
तो भी वे मुझ पर प्रबल न हो सके।
3 हलवाहों ने मेरी पीठ पर हल चलाए;
उन्होंने मेरी भूमि को जोत कर अपनी रेखाएं लम्बी कीं।'
4 प्रभु धार्मिक है;
उसने दुर्जनों की रस्सियां काट दीं।

5 सियोन से घृणा करने वाले
लज्जित हों, और पीछे लौट जाएं!
6 वे छत की घास के सदृश हो जाएं
जो बढ़ने के पूर्व सूख जाती है,
7 जिससे न घास काटनेवाला अपनी मुट्ठी भरता है,
और न पूले बांधनेवाला अपनी बाहें।
8 राह से गुजरनेवाले भी यह नहीं कहते,
'प्रभु की आशिष तुम पर हो!
हम तुम्हें प्रभु-नाम से आशिष देते हैं।'

प्रभु के उद्धार की आशा करना

यात्रा-गीत।

130 हे प्रभु, गंभीर संकट की स्थिति में *
मैं तुझको पुकारता हूं!
2 हे स्वामी, मेरी पुकार सुन!
मेरी विनती के शब्दों पर
तेरे कान ध्यान से लगे रहें!

3 हे प्रभु, यदि तू मेरे अधर्म पर ध्यान देगा,
तो, हे स्वामी, तेरे सम्मुख कौन खड़ा रह सकेगा?
4 पर तेरे साथ क्षमा है, ताकि हम तेरी भक्ति करें।

5 मैं प्रभु की प्रतीक्षा करता हूं;
मेरा प्राण प्रतीक्षा करता है;
मैं प्रभु के वचन की आशा करता हूं।
6 सबेरे की प्रतीक्षा करनेवाले पहरेदारों से अधिक,
प्रातः की प्रतीक्षा करनेवाले पहरेदारों से अधिक
मेरा प्राण स्वामी की प्रतीक्षा करता है।

7 ओ इस्राएल, प्रभु की आशा कर!
क्योंकि प्रभु के साथ करुणा है।
प्रभु के साथ अपार उद्धार है।
8 वह इस्राएल को
उसके समस्त अधर्म से छुड़ाएगा।

प्रभु में शिशुवत् भरोसा करना

यात्रा-गीत। दाऊद का।

131 हे प्रभु, न मेरे हृदय में अहंकार है,
और न मेरी आंखें घमण्ड से चढ़ी हैं।
अपनी पहुंच से दूर
बड़ी और अद्भुत वस्तुओं के पीछे

* शब्दश: गहरे गर्त से

129 : 8 रूत 2 : 4 130 : 1 शोक 3 : 55; योना 2 : 2 130 : 3 भज 143 : 2; रोम 3 : 20; गल 2 : 16 130 : 4 नि 34 : 7; 1 रा 8 : 39-40 130 : 8 मत 1 : 21; तीत 2 : 14

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मैं नहीं भागता।
2 किन्तु मैंने अपनी अभिलाषाओं को
स्थिर और शान्त किया है;
मां की गोद में दूध पीकर शान्त लेटे हुए
शिशु+ के सदृश,
शान्त शिशु के सदृश मेरा प्राण मुझमें शान्त
है!

3 ओ इस्राएल! अब से सदा तक;
प्रभु की आशा कर!

मंदिर में मंजूषा का प्रतिष्ठापन

यात्रा-गीत।

132 हे प्रभु, दाऊद के हित में
उसकी समस्त कठिनाइयों को
स्मरण कर ;
2 प्रभु, उसने तेरी शपथ खाई है,
उसने याकूब के सर्वशक्तिमान प्रभु की यह
मन्नत मानी है:
3 'मैं अपने घर में प्रवेश नहीं करूंगा,
और न बिछे हुए बिस्तर पर लेटूंगा;
4 मैं अपनी आंखों में नींद नहीं आने दूंगा,
और न अपनी पलकों को झपकियां लेने
दूंगा,
5 जब तक मैं प्रभु के लिए एक स्थान,
याकूब के सर्वशक्तिमान प्रभु के लिए एक
निवास-स्थान प्राप्त न कर लूं।'

6 देखो, हमने मंजूषा के विषय में एप्राताह*
नगर में सुना;
और हमने उसको यअर के मैदान में पाया।
7 आओ, हम प्रभु के निवास-स्थान में प्रवेश
करें,
आओ, हम उसकी चरणों की चौकी के
सम्मुख वन्दना करें।
8 हे प्रभु, उठ!
तू और तेरे सामर्थ्य की मंजूषा
अपने विश्राम-स्थान को जाएं।
9 तेरे पुरोहित धार्मिकता से विभूषित हों,
तेरे भक्त जय-जयकार करें।
10 अपने सेवक दाऊद के लिए हमारी प्रार्थना
सुन;
तू अपने अभिषिक्त राजा को अस्वीकार
मत कर।

11 प्रभु ने दाऊद से सत्य शपथ खाई है,
वह उससे विमुख न होगा:
'तेरे निज पुत्रों में से एक पुत्र को
मैं तेरे सिंहासन पर बैठाऊंगा।
12 यदि तेरे पुत्र मेरे विधान
और साक्षी का पालन करेंगे,
जो मैं उन्हें सिखाऊंगा,
तो उनके पुत्र भी युग-युगान्त
तेरे सिंहासन पर बैठेंगे।'

13 प्रभु ने सियोन को चुना है;
उसको अपना निवास-स्थान बनाने की
इच्छा की है:
14 'यह युग-युगान्त मेरा विश्राम स्थल होगा;
यहां मैं रहूंगा; क्योंकि मैंने इसकी इच्छा की
है।
15 मैं इस नगर की भोजन-व्यवस्था को आशिष
दूंगा;
मैं इसके दरिद्रों को रोटी से तृप्त करूंगा।
16 मैं इसके पुरोहितों को उद्धार से विभूषित
करूंगा,
इसके भक्त ऊंचे स्वर से जय-जयकार
करेंगे।
17 यहां मैं दाऊद के लिए वंश-वृक्ष उत्पन्न
करूंगा;
मैंने अपने अभिषिक्त के लिए वंश-दीपक
तैयार किया है।
18 मैं दाऊद के शत्रुओं को लज्जित करूंगा;
पर दाऊद का मुकुट उस पर सदा सुशोभित
होगा।'

+ शब्दश: ''दूध-छुड़ाये हुए बालक'' * अथवा बेतलेहम

131 : 2 मत 18: 3 **132 : 8–10** 2 इति 6 : 41–42 **132 : 8** गण 10 : 35 **132 : 11–12** 2 शम 7 : 12–16; भज 89 : 3–4; प्रे 2 : 30 **132 :17** लू 1 : 69; 1 रा 11: 36

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सहभागिता की प्रशंसा

यात्रा-गीत।+

133 भाई-बन्धुओं का एक-साथ रहना,
कितना भला और मनोहर है!
2 यह सिर पर डाले गए मूल्यवान तेल के सदृश है;
जो दाढ़ी पर बहता है,
वृद्ध पुरोहित* की दाढ़ी पर बहता है;
जो उसके वस्त्र के छोर तक बहता है।
3 यह हेर्मोन पर्वत की ओस के समान है,
जो सियोन की पहाड़ियों पर गिरती है!
वहां प्रभु अपनी आशिष को,
शाश्वत जीवन को प्रेषित करता है।

सन्ध्या की आराधना

यात्रा-गीत।

134 ओ प्रभु के सेवको,
जो रात में प्रभु-गृह में खड़े रहते हो,
प्रभु को धन्य कहो!
2 पवित्र स्थान की ओर अपने हाथ उठाओ,
और प्रभु को धन्य कहो!

3 प्रभु तुझे सियोन से आशिष दे;
वह आकाश और पृथ्वी का सृजक है।

प्रभु की महानता और मूर्तियों की निस्सारता

135 प्रभु की स्तुति करो!
प्रभु-नाम की स्तुति करो,
ओ प्रभु के सेवको, स्तुति करो,
2 जो प्रभु-गृह में
हमारे परमेश्वर के आंगनों में खड़े रहते हो!

3 प्रभु की स्तुति करो,
क्योंकि प्रभु भला है।
प्रभु-नाम के गीत गाओ;
क्योंकि उसका नाम मनोहर है!**
4 प्रभु ने अपने लिए याकूब को,
इस्राएल को निज सम्पत्ति के लिए चुना है।
5 मैं जानता हूं, प्रभु महान है,
हमारा स्वामी समस्त देवताओं के ऊपर है।
6 प्रभु को जो पसन्द आया,
वही उसने आकाश, पृथ्वी, सागरों
और समस्त महासागरों में किया।
7 वह पृथ्वी के छोर से बादल उठाता है,
वह वर्षा के लिए विद्युत चमकाता है,
वह अपने स्वर्गिक भण्डार-गृहों से
पवन बहाता है।

8 प्रभु ने मिस्र देश में
मनुष्य और पशु के पहिलौठे को मार डाला था।
9 अरे मिस्र, प्रभु ने तेरे मध्य
फरओ और उसके समस्त सेवकों के विरुद्ध
चिह्न और चमत्कार किए थे।
10 उसने अनेक राष्ट्रों को नष्ट किया,
और कई राजाओं को मार डाला:
11 अमोरियों के राजा सीहोन को,
बाशान के राजा ओग को
और कनान के समस्त राज्यों के शासकों को!
12 उसने उनकी भूमि को इस्राएलियों की पैतृक-सम्पत्ति,
अपने निज लोगों की पैतृक सम्पत्ति बनने के लिए प्रदान कर दिया।

13 हे प्रभु, तेरा नाम शाश्वत है,
हे प्रभु, तेरी स्मृति पीढ़ी से पीढ़ी बनी रहती है।
14 हे प्रभु, तू अपनी प्रजा को निर्दोष सिद्ध करेगा,
तू अपने सेवकों पर दया करेगा।

15 राष्ट्रों की मूर्तियां सोना और चांदी हैं:
वे मनुष्य के हाथों का काम हैं।
16 उनके मुंह हैं, पर वे बोलतीं नहीं।
उनके आंखें हैं, किन्तु वे देख नहीं सकतीं;

+ पाठांतर, ''दाऊद का'' * अथवा, ''हारून'' ** अथवा, 'क्योंकि प्रभु कृपालु है।'

133 : 2 नि 30 : 25-30 133 : 3 व्य 28 : 8; 1 यो 5 : 20 134 :1 1 इति 9 : 33 134 : 3 गण 6 : 24 135 : 5 भज 95 : 3 135 : 7 यिर 10 : 13; अय्य 28 : 25 135 : 10-12 भज 136 : 17-22 135 : 14 इब्र 10 : 30 135 : 15-18 भज 115 : 4-8; प्रक 9 : 20

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
17 उनके कान हैं, पर वे सुन नहीं सकतीं;
और न उनके मुंह में जीवन की सांस है!
18 जो उन्हें बनाते हैं,
वे उन्हीं मूर्तियों के सदृश निर्जीव हैं।
वे भी बेजान हैं, जो उन पर भरोसा करते
हैं।

19 ओ इस्राएल के वंशजो, प्रभु को धन्य कहो!
ओ हारून वंश के पुरोहितो, प्रभु को धन्य
कहो!
20 ओ लेवी वंश के उपपुरोहितो, प्रभु को धन्य
कहो।
ओ प्रभु के श्रद्धालु भक्तो, प्रभु को धन्य
कहो!
21 सियोन में प्रभु को धन्य कहा जाए;
प्रभु यरूशलेम में निवास करता है!
प्रभु की स्तुति करो!

प्रभु की करुणा के लिए स्तुति

136 प्रभु की सराहना करो,
क्योंकि प्रभु भला है;
उसकी करुणा शाश्वत है।
2 परम परमेश्वर* की सराहना करो,
उसकी करुणा शाश्वत है।
3 परम स्वामी की सराहना करो,
उसकी करुणा शाश्वत है।

4 अकेले ही महान आश्चर्य कर्म करने वाले की
सराहना करो,
उसकी करुणा शाश्वत है।
5 बुद्धि से आकाश बनाने वाले की सराहना
करो,
उसकी करुणा शाश्वत है।
6 सागर के ऊपर पृथ्वी को फैलाने वाले की
सराहना करो,
उसकी करुणा शाश्वत है।
7 महान् प्रकाश-पिण्ड बनाने वाले की सराहना
करो,
उसकी करुणा शाश्वत है।
8 उसने दिन पर शासन करने के लिए सूर्य
बनाया,
उसकी करुणा शाश्वत है।
9 उसने रात पर शासन करने के लिए चन्द्रमा
और तारागण बनाए,
उसकी करुणा शाश्वत है।

10 मिस्र देश के पहिलौठों को मारनेवाले की
सराहना करो,
उसकी करुणा शाश्वत है।
11 मिस्र देश से इस्राएलियों को निकालनेवाले
की सराहना करो,
उसकी करुणा शाश्वत है।
12 उसने अपनी सामर्थी और शक्तिशाली भुजा
से उनको निकाला था,
उसकी करुणा शाश्वत है।
13 लाल सागर को खण्ड-खण्ड करने वाले की
सराहना करो,
उसकी करुणा शाश्वत है।
14 उसने लाल सागर के मध्य से इस्राएल को
पार कराया,
उसकी करुणा शाश्वत है।
15 पर उसने फरओ और उसकी सेना को
समुद्र में फेंक दिया,
उसकी करुणा शाश्वत है।
16 अपने निज लोगों का निर्जन प्रदेश में
नेतृत्व करने वाले की सराहना करो,
उसकी करुणा शाश्वत है।
17 बड़े-बड़े राजाओं को मारनेवाले की
सराहना करो,
उसकी करुणा शाश्वत है।
18 उसने प्रतापी राजाओं को भी मारा:
उसकी करुणा शाश्वत है—
19 अमोरियों के राजा सीहोन को,
उसकी करुणा शाश्वत है —
20 बाशान के राजा ओग को मारा,
उसकी करुणा शाश्वत है।

---
* अथवा, 'ईश्वरों का परमेश्वर'

136 : 1 1 इति 16 : 34 **136 :2** व्य 10 : 17 **136 : 5** उत 1 : 1 **136 : 7** उत 1 : 16 **136 : 10** नि 12 : 29
136 : 13-14 नि 14 : 21-22 **136 :19** गण 21 : 22-26 **136 : 20** गण 21 : 33-35

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

21 और उनकी भूमि को पैतृक सम्पत्ति बनने
के लिए,
उसकी करुणा शाश्वत है—
22 अपने सेवक इस्राएल की पैतृक-सम्पत्ति
बनने के लिए प्रदान कर दिया;
उसकी करुणा शाश्वत है।

23 प्रभु ने हमारी दुर्दशा में हमें स्मरण किया,
उसकी करुणा शाश्वत है।
24 और हमारे बैरियों से हमें छुड़ाया।
उसकी करुणा शाश्वत है।
25 समस्त प्राणियों को भोजन देनेवाले की
सराहना करो,
उसकी करुणा शाश्वत है।

26 स्वर्ग के परमेश्वर की सराहना करो,
उसकी करुणा शाश्वत है।

बेबीलोन देश में निष्कासित बन्दियों का गीत

137 जब हम बेबीलोन की नदियों के
तट पर बैठे;
तब सियोन को स्मरण कर रो दिए।
2 वहां मजनू के वृक्षों पर
हमने अपने सितार लटका दिए।
3 हमें बन्दी बनाने वाले
वहां हमें गीत गाने को कहते थे,
'हमें सियोन का कोई गीत सुनाओ!'
हमें रुलानेवाले आनन्द मनाने को कहते
थे।

4 विदेश में
हम प्रभु का गीत कैसे गाएं?
5 ओ यरूशलेम, यदि मैं तुझे भूल जाऊं,
तो मेरा दाहिना हाथ सूख जाए!
6 यदि मैं तुझे स्मरण न करूं,
यदि यरूशलेम को अपने आनन्द से श्रेष्ठ
न मानूं,
तो मेरी जीभ मेरे तालू से चिपक जाए!

7 हे प्रभु, एदोम के वंशजों के विरुद्ध
यरूशलेम के दिन स्मरण कर;
उन्होंने यह कहा था, 'ढाओ, इसकी नींव
तक ढा दो।'
8 अरी विनाशक बेबीलोन नगरी!
वह मनुष्य धन्य होगा,
जो तुझसे वैसा ही व्यवहार करेगा
जैसा तूने हमसे किया है!
9 वह मनुष्य धन्य होगा,
जो तेरे शिशुओं को पकड़ कर
चट्टान पर पटक देगा!

प्रभु-कृपा के लिए सराहना करना

दाऊद का गीत।

138 प्रभु, मैं सम्पूर्ण हृदय से तेरी सराहना
करता हूं; देवताओं+ के समक्ष भी
मैं तेरी स्तुति करता हूं;
2 मैं तेरे पवित्र मन्दिर की ओर मुंह कर,
तेरी वन्दना करता हूं;
मैं तेरी करुणा और सच्चाई के लिए
तेरे नाम की सराहना करता हूं;
क्योंकि तूने सबसे ऊपर अपने नाम और
वचन को महान किया है।
3 जिस दिन मैंने पुकारा, तूने मुझे उत्तर दिया;
तूने मेरी आत्म-शक्ति को बढ़ाया।*

4 हे प्रभु, पृथ्वी के समस्त राजा तेरी सराहना
करेंगे;
क्योंकि उन्होंने तेरे मुंह के वचन सुने हैं;
5 वे प्रभु-मार्ग के गीत गायेंगे;
क्योंकि प्रभु, तेरी महिमा महान है।
6 यद्यपि प्रभु, तू उच्चासन पर विराजमान है,
तो भी तू नम्र मनुष्य पर दृष्टि करता है;
पर तू दूर से ही अहंकारयों को
पहचान लेता है।

7 प्रभु, यद्यपि मैं संकटमय मार्ग पर चलता हूं,
तो भी तू मेरी जीवन-रक्षा करता है।
तू मेरे शत्रुओं के क्रोध से
मेरी रक्षा के लिए अपना हाथ बढ़ाता है,
तेरा दाहिना हाथ मुझे बचाता है।
8 प्रभु, मेरे लिए अपने अभिप्राय को पूर्ण कर;

+ अथवा प्राचीन अनुवादों के अनुसार, "स्वर्गदूतों" * मूल अस्पष्ट

136 : 23 लू 1 : 48 137 : 2 शोक 5 : 15 137 : 7 शोक 4 : 21-22; ओब 8-14 137 : 8 प्रक 18 : 6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हे प्रभु, तेरी करुणा शाश्वत है।
मैं तेरे हाथों की रचना हूं,
मुझ को मत त्याग।

प्रभु सर्वज्ञ है

मुख्यवादक के लिए। दाऊद का। एक भजन।

139 हे प्रभु, तूने परख कर मुझे जान लिया!
2 तू मेरा उठना और बैठना जानता है,
तू दूर से ही मेरे विचार समझ लेता है।
3 तू मेरी यात्राओं और विश्राम-स्थलों का पता लगा लेता है,
तू मेरे समस्त मार्गों से परिचित है।
4 मेरे मुंह में शब्द आने भी नहीं पाता,
कि तू उसे पूर्णत: जान लेता है।
5 तू आगे-पीछे से मुझे घेरता,
और मुझपर अपना हाथ रखता है।
6 प्रभु, यह ज्ञान मेरे लिए अद्‌भुत है,
बहुत गहरा है,
उस तक मैं नहीं पहुंच सकता।

7 तेरे आत्मा से अलग हो मैं कहां जाऊंगा?
मैं तेरी उपस्थिति से कहां भाग सकूंगा?
8 यदि मैं आकाश पर चढ़ूं तो तू वहां है।
यदि मैं मृतक-लोक में बिस्तर बिछाऊं,
तो तू वहां है।
9 यदि मैं उषा के पंखों पर उड़कर,
समुद्र के क्षितिज पर जा बसूं,
10 तो वहां भी तेरा हाथ मेरा नेतृत्व करेगा,
तेरा दाहिना हाथ मुझे पकड़े रहेगा।
11 यदि मैं यह कहूं, 'अन्धकार मुझे ढांप ले,
और मेरे चारों ओर का प्रकाश रात हो जाए',
12 तो अन्धकार भी तेरे लिए अन्धकार नहीं है,
और रात भी दिन के सदृश चमकती है;
तेरे लिए अन्धेरा प्रकाश जैसा है।

13 तूने ही मेरे भीतरी अंगों को बनाया है,
मेरी मां के गर्भ से तूने मेरी रचना की है।
14 मैं तेरी सराहना करता हूं,
क्योंकि तू भय-योग्य और अद्‌भुत है।**
तेरे कार्य कितने आश्चर्यपूर्ण हैं!
तू मुझे भली भांति जानता है।
15 जब मैं गुप्त स्थान में बनाया गया,
पृथ्वी के निचले स्थान में बुना गया,
तब मेरा कंकाल तुझसे छिपा न रहा।
16 तेरी आंखों ने मेरे भ्रूण को देखा;
तेरी पुस्तक में सब कुछ लिखा था,
दिन भी रचे गये थे,
जब वे दिन अस्तित्व में नहीं थे।
17 हे परमेश्वर, तेरे विचार मेरे प्रति
कितने मूल्यवान हैं।
उनका योग कितना बड़ा है!
18 यदि मैं उनको गिनूं,
तो मुझे ज्ञात होगा कि वे धूलकण से भी अधिक हैं;
जब मैं जागता हूं, तब भी मैं तेरे साथ हूं।

19 हे परमेश्वर, भला होता कि तू दुर्जन को मारता,
और हत्यारे मुझसे दूर हो जाते।
20 वे द्वेषपूर्वक तेरा अनादर करते हैं,
वे बुराई के लिए तेरे विरुद्ध स्वयं को उन्नत करते हैं!
21 हे प्रभु, तुझसे बैर करनेवालों से क्या मैं बैर न करूं?
तेरे विरोधियों के प्रति क्या मैं शत्रु-भाव न रखूं?
22 मैं उनसे हृदय से घृणा करता हूं,
मैं उनको अपना ही शत्रु समझता हूं।
23 हे परमेश्वर, मुझे परख और मेरा हृदय पहचान,
मुझे जांच और मेरे विचारों को जान!
24 मुझे देख, क्या मैं कुमार्ग* पर चल रहा हूं?
प्रभु, मुझे शाश्वत मार्ग पर ले चल!

** मूल में, 'मैं अपूर्व और अद्‌भुत ढंग से रचा गया हूं।' * अथवा, दु:खद मार्ग।

139 : 1 यिर 12 : 3 139 : 2 2 रा 19 : 27 139 : 4 इब्र 4 : 13 139 : 8 नीति 15 : 11; आमो 9 : 2
139 : 15 अय्य 10 : 8-11 139 : 17 प्रव 18 : 5-7 139 : 24 यो 14 : 6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रक्षा के लिए प्रार्थना

मुख्यवादक के लिए। दाऊद का भजन।

140 हे प्रभु, दुर्जन से मुझे छुड़ा;
हिंसक पुरुष से मेरी रक्षा कर;
2 वे हृदय में बुराइयों की योजना बनाते हैं,
और युद्ध को निरन्तर उकसाते हैं,
3 वे अपनी जीभ को सांप के दांत जैसा तेज करते हैं,
उनके ओंठों के नीचे नाग का विष है। सेलाह

4 हे प्रभु, अधर्मी के हाथ से मुझे बचा,
हिंसक पुरुष से मेरी रक्षा कर,
उन्होंने षड्यन्त्र रचा है कि मेरे पैर को ठोकर लगे।
5 अहंकारियों ने मेरे लिए पाश बिछाया है,
रस्सियों के साथ जाल बिछाया है,
उन्होंने पथ के किनारे मेरे लिए फन्दे लगाए हैं। सेलाह

6 मैं प्रभु से यह कहता हूं, 'तू ही मेरा परमेश्वर है,
हे प्रभु, मेरी विनती की पुकार कर कान दे।'
हे प्रभु, मेरे स्वामी, मेरे शक्तिमान सहायक,
तू युद्ध के दिन मेरे सिर की रक्षा कर।
8 हे प्रभु, दुर्जन की इच्छाओं को पूरा न करना;
उसका षड्यन्त्र सफल न होने देना। सेलाह

9 जो मुझे घेरे हुए हैं, वे अपना सिर उठा रहे हैं;
उनके ओंठों का अनिष्ट उन पर ही पड़े!
10 उन पर अंगारों की वर्षा हो!
वे गड्ढों में डाले जाएं,
कि वे फिर उठ न सकें!
11 बकवादी मनुष्य भूमि पर पैर न जमा सके,
बुराई तेज गति से हिंसक व्यक्ति का पीछा करे!
12 मैं यह जानता हूं कि प्रभु पीड़ित के पक्ष में निर्णय देता है;
वह दरिद्र को न्याय दिलाता है।
13 निस्सन्देह धार्मिक मनुष्य तेरे नाम की सराहना करेंगे;
निष्कपट व्यक्ति तेरे सम्मुख निवास करेंगे।

बुराई से बचाव के लिए प्रार्थना

दाऊद का भजन

141 हे प्रभु, मैं तुझको पुकारता हूं,
शीघ्र ही मेरी सहायता कर।
जब मैं तुझको पुकारूं,
मेरी पुकार को ध्यान से सुन।
2 मेरी प्रार्थना तेरे सम्मुख सुगन्धित धूप,
और मेरा हाथ जोड़ना** सान्ध्य-बलि माना जाए!

3 हे प्रभु, मेरे मुंह पर पहरा बैठा;
मेरे ओंठों के द्वार की रखवाली कर;
4 बुराई की ओर मेरे हृदय को न झुकने दे।
मेरा हृदय कुकर्मी जनों के साथ
बुरे कर्मों में संलग्न न हो;
मैं उनके स्वादिष्ट भोजन को न खाऊं!

5 यदि धार्मिक व्यक्ति करुणा से मुझे मारे,
तो यह उसकी करुणा है;
यदि वह मुझे ताड़ित करें,
तो यह मेरे सिर का अभ्यंजन है;
और मैं अपने सिर को नहीं हटाऊंगा।
पर दुर्जनों के दुष्कर्मों के विरुद्ध
मैं निरन्तर प्रार्थना करता रहूंगा।
6 जब वे अपने न्यायाधीशों को सौंप दिये जाएंगे,
तब वे यह अनुभव करेंगे कि प्रभु का वचन सत्य है।***
7 चट्टान के सदृश जिसको तोड़कर व्यक्ति भूमि पर बिखेर देता है,
उनकी हड्डियां भी मृतक-लोक के मुख पर छितराई जाएंगी।

** शब्दश: उठाना। ***पाठांतर, " जब उनके न्यायाधीश चट्टान के निकट फेंक दिए जाएंगे, तब वे मेरे वचन सुनेंगे कि वे मधुर हैं।"

140 : 3 रोम 3 : 13 140 : 5 यिर 18 : 22 141 : 2 प्रक 5 : 8 141 : 5 नीति 9 : 8; 25 : 12

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

8 पर, हे प्रभु परमेश्वर, मेरी आंखें तुझ पर लगी
हैं;
मैं तेरी शरण में आया हूं;
मुझे असुरक्षित न छोड़।
9 जो फन्दा उन्होंने मेरे लिए लगाया है उससे,
तथा कुकर्मियों के जाल से मेरी रक्षा कर।
10 दुर्जन अपने ही जालों में फंसें,
पर मैं बच जाऊं।

संकट में सहायता के लिए प्रार्थना

दाऊद का मसकील, जब वह गुफा में था।
एक प्रार्थना।

142 मैं प्रभु की दुहाई देता हूं,
मैं उच्च स्वर में प्रभु से विनती करता
हूं;
2 मैं प्रभु के सम्मुख अपनी शिकायत प्रस्तुत
करता हूं;
उसके समक्ष अपना दु:ख प्रकट करता हूं।
3 प्रभु, मेरी आत्मा मूर्छित होती है,
पर तू मेरे आचरण को जानता है।
जिस मार्ग पर मैं चलता हूं,
वहां मेरे शत्रुओं ने मेरे लिए फन्दा लगाया
है।

4 मैं दाहिनी ओर दृष्टि करता हूं
और यह देखता हूं कि मुझे पहचाननेवाला
कोई नहीं है।
मेरे लिए शरण-स्थल भी नहीं रहा;
मेरी चिन्ता करनेवाला कोई नहीं है।

5 हे प्रभु, मैं तेरी दुहाई देता हूं,
मैं यह कहता हूं, तू ही मेरा शरण-स्थल है,
तू ही जीव-लोक में मेरा सर्वस्व है।
6 मेरी पुकार पर ध्यान दे;
क्योंकि मेरी बहुत दुर्दशा की गई है!
मेरा पीछा करनेवालों से मुझे छुड़ा;
वे मुझसे अधिक बलवान हैं।
7 मेरे प्राण को बन्दीगृह से निकाल,
ताकि मैं तेरे नाम की सराहना करूं!
धार्मिक व्यक्ति मुझे घेर लेंगे;
क्योंकि तू मेरा उपकार करेगा।

मुक्ति और मार्गदर्शन के लिए प्रार्थना

दाऊद का भजन।

143 हे प्रभु, मेरी प्रार्थना सुन,
मेरी विनती पर कान लगा;
अपनी सच्चाई और धार्मिकता के अनुरूप
मुझे उत्तर दे।
2 हे प्रभु, अपने सेवक के साथ न्याय में प्रवेश
न कर;
क्योंकि एक भी प्राणी तेरी दृष्टि में धार्मिक
नहीं है।

3 शत्रु ने मेरा पीछा किया,
मेरे जीव को भूमि पर कुचल दिया,
उसने मुझे अंधेरे स्थान में बैठा दिया
मानो मैं बहुत दिन का मरा हुआ व्यक्ति हूं।
4 मेरी आत्मा मूर्छित है; मेरा हृदय व्याकुल है।

5 मैं अतीत के दिनों को स्मरण करता हूं,
मैं तेरे सब कार्यों का ध्यान करता हूं;
मैं तेरे हस्तकार्यों का चिन्तन करता हूं।
6 मैं तेरी ओर अपने हाथ फैलाता हूं;
सूखी भूमि के समान मेरा प्राण तेरे लिए
प्यासा है। सेलाह

7 हे प्रभु, अविलम्ब मुझे उत्तर दे,
मेरी आत्मा मिटने पर है,
अपना मुख मुझसे न छिपा
अन्यथा मैं कबर में जानेवालों के समान
मृत हो जाऊँगा।
8 प्रभु, प्रात:काल अपनी करुणा के वचन
मुझे सुना;
मैं तुझपर ही भरोसा करता हूं।
जिस मार्ग पर मुझे चलना चाहिए,
प्रभु, वह मार्ग मुझे सिखा;
क्योंकि मैं तेरा ही ध्यान करता हूं।
9 हे प्रभु, मेरे शत्रुओं से मुझे मुक्त कर।
तुझमें ही मैंने स्वयं को छिपाया है।
10 तेरी इच्छा को पूर्ण करना मुझे सिखा;
क्योंकि तू ही मेरा परमेश्वर है,

---

142 1 शम 22 : 1; 24 : 3 143 : 2 भज 130 : 3 ; रोम 3 : 20 ; गल 2 : 16

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तेरा भला आत्मा मुझे सुरक्षित स्थान पर ले
जाएगा।
11 हे प्रभु, अपने नाम के लिए,
मुझे पुनर्जीवित कर;
अपनी धार्मिकता के अनुरूप
मुझे संकट से निकाल!
12 अपनी करुणा के अनुरूप
मेरे शत्रुओं का विनाश कर,
मेरे प्राण के बैरियों को मिटा,
क्योंकि मैं तेरा सेवक हूं।

छुटकारे और समृद्धि के लिए प्रार्थना

दाऊद का।

144 धन्य है प्रभु मेरी चट्टान!
वह युद्ध के लिए मेरे हाथों को,
लड़ाई के लिए मेरी भुजा को
प्रशिक्षित करता है।
2 वह मेरी शक्ति* और मेरा गढ़ है;
वह मेरा शरण-स्थल और मेरा मुक्तिदाता
है।
वह मेरी ढाल है, मैं उसकी शरण में आता
हूं।
वह जातियों को मेरे अधीन करता है।

3 हे प्रभु, मानव क्या है, कि तू उस पर ध्यान
दे?
मर्त्य मनुष्य क्या है कि तू उसकी चिन्ता
करे?
4 मानव श्वास के सदृश है,
उसकी आयु के दिन ढलती छाया के समान
हैं।

5 हे प्रभु, स्वर्ग को झुका और नीचे उतर आ!
पर्वतों को स्पर्श कर कि वे धुआँ उगलने
लगें!
6 तू विद्युत् चमका और मेरे शत्रुओं को छिन्न-
भिन्न कर दे,
अपने बाण छोड़ और उनमें भगदड़ मचा
दे!
7 तू ऊंचे स्थान से अपना हाथ बढ़ा,
और मुझे गहरे सागर से,
विदेशियों के हाथ से मुझे मुक्त कर।
8 वे अपने मुंह से असत्य वचन निकालते हैं।
वे अपना दाहिना हाथ उठाकर
धोखे की शपथ खाते हैं!

9 हे परमेश्वर, तेरे लिए मैं नया गीत गाऊंगा।
दस-तार के सितार पर मैं तेरे लिए राग
बजाऊंगा।
10 तू ही राजाओं को विजय प्रदान करता है,
तू ही अपने सेवक दाऊद को छुड़ाता है।
11 प्रभु, मुझे क्रूर तलवार से छुड़ा,
मुझे विदेशियों के हाथ से मुक्त कर।
वे अपने मुंह से असत्य वचन निकालते
हैं;
वे अपना दाहिना हाथ उठाकर धोखे की
शपथ खाते हैं।

12 हमारे पुत्र अपनी युवावस्था में
पूर्ण विकसित पौधों के सदृश हों,
हमारी पुत्रियाँ उन स्तम्भों के समान बनें,
जो महल के ढांचे के लिए तराशे गये हैं।
13 हमारे भण्डार-गृह प्रत्येक प्रकार की उपज
से भरे रहें,
हमारी चरागाहों में हमारी भेड़ें
हजारों-हजार गुना बढ़ जाएँ;
14 हमारे पशु खूब मोटे-ताजे हों,
हमारे नगर की दीवारों में दरार न पड़े,
हमारा युद्ध में जाना न हो,
हमारे नगर-चौकों पर रोने का स्वर सुनाई
न दे!
15 ऐसी सुख-समृद्धि की दशा में रहनेवाले
लोग धन्य हैं!
धन्य हैं वे जिनका परमेश्वर प्रभु है!

प्रभु की भलाई और सामर्थ्य के लिए स्तुति

स्तुतिगान। दाऊद का।

145 हे मेरे परमेश्वर, हे राजा, मैं तेरा
गुणगान करूंगा;
मैं युग-युगान्त तेरे नाम को धन्य कहूंगा।

* मूल में, 'मेरी करुणा' अथवा 'नित्य सहायता'।

144 : 3 अय्य 7 : 17-18; भज 8 : 4 144 : 13-14 लेव 26 : 3-11

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

2 प्रतिदिन मैं तुझको धन्य कहूंगा;
मैं युग-युगान्त तेरे नाम की स्तुति करूंगा।

3 प्रभु महान् है, वह अत्यन्त स्तुत्य है;
प्रभु की महानता अगम है।
4 एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी को तेरे कार्य बताएगी;
तेरे महान् कार्यों को घोषित करेगी।
5 मैं तेरे ऐश्वर्य की महिमा के प्रताप का,
तेरे आश्चर्यपूर्ण कामों का ध्यान करूंगा।
6 लोग तेरे आतंकपूर्ण कार्यों की शक्ति की
चर्चा करेंगे;
और मैं तेरी महानता का वर्णन करूंगा।
7 वे तेरी अपार भलाई की कीर्ति की चर्चा करेंगे;
तेरी धार्मिकता का जय-जयकार करेंगे।

8 प्रभु कृपालु और दयालु,
विलम्ब-क्रोधी और अपार करुणामय है।
9 प्रभु सबके प्रति भला है;
उसकी दया उसकी समस्त सृष्टि पर
व्याप्त है।

10 हे प्रभु, तेरी समस्त सृष्टि तेरी सराहना
करेगी,
तेरे भक्त तुझको धन्य कहेंगे!
11 वे तेरे राज्य की महिमा की चर्चा करेंगे;
वे तेरे सामर्थ्य की बातें करेंगे,
12 वे मनुष्य-जाति पर तेरे महान् कार्य,
और तेरे राज्य के प्रताप की महिमा
प्रकट करेंगे।
13 तेरा राज्य शाश्वत राज्य है,
तेरा शासन पीढ़ी से पीढ़ी बना रहता है।

प्रभु अपने सब वचनों को पूर्ण करता है;
वह विश्वास योग्य है।
प्रभु अपने सब कार्यों को पूरा करता है,
वह कृपालु है।
14 प्रभु गिरते हुओं को सहारा देता है,
वह झुके हुओं को उठाता है।
15 प्रभु, सब प्राणियों की आंखें तेरी ओर लगी
रहती हैं,
और तू उन्हें समय पर उनका भोजन देता
है।
16 तू अपनी मुट्ठी खोलता है,
और सब प्राणियों की इच्छा को सन्तुष्ट
करता है।

17 प्रभु अपने समस्त आचरण में धार्मिक,
और अपने सब कार्यों में करुणामय है।
18 प्रभु अपने समस्त पुकारने वालों के समीप
है,
वह उन सबके निकट है,
जो सच्चाई से उसको पुकारते हैं।
19 वह अपने भक्तों की इच्छा पूर्ण करता है,
वह उनकी दुहाई सुनता और उन्हें बचाता
है।
20 प्रभु उन सबकी रक्षा करता है,
जो उनसे प्रेम करते हैं,
पर वह समस्त दुर्जनों को नष्ट करता है।

21 मैं अपने ओंठों से प्रभु की स्तुति करूंगा;
समस्त प्राणी प्रभु के पवित्र नाम को
युग-युगान्त धन्य कहते रहें।

उद्धारकर्ता परमेश्वर की स्तुति

146 प्रभु की स्तुति करो!
ओ मेरे प्राण, प्रभु की स्तुति कर।
2 जब तक मैं जीवित हूं, प्रभु की स्तुति करूँगा,
मैं अपने जीवन-भर
अपने परमेश्वर का स्तुतिगान करूंगा।

3 शासकों पर भरोसा मत करो,
और न मनुष्यों पर,
जिनमें सहायता करने का सामर्थ्य नहीं है।
4 प्राण के निकलते ही
वे मिट्टी में मिल जाते हैं; उसी दिन
उनकी योजनाएँ भी नष्ट हो जाती हैं।
5 धन्य है वह मनुष्य, जिसका सहायक
इस्राएल का परमेश्वर है,
जो अपने प्रभु परमेश्वर पर आशा करता है।
6 वही प्रभु आकाश, पृथ्वी और सागर का
एवं सबका सृजक है, जो उनमें हैं।

145 : 13 1 तिम 1 : 17 145 : 18 व्य 4 : 7; यश 58 : 9 146 : 3 यश 2 : 22 146 : 5 यिर 17 : 7 146 : 6 प्रे 4 : 24; 14 : 15

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रभु सदा के लिए सत्य का रक्षक है;
7 वह दलितों को न्याय दिलाता है;
और भूखों को रोटी देता है।
निस्सन्देह, प्रभु बन्दियों को छुड़ाता है।
8 वह अन्धों को दृष्टि देता है।
प्रभु झुके हुओं को उठाता है;
प्रभु अपने भक्तों से प्रेम करता है।
9 प्रभु परदेशी का रक्षक है,
वह अनाथ एवं विधवा का सहारा है;
पर वह दुर्जनों के मार्ग को कुटिल बनाता है।

10 ओ सियोन, तेरा प्रभु परमेश्वर पीढ़ी से पीढ़ी तक सदा राज्य करता है।
प्रभु की स्तुति करो!

यरूशलेम पर प्रभु की कृपा के लिए स्तुति

147 प्रभु की स्तुति करो!
हमारे परमेश्वर का स्तुतिगान करना भला है,
हमें उसका स्तुतिगान करना उचित है;
क्योंकि वह कृपालु है।
2 प्रभु यरूशलेम का निर्माता है;
वह निष्कासित इस्राएलियों को एकत्र करता है।
3 वह विदीर्ण हृदय वालों का वैद्य है;
वह उनके घावों पर पट्टी बांधता है।
4 वह तारों की संख्या को निश्चित करता है;
वह समस्त तारों को उनके नाम से पुकारता है।
5 हमारा स्वामी महान और अत्यन्त शक्ति-सम्पन्न है;
उसकी बुद्धि असीम है।
6 प्रभु पीड़ित को सहारा देता है,
पर वह दुर्जनों को धूल-धूसरित करता है।

7 प्रभु की सराहना करते हुए गीत गाओ,
हमारे परमेश्वर के लिए सितार के साथ, स्तुति गाओ।
8 वह आकाश को बादलों से आच्छादित करता
और पृथ्वी के लिए वर्षा तैयार करता है;
वह पर्वतों पर घास उगाता है।
9 वह पशुओं को,
कौवों के बच्चों को आहार देता है;
क्योंकि वे उसको पुकारते हैं।
10 वह अश्वसेना की शक्ति से प्रसन्न नहीं होता है,
और न धावक-योद्धा के पैरों से हर्षित होता है।
11 पर वह अपने भक्तों से,
उसकी करुणा की प्रतीक्षा करनेवालों से प्रसन्न होता है।

12 ओ यरूशलेम, प्रभु की प्रशंसा कर,
ओ सियोन, अपने परमेश्वर की स्तुति कर।
13 प्रभु तेरे द्वार की अर्गलाओं को सुदृढ़ करता,
वह तुझमें रहनेवाले तेरे पुत्र-पुत्रियों को आशिष देता है।
14 वह तेरी सीमाओं पर शान्ति रखता,
वह तुझे प्रचुर मात्रा में उत्तम गेहूं से तृप्त करता है।
15 वह पृथ्वी पर अपने शब्द भेजता है;
उसके वचन तेज गति से दौड़ते हैं।
16 वह ऊन के सदृश बर्फ की वर्षा करता है।
वह राख के समान पाला बिखेरता है।
17 वह बर्फ के छोटे-छोटे टुकड़े भेजता है;
उसकी ठण्ड से जल जम जाता है।
18 वह अपना वचन भेजकर उसे पिघलाता है;
वह अपना पवन बहाता और जल बहने लगता है।
19 वह याकूब को अपना वचन,
इस्राएल को अपनी संविधि और न्याय-सिद्धान्त बताता है।
20 प्रभु ने यह व्यवहार अन्य राष्ट्रों से नहीं किया,
वे प्रभु के न्याय-सिद्धान्तों को नहीं जानते हैं।
प्रभु की स्तुति करो!

---

146 : 7 भज 145 : 15; यश 61 : 1 **146 : 8** मत 9 : 30; यो 9 : 7 **147 : 2** यहेज 36 : 24 **147 : 3** यश 61 : 1 **147 : 17** अय्य 37 : 9-10 **147 : 19** व्य 33 : 4 **147 : 20** प्रे 14 : 16

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

समस्त सृष्टि प्रभु की स्तुति करे

148 प्रभु की स्तुति करो!
स्वर्ग से प्रभु की स्तुति करो,
ऊंचे स्थानों में उसकी स्तुति करो!
2 ओ प्रभु के दूतो, उसकी स्तुति करो,
ओ प्रभु की सेनाओ, उसकी स्तुति करो!
3 ओ सूर्य और चन्द्रमा, उसकी स्तुति करो,
ओ समस्त प्रकाशवान नक्षत्रो, उसकी स्तुति करो!
4 ओ आकाश, सर्वोच्च आकाश,
ओ आकाश से ऊपर के जल, उसकी स्तुति करो!

5 ये सब प्रभु के नाम की स्तुति करें;
क्योंकि प्रभु ने आज्ञा दी, और वे निर्मित हुए।
6 प्रभु ने युग-युगान्त के लिए
उन्हें स्थित किया है,
प्रभु ने संविधि प्रदान की है,
जो कभी टल नहीं सकती!

7 पृथ्वी पर प्रभु की स्तुति करो,
ओ मगरमच्छो, ओ सागरो,
8 ओ अग्नि और ओले,
ओ बर्फ और कुहरे,
ओ प्रभु का वचन पूर्ण करनेवाली प्रचण्ड वायु।
9 ओ पर्वत एवं समस्त घाटियो!
ओ फलवान वृक्षो तथा देवदारो!
10 ओ पशुओ, और पालतू जानवरो,
ओ रेंगनेवाले जन्तुओ, ओ उड़नेवाले पक्षियो!
प्रभु की स्तुति करो।

11 पृथ्वी के राजागण,
और समस्त जातियां,
शासक एवं पृथ्वी के समस्त न्यायकर्त्ता;
12 युवक और युवतियाँ भी;
बच्चों समेत वृद्ध भी;
13 ये सब प्रभु के नाम की स्तुति करें;
क्योंकि केवल प्रभु का नाम महान है,
उसकी महिमा पृथ्वी और आकाश के ऊपर है।

14 प्रभु ने अपने निज लोगों को शक्तिमान बनाया है;
समस्त सन्तों के लिए
इस्राएल की सन्तान के लिए,
उस प्रजा के लिए जो प्रभु के निकट है,
यह स्तुति का विषय है।
प्रभु की स्तुति करो!

विजयोल्लास से प्रभु की स्तुति

149 प्रभु की स्तुति करो!
प्रभु के लिए नया गीत गाओ,
भक्तों की मण्डली में प्रभु की स्तुति हो!
2 इस्राएली अपने निर्माता में आनन्दित हों!
सियोन की जनता अपने राजा प्रभु में मगन हो!
3 वे नृत्य से प्रभु के नाम की स्तुति करें,
डफ और सितार पर उसके लिए राग बजाएँ।
4 प्रभु अपनी प्रजा से प्रसन्न है।
वह पीड़ित व्यक्ति को विजय* से विभूषित करता है।

5 भक्त प्रभु की महिमा के कारण प्रफुल्लित हों,
वे अपने-अपने स्थान से+ जय-जयकार करें।
6 उनके कण्ठों में प्रभु का गुणगान हो,
और उनके हाथों में दुधारी तलवार हो,
7 ताकि वे राष्ट्रों से प्रतिशोध ले सकें,
और अन्य-जातियों को ताड़ित कर सकें।
8 वे उनके राजाओं को जंजीरों से
और उनके सामंतों को लौह-बेड़ियों से बांध सकें,
9 और उन्हें लिखित न्याय का दण्ड दें!
प्रभु के भक्तों का यही सम्मान है।
प्रभु की स्तुति करो!

---

* अथवा, 'उद्धार' + शब्दश:, 'अपने पलंग' अथवा 'बिछौने पर'।

148 : 2 भज 103 : 20-21 **148 : 4** 1 रा 8 : 27; उत 1 : 7 **148 : 10** यश 43 : 20 **149 : 6** 2 मक 15 : 27

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रभु की स्तुति करो

150 प्रभु की स्तुति करो!
उसके पवित्र स्थान में
परमेश्वर की स्तुति करो।
आकाश के मेहराब में
उसके सामर्थ्य की स्तुति करो।
2 उसके महान कार्यों के लिए
उसकी स्तुति करो।
उसकी अपार महानता के अनुरूप
उसकी स्तुति करो!
3 नरसिंगे की गूंज पर
उसकी स्तुति करो!
सारंगी और सितार पर
उसकी स्तुति करो!
4 डफ और नृत्य से
उसकी स्तुति करो।
वीणा और बांसुरी से
उसकी स्तुति करो।
5 झाझों की ध्वनि पर
उसकी स्तुति करो।
उच्च स्वर की झांझ से।
उसकी स्तुति करो!
6 समस्त प्राणी प्रभु की स्तुति करें!
प्रभु की स्तुति करो!

---

150 : 6 प्रक 5 : 13

नीतिवचन

पुस्तक-परिचय

प्रस्तुत ग्रंथ में नैतिक तथा धार्मिक शिक्षाओं को लोकोक्तियों, कहावतों, मुहावरों एवं पहेलियों के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इनमें अधिकांश का संबंध दिन-प्रतिदिन के व्यवहार से है; ये दैनिक आचरण के लिए ''हितोपदेश'' ही हैं। पुस्तक के आरम्भ में पाठक को बता दिया जाता है कि ''प्रभु की श्रद्धा-भक्ति करना ही बुद्धि (प्रज्ञा) का आरम्भ है''। तत्पश्चात् प्राक्कथन के रूप में नैतिकता, व्यवहार-कुशलता, सदाचरण के विषय में अधिक विस्तार से सुभाषित वचन कहे गये हैं। छोटी-छोटी सूक्तियों में प्राचीन इस्राएली गुरुओं ने जीवन के सम्बन्ध में अपनी अन्तरदृष्टि प्रकट की है। उन्होंने अपने अनुभव को सहज और सरल ढंग से बताया है! बुद्धिमान व्यक्ति वह है जो अमुक-अमुक परिस्थिति में कर्त्तव्य-धर्म के अनुसार व्यवहार करता है। जनता के ये जन-गुरु कौन थे? दरबारी शैली में ऐसे नीतिवचन कहने का श्रेय राजा सुलेमान को दिया गया है (1 राजा 4 : 32)। वास्तव में, प्राचीन विद्यागृहों की कक्षाओं में इस प्रकार का बुद्धि-साहित्य लोक शिक्षा का रोचक माध्यम था।

नीतिवचनों में से कुछ वचन परिवार से सम्बन्धित हैं, कुछ लेन-देन से, कुछ व्यापार से। कुछ वचन मनुष्य के सामाजिक व्यवहार और शिष्टाचार पर प्रकाश डालते हैं, और कुछ मनुष्य की इस आवश्यकता पर जोर डालते हैं कि वह आत्म-संयम रखे, अपनी वाणी पर नियंत्रण रखे। कुछ नीतिवचन विनम्रता, धैर्य, गरीबी, परिश्रम और मित्रता के संबंध में कहे गये हैं। बुद्धि स्वयं ज्ञान-दात्री के रूप में सीधे-सादे लोगों को आमंत्रित करती है और उन्हें मूढ़ मोहनी से दूर रहने के लिए सतर्क करती है। पुस्तक के अन्त में आदर्श गृहिणी की प्रशंसा की गई है।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

बुद्धि की प्रशंसा 1 : 1 — 9 : 18
राजा सुलेमान के नीतिवचन :
(क) पहला संग्रह 10 :1 — 22 : 16

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(ख) ज्ञानियों के तीस नीतिवचन	22 : 17 — 24 : 34
(ग) दूसरा संग्रह	25 :1 — 29 : 27
आगूर के नीतिवचन	30 :1 - 33
अन्य नीतिवचन	31 : 1 - 31

पुस्तक का शीर्षक

1 इस्राएल देश के राजा दाऊद के पुत्र, राजा सुलेमान के नीतिवचन:

पुस्तक का उद्देश्य

2 नीतिवचन को पढ़ने वाला मनुष्य
बुद्धि और शिक्षा प्राप्त करे;
वह समझ की बातें समझे।
3 उसे व्यवहार-कुशलता की शिक्षा प्राप्त हो;
और वह धर्मयुक्त,न्यायपूर्ण और निष्कपट आचरण करे।
4 जो मनुष्य सीधा-सादा है,
वह नीतिवचन को पढ़कर चतुर बने;
युवकों को समझ और विवेक मिले।
5 बुद्धिमान भी इन वचनों को सुने,
और वह अपनी विद्या को बढ़ाए;
समझदार व्यक्ति जीवन-रूपी नौका को खेने की कुशलता प्राप्त करे।
6 इसके द्वारा मनुष्य पहेली और दृष्टांत का अर्थ जाने,
वह बुद्धिमानों की बातों और उनके गूढ़ वचनों को समझे।

7 प्रभु के प्रति भय-भाव ही* बुद्धि का मूल है,
जो मूर्ख हैं;
वे ही बुद्धि और शिक्षा को तुच्छ समझते हैं।

दुर्जनों से दूर रहो

8 मेरे पुत्र,+ अपने पिता की शिक्षा को सुन,
और अपनी मां की सीख को मत छोड़।
9 उनकी शिक्षा और सीख
मानो तेरे सिर के लिए सुन्दर मुकुट हैं,
वे तेरे गले की माला हैं।
10 मेरे पुत्र, यदि पापी तुझे फुसलाएं,
तो तू उनकी बातों में न आना;
11 यदि वे तुझसे यह कहें,
'हमारे साथ आ।
हम हत्या के लिए घात लगाएं;
हम अकारण ही निर्दोष पर छिप कर वार करें;
12 आ, हम अधोलोक की तरह,
उन्हें जीवित ही निगल जाएं,
उनको कबर में जानेवालों के समान
पूरा का पूरा खा जाएं।
13 तब हम उनके सब कीमती सामान को हड़प लेंगे;
हम अपने मकान उनकी लूट से भर लेंगे।
14 तू हमारे झुण्ड में सम्मिलित हो जा;
हम सब का एक ही बटुआ होगा।'

15 मेरे पुत्र, तू उन दुर्जनों के मार्ग पर मत चलना,
बल्कि उनकी गली में पैर भी मत रखना।
16 वे दुष्कर्म करने को दौड़ते हैं;
वे हत्या करने को शीघ्रता करते हैं।
17 जब पक्षी देख रहा हो
तब जाल बिछाने से क्या लाभ?
18 दुर्जन अपनी ही हत्या के लिए घात लगाते हैं ;
वे मानो अपने ही प्राण लेने के लिए छिपकर बैठते हैं।
19 हिंसक लोभियों का आचरण ऐसा ही होता है,
पर उनका लोभ ही उनकी मृत्यु का कारण बनता है।

बुद्धि की चेतावनी

20 बुद्धि सड़क पर पुकार रही है;
चौराहे पर उसकी आवाज गूंज रही है।

* "प्रभु की भक्ति करना"। + अथवा "प्रिय शिष्य,"

1 :1 1 रा 4 : 32 **1: 7**अय्य 28 : 28; भज 111 : 10; सभ 12 : 13; नीति 9 :10; 15 : 33; प्रव 1 : 14 **1 : 8** नीति 6 : 20 **1 : 16** यश 59 : 7 **1 :20** नीति 8 : 1-3; यो 7 : 37

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

21 वह भीड़ भरे मार्गों में पुकार रही है;
वह नगर के प्रवेश-द्वारों पर खड़ी हुई कह रही है:
22 'ओ अज्ञानियो,
कब तक तुम अज्ञान को गले लगाए रखोगे?
ज्ञान की हंसी उड़ाने वालो,
कब तक तुम ज्ञान की हंसी उड़ाते रहोगे?
ओ मूर्खो, तुम कब तक ज्ञान से बैर रखोगे?
23 मेरी चेतावनियों पर ध्यान दो;
देखो, मैं अपनी आत्मा तुम पर उण्डेल रही हूं।
मैं तुम पर अपनी बातें प्रकट करूंगी।
24 मैंने तुम्हें पुकारा,
पर तुमने मेरी बात सुनने से इन्कार कर दिया;
मैंने तुम्हारी ओर अपना हाथ बढ़ाया,
किन्तु तुममें से किसी ने भी ध्यान नहीं दिया।
25 तुमने मेरी सलाह की उपेक्षा की,
और मेरी चेतावनी को अनसुना किया।
26 अत: जब तुम पर विपत्ति आएगी
तब मैं हंसूंगी,
जब तुम पर आतंक छाएगा
तब मैं तुम्हारा उपहास करूंगी।
27 जब तूफान के समान
आतंक तुम पर छा जाएगा,
बवंडर के सदृश
विपत्ति तुम पर टूट पड़ेगी;
तुम दु:ख और संकट के जाल में फंस जाओगे,
तब मैं तुम्हारा मजाक उड़ाऊंगी।
28 तुम मुझे पुकारोगे,
पर मैं तुम्हें उत्तर नहीं दूंगी;
तुम मुझे ढूंढ़ने में जमीन-आसमान एक कर दोगे,
किन्तु मुझे नहीं पा सकोगे।
29 क्योंकि तुमने ज्ञान से बैर किया है;
तुम्हें प्रभु की भक्ति करना* पसन्द नहीं है।
30 तुम्हें मेरी सलाह नहीं चाहिए;
तुम मेरी चेतावनियों को तुच्छ समझते हो।
31 अत: तुम अपनी करनी का फल स्वयं भोगोगे;
जो काम तुमने अपनी इच्छा से किए हैं,
उनके फल से तुम अघा जाओगे।
32 अज्ञानी मार्ग से भटक जाते हैं,
और उनका भटकना मृत्यु का कारण बनता है;
मूर्खों का आत्म-सन्तोष
उनके विनाश का कारण होता है।
33 किन्तु जो व्यक्ति मेरी बात सुनेगा,
वह सुरक्षित निवास करेगा।
वह बुराई से नहीं डरेगा;
बल्कि सुख-चैन से रहेगा।'

बुद्धि का पुरस्कार

2 प्रिय शिष्य![+] यदि तू मेरा कहना माने,
और मेरी आज्ञाओं को निधि के सदृश अपने हृदय में रखे;
2 यदि तू बुद्धि की बात पर कान लगाए,
और समझ की बात पर हृदय,
3 यदि तू अन्तर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए पुकारे,
यदि तू समझ को बुलाए,
4 यदि तू चांदी की खान के सदृश उसको खोजे,
और गुप्त खजाने के समान उसको ढूंढ़ता रहे,
5 तो तू परमेश्वर के प्रति भय-भाव को समझ सकेगा,
और तू परमेश्वर का ज्ञान प्राप्त करेगा।
6 प्रभु ही बुद्धि देता है;
उसके मुख से ही ज्ञान और समझ की बातें निकलती हैं।
7 वह निष्कपट व्यक्ति के लिए ज्ञान संचित करता है;
जिनका आचरण खरा है,
उनकी वह ढाल के सदृश रक्षा करता है।

---

* अथवा 'भय मानना'। + शब्दश: "मेरे पुत्र"

1 :24 यश 66 : 4; यिर 7 : 13 **1 : 28** यश 55 : 6; मी 3 : 4; यो 7 : 34 **2 : 4** मत 13 : 44 **2 : 6** यो 6 : 45; प्रज्ञा 9 : 10; प्रव 1 : 1

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

8 जो न्याय के पथ पर चलते हैं, उनका वह
रक्षक है
और वह अपने भक्तों के मार्ग की रक्षा
करता है।

9 प्रिय शिष्य, बुद्धि ग्रहण करने से तू धर्म और
न्याय को समझ पाएगा,
निष्कपट आचरण तथा सन्मार्ग को पहचान
पाएगा,
10 क्योंकि बुद्धि तेरे हृदय में प्रवेश करेगी,
ज्ञान तेरे प्राण को सुख प्रदान करेगा।
11 विवेक तेरी निगरानी करेगा,
और समझ तेरी रक्षा करेगी।
12 ये वरदान दुर्जनों के मार्ग से तुझे बचाएंगे,
वे कुटिल बातें करने वाले लोगों से
तेरी रक्षा करेंगे।
13 दुर्जन धर्म का मार्ग छोड़कर
अन्धकार के मार्ग पर चलते हैं।
14 वे दुष्कर्म से हर्षित होते हैं;
उन्हें अनिष्ट और अहित के कामों में
मजा आता है।
15 वे कुटिल मार्ग के अनुयायी हैं,
वे पथभ्रष्ट लोग हैं।

16 बुद्धि ग्रहण करने से
तू परायी स्त्री से बचा रहेगा।
वह मीठी-मीठी बातें बोलती है;
17 वह अपनी युवा अवस्था के साथी को छोड़
देती है;
वह परमेश्वर के विधान को भूल जाती है।
18 उसका घर विनाश के गर्त में समा जाता है,
उसकी गलियां अधोलोक की ओर जाती
हैं।
19 जो उसके पास जाता है, वह लौटकर नहीं
आता;
और न वह पुनः जीवन का मार्ग पाता है।

20 अतः प्रिय शिष्य,
तू सज्जनों के मार्ग पर चल,
तू धार्मिकों के पथ को पकड़े रह।
21 क्योंकि निष्कपट व्यक्ति ही देश में बसे
रहेंगे,
निर्दोष मनुष्य ही उसमें निवास करते रहेंगे।
22 किन्तु दुर्जन देश से निकाल दिए जाएंगे,
धर्महीन व्यक्तियों का समूल नाश हो
जाएगा।

आज्ञापालन का उपदेश

3 प्रिय शिष्य! मेरी शिक्षा को मत भूलना,
अपने हृदय में मेरी आज्ञाओं को स्मरण
रखना;
2 क्योंकि ऐसा करने से
तेरे जीवन के दिन और वर्ष और बढ़ेंगे,
तेरा अधिकाधिक कल्याण होगा।

3 प्रिय शिष्य, करुणा और सच्चाई
तुझसे कभी अलग न हों;
तू उनको अपने गले का हार बनाना;
और उनको अपने हृदय-पटल पर लिख
लेना।
4 तब तू परमेश्वर और मनुष्य
दोनों की दृष्टि में कृपा का पात्र होगा।
तू अति बुद्धिमान बनेगा।

5 तू अपनी समझ का सहारा न लेना
वरन् सम्पूर्ण हृदय से प्रभु पर भरोसा करना।
6 अपने सब कार्यों में तू प्रभु को स्मरण करना,
वह तेरे कठिन मार्ग को सरल कर देगा।
7 अपनी ही दृष्टि में स्वयं को बुद्धिमान मत
मानना;
प्रभु से डरना और बुराई से मुंह फेरना।
8 इससे तेरा शरीर सदा स्वस्थ रहेगा
और तेरी हड्डियों में ताजगी बनी रहेगी।
9 अपनी धन-सम्पत्ति से प्रभु की महिमा करना,
तू उसको अपनी फसल का प्रथम फल
चढ़ाना।
10 तब तेरे भण्डार-घर भरे-पूरे रहेंगे;
तेरे कुण्डों में अंगूर-रस उमड़ता रहेगा।

---

2 : 21 भज 37 : 9 **3 : 2** व्य 30 : 16 **3: 3** व्य 6 : 8 **3 : 4** लू 2 : 52; रोम 12 : 17 **3: 5** भज 37 : 5
3: 7 रोम 12 : 16 **3 : 10** व्य 28 : 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

11 प्रिय शिष्य, प्रभु की ताड़ना की उपेक्षा मत करना,
जब वह तुझे दण्ड दे तब तू उससे घृणा मत करना।
12 जैसे पिता अपने प्रिय पुत्र को ताड़ना देता है
वैसे ही प्रभु उस मनुष्य को ताड़ना देता है
जिससे वह प्रेम करता है।

बुद्धि का महत्व

13 धन्य है वह मनुष्य जिसको बुद्धि मिल गई है;
जिसने समझ को पा लिया है।
14 क्योंकि बुद्धि की प्राप्ति
चांदी की प्राप्ति से श्रेष्ठ है;
उसकी उपलब्धि सोने से बढ़कर है।
15 बुद्धि मोतियों से अधिक मूल्यवान है।
तेरी किसी भी इष्ट वस्तु से
उसकी तुलना नहीं हो सकती।
16 उसके दाहिने हाथ में दीर्घायु,
और बाएँ हाथ में सम्पत्ति और सम्मान हैं।
17 उसके मार्ग आनन्दमय हैं;
उसके पथ सुख-समृद्धि से परिपूर्ण हैं।
18 जो मनुष्य उसको थामे रहते हैं,
उनके लिए वह जीवन का वृक्ष है।
उसको कसकर पकड़े रहनेवाले लोग
निस्सन्देह सुखी हैं।

19 प्रभु ने बुद्धि से पृथ्वी की नींव डाली है;
उसने समझ से आकाश को स्थिर किया है।
20 उसके ज्ञान से गहरे जल-स्रोत फूटते हैं
और आकाश से ओस टपकती है।

21 प्रिय शिष्य, खरी बुद्धि और विवेक की रक्षा कर,
ये तेरी आंखों से ओझल न हों।
22 तब तू उनसे जीवन प्राप्त करेगा,
ये तेरे गले का हार बनेंगे।
23 तब तू अपने मार्ग पर निश्चिंत चलेगा,
तेरे पैरों में ठोकर नहीं लगेगी।
24 जब तू सोएगा तब तुझे डर न लगेगा,
निस्सन्देह सोते समय
तुझे सुख की नींद आएगी।
25 प्रिय शिष्य, अचानक आने वाले आतंक से न डरना;
जब दुर्जन तुझ पर तूफान की तरह टूट पड़ें,
तब न घबराना;
26 क्योंकि प्रभु तुझे सहारा देगा,
वह तेरे पैर को फंदे में फंसने से बचाएगा।

सत्कर्म और भलाई करो

27 यदि तुझमें भला करने का सामर्थ्य है
तो उनका भला अवश्य करना
जो भलाई के योग्य हैं।
28 यदि तेरे पास अपने पड़ोसी को देने के लिए कुछ है
तो उससे यह मत कहना,
'जाओ, कल फिर आना। मैं कल दूंगा।'
29 अपने पड़ोसी के विरुद्ध कुचक्र मत रचना,
क्योंकि वह तुझ पर भरोसा करके
तेरे पड़ोस में रहता है।
30 जिस मनुष्य ने तेरा अनिष्ट न किया हो
उससे अकारण मत लड़ना।
31 हिंसा करनेवाले व्यक्ति से ईर्ष्या मत करना,
और न उसके आचरण का अनुसरण करना।

धार्मिक और दुर्जन

32 प्रभु की दृष्टि में कुटिल व्यक्ति घृणित है,
किन्तु निष्कपट व्यक्ति उसका विश्वासपात्र है।
33 प्रभु का श्राप दुर्जन के घर पर पड़ता है;
पर प्रभु धार्मिक व्यक्ति के निवास-स्थान
पर आशिष की वर्षा करता है।

34 दूसरे को तुच्छ समझनेवाले को,
प्रभु तुच्छ समझता है।
पर जो मनुष्य नम्र और दीन है,
उस पर प्रभु कृपा करता है।

---

3 : 11–12 अय्य 5 : 17; इब्र 12 : 5–6; व्य 8 : 5; प्रक 3 : 19 3 : 18 उत 2 : 9; प्रक 2 : 7 3 : 19 नीति 8 : 27; यो 1 : 3; इब्र 1 : 2 3 : 23 भज 91 : 12 3: 24 भज 3 : 5 3 : 25 भज 91 : 5 3 : 28 मत 5 : 42; प्रव 4 : 3 3 : 34 याक 4 : 6; 1 पत 5 : 5

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

35 बुद्धिमान को सम्मान मिलता है,
पर मूर्ख का हर जगह अपमान होता है।

पिता की शिक्षा: बुद्धि से प्रेम कर

4 मेरे पुत्रो, अपने पिता की शिक्षा सुनो,
और ज्ञान को प्राप्त करने में मन लगाओ।
2 मैं तुम्हें अच्छी विद्या दे रहा हूं,
मेरी सीख की उपेक्षा मत करना।
3 देखो, मैं भी अपने पिता का पुत्र था,
मैं भी अपनी मां का दुलारा इकलौता पुत्र था।
4 मेरे पिता ने मुझे शिक्षा दी; उसने मुझसे यह कहा:
'मेरे शब्दों पर तेरा हृदय लगा रहे;
मेरी आज्ञाओं का पालन कर
तो तू सदा जीवित रहेगा।
5 मेरे मुंह के शब्दों को मत भूलना,
उनसे विमुख मत होना।
बुद्धि को प्राप्त कर; समझ को खरीद।
6 उसको मत छोड़ना, वह तेरी निगरानी करेगी;
बुद्धि से प्रेम करना, वह तेरी रक्षा करेगी।
7 बुद्धि का आरम्भ इस प्रकार होता है:
बुद्धि को प्राप्त कर;
समझ को हर कीमत पर प्राप्त कर।

8 बुद्धि की कीमत ऊंची लगा
तो वह तेरी कीमत बढ़ाएगी;
यदि तू उसको गले लगाएगा
तो वह तेरा सम्मान करेगी।
9 वह तेरे मस्तक को कीमती आभूषण पहनाएगी;
वह तुझको भव्य मुकुट प्रदान करेगी।'

10 मेरे पुत्र, मेरी बात सुन;
मेरे शब्दों को स्वीकार कर
ताकि तेरी आयु लम्बी हो।
11 मैंने तुझको बुद्धि का मार्ग बताया है;
मैंने सीधे पथ पर तेरा मार्ग-दर्शन किया है।
12 जब तू बुद्धि के मार्ग पर चलेगा,
तब तेरे पैरों को बाधा न होगी;
यदि तू दौड़ेगा तो तुझको ठोकर न लगेगी।
13 मेरी शिक्षा को कस कर पकड़े रह,
उसकी रक्षा कर, वह तेरा जीवन है।

14 दुर्जन की गली में कदम मत रखना
और न दुष्कर्मी के पथ पर चलना।
15 उस पथ की ओर ध्यान भी न देना,
उसके पास से गुजरना भी नहीं।
उसकी ओर से मुंह मोड़ ले,
और आगे बढ़ जा!

16 जब तक दुर्जन दुष्कर्म न कर लें
उनको नींद भी नहीं आती:
जब तक वे निर्दोष व्यक्ति को सता नहीं लेते,
नींद उनके पास फटकती भी नहीं।
17 दुष्कर्म ही उनकी रोटी,
और हिंसा ही उनका पानी है।
18 धार्मिक व्यक्ति का पथ
मानो ऊषाकाल का प्रकाश है,
जो सबेरे से दोपहर तक
अधिकाधिक बढ़ता जाता है।
19 पर दुर्जनों का मार्ग घोर अन्धकारमय है,
वे नहीं जानते कि किससे ठोकर खा रहे हैं।

20 मेरे पुत्र, मेरी बातें ध्यान से सुन,
मेरे वचनों की ओर कान दे।
21 ये तेरी आंखों से ओझल न हों,
इनको अपने हृदय में धारण कर।
22 जो व्यक्ति उनको प्राप्त कर लेता है,
उसको मानो जीवन मिल जाता है;
वह सदा स्वस्थ रहता है।
23 मेरे पुत्र, सबसे अधिक अपने हृदय की रक्षा कर;
क्योंकि जीवन के स्रोत उससे ही फूटते हैं।
24 अपने मुंह से कुटिल बातें मत निकालना,
और न ओंठों पर धोखा-धड़ी की बातें आने देना।
25 तेरी आंखें सामने की ओर देखें,
तेरी पलकें सीधी दिशा में खुली रहें।
26 कदम उठाने के पूर्व अपने पैरों को तौल ले!
तब तेरा सारा पथ निरापद हो जाएगा।

4 : 7 मत 13 : 44-46 **4 : 14** भज 1 : 1 **4 : 18** मत 5 : 16 **4 : 26** इब्र 12 : 13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

27 पथ में न दाहिनी ओर मुड़ना
और न बाईं ओर,
बुरे मार्ग से अपने पैर हटा लेना।

स्त्री का सच्चा और झूठा प्रेम

5 मेरे पुत्र, मेरी बुद्धि की बातों पर ध्यान दे,
मेरी समझ की बातों की ओर कान दे,
2 जिससे तू विवेक की निगरानी कर सके,
और तेरे ओंठ ज्ञान की रक्षा कर सकें।

3 परायी स्त्री के ओंठों से मधु टपकता है;
उसकी बातें चिकनी चुपड़ी होती हैं।
4 किन्तु उसके प्रेम का अन्त
चिरायते-सा कड़वा,
और दुधारी तलवार-जैसा पैना होता है।
5 उसके पैर मृत्यु की ओर बढ़ते हैं,
उसके कदम अधोलोक के मार्ग पर उठते
हैं।
6 वह जीवन-मार्ग का अनुसरण नहीं करती;
उसका आचरण चंचल है
परन्तु वह इसे नहीं मानती।

7 मेरे पुत्रो, अब मेरी बातें सुनो,
मेरे मुख के शब्दों से मुंह न मोड़ो!
8 परायी स्त्री से सदा दूर रहना;
उसके घर के द्वार पर कदम भी मत रखना।
9 अन्यथा तुम अपना मान-सम्मान उसके हाथ
में सौंप दोगे,
उस निर्दय के पंजों में तुम्हारा जीवन फंस
जाएगा।
10 उसके दलाल तुम्हारी धन-सम्पत्ति से अपना
घर भरेंगे;
और यों तुम्हारे परिश्रम की कमाई
दूसरों के घर में चली जाएगी।
11 जीवन की ढलती आयु में,
जब तुम्हारे शरीर का बल
और त्वचा की ताजगी खत्म हो जाएगी,
तब तुम केवल सिर धुनोगे,
12 और यह कहोगे:
'काश! मैं अनुशासन से घृणा न करता;
मेरा हृदय चेतावनियों को तुच्छ न समझता!
13 मैंने अपने गुरुओं की शिक्षाओं को नहीं
सुना,
मैंने अपने शिक्षकों के उपदेशों पर ध्यान
नहीं दिया।
14 अत: मैं सर्वनाश के कगार पर पहुंच गया हूँ;
मैं एकत्र हुए जन-समुदाय के मध्य
दण्ड का पात्र ठहरा हूँ।'

15 मेरे पुत्र, अपने निजी जल-कुण्ड से,
अपने कुएं के झरने से पानी पीना!
16 क्या तू यह चाहता है कि
तेरे झरने की जलधाराएं इधर-उधर फैल
जाएं;
तेरे जल-स्रोत सड़क पर बहने लगें?
17 नहीं, उन पर केवल तेरा ही अधिकार हो,
वे तेरे ही हों, किसी अजनबी के न हों।
18 तेरा झरना सदा हरा-भरा रहे;
तू अपनी युवावस्था की पत्नी से ही
सदा सुखी रहना;
19 वह तेरी दृष्टि में हमेशा सुन्दर हरिणी,
आकर्षक सांभरनी बनी रहे।
उसका प्रेम सदा तुझे रसमय बनाए रखे,
तू उसके प्रेम में सदा डूबे रहना।
20 मेरे पुत्र, तू परायी स्त्री पर क्यों मोहित हो?
तू किसी व्यभिचारिणी को क्यों सीने से
लगाए?

21 मेरे पुत्र, मनुष्य के समस्त आचरण पर
प्रभु दृष्टि करता है,
प्रभु उसके प्रत्येक व्यवहार को देखता है।
22 दुर्जन व्यक्ति अपने दुष्कर्मों के जाल में
फंसता है;
वह अपने पापों के बन्धन में बन्ध जाता है।
23 वह अनुशासन का पालन न करने के कारण
मर जाता है;
वह अपनी मूर्खता के कारण
यहां-वहां भटकता फिरता है।

सोच-समझ कर काम करना

6 मेरे पुत्र, यदि तूने बिना सोचे-समझे
अपने पड़ोसी के लिए जमानत दी है;

4 : 27 व्य 5 : 32 5 : 4 सभ 7 : 26 5 : 18 सभ 9 : 9 6 : 1 नीति 27 : 13; प्रव 29 : 14-20

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
अथवा किसी अपरिचित के लिए
उत्तरदायित्व लिया है;
2 यदि तू वचन देकर फंस गया है,
यदि तू अपने मुंह के शब्दों के कारण पकड़ा
गया है,
3 तो तू यह काम करना और बच जाना:
तू पड़ोसी के हाथ में पड़ गया है;
अत: तू अविलम्ब जाना
और उसको साष्टांग प्रणाम कर मना लेना।
4 तू अपनी आंखों में नींद न आने देना,
और न पलकों में झपकी आने देना।
5 जैसे हरिणी शिकारी के हाथ से
और चिड़िया चिड़ीमार के जाल से
स्वयं को बचा लेती है
वैसे ही तू अपने पड़ोसी से स्वयं को बचा
लेना।

चींटी का उदाहरण

6 ओ आलसी, चींटी के पास जा;
और उसके कार्यों पर विचार कर;
तब तू बुद्धिमान बनेगा।
7 वह बिना मेट, निरीक्षक और शासक के
आदेश से
8 ग्रीष्म ऋतु में
अपने आहार की व्यवस्था कर लेती है;
वह फसल की कटनी के समय
अपना भोजन एकत्र करती है।
9 ओ आलसी, तू कब तक पड़ा रहेगा?
तू अपनी नींद से कब जागेगा?
10 यदि तू थोड़ा और सोएगा,
कुछ समय और झपकी लेगा,
छाती पर हाथ रखे लेटा रहेगा
11 तो यह निश्चय है,
कि पथ के लुटेरे की तरह
गरीबी तुझ पर टूट पड़ेगी;
सशस्त्र सैनिक के समान
अभाव तुझ पर आक्रमण करेगा।

12 दुर्जन किसी काम का आदमी नहीं होता;
बकवादी यहां-वहां कुटिल बातें कहता
फिरता है।
13 वह आंखों से सैन
और पैर से इशारा करता है;
वह अपनी अंगुलियों से संकेत करता है।
14 वह कुटिल हृदय से बुरी योजनाएं गढ़ता
है;
वह निरन्तर लड़ाई-झगड़ा उत्पन्न करता है।
15 अत: उस पर अचानक ही
विपत्ति का आक्रमण होगा;
वह पल-भर में नष्ट हो जाएगा,
और उसके बचने की कोई आशा नहीं
रहेगी।

सात पाप

16 छ: बातों से प्रभु को बैर है,
वरन् सात दुर्गुणों से वह घृणा करता है:
17 घमण्ड से चढ़ी हुई आंखें,
झूठ बोलनेवाली जीभ,
निर्दोष व्यक्ति की हत्या करनेवाले हाथ,
18 कुचक्र रचनेवाला हृदय,
बुराई करने के लिए दौड़नेवाले पैर,
19 झूठ बोलने वाले गवाह
और भाई-बहिनों में झगड़ा करवानेवाला
मनुष्य।

व्यभिचार से बचो

20 मेरे पुत्र, अपने पिता की आज्ञा का पालन
कर,
और अपनी मां की शिक्षा को मत छोड़।
21 तू उनको गांठ बांधकर अपने हृदय में निरन्तर
रखना;
तू उनको अपने गले का हार बनाना।
22 जब तू मार्ग पर चलेगा तब वे तेरा मार्ग-दर्शन
करेंगी;
जब तू सोएगा तब वे तेरी चौकसी करेंगी,
और जब तू जागेगा तब वे तुझसे बात
करेंगी :
23 क्योंकि पिता की आज्ञा मार्ग का दीपक है,
और मां की शिक्षा जीवन की ज्योति है!
अनुशासन के लिए दी जानेवाली चेतावनियां
जीवन का मार्ग हैं।

---

6 : 10-11 नीति 24 : 33-34 **6 : 13** प्रव 27 : 22 **6 : 14** भज 36 : 4 **6 : 20** नीति 1 : 8 **6 : 23** भज 119 : 105

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

24 ये तुम्हें बुरी स्त्री से,
व्यभिचारिणी स्त्री के मीठे बोल से बचाएंगी।

25 मेरे पुत्र, बुरी स्त्री के सौन्दर्य की कामना
अपने हृदय में मत करना,
उसके कटाक्ष के जाल में मत फंसना।
26 वेश्या रोटी के एक टुकड़े में खरीदी जा
सकती है,
किन्तु व्यभिचारिणी स्त्री
पुरुष का जीवन ही नष्ट कर देती है।
27 क्या यह सम्भव है कि
मनुष्य छाती पर आग रखे,
और उसके वस्त्र न जलें;
28 वह अंगारे पर चले
पर उसके पैर न झुलसें ?
29 अत: जो पुरुष परायी स्त्री के पास जाता है,
वह भी ऐसे ही जलेगा;
जो पुरुष परायी स्त्री का स्पर्श करेगा,
वह दण्ड से नहीं बचेगा।

30 जब चोर भूख के कारण चोरी करता,
और चोरी की रोटी से अपना पेट भरता है,
तब लोग उसको तुच्छ नहीं समझते हैं।*
31 जब चोर पकड़ा जाता है
तब उसको सात गुना भरना पड़ता है।
उसे अपने घर का सारा माल देना पड़ता है।

32 व्यभिचार करनेवाला व्यक्ति निरा मूर्ख होता
है,
जो पुरुष व्यभिचार करता है, वह स्वयं को
नष्ट करता है।
33 वह घायल और अपमानित होता है,
उसका कलंक कभी धुल नहीं सकेगा।
34 ईर्ष्या पुरुष को क्रोध से अन्धा बना देती है;
जब वह बदला लेगा
तब वह तुझ पर दया नहीं करेगा।
35 वह क्षतिपूर्ति के लिए कुछ नहीं लेगा;
तू उसको कितने ही उपहार देगा,
पर वह प्रसन्न नहीं होगा।

वेश्या का आचरण

7 मेरे पुत्र, मेरे वचनों का पालन कर,
मेरी आज्ञाओं को निधि के सदृश हृदय में
रख।
2 यदि तू मेरी आज्ञाओं का पालन करेगा
तो तू जीवित रहेगा;
अपनी आंखों की पुतली के सदृश
मेरी शिक्षाओं को बहुमूल्य जान।
3 उनको अंगूठी के समान
अपनी अंगुलियों में पहन;
उनको अपने हृदय-पटल पर लिख;
4 और बुद्धि से यह बोल,
'तू मेरी बहिन है।'
समझ को अपनी सखी कह;
5 ताकि तेरी यह बहिन और सखी
तुझको परायी स्त्री से बचाएं,
व्यभिचारिणी स्त्री के मीठे बोलों से
तेरी रक्षा करें।

एक उदाहरण

6 एक दिन मैंने अपने घर की खिड़की से,
अपने झरोखे से बाहर झांका।
7 मुझे सीधे-सादे जवानों की भीड़ में
एक नासमझ युवक दिखाई दिया,
8 जो वेश्या की कोठी के मोड़ पर
गली से गुजर रहा था।
यह गली वेश्या की कोठी की ओर जाती
थी।
9 दिन ढल गया था;
शीतल सन्ध्या का समय था।
काली रात आ चुकी थी,
घोर अन्धकार छा गया था।

10 मैंने देखा कि एक स्त्री उससे मिली,
जो वेश्या की पोशाक पहिने हुए थी,
जिसके हृदय में धूर्तता भरी थी।
11 वह अशान्त और चंचल थी,
उसके पैर घर में टिकते न थे।
12 वह कभी गली में,

* अथवा 'क्या लोग उसे तुच्छ नहीं समझते ?'

6 : 31 नि 22 : 1.4 **6 : 34** नीति 27 : 4 **7 : 3** नीति 3 : 3 **7 : 10** उत 38 : 19

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और कभी बाजार में दिखाई देती थी।
वह हर मोड़ पर घात लगाकर
शिकार की तलाश में बैठती थी।
13 वेश्या ने युवक को पकड़ा
और वह उसको चूमने लगी।
उसने निर्लज्जता से मुख बनाया
और जवान से यह कहा,
14 'मुझे सहभागिता-बलि* चढ़ानी थी;
मैंने आज ही अपनी मन्नतें पूरी की हैं।
15 इसीलिए मैं तुमसे भेंट करने को
घर से बाहर निकली थी।
मैं तुम्हें उत्सुकता से ढूंढ़ रही थी।
अब तुम मुझे मिल गए।
16 मैंने अपने पलंग के बिस्तर को सजाया है,
उस पर मिस्र देश की बेल-बूटेदार रंगीन
चादर विछायी है।
17 गन्धरस, अगर और दालचीनी से
मैंने अपनी सेज को सुगन्धित किया है।
18 चलो, वहीं सबेरे तक हम प्रेम-क्रीड़ा करते
रहें;
प्रेम का आदान-प्रदान कर
एक-दूसरे को आनन्दित करें।
19 मेरा पति घर पर नहीं है,
वह लम्बी यात्रा पर गया है।
20 वह अपने साथ थैली भर रुपए ले गया है,
वह पूर्णमासी के दिन घर लौटेगा।'

21 ऐसे लुभावने वचन बोलकर
उस स्त्री ने युवक को फांस लिया;
उसने मीठी-मीठी बातें कहकर
उसको अपने वश में कर लिया।
22 वह तुरन्त उसके पीछे चला गया
जैसे बैल कसाई-खाने को जाता है,
जैसे हरिण मुग्ध रहता है,
23 और तीर उसके कलेजे में बिन्ध जाता है।
अथवा जैसे पक्षी फन्दे की ओर झपटता है,
और नहीं जानता है कि ऐसा करने से
उसे अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ेगा।
24 अब, मेरे पुत्रो, मेरी बात सुनो;
मेरे वचनों पर ध्यान दो।
25 तुम्हारा हृदय व्यभिचारिणी स्त्री की ओर
आकर्षित न हो,
तुम उसकी गली में प्रवेश भी न करना।
26 अनेक पुरुष उसकी चितवन की मार से मर
गए हैं;
उसने लाशों का ढेर लगा दिया है।
27 उसके घर का मार्ग अधोलोक को जाता है,
वह अपने प्रेमी को कबर में ले जाती है।

बुद्धि सब गुणों से सर्वश्रेष्ठ है

8 बुद्धि तुम्हें आवाज दे रही है;
समझ उच्च स्वर में तुम्हें पुकार रही है।
2 वह मार्ग के किनारे ऊंचे स्थानों पर,
रास्तों के मिलने के स्थान पर
आकर खड़ी है।
3 नगर के सम्मुख, प्रवेश-द्वार के समीप.
दरवाजों के पैठार पर खड़ी होकर
वह उच्च स्वर में पुकार रही है :
4 'ओ प्रतिष्ठित लोगो, मैं तुम से बोल रही हूं;
ओ साधारण लोगो,
मेरी पुकार तुम्हारे लिए भी है।
5 ओ सीधे-सादे लोगो, चतुराई सीखो;
ओ मूर्ख लोगो, समझ की बात पर हृदय
लगाओ।
6 मेरी बात सुनो,
क्योंकि मैं तुम से श्रेष्ठ वचन कहूंगी;
मेरे मुख से केवल उचित बातें ही निकलेंगी।
7 मेरा मुंह केवल सत्य वचन ही कहेगा
मेरे ओंठों को दुष्ट वचन से घृणा है।
8 मेरे मुख के सब वचन धार्मिक होते हैं,
उनमें छल-कपट और उलट-फेर नहीं
होता।
9 ये समझदार मनुष्यों के लिए सहज हैं,
और ज्ञान पिपासुओं के लिए सीधे-सादे।
10 चांदी को नहीं, वरन् मेरी शिक्षा को ग्रहण
करो;
सोने को नहीं,

---

* अथवा शांति-बलि

8 : 1-3 नीति 1 : 20-21 8 : 3 यो 7 : 37

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बल्कि मेरे ज्ञान को प्राप्त करो।
11 क्योंकि मैं–बुद्धि मोतियों से श्रेष्ठ हूं;
तुम्हारी किसी भी इष्ट वस्तु से
मेरी तुलना नहीं हो सकती।

12 'मैं समझ में निवास करती हूं;
मुझे ज्ञान और विवेक उपलब्ध हैं।
13 बुराई से घृणा करना ही
प्रभु की भक्ति* करना है;
मैं घमण्ड, अहंकार और दुराचरण से,
छल–कपटपूर्ण बातों से घृणा करती हूं।
14 मुझमें सम्मति और खरी बुद्धि है,
मुझ में समझ है,
शक्ति भी मेरी है।
15 मुझ–बुद्धि के द्वारा ही
राजा राज्य करते हैं;
मेरी सहायता से शासक
न्यायपूर्ण निर्णय करते हैं।
16 मेरे द्वारा ही शासक राज्य करते हैं,
उच्चाधिकारी पृथ्वी पर शासन करते हैं।
17 जो मुझसे प्रेम करते हैं,
मैं उनसे प्रेम करती हूं;
जो मुझे ढूंढ़ने में जमीन–आसमान एक कर देते हैं,
वे मुझे पाते हैं।
18 सम्पत्ति और सम्मान,
शाश्वत धन और धार्मिकता मेरे पास हैं।
19 मेरा फल सोने से,
नहीं, शुद्ध सोने से श्रेष्ठ है;
मेरी उपज उत्तम चांदी से अच्छी है।
20 मैं धर्म के मार्ग में,
न्याय के पथ पर चलती हूं;
21 और अपने प्रेमियों को
धन–सम्पत्ति से पूर्ण कर देती हूं,
उनके खजानों को भर देती हूं।'

बुद्धि का सृष्टि–रचना में सहयोग

22 प्रभु ने अपने समस्त सृष्टि–कार्यों में
सर्वप्रथम, अपना रचना–कार्य आरम्भ करने से
पूर्व मुझे ही पहले उत्पन्न किया था**।
23 युगों के आरम्भ से,
आदि से ही,
पृथ्वी की रचना के पहले से
मैं ही गढ़ी गई।
24 जब न गहरा महासागर था,
और न जल से भरे हुए झरने थे,
तब मेरा जन्म हुआ।
25 जब पहाड़ों का अस्तित्व भी न था,
जब पहाड़ियों का आकार गढ़ा नहीं गया था,
तब मैं ही उत्पन्न हुई थी।
26 जब प्रभु ने भूमि और मैदान बनाए,
जब उसने पृथ्वी का प्रथम धूलि–कण रचा,
उसके पूर्व मैं अस्तित्व में आई।
27 जब प्रभु ने आकाश की रचना की
तब मैं वहां थी;
जब उसने गहरे महासागर के ऊपर
वितान खींचा था,
तब भी मैं उपस्थित थी।
28 जब उसने ऊपर, आकाश मण्डल को स्थिर किया,
जब उसने गहरे महासागर के झरनों का मुंह खोला,
29 जब उसने सागर की सीमा निर्धारित की,
कि जल उसकी आज्ञा का उल्लंघन कर उस सीमा को पार न करे;
जब उसने पृथ्वी की नींव के चिह्न लगाए,
30 तब मैं एक कुशल कारीगर के समान, उस के समीप ही थी।***
मैं प्रतिदिन उसको प्रसन्न करती थी;
मैं सदा उसके सम्मुख आनन्द मनाती थी।
31 मैं उसके द्वारा बसायी गई पृथ्वी से आनन्दित थी;
मैं मनुष्य जाति से प्रसन्न थी।

बुद्धि के लिए आह्वान

32 अब, हे मेरे शिष्यो,+ मेरी बात सुनो :
मेरे मार्ग पर चलनेवाले लोग धन्य हैं!

---

* भय मानना ** अथवा 'प्राप्त किया था'। *** मूल में अस्पष्ट + मूल में, 'हे पुत्रो'

8 : 11 अय्य 28 : 15; प्रव 24 : 1–22 **8 : 14** यश 11 : 2 **8 : 17** मत 7 : 7–11; यो 14 : 21 **8 : 22** यो 1 : 1; प्रव 1 : 4; प्रक 3 : 14 **8 : 26** उत 1 : 6 **8 : 30** यो 1 : 2; प्रज्ञा 1 : 1; प्रव 24 : 3–6 **8 : 32** प्रव 14 : 20–27

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

33 शिक्षा की बात सुनो,
और बुद्धिमान हो जाओ;
मेरे शिष्यो, शिक्षा की उपेक्षा मत करना।
34 मेरी बात को सुननेवाला मनुष्य धन्य है।
वह प्रतिदिन मेरे द्वार पर
आस लगाए खड़ा रहता है;
वह मेरी प्रतीक्षा में
द्वार पर पलकें बिछाए रहता है।
35 मेरे शिष्यो, जो मनुष्य मुझ को प्राप्त कर लेता है,
वह जीवन को पा जाता है;
वह प्रभु की कृपा का पात्र बन जाता है।
36 पर जो मुझे चूक जाता है,
वह अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारता है;
जो मुझसे घृणा करता है
वह मृत्यु को प्यार करता है।

बुद्धि का निमन्त्रण

9 बुद्धि ने अपना घर बनाया;
उसने घर के सातों खम्भे खड़े किए।
2 उसने भोज के लिए अपने पशु काटे,
और अंगूर-रस में मसाले मिलाए;
और अतिथियों के लिए भोज तैयार किया।
3 तब उसने अपनी सेविकाओं को भेजा
कि वे नगर के उच्च स्थान पर खड़े होकर
लोगों को यह निमंत्रण दें :
4 'जो मनुष्य सीधा-सादा है,
वह घर के भीतर आए।'
जिसमें बुद्धि नहीं है
उससे बुद्धि यह कहती है :
5 'आ, और मेरी रोटी खा,
और मसाला मिला अंगूर-रस पी।
6 तब तुझे समझ आ जाएगी
और तू जीवित रहेगा,
तू समझ के मार्ग पर चलेगा।'

7 जो मनुष्य हंसी उड़ानेवालों को
शिक्षा देता है,
वह स्वयं अपमानित होता है;
दुर्जनों को चेतावनी देनेवाला
अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारता है।
8 अत: हंसी उड़ाने वाले को चेतावनी मत दो;
अन्यथा वह तुमसे घृणा करेगा,
बल्कि बुद्धिमान को उसकी भूल के लिए
डांटो;
वह तुमसे प्रेम करेगा।
9 बुद्धिमान को शिक्षा दो
तो वह और भी बुद्धिमान बनता है;
धार्मिक मनुष्य को सीख दो
तो वह अपनी विद्या बढ़ाता है।

10 प्रभु का भय ही बुद्धि का मूल है*,
पवित्र परमेश्वर का ज्ञान ही
पूर्ण समझ है।

11 मुझ-बुद्धि के द्वारा ही
तुम्हारी आयु बढ़ेगी,
और तुम अधिक दिन जीवित रहोगे।
12 यदि तुम बुद्धिमान हो
तो बुद्धि का लाभ तुम्हें ही होगा,
पर यदि तुम बुद्धि की हंसी उड़ाओगे,
तो उसका फल तुम ही भोगोगे।

13 मूर्खता उस स्त्री के सदृश है
जो बकबक करती है,
जो कुलटा और निर्लज्ज है।
14 वह अपने घर के द्वार पर,
नगर के उच्च स्थान पर बैठकर
15 वहां से राहगीरों को,
मार्ग पर जानेवाले पथिकों को
पुकार-पुकार कर कहती है,
16 'जो मनुष्य सीधा-सादा है,
वह घर के भीतर आए।'
जो नासमझ है
उससे मूर्खता यह कहती है :
17 'चोरी का जल मीठा होता है,
रोटी लुक-छिपकर खाने में अच्छी लगती
है।'

* अथवा, 'आरम्भ'

8 : 35 1 यो 5 : 12 **9 : 3** मत 22 : 1-14 **9 : 5** यश 55 : 1; यो 6 : 27; 7 : 27 **9 : 10** अय्य 28 : 28; नीति 1 : 7

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

18 किन्तु सीधा-सादा मनुष्य यह नहीं जानता
है,
कि मूर्खता के घर में प्रवेश करनेवाले का
अन्त मृत्यु है;
मूर्खता के अतिथि
अधोलोक की गहराइयों में पड़े हुए हैं!

राजा सुलेमान के नीतिवचनों का संग्रह

सामान्य अक्षरों में

10 राजा सुलेमान के नीतवचनः
बुद्धिमती संतान के कारण
पिता आनन्दित रहता है;
पर मूर्ख संतान से मां को दुःख होता है।

2 जो धन अन्याय से प्राप्त किया जाता है,
उससे किसी को लाभ नहीं होता;
पर धार्मिकता मनुष्य को मृत्यु से बचाती है।

3 प्रभु धार्मिक मनुष्य को भूखा मरने नहीं देता;
पर वह दुर्जन की लालसा पर
पानी फेर देता है।

4 गरीबी का कारण आलस्य है;
पर कठोर परिश्रम से
गरीब मनुष्य भी धनवान हो जाता है।

5 ग्रीष्म ऋतु में,
अपने आहार की व्यवस्था करनेवाला
मनुष्य
बुद्धिमान है;
पर, जो मनुष्य फसल की कटाई के समय
सोता है,
वह निंदा का कारण बनता है।

6 धार्मिक मनुष्य के सिर पर
आशिषों की वर्षा होती है;
पर दुर्जन के मुंह में
हिंसा ही हिंसा भरी रहती है।

7 धार्मिक मनुष्य की मृत्यु के बाद भी
लोग उसका स्मरण कर,
दूसरों को आशीर्वाद देते हैं,
पर दुर्जन का नाम शीघ्र मिट जाता है।

8 बुद्धिमान मनुष्य हृदय से
आज्ञाओं पर ध्यान देता है;
पर बकवादी मूर्ख पूर्णतः नष्ट हो जाता है।

9 जिसका आचरण खरा है, वह सुरक्षित है;
किन्तु कुटिल मार्ग पर चलनेवाले का
आचरण अन्त में प्रकट हो जाता है।

10 जो मनुष्य आंखों से संकेत की भाषा में बात
करता है,
वह दूसरों को दुःख देता है;
पर साहस से चेतावनी देनेवाला मनुष्य
शान्ति स्थापित करता है।*

11 धार्मिक मनुष्य का मुख जीवन का झरना है;
पर दुर्जन के मुख में हिंसा निवास करती है!

12 घृणा लड़ाई-झगड़ों को जन्म देती है;
पर प्रेम सब अपराधों को क्षमा कर देता है।

13 जिस मनुष्य में समझ है,
उसके ओंठों पर बुद्धि निवास करती है;
पर मूर्ख को छड़ी से हांकना पड़ता है।

14 बुद्धिमान अपनी बातों से ज्ञान का कोष एकत्र
करता है,
पर जब मूर्ख बक-बक करता है,
तब उसका विनाश समीप आ जाता है!

15 धनी का धन उसका दृढ़ नगर है;
किन्तु गरीब की गरीबी
उसके विनाश का कारण है।

16 धार्मिक मनुष्य का परिश्रम
उसको जीवन की ओर ले जाता है;
पर दुर्जन की कमाई
उसको पाप की ओर अग्रसर करती है।

17 जो मनुष्य शिक्षा की बातों पर ध्यान देता है,
वह जीवन के मार्ग पर चलता है;
पर जो व्यक्ति चेतावनी की उपेक्षा करता है;
वह जीवन के मार्ग से भटक जाता है।

---

* यूनानी अनुवाद से।

10 : 1 नीति 15 : 20; 17 : 25 **10 : 12** 1 कुर 13 : 4 : 7; याक 5 : 20; 1 पत 4 : 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

18 जो मनुष्य घृणा को मन में छिपाकर रखता है,
उसके ओंठों से झूठ निकलता है;
निन्दा करनेवाला मनुष्य
वास्तव में मूर्ख होता है।

19 जो मनुष्य अधिक बोलता है,
वह अपराध करने से बच नहीं सकता;
पर अपनी जीभ को वश में रखनेवाला मनुष्य बुद्धिमान है!

20 धार्मिक मनुष्य के शब्द
सर्वोत्तम चांदी के सदृश बहुमूल्य होते हैं;
पर दुर्जन के विचारों का कोई मूल्य नहीं होता।

21 धार्मिक मनुष्य के शब्दों से
अनेक लोगों का भला होता है;
पर मूर्ख मनुष्य समझ के अभाव में मर जाता है।

22 प्रभु की आशिष से ही
मनुष्य धनवान बनता है।
आशिष के साथ प्रभु दुःख नहीं देता।+

23 मूर्ख व्यक्ति पाप कर्म को
हंसी की बात समझता है,
पर समझदार व्यक्ति
सदाचरण को प्रशंसा की बात मानता है।

24 जिस बात से दुर्जन डरता है,
वह उस पर आती है;
पर धार्मिक मनुष्य की मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।

25 बवंडर आता है तो दुर्जन उड़ जाता है;
पर धार्मिक मनुष्य सदा टिका रहता है।

26 जैसे सिरका दांतों को,
और धुआं आंखों को अप्रिय है
वैसे ही भेजनेवाले को आलसी दूत
अप्रिय होता है।

27 प्रभु की भक्ति करने से
मनुष्य लम्बी आयु प्राप्त करता है;
पर दुर्जन असमय में ही मर जाता है।

28 धार्मिक मनुष्य की आशाएं पूर्ण होती हैं,
और वह आनन्दित होता है,
पर दुर्जन की आशा
निराशा में बदल जाती है।

29 निष्कपट मनुष्य का गढ़ है—प्रभु;
किन्तु प्रभु दुष्कर्मियों का संहार करता है।

30 धार्मिक मनुष्य अपने देश में
स्थायी रूप से निवास करेगा,
पर दुर्जन का डेरा उखड़ जाएगा।

31 धार्मिक मनुष्य के ओंठों से
बुद्धि के वचन निकलते हैं;
पर कुटिल जिह्वा काट दी जाएगी!

32 धार्मिक मनुष्य समझ-बूझकर
ग्रहणयोग्य बातें ही बोलता है,
पर दुर्जन के ओंठों से
कुटिल बातें ही निकलती हैं।

11 प्रभु उन व्यापारियों से घृणा करता है
जो झूठे नाप-तौल रखते हैं;
पर वह सच्चे, खरे बाट से प्रसन्न होता है।

2 जब मनुष्य अभिमान करता है,
तब अभिमान के साथ अपमान आता है,
परन्तु बुद्धिमान व्यक्ति में नम्रता होती है।

3 निष्कपट मनुष्य का मार्गदर्शन
उसकी निष्कपटता करती है;
परन्तु कपटी व्यक्ति अपने कपट के कारण
स्वयं नष्ट हो जाता है।

4 मृत्यु* के दिन धन किसी काम नहीं आता,

+ अथवा, 'उस धन में कठोर परिश्रम कुछ नहीं बढ़ाता'। * मूल में 'कोप'।

10 : 19 याक 1 : 19; 3 : 8 **10 : 22** भज 127 : 1 **10 : 25** मत 7 : 24-27 **10 : 30** भज 37 : 29 **11 : 1** लेव 19 : 35; हो 12 : 8; आमो 8 : 5-6; मी 6 : 10 **11 : 4** भज 49 : 7

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

किन्तु मनुष्य की धार्मिकता
उसको मृत्यु से बचाती है!

5 निर्दोष मनुष्य अपनी धार्मिकता के कारण
अपने जीवनमार्ग में सीधा चलता है।
किन्तु दुर्जन की दुर्जनता के कारण
उसका पतन हो जाता है।
6 निष्कपट मनुष्य की रक्षा
उसकी धार्मिकता करती है,
पर विश्वासघाती मनुष्य
अपनी वासना के जाल में फंस जाता है।
7 दुर्जन की मृत्यु के साथ
उसकी आशा भी मर जाती है;
अधार्मिक मनुष्य की आशा
अन्त में पूरी नहीं होती।
8 धार्मिक मनुष्य संकट से मुक्त होता है,
परन्तु दुर्जन उसमें फंस जाता है।
9 अधार्मिक मनुष्य अपने मुख के वचनों से
अपने पड़ोसी को नष्ट कर देता है,
पर धार्मिक मनुष्य अपने ज्ञान से
अपने पड़ोसी को बचाता है।
10 जब धार्मिक मनुष्य का कल्याण होता है,
तब सम्पूर्ण नगर जय जयकार करता है
किन्तु दुर्जन के विनाश पर
सब नगरवासी हर्ष मनाते हैं।
11 निष्कपट व्यक्ति के आशिष-वचनों से
नगर की उन्नति होती है,
परन्तु दुर्जन के दुर्वचनों से
वह ध्वस्त हो जाता है।

12 जो मनुष्य अपने पड़ोसी को तुच्छ समझता है,
वह नासमझ है;
पर समझदार व्यक्ति
अपनी वाणी पर संयम रखता है!

13 जो चुगलखोर इधर-उधर चुगली खाता है,
वह भेद की बात को पचा नहीं सकता;
परन्तु जो मनुष्य हृदय से विश्वासयोग्य है,
वह भेद की बात को छिपा कर रखता है।

14 पथ-प्रदर्शन के अभाव में
कौम का पतन हो जाता है;
पर यदि उचित परामर्श देनेवाले मंत्री बहुत
हों तो राष्ट्र सुरक्षित रहता है।

15 जो मनुष्य किसी अजनबी की जमानत लेता
है, वह हानि उठाता है;
जमानत लेने के दायित्व से दस कदम दूर
रहनेवाला झंझटों से बचा रहता है।

16 दयालु स्त्री का सम्मान होता है,
और कठोर परिश्रम करनेवाला पुरुष
धन प्राप्त करता है।

17 जो मनुष्य दूसरों पर दया करता है,
वह स्वयं अपना हित करता है;
पर निर्दयी मनुष्य
स्वयं अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारता है।

18 दुर्जन की कमाई मिथ्या है;
पर धार्मिकता का बीज बोनेवाला मनुष्य
निश्चय ही सच्चा फल प्राप्त करता है।

19 धर्म पर स्थिर रहनेवाला मनुष्य
सदा जीवित रहता है,
पर जो दुष्कर्मों को गले लगाता है,
वह नष्ट हो जाता है।

20 जिसके हृदय में कुटिलता निवास करती है,
उससे प्रभु घृणा करता है;
पर वह निष्कपट मार्ग पर चलनेवाले से
प्रसन्न होता है।

21 निश्चय जानो!
प्रभु दुर्जन को अवश्य दण्ड देगा,
किन्तु धार्मिक मनुष्य का अनिष्ट न होगा।

22 यदि सुन्दर स्त्री में विवेक नहीं है
तो वह सूअर के थूथन में
सोने की नथ के समान है!

23 धार्मिक मनुष्य की अभिलाषा
केवल भलाई होती है;

---

11 : 14 1 रा 12 : 8-11; नीति 15 : 22; प्रज्ञ 6 : 24 **11 : 18** गल 6 : 9; 2 कुर 9 : 6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पर दुर्जन की आशा का परिणाम
प्रभु का क्रोध होता है!

24 मुक्त हृदय से लुटानेवाला मनुष्य
धनवान होता जाता है;
पर जो मनुष्य
जितना देना चाहिए उतना नहीं देता,
वह अभावग्रस्त हो जाता है।

25 उदारता से देनेवाला मनुष्य
सम्पन्न होता है;
दूसरे के खेत को सींचनेवाले किसान की
भूमि भी सींची जाती है।

26 अनाज के जमाखोर को लोग कोसते हैं,
पर जो व्यापारी अपना अनाज
जनता को बेच देता है,
उसको लोग आशीर्वाद देते हैं।

27 जो भलाई करने के लिए सदा प्रयत्न करता
है,
वह मनुष्य और परमेश्वर
दोनों की कृपा प्राप्त करता है;
पर जो बुराई की तलाश में रहता है
उसको बुराई ही मिलती है।

28 अपनी धन-सम्पत्ति पर भरोसा करनेवाला
सूखे पत्ते के समान झड़ जाता है;
पर धार्मिक मनुष्य नए पत्ते के समान
लहलहाता है।

29 जो मनुष्य अपने परिवार को दुःख देता है
उसकी धन-सम्पत्ति नष्ट हो जाती है,
और वह मूर्ख मनुष्य
बुद्धिमान का गुलाम बन जाता है।

30 धार्मिक व्यक्ति के आचरण का फल है :
जीवन वृक्ष!
पर दुष्कर्मी के कार्य का फल है : हिंसा!

31 यदि धार्मिक को पृथ्वी पर ही उसके
आचरण का प्रतिफल मिल जाता है, तो फिर
दुर्जन और पापी को क्यों नहीं मिलेगा ?

12 जो मनुष्य शिक्षा से प्रेम करता है,
वह ज्ञान-प्रिय भी होता है;
पर जो डांट-फटकार से घृणा करता है,
वह पशु के समान नासमझ है।

2 प्रभु भले मनुष्य पर कृपा करता है,
पर वह बुरी योजनाएं रचनेवाले को दण्ड
देता है।

3 मनुष्य दुष्कर्म के द्वारा स्थापित नहीं होता;
पर धार्मिक मनुष्य की जड़ें नहीं उखड़तीं।

4 चरित्रवान पत्नी अपने पति की शोभा है,
पर व्यभिचारिणी पत्नी मानो
अपने पति की हड्डियों का क्षय है!

5 धार्मिक मनुष्य के विचार न्यायसंगत होते हैं
पर दुर्जन सदा छल-कपट की बातें सोचता
है।

6 दुर्जन के शब्द हिंसा से भरे होते हैं,
किन्तु धार्मिक मनुष्य के वचन
लोगों को बचाते हैं।

7 दुर्जन का पतन होता है,
पृथ्वी से उसका नामोनिशान मिट जाता है;
परन्तु धार्मिक मनुष्य का वंश सदा बना
रहता है।

8 मनुष्य की प्रशंसा
उसकी सद्बुद्धि के लिए होती है,
किन्तु कुटिल हृदयवाले मनुष्य से
सब लोग घृणा करते हैं।

9 साधारण मनुष्य,
जो मेहनत की सूखी रोटी खाता है,
वह बड़प्पन-प्रिय मनुष्य से श्रेष्ठ है
जिसके पास खाने के लिए रोटी भी नहीं!

10 धार्मिक मनुष्य अपने पशु के प्राण की भी
चिन्ता करता है;
पर दुर्जन की दया भी निर्दयता के समान
होती है!

---

11 : 25 मत 7 : 2; 10 : 42 **11 : 31** 1 पत 4 : 18 **12 : 1** प्रव 21 : 6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

11 जो किसान अपनी भूमि को
स्वयं जोतता-गोड़ता है,
उसको रोटी का अभाव नहीं होता!
पर जो मनुष्य व्यर्थ की योजनाओं में समय
गुजारता है,
वह नासमझ है!

12 दुर्जनों का सुदृढ़ गढ़ भी ढह जाता है;
पर धार्मिक मनुष्य की जड़ें गहरी होती हैं।

13 दुर्जन अपने मुंह से निकले
शब्दों के जाल में स्वयं फंस जाता है,
पर धार्मिक मनुष्य संकट आने पर भी बच
जाता है।

14 मनुष्य को अपने वचनों के फल के अनुरूप
उत्तम वस्तुएं प्राप्त होती हैं,
और वह सन्तुष्ट होता है;
मनुष्य जैसा कार्य करता है
वैसा ही उसको फल मिलता है।

15 मूर्ख मनुष्य को अपना आचरण
अपनी दृष्टि में उचित लगता है,
पर बुद्धिमान मनुष्य दूसरों की सलाह को
ध्यान से सुनता है।

16 मूर्ख मनुष्य अपनी चिढ़
तत्काल प्रकट कर देता है,
किन्तु व्यवहार-कुशल मनुष्य
अपना अपमान पी जाता है।

17 सच बोलनेवाला गवाह
सच्ची साक्षी देता है;
पर झूठा गवाह झूठ के अतिरिक्त
कुछ नहीं बोलता।

18 बिना सोच-विचार के
बोलनेवाले मनुष्य के शब्द
तलवार की तरह बेधते हैं;
पर बुद्धिमान की बातें
मलहम का काम करती हैं।

19 सत्यनिष्ठ ओंठों के वचन अमर रहते हैं;
किन्तु झूठी जीभ की बातें क्षणभंगुर होती
हैं।

20 बुरी योजना रचनेवाले के दिल में
छल-कपट भरा रहता है;
परन्तु कल्याणकारी योजना बनानेवाला
आनन्द-मग्न रहता है।

21 धार्मिक मनुष्य अनिष्ट से बचा रहता है;
पर दुर्जन विपत्ति से घिरा रहता है।

22 प्रभु झूठ बोलनेवाले मनुष्यों से घृणा करता
है;
पर जो मनुष्य सच्चाई से काम करते हैं,
उनसे प्रभु प्रसन्न होता है।

23 चतुर मनुष्य अपना ज्ञान छिपाकर रखता है;
पर मूर्ख अपनी मूर्खता का प्रदर्शन करता
है।

24 कठोर परिश्रम करनेवाला व्यक्ति शासक
बनता है;
पर आलसी मनुष्य दूसरों की बेगार करता
है।

25 मनुष्य के मन की चिन्ता
उसको दबा देती है;
पर एक सुभाषित वचन
उसको आनन्दित कर देता है।

26 धार्मिक मनुष्य दुराचरण से दूर रहता है,
पर दुर्जन का मार्ग
उसको विनाश की ओर ले जाता है।

27 आलसी मनुष्य अपने लक्ष्य तक
कभी नहीं पहुंच पाता,
किन्तु कठोर परिश्रम करनेवाला व्यक्ति
अपार धन-सम्पत्ति अर्जित कर लेता है।

28 धर्म का मार्ग जीवन का मार्ग है;
पर टेढ़े रास्ते पर चलना
मृत्यु को बुलावा देना है।

---

12 : 11 नीति 28 : 19

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

13 बुद्धिमान पुत्र अपने पिता की
शिक्षा की बातें सुनता है,
परन्तु पिता की हंसी उड़ानेवाला कुपुत्र
डांट-डपट पर भी ध्यान नहीं देता।

2 सज्जन अपने मीठे वचनों से
मीठा फल ही खाता है;
किन्तु विश्वासघाती मनुष्य की इच्छा सदा
हिंसा ही होती है।

3 अपनी वाणी पर संयम रखनेवाला मनुष्य
अपने जीवन की रक्षा करता है;
पर व्यर्थ गाल बजानेवाला व्यक्ति
अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मारता है।

4 आलसी मनुष्य के हृदय में
इच्छाएं उत्पन्न होती हैं,
पर वह उनको पूरा नहीं कर पाता;
किन्तु कठोर परिश्रम करनेवाले की
सब अभिलाषाएं पूर्ण होती हैं।

5 धार्मिक मनुष्य झूठ से घृणा करता है;
पर दुर्जन निर्लज्जता और बदनामी के काम
करता है।

6 धार्मिकता उस मनुष्य की रक्षा करती है,
जिसका आचरण निष्कपट होता है;
पर पाप दुर्जन को उखाड़कर फेंक देता है।

7 झूठी शानवाला व्यक्ति
धन-सम्पत्ति न होने पर भी
धनी होने का ढोंग करता है;
प्रदर्शन को पसन्द न करनेवाला मनुष्य
धनी होने पर भी
निर्धन होने का बहाना करता है।

8 मनुष्य का जीवन
उसके धन से बच सकता है;
पर गरीब के पास
अपने प्राण की रक्षा के लिए
कुछ नहीं होता।

9 धार्मिक मनुष्य का प्रकाश
आनन्द प्रदान करता है;
किन्तु दुर्जन का दीया बुझ जाता है।

10 अविवेकी मनुष्य घमण्ड के कारण
लड़ाई-झगड़े मोल लेता है;
पर दूसरों की सलाह माननेवाला मनुष्य
निस्सन्देह बुद्धिमान है।

11 अचानक प्राप्त हुआ धन
घर में टिकता नहीं;
पर अपने परिश्रम से थोड़ा-थोड़ा धन
एकत्र करनेवाला मनुष्य
उसको और बढ़ाता है।

12 जब आशा पूरी होने में विलम्ब होता है
तब हृदय उदास हो जाता है;
पर इच्छा की पूर्ति का अर्थ है :
जीवन-वृक्ष!

13 जो मनुष्य परमेश्वर के वचन को तुच्छ
समझता है,
वह स्वयं अपने विनाश का कारण बनता
है !
पर प्रभु की आज्ञाओं का आदर करनेवाला
पुरस्कार पाएगा !

14 बुद्धिमान व्यक्ति के शिक्षाप्रद वचन
जीवन के झरने हैं,
जिनके द्वारा मनुष्य मृत्यु के फंदे से बचता
है।

15 सद्‌बुद्धि के द्वारा
मनुष्य लोगों का कृपापात्र बनता है,
किन्तु धर्महीन व्यक्ति का आचरण
उसके विनाश का कारण होता है।

16 व्यवहार-कुशल व्यक्ति बुद्धि से
अपने कार्य करता है,
परन्तु मूर्ख अपनी मूर्खता का प्रदर्शन करता
है।

---

13 : 3 याक 3 : 2; प्रव 38 : 25-26

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

17 बुरा राजदूत जनता को संकट में डालता है,
पर विश्वासयोग्य राजदूत सुखद समाचार
लाता है।

18 जो मनुष्य शिक्षा की उपेक्षा करता है,
वह गरीबी और अपमान का जीवन बिताता
है;
पर चेतावनी पर ध्यान देनेवाला मनुष्य
सम्मान का पात्र बनता है।

19 जब इच्छा पूर्ण हो जाती है
तब मनुष्य को उसका स्वाद मधुर लगता है।
पर दुराचार के मार्ग को छोड़ना
मूर्ख को घृणित लगता है।

20 जो मनुष्य बुद्धिमानों का सत्संग करता है,
वह स्वयं बुद्धिमान बनता है;
पर मूर्खों का साथी विपत्ति में पड़ता है।

21 अनिष्ट पापी मनुष्य के पीछे लगा रहता है;
किन्तु धार्मिक व्यक्ति को समृद्धि प्राप्त
होती है।

22 सज्जन अपने वंश के लिए
पैतृक सम्पत्ति छोड़ जाता है;
किन्तु पापी का धन
धार्मिक मनुष्य के हाथ लगता है।

23 गरीब किसान की परती भूमि भी
भरपूर फसल उत्पन्न करती है,
पर अन्यायी मालगुजार
उसको हड़प जाते हैं।

24 जो पिता अपने पुत्र को दण्ड नहीं देता,
वह उससे प्रेम नहीं करता;
क्योंकि जो पिता अपने पुत्र से प्रेम करता है,
वह पुत्र को अनुशासित करने में
देर नहीं करता।

25 धार्मिक मनुष्य के पास अपनी भूख तृप्त
करने के लिए पर्याप्त भोजन रहता है;
किन्तु दुर्जन को कभी पेट-भर भोजन नहीं
मिलता।

14 बुद्धिमती स्त्री अपना घर बनाती है,
पर मूर्ख स्त्री अपना घर अपने ही हाथ
से ढाह देती है।

2 जिस मनुष्य का आचरण निष्कपट है,
वह प्रभु की भक्ति* करता है;
किन्तु जिसका आचरण छल-कपट से भरा
है, वह प्रभु को तुच्छ समझता है।

3 मूर्ख मनुष्य के मुंह में गर्व का अंकुर फूटता
है, और वह विपत्ति को बुलाता है;
पर बुद्धिमान मनुष्य के ओंठों से निकले
शब्द उसकी रक्षा करते हैं।

4 जहाँ हल के लिए बैल नहीं
वहां अनाज पैदा नहीं होता।
बैल के बल से ही
प्रचुर अन्न उत्पन्न होता है।

5 सच्चा साक्षी झूठ नहीं बोलता;
किन्तु झूठे गवाह के मुंह से
केवल झूठ ही निकलता है।

6 हर बात को हंसी में उड़ानेवाला व्यक्ति
व्यर्थ ही ज्ञान की तलाश करता है;
पर समझदार मनुष्य के लिए
ज्ञान सहज ही प्राप्त हो जाता है।

7 मूर्ख मनुष्य का साथ छोड़ दे;
उसकी संगति में तुझे ज्ञान की बातें नहीं
मिलेंगी।

8 विवेकी मनुष्य की बुद्धि क्या है?
अपने मार्ग को पहचानना;
परन्तु मूर्खों की मूर्खता
केवल धोखा देना है।

9 परमेश्वर दुर्जन को ठुकराता है,
पर धार्मिक व्यक्ति उसकी कृपा का पात्र
बनता है।

*'भय मानना'
13 : 20 प्रव 6 : 33-34

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

10 केवल हृदय अपनी पीड़ा को जानता है;
पर उसके आनन्द में भी
दूसरा साझी नहीं हो सकता।

11 दुर्जन का मकान ढह जाता है,
पर धार्मिक मनुष्य का डेरा आबाद रहता है।

12 एक ऐसा भी मार्ग है,
जो मनुष्य को उचित प्रतीत होता है;
किन्तु वह पथिक को मृत्यु के द्वार
पर पहुंचाता है।

13 हंसी के समय भी हृदय उदास होता है;
आनन्द का अन्त भी दु:ख होता है।

14 कुटिल मनुष्य को
अपने दुराचरण का फल निस्सन्देह
भोगना पड़ता है;
पर सज्जन को उसके सत्कर्मों का
पुरस्कार मिलता है।

15 सीधा-सादा मनुष्य हर बात पर विश्वास
कर लेता है,
किन्तु चतुर मनुष्य फूंक-फूंक कर
कदम रखता है।

16 बुद्धिमान मनुष्य सावधान रहता,
और बुराई से बचता है,
किन्तु मूर्ख मनुष्य लापरवाह होता, और
ढीठ बनकर दुराचरण करता है।

17 जो मनुष्य तुरन्त क्रोध करता है,
वह मूर्खता का कार्य करता है;
किन्तु जिसमें विवेक है, वह धीरज रखता
है।

18 भोला मनुष्य मूर्खता के काम करता है;
परन्तु चतुर व्यक्ति ज्ञान से सुशोभित होते
हैं।

19 बुराई भलाई के सम्मुख झुकती है;
दुर्जन धार्मिक मनुष्य के द्वार पर
माथा टेकता है।

20 गरीब मनुष्य को उसका पड़ोसी भी पसन्द
नहीं करता;
किन्तु धनवान व्यक्ति के अनेक मित्र
होते हैं।

21 जो मनुष्य अपने पड़ोसी से घृणा करता है,
वह पापी है;
पर गरीबों पर दया करनेवाला व्यक्ति
धन्य है।

22 बुरी-बुरी योजनाएं बनानेवाले
क्या पथभ्रष्ट नहीं होते?
पर भली बातें सोचनेवालों से
करुणा और सच्चाई का व्यवहार किया
जाता है।

23 परिश्रम से सदा लाभ होता है,
पर कोरी बक-बक से गरीबी आती है।

24 बुद्धिमान की शोभा बुद्धि है;
किन्तु मूर्ख का आभूषण उसकी मूर्खता है।

25 सच्चा गवाह निर्दोष व्यक्तियों के प्राण
बचाता है;
पर झूठ बोलनेवाला व्यक्ति
विश्वासघाती होता है।

26 प्रभु की भक्ति करने से
मनुष्य में सुदृढ़ आत्म-विश्वास जागता है;
प्रभु के भक्त की सन्तान
कभी निराश्रित नहीं होगी।

27 प्रभु का भय जीवन का स्रोत है,
जिसके द्वारा मनुष्य मृत्यु के फंदे से बचता
है।

28 राजा की कीर्ति
उसकी प्रजा की विशाल संख्या में है;
जनता के बिना शासक नष्ट हो जाता है।

29 जो व्यक्ति विलम्ब से क्रोध करता है
वह बड़ा समझदार है;
पर तुरन्त क्रुद्ध होनेवाला मनुष्य

---

14 : 12 नीति 16 : 25 **14 : 13** सभ 2 : 2; लू 6 : 25 **14 : 20** नीति 19 : 7 **14: 21** भज 41 : 1

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

केवल अपनी मूर्खता को प्रकट करता है।

30 शान्त मन शरीर को स्वस्थ रखता है,
पर क्रोध की ज्वाला हड्डियों को भी
भस्म कर देती है।

31 जो मनुष्य गरीब पर अत्याचार करता है,
वह उसके सृजक का अपमान करता है;
किन्तु दीन-दरिद्र पर दया करनेवाला
उसके रचयिता का आदर करता है।

32 दुर्जन को उसके दुष्कर्म ही उखाड़ फेंकते
हैं,
पर धार्मिक मनुष्य अपनी सत्यनिष्ठा के
कारण आश्रय पाता है।

33 समझदार मनुष्य के हृदय में
बुद्धि का निवास होता है;
किन्तु मूर्ख मनुष्य
बुद्धि के विषय में कुछ भी नहीं जानता।

34 राष्ट्र की उन्नति का आधार है धार्मिकता;
पर पाप कौम का कलंक होता है।

35 बुद्धिमान सेवक राजा का कृपापात्र होता है;
पर जो कर्मचारी मूर्खतापूर्ण कार्य करता है
उस पर राजा का क्रोध भड़क उठता है।

15 कोमल उत्तर देने से क्रोध शान्त हो
जाता है;
परन्तु कटु वचन से क्रोधाग्नि धधक उठती
है।

2 बुद्धिमान के कंठ से ज्ञान की धारा प्रवाहित
होती है;
किन्तु मूर्ख अपने मुंह से केवल मूर्खता ही
निकालता है।

3 प्रभु की दृष्टि सर्वव्यापी है;
प्रभु हमारे प्रत्येक कार्य को देखता है,
चाहे हम भला करें, चाहे बुरा!

4 मधुर वचन बोलनेवाली जिह्वा
जीवन का वृक्ष है;
पर छल-कपट की बातें बोलनेवाली जीभ से
आत्मा को कष्ट होता है।

5 मूर्ख पुत्र अपने पिता की शिक्षाप्रद बातों का
तिरस्कार करता है;
परन्तु जो पुत्र अपने पिता की डांट-डपट को
स्वीकार करता है,
वह व्यवहारकुशल बन जाता है।

6 धार्मिक मनुष्य के घर में
बहुत धन रहता है,
परन्तु दुर्जन की आमदनी में
घुन लग जाता है।

7 बुद्धिमान अपनी वाणी से ज्ञान का प्रसार
करता है;
पर मूर्ख का मस्तिष्क ऐसा नहीं कर पाता।

8 मूर्ख का बलि चढ़ाना भी
प्रभु पसन्द नहीं करता।
किन्तु निष्कपट मनुष्य की प्रार्थना से
वह हर्षित होता है।

9 प्रभु दुर्जन के दुराचरण से घृणा करता है,
किन्तु वह धर्म के मार्ग पर चलनेवाले व्यक्ति
से प्रेम करता है।

10 जो मनुष्य पथभ्रष्ट हो जाता है,
वह कठोर दण्ड पाता है;
डांट-डपट की उपेक्षा करनेवाला
मनुष्य समय से पहले मर जाता है।

11 अधोलोक और अतल पाताल भी
प्रभु की दृष्टि से छिपे नहीं हैं;
तब क्या मनुष्य का हृदय
उससे छिपा रह सकता है?

12 हर बात की हंसी उड़ानेवाला
डांट-डपट पसन्द नहीं करता;

---

14 : 35 मत 24 : 45-47 15 : 1 1 रा 12 : 13-16 15 : 3 जक 4 : 10 15 : 8 नीति 21 : 27; यश 1 : 11; आमो 5 : 22 15 : 11 यो 2 : 25

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वह सलाह के लिए बुद्धिमान मनुष्य
के पास नहीं जाता।

13 यदि हृदय प्रसन्न है
तो चेहरे पर रौनक रहती है;
किन्तु यदि हृदय दुःखित है
तो अन्तर-आत्मा भी उदास रहती है।

14 जो मनुष्य समझदार है,
उसका हृदय ज्ञान का प्यासा होता है,
किन्तु मूर्ख मूर्खतापूर्ण बातों से
अपना पेट भरता है।

15 जो मनुष्य दुःखी है,
उसका हर दिन दुःख में बीतता है,
किन्तु जिस व्यक्ति का हृदय
प्रसन्नता से भरा रहता है,
वह मानो नित्य भोज में सम्मिलित होता है।

16 यदि मनुष्य प्रभु की भक्ति करता,
और उसके पास थोड़ा ही धन है,
तो उसका यह धन उस प्रचुर धन से श्रेष्ठ है,
जिसके साथ अशान्ति जुड़ी है।

17 जहां प्रेम है,
वहां सूखी रोटी भी मीठी लगती है,
पर जिस घर में घृणा का वास है,
वहां अच्छे से अच्छा भोजन भी त्याज्य है।

18 उग्र स्वभाव का मनुष्य
झगड़े की आग को भड़काता है;
परन्तु विलम्ब से क्रोध करनेवाला व्यक्ति
उसको मधुर वचन से बुझा देता है।

19 आलसी मनुष्य के मार्ग में,
झाड़-झंखाड़ उगे होते हैं,
पर निष्कपट व्यक्ति का मार्ग
राजमार्ग के सदृश समतल होता है।

20 बुद्धिमती संतान के कारण
पिता आनन्दित होता है;
किन्तु मूर्ख संतान अपनी मां का
तिरस्कार करती है।

21 जिस मनुष्य में समझ नहीं है,
वह मूर्खता को ही आनन्द समझता है;
किन्तु समझदार व्यक्ति सन्मार्ग पर
चलता है।

22 बिना उचित सलाह के
योजनाएं निष्फल हो जाती हैं;
किन्तु यदि योजना में
अनेक बुद्धिमानों की सम्मति प्राप्त हो,
तो वह सफल हो जाती है।

23 समय पर उपयुक्त उत्तर देना
मनुष्य को आनन्द प्रदान करता है;
अवसर पर कही गई बात
कितनी भली होती है।

24 बुद्धिमान का मार्ग उसको जीवन की ओर,
ऊर्ध्व लोक में ले जाता है,
और वह अधोलोक में जाने से बच जाता
है।

25 प्रभु दुर्जन का मकान
तहस-नहस कर देता है;
किन्तु वह विधवा की सम्पत्ति की रक्षा
करता है।

26 प्रभु दुर्जन के विचारों से घृणा करता है;
किन्तु शुद्ध हृदयवाले व्यक्ति के
वचन से उसे प्रसन्नता होती है।

27 धन का लोभी मनुष्य,
जो अन्याय से धन कमाता है,
अपने परिवार को संकट में डालता है;
पर घूस से घृणा करनेवाला व्यक्ति
जीवित रहेगा।

28 उत्तर देने के पूर्व
धार्मिक मनुष्य अपने मन में विचार करता
है;
किन्तु दुर्जन का मुंह
बुरी बातें ही उगलता रहता है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

29 प्रभु धार्मिक व्यक्ति की प्रार्थना सुनता है,
पर वह दुर्जन की ओर ध्यान नहीं देता।

30 सन्देशवाहक की आंखों की चमक से
हृदय भी आनन्दित होता है;
सुखद समाचार सुनकर
हड्डियों में जान आ जाती है।

31 जो मनुष्य हितपूर्ण चेतावनियों पर
ध्यान देता है,
वह बुद्धिमानों के सत्संग में स्थान पाता है।

32 जो मनुष्य शिक्षा की बातों की
उपेक्षा करता है,
वह स्वयं अपना तिरस्कार करता है;
पर डांट-डपट पर ध्यान देनेवाला व्यक्ति
व्यवहार-कुशल बनता है।

33 प्रभु की भक्ति करना
बुद्धि से शिक्षा प्राप्त करना है;
आदर पाने के पूर्व विनम्र बनना आवश्यक
है।

16 मनुष्य मन में योजनाएं बनाता है,
परन्तु उनको सफल करना—
यह प्रभु की इच्छा पर निर्भर है।

2 मनुष्य अपनी दृष्टि में
अपने प्रत्येक आचरण को शुद्ध मानता है;
किन्तु प्रभु उसकी आत्मा को तौलता है।

3 अपना कार्य प्रभु को सौंप दो,
तो तुम्हारी योजनाएं अवश्य सफल होंगी।
4 प्रभु ने हर एक वस्तु को विशेष उद्देश्य के
लिए रचा है;
अत: दुर्जन निस्सन्देह दु:ख भोगेगा!
5 प्रत्येक अहंकारी व्यक्ति से
प्रभु घृणा करता है;
मैं निश्चय के साथ कहता हूं :
प्रभु उसको अवश्य दण्ड देगा।

6 दुष्कर्म का प्रायश्चित्त करुणा और सच्चाई है;
प्रभु की भक्ति करने से
मनुष्य बुराई से बचा रहता है।

7 जब प्रभु मनुष्य के आचरण से
प्रसन्न होता है,
तब वह उसके शत्रुओं को भी
उसके मित्र बना देता है।

8 अन्याय से कमाए गए अपार धन से,
धर्म से कमाया गया थोड़ा धन श्रेष्ठ है !

9 मनुष्य मन में अपना मार्ग तो निश्चित करता
है
पर उस पर चलना, यह प्रभु के हाथ में होता
है।

10 राजा के मुंह में दिव्य वाणी निवास करती
है,
अत: न्याय करने में वह गलती नहीं करता।

11 सच्चा तराजू और धर्म-कांटा
नाप-तौल के सब बाट
प्रभु ने ही निश्चित किए हैं।

12 दुष्कर्म करना राजा के लिए
घृणित कार्य है;
क्योंकि उसका सिंहासन
धर्म से ही स्थिर रहता है।

13 धर्म-वचन कहनेवाले मनुष्य से
राजा प्रसन्न होता है;
वह सच बोलनेवाले व्यक्ति से प्रेम करता
है।

14 राजा का क्रोध मृत्यु-दूत के समान है,
पर बुद्धिमान मनुष्य
उसको ठण्डा कर देता है।

15 राजा के मुख की चमक
जीवन प्रदान करती है;
उसकी कृपा मानो वर्षा के बादल हैं,
जो फसल पकने के समय
जल बरसाते हैं।

---

15 : 29 यो 6 : 31 16 : 2 नीति 21 : 2 16 : 4 रोम 9 : 22 16 : 6 तोब 12 : 9 16 : 7 उत 26 : 28; तोत्र 12 : 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

16 बुद्धि की प्राप्ति
सोना को प्राप्त करने से श्रेष्ठ है;
समझदार बनना
चांदी को पाने से कहीं अधिक मूल्यवान
है।

17 बुराई से दूर रहना
निष्कपट मनुष्य का सदाचरण है।
जो मनुष्य अपने आचरण की चौकसी
करता है,
वह अपने जीवन की रक्षा करता है।

18 मनुष्य विनाश के पहले अहंकारी,
और पतन के पूर्व घमण्डी हो जाता है।

19 घमण्डी मनुष्य के साथ
उसकी लूट-मार में हिस्सा बंटाने की
अपेक्षा
गरीब मनुष्य के साथ
विनम्रता से रहना श्रेष्ठ है।

20 जब मनुष्य प्रभु के वचन पर ध्यान देता है,
तब वह सफल होता है;
धन्य है वह मनुष्य
जो प्रभु पर भरोसा करता है।

21 जिसके मस्तिष्क में बुद्धि का निवास है,
वह समझदार कहलाता है;
मधुर वचन बोलने से
मनुष्य अपनी विद्या में वृद्धि करता है।

22 जिस मनुष्य में बुद्धि है,
उसके पास जीवन का झरना है।
पर मूर्ख व्यक्ति की ताड़ना
स्वयं उसकी मूर्खता है।

23 बुद्धिमान मनुष्य का मन
उसके वचन को ज्ञान से परिपूर्ण करता है,
और उसकी वाणी में विद्या की वृद्धि करता
है।

24 मीठे वचन मधु की तरह हैं
जो प्राण को मीठा लगता है,
जो शरीर को स्वस्थ रखता है।

25 एक ऐसा भी मार्ग है
जो मनुष्य को उचित प्रतीत होता है;
किन्तु वह पथिक को मृत्यु के
द्वार पर पहुंचाता है।

26 मजदूर की भूख ही उसको काम करने के
लिए प्रेरित करती है;
पेट ही उसको विवश करता है।

27 अधर्मी मनुष्य बुराई की योजनाएं बनाता है;
उसकी वाणी मानो धधकती अग्नि है।

28 कुटिल मनुष्य झगड़ा उत्पन्न करता है,
कानाफूसी करनेवाला घनिष्ठ मित्रों में भी
फूट डाल देता है।

29 हिंसा करनेवाला मनुष्य
अपने पड़ोसी को फुसलाता है,
और उसको बुरे मार्ग पर ले जाता है।

30 आंख से सैन करनेवाला मनुष्य
छल-कपट की योजनाएं बनाता है;
और जो ओंठ चबाता है,
वह दुष्कर्म करता है।

31 जिस सिर के बाल
दीर्घ आयु के कारण पके हैं,
वह सुन्दर मुकुट के सदृश है।
यह मुकुट सदाचरण के द्वारा प्राप्त होता है।

32 विलम्ब से क्रोध करनेवाला मनुष्य
महा योद्धा से श्रेष्ठ है;
अपने मन पर संयम रखनेवाला मनुष्य
उस विजेता से श्रेष्ठ है
जो नगर को जीतता है।

33 निर्णय करने के लिए चिट्ठी डाली जाती
है;
पर निर्णय करना प्रभु के हाथ में है।

---

16 : 20 भज 2 : 12 **16 : 25** नीति 14 : 12 **16 : 27** याक 3 : 6 **16 : 28** प्रव 28 : 13-26

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

17 सुख-चैन के साथ सूखी रोटी खाना
उस बलि-भोज के मांस से श्रेष्ठ है,
जो लड़ाई-झगड़े वाले घर में खाया जाता है।

2 जो संतान अपने माता-पिता के लिए
लज्जा का कारण बनती है,
उस पर वह सेवक शासन करता है,
जो बुद्धि से कार्य करता है।
ऐसा सेवक मालिक की पैतृक सम्पत्ति में
संतान के साथ बराबर का हिस्सा पाता है।

3 जैसे कुठाली चांदी को परखने के लिए,
और सोने को परखने के लिए भट्ठी है,
वैसे ही मनुष्य के हृदय को परखने वाला
प्रभु है।

4 दुष्कर्मी बुरी बातों को ध्यान से सुनता है,
झूठा मनुष्य दुष्टतापूर्ण वचनों पर
कान लगाता है।

5 जो मनुष्य गरीब का मजाक उड़ाता है,
वह उसके सृजक परमेश्वर का उपहास
करता है;
जो मनुष्य दूसरे के दुःख पर हंसता है,
उसको परमेश्वर निस्सन्देह दण्ड देगा।

6 बूढ़ों की शोभा उनके नाती-पोते हैं,
और बाल-बच्चों का गौरव
उनके माता-पिता।

7 मूर्ख मनुष्य के मुख में
शुभ वचन फबता नहीं;
इससे अधिक अशोभनीय है
शासक के मुख से झूठी बात का निकलना।

8 घूस देनेवाला मनुष्य
घूस को जादू का चिराग समझता है;
वह जहाँ-जहाँ जाता है,
सफलता उसके चरण चूमती है।

9 जो मनुष्य दूसरे के अपराध क्षमा करता है,
वह प्रेम का खोजी कहलाता है;
पर दूसरों की बातें यहाँ-वहाँ फैलानेवाला
मित्रों में फूट कराता है।

10 जितना प्रभाव एक घुड़की का
समझदार व्यक्ति पर होता है,
उतना सौ बार मार खाने पर भी
मूर्ख पर नहीं होता।

11 बुरा मनुष्य विद्रोह की ही खोज में रहता है।
उसको दबाने के लिए क्रूर दूत भेजा जाता
है।

12 मूर्खता के आवेश में डूबे हुए मूर्ख मनुष्य
की अपेक्षा
बच्चा छीनी हुई रीछनी से मिलना अच्छा
है।

13 जो मनुष्य भलाई के बदले में बुराई करता
है,
उसके घर में बुराई सदा निवास करती है।

14 लड़ाई-झगड़े का आरम्भ
मानो बान्ध के छेद के समान है,
अतः उसके फूटने के पहले ही
वहाँ से हट जाओ!

15 जो मनुष्य दुर्जनों का पक्ष लेता
और सज्जनों को दोषी बताता है,
उसके दोनों कार्य
प्रभु की दृष्टि में घृणित हैं।

16 मूर्ख मनुष्य बुद्धि को खरीदने के लिए
अपने हाथ में दाम क्यों रखे हुए है,
जबकि उसमें समझ है ही नहीं ?

17 सच्चा मित्र सब समय मित्रता निभाता है,
वह संकट-काल में भाई बन जाता है।

18 जो मनुष्य बन्धक रखता है,
जो अपने पड़ोसी के कर्ज के लिए जमानत
देता है,
वह निस्सन्देह निर्बुद्धि है।

---

17 : 3 नीति 27 : 21 17 : 5 लेव 19 : 14 17 : 6 भज 128 : 6 17 : 17 प्रव 6 : 7-10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

19 जो अपराध से प्रेम करता है,
वह लड़ाई-झगड़े से प्रेम करता है;
बढ़-बढ़कर बोलनेवाला मनुष्य
अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारता है।

20 जो मनुष्य कुटिल हृदय का है,
वह कभी सफल न होगा;
कुटिल वचन बोलनेवाला
विपत्ति के गड्ढे में गिरता है।

21 मूर्ख संतान अपने पिता के दु:ख का कारण
बनती है;
पिता नासमझ संतान से आनन्द नहीं पाता।

22 आनन्दित रहनेवाला हृदय उत्तम दवा है।
निराश मन हड्डियों को भी सुखा देता है।

23 दुर्जन न्याय को अन्याय में
बदलने के लिए
जेब में घूस स्वीकार करता है।

24 समझदार मनुष्य
बुद्धि की ओर दृष्टि करता है;
पर मूर्ख मनुष्य अन्धकार में
यहाँ-वहाँ टटोलता है।

25 मूर्ख संतान अपने पिता के दु:ख का कारण
है;
उसकी जननी उसके कारण दु:खित
रहती है।

26 धार्मिक मनुष्य पर जुर्माना करना उचित
नहीं;
सज्जनों को कोड़ों से पीटना अन्याय है।

27 जो मनुष्य अपनी वाणी पर संयम रखता है,
वह ज्ञानी है;
जिसका मन शान्त रहता है,
वह समझदार है।

28 मूर्ख मनुष्य भी
यदि वह चुप रहता है
तो वह बुद्धिमान समझा जाता है।
जब वह मुंह बन्द रखता है
तब वह समझवाला गिना जाता है।

18 अलग-अलग रहनेवाला
अपने ही स्वार्थ की चिन्ता करता है,
वह बुद्धिमत्तापूर्ण निर्णयों का
विरोध करता है।

2 मूर्ख मनुष्य का मन
समझ की बातों में नहीं लगता;
वह सदा अपनी ही राय प्रकट करता है।

3 जब बुराई आती है
तब उसके साथ अपमान भी आता है।
अनादर के साथ
निन्दा का आगमन होता है।

4 बुद्धिमान मनुष्य के मुख से निकले हुए वचन
समुद्र के समान गहरे होते हैं,
वे ज्ञान के स्रोत,
और उमड़ते हुए झरने के सदृश होते हैं।

5 दुर्जन का पक्ष लेना,
और धार्मिक मनुष्य के साथ न्याय न करना
अनुचित है।

6 मूर्ख की बातें लड़ाई-झगड़ा पैदा करती हैं,
उसके वचन मार-पीट को निमंत्रण देते हैं।

7 मूर्ख का मुंह ही उसके विनाश का कारण है,
उसके ओंठ ही उसको जाल में फंसाते हैं।

8 कान भरनेवाले की बातें
स्वादिष्ट भोजन की तरह लगती हैं;
वे पेट में हजम हो जाती हैं।

9 जो मनुष्य अपने काम में सुस्ती करता है,
वह मानो काम बिगाड़नेवाले का भाई है।

10 प्रभु का नाम मानो मजबूत किला है,
जिसमें धार्मिक मनुष्य भागकर शरण लेते
हैं
और सुरक्षित रहते हैं।

11 धनवान का धन

---

17 : 23 नि 23 : 8 **17 : 28** प्रव 20 : 5 **18 : 8** नीति 26 : 22

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उसका सुदृढ़ नगर है,
जो ऊंची दीवार के समान
उसकी रक्षा करता है।

12 मनुष्य अपने विनाश के पूर्व
घमण्डी हो जाता है;
पर आदर पाने के लिए मनुष्य को
पहले विनम्र बनना पड़ता है।

13 जो मनुष्य प्रश्न सुनने के पहले
उत्तर देता है,
वह लज्जित होता,
और मूर्ख कहलाता है।

14 बीमारी की दशा में
मनुष्य का आत्म-बल
उसको सम्भालता है;
पर जब हृदय ही टूट जाता है,
तब उसको कौन सह सकता है?

15 तेज बुद्धिवाला मनुष्य
ज्ञान प्राप्त करता है;
बुद्धिमान व्यक्ति के कान
ज्ञान की बातों की ओर लगे रहते हैं।

16 भेंट मनुष्य के लिए मार्ग खोल देती है;
और उसे बड़े लोगों के सामने पहुंचाती है।

17 जो व्यक्ति मुकदमे में पहले बोलता है,
वह सच्चा प्रतीत होता है,
पर उसके बाद बोलनेवाला
उसकी सच्चाई की जांच करता है।

18 चिट्ठी डालकर निर्णय करने में
विवाद हल हो जाता है।
इससे सबल विरोधियों के मध्य
निर्णय होता है।

19 नाराज भाई को मनाना
सुदृढ़ नगर पर जय प्राप्त करने के सदृश
कठिन है।
भाइयों का लड़ाई-झगड़ा
महल की अर्गलाओं के समान है।

20 मनुष्य का पेट उसकी बातों के फल से भरता
है;
उसके ओंठों से निकले हुए वचनों के
परिणाम से
उसको तृप्ति होती है।

21 जीभ के वश में
मनुष्य का जीवन और मृत्यु
दोनों हैं;
और जो मनुष्य
अपनी जीभ का प्रयोग जानता है
उसको उचित फल प्राप्त होता है।

22 जिसने धर्मपत्नी पा ली
उसको अनमोल वस्तु मिल गई!
प्रभु उस मनुष्य पर कृपा करता है।

23 गरीब गिड़गिड़ाकर बोलता है,
परन्तु धनवान सीधे मुंह उत्तर नहीं देता।

24 कुछ मित्र ऐसे होते हैं,
जो मित्र होने का ढोंग करते हैं;
किन्तु कोई ऐसा भी मित्र होता है
जो भाई से बढ़कर अपना होता है।

19 जो गरीब मनुष्य
सच्चाई के मार्ग पर चलता है,
वह उस मूर्ख मनुष्य से श्रेष्ठ है
जो छल-कपट की बातें करता है।

2 मनुष्य का ज्ञानरहित रहना उचित नहीं है;
जो मनुष्य बिना सोच-विचार के दौड़ता है,
वह मार्ग से चूक जाता है।

3 मनुष्य अपनी मूर्खता से
अपने काम बिगाड़ता है,
पर उसका हृदय क्रोध में
प्रभु के प्रति भड़क उठता है।

4 धन के कारण अनेक

---

18 : 12 नीति 10 : 15 18 : 13 प्रव 11 : 8 18 : 22 प्रव 26 : 1-4 19 : 2 रोम 10 : 2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नए-नए मित्र बन जाते हैं;
किन्तु गरीब का मित्र भी
उसको छोड़ देता है।

5 झूठी गवाही देनेवाला
अवश्य दण्ड पाएगा।
जो झूठ बोलता है,
वह दण्ड से बच नहीं सकता।

6 उदार मनुष्य की कृपा चाहनेवाले
अनेक लोग होते हैं;
जो मनुष्य धन लुटाता है,
उसके मित्र सब बनना चाहते हैं।

7 जब गरीब मनुष्य के भाई ही
उससे घृणा करते हैं,
तब आश्चर्य नहीं,
उसके मित्र उससे दूर हो जाएं।
वह बातचीत के द्वारा उनको मनाता है,
पर वह उनकी मित्रता नहीं पाता।

8 बुद्धि को प्राप्त करनेवाला
मानो स्वयं से प्रेम करता है;
समझदार व्यक्ति
निस्सन्देह सफल होता है।

9 झूठी गवाही देनेवाला
अवश्य दण्ड पाएगा;
जो झूठ बोलता है,
वह निस्सन्देह नष्ट हो जाएगा।

10 जब मूर्ख मनुष्य का शान-शौकत से रहना
नहीं फबता,
तब गुलाम मनुष्य का
शासकों पर शासन करना
कैसे फब सकता है ?

11 जो मनुष्य सद्‌बुद्धि से काम लेता है,
वह विलम्ब से क्रोध करता है;
दूसरे के अपराध को भुलाना,
उसको शोभा देता है।

12 राजा का क्रोध
सिंह की दहाड़ के समान भयानक होता है,
पर उसकी कृपा
घास पर पड़ी ओस की बून्द के सदृश
जीवनदायक होती है।

13 मूर्ख संतान पिता के विनाश का कारण होती
है;
पत्नी का लड़ाई-झगड़ा करना
मानो घर की छत से लगातार
पानी का टपकना है।

14 मकान और धन-सम्पत्ति
पूर्वजों से प्राप्त होती है;
किन्तु बुद्धिमति पत्नी
केवल प्रभु ही देता है।

15 आलस्य करने से
मनुष्य गहरी नींद में सो जाता है,
निस्सन्देह आलसी मनुष्य
सदा भूखा ही रहता है।

16 जो मनुष्य परमेश्वर की आज्ञा का पालन
करता है,
वह अपने प्राण की रक्षा करता है;
प्रभु के वचन की उपेक्षा करनेवाला
निस्सन्देह मर जाता है।

17 जो गरीब को दान करता है
वह मानो प्रभु को उधार देता है;
प्रभु उसको इस कार्य का प्रतिफल देगा।

18 जब तक बच्चों के सुधार की आशा है,
उनको ताड़ना देकर सुधारो;
उनको न सुधारना
मानो उनको विनाश के गड्ढे में डालना है।

19 जो मनुष्य बड़ा क्रोधी है,
उसे अपने क्रोध का फल
भोगता ही पड़ेगा;
यदि तुम उसे एक बार बचाओगे,
तो उसे बार-बार बचाना पड़ेगा।

---

19 : 16 लू 10 : 28 **19 : 17** मत 25 : 40

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

20 सलाह को मानो,
शिक्षा को ग्रहण करो;
जिससे तुम आगे के लिए
बुद्धिमान बन सको।

21 मनुष्य अपने मन में
अनेक योजनाएं बनाता है;
परन्तु प्रभु का अभिप्राय स्थिर रहता है।

22 मनुष्य में निष्ठा का होना
एक उत्तम गुण है;
झूठे आदमी से गरीब आदमी अच्छा होता है।

23 प्रभु की भक्ति करने से
जीवन प्राप्त होता है;
जो मनुष्य प्रभु की भक्ति करता है
वह निश्चिंत निवास करता है,
उस पर विपत्ति के बादल नहीं मंडराते।

24 जो मनुष्य आलसी है,
वह अपना हाथ भोजन की थाली में डालता है,
पर कौर को मुंह तक नहीं ले जाता।

25 ज्ञान की हंसी उड़ानेवाले को मारो;
तब सीधा-सादा मनुष्य समझदार बनेगा;
समझदार व्यक्ति को ताड़ना देने से
वह और ज्ञान प्राप्त करता है।

26 जो पुत्र अपने पिता से
कठोर व्यवहार करता है,
और अपनी मां को घर से निकाल देता है,
वह सब जगह अपमान और निंदा का पात्र बनता है।

27 प्रिय शिष्य!* यदि तू शिक्षा की बातों की ओर कान बन्द कर लेगा,
तो निस्सन्देह, ज्ञान के द्वार
तेरे लिए बन्द हो जाएंगे।

28 नीच गवाह न्याय की हंसी उड़ाता है;
दुर्जन अधर्म को मानो हजम कर जाता है।

29 ज्ञान की हंसी उड़ानेवाला,
निस्सन्देह दण्डित होगा;
मूर्ख मनुष्य की पीठ पर
कोड़ों का प्रहार होगा।

20 शराब शराबी को उपहास का पात्र बनाती है,
मदिरा उससे हल्ला-गुल्ला करवाती है;
जो मनुष्य उसके रास्ते पर चलता है,
वह बुद्धिमान नहीं है।

2 राजा का क्रोध सिंह की दहाड़ के समान
भयावह होता है;
जो मनुष्य राजा का क्रोध भड़काता है,
वह अपने प्राण से हाथ धोता है।

3 लड़ाई-झगड़ों में हाथ न डालना
मनुष्य के लिए गौरव की बात है;
मूर्ख मनुष्य ही झगड़े के लिए
सदा तैयार रहता है।

4 आलसी किसान खरीफ के मौसम में
हल नहीं जोतता,
इसलिए जब वह कटनी के समय
फसल खोजता है,
तब उसके हाथ कुछ नहीं लगता।

5 मनुष्य के मन में विचार
अथाह जल के समान हैं;
पर मनुष्य की समझ
उनको वहां से निकाल लेती है।

6 अनेक मनुष्य अपनी मित्रता का दावा करते हैं;
पर सच्चा मित्र किसे मिल सकता है?

7 उस पिता की सन्तान धन्य है,
जो धार्मिक है,
जिसका आचरण निर्दोष है।

---

* शब्दः, "मेरे पुत्र"।

19 : 24 नीति 26 : 15 **20 : 1** नीति 23 : 29-32 **20 : 6** मत 6 : 2 **20 : 9** 1 यो 1 : 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

8 जो राजा न्याय-आसन पर बैठता है,
वह आंखों से ही अन्याय को छांट लेता है।

9 कौन यह दावा कर सकता है,
कि मैंने अपना हृदय शुद्ध कर लिया है,
मैं पाप से मुक्त होकर
पवित्र हो गया हूँ?

10 दो तरह के बाट और दो तरह के नाप
दोनों से प्रभु घृणा करता है।

11 बच्चा भी अपने कामों से पहचाना जाता है
कि उसका आचरण कैसा है,
भला अथवा बुरा।

12 कान जो सुनते हैं,
आंखें जो देखती हैं,
दोनों को प्रभु ने बनाया है।

13 नींद को प्यार मत करो,
अन्यथा तुम गरीब हो जाओगे;
आंखें खोलकर कठोर परिश्रम करो
तो तुम्हें रोटी का अभाव न होगा।

14 मोल लेते समय खरीदार कहता है,
''वस्तु अच्छी नहीं है।''
पर कम कीमत पर वस्तु खरीद लेने के बाद
वह शेखी मारता है।

15 मनुष्य के पास बहुत सोना और मणि हो सकते हैं,
परन्तु बुद्धिमान मनुष्य की वाणी ही अमोल मोती है।

16 यदि कोई मनुष्य अजनबी की जमानत देता है,
तो उसको अजनबी के वस्त्र गिरवी रख लेना चाहिए;
और यदि वह किसी विदेशी की जमानत देता है
तो उससे बंधक की वस्तु लेना चाहिए।

17 छल-कपट से कमाई गई रोटी
मनुष्य को खाते समय मीठी लगती है,
परन्तु कुछ समय के पश्चात्
उसका मुंह कंकड़ों से भर जाता है।

18 योजनाएं विचार-विमर्श से निश्चित की जाती हैं,
युद्ध भी बुद्धिपूर्ण मार्ग-दर्शन में लड़ा जाता है।

19 जो मनुष्य यहां-वहां गप्प मारता फिरता है,
वह गुप्त बातें भी प्रकट कर देता है,
अत: मूर्खतापूर्ण बातें करनेवाले की
संगति मत करो।

20 जो अपने माता-पिता को अपशब्द कहता है,
उसकी धन-सम्पत्ति* पूर्णत: नष्ट हो जाएगी।

21 जो सम्पत्ति आरम्भ में
बिना दीर्घ परिश्रम के प्राप्त होती है,
वह अन्त में अधिक समय तक नहीं टिकती।

22 यह मत कहो, ''मैं बुराई का बदला लूंगा,''
पर प्रभु पर भरोसा रखो,
वही तुम्हारी सहायता करेगा।

23 दो तरह के बाटों से प्रभु घृणा करता है;
झूठा तराजू रखना, उचित नहीं है।

24 मनुष्य के सब पग
प्रभु ही निश्चित करता है,
तब मनुष्य अपना मार्ग
कैसे समझ सकता है?

25 जो मनुष्य उतावली में कहता है,
'यह प्रभु को अर्पित है',
और उसकी मन्नत मानकर
पुन: विचार करता है,
तो वह जाल में फंसता है।

---

* अथवा, 'उसका दीपक'।

20 : 12 नि 4 : 11; भज 94 : 9 **20 : 16** नीति 27 : 13 **20 : 20** नि 21 : 17 **20 : 22** रोम 12 : 17 **20 : 25** सभ 5 : 2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

26 बुद्धिमान राजा दुर्जनों को छांट कर
अलग करता,
और उन पर दावने का पहिया चलवाता है।

27 मनुष्य की चेतना प्रभु का दीपक है,
जो मनुष्य के सब भीतरी अंगों को
प्रकाश देता है।

28 यदि राजा निष्ठावान और सच्चा है,
तो वह सुरक्षित रहता है,
धर्मपूर्ण आचरण से
उसका सिंहासन टिका रहता है।

29 जवान पुरुष की सुन्दरता
उसका बल होता है;
पर बूढ़े मनुष्य की शोभा
उसके सफेद बाल हैं।

30 जो घाव चोट लगने से होते हैं,
उनसे बुराई दूर होती है;
कोड़ों की मार
हमारे शरीर के भीतरी अंगों को भी
स्वस्थ कर देती है।

21 राजा का हृदय नहर के सदृश है,
जो प्रभु के हाथ में है;
जहां वह चाहता है
वहां वह उसको मोड़ देता है।

2 प्रत्येक मनुष्य अपनी दृष्टि में
अपने आचरण को उचित समझता है,
परन्तु प्रभु उसके हृदय को जांचता है।

3 पशु-बलि की अपेक्षा
धर्म और न्याय के कार्य करना
प्रभु को अधिक पसन्द है।

4 घमण्ड से चढ़ी हुई आंख,
अहंकार में डूबा हुआ हृदय,
और दुर्जन का धन*;
ये तीनों पाप हैं।

5 परिश्रमी पुरुष की योजनाएँ
निस्सन्देह समृद्धि लाती हैं;
परन्तु जो मनुष्य उतावली करता है,
उसको निराशा ही हाथ लगती है।

6 जो धन झूठ से प्राप्त होता है,
वह हवा में उड़ जानेवाली भाप है,
वह मृत्यु का फंदा है।

7 दुर्जनों की हिंसा
स्वयं दुर्जनों को नष्ट कर देगी;
क्योंकि वे उचित कार्य करने से इन्कार करते
हैं।

8 दुष्कर्मी मनुष्य टेढ़े मार्ग पर चलता है,
और सत्कर्मी सीधे मार्ग पर।

9 झगड़ालू पत्नी के साथ घर में रहने की अपेक्षा
छत के कोने में पड़े रहना अच्छा है।

10 दुर्जन का जीव
सदा बुराई की कामना करता है;
उसका पड़ोसी भी
उसकी आंखों में दया-भाव नहीं पाता है।

11 जब ज्ञान की निन्दा करनेवाले को दण्ड
मिलता है,
तब सीधा-सादा व्यक्ति बुद्धिमान बनता है,
और जब बुद्धिमान को शिक्षा दी जाती है,
तब वह ज्ञान प्राप्त करता है।

12 धर्ममय परमेश्वर दुर्जन के कुटुम्ब पर
बुद्धिमानी से विचार करता है;
और दुर्जनों को विनाश के गड्ढे में फेंक
देता है।

13 जो मनुष्य गरीब की दुहाई सुनकर
कान बन्द कर लेता है,
वह जब स्वयं सहायता के लिए पुकारेगा
तब उसकी दुहाई भी नहीं सुनी जाएगी।

14 गुप्त रूप से दिया गया उपहार
क्रोध को शान्त कर देता है;

* मूल में 'दीपक'।

21 : 3 1 शम 15 : 22; हो 6 : 6 21 :9 नीति 25 : 24; प्रव 25 : 16 21 : 13 याक 2 : 13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

चुपके से दी गई भेंट से
क्रोधाग्नि भी ठण्डी पड़ जाती है।

15 धार्मिक मनुष्य न्याय का काम कर अपने
हृदय में आनन्द अनुभव करता है;
पर दुर्जन हताश हो जाता है।

16 जो मनुष्य समझ के मार्ग से भटक जाता है,
वह अन्त में मृतकों के समाज में ही
ठिकाना पाता है।

17 जो भोग-विलास को गले लगाता है
वह अन्त में कंगाल हो जाता है,
शराब-कबाब से प्रेम करनेवाला
कभी धनवान नहीं बन सकता।

18 धार्मिक मनुष्य के लिए दुर्जन को
मूल्य चुकाना पड़ता है,
और विश्वासघाती को निष्कपट लोगों के
लिए!

19 झगड़ालू और चिड़चिड़े स्वभाव की पत्नी
के साथ रहने की अपेक्षा
मरुस्थल में रहना अच्छा है।

20 बुद्धिमान मनुष्य के घर में
अपार धन-दौलत जमा रहती है,
किन्तु मूर्ख मनुष्य उसको पानी की तरह
बहा देता है।

21 धार्मिकता और करुणा की खोज में रहनेवाला
मनुष्य
दीर्घ जीवन और सम्मान पाता है।

22 बुद्धिमान सेनापति शूरवीर शत्रुओं के नगर
पर भी कब्जा कर लेता है;
जिस किले पर उनको भरोसा था,
उसको वह खण्डहर बना देता है।

23 जो मनुष्य अपने मुह में लगाम देता है,
और जीभ को वश में रखता है,
वह अपने प्राण को विपत्तियों से बचाता है।

24 जो मनुष्य घमण्डी और हठी है,
जो अहंकार में डूबकर काम करता है,
उसको ज्ञान की हंसी उड़ानेवाला कहते हैं।

25 आलसी मनुष्य की इच्छाएं ही
उसको मार डालती हैं;
क्योंकि वह अपनी इच्छा की पूर्ति के लिए
हाथों से काम नहीं करता।

26 दुर्जन दिन भर लालच के जाल में फंसा
रहता है;
परन्तु धार्मिक मनुष्य उदारता से दान देता
है,
और कंजूसी नहीं करता है।

27 दुर्जनों के द्वारा चढ़ाई गई बलि
प्रभु की दृष्टि में घृणित वस्तु है;
तब बुरे उद्देश्य से चढ़ाई गई बलि
कितनी घृणित होगी।

28 झूठा गवाह निस्सन्देह नष्ट हो जाएगा;
परन्तु जो मनुष्य सच्चा है, वह सुनता है,
उसके शब्द नष्ट नहीं होंगे।

29 दुर्जन के चेहरे पर कठोरता झलकती है,
पर निष्कपट मनुष्य
अपने आचरण पर ध्यान देता है।

30 प्रभु के विरुद्ध मनुष्य की
न बुद्धि, न समझ और न सम्मति टिक पाती
है।

31 युद्ध के दिन विजय के लिए
घोड़ा कसा जाता है,
पर युद्ध में विजय प्रभु ही देता है।

22 यदि मनुष्य को कीर्ति और
अपार धन-सम्पत्ति के बीच
चुनाव करना पड़े
तो उसको कीर्ति ही चुनना चाहिए।
सोने और चांदी से अधिक बहुमूल्य है
जनता की प्रसन्नता।

---

21 : 21 मत 5 : 6 21 : 27 प्रव 7 : 9 21 : 30 यश 8 : 10 21 : 31 भज 20 : 7

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

2 समाज में अमीर और गरीब
एक-साथ रहते हैं;
प्रभु ही उन-सब का सृजक है।

3 चतुर मनुष्य खतरे को देख कर
अपने को छिपा लेता है;
पर भोला मनुष्य
खतरे के मुंह में चला जाता है,
और कष्ट भोगता है।

4 जो मनुष्य नम्र है,
और प्रभु की भक्ति करता है,
उसको प्रतिफल में मिलता है :
धन, सम्मान और दीर्घ जीवन।

5 कुटिल मनुष्य के मार्ग में
कांटे और जाल बिछे रहते हैं;
जो मनुष्य अपने प्राण की रक्षा करना चाहता है,
वह उनसे दूर रहता है।

6 बच्चे को उस मार्ग की शिक्षा दो
जिस पर उसको चलना चाहिए;
और वह बुढ़ापे में भी उससे नहीं हटेगा।

7 धनवान गरीब पर शासन करता है;
उधार लेने वाला साहूकार का गुलाम होता है।

8 जो मनुष्य अन्याय के बीज बोता है,
वह विपत्ति की फसल काटता है;
उसके क्रोध की छड़ी टूट जाती है।

9 जिसकी आंखों में उदारता झलकती है,
उसको प्रभु आशिष देता है,
क्योंकि वह अपने हिस्से की रोटी
गरीब को खिलाता है।

10 ज्ञान की हंसी उड़ानेवाले को निकाल दो,
तो लड़ाई-झगड़ा भी दूर हो जाएगा;
गाली-गलौज, वाद-विवाद शान्त हो जाएगा।

11 जो मनुष्य अपने हृदय को
शुद्ध रखना पसन्द करता है;
जिसकी बातों में मिठास होती है,
राजा उसको अपना मित्र बनाता है।

12 प्रभु की आंखें
बुद्धिमान की चौकसी करती हैं;
परन्तु वह विश्वासघाती को
उसके दुर्वचनों के कारण उलट देता है।

13 आलसी मनुष्य घर के बाहर निकल कर
परिश्रम करना नहीं चाहता,
अत: वह कहता है;
'बाहर सिंह है;
वह मुझे चौक में मार डालेगा।'

14 चरित्रहीन स्त्री का मुंह
मानो गहरा गड्ढा है;
प्रभु जिससे नाराज होता है,
वह मनुष्य उस गड्ढे में गिरता है।

15 बालक के हृदय में
मूढ़ता की गांठ होती है,
पर अनुशासन की छड़ी
उस को खोलकर
उसे दूर कर देती है।

16 जो मनुष्य अपना धन
बढ़ाने के लिए
अथवा धनवानों को भेंट चढ़ाने के लिए
गरीब पर अत्याचार करता है,
वह स्वयं अभावग्रस्त होगा।

विद्वानों के तीस नीतिवचन

17 विद्वानों के ये वचन हैं :
मेरी ओर कान लगाओ
और ध्यान से मेरी बातें सुनो,
ज्ञान की बातों पर मन लगाओ,
जो मैं तुमसे कहूंगा।
18 यदि तुम इन बातों को
अपने हृदय में धारण करोगे

22 : 2 नीति 26 : 13; अय्य 31 : 1; मत 5 : 45 **22 : 6** प्रव 6 : 18 **22 : 8** अय्य 4 : 8 **22 : 9** लू 14 : 13-14
22 : 13 नीति 26 : 13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और ये तुम्हारे ओंठों से निकला करेंगी
तो यह आनन्द की बात होगी।
19 तुम प्रभु पर भरोसा करो,
इसलिए मैंने तुमसे
ज्ञान की ये बातें कहीं हैं।

20 मैंने तुम्हारे हित और ज्ञान के लिए
तीस नीतिवचन लिखे हैं,
21 जिससे तुम्हें मालूम हो जाए
कि उचित मार्ग क्या है, सत्य क्या है,
और तुम लौटकर अपने भेजनेवालों को
सच्चा उत्तर दे सको:

22 किसी गरीब को मत लूटना
क्योंकि वह गरीब है;
और न अदालत में
किसी पीड़ित का दमन करना।
23 क्योंकि स्वयं प्रभु उनका मुकद्दमा लड़ेगा,
और वह उनका प्राण ले लेगा,
जो गरीबों और पीड़ितों को लूटते हैं।

24 जिस मनुष्य का स्वभाव क्रोधी है,
उससे मित्रता मत करना;
तुरन्त नाराज होनेवाले मनुष्य के साथ
मत रहना।
25 अन्यथा तुम भी
उसका आचरण सीख जाओगे,
और अपने प्राण को फंदे में फंसाओगे।

26 उन लोगों के समान मत बनो,
जो दूसरों की जमानत देते हैं,
जो कर्जदारों का कर्ज चुकाने के लिए
वचन देते हैं।
27 क्योंकि यदि चुकाने के लिए
तुम्हारे पास कुछ न होगा
तो साहूकार तुम्हारा बिस्तर भी तुमसे
ले लेगा।

28 जो सीमा-चिह्न तुम्हारे पूर्वजों ने गाड़ा है,
उसको मत हटाना।

29 यदि तुम्हें ऐसा मनुष्य दिखाई दे
जो अपने काम में माहिर है,
तो समझ जाना कि
वह उच्च पद पर नियुक्त होगा,*
वह साधारण नौकरी नहीं करेगा।

23 यदि तुम उच्च पदाधिकारी के साथ
भोजन करने के लिए बैठोगे
तो ध्यान में रखना कि
तुम्हारे सामने कौन बैठा है।
2 यदि तुम बहुत भोजन खाते हो
तो उस समय थोड़ा ही खाना।
3 उसकी स्वादिष्ट चीजों का लालच मत करना,
क्योंकि वह धोखे का भोजन है।

4 पूंजीपति बनने के लिए
अपना पसीना मत बहाना;
इस लोभ के बचने में ही
बुद्धिमानी है।

5 धन-सम्पत्ति चंचल होती है,
पलक झपकते वह
हाथ से निकल जाती है;
मानो उसको पंख उग आते हैं,
और वह गरुड़ के समान तीव्र गति से
आकाश की ओर उड़ जाती है।

6 कंजूस मनुष्य की रोटी मत खाना,
और न उसके स्वादिष्ट भोजन का लालच
करना;
7 क्योंकि वह मुंह से तो कहता है,
'खाइये, खाइये।'
पर वह मन में कुढ़ता है,
और हृदय से तुम्हारा स्वागत नहीं करता।
8 जो कौर तुम खाओगे,
उसको तुम उगल दोगे;
कंजूस से की गई तुम्हारी मीठी बातें भी व्यर्थ
हो जाएंगी।

9 तुम मूर्ख मनुष्य से ज्ञान की बातें मत कहना,
क्योंकि वह तुम्हारे वचनों को तुच्छ समझेगा।

10 दूसरे की भूमि को हड़पने के लिए

* अथवा 'राजाओं के सम्मुख खड़ा होगा'।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पुराना सीमा-चिह्न मत हटाना;
और न अनाथ बच्चे के खेतों को हड़पना।
11 क्योंकि उनको छुड़ानेवाला प्रभु बलवान है;
वह तुम्हारे विरुद्ध और उनके पक्ष में
मुकद्दमा लड़ेगा।

12 शिक्षा में मन लगाना
और ज्ञान की बातों पर ध्यान देना।

13 बालक को दण्ड देने में मत हिचकना;
यदि तुम उसको छड़ी से मारोगे,
तो वह मर नहीं जाएगा;
14 बल्कि तुम उसको छड़ी से मार कर उसका
प्राण अधोलोक में पड़ने से बचाओगे।

15 मेरे पुत्र+, यदि तेरे हृदय में
बुद्धि का निवास है
तो मेरा हृदय भी आनन्दित होगा।
16 जब तेरे मुंह से विवेकपूर्ण बातें निकलती हैं,
तब मेरी आत्मा हर्षित होती है।

17 मेरे पुत्र, पापियों की सफलता को देखकर
उनसे ईर्ष्या मत करना;
परन्तु प्रति दिन प्रभु की भक्ति
निरन्तर करते रहना।
18 निस्सन्देह सुबह फिर होगी,
और तेरी आशा पर तुषार-पात न होगा।

19 मेरी बातों को सुन,
और बुद्धिमान बन।
सदाचरण पर मन लगा।

20 शराबियों के साथ मत रह,
और उनके साथ
जो मांस खूब खाते हैं।
21 क्योंकि शराबी और पेटू आदमी
अपनी आदत से गरीब हो जाते हैं;
उनकी उंघाई
उनको फटे चीथड़े पहना देती है।

22 मेरे पुत्र, जिसने तुझे उत्पन्न किया है,
उस पिता की बात पर ध्यान देना;
जब तेरी मां बूढ़ी हो जाए
तब भी उसकी उपेक्षा मत करना।

23 सच्चाई को बेचना नहीं,
वरन् उसको खरीदना;
बुद्धि, शिक्षा और समझ को मोल लेना।

24 धार्मिक पुत्र का पिता
उसके कारण अत्यन्त आनन्द मनाता है,
निस्सन्देह जिस पिता ने
बुद्धिमान पुत्र को उत्पन्न किया है,
वह हर्षित होता है।
25 मेरे पुत्र, तेरे कारण
तेरे माता-पिता आनन्द मनाएँ;
तुझे जन्म देनेवाली मां हर्षित हो।

26 मेरे पुत्र, अपना मन मेरी ओर लगा;
तेरी दृष्टि मेरे आचरण पर लगी रहे।

27 वेश्या मानो गहरा गड्ढा है।
व्यभिचारिणी स्त्री अन्धे कुंए के समान है।
28 वह लुटेरे के समान घात लगाकर बैठती है;
उसके कारण अनेक पुरुष
पत्नी से विश्वासघात करते हैं।

29 कौन दु:खी है?
कौन शोक मनाता है?
कौन लड़ाई-झगड़ा करता है?
कौन शिकायत करता है?
अकारण ही कौन घायल होता है?
किसकी आंखें लाल रहती हैं?
30 वे, जो देर तक शराब पीते हैं,
जो मसाला-मिश्रित मदिरा की तलाश में
यहां-वहां भटकते हैं।
31 लाल-लाल शराब की ओर नज़र मत
उठाना;
क्योंकि जब वह प्याले में ढाली जाती है
तब सीधे पेट में उतर जाती है।
32 तब अन्त में
वह सांप के सदृश डसती है,

+ अथवा, "प्रिय शिष्य"।
23 : 17 भज 37 : 1 23 : 28 व्य 19 : 14

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

करैत सर्प के समान काटती है।
33 शराब पीने के बाद
तुझे आंखों से विचित्र वस्तुएं दिखाई देंगी;
तू उलटी-सीधी बातें कहेगा।
34 तुझे ऐसा अनुभव होगा
मानो तू समुद्र के तल में पड़ा है,
मानो तू मस्तूल की चोटी पर खड़ा है।
35 तू कहेगा, 'लोगों ने मुझे मारा,
पर मुझे चोट नहीं लगी।
उन्होंने मुझे पीटा
लेकिन मुझे पीड़ा नहीं हुई।
मुझे होश कब होगा
कि मैं दूसरा पैग पीऊं?'

24 दुर्जनों की सम्पत्ति देखकर
उनसे ईर्ष्या मत करना,
और न उनकी संगति की इच्छा करना।
2 वे सदा हिंसा की बातें सोचते हैं,
उनके मुंह से अनिष्ट की बातें निकलती हैं।

3 घर बुद्धि से बनता है,
और वह समझ के द्वारा सुदृढ़ होता है।
4 उसके कमरे ज्ञान के द्वारा
बहुमूल्य और मनोहर वस्तुओं से भर जाते हैं।

5 बलवान से बुद्धिमान
और शक्तिमान से ज्ञानवान
अधिक शक्तिशाली होता है।
6 क्योंकि बुद्धिमान मनुष्यों के निर्देशन में
तुम युद्ध जीत सकते हो;
अनेक सलाहकारों के होने से
विजय निश्चित होती है।

7 मूर्ख के लिए
बुद्धि उसकी पहुंच से परे होती है;
वह सभा में अपना मुंह नहीं खोलता।

8 जो मनुष्य बुरे काम करने की योजनाएं बनाता है,
उसको लोग दुष्कर्मी कहते हैं।
9 मूर्खतापूर्ण सोच-विचार भी पाप है,
ज्ञान की हंसी उड़ानेवाले से
लोग घृणा करते हैं।

10 यदि तुम संकटकाल में हताश हो जाते हो
तो निस्सन्देह तुम में शक्ति का अभाव है।
11 जिनको मृत्यु के घाट पर लाया जा रहा है,
उनको छुड़ाओ;
वध होनेवालों को बचाओ!

12 यदि तू कहेगा,
'हम उनको नहीं जानते।'
तो, मेरे पुत्र,
हृदय को तौलनेवाला परमेश्वर
तेरे विचार को जानता है;
तेरी आत्मा की चौकसी करनेवाला परमेश्वर
तेरा अभिप्राय जानता है।
क्या वह तेरे कर्म के अनुसार
तुझे फल नहीं देगा?

13 मेरे पुत्र, शहद खा,
क्योंकि वह अच्छा है।
शहद के छत्ते से टपकनेवाली बून्दें
स्वाद में मीठी होती हैं।
14 यह बात जान ले, कि
तेरे प्राण को भी
बुद्धि ऐसी ही मीठी लगेगी।
यदि तू बुद्धि को पा लेगा
तो तेरा भविष्य सुखद हो जाएगा,
तेरी आशा पर तुषार-पात न होगा।

15 दुर्जन धार्मिक मनुष्य के घर को नष्ट करने के लिए
घात लगाकर बैठता है;
तू ऐसा मत करना।
धार्मिक मनुष्य के निवास-स्थान को मत उजाड़ना।
16 क्योंकि धार्मिक मनुष्य सात बार गिरकर भी
फिर खड़ा हो जाता है,
किन्तु दुर्जन विपत्ति के बवण्डर में जड़ से

---

24 : 6 लू 14 : 31 **24 : 16** मी 7 : 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उखड़ जाता है।

17 मेरे पुत्र, अपने शत्रु के पतन से आनन्दित
मत होना;
जब उसको ठोकर लगे
तब तू हृदय में आनन्द मत मनाना।
18 अन्यथा प्रभु यह देखकर अप्रसन्न होगा,
और उस पर से अपनी कोपपूर्ण दृष्टि हटा
लेगा।

19 दुष्कर्मियों के वैभव के कारण
मत कुढ़ना,
दुर्जनों की सफलता के कारण
उन से द्वेष न करना;
20 क्योंकि बुरे काम करनेवाले मनुष्य का
भविष्य अन्धकारमय होता है;
दुर्जन का जीवन-दीप बुझ जाएगा।

21 मेरे पुत्र, देश के राजा से डरना,
तथा प्रभु का भय मानना;
उनकी आज्ञाओं की उपेक्षा मत करना।*
22 वे अचानक विपत्ति ढाहते हैं।
कौन जानता है कि
वे किस प्रकार की विपत्ति ढाहेंगे?

विद्वानों के अन्य नीतिवचन

23 विद्वानों ने यह भी कहा है:
न्याय करते समय
पक्षपात करना अनुचित है।
24 जो न्यायाधीश दुर्जन से यह कहता है:
'तू निर्दोष है!'
उसको जनता शाप देगी,
लोग उससे घृणा करेंगे।
25 किन्तु दुर्जन को डांटनेवाले न्यायाधीश
जनता की दृष्टि में आदरणीय होंगे,
उन पर शुभ आशिषों की वर्षा होगी।

26 जो सही उत्तर देता है,
वह सच्ची मित्रता प्रकट करता है।

27 पहले अपने घर के बाहर का काम पूरा करो,
अपने खेत को तैयार रखो,
तब अपना घर बसाना।

28 अकारण अपने पड़ोसी के विरुद्ध साक्षी मत
देना;
उसको झूठी बातों से धोखा भी मत देना।
29 उसके विषय में यह मत कहना:
'जैसा उसने मेरे साथ किया है
वैसा ही मैं उसके साथ करूँगा।
जो व्यवहार उसने मेरे साथ किया है,
उसका प्रतिफल मैं उसको दूंगा।'

30 मैं एक दिन आलसी मनुष्य के खेत से,
एक मूर्ख किसान के अंगूर-उद्यान से
गुजरा।
31 तो मैंने देखा कि
खेत में कंटीली झाड़ियां उग आयी हैं,
भूमि बिच्छू पौधे से ढक गई है;
उसकी पत्थर की दीवार भी गिर गई है।
32 यह देखक मैंने विचार किया,
खेत-उद्यान पर दृष्टि डाली
तो यह शिक्षा मिली:
33 'यदि तू काम के समय
थोड़ी भी नींद लेगा, थोड़ी झपकी लेगा,
छाती पर हाथ रखकर थोड़ा आराम करेगा,
34 तो डाकू के समान
गरीबी तुझ पर टूट पड़ेगी,
हथियार-बन्द शत्रु के सदृश
अभाव तुझे घेर लेगा।'

राजा सुलेमान के शेष नीतिवचन

25 ये नीतिवचन भी राजा सुलेमान के हैं।
इन्हें यहूदा प्रदेश के राजा हिजकियाह
के लिपिकों ने चर्म-पत्रों पर उतारा था। राजा
सुलेमान कहता है:
2 यह परमेश्वर की महिमा है
कि रहस्य, रहस्य बना रहे;

---

* अथवा 'विरोध करनेवालों का साथ मत देना'।

24 : 19 भज 37 : 1 **24 : 21** 1 पत 2 : 17 **24 : 23** नीति 18 : 5; व्य 1 : 17 **24 : 29** मत 39 **24 : 33** नीति 6 : 10 **25 : 2** व्य 29 : 29; रोम 11 : 33

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पर राजा की महिमा तब होती है,
जब वह रहस्यों से परदा उठाता है।
3 जैसे आकाश की ऊंचाई
और पृथ्वी की गहराई
नापी नहीं जा सकती,
वैसे ही राजा के मन में क्या है,
यह जाना नहीं जा सकता।
4 चांदी में से धातु-मैल निकाल लेने के पश्चात्
चांदी शुद्ध हो जाती है,
और सुनार उससे पात्र बनाता है।
5 ऐसे ही:
राजा के दरबार से दुर्जन को
निकालने के पश्चात्
राजा का सिंहासन
धर्म की नींव पर सुदृढ़ हो जाता है।

6 राजा के सामने बार-बार मत मंडराना,
और न दरबार में
प्रमुख आसन पर बैठना;
7 ऐसा न हो कि तुझे लज्जित होकर
उच्चाधिकारी के लिए प्रमुख आसन
छोड़ना पड़े।
तेरी प्रशंसा तब होगी
जब तुझसे यह निवेदन किया जाएगा:
'आप इस प्रमुख आसन पर बैठिए।'

8 पड़ोसी की जो बात तेरी आंखों ने देखी है,
उसका फैसला कराने के लिए
तुरन्त अदालत मत जाना:
क्योंकि यदि तेरा पड़ोसी
तुझे अदालत में झूठा सिद्ध कर देगा
तो तू अन्त में क्या करेगा?
9 यदि पड़ोसी के साथ तेरा मतभेद है
तो आपस में बातचीत के द्वारा हल कर लेना;
और एक-दूसरे का भेद मत खोलना।
10 अन्यथा सुननेवाले तेरी निन्दा करेंगे,
और तेरे अपयश का कभी अन्त न होगा।

11 ठीक अवसर पर कही गई बात
मानो चांदी की थाली में सोने का सेब है।

12 डांट-डपट को माननेवाले
मनुष्य के कान में
ताड़ना के शब्द वैसे ही कीमती होते हैं,
जैसे सोने की बाली अथवा स्वर्ण आभूषण।

13 जैसे फसल-कटाई की गर्म दोपहर में
शीतल जल हृदय में स्फूर्ति भर देता है,
वैसे ही सच्चा सन्देशवाहक
अपने भेजने वाले मालिकों के लिए होता
है;
वह अपने स्वामी की आत्मा को संजीवन
कर देता है।

14 जो मनुष्य दान देने की शेखी मारता है,
पर दान देता नहीं,
वह उस हवा और उन बादलों के समान है,
जो गरजते हैं, पर बरसते नहीं।

15 धीरज रखकर शासक को समझाया जाता
है;
कोमल रस्सी पत्थर को भी काट देती है।

16 यदि तुझे शहद खाना पड़े
तो उतना ही खाना,
जितना आवश्यक हो।
क्योंकि अधिक खाने पर
तू उल्टी कर देगा।

17 अपने पड़ोसी के घर बार-बार मत जाना;
अन्यथा वह तुझसे ऊब जाएगा
और तुझसे घृणा करने लगेगा।

18 जो मनुष्य अपने पड़ोसी के विरुद्ध
झूठी साक्षी देता है,
वह मानो गदा, या तलवार या पैना तीर है।

19 संकट में विश्वासघाती मनुष्य पर भरोसा
करना
मानो सड़े हुए दांत पर
अथवा टूटे हुए पैर पर भरोसा करना है।

20 जिस मनुष्य का हृदय उदास है,

25 : 6 लू 14 : 8-11 **25 : 15** लू 18 : 1-8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उसके सामने गीत गानेवाला
उस व्यक्ति के समान नासमझ है,
जो शीत ऋतु में अपने वस्त्र उतार देता है,
जो जले पर नमक छिड़कता है।

21 यदि तेरा शत्रु भूखा है
तो उसको खाने के लिए भोजन दे।
यदि वह प्यासा है
तो उसको पीने के लिए पानी दे।
22 यों तू उसको अपने इस दयापूर्ण व्यवहार से
पानी-पानी कर देगा,
और प्रभु तुझ को इसका फल देगा।

23 जैसे मौसमी हवा
अपने साथ वर्षा लाती है;
वैसे ही चुगलखोर जीभ
क्रुद्ध दृष्टि उत्पन्न करती है।

24 झगड़ालू पत्नी के साथ
घर में रहने की अपेक्षा,
छत के कोने में पड़े रहना अच्छा है।

25 जैसे प्यासे प्राण के लिए
शीतल जल स्फूर्तिदायक होता है;
वैसे ही दूर देश से आया शुभ समाचार।

26 जब धार्मिक मनुष्य का
दुर्जन के सम्मुख नैतिक पतन हो जाता है
तब वह मानो कीचड़ भरा झरना,
अथवा विष भरा जलकुण्ड बन जाता है।

27 जैसे भरपेट शहद खाना अच्छा नहीं;
वैसे ही अधिक खुशामद करना ठीक नहीं।

28 जो मनुष्य अपने पर संयम नहीं रखता,
वह उस तहस-नहर नगर के समान है,
जिसकी शहरपनाह ध्वस्त कर दी गई है।

26 जैसे ग्रीष्म ऋतु में बरफ का गिरना,
जैसे फसल की कटनी के समय
पानी का बरसना ठीक नहीं,
वैसे ही मूर्ख का सम्मान करना अनुचित है।

2 जैसे गौरैया और सूपावेनी
आकाश में उड़ते समय नहीं ठहरतीं,
वैसे ही अकारण दिया गया शाप भी
मनुष्य पर नहीं ठहरता।

3 घोड़े के लिए लगाम,
गधे के लिए छड़ी
और मूर्ख की पीठ के लिए बेंत उचित है।

4 मूर्ख की मूर्खता भरी बातों का उत्तर मत देना;
अन्यथा तू भी उसी के समान मूर्ख बन
जाएगा।

5 मूर्ख को उसकी मूर्खता के अनुरूप उत्तर देना;
अन्यथा वह स्वयं को अपनी दृष्टि में बुद्धिमान
समझेगा।

6 जो मनुष्य मूर्ख के हाथ से सन्देश भेजता है,
वह मानो अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारता है,
वह मानो विपत्ति मोल लेता है।

7 जैसे पंगु मनुष्य के पैर व्यर्थ लटकते रहते हैं,
वैसे ही मूर्ख के मुंह में
नीति के वचन व्यर्थ लगते हैं।

8 मूर्ख मनुष्य को सम्मान देना,
मानो सूअर के आगे मोती डालना है।*

9 मूर्ख मनुष्य के मुंह में नीतिवचन ऐसे लगते
हैं,
मानो शराबी के हाथ में कांटों की शाख!

10 जो मालिक राह चलते शराबी
या मूर्ख को काम पर लगाता है,
वह मानो ऐसा तीरंदाज है,
जो अकारण सबको घायल करता है।

11 जो मूर्ख बार-बार मूर्खता के काम करता है,
वह मानो कुत्ते के समान अपनी उल्टी को
चाटता है।

12 यदि तुझे ऐसा मनुष्य मिले,

---

* शब्दश:, ''गोफन में पत्थर बांधने के समान है।''

25 : 21 मत 5 : 44; रोम 12 : 20 **26 : 2** गण 23 : 8 **26 : 11** 2 पत 2 : 22

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जो स्वयं को अपनी दृष्टि में
बुद्धिमान मानता है,
तो उस मनुष्य से अधिक मूर्ख का भविष्य
उज्ज्वल है।

13 आलसी मनुष्य नकली डर का बहाना
बनाता है।
वह कहता है, 'रास्ते में सिंह है;
गलियों में सिंह है।'
14 जैसे किवाड़ अपने कब्जे पर घूमता है,
वैसे ही आलसी मनुष्य बिस्तर से उठना
नहीं चाहता,
और करवटें बदलता है।
15 आलसी मनुष्य भोजन की थाली में हाथ
डालता है,
पर आलस्य के कारण कौर मुंह तक
नहीं उठाता।
16 आलसी मनुष्य स्वयं को अपनी दृष्टि में सात
बुद्धिमान मनुष्यों से श्रेष्ठ समझता है,
जो सोच-समझ कर उत्तर देते हैं।

17 जो मनुष्य दूसरों के झगड़ों में हाथ डालता
है,
वह मानो आवारा कुत्ते के कान पकड़ता है।

18-19 जो मनुष्य अपने पड़ोसी को
धोखा देता है,
और बहाना बनाकर यह कहता है,
'मैं तो मजाक कर रहा था';
वह उस पागल मनुष्य के समान है,
जो लोगों पर जलती लकड़ियां फेंकता है,
जो प्राण घातक तीर मारता है।

20 जैसे लकड़ी न होने से आग बुझ जाती है,
वैसे ही कानाफूसी करनेवाले के
न होने से झगड़ा शान्त हो जाता है।
21 जैसे अंगारों में कोयला,
और आग में लकड़ी होती है
वैसे ही झगड़ालू आदमी होता है
जो झगड़े में घी का काम करता है।
22 कानाफूसी करनेवाले की बातें
कानों को प्रिय लगती हैं,
वे सीधे मन में उतर जाती हैं,
स्वादिष्ट भोजन के समान हजम हो जाती
हैं।

23 जैसे मिट्टी के बर्तन पर चांदी की कलई चढ़ी
होती है
वैसे ही जिस मनुष्य के हृदय में बुराई होती
है,
उसके ओंठ चिकनी-चुपड़ी बातें करते हैं।
24 घृणा करनेवाला मनुष्य
ओंठों से मीठी-मीठी बातें करता है,
पर हृदय में कपट रखता है।
25 जब वह मीठी-मीठी बातें करे,
तब उसकी बात पर विश्वास मत करना;
क्योंकि उसके हृदय में सात घिनौनी बातें
छिपी होती हैं।
26 यद्यपि वह अपनी घृणा को
चतुराई से छिपा लेता है;
तो भी उसकी बुराई सभा में प्रकट हो
जाएगी।

27 जो मनुष्य दूसरे के लिए गड्ढा खोदता है,
वह स्वयं उसमें गिरता है।
जो मनुष्य दूसरे के लिए फन्दा लगाता है,
वह खुद उसमें फंस जाता है।*

28 यदि झूठा मनुष्य सच्चे मनुष्य को नष्ट करे,
तो वह उससे सदा घृणा करता रहेगा;
चाटुकारी ओंठ विनाश का जाल ही बुनते
हैं।

27

आनेवाले कल के सम्बन्ध में
शेखी मत मारना;
क्योंकि तू नहीं जानता है कि
कल क्या होगा?

2 तू अपनी प्रशंसा अपने मुंह से न करना;
दूसरे लोग तेरी प्रशंसा करें तो करें।

---

* शब्दश: "दूसरे पर पत्थर लुढ़कानेवाले पर पत्थर पलटकर गिरता है।"

26 : 23 लू 11 : 39 **26 : 27** भज 7 : 15; प्रव 27 : 25-27 **27 : 1** लू 12 : 19-20; याक 4 : 13-14

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दूसरे मनुष्य के मुख से तेरी प्रशंसा हो,
यह शोभा देता है;
अपने आप मियां-मिट्ठू मत बनना।

3 पत्थर भारी होता है
रेत भी वजनदार होती है,
पर इनसे अधिक भारी होता है
मूर्ख मनुष्य का क्रोध।
4 क्रोध निर्दय होता है;
गुस्सा मनुष्य को दबोच देता है;
पर ईर्ष्या के सामने कौन ठहर सकता है?

5 प्रेम जो सक्रिय नहीं है,
उससे उत्तम है ताड़ना
जो मनुष्य को सुधारती है।
6 शत्रु के अपार प्यार से
सच्चे मित्र की मार श्रेष्ठ है।

7 जिसका पेट भरा है,
उसको शहद भी फीका लगता है;
परन्तु जिसका पेट खाली है,
उसको कड़ुवी वस्तु भी मीठी लगती है।

8 घर छोड़कर चला जानेवाला आदमी
उस पक्षी की तरह भटकता है,
जो अपने घोंसले से दूर चला गया है।

9 तेल और इत्र से हृदय प्रसन्न होता है;
किन्तु संकट से मन घबरा जाता है।**

10 अपने मित्र को, और अपने पिता के मित्र
को कभी मत छोड़ना;
अपने संकट के दिन
अपने भाई के घर में पैर मत रखना।
दूर रहनेवाले भाई से
पास रहनेवाला पड़ोसी उत्तम है।

11 मेरे पुत्र, बुद्धिमान बन,
जिससे मेरा हृदय आनन्दित हो,
और मैं उस मनुष्य का मुंह बन्द कर सकूं
जो तेरे कारण मेरी निन्दा करता है।

12 चतुर मनुष्य खतरे को देखकर स्वयं को
छिपा लेता है;
पर भोला मनुष्य खतरे के मुंह में चला जाता
है,
और कष्ट भोगता है।

13 यदि किसी मनुष्य ने अजनबी आदमी की
जमानत दी है,
तो उससे उसका वस्त्र गिरवी रख लेना;
और यदि वह विदेशी की जमानत देता है,
तो उससे बन्धक की वस्तु लेना।

14 यदि कोई मनुष्य सबेरे उठकर ऊँची आवाज
में अपने पड़ोसी को आशीर्वाद देता है,
तो यह वास्तव में शाप बन जाएगा।

15 वर्षा ऋतु में पानी का लगातार बरसना,
और झगड़ालू पत्नी,
दोनों कष्टदायक हैं।
16 जो पति झगड़ालू पत्नी को रोक सकता है,
तो वह हवा को रोक सकता है,
वह दाहिने हाथ से तेल को पकड़ सकता
है।

17 लोहे पर धार लोहे से ही होती है;
ऐसे ही मनुष्य, मनुष्य को सुधारता है।

18 जो मनुष्य अंजीर के वृक्ष की
देखभाल करता है,
उसे उसके फल खाने को मिलते हैं।
ऐसे ही जो सेवक अपने मालिक की सेवा
करता है,
मालिक उसका सम्मान करता है।

19 जैसे जल में मुख की परछाई
मुख को प्रकट करती है,
वैसे ही मनुष्य का मन
मनुष्य को प्रकट करता है।

20 जैसे अधोलोक और पाताल
मनुष्यों के शवों से कभी तृप्त नहीं होते,

** अथवा, "मित्र के हृदय से निकले उचित परामर्श से मन आनन्दित होता है।"
27 : 2 2 कुर 1 : 12 **27 : 6** मत 26 : 49

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वैसे ही मनुष्य की इच्छाएँ कभी तृप्त
नहीं होतीं।

21 जैसे चांदी की परख कुठाली पर,
और सोने की परख भट्ठी में होती है,
वैसे ही मनुष्य की परख
लोगों के द्वारा की गई
प्रशंसा से होती है।

22 चाहे तू मूर्ख को अनाज की तरह
ओखली में डालकर मूसल से
क्यों न कूटे, उसकी मूर्खता नहीं जाने की!

23 अपने पशुधन की दशा से
भली-भांति परिचित रहो;
अपने रेवड़ की देखभाल करो;
24 क्योंकि नकदी रुपया-पैसा सदा
टिकता नहीं,
और न मनुष्य का गौरव
पीढ़ी से पीढ़ी तक बना रहता है।
25 जब कटी हुई घास उठा ली जाती है,
और नई घास उगती है,
जब पहाड़ों की वनस्पति एकत्र की जाती
है,
26 तब मेमनों के ऊन से
तेरे लिए वस्त्रों की व्यवस्था होती है
और बकरों की कीमन से
तू खेत मोल लेता है।
27 बकरियों को इतना दूध होता है
कि उससे तेरे और तेरे परिवार का
पेट भरता है;
उससे तेरी दासियों का भी जीवन निर्वाह
होता है।

28 जब कोई पीछा भी नहीं करता
तब भी दुर्जन डर से भागता है;
पर धार्मिक मनुष्य सिंह के समान साहसी
होता है,
और वह निर्भयता से शत्रु का सामना करता
है।

2 जब देश में अराजकता फैल जाती है
तब अनेक लोग शासक बन जाते हैं;
किन्तु समझदार और बुद्धिमान लोगों के
कारण
राष्ट्र दीर्घ काल तक सुदृढ़ बना रहता है।

3 जब एक गरीब मनुष्य
दूसरे गरीब मनुष्य पर अत्याचार करता है,
तब उसका यह कार्य
मानो घनघोर वर्षा से फसल का सर्वनाश
होना है।

4 कानून का उल्लंघन करनेवाला मनुष्य ही
दुर्जन की प्रशंसा करता है:
पर कानून के माननेवाले व्यक्ति दुर्जन का
विरोध करते हैं।
5 दुष्कर्म करनेवाला मनुष्य
न्याय को नहीं समझता;
परन्तु प्रभु के भक्त ही उसको भली-भांति
समझते हैं।

6 कुमार्ग पर चलनेवाले धनवान से
सन्मार्ग पर चलनेवाला गरीब श्रेष्ठ है।

7 व्यवस्था का पालन करनेवाला युवक
अपने पिता का बुद्धिमान पुत्र कहलाता है;
किन्तु उड़ाने-खाने वालों के साथ रहनेवाला
जवान
अपने पिता की निन्दा का कारण बनता है।

8 जो धनवान अपना धन
ब्याज और मुनाफाखोरी से बढ़ाता है,
उसे अपना धन उस मनुष्य के लिए छोड़ना
पड़ता है
जो गरीबों पर दया करता है।

9 जो मनुष्य व्यवस्था-पाठ को नहीं सुनता,
उसकी प्रार्थना भी परमेश्वर नहीं सुनता।

10 जो आदमी निष्कपट मनुष्य को
कुमार्ग पर ले जाता है,
वह स्वयं पतन के गड्ढे में गिरता है।

28 : 1 लेव 26 : 17 28 : 5 1 कुर 2 : 15

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

किन्तु निर्दोष व्यक्ति को सुन्दर पुरस्कार
प्राप्त होता है।

11 धनवान मनुष्य स्वयं को अपनी दृष्टि में
बुद्धिमान समझता है,
परन्तु समझदार गरीब
उसकी बुद्धिमानी की वास्तविकता को
पहचान जाता है।

12 जब धार्मिक मनुष्य विजय प्राप्त करता है
तब यह सबके लिए बड़े गौरव की बात
होती है;
परन्तु दुर्जन के प्रबल होने पर
लोग डर के कारण छिप जाते हैं।

13 जो मनुष्य अपने अपराध छिपाता है
वह जीवन में उन्नति नहीं करता;
परन्तु अपने अपराध को स्वीकार करनेवाले
और उसको पुनः न करनेवाले
मनुष्य पर परमेश्वर दया करता है।

14 धन्य है वह मनुष्य
जो प्रभु की भक्ति* सदा करता है;
पर प्रभु के प्रति अपने हृदय को
कठोर बनानेवाला मनुष्य
विपत्ति के गड्ढे में गिरता है।

15 गरीब जनता पर शासन करनेवाला दुर्जन
मानो दहाड़ता हुआ सिंह है,
मानो शिकार का भूखा रीछ है।

16 जिस शासक में समझ नहीं है,
वह निर्दय अत्याचारी बन जाता है;
जो अन्याय के धन से घृणा करता है,
वह दीर्घ आयु पाता है।

17 यदि किसी मनुष्य ने दूसरे की हत्या की है,
तो वह मृत्यु पर्यन्त यहां वहां मारा-मारा
फिरे;
कोई भी व्यक्ति उसकी सहायता न करे।

18 निष्कपट आचरण करनेवाला मनुष्य
निस्सन्देह बचाया जाएगा;
किन्तु कुमार्ग पर चलनेवाला व्यक्ति
पतन के गड्ढे में गिरेगा।

19 अपने खेत में खून-पसीना बहानेवाला
किसान समृद्ध होता है;
किन्तु व्यर्थ की बातों में समय बितानेवाला
किसान घोर गरीबी में जीवन बिताता है।

20 जो ईमानदार है,
उस पर आशिषों की वर्षा होती है;
परन्तु जो मनुष्य अति शीघ्र
धनवान बनना चाहता है,
वह निर्दोष नहीं ठहरता।

21 पक्षपात करना अच्छा नहीं;
परन्तु रोटी के एक टुकड़े के लिए भी
मनुष्य अनुचित कार्य कर डालता है।

22 कंजूस मनुष्य धन कमाने के लिए तड़पता
है;
परन्तु वह नहीं जानता है कि
वह फिर अभाव का जीवन बिताएगा।

23 दूसरे की चापलूसी करनेवाले की अपेक्षा
वह मनुष्य उसका कृपापात्र बनता है
जो गलत काम के लिए उसको डांटता है।

24 जो पुत्र अपने माता-पिता के घर में चोरी
करता है,
और कहता है, "यह अपराध नहीं है"
वह घर उजाड़नेवाले का साथी है।

25 लालची मनुष्य लड़ाई-झगड़ा उभाड़ता है;
किन्तु प्रभु पर भरोसा करनेवाला
निस्सन्देह धन-सम्पन्न होगा।

26 जो मनुष्य केवल अपने ऊपर भरोसा रखता
है, वह मूर्ख है;
पर बुद्धि के मार्ग पर चलनेवाला
मनुष्य बचाया जाएगा।

---

* प्रभु से डरता है।

28 : 13 भज 32 : 5; 1 यो 1 : 8-10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

27 जो मनुष्य गरीब को उदारता से देता है,
उसे किसी प्रकार का अभाव न होगा;
किन्तु गरीब को देखकर
मुंह फेरनेवाले आदमी पर शाप पड़ता है।

28 जब दुर्जन प्रबल होता है
तब लोग डर से छिप जाते हैं;
किन्तु उसके मरने पर
धार्मिक जन बढ़ने लगते हैं।

29 जो मनुष्य बार-बार डांटे जाने पर भी
अपना हठ नहीं छोड़ता,
उसका अचानक सर्वनाश होगा,
और वह फिर नहीं सुधर सकेगा।

2 जब धार्मिक मनुष्य शासन करते हैं
तब जनता आनन्द मनाती है;
किन्तु जब दुर्जन सत्ता हथिया लेते हैं,
तब जनता शोक मनाती है।

3 बुद्धि से प्रेम करनेवाला पुत्र
अपने पिता के आनन्द का कारण बनता है,
परन्तु वेश्याओं के पास जानेवाला पुत्र
अपने पिता की धन-सम्पत्ति उड़ा देता है।

4 राजा न्याय के द्वारा
देश को स्थिर शासन देता है,
पर जो राजा जनता को लूटता है,
वह अपने देश को नष्ट कर देता है।

5 अपने पड़ोसी की चापलूसी करनेवाला मनुष्य
वास्तव में उसके पतन के लिए
जाल फैलाता है।

6 दुर्जन अपने अपराध के फन्दे में फंसता है;
किन्तु धार्मिक मनुष्य अपने धर्म के कारण
सदा गीत गाता और आनन्द मनाता है।

7 धार्मिक मनुष्य गरीब के अधिकार की रक्षा
करता है,
किन्तु दुर्जन उसको समझता नहीं।

8 हर बात की हंसी उड़ानेवाले लोग
नगर में आग लगाते हैं;
किन्तु बुद्धिमान मनुष्य
क्रोधाग्नि पर शीतल जल के छींटे डालते हैं।

9 यदि बुद्धिमान मनुष्य मूर्ख से वाद-विवाद
करता है,
तो मूर्ख क्रोध से भड़क उठता है,
वह ज्ञान की बातों को हंसी में उड़ाता है,
और सारा वातावरण अशान्त हो जाता है।

10 खून के प्यासे लोग उस मनुष्य से घृणा करते
हैं,
जो निष्कलंक है;
दुर्जन उसके प्राण की खोज में रहता है।

11 मूर्ख मनुष्य अपने क्रोध को
जोर-शोर से प्रकट करता है,
किन्तु बुद्धिमान मनुष्य शान्ति से
क्रोध को वश में करता है।

12 यदि शासक झूठी बातों को सुनता है,
तो निस्सन्देह उसके कर्मचारी भी
दुष्ट बन जाते हैं।

13 गरीब मनुष्य और अत्याचारी में
यही समानता है कि प्रभु दोनों की आंखों
को प्रकाश देता है।

14 जो राजा गरीब मनुष्य का न्याय
सच्चाई से करता है,
उसका सिंहासन सदा सुदृढ़ रहता है।

15 छड़ी की मार और डांट-डपट से
मनुष्य को ज्ञान प्राप्त होता है;
परन्तु जिस बच्चे को माता-पिता
हाथ नहीं लगाते,
वह उनके कलंक का कारण बनता है।

16 जब दुर्जन देश पर शासन करते हैं,
तब अपराध बढ़ जाते हैं;
किन्तु धार्मिक मनुष्य उनका पतन
अपनी आंखों से देखता है।

---

28 : 26 1 कुर 3 : 18 **29 : 3** लू 15 : 13 **29 : 13** नीति 22 : 2; मत 5 : 45

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

17 पिता, अपने पुत्र को अनुशासन में रख,
तब वह तुझे सुख–चैन से रहने देगा;
वह तेरे हृदय को आनन्द देगा।

18 नबियों के दर्शन के अभाव में
लोगों में प्रभु का डर नहीं रह जाता;
कन्तु धन्य है वह मनुष्य
जो व्यवस्था का पालन करता है।

19 कोरे शब्दों से सेवक नहीं सुधरता;
वह मालिक के शब्दों को समझता तो है,
पर वह उन पर ध्यान नहीं देता।

20 जो मनुष्य
बातें करने में जल्दीबाजी करता है,
वह मूर्ख से भी गया–बीता है;
उसका भविष्य अन्धकारमय है।

21 यदि मालिक गुलाम को बचपन से ही
लाड़–प्यार से पालता है,
तो गुलाम बड़ा होने पर
उसकी धन–सम्पत्ति का उत्तराधिकारी
बन बैठता है।

22 जो मनुष्य क्रुद्ध स्वभाव का है,
वह लड़ाई–झगड़ा उत्पन्न करता है,
जो क्रोध के वश में है,
वह अपराध–पर–अपराध करता है।

23 जो मनुष्य घमण्ड से भरा है,
उसको नीचा देखना पड़ता है,
किन्तु विनम्र मनुष्य
सम्मान का पात्र बनता है।

24 चोर का साथी अपने प्राण का बैरी होता है;
अदालत में शपथ खाने पर भी
वह सच्चाई को प्रकट नहीं करता।

25 जो आदमी से डरता है,
वह मानो अपने लिए जाल फैलाता है;
कन्तु प्रभु से डरनेवाला मनुष्य
सुरक्षित रहता है।

26 न्याय के लिए अनेक लोग
शासक का कृपापात्र बनना चाहते हैं;
परन्तु केवल प्रभु से ही
मनुष्य न्याय पाता है।

27 जैसे अधार्मिक मनुष्य से
धार्मिक मनुष्य घृणा करता है;
वैसे ही निष्कपट व्यक्ति से
दुर्जन घृणा करता है।

आगूर बेन–याकेह के नीतिवचन

30 मस्सा नगर के आगूर बेन–याकेह* के
नीतिवचन। आगूर ने दुःख में कहा:
''परमेश्वर मेरे साथ नहीं है;**
निस्सन्देह वह मेरे साथ नहीं है;
मैं निस्सहाय हो गया हूं।
2 निश्चय ही मैं मनुष्य नहीं,
वरन् पशु बन गया हूँ।
मुझ में मनुष्य की समझ नहीं रही।
3 मैंने बुद्धि को पाने का प्रयत्न नहीं किया,
और न पवित्र परमेश्वर का ज्ञान मुझे मिला।

4 ''कौन मनुष्य स्वर्ग में जाकर
फिर पृथ्वी पर लौटा है?
कौन आदमी अपनी मुट्ठी में
हवा को पकड़ सका है?
कौन व्यक्ति वस्त्र में महासागर को लपेट
सका है?
किसने पृथ्वी के सब सीमान्तों को स्थिर
किया है?
उसका नाम क्या है?
उसके पुत्र का क्या नाम है?
यदि तुम जानते हो तो बताओ।

5 ''परमेश्वर की प्रत्येक प्रतिज्ञा
कसौटी–सिद्ध है।
जो मनुष्य परमेश्वर की शरण में आते हैं,
वह उनकी रक्षा ढाल जैसे करता है।

---

* अर्थात् 'याकेह का पुत्र आगूर' ** मूल में 'ईतीएल' और 'उक्काल'।
29 : 17 नीति 13 : 14 29 : 19 प्रव 33 : 25–30 29 : 23 मत 23 : 12 29 : 24 लेव 5 : 1 30 : 4 यो 3 : 13
अय्य 38 : 4–6 30 : 5 भज 18 : 30

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

6 परमेश्वर के वचनों में घट-बढ़ मत करो;
अन्यथा वह तुम को प्रताड़ित करेगा,
और तुम झूठे कहलाओगे।

7 "हे परमेशवर, मैं तुझ से दो वरदान मांगता हूं।
मेरे मरने के पहले,
उन्हें देने से इन्कार मत कर।
8 पहला वरदान:
छल-कपट और झूठ से मुझे बचा।
दूसरा वरदान:
न मुझे धन दे, और न गरीबी।
केवल उतना भोजन दे
जो मेरे जीवन के लिए आवश्यक है;
9 अन्यथा मैं भरपेट खाने पर
तेरी महिमा से इन्कार कर दूंगा,
और गर्व से कहूंगा, 'प्रभु है कौन?'
अथवा गरीब होने पर मैं चोरी करने लगूंगा;
और यों तेरे पवित्र नाम को कलंकित करूंगा।

10 "सेवक की चुगली
उस के स्वामी से न करना;
ऐसा न हो कि वह तुझे शाप दे,
और तुझे भुगतना पड़े।

11 "संसार में कुछ लोग हैं,
जो अपने माता-पिता को शाप देते हैं;
वे उनका भला नहीं चाहते।
12 संसार में कुछ मनुष्य हैं
जो स्वयं को अपनी दृष्टि में शुद्ध मानते हैं;
किन्तु वे गन्दे हैं।
उनकी गन्दगी धुली नहीं है।
13 संसार में कुछ आदमी हैं
जिनकी आंखें घमण्ड से भरी रहती हैं,
जिनकी भौंहें गर्व से चढ़ी रहती हैं।
14 संसार में कुछ लोग हैं,
जिनके दांत मानो तलवार हैं,
छूरी जैसे तेज हैं;
वे पृथ्वी की सतह से गरीबों को,
समाज में दीन-दरिद्रों को फाड़ खाते हैं।"

संख्यात्मक नीतिवचन

15 जोंक की दो बेटियां होती हैं,
जो सदा पुकारती हैं, 'दो', 'दो'।
इसी प्रकार तीन वस्तुएं कभी तृप्त नहीं होतीं,
चार वस्तुएं कभी नहीं कहतीं, 'बस'।
16 अधोलोक, बांझ स्त्री की कोख,
पानी के लिए प्यासी धरती,
और अग्नि, कभी नहीं कहती, 'बस'।

17 जो आंख पिता को टेढ़ी नजर से देखती है,
मां की आज्ञा को अनदेखा करती है,
उसको घाटी के कौए
खोद-खोद कर निकालेंगे,
उसको गिद्ध के बच्चे खाएंगे।

18 तीन बातें मेरे लिए बहुत कठिन हैं;
नहीं चार बातें मेरी समझ में नहीं आतीं:
19 गरुड़ का आकाश में उड़ना,
सांप का चट्टान पर चलना,
समुद्र में जहाज का तैरना
और स्त्री के साथ पुरुष का व्यवहार।

20 यह व्यभिचारिणी स्त्री का आचरण है:
जैसे भोजन के बाद मनुष्य मुंह पोंछता है,
वैसे ही व्यभिचारिणी स्त्री
व्यभिचार कर्म के बाद कहती है,
"मैंने कोई बुरा काम नहीं किया।"

21 तीन बातों के कारण धरती कांप उठती है;
नहीं, वह ये चार बातें सहन नहीं कर सकती:
22 जब कोई गुलाम राजा बन जाता है,
जब मूर्ख मनुष्य को भरपेट खाना मिलता है,
23 जब कुलटा स्त्री का विवाह होता है,
और जब घर की नौकरानी
अपनी मालकिन को हटाकर
पैतृक सम्पत्ति पर कब्जा कर लेती है।

---

30 : 8 मत 6 : 11 **30 : 9** व्य 8 : 12 **30 : 19** प्रज्ञा 5 : 10-12 **30 : 22** सभ 10 : 7

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

24 धरती पर ये चार प्राणी छोटे माने जाते हैं,
किन्तु ये बड़े बुद्धिमान होते हैं:
25 चींटियां कीड़े–मकोड़ों में निर्बल होती हैं;
पर वे वर्ष भर के लिए भोजन
ग्रीष्म काल में इकट्ठा कर लेती हैं।
26 चट्टानी बिज्जू जीव–जन्तुओं में निर्बल होता है,
किन्तु वह अपना घर मजबूत चट्टानों में बनाता है।
27 टिड्डियों में कोई राजा नहीं होता,
फिर भी वे सैन्य दल के सदृश
पंक्ति में चलती हैं।
28 छिपकली इतनी छोटी होती है
कि तुम उसको हथेली पर ले सकते हो;
तो भी वह राजमहलों में रहती है।

29 तीन प्राणियों की चाल आकर्षक होती है,
नहीं, चार प्राणी जब चलते हैं
तब हृदय को मुग्ध कर देते हैं:
30 पशुओं का राजा सिंह,
जो किसी भी पशु से नहीं डरता है;
31 मुर्गियों के मध्य मुर्गा,
बकरा;
तथा राजा,
जब वह अपनी जनता के आगे–आगे चलता है।

32 यदि तूने अपनी प्रशंसा
करने की मूर्खता की है,
यदि तूने दुष्कर्म करने का
षड्यन्त्र रचा है,
तो अपने मुंह को बन्द रख।

33 जैसे दूध को मथने से मक्खन,
और नाक को मरोड़ने से खून निकलता है,
वैसे ही क्रोध को उभाड़ने से
झगड़ा उत्पन्न होता है।

राजा को सलाह

31 मस्सा नगर के राजा लमूएल के नीतिवचन।
ये बातें उसकी मां ने उसे सिखाई थीं।
2 मां ने कहा,
"मेरे पुत्र, मेरे गर्भ से जन्मे पुत्र,
मेरी मन्नतों के पुत्र,
मैं तुझसे क्या कहूं?
3 अपनी शक्ति स्त्रियों के साथ
भोग–विलास में मत नष्ट करना,
और न अपने जीवन की लगाम
उनके हाथ में देना
जो राजाओं को बर्बाद कर देती हैं।

4 "ओ लमूएल, शराब राजा के लिए नहीं होती;
राजाओं को मदिरा–पान शोभा नहीं देता;
शासकों के मुंह में शराब नहीं फबती।
5 शराब के नशे में
वे कानून–कायदे भूल जाते हैं,
और पीड़ित जनों का हक मारते हैं।
6 शराब उनके लिए है जो मरने पर हैं,
जो घोर दुःख में डूबे हुए हैं।
7 वे शराब पीकर अपनी गरीबी के नरक को भूल जाएंगे
और उनका दुःख उन्हें स्मरण न रहेगा

8 "मेरे पुत्र, दीन–दलित के न्याय के लिए*
अपना मुंह खोलना;
अनाथों को उनका हक देना।
9 न्याय के लिए अपना मुंह बन्द मत करना,
वरन् धर्म से न्याय करना;
दीन–दरिद्रों के अधिकार की रक्षा करना।"

आदर्श पत्नी

10 एक अच्छी पत्नी कौन पा सकता है?
वह हीरे–मोती से अधिक मूल्यवान होती है।
11 उसके पति का हृदय
उस पर पूरा भरोसा करता है,
और जीवन सुखमय रहता है**।

---

* शब्दशः 'गूंगे के लिए'। ** शब्दशः 'लूट की कमी नहीं'।

30 : 25 नीति 6 : 6-8 31 : 3 1 रा 11 : 1-4 31 : 4 सम 10 : 17; 1 रा 20 : 16 31 : 6 मत 27 : 34 31 : 11

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

12 वह अपने जीवन भर
उसका अनिष्ट नहीं, वरन् भलाई करती है।
13 वह ऊन और पटसन खोज कर लाती है,
और प्रसन्नतापूर्वक अपने हाथों से काम
करती है।
14 व्यापार के जहाजों की तरह
वह दूर-दूर से भोजन-वस्तुएं लाती है।
15 वह पौ फटने के पहले ही रात में उठ जाती
है,
और अपने परिवार के लिए
भोजन का प्रबन्ध करती है;
वह अपनी सेविकाओं को
उनका काम बांट देती है।
16 वह देख-भाल कर खेत खरीदती है;
वह अपनी मेहनत से अंगूर-उद्यान
लगाती है।
17 वह कमर कस कर परिश्रम के लिए तैयार
रहती है;
वह काम करने के लिए
अपने हाथों को मजबूत रखती है।
18 वह जानती है कि घरेलू उद्योग में उसका
लाभ है,
रात को उसका दीपक नहीं बुझता।
19 उसके हाथ चरखे पर लगे रहते हैं,
और वह उंगलियों से तकली चलाती है।
20 गरीबों के लिए उसकी मुट्ठी खुली रहती है,
वह दीन-दरिद्रों को संभालती है।
21 वह हिमपात के समय
अपने परिवार के लिए चिन्तित नहीं होती;
क्योंकि उसके परिवार के लोग ऊनी वस्त्र
पहनते हैं।
22 वह स्वयं चादरें बुनती है;
उसके वस्त्र सूक्ष्म पटसन के,
और बैंजनी रंग के होते हैं।
23 उसका पति नगर के प्रवेश-द्वार पर
नगर के धर्मवृद्धों के साथ
पंचायत में बैठता है,
सब उसका सम्मान करते हैं।
24 वह पटसन के वस्त्र बनाती और उनको
बेचती है;
वह व्यापारियों को कमरबन्द बेचती है।
25 शक्ति और मर्यादा उसके वस्त्र हैं;
वह आनेवाले कल को हंसकर उड़ा देती
है।
26 उसके मुंह से बुद्धि की बातें निकलती हैं,
उसके ओंठों पर सदा
दया की सीख ही रहती है।
27 वह गृहस्थी का सब काम
अच्छी तरह संभालती है;
वह आलस की रोटी नहीं खाती।
28 उसके बेटे और बेटियां
सोकर उठते ही उसके पैर छूते हैं;
जब उसका पति सो कर उठता है,
वह भी उस की प्रशंसा करता है।
29 वह कहता है:
"अनेक स्त्रियों ने गृहस्थी के लिए
अच्छे-अच्छे काम किए हैं;
किन्तु तू उन सब से बढ़कर है।"
30 आकर्षण में धोखा हो सकता है,
और शरीर की सुन्दरता भी निस्सार है;
किन्तु जो स्त्री प्रभु का भय मानती है
वह प्रशंसा के योग्य है।
31 ऐसी स्त्री का उसके परिश्रम के अनुरूप
सम्मान करो;
सभा-पंचायत में उसके कार्यों की
प्रशंसा होनी चाहिए।

नीति 18 : 22
31 : 25 1 तिम 2 : 9-10 **31 : 27** 1 तिम 5 : 14; तीत 2 : 4-5 **31 : 28** 1 रा 2 : 19

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सभा-उपदेशक

पुस्तक-परिचय

"सभा-उपदेशक" ग्रंथ में किसी अज्ञात दार्शनिक के जीवन-सम्बन्धी विचार संकलित हैं। उसने मनुष्य के जीवन पर गम्भीरता से विचार किया और इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि मानवीय जीवन क्षण-भंगुर तथा विरोधाभासों का संग्रह है। मानवीय जीवन दुःखों और रहस्यों से परिपूर्ण है। अतः "सभा-उपदेशक" कहता है, "जीवन निस्सार है।" वह नहीं समझ पा रहा है कि परमेश्वर इस असार संसार में मानवीय नियति कैसे नियंत्रित करता है।

नैराश्यपूर्ण दृष्टिकोण के बावजूद सभा-उपदेशक मनुष्य को कठोर परिश्रम के लिए प्रोत्साहित करता है और उससे कहता है कि जब तक वह जीवित है, परमेश्वर के उपहारों का भरपूर उपभोग करे।

"सभा-उपदेशक" ग्रन्थ के रचयिता के अनेक विचार नैराश्य-हतोत्साह की भावना जाग्रत करते हैं। किन्तु ऐसी पुस्तक भी पवित्र बाइबिल की अन्य पुस्तकों के साथ सम्मिलित की गयी, यह तथ्य ही "सभा-उपदेशक" का महत्व प्रकट करता है। वस्तुतः धर्मशास्त्रीय विश्वास इतना विशाल सागर है कि उसमें प्रस्तुत ग्रन्थ की नैराश्य-हतोत्साहपूर्ण विचारधारा भी समाहित हो जाती है। तर्क-वितर्क के विभिन्न पहलुओं पर नहीं अटकना चाहिए, वरन् सम्पूर्ण ग्रन्थ को एक ही बार आद्योपांत पढ़ कर यह समझना चाहिए कि अंततः परमेश्वर की भक्ति ही सद्‌बुद्धि है (12 : 13)।

अनेक जिज्ञासु जन "सभा-उपदेशक" के दर्पण में स्वयं को देखते हैं, और उनको सांत्वना प्राप्त होती है कि पवित्र बाहबिल में जहाँ निराशा, हतोत्साह के विचार पाये जाते हैं वहाँ आशा-उत्साह के वचन भी उपलब्ध हैं। बाइबिल परमेश्वर में ऐसी आशा प्रदान करती है जो मनुष्य के जीवन को सार्थक बनाती है।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

सब व्यर्थ है : "मानो हवा को पकड़ना"	1 : 1 — 6 : 9
स्वीकारोक्ति	1 : 1 — 18
विवेचन	2 : 1 — 6 : 9
सब व्यर्थ है : "जान कर भी हम अज्ञानी ही रहते हैं"	6 : 10 — 12 : 14
समालोचना	6 : 10 — 11 : 6
निष्कर्ष	11 : 7 — 12 : 14

सब व्यर्थ है

1 यरूशलेम के राजा, दाऊद के पुत्र सभा-
उपदेशक के प्रवचन।
2 सभा-उपदेशक यह कहता है:
सब व्यर्थ है, सब निस्सार है।
निस्सन्देह सब व्यर्थ है, सब निस्सार है;
सब कुछ व्यर्थ है!
3 जो मेहनत मनुष्य इस धरती पर करता है,
उसे उससे क्या प्राप्त होता है?
4 एक पीढ़ी गुजरती है,
और दूसरी पीढ़ी आती है,
पर पृथ्वी ज्यों की त्यों सदा बनी रहती है।
5 सूर्य उगता है, वह अस्त होता है,
और वह शीघ्रता से उस स्थान को लौट जाता
है जहाँ से वह उदय होता है।
6 पवन दक्षिण दिशा की ओर बहता है,
और घूम कर उत्तर में आ जाता है,
और यों वह निरन्तर

1 : 2 भज 62 : 10; रोम 8 : 20 **1 : 4** प्रव 14 : 18

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अपनी परिधि में चक्कर लगाता है,
पवन अपनी परिधि की परिक्रमा करता है।
7 सब सरिताएँ सागर में मिलती हैं,
पर सागर भरता नहीं।
नदियाँ अपने उद्गम-स्थल से
फिरकर फिर बहती हैं।
8 सब बातें थकानेवाली हैं,
मनष्य उनका वर्णन नहीं कर सकता।
आंखें देखकर भी तृप्त नहीं होतीं,
और न कान सुनकर ही संतुष्ट होते हैं।
9 जो बात हो चुकी है वह फिर होगी,
जो बन चुकी है वह फिर बनेगी;
इस सूर्य के नीचे कुछ भी नया नहीं है।

10 क्या पृथ्वी पर ऐसा कुछ है,
जिसके विषय में यह कहा जा सके,
"देखो, यह नयी बात है?"
पर वह हमसे बहुत पहले
प्राचीनकाल में हो चुकी है।

11 प्राचीनकाल की बातों की स्मृति
वर्तमान काल में शेष नहीं रहती,
और न हमारे पश्चात्
आनेवाले लोगों को
भविष्य की बातें याद रहेंगी।

सभा-उपदेशक का अनुभव

12 मैं—सभा-उपदेशक, इस्राएल देश का
राजा था और यरूशलेम नगर में राज्य करता
था। 13इस आकाश के नीचे पृथ्वी पर जो होता
है, बुद्धि से उसकी खोजबीन करने और उसका
भेद समझने के लिए मैंने अपना मन लगाया।
यह एक कष्टप्रद कार्य है, जिसे परमेश्वर ने
मनुष्यों को इसी कार्य में व्यस्त रहने के लिए
सौंपा है। 14जो कुछ सूर्य के नीचे धरती पर होता
है, वह सब मैंने देखा है। मुझे अनुभव हुआ कि
यह सब निस्सार है—यह मानो हवा को
पकड़ना है।
15 जो कुटिल है, वह सीधा नहीं हो सकता,
और जो है ही नहीं, वह गिना नहीं जा सकता।

16 मैंने अपने हृदय से कहा, "देख, तूने
बहुत ज्ञान प्राप्त कर लिया है, इतना कि तेरा ज्ञान
उन सब राजाओं से बढ़ गया, जो तुझसे पहले
यरूशलेम में हुए थे। तुझे बहुत बुद्धि और ज्ञान
का अनुभव हो चुका है।" 17अत: मैंने अपना
मन यह जानने में लगाया कि बुद्धि क्या है,
पागलपन और मूर्खता क्या है। तब मुझे ज्ञात
हुआ कि यह भी हवा को पकड़ना है।
क्योंकि—
18 अधिक बुद्धि अधिक कष्ट की जननी है।
ज्ञान बढ़ानेवाला अपने दुःख को भी
बढ़ाता है।

आरंभिक जांच-पड़ताल

2 मैंने अपने हृदय में कहा, "चल, अब मैं
भोग-विलास को जांचूंगा, इसलिए मौज
कर।" पर मुझे अनुभव हुआ कि भोग-विलास
भी निस्सार है। 2मुझे हंसी-खुशी के विषय में
कहना पड़ा, "यह पागलपन है," और भोग-
विलास के विषय में "यह किस काम का है?"
3 मैंने मन लगाकर खोज-बीन की कि
मदिरा से किस प्रकार अपने शरीर को सुखी
करूं (मेरा मन अब तक बुद्धि के मार्ग पर मेरा
पथ-प्रदर्शन कर रहा है), और मूढ़ता को मैं
कैसे वश में करूं। मैंने यह भेद प्राप्त करने का
प्रयत्न किया कि मनुष्यों की भलाई किस प्रकार
का काम करने में है, ताकि वे जीवन के
अल्पकाल में इस पृथ्वी पर उस काम को कर
सकें।
4 मैंने बड़े-बड़े काम किए। मैंने अपने लिए
महल बनाए और अंगूर-उद्यान लगाए। 5मैंने
अपने लिए बगीचे-उद्यान लगाए और इन
उद्यानों में हर प्रकार के फलों के वृक्ष लगाए।
6मैंने जलाशय बनाए, जहाँ के जल से जंगल के
वृक्षों को सींचा जाता था। 7मैंने स्त्री-पुरुष गुलाम
खरीदे। मेरे पास वे गुलाम भी थे, जिनका जन्म
मेरे ही महल में हुआ था। मेरे पास गाय-बैलों
के इतने रेवड़ और भेड़-बकरियों के इतने
झुण्ड थे जितने यरूशलेम में किसी राजा के

---

1 : 16 1 रा 3 : 12; 4 : 29; प्रव 47 : 14-18 **2 : 2** नीति 14 : 13 **2 : 4-8** 1 रा 10 : 23-27 **2 : 7** 1 रा 4 : 23

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पास नहीं थे। 8इनके अतिरिक्त मैंने राजाओं
और प्रदेशों का सोना, चांदी और धन भी अपने
पास इकट्ठा कर रखा था। मेरे दरबार में अनेक
गायिकाएँ और गायक थे। मेरे पास पुरुष का
दिल बहलानेवाली अनेक रखेल स्त्रियाँ भी
थीं।

9 इस प्रकार मैं यरूशलेम के भूतपूर्व
राजाओं से अधिक महान और सम्पत्तिशाली हो
गया। तो भी मेरी बुद्धि ने मेरा साथ नहीं छोड़ा।
10जिन वस्तुओं को देखने की मुझे इच्छा हुई,
मैंने उन्हें भरपूर नजर से देखा। मैं किसी भी
प्रकार के आमोद-प्रमोद से अपना हृदय वंचित
नहीं रखता था, क्योंकि मेरा हृदय मेरे परिश्रम
के सब कामों में आनन्द लेता था और यही
आनन्द मेरे सब परिश्रमों का पुरस्कार था।

11 तब मैंने अपने कामों पर विचार किया,
मैंने उस परिश्रम पर भी सोचा जो मैंने उन कामों
पर किया था। मुझे अनुभव हुआ कि यह सब
निस्सार है—यह मानो हवा को पकड़ना है। इस
सूर्य के नीचे धरती पर मनुष्य के काम और
परिश्रम से कुछ लाभ नहीं।

12 अब मैं बुद्धि, पागलपन और मूर्खता पर
विचार करने लगा, क्योंकि उत्तराधिकारी जो
राजा के पीछे आएगा, वह क्या कर सकता है?
वही न, जो राजा कर चुका है?

13 मैंने देखा कि जैसे अन्धकार से प्रकाश
श्रेष्ठ है वैसे ही बुद्धि मूर्खता से श्रेष्ठ है।
14बुद्धिमान व्यक्ति के सिर में उसकी आंखें
होती हैं, और वह देखकर चलता है, किन्तु
मूर्ख मनुष्य अन्धकार में टटोलता है। तो भी मुझे
यह अनुभव हुआ कि मूर्ख और बुद्धिमान दोनों
एक ही गति को प्राप्त होते हैं। 15मैंने अपने
हृदय में कहा, "जो दशा मूर्ख की होती है, वही
मेरी भी होगी। फिर मैं इतना बुद्धिमान क्यों
हुआ?" अत: मैंने अपने हृदय में कहा, "मूर्ख
होना, अथवा बुद्धिमान होना भी व्यर्थ है।"
16क्योंकि जैसे मूर्ख की स्मृति स्थायी नहीं होती
वैसे ही बुद्धिमान की भी स्मृति स्थायी नहीं
होती। कुछ ही दिनों में लोग सब भूल जाते हैं।
जैसे मूर्ख मरता है वैसे ही बुद्धिमान भी।

17 मुझे जीवन से घृणा हो गई, क्योंकि
आकाश के नीचे पृथ्वी पर किए जाने वाले सब
कार्य मुझे बुरे लगने लगे। यह सब व्यर्थ है, यह
मानो हवा को पकड़ना है।

18 मैंने देखा कि मुझे अपने परिश्रम का फल
उस उत्तराधिकारी के लिए छोड़ जाना होगा जो
मेरे पीछे आनेवाला है। अत: मुझे अपने सम्पूर्ण
परिश्रम से घृणा हो गई जो मैंने सूर्य के नीचे इस
धरती पर किया था। 19कौन जानता है कि मेरा
उत्तराधिकारी बुद्धिमान होगा अथवा मूर्ख? तो
भी धरती पर वह मेरे समस्त परिश्रम के फल
को भोगेगा और जो कुछ मैंने बुद्धि से संग्रह
किया है वह उसका स्वामी होगा। 20अत: यह
भी व्यर्थ है। इसलिए मैं सूर्य के नीचे धरती पर
किए गए अपने सम्पूर्ण परिश्रम के प्रति निराश
हो गया। उससे विमुख हो गया। 21कभी ऐसा
भी होता है कि मनुष्य बुद्धि, ज्ञान और कौशल
से परिश्रम करता है किन्तु वह उसका फल उस
व्यक्ति के द्वारा भोगने के लिए छोड़ जाता है,
जिसने उसके लिए कुछ भी परिश्रम नहीं
किया। यह भी व्यर्थ है और बहुत बुरा है।
22सूर्य के नीचे पृथ्वी पर मन लगा कर किए गए
परिश्रम से मनुष्य को क्या लाभ? 23सच पूछो
तो उसके जीवन के सब दिन दु:खों से भरे रहते
हैं, और उसका काम सन्तोष नहीं, वरन् सन्ताप
उत्पन्न करता है। रात में भी उसके मन को चैन
नहीं मिलता। यह भी व्यर्थ है।

24 मनुष्य के लिए इससे अधिक अच्छी
बात और कोई नहीं कि वह खाए-पीए और
आनन्द के साथ परिश्रम करे। किन्तु मैंने देखा
है कि यह भी परमेश्वर के हाथ से प्राप्त होता
है। 25क्योंकि परमेश्वर से दूर रहकर कौन
व्यक्ति खा-पी सकता है, और आनन्द मना
सकता है? 26जिस मनुष्य से परमेश्वर प्रसन्न
होता है वह उसी को बुद्धि, ज्ञान और आनन्द
प्रदान करता है। पापी मनुष्य से परमेश्वर कठोर

---

2 : 8 1 रा 9 : 28; 10 : 10 **2 : 9** 1 इत 29 : 25 **2 : 14** यो 8 : 12; 1 यो 2 : 10-11 **2 : 23** अय्य 5 : 7; 14 : 1 **2 : 24** यश 56 : 12; लू 12 : 19; 1 कुर 15 : 32 **2 : 26** अय्य 32 : 8; नीति 2 : 6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

परिश्रम कराता है। पापी मनुष्य परमेश्वर के प्रिय व्यक्ति के लिए धन एकत्र करता और उसको संचित करता है। अत: यह भी व्यर्थ है, यह मानो हवा को पकड़ना है।

सब कामों का समय निश्चित है

3 हर एक बात का उपयुक्त अवसर, और आकाश के नीचे पृथ्वी पर किए जानेवाले काम का निर्धारित समय होता है:

2 जन्म का समय; और मृत्यु का भी समय,
पौधा लगाने का समय और लगाए गए पौधे
को उखाड़ने का भी समय निश्चित है।
3 हत्या का समय, और स्वस्थ करने का समय,
ढाहने का समय और निर्माण का भी समय
निर्धारित है।
4 रोने का समय, और हंसने का समय,
शोक मनाने का समय, और नाचने का भी
समय नियत है।
5 पत्थरों को बिखेरने का समय, और पत्थरों को
बटोरने का समय,
गले लगाने का समय और गले से दूर रहने
का भी समय होता है।
6 ढूंढ़ने का समय, और खोने का भी समय,
रखने का समय, और फेंकने का भी समय
निर्धारित है।
7 फाड़ने का समय, और सीने का भी समय,
चुप रहने का समय, और बोलने का भी
समय निश्चित है।
8 प्रेम करने का समय, और घृणा करने का भी
समय,
युद्ध करने का समय, और शान्ति बनाए रखने
का भी समय नियत है।

9 काम करने वाले को अपने परिश्रम से क्या
लाभ होता है? 10मैंने उन कामों को देखा है जो
परमेश्वर ने मनुष्यों को प्रदान किए हैं, ताकि वे
उन में जीवन भर व्यस्त रहें। 11वस्तुत: परमेश्वर
ने हर एक काम का समय निश्चित किया है,
और प्रत्येक काम अथवा प्रत्येक वस्तु अपने
नियत समय पर ही सुन्दर लगती है। उसने
मनुष्य के हृदय में अनादि-अनन्त काल का ज्ञान
भरा है, फिर भी मनुष्य यह भेद जान नहीं पाता
है कि परमेश्वर ने आदि से अन्त तक क्या कार्य
किया है। 12अत: मुझे यह अनुभव हुआ कि
मनुष्य के लिए इससे अच्छी और कोई बात नहीं
है कि वह जीवन-भर सुख से रहे और आनन्द
मनाता रहे। 13वस्तुत: यह परमेश्वर का वरदान
है कि प्रत्येक मनुष्य भरपेट खाए-पीए और
आनन्दपूर्वक परिश्रम करे।

14 मैं यह जानता हूं कि जो कुछ परमेश्वर
करता है, वह सदा बना रहेगा; उसमें न कुछ
जोड़ा जा सकता है, और न उससे कुछ घटाया
जा सकता है। परमेश्वर ने यह इसलिए किया
है ताकि मनुष्य उससे डरे। 15जो है, वह हो
चुका है, और जो होनेवाला है, वह भी हो चुका
है। परमेश्वर उसको ढूंढ़ता है, जो हांक दिया
गया है।

जीवन में अन्याय और अधर्म की बहुलता

16 मैंने सूर्य के नीचे धरती पर यह भी देखा:
न्याय के स्थान पर अन्याय हो रहा है, धार्मिकता
के स्थान पर अधर्म हो रहा है। 17मैंने अपने
हृदय में कहा, "परमेश्वर ने प्रत्येक बात और
हर एक कार्य का समय निश्चित कर रखा है;
अत: वह धार्मिक मनुष्य और दुर्जन दोनों का
न्याय करेगा।" 18मैंने मानव-सन्तान के विषय
में यह सोचा : परमेश्वर उन्हें यह सच्चाई
सिखाने के लिए परख रहा है कि वे पशु के
अतिरिक्त कुछ नहीं हैं। 19मनुष्य और पशु एक
ही गति को प्राप्त होते हैं। जैसे पशु मरता है वैसे
ही मनुष्य भी। उन सब में एक ही से प्राण हैं।
मनुष्य पशु से श्रेष्ठ नहीं है। अत: सब व्यर्थ है।
20सब अन्त में एक ही स्थान में जाते हैं। सब
मिट्टी से बने हैं, और मिट्टी में ही मिल जाएंगे।
21कौन कह सकता है कि मनुष्य के प्राण
ऊर्ध्वलोक में और पशु के प्राण अधोलोक में
जाते हैं? 22अत: मुझे ज्ञात हुआ कि मनुष्य के
लिए इससे अधिक अच्छी बात और कोई नहीं
है कि वह आनन्दपूर्वक अपना काम करे,
क्योंकि काम करना ही उसकी नियति है। कौन
व्यक्ति किसी की मृत्यु के पश्चात् उसको

---

3 : 11 रोम 11 : 33 3 : 13 सभ 2 : 24 3 : 19 भज 49 : 12 3 : 20 उत 3 : 19 3 : 21 अय्य 34 : 1; भज 104 : 29

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वापस लाकर भविष्य की बातें दिखा सकता है ?

4 तब मैंने पुनर्विचार किया कि सूर्य के नीचे
धरती पर कितना अत्याचार होता है। जिन
पर अत्याचार होता है, वे आंसू बहाते हैं, पर
उनके आंसू पोंछनेवाला कोई नहीं है। अत्याचार
करनेवालों के पास शक्ति थी, किन्तु आंसू
बहानेवालों के पास उन्हें सान्त्वना देनेवाला भी
नहीं था। 2अत: मैंने मृत व्यक्तियों को उन से
श्रेष्ठ माना, जो जीवित हैं। 3परन्तु मृत और जीवित
व्यक्तियों से श्रेष्ठ है वह व्यक्ति जिसका जन्म
नहीं हुआ है, जिसने सूर्य के नीचे धरती पर
किए जाने वाले दुष्कर्मों को नहीं देखा है।

4 फिर मैंने देखा कि सब परिश्रम और सारा
कार्यकौशल अपने पड़ोसी के प्रति शत्रु-भावना
से किया जाता है। अत: यह भी व्यर्थ है, यह
मानो हवा को पकड़ना है।

5 मूर्ख हाथ पर हाथ रखकर बैठा रहता है,
वह मानो अपना ही मांस खाता है।
6 मुट्ठी भर मन का चैन
दो मुट्ठी परिश्रम से श्रेष्ठ है,
जो मानो हवा को पकड़ना है।

7 मैंने सूर्य के नीचे धरती पर पुन: निस्सारता
को देखा: 8यद्यपि मनुष्य अकेला है, उसका पुत्र
नहीं, भाई नहीं, तथापि वह निरन्तर कमाता ही
जाता है, उसके परिश्रम का कोई अन्त नहीं।
उसकी आंखें धन-सम्पत्ति से तृप्त नहीं होतीं।
वह अपने आपसे कभी पूछता नहीं, "मैं यह
सब परिश्रम किसके लिए कर रहा हूं, और क्यों
स्वयं को सुख-चैन से वंचित कर रहा हूं ?" यह
भी व्यर्थ है, और एक दु:खद कार्य-व्यापार है।

9 एक से दो अच्छे होते हैं, क्योंकि उन्हें
उनके परिश्रम का अच्छा फल मिलता है।
10यदि उनमें से एक गिरता है तो दूसरा उसको
उठा सकता है। शोक उसको जो अकेला है!
यदि वह गिर जाए तो उसको कौन उठाएगा ?

11 यदि दो एक साथ लेटें तो वे गर्म रहेंगे।
किन्तु अकेला व्यक्ति अपने को कैसे गर्म कर
सकता है ?

12 प्रहार करनेवाला अकेले व्यक्ति पर
प्रबल हो सकता है, परन्तु दो व्यक्ति उसका
सामना कर सकते हैं। जो रस्सी तीन तागों से
बटी होती है, वह जल्दी नहीं टूटती।

13 बुद्धिमान युवक गरीब होने पर भी ऐसे
बूढ़े और मूर्ख राजा से श्रेष्ठ है, जो सलाह नहीं
मानता। 14फिर चाहे युवक बन्दीगृह से सिंहासन
पर पहुँचा हो, चाहे वह अपने राज्य में गरीब
उत्पन्न हुआ हो। 15मैंने सूर्य के नीचे धरती पर
सब जीवों को उस का अनुगमन करते देखा, जो
वृद्ध और मूर्ख राजा के स्थान पर सिंहासन पर
बैठा था। 16उसके अनुगामियों की संख्या,
जिनका उसने नेतृत्व किया, अगणित थी। फिर
भी आनेवाली पीढ़ी उससे प्रसन्न नहीं होगी।
अत: निस्सन्देह यह भी व्यर्थ है, यह मानो हवा
को पकड़ना है।

परामर्श

5 *जब तुम परमेश्वर के मन्दिर में जाते हो
तब अपने आचरण का ध्यान रखो। मूर्ख
द्वारा चढ़ाई गई बलि की अपेक्षा परमेश्वर के
मन्दिर में आना, और उसका वचन सुनना श्रेष्ठ
है। क्योंकि मूर्ख यह नहीं जानता है कि जो कार्य
वह करता है, वह दुष्कर्म है।

2 अपने मुंह से कोई बात जल्दी मत
निकालो, और न उतावली में अपने हृदय की
बात परमेश्वर के सम्मुख प्रकट करो, क्योंकि
परमेश्वर तो स्वर्ग में है, और तुम पृथ्वी पर।
अत: तुम्हारे शब्द थोड़े ही हों।

3 जैसे कार्य की अधिकता के कारण व्यक्ति
स्वप्न देखता है, वैसे ही बहुत बकवास से मूर्ख
की मूर्खता प्रकट होती है।

4 जब तुम परमेश्वर के लिए मन्नत मानते हो
तब उसको पूरा करने में विलम्ब मत करना,
क्योंकि परमेश्वर मूर्खों से प्रसन्न नहीं होता। जो
मन्नत तुम मानते हो उसे पूरा करो। 5मन्नत मान
कर उसे पूरा न करने से मन्नत का न मानना ही

---

* मूल में, अध्याय 4 : 17

4 : 5 नीति 6 : 10 **4 : 12** 1 रा 1 : 1-2 **5 : 1** 1 शम 15 : 22; नीति 21 : 3 **5 : 2** मत 6 : 7; याक 3 : 8 **5 : 4** गण 30 : 2; भज 66 : 13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अच्छा है। 6तुम अपने मुंह से ऐसे शब्द न निकालो जो तुम्हें पाप में फंसाएं। स्वर्गदूत के सम्मुख यह न कहो कि मुझसे भूल हो गयी। अन्यथा परमेश्वर तुम्हारी आवाज सुन कर क्रुद्ध होगा, और वह परिश्रम से किए गए तुम्हारे काम को नष्ट कर देगा।

7 जब व्यक्ति अधिकाधिक स्वप्न देखने लगता है, तब उसकी व्यर्थ बातें भी बढ़ जाती हैं। किन्तु तुम परमेश्वर का भय मानना।

8 यदि तुम किसी प्रदेश में गरीबों पर अत्याचार होते देखो, यदि तुम वहाँ न्याय और धर्म का गला घोंटा जाता हुआ देखो, तो आश्चर्य मत करना; क्योंकि एक अधिकारी के ऊपर उससे बड़ा अधिकारी होता है और उससे भी ऊपर उच्च अधिकारी होता है। 9किन्तु ऐसा होते हुए भी देश के लिए यह लाभदायक बात है कि देश की सेवा करने वाला** एक राजा हो।

जीवन निस्सार है

10 पैसे से प्यार करनेवाला पैसे से कभी सन्तुष्ट नहीं होता; और न ही ऐसा व्यक्ति, जिसे धन से प्रेम है, उसके अधिकाधिक लाभ से सन्तुष्ट होता है। यह भी व्यर्थ है।

11 जब सम्पत्ति बढ़ती है तब उसको खानेवाले भी बढ़ते हैं। अत: उसके स्वामी को उससे क्या लाभ ? सिर्फ यह कि वह उसे केवल आंखों से देखे!

12 मजदूर के लिए वरदान है—मीठी नींद, चाहे वह आधा पेट खाए चाहे पेट भर। किन्तु धनवान का धन बढ़ने से उसकी आंखों से नींद उड़ जाती है।

13 मैंने सूर्य के नीचे धरती पर एक दु:खद बुराई देखी : धन का स्वामी अपने अनिष्ट के लिए धन संग्रह करता है। 14यदि उसका धन सट्टेबाजी में उड़ जाता है, और यदि उसके घर में पुत्र जन्म लेता है तो उसके हाथ में कुछ नहीं बचता। 15जैसा वह अपनी मां की कोख से पैदा हुआ था वैसा ही नंगा लौट जायेगा, वह अपने हाथ में अपने परिश्रम का फल नहीं ले जा सकेगा। 16यह दु:खद बुराई है, जैसा वह आया था ठीक वैसा ही यहाँ से लौट जायेगा। उसे अपने परिश्रम से क्या लाभ हुआ ? 17उसने व्यर्थ ही परिश्रम किया, उसने अपना सम्पूर्ण जीवन अन्धकार और दु:ख में, चिन्ता और रोग में, असन्तोष में व्यतीत किया।

18 देखो, जो भली बात मैंने अनुभव की, और जो उचित भी है, वह यह है : "मनुष्य परमेश्वर द्वारा दिए गए अपने अल्पकाल के जीवन में सूर्य के नीचे धरती पर आनन्दपूर्वक परिश्रम करे, खाए और पीए, क्योंकि यही उसकी नियति है।" 19हर एक मनुष्य, जिसे परमेश्वर ने धन-सम्पत्ति दी है तथा उसको भोगने का सामर्थ्य भी दिया है, वह अपनी नियति को स्वीकार करे और आनन्दपूर्वक परिश्रम करे। यह परमेश्वर का वरदान है। 20परमेश्वर उसे उसके हृदय के उल्लास में ही डुबाए रखता है: इसलिए वह इस बात को बहुत याद नहीं कर पाएगा कि उसका जीवन थोड़े दिन का ही है।

6 मैंने सूर्य के नीचे धरती पर एक और बुराई देखी, जिसके भार से मनुष्य दबा रहता है। 2वह बुराई यह है: परमेश्वर मनुष्य को धन-सम्पत्ति और प्रतिष्ठा प्रदान करता है, और मनुष्य को अपनी इच्छा के अनुसार सब कुछ प्राप्त हो जाता है। उसे किसी वस्तु का अभाव नहीं रहता। परन्तु उस मनुष्य को परमेश्वर धन-सम्पत्ति भोगने का सामर्थ्य नहीं देता; बल्कि अनजान व्यक्ति उसकी धन-सम्पत्ति भोगता है। अत: धन-सम्पत्ति निस्सार है, यह भयानक दु:ख की बात है।

3 यदि किसी मनुष्य के सौ पुत्र उत्पन्न होते हैं, और वह लम्बी उम्र तक जीवित रहता है, दीर्घ आयु प्राप्त करता है, पर यदि वह जीवन के सुखों को भोग न कर पाए, मरने पर अन्तिम क्रिया भी उसे न प्राप्त हो, तो मैं यह कहूंगा : ऐसे मनुष्य से अधूरे माह का जन्मा मृत बच्चा श्रेष्ठ है। 4मृत बच्चा इस धरती पर व्यर्थ ही आता

** शब्दश: 'खेती के लिए'

5 : 15 अय्य 1 : 21; भज 49 : 17; 1 तिम 6 : 7 **6 : 2** लू 12 : 19-20 **6 : 3** अय्य 3 : 16

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
है, और अंधकार में लुप्त हो जाता है, अंधकार
का परदा उसके नाम को ढक लेता है। 5वह सूर्य
के प्रकाश को नहीं देख सका, और न उसे
जीवन का कुछ अनुभव ही हुआ। फिर भी उसे
उस दीर्घायु वाले मनुष्य से अधिक विश्राम
मिला। 6चाहे मनुष्य दो हजार वर्ष जीए, किन्तु
यदि वह जीवन का आनन्दपूर्वक भोग नहीं
करता तो ऐसी दीर्घायु से क्या लाभ? सब मनुष्य
जीवन के अन्त में एक ही स्थान को जाते हैं।
7 मनुष्य अपने पेट के लिए ही सब परिश्रम
करता है, तो भी उसका पेट कभी नहीं भरता।
8अत: बुद्धिमान व्यक्ति किस बात में मूर्ख
मनुष्य से श्रेष्ठ हुआ? गरीब मनुष्य, जो यह
जानता है कि जीवन में कैसा आचरण करना
चाहिए, उससे किस बात में श्रेष्ठ सिद्ध हुआ?
9आंखों से देख लेना मन की चंचल कामनाओं
से उत्तम है। अत: पेट के लिए परिश्रम करना
भी निस्सार है, यह मानो हवा को पकड़ना है।

उपदेशक नये प्रश्न उठाता है

10 जो कुछ भी मनुष्य हो, उसे उसका नाम
आदि में ही दे दिया गया था: मनुष्य के विषय
में यह प्रकट कर दिया गया था कि वह केवल
मिट्टी है।* अत: वह अपने से अधिक बलवान
व्यक्ति से लड़ नहीं सकता। 11जीवन के विषय
में जितना विचार करो, उतना ही वह निस्सार
लगता है, तो ऐसे जीवन से मनुष्य को क्या
लाभ? 12मनुष्य अपना क्षणिक जीवन परछाँई
के समान व्यतीत करता है; अत: कौन जानता
है कि उसके लिए ऐसे जीवन में उत्तम क्या है?
मनुष्य को कौन बता सकता है कि उसकी मृत्यु
के पश्चात् सूर्य के नीचे धरती पर क्या होगा?

बुद्धि की श्रेष्ठता

7 नाम की सुगन्ध
अनमोल इत्र की सुगन्ध से श्रेष्ठ है।
मृत्यु का दिन
जन्म के दिन से उत्तम है।
2 भोज के उत्सव में सम्मिलित होने की अपेक्षा
मृत्यु-शोक से पीड़ित परिवार में जाना
अच्छा है,
क्योंकि मृत्यु ही सब मनुष्यों का अन्त है।
अत: जीवित व्यक्ति गम्भीरतापूर्वक
अपने अन्त पर विचार करेगा।
3 हास्य से श्रेष्ठ है विलाप;
क्योंकि मुख का दु:ख
हृदय का सुख है।
4 बुद्धिमान व्यक्ति का हृदय
शोक-पीड़ित परिवार में
लगा रहता है,
किन्तु मूर्ख मनुष्य का मन
आमोद-प्रमोद करनेवाले घर में लगा रहता
है।
5 मूर्खों के मुख से गीत सुनने की अपेक्षा
बुद्धिमान की डांट-डपट सुनना अच्छा है।
6 मूर्खों की हंसी वैसी ही होती है
जैसी हांडी के नीचे जलते हुए कांटों की
चरचराहट।
अत: यह भी व्यर्थ है।
7 निस्सन्देह अत्याचार की कमाई से
बुद्धिमान भी मूर्ख बन जाता है,
घूस लेने से बुद्धि नष्ट हो जाती है।
8 कार्य के आरम्भ से
उसका अन्त उत्तम है,
अहंकारी पुरुष की अपेक्षा
धीरज रखने वाला पुरुष श्रेष्ठ है।
9 तुरन्त क्रुद्ध मत हो,
क्योंकि क्रोध का वास-स्थान
मूर्ख का हृदय है।
10 यह मत कहो,
कि आज से बीता हुआ कल अच्छा था।
क्योंकि इस प्रकार का प्रश्न उठाना,
बुद्धिमानी की बात नहीं है।
11 बुद्धि धन-सम्पत्ति के सदृश उत्तम है,
जीवित व्यक्तियों के लिए
बुद्धि लाभदायक है।
12 बुद्धि का संरक्षण
धन के संरक्षण के तुल्य है।

* मूल शब्द में श्लेष है: आदम अर्थात् मिट्टी
6 : 10 उत 2 : 7 7 : 1 नीति 22 : 1 7 : 9 याक 1 : 19

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ज्ञान से यह लाभ है कि
वह अपने धारक का जीवन सुरक्षित रखता
है।
13 परमेश्वर के कार्यों पर विचार करो :
जिसको परमेश्वर ने टेढ़ा बनाया है,
उसे कौन सीधा कर सकता है?
14 सुख के दिनों में आनन्द मनाओ, किन्तु
दु:ख के दिनों में विचार करो, क्योंकि परमेश्वर
ने सुख और दु:ख दोनों को बनाया है, ताकि
मनुष्य इस बात का भेद न पा सके कि उसकी
मृत्यु के बाद क्या होनेवाला है।
15 मैंने अपने निस्सार जीवन में यह देखा
है: धार्मिक मनुष्य अपनी धार्मिकता में मरता है,
किन्तु दुर्जन व्यक्ति दुष्कर्म करते हुए दीर्घायु
प्राप्त करता है। 16अत: अत्यधिक धार्मिक मत
बनो, और न अत्यधिक बुद्धिमान! अन्यथा तुम
अपने पैरों पर स्वयं कुल्हाड़ी मारोगे।
17 अत्यधिक अधार्मिक भी मत बनो, और
न मूर्ख। अन्यथा तुम समय से पहले ही मर
जाओगे। 18अच्छा यह है कि तुम एक को
पकड़े रहो, और दूसरे को भी अपने हाथों से
न निकलने दो। जो मनुष्य परमेश्वर की भक्ति
करता है, वह इन सब कठिनाइयों से पार हो
जाएगा।
19 बुद्धि ही बुद्धिमान व्यक्ति को नगर के
दस शासकों से अधिक बल प्रदान करती है।
20 निश्चय ही संसार में कोई ऐसा धार्मिक
व्यक्ति नहीं है जो सदा भलाई ही करता है, और
कभी पाप नहीं करता।
21 जो बातें मनुष्य कहते हैं, उन सब बातों
पर कान न लगाना। अन्यथा तुम यह बात सुनोगे
कि तुम्हारा सेवक तुम्हें अपशब्द कह रहा था!
22तुम्हारा हृदय जानता है कि स्वयं तुमने भी
अनेक बार दूसरे व्यक्तियों को अपशब्द कहे
हैं।

बुद्धि की खोज

23 यह सब मैंने बुद्धि से परखा है। मैंने
सोचा, 'मैं बुद्धिमान बनूंगा,' किन्तु बुद्धि मुझसे
दूर ही रही। 24जो तत्व है, वह बहुत दूर है,
गहरा है, और अत्यन्त गहरा है। उसका भेद
कौन पा सकता है?
25 मैंने यह जानने के लिए मन लगाया
कि बुद्धि क्या है, सब का सार तत्व कहाँ है
जिससे मुझे ज्ञात हो जाए कि मूर्खता अधर्म
है, मूर्खता पागलपन है। 26तब मैंने मृत्यु से
अधिक कड़ा सत्य प्राप्त किया : अर्थात् वह
स्त्री, जिसका हृदय फन्दा है, जिसका मन जाल
है, जिसके हाथ जंजीर हैं। केवल वही पुरुष
उससे बच सकता है, जिससे परमेश्वर प्रसन्न
रहता है, अन्यथा पापी पुरुष उसका शिकार हो
जाता है।
27 सभा-उपदेशक कहता है: देखो, जब
मैंने सार तत्व निकालने के लिए एक से दूसरी
बात जोड़ी, तब मुझे यह तथ्य हाथ लगा।
28किन्तु मैं जिसको ढूंढ़ता रहा, वह मुझे मिला
नहीं। हजार पुरुषों में कहीं एक पुरुष मुझे
मिला, परन्तु उनमें मुझे एक भी स्त्री नहीं
मिली। 29देखो, मैंने केवल यह सच पाया है:
परमेश्वर ने मनुष्य को सीधा-सादा बनाया है,
किन्तु मनुष्य ने स्वयं जीवन की अनेक
जटिलताएँ ढूंढ़ निकाली हैं।

8 बुद्धिमान मनुष्य किसके समान है?
कौन व्यक्ति तत्व का अर्थ जानता है?
मनुष्य की बुद्धि के कारण उसका मुख
चमकता है,
और उसके चेहरे की कठोरता दूर हो जाती
है।

राजा के प्रति ईमानदार रहो

2 राजा की आज्ञा का पालन करो, अपनी
पवित्र शपथ के कारण मत भयभीत हो। 3उसके
सम्मुख से चले जाओ; यदि वह किसी बात से
अप्रसन्न है तो तुम वहाँ मत ठहरो; क्योंकि राजा
जैसा चाहता है वैसा करता है।
4 राजा के शब्दों में परम सत्ता होती है। राजा
से कौन पूछ सकता है, 'आप यह क्या कर रहे
हैं?'
5 जो व्यक्ति राजा की आज्ञा का पालन
करता है, उसका अनिष्ट नहीं होता।

7 : 20 रोम 3 : 23; 1 यो 1 : 8 **7 : 28** नीति 31 : 10 **8 : 2** रोम 13 : 5

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

परमेश्वर की कार्य-विधि मनुष्य की समझ से परे है

बुद्धिमान मनुष्य उपयुक्त समय और उपयुक्त
कार्य-विधि जानता है। 6प्रत्येक बात का उपयुक्त
समय और उसकी उपयुक्त कार्य-विधि होती
है, यद्यपि मनुष्य की बुराई उसके लिए बहुत
भारी पड़ती है। 7मनुष्य यह नहीं जानता है कि
क्या होने वाला है, क्योंकि कौन व्यक्ति उसे
भविष्य में घटनेवाली बातें बता सकता है?
8ऐसा कौन मनुष्य है जिसका वश प्राण पर चले,
और वह प्राण के निकलते समय उसको रोक
ले? मृत्यु के दिन पर मरनेवाले का अधिकार
नहीं होता। युद्ध से छुटकारा नहीं मिलता, और
न दुर्जन व्यक्ति अपनी दुर्जनता के कारण मृत्यु
से बच सकता है।

9 जब मैंने सूर्य के नीचे धरती पर होनेवाली
बातों पर गम्भीरतापूर्वक अपना मन लगाया,
तब मैंने यह देखा: जब एक मनुष्य दूसरे मनुष्य
पर प्रभुत्व जमाता है तब वह स्वयं का अनिष्ट
करता है।

10 तब मैंने दुर्जनों को कबर में गाड़े जाते
हुए देखा। वे पवित्र स्थान में आते जाते थे। नगर
में जहाँ उन्होंने नाना प्रकार के दुष्कर्म किए थे,
उनकी प्रशंसा की जाती थी। यह भी व्यर्थ है।
11दुष्कर्म के लिए व्यक्ति को जल्दी दण्ड नहीं
मिलता, इसलिए मनुष्यों का हृदय दुष्कर्म करने
में लगा रहता है। 12यद्यपि पापी मनुष्य सौ बार
दुष्कर्म करता है, और उसे दण्ड नहीं मिलता,
वह लम्बी उम्र तक जीवित रहता है, तथापि मैं
यह जानता हूं कि परमेश्वर से डरनेवालों का
अन्त में भला ही होता है। परमेश्वर उनका भला
करता है, क्योंकि वे उससे डरते हैं। 13निस्सन्देह
दुर्जन का अन्त में भला नहीं होगा, और न वह
छाया के सदृश अपनी उम्र लम्बी कर सकेगा,
क्योंकि वह परमेश्वर से नहीं डरता है।

14 एक बात और : यह भी व्यर्थ है, और
पृथ्वी पर होती है। धार्मिक व्यक्तियों को दुर्जन
मनुष्यों के दुष्कर्मों का फल भुगतना पड़ता है,
और दुर्जन मनुष्य धार्मिक व्यक्तियों के सत्कर्मों
का फल प्राप्त करते हैं। अत: मैं कहता हूं, यह
भी व्यर्थ है। 15इसलिए मैं लोगों को सलाह देता
हूं: आनन्द मनाओ। सूर्य के नीचे धरती पर
मनुष्य के लिए खाने-पीने और आनन्द मनाने
के अतिरिक्त और कुछ भी अच्छा नहीं है। जो
आयु परमेश्वर ने उसे इस धरती पर प्रदान की
है, उसके परिश्रम में यही आनन्द विद्यमान
रहेगा।

16 जब मैंने बुद्धि प्राप्त करने के लिए, तथा
पृथ्वी पर होने वाले कार्य-व्यापार को समझने
के लिए मन लगाया, और जब मैंने यह जानने
का प्रयत्न किया कि कैसे मनुष्य रात-दिन
जागते रहते हैं, 17तब मुझे अनुभव हुआ कि
परमेश्वर का समस्त कार्य, जो सूर्य के नीचे इस
धरती पर होता है, चाहे मनुष्य उसका भेद
जानने के लिए कितना ही परिश्रम क्यों न करे,
वह उसका पता नहीं लगा सकता। यदि कोई
बुद्धिमान मनुष्य उसको जानने का दावा करे तो
भी वह उसका पता नहीं लगा सकता।

जीवन की विषमता

9 मैंने इन सब बातों को जांचा-परखा और
मन से गम्भीरतापूर्वक विचार किया। तब
मुझे ज्ञात हुआ कि धार्मिक और बुद्धिमान
व्यक्ति और उनके सत्कर्मों का फल परमेश्वर
के हाथों में है। मनुष्य यह नहीं जानते कि
परमेश्वर उनके कार्य से प्रसन्न हैं अथवा उसे
उनके कार्य से घृणा है। अत: उनके सम्मुख सब
व्यर्थ है। 2सब की नियति एक ही है: धार्मिक
और अधार्मिक, भला और बुरा, शुद्ध और
अशुद्ध, बलि चढ़ानेवाला—बलि न चढ़ानेवाला।
जो नियति अच्छे मनुष्य की है वही पापी मनुष्य
की है। जो अपनी शपथ को पूरा करता है,
उसकी नियति वही है, जो अपनी शपथ का
उल्लंघन करता है। 3जो बुराइयाँ सूर्य के नीचे
इस धरती पर विद्यमान हैं उनमें से एक यह
नियति है : सब मनुष्य एक ही गति को प्राप्त
होते हैं।

मनुष्यों के हृदय बुराई से भरे हैं। जब तक
वे जीवित रहते हैं, उनमें पागलपन समाया रहता

8 : 11 अय्य 21 : 32-33 9 : 1 नीति 16 : 6; 1 पत 1 : 5

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

है। उसके बाद वे मृतकों में मिल जाते हैं।

4 जब तक मनुष्य जीवित रहता है, उसके हृदय में आशा का दीया टिमटिमाता रहता है, क्योंकि जीवित कुत्ता मृत सिंह से श्रेष्ठ है।
[5]जो जीवित हैं, वे जानते हैं कि उन्हें एक दिन मरना ही होगा, किन्तु जो मर चुके हैं, वे क्या जानते हैं? उन्हें प्रतिफल मिल चुका है। उनकी स्मृति मिट चुकी है।
[6]उनका प्रेम, उनकी घृणा, उनकी शत्रुता सब नष्ट हो गए। इस धरती के कार्य-व्यापार में अब उनका कोई भाग नहीं रहा।

7 अपने घर जाओ, आनन्द से रोटी खाओ, और हृदय की उमंग से अंगूर-रस पीओ, क्योंकि जो तुम करते हो, उसको परमेश्वर पहले से अपनी स्वीकृति दे चुका है।

8 तुम्हारे वस्त्र सदा स्वच्छ रहें, तुम्हारे सिर पर सदा तेल लगा रहे।

9 परमेश्वर ने सूर्य के नीचे धरती पर निस्सार जीवन के जितने भी दिन दिए हैं, उनमें अपनी प्रिय पत्नी के साथ जीवन का आनन्द भोगो, क्योंकि जीवन में यही तुम्हारा भाग है। जो परिश्रम तुम धरती पर करते हो उसमें यही तुम्हारा हिस्सा है।
[10]तुम्हारे हाथ में जो भी काम आए, उसको पूरी शक्ति से करो, क्योंकि अधोलोक में, जहाँ अपनी मृत्यु के बाद तुम जाओगे, न काम है, न विचार। वहाँ न ज्ञान है, न बुद्धि।

11 मैंने पुन: अनुभव किया कि सूर्य के नीचे इस धरती पर तेज दौड़ने वाला धावक नहीं जीतता, और न बलवान योद्धा लड़ाई जीतता है। बुद्धिमान मनुष्य को भोजन नहीं मिलता, और न समझदारों को धन-सम्पत्ति। विद्वानों पर कोई कृपा नहीं करता। ये सब समय और संयोग के वश में हैं।
[12]मनुष्य अपना समय नहीं जानता। जैसे मछली कुटिल जाल में फंस जाती है, जैसे पक्षी फंदे में फंस जाते हैं, वैसे ही मनुष्य समय-जाल में फंस जाते हैं। यह जाल अचानक उन पर पड़ता है।

बुद्धि बल से श्रेष्ठ है

13 मैंने सूर्य के नीचे धरती पर बुद्धि का एक उदाहरण देखा। यह मुझे बड़ा महत्वपूर्ण लगा।
[14]एक छोटा-सा नगर था। उसमें गिने-चुने लोग रहते थे।

एक दिन उस पर किसी बड़े राजा ने आक्रमण कर दिया, और उसको घेर लिया। उसके चारों ओर बड़ी मोर्चाबन्दी कर दी।

15 उस छोटे-से नगर में एक गरीब, पर बुद्धिमान मनुष्य था। उसने अपनी बुद्धि से उस नगर को बचाया। फिर भी उस गरीब को सब लोग भूल गए।

16 यद्यपि गरीब आदमी की बुद्धि का किसी ने सम्मान नहीं किया, उसकी बातों पर ध्यान नहीं दिया तो भी मैं कहता हूं: बल से बुद्धि श्रेष्ठ है।

17 बुद्धिमान मनुष्य के शान्ति से सुने हुए शब्द मूर्खों के मध्य शासक द्वारा चिल्लाकर कहे गए शब्दों से श्रेष्ठ हैं।

18 युद्ध के शस्त्रों से बुद्धि उत्तम है, किन्तु एक दुर्जन अनेक भले कार्यों को नष्ट कर देता है।

मूर्खता का परिणाम

10 मृत मक्खियाँ गंधी की सुगंध को
दुर्गंध में बदल देती हैं,
इसी प्रकार थोड़ी-सी मूर्खता
बुद्धि और प्रतिष्ठा पर पानी फेर देती है।

2 बुद्धिमान का हृदय
उसे उचित मार्ग की ओर उन्मुख करता है,
किन्तु मूर्ख का मन
बुराई की ओर उसे प्रेरित करता है।

3 जब मूर्ख मार्ग पर चलता है
तब भी उसे समझ नहीं सूझती।
वह सब राहगीरों से कहता है,
'तुम मूर्ख हो।'

4 यदि शासक तुमसे नाराज हो
तो तुम अपना स्थान मत छोड़ो।
क्योंकि धैर्य गंभीर अपराध भी
सुधार देता है।

5 मैंने सूर्य के नीचे धरती पर एक बुराई देखी। इस बुराई का जिम्मेदार शासक है।
[6]मूर्ख ऊंचे स्थानों पर बैठाए जाते हैं, और धनी

---

9 : 12 लू 12 : 20; 1 थिस 5 : 3

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

निम्न स्थानों में। 7मैंने गुलामों को घोड़ों पर
जाते देखा है, जब कि शासक गुलामों की तरह
पैदल चल रहे थे।

8 जो दूसरे व्यक्ति के लिए गड्ढा खोदता है,
वह स्वयं उसमें गिरेगा।
जो चोरी के लिए दीवार में सेंध लगाता है,
उसको सांप डसेगा।
9 जो सीमा के पत्थरों को हटाता है,
उसको पत्थरों से चोट लगेगी।
जो सीमा के लट्ठों को चीरता है,
उसे उनसे खतरा रहेगा।
10 यदि कुल्हाड़ी थोथी हो,
और मनुष्य उसकी धार पैनी न करे,
तो उसको प्रयुक्त करने में
अधिक बल लगाना पड़ेगा।
किन्तु बुद्धि सफलता की कुंजी है।
11 यदि मन्त्र से पहले सर्प डस ले,
तो मन्त्र फूंकनेवाले से क्या लाभ?
12 बुद्धिमान मनुष्य के मुख के शब्द
उसके लिए दूसरों की कृपा के साधन हैं।
किन्तु मूर्ख मनुष्य के ओंठ
उसके विनाश के कारण हैं।
13 मूर्ख के मुख से निकले शब्द
आदि से अन्त तक मूर्खता से पूर्ण होते हैं:
उसकी बात का अन्त
दुष्टतापूर्ण पागलपन होता है।
14 मूर्ख मनुष्य एक बात की दो बातें बनाता है,
यद्यपि कोई नहीं जानता है
कि भविष्य में क्या होनेवाला है;
उसे कौन बता सकता है
कि उसकी मृत्यु के बाद क्या होगा।
15 मूर्ख का परिश्रम उसे थकाता है,
इतना कि उसे वापसी के लिए
शहर का रास्ता भी नहीं सूझता है।

16 ओ देश! धिक्कार है तुझे,
यदि तेरा राजा अनुभव-हीन युवक है;
और यदि तेरे सामन्त प्रातः से ही
खाने-पीने में जुट जाते हैं।
17 ओ देश, धन्य है तू,
यदि तेरा राजा कुलीन वंशज है,
और यदि तेरे सामन्त
निर्धारित समय पर खाते-पीते हैं,
बल प्राप्त करने के लिए,
न कि मतवालेपन के लिए।

18 आलस्य के कारण छत गिर जाती है,
सुस्ती से घर चूने लगता है।
19 भोज आमोद-प्रमोद के लिए किया जाता है,
अंगूर-पान से जीवन आनन्दित होता है।
रुपये से सब कुछ प्राप्त हो सकता है।
20 अपने मन में भी राजा को अपशब्द न कहो,
और न अपने शयन-कक्ष में
धनवान को बुरे शब्द कहना।
आकाश का पक्षी तेरे शब्द ले जाएगा,
उड़नेवाला जीव-जन्तु खबर कर देगा।

बुद्धिमान मनुष्य का आचरण

11 नेकी कर और दरिया में डाल*,
अनेक दिनों के पश्चात् भी तू प्रतिफल
प्राप्त कर सकता है।
2 सात, नहीं आठ व्यक्तियों को भाग दो,
क्योंकि तू नहीं जानता,
कि इस पृथ्वी में
कब तुझपर विपत्ति आ पड़े।
3 यदि बादल जल से भरे हैं,
तो वे स्वतः भूमि पर बरसेंगे।
चाहे वृक्ष दक्षिण की ओर गिरे,
चाहे वह उत्तर की ओर गिरे,
वह जिस स्थान पर गिरा है,
वह वहीं पड़ा रहेगा।
4 जो किसान वायु को ताकता है,
वह बीज बो नहीं सकता,
जो बादल का ही विचार करता है,
वह फसल काट नहीं सकता।
5 जैसा तुम नहीं जानते हो कि गर्भवती के
पेट के शिशु में प्राण कैसे पड़ जाता है, वैसे ही
तुम परमेश्वर के कार्यों को नहीं समझ सकते,
जो सबको बनाता है।

* शब्दशः 'अपनी रोटी जलाशय में डाल दे'

10 : 8 भज 7 : 15; नीति 26 : 27; प्रव 27 : 26-27 10 : 17 नीति 31 : 4 10 : 20 लू 12 : 2-3 11 : 5 भज 139 : 15; यो 3 : 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

6 प्रात:काल से अपना बीज बोना आरम्भ
करो, और सन्ध्या समय भी अपना हाथ मत
रोको, और काम करते रहो, क्योंकि तुम नहीं
जानते हो कि तुम्हें किस काम में सफलता
मिलेगी—इस काम में अथवा उस काम में, या
दोनों में।

उपदेशक का निष्कर्ष

7 सूर्य का प्रकाश प्रिय लगता है, धूप आंखों
को सुख पहुँचाती है।
8 यदि मनुष्य अनेक वर्षों तक जीवित रहता
है तो उसे चाहिए कि वह अपनी आयु के सब
वर्षों में जीवन का आनन्द ले, किन्तु वह स्मरण
रखे कि अन्धकार के दिन भी कम नहीं होंगे।
अत: जो कुछ होता है, वह व्यर्थ है।

युवक को सलाह

9 ओ जवान, अपनी जवानी भर आनन्द
मना, अपनी जवानी के दिनों में अपना हृदय
आनन्द से भर ले। जिस मार्ग पर तेरा दिल तुझे
ले जाए, जो मार्ग तेरी आंखों में उचित लगे, उस
पर चल। किन्तु यह बात जान ले, तेरे सब कामों
के विषय में स्पष्टीकरण के लिए परमेश्वर तुझे
कटघरे में खड़ा करेगा।
10 ओ तरुण! अपने हृदय से परेशानी को
निकाल दे, शरीर में दर्द न होने दे; क्योंकि तेरी
तरुणाई, जीवन की यह उषा, व्यर्थ है।

12 अपनी जवानी के दिनों में अपने सृष्टिकर्ता
परमेश्वर को स्मरण रख, अन्यथा इन
दिनों के बाद वे दिन और वर्ष आएंगे जब तू यह
कहेगा, 'अब जीवन में मुझे आनन्द नहीं
मिलता।' 2उन दिनों में तेरे लिए सूर्य और
प्रकाश, चन्द्रमा और तारे अन्धकारमय हो
जाएंगे। जल भरे बादल भूमि पर वर्षा कर लौट
जाएंगे। 3उन दिनों में तेरी रक्षा करने वाले
हाथ** कांपने लगेंगे, बलिष्ठ पैर भी झुक
जाएंगे। संख्या में कम होने के कारण दांत***
भोजन चबाना छोड़ देंगे। झरोखे से झांकनेवाली
आंखें धुंधली पड़ जाएंगी। 4सड़क की ओर
खुलनेवाले दोनों कान बन्द हो जाएंगे। चक्की
पीसने की आवाज धीमी पड़ जाएगी। तू
चिड़िया के चहचहाने से भी नींद से उठ
जाएगा। तेरे सब स्वर धीमे पड़ जाएंगे।
5थोड़ी-सी ऊंचाई चढ़ने में तुझे डर लगेगा।
गली-कूचों से तू आतंकित होगा। बादाम के
वृक्ष में पंखुड़ियाँ खिलेंगी। टिड्डी भी रेंगकर
चलने लगेगी। पर तेरी अभिलाषाएँ मर जाएंगी,
और तू अपने शाश्वत निवास स्थान को प्रस्थान
करेगा। भाड़े के रोने-पीटनेवाले लोग गली-
कूचों को घेर लेंगे। 6चांदी का तार कट जाएगा,
सोने का प्याला टूट जाएगा। झरने पर घड़ा फूट
जाएगा, कुएं के पास रहँट टूट जाएगा। 7तब मिट्टी
मिट्टी में मिल जाएगी, और आत्मा परमेश्वर के
पास लौट जाएगी, जिसने उसको प्रदान किया
था। 8सभा-उपदेशक यह कहता है: सब व्यर्थ
है, सब निस्सार है। निस्सन्देह सब कुछ व्यर्थ
है!

मनुष्य का सम्पूर्ण कर्त्तव्य

9 सभा-उपदेशक बुद्धिमान तो था, इसके
अतिरिक्त वह जनता को ज्ञान की बातें सिखाता
रहा। उसने सूक्तियों को शोध कर और परखकर
क्रम से अत्यन्त सावधानीपूर्वक संकलित किया।
10उपदेशक ने मनोहर शब्द ढूंढ़े और सच्चाई
की शिक्षा देनेवाले वचन लिखे।
11 बुद्धिमान व्यक्ति के कथन अंकुश की
तरह होते हैं। सभा के मुखियों के द्वारा दिए गए
ये संकलित कथन, मजबूती से ठोंकी गई
खूंटियों के समान हैं, क्योंकि इनका दाता एक-
मात्र 'चरवाहा' है। 12प्रिय शिष्य*, इनके अतिरिक्त
अन्य शिक्षाओं से सावधान रहना। अनेक
पुस्तकों के रचना-कार्य का अन्त नहीं होता।
अत्यधिक अध्ययन से शरीर थक जाता है।
13 जो कुछ तुमने सुना, उसका सार यह है:
तुम परमेश्वर पर श्रद्धा रखो, और उसकी
आज्ञाओं का पालन करो; क्योंकि मनुष्य का
सम्पूर्ण धर्म यही है। 14परमेश्वर मनुष्य के प्रत्येक
कर्म को, उसकी सब गुप्त बातों को, चाहे वे
भली हों या बुरी, न्याय के समय प्रस्तुत करेगा।

** मूल में, 'घर के पहरेदार', *** मूल में, 'पीसनेवाली स्त्रियाँ' * मूल में 'मेरे पुत्र'

12 : 13 नीति 1 : 7 12 : 14 मत 12 : 36

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

श्रेष्ठ गीत

(सुलेमान का श्रेष्ठ गीत)

पुस्तक-परिचय

"श्रेष्ठ गीत" एक काव्य संग्रह है। इसमें प्रेम-गीत संकलित हैं। ये गीत वास्तव में वर-वधू के प्रेमालाप हैं। वर अपनी वधू से गीत के माध्यम से अपने प्रेम की अभिव्यक्ति करता है। वधू भी उसको गीत के माध्यम से प्रत्युतर देती है, और सखियाँ भी उसके स्वर में स्वर मिलाती हैं।

इब्रानी बाइबिल में "श्रेष्ठ गीत" का उपशीर्षक "सुलेमान का श्रेष्ठ गीत" है। हो सकता है कि ऐसे प्रेम-गीतों की रचना में राजा सुलेमान का हाथ हो, अथवा वह विवाहोत्सव के मंच-मंडप का नायक माना जाता रहा हो।

इन प्रेमगीतों की व्याख्या के संबंध में विद्वानों में मतैक्य नहीं है। कुछ लोग इन्हें मानवी स्तर पर प्रेम-संबंधी गीति-काव्य मानते हैं। अन्य लोग श्रेष्ठ गीत को रूपक-काव्य मानते हैं, और उसमें आध्यात्मिक अर्थ देखते हैं। प्राचीन व्याख्याकार मानते हैं कि यह प्रेम परमेश्वर का अपने निज लोगों के प्रति है (होशे 2 : 16-19)। उसी सोच-विचार में, भक्ति-रस की भाषा में, यह प्रेमालाप "नया-विधान" के उस संबंध पर लागू किया जा सकता है, जो प्रभु येशु मसीह और उनकी भक्त मंडली के बीच में है।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

पहला गीत	1 : 1 — 2 : 7
दूसरा गीत	2 : 8 — 3 : 5
तीसरा गीत	3 : 6 — 5 : 1
चौथा गीत	5 : 2 — 6 : 3
पांचवां गीत	6 : 4 — 8 : 4
छठा गीत	8 : 5 — 14

शीर्षक

1 *राजा सुलेमान द्वारा*
रचित "श्रेष्ठ गीत"।

वधू और यरूशलेम की कन्याएँ

[वधू] 2 'काश! तुम अपने ओंठों से मुझे
चूमते;
तुम्हारा अधर अंगूर-रस से अधिक मधुर है।
3 तुम भिन्न-भिन्न इत्र लगाए हो,
उनकी महक कितनी तेज है।
तुम्हारा नाम मानो उण्डेला हुआ इत्र है,
इसलिए कन्याएँ तुमसे प्रेम करती हैं।
4 मैंने कहा, "मुझे अपनी अनुचरी बना लो,
आओ, हम शीघ्रता करें।"
महाराज मुझे अपने कक्ष में ले गए
और बोले, "हम तुममें उल्लसित और
आनन्दित होंगे,
हम अंगूर-रस से अधिक
तुम्हारे प्रेम की प्रशंसा करेंगे।"
कन्याएँ उचित ही तुमसे प्रेम करती हैं।

5 ओ यरूशलेम की कन्याओ!
मैं केदार-वंशियों के तम्बुओं के सदृश
काली हूं,
पर राजा सुलेमान के
भव्य परदों के सदृश सुन्दर हूं।
6 मुझे टेढ़ी नजर से मत देखो,
कि मैं रंग की सांवली हूं,
कि मैं धूप की झुलसी हूं।
मेरे सहोदर भाई मुझसे नाराज थे,

1 : 1 1रा 4 : 32 1 : 3 मत 25 : 1; 2 कुर 11 : 2; हो 2 : 14-24 1 : 4 भज 45 : 14 1 : 6 यश 5 : 1

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उन्होंने मुझे अंगूर-उद्यानों की रखवाली पर
लगाया।
पर मैं स्वयं अपने अंगूर-उद्यान की रखवाली
न कर सकी!

7 ओ मेरे प्राण-प्रिय! मुझे यह बताओ,
तुम अपनी भेड़-बकरियाँ कहां चराते हो,
दोपहर में उन्हें आराम कहाँ कराते हो?
मैं तुम्हारे साथियों के रेवड़ के आस-पास
घूंघट काढ़े हुए क्यों भटकती फिरूं?'
[*सखियां*] 8 'ओ महासुन्दरी!
यदि तुझे अपने प्राण-प्रिय का पता नहीं
मालूम,
तो भेड़ों के पद-चिह्नों का अनुसरण कर,
चरवाहों के तम्बुओं के पास
अपनी बकरियों के बच्चे चरा।'

वर और वधू

[*वर*] 9 'ओ मेरी प्रियतमा!
मैं तेरी उपमा,
राजा फरओ के रथ की घोड़ी से देता हूं।
10 गहने से जड़े
तेरे गाल कितने सुन्दर लग रहे हैं।
तेरी गरदन में मूंगे के हार लटक रहे हैं।
11 हम तेरे लिए चांदी के फूलदार,
सोने के आभूषण बनाएंगे।'
[*वधू*] 12 'जब महाराज अपने दीवान पर बैठे
थे,
मेरी जटामासी अपनी सुगन्ध बिखेर रही थी।
13 मेरा प्रियतम मेरे लिए लोबान की थैली है,
जो मेरे उरोजों के बीच लटकती रहती है।
14 मेरा प्रियतम मेरे लिए
एनगेदी के अंगूर-उद्यान में लहकती
मेहँदी के फूलों के गुच्छों के समान है।'

[*वर*] 15 'ओ मेरी प्रियतमा, तू खूबसूरत है।
तू कितनी सुन्दर है!
कपोतियों की तरह तेरी आंखें हैं।'

[*वधू*] 16 'ओ प्रियतम, तुम सुन्दर हो,
तुम प्रियदर्शी हो। हमारा दीवान हरा है,
17 हमारे महलों के शहतीर देवदार के हैं,
हमारी छत की कड़ियाँ सनोवर की हैं।

2 'मैं शारोन की कुमकुम हूं,
मैं घाटियों का सोसन फूल हूं।'
[*वर*] 2 'जैसे झाड़-झंखाड़ों में सोसन
खिलता है,
वैसे ही मेरी प्रियतमा कन्याओं के मध्य
सुशोभित है।'
[*वधू*] 3 'जैसे वन-वृक्षों में सेब,
वैसे ही मेरा प्रिय युवकों में है।
मैं उसकी छाया में हर्षित होकर बैठ गई,
उसके प्रेम-फल का स्वाद कितना मीठा है।

वधू का प्रेम-ज्वर

[*वधू*] 4 'वह मुझे मयखाने में ले गया,
उसके प्रेम की ध्वजा मुझपर फहरा उठी।
5 सखियो! तुम किशमिश खिलाकर मुझे बल
दो,
सेब खिलाकर मुझे तरोताजा करो,
क्योंकि मैं प्रेम-ज्वर से पीड़ित हूं।
6 काश! उसका बायाँ हाथ मेरे सिर के नीचे
रहता,
और वह अपने दाहिने हाथ से मेरा आलिंगन
करता।
7 ओ यरूशलेम की कन्याओ!
मैं वन-प्रदेश की हरिणियों
और मृगियों की तुम्हें शपथ देती हूं:
जब तक प्रेम स्वतः न जाग उठे,
तुम उसे न उकसाना, तुम उसे न जगाना।

मधुर भेंट की स्मृति

[*वधू*] 8 'सुनो! मेरे प्रियतम की आवाज।
देखो, वह पहाड़ों पर कूदता,
पहाड़ियों को फांदता आ रहा है!
9 मेरा प्रियतम मृग की तरह है,
वह तरुण हरिण है।
देखो, वह हमारी दीवार के पीछे खड़ा है,
वह खिड़कियों की ओर ताक रहा है,
वह झंझरी से झांक रहा है।
10 मेरा प्रियतम मुझसे कह रहा है:
''ओ मेरी प्रियतमा,

---

1 : 7 उत 37 : 16; यो 10 : 27 **1 : 10** यहेज 16 : 11 **2 : 8** यो 10 : 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मेरी प्रियदर्शिनी, उठकर चली आ।
11 देख, शरद ऋतु बीत गई,
वर्षा भी बरस कर जा चुकी,
12 धरती पर फूल खिलने लगे।
गीत गाने का समय आ गया।
हमारे देश में पण्डुक का स्वर सुनाई देने लगा।
13 अंजीर फल पकने लगे हैं,
अंगूर लताएँ फूल रही हैं,
वे सुगन्ध बिखेर रही हैं।
ओ मेरी प्रियतमा,
मेरी प्रियदर्शिनी, उठकर चली आ।
14 ओ मेरी कपोती।
चट्टानों की खोहों में
पहाड़ों की गुप्त दरारों में
मुझे तेरे रूप के दर्शन करने दे,
मुझे तेरी आवाज सुनने दे।
क्योंकि तेरा मुख सुन्दर है,
तेरी आवाज मधुर है।''

15 'इन लोमड़ियों को,
इन छोटी-छोटी लोमड़ियों को,
हमारे लिए पकड़ लो,
ये अंगूर-उद्यानों को नाश करती हैं,
हमारे अंगूर-उद्यानों में फूल आ गए हैं।

16 'मैं अपने प्रियतम की हूं,
और वह मेरा है।
वह सोसन पुष्पों के मध्य
अपनी भेड़-बकरियां चराता है।
17 सन्ध्या पवन बहने से पूर्व
छाया लम्बी होकर
उसके लोप होने के पूर्व,
ओ मेरे प्रियतम,
मृग की तरह ऊबड़-खाबड़ पहाड़ों पर
तरुण हरिण के सदृश लौट आना।

वर की प्रतीक्षा

[वधू]

3 'रात के समय मैं पलंग पर लेटी थी,
उस समय मैंने अपने प्राण-प्रिय को पाना
चाहा; मैं उसे ढूंढ़ने लगी,
पर वह मुझे न मिला।
मैंने उसको पुकारा, किन्तु उसने उत्तर नहीं दिया।
2 अब मैं पलंग से उठकर शहर में,
गलियों, चौराहों में घूम-घूम कर
अपने प्राणप्रिय को ढूंढूंगी।
3 मुझे पहरेदार मिले;
वे शहर में घूम-घूम कर पहरा दे रहे थे।
मैंने उनसे पूछा,
''क्या तुमने मेरे प्राण-प्रिय को देखा है?''
4 मैं उनके पास से गुजरी ही थी,
कि मुझे अपना प्राणप्रिय मिल गया।
मैंने उसको पकड़ लिया;
जब तक मैं उसे अपनी मां के घर में,
अपनी जननी के कक्ष में न ले आई,
मैंने उसको जाने न दिया।

5 'ओ यरूशलेम की कन्याओ!
मैं वन-प्रदेश की हरिणियों
और मृगियों की तुम्हें शपथ देती हूं:
जब तक प्रेम स्वतः न जाग उठे,
तुम उसे न उकसाना, तुम उसे न जगाना।

बारात की शोभा

[वधू] 6 'गन्धरस और लोबान से सुगन्धित,
गन्धी के सब प्रकार के मसालों का लेप लगाये,
धुएं के खम्भे-सा
यह कौन निर्जन प्रदेश से आ रहा है?
7 अरे, यह तो राजा सुलेमान की पालकी है।
इस्राएली सेना के चुनिन्दे साठ योद्धा
उसके साथ-साथ चल रहे हैं।
8 वे सब तलवार बांधे हुए हैं,
वे युद्ध-विद्या में निपुण हैं।
रात के खतरे से सतर्क रहने के लिए
प्रत्येक योद्धा अपनी जांघ पर
तलवार लटकाए रहता है।
9 राजा सुलेमान ने लबानोन प्रदेश के देवदार की
लकड़ी से एक पालकी बनवाई है।

---

2 : 15 यहेज 13 : 4; लू 13 : 32 **3 : 1** यिर 29 : 13; यो 20 : 13 **3 : 4** उत 2 : 24

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

10 उसने उसके पाये चांदी के,
और उसका सिरहाना सोने का बनवाया है।
पालकी की गद्दी बैंजनी वस्त्र से मढ़ी है,
उसका भीतरी भाग चर्म-पट्टियों से सजा है।

11 'ओ यरूशलेम की कन्याओ,
अपने-अपने घर से बाहर निकलो।
ओ सियोन की पुत्रियो,
बाहर आकर राजा सुलेमान को देखो।
वह उस मुकुट को पहिने हुए है,
जो उसकी माता ने
उसके विवाह के दिन
उसके हृदय के आनन्द-दिवस पर
उसको पहिनाया था।'

वर द्वारा वधू का नख-शिख वर्णन

[वर]

4 'ओ मेरी प्रियतमा, तू सुन्दर है,
सचमुच तू सुन्दर है।
नकाब के भीतर
तेरी आंखें कपोत की तरह दिखाई देती हैं,
तेरे केश गिलआद प्रदेश की ढाल से नीचे
उतर रही बकरियों के झुण्ड के सदृश लगते
हैं।
2 तेरे दांत ऊन कतरी भेड़ों के झुण्ड के समान
हैं,
जो नहाने के बाद पानी से बाहर आई हैं,
जिनके जुड़वा बच्चे हैं।
उनमें से किसी का जोड़ा नहीं मरा है।
3 तेरे ओंठ मानो गुलाबी डोरी हैं।
तेरा चेहरा अजब आकर्षक है।
तेरे गाल नकाब के पीछे
अनार की फांक के सदृश हैं।
4 तेरी गरदन दाऊद की मीनार जैसी लम्बी है,
जो शस्त्रागार के लिए बनी है,
जिसमें हजार ढालें टंगी हैं;
ये योद्धाओं की ढालें हैं।
5 तेरे दो उरोज मानो दो मृग शावक हैं,
मानो सोसन पुष्पों के मध्य
चरते हुए मृग के दो जुड़वा बच्चे हैं।
6 'सन्ध्या पवन बहने से पूर्व
छाया ढलने तक
मैं गन्धरस के पहाड़ पर
लोबान की पहाड़ी पर भाग जाऊंगा।

7 'ओ मेरी प्रियतमा!
तेरा हर अंग सांचे में ढला है,
तू निष्कलंक सुन्दरी है।
8 ओ वधू, मेरे साथ लबानोन से,
लबानोन पहाड़ से भाग चल।
अमाना शिखर से
शनीर और हेर्मोन की चोटी से,
सिंहों की मांदों से,
तेंदुओं के पहाड़ों से भाग चल।

9 'ओ मेरी संगिनी, ओ मेरी दुलहन,
तूने एक नजर में ही
अपने कण्ठहार के एक ही हीरे से
मेरा हृदय मोह लिया है।
10 ओ मेरी संगिनी, ओ मेरी दुलहन!
तेरा प्यार कितना मीठा है,
अंगूर से अधिक मधुर तेरा प्यार है।
11 ओ मेरी वधू,
तेरे ओंठों से मधु टपकता है,
तेरी जीभ के नीचे
शहद और दूध की मिठास है।
तेरे वस्त्रों की सुगन्ध
मानो लबनोन की सुगन्ध है।
12 मेरी दुलहन उस वाटिका के सदृश है
जिसका प्रवेश-द्वार बन्द है।
वह प्रवेश-निषिद्ध उद्यान है!
वह मुहरबन्द झरना है!
13 उस अनार उद्यान के सदृश तेरे कुंज* हैं
जो सर्वोत्तम फलों से लदा है,
जिसमें मेहँदी और जटामासी,
14 जटामासी और केसर,
लोबान, मुश्क और दालचीनी,
तथा सब मुख्य मसालों के वृक्ष हैं।

---

*मूल अस्पष्ट।

3 : 6 -11 1 मका 9 : 37-39; भज 45 : 15-16 **3 : 11** 1 रा 3 : 1; 10 : 8 ; 11 : 3; यश 62 : 5 **4 : 7** इफ 5 : 27 **4 : 9** यश 54 : 5; यो 3 : 29; प्रक 19 : 7-8 **4 : 11** हो 14 : 6-7 **4 : 12** यश 58 : 11

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

15 तू उद्यान का झरना है,
जीवनदायक जल का कुआं।
तू लबानोन से निकली हुई जल-धारा है।'

मिलन

[वधू] 16 'ओ उत्तरी पवन, जाग,
ओ दक्षिणी पवन, आ।
मेरे उद्यान में बहो,
जिससे उसकी सुगन्ध दूर-दूर तक फैल जाए।
तब मेरा प्रियतम,
अपने उद्यान में आए,
और उसके मधुर फल खाए।'

[वर]

5 'ओ मेरी संगिनी, ओ मेरी दुलहन!
मैं अपने उद्यान में आया हूं।
मैंने अपना गन्धरस और बलसान चुन लिया।
मैंने मधु छत्ते से टपकता मधु खाया।
मैंने दूध के साथ अंगूर-रस पिया।'

[सखियाँ] 'ओ मित्रो, खाओ-पियो।
ओ प्रेमियो, छककर पियो।'

वियोग की पीड़ा

[वधू] 2 'मैं सोई हुई थी,
पर मेरा मन जाग रहा था।
सुनो, मेरा प्रियतम द्वार खटखटा रहा है :
''ओ मेरी संगिनी, मेरी प्रियतमा,
मेरी कपोती, मेरी निष्कलंक सुन्दरी!
मेरे लिए द्वार खोल!
मेरा सिर ओस से भीग गया है।
मेरी लटें रात में टपकती बूंदों से तर हैं।''
3 मैं अपनी साड़ी उतार चुकी हूं,
अब उसे मैं फिर कैसे पहनूं?
मैं अपने पैर धो चुकी हूं,
मैं उन्हें कैसे भूमि पर रखकर मैला करूं?
4 मेरे प्रियतम ने अपना हाथ दराज में डाला,
मेरा हृदय भीतर ही भीतर धड़कने लगा।
5 मैं अपने प्रियतम के लिए
द्वार खोलने के लिए उठी।
मेरे हाथों से गन्धरस टपक रहा था,
किल्ली के मूंठों पर
मेरी अंगुलियों से तरल गन्धरस टपक रहा था।
6 मैं अपने प्रियतम के लिए
द्वार खोल ही रही थी कि
मेरा प्रियतम मुड़कर चला गया।
जब उसने मुझे पुकारा
तब मैं सुध-बुध खो बैठी थी।
मैंने उसको ढूंढ़ा पर वह मुझे न मिला।
मैंने उसको पुकारा, परन्तु उसने उत्तर नहीं दिया।
7 मैं पहरेदारों के हाथ में पड़ गई।
वे नगर में घूम-घूमकर पहरा दे रहे थे।
उन्होंने मुझे मारा,
उन्होंने मुझे घायल कर दिया।
शहरपनाह के पहरेदारों ने
मेरी चुनरी छीनकर मुझे नग्न कर दिया।

8 'ओ यरूशलेम की कन्याओ!
मैं तुम्हें शपथ देती हूं!
अगर तुम्हें मेरा प्रियतम मिले
तो तुम उसे यह अवश्य बताना
कि मैं प्रेम-ज्वर से पीड़ित हूं।'

वधू द्वारा वर की प्रशंसा

[सखियाँ] 9 'ओ परम सुन्दरी,
तेरा प्रियतम अन्य प्रेमियों से
किस बात में श्रेष्ठ है,
उसमें क्या विशेषता है
कि तू हमें शपथ देती है?'

[वधू] 10 'मेरे प्रियतम में तेज है, उसमें लालिमा है।
वह हजारों में एक है।
11 उसका ललाट चोखा सोने का-सा है,
उसकी लहलहाती हुई लटें,
कौओं की तरह काली हैं।
12 उसकी आंखें झरने तट पर पंक्तिबद्ध बैठी,
दूध की धुली कपोतियों के सदृश हैं।*
13 उसके ओंठ मानो सोसन पुष्प हैं

---

* मूल अस्पष्ट।

5 : 1 यश 55 : 1-2 **5 : 2** प्रक 3 : 20 **5 : 6** हो 5 : 6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जिनसे तरल गन्धरस टपकता है।
उसके गाल बलसान की क्यारियां हैं
जो सुगन्ध बिखेरती हैं।
14 उसकी भुजाएँ फिरोज़ा जड़ी हुई
सोने की छड़ों के समान हैं।
उसका शरीर मानो हाथीदांत का बना है
और उसमें नील मणियाँ जड़ी गई हैं।
15 उसके पैर संगमर्मर के खम्भे हैं,
जो शुद्ध सोने पर बैठाए गए हैं।
उसका रूप लबानोन के सदृश है,
सर्वोत्तम देवदार वृक्ष के सदृश
वह आकर्षक है।
16 उसका कण्ठ अत्यन्त मधुर है,
वह हर दृष्टि से सुन्दर है।
ओ यरूशलेम की कन्याओ,
यह मेरा प्रियतम है, यही मेरा मित्र है।'

[*सखियाँ*]
6 'ओ परम सुन्दरी,
तेरा प्रियतम कहाँ चला गया?
तेरा प्रियतम किस दिशा में गया?
बता, जिससे हम तेरे साथ उसको ढूंढ़ें।'
[*वधू*] 2 'मेरा प्रियतम अपने उद्यानों में
अपनी भेड़-बकरियाँ चराने के लिए
सोसन पुष्प चुनने के लिए
अपने उद्यान में गया है,
वह बलसान की क्यारियों में गया है।
3 मैं अपने प्रियतम की हूं,
और वह मेरा है,
जो सोसन पुष्प के मैदान में
अपनी भेड़-बकरियाँ चराता है।'

पुनर्मिलन

[*वर*]4 'ओ मेरी प्रियतमा,
तू तिर्सा नगरी की तरह सुन्दर,
यरूशलेम के सदृश रूपवती है।
पताका फहराती हुई सेना के समान
तू प्रेम में आक्रमणकारी* है।
5 तू मेरी ओर से अपनी आंखें फेर ले,
क्योंकि मैं उनसे घबराता हूं।
तेरे केश गिलआद प्रदेश की ढाल से
नीचे उतर रही बकरियों के झुण्ड के सदृश
लगते हैं।
6 तेरे दांत उन भेड़ों के समान हैं
जो नहाकर पानी से बाहर आई हैं,
जिनके जुड़वा बच्चे हैं।
उनमें से किसी का जोड़ा नहीं मरा है।
7 तेरे गाल नकाब के पीछे
अनार की फांक के सदृश हैं।
8 हरम में चाहे साठ रानियाँ
और अस्सी उप-पत्नियाँ हों,
तथा अगणित कन्याएँ,
9 तोभी मेरी कपोती, मेरी सर्वांग सुन्दरी,
तू अद्वितीय है।
तू अपनी मां की दुलारी,
अपनी जननी की निष्कलंक कन्या है।
सभी कन्याओं ने,
रानियों और उप-पत्नियों ने भी
तुझे देखकर धन्य कहा;
उन्होंने तेरे रूप की प्रशंसा की :
10 "यह उषा के सदृश दिखनेवाली कन्या
कौन है?
यह मानो दूज का चन्द्रमा है,
सूर्य की तरह आलोकमयी है।
पताका फहराती हुई सेना के सदृश
प्रेम में आक्रमण करनेवाली
यह कौन है?"'
[*वधू*] 11 'मैं घाटी में फूल देखने के उद्देश्य से,
यह देखने के लिए कि अंगूर-लताएँ फूली
हैं कि नहीं,
अनारों के फूल खिले हैं कि नहीं,
मैं अखरोट उद्यान में गई।
12 मैं संभल भी न पायी थी,
कि मेरी कल्पना ने मुझे
अपने राजकुमार के रथ पर चढ़ा दिया।'

सखियों द्वारा वधू का नख-शिख वर्णन

[*सखियाँ*] 13 'ओ सुलेमानिन!+
लौट आ, लौट आ, ताकि हम तुझे निहारें।

---

* अथवा, 'भयंक'। + अथवा, 'शूलमिती'। मूल में 7 : 1

5 : 16 भज 45 : 2; यिर 31 : 3 **6 : 2** यश 40 : 11 **6 : 4** 1 रा 14 : 17 **6 : 8** सभ 2 : 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लौट आ, लौट आ!'

[वधू] 'तुम सुलेमानिन को क्यों निहारना
चाहती हो?
क्या मैं दो दलों के बीच नाचनेवाली लड़की
हूं?'

[*सखियाँ*]

7 'ओ राजकुमारी,
चप्पल पहिने हुए तेरे चरण
कितने सुन्दर प्रतीत होते हैं।
तेरे जांघों की गोलाई
निपुण कारीगरों के हाथों
काढ़े गए रत्नों के सदृश है।
2 तेरी नाभि गोल चषक है,
जो मिश्रित शराब से कभी खाली नहीं होता।
तेरा उदर गेहूं का ढेर है,
जिसके चारों ओर सोसन पुष्पों की कतार है।
3 तेरे दोनों उरोज मानो दो मृग-शावक हैं,
हरिणी के जुड़वा बच्चे हैं।
4 तेरी सुराईदार गरदन
जैसे हाथीदांत की मीनार है।
तेरी आंखें हेशबोन के उन तड़ागों जैसी हैं
जो बेत-रब्बीम के प्रवेश-द्वार पर हैं।
तेरी नाक लबानोन की मीनार है,
जो दमिश्क नगर की ओर उन्मुख है।
5 तेरी देह पर कर्मेल पर्वत की तरह
तेरा सिर शोभा देता है,
तेरी लहलहाती लटें मानो बैंगनी परदे हैं।
इन्हीं लटों में राजा कैद हो गया।'

प्रेम का आदान-प्रदान

[वर] 6 'ओ प्रियतमा, मनमोहनी!
तू कितनी सुन्दर, सुकुमार कन्या है।
7 तेरा कद खजूर वृक्ष-जैसा ऊंचा है,
और उसके गुच्छों की तरह तेरे स्तन हैं।
8 मैंने सोचा है,
मैं इस खजूर वृक्ष पर चढ़ूंगा,
और उसकी चोटी को पकड़ूंगा।
ओ प्रियतमा,
तेरे उरोज अंगूर के गुच्छे की तरह लुभावने
बने रहें,
और तेरी सांस सेबों की तरह महकती रहे।
9 तेरे कण्ठ का चुम्बन
तीखी शराब के घूंट के समान लगता है!'

[वधू] 'मेरे ओंठों और दांतों से बहती हुई
वह मेरे प्रियतम के लिए ही उतरती है।
10 मैं अपने प्रियतम की हूं,
और उसकी कामना मुझे पाने की है।
11 ओ मेरे प्रियतम, आओ,
हम खेतों में चलें,
मेहंदी पुष्पों के मध्य लेटें।
12 हम बड़े तड़के अंगूर-उद्यानों में चलें,
और देखें कि अंगूर-लताओं में कलियाँ आई
अथवा नहीं,
अंगूर के फूल फूले हैं अथवा नहीं,
अनार की कलियाँ खिल उठी हैं या नहीं।
वहाँ मैं तुमको अपना प्रेम अर्पित* करूंगी।
13 दोदाफलों से सुगन्ध निकल रही है।
हमारे द्वारों पर सर्वोत्तम फल फले हैं,
नए भी और पुराने भी
जिन्हें, ओ मेरे प्रियतम,
मैंने तुम्हारे लिए एकत्र किया है।

8 'काश कि तुम मेरे सहोदर भाई होते;
और तुमने मेरी मां का दूध पिया होता;
क्योंकि तब यदि मैं
घर के बाहर तुम्हारा चुम्बन लेती,
तो कोई मेरी निन्दा न करता।
2 मैं तुम्हें अपनी मां के घर ले जाती,
अपनी जननी के कक्ष में लाती।
मैं तुम्हें पीने को मसाला मिश्रित अंगूर का
रस, और अपने अनारों का रस पिलाती।
3 काश! तुम्हारा बायां हाथ मेरे सिर के नीचे
रहता,
और तुम अपने दाहिने हाथ से मेरा आलिंगन
करते।
4 'ओ यरूशलेम की कन्याओ!
मैं तुम्हें शपथ देती हूं:
जब तक प्रेम स्वतः न जाग उठे,

* अथवा, 'प्रदर्शित'

7 : 6 भज 4 : 11 **7 : 11** उत 3 : 16 **7 : 12** प्रक 22 : 17 **8 : 1** नीति 7 : 13 **8 : 2** नीति 9 : 2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तुम उसे न उकसाना, तुम उसे न जगाना।'

प्रेम का मूल्य

[*सखियाँ*] 5 'अपने प्रियतम के कन्धे पर
झुकी-सी
यह कौन निर्जन प्रदेश से आ रही है?'

[*वधू*] 'मैं तुमको सेब के वृक्ष के नीचे जगाती हूं,
जहाँ तुम्हारी मां ने तुम्हारे लिए प्रसव-पीड़ा भोगी थी,
जहाँ तुम्हारी जननी ने तुमको जन्म दिया था।
6 ओ मेरे प्रियतम!
मुझे मुहर की तरह अपने हृदय पर अंकित कर लो।
ताबीज के समान अपनी बाँह पर बांध लो,
क्योंकि प्रेम मृत्यु जैसा शक्तिशाली है,
और ईर्ष्या कबर के समान निर्दयी है।
उसकी लपटें आग की लपटों जैसी होती हैं,
उसकी ज्वाला बड़ी उग्र होती है।
7 अनेक जलाशय भी प्रेम की आग नहीं बुझा सकते,
और न बाढ़ का जल उसे डुबा सकता है।
यदि कोई प्रेम के बदले
अपने घर की तमाम धन-सम्पत्ति लुटा दे,
तो भी उसकी धन-सम्पत्ति
प्रेम के पलड़े पर हल्की पड़ेगी।

8 'मेरे भाइयों ने कहा था : ''हमारी एक छोटी बहिन है,
उसके उरोज अब तक उठे नहीं।
अभी यदि उसको कोई मांगे
तो हम अपनी बहिन के लिए क्या करेंगे?
9 यदि वह शहरपनाह होती
तो हम उस पर चांदी का कंगूरा बनाते,
और यदि वह द्वार का किवाड़ होती
तो हम उसपर देवदार के तख्ते लगा देते।''
10 किन्तु मैं शहरपनाह हूं,
और मेरे उरोज उसकी मीनार हैं।
मैं अपने प्रियतम की नजर में
शान्ति लानेवाली वधू हूं।

11 'बअल-हामोन नगर में राजा सुलेमान का
एक अंगूर-उद्यान था। उसने अंगूर-उद्यान
रखवालों को ठेके पर दे दिया। प्रत्येक रखवाला
उसके फलों के लिए चांदी के एक हजार
सिक्के देता था।
12 मेरा, मेरे निज का अंगूर-उद्यान मेरे सामने
है! ओ सुलेमान, तुम ये हजार सिक्के ले लो,
और उसके फल के रखवाले भी दो सौ सिक्के
ले लें।'

[*वर*] 13 'ओ बागों में रहनेवाली,
मेरे साथी तेरी आवाज सुनना चाहते हैं,
मुझे भी अपनी आवाज सुना।'

[*वधू*] 14 'ओ मेरे प्रियतम!
सुगन्धद्रव्यों के पर्वतों के तरुण मृग की तरह,
एक हरिण के सदृश शीघ्र आओ!'

---

8 : 6 व्य 6 : 8; यश 49 : 16; यिर 22 : 24; हग्ग 2 : 23; हब 2 : 5; रोम 8 : 38 **8 : 10** यहेज 16 : 7; 1 राजा 4 : 24-25 **8 : 14** 1 कुर 16 : 22; प्रक 22 : 20

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नबी यशायाह का ग्रंथ

पुस्तक-परिचय

पवित्र बाइबिल में उस व्यक्ति को नबी अथवा नबिया कहते हैं, जो परमेश्वर की ओर से विशेष आध्यात्मिक अनुभूति प्राप्त करे और उसे प्रभु की इच्छा समझ कर 'वाणी' के रूप में घोषित करे। इस प्रकार नबी अपनी परिस्थितियों में 'दर्शी' है। प्रभु के नाम में वह अपने समकालीन लोगों के लिए 'प्रवाचक' का कार्य करता है : वह उन्हें चेतावनी देता है और सांत्वना भी दे सकता है। उसी अर्थ में वह कभी युग-परिवर्तन का 'भविष्यवक्ता' बन जाता है।

इब्रानी बाइबिल के क्रमानुसार 'यहोशुअ, शासक, 1-2 शमूएल तथा 1-2 राजा' ग्रंथों को नबी साहित्य का पूर्वभाग मानते हैं। उन ग्रन्थों के ऐतिहासिक विवरण में अनेक 'पूर्ववर्ती नबियों' के कार्यों एवं वचनों का उल्लेख मिलता है। उनमें प्रमुख हैं : नबिया दबोराह, नबी नातान और नबी-दल के गुरु एलियाह तथा एलीशा। तब नबी यशायाह के ग्रंथ से लेकर 'उत्तरवर्ती नबियों' के ग्रंथ आते हैं, जो नबियों के नाम से जाने जाते हैं। किन्तु प्राचीन बाइबिल-अनुवादों के क्रम में ये नबी-ग्रंथ अंतिम खण्ड में हैं।

प्रस्तुत ग्रंथ महान् नबी यशायाह के नाम पर प्रचलित है। नबी यशायाह ईसवी पूर्व आठवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में यरूशलेम में रहते थे। राजदरबार से उनका निकट सम्पर्क था। उनकी नबूवतों के प्रभाव से एक परम्परा-सी बनती गई। प्रस्तुत ग्रंथ को हम तीन खण्डों में बांट सकते हैं :

पहला खण्ड : अध्याय 1-39। इस खण्ड की विषय-सामग्री उस काल से आरम्भ होती है, जब महाशक्तिशाली असीरियाई साम्राज्य यहूदा राज्य पर आक्रमण की योजना बनाता है। सन् 742 ईसवी पूर्व की बात है। मंदिर में पवित्र परमेश्वर की उपस्थिति का अनुभव प्राप्त कर नबी यशायाह कहते हैं कि यहूदा प्रदेश को वास्तविक खतरा असीरिया की सैन्य-शक्ति से नहीं, बल्कि इस्राएली कौम के द्वारा किये गये पापों से है। इस्राएली लोग परमेश्वर पर भरोसा नहीं करते। नबी ने स्पष्ट शब्दों तथा कार्यों द्वारा जनता और नेताओं को आह्वान दिया कि वे धर्म एवं न्याय का जीवन व्यतीत करें! नबी उन्हें यह चेतावनी भी देते हैं कि यदि वे परमेश्वर के वचन को नहीं सुनेंगे तो उनका विनाश अवश्यंभावी है। सन् 734 ईसवी पूर्व में वह राजा आहाज को अयोग्य ठहराते हैं और यह नबूबत करते हैं कि राजा दाऊद के वंश में एक ऐसा व्यक्ति जन्म लेगा जो विश्व का आदर्श राजा होगा। संपूर्ण विश्व में ऐसा समय आयेगा जब चारों ओर शान्ति का साम्राज्य होगा। यद्यपि हिजकियाह अपेक्षाकृत सुयोग्य राजा था और इसके शासनकाल में, लगभग सन् 701 ईसवी पूर्व में, असीरियाई सम्राट सनहेरिब राजधानी यरूशलेम को गिराने में असफल रहा, फिर भी दाऊद-वंशज के संबंध में कही गई महत्वपूर्ण नबूवत उस धार्मिक राजा हिजकियाह पर लागू नहीं हुई।

दूसरा खण्ड : ('द्वितीय यशायाह') : अध्याय 40-55। इस खण्ड में संकलित नबूवतें उस समय की हैं, जब यहूदा प्रदेश के बहुत लोग बेबीलोन देश में निष्कासित थे। उन दिनों, लगभग सन् 545 ईसवी पूर्व में फारस देश का राजा कुस्रू एक नये साम्राज्य की स्थापना कर रहा था। ऐसी परिस्थिति में किसी अज्ञात नबी ने यह घोषणा की: परमेश्वर अपने लोगों को शीघ्र ही बंधुआई से मुक्त करेगा, और उन्हें यरूशलेम वापस लायेगा, ताकि वे नया जीवन आरम्भ करें। इन अध्यायों में एक विशेष विषय-वस्तु पर जोर दिया गया है कि सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर मानवीय इतिहास का सर्वोपरि प्रभु है। उसने अपने लोगों के लिए एक योजना बनायी है, और उनको समस्त विश्व के लिए एक कार्य सौंपा है, क्योंकि उत्पीड़ित इस्राएल के माध्यम से (अथवा

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उसके प्रतिनिधि की प्रतिस्थानिक मृत्यु के द्वारा ?) विश्व के सब राष्ट्र आशिष पायेंगे। 'प्रभु के सेवक' संबंधी चार काव्य हैं : 42 : 1-7; 49 : 1-9; 50 : 4-11; 52 : 13—53 : 12।

तीसरा खण्ड ('तृतीय यशायाह') : अध्याय 56-66। इन अध्यायों की अधिकांश सामग्री उन लोगों से संबंधित है जो निष्कासन से लौट कर यरूशलेम में पुन: बसने का प्रयास कर रहे थे, और जिन्हें इस आश्वासन की आवश्यकता थी कि परमेश्वर इस्राएली राष्ट्र से की गयी अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करेगा। इन अध्यायों में मनुष्य के धार्मिक आचरण, सामाजिक न्याय, विश्राम-दिवस का पालन, बलि अर्पण तथा प्रार्थना-उपवास के संबंध में नबी (अथवा नबिया ?) के महत्वपूर्ण वचन हैं।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

पहला खण्ड :	चेतावनी एवं प्रतिज्ञा	1 : 1—12 : 6
	राष्ट्रों को दण्ड	13 : 1—23 : 18
	परमेश्वर द्वारा संसार का न्याय	24 : 1—27 : 13
	अन्य चेतावनियां तथा प्रतिज्ञाएँ	28 : 1—35 : 10
	यहूदा प्रदेश का राजा हिजकियाह तथा असीरिया का राजा सनहेरिब	36 : 1—39 : 8
दूसरा खण्ड :	आशा और प्रतिज्ञा के सन्देश	40 : 1—55 : 13
तीसरा खण्ड :	चेतावनी और आश्वासन	56 : 1—66 : 24

---

1 यशायाह बेन-आमोत्स का दर्शन : यह यहूदा प्रदेश तथा यरूशलेम नगर के सम्बन्ध में था। ये दर्शन यशायाह ने यहूदा प्रदेश के राजाओं उज्जियाह, योताम, आहाज और हिजकियाह के राज्य-काल में देखे थे।

पापी राष्ट्र

2 ओ आकाश, सुन!
ओ पृथ्वी, ध्यान दे,
क्योंकि प्रभु ने यह कहा है :
'मैंने बाल-बच्चों का पालन-पोषण किया,
उनको बड़ा किया;
पर उन्होंने ही मेरे विरुद्ध विद्रोह कर दिया।
3 बैल अपने मालिक को जानता है,
गधा अपने स्वामी की नींद को पहचानता है;
पर इस्राएल मुझे नहीं जानता,
मेरे निज लोगों में समझ नहीं!'

4 ओ पापी राष्ट्र! ओ अधर्म के बोझ से दबे लोगो! ओ कुकर्मियों की सन्तान! ओ भ्रष्टाचारी पुत्रो!
तुमने प्रभु को त्याग दिया,
तुमने इस्राएल के पवित्र परमेश्वर को तुच्छ समझा।
तुम उससे मुंह मोड़ कर दूर हो गए।
5 अब तुम्हारे किस अंग पर प्रहार किया जा सकता है ?
तुम्हारा कोई अंग भी मार से बचा नहीं,
फिर भी तुम बार-बार विद्रोह करते हो!
तुम्हारा सारा सिर घायल है,
तुम्हारा सम्पूर्ण हृदय रोगी है।
6 सिर से पैर तक,
तुममें स्वास्थ्य का चिह्न नहीं रहा,
केवल घाव, चोट और सड़े हुए जख्म!
उनका न मवाद पोंछा गया,
न उनपर पट्टी बांधी गई,
और न तेल लगाकर उन्हें ठण्डा ही किया गया।
7 तुम्हारा देश उजड़ गया,
तुम्हारे नगर आग से भस्म हो गए।
तुम्हारी आंखों के सामने विदेशी तुम्हारे देश को लूटते हैं।
जैसे सदोम नगर-राज्य+ उलट-पुलट गया था,

+ मूल में, "मानो विदेशियों द्वारा"

1 : 1 2 रा 15 : 1 **1 : 2** व्य 32 : 5-6 **1 : 3** यिर 8 : 7; लू 2 : 7 **1 : 5** यिर 5 : 3 **1 : 6** यिर 30 : 12-14

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वैसे ही तुम्हारा देश उजाड़ हो गया।
8 सियोन की पुत्री—
यरूशलेम नगरी—
अंगूर-उद्यान की झोपड़ी के समान,
ककड़ी के खेत के मचान की तरह,
सेना से घिरे हुए नगर के सदृश बची हुई है।
9 यदि स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु ने हममें से कुछ
लोगों को बचाया न होता
तो सदोम नगर की तरह,
गमोरा नगर के समान
हम भी नष्ट हो जाते।

पश्चात्ताप का आवाहन

10 ओ सदोम नगर के समान दुष्ट शासको,
प्रभु की यह वाणी सुनो!
ओ गमोरा नगर की तरह कुकर्मी लोगो,
हमारे परमेश्वर की व्यवस्था पर ध्यान दो!
11 प्रभु यह कहता है,
'मेरे लिए तुम्हारी यह प्रचुर पशु-बलि किस
काम की?
मैं मेढ़ों की अग्नि-बलि से,
पालतू पशुओं की चर्बी से अघा गया हूं।
मैं बैलों, मेमनों और बकरों के रक्त से प्रसन्न
नहीं होता।

12 'जब तुम यात्रा-पर्वों के लिए मेरे सम्मुख
आते हो—
तुमसे बलि-पशु लाने के लिए किसने कहा
था?
तुम इनको लेकर मेरे आंगन में क्यों प्रवेश
करते रहते हो?
13 तुम अपनी निस्सार भेंटें मेरे पास मत लाओ;
उनकी सुगन्ध से मुझे घृणा हो गई है।
तुम्हारा नवचन्द्र-पर्व मनाना, विश्राम-दिवस
मनाना,
धर्मसम्मेलन के लिए एकत्र होना,
और धर्ममहासभा के साथ-साथ अधर्म भी
करते जाना,
यह मैं नहीं सह सकता।
14 तुम्हारे नवचन्द्र-पर्वों तथा निर्धारित
यात्रा पर्वों से
मैं घृणा करता हूं।
ये मुझ पर बोझ बन गए हैं,
मैं इनको सहते-सहते ऊब गया हूं।
15 जब तुम प्रार्थना करते समय मेरी ओर हाथ
फैलाओगे
तब मैं तुम्हारी ओर से अपनी आंखें फेर लूंगा।
चाहे तुम एक के बाद एक, कितनी ही
प्रार्थनाएँ क्यों न करो,
मैं उन्हें नहीं सुनूंगा;
क्योंकि तुम्हारे हाथ खून से सने हैं।
16 तुम अपने को धोओ;
अपने को शुद्ध करो;
मेरी आंखों के सामने से अपने कुकर्मों को
दूर करो।
तुम बुराई करना छोड़ दो,
17 पर भलाई करना सीखो।
न्याय के लिए प्रयत्न करो;
अत्याचारी को सुधारो;
अनाथ को न्याय दिलाओ,
और विधवाओं का पक्ष लो।'

18 प्रभु यह कहता है,
'अब आओ; हम अपना वाद-विवाद हल
कर लें;
चाहे तुम्हारे पाप लाल रंग के हों,
वे हिम के समान सफेद हो जाएंगे।
चाहे वे अर्गवानी रंग के हों,
वे ऊन के समान श्वेत हो जाएंगे।
19 यदि तुम इच्छुक हो,
और आज्ञापालन के लिए तत्पर हो,
तो तुम भूमि का सर्वोत्तम फल खाओगे।
20 परन्तु यदि तुम मुझ-प्रभु की आज्ञा का
उल्लंघन करोगे
और मुझसे विद्रोह करोगे,
तो तुम तलवार से मौत के घाट उतारे
जाओगे।'
प्रभु ने अपने मुंह से यह कहा है।

1 : 9 रोम 9 : 29; उत 19 **1 : 11** आमो 5 : 21-22 **1 : 15** यिर 14 : 12; मी 3 : 4 **1 : 16** यिर 4 : 14 **1 : 17** मी 6 : 8 **1 : 18** भज 51 : 7 **1 : 19** व्य 28 : 1

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यरूशलेम नगर का पतन और उद्धार

21 जो नगरी सती–साध्वी थी,
वह कैसे वेश्या बन गई!
वह न्याय–प्रिय थी,
उसमें धर्म का निवास था।
पर अब ? वहाँ हत्यारे बसे हुए हैं।
22 ओ यरूशलेम, तेरी चांदी कूड़ा बन गई!
तेरा अंगूर–रस पानी हो गया!
23 तेरे शासक कानून के विरोधी हैं,
वे चोरों के साथी हैं।
वे–सब रिश्वत के लोभी हैं।
वे उपहारों के पीछे दौड़ते हैं।
वे अनाथों का न्याय नहीं करते,
और न विधवाओं का मुकदमा उन तक
पहुंच ही पाता है।

24 अत: प्रभु, स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु,
इस्राएल का सर्वशक्तिमान परमेश्वर यों
कहता है,
'सुनो, मैं अपने शत्रुओं पर अपना क्रोध
उतार कर
चैन की सांस लूंगा;
मैं अपने बैरियों से बदला लूंगा।
25 मैं तुझ पर अपना हाथ उठाऊंगा;
छार का प्रयोग कर तेरी मैल को पूर्णत:
भस्म करूंगा।
तेरी सारी मिलावट को दूर करूंगा।
26 मैं पहले–जैसे तेरे प्रशासकों को,
प्राचीन काल के समान तेरे मन्त्रियों को पुन:
नियुक्त करूंगा।
तब तू धार्मिक नगरी कहलायेगी।
लोग तुझे विश्वास–योग्य नगरी कहेंगे।'

27 सियोन का उद्धार न्याय से होगा;
बुराई से विमुख होनेवाले लोगों की मुक्ति
धार्मिकता से होगी।
28 किन्तु विद्रोही और पापी दोनों नष्ट किए
जाएंगे;
प्रभु को त्यागनेवाले पूर्णत: मिट जाएंगे।
29 तुम बांज वृक्षों की पूजा प्रसन्नता से करते थे;
इन्हीं बांज वृक्षों के कारण तुम्हारा लज्जा–
जनक पतन होगा।
जिन उद्यानों को पूजा के लिए तुमने चुना
था,
उनके कारण ही तुम लज्जित होगे।
30 क्योंकि तुम उस बांज वृक्ष के समान हो
जाओगे,
जिसके पत्ते मुर्झा गए हैं।
तुम उस उद्यान के समान सूख जाओगे,
जिसको पानी नहीं मिलता।

31 शक्तिशाली व्यक्ति सन के रेशे की तरह,
और उसकी बनाई गई प्रतिमा चिनगारी की
तरह है।
वस्तुत: दोनों एक साथ जल उठेंगे;
उन्हें बुझानेवाला कोई न होगा।

परमेश्वर का विश्वव्यापी शान्ति का राज्य

2 यशायाह बेन–आमोत्स ने दर्शन में यहूदा
प्रदेश और यरूशलेम के सम्बन्ध में यह
सुना :

2 आनेवाले दिनों में यह होगा :
जिस पर्वत पर
प्रभु का भवन निर्मित है,
वह विश्व के पर्वतों में उच्चतम स्थान पर,
गौरवमय स्थान पर प्रतिष्ठित होगा।
वह पहाड़ियों के मध्य उच्चतम स्थान ग्रहण
करेगा;
विश्व के राष्ट्र जलधारा के समान उसकी ओर
बहेंगे।
3 देश–देश के लोग वहाँ जाएंगे
और यह कहेंगे :
'आओ, हम प्रभु के पर्वत पर चढ़ें;
आओ, हम याकूब के परमेश्वर के भवन की
ओर चलें,
ताकि प्रभु हमें अपना मार्ग सिखाए,
और हम उसके सिखाए हुए मार्ग पर
चलें।'
सियोन पर्वत से प्रभु की व्यवस्था प्रकट
होगी,

---

1 : 26 जक 8 : 3 **2 : 2–4** मी 4 : 1–3 **2 : 3** जक 8 : 21; लू 24 : 47; यो 4 : 22

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यरूशलेम नगर से ही प्रभु का शब्द सुनाई
देगा।
4 प्रभु राष्ट्रों के मध्य न्याय करेगा;
वह भिन्न-भिन्न कौमों को अपना निर्णय
सुनायेगा।
तब विश्व में शान्ति स्थापित होगी :
राष्ट्र अपनी तलवारों को हल के फाल
बनायेंगे,
वे अपने भालों को हंसियों में बदल देंगे।
एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र के विरुद्ध तलवार नहीं
उठायेगा,
वे युद्ध-विद्या फिर नहीं सीखेंगे।
5 ओ याकूब के वंशजो,
आओ, हम प्रभु की ज्योति में चलें।

अहंकारियों का पतन निस्सन्देह होगा

6 हे प्रभु, तूने अपने निज लोगों को,
याकूब के वंशजों को त्याग दिया,
क्योंकि उनमें पूर्व देश के व्यापारी भर गए हैं,
पलिश्ती लोगों के सदृश झाड़-फूंक करनेवाले
उनमें बस गए हैं;
विदेशियों की सन्तान उनमें पनप रही है।
7 उनका देश सोने और चांदी से भर गया है;
उनके खजाने का कोई अन्त नहीं।
उनका देश घोड़ों से भरपूर है;
उनके यहाँ असंख्य रथ हैं।
8 उनका देश मूर्तियों से परिपूर्ण है।
वे अपने हाथों से बनाई गई मूर्तियों की
वन्दना करते हैं,
जिनको उनकी अंगुलियों ने रचा है।
9 मनुष्य-जाति का पतन हो रहा है,
मनुष्य नीचे गिर रहा है!
प्रभु, तू उसको मत उठा!
10 ओ मनुष्य!
प्रभु के आतंक से,
उसकी प्रभुता के तेज से भागकर
चट्टान की गुफा में प्रवेश कर;
तू रेत के ढेर में छिप जा।
11 मनुष्य-जाति की चढ़ी हुई आंखें नीची की
जाएंगी;
मनुष्य का घमण्ड चूर-चूर किया जाएगा।
उस दिन केवल प्रभु ही उच्च स्थान पर
विराजमान होगा।

12 अहंकारियों और अभिमानियों के लिए,
घमण्डियों और गर्व से फूलनेवालों के
लिए+
स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु ने एक दिन
निश्चित कर रखा है।
13 उसने इन सबके विरुद्ध भी वह दिन निश्चित
कर रखा है :
आसमान की ओर सिर उठाए लबानोन के
देवदार के वृक्ष,
बाशान क्षेत्र के बांज-वृक्ष,
14 ऊंचे-ऊंचे पहाड़ और आसमानी पहाड़ियां,
15 ऊंची मीनारें और पक्की शहरपनाह,
16 तर्शीश देश के जलयान, और अरब सागर
के जहाज।
17 सिर उठाकर चलनेवाले मनुष्य का पतन
होगा,
मनुष्य-जाति का घमण्ड चूर-चूर किया
जाएगा।
उस दिन केवल प्रभु ही उच्च स्थान पर
विराजमान होगा।
18 मूर्तियों का पूर्णत: अन्त हो जाएगा।
19 जब प्रभु पृथ्वी को आतंकित करने के लिए
अपने सिंहासन से उठेगा,
तब मनुष्य उसके आतंक से,
उसकी प्रभुता के तेज से भागकर
चट्टान की गुफ़ाओं में प्रवेश करेंगे,
वे भूमि के गड्ढों में छिपेंगे।
20 उस दिन मनुष्य सोने-चांदी की मूर्तियों को,
जो उन्होंने पूजा करने के लिए बनाई थीं,
छछून्दरों और चमगादड़ों के सामने फेंक
देंगे;
21 और वे प्रभु के आतंक से,
उसकी प्रभुता के तेज से भागकर
चट्टानों की खोहों में,

+ मूल में, "वे नीचे किए जाएंगे"।

2 : 4 योए 3 : 10 **2 : 10** प्रक 6 : 15; 2 थिस 1 : 9

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अधरशिलाओं के दरारों में छिपेंगे;
क्योंकि प्रभु पृथ्वी को आतंकित करने के
लिए
अपने सिंहासन से उठेगा।
22 अतः मनुष्य से,
जो केवल सांस का पुतला है,
मुंह मोड़ लो।
उसका मूल्य ही कितना है?

यहूदा प्रदेश और यरूशलेम नगर का न्याय

3 देखो, स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु, स्वामी,
यरूशलेम नगर से,
यहूदा प्रदेश से जीवन का आधार और सहारा
समस्त भोजन-वस्तु का आधार,
सम्पूर्ण पेय-जल का आधार
छीन रहा है।
2 महायोद्धा और सैनिक को
प्रशासक और नबी को,
सगुन विचारने वाले को,
और धर्मवृद्ध को,
3 पचास सैनिकों के नायक को,
और उच्च प्रतिष्ठित नागरिकों को,
मंत्रियों और निपुण जादूगर को,
कुशल तंत्र-मंत्र के ज्ञाता को
प्रभु समाज से छीन रहा है।
4 वह++ कच्ची उम्र के लड़कों को
उन का शासक बनाएगा;
स्वेच्छाचारी उन पर राज्य करेंगे।
5 लोग एक-दूसरे पर अत्याचार करेंगे,
प्रत्येक मनुष्य अपने साथी को,
अपने पड़ोसी को लूटेगा,
युवाजन अपने से बड़ों के प्रति,
और क्षुद्र व्यक्ति आदरणीय लोगों के प्रति
धृष्टतापूर्ण व्यवहार करेंगे।

6 उस दिन व्यक्ति अपने पिता के घर में
भाई को पकड़कर यह कहेगा,
'तुम्हारे पास चादर है,
तुम हमारे नेता हो।
आओ, खंडहरों के इस ढेर पर राज्य करो।'
7 तब भाई यह उत्तर देगा,
'मैं सुधारक कैसे बन सकता हूं?
मेरे घर में न भोजन है, और न वस्त्र।
तुम मुझे जनता का नेता नहीं बना सकते।'
8 यरूशलेम नगर लड़खड़ाकर गिर गया;
यहूदा प्रदेश का पतन हो गया;
क्योंकि उन्होंने प्रभु की महिमामय उपस्थिति
की उपेक्षा की,
और अपने शब्दों और कामों से उसका
विरोध किया।

9 उनका मुख उनके विरुद्ध साक्षी दे रहा है!
वे सदोम नगर-राज्य के समान
अपने पाप की घोषणा करते हैं,
वे उसको छिपाते नहीं!
धिक्कार है उन्हें!
उन्होंने स्वयं ही विपत्ति मोल ली है।
10 धार्मिक व्यक्तियों से यह कहो,
'चिन्ता मत करो,
तुम्हारा भला होगा,
तुम अपने परिश्रम का फल खाओगे।'
11 दुर्जन को धिक्कार है;
क्योंकि उसका बुरा होगा।
जैसा उसने किया है,
वैसा ही उसके साथ किया जायेगा।
12 ओ मेरे निज लोगो,
बच्चे तुम पर अत्याचार करते हैं;
स्त्रियाँ तुम पर राज्य करती हैं।
ओ मेरे निज लोगो,
तुम्हारे नेताओं ने तुम्हें पथ-भ्रष्ट किया;
तुम्हें तुम्हारे मार्ग से बहका दिया।

13 प्रभु अपना मुकदमा लड़ने के लिए खड़ा
हुआ,
वह अपने निज लोगों का न्याय करने के
लिए खड़ा हुआ।
14 प्रभु ने अपने निज लोगों के धर्मवृद्धों
और शासकों से बहस आरम्भ की :

++ शब्दशः "मैं (प्रभु)"
3 : 4 सभ 10 : 16

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'तुमने ही अंगूर-उद्यान उजाड़ा है,
तुमने ही गरीब को लूटा है
और उसका माल अपने घर में रखा है।
15 तुम किस उद्देश्य से
लोगों को रौंदते हो,
गरीबों को पीसते हो?'
स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु, स्वामी की यह
वाणी है।

सियोन की घमण्डी स्त्रियों का न्याय

16 प्रभु ने आगे यह कहा :
'सियोन की स्त्रियाँ घमण्डी हैं,
वे सिर उठाये,
आंखें मटकाती और घुंघरुओं को छमछमाती,
ठुमक-ठुमक कर चलती हैं।'
17 अत: स्वामी सियोन की पुत्रियों का सिर गंजा
करेगा;
प्रभु उनको नंगा करेगा।

18 उस दिन स्वामी उनके इन आभूषणों को
उतरवा लेगा : पैंजना, बिंदिया, चंद्राभूषण,
19बाली, कंगन, ओढ़नी, 20शिरोभूषण,
बाजूबन्द, करधनी, इत्रदान, ताबीज, 21अंगूठी,
नथ, 22सुन्दर वस्त्र, दुपट्टा, शाल, बटुआ,
23दर्पण, मलमल के वस्त्र, सिरपट और बुरका।
24 उनकी देह में इत्र की सुगन्ध के स्थान पर
दुर्गन्ध,
कमर में पटुआ के बदले रस्सी होगी।
उनके सावधानी से गुन्थे केशों के स्थान पर
गंजापन होगा।
वे कीमती साड़ी के स्थान पर टाट का
कटि वस्त्र पहिनेंगी।
उनके सौंदर्य-चिह्नों के स्थान पर
गुलामी के दाग होंगे।
25 ओ यरूशलेम नगरी,
तेरे सैनिक तलवार से मौत के घाट उतारे
जाएंगे;
तेरे वीर योद्धा युद्ध-भूमि में मारे जाएंगे।
26 तेरे प्रवेश-द्वार विलाप करेंगे;
वे शोक मनाएंगे;
तू लुटी हुई, विधवा-स्त्री-सी
भूमि पर बैठेगी।

4 उस दिन सात स्त्रियाँ एक पुरुष को
पकड़कर यह निवेदन करेंगी, 'हम अपने
भोजन की व्यवस्था स्वयं करेंगी, पहिनने के
लिए वस्त्र भी स्वयं जुटा लेंगी, तुम्हारी कमाई
नहीं खाएंगी। बस हमें अपनी पत्नी स्वीकार
करो; और हमारे कुंआरेपन का कलंक मिटा
दो।'

यरूशलेम नगर का सुन्दर भविष्य

2 उस दिन प्रभु का अंकुर,
जिसको उसने रोपा था,
सुन्दर और भव्य होगा,
शेष बचे हुए इस्राएलियों के लिए
भूमि की उपज
गौरव और गर्व की बात होगी।
3 सियोन में बचे हुए व्यक्ति,
यरूशलेम में शेष रहे पुरुष,
सब जिनके नाम वहाँ 'जीवन की पुस्तक' में
लिखे हुए हैं,
पवित्र कहलाएंगे।

4 जब स्वामी सियोन की पुत्रियों के कलंक
को दूर करेगा, और न्याय की आत्मा तथा अग्नि
की आत्मा से यरूशलेम के खून के दागों को
धोकर दूर करेगा, 5तब वह सियोन पर्वत की
समस्त इमारतों पर, तथा उसके समस्त सभा-
भवनों के ऊपर दिन के समय मेघ तथा रात के
समय धूआं और धधकती अग्नि का प्रकाश
उत्पन्न करेगा। सबके ऊपर प्रभु की महिमा
मंडप और वितान के सदृश फैली रहेगी। 6वह
दिन में धूप से बचाव के लिए छाया करेगी। वह
आंधी और वर्षा से बचने के लिए आश्रय और
शरण-स्थल होगी।

अंगूर-उद्यान की नीति कथा

5 मैं अपने प्रिय के लिए
एक प्रेम गीत गाऊंगा।
इस गीत का विषय
मेरे प्रिय का अंगूर-उद्यान है।

---

4 : 2 यिर 23 : 5; जक 3 : 8 **4 : 3** दान 12 : 1 **4 : 5** नि 13 : 21 **5 : 1** यिर 2 : 21; भज 80 : 8; मत 21 : 33

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

एक अति उपजाऊ पहाड़ी पर
मेरे प्रिय का एक अंगूर-उद्यान था।
2 उसने भूमि को खोदा,
उसके पत्थर-कंकड़ बीने,
और उसमें
उत्तम जाति की अंगूर-बेल लगाई।
उसने अंगूर-उद्यान के मध्य
एक मचान बनाया,
और वहाँ अंगूर-रस के लिए कुण्ड खोदा।
उसने आशा की,
कि अंगूर-उद्यान में उसे मीठे अंगूर मिलेंगे,
पर उसमें केवल खट्टे अंगूर लगे!

3 अब, ओ यरूशलेम नगर के नागरिको,
ओ यहूदा प्रदेश के निवासियो,
तुमसे मेरा यह निवेदन है :
अब तुम्हीं मेरे और मेरे अंगूर-उद्यान के मध्य न्याय करो।
4 मेरे अंगूर-उद्यान में
और क्या करने को शेष था,
जो मैंने उसके लिए नहीं किया?
पर जब मैंने उसके मीठे अंगूर की आशा की,
तब मुझे उससे केवल खट्टे अंगूर मिले।
5 अब मैं तुम्हें बताता हूं,
मैं अपने अंगूर-उद्यान के साथ कैसा व्यवहार करूंगा :
मैं उसकी बाड़ हटा दूंगा,
और तब पशु उसको चर जाएंगे।
मैं उसकी दीवारें ढाह दूंगा,
और राहगीर उसको रौंदेंगे।
6 मैं उसको उजाड़ दूंगा;
मैं उसको नहीं छांटूंगा,
और न कुदाली से खोदकर
उसको निराऊंगा।
तब उसमें कंटीले झाड़-झंखाड़ उग आएंगे।
मैं बादलों को भी आदेश दूंगा,
कि वे उस पर पानी न बरसाएँ।

7 स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु का यह अंगूर-उद्यान
इस्राएल वंश है।
यहूदा प्रदेश के निवासी
प्रभु के सुन्दर पौधे हैं।
प्रभु ने उनसे न्याय की आशा की,
पर उसे देखने को मिला: रक्त पात।
प्रभु ने उनसे धार्मिकता की आशा की,
पर उसे सुनने को मिला: गरीबों का करुण-क्रंदन!

दुर्जनो, तुम्हें धिक्कार है।

8 धिक्कार है तुम्हें!
तुम एक के बाद एक मकान बनाते जाते हो,
खेत पर खेत जोड़ते जाते हो,
कि अन्त में गरीबों के लिए एक गज जमीन भी नहीं बचती,
और तुम सारी भूमि के अकेले मालिक बन बैठते हो!
9 स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु ने मेरे कानों में यह कहा :
'निस्सन्देह अनेक घर उजड़ जाएंगे,
विशाल और सुन्दर भवन निर्जन हो जाएंगे।
10 अंगूर-उद्यान की दस बीघा भूमि पर
केवल एक बीघा भूमि* की फसल होगी;
दस किलो** बीज से केवल एक किलो अन्न उपजेगा।

11 धिक्कार है तुम्हें!
तुम बड़े सबेरे उठते ही नशा करते हो;
शराब की गर्मी चढ़ाने के लिए
रात को बड़ी देर तक पीते रहते हो।
12 तुम्हारे भोजन-उत्सव में
सितार, सारंगी, डफ, बांसुरी बजाये जाते हैं,
और शराब का दौर चलता है।
पर तुम प्रभु के कार्यों पर ध्यान नहीं देते,
और न ही उसकी कृतियों पर
तुम्हारी दृष्टि जाती है।
13 मेरे निज लोग ज्ञान के अभाव के कारण बन्दी होकर
अपने देश से निर्वासित हो गये।

---

* मूल में, 'एक बत', प्राय: चालीस लिटर के बराबर। ** मूल में, 'होमेर'

5 : 2 यश 27 : 2-5; यो 15 : 1-2 **5 : 8** मी 2 : 2 **5 : 11** नीति 23 : 29-30; प्रज्ञा 2 : 7-9

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रतिष्ठित लोग भी भूख से मर रहे हैं,
और जनता प्यास से।
14 मृतक-लोक की भूख बढ़ गई है,
वह मुंह फैलाए खड़ा है।
यरूशलेम नगर का अभिजात्य वर्ग,
जन-साधारण वर्ग,
शोरगुल करती हुई भीड़
और आमोद-प्रमोद में डूबे हुए लोग,
मृतक-लोक के मुंह में समा जाएंगे।
15 मनुष्य-जाति का पतन हो गया,
मनुष्य नीचे गिर गया;
घमण्डियों की आंखें नीची कर दी गईं।
16 स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु
न्याय करने के कारण उन्नत हुआ है;
पवित्र परमेश्वर धार्मिक कार्यों के द्वारा
अपनी पवित्रता प्रकट करता है।
17 जहाँ हृष्ट-पुष्ट बैल चरते थे,
अब वहां मेमने चरेंगे;
जहाँ पशु घास खाकर मोटे होते थे,
वहाँ अब विस्तृत चरागाह में
भेड़-बकरी के बच्चे चरेंगे।+

18 धिक्कार है तुम्हें!
तुम अधर्म को झूठ की डोरियों से,
और पाप को गाड़ी के रस्सी से खींचते हो।
19 तुम कहते हो,
'प्रभु शीघ्रता करे,
वह अपना कार्य अविलम्ब पूरा करे,
ताकि हम भी उस कार्य को देखें।
इस्राएल के पवित्र परमेश्वर की योजना
शीघ्र पूरी हो,
जिनसे हम उसको जान सकें।'
20 धिक्कार है तुम्हें!
तुम बुराई को भलाई,
और भलाई को बुराई कहते हो।
तुम प्रकाश को अन्धकार
और अन्धकार को प्रकाश बताते हो।
तुम विष को अमृत
और अमृत को विष मानते हो।
21 धिक्कार है तुम्हें!
तुम अपनी ही दृष्टि में
स्वयं को बुद्धिमान और चतुर समझते हो।
22 धिक्कार है तुम्हें!
तुम शराब पीने में वीरता दिखाते हो,
और शराब को तेज बनाने में बहादुरी।
23 तुम घूस लेकर अपराधी को छोड़ देते हो,
और निर्दोष को उसके न्यायोचित अधिकार
से वंचित कर देते हो।
24 जैसे अग्नि की लपटें
खूंटों को भस्म कर देती हैं;
जैसे सूखी घास ज्वाला में जलकर
राख बन जाती है,
वैसे ही उन लोगों की जड़ सड़ जाएगी,
उनके फूल धूल की तरह उड़ जाएंगे;
क्योंकि उन्होंने स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु की
व्यवस्था को
मानने से इन्कार किया;
उन्होंने इस्राएल के पवित्र परमेश्वर की
वाणी को तुच्छ समझा।
25 अत: प्रभु का क्रोध
अपने लोगों के विरुद्ध भड़क उठा।
उसने उन पर हाथ उठाया,
और उन पर प्रहार किया।
पहाड़ हिल उठे।
उनकी लाशें कूड़ा-कचरा-सी
सड़कों पर बिछ गईं।
इस विनाश के बाद भी
उसका क्रोध शान्त नहीं हुआ,
और प्रहार के निमित्त
उसका हाथ उठा रहा।

26 प्रभु सुदूर राष्ट्र के लिए झंडा फहराएगा;
वह पृथ्वी के सीमांत से
उसे बुलाने के लिए सीटी बजाएगा।
देखो, वह अविलम्ब,

+ मूल में अस्पष्ट
5 : 19 2 पत 3 : 3 5 : 20 मत 23 : 13 5 : 26 यिर 5 : 15

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पवन की गति से आएगा।
27 उसके सैनिक न थके-मांदे होंगे,
और न लड़खड़ाकर गिरेंगे।
वे न ऊंघेंगे, और न सोएंगे।
उनका न कमर-पट्टा ढीला होगा,
और न जूते का बन्धन टूटा होगा।
28 उनके तीर प्राण-बेधी हैं।
वे धनुष चढ़ाए हुए हैं।
उनके घोड़ों के खुर वज्र की तरह हैं।
उनके रथ के पहिए बवंडर के सदृश घूमते हैं।
29 वे शेर की तरह दहाड़ते हैं,
उनका गर्जन जवान सिंह के समान है।
वे गुर्राकर शिकार को पकड़ते,
और उसको दबोचकर ले जाते हैं।
उनके मुंह से उनको कौन छुड़ा सकता है?
30 उस दिन वे समुद्र के गर्जन की तरह
इस्राएल पर गुर्राएंगे।
यदि कोई व्यक्ति इस्राएल देश पर दृष्टिपात करेगा,
तो वह वहाँ यह देखेगा :
अन्धकार और संकट के बादल!
काले बादलों से प्रकाश छिप जाएगा।

यशायाह को दर्शन और सेवा के लिए आवाहन

6 जिस वर्ष राजा उज्जियाह की मृत्यु हुई,
मैंने यह दर्शन देखा : एक बहुत ऊंचे
सिंहासन पर स्वामी बैठा है। उसकी राजसी
पोशाक के छोर से मन्दिर भर गया है। 2उसके
ऊपर की ओर साराप+ स्वर्गदूत खड़े थे। प्रत्येक
दूत के छः पंख थे। वे दो पंखों से अपना मुंह
ढके थे। उन्होंने दो पंखों से अपने पैर को ढांप
लिया था; और शेष दो पंखों से वे उड़ रहे थे।
3एक दूत दूसरे दूत से उच्च स्वर में यह कह रहा
था:
'पवित्र, पवित्र,
स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु पवित्र है।
सम्पूर्ण पृथ्वी उसके तेज से परिपूर्ण है।'

4 उसकी आवाज से ड्योढ़ी की नीवें थर्रा
गईं। भवन धूएं से भर गया। 5तब मैंने कहा,
'हाय! अब मैं जीवित नहीं रह सकता! मैं
अशुद्ध ओंठवाला मनुष्य हूं, और अशुद्ध
ओंठवाले लोगों के मध्य निवास करता हूं। मैंने
साक्षात् स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु, महाराजाधिराज
को अपनी आंखों से देखा।'

6 तब एक साराप दूत ने वेदी पर से एक
अंगारा चिमटे से उठाया। वह उसको हाथ में
लेकर उड़ा और मेरे पास आया। 7उसने मेरे
ओंठों को अंगारे से स्पर्श किया, और यह कहा,
'देख, इसने तेरे ओंठों को स्पर्श किया,
अतः तेरा अधर्म तुझसे दूर हो गया;
तेरा पाप क्षमा कर दिया गया।'
8 तत्पश्चात् मैंने स्वामी की यह वाणी सुनी,
'मैं किस को भेजूं? हमारी ओर से कौन
जाएगा?' मैंने कहा, 'मैं प्रस्तुत हूं, मुझे भेज।'
9 प्रभु ने कहा, 'जा और लोगों से यह कह :
''निस्सन्देह तुम प्रभु का सन्देश सुनोगे,
पर तुम उसको समझोगे नहीं;
तुम उसको अपनी आंखों से देखोगे,
पर उसको पहचानोगे नहीं।''
10 इन लोगों की समझ पर पत्थर पड़ गए हैं;
इनके कान बहरे हैं, और आंखें अंधी!
अतः ये अपने कानों से सुन नहीं सकते,
और न आंखों से इन्हें दिखाई देता है।
इनका हृदय समझ नहीं पाता है;
अन्यथा ये पश्चाताप करते,
और मैं इनको स्वस्थ कर देता।'
11 मैंने पूछा, 'स्वामी, यह स्थिति कब तक रहेगी?'
प्रभु ने कहा, 'जब तक नगर उजड़ कर
निर्जन न बन जाएं; जब तक मकान सुनसान न
हो जाएँ; जब तक खेत पूर्णतः उजड़ न जाएँ।
12मैं-प्रभु इन लोगों को इस देश से हटाकर दूर
देश में ले जाऊंगा। इस देश के अनेक स्थान
उजाड़ हो जाएंगे।

+ अथवा ''आग्नेय''।

5 : 29 हो 5 : 14 6 : 1 2 रा 15 : 7; यहेज 1 : 11; प्रक 4 : 2 6 : 3 प्रक 4 : 8 6 : 4 प्रक 15 : 8 6 : 8 नि 4 : 10.13; यिर 1 : 6 6 : 9-10 मत 13 : 14-15; यो 12 : 39-41; प्रे 28 : 26-27

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

13 यदि जनसंख्या का दसवां अंश भी शेष
रहेगा, तो वह भी नष्ट होगा, जैसे तारपीन अथवा
बांज वृक्ष के कट जाने पर उनका ठूंठ शेष रहता
है।' उनका ठूंठ एक पवित्र वंश है।

राजा आहाज को नबी यशायाह का प्रथम संदेश

7 उस समय यहूदा प्रदेश का राजा आहाज
था। उसके पिता का नाम योताम और दादा
का नाम ऊज्जियाह था। उसके राज्य-काल में
सीरिया देश के राजा रसीन तथा इस्राएल प्रदेश
के राजा पेकह बेन-रमल्याह ने राजा आहाज
की राजधानी यरूशलेम पर चढ़ाई कर दी। पर
वे युद्ध न जीत सके। 2उसी समय किसी ने
दाऊद के राज-परिवार को यह बताया, 'सीरिया
देश तथा एफ्रइम राज्य के मध्य संधि हो गई
है।' यह सुनकर राजा आहाज तथा उसकी प्रजा
का हृदय कांप उठा, जैसे जंगल के वृक्ष आंधी
से कांप उठते हैं।

3 प्रभु ने यशायाह से कहा, 'तू तथा तेरा पुत्र
शआर-याशूब+ आहाज से मिलने के लिए
जाओ। ''धोबी खेत'' की ओर जानेवाली
सड़क पर एक उपरला पोखर है। उससे एक
नहर निकली है। इसी नहर पर तुम्हें आहाज
मिलेगा। 4तू उससे यह कहना, ''सावधान!
शान्त रह। मत डर। सीरिया का राजा रसीन और
उस की सेना तथा राजा बेन-रमल्याह धुंधुवाती
लकड़ियाँ हैं। उनके भयंकर क्रोध से तू हताश
मत हो। 5सीरिया ने एफ्रइम और उसके राजा
बेन-रमल्याह के साथ तेरा अनिष्ट करने के
लिए षड्यन्त्र रचा है। 6उन्होंने यह कहा है,
'आओ हम यहूदा प्रदेश पर चढ़ाई करें और उसे
आतंकित करें। उस पर अधिकार करें, और
वहाँ टाबएल के पुत्र को राजा नियुक्त करें।'
7स्वामी प्रभु यों कहता है :

यह षड्यंत्र सफल न होगा,
यह योजना कदापि पूर्ण न होगी।
8 सीरिया देश की राजधानी दमिश्क है,
और दमिश्क का राजा रसीन है।
(आगामी पैंसठ वर्षों में एफ्रइम राज्य के
खण्ड-खण्ड हो जाएंगे, और स्वतंत्र राज्य के
रूप में उसका अस्तित्व भी नहीं रहेगा।)
9 एफ्रइम राज्य की राजधानी सामरी नगर है,
और सामरी नगर का राजा बेन-रमल्याह है।
मुझ-प्रभु पर दृढ़ विश्वास करो,
अन्यथा तुम लोग उसके सामने दृढ़ नहीं रह
सकोगे।'''

इम्मानुएल के सम्बन्ध में नबी यशायाह का सन्देश

10 प्रभु ने यशायाह के द्वारा राजा आहाज से
पुन: कहा, 11 'अपने प्रभु परमेश्वर से, मुझसे
कोई संकेत-चिह्न मांग; फिर चाहे यह चिह्न
अतल अधोलोक में हो, या उच्च आकाश
में।' 12आहाज ने कहा, 'नहीं, मैं प्रभु से
संकेत-चिह्न नहीं मांगूंगा। मैं प्रभु को नहीं
परखूंगा।' 13तब यशायाह ने कहा, 'ओ दाऊद
के वंशजो, सुनो! क्या तुम्हारी दृष्टि में लोगों को
तंग करना इतनी साधारण-सी बात है कि अब
तुम मेरे परमेश्वर को भी तंग कर रहे हो!
14अत: स्वयं स्वामी तुम्हें एक संकेत-चिह्न
देगा : देखो, एक कन्या++ गर्भवती होगी और
वह एक पुत्र को जन्म देगी। वह उसका नाम
'इम्मानुएल'* रखेगी। 15जब वह बड़ा हो जाएगा
और उसे भले-बुरे का ज्ञान होने लगेगा तब वह
दही और शहद खाएगा। 16हे राजा, जब बालक
भले और बुरे को पहचानने लगेगा, उसके पूर्व
ही प्रभु उस देश को उजाड़ देगा जिसके दो
राजाओं से तू अभी घबरा रहा है। 17प्रभु तुझ
पर, तेरी प्रजा पर और तेरे राज-परिवार पर
भीषण संकट के दिन लाएगा—ऐसा संकट-
काल जो पहली बार देश पर तब आया जब
एफ्रइम राज्य यहूदा राज्य से अलग हुआ
था—अर्थात् असीरिया के राजा के दिन!'
18 उस दिन प्रभु सीटी बजाकर उन मक्खियों
को बुलाएगा

+ अर्थात्, ''बचे हुए लोग लौटेंगे''। ++अथवा 'जवान स्त्री'; यूनानी में, 'कुंवारी'। * अर्थात् 'परमेश्वर हमारे साथ है।'
7 : 2 2 रा 16 : 5 **7 : 3** यश 10 : 20-21 **7 : 9** यश 28 : 16; हब 2 : 4 **7 : 14** 2 रा 18 : 2-3; यश 9 : 6; मी 5 : 2; मत 1 : 23 **7 : 16** 2 रा 15 : 30 **7 : 17** 2 इत 28 : 19

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जो मिस्र देश की नदियों के उद्गम-स्थान
पर रहती हैं;
वह सीटी बजाकर असीरिया देश की
मधुमक्खियों को बुलाएगा।
19 वे आएंगी,
और प्रपाती दर्रों चट्टान की दरारों,
कंटीली झाड़ियों और समस्त चरागाहों पर
बैठ जाएंगी।
20 उस दिन स्वामी
फरात नदी के तट पर एक उस्तरा किराए पर
लेगा—अर्थात् असीरिया के राजा को,
और वह उससे सिर और पैरों के बाल
मूंड़ेगा,
वह दाढ़ी भी साफ करेगा।
21 उस दिन मनुष्य एक गाय
और दो भेड़ों को बचाकर जीवित रखेगा।
22 गाय और भेड़ें अत्यधिक दूध देंगी;
अत: वह दही खाएगा।
देश में बचे हुए लोग भी दही और शहद
खाएँगे।
23 उस दिन वे सब स्थान,
जहाँ अंगूर की हजार बेलें थीं,
जिनका मूल्य चांदी के हजार सिक्के था
वहाँ अब कंटीले झाड़-झंखाड़ होंगे।
24 समस्त देश जंगली इलाका हो जाएगा।
और वहाँ लोग तीर-धनुष के साथ जाएंगे।
25 जिन पहाड़ियों पर उद्यान के लिए कुदाल
चलाए जाते थे
वहाँ अब झाड़-झंखाड़ के भय से कोई नहीं
जाएगा।
वे पशुओं की चराई बन जाएंगी,
जहाँ गाय-बैल को चरने के लिए छोड़ दिया
जाता है,
जहाँ भेड़-बकरियाँ कूदती-फांदती हैं।

नबी के पुत्र का सांकेतिक नाम

8 तब प्रभु ने मुझसे कहा, 'तू एक बड़ी तख्ती
ले, और उस पर बड़े-बड़े अक्षरों में यह
लिख: ''महेर-शालाल-हाशबज के लिए''
2 और विश्वसनीय साक्षी के लिए पुरोहित
ऊरियाह और जकर्याह बेन-यबेरेक्याह को
ला।' 3 मैंने अपनी पत्नी+ से संभोग किया। वह
गर्भवती हुई, और उसने एक पुत्र को जन्म
दिया।

तब प्रभु ने मुझसे यह कहा, 'तू अपने पुत्र
का नाम ''महेर-शालाल-हाशबज''* रख,
4 क्योंकि बालक ''मां'' और ''पिताजी''
बोलना सीख भी नहीं पाएगा, कि उसके पूर्व
असीरिया देश का राजा दमिश्क नगर की धन-
सम्पत्ति और सामरी नगर की अपार लूट अपने
देश को भेज देगा।'
5 प्रभु ने मुझ से पुन: कहा,
6 'मुझ-प्रभु को, शिलोह जल-स्रोत को,
मंद-मंद बहनेवाले जल को,
इस राष्ट्र ने त्याग दिया है;
और यह राजा रसीन और
राजा बेन-रमल्याह से प्रसन्न है।
7 अत: देख,
मैं-स्वामी उन पर असीरिया देश के राजा
और उसके समस्त सैन्य बल को,
उमड़ती-गरजती फरात नदी की बाढ़ को
लाऊंगा।
उस का जल समस्त नदी-नालों में
भर जाएगा;
फरात नदी अपने तटों से ऊपर बहने लगेगी।
8 उसकी बाढ़ यहूदा प्रदेश पर चढ़ आएगी;
वस्तुत: यह प्रदेश उसमें गले तक डूब
जाएगा।
ओ इम्मानुएल,
उस बाढ़ के पंखों के नीचे सारा प्रदेश ढक
जाएगा।'
9 ओ राष्ट्रो, ध्यान दो :
तुम टुकड़े-टुकड़े होगे।
ओ सुदूर देशो, सुनो :
तुम युद्ध की तैयारी कर सकते हो,
पर तुम्हें पराजय का मुंह देखना पड़ेगा।

+ अथवा 'नबिया'। * अर्थात् ''लूट शीघ्र आती है; लूट का माल जल्दी आता है।''

7 : 20 2 रा 16 : 7 8 : 2 2 रा 16 : 10 8 : 4 यश 7 : 16 8 : 6 यो 9 : 7

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तुम अस्त्र-शस्त्र धारण कर सकते हो,
पर तुम्हें मुंह की खानी पड़ेगी।
10 तुम परस्पर विचार-विमर्श करोगे,
पर वह निष्फल होगा;
तुम आपस में निश्चय करोगे,
पर तुम्हारा निश्चय पूरा न होगा;
क्योंकि परमेश्वर हमारे साथ है।**

प्रभु की भक्ति करो

11 प्रभु ने अपना सामर्थ्यपूर्ण हाथ मुझ पर
रखा और मुझे चेतावनी दी कि मैं इन लोगों के
मार्ग पर न चलूं। उसने मुझ से यों कहा :
12 'जिस कार्य को ये लोग षड्यन्त्र कहते हैं,
उसको तुम लोग षड्यंत्र मत कहो। जिससे ये
डरते हैं, उससे तुम मत डरो और न उससे
आतंकित हो। 13 परन्तु जिससे तुमको डरना
चाहिए, जिससे तुम्हें आतंकित होना चाहिए,
वह मैं हूं स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु! तुम मुझे
पवित्र मानना। 14 मैं तुम्हारे लिए पवित्र स्थान
बनूंगा; पर इस्राएली राष्ट्र के दोनों राज-परिवारों
के लिए ठोकर का पत्थर और ठेस की चट्टान
तथा यरूशलेम-निवासियों के लिए जाल और
फन्दा बनूंगा। 15 अनेक उससे ठोकर खाएंगे, वे
गिरेंगे और चूर-चूर होंगे। वे जाल में फंसेंगे
और कैद होंगे।'

16 साक्षी-पत्र बन्द करो; प्रभु की इस शिक्षा
पर मेरे शिष्यों के मध्य मुहर लगाओ। 17 प्रभु
याकूब के वंशजों से मुख मोड़े हुए है। मैं उसकी
प्रतीक्षा करूंगा; वही मेरी आशा का आधार
होगा। 18 मैं और ये बच्चे, जो प्रभु ने मुझे दिए
हैं, इस्राएल के लिए संकेत-चिह्न हैं : सियोन
पर्वत पर विराजनेवाले सेनाओं के प्रभु की ओर
से शकुन-चिह्न हैं। 19 ओ मेरे शिष्यो! जब लोग
तुमसे यह कहेंगे, 'बुदबुदानेवाले और
गुनगुनानेवाले भूत-प्रेत के साधकों और जादू-
टोना करनेवालों से मार्गदर्शन प्राप्त करो' तो
तुम यह कहना, 'क्या हमें परमेश्वर से मार्ग-
दर्शन नहीं प्राप्त करना चाहिए? क्या जीवित
जाति के लिए मुर्दों से मार्ग-दर्शन प्राप्त करना
उचित है?' 20 प्रभु की शिक्षा और उसकी साक्षी
की ओर लौटो! यदि तुम उन लोगों के कथन
के अनुसार आचरण करोगे, तो तुम्हारे लिए
ज्ञान की पौ न फटेगी। 21 वे अत्यन्त निराश और
भूखे इधर-उधर भटकेंगे-फिरेंगे। वे भूख से
पीड़ित होकर अपने देश के राजा और अपने
परमेश्वर के प्रति क्रुद्ध होंगे और उनको
अपशब्द कहेंगे। वे भ्रमित होकर कभी ऊपर
22 और कभी नीचे देखेंगे। परन्तु उन्हें केवल
यह दिखाई देगा: अन्धकार, संकट और निराशपूर्ण
व्यथा। वे गहन अन्धकार में ढकेल दिए जाएंगे।

शान्ति के शासक का जन्म और राज्य

9 * जो भूमि व्यथा सह रही थी,
अब वह उस निराशा से मुक्त हो जाएगी।
प्रथम आक्रमणकारी ने
जबूलून और नफ्ताली क्षेत्र की जनता पर
अत्याचार किया था,
पर दूसरे आक्रमणकारी ने
सागर के पथ से
यर्दन नदी के उस पार के गलील प्रदेश पर
जहाँ अन्य कौमों के लोग बस गए हैं,
भयानक आक्रमण किया।*
2 जो लोग अन्धकार में भटक रहे थे,
उन्होंने बड़ी ज्योति देखी;
जो लोग गहन अन्धकार के क्षेत्र में रहते थे,
उन पर ज्योति उदित हुई।
3 प्रभु, तूने इस्राएली राष्ट्र की समृद्धि की;
तूने उसके आनन्द में समृद्धि की;
जैसे वे लूट का माल
परस्पर बांटते समय उल्लसित होते हैं,
जैसे वे फसल-कटाई के पर्व पर हर्षित होते
हैं,

** अथवा 'इम्मानुएल'। * इस पद का यह अनुवाद भी हो सकता है : ''प्राचीन काल में उसने जबूलून और नफ्ताली की जनता को अपमानित किया था, पर अन्तिम दिनों में वह झील की ओर यर्दन नदी के उस पार के गलील प्रदेश को, जहाँ अन्य कौमों के लोग बस गए हैं, महिमा प्रदान करेगा।'' + मूल में, अध्याय 8 : 23

8 : 10 यहो 1 : 5; यश 7 : 14; मत 1 : 23; 28 : 20; रोम 8 : 31 **8 : 12** 1 पत 3 : 14 **8 : 14** रोम 9 : 33; 1 पत 2 : 8 **8 : 18** इब्र 2 : 13 **9 : 1-2** मत 4 : 15-16; लू 1 : 79; यो 8 : 12

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
वैसे ही आज तेरे सम्मुख आनन्द मना रहे हैं।
4 तूने इस्राएली राष्ट्र की गुलामी के जूए को,
उसके कन्धे की कांवर को,
अत्याचारी की लाठी को तोड़ दिया है,
जैसे मिद्यानी सेना के युद्ध-दिवस पर तूने किया था।
5 पदाति सैनिकों के जूते
जो धब-धब करते हुए चलते हैं,
और उनके रक्त-रंजित वस्त्र
आग के कौर बन गए।
6 देखो, हमारे लिए एक बालक का जन्म हुआ है;
हमें एक पुत्र दिया गया है।
राज-सत्ता उसके कंधों पर है।
उसका यह नाम रखा जाएगा :
'अद्‌भुत् परामर्शदाता',
'शक्तिमान ईश्वर',
'शाश्वत पिता',
'शान्ति का शासक'**।
7 उसकी राज्य-सत्ता बढ़ती जाएगी,
उसके कल्याणकारी कार्यों का अन्त
न होगा।
वह दाऊद के सिंहासन पर बैठेगा,
और उसके राज्य को संभालेगा।
वह अब से लेकर सदा के लिए
न्याय के कार्यों से उसको सुदृढ़ करेगा,
अपने धार्मिक आचरण से उसे सम्भालेगा।
स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु का धर्मोत्साह
यह कार्य पूर्ण करेगा!

इस्राएल के प्रति प्रभु का क्रोध

8 स्वामी ने याकूब अर्थात् इस्राएल के विरुद्ध यह सन्देश भेजा है;
और यह सच प्रमाणित होगा।
9 सब लोग यह जानेंगे,
एफ्रइम राज्य के लोग,
सामरी नगर के निवासी
जो अहंकार से,
घमण्ड से यह कहते हैं,
10 'ईंटों की दीवार गिर गई तो क्या हुआ!
हम पक्के पत्थरों की पक्की दीवार खड़ी कर लेंगे।
गूलर-वृक्ष कट गए तो क्या हुआ?
हम उनके स्थान पर देवदार के वृक्ष उगाएंगे।'
11 उनकी इस गर्वोक्ति के कारण
प्रभु ने उनके विरुद्ध बैरियों को खड़ा किया है,
वह उनके शत्रुओं को भड़का रहा है।
12 पूर्व दिशा से सीरियाई सेना,
पश्चिमी दिशा से पलिश्ती सेना
इस्राएल पर आक्रमण करेंगी;
वे मुंह फाड़कर इस्राएल को निगल जाएंगी।
प्रभु का क्रोध इस विनाश के बाद भी शान्त नहीं होगा।
विनाश के लिए उसका हाथ अब तक उठा हुआ है।

13 जिनको प्रभु ने ताड़ित किया था,
वे फिर भी प्रभु की ओर नहीं लौटे,
उन्होंने स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु को नहीं खोजा।
14 अत: प्रभु ने इस्राएल राष्ट्र के सिर
और उसकी पूंछ को काट दिया;
एक ही दिन में उसने
इस्राएल के धनी और निर्धन वर्ग* का विनाश कर दिया।
15 धर्मवृद्ध और प्रतिष्ठित व्यक्ति
समाज का सिर हैं,
झूठी शिक्षा देनेवाले नबी पूंछ हैं।
16 ये लोग जनता का नेतृत्व करते,
और उसको गलत मार्ग पर ले जाते हैं।
गलत मार्ग पर जानेवाली जनता
नष्ट हो जाती है।
17 अत: स्वामी इन लोगों के नवयुवकों से प्रसन्न नहीं है,

** अथवा, 'कल्याणकारी शासक' * अक्षरश: 'खजूर की शाखा' और 'सरकण्डा'।

9 : 4 शास 7 : 22 **9 : 6** उत 49 : 10; 2 शम 7 : 12-16; भज 2 : 7; मत 28 : 18; लू 2 : 11 **9 : 7** दान 2 : 44; जक 9 : 9-10; लू 1 : 32; कुल 1 : 20 **9 : 13** यिर 5 : 3

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और न वह उनके अनाथ बच्चों पर,
और न उनकी विधवा स्त्रियों पर
दया करता है।
ये सब भक्तिहीन और कुकर्मी हैं;
हर आदमी मूर्खतापूर्ण बातें करता है।
प्रभु का क्रोध इस विनाश के बाद भी
शान्त नहीं होगा;
विनाश के लिए उसका हाथ
अब तक उठा हुआ है।

18 दुष्टता अग्नि के सदृश धधकती है;
वह कंटीले झाड़-झंखाड़ को भस्म करती
है।
वह जंगल की घनी झाड़ियों में भी आग
लगाती है,
और मनुष्य
धूएँ के घने बादल में सिमट कर ऊपर लुप्त
हो जाते हैं।
19 स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु के क्रोध से समस्त
देश जल गया;
जनता अग्नि का कौर बन गई।
भाई, भाई पर दया नहीं करता।
20 वे दाहिनी ओर से छीन-झपट कर खाते हैं;
फिर भी उनकी भूख मिटती नहीं;
वे बायीं ओर से भकोसते हैं,
फिर भी सन्तुष्ट नहीं होते।
वे अपनी सन्तान का भी मांस खा रहे हैं।
21 मनश्शे इफ्रइम को खा रहा है,
और इफ्रइम मनश्शे को।
वे दोनों मिलकर यहूदा को खा रहे हैं।
प्रभु का क्रोध इस विनाश के बाद भी शान्त
नहीं होगा;
विनाश के लिए उसका हाथ अब तक
उठा हुआ है।

10 धिक्कार है तुम्हें!
तुम अन्यायपूर्ण संविधियाँ बनाते हो!
ओ कानून रचनेवालो,
तुम दमनपूर्ण नियमों की रचना करते हो।
2 तुम इन अन्यायपूर्ण नियमों से
गरीब को न्याय से वंचित करते हो;
मेरी प्रजा के कमजोर वर्ग का हक मारते हो;
तुम विधवाओं को लूटते हो;
अनाथों को अपना शिकार बनाते हो।
3 तुम दण्ड-दिवस पर क्या करोगे?
सुदूर दिशा से आनेवाले विनाश के तूफान के
समय
तुम किसके पास सहायता के लिए भागकर
जाओगे?
तुम अपना धन कहाँ छोड़ जाओगे?
4 वस्तुतः तुम बन्दियों के मध्य दुबक कर
बैठोगे;
घात किए हुओं के ढेर में तुम्हारी भी लाश
होगी!
प्रभु का क्रोध इस विनाश के बाद भी शान्त
नहीं होगा;
विनाश के लिए उसका हाथ अब तक
उठा हुआ है।

असीरिया राष्ट्र का अहंकार

5 प्रभु ने कहा था : 'ओ असीरिया, धिक्कार
है तुझे!
तू मेरे क्रोध को चरितार्थ करनेवाला डंडा है;
तू मेरी क्रोधाग्नि को सिद्ध करनेवाला सोंटा
है।
6 मैंने तुझे एक भक्तिहीन राष्ट्र को
दण्ड देने के लिए भेजा;
मेरा क्रोध भड़कानेवाली जाति को लूटने,
उसकी सम्पत्ति का अपहरण करने,
गली की कीचड़ की तरह उसे रौंदने के लिए
तुझे भेजा।'
7 पर असीरिया राष्ट्र यह नहीं सोचता,
और न ही उसका हृदय यह विचार करता है।
वह अपने हृदय में विनाश की बात सोच रहा
है,
उसका इरादा एक राष्ट्र को नहीं,
वरन् अनेक राष्ट्रों को खतम करने का है।
8 असीरिया यह कहता है :
'मेरे सब प्रशासक राजा हैं।

---

10 : 5-34 नहू; सप 2 : 13-15

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

9 मैंने कलनो नगर के साथ भी वैसा ही किया,
जैसा कर्कमीश नगर के साथ किया था।
मैंने हमात और सामरी नगर को भी
अरपद और दमिश्क नगर के समान नष्ट किया था।
10 मेरा हाथ उन मूर्तिपूजक राज्यों तक पहुंचा,
जिनकी मूर्तियाँ
यरूशलेम और सामरी नगर की मूर्तियों से अधिक विशाल थीं।
11 जैसा मैंने सामरी नगर और उसकी मूर्तियों के साथ व्यवहार किया था,
वैसा ही व्यवहार
मैं यरूशलेम और उसकी मूर्तियों के साथ करूंगा।'

12 जब स्वामी सियोन पर्वत पर तथा
यरूशलेम नगर में अपने सब कार्य समाप्त कर
लेगा, तब वह असीरिया राष्ट्र को उसके
अहंकारपूर्ण हृदय तथा घमण्ड से चढ़ी आंखों
के लिए दण्ड देगा। 13क्योंकि असीरिया यह
कहता है :
'मैंने अपने भुजबल से, मैंने अपनी बुद्धि से यह सब किया है;
क्योंकि मैं बुद्धिमान हूं।
मैंने राष्ट्रों की सीमाएँ तोड़ीं,
और उनके खजानों को लूटा।
जो सिंहासनों पर आसीन थे,
उनको मैंने सांड़ की तरह नीचे फेंक दिया।
14 मेरा हाथ देश-देश के खजानों तक पहुँच गया;
जैसे शिकारी घोंसले के त्यक्त अंडों को एक-एक करके उठाता है
वैसे ही मैंने पृथ्वी के समस्त देशों को हथिया लिया।
पंख फड़फड़ानेवाला वहाँ कोई न था,
और न अपनी चोंच खोलनेवाला,
और न चीं चीं करनेवाला।'
15 क्या कुल्हाड़ी लकड़हारे से शेखी मार सकती है?
क्या आरा आराकश से डींग मार सकता है?
इनकी शेखी करना,
या डींग मारना तो वैसा है
जैसे डंडा अपने उठाने वाले को उठाए;
निर्जीव लट्ठ उसको उठाए जो सजीव है!
16 अत: स्वामी, स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु
असीरिया के हृष्ट-पुष्ट योद्धाओं को
क्षय रोग का शिकार बनाएगा;
उसके वैभव के नीचे जलती हुई आग भभकेगी!
17 इस्राएल की ज्योति अग्नि में बदल जाएगी।
इस्राएल का पवित्र परमेश्वर
ज्वाला बन जाएगा।
असीरिया राष्ट्र के कंटीले झाड़-झंखाड़ को
धधकती अग्नि एक ही दिन में जला कर राख कर देगी।
18 असीरिया राष्ट्र की आत्मा और शरीर,
उसके सघन वन की वनोपज
और उसकी शस्य-श्यामल उपजाऊ भूमि,
दोनों को प्रभु नष्ट करेगा।
असीरिया कमजोर राष्ट्र हो जाएगा,
जैसे रोगी रोग से कमजोर हो जाता है।
19 उसके जंगलों में इतने कम पेड़ शेष रहेंगे
कि उनको बालक भी गिन कर लिख लेगा।

इस्राएल राष्ट्र के बचे हुए लोग

20 उस दिन इस्राएल राष्ट्र के शेष लोग,
याकूब वंश के बचे हुए लोग उस राष्ट्र का सहारा
नहीं लेंगे, जिसने उनका संहार किया था;
बल्कि वे सच्चाई से इस्राएल के पवित्र प्रभु
परमेश्वर का आधार ग्रहण करेंगे। 21बचे हुए
लोग, याकूब वंश के बचे हुए लोग शक्तिशाली
परमेश्वर की ओर लौटेंगे। 22ओ इस्राएल, यह
सच है कि तेरी कौम की जनसंख्या समुद्र के
रेतकणों के सदृश असंख्य होगी, तो भी मुट्ठी
भर लोग बचकर लौटेंगे। विनाश का निर्णय
लिया जा चुका है। धार्मिकता उमड़ रही है।
23स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु, स्वामी अपने
अंतिम निर्णय के अनुसार समस्त पृथ्वी पर

---

10 : 15 रोम 9 : 20-21 **10 : 22** रोम 5 : 20; 9 : 27

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
विनाश करेगा।
24 स्वामी, सेनाओं का प्रभु यों कहता है,
'सियोन पर्वत पर निवास करनेवाले मेरे निज
लोगो,
असीरिया राष्ट्र से मत डरो।
जैसा मिस्र राष्ट्र ने तुम्हारे साथ किया था
वैसा ही वे डंडे से तुम पर प्रहार करेंगे,
तुम्हारे विरुद्ध अपना सोंटा उठाएंगे।
25 कुछ क्षण में, पलक झपकते ही,
तुम्हारे प्रति मेरा क्रोध शान्त हो जाएगा;
और मेरा कोप उनके विनाश के लिए प्रेषित
होगा।
26 मैं, सेनाओं का प्रभु,
उन पर चाबुक से प्रहार करूंगा;
जैसा मैंने ओरेब चट्टान पर
मिद्यानी सेना के विरुद्ध किया था।
जैसा मैंने लाल सागर पर
डंडे से प्रहार किया था
वैसा ही अब मैं फरात नदी पर उसको
उठाऊंगा।
27 उस दिन तुम्हारे कन्धों से
असीरिया की गुलामी का बोझ हट जाएगा,
तुम्हारी गर्दन से दासत्व का जूआ टूट
जाएगा।'

असीरियाई सेना का प्रस्थान

असीरियाई सेना ने रिम्मोन नगर से प्रस्थान
किया।*
28 वह अय्यात नगर में प्रविष्ट हुई।
वह मिग्रोन नगर से गुजर रही है।
उसने मिक्माश नगर में सैन्य-सामग्री
रखी।
29 सैनिक घाटी को पार कर रहे हैं।
वे गेबाह नगर में रात बिताते हैं।
रामाह नगर थरथराने लगा;
'शाऊल का गिबआह नगर' सिर पर पैर
रख कर भागा!
30 ओ बत-गल्लीम, उच्च स्वर में चिल्ला,
ओ लयशाह, सुन!
ओ अनातोत, उसे उत्तर दे।
31 मदमेनाह भाग रहा है,
गेबीम के नागरिक प्राण बचाकर भाग रहे
हैं।
32 आज ही असीरियाई सेना नोब नगर में
रुकेगी :
वह सियोन पर्वत पर
यरूशलेम पहाड़ी पर घूंसा तानेगा।
33 देखो, स्वामी, स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु
बिजली के प्रहार से वृक्षों को फाड़ेगा,
वह ऊंचे-ऊंचे पेड़ों को काटेगा;
जो बड़े हैं, वे छोटे किए जाएंगे।
34 प्रभु कुल्हाड़ी से घने जंगल को काटेगा;
लबानोन के भव्य वृक्ष धूल-धूसरित होंगे।

दाऊद वंशज का सद्धर्म राज्य

11 यिशय वंश के तने से एक शाखा
निकलेगी;
उसकी जड़ से एक टहनी फूटेगी, और
फलवंत होगी।
2 प्रभु की आत्मा,
बुद्धि और समझ की आत्मा,
सम्मति और सामर्थ्य की आत्मा,
ज्ञान और प्रभु के भय की आत्मा
उस पर ठहरी रहेगी।
3 प्रभु का भय ही उसका आनन्द होगा।
वह केवल मुंह देखकर न्याय नहीं करेगा;
वह केवल कान से सुनकर निर्णय नहीं देगा;
4 वरन् वह गरीबों का न्याय
धार्मिकता से करेगा,
वह पृथ्वी के दीन-दलितों का निर्णय
निष्पक्षता से करेगा।
वह अपने शब्द-रूपी डंडे से
अत्याचारियों पर प्रहार करेगा;
वह मुंह की फूंक से दुष्टों का नाश करेगा।
5 धर्म ही उसकी शक्ति,
सच्चाई ही उसका सामर्थ्य होगी।
6 उसके शासन में

* मूल अस्पष्ट।
10 : 26 शास 7 : 25; नि 14 : 16

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
भेड़िया भेड़ के बच्चे के साथ रहेगा;
चीता बकरी के बच्चे के पास बैठेगा;
बछड़ा, सिंह का बच्चा और पाला-पोसा पशु
साथ-साथ घूमेंगे,
और छोटा बालक उनकी अगुवाई करेगा।
7 गाय और रीछनी एक साथ खाएंगी,
उनके बच्चे भी एक ही स्थान पर बैठेंगे।
सिंह बैल के समान घास खाएगा;
8 दूध पीता शिशु करैत सांप के बिल पर
खेलेगा,
दूध छुड़ाया हुआ लड़का नाग के बिल में
अपना हाथ डालेगा।
9 मेरे समस्त पवित्र पर्वत पर
वे न किसी को दु:ख देंगे,
और न किसी का अनिष्ट करेंगे;
क्योंकि मुझ-प्रभु के ज्ञान से पृथ्वी परिपूर्ण
हो जाएगी,
जैसे जल से समुद्र भरा रहता है।

10 उस दिन यिशय का वंश-मूल देश-देश
के लोगों के लिए एक पताका बनेगा। राष्ट्र
उसको ढूंढ़ेंगे। उसका निवास-स्थान तेजोमय
होगा।

11 उस दिन दूसरी बार स्वामी अपना
भुजबल प्रकट करेगा : वह अपनी प्रजा के बचे
हुए लोगों को मुक्त करेगा। वह उन्हें असीरिया,
मिस्र, पतरोस, इथियोपिआ, एलाम, शिनआर,
हमात और समुद्र तटीय देशों से छुड़ा लेगा।
12 वह इन राष्ट्रों को चेतावनी देने के लिए
झण्डा फहराएगा,
वह इस्राएली राष्ट्र से निष्कासित लोगों को
एकत्र करेगा।
वह पृथ्वी की चारों दिशाओं से
यहूदा के बिखरे हुए निवासियों को बटोरेगा।
13 एफ्रइम की ईर्ष्या खत्म हो जाएगी;
यहूदा में सतानेवाले समाप्त होंगे।
एफ्रइम यहूदा से फिर नहीं जलेगा,
और न यहूदा एफ्रइम को सताएगा।
14 वे संगठित होकर पश्चिम दिशा में
पलिश्ती देश पर आक्रमण करेंगे;
वे मिलकर पूर्व दिशा के देशों को लूटेंगे।
वे एदोम और मोआब को दबोचने के लिए
अपने हाथ बढ़ाएंगे;
अम्मोनी जाति उनके आदेश का पालन
करेगी।
15 प्रभु मिस्र देश की खाड़ी को
पूर्णत: सुखा देगा।
वह फरात नदी पर अपना हाथ उठाएगा,
और प्रचण्ड लू बहाएगा;
वह उस पर प्रहार करेगा,
और उसको सात धाराओं में खण्डित कर
देगा,
लोग बिना जूता उतारे हुए उन्हें पार करेंगे।
16 यों उसकी प्रजा के अवशिष्ट लोगों के लिए
असीरिया देश में बचे हुए लोगों के लिए,
एक राजमार्ग बन जाएगा,
जैसा उस दिन इस्राएलियों के लिए बना था,
जब वे मिस्र देश से बाहर निकले थे।

इस्राएली राष्ट्र का प्रभु को धन्यवाद देना

12 तू उस दिन यह कहेगा :
"प्रभु, मैं तुझे धन्यवाद देता हूं।
यद्यपि तू मुझ पर क्रोधित था,
तथापि तेरा क्रोध अब शान्त हो गया,
और तूने मुझे सांत्वना दी।

2 "देखो, प्रभु परमेश्वर ही मेरा उद्धारकर्त्ता है;
मुझे उसपर पूर्ण भरोसा है, मैं डरूंगा नहीं;
क्योंकि प्रभु ही मेरा बल, और मेरी रक्षा है।
वह मेरा उद्धारकर्ता बन गया है।"

3 तुम मुक्ति के झरनों से
आनन्दपूर्वक जल भरोगे।
4 उस दिन तुम यह कहोगे,
"प्रभु को धन्यवाद दो,
उसके नाम से प्रार्थना करो।

---

11 : 8 प्रक 22 : 16; प्रे 13 : 22-23; यिर 23 : 5 **11 : 2** यश 9 : 6; 42 : 1; मत 3 : 16; 1 पत 4 : 14 **11 : 4** भज 72 : 2.4; 2 थिस 2 : 8 **11 : 5** इफ 6 : 14 **11 : 6** यश 65 : 25 **11 : 9** यिर 31 : 33-34; हब 2 : 14 **11 : 10** रोम 15 : 12 **11 : 15** प्रक 16 : 12 **11 : 16** नि 14 : 29 **12 : 2** नि 15 : 2; भज 118 : 14 **12 : 3** यो 4 : 10.14

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

राष्ट्रों में उसके महान कार्य प्रकट करो;
यह घोषित करो कि उसका नाम महान है।

5 "प्रभु का स्तुतिगान करो;
क्योंकि उसने प्रतापमय कार्य किए हैं।
यह बात समस्त पृथ्वी पर घोषित करो।
6 ओ सियोन के निवासियो, जयजयकार करो,
आनन्द से गीत गाओ;
तुम्हारे मध्य रहनेवाला
इस्राएल का पवित्र परमेश्वर महान है।"

बेबीलोन राष्ट्र के सम्बन्ध में नबूवत

13 यशायाह बेन-आमोत्स ने दर्शन में बेबीलोन के सम्बन्ध में यह नबूवत देखी :

2 वीरान पहाड़ पर झंडा फहराओ,
उच्च स्वर में सैनिकों को पुकारो;
उन्हें हाथ से इशारा करो,
ताकि वे सामन्तों के फाटकों से प्रवेश करें।
3 मैंने अपने समर्पित सैनिकों को आदेश दिया,
मैंने अपने वीर योद्धाओं को बुलाया,
कि वे मेरे क्रोध को चरितार्थ करें।
वे मेरे स्वाभिमानी और प्रसन्नचित योद्धा हैं।

4 सुनो, पहाड़ों पर कोलाहल हो रहा है,
मानो अपार भीड़ की हलचल हो।
सुनो, राज्यों की दहाड़!
राष्ट्रों के एकत्र होने का स्वर।
सेनाओं का प्रभु युद्ध के लिए
सैनिकों को एकत्र कर रहा है।
5 ये सैनिक दूर देश से,
आकाश के छोर से आए हैं।
प्रभु अपने क्रोध के हथियारों से लैस होकर
समस्त पृथ्वी को नष्ट करने के लिए आ रहा है।
6 शोक मनाओ!
प्रभु का दिन समीप आ गया।
वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर की ओर से
सर्वनाश के रूप में आ गया।
7 सब के हाथ ढीले पड़ गए;
सब के हृदय का उत्साह मर गया।
8 वे घबरा गए।
सन्त्रास और पीड़ा ने उन्हें दबा लिया।
वे प्रसूता के समान छटपटा रहे हैं।
वे मुंह बाए एक-दूसरे को ताक रहे हैं।
उनके चेहरे क्रोध से जल रहे हैं।

9 देखो, प्रभु का दिन आ रहा है।
वह निर्दयता का दिन है,
वह कोप और क्रोधाग्नि का दिन है;
पृथ्वी को उजाड़ने के लिए,
पृथ्वी की सतह से पापियों को समाप्त करने के लिए
वह आ रहा है!
10 उस दिन आकाश में तारे और नक्षत्र प्रकाश नहीं देंगे;
सूर्य उदित होते ही
अन्धकार में बदल जाएगा,
चन्द्रमा अपना प्रकाश नहीं देगा।
11 मैं दुनिया को उसकी दुष्टता के लिए,
और दुर्जनों को उनके दुष्कर्म के लिए
दण्ड दूंगा।
मैं अहंकारी का अहंकार मिटा दूंगा;
मैं अत्याचारी की घमण्ड से चढ़ी हुई आंखों को नीचा करूंगा।
12 मैं मनुष्य-जाति की आबादी घटा दूंगा:
मनुष्य शुद्ध सोने से अधिक दुर्लभ,
ओपीर देश के सोने के समान
अल्प हो जाएंगे।
13 मैं सेनाओं का प्रभु,
अपने भयंकर क्रोध के दिन
अपने रोष से आकाश को कंपाऊंगा,
पृथ्वी अपने स्थान से टल जाएगी।

14 शिकारी के कारण भागती हुई हरिणी के समान,
बिन चरवाहे की भेड़ों के सदृश
हर एक प्रवासी अपने भाई-बन्धु की ओर लौटेगा,

---

12 : 6 सप 3 : 14 13 : 1–14 : 23 यश 47; यिर 50–51; हब 1–2 13 : 6 योए 1 : 15 13 : 10 यहेज 32 : 7; मत 24 : 29; प्रक 6 : 12 13 : 19 उत 19 : 24 13 : 6 योए 1 : 15 13 : 10 यहेज 32 : 7; मत 24 : 29; प्रक 6 : 12

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रत्येक विदेशी स्वदेश की ओर भागेगा,
15 जो नगर में रह जाएंगे,
उन्हें भाले से बेधा जाएगा;
जो पकड़े जाएंगे,
उन्हें तलवार से मौत के घाट उतारा जाएगा।
16 उनकी आंखों के सामने उनके शिशुओं को
भूमि पर पटक-पटक कर मारा जाएगा।
उनके घरों को लूट लिया जाएगा।
उनकी स्त्रियों के साथ बलात्कार किया
जाएगा।

17 देखो, मैं मादी सेना को
बेबीलोन राष्ट्र के विरुद्ध उभाड़ रहा हूं।
मादी सैनिक न चांदी की परवाह करते हैं,
और न उन्हें सोने की चाह है।
18 उनके धनुष युवकों का वध करेंगे;
वे गर्भ के शिशुओं पर भी दया नहीं करेंगे।
वे बच्चों पर भी तरस नहीं खाएंगे।
19 बेबीलोन, जो राज्यों का शिरोमणि,
कसदी कौम का वैभव और गरिमा है,
उस की वैसी ही दशा होगी,
जैसी सदोम और गमोरा नगर-राज्यों की
हुई थी,
जब परमेश्वर ने उन को उलट-पलट दिया
था।
20 वह फिर कभी आबाद नहीं होगा;
लोग युग-युग तक उसमें नहीं बसेंगे।
बद्दू अरबी लोग भी उस पर तम्बू नहीं
गाड़ेंगे।
चरवाहे भी अपने रेवड़ को
वहाँ विश्राम नहीं कराएंगे।
21 केवल जंगली पशु वहाँ सोएंगे,
उसके महलों को उल्लू आबाद करेंगे।
वहाँ शुतुरमुर्ग बसेंगे, अजासुर नाचेंगे।
22 उसकी मीनारों पर लकड़बग्घे चिल्लाएंगे,
उसके विलास-भवनों में गीदड़ बोलेंगे।
बेबीलोन के विनाश का दिन समीप आ
गया,
उसके दिन अब बहुत नहीं रहे।

इस्राएल का पुनरुत्थान

14 प्रभु याकूब के वंश पर पुनः दया करेगा।
वह इस्राएल को फिर अपनाएगा। वह
इस्राएलियों को उनके देश में फिर बसाएगा।
विदेशी भी उनसे मिल जाएंगे, और याकूब के
वंशजों के साथ घुल-मिल कर रहेंगे। 2अनेक
कौमों के लोग इस्राएलियों को उनके देश
पहुँचाने के लिए उनके साथ जाएंगे। इस्राएल
के वंशज उन्हें अपने देश में, प्रभु के देश में,
सेवक और सेविका के रूप में प्राप्त करेंगे।
जिन्होंने इस्राएलियों को बन्दी बनाया था, अब
उनको इस्राएली अपना बन्दी बनाएंगे; जिन्होंने
उन पर शासन किया था, अब वे उन पर शासन
करेंगे।

बेबीलोन पर व्यंग्य

3 ओ इस्राएली राष्ट्र! जब प्रभु तेरे कष्ट और
बेचैनी से तुझे मुक्त करेगा, तुझे गुलामी से
छुड़ाएगा, जिसके कारण तुझे कठोर श्रम करना
पड़ा था; और जब तू चैन की सांस लेगा 4तब
तू बेबीलोन के सम्राट के सम्बन्ध में व्यंग्य-गीत
गाना:

'अत्याचारी का कैसा अन्त हुआ,
उसका उन्माद ठण्डा पड़ गया!*
5 प्रभु ने दुष्टों का डंडा,
शासकों का राजदण्ड तोड़ दिया,
6 जिससे वे देशों पर क्रोधावेश में
निरन्तर अचूक प्रहार करते थे,
जिसके द्वारा वे रोष में
राष्ट्रों पर शासन करते थे,
और उनको लगातार सताते थे।
7 उनके पतन के बाद
समस्त पृथ्वी में अमन-चैन है;
लोग उच्चस्वर में गा रहे हैं।
8 ओ बेबीलोन,
सनोवर वृक्ष और लबानोन के देवदार
तेरे पतन से हर्षित हैं।
वे तुझसे कह रहे हैं;
"अच्छा हुआ तेरा पतन हो गया,

---

* मूल में, अस्पष्ट

13 : 19 उत 19 : 24 13 : 21 प्रक 18 : 2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अब हमें काटने को कोई लकड़हारा नहीं
आएगा।''

9 तू अधोलोक में जा रहा है,
तुझसे मिलने को वहाँ हलचल मची है।
अधोलोक तेरा अभिनन्दन करने के लिए
मृतात्माओं को जगा रहा है;
ये पृथ्वी के शासक थे।
वह मृत राजाओं को
उनके सिंहासन से उठा रहा है;
ये भिन्न-भिन्न देश के राजा थे।
10 वे सब तुझसे बात करेंगे,
तुझसे यह कहेंगे,
''आप भी हमारी तरह कमजोर पड़ गए!
आप भी हमारे समान छाया बन गए!''
11 तेरा राजसी वैभव,
सारंगियों पर गूंजता संगीत
अधोलोक में पहुंच गया।
अब कीड़े तेरा बिछौना हैं,
और केंचुए तेरा ओढ़ना।

12 'ओ भोर के चमकते तारे,
ओ उषा-पुत्र,
आकाश से तू कैसे नीचे गिर गया!
अरे, तूने तो राष्ट्रों को धूल-धूसरित किया
था।
अब तू कैसे स्वयं भूमि की धूल चाट रहा
है!
13 तूने अपने हृदय में सोचा था,
''मैं आकाश पर चढ़ूंगा,
परमेश्वर के तारों के ऊपर,
ऊंचे से ऊंचे स्थान पर
मैं अपना सिंहासन प्रतिष्ठित करूंगा।
मैं दूरस्थ उत्तर में स्थित
'देवताओं के पर्वत' पर विराजूंगा।
14 मैं बादलों के ऊपर
उच्चतम स्थान पर चढ़ूंगा,
मैं स्वयं को
सर्वोच्च परमेश्वर के तुल्य बनाऊंगा।''

15 किन्तु तुझे अधोलोक में,
अतल गड्ढे में नीचे उतार दिया गया।
16 तुझे देखनेवाले
आंखें फाड़-फाड़कर तुझे ताकेंगे।
वे तेरे विषय में यह सोचेंगे,
''क्या यह वही सम्राट है,
जिसने सारी पृथ्वी को कंपा दिया था,
जिसने राज्यों को हिला दिया था?
17 इसने ही दुनिया को रेगिस्तान बना दिया था;
जिन नगरों ने
इसके बन्दियों को उनके घर लौटने नहीं
दिया था,
उनको इसने उलट-पुलट दिया था।
क्या यह वही सम्राट है?''
18 सब राष्ट्रों के राजा अपनी-अपनी कबर में
राजसी वैभव के साथ सो रहे हैं।
19 पर तू, ओ बेबीलोन के सम्राट!
घृणित गर्भपात* के समान
बिना दफनाए ही फेंक दिया गया!
तू अपने सैनिकों की लाशों से लिपटा है,
जो तलवार से मौत के घाट उतारे गए थे,
जो अधोलोक के चट्टानी गड्ढों में फेंक दिए
गए थे।
तू पैरों से कुचली हुई लाश है!
20 उनके साथ तुझे सम्मानपूर्वक दफनाया नहीं
जाएगा;
क्योंकि तूने अपने देश को बर्बाद किया,
तूने अपनी प्रजा का वध किया।

'दुष्कर्मियों के वंशजों के नाम भी शेष न
रहें।
21 उनके पूर्वजों के पाप के कारण
उनका भी वध किया जाएगा।
अतः सम्राट के पुत्रों के लिए
एक वध-स्थान तैयार करो;
अन्यथा वे उठेंगे, और पृथ्वी पर अधिकार
जमा लेंगे।
वे नए-नए नगरों से पृथ्वी की सतह को भर
देंगे।'

* मूल में 'टहनी'

14 : 12 लू 10 : 18; प्रक 8 : 10; 9 : 1 **14 : 13** मत 11 : 23; भज 48 : 2 **14 : 14** 2 थिस 2 : 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

22 स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु यों कहता है,
''मैं बेबीलोन के विरुद्ध उठूंगा, और उसका
नाम और निशान मिटा डालूंगा; मैं उसकी
सन्तान को, उसके वंशजों को निर्मूल कर दूंगा।
23 मैं उसे साहियों की मांद बना दूंगा। मैं उसको
सागर बना दूंगा। मैं विनाश की झाड़ू से उसको
झाडूंगा।'' सेनाओं के प्रभु ने यह कहा है।

असीरिया साम्राज्य का पतन

24 स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु ने यह शपथ
खाई :
''जैसा मैंने निश्चय किया है, वैसा ही
होगा;
जो योजना मैंने बनाई है, वह पूरी होगी।
25 मैं अपने देश में असीरिया को टुकड़े-टुकड़े
करूंगा,
मैं अपने पहाड़ों पर उसे पैरों तले रौंदूंगा।
उसके दासत्व का जूआ
इस्राएलियों की गर्दन से उठ जाएगा;
उनके कन्धों से गुलामी का बोझ हट
जाएगा।''
26 समस्त पृथ्वी के सम्बन्ध में
प्रभु ने यही निश्चय किया है;
समस्त राष्ट्रों के उद्धार के लिए
प्रभु ने अपना हाथ बढ़ाया है।
27 जब सेनाओं के प्रभु ने यह निश्चय किया है
तो उसके निश्चय को
कौन बदल सकता है?
जब उसने अपना हाथ बढ़ा दिया है
तो कौन उसे मोड़ सकता है?

पलिश्ती राज्य-संघ के सम्बन्ध में नबूवत

28 जिस वर्ष यहूदा प्रदेश के राजा आहाज
की मृत्यु हुई, यह नबूवत की गई:

29 ओ पलिश्ती राज्य-संघ!
आनन्द मत मना,
कि जिस लाठी से तुझे पीटा जाता था,
वह टूट गई!
पर जैसे जड़ से अंकुर फूटता है,
वैसे सर्प से काला नाग उत्पन्न होगा।
वह बढ़कर
उड़नेवाला सर्पासुर बन जाएगा!
30 तब गरीबों के ज्येष्ठ पुत्रों का पालन पोषण
होगा;
दरिद्र भी निश्चिन्त निवास करेंगे।
पर, ओ पलिश्ती राज्य-संघ!
तेरे वंश को वह अकाल से मार डालेगा,
और जो शेष बच जाएंगे,
उनका भी वध करेगा।
31 नगर के प्रवेश-द्वार पर विलाप करो,
नगरों में सहायता क लिए दुहाई दो।
ओ पलिश्तियो,
डर से मूर्च्छित हो जाओ।
उत्तर दिशा से महाकाल की आंधी आ रही
है!
शत्रु सेना का एक भी सैनिक
पीछे नहीं छूटेगा।

32 राष्ट्र के राजदूतों को
क्या उत्तर देना चाहिए?
यह कि प्रभु ने सियोन की नींव डाली है,
उसकी प्रजा के दुःखी जन उसमें शरण लेंगे।

मोआब राष्ट्र के सम्बन्ध में नबूवत

15 जिस रात आर नगर का पतन होगा,
मोआब राष्ट्र उजड़ जाएगा;
जिस रात कीर नगर का पतन होगा,
मोआब राष्ट्र उजड़ जाएगा।
2 दीबोन नगर के निवासी शोक मनाने के लिए
पहाड़ी शिखर के मन्दिर पर गए।
नबो और मेदबा नगरों के पतन के कारण
मोआब राष्ट्र रो रहा है।
शोक प्रकट करने के लिए
सबके सिर मुंड़े हुए हैं,
सबकी दाढ़ी मुंड़ हुई है।
3 गलियों में लोग
शोक वस्त्र पहिने हुए घूम रहे हैं।
मकानों की छतों पर,

---

14 : 28 2 रा 16 : 20 **14 : 29–31** यिर 47; यहेज 25 :15–17; योए 3 : 4–8; आमो 1 : 6–8; सप 2 : 4–7; जक
9 : 5–7

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

चौराहों पर लोग
छाती पीट-पीटकर रो रहे हैं;
वे आंसू की नदी बहा रहे हैं।
4 हेश्बोन और एलआलेह नगर
सहायता के लिए पुकार रहे हैं,
उनकी आवाज यहस नगर तक
सुनाई दे रही है।
मोआब के सशक्त सैनिक भी भय से चिल्ला रहे हैं।
मोआब का कलेजा कांप उठा है।
5 मेरा हृदय मोआब के लिए दुहाई देता है,
उसके सामन्त
सोअर और एग्लत-शलीशीयाह नगरों में भाग गए हैं।
वे लूहीत के चढ़ाव पर
रोते हुए चढ़ रहे हैं।
होरोनइम नगर के मार्ग पर
महाविनाश का क्रंदन स्वर सुनाई पड़ रहा है।
6 निमरीन नदी का जल सूख गया;
घास कुम्हला गई,
हरियाली सूख गई;
शस्य-श्यामलता नहीं रही।
7 वे अपनी शेष धन-सम्पत्ति,
अपना संचित माल-असबाव
अराबीम की तंग घाटी के उस पार ले जा रहे हैं।
8 मोआब राज्य के चारों ओर,
उसकी सीमाओं तक
सहायता के लिए पुकार सुनाई दे रही है।
उनके रोने का स्वर
एगलइम और बएर-एलीम नगरों तक पहुँच गया है।
9 दीबोन का जलाशय खून से भरा हुआ है;
फिर भी प्रभु दीबोन पर और आपदा डालेगा;
जो लोग मोआब से प्राण बचाकर भागेंगे
अथवा जो देश में शेष बच जाएँगे,
उन पर वह एक सिंह छोड़ेगा।

16 ओ देश के शासको,
निर्जन प्रदेश के सेला नगर से
सियोन की पुत्री की पहाड़ी को
भेंट में मेमने भेजो।
2 मोआब के निवासी,
जो अपने नगरों से निकाल दिए गए हैं,
अर्नोन नदी के घाट पर
ऐसे दिखाई दे रहे हैं,
मानो वे भटके हुए पक्षी हों,
घोंसले से निकाले गए चिड़िया के बच्चे हों।
3 वे यह निवेदन करते हैं:
"हमें सलाह दो, हमारा न्याय करो,
इस दिन-दोपहर में
हमें रात की छाया दो।
निराश्रितों को आश्रय दो,
भागनेवालों को पकड़वाकर
उनके साथ विश्वासघात मत करो।
4 घर से निकाले गए मोआबियों को
अपने साथ रहने दो।
विनाशक शत्रु के हाथ से
मोआबियों की रक्षा करो।
जब अत्याचारी लौट जाएगा,
जब विनाश का चक्र रुक जाएगा,
जब हमें पैरों तले रौंदनेवाला
देश छोड़कर चला जाएगा,
5 तब प्रेम प्रतीक के रूप में
दाऊद के शिविर में
एक सिंहासन प्रतिष्ठित किया जाएगा,
और उस पर एक सच्चा प्रशासक बैठेगा,
जो निष्पक्ष न्याय करेगा,
और सदा धार्मिकता की खोज में रहेगा।"
6 परन्तु हमने मोआब के अहंकार के विषय में सुना है
कि वह कितना घमंडी था।
हम उसकी धृष्टता, उसके अभिमान, गर्व को जानते हैं,
पर उस का डींग मारना,
यह सब व्यर्थ है।
7 अतः मोआब को रोने दो;
हर व्यक्ति मोआब के लिए विलाप करे।

15-16 यश 25 : 10-12; यिर 48; यहेज 25 : 8-11; आमो 2 : 1-3; सप 2 : 8-11

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
कीर-हरेसत नगर की मीठी दाख-टिकियों
के लिए
मोआब शोक मनाएगा,
और अत्यन्त दु:खित होगा।
8 हेश्बोन के खेत,
सिबमा के अंगूर-उद्यान सूख गए।
कभी इन्हीं अंगूर-उद्यानों के रस भरे गुच्छों
से
राष्ट्रों के नायक मतवाले होते थे।
इनकी अंगूर-बेलें यसेर तक फैली हुई थीं;
ये निर्जन प्रदेश में भी पहुँच गई थीं।
इनकी अंगूर-लताएँ फैलते-फैलते
मृत सागर के उस पार तक बढ़ गई थीं।
9 मैं सिबमा के विख्यात अंगूर-रस के लिए
यसेर के साथ विलाप करूंगा।
ओ हेश्बोन, ओ ऐलआलेह,
मैं अपने आंसुओं में तुम्हें डूबा दूंगा।
अब तुम्हारे ग्रीष्मकालीन फलों के लिए,
भरपूर फसल के लिए
कटनी के समय कोई आनन्द के गीत नहीं
गाता।
10 उपजाऊ खेतों में से
आनन्द और हर्ष का लोप हो गया।
अब अंगूर-उद्यानों में
आनन्द के गीत नहीं गाए जाते,
हर्ष-ध्वनि सुनाई नहीं पड़ती।
अंगूर के रस-कुण्डों में से
रस निकालने वाले नहीं रहे।
अंगूर-रस पेरने के समय
की जानेवाली हर्ष-ध्वनि बन्द हो गई।
11 अत: मोआब के लिए मेरा प्राण
शोक-संतप्त वीणा के सदृश व्याकुल है;
कीर-हेरेस के लिए मेरा हृदय रो रहा है।
12 जब मोआब आराधना करने के लिए उपस्थित
होगा,
जब वह पूजास्थान में प्रार्थना करने के लिए
आएगा
और पहाड़ी शिखर के मन्दिर में
पूजा पाठ करते-करते थक जाएगा,
तब भी उसे कुछ लाभ न होगा।

13 प्राचीनकाल में प्रभु ने मोआब के
सम्बन्ध में यही कहा था। 14 किन्तु अब प्रभु यों
कहता है, "अनुबन्ध से बंधा मजदूर निश्चित
अवधि पूर्ण हो जाने पर काम नहीं करता। तीन
वर्षों की निश्चित अवधि में मोआब की विशाल
जन-संख्या के बावजूद उसका वैभव समाप्त
हो जाएगा। जो मोआबी शेष रहेंगे, उनकी
संख्या नगण्य होगी, वे कमजोर राष्ट्र
होंगे।"

सीरिया राज्य की राजधानी दमिश्क के पतन की नबूवत

17 दमिश्क के विषय में नबूवत :
देखो दमिश्क नगर,
अब नगर नहीं रह जाएगा,
वह खण्डहरों का ढेर बन जाएगा।
2 सीरिया के नगर* सदा के लिए उजड़ जाएंगे;
वे केवल पशुओं के झुण्ड के लिए चरागाह
बनेंगे।
पशु उनपर निश्चिंत लेटेंगे,
उनको वहाँ कोई डराएगा नहीं।
3 एफ्रइम राज्य का गढ़
और दमिश्क की राज्य-सत्ता
विलुप्त हो जाएगी।
सीरिया देश के बचे हुए लोगों का भविष्य
और इस्राएलियों के वैभव का अन्त एक-
जैसा है।
स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु का यही कथन है।
4 उस दिन याकूब का वैभव घट जाएगा,
उसका पुष्ट शरीर दुबला हो जाएगा।
5 रपाइम की घाटी में जैसे फसल काटनेवाला
बालों को काटकर अपनी बाहों में भरता है,
फिर भी वहाँ किसान सिला बीनता है।
6 अथवा जैसे जैतून वृक्ष को झाड़ने पर
उसमें कुछ फल शेष रह जाते हैं :

---
* मूल में, 'अरोएर'
17 : 1 यिर 49 : 23; आमो 1 : 3; जक 9 : 1

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

फुनगी पर दो-तीन,
वृक्ष की शाखाओं में चार-पांच,
वैसे ही याकूब की दशा होगी।
इस्राएल के परमेश्वर प्रभु की यही वाणी है।

7 उस दिन मनुष्य अपने बनानेवाले की ओर
देखेगा। उसकी आंखें इस्राएल के पवित्र
परमेश्वर की ओर लगी रहेंगी। 8वह वेदियों की
ओर दृष्टि नहीं करेगा, जिनको उसने अपने हाथ
से बनाया था। वह अपने हाथ से गढ़ी हुई
अशेराह देवी की मूर्तियों और सूर्य-देवता के
स्तम्भों पर दृष्टिपात नहीं करेगा। 9हिव्वी और
एमोरी राष्ट्रों ने इस्राएलियों के आगमन पर
अपने नगर खाली कर दिए थे। इसी प्रकार उस
दिन हिव्वी और एमोरी नगरों के समान सीरिया
के किलाबन्द नगर भी खाली हो जाएंगे। सब
नगर उजाड़ पड़े रहेंगे।

10 तू अपने उद्धारकर्त्ता परमेश्वर को भूल गया;
तुझे अपने आश्रय की चट्टान का स्मरण नहीं
रहा।
अत: चाहे तू अदोनी देवता के सम्मान में
बाग-बगीचे लगा ले;
उस विदेशी देवता के लिए
फूल-पौधों की कलम जमा ले,
11 अथवा रोपने के दिन
तू उनके चारों ओर बाड़ा बांधे
और दूसरे दिन तेरे बीज में अंकुर फूटें,
तो भी असहनीय पीड़ा के दिन
जब असाध्य रोग का आक्रमण होगा
तब तेरी फसल सूख जाएगी।
12 सुन, अनेक देशों के सैनिक दहाड़ रहे हैं,
जैसे उफनता हुआ समुद्र गर्जन करता है।
राष्ट्रों का युद्ध स्वर सुन;
वे प्रचण्ड धारा के समान गर्जन कर रहे हैं।
13 यह सच है,
कि राष्ट्र भयंकर बाढ़ की तरह दहाड़ रहे हैं;
पर वे प्रभु की डांट से
सिर पर पैर रखकर भागेंगे,
जैसे पवन के सम्मुख पहाड़ी पर भूसा उड़ता
है; जैसे बवन्डर से धूल उड़ती है।
14 देखो, संध्या समय आतंक का वास था;
पर सबेरा होने के पूर्व ही
वे गायब हो गए।
यह उन लोगों की नियति है
जो हमें लूटते हैं;
यही उनका अन्त है, जो हमें उजाड़ते हैं।

इथियोपिआ देश के विरुद्ध नबूवत

18 ओ पालोंवाले जलयान के देश*,
ओ इथियोपिआ की नदियों के उस पार
के देश!
2 तू नरकट की नावों पर
नील नदी के जलमार्ग से
राजदूतों को भेजता है :
''द्रुतगामी दूतो, उस राष्ट्र के पास जाओ,
जिसके निवासी ऊंचे-ऊंचे,
और चिकनी चमड़ी वाले हैं;
उस कौम के पास जाओ,
जिससे दूर और पास के सब देश डरते हैं,
जो शक्तिशाली और विजयी राष्ट्र है,
जिसका देश नदियों द्वारा कटा हुआ है।
3 ओ संसार के सब रहनेवालो!
ओ पृथ्वी के सब निवासियो!
जब ध्वजा पर्वतों पर फहरायी जाएगी,
तब तुम उस को देखोगे;
जब तुरही फूंकी जाएगी,
तब तुम उस को सुनोगे।''
4 प्रभु ने मुझसे यों कहा :
''सूर्य की तेज धूप के समान,
फसल की कटनी के समय
ओस-भरे बादल के समान
मैं अपने निवास-स्थान से
उन पर चुपचाप दृष्टिपात करूंगा।''
5 अंगूर की फसल काटने के पहले
जब बौड़ियों का खिलना समाप्त हो जाएगा,

* अथवा, 'परों की सनसनाहट से भरे हुए देश'।
18 सप 2 : 12

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जब अंगूर के गुच्छे पकने लगेंगे,
तब वह हंसियों से टहनियों को काटेगा,
फैली हुई शाखाओं को छांटेगा।
6 वे पहाड़ के मांसाहारी पक्षियों के लिए,
मैदान के जंगली पशुओं के लिए
छोड़ दी जाएंगी।
पहाड़ के मांसाहारी पक्षी ग्रीष्मकाल में
और मैदान के सब जंगली पशु शीतकाल में
उनमें निवास-स्थान बनाएंगे।

7 उस समय उस कौम के लोग जिनसे दूर
और पास के सब देश डरते हैं, जो ऊंचे-ऊंचे
और चिकनी चमड़ीवाले हैं, जो शक्तिशाली
और विजयी राष्ट्र हैं, जिनका देश नदियों के द्वारा
कटा हुआ है, स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु को भेंट
चढ़ाएंगे। उनकी भेंट सियोन पर्वत पर, जहाँ
स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु का नाम प्रतिष्ठित है,
लाई जाएगी।

मिस्र देश के विषय में नबूवत

19 मिस्र देश के विरुद्ध नबूवत:
प्रभु एक तीव्रगामी मेघ पर सवार हो
मिस्र देश आ रहा है।
उसके सम्मुख
मिस्र देश के देवताओं की मूर्तियाँ थर्रा
उठेंगी।
मिस्र के निवासियों का हृदय डूब जाएगा।
2 प्रभु यों कहता है : "मैं मिस्र निवासियों को
एक-दूसरे के विरुद्ध उकसाऊंगा;
वे आपस में लड़ेंगे :
भाई, भाई के विरुद्ध
पड़ोसी, पड़ोसी के विरुद्ध।
एक नगर दूसरे नगर से,
एक राज्य दूसरे राज्य से युद्ध करेगा।
3 मिस्र-निवासियों का उत्साह ठण्डा पड़
जाएगा :
मैं उनकी योजनाओं को निरर्थक कर दूंगा।
तब वे मार्गदर्शन के लिए
अपनी देव-मूर्तियों, झाड़-फूंक करनेवालों,
प्रेतसाधकों और टोनहों के पास जाएंगे।
4 मैं मिस्र-निवासियों को
एक कठोर स्वामी के हाथ में सौंप दूंगा।
एक खूंखार राजा उन पर शासन करेगा।"
स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु स्वामी ने यही कहा
है।

5 नील नदी का पानी सूख जाएगा;
महानदी का तल शुष्क और रिक्त हो
जाएगा।
6 उसकी नहरों से दुर्गन्ध आने लगेगी,
नील नदी की सहायक नदियाँ भी
सूख जाएंगी,
वे शुष्क हो जाएंगी।
नरकट और कांस झुलस जाएंगे।
7 नील नदी के मुहाने पर,
नील नदी के तट पर शुष्क स्थल होंगे;
जो कुछ उसके कछार में बोया जाएगा,
वह सब सूख जाएगा; वह उड़ जाएगा,
कुछ भी शेष नहीं रहेगा।
8 मछुवे शोक मनाएंगे,
नील नदी में मछली पकड़नेवाले
विलाप करेंगे।
नील नदी के जल में जाल फेंकनेवाले
उदास होंगे।
9 तीसी साफ करनेवाले मजदूर और
सफेद कपास के बुनकर निराश होंगे।
10 समाज के स्तम्भ ध्वस्त हो जाएंगे;
मजदूरी पर काम करनेवाले
अत्यन्त दु:खित होंगे।

11 सोअन नगर के सामन्त निश्चय ही मूर्ख हैं,
फरओ के बुद्धिमान मन्त्री भी
मूर्खतापूर्ण सलाह देते हैं।
तब तुम फरओ के सामने यह दावा
कैसे कर सकते हो कि तुम बुद्धिमानों के
अवशिष्ट हो,
प्राचीन राजाओं के वंशज हो ?
12 ओ मिस्र देश,

---

19 यिर 46; यहेज 29-32; जक 14 : 18-19

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कहां गए तेरे बुद्धिमान पंडित ?
वे तुझे बताएँ,
तुझ पर प्रकट करें कि सेनाओं के प्रभु ने
तेरे विरुद्ध क्या करने का निश्चय किया है ?
13 सोअन नगर के सामन्त मूर्ख हो गए हैं;
मेम्फिस नगर के सामन्त भ्रम में फंस गए हैं।
मिस्र देश के कुलों के मुखियों ने
मिस्र देश को पथभ्रष्ट कर दिया है।
14 प्रभु ने मिस्र देश में
संभ्रम की आत्मा प्रेषित की है।
उन नेताओं के कारण मिस्री
अपने सब कामों में इस तरह लड़खड़ाते हैं,
जैसे कोई शराबी वमन करता हुआ
लड़खड़ाता है।
15 अतः मिस्र देश कोई भी कार्य नहीं कर
पाएगा;
न उसके शासक, और न उसकी प्रजा
न उसके अधिकारी, और न उसकी जनता।

16 उस दिन मिस्र-निवासी स्त्रियों के
सदृश भयभीत होंगे। स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु
उन पर अपना हाथ उठाएगा, और वे डर से
कांपेंगे। 17यहूदा प्रदेश मिस्र निवासियों के
लिए 'हौआ' बन जाएगा। जो भी मिस्र निवासी
उसका नाम सुनेगा, वह आतंकित हो जाएगा;
क्योंकि सेनाओं के प्रभु ने मिस्र-निवासियों का
विनाश करने का निश्चय किया है।

18 उस दिन मिस्र देश के पांच नगर कनान
देश की भाषा बोलेंगे और स्वर्गिक सेनाओं के
प्रभु के प्रति निष्ठा रखने की शपथ खाएँगे। इन
पांच नगरों में से एक नगर का नाम 'सूर्य नगर'
होगा।

19 उस दिन मिस्र देश में प्रभु के नाम की
एक वेदी होगी, और मिस्र देश की सीमा पर
प्रभु के नाम का एक स्तम्भ होगा। 20यह मिस्र
देश में स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु के लिए एक
चिह्न और साक्षी होगा। जब मिस्र-निवासी
अत्याचारियों के कारण प्रभु की दुहाई देंगे तब
प्रभु उनके पास एक उद्धारकर्त्ता भेजेगा। वह
उनकी रक्षा कर उनका उद्धार करेगा। 21प्रभु
मिस्र-निवासियों पर स्वयं को प्रकट करेगा,
और उस दिन मिस्र-निवासी प्रभु का अनुभव
करेंगे, और वे पशु-बलि और अग्नि-बलि के
द्वारा प्रभु की आराधना करेंगे। वे प्रभु के लिए
मन्नतें मानेंगे और उनको पूर्ण करेंगे। 22यद्यपि
प्रभु मिस्र-निवासियों को मारेगा, तथापि वह
उनको मार के द्वारा स्वस्थ भी करेगा। वे पश्चात्ताप
कर प्रभु की ओर उन्मुख होंगे। प्रभु उनकी
प्रार्थना सुनेगा, और तब उन्हें स्वस्थ करेगा।

23 उस दिन मिस्र देश से असीरिया देश
तक एक राजमार्ग निर्मित होगा। असीरिया देश
के नागरिक उस मार्ग से मिस्र देश में आयेंगे
और मिस्र देश के नागरिक असीरिया देश को
जाएंगे। मिस्र देश के निवासी असीरिया देश के
निवासियों के साथ आराधना करेंगे।

24 उस दिन इस्राएली राष्ट्र मिस्र देश और
असीरिया देश के बराबर+ होगा और वह पृथ्वी
के सब देशों के लिए प्रभु की आशिष का माध्यम
बनेगा; 25क्योंकि स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु
तीनों देशों को यह आशिष देगा : "धन्य हैं
मिस्र-निवासी: तुम मेरे निज लोग हो। धन्य है
असीरिया राष्ट्र : तू मेरे हाथों की रचना है। धन्य
है इस्राएली राष्ट्र : तू मेरी मीरास* है।"

अश्दोद नगर-राज्य का पतन

20 जिस वर्ष असीरिया के राजा सर्गोन ने
अपने सेनापति को अश्दोद नगर पर
आक्रमण करने के लिए भेजा था, और उसने
वहाँ आकर युद्ध किया और उस पर अधिकार
कर लिया था, 2उस वर्ष प्रभु ने यशायाह बेन-
आमोत्स को यह आदेश दिया था : "जा,
अपनी कमर से टाट वस्त्र अलग कर और पैरों
से अपने जूते उतार।" यशायाह ने प्रभु के
आदेश का पालन किया। वह नंगे बदन और नंगे
पैर चलते-फिरते थे।

+ शब्दशः 'तीसरा'। + शब्दशः 'तीसा'। * अथवा, 'निज भाग'

20 : 1 2 रा 18 : 17

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

3 तब प्रभु ने यह कहा, "जैसे मेरा सेवक
यशायाह तीन वर्ष तक मिस्र देश और
इथियोपिआ देश के विरुद्ध संकेत-चिह्न और
चमत्कार स्वरूप नंगे बदन और नंगे पैर
चलता-फिरता रहा, 4वैसे ही असीरिया देश
मिस्र देश के बन्दियों और इथियोपिआ के
निवासियों को, युवकों और वृद्धों को, नंगे
बदन और नंगे पैर ले जाएगा। उनके नितम्ब
खुले होंगे। यह मिस्र देश के लिए अपमानजनक
बात होगी। 5तब समुद्र तट के निवासियों को
अपनी आशा के केन्द्र इथियोपिआ और अहंकार
के प्रतीक मिस्र देश के कारण हताश और
लज्जित होना पड़ेगा। 6उस दिन वे यह कहेंगे,
"ये ही थे हमारी आशा के केन्द्र। असीरिया के
राजा से बचने के लिए हमने इनकी ही शरण
ली थी! जब इनका यह हाल है, तब हम कैसे
बचेंगे?"

बेबीलोन के विरुद्ध नबूवत

21 बेबीलोन** के विरुद्ध नबूवत :
जैसे नेगेब क्षेत्र में बवंडर उठता है,
वैसे ही वह निर्जन प्रदेश से,
आतंकमय देश से आ रहा है।
2 एक भयानक दृश्य मुझे दिखाया गया :
लुटेरा लूटता जा रहा है,
विनाश करनेवाला विनाश कर रहा है।
ओ एलाम देश, आक्रमण कर।
ओ मादय देश, घेरा डाल दे।
जो आहें और विलाप,
बेबीलोन ने उत्पन्न किये हैं,
प्रभु उनका अन्त कर देगा।
3 इसलिए मेरी कमर में पीड़ा है,
गर्भवती स्त्री की तरह
मुझे भी पीड़ा हो रही है।
मैं ऐसे संकट में हूं
कि मुझे सुनाई नहीं पड़ता,
मैं इतना घबरा गया हूं
कि मुझे दिखाई नहीं देता।
4 मेरा हृदय धड़कता है,
मैं अत्यन्त भयभीत हूं।
जिस संध्या की मैं प्रतीक्षा कर रहा था,
वह मेरी घबराहट का कारण बन गई।
5 वे भोजन की तैयारी कर रहे हैं।
दस्तरख्वान+ बिछा रहे हैं।
वे खा-पी रहे हैं।
ओ सामन्तो, उठो।
ढाल को तेल पिलाओ।
6 स्वामी ने मुझसे यों कहा है :
"जा, एक पहरेदार को
चौकी पर खड़ा कर;
जो वह देखेगा, उसको घोषित करेगा।
7 जब वह सवारों को देखेगा :
दो-दो की पंक्ति में चलनेवाले घुड़सवारों
को,
गधों के सवारों को, ऊंटों के सवारों को,
तब वह ध्यान से
बड़े ध्यान से उनकी आवाज सुनेगा।"
8 यह भयानक दृश्य देखनेवाले ने पुकारा :
"ओ स्वामी,
मैं दिन भर मीनार पर खड़ा-खड़ा
पहरा देता रहा,
मैंने चौकी पर रातें व्यतीत कीं।
9 देख, सवार आ रहे हैं।
दो-दो की पंक्ति में घुड़सवार आ रहे हैं।"
उसने उत्तर में यह कहा, "पतन हो गया!
बेबीलोन देश का पतन हो गया!
उसके शत्रु ने
उसके इष्ट देवता की सब मूर्तियाँ
भूमि पर ध्वस्त कर दीं।"
10 बेबीलोन के द्वारा रौंदे गए,
अन्न के सदृश फटकारे गए मेरे पुत्रो!
जो मैंने स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु से,
इस्राएल के परमेश्वर से सुना,
वह मैं तुम्हें बताता हूं।

अन्य राष्ट्रों के विरुद्ध नबूवत

11 एदोम देश* के विरुद्ध नबूवत :
सेईर पहाड़ से कोई मुझे पुकार रहा है :
"ओ रखवाले, रात कितनी शेष रही?

** शब्दशः "समुद्रतटीय निर्जन प्रदेश" + अथवा, 'भूमि पर बिछाई जानेवाली चादर।' * अक्षरशः 'दूमा नगर'।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रात कितनी गुजर गई?''
12 रखवाला कहता है :
''सबेरा हो रहा है,
पर रात फिर आएगी।
यदि पूछना चाहते हो, तो पूछो।
लौटकर फिर आओ।''

13 अरब देश के विरुद्ध नबूवत :
ओ ददान नगर के कारवां,
तुम्हें अरब की बीहड़ झाड़ियों में
रात व्यतीत करनी पड़ेगी।
14 ओ तेमा देश के निवासियो,
प्यासों के लिए पानी ले जाओ,
प्राण बचाकर भागनेवालों से जाकर मिलो,
और उन्हें भोजन दो।
15 वे तलवार से,
म्यान से बाहर निकली तलवार से,
खींचे गए धनुष से
युद्ध के दबाव से बचने के लिए
अपना देश छोड़कर भागे हैं।

16 स्वामी ने मुझ से यों कहा है :
''अनुबन्धी मजदूर के वर्षों के हिसाब से
एक ही वर्ष में
केदार के समस्त राज-वैभव का अन्त हो
जाएगा।
17 धनुर्धारी सशक्त केदारी सैनिकों के
कुछ ही वंशज शेष रहेंगे।''
इस्राएल के प्रभु परमेश्वर ने यह कहा है।

यरूशलेम के विरुद्ध नबूवत

22 'दर्शन की घाटी' के विरुद्ध नबूवत :
तुम्हें क्या हुआ कि तुम सबके सब
मकान की छतों पर चढ़ गए?
2 अरे कोलाहल भरे नगर,
जयजयकार करनेवाले नगर,
आनन्द-उत्सव मनानेवाले नगर,
तेरे मृतजन तलवार से नहीं मारे गए,
और न युद्ध में मारे गए।
3 तेरे सैनिक-अधिकारी
एक-साथ भाग गए थे,
पर वे बिना धनुष के ही
बन्दी बना लिये गए।
तेरे नागरिक,
जो युद्ध से बहुत दूर भाग गए थे,
उन्हें खोज लिया गया,
वे कैद कर लिये गए।
4 इसलिए मैं कहता हूं :
''मुझसे आंख हटा लो,
ताकि मैं फूट-फूट कर रो सकूं,
मेरे लोगों की नगरी यरूशलेम के विनाश के
शोक में
मुझे सांत्वना देने का प्रयत्न न करो।''

5 स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु, स्वामी ने
कोलाहल, विध्वंस और संभ्रम का दिन
निर्धारित कर दिया है।
दर्शन की घाटी में
शहरपनाह फेंक दी गई।
लोगों की दुहाई पहाड़ से टकरा रही है।
6 एलाम ने तरकश उठा लिया,
सीरिया घोड़े पर सवार हुआ,
कीर ने अपनी ढाल निकाल ली।
7 यहूदा प्रदेश की सर्वोत्तम घाटियाँ रथों से भर
गईं
घुड़सवार यरूशलेम नगर के प्रवेश-द्वारों पर
खड़े हो गए।
8 यों यहूदा प्रदेश की मोर्चाबन्दी ध्वस्त हो गई।
उस दिन तुमने वन-भवन के शस्त्र-भण्डार
को देखा,
9 तुमने देखा कि
दाऊदपुर के किले में कितने जलकुण्ड* हैं।
तुमने निचले जलाशय का जल एकत्र किया।
10 तुमने यरूशलेम नगर के मकानों की गणना
की
परकोटे को सुदृढ़ बनाने के लिए
तुमने अनेक मकान गिरा दिए।
11 तुमने पुराने जलाशय का जल
एकत्र करने के लिए

* अथवा, 'कितनी दरारें'।

22 : 8 1 रा 7 : 2 22 : 9 2 रा 20 : 20

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दो दीवारों के मध्य नया जलाशय बनाया।
पर जिसने यह कार्य सम्पन्न किया था,
उस पर तुमने दृष्टिपात भी नहीं किया;
जिसने पहले से ही यह योजना बनाई थी,
उसपर तुमने ध्यान भी नहीं दिया!

12 उस दिन स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु ने,
स्वामी ने तुम्हें आदेश दिया था
कि तुम अपना पश्चात्ताप प्रकट करने के लिए
रोओ, शोक मनाओ, सिर मुंड़ाओ, टाटवस्त्र पहिनो।
13 पर तुम उसका उल्लंघन कर
आनन्द और हर्ष मना रहे हो;
तुम बैलों को हलाल कर रहे हो;
भेड़ों को काट रहे हो;
और उनका मांस खा रहे हो,
शराब पी रहे हो
और यह कह रहे हो,
''खाओ-पीओ, मौज करो;
क्योंकि कल तो मरना ही है।''
14 स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु, स्वामी ने
मेरे कान में यह भेद प्रकट किया,
''निस्सन्देह इनके इस अधर्म का
कोई प्रायश्चित नहीं है,
केवल इनकी मृत्यु!''

महाप्रबन्धक शेबना के विरुद्ध नबूवत

15 स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु ने, स्वामी ने
यों कहा: ''राज-भवन के महाप्रबन्धक शेबना
के पास जा, और उससे यह कह:
16 'तुझ-विदेशी का यहां क्या काम?
तेरे नाते-रिश्तेदार यहां कौन हैं
कि तू अपने लिए कबर खुदवा रहा है?
और वह भी उच्च स्थान पर?
तू चट्टान में अपने लिए निवास-स्थान क्यों खुदवा रहा है?
17 ओ बलवान पुरुष,
प्रभु तुझको जोर से फेंक देगा।
वह मुझे जकड़कर पकड़ लेगा;
18 वह तुझे चक्कर खिला-खिलाकर गेंद के समान
दूर विस्तृत देश में फेंक देगा।
वहाँ तू मरेगा,
और वहीं तेरे वैभव के प्रतीक रथ भी।
ओ शेबना,
अपने स्वामी के राज-परिवार को कलंकित करनेवाले!
प्रभु तुझसे यों कहता है :
19 मैं तुझे तेरे स्थान से हटा दूंगा;
तू अपने महाप्रब्धक-पद से नीचे उतार दिया जाएगा।

20 उस दिन मैं अपने सेवक
एलयाकीम बेन- हिलकियाह को बुलाऊंगा,
21 और उसको तेरे पद पर प्रतिष्ठित करूंगा :
तेरी राजसी पोशाक पहनाऊंगा,
उसकी कमर में तेरा राजसी कमरबन्द बांधूंगा,
और उसके हाथ में तेरी सत्ता सौपूंगा।
तब वह राजधानी यरूशलेम के निवासियों का,
यहूदा प्रदेश का
पिता के समान प्रशासक होगा।
22 मैं उसके कन्धे पर
दाऊद के राजवंश की कुंजी रखूंगा।
जो वह खोलेगा,
उसको कोई व्यक्ति बन्द न कर सकेगा;
और जो वह बन्द करेगा
उसको कोई व्यक्ति खोल न सकेगा।
23 मैं उसको एक निश्चित स्थान में
खूंटी के सदृश
दृढ़ता से प्रतिष्ठित करूंगा।
वह अपने पितृकुल के लिए
महिमायुक्त सिंहासन बनेगा।'
24 ''परन्तु एलयाकीम के कन्धों पर उसके
पितृकुल के समस्त सदस्यों का—वंशजों और

---

* अथवा 'छोटे-बड़े सब पात्रों का, कटोरों और सुराहियों का'

22 : 13 यश 5 : 12; 1 कुर 14 : 32 **22:15** 2 रा 18 : 37; यश 36 : 3 **22 : 20** 2 रा 18 : 18 **22 : 22** मत 16 : 19; प्रक 3 : 7

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सन्तानों का, बाल-वृद्ध, स्त्री-पुरुषों का —
भार होगा। 25स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु यों कहता
है: निश्चित स्थान में प्रतिष्ठित की गई खूंटी उस
दिन अपने स्थान से उखाड़ ली जाएगी। वह
काटी जाएगी और टूटकर गिर जाएगी। जो भार
उस पर लदा था, वह गिरकर नष्ट हो जाएगा।''
प्रभु ने यह कहा है।

फीनीकी बन्दरगाहों के विरुद्ध नबूवत

23 सोर के विरुद्ध नबूवत :
तर्शीश के जलयान शोक-मग्न हैं;
क्योंकि सोर बन्दरगाह नष्ट हो गया।
कुप्रुस द्वीप की ओर से आने पर उनको इस
बात का पता चला।
2 समुद्र तट के निवासी,
सीदोन के व्यापारी विलाप कर रहे हैं।
इनके प्रतिनिधि व्यापार के उद्देश्य से
सागर को पार करते थे;
3 वे अनेक सागरों की यात्रा करते थे।
शिहोर का अनाज, नील नदी की फसल
उन्हें आय में प्राप्त होती थी।
वे अनेक राष्ट्रों से व्यापार करते थे।
4 सीदोन, जो समुद्री किला है,
निराशा में डूबकर यों कहता है:
''ओ समुद्र! अब मुझे गर्भवती स्त्री की
पीड़ाएं नहीं होतीं,
अब मुझे सन्तान नहीं होगी।
मेरे पुत्र नहीं हैं कि मैं उनका लालन-पालन
करूं;
पुत्रियाँ नहीं हैं कि मैं उनको बड़ा करूं।''
5 जब यह खबर मिस्र देश में पहुँची,
उसके निवासी सोर के पतन का समाचार
सुन अत्यन्त व्यथित हुए।
6 उन्होंने कहा,
'जलयान से तर्शीश को जाओ;
ओ समुद्रतट के निवासियो, विलाप करो!
7 क्या यही तुम्हारा समृद्ध नगर है
जिसकी स्थापना प्राचीन काल में हुई थी?
जिसके पैर उसे अपने उपनिवेश बसाने के
लिए
दूर-दूर देश ले गए थे?
8 किसने सोर के विरुद्ध यह योजना बनाई थी?
सोर, जिसने अनेक राज्यों की स्थापना की,
जिसके व्यापारी सामन्त थे,
जिसके व्यापारियों का
समस्त पृथ्वी पर आदर किया जाता था।
9 स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु ने यह योजना बनाई
थी,
ताकि वह प्रत्येक अहंकारी का अहंकार
मिटा दे,
पृथ्वी के समस्त प्रतिष्ठित लोगों की प्रतिष्ठा
धूल में मिला दे।
10 ओ तर्शीश के निवासियो, अब नील नदी के
खेतीहरों की तरह खेतों में काम करो;
क्योंकि बन्दरगाह नष्ट हो गया।
11 प्रभु ने समुद्र पर अपना हाथ उठाया,
उसने राज्यों को हिला दिया।
प्रभु ने फीनीके देश के विषय में
यह आदेश दिया :
''उसके किलों को ढाह दो!''
12 प्रभु ने यह कहा,
''ओ सीदोन की कुवांरी कन्या,
संत्रस्त नगरी,
तू समृद्ध नगरी नहीं रह सकेगी,
यद्यपि तेरे नागरिक उठकर कुप्रुस द्वीप
जाएंगे
तो भी उन्हें वहाँ आराम नहीं मिलेगा।''
13 देखो, यह कसदी कौम का देश है;
वह राष्ट्र नहीं बना रहा।
असीरिया ने उस देश को विनष्ट कर
जंगली पशुओं का निवास-स्थान बना
दिया।
उन्होंने गढ़ बना-बनाकर मोर्चाबन्दी की;
उन्होंने उस के महल ढाह दिए;
उसको खण्डहरों का ढेर बना दिया।
14 ओ तर्शीश के जलयानो, विलाप करो।
तुम्हारा बन्दरगाह ध्वस्त कर दिया गया।
15 उस दिन से सोर देश

---

23 यहेज 26 : 1-28 : 19; योए 3 : 4-8; आमो 1 : 9-10; जक 9 : 3-4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

एक राजा की जीवन-आयु तक,
सत्तर वर्ष तक विस्मृत रहेगा।
सत्तर वर्ष के बाद
सोर की नियति यह होगी,
जैसा एक वेश्या-गीत में कहा गया है :
16 "ओ विस्मृता* वृद्धा-वेश्या!
हाथ में सितार ले नगर में घूम-फिर।
सितार पर मधुर राग बजा,
नए-नए गीत गा
कि लोगों को फिर तेरी याद आ जाए।"
17 सत्तर वर्ष के पश्चात्
प्रभु सोर नगर की सुधि लेगा,
और सोर अपना पुराना
आजीविका का साधन अपनाएगा
पृथ्वी के समस्त राज्यों के साथ
व्यापार सम्बन्ध+ स्थापित करेगा।
18 उसके व्यापार का लाभ,
उसकी आय प्रभु को अर्पित की जायेगी।
अर्पण का यह धन
न भण्डारगृह में संचय किया जाएगा,
और न व्यर्थ उसको जमा किया जाएगा,
वरन् वह प्रभु के सम्मुख रहनेवालों के
प्रचुर भोजन और भव्य वस्त्रों पर व्यय
होगा।

प्रभु पृथ्वी का न्याय करेगा

24 देखो, प्रभु पृथ्वी को निर्जन और उजाड़
बना देगा;
वह उसकी सतह को उलट देगा,
और उस पर रहनेवालों को
तितर-बितर कर देगा।
2 तब पुरोहित की भी वही दशा होगी
जो आराधकों की होगी।
इन सब की दशा एक-जैसी होगी :
मालिक की और गुलाम की,
मालकिन की और दासी की,
विक्रेता की और खरीददार की,
उधार देनेवाले की और उधार लेनेवाले की,
साहूकार की और कर्जदार की।
3 पृथ्वी पूर्णत: निर्जन,
एकदम उजाड़ हो जाएगी;
क्योंकि प्रभु ने यह कहा है।

4 पृथ्वी शोक मना रही है,
वह मुरझा रही है;
दुनिया व्याकुल है, वह कुम्हला रही है,
आकाश भी पृथ्वी के साथ क्षीण होता जा रहा
है।
5 धरती अपने निवासियों के बोझ से
अशुद्ध हो गई,
क्योंकि लोगों ने विधि-विधानों का उल्लंघन
किया,
संविधियों की अवहेलना की,
शाश्वत विधान को तोड़ दिया।
6 अत: पृथ्वी को शाप ग्रस रहा है,
पृथ्वी के निवासी
अपने अधर्म के कारण दु:ख भोग रहे हैं।
वे झुलस गए;
अत: पृथ्वी पर कुछ ही मनुष्य शेष रह गए!

7 अंगूर की नई फसल भी शोक मना रही है;
अंगूर-उद्यान भी सूख गया।
आनन्द मनानेवाले ठण्डी आहें भर रहे हैं।
8 डफ वाद्य-यन्त्र का
हर्ष-निनाद शब्द अब नहीं होता;
आनन्द-उत्सव मनानेवालों का शोर
अब सुनाई नहीं पड़ता।
सितार पर कर्ण-प्रिय राग
अब नहीं बजता।
9 अब वे गाते हुए अंगूर का रस नहीं पीते;
शराब भी कड़वी लगने लगी है।
10 निर्जन नगर तहस-नहस पड़ा है;
प्रत्येक मकान का दरवाजा बन्द है,
ताकि कोई व्यक्ति भीतर न आ सके।
11 अंगूर का रस उपलब्ध न होने के कारण
गलियों में चीत्कार मचा है;
आनन्द को पाला मार गया!
देश से हर्ष विदा हो गया!

---

* 'जो भुला दी गई' + अक्षरश: 'वेश्यापन'।

23 : 17 प्रक 17 : 2 24 : 1 2 पत 3 : 10 24 : 5 उत 9 : 16 24 : 8 प्रक 18 : 22

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

12 नगर में केवल विनाश ही शेष है,
नगर के प्रवेश-द्वार तोड़ दिए गए,
वे मलवा हो गए।
13 जैसे जैतून के फल झहराए जाते हैं,
जैसे अंगूर के गुच्छे तोड़ लेने के बाद शेष
अंगूरों को झाड़ते हैं,
वैसे समस्त पृथ्वी पर
सब जातियों को झहराया जाएगा!

भक्तों का आनन्द मनाना

14 भक्त* उच्च स्वर में जयजयकार करेंगे,
वे हर्ष से गीत गाएंगे।
वे समुद्र की गर्जन से अधिक जोर-शोर से
प्रभु के माहात्म्य के विषय में
यह स्तुति गाएंगे :
15 "ओ पूर्व दिशा के निवासियो,
प्रभु की महिमा करो!
ओ समुद्र तट पर रहनेवालो,
इस्राएल के प्रभु परमेश्वर के नाम का
गुणगान करो।
16 पृथ्वी के सीमान्तों से
हम धर्मात्मा परमेश्वर की महिमा के सम्बन्ध
में स्तुति-गीत सुनते हैं।"
परन्तु मैंने यह कहा,
"ओह! मैं दु:ख से क्षीण हो रहा हूं,
चिन्ता से व्याकुल हो रहा हूं।
धिक्कार है विश्वासघातियों को,
धोखेबाजों को;
वे एक के बाद एक विश्वासघात किए जा
रहे हैं।"

17 ओ पृथ्वी के निवासियो, तुम्हारे लिए
आतंक, गड्ढा और फंदा निर्धारित हैं;
18 जो व्यक्ति आतंक का स्वर सुनकर भागेगा,
वह गड्ढे में गिरेगा;
और जो व्यक्ति गड्ढे से बचकर
बाहर निकल आएगा,
वह फंदे में फंसेगा,
क्योंकि आकाश के झरोखे खुल गए हैं,
और पृथ्वी की नींव कांप रही है।
19 पृथ्वी पूर्णत: विदीर्ण हो गई।
पृथ्वी पूर्णत: फट गई
पृथ्वी अत्यन्त कांप उठी।
20 पृथ्वी शराबी के समान लड़खड़ा रही है;
वह झोपड़ी जैसी डोल रही है।
उस पर उसके अपराधों का भारी बोझ है,
वह बोझ से दबकर गिर रही है;
वह फिर नहीं उठेगी।

21 उस दिन प्रभु
आकाश की शक्तियों को आकाश में
और पृथ्वी के राजाओं को पृथ्वी पर
दण्ड देगा।
22 वे अधोलोक के गड्ढे में
बन्दी के रूप में एकत्र होंगे।
वे बन्दीगृह में अनेक दिन तक बन्द रहेंगे।
तत्पश्चात् उनको दण्ड दिया जाएगा।
23 तब चन्द्रमा शर्म से मुंह छिपाएगा,
सूर्य का मुंह काला होगा;
क्योंकि आकाश की शक्तियों का प्रभु
सियोन पर्वत पर,
यरूशलेम नगर पर शासन करेगा;
और अपने सेवक-धर्मवृद्धों के सम्मुख
अपनी महिमा प्रकट करेगा।

प्रभु की कृपा के लिए स्तुतिगान

25 हे प्रभु, तू ही मेरा परमेश्वर है;
मैं तुझे सराहूंगा,
मैं तेरे नाम का गुणगान करूंगा।
तूने अद्भुत कार्य किए हैं,
तूने अपनी योजनाएं पूर्ण की हैं,
जो आरम्भ से बनी थीं,
जो विश्वस्त और निश्चयपूर्ण थीं।
2 तूने नगर को खण्डहरों का ढेर बना दिया;
किलाबन्द नगर को खण्डहर कर दिया।
विदेशियों के महलों का नगर,
अब नगर नहीं रहा।
उसका पुनर्निर्माण अब कभी नहीं होगा।

---

* मूल में 'वे'

24 : 17 यिर 48 : 43-44 24 : 18 उत 7 : 11 24 : 23 इब्र 12 : 22; प्रक 19 : 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

3 इसलिए शक्तिशाली कौम तेरी महिमा करेगी,
खूंखार राष्ट्रों के नगर तुझसे डरेंगे।
4 तू गरीबों का सुदृढ़ आश्रय रहा है;
तू संकट में पड़े निर्धन का सहारा रहा है।
तू तूफान से रक्षा करनेवाला शरण-स्थल,
ग्रीष्म-ताप से बचानेवाली शीतल छाया है।
निर्दयी जन का फूत्कार
उस तूफान के झोंके-सा है,
जो दीवार से टकराता है;
5 वह शुष्क स्थान की ताप के समान है।
तू विदेशियों की अहंकारपूर्ण उक्तियों का शमन करता है;
जैसे बदली में गर्मी कम हो जाती है
वैसे ही निर्दयी का अहंकार-गान
शान्त हो गया।

6 स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु सियोन पर्वत पर
सब जातियों के लिए महाभोज तैयार करेगा,
जिस में छप्पन व्यंजन,
शुद्ध किया हुआ अंगूर का रस होगा;
जिसमें स्निग्ध भोजन,
और पुराने अंगूर रस के पेय होंगे।

7 प्रभु इसी पर्वत पर
उस आवरण को नष्ट कर देगा,
जो समस्त जातियों पर छाया हुआ है;
वह उस परदे को हटा देगा,
जो सब राष्ट्रों पर पड़ा हुआ है।
8 वह सदा के लिए मृत्यु को समाप्त कर देगा,
प्रभु, स्वामी
सबकी आंखों के आंसू पोंछ डालेगा।
वह अपने निज लोगों के कलंक को
समस्त पृथ्वी से दूर कर देगा;
प्रभु ने यह कहा है।
9 उस दिन लोग यह कहेंगे,
''देखो, यही है हमारा परमेश्वर;
हमने इसकी ही प्रतीक्षा की थी
कि वह हमें बचाएगा।
यही प्रभु है,
हमने इसकी ही प्रतीक्षा की थी।
आओ, हम उसके उद्धार के कारण
आनन्द मनाएँ, हर्षित हों।''
10 प्रभु का वरदहस्त*
इसी पर्वत पर रहेगा;
वह सियोन पर्वत की रक्षा करेगा;
किन्तु मोआबी कौम
अपने देश में रौंद दी जाएगी,
जैसे घास का तिनका
गोबर के गड्ढे में रौंदा जाता है।
11 जैसे तैराक तैरने के लिए
अपने हाथ फैलाता है,
मोआब भी अपने हाथ फैलाएगा;
परन्तु प्रभु उसके गर्व को चूर-चूर करेगा,
उसकी हर चाल को विफल करेगा।
12 उसकी ऊंची-ऊंची सुदृढ़ दीवारों को
प्रभु नीचे गिरा देगा;
वह उनको भूमि पर ध्वस्त करेगा,
वह उनको मिट्टी में मिला देगा

प्रभु की रक्षा-शक्ति पर अटूट विश्वास

26 उस दिन यहूदा प्रदेश के निवासी यह गीत गाएंगे :
''यरूशलेम हमारा सुदृढ़ नगर है;
प्रभु ने हमें बचाने के लिए
नगर में दीवारें और परकोटे बनाए हैं।
2 नगर के प्रवेश-द्वार खोल दो,
ताकि राष्ट्र के धार्मिक लोग
जो प्रभु पर विश्वास करते हैं,+
नगर के भीतर प्रवेश करें।
3 प्रभु! जो व्यक्ति अपने मन को
सदा तुझ में लीन रखता है,
उसको तू पूर्ण शान्त जीवन प्रदान करता है,
क्योंकि वह तुझ पर भरोसा रखता है।''
4 राष्ट्र के लोगो,
प्रभु पर सदा भरोसा करो;
क्योंकि प्रभु स्वयं शाश्वत चट्टान है :

---

* अथवा, 'वरदान देनेवाला हाथ' + शब्दशः, 'एक धार्मिक राष्ट्र, जो विश्वासी बना रहता है'

25 : 6 मत 8 : 11; यो 6 : 54 **25 : 8** हो 13 : 14; 1 कुर 15 : 54; प्रक 7 : 17 **25 : 10-22** यश 15-16
26 : 2 भज 118 : 19 **26 : 4** व्य 32 : 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वह सदा हमारी रक्षा करता है।
5 उच्च स्थान पर रहनेवालों को,
उच्च स्थित नगर के निवासियों को
प्रभु ने नीचा दिखाया है।
उसने अहंकारी नगर को
धूल में मिला दिया है,
उसे भूमि पर ध्वस्त कर दिया है।
6 अब लोगों के पांव उसको रौंदते हैं;
गरीबों के पैर,
दरिद्रों के पग उसको कुचलते हैं।

7 धार्मिक व्यक्ति का मार्ग समतल होता है,
क्योंकि प्रभु, तू उसके मार्ग को सीधा बनाता है।
8 प्रभु, हम भी तेरे न्याय-मार्ग पर
तेरी प्रतीक्षा करते हैं।
तेरा स्मरणीय नाम लेने के लिए
हमारे प्राण उत्सुक हैं।
9 मेरे प्राण रात में तेरे लिए तरसते हैं,
मेरी आत्मा मेरे अन्त: में तुझे ढूंढ़ती है।
जब तेरे न्याय-सिद्धान्त पृथ्वी पर प्रबल होते हैं,
तब संसार के निवासी धर्म को सीखते हैं।
10 यदि दुर्जन पर दया भी की जाए
तो भी वह धर्म को नहीं सीखेगा।
वह धर्म-परायण देश में भी
दुराचरण करता है,
वह प्रभु की प्रभुता नहीं देखता!
11 प्रभु, न्याय करने के लिए
तेरा हाथ उठा हुआ है;
पर वे उसे नहीं देख रहे हैं।
वे तेरे निज लोगों के प्रति
तेरा उत्साह देखें,
और तब वे लज्जित हों।
शत्रुओं के प्रति तेरी क्रोधाग्नि
उन्हें भस्म कर दे।
12 प्रभु, तू ही हमारे लिए शान्ति स्थापित करेगा,
जो कुछ हमने किया, उसका करनेवाला
वस्तुत: तू ही था!
13 हे हमारे प्रभु परमेश्वर,
तेरे अतिरिक्त अन्य स्वामियों ने
हम पर शासन किया,
पर हम केवल तेरा नाम स्मरण करते हैं।
14 वे मृत हैं, वे जीवित नहीं होंगे;
वे छायाएँ हैं,
वे मृतकों के मध्य से उठ नहीं सकते।
तूने उनको इस सीमा तक दण्डित किया,
कि वे पूर्णत: नष्ट हो गए;
तूने उनकी स्मृति तक मिटा दी!
15 किन्तु प्रभु, तूने हमारे राष्ट्र को बढ़ाया;
निस्सन्देह तूने हमारे राष्ट्र को बढ़ाया,
और यों अपने नाम की महिमा की।
तूने हमारे देश की सब सीमाओं को बढ़ाया।

16 प्रभु, हम संकट-काल में तुझे ढूंढ़ते हैं।
जब तू हमें ताड़ित करता है,
तब हम तुझसे निरन्तर प्रार्थना करते हैं।
17 प्रभु, तेरे सम्मुख हम गर्भवती स्त्री के समान थे :
जब उसका जनने का समय आता है
तब वह प्रसव-पीड़ा से चीखती है।
18 मानो गर्भवती स्त्री के समान हमें भी प्रसव-पीड़ा हुई;
पर हमने केवल वायु प्रसव की!
हमने देश में मुक्ति का कोई कार्य नहीं किया;
संसार को बसाने के लिए किसी का जन्म नहीं हुआ।
19 ओ इस्राएली राष्ट्र,
तेरे मृतक जीवित होंगे,
उनका मृत शरीर लाशों के मध्य से उठेगा।
ओ मिट्टी में दफनाए गए मृत लोगो,
जागो, और जयजयकार करो!
प्रभु, तेरी यह ओस
ज्योतिर्मय ओस है।
तू उसको मृत-लोक पर बरसाएगा,
और मृतक जीवित हो जाएंगे!

---

26 : 11 इब्र 10 : 27 **26 : 19** हो 13 : 14; यो 5 : 28-29; दान 12 : 2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

20 ओ मेरे निज लोगो,
अपने-अपने कक्ष में जाओ,
और भीतर से दरवाजा बन्द कर लो।
जब तक क्रोध शान्त न हो जाए,
इस थोड़े समय तक अपने को छिपाए
रखो।
21 देखो, पृथ्वी के निवासियों को,
उनके अधर्म का दण्ड देने के लिए
प्रभु अपने निवास-स्थान से बाहर निकल
रहा है!
तब पृथ्वी उन हत्याओं को प्रकट करेगी,
जो उस पर की गई हैं;
वह किसी के रक्त को नहीं छिपाएगी।

इस्राएल की मुक्ति और उसका एकत्र होना

27 उस दिन प्रभु अपनी मजबूत, कठोर
और विशाल तलवार से
वेगवान, वक्र सर्पासुर लिव्यातान को दण्ड
देगा,
वह समुद्र में रहने वाले जल-पशु का वध
करेगा।

2 उस दिन तुम
सुन्दर अंगूर-उद्यान के विषय में यह गीत
गाना :
3 "मैं-प्रभु इस उद्यान का रखवाला हूं;
मैं बार-बार इसे पानी से सींचता हूं,
ऐसा न हो कि इसके पत्ते मुरझाएँ :
मैं दिन-रात इसकी रक्षा करता हूं।
4 मुझ में अब कोप नहीं रहा।
यदि मैं कंटीले झाड़-झंखाड़ पाऊंगा,
तो मैं उसके विरुद्ध युद्ध छेड़ दूंगा,
मैं उन-सब को भस्म कर दूंगा।
5 अथवा यदि वे मेरी छत्र-छाया में शरण लेना
चाहें
तो वे मेरे साथ शान्ति स्थापित करें।
वे मुझसे मेल-मिलाप करें।"

6 आगामी दिनों में
याकूब राष्ट्र जड़ पकड़ेगा,
इस्राएल देश पुष्पित होगा,
उसमें शाखाएँ फूटेंगी,
वह अपने फलों से समस्त संसार को भर
देगा।
7 क्या प्रभु ने इस्राएलियों को
उतना दण्ड दिया है,
जितना उसने उन राष्ट्रों को दिया था,
जिन्होंने इस्राएलियों को मारा था?
क्या प्रभु ने इस्राएलियों का
उतना ही वध किया है,
जितना उनके वधिकों का किया था?
8 नहीं, प्रभु ने उन्हें थोड़ा-थोड़ा ताड़ित किया;
उन्हें अपने देश से निर्वासित कर दंडित
किया।
जिस समय पूर्वी पवन बह रहा था,
उसने उन्हें अपनी प्रचण्ड वायु से खदेड़
दिया।
9 अत: याकूब के अधर्म का प्रायश्चित यों
किया जाएगा,
उसके पाप के विमोचन का यह परिणाम
होगा :
वह चूना बनाने के पत्थरों की तरह
वेदियों के सब पत्थरों को चूर-चूर करेगा;
अशेराह देवी की मूर्तियाँ
और सूर्य देवता के स्तम्भ खड़े नहीं रहेंगे।
10 किलाबन्द नगर सुनसान है,
आबाद नगर उजड़ गया,
निर्जन प्रदेश की तरह
लोगों ने उसको छोड़ दिया।
अब वहाँ पशुओं का रेवड़ चरता है;
वह वहाँ बैठता है,
और पौधों की डालियाँ तोड़ता है।
11 वृक्ष की डालियाँ सूख गईं;
वे टूट गईं।
स्त्रियाँ आती हैं,
और उनसे आग जलाती हैं।
यह एक विवेकहीन कौम है;
अत: उसका सृजक उस पर दया नहीं करेगा;
उनको रचनेवाला उन पर कृपा नहीं करेगा।

---

26 : 20 मत 6 : 6 **26 : 21** मी 1 : 3 **27 : 1** भज 74 : 13 **27 : 2** यश 5 : 1-7

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

12 उस दिन प्रभु
फरात नदी से मिस्र की बरसाती नदी तक
अन्न को फटकेगा;
तब तुम, ओ इस्राएलियो,
अनाज के दाने के समान
एक-एक व्यक्ति इकट्ठे किए जाओगे।
13 उस दिन महा नरसिंगा फूंका जाएगा।
तब जो इस्राएली असीरिया देश में खो गए थे,
और जो मिस्र देश को खदेड़ दिए गए थे,
वे सब आएंगे,
और यरूशलेम नगर में,
पवित्र पर्वत पर प्रभु की आराधना करेंगे।

उत्तरी राज्य को चेतावनी

28 एफ्रइम राज्य के शराबियों के
अहंकारमय मुकुट को धिक्कार!
उत्तरी राज्य के कान्तिमय सौंदर्य के
मुरझाते हुए फूल को धिक्कार!
यह मदिरा से मस्त शराबियों की
उपजाऊ घाटी के ऊपरी भाग में खिला है।
2 देख, तुझे दण्ड देने के लिए
प्रभु ने एक शक्तिशाली और बलवान राष्ट्र को नियुक्त किया है;
वह ओलों की वर्षा जैसा तुझ पर बरसेगा;
वह विनाशकारी तूफान के सदृश,
प्रचण्ड तूफान के समान,
बाढ़ की तेज धार के सदृश
तुझ पर टूट पड़ेगा,
और तुझे निर्दयतापूर्वक भूमि पर पटकेगा।
3 एफ्रइम राज्य के शराबियों का अहंकारमय मुकुट
पैरों तले कुचला जाएगा।
4 उसकी उपजाऊ घाटी के ऊपरी भाग में
खिले हुए कांतिमय सौंदर्य के
मुरझाते हुए फूल की दशा
ग्रीष्म ऋतु के पूर्व पके हुए
अंजीर के फल के सदृश होगी :
जो कोई उसको देखता है,
वह तत्काल उस को तोड़ता,
और अविलम्ब उसको खा जाता है।

5 उस दिन स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु
इस्राएली राष्ट्र के बचे हुए लोगों के लिए
महिमा का मुकुट,
सुन्दरता का किरीट होगा!
6 जो न्याय-सिंहासन पर बैठकर न्याय करेगा,
उसके लिए प्रभु न्याय की आत्मा होगा;
वह उन सैनिकों के लिए शक्ति की आत्मा होगा,
जो नगर के प्रवेश-द्वार पर युद्ध में
आक्रमणकारियों को पीछे ढकेलते हैं।

यरूशलेम नगर को चेतावनी

7 यरूशलेम के पुरोहित और नबी भी
मदिरा पीकर डगमगाते हैं :
वे शराब के कारण लड़खड़ाते हैं।
निस्सन्देह पुरोहित और नबी
मदिरा पीकर डगमगाते हैं।
मदिरा के कारण उनकी मति भ्रष्ट हो गई;
वे प्रभु के दर्शन को समझने में भूल करते हैं।
वे फैसला सुनाते समय
शराब के कारण लड़खड़ाते हैं।
8 दस्तरख्वान* वमन-कै से भरे हैं,
कोई भी स्थान गन्दगी से नहीं बचा!

9 वे ताना मारते हैं: "नबी किस व्यक्ति को ज्ञान सिखाएगा?
वह किसको प्रभु का सन्देश समझाएगा?
क्या उन शिशुओं को,
जिन्होंने अभी-अभी मां का दूध पीना छोड़ा है,
जो मां के स्तन से अलग किए गए हैं?"
10 यह सब बकवास है उनके लिए :
"आदेश पर आदेश,
आदेश पर आदेश,
नियम पर नियम,
नियम पर नियम,
कुछ यहाँ, कुछ वहां।"

* भोजन के समय भूमि पर बिछाई जानेवाली चादर

27 : 13 मत 24 : 31; 1 कुर 15 : 52; 1 थिस 4 : 16 **28 : 7** यश 5 : 13; 56 : 12

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

11 निस्सन्देह प्रभु
अपरिचित भाषा बोलने वाले लोगों के द्वारा,
विदेशी भाषा में,
यरूशलेम के निवासियों से बात करेगा।
12 इनके विषय में प्रभु ने यह कहा था:
"यही विश्राम है, कि तुम स्वयं
थके-मांदे लोगों को विश्राम दो;
इसी से पुनर्जीवन प्राप्त होता है।"
परन्तु उन्होंने नहीं सुना था।
13 अत: उनके लिए प्रभु का यह सन्देश है:
"आदेश पर आदेश,
आदेश पर आदेश,
नियम पर नियम,
नियम पर नियम,
कुछ यहाँ, कुछ वहां।"
अत: वे ठोकर खाकर मुंह के बल गिरेंगे।
उनका अंग-भंग होगा।
वे जाल में फंसेंगे, और बन्दी बनेंगे।

14 अरे धर्म-निन्दको!
राजधानी यरूशलेम में
इन लोगों पर शासन करने वाले प्रशासको,
प्रभु का यह सन्देश सुनो:
15 तुमने यह कहा है:
"हमने मौत से सन्धि की है;
अधोलोक से समझौता किया है
अत: जब प्रलय का जल-प्रवाह बहेगा
तब वह हम तक नहीं पहुंचेगा!
असत्य को हमने अपना आश्रय-स्थल
माना है,
16 इसलिए प्रभु, स्वामी यों कहता है:
"देखो, मैं सियोन की नींव के लिए एक
पत्थर,
कसौटी पर कसा गया एक पत्थर,
सुदृढ़ नींव के लिए
आधार-शिला* का कीमती पत्थर रख रहा
हूं:
'विश्वास करनेवाला अपने विश्वास में
डगमगाता नहीं।'
17 मैं न्याय को मापदण्ड
और धार्मिकता को साहुल बनाऊंगा!
ओलों की वर्षा
तुम्हारे असत्य के आश्रय-स्थल को बहा ले
जाएगी,
बाढ़ में तुम्हारा, झूठ का शरण-स्थान, डूब
जाएगा।"
18 तब मौत से की गई तुम्हारी सन्धि टूट
जाएगी,
अधोलोक से किया गया तुम्हारा समझौता
टिक नहीं पाएगा।
जब प्रलय का जल-प्रवाह बहेगा,
तब तुम उसमें डूब जाओगे।
19 जल-जब वह बहेगा, वह तुम्हें डुबा लेगा;
वह हर सुबह बहेगा;
वह दिन और रात में बहेगा।
तुम उस खबर को सुनकर ही आतंकित हो
जाओगे!

20 पलंग इतना बड़ा नहीं है कि
पैर फैलाकर सोनेवाला सो सके;
चादर इतनी छोटी है कि वह उसे पूरा ओढ़
नहीं सकता!
21 जैसे परासीम पर्वत पर युद्ध के समय
प्रभु सक्रिय हुआ था,
जैसे वह गिबओन घाटी में अत्यन्त क्रुद्ध
हुआ था,
वैसे ही वह अब उठेगा,
और अपना क्रोध प्रकट करेगा:
वह अपना कार्य करेगा,
अद्‌भुत है उसका कार्य!
वह अपना कार्य पूर्ण करेगा,
अनोखा है उसका कार्य!
22 अत: धर्म-निन्दको, धर्म की निन्दा मत करो;
अन्यथा तुम्हारे बन्धन और कस जाएंगे;
क्योंकि स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु, स्वामी के
मुख से

---
* अक्षरश: 'कोने का'

28 : 11 1 कुर 14 : 21 **28 : 12** मत 11 : 29 **28 : 15** प्रज्ञा 1 : 16; प्रव 14 : 12 **28 :16** भज 118 : 22; मत 16 : 18; 21 : 42; रोम 9 : 33; इफ 2 : 20; 1 पत 2 : 6 **28 : 21** 2 शम 5 :20; यहो 10 : 10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मैंने यह सुना है
कि उसने समस्त देश के संहार का निश्चय
किया है।

23 सुनो, ध्यान से मेरी बात सुनो;
ध्यान दो, मेरे सन्देश पर कान दो।
24 जो किसान बीज बोने के लिए हल चलाता
है,
क्या वह निरन्तर हल चलाता ही रहता है?
क्या वह खेत को हल से लगातार चीरता
और हेंगा फेरता रहता है?
25 नहीं, वह खेत को चौरस करने के बाद
उस पर सौंफ छितराता है,
जीरे को बिखराता है;
वह पंक्तियों में गेहूं,
तथा जौ को उसके नियत स्थान में
और कठिए गेहूं को किनारे पर बोता है।
26 परमेश्वर ने किसान को सिखाया है;
उसको खेती की उचित शिक्षा मिली है।
27 किसान यह जानता है:
दांवरी की गाड़ी से सौंफ दांई नहीं जाती;
गाड़ी का पहिया जीरे के ऊपर
चलाया नहीं जाता;
बल्कि सौंफ छड़ी से, और जौ सोठे से
झाड़ा जाता है।
28 क्या अन्न, जिससे रोटी बनाई जाती है,
दांवने में चूर-चूर किया जाता है?
नहीं, किसान उसको सदा नहीं दांवता;
वह अपनी गाड़ी के पहिए,
बैलों के द्वारा उसके ऊपर से चलाता है;
पर वह उसको चूर-चूर नहीं करता।
29 यह समझ भी किसान को
स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु से प्राप्त होती है,
प्रभु अद्‌भुत परामर्शदाता है,
उसकी समझ महान है!

यरूशलेम नगर और उसके शत्रु

29 सावधान, यरूशलेम नगर* !
तुझमें ही दाऊद ने पड़ाव डाला था।
एक अथवा दो वर्ष गुजर जाने दे;
जब उत्सवों का चक्र गुजर जाएगा,
2 तब मैं तुझको संकट में डालूंगा।
नगर में शोक मनाया जाएगा;
हर जगह रोना-पीटना होगा,
तू निस्सन्देह मेरे क्रोध का अग्निकुण्ड** बन
जाएगा।
3 मैं दाऊद के सदृश
तेरे विरुद्ध चारों ओर पड़ाव डालूंगा;
बुर्ज बनाकर तुझे घेरूंगा;
मैं तेरे विरोध में मोर्चाबन्दी करूंगा।
4 तेरा पतन होगा:
तू पाताल से बोलेगा,
मिट्टी के नीचे तेरी आवाज सुनाई देगी।
भूत-प्रेत की आवाज के सदृश
तेरी आवाज पाताल से आएगी;
मिट्टी के नीचे से तेरे शब्द
फुसफुसाहट के रूप में निकलेंगे।

5 तेरा शत्रु-दल बारीक रेत-कणों के सदृश
बिखर जाएगा;
निर्दयी आक्रमणकारियों का समुदाय
भूसे के सदृश उड़ जाएगा।
पलक झपकते, अचानक
6 स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु का आगमन होगा;
बादल गरजेंगे, भूकम्प होगा,
महानाद सुनाई देगा।
बवंडर उठेगा, तूफान आएगा।
भस्म करनेवाली अग्निज्वाला प्रकट होगी;
और प्रभु तुझे दण्ड देगा।
7 ओ यरूशलेम नगर,+
तुझसे युद्ध करनेवाले सब राष्ट्रों का समुदाय,
तुझे और तेरे गढ़ को घेरकर
तुझसे लड़नेवाले सब शत्रु,
जो तुझे कष्ट देते हैं,
वे रात में देखे गए स्वप्न के सदृश,
लुप्त हो जाएंगे।
8 उनकी दशा वैसी होगी

* मूल में, 'अरीएल, अरीएल' अर्थात् 'परमेश्वर का पर्वत' अथवा 'परमेश्वर का सिंह' या 'परमेश्वर का नगर'।
** यरूशलेम के मंदिर के अग्निकुण्ड का नाम भी 'अरीएल' था। + मूल में, 'अरीएल'
29 : 3 लू 19 : 43 29 :10 रोम 11 : 8 29 : 11 प्रक 5 : 1

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जैसी भूखे व्यक्ति की होती है:
जब वह रात में स्वप्न देखता है
कि वह भोजन कर रहा है,
किन्तु जागने पर उसकी भूख शान्त नहीं होती!
अथवा जैसी प्यासे व्यक्ति की होती है:
जब वह रात में स्वप्न देखता है
कि वह पानी पी रहा है,
किन्तु जागने पर वह मूर्छित हो जाता है,
क्योंकि उसकी प्यास बुझी नहीं होती!
यही दशा उन सब राष्ट्रों के समुदाय की होगी
जो सियोन पर्वत के विरुद्ध युद्ध करते हैं।

इस्राएली राष्ट्र का अन्धापन और पाखंड

9 अरे यहूदा प्रदेश के निवासियो,
अवाक् हो, और अवाक् ही बने रहो!
अपनी आंखें फोड़ लो, और अन्धे हो जाओ!
मतवाले हो, पर मदिरा पीकर नहीं;
लड़खड़ाओ, लेकिन शराब पीकर नहीं!
10 प्रभु ने तुम पर घोर आलस्य की आत्मा प्रेषित की है!
उसने नबियों को, जो तुम्हारे नेत्र थे, बन्द कर दिया;
तुम्हारे द्रष्टाओं पर, जो तुम्हारे मस्तिष्क थे, परदा डाल दिया!

11 अब दर्शन की ये सब बातें तुम्हारे लिए
मुहरबन्द पुस्तक के शब्द बन गई हैं। जब तुम
किसी पढ़े-लिखे व्यक्ति को पुस्तक देते और
उससे कहते हो, ''इसको पढ़ो,'' तब वह
तुमसे कहता है, ''यह मुहरबन्द है, मैं इसको
नहीं पढ़ सकता।''
12 जब तुम किसी अपढ़ व्यक्ति को पुस्तक
देते, और उससे कहते, ''इसको पढ़,'' तब वह
तुम से कहता है, ''मैं अपढ़ हूं, पढ़ नहीं
सकता।''
13 स्वामी ने यह कहा,
''ये लोग केवल मुंह से मेरी आराधना करते हैं,
केवल ओंठों से मेरा सम्मान करते हैं;
किन्तु इनका हृदय मुझसे दूर है।
ये दूसरों के आदेश से मेरी भक्ति करते हैं;
इनकी भक्ति रटी-रटाई, सीखी हुई है।
14 अतः मैं इन लोगों के मध्य पुनः आश्चर्य कर्म, अद्‌भुत कार्य करूंगा:
इनके बुद्धिमान लोगों की बुद्धि नष्ट हो जाएगी,
समझदार व्यक्तियों की समझ को पाला मार जाएगा।''

15 धिक्कार है उन्हें,
जो अपनी योजना को गहरे अन्धकार में प्रभु से छिपाते हैं,
जो अन्धेरे में काम करते हैं,
और यह सोचते हैं, ''हमें कौन देखता है?
हमें कौन जानता है?''
16 ओ उलटी समझवालो!
क्या कुम्हार की गणना मिट्टी के बराबर की जाएगी?
क्या बनाई गई वस्तु अपने बनाने वाले से यह कह सकती है:
''तूने मुझे नहीं बनाया''?
क्या रची गई वस्तु अपने रचने वाले से यह कह सकती है,
''तुझ में समझ नहीं?''

इस्राएली राष्ट्र की मुक्ति

17 निस्सन्देह कुछ ही समय के पश्चात्
लबानोन का जंगल
उपजाऊ मैदान में बदल जाएगा,
और उपजाऊ मैदान* घने जंगल में!
18 उस दिन बहरा व्यक्ति पुस्तक के शब्द सुनेगा,
और अन्धे व्यक्ति की आंखें
गहन अन्धकार में देखेंगी!

---

* अथवा 'कर्मेल का उपजाऊ क्षेत्र'।

29 : 13 यहेज 33 : 31; मत 6 : 5; मक 7 : 6 **29 : 14** 1 कुर 1 : 19 **29 : 15** अय्य 22 : 13-14 **29 : 16** यश 45 : 9; यिर 18 : 6; रोम 9 : 20; प्रव 33 : 13 **29 : 18-19** मत 11 : 5

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

19 पीड़ित व्यक्ति प्रभु में अधिकाधिक आनन्दित
होंगे,
समाज का सर्वाधिक दरिद्र मनुष्य
इस्राएल के पवित्र परमेश्वर में हर्षित होगा;
20 क्योंकि निर्दय मनुष्य निर्मूल हो जाएंगे।
धर्म-निन्दक शेष न बचेंगे;
दुष्कर्म करने को सदा तैयार व्यक्ति
नष्ट हो जाएंगे।
21 जो मनुष्यों को शब्दों में फंसाते हैं,
जो अदालत में न्याय करनेवाले के लिए
जाल रचते हैं,
और जो झूठे तर्कों के द्वारा
सच्चे मनुष्य को परास्त करते हैं,
वे सब मिट जाएंगे।
22 अत: प्रभु, अब्राहम का मुक्तिदाता,
याकूब के वंशजों का परमेश्वर,
यों कहता है:
"अब याकूब का वंश लज्जित नहीं होगा,
अपमान के कारण उसका मुख काला नहीं
होगा।
23 वह अपने मध्य में किए गए
मेरे हस्तकार्य को+ देखेगा
और मेरे नाम को पवित्र बनाए रखेगा।
निस्सन्देह वह याकूब के
पवित्र परमेश्वर की पवित्रता बनाए रखेगा,
और इस्राएल के परमेश्वर की भक्ति
करेगा।
24 भटकी हुई आत्माएं समझ को सीखेंगी,
और धर्म-विद्रोही भी धार्मिक शिक्षा
ग्रहण करेंगे।"

मिस्र देश पर भरोसा करना व्यर्थ है

30 प्रभु कहता है:
"ओ विद्रोही पुत्रो, धिक्कार है तुम्हें!
तुम योजना तो बनाते हो,
परन्तु मेरी सम्मति से नहीं;
तुम सन्धि तो करते हो,
पर मेरे आत्मा की प्रेरणा से नहीं।
यों तुम पाप पर पाप कर रहे हो।
2 तुमने मिस्र देश जाने के लिए,
वहां फरओ की रक्षा में आश्रय लेने के लिए,
मिस्र की छत्र-छाया में शरण लेने के लिए
प्रस्थान किया,
और मेरे मुख—नबी—से पूछा तक नहीं!
3 अत: फरओ का आश्रय-स्थल
तुम्हारे अपमान का कारण बनेगा;
मिस्र देश की छत्र-छाया के कारण
तुम्हारे सम्मान को ठेस लगेगी।
4 फरओ के सामन्त सोअन नगर में हैं,
और उसके दूत हानेस नगर पहुंच चुके हैं।
5 तुम अपने साथ उपहार ले जा रहे हो,
ऐसी कौम के लिए,
जिससे तुम्हें कोई लाभ न होगा;
वह न तुम्हारी मदद कर सकती है
और न तुम्हें कोई लाभ पहुंचा सकती है।
वह लज्जा और अपमान ही तुम्हें दे सकती
है!"
6 नेगेब क्षेत्र के जानवरों के विषय में नबूवत:
मिस्र देश को जानेवाले राजदूत,
अपनी धन-सम्पत्ति गधों की पीठ पर लादे,
अपने खजाने को ऊंटों के कोहान पर रखे,
संकट और कष्टप्रद नेगेब प्रदेश से गुजरते हैं,
जो सिंह और सिंहनी का इलाका है,
जहाँ सांप और उड़नेवाले सर्प पाए जाते हैं।
वे ऐसी कौम के पास जा रहे हैं
जिससे उन्हें कोई लाभ न होगा!
7 मिस्र देश की सहायता व्यर्थ और निस्सार है;
अत: मैंने उसका नाम "निठल्ला रहब"
रखा है।
8 अब जा, उनके सम्मुख
एक पट्टी पर यह संदेश अंकित कर,
एक पुस्तक में यह लिख,
ताकि आनेवाली पीढ़ियों के लिए
सदा-सर्वदा तक साक्षी बनी रहे।
9 क्योंकि यह विद्रोही कौम है, झूठी संतान है,
ये प्रभु की शिक्षा न सुननेवाले पुत्र हैं।
10 ये द्रष्टाओं को आदेश देते हैं:

+ मूल में 'अर्थात् अपनी संतान को'।
30 : 10 आमो 2 : 12; 7 : 13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

''परमेश्वर के दर्शन मत देखो;''
और दर्शियों से कहते हैं,
''जो कटु सत्य है उसकी नबूवत हम से मत करो।
हमें मीठी-मीठी बातें सुनाओ,
हमसे मिथ्या भविष्यवाणी कहो।
11 नबियो, मार्ग छोड़ दो, रास्ते से हट जाओ।
इस्राएल के पवित्र परमेश्वर के विषय में हमें और न सुनाओ।''
12 अतः इस्राएल का पवित्र परमेश्वर
यों कहता है:
''तुमने मेरे संदेश को तुच्छ समझा;
तुम अत्याचार और कुटिलता पर
भरोसा करते हो,
तुम अत्याचार और कुटिलता का
सहारा लेते हो;
13 इस कारण तुम्हारा यह अनिष्ट होगा:
जैसे एक ऊंची दीवार का
कुछ भाग टूट कर आगे निकल आता है,
और गिरनेवाला होता है;
अचानक, क्षण-भर में टूटकर गिर पड़ता है,
ऐसी ही दशा तुम्हारी होगी।
14 तुम कुम्हार के पात्र के सदृश
निर्दयता से पटक कर चकनाचूर किए जाओगे:
जैसे उसके टुकड़ों में एक भी ठीकरी नहीं मिलती,
जिससे चूल्हे में से आग निकाली जा सके,
या कुण्ड में से पानी निकाला जा सके,
वैसे ही विनाश के बाद तुम्हारा पता नहीं चलेगा।''

15 इस्राएल का पवित्र परमेश्वर,
प्रभु, स्वामी यों कहता है:
''लौट आने और शान्त रहने से ही तुम्हारी रक्षा होगी,
चुप रहने और भरोसा करने में ही तुम्हारी शक्ति है।''
पर तुमने ऐसा नहीं किया।
16 तुमने कहा, ''नहीं,
हम घोड़ों पर बैठकर अविलम्ब जाएंगे।''
अतः तुम्हारा विनाश अविलम्ब होगा।
तुमने कहा, ''हम द्रुतगामी घोड़ों पर
बैठकर जाएंगे।''
अतः तुम्हारा पीछा करनेवाले द्रुतगामी होंगे।
17 एक शत्रु-सैनिक के डर से
तुम्हारे एक हजार सैनिक भागेंगे;
पाँच शत्रु-सैनिकों के डराने से
तुम सब भागोगे, और तब तक भागते रहोगे
जब तक तुम पर्वत-शिखर पर गड़े
झंडे के समान अकेले,
पहाड़ी की चोटी पर गड़ी
अकेली पताका के सदृश
नगण्य न रह जाओ।

परमेश्वर की कृपा का वरदान

18 प्रभु अब भी प्रतीक्षा कर रहा है
कि तुम प्रायश्चित करो,
और वह तुम पर कृपा करे।
वह तुम पर दया करने को तत्पर है।
प्रभु न्याय करनेवाला परमेश्वर है।
धन्य हैं वे, जो उसकी प्रतीक्षा करते हैं।
19 ओ सियोन के लोगो,
यरूशलेम नगर में रहनेवालो,
तुम अब नहीं रोओगे;
तुम्हारी दुहाई की पुकार सुनकर
प्रभु तुम पर निस्सन्देह कृपा करेगा।
जब वह उसको सुनेगा
तब निश्चय ही वह तुम्हें उत्तर देगा।
20 यद्यपि स्वामी ने तुम्हें कष्ट की रोटी खिलाई
और दुःख का पानी पिलाया,
तो भी प्रभु, तुम्हारा गुरु तुमसे
स्वयं को फिर कभी नहीं छिपाएगा!
तुम स्वयं अपनी आंखों से अपने गुरु के
दर्शन करोगे!
21 जब तुम सत्य मार्ग से दाएं-बाएं भटकोगे

---

30 : 17 यहो 23 : 10 30 : 18 2 पत 3 : 9

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तब तुम्हारे कानों में पीछे से यह आवाज
सुनाई देगी:
"सत्य मार्ग यही है, इस पर चलो।"
22 तुम देवी-देवताओं की
सोना-चांदी से मढ़ी हुई मूर्तियां अशुद्ध
करोगे,
और उन्हें कचरे की तरह फेंक दोगे।
तुम उनसे यह कहोगे, "हटो यहां से।"
23 प्रभु तुम्हारे खेतों में बोए हुए बीजों के
लिए समय पर वर्षा करेगा, और तुम्हारे खेतों
में खूब फसल होगी, भरपूर उपज उत्पन्न
होगी। उस दिन तुम्हारे पशु बड़े-बड़े चरागाहों
में घास चरेंगे। 24खेत में काम करनेवाले बैल
और गधे सूप और डलिया से फटकी हुई भूसी
नमक के साथ खाएंगे। 25उस महासंहार के दिन
जब बुर्ज गिर जाएंगे, तब प्रत्येक ऊंचे पहाड़
पर, हर एक ऊंची पहाड़ी पर बहते हुए झरने
फूटेंगे। 26उस दिन जब प्रभु अपने निज लोगों
की चोटों की मरहम पट्टी करेगा। जब वह
उनके घावों को स्वस्थ करेगा जो उसके प्रहार
से हुए थे, तब चन्द्रमा का प्रकाश सूर्य के प्रकाश
के सदृश हो जाएगा, और सूर्य का प्रकाश सात
गुना तेज होगा, सप्ताह भर का सम्मिलित
प्रकाश एक दिन में होगा!

असीरिया को दण्ड

27 देखो, प्रभु* दूर से आ रहा है,
उसकी क्रोधाग्नि प्रज्वलित है;
धुएं का बादल उठ रहा है।
उसके ओंठ क्रोध से फड़क रहे हैं,
उसकी जीभ भस्मकारी ज्वाला के समान
लपलपा रही है!
28 उसका श्वास उमड़ती हुई नदी के समान है,
जिसकी बाढ़ में लोग गले तक डूब जाते हैं।
वह विनाश की छलनी से राष्ट्रों को छानता
हुआ,
कौमों के जबड़ों में पथभ्रष्ट करनेवाली
लगाम लगाता हुआ आ रहा है।

29 जैसे पवित्र पर्व की रात में तुम गीत गाते
हो, वैसे ही तुम उस दिन गीत गाओगे। जैसे प्रभु
के पर्वत, इस्राएल की चट्टान पर आनेवाला
तीर्थयात्री मार्ग में बांसुरी बजाता हुआ आनन्द
मनाता है, वैसे ही तुम हृदय से आनन्द
मनाओगे। 30उस दिन प्रभु अपने भक्तों को
अपनी तेजस्वी वाणी सुनाएगा और पृथ्वी की
ओर नीचे आती हुई अपनी शक्तिशाली भुजा
के दर्शन कराएगा। वह प्रचण्ड क्रोध, भस्मकारी
ज्वाला, मेघों की गड़गड़ाहट, तूफान और
ओलों की वर्षा में यह कार्य करेगा। 31प्रभु अपने
डण्डे से असीरियाई सेना पर प्रहार करेगा, और
सैनिक उसकी आवाज सुनकर आतंक से थर्रा
उठेंगे। 32प्रभु के डण्डे का प्रहार, जिससे वह
उन्हें दण्ड देगा और उन पर आघात करेगा, डफ
और सितार की ध्वनि के साथ होगा। वह हाथ
घुमा-घुमा कर उनसे लड़ता रहेगा।
33 बहुत समय से एक चिता तैयार है। वह
राजा के लिए तैयार की गई है। यह चिता गहरी
और चौड़ी बनाई गई है। उस पर बहुत ईंधन
और आग जमा है। प्रभु का श्वास जलते हुए
गंधक की धारा की तरह उसे सुलगाएगा।

मिस्र निवासी केवल मनुष्य हैं, ईश्वर नहीं

31 ओ इस्राएलियो, धिक्कार है तुम्हें!
तुम मिस्र-देश से सहायता मांगने
जाते हो;
तुम उसकी अश्व-शक्ति का सहारा लेते हो।
तुम्हें उसके रथों पर भरोसा है;
क्योंकि उसके पास असंख्य रथ हैं।
तुम्हें उसके घुड़सवारों पर विश्वास है;
क्योंकि वे बहुत बलवान हैं।
ओ इस्राएलियो, धिक्कार है तुम्हें!
तुम इस्राएल के पवित्र परमेश्वर की ओर
सहायता के लिए नहीं देखते;
तुम प्रभु का मार्गदर्शन नहीं खोजते।
2 परन्तु प्रभु भी बुद्धिमान है;
वह दुर्जनों को दुःख देता है।
वह अपने वचन से नहीं मुकरता है।
वह दुर्जनों के गृह-कुल के विरुद्ध उठता है।
वह उनको भी दण्डित करता है

* मूल में, 'प्रभु-नाम'

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जो दुष्कर्मियों की सहायता करते हैं।
3 मिस्र निवासी मनुष्य हैं, ईश्वर नहीं।
उनके घोड़े 'हाड़-मांस' हैं, आत्मा नहीं!
प्रभु के हाथ उठाते ही
सहायता करनेवाला औंधे मुंह गिर पड़ेगा;
और जिसकी उसने सहायता की है,
वह धराशायी हो जाएगा।
यों दोनों एक साथ नष्ट हो जाएंगे।

4 प्रभु ने मुझ से यह कहा:
"सिंह या सिंह-शावक
अपने शिकार को दबोच कर गुर्राता है;
और उसको भगाने के लिए
अनेक चरवाहे बुलाए जाते हैं।
वे हल्ला करते हैं,
पर वह उनके हो-हल्ला से आतंकित नहीं होता;
वह उनके शोर-गुल की परवाह नहीं करता।
इसी प्रकार मैं-स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु
सियोन पर्वत पर,
उसकी पहाड़ी पर युद्ध करने के लिए नीचे आऊंगा।
5 जैसे पक्षी अपने घोंसले के चारों ओर मंडराकर
अपने बच्चों की रक्षा करते हैं,
वैसे ही मैं-स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु
यरूशलेम नगर की रक्षा करूंगा।
मैं यरूशलेम की रक्षा कर उसको मुक्त करूंगा;
मैं उसको नष्ट न होने दूंगा,
मैं उसको बचाऊंगा।

6 ओ इस्राएलियो, जिसके प्रति तुमने भारी विद्रोह किया,
उसकी ओर लौटो।
7 सोना-चांदी की मूर्तियां
जिन को तुमने अपने लिए पूजा के उद्देश्य से
अपने हाथों से गढ़ा, और यों पाप किया,
उनको तुम उस दिन फेंक दोगे।

8 "असीरिया राष्ट्र
तलवार से मौत के घाट उतारा जाएगा,
पर यह तलवार मनुष्य की नहीं होगी!
यह तलवार उसका पूर्ण संहार करेगी।
असीरियाई सेना इस तलवार के कारण
उसके सम्मुख से भागेगी;
उसके सैनिक बन्दी होंगे,
और वे बेगार करेंगे।
9 असीरिया का राजा आतंकित हो भाग जाएगा;
प्रशासक भयाकुल हो
राष्ट्र-पताका छोड़कर भाग जाएंगे।"
जिसकी अग्नि-ज्वाला सियोन में है,
जिसका अग्नि-कुण्ड यरूशलेम में है,
उस प्रभु ने यह कहा है।

धार्मिक राजा

32 देखो, एक राजा ऐसा होगा,
जो धार्मिकता से राज्य करेगा,
उसके प्रशासक न्यायपूर्वक शासन करेंगे।
2 राजा और प्रशासक जनता के लिए
मानो आंधी से छिपने का आश्रय-स्थल
तूफान से बचने का आड़-स्थल होंगे।
वे मानो निर्जल प्रदेश में जल के झरने
उत्तप्त भूमि में विशाल चट्टान की छाया होंगे।
3 उनके राज्य-काल में
लोग, जो अपनी आंखों से देख सकते हैं,
वे ध्यान से देखेंगे;
जो अपने कानों से सुन सकते हैं,
वे प्रभु का सन्देश ध्यान से सुनेंगे।
4 उतावले हृदय वाले मनुष्य
ज्ञान की बातें समझ सकेंगे;
जो हकलाते हैं,
वे स्पष्ट और अविलम्ब बोलेंगे।
5 उनके राज्य में मूर्ख कुलीन नहीं कहलाएंगा,
और न धूर्त का सम्मान किया जाएगा।
6 क्योंकि मूर्ख मूर्खता की बातें करता है,
उसका हृदय दुष्कर्म की योजना रचता है।
उसका हर कार्य धर्महीन होता है,
वह प्रभु के विषय में कुतर्क करता है।

31 : 3 यहेज 28 : 9 31 : 5 व्य 32 : 11 32 : 1 यिर 23 : 5

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वह भूखे को भूखा ही रहने देता है।
वह प्यासे की प्यास नहीं बुझाता है।
7 धूर्त्त की धूर्त्तता बुरी होती है।
वह दुष्टतापूर्ण कुचक्र रचता है:
चाहे गरीब सच्चाई के मार्ग पर क्यों न हो,
धूर्त्त उसको झूठी बातों से लूटता है।
8 परन्तु उदार मनुष्य उदारता की ही बातें सोचता है,
न केवल वह सोचता है,
वरन् उनको कार्यरूप में परिणत भी करता है!

9 ओ आलसी स्त्रियो,
उठो और मेरी बात सुनो!
ओ आत्म-सन्तुष्ट महिलाओ,
मेरे शब्दों पर ध्यान दो!
10 ओ आत्म-सन्तुष्ट महिलाओ,
एक वर्ष से कुछ अधिक समय बीतते ही
तुम संकट में पड़ जाओगी:
अंगूर की फसल नष्ट हो जाएगी,
फलों की उपज नहीं होगी।
11 ओ आलसी स्त्रियो, कांपो!
ओ आत्म-सन्तुष्ट महिलाओ, व्याकुल हो!
पश्चात्ताप प्रकट करने के लिए
अपने वस्त्र उतारो,
और अपनी कमर में टाट वस्त्र लपेट लो।
12 हरे-भरे लहलहाते खेतों के लिए,
अंगूर उद्यानों के लिए छाती पीटो।
13 शोक मनाओ!
मेरे देशवासियों की धरती में
अब झाड़-झंखाड़ उग आए हैं।
सुखी नगर के सब उल्लसित घरों के लिए शोक मनाओ।
14 राजमहल परित्यक्त हो जाएगा,
आबाद नगर उजाड़ हो जाएगा।
पहाड़ी और पहरेदार के बुर्ज
सदा के लिए खोहें बन जाएंगे;
जहाँ जंगली गधे मौज करेंगे,
जहाँ पालतू पशु घास चरेंगे।
15 जब ऊपर से हम पर आत्मा उंडेला जाएगा
तब यह निर्जन प्रदेश
उपजाऊ भूमि में बदल जाएगा,
और उपजाऊ भूमि ही वन मानी जाएगी।
16 निर्जन प्रदेश में न्याय का वास होगा,
और उपजाऊ भूमि में धार्मिकता निवास करेगी।
17 धार्मिकता से शान्ति मिलेगी,
और धार्मिकता का फल होगा:
चिर सुख-चैन और सुरक्षा!
18 मेरे देशवासी शान्तिपूर्ण घरों में,
सुरक्षित मकानों में
और आरामदायक स्थानों में निवास करेंगे।

19 फिर भी वन का सर्वनाश होगा,
और नगर पूर्णत: मटियामेट हो जाएगा।

20 जलाशयों के तट पर खेती करनेवालो!
तुम सुखी होगे;
तुम बैल और गधे को स्वतन्त्रता से
इधर-उधर विचरने दोगे।

प्रभु उद्धार करेगा

33 अरे विनाशक, तेरा बुरा हो;
स्वयं तेरा कभी विनाश नहीं हुआ!
अरे विश्वासघाती,
तेरे साथ कभी किसी ने विश्वासघात नहीं किया!
जब तू विनाश कर चुकेगा तब तेरा भी विनाश होगा।
जब तू विश्वासघात कर चुकेगा
तब तेरे साथ भी विश्वासघात किया जाएगा।

2 हे प्रभु, हम पर कृपा कर,
हम तेरी प्रतीक्षा करते हैं।
रोज सबेरे तू हमारा सम्बल बन
और संकट के दिन हमारा उद्धारकर्ता!
3 तेरी ललकार से कौमें भाग जाती हैं,
तेरे उठते ही राष्ट्र तितर-बितर हो जाते हैं।
4 जैसे टिड्डियां वनस्पति को चट कर जाती हैं,
वैसे ही लोग विनाशक के लूट के माल को

---
32 : 15 भज 104 : 30

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हड़प जाएंगे।
जैसे टिड्डे घास-फूस पर टूट पड़ते हैं,
वैसे ही वे उसके माल पर टूट पड़ेंगे।

5 प्रभु महान है;
क्योंकि वह उच्च स्थान पर विराजमान है।
वह सियोन पर्वत को
न्याय और धार्मिकता से परिपूर्ण करेगा।

6 ओ इस्राएल, तेरे युग में
प्रभु स्थायित्व का आधार होगा;
वह तुझे पूर्ण उद्धार,
अपार बुद्धि और असीमित ज्ञान
प्रदान करेगा।
प्रभु का भय ही तेरा एकमात्र धन है!

7 देखो, नगर के बाहर
महायोद्धा सहायता के लिए पुकार रहे हैं;
शान्ति-स्थापना के लिए भेजे गए दूत
फूट-फूट कर रो रहे हैं।
8 राजमार्ग उजाड़ पड़े हैं,
यात्रियों का आना-जाना बन्द है।
संधियां भंग हो गई,
साक्षियां तुच्छ समझी जा रही हैं;
अब मनुष्य, मनुष्य का सम्मान नहीं करता।
9 देश विलाप कर रहा है,
वह दुःख से व्याकुल है।
अनावृष्टि के कारण
लबानोन की हरियाली कुम्हला गई,
वह सूख गया।
शारोन की उपजाऊ भूमि मरुस्थल बन गई।
बाशान और कर्मेल क्षेत्र के वृक्ष सूख गए।

10 प्रभु राष्ट्रों से यह कहता है, "अब मैं उठूंगा,
अब मैं हस्तक्षेप करने के लिए उठूंगा;
मैं अपनी महानता प्रकट करूंगा।
11 तुम्हें सूखी घास का गर्भ है,
अतः तुम भूसी को ही जन्म दोगे।
तुम्हारी सांस आग है,
वह स्वयं तुमको भस्म करेगी।
12 कौमें जले हुए चूने के सदृश
राख का ढेर बन जाएंगी,
जैसे कांटों को काटकर आग में झोंक देते हैं,
वैसे ही राष्ट्र आग में झोंक दिए जाएंगे।"

13 दूर देशों में रहनेवाले इस्राएलियो,
सुनो, मैंने क्या किया है।
समीप के देशों में रहनेवाले इस्राएलियो,
मेरे सामर्थ्य को स्वीकार करो।
14 सियोन में रहनेवाले पापी भयभीत हैं;
डर ने अधार्मिकों को दबोच लिया है।
वे यह कहते हैं, "हम में से कौन व्यक्ति
भस्म करनेवाली अग्नि में रह सकता है?
हम में कौन व्यक्ति
शाश्वत अग्नि में वास कर सकता है?"
15 वह व्यक्ति जिसका आचरण धर्ममय है,
जो हृदय से सीधी-सच्ची बातें बोलता है,
जो शोषण से घृणा करता है,
जो घूस से अपना हाथ सिकोड़ लेता है,
जो हिंसा की बातें सुनने से,
अपने कान बन्द कर लेता है,
जो बुराई को देखने से
अपनी आंखें बन्द कर लेता है।
16 ये कार्य करनेवाला व्यक्ति
उच्चस्थान पर निवास करेगा,
उसके रक्षा-स्थान चट्टानी किले होंगे;
उसे भोजन सदा मिलता रहेगा,
उसे जल का अभाव कभी न होगा।

सुनहरा भविष्य

17 तेरी आंखें राजा को उसके वैभव में देखेंगी;
तू अपने देश को देखेगा,
जिसकी सीमाएं दूर-दूर तक फैली हुई होंगी।
18 तेरा हृदय आतंक के दिनों को याद करेगा:
"अब वह कर-मापक कहाँ गया?
लेखपाल कहाँ है?
जो बुर्जों को गिनता था, वह कहां गया?"

---

33 : 5 भज 97 : 9 **33 : 6** नीति 1 : 7; मत 6 : 33 **33 : 10** भज 12 : 5 **33 : 15** भज 15 **33 : 18** 1 कुर 1 : 20

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

19 अब तू अपने देश में
अहंकारी जनों को नहीं देखेगा;
उन्हें भी नहीं पाएगा, जो अस्पष्ट बोली
बोलते हैं,
जिसको तू समझ नहीं पाता,
जो हकलाकर बातें करते हैं,
जिनको तू समझ नहीं पाता।
20 अपने* पर्वों के नगर सियोन पर दृष्टि कर;
तेरी आंखें यरूशलेम नगर को देखेंगी:
यरूशलेम नगर जो शान्त नगर है,
जो अटल शिविर है,
उसके खूंटे अब नहीं उखाड़े जाएंगे,
और न उसकी रस्सियाँ तोड़ी जाएंगी।
21 हम प्रभु को उसकी प्रभुता में वहाँ देखेंगे!
वहां महानदियां और नहरें बहती हैं।
वहां पतवारों वाली नावें नहीं जा सकतीं,
और न बड़ा जलयान वहाँ से निकल सकता है।

22 प्रभु ही हमारा न्याय करनेवाला है,
वही हमारा प्रशासक है।
प्रभु ही हमारा राजा है, वही हमें बचाएगा।

23 तेरी रस्सियां ढीली हैं।
वे मस्तूल को उसके स्थान पर दृढ़ नहीं रख
सकती हैं;
वे पाल को भी नहीं तान सकती हैं।

उस समय प्रचुर शिकार और अपार लूट
बांटी जाएंगी;
लंगड़ा व्यक्ति भी शिकार में अधिकाधिक
हिस्सा पाएगा।
24 तब कोई भी निवासी यह न कह सकेगा,
"मैं बीमार हूं,"
क्योंकि वहां रहनेवाले लोगों के अधर्म
क्षमा कर दिए जाएंगे।

एदोम का विनाश

34 ओ राष्ट्रो, प्रभु का संदेश सुनने के लिए
समीप आओ!
ओ कौमो, ध्यान दो!
संसार और उस में रहनेवाले सब प्राणी,
पृथ्वी और उस पर उत्पन्न होनेवाली समस्त
वस्तुएं
प्रभु की यह वाणी सुनें:
2 प्रभु सब राष्ट्रों से क्रुद्ध है;
उनकी समस्त सेनाओं पर
उसकी क्रोधाग्नि भड़क उठी है।
उसने उनका संहार करने का निश्चय किया
है;
उनका वध करने के लिए
शत्रु के हाथ में उन्हें सौंप दिया है।
3 उनके लोगों के शव फेंक दिए जाएंगे,
उनकी लाशों की सड़ांध फैल जाएगी।
उनके खून से पहाड़ भी डूब जाएंगे!
4 आकाश के तारा-गण बुझ जाएंगे;
विस्तृत आकाश खर्रे के कागज की तरह
लपेटा जाएगा।
जैसे अंजीर वृक्ष से पत्ते झड़ते हैं,
जैसे अंगूर की लता से पत्तियां गिरती हैं
वैसे आकाश के तारे गिरेंगे!

5 प्रभु की तलवार स्वर्ग में रक्त से तृप्त हो
चुकी,
देखो, वह एदोम राष्ट्र को,
उन लोगों को, जिनका संहार करने का उसने
निश्चय किया है,
दण्ड देने के लिए उतर रही है।
6 प्रभु के पास एक तलवार है,
वह रक्त रंजित है।
वह चरबी में डूबी हुई है।
वह मेमनों और बकरों के रक्त से,
मेढ़ों के गुर्दों की चरबी से सनी है;
क्योंकि प्रभु ने एदोम देश की राजधानी
बोस्रा में
पशुओं की बलि की है,
एदोम में महावध किया है।

---

* मूल में 'हमारे'

34 यश 61 : 1-6; यिर 49 : 7-22; यहेज 25 : 12-14; 35; आमो 1 : 11-12; ओब; मला 1 : 2-5 **34 : 4** प्रक 6 : 13-14

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

7 जंगली सांड़ और भैंसे,
बैल और बछड़े वध किए जाएंगे।
उनके रक्त से भूमि की प्यास बुझेगी;
उनकी चरबी से मिट्टी उपजाऊ होगी।

8 प्रभु के प्रतिशोध का दिन निर्धारित है;
सियोन के बदले का वर्ष नियत है;
तब प्रभु, जो सियोन का महायोद्धा है,
प्रतिकार करेगा।
9 एदोम की नदियां राल में,
उसकी भूमि गंधक में,
सारा देश जलते हुए राल में
परिणत हो जाएगा।
10 रात-दिन वह जलता रहेगा,
और बुझेगा नहीं।
उसका धुआँ निरन्तर उठता रहेगा।
पीढ़ी दर पीढ़ी वह उजाड़ पड़ा रहेगा।
कभी कोई मनुष्य उस पर से नहीं गुजरेगा।
11 धनेशपक्षी और साही उस पर राज्य करेंगे,
उल्लू और कौवे उस में निवास करेंगे।
प्रभु उसको संभ्रम के माप से नापेगा;
वह उसके कुलीनों पर अव्यवस्था का साहुल तानेगा।
12 लोग कहेंगे, 'वहां कोई राज्य नहीं करता!'
उसके सामन्तों का अस्तित्व ही नहीं रहेगा।

13 उसके महलों में कांटे उगेंगे,
और उसके किलों में बिच्छु पौधे और
झाड़-झंखाड़।
वह गीदड़ों की मांद बन जाएगा,
वहां शुतुरमुर्ग निवास करेंगे।
14 वहां वन-पशु लकड़बग्घों से मिलेंगे।
अजासुर अपने साथी को पुकारेगा,
वहां भूतिनी रहेगी।
वह विश्राम-स्थान पाकर
वहां चैन से रहेगी।

15 वहां उल्लू अपना घोंसला बनाएगा;
और मादा उल्लू अण्डे देगी,
और उनको सेएगी।
वह अपने पंखों की छाया में
अपने बच्चों को रखेगी।
वहां चीलें भी अपने-अपने जोड़े के साथ एकत्र होंगी।
16 प्रभु के ग्रन्थ में ढूंढ़ो, और उसको पढ़ो।
उपरोक्त पक्षियों में से
एक भी नहीं छूटा;
एक भी पक्षी बिना अपने जोड़े के नहीं रहेगा।
प्रभु ने अपने मुख से यह आदेश दिया है,
उसके आत्मा ने उन्हें एकत्र किया है।
17 प्रभु ने चिट्ठी डालकर
उनका स्थान निर्धारित किया है;
अपने ही हाथों से डोरी से नापकर
उनका भाग बांट दिया है।
वे अपने-अपने भूमिभाग पर सदा बसे रहेंगे;
वे पीढ़ी दर पीढ़ी उस पर निवास करेंगे।

परमेश्वर का न्याय

35 निर्जन प्रदेश और निर्जल क्षेत्र
आनन्द मनाएंगे;
मरुस्थल हर्षित होगा;
वह फूलेगा-फलेगा।
2 केसर के उद्यान की तरह
वह फूलों से भर जाएगा;
वह आनन्द के गीत गाएगा,
और हर्ष मनाएगा।
प्रभु उसको लबानोन की महिमा,
कर्मेल और शारोन का प्रताप प्रदान करेगा।
वे प्रभु की महिमा,
हमारे परमेश्वर का प्रताप देखेंगे।

3 कमजोर हाथों में शक्ति भरो,
निर्बल घुटनों को बलवान बनाओ,
4 भयभीत हृदयवालों से यह कहो:
"साहसी बनो: मत डरो।
देखो, तुम्हारा परमेश्वर आएगा;
वही प्रतिशोध लेगा; वह बदला लेगा;
वह निस्सन्देह आएगा, और तुम्हें बचाएगा।"

---

34 : 10 प्रक 14 : 11 34 : 11-14 यश 13 : 20-22 35 : 3 इब्र 12 : 12 35 : 5 मत 11 : 5

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

5 तब अन्धों की आंखें खुल जाएंगी,
बहरों को कानों से सुनाई देने लगेगा!
6 लंगड़ा भी हिरन के समान छलांग मारेगा!
गूंगे की जीभ आनन्द के गीत गाएगी!
निर्जन प्रदेश में जल-धाराएं बहेंगी!
मरुस्थल में झरने फूटेंगे!
7 गर्म रेतीली भूमि तालाब बन जाएगी,
प्यासी धरती जल-स्रोतों में बदल जाएगी!
जहां गीदड़ घूमते-फिरते हैं,
वहां अब कांस और सरकंडे होंगे!

8 वहां एक राजमार्ग होगा,
वह 'पवित्र मार्ग' कहलाएगा।
कोई अपवित्र प्राणी उस पर नहीं चलेगा।
मूर्ख उस पर पैर भी नहीं रख सकेंगे।
9 वहां सिंह भी नहीं रहेगा,
और न कोई खूंखार पशु उस पर चलेगा।
ये पशु वहां नहीं पाए जाएंगे।
केवल वे ही लोग उस मार्ग पर चलेंगे,
जिनको प्रभु ने मुक्त किया है।
10 प्रभु के द्वारा मुक्त किए गए लोग
सियोन को लौटेंगे;
वे हर्ष के गीत गाते हुए आएंगे।
शाश्वत आनन्द से उनके मुख चमकते होंगे।
उन्हें हर्ष और सुख प्राप्त होगा;
उनके दु:ख और आहों का अन्त हो जाएगा।

राजा सनहेरिब का आक्रमण

36 राजा हिजकियाह के राज्य-काल के
चौदहवें वर्ष में असीरिया के राजा
सनहेरिब ने यहूदा प्रदेश पर आक्रमण किया।
उसने यहूदा के सब किलेबन्द नगरों पर
अधिकार कर लिया। 2असीरिया के राजा ने
लाकीश नगर से अपने मुख्य साकी को विशाल
सेना के साथ राजा हिजकियाह के पास
यरूशलेम नगर में भेजा। मुख्य साकी उपरले
जलकुण्ड की नहर के समीप खड़ा हो गया।
यह जलकुण्ड धोबी-खेत को जाने वाले मार्ग
पर स्थित है। 3तब उससे भेंट करने के लिए
राजमहल का गृह-प्रबन्धक एलयाकीम बेन-
हिलकियाह, महासहायक शेबनाह और राज-
सचिव योआह बेन-आसाफ निकले।

4 मुख्य साकी ने उनसे कहा, "हिजकियाह
से यह कहना: असीरिया देश के राजा, हमारे
सम्राट यों कहते हैं: किस आधार पर तुम यह
विश्वास करने लगे हो? 5तुम सोचते हो कि
युद्ध के लिए शक्ति और युद्ध-कौशल नहीं,
वरन् किसी के मुंह के शब्द ही पर्याप्त हैं। तुमने
किस पर भरोसा करके मुझसे विद्रोह किया है?
6मिस्र देश पर? मिस्र देश क्या है? एक टूटा
हुआ सरकंडा! जो व्यक्ति उस पर टिकता है,
वह उसके हाथ में चुभता है और उसको छेद
देता है। मिस्र देश का राजा फरओ अपने भरोसा
करनेवालों के साथ ऐसा ही व्यवहार करता है।
7पर यदि तुम मुझसे यह कहोगे, 'हमने अपने
प्रभु परमेश्वर पर भरोसा किया है,' तो मैं तुमसे
यह कहता हूं: क्या यह वही प्रभु परमेश्वर नहीं
है, जिसकी पहाड़ी शिखर की वेदियां तथा
अन्य वेदियां हिजकियाह ने हटा दी हैं, और
जिसके लिए हिजकियाह ने यहूदा प्रदेश और
यरूशलेम के निवासियों को यह आदेश दिया
है: 'तुम यरूशलेम नगर की वेदी के सम्मुख ही
वंदना करना?'

8 "अब तुम असीरिया देश के राजा, मेरे
स्वामी के साथ एक शर्त बदो: मैं तुम्हें दो हजार
घोड़े दूंगा, अगर तुम इन घोड़ों पर सवारी करने
के लिए सवार जुटा सको। 9क्या तुम मिस्र देश
के रथों और घुड़सवारों के बल पर मेरे स्वामी
के छोटे-से-छोटे सेना-नायक को पीठ दिखाने
के लिए विवश कर सकते हो? 10इसके
अतिरिक्त, क्या मैं बिना प्रभु की अनुमति के इस
स्थान को नष्ट करने आया हूं? कदापि नहीं। प्रभु
ने मुझसे कहा, 'जा, इस प्रदेश पर चढ़ाई कर,
और इसको नष्ट कर दे।'"

11 तब एलयाकीम, शेबनाह और योआह
ने मुख्य साकी से निवेदन किया, "आप,
कृपया अपने सेवकों से, हमसे, अरामी भाषा

---

35 : 6 लू 7 : 22; यो 5 : 8; प्रे 3 : 2 **35 : 8** यश 40 : 3-5 **35 : 10** यश 51 : 11; भज 126 **36 : 1-38 : 8** · **21-22** 2 रा 18 : 13-30 : 11; 2 इत 32 : 1-24 **36 : 6** यहेज 29 : 6-7

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

में बात कीजिए। हम इस भाषा को समझते हैं।
इन लोगों के सामने जो परकोटे पर बैठें हैं, हम
से इब्रानी भाषा* में बात मत कीजिए।'' 12मुख्य
साकी ने उत्तर दिया, ''क्या मेरे स्वामी ने केवल
तुम्हारे स्वामी से, और तुमसे ये बातें कहने के
लिए भेजा है? क्या परकोटे पर बैठे इन लोगों
से बात करने के लिए नहीं भेजा है, जो तुम्हारे
साथ अपना मल खाएंगे, और अपना मूत्र
पीएंगे?''

13 तब मुख्य साकी खड़ा हुआ। उसने
इब्रानी भाषा में पुकार कर यह कहा, ''ओ
लोगो! असीरिया देश के राजा, हमारे महाराज
के वचन सुनो। 14महाराज यों कहते हैं: तुम
राजा हिजकियाह के भुलावे में मत आओ। वह
तुम्हें मेरे हाथ से मुक्त नहीं कर सकेगा।
15हिजकियाह तुम्हें प्रभु पर भरोसा करने को
कहेगा, और बोलेगा: 'प्रभु निश्चय ही हमें
मुक्त करेगा। यह नगर असीरिया के राजा के
हाथ में नहीं आएगा।' 16तुम हिजकियाह की
बात मत सुनो। असीरिया देश के राजा यह
कहते हैं: मुझसे समझौता करो। हर एक
व्यक्ति नगर से निकलकर मेरे पास आए और
आत्म-समर्पण करे। तब तुम सब अपने अंगूर-
उद्यान का, अपने अंजीर वृक्ष का फल खा
सकोगे, अपने कुएं का पानी पी सकोगे।
17इसके बाद मैं आऊंगा, और तुम्हें ऐसे देश में
ले जाऊंगा, जो तुम्हारे ही देश के समान है। वह
रोटी और अंगूर-रस का देश है। अन्न और
अंगूर-उद्यान का देश है। 18तुम हिजकियाह
की बात मत सुनना। तुम उसकी इस बात के
भुलावे में मत आना कि प्रभु तुम्हें मुक्त करेगा।
ओ लोगो! क्या कभी किसी राष्ट्र का इष्ट देवता
अपने देश को असीरिया देश के महाराज के
हाथ से मुक्त कर सका है? 19हमात राज्य के,
अरपाद राज्य के इष्ट देवता कहां गए? सपरवइम
नगर के इष्ट देवता कहां गए? क्या वे मेरे हाथ
से सामरी नगर को मुक्त कर सके? 20किस देश
का वह कौन देवता है जो अपने देश को मेरे
हाथ से मुक्त कर सका है? तब क्या तुम्हारा प्रभु
यरूशलेम नगर को मेरे हाथ से मुक्त कर
सकेगा?''

21 पर लोग चुप रहे। उन्होंने मुख्य साकी
को एक शब्द भी नहीं कहा, क्योंकि राजा
हिजकियाह का यह आदेश था: ''उसको उत्तर
मत देना।''

22 तत्पश्चात् राजमहल का गृह-प्रबन्धक
एलयाकीम बेन-हिलकियाह, महासहायक
शेबनाह और राज-सचिव योआह बेन-आसाफ
ने शोक प्रदर्शित करने के लिए अपने वस्त्र
फाड़े, और वे राजा हिजकियाह के पास लौटे।
उन्होंने मुख्य साकी की बातें उसको बताईं।

नबी यशायाह द्वारा प्रभु का आश्वासन देना

37 जब राजा हिजकियाह ने यह सुना,
उसने पश्चात्ताप और शोक प्रकट करने
के लिए तत्काल अपने वस्त्र फाड़ दिए। उसने
अपने शरीर पर टाट के वस्त्र लपेटे, और वह
प्रभु के भवन में गया। 2उसने गृह-प्रबन्धक
एलयाकीम, महासहायक शेबनाह और वृद्ध
पुरोहितों को नबी यशायाह बेन-आमोत्स के
पास भेजा। वे सब टाट के वस्त्र लपेटे हुए थे।
3उन्होंने नबी यशायाह से यह कहा, ''महाराज
हिजकियाह यों कहते हैं: 'हमारे लिए आज का
दिन संकट, दण्ड और अपमान का दिन है।
बच्चे के जन्म का समय तो पूरा हुआ, किन्तु
जच्चा में शक्ति नहीं रही कि वह उसको जन्म
दे सके। 4सम्भवत: आपके प्रभु परमेश्वर ने
मुख्य साकी के शब्द सुने हैं, जिसको असीरिया
के राजा ने जीवित परमेश्वर का मजाक उड़ाने
के लिए भेजा था। जो शब्द प्रभु परमेश्वर ने
सुने हैं, उनको वह झूठा सिद्ध करे। कृपया, जो
व्यक्ति शेष रह गए हैं, उनके लिए प्रार्थना
कीजिए।'''

5 जब राजा हिजकियाह के ये दरबारी नबी
यशायाह के पास आए, 6तब नबी यशायाह ने
उनसे यह कहा, ''अपने स्वामी से कहो: 'प्रभु
यों कहता है: जो शब्द तुमने सुने हैं, और जिनके
द्वारा असीरिया के राजा के सेवकों ने मेरी निन्दा
की है, उनके कारण मत डर। 7देख, मैं असीरिया

* मूल में 'यहूदी भाषा'।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

के राजा के भीतर भय की आत्मा प्रेषित कर रहा हूं। वह एक खबर सुनेगा, और अपने देश को लौट जाएगा। मैं उसके देश में ही तलवार से उसका पतन कराऊंगा।'''

मुख्य साकी की वापसी

8 मुख्य साकी यरूशलेम से लौटा। उसने
सुना कि उसके महाराज, असीरिया के राजा
लाकीश नगर से चले गए हैं। उसने अपने
महाराज को लिबनाह नगर से युद्ध करते हुए
पाया। 9उसी समय असीरिया के राजा ने
इथियोपिआ देश के राजा तिरहाकाह के विषय में यह खबर सुनी, ''महाराज, वह आप से युद्ध करने के लिए निकला है।'' अतएव उसने राजा हिजकियाह के पास दूतों को फिर भेजा, और यह सन्देश दिया:

सनहेरिब का पत्र

10 ''तुम यहूदा प्रदेश के राजा हिजकियाह
से यों कहना: 'तुम अपने परमेश्वर के धोखे में मत आना, जिस पर तुमने भरोसा किया है, और जिसने तुम्हें यह वचन दिया है कि यरूशलेम नगर मेरे हाथ में, असीरिया देश के राजा के हाथ
में नहीं आएगा। 11तुमने यह सुना ही होगा कि
असीरिया के राजाओं ने अनेक देशों के साथ क्या किया है। उन्होंने वहां के निवासियों का पूर्ण संहार कर दिया है। तब क्या तुम मेरे हाथ
से बच सकोगे? 12जिन नगर-राज्यों को —
गोजान, हारान, रेसेफ को, तलेस्सार राजधानी में रहनेवाले एदेनी कौम के लोगों को — जब मेरे पूर्वजों ने नष्ट किया था, तब क्या उनके इष्ट देवता उनको मेरे पूर्वजों के हाथ से बचा सके
थे? 13कहां गए हमात्, अरपाद, सपरवइम,
हेना और इव्वा नगर-राज्यों के राजा?'''

14 हिजकियाह ने दूतों के हाथ से पत्र लिया
और उसको पढ़ा। तब वह प्रभु के भवन में
गया। उसने प्रभु के सम्मुख पत्र को रखा।
15हिजकियाह ने प्रभु के सम्मुख यह प्रार्थना
की: 16''हे स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु, इस्राएल
के परमेश्वर! तू करूबों पर विराजमान है। केवल तू ही पृथ्वी के समस्त राज्यों का परमेश्वर है। तूने ही पृथ्वी और आकाश को बनाया है।

17 ''मेरी ओर अपना कान दे,
हे प्रभु, मेरी प्रार्थना को सुन,
अपनी आंखें खोल,
हे प्रभु, मेरी विपत्ति पर ध्यान दे।
सनहेरिब के सन्देश को सुन,
जो उसने तुझ जीवित परमेश्वर का
मजाक उड़ाने के लिए भेजा है।

18 ''प्रभु, यह सच है कि असीरिया देश
के राजाओं ने अनेक कौमों और उनके राज्यों
को उजाड़ दिया और 19उनके इष्ट देवताओं
की मूर्तियां आग में झोंक दीं। प्रभु, ये मूर्तियां सच्चा ईश्वर नहीं थीं। वे केवल मनुष्य के हाथ की रचना, लकड़ी और पत्थर की मूर्तियां थीं।
इसलिए वे नष्ट हो गईं। 20अब, हे हमारे प्रभु
परमेश्वर, कृपाकर हमें सनहेरिब के हाथ से बचा, जिससे पृथ्वी के सब राज्यों को ज्ञात हो जाए कि केवल तू ही प्रभु है।''

प्रभु का आश्वासन

21 तब नबी यशायाह बेन-आमोत्स ने
राजा हिजकियाह को यह सन्देश भेजा, ''इस्राएल का प्रभु परमेश्वर यों कहता है: मैंने असीरिया के राजा सनहेरिब के विषय में तेरी प्रार्थना सुनी।

22 सनहेरिब के सम्बन्ध में मेरा यह वचन
है:

'ओ सनहेरिब,
यरूशलेम की कुंवारी बेटी,
तुझे तुच्छ समझती है,
वह तेरा मजाक उड़ाती है,
तेरे पीठ पीछे
यरूशलेम की कन्या मुंह बिचकाती है।

23 'तूने किस की ओर व्यंग्य-बाण छोड़े थे?
तूने किसको गाली दी थी?
तूने किसके विरुद्ध आवाज उठाई थी?
तूने अहंकार से किसको आंख दिखाई थी?
क्या मुझे, इस्राएल के पवित्र परमेश्वर को?
24 तूने अपने दूतों के द्वारा

37 : 16 नि 25 : 22

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मुझ-स्वामी का उपहास किया।
तूने यह कहा, ''मैं अपने असंख्य रथों पर
पहाड़ों की ऊंचाई नाप चुका हूं;
मैं लबानोन की चोटी को चूम चुका हूं।
मैं लबानोन वन-प्रदेश के
ऊंचे-से-ऊंचे देवदार वृक्षों को,
उसके सुन्दर-से-सुन्दर सनोवर वृक्षों को
काट चुका हूं।
मैं लबानोन के दूरस्थ कोनों में,
उसके वन-प्रान्तर में प्रवेश कर चुका हूं।
25 मैंने कुएं खोदे थे,
मैं विदेशों के घाट-घाट का पानी
पी चुका हूं।
मैंने ही खड़े-खड़े
मिस्र देश की समस्त सरिताओं को
सुखा दिया था।''

26 'ओ सनहेरिब, क्या तूने यह नहीं सुना?
जिस को अब मैं
कार्यरूप में परिणत कर रहा हूं,
उसकी योजना पूर्वकाल में मैंने बनाई थी,
बहुत पहले से ही मैं
उसको निर्धारित कर चुका था।
उस योजना में तेरा कार्य केवल यह था
कि तू किलेबन्द नगरों को
खण्डहर के ढेरों में बदल दे।
27 उनके निवासी,
जिनके हाथों में बल नहीं था,
पराजित और निराश थे।
वे मैदान के पौधों के सदृश
कोमल घास के समान थे।
वे मकान की छत की घास के समान थे,
जो पल्लवित होने के पूर्व ही सूख जाती है।

28 'मैं तेरा उठना-बैठना,
आना-जाना जानता हूं,
मेरे प्रति क्रोध से उबलना
यह मुझसे छिपा नहीं है।
29 तू मुझसे क्रुद्ध हुआ,
तेरी गर्वोक्ति मेरे कानों में पड़ी,
इसलिए मैं तेरी नाक में नकेल डालूंगा,
और तेरे मुंह में अपनी लगाम।
जिस मार्ग से तू आया था
उसी से मैं तुझे वापस भेजूंगा।'

30 ''ओ हिजकियाह! तेरे लिए यह चिह्न
होगा: तू इस वर्ष अपने-आप उगनेवाली
जंगली साग-पात खाएगा। दूसरे वर्ष इससे जो
उत्पन्न होगा, वह खाएगा। तीसरे वर्ष जो तू
बोएगा, उसको काटेगा। तू अंगूर की बेल
लगाएगा, और उसका फल खाएगा। 31यहूदा-
कुल के अवशिष्ट वंशज भूमि में फिर जड़
पकड़ेंगे, और फलेंगे-फूलेंगे। 32यरूशलेम से
बचे हुए यहूदा कुल के वंशज और सियोन
पर्वत से भागकर बचे हुए लोगों का दल बाहर
निकलेगा। प्रभु का धर्मोत्साह यह कार्य करेगा।

33 ''प्रभु असीरिया देश के राजा के विषय
में यों कहता है: सनहेरिब इस नगर में प्रवेश
नहीं करेगा। वह यहां तीर भी नहीं चलाएगा।
वह ढाल के साथ नगर का सामना भी नहीं
करेगा। वह इसके विरुद्ध मोर्चाबन्दी भी नहीं
करेगा। 34सनहेरिब जिस मार्ग से आया है, उसी
मार्ग से वह लौट जाएगा। मैं-प्रभु, यह कहता
हूं: वह नगर में प्रवेश नहीं कर सकेगा। 35मैं अपने
लिए, अपने सेवक दाऊद के कारण इस नगर की
रक्षा करूंगा, और इसको बचाऊंगा।''

36 उस रात प्रभु का एक दूत बाहर निकला।
वह असीरियाई सेना के पड़ाव में गया, और
उसने वहां एक लाख पचासी हजार सैनिकों का
वध कर दिया। जब सबेरा हुआ तब लोगों ने
देखा कि शव पड़े हैं! 37अत: असीरिया देश
के राजा सनहेरिब ने प्रस्थान किया, और वह
नीनवे नगर को लौट गया। वह वहां रहने लगा।

38 एक दिन वह अपने गृह-देवता निसरोख
के मन्दिर में पूजा कर रहा था। तब उसके पुत्रों
ने, अद्रमेलेक और सर-ऐसेर ने, तलवार से
उसकी हत्या कर दी, और अराराट देश को भाग
गए। उसका पुत्र एसर-हद्दोन उसके स्थान पर
राज्य करने लगा।

हिजकियाह का बीमार पड़ना

38 इन्हीं दिनों में राजा हिजकियाह इतना
बीमार पड़ा कि वह मृत्यु के समीप

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पहुंच गया। तब नबी यशायाह बेन-आमोत्स
उसके पास आए। उन्होंने उससे कहा, "प्रभु
यों कहता है: 'मृत्यु के पूर्व अपने परिवार की
समुचित व्यवस्था कर ले, क्योंकि निश्चय ही
तेरी मृत्यु होगी। तू नहीं बचेगा।'"
2 हिजकियाह ने दीवार की ओर अपना मुख
किया, और प्रभु से यह प्रार्थना की, 3"हे प्रभु,
स्मरण कर कि मैं सच्चाई और सम्पूर्ण हृदय से
तेरे सम्मुख तेरे मार्ग पर चला। मैंने उन्हीं कार्यों
को किया, जो तेरी दृष्टि में उचित हैं।" यह
कहकर हिजकियाह फूट-फूटकर रोने लगा।
4तब नबी यशायाह ने प्रभु का यह वचन सुना:
5"लौट, और हिजकियाह से यह कह: 'तेरे
पूर्वज दाऊद का प्रभु परमेश्वर यों कहता है:
मैंने तेरी प्रार्थना सुनी, और आंसू देखे। देख, मैं
तेरी आयु को पन्द्रह वर्ष और लम्बा कर रहा
हूं। 6मैं असीरिया के राजा के हाथ से तुझ को
और इस नगर को मुक्त करूंगा। मैं इस नगर
की रक्षा करूंगा।"
7 यशायाह ने हिजकियाह को यह बताया,
"जो वचन प्रभु ने तुम्हें दिया है वह उसको पूरा
करेगा। प्रभु ने तुम्हें यह चिह्न दिया है: 8'देख,
मैं ढलते हुए सूर्य की छाया राजा आहाज की
धूप-घड़ी पर दस अंश पीछे की ओर लौटा
दूंगा।'" इस प्रकार धूप-घड़ी पर सूर्य की
छाया दस अंश पीछे हो गई।

हिजकियाह का स्तुतिगान

9 यहूदा प्रदेश के राजा हिजकियाह का
आलेख। एक बार वह बीमार पड़ा। स्वस्थ होने
पर उसने यह कविता लिखी:

10 मैंने यह सोचा था:
मुझे अपने जीवनकाल के मध्य में ही
यहां से प्रस्थान करना होगा;
मुझे अधोलोक के द्वारों से प्रवेश करना
होगा!
जीवन के शेष वर्ष मुझ से छिन गए!
11 मैंने यह सोचा था:
अब मैं जीव-लोक में
प्रभु के दर्शन नहीं कर सकूंगा;
मैं पृथ्वी के लोगों को
फिर नहीं देख पाऊंगा।
12 मेरा निवास-स्थान
चरवाहे के तम्बू की तरह उठा लिया गया;
वह मुझसे अलग कर दिया गया।
मैंने जुलाहे के समान अपना जीवन लपेट
लिया।
प्रभु मुझे करघे पर से काट रहा है।
सबेरे से शाम तक वह
मेरे जीवन का अन्त कर रहा है!
13 मैं प्रातः काल तक
सहायता के लिए पुकारता रहा।
सिंह के सदृश वह
मेरी हड्डियों को तोड़ता रहा।
सबेरे से शाम तक वह
मेरे जीवन का अन्त कर रहा है!

14 मैं सूपाबेनी अथवा सारस के समान
चूं-चूं करता हूं;
कबूतर जैसे मैं कराहता हूं;
मेरी आंखें ऊपर देखते-देखते पथरा गईं।

स्वामी, मैं कष्ट में हूं; तू मुझे सहारा दे!
15 मैं क्या कह सकता हूं?
उसी ने मुझ से जैसा कहा था
वैसा ही मेरे साथ किया है!
मेरे प्राण की कड़आहट के कारण
मेरी आंखों की नींद उड़ गई।

16 स्वामी, इन्हीं बातों के कारण मनुष्य जीते
हैं;
इन्हीं बातों में मेरी आत्मा का जीवन है!
प्रभु, मुझे पुनः स्वस्थ कर दे,
मुझे जीवन-दान दे।
17 कड़ुआहट भोगने में ही
मेरा कल्याण छिपा था;
तूने मेरे जीवन को
विनाश के गड्ढे में गिरने से रोका।
तूने मेरे सब पाप
अपनी पीठ के पीछे फेंक दिए!

---

38 : 11 भज 27 : 13; 116 : 9 38 : 12 अय्य 7 : 6; 2 कुर 5 : 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

18 निस्सन्देह अधोलोक तेरा गुणगान नहीं कर
सकता;
मृत्यु तेरी स्तुति नहीं कर सकती।
अधोलोक को जानेवाले व्यक्ति
तेरी सच्चाई की आशा नहीं कर सकते।
19 जो जीवित है, हां वही जो जीवित है,
तेरा गुणगान करता है,
जैसा मैं आज कर रहा हूं।
पिता अपनी सन्तान को तेरी सच्चाई बताता
है।

20 प्रभु मेरी रक्षा करेगा,
और हम वाद्य-यन्त्रों पर गीत गाएंगे;
हम आजीवन प्रभु के भवन में
स्तुतिगान गाएंगे।

21 यशायाह ने आदेश दिया था, "सेवक
अंजीर की पुलटिस लें और वे राजा हिजकियाह
के फोड़े पर उसको लगाएं ताकि वह स्वस्थ हो
जाए।" 22हिजकियाह ने यशायाह से पूछा था,
"मैं स्वस्थ होने के बाद प्रभु के भवन में जा
सकूंगा, इस बात का क्या चिह्न है?"

बेबीलोन के दूतों का आगमन

39 इन्हीं दिनों में बेबीलोन के राजा मरोदख-
बलअदान ने, जो बलअदान का पुत्र
था, पत्रों और उपहारों के साथ अपने दूतों को
हिजकियाह के पास भेजा। उसने सुना था कि
हिजकियाह अस्वस्थ था, और अब स्वस्थ हो
गया है। 2हिजकियाह दूतों को देखकर आनन्दित
हुआ। उसने उनको अपना सब कोष दिखाया:
चांदी, सोना, मसाले, कीमती तेल, और अस्त्र-
शस्त्र। वस्तुतः उसने अपने भण्डारगृहों में
उपलब्ध सब कुछ दूतों को दिखाया। उसके
महल और राज्य में ऐसा कुछ न रहा जिसको
हिजकियाह ने उन्हें न दिखाया हो।

3 नबी यशायाह राजा हिजकियाह के पास
गए। उन्होंने राजा से पूछा, "इन लोगों ने
आपसे क्या कहा है? ये किस देश से आपके
पास आए हैं?" हिजकियाह ने कहा, "ये दूर
देश से, बेबीलोन से आए हैं।" 4नबी यशायाह
ने फिर पूछा, "इन्होंने आपके महल में क्या-
क्या देखा?" हिजकियाह ने उत्तर दिया, "सब
कुछ जो मेरे महल में है, वह उन्होंने देखा। मेरे
भण्डारगृहों में एक भी ऐसी वस्तु नहीं रही, जो
मैंने उनको नहीं दिखाई।"

5 यशायाह ने हिजकियाह से कहा, "स्वर्गिक
सेनाओं के प्रभु का वचन सुनो: 6देख, वह समय
आ रहा है, जब तेरे महल का सब माल-
असबाब, आज के दिन तक तेरे पूर्वजों द्वारा
एकत्र की गई समस्त धन-सम्पत्ति बेबीलोन
देश को चली जाएगी। कुछ भी नहीं बचेगा,
प्रभु यह कहता है। 7तुझसे उत्पन्न तेरे पुत्र बन्दी
बनाकर ले जाए जाएंगे। वे बेबीलोन के राजा
के महल में खोजा बनेंगे।" 8हिजकियाह ने
यशायाह से कहा, "प्रभु का यह वचन, जो
तुमने मुझसे कहा, अच्छा है।" वह यह सोचता
था, "यदि मेरे जीवन-काल में शान्ति और
सुरक्षा बनी रहती है तो क्या बुरा है!"

[अन्य नबूवतों का संग्रह:]

इस्राएली लोगों को प्रभु की सांत्वना

40 तुम्हारा परमेश्वर यह कहता है:
"मेरे निज लोग इस्राएल को
शान्ति* दो, शान्ति!
2 यरूशलेम के हृदय से बात करो,
उसको बताओ कि
उसके निष्कासन** के दिन पूरे हो गए;
उसके अधर्म का मूल्य चुका दिया गया;
उसे मुझ-प्रभु के हाथ से
अपने पापों का दुगना दण्ड
प्राप्त हो चुका है।"

3 सुनो, कोई पुकार रहा है:
"निर्जन प्रदेश में प्रभु का मार्ग सुधारो+।
हमारे परमेश्वर के लिए मरुस्थल में
राजपथ सीधा करो।
4 हर एक घाटी को भर दो,
प्रत्येक पहाड़ और पहाड़ी को गिरा दो,

* अथवा, 'सांत्वना'। ** अथवा, 'कठिन सेवा'। + अथवा, 'तैयार करो'।

38 : 18 भज 6 : 5; प्रव 17 : 27; बारू 2 : 17 **38 : 19** व्य 4 : 9 **39 : 1-8** 2 रा 20 : 12-19; 2 इत 32 : 31
39 : 7 2 रा 24 : 12; दान 1 : 2 **40 : 3** मत 3 : 3; मला 3 : 1; लू 1 : 76; यो 1 : 23; प्रव 48 : 10; बारू 5 : 7

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ऊंची-नीची जमीन को समतल कर दो,
ऊबड़-खाबड़ मैदान को सपाट बना दो।
5 तब प्रभु की महिमा प्रकट होगी,
और समस्त मनुष्यजाति
उसको एक-साथ देखेगी।
प्रभु ने अपने मुख से यह कहा है।''

6 बोलनेवाला यह आदेश देता है,
''प्रचार कर।''
मैंने उत्तर दिया, ''मैं क्या प्रचार करूँ?''
समस्त प्राणी घास की तरह अनित्य हैं,
उनकी शोभा बाग के फूल के समान क्षणिक है।
7 जब प्रभु का श्वास घास पर पड़ता है
तब वह सूख जाती है, फूल मुरझा जाते हैं।
निस्सन्देह ये लोग घास ही हैं!
8 घास सूख जाती है, फूल मुरझाते हैं,
पर हमारे परमेश्वर का वचन नित्य है,
वह कभी टलता नहीं।

9 ओ सियोन को शुभ सन्देश सुनानेवाली,++
ऊंचे पर्वत पर चढ़कर सन्देश सुना!
ओ यरूशलेम को शुभ सन्देश सुनानेवाली,
बलपूर्वक उच्च स्वर में सुना!
मत डर, ऊंची आवाज में सुना।
यहूदा प्रदेश के नगरों में यह प्रचार कर,
''देखो! तुम्हारा परमेश्वर!''
10 देखो, प्रभु स्वामी सामर्थ्य के साथ आ रहा है,
वह अपने भुजबल से शासन करता है।
देखो, उसका पुरस्कार उसके साथ है,
उसके आगे-आगे उसका प्रतिफल है!
11 वह मेषपाल* के सदृश
अपने रेवड़ को चराएगा;
वह अपनी बाहों में मेमनों को उठाएगा;
वह उन्हें अपनी गोद में उठाकर ले जाएगा,
वह दूध पिलानेवाली भेड़ों को
धीरे-धीरे ले जाएगा।

इस्राएल का अतुलनीय परमेश्वर

12 अपनी अंजली से किसने महासागर को नापा है?
किसने बित्ते से आकाश को नापा है?
किसने पृथ्वी की मिट्टी को नाप में भरा है?
किसने तराजू से पहाड़ी को तौला है?
किसने पहाड़ियों को पलड़ों में रखा है?
13 प्रभु के आत्मा को किसने निर्देशित किया है?
उसका परामर्शदाता कौन है,
जो उसको सिखाता है?
14 उसने किस से ज्ञान के लिए सम्मति मांगी?
किसने उसे न्याय का मार्ग सिखाया है?
किसने उसे ज्ञान सिखाया है?
किसने उसे बुद्धि का मार्ग बताया है?
15 देखो, राष्ट्र तो ऐसे हैं, जैसे बाल्टी में एक बूंद;
वे तराजू के पलड़ों में लगे रजकण के समान हैं!
देखो, वह द्वीपों को धूल के सदृश उठा लेता है।
16 लबानोन का विशाल वन भी
उसके इंधन के लिए अपर्याप्त है,
वन के समस्त पशु भी
उसकी अग्नि-बलि के लिए पर्याप्त नहीं हैं।
17 उसके सम्मुख पृथ्वी के समस्त राष्ट्र नगण्य हैं,
उनका अस्तित्व शून्य से भी कम है,
वे कुछ भी नहीं हैं!
18 तब परमेश्वर, हम तेरी तुलना किससे करें?
हम तेरी उपमा किससे दें?
19 क्या मूर्ति से जिसको कारीगर ढालता है,
सुनार सोने से मढ़ता है,
और जिसके लिए वह चांदी की जंजीरें ढालता है?

++ अथवा, 'ओ सियोन, शुभ संदेश सुनानेवाली!' * अथवा, 'चरवाहा'

40 : 5 लू 3 : 4-6 **40 : 8** 1 पत 1 : 25; याक 1 : 10-11 **40 : 9** यश 52 : 7; नहू 1 : 15; प्रे 10 : 36; रोम 10 : 15 **40 : 10** यश 62 : 11; प्रक 22 : 12 **40 : 11** यहेज 34 : 23; यो 10 : 11 **40 : 12** अय्य 38 : 4-5 **40 : 13** रोम 11 : 34; 1 कुर 2 : 16 **40 : 15** प्रज्ञ 11 : 12; प्रव 10 : 16-17 **40 : 18** प्रे 17 : 29

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

20 जो आराधक सोने–चांदी की मूर्ति चढ़ाने में
असमर्थ है,
वह घुन न लगनेवाले वृक्ष को चुनता है,
वह कुशल कारीगर को ढूंढ़ता है,
और उससे लकड़ी पर मूर्ति खुदवाता है,
जो हिलती–डुलती नहीं है!

21 क्या तुम नहीं जानते? क्या तुमने नहीं सुना?
क्या तुम्हें प्राचीन काल से नहीं बताया
गया?
जब से पृथ्वी की नींव डाली गई,
सृष्टि के आरम्भ से ही
तुम्हें यह समझाया जाता रहा है कि
22 वह प्रभु ही है
जो पृथ्वी के चक्र के ऊपर विराजमान है।
और हम, पृथ्वी के निवासी, मात्र टिड्डियां
हैं!
प्रभु आकाश को वितान के समान तानता है,
उसको तम्बू के समान फैलाता है
ताकि मनुष्य उस के नीचे रह सकें।
23 जो सामन्तों का अस्तित्व मिटा देता है,
जो पृथ्वी के शासकों को नगण्य बना देता
है,
वह प्रभु ही है।

24 अभी–अभी वे रोपे गए थे,
अभी–अभी वे बोए गए थे,
अभी–अभी उनकी ठूंठ ने जड़ पकड़ी थी
कि प्रभु ने उन पर पवन बहाया,
और वे सूख गए।
तूफान उन्हें भूसे की तरह उड़ा ले गया।
25 पवित्र परमेश्वर पूछता है,
''तुम किससे मेरी तुलना करोगे?
मैं किस के समान हूं?
26 आकाश की ओर आंखें उठाओ, और
देखो:
इन तारों को किसने रचा है?
मैं–प्रभु ने!
मैं सेना के सदृश उनकी गणना करता हूं;
और हर एक तारे को उसके नाम से
पुकारता हूं।
मेरी शक्ति असीमित है, मेरा बल अपार
है,
अत: प्रत्येक तारा मुझे उत्तर देता है।''

27 ओ याकूब, तू यह क्यों कहता है;
ओ इस्राएल, तू क्यों बोलता है
कि तेरा आचरण प्रभु से छिपा है?
तेरा परमेश्वर तेरे अधिकार पर ध्यान नहीं
देता है?
28 क्या तुम नहीं जानते? क्या तुमने नहीं सुना?
प्रभु शाश्वत परमेश्वर है,
वह समस्त पृथ्वी का सृष्टिकर्ता है।
वह न निर्बल है, और न थकता है।
उसकी समझ अगम है!
29 वह शक्तिहीन को शक्ति प्रदान करता है,
वह बलहीन का बल बढ़ाता है।
30 युवक भी निर्बल हो जाते हैं, वे थक जाते हैं,
तरुण भी थक कर चूर हो जाते हैं।
31 परन्तु प्रभु की प्रतीक्षा करनेवाले
नया बल प्राप्त करते जाएंगे,
वे गरुड़* के पंखों की तरह
नवशक्ति प्राप्त कर ऊंचे उड़ेंगे;
वे दौड़ेंगे, पर थकेंगे नहीं;
वे चलते रहेंगे, किन्तु निर्बल नहीं होंगे।

इस्राएली लोगों को परमेश्वर का आश्वासन

41 ओ भूमध्यसागर तट के द्वीपो,
शान्त रहो, और मेरी बात सुनो!
कौमें नया बल प्राप्त करें,
वे मेरे समीप आएं,
और तब अपना पक्ष प्रस्तुत करें।
मैं और वे एक साथ
न्याय–आसन के सम्मुख उपस्थित हों।

2 पूर्व देश के उस राजा को
किसने आन्दोलित किया था,

---

*अथवा, 'बाज', 'गिद्ध'

40 : 20 यिर 10 : 4; प्रज्ञ 13 : 11–19; यिर पत्र 8–40 **40 : 22** व्य 4 : 32; भज 104 : 2 **40 : 26** बारू 3 : 34–35 **40 : 28** रोम 11 : 33 **40 : 31** भज 103 : 5 **41 : 2** यश 45 : 1

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जिसके हर कदम को विजय चूमती है ?
प्रभु ही राष्ट्रों को उसके हाथ में सौंपता है,
और वह उनको अपने पैरों के तले रौंदता है।
वह अपनी तलवार से
धूल के सदृश उन्हें भूमि पर बिखेर देता है;
वह उन्हें अपने धनुष से
भूसी के सदृश हवा में उड़ा देता है।
3 वह उन्हें खदेड़ता जाता है,
बिना अवरोध के वह बढ़ता जाता है,
वह इतनी तीव्रगति से पीछा करता है,
मानो उसके पैर भूमि को स्पर्श ही नहीं करते।
4 किसने यह कार्य सम्पन्न किया है ?
वह कौन है, जो सृष्टि के आरम्भ से
पीढ़ी-दर-पीढ़ी को
अपने वचन से बुलाता आ रहा है ?
मैं प्रभु जो सबसे पहला हूं,
और अन्त तक रहूंगा;
मैं ही 'वह' हूं।

5 भूमध्यसागर तट के द्वीप
यह देखकर भयभीत हैं,
पृथ्वी के सीमान्त भी कांप गए हैं,
वे और समीप आ गए हैं।
6 प्रत्येक मनुष्य अपने पड़ोसी की मदद कर रहा है,
वह अपने जाति-बन्धु से यह कहता है,
"हिम्मत मत हार।"
7 कारीगर सुनार को हिम्मत बंधाता है,
हथौड़ा पीटनेवाला
निहाई पर काम करनेवाले से यह कहता है :
"जोड़ने का काम पूरा हो गया।"
तत्पश्चात् वे मूर्ति में कीलें ठोंकते हैं,
ताकि वह स्थिर रहे।
8 ओ मेरे सेवक इस्राएल!
ओ मेरे मनोनीत याकूब!
मेरे मित्र अब्राहम की सन्तान।
9 मैं तुझे पृथ्वी के सीमान्तों से लाया था,
मैंने तुझे दूरस्थ कोनों से बुलाया था।
मैंने तुझ से यह कहा था,
"तू मेरा सेवक है;
मैंने तुझे राष्ट्रों में से चुना है;
मैंने अब तक तुझे नहीं छोड़ा है।"
10 मत डर, क्योंकि मैं तेरे साथ हूं।
डर से यहाँ-वहाँ मत ताक;
क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर हूं।
मैं तुझे सुदृढ़ करूंगा,
मैं तेरी सहायता करूंगा।
विजय प्रदान करनेवाले
अपने दाहिने हाथ का सहारा मैं तुझे दूंगा।

11 देख, जो राष्ट्र तुझसे क्रोधित हैं,
वे पराजय के कारण लज्जित होंगे,
उनका मुंह काला होगा।
जो राष्ट्र तुझसे लड़ते हैं,
उनका नामो-निशान मिट जाएगा,
वे नष्ट हो जाएंगे।
12 जो राज्य तुझसे लड़ने आए हैं,
तू उन्हें ढूंढ़ेगा,
पर वे तुझे नहीं मिलेंगे।
जो राष्ट्र तुझसे युद्ध करते हैं,
उनका अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा,
13 क्योंकि मैं, तेरा प्रभु परमेश्वर,
तेरे दाहिने हाथ को सम्भालता हूं,
मैं ही तुझ से कहता हूं :
"मत डर, मैं तेरी सहायता करता हूं।"

14 प्रभु कहता है : ओ याकूब,
तू कीड़ा मात्र है;
ओ इस्राएल, मत डर।
मैं तेरी सहायता करूंगा।
तुझे छुड़ानेवाला
इस्राएल का पवित्र परमेश्वर मैं हूं।
15 मैं तुझे नए, तेज और अनेक दांतोंवाले
दंवरी के हेंगे-सा बना दूंगा,
तब तू पहाड़ों को दांव कर चूर-चूर करेगा,
तू पहाड़ियों को भूसा बना देगा।
16 तू उन्हें ओसाएगा,
और हवा उन्हें उड़ा ले जाएगी;

41 : 8 2 इत 20 : 7; याक 2 : 23; लू 1 : 54; इब्र 2 : 16 **41 : 10** प्रे 18 : 10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तूफान उन्हें छितरा देगा।
तब तू प्रभु में हर्षित होगा,
तू इस्राएल के पवित्र परमेश्वर के कारण
गौरव प्राप्त करेगा।

17 जब दीन-हीन जन पानी ढूंढ़ेंगे,
और उन्हें पानी नहीं मिलेगा;
जब उनका तालु प्यास के कारण सूखेगा,
तब मैं, इस्राएल का प्रभु परमेश्वर
उनकी प्रार्थना का उत्तर दूंगा,
मैं उन्हें नहीं त्यागूंगा।
18 मैं मुण्डे टीलों पर नदियाँ बहाऊंगा;
घाटियों के मध्य जल के सोते निकालूंगा;
मैं निर्जन प्रदेश को जलाशय में बदल दूंगा;
शुष्क भूमि-क्षेत्र को जल के झरनों में
परिणत कर दूंगा।
19 मैं निर्जन प्रदेश में
देवदार, बबूल, मेहँदी और जैतून के वृक्ष
लगाऊंगा;
मैं मरुस्थल में सनोवर, चनार और चीड़ के
वृक्ष एक साथ उगाऊंगा।
20 लोग यह देखेंगे,
वे यह जानेंगे, और विचार करेंगे।
तब वे यह समझेंगे कि प्रभु के हाथ ने ही
यह अद्‌भुत कार्य किया है;
इस्राएल के पवित्र परमेश्वर ने ही
यह उपजाया है।

प्रभु की चुनौती

21 प्रभु, याकूब का राजा, कहता है,
"अपना पक्ष प्रस्तुत करो; अपने प्रमाण
लाओ।"
22 निकट आओ और हमें बताओ कि
क्या होनेवाला है।
जो बातें पहले हो चुकी हैं, वे हमें बताओ।
हम उन पर विचार करेंगे,
हम उनका परिणाम जानेंगे।
आगे घटनेवाली बातें हमें सुनाओ।
23 भविष्य में क्या होगा, यह हमें बताओ,
तब हम मानेंगे, कि तुम देवता हो।
भला या बुरा कुछ ऐसा कार्य करो
जिसको देखकर हम चकित और भयभीत
हो जाएँ।
24 सुनो, तुम कुछ भी नहीं हो,
तुम कुछ नहीं कर सकते,
जो तुम्हें आराधना के लिए चुनता है,
वह स्वयं घृण्य है।

25 मैंने उत्तर दिशा के एक देश में
एक राजा को आन्दोलित किया,
और वह आ गया।
वह पूर्व दिशा से आया है,
वह मेरे नाम से आराधना करेगा।
जैसा कुम्हार गीली मिट्टी को पैरों से रौंदता
है
वैसा ही वह शासकों को कीचड़ के समान
रौंदेगा।
26 आरम्भ से किसने यह बात घोषित की,
ताकि हम उसे जान सकें?
किसने प्राचीनकाल में यह बात प्रकट की,
जिससे हम यह कहें : "वह सच्चा है?"
उस समय घोषणा करनेवाला,
बतानेवाला कोई नहीं था,
तुम्हारे शब्दों को सुननेवाला कोई नहीं था।
27 मैंने सर्वप्रथम सियोन को यह बात बताई,
"देख, वे वापस आ रहे हैं!"*
मैंने यरूशलेम के लिए शुभ सन्देश
सुनानेवाले को नियुक्त किया।
28 मैंने इधर-उधर देखा, पर वहाँ कोई न था,
देवताओं के मध्य कोई परामर्शदाता नहीं
था,
जो मेरी पूछताछ का उत्तर दे सके।
29 देखो, उनका अस्तित्व व्यर्थ है,
उनके कार्य व्यर्थ हैं,
उनकी ढली हुई मूर्तियाँ कोरी हवा हैं।

प्रभु का सेवक

42 यह है मेरा सेवक! इसको मैं सम्भाले
हुए हूं।
यह मेरा मनोनीत है! इससे मैं प्रसन्न हूं।

* शब्दशः "देख, उन्हें देख!"

41 : 18 यश 35 : 6-7 42 : 1 यश 49 : 3; 50 : 10; 52 : 13; मत 12 : 18; 3 : 17; 17 : 5; यश 11 : 2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मैंने इसको अपना आत्मा प्रदान किया है,
जिससे वह राष्ट्रों में न्याय की स्थापना करे।
2 वह न चिल्लाएगा,
और न ऊंचे स्वर में शोर मचाएगा,
वह न गली-कूचों में आवाज देगा।
3 वह मुड़े हुए सरकंडे को तोड़ेगा नहीं,
वह टिमटिमाते हुए दीपक को बुझाएगा नहीं।
वह सच्चाई से न्याय की स्थापना करेगा।
4 जब तक वह पृथ्वी पर
न्याय की स्थापना नहीं कर लेगा
तब तक उसका उत्साह बुझेगा नहीं,
वह हिम्मत नहीं हारेगा।
द्वीप उसके धर्म-नियमों की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

5 प्रभु परमेश्वर, जिसने आकाश को बनाया
और उसको विस्तृत फैलाया है,
जिसने पृथ्वी और उस पर होनेवाली
प्रत्येक वस्तु की रचना की है;
जो पृथ्वी के सब लोगों में प्राण डालता है,
जो पृथ्वी पर विचरनेवालों को आत्मा प्रदान करता है,
वह यों कहता है: 6 'मैं प्रभु हूं;
मैंने तुझे धार्मिक अभिप्राय से बुलाया है।
मैंने तेरा हाथ थामकर तुझे सहारा दिया है।*
मैंने तुझे कौम** के लिए विधान और
राष्ट्रों के लिए ज्योति नियुक्त किया है,
7 ताकि तू अंधी आंखों को दृष्टि प्रदान करे,
बन्दियों को बन्दीगृह से बाहर निकाले,
कारागार के अंधकार में बैठे हुओं को
बाहर प्रकाश में लाए।
8 मैं प्रभु हूं, यही मेरा नाम है,
मैं अपनी महिमा दूसरों को न दूंगा,
जो स्तुति मुझे अर्पित की जाती है,
वह मैं गढ़ी हुई मूर्तियों को नहीं दूंगा।
9 देख, पुरानी बातें पूरी हो चुकीं,
अब मैं नई बातें घोषित करता हूं,
उनके होने से पहले ही
मैं तुझे उनके विषय में सुना रहा हूं।'

प्रभु की कृपा से प्राप्त विजय

10 प्रभु के लिए नया गीत गाओ।
पृथ्वी के सीमान्तों तक उसकी स्तुति गूंज उठे।
सागर और उसके सब जलचर,
भूमध्यसागर तट के सब द्वीपों के निवासी,
प्रभु की स्तुति गाएँ।
11 मरुस्थल और उसके नगर,
केदार के ग्रामवासी उच्च स्वर में गाएँ,
सेला के रहनेवाले जयजयकार करें,
वे पहाड़ के शिखरों से जयघोष करें।
12 वे प्रभु की महिमा करें,
वे भूमध्यसागर के तटवर्ती द्वीपों में
उसका गुणगान करें।

13 प्रभु महायोद्धा के सदृश
बाहर निकल रहा है;
सशक्त सैनिक के समान
वह अपने क्रोध को उभाड़ रहा है।
वह युद्ध-नाद करता है,
वह ऊंची आवाज में
अपने बैरियों को ललकारता है;
वह अपने शत्रुओं पर
अपना महाबल प्रकट करता है:
14 'मैं बहुत समय तक चुप रहा,
मैं शांत रहा, और अपने को रोकता रहा।
परन्तु अब मैं प्रसव-पीड़ित स्त्री की तरह चिल्लाऊंगा,
मैं हांफ-हांफ कर सांस भरूंगा।
15 मैं पर्वतों और पहाड़ियों को उजाड़ दूंगा,
मैं उनकी समस्त वनस्पति को सुखा दूंगा।
मैं नदियों को द्वीप बना दूंगा;
मैं तालाबों को सुखा दूंगा।

* अथवा, "मैंने तेरा हाथ थामा, और तुझे गढ़ा है।" ** अथवा, "(अपनी) प्रजा"।

42 : 5 प्रे 17 : 25 42 : 6 लू 2 : 32; यो 8 : 12; प्रे 13 : 47; 26 : 23; यश 49 : 6 42 : 7 लू 4 : 18; यो 8 : 32; प्रे 26 : 18 42 : 10 प्रक 5 : 9 42 : 13 गण 10 : 35; शास 5 : 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

16 मैं अनजान मार्ग पर अंधों का मार्ग-दर्शन
करूंगा,
मैं अपरिचित राह पर उनका पथ-प्रदर्शन
करूंगा।
मैं उनके सम्मुख अंधकार को प्रकाश में
बदल दूंगा,
ऊबड़-खाबड़ स्थानों को समतल मैदान
बना दूंगा।
मैं यह सब आश्चर्यपूर्ण कार्य करूंगा,
और उनको कभी नहीं त्यागूंगा।
17 जो गढ़ी हुई मूर्तियों को ईश्वर मानते हैं,
और उन पर भरोसा करते हैं;
जो ढली हुई मूर्तियों से यह कहते हैं
''तुम ही हमारे देवी-देवता हो'',
वे पीठ दिखाएंगे, वे पूर्णतः लज्जित होंगे।'

अवज्ञाकारियों को चेतावनी

18 प्रभु कहता है: 'ओ बहरो, सुनो;
ओ अंधो, आंखें खोलो, जिससे तुम देख
सको!
19 मेरे सेवक इस्राएल के अतिरिक्त
और कौन अंधा है?
मेरे संदेश-वाहक को छोड़कर
और कौन बहरा है?
मेरे भक्त के तुल्य और कौन अंधा है?
मेरे सेवक के सदृश और कौन बहरा है?
20 वह अनेक बातों को देखता है,
किन्तु उन पर ध्यान नहीं देता,
उसके कान खुले तो हैं, पर वह नहीं सुनता।'

21 अपनी धार्मिकता के कारण
अपनी व्यवस्था को महिमा देने के लिए,
उसको गौरव प्रदान करने के लिए
प्रभु अपने सेवक इस्राएल से प्रसन्न हुआ
था।

22 पर वे लोग लुटे हुए हैं,
वे सबके सब मांदों में फंस गए हैं,
वे बन्दीगृह में दुबके बैठे हैं।
वे शिकार हो गए,
उनको छुड़ानेवाला कोई नहीं है।
वे ऐसी लूट हैं, जिनको कोई वापस नहीं
करता!
23 तुममें से कौन व्यक्ति,
इन बातों पर कान देता है?
कौन व्यक्ति ध्यान देकर
भविष्य की बातों को सुनता है?
24 किसने याकूब को लुटेरों के हाथ में सौंपा
था?
किसने इस्राएल को डाकुओं के हाथ में दे
दिया था?
क्या प्रभु ने ही यह कार्य नहीं किया था?
क्योंकि हमने उसके प्रति पाप किया था।
हम उसके बताए हुए मार्ग पर नहीं चले
थे;
हमने उसकी व्यवस्था का पालन नहीं
किया था।
25 अतः उसने इस्राएली राष्ट्र पर
अपनी क्रोधाग्नि की वर्षा की,
युद्ध का आतंक फैलाया।
विनाश की आग से
इस्राएली राष्ट्र चारों ओर से घिर गया,
पर उसने उसको नहीं समझा,
कि यह क्यों हुआ।
आग ने उसको झुलसा दिया, पर वह नहीं
चेता।

प्रभु ही एक मात्र छुड़ानेवाला है

43 ओ याकूब, तेरा रचनेवाला
ओ इस्राएल, तेरा गढ़नेवाला
प्रभु अब यों कहता है :
'मत डर, क्योंकि मैंने तुझे छुड़ा लिया है।
मैंने तेरा नाम लेकर तुझे छुड़ाया है,
तू मेरा है।
2 जब तू समुद्र पार करेगा,
मैं तेरे साथ रहूंगा।
जब तू नदियों से होते हुए जाएगा
तब नदियां तुझे डुबो न सकेंगी।
यदि तू आग पर चलेगा,
तो भी तू नहीं जलेगा;

---

42 : 19 मत 13 : 9-15 **43 : 2** 1 कुर 3 : 15

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लपटें तुझे भस्म न कर सकेंगी;
3 क्योंकि मैं तेरा प्रभु परमेश्वर हूं;
मैं तुझे बचानेवाला,
इस्राएल का पवित्र परमेश्वर हूं।
मैंने तेरे विमोचन के मूल्य में
मिस्र देश दिया है,
तेरे बदले में इथियोपिआ और सबा देश दिए हैं।
4 मैं तुझ से प्रेम करता हूं।
तू मेरी दृष्टि में अनमोल और सम्मानित है,
अत: मैं तुझे छुड़ाने के लिए
तेरे बदले में अन्य जातियों को देता हूं।
तेरे प्राण को बचाने के लिए
दूसरी कौमों को देता हूं।
5 मत डर; क्योंकि मैं तेरे साथ हूं।
मैं तेरे वंशजों को पूर्व के देशों से लाऊंगा।
ओ इस्राएल,
मैं तुझे पश्चिम के देशों से एकत्र करूंगा।
6 मैं उत्तर के राज्यों को आदेश दूंगा,
''इन्हें छोड़ दो।''
मैं दक्षिण के राज्यों से यह कहूंगा,
''इन्हें मत रोको।''
मेरे पुत्रों को दूर-दूर देशों से लाओ,
मेरी पुत्रियों को पृथ्वी के सीमान्तों से एकत्र करो।
7 ये सब मेरे नाम से आराधना करते हैं,
इनको मैंने अपनी महिमा के लिए रचा है,
इनको मैंने गढ़ा है, इनको मैंने बनाया है।''

8 'उन लोगों को मेरे सम्मुख प्रस्तुत करो,
जिनको आंखें हैं, पर वे देखते नहीं,
जिनके कान हैं, पर वे सुनते नहीं।
9 विश्व के सब राष्ट्र एकत्र हों,
समस्त कौमें इकट्ठी हों।
उनमें से कौन ऐसा राष्ट्र है,
जो यह बात बता सकता है?
कौन ऐसी कौम है,
जो बीती हुई घटनाएँ हमें दिखा सकती है?
अपने को निर्दोष प्रमाणित करने के लिए
वे अपने गवाह पेश करें।
लोग उनकी गवाही सुनें
और तब वे यह कह सकें, ''यह सच है।'''

10 प्रभु कहता है,
'तुम ही मेरे गवाह, मेरे मनोनीत सेवक हो,
कि तुम जान सको,
मुझ पर विश्वास कर सको,
और समझ सको, कि मैं ही ''वह'' हूं।
मुझ से पूर्व कोई भी ईश्वर नहीं हुआ,
और न मेरे बाद कोई होगा।
11 मैं, केवल मैं प्रभु हूं,
मेरे अतिरिक्त कोई उद्धारकर्त्ता नहीं!
12 मैंने प्रकट किया था,
मैंने ही घोषित किया था,
मैंने ही तुम्हें बचाया था,
उन दिनों में जब तुम्हारे मध्य अन्य ईश्वर नहीं था।'
प्रभु कहता है, 'तुम ही मेरे गवाह हो।
13 मैं ही परमेश्वर हूं,
और भविष्य में भी मैं ही ''वह'' रहूंगा।
मेरे हाथ से मुक्त करनेवाला कोई नहीं है।
जो कार्य मैं सम्पन्न करता हूं,
उसे कोई मिटा नहीं सकता।'

14 इस्राएल का पवित्र परमेश्वर,
तुम्हारा विमोचक प्रभु, यों कहता है :
'मैं तुम्हारे हित के लिए
सेना को बेबीलोन देश भेजूंगा।
मैं सब जंजीरें तोड़ डालूंगा।
मैं कसदी सेना का हर्ष-निनाद
विलाप में बदल दूंगा।
15 मैं प्रभु हूं; तुम्हारा पवित्र परमेश्वर हूं;
इस्राएल का स्रष्टा, तुम्हारा राजा हूं।'

16 प्रभु ही बोल रहा है,
जो समुद्र में मार्ग बनाता है,
उत्ताल तरंगों में पथ निर्मित करता है।
17 वह ही रथों और घोड़ों को,
सेना और योद्धाओं को

---

43 : 5 प्रे 18 : 10 **43 : 10** प्रे 1 : 8; यो 15 : 16 **43 : 11** हो 13 : 4; प्रे 4 : 12

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

निकाल कर लाता है।
वे भूमि पर पड़े हैं; अब वे उठ नहीं सकते।
वे सन की बत्ती की तरह बुझ गए।

18 पर प्रभु यों कहता है :
'बीती घटनाओं को याद मत करो;
प्राचीन काल की बातों पर विचार मत करो।
19 देखो, मैं एक नया कार्य कर रहा हूं :
वह अब प्रकट हो रहा है।
तुम स्वयं उसका अनुभव कर रहे हो।
मैं निर्जन प्रदेश में एक मार्ग बनाऊंगा,
मरुस्थल में नदियाँ बहा दूंगा।
20 वन-पशु, गीदड़ और शुतुरमुर्ग
मेरा आदर करेंगे;
क्योंकि मैं उन्हें निर्जन प्रदेश में
पीने को पानी देता हूं,
मरुस्थल में नदियां बहाता हूं।
मैं अपने मनोनीत लोगों को,
पीने का पानी प्रदान करता हूं,
21 जिनको मैंने अपने लिए रचा है,
ताकि वे मेरी स्तुति सर्वत्र घोषित करें।'

22 ओ याकूब, फिर भी तूने मेरी आराधना नहीं की।
ओ इस्राएल, तू मुझसे ऊब गया।
23 तूने अपनी भेड़ें मुझे अग्नि-बलि में नहीं चढ़ाईं;
तूने बलि चढ़ाकर मेरा सम्मान नहीं किया।
मैंने तुझे इतनी बलि चढ़ाने को नहीं कहा था,
कि वह तेरे ऊपर बोझ बन जाए!
मैने तुझे इतना धूप-द्रव्य
जलाने का आदेश नहीं दिया था
कि तू कष्ट में पड़ जाए!
24 तूने मुझे चढ़ाने के लिए
शहद के साथ शक्कर नहीं खरीदी,
अपने बलि-पशु की चर्बी की सुगन्ध से
मुझे सन्तुष्ट नहीं किया।
वरन् तूने अपने पाप का भार
मुझ पर लाद दिया;
तूने अपने अधर्म से मुझे थका दिया।
25 मैं, मैं ही 'वह' प्रभु हूं;
मैं अपने निमित्त
तेरे अपराध क्षमा कर देता हूं,
मैं तेरे पाप स्मरण नहीं रखूंगा।
26 मुझे स्मरण करा, यदि मैंने तेरे किसी सत्कर्म पर ध्यान नहीं दिया :
आ, हम परस्पर विवाद करें।
अपना पक्ष प्रस्तुत कर
ताकि तू निर्दोष प्रमाणित हो सके।
27 तेरे मूल पिता याकूब ने पाप किया था,
तेरे प्रवक्ताओं ने मेरे प्रति अपराध किया था।
28 इस कारण मैंने
पवित्र स्थान के प्रशासकों को पदच्युत कर दिया,
मैंने याकूब को संहार के लिए,
इस्राएल को निन्दा के हेतु त्याग दिया।

प्रभु ही एकमात्र परमेश्वर है

44 ओ मेरे सेवक याकूब,
ओ मेरे मनोनीत इस्राएल, अब तू सुन।
2 तेरा सृष्टिकर्त्ता, गर्भ में तुझे रचनेवाला,
प्रभु यों कहता है :
'मैं तेरी सहायता करूंगा।
ओ मेरे सेवक याकूब,
ओ मेरे मनोनीत यशूरून!* मत डर।
3 मैं प्यासी भूमि को पानी दूंगा,
सूखी भूमि पर नदियाँ बहाऊंगा।
मैं तेरे वंशजों पर अपना आत्मा उण्डेलूंगा,
तेरी सन्तान पर अपनी आशिष की वर्षा करूंगा।'
4 तब वे जलाशयों के तट की
घास के सदृश लहलहा उठेंगे;
वे बहते झरनों के किनारे
उगे मजनूं के समान बढ़ने लगेंगे।
5 उनमें से एक कहेगा, 'मैं प्रभु का हूं,'
तो दूसरा अपना नाम 'याकूब' रखेगा।

*अर्थात् 'सद्धर्मी'

43 : 19 2 कुर 5 : 17; प्रक 21 : 5 43 : 27 उत 27 : 36 44 : 2 व्य 32 : 15

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अन्य व्यक्ति अपने हाथ पर यह खुदवाएगा :
'यह प्रभु का है,'
और अपना कुल-नाम 'इस्राएल' बताएगा।

6 प्रभु, इस्राएल का राजा, उसका छुड़ानेवाला,
स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु यों कहता है :
'मैं ही आदि हूं, मैं ही अन्त हूं,
मेरे अतिरिक्त अन्य ईश्वर नहीं है।
7 मेरे समान कौन है? वह इसकी घोषणा करे।
वह बताए और मेरे सम्मुख
अपने पक्ष को प्रस्तुत करे।
प्राचीनकाल से कौन भविष्य की घटनाएँ
पहले से ही बताता आया है?
वे हमें बताएँ कि भविष्य में
क्या होनेवाला है?
8 मत डरो, भयभीत मत हो।
मैं प्राचीनकाल से
ये बातें तुम्हें बताता आ रहा हूं,
तुम पर प्रकट करता आ रहा हूं।
तुम मेरे गवाह हो।
क्या मुझे छोड़ और कोई ईश्वर है?
नहीं, मुझे छोड़ तुम्हारी कोई "चट्टान" नहीं
है।
मैं किसी अन्य को नहीं जानता।'

मूर्ति पूजा की निस्सारता

9 मूर्ति गढ़नेवालों का अस्तित्व निस्सार है,
उनकी प्रिय मूर्तियों से कोई लाभ नहीं!
मूर्तियों के समर्थक जो उनको अपना ईश्वर
मानते हैं,
न देखते हैं और न जानते हैं।
वे लज्जित होंगे।
10 कौन देवता की मूर्ति बनाता,
अथवा उसको गढ़ता है,
जब कि उससे किसी को लाभ नहीं होता?
11 मूर्तिकार के सहयोगी भी लज्जित होंगे,
कारीगर तो मनुष्य ही हैं।
सब कारीगर एकत्र हों।
वे मेरे सम्मुख खड़े हों।
मैं उनको आतंकित करूंगा,
वे सबके सब लज्जित होंगे।

12 लोहार मूर्ति को बनाता है। वह उसको
अंगारों पर रखता है। वह हथौड़ों से उसको
पीटता है। वह अपने मजबूत हाथों से उसको
आकार देता है। यह सब कार्य करते-करते उसे
भूख लगती है। वह निर्बल हो जाता है। जब वह
पानी नहीं पीता तब मूर्छित हो जाता है।

13 बढ़ई डोरी से नापता है। वह पेन्सिल से
उस पर निशान लगाता है। वह रन्दे से उसको
आकार देता है। वह परकार से रेखा खींचता है।
तत्पश्चात् वह उसको मनुष्य की आकृति में
बदलता है। सुन्दर मनुष्य के सदृश वह उसको
बनाता है कि आराधक उसे गृहदेवता के रूप
में घर में प्रतिष्ठित कर सकें।

14 मनुष्य देवदार के वृक्ष को काटता है।
अथवा पहले वह तिर्जा या बांज वृक्ष को चुनता
है। तत्पश्चात् वह उसको जंगल के अन्य वृक्षों
के मध्य बढ़ने और मजबूत होने देता है। वह
देवदार का पौधा भी लगाता है, और वर्षा
उसको बढ़ाती है। 15फिर वह मनुष्य के लिए
इंधन की लकड़ी बन जाता है। मनुष्य उसकी
कुछ लकड़ी जलाकर आग तापता है। वह
उसको चूल्हे में जलाकर उस पर रोटी सेंकता
है। वह उससे देवता बनाता है, और झुककर
उसकी वंदना करता है। वह उस पर मूर्ति
खोदता और भूमि पर लेटकर उसको प्रणाम
करता है। 16यों देवदार की आधी लकड़ी वह
आग में जलाता है, और उससे वह मांस
पकाता, मांस को भूंजता, उसको खाता और
सन्तुष्ट होता है। वह लकड़ी जलाकर आग
तापता, और यह कहता है, 'अहा! शरीर में गर्मी
आ गई। मैंने आग ताप ली।'

17 बची हुई लकड़ी से वह अपने देवता की
मूर्ति बनाता है। वह उसके सम्मुख भूमि पर
गिरकर उसकी वंदना करता है। वह मूर्ति से
प्रार्थना करता है, और उससे यह कहता है, 'तू
ही मेरा ईश्वर है, मुझे बचा।'

18 ऐसे लोग न जानते हैं और न समझते हैं।
उनकी आंखें बन्द हैं, अत: वे देख नहीं सकते।

44 : 6 यश 48 : 12; प्रका 1 : 17 44 : 10 यिर 10 : 5 44 : 15 प्रज्ञ 13 : 11-19

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उनकी बुद्धि पर परदा पड़ा है, इसलिए वे समझ
नहीं सकते। [19]वे विचार नहीं करते; न उनमें
ज्ञान है और न समझ। वे यह नहीं सोचते कि
उन्होंने देवदार की लकड़ी का आधा भाग आग
में जलाया। उसके अंगारों पर रोटी सेंकी, मांस
भूंजकर खाया। तब क्या बची हुई लकड़ी से
मूर्ति बनाना चाहिए जो प्रभु परमेश्वर की दृष्टि
में घृणित कार्य है? क्या उन्हें एक लकड़ी के
खंभे के सम्मुख भूमि पर लेटकर वंदना करना
चाहिए? [20]ऐसे मनुष्य राख खानेवाले हैं।
भ्रमपूर्ण मन ने उन्हें पथभ्रष्ट कर दिया है। वे
अपने को बचा नहीं सकते और न यह कह
सकते हैं, 'हम मिथ्याचार में फंसे हुए हैं।'

प्रभु इस्राएल का विमोचक है

21 ओ याकूब, ओ इस्राएल!
ये बातें स्मरण रख, क्योंकि तू मेरा सेवक है।
मैंने तुझे गढ़ा है, तू मेरा सेवक है।
ओ इस्राएल, मैं तुझे कभी नहीं भूलूंगा।
22 मैंने बादलों की तरह
तेरे अपराध लोप कर दिए;
कुहरे के समान तेरे पाप उड़ा दिए।
मेरे पास लौट आ, मैंने तुझे छुड़ा लिया है।

23 ओ आकाश, गीत गा,
क्योंकि प्रभु ने कार्य सम्पन्न किया है।
ओ पृथ्वी के अधोलोक, जयजयकार कर।
ओ पर्वतो, जंगलो, और वन-वृक्षो,
उच्चस्वर में गाओ।
प्रभु ने याकूब को मुक्त किया है,
इस्राएल में प्रभु की महिमा की जाएगी।
24 तेरा मुक्तिदाता, तुझे गर्भ में गढ़नेवाला
प्रभु यों कहता है: "मैं ही प्रभु हूं,
मैं ही सबका बनानेवाला हूं।
मैंने ही आकाश को वितान के समान ताना है,
मैंने ही पृथ्वी को आकार दिया है।
उस समय मेरे साथ कौन था?
25 मैं मिथ्याविचारकों के शकुन-विचार
व्यर्थ कर देता हूं;
भविष्य बतानेवालों को मूर्ख सिद्ध करता हूं,
बुद्धिमान कहलानेवालों की मूर्खता
प्रकट करता हूं,
उनके ज्ञान को अज्ञान सिद्ध कर देता हूं।
26 मैं अपने सेवक के वचन को
सच प्रमाणित करता हूं,
मैं अपने संदेश-वाहकों के परामर्श को
सफल करता हूं।
मैं यरूशलेम के विषय में यह कहता हूं,
'तू फिर आबाद होगा।'
मैंने यहूदा प्रदेश के नगरों के विषय में
यह कहा है:
'इनका पुनर्निर्माण होगा;
मैं उनके खण्डहरों को फिर खड़ा करूंगा।'
27 मैं गहरे सागर से यह कहता हूं,
'सूख जा। मैं तेरी नदियों को सुखा डालूंगा।'
28 मैं राजा कुस्रू के विषय में यह कहता हूं,
'वह मेरा चरवाहा है,
वह मेरे समस्त अभिप्रायों को पूरा करेगा।'
मैंने यरूशलेम के विषय में यह कहा है:
'उसका पुनर्निर्माण होगा,'
और मन्दिर के विषय में यह कहा है:
'तेरे भवन की नींव फिर डाली जाएगी।'"

राजा कुस्रू (साइरस) को आदेश

45 प्रभु अपने अभिषिक्त
राजा कुस्रू से यह कहता है:
'राष्ट्रों को तेरे अधीन करने के लिए,
उनके राजाओं को शक्तिहीन बनाने के लिए
मैंने तुझे सामर्थ्य प्रदान किया है।
तू उनके नगरों के प्रवेश-द्वार खोलेगा,
वे फिर बन्द न होंगे।
2 मैं तेरे आगे-आगे जाऊंगा,
और पहाड़ों को समतल मैदान बनाऊंगा।
मैं पीतल के प्रवेश-द्वार तोड़ दूंगा,
मैं लोहे की छड़ों को टुकड़े-टुकड़े करूंगा।
3 मैं तुझे अंधकार में छिपा हुआ खजाना,

44 : 23 यिर 51 : 48; प्रक 18 : 20 **44 : 25** 1 कुर 1 : 20 **44 : 28** 2 इति 36 : 22

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
गुप्त स्थानों में गड़ा हुआ धन दूंगा।
तब तुझे ज्ञात होगा कि मैं ही प्रभु हूं।
मैं ही इस्राएल का परमेश्वर हूं
और मैंने ही तुझे
अपना अभिप्राय पूरा करने के लिए
बुलाया है*।
4 अपने सेवक याकूब,
अपने मनोनीत इस्राएल के कारण,
मैंने तुझे निजी तौर पर बुलाया है,
और तुझे कुल नाम दिया है,
यद्यपि तू मुझे नहीं जानता है।
5 मैं ही प्रभु हूं,
मुझे छोड़ दूसरा प्रभु नहीं है,
मेरे अतिरिक्त अन्य ईश्वर नहीं है।
मैं ही तुझे सामर्थ्य देता हूं,
यद्यपि तू मुझे नहीं जानता है,
6 ताकि उदयाचल से अस्ताचल तक
सभी लोग जान लें कि
मेरे अतिरिक्त अन्य ईश्वर नहीं है।
मैं ही प्रभु हूं,
मुझे छोड़ दूसरा प्रभु नहीं है।
7 मैं ही प्रकाश का उत्पन्न करनेवाला हूं,
मैं ही अन्धकार का स्रष्टा हूं।
मैं ही कल्याण का देनेवाला,
मैं ही विपत्ति का ढाहनेवाला हूं।
मैं, प्रभु, यह सब करता हूं।'

प्रभु स्रष्टा है

8 ओ आकाश, धर्म की वर्षा कर।
ओ आकाश-मण्डल, धार्मिकता बरसा।
धरती की सतह खुल जाए,
जिससे उद्धार का अंकुर फूटे।
वह धार्मिकता को भी उपजाए।
मैं-प्रभु ने ही उसे रचा है।

9 धिक्कार है उसे,
जो अपने रचनेवाले से तर्क करता है।
क्या घड़ा अपने बनानेवाले
कुम्हार से बहस कर सकता है?
क्या मिट्टी अपने गढ़नेवाले कुम्हार से
कह सकती है, 'तू क्या बना रहा है?'
अथवा, 'इसमें मुठिया तो है ही नहीं।'
10 धिक्कार है उस पुत्र को,
जो अपने पिता से यह कहता है,
'तू क्या पैदा कर रहा है?'
अथवा अपनी मां से यह कहता है,
'तू किस को जन्म दे रही है?'
11 इस्राएल का पवित्र परमेश्वर,
इस्राएल का स्रष्टा, प्रभु यों कहता है,
'क्या तुम मेरी सन्तान के बारे में
मुझ से पूछताछ करोगे?
क्या तुम मेरे हस्तकार्यों के विषय में
मुझे आदेश दोगे?
12 मैंने पृथ्वी को बनाया है,
मैंने ही मनुष्य को रचा है,
ताकि वह उस पर निवास करे।
मेरे ही हाथों ने
आकाश को वितान के समान ताना है;
मेरे ही आदेश से
आकाश के तारागण स्थित हैं।
13 मैंने ही राजा कुस्रू को
सत्कार्य के लिए उभाड़ा है;
मैं उसके सब मार्गों को सफल बनाऊंगा।
वह मेरे नगर का पुनर्निर्माण करेगा,
और मेरे निर्वासितों को मुक्त करेगा।'
स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु यह कहता है,
'कुस्रू अपने इस कार्य के लिए
कोई कीमत या पुरस्कार नहीं लेगा।'

14 प्रभु इस्राएली लोगों से यों कहता है :
'मिस्र देश की धन-सम्पत्ति,
इथियोपिआ देश की व्यापार-सामग्री
तेरी हो जाएगी।
ऊंचे कदवाले सबाई लोग
तेरे पास आएंगे और वे तेरे हो जाएंगे;
वे तेरा अनुसरण करेंगे।
वे बेड़ियों में बंधे हुए तेरे पास आएंगे
और तेरे सम्मुख सिर झुकाएंगे।
वे तुझ से यह कहते हुए

* शब्दशः 'नाम लेकर बुलाया है।'

45 : 7 आमो 3 : 6 **45 : 8** भज 85 : 11; यश 6 : 13 **45 : 9** यश 29 : 16; रोम 9 : 20 **45 :14** 1 कुर 14 : 25

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अनुनय-विनय करेंगे,
''ईश्वर केवल आपके साथ है,
उसे छोड़ दूसरा कोई ईश्वर नहीं है;
उसके अतिरिक्त अन्य ईश्वर नहीं है।'' '

15 ओ इस्राएल के उद्धारकर्ता परमेश्वर!
निश्चय ही तू अगम्य परमेश्वर* है!
16 मूर्ति बनानेवाले सबके सब लज्जित,
भ्रमित और आतंकित हो गए।
17 किन्तु प्रभु ने अपने शाश्वत उद्धार से
इस्राएली राष्ट्र को बचा लिया;
अब वह अनन्तकाल तक
लज्जित और आतंकित नहीं होगा।

18 आकाश का स्रष्टा (वह परमेश्वर है!),
पृथ्वी को आकार देनेवाला
और बनानेवाला प्रभु यों कहता है :
(उसने ही पृथ्वी को स्थिर किया है,
उसने उसको इसलिए नहीं रचा
कि वह निर्जन रहे,
उसने उसे आबाद करने के लिए बनाया
है।)
'मैं ही प्रभु हूं,
मुझे छोड़ दूसरा कोई प्रभु नहीं है।
19 मैंने किसी गुप्त स्थान में,
या कहीं अंधकारमय क्षेत्र में नहीं कहा;
मैंने याकूब के वंशजों से यह नहीं कहा,
''मुझे निर्जन स्थान में ढूंढ़ना।''
मैं प्रभु हूं, मैं केवल सच बोलता हूं;
मैं उचित बात बताता हूं।'

मूर्तियाँ और प्रभु

20 विजित कौमों में से बचे हुए लोगो, एकत्र
हो।
तुम-सब पास आओ।
लकड़ी की मूर्ति ढोनेवालो,
तुम मुझे नहीं जानते।
तुम ऐसे देवता से प्रार्थना करते हो,
जो तुम्हें नहीं बचा सकता।

21 अपनी बात कहो, प्रमाण को सामने लाओ,
तुम आपस में विचार-विमर्श करो।
किसने प्राचीनकाल से ये बातें बताई थीं?
किसने बहुत पहले से ये घटनाएँ
प्रकट की थीं?
मैंने, मैं-प्रभु ने ही ये बातें तुम पर प्रकट की
थीं।
मेरे अतिरिक्त अन्य ईश्वर नहीं है।
मुझे छोड़ दूसरा धार्मिक और उद्धारकर्त्ता
ईश्वर नहीं है।

22 ओ पृथ्वी के सीमान्तों तक रहनेवालो,
मेरी ओर मुड़ो और मैं तुम्हें बचाऊंगा;
क्योंकि मैं परमेश्वर हूं,
और मुझे छोड़ दूसरा कोई नहीं है।
23 मैंने स्वयं अपनी शपथ खाई है,
मेरी धार्मिकता से
मेरे मुंह से यह वचन निकला है,
और वह नहीं टलेगा :
'हर एक मनुष्य मेरे सम्मुख घटना टेकेगा,
प्रत्येक जीभ मेरे नाम से शपथ लेगी।'

24 लोग मेरे विषय में यह कहेंगे :
'केवल प्रभु में ही
धार्मिकता और सामर्थ्य है।
जो उसके विरोधी हैं,
वे सब उसके पास आएंगे,
और लज्जित होंगे।
25 परन्तु इस्राएल के सब वंशज
प्रभु के द्वारा विजय* और यश प्राप्त करेंगे।'

46

बेल देवता झुक गया,
नबो देव नत हो गया।
उनकी मूर्तियां जानवरों और ढोरों
पर लाद दी गईं।
जिन वस्तुओं को तुम ढोते थे,
वे थके हुए पशुओं पर लदी हैं;
अब वे बोझ बन गईं।
2 बेल और नबो नत हो गए,

* अक्षरशः 'स्वयं को छिपानेवाला ईश्वर' * अथवा, 'धार्मिकता'।
45 : 17 इब्र 5 : 9 45 : 19 व्य 30 : 11; यो 18 : 20; प्रे 26 : 26 45 : 21 प्रे 15 : 18, 45 : 23 रोम 14 : 11; फिल 2 : 10 46 : 3 नि 19 : 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उनका सिर झुक गया।
वे बोझ ढोनेवालों को नहीं बचा सके,
और स्वयं बन्दी बनकर जा रहे हैं।

3 ओ याकूब के वंशजो, मेरी बात सुनो।
इस्राएल कुल के बचे हुए लोगो,
मेरी ओर ध्यान दो।
तुम्हारे जन्म से,
गर्भ से ही मैं तुम्हें उठाए हुए हूं।
4 और तुम्हारी वृद्धावस्था तक,
तुम्हारे बूढ़े होने तक,
तुम्हें उठाए रहूंगा,
क्योंकि मैं 'वही प्रभु' हूं।
मैंने तुम्हें रचा है,
अत: मैं तुम्हारा बोझ उठाऊंगा;
मैं तुम्हें ढोऊंगा, और तुम्हारी रक्षा करूंगा।

5 'तुम मेरी उपमा किससे दे सकते हो?
तुम मेरी तुलना किससे करोगे?
किससे तुम मेरी समता करोगे,
कि मैं और वह एक-बराबर हैं?
6 मूर्ति पूजक थैली से सोना निकालते,
और तराजू पर चांदी तौलते।
वे सुनार को काम पर लगाते,
और वह सोना-चांदी की एक मूर्ति बना देता
है।
तब वे उसके सम्मुख भूमि पर लेटकर
उसकी वंदना करते, उसकी पूजा करते हैं।
7 वे उसको कंधों पर उठा कर ले जाते
और उसको उसके स्थान पर
प्रतिष्ठित कर देते हैं;
मूर्ति वहाँ खड़ी रहती है।
जब उसके उपासक
सहायता के लिए उसे पुकारते हैं,
तब वह उनको उत्तर नहीं देती है,
वह अपने उपासकों को
संकट से नहीं बचाती है।

8 अरे अपराधियो! यह स्मरण करो,
इस पर विचार करो,
अपने हृदय में इस को याद करो।
9 अतीत की घटनाओं को स्मरण करो,
क्योंकि मैं ही परमेश्वर हूं;
मुझे छोड़ दूसरा कोई ईश्वर नहीं है।
मैं ही परमेश्वर हूं,
और मेरे समान दूसरा ईश्वर नहीं है।
10 मैं आदिकाल से ही अन्त की बातें बताता
आया हूं,
मैंने प्राचीनकाल में ही भविष्य की घटनाएं
घोषित कर दी हैं।
मैंने यह कहा है: 'मेरे संकल्प अटल हैं,
मैं अपने समस्त अभिप्रायों को
निस्सन्देह पूर्ण करूंगा।'
11 मैंने पूर्व देश के एक शिकारी पक्षी को
बुलाया है;
दूर देश से मैंने अपने संकल्प को पूरा
करनेवाले को
बुलाया है।
यह मैं कह चुका हूं;
निस्सन्देह मैं यह कार्य सम्पन्न करूंगा;
जैसा मेरा अभिप्राय है, वैसा ही मैं करूंगा।

12 ओ हठीले लोगो! मेरी बात सुनो।
तुम उद्धार से बहुत दूर हो।
13 मैं अपना उद्धार तुम्हारे समीप ला रहा हूं,
अब वह तुमसे बहुत दूर नहीं है।
मेरी ओर से उद्धार में देर नहीं होगी।
मैं सियोन को अपना उद्धार,
और इस्राएल को अपनी महिमा
प्रदान करूंगा।

बेबीलोन को दण्ड

47 ओ बेबीलोन देश की कुंआरी कन्या।*
अब सिंहासन से उतर और धूल पर
बैठ, ओ कसदी कौम की बेटी!
अब सिंहासन पर नहीं, वरन् भूमि पर बैठ।
लोग तुझे फिर कभी
कोमल और सुकुमारी नहीं कहेंगे।

---

* कुंआरी कन्या, अर्थात् अब तक अपराजित राष्ट्र

46 : 10 भज 33 : 11 **47** यश 13 : 1-14; 23; यिर 50-51; हब 1-2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

2 अपना घूंघट उठा,
चक्की ले और उसमें आटा पीस।
अपना घाघरा समेट,
और नंगे पैर नदियों को पार कर।
3 लोग तुझे नग्न करेंगे,
और वे तेरी नग्नता को देखेंगे।
मैं बदला लूंगा,
और किसी भी मनुष्य को नहीं छोड़ूंगा।
4 इस्राएल का पवित्र परमेश्वर
हमारा मुक्तिदाता है,
उसका नाम 'स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु' है!

5 ओ कसदी कौम की बेटी, अंधकार में जा,
और वहाँ चुपचाप बैठ;
क्योंकि अब लोग तुझे
राज्यों की महारानी नहीं कहेंगे।
6 मैं अपने निज लोग इस्राएलियों से क्रुद्ध था,
अतः मैंने अपनी मीरास को अशुद्ध घोषित कर
तेरे हाथ में उसे सौंप दिया।
पर तूने उन पर दया नहीं की,
तूने बूढ़ों पर भी बड़ा भारी जूआ रखा।
7 तूने सोचा था, कि तू सदा मालकिन बनी रहेगी।
अतः तूने अपने हृदय में
इन बातों पर विचार नहीं किया,
तू भूल गई कि इनका परिणाम गंभीर होगा।

8 ओ राग-रंग में डूबी हुई,
निश्चिंत जीवन बितानेवाली,
मेरी बात सुन!
तू अपने हृदय में यह कहती है,
'केवल मैं ही हूं,
मुझे छोड़ दूसरी स्वामिनी है ही नहीं।
मैं विधवा की तरह नहीं रहूंगी,
और न मैं निस्संतान हूंगी।'
9 सुन, एक क्षण, एक ही दिन
ये दोनों विपत्तियाँ तुझ पर टूट पड़ेंगी :
तू सन्तान से पूर्णतः वंचित होगी,
और तू विधवा होगी।
तेरे अनेक टोने-टोटके,
तेरे भारी-भारी तन्त्र-मन्त्र निष्फल हो जाएंगे!

10 तूने अपनी दुष्टता के कारण
स्वयं को सुरक्षित समझा था,
तू कहती थी, 'मुझे कोई नहीं देखता।'
तेरी बुद्धि और तेरे ज्ञान ने तुझे धोखा दिया।
तूने अपने हृदय में यह कहा,
'केवल मैं ही हूं,
मुझे छोड़ दूसरी स्वामिनी है ही नहीं।'
11 पर तुझ पर अनिष्ट का प्रकोप होगा,
जिस को दूर करने का मन्त्र तू नहीं जानती।
तुझ पर विपत्ति का पहाड़ टूटेगा,
जिसको तू दूर नहीं कर सकेगी।
अचानक तेरा सर्वनाश हो जाएगा,
तू उसको समझ ही नहीं पाएगी।
12 तू अपने अनेक टोने-टोटकों को,
भारी-भारी तन्त्र-मन्त्र को,
जिनका अभ्यास तू बचपन से कर रही है,
अब उनको उपयोग में ला;
सम्भवतः वे सफल हो जाएं,
हो सकता है, तू उनसे आतंक फैला दे।
13 तू अनेक प्रयास कर थक गई;
अब वे खड़े हों, और तेरी रक्षा करें,
जो ज्योतिष-विद्या जानते हैं,
जो नक्षत्रों को टकटकी बान्ध कर देखते हैं,
जो नवचन्द्र पर तेरा भविष्यफल बताते हैं।

14 देख, वे सब भूसा हैं,
और आग उन्हें भस्म कर देगी।
वे अपने प्राण को आग की लपटों से बचा नहीं सकते।
यह आग तापने के लिए नहीं है;
इस आग के सम्मुख कोई नहीं बैठ सकता।
15 टोना-टोटका करनेवाले
तेरे ये लोग ऐसे हैं, जिन्होंने तुझे थका दिया,
जिनके साथ बचपन से
तू टोना-टोटका करवाती आ रही है!
वे अपना-अपना रास्ता नापेंगे,
और तुझे बचानेवाला कोई न होगा।

---
47 : 7 प्रक 18 : 7

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नई बातों के विषय में नबूवत

48 ओ याकूब के वंशजो,
मेरी यह बात सुनो।
तुम इस्राएल के नाम से पुकारे जाते हो,
तुम यहूदा के वंश में उत्पन्न हुए हो।
तुम प्रभु के नाम की शपथ खाते हो,
तुम इस्राएल के परमेश्वर के नाम को स्मरण करते हो,
पर सच्चाई से नहीं, धार्मिकता से नहीं!
2 तुम अपने को पवित्र नगर के निवासी बताते हो,
और इस्राएल के परमेश्वर का सहारा लेते हो,
जिसका नाम 'स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु' है।

3 प्रभु इस्राएल से यह कहता है :
'जो बातें हो चुकी हैं, उनके होने के पहले ही
मैंने उन्हें बता दिया था;
वे मेरे मुंह से निकली थीं,
मैंने ही उनको प्रकट किया था।
अचानक मैंने उन्हें कार्यरूप में परिणत किया, और वे पूरी हो गईं।
4 ओ इस्राएल! मैं तुझे जानता था
कि तू जिद्दी है,
तेरी गर्दन लोहे की तरह कठोर है;
तेरा माथा पीतल का बना है।
5 मैंने पहले ही से उन बातों को बता दिया था;
उनके पूरा होने के पूर्व ही
मैंने तुझे सुना दिया था,
ताकि तू यह न कह सके,
''मेरी मूर्ति ने यह कार्य किया है,
मेरी गढ़ी हुई मूर्ति,
मेरी ढली हुई मूर्ति के आदेश से
ये सब कार्य हुए हैं।''

6 'तू ने यह सुना,
अब इन-सब को देख,
क्या तू इनकी घोषणा नहीं करेगा?
अब मैं तुझे नई-नई बातें सुनाऊंगा,
ऐसी गुप्त बातें बताऊंगा, जिन्हें तू नहीं जानता है।
7 वे अभी-अभी रची गई हैं,
वे बहुत पहले की नहीं हैं।
आज से पहले तूने उनके विषय में कभी नहीं सुना था।
अब तू यह नहीं कह सकता,
''देख, मैं इन्हें पहले से जानता था।''
8 निस्सन्देह, तूने इनके विषय में कभी सुना नहीं था,
और न तुझे कुछ मालूम ही था।
इससे पहले तेरे कान में यह बात
पड़ी भी नहीं थी;
क्योंकि मैं जानता था,
कि तू निश्चय विश्वासघात करेगा।
तू अपनी मां के गर्भ से ही
विद्रोही कहलाता आया है।

9 'मैं अपने नाम के कारण
अपना क्रोध रोके हुए हूं,
मैंने अपनी स्तुति के अभिप्राय से,
उसको तेरे लिए रोक लिया है,
अन्यथा मैं तुझे टुकड़े-टुकड़े कर देता।
10 देख, मैंने तुझे शुद्ध किया,
पर चांदी के समान नहीं,
मैंने दु:ख की भट्ठी में तुझे परखा है।
11 मैं यह अपने लिए, केवल अपने लिए करता हूं;
अन्यथा मेरा नाम अपवित्र हो जाएगा।
मैं अपनी महिमा दूसरे को नहीं दूंगा।

प्रभु इस्राएली लोगों को छुड़ाएगा

12 'ओ याकूब, ओ इस्राएल, मेरी बात सुन!
मैंने तुझे मनोनीत किया है।
मैं ही 'वह' हूं,
मैं ही आदि हूं,
मैं ही अन्त हूं।
13 मैंने अपने हाथ से पृथ्वी की नींव डाली है;
मेरे ही दाहिने हाथ ने
आकाश को वितान के सदृश फैलाया है।

---

48 : 10 भज 66 : 10 48 : 12 यश 44 : 6; प्रक 22 : 13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जब मैं आकाश और पृथ्वी को बुलाता हूं,
तब वे दोनों मेरे सम्मुख उपस्थित हो जाते
हैं!

14 'ओ सब इस्राएलियो,
एकत्र हो, और मेरी बात सुनो।
किस देवता ने पहले से ये बातें तुम्हें बताई
थीं?
प्रभु राजा कुस्रू से प्रेम करता है,
वही प्रभु का अभिप्राय
बेबीलोन देश में पूरा करेगा;
वह प्रभु का सामर्थ्य
कसदी कौम पर प्रकट करेगा।
15 मैंने, हां मैंने ही यह कहा है,
मैंने ही कुस्रू को बुलाया है।
मैं ही उसको लाया हूं,
उसका हर काम सफल होगा।
16 समीप आओ, मेरी यह बात सुनो।
आरम्भ से ही मैंने तुमसे गुप्त रूप में
कोई बात नहीं कही।
सृष्टि के रचना-काल से मैं वहाँ हूं।'
—अब स्वामी प्रभु ने
मुझे अपने आत्मा के साथ भेजा है।

17 प्रभु, तेरा मुक्तिदाता,
इस्राएल का पवित्र परमेश्वर
यों कहता है:
'मैं तेरा प्रभु परमेश्वर हूं।
मैं तेरे लाभ के लिए
शिक्षा देनेवाला तेरा शिक्षक हूं,
जिस मार्ग पर तुझे चलना चाहिए,
उस मार्ग पर तुझे चलानेवाला
तेरा पथ-प्रदर्शक हूं।
18 भला होता कि
तू मेरी आज्ञाओं को ध्यान से सुनता,
तब नदी के बहते जल की तरह,
तेरा कल्याण होता,
सागर की लहरों की तरह
तेरी धार्मिकता होती।

19 तेरे वंशज रेत के सदृश असंख्य होते,
तेरी सन्तान उसके कणों के समान
अगणित होती।
उनका नाम मेरे सम्मुख से
न कभी काटा जाता, और न मिटायाजाता।'

20 बेबीलोन देश से बाहर निकलो,
कसदी कौम के बीच में रहनेवालो, भागो!
जय-जयकार करते हुए
यह शुभ सन्देश घोषित करो।
पृथ्वी के सीमान्तों तक सन्देशवाहकों को
भेजो, और यह कहो,
"प्रभु ने अपने सेवक याकूब को छुड़ा
लिया है।"
21 जब प्रभु उन्हें मरुस्थल में से ले गया था
तब उन्हें प्यासा नहीं रहना पड़ा था;
उसने चट्टान से उनके लिए पानी बहाया
था।
उसने चट्टान को तोड़ा,
और पानी बह निकला था।

22 प्रभु कहता है,
'दुर्जनों को कहीं शान्ति नहीं मिलती।'

प्रभु का सेवक ज्योति है

49 ओ समुद्र तट के द्वीपो, मेरी बात सुनो!
दूर-दूर देशों में रहनेवाली कौमो,
मेरी ओर ध्यान दो :
जब मैं गर्भ में था
तब ही प्रभु ने मुझे अपनी सेवा के लिए
मनोनीत किया था।
जब मैं मां के पेट में था,
उस समय से ही उसने
मेरा नाम घोषित कर दिया था।
2 प्रभु ने दुधारी तलवार की तरह
मेरे मुंह के वचन को तेज बनाया।
उसने अपने हाथ की छाया में
मेरी रक्षा के लिए मुझे छिपाकर रखा।
उसने मुझे मानो एक तीक्ष्ण तीर बनाया,
और अपने तरकश में मुझे गुप्त रखा।

---

48 : 19 उत 22 : 17 **48 : 20** प्रक 18 : 4 **48 : 21** गण 20 : 11 **48 : 22** यश 57 : 21 **49 : 1** यिर 1 : 5; गल 1 : 15 **49 : 2** इब्र 4 : 12; प्रक 1 : 16

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

3 प्रभु ने मुझ से कहा,
'ओ इस्राएल, तू मेरा सेवक है;
मैं तेरे माध्यम से
अपनी महिमा प्रकट करूंगा।'
4 परन्तु मैंने कहा, 'मैंने व्यर्थ परिश्रम किया,
मैंने अपनी शक्ति निस्सार-कार्य में बर्बाद
की।
तो भी मेरा न्याय प्रभु के हाथ में है,
मेरा परमेश्वर ही मुझे प्रतिफल देगा।''

5 जिस प्रभु ने मेरी मां के गर्भ से ही
मुझे अपने सेवक के रूप में गढ़ा है
ताकि मैं याकूब-वंश को प्रभु के पास
लौटाकर लाऊं,
विसर्जित इस्राएल को उसके पास एकत्र
करूं*,
वह अब मुझसे कहता है—
क्योंकि मैं प्रभु की दृष्टि में आदर का पात्र हूं;
क्योंकि मेरा परमेश्वर मेरा बल है।
6 वह कहता है, 'यह साधारण-सी बात है
कि याकूब के कुलों को
पुनः स्थापित करने के लिए,
इस्राएल के बचे हुए लोगों को
वापस लाने के लिए तू मेरा सेवक बने;
पर यह पर्याप्त नहीं है :
मैं तुझे राष्ट्रों के लिए ज्योति बनाऊंगा,
जिससे मेरा उद्धार
पृथ्वी के सीमान्तों तक पहुँच सके।'
7 अपने सेवक से
जिसको मनुष्य सर्वथा तुच्छ समझते हैं,
जिससे राष्ट्र घृणा करते हैं,
जो शासकों का गुलाम है,
उससे प्रभु, इस्राएल का मुक्तिदाता और
उसका पवित्र परमेश्वर, यों कहता है :
'तुझे देखकर राजा
अपने सिंहासन से खड़े हो जाएंगे,
सामन्त तेरे सम्मुख भूमि पर लेटकर
तुझे साष्टांग प्रणाम करेंगे,
क्योंकि मैं-प्रभु ने, जो सच्चा परमेश्वर हूं,
जो इस्राएल का पवित्र परमेश्वर हूं,
तुझे मनोनीत किया है।'

प्रभु की प्रतिज्ञा: सियोन का पुनर्निर्माण होगा

8 प्रभु यों कहता है :
'कृपा के समय मैंने तेरी प्रार्थना सुनी,
उद्धार के दिन मैंने तेरी सहायता की।
मैंने तुझे सुरक्षित रखा है,
और जनता के लिए विधान के रूप में
तुझे नियुक्त किया है,
ताकि तू देश का पुनः निर्माण करे,
उजाड़ पैतृक-भूमि का पुनः आबंटन करे;
9 तू बन्दियों को यह सन्देश सुनाए,
''बाहर निकलो'';
जो अन्धकार में बैठे हैं
उनसे यह कहे, ''अन्धकार से प्रकाश में
आओ।''
वे भेड़ों के समान
स्वदेश लौटते समय मार्ग के किनारे चरेंगे;
मुण्डे पठारों पर भी उन्हें चारा मिलेगा।
10 वे न भूखे रहेंगे, और न प्यासे;
वे न गर्म रेत से पीड़ित होंगे,
और न धूप में उन्हें कष्ट होगा;
क्योंकि जिसने उन पर दया की है,
और उन्हें छुड़ाया है,
वही उनका मार्गदर्शन करेगा।
वह उन्हें जल-स्रोतों के पास ले जाएगा।
11 मैं अपने पहाड़ों से
उनके लिए मार्ग निकालूंगा,
मैं अपने ऊबड़-खाबड़ राजमार्गों को
समतल बनाऊंगा।
12 देखो, वे दूर-दूर से आ रहे हैं :
कोई उत्तर से, कोई पश्चिम से,
और कोई सीनीम देश से आ रहे हैं।'

13 ओ आकाश, आनन्द से गा;
ओ पृथ्वी, हर्ष से मगन हो।

---

* अथवा पाठभेद : ''ताकि इस्राएल नष्ट न हो।''

49 : 3 मत 17 : 17 49 : 4 फिल 2 : 16 49 : 6 यश 42 : 6; लू 2 : 32; प्रे 13 : 47; 26 : 23 49 : 8 2 कुर 6 : 2 49 : 10 यो 6 : 35; प्रक 7 : 16 49 : 13 यश 44 : 23; यिर 51 : 48; प्रक 12 : 12

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ओ पर्वतो, जयजयकार से गूंज उठो।
क्योंकि प्रभु ने अपने निज लोगों को
शान्ति प्रदान की है;
उसने दु:खी जनों पर दया की है।

14 सियोन नगरी ने यह कहा था,
'प्रभु ने मुझे त्याग दिया है,
मेरे स्वामी ने मुझे भुला दिया है।'
15 पर प्रभु कहता है : 'क्या यह हो सकता है
कि मां अपने दूध पीनेवाले शिशु को भूल
जाए,
अपने गर्भ से उत्पन्न हुए बच्चे पर दया न
करे?
हो सकता है कि मां अपने बच्चे को भूल भी
जाए,
पर मैं तुझे नहीं भूलूंगा।

16 देख, मैंने तेरा चित्र
अपनी हथेलियों पर खोदा है;
तेरी शहरपनाह मेरी आंखों के सम्मुख
निरन्तर विद्यमान है।
17 तेरे भवन निर्माता द्रुतगति से आ रहे हैं,
तेरे विध्वंसक, तुझे उजाड़नेवाले
तेरे पास से चले जाएंगे।
18 अपनी आंखें चारों ओर उठा, और देख;
तेरे पुत्र और पुत्रियां एकत्र हो गए,
वे तेरे पास आ रहे हैं।
मैं-प्रभु स्वयं अपनी शपथ लेता हूं :
तू उन सब को
आभूषण की तरह पहिन लेगी।
जैसे दुल्हन गहना धारण करती है,
वैसे तू उन्हें धारण करेगी!

19 'निस्सन्देह तेरे खण्डहर, देरे ध्वस्त स्थान,
तेरा उजाड़ देश, तेरे निवासियों के लिए
अब पर्याप्त नहीं होगा;
पर तुझे हड़पनेवाले लोग दूर भाग जाएंगे।
20 जो पीढ़ी तेरे निष्कासन के दिनों में
उत्पन्न हुई है,
वह तेरे कान में यह शिकायत करेगी,
"यह स्थान हम लोगों के लिए
छोटा पड़ रहा है,
हमें बसने के लिए और जगह चाहिए।"
21 तब तू अपने हृदय में यह कहेगी,
"इन्हें किसने मेरे लिए उत्पन्न किया है?
मैं तो निस्सन्तान और बांझ थी,
मैं निर्वासिता और परित्यक्ता थी।
किसने इन को पाला है।
मैं अकेली थी, ये सब कहाँ से आ गए?" '

22 स्वामी प्रभु यों कहता है :
'देख, मैं संकेत देने के लिए
राष्ट्रों की ओर अपना हाथ उठाऊंगा,
मैं कौमों की ओर अपना झण्डा खड़ा
करूंगा।
वे तेरे पुत्रों को अपनी गोद में उठा लेंगे,
और उनको वापस लाएंगे;
वे तेरी पुत्रियों को कन्धों पर बैठा कर
लाएंगे।
23 राजा तेरे बच्चों के पालक-पिता होंगे;
रानियाँ उनको दूध पिलानेवाली धाइयाँ
बनेंगी।
वे भूमि की ओर सिर झुकाकर
तुझे प्रणाम करेंगे,
वे तेरे पैरों की धूल चाटेंगे।
तब तुझे अनुभव होगा
कि निस्सन्देह मैं ही प्रभु हूं;
जो लोग मेरी प्रतीक्षा करते हैं,
वे निराश नहीं होंगे।

24 क्या शेर के मुंह से
शिकार छीना जा सकता है?
क्या अत्याचारी राजा के हाथ से
बन्दी छुड़ाए जा सकते हैं? कदापि नहीं।
25 पर प्रभु यों कहता है, 'मैं निस्सन्देह,
शेर के मुंह से उसका शिकार छुड़ाऊंगा,
अत्याचारी के हाथ से उसका बन्दी छीनूंगा।
जो तुझसे लड़ते हैं, उनसे मैं लड़ूंगा;
और मैं तेरे पुत्र-पुत्रियों को बचाऊंगा।
26 मैं तेरे बैरियों को विवश करूंगा,

49 : 15 हो 11 : 8-9; यश 54 : 8 49 : 22 यश 60 : 4; बारू 5 : 6 49 : 24 लू 11 : 21

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और वे अपना ही मांस खाएंगे;
वे शराब की तरह
अपना रक्त पीएंगे, और मतवाले होंगे।
तब समस्त मनुष्यजाति को यह अनुभव होगा
कि मैं ही तेरा उद्धारकर्ता प्रभु हूं,
तेरा मुक्तिदाता, याकूब का सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूं।'

50 प्रभु यों कहता है,
'क्या तुम्हारी मां के पास
तलाक-पत्र है,
जिससे यह प्रमाणित हो कि
मैंने उसे त्याग दिया है?
मैंने किस साहूकार के हाथ तुम्हें बेचा है?
सुनो, तुम स्वयं दुष्कर्मों के कारण बिक गए हो।
तुम्हारे ही अपराधों के कारण
तुम्हारी मां को तलाक मिला है!
2 क्या कारण है कि जब मैं आया
तब वहां कोई मनुष्य नहीं था?
जब मैं ने पुकारा
तब क्यों मुझे उत्तर देनेवाला वहाँ नहीं था?
क्या मेरा हाथ इतना छोटा हो गया कि
वह छुड़ा नहीं सकता?
क्या मुझ में उद्धार करने की शक्ति नहीं रही?
देखो, मैं अपनी डांट से
समुद्र को सुखा देता हूं,
मैं नदियों को मरुस्थल बना देता हूं।
उनकी मछलियाँ जल के अभाव में
प्यास से तड़प कर मर जाती हैं,
और बसाती हैं।
3 मैं ही आकाश को
मानो शोक का काला वस्त्र पहिनाता हूं;
और पश्चात्ताप के प्रतीक टाट-वस्त्रों को उसका आवरण बनाता हूं।'

प्रभु के सेवक का आज्ञा पालन करना

4 स्वामी-प्रभु ने मुझे
शिक्षित जन की वाणी दी है
ताकि मैं थके-मांदे लोगों को
शांति+ के वचन बोलकर संभाल सकूं।
वह प्रतिदिन सबेरे मुझे जगाता है;
मेरे कान खोलता है,
जिससे मैं शिष्य की तरह ध्यान दे सकूं।
5 स्वामी-प्रभु ने अपना सन्देश मुझे सुनाया;*
उससे न मैंने विरोध किया,
और न पीछे हटा।
6 मैंने कोड़ा मारनेवालों के सामने
अपनी पीठ कर दी;
दाढ़ी नोचनेवालों की ओर
अपने गाल कर दिए।
मैंने अपमान सहा,
उनके थूक से अपना मुख नहीं हटाया।
7 स्वामी-प्रभु मेरी सहायता करता है,
अत: मैं हताश नहीं हुआ।
मैं अपना मुंह चकमक पत्थर की तरह दृढ़ बनाए रहा।
मैं जानता था कि
मुझे पराजय का अपमान नहीं सहना पड़ेगा।
8 जो मुझे निर्दोष सिद्ध करता है,
वह मेरे निकट है,
मुझ से कौन मुकदमा लड़ेगा?
हम आमने-सामने खड़े हों।
मेरा बैरी कौन है? वह मेरे समीप आए।
9 देखो, स्वामी-प्रभु मेरी सहायता करता है;
कौन मुझे दोषी ठहरा सकता है?
मुझ पर दोष लगानेवाले
वस्त्र के सदृश जीर्ण हो जाएंगे,
उनको कीड़े खा जाएंगे।
10 तुममें कौन ऐसा व्यक्ति है,
जो प्रभु की श्रद्धा-भक्ति** करता है,
जो प्रभु के सेवक के वचन का पालन करता है,

+ अथवा 'सांत्वना' * शब्दश: 'मेरा कान खोला!' ** अथवा, 'डरता है।'

50 : 1 व्य 24 : 1; हो 2 : 2; बारू 4 : 6 [illegible] 12; गण 11 : 23 50 : 4 नि 4 : 11; मत 11 : 22
50 : 6 मत 26 : 67; यश 52 : 13-53 : 12 50 : 7 यहेज 3 : 8-9 50 : 8 राम 8 : 33-34
50 : 9 अय्य 13 : 28; इब्र 1 : 11-12 50 : 10 यो 3 : 11

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जिसके साथ दीपक का प्रकाश नहीं है,
और अन्धकार में चलता है,
वह प्रभु के नाम पर भरोसा करे,
वह परमेश्वर का सहारा ले!
11 ओ आग जलानेवालो!
ओ अग्निबाण छोड़ने वालो!
तुम्हें स्वयं अपनी जलाई हुई आग में,
अग्निबाणों से सुलगाई हुई अग्नि में चलना पड़ेगा;
मेरा हाथ ही तुम्हें यह भोगने पर विवश करेगा।
तुम संताप में पड़े रहोगे।

सियोन को शांतिदायक वचन

51 ओ धर्म पर आचरण करनेवालो!
प्रभु को ढूंढ़नेवालो, मेरी बात सुनो!
जिस चट्टान से तुम काटे गए,
जिस खदान से तुम निकाले गए,
उस पर ध्यान दो।
2 अपने पिता अब्राहम का,
अपनी माता सारा का ध्यान करो।
जब अब्राहम अकेला था,
तब मैं-प्रभु ने उसे बुलाया,
मैंने उसे आशिष दी,
और उसको एक से अनेक बनाया।
3 मैं-प्रभु सियोन को सांत्वना प्रदान करूंगा;
मैं उसके उजाड़ स्थलों को शान्ति दूंगा,
उसके निर्जन प्रदश को
अदन वाटिका के सदृश हरा-भरा कर दूंगा।
उसका मरुस्थल मेरे उद्यान के समान
हरा-भरा हो जाएगा।
सियोन के हर कोने में
हर्ष और आनन्द उपलब्ध होगा;
चारों ओर धन्यवाद का गीत,
और स्तुतिगान गूंजेगा।

4 ओ मेरे निज लोगो, मेरी बात पर ध्यान दो।
ओ मेरी कौम, मेरी ओर कान लगा,
क्योंकि मेरे मुंह से व्यवस्था निकलगी;
मैं न्याय का सिद्धान्त प्रकट करूंगा,
जो सब जातियों के लिए ज्योति बनेगा।
5 मेरा मुक्ति-कार्य समीप है;
मेरा उद्धार ज्योति के सदृश प्रकट होगा;
मैं अपने भुजबल से
सब राष्ट्रों पर शासन करूंगा।
समुद्रतट के द्वीप मेरी प्रतीक्षा करेंगे;
वे मेरे सामर्थ्य पर आशा रखेंगे।
6 अपनी आंखें आकाश की ओर उठाओ,
पृथ्वी पर दृष्टि डालो।
धुएँ के समान आकाश लुप्त हो जाएगा,
पृथ्वी वस्त्र के सदृश जीर्ण-शीर्ण हो जाएगी;
उस पर निवास करनेवाले
कीड़े-मकोड़ों के समान नष्ट हो जाएंगे,
किन्तु मेरा उद्धार सदा विद्यमान रहेगा
मेरे मुक्ति-कार्य का कभी अन्त न होगा।

7 ओ धर्म के जाननेवालो,
जिनके हृदय में मेरी व्यवस्था विद्यमान है,
मेरी बात सुनो!
मनुष्यों की निन्दा से मत डरो।
उनके अपशब्दों से नहीं घबराओ।
8 क्योंकि घुन उन्हें कपड़ों की तरह खा लेगा;
कीड़ा उन्हें ऊन के सदृश चाट जाएगा।
पर मेरा मुक्ति-कार्य सदा विद्यमान रहेगा;
मैं पीढ़ी से पीढ़ी
मनुष्यों का उद्धार करता रहूंगा।

9 ओ प्रभु की भुजा! जाग! जाग!
और अपने बल को धारण कर।
जैसी तू प्राचीनकाल में,
पुरानी पीढ़ियों के समय में जागी थी,
वैसे आज भी जाग!
ओ प्रभु की भुजा!
क्या तू वही नहीं है
जिसने रहब के टुकड़े-टुकड़े किए थे,
जिसने जल-राक्षस को बेधा था?
10 क्या तू वही नहीं है
जिसने समुद्र को शुष्क कर दिया था,
जिसने अतल महासागर के जल को सुखा दिया था,

---

51 : 1 मत 6 : 33 **51 : 2** रोम 4 : 1 **51 : 3** उत 2 : 8; यहेज 36 : 35 **51 : 6** मत 24 : 35; 2 पत 3 : 10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जिसने गुलामी के बंधन से छुड़ाए गए
लोगों को उस पार ले जाने के लिए
समुद्र की गहराई को मार्ग बना दिया था?
11 प्रभु के द्वारा मुक्त किए गए लोग
हर्ष के गीत गाते हुए सियोन में आएंगे।
शाश्वत आनन्द से उनके मुख चमकते होंगे।
उन्हें हर्ष और सुख प्राप्त होगा।
उनके दु:ख और आहों का अन्त हो जाएगा।

12 प्रभु कहता है: 'मैं, मैं ही वह हूं,
जो तुझे शांति देता है।
तब तू नश्वर मनुष्य से, घास के समान तत्काल
सूख जानेवाले इन्सान से क्यों डरता है?
13 तू अपने सृजक प्रभु को क्यों भूल गया,
जिसने आकाश को फैलाया,
जिसने पृथ्वी की नींव डाली?
तू दिन-भर, निरन्तर
अत्याचार करनेवाले के क्रोध से
क्यों भयभीत रहता है?
जब वह तुझे नष्ट करने को तत्पर होता है
तब तू क्यों थर-थर कांपता है?
कहां है अत्याचार करनेवाले का क्रोध?

14 'बन्दी, जो जंजीर के भार से दबा है,
अविलम्ब मुक्त होगा!
वह मरेगा नहीं,
और न "मृत्यु के गड्ढे" में फेंका जाएगा।
उसे भोजन का अभाव भी न होगा;
15 क्योंकि मैं तेरा प्रभु परमेश्वर हूं,
मैं ही सागर को आन्दोलित करता हूं,
जिससे उसकी लहरें गर्जन करती हैं।
मेरा नाम "स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु" है।
16 मैंने अपने शब्द तेरे मुंह में रखे हैं;
मैंने अपने हाथ की छाया में
तुझे छिपाकर रखा है।
मैंने ही आकाश को फैलाया है,
मैंने ही पृथ्वी की नींव डाली है।
मैं सियोन से यह कहता हूं:
"तू ही मेरी प्रजा है।" '

17 ओ यरूशलेम नगरी, जाग! जाग! उठ!
तूने प्रभु के हाथ से
उसके क्रोध का प्याला पी लिया था,
प्याले की लड़खड़ा देनेवाली शराब की
एक-एक बूंद तूने पी थी।
18 जिन पुत्रों को तूने जन्म दिया,
उनमें एक भी ऐसा पुत्र नहीं निकला
जो तुझे सम्भाल सके।
जिन पुत्रों को तूने पाला-पोसा
उनमें एक भी ऐसा पुत्र नहीं हुआ
जो तेरा हाथ थाम सके!
19 ये दो विपत्तियाँ तुझ पर टूटीं:
तबाही और विनाश;
अकाल और शत्रु का आक्रमण!
कौन तेरे प्रति सहानुभूति प्रकट करेगा?
कौन तुझे शान्ति देगा?
20 तेरे पुत्र मूर्छित पड़े हैं,
वे जाल में फंसे हिरण के सदृश
प्रत्येक गली के छोर पर पड़े हैं।
प्रभु के प्रकोप की मार से,
तुम्हारे परमेश्वर की डांट से
वे आहत हैं।

21 ओ पीड़ित नगरी, यह बात सुन!
तूने मदिरा पी तो है, पर अंगूर की नहीं!
22 तेरा स्वामी-प्रभु परमेश्वर,
जो अपने निज लोगों का मुकदमा लड़ता है,
तुझ से यों कहता है:
'देख मैंने तेरे हाथ से
लड़खड़ानेवाली मदिरा का प्याला
ले लिया है;
तू मेरे क्रोध का प्याला फिर कभी नहीं पियेगी।
23 पर मैं यह प्याला
उन लोगों के हाथ में दूंगा

51 : 17 प्रक 14 : 10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जिन्होंने तुझे दुःख दिया है,
जिन्होंने तुझसे कहा था,
''भूमि पर लेट, हम तेरे ऊपर से जाएंगे।''
तूने अपनी पीठ को मैदान बना दिया था,
कि वे तुझ पर से गुजर सकें!
तू उनके लिए मार्ग बन गई थी।'

प्रभु यरूशलेम को गुलामी से मुक्त करेगा

52 ओ सियोन, जाग, जाग!
अपना बल धारण कर!
ओ पवित्र नगर यरूशलेम,
अपने सुन्दर वस्त्र पहिन!
अब खतना-रहित और अशुद्ध विधर्मी
तुझ में प्रवेश नहीं करेंगे।
2 ओ बन्दी यरूशलेम,
उठ, और अपने शरीर से धूल झाड़!
ओ सियोन के बन्दी नगर-निवासियो,
अपनी गरदन का जूआ उतारकर फेंक दो।
3 प्रभु यों कहता है : 'तुम गुलामी में बिना
मूल्य बेच दिए गए थे, और अब तुम बिना मूल्य
मुक्त भी किए जाओगे।' 4 स्वामी-प्रभु यों कहता
है : 'मेरे निज लोग पहले मिस्र देश में प्रवास
करने गए थे, और फिर असीरियाई सेना ने भी
उन पर बिना कारण अत्याचार किया। 5 अत: अब
यहाँ मैं क्या करूं, जब कि मेरे निज लोगों को
उनके शत्रुओं ने बिना किसी कारण के गुलाम
बनाया और उन्हें ले गए? मैं-प्रभु यों कहता हूं:
उनके शासक उन्हें रुलाते हैं और दिन-भर
मेरे नाम की निन्दा निरंतर करते हैं। 6 अत: मेरे
निज लोग मेरे नाम के सामर्थ्य का अनुभव
करेंगे। उन्हें उस दिन यह अनुभव होगा कि जो
उनसे यह कहता था कि ''मैं यहाँ हूं'' वह मैं
ही हूं।'

7 पहाड़ों पर उसके पैर कितने सुन्दर दिखाई देते
हैं,
जो शुभ-सन्देश सुनाने के लिए आता है,
जो शांति का सन्देश सुनाता है,
जो कुशल-मंगल का समाचार लाता है,
जो उद्धार की सूचना देता है,
जो सियोन से यह कहता है :
'तेरा परमेश्वर राजा है!*'
8 सुन, तेरे पहरेदार उच्चस्वर में
सब मिलकर, आनन्द से गीत गा रहे हैं;
वे साक्षात् देख रहे हैं
कि प्रभु सियोन को लौट रहा है।
9 ओ यरूशलेम के उजाड़ स्थानो!
उमंग में, सब मिलकर गीत गाओ;
क्योंकि प्रभु ने अपने निज लोगों को
शान्ति प्रदान की है;
उसने यरूशलेम को मुक्त किया है।
10 सब राष्ट्रों की आंखों के सामने
युद्ध के लिए प्रभु ने
अपनी पवित्र भुजा प्रकट की है।
समस्त पृथ्वी के देश,
एक कोने से दूसरे कोने तक,
हमारे परमेश्वर के उद्धार का दर्शन करेंगे।

11 चले जाओ, चले जाओ;
बेबीलोन से बाहर निकलो।
अशुद्ध वस्तु को स्पर्श मत करो।
ओ प्रभु के पवित्र पात्रों को उठानेवालो!
बेबीलोन के मध्य से बाहर निकलो,
और अपने-आप को शुद्ध करो।
12 पर तुम्हें वहाँ से
हड़बड़ी में नहीं निकलना होगा;
तुम्हें प्राण बचाकर भागना ही नहीं पड़ेगा;
क्योंकि प्रभु तुम्हारे आगे-आगे चलेगा,
इस्राएल का परमेश्वर
तुम्हारे पीछे-पीछे रक्षक बन कर चलेगा।

प्रभु के सेवक का दुःख-भोग

13 प्रभु कहता है: 'देखो, मेरा सेवक सफल
होगा; वह उन्नत होगा;
वह ऊंचा उठाया जाएगा; वह अति महान
होगा।

---

* अथवा, ''तेरा परमेश्वर राज्य करता है,'' अथवा ''तेरा परमेश्वर राजा बन गया है।''

52 : 1 प्रक 21 : 2.27 **52 : 5** रोम 2 : 24 **52 : 7** रोम 10 : 15; इफ 6 : 15; प्रे 10 : 36 **52 : 10** लू 3 : 6
52 : 11 2 कुर 6 : 17; प्रक 18 : 4 52:12 नि 12 : 33 **52 : 13** यश 42 : 1; फिल 2 : 9

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

14 जैसे अनेक लोग उसे[+] देखकर चकित हुए,
(क्योंकि उसका रूप विकृत हो गया था,
यहाँ तक कि वह मानव-रूप जैसा
दिखाई नहीं देता था।
उसकी आकृति भी
मनुष्यों जैसी नहीं रह गई थी।)
15 वैसे ही वह अनेक राष्ट्रों को चकित करेगा।
उसके सम्मुख राजा चुप रहेंगे;
क्योंकि जिसके विषय में
उन्हें नहीं बताया गया था,
वे उसको देखेंगे।
जो उन्होंने सुना भी नहीं था,
वे उसको समझेंगे।'

53 जो हमने सुना, उस पर कौन विश्वास करेगा?
किस पर प्रभु का भुजबल प्रकट हुआ?
2 प्रभु का सेवक एक नन्हा पौधा-जैसा
उसके सम्मुख उगा;
वह जड़ के सदृश शुष्क भूमि से फूटा।
उसमें न रूप था, और न आकर्षण
कि हम उसे देखते;
उसमें सुन्दरता भी न थी,
कि हम उसकी कामना करते।
3 लोगों ने उससे घृणा की;
उन्होंने उसको त्याग दिया।
वह दु:खी मनुष्य था,
केवल पीड़ा[*] से उसकी पहचान थी।
उसको देखते ही लोग अपना मुख फेर लेते थे।
हम ने उससे घृणा की
और उसका मूल्य नहीं जाना।
4 निस्सन्देह उसने हमारी पीड़ा को सहा,
और हमारे दु:खों को भोगा।
फिर भी हमने समझा
कि परमेश्वर ने उसे घायल किया है,
उसे दु:खी और पीड़ित किया है।
5 किन्तु वह हमारे पापों के कारण घायल हुआ;
वह हमारे दुष्कर्मों के कारण आहत हुआ।
उसने अपने शरीर पर ताड़ना-स्वरूप
मार सही,
और उसकी मार से हमारा कल्याण हुआ।
उसने कोड़े खाए, जिससे हम स्वस्थ हुए।
6 हम-सब भटकी हुई भेड़ों के सदृश थे;
प्रत्येक व्यक्ति अपने-अपने मार्ग पर
चल रहा था।
परन्तु प्रभु ने हमारे सब दुष्कर्मों का बोझ
उस पर लाद दिया।

7 वह सताया गया, उसे पीड़ित किया गया,
तोभी उसके मुंह से 'आह' न निकली।
जैसे मेमना वध के लिए
ले जाते समय चुप रहता है,
जैसे भेड़ ऊन कतरने वाले के सामने
शान्त रहती है,
वैसे ही वह मौन था।
8 अत्याचार और दण्ड-आज्ञा के पश्चात्
वे उसे वध के लिए ले गए।
उसकी पीढ़ी के किस व्यक्ति ने
इस बात पर ध्यान दिया
कि वह जीव-लोक से उठा लिया गया
और अपने लोगों[++] के अपराधों के लिए
मारा गया?
9 उन्होंने दुर्जनों के मध्य उसकी कबर बनाई;
एक धनवान की कबर में वह गाड़ा गया,
यद्यपि उसने कोई हिंसा नहीं की थी,
और न अपने मुंह से किसी को धोखा दिया
था।

10 यह प्रभु की इच्छा थी कि वह मार सहे,
प्रभु ने उसे दु:ख से पीड़ित किया।
जब वह पाप-बलि के लिए
अपना प्राण अर्पित करता है,
तब वह अपने वंश को देखेगा;

+ मूल में, 'तुझे'। *अथवा, 'रोग'। ++ पाठांतर 'मेरे लोगों

52 : 14 भज 22 : 6 ·मूल में, 'तुझे' **52 : 15** रोम 15 : 21 **53 : 1** यो 12 : 38; रोम 10 : 16 **53 : 4** मत 8 : 17; 1 पत 2 : 24 **53 : 5** गल 3 : 13; रोम 4 : 25 **53 : 7** प्रे 8 : 32; प्रक 5 : 6; यो 1 : 29 **53 : 9** मत 27 : 57; 1 पत 2 : 22 **53 : 10** 2 कुर 5 : 21

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वह दीर्घायु प्राप्त करेगा।
उसके हाथ से प्रभु की इच्छा सफल होगी।
11 जो पीड़ा उसने अपने प्राण में सही है,
उसका फल** देखकर वह सन्तुष्ट होगा।
प्रभु कहता है : 'मेरा धार्मिक सेवक
अपने ज्ञान के द्वारा*** अनेक लोगों को
धार्मिक बनाएगा;
वह उनके दुष्कर्मों का फल स्वयं भोगेगा।
12 अत: मैं महान व्यक्तियों के साथ
उसका भाग बांटूंगा,
और वह बलवानों के साथ "लूट" बांटेगा।
उसने मृत्यु की वेदी पर
अपना प्राण अर्पित कर दिया;
और वह अपराधियों के साथ गिना गया।
फिर भी उसने अनेक लोगों के पाप का
बोझ उठाया,
और अपराधियों के लिए प्रार्थना की।'

इस्राएल के प्रति प्रभु का शाश्वत प्रेम

54 ओ यरूशलेम नगरी! तू बांझ है;
तू निस्सन्तान है!
तूने प्रसव-पीड़ा नहीं भोगी;
पर अब तू उमंग में, उच्च स्वर में गीत गा।
क्योंकि प्रभु यह कहता है :
परित्यक्त स्त्री को सुहागिन स्त्री से अधिक
सन्तान होगी।
2 अपने तम्बू का स्थान चौड़ा कर,
अपने शिविर की कनातें लम्बी कर;
हाथ मत रोक;
अपनी रस्सियों को लम्बा
और खूंटों को मजबूत कर।
3 क्योंकि अब तू दाएं-बाएँ फैलेगी,
तेरे वंशज राष्ट्रों पर अधिकार करेंगे,
वे उजाड़ नगरों को आबाद करेंगे।

4 मत डर; क्योंकि अब तू लज्जित न होगी।
मत घबरा; क्योंकि अब तू अपमानित न होगी।
जो अपमान तूने जवानी में सहा था,
उसे तू भूल जाएगी।
अपने विधवापन का कलंक
तूझे याद न रहेगा।
5 क्योंकि तुझे 'बनानेवाला' ही तेरा पति है;
उसका नाम है—'स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु'।
इस्राएल का पवित्र परमेश्वर
तेरा मुक्तिदाता है।
वह सम्पूर्ण पृथ्वी का परमेश्वर कहलाता है।
6 प्रभु ने तुझे ऐसे बुलाया है,
जैसे त्यागी हुई और दु:खी मन वाली स्त्री को
पुन: बुलाया जाता है।
क्या कोई युवावस्था की पत्नी को भुला
सकता है?
तेरा परमेश्वर यह कहता है:
7 'केवल कुछ पल के लिए
मैंने तुझे त्याग दिया था;
पर अब मैं तुझ पर अपार दया कर
तुझे एकत्र करूंगा।
8 क्रोध के आवेश में मैं ने क्षण भर के लिए
तुझ से अपना मुंह छिपा लिया था;
पर अब मैं तेरे प्रति
शाश्वत, करुणापूर्ण दया करूंगा।'
तेरा मुक्तिदाता प्रभु यह कहता है।

9 'मेरे लिए यह वैसा है जैसा नूह के समय में था:
मैंने शपथ ली थी
कि जल-प्रलय से पृथ्वी पुन: न डूबेगी।
वैसी ही शपथ अब मैं पुन: ले रहा हूं:
मैं तुझसे नाराज न होऊंगा,
मैं तुझे फिर न डांटूंगा।
10 चाहे पहाड़ अपने स्थान से टल जाएं,
चाहे पहाड़ियाँ अपने स्थान से हिल जाएं,
किन्तु तुझ पर से मेरी करुणा नहीं हटेगी,
मेरा शान्ति-विधान नहीं टलेगा।'
तुझ पर दया करनेवाला प्रभु यह कहता है।

नयी यरूशलेम नगरी

11 'ओ दुखियारी, तूफान की झकझोरी,

**पाठांतर 'ज्योति' ***अथवा दूसरे शब्दक्रम में; 'वह अपने ज्ञान के द्वारा सन्तुष्ट होगा।'

53 : 11 रोम 5 : 18 **53 : 12** मक 15 : 28; लू 22 : 37; 1 पत 2 : 24 **54 : 1** गल 4 : 27; 1 शम 2 : 5 **54 : 5** हो 2 : 19 **54 : 8** यिर 31 : 3 **54 : 9** उत 9 :8–17 **54 : 10** प्रक 21 : 18–21; यहूदी 16 : 15 **54 : 11** तोब 13 : 16–17

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तुझको शान्ति नहीं मिली।
ओ यरूशलेम नगरी!
अब मैं तेरे पत्थरों की पच्चीकारी करूंगा,
और उन्हें अच्छे ढंग से लगाऊंगा;
मैं तेरी नींव में नीलमणि डालूंगा।
12 मैं तेरे कलश⁺ मणिकों से,
तेरे प्रवेश-द्वार लालड़ियों से
और परकोटे बहुमूल्य रत्नों से बनाऊंगा।
13 स्वयं मैं-प्रभु तेरी संतान को शिक्षा दूंगा;
और तेरी संतान अत्यन्त समृद्ध होगी।
14 तू धर्म की नींव पर स्थिर होगी,
तू नहीं डरेगी;
अत्याचार से तू बची रहेगी;
आतंक तेरे पास फटकेगा भी नहीं।
15 यदि तुझ पर आक्रमण होगा,
तो यह मेरी ओर से नहीं होगा;
जो शत्रु तुझसे लड़ेगा,
वह तुझ से पराजित होगा।
16 देख, लोहार को,
जो कोयले की आग धधकाता है,
और युद्ध के लिए हथियार बनाता है;
उसको मैंने ही सृजा है।
मैंने विनाश के लिए
विध्वंसक की भी सृष्टि की है।
17 तेरे विरुद्ध बनाया गया
कोई भी शस्त्र सफल न होगा;
जो साक्षी न्यायालय में तेरे विरुद्ध प्रस्तुत होगी,
तू उसको निरस्त करने में सफल होगी।
यह प्रभु के सेवकों की नियति* है,
मैं उनको विजय** प्रदान करता हूं।'
प्रभु यह कहता है।

सब मनुष्यों को कृपा का आवाहन

55 सब प्यासे लोगो, जल के पास आओ।
जिसके पास पैसा नहीं है, वह भी आए।
सब आओ, खरीदो, और खाओ।
बिना पैसे के, बिना दाम के,
अंगूर-रस और दूध खरीदो।
2 जो भोजन नहीं है, उस पर
पैसा क्यों खर्च करते हो?
जिससे सन्तोष नहीं मिलता,
उसके लिए परिश्रम क्यों करते हो?
ध्यान से मेरी बात सुनो!
तब तुम्हें खाने को उत्तम वस्तु प्राप्त होगी,
और तुम स्वादिष्ट व्यंजन खाकर तृप्त होगे।
3 मेरी ओर कान दो, और मेरे पास आओ।
मेरी बात सुनो,
ताकि तुम्हारा प्राण जीवित रहे।
तब मैं दाऊद के प्रति अपनी अटूट करुणा के कारण
तुम्हारे साथ शाश्वत विधान स्थापित करूंगा।
4 देखो, मैंने दाऊद को
राष्ट्रों के लिए गवाह नियुक्त किया है;
वह कौमों का नेता और आदेश देनेवाला नायक है।

5 तू उन राष्ट्रों को बुलाएगा,
जिनको तू नहीं जानता है;
और जो राष्ट्र तुझको नहीं जानते हैं,
वे तेरे पास दौड़कर आएंगे।
तेरे प्रभु परमेश्वर के कारण,
इस्राएल के पवित्र परमेश्वर के कारण
वे तेरे पास आएंगे,
क्योंकि उसने तेरा गौरव बढ़ाया है।

6 जब तक प्रभु मिल सकता है,
उसको ढूंढ़ लो।
जब तक वह समीप है,
उसको पुकार लो।
7 दुर्जन मनुष्य अपने मार्ग को छोड़ दे,
और अधार्मिक व्यक्ति अपने बुरे विचारों को।
वह प्रभु की ओर लौटे,

⁺ अथवा 'कंगूरे'। * अथवा 'पैतृक भाग' ** अथवा, 'धार्मिक या निर्दोष सिद्ध करना'

54 : 13 यो 6 : 45; यिर 31 : 33-34 55 : 1 यो 4 : 14; 7 : 37; प्रक 21 : 6 55 : 2 नीति 9 : 3; यो 6 : 35; प्रव 24 : 19-22 55 : 3 2 शम 7 : 8; प्रे 13 : 34; इब्र 13 : 20 55 : 4 प्रक 1 : 5 55 : 6 आमो 5 : 4; 2 कुर 6 : 2 55 : 7 लू 15 : 20; जक 1 : 3

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जिससे प्रभु उस पर दया करे।
वह हमारे परमेश्वर के पास आए;
क्योंकि प्रभु उसे पूर्णत: क्षमा करेगा।
8 प्रभु यह कहता है : 'मेरे विचार
तुम्हारे विचारों के समान नहीं हैं,
और न तुम्हारे मार्ग मेरे मार्गों के सदृश हैं।
9 पृथ्वी से जितना दूर आकाश है,
उतने ही दूर मेरे मार्ग से तुम्हारे मार्ग हैं;
उतने ही तुम्हारे विचार मेरे विचारों से दूर हैं।

10 'आकाश से हिम गिरता है,
और वर्षा की बूंदें टपकती हैं;
वे लौटकर आकाश को नहीं जातीं,
वरन् पृथ्वी पर भूमि को सींचती हैं।
वे अन्न को उपजाती हैं;
और बोनेवाले को बीज
और खानेवाले को भोजन प्राप्त होता है।
11 ऐसे ही जो शब्द मेरे मुंह से निकलता है,
वह मेरे पास खाली नहीं लौटेगा;
वरन् जिस उद्देश्य से मैंने उसको उच्चारा था,
वह उसको पूरा करेगा;
जिसके लिए मैंने उसको भेजा था,
वह उसको सफल करेगा।'

12 तुम इस देश से आनन्दपूर्वक निकलोगे,
और कुशलतापूर्वक तुम्हारा नेतृत्व किया जाएगा।
मार्ग में आनेवाली पहाड़ियां और पहाड़
तुम्हारे सम्मुख आनन्द के गीत गाएंगे;
मैदान के पेड़ हर्ष से तालियाँ बजाएंगे।
13 तब जिन स्थानों पर भटकटैया के वृक्ष होते हैं, वहां सनोवर उगेंगे,
बिच्छू झाड़ियों के स्थान पर मेहँदी उग आएगी।
यह आश्चर्यपूर्ण घटना प्रभु का स्मारक चिह्न होगी;
यह शाश्वत चिह्न होगा
जो कभी नहीं मिटेगा।

सब के लिए व्यवस्था-पालन का पुरस्कार

56 प्रभु यों कहता है :
'न्याय का पालन करो,
और धर्म के कार्य करो;
क्योंकि मेरी मुक्ति का आगमन समीप है,
मेरा उद्धार शीघ्र प्रकट होगा।

2 'धन्य है वह मनुष्य
जो न्याय का पालन करता है;
धन्य है मानव-पुत्र
जो धर्म को पकड़े रहता है,
जो विश्राम-दिवस को पवित्र मानता है,
और उसको अपवित्र नहीं करता,
जो सब प्रकार की बुराई से
स्वयं को दूर रखता है।'

3 जो विदेशी व्यक्ति
प्रभु का अनुयायी हो गया है,
वह यह न कहे : 'प्रभु निस्सन्देह,
मुझे अपने निज लोगों से अलग करेगा।'
खोजा व्यक्ति भी यह न कहे :
'मैं तो सूखा वृक्ष हूं!'
4 क्योंकि प्रभु यह कहता है : 'जो खोजा व्यक्ति
मेरे विश्राम-दिवसों का पालन करता है,
जो उन कामों को करता है,
जिनसे मैं प्रसन्न होता हूं,
जो मेरे विधान पर दृढ़ रहता है,
5 मैं उसको अपने गृह में,
अपनी शहरपनाह के भीतर
ऐसा स्थायी नाम दूंगा
जो पुत्रों और पुत्रियों से श्रेष्ठ होगा।
मैं उसको शाश्वत नाम दूंगा जो कभी न मिटेगा।

6 'जो विदशी व्यक्ति
मुझ-प्रभु के अनुयायी हो गए हैं,
जो मेरी सेवा करते हैं, मेरे नाम से प्रेम करते हैं,

---

55 : 10 2 कुर 9 : 10 55 : 11 1 थिस 2 : 13 56 : 2 नि 20 : 11 55 : 4 प्रक 1 : 1 55 : 6 आमो 5 : 4; 2 कुर 6 : 2 55 : 7 लू 15 : 20; जक 1 : 3 55 : 10 2 कुर 9 : 10 55 : 11 1 थिस 2 : 13 56 : 2 नि 20 : 11 56 : 3 व्य 23 : 1; प्रे 8 : 27 56 : 5 प्रक 3 : 12

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और मेरे सेवक हैं,
जो विश्राम-दिवस का पालन करते हैं
और उसको अपवित्र नहीं करते हैं,
जो मेरे विधान पर दृढ़ हैं;
7 उनको मैं अपने पवित्र पर्वत पर लाऊंगा;
अपने प्रार्थनाघर में
उन्हें आनन्द प्रदान करूंगा।
जब वे वेदी पर अपनी अग्निबलि तथा
अन्न-बलि चढ़ाएंगे
तब मैं उनकी बलि स्वीकार करूंगा;
क्योंकि मेरा घर सब जातियों के लिए
प्रार्थना का घर कहलाएगा।'

8 स्वामी-प्रभु जो इस्राएल के निष्कासित
लोगों को एकत्र करता है,
यह कहता है : 'जो एकत्र हो चुके हैं
उनके अतिरिक्त अन्य लोगों को भी
मैं उनके पास एकत्र करूंगा।'

इस्राएली नेताओं को ताड़ना

9 ओ मैदान के सब पशुओ,
ओ वन-पशुओ, आओ, और सब खा जाओ।
10 इस्राएल के पहरेदार अन्धे हैं;
वे सबके सब अज्ञानी हैं।
वे गूंगे कुत्ते हैं, जो भौंक नहीं सकते।
उन्हें पड़े-पड़े नींद में स्वप्न देखना प्रिय है।
11 कुत्तों की भूख शान्त नहीं होती,
उनका पेट कभी नहीं भरता।
चरवाहों में भी समझ नहीं है,
वे अपने-अपने मार्ग पर चल रहे हैं,
उन सबको केवल अपने लाभ की
चिन्ता है।
12 वे एक दूसरे से कहते हैं :
'आओ, शराब ले आएं,
हम शराब पीकर छक जाएं,
कल का दिन भी
आज के समान अत्यन्त सुहावना होगा।'

57 जब धार्मिक मनुष्य मरता है,
तब इस पर कोई ध्यान नहीं देता।
भक्त मनुष्य उठा लिये जाते हैं,
पर यह बात कोई नहीं समझता :
विपत्ति आने से पूर्व
प्रभु भक्त मनुष्य को उठा लेता है।
2 भक्त मनुष्य को शान्ति प्राप्त होती है;
जो सन्मार्ग पर चलते हैं,
वे कबर* में भी शान्ति से सोते हैं।
3 किन्तु तुम, ओ जादूगरनी के पुत्रो,
ओ व्याभिचारिणी की सन्तान,
ओ वेश्या-पुत्रो, यहाँ पास आओ।
4 तुम किसका मजाक उड़ा रहे हो?
तुमने किसके विरुद्ध अपना मुंह खोला है?
तुम किसको जीभ निकालकर चिढ़ा रहे हो?
क्या तुम अपराध की सन्तान,
झूठ की औलाद नहीं हो?
5 तुम हर एक हरे वृक्ष के नीचे,
बांज वृक्ष के निकुंज में कामातुर पड़े रहते हो;
घाटियों में, चट्टानों की दरारों में
तुम अपने बच्चों की बलि चढ़ाते हो।
6 ओ भ्रष्ट नगरी! घाटी में पूजा के चिकने पत्थर
ही तेरा भाग हैं;
वे ही तेरा अंश हैं।
उनको ही तूने पेय-बलि चढ़ाई,
उनके लिए तू अन्न-बलि लाई।
क्या मैं-प्रभु तेरे इन कामों को देखकर
शान्त रहूंगा?
7 बड़े ऊंचे पहाड़ पर व्यभिचार के लिए
तूने सेज बिछा रखी है;
वहाँ तू बलि चढ़ाने गयी।
8 द्वार पर और चौखट की आड़ में
तूने देवता की आकृति बना रखी है।
तू मुझे छोड़कर,
दूसरों को अपना शरीर दिखाने के लिए
सेज पर चढ़ी।
तूने उसको चौड़ा किया,
और उनके साथ अपने शरीर का सौदा
किया।

---

*मूल में, 'शैया'
56 : 7 मला 1 : 11; मत 21 : 13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तूने उनकी सेजों को पसन्द किया,
और उनकी नग्नता पर दृष्टि डाली।
9 तू तेल लेकर मोलेक देवता के पास गई;
तू अनेक सुगन्धित द्रव्य काम में लाई।
तूने अपने दूतों को दूर-दूर तक भेजा,
यहाँ तक कि अधोलोक में भी।
10 तू मार्ग की दूरी के कारण थक गई,
पर तूने यह नहीं कहा, 'यह सब व्यर्थ है।'
तुझे नई पूजा-पद्धति से नई स्फूर्ति प्राप्त हुई,*
अत: तू नहीं थकी।

11 तूने किसके डर से
भयभीत होकर मुझ से झूठ कहा;
मुझे स्मरण नहीं किया,
मेरा विचार भी नहीं किया?
निस्सन्देह मैं बहुत समय तक चुप रहा,
इसलिए तूने मुझ से डरना छोड़ दिया।
12 मैं तेरी धार्मिकता को,
तेरे कामों को प्रकट करूंगा;
किन्तु उनसे तुझे कुछ लाभ न होगा।
13 जब तू दुहाई देगी, तब तेरी ये मूर्तियां,
जिनका अम्बार तूने लगा रखा है,
तुझे बचाएं।
हवा उन्हें उड़ा ले जाएगी,
वे एक ही फूंक में उड़ जाएंगी।
परन्तु जो मनुष्य मेरी शरण में आएगा,
वह इस देश पर अधिकार करेगा,
वह मेरे पवित्र पर्वत का अधिकारी होगा।

परमेश्वर की सहायता और स्वस्थ करने का सामर्थ्य

14 एक आवाज यह कहेगी : 'राजमार्ग बनाओ,
उसको बनाओ, राजमार्ग तैयार करो।
मेरे निज लोगों के मार्ग से
हर प्रकार की बाधा दूर करो।'
15 सर्वोच्च और महान परमेश्वर,
जिसका नाम पवित्र है,
जो अनन्तकाल तक जीवित है,
यह कहता है:
'मैं उच्च और पवित्र स्थान में
निवास करता हूं,
पर मैं उसके साथ भी विद्यमान रहता हूं
जिसकी आत्मा विदीर्ण और विनम्र है।
मैं उस विनम्र व्यक्ति की आत्मा को
संजीव करता हूं,
और उसके विदीर्ण हृदय को पुनर्जीवित।

16 'मैं इस्राएल पर सदा अभियोग नहीं लगाता रहूंगा,
और न सदा क्रुद्ध रहूंगा;
क्योंकि मुझसे आत्मा निसृत होता है,
मैंने ही जीवन का श्वास सृजा है।
17 मैं उसके लोभ के पाप के कारण
उससे क्रुद्ध हुआ था;
मैंने उसको मारा,
मैंने उससे अपना मुंह छिपा लिया,
मैं उससे नाराज था।
किन्तु वह अपने हृदय के अनुसार
अपने मार्ग पर चलता गया,
और धर्म-भ्रष्ट बना रहा।
18 मैंने उसका आचरण देखा,
तो भी मैं उसको स्वस्थ करूंगा।
मैं उसका पथ-प्रदर्शन करूंगा,
मैं उसकी क्षति के बदले में
उसको शान्ति प्रदान करूंगा।
जो उसके लिए शोक करते हैं,
उन्हें मैं स्वयं अपने मुंह से
शान्ति के वचन कहूंगा।'

19 प्रभु यह कहता है :
'जो समीप है, और जो दूर है,
दोनों का कल्याण हो, उन्हें शान्ति प्राप्त हो।
मैं उन्हें स्वस्थ करूंगा।
20 परन्तु दुर्जन व्यक्ति
उमड़ते हुए समुद्र के समान है,
जो कभी शान्त नहीं होता,

*शब्दश: 'तूने अपने हाथ का जीवन पाया।'
57 : 15 मत 5 : 3 **57 : 19** प्रे 2 : 39; इफ 2 : 17

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जिसका जल कीचड़ और कचरा
उछालता रहता है।'
21 मेरा परमेश्वर कहता है :
'दुर्जनों को कहीं शान्ति नहीं मिलती।'

पर्वों को मनाने की उचित विधि

58 गला फाड़कर पुकार, तुरही के उच्च
स्वर के सदृश आवाज दे!
मेरे निज लोगों पर उनके अपराध प्रकट कर,
याकूब के वंशजों को उनके पाप बता।
2 वे प्रतिदिन मुझे ढूंढ़ते हैं;
वे मेरे मार्ग जानने की इच्छा प्रकट करते हैं;
मानो वे धर्म-कर्म करनेवाला राष्ट्र हैं,
जिसने अपने ईश्वर के न्याय-सिद्धान्तों का
परित्याग नहीं किया है।
वे मुझ से धर्म के नियम पूछते हैं।
वे मुझ-परमेश्वर के समीप आते,
और प्रसन्न होते हैं।
3 वे मुझसे कहते हैं: 'हम उपवास करते हैं
किन्तु तू उसको देखता नहीं,
हम अपने प्राण को कष्ट देते हैं,
परन्तु तू उस पर ध्यान नहीं देता।'
देखो, जब तुम उपवास करते हो,
तब तुम्हारा उद्देश्य
अपनी इच्छाओं को पूर्ण करना होता है;
तुम अपने मजदूरों पर अत्याचार करते हो।
4 देखो, तुम केवल लड़ाई-झगड़ा करने के
लिए,
दुष्टता से घूसा मारने के लिए उपवास करते
हो।
तुम्हारे आजकल के उपवास से
तुम्हारी प्रार्थना स्वर्ग में नहीं सुनाई देगी!
5 क्या मैं ऐसे उपवास से प्रसन्न होता हूं?
क्या इस दिन उपवास करनेवाले व्यक्ति को
अपने प्राण को कष्ट नहीं देना चाहिए?
क्या सिर को झाऊ वृक्ष की तरह झुकाना,
अपने नीचे राख और टाट-वस्त्र बिछाना,
उपवास कहलाता है?
क्या तुम इसको उपवास कहते हो?
क्या ऐसा उपवास का दिन मुझे स्वीकार
होगा?
6 जिस उपवास से मैं प्रसन्न होता हूं,
वह यह है :
दुर्जनता के बन्धनों से मनुष्य को मुक्त करना,
व्यक्ति की गरदन से जूआ उतारना,
अत्याचार की गुलामी में कैद इन्सान को
स्वतन्त्र करना,
वस्तुत: हर प्रकार की गुलामी से
मनुष्य को स्वतंत्र करना।
7 अपना भोजन भूखों को खिलाना,
बेघर गरीब को अपने घर में जगह देना,
किसी को नंगे देखकर उसे कपड़े
पहिनाना,
अपने जरूरतमन्द भाई-बहिन से मुंह न छिपाना।
8 तब तेरे आनन्द का प्रकाश
प्रात: के पौ फटने के सदृश चमकेगा।
तेरा घाव अति शीघ्र भरेगा।
तेरी धार्मिकता मार्ग में
तेरे आगे-आगे तेरा मार्गदर्शन करेगी,
और प्रभु की महिमा तेरे पीछे-पीछे
रक्षक बनकर तेरी रक्षा करेगी।
9 तब तू मुझ-प्रभु को संकट में पुकारेगा
और वह तुझको उत्तर देगा।
तू उसकी दुहाई देगा,
और वह तुझसे कहेगा: 'मैं प्रस्तुत हूं।'
यदि तू अपने मध्य से दूसरे को गुलाम बनाना,
लोगों पर अंगुली उठाना,
दुष्ट वचन बोलना दूर कर दे;
10 यदि भूखे व्यक्ति के लिए
अपना भण्डार-गृह खोल दे*,
पीड़ित मनुष्य के प्राण को सन्तुष्ट करे,
तो तेरे आनन्द का प्रकाश
अंधकार में चमकेगा,
और तेरे दु:ख का अंधकार
दोपहर के सुखद प्रकाश में

* अक्षरश: 'अपने प्राण उण्डेल दे'। पाठभेद: 'अपनी रोटी खिला दे'।
58 : 3 मला 3 : 14; मत 6 : 18 58 : 6 प्रे 8 : 23 58 : 7 मत 25 : 35

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

परिणत हो जाएगा।
11 प्रभु निरन्तर तेरा मार्गदर्शन करता रहेगा,
और वह अभाव के दिनों में भी
तुझे तृप्त करेगा।
वह तेरी हड्डियों को मजबूत बनाएगा,
और तू सिंचे हुए उद्यान के सदृश
हरा-भरा होगा;
तू उस झरने के समान होगा,
जिसका जल कभी नहीं सूखता।
12 तेरे नगर के प्राचीन खण्डहरों का
पुनः निर्माण होगा,
जो नींव अनेक वर्षों से उजाड़ पड़ी थी,
तू उसको फिर उठाएगा,
तू दरारों को भरनेवाला,
और घरों में निवास के हेतु
गलियों को सुधारनेवाला कहलाएगा।

विश्राम-दिवस का पालन करना

13 यदि तू विश्राम-दिवस को अपवित्र नहीं करेगा,
मेरे पवित्र दिवस पर
अपना दैनिक काम-धन्धा नहीं करेगा,
और विश्राम-दिवस को आनन्द-पर्व मानेगा,
उसको प्रभु का पवित्र और सम्माननीय दिन समझेगा;
यदि तू अपने मार्ग पर
अपने मन के अनुरूप आचरण नहीं करेगा,
अपना काम-काज नहीं करेगा,
और न व्यर्थ बातों में उसको गुजारेगा
और यों उसका सम्मान करेगा;
14 तो तुझे मुझ-प्रभु में सुख प्राप्त होगा,
और मैं तुझे पृथ्वी के उच्चतम स्थानों में
विजय प्रदान करूंगा;
मैं तुझे तेरे पिता याकूब का उत्तराधिकार
भोगने के लिए प्रदान करूंगा।
स्वयं मेरे मुंह से यह वचन निकला है।

राष्ट्रीय दुराचरण

59 देखो, प्रभु का हाथ इतना छोटा नहीं है
कि वह बचा न सके।
प्रभु के कान बहरे नहीं हैं,
कि वह सुन न सके।
2 किन्तु तुम्हारे अधर्म के कामों ने
तुम्हारे और तुम्हारे परमेश्वर के मध्य
अलगाव की दीवार खड़ी कर दी है।
तुम्हारे पापों ने परमेश्वर के मुख को
तुम से छिपा दिया है,
इसलिए वह तुम्हारी बात नहीं सुनता।
3 तुम्हारे हाथ हत्या के खून से,
और तुम्हारी अंगुलियाँ दुष्कर्म से
अपवित्र हैं।
तुम्हारे ओंठ झूठ बोलते हैं,
तुम्हारी जीभ दुष्टतापूर्ण बातें निकालती है।
4 कोई भी व्यक्ति सच्चाई से नालिश नहीं करता,
और न कोई ईमानदारी से मुकदमा लड़ता है।
वे सब झूठे तर्कों पर भरोसा करते हैं,
वे झूठ ही बोलते हैं,
उन्हें अनिष्ट का गर्भ रहता है,
और वे अधर्म को जन्म देते हैं!
5 वे सांप के अण्डे सेते,
और मकड़ी के जाले बुनते हैं।
जो व्यक्ति उनका अण्डा खाता है,
वह मर जाता है,
और जो अण्डा फूटता है,
उसमें से सांप का बच्चा निकलता है!
6 उनके जालों से कपड़ा नहीं बनेगा;
जो वे बुनते हैं, उनसे मनुष्य अपने शरीर को ढक नहीं सकता।
उनके काम केवल दुष्कर्म हैं,
उनके हाथों से सिर्फ हिंसा के काम होते हैं।
7 उनके पैर बुराई की ओर दौड़ते हैं,
वे निर्दोश व्यक्ति का रक्त बहाने को
भागकर जाते हैं।
उनके विचार अधर्म के विचार हैं;
उनकी योजनाएं
केवल हिंसा और विनाश के लिए हैं।
8 वे शान्ति का मार्ग नहीं जानते;
उनके आचरण में न्याय का अभाव है;

---

58 : 14 व्य 32 : 13 59 : 1 गण 11 : 23 59 : 3 यश 1 : 15 59 : 4 अर्य्य 15 : 35 59 : 7 नीति 1 : 16; सेम 3 : 15-17

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वे सीधे मार्ग पर नहीं चलते;
वरन् उन्होंने अपने मार्गों को टेढ़ा बनाया है;
उनके मार्ग पर चलनेवाला व्यक्ति
शान्ति का अनुभव नहीं करता।

9 इस कारण न्याय हमसे दूर है;
और धार्मिकता हमारे पास नहीं फटकती।
हम प्रकाश की तलाश में हैं
लेकिन हमें अंधकार मिलता है।
हम उजियाला चाहते हैं,
पर चलते हैं अंधकार में!
10 हम अंधों की तरह दीवार टटोलते हैं,
नेत्रहीनों के समान हम टटोलते हैं।
हम दिन-दोपहर में रात की तरह
ठोकर खाते हैं।
हृष्ट-पुष्ट लोगों के मध्य हम मुरदों के समान हैं!
11 हम-सब रीछों के सदृश गुर्राते हैं;
और कबूतरों के समान गुटरगूं...
गुटरगूं करते हुए विलाप करते हैं।
हम न्याय की राह देखते हैं।
पर वह है ही नहीं;
हम उद्धार की प्रतीक्षा करते हैं
पर वह हमसे बहुत दूर है।
12 क्योंकि प्रभु के सम्मुख
हमारे अपराधों का अम्बार लग गया है!
हमारे पाप ही हमारे विरुद्ध साक्षी देते हैं;
हमारे अपराध हमारे साथ हैं,
हम अपने दुष्कर्मों को जानते हैं :
13 हमने प्रभु को अस्वीकार किया;
उसके प्रति अपराध किया;
अपने परमेश्वर का अनुसरण करना छोड़ दिया,
उससे अपना मुंह फेर लिया।
हमने अत्याचार और विरोध की बातें कहीं,
हमने मन में झूठी बातें गढ़ीं,
और उनको अपने मुंह से निकाला भी।
14 अत: न्याय ने हम से मुंह मोड़ लिया;
धार्मिकता हमसे दूर चली गई।
चौराहे पर सच्चाई की धज्जियाँ उड़ गईं,
सद्आचरण प्रवेश नहीं पा सकता।
15 हमारे जीवन में सत्य का अभाव है;
जो बुराई से दूर रहता है, वही ठगा जाता है।
प्रभु ने यह देखा, वह अप्रसन्न हुआ कि न्याय का अस्तित्व नहीं रहा।
16 उसने देखा कि किसी में भी पुरुषार्थ नहीं रहा।
यह देखकर उसे अचरज हुआ
कि कोई भी ऐसा मनुष्य नहीं है,
जो बुराई से संघर्ष करे।
अत: उसने अपने भुजबल से
विजय प्राप्त की,
और उसकी धार्मिकता ने उसका साथ दिया।
17 उसने धार्मिकता का कवच धारण किया,
और उद्धार का मुकुट अपने सिर पर रखा।
उसने प्रतिशोध के वस्त्र पहिने,
और क्रोधाग्नि की चादर ओढ़ ली।
18 वह दुर्जनों को
उनके दुष्कर्मों के अनुसार प्रतिफल देगा,
वह अपने बैरियों पर अपना क्रोध प्रकट करेगा;
वह अपने शत्रुओं से प्रतिशोध लेगा;
वह समुद्रतट के द्वीपों को
उनके कामों का बदला देगा।
19 अत: पूर्व से पश्चिम तक
लोग प्रभु के नाम से, उसके तेज से डरेंगे;
क्योंकि वह उमड़ते हुए जल-प्रवाह के सदृश आएगा,
जिसको प्रभु का आत्मा बहाएगा।
20 याकूब के वंशजों के पास
जो अपने अपराधों से पश्चाताप करते हैं,
वह सियोन में
मुक्तिदाता के रूप में आएगा।
प्रभु की यही वाणी है।
21 प्रभु कहता है, 'जहाँ तक मेरा प्रश्न है,
मैंने तेरे साथ यह विधान स्थापित किया है : मेरा

---

59 : 9 यिर 8 : 15 59 : 16 यश 63 : 5 59 : 17 इफ 6 : 14; 1 थिस 5 : 8; प्रज्ञ 5 : 17-23 59 : 19 मत 8 : 11 59 : 20 रोम 11 : 26

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आत्मा, जो तुझ पर है, तथा मेरे वचन, जो मैंने तेरे मुंह में प्रतिष्ठित किए हैं, वे तेरे मुंह से, तेरी सन्तान के मुंह से तथा आनेवाली पीढ़ी से पीढ़ी के मुंह से आज से युग-युगान्त तक कभी अलग न होंगे' — प्रभु की यही वाणी है।

यरूशलेम नगरी का महिमापूर्ण भविष्य

60 उठ, प्रकाशवती हो;
क्योंकि तेरा प्रकाश आ गया;
प्रभु का तेज तुझ पर उदित हुआ!
2 देख, पृथ्वी पर अन्धकार छाया हुआ है,
जातियों में घोर अंधेरा व्याप्त है,
किन्तु प्रभु तुझ पर उदित होगा,
उसका तेज तुझ में दिखाई देगा।
3 राष्ट्र तेरे प्रकाश के समीप आएंगे,,
और राजा तेरे उषा: कालीन प्रकाश की ओर।

4 अपनी आंखें उठा, और चारों ओर देख:
वे सब एकत्र होकर तेरे पास आ रहे हैं।
तेरे पुत्र दूर देशों से आ रहे हैं,
तेरी पुत्रियाँ गोद में लाई जा रही हैं।
5 यह देखकर तू प्रसन्नता से प्रफुल्लित हो उठेगी,
तेरा हृदय हर्षित और गदगद हो उठेगा;
क्योंकि समुद्र का अपार धन,
राष्ट्रों की धन-सम्पत्ति तेरे पास आएगी।
6 मिद्यान और एपा देशों की ऊंटनियों के,
ऊंटों के कारवां तुझे ढक लेंगे।
वे शबा देश से आएंगे।
वे अपने साथ सोना और लोबान लाएंगे
और प्रभु के प्रशंसात्मक कार्यों का
शुभ-सन्देश सुनाएँगे।
7 केदार कबीले की भेड़-बकरियाँ
तेरे समीप एकत्र होंगी;
नबायोत कबीले के मेढ़े तेरे पास आएंगे।*
वे प्रभु की वेदी पर चढ़ाए जाएंगे,
और प्रभु उन्हें ग्रहण करेगा।
वह अपने सुन्दर भवन को और सुन्दर बनाएगा।
8 मेघों के सदृश उड़ते हुए,
दरबों की ओर जाते हुए क़बूतरों की तरह
ये कौन हैं जो चले आ रहे हैं?
9 समुद्रतट के द्वीप प्रभु की प्रतीक्षा करेंगे;
सर्वप्रथम तर्शीश के जलयान
दूर देश से सोना और चांदी के साथ
तेरे पुत्र-पुत्रियों को लाएँगे।
प्रभु ने तुझे और सुन्दर बनाया है,
अत: वे तेरे प्रभु परमेश्वर के नाम के लिए,
इस्राएल के पवित्र परमेश्वर के लिए
उन्हें लाएंगे।
10 प्रभु यरूशलेम नगरी से कहता है:
'विदेशी कारीगर तेरी शहरपनाह बनाएंगे,
उनके राजा तेरी सेवा करेंगे।
यद्यपि मैंने अपने क्रोध में तुझे दु:ख दिया था,
तथापि अब तुझ से प्रसन्न हो
मैंने तुझ पर दया की है।
11 तेरे प्रवेश-द्वार निरन्तर खुले रहेंगे;
वे दिन-रात कभी बन्द न होंगे,
ताकि लोग अपने-अपने राष्ट्र का धन
तेरे पास ला सकें;
उनके राजा उनकी अगुवायी करेंगे।
12 जो राष्ट्र और जो राज्य तेरी सेवा नहीं करेगा,
वह नष्ट हो जाएगा।
ऐसे राष्ट्र पूर्णत: नष्ट हो जाएंगे।
13 लबानोन प्रदेश का वैभव तेरे पास आएगा:
मेरे पवित्र स्थान की साज-सज्जा के लिए
सनोवर, देवदार और चीड़ वृक्षों की इमारती
लकड़ी तेरे पास आएगी।
मैं उस स्थान को जहाँ मैं चरण रखता हूं,
महिमा प्रदान करूंगा।
14 जिन्होंने तुझ पर अत्याचार किया था,
उनकी सन्तान सिर झुकाए हुए
तेरे पास आएगी;
जो तुझसे घृणा करते थे,
वे तेरे चरणों पर गिरकर
तुझे साष्टांग प्रणाम करेंगे।

* मूल में, 'तेरी सेवा करेंगे'।

60 : 4 बारू 5 : 5-6 60 : 6 मत 2 : 11 60 : 10 प्रक 21 : 24 60 : 14 प्रक 3 : 9

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वे तुझे इस नाम से पुकारेंगे:
''प्रभु की नगरी'',
''इस्राएल के पवित्र परमेश्वर का
नगर–सियोन।''

15 'तू त्याग दी गई थी;
लोग तुझसे घृणा करते थे,
और तुझमें से होकर नहीं जाते थे।
पर मैं तुझे सदा के लिए भव्यता प्रदान करूंगा,
युग–युगांत के लिए तुझे आनन्दमयी कर दूंगा।
16 तू राष्ट्रों का दूध पीएगी,
तू राजाओं का रस चूसेगी;
और तुझे अनुभव होगा
कि मैं–प्रभु तेरा उद्धारकर्त्ता हूं,
मैं तेरा मुक्तिदाता हूं।
मैं याकूब वंश का सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूं।
17 मैं आराधकों को प्रेरित करूंगा,
और वे पीतल के बदले सोना,
लोहे के बदले चांदी,
लकड़ी के बदले पीतल
पत्थर के बदले लोहा लाएंगे।
मैं शान्ति को तेरा निरीक्षक,
और धार्मिकता को तेरा पदाधिकारी बना दूंगा!
18 तेरे देश में हिंसा की घटना
फिर कभी नहीं सुनी जाएगी;
और न तेरी सीमाओं के भीतर
विध्वन्स और विनाश होगा।
तू अपने शहरपनाह का नाम ''उद्धार''
और प्रवेश–द्वार का नाम ''स्तुति'' रखेगी।

19 'दिन में तुझे प्रकाश के लिए
सूर्य की आवश्यकता न होगी;
और न रात में चन्द्रमा की चांदनी की।
किन्तु प्रभु तेरा शाश्वत प्रकाश होगा,
तेरा परमेश्वर ही तेरा तेज होगा।
20 तेरा यह सूर्य कभी अस्त न होगा,
और न चन्द्रमा की चांदनी मलिन पड़ेगी;
क्योंकि प्रभु तेरा शाश्वत प्रकाश होगा,
और तेरे शोक के दिन समाप्त हो जाएंगे।
21 तेरे सब निवासी धार्मिक होंगे;
वे सदा के लिए देश पर अधिकार करेंगे,
जिससे मेरी महिमा हो।
ये लोग मेरे पौधे की शाखाएँ हैं;
इन्हें मैंने अपने हाथ से रचा है।
22 उनमें से छोटे–से–छोटे व्यक्ति से
कुल बनेगा,
सबसे दुर्बल मनुष्य से
शक्तिशाली राष्ट्र का उद्भव होगा,
मैं प्रभु हूं, ठीक समय पर,
मैं इसे अविलम्ब पूरा करूंगा।'

उद्धार का शुभ सन्देश

61 प्रभु का आत्मा मुझ पर है;
क्योंकि उसने पीड़ित* व्यक्तियों को
शुभ–सन्देश सुनाने के लिए
मेरा अभिषेक किया है;
स्वामी प्रभु ने मुझे इस कार्य के लिए भेजा है
कि मैं घायल हृदयवालों को स्वस्थ करूं,
बन्दियों को स्वतंत्रता का सन्देश सुनाऊं,
और जो कारागार में हैं
उनके लिए कारागार के द्वार खोल दूं।
2 उसने मुझे भेजा है
कि मैं 'प्रभु की कृपा का वर्ष',
और 'हमारे परमेश्वर का प्रतिशोध दिवस'
घोषित करूं,
और जो शोक करते हैं, उन्हें शान्ति प्रदान करूं।
3 प्रभु ने मुझे इसलिए भेजा है
कि मैं सियोन में शोक करनेवालों को
राख नहीं, वरन् विजय–माला पहनाऊं;
विलाप नहीं, बल्कि उनके मुख पर
आनन्द का तेल मलूं,
उन्हें निराशा की आत्मा नहीं,

---

* अथवा 'गरीब, विनम्र'।

60 : 19 प्रक 21 : 23 **61 : 1** यश 11 : 2; लू 4 : 18; मत 11 : 5 **61 : 2** लेव 25 : 9 मत 5 : 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वरन् स्तुति की चादर ओढ़ाऊं,
ताकि वे धार्मिकता के बांज वृक्ष कहलाएँ;
वे प्रभु के पौधे कहलाएँ
और उनसे प्रभु की महिमा हो।
4 सियोन के निवासी
प्राचीन खण्डहरों का पुन: निर्माण करेंगे;
वे पुराने ध्वन्स-अवशेषों पर मकान बनाएँगे।
वे अनेक पीढ़ियों से ध्वस्त स्थानों को,
उजाड़ पड़े नगरों को, आबाद करेंगे।

5 विदेशी सेवक तुम्हारी सेवा करेंगे;
वे तुम्हारी भेड़-बकरियाँ चराएंगे;
तुम्हारे मध्य प्रवास करनेवाले परदेशी
तुम्हारे अंगूर-उद्यान में मजदूरी करेंगे।
6 किन्तु तुम 'प्रभु के पुरोहित' कहलाओगे;
अन्य जातियों के लोग
तुम्हें 'हमारे परमेश्वर के सेवक' कहेंगे।
तुम राष्ट्रों की धन-सम्पत्ति भोगोगे,
उनके वैभव से तुम्हारा ऐश्वर्य बढ़ेगा।
7 पतन के अपमान के बदले,
अब तुम्हें दुगुना यश प्राप्त होगा,
अनादर के स्थान पर
अब तुम वैभव प्राप्त कर आनन्दित होगे।
अपने देश में तुम
दुगुने भाग पर अधिकार करोगे।
तुम्हें शाश्वत आनन्द प्राप्त होगा।

8 प्रभु कहता है : 'मैं न्याय से प्रेम करता हूं,
मुझे अन्याय और लूटमार से घृणा है।
मैं अपने निज लोगों को सच्चाई से
उनका प्रतिफल दूंगा।
मैं उनके साथ
स्थायी विधान स्थापित करूंगा।
9 उनके वंशज राष्ट्रों में विख्यात होंगे;
और उनके वंशजों की सन्तान
कौमों में प्रसिद्ध होगी।
उनको देखनेवाले यह स्वीकार करेंगे
कि निस्सन्देह ये वे लोग हैं,
जिनको प्रभु ने आशिष दी है।'

10 मैं प्रभु में अति आनन्दित हूं,
मेरा प्राण परमेश्वर में उल्लसित है।
जैसे दूल्हा पुष्पहार से स्वयं को सजाता है,
जैसे दुल्हिन आभूषणों से अपना शृंगार
करती है,
वैसे ही प्रभु ने उद्धार के वस्त्र मुझे पहिनाए,
और धार्मिकता की चादर मुझे ओढ़ाई।
11 जैसे भूमि उपज को उगाती है,
जैसे उद्यान में बोया गया बीज
अंकुरित होता है,
वैसे ही स्वामी-प्रभु समस्त राष्ट्रों के सम्मुख
धार्मिकता और स्तुति
अपने निज लोगों में अंकुरित करेगा।

सियोन के लिए प्रभु की चिन्ता

62 मैं सियोन के विषय में अब चुप नहीं
रहूंगा,
मैं यरूशलेम के कारण चैन न लूंगा,
जब तक उसकी धार्मिकता
प्रकाश के सदृश न चमकने लगे,
जब तक उसका उद्धार
मशाल की तरह न जलने लगे।

2 'ओ सियोन,
सब राष्ट्र तेरी धार्मिकता के दर्शन करेंगे;
सब राजा तेरी महिमा को देखेंगे।
तेरा नया नाम रखा जाएगा;
यह नाम स्वयं प्रभु तुझे प्रदान करेगा।
3 प्रभु के हाथ में तू सौंदर्य का मुकुट,
अपने परमेश्वर की हथेली में राज- मुकुट
होगी!
4 तू फिर ''परित्यक्ता'' न कहलाएगी;
तेरी भूमि फिर ''उजाड़'' न कहलाएगी।
तू ''मेरा आनन्द'',
और तेरी भूमि ''सुहागिन'' कहलाएगी;
क्योंकि प्रभु तुझसे प्रसन्न है,
और तेरी भूमि सुहागिन बनेगी।
5 जैसे जवान पुरुष
कुंआरी कन्या से विवाह करता है

---

61 : 4 यहेज़ 36 : 33 **61 : 5** इफ 2 : 12 **61 : 6** नि 19 : 6; 1 पत 2 : 5; प्रक 1 : 6; 5 : 10; 20 : 6 **61 : 10** प्रक 21 : 2; लू 1 : 46 **62 : 2** प्रक 2 : 17 **62 : 4** हो 1 : 10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वैसे ही तेरा पुन: निर्माण करनेवाले*
तुझ से विवाह करेंगे।
जैसे दूल्हा अपनी दुल्हिन से आनन्दित होता है
वैसे ही तेरा परमेश्वर तुझसे हर्षित होगा।'

6 ओ यरूशलेम, मैंने तेरी शहरपनाह पर
पहरेदारों को बैठा दिया।
वे दिन भर और रात भर कभी चुप न रहेंगे।
ओ प्रभु को स्मरण करनेवालो,
तुम चैन से न बैठो,
7 और उसे भी चैन न लेने दो,
जब तक वह यरूशलेम का
पुनर्निर्माण न करे,
जब तक वह पृथ्वी पर उसका यश न फैला दे।
8 प्रभु ने अपने दाहिने हाथ की,
अपनी सामर्थी भुजा की शपथ खाई है :
'निश्चय ही मैं भविष्य में तेरा अन्न
तेरे शत्रुओं को फिर न दूंगा;
जिस अंगूर-रस के लिए
तूने खून पसीना एक किया है,
विदेशी आक्रमणकारी उसे पी न सकेंगे।
9 पर जो अन्न को खत्ते में एकत्र करते हैं,
वे ही उसको खाएंगे,
और मुझ-प्रभु की स्तुति करेंगे।
अंगूर को जमा करनेवाले ही
मेरे पवित्र स्थान के आंगनों में उसका रस पीएंगे।'

10 प्रवेश-द्वार से बाहर निकलो, बाहर निकलो;
और आनेवाले लोगों के लिए मार्ग तैयार करो;
सुधारो, राजमार्ग सुधारो; पत्थरों को हटा दो!
कौमों के लिए झंडा फहराओ।
11 देखो, प्रभु ने पृथ्वी के सीमान्तों तक,
यह आदेश प्रसारित किया है:
सियोन के निवासियों से यह कहो,
'देखो, तुम्हारा उद्धारकर्त्ता आ रहा है,
उसका पुरस्कार उसके साथ है,
उसके आगे-आगे उसका प्रतिशोध है।'
12 लोग उन्हें 'पवित्र कौम',
'प्रभु के द्वारा छुड़ाया गया राष्ट्र' कहेंगे।
ओ सियोन, तेरा नाम 'ग्रहण की हुई नगरी',
'सुहागिन' रखा जाएगा।

प्रभु के प्रतिशोध का दिन

63 यह कौन है जो एदोम देश से,
लाल वस्त्र पहिने हुए
बोसरा नगर से आ रहा है?
उसका पहनावा फूला हुआ है,
वह अति बलवान है।
वह झूमता हुआ चला आ रहा है।
'यह मैं हूं,
मैं विजय की घोषणा करता हूं,
मैं मुक्त करने में समर्थ हूं।'

2 तेरे वस्त्र लाल क्यों हैं?
तेरी पोशाक अंगूर-रस निकालने वाले के वस्त्र के समान लाल क्यों है?

3 'मैंने अकेले ही रस-कुण्ड में अंगूर रौंदे हैं,
किसी भी कौम के लोग मेरे साथ नहीं थे।
मैंने क्रोध में उनको रौंदा,
मैंने प्रकोप में उन्हें कुचला।
उनके रक्त के छींटे मेरे वस्त्रों पर आ पड़े,
इससे मेरे कपड़ों पर धब्बे लग गए।
4 मेरे हृदय में प्रतिशोध का दिन विद्यमान था,
और मेरे लोगों के छुटकारा-दिवस का वर्ष आ गया है।
5 मैंने यहाँ-वहाँ देखा,
पर मेरी सहायता करनेवाला कोई न था;
मैं चकित था;
किन्तु मुझे सहारा देने वाला कोई न था।
अत: मेरी भुजा ने ही विजय प्राप्त की,
मेरे प्रकोप ने ही मुझे सहारा दिया।

* अथवा, 'तेरे पुत्र'

62 : 8 व्य 28 : 31 61 : 11 प्रक 22 : 12; यश 40 : 10 63 : 1-6 यश 34 63 : 2 प्रक 19 : 13 63 : 3 प्रक 14 : 20; 19 : 15

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

6 मैंने कौमों को अपने क्रोध में रौंद डाला,
मैंने उन्हें अपने क्रोध की मदिरा पिलाई।
मैंने उनका जीवन-रक्त पृथ्वी पर उण्डेल दिया!'

इस्राएल के प्रति प्रभु के उपकार

7 जो उपकार प्रभु ने हम पर किए हैं,
उनके लिए मैं प्रभु की अपार करुणा का,
प्रभु के स्तुत्य कार्यों का, वर्णन करूंगा।
प्रभु ने इस्राएल वंश की अत्यन्त भलाई की है,
यह उसने अपने दयामय स्वभाव के कारण,
अपनी अपार करुणा के अनुरूप किया है।
8–9 प्रभु ने यह कहा,
'निस्सन्देह ये मेरे निज लोग हैं,
ये मेरे पुत्र-पुत्रियां हैं, और मुझे धोखा नहीं देंगे।'
उनके दु:ख में प्रभु उनका उद्धारकर्त्ता बन गया।*
न किसी संदेशवाहक ने, न किसी स्वर्गदूत ने
वरन् स्वयं उसकी उपस्थिति ने
उनका उद्धार किया।
प्रभु ने अपने प्रेम और दया के कारण
उन्हें छुड़ाया।
वह प्राचीनकाल से उन्हें शिशु के सदृश
गोद में उठाकर ले जा रहा है।

10 किन्तु उन्होंने प्रभु से विरोध किया,
उसके पवित्र आत्मा को दु:ख दिया।
अत: वह उनका शत्रु बन गया,
और उसने उनके विरुद्ध युद्ध किया।
11 तब इस्राएली कौम को प्रभु के सेवक
मूसा का प्राचीन समय स्मरण हुआ;
उसने पूछा,
'कहां है प्रभु, हम-भेड़ों का चरवाहा,
जिसने हमें समुद्र पार कराया था?
कहां है वह जिसने अपना पवित्र आत्मा
हमारे मध्य में भेजा था;
12 जिसने अपनी प्रतापी भुजा से
मूसा के दाहिने हाथ को
नेतृत्व के लिए सामर्थ्य प्रदान किया था;
अपने नाम को अमर करने के लिए
जिसने हमारी आंखों के सामने
समुद्र को दो भागों में विभक्त कर दिया था,
13 और हमें लाल सागर की गहराइयों के
उस पार ले गया?
जैसे घोड़ा बिना गिरे मरुस्थल को पार कर जाता है
वैसे ही हमने समुद्र पार किया था।
14 जैसे पालतु पशु चराई की तलाश में
घाटी में उतर जाता है,
वैसे ही प्रभु के आत्मा ने
हमारा मार्ग-दर्शन किया था।
प्रभु, तूने अपने नाम की महिमा प्रकट करने के लिए
हमारा पथ-प्रदर्शन किया था।'

दया और सहायता के लिए प्रार्थना

15 प्रभु, स्वर्ग से, अपने पवित्र और वैभवपूर्ण
निवास-स्थान से हम पर दृष्टि कर।
कहां है तेरा हमारे प्रति उत्साह?
कहाँ है तेरी शक्ति?
अपने हृदय की ललक, अपनी दया,
हम पर से मत हटा।
16 यद्यपि हमारे पूर्वज अब्राहम और इस्राएल
हमें नहीं जानते, हमें नहीं पहिचानते,
तो भी तू हमारा पिता है।
प्राचीनकाल से तेरा नाम 'हमारा मुक्तिदाता' है,
निस्सन्देह तू ही हमारा पिता है।
17 हे प्रभु, क्यों तू
हमें अपने मार्ग से भटकाता है,
क्यों तू हमारा हृदय कठोर करता है
कि हम तुझसे न डरें?
अपनी मीरास के कुलों के लिए,
अपने सेवकों के हित में लौट आ।
18 क्यों दुर्जनों ने
तेरे पवित्र स्थान पर आक्रमण किया,

*अथवा, 'दु:खी हुआ'

63 : 9 हो 12 : 4-5 **63 : 10** व्य 32 : 15; इफ 4 : 30 **63 : 11** इब्र 13 : 20 **63 : 12** नि 14 : 21

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

क्यों हमारे बैरियों ने उसको रौंदा है?
19 हमारी दशा ऐसी हो गई
मानो तूने हम पर कभी शासन नहीं किया,
हमको तूने अपने नाम से कभी बुलाया ही नहीं।

64 काश! तू आकाश को फाड़कर
पृथ्वी पर उतर आता;
तेरी उपस्थिति से पहाड़ थर्रा उठते!
2* जैसे आग झाड़-झंखाड़ को जलाती है,
जैसे आग की आंच पानी को उबालती है,
वैसे ही प्रभु, तू अपने बैरियों पर
अपना नाम प्रकट कर
जिससे राष्ट्र तेरी उपस्थिति से कांप उठें।
3 तूने ऐसे भयानक काम किए हैं
जिनकी हमने आशा भी नहीं की थी!
सचमुच जब तू स्वर्ग से नीचे उतर आया
तब तेरी उपस्थिति से पहाड़ भी थर्रा उठे।
4 प्राचीन काल से यह कभी सुनने में नहीं आया;
न किसी ने कानों से सुना,
और न अपनी आंखों से देखा
कि तेरे अतिरिक्त और कोई ईश्वर है।
केवल तू उनके लिए आश्चर्यपूर्ण कार्य करता है,
जो तेरी प्रतीक्षा करते हैं।
5 तू उन लोगों से मिलता है
जो आनन्दपूर्वक धर्म के कार्य करते हैं;
जो तेरे मार्गों पर चलकर तुझे स्मरण करते हैं।
देख, तू हमसे क्रोधित था,
क्योंकि हमने पाप किया था।
हम बहुत समय तक पाप की अवस्था में रहे।
क्या हम बच सकते हैं?
6 हम-सब अशुद्ध व्यक्ति के समान हो गए हैं,
हमारे सब धर्म-कर्म गन्दे वस्त्र हो गए हैं।
हम-सब पत्ते के सदृश मुरझा जाते हैं।
हमारे दुष्कर्म हवा की तरह
हमें उड़ा ले जाते हैं।
7 कोई भी मनुष्य तेरा नाम नहीं लेता,
और न तेरा सहारा लेने के लिए
स्वयं प्रयास करता है।
हमारे अधर्म के कारण
तूने हमसे अपना मुख छिपा लिया है;
और हमें हमारे दुष्कर्मों के हाथ में सौंप दिया है।
8 तो भी, प्रभु, तू हमारा पिता है,
हम मिट्टी मात्र हैं, और तू हमारा कुम्हार है।
हम-सब तेरे हाथ की रचना हैं।
9 हे प्रभु, हमसे अत्यन्त क्रोधित मत हो;
अनन्तकाल तक हमारे अधर्म को मत स्मरण रख।
देख, विचार कर!
हम-सब तेरे ही निज लोग हैं।
10 तेरे पवित्र नगर निर्जन हो गए,
सियोन उजाड़ क्षेत्र बन गया,
यरूशलेम खण्डहर हो गया।
11 हमारा पवित्र और सुन्दर मन्दिर
जहाँ हमारे पूर्वजों ने तेरी स्तुति की थी,
आग से भस्म कर दिया गया;
हमारे सब मनोहर स्थल खण्डहर हो गए।
12 प्रभु, क्या तू यह देखकर भी
अपने को रोके रहेगा?
क्या तू चुप रहेगा,
और हमें इतना दु:ख देता रहेगा?

विद्रोहियों को दण्ड

65 प्रभु यह कहता है:
'मैं उनसे भी मिलने को तैयार था,
जो मुझे पूछते तक नहीं थे।
जो मुझे खोजते भी न थे,
मैं उनको अति सुलभ था।
जो राष्ट्र मेरे नाम से आराधना भी नहीं करता था,
उससे मैंने यह कहा, "मैं प्रस्तुत हूं,
देख, मैं प्रस्तुत हूं।"
2 मैं विद्रोही कौम की ओर
दिन भर हाथ फैलाए रहा, उन्हें बुलाता रहा।
यह कौम अपने मन की योजनाओं के अनुसार

---

* मूल में 64 : 1
64 : 4 1 कुर 2 : 9-10 **65 : 1-2** रोम 10 : 20-21

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उस मार्ग पर चलती है, जो भला नहीं है।
3 यह मेरे मुंह पर निरंतर मुझे भड़काती रहती है;
इसके लोग उद्यानों में देवताओं को बलि चढ़ाते हैं,
ईंटों पर धूप जलाते हैं।
4 ये मृतकों से अपने स्वप्नों का अर्थ पूछने के लिए कबरों के मध्य बैठते हैं,
और सुनसान स्थानों में रात बिताते हैं।
ये सूअर का मांस खाते हैं।
जो घृणित पशु बलि में चढ़ाया जाता है,
उसका शोरबा अपने बरतनों में रखते हैं।
5 ये दूसरों से कहते हैं, ''मुझ से दूर रह,
मुझे स्पर्श मत कर;
क्योंकि मैं तुझसे अधिक पवित्र हूं।''
ऐसे लोग मेरी नाक में धुएँ की तरह
घुटन पैदा करते हैं,
ये निरंतर जलनेवाली आग हैं।
6-7 मैं-प्रभु यह कहता हूं :
देखो, यह बात मेरे सामने लिखी हुई है:
''मैं अधर्म को देखकर चुप नहीं रहूंगा;
वरन् मैं उनको अधर्म का प्रतिफल दूंगा।''
मैं उनके दुष्कर्मों का, उनके पूर्वजों के दुष्कर्मों का
पूरा-पूरा बदला, निस्सन्देह उन्हें दूंगा।
उन्होंने पहाड़ों पर धूप जलाया;
पहाड़ियों पर मुझे निन्दात्मक शब्द कहे।
अत: मैं गिन-गिनकर उनसे प्रतिशोध लूंगा।'

8 प्रभु यों कहता है :
'जैसे अंगूर के गुच्छे में रस भर आने पर
लोग यह कहते हैं :
''इसे नष्ट मत करो, क्योंकि यह रसमय है।''
वैसे ही मैं अपने सेवकों के कारण
उन सब को नष्ट नहीं करूंगा।
9 मैं याकूब की संतति में से एक वंश,
यहूदा कुल में से अपने पर्वतों का
एक वारिस उत्पन्न करूंगा।
मेरे मनोनीत लोग उन पर अधिकार करेंगे;
मेरे सेवक वहाँ निवास करेंगे।
10 मेरी खोज में रहनेवाले
मेरे निज लोगों के लिए शारोन मैदान
भेड़ों का चरागाह बन जाएगा;
और आकोर घाटी
रेवड़ का विश्राम-स्थल बनेगी।
11 किन्तु तुम लोग,
जिन्होंने मुझ-प्रभु को त्याग दिया है,
जिन्होंने मेरे पवित्र पर्वत को भुला दिया है,
जो भाग्य-देवता की मेज पर
अन्न की भेंट अर्पित करते हो,
नियति देवी को मसाला मिश्रित मदिरा चढ़ाते हो,
12 मैं तुम्हारी 'नियति' तलवार को निश्चित् करूंगा;
तुम-सब को वध के लिए गर्दन झुकानी होगी;
क्योंकि मैंने तुम्हें पुकारा,
पर तुमने मुझे उत्तर नहीं दिया।
जब मैं तुमसे बोला, तो तुमने नहीं सुना।
किन्तु तुमने वही किया जो मेरी दृष्टि में बुरा था;
तुमने उसको पसन्द किया, जो मुझे नापसन्द था।'

13 अत: स्वामी-प्रभु यों कहता है :
'मेरे सेवकों को भोजन प्राप्त होगा,
पर तुम भूखे मरोगे;
मेरे सेवक पेय पीएंगे; लेकिन तुम प्यासे रहोगे।
मेरे सेवक आनन्द-मग्न होंगे; पर तुम विलाप करोगे।
14 मेरे सेवक हृदय की प्रसन्नता के कारण गीत गाएंगे;
पर तुम हृदय की पीड़ा के कारण रोओगे,
आत्मा की वेदना के कारण शोक करोगे।
15 मेरे मनोनीत लोग तुम्हारे नाम से शाप देंगे।
मैं स्वामी, उनका प्रभु, तुम्हारा वध करूंगा।
मैं अपने मनोनीत लोगों का

---

65 : 10 यहो 7 : 24-26 65 : 12 यिर 7 : 13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

एक दूसरा नाम रखूंगा।
16 जो व्यक्ति देश में आशिष की याचना करेगा,
वह सत्य परमेश्वर के नाम से
आशिष को प्राप्त करेगा।
जो देश में शपथ लेगा,
वह सत्य परमेश्वर के नाम से शपथ लेगा;
क्योंकि अतीत के कष्ट भुला दिये गये हैं;
वे मेरी आंखों से ओझल हो गये हैं।

नया आकाश और नयी पृथ्वी

17 'देखो, मैं नया आकाश
और नयी पृथ्वी बनाने जा रहा हूं।
अतीत की बातें भुला दी जाएंगी,
वे मन में भी नहीं आएंगी।
18 जो मैं बनाने जा रहा हूं,
उसके लिए आनन्द मनाओ,
सदा-सर्वदा तक हर्षित रहो;
क्योंकि मैं यरूशलेम को आनन्द का
और उसके निवासियों को हर्ष का
माध्यम बनाने जा रहा हूं।
19 मैं स्वयं यरूशलेम में हर्षित,
और अपने निज लोगों से आनन्दित होऊंगा।
यरूशलेम नगर में फिर कभी न रोने का स्वर,
और न सहायता के लिए पुकार सुनाई देगी।
20 वहाँ न शिशु होगा, जो कुछ दिन जीवित रहकर
असमय में मर जाएगा;
और न ऐसे वृद्ध होंगे, जो पूर्ण आयु न भोगेंगे।
प्रत्येक बालक शतायु होगा;
जो व्यक्ति सौ वर्ष की उम्र के पहले मरेगा,
वह शापित समझा जाएगा।

21 'यरूशलेम निवासी अपने लिए मकान बनाएंगे, और वे उनमें रहेंगे भी।
वे अंगूर-उद्यान लगाएंगे,
और उनका फल भी खा सकेंगे।
22 अब यह न होगा कि
वे अपने लिए मकान बनाएं
और उनके शत्रु उनमें रहें!
वे अंगूर-उद्यान लगाएँ,
पर उनका फल उनके बैरी खाएँ!
मेरे निज लोगों की आयु
वृक्ष की आयु के सदृश दीर्घ होगी।
मेरे मनोनीत लोग दीर्घ काल तक
अपनी मेहनत का फल खाएंगे।
23 उनका परिश्रम निष्फल न होगा,
उनकी सन्तान दुःख के दिन न देखेगी,
क्योंकि उनके माता-पिता को
मुझ-प्रभु ने आशिष दी होगी,
और उनके साथ उनकी संतात को भी।
24 उनके पुकारने के पूर्व ही मैं उनको उत्तर दूंगा;
उनकी प्रार्थना समाप्त भी न होगी
कि मैं उसको सुन लूंगा।
25 भेड़िया और मेमना एक-साथ चरेंगे
सिंह बैल के समान भूसा खाएगा,
सांप मिट्टी खाकर पेट भरेगा।
वे मेरे पवित्र पर्वत पर
किसी को हानि नहीं पहुँचाएंगे,
और न किसी का अनिष्ट करेंगे।'
प्रभु की यह वाणी है।

प्रभु का न्याय और सियोन की समृद्धि

66 प्रभु यों कहता है :
'आकाश मेरा सिंहासन है और
पृथ्वी मेरे चरणों की चौकी है!
तब तुम मेरे लिए कैसा घर बनाओगे?
वह स्थान कहाँ है, जहाँ मैं विश्राम कर सकता हूं?'
2 प्रभु कहता है :
'इन सबको स्वयं मेरे हाथों ने बनाया है,
अत: ये सब वस्तुएँ मेरी ही हैं।
पर मैं उस मनुष्य पर ध्यान दूंगा,
जो विनम्र है जो आत्मा में पीड़ित है
जो मेरे वचन में श्रद्धा रखता है।

3 'जो आराधक बलि चढ़ाने के लिए
बैल का वध करता है,
वह मानो मनुष्य की हत्या करता है;
जो आराधक मेमने की बलि करता है

65 : 17 2 पत 3 : 13 65 : 19 प्रक 21 : 4 65 : 21 आमो 9 : 14 65 : 23 व्य 28 : 41 65 : 25 उत 3 : 14; यश 11 : 6-9

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वह मानो कुत्ते की गरदन तोड़ता है;
जो आराधक अन्न-बलि चढ़ाता है,
वह मानो सूअर का रक्त अर्पित करता है;
जो आराधक 'स्मृति-बलि' में लोबान जलाता है
वह मानो मूर्ति की पूजा करता है।*
ऐसे आराधक
आराधना की अपनी ही पद्धति चुनते हैं,
उनके प्राण ऐसी ही घृणित आराधना से प्रसन्न होते हैं।
4 इसलिए मैं भी उनके लिए विपत्ति चुनूंगा;
जिन बातों से वे डरते हैं;
उन्हीं को मैं उन पर लाऊंगा।
मैंने उनको पुकारा था,
पर उन्होंने मुझे उत्तर नहीं दिया;
जब मैं उनसे बोला, तो उन्होंने नहीं सुना :
किन्तु उन्होंने वही किया जो मेरी दृष्टि में बुरा था;
उन्होंने उसको पसन्द किया, जो मुझे नापसन्द था।'

5 प्रभु के वचन से डरनेवाले लोगो,
प्रभु का यह वचन सुनो :
'तुम्हारे जाति-भाई जो तुमसे घृणा करते हैं,
जो तुम्हें मेरे नाम के कारण
सभागृह से बहिष्कृत करते हैं,
और यह कहते हैं : "प्रभु की महिमा हो,
कि हम भी तुम्हारे आनन्द को देखें।"
तुम्हारे ये जाति-भाई ही लज्जित होंगे।

6 'सुनो, नगर में कोलाहल हो रहा है,
मन्दिर में आवाज सुनाई दे रही है।
यह प्रभु की आवाज है,
वह अपने शत्रुओं को
उनके दुष्कर्मों का फल दे रहा है।

7 'प्रसव-पीड़ा के पूर्व ही उसने शिशु को जन्म दिया;
उसे प्रसव-पीड़ा नहीं हुई
और उससे एक बालक उत्पन्न हुआ।
8 ऐसा चमत्कार क्या कभी किसी ने सुना?
क्या किसी ने अपनी आंखों से
ऐसा चमत्कार देखा?
क्या कोई देश एक दिन में उत्पन्न हो सकता है?
क्या कोई राष्ट्र एक क्षण में जन्म ले सकता है?
सियोन को जब प्रसव-पीड़ा हुई थी,
उस क्षण ही उसने
अपनी संतान को जन्म दिया था।'

9 प्रभु कहता है, 'क्या मैं जन्म का समय हो जाने पर भी जन्म न होने दूं?
मैं ही जन्मदाता हूं :
अत: क्या मैं गर्भ का द्वार ही बन्द कर दूं?'
यह तुम्हारे परमेश्वर की वाणी है।

10 'ओ यरूशलेम के प्रेमियो!
यरूशलेम के साथ हर्षित हो,
उसके साथ आनन्द मनाओ।
ओ यरूशलेम के लिए शोक करनेवालो!
अब तुम उसके हर्ष में सम्मिलित हो।
11 ओ यरूशलेम के पुत्र-पुत्रियो!
तुम अपनी मां के सांत्वना देनेवाले
स्तनों का पान कर तृप्त होगे!
तुम उसके महिमामय स्तनों का
अपार आनन्द के साथ पान करोगे।

12 प्रभु यों कहता है :
'मैं यरूशलेम की समृद्धि को
नदी की बाढ़ के सदृश बनाऊंगा;
राष्ट्रों की सम्पत्ति को
उमड़ती हुई जल-धारा के समान
उसकी ओर प्रवाहित करूंगा।
ओ यरूशलेम के पुत्र-पत्रियो!
तुम अपनी मां का स्तन-पान करोगे!

* अथवा, "कुछ आराधक बलि चढ़ाने के लिए बैल का वध करते हैं, किन्तु वे मनुष्य की हत्या भी करते हैं! कुछ आधिक..., किन्तु..." (इसी प्रकार शेष वाक्यों में)।

66 : 1 मत 5 : 34; प्रे 7 : 49 **66 : 6** प्रक 16 : 1.17 **66 : 7** प्रक 12 : 5

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वह तुम्हें अपनी पीठ पर बैठाकर ले जाएगी।
तुम उसके घुटनों पर कूदोगे।
13 जैसे मां अपने बच्चों को सान्त्वना देती है,
वैसे ही मैं तुम्हें सान्त्वना दूंगा,
तुम यरूशलेम में सान्त्वना प्राप्त करोगे।

14 'तुम अपनी मां-यरूशलेम के दर्शन करोगे,
और तुम्हारा हृदय हर्ष से भर जाएगा;
तुम्हारी हड्डियाँ हरी घास की तरह लहलहा
उठेंगी।
तब तुम्हें ज्ञात होगा कि प्रभु का वरदहस्त*
अपने सेवकों पर रहता है,
पर उसका क्रोध
अपने शत्रुओं के प्रति भड़क उठता है।'
15 देखो, प्रभु अग्नि में आएगा,
और उसके रथ बवंडर के सदृश वेगवान
होंगे।
वह अपनी क्रोधाग्नि प्रकट करेगा,
और अग्नि-ज्वाला के साथ अपना प्रकोप!
16 प्रभु हर एक प्राणी का अग्नि के माध्यम से
और अपनी तलवार के द्वारा न्याय करेगा;
वह अनेक लोगों का वध करेगा।

17 'जो लोग पूजा-उद्यानों की ओर पंक्ति
में जाने के लिए स्वयं को पवित्र और शुद्ध करते
हैं, और वहां सूअर का मांस, अन्य घृणित
वस्तुएँ तथा चूहे खाते हैं, उन सब का एक साथ
अन्त हो जाएगा।' प्रभु की यह वाणी है।

18 'मैं उनके काम और उनके विचार
जानता हूं। मैं सब राष्ट्रों और सब भाषाओं की
कौमों को एकत्र करने के लिए आ रहा हूं। वे
यरूशलेम में आएंगे और मेरे वैभव का दर्शन
करेंगे।
19 मैं उनके मध्य एक चिह्न स्थापित
करूंगा। मैं उनमें से अपने बचे हुए लोगों को
अनेक राष्ट्रों में तथा उन सुदूर राष्ट्रों में भेजूंगा
जिन्होंने न मेरा नाम सुना है, और न मेरी महिमा
के दर्शन किए हैं : तर्शीश, धनुर्धारी पूत और
लूद, तूबल और यवन; उन राष्ट्रों में वे मेरी
महिमा प्रकट करेंगे।'
20 प्रभु की यह वाणी
है : 'जैसे इस्राएली आराधक अन्नबलि को शुद्ध
पात्र में रखकर प्रभु-गृह में लाते हैं, वैसे ही वे
सभी राष्ट्रों में से तुम्हारे जाति-भाई-बन्धुओं को
घोड़ों, रथों, पालकियों, खच्चरों और ऊंटनियों
पर बैठा कर पवित्र पर्वत यरूशलेम में लाएंगे,
और मुझे भेंट के रूप में अर्पित करेंगे।

21 'मैं-प्रभु यह कहता हूं : मैं उन में से कुछ
व्यक्तियों को पुरोहित और उपपुरोहित पद पर
नियुक्त करूंगा।'
22 प्रभु यह कहता है;
'जिस प्रकार नया आकाश और नई पृथ्वी,
जो मैं बनानेवाला हूं,
मेरे सम्मुख स्थिर रहेंगे,
उसी प्रकार तुम्हारे वंशज और तुम्हारा नाम
स्थिर रहेंगे।
23 मैं-प्रभु यह कहता हूं;
नए चांद के दिन से
दूसरे नए चांद के दिन तक,
एक विश्राम-दिवस से
दूसरे विश्राम-दिवस तक
समस्त प्राणी मेरी आराधना के लिए
मेरे सम्मुख उपस्थित होंगे।

24 'वे नगर से बाहर निकलेंगे, और उन
लोगों के शव देखेंगे जिन्होंने मुझ से विद्रोह
किया था। कीड़े उन के शव को निरन्तर खाते
रहेंगे, उनको भस्म करने वाली अग्नि कभी न
बुझेगी। सब प्राणियों को उन से घृणा होगी।'

---

* अथवा, 'कृपापूर्ण हाथ', वरदान देने अथवा रक्षा करने वाला हाथ।

66 : 22 2 पत 3 : 13; प्रक 21 : 1 **66 : 24** मक 9 : 48; यहूदी 16 : 17

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नबी यिर्मयाह का ग्रंथ

पुस्तक-परिचय

नबी यिर्मयाह का सेवा-काल ईसवी पूर्व सातवीं शताब्दी के उत्तरार्ध से छठी शताब्दी के पूर्वार्ध तक माना जाता है। उन्होंने अपने दीर्घ सेवाकाल के आरंभ में धर्मसुधार के कार्यों में राजा योशियाह का साथ दिया था। नबी ने परमेश्वर के लोगों को चेतावनी दी थी कि इस्राएली राष्ट्र पर विनाश के बादल मंडरा रहे हैं, क्योंकि उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया है। यरूशलेम के निवासी मूर्तियों में अवास्तविकता की पूजा करने लगे, वरन् अपने पड़ोसी को वास्तविक आदर नहीं देते और यों अधर्म करते थे। इसलिए उनका मंदिर खड़ा नहीं रह सकेगा! नबी यिर्मयाह ने स्वयं अपने जीवनकाल में अपने इस कठोर वचन को सच प्रमाणित होते देखा। यरूशलेम नगर बेबीलोन के सम्राट नबूकदनेस्सर के हाथों विनष्ट हो गया। यरूशलेम का मंदिर भी खण्डहर हो गया, तथा प्रजा को गुलाम बन कर बेबीलोन देश जाना पड़ा। एकाएक नबी यिर्मयाह की वाणी मधुर हो गयी। उन्होंने दृढ़तापूर्वक यह नबूबत की कि इस्राएली लोग अंततः बंधुआई से वापस यरूशलेम लौटेंगे और इस्राएली राष्ट्र की पुनः स्थापना होगी।

यिर्मयाह गन्थ को चार खण्डों में विभाजित किया जा सकता है:

पहला खण्ड: यहूदा प्रदेश के राजा योशियाह, यहोयाकीम तथा सिदकियाह के राज्यकाल में दिये गये सन्देश।

दूसरा खण्ड: यिर्मयाह के सचिव बारूक द्वारा लिखित कार्य-विवरण। अध्याय 36 में सन् 605 ईसवी पूर्व का यह अनिष्ट-सूचक दृश्य मिलता है कि राजा यहोयाकीम चर्मपत्र पर लिखित नबूवतों को जलाता है। अतः बारूक को एक नया संस्करण तैयार करना पड़ा। इसमें नबी यिर्मयाह की अनेक नबूवतें एवं उनके जीवन की महत्वपूर्ण घटनाएं उल्लिखित हैं (इसमें यरूशलेम के पतन के बाद की घटनाएं भी सम्मिलित हैं)।

तीसरा खण्ड: इस खण्ड में परमेश्वर के वे वचन हैं, जो उसने नबी के मुख से अन्य राष्ट्रों के सम्बन्ध में कहे थे।

चौथा खण्ड: वास्तव में यह ऐतिहासिक परिशिष्ट है, जिसमें यरूशलेम के पतन एवं बेबीलोन को निष्कासित होनेवालों का विवरण दिया गया है।

नबी यिर्मयाह एक संवेदनशील व्यक्ति थे। वह अपनी कौम से प्रेम करते थे और उन्हें उसके भविष्य की चिन्ता थी। वह अपने लोगों के लिए ऐसे अशुभ वचन अपने मुख से निकालना पसन्द नहीं करते थे, और उन्हें मानसिक कष्ट होता था कि वह परमेश्वर के नबी हैं। फिर भी उन्हें हथौड़े की मार के सदृश परमेश्वर का वचन सुनाना ही पड़ा। परमेश्वर का वचन उनके हृदय में अग्नि-जैसा प्रज्वलित था, और वह अग्नि को अपने हृदय में दबा कर नहीं रख सकते थे।

प्रस्तुत ग्रंथ के सर्वोत्कृष्ट अंश वे हैं, जिनका संबंध "नया विधान" (वाचा) से है: "बिना गुरु के ही सब छोटे-बड़े लोग प्रभु को जानेंगे, क्योंकि प्रभु की व्यवस्था उनके हृदय पर अंकित होगी: मैं उनका परमेश्वर होऊंगा, और वे मेरे निज लोग होंगे" (31 : 31-34)।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

संदेशों का पहला आलेख	**1 : 1—25 : 38**
नबी को प्रभु का आवाहन	**1 : 1-19**
योशियाह, यहोयाकीम तथा सिदकियाह के राज्यकाल में हुई नबूवतें	**2 : 1—25 : 38**

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नबी यिर्मयाह के जीवन की घटनाएं और नये संदेश	26 : 1—45 : 5
विभिन्न राष्ट्रों के विरुद्ध नबूवतें	46 : 1—51 : 64
यरूशलेम का पतन	52 : 1—34

यिर्मयाह का सेवाकाल

1 यिर्मयाह का इतिहास+ :
यिर्मयाह के पिता का नाम हिल्कियाह था।
उनका पिता बिन्यामिन कुलक्षेत्र के अनातोत
नगर के पुरोहितों में से एक था।
2 यिर्मयाह को जब प्रभु का संदेश मिला तब
यहूदा प्रधेश पर राजा योशियाह बेन-आमोन*
राज्य करता था, और उसके राज्यकाल का
तेरहवां वर्ष था।
3 राजा योशियाह के पश्चात् उसके पुत्र
यहोयाकीम के राज्य-काल में भी प्रभु का
सन्देश यिर्मयाह को मिला।
राजा योशियाह के पुत्र सिदकियाह के
राज्य-काल के ग्यारहवें वर्ष के अन्त तक प्रभु
का सन्देश यिर्मयाह को मिलता रहा। इसी वर्ष
के पांचवें महीने में यरूशलेम के निवासी
गुलाम बनकर यहूदा प्रदेश से निष्कासित हुए।

यिर्मयाह को प्रभु का आवाहन

4 प्रभु का यह सन्देश मुझे मिला,
उसने मुझसे यों कहा,
5 'जब मैंने तेरी मां के पेट में तुझे गढ़ा,
उसके पहले से मैंने तुझे चुना है।
तेरे जन्म लेने के पूर्व ही
मैंने नबी-कार्य के लिए
तेरा अभिषेक किया है++ ।
मैंने राष्ट्रों के लिए
तुझे नबी नियुक्त किया है।'
6 तब मैंने कहा, 'प्रभु, मेरे स्वामी, देख,
अभी तो मैं बोल भी नहीं सकता;
मैं तो अभी किशोर ही हूं।'
7 किन्तु प्रभु ने कहा,
'मत कह कि तू किशोर है!
मैं जिस-जिस व्यक्ति के पास
तुझको भेजूंगा,
तू उसके पास जाएगा,
और जो मैं तुझे बोलने के लिए कहूंगा,
वही तू बोलेगा।
8 तू उनसे मत डरना,
क्योंकि तुझे बचाने के लिए
मैं तेरे साथ हूं,' प्रभु की यह वाणी है।

9 फिर प्रभु ने हाथ बढ़ाकर मेरे मुंह को
छुआ, और मुझ से यों कहा, 'देख, मैं अपने
वचन तेरे मुंह में प्रतिष्ठित करता हूं।
10 देख, आज मैं तुझको राष्ट्रों और राज्यों पर
प्रबन्धक नियुक्त करता हूं,
कि तू उनको उखाड़े, और गिराए;
कि तू उनको नष्ट करे और ध्वस्त करे;
कि तू उनको बनाए, और रोपे!'

11 प्रभु का यह सन्देश मुझे मिला। उसने
मुझसे पूछा, 'यिर्मयाह, तुझे क्या दिखाई दे रहा
है?' मैंने उत्तर दिया, 'प्रभु, मुझे बादाम वृक्ष**
की एक शाखा दिखाई दे रही है।'
12 तब प्रभु ने मुझ से कहा, 'तूने ठीक
देखा; क्योंकि मैं अपने वचन को पूरा करने के
लिए जाग्रत** हूं।'

13 प्रभु का सन्देश मुझे दूसरी बार मिला।
प्रभु ने मुझसे पूछा; 'तुझे क्या दिखाई दे रहा है?'
मैंने उत्तर दिया, 'प्रभु, मुझे एक हण्डा दिखाई
दे रहा है, जो उबल रहा है, और उसका मुंह
उत्तर दिशा से हमारी ओर है।'
14 तब प्रभु ने मुझ से कहा, 'उत्तर दिशा से
संकट का एक बादल उठेगा, जो इस देश के

+ अथवा, 'वचन' * अर्थात् 'आमोन का पुत्र' ++ अक्षरशः, 'अलग किया' ** मूल में बादाम और जाग्रत शब्द का उच्चारण समान है।

1 : 3 2 रा 25 : 8 1 : 5 यश 49 : 1; लू 1 : 15; गल 1: 15 1 : 6 नि 4 : 10 1 : 7 यहेज 2 : 3 1 : 8 यश 43 : 5; प्रे 18 : 9–10 1 : 9 2 शम 23 : 2; यश 6 : 7 1 : 10 प्रक 10: 11

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

निवासियों पर छा जाएगा। [15]देख, मैं उत्तर
दिशा के सब राज्यों के कुलों को बुला रहा हूं।
वे यरूशलेम की सब दीवारों पर, यहूदा प्रदेश
के सब नगरों पर आक्रमण करेंगे, और
राजधानी यरूशलेम के प्रवेश-द्वारों के सम्मुख
अपना-अपना न्यायासन जमाएंगे।

16 'इस प्रकार मैं इस्राएलियों का न्याय
करूंगा। उन्होंने मुझे त्याग कर दुष्कर्म किया है।
वे अन्य देवताओं के सम्मुख धूप-द्रव्य जलाते
हैं, और अपने हाथों से बनाई गई मूर्तियों की
पूजा करते हैं,' प्रभु की यह वाणी है।

17 'ओ यिर्मयाह, उठ; कमर कस कर तैयार
हो। उनसे सब बातें कह, जो मैंने तुझ से कही
हैं। उनसे मत घबराना, अन्यथा मैं तुझे उनके
सामने घबरा दूंगा।

18 'देख, आज मैं तुझको एक किलाबन्द
नगर, लौहस्तम्भ, और कांस्य दीवार बनाता हूं।
यह सारा यहूदा प्रदेश—राजा, उच्चाधिकारी,
पुरोहित, और प्रतिष्ठित नागरिक+—तुझ पर
आक्रमण करेगा। [19]वे तुझ से युद्ध करेंगे, पर
वे तुझ पर प्रबल न हो सकेंगे, क्योंकि मैं तुझे
बचाने के लिए, तेरे साथ हूं,' प्रभु की यह वाणी
है।

इस्राएली राष्ट्र का पाप

2 प्रभु का यह सन्देश मुझे मिला। उसने
मुझसे कहा,
2 'जा, यरूशलेम नगरी से यह कह:
प्रभु यों कहता है:
ओ यरूशलेम, मुझे तेरी भक्ति स्मरण है,
जब तू जवान थी,
तूने मुझे दुल्हन-सा प्रेम दिया था!
तू पतिव्रता स्त्री के समान
निर्जन प्रदेश में मेरे पीछे-पीछे चली थी।
उस निर्जन भूमि में हल भी नहीं चला था।
3 ओ इस्राएली राष्ट्र,
तू मुझ-प्रभु के लिए पवित्र था,
फसल का प्रथम फल था।
जिस-जिस ने उसको खाया,
वह दोषी हो गया,
और उस पर विपत्तियों का पहाड़ टूट पड़ा,'
प्रभु की यह वाणी है।

यहूदा प्रदेश को चेतावनी

4 ओ याकूब के वंशजो,
इस्राएली कुलों के सब लोगो,
प्रभु का यह वचन सुनो।
5 प्रभु तुमसे यों कहता है:
'तुम्हारे पूर्वजों ने मुझ मे
कौन-सी त्रुटि पायी थी कि
वे मुझ से दूर हो गए?
और निस्सार देवता का अनुसरण कर
स्वयं निस्सार बन गए?
6 उन्होंने पश्चात्ताप कर यह नहीं कहा,
"हमारा प्रभु कहां है
जिसने हमें मिस्र देश से मुक्त कर
बाहर निकाला था,
जिसने निर्जन प्रदेश में हमारा नेतृत्व किया
था,
जो हमें मरुस्थल और गड्ढों के प्रदेश से,
निर्जल और घोर अंधकार के क्षेत्र से,
निर्जन प्रदेश से ले गया था,
जहां कोई आता-जाता न था,
जहां कोई रहता न था?"

7 'ओ इस्राएलियो,
मैं तुम्हें हरे-भरे देश में लाया,
कि तुम उसके फल-फूल खाओ,
उसकी उत्तम उपज से तृप्त हो।
किन्तु जब तुम यहाँ आए, तुम ने अपने
आचरण से
मेरे इस देश को अपवित्र कर दिया,
मेरी इस मीरास को घृणित बना दिया।
8 पुरोहित अब मुझसे नहीं पूछते हैं,
"प्रभु कहां है?"
व्यवस्था के आचार्य मुझे नहीं जानते हैं।
राज्य के उच्चाधिकारी मेरे प्रति अपराध करते
हैं।
नबी बअल देवता के नाम से

+ अक्षरशः 'देश की जनता'

2 : 2 हो 2 : 15 2 : 3 प्रक 14 : 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नबूवत करते हैं,
और निरर्थक मूर्तियों का अनुसरण करते हैं।
9 इसलिए, ओ इस्राएलियो!
मैं तुम पर दोष लगाता हूं,
और तुम्हारी पीढ़ी दर पीढ़ी दोष लगाता रहूंगा,' प्रभु की यह वाणी है।

10 'पश्चिम की ओर कुप्रुस द्वीप को पार करो और देखो,
पूर्व की ओर केदार देश में दूत भेजो,
और उनकी सूचना की सावधानी से जांच करो;
क्या कभी किसी कौम ने ऐसा आचरण किया है?
11 क्या किसी राष्ट्र ने अपने देवता ही बदल दिए,
फिर चाहे वे झूठे ही क्यों न हों?
परन्तु मेरे निज लोगों ने
अपने महिमामय परमेश्वर को निरर्थक मूर्तियों से बदल लिया!
12 ओ आकाश, इस बात से तू आश्चर्य में डूब जा;
तू थर्रा उठ! तेरा सारा जल सूख जाए!'
प्रभु की यह वाणी है।

13 'मेरे निज लोगों ने दो दुष्कर्म किए हैं:
उन्होंने मुझे, जीवन-जल के झरने को, त्याग दिया,
और अपने लिए हौज बना लिये
जो टूटे-फूटे हैं,
और जिनसे पानी बह जाता है!

14 'क्या इस्राएल गुलाम है?
क्या वह घर में जन्मा हुआ दास है?
तब फिर वह क्यों शिकार बना?
15 सिंह उसको देखकर गरजे;
वे उसको चीरने-फाड़ने के लिए
जोरों से दहाड़े।
उन्होंने उसके देश को उजाड़ दिया;
उसके नगर खण्डहर हो गए;
वे निर्जन पड़े हैं।
16 ओ इस्राएल, मेमफिस और तहपन्हेस नगरों के निवासियों ने तेरा सिर मूँड़ लिया!
17 क्या तेरी इस शोचनीय दशा का कारण स्वयं तू नहीं है?
जिस प्रभु ने तेरा मार्ग-दर्शन किया था,
उसी परमेश्वर को तूने त्याग दिया!
18 अब मिस्र की ओर ताकने से क्या लाभ?
नील नदी का पानी पीने से
तुझे कुछ फायदा न होगा।
असीरिया देश से संधि करने से
तेरा भला न होगा।
फरात नदी का जल भी तुझ में
नवजीवन नहीं डाल सकेगा।
19 तेरा दुष्कर्म ही तुझे ताड़ना देगा
और तेरा ईश-त्याग ही
तुझे दंडित करेगा।
ओ इस्राएल, तू यह बात जान,
और स्वयं अपनी आंखों से देख,
कि अपने प्रभु परमेश्वर को त्यागना
तेरे लिए कितना अनिष्टकारी और कटु है।
तेरे हृदय में मेरे लिए कोई भय नही है,'
स्वर्गिक सेनाओं के स्वामी प्रभु की यह वाणी है।

20 'ओ इस्राएल,
तूने मुझसे विश्वासघात किया।
तूने मेरे प्रेम और अधिकार के बंधन तोड़कर कहा,
''मैं तेरी सेवा नहीं करूंगी।''
तू प्रत्येक पहाड़ी शिखर के मन्दिर में,
हर एक हरे वृक्ष के नीचे
वेश्या के समान दूसरे से प्रेम करती रही।
21 मैंने उत्तम अंगूर-बेल,
श्रेष्ठ जाति की बेल के रूप में तुझे लगाया था।
फिर क्यों तुझ में कीड़ा लग गया?
क्यों तू जंगली अंगूर-बेल बन गई?
22 चाहे तू क्षार से स्वयं को धोए,

2 : 11 भज 106 : 20; रोम 1 : 23 2 : 13 यो 4 : 1 2 : 21 यश 5 : 1

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

साबुन से मल-मल कर नहाए,
तो भी तेरे कुकर्म का दाग
मेरी आंखों के सामने है,'
स्वामी-प्रभु की यह वाणी है।

23 'तू कैसे कह सकती है कि तू अशुद्ध नहीं
है?
क्या तू इन्कार कर सकती है
कि तूने बअल देवता का अनुसरण नहीं
किया?
घाटी में तूने जो किया है,
उस पर दृष्टि कर;
अपने आचरण को जान ले!
तू कामाग्नि में जलती हुई
इधर-उधर वेग से दौड़नेवाली ऊंटनी थी!
24 तू निर्जन प्रदेश की कामातुर जंगली गदही
की तरह
यहां-वहां हवा सूंघती फिरती थी।
उसकी वासना को कौन रोक सकता था?
उसे ढूंढ़नेवाले व्यर्थ परिश्रम न करें;
क्योंकि वे उसको ऋतुकाल में पा लेंगे।
25 तू काम की तृप्ति के लिए यहां-वहां
मत भटक,
अपने पैरों को मत थका,
और न प्यास से अपना गला सुखा!
परन्तु तू कहती है, "नहीं, ऐसा नहीं हो
सकता ।
मैं अन्य जाति के देवताओं से प्रेम करती हूं;
मैं उनके ही पीछे-पीछे जाऊंगी।"

26 'जैसे चोर पकड़े जाने पर लज्जित होता है,
वैसे ही इस्राएल वंश लज्जित होगा:
जनता, उसके राजा, उसके उच्चाधिकारी,
उसके पुरोहित और उसके नबी
शर्म से सिर झुकाएंगे।
27 वे काठ स्तम्भ से कहते हैं,
"तू हमारा पिता है।"
वे पत्थर से कहते हैं,
"तूने ही हमें जन्म दिया है।"
उन्होंने मेरी ओर अपना मुंह नहीं
वरन् अपनी पीठ फेरी है।
जब उन पर संकट के बादल मंडराते हैं,
तब मुझसे कहते हैं, "उठ और हमें बचा।"
28 ओ इस्राएल, तेरे देवता कहां गए,
जिनकी मूर्तियां तूने अपने हाथ से गढ़ी थीं?
वे तेरे इस संकट-काल में उठें,
और तुझ को बचाएं!
ओ यहूदा प्रदेश, जितने तेरे नगर हैं,
उतने ही तेरे देवता हैं!

29 'तुम मेरी शिकायत क्यों करते हो?
तुम-सबने मुझसे विद्रोह किया है,'
प्रभु की यह वाणी है।

30 'मैंने व्यर्थ ही तुम्हारे बच्चों को मारा,
वे मेरी ताड़ना से सुधरे नहीं;
तुमने अपनी तलवार से
अपने नबियों को चीर-फाड़ डाला,
जैसे गरजता हुआ सिंह
अपने शिकार को फाड़ता है!
31 ओ लोगो, मुझ-प्रभु के वचन पर ध्यान दो।
क्या मैं इस्राएली कौम के लिए
निर्जन प्रदेश के सदृश
अथवा घोर अन्धकारमय क्षेत्र के सदृश
भटकाने वाला था?
तब मेरे निज लोग यह क्यों कहते हैं,
"हम स्वतन्त्र हैं,
हम तेरे पास नहीं आएंगे"?
32 क्या कुंआरी कन्या सजना-संवरना भूल
सकती है?
क्या नई दुल्हन श्रृंगार भुला सकती है?
फिर भी मेरे निज लोगों ने मुझे युगों से भुला
दिया,

33 'तू अपने प्रेमी ढूंढ़ने में कितनी चतुर है?
तूने बुरी स्त्रियों को भी
अपनी चाल सिखा दी है!
34 तेरे आंचल में निर्दोष गरीबों का रक्त लगा
है।
यद्यपि तूने उन्हें सेंध लगाते हुए नहीं पकड़ा

2: 28 व्य 32 : 37

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

था।
इन सब अपराधों के होते हुए भी
35 तू कहती है, ''मैं निर्दोष हूं;
निश्चय ही प्रभु का क्रोध मुझ पर से हट
जाएगा।''
पर नहीं, क्योंकि तूने कहा कि तूने पाप नहीं
किया,
इसलिए मैं तुझे न्याय के कटघरे में खड़ा
करूँगा।
36 तू कितनी सरलता से अपना आचरण बदल
लेती है,
जैसे गिरगिट रंग बदलता है।
पर जैसे असीरिया ने तेरी लज्जा लूटी थी,
वैसे ही मिस्र भी तुझे अपमानित करेगा।
37 वहां से भी तू खाली हाथ लौटेगी,
सिर पकड़ कर रोती हुई।
क्योंकि जिन पर तूने भरोसा किया है,
उनको मुझ-प्रभु ने तिरस्कृत कर दिया है।
उनकी सहायता से तेरा काम सफल नहीं
होगा।

सच्चे पश्चात्ताप की आवश्यकता

3 'कहो,
यदि कोई पुरुष अपनी पत्नी को त्याग दे,
और उसकी पत्नी दूसरे पुरुष की स्त्री हो
जाए
तो क्या वह उसके पास लौटेगा?
क्या उसके ऐसे आचरण से
सारा देश भ्रष्ट नहीं हो जाएगा?
ओ इस्राएली जनता,
तू अनेक प्रेमियों के साथ व्यभिचार कर
चुकी है।
क्या अब तू मेरे पास लौटेगी?'
प्रभु की यह वाणी है।

2 'मुण्डे पहाड़ी शिखरों की ओर आंख उठाकर
देख!
कौन-सा स्थान बाकी है
जहां तूने कुकर्म नहीं किया?
जैसे अरब-निवासी
निर्जन स्थान में घात लगाकर बैठता है
और कारवां की प्रतीक्षा करता है,
वैसे ही तू राह में आंख बिछाए
अपने प्रेमियों का इंतजार करती थी।
अरी, इस्राएली जनता,
तूने अपने व्यभिचार से
समस्त देश को भ्रष्ट कर दिया है।
3 अत: मैंने वर्षा रोक दी,
वसंत ऋतु में होनेवाली वर्षा
इस वर्ष नहीं हुई।
फिर भी तुझे पाप की ग्लानि नहीं हुई।
तेरी आंखों में व्यभिचार झलकता रहा!
4 दूसरी ओर तू मुझसे प्रार्थना करती है,
''हे मेरे पिता, तू तो मेरे बचपन से मेरा मित्र
रहा है!
5 क्या तू सदा मुझसे नाराज रहेगा?
क्या युगान्त तक तेरा क्रोध शान्त नहीं
होगा?''
ओ इस्राएल, यों तू मुझ से प्रार्थना भी करती
है,
और जितने कुकर्म तुझसे हो सकते हैं,
उनको भी करती जाती है!'

इस्राएल और यहूदा प्रदेशों को पश्चात्ताप करना ही होगा

6 राजा योशियाह के राज्य-काल में मुझे प्रभु
का यह संदेश मिला। उसने मुझसे कहा,
'विश्वासघातिनी इस्राएल प्रदेश की जनता के
कामों को क्या तूने देखा है? वह पहाड़ी-शिखर
के प्रत्येक मन्दिर में गई। उसने हरएक हरे वृक्ष
के नीचे मूर्ति की पूजा की। यों उसने मेरे प्रति
विश्वासघात किया। 7 मैंने सोचा था कि इन सब
कामों को करने के बाद वह पश्चात्ताप करेगी,
और मेरे पास लौट आएगी। पर वह नहीं लौटी।
उसकी बहिन यहूदा ने भी यह देखा। लेकिन
वह भी कपटी बनी रही। 8 उसने देखा कि
उसकी बहिन विश्वासघातिनी इस्राएल के
व्यभिचार-कर्म के कारण — कि उसने मुझे
त्यागकर अन्य देवताओं की पूजा की — मैंने
तलाक पत्र लिखकर उसको भगा दिया है, फिर

---
3 : 1 व्य 24 : 4 **3 : 2** व्य 12 : 2 **3 : 3** लेव 26 : 19

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भी उसकी कपटी बहिन यहूदा प्रदेश की जनता
नहीं डरी! बल्कि उसने भी वही आचरण किया
और वह भी व्यभिचारिणी बन गई। 9यहूदा को
यह व्यभिचार-कर्म बड़ा हल्का जान पड़ा।
अत: उसने पत्थरों और काठ स्तम्भों की पूजा
करके सारे प्रदेश को भ्रष्ट कर दिया। 10फिर भी
यह कपटी बहिन यहूदा मेरे पास पूरे हृदय से
नहीं लौटी। उसके हृदय में कपट बना रहा,'
प्रभु की यह वाणी है।

11 प्रभु ने मुझसे कहा, 'कपटी यहूदा से
विश्वासघातिनी इस्राएल कम दोषी है।
12 जा, तू उत्तर दिशा में मेरे ये वचन सुना:
प्रभु यह कहता है:
ओ विश्वासघातिनी इस्राएली जनता,
'मेरी ओर लौट।
मैं करुणा-सागर हूं;
मैं तुझ पर क्रोध नहीं करूँगा।
मुझ-प्रभु का यह वचन है।
मैं युगांत तक तुझसे नाराज नहीं रहूंगा।
13 केवल तू अपने दुष्कर्म को स्वीकार कर,
कि तूने मुझ-प्रभु परमेश्वर से विद्रोह किया
था,
और यहां-वहां हरएक हरे वृक्ष के नीचे
अन्य देवताओं की पूजा की थी,
और यों तूने मेरे आदेशों को नहीं माना,'
प्रभु ने यह कहा है।

14 प्रभु यों कहता है:
'ओ विश्वासघातिनी जनता, लौट आ!
क्योंकि मैं तेरा स्वामी हूं।
मैं प्रत्येक नगर से एक व्यक्ति
और हरएक गोत्र से दो जन लूंगा,
ओर यों तुझको सियोन में पहुंचा दूंगा।

15 'सुन, मैं तुझको अपने हृदय के अनुकूल
उच्च अधिकारी दूंगा। वे तुझ पर बुद्धि और
समझ से शासन करेंगे। 16 उन दिनों में, जब तेरी
आबादी इतनी बढ़ जाएगी कि लोग देश में भर
जाएंगे, वे "प्रभु की विधान-मंजूषा" के विषय
में चर्चा नहीं करेंगे। उसका विचार उनके
मस्तिष्क में नहीं आएगा। वे उसका स्मरण नहीं
करेंगे। वे उसकी अनुपस्थिति भी अनुभव नहीं
करेंगे, और नयी विधान-मंजूषा भी नहीं
बनाएंगे।

17 'उन दिनों में यरूशलेम नगर "प्रभु का
सिंहासन" कहलाएगा। विश्व की सब जातियां
यरूशलेम में प्रभु की उपस्थिति में एकत्र
होंगी। वे हठ-पूर्वक अपने हृदय के अनुरूप
बुरे मार्ग पर नहीं चलेंगी। 18उन दिनों में यहूदा
प्रदेश की जनता इस्राएल प्रदेश की जनता से
मिल जाएगी। वे दोनों संगठित होकर उत्तर
दिशा से उस भूमि में प्रवेश करेंगी, जो मैंने
उनके पूर्वजों को पैतृक-अधिकार के लिए
प्रदान की थी।
19 'ओ इस्राएली कौम, मैंने सोचा था कि तुझे
अपने ही लोगों के मध्य* प्रतिष्ठित करूंगा,
तुझे एक उपजाऊ देश प्रदान करूंगा,
जो सब देशों में सर्वोत्तम होगा।
मैं सोचता था, तू मुझे अपना पिता मानेगी,
और मेरा अनुसरण करना नहीं छोड़ेगी।
20 परन्तु, नहीं! जैसे विश्वासघातिनी पत्नी
पति को छोड़कर चली जाती है,
वैसे ही तूने मेरे साथ विश्वासघात किया,'
प्रभु की यह वाणी है।

इस्राएलियों का पश्चात्ताप करना

21 मुण्डे पहाड़ी शिखरो पर शोक-स्वर सुनाई
दे रहा है,
इस्राएली रो रहे हैं, वे गिड़गिड़ा रहे हैं।
वे मार्ग से भटक गए थे;
वे अपने प्रभु परमेश्वर को भूल गए थे।
22 प्रभु ने उनसे कहा था,
'ओ विश्वासघाती सन्तान, लौट आ!
मैं तेरे विश्वासघात के घाव को भर दूंगा।'
वे बोले, 'देख, हम तेरे पास लौट आए हैं;
क्योंकि तू ही हमारा प्रभु परमेश्वर है
23 पहाड़ी-शिखर के मन्दिर और मूर्तियां
निस्सन्देह निस्सार हैं;
पूजा-पाठ का शोर व्यर्थ है।
सचमुच इस्राएली कौम का उद्धार

*अथवा, 'पुत्र के सदृश'
3 : 15 यिर 23 : 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

केवल प्रभु परमेश्वर ही करता है।

24 'किन्तु हमारे बचपन से ही, ये घृणित
देवता हमारे पूर्वजों के कठोर परिश्रम का फल,
उनके रेवड़ के बैल-गाय, भेड़-बकरियां,
उनके पुत्र और पुत्रियां खाते रहे हैं! 25हमें तो
शर्म के मारे गड़ जाना चाहिए। हमें चुल्लू भर
पानी में डूब मरना चाहिए। हमने अपने प्रभु
परमेश्वर के प्रति पाप किया है। हम और हमारे
पूर्वज बचपन से आज तक पाप करते आए हैं।
हमने अपने प्रभु परमेश्वर की बातों को नहीं
माना।'

परमेश्वर की शर्त

4 प्रभु कहता है, 'ओ इस्राएल!
यदि तू लौटे, तो तुझे मेरे पास ही लौटना
चाहिए।
यदि तू अपनी मूर्ति-पूजा की घृणित वस्तुओं
को मेरे सामने से दूर करे,
और मेरे पास से न भागे,
2 यदि तू सच्चाई, न्याय और निष्कपट हृदय से
जीवंत प्रभु की शपथ खाए,
तो विश्व के राष्ट्र तेरे कारण
मुझसे आशिष पाएंगे;
वे तेरे माध्यम से मेरी महिमा करेंगे+।'

3 प्रभु यहूदा प्रदेश की जनता से तथा यरूशलेम
के निवासियों से यों कहता है:
'परती भूमि को जोतो
और कंटीली झाड़ियों में बीज मत बोओ।
4 ओ यहूदा प्रदेश की जनता,
ओ यरूशलेम के निवासियो,
मुझे प्रसन्न करने के लिए
शारीरिक खतना नहीं,
वरन् मन का खतना करो।
अन्यथा तुम्हारे दुष्कर्म देखकर
मेरा क्रोध अग्नि के सदृश भड़क उठेगा,
और वह कभी शान्त नहीं होगा।'

शत्रु के आक्रमण की सूचना

5 यहूदा प्रदेश में यह घोषित करो,
राजधानी यरूशलेम में यह कहो:
'सारे देश में खतरे का बिगुल बजाओ,
नागरिकों को पुकार-पुकार कर कहो:
''एकत्र हो, और किलाबंद नगरों में
जाओ।''
6 सियोन के मार्ग पर ध्वजा फहराओ,
कि लोगों को रास्ता मालूम हो।
नगरों में मत रुको,
सुरक्षित स्थानों को भाग जाओ;
क्योंकि मैं उत्तर दिशा से
महा-विनाशकारी शत्रु को लाऊंगा।
7 एक सिंह अपनी झाड़ी से निकल पड़ा है;
राष्ट्रों के विनाशक ने कूच का डंका बजाया
है।
वह अपने स्थान से बाहर निकला है।
वह तुम्हारे देश को उजाड़ देगा;
तुम्हारे नगरों को खण्डहर बना देगा,
और वे निर्जन हो जाएंगे।
8 अतः पश्चात्ताप प्रकट करने के लिए
टाट के वस्त्र पहनो;
शोक मनाओ, और रोओ।
मुझ-प्रभु की क्रोधाग्नि तुम से अभी दूर नहीं
हुई है।'

9 प्रभु ने मुझसे कहा, 'उस दिन, राजा और
उसके उच्च-अधिकारियों के हाथ-पैर ठण्डे
पड़ जाएंगे। पुरोहित आश्चर्य में डूब जाएंगे।
नबियों की बुद्धि काम नहीं करेगी।'

10 तब मैंने प्रभु से कहा, 'स्वामी, यदि
यहूदा प्रदेश की जनता और यरूशलेम के
निवासियों की यह दशा होगी तो निस्सन्देह तूने
उनको यह कह कर धोखा दिया है कि ''मत
डरो, तुम-सब सुख-शान्ति से रहोगे,'' जब कि
उनके सिर पर तलवार लटक रही है!'

11 उस दिन यहूदा प्रदेश की जनता और
यरूशलेम के निवासियों से यह कहा जाएगा:
'देखो, मरुस्थल के मुण्डे टीलों से मेरे नगर की
ओर लू बह रही है। पर यह अनाज के पछोरने
और ओसाने के लिए नहीं है। 12यह प्रचण्ड लू

+ मूल अस्पष्ट।

4 : 3 हो 10 : 12 **4 : 4** व्य 10 : 16

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मेरे उद्देश्य को पूरा करने के लिए है। अब मैं
उनको दण्ड की आज्ञा दूंगा।'
13 देखो, वह गरजते मेघों की तरह आ रहा है।
बवण्डर के समान उसके रथ दौड़ रहे हैं।
उसके घोड़ों की चाल
बाज से अधिक तेज है।
हाय! हाय! हम तो नष्ट हो जाएंगे।
14 ओ यरूशलेम, अपने हृदय से
दुष्कर्म की इच्छा निकाल दे,
और हृदय को धो ले।
तब ही तू बच सकती है।
कब तक तेरे अन्त: करण में
बुरे विचार घर किए रहेंगे?
15 दान क्षेत्र से, एफ्रइम के पहाड़ी क्षेत्र से
युद्ध के बुरे समाचार सुनाई दे रहें हैं।
16 राष्ट्रों को यह चेतावनी दे दो,
कि वह आ रहा है।
यरूशलेम में यह खबर सुना दो:
'दूर देश से आक्रमणकारी आ रहे हैं।
वे यहूदा प्रदेश के नगरों को ललकार रहे
हैं;
17 जैसे खेत के रखवाले
खेत के चारों ओर चक्कर लगाते हैं
वैसे ही वे यरूशलेम को घेर रहे हैं।
क्योंकि उसने मुझसे विद्रोह किया था,'
प्रभु की यह वाणी है।

18 'तेरे ही आचरण, तेरे ही दुष्कर्मों के कारण
यह विपत्ति तुझ पर आयी है।
यह विनाश-फल कितना कटु है;
और हृदय में सीधा उतर गया है।'

नबी की पीड़ा और दु:ख

19 आह! मेरा मन! मेरा मन!
मैं पीड़ा से तड़प रहा हूं।
आह! मेरा हृदय!
मेरे हृदय की धड़कन तेज हो गई है!
मैं चुप नहीं रह सकता;
क्योंकि मैं युद्ध के बिगुल की आवाज,
युद्ध का कोलाहल सुन रहा हूं।

20 विनाश पर विनाश का समाचार आ रहा है;
सारा प्रदेश लूट लिया गया है।
अचानक मेरे निवास-स्थान के तम्बू उखाड़
लिये गए,
क्षण-भर में मेरी कनातें नष्ट हो गयीं।
21 कब तक मैं युद्ध-पताका देखता रहूंगा?
कब तक मैं युद्ध का विगुल सुनता रहूंगा?
22 प्रभु ने कहा, 'मेरे निज लोग मूर्ख हैं;
वे मुझे नहीं जानते।
वे नासमझ बच्चे हैं;
उनमें बिल्कुल समझ नहीं है।
वे दुष्कर्म करने में चतुर हैं,
पर सत्कर्म कैसे करना चाहिए,
यह वे नहीं जानते।'

विनाश का दृश्य

23 मैंने पृथ्वी को देखा,
वह उजाड़ और निर्जन पड़ी थी।
मैंने आकाश की ओर दृष्टि की,
वहां पूर्ण अन्धकार था।
24 तब मैंने पहाड़ों पर नजर डाली,
तो देखा कि वे हिल रहे हैं।
पहाड़ियां डोल रही हैं।
25 मैंने धरती को देखा,
परन्तु वहां एक भी मनुष्य दिखाई
नहीं दिया।
आकाश के पक्षी भी अज्ञात स्थान को
उड़ गए।
26 मैंने देखा कि जो पहले उपजाऊ देश था,
वह अब मरुस्थल बन गया है।
उसके आबाद नगर अब खण्डहर हो गए
हैं।
यह विनाश प्रभु के सामने हुआ,
प्रभु की क्रोधाग्नि के कारण हुआ।

27 प्रभु यों कहता है,
'सारा देश उजाड़ हो जाएगा;
पर नहीं, मैं पूर्ण विनाश नहीं करूँगा।
28 पृथ्वी इस देश के लिए विलाप करेगी;
आकाश शोक से अंधकारमय हो जाएगा।
जो मैंने कहा है, जो मैंने निश्चित किया है

4 : 28 हो 4 : 3

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
उसको पूरा करूंगा
मैं इस कार्य के लिए नहीं पछताऊंगा,
और न ही अपने वचन से मुंह मोड़ूंगा।'

नागरिकों का पलायन

29 शत्रु-सेना के घुड़सवारों और
धनुष-धारियों के शोर से
नगरों के लोग प्राण बचाकर भागने लगे।
वे झाड़ियों में छिप गए।
वे चट्टानों पर चढ़ गए।
सब नगर निर्जन और सुनसान पड़े हैं।
अब उनमें मनुष्य नहीं रहते।
30 ओ उजाड़ नगरी! तू सजी-संवरी बैठी है,
इसका क्या अर्थ है?
तूने लाल वस्त्र पहिने हैं!
तूने सोने के आभूषणों से स्वयं को सजाया है;
आंखों में काजल डाला है।
पर इस श्रृंगार से क्या लाभ?
तेरे प्रेमी तुझसे घृणा करेंगे;
वे तेरे प्राण के ग्राहक बन जाएंगे।

31 मैंने प्रसव-पीड़ा से कराहती हुई
स्त्री की चीख सुनी।
मुझे ऐसा लगा मानो यह कराह
उस स्त्री की है,
जो पहली बार बच्चे को जन्म दे रही है।
यह चीख पुत्री सियोन की थी;
वह हांफ रही थी,
और हाथ फैलाए हुए कह रही थी,
'मुझे बचाओ!
मैं हत्यारों के हाथ में पड़ गई हूं;
मैं बेहोश हो रही हूं।'

यरूशलेम-निवासियों का पाप

5 प्रभु कहता है, 'यरूशलेम की सड़कों पर
इधर-उधर दौड़ कर देखो, और पता
लगाओ!
उसके चौराहों में खोजो और देखो,
कि क्या यरूशलेम में ऐसा मनुष्य है
जो न्याय से काम करता है,
जो अपने आचरण में ईमानदार है?
तब मैं यरूशलेम को क्षमा कर दूंगा।
2 यद्यपि यरूशलेम-निवासी
मुझ-जीवन्त परमेश्वर की शपथ खाते हैं,
पर उनकी शपथ झूठी होती है।'

3 'हे प्रभु, क्या तू सच्चाई को नहीं देखता?
देख, तूने उनको मारा,
किन्तु उन्हें पीड़ा का अनुभव ही नहीं हुआ!
तूने उनका संहार किया,
फिर भी उन्होंने इससे पाठ नहीं सीखा!
उन्होंने अपना हृदय
चट्टान से अधिक कठोर बना लिया,
उन्होंने पश्चात्ताप करने से इन्कार कर दिया।'

4 मैंने सोचा, 'यरूशलेम के ये लोग गरीब हैं।
उन्हें समझ नहीं है।
वे न प्रभु का मार्ग जानते हैं,
और न अपने परमेश्वर के न्याय-सिद्धान्त।
5 अत: मैं बड़े लोगों के पास जाऊंगा,
और उनसे बात करूंगा।
वे प्रभु का मार्ग जानते हैं।
वे अपने परमेश्वर के न्याय-सिद्धान्तों से परिचित हैं।'
प्रभु ने कहा, 'नहीं, उन्होंने भी
मेरे अधिकार के प्रतीक-चिह्न
जूए को तोड़ दिया है,
मेरे बन्धन को काट दिया है।

6 'अत: जंगल से एक सिंह आएगा,
और वह उनको मार डालेगा;
मरुस्थल से एक भेड़िया आएगा
और वह उनको चीर-फाड़ देगा।
उनके नगरों के प्रवेश-द्वारों पर
एक चीता घात लगाकर बैठा है।
जो आदमी नगर के बाहर निकलेगा,
वह उसको टुकड़े-टुकड़े कर देगा।
यहूदा प्रदेश की जनता
और यरूशलेम के निवासियों ने

5:1 मी 7:2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बहुत दुष्कर्म किए हैं,
वे कई बार मुझ-परमेश्वर को त्याग चुके हैं।

7 'ओ यरूशलेम ! मैं तुझे कैसे क्षमा कर दूं?
तेरे बच्चों ने मुझे छोड़ दिया है।
वे झूठे देवी-देवताओं की शपथ खाते हैं।
जब मैंने उनको भरपेट भोजन दिया
तब वे व्यभिचार करने लगे;
उन्होंने वेश्याओं के घरों में डेरा-डण्डा डाल
दिया।
8 वे स्वस्थ, मोटे-ताजे घोड़ों की तरह हो गये,
और अपने-अपने पड़ोसी की स्त्री पर
हिनहिनाने लगे!
9 क्या मैं उनके इस व्यभिचार के लिए
उनको दण्ड न दूंगा?
क्या मैं ऐसी जाति से प्रतिशोध न लूं?'
प्रभु की यह वाणी है।

10 प्रभु ने कहा, 'ओ इस्राएल के बैरियो,
ओ यहूदा के शत्रुओ,
उसकी अंगूर की क्यारियों में से होकर जाओ,
और अंगूर-उद्यान को नष्ट कर दो
(पर पूर्णतः नष्ट मत करना);
उसकी बेल-लताएं तोड़ डालो;
क्योंकि यह उद्यान अब मेरा नहीं रहा।
11 इस्राएल के वंश ने, यहूदा के कुल ने
मुझसे बड़ा विश्वासघात किया है,'
प्रभु की यह वाणी है।

12 'ओ यिर्मयाह, वे मुझ-प्रभु के विषय में
झूठा प्रचार करते हैं।
वे कहते हैं कि मैं कुछ नहीं करूँगा।
उनका अनिष्ट नहीं होगा।
न उन पर शत्रु का आक्रमण होगा,
और न उनके देश में अकाल पड़ेगा।
13 ये नबी हवा मात्र हैं,
उनमें मुझ-प्रभु की वाणी निवास नहीं
करती।
पर जैसा ये कहते हैं, वैसा ही उनके साथ
घटेगा।'

14 अत: स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु परमेश्वर यों
कहता है:
'उन्होंने तुझे "हवा" कहा है,
इसलिए देख, मैं तेरे मुंह में अपने शब्दों को
अग्नि बना दूंगा,
और यहूदा प्रदेश की जनता
तथा यरूशलेम के निवासियों को सूखी
लकड़ी!
मेरे अग्निमय वचन उन्हें भस्म कर देंगे।'

शत्रु का आगमन

15 प्रभु यों कहता है: 'ओ इस्राएल के वंशजो,
मैं दूर देश से एक कौम को बुला रहा हूं;
वह तुझ पर आक्रमण करेगी।
यह शक्तिशाली कौम है। यह प्राचीन कौम
है।
इस कौम की भाषा तुम नहीं जानते,
और न तुम उनकी बातचीत को समझ सकते
हो।
16 उनका तरकश खुली हुई कबर है।
वे सब के सब शूरवीर योद्धा हैं।
17 वे तुम्हारी फसल और तुम्हारी खाने-पीने
की वस्तुएं चटकर जाएंगे;
वे तुम्हारे पुत्रों और पुत्रियों को निगल जाएंगे।
वे तुम्हारी पशुशाला की भेड़-बकरियां
और रेवड़ के गाय-बैल खा जाएंगे।
वे तुम्हारे अंगूर-उद्यान के अंगूर,
और अंजीर-कुंज के अंजीर साफ कर देंगे।
जिन किलाबंद नगरों पर तुम्हें भरोसा है,
उनको तलवार के बल पर खण्डहर बना
देंगे।'

18 प्रभु का कथन है, 'किन्तु उन दिनों में
भी मैं तुम्हारा पूर्ण संहार नहीं करूंगा। 19 जब
लोग तुझ से पूछेंगे, कि "हमारे प्रभु परमेश्वर
ने हमारे साथ ऐसा व्यवहार क्यों किया?" तब
तुम उनसे यह कहना, "जैसे हम ने प्रभु
परमेश्वर को त्याग कर अपने देश में विदेशी
कौमों के देवी-देवताओं की सेवा की थी, वैसे
ही हमें पराए देश में विदेशी लोगों की सेवा
करनी पड़ेगी।"

5 : 7 व्य 32 : 15 5 : 12 यश 28 : 15; भज 14 : 1 5 : 14 हो 6 : 5 5 : 15 व्य 28 : 49 5 : 19 व्य 29 : 24

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
20 'याकूब के वंशजों को यह बताओ,
यहूदा प्रदेश के लोगों से यह कहो:
21 ओ मूर्ख और नासमझ लोगो, यह सुनो।
तुम्हारी आंखें हैं, पर तुम नहीं देखते।
तुम्हारे कान हैं, पर तुम नहीं सुनते।
22 तुम कब तक मेरी भक्ति नहीं करोगे?
तुम कब तक भक्ति भाव से
मेरे सम्मुख घुटने नहीं टेकोगे?
मैंने समुद्र की सीमा बांधने के लिए
रेत डाली है।
यह स्थायी मर्यादा है,
जिसको वह कभी लांघ नहीं सकता।
लहरें उठती हैं,
पर वे उसको लांघ नहीं सकतीं।
वे गरजती हैं,
किन्तु वे उस पर प्रबल नहीं हो पातीं।
23 लेकिन इन लोगों का हृदय हठीला
और विद्रोही है।
वे मुझ–प्रभु की ओर पीठ फेर कर
भटक गए हैं।
24 वे अपने हृदय में यह नहीं कहते हैं,
"आओ, हम अपने प्रभु परमेश्वर की
आराधना करें;
क्योंकि प्रभु ही उचित समय पर पानी
बरसाता है,
वह हमें शिशिर ऋतु में वर्षा देता है;
वसंत ऋतु में भी वर्षा करता है।
हमारे लिए फसल का समय भी
उसने निश्चित् कर दिया हैं।"
25 किन्तु तुम्हारे दुष्कर्मों के कारण
समय पर वर्षा नहीं होती;
तुम्हारे पापों के कारण
तुम्हारा कल्याण रुक गया है।
26 मेरे निज लोगों में दुर्जन पाए जाते हैं।
वे चिड़ीमार शिकारी की तरह
फंदा लगा कर बैठते हैं।
वे जाल बिछाते हैं,
और लोगों का शिकार करते हैं।
27 जैसे पिंजरा चिड़ियों से भरा रहता है
वैसे ही उनका घर लूट से भरा है।
वे अपने छल–कपट से धनवान बन गए हैं,
और समाज में बड़े लोग कहलाते हैं।
28 वे मोटे हो गए हैं,
उनके शरीर पर चर्बी चढ़ गई है।
उनके लिए दुष्कर्म करने की कोई सीमा नहीं
है।
वे निष्पक्ष होकर न्याय नहीं करते।
वे अनाथों के न्याय की उपेक्षा कर
अपना उल्लू सीधा करते हैं।
वे गरीबों के हक की रक्षा नहीं करते।
29 तब क्या मैं उनके इन दुष्कर्मों के लिए
उनको दण्ड न दूंगा?
क्या मैं ऐसी पापी कौम से
प्रतिशोध न लूं?' प्रभु की यह वाणी है।

30 इस देश में ऐसी भंयकर बात हुई है
कि इसको देखकर दांतों तले अंगुली दबानी
पड़ती है:
31 नबी झूठी नबूवत करते हैं;
पुरोहित उनकी हां में हां मिलाते हैं।
मेरे निज लोगों को यह पसन्द भी है।
परन्तु जब अन्त आएगा तब तुम क्या करोगे?

शत्रु यरूशलेम को घेर लेंगे

6 ओ बिन्यामिन कुल के लोगो, यरूशलेम
को छोड़कर
सुरक्षित स्थानों में भाग जाओ।
तकोआ नगर में चेतावनी का बिगुल बजाओ,
बेत–हक्केरेम नगर में संकेत देने के लिए
पताका फहराओ।
क्योंकि उत्तर दिशा में संकट के बादल उमड़
रहे हैं; महाविनाश आ रहा है।
2 सुन्दर और सुकुमार कन्या,
सियोन को मैं नष्ट कर दूंगा।
3 शत्रु रूपी चरवाहे अपनी भेड़ों के साथ,
यरूशलेम पर हमला करेंगे;
वे सियोन के चारों ओर अपने तम्बू गाड़ेंगे;
वे अपने–अपने स्थान की घास चरा लेंगे।
4 वे परस्पर यह कहेंगे,

5 : 21 मत 13 : 14; यश 6 : 9–10; यो 12 : 40; प्रे 28 : 26 **5 : 22** अय्य 38 : 8–11

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'आओ, हम उस के विरुद्ध युद्ध की तैयारी
करें,
आओ, दोपहर को उस पर आक्रमण करें।'
शत्रु के सैनिक कह रहे हैं, 'धिक्कार है हमें;
अभी नगर का विनाश शेष है,
किन्तु दिन बीतने लगा,
संध्या की छायाएं लम्बी होने लगीं।
5 इसलिए तैयार रहो,
कि हम रात को हमला करें,
और सियोन के महलों को खण्डहर बना
दें।'

6 स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु यों कहता है,
'यरूशलेम की घेराबन्दी करने के लिए
पेड़-पौधों को काट डालो, और मोर्चा
बनाओ।
इस पापी नगर को दण्ड अवश्य मिलना
चाहिए।
इस नगर में अत्याचार,
बस अत्याचार ही दिखाई देता है।
7 जैसे कुंए में ताजा पानी भरता रहता है,
वैसे ही यह नगर नित्य नए दुष्कर्म करता है।
हिंसा और विनाश की चीख-पुकार
इस नगर में सदा सुनाई पड़ती है।
बीमारी और घावों के दृश्य
सदा मेरे सम्मुख उपस्थित रहते हैं।
8 ओ यरूशलेम, ताड़ना से ही सुधर जा;
अन्यथा तू मेरे मन से उतर जाएगा,
मैं तुझको उजाड़ दूंगा, तू निर्जन हो जाएगा।'

9 स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु यों कहता है,
'इस्राएली राष्ट्र के बचे हुए लोग
ऐसे चुन-चुन कर मारे जाएंगे,
जैसे अंगूर-बेल में अंगूर को
ढूंढ़-ढूंढ़ कर तोड़ा जाता है!
जैसे अंगूर-तोड़ने वाला
अंगूर की लताओं में बार-बार
अपना हाथ डालता है,
वैसे ही तू, ओ यिर्मयाह,
यरूशलेम में धार्मिक व्यक्ति को ढूंढ़।
10 मैं किसको चेतावनी दूं?
किस से बोलूं कि लोग सुनें?
देख, उनके कान बहरे हैं,
वे सुन नहीं सकते।
उनकी दृष्टि में
मुझ-प्रभु का वचन मजाक बन गया है;
वे उसको सुनना पसन्द नहीं करते हैं।
11 अत: मेरे क्रोध का प्याला भर गया है;
अब मैं और सहन नहीं कर सकता।
मैं यरूशलेम के गली-कूचों में बच्चों पर,
जवानों के एकत्र होने के स्थानों पर
अपने क्रोध को उण्डेल दूंगा।
पति और पत्नी दोनों एक साथ
मेरे क्रोध से भस्म हो जाएंगे;
पकी आयु वाले और बूढ़े भी
मेरे क्रोध की पकड़ में आ जाएंगे।
12 यरूशलेम निवासियों के मकानों,
खेतों और स्त्रियों पर
शत्रु-सेना का अधिकार हो जाएगा;
क्योंकि मैं देश के निवासियों पर प्रहार करने
के लिए
अपना हाथ उठाऊंगा,' प्रभु की यह वाणी है।

नबियों और पुरोहितों को भर्त्सना

13 'बच्चों से बूढ़ों तक, गरीब से अमीर तक
हर कोई अन्याय से कमाए गए धन का लोभी
बन गया है।
नबी से पुरोहित तक
सब मनुष्य झूठ का सौदा करते हैं।
14 मेरे निज लोगों के घावों पर
झूठ का मलहम लगाते हैं;
वे उनसे कहते हैं, "तुम्हारा कल्याण होगा*,"
जबकि कल्याण होगा ही नहीं।
15 जब वे घृणित कार्य करते हैं,
तब क्या वे लज्जित होते हैं?
नहीं, उनकी आंखों में
शर्म-लज्जा का पानी मर गया है।
दुष्कर्म करते समय

---

* अक्षरश: 'शान्ति, शान्ति'

6 : 12 यिर 8 : 10   6 : 14 यहेज 13 : 10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पश्चात्ताप की भावना उनमें उभरती ही नहीं।
इसलिए विनाश होनेवालों के साथ
वे भी नष्ट होंगे।
जब मैं यरूशलेम के निवासियों को दण्ड दूंगा,
तब नबी और पुरोहित भी ठोकर खाकर गिर जाएंगे।'
प्रभु की यह वाणी है।

परमेश्वर का मार्ग

16 प्रभु यों कहता है,
'मार्ग के किनारे खड़े हो, और स्वयं देखो।
प्राचीन पथों का पता लगाओ।
लोगों से पूछो कि सन्मार्ग कहां है।
तब उस पर चलो,
तभी तुम्हारी आत्मा को चैन मिलेगा।
लेकिन यरूशलेम निवासी कहते हैं,
"हम सन्मार्ग पर नहीं चलेंगे।"
17 मैंने उन पर प्रहरी नियुक्त किए कि
वे चेतावनी के लिए बिगुल बजाएं।
परन्तु यरूशलेम-निवासी कहते हैं,
"हम चेतावनी पर ध्यान नहीं देंगे!"
18 अत: ओ राष्ट्रो, सुनो।
ओ विश्व की जातियो,*
देखो कि उन पर क्या गुजरेगा।
19 ओ पृथ्वी, सुन!
मैं इस इस्राएली जाति पर इसके दुष्कर्मों का फल,
अनिष्ट का बवण्डर ला रहा हूं;
क्योंकि इन लोगों ने मेरे वचनों पर ध्यान नहीं दिया,
मेरे नियमों का तिरस्कार कर दिया।
20 ओ यरूशलेम के निवासियो,
शबा देश से लाया गया लोबान,
दूर देश से लाए गए सुगन्धित द्रव्य
मेरे किस काम के?
इन्हें मुझे मत चढ़ाओ।
मुझे तुम्हारी अग्नि-बलि स्वीकार नहीं है।
मैं तुम्हारी पशु-बलि पसन्द नहीं करता हूं।'
21 इसलिए प्रभु यों कहता है:
'देखो, मैं इस जाति के मार्ग में
रोड़े अटकाऊंगा,
जिन से ठोकर खाकर यह मुंह के बल गिरेगी।
पिता और पुत्र, पड़ोसी और मित्र
सब के सब एक साथ नष्ट हो जाएंगे।'

22 प्रभु यों कहता है:
'देखो, उत्तर देश से एक कौम आ रही है।
पृथ्वी के सीमांत से
एक महाशक्तिशाली राष्ट्र की सेना
इस देश पर चढ़ाई करने के लिए आ रही है।
23 उसके सैनिक धनुष और भाले से सुसज्जित हैं;
वे निर्दयी हैं, और उन में लेशमात्र भी दया नहीं है।
जब वे चिल्लाते हैं, तब मानो समुद्र गरजता है।
वे घोड़ों पर सवार हैं।
ओ यरूशलेम के निवासियो!
वे वीर योद्धा की तरह
तुम पर आक्रमण करने के लिए पंक्तिबद्ध आ रहे हैं।'

24 उनके विषय में खबर सुनकर
हमारे हाथ-पैर सुन्न पड़ गए।
जैसे प्रसव-पीड़ित स्त्री दर्द से चीखती है,
वैसे ही हम आतंक और डर से चीख रहे हैं।
25 खेतों की ओर मत जाओ, और न सड़कों पर घूमो;
क्योंकि शत्रु के सैनिक
हाथ में तलवार लिए घूम रहे हैं।
हर जगह आतंक छाया हुआ है।
26 ओ मेरे नगर के निवासियो!
पश्चात्ताप प्रकट करने के लिए
टाट के वस्त्र पहनो और राख में लोटो!
जैसे इकलौती संतान के निधन पर

* अक्षरशः 'समाज'

6 : 16 यिर 18 : 15; मत 11 : 29 **6 : 19** नीति 1 : 31 **6 : 25** यिर 20 : 3.10; 46 : 5; 49 : 29; भज 31 : 13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हृदय को चीरनेवाला विलाप होता है,
वैसा ही शोर मचाओ!
क्योंकि अचानक ही महाविनाशक
हम पर टूट पड़नेवाला है।

27 'ओ यिर्मयाह,
मैंने अपने निज लोगों का आचरण परखने
और उसको जानने के लिए
तुझे परीक्षक नियुक्त किया है,
तुझे पारखी बनाया है।
28 वे सब के सब हठी और
मेरे प्रति विद्रोही हो गए हैं;
यहां-वहां मेरी निन्दा करते-फिरते हैं।
वे वास्तव में ठोस पीतल
और सख्त लोहा बन गए हैं।
वे सब भ्रष्टाचार करते हैं।
29 धौंकनी जोरों से फूं-फूं करती है;
सीसा आग में पिघल जाता है।
पर यह शोधन-क्रिया व्यर्थ है;
क्योंकि खोटापन निकाला नहीं जा सकता।
इसी प्रकार समाज से बुरे लोग हटाए नहीं जा
सकते।
30 वे खोटी चांदी कहलाते हैं,
क्योंकि प्रभु ने उनको त्याग दिया है।,

मन्दिर के प्रवेश-द्वार पर दिए गए नबी के प्रवचन

वास्तविक आराधना

7 यह सन्देश यिर्मयाह को प्रभु की ओर से
मिला: 2'मेरे भवन के प्रवेश-द्वार पर
खड़ा हो, और वहां मेरा यह वचन घोषित कर:
ओ यहूदा प्रदेश के निवासियो, प्रभु के भवन में
प्रवेश करनेवालो, प्रभु के आराधको! प्रभु का
वचन सुनो। 3स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु, इस्राएल
का परमेश्वर यों कहता है: अपना आचरण
सुधारो, अपना व्यवहार ठीक करो। तब मैं तुम्हें
इस प्रदेश में निवास करने दूंगा।* 4इन झूठे शब्दों
के भरोसे में मत रहना, जो तुम बार-बार दुहराते
हो: "यह प्रभु का भवन है। यह प्रभु का भवन
है। यह प्रभु का भवन है।"
5 'यदि तुम सचमुच अपना आचरण सुधारोगे,
अपना व्यवहार ठीक करोगे, एक-दूसरे के
साथ न्यायपूर्ण व्यवहार करोगे; 6यदि तुम
विदेशियों, अनाथों और विधवाओं पर अत्याचार
नहीं करोगे, इस स्थान पर निर्दोष मनुष्य की
हत्या नहीं करोगे; यदि तुम अन्य देवताओं का
अनुसरण नहीं करोगे जिससे तुम्हारा अनिष्ट
होता है; 7तो मैं तुम्हें इस स्थान में, इस देश में
रहने दूंगा, जो मैंने तुम्हारे पूर्वजों को सदा-
सर्वदा के लिए प्रदान किया था।
8 'देखो, तुम झूठे शब्दों का भरोसा करते
हो। उनसे तुम्हें कुछ लाभ नहीं होगा। 9तुम चोरी
करते हो, हत्या करते हो, व्यभिचार करते हो,
झूठी शपथ खाते हो, बअल देवता की मूर्ति के
सामने लोबान जलाते हो; अनजान देवताओं
का अनुसरण करते हो। 10इन पाप-कर्मों को
करने के पश्चात् तुम मेरे भवन में आते, जो
भवन मेरे नाम से प्रसिद्ध है, और मेरे सम्मुख
खड़े हो कर कहते हो, "हम सुरक्षित हैं"; क्या
इसलिए कि ये घृणित काम करते रहो? 11मेरे
नाम से प्रसिद्ध यह भवन तुम्हारी दृष्टि में
डाकुओं का अड्डा बन गया है। देखो, मैंने
स्वयं यह सब देखा है,' प्रभु की यह वाणी है।
12'जाओ, अब मेरे उस निवास-स्थान को
जाओ, जो शीलोह नगर में था, जहां सर्वप्रथम
मैंने अपना नाम प्रतिष्ठित किया था। अब उस
को देखो। मैंने अपने निज लोग इस्राएलियों के
दुष्कर्मों के कारण उसको तहस-नहस कर
दिया है। 13अब तुम मुझ-प्रभु की वाणी सुनो:
तुम ने भी ये दुष्कर्म किए। मैंने बार-बार तुम्हें
चेतावनी दी; पर तुमने मेरी बात नहीं सुनी; और
जब मैंने तुम्हें पश्चात्ताप के लिए बुलाया तब
तुमने मुझे उत्तर भी नहीं दिया। 14इसलिए, सुनो:
जो भवन मेरे नाम से प्रसिद्ध है, और जिस पर
तुम भरोसा करते हो, और जो मैंने तुम्हें और
तुम्हारे पूर्वजों को दिया था, उसको मैं शीलोह
के समान तहस-नहस कर दूंगा। 15जैसे मैंने

* [illegible] मैं तुम्हारे साथ इस स्थान में निवास करूंगा'

6 : 26 जक 12 : 10 [illegible] रोम 4 : 10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तुम्हारे सब जाति-भाई-बंधुओं, एफ्रइम के
वंशजों को अपने सामने से हटा दिया था, वैसे
ही मैं तुम्हें अपने सम्मुख से निकाल दूंगा।

देवी-देवताओं की पूजा

16 'और तू, यिर्मयाह, इन लोगों के लिए
प्रार्थना मत कर। तू इनके लिए क्षमा की प्रार्थना
मत कर; मेरी दुहाई मत दे, और न इनके लिए
मुझसे निवेदन कर; क्योंकि मैं इनके सम्बन्ध में
तेरी प्रार्थना नहीं सुनूंगा। 17क्या तू स्वयं नहीं
देखता है कि ये यहूदा प्रदेश के नगरों में,
यरूशलेम की सड़कों में क्या करते हैं?
18 "आकाश की रानी" को वे देवी मानते हैं।
उसको रोटी चढ़ाने के लिए पुत्र-पुत्रियां
लकड़ी बीनते हैं, पिता चूल्हे में आग सुलगाता
है, और मां आटा गूंधती है। वे दूसरे देवताओं
को पेय-बलि चढ़ाते हैं। क्या इससे मेरा क्रोध
नहीं भड़केगा? 19मैं कहता हूं, क्या वे अपने इस
घिनौने काम से केवल मेरा क्रोध भड़काते हैं?
नहीं, वे क्रोध भड़कने पर स्वयं अपना अहित
करते हैं। 20इसलिए मैं-प्रभु स्वामी कहता हूं:
इस स्थान पर, मनुष्य और पशु पर, मैदान के
वृक्षों और भूमि की उपज पर मैं अपनी
क्रोधाग्नि उण्डेलूंगा। वह सदा जलती रहेगी,
और कभी न बुझेगी।'

कपटपूर्ण आराधना

21 स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु, इस्राएल का
परमेश्वर यों कहता है: 'ओ इस्राएलियो, चाहे
तुम पशु-बलि के साथ अग्नि-बलि चढ़ाओ
और चाहे मुझे चढ़ाई गयी अग्नि-बलि का
मांस भी स्वयं खाओ, मेरी दृष्टि में इनका महत्व
नहीं है। 22जब मैं तुम्हारे पूर्वजों को मिस्र देश
की गुलामी से निकाल कर इस देश में लाया था,
तब मैंने उन्हें अग्नि-बलि तथा पशु-बलि
चढ़ाने का आदेश नहीं दिया था। 23किन्तु मैंने
उनको यह आज्ञा दी थी: "मेरी वाणी को
सुनोगे तो मैं तुम्हारा परमेश्वर होऊंगा, और तुम
मेरे निज लोग होगे। जिस मार्ग पर चलने का
मैंने तुम्हें आदेश दिया है, उस पर चलते रहोगे
तो तुम्हारा कल्याण होगा।" 24परन्तु उन्होंने
मेरी आज्ञा का पालन नहीं किया, और न ही उस
पर कान दिया। वे मनचाहे मार्ग पर चलते रहे,
अपने हठीले हृदय के अनुरूप दुराचरण करते
रहे। उनके कदम मेरी ओर आगे नहीं बढ़े,
बल्कि पीछे हट गए। 25जिस दिन से तुम्हारे
पूर्वज मिस्र देश से बाहर निकले, उस दिन से
आज तक, मैं अपने सेवक नबियों को निरंतर,
दिन-प्रतिदिन, उन के पास भेजता रहा। 26फिर
भी उन्होंने मेरी आज्ञा का पालन नहीं किया,
और न ही उस पर कान दिया। उन्होंने अपना
हृदय पत्थर-सा कठोर बना लिया, और अपने
पूर्वजों से बढ़कर दुष्कर्म किए।

27 'यिर्मयाह, तू ये बातें उन से कहेगा;
किन्तु वे नहीं सुनेंगे। तू पश्चात्ताप के लिए उन्हें
बुलाएगा; परन्तु वे तुझे उत्तर नहीं देंगे। 28तू उन
से कहेगा, "ओ इस्राएलियो, तुम ऐसी कौम हो
जिसने अपने प्रभु परमेश्वर के आदेश का
पालन नहीं किया, जिसने दण्ड पाने पर भी
स्वयं को नहीं सुधारा। निस्सन्देह सच्चाई मर
गई, तुम्हारे ओंठों से सत्य दूर हो गया!

दुष्कर्मों का फल

29 ' "ओ इस्राएली कौम, अपने सिर के केश
मुँड़ा,
और उनको फेंक दे।
मुण्डे पहाड़ी शिखरों पर जा, और शोक-
गीत गा।
क्योंकि प्रभु इस पीढ़ी से नाराज है,
उसने इसको पूर्णतः त्याग दिया है!" '

30 प्रभु कहता है, 'यहूदा प्रदेश के निवासियों
ने मेरी दृष्टि में दुष्कर्म किए हैं। जो भवन मेरे
नाम से प्रसिद्ध है, उसको अशुद्ध करने के लिए
उन्होंने उसमें घृणित मूर्तियां प्रतिष्ठित की हैं।
31अपने पुत्र-पुत्रियों की बलि चढ़ाने के लिए
उन्होंने बेन-हिन्नोम की घाटी में तोपेत नामक
वेदी बनायी है। वहां वे आग में अपने पुत्रों और
पुत्रियों की आहुति देते हैं। इस बलि का मैंने
कभी आदेश नहीं दिया था, और न कभी यह
घृणित बात मेरे मन में आयी थी। 32अतः मैं-
प्रभु यह कहता हूं: सुनो, वे दिन आ रहे हैं, जब

7 : 21 आमो 5 : 21 7 : 25 यिर 25 : 4 [illegible] 31 : 2 र 23 :10; लव [illegible] : 21

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यह स्थान न तोपेत* कहलाएगा, और न बेन-
हिन्नोम की घाटी ही। वरन् यह स्थान ''महावध
की घाटी'' कहलाएगा। मुरदों को गाड़ने के
लिए स्थान नहीं बचेगा, इसलिए लोग तोपेत में
भी मुरदों को गाड़ेंगे। 33 इस कौम के शव आकाश
के पक्षियों के लिए भोजन और भूमि के वन-
पशुओं का आहार होंगे। उन पक्षियों और
पशुओं को भगानेवाला भी कोई न होगा। 34 मैं
यहूदा प्रदेश के नगरों में तथा यरूशलेम की
सड़कों पर आनन्द-उल्लास का स्वर, हर्ष-
ध्वनि तथा वर-वधुओं के हास-परिहास की
आवाज को बन्द कर दूंगा। चारों ओर मौत का
सन्नाटा होगा।'

8 प्रभु कहता है, 'उन दिनों में शत्रु-सेना के
सैनिक यहूदा प्रदेश के मृत राजाओं,
उच्चाधिकारियों, पुरोहितों, नबियों तथा
यरूशलेम के मृत नागरिकों की कबर खोदेंगे,
और उनकी हड्डियां कबरों से बाहर निकालेंगे।
2 उनकी हड्डियां सूर्य, चन्द्रमा और आकाश के
तारागणों के सामने बिखरा दी जाएंगी; क्योंकि
इनसे ही वे प्यार करते थे। इन की ही उन्होंने
सेवा की थी, और इनका ही अनुसरण किया
था। वे इन से ही शकुन विचारते थे, और इनकी
ही पूजा करते थे। उनके इन्हीं दुष्कर्मों के कारण
उनकी हड्डियां एकत्र नहीं की जाएंगी, और
न वे पुन: गाड़ी जाएंगी। कूड़े के ढेर की तरह
उनकी हड्डियों का ढेर जमीन पर पड़ा रहेगा।
3 इस दुष्ट पीढ़ी के बचे हुए लोग जीवन की
नहीं, मृत्यु की कामना करेंगे। जिन देशों में मैं
उनको खदेड़ दूंगा, वहां वे जीवित रहना नहीं
चाहेंगे,' स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु की यही वाणी
है।

पथ-भ्रष्ट इस्राएली कौम

4 'ओ यिर्मयाह, तू उन से यह कहना,
प्रभु यों कहता है:
जब आदमी गिरता है,
तब क्या वह फिर नहीं उठता?
जब कोई मनुष्य मार्ग से भटक जाता है,
तब क्या वह लौटता नहीं है?
5 तो फिर यह इस्राएली कौम
जो अपने मार्ग से भटक गई है,
क्या सदा भटकती ही रहेगी?
वे अपनी भूलों को गले लगाए हुए हैं,
और पश्चात्ताप करने से इन्कार करते हैं।
6 मैं ध्यान से उनकी बातें सुनता हूं,
किन्तु वे उचित बात बोलते ही नहीं!
एक भी आदमी अपने दुष्कर्म के लिए
पश्चात्ताप नहीं करता;
बल्कि वह कहता है, ''मैंने किया ही क्या
है?''
जैसे घोड़ा युद्ध के मैदान में
बिना समझे-बूझे अपनी नाक की सीध में
दौड़ता है,
वैसे ही यह जाति मनमाना आचरण कर रही
है।
7 आकाश का लकलक पक्षी भी
अपने नियत समय को जानता है;
पण्डुकी, सूपाबेनी और सारस भी
अपने लौटने का समय जानते हैं।
किन्तु शोक! मेरे निज लोग
अपने प्रभु के न्याय-सिद्धान्तों को नहीं
जानते।

प्रभु की व्यवस्था की उपेक्षा

8 'तुम यह कैसे कह सकते हो
कि तुम बुद्धिमान हो,
और मेरी व्यवस्था तुम्हारे साथ है?
किन्तु देखो, शास्त्रियों ने उसका क्या
किया?
अपनी झूठी कलम से उसको भी झूठ बना
दिया।
9 बुद्धिमान लोग अपमानित होंगे;
वे विस्मित होंगे,
और अपने ही जाल में फंस जाएंगे।
उन्होंने भी प्रभु के वचन को
अस्वीकार कर दिया,
तो क्या उनमें बुद्धि रहेगी?

---

* अर्थात् 'चिता, अग्नि-कुण्ड'

7:34 प्रक 18 : 23; बारू 2 : 23 **8 : 2** 2 रा 9 : 36 **8 : 7** यश 1 : 3

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

10 अत: मैं उनकी स्त्रियां और उनके खेत
विजेता शत्रुओं के हाथ में सौंप दूंगा।
क्योंकि छोटे से बड़े तक, हर कोई मनुष्य
अन्याय से कमाए गए धन का लोभी बन
गया है।
नबी से पुरोहित तक
सब मनुष्य झूठ का सौदा करते हैं।
11 वे मेरे निज लोगों के घावों पर
झूठ का मलहम लगाते हैं।
वे उनसे कहते हैं, ''तुम्हारा कल्याण होगा,''
जबकि कल्याण होगा ही नहीं।
12 जब वे घृणित कार्य करते हैं,
तब क्या वे लज्जित होते हैं?
नहीं, उनकी आंखों में शर्म-लज्जा
का पानी मर गया है।
दुष्कर्म करते समय
पश्चात्ताप की भावना उनमें उभरती ही नहीं।
इसलिए विनाश होनेवालों में
वे भी नष्ट होंगे।
जब मैं यरूशलेम के निवासियों को दण्ड
दूंगा,
तब नबी और पुरोहित भी ठोकर खाकर
गिर जाएंगे।' प्रभु की यह वाणी है।

13 'जब मैं उन ''बुद्धिमानों'' से फसल एकत्र
करूंगा,
तब अंगूर-बेल में न अंगूर होंगे,
और न अंजीर वृक्ष में अंजीर।
पत्तियां भी सूख जाएंगी।
जो मैंने उनको दिया है,
वह भी उनके हाथ से निकल जाएगा।'

14 लोग आपस में बोलते हैं:
'हम हाथ पर हाथ रखे हुए
क्यों बैठे रहें?
आओ, एकत्र हों,
और किलाबंद नगरों में शरण लें,
और वहां दम तोड़ें।
हमारे प्रभु परमेश्वर ने
हमें मार डालने का दृढ़ निश्चय कर रखा है।
उसने हमें विष का प्याला पीने को दिया है;
क्योंकि हमने उस के प्रति पाप किया है।
15 हम कल्याण की बाट जोहते रहे,
पर वह नहीं आया।
हम स्वस्थ होने की प्रतीक्षा कर रहे थे,
पर देखो, हम पर आतंक छा गया।
16 शत्रु के घोड़ों की हिनहिनाहट
दान क्षेत्र से सुनाई दे रही है;
उनके शक्तिशाली अश्वों के फुर्राने से सारा
देश कांप उठा है।
शत्रु आ रहे हैं;
वे भूमि की फसल को,
और जो कुछ देश में है, उस सब को
नगरों को, और नागरिकों को
पूर्णत: नष्ट कर रहे हैं।'
17 और देखो, प्रभु कहता है, 'मैं तुम्हारे बीच
में नाग और सर्प भेजूंगा,
जिन पर मंत्र न चलेगा;
वे तुमको डस लेंगे।'

नबी यिर्मयाह का दु:ख

18 मेरा दु:ख असहनीय है।
शोक में मेरा हृदय डूब रहा है।
19 मेरे नगर के निवासियों की,
यरूशलेम के नागरिकों की करुण चीख-
पुकार सुनाई दे रही है।
सारे देश में एक छोर से दूसरे छोर तक,
लोग कह रहे हैं, 'क्या सियोन में प्रभु नहीं
है?
क्या सियोन का राजा सियोन को त्याग
चुका है?'
प्रभु ने कहा,
'इन लोगों ने अपनी मूर्ति-पूजा से,
विदेशियों की निस्सार मूर्तियों की प्रतिष्ठा
से
मेरी क्रोधाग्नि क्यों भड़कायी?'
20 लोग कहते हैं, 'फसल कट चुकी,
फल पकने की ऋतु समाप्त हो गई
फिर भी हमारा उद्धार नहीं हुआ!'
21 मेरे लोगों के दु:ख के कारण

8 : 11 यिर 6 : 14; यहेज 13 : 10 8 : 13 यश 5 : 1; मत 21 : 19; लू 13 : 6 8 : 35 यिर 14 : 19

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मेरा हृदय भी दु:खी है;
मैं शोक मनाता हूं,
मैं आश्चर्य में डूबा हुआ हूं।
22 क्या गिलआद प्रदेश की बलसान औषधि
समाप्त हो गई?
क्या वहां अब वैद्य भी नहीं रहे?
तब मेरे लोगों के घाव क्यों नहीं भर रहे हैं?

9 *काश, मेरा मस्तिष्क सागर होता,
मेरी आंखें आँसुओं की झील होती,
तो मैं अपने लोगों के महासंहार के कारण
दिन-रात फूट-फूट कर रोता।
2 + काश, निर्जन प्रदेश में मुझे
टिकने के लिए सराय मिल जाती,
तो मैं अपने लोगों को छोड़कर चला जाता;
क्योंकि वे सब के सब व्यभिचारी हैं;
और वे विश्वासघातियों का संघ बन गए हैं।
3 वे झूठ का शब्द फेंकने के लिए
धनुष के सदृश अपनी जीभ को,
प्रत्यंचा पर चढ़ाते हैं;
सच्चाई नहीं, वरन् असत्य की फसल
सारे देश में खूब पैदा हो रही है!
वे दुष्कर्म पर दुष्कर्म करते जाते हैं।
उनके विषय में स्वयं प्रभु कहता है:
'वे मेरी उपस्थिति का अनुभव नहीं करते
हैं।' **

4 प्रत्येक मनुष्य अपने पड़ोसी से सावधान रहे,
और न अपने भाई पर भरोसा करे।
क्योंकि भाई, भाई को धोखा देता है, ++
पड़ोसी, पड़ोसी की निन्दा करता है।
5 हर आदमी अपने पड़ोसी को ठगता है,
उन्होंने सच न बोलने की कसम खा रखी है,
वे सदा झूठ बोलते हैं,
वे दुष्कर्म करते हैं,
और पश्चात्ताप से मुंह फेर लेते हैं।
6 वे अत्याचार पर अत्याचार,
बार-बार छल-कपट करते हैं;
उनके विषय में स्वयं प्रभु कहता है:
'वे मेरी उपस्थिति का अनुभव करना नहीं
चाहते।'

प्रभु दण्ड देगा

7 अत: स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु यों कहता है:
'मैं उनको आग में शुद्ध करूँगा,
और उनको परखूंगा।
इसके अतिरिक्त मैं
उनके साथ और क्या कर सकता हूं;
क्योंकि वे मेरे निज लोग हैं?
8 उनकी जीभ मानो विष-बुझा तीर है;
वह निरंतर छल-कपट की बातें उगलती
रहती है।
ये लोग मुंह से तो अपने पड़ोसी से प्रेम की
बातें करते हैं;
पर हृदय में उस पर घात लगाने की योजना
बनाते हैं।
9 क्या मुझे उनके इन दुष्कर्मों के लिए उन्हें दण्ड
नहीं देना चाहिए?
क्या मैं ऐसी जाति से प्रतिशोध न लूं?'
प्रभु की यह वाणी है।

10 मैं पर्वतों के लिए रोऊंगा, शोक मनाऊंगा;
निर्जन प्रदेश के चरागाह के लिए विलाप
करूंगा;
क्योंकि वे उजाड़ हो गए हैं,
राहगीर उधर से अब नहीं गुजरते।
पशुओं का रंभाना भी नहीं सुनाई देता।
आकाश के पक्षी उनको छोड़ चले गए हैं;
जंगली पशु भी भाग गए हैं।
11 प्रभु कहता है,
'मैं यरूशलेम को खण्डहरों का ढेर
और गीदड़ों की मांद बना दूंगा।
मैं यहूदा प्रदेश के नगरों को उजाड़ दूंगा,
वे निर्जन हो जाएंगे।'

दण्ड का कारण

12 कौन मनुष्य इतना बुद्धिमान है कि वह
इन घटनाओं का भेद समझ सके? किस मनुष्य
को स्वयं प्रभु ने इनका अर्थ समझाया है, कि
वह सब मनुष्यों पर उसको घोषित करे? देश
क्यों खण्डहर बन गया? वह निर्जन प्रदेश के

---

* मूल में 8 : 23 + मूल में 9 : 1 ** अथवा, 'वे मुझे नहीं जानते हैं' ++ अथवा, 'याकूब की तरह धोखा देता है।'

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
समान उजाड़ क्यों पड़ा है? राहगीर वहां से
क्यों नहीं गुजरते ? 13प्रभु कहता है: 'जो
व्यवस्था मैंने उनके सम्मुख प्रतिष्ठित की थी,
उसको उन्होंने त्याग दिया। उन्होंने मेरे वचनों
को नहीं सुना, और न मेरी आज्ञाओं के अनुसार
आचरण किया। 14वे हठपूर्वक अपने हृदय के
अनुरूप बुरे मार्ग पर चलते रहे। वे बअल
देवताओं का अनुसरण करते रहे, जैसा उनके
पूर्वजों ने उन्हें सिखाया था।' 15अत: इस्राएल
का परमेश्वर, स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु यों
कहता है, 'ओ यिर्मयाह, सुन! इस कारण मैं इन
लोगों को कड़ुवा साग-पात खिलाऊंगा, और
पीने को विष-मिला पानी दूंगा। 16मैं इनको
विश्व की समस्त जातियों में बिखेर दूंगा, जिन
को न ये जानते हैं, और न इनके पूर्वज ही जानते
थे। मैं इनके पीछे अपनी तलवार लगा दूंगा;
और जब तक वह उनको मौत के घाट न उतार
देगी, तब तक वह उनके पीछे लगी रहेगी।'

यरूशलेम के लिए शोक गीत

17 स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु यों कहता है:
'जाओ, विलाप करनेवाली औरतों को बुलाओ;
छाती पीट-पीटकर मातम मनानेवाली
स्त्रियों को लाओ।
18 वे शीघ्र आएं, और हमारे लिए रोएं,
कि हमारी आंखों से भी आंसुओं की नदी
बहने लगे,
हमारी पलकें आंसुओं के सागर में डूब जाएं।
19 सियोन से यह शोक गीत सुनाई दे रहा है:
''हम बरबाद हो गए!
हम अपमान से भूमि में गड़ गए।
हमें अपने देश को छोड़ना पड़ा।
शत्रुओं ने हमारे निवास-स्थान ध्वस्त कर
दिए।'''

मृत्यु का आतंक

20 ओ मातम मनानेवाली स्त्रियो,
प्रभु का यह आदेश सुनो;
स्वयं प्रभु के मुंह से निकला हुआ वचन
ध्यान से सुनो।
तुम अपनी पुत्रियों को शोक-गीत, और
अपनी पड़ोसिन को विलाप-गीत सिखाना;
21 क्योंकि मृत्यु हमारी खिड़कियों तक पहुंच
चुकी है,
वह हमारे महलों में घुस आयी है।
वह गली-कूचों में बच्चों का वध कर रही
है,
और चौराहों पर जवानों का।
22 प्रभु यों कहता है, 'ओ यिर्मयाह, यह कह:
युद्ध में मरनेवालों की लाशें
ऐसी पड़ी रहेंगी
जैसे खेत में खाद का ढेर लगा रहता है,
जैसे फसल काटनेवाले के पीछे पूले पड़े
रहते हैं!
उन लाशों को उठानेवाला नहीं मिलेगा।'

सच्ची बुद्धिमत्ता

23 प्रभु यों कहता है,
'बुद्धिमान मनुष्य अपनी बुद्धि पर गर्व न करे,
और न बलवान अपने बल पर।
धनवान मनुष्य अपने धन का घमण्ड न करे।
24 किन्तु यदि कोई मनुष्य किसी बात पर
घमण्ड करना चाहता है तो उसे इस पात पर
घमण्ड करना चाहिए कि वह मुझे जानता है,*
उसको मेरे विषय मे यह समझ है कि मैं पृथ्वी
पर दया, न्याय और धर्म की स्थापना करनेवाला
प्रभु हूं; और मैं इन्हीं बातों से प्रसन्न होता हूं,'
प्रभु की यह वाणी है।

शारीरिक खतने से कोई लाभ नहीं

25 प्रभु यों कहता है, 'देखो, वे दिन आ रहे
हैं जब मैं उन कौमों को दण्ड दूंगा, जिनका
शारीरिक खतना तो हुआ है पर हृदय से
खतना-रहित हैं।
26 वे ये कौमें हैं: मिस्री, यहूदी, एदोमी,
अम्मोनी, मोआबी और मरुस्थल में रहनेवाली
अरबी कौम, जो अपने गालों के बालों को
मूंड़ती है। ये सब खतना-रहित हैं, और
इस्राएल के वंशज भी हृदय से खतना-रहित
हैं।'

---

* अथवा, 'मेरी उपस्थिति का अनुभव करता है'

9 : 24 1 कुर 1 : 31; 2 कुर 10 : 17; याक 1 : 9 **9 : 26** प्रे 7 : 51

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रभु परमेश्वर सच्चा ईश्वर है

10 ओ इस्राएल के वंशजो, प्रभु का वचन सुनो,
जो वह तुमसे कह रहा है।
2 प्रभु यों कहता है:
'अन्य जातियों का आचरण मत सीखो,
और न आकाश के चिह्नों से आतंकित हो,
जैसा अन्य जातियां उनसे आतंकित होती हैं।
3 उन राष्ट्रों की ये धर्म-रीतियां निस्सार हैं:
जंगल का एक वृक्ष काटा जाता है,
और बढ़ई बसूले से उसको काटता-छांटता है,
और उसकी मूर्ति बनाता है।
4 लोग सोना-चांदी के आभूषण से
उसको सजाते हैं;
हथौड़े से कीलें ठोक-ठोक कर
उसको जोड़ते हैं कि वह हिल-डुल न सके!
5 उनकी ये मूर्तियां ककड़ी के खेत में खड़े
फूस के पुतले के समान हैं;
वे न बोल सकती हैं, और न चल ही सकती हैं।
अत: उनको लाद कर ले जाते हैं।
उनसे मत डरो,
वे न तो तुम्हारा अनिष्ट कर सकती हैं,
और न उनमें भलाई करने का सामर्थ्य ही है।'

6 हे प्रभु, तेरे समान कोई दूसरा ईश्वर नहीं है।
तू महान है, और तेरा नाम सर्वशक्तिमान है।
7 विश्व की सब जातियों के महाराजाधिराज!
तेरी भक्ति कौन नहीं करेगा ?
तेरी आराधना करना हमारा धर्म है।
अन्य जातियों के सब बुद्धिमान लोगों में,
उनके सब राजाओं में+
तेरे समान कोई दूसरा नहीं है।
8 मूर्तियों की आशा करनेवाले मूर्ख और अज्ञानी हैं;
मूर्तियां क्या शिक्षा दे सकती हैं?
उनकी शिक्षा लकड़ी के समान बेजान है।
9 मूर्तियों के आभूषण के लिए
तर्शीश देश से चांदी की पत्तियां
और उफाज देश से सोना लाया जाता है।
मूर्तियां कारीगर के हाथों का काम है,
सुनार के हाथों की कारीगरी है।
मूर्तियों के वस्त्र नीले और बैंगनी रंग के हैं।
पर यह सब कुशल कारीगर के हाथ से बनाई गई है।
10 किन्तु प्रभु ही सच्चा ईश्वर है।*
वह जीवंत परमेश्वर है,
और शाश्वत महाराजाधिराज है।
जब वह क्रुद्ध होता है,
तब पृथ्वी कांप उठती है;
उसके क्रोध को सहन करने की शक्ति किसी राष्ट्र में नहीं है।

यिर्मयाह के पत्र की एक पंक्ति++

11 'तू उन से यह कहना: 'ये देवता,
जिन्होंने आकाश और पृथ्वी को नहीं बनाया,
आकाश और पृथ्वी से मिट जाएंगे।'''

प्रभु परमेश्वर ने ही सृष्टि की रचना की

12 प्रभु परमेश्वर ने ही
पृथ्वी को अपने सामर्थ्य से बनाया है;
उसने ही संसार को
अपनी बुद्धि से स्थित किया है।
प्रभु परमेश्वर ने आकाश को
अपनी समझ से फैलाया है।
13 जब वह बोलता है,
तब आकाश में महासागर उमड़ पड़ता है।
वह पृथ्वी के सीमान्तों से कुहरे को उठाता है।
वह वर्षा के लिए बिजली चमकाता है,
और अपने भण्डारगृहों में से पवन बहाता है।
14 इस जाति के सब मनुष्य मूर्ख हैं,
वे परमेश्वर के ज्ञान से रहित हैं।
सुनार अपनी बनाई हुई मूर्ति के कारण

+ मूल में, राज्यों में' * अथवा, 'प्रभु परमेश्वर ही सत्य है' ++ इस पंक्ति की मूल भाषा अरामी है

10 : 5 भज 115 : 5.7 10 : 6 भज 86 : 8.10 10 : 7 प्रक 15 : 4 10 : 12 अय्य 38 : 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अपमानित होगी;
क्योंकि उसकी मूर्ति झूठी है;
उनमें जीवन का श्‍वास है ही नहीं।
15 वे निस्सार हैं,
वे मनुष्यों को भ्रम के जाल में फंसाती हैं।
दण्ड के समय वे भी नष्‍ट होंगी।
16 किन्तु 'याकूब का निज भाग' ऐसा नहीं है।
उसने ही सबको गढ़ा है,
इस्राएल उसके उत्तराधिकार का कुल है;
प्रभु, स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु,
उसका नाम है।

निष्कासन निकट है

17 शत्रु सेना के द्वारा
घिरे हुए नगर में रहनेवाली,
तू भूमि पर से अपनी गठरी उठा।
18 प्रभु यों कहता है, 'इस बार मैं यहूदा
प्रदेश के निवासियों को
मानो गोफन में रखकर दूर फेंक दूंगा।
मैं उन पर विपत्तियों के पहाड़ ढाहूंगा,
और वे उसके भार से दब जाएंगे।'

19 मां-सियोन कह रही है,
'हाय! हाय! मेरी चोट गम्भीर है।
मेरा घाव प्राण-घातक है।
मैंने सोचा, निस्सन्देह मुझ पर विपत्ति आई है,
मुझे उसको सहना ही पड़ेगा।
20 मेरा घर उजड़ गया,
शत्रुओं ने मेरे तम्बू की कनातें उखाड़ लीं।
मेरे बच्चे मुझसे छीन लिये।
अब वे नहीं रहे।
अब मेरे घर को फिर खड़ा करनेवाला कोई नहीं है।
मेरे तम्बू की कनातें कौन खड़ा करेगा?
21 मेरे उच्चाधिकारी, जनता के चरवाहे मूर्ख हैं।
वे प्रभु से मार्ग नहीं पूछते।
अत: जनता फल-फूल कर समृद्ध नहीं हुई,
और उनकी भेड़ें यहां-वहां बिखर गईं।'
22 सुनो, एक खबर! देखो, वह आ रहा है।
यहूदा प्रदेश के नगरों को उजाड़ कर
उनको गीदड़ों की मांद बनाने के लिए
उत्तर के देश से
एक भीषण बवण्डर आ रहा है।

यिर्मयाह की प्रार्थना

23 हे प्रभु, मैं यह जानता हूं कि
मनुष्य का आचरण उसके वश में नहीं है;
मनुष्य के कदम उसकी इच्छा से नहीं उठते।
24 प्रभु, मुझे दण्ड देकर सुधार,
पर उतना दण्ड दे, जितना न्याय के अनुसार उचित है।
मुझे क्रोध में दण्ड मत दे,
अन्यथा मेरा नाम-निशान मिट जाएगा।

25 प्रभु, अपने क्रोध का प्याला उन राष्‍ट्रों पर उण्डेल,
जो तुझे नहीं जानते हैं;
उन कौमों पर जो तेरी आराधना नहीं करती हैं,
प्रभु, अपने क्रोध का प्याला उण्डेल!
उन्होंने याकूब को निगल लिया है,
उन्होंने उसके वंशजों को खा लिया है,
पृथ्वी की सतह से उसको मिटा डाला है,
उन्होंने याकूब के निवास-स्थान को उजाड़ दिया है।

धर्म-सुधार और नबी यिर्मयाह

11 यिर्मयाह के पास प्रभु का यह वचन
पहुंचा। प्रभु ने यिर्मयाह से कहा, 2 'मेरे
इस विधान के शब्द सुन और यहूदा प्रदेश की
जनता तथा यरूशलेम के निवासियों को बता।
3 तू उन से यह कहना: इस्राएल का प्रभु
परमेश्‍वर यों कहता है: जो मनुष्य इस विधान
के शब्दों के अनुसार आचरण नहीं करेगा,
उसको मैं शाप दूंगा। 4 मैंने यह विधान तुम्हारे
पूर्वजों को उस समय सुनाया था, जब मैंने

10 : 24 भज 6 : 1 **10 : 25** 1 थिस 4 : 5; प्रक 16 : 1 **11 : 3** व्य 27 : 26

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
उनको मिस्र देश की गुलामी से, लोहे की भट्टी
से बाहर निकाला था, और उन से यह कहा था,
"जो मैं तुम से कहता हूं, यदि उस को तुम
मानोगे, मेरी प्रत्येक आज्ञा का पालन करोगे, तो
तुम मेरे निज लोग कहलाओगे, और मैं तुम्हारा
परमेश्वर होऊंगा।" 5ओ यिर्मयाह, तू उनसे
यह कहना: यदि तुम मेरे इस विधान के अनुसार
आचरण करोगे, तो मैं अपनी शपथ को पूरा
करूँगा जो मैंने तुम्हारे पूर्वजों से खायी थी कि
मैं उनको दूध और शहद की नदियों वाला देश
दूंगा; देख, वह शपथ आज पूरी हुई।'
मैंने उत्तर दिया, 'प्रभु, आमेन+।'
6 प्रभु ने मुझ से कहा, 'यिर्मयाह, तू ये शब्द
यहूदा प्रदेश के नगरों तथा यरूशलेम के गली-
कूचों में घोषित कर: विधान के ये शब्द सुनो
और उनके अनुसार आचरण करो। 7जब मैं
तुम्हारे पूर्वजों को मिस्र देश से निकाल लाया
था, तब उनको गंभीर चेतावनी दी थी। उस दिन
से आज तक मैं लगातार चेतावनी देता आया हूं
कि मेरी आज्ञा का पालन करो। 8फिर भी उन्होंने
मेरी आज्ञाओं का उल्लंघन किया, उनको
अनसुना कर दिया। वे सब के सब हठपूर्वक
अपने हृदय के अनुसार दुराचरण करते रहे।
अत: विधान-उल्लंघन के सब परिणाम उन्हें
भुगतने पड़े। मैंने उनसे कहा था कि वे मेरे
विधान के अनुसार आचरण करें, परन्तु उन्होंने
मेरी बात नहीं मानी।'
9 प्रभु ने मुझसे फिर कहा, 'यहूदा प्रदेश की
जनता तथा यरूशलेम के निवासियों ने मुझसे
विद्रोह किया है। 10वे अपने पूर्वजों के दुष्कर्मों
की ओर लौट गए हैं। जैसा उनके पूर्वजों ने मेरे
वचनों को सुनने से इन्कार कर दिया था, वैसा
ही उन्होंने किया है। वे अन्य कौमों के देवी-
देवताओं की पूजा करने के लिए उनका
अनुसरण करने लगे हैं। इस्राएल प्रदेश के और
यहूदा प्रदेश के लोगों ने भी उस विधान को तोड़
दिया है, जो मैंने उनके पूर्वजों से स्थापित किया
था। 11अत: मैं-प्रभु यह कहता हूं: मैं उन पर
ऐसी विपत्ति डालूंगा कि वे उस से बच कर भाग
नहीं सकेंगे। वे मेरी दुहाई देंगे, पर मैं उनकी
प्रार्थना नहीं सुनूंगा। 12तब यहूदा प्रदेश के
नगरों के निवासी तथा यरूशलेम के नागरिक
अन्य कौमों के देवताओं के पास जाएंगे, और
उनकी दुहाई देंगे। इन्हीं देवताओं को वे
सुगंधित धूप-द्रव्य जलाते हैं। किन्तु उनके ये
देवता भी संकट-काल में उनको नहीं बचा
सकते। 13ओ यहूदा, जितने तेरे नगर हैं, उतने
ही तेरे देवता हैं। जितनी यरूशलेम की सड़कें
हैं, उतनी ही वेदियां तूने उस घृणित बअल
देवता के लिए बनाई हैं। लोग उन पर सुगंधित
धूप-द्रव्य जलाते हैं।
14 'इसलिए, यिर्मयाह, तू इन लोगों के लिए
प्रार्थना मत कर। इन की ओर से न विनती कर,
और न गिड़गिड़ा कर प्रार्थना कर; क्योंकि जब
वे अपने संकट-काल में मेरे नाम की दुहाई देंगे,
तब भी मैं उसको नहीं सुनूंगा।
15 'मेरी प्रियतमा* को मेरे घर में क्या काम,
जबकि उसने बुरी युक्तियां बनायी हैं ? ओ मेरी
प्रिया, क्या तेरी मन्नतें और पशु-बलि का मांस
तुझ पर आनेवाले संकट को टाल सकता है कि
तू फिर से आनन्द मना सके ?'
16 ओ इस्राएली कौम, प्रभु ने एक बार
तुझको 'हरा-भरा, मीठे, रस-भरे फलों से
परिपूर्ण जैतून वृक्ष' कहा था; किन्तु अब वह
दावानल उत्पन्न करेगा, और जैतून-वृक्ष में आग
लग जाएगी, और उसकी शाखाएं जल कर राख
हो जाएँगी।
17 ओ इस्राएली राष्ट्र, जिस स्वर्गिक सेनाओं
के प्रभु ने तुझे स्थापित किया था, अब वही तुझे
उखाड़ कर फेंक देगा। वह कहता है, 'इस्राएल
प्रदेश के, और यहूदा प्रदेश के लोगों ने मेरे प्रति
दुष्कर्म किया है; उन्होंने बअल देवता की वेदी
पर सुगन्धित धूप-द्रव्य जलाकर मेरी क्रोधाग्नि
को भड़काया है।'

यिर्मयाह के विरुद्ध षड्यन्त्र

18 प्रभु ने मुझ पर ये बातें प्रकट कीं,

+ अथवा, 'सच, ऐसा ही है' * मूल में 'मेरे प्रियतम'

11 : 5 व्य 7 : 12 11 : 11 मी 3 : 4 11 : 14 यिर 7 : 16

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तो मुझे इनका ज्ञान हुआ।
प्रभु ने ही उनका षड्यन्त्र मुझे बताया।
19 मैं तो वध के लिए ले जाये जानेवाले मेमने
के सदृश
उनके दुष्कर्मों से अनजान + था।
मैं नहीं जानता था कि
उन्होंने मेरे विरुद्ध कुचक्र रचा है।
वे कहते थे, 'न रहेगा बांस, न बजेगी
बांसुरी!*
यिर्मयाह को इस पृथ्वी से,
जीव-लोक से मिटा दें कि
उसका नाम भी शेष न रहे।'
20 हे स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु,
तू धार्मिकता से न्याय करता है,
तू सब के हृदय और मन को परखता है।
प्रभु, मैं जीते-जी, अपनी आंखों से
तेरा प्रतिशोध देखूं।
मैंने अपना मुकदमा तेरे हाथ में सौंप दिया है।

21 अतः प्रभु ने अनातोत नगर के निवासियों
के सम्बन्ध में मुझ से यह कहा है, 'ये लोग तेरे
प्राण के खोजी थे, और तुझ से कहते थे, "प्रभु
के नाम से नबूवत करना बन्द कर। अन्यथा तू
हमारे हाथों से मरेगा।"'

22 स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु यों कहता है:
'देख, मैं उन को दण्ड दूंगा। उनके जवान
तलवार से मौत के घाट उतारे जाएंगे। उनके
पुत्र-पुत्रियां अकाल में भूख से मर जाएंगे।
23नगर में एक भी जीवित प्राणी नहीं बचेगा।
जिस वर्ष मैं अनातोत नगर के लोगों को दण्ड
दूंगा, उस वर्ष मैं उन पर विपत्तियों का पहाड़
ढाहूंगा।'

दुर्जन क्यों फलते-फूलते हैं ?

12 मैं तुझसे क्यों वाद-विवाद करूं ?
क्योंकि तू धार्मिक है,
और तेरा न्याय सच्चा है।
फिर भी, हे प्रभु,
मैं तेरे सम्मुख अपनी शिकायत पेश करूंगा:
दुर्जन अपने काम में सफल क्यों होते हैं ?
विश्वासघाती सुख-चैन से क्यों रहते हैं ?
2 सच है कि तूने उनको रोपा है,
और उन्होंने जड़ पकड़ ली है।
वे दिन-प्रतिदिन बढ़ते हैं, और फलते-
फूलते हैं।
वे मुंह से तेरा नाम जपते हैं,
पर हृदय से तुझको दूर रखते हैं।
3 हे प्रभु, तू मुझे जानता है;
हर पल मुझे देखता है।
तू मेरे हृदय को परखता है,
वह तुझ में लगा है।
प्रभु, वध होनेवाली भेड़ों के सदृश
झुण्ड में से दुर्जनों को निकाल,
और महाविनाश के दिन के लिए
उनको अलग कर।
4 कब तक देश विलाप करता रहेगा ?
कब तक हमारे चरागाह की घास सूखती
रहेगी ?
क्योंकि देशवासियों के दुष्कर्मों के कारण
पशु और पक्षी भी नष्ट हो गए हैं:
ये दुष्कर्मी कहते हैं,
'प्रभु हमारा आचरण नहीं देखता है।'

5 'यिर्मयाह, यदि तू पैदल चलनेवालों के साथ
दौड़कर थक गया,
तो तू घोड़ों का मुकाबला कैसे करेगा ?
यदि शांतिपूर्ण देश में घबरा गया
तो यर्दन नदी के घने जंगल में
तू क्या करेगा ?
6 तेरे भाइयों ने, तेरे पितृकुल के नाते-रिश्तेदारों
ने तेरे साथ विश्वासघात किया है;
वे तेरे पीछे हाथ धोकर पड़े हैं;
यदि वे तुझसे मीठी-मीठी बातें करें
तो भी तू उन पर विश्वास मत करना।

7 'ओ यिर्मयाह, मैंने अपना घर त्याग दिया:
अपनी मीरास को छोड़ दिया।
मैंने अपनी प्राण-प्रिय प्रेमिका को
शत्रुओं के हाथों में सौंप दिया।

+ अथवा, 'भोला-भाला, अग्रगामी' * शब्दशः 'आओ, हम वृक्ष को उसके फलों के साथ काट डालें।'
11 : 20 भज 7 : 8-9; प्रज्ञ 1 : 6-9 12 : 4 हो 4 : 3

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

8 मेरी मीरास जंगल की सिंहनी के समान
मेरे प्रति व्यवहार करती है।
वह मुझे देखकर दहाड़ती है;
अत: मैं उससे घृणा करता हूं।
9 मेरी मीरास मानो रंग-बिरंगी चिड़िया है,
जिसको मारने के लिए
चारों ओर से गिद्ध उसको घेरे हुए हैं।
जाओ, जंगल के सब पशुओं को एकत्र करो;
उन्हें बुलाकर ले आओ कि वे उसको खा
डालें।
10 अन्य देश के राजाओं ने, अनेक चरवाहों ने
मेरे अंगूर-उद्यान को उजाड़ दिया,
मेरे ''निज भाग'' को रौंद डाला।
उन्होंने मेरे सुन्दर उद्यान को
वीरान निर्जन प्रदेश बना दिया।
11 उन्होंने उसको उजाड़ दिया;
वह उजड़ कर मुझसे अपना रोना रो रहा है।
सारा देश ही उजड़ गया है,
परन्तु किसी के हृदय में इसका दु:ख नहीं है।
12 निर्जन प्रदेश के मुंडे टीलों पर
विनाश करनेवाले आ पहुंचे।
देश के एक कोने से दूसरे कोने तक
मुझ-प्रभु की तलवार विनाश कर रही है।
कोई भी मनुष्य सुरक्षित नहीं है।
13 उन्होंने बोया था गेहूं, पर काटे कांटे।
उन्होंने खून-पसीना बहाया,
किन्तु हाथ कुछ न आया।
मुझ-प्रभु की क्रोधाग्नि के कारण
वे अपनी फसल के लिए लज्जित होंगे।'

शत्रु राष्ट्रों को दण्ड

14 प्रभु अपने दुष्कर्मी पड़ोसी राष्ट्रों के
सम्बन्ध में यह कहता है: 'जो मीरास मैंने अपने
निज लोग इस्राएल को पैतृक अधिकार के लिए
दी थी, उसको पड़ोसी राष्ट्रों ने स्पर्श किया है।
अत: मैं-प्रभु कहता हूं: देखो, मैं उनको उनके
देश से उखाड़ दूंगा, और यहूदा कुल के लोगों
को भी उनके मध्य से उखाड़ूंगा। 15जब मैं
उनको उखाड़ लूंगा तब पुन: उन पर दया
करूंगा; और प्रत्येक कौम को उसकी पैतृक
भूमि पर वापस लाऊंगा, वे अपने-अपने देश
में पुन: बसेंगे। 16यदि वे मेरे निज लोगों का
आचरण सीखेंगे, यदि वे मेरे नाम की शपथ
खाएंगे: ''जीवंत प्रभु की शपथ,'' जैसा उन्होंने
मेरे निज लोगों को बअल देवता की शपथ
खाना सिखाया था, तो वे मेरे निज लोगों के
मध्य घरबार बना सकेंगे। 17किन्तु यदि कोई
कौम मेरी बात नहीं सुनेगी, तो मैं उसको उसके
देश से जड़-मूल सहित उखाड़ लूंगा, और उस
को नष्ट कर दूंगा,' प्रभु की यह वाणी है।

लुंगी का उदाहरण

13 प्रभु ने मुझसे यों कहा, 'जा, और एक
लुंगी खरीद। तू उस को अपनी कमर
में बांधना,और पानी में मत भिगोना।'
2 अत: प्रभु के आदेश के अनुसार मैंने एक
लुंगी खरीदी, और उस को अपनी कमर में बांध
लिया। 3दूसरी बार प्रभु ने मुझसे यों कहा:
4 'जो लुंगी तूने खरीदी है और जो तूने कमर
में बांधी है, उस को उतार, और फरात नदी के
तट पर जा। वहां तू लुंगी को चट्टान की दरार
में छिपा देना।'
5 अत: मैं उठा, और फरात नदी के तट पर
गया। मैंने प्रभु के आदेश के अनुसार लुंगी को
चट्टान की दरार में छिपा दिया।
6 कई दिनों के पश्चात् प्रभु ने मुझसे कहा,
'उठ, और फरात नदी के तट पर जा, और वहां
से लुंगी निकाल, जो तूने मेरे आदेश के अनुसार
छिपा दी थी।'
7 अत: मैं फरात नदी के तट पर गया। जिस
स्थान पर मैंने लुंगी को छिपाया था, वहां से मैंने
लुंगी निकाली। पर यह क्या! लुंगी खराब हो
गई थी। वह किसी काम की नहीं रही।
8 तब प्रभु का यह वचन मेरे पास पहुंचा:
9 'प्रभु यों कहता है: मैं यहूदा के घमण्ड को,
यरूशलेम के महा घमण्ड को इसी प्रकार खराब
करूंगा। 10यह दुष्कर्मी जाति है। ये मेरी बात
सुनने से इन्कार करते हैं, और हठपूर्वक अपने
हृदय के अनुसार आचरण करते हैं। ये अन्य
कौमों के देवी-देवताओं की सेवा करने के

12 : 10 यिर 6 : 3 12 : 10 मिर 4 : 2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लिए उनके अनुयायी बन गए हैं, और उनकी
पूजा करते हैं। अत: यह कौम भी लुंगी के
समान किसी काम की नहीं रहेगी। 11मुझ–प्रभु
की यह वाणी है: जैसे लुंगी मनुष्य की कमर
से चिपकी रहती है वैसे ही मैंने इस्राएल के तथा
यहूदा प्रदेश के सब लोगों को अपने से चिपका
कर रखा था कि वे मेरे निज लोग बनें, और मेरे
नाम, मेरी स्तुति और महिमा का कारण बनें।
किन्तु उन्होंने मेरी बात नहीं मानी।

मदिरा से भरे घड़ों का उदाहरण

12 'ओ यिर्मयाह, तू उनसे कहना :
"इस्राएल का प्रभु परमेश्वर यों कहता है:
मदिरा का हर एक घड़ा भरा जाएगा।" किन्तु
वे तुझको उलट कर यह उत्तर देंगे, "निस्सन्देह,
हम यह बात जानते हैं कि मदिरा का प्रत्येक
पात्र मदिरा से भरा जाएगा।" 13तब तू उनसे
यह कहना, "प्रभु यों कहता है: देखो, मैं देश
के सब निवासियों को शराब के नशे से मतवाला
कर दूंगा। दाऊद के सिंहासन पर बैठनेवाला
राजा, पुरोहित, नबी और यरूशलेम के सब
नागरिक मेरी क्रोध रूपी मदिरा पीकर मतवाले
हो जाएंगे। 14मैं उनको एक–दूसरे से टकराऊंगा:
पिता और पुत्रों को भी टकराऊंगा। मैं उनको
नष्ट करते समय उन पर दया नहीं करूंगा, न ही
उनको छोड़ूंगा, और न ही उन पर तरस
खाऊंगा," प्रभु की यह वाणी है।'

घमण्ड मत करो

15 ओ इस्राएलियो, मेरी बात ध्यान से सुनो;
क्योंकि यह मैंने नहीं वरन् प्रभु ने कहा है:
घमण्ड मत करो।
16 इस के पूर्व कि
प्रभु अन्धकार की चादर बिछाए,
इसके पूर्व कि
पहाड़ों पर अन्धकार की बदली छाए,
और तुम्हें ठोकर लगे,
ओ यहूदा प्रदेश के निवासियो,
अपने प्रभु परमेश्वर की महिमा करो।
ऐसा न हो कि जब तुम प्रकाश को खोजो,
तब प्रभु प्रकाश को अन्धकार में बदल दे,
वह प्रकाश को घोर अन्धकार बना दे!
17 किन्तु यदि तुम मेरी बात नहीं सुनोगे,
तो मैं तुम्हारे घमण्ड के कारण
एकांत स्थान में आंसू बहाऊंगा,
मेरी आंखें बुरी तरह रोएंगी,
उनसे आंसुओं की नदी बहेगी;
क्योंकि प्रभु का रेबड़ बन्दी बना लिया
जाएगा।

राजा और राजमाता का अपमान

18 राजा और राजमाता से यह कहो :
'महाराज और राजमाता, सिंहासन पर नहीं,
वरन् अब भूमि पर बैठिए;
क्योंकि आपके सिर से
सुन्दर मुकुट उतार लिया गया है।'
19 यहूदा प्रदेश के दक्षिणी नगरों के प्रवेश–द्वार
बन्द कर दिए गए हैं;
अब उनको कोई खोलनेवाला नहीं है।
यहूदा प्रदेश की जनता गुलाम बनकर
विदेश चली गई है,
सब लोग स्वदेश से निकाल दिए गए हैं।

यरूशलेम के लिए शोक गीत

20 ओ यरूशलेम! उत्तर दिशा से आनेवालों को
आंखें ऊपर उठाकर देख।
तेरा सुन्दर रेवड़, जो प्रभु ने तुझ को सौंपा
था, कहां गया?
21 जिनको तूने मित्रता का पाठ पढ़ाया था,
जिन को तूने मित्र बनाया था,
जब वे तेरे शासक नियुक्त होंगे
तब तू क्या कहेगी?
क्या यह देखकर तुझे जच्चा स्त्री के समान
प्रसव–पीड़ा नहीं होगी?
22 यदि तू अपने हृदय में यह सोचे कि
यह विपत्ति तुझ पर क्यों आई है,
तो सुन :
तेरे महा दुष्कर्म के कारण
तेरा वस्त्र उतारा गया,
तू नग्न की गई
और तेरे साथ बलात्कार किया गया।
23 क्या हबशी अपनी काली त्वचा

13 : 10 पो 12 [illegible]

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अथवा चीता अपने चित्ते बदल सकता है ?
तब तू कैसे अपना स्वभाव बदल कर
सत्कर्म कर सकती है;
क्योंकि तुझे तो दुष्कर्म करने की आदत है ?
24 जैसे मरुस्थल का पवन भूसे को उड़ा ले जाता है
वैसे ही प्रभु तुझको तितर-बितर कर देगा।
25 प्रभु कहता है,
'जो मैंने तेरे लिए निश्चित् किया है,
वह यही है,
यही तेरी नियति है;
क्योंकि तू मुझे भूल गई ,
तूने झूठ पर भरोसा किया।
26 तेरे दुष्कर्मों के कारण मैं स्वयं तेरे वस्त्र उतारूंगा,
और सब राष्ट्र तेरी नग्नता देखेंगे।
27 जो घृणित कार्य, व्यभिचार, कामुकता, वेश्यावृत्ति,
तूने पहाड़ियों और मैदानों में किए हैं,
वे सब मैंने देखे हैं।
ओ यरूशलेम, धिक्कार है तुझे!
तू कब शुद्ध होगी ?'

अकाल की भविष्यवाणी

14 अकाल के सम्बन्ध में प्रभु ने यिर्मयाह से यह कहा:
2 'यहूदा प्रदेश विलाप कर रहा है;
उसके नगर के प्रवेश-द्वार
गर्मी से मूर्छित पड़े हैं।
उसके निवासी
भूमि पर बैठकर शोक मना रहे हैं;
यरूशलेम के रोने की आवाज
आकाश तक पहुंच रही है।
3 यरूशलेम के धनवान लोग पानी के लिए
अपने सेवकों को भेज रहे हैं।
सेवक कुएं-झरनों पर आते हैं,
पर उनमें पानी नहीं है।
अत: वे खाली घड़े लिये वापस लौट जा रहे हैं।
वे उदास हैं, और नहीं जानते हैं कि क्या करें ?
वे सिर को ढक कर बैठे हुए हैं।
4 वर्षा न होने के कारण
भूमि में दरारें पड़ गई हैं;
किसान उदास हैं,
वे सिर को ढक कर बैठे हुए हैं।
5 घास न होने के कारण
हरिणी भी अपने नवजात बच्चे को
जंगल में छोड़कर चली गई है।
6 जंगली गधे मुण्डे टीलों पर खड़े हैं;
वे सियारों की तरह हांफ रहे हैं।
चारा न मिलने के कारण
उनकी आंखें पथरा गई हैं।

जनता अपना पाप स्वीकार करती है

7 ये लोग इस प्रकार प्रार्थना करते हैं:
'हे प्रभु, यह सच है कि
हमारे दुष्कर्म हमारे मुंह पर साक्षी दे रहे हैं,
कि हमने तेरे प्रति पाप किया है;
हम तेरा साथ छोड़कर
अनेक बार पथभ्रष्ट हुए हैं;
फिर भी प्रभु, अपने महिमामय नाम के कारण
हम पर दया कर।
8 प्रभु, तू इस्राएल की आशा है।
संकट-काल में तू ही बचानेवाला है।
तब तू क्यों हम से परदेशियों की तरह व्यवहार कर रहा है ?
तू ऐसा व्यवहार कर रहा है
मानो तू राह से गुजरता हुआ पथिक है
जो एक रात का मेहमान होता है।
9 तू भ्रम में पड़े हुए व्यक्ति की तरह
निष्क्रिय क्यों हो गया है ?
तू वीर योद्धा है,
फिर भी हमें नहीं बचा रहा है।
प्रभु, तू हमारे मध्य उपस्थित है;
तूने हमें अपना नाम दिया है,
प्रभु, हमें मत त्याग।'

10 किन्तु प्रभु इन लोगों के विषय में
यों कहता है:

---
14 : 10 हो 8 : 13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'उनके पैरों में चक्र है;
उन्हें सिर्फ भटकना ही प्रिय लगता है।
उन्होंने अपने पैरों को
गलत मार्ग पर चलने से नहीं रोका।
अत: मैं उनको स्वीकार नहीं करूंगा,
मैं उनके दुष्कर्मों को स्मरण रखूंगा,
और उनके पापों के लिए उन्हें दण्ड दूंगा।'

11 प्रभु ने मुझसे कहा, 'यिर्मयाह, तू इन
लोगों के कल्याण के लिए प्रार्थना मत कर।
12यद्यपि ये उपवास करते हैं, तो भी मैं इनकी
दुहाई नहीं सुनूंगा। यद्यपि ये मुझे अग्नि-बलि
और अन्न-बलि चढ़ाते हैं, तो भी मैं इन लोगों
को स्वीकार नहीं करूंगा। मैं इन लोगों को
तलवार से मौत के घाट उतार दूंगा, इनको
अकाल और महामारी से मिटा दूंगा।'

13 मैंने कहा, 'परन्तु स्वामी, प्रभु! देख,
नबी तो उनसे यह कहते हैं: ''ओ यहूदा प्रदेश
के निवासियो, ओ यरूशलेम के नागरिको, न
तुम शत्रु की तलवार देखोगे, और न तुम पर
अकाल और महामारी की छाया पड़ेगी। प्रभु
तुम को इस देश में सुख-चैन की नींद सोने
देगा।'' '

14 तब प्रभु ने मुझ से कहा, 'ये नबी मेरे नाम
से झूठी नबूवत कर रहे हैं। मैंने इन झूठे नबियों
को नहीं भेजा है। न तो मैंने इन्हें कोई आदेश
दिया है, और न इनसे मैं बोला हूं। ये तुम से
झूठे दर्शन की भविष्यवाणी कर रहे हैं। ये मन-
गढ़न्त बातों की नबूवत करते हैं। ये निस्सार
शकुन की बातें विचारते हैं। 15अत: मैं, प्रभु,
इन नबियों के सम्बन्ध में यह कहता हूं: जो नबी
मेरे नाम से नबूवतें करते हैं, यद्यपि मैंने उनको
नहीं भेजा है, और जो जनता से यह कहते हैं,
''इस देश पर तलवार और अकाल की छाया
नहीं पड़ेगी,'' वे तलवार और अकाल से ही नष्ट
होंगे। 16और जिन लोगों को ये नबूवतें सुनाते
हैं, वे अकाल और तलवार के शिकार बन
जाएंगे, और उनकी लाशें यरूशलेम की सड़कों
पर लावारिस पड़ी रहेंगी, क्योंकि उन को
गाड़नेवाला कोई न होगा। उनकी, तथा पत्नी,
पुत्रों और पुत्रियों की यही दुर्दशा होगी। मैं
उनके दुष्कर्म ही उनके सिर पर उण्डेल दूंगा।

नबी यिर्मयाह का विलाप

17 'ओ यिर्मयाह, तू उन से यह कहना:
''मेरी आंखों से दिन-रात
आंसुओं की झड़ी लगी रहती है;
मेरे आंसू नहीं रुकते;
क्योंकि यहूदा प्रदेश की जनता* का सर्वनाश
हो गया है;
उसका भयंकर विनाश हुआ है।
18 अगर मैं मैदान में जाता हूं
तो मुझे वहां तलवार की मारकाट दिखाई
देती है।
यदि नगर में प्रवेश करता हूं
तो मुझे वहां अकाल की महामारी दिखाई
देती है।
नबी और पुरोहित देश में रोजगार की
तलाश में मारे-मारे फिर रहे हैं।+
वे समझ नहीं पा रहे हैं कि क्या करें।'''

19 हे प्रभु, क्या तूने
यहूदा को पूर्णत: त्याग दिया है?
क्या तू सियोन से घृणा करने लगा है?
तूने हमें इस तरह क्यों मारा
कि हम अब स्वस्थ हो ही नहीं सकते?
हम कल्याण की बाट जोहते रहे,
पर हमारा कल्याण नहीं हुआ,
हम स्वस्थ होने की प्रतीक्षा करते हैं,
पर देख, हम पर आतंक छा गया।
20 हे प्रभु, हम अपने और अपने पूर्वजों के
दुष्कर्मों को
उनके अधर्म के कामों को स्वीकार करते
हैं।
हे प्रभु, हमने तेरे प्रति पाप किया है।
21 अपने दयामय नाम के हेतु हमें मत ठुकरा।
अन्य कौमों में अपने महिमामय सिंहासन
को

---

* अक्षरशः, 'कुंवारी कन्या, मेरी जनता की पुत्री' + अथवा, 'देश में अपना-अपना धंधा कर रहे हैं।'

14 : 12 प्रक 6 : 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
अपमानित न होने दे।
प्रभु, स्मरण कर कि
तूने हमारे साथ विधान स्थापित किया है;
अपना यह विधान मत तोड़!
22 अन्य जातियां निस्सार मूर्तियों की आशा
करती हैं।
क्या उन में सामर्थ्य है
कि वे आकाश से वर्षा कर दें?
क्या स्वयं आकाश वर्षा कर सकता है?
हे हमारे प्रभु परमेश्वर,
क्या तू पहले-जैसा 'वह' नहीं रहा?
प्रभु, हम तेरी ही आस लगाए बैठे हैं;
क्योंकि तू ही इन सब कामों को करता है।

प्रभु द्वारा यहूदा प्रदेश की जनता का पूर्ण त्याग

15 तब प्रभु ने मुझ से कहा, 'यदि मूसा और
शमूएल भी मेरे सम्मुख खड़े हों, और
यहूदा प्रदेश के लोगों के लिए दया की भीख
मांगें, तो भी मेरा हृदय उनके प्रति नहीं
पिघलेगा। उनको मेरी नजर से दूर करो, मेरी
उपस्थिति से निकाल दो। 2अगर यहूदा प्रदेश
के लोग तुझ से पूछें कि हम कहां जाएं, तो तू
उनसे यह कहना: 'प्रभु यों कहता है,
"जो महामारी से मरनेवाले हैं,
वे महामारी के मुंह में चले जाएं;
जो तलवार से मौत के घाट उतरनेवाले हैं,
वे तलवार से घात होने चले जाएं।
जो अकाल से मरनेवाले हैं,
वे अकाल की छाया में चले जाएं;
और जिनको बन्दी होकर निष्कासित होना
है, वे निष्कासन में चले जाएं!"
3 'मैंने उन पर ये चार विनाश-दूत नियुक्त
किए हैं!' प्रभु कहता है: 'वध करने के लिए
तलवार, चीरने-फाड़ने के लिए शिकारी कुत्ते,
उनके शव खाने के लिए आकाश के पक्षी, और
उनको पूर्णत: समाप्त करने के लिए धरती के
जंगली पशु। 4यहूदा प्रदेश के राजा मनश्शे
बेन-हिजकियाह** ने जो घृणित कार्य यरूशलेम
नगर में किया था, उसके कारण मैं इन लोगों
को ऐसा दण्ड दूंगा कि विश्व के सब राज्य
इनको देख कर आतंकित हो जाएंगे।
5 'ओ यरूशलेम, तुझ पर कौन दया करेगा?
कौन तेरे लिए शोक मनाएगा?
तेरा कुशल-मंगल पूछने के लिए
कौन तेरे पास आएगा?
6 तूने मुझ-प्रभु को अस्वीकार कर लिया है,
और मेरी ओर पीठ कर ली है।
अत: मैंने तुझ पर हाथ उठाया,
और तुझको नष्ट कर दिया।
मैं तुझ पर दया करते-करते थक गया हूं।
7 मैंने उनको देश के प्रवेश-द्वारों पर
सूप से फटका;
मैंने अपने निज लोगों को निर्वंश कर दिया,
उनको नष्ट कर दिया,
फिर भी उन्होंने अपना दुराचरण नहीं छोड़ा।
8 मैंने उनके देश में विधवाओं की संख्या
सागर-तट के रेत-कणों से अधिक कर दी!
मैंने तरुण सैनिकों की माताओं के विरुद्ध
दिन-दहाड़े एक विध्वंसक भेजा।
मैंने आदेश दिया,
और उन पर दु:ख और आतंक का पहाड़
अचानक टूट पड़ा।
9 सात बच्चों वाली मां भी बेहाल है;
वह अंतिम सांस गिन रही है।
उसके जीवन का सूर्य दोपहर को ही डूब गया।
उसको अपमानित और लज्जित होना पड़ा।
मैं बचे हुए लोगों को
उनके शत्रुओं के हाथ में सौंप दूंगा,
कि वे उनको तलवार से, मौत के घाट उतार
दें,'
यह प्रभु की वाणी है।

नबी का शोक

10 ओ मेरी मां, धिक्कार है मुझे!
कि तूने जन्म दिया मुझे,
जो समस्त देशवासियों से
लड़ने-झगड़नेवाला मनुष्य हूं!
न मैं किसी को देता हूं,

** अथवा, 'हिजकियाह का पुत्र मनश्शे'

15 : 1 नि 32 : 11; 1 शम 7 : 9 15 : 2 प्रक 13 : 10 15 : 5 यश 51 : 19

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और न किसी से लेता हूं;
तो भी सब लोग मुझे
पानी पी-पीकर कोसते हैं।
11 प्रभु, क्या यह सच नहीं है कि
मैंने शक्ति-भर सेवा की;
अपने शत्रु के लिए भी तुझ से निवेदन
किया,
जब वह संकट में था, जब वह कष्ट में था?+
12 क्या हमारा लोहा, उत्तर दिशा के लोहे
और पीतल को काट सकता है?

13 प्रभु, तूने इस्राएली राष्ट्र से कहा था:
'जो पाप तूने अपने देश में किए हैं,
उनके दण्ड के लिए
मैं तेरी सारी धन-सम्पत्ति,
तेरा बहुमूल्य खजाना लुटेरे शत्रु को दे दूंगा।
14 तू उस देश में अपने शत्रु की गुलामी करेगा,
जिस को तू अभी नहीं जानता है।
मेरी क्रोधाग्नि तेरे विरुद्ध भड़क उठी है;
यह कभी नहीं बुझेगी!'

15 प्रभु, तू सब जानता है;
मुझे स्मरण रख, मेरी सुधि ले।
मेरे प्राण के खोजियों से प्रतिशोध ले।
प्रभु, तू सहनशील है,
अत: मुझे मरने से बचा ले।
प्रभु, तुझे यह मालूम है कि
मैंने तेरे कारण ही निन्दा सही है।
16 जब मुझे तेरे वचन मिले
तब मैंने उन्हें ऐसा ग्रहण किया था
कि मानो मैं कोई स्वादिष्ट व्यंजन खा रहा
हूं।
तेरे वचन मेरे लिए हर्ष का कारण बन गए।
वे मेरे हृदय का आनन्द थे।
क्योंकि, हे स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु परमेश्वर,
मैं तेरा नबी* कहलाता हूं।
17 मैं हंसी-मजाक करने वालों के साथ नहीं
बैठता था;
और न आनन्द मनाता था।
मैं तो अकेला था,
पर तेरा हाथ मुझ पर था।
तूने ही मुझे क्रोध से भरा था।
18 तब क्यों मेरी पीड़ा दूर नहीं हो रही है?
मेरा घाव क्यों नहीं भर रहा है?
क्या तू मेरे लिए मृग-तृष्णा बन गया है?
क्या तू ऐसा झरना हो गया है, जो सूख जाता
है?
क्या तू गरजनेवाला बादल हो गया है:
जो गरजता तो है पर बरसता नहीं?

19 अत: प्रभु ने मुझसे यों कहा:
'ओ यिर्मयाह,
यदि तू पश्चात्ताप करे और मेरे पास लौटे
तो मैं तुझे पुन: स्वीकार करूंगा;
तुझे फिर अपनी सेवा में लूंगा।
यदि तू केवल मेरे अनमोल वचन बोलेगा,
और निरर्थक वचन नहीं कहेगा,
तो तू निस्सन्देह मेरा मुंह कहलाएगा!
तब लोग तेरी ओर लौटेंगे,
और तुझे उनके पास लौटना न पड़ेगा।
20 मैं तुझ को इन लोगों के लिए
एक किलाबन्द नगर,
एक कांस्य दीवार बना दूंगा।
वे तुझसे लड़ेंगे,
पर तुझको पराजित न कर पाएंगे।
क्योंकि मैं तुझ को बचाने के लिए
तुझ को उनके हाथ से छुड़ाने के लिए,
तेरे साथ हूं,' यह प्रभु की वाणी है,
21 'मैं दुर्जनों के हाथ से तुझे छुड़ाऊंगा;
हिंसक व्यक्तियों के पंजे से तुझे मुक्त
करूंगा।'

स्वयं नबी का जीवन एक चिह्न है

16 प्रभु का यह संदेश मुझे मिला। प्रभु ने
कहा, 2 'यिर्मयाह, तू विवाह नहीं
करेगा, और न ही इस देश में तेरे पुत्र और
पुत्रियां उत्पन्न होंगे। 3 मैं इस देश में उत्पन्न पुत्रों

+ मूल में: 'प्रभु ने कहा, "मैं शक्ति-भर तुझे संभालूंगा। संकट के समय, कष्ट के समय, मैं शत्रु को तुझ से निवेदन करने के लिए बाध्य करूंगा।"' * अक्षरश:, 'तेरे नाम से'
15 : 13 यिर 17 : 3 15 : 15 भज 69 : 7

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
और पुत्रियों के सम्बन्ध में तथा उनकी मांओं
तथा पिताओं के सम्बन्ध में यह कहता हूं: 4वे
भयंकर महा रोग से मर जाएंगे। उनके लिए
रोनेवाला भी नहीं मिलेगा और न उनके शवों
को गाड़ने वाला। उनकी लाशें भूमि पर कूड़े-
कचरे के ढेर की तरह पड़ी रहेंगी। वे तलवार
और अकाल की मार से नष्ट हो जाएंगे। उनकी
लाशों को आकाश के पक्षी और धरती के
जंगली पशु खा जाएंगे।
5 'मैं प्रभु कहता हूं: यिर्मयाह, तू मृत्यु-
शोक मनानेवाले किसी घर में प्रवेश मत करना,
और न शोक मनाने के लिए जाना। तू उनके
लिए शोक भी मत मनाना; क्योंकि मैंने इन
लोगों से अपनी शांति, अपनी करुणा और दया
वापस ले ली है। 6बड़े और छोटे—सब लोग
इस देश में बेमौत मरेंगे, और उनकी लाश को
गाड़नेवाला कोई नहीं मिलेगा। उनके लिए
कोई मृत्यु-शोक भी नहीं मनाएगा। उनके लिए
शोक प्रकट करने के लिए कोई अपने शरीर पर
घाव नहीं करेगा, और न उनके लिए अपना सिर
मूंड़ेगा। 7मृतक के लिए शोक मनानेवाले को
रोटी खिलानेवाला भी कोई नहीं मिलेगा कि
उसको सांत्वना मिले! माता अथवा पिता की
मृत्यु के अवसर पर उसके पुत्र को सांत्वना देने
के लिए कोई भी मनुष्य प्याले में उसको अंगूर-
रस नहीं पिलाएगा।
8 'यिर्मयाह, आनन्द मनानेवाले घरों में भी
खाने-पीने के उद्देश्य से प्रवेश मत करना;
9क्योंकि इस्राएल का परमेश्वर, स्वर्गिक सेनाओं
का प्रभु यों कहता है: इन लोगों की आंखों के
सामने, इनके जीवन-काल में मैं इस देश में
आनन्द-उल्लास की ध्वनि, हर्ष ध्वनि तथा वर
और वधु की हास-परिहास की आवाज बन्द
कर दूंगा।
10 'यिर्मयाह, जब तू इन लोगों से ये बातें
कहेगा, और वे तुझसे यह पूछेंगे, "प्रभु ने हमारे
ऊपर यह महा विपत्ति ढाहने को क्यों कहा है?
क्या हमने कोई अधर्म किया है? हम ने अपने
प्रभु परमेश्वर के प्रति कौन-सा पाप किया
है?" 11तब तू उनको यह उत्तर देना, "प्रभु
कहता है: क्योंकि तुम्हारे पूर्वजों ने मुझ-प्रभु
को त्याग दिया था, और वे अन्य देवी-देवताओं
का अनुसरण करने लगे थे। वे उनकी सेवा और
पूजा करते थे। उन्होंने मेरा पूर्ण परित्याग कर
दिया था, और मेरी व्यवस्था का पालन नहीं
किया था। 12किन्तु तुमने तो अपने पूर्वजों को
भी पीछे छोड़ दिया; क्योंकि देखो, तुममें से
प्रत्येक व्यक्ति अपने हठीले हृदय के अनुसार
दुराचरण करता है, और मेरे वचन को सुनने से
इन्कार करता है। 13इसलिए मैं तुम को इस देश
से उखाड़ कर ऐसे देश में फेंक दूंगा जिसको
न तुम्हारे पूर्वज जानते थे, और न तुम जानते हो।
वहां तुम अन्य देवी-देवताओं की रात-दिन
गुलामी करोगे, और मैं तुम पर कदापि कृपा
नहीं करूंगा" '

इस्राएलियों की स्वदेश-वापसी का शुभ सन्देश

14 प्रभु कहता है, 'देखो, वे दिन आ रहे हैं
जब लोग शपथ लेते समय यह नहीं कहेंगे कि
"मिस्र देश की गुलामी से इस्राएलियों को
बाहर निकालने वाले जीवंत प्रभु की सौगन्ध!"
15बल्कि वे कहेंगे "जीवंत प्रभु की सौगंध, जो
इस्राएली लोगों को उत्तरी देश की गुलामी से,
तथा उन देशों से निकाल कर लाया, जहां उसने
उन्हें हांक दिया था।" क्योंकि मैं निस्सन्देह
उनको स्वदेश वापस लाऊंगा, जो मैंने उनके
पूर्वजों को दिया था।

आक्रमण की सूचना

16 'ओ यिर्मयाह, देख', प्रभु की यह वाणी
है: 'मैं अनेक मछुओं को भेज रहा हूँ, और वे
उनको अपने जाल में पकड़ेंगे। मछुओं के बाद
मैं अनेक शिकारियों को भेजूँगा, जो इस्राएलियों
को हर एक पहाड़ पर, प्रत्येक घाटी में और सब
चट्टानों की दरारों में ढूंढ़-ढूंढ़कर उनका
शिकार करेंगे।
17 'क्योंकि मेरी आंखों से उनका आचरण
छिपा नहीं है;
मैं उनके व्यवहार को हर क्षण देखता हूँ;
उनका अधर्म मेरी आंखों से गुप्त नहीं है।

16 : 9 यिर 7 : 34; 25 : 10; प्रक 18 : 23

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

18 अत: उनके अधर्म और पाप का दो गुना दण्ड
मैं उनको सौंप दूंगा।
उन्होंने अपने देवी-देवताओं की घृणित
लोथों से
मेरे देश को भ्रष्ट कर दिया है।
उन्होंने मेरे निजी भूमि-क्षेत्र को
घृण्य मूर्तियों से भर दिया है'।

राष्ट्रों का हृदय-परिवर्तन

19 हे प्रभु, तू ही मेरा बल और मेरा गढ़ है;
संकट के समय मैं तेरी ही शरण में आता
हूं।
प्रभु, विश्व के कोने-कोने से,
सब राष्ट्रों के लोग तेरे सम्मुख आएंगे,
और यह कहेंगे:
'निस्सन्देह, हमारे पूर्वजों को पैतृक अधिकार
में
असत्य के अतिरिक्त कुछ नहीं मिला;
उन्हें निस्सार वस्तुएं प्राप्त हुई
जो मनुष्य को लाभ नहीं पहुंचातीं।
20 क्या मनुष्य अपने लिए
देवताओं की रचना कर सकता है?
क्या ऐसे देवता ईश्वर हो सकते हैं?
निस्सनदेह नहीं।'

21 'यिर्मयाह, देख, मैं उनको बताऊंगा,
और वे यह स्वीकार करेंगे;
मैं उन पर अपना भुजबल,
अपना सामर्थ्य प्रकट करूंगा;
तब उन्हें अनुभव होगा कि
मेरा नाम "प्रभु" है।

यहूदा प्रदेश के निवासियों का पाप

17 'यिर्मयाह, यहूदा प्रदेश के पाप का
विवरण
लोहे की कलम से लिखा हुआ है!
उनके अपराध का लेख
उनके हृदय में हीरे की नोक से
खुदा हुआ है!
उनकी वेदियों के सींगों पर
उनका अधर्म अंकित है।
2-3 क्या उनके पुत्र-पुत्रियां
पहाड़ों पर, खुले मैदानों में
हरे-हरे वृक्षों के नीचे,
ऊँची-ऊँची पहाड़ियों पर स्थापित
अपनी वेदियों और अशेरा देवी की मूर्तियों
को
एक पल के लिए भी भूल सकते हैं?
अत: ओ यहूदा प्रदेश!
जो पाप तूने अपने प्रदेश में किए हैं,
उनके दण्ड के लिए मैं तेरी सारी सम्पत्ति,
तेरा बहुमूल्य खजाना लुटेरे शत्रु को दे
दूंगा।
4 तुझको अपने पैतृक भूमि-क्षेत्र से
हाथ धोना पड़ेगा,
जो मैने तुझको दिया था!
तू उस देश में शत्रुओं की गुलामी करेगा,
जिस को तू अभी नहीं जानता है।
ओ यहूदा प्रदेश,
मेरी क्रोधाग्नि तेरे विरुद्ध भड़क उठी है।
यह कभी नहीं बुझेगी।'

कुछ नीति वचन

5 प्रभु यों कहता है:
'वह मनुष्य शापित है,
जो आदमी पर भरोसा करता है,
जो हाड़-मांस के पुतले का सहारा लेता है,
जिसका हृदय प्रभु से भटक जाता है।
6 वह मरुस्थल की छोटी सूखी झाड़ी
के समान होता है,
जो कभी फलती-फूलती नहीं।
वह मनुष्य निर्जन प्रदेश के सूखे इलाकों में
निवास करेगा;
वह नोनी भूमि के क्षेत्र में रहेगा,
जहां कोई नहीं बसता।

7 'धन्य है वह मनुष्य,
जो प्रभु पर भरोसा करता है;
जिसका भरोसा ही प्रभु है।
8 वह मानो कल-कल करते झरने के
तट पर रोपा गया वृक्ष है;

---

16 : 18 प्रक 18 : 6 17 : 3 यिर 15 : 13 17 : 8 भज 1 : 3

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जिसकी जड़ें गहरे पानी में होती हैं।
जब दोपहर के सूरज की प्रखर किरणें उस पर पड़ती हैं,
तब वह उनकी गर्मी से नहीं मुरझाता;
उसके पत्ते सदा हरे बने रहते हैं।
वर्षा न होने पर भी उनको चिन्ता नहीं होती,
क्योंकि वह सूखा पड़ने पर भी फलता है।

9 'मनुष्य का हृदय छल-कपट से भरा होता है,
निस्सन्देह वह सब से अधिक भ्रष्ट होता है।
मनुष्य के हृदय को कौन समझ सकता है?
10 केवल मैं हृदय की जांच करता हूँ;
मैं प्रभु, मनुष्य के मन को परखता हूँ,
और हर एक मनुष्य को
उसके आचरण के अनुकूल
उसके कर्मों के फल के अनुसार
पुरस्कार देता हूं।

11 'जो मनुष्य अन्यायपूर्ण साधनों से
धन-सम्पत्ति संचित करता है,
वह उस तीतरनी की तरह है,
जो दूसरे पक्षियों के अण्डे सेती है।
ऐसे मनुष्य के जीवन-काल में ही
धन-सम्पत्ति उसका साथ छोड़ देती है;
और अन्त में वह मूर्ख सिद्ध होता है।'

यरूशलेम का मन्दिर और प्रभु में अटूट विश्वास

12 जहां आरम्भ से उच्च स्थान पर
महिमामय सिंहासन प्रतिष्ठित है,
वह हमारा आराधना-स्थल है।
13 हे प्रभु, तू ही इस्राएल की आशा है!
जो तुझको त्याग देते हैं,
वे अंत में अपने शत्रु से पराजित होते हैं।
जो तुझ से मुंह मोड़ लेते हैं,
उनका नाम और निशान
पृथ्वी की सतह से मिट जाता है;
क्योंकि उन्होंने तुझ-प्रभु को,
जीवन-जल के झरने को, त्याग दिया है।

प्रतिशोध के लिए प्रार्थना

14 हे प्रभु, मुझे स्वस्थ कर, तो मैं स्वस्थ हूंगा;
मुझे बचा तो मैं बच जाऊंगा;
क्योंकि प्रभु, मैं तेरी ही स्तुति करता हूं।
15 देख, मेरे शत्रु मुझ से व्यंग्य से कहते हैं,
'कहां है प्रभु का वचन?
अब वह कार्य-रूप में पूरा हो।'
16 प्रभु, मैंने उन पर विपत्ति भेजने के लिए*
तुझ पर जोर नहीं डाला था;
तू जानता है कि
मैंने विनाश-दिवस की कामना नहीं की थी।
जो कुछ मेरे ओंठों से निकला है,
वह सब तू जानता है।
17 प्रभु, तू मेरे आतंक का कारण न बन;
क्योंकि दुर्दिन में तू ही मेरा शरणस्थान है।
18 प्रभु, जो लोग मुझे सताते हैं,
उनको तू लज्जित कर,
और मुझे लज्जित न होने दे।
वे डर से कांप उठें,
किन्तु मैं निडर बनूं।
उनको विनाश का दिन दिखा;
उनका विनाश कर, नहीं, सर्वनाश कर!

विश्राम दिवस का पालन करना

19 प्रभु ने मुझसे यह कहा, 'यिर्मयाह, जा
और जनता-द्वार पर खड़ा हो, जहां से यहूदा के
राजा प्रवेश करते हैं और आते-जाते हैं। उसके
बाद तू यरूशलेम के सब प्रवेश-द्वारों पर खड़ा
होना, 20और उनसे कहना: ओ यहूदा प्रदेश
के राजाओ, ओ यहूदा प्रदेश की जनता! ओ
यरूशलेम के निवासियो, तुम-सब लोग जो इन
द्वारों से प्रवेश करते हो, प्रभु का वचन सुनो।
21प्रभु ने यह कहा है: यदि तुम अपना जीवन
बचाना चाहते हो तो मेरी बात पर ध्यान दो।
विश्राम दिवस पर किसी प्रकार का बोझ मत
उठाओ, और न ही उसको ढोते हुए यरूशलेम
के प्रवेश-द्वारों से गुजरो। 22विश्राम दिवस पर
अपने घर से बाहर भी बोझ लाद कर मत
निकलो, और न किसी प्रकार का काम करो।
जैसे मैंने तुम्हारे पूर्वजों को आज्ञा दी थी, उसी

* मूल में, 'तेरे पीछे चरवाहा बनने के लिए'।

17 : 10 भज 62 : 12; नीति 17 : 3; मत 16 : 27; प्रक 2 : 23; 22 : 12 **17 : 21** नह 13 : 19 **17 : 22** नि 20 : 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

के अनुरूप विश्राम दिवस को पवित्र मानो।
23किन्तु तुम्हारे पूर्वजों ने मेरी आज्ञा नहीं मानी;
उन्होंने अकड़ कर अपनी गर्दन टेढ़ी कर ली।
उन्होंने अपने कान बन्द कर लिये, जिससे वे
मेरे वचन न सुनें और न किसी प्रकार का उपदेश
ग्रहण करें।
24 'किन्तु मैं-प्रभु कहता हूँ: यदि तुम मेरे
वचन सुनोगे, और विश्राम दिवस पर किसी
प्रकार का बोझ उठा कर इस नगर के प्रवेश-
द्वारों से प्रवेश नहीं करोगे, विश्राम दिवस को
पवित्र मानोगे, और उस दिन किसी प्रकार का
काम नहीं करोगे, 25तो दाऊद के सिंहासन पर
बैठने वाले राजा इस नगर के प्रवेश-द्वारों से
सदा प्रवेश करते रहेंगे। रथों और घोड़ों पर
सवार राजा और राजकुमार तथा यहूदा प्रदेश के
योद्धा, और यरूशलेम के निवासी, इन प्रवेश-
द्वारों से आते-जाते रहेंगे। यह यरूशलेम नगर
सदा आबाद रहेगा। 26तब यहूदा प्रदेश के सब
नगरों से, यरूशलेम नगर के आसपास के गांवों
से, बिन्यामिन के भूमि-क्षेत्र से, शफेलाह के
मैदानी नगरों से, पहाड़ी क्षेत्र से और नेगेब क्षेत्र
से सब लोग अग्नि-बलि, पशु-बलि, अन्न-
बलि और सुगन्धित धूप-बलि लाएंगे, और
प्रभु के गृह, यरूशलेम के मन्दिर में स्तुति-बलि
के रूप में उनको चढ़ाएंगे।
27 'किन्तु यदि तुम मेरा वचन नहीं सुनोगे,
और विश्राम दिवस को पवित्र नहीं रखोगे; यदि
विश्राम दिवस पर किसी प्रकार का बोझ उठा
कर यरूशलेम के प्रवेश-द्वारों से प्रवेश करोगे,
तो मैं उन द्वारों में आग लगा दूंगा, और यह आग
यरूशलेम के महलों को भस्म कर देगी, और
कभी नहीं बुझेगी।'

कुम्हार का उदाहरण

18 प्रभु का यह वचन यिर्मयाह को मिला।
2प्रभु ने कहा, 'यिर्मयाह, उठ और
कुम्हार के घर जा। वहां मैं तुझे अपना सन्देश
सुनाऊंगा।'
3 अतः मैं कुम्हार के घर गया। मैंने देखा कि
वह चाक पर मिट्टी के बर्तन बना रहा है। 4और
जो बर्तन उसने बनाया, वह उसके हाथ से
बिगड़ गया। तब उसने उसी मिट्टी से दूसरा
बर्तन, जो उस को अपनी आंखों में उचित लगा,
बना लिया।
5 तब प्रभु का यह वचन मुझे मिला: 6 'ओ
इस्राएल के वंश! जैसा इस कुम्हार ने मिट्टी के
साथ किया, क्या मैं तुम्हारे साथ वैसा नहीं कर
सकता हूं? मुझ-प्रभु का यह कथन है: सुन, ओ
इस्राएल के वंश! जैसे मिट्टी कुम्हार के हाथ में
होती है, वैसे ही तू मेरे हाथ में है। 7यह सच
है कि जब मैं किसी कौम अथवा राज्य के
सम्बन्ध में यह घोषित करता हूं कि मैं उसको
उसके देश से उखाड़ कर नष्ट कर दूंगा और
ध्वस्त कर दूंगा; 8किन्तु यदि वह राष्ट्र जिस के
विनाश के सम्बन्ध में मैंने घोषणा की थी, अपने
बुरे मार्ग को छोड़कर मेरी ओर लौटता है, तो
मैं पछताता हूं कि मैंने उस राष्ट्र का अनिष्ट करने
का निश्चय किया था।
9 'यदि मैं कभी किसी राष्ट्र या राज्य के
सम्बन्ध में यह घोषित करता हूं कि मैं उसको
रोपूंगा, और उसकी जड़ें मजबूत करूंगा;
10किन्तु यदि वह मेरी दृष्टि में दुष्कर्म करता है,
मेरे वचन को नहीं सुनता है, तो मैं पछताता हूं
कि मैंने उस राष्ट्र की भलाई करने का निश्चय
किया था।
11 'अब, यिर्मयाह, तू यहूदा प्रदेश की
जनता और यरूशलेम के निवासियों से यह
कहः "प्रभु यों कहता है : देखो, मैं तुम्हारा
अनिष्ट करने का विचार कर रहा हूँ; मैं तुम्हारे
विरुद्ध अनिष्ट की योजना बना रहा हूं। अतः
प्रत्येक मनुष्य अपने बुरे मार्ग को छोड़कर मेरी
ओर लौटे, और तुम-सब अपना-अपना आचरण
और व्यवहार सुधारो।"
12 'किन्तु वे कहते हैं: "यह बेकार की बात
है। हम अपनी योजना के अनुसार चलेंगे, अपने
हठी हृदय के अनुसार काम करेंगे, आचरण
करेंगे।"
13 'अतः प्रभु यों कहता है:
विश्व के राष्ट्रों से पूछो,

18 : 6 रोम 9 : 21 18 : 7 यिर 1 : 10 18 : 8 यहेज 18 : 21 18 : 13 यिर 2 : 10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

क्या कभी किसी राष्ट्र ने ऐसा उत्तर सुना है?
निस्सन्देह इस्राएली जाति ने*
अत्यन्त घिनौना काम किया है।
14 लबानोन पर्वत का बर्फ,
चट्टानों से पिघलकर मैदान में आता है;
क्या उसका बहना बन्द हो सकता है?
क्या ठण्डे पानी की पहाड़ी नदियां,
पहाड़ी झरने कभी सूख सकते हैं?
15 ऐसी असंभव बात मेरे निज लोगों ने संभव कर दी:
वे मुझे भूल गए।
वे झूठे देवी-देवताओं को
सुगन्धित धूप-द्रव्य जलाते हैं।
वे अपने मार्गों पर ठोकर खाते हैं;
वे प्राचीन मार्गों पर भटक गए हैं।
वे राजमार्ग छोड़कर पगडण्डियों में खो गए हैं।
16 अत: उन का देश उजाड़ हो गया,
उसको देखकर अन्य राष्ट्रों के लोग सदा व्याकुल** रहेंगे।
उससे गुजरनेवाला राहगीर आश्चर्य करता है,
और सिर हिलाता है।
17 पूरबी वायु के समान मैं उन को शत्रुओं के सम्मुख बिखेर दूंगा;
उनकी विपत्ति के दिन
मैं उनको अपना मुंह नहीं,
बल्कि पीठ दिखाऊंगा!'

यिर्मयाह की हत्या का षड्यन्त्र

18 यहूदा प्रदेश की जनता और यरूशलेम
के निवासियों ने आपस में कहा, 'आओ, हम
यिर्मयाह के विरुद्ध षड्यन्त्र रचें; क्योंकि
यिर्मयाह के न रहने से पुरोहितों की व्यवस्था
समाप्त नहीं हो जाएगी, और न बुद्धिमान
आचार्यों के बुद्धिमत्तापूर्ण परामर्श, और न ही
नबियों की नबूवत। आओ हम झूठे आरोप में
यिर्मयाह को पकड़ें और मार डालें। अच्छा हो
कि हम उसकी बात पर ध्यान न दें।'

19 हे प्रभु, मेरी प्रार्थना पर ध्यान दे;
मेरे निवेदन को सुन।
20 क्या भलाई का बदला बुराई है?
फिर भी उन्होंने मेरा प्राण लेने के लिए गड्ढा खोदा है।
प्रभु, स्मरण कर कि मैं उनकी भलाई के लिए
तेरे सम्मुख खड़ा होकर
तुझ से विनती करता था कि
तेरा क्रोध उनसे दूर हो जाए।
21 अब प्रभु, तू उनके बच्चों को अकाल के मुख में जाने दे;
उनको तलवार से मौत के घाट उतार दे।
उनकी स्त्रियां निस्सन्तान हो जाएं,
वे विधवा हो जाएं।
पुरुषों की मौत महामारी से हो।
उनके जवान बेटे युद्ध में मारे जाएं।
22 प्रभु, जब तू उन पर अचानक शत्रु-दल लाएगा,
तब उनके मकानों से चीख-पुकार की आवाज निकले।
उन्होंने मुझे गिराने के लिए गड्ढा खोदा है;
मेरे पैरों को फांसने के लिए फंदा बिछाया है!
23 प्रभु, तू जानता है कि
उन्होंने मेरी हत्या का षड्यंत्र रचा है।
तू उनका यह दुष्कर्म क्षमा मत करना।
अपनी दृष्टि से उनका पाप मत मिटाना।
प्रभु वे तेरे सामने ही लड़खड़ा कर गिरें;
जब तेरी क्रोधाग्नि भड़क उठे,
तब तू उनको उनके षड्यन्त्र का फल देना।

टूटी सुराही का उदाहरण

19 तब प्रभु ने यिर्मयाह से कहा, 'जा और
कुम्हार से एक सुराही खरीद। तब
जनता के कुछ धर्मवृद्ध और कुछ अनुभवी
पुरोहितों को अपने साथ ले, 2और बेन-हिन्नोम
की घाटी की ओर चला जा। वहां तू ठीकरी-

* अक्षरश:, 'कुंआरी इस्राएल' ** शब्दश: 'सिसकाते'

18 : 16 1 रा 9 : 8; शोक 2 : 15 18 : 20 भज 35 : 7 19 : 2 2 रा 23 : 10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

द्वार पर खड़ा होना, जहां टूटे-फूटे बर्तनों का
मलवा फेंका जाता है। ठीकरी-द्वार से तू मेरे
सन्देश को सुनाना, जो मैं तुझे दूंगा। 3तू उन से
यह कहना:
''ओ यहूदा प्रदेश के राजाओ और यरूशलेम
के निवासियो, प्रभु का सन्देश सुनो। इस्राएल
का परमेश्वर, स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु यों
कहता है: सुनो, मैं इस देश पर ऐसी विपत्ति ला
रहा हूं कि उसके विषय में जो भी सुनेगा,
उसका कलेजा दहल जाएगा। 4क्योंकि तुम लोगों
ने मुझ-प्रभु की आराधना त्याग कर इस स्थान
में अन्य देवी-देवताओं को सुगन्धित धूप-द्रव्य
जलाए हैं, और यों मेरे निवास-स्थान को
अपवित्र कर दिया है। इन देवी-देवताओं की
उपस्थिति का अनुभव न तुम्हें, न तुम्हारे पूर्वजों
और न यहूदा प्रदेश के राजाओं को हुआ है। तुम
ने निर्दोष बच्चों के खून से इस स्थान को भर
दिया है। 5तुम ने बअल देवता के लिए ऊँचे
टीलों पर वेदियाँ बनायी हैं ताकि तुम अपने
बच्चों को अग्नि में बअल देवता को अर्पित
करो, उसको अग्नि-बलि चढ़ाओ। ऐसा घृणित
कार्य करने का न मैंने तुम्हें आदेश दिया और
न ही अनुमति दी; और न कभी यह घृणित बात
मेरे मन में आयी ही थी। 6अत: मुझ-प्रभु का
यह कथन है: सुनो, वे दिन आ रहे हैं, जब यह
स्थान न तोपेत* कहलाएगा, और न बेन-
हिन्नोम की घाटी ही; वरन् यह स्थान 'महावध
की घाटी' कहलाएगा। 7मैं इस स्थान पर यहूदा
प्रदेश के राजाओं और यरूशलेम के निवासियों
की समझ रूपी सुराही खाली कर दूंगा, और
उनके सैनिकों तथा लोगों के शरीर तलवार से
कट-कटकर उनके शत्रुओं के सम्मुख, उनके
प्राण के खोजियों के सामने गिरने लगेंगे।
उनकी लाशें आकाश के पक्षियों और भूमि के
पशुओं का आहार बन जाएँगी। 8यह नगर एक
आतंकपूर्ण नगर बन जाएगा, जिस से लोग
व्याकुल होंगे। यहां से गुजरनेवाले राहगीर
इसके विनाश को देखकर डर से कांप उठेंगे;
वे चकित होंगे और घबरा जाएंगे। 9जब उनके
शत्रु और उनके प्राण के खोजी यरूशलेम नगर
को घेर लेंगे, और यहूदा प्रदेश संकट में पड़
जाएगा तब हर आदमी अपने पड़ोसी का मांस
खाएगा। मैं मां-बाप को उनके बेटों और
बेटियों का मांस खिलाऊंगा।''
10 'यिर्मयाह, तू अपने साथ के लोगों के
सम्मुख सुराही को तोड़ देना 11और उनसे कहना,
''स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु यों कहता है: इसी
प्रकार मैं इन लोगों को और इस नगर को ऐसा
तोड़ूंगा जैसे मिट्टी की सूराही को तोड़ा जाता है।
जैसे टूटी हुई सुराही फिर नहीं जुड़ती वैसे ही
ये लोग और यह नगर फिर नहीं बसेगा।
कब्रिस्तान में गाड़ने के लिए जगह नहीं होगी,
इसलिए लोगों के शव तोपेत गाह में गाड़े
जाएंगे। 12इस नगर और इसके निवासियों के
साथ मैं ऐसा ही करूंगा। मैं-प्रभु कहता हूँ: मैं
इस नगर को तोपेत गाह के समान ही बनाऊंगा।
13यहूदा प्रदेश के राजाओं के महल, यरूशलेम
निवासियों के मकान, जहां आकाश की प्राकृतिक
शक्तियों को सुगन्धित धूप-द्रव्य जलाया गया
है, अन्य देवी-देवताओं को पेय-बलि चढ़ायी
गयी है, वे सब घर तोपेत पूजा-स्थल के समान
अशुद्ध होंगे।'' '
14 यिर्मयाह उस तोपेत नामक स्थान से
लौटे, जहां प्रभु ने उनको नबूवत करने के लिए
भेजा था। वह यरूशलेम के मन्दिर के आंगन
में खड़े हुए। यिर्मयाह ने सब लोगों से कहा,
15 'इस्राएल का परमेश्वर, स्वर्गिक सेनाओं का
प्रभु यों कहता है: जिस विपत्ति की घोषणा मैंने
तुम्हारे हठ और दुराचरण के कारण की है, वह
मैं इस नगर और यहूदा प्रदेश के सब नगरों पर
ला रहा हूं; क्योंकि तुमने अपना हृदय कठोर
बना लिया है, और मेरे वचनों को सुनने से
इन्कार कर दिया है।'

नबी यिर्मयाह को दण्ड

20 प्रभु-भवन के सिपाहियों का नायक
पशहूर बेन-इम्मेर था। वह पुरोहित भी

* अर्थात् 'चिता, अग्नि-कुण्ड'

19 : 5 लेव 18 : 21 19 : 13 प्रे 7 : 42 19 : 15 यिर 7 : 26

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

था। जब उसने नबी यिर्मयाह को यह नबूवत
करते हुए सुना, [2]तब उसने नबी यिर्मयाह को
मारा और उनको काठ की बेड़ियों में जकड़ कर
प्रभु-भवन के उपरले बिन्यामिन दरवाजे में
डाल दिया।

3 दूसरे दिन पशहूर ने यिर्मयाह को मुक्त कर
दिया। तब नबी ने उस से कहा, 'अब प्रभु तुझे
पशहूर नाम से नहीं, वरन "चहुंओर आतंक"
नाम से पुकारेगा। [4]प्रभु तेरे विषय में यों कहता
है: मैं तुझे स्वयं तेरे लिए तथा तेरे मित्रों के लिए
आतंक बना दूंगा। वे शत्रुओं की तलवार से
कट-कट कर तेरी आंखों के सामने गिरेंगे। मैं
समस्त यहूदा प्रदेश को बेबीलोन के राजा के
हाथ में सौंप दूंगा। वह यहूदा प्रदेश के
निवासियों को गुलाम बना कर बेबीलोन ले
जाएगा, और उनको तलवार से मौत के घाट
उतार देगा। [5]मैं यरूशलेम नगर की समस्त
धन-सम्पत्ति, उस की समस्त जमा-पूंजी,
समस्त बहुमूल्य साज-सामान, यहूदा प्रदेश के
राजाओं का पैतृक खजाना उनके शत्रुओं के
हाथ में दे दूंगा। उनके शत्रु उनको लूटेंगे, उन
पर कब्जा कर लेंगे, और उनको बन्दी बनाकर
बेबीलोन में ले जाएंगे।

6 'और तू, पशहूर! तू और तेरे घर में
रहनेवाला प्रत्येक व्यक्ति गुलाम बन कर
बेबीलोन देश को जाएगा। पशहूर, तू निस्सन्देह
बेबीलोन को जाएगा, और वहां तू मरेगा, और
वहीं — परदेश में — तू अपने मित्रों के साथ
गाड़ा जाएगा, जिनको तूने झूठी नबूवत सुनाई
थी।'

नबी की प्रभु से शिकायत

7 हे प्रभु, तूने मुझे धोखा दिया,
और मैंने धोखा खाया!
प्रभु, तू मुझ से बलवान है,
अत: मैं तेरे हाथों से पराजित हो गया।
प्रभु, मैं तेरे कारण सब लोगों के लिए
हंसी का पात्र बन गया हूं,
वे दिन-भर मेरी हंसी उड़ाते हैं;
8 क्योंकि जब-जब मैं जोर से बोलता हूं,
तब-तब मेरे ओठों से बड़े जोर-शोर से
'हिंसा और विनाश' की नबूवत ही निकलती
है।
प्रभु तेरा वचन मेरे लिए
निन्दा और अपमान का कारण बन गया,
और मैं यह दिन-भर सहता हूं।
9 यदि मैं यह कहूं,
कि मैं तेरी चर्चा न करूंगा,
तेरे नाम से नहीं बोलूंगा,
तो मेरे हृदय में मानो अग्नि धधक उठती है,
और वह हड्डियों में समा जाती है।
मैं उस आग को बाहर निकलने से
रोक नहीं पाता हूं;
सचमुच मैं उसको रोक सकने में
असमर्थ हो जाता हूं।
10 प्रभु, मैं अपने विरुद्ध अनेक लोगों की
कानाफूसी सुनता हूँ।
मेरे चहुं ओर आतंक का साम्राज्य है।
लोग मेरे विरुद्ध यह कह रहे हैं:
'आओ, हम उस पर दोष लगाएं;
तब हम उसको अपराधी ठहरा देंगे।'
मेरे घनिष्ठ मित्र भी
मेरे पतन की राह देख रहे हैं।
वे कह रहे हैं, 'शायद वह धोखा खाए।
तब हम उसको अपने वश में कर लेंगे,
और उससे बदला लेंगे।'
11 किन्तु, प्रभु, तू मानो आतंकमय योद्धा है।
तू मेरे साथ है।
अत: मुझे सतानेवाले, मेरे बैरी,
मुंह के बल गिरेंगे;
वे मुझ पर प्रबल न होंगे।
वे अपनी पराजय के कारण अत्यन्त लज्जित
होंगे।
उनका यह अपमान सदा बना रहेगा,
और कभी भुलाया न जा सकेगा।
12 हे स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु,
तू धार्मिक जन को परखता है;
तू हर एक व्यक्ति के
हृदय और मन को जानता है।

20 : 9 भज 39 : 3; अय्य 32 : 19 **20 : 10** भज 31 : 13; यिर 6 : 25 **20 : 12** यिर 11 : 20

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रभु, मैं अपनी आंखों से देखूं
कि तूने उनसे प्रतिशोध लिया है;
क्योंकि मैंने अपना यह मुकदमा
तुझ पर छोड़ दिया है।

13 प्रभु के लिए स्तुतिगान गाओ;
प्रभु की स्तुति करो!
क्योंकि उसने दुष्कर्मियों के हाथ से
गरीब के प्राण मुक्त किए हैं।

नबी अपने जन्म-दिन को धिक्कारते हैं

14 जिस दिन मैं पैदा हुआ,
उस दिन को आग लग जाए।
जिस दिन मेरी मां ने मुझे जन्म दिया,
वह दिन युग-युग तक शापित हो।
15 उस मनुष्य को धिक्कार है,
जो मेरे पिता के पास यह खबर लाया था
'आप को एक पुत्र उत्पन्न हुआ है'
और मेरे पिता को यह समाचार सुनाकर
अत्यन्त आनन्दित किया था।
16 मेरे जन्म की खबर लानेवाला मनुष्य सदोम
और गमोरा नगरों की तरह मिट जाए
जिनको प्रभु ने कठोरता से उलट-पुलट
दिया था।
वह हर क्षण तनाव का जीवन जीए;
वह सबेरे चीख-पुकार सुने;
दोपहर को उसके कानों में युद्ध की ध्वनि
पड़े।
17 तूने मुझे मां के पेट में ही क्यों न मार डाला?
तब मेरी मां की कोख मेरी कबर बन जाती
और मैं उसमें सदा पड़ा रहता।
18 प्रभु, मैं अपनी मां के पेट से बाहर क्यों
आया?
क्या कष्ट और दुःख का जीवन बिताने के
लिए?
क्या मैं अपमान और निन्दा में
अपना जीवन बिताता रहूंगा?

राजा सिदकियाह के दूतों को नबी की फटकार

21 राजा सिदकियाह ने पशहूर बेन-
मलकियाह तथा पुरोहित सफन्याह
बेन-मासेयाह को यिर्मयाह के पास भेजा और
नबी से यह निवेदन किया, 2 'बेबीलोन के राजा
नबूकदनेस्सर ने हम पर आक्रमण कर दिया है।
आप, कृपया, इस सम्बन्ध में प्रभु से उसकी
इच्छा मालूम कीजिए। कदाचित प्रभु हमारे
मध्य अपने स्वभाव के अनुरूप आश्चर्यपूर्ण
कार्य करे और राजा नबूकदनेस्सर हम पर
आक्रमण करने का विचार छोड़ दे!'
तब प्रभु का यह सन्देश यिर्मयाह को मिला।
3 यिर्मयाह ने राजा सिदकियाह के दूतों से कहा:
4 'तुम सिदकियाह से यह कहोगे: ''इस्राएल
का प्रभु परमेश्वर यों कहता है: देख, जो युद्ध
के हथियार तेरे हाथ में हैं, और जिनके बल पर
तू बेबीलोन के राजा तथा कसदी सेना से,
जिसने तुझ को शहरपनाह की बाहरी ओर से
घेर लिया है, लड़ रहा है, वे हथियार निष्फल
हो जाएंगे, और मैं इस नगर के चौक में उनका
ढेर लगा दूंगा। 5 ओ सिदकियाह, मैं स्वयं तेरे
विरुद्ध लड़ूंगा और क्रोध, आक्रोश और क्रोधाग्नि
में धधकता हुआ, तेरे विनाश के लिए अपनी
बाहें फैलाऊँगा और तुझ पर अपना भुजबल
प्रकट करूंगा। 6 मैं इस नगर के निवासियों और
पशुओं, दोनों को मार डालूंगा। वे महामारी से
मर जाएंगे। 7 मुझ-प्रभु की यह वाणी है: सुन,
इसके पश्चात् मैं यहूदा प्रदेश के राजा
सिदकियाह और उसके राजकर्मचारियों को,
तथा नगर के उन लोगों को जो महामारी,
तलवार और अकाल से बच जाएंगे, बेबीलोन
के राजा नबूकदनेस्सर के हाथ में, उनके प्राणों
के खोजी, उनके शत्रुओं के हाथ में सौंप दूंगा।
राजा नबूकदनेस्सर उन पर लेशमात्र भी दया
नहीं करेगा। वह उनको जीवित नहीं छोड़ेगा,
और न उन पर तरस खाएगा; वरन् वह उन को
तलवार से मौत के घाट उतार देगा।''
8 'यिर्मयाह, तू यहूदा प्रदेश की जनता से
कहना: ''प्रभु यों कहता है: देख, मैंने तुम्हारे
सम्मुख एक ओर जीवन का मार्ग और दूसरी
ओर मृत्यु का मार्ग रखा है। 9 जो मनुष्य इस नगर
में ठहरेगा, वह तलवार, अकाल और महामारी

20 : 14-18 अय्य 3 : 3-13 20 : 16 उत 19 : 25 21 : 9 यिर 38 : 2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

से मार डाला जाएगा। किन्तु जो मनुष्य इस नगर
से बाहर निकलेगा, और तुम लोगों को
घेरनेवाली कसदी सेना के सामने अपने हथियार
डाल देगा, वह जीवित रहेगा। युद्ध की लूट की
तरह उसका प्राण बच जाएगा। 10इस नगर की
भलाई करने के लिए नहीं, बल्कि अनिष्ट करने
के लिए मैंने इस नगर की ओर अपना मुंह किया
है। मैं इस नगर को बेबीलोन के राजा के हाथ
में सौंप दूंगा, और वह इस को आग में भस्म
कर देगा,'' प्रभु की यह वाणी है।'

यहूदा के राजवंश के सम्बन्ध में भविष्य-वाणी

11-12 प्रभु ने यहूदा प्रदेश के राजा के
सम्बन्ध में यह कहा : 'ओ राजा दाऊद के वंश,
प्रभु का यह सन्देश सुन। प्रभु यों कहता है,
जो व्यक्ति लूट लिया गया है,
उसको अत्याचारी के हाथ से बचा,
प्रात: होते ही उसका न्याय कर दे।
अन्यथा तेरे दुष्कर्मों के कारण
मेरी क्रोधाग्नि भड़क उठेगी;
और उसको बुझानेवाला कोई न होगा।'

13 यरूशलेम नगरी के संबंध में प्रभु ने कहा,
'ओ घाटी में रहने वाली,
ओ मैदान की चट्टान! मैं तेरे विरुद्ध हूं।
तुम कहती हो,
''हम पर कौन आक्रमण कर सकता है?
हमारे निवासस्थानों में कौन प्रवेश कर
सकता है?''

14 पर मैं-प्रभु कहता हूँ:
मैं तुम्हारे आचरण के अनुरूप तुम्हें दण्ड
दूंगा।
मैं तुम्हारी बस्ती के जंगल में
दावानल सुलगा दूंगा;
वह वन के आसपास के सब मकानों को
भस्म कर देगा।'

राजमहल और राजधानी का विनाश

22 प्रभु ने मुझसे यह कहा, 'यिर्मयाह, तू
यहूदा प्रदेश के राजा के महल में जा
और वहां मेरा यह सन्देश सुना: 2''यहूदा प्रदेश
के राजा, जो दाऊद के सिंहासन पर विराजमान
है! तू और तेरे राजकर्मचारियों तथा इन प्रवेश-
द्वारों से आने-जाने वाले सब लोगो, प्रभु का यह
वचन सुनो। 3प्रभु यह कहता है: न्याय और धर्म
का आचरण करो; जो मनुष्य लूट लिया गया है,
उसको अत्याचारी के हाथ से बचाओ। विदेशी,
अनाथ और विधवा के साथ बुरा व्यवहार मत
करो; उन पर अत्याचार मत करो; और न
राजमहल के इस स्थान में किसी निर्दोष की
हत्या करो। 4यदि तुम प्रभु का यह आदेश
मानोगे, तो दाऊद के सिंहासन पर बैठनेवाले
राजा और उनके कर्मचारी रथों और घोड़ों
पर सवार हो कर तथा उनकी प्रजा इन प्रवेश-
द्वारों से सुरक्षित गुजरते रहेंगे। 5किन्तु यदि तुम
मेरे वचन का पालन नहीं करोगे, तो मुझे अपने
नाम की सौगन्ध है: मैं इस स्थान को उजाड़
दूंगा।'' '

6 यहूदा के राजा के राजमहल के
सम्बन्ध में प्रभु यह कहता है:
'तू मेरे लिए गिलआद के सदृश प्रिय
और लबानोन पर्वत के शिखर के सदृश
सुन्दर था;
किन्तु अब मैं तुझको मरुस्थल बना दूंगा,
तुझको उजाड़ नगर-जैसा निर्जन कर दूंगा।

7 मैं तुझ पर चढ़ाई करने के लिए
विध्वन्सकों को चुनूंगा;
हर एक विध्वन्सक हथियारबन्द होगा।
वे तेरे सुन्दरतम देवदारों को काट देंगे,
और उनको आग में झोंक देंगे।

8 'अनेक राष्टों के निवासी, इस नगर से
गुजरेंगे, और वे आपस में यह बात पूछेंगे, ''प्रभु
ने इस महानगर के साथ ऐसा व्यवहार क्यों
किया?'' 9उनका साथी उन्हें बतायेगा, ''इस
महानगर के निवासियों ने अपने प्रभु परमेश्वर
के विधान का त्याग कर दिया था, और वे
अन्य देवताओं की पूजा और आराधना करने
लगे थे।''

10 'ओ यहूदा प्रदेश के निवासियो,
मृत राजा योशियाह के लिए मत रोओ,
और न उसके लिए शोक मनाओ।

---

22 : 4 यिर 17 : 25 **22 : 5** मत 23 : 38; लू 13 : 35 **22 : 8** 1 रा 9 : 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

क़िन्तु राजा शल्लूम के लिए छाती पीट कर
रोओ,
जो बन्दी होकर जा रहा है।
वह फिर नहीं लौटेगा;
वह फिर अपनी मातृ-भूमि को नहीं देखेगा।'

11 यहूदा प्रदेश के राजा योशियाह का पुत्र
शल्लूम, जो अपने पिता योशियाह के स्थान पर
राज्य कर रहा था, और जो यहां से चला गया
है, उस के विषय में प्रभु यह कहता है:
'शल्लूम अब यहां फिर नहीं लौटेगा;
12 बल्कि वह उस देश में मरेगा,
जहां वह बन्दी हो कर जा रहा है।
वह इस देश को फिर नहीं देखेगा।'

राजा यहोयाकीम के विरुद्ध नबूवत

13 'धिक्कार है उसे, जो अधर्म के धन से
अपना घर बनाता है,
जो अन्याय के धन से
ऊंचे-ऊंचे महल बनाता है।
धिक्कार है उसे, जो अपने भाई-बन्धु से
मुफ्त में अपनी सेवा करवाता है,
और उसको मजदूरी नहीं देता।
14 वह कहता है,
''मैं स्वयं एक बड़ा मकान बनाऊंगा,
जिस में बड़े-बड़े उपरले कक्ष होंगे।''
वह अपने महल के लिए खिड़कियां बनाता
है,
वह उसमें देवदार की लकड़ी के पटरे
जड़ता है।
वह उस को सिन्दूर से रंगता है।
15 क्या तू इसलिए राजा बना है कि दूसरों से
अधिक देवदार की इमारतें बनाए?
तेरा पिता खाता-पीता, आमोद-प्रमोद करता
था,
फिर भी वह न्याय और धर्म का आचरण
करता था।
अत: उसका भला हुआ।
16 वह निर्धन और निस्सहाय लोगों का न्याय
करता था,
इसलिए उसका भला हुआ।
ऐसा कार्य करना ही मुझे जानना* है।
मुझ-प्रभु की यह वाणी है!
17 किन्तु तेरी आंखें किस लिए हैं?
तेरे पास हृदय है...पर किस लिए?
अन्याय से लाभ कमाने के लिए,
निर्दोष की हत्या करने के लिए,
जनता पर अत्याचार और दमन करने के
लिए?'

18 अत: प्रभु यहूदा प्रदेश के राजा योशियाह
के पुत्र यहोयाकीम के विषय में यह कहता है:
'लोग यह कहते हुए
उसके लिए शोक नहीं मनाएंगे :
''अरे मेरे भैया! अरी मेरी बहिन!''
वे यह कहते हुए
यहोयाकीम के लिए विलाप नहीं करेंगे:
''आह स्वामी! हाय महाराज!''
19 गधे की लोथ के समान उसका शव घसीट
कर
यरूशलेम के प्रवेश-द्वारों से बाहर लाया
जाएगा,
और वहां फेंक दिया जाएगा।

20 'ओ यरूशलेम की जनता!
लबानोन पहाड़ पर जा,
और वहां छाती पीट कर रो;
बाशान पहाड़ पर ऊँचे स्वर में रो;
अबारीम पहाड़ पर चिल्ला-चिल्लाकर रो;
क्योंकि तेरे सब प्रिय नेता मर गए हैं।
21 जब तू सुख में डूबी थी,
तब मैंने तुझे चेतावनी दी थी;
पर तूने मेरी उपेक्षा कर कहा,
''मैं तेरी बात नहीं सुनूंगी।''
तू अपने बचपन से
यही आचरण करती आयी है।
तूने मेरी वाणी नहीं सुनी;
तूने मेरी आज्ञा का उल्लंघन किया।
22 पवन तेरे सब चरवाहों को खदेड़ देगा;

---

* अथवा, 'मेरी उपस्थिति का अनुभव करना'।

22 : 11 2 रा 23 : 30 **22 : 18** 1 रा 13 : 30 **22 : 19** 2 इति 36 : 6 **22 : 21** यिर 3 : 25

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तेरे प्रिय नेता बन्दी हो कर
स्वदेश से निष्कासित हो जाएंगे।
तब तू अपमानित होगी;
पराजय की ग्लानि से तेरा मुंह काला होगा।
तेरे सब दुष्कर्मों का यही प्रतिफल तुझे मिलेगा।
23 ओ यरूशलेम नगरी, लबानोन की निवासिनी!
देवदार के जंगलों में अपना घोंसला बनानेवाली!
जब तुझमें गर्भवती स्त्री की पीड़ाएं उठेंगी,
जब तुझ पर दुःख का पहाड़ टूटेगा
तब तू क्या दर्द से नहीं चीखेगी?'
24 प्रभु कहता है: 'मुझे अपनी सौगन्ध है।
चाहे यहोयाकीम का पुत्र, यहूदा प्रदेश का राजा
कोन्याह,** मेरे दाहिने हाथ में मुद्रा की अंगूठी
होता, तो भी मैं उसको उतार कर फेंक देता।
25निस्सन्देह मैं तुझको तेरे प्राण के खोजियों के
हाथ में दे दूंगा; उनके हाथ में सौंप दूंगा, जिन
से तू डरता है। मैं तुझको बेबीलोन के राजा
नबूकदनेस्सर के हाथ में, और कसदी सेना के
हाथ में सौंप दूंगा।26मैं तुझको और तेरी मां को
उस देश में फेंक दूंगा, जो तुम्हारी जन्म भूमि
नहीं है; और तुम दोनों की वहीं मृत्यु होगी।
27तुम स्वदेश लौटने को तड़पोगे, पर वहां से
कभी लौट न सकोगे।'
28 लोग कहते हैं,
'क्या कोन्याह टूटा-फूटा, उपेक्षित पात्र है?
क्या वह तुच्छ बर्तन है
जिस की कोई चिन्ता नहीं करता?
तब वह और उसके बच्चे
अज्ञात देश में क्यों फेंक दिए गए,
उनको क्यों त्याग दिया गया?'
29 ओ मातृभूमि! ओ मातृभूमि!
प्रभु की वाणी सुन।
30 प्रभु यों कहता है,
'इस पुरुष को निर्वंश लिख,
यह अपने जीवन मे कभी सफल न होगा।
इसके वंश में अब कोई ऐसा भाग्यवान न होगा।
जो दाऊद के सिंहासन पर बैठेगा,
और यहूदा प्रदेश पर पुनः राज्य करेगा।'

इस्राएली राष्ट्र की पुनः स्थापना

23 प्रभु कहता है, 'धिक्कार है शासकों
को, मेरी प्रजा के चरवाहों को, जो मेरे
चरागाह की भेड़ों को तितर-बितर कर रहे हैं।
2इसलिए मैं—तुम्हारा इस्राएली राष्ट्र का प्रभु
परमेश्वर, अपने निज लोगों के शासकों-
चरवाहों के सम्बन्ध में यों कहता हूं: तुमने मेरी
भेड़ों की सुधि नहीं ली, और उन्हें तितर-बितर
कर दिया, उनको चरागाह से हांक दिया। अतः
मैं तुम्हारे इन दुष्कर्मों की सुधि लूंगा।'
प्रभु कहता है, 3'मैं अपने रेवड़ की बची हुई
भेड़ों को उन-सब देशों से एकत्र करूंगा जहां
मैंने उन को हांक दिया था। मैं उन को उन की
भेड़शाला में वापस लाऊंगा, और वे फिर समृद्ध
और असंख्य हो जाएंगी।4मैं उन पर ऐसे चरवाहे
नियुक्त करूंगा, जो उनकी देखभाल करेंगे।
तब मेरी भेड़ें नहीं डरेंगी, और न भ्रम में पड़ेंगी,
उन में से एक भी नहीं खोएगी,' प्रभु की यह
वाणी है।
5 प्रभु कहता है, 'देखो, समय आ रहा है,
जब मैं दाऊद के वंश-वृक्ष में एक शाखा
निकालूंगा, और वह धार्मिक पुरुष होगा। वह
राजा के रूप में राज्य करेगा। वह बुद्धि से शासन
करेगा, और अपने देश में न्याय और धर्म से
राज्य करेगा। 6उस के सयम में यहूदा प्रदेश
सुरक्षित रहेगा, और इस्राएल प्रदेश निश्चिंत
निवास करेगा। वह इस नाम से प्रसिद्ध होगा
"प्रभु हमारा धर्म है"।'
7 प्रभु कहता है, 'देखो, वे दिन आ रहे हैं,
जब लोग शपथ लेते समय यह नहीं कहेंगे
"जीवंत प्रभु की सौगन्ध, जिसने इस्राएली
जाति को मिस्र की गुलामी से निकाला था!"
8बल्कि वे कहेंगे, "जीवंत प्रभु की सौगन्ध, जो
इस्राएल के वंशजों को उत्तरी देश की गुलामी
से, तथा उन देशों से निकाल कर लाया, जहां

** अथवा 'यकोन्याह' (अर्थात् यहोयाकीन)।

22 : 24 हग 2 : 23 **23 : 1** यहेज 34 : 2 **23 : 5** यश 4 : 2; यिर 33 : 14; जक 3 : 8; 6 : 12

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
उसने उन्हें हांक दिया था।'' तब वे स्वदेश में पुन: बस जाएंगे।'

नबियों को फटकार

9 नबियों के विषय में:
मेरा हृदय भीतर ही भीतर फटा जा रहा है।
मेरी देह की हड्डियाँ हिल उठी हैं।
प्रभु के कारण, प्रभु के पवित्र वचनों के कारण
मैं शराबी के समान मतवाला हो गया हूं,
मुझ पर मानो मदिरा का नशा चढ़ गया है।
10–11 देश व्यभिचारियों से भर गया है;
शाप के कारण धरती शोक में डूबी है।
निर्जन प्रदेश के विशाल चरागाह सूखे पड़े हैं;
पुरोहित और नबी दुष्कर्म करने को
मानो कमर कसे रहते हैं,
उनकी वीरता केवल हिंसा के लिए होती है।
प्रभु कहता है, 'ये दोनों धर्म से गिर गए हैं,
स्वयं मैंने अपने भवन में इनके दुष्कर्म देखे हैं!
12 इसलिए जैसे अंधकार में
फिसलनेवाला पथ खतरनाक होता है,
वैसे ही उनका मार्ग फिसलनेवाला बन जाएगा।
वे उस मार्ग पर हांके जाएंगे,
और फिसल कर गिर पड़ेंगे।
उनके दण्ड-वर्ष के दिनों में
मैं उन पर विपत्ति ढाहूंगा,
प्रभु की यह वाणी है।
13 मैंने सामरी प्रदेश के नबियों में
यह मूर्खतापूर्ण बात देखी थी:
वे बअल देवता के नाम से नबूवत करते थे,
और मेरे निज लोग-इस्राएलियों को पथभ्रष्ट कर देते थे।
14 मैंने यरूशलेम के नबियों में
यह भयानक बात देखी है:
वे व्यभिचार करते और झूठ बोलते हैं।
वे दुष्कर्मियों का हाथ मजबूत करते हैं।
अत: कोई भी आदमी बुरा मार्ग छोड़कर
मेरें पास नहीं लौटता।
वे-सब मेरे लिए सदोम नगर के समान बन गए हैं;
यरूशलेम के सब रहने वाले
गमोरा के निवासियों के सदृश हो गए हैं।'
15अत: स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु इन नबियों के विषय में यह कहता है:
'मैं इनको कड़वी से कड़वी वस्तु खाने को दूंगा;
मैं इनको पीने के लिए विष दूंगा।
क्योंकि यरूशलेम के इन नबियों ने
सारे देश में अधर्म फैलाया है।'

16 स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु यों कहता है,
'तुम इन नबियों की नबूवत मत सुनो; क्योंकि
ये तुम में झूठी आशा जगाते हैं। ये ईश्वरीय
दर्शन की बातों का दावा करते हैं; पर ये बातें
मुझ-प्रभु के मुख की नहीं, वरन् इनके मस्तिष्क
की उपज होती हैं।
17ये मुझ-प्रभु के वचन से
घृणा करनेवालों से निरंतर कहते रहते हैं: ''मत
घबराओ! तुम्हारा भला होगा।'' जो आदमी
अपने हठी हृदय के अनुसार आचरण करता है,
उससे ये कहते हैं, ''मत डर, तेरा अनिष्ट नहीं
होगा।'' '

18 इन नबियों में से कौन नबी
प्रभु के दरबार में खड़ा था,
और किसने प्रभु की बातें सुनीं,
और उनको समझा है?
किसने प्रभु के वचन सुने,
और उन पर ध्यान दिया है?
19 प्रभु के क्रोध के तूफान को देखो!
बवण्डर के सदृश उसके प्रकोप की आंधी बहने लगी!
उसकी क्रोधाग्नि दुर्जन के सिर पर बरसेगी।
20 जब तक प्रभु अपने हृदय के संकल्प को कार्य रूप में परिणत नहीं करेगा,
और उसको पूर्ण नहीं कर लेगा,
तब तक वह अपने क्रोध को शांत नहीं करेगा।
अन्तिम दिनों में तुम्हें यह बात स्पष्ट समझ में आ जाएगी।

---

23 : 18 1 कुर 2 : 16

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

21 प्रभु कहता है, 'मैंने इन झूठे नबियों को नहीं
भेजा;
फिर भी ये दौड़ पड़े।
मैं इन से नहीं बोला,
तो भी ये नबूवत करते हैं।
22 यदि ये मेरे दरबार में उपस्थित रहते,
तो निस्सन्देह ये मेरे निज लोगों को
मेरा वचन सुना सकते थे,
और उन्हें बुरे मार्ग से मेरे पास लौटा ले
आते;
उन्हें उनके बुरे रास्तों से वापस ले आते।'
23 प्रभु कहता है, 'जब मैं पास हूँ, तब ही
क्या मैं ईश्वर हूं? और जब दूर हूं, तब ईश्वर
नहीं हूँ? 24क्या मनुष्य अपने को ऐसे गुप्त
स्थानों में छिपा सकता है कि मैं उसको न देख
सकूं? क्या मेरी उपस्थिति से आकाश और
पृथ्वी परिपूर्ण नहीं हैं?' प्रभु की यह वाणी है।
25'मैंने इन नबियों की झूठी नबूवतें सुनी हैं, जो
उन्होंने मेरे नाम से की हैं। ये कहते हैं, "हम
ने परमेश्वर का दर्शन पाया है! हमने परमेश्वर
का दर्शन पाया है।" 26इन झूठे नबियों के हृदय
में यह झूठ कब तक बना रहेगा? ये सदा झूठी
नबूवत करते हैं, और अपने हृदय के अनुसार
छल-कपट करते हैं। 27ये मेरे निज लोगों को
तथा आपस में एक-दूसरे को अपने झूठे दर्शन
की बातें बता कर चाहते हैं कि मेरे निज लोग
मेरा नाम भूल जाएं, जैसा इनके पूर्वज बअल
देवता के लिए मेरा नाम भूल गए थे।
28 'जिन नबियों को मेरा दर्शन मिलता है,
वे मेरे दर्शन की बातें लोगों को बताएं; किन्तु
जिनको मेरा वचन मिला है, वे सच्चाई से उस
वचन के विषय में भी बताएं। कहां भूसा? कहां
गेहूं?' प्रभु की यह वाणी है, 29 'मेरा वचन
अग्नि है! मेरा वचन हथौड़ा है, जो चट्टान को
टुकड़े-टुकड़े कर देता है!' 30अत: प्रभु कहता
है: 'मैं झूठे नबियों के विरुद्ध हूँ जो मेरा वचन
एक-दूसरे से चुरा कर सुनाते हैं। 31मैं झूठे नबियों
के खिलाफ हूँ जो झूठ-मूठ अपने मुंह से यह
कहते हैं: "प्रभु यह कहता है।"' 32प्रभु की
यह वाणी है, 'देखो, मैं झूठी नबूवत, झूठे दर्शन
की बातें करनेवाले नबियों के विरुद्ध हूं। मैंने
इन नबियों को नहीं भेजा है, और न ही नबूवत
सुनाने का दायित्व सौंपा है। ये अपने झूठ और
व्यर्थ बातों से मेरे निज लोगों को पथ-भ्रष्ट करते
हैं। इन झूठे नबियों से इस प्रजा को कुछ लाभ
नहीं होता है;' प्रभु की यह वाणी है।
33 'यिर्मयाह! जब इस प्रजा में कोई
व्यक्ति, नबी अथवा पुरोहित तुझ से यह पूछे:
"प्रभु के वचन का भार* क्या है?" तो तुम
उससे कहना, "तुम ही भार हो! और मैं इस
भार को फेंक दूंगा, प्रभु की यह वाणी है।"
34यिर्मयाह, मैं इस प्रजा में उस व्यक्ति को, नबी
अथवा पुरोहित को, जिस ने पूछा था, "प्रभु के
वचन का भार क्या है?" दण्ड दूंगा; न केवल
उसको वरन् उसके समस्त कुटुम्ब को दण्ड
दूंगा। क्योंकि उस ने मेरे वचन को भार कहते
हुए भी उसको हल्का ही समझा।
35 'तुममें से प्रत्येक व्यक्ति को अपने
पड़ोसी से, अपने भाई से मेरे वचन के सम्बन्ध
में यह पूछना चाहिए, "प्रभु ने क्या उत्तर
दिया?" अथवा, "प्रभु ने क्या कहा है?"
36तुम मेरे वचन को भार मत कहना। प्रत्येक
व्यक्ति की कथनी-बिना-करनी उसी का
"भार" होगी। अत: तुम अपने परमेश्वर,
स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु, जीवंत परमेश्वर के
वचन को मत बिगाड़ना।
37 'तुम मेरे नबी से इस प्रकार कहना, "प्रभु
ने तुम्हें क्या उत्तर दिया है?" अथवा, "प्रभु ने
क्या कहा है?" 38किन्तु यदि तुम कहोगे, "प्रभु
के वचन का भार," तो मैं यह कहता हूं:
क्योंकि तुमने मेरे वचन को भार कहा है, जब
कि मैंने तुम्हें मना किया था कि तुम यह मत
कहना: 'प्रभु के वचन का भार', 39अत: देखो,
मैं तुम्हें निस्सन्देह भार के सदृश उठाऊंगा, और
अपनी उपस्थिति से निकाल कर फेंक दूंगा —
न केवल तुम्हें, बल्कि तुम्हारे नगर को भी जो

---

* मूल शब्द 'मस्सा' का अर्थ 'भार' और 'आप्तवचन' दोनों है।

23 : 24 भज 139 : 7; आमो 9 : 2; प्रज्ञ 1 : 7; प्रव 16 : 17

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मैंने तुम्हें और तुम्हारे पूर्वजों को दिया था। 40मैं
तुम पर स्थायी निन्दा और अनंत अपमान का
भार लाद दूंगा, जिस को तुम कभी भूल न
सकोगे।'

अंजीर के फलों से भरी दो टोकरियाँ

24 जब बेबीलोन का राजा नबूकदनेस्सर
यहूदा प्रदेश के राजा यकोन्याह बेन-
यहोयाकीम को, तथा यहूदा प्रदेश के सामन्तों,
कारीगरों और लोहारों को बन्दी बना कर
यरूश्लेम नगर से ले गया, और उनको बेबीलोन
नगर में लाया, तब प्रभु ने मुझ को यह दर्शन
दिखाया। मैंने यह देखा: प्रभु के मन्दिर के
आंगन के सम्मुख दो टोकरियां हैं, जिन में
अंजीर के फल हैं। 2एक टोकरी के फल मौसम
के प्रथम फलों के सदृश बहुत अच्छे हैं। किन्तु
दूसरी टोकरी में खराब फल हैं, जो इतने खराब
हैं कि कोई उन को खा भी नहीं सकता। 3प्रभु
ने मुझ से पूछा, 'यिर्मयाह, तुझे क्या दिखाई दे
रहा है?' मैंने कहा, 'दो प्रकार के अंजीर के
फल: अच्छे...बहुत अच्छे, और बुरे...बहुत बुरे,
इतने बुरे कि उन को कोई खा भी नहीं सकता।'

4 तब प्रभु का यह सन्देश मुझे मिला।
5इस्राएल का प्रभु परमेश्वर यों कहता है, 'इन
अच्छे अंजीर फलों के सदृश मैं यहूदा प्रदेश से
निष्कासित लोगों के साथ अच्छा व्यवहार
करूंगा। यद्यपि मैंने उनको इस देश से निकाल
कर कसदी जाति के देश में भेज दिया है, 6तो
भी मैं उनका भला करने के उद्देश्य से उन पर
दृष्टि करूंगा, और उन को फिर इस देश में
वापस लाऊँगा। मैं उन को पुन: स्थापित
करूंगा, और फिर कभी उन को ध्वस्त नहीं
करूंगा। मैं उनको पुन: बोऊंगा, और उनको
जड़-मूल से नहीं उखाड़ूंगा। 7मैं उन को ऐसा
हृदय दूंगा, जिससे वे मुझे जानेंगे कि मैं ही प्रभु
हूं। मैं उनका परमेश्वर हूंगा, और वे मेरे निज
लोग होंगे, क्योंकि वे सच्चे हृदय से मेरे पास
लौट आएंगे।'

खराब अंजीर का अर्थ

8 प्रभु यों कहता है, 'बुरे अंजीर फलों के
समान, जो इतने बुरे हैं कि खाए भी नहीं जा
सकते, मैं यहूदा प्रदेश के राजा सिदकियाह,
सामंतों और यरूशलेम के बचे हुए निवासियों
तथा मिस्र देश के रहनेवालों के साथ बुरा
व्यवहार करूंगा। 9मैं उनको पृथ्वी के समस्त
राज्यों के लिए आतंक का कारण बना दूंगा। मैं
उनको जिन-जिन देशों में हांक कर ले जाऊंगा
वहां-वहां के लोग उनकी निंदा करेंगे, उनका
उपहास करेंगे, उनको ताना मारेंगे और शाप
देंगे। 10जो देश मैंने उनको और उनके पूर्वजों
को दिया था, उस में जब तक वे पूर्णत: नष्ट नहीं
हो जाएंगे, मैं उनको तलवार, महामारी और
अकाल से नष्ट करता रहूंगा।'

यहूदा प्रदेश की जनता ने पश्चात्ताप नहीं किया

25 यहूदा प्रदेश की समस्त जनता के
सम्बन्ध में यिर्मयाह को प्रभु का संदेश
मिला। उस समय यहूदा प्रदेश के राजा
यहोयाकीम बेन-योशियाह के राज्य-काल का
चौथा वर्ष था, (तथा बेबीलोन के राजा
नबूकदनेस्सर के राज्य का पहला वर्ष था)।
2नबी यिर्मयाह ने यहूदा प्रदेश की सब जनता
तथा यरूशलेम नगर के निवासियों से यह कहा:
3'यहूदा प्रदेश के राजा योशियाह बेन-आमोन
के राज्य के तेरहवें वर्ष से लेकर आज के दिन
तक अर्थात् पिछले तेईस वर्ष से मुझे प्रभु का
वचन मिल रहा है। मैंने निरन्तर उत्साह से तुम्हें
प्रभु का वचन सुनाया, लेकिन तुमने नहीं सुना।
4यद्यपि प्रभु अपने वचन को सुनाने के लिए
अपने सेवक-नबियों को तुम्हारे पास नियमित
रूप से भेजता रहा, किन्तु तुमने उसका सन्देश
नहीं सुना, और न ही सुनने के लिए कान
लगाया। 5प्रभु कहता रहा, ''तुम में से प्रत्येक
मनुष्य पश्चात्ताप करे, अपने बुरे मार्ग से लौटे,
अपने दुष्कर्मों को छोड़े, और लौट कर उस देश
पर निवास करे जो तुम्हारे प्रभु ने तुम्हें और
तुम्हारे पूर्वजों को प्राचीन काल में सदा के लिए
दिया था। 6अन्य जातियों के देवताओं की
सेवा करने के लिए उनका अनुसरण मत करो,
और न उनकी पूजा करो। अपने हाथ के कामों

24 : 1 2 रा 24 : 12; मत 21 : 18-19 **24 : 7** यहेज 11 : 19 **25 : 1** 2 रा 24 : 1

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

से मेरा क्रोध मत भड़काओ! तब मैं तुम्हारा
अनिष्ट नहीं करूंगा। 7किन्तु तुमने मेरी बात नहीं
सुनी, और अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारने के
लिए अपने हाथ के कामों से मेरा क्रोध
भड़काया।''

8 'स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु यों कहता है,
''देखो, तुमने मेरी आज्ञाओं का पालन नहीं
किया, 9इसलिए मैं उत्तर दिशा में रहनेवाले
कबीलों को तथा बेबीलोन के राजा, अपने
सेवक नबूकदनेस्सर को भेजूंगा। मैं इस देश
पर, इस देश के निवासियों पर तथा इस देश के
आसपास के सब राष्ट्रों पर कबीलों तथा
नबूकदनेस्सर से आक्रमण कराऊँगा। मैं इन
सब को पूर्णतः नष्ट कर दूंगा, और इनको
आतंक का कारण बना दूंगा। ये सदा के
लिए उजड़ जाएंगे और इनको देखकर अन्य
कौमों के लोग व्याकुल हो जाएंगे। 10मैं इनको
इतना दुःख दूंगा कि ये हंसना-गाना भूल
जाएंगे। दूल्हा और दुल्हिन के मुंह से भी
आनन्द-उल्लास की आवाज नहीं निकलेगी।
स्त्रियाँ चक्की पीसना भूल जाएंगी, और
घरों में दीपक नहीं जलेंगे। 11यह सारा देश
उजाड़ और खण्डहर हो जाएगा, और इस के
आसपास रहनेवाली जातियां भी सत्तर वर्ष तक
बेबीलोन के राजा नबूकदनेस्सर की गुलामी
करेंगे।''

12 'प्रभु यह कहता है: ''सत्तर वर्ष के
पश्चात् मैं बेबीलोन के राजा, तथा उस राष्ट्र
को, कसदी कौम के देश को उनके दुष्कर्मों के
लिए दण्ड दूंगा। मैं उस देश को सदा के लिए
उजाड़ दूंगा। 13जिन विपत्तियों के विषय में मैंने
कहा है, मैं उन सब को इन पर लाऊंगा, और
जो-जो विपत्तियाँ इस पुस्तक में लिखी हैं, और
जिन के विषय में यिर्मयाह ने नबूवत की है, वे
सब इन राष्ट्रों पर पड़ेंगी। 14अनेक राष्ट्र और
बड़े-बड़े राजा उनको अपना गुलाम बनाएंगे।
मैं उनको उनके दुष्कर्मों और उनके हाथों के
कामों का प्रतिफल दूंगा।'' '

अन्य राष्ट्रों के विरुद्ध प्रभु का क्रोध

15 इस्राएल के प्रभु परमेश्वर ने मुझसे कहा,
'यिर्मयाह, मेरे हाथ से मेरे क्रोध-रूपी मदिरा
का प्याला ले, और जिन राष्ट्रों के पास तुझ को
मैं भेज रहा हूं, उनको पिला दे। 16मैं उनके मध्य
शत्रु की तलवार भेजूंगा, जिसके कारण वे मेरे
क्रोध-रूपी मदिरा को पीकर लड़खड़ाएंगे और
मदमस्त हो जाएंगे।'

17 अतः मैंने प्रभु के हाथ से प्याला लिया,
और जिन राष्ट्रों के पास प्रभु ने मुझे भेजा था,
उनको पिला दिया। (18 तब प्रभु ने यरूशलेम
नगर, तथा यहूदा प्रदेश के नगरों को, उसके
राजाओं और सामन्तों को नष्ट कर दिया। ये
नगर उजाड़ और खण्डहर हो गए, और आज
के दिन तक वे शापग्रस्त हैं। अन्य जाति के लोग
उनको देखकर व्याकुल हो जाते हैं।) 19प्याले
से पीनेवाले ये हैं: मिस्र देश का राजा फरओ,
और उसके कर्मचारी, सामन्त और उसकी
समस्त प्रजा, 20उन के मध्य रहनेवाले सब
विदेशी; ऊज देश के राजा; पलिश्ती देश के इन
नगर-राज्यों के राजा : अश्कलोन, गाजा,
एक्रोन और अश्दोद नगर का बचा हुआ भाग;
21एदोम; मोआब; और अम्मोन देश के नगर;
22सूर के सब राजा, सीदोन के सब राजा और
समुद्र के उस पार के तटीय देशों के राजा;
23ददान, तेमा और बूज जाति के लोग, और वे
सब जो गाल के बालों को मूंड़ते हैं; 24अरब के
सब राजा, मरुस्थल में रहनेवाले सम्मिश्रित
कबीले के राजा; 25जिम्री, एलाम और मादय
देशों के सब राजा; 26उत्तर के सब राजा, जो
पास अथवा दूर देशों पर राज्य करते हैं। एक
के बाद दूसरे को, अर्थात् पृथ्वी की सतह पर
विश्व में जितने राजा हैं, सब को प्रभु के क्रोध
की मदिरा पिलायी जा रही है। इन सब के
पश्चात् बेबीलोन के राजा* को मदिरा पीना
पड़ेगी।

27 'यिर्मयाह, तब तू उन से यह कहना:
'इस्राएल का परमेश्वर, स्वर्गिक सेनाओं का
प्रभु यों कहता है : ''पियो! मदमस्त हो जाओ,

---

* मूल में, 'शेषक के राजा को'

25 : 10 यिर 7 : 34; प्रक 18 : 23 25 : 12 यिर 29 : 10; दान 9 : 2 25 : 15 यिर 51 : 7; प्रक 14 : 10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और वमन करो। मैं तुम्हारे मध्य शत्रु की तलवार भेज रहा हूं। उसके कारण भूमि पर गिर पड़ो, और फिर कभी न उठो।''

28 'यिर्मयाह, यदि वे तेरे हाथ से प्याला नहीं लेंगे, और इन्कार करेंगे तब तू उन से यह कहना: ''स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु यों कहता है: तुम्हें यह पीना ही पड़ेगा।
29देखो, जो नगर मेरे नाम से प्रसिद्ध है, उस का मैं अनिष्ट करनेवाला हूं, तो क्या तुम मेरे दण्ड से बच जाओगे? कदापि नहीं। तुम नहीं बच सकते। स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु यों कहता है: मैं पृथ्वी के समस्त निवासियों को नष्ट करने के लिए शत्रु की तलवार को बुला रहा हूं।''

30 'यिर्मयाह, तू इन शब्दों में उन के विरुद्ध यह नबूवत करना। तू उन से कहना:

''प्रभु अपने उच्च आसन से गरजेगा;
वह अपने पवित्र निवास से उच्च स्वर में
कहेगा।
वह पृथ्वी के सब निवासियों के विरुद्ध,
अपनी चराई के विरोध में सिंह के सदृश
दहाड़ेगा;
जैसे रस-कुण्ड में अंगूर रौंदनेवाले
आवाज करते हैं,
वैसे ही वह भी ललकारेगा।
31 उसका गर्जन पृथ्वी के सीमान्तों तक गूंज
उठेगा,
क्योंकि प्रभु ने पृथ्वी की सब कौमों पर
मुकदमा किया है
वह समस्त मानव-जाति का न्याय करेगा,
और दुर्जनों को तलवार से मौत के घाट
उतार देगा,'' प्रभु ने यह कहा है।'
32 स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु यों कहता है:
'देखो, अनिष्ट की एक लहर
एक राष्ट्र से दूसरे राष्ट्र में फैलेगी।
पृथ्वी के उत्तरी सीमान्त से
एक बड़ी आंधी उठ रही है।'

33 जिन लोगों को प्रभु इस दिन मारेगा, उनके शव पृथ्वी के एक छोर से दूसरे छोर तक पड़े रहेंगे। उन के लिए कोई शोक नहीं मनाएगा, और न कोई उनके शव एकत्र कर उनको गाड़ेगा। वे मैदान में कूड़े के ढेर के समान पड़े रहेंगे।

34 'ओ राष्ट्र के चरवाहो, रोओ,
ऊंचे स्वर में शोक मनाओ।
ओ प्रजा के स्वामियो, राख के ढेर में
लोटो।
क्योंकि तुम्हारे वध होने के दिन
समीप आ गए हैं,
तुम्हारे तितर-बितर होने के दिन
पास आ गए हैं।
मोटे-ताजे मेढ़ों की तरह
तुम्हारा काटा जाना निश्चित है।
35 चरवाहे प्राण बचा कर कहां शरण लेंगे?
शरण-स्थान कहीं नहीं है।
भेड़ों के स्वामी भाग कर नहीं बच सकते।
36 सुनो, चरवाहों का रोना-पीटना।
भेड़ों के स्वामी कैसे रो रहे हैं।
प्रभु उनकी चराई को नष्ट कर रहा है।
37 प्रभु की क्रोधाग्नि के कारण
शान्त भेड़-शालाएं भस्म हो गईं।
38 जैसे युवा सिंह अपनी गुफा से बाहर
निकलता है,
वैसे ही प्रभु निकला है।
उसकी क्रोधाग्नि से सारा देश उजाड़ हो
गया है,
अत्याचारी की तलवार ने उसको नष्ट कर
दिया है।'

मन्दिर में नबी यिर्मयाह की चेतावनी

26 यहूदा प्रदेश के राजा यहोयाकीम बेन-योशियाह के राज्य-काल के आरंभिक वर्ष में प्रभु का यह सन्देश मुझे मिला।

2 'प्रभु यों कहता है: जा, प्रभु-गृह के आंगन में खड़ा हो और मेरे भवन में यहूदा प्रदेश के नगरों से आनेवाले आराधकों से यह कह। मैं तुझसे जो बातें कहूंगा, वह सब उन से कहना, एक शब्द भी उन से मत छिपाना।
3हो सकता है, वे मेरे इन वचनों को सुन कर अपने कुमार्ग से लौटें, और उनके दुष्कर्मों के कारण जो मैंने

---

25 : 29 1 पत 4 : 17 25 : 30 आमो 1 : 2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उनका अनिष्ट करने का निश्चय किया है, उससे
मैं पछताऊँ।
4 'यिर्मयाह, तू उनसे यह कहना: "प्रभु यों
कहता है: यदि तुम मेरी बात नहीं सुनोगे, जो
व्यवस्था मैंने तुम्हारे सामने रखी है, उस पर नहीं
चलोगे, 5और मेरे सेवक नबियों की शिक्षाओं
पर ध्यान नहीं दोगे, जिनको मैंने अविलम्ब
तुम्हारे पास भेजा है, (सच तो यह है कि तुमने
उनके वचनों पर ध्यान नहीं दिया!), 6तो मैं
यरूशलेम के इस मन्दिर को शिलोह के समान
तहस-नहस कर दूंगा, और इस नगर को पृथ्वी
की सब जातियों के लिए 'शाप नगरी' बना
दूंगा।" '

नबी यिर्मयाह का बन्दी होना

7 पुरोहितों, नबियों और मन्दिर में आराधना
करनेवाले सब लोगों ने नबी यिर्मयाह को प्रभु
के भवन में ये बातें कहते हुए सुना। 8जब यिर्मयाह
प्रभु का यह वचन सब लोगों को सुना चुके
जिसका आदेश प्रभु ने उनको दिया था, तब
पुरोहितों और नबियों ने तथा मन्दिर में उपस्थित
लोगों ने उनको पकड़ लिया, और कहा, 'तुम
जीवित नहीं रह सकते। 9तुम प्रभु के नाम में यह
नबूवत क्यों कर रहे हो कि यह मन्दिर शीलोह
के मन्दिर के समान तहस-नहस हो जाएगा,
और यह नगर उजाड़ और निर्जन हो जाएगा?'
सब लोगों ने यिर्मयाह को प्रभु के भवन में घेर
लिया।
10 यहूदा प्रदेश के उच्चाधिकारियों ने यह
खबर सुनी। वे राजमहल से निकलकर प्रभु
के भवन में आए, और वहां मन्दिर के नव
प्रवेश-द्वार पर आसन जमा कर बैठ गए।
नबी यिर्मयाह का न्याय आरम्भ हुआ।
11पुरोहितों और नबियों ने उच्चाधिकारियों और
जनता से कहा, 'यह आदमी मृत्यु-दण्ड के
योग्य है। आप लोगों ने स्वयं अपने कानों से
सुना है कि इस ने हमारे इस नगर के विरुद्ध
नबूवत की है।'
12 तब यिर्मयाह ने उच्चाधिकारियों और
समस्त जनता से कहा, 'प्रभु ने इस मन्दिर और
इस नगर के विरुद्ध नबूवत करने के लिए मुझे
भेजा है, और तुम-सब ने प्रभु के ये वचन सुने।
13अत: अब अपना आचरण सुधारो, अपने बुरे
कामों को छोड़ो, और अपने प्रभु परमेश्वर की
वाणी को सुनो। तब कदाचित् प्रभु अपने
निश्चय के लिए पछताए; क्योंकि उसने तुम्हारा
अनिष्ट करने का निश्चय किया है, जिसकी
घोषणा उसने की है। 14देखो, मैं तुम्हारे हाथ में
हूं। जो तुम्हारी दृष्टि में उचित और भला लगे,
वही मेरे साथ करो। 15पर यह अच्छी तरह
समझ लो कि अगर तुम मुझे प्राण-दण्ड दोगे,
तो तुम निर्दोष मनुष्य की हत्या करने के कारण
दोषी ठहरोगे, और मेरी हत्या का दोष तुम पर,
इस नगर पर और नगर-निवासियों के मत्थे
पड़ेगा। क्योंकि यह सच है कि प्रभु ने मुझे तुम्हें
यह वचन सुनाने के लिए भेजा है।'
16 तब उच्चाधिकारियों और जनता ने
पुरोहितों और नबियों से कहा, 'इस मनुष्य ने
ऐसा कोई काम नहीं किया है कि इस को मृत्यु-
दण्ड दिया जाए। इस ने तो हमारे प्रभु परमेश्वर
के नाम से वचन सुनाया है।'
17 उसी समय यहूदा प्रदेश के धर्मवृद्ध खड़े
हुए और उन्होंने एकत्रित जन-समुदाय से
कहा, 18 'भाइयो, हमारे यहूदा प्रदेश के राजा
हिजकियाह के राज्य-काल में मोरेशेत नगर के
रहनेवाले नबी मीकायाह नबूवत करते थे।
उन्होंने यहूदा प्रदेश की समस्त जनता से यह
कहा था:

"स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु यह कहता है:
सियोन की पवित्र भूमि पर
शत्रु-सेना का हल चलेगा;
यरूशलेम नगर मलवों का ढेर बन जाएगा;
और मन्दिर का पहाड़
पूजास्थल का जंगल बन जाएगा!"

19 'हम आप-सब से पूछते हैं: क्या राजा
हिजकियाह ने नबी मीकायाह की इस कठोर
नबूवत के कारण उन को मृत्यु-दण्ड दिया?
कदापि नहीं; बल्कि वह प्रभु से डरा, और उसने
प्रभु की कृपा के लिए विनती की। अत: प्रभु

26 : 4 व्य 28 : 15 **26 : 11** मत 26 : 61 **26 : 18** मी 3 : 12

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अपने निश्चय के लिए पछताया, और उसने
यहूदा प्रदेश का अनिष्ट करने का जो निश्चय
किया था, और जिसकी उसने घोषणा की थी,
वह नहीं किया। किन्तु हम तो इस मनुष्य के
साथ यह व्यवहार कर अपने ऊपर महा विपत्ति
ला रहे हैं।'

20 वहां एक और मनुष्य था। वह प्रभु के
नाम में नबूवत करता था। उसका नाम ऊरियाह
बेन-शमायाह था। वह किर्यत्यरीम गांव का
रहनेवाला था। ऊरीयाह ने भी नबी यिर्मयाह के
समान, उन्हीं के शब्दों में इस नगर तथा इस
प्रदेश के विरुद्ध नबूवत की। 21जब राजा
यहोयाकीम, उसके महायोद्धाओं तथा
उच्चाधिकायियों ने ऊरीयाह की नबूवत सुनी, तब
राजा ने उसको मार डालने का प्रयत्न किया।
ऊरीयाह ने यह सुना, तो वह डर गया, और प्राण
बचा कर मिस्र देश भाग गया। 22किन्तु राजा
यहोयाकीम ने कुछ सैनिकों को, एलनातान
बेन-अकबोर तथा उसके साथ कुछ और लोगों
को मिस्र देश भेजा। 23वे ऊरीयाह को मिस्र देश
से पकड़ कर लाए, और उसको राजा यहोयाकीम
के सामने पेश किया। राजा यहोयाकीम ने
अपनी तलवार से उसका सिर धड़ से अलग कर
दिया, और शव को जन-साधारण के कब्रिस्तान
में फेंक दिया।

24 किन्तु उच्चाधिकारी अहीकाम बेन-शापान ने
यिर्मयाह की मदद की। अत: यिर्मयाह भीड़ के हाथ
में नहीं सौंपे गए, अन्यथा भीड़ उनको मार डालती।

नबूकदनेस्सर के विरुद्ध बलवा का षड्यन्त्र

27 यहूदा प्रदेश के राजा सिदकियाह बेन-
योशियाह के राज्य-काल के आरम्भ में
प्रभु का यह सन्देश मुझ-यिर्मयाह को मिला।
2प्रभु ने मुझसे कहा, 'रस्सियों के बन्धन और
जूए बना, और उन को अपनी गर्दन पर रख।
3उस के बाद राजदूतों के हाथ, जो यहूदा प्रदेश
के राजा सिदकियाह के पास यरूशलेम में आए
हैं, यह सन्देश मोआब, अम्मोन, सोर और
सीदोन के राजाओं को भेज। 4राजदूतों को यह
दायित्व सौंपना कि वे अपने-अपने स्वामी से
यह कहें: ''इस्राएल का परमेश्वर, स्वर्गिक
सेनाओं का प्रभु यों कहता है: तुम अपने-अपने
स्वामी से यह कहना: 5मैंने ही अपने महा
सामर्थ्य तथा भुजबल से यह पृथ्वी बनाई है।
मैंने ही पृथ्वी के सब मनुष्यों तथा पशुओं को
रचा है। यह पृथ्वी जिसको मैं देना उचित
समझता हूं, उस को देता हूं। 6सुनो, मैंने पृथ्वी
के ये सब देश बेबीलोन के राजा अपने सेवक
नबूकदनेस्सर के हाथ में सौंप दिए हैं। मैंने
धरती के पशुओं को भी उस के अधीन कर
दिया है, कि वे उस की सेवा करें। 7जब तक
उस के देश के पतन का निर्धारित समय नहीं
आता, तब तक पृथ्वी की सब जातियां उसकी,
उसके पुत्र की और पौत्र की सेवा करेंगी।
निर्धारित समय के पश्चात् अनेक जातियां और
बड़े राजा उसको अपना गुलाम बना लेंगे।

8 ''किन्तु इस निर्धारित समय के अन्तर्गत
यदि कोई राष्ट्र अथवा राज्य बेबीलोन के राजा
नबूकदनेस्सर की सेवा नहीं करेगा, उसकी
गुलामी का जूआ अपनी गर्दन पर नहीं रखेगा,
तो मैं उस राष्ट्र या राज्य को तलवार, अकाल
और महामारी से दण्डित करूंगा, मैं अपने
सेवक नबूकदनेस्सर के हाथ से उस को पूर्णत:
नष्ट कर दूंगा। मुझ-प्रभु की यह वाणी है।

9''तुम्हारे नबी, सगुन विचारनेवाले, तुम्हारे
स्वप्न-द्रष्टा, टोनहे, तांत्रिक कहते हैं, 'ओ मेरे
देश-वासियो, तुम बेबीलोन के राजा की
गुलामी नहीं करोगे।' तुम उनकी बातों पर ध्यान
मत दो। 10वे झूठ बोलते हैं, ताकि तुम उन की
नबूवत के फलस्वरूप अपने देश से निष्कासित
हो जाओ, और मैं तुम्हें तुम्हारे देश से हांक दूं
और तुम नष्ट हो जाओ।

11''किन्तु जो जाति बेबीलोन के राजा
नबूकदनेस्सर की गुलामी के जूए को अपनी
गर्दन पर रखेगी, और उसकी सेवा करेगी, उस
को मैं उस के देश में रहने दूंगा, और वे अपनी
भूमि को जोतेंगे, और वहीं बसे रहेंगे। मुझ-प्रभु
की यह वाणी है।'' '

12 मैंने यहूदा के राजा सिदकियाह से ऐसा

27 : 6 बारू 3 : 16-17

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ही कहा, 'महाराज, आप बेबीलोन के राजा की अधीनता स्वीकार कर लीजिए, और उसकी तथा उसकी प्रजा की गुलामी कीजिए। तब आप जीवित रहेंगे।
13आप, आपकी प्रजा तलवार, अकाल और महामारी से क्यों मरें? जैसा प्रभु ने कहा है कि जो राष्ट्र बेबीलोन के राजा की अधीनता स्वीकार नहीं करेगा, वह तलवार, अकाल और महामारी से नष्ट हो जाएगा।
14आप इन नबियों की बातें मत सुनिए जो आप से कह रहे हैं, "आप बेबीलोन के राजा के अधीन नहीं होंगे।" जो नबूवत ये लोग आप को सुना रहे हैं, वह केवल झूठ है।
15प्रभु यह कहता है, "मैंने इन को नहीं भेजा है। परन्तु ये लोग मेरे नाम से झूठ-मूठ नबूवत कर रहे हैं। इस का परिणाम यह होगा कि मैं तुझ को इस देश से हांक दूंगा, और तू और तेरे ये नबी जो तुझसे नबूवत करते हैं, नष्ट हो जाएंगे।" '

16 इस के बाद मैंने पुरोहितों और समस्त जनता से कहा, 'प्रभु यों कहता है: तुम अपने इन नबियों की बातें मत सुनो। ये तुम से नबूवत करते हैं कि प्रभु-भवन के पवित्र पात्र शीघ्र ही बेबीलोन नगर से वापस आ जाएंगे। यह केवल झूठी नबूवत है।
17ओ पुरोहितो, और लोगो, तुम इन नबियों की बातें मत सुनो, वरन् बेबीलोन के राजा की अधीनता स्वीकार करो। तब तुम जीवित रहोगे। यह नगर क्यों उजाड़ हो?
18यदि ये नबी सचमुच प्रभु के नबी हैं, और प्रभु का वचन उनके साथ है, तो वे स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु से विनती करें कि शत्रु-सैनिक उस के भवन में बचे हुए पवित्र पात्रों को, राजमहल के बहुमूल्य पात्रों तथा यरूशलेम के समस्त कीमती पात्रों को न लूटें, और उनको भी बेबीलोन न ले जाएं।
19स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु उन स्तम्भों, हौज, आधार-स्तम्भों और नगर में बचे हुए पात्रों के सम्बन्ध में कहता है,
20जो बेबीलोन का राजा नबूकदनेस्सर अपने साथ नहीं ले गया था, जब वह यहूदा प्रदेश के राजा यकोन्याह बेन-यहोयाकीम को, तथा उसके साथ यहूदा प्रदेश तथा यरूशलेम के समस्त उच्चाधिकारियों को बन्दी बना कर यरूशलेम नगर से बेबीलोन ले गया था—
21जो पवित्र और बहुमूल्य पात्र प्रभु के भवन में, राजमहल में तथा यरूशलेम नगर में बच गए हैं, उनके सम्बन्ध में इस्राएल का परमेश्वर, स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु यों कहता है:
22ये पात्र लुटकर बेलीलोन नगर ले जाये जाएंगे, और वहां तब तक रहेंगे जब तक मैं उनकी सुधि न लूंगा। उसके पश्चात् मैं उनको वापस लाऊंगा, और उन को उनके स्थान पर पुनः प्रतिष्ठित करूंगा।'

सच्चे नबी की पहचान

28 उसी वर्ष की यह घटना है। यहूदा प्रदेश के राजा सिदकियाह के राज्य-काल के आरम्भ में चौथे वर्ष के पांचवें महीने यह घटना घटी। गिबओन नगर में एक नबी था। उसका नाम हनन्याह बेन-अज्जूर था। उसने प्रभु के भवन में पुरोहितों और सब लोगों के सामने मुझ से कहा,
2 'इस्राएली राष्ट्र का परमेश्वर, स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु यों कहता है: मैंने बेबीलोन के राजा का जूआ तोड़ डाला है।
3मैं दो वर्ष के भीतर अपने भवन के सब पवित्र पात्र बेबीलोन नगर से यहां वापस ले आऊंगा, जो बेबीलोन का राजा नबूकदनेस्सर यहां से लूट कर बेबीलोन नगर ले गया था।
4मैं यहूदा प्रदेश के राजा, यहोयाकीम के पुत्र यकोन्याह को तथा उन सब लोगों को भी इस नगर में वापस लाऊंगा, जो बन्दी बनकर बेबीलोन नगर गए थे। मुझ-प्रभु की यह वाणी है, क्योंकि मैंने बेबीलोन के राजा का जूआ तोड़ डाला है।'

5 प्रभु के भवन में पुरोहित और अन्य लोग खड़े थे। नबी यिर्मयाह ने उन सब के सामने नबी हनन्याह से यह कहा,
6 'आमेन! काश, प्रभु ऐसा ही करे। जो नबूवत तुमने की है, वह प्रभु सच प्रमाणित करे, और प्रभु अपने भवन के पवित्र पात्रों को तथा सब बन्दियों को बेबीलोन से यहां वापस लाए।
7किन्तु जो बातें अब मैं तुमसे तथा यहां खड़े हुए सब लोगों और

---

27 : 20 2 रा 24 : 14

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पुरोहितों से कह रहा हूं, वह ध्यान से सुनो।
8हनन्याह, प्राचीन काल से जो नबी मुझ से और
तुम से पहले हुए हैं, उन्होंने अनेक देशों और
राज्यों के विरुद्ध नबूवत की थी कि वे युद्ध,
अकाल और महामारी से नष्ट हो जाएंगे।
9निस्सन्देह यदि कोई नबी सुख-शांति की
नबूवत करता है, तो लोग यह बात तभी मान
सकते हैं कि उस नबी को सचमुच प्रभु ने भेजा
है, जब उस नबी की नबूवत सच प्रमाणित होती
है।'

10 यह सुनकर नबी हनन्याह ने नबी
यिर्मयाह की गर्दन पर रखा हुआ जूआ उठाया
और उसको तोड़ डाला। 11तब उस ने सब
लोगों के सामने यह कहा, 'प्रभु यों कहता है:
मैं इसी प्रकार दो वर्ष के भीतर सब जातियों की
गर्दन से बेबीलोन की गुलामी के जूए को तोड़
डालूंगा, और उन को मुक्त कर दूंगा।' इस पर
नबी यिर्मयाह वहाँ से चले गए।

12 इस घटना के कुछ समय पश्चात्, जब
नबी हनन्याह ने नबी यिर्मयाह की गर्दन पर रखे
हुए जूए को तोड़ा था, प्रभु का यह वचन
यिर्मयाह को मिला: 13'जा, और हनन्याह से
यह कह, ''प्रभु यों कहता है: तूने लकड़ी के
जूए को तोड़ा, पर मैं उसके स्थान पर लोहे का
जूआ रखूंगा। 14मैं, इस्राएल का परमेश्वर,
स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु यों कहता हूँ: अब मैं
सब जातियों की गर्दन पर बेबीलोन के राजा
नबूकदनेस्सर के लोहे के जूए को रख रहा हूं।
वे उसकी गुलामी करेंगी। मैंने धरती के सब
पशुओं को भी उसके अधीन कर दिया है।'' '

15 नबी यिर्मयाह ने हनन्याह से कहा,
'सुनो, हनन्याह! प्रभु ने तुम्हें नबी के रूप में
नहीं भेजा है। किन्तु तुमने इन लोगों को झूठी
आशा दिलाई है। 16इसलिए प्रभु यों कहता है,
''देख, मैं पृथ्वी की सतह से तेरा नाम और
निशान मिटा दूंगा। तू इसी वर्ष मर जाएगा,
क्योंकि तूने मुझ-प्रभु के विरुद्ध लोगों से
विद्रोहपूर्ण बातें कही हैं।'' '

17 और उसी वर्ष के सातवें महीने में नबी
हनन्याह मर गया।

बेबीलोन में निष्कासित अपने जाति भाई-बन्धुओं को नबी यिर्मयाह का पत्र

29 नबी यिर्मयाह ने बेबीलोन में निष्कासित
अपने जाति भाई-बन्धुओं के धर्मवृद्धों,
पुरोहितों, और नबियों तथा उन सब लोगों को
यरूशलेम से एक पत्र लिखा जिनको बेबीलोन
का राजा नबूकदनेस्सर बन्दी बना कर यरूशलेम
से बेबीलोन ले गया था।

2 यह पत्र तब लिखा गया था जब राजा
यकोन्याह, राजमाता, राजकोष के खजांची-
कंचुकी, यहूदा प्रदेश तथा यरूशलेम नगर के
उच्चाधिकारी, कारीगर और लोहार बन्दी बनकर
यरूशलेम नगर से चले गये थे। 3यह पत्र एलासा
बेन-शापान तथा गमर्याह बेन-हिल्कियाह के
हाथ से भेजा गया था। इन को यहूदा के राजा
सिदकियाह ने बेबीलोन के राजा नबूकदनेस्सर
के पास भेजा था। पत्र में यह लिखा था:

4 'मैं, इस्राएल का परमेश्वर, स्वर्गिक
सेनाओं का प्रभु, उन सब बन्दियों से यह कहता
हूं, जिन को मैंने यरूशलेम नगर से बन्दी बना
कर बेबीलोन भेजा है। 5तुम बेबीलोन में घर
बनाओ, और उन में रहो। फलों के बाग-बगीचे
लगाओ, और उनके फल खाओ। 6शादी-ब्याह
रचाओ, और पुत्र-पुत्रियां उत्पन्न करो। अपने
पुत्रों और पुत्रियों का भी विवाह कराओ कि उन
के भी पुत्र-पुत्रियां उत्पन्न हों। तुम बेबीलोन में
दिन-प्रतिदिन संख्या में बढ़ते जाओ और घटो
नहीं।

7 'किन्तु जिस नगर में मैंने तुमको निष्कासित
किया है, उस के कल्याण के लिए तुम प्रयत्न
करो, और उसके हित के लिए तुम मुझ से प्रार्थना
करो; क्योंकि उस के हित में तुम्हारा हित है।

8 'मैं, इस्राएल का परमेश्वर, स्वर्गिक
सेनाओं का प्रभु यों कहता हूँ: तुम्हारे मध्य
निवास करनेवाले तुम्हारे नबी और शकुन
विचारनेवालों के धोखे में मत आओ; क्योंकि
वे तुम्हें धोखा दे रहे हैं। जो दर्शन वे देखते हैं,
और जिनके बारे में वे तुम्हें बताते हैं, उन को

28 : 9 व्य 18 : 22

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मत सुनो। 9वे तुम्हें मेरे नाम से झूठी नबूवत
सुनाते हैं। मैंने उनको नहीं भेजा है, प्रभु की यह
वाणी है।

10 'मैं-प्रभु यों कहता हूँ: जब बेबीलोन के
सत्तर वर्ष पूरे हो जाएंगे, तब मैं तुम्हारी सुधि
लूंगा, और जो सुन्दर वचन मैंने तुम्हें दिया है,
वह पूरा करूंगा, और तुमको यहां वापस
लाऊंगा।

11 'मैं-प्रभु यह कहता हूं, कि मैंने तुम्हारी
भलाई के लिए योजनाएं बनाई हैं, बुराई के लिए
नहीं; और मैं इन योजनाओं को अच्छी तरह
जानता हूं। मैंने तुम्हारे लिए एक सुखद भविष्य
की योजना बनाई है। मैं तुम्हें एक आशामय
भविष्य दूंगा। 12तब तुम मेरे नाम से आराधना
करोगे, और मेरे भवन में आ कर मेरे नाम से
प्रार्थना करोगे, और मैं तुम्हारी प्रार्थना सुनूंगा।
13तुम मुझे ढूंढ़ोगे, और मैं तुम्हें मिलूंगा। जब
तुम मुझे सच्चे हृदय से खोजोगे, तब मुझे
पाओगे। 14मुझ-प्रभु की यह वाणी है: निस्सन्देह
मैं तुम्हें सुलभ होऊंगा। मैं तुम्हारी समृद्धि लौटा
दूंगा, और विश्व के सब राष्ट्रों से, जहां तुम
बिखर गए हो, पुन: एकत्र करूंगा। जिन देशों
में मैंने तुम्हें हांक दिया है, वहां से इस स्थान
में वापस लाऊंगा, क्योंकि मैंने इस स्थान से
तुम्हें बन्दी बना कर निष्कासित कर दिया था —
यह प्रभु की वाणी है।

*16 'दाऊद के सिंहासन पर विराजनेवाले
राजा तथा इस नगर के बचे हुए निवासियों के
सम्बन्ध में, जो तुम्हारे जाति भाई-बन्धु हैं, और
तुम्हारे साथ बन्दी बन कर बेबीलोन नहीं गए
हैं, प्रभु यों कहता है: 17देखो, मैं — स्वर्गिक
सेनाओं का प्रभु — उन पर शत्रु की तलवार,
अकाल और महामारी भेजनेवाला हूं । मैं
उनको अंजीर के सड़े फल के सदृश निकृष्ट
बना दूंगा, अंजीर का ऐसा सड़ा फल, जिसको
कोई नहीं खाता। 18मैं तलवार, अकाल और
महामारी से उनका पीछा करूंगा। मैं उनको
पृथ्वी के सब राज्यों के लिए आतंक का कारण
बना दूंगा। मैं उनको जिन-जिन देशों में हांक
कर ले जाऊंगा, वहां-वहां के लोग उन से घृणा
करेंगे, उनके कारण आतंकित और व्याकुल
होंगे, और उनकी निन्दा करेंगे। 19मैंने अपने
सेवक नबियों को उनके पास भेजा था, और
नबियों के माध्यम से बार-बार उन्हें अपना
सन्देश सुनाया था। किन्तु उन्होंने मेरे सन्देश पर
ध्यान नहीं दिया। मुझ-प्रभु की यह वाणी है कि
तुमने मेरे वचन को नहीं सुना!

20 'ओ निष्कासित लोगो, तुम को प्रभु ने
बन्दी बनाकर यरूशलेम से बेबीलोन को
निष्कासित किया है। तुम प्रभु का वचन सुनो।
15-21 तुम कहते हो, "प्रभु ने हमारे लिए
बेबीलोन में ये नबी उत्पन्न किये हैं: अहाब बेन-
कोलायाह और सिदकियाह बेन-मासेयाह।" मैं,
इस्राएल का परमेश्वर, स्वर्गिक सेनाओं का
प्रभु, यों कहता हूँ: ये मेरे नाम से झूठी नबूवत
करते हैं। क्योंकि तुमने कहा कि ये झूठे नबी
तुम्हारे हैं, इसलिए, देखो, मैं इनको बेबीलोन
के राजा नबूकदनेस्सर के हाथ में सौंप दूंगा,
और वह तुम्हारी आंखों के सामने उनका वध
कर देगा। 22यहूदा प्रदेश से बेबीलोन को
निष्कासित लोगों में, यह घटना एक शाप बन
जाएगी, और लोग एक-दूसरे को इन शब्दों में
शाप देंगे: "जैसा बेबीलोन के राजा नबूकदनेस्सर
ने अहाब और सिदकियाह को आग की भट्ठी
में भूना था वैसे ही प्रभु तुझे भी करे।"
23क्योंकि उन्होंने इस्राएली जाति में मूर्खतापूर्ण
कार्य किये: उन्होंने अपने पड़ोसी की पत्नी के
साथ व्यभिचार किया, उन्होंने मेरे नाम से झूठी
नबूवत की, जबकि मैंने उन को नबूवत करने
का आदेश दिया ही नहीं था। ओ निष्कासित
लोगो, मैं ये बातें जानता हूं, और मैं इस बात
का गवाह हूं। मुझ-प्रभु की यह वाणी है।'

24 यिर्मयाह को प्रभु का यह संदेश मिला,
'नेहेलाम नगर के शमायाह से तू यह कहना:
25इस्राएल का परमेश्वर, स्वर्गिक सेनाओं का
प्रभु यों कहता है: शमायाह, तूने अपने नाम से

* कृपया पद 15 को 21-23 के साथ पढ़िए।

29 : 10 2 इति 36 : 21-22 **29 : 13** व्य 4 : 29; प्रज्ञ 6 : 12-13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यरूशलेम के सब निवासियों को, पुरोहित
सफन्याह बेन-मसेयाह को तथा अन्य पुरोहितों
को यह पत्र लिखा है 26कि ''प्रभु ने पुरोहित
यहोयादा के स्थान पर तुझे पुरोहित अभिषिक्त
किया है ताकि तू प्रभु के भवन का दायित्व
संभाले, और उन सब पागलों के हाथ में जंजीरें
और पैरों में बेड़ियां पहिनाए जो प्रभु के भवन
में नबूवत करते हैं। 27ओ सफन्याह, तूने अनातोत
नगर के यिर्मयाह को क्यों नहीं मना किया, जो
तुझ को नबूवत सुनाता है? 28उसने हमें बेबीलोन
में यह सन्देश भेजा है: तुम बेबीलोन में बहुत
समय तक निष्कासित रहोगे, इसलिए मकान
बनाओ, और उन में रहो। फलों के बाग-बगीचे
लगाओ, और उनके फल खाओ।'' '

29 पुरोहित सफन्याह ने यही पत्र नबी
यिर्मयाह को पढ़कर सुनाया। 30तब प्रभु का यह
वचन नबी यिर्मयाह को मिला। 31प्रभु ने नबी
यिर्मयाह से कहा: 'बेबीलोन में निष्कासित
लोगों को यह सन्देश भेज: नेहेलाम नगर के
शमायाह के विषय में प्रभु यों कहता है:
शमायाह ने तुम-लोगों से नबूवत की, जब कि
मैंने उस को नहीं भेजा है, और उसने तुम को
झूठी आशा दी, 32इसलिए मैं-प्रभु यह कहता
हूं: देखो, मैं नेहेलाम नगर के शमायाह और
उसके वंश को दण्ड दूंगा। उस के वंश में एक
भी व्यक्ति जीवित नहीं बचेगा, जो उस भलाई
के दर्शन कर सकेगा जो मैं अपने निज लोगों
के साथ करूंगा, क्योंकि उसने प्रभु से
विद्रोहपूर्ण बातें कही हैं। मुझ-प्रभु की यह
वाणी है।'

बन्दी इस्राएली स्वदेश अवश्य लौटेंगे

30 प्रभु का यह वचन यिर्मयाह को मिला।
प्रभु ने कहा, 2'इस्राएल का प्रभु परमेश्वर
यों कहता है: यिर्मयाह, तू मेरी सब बातें एक
पुस्तक में लिख, जो मैंने तुझ से कही हैं।
3क्योंकि, देख, वे दिन आ रहे हैं, जब मैं
इस्राएल और यहूदा प्रदेश के अपने निज लोगों
की समृद्धि लौटा दूंगा, उनको उनके देश में
वापस लाऊंगा, जो मैंने उन के पूर्वजों को दिया
था, और वे उस देश पर पुनः अधिकार करेंगे।
मुझ-प्रभु की यह वाणी है।'

4 प्रभु ने इस्राएल और यहूदा प्रदेशों के
सम्बन्ध में यह कहा:
5 'प्रभु यों कहता है:
हमने भगदड़ और आतंक की आवाज सुनी,
कहीं शान्ति नहीं है।
6 तुम पूछो, और स्वयं अपनी आंखों से देखो,
क्या पुरुष को भी प्रसव-पीड़ा होती है?
तब ये पुरुष गर्भवती स्त्री के समान
अपनी कमर को हाथों से क्यों दबाए हुए हैं?
उनका चेहरा पीला क्यों पड़ गया है?
7 उफ! वह महा संकट का दिन है।
उस के तुल्य और कोई दिन नहीं है।
वह याकूब के लिए दु:ख का दिन है।
फिर भी याकूब उससे बच जाएगा।

8 'स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु यों कहता है:
उस दिन मैं यह काम करूंगा: मैं उनकी गर्दन
से गुलामी का जूआ तोड़ डालूंगा। मैं उनके
बन्धन की रस्सियां काट दूंगा। तब विदेशी
शासक उनसे अपनी गुलामी नहीं कराएंगे। 9मैं
उनके लिए राजा दाऊद के वंश में एक आदर्श
राजा उत्पन्न करूंगा। तब वे मेरी, अर्थात् अपने
प्रभु परमेश्वर तथा उस राजा की सेवा करेंगे।
10 'इसलिए, ओ याकूब, मेरे सेवक, मत डर।
ओ इस्राएल, भयभीत मत हो।
मैं-प्रभु कहता हूँ:
मैं तुझको और तेरी संतान को,
दूर देश से, जहां तू गुलाम है,
उस देश से बचा कर लाऊंगा।
तब याकूब लौटेगा,
और सुख-चैन का जीवन बिताएगा;
उस का कोई भी शत्रु उस को डरा नहीं
सकेगा।
11 मैं-प्रभु कहता हूं:
मैं तुझे बचाने के लिए तेरे साथ हूँ।
जिन राष्ट्रों में मैंने तुझ को बिखेर दिया था,
उन-सब का मैं पूर्ण संहार कर दूंगा।

---

30 : 9 हो 3 : 5 **30 : 10** यश 41 : 13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मैं तेरा पूर्ण विनाश नहीं करूंगा,
किन्तु तुझे उचित मात्रा में दण्ड दूंगा;
निस्सन्देह मैं तुझको दण्ड दिए बिना नहीं छोड़ूंगा।

12 'प्रभु यों कहता है:
ओ इस्राएली कौम, तेरी चोट असाध्य है,
तेरा घाव गहरा है।
13 तुझे न्याय दिलानेवाला कोई नहीं है।
तेरे घाव की कोई दवा नहीं है;
तेरा रोग स्वस्थ नहीं होगा।
14 तेरे सभी प्रेमी तुझे भूल गए हैं;
अब वे तेरी कामना नहीं करते।
मैंने तुझे शत्रु जैसा मारा है,
निर्दय शत्रु के समान तुझे कठोर दण्ड दिया है;
क्योंकि तूने बड़े-बड़े दुष्कर्म किये हैं,
तेरे पाप गंभीर हैं।
15 तू अपनी चोट के लिए क्यों चिल्लाती है?
तेरे दर्द का कोई इलाज नहीं है।
क्योंकि तूने बड़े-बड़े दुष्कर्म किए हैं,
तेरे पाप गंभीर हैं।
इसीलिए मैंने तेरे साथ यह व्यवहार किया है।
16 सुन, जो तुझ को खाते हैं,
उनको भी दूसरे खा लेंगे।
तेरा प्रत्येक बैरी, तेरे सब शत्रु
बन्दी बनकर अपने देश से निष्कासित होंगे।
तुझको लूटनेवाला स्वयं लूटा जाएगा;
जो तुझको हड़पेगा, उसको दूसरे हड़प लेंगे।
17 मैं-प्रभु कहता हूँ:
मैं तेरा स्वास्थ्य तुझे लौटाऊँगा,
मैं तेरे घाव भर दूंगा।
क्योंकि तेरे शत्रुओं ने तुझे 'परित्यक्ता' कहा है:
"देखो, यह है सियोन नगरी,
जिसकी अब कोई चिन्ता नहीं करता।"

18 'प्रभु यों कहता है:
देखो, मैं याकूब के ध्वस्त मकानों का वैभव लौटाऊंगा:
उसके निवास-स्थानों पर दया करूंगा।
नगर का पुनर्निर्माण उसके मलबों के ढेर पर होगा।
राजमहल वहां फिर खड़ा होगा,
जहां वह पहले था।
19 तब नगर में मेरी स्तुति के गान सुनाई देंगे;
आनन्द मनानेवालों का शोर वहां सुनाई देगा।
मैं उनकी आबादी बढ़ाऊंगा,
और तब वे जनसंख्या में थोड़े न होंगे।
मैं उनका गौरव दिन दूना – रात चौगुना बढ़ाऊंगा,
और वे फिर तुच्छ न समझे जाएंगे।
20 जैसे प्राचीन काल में उनके बच्चे थे,
वैसे ही अब होंगे,
और उनकी धर्म-मण्डली
मेरे सम्मुख सुदृढ़ हो जाएगी।
जो उन पर अत्याचार करेगा,
उनको मैं दण्ड दूंगा।
21 उनका उच्चाधिकारी उन्हीं में से होगा,
उनका प्रशासक उन्हीं के समाज में से चुना जाएगा।
मैं उसको अपने निकट लाऊंगा,
और वह मेरे समीप आएगा।
क्योंकि बिना मेरी अनुमति के
कौन व्यक्ति मेरे समीप आ सकता है?
मुझ-प्रभु की यह वाणी है।
22 तब तुम मेरे निज लोग होगे,
और मैं तुम्हारा परमेश्वर होऊंगा।'

23 प्रभु के क्रोध के तूफान को देखो।
बवण्डर के सदृश उस के प्रकोप की आंधी बहने लगी है।
उस की क्रोधाग्नि दुर्जन के सिर पर बरसेगी।
24 जब तक प्रभु अपने हृदय के संकल्प को

30:14 शोक 1:2 30:22 यहेज 36:28

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कार्य रूप में परिणित नहीं कर लेगा,
और उसको पूर्ण नहीं कर लेगा,
तब तक वह अपने क्रोध को शान्त नहीं
करेगा।
अंतिम दिनों में यह बात स्पष्ट समझ में आ
जाएगी।

प्रभु का शाश्वत प्रेम

31 प्रभु कहता है. 'उन दिनों में,
मैं इस्राएल के सब कुलों का परमेश्वर
होऊंगा,
और वे मेरे निज लोग कहलाएंगे।'

2 प्रभु यों कहता है,
'जो लोग फरओ की तलवार से बच गए थे,
उन लोगों ने निर्जन प्रदेश में
मेरी कृपा प्राप्त की थी।
जब इस्राएल ने विश्राम-स्थल की खोज की
3 तब मैंने दूर से उसको दर्शन दिया।
ओ इस्राएल! ओ कुंआरी कन्या! मैंने तुझ से
प्रेम किया है, सदा प्रेम किया है;
इसलिए स्नेह से मैं
तुझको अपने पास लाया हूं।
4 मैं तेरा पुनर्निर्माण करूंगा,
और तू फिर बसेगी,
तू फिर सोलह शृंगार करेगी,
और आनन्द मनानेवालों के बीच में
नाचते-गाते हुए निकलेगी।
5 तू सामरी प्रदेश के पहाड़ों पर
पुनः अंगूर-उद्यान लगाएगी;
बाग-बगीचे लगानेवाले
अपने बाग-बगीचों का फल भी खाएंगे।
6 ओ इस्राएल! एक दिन ऐसा भी आएगा
जब पहरेदार एफ्रइम के पहाड़ी क्षेत्र में
पुकार-पुकार कर कहेगा,
"ओ सोनेवालो, उठो! और सियोन पर्वत पर
अपने प्रभु परमेश्वर के पास चलो।" '

सब देशों से बन्दी इस्राएलियों की वापसी

7 प्रभु यों कहता है: 'याकूब के स्वागत में
उल्लासपूर्वक उच्च स्वर में गाओ।
पहाड़ों के शिखरों से*
ऊंचे स्वर में जय-जयकार करो;
प्रभु के इस कार्य के लिए यह घोषित करो;
प्रभु की स्तुति करो, और यह कहो,
"प्रभु ने इस्राएल के बचे हुए लोगों का,
अपने निज लोगों का उद्धार किया।" '
8 प्रभु कहता है:
'मैं उनको उत्तर देश से वापस लाऊंगा,
मैं पृथ्वी के सीमान्तों से उन को एकत्र
करूंगा।
उन के साथ अन्धे और लंगड़े होंगे,
गर्भवती स्त्रियां और जच्चा स्त्रियां भी होंगी।
एक विशाल जन-समूह यहां लौटेगा।
9 वे आनन्द के आंसू बहाते हुए आएंगे;
और मैं उनको शान्ति देता हुआ
उनका मार्ग-दर्शन करूंगा।
मैं उनको झरनों के किनारे चलाता हुआ
लाऊंगा,
उनको सीधे मार्ग से ले जाऊंगा,
जहां वे लड़खड़ा कर नहीं गिरेंगे;
क्योंकि मैं इस्राएली कौम का पिता हूं,
और एफ्रइम मेरा ज्येष्ठ पुत्र है।'

10 ओ राष्ट्रो, प्रभु का सन्देश सुनो:
और उसको दूर-दूर के,
समुद्र तट के द्वीपों में घोषित करो:
'जिस प्रभु ने इस्राएली कौम को बिखराया
था,
वही अब उस को एकत्र करेगा।
और जैसे चरवाहा अपने रेवड़ की देखभाल
करता है
वैसे ही प्रभु इस्राएलियों को संभालेगा।'
11 प्रभु ने याकूब का विमोचन-मूल्य चुका
दिया,
उसने उसके प्रबल शत्रु के पंजे से
उसको मुक्त कर दिया।
12 अब इस्राएली सियोन पर्वत पर आएंगे,
और उच्च स्वर में प्रभु का गुणगान करेंगे।
प्रभु की भलाई के कारण

* अथवा, 'जो जातियों में श्रेष्ठ है, उसके लिए,'

31 : 5 यश 65 : 21; आमो 9 : 14 **31 : 9** भज 126 : 5; 2 कुर 6 : 18 **31 : 10** यो 10 : 16 **31 : 11** यश 49 : 24

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उनके मुख पर चमक होगी;
क्योंकि प्रभु उनको अनाज, अंगूर-रस,
जैतून का तेल
भेड़-बकरियों और गायों के बच्चे देगा।
जल से सींचे गये उद्यान के सदृश
उनके प्राण हरे-भरे होंगे;
इस्राएली फिर कभी दु:खी न होंगे।

13 प्रभु यों कहता है: 'युवतियां आनन्द-मग्न
हो नृत्य करेंगी,
जवान और बूढ़े एक साथ हर्ष मनाएंगे।
मैं-प्रभु उनके शोक को आनन्द में बदल
दूंगा,
मैं उनको शान्ति दूंगा,
और उनको दु:ख के बदले सुख दूंगा।
14 मैं अपने पुरोहितों को
उत्तम भोजन-वस्तुओं से तृप्त करूंगा,
मैं अपनी भलाई के कारण
अपने निज लोगों को उत्तम वस्तुएं दूंगा,
और वे सन्तुष्ट होंगे।'

कुल-माता राहेल का रोदन

15 प्रभु यों कहता है:
'रामा नगर में शोक-स्वर सुनाई दे रहा है:
छाती पीट-पीट कर रोने का स्वर:
राहेल अपने बच्चों के लिए
बिलख-बिलख कर रो रही है।
उसके बच्चे नहीं रहे,
इसलिए वह शान्त होना नहीं चाह रही है।'
16 प्रभु राहेल से यों कहता है:
'ओ राहेल, मुंह से रोने की आवाज मत
निकाल,
अपनी आंखों को आंसुओं से मत भिगो।
तेरे परिश्रम का फल तुझे मिलेगा,
तेरे पुत्र अपने शत्रुओं के देश से लौटेंगे;
मुझ-प्रभु की यह वाणी है।
17 सुन, तेरा भविष्य आशापूर्ण है।
तेरे बच्चे, निस्सन्देह, स्वदेश वापस आएंगे।'
प्रभु की यह वाणी है।

18 'मैंने एफ्रइम को विलाप करते हुए सुना है।
वह मुझ से कह रहा था,
"तूने मुझे सजा दी, और मैं ताड़ित हुआ,
मानो मैं नवसीखिए बछड़े के समान हूं
जो जूए में जोतने के योग्य नहीं होता
और बहुत ताड़ना पाता है।
मुझे स्वदेश वापस ले जा,
तब मैं पुन: प्रतिष्ठित होऊंगा,
क्योंकि तू ही मेरा प्रभु परमेश्वर है।
19 तुझ से विमुख हो जाने के बाद
मैं पछताया;
जब मैं दुष्कर्म के अधीन हो गया*
तब मैंने छाती पीट कर विलाप किया।
मैं अपनी जवानी के पापों का स्मरण कर
लज्जित हो जाता हूं,
शर्म से मेरा सिर झुक जाता है।"
20 ओ एफ्रइम, निस्सन्देह, तू मेरा प्रिय पुत्र है,
सचमुच तू मेरा प्यारा बेटा है।
यदि मैं तेरे विरुद्ध कुछ कहता भी हूं,
तब भी मुझे तेरी सुधि रहती है।
मेरा हृदय तेरे लिए भर आता है,
मैं निस्सन्देह तुझ पर दया करूंगा',
प्रभु की यह वाणी है।

21 'ओ इस्राएल, ओ कुंआरी कन्या!
अपने लिए मार्ग-चिह्न बना ले,
पथ पर दिशा बतानेवाले
खंभे और ध्वजाएं गाड़ ले।
जिस मार्ग पर तू गई थी,
जिस पथ से तू गुजरी थी,
उस पर सोच-विचार कर।
ओ कुंआरी कन्या, वापस आ;
अपने इन नगरों में लौट आ।
22 ओ चंचल** पुत्री!
तू कब तक यहां-वहां भटकती रहेगी?
मैं-प्रभु ने पृथ्वी पर एक नई व्यवस्था की है:
नारी पुरुष की रक्षा करेगी+ ।'
23 इस्राएल का परमेश्वर, स्वर्गिक सेनाओं

*अथवा, 'जब मुझमें समझ आई' ** अथवा, 'विश्वासघातिनी' + मूल इब्रानी शब्द के अर्थ के सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद है: प्रणय-निवेदन करना, आवृत्त करना

31 : 13 यो 16 : 22 31 : 15 मत 2 : 18; उत 35 : 16-19

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

का प्रभु यों कहता है: 'जब मैं यहूदा प्रदेश के
निवासियों की समृद्धि लौटा दूंगा, तब वे पुन:
अपने नगरों में, यहूदा प्रदेश में यह कह कर
सियोन की प्रशंसा करेंगे:

"ओ पवित्र सियोन पर्वत,
धर्म से परिपूर्ण नगर यरूशलेम!
प्रभु तुझ पर आशिष की वर्षा करता रहे।"

24 'यहूदा प्रदेश के सब नगर-निवासी,
किसान और चरवाहे जो भेड़-बकरियों के
साथ यहां-वहां भटकते हैं, अब शांति से अपने
देश में निवास करेंगे। 25मैं थके-मांदे लोगों को
तृप्त करूंगा, और उदास लोगों को नवजीवन
दूंगा।'

26 तब मैं नींद से जाग उठा। मैंने इधर-उधर
देखा। मुझे अपनी नींद बहुत मीठी लगी।

नया विधान

27 प्रभु यों कहता है: 'देखो, समय आ रहा
है जब मैं इस्राएल और यहूदा प्रदेशों के मनुष्यों
और पशुओं की आबादी बढ़ाऊंगा। 28जैसे मैं
बीते वर्षों में उन को उखाड़ने, तोड़ने, उलट-
पुलट करने, उनका सर्वनाश करने, और उन पर
विपत्ति ढाहने की बात सोचता था, वैसे ही अब
उनका पुनर्निर्माण करने और उनको रोपने की
बात सोचूंगा। मुझ-प्रभु की यह वाणी है। 29उन
दिनों में लोग यह कहावत नहीं कहेंगे: "बाप-
दादों ने दुष्कर्म किए, इसलिए उनकी सन्तान
को उनके दुष्कर्मों का फल भुगतना पड़ा।++"
30किन्तु अब पाप करनेवाला व्यक्ति स्वयं
अपने पाप का फल भोगेगा, और मरेगा। दुष्कर्म
करनेवाला अपने दुष्कर्म का फल पाएगा।'

31 प्रभु यों कहता है: 'देखो, समय आ रहा
है, जब मैं इस्राएल और यहूदा प्रदेशों की जनता
के साथ नया विधान स्थापित करूंगा। 32यह
विधान उस विधान के समान नहीं होगा, जो मैंने
उनके पूर्वजों से स्थापित किया था। जब मैं
उनका हाथ पकड़ कर उन्हें मिस्र देश से
निकाल लाया था, तब मैंने उनसे विधान
स्थापित किया था। किन्तु उन्होंने मेरे विधान
को तोड़ डाला था, यद्यपि मैं उन का स्वामी था।
मुझ-प्रभु की यह वाणी है।'

33 प्रभु यों कहता है: 'उन दिनों के पश्चात्
मैं इस्राएली जनता से यह विधान स्थापित
करूंगा: मैं उनके मन में अपनी व्यवस्था
प्रतिष्ठित करूंगा, और मैं उसको उनके हृदय पर
लिखूंगा। मैं उनका परमेश्वर होऊंगा, और वे
मेरे निज लोग होंगे। 34तब किसी भी व्यक्ति को
अपने पड़ोसी अथवा भाई-बन्धु को यह
सिखाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी कि "प्रभु
को जानो," क्योंकि छोटे-बड़े सब लोग स्वयं
मुझे जानेंगे। मैं उनके अधर्म को क्षमा कर दूंगा,
और उनका पाप फिर स्मरण नहीं करूंगा।
मुझ-प्रभु की यह वाणी है।'

35 प्रभु, जिसने दिन में प्रकाश देने के लिए
सूर्य को नियुक्त किया है,
जिस ने रात में रोशनी के लिए
चन्द्रमा और तारों को स्थित किया है;
जो समुद्र को उत्तेजित करता है
और लहरें गरजने लगती हैं;
और जिसका यह नाम है,
"स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु,"
वह यों कहता है,

36 'क्या यह संभव है
कि सूर्य, चन्द्रमा और तारों के
ये निश्चित नियम
मेरे सम्मुख से टल जाएं?
यदि यह संभव है तो इस्राएल के वंशज भी
मेरे सामने से एक राष्ट्र के रूप में
सदा के लिए विलुप्त हो जाएंगे।'

37 प्रभु यों कहता है,
'ऊपर, आकाश को यदि नापना संभव है,
अथवा यदि नीचे, पृथ्वी की नींव का पता
लगाया जा सकता है,
तो मैं इस्राएल के सब वंशजों को
उन के समस्त दुष्कर्मों के कारण त्याग दूंगा।

++ अथवा, 'पूर्वजों ने खट्टे अंगूर खाए, इसलिए उनकी सन्तान के दांत खट्टे हो गए।'

31 : 27 यहेज 18 : 2 **31 : 31** यिर 32 : 40; मत 26 : 28; 1 कुर 11 : 25; 2 कुर 3 : 6; इब्र 8 : 8 **31 : 33** यिर
24 : 7; इब्र 10 : 16; 2 कुर 3 : 3 **31 : 35** उत 1 : 16; यश 51 : 15

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मुझ-प्रभु की यह वाणी है।'
38 प्रभु कहता है, 'देखो, समय आ रहा है,
जब यह नगर हननएल बुर्ज से कोना-द्वार तक
मेरे लिए पुनर्निर्मित होगा। 39उस के माप की
डोरी सीधे आगे जाएगी, वह गारेब पहाड़ी पर
पहुंचेगी, और वहां से घूम कर गोआ तक
जाएगी। 40सम्पूर्ण घाटी, जहां लाशें और राख
के ढेर पड़े हैं, तथा किद्रोन नाले तक के सब
खेत और पूर्व के अश्व-द्वार के कोने तक की
समस्त भूमि मुझ-प्रभु के लिए पवित्र मानी
जाएगी।

'यह नगर फिर कभी ध्वस्त नहीं होगा, और
न यह ढाया ही जाएगा।'

नबी यिर्मयाह एक खेत खरीदते हैं

32 यहूदा प्रदेश के राजा सिदकियाह के
राज्य का दसवां वर्ष था, और बेबीलोन
में राजा नबूकदनेस्सर के शासन का अठारहवां
वर्ष था। 2उस समय बेबीलोन के राजा की सेना
यरूशलेम नगर की घेराबन्दी कर रही थी, और
नबी यिर्मयाह यहूदा के राजा के राजमहल में,
अंगरक्षकों के आंगन में बन्दी थे; 3क्योंकि राजा
सिदकियाह ने उनको गिरफ्तार कर लिया था।
उसने उनपर यह आरोप लगाया था, 'नबी, तुम
नबूवत में यह क्यों कहते हो कि प्रभु यों कहता
है: "प्रभु इस नगर को बेबीलोन के राजा के
हाथ में सौंप रहा है, और वह इस पर अधिकार
कर लेगा"? 4तब मैं, यहूदा प्रदेश का राजा,
कसदी सेना के हाथ से बच कर भाग नहीं
सकूंगा, और बेबीलोन के राजा के हाथ में सौंपा
जाऊंगा। मैं और वह आमने-सामने बातें करेंगे,
और एक-दूसरे को अपनी आंखों से देखेंगे।
5वह मुझे बन्दी बनाकर बेबीलोन ले जाएगा।
जब तक प्रभु मेरी सुधि न लेगा, मैं वहां बन्दी
रहूंगा। तुम यह भी कहते हो, "यह प्रभु की
वाणी है"। यद्यपि मैं कसदी सेना के आक्रमण
का मुकाबला करूंगा तो भी मुझे सफलता नहीं
मिलेगी?'

तब प्रभु की ओर से यह सन्देश नबी
यिर्मयाह को मिला। 6नबी यिर्मयाह ने कहा,
'प्रभु का यह वचन मुझे मिला है: 7"देख, तेरे
चाचा शल्लूम का पुत्र हनमएल तेरे पास आएगा
और तुझ से निवेदन करेगा कि तू उसके
अनातोत नगर के खेत को खरीद ले, क्योंकि
मोल ले कर सम्पत्ति को छुड़ाने का अधिकार
तेरा ही है।"

8 'प्रभु के वचन के अनुसार मेरा चचेरा भाई
हनमएल मेरे पास आया। वह मुझ से राजमहल
के अंगरक्षकों के आंगन में मिला। उस ने मुझ
से कहा, "आप बिन्यामिन कुल-क्षेत्र के नगर
अनातोत के मेरे खेत को खरीद लीजिए;
क्योंकि उस को मोल ले कर सम्पत्ति को छुड़ाने
का अधिकार केवल आप का है। आप मेरे खेत
को अपने लिए खरीद लीजिए।" तब मुझे
निश्चय हो गया कि यह प्रभु का ही सन्देश था।

9 'अत: मैंने अपने चचेरे भाई हनमएल से
अनातोत नगर का खेत खरीद लिया, और उस
को चांदी के सत्रह सिक्के तौल कर दे दिए।
10मैंने दस्तावेज पर हस्ताक्षर कर दिए और
गवाहों के भी हस्ताक्षर करा लिये। उस पर मुहर
लगा दी, और तराजू पर चांदी के सिक्के तौल
कर उसे दे दिए।

11 'खरीद के दस्तावेज की दो प्रतियां थीं।
उन में खरीद की शर्तें और नियम लिखे हुए थे।
एक दस्तावेज मुहरबन्द था, और दूसरा खुला
हुआ। 12दस्तावेज की एक प्रति मैंने बारूक को
दे दी। बारूक के पिता का नाम नेरियाह, और
दादा का नाम महसेयाह था। उस समय
राजमहल के अंगरक्षकों के आंगन में मेरा
चचेरा भाई हनमएल, दस्तावेज पर हस्ताक्षर
करनेवाले गवाह, तथा अन्य यहूदा-वासी
उपस्थित थे। 13इन सब लोगों के सामने मैंने
बारूक को यह आदेश दिया, 14"इस्राएल का
परमेश्वर, स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु यों कहता
है: यह मुहरबन्द दस्तावेज तथा यह खुला हुआ
दस्तावेज—ये दोनों ले, और इन को मिट्टी के
घड़े में रख दे ताकि ये बहुत समय तक सुरक्षित
रहें। 15इस्राएल का परमेश्वर, स्वर्गिक सेनाओं
का प्रभु, यों कहता है: इस देश के निवासी

---

31 : 40 प्रक 22 : 3 **32 : 1** 2 रा 25 : 1

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अपने ही मकानों, खेतों और अंगूर-उद्यानों को
फिर खरीदेंगे।''
16 'बारूक बेन-नेरियाह को दस्तावेज देने
के बाद मैंने इन शब्दों में प्रभु से प्रार्थना की:
17आह! मेरे स्वामी, मेरे प्रभु! तूने ही अपने
महान सामर्थ्य से, अपने भुजबल से आकाश
और पृथ्वी की रचना की है। तेरे लिए कुछ भी
असंभव नहीं है। 18तू लाखों पर करुणा करता
है, फिर भी तू बाप-दादों के दुष्कर्मों का
प्रतिफल उनके मरने के बाद उनकी संतान को
देता है। हे महान और सर्वशक्तिमान परमेश्वर,
तेरा नाम ''स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु'' है। 19तू
महान परामर्शदाता है। तू महान आश्चर्यपूर्ण
कामों को करता है। तू सब मनुष्यों के आचरण
पर दृष्टि रखता है। तू प्रत्येक मनुष्य को उस के
आचरण के अनुसार, उसके कामों के अनुरूप
फल देता है। 20तूने मिस्र देश में आश्चर्यपूर्ण
कार्य किये थे, और अद्भुत चिह्न दिखाये थे,
जो आज भी तू इस्राएली राष्ट्र में तथा समस्त
मानव-जाति के मध्य कर रहा है। यों तूने अपना
नाम ऐसा प्रतिष्ठित किया जो आज तक बना है।
21तूने अपने महान सामर्थ्य और भुजबल से
मिस्र देश में आश्चर्यपूर्ण कार्य किए, अद्भुत
चिह्न दिखाए तथा महाआतंकपूर्ण काम किए
और अपने निज लोग इस्राएलियों को वहां से
निकाला था। 22तूने उनको यह देश दिया था।
तूने इस्राएलियों के पूर्वजों से यह शपथ भी खाई
थी कि तू उन को ऐसा देश देगा, जहां दूध और
शहद की नदियां बहती हैं। 23वे मिस्र देश से
इस देश में आए। उन्होंने इस देश में प्रवेश
किया, और इस पर अधिकार कर लिया।
'किन्तु उन्होंने तेरी वाणी नहीं सुनी, और
तेरी व्यवस्था के अनुसार आचरण नहीं किया।
उन्होंने वे कार्य नहीं किये जिनको करने का
आदेश तूने उनको दिया था। अत: तूने यह
विपत्ति उन पर ढाही।
24 'प्रभु, नगर की यह मोर्चाबन्दी देख!
शत्रु-सैनिक नगर पर कब्जा करने के लिए
दीवारों में चढ़ रहे हैं। तलवार, अकाल और
महामारी के कारण यह नगर कसदी सेना के हाथ
में पड़ गया है। कसदी सैनिक नगर-वासियों
से लड़ रहे हैं। प्रभु, जो तूने कहा था, वह पूरा
हो रहा है। और यह तू स्वयं देख रहा है।
25 'तूने नगर को कसदी सेना के हाथ में
सौंप दिया है। फिर भी तूने, हे मेरे स्वामी, हे
मेरे प्रभु, मुझ से कहा कि मैं चांदी के सिक्कों
से खेत मोल लूं और दस्तावेज पर गवाहों के
हस्ताक्षर कराऊं।'

प्रभु का उत्तर

26 तब प्रभु ने यिर्मयाह को उत्तर दिया,
27 'देख, मैं समस्त प्राणियों का प्रभु परमेश्वर
हूं। क्या मेरे लिए कोई काम कठिन है?
28इसलिए मैं-प्रभु तुझ से यों कहता हूं: मैं यह
नगर कसदी सेना के हाथ में, बेबीलोन के राजा
नबूकदनेस्सर के हाथ में सौंप रहा हूं और वह
इस पर अधिकार कर लेगा। 29इस नगर पर
आक्रमण करनेवाले कसदी सैनिक नगर में
प्रवेश करेंगे, और इस में आग लगा देंगे। वे उन
मकानों को भस्म कर देंगे जिनकी छतों पर
बअल देवता के लिए धूप-द्रव्य जलाए गए थे,
अन्य देवी-देवताओं को पेयबलि अर्पित की
गई थी, और यों मुझे क्रोध के लिए उकसाया
गया था।
30'इस्राएल और यहूदा के वंशजों ने अपने
बचपन से मेरी दृष्टि में दुष्कर्म के अतिरिक्त
कुछ नहीं किया। मैं-प्रभु कहता हूं: इस्राएली
सदा से अपने हाथों से ऐसे काम करते आए हैं,
जो मेरी दृष्टि में पाप हैं, और यों उन्होंने मेरे क्रोध
को भड़काया है।
31 'यिर्मयाह! यह नगर जब से आबाद
हुआ है तब से आज तक मेरे क्रोध और रोष
को भड़काता आया है। अत: मैं इस को अपने
सामने से हटा दूंगा। 32इस्राएल और यहूदा प्रदेश
की जनता ने, न केवल जनता ने, बल्कि उन के
राजाओं, उच्चाधिकारियों, पुरोहितों, नबियों ने,
यहूदा प्रदेश के निवासियों और यरूशलेम के
नागरिकों ने ऐसे दुष्कर्म किए हैं, जिन के कारण
मेरी क्रोधाग्नि भड़क उठी है। 33वे मेरी ओर

32 : 19 भज 33 : 13-15 **32 : 22** नि 3 : 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उन्मुख नहीं हुए, बल्कि मुझ से विमुख हो गए।
यद्यपि मैंने उन को बार-बार समझाया, तो भी
उन्होंने मेरी वाणी नहीं सुनी, और मेरी शिक्षा
स्वीकार नहीं की।

34 'जो मन्दिर मेरे नाम से प्रसिद्ध है, उसमें
उन्होंने घृणास्पद वस्तु को प्रतिष्ठित किया, और
यों उसको अपवित्र कर दिया। [35]उन्होंने मोलेक
देवता को अपने पुत्र-पुत्रियां बलि चढ़ाने के
लिए बेन-हिन्नोम की घाटी में पहाड़ी टीलों पर
बअल देवता के लिए वेदियां+ बनायी हैं। क्या
मैंने उन को यह घृणास्पद कार्य करने की आज्ञा
दी थी? क्या ऐसा विचार मेरे मस्तिष्क में आ
सकता है कि वे ऐसा घृणास्पद कार्य करें, और
यहूदा प्रदेश की जनता को पाप-कर्म के लिए
फुसलाएं?

36 'इसलिए अब इस्राएल का प्रभु परमेश्वर
इस नगर के विषय में यों कहता है: तुम लोग
कहते हो कि तलवार, अकाल और महामारी
के कारण यह नगर बेबीलोन के राजा के हाथ
में सौंप दिया गया है। [37]किन्तु देखो, मैं-प्रभु
इस्राएली लोगों को उन सब देशों से वापस
लाऊंगा, जहां मैंने क्रोध, रोष और महा कोप
में आ कर उन को हांक दिया था। निस्सन्देह
मैं उनको वापस लाऊंगा, और वे मेरे कारण
यहां निश्चिन्त निवास करेंगे। [38]वे मेरे निज
लोग बनेंगे और मैं उनका परमेश्वर होऊंगा।
[39]मैं उन को एक हृदय और एक मार्ग दूंगा कि
वे अपने, और अपने बाद अपने बच्चों के,
कल्याण के लिए सदा-सर्वदा मेरी भक्ति करते
रहें।

40 'मैं उन के साथ शाश्वत विधान स्थापित
करूंगा ताकि मैं उनकी भलाई निरन्तर करता
रहूं। मैं उनके हृदय में अपने लिए भक्ति की
भावना डालूंगा जिससे वे मेरी ओर से मुंह न
मोड़ लें।

41 'उनकी भलाई करने में मुझे सदा आनन्द
आएगा, और मैं अपने सम्पूर्ण हृदय और सम्पूर्ण
प्राण से, पूर्ण सच्चाई से इस देश में उनको रोपूंगा।

42 'मैं-प्रभु यों कहता हूं: जैसी मैंने इन
लोगों पर महाविपत्ति ढाही है, वैसी ही मैं
अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार इन की अपार भलाई
भी करूंगा। [43]तुम कहते हो कि यह देश कसदी
सेना के हाथ में प्रभु ने सौंप दिया है, यह देश
निर्जन हो गया है, मनुष्य और पशु यहां दिखाई
नहीं देते; किन्तु मैं-प्रभु कहता हूं: इसी देश में
लोग खेतों को पुनः खरीदेंगे। [44]बिन्यामिन के
कुल-क्षेत्र में, यरूशलेम नगर के आसपास के
गांवों में, यहूदा प्रदेश के नगरों में, पहाड़ी क्षेत्र
के नगरों में, मैदानी इलाके के नगरों में, दक्षिणी
क्षेत्र के नगरों में लोग खेत मोल लेंगे, वे
दस्तावेज पर गवाहों के हस्ताक्षर कराएंगे और
मुहर लगाएंगे।

'मैं-प्रभु यह कहता हूं: मैं उनकी समृद्धि
लौटा दूंगा।'

यरूशलेम नगर का पुनर्निर्माण

33 जब नबी यिर्मयाह राजमहल के
अंगरक्षकों के आंगन में बन्दी थे तब
दूसरी बार प्रभु का यह सन्देश नबी यिर्मयाह को
मिला: [2]'प्रभु, जिसने पृथ्वी को बनाया, जिसने
उसको स्थिर करने के लिए आकार दिया,
जिसका नाम प्रभु है, वह यों कहता है:
[3]यिर्मयाह, मुझे पुकार और मैं तुझे उत्तर दूंगा।
मैं तुझे महान और रहस्यमय बातें बताऊंगा जो
तू नहीं जानता है। [4]इस्राएल का प्रभु परमेश्वर
इस नगर के मकानों तथा यहूदा प्रदेश के
राजभवनों के विषय में यों कहता है। ये शत्रु के
आक्रमण का तथा उनकी मोर्चाबन्दी का
सामना करने के लिए गिरा दिए गए थे। प्रभु
कहता है: [5]यद्यपि इस नगर के निवासी कसदी
सेना का मुकाबला करने के लिए आ रहे हैं,
किन्तु मैं इनकी लोथों से इस नगर को पाट दूंगा।
मैंने इस नगर के दुष्कर्मों के कारण इससे मुंह
फेर लिया है। अतः मैं अपने क्रोध और रोष से
इन लोगों को मार डालूंगा।

6 'किन्तु, यिर्मयाह! मैं इस प्रहार के बाद
इस नगर में औषधि और स्वास्थ्य लाऊंगा, और

+ अथवा, 'पूजा-स्थल'

32 : 34 यिर 7 : 30 **32 : 35** 2 रा 23 : 10; लेव 18 : 21 **32 : 38-40** यिर 31 : 31-34 **32 : 41** व्य 30 : 9

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
इस के निवासियों को स्वस्थ कर दूंगा। मैं
इनको सुरक्षा और समृद्धि प्रदान करूंगा। [7]मैं
यहूदा और इस्राएल प्रदेशों की जनता को फिर
समृद्धिशाली बना दूंगा, जैसी वह पहले थी। मैं
उसका पुन: निर्माण करूंगा। [8]यहूदा और इस्राएल
प्रदेशों के लोगों ने मेरे प्रति अनेक पाप किए थे;
किन्तु मैं उनके पाप-कलंक को धो दूंगा।
उन्होंने मेरे प्रति विद्रोह किया था, पाप किया
था, तो भी मैं उनका पाप क्षमा कर दूंगा। [9]यह
नगर पृथ्वी के सब राष्ट्रों में मेरे लिए एक
आनन्ददायक नाम, स्तुति और महिमा का स्थान
बन जाएगा। जो भलाई मैं इस नगर के रहने
वालों के लिए करूंगा, उसके विषय में पृथ्वी
की सब जातियां सुनेंगी, और उनसे भयभीत
होंगी। मैं इस नगर का कल्याण करूंगा और इस
को समृद्ध बनाऊँगा। इसके कल्याण और
समृद्धि को देख कर विश्व की जातियां डर से
कांपेंगी।'

10 प्रभु यों कहता है: 'इस स्थान में, जिसके
विषय में तुम कहते हो कि यह निर्जन है, यहां
मनुष्य और पशु भी नहीं रहते; यहूदा प्रदेश के
नगरों में, उजाड़ पड़ी यरूशलेम की गलियों में
जहां मनुष्य, पशु, और नागरिक दिखाई नहीं
देते, [11]वहां आनन्द-उल्लास का स्वर फिर
सुनाई देगा, दूल्हा-दुल्हिन के हास-परिहास
की आवाज सुनाई देगी। जब आराधक प्रभु के
भवन में स्तुति-बलि चढ़ाने के लिए आएंगे तब
वे आनन्द से यह गीत गाएंगे:

"स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु को धन्यवाद दो,
क्योंकि प्रभु भला है,
उसकी करुणा सदा बनी रहती है।"

मैं-प्रभु कहता हूं: मैं पहले के समान इस
देश की दशा समृद्ध कर दूंगा।'

12 स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु यों कहता है:
'यह स्थान उजाड़ पड़ा है। यहां न मनुष्य रहते
हैं, और न पशु। मैं इस स्थान को, इस प्रदेश के
सब नगरों को आबाद कर दूंगा। यहां चरवाहे
बसेंगे, और वे अपने रेवड़ को चराएंगे।
[13]पहाड़ी क्षेत्र के नगरों में, मैदानी क्षेत्र के नगरों
में, दक्षिण क्षेत्र के नगरों में, बिन्यामिन कुल-
क्षेत्र के नगरों में तथा यरूशलेम के आसपास
के गांवों में भेड़-बकरियां फिर चराई जाएंगी;
वे चरवाहे के हाथ के नीचे से गुजरेंगी, और वह
उनको गिनेगा।' प्रभु की यह वाणी है।

14 प्रभु यों कहता है, 'देखो, समय आ रहा
है, जब मैं अपने वचन को पूर्ण करूंगा, जो मैंने
इस्राएल और यहूदा प्रदेशों की जनता को दिया
था। [15]मैं उन दिनों में, उस समय दाऊद के
वंश-वृक्ष में एक शाखा निकालूंगा, और वह
धार्मिक पुरुष होगा। वह अपने देश में न्याय
और धर्म से राज्य करेगा। [16]उस के समय में
यहूदा प्रदेश सुरक्षित रहेगा, और यरूशलेम
नगर निश्चिंत निवास करेगा। उसका यह नाम
होगा, "प्रभु हमारा धर्म है।"

17 'मैं-प्रभु यों कहता हूँ: इस्राएली जनता
पर शासन करने के लिए दाऊद के वंश में
उत्तराधिकारी का कभी अभाव न होगा। [18]लेवी
कुल में भी पुरुष पुरोहिताई के लिए स्वयं को
अर्पित करते रहेंगे, और वे मेरे सम्मुख अग्निबलि,
अन्नबलि और पशुबलि सदा चढ़ाते रहेंगे।'

19 प्रभु का यह सन्देश यिर्मयाह को मिला।
प्रभु ने कहा, [20]'प्रभु यों कहता है: मैंने रात और
दिन के साथ अपना विधान स्थापित किया है।
यदि तुम उनके साथ मेरे विधान को तोड़ सको
कि रात और दिन अपने निश्चित् समय पर न
हों, [21]तो मेरा यह विधान भी टूट सकता है, जो
मैंने अपने सेवक दाऊद के साथ स्थापित किया
था। मैंने उसको वचन दिया था कि उसके
सिंहासन पर बैठने के लिए उस के वंश में
उत्तराधिकारी उत्पन्न होते रहेंगे। मैंने लेवी कुल
से भी विधान स्थापित किया था। लेवी कुल में
उत्पन्न पुरोहित ही मेरे सेवक होंगे। [22]जैसे आकाश
के तारों की और समुद्र-तट के रेतकणों की
गणना नहीं हो सकती है, वैसे मैं अपने सेवक

33: 8 यहेज 36 : 25; इब्र 9 : 13 **33 : 11** 1 इति 16 : 8; 2 इति 5 : 13 **33 : 14-15** यिर 23 : 5; यश 4 : 2; जक 3 : 8 **33 : 17** 2 शम 7 : 12-16 **33 : 18** गण 3 : 5-10; 1 पत 2 : 5,9; प्रक 1 : 6 **33 : 20** भज 89 : 37 **33 : 22** उत 15 : 5

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दाऊद के वंशजों को तथा मेरी सेवा करनेवाले
लेवीय पुरोहितों को अगणित बनाऊंगा।'
23 प्रभु का यह सन्देश यिर्मयाह को मिला।
प्रभु ने कहा, 24 'यिर्मयाह, क्या तूने ध्यान दिया
कि ये लोग मेरे बारे में क्या कह रहे हैं? ये कहते
हैं कि प्रभु ने जिन दो परिवारों को चुना था,
उनको त्याग दिया है। यों ये मेरे निज लोगों को
अपनी दृष्टि में तुच्छ समझने लगे हैं कि अब वे
राष्ट्र नहीं रहे; एक कौम के रूप में मेरे निज
लोगों का अस्तित्व समाप्त हो गया। 25अत: मैं
कहता हूं: जैसे रात और दिन के विषय में मेरा
विधान अटल है, जैसे आकाश और पृथ्वी के
सम्बन्ध में मेरे नियम अपरिवर्तनीय हैं, 26वैसे
ही याकूब के वंशजों और मेरे सेवक दाऊद के
वंशजों के साथ स्थापित मेरा विधान अटल है।
मैं उनको नहीं त्यागूंगा; दाऊद का ही एक
वंशज अब्राहम, इसहाक और याकूब की संतान
पर राज्य करेगा। निस्सन्देह मैं उनको पुन:
समृद्ध करूंगा, और उन पर दया करूंगा।'

राजा सिदकियाह को नबी यिर्मयाह की चेतावनी

34 जब बेबीलोन का राजा नबूकदनेस्सर
अपनी समस्त सेना तथा अपने अधीन
सब राज्यों की सेनाओं तथा अपने सब लोगों
के साथ यहूदा प्रदेश की राजधानी यरूशलेम
एवं उसके सब नगरों के विरुद्ध लड़ रहा था,
तब प्रभु का यह सन्देश यिर्मयाह को मिला। प्रभु
ने कहा, 2 'इस्राएल का प्रभु परमेश्वर यों कहता
है: यिर्मयाह, तू यहूदा प्रदेश के राजा सिदकियाह
के पास जा, और उस से कह, "प्रभु यों कहता
है: देख, मैं यह नगर बेबीलोन के राजा के हाथ
में सौंप रहा हूं, और वह आग में इसको भस्म
कर देगा। 3तू उस के हाथ से बच नहीं सकेगा,
वरन् निश्चय ही पकड़ा जाएगा और उसके
हाथ में सौंप दिया जाएगा। तू उसको अपनी
आंखों से प्रत्यक्ष देखेगा, और उससे आमने-
सामने बातें करेगा। तू निस्सन्देह बेबीलोन नगर
जाएगा।
4 "ओ यहूदा प्रदेश के राजा सिदकियाह!
फिर भी, तू प्रभु का यह सन्देश सुन। तेरे विषय
में प्रभु यह कहता है: तू तलवार से नहीं मरेगा।
5तेरी मृत्यु शान्ति से होगी। जैसे तेरे मृत पूर्वजों
के लिए, जो तुझ से पहले राजा हुए थे, लोगों
ने सुगन्धित धूप-द्रव्य जलाए थे वैसे ही तेरी
मृत्यु पर लोग सुगंधित धूप-द्रव्य जलाएंगे। वे
तेरे लिए शोक मनाएंगे, और कहेंगे, 'आह
स्वामी! आह महाराज!' मैं-प्रभु ने यह कहा
है। यही मेरी वाणी है।" '
6 नबी यिर्मयाह ने प्रभु की ये बातें यहूदा
प्रदेश के राजा सिदकियाह से यरूशलेम में
कहीं। 7उस समय बेबीलोन के राजा की सेना
यरूशलेम तथा यहूदा प्रदेश के बचे हुए दो
नगरों — लाकीश और अजेका से युद्ध कर रही
थी। यहूदा प्रदेश के किलाबन्द नगरों में से
केवल ये ही बचे हुए थे।

दास-प्रथा के विरोध में प्रभु का वचन

8 यहूदा प्रदेश के राजा सिदकियाह ने
यरूशलेम में अपनी प्रजा से यह समझौता
किया* कि उसकी प्रजा के सब लोग दास-प्रथा
को समाप्त कर दें, 9वे अपने-अपने इब्रानी
गुलामों को — स्त्री और पुरुषों दोनों को —
स्वतन्त्र कर दें ताकि भविष्य में कोई भी व्यक्ति
अपने यहूदी जाति-भाई अथवा बहिन को
गुलाम बना कर न रखे। 10उच्चाधिकारियों तथा
सब लोगों ने राजा सिदकियाह के आदेश का
पालन किया। उन्होंने राजा से किए गए
समझौते के अनुसार अपने-अपने दास अथवा
दासी को मुक्त कर दिया, कि गुलामी के बन्धन
में पुन: न जकड़ जाए। यों उन्होंने राजा के
आदेश का पालन किया और गुलामों को
आजाद कर दिया।
11 किन्तु कुछ समय पश्चात् उच्चाधिकारी
तथा वे लोग, जिनके पास गुलाम थे, समझौते
से मुकर गए। जिन दासों और दासियों को
उन्होंने छोड़ दिया था, उनको फिर पकड़
लिया, और गुलाम बनाकर वापस ले गए।
12तब प्रभु का यह सन्देश यिर्मयाह को मिला:
13इस्राएल का प्रभु परमेश्वर यों कहता है: 'जब
मैंने तुम्हारे पूर्वजों को मिस्र देश से बाहर

* अथवा, 'विधान स्थापित किया'।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

निकाला था, जब मैंने उनको गुलामी के बन्धन
से मुक्त किया था, तब मैंने उन से यह विधान
स्थापित किया था। मैंने उनसे यह कहा था:
14 ''प्रत्येक छ:+ वर्ष के पश्चात् तुम अपने
जाति-बन्धु इब्रानी गुलाम को मुक्त कर देना जो
तुम्हें बेचा गया है, और जो छ: वर्ष तक तुम्हारी
गुलामी कर चुका है! तुम उसको गुलामी के
बन्धन से अवश्य मुक्त कर देना।'' किन्तु
तुम्हारे पूर्वजों ने मेरी बात नहीं सुनी। उन्होंने मेरे
आदेश पर ध्यान नहीं दिया।

15 'तुम ने अभी-अभी पश्चात्ताप किया
था। तुम ने अपने जाति-बन्धु को मुक्त करने
की घोषणा की। जो मन्दिर मेरे नाम से प्रसिद्ध
है, उसमें तुमने मेरे सम्मुख समझौता किया कि
तुम अपने-अपने दास-दासी को मुक्त कर
दोगे। तुम्हारा यह कार्य मेरी दृष्टि में उचित था।

16 'किन्तु तुम अपने समझौते से मुकर गए।
तुमने मेरे पवित्र नाम को अपवित्र कर दिया।
जो दास-दासी को उस की इच्छा के अनुसार
तुमने मुक्त कर दिया था, उस को फिर पकड़
लिया, और गुलाम बना कर वापस ले आए।
17 इसलिए मैं-प्रभु यह कहता हूं: तुमने मेरे
आदेश का पालन नहीं किया, और यों अपने
जाति-बन्धु को मुक्त करने की घोषणा नहीं
की। अत: देखो, मैं घोषणा करता हूं कि तुम
तलवार, महामारी और अकाल के बन्धन में
फंस जाओगे** । मैं-प्रभु यह कहता हूं: मैं
पृथ्वी के समस्त राज्यों में तुम्हें आतंक का
कारण बना दूंगा। 18 जिन्होंने मेरे समझौते को
भंग किया, जिन्होंने उस समझौते की शर्तों का
पालन नहीं किया, जो उन्होंने मेरे सम्मुख किया
था, उन को मैं उसी बछड़े के समान दो टुकड़े
कर दूंगा जिसके उन्होंने समझौते के अवसर
पर दो टुकड़े किए थे, और टुकड़ों के बीच से
गुजरे थे। 19 यहूदा प्रदेश के और यरूशलेम
नगर के उच्चाधिकारियों और खजांचियों++,
पुरोहितों और प्रदेश के प्रतिष्ठित नागरिकों ने
समझौते की इस विधि में भाग लिया है** । 20 अत:
मैं उनको उन के शत्रुओं के हाथ में, उनके प्राण
के ग्राहकों के हाथ में सौंप दूंगा। उनकी लोथें
आकाश के पक्षियों और पृथ्वी के पशुओं का
आहार बन जाएंगी। 21 मैं यहूदा प्रदेश के राजा
सिदकियाह और उसके उच्चाधिकारियों को
उनके शत्रुओं के हाथ में, उनके प्राण के ग्राहकों
के हाथ में, अर्थात् बेबीलोन के राजा की सेना
के हाथ में सौंप दूंगा जो तुम्हारे नगर की
मोर्चाबन्दी उठाकर चली गयी है। 22 मैं उनको
आदेश दूंगा, और वे पुन: इस नगर को लौटेंगे।
वे इस पर आक्रमण करेंगे, और इस पर
अधिकार कर लेंगे। वे इस को आग में भस्म
कर देंगे। सुनो, मैं यहूदा प्रदेश के नगरों को
उजाड़ दूंगा, वे निर्जन हो जाएंगे।'

रेकाब के वंशजों का उदाहरण

35 यहूदा प्रदेश के राजा यहोयाकीम बेन-
योशियाह के राज्य-काल में प्रभु का
यह सन्देश यिर्मयाह को मिला। प्रभु ने मुझसे
कहा, 2 'जहां रेकाब के वंशज रहते हैं, वहां
जा, और उनसे बात कर। तू उनको मेरे भवन
के एक कमरे में लाना, और उनको मदिरा पीने
के लिए कहना।'

3 अत: मैं गया और इन लोगों को अपने
साथ ले आया: याजन्याह, जिस के दादा का
नाम हबस्सिन्याह, और पिता का नाम यिर्मयाह
था, उस के सब भाई तथा उसके सब पुत्र।
वस्तुत: रेकाब के सब वंशजों को मैं ले आया।
4 मैं उनको प्रभु के भवन के एक कमरे में ले
गया। इस कमरे में परमेश्वर के जन, नबी
हानान बेन-यिग्दल्याह के पुत्र रहते थे। इसी
कमरे के पास उच्चाधिकारी का कक्ष था। इस
कमरे के ऊपर राजभवन के आंगन के पहरेदार
मासेयाह बेन-शल्लूम का कमरा था।

5 मैंने रेकाबियों के सम्मुख शराब के घड़े
और प्याले रख दिए, और उनसे कहा, 'शराब
पीओ!'

+ मूल में 'सात', यूनानी अनुवाद में 'छह'। ** अक्षरश: 'तलवार, महामारी और अकाल के लिए ही तुम्हें मुक्त करूंगा'
++ अथवा, 'कंचुकी,' 'खोजे' ** शब्दश:, 'बछड़े के टुकड़ों के बीच से होकर निकले'

34 : 14 नि 21 : 2 **34 : 20** यिर 7 : 33 **35 : 2** 2 रा 10 : 15

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

6 रेकाबियों ने कहा, 'हम शराब नहीं
पीएंगे; क्योंकि हमारे सम्प्रदाय के प्रवर्तक
योनादाब बेन-रेकाब ने हमें यह आज्ञा दी है:
''तुम और तुम्हारे पुत्र शराब कभी मत पीना।
7न तो तुम स्थायी रूप से रहने के लिए घर
बनाना, और न खेती करने के लिए बोना। तुम
अंगूर-उद्यान मत लगाना, और न उनके स्वामी
बनने के लिए उनको खरीदना। तुम हमेशा
तम्बुओं में रहना ताकि तुम इस देश में, जहां तुम
प्रवासी हो, बहुत समय तक रह सको।''
8अत: हमने अपने सम्प्रदाय के प्रवर्तक योनादाब
बेन-रेकाब की आज्ञा का सदा पालन किया है,
हमने, हमारी पत्नियों, पुत्रों और पुत्रियों ने
अपने जीवन में कभी शराब नहीं पी। 9हमने
रहने के लिए मकान नहीं बनाए। न हमारे पास
अंगूर-उद्यान है, और न खेत-खलियान। 10हम
तम्बुओं में रहते हैं, और यों अपने कुल-पिता
योनादाब बेन-रेकाब की आज्ञा का पालन करते
हैं। जो कार्य करने को उन्होंने हम से कहा है,
वह हम अब तक करते हैं। 11जब बेबीलोन
के राजा नबूकदनेस्सर ने इस देश पर आक्रमण
किया, तब हमने सोचा : चलो, हम यरूशलेम
नगर चलें, क्योंकि कसदी सेना और सीरियाई
सेना का डर हम पर छा गया है। तब से हम
यरूशलेम नगर में रह रहे हैं।'

12 तब प्रभु का यह सन्देश यिर्मयाह को
मिला: 13 'इस्राएल का परमेश्वर, स्वर्गिक
सेनाओं का प्रभु यों कहता है: जा, यहूदा प्रदेश
की जनता और यरूशलेम नगर के निवासियों
से यह कह: क्या तुम मेरी शिक्षाओं पर ध्यान
नहीं दोगे? मेरे वचन को नहीं सुनोगे ? मुझ-
प्रभु की यह वाणी है। 14देखो, योनादाब बेन-
रेकाब ने अपने अनुयायियों को शराब न पीने
का आदेश दिया था, और उसके सम्प्रदाय के
सब लोगों ने अब तक उसके आदेश का पालन
किया। किन्तु मैं बार-बार तुमसे बोलता हूं,
और तुम मेरे वचनों को नहीं सुनते हो। 15मैंने
बार-बार तुम्हारे पास अपने सेवक नबियों को
भेजा, और उनके माध्यम से मैंने तुमसे कहा,
''प्रत्येक व्यक्ति अपने बुरे आचरण को छोड़
दे, अपने व्यवहार को सुधारे, अन्य जाति के
देवताओं का अनुसरण न करे, उनकी पूजा न
करे। तब तुम इस देश में निश्चिन्त निवास
करोगे, जो मैंने तुम्हारे पूर्वजों को, और तुम्हें
दिया है।'' लेकिन तुमने मेरी बातों पर ध्यान
नहीं दिया, एक कान से सुन कर दूसरे कान से
निकाल दिया। 16योनादाब के वंशजों, रेकाब
के अनुयायियों ने अपने सम्प्रदाय के प्रवर्तक के
आदेश का पालन किया, किन्तु मेरे निज लोगों
ने मेरी आज्ञा नहीं मानी। 17अत: मैं, इस्राएल
का परमेश्वर, स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु परमेश्वर,
यों कहता हूं: जिन विपत्तियों की घोषणा मैंने
की थी, वे सब मैं यहूदा प्रदेश की जनता और
यरूशलेम के निवासियों पर ला रहा हूं। मैंने इन
लोगों को अपना सन्देश सुनाया था, लेकिन
इन्होंने नहीं सुना। मैंने इन को पुकारा, किन्तु
इन्होंने मेरी पुकार का उत्तर नहीं दिया।'

18 यिर्मयाह ने रेकाब-सम्प्रदाय के
अनुयायियों से कहा, 'इस्राएल का परमेश्वर,
स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु यों कहता है: तुमने
अपने सम्प्रदाय के प्रवर्तक योनादाब के आदेश
को माना, उसकी संविधियों का पालन किया
और उसकी आज्ञाओं के अनुसार आचरण
किया, 19अत: इस्राएल का परमेश्वर, स्वर्गिक
सेनाओं का प्रभु यों कहता है : योनादाब बेन-
रेकाब का वंश कभी निर्वंश नहीं होगा, उस के
पुत्र मेरे सम्मुख सदा सेवा करते रहेंगे।'

चर्मपत्रों पर नबी यिर्मयाह की नबूवत का लिखा जाना

36 यहूदा प्रदेश का राजा यहोयाकीम बेन-
योशियाह के राज्य-काल के चौथे वर्ष
में प्रभु का यह सन्देश यिर्मयाह को मिला:
2 'एक चर्मपत्र ले, और उस पर मेरे सब वचन
लिख, जो मैंने इस्राएल और यहूदा प्रदेश तथा
समस्त राष्ट्रों के विरुद्ध तेरे माध्यम से कहे हैं।
राजा योशियाह के राज्य-काल में जब मैंने
तुझसे बात करना आरंभ किया था, तब से लेकर
आज तक मैंने तुझे जो-जो सन्देश दिए हैं, उन

35 : 15 यिर 25 : 5-6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सब को लिख। 3जब मेरे ये वचन पढ़े जाएंगे
और यहूदा प्रदेश की जनता सुनेगी कि मैं उनका
क्या अनिष्ट करनेवाला हूं, तो हो सकता है कि
यहूदा प्रदेश का प्रत्येक व्यक्ति अपने दुराचरण
को छोड़ दे और पश्चात्ताप करे, और मैं उसके
अधर्म और पाप को क्षमा कर दूं।'
4 अतः यिर्मयाह ने बारूक बेन-नेरियाह को
बुलाया। यिर्मयाह ने प्रभु के सब वचन, जो
उसने यिर्मयाह से कहे थे, बारूक को बोल कर
लिखवाए। बारूक ने एक चर्मपत्र पर उन को
लिख लिया।
5 प्रभु के वचनों को लिखवाने के पश्चात्
यिर्मयाह ने बारूक को आदेश दिया। उन्होंने
कहा, 'मैं प्रभु के भवन में स्वयं नहीं जा सकता।
मेरे लिए वहां प्रवेश करना मना है। 6इसलिए
तुम जाओ। तुम उपवास दिवस पर प्रभु के भवन
में सब लोगों की उपस्थिति में इस पुस्तक में
से प्रभु के वचन पढ़ना, जो मैंने तुम्हें बोल कर
लिखवाए हैं। यह तुम यहूदा प्रदेश के नगरों से
आए सब लोगों के सामने भी पढ़ना। 7हो सकता
है कि वे प्रभु के ये वचन सुनकर अपना
दुराचरण छोड़ दें, वे पश्चात्ताप करें और प्रभु
से विनती करें। संभव है कि प्रभु उनकी विनती
सुने। प्रभु ने चेतावनी दी है कि वह उन लोगों
से बहुत क्रुद्ध है। उनके विरुद्ध उसकी क्रोधाग्नि
भड़क उठी है।'

बारूक प्रभु के वचन पढ़ कर सुनाता है

8 बारूक बेन-नेरियाह ने नबी यिर्मयाह के
आदेश का पालन किया। वह प्रभु के भवन में
गया, और उसने वहां लोगों के सामने पुस्तक
में से प्रभु के वचन पढ़े।
9 यहूदा प्रदेश के राजा यहोयाकीम बेन-
योशियाह के राज्य-काल के पांचवें वर्ष के
नौवें महीने में उपवास दिवस था। यहूदा प्रदेश
के नगरों से लोग यरूशलेम नगर में आए थे।
इन लोगों ने तथा यरूशलेम के रहनेवालों ने प्रभु
के सम्मुख घोषणा की कि वे सामूहिक रूप से
उपवास करेंगे। 10इन सब लोगों की उपस्थिति
में बारूक ने पुस्तक में से यिर्मयाह की नबूवत
पढ़ी। वह उस समय प्रभु के भवन में सचिव
गमर्याह बेन-शापान के कमरे में था। यह कमरा
उपरले आंगन में, प्रभु के भवन के नव प्रवेश-
द्वार के समीप था।

प्रभु के वचनों का जलाना जाना

11 गमर्याह बेन-शापान का एक पुत्र था —
मीकायाह। उसने पुस्तक में से प्रभु के ये वचन
सुने। 12वह अपने पिता के कमरे से निकला
और राजभवन में सचिव के कमरे में गया। वहां
राजा के ये उच्चाधिकारी बैठे थे: सचिव
एलीशामा, दलायाह बेन-शमायाह, एलनातान
बेन-अकबोर, गमर्याह बेन-शापान और
सिदकियाह बेन-हनन्याह। वहां अन्य
उच्चाधिकारी भी थे।
13 जो प्रभु के वचन बारूक ने चर्मपत्र में
से लोगों की उपस्थिति में पढ़े थे, और जो
मीकायाह ने सुने थे, वे सब उसने उच्चाधिकारियों
को बता दिए। 14अतः उन्होंने येहूदी नामक
एक व्यक्ति को बारूक के पास भेजा। येहूदी
नतन्याह का पुत्र था। उसके दादा का नाम
शेलेम्याह और परदादा का नाम कूशी था।
उच्चाधिकारियों ने उससे कहा, 'तुम बारूक
से यह कहना: जिस चर्मपत्र में से लोगों के
सामने तुमने पढ़ा है, उस को लेकर हमारे पास
आओ।'
अतः बारूक बेन-नेरियाह अपने हाथ में
चर्मपत्र लेकर उनके पास आया। 15उच्चाधिकारियों
ने उससे कहा, 'बैठो।' बारूक बैठ गया। 'पढ़ो,'
उन्होंने कहा। बारूक ने चर्मपत्र को पढ़ा।
16 जब उच्चाधिकारियों ने प्रभु के वचन सुने
तो वे भय से पीले पड़ गए। उन्होंने डर कर
एक-दूसरे को देखा। वे बारूक से बोले, 'हम
निश्चय ही महाराज को ये बातें बताएंगे।'
17 उन्होंने बारूक से फिर पूछा, 'तुमने ये
सब वचन कैसे लिखे ? क्या यिर्मयाह ने बोल
कर तुम्हें ये वचन लिखवाए हैं ?' 18बारूक
ने उनको उत्तर दिया, 'वह बोलते जाते थे, और
मैं चर्मपत्र पर स्याही से लिखता जाता था।'
19उच्चाधिकारी बोले, 'तुम और यिर्मयाह,
दोनों, भाग कर कहीं छिप जाओ। किसी को
पता न चले कि तुम कहां हो।'

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

20 उच्चाधिकारी चर्मपत्र को सचिव
एलीशामा के कमरे में छोड़ कर राजा के दरबार
में गए। उन्होंने राजा को सब बातें बताईं।
21राजा ने चर्मपत्र लाने के लिए येहूदी को
भेजा। सचिव एलीशामा के कमरे में येहूदी
गया, और चर्मपत्र ले आया। उसने राजा को,
तथा उस के पास खड़े उच्चाधिकारियों को
चर्मपत्र पढ़ कर सुनाया।

22 वर्ष का नौवां महीना था। शीत ऋतु थी।
राजा अपने शीत महल में था। उसके सामने
अंगीठी में आग जल रही थी। 23जब येहूदी
तीन-चार पंक्तियां पढ़ चुकता, तब राजा पढ़े
हुए अंशों को चाकू से काट देता, और अंगीठी
की आग में उसको झोंक देता। यों सम्पूर्ण
चर्मपत्र अंगीठी की आग में भस्म हो गया।

24 प्रभु के ये वचन सुन कर न तो राजा
भयभीत हुआ और न उसके कर्मचारी। उन्होंने
पश्चात्ताप प्रकट करने के लिए अपने वस्त्र भी
नहीं फाड़े। 25 जब एलनातान, दलायाह और
गमर्याह ने निवेदन किया कि वह चर्मपत्र को
न जलाए, तब उसने उनकी बात नहीं सुनी।
26राजा ने अपने पुत्र यरहमेल को तथा सरायाह
बेन-अज्रीएल और शेलेम्याह बेन-अब्देल को
आदेश दिया कि लेखक बारूक और नबी
यिर्मयाह को गिरफ्तार कर लो। परन्तु प्रभु ने
दोनों को छिपा दिया।

राजा यहोयाकीम को प्रभु की चेतावनी

27 जब राजा यहोयाकीम चर्मपत्र को जला
चुका, जिस पर यिर्मयाह ने बोल-बोल कर
बारूक से प्रभु के वचन लिखवाए थे, उस के
पश्चात् प्रभु का यह सन्देश यिर्मयाह को मिला।
प्रभु ने कहा, 28'तू दूसरा चर्मपत्र ले, और उस
पर सब बातें लिख जो पहले चर्मपत्र पर लिखी
थीं, और जिस चर्मपत्र को यहूदा प्रदेश के राजा
यहोयाकीम ने जला दिया है। 29तू यहूदा प्रदेश
के राजा यहोयाकीम के विषय में यह लिखवाना:
"प्रभु यों कहता है: तूने यह कह कर चर्मपत्र
को जला दिया कि यिर्मयाह ने यह क्यों लिखा
कि बेबीलोन का राजा निस्सन्देह यहां आक्रमण
करेगा, और इस देश को उजाड़ देगा। वह
मनुष्य और पशु दोनों को पूर्णत: नष्ट कर देगा।
30 अत: प्रभु यहूदा प्रदेश के राजा यहोयाकीम
के विषय में यह कहता है: दाऊद के सिंहासन
पर बैठने के लिए उसके वंश में कोई नहीं
बचेगा। उसका शव दिन में धूप में सड़ने के
लिए, और रात में पाले में गलने के लिए बाहर
फेंक दिया जाएगा। 31मैं उसको, उसकी सन्तान
को, और उसके कर्मचारियों को उनके अधर्म
के लिए दण्ड दूंगा। मैं उन पर, यहूदा प्रदेश की
समस्त जनता पर, यरूशलेम के निवासियों पर
सब विपत्तियां ढाहूंगा, जिनकी घोषणा मैंने की
थी, और जिनको उन्होंने नहीं सुना था।" '

32 अत: यिर्मयाह ने दूसरा चर्मपत्र लिया,
और अपने सचिव बारूक बेन-नेरियाह को दे
दिया। बारूक ने यिर्मयाह के मुंह से सुन-सुन
कर सब वचन इस चर्मपत्र में लिख लिए जो
पहले चर्मपत्र में लिखे थे, और जिसको यहूदा
प्रदेश के राजा यहोयाकीम ने आग में जला दिया
था। दूसरे चर्मपत्र में उन वचनों के समान अन्य
वचन भी जोड़ दिए।

नबी यिर्मयाह की गिरफ्तारी

37 यहोयाकीम के पुत्र कोन्याह के बदले
योशियाह का पुत्र सिदकियाह यहूदा
प्रदेश पर राज्य करने लगा; क्योंकि बेबीलोन
के राजा नबूकदनेस्सर ने उसको यहूदा प्रदेश
का राजा नियुक्त किया था। 2किन्तु न तो
सिदकियाह ने, और न उसके कर्मचारियों ने
और न प्रतिष्ठित नागरिकों ने प्रभु के वचनों पर
ध्यान दिया जो प्रभु ने नबी यिर्मयाह के माध्यम
से कहे थे।

3 राजा सिदकियाह ने येहूकल बेन-शेलेम्याह
और पुरोहित सफन्याह बेन-मासेयाह को
नबी यिर्मयाह के पास भेजा और यह निवेदन
किया, 'प्रभु परमेश्वर से हमारे लिए प्रार्थना
कीजिए।'

4 उस समय यिर्मयाह बन्दी नहीं बनाए गए
थे, और स्वतन्त्रतापूर्वक जनता में आते-जाते
थे। 5इन्हीं दिनों में मिस्र देश के राजा फरओ

---

37 : 1 2 इति 36 : 10 37 : 2 2 रा 24 : 19

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

की सेना ने यरूशलेम का संरक्षण करने के लिए
मिस्र देश से प्रस्थान किया। उस समय कसदी
सेना यरूशलेम के चारों ओर घेरा डाले हुए थी।
जब उसने फरओ की सेना की खबर सुनी तो
उसने अपना घेरा उठा लिया, और यरूशलेम से
चली गयी।

6 तब प्रभु का यह सन्देश नबी यिर्मयाह को
मिला: 7 'इस्राएल का प्रभु परमेश्वर यों कहता
है: यहूदा प्रदेश के राजा ने मेरी इच्छा जानने के
लिए तेरे पास यहूकल और पुरोहित सफन्याह
को भेजा है। अत: तू उनसे यह कहना: "जो
फरओ की सेना तुम्हारी सहायता के लिए आयी
है, वह अपने देश मिस्र को लौटने पर है।
8 कसदी सेना फिर लौटेगी, और उसके सैनिक
यरूशलेम नगर पर आक्रमण करेंगे। वे नगर पर
कब्जा कर लेंगे, और उसको आग से भस्म कर
देंगे। 9 प्रभु कहता है, तुम अपने आप को यह
कह कर धोखा मत दो कि 'कसदी सेना हमारे
पास से सदा के लिए चली गई है।' देख, वह
निश्चय ही लौटेगी। 10 यदि तुम आक्रमण
करनेवाली समस्त कसदी सेना को भी परास्त
कर दो और उसमें केवल घायल सैनिक ही
बचें, जो शिविर में पड़े हों, तो भी वे उठेंगे और
इस नगर को आग से भस्म कर देंगे।"'

11 जब कसदी सेना फरओ की सेना के
आगमन पर यरूशलेम से अपना घेरा उठा कर
लौट गई, 12 तब नबी यिर्मयाह यरूशलेम से
निकले। वह बिन्यामिन कुल-क्षेत्र में रहनेवाले
अपने सगे-सम्बन्धियों से अपना पैतृक-अंश
लेने के लिए वहां जा रहे थे। 13 किन्तु जब वह
यरूशलेम की दीवार से बिन्यामिन-द्वार पर
पहुंचे, तब उनको यिरियाह नामक पहरेदार ने
पकड़ लिया। यिरियाह शेलेम्याह बेन-हनन्याह
का पुत्र था। पहरेदार ने कहा, 'तुम कसदी सेना
के पास भाग रहे हो।' 14 यिर्मयाह बोले, 'यह
झूठ है। मैं कसदी सेना के पास नहीं जा रहा हूं।'
यिरियाह ने उनकी बात नहीं सुनी, और उनको
पकड़ कर उच्चाधिकारियों के पास ले गया।
15 उच्चाधिकारी यिर्मयाह से बहुत नाराज हुए।
उन्होंने यिर्मयाह को मारा और सचिव योनातान
के घर में बन्द कर दिया: योनातान के घर को
बन्दीगृह बना दिया गया था।

16 उस बन्दीगृह में अनेक काल-कोठरियां
थीं। यिर्मयाह वहां बहुत दिन तक कैद रहे।

सिदकियाह यिर्मयाह से सलाह लेता है

17 तब राजा सिदकियाह ने यिर्मयाह को
अपने महल में बुलवाया, और वह उनसे
मिला। उसने अपने महल में गुप्त रूप से
यिर्मयाह से पूछा, 'क्या आप को प्रभु का कोई
सन्देश मिला है ?' यिर्मयाह बोले, 'निस्सन्देह,
मिला है।' फिर आगे यिर्मयाह ने कहा, 'आप
निश्चय ही बेबीलोन के राजा के हाथ में सौंपे
जाएंगे।' 18 यिर्मयाह ने राजा सिदकियाह से यह
भी कहा, 'मैंने आपका या आपके कर्मचारियों
का, या आपकी प्रजा का क्या अपराध किया है
कि आप ने मुझे बन्दी बना कर कारागाह में डाल
रखा है ? 19 आपके वे झूठे नबी कहां गए जो
आप से नबूवत करते थे कि बेबीलोन का राजा
हम पर आक्रमण नहीं करेगा, वह इस देश पर
चढ़ाई नहीं करेगा ? 20 मेरे स्वामी, महाराज,
मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि आप मेरी बात
सुनिए, और मुझे सचिव योनातान के घर में मत
भेजिए। मैं वहां मर जाऊंगा।'

21 अत: राजा सिदकियाह ने आदेश दिया,
और सिपाहियों ने यिर्मयाह को राजमहल के
पहरे के आंगन में रख दिया। जब तक नगर में
रोटी उपलब्ध रही, यिर्मयाह को रोटी वालों की
गली से प्रति दिन एक रोटी मिलती रही। इस
प्रकार यिर्मयाह राजमहल के पहरे के आंगन में
रहने लगे।

यिर्मयाह का अन्धे-कुएं में डाला जाना

38 जो बातें यिर्मयाह ने सब लोगों से कही
थीं, उनको शपत्याह बेन-मत्तान,
गदल्याह बेन-पशहूर, येहूकल बेन-शेलेम्याह
और पशहूर बेन-मल्कियाह ने भी सुना।
2 यिर्मयाह ने यह कहा था, 'प्रभु यों कहता है:
जो व्यक्ति इस नगर में ठहरेगा, वह शत्रु की
तलवार, अकाल और महामारी से मरेगा। किन्तु

---

38 : 2 यिर 21 : 9

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जो व्यक्ति नगर से भाग कर कसदी सेना की
शरण में जाएगा, वह जीवित रहेगा। युद्ध की
लूट की तरह उसका प्राण बच जाएगा। 3प्रभु
यों कहता है: यह नगर निस्सन्देह बेबीलोन के
राजा की सेना के हाथ में सौंप दिया जाएगा,
और वह इस पर कब्जा कर लेगा।'
4 उच्चाधिकारियों ने राजा से कहा, 'इस
आदमी को अवश्य मार डालना चाहिए;
क्योंकि यह नगर में बचे हुए सैनिकों का
मनोबल घटा रहा है। वह अपनी इन बातों से
नगरवासियों की हिम्मत तोड़ रहा है। इस
आदमी को अपने लोगों के हित की चिंता नहीं
है, बल्कि यह उनका अनिष्ट खोज रहा है।'
5राजा सिदकियाह ने कहा, 'देखो, वह तुम्हारे
हाथ में है; क्योंकि राजा भी तुम्हारी इच्छा के
विरुद्ध कुछ नहीं कर सकता।'
6 अत: उच्चाधिकारियों ने यिर्मयाह को
पकड़ा, और रस्सियों से बांध कर राजकुमार
मल्कियाह के अंधे-कुएं में डाल दिया। यह
कुआँ राजमहल के पहरे के आंगन में था। उसमें
पानी नहीं, बल्कि कीचड़ ही कीचड़ था।
यिर्मयाह कीचड़ में धंस गए।

अन्धे-कुएं से छुटकारा

7-8 एबेद-मेलेक नामक एक खोजा था।
वह कूश देश का निवासी था। वह उस समय
राजभवन में था। जब उसने सुना कि यिर्मयाह
अंधे-कुएं में डाल दिए गए हैं, तब वह
राजभवन से बाहर निकला, और राजा के पास
गया। उस समय राजा बिन्यामिन द्वार पर
न्यायासन पर बैठा था। 9एबेदमेलेक ने राजा
से निवेदन किया, 'महाराज, मेरे मालिक, इन
उच्चाधिकारियों ने नबी यिर्मयाह को अन्धे-
कुएं में डाल कर बुरा काम किया है। नबी
यिर्मयाह अंधे-कुएं में भूख से मर जाएंगे; नगर
में भी रोटी का काल पड़ गया है।'
10 तब राजा ने एबेदमेलेक को आदेश
दिया, 'तुम यहां से तीन सिपाही अपने साथ ले
जाओ, और मरने से पहले यिर्मयाह को अंधे-
कुएं से निकाल लो।'
11 अत: एबेदमेलेक तीन सिपाहियों को ले
कर राजमहल में गया। वहां वह भण्डारगृह के
तलघर में गया। वहां से उस ने फटे पुराने कपड़े
और चिथड़े निकाले, और उन को रस्सियों के
सहारे यिर्मयाह के पास अंधे-कुएं में उतार
दिया। 12एबेदमेलेक ने पुकार कर यिर्मयाह से
कहा, 'ये फटे-पुराने कपड़े और चिथड़े अपनी
कांखों में रस्सी के नीचे रख लीजिए।' यिर्मयाह
ने ऐसा ही किया। 13तब उन्होंने रस्सी के सहारे
यिर्मयाह को ऊपर खींचा, और यों उनको
अंधे-कुएं से बाहर निकाल लिया।
यिर्मयाह राजमहल के पहरे के आंगन में
फिर रहने लगे।

यिर्मयाह और राजा सिदकियाह में वार्तालाप

14 राजा सिदकियाह ने सन्देश भेज कर नबी
यिर्मयाह को बुलाया, और प्रभु भवन के तीसरे
प्रवेश-द्वार पर उनसे भेंट की। राजा सिदकियाह
ने यिर्मयाह से कहा, 'मैं तुमसे एक प्रश्न पूछ
रहा हूं; मुझसे कुछ मत छिपाना।'
15 यिर्मयाह ने सिदकियाह को उत्तर दिया,
'महाराज, अगर मैं सच बात आप से कहूं, तो
आप निस्सन्देह मेरा वध कर देंगे। और अगर
मैं आप को कोई सलाह दूं, तो वह भी आप नहीं
मानेंगे।'
16 तब राजा सिदकियाह ने यिर्मयाह से गुप्त
शपथ खाई। उसने कहा, 'जिसने हमारा यह
जीव रचा है, उस जीवंत प्रभु की सौगन्ध, मैं
तुम्हारा वध नहीं करूंगा, और न तुम्हारे शत्रुओं
के हाथ में तुम्हें सौंपूंगा, जो तुम्हारे प्राण के
ग्राहक हैं।'
17 अत: यिर्मयाह ने सिदकियाह से कहा,
'इस्राएल का परमेश्वर, स्वर्गिक सेनाओं का
प्रभु परमेश्वर यों कहता है: यदि तू बेबीलोन
के उच्चाधिकारियों के सम्मुख समर्पण कर
देगा, तो तेरा प्राण बच जाएगा, और यह नगर
आग से भस्म नहीं होगा; तू और तेरा परिवार
जीवित रहेगा। 18किन्तु यदि तू बेबीलोन के
उच्चाधिकारियों के सम्मुख समर्पण नहीं करेगा,
तो मैं यह नगर कसदी सेना के हाथ में सौंप
दूंगा। कसदी सैनिक इस नगर को आग में भस्म
कर देंगे, और तू उनके हाथ से नहीं बच सकेगा।'

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

19 राजा सिदकियाह ने यिर्मयाह से कहा,
'तुम्हारी सलाह उचित है। लेकिन मैं उन
यहूदा-वासियों से डरता हूं, जो कसदियों से
मिल गए हैं। ये कसदी अधिकारी मुझे उनके
हाथ में सौंप देंगे और यहूदा-वासी मेरी हंसी
उड़ाएंगे।'
20 यिर्मयाह ने उत्तर दिया, 'महाराज,
कसदी उच्चाधिकारी आपको उनके हाथ में
नहीं सौंपेंगे। कृपया, प्रभु की वाणी पर ध्यान
दीजिए। जो प्रभु का वचन मैंने आप से कहा
है, उस पर विश्वास कीजिए। आप का भला
होगा, और आपका प्राण जीवित रहेगा। 21 किन्तु
आप कसदी सेना की शरण में जाने से इन्कार
करेंगे तब क्या होगा, उसका दृश्य प्रभु ने मुझे
यों दिखाया है:
22 'यहूदा प्रदेश के महल की बची हुई राज
महिलाएं
बेबीलोन के राजाओं के उच्चाधिकारियों के
हरम में लाई जा रही हैं,
और वे तुम से यह कह रही हैं:
"महाराज, आपके विश्वस्त मित्रों ने
आपको धोखा दिया;
और यों उनकी इच्छा पूरी हुई।
अब, जब आपके पैर कीचड़ में धंस गए,
तो वे आपको अकेला छोड़कर भाग गए।"
23 'मैंने यह भी देखा: आप की सब स्त्रियों
और राजकुमारों को कसदी सैनिकों ने पकड़ा,
और वे उनको अपनी सेना-शिविर में लाए।
महाराज, आप भी उनके हाथ से नहीं बचे, और
बेबीलोन के राजा ने आप को बन्दी बना लिया।
यह नगर आप के कारण आग में भस्म हो गया।'
24 राजा सिदकियाह ने यिर्मयाह से कहा,
'देखो, किसी भी आदमी को तुम्हारी ये बातें
मालूम न हों, अन्यथा मेरे उच्चाधिकारी तुम्हें
मार डालेंगे। 25 यदि वे यह सुनेंगे कि मैंने तुमसे
गुप्त मंत्रणा की है, तो वे तुम्हारे पास आएंगे
और तुमसे यह पूछेंगे कि तुमने मुझसे क्या-क्या
कहा है और मैंने तुमसे क्या कहा है। वे तुमसे
कहेंगे, "हम से मत छिपाओ: हम तुम्हारा वध
नहीं करेंगे। हमें यह भी बताओ कि महाराज ने
तुमसे क्या कहा है।" 26 यिर्मयाह, यदि मेरे
उच्चाधिकारी तुमसे पूछें तो तुम केवल यही
कहना कि तुमने मुझसे विनती की है कि मैं तुम्हें
योनातान के मकान में न भेजूं अन्यथा तुम मर
जाओगे।'
27 ऐसा ही हुआ। उच्चाधिकारी यिर्मयाह के
पास आए। उन्होंने यिर्मयाह से पूछा कि राजा
और उसके बीच क्या-क्या बातें हुईं। यिर्मयाह
ने राजा सिदकियाह के परामर्श के अनुसार
उसकी बातें दुहरा दीं, जो उसने यिर्मयाह से
कही थीं। अत: उन्होंने यिर्मयाह से पूछना छोड़
दिया, और गुप्त मंत्रणा की बात न खुली।
28 जिस दिन यरूशलेम नगर पर कसदी सेना
का कब्जा हुआ, उस दिन तक यिर्मयाह
राजमहल के पहरे के आंगन में रहे।

यरूशलेम का पतन

39 यहूदा प्रदेश के राजा सिदकियाह के
राज्य-काल के नौवें वर्ष के दसवें
महीने में बेबीलोन के राजा नबूकदनेस्सर ने
अपनी सेना के साथ यरूशलेम नगर पर
आक्रमण कर दिया, और उसको घेर लिया।
2 सिदकियाह के राज्य-काल के ग्यारहवें वर्ष
के चौथे महीने के नौवें दिन नगर की शहरपनाह
में दरार पड़ गई, और उसको शत्रु सेना ने गिरा
दिया। 3 जब शत्रु सेना का नगर पर कब्जा हो
गया, तब बेबीलोन के राजा के सब
उच्चाधिकारियों ने नगर में प्रवेश किया, और
उन्होंने 'मध्य द्वार' पर आसन जमाया। उनके
नाम इस प्रकार हैं: नेर्गलसरेसेर, समगर्नबो,
खोजों का मुखिया सर्सकीम और राजवैद्य
नेर्गलसरेसेर। इनके साथ बेबीलोन के राजा के
अन्य उच्चाधिकारी भी थे।
4 जब यहूदा प्रदेश के राजा सिदकियाह और
उसके सैनिकों ने देखा, तब वे भागे। वे रातों-
रात राज-उद्यान के मार्ग से नगर के दोनों
दीवारों के मध्य के दरवाजे से निकले, और
अराबाह घाटी की ओर बढ़े। 5 किन्तु कसदी
सेना ने उनका पीछा किया, और यरीहो के

38 : 28 यहेज 33 : 21 **39 : 1** 2 रा 25 : 1-4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मैदान में सिदकियाह को पकड़ लिया। वे
उसको बन्दी बना कर हमात देश के रिबला
नगर में ले गए, और बेबीलोन के राजा
नबूकदनेस्सर के सामने पेश किया। नबूकदनेस्सर
ने वहां सिदकियाह को दण्ड दिया। 6उसने
रिबला में सिदकियाह की आंखों के सामने
उसके पुत्रों का वध कर दिया। इसके
अतिरिक्त उसने यहूदा प्रदेश के सब प्रतिष्ठित
लोगों को मार डाला। 7उसने सिदकियाह की
आंखें निकाल लीं, और उसको बेबीलोन ले
जाने के लिए जंजीरों से बांध दिया। 8कसदी
सैनिकों ने राजा के महल में आग लगा दी, और
लोगों के मकानों को आग से भस्म कर दिया।
उन्होंने यरूशलेम की दीवारों को गिरा दिया।
9तब अंगरक्षकों का नायक नबूजरदान इन
लोगों को बन्दी बना कर ले गया: यरूशलेम
नगर में बचे हुए लोग, उसकी शरण में आए हुए
लोग, और शेष कारीगर* । 10नबूजरदान ने
यहूदा प्रदेश में उन लोगों को छोड़ दिया जो
गरीब थे, और जिनके पास कुछ नहीं था। वह
जाते समय उनको अंगूर-उद्यान और खेत दे
गया।

नबी यिर्मयाह के प्रति नबूकदनेस्सर की उदारता

11 नबूकदनेस्सर ने अंगरक्षकों के नायक
नबूजरदान के माध्यम से यिर्मयाह के सम्बन्ध
में यह आदेश दिया, 12'यिर्मयाह को ले जाओ।
उनकी अच्छे से देखभाल करो, और उनका
अहित मत करना। जैसा वह तुम्हें कहें वैसा ही
करना।' 13अत: बेबीलोन के राजा के सब
उच्चाधिकारी, अंगरक्षकों का नायक नबूजरदान,
खोजों का मुखिया नबूसजबान, राजवैद्य
नेर्गलसरेसेर, और अन्य उच्चाधिकारियों ने
14सैनिक भेजे और राजमहल के पहरे के
आंगन से यिर्मयाह को निकाला। उन्होंने
यिर्मयाह की देखभाल करने के लिए गदल्याह
को नियुक्त किया, जिसके पिता का नाम
अहीकाम और दादा का नाम शापान था।
गदल्याह यिर्मयाह को अपने घर ले गया, और
नबी यिर्मयाह अपने लोगों के मध्य रहने लगे।

खोजा एबेदमेलेक निस्सन्देह बचाया जाएगा

15 जब यिर्मयाह राजमहल के पहरे के
आंगन में नजरबन्द थे, तब उन्हें प्रभु का यह
सन्देश मिला था। प्रभु ने कहा, 16'जा, और
कूश देश के निवासी एबेदमेलेक से यह कह:
"इस्राएल का परमेश्वर, स्वर्गिक सेनाओं का
प्रभु यों कहता है: इस नगर को दण्ड देने के
लिए जो वचन मैंने कहे हैं, उनको मैं अवश्य
पूरा करूंगा, और उनसे इस नगर का बुरा ही
होगा, भला नहीं। तेरी आंखों के सामने उस
दिन मेरे सब वचन पूर्ण होंगे। 17किन्तु उस दिन
मैं तुझको बचाऊंगा, और तू शत्रु-सैनिकों के
हाथ में नहीं सौंपा जाएगा, जिन से तू डर रहा
है। मुझ-प्रभु की यह वाणी है। 18मैं निस्सन्देह
तुझे बचाऊंगा, और तू शत्रु की तलवार से नहीं
मारा जाएगा। तूने मुझ पर भरोसा किया है,
इसलिए तेरा प्राण बच रहेगा। युद्ध की लूट के
समान तू अपने जीवन को बचाएगा। मुझ-प्रभु
की यह वाणी है।"'

यिर्मयाह और नबूजरदान

40 अंगरक्षकों का नायक नबूजरदान
यिर्मयाह को जंजीरों से बान्ध कर ला
रहा था। यिर्मयाह के साथ यरूशलेम और
यहूदा प्रदेश के बन्दी भी थे, जो गुलाम बन कर
बेबीलोन जा रहे थे। नबूजरदान ने रामाह नगर
में यिर्मयाह को मुक्त कर दिया, और उनको
रामाह नगर से चले जाने दिया। इसके पश्चात्
यिर्मयाह को प्रभु का सन्देश मिला। 2नबूजरदान
ने यिर्मयाह को बुला कर उन से कहा, 'आपके
प्रभु परमेश्वर ने इस नगर के विरुद्ध अनिष्ट की
घोषणा की थी, 3और उसने उस नबूवत को
पूरा भी किया। प्रभु ने वैसा ही किया जैसा उसने
कहा था। आप लोगों ने प्रभु के विरुद्ध पाप
किया, उसकी वाणी नहीं सुनी, इसलिए यह
विपत्ति आप पर पड़ी। 4अब देखिए, मैं आप
की हथकड़ियां खोलता हूं, और आपको मुक्त
करता हूं। यदि आपको मेरे साथ बेबीलोन जाना
अच्छा लगे, तो मेरे साथ आइए। मैं अच्छे से
आपकी देखभाल करूंगा। और अगर आप को

---

* मूल में 'लोग'

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बेबीलोन जाना पसन्द न हो तो मत जाइए। आपके सामने सारा देश है। जहां आप जाना अच्छा समझें, आपको उचित लगे, वहां आप जा सकते हैं। [5]अगर आप यहीं रहेंगे, तो आप कृपा कर गदल्याह के पास लौट जाएं। हमारे महाराज बेबीलोन के राजा ने अहीकाम के पुत्र और शापान के पौत्र गदल्याह को यहूदा प्रदेश का राज्यपाल नियुक्त किया है। आप उसके पास लौट सकते हैं, और अपने लोगों के मध्य रह सकते हैं। अथवा आप जहां भी जाना उचित समझें वहां आप जाइए।' यह कह कर अंगरक्षकों के नायक नबूजरदान ने मार्ग के लिए यिर्मयाह को भोजन-सामग्री दी, और कुछ उपहार भी दिए, और उनको विदा कर दिया।

6 यिर्मयाह गदल्याह बेन-अहीकाम के पास मिस्पाह नगर में आए, और उसके साथ अपने लोगों के मध्य रहने लगे। ये लोग यहूदा प्रदेश में बच गए थे।

गदल्याह की हत्या

7 यहूदा प्रदेश के मैदानों में सिदकियाह के सैनिक और सेना-नायक बच गए थे। जब इन सैनिकों और नायकों ने सुना कि बेबीलोन के राजा ने गदल्याह बेन-अहीकाम को यहूदा प्रदेश का राज्यपाल नियुक्त किया है, और प्रदेश में बचे हुए स्त्री-पुरुषों और बच्चों की देखभाल करने का दायित्व सौंपा है, जो बहुत गरीब थे, और बन्दी बन कर बेबोलोन नहीं गए थे, [8]तब सेनानायक मिस्पाह में गदल्याह के पास गए। उनके नाम इस प्रकार हैं: यिश्माएल बेन-नतन्याह, योहानान बेन-कारेह, सरायाह बेन-तन्हूमेत, नतोपा-वासी एपई के पुत्र, और याजन्याह, जो किसी माका-वासी का पुत्र था। ये सेना-नायक अपने-अपने सैन्य दल के साथ गए।

9 गदल्याह बेन-अहीकाम ने शपथ खाकर आश्वासन दिया, 'कसदी जाति के अधीन रहने से आप लोग मत डरिए। आप निश्‍चिंत होकर देश में रहिए और बेबीलोन के राजा की सेवा कीजिए। तब आपका भला होगा। [10]जहां तक मेरा प्रश्‍न है, मैं मिस्पाह में रहूंगा, और जब कसदी उच्चाधिकारी यहां आएंगे, तब मैं आपकी ओर से उनके सम्मुख खड़ा हूंगा। आप लोग घबराइए मत, अपने-अपने नगर में जाइए, और अंगूर और ग्रीष्मऋतु के फल एकत्र कीजिए, तेल निकालिए, और उसको बर्तनों में जमा कीजिए। जिन नगरों पर आप लोगों ने पुन: अधिकार कर लिया है, उनमें निवास कीजिए।'

11 यही समाचार उन यहूदा-वासियों ने सुना, जो मोआब, अम्मोन, एदोम और अन्य देशों में बस गए थे। उन्होंने सुना कि बेबीलोन का राजा यहूदा प्रदेश में उन लोगों को छोड़ गया है जो बहुत गरीब हैं और उनके ऊपर अहीकाम के पुत्र और शापान के पौत्र गदल्याह को राज्यपाल नियुक्त किया है। [12]यह सुन कर सब यहूदी जो अन्य देशों से खदेड़ दिए गए थे, अपने-अपने देश से यहूदा प्रदेश के मिस्पाह नगर में गदल्याह के पास लौट आए। इन लोगों ने अंगूर और ग्रीष्म फलों की खूब फसल उत्पन्न की।

13 योहानान बेन-कारेह, और मैदानी इलाके के सब सेनानायक मिस्पाह नगर में गदल्याह के पास आए, और [14]उससे कहा, 'क्या आप जानते हैं कि अम्मोन के राजा बालीस ने आपकी हत्या के लिए यिश्माएल बेन-नतन्याह को भेजा है?' किन्तु गदल्याह ने उनकी बातों पर विश्‍वास नहीं किया। [15]तब योहानान ने मिस्पाह में गुप्त रूप से गदल्याह से कहा, 'आप मुझे अनुमति दीजिए; मैं जाकर यिश्माएल बेन-नतन्याह का चुपचाप वध कर दूंगा; और किसी को पता न चलेगा। यदि उसने आपकी हत्या कर दी, तो जो यहूदी दूर देश से आकर आपके चारों ओर इकट्ठे हो गए हैं, वे फिर तितर-बितर हो जाएंगे, और यहूदा प्रदेश की बची हुई जनता भी नष्‍ट हो जाएगी।' [16]लेकिन गदल्याह बेन-अहीकाम ने योहानान बेन-कारेह से कहा, 'तुम यह काम कदापि मत करना, क्योंकि तुम यिश्माएल के बारे में झूठ

---

40 : 7 2 रा 25 : 23

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बोल रहे हो।'

41 यिश्माएल राजवंश का था। वह राजा सिदकियाह का एक मुख्य उच्चाधिकारी था। उनके पिता का नाम नतन्याह और दादा का नाम एलीशामा था।

सातवें महीने में यह घटना घटी। यिश्माएल अपने साथ दस सैनिक लेकर मिस्पाह नगर में गदल्याह बेन-अहीकाम के पास आया। राज्यपाल गदल्याह ने मिस्पाह में उसका स्वागत किया, और उन्होंने एक साथ भोजन किया।

2 तब यिश्माएल बेन-नतन्याह अपने साथियों के साथ उठा, और उसने गदल्याह पर तलवार से प्रहार किया, और उसका वध कर दिया; क्योंकि बेबीलोन के राजा ने यहूदा प्रदेश पर उसको राज्यपाल नियुक्त किया था। 3यिश्माएल ने उन यहूदियों का भी वध कर दिया जो गदल्याह के साथ थे। उसकी तलवार से कसदी सैनिक भी न बच सके, जो उस समय मिस्पाह में तैनात थे।

शरणार्थियों की हत्या

4 गदल्याह की हत्या की खबर किसी को नहीं मिली। उसके दूसरे दिन 5शकेम, शीलोह और सामरी नगरों से अस्सी यहूदी आए। उनकी दाढ़ी मुँड़ी हुई थी। वस्त्र फटे हुए थे। उनका सारा शरीर घावों से भरा था। उनके हाथों में अन्नबलि और लोबान था, और वे उनको प्रभु के भवन में चढ़ाने जा रहे थे।

6 यिश्माएल बेन-नतन्याह उनसे भेंट करने के लिए रोता हुआ मिस्पाह से बाहर निकला। जब वह उनसे मिला तब उनसे बोला, 'आओ, गदल्याह के पास शहर के भीतर चलें।' 7जब वे मिस्पाह नगर के भीतर आए तब यिश्माएल और उसके साथियों ने उनकी हत्या कर दी, और लाशों को अंधे-कुएं में फेंक दिया। 8किन्तु उन में से दस आदमी बच गए। उन्होंने यिश्माएल से कहा, 'हमें मत मारो; हमारे पास गेहूं, जौ, तेल और शहद है, जो हमने खेतों में छिपा दिया है।' अत: यिश्माएल ने उनको छोड़ दिया और उनके साथियों के साथ उन्हें नहीं मारा।

9 यिश्माएल ने जिस अंधे-कुएं में लाशों को फेंका था, वह बहुत बड़ा था। यह कुआं राजा आसा ने इस्राएल प्रदेश के राजा बाशा के आक्रमण से बचने के लिए खोदा था। अब यिश्माएल ने लाशों से उसको पाट दिया। 10तत्पश्चात् उसने मिस्पाह में बचे हुए सब लोगों को बन्दी बना लिया। बन्दी बनाए गए लोगों में राज कन्याएं और वे गरीब लोग थे जिनको अंगरक्षकों के नायक नबूजरदान ने गदल्याह बेन-अहीकाम के हाथ में सौंपा था कि वह उनकी देखभाल करे। यिश्माएल ने मिस्पाह के सब लोगों को बन्दी बना कर यर्दन नदी के उस पार अम्मोन देश की ओर प्रस्थान किया।

योहानान का बदला

11 योहानान बेन-कारेह तथा उसके सेनानायकों को इस दु:खद घटना की खबर मिली। जो दुष्कर्म यिश्माएल बेन-नतन्याह ने किया था, योहानान और उसके साथियों को उसका पता चला। 12उन्होंने अपने सैनिकों को एकत्र किया और यिश्माएल से युद्ध करने के लिए गए। उन्होंने गिबओन के महा कुण्ड पर यिश्माएल को घेर लिया।

13 जब यिश्माएल के साथ लोगों ने योहानान और उसके सेनानायकों को देखा तब वे आनन्द से भर उठे। उन्होंने जय-जयकार किया। 14जिन लोगों को यिश्माएल बन्दी बना कर मिस्पाह से ले जा रहा था, वे लौट पड़े और वापस आ गए। वे योहानान बेन-कारेह के पास आ गए। 15परन्तु यिश्माएल अपने आठ साथियों के साथ योहानान के हाथ से बच गया, और अम्मोन देश को भाग गया। 16गदल्याह की हत्या के बाद यिश्माएल जिन लोगों को बन्दी बना कर मिस्पाह से ले जा रहा था, उनमें सैनिक, स्त्रियां, बच्चे, और खोजे थे। योहानान और उसके सेनानायक इन सबको गिबओन से वापस लाए। 17ये लोग बेतलेहम गांव के समीप

41: 1 2 रा 25 : 25

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

किम्हाम की सराय में ठहर गए, और मिस्पाह
नहीं गए, उनका इरादा मिस्र देश जाने का था।
18वे कसदियों से डरते थे; क्योंकि यिश्माएल
बेन-नतन्याह ने गदल्याह की हत्या की थी,
जिसको बेबीलोन के राजा ने यहूदा प्रदेश का
राज्यपाल नियुक्त किया था।

यिर्मयाह का योहानान को सन्देश

42 सैन्य-दल के सब सेना-नायक,
योहानान बेन-कारेह, याजन्याह बेन-
होशायाह तथा जनता के छोटे-बड़े लोग 2नबी
यिर्मयाह के पास आए, और उन से यह निवेदन
किया, 'कृपया, हमारा निवेदन स्वीकार
कीजिए, और हम-सब बचे हुए लोगों के लिए
अपने प्रभु परमेश्वर से प्रार्थना कीजिए (आप
स्वयं अपनी आंखों से देख रहे हैं, कि पहले हम
संख्या में कितने अधिक थे, और अब कितने
थोड़े रह गए हैं।), 3ताकि आपका प्रभु परमेश्वर
हमें वह मार्ग बताए जिस पर हमें चलना
चाहिए; हमें वह काम बताए, जो हमें करना
चाहिए।'

4 नबी यिर्मयाह ने उनसे कहा, 'मैंने तुम्हारा
निवेदन सुना। मैं निस्सन्देह तुम्हारे निवेदन के
अनुसार तुम लोगों के प्रभु परमेश्वर से प्रार्थना
करूंगा, और जो कुछ वह कहेगा, मैं तुम्हें
बताऊंगा। मैं तुम से कुछ भी नहीं छिपाऊंगा।'
5तब सब लोगों ने यिर्मयाह से कहा, 'यदि
आपका प्रभु परमेश्वर आपके माध्यम से हमें
अपना वचन देगा और यदि हम उस वचन के
अनुसार आचरण नहीं करेंगे तो हमारे विरुद्ध
स्वयं प्रभु हमारा सच्चा और विश्वस्त साक्षी
हो। 6चाहे उसका वचन हमारे हित में हो, या
अहित में, हम अपने प्रभु परमेश्वर की आज्ञा
का पालन करेंगे। उससे प्रार्थना करने के लिए
हम आप को भेज रहे हैं। ताकि जब हम अपने
प्रभु परमेश्वर की आज्ञा का पालन करें, तब
हमारा कल्याण हो।'

7 दस दिन के अंत में प्रभु का वचन
यिर्मयाह को मिला। 8अत: यिर्मयाह ने योहानान
बेन-कारेह, उसके साथ के सब सेना-नायकों
और जनता के छोटे-बड़े लोगों को बुलाया
9और उनसे यह कहा, 'इस्राएल का प्रभु
परमेश्वर, जिसके सम्मुख तुम्हारी याचना करने
के लिए तुमने मुझे भेजा था, यों कहता है:
10यदि तुम इस देश में रहोगे, तो मैं तुम्हारा पुन:
निर्माण करूंगा, और तुम्हें नष्ट नहीं करूंगा। मैं
तुम्हारे वंश-वृक्ष को पुन: रोपूंगा, और तुम्हें
नहीं उखाड़ूंगा; क्योंकि मैंने तुम्हारा जो अनिष्ट
किया है, उसके लिए मैं पछता रहा हूं।

11 'बेबीलोन के राजा से तुम डर रहे हो,
किन्तु तुम उससे मत डरो। मुझ-प्रभु की यह
वाणी है। सुनो, मैं तुम्हारे साथ हूं, इसलिए तुम
उस से मत डरो। मैं उसके हाथ से तुम्हें
छुड़ाऊंगा, तुम्हें बचाऊंगा। 12मैं तुम पर दया
करूंगा ताकि वह तुम पर दया करे, और तुम्हें
अपने इस देश में रहने दे।

13 'किन्तु यदि तुम अपने प्रभु परमेश्वर की
वाणी को अनसुना करोगे, और कहोगे, "हम
इस देश में नहीं रहेंगे, 14और हम मिस्र देश
जाएंगे जहां हम युद्ध नहीं देखेंगे, और न ही युद्ध
का स्वर, न नरसिंगे का स्वर हमारे कानों में
पड़ेगा; जहां हमें रोटी के लिए तरसना नहीं
पड़ेगा; बल्कि हम वहां निश्चिन्त निवास
करेंगे," 15तो, ओ यहूदा प्रदेश के बचे हुए
निवासियो, प्रभु का वचन सुनो। स्वर्गिक
सेनाओं का प्रभु, इस्राएल का परमेश्वर यों
कहता है: यदि तुम मिस्र देश में प्रवेश करने
और वहां बसने के लिए उस दिशा में मुंह
करोगे, 16तो जिस तलवार से तुम डरते हो, वह
मिस्र देश में भी तुम्हारे सिर पर मंडराएगी; जिस
अकाल से तुम भयभीत हो, वह मिस्र देश में
भी तुम्हारा पीछा करेगा, और वहां तुम मर
जाओगे। 17वे सब लोग, जो मिस्र देश को जाने
के लिए उस दिशा में मुंह किए हुए हैं, वे
तलवार, अकाल और महामारी से नष्ट हो
जाएंगे। जो विपत्ति मैं उन पर ढाहूंगा, उससे
उनका कोई वंशज भी नहीं बचेगा; वे सब के
सब पूर्णत: नष्ट हो जाएंगे।

18 'स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु, इस्राएल का
परमेश्वर यों कहता है: यदि तुम मिस्र देश को
जाओगे, तो जैसी मेरी क्रोधाग्नि यरूशलेम के

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
प्रति भड़क उठी थी, जैसे मैंने अपने प्रकोप का
प्याला उण्डेला था, वैसे ही मैं तुम्हारे प्रति
अपनी क्रोधाग्नि प्रज्वलित करूंगा। तब अन्य
जातियां तुमसे घृणा करेंगी। वे तुम्हें आतंक का
कारण, शापित कौम, और निंदित मानेंगी। तुम
इस देश के पुन: दर्शन नहीं कर सकोगे। [19]ओ
यहूदा प्रदेश के बचे हुए लोगो! प्रभु तुमसे यों
कहता है: "मिस्र देश को मत जाओ।" मैंने
आज तुम्हें चेतावनी दी है; तुम भूल में मत पड़ो,
[20]अन्यथा तुम्हें अपने प्राण से हाथ धोना
पड़ेगा। तुमने मुझे अपने प्रभु परमेश्वर के पास
यह कहकर भेजा था, "हमारे प्रभु परमेश्वर से
हमारे लिए प्रार्थना कीजिए, और जो कुछ वह
हम से कहेगा, हम करेंगे।" [21]आज मैंने प्रभु
परमेश्वर का वचन तुम पर प्रकट कर दिया।
किन्तु तुमने अपने प्रभु परमेश्वर की वाणी
अनसुनी कर दी; जो बातें तुम्हें सुनाने के लिए
उसने मुझे तुम्हारे पास भेजा है, उनको तुम नहीं
मानते हो। [22]इसलिए, निश्चय जानो, जिस देश
में तुम बसने की इच्छा करते हो, वहां तुम
तलवार, अकाल और महामारी से निस्सन्देह
मारे जाओगे।'

मिस्र देश को प्रस्थान

43 प्रभु परमेश्वर ने अपना वचन सुनाने के
लिए यिर्मयाह को यहूदा प्रदेश के बचे
हुए लोगों तथा योहानान और उसके सहयोगी
सेनानायकों के पास भेजा था। जब यिर्मयाह
उनको उनके ही प्रभु परमेश्वर का वचन सुना
चुके, [2]तब अजर्याह बेन-होशाया, योहानान
बेन-कारेह तथा अन्य ढीठ लोगों ने यिर्मयाह
को उत्तर दिया, 'आप झूठ बोल रहे हैं। हमारे
प्रभु परमेश्वर ने आप को यह कहने के लिए
नहीं भेजा है कि मिस्र देश में बसने के लिए मत
जाओ। [3]किन्तु बारूक बेन-नेरियाह ने आपको
हमारे विरुद्ध भड़काया है। वह चाहता है कि
हम कसदी सेना के हाथ में सौंप दिए जाएं, और
वे हमें मार डालें, हमें गुलाम बनाकर बेबीलोन
ले जाएं।' [4]अत: योहानान बेन-कारेह, उसके
सहयोगी सेनानायक तथा बचे हुए सब लोगों
ने प्रभु की वाणी को अनसुना कर दिया, और
वे यहूदा प्रदेश में नहीं रहे।

5 योहानान और उसके सहयोगी सेनानायकों
ने यहूदा प्रदेश के सब बचे हुए लोगों को, सब
शरणार्थियों को, जो उन देशों में तितर-बितर
हो गए थे, जहां वे खदेड़ दिए गए थे, और जो
अब स्वदेश लौटे थे, [6]तथा उन सब स्त्री-
पुरुषों, बच्चों, राज कन्याओं को एकत्र कर ले
गये जिनको अंगरक्षकों के नायक नबूजरदान ने
गदल्याह बेन-अहीकाम को देखभाल के लिए
सौंपा था। वे नबी यिर्मयाह और बारूक बेन-
नेरियाह को भी अपने साथ ले गए। [7]उन्होंने
प्रभु की वाणी को अनसुना कर दिया। वे मिस्र
देश के तहपन्हेस नगर में पहुंचे।

मिस्र देश को चेतावनी

8 तब प्रभु का यह वचन तहपन्हेस में
यिर्मयाह को मिला। प्रभु ने कहा: [9]'अपने हाथों
में बड़े-बड़े पत्थर ले, उन पर चूना फेर और
उनको यहूदा प्रदेश के लोगों के सामने उस ईंट
के चबूतरे में छिपा दे, जो तहपन्हेस में फरओ
के राजभवन के प्रवेश-द्वार पर है। [10]तब तू
उनसे यह कहना: स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु,
इस्राएल का परमेश्वर यों कहता है: देखो, मैं
अपने सेवक बेबीलोन के राजा नबूकदनेस्सर
को बुला रहा हूं। वह अपना सिंहासन इन
पत्थरों पर, जो मैंने छिपाए हैं, स्थापित करेगा।
वह इन पत्थरों के ऊपर अपना छत्र तानेगा।
[11]तब वह मिस्र देश की राजधानी में आएगा,
और देश को नष्ट कर देगा। जो लोग महामारी
से मरने के लिए ठहराए गए हैं, वे महामारी से
मरेंगे। जो लोग बन्दी बनाए जाने के लिए
ठहराए गए हैं, वे बन्दी बन कर गुलामी में
जाएंगे, और जो तलवार से वध होने के लिए
ठहराए गए हैं, उनका तलवार से वध होगा।

12 'मेरा सेवक नबूकदनेस्सर मिस्र देश के
देवताओं के मन्दिरों में आग लगा देगा। वह
उनको भस्म कर देगा, और उनकी मूर्तियों को
लूट कर ले जाएगा। जैसे चरवाहा चीलर-भरे
गंदे कपड़ों को साफ करता है, वैसे ही मेरा

43 : 10 यिर 25 : 9

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सेवक नबूकदनेस्सर मिस्र देश को साफ कर
देगा, और वहां से सकुशल लौट जाएगा। 13वह
मिस्र देश के सूर्यगृह के खम्भों को टुकड़े-
टुकड़े कर देगा, और वहां के देवताओं के
मन्दिरों में आग लगा देगा।'

मिस्र देश के यहूदियों को यिर्मयाह की नबूवत

44 मिस्र देश के मिग्दोल, तहपन्हेस, और
मेमफिस नगरों तथा पत्रोस प्रदेश में
यहूदी रहते थे। उनके विषय में यिर्मयाह को
प्रभु का यह सन्देश मिला: 2 'स्वर्गिक सेनाओं
का प्रभु, इस्राएल का परमेश्वर यों कहता है:
जो विपत्तियां मैं यरूशलेम नगर तथा यहूदा
प्रदेश के सब नगरों के रहनेवालों पर ढाह चुका
हूं, वे तुमने देखी हैं। आज वे स्थान उजाड़ पड़े
हैं, ओर वहां कोई नहीं रहता है। 3यह उनके
दुष्कर्मों का फल है। उन्होंने ये दुष्कर्म किए, और
मुझे क्रोध दिलाया: वे मुझे छोड़कर अन्य
देवताओं को धूप जलाते थे। वे ऐसे देवताओं
की पूजा करते थे, जिनको न वे जानते थे, और
न तुम जानते हो, और न तुम्हारे पूर्वज। 4फिर
भी मैं अपने प्रेम के कारण बार-बार अपने
सेवक नबियों को भेजता रहा, और उनके माध्यम
से कहता रहा, 'ओह, यह घृणित कार्य मत
करो, मैं इस पूजा-पाठ से घृणा करता हूं।'
5लेकिन उन्होंने मेरी बात नहीं सुनी, और न मेरी
चेतावनी पर ध्यान ही दिया। उन्होंने घृणित
दुष्कर्म करना नहीं छोड़ा। वे अन्य देवताओं को
धूप जलाते रहे। 6अत: मैंने उन पर क्रोध और
प्रकोप उण्डेल दिया। मैंने यहूदा प्रदेश के नगरों
और यरूशलेम के गली-कूचों को अपनी
क्रोधाग्नि से भस्म कर दिया। वे उजाड़ और
निर्जन हो गए, और आज तक वैसे ही उजाड़
और निर्जन पड़े हैं।

7 'मैं, इस्राएल का परमेश्वर, स्वर्गिक
सेनाओं का प्रभु परमेश्वर यों कहता हूं: यह
दुष्कर्म करके तुम अपने पैरों पर क्यों कुल्हाड़ी
मारते हो? तुम यहूदा के स्त्री-पुरुष और बच्चों
को क्यों नष्ट करना चाह रहे हो? यों तुम्हारी
जाति समूल नष्ट हो जाएगी, और एक भी यहूदी
नहीं बचेगा। 8तुम ऐसे काम क्यों करते हो
जिससे मेरा क्रोध भड़क उठे? जिस मिस्र देश
में तुम रहने आए थे, वहां के अन्य देवताओं को
तुम धूप जलाने लगे। सुनो, अपने इस दुष्कर्म
के कारण तुम नष्ट हो जाओगे, और संसार के
सब देशों में तुम शापित, कलंकित कौम
कहलाओगे। 9क्या तुम अपने दुष्कर्मों और
अपने पूर्वजों के दुष्कर्मों को भूल गए? क्या
तुम्हें वे दुष्कर्म याद नहीं रहे, जो यहूदा प्रदेश
के राजाओं, रानियों और तुम्हारी स्त्रियों ने
यहूदा प्रदेश के नगरों में, यरूशलेम की गलियों
में किये थे? 10आज भी उन्होंने अपने दुष्कर्मों
से पश्चात्ताप कर अपने हृदय को विनम्र नहीं
किया। वे मेरी भक्ति नहीं करते। जो धर्म-
नियम और संविधियां मैंने तुम्हारे सामने और
तुम्हारे पूर्वजों के सम्मुख रखी थीं, उन के
अनुरूप वे आचरण नहीं करते।

11 'इसलिए, सुनो, मैं — स्वर्गिक सेनाओं
का प्रभु, इस्राएल का परमेश्वर यों कहता हूं:
मैं तुम्हारा अनिष्ट करने के लिए तुम्हारी ओर
उन्मुख हूंगा, और यहूदा के समस्त वंशजों को
नष्ट कर दूंगा। 12जो यहूदा प्रदेश के बचे हुए
लोग मिस्र देश में बसने के लिए इधर आ रहे
हैं, मैं उन पर हाथ उठाऊंगा, और वे सब पूर्णत:
नष्ट हो जाएंगे। वे मिस्र देश में मर-मिट
जाएंगे। तलवार और अकाल से वे मारे जाएंगे;
हाँ, छोटे-बड़े सबका तलवार और अकाल से
संहार होगा। वे लोगों के लिए आतंक का
कारण बनेंगे और शापित कहलाएंगे। लोग
उनसे घृणा करेंगे और उनकी निंदा करेंगे।
13जैसे मैंने यरूशलेम के निवासियों को तलवार,
अकाल और महामारी से दण्ड दिया था, वैसे
ही मैं मिस्र देश में बसनेवाले यहूदा प्रदेश के
लोगों को दूंगा। 14तब यहूदा प्रदेश के बचे हुए
लोग जो मिस्र देश में आकर बस गए हैं, पूर्णत:
नष्ट हो जाएंगे। यदि वे स्वदेश लौटने की इच्छा
करते हैं तो भी वे यहां से बच कर, अपना प्राण
बचा कर, यहूदा प्रदेश नहीं जा सकेंगे कि वहां
पुन: बस जाएं। केवल कुछ लोग भाग कर

---

44 : 4 यिर 7 : 25

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अपना प्राण बचाएंगे, और यहूदा प्रदेश को
लौटेंगे।'
15 जो पति यह जानते थे कि उनकी पत्नियां
अन्य देवताओं के लिए धूप जलाती हैं, उन्होंने
तथा उनके साथ उन स्त्रियों ने भी, जो स्वयं
देवताओं को धूप चढ़ाती थीं, और जो बड़ी
संख्या में वहां उपस्थित थीं, यिर्मयाह को उत्तर
दिया। (ये सब मिस्र देश के पत्रोस प्रदेश में
रहते थे।) 16 उन्होंने कहा, 'प्रभु के नाम में
तुमने हमसे जो बातें कहीं हैं, हम नहीं सुनेंगे।
17जो हम करते थे, करते हैं, और जो हमारे
पूर्वजों ने, राजाओं ने, और हमारे उच्चाधिकारियों
ने यहूदा प्रदेश के नगरों में, यरूशलेम की
गलियों में किया था, वह करते रहेंगे। हम
आकाश की रानी की मन्नतें मानेंगे, उसको धूप
जलाएंगे, और उसको पेयबलि चढ़ाएंगे। उन
दिनों में हम सुख-समृद्धि से रहते थे, पेट भर
रोटी खाते थे, और हम पर कोई विपत्ति नहीं
आई थी। 18लेकिन जब हमने आकाश की रानी
के लिए धूप जलाना छोड़ दिया, उसको
पेयबलि नहीं चढ़ायी, तब हम पर अभाव का
पहाड़ टूट पड़ा; हम तलवार और अकाल से
नष्ट हो गए।' 19स्त्रियों ने कहा, 'हां, हम
आकाश की रानी के लिए धूप जलाती हैं,
उसको पेयबलि चढ़ाती हैं। पर यह हम अपने-
अपने पति की अनुमति से करती हैं। हम बिना
अपने-अपने पति को बताए आकाश की रानी
को पेयबलि नहीं चढ़ातीं, और न चन्द्राकार
रोटियां चढ़ाती हैं।'
20 तब यिर्मयाह ने सब लोगों से, स्त्री-
पुरुषों से, उन सब से जिन्होंने उन को उत्तर
दिया था, यह कहा, 21'क्या प्रभु भूल गया था
कि तुम और तुम्हारे पूर्वज, तुम्हारे राजा और
उच्चाधिकारी यहूदा प्रदेश के नगरों, यरूशलेम
की सड़कों पर आकाश की देवी के लिए धूप
जलाते थे ? क्या प्रभु को तुम्हारे इस दुष्कर्म का
ध्यान नहीं था ? 22सुनो, यह असहनीय था;
प्रभु और अधिक तुम्हारे इस दुष्कर्म को, इस
घृणास्पद कार्य को सह नहीं सका। उसने
तुम्हारे देश को उजाड़ दिया। तुम्हारा देश निर्जन
और सुनसान हो गया। वह शापित हो गया और
बर्बाद हो गया, जैसा वह आज तक है।
23क्योंकि तुमने आकाश की रानी के लिए धूप
जलायी थी; क्योंकि तुमने प्रभु के प्रति पाप
किया था, और उसकी वाणी नहीं सुनी थी।
तुमने उसके धर्मनियमों, संविधियों और साक्षियों
के अनुरूप आचरण नहीं किया; इस कारण यह
विपत्ति तुम पर आयी, और आज तक बनी हुई
है।'
24 यिर्मयाह ने स्त्री-पुरुषों से पुनः कहा,
'ओ यहूदा प्रदेश के रहनेवालो, तुम जो मिस्र
देश में बस गए हो, प्रभु का वचन सुनो।
25स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु, इस्राएल का
परमेश्वर यों कहता है: तुमने और तुम्हारी
पत्नियों ने अपने मुंह से कहा है, और अपने
हाथों से उसको पूरा भी किया है कि जो मन्नतें
हमने मानी हैं, उनको हम अवश्य पूरा करेंगी;
हम निस्सन्देह आकाश की रानी को धूप
जलाएंगी, और उसको पेयबलि चढ़ाएंगी। तो
तुम अपनी मन्नतें मानो और उनको अवश्य पूरा
करो! 26लेकिन, ओ यूहादा प्रदेश के रहनेवालो,
तुम जो मिस्र देश में बस गए हो, प्रभु का यह
वचन सुनो। मैं-प्रभु यह कहता हूं: मैंने अपने
महान नाम की शपथ खाई है कि अब यहूदा
प्रदेश का रहनेवाला कोई भी मनुष्य, जो मिस्र
देश में बस गया है, मेरा नाम अपनी जबान पर
नहीं लाएगा, और न यह कहेगा: ''जीवन्त प्रभु
की सौगन्ध।'' 27मैं उनके हित के लिए नहीं,
वरन् अहित के लिए उन पर टकटकी लगाए हूं।
जब तक मिस्र देश में बसनेवाले यहूदा प्रदेश
के सब लोगों का संहार नहीं हो जाता, तब तक
तलवार और अकाल उनको नष्ट करते रहेंगे।
28जो लोग तलवार की मार से बच जाएंगे, वे
मिस्र देश से यहूदा प्रदेश को लौटेंगे, किन्तु
उनकी संख्या थोड़ी ही होगी। तब यहूदा प्रदेश
के ये बचे हुए लोग जो मिस्र देश में बसने के
लिए आए हैं, इस सच्चाई को जानेंगे कि मेरा
वचन सच सिद्ध हुआ अथवा उनका।

44 : 19 यिर 7 : 18

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

29 'प्रभु कहता है: जब मैं तुम्हें इस देश में
दण्ड दूंगा, तब यह उसका संकेत-चिह्न होगा,
ताकि तुम यह निश्चय ही जान लो कि मेरे ये
अनिष्ट वचन अवश्य पूरे होंगे : 30जैसा मैंने यहूदा
प्रदेश के राजा सिदकियाह को उसके शत्रु,
उसके प्राणों के ग्राहक बेबीलोन के राजा
नबूकदनेस्सर के हाथ में सौंप दिया था, वैसे ही
मैं मिस्र देश के राजा फरओ होप्रा को उसके
शत्रुओं के हाथ में, उसके प्राणों के ग्राहक
बेबीलोन के राजा के हाथ में सौंप दूंगा। मैं-प्रभु
यह कहता हूं।'

बारूक को नबी यिर्मयाह का सन्देश

45 यहूदा प्रदेश के राजा यहोयाकीम बेन-
योशियाह के राज्य-काल के चौथे वर्ष
में बारूक बेन-नेरियाह ने नबी यिर्मयाह की
नबूवतों की यह पुस्तक लिख कर समाप्त की।
नबी यिर्मयाह ने उसको अपने मुंह से बोल कर
लिखवाया था।

जब बारूक पुस्तक लिख चुका तब यिर्मयाह
ने उससे कहा: 2'ओ बारूक, इस्राएल का प्रभु
परमेश्वर तुझ से यों कहता है: 3तूने अपने आप
से यह कहा था: "मुझे धिक्कार है! क्या मेरा
दु:ख कम था कि प्रभु मुझ पर एक के बाद एक
विपत्ति ढाहता रहा। मैं कराहते-कराहते थक
गया। मुझे कहीं चैन नहीं मिला।" 4प्रभु ने मुझसे
कहा, "यिर्मयाह, तू उससे कहना: प्रभु यों
कहता है: जो मैंने बनाया था, उसको अब मैं
ध्वस्त कर रहा हूं। जिसको मैंने रोपा था, अब
उसको मैं उखाड़ रहा हूं- अर्थात् इस सम्पूर्ण
देश को। 5क्या तू अपने लिए प्रशंसा की बातें
ढूंढ़ रहा है? ओ बारूक, तू उनको मत ढूंढ़!
मुझ-प्रभु की यह वाणी है: मैं समस्त प्राणियों
पर विपत्ति ढाहने पर हूं। परन्तु तू जहां-कहीं
भी जाएगा, वहां मैं तेरे प्राण की रक्षा करूंगा,
मानो तेरा प्राण युद्ध में प्राप्त भेंट हो।"'

अन्य राष्ट्रों के सम्बन्ध में नबूवतें

46 अन्य राष्ट्रों के सम्बन्ध में प्रभु के ये
वचन यिर्मयाह को मिले।
2 मिस्र देश के राजा फरओ नको की सेना
फरात महानदी के तट पर कर्कमीश में डेरा डाले
हुए थी। उसको बेबीलोन के राजा नबूकदनेस्सर
ने यहूदा प्रदेश के राजा यहोयाकीम बेन-
योशियाह के राज्य-काल के चौथे वर्ष में
पराजित किया था।

प्रभु ने मिस्र देश की सेना के सम्बन्ध में यह
कहा:

3 'ओ सैनिको, फरियां और ढालें तैयार करो
और फिर युद्ध के लिए आगे बढ़ो।
4 ओ घुड़ सवारो, अपने घोड़ों को कसो,
और उन पर सवार हो।
अपना शिरस्त्राण पहिनो,
और अपने स्थान पर खड़े हो।
भालों को पैना करो, और कवच पहिन लो।

5 'मैं यह क्या देख रहा हूं ?
वे हताश होकर पीछे हटने लगे हैं।
उनके योद्धा पराजित हो गए,
और वे तुरन्त पीठ दिखाकर भाग गए।
वे पीछे मुड़कर नहीं देख रहे हैं;
चारों ओर आतंक छा गया है।
प्रभु की यह वाणी है।
6 वेग से दौड़नेवाला भाग भी नहीं सकता,
और न ही योद्धा बच सकता है;
उत्तर में फरात नदी है;
देखो, वे उसके तट पर लड़खड़ा कर गिर रहे हैं।

7 'यह कौन है ?
यह नील नदी की बाढ़ के सदृश,
महानदी की बाढ़ के सदृश
कौन उठ रहा है ?
8 यह मिस्र है,
जो नील नदी की तरह उठता है;
वह महानदियों की बाढ़ के सदृश ऊंचा उठता है।
वह कहता है, "मैं ऊपर उठूंगा
और पृथ्वी को ढक लूंगा।
मैं नगरों को नष्ट कर दूंगा,

---

46 यश 19 46 : 5 यिर 6 : 25; भज 31 : 13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और उसके निवासियों का संहार कर
दूंगा।''
9 ओ घुड़ सवारो, आगे बढ़ो;
ओ रथ सवारो, वेग से बढ़ो।
योद्धा आगे जाएं,
ढाल संभालनेवाले कूश और पूत के योद्धा
आगे जाएं,
लूद के अचूक निशानेबाज धनुर्धारी आगे
बढ़ें।
10 यह दिन स्वर्गिक सेनाओं के स्वामी, प्रभु का
दिन है,
उसके प्रतिशोध का दिन है।
वह उस दिन अपने बैरियों से प्रतिशोध
लेगा।
उस दिन तलवार छक कर खून पीएगी!
वह पूर्ण सन्तुष्ट होगी।
वह बैरी के रक्त से अपनी प्यास बुझाएगी।
क्योंकि उत्तर के देश में
फरात नदी के तट पर
स्वर्गिक सेनाओं का स्वामी प्रभु
बलियज्ञ कर रहा है।
11 ओ मिस्र! ओ कुंआरी कन्या!
गिलआद प्रदेश जा,
और वहां से बलसान औषधि ला।
अब तक तूने व्यर्थ ही अनेक दवाइयां लीं;
तू स्वस्थ नहीं होगी।
12 विश्व के राष्ट्र तेरे विषय में सुन चुके हैं,
कि तू भ्रष्ट हो चुकी है;
तेरी चिल्लाहट से सारी पृथ्वी गूंज उठी है।
एक योद्धा दूसरे योद्धा से टकरा रहा है;
वे दोनों एक-साथ गिर रहे हैं।'

बेबीलोन का मिस्र देश पर आक्रमण

13 प्रभु ने नबी यिर्मयाह से कहा कि बेबीलोन
का राजा नबूकदनेस्सर आ रहा है, और वह
मिस्र देश पर आक्रमण करेगा।

14 'मिस्र देश में घोषणा करो, मिग्दोल में
सुनाओ,
मेमफिस और तहपन्हेस नगरों में घोषणा
करो,
और लोगों से यह कहो,
''मरने के लिए तैयार हो जाओ,
तुम्हारा वध करने के लिए
तुम्हारे चारों ओर तलवार घूम रही है।''
15 'मेमफिस का एपिस देवता कहां भाग गया?
तेरा वृषभ-देव क्यों सामना न कर सका?
इसलिए न कि प्रभु ने
उसको भूमि पर गिरा दिया है?
16 देखो, जनता में भगदड़ मच गई है।
लोग एक-दूसरे पर गिरे पड़ रहे हैं।
वे परस्पर कह रहे हैं,
''अत्याचारी की तलवार से बच कर आओ,
हम अपने स्वजाति भाइयों के पास,
अपनी जन्म भूमि को लौट जाएं।''
17 मिस्र देश के राजा फरओ का नाम बदल दो,
और कहो, ''अवसर खोकर चिल्लाने-
वाला।'' '

18 राजाधिराज, जिसका नाम स्वर्गिक सेनाओं
का प्रभु है, यह कहता है :
'मेरे जीवन की सौगन्ध!
जैसे पर्वतों में ताबोर पर्वत है,
जैसे समुद्र-तट पर कर्मेल पर्वत है
वैसे ही आने वाला शत्रु
सब शत्रुओं में महाशत्रु है।
19 ओ मिस्र निवासियो!
स्वदेश से निष्कासित होने की तैयारी करो,
अपना बोरिया-बिस्तर बांध लो।
क्योंकि मेमफिस नगर उजाड़ हो जाएगा,
वह निर्जन और खण्डहर बन जाएगा।

20 'मिस्र एक सुन्दर बछिया है,
किन्तु उत्तर देश का डांस उस पर टूट पड़ा
है।
21 उसके किराए के सैनिक
हृष्ट-पुष्ट बछड़ों के समान हैं,
फिर भी वे युद्ध में पीठ दिखाकर,
एक-साथ भाग गए।
उन्होंने शत्रु का सामना नहीं किया।
क्योंकि उनकी विपत्ति का दिन,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उनका दण्ड-दिवस उन पर आ गया है।

22 'मिस्र भागते हुए सांप के सदृश फुफकारता
है;
क्योंकि उसके शत्रु-सैनिक पंक्तिबद्ध हो,
उस पर चढ़े आ रहे हैं;
वे हाथों में कुल्हाड़ी थामे हैं,
मानो वे पेड़ काटने वाले हों।
23 मैं-प्रभु यह कहता हूँ :
वे मिस्र देश के वन को काट देंगे,
यद्यपि वह अत्यन्त सघन है।
वे टिड्डियों से भी अधिक अनगिनत हैं।
उनकी गणना असंभव है।
24 मिस्र की कन्या की इज्जत लूट ली जाएगी,
वह उत्तर दिशा की कौम के हाथ में सौंप
दी जाएगी।'

25 स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु, इस्राएल के
परमेश्वर ने कहा, 'नो नगर के देवता आमोन,
राजा फरओ, मिस्र की जनता तथा उसके
देवताओं एवं राजाओं को और फरओ पर
भरोसा रखने वाले सब लोगों को मैं दण्ड देने
वाला हूं। 26मैं उन सबको उनके प्राणों के ग्राहक,
बेबीलोन के राजा नबूकदनेस्सर तथा उसके
उच्चाधिकारियों के हाथ में सौंप दूंगा। इस दण्ड
के पश्चात् मिस्र देश फिर पहले की ही तरह
आबाद हो जाएगा,' प्रभु की यही वाणी है।

इस्राएली राष्ट्र को सांत्वना

27 'ओ मेरे सेवक याकूब, मत डर।
ओ इस्राएल, मत घबरा।
देख, मैं तुझे दूर देश से,
तेरी सन्तान को, उसके निष्कासन के देश
से,
जहां वह कैद है, निकाल लाऊंगा;
तब याकूब स्वदेश लौटेगा;
वह सुख और चैन से निवास करेगा,
और फिर उसको शत्रु भयभीत नहीं करेगा।

28 'मैं-प्रभु, तुझसे कहता हूं,
ओ मेरे सेवक याकूब, मत डर;
क्योंकि मैं तेरे साथ हूं;
जिन राष्ट्रों में मैंने तुझे खदेड़ दिया था,
उन-सबका मैं पूर्ण संहार करूंगा;
किन्तु मैं तेरा पूर्ण विनाश नहीं करूंगा।
मैं तुझको दण्ड दूंगा,
मैं तुझे बिना दण्ड दिए नहीं छोडूंगा,
परन्तु मैं तुझे उचित परिमाण में दण्ड
दूंगा।'

पलिश्ती राष्ट्र के सम्बन्ध में नबूवत

47 मिस्र देश के राजा फरओ ने गाजा नगर
को पराजित किया। उसके पूर्व ही
पलिश्ती कौम के सम्बन्ध में प्रभु का यह वचन
नबी यिर्मयाह को मिला था।
2 'प्रभु यों कहता है :
देखो उत्तर दिशा में पानी चढ़ रहा है;
और यह उमड़नेवाली बाढ़ में बदल जाएगा।
बाढ़ की धाराएं समस्त देश में,
देश के हर एक नगर में फैल जाएंगी।
नगर और उसके निवासी उन में डूब जाएंगे!
आदमी सहायता के लिए चिल्लाएंगे;
देश के निवासी छाती पीट-पीटकर रोएंगे।
3 जब शत्रु-सेना के घोड़ों की टाप सुनाई देगी,
जब उसके रथ वेग से दौड़ेंगे,
उनके पहियों की गढ़गड़ाहट होगी,
तब बच्चों के पिता के हाथ-पांव
इतने ढीले पड़ जाएंगे कि
वे मुड़कर अपने बच्चों को देखेंगे भी नहीं।
4 क्योंकि पलिश्ती जाति के विनाश का दिन
आ रहा है।
तब सोर और सीदोन के बचे हुए सहायक
भी कट कर उनसे अलग हो जाएंगे;
क्योंकि प्रभु पलिश्तियों को,
कफ्तोर के समुद्र तट पर रहने वाले
बचे हुए लोगों को नष्ट करेगा।
5 पलिश्ती राष्ट्र का नगर-राज्य गाजा मानो गंजा
हो गया।
अश्कलोन बर्बाद हो गया।
ओ अनाकीम के बचे हुए वंशजो,
कब तक तुम पूजा के लिए अपने शरीर को

---

47 यश 14 : 29-31

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

घायल करते रहोगे ?
6 आह ! प्रभु की तलवार ! तू कब शांत होगी ?
अब अपनी म्यान में जा, शान्त हो और थम जा।
7 नहीं, प्रभु की तलवार कैसे रुक सकती है ?
उसे प्रभु ने दायित्व सौंपा है;
उसने उसको नियुक्त किया है कि
वह अश्कलोन और समुद्र तटीय लोगों का संहार करे।'

मोआब राष्ट्र के सम्बन्ध में नबूवत

48 स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु, इस्राएल के परमेश्वर ने मोआब देश के सम्बन्ध में यों कहा :
'शोक ! नबो नगर खण्डहर हो गया।
शत्रु-सेना ने किर्यातइम नगर पर अधिकार कर लिया,
उसका मुंह पराजय के अपमान से काला हो गया।
ऊंचा गढ़ धूल-धूसरित कर दिया गया,
उसे भी अपमान का घूंट पीना पड़ा।
2 मोआब राष्ट्र की कीर्ति नष्ट हो गई।
शत्रु हेश्बोन नगर में उसके विरुद्ध
अहित की योजनाएं बना रहे हैं।
वे कह रहे हैं,
"आओ, हम मोआब को राष्ट्र न बनने दें।"
ओ मदमेन नगर, तू भी सुनसान बनाया जाएगा,
शत्रु की तलवार तेरा पीछा करेगी।

3 'सुनो, होरोनइम से चिल्लाहट का शब्द आ रहा है: विध्वंस! महा विध्वंस!
4 मोआब नष्ट हो गया।
सोअर नगर तक उसकी चीत्कार सुनाई दे रही है।
5 शरणार्थी रोते हुए
लूहीत के चढ़ाव पर चढ़ रहे हैं;
क्योंकि उन्होंने होरनइम की ढाल पर विनाश की चीत्कार सुनी।
6 भागो। अपने प्राण बचाओ।
जंगली गधे की तरह वीरान मरुस्थल में रहो।
7 'क्योंकि तूने अपने गढ़ों और खजानों पर भरोसा किया था,
इसलिए तू भी बन्दी बनाया जाएगा।
तेरा राष्ट्रीय देवता कमोश भी
जंजीरों से जकड़ा जाएगा, और निष्कासित होगा,
और उसके साथ
उसके पुरोहित और उच्चाधिकारी भी
बन्दी बनकर दासत्व में जाएंगे।
8 विनाश करने वाला प्रत्येक नगर में आएगा,
और कोई भी नगर विनाश के पंजे से
बच नहीं सकेगा;
हर एक घाटी विनाश के रक्त से भर जाएगी,
सब मैदान उजड़ जाएंगे, जैसा प्रभु ने कहा है।

9 'मोआब को पंख लग जाएं
तो वह प्राण बचा कर दूर उड़ जाए।
उसके नगर उजड़ जाएंगे;
और उनमें कोई निवास नहीं करेगा।

10 'उस मनुष्य को शाप लगे, जो प्रभु के
काम में आलस्य करता है। शापित है वह मनुष्य
जो प्रभु के आदेश का पालन नहीं करता, और
अपनी तलवार को म्यान में रखता है, और रक्त
नहीं बहाता।

11 'मोआब बचपन से ही सुखी रहा है; वह
मानो पुरानी मदिरा है और उसकी तलछट
निकालने के लिए उसको एक बर्तन से दूसरे
बर्तन में नहीं उण्डेला गया : मोआब कभी बन्दी
हो कर निष्कासित नहीं हुआ। अतः स्वतन्त्रता
का स्वाद अब तक उसके मुंह में है; आजादी
की खुशबू उससे अलग नहीं हुई।
12 'इसलिए, देखो, प्रभु की यह वाणी है,
वे दिन आ रहे हैं, जब मैं मोआब में उण्डेलनेवालों
को भेजूंगा। वे मोआब को उण्डेलेंगे, वे उसको
खाली करेंगे, और जिस पात्र में वह है, उसको
फोड़ देंगे। 13 तब मोआब इस पराजय से अपने
राष्ट्र देवता कमोश के कारण अपमानित होगा,

---

48 यश 15-16 48 : 13 हो 10 : 6; 1 रा 12 : 29

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
जैसे इस्राएल बेतएल देवता के कारण अपमानित
हुआ था, जब उसने बेतएल पर भरोसा किया
था।

14 'ओ मोआब के सैनिको, तुम यह कैसे
कह सकते हो कि तुम वीर सैनिक हो,
महायोद्धा हो ?

15 'देखो, मोआब का विनाश करने वाला
आ गया। और वह नगरों में पहुंच गया; मोआब
के सर्वोत्तम सैनिक मौत के घाट उतार दिए गए।
राजाधिराज ने, जिसका नाम "स्वर्गिक सेनाओं
का प्रभु है," यह कहा है।

16 'मोआब के संकट का दिन समीप आ
गया, उसकी विपत्ति तेजी से बढ़ी चली आ रही
है।

17 ओ राष्ट्रो, तुम जो उसके आसपास हो,
तुम जो उसके नाम से परिचित हो,
उसके लिए शोक मनाओ,
और कहो, "शोक! शक्तिशाली राजदण्ड,
तेजस्वी अधिकार-दण्ड कैसे टूट गया ?"

18 ओ दीबोन के निवासियो!
अपने गौरवशाली आसन से नीचे उतरो,
और सूखी भूमि पर बैठो।
क्योंकि मोआब के विनाशक ने
तुम पर आक्रमण किया है।
उसने तुम्हारे गढ़ों को ध्वस्त कर दिया है।

19 ओ अरोएर के निवासियो!
मार्ग के किनारे खड़े हो, और शरणार्थियों
को देखो,
प्राण बचाकर भागनेवालों से पूछो,
"क्या हुआ ? तुम क्यों भाग रहे हो ?"

20 वे तुम्हें बताएंगे कि मोआब का पतन हो गया,
उसको पराजय का अपमान सहना पड़ा।
रोओ, और पुकारो।
अर्नोन नगर में भी बताओ
कि मोआब नष्ट हो गया।

21 'प्रभु ने इन नगरों को दण्ड की आज्ञा दी
है : पठार की भूमि के नगर, होलोन, यहसा,
मेपात, 22 दीबोन, नबो, बेत-दिबलातइम,
23 किर्यातइम, बेतगामूल, बेतमोन, 24 करियोत
और बोसुरा। इनके अतिरिक्त मोआब के दूर
और पास के सब नगर। 25 प्रभु कहता है: मोआब
की शक्ति का सींग कट गया, उसकी भुजाएं टूट
गईं।

26 'मोआब ने प्रभु के विरुद्ध स्वयं को
महान समझा था; उसको विनाश की मदिरा
पिलाओ। तब मोआब अपने वमन में लोटेगा,
और देखनेवाले उसका मजाक उड़ाएंगे। 27 ओ
मोआब, क्या तूने इस्राएल का मज़ाक नहीं
उड़ाया था ? क्या इस्राएल चोरों के साथ पकड़ा
गया था कि जब तू उसकी चर्चा करता था तब
उपेक्षा से सिर हिलाता था ?

28 'ओ मोआब के निवासियो!
नगर छोड़कर पहाड़ी की गुफा में जा बसो।
कबूतरों के समान बन जाओ
जो गुफा के मुंह के किनारों पर घोंसला
बनाते हैं।

29 हमने मोआब के विषय में सुना है
कि वह बहुत घमण्डी है,
वह बढ़-बढ़कर बातें करता है;
वह अभिमान करता है, वह धृष्ट वचन
बोलता है।
उसके हृदय में अहंकार भरा है।

30 प्रभु कहता है, "मैं उसकी धृष्टता जानता हूं,
उसका शेखी मारना केवल झूठ है,
उसके बड़े बोलों से कुछ न बन पड़ा।"

31 इसलिए मैं मोआब के लिए रोता हूं,
मैं उसके लिए चिल्लाता हूं;
मैं कीरहेरेस नगर के लोगों के लिए शोक
मनाता हूं।

32 ओ सिबमा की अंगूर लता,
मैं तेरे लिए याजेर नगर से अधिक विलाप
करता हूं।
तेरी शाखाएं समुद्र तट तक,
याजेर तक फैल गई थीं।
किन्तु विनाश करनेवाला, तेरे ग्रीष्म फलों
पर,
तोड़े हुए अंगूर के भण्डारों पर टूट पड़ा है।

33 मोआब की उपजाऊ भूमि से
आनन्द और हर्ष विदा हो गए।
मैंने अंगूर रस-कुण्डों में रस सुखा दिया,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अब हंसते-गाते किसान
रसकुण्डों से रस नहीं निकालते।
उनके मुंह से हर्ष की आवाज नहीं निकलती।
34 'हेशबोन और एलालेह चिल्ला रहे हैं।
उनकी चिल्लाहट की आवाज यहस तक सुनाई
दे रही है। उनकी आवाज सोअर से होरोनइम,
और एग्लत-शलीशिया तक सुनाई दे रही है;
क्योंकि निम्रीम के जलाशय भी सूख गए हैं।
35 प्रभु कहता है: "मैं मोआब देश में से उसका
पूर्ण संहार कर दूंगा, जो पहाड़ी शिखर के
मन्दिरों में कमोश देवता को बलि चढ़ाएगा,
और धूप जलाएगा।"
36 'मेरा हृदय मोआब के लिए बांसुरी की
करुण रागिनी के सदृश रो रहा है। मेरा हृदय
कीरहेरेस के निवासियों के लिए शोक से
व्याकुल है, मानो बांसुरी पर शोक का आलाप
हो रहा है। मोआब और कीरहेरेस का कमाया
हुआ सारा धन नष्ट हो गया।
37 'प्रत्येक आदमी ने अपना सिर और
अपनी दाढ़ी मूँड़ी है। उन्होंने शोक प्रकट करने
के लिए अपने शरीर पर घाव किये हैं, और
कमर में टाट का वस्त्र पहिना है।
38 मोआब के
मकानों की छतों और चौकों पर रोना-पीटना
हो रहा है: सब जगह विलाप ही विलाप हो रहा
है; क्योंकि मैंने मिट्टी के बरतन की तरह
मोआब को तोड़ दिया है; अब उसकी ओर
कोई ध्यान नहीं देता। प्रभु की यह वाणी है।
39 'मोआब कैसे टूटा पड़ा है! लोग कैसे
छाती पीट-पीटकर रो रहे हैं! मोआब अपमान
में डूबा हुआ कैसे मुंह छिपा रहा है! मोआब
के आस-पास के राष्ट्र उसका मजाक उड़ा रहे
हैं, मोआब उनकी दृष्टि में आतंक का कारण
बन गया है।'
40 प्रभु यों कहता है :
'देखो, कोई बाज की तरह वेग से उड़ेगा,
और मोआब पर उसके विनाश के लिए
अपने पंख फैलाएगा।
41 वह मोआब के नगरों पर अधिकार कर
लेगा।
वह उसके गढ़ों को घेर लेगा।
जैसे प्रसव के समय
स्त्री का हृदय डर से कांपता है,
वैसे ही उस दिन
मोआब के योद्धाओं का हृदय डर से कांपेगा।
42 मोआब उस दिन पूर्णत: नष्ट हो जाएगा,
वह एक राष्ट्र के रूप में समाप्त हो जाएगा,
क्योंकि उसने प्रभु के विरुद्ध
स्वयं को महान समझा था।
43 प्रभु कहता है : "ओ मोआब के निवासियो,
तुम्हारे सामने आतंक, गड्ढा और फन्दा
फैले हुए हैं।
44 जो मनुष्य आतंक से डर कर भागेगा,
वह गड्ढे में गिरेगा;
और जो गड्ढे से बाहर निकलेगा,
वह फंदे में फंसेगा।
मैं- प्रभु कहता हूँ: मोआब के दण्ड-वर्ष
के दिनों में
मैं मोआब पर ये विपत्तियां ढाहूंगा।"
45 'शरणार्थी हेशबोन की छाया में खड़े हैं,
किन्तु उनमें खड़े रहने का सामर्थ नहीं है।
देखो, हेशबोन से अग्नि-ज्वाला निकली,
सीहोन के महल से लपटें निकलीं,
और उसने मोआब का माथा भस्म कर
दिया,
उपद्रवी राजपुत्रों के मुकुट को धूल-
धूसरित कर दिया।
46 ओ मोआब, शोक! शोक!
कमोश के अनुयायी नष्ट हो गए!
तेरे नागरिक, स्त्री और पुरुष
बन्दी बनकर निष्कासित हो गए।
47 प्रभु कहता है, "तो भी मैं मोआब की समृद्धि
आनेवाले दिनों में पुन: लौटाऊंगा।"
मोआब का दण्ड-विचार समाप्त हुआ।'

अम्मोन राष्ट्र के सम्बन्ध में नबूवत

49 अम्मोनी राष्ट्र के सम्बन्ध में प्रभु यों
कहता है :
'क्या इस्राएल निर्वंश हो गया?

48 : 45 गण 21 : 28 **49 : 1-6** यहेज 21 : 28-32; 25 : 1-7; आमो 1 : 13-15; सप 2 : 8-11.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

क्या उसका कोई वारिस नहीं है?
तब अम्मोनी राष्ट्र-देवता मल्काम ने
गाद प्रदेश पर क्यों अधिकार कर लिया,
और अपने निवासियों को
उनके नगरों में बसा दिया?
2 इसलिए, मैं-प्रभु कहता हूं :
देखो, वे दिन आ रहे हैं,
जब मैं अम्मोन राष्ट्र की राजधानी रब्बाह के
विरुद्ध उसके शत्रु को भड़काऊंगा,
और चारों ओर युद्ध की आवाज सुनाई देगी;
रब्बाह उजड़ जाएगा, वह खण्डहर बन
जाएगा।
उसके गांव और कस्बे आग से भस्म हो
जाएंगे।
तब जिन लोगों ने इस्राएली राष्ट्र को
उसके देश से निकाल दिया था,
इस्राएली उनको उनके देश से निकाल देंगे।
प्रभु की यह वाणी है।

3 'ओ हेशबोन, मृत्यु-शोक मना;
क्योंकि अइ नगर उजाड़ हो गया।
ओ रब्बाह की पुत्रियो,
मृत्यु-शोक प्रकट करने के लिए,
अपनी-अपनी कमर में टाट के वस्त्र पहिनो।
छाती पीटती हुई अपने बाड़ों में यहां-वहां
दौड़ो।
निस्सन्देह तुम्हारा राष्ट्रीय देवता मल्काम,
बन्दी बनकर निष्कासित होगा,
और उसके साथ उसके पुरोहित और
उच्चाधिकारी भी बन्दी बनकर जाएंगे।

4 'ओ विश्वासघातिनी पुत्री,
तू अपनी घाटियों पर अभिमान क्यों करती
है?
तुझे अपनी धन-सम्पत्ति पर बड़ा भरोसा था;
तू कहती थी, "मुझ पर कौन हमला कर
सकता है?"
5 सुन, मैं-स्वर्गिक सेनाओं का स्वामी, प्रभु
यह कहता हूं :
मैं तुझ पर आतंक ढाहूंगा,
तेरे आस-पास के राष्ट्र तुझ पर आक्रमण
करेंगे;
और उनके आतंक के कारण
तेरे सब नगर-निवासी प्राण बचाकर भाग
जाएंगे;
इन शरणार्थियों को कोई पुन: एकत्र न कर
सकेगा।
6 किन्तु मैं बाद में अम्मोनियों की समृद्धि
लौटा दूंगा,' प्रभु की यह वाणी है।

एदोम राष्ट्र के सम्बन्ध में नबूवत

7 एदोम राष्ट्र के सम्बन्ध में
स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु ने यह कहा :
'क्या तेमान नगर में बुद्धि का अकाल पड़
गया है?
क्या समझदार व्यक्तियों की सलाह निष्फल
हो गई?
क्या उनकी बुद्धि को पाला मार गया?
8 ओ ददान के रहने वालो!
भागो, शत्रु को पीठ दिखाओ,
और कंदराओं में छिप जाओ।
क्योंकि जब मैं एसाव को दण्ड दूंगा,
तब उस पर विपत्ति ढाहूंगा।
9 क्या अंगूर तोड़ने वाले अंगूर तोड़ते समय
कुछ अंगूर छोड़ देते हैं?
जब चोर रात में चोरी करता है,
तब क्या घर का माल-असबाब सब साफ
नहीं कर देता?
10 इसी प्रकार मैंने एसाव को नंगा कर दिया।
मैंने उसके छिपने के स्थानों को उघाड़ दिया,
और वह स्वयं को फिर न छिपा सका।
उसके बच्चे, उसके भाई-बन्धु,
उसके पड़ोसी सब नष्ट हो गए।
11 'ओ ददान के निवासियो! अपने
पितृहीन बच्चों को, मेरे पास छोड़ जाओ, मैं
उनके जीवन की रक्षा करूंगा; तुम्हारी विधवाएं
मुझ पर भरोसा करें।'
12 प्रभु यों कहता है : 'देख, जिन राष्ट्रों का
रक्त-सम्बन्ध इस्राएल से नहीं है, उनको भी
मैंने दण्ड दिया; उन्होंने मेरे क्रोध की मदिरा पी,

49 : 7-22 यश 34

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तो तू क्या दण्ड से बच जाएगा? ओ एदोम, तू मेरे दण्ड से नहीं बच सकता। तुझे मेरे क्रोध की मदिरा पीना पड़ेगी।
13मैं-प्रभु ने स्वयं अपने जीवन की सौगन्ध खाई है कि बोसरा नगर उजड़ जाएगा। वह दूसरे राष्ट्र के नगरों के लिए आतंक का कारण बन जाएगा। वह शापित नगर कहलाएगा, अन्य जातियां उसकी निन्दा करेंगी। एदोम के सब नगर सदा के लिए उजड़ जाएंगे।'

14 प्रभु ने मुझे यह समाचार दिया है
कि सब राष्ट्रों में एक दूत भेजा गया है।
वह उनसे यह कहता है :
'अपनी सेनाएं एकत्र करो,
और एदोम पर आक्रमण करो;
युद्ध के लिए तैयार हो।'
15 'ओ एदोम! मैं राष्ट्रों में तुझे सबसे छोटा
बना दूंगा।
सब जातियां तुझे तुच्छ समझेंगी।
16 ओ चट्टान की गुफाओं में रहने वाले!
ओ पहाड़ी शिखरों पर निवास करने वाले!
तुझे अपनी शक्ति पर बड़ा घमण्ड था।
और तूने आसपास के राष्ट्रों में
अपनी शक्ति का आतंक फैला रखा था।
तेरे इसी आतंक ने,
तेरे हृदय के घमण्ड ने तुझे धोखा दिया!
यद्यपि तूने बाज की तरह
ऊंचे स्थान पर अपना घोंसला बनाया है,
तो भी मैं तुझे ऊंचे स्थान से नीचे गिराऊंगा।
मुझ-प्रभु की यह वाणी है।

17 'एदोम देश अन्य राष्ट्रों के लिए आतंक का कारण बन जाएगा। जो भी पथिक उस के पास से गुजरेगा, वह उसको देख कर आतंकित हो जाएगा। वह उसके विनाश को देख कर व्याकुल होगा।
18जैसे सदोम और गमोरा नगर-राज्यों तथा उनके आसपास के नगरों के उलट-पुलट जाने के पश्चात् वे निर्जन और उजाड़ हो गए थे, वैसे ही एदोम की दशा होगी। वहां न कोई मनुष्य निवास करेगा, और न ही प्रवास करेगा।
19देखो, जैसे सिंह यर्दन के जंगल से निकलता, तथा मजबूत भेड़शाला पर टूट पड़ता और भेड़ों को तितर-बितर कर देता है, वैसे ही मैं एदोम के निवासियों को एदोम देश से अचानक भगा दूंगा। तब जिसको मैं चुनूंगा, उस को उन पर नियुक्त करूंगा।

'मेरे समान ईश्वर कौन है? कौन मेरे निर्णय को चुनौती दे सकता है? कौन राजा—अपनी प्रजा का चरवाहा—मेरे सम्मुख खड़ा हो सकता है?
20अत: सुनो, मैं-प्रभु ने एदोम के विरुद्ध एक योजना बनाई है। मैंने निश्चय किया है कि तेमान के निवासियों को दण्ड दूंगा। उसका शत्रु भेड़शाला के छोटे-से-छोटे बच्चों को भी घसीट ले जाएगा। भेड़शाला उनकी इस दशा को देख कर भयाकुल हो उठेगी।
21उनके गिरने की आवाज सुनकर पृथ्वी कांप उठेगी। उनके चीत्कार की आवाज लाल सागर* तक सुनाई देगी।
22देखो, वह बाज की तरह वेग से उड़कर आएगा, और बोसरा पर अपने पंख फैला देगा। जैसे प्रसव के समय स्त्री का हृदय डर से कांपता है, वैसे ही उस दिन एदोम के योद्धाओं का हृदय डर से कांपेगा।'

दमिश्क के सम्बन्ध में नबूवत

23 प्रभु ने दमिश्क नगर के सम्बन्ध में यह
कहा :
'जब हमात और अर्पद नगरों ने ये दु:खद
समाचार सुने
तब वे हताश हो गए।
डर से उनके हाथ-पैर फूल गए,
वे अशान्त सागर के समान कांपने लगे।
अशांत सागर को कौन शान्त कर सकता है?
24 दमिश्क कमजोर हो गया,
घबराहट ने उसको दबोच लिया,
वह सिर पर पैर रखकर भाग रहा है।
जैसे प्रसव के समय स्त्री
पीड़ा और कष्ट में डूब जाती है,
वैसे ही दमिश्क पर दु:ख के बादल मंडरा रहे
हैं।

---

* अथवा, ''अकाबा की खाड़ी''।

49 : 18 उत 19 : 24 **49 : 19** प्रज्ञ 12 : 12 **49 : 23-27** यश 17 : 1-3

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

25 आनन्द-उल्लास से भरा नगर!
विश्व में विख्यात् नगर!
प्रभु ने विनाश के लिए तुझे क्यों त्याग दिया?
26 स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु कहता है,
दमिश्क के चौराहों पर उसके युवक तलवार से
मौत के घाट उतारे जाएंगे,
और उस दिन उसके सब सैनिकों का संहार होगा।
27 मैं दमिश्क की शहरपनाह में आग लगाऊंगा,
और यह आग
राजा बेन-हदद के महलों को भस्म कर देगी।'

अरबों के सम्बन्ध में नबूवत

28 केदार और हासोर राज्यों के सम्बन्ध में नबूवत। इनको बेबीलोन के राजा नबूकदनेस्सर ने पराजित किया था।

प्रभु यों कहता है: 'ओ बेबीलोन के सैनिको,
उठो, और केदार नगर पर आक्रमण करो;
पूर्व देश के लोगों को नष्ट कर दो।
29 बेबीलोन के सैनिक
केदार के निवासियों के तम्बू
और भेड़-बकरियां हांककर ले जाएंगे;
वे उनकी कनातें और माल-असबाब
लूट कर ले जाएंगे;
वे उनके ऊंटों को उनसे छीन लेंगे;
लोग पुकार कर उनसे कहेंगे:
''चारों ओर आतंक ही आतंक छाया है।''
30 प्रभु कहता है: ओ हासोर के निवासियो! भागो,
नगर से दूर चले जाओ,
और कन्दराओं में छिप जाओ।
क्योंकि बेबीलोन के राजा नबूकदनेस्सर ने
तुम्हारे विनाश के लिए एक योजना बनाई है,
उसने तुम्हें नष्ट करने का निश्चय किया है।'
31 प्रभु कहता है: 'सुख-चैन से रहने वाले,
निश्चिंत निवास करने वाले राष्ट्र पर
आक्रमण करने के लिए उठो,
और उसके विरुद्ध मोर्चाबन्दी करो।
वे तम्बुओं में रहते हैं,
उनके नगरों में न प्रवेश-द्वार हैं,
और न फाटकों में अर्गलाएं हैं।
32 तुम्हें लूट में ऊंट मिलेंगे,
तुम उनके पशुओं के रेवड़ों पर कब्जा कर लोगे;
क्योंकि मैं उस कौम को,
दाढ़ी के कोने मूंड़ने वाली जाति को
सब दिशाओं में तितर-बितर करूंगा;
मैं चारों दिशाओं से उस पर विपत्ति डालूंगा।
33 हासोर नगर गीदड़ों का डेरा बनेगा,
वह सदा के लिए उजाड़ हो जाएगा;
न उसमें कोई निवास करेगा,
और न प्रवास करेगा,' प्रभु की यह वाणी है।

एलाम देश के सम्बन्ध में नबूवत

34 यहूदा प्रदेश के राजा सिदकियाह के राज्य-काल के आरम्भ में प्रभु का यह वचन नबी यिर्मयाह को मिला। प्रभु ने एलाम देश के सम्बन्ध में यह कहा:

35 स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु यों कहता है:
'देखो, एलाम का बल उसकी धनुष-विद्या में
है; मैं उसके धनुष को तोड़ डालूंगा। 36मैं आकाश
के चारों कोनों से, चारों दिशाओं से एलामियों
पर विपत्ति डालूंगा, और उनको चहुंओर
तितर-बितर कर दूंगा। संसार में एक भी ऐसा
राष्ट्र न होगा, जहां एलाम से निकाले गए
शरणार्थी न आएंगे। 37मैं-प्रभु कहता हूँ: मैं
एलाम को उसके शत्रुओं के सामने, उसके
प्राणों के ग्राहकों के सम्मुख आतंकित करूंगा।
मैं अपनी क्रोधाग्नि के कारण उस पर विपत्ति
ढाहूंगा। मैं अपनी विनाशकारी तलवार भेजूंगा,
जो एलोम के निवासियों का पीछा करती रहेगी,
जब तक मैं उनका पूर्णतः विनाश न कर दूंगा।
38मैं उनके राजा और उच्चाधिकारियों को नष्ट
करूंगा और एलाम देश में अपना सिंहासन
प्रतिष्ठित करूंगा,' प्रभु की यह वाणी है।
39 'किन्तु मैं बाद में एलाम राष्ट्र की समृद्धि
लौटा दूंगा।' प्रभु की यह वाणी है।

---

49 : 29 यिर 6 : 25; भज 31 : 13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बेबीलोन के सम्बन्ध में नबूवत

50 प्रभु ने नबी यिर्मयाह के माध्यम से
कसदी जाति के बेबीलोन देश के
सम्बन्ध में यह कहा;
2 'सब देशों में यह घोषणा करो,
राष्ट्रों में यह सन्देश सुनाओ, ध्वजा फहराओ,
और घोषणा करो और समाचार को मत
छिपाओ,
किन्तु यह कहो : "बेबीलोन पराजित हो
गया,
उसका राष्ट्रीय देवता बेल
इस पराजय से अपमानित हुआ,
मरोदक देवता व्याकुल हो गया।
उसकी मूर्तियों का मुंह काला हो गया;
उसकी प्रतिमाओं का गौरव धूल में मिल
गया।"
3 'उत्तर दिशा से एक राष्ट्र ने उस पर
आक्रमण किया है। वह बेबीलोन देश को
उजाड़ देगा, और वह निर्जन हो जाएगा। मनुष्य
और पशु, सब प्राणी वहां से भाग जाएंगे।'

इस्राएलियों की स्वदेश वापसी

4 प्रभु कहता है, 'उन दिनों में, उस समय
इस्राएल प्रदेश और यहूदा प्रदेश के लोग एक
साथ लौटेंगे। वे पश्चात्ताप के कारण रोते हुए
लौटेंगे, और अपने प्रभु-परमेश्वर को खोजेंगे।
5 वे सियोन की ओर उन्मुख हो, यह पूछेंगे,
"सियोन का मार्ग कौन-सा है?" वे परस्पर
यह कहेंगे, " आओ, हम प्रभु के साथ शाश्वत
विधान स्थापित करें, जो कभी भुलाया न जा
सकेगा। आओ, हम प्रभु से मेल-मिलाप कर
लें।"
6 'मेरे निज लोग भटकी हुई भेड़ें हैं। उनके
चरवाहों ने उनको भटका दिया है। वे उनको
पहाड़ों पर भटकाते रहे। भेड़ें एक पहाड़ से
दूसरे पहाड़ पर गईं, और वे अपने बाड़ों को
भूल गईं। 7 जिन्होंने भटकी हुई भेड़ों को पाया,
वे उनको खा गए। उनके शत्रुओं ने कहा,
"हमारा इसमें कोई दोष नहीं है; क्योंकि
उन्होंने अपने सच्चे प्रभु के प्रति पाप किया है;
ऐसा प्रभु जो धर्म का आधार है, जो उनके
पूर्वजों का आश्रय था।"

बेबीलोन का पतन

8 'ओ इस्राएलियो, बेबीलोन देश से भाग
जाओ, कसदी कौम के देश से बाहर निकलो।
जैसे बाड़ा खुलने पर बकरा पहले बाहर
निकलता है, वैसे ही तुम इस देश से सर्वप्रथम
बाहर निकलो। 9 क्योंकि, देखो, मैं उत्तर के देश
से राष्ट्रों के एक दल को उभाड़ कर ला रहा हूं।
वे बेबीलोन पर आक्रमण करेंगे। वे उसके
विरुद्ध युद्ध के लिए पंक्तिबद्ध होंगे। वे उत्तर
दिशा से बेबीलोन पर अधिकार कर लेंगे। उनके
बाण मानो कुशल योद्धा हैं, जो युद्ध से कभी
खाली हाथ नहीं लौटता। 10 कसदी कौम का
देश लूट लिया जाएगा। लूटने वाले उसको
इतना लूटेंगे कि वे अघा जाएंगे।' प्रभु की यह
वाणी है।

लुटेरों को चेतावनी

11 'मेरी मीरास को लूटनेवालो!
अभी तुम आनन्द मना रहे हो,
तुम हर्षित हो रहे हो।
घास पर बछिया के समान कूद-फांद रहे
हो,
जवान घोड़ों की तरह हिनहिना रहे हो।
12 किन्तु, स्मरण रखो,
तुम्हारी मातृ-भूमि की इज्जत लूटी जाएगी;
तुम्हारी जननी का अनादर होगा।
जो सब राष्ट्रों में प्रथम थी, वह अब अंतिम
होगी।
तुम्हारी मातृ-भूमि उजाड़, निर्जन और
मरुस्थल बन जाएगी।
13 प्रभु के क्रोध के कारण
वह कभी आबाद नहीं होगी;
किन्तु सदा उजाड़ पड़ी रहेगी।
बेबीलोन से गुजरने वाला
उसको देखकर भय से कांप उठेगा,
वह उसके घावों को देखकर
व्याकुल हो जाएगा।
14 ओ सब धनुषधारियो!

50-51 यश 13 : 1—14 : 23 50 : 8 यश 48 : 20; यिर 51 : 6; 2 कुर 6 : 17; प्रक 18 : 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बेबीलोन नगरी के चारों ओर उसके विरुद्ध
पंक्तिबद्ध हो।
उसको अपने तीरों का निशाना बनाओ,
अपने तरकश के तीर खाली कर दो।
क्योंकि उसने प्रभु के प्रति पाप किया है।
15 चारों ओर से उसको ललकारो।
देखो, वह समर्पण कर रही है।
उसकी प्राचीरें गिर गईं, उसकी दीवारें ढह
गईं।
क्योंकि प्रभु उससे प्रतिशोध ले रहा है;
तुम भी उससे बदला लो;
जैसा उसने तुम्हारे साथ किया था,
वैसा ही तुम उसके साथ करो।
16 बेबीलोन देश के बीज बोने वाले को नष्ट
कर दो।
जो फसल के समय कटाई करता है,
उसका संहार कर दो।
अत्याचारी की तलवार से बचकर
हर आदमी अपने जाति-भाइयों के पास
लौटेगा,
वह भागकर अपने ही देश को जाएगा।

इस्राएलियों का सुन्दर भविष्य

17 'इस्राएली कौम एक सतायी हुई भेड़ है,
जिसके पीछे सिंह हाथ धोकर पड़े हैं; उन्होंने
इस्राएल को एक स्थान से दूसरे स्थान में
भगाया। पहले तो असीरिया के राजा ने उसका
मांस खाया, और अंत में अब बेबीलोन के राजा
नबूकदनेस्सर ने उसकी हड्डियां चबा डालीं।
18 अत: इस्राएल का परमेश्वर, स्वर्गिक सेनाओं
का प्रभु यों कहता है : जैसे मैंने असीरिया के
राजा को दण्ड दिया था, वैसे ही अब मैं
बेबीलोन के राजा और उसके देश को दण्ड देने
वाला हूं। 19 अपनी निज भेड़ इस्राएल को मैं
हरे-भरे चरागाह में ले जाऊंगा। वह कर्मेल
पहाड़ और बाशान की चराई में फिर चरेगी।
वह एफ्रइम और गिलआद के पहाड़ी क्षेत्रों में
अपनी इच्छा को तृप्त करेगी। 20 मैं-प्रभु यह
कहता हूँ : उन दिनों में, उस समय मैं इस्राएल
के बचे हुए लोगों को जिन्हें मैंने बचाया है,
पूर्णत: क्षमा कर दूंगा। इस्राएल प्रदेश इतना
धर्ममय हो जाएगा कि उसमें अधर्म ढूंढ़ने पर
भी नहीं मिलेगा, यहूदा प्रदेश में खोजने पर भी
पापी मनुष्य नहीं मिलेगा।

युद्ध

21 'तू मरातइम* देश पर आक्रमण कर;
पकोद** के निवासियों पर हमला कर।
प्रभु की यह वाणी है :
उनको पूर्णत: नष्ट कर दे, उनका वध कर
दे।
जिन कामों को करने की आज्ञा
मैंने तुझको दी है, उनको पूरा कर।
22 सुनो, सारे देश में युद्ध का कोलाहल सुनाई
दे रहा है,
सब ओर विनाश का दृश्य दिखाई दे रहा है।
23 पृथ्वी को तहस-नहस करने वाला हथौड़ा,
अब स्वयं कैसे टूट गया!
वह टुकड़े-टुकड़े हो गया।
विश्व के राष्ट्रों में
बेबीलोन कैसा आतंक का कारण बन गया!
24 ओ बेबीलोन, मैंने तेरे लिए फंदा डाला था,
और तू उसमें फंस गया।
तू उससे अनजान था।
तूने प्रभु को युद्ध के लिए ललकारा था।
तुझको खोज लिया गया, और तू पकड़ा
गया।
25 प्रभु ने अपना शस्त्रागार खोला,
और अपने क्रोध-रूपी शस्त्र निकाले;
क्योंकि स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु को
कसदी कौम के देश में एक काम करना है।
26 विश्व के कोने-कोने से बेबीलोन पर
आक्रमण करो;
उसके अन्न के भण्डारगृहों को खोल दो;
अनाज के ढेरों के समान
बेबीलोन को भी ढेर कर दो;
उसको पूर्णत: नष्ट कर दो;
उसमें कुछ भी शेष न बचे।
27 उसके सब बैलों का वध कर दो,
उनको वध के स्थान पर ले जाओ।

* मूल में श्लेष है : मरातइम अर्थात् 'दोहरा विद्रोह,' ** पकोद अर्थात् 'दण्ड'

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ओ बेबीलोन के निवासियो, शोक मनाओ।
तुम्हारा विनाश-दिवस आ गया;
तुम्हें दण्ड देने का दिन आ गया।

28 'सुनो, वे बेबीलोन देश से भाग कर जा
रहे हैं। वे सियोन जा रहे हैं कि वहां हमारे प्रभु
परमेश्वर के प्रतिशोध की घोषणा करें, और यह
घोषित करें कि प्रभु परमेश्वर ने अपने मन्दिर
का प्रतिशोध ले लिया।

29 'सब धनुषधारियों को, धनुष को प्रयोग
में लाने वाले सब सैनिकों को बेबीलोन के
विरुद्ध एकत्र करो। ओ धनुषधारियो! बेबीलोन
को चारों ओर से घेर लो। कोई बच कर भागने
न पाए। उसके एक-एक काम का प्रतिफल दो।
जैसा उसने तुम्हारे साथ किया था, वैसा ही
उसके साथ करो। उसने इस्राएल के पवित्र प्रभु
परमेश्वर की अवहेलना की है। 30इसलिए, प्रभु
की यह वाणी है, उस दिन उसके युवक चौराहों
पर तलवार से मौत के घाट उतारे जाएंगे, उसके
सैनिकों का पूर्ण संहार होगा।

31 'स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु परमेश्वर कहता
है,
ओ अहंकारी, मैं तेरे विरुद्ध हूं;
अब तेरे विनाश का दिन आ पहुंचा है;
तुझे दण्ड देने का दिन आ गया है।
32 अहंकारी लड़खड़ा कर गिरेगा, और उसका
पतन होगा।
उसे फिर कोई नहीं उठाएगा।
मैं उसके नगरों में आग लगा दूंगा;
जो उसके चारों ओर सब कुछ भस्म कर
देगी।

इस्राएलियों ने बहुत दुःख भोगा है

33 'स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु यों कहता
है : इस्राएल प्रदेश और यहूदा प्रदेश की जनता
पर बहुत अत्याचार हुआ है। जो राष्ट्र उनको
बन्दी बनाकर ले गए थे, वे उनको गुलाम बना
कर रखे रहे, और उन्हें स्वदेश न लौटने दिया।
34सुनो, उनका छुड़ानेवाला बलवान है। उसका
नाम है : स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु। वह
निस्सन्देह उनकी ओर से मुकदमा लड़ेगा
जिससे संसार को शान्ति प्राप्त हो, और
बेबीलोन के निवासियों को अशान्ति।

तलवार और अकाल की मार

35 'प्रभु कहता है :
कसदी कौम पर तलवार का प्रहार होगा;
बेबीलोन की जनता,
उसके उच्चाधिकारी और ज्ञानी-पंडित
तलवार से मौत के घाट उतारे जाएंगे।
36 शकुन बिचारनेवालों पर तलवार चलेगी,
और वे मूर्ख बन जाएंगे।
उसके योद्धाओं पर तलवार का प्रहार होगा,
और वे नष्ट हो जाएंगे।
37 बेबीलोन के घुड़सवारों, रथों, और उसके
विदेशी सैनिकों पर तलवार चलेगी,
और वे शिखंडी * बन जाएंगे।
बेबीलोन के खजानों पर तलवार चलेगी,
और वे लूट लिये जाएंगे।
38 उसके जलाशयों पर अकाल की छाया
पड़ेगी, और वे सूख जाएंगे;
क्योंकि सारा बेबीलोन देश
देवताओं की मूर्तियों से भर गया है;
लोग घृणित प्रतिमाओं के पीछे पागल हो
रहे हैं।

39 'अतः बेबीलोन देश जंगली पशुओं और
गीदड़ों का देश बन जाएगा। वहां शुतुर्मुर्ग बस
जाएंगे। वहां मनुष्य फिर कभी निवास नहीं
करेंगे, और वह पीढ़ी से पीढ़ी तक निर्जन पड़ा
रहेगा। 40प्रभु की यह वाणी है : जैसे मैं-
परमेश्वर ने सदोम और गमोरा नगर-राज्यों
तथा उसके आसपास के नगरों को उलट-पुलट
कर दिया था, वैसे ही मैं बेबीलोन को भी
करूंगा, और वहां कोई निवास नहीं करेगा,
और न कभी मनुष्य-जाति वहां प्रवास करेगी।

शत्रु का आक्रमण

41 'देखो, उत्तर दिशा से एक राष्ट्र आ रहा है;
वह शक्तिशाली राष्ट्र है;
पृथ्वी के शीमान्तों से अनेक राजा

---

* अथवा, 'नामर्द', 'स्त्रियों-जैसे'।

50 : 29 प्रक 18 : 6 **50 : 39** प्रक 18 : 2 **50 : 40** उत 19 : 25

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

युद्ध के लिए आ रहे हैं।
42 उनके सैनिकों के हाथों में धनुष और भाले
हैं।
वे निर्दय हैं, उनमें तनिक भी दया नहीं है।
वे समुद्र की तरह गरजते हैं;
वे घोड़ों पर सवार हैं।
ओ बेबीलोन के निवासियो,
वे युद्ध के लिए पंक्तिबद्ध हो आ रहे हैं।
43 उनके आक्रमण की खबर
बेबीलोन के राजा ने सुनी।
यह सुनकर उसके हाथ-पैर सुन्न पड़ गए;
उस पर आतंक छा गया।
जैसे स्त्री बच्चे को जन्म देते समय
पीड़ा से चीखती है,
वैसे ही बेबीलोन का राजा पीड़ित है।

44 'देखो, वह सिंह के समान आ रहा है,
जो यर्दन नदी के जंगल में रहता है। वह भेड़ों
के मजबूत बाड़े पर अचानक हमला करेगा। मैं
बेबीलोन के निवासियों को उनके देश से
निकाल दूंगा, और अपनी इच्छानुसार किसी
व्यक्ति को चुनकर उन पर नियुक्त करूंगा;
क्योंकि मेरे समान और कौन ईश्वर है? मुझसे
कौन मेरे कामों का लेखा ले सकता है? कौन
राजा** मेरे सम्मुख खड़ा हो सकता है?
45 इसलिए सुनो, मैंने बेबीलोन देश के विरुद्ध
यह योजना बनाई है। मैंने कसदी कौम को नष्ट
करने का दृढ़ निश्चय किया है। निस्सन्देह
बेबीलोन के निवासियों के छोटे-छोटे बच्चे भी
देश से निकाले जाएंगे। उनका बाड़ा-रूपी देश
भी अपनी भेड़ों की दयनीय स्थिति देखकर
चकित रह जाएगा। 46 बेबीलोन के पतन की
आवाज से पृथ्वी कांप उठेगी, और उसके
हाहाकार का स्वर विश्व के राष्ट्रों में सुनाई
देगा।'

प्रभु का न्याय : बेबीलोन का विनाश

51 प्रभु यों कहता है :
'मैं विनाश करने वाले की आत्मा को
उकसाऊंगा,
जो बेबीलोन देश के निवासियों को,
कसदी कौम को नष्ट कर देगा।
2 मैं बेबीलोन पर ओसाने वाले भेजूंगा,
जो बेबीलोन के निवासियों को
फटक-फटक कर साफ कर देंगे।
वे बेबनीलोन के संकट-दिवस पर
उस पर आक्रमण करेंगे,
और सारे देश को निर्जन बना देंगे।
3 धनुषधारी अपना धनुष न ताने,
और न वह कवच पहिनकर खड़ा हो।
बेबीलोन के एक भी सैनिक को मत
छोड़ना; उसकी समस्त सेना को नष्ट कर देना।
4 कसदी कौम के देश में उसके सैनिक मरे पड़े
होंगे;
बेबीलोन की सड़कों पर वे घायल पड़े होंगे।
5 क्योंकि स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु परमेश्वर ने
अपने निज लोगों को,
इस्राएल और यहूदा प्रदेश की जनता को
त्यागा नहीं है।
किन्तु कसदी कौम का समस्त देश
उनके दुष्कर्मों से भर गया है;
उन्होंने इस्राएल के पवित्र परमेश्वर के प्रति
अधर्म के बहुत कार्य किए हैं।

6 'बेबीलोन से भाग जाओ,
प्रत्येक मनुष्य अपना प्राण बचाए।
यह प्रभु के प्रतिशोध लेने का समय है;
वह बेबीलोन को उसके दुष्कर्मों का प्रतिफल
दे रहा है।
ऐसा न हो कि
उनके साथ तुम्हारा भी संहार हो जाए।
7 प्रभु के हाथ में
बेबीलोन मानो सोने का चषक था,
जो पृथ्वी के सब देशों को मतवाला करता
था।
राष्ट्रों ने उसकी मदिरा पी,
और वे मदिरा के कारण उन्मत्त हो गए।
8 किन्तु अचानक बेबीलोन का पतन हो गया,
वह छिन्न-भिन्न हो गया।

** अथवा, 'शासक'। मूल में, 'चरवाहा'

51 : 6 प्रक 18 : 4; यिर 50 : 8 51 : 7 प्रक 17 : 4; यिर 25 : 16 51 : 9 प्रक 18 : 5

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ओ राष्ट्रो, उसके लिए विलाप करो,
उसके घावों पर लगाने के लिए मलहम ले
जाओ।
कदाचित् वह स्वस्थ हो जाए।
9 हम बेबीलोन को स्वस्थ करना चाहते थे,
किन्तु वह स्वस्थ नहीं हुआ।
अत: उसको छोड़ दो,
आओ, हम अब अपने-अपने देश को चले
जाएं।
क्योंकि उसके अपराध के दण्ड की सीमा
आकाश को छूने लगी है;
उसके अधर्म का न्याय-निर्णय मेघों तक
पहुंच गया है।
10 परन्तु प्रभु ने हमें निर्दोष ठहराया है;
अत: आओ, हम सियोन में अपने प्रभु
परमेश्वर का यह कार्य घोषित करें।

11 'तीरों को पैना करो! ढालें सम्भाल लो! प्रभु ने मादी कौम के राजाओं की आत्मा को उत्तेजित किया है कि वे बेबीलोन पर आक्रमण करें; क्योंकि प्रभु का उद्देश्य यह है कि वह बेबीलोन को नष्ट करे। यही प्रभु का प्रतिशोध है, यही उसके मन्दिर के लिए प्रतिशोध है।

12 'बेबीलोन की शहरपनाह के विरुद्ध झण्डा
गाड़ो।
चौकसी मजबूत करो, पहरेदार नियुक्त करो।
घात लगाने वाले सैनिक बैठाओ;
क्योंकि जो कुछ प्रभु ने
बेबीलोन के विनाश के लिए कहा था,
जो उसने कसदी कौम के लिए योजना बनाई
थी
उसको पूरा किया है।
13 ओ अनेक नदियों से घिरी नगरी,
ओ धन-सम्पत्ति से भरी-पूरी नगरी!
तेरा अन्त आ गया।
तेरी जीवन-लीला समाप्त हो गई।
14 स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु ने
अपने जीवन की सौगन्ध खायी है:
निस्सन्देह मैं टिड्डी दल के सदृश
इस नगर को शत्रु के सैनिकों से भर दूंगा,
और वे तुझे पराजित कर जयजयकार करेंगे।'

प्रभु परमेश्वर ने ही सृष्टि की रचना की है

15 प्रभु परमेश्वर ने ही पृथ्वी को
अपने सामर्थ्य से बनाया है;
उसने ही संसार को
अपनी बुद्धि से स्थित किया है।
प्रभु परमेश्वर ने आकाश को अपनी समझ
से फैलाया है।
16 जब वह बोलता है
तब आकाश में महासागर उमड़ पड़ता है।
वह पृथ्वी के सीमान्तों से कुहरा उठाता है।
वह वर्षा के लिए बिजली चमकाता है,
और अपने भण्डारगृहों से पवन बहाता है।
17 इस जाति के सब मनुष्य
मूर्ख और परमेश्वर के ज्ञान से अनजान हैं।
सुनार अपनी बनाई हुई मूर्ति के कारण
अपमानित होगा;
क्योंकि उसकी मूर्तियां झूठी हैं;
उनमें जीवन का श्वास नहीं है।
18 वे निस्सार हैं,
वे मनुष्यों को भ्रम के जाल में फंसाती हैं।
दण्ड के समय वे भी नष्ट होंगी।
19 किन्तु याकूब का निज भाग ऐसा नहीं है।
उसने ही सबको गढ़ा है,
इस्राएल उसके उत्तराधिकार का कुल है,
स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु, उसका नाम है।

बेबीलोन प्रभु का माध्यम था

20 'ओ बेबीलोन तू मेरा फरसा, और शस्त्र है!
तेरे माध्यम से मैं राष्ट्रों के टुकड़े-टुकड़े
करता हूं,
राज्यों को नष्ट करता हूं।
21 तेरे माध्यम से मैं घोड़ों और घुड़सवारों के
टुकड़े-टुकड़े करता हूं,
रथों और सारथियों को नष्ट करता हूं।
22 तेरे माध्यम से मैं स्त्रियों और पुरुषों के
टुकड़े-टुकड़े करता हूं,
बच्चों और बूढ़ों को नष्ट करता हूं,
युवकों और युवतियों का वध करता हूं।

---

51 : 13 प्रक 17 : 1 51 :16 भज 135 : 7

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

23 मैं तेरे माध्यम से चरवाहे और उसकी भेड़ों
को नष्ट करता हूं।
किसान और उसके बैलों का वध करता हूं।
राज्यपालों और सेनापतियों का सर्वनाश
करता हूं।

बेबीलोन को उसके दुष्कर्मों का फल मिलेगा

24 'प्रभु कहता है : मैं राजधानी बेबीलोन और
कसदी देश के समस्त निवासियों को तुम्हारी
आंखों के सामने उनके दुष्कर्मों का प्रतिफल
दूंगा, जो उन्होंने सियोन में किए हैं।

25 'ओ विनाशकारी पर्वत, मैं अब तेरे विरुद्ध
हूं।
तूने समस्त पृथ्वी का नाश किया है।
प्रभु कहता है : मैं तुझ पर अपना हाथ उठाऊंगा,
और तुझको चट्टान से नीचे लुढ़का दूंगा,
मैं तुझ को जला हुआ पहाड़ बना दूंगा।
26 तब मेहराब बनाने के लिए
तुझमें से पत्थर नहीं निकाला जाएगा,
और न नींव डालने के लिए लोग
तुझे खोदकर पत्थर निकालेंगे;
क्योंकि तू सदा उजाड़ रहेगा।
प्रभु की यह वाणी है।

बेबीलोन के विरुद्ध युद्ध का आवाहन

27 'पृथ्वी पर झण्डा गाड़ो।
विश्व के राष्ट्रों में युद्ध का बिगुल बजाओ!
बेबीलोन के विरुद्ध सब देशों को तैयार
करो।
युद्ध के लिए अरारात, मिन्नी और
अश्कनज राज्यों की सेनाएं बुलाओ।
उस पर आक्रमण करने के लिए
एक सेनापति नियुक्त करो।
चोटीवाली टिड्डियों के दल के समान
असंख्य घोड़ों से उसको रौंद दो।
28 बेबीलोन से युद्ध करने के लिए राष्ट्रों को,
मादय के राजाओं, राज्यपालों और
सेनापतियों को तैयार करो,
मादय के अधीन जो देश हैं वे भी,
युद्ध के लिए तैयार हों।

29 पृथ्वी कांप रही है, वह पीड़ा से तड़प रही है;
क्योंकि प्रभु ने निश्चय किया है
कि वह बेबीलोन देश को उजाड़ देगा,
वह उसको निर्जन बना देगा।
30 बेबीलोन के योद्धाओं ने हथियार डाल दिए
हैं,
वे किलों में दुबककर बैठे हैं।
उनका मनोबल समाप्त हो गया है;
मानो उन्होंने औरतों के समान चूड़ियां
पहिन ली हैं!*
बेबीलोन के निवास स्थानों में आग लग
गई है;
उसके प्रवेश-द्वारों की अर्गलाएं टूट गई हैं।
31 एक हरकारा दूसरे हरकारे को,
एक सन्देशवाहक दूसरे सन्देशवाहक को
यह सन्देश दे रहा है,
"जाओ, महाराज को यह खबर दो :
बेबीलोन नगर चारों ओर से घेर लिया गया
है।
32 शत्रु-सेना ने घाटों पर कब्जा कर लिया है;
उसने दलदल के सरकण्डों में आग लगा
दी है,
और हमारे सैनिकों में भगदड़ मच गई है।"
33 इस्राएल का परमेश्वर,
स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु यों कहता है :
बेबीलोन के निवासियों की दशा,
उस खलियान के समान हो गई है,
जो दांवा जा रहा है;
कुछ दिन बाद ही कटनी का समय आ जाएगा।'

इस्राएली राष्ट्र पर बेबीलोन का अत्याचार

34 'बेबीलोन के राजा नबूकदनेस्सर ने
मुझे खा लिया; मुझे रौंद डाला!
उसने मेरी समस्त धन-सम्पत्ति लूट ली,
और मुझे खाली बरतन बना दिया!
उसने मुझे मगरमच्छ के समान पूरा निगल
लिया!
उसने मुझसे अपना पेट भर लिया,
मानो मैं स्वादिष्ट भोजन हूं।
उसने मुझे अपनी धन-सम्पत्ति से

* शब्दशः 'वे औरतें बन गये'।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वंचित कर दिया।'
35 सियोन के निवासी अब यह कहें :
'हम पर, हमारे जाति-भाइयों एवं बहिनों पर
जो अत्याचार बेबीलोन ने किया था,
वह पलट कर अब बेबीलोन के सिर पर
पड़े।'
यरूशलेम यह कहे, 'मेरी हत्या का प्रतिशोध
कसदी कौम के देश से लिया जाए।'
36 इसलिए प्रभु कहता है :
'ओ इस्राएल, मैं तेरा न्याय करूंगा,
और तेरे शत्रु से तेरा प्रतिशोध लूंगा,
मैं बेबीलोन का महा जलाशय सुखा दूंगा;
मैं उसके झरने का मुंह बन्द कर दूंगा।
37 तब बेबीलोन खण्डहरों का ढेर हो जाएगा।
वह गीदड़ों की मांद बन जाएगा।
वह निर्जन हो जाएगा,
वह लोगों में आतंक उत्पन्न करेगा;
अन्य राष्ट्र उसका विनाश देखकर
व्याकुल हो जाएंगे!
38 'बेबीलोन के निवासी सिंह के समान गरजेंगे,
वे सिंह के बच्चे के समान गुर्राएंगे।
39 जब वे भूख की आग से जलेंगे,
तब मैं उनके लिए भोज तैयार करूंगा।
मैं उनको मतवाला कर दूंगा ।
और वे नशे में चूर हो जाएंगे,
वे चिर निन्द्रा में सो जाएंगे,
और कभी न जागेंगे।
40 जैसे कसाई वध होने वाले पशुओं को
मेढ़े , मेमने और बकरों को ले जाता है,
वैसे ही मैं उनको ले जाऊंगा।
मुझ प्रभु की यह वाणी है।

पतन के पश्चात् बेबीलोन की दशा

41 'बेबीलोन देश* पर, ''विश्व के गौरव'' देश पर
शत्रु सेना का अधिकार हो गया।
शोक! समस्त विश्व में
बेबीलोन आतंक का कारण बन गया।
42 बेबीलोन मानो समुद्र में डूब गया;
सागर की उल्लास लहरों ने उसको ढक
लिया!
43 बेबीलोन के नगर आतंक का कारण बन गए.
बेबीलोन अकाल का देश बन गया।
वह मरुस्थल हो गया। वह निर्जन हो गया,
अब उसमें कोई नहीं रहता;
वहां से मनुष्य भी नहीं गुजरते।
44 प्रभु कहता है,
मैं बेबीलोन के राष्ट्रीय देवता बेल को दण्ड
दूंगा :
और उसने जो निगल लिया है,
वह उसके मुंह से उगलवा लूंगा।
अब विश्व के राष्ट्र
उसकी ओर खिंचे हुए नहीं आएंगे;
देखो, बेबीलोन की शहरपनाह ढह गई।

इस्राएलियों को भागने का आदेश

45 'ओ मेरे निज लोग!
बेबीलोन के मध्य से निकल जाओ।
प्रभु के भयानक क्रोध से
तुम-सब अपने प्राण बचाओ।
46 जब तुम देश में अफवाह सुनो,
तब तुम मत घबराना,
उड़ती हुई खबर से मत डरना;
हर वर्ष देश में अफवाहें उड़ेंगी,
पहले वर्ष एक, दूसरे वर्ष दूसरी!
सारे देश में हिंसा-उपद्रव का राज्य होगा,
एक शासक दूसरे शासक के विरुद्ध होगा।

बेबीलोन को दण्ड मिलेगा

47 'देखो, वे दिन आ रहे हैं,
जब मैं बेबीलोन की मूर्तियों को दण्ड दूंगा।
समस्त बेबीलोन पराजय के कारण
अपमानित होगा,
सारे देश में लोथों का ढेर लग जाएगा।
48 बेबीलोन के पतन के कारण
आकाश और पृथ्वी, और उनके सब प्राणी
आनन्द से जयजयकार करेंगे।
प्रभु कहता है, ओ बेबीलोन, उत्तर दिशा से
तुझ पर लुटेरे आक्रमण करेंगे।
49 बेबीलोन ने इस्राएली राष्ट्र के लोगों का वध
किया था,

* मूल में 'शेषक देश'।
51 : 48 यश 44 : 23; प्रक 18 : 20

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अब बेबीलोन के लोगों का वध
उन्हीं के देश में होगा।
जैसे बेबीलोन ने समस्त पृथ्वी के लोगों का
वध किया था,
वैसे अब बेबीलोन का विनाश होगा।

बचे हुए लोगों को आदेश

50 'तलवार की मार से बचे हुए लोगो!
यहां खड़े मत रहो, भाग जाओ।
दूर से ही प्रभु को स्मरण करो,
तुम्हारे हृदय में यरूशलेम की याद बनी रहे।
51 कहो : ''हमने पराजय के अपमान का घूंट
पिया है;
हमने अपनी निन्दा सुनी है।
अनादर से हमारा मुँह काला हो गया है।
प्रभु के भवन के पवित्र स्थानों में
विधर्मी घुस आए हैं।'' '

बेबीलोन को दण्ड

52 प्रभु कहता है, 'देखो, वे दिन आ रहे हैं, जब
मैं बेबीलोन की देवमूर्त्तियों को दण्ड दूंगा।
समस्त बेबीलोन देश में
घायलों की चीख-पुकार सुनाई देगी।
53 चाहे बेबीलोन इतनी उन्नति कर ले कि वह
आकाश से बातें करने लगे,
चाहे वह आसमान तक अपने गढ़ सुदृढ़
कर ले तो भी मैं उस पर विध्वंसक
भेजूंगा' प्रभु की यही वाणी है।
54 सुनो, बेबीलोन से चीख-पुकार आ रही है।
कसदी कौम के देश से
विनाश की आवाज सुनाई दे रही है।
55 क्योंकि प्रभु बेबीलोन को नष्ट कर रहा है;
वह उसके गर्जन को शान्त कर रहा है।
समुद्र की उत्ताल तरंगों की तरह
लोग गरज रहे हैं।
वे गला फाड़कर चिल्ला रहे हैं।
56 क्योंकि विध्वंसक ने
बेबीलोन पर आक्रमण किया है;
बेबीलोन के योद्धा बन्दी बना लिये गए;
शत्रु सैनिकों ने उनके धनुष तोड़ दिए।
प्रभु निस्सन्देह प्रत्येक मनुष्य को
उसके कर्म का प्रतिफल देता है,
वह बदला लेने वाला परमेश्वर है।
57 'मैं बेबीलोन के उच्चाधिकारियों,
विद्वानों, राज्यपालों, सेनापतियों
और योद्धाओं को मतवाला कर दूंगा;
वे चिरनिद्रा में सो जाएंगे, और कभी नहीं
जागेंगे।'
यह राजाधिराज की वाणी है,
जिसका नाम है : 'स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु'।
58 स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु कहता है,
'बेबीलोन की चौड़ी शहरपनाह
भूमि की सतह से मिला दी जाएगी।
उसके ऊंचे-ऊंचे विशाल प्रवेश-द्वार
आग में भस्म कर दिए जाएंगे।
जातियां व्यर्थ ही परिश्रम करती हैं;
जिसके लिए राष्ट्र कष्ट झेलते हैं,
वह अग्नि में भस्म हो जाएगा।'

नबी यिर्मयाह की पुस्तक को नदी में डुबाना

59-60 सरायाह राजभवन का उच्चाधिकारी*
था। उसके पिता का नाम नेरियाह और दादा
का नाम महसेयाह था। वह भी यहूदा प्रदेश के
राजा सिदकियाह के राज्यकाल के चौथे वर्ष में
अपने राजा के साथ बन्दी बनकर बेबीलोन गया
था। नबी यिर्मयाह ने बेबीलोन के सम्बन्ध में
अपनी नबूवतें, अर्थात् बेबीलोन के ऊपर
आनेवाली विपत्तियों का विवरण एक पुस्तक
में लिख लिया था। 61नबी यिर्मयाह ने सरायाह
को आदेश दिया, 'ध्यान से सुन, जब तू
बेबीलोन में प्रवेश करे, तब तू इन सब वचनों
को पढ़ना, 62और प्रभु से यह प्रार्थना करना:
''प्रभु, तूने इस देश के विषय में कहा है कि तू
इस देश को पूर्णतः नष्ट कर देगा। तू इस को
उजाड़ देगा। यहां न मनुष्य रहेंगे, और न पशु,
और यह सदा के लिए निर्जन हो जाएगा।''63
जब तू यह पुस्तक पढ़ चुकेगा तब इस को एक
पत्थर से बांध देना, और यह कहते हुए इसको
फरात नदी में फेंक देना: 64''ऐसे ही बेबीलोन

---

* अथवा, 'विश्राम-प्रबंधक'।

51 : 63 प्रक 18 : 21

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भी डूब जाएगा। मैं-प्रभु बेबीलोन पर ऐसी
विपत्ति ढाहूंगा कि वह फिर कभी उठ नहीं
सकेगा।+'' '

यहां तक नबी यिर्मयाह के शब्द हैं।

सिदकियाह का राज्यकाल

52 जब सिदकियाह सिंहासन पर बैठा,
उस समय वह इक्कीस वर्ष का था।
उसने ग्यारह वर्ष तक राज्य किया। उसकी
राजधानी यरूशलेम थी। उसकी मां का नाम
हमूतल था जो लिब्नाह नगर में रहनेवाले
यिर्मयाह की पुत्री थी।

2 सिदकियाह ने यहोयाकीम के समान
आचरण किया, जो प्रभु की दृष्टि में बुरा था।
3निस्सन्देह प्रभु के क्रोध के कारण राजधानी
यरूशलेम और यहूदा प्रदेश में घटनाएं घटीं,
और प्रभु ने सिदकियाह को अपनी उपस्थिति
से निकाल दिया।

यरूशलेम नगर का पतन

सिदकियाह ने बेबीलोन के राजा के विरुद्ध
विद्रोह किया। 4अत: उसके राज्य-काल के
नौवें वर्ष के दसवें महीने की दसवीं तारीख को
बेबीलोन के राजा नबूकदनेस्सर ने अपनी
समस्त सेना के साथ राजधानी यरूशलेम पर
आक्रमण कर दिया। उसने यरूशलेम को घेर
लिया, और उसके चारों ओर मोर्चाबन्दी कर
दी। 5यरूशलेम नगर सिदकियाह के राज्य-
काल के ग्यारहवें वर्ष तक घिरा रहा। 6नगर में
भयंकर अकाल पड़ गया। यहूदा प्रदेश में लोगों
के पास खाने को अन्न नहीं रहा। हाहाकार मच
गया। अत: चौथे महीने की नौवीं तारीख को
7 नगर की शहरपनाह में दरार की गई और वहां
से सब सैनिक भागने लगे। राज-उद्यान के
समीप एक द्वार था। यह द्वार शहरपनाह की
दोनों दीवारों के बीच था। सिदकियाह के
सैनिक इस द्वार से रात के समय नगर के बाहर
निकल गए, यद्यपि कसदी सेना नगर के चारों
ओर घेरा डाल कर पड़ी हुई थी।

सिदकियाह और उसके सैनिक अराबाह की
ओर गए। 8किन्तु कसदी-सेना ने उनका पीछा
किया, और यरीहो के मैदान में राजा सिदकियाह
को पकड़ लिया। राजा सिदकियाह के सैनिक
उसको छोड़कर भाग गए। 9कसदी सैनिक राजा
सिदकियाह को बन्दी बना कर हमात देश के
रिबलाह नगर में ले गए। उस समय बेबीलोन
का राजा वहां था। उसने सिदकियाह को सजा
सुनाई। 10बेबीलोन के राजा ने सिदकियाह के
पुत्रों का उनके पिता के सामने वध किया, और
उसी नगर में यहूदा प्रदेश के सब उच्चाधिकारियों
को मरवा डाला। 11उसने सिदकियाह की आंखें
फोड़ दीं, उसको पीतल की जंजीरों से बांधा,
और वह उसे बेबीलोन देश ले गया। वहां
बेबीलोन के राजा ने सिदकियाह को कारागार
में डाल दिया। सिदकियाह अपने मृत्यु के दिन
तक वहां रहा।

यहूदा प्रदेश की जनता का गुलाम बनना

12 बेबीलोन के राजा नबूकदनेस्सर के
राज्य-काल के उन्नीसवें वर्ष के पांचवें महीने
की दसवीं तारीख को अंगरक्षकों के नायक
नबूजरदान ने यरूशलेम नगर में प्रवेश किया।
नबूजरदान बेबीलोन के राजा का उच्चाधिकारी
था।

13 उसने प्रभु के भवन में और राजा के
राजमहल में और नगर के सभी घरों में आग
लगा दी। उसने यरूशलेम के किसी भी बड़े
मकान को नहीं छोड़ा। 14अंगरक्षकों के नायक
नबूजरदान के साथ कसदी सेना थी। कसदी
सैनिकों ने यरूशलेम के चारों ओर के परकोटों
को तोड़कर धूल में मिला दिया। 15इसके बाद
अंगरक्षकों का नायक नबूजरदान इन लोगों को
बन्दी बनाकर बेबीलोन देश ले गया : जनता के
कुछ महा दरिद्र लोग, नगर के बचे हुए लोग,
शरणार्थी जो यरूशलेम से भागकर बेबीलोन के
राजा की शरण में आए थे और नगर में बचे हुए
कारीगर। 16अंगरक्षकों के नायक नबूजरदान ने
अंगूर-उद्यान में काम करने और खेत जोतने के
लिए यहूदा प्रदेश के कुछ महा दरिद्रों को छोड़

+ मूल में ये शब्द भी पाए जाते हैं, ''बेबीलोन के निवासी व्यर्थ परिश्रम कर रहे हैं।''

52 2 रा 24 : 18—25 : 30; 2 इति 36 : 11-13 **52 : 7** यहेज 33 : 21 **52 : 12** 2 रा 25 : 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दिया।

मन्दिर का विनाश

17 प्रभु के मन्दिर में पीतल के स्तम्भ,
आधार पीठिकाएं, और पीतल का हौज थे। इन
सबको कसदी सैनिकों ने तोड़ डाला, और सब
पीतल लूट कर बेबीलोन ले गए। [18]वे अपने
साथ प्रभु-भवन के कार्यों में काम आनेवाले
सब पवित्र पात्र भी ले गए : हांडियां, फावड़ियां,
कैंचियां, कटोरे, धूपदान। इनके अतिरिक्त और
भी पीतल के पात्र ले गए। [19]अंगरक्षकों का प्रधान
अपने साथ इनको भी ले गया : कटोरियां,
कलछियां, चिलमचियां, हांडियां, दीपाधार,
धूपदान, पेयबलि के प्याले। जिन पात्रों पर
चांदी और सोना मढ़ा था, वह उनका सोना-
चांदी भी ले गया। [20]प्रभु के मन्दिर में दो स्तम्भ,
एक हौज, बारह बैल जो हौज को सम्भाले हुए
थे, और आधार-पीठिकाएं थीं जिनको राजा
सुलेमान ने प्रभु के मन्दिर के लिए बनाया था।
ये सब पीतल के थे, और इनका वजन तौल के
बाहर था। [21]प्रत्येक स्तम्भ प्राय: आठ मीटर
ऊंचा और आठ सेंटीमीटर मोटा था। प्रत्येक
स्तम्भ की परिधि साढ़े पांच मीटर थी। ये स्तम्भ
भीतर से खोखले थे। [22]हर एक स्तम्भ के ऊपर
पीतल का एक शीर्ष था। वह सवा दो मीटर
ऊंचा था। शीर्ष के चारों ओर जाली और अनार
बने थे। ये सब पीतल के थे। दूसरा स्तम्भ भी
ऐसा ही था। उसमें भी अनार बने थे। [23]शीर्ष
के चारों ओर छियानबे अनार थे, और जाली के
चारों ओर एक सौ अनार थे।

यहूदा प्रदेश के उच्चाधिकारियों की हत्या

24 अंगरक्षकों के नायक नबूजरदान ने
महापुरोहित सरायाह, उपमहापुरोहित सफन्याह
तथा आंगन के तीन द्वारपालों को बन्दी बनाया।
[25]उसने नगर में एक सेनानायक को भी पकड़ा।
उस समय नगर में राजा की सलाहकार समिति
के सात सदस्य भी थे। उसने उनको भी पकड़
लिया। वहीं सेना में भरती करनेवाले सेनापति
का सचिव भी था। वह भी पकड़ा गया। इनके
अतिरिक्त जनता के साठ प्रतिष्ठित व्यक्ति भी
बन्दी बनाए गए, जो उस समय नगर में
उपस्थित थे। [26]अंगरक्षकों का नायक उन सबको
जंजीरों में जकड़ कर ले गया, और उनको
रिबलाह नगर में बेबीलोन के राजा के सम्मुख
प्रस्तुत किया। [27]बेबीलोन के राजा ने उनको
मारने का आदेश दिया। हमात देश के रिबलाह
नगर में उसने उनका वध करवा दिया। यों
समस्त यहूदा प्रदेश के निवासी बन्दी बनकर
स्वदेश से निष्कासित हो गए।

बन्दियों की संख्या

28 जिन लोगों को राजा नबूकदनेस्सर बन्दी
बनाकर ले गया, उनकी संख्या यह है :
नबूकदनेस्सर के राज्य-काल के सातवें वर्ष,
तीन हजार तेईस यहूदा-वासी; [29]अपने राज्य-
काल के अठारहवें वर्ष यह यरूशलेम से आठ
सौ बत्तीस प्राणियों को बन्दी बनाकर ले गया।
[30]नबूकदनेस्सर के राज्य-काल के तेईसवें वर्ष
में अंगरक्षकों का नायक नबूजरदान सात सौ
पैंतालीस यहूदा-वासियों को बन्दी बना कर ले
गया। इस प्रकार बन्दियों की कुल संख्या चार
हजार छ: सौ थी।

राजा यहोयाकीन का बन्दीगृह से मुक्त होना

31 यहूदा प्रदेश के राजा यहोयाकीन को
बन्दीगृह में पड़े सैंतीस वर्ष बीत गए। इसी वर्ष
के बारहवें महीने की पच्चीसवीं तारीख को
एबीलमरोदक बेबीलोन के राजसिंहासन पर
बैठा। उसने अपने शासन के प्रथम वर्ष के
उपलक्ष्य में यहूदा प्रदेश के राजा यहोयाकीन
को उसका राजपद लौटा दिया, और उसको
बन्दीगृह से निकाला। [32]उसने यहोयाकीन से
सहानुभूतिपूर्ण बातें कीं। उसके साथ उस समय
बेबीलोन में अनेक राजा थे। इन राजाओं के
मध्य उसने यहोयाकीन को उच्चासन पर
बैठाया। [33]यहोयाकीन ने कैदियों की पोशाक
उतार दी। वह शेष जीवन भर राजा एबीलमरोदक
के साथ प्रतिदिन भोजन करता रहा। [34]प्रतिदिन
के खर्च के लिए उसको राजकीय कोष से भत्ता
मिलता था। जब तक यहोयाकीन जीवित रहा,
उसको राजा नियमित रूप से भत्ता देता रहा।

52 : 21 1 रा 7 : 15

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शोक-गीत

पुस्तक-परिचय

प्रस्तुत काव्य-पुस्तिका में पाँच शोक गीत संकलित हैं। इनका संबंध ईसवी पूर्व 586 में हुए यरूशलेम के विनाश से है। यरूशलेम के निवासी बँधुवाई में जा चुके थे। मंदिर खण्डहर हो गया था। इन गीतों में मुख्य स्वर विलाप-शोक का है। फिर भी परमेश्वर पर भरोसा तथा भविष्य में समृद्धि, सुख-शांति की आशा भी है।

ईसवी पूर्व 586 में हुए यरूशलेम के विनाश की स्मृति में यहूदी हर वर्ष राष्ट्रीय शोक-दिवस मनाते थे। इस दिन सब यहूदी उपवास रखते एवं विलाप करते थे (जकर्याह 7 : 5)। ऐसे अवसर पर शोक-गीत का 'कुण्डल पत्र' प्रयोग में आता था। इब्रानी बाइबिल के क्रम में यह पुस्तिका उन पांच कुंडल पत्रों में से एक है जो नीति-वचन के बाद मिलते हैं (अर्थात् रूत, श्रेष्ठगीत, सभा-उपदेशक, और एस्तर के साथ)। प्राचीन बाइबिल-अनुवादों में शोक-गीत नबी मिर्मयाह की कृति माना गया है।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

बन्दिनी सियोन नगरी (यरूशलेम) का दुःख	**1 : 1-22**
स्वयं प्रभु ने सियोन को दण्ड दिया	**2 : 1-22**
दण्ड किन्तु उद्धार की आशा	**3 : 1-66**
यरूशलेम खण्डहर हो गया	**4 : 1-22**
दया के लिए प्रार्थना	**5 : 1-22**

बन्दिनी सियोन का दुःख

1 जो नगरी लोगों से भरी-पूरी थी, अब वह उजाड़ पड़ी है;
वह विधवा के सदृश अकेली हो गई।
जो कभी राष्टों में महान थी,
जो कभी नगरों में रानी थी,
अब वह दासी बन गई,
वह दूसरे राज्यों को कर चुकाती है।
2 वह रात में फूट-फूटकर रोती है;
उसके गालों पर आंसू बहते हैं।
उसके अनेक चाहनेवाले थे,
पर अब उनमें से एक भी
उसको सांत्वना नहीं देता,
उसके मित्रों ने उसके साथ विश्वासघात किया।
वे उसके शत्रु बन गए।

3 अनेक दुःख भोगने और कठोर गुलामी के
बोझ से दबने के लिए
यहूदा राष्ट्र को निर्वासित होना पड़ा;
अब यहूदा अनेक राष्ट्रों में भटक रहा है;
उसे कहीं ठौर नहीं मिला।
जब वह संकट में रहता है,
तब उसका पीछा करनेवाले उसको पकड़ लेते हैं।

4 सियोन को जानेवाले मार्ग विलाप करते हैं,
क्योंकि अब पर्व मनाने के लिए
कोई वहां नहीं आता!
सियोन के सब द्वार उजाड़ पड़े हैं;
उसके पुरोहित कराह रहे हैं।
उसकी कन्याएँ दुःख से पीड़ित हैं;
स्वयं सियोन नगरी दुःख भोग रही है।

5 सियोन के बैरी अब अगुए बन गए;
उसके शत्रु खुशहाल हैं।
सियोन के अपार अपराधों के कारण

1 : 2 भज 6 : 6; यो 13 : 18

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रभु ने उसको दु:ख भोगने के लिए विवश
किया है।
सियोन के निवासी शत्रु के सम्मुख बन्दी
बनाए गए,
और वे निर्वासित हो गए।

6 सियोन के निवासियों का वैभव लुट गया;
उसके शासक ऐसे मेढ़ों की तरह हो गए
जिन्हें चरने को चरागाह नहीं मिलते।
वे निर्बल हो गए,
और अपने पीछा करनेवालों के आगे-आगे
भागते हुए चल रहे हैं।
7 ऐसे संकट और दु:ख-भरे दिनों में
यरूशलेम को धन-समृद्धि की, वैभवपूर्ण
दिनों की,
उन वस्तुओं की याद आ रही है,
जब प्राचीनकाल में ये वस्तुएँ
उसके अधिकार में थीं।
अब यरूशलेम के निवासी बैरियों के हाथ में
पड़ गए;
उनकी सहायता करनेवाला कोई न था;
उसके पतन को देखकर
उसके बैरी उसका मजाक उड़ाने लगे।
8 यरूशलेम नगरी ने भयानक पाप किए थे,
अत: सब उससे घृणा करने लगे।
जो उसका आदर करते थे
अब वे उसका अनादर करते हैं;
क्योंकि उन्होंने उसकी नग्नता देख ली है।
अब यरूशलेम नगरी स्वयं कराह रही है,
और शर्म से अपना मुंह छिपा रही है।

9 उसकी अशुद्धता उसके कपड़ों पर लिपटी
है।
उसने अपने अंत का विचार भी न किया।
अत: वह विस्मित ढंग से पतन के गड्ढे में
गिर पड़ी!
उसे सांत्वना देनेवाला भी कोई नहीं है।
'हे प्रभु, मेरे कष्टों को देख;
क्योंकि शत्रु मुझ पर प्रबल हो गया!'

10 शत्रु ने उसका धन-वैभव लूटने के लिए
अपना हाथ बढ़ाया है;
हां, यरूशलेम नगरी को यह भी देखना पड़ा:
विधर्मी राष्ट्र उसके पवित्र स्थान में घुस गए,
जिनके विषय में तूने, प्रभु, यह आज्ञा दी थी,
कि वे तेरी मंडली में प्रवेश नहीं करेंगे।
11 अब उसके सब निवासी कराहते हुए
भोजन की तलाश में भटक रहे हैं।
वे अपने प्राण बचाने के लिए
बहुमूल्य वस्तुओं के बदले में भोजन खरीद
रहे हैं।
'हे प्रभु, मेरे कष्ट को देख, मुझ पर ध्यान दे!
क्योंकि मैं कितनी तिरस्कृत हो गई हूं।'

12 'ओ सब राहगीरो!
तुम पर यह मुसीबत न आए![*]
मुझे देखो, मुझ पर ध्यान दो।
जो दु:ख मुझे दिया गया है
क्या उस दु:ख के तुल्य अन्य दु:ख हो
सकता है?
प्रभु ने अपने क्रोध-दिवस पर
यह दु:ख मुझे दिया है।

13 'उसने ऊपर से आग फेंकी,
और उसको मेरी हड्डियों तक उतार दिया।
उसने मेरे पैरों के लिए जाल फैलाया,
और मुझे चित्त कर दिया।
उसने मुझे उजाड़ दिया;
मैं दिन भर मूर्च्छित पड़ी रही।

14 'मेरे अपराधों का जूआ मुझ पर रखा गया;
स्वयं प्रभु ने अपने हाथ से
रस्सी के सदृश मेरे अपराधों को बुना है।
जूआ मेरी गर्दन पर बांधा गया;
स्वामी ने मेरी शक्ति क्षीण कर दी,
और मुझे उन लोगों के हाथ में सौंप दिया
जिनका सामना मैं नहीं कर सकती।

---

* मूल में अस्पष्ट। कुछ विद्वानों के मत से इस पद का यह अर्थ हो सकता है, "क्या तुम्हें इस बात की कुछ चिन्ता नहीं है।"

1 : 8 यहेज 16 : 37 **1 : 9** व्य 32 : 29 **1 : 10** व्य 23 : 3 **1 : 12** मत 24 : 21

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

15 'मुझ में निवास करनेवाले सब योद्धाओं को
स्वामी ने मौत के घाट उतार दिया।
स्वामी ने मेरे विरुद्ध ऐसे दल को बुलाया
जिसने मेरे जवानों को रौंद डाला।
स्वामी ने यहूदा प्रदेश की कुंआरी कन्या को
पेर दिया,
जैसे रस-कुण्ड में अंगूर पेरा जाता है।

16 'मैं इन बातों के कारण रोती हूं;
मेरी आंखों से आंसू की धारा बहती है।
जो मुझमें साहस फूंकता था,
वह मुझसे दूर चला गया है।
मेरे बच्चे बेघर हो गए हैं;
क्योंकि शत्रु मुझ पर प्रबल हुआ है।'

17 सियोन हाथ फैलाकर प्रार्थना कर रही है;
पर उसे सांत्वना देनेवाला कोई नहीं है।
प्रभु ने याकूब के विरुद्ध
उसके पड़ोसी राष्ट्रों को आदेश दिया
कि वे उसके बैरी बन जाएं।
अत: उनके मध्य में यरूशलेम एक घृणित
नगरी बन गई।

18 'प्रभु सच्चा है;
मैंने ही उसके वचन से विद्रोह किया है।
ओ विश्व की सब कौमो!
मेरी बात सुनो, मेरे दु:ख पर ध्यान दो।
मेरे जवान बेटे और बेटियां
बन्दी बनकर निर्वासित हो गए।

19 'मैंने सहायता के लिए अपने प्रेमियों को
पुकारा;
किन्तु उन्होंने मुझे धोखा दिया।
मेरे पुरोहित और धर्मवृद्ध
नगर में भूख से मर गए,
जब वे प्राण बचाने के लिए
भोजन की तलाश में भटक रहे थे।

20 'हे प्रभु, देख; क्योंकि मैं संकट में हूं।
मेरी अंतड़ियाँ एंठ रही हैं।
मेरा हृदय व्याकुल हो उठा है;
क्योंकि मैंने तेरे वचन से बहुत विद्रोह किया
है।
घर के बाहर तलवार से मैं निर्वंश होती हूं,
और घर के भीतर मृत्यु विराज रही है।

21 'वे सुनते हैं कि मैं पीड़ा से कराहती हूं,
पर कोई मुझे सांत्वना नहीं देता।
मेरे सब शत्रुओं ने मेरे संकट के विषय में
सुना;
प्रभु, वे प्रसन्न हैं कि तूने मुझे संकट में
डाला।
जिस दिन की तूने घोषणा की है
वह दिन अविलम्ब ला,
ताकि मेरे शत्रु भी मुझ जैसे दु:ख भोगें।

22 'उनके समस्त दुष्कर्म तेरे सम्मुख प्रकट
किए जाएं;
जैसा तूने मेरे साथ मेरे तमाम अपराधों के
कारण कठोर व्यवहार किया है,
वैसा ही उनके साथ कर।
मैं बहुत कराहती हूं,
मेरा हृदय पीड़ा से मूर्च्छित हो जाता है।'

स्वयं प्रभु ने सियोन को दु:ख दिया है

2 प्रभु ने सियोन की पुत्री को
अपने प्रकोप के मेघों से ढक दिया!
उसने इस्राएल के वैभव को
आकाश से पृथ्वी पर फेंक दिया!
उसने अपने प्रकोप-दिवस पर
अपने चरणों की चौकी को स्मरण न रखा।
2 स्वामी ने निर्दयतापूर्वक
याकूब राष्ट्र की सब बस्तियों को
नष्ट कर दिया;
उसने अपने क्रोध से
यहूदा की पुत्री के गढ़ों को ध्वस्त कर दिया।
उसने राज्य और उसके शासकों को
अपमानित कर धूल-धूसरित कर दिया।
3 प्रभु ने अपनी क्रोधाग्नि में
इस्राएल राष्ट्र की शक्ति के प्रतीक
सींग को काट दिया,
उसने शत्रु के आक्रमण के समय अपना दाहिना

---

1 : 15 यश 63 : 3 1 : 20 यश 16 : 11; यिर 4 : 19; व्य 32 : 25 2 : 1 1 इति 28 : 2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हाथ इस्राएली सेना से खींच लिया।
उसने याकूब राष्ट्र में अग्नि प्रज्वलित की,
जिसने चारों ओर सब को भस्म कर दिया।

4 उसने शत्रु के सदृश धनुष चढ़ाया;
उसने बैरी के समान हाथ बढ़ाया;
और सियोन की पुत्री के तम्बू में
हमारी आंखों में प्रिय लोगों को मार डाला।
उसने अग्नि के सदृश
अपने क्रोध की मदिरा उण्डेल दी।

5 स्वामी हमारा शत्रु बन गया;
उसने इस्राएल राष्ट्र को नष्ट कर दिया।
उसने इस्राएल के सब महलों को ध्वस्त कर दिया,
उसके गढ़ों को खण्डहर बना दिया।
उसने यहूदा की पुत्री के घर-घर में विलाप
और रोना-पीटना मचवा दिया।

6 उसने अपना मन्दिर
उद्यान के मचान की तरह अचानक गिरा दिया;
अपने निर्धारित पर्वों के पवित्र स्थान को खण्डहर बना दिया।
प्रभु ने सियोन में निर्धारित पर्व और विश्राम-दिवस समाप्त कर दिए;
उसने अत्यन्त क्रुद्ध हो
राजा और पुरोहित दोनों को त्याग दिया।

7 स्वामी ने अपनी वेदी त्याग दी;
उसने अपना पवित्र स्थान छोड़ दिया।
उसने सियोन के भवनों की दीवारें
शत्रु के हाथ में सौंप दीं।
जैसे निर्धारित पर्व के दिवस पर
प्रभु के मन्दिर में कोलाहल होता है
वैसे ही शत्रुओं ने कोलाहल मचाया।

8 प्रभु ने यह निश्चय किया था
कि यह सियोन की पुत्री की शहरपनाह ढाह देगा;
उसने साहुल से नापकर निशान लगाए;
उसने विनाश करने के लिए अपना हाथ बढ़ाया,
और उसको नहीं रोका।
उसने परकोटा और शहरपनाह को रुला दिया,
दोनों एक-साथ जर्जर हो गए।

9 उसके प्रवेश-द्वार भूमि में धंस गए;
प्रभु ने उसकी अर्गलाएँ टुकड़े-टुकड़े कर दीं।
उसका राजा और प्रशासक विदेशी राष्ट्रों में निर्वासित हैं।
व्यवस्था की मान्यता नहीं रही;
नबियों को प्रभु की ओर से दर्शन नहीं मिलता।

10 सियोन की पुत्री के धर्मवृद्ध
निराशा में डूबे भूमि पर बैठे हैं।
उन्होंने पश्चात्ताप प्रकट करने के लिए
अपने-अपने सिर पर राख डाली है,
और टाट का वस्त्र पहिना है।
यरूशलेम की कन्याएँ भूमि की ओर
सिर झुकाकर विलाप कर रही हैं।

11 रोते-रोते मेरी आंखें धुंधली पड़ गईं;
मेरी अंतड़ियाँ ऐंठ रही हैं;
मेरा कलेजा मुंह को आ रहा है;
क्योंकि मेरे लोगों की नगरी का सर्वनाश हो गया;
शिशु और बच्चे नगर के चौराहों पर मूर्च्छित पड़े हैं।

12 बालक अपनी-अपनी मां से पूछते हैं,
'रोटी और अंगूर-रस कहाँ है?'
वे घायलों की तरह मूर्च्छित होकर
नगर के चौराहों पर गिर जाते हैं;
वे अपनी मांओं की गोद में प्राण त्याग देते हैं।

13 ओ यरूशलेम की पुत्री!
मैं तेरे विषय में क्या कहूं?
मैं तेरी तुलना किससे करूं?

---

2 : 6 सफ 3 : 18 **2 : 7** यहेज 24 : 21 **2 : 8** यश 34 : 11 **2 : 9** 2 रा 25 : 7; भज 74 : 9

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ओ सियोन की कुंआरी कन्या,
तुझे धैर्य बंधाने के लिए
मैं तेरी समता किससे करूं ?
तेरा दुःख सागर के सदृश अपार है;
कौन तुझे तेरे दुःख से उबार सकता है ?

14 जो दर्शन तेरे नबियों ने तेरे लिए देखे थे,
वे सफेद झूठ थे।
उन्होंने तेरा अधर्म तुझ पर प्रकट नहीं किया,
अन्यथा तू बन्दिनी बनकर निर्वासित न होती।
तेरे नबियों ने तेरे लिए ऐसी नबूवतें कीं,
जो झूठी और भ्रामक थीं।

15 मार्ग से गुजरनेवाले तुझे देखकर ताली बजाते हैं।
वे यरूशलेम की पुत्री को देखकर
छी-छी करते और मुंह बनाकर यह कहते हैं : 'क्या यह वही नगरी है, जिसको "विश्व का आनन्द", "परम-सुन्दरी" कहा जाता था ?'

16 ओ यरूशलेम!
तेरे सब शत्रु तेरे विरुद्ध मुंह बनाते हैं,
वे छी-छी करते और दांत पीसते हैं।
वे पुकारकर कहते हैं, 'हमने उसको बर्बाद कर दिया।
हम इसी दिन की प्रतीक्षा कर रहे थे।
वह हमें मिल गया! हमने उसको देख लिया।'

17 जो प्रभु ने निश्चय किया था,
उसने उसको पूरा किया,
उसने अपनी धमकी पूरी की।
जैसा उसने बहुत पहले आदेश दिया था,
उस वचन के अनुसार उसने कार्य किया।
उसने निर्दयतापूर्वक नगर का विध्वन्स कर दिया।
ओ यरूशलेम! उसने तेरे शत्रुओं को
तुझ पर हंसने और आनन्द मनाने का अवसर प्रदान किया;
तेरे बैरियों की शक्ति को बढ़ाया।

18 ओ सियोन की पुत्री,
उच्च स्वर में स्वामी को पुकार;
तेरी आंखों से रात और दिन
आंसू की जलधाराएं बहें!
तू निरन्तर पुकारती रह, और चुप न रह;
तेरी आंखों से आंसू बहते रहें,
और वे बन्द न हों!

19 रात के हर पहर के आरम्भ में
तू उठ, और प्रभु को पुकार,
स्वामी के सम्मुख
जल के सदृश अपना हृदय उण्डेल।
अपने बच्चों की प्राण-रक्षा के लिए
जो गलियों के नुक्कड़ पर
भूख से मूर्च्छित पड़े हैं,
प्रभु की ओर हाथ फैला।

20 'हे प्रभु, देख और ध्यान दे!
तूने ऐसा व्यवहार किसके साथ किया है ?
भूख के कारण मांओं को अपने बच्चे खाने पड़े,
जो उन्हें अपने प्राण से भी अधिक प्रिय थे!
पुरोहित और नबी
तुझ-स्वामी के पवित्र-स्थान में मार डाले गए।

21 'सड़कों की धूल में
वृद्धों और बच्चों के शव पड़े हैं।
मेरे युवक और युवतियाँ
तलवार से मौत के घाट उतार दिए गए।
प्रभु, तूने अपने प्रकोप-दिवस पर उनका वध कर दिया;
तूने निर्दयतापूर्वक उनको मार डाला।

22 'जैसे निर्धारित पर्व-दिवस पर चारों ओर से लोग एकत्र होते हैं,

---

2 : 14 यहेज 13 : 10 **2 : 18** यिर 14 : 17 **2 : 19** यश 51 : 20 **2 : 20** व्य 28 : 53; 2 रा 6 : 28-29 **2 : 22** आमो 5 : 18-20

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वैसे ही तूने मुझको आतंकित करनेवालों
को सब ओर से बुलाया।
प्रभु के प्रकोप-दिवस पर
एक भी बचकर भाग न सका,
कोई भी जीवित न रहा।
जिनको मैंने गोद में लिया था,
जिनका मैंने लालन-पालन किया था,
उनको मेरे शत्रु ने खत्म कर दिया।'

प्रभु की दया से उद्धार की आशा

3 मैं वह पुरुष हूं,
जिसने प्रभु के कोप-दण्ड का दुःख भोगा
है।*
2 उसने मुझे खदेड़ा,
और यहाँ प्रकाशहीन, गहन अंधकार में
पहुंचा दिया।
3 निस्संदेह क्रोध में उसका हाथ मुझ पर बार-
बार, वस्तुतः दिन-भर उठा रहता है।

4 प्रभु ने मेरी चमड़ी और मेरा मांस गला दिया;
उसने मेरी हड्डियाँ चूर-चूर कर दीं।
5 उसने मुझे पकड़ा,
और कटुता और कष्ट का विष पिलाया।
6 अतीत में मृतकों के सदृश
उसने मुझे अंधेरे बन्दीगृह में बसा दिया।
7 प्रभु ने मेरे चारों ओर घेराबन्दी की,
अतः मैं भाग न सका।
उसने मुझे जंजीरों से जकड़ दिया।
8 यद्यपि मैं उसको पुकारता हूं,
उसकी दुहाई देता हूं,
तो भी वह मेरी प्रार्थना नहीं सुनता।
9 उसने मेरे निकलने के मार्ग को
भारी पत्थरों से बन्द कर दिया,
उसने मेरे सरल मार्ग टेढ़े-मेढ़े बना दिए।

10 प्रभु मेरी घात में एक रीछ की तरह लगा है;
वह छिपकर बैठे सिंह के समान है।
11 उसने मुझे मेरे मार्ग में दबोचा,
और मेरे टुकड़े-टुकड़े कर दिए;
उसने मुझको उजाड़ दिया।
12 उसने अपना धनुष चढ़ाया,
और मुझे अपने तीर का निशाना बना दिया।

13 प्रभु ने अपने तरकश के तीरों से
मेरे हृदय को बेध दिया।
14 सब लोग मेरा मजाक उड़ाते हैं,
वे दिन भर मुझ पर गीत लिखते हैं।
15 उसने मेरे जीवन में कड़ुवाहट भर दी;
उसने मुझे भरपेट चिरायता पिलाया!

16 प्रभु ने मेरे दांतों में कंकड़ भर दिए,
और मुझे राख के ढेर पर बिठा दिया!
17 मेरी आत्मा सुख-शांति से वंचित हो गई;
मैं भूल गया कि भलाई क्या होती है।
18 इसलिए मैं यह कहता हूं,
'मेरा सुख समाप्त हो गया;
मेरी आशा, जो प्रभु से मैंने की थी,
उसका अंत हो गया।'
19 हे प्रभु, मेरी पीड़ा और मेरे दुःख को स्मरण
कर,
देख, मैं कड़ुवाहट से पूर्ण विष और चिरायता
पी चुका हूं।
20 मेरी आत्मा सदा इसी बात को सोचती रहती
है;
मेरा प्राण भीतर ही भीतर दब गया है।
21 परन्तु मैं अपने हृदय में यह स्मरण करता हूं,
अतः मेरी यह आशा नहीं टूटती :
22 प्रभु की करुणा निरन्तर बनी रहती है;
उसकी दया अनंत है।
23 रोज सबेरे उसमें नए अंकुर फूटते हैं;
उसकी सच्चाई अपार है।
24 मेरा प्राण कहता है, 'प्रभु ही मेरा अंश है,
अतः मैं उसकी आशा करूंगा।'

25 जो लोग प्रभु की बाट जोहते हैं,
जो आत्मा उसकी खोज करती है,
उसके प्रति प्रभु भला है।
26 यह मनुष्य के हित में है, कि वह शांति से
प्रभु के उद्धार की प्रतीक्षा करे।

* अथवा, 'देखा है।'
3 : 14 यिर 20 : 7 **3 : 15** मत 27 : 34

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

27 यह मनुष्य के लिए हितकर है
कि वह बचपन से अपना जूआ उठाए!

28 जब मनुष्य को यह अनुभव हो
कि प्रभु ने उसे दण्डित किया है,
तब वह चुपचाप उसे स्वीकार कर ले।
29 वह भूमि पर लेटकर पश्चात्ताप करे,
और आशा का परित्याग न करे।
30 वह मारनेवाले की ओर अपना गाल कर दे,
और अपमान का घूंट पी जाए।

31 स्वामी सदा के लिए
मनुष्य का परित्याग नहीं करता।
32 यद्यपि वह मनुष्य को दु:ख देता है,
तथापि वह उस पर दया भी करता है;
क्योंकि वह करुणा-सागर है।
33 वह स्वेच्छा से मनुष्यों को पीड़ित नहीं करता,
और न ही उन्हें दु:ख देता है।

34 स्वामी इन तीन कार्यों को पसन्द नहीं करता :
पृथ्वी के समस्त बन्दियों को पैरों तले रौंदना;
35 सर्वशक्तिमान परमेश्वर के सम्मुख
मनुष्य को उसके मूलभूत अधिकारों से वंचित करना;
36 और किसी निर्दोष व्यक्ति को दोषी ठहराना।

37 जब तक स्वामी आदेश न दे,
तब तक क्या किसी मनुष्य के वचन के अनुसार कुछ हो सकता है?
38 सर्वशक्तिमान परमेश्वर के मुंह से ही
अच्छाई और बुराई दोनों निकलती हैं।
39 तब जीवित मनुष्य प्रभु के न्याय की शिकायत क्यों करे;
मनुष्य अपने पाप के दण्ड के लिए क्यों कुड़कुड़ाए?

40 आओ, हम अपने आचरण की जांच-पड़ताल करें,
और प्रभु की ओर लौटें!
41 आओ, हम स्वर्ग में विराजमान परमेश्वर की ओर
अपने हृदय और हाथ उठाएँ और यह कहें :
42 'प्रभु, हमने तेरे प्रति अपराध किया,
हमने तुझसे विद्रोह किया;
और तूने हमें क्षमा नहीं किया।

43 'तूने क्रोध में भरकर हमारा पीछा किया,
और निर्दयतापूर्वक हमारा वध किया।
44 तूने स्वयं को मेघ से ढक लिया,
ताकि हमारी प्रार्थना तेरे पास न पहुंच सके।
45 तूने हमें विश्व की कौमों के मध्य
कूड़ा-कर्कट बना दिया!
46 हमारे सब शत्रु हमारे विरुद्ध मुंह बनाते हैं।
47 आतंक और पतन, विध्वंस और विनाश
हम पर टूट पड़े हैं।'

48 अपने लोगों की नगरी का विनाश देखकर
मेरी आंखों से आंसू की नदी बहती है।
49 मेरी आंखों से लगातार,
अविराम आंसू बहते रहेंगे
50 जब तक स्वर्ग से प्रभु
हम पर दृष्टिपात नहीं करेगा।
51 अपने नगर की कन्याओं का हाल देखकर
मेरी आंखें दु:ख से त्रस्त हो गई हैं,
मेरे प्राण को क्लेश होता है।

52 मेरे शत्रुओं ने जो अकारण ही
मुझसे शत्रुता करते थे,
शिकारी पक्षी के सदृश मेरा पीछा किया।
53 उन्होंने मेरा वध करने के लिए मुझे गड्ढे में
डाल दिया, और मुझपर पत्थर लुढ़काए।

54 मेरे सिर तक पानी आ गया,
मैंने सोचा, "अब मैं डूब जाऊंगा।"
55 'हे प्रभु, तब मैंने तेरे नाम की दुहाई दी;
मृत्यु के गड्ढे के भीतर से तुझे पुकारा।

---

3 : 30 मत 5 : 39 **3 : 33** यहेज 33 : 11 **3 : 37** भज 33 : 9 **3 : 40** हो 6 : 1 **3 : 45** 1 कुर 4 : 13 **3 : 50** यश 63 : 15

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

56 प्रभु, मेरी दुहाई की पुकार से
अपने कान बन्द न कर!
निस्सन्देह तूने मेरी दुहाई सुन ली।
57 जब मैंने तुझे पुकारा तब तू मेरे पास आया,
और तूने मुझसे कहा, "मत डर!"

58 'हे स्वामी,
तूने अपने हाथ में मेरा मुकदमा लिया,
और मेरे प्राण को बचाया।
59 जो अन्याय मेरे साथ किया गया,
उसको तूने देखा है,
हे प्रभु, मेरा न्याय कर।
60 जो बदला उन्होंने मुझसे लिया है,
जो षड्यन्त्र उन्होंने मेरे विरुद्ध रचे हैं,
उन सबको तूने देखा है।

61 'हे प्रभु, जो वे ताना मारते हैं,
उनको तूने सुना है;
जो षड्यन्त्र उन्होंने मेरे विरुद्ध रचे हैं,
उनको तू जानता है।
62 मुझ पर आक्रमण करने वालों के वचन और
विचार दिन भर मेरे विरुद्ध रहते हैं।
63 देख, वे हर समय, उठते-बैठते मेरे विषय में
व्यंग्य-गीत गाते हैं।

64 'हे प्रभु, मैं जानता हूं कि तू
उनके दुष्कर्मों के अनुसार
उनको प्रतिफल देगा।
65 तू उनके हृदय में विकार भर देगा,
तेरा अभिशाप उन पर होगा।
66 हे प्रभु, क्रोध में भरकर तू उनका पीछा करेगा,
और उनको आकाश के नीचे से मिटा देगा।'

सियोन का दण्ड पूर्ण हुआ

4 सोने का रंग कैसे फीका पड़ गया!
शुद्ध सोना कैसे खोटा हो गया!
यरूशलेम में पवित्र पत्थर रूपी पुरुष गली-
कूचों के छोरों पर मृत पड़े हैं।

2 सियोन के श्रेष्ठ पुत्र, जो शुद्ध सोने के तुल्य
थे;
वे कुम्हार के बनाए गए
मिट्टी के बर्तन के समान तुच्छ माने गए!

3 सियार भी थन पसार कर
अपने बच्चों को दूध पिलाती है;
किन्तु मेरे लोगों की बेटी,
वन की शुतुरमुर्गी की तरह निष्ठुर हो गई है।
4 प्यास के कारण दूध पीनेवाले बच्चों की जीभ
उनके तालू से चिपक गई।
बच्चे रोटी मांग रहे हैं,
परन्तु कोई भी उनको रोटी नहीं देता।

5 जो पहिले छप्पन भोग खाते थे,
अब वे सड़कों पर भूख से मरे पड़े हैं।
जो कीमती वस्त्र पहिनकर जवान हुए थे,
अब वे घूरों को गले लगा रहे हैं।

6 मेरे लोगों की नगरी यरूशलेम के अधर्म का
दण्ड
सदोम नगर के पाप के दण्ड से अधिक
कठोर है,
जो नगर बिना किसी के हाथ लगाए ही
क्षण भर में उलट-पुलट गया था।

7 मेरे लोगों की नगरी के तरुण*
हिम से अधिक निर्मल थे,
दूध से अधिक उज्ज्वल थे।
उनकी देह मूंगे से अधिक लाल थी;
उनका रूप नीलम जैसा सुन्दर था।
8 अब उनके चेहरे अंधकार से अधिक काले
पड़ गए हैं;
वे सड़कों पर पहचाने भी नहीं जाते।
उनकी चमड़ी हड्डियों से चिपक गई है,
वह लकड़ी के समान सूख गई है।
9 जो तलवार से मारे गए
वे उन लोगों से अच्छे रहे,
जो भूख का शिकार बने;
वे खेतों के अन्न के अभाव में
सूख गए, मुरझा गए।

---

* मूल में 'नाजीर' अर्थात् समर्पण-व्रतधारी

4 : 3 अय्य 39 : 14 **4 : 6** उत 19 : 25

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

10 दयालु मांओं ने
अपने ही हाथों से अपने बच्चों को पकाया!
मेरे अपने लोगों की नगरी के विनाश के
समय ये बच्चे अपनी मांओं का आहार बन
गए।

11 तब प्रभु ने अपना पूरा क्रोध ढाह दिया;
उसने क्रोधाग्नि की वर्षा की;
उसने सियोन में आग लगा दी,
जिसने उसकी नींव तक भस्म कर दी।

12 संसार के राजा और पृथ्वी के निवासी
यह विश्वास नहीं करते थे कि
बैरी अथवा शत्रु यरूशलेम के द्वारों से प्रवेश
कर सकेंगे।

13 परन्तु यह यरूशलेम के नबियों के पापों के
कारण,
उसके पुरोहितों के दुष्कर्मों के कारण संभव
हुआ;
क्योंकि नबियों और पुरोहितों ने
धार्मिकों का रक्त नगर में बहाया था।

14 वे अंधों की तरह गलियों में भटकते हैं;
उनकी पोशाक धार्मिकों के खून से कलंकित
है, अतः कोई उनकी पोशाक को
स्पर्श नहीं करता।

15 लोग उनको देखकर चिल्लाते हैं,
'अशुद्ध ! भागो!
भागो! यहां से भागो। हमें स्पर्श मत करो।'
अतः वे इधर-उधर भटकने लगे।
तब अन्य राष्ट्रों के लोगों ने यह कहा,
'ये हमारे साथ अब नहीं रह सकते।'
16 स्वयं प्रभु ने अपने क्रोध से
उन्हें अन्य राष्ट्रों में तितर-बितर किया है;
अब वह उन पर ध्यान नहीं देगा।
लोगों ने पुरोहितों का सम्मान नहीं किया,
और न ही धर्मवृद्धों पर दया की।

17 सहायता की राह देखते-देखते
हमारी आंखें पथरा गईं;
हमने सहायता के लिए ऐसे राष्ट्र की बाट
जोही जो हमें बचा न सका।

18 शत्रु हमारे पीछे ऐसे पड़े थे
कि हम चौराहों पर खुलेआम न चल सके।
हमारा अन्त समीप आ गया था;
हमारी आयु पूरी हो चुकी थी;
क्योंकि हमारे जीवन का अंत
निकट आ गया था।

19 हमारा पीछा करनेवाले शत्रु
आकाशगामी बाजों से भी अधिक वेगवान
थे, उन्होंने पहाड़ों पर हमारा पीछा किया;
वे निर्जन प्रदेश में भी घात लगाकर बैठे रहे।

20 हमारा प्राण, प्रभु का अभिषिक्त राजा बन्दी
बना लिया गया;
और वह उनके गड्ढों में डाल दिया गया।
हम अपने राजा के विषय में यह कहते थे:
'हम महाराज की छत्रछाया में
पृथ्वी के राष्ट्रों के मध्य जीवित रहेंगे।'

21 ओ एदोम देश की राजधानी,
ओ ऊज देश में रहनेवाली!
तू यरूशलेम के पतन से आनन्दित है;
आनन्द मना! पर स्मरण रख!
तेरा भी पतन होगा,
विनाश का प्याला तू भी पियेगी;
तू मदमस्त होगी,
और अपनी नग्नता का प्रदर्शन करेगी।

22 ओ सियोन की पुत्री,
तेरे अधर्म का दण्ड पूरा हुआ;
प्रभु तुझे और अधिक दिन तक
विदेश में निर्वासित नहीं रखेगा;
पर तू, ओ एदोम की पुत्री,
प्रभु तुझे तेरे अधर्म का दण्ड देगा;
वह तेरे सब पापों को उघाड़ेगा।

दया के लिए प्रार्थना

5 हे प्रभु, स्मरण कर
कि हम पर क्या-क्या बीता है?

4 : 10 व्य 28 : 57 4 : 13 यिर 5 : 31 4 : 15 लेव 13 : 45 4 : 20 उत 2 : 7

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जो हमारी निन्दा हुई है, उस पर दृष्टिपात कर!
2 हमारी पैतृक भूमि विदेशियों के हाथ में चली गई,
हमारे निवास-स्थानों पर विजातियों ने कब्जा कर लिया है।
3 हम अनाथ-पितृहीन हो गए हैं,
हमारी मांएं विधवा के समान जीवन व्यतीत कर रही हैं।
4 जो पानी हम पीते हैं,
उसका मूल्य हमें चुकाना पड़ता है।
जो लकड़ी हम जलाते हैं,
उसका दाम हमें देना पड़ता है।
5 हमारी गर्दन पर जूआ रखकर
हमें कठोरता से हांका जाता है;
हम थक गए हैं; हमें विश्राम नहीं मिलता है।
6 पर्याप्त भोजन-सामग्री प्राप्त करने के लिए
हमने मिस्र और असीरिया देशों को भेंट चढ़ाई।
7 हमारे पूर्वजों ने पाप किया, और वे नष्ट हो गए;
पर हम उनके दुष्कर्मों का भार ढो रहे हैं।
8 गुलाम-अधिकारी हम पर शासन करते हैं;
उनके हाथ से हमें मुक्त करनेवाला कोई नहीं है।
9 भोजन-वस्तु प्राप्त करने के लिए
हम अपने प्राण संकट में डालते हैं,
क्योंकि निर्जन प्रदेश में लुटेरों की तलवार का डर है।
10 अकाल की भीषण गर्मी से
हमारे शरीर की चमड़ी भी
तंदूर के समान गर्म हो गई!
11 सियोन में स्त्रियाँ, यहूदा प्रदेश में
कुआंरी कन्याएँ भ्रष्ट कर दी गईं।
12 शत्रुओं ने हमारे अधिकारियों को
उनके हाथ बांधकर लटका दिया;
धर्मवृद्धों का अनादर किया गया।
13 किशोरों को चक्की पीसनी पड़ती है,
बच्चे लकड़ी के बोझ से
लड़खड़ाकर गिरते हैं।
14 युवकों ने गाना-बजाना बन्द कर दिया;
वृद्धों ने नगरों के प्रवेश-द्वार पर बैठना छोड़ दिया।
15 हमारे हृदय का आनन्द लुट गया;
हमारा नाचना-गाना शोक में बदल गया।
16 स्वतंत्र राष्ट्र का प्रतीक मुकुट
हमारे सिर से नीचे गिर गया।
धिक्कार है हमें! क्योंकि हमने पाप किया है।
17 इसीलिए हमारा हृदय डूबा हुआ है;
इन्हीं बातों के लिए हमारी आंखें धुंधली पड़ गई हैं,
18 कि सियोन पर्वत उजाड़ पड़ा है;
जिस पर सियार घूमते-फिरते हैं।
19 हे प्रभु, तू सदा-सर्वदा
सिंहासन पर विराजमान है।
तेरा राज्य पीढ़ी दर पीढ़ी विद्यमान है।
20 प्रभु, तूने हमें क्यों सदा के लिए भुला दिया,
तूने इतने दिन तक हमें क्यों छोड़ रखा है?
21 हे प्रभु, हमारी ओर उन्मुख हो,
ताकि हम तेरी ओर उन्मुख हों;
प्राचीन काल के सदृश हमारे दिन फेर दे।
22 क्या तूने हमें पूर्णतः त्याग दिया है?
क्या तू हमसे इतना अधिक नाराज है?

---

5 : 7 यहेज 18 : 2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नबी यहेजकेल का ग्रंथ

पुस्तक-परिचय

नबी यहेजकेल का समय यरूशलेम के पतन (ईसवी पूर्व 586) के पहले एवं यरूशलेम के पतन के पश्चात् का है। जब सन् 597 ईसवी पूर्व में सम्राट नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम नगर पर प्रथम आक्रमण किया था, तब यहेजकेल भी बंदी बनाये गये और बेबीलोन देश में निष्कासित लोगों के शिविर में लाये गये। अपने निष्कासन के पांचवें वर्ष में नबी ने व्यक्तिगत दर्शन में महिमामय परमेश्वर की उपस्थिति का अनुभव किया। पापाचारी नगर यरूशलेम के मंदिर को "पवित्र स्थान" मानने का कोई तात्पर्य नहीं रहा। तब से नबी अपने जाति-बंधु बंदियों को परमेश्वर का संदेश सुनाते रहे।

प्रस्तुत ग्रंथ के चार खण्ड किये जा सकते हैं:

पहला खण्ड—नबी यहेजकेल लोगों को परमेश्वर के आनेवाले प्रकोप की चेतावनी देते हैं, कि यरूशलेम का पतन हो जायेगा।

दूसरा खण्ड—परमेश्वर का वचन है कि वह उन राष्ट्रों को दण्ड देगा, जिन्होंने उसके निज लोगों को पथभ्रष्ट किया एवं उन पर अत्याचार किया है।

तीसरा खण्ड—यरूशलेम के पतन के पश्चात् इस्राएली राष्ट्र को सांत्वना दी गयी और उससे प्रतिज्ञा की गयी है कि उसका भविष्य समृद्धशाली होगा।

चौथा खण्ड—इस खण्ड में नबी यहेजकेल यरूशलेम के नव-मंदिर के विषय में दर्शन करते हैं कि उसका आदर्श स्वरूप कैसा होना चाहिए, जिससे इस्राएली कौम का गौरव सच्ची धार्मिकता पर पुनः स्थापित हो।

नबी यहेजकेल का परमेश्वर पर अटूट विश्वास था। वह कल्पनाशील व्यक्ति थे। उनके गम्भीर मनन-चिंतन एवं अन्तःदृष्टि उनके दर्शनों के बहुरूप में अभिव्यक्त हुई है।

उनकी नबूवतें प्रतीक घटनाओं के रूप में अथवा अभिनय के माध्यम से स्पष्ट की गयी हैं। नबी यहेजकेल ने अपने सन्देशों में इस बात पर जोर दिया है कि लोग अपने हृदय को परिवर्तित करें। आत्मजागरण के लिए हृदय परिवर्तन आवश्यक है। हरेक व्यक्ति अपने-अपने पापों के लिए उत्तरदायी है। नबी ने पुनर्जीवित तथा शुद्धीकृत इस्राएली समाज की स्थापना की घोषणा की। इस प्रकार नबी यहेजकेल पूर्ण आशावादी थे। वह पुरोहित तथा नबी दोनों थे। उनका मन्दिर के प्रति लगाव था और वह मंदिर की पवित्रता को बनाये रखने के लिए चिन्तित थे।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

चेतावनियाँ :	**1 : 1—24 : 27**
नबी यहेजकेल को आवाहन	**1 : 1—3 : 27**
यरूशलेम नगर नष्ट हो जायेगा	**4 : 1—24 : 27**
अन्य राष्ट्रों के विरुद्ध नबूवतें	**25 : 1—32 : 32**
आश्वासन:	**33 : 1—39 : 29**
प्रभु परमेश्वर की अपने लोगों के प्रति प्रतिज्ञा	**33 : 1—37 : 28**
गोग के विरुद्ध नबूवत	**38 : 1—39 : 29**
इस्राएली राष्ट्र तथा मन्दिर के गौरव की पुनःस्थापना का दर्शन	**40 : 1—48 : 35**

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दर्शन और आवाहन

1 तीसवें वर्ष के* चौथे महीने की पांचवीं तारीख
को** यह घटना घटी। उस समय कबार
नदी के तट पर यहूदा प्रदेश से निष्कासित
बन्दियों का शिविर था। मैं भी इन्हीं बन्दियों में
था। तब स्वर्ग खुल गया, और मैंने परमेश्वर के
दर्शन देखे।

2 (राजा यहोयाकीन की कैद का पांचवां
वर्ष था।) उसी महीने की पांचवीं तारीख को
3 प्रभु का यह सन्देश पुरोहित यहेजकेल बेन-
बूजी को मिला। उस समय पुरोहित यहेजकेल
कसदी कौम के देश में कबार नदी के तट पर
बन्दियों के शिविर में थे। वहाँ प्रभु की सामर्थ्य
नबी यहेजकेल को प्राप्त हुई।+

4 जब मैं-यहेजकेल ने आंखें ऊपर उठायीं,
तब यह देखा: उत्तर दिशा से आंधी उठी, और
उसके साथ महा मेघ है, और उस महा मेघ के
चारों ओर प्रकाश है, जिससे आग रह-रह कर
बिजली के सदृश चमक रही है। आग के मध्य
में मानो पीतल चमक रहा है। 5 तब आग में से
चार आकृतियाँ निकलीं, जो जीवधारी प्राणियों
के समान दिखाई दे रही थीं। उनका रूप मनुष्यों
के समान था, 6 किन्तु प्रत्येक प्राणी के चार मुंह
और चार पंख थे। 7 उनके पैर सीधे थे, और
पांवों के तलुए बछड़े के खुरों के समान थे, और
वे चमकाए हुए पीतल के समान चमक रहे थे।
8 उनके चारों ओर पंखों के नीचे, मनुष्य के ही
हाथ थे।

चारों प्राणियों के चेहरे और पंख इस प्रकार
थे: 9 उनके पंख परस्पर जुड़े हुए थे। वे चलते
समय अपनी आंखों की सीध में सीधे चलते थे,
और मुड़ते नहीं थे। 10 चारों के चेहरे का रूप
इस प्रकार था : प्रत्येक प्राणी का चेहरा सामने
की ओर मनुष्य के समान था, दाहिनी ओर सिंह
का था, और बायीं ओर बैल का तथा पीछे की
ओर गरुड़ का। 11 चारों प्राणियों के चेहरों की
आकृति यही थी।
उनके पंख ऊपर की ओर फैले हुए थे।
प्रत्येक प्राणी के दो पंख दूसरे प्राणी के दो पंखों
से मिले हुए थे। वे अन्य दो पंखों से अपना शरीर
ढके हुए थे। 12 वे सीधे, अपने सामने की ओर
चल रहे थे, और चलते समय न दाएँ और न
बाएँ मुड़ रहे थे। जहाँ आत्मा जाना चाहती थी,
वहाँ वे जा रहे थे। 13 चारों जीवधारियों के मध्य
में आग के जलते हुए अंगारों के समान कुछ
था। वह जलती हुई मशाल के समान जीवधारियों
के बीच यहाँ-वहाँ घूम रहा था। आग धधक
रही थी, और उससे बिजली निकल रही थी।
14 जीवधारी बिजली की चमक के समान
इधर-उधर कौंध रहे थे।

15 जब मैं जीवधारियों को देख रहा था तब
मुझे एक पहिया दिखाई दिया, जो भूमि पर था।
वस्तुत: चारों जीवधारियों की बाजू में एक-
एक पहिया था, जो भूमि को स्पर्श कर रहा था।
16 उन पहियों की चमक और बनावट इस प्रकार
थी : वे स्वर्णमणि के समान चमक रहे थे। चारों
की बनावट एक-जैसी थी; बनावट ऐसी थी,
मानो एक पहिए के भीतर दूसरा पहिया हो।
17 वे चारों दिशाओं में घूम सकते थे। वे किसी
भी दिशा में बिना मुड़े ही जा सकते थे। 18 चारों
पहियों के घेरे बहुत बड़े और भयानक थे।
उनके घेरों में चारों ओर आंखें ही आंखें थीं।
19 जब जीवधारी चलते थे तब उनके साथ-
साथ ये पहिए भी चलते थे, और जब जीवधारी
भूमि की सतह से ऊपर उठते थे तब पहिए भी
उठ जाते थे। 20 जहाँ आत्मा जाना चाहती थी,
वहाँ जीवधारी जाते थे, और जीवधारियों के
साथ ये पहिए भी उठ जाते थे; क्योंकि
जीवधारियों की आत्मा इन पहियों में थी।
21 जब जीवधारी जाते थे तब ये पहिए भी जाते
थे। जब वे खड़े होते तब पहिये भी खड़े हो
जाते। जब जीवधारी भूमि से ऊपर उठते तब
उनके पहिये भी ऊपर उठ जाते थे; क्योंकि
जीवधारियों की आत्मा इन पहियों में थी।

---

* अर्थात् 'यहेजकेल की आयु के' अथवा, 'निष्कासन के' ** अथवा, 'पांचवें दिन' + शब्दश: 'प्रभु का हाथ उन पर पड़ा'

1 : 1 मत 3 : 16; प्रक 19 : 11 1 : 5 प्रक 4 : 6; यहेज 10 : 8 1 : 10 प्रक 4 : 7 1 : 11 यश 6 : 2 1 : 13 प्रक 4 : 5 1 : 14 जक 4 : 10; भज 104 : 4 1 : 15 यहेज 10 : 9-10 1 : 18 यहेज 10 : 12; प्रक 4 : 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

22 उन जीवधारियों के सिर के ऊपर
आकाश-मण्डल के समान कुछ था, जो भय
उत्पन्न करनेवाला स्फटिक के समान चमक रहा
था। वह उनके सिर पर फैला हुआ था।
23आकाशमण्डल के नीचे, उनके पंख एक-
दूसरे की ओर सीधे फैले हुए थे। वे अपने दो
पंखों से अपना-अपना शरीर ढके हुए थे।
24जब वे चलते थे तब उनके पंखों की आवाज
ऐसी सुनाई पड़ती थी मानो सागर का गर्जन हो,
अथवा सर्वशक्तिमान परमेश्वर का स्वर* हो या
सेना का कोलाहल हो। जब जीवधारी रुककर
खड़े होते थे तब वे अपने पंख नीचे कर लेते
थे। 25उनके सिर के ऊपर आकाशमण्डल था।
उससे एक आवाज आती थी। जब-जब
जीवधारी रुककर खड़े होते थे तब वे अपने पंख
नीचे कर लेते थे।

26 जीवधारियों के सिर के ऊपर आकाश-
मण्डल था। उस आकाशमण्डल के ऊपर
सिंहासन के समान कुछ था। यह सिंहासन
मानो नीलम का बना था। सिंहासन के समान
इस आसन पर कोई बैठा था, जिसकी आकृति
मनुष्य के समान थी। 27मुझे ऐसा दिखाई दिया
मानो उसकी कमर से ऊपर की ओर का हिस्सा
चमकाया हुआ पीतल है, और उसके भीतर
और बाहर मानो आग धधक रही है। आकृति
का जो भाग कमर के सदृश था, उसके नीचे
अग्नि थी। मनुष्य की आकृति के चारों ओर
प्रभा-मण्डल था। 28जैसे वर्षा के दिन बादलों
में धनुष दिखाई पड़ता है, वैसे ही उसके चारों
ओर का प्रभा-मण्डल दिखाई दे रहा था।

प्रभु के तेज का रूप मानो ऐसा ही दिखाई
दे रहा था। जब मैंने प्रभु के तेज के दर्शन किए,
तब मैं श्रद्धा और भक्ति से नतमस्तक हो गया,
और मैंने किसी की आवाज सुनी। कोई व्यक्ति
मुझसे कह रहा था+:

प्रभु का आदेश : 'मेरा सन्देश सुना'

2 उसने मुझसे कहा, 'ओ मानव-सन्तान** !
अपने पैरों पर खड़ा हो, मैं तुझ से बातें
करूंगा।' 2जब उसने मुझसे यह कहा तब
आत्मा ने मुझ में प्रवेश किया, और मुझे पैरों पर
खड़ा कर दिया। मैंने उसको स्वयं मुझसे बातें
करते हुए सुना। 3उसने मुझसे कहा, 'ओ मानव,
मैं तुझको इस्राएली राष्ट्र के पास भेज रहा हूं, जो
विद्रोही कौम है, जिसने मेरे प्रति विद्रोह किया
है। वे और उनके पूर्वज आज तक मेरे प्रति
अपराध करते चले आ रहे हैं। 4यह पीढ़ी धृष्ट
और हठी है। मैं उन लोगों के पास तुझको भेज
रहा हूं। तू उनसे यह कहना : ''स्वामी-प्रभु यों
कहता है।'' 5चाहे वे सुनें या सुनने से इन्कार
करें—क्योंकि वे विद्रोही कुल की सन्तान
हैं—उन्हें यह मालूम होगा कि तू उनके मध्य
एक नबी है। 6और तू, मानव, उनसे मत डरना,
और न उनके कठोर शब्दों से घबराना, चाहे तेरे
आसपास कांटे, ऊंटकंटारे हों और चाहे तुझे
बिच्छुओं के बीच रहना पड़े। तू उनकी बातों
से मत डरना, और न उनकी तीखी दृष्टि से
हताश होना; क्योंकि वे विद्रोही कुल की सन्तान
हैं। 7चाहे वे सुनें, चाहे सुनने से इन्कार करें, तू
उनको मेरे सन्देश सुनाना। निस्सन्देह, वे
विद्रोही कुल की सन्तान हैं।

8 'ओ मानव-सन्तान! जो बात मैं तुझसे
कहता हूं, उसको ध्यान से सुन। तू भी उन
विद्रोहियों के समान विद्रोही मत बनना। अपना
मुंह खोल, और जो मैं तुझको दे रहा हूं, उसको
खा जा!'

9 तब मैंने देखा कि एक हाथ मेरी ओर बढ़ा।
उस हाथ में एक पुस्तक* थी, जिसमें कुछ
लिखा था। 10उसने पुस्तक मेरे सामने खोल
दी। उसके दोनों पृष्ठों पर लिखा हुआ था। मैंने
पढ़ा, उस पर विलाप और शोक-गीत लिखे हुए
थे। उस पर धिक्कार के शब्द लिखे हुए थे।

---

* अथवा, 'बादलों का गर्जन' + अथवा, 'वाणी कह रही थी'। ** अथवा, 'मानव-पुत्र'। इस ग्रंथ में इसका अनुवाद अनेकों बार 'मानव' किया गया है। * मूल में, 'लपेटा हुआ चर्मपत्र'

1 : 22 यहेज 10 : 1 **1 : 24** यहेज 43 : 2; प्रक 1 : 15 **1 : 26** नि 24 : 10; प्रक 1 : 13; 4 : 2 **1 : 27** यहेज 8 : 2 **1 : 28** उत 9 : 13-15; नि 33 : 20; दान 8 : 17 **2 : 1** दान 10 : 11 **2 : 2** यहेज 3 : 24 **2 : 5** यहेज 33 : 33 **2 : 7** यिर 1 : 7 **2 : 9** प्रक 5 : 1

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

3 उसने मुझसे कहा, 'ओ मानव-संतान!
जो तुझे खाने के लिए दिया जा रहा है,
उसको खा ले। तू इस पुस्तक को खा, और फिर
इस्राएल के कुल के पास जा, और उन्हें मेरे सन्देश
सुना।'
2 मैंने अपना मुंह खोला, और उसने मुझे
खाने के लिए पुस्तक दी। 3उसने मुझसे
फिर कहा, 'मानव, जो पुस्तक मैं तुझको खाने
के लिए दे रहा हूं, इसे खा और इससे अपना
पेट भर।' अत: मैंने उसको खा लिया। वह
मुझे अपने मुंह में शहद से अधिक मीठी
लगी।
4 उसने मुझसे फिर कहा, 'मानव, इस्राएल
कुल के पास जा, और उनसे मेरे वचन कह।
5क्योंकि मैं तुझको कोई अनोखी बोली या
कठिन भाषा बोलने वालों के पास नहीं भेज रहा
हूं; बल्कि इस्राएल-कुल के पास भेज रहा हूं।
6तुझे ऐसे लोगों के पास नहीं भेज रहा हूं जो
अनोखी बोली बोलते हैं या कठिन भाषा
बोलनेवाले लोग हैं, जिनकी भाषा तू नहीं
समझता। यदि मैं तुझको ऐसे लोगों के पास ही
भेजता, तो निस्सन्देह वे तेरी बात सुनते। 7किन्तु
इस्राएल-कुल तेरी बात नहीं सुनेगा; क्योंकि
वह मेरी बात सुनने को तैयार नहीं है। समस्त
इस्राएल-कुल का मन ढीठ और उनका हृदय
हठी हो गया है। 8सुन, इसीलिए मैंने उनके प्रति
तेरा मन भी ढीठ और तेरा हृदय भी हठीला बना
दिया है। 9मैंने तेरे मन को चकमक पत्थर से
अधिक कठोर+ बना दिया है। वे विद्रोही कुल
की सन्तान हैं। तू उनकी तीखी दृष्टि से मत डरना
और न हताश होना।'
10 इसके अतिरिक्त उसने मुझसे यह भी
कहा, 'ओ मानव-सन्तान, जो बातें मैं तुझसे
कह रहा हूं, उनको ध्यान से सुन, और उनको
अपने हृदय में संभाल कर रख। 11और तब स्वदेश
से निष्कासित बन्दियों के पास जा, और अपने
जाति-भाई-बहिनों से यह कह : "स्वामी-
प्रभु का यह सन्देश है," फिर चाहे वे सुनें या
सुनने से इन्कार करें।'
12 तत्पश्चात् आत्मा ने मुझे ऊपर उठाया।
जब प्रभु का तेज** अपने स्थान से उठा, तब
मैंने अपनी पीठ की ओर भारी भूकम्प की
घड़घड़ाहट सुनी। 13यह जीवधारियों के पंखों
और उनके पहियों की आवाज थी, जो ऐसी
सुनाई दे रही थी मानो भूकम्प की बड़ी
घड़घड़ाहट हो। जीवधारियों के पंख परस्पर
टकरा रहे थे, और उनकी बाजू में पहिए थे, जो
चलते समय घड़घड़ाहट की आवाज कर रहे
थे। 14तब आत्मा मुझे उठा कर ले गया। मैं मन
ही मन जल रहा था, और मेरी आत्मा कटुता से
भर गई थी। मैं चला गया, और प्रभु का हाथ
मुझ पर प्रबल था।

बन्दियों के शिविर में

15 मैं तेल-आबीब नगर में आया। यहीं
कबार नदी के तट पर स्वदेश से निष्कासित
बन्दियों का शिविर था। मैं वहाँ उनके मध्य में
सात दिन तक बैठा रहा; मेरी समझ में न आया
कि क्या करूं, क्या न करूं।
16 सात दिन के पश्चात् प्रभु का यह सन्देश
मुझे मिला। 17प्रभु ने मुझ से कहा, 'ओ मानव,
मैंने तुझे इस्राएल-कुल का पहरेदार नियुक्त
किया है। जब-जब तू मेरे मुंह के वचन सुनेगा,
तब-तब उनको मेरी ओर से चेतावनी देना।
18यदि मैं दुर्जन से यह कहूंगा, "तू अपने
दुष्कर्म के कारण निश्चय मरेगा" और तू
उसको चेतावनी नहीं देगा, और न उसको
अपना कुमार्ग छोड़ने के लिए सावधान करेगा
कि वह चेतावनी सुनकर अपना प्राण बचा ले,
तो, ओ मानव, सुन, वह दुर्जन अपने दुष्कर्मों
के कारण तो मरेगा ही, परन्तु मैं उसकी मृत्यु
का दोष तेरे माथे ही मढ़ूंगा। 19किन्तु यदि तू उस
दुर्जन को चेतावनी देगा, और वह दुर्जन अपने
दुष्कर्म के मार्ग से मुंह नहीं मोड़ेगा, अथवा
दुष्कर्म करना नहीं छोड़ेगा, तो वह निस्सन्देह

+ मूल में शब्द-श्लेष है; 'यहेजकेल' शब्द का अर्थ है : 'परमेश्वर कठोर अथवा प्रबल बनाता है'। ** अथवा, 'महिमा'
3 : 3 प्रक 10 : 9 3 : 7 मत 12 : 38-42 3 :16-21 यहेज 33 : 1-9 3 : 17 यश 21 : 6,8 3 : 20 यहेज 18 : 24; 33 : 12-13; 2 पत 2 : 20

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अपने दुष्कर्मों के कारण मरेगा, किन्तु तेरा प्राण
बच जाएगा।
20 'इसी प्रकार यदि धार्मिक मनुष्य अपने
सन्मार्ग से विमुख हो जाए और अधर्म करने
लगे, और मैं उसको रोकने के लिए उसके आगे
बाधाएँ उत्पन्न करूं, तो वह निस्सन्देह मर
जाएगा। अब, क्योंकि तूने उस धार्मिक मनुष्य
को चेतावनी नहीं दी थी, इसलिए वह अपने
पाप में मरा और उसके सत्कर्मों को स्मरण नहीं
किया गया, अतः मैं उसकी मृत्यु का दोष तेरे
माथे ही मढूंगा। 21परन्तु यदि तू धार्मिक मनुष्य
को चेतावनी देगा कि वह पाप न करे, और वह
तेरी चेतावनी सुन कर पाप नहीं करेगा, तो वह
निस्सन्देह जीवित रहेगा। तब तेरा प्राण बच
जाएगा।'

प्रभु का पुनः दर्शन देना

22 प्रभु की सामर्थ्य मुझ पर प्रबल हुई। प्रभु
ने मुझ से कहा, 'उठ, और मैदान की ओर जा।
मैं वहाँ तुझसे बातें करूंगा। 23अतः मैं उठा,
और मैदान की ओर गया, और देखो, प्रभु का
तेज वहां प्रकट हुआ*; वह उस तेज के समान
था जो मैंने कबार नदी के तट पर देखा था। तब
मैं भूमि पर मुंह के बल गिर पड़ा।+ 24किन्तु आत्मा
ने मुझ में प्रवेश किया और मुझे पैरों पर खड़ा
कर दिया, और मुझ से बातें कीं। उसने मुझ से
कहा, 'अपने घर जा, और द्वार बन्द कर भीतर
बैठ। 25ओ मानव, देख, लोग तुझे रस्सियों से
बांधेंगे, और रस्सियों से बन्ध जाने पर तू बाहर
समाज में नहीं आ-जा सकेगा। 26मैं तेरी जीभ
तेरे तालू से चिपका दूंगा, और तू गूंगा हो
जाएगा, और तू उनको डांट नहीं सकेगा,
क्योंकि वे विद्रोही कुल के लोग हैं! 27जब मैं
तुझसे बातें करूंगा तब मैं तेरा मुंह खोल दूंगा
और तू उनसे यह कहेगा, ''स्वामी-प्रभु यों
कहता है!'' जो सुन सकता है, वह सुने! और
जो सुनने से इन्कार करता है, वह न सुने;
क्योंकि ये लोग विद्रोही कुल की सन्तान हैं।

यरूशलेम पर आक्रमण होगा

4 'ओ मानव, तू एक ईंट ले, और उसको
अपने सामने रख। इसके पश्चात्, तू उस
पर यरूशलेम नगर का रेखाचित्र अंकित कर।
2तू उसके चारों ओर से घेर कर मोर्चाबन्दी कर।
तू उसके सामने दमदमा बान्ध। सैनिकों का
पड़ाव डाल, और उसके चारों ओर युद्ध के यन्त्र
लगा। 3तब लोहे का एक तवा ले, और उसको
दीवार के रूप में रख दे : यह तेरे और नगर के
मध्य मानो लोहे की दीवार होगी। तू नगर की
ओर मुँह कर, और उसको घेर ले। घेराव की
स्थिति बनाए रख। यह रेखाचित्र इस्राएल-
कुल की स्थिति का संकेत-चिह्न है।
4'अब तू बायीं करवट लेट, और इस्राएल-
कुल के अधर्म का भार अपने ऊपर ले†। जितने
दिन तक तू बायीं करवट पर लेटा रहेगा, उतने
दिन तू इस्राएल-कुल के दण्ड को सहता
रहेगा। 5मैं तेरे लिए दिनों की संख्या निश्चित
कर देता हूं : तू तीन सौ नब्बे दिन तक उनका
दण्ड सहेगा। एक दिन एक वर्ष के बराबर है।
इस्राएल प्रदेश की जनता को तीन सौ नब्बे वर्ष
तक दण्ड मिलेगा। 6जब तू तीन सौ नब्बे दिन
तक इस्राएल-कुल के दण्ड को भोग चुकेगा,
तब तू दूसरी बार लेटना। इस बार दाहिनी
करवट लेटना। तू दाहिनी करवट पर यहूदा
प्रदेश की जनता का दण्ड भोगेगा। मैं तेरे लिए
चालीस दिन निश्चित करता हूँ। एक दिन एक
वर्ष के बराबर है। 7तू शत्रुओं से घिरे हुए
यरूशलेम नगर की ओर अपना मुंह करना।
क्रोध प्रकट करने के लिए तेरी बाहें उघड़ी
होंगी। तब तू यरूशलेम के विरुद्ध नबूवत
करना। 8देख, जब तक तू घेराबन्दी के पूरे दिन
भोग नहीं चुकेगा, तब तक मैं तुझे रस्सियों से
बांधे रहूंगा ताकि तू करवट न बदल सके।
9 'तू गेहूं, जौ, सेम, मसूर, बाजरा और
कठिया गेहूं लेना, और उनको एक थाली में
मिला लेना। तू उन से रोटी बनाना। तू तीन सौ

* अथवा 'खड़ा हुआ'। + अथवा, 'श्रद्धा और भक्ति से नतमस्तक हो गया'। † अथवा, ''मैं तुझे दण्ड दूंगा, मानो मैं इस्राएल-कुल को दण्ड दे रहा हूं।''

3 : 23 यहेज 1 : 28 **3 : 24** यहेज 2 : 2 **3 : 27** यहेज 24 : 27; 33 : 22 **4 : 8** यहेज 3 : 25

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
नब्बे दिन, अर्थात् जब तक तू करवट पर लेटा
रहेगा, तब तक तू यही रोटी खाना। 10जो भोजन
तू खाएगा, उसको तौल कर खाना अर्थात्
प्रतिदिन दो सौ पचास ग्राम* । तू दिन में केवल
एक बार भोजन करना। 11तू पानी भी माप कर
पीनाः अर्थात् एक लिटर** । तू पानी भी दिन में
एक बार पीना। 12जैसे जौ की रोटी खाई जाती
है वैसे ही तू अपनी रोटी खाना। तू उसको
मनुष्य की विष्ठा के कण्डे पर लोगों की आंखों
के सामने सेंकना।' 13प्रभु ने आगे कहा, 'जब
मैं इस्राएली राष्ट्र के लोगों को विश्व के अनेक
देशों में खदेड़ दूंगा, तब वे ठीक ऐसा ही अशुद्ध
भोजन खाएंगे।'

14 तब मैंने कहा, 'यह क्या, स्वामी-प्रभु!
देख, मैंने निषिद्ध भोजन खाकर कभी स्वयं को
अशुद्ध नहीं किया। बचपन से अब तक मैंने
किसी मरे हुए पशु अथवा जंगली जानवरों द्वारा
मारे गए पशु का मांस नहीं खाया। मैंने व्यवस्था
द्वारा निषिद्ध मांस अपने मुंह में कभी नहीं
डाला।' 15प्रभु ने मुझसे कहा, 'अच्छा, तेरा
निवेदन मुझे स्वीकार है। तू मनुष्य की विष्ठा के
कण्डे के स्थान पर गाय के गोबर के कण्डे पर
अपनी रोटी सेंकना।' 16प्रभु ने मुझसे यह भी
कहा, 'ओ मानव! देख, मैं यरूशलेम में "रोटी
के आधार" को तोड़ दूंगा। यरूशलेम के
निवासी रोटी तौल-तौल कर और डरते हुए
खाएंगे। वे पानी को मापकर पीएंगे, और पानी
पीते समय भी वे चिंता में डूबे रहेंगे। 17मैं वहां
रोटी और जल का अभाव करूंगा। वे चिंतित
होकर एक-दूसरे का मुंह ताकेंगे। यों धीरे-धीरे
अपने अधर्म का दण्ड भोगते हुए वे नष्ट हो
जाएंगे।

यरूशलेम नगर नष्ट हो जाएगा

5 'ओ मानव-सन्तान, अपने हाथ में एक
तेज तलवार ले। नाई के उस्तरे के समान
उसको काम में ला। उससे अपने सिर और
दाढ़ी के बाल मूंड़। इसके पश्चात् तू तौलने का
कांटा लेना, और उससे बालों को तौलकर
उसके तीन भाग करना। 2जब यरूशलेम की
घेराबन्दी के दिन पूरे हो जाएंगे, तब बालों के
एक भाग को नगर के भीतर आग में जला देना,
और दूसरे भाग को नगर के चारों ओर तलवार
से टुकड़े-टुकड़े कर देना। शेष तिहाई भाग को
हवा में उड़ा देना और मैं तलवार खींच कर
उसके पीछे चलाऊंगा†† । 3इनमें से कुछ बाल
लेना, और उनको अपने अंगरखे के छोर में
बांध देना। 4इनमें से भी कुछ बाल अलग
करना, और उनको आग में डालकर जला देना।
यहां से आग की एक ज्वाला निकलेगी, और
इस्राएल के सम्पूर्ण कुल में फैल जाएगी।

5 'मैं, स्वामी-प्रभु यों कहता हूँ: यही
स्थिति यरूशलेम नगर की है। मैंने उसको राष्ट्रों
के मध्य स्थित किया था। उसके चारों ओर
अन्य देश बसे हुए थे। 6किन्तु यरूशलेम नगरी
ने दुष्कर्म करने के लिए मेरे न्याय-सिद्धान्तों को
बदल दिया, और मेरी संविधियों के अनुसार
आचरण नहीं किया। यरूशलेम के निवासियों
ने मेरे न्याय-सिद्धान्तों का तिरस्कार किया। वे
मेरी संविधियों के अनुरूप नहीं चले। इस
प्रकार उन्होंने अपने आसपास के राष्ट्रों से
अधिक दुष्कर्म किए। उन्होंने अपने चारों ओर
के देशों की अपेक्षा अधिक अधर्म किया।
7इसलिए मैं, स्वामी-प्रभु यों कहता हूँ: तुमने
मेरे प्रति अपने चारों ओर के राष्ट्रों से अधिक
बलवा किया, और मेरी संविधियों का पालन
नहीं किया, तुमने मेरे न्याय-सिद्धान्तों के
अनुसार आचरण नहीं किया; किन्तु तुमने अपने
आसपास के राष्ट्रों के न्याय-सिद्धान्त+ अपनाए,
और उनको व्यवहार में लाए। 8अतः सुनो, मैं,
स्वामी-प्रभु क्या कहता हूँ: मैं, हां मैं, तुम्हारे
विरुद्ध हूँ। मैं इन्हीं राष्ट्रों के सामने तुम्हारे मध्य
में अपना न्याय-निर्णय सुनाऊंगा। 9तुमने अत्यन्त
घृणित कार्य किए हैं। इसलिए जो अनिष्ट मैंने
अब तक नहीं किया, वह अब करूंगा, और

---

* मूल में "बीस शेकेल" ** मूल में, 'हीन माप का छठवां अंश' †† पद का अन्तिम वाक्य 12वें पद के समान बनाया गया। + पाठांतर 'नहीं अपनाए, और न उनको व्यवहार में लाए।'

4 : 14 नि 22 : 31; व्य 14 : 3 **4 : 16** लेव 26 : 26; भज 105 : 16; यहेज 12 : 18 **4 : 17** लेव 26 : 39

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वैसा अनिष्ट दुबारा कभी नहीं करूंगा: 10सुनो,
तुम्हारे मध्य रहनेवाले पिता अपने पुत्रों का मांस
खाएंगे, और पुत्र अपने पिता का! मैं तुम्हें यही
दण्ड दूंगा। और जो लोग बच जाएंगे, उनको
मैं चारों दिशाओं में बिखेर दूंगा।

11 'मैं, स्वामी-प्रभु अपनी सौगन्ध खाकर
कहता हूँ: तूने मेरे पवित्र स्थान को अपनी
घृणित मूर्तियों और घिनौने कामों से अपवित्र
कर दिया है, इसलिए मैं तेरी बोटी-बोटी
कर दूंगा। मैं तुझ पर दया-दृष्टि नहीं करूंगा,
और न मेरी आंखों से बचकर कोई भाग
सकेगा।

12 'तेरी आबादी का एक-तिहाई भाग
महामारी से मर जाएगा। वे तेरे सामने अकाल
से मर जाएंगे। आबादी का दूसरा एक-तिहाई
भाग नगर के चारों ओर शत्रु की तलवार से मारा
जाएगा, और शेष तीसरे भाग को मैं सब
दिशाओं में बिखेर दूंगा, और तलवार खींच कर
उनका पीछा करूंगा।

13 'इस प्रकार मेरा क्रोध शान्त होगा। जब
तक मेरी क्रोधाग्नि उन पर पूरी तरह न भड़क
उठेगी, तब तक वह शांत न होगी, और न मुझे
चैन मिलेगा। और तब उनको मालूम होगा कि
मैं-प्रभु ने ही ईर्ष्या की अग्नि में धधक कर यह
कहा है। उस समय ही उनके प्रति मेरा क्रोध
ठण्डा होगा।

14 'इसके अतिरिक्त, ओ यरूशलेम, मैं
तुझको उजाड़ दूंगा, और तेरे पड़ोसी राष्ट्रों की
दृष्टि में तुझे निन्दा और घृणा का पात्र बना दूंगा।
तेरे पास से गुजरनेवाले तेरी निन्दा करेंगे। 15जब
मैं तुझको क्रोध, कोप और रोषपूर्ण चेतावनी के
साथ दण्ड दूंगा, तब तू सब राष्ट्रों में घृणा, निन्दा,
चेतावनी और अपमान का पात्र बन जाएगा।
सुन, मैंने, तेरे प्रभु ने, यह कहा है। 16मैं तुझे नष्ट
करने के लिए, तुझ पर अकाल के घातक तीर
चलाऊंगा, विनाश के बाण मारूंगा, तुझ पर
भयंकर से भयंकर अकाल लाऊंगा और तेरी
''रोटी का आधार'' तोड़ दूंगा। 17मैं तुझ पर
जंगली पशु और अकाल भेजूंगा। वे तेरे बच्चों
को खा जाएंगे। महामारी और हत्या की काली
छाया तेरे दरवाजों से गुजरेगी। ओ यरूशलेम
के निवासियो, सुनो, मैं—तुम्हारा प्रभु, तुम पर
शत्रु की तलवार चलवाऊंगा। मैं-प्रभु ही यह
कह रहा हूँ।'

पहाड़ी शिखरों पर घृणित कार्य

6 प्रभु का यह सन्देश मुझे मिला। प्रभु ने मुझ
से कहा, 2'ओ मानव-सन्तान, अपना मुख
इस्राएल प्रदेश के पहाड़ों की ओर कर, और
उनके विरुद्ध यह नबूवत कर: 3ओ इस्राएल के
पहाड़ो! स्वामी-प्रभु का यह सन्देश सुनो:
स्वामी-प्रभु पहाड़ों और पहाड़ियों, घाटियों
और तराइयों के सम्बन्ध में यों कहता है: देखो,
मैं, हाँ मैं, तुम पर शत्रु की तलवार चलवाऊंगा,
और यों मैं तुम्हारे पहाड़ी शिखर के पूजागृह नष्ट
कर दूंगा। 4तुम्हारी वेदियां उजड़ जाएंगी। शत्रु
तुम्हारी सूर्य की प्रतिमाएं तोड़ डालेंगे। मैं
तुम्हारे मृत लोगों को तुम्हारी इन मूर्तियों के
आगे फेंक दूंगा। 5मैं इस्राएलियों के शव उनकी
मूर्तियों के सम्मुख डालूंगा। ओ इस्राएलियो,
मैं तुम्हारी वेदियों के चारों ओर तुम्हारे शव
की हड्डियाँ बिखेरूंगा। 6तुम्हारे जितने
आबाद नगर हैं, वे सब उजड़ जाएंगे, तुम्हारे
पहाड़ी शिखर के पूजागृह खण्डहर हो जाएंगे,
और यों तुम्हारी वेदियां उजाड़ और ध्वस्त हो
जाएंगी, तुम्हारी मूर्तियां तोड़ी जाएंगी, तुम्हारी
सूर्य की प्रतिमाएं टुकड़े-टुकड़े हो जाएंगी,
और यों तुम्हारे हाथ की ये रचनाएं भूमि की
सतह से मिट जाएंगी। 7तुम्हारे मध्य में शवों के
ढेर लगे होंगे। तब तुम्हें अनुभव होगा कि मैं प्रभु
हूं।

8 'फिर भी ओ इस्राएलियो, मैं तुम में से
कुछ लोगों को जीवित छोड़ दूंगा। कुछ लोग
तलवार की मार से बच जाएंगे, और वे अन्य
राष्ट्रों में तितर-बितर हो जाएंगे। अन्य देशों में
बिखरे हुए ये ही लोग बचेंगे। 9तुम्हारे ये बचे
हुए लोग उन राष्ट्रों में मुझे स्मरण करेंगे, जहाँ

5 : 10 व्य 28 : 53; यिर 19 : 9; शोक 2 : 20; 4 : 10; लेव 26 : 33 **5 : 17** प्रक 6 : 8 **6 : 3** लेव 26 : 30
6 : 9 यहेज 20 : 43; 36 : 31

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वे बन्दी बनकर निष्कासित हुए थे। वे याद
करेंगे कि मैंने उनको दण्ड दिया था, क्योंकि उन
दिनों में उनके हृदय की निष्ठा मेरे प्रति नहीं रही
थी। और उन्होंने मेरी ओर से आंखें हटा ली थीं,
और उन्होंने अन्य देवताओं की मूर्तियों पर
कामनापूर्ण दृष्टि की थी। वे यह अनुभव कर
अपने घृणित कार्यों के लिए स्वयं अपनी दृष्टि
में घृणित ठहरेंगे, और कहेंगे कि उन्होंने कितने
दुष्कर्म किये हैं। [10]तब उन्हें ज्ञात होगा कि मैं
प्रभु हूं और जो मैंने यह कहा कि मैं उनका
अनिष्ट करूंगा, वह व्यर्थ नहीं कहा था।'
11 स्वामी-प्रभु यों कहता है, 'व्यंग्य से हाथ
पर हाथ मारकर और घृणा से भूमि पर पैर
पटककर कहो, "थू! थू! इस्राएल के कुल ने
कितने घृणित दुष्कर्म किए।" निस्सन्देह, वे
तलवार से मौत के घाट उतारे जाएंगे। वे अकाल
और महामारी से मर जाएंगे। [12]जो इस्राएल प्रदेश
से दूर होगा, वह महामारी से मरेगा, और जो
प्रदेश में होगा, वह शत्रु की तलवार से मरेगा।
जो महामारी और तलवार की मार से बच
जाएगा, वह अकाल से मर जाएगा। इस प्रकार
मैं इस्राएलियों के प्रति अपनी क्रोधाग्नि
भड़काऊंगा [13]ओ इस्राएलियो, जब तुम
पहाड़ियों, पहाड़ों के शिखरों, हरे वृक्ष के नीचे,
घने बांज वृक्ष की छाया तले स्थापित वेदियों की
मूर्तियों के सम्मुख अपने जाति-बन्धुओं के शव
पड़े हुए देखोगे, जहां वे मूर्तियों के सम्मुख
धूप-द्रव्य जलाते थे, तब तुम्हें ज्ञात होगा कि मैं
प्रभु हूँ। [14]मैं उन पर अपना विनाशकारी हाथ
उठाऊंगा, और उनकी समस्त बस्तियों को—
दक्षिण के निर्जन प्रदेश से उत्तर में रिबलाह नगर
तक—सम्पूर्ण देश को उजाड़ और निर्जन बना
दूंगा। तब उन्हें मालूम होगा कि मैं प्रभु हूं।'

इस्राएल के सर्वनाश का संकेत

7 प्रभु का यह सन्देश मुझे मिला: [2] 'ओ
मानव-संतान, सुन। इस्राएल देश के सम्बन्ध
में स्वामी-प्रभु यों कहता है: अन्त! हां अन्त!
देश के चारों कोनों पर अन्त बढ़ा आ रहा है।
[3]ओ इस्राएल, सुन। तेरा अन्त आ गया। मैं
अपनी क्रोधाग्नि तुझ पर बरसाऊंगा। मैं तेरे
आचरण के अनुसार तेरा न्याय करूंगा, और
तूने जो घृणित कार्य किए हैं, उनके लिए तुझे
दण्ड दूंगा। [4]मैं तुझ पर दया की दृष्टि नहीं
करूंगा और न तू मेरी आंखों से बच कर भागने
पाएगा। ओ इस्राएल, जब तक तेरे मध्य में
घृणित पाप-कर्म होते रहेंगे, मैं तेरे आचरण के
अनुरूप तुझे दण्ड दूंगा। तब तुझे मालूम होगा
कि मैं ही प्रभु हूं।'
5 स्वामी-प्रभु कहता है: 'विपत्ति के बाद
विपत्ति! देख, तुझ पर विपत्ति आ रही है। [6]तेरा
अन्त आ गया। निस्सन्देह तेरा अन्त आ गया।
वह तेरा सर्वनाश करने के लिए नींद से जाग
पड़ा है। देख, वह आ रहा है।
7 'ओ इस्राएल देश के निवासियो! तुम्हारे
विनाश का समय आ गया। तुम्हारे लिए
विनाश-चक्र घूम चुका है। विनाश-दिवस
समीप आ पहुंचा। वह पहाड़ों पर आनन्द-
उल्लास के स्वर का नहीं, भगदड़ का दिन
होगा।
8 'अब, मैं तुझ पर अपना क्रोध उण्डेलूंगा,
तेरे प्रति अपनी क्रोधाग्नि भड़काऊंगा। तेरे
आचरण के अनुरूप तेरा न्याय करूंगा और तेरे
घृणित कार्यों के लिए तुझे दण्ड दूंगा। [9]मैं तुझ
पर दयादृष्टि नहीं करूंगा, और न तू मेरी आंखों
से बचकर भाग सकेगा। ओ इस्राएल, जब तक
तेरे मध्य में घृणित पापकर्म होते रहेंगे, मैं तेरे
आचरण के अनुरूप तुझे दण्ड दूंगा। तब तुझे
मालूम होगा कि वध करने वाला प्रभु मैं ही हूं।
10 'देखो, विनाश के दिन को देखो, वह आ
रहा है! ओ इस्राएल, तेरे विनाश का दिन आ
गया। तुझ में अन्याय दिन दूना रात चौगुना बढ़
गया था। तेरा अहंकार आकाश को छूने लगा
था। [11]हिंसा बढ़कर दुष्कर्म की लाठी बन गई
थी। ओ इस्राएलियो, तुममें से एक भी जन
जीवित नहीं रहेगा। न तुम्हारे वैभव की प्रचुरता
रहेगी और न तुम्हारी धन-सम्पत्ति। तुम्हारे
विनाश पर आंसू बहानेवाला भी कोई नहीं
होगा।

---

7 : 2 प्रक 7 : 1; 20 : 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

12 देखो, समय आ गया! दिन और निकट
आ गया! न खरीदनेवाला सस्ते दाम के कारण
आनन्द मनाए और न बेचने वाला शोक करे;
क्योंकि विनाश सबका होगा, प्रभु का क्रोध
सब पर भड़केगा। 13जब तक वे दोनों जीवित
रहेंगे, बेचनेवाला अपनी बेची हुई वस्तु के पास
नहीं लौट सकेगा। क्योंकि प्रभु का क्रोध सब
पर भड़केगा, वह उनका विनाश किए बिना
नहीं लौटेगा। आज का मनुष्य अपने पाप में
जीवित रहता है। अतः वह स्वयं को सम्भाल
न पाएगा।*

14 'उन्होंने तुरही फूंकी, और सब तैयार हो
गए। परन्तु युद्ध में कोई भी नहीं जाता; क्योंकि
समस्त देशवासियों पर मेरा क्रोध भड़का हुआ
है। 15नगर के बाहर शत्रु की तलवार लटक रही
है, और नगर के भीतर महामारी तथा अकाल
की छाया है। जो नगर के बाहर मैदान में है, वह
शत्रु की तलवार से मौत के घाट उतर जाता है;
और जो नगर के भीतर है, उसको महामारी और
अकाल खा जाते हैं। 16जो मनुष्य तलवार,
महामारी और अकाल से बच जाता है, वह
पहाड़ पर भाग जाता है। ये बचे हुए लोग ऐसे
हैं मानो घाटियों में रहनेवाले कबूतर। हर एक
बचा हुआ आदमी अपने-अपने अधर्म के लिए
शोक मना रहा है। 17उनके हाथों में बल नहीं
रहा। डर से उनके पैर कांप रहे हैं; 18उन्होंने
पश्चात्ताप प्रकट करने के लिए कमर में टाट के
वस्त्र पहिन लिये हैं। आतंक ने उनको ढक
लिया है। उनके चेहरे से ग्लानि टपक रही है।
उन्होंने पश्चात्ताप के कारण अपने सिरों को मूंड़
लिया है। 19उन्होंने सड़कों पर अपनी चांदी की
मूर्तियां फेंक दी हैं। उनकी सोने की मूर्तियां
अशुद्ध वस्तुएं हो गई हैं। ये सोना-चांदी की
मूर्तियाँ उनके प्रभु के कोप-दिवस पर उनको
संकट से नहीं बचा सकीं। वे उनकी भूख को
तृप्त नहीं कर सकीं और न उनका पेट भर
सकीं। वास्तव में ये मूर्तियां ही तो उनके अधर्म
का कारण हैं। 20झूठी शान-शौकत के लिए वे
इसी सोना-चांदी से आभूषण बनाते थे। सोना-
चांदी से ही उन्होंने घृणित मूर्तियां और अन्य
घृणित वस्तुएं बनाई थीं। इसलिए मैं इस
सोना-चांदी को अशुद्ध वस्तु बना दूंगा, और वे
इसको अपने पास से दूर कर देंगे। 21मैं यह
सोना-चांदी विदेशियों के हाथ में लूट के रूप
में दे दूंगा। सम्पूर्ण पृथ्वी के दुर्जन इसको लूट
लेंगे और सोना-चांदी की मूर्तियों को अपवित्र
कर देंगे। 22इतना ही नहीं, मैं उनसे अपना मुंह
मोड़ लूंगा, ताकि विधर्मी मेरे मन्दिर-रूपी
कोषागार को भी अपवित्र कर दें। लुटेरे-डाकू
मेरे कोषागार में प्रवेश करेंगे, और उसको
अपवित्र कर देंगे। 23वे उसको खाली कर
देंगे**।

'सारा देश और यरूशलेम नगर रक्तपात
और हिंसात्मक कार्यों से भर गया है। 24इसलिए
मैं राष्ट्रों में सबसे दुष्ट राष्ट्र को भड़काऊंगा
कि वह इस्राएल पर आक्रमण करे। वह
आएगा, और इस्राएलियों के घरों पर अधिकार
कर लेगा। यों मैं उनके वैभव के अहंकार को
धूल में मिला दूंगा, और उनके पवित्र स्थान
अपवित्र हो जाएंगे। 25दुःख-पीड़ा पड़ने पर वे
शान्ति की तलाश करेंगे, किन्तु उनको शान्ति
नहीं मिलेगी। 26उन पर एक के बाद एक
विपत्ति आएगी; युद्ध की अफवाहें चारों ओर
फैलेंगी। वे नबियों के पास मेरा दर्शन पाने के
लिए जाएंगे। परन्तु स्वयं पुरोहित मेरी धर्म-
व्यवस्था से वंचित हो जाएगा, और न धर्मवृद्ध
के पास परामर्श देने का सामर्थ्य रहेगा। 27देखो,
इस्राएल देश का राजा शोक मना रहा है।
उच्चाधिकारी निराशा के गर्त में डूबे हैं।
देशवासियों के हाथ-पैर आतंक के कारण सुन्न
पड़ गए हैं।

'ओ मानव-पुत्र, मैं उनके आचरण के
अनुरूप उनके साथ व्यवहार करूंगा। जैसे
उनके न्याय-सिद्धान्त हैं, वैसे ही मैं उनका
न्याय करूंगा। तब उनको ज्ञात होगा कि मैं ही
प्रभु हूँ।'

---

* मूल में अस्पष्ट ** मूल में, 'जंजीर बना! क्योंकि....'।

7 : 15 मत 24 : 16-18 **7 : 26** शोक 2 : 9

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यरूशलेम के मन्दिर में अन्य देवताओं की पूजा

8 निष्कासन के छठे वर्ष के छठे महीने की
पांचवीं तारीख की यह घटना है। मैं अपने
घर में बैठा था। यहूदा प्रदेश के धर्मवृद्ध मेरे
सामने बैठे थे। उसी समय स्वामी-प्रभु की
सामर्थ्य मुझ पर प्रकट हुई, 2और मैंने यह दर्शन
देखा: मुझे मनुष्य की आकृति-सा कुछ दिखाई
दिया। आकृति का जो भाग कमर के सदृश था,
उसके नीचे अग्नि थी, और कमर के ऊपर का
भाग चमक रहा था मानो पीतल को चमकाया
गया हो।
3 तब उस आकृति ने हाथ के समान कुछ
बढ़ाया, और मेरे सिर के बालों का गुच्छा पकड़
लिया, और आत्मा ने मुझे आकाश और भूमि
के मध्य उठा लिया। वह मुझे परमेश्वर के दर्शन
में यरूशलेम ले गया। मैं ने परमेश्वर के दर्शन
में यह देखा कि मैं यरूशलेम के मन्दिर के
भीतरी आंगन के प्रवेश-द्वार पर खड़ा हूं जो
उत्तर दिशा में है, और जहां 'ईर्ष्या की मूर्ति' का
सिंहासन है, और जिसको देखकर ईर्ष्या जाग्रत
होती है। 4और देखो, वहां इस्राएल के परमेश्वर
का तेज था। वह उस दर्शन के अनुरूप था, जैसा
मैंने मैदान में देखा था।
5 उसने मुझसे कहा, 'ओ मानव, अपनी
आंखें ऊपर उठा, और उत्तर दिशा में देख।'
अत: मैंने उत्तर दिशा में दृष्टि की, और यह
देखा: वेदी के द्वार के उत्तर में, प्रवेश-द्वार पर
ईर्ष्या की मूर्ति प्रतिष्ठित है। 6उसने मुझसे फिर
कहा, 'ओ मानव, क्या तू देख रहा है कि वे क्या
करे रहे हैं? इस्राएल का यह कुल मन्दिर में
कितने घृणित कार्य कर रहा है! वह मुझे इस
पवित्र स्थान से भगा देना चाहता है। परन्तु तू
इन से भी अधिक घृणित कार्य देखेगा।'
7 अत: वह मुझे आंगन के दरवाजे पर ले
गया। मैंने आंखें ऊपर उठायीं तो दीवार में एक
छेद देखा। 8उसने मुझसे कहा, 'ओ मानव,
दीवार को फोड़।' अत: मैंने दीवार फोड़ दी।
तब मुझे एक द्वार दिखाई दिया। 9उसने मुझसे
कहा, 'भीतर जाकर देख कि इस्राएली यहां
कितने घृणित कार्य कर रहे हैं।' 10अत: मैं भीतर
गया, और मैंने दीवार पर एक कोने से दूसरे
कोने तक अनेक चित्र देखे: सब प्रकार के
कीड़ों-मकौड़ों के चित्र, घृणित पशुओं के
चित्र, और इस्राएलियों के द्वारा पूजे जानेवाले
देवी-देवताओं के चित्र! 11मैंने यह भी देखा:
इस्राएल-कुल के सत्तर धर्मवृद्ध उन चित्रों के
सामने खड़े हैं। उनके मध्य में याजन्याह बेन-
शापान भी खड़ा है। हर एक धर्मवृद्ध अपने हाथ
में एक धूपदान लिये हुए है, और लोबान का
धूंआ ऊपर उठ रहा है। 12तब उसने मुझसे कहा,
'मानव, तू देख रहा है कि इस्राएल-कुल के
धर्मवृद्ध अंधकार में अपने पूजागृहों में क्या कर
रहे हैं? ये कहते हैं, कि प्रभु हमें नहीं देखता
है। वह तो हमारे देश को छोड़कर चला गया
है।'
13 उसने मुझसे यह भी कहा, 'ओ मानव,
तू इनसे भी अधिक घृणित कार्य देखेगा, जो वे
करते हैं।'
14 इसके पश्चात् वह मुझे प्रभु-भवन के
उत्तरी फाटक के प्रवेश-द्वार पर ले गया। वहां
मैंने देखा कि स्त्रियाँ भूमि पर बैठकर तम्मूज
देवता के लिए विलाप कर रही हैं। 15उसने मुझसे
कहा, 'मानव, तू यह देख रहा है न? अभी तू
इससे भी अधिक घृणित कार्य देखेगा।'
16 इसके बाद वह मुझे प्रभु-भवन के
भीतरी आंगन में ले गया। वहां मैंने लगभग
पच्चीस आदमी देखे, जो प्रभु-भवन के प्रवेश-
द्वार के सामने, ड्योढ़ी और वेदी के बीच में
खड़े थे। उनकी पीठ प्रभु के मन्दिर की ओर
थी, और मुख पूर्व की ओर। वे पूर्व दिशा में सूर्य
की पूजा कर रहे थे। 17उसने मुझसे कहा, 'ओ
मानव, तू यह देख रहा है न? मैं तुझसे पूछता
हूँ, क्या यहूदा कुल के लिए यह हल्की बात है,
कि यहां वे ये घृणित कार्य कर रहे हैं? उन्होंने
सारे देश को हिंसात्मक कार्यों से भर दिया है
तथा वे अपने इन्हीं घृणित कार्यों से मुझे क्रोध
दिलाते हैं। वे मानो मुंह बना कर मुझे चिढ़ाते
हैं। 18अत: मैं उनसे क्रोधपूर्ण व्यवहार करूंगा।

---

8 : 1 यहेज 14 : 1 8 : 2 यहेज 1 : 26 8 : 3 2 रा 16 : 14 8 : 4 यहेज 1 : 28 8 : 12 यश 29 : 15

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मैं उन पर दयादृष्टि नहीं करूंगा। मेरी आंखों से
छिप कर वे भाग नहीं सकेंगे। वे ऊंचे स्वर
से मुझे पुकारेंगे तो भी मैं उनकी दुहाई नहीं
सुनूंगा।'

केवल दोषी को दण्ड दिया जाएगा

9 तब मैंने सुना, उसने ऊंची आवाज में कहा,
'ओ नगर को दण्ड देनेवाले जल्लादो!
अपने-अपने हाथ में घातक हथियार लो, और
मेरे पास आओ।' 2उसी क्षण उत्तर दिशा के
उपरले दरवाजे की ओर से छ: जल्लाद
निकले। वध करने के लिए हर एक के हाथ में
एक घातक हथियार था। उसके साथ एक
लिपिक भी था। वह सूती वस्त्र पहिने था, और
उसकी कमर में कलम-दवात लटक रही थी।

जल्लाद भीतर गए, और पीतल की वेदी के
बाजू में खड़े हो गए।

3 अब इस्राएल के परमेश्वर का तेज, जो
करूबों पर स्थित था, मन्दिर की ड्योढ़ी की
ओर उठ गया। उसने लिपिक को जिसकी
कमर में कलम-दवात लटक रही थी, पुकारा।
4प्रभु ने उससे कहा, 'यरूशलेम नगर में जाओ,
और उन-सब मनुष्यों के माथे पर चिह्न
लगाओ, जो नगर में किए जा रहे घृणित कार्यों
के लिए दु:ख मनाते और शोक करते हैं।' 5मैंने
सुना, प्रभु ने जल्लादों से यह कहा, 'और तुम
इसके पीछे-पीछे नगर में जाओ, और घृणित
कार्य करनेवालों का वध करो। तुम उन पर
दयादृष्टि मत करना। एक भी व्यक्ति तुम्हारी
आंखों से बचकर भागने न पाए: 6जवान, बूढ़े,
कन्याएं, बच्चे, औरतें, उन सब का वध करो;
किन्तु उन लोगों पर हाथ न उठाना जिनके माथे
पर लिपिक ने चिह्न अंकित किया है। वध का
काम मेरे पवित्र स्थान से आरम्भ करो।'

अत: जल्लादों ने वध का काम आरम्भ
किया, और उन धर्मवृद्धों का वध कर दिया जो
प्रभु के भवन के सामने थे। 7फिर उसने जल्लादों
को आदेश दिया, 'मेरे भवन को लाशों से
अशुद्ध कर दो। आंगनों को शवों से भर दो।
अब जाओ, मन्दिर के बाहर जाओ।' जल्लाद
मन्दिर से बाहर निकले, और उन्होंने यरूशलेम
नगर में घृणित कार्य करनेवालों का वध कर
दिया।

8 जब वे नगर में सबका वध कर रहे थे, और
मैं ही अकेला बच गया था, तब मैं मुंह के बल
गिरा, और प्रभु को पुकारने लगा, 'ओ स्वामी-
प्रभु! क्या तू यरूशलेम पर अपनी क्रोधाग्नि
इतनी उण्डेलेगा कि इस्राएल के बचे हुए वंशज
भी नष्ट हो जाएं?'

9 तब उसने मुझसे कहा, 'ओ मानव, यहूदा
और इस्राएल प्रदेशों की जनता ने महादुष्कर्म
किया है। उनका सारा देश रक्तपात से भर गया
है। यरूशलेम नगर में अन्याय ही अन्याय
दिखाई देता है। वे कहते हैं, "प्रभु हमारे देश
को छोड़ कर चला गया है, वह हमें नहीं देखता
है।" 10किन्तु मैं उनके कामों का प्रतिफल
उनके माथे पर ही लौटाऊंगा। मैं उन पर
दयादृष्टि नहीं करूंगा। एक भी व्यक्ति मेरी
आंखों से बच कर भाग नहीं सकेगा।'

11 उसी समय मैंने देखा कि लिपिक,
जिसकी कमर में कलम-दवात लटक रही थी,
यह समाचार लाया, 'प्रभु, जैसा तूने तुझे आदेश
दिया था, वैसा ही मैंने कर दिया।'

प्रभु के तेज से इस्राएल का वंचित होना

10 मैंने आंखें ऊपर कीं और यह देखा:
करूबों के सिर के ऊपर आकाशमण्डल
है, और इस आकाशमण्डल में सिंहासन-सा
कुछ है, जो नीलमणि के समान चमक रहा है।
2फिर उसने लिपिक से कहा, जो सूती वस्त्र
पहिने हुए था, 'देख, करूबों के नीचे पहिए
घूम रहे हैं। तू उनके बीच जा, और करूबों के
मध्य से दोनों मुट्ठियों में जलते हुए अंगारे उठा
ला, और उनको यरूशलेम नगर के ऊपर बिखेर
दे।'

वह मेरी आंखों के सामने भीतर गया। 3जब
वह गया तब मैंने देखा कि करूब प्रभु के भवन
के दक्षिण में खड़े हैं, और एक बादल भीतरी

---

9 : 4 1 पत 4 : 17 ; प्रक 7 : 3; 9 : 4; 14 : 1 **9 : 8** आमो 7 : 2,5 **9 : 9** भज 10 : 11 **10 : 1** यहेज 1 : 22;
प्रक 4 : 3 **10 : 2** प्रक 8 : 5 **10 : 4** यहेज 1 : 28; नि 40 : 35; 1 रा 8 : 10-11

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आंगन में समा गया है। 4उसी क्षण प्रभु का तेज
करूबों के पास से भवन की द्योढ़ी में चला
गया, और सम्पूर्ण भवन बादल से ढक गया।
आंगन प्रभु के तेज के प्रकाश से भर गया।
5बाहरी आंगन तक करूबों के पंखों की
फड़फड़ाहट सुनाई देने लगी। जैसी आवाज
सर्वशक्तिमान परमेश्वर के बोलने पर होती है,
वैसी ही करूबों के पंखों की फड़फड़ाहट थी।

6 उसने सूती वस्त्र पहिने हुए लिपिक को
आदेश दिया, 'करूबों के मध्य से, घूमते हुए
पहियों के बीच से अंगारे उठा।' लिपिक तुरन्त
भीतर चला गया, और एक पहिए के पास खड़ा
हो गया। 7तब करूबों में से एक ने उस आग
की ओर अपना हाथ बढ़ाया, जो करूबों के
मध्य में थी। उसने कुछ अंगारे उठाए और सूती
वस्त्र पहिने हुए लिपिक के हाथ पर रख दिए।
लिपिक अंगारे लेकर बाहर चला गया। 8करूबों
के पंखों के नीचे मनुष्य के हाथ जैसा कुछ
दिखाई दे रहा था।

9 तब मैंने देखा कि करूबों के समीप चार
पहिये हैं: प्रत्येक करूब के समीप एक पहिया
है। पहियों का रूप-रंग फीरोजा के समान
चमकीला है। 10सब पहियों की आकृति समान
थी मानो एक पहिये के भीतर दूसरा पहिया हो।
11जब वे चलते थे तब चारों दिशाओं में वे बिना
मुड़े ही चल सकते थे। किन्तु सामने का पहिया
जिस दिशा में चलता था, शेष पहिए उसके
पीछे-पीछे जाते थे, और चलते समय वे मुड़ते
नहीं थे। 12-13मैंने देखा कि करूबों की सम्पूर्ण
देह में पीठ, हाथ और पंखों में तथा उनके
समीप के पहियों में भी सब ओर आंखें ही
आंखें हैं। मैंने उनका नाम सुना: घूमनेवाले
पहिए।

14 प्रत्येक प्राणी के चार मुंह थे: पहला मुंह
करूब का, दूसरा मुंह मनुष्य का, तीसरा मुंह
सिंह का और चौथा मुंह गरुड़ का था।

15 करूब भूमि से ऊपर उठ गए। ये वे ही
जीवधारी थे जिनको मैंने कबार नदी के तट पर
देखा था। 16जब करूब जाते थे, तब उनके बाजू
में, साथ-साथ ये पहिये भी जाते थे। जब करूब
भूमि से ऊपर उड़ने के लिए पंख फैलाते थे, तब
भी पहिये उनके पास से दूर नहीं होते थे। 17जब
वे खड़े होते थे तब पहिये भी खड़े हो जाते थे।
जब वे ऊपर उठते थे तब ये भी उन के साथ
ऊपर उठ जाते थे; क्योंकि इन जीवधारियों की
आत्मा उनमें भी थी।

18 इसके पश्चात् मैंने यह देखा: प्रभु का
तेज भवन की ड्योढ़ी में से बाहर निकला, और
करूबों के ऊपर स्थित हो गया। 19तब करूबों
ने अपने पंख फैलाए, और मैंने देखा कि वे भूमि
से ऊपर उठे और चले गए। जब वे गए तब
उनके साथ-साथ पहिये भी गए। वे प्रभु-भवन
के पूर्वी फाटक पर रुक गए। इस्राएल के
परमेश्वर का तेज उन पर छाया हुआ था।

20 ये वे ही प्राणी थे जिनको मैंने कबार नदी
के तट पर देखा था, और जिन पर इस्राएल का
परमेश्वर आसीन था। मैं जानता हूँ कि वे करूब
थे। 21हर एक प्राणी के चार मुंह और चार पंख
थे। उनके पंखों के नीचे मनुष्यों के से हाथ थे।
22उनके मुखों की आकृति वैसी ही थी, जो मैंने
कबार नदी के तट पर देखी थी। उनके मुख ही
नहीं, वरन् देह भी वैसी ही थी। वे सीधे सामने
की ओर चलते थे।

उच्चाधिकारियों को प्रभु दण्ड देगा

11 आत्मा ने मुझे उठाया, और वह मुझे प्रभु
के भवन के पूर्वी फाटक पर ले गया,
जिसका मुंह पूर्व दिशा में है। वहां मैंने देखा कि
फाटक के प्रवेश-द्वार पर पच्चीस पुरुष खड़े हैं,
और उनमें याजन्याह बेन-अज्जूर और पलत्याह
बेन-बनायाह भी हैं, जो लोगों के उच्चाधिकारी
हैं। 2उसने मुझसे कहा, 'ओ मानव, ये वे लोग
हैं, जो नगर में अधर्म करने के लिए नए-नए
उपाय सोचते हैं, ये जनता को गलत परामर्श देते
हैं। 3ये कहते हैं, "हम सुरक्षित हैं! घर बनाने
का अभी समय नहीं आया है। यह नगर मानो
हांडी है, और हम उसके भीतर का मांस! पूरी
तरह सुरक्षित!" 4इसलिए, ओ मानव, नबूवत
कर; इनके विरुद्ध नबूवत कर!'

10 : 5 यहेज 1 : 24; भज 29 : 3 10 : 12 यहेज 1 : 8; प्रक 4 : 8 10 : 24 यहेज 1 : 10; प्रक 4 : 7

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

5 तब प्रभु का आत्मा मुझ पर उतरा, और
उसने मुझ से कहा, 'तू इस प्रकार बोल: प्रभु
यों कहता है, ओ इस्राएल-कुल के लोगो, तुम
यही सोचते हो न ! जो विचार तुम्हारे मन-
मस्तिष्क में उठते हैं, उनको मैं जानता हूं ।
6तुमने इस नगर में अनेक लोगों का वध किया
है । इसकी सड़कों को लाशों से पाट दिया है ।
7इसलिए स्वामी-प्रभु कहता है : जिन लोगों
का वध तुमने नगर में किया है, उन्हीं का मांस
तुम्हारी इस नगर-रूपी हांडी का ''मांस'' बन
जाएगा । तुम इस नगर से बाहर निकाल दिए
जाओगे ।8स्वामी-प्रभु कहता है: तुम तलवार
से डरते हो, और मैं तुम को तलवार से मौत के
घाट उतारूंगा।9 मैं तुमको नगर से निकालकर
बाहर लाऊंगा, और तुमको विदेशियों के हाथ
में सौंप दूंगा। यही मेरा न्याय-निर्णय होगा; मैं
तुमको दण्ड दूंगा। 10मैं तुमको इस्राएल देश की
सीमा पर दण्ड दूंगा, और तुम शत्रु की तलवार
से धराशायी होगे। तब तुम्हें मालूम होगा कि मैं
ही प्रभु हूं।' 11तुम अपने को सुरक्षित समझते
हो : तुम इस नगर को हांडी और स्वयं को
उसके भीतर का मांस मानते हो। पर नहीं, मैं
तुम्हें सुरक्षित रहने नहीं दूंगा। मैं तुमको इस्राएल
देश की सीमा पर दण्ड दूंगा, 12और तुम्हें मालूम
होगा कि मैं ही प्रभु हूं। तुमने मेरी संविधियों
के अनुसार आचरण नहीं किया, और न ही मेरे
न्याय-सिद्धान्तों का पालन किया। किन्तु तुम
अपने चारों ओर के राष्ट्रों के न्याय-सिद्धान्तों
पर चलते रहे।'

13 जब मैं यह नबूवत कर रहा था, तब
अचानक पलत्याह बेन-बनायाह मर गया। मैं
भय से अपने मुंह के बल भूमि पर गिरा, और
ऊंची आवाज में प्रभु की दुहाई दी। मैंने कहा,
'स्वामी-प्रभु ! क्या तू इस्राएली कौम के बचे
हुए लोगों का भी अंत कर देगा ?'

निष्कासितों को आशा का सन्देश

14 प्रभु का यह सन्देश मुझे मिला : प्रभु ने
कहा, 15'ओ मानव, यरूशलेम के निवासियों
ने, तेरे भाई-बन्धुओं, तेरे साथ निर्वासित
जाति-भाई-बहिनों से, वस्तुत: समस्त इस्राएली
कुल से यह कहा है : ''तुम प्रभु से बहुत दूर
चले गए हो। अत: हमें यह देश दिया गया है
कि हम इस पर अधिकार करें।'' 16इसलिए तू
उनसे कह, ''स्वामी-प्रभु यों कहता है : यद्यपि
मैंने तुमको तुम्हारे देश से निकालकर अन्य
राष्ट्रों में बसाया है, तुम्हें अन्य देशों में बिखेर
दिया है, तथापि तुम अन्य जातियों में रहते हुए
भी वहां कुछ समय के लिए मेरी आराधना कर
सकते हो*।'' 17इतना ही नहीं, तू कहना,
''स्वामी-प्रभु यों कहता है: मैं तुम्हें उन कौमों
के मध्य से एकत्र करूंगा। जिन देशों में मैंने
तुम्हें बिखेर दिया है, वहां से मैं तुम्हें निकालूंगा,
और तुम्हें इस्राएल देश फिर दूंगा।''

18 'जब वे अपने देश में आएंगे, तब वहां
से समस्त घृणित मूर्तियों को हटा देंगे और
अपने सब घृणित कार्यों को छोड़ देंगे।19मैं उनको
एक हृदय और एक मन दूंगा, और उनके भीतर
नयी आत्मा प्रतिष्ठित करूंगा। मैं उनका पत्थर
का हृदय हटा दूंगा और उसके बदले में उनको
सजीव हृदय दूंगा, 20ताकि वे मेरी संविधियों
के अनुसार आचरण करें, मेरे न्याय-सिद्धान्तों
का पालन करें और मेरी आज्ञाओं को मानें। तब
वे मेरे निज लोग होंगे, और मैं उनका परमेश्वर
हूंगा। 21लेकिन जिन लोगों का हृदय अपनी
घृणित मूर्तियों पर लगा रहेगा, जो लोग अपने
घृणित कार्य करते रहेंगे, उनके दुष्कर्मों का
प्रतिफल मैं उनके सिर पर डालूंगा। स्वामी-प्रभु
यह कहता है।'

प्रभु के तेज का प्रस्थान

22 करूबों ने अपने पंख फैलाए। पहिये भी
उनके साथ-साथ चले। करूबों के ऊपर
इस्राएल के परमेश्वर का तेज था । 23देखते-
देखते प्रभु का तेज नगर के मध्य से निकल कर
आकाश में उठ गया। मैंने देखा कि प्रभु का तेज

---

* अथवा, 'मैं वहाँ तुम्हारे लिए थोड़ा-बहुत आराधना-स्थल हूं।'
11 : 12 व्य 12 : 30 11 : 13 यहेज 9 : 8 11 : 17 यिर 24 : 5 ; व्य 30 : 3-5 11 : 19 व्य 30 : 6 ; यहेज
18 : 31 ; 36 : 26-28 ; 44 : 7 ; यिर 31 : 33 ; 2 कुर 3 : 3 11 : 23 यहेज 43 : 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उस पहाड़ पर ठहर गया जो नगर की पूर्व दिशा
में है।
24 फिर मैंने परमेश्वर के आत्मा के द्वारा यह
दर्शन देखा : आत्मा ने मुझे उठाया और कसदी
देश में निष्कासित मेरे जाति-बन्धुओं में मुझे
पहुंचा दिया। इसके पश्चात् दर्शन लुप्त हो
गया। 25तब मैंने प्रभु की ये सब बातें निष्कासित
जाति-बन्धुओं को सुना दीं, जो उसने मुझे
दर्शन में दिखायी थीं।

निष्कासन के प्रतीक-चिह्न

12 प्रभु का यह वचन मुझे मिला। उसने
कहा, 2'ओ मानव, तू विद्रोही कौम,
इस्राएली कुल के मध्य रहता है। उनके पास
आंखें तो हैं, पर उन्हें दिखाई नहीं देता। उनके
पास कान हैं, पर वे सुनते नहीं। इस्राएली कुल
विद्रोही है। 3इसलिए ओ मानव, तू निष्कासन
का सामान तैयार कर, और दिन के समय उनकी
आंखों के सामने नगर से निष्कासित हो। तू
निष्कासित व्यक्ति के समान उनकी आंखों के
सामने अपने निवास-स्थान से दूसरे स्थान को
चले जाना। यद्यपि इस्राएली लोग विद्रोही हैं,
परन्तु हो सकता है, वे तुझ पर ध्यान दें। 4इस
प्रकार, तू दिन के समय उनकी आंखों के सामने
अपना सामान बांध लेना, मानो यह निष्कासन
का सामान है। और जैसे लोग सामान लादकर
निष्कासन में जाते हैं, वैसे ही तू संध्या समय
उनकी आंखों के सामने अपने निवास-स्थान से
निकल कर जाना। 5उनके सामने ही अपने
मकान की दीवार फोड़ना और उससे निकल
जाना। 6उनके सामने ही अपना सामान कंधे पर
उठाना और अंधकार में चले जाना। निष्कासित
होनेवाले बंदी के समान तू अपनी आंखों पर
पट्टी बांध लेना ताकि निष्कासित होते समय
तू अपने देश को न देख सके; क्योंकि मैंने
तुझको इस्राएली कुल के लिए एक चिह्न
ठहराया है।'
7 मैंने वैसा ही किया जैसा मुझे आदेश मिला
था। मैंने अपने देश से निष्कासित होनेवाले
बन्दी के समान अपना सामान दिन में तैयार
किया, और सन्ध्या समय अपने हाथों से मकान
की दीवार को फोड़ा। जब अंधेरा हुआ तब मैंने
इस्राएलियों की आंखों के सामने अपना माल-
असबाब अपने कंधे पर रखा, और चला गया।
8 सबेरे प्रभु का यह सन्देश मुझे मिला। प्रभु
ने मुझसे कहा, 9'ओ मानव, तूने देखा न कि
इस्राएली कुल ने, उस विद्रोही कुल ने तुझ से
यह भी नहीं पूछा कि तू क्या कर रहा है? 10जा,
उनसे यह कह, "स्वामी-प्रभु यों कहता है :
यरूशलेम नगर के शासक और नगर में
रहनेवाले सब इस्राएली लोगों के विषय में प्रभु
का यह गंभीर वचन है"। 11 ओ मानव-पुत्र,
तू उनसे यह कहना : मैं—यहेजकेल तुम्हारे
लिए एक चिह्न हूं। जैसा मैंने किया है वैसा
तुम्हारे साथ किया जाएगा। तुम अपने नगर और
देश से निष्कासित होगे, और बन्दी बनकर
विदेश जाओगे। 12तुम्हारा शासक अंधेरे में
अपने कंधे पर अपना सामान उठाएगा और
चला जाएगा। तुम दीवार को फोड़ोगे और वह
उससे निकल जाएगा। उसकी आंखों पर पट्टी
बांधी जाएगी, ताकि वह अपने देश को न देख
सके। 13मैं उस पर अपना जाल फेंकूंगा, और
वह मेरे फंदे में फंस जाएगा। मैं उसको कसदी
देश की राजधानी बेबीलोन में लाऊंगा, लेकिन
वह उसको न देख सकेगा (क्योंकि वह अंधा
कर दिया जाएगा) और वहीं मर जाएगा। 14मैं
उसके सहायकों और उसके सैन्य दलों को सब
दिशाओं में बिखेर दूंगा, और तलवार खींचकर
उनका पीछा करूंगा। 15जब मैं उनको राष्ट्रों में
तितर-बितर करूंगा, देशों में बिखेर दूंगा, तब
उनको ज्ञात होगा कि मैं ही प्रभु हूं। 16फिर भी
मैं उनमें से कुछ लोगों को तलवार, अकाल
और महामारी से बच कर भागने दूंगा; क्योंकि
मैं चाहता हूं कि जिन राष्ट्रों में जाकर वे बसेंगे
उनमें वे अपने सब घृणित कार्यों को स्वीकार
कर पश्चात्ताप करें, और इस सच्चाई का
अनुभव करें कि मैं ही प्रभु हूं।'

जनता में भय

17 फिर प्रभु का यह सन्देश मुझे मिला। प्रभु

12 : 2 यश 6 : 9 ; यिर 5 : 21 ; मत 13 : 13 12 : 6 यश 8 : 18 12 : 13 यिर 52 : 11

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ने मुझसे कहा, 18 'ओ मानव, तू डर से कांपते
हुए रोटी खाना, और भय से थर-थराते हुए
पानी पीना। 19तब अपने देशवासियों से यह
कहना : इस्राएल देश की राजधानी यरूशलेम
के निवासियों के सम्बन्ध में स्वामी-प्रभु यों
कहता है: तुम सब अपने नगर में हिंसात्मक
कार्य करते हो, इसलिए तुम्हारा देश खाली हो
जाएगा। तुम डर से कांपते हुए रोटी खाओगे
और भय से थर-थराते हुए पानी पीओगे।
20तुम्हारे आबाद नगर उजाड़ हो जाएंगे, और
सारा देश निर्जन हो जाएगा। तब तुम्हें मालूम
होगा कि मैं ही प्रभु हूं।'

विनाश समीप है

21 प्रभु का यह सन्देश मुझे मिला। प्रभु ने
मुझसे कहा, 22 'ओ मानव, इस कहावत का
क्या अर्थ है जो तुम अपने देश के सम्बन्ध में
कहते हो : "दिन तो बीतते-बीतते अधिक हो
गए, किन्तु प्रभु के दर्शन की बातें सच सिद्ध नहीं
हुईं।"? 23इसलिए तू उनसे कह : "स्वामी-
प्रभु यों कहता है, अब मैं इस कहावत का
अन्त कर दूंगा, और लोग इस्राएल देश में फिर
कभी इसका प्रयोग नहीं करेंगे।" तू उनसे यह
कहना : "दिन समीप आ गए, और प्रत्येक
दर्शन की बातें पूरी होंगी। 24अब इस्राएली कुल
में कोई भी मनुष्य झूठा दर्शन, और मन के
अनुकूल शकुन नहीं विचारेगा। 25किन्तु केवल
मैं-प्रभु ही वचन कहूंगा, और उसको पूरा
करूंगा। उसके पूर्ण होने में विलम्ब नहीं
होगा। ओ विद्रोही कुल, मैं तेरे समय में वचन
कहूंगा, और उसको निस्सन्देह पूरा करूंगा।"
स्वामी-प्रभु यह कहता है।'

26 प्रभु का सन्देश मुझे पुनः प्राप्त हुआ। प्रभु
ने मुझसे कहा, 27 'ओ मानव, देख, इस्राएली
कुल के लोग यह कहते हैं : "जो दर्शन नबी
देखता है, उसकी बातें बहुत दिनों में पूरी होंगी।
उसकी भविष्यवाणियां दूर भविष्य के लिए
हैं।" 28इसलिए तू उनसे यह कह : स्वामी-प्रभु
यों कहता है, मेरे वचन के पूर्ण होने में विलम्ब
नहीं होगा। जो मैं कहता हूं, वह निस्सन्देह पूरा
होगा। स्वामी-प्रभु यह कहता है।'

झूठे नबियों के विरुद्ध प्रभु का वचन

13 प्रभु का यह सन्देश मुझे मिला। प्रभु ने
मुझसे कहा, 2 'ओ मानव, नबूवत कर;
इस्राएली राष्ट्र के नबियों के विरुद्ध नबूवत कर !
ये अपने मन से नबूवत करते हैं, और जनता से
कहते हैं, "प्रभु का सन्देश सुनो।" 3स्वामी-
प्रभु यों कहता है : इन मूर्ख नबियों को धिक्कार
है ! ये अपनी आत्मा का अनुसरण करते हैं। मैंने
इनको अपना दर्शन कभी नहीं दिया। 4ओ
इस्राएली राष्ट्र ! तेरे ये नबी खण्डहरों में रहनेवाली
लोमड़ियों की तरह हैं। 5ओ नबियो ! न तुमने
शहरपनाह की दरारें भरीं, और न इस्राएली
कुल के लिए शहरपनाह बनाई कि वह प्रभु
के दिन युद्ध में स्थिर रहे। 6ओ नबियो, तुमने
झूठी भविष्यवाणी की, और तुम झूठा शकुन
विचार कर कहते रहे, "प्रभु यह कहता है"
जबकि मैंने तुमको भेजा ही नहीं था। तुम
मुझसे आशा करते हो कि मैं तुम्हारी झूठी
भविष्यवाणी को पूरा करूं ? 7क्या तुम्हारे दर्शन
की बात सफेद झूठ नहीं है ? क्या तुम झूठमूठ
शकुन नहीं विचारते ? तुम कहते हो, "प्रभु यह
कहता है, " जबकि मैं तुम से कुछ कहता भी
नहीं।'

8 स्वामी-प्रभु यों कहता है, 'ओ नबियो,
तुमने झूठी बातें कहीं, और झूठे दर्शन देखे,
इसलिए, देखो मैं तुम्हारे विरुद्ध हूं। स्वामी-प्रभु
की यही वाणी है। 9झूठी भविष्यवाणी करनेवाले
और झूठे शकुन विचारनेवाले नबियों पर मैं
अपना हाथ उठाऊंगा। ये झूठे नबी मेरे निज
लोगों के समाज में सम्मिलित नहीं हो सकेंगे,
और न ही इस्राएली कुल की नामावली में इनके
नाम लिखे जाएंगे। ये इस्राएल देश में कदम भी
नहीं रख सकेंगे। तब तुम्हें ज्ञात होगा कि मैं ही
स्वामी-प्रभु हूं। 10ओ झूठे नबियो, तुमने, हां
तुमने, मेरे निज लोगों को बहकाया है। तुम
कहते हो, "शान्ति है" जबकि कहीं शान्ति है
ही नहीं। लोग दीवार खड़ी करते हैं, तो मानो
तुम उस पर लीपा-पोती करते हो !

12 : 18 यहेज 4 : 16 12 : 22 2 पत 3 : 4 12 : 28 प्रक 10 : 6 13 : 2 यिर 14 : 14 13 : 10 यिर 6 : 14

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

11 'ओ मानव, लीपा–पोती करनेवाले झूठे
नबियों से कह कि दीवार ढह जाएगी; क्योंकि
शीघ्र ही मूसलाधार वर्षा होगी। बड़े–बड़े ओले
गिरेंगे और प्रचण्ड आंधी बहेगी। 12जब दीवार
गिर जाएगी तब क्या लोग तुमसे यह न कहेंगे,
"तुमने दीवार पर जो लिपाई–पुताई की थी,
वह कहां गई ?" 13इसलिए स्वामी–प्रभु यों
कहता है : मैं क्रोध से प्रचण्ड आंधी बहाऊंगा।
मेरे प्रकोप के कारण मूसलाधार वर्षा होगी। मैं
गुस्से में बड़े–वड़े ओले गिराऊंगा, और उसको
नष्ट कर दूंगा। 14ओ नबियो, जिस दीवार की
तुमने लिपाई–पुताई की है, उसको मैं धूल में
मिला दूंगा। मैं उसकी नींव तक उखाड़ दूंगा।
जब वह गिरेगी तब तुम भी उस में दब कर मर
जाओगे। तब तुम्हें मालूम होगा कि मैं ही प्रभु
हूं। 15इस प्रकार मैं दीवार पर, और उसको
पोतनेवाले नबियों पर अपना क्रोध उतारूंगा।
तब मैं तुमसे पूछूंगा, "कहां गई तुम्हारी दीवार,
और कहां गए उसको पोतनेवाले ?" 16ये इस्राएल
के नबी यरूशलेम के कुशल–मंगल की
नबूवत करते थे। ये यरूशलेम की शान्ति के
दर्शन देखते थे, जबकि वहां शान्ति थी ही नहीं।
स्वामी–प्रभु की यही वाणी है।

झूठी नबियाओं को दण्ड मिलेगा

17 'ओ मानव, अब तू अपने जाति भाई–
बन्धुओं की पुत्रियों के विरुद्ध अपना मुंह
खोल। ये अपने मन से भविष्यवाणी करती हैं।
तू झूठी भविष्यवाणी करनेवाली इन नबियाओं
के विरुद्ध नबूवत कर। 18उनसे कह, स्वामी–
प्रभु यों कहता है : धिक्कार है तुम्हें! तुम
प्राणियों का शिकार करने के लिए ताबीज
बनाती हो और बुरकों की सिलाई करती हो।
तुम उनको सब लोगों की कलाइयों पर
बान्धती, और हर एक कद के लोगों के सिरों
पर ओढ़ाती हो। तुम मेरे निज लोगों के प्राणों
का शिकार करती हो और अपनी जीविका के
लिए दूसरे प्राणों को छोड़ देती हो। क्या यह
उचित है ? 19तुमने मुट्ठी भर जौ और चन्द रोटी
के टुकड़ो के लिए मेरे निज लोगों के सम्मुख
मुझे अपवित्र किया है। तुम ऐसे लोगों को मार
डालती हो, जिन्हें मरना नहीं चाहिए; और ऐसे
लोगों को जीवित रखती हो, जिन्हें जीवित नहीं
रहना चाहिए। तुम मेरी जनता से झूठ बोलती
हो, जो झूठ सुनना पसन्द करती है।

20 'इसलिए स्वामी–प्रभु यों कहता है : तुम
जिन ताबीजों के माध्यम से प्राणियों का शिकार
करती हो, मैं, उनके विरुद्ध हूं। मैं उनको,
तुम्हारे भुजबन्धों को, बाहों से उतरवा लूंगा,
और प्राणियों को तुम्हारे जाल से मुक्त कर पंछी
की तरह उड़ा दूंगा। 21मैं तुम्हारे बुरके नोंचकर
फेंक दूंगा, और अपने निज लोगों को तुम्हारे
हाथ से मुक्त करूंगा। वे फिर कभी तुम्हारे हाथों
का शिकार नहीं बनेंगे। तब तुम्हें ज्ञात होगा कि
मैं ही प्रभु हूं।

22 'मैंने धार्मिक व्यक्ति को निराश नहीं
होने दिया, लेकिन तुमने अपनी झूठी
भविष्यवाणियों से उसको निराश किया। तुमने
दुर्जन को उत्साहित किया कि वह अपने
दुराचरण को न छोड़े। यदि दुर्जन अपना
दुराचरण छोड़ देता तो वह जीवित रहता।
23इसलिए, ओ नबियाओ ! तुम फिर कभी
झूठा दर्शन नहीं देखोगी, और न शकुन विचार
सकोगी। मैं तुम्हारे चंगुल से अपने निज लोगों
को मुक्त करूंगा। तब तुम्हें ज्ञात होगा कि मैं
ही प्रभु हूं।'

मूर्तिपूजकों को प्रभु की चेतावनी

14 एक दिन इस्राएली कुल के कुछ
धर्मवृद्ध मेरे पास आए, और वे मेरे
सामने बैठ गए। 2उसी क्षण प्रभु का यह वचन
मुझे मिला। प्रभु ने मुझ से कहा, 3 'ओ मानव,
इन लोगों ने अपने–अपने देवता की मूर्ति अपने
हृदय में प्रतिष्ठित कर रखी है। इन्होंने धर्म–मार्ग
पर चलने के पूर्व ही अपने सम्मुख अधर्म के रोड़े
डाल रखे हैं, तो क्या ये ठोकर नहीं खाएंगे ?
ये मेरी इच्छा जानने के लिए तेरे पास आए हैं।
क्या मैं इन को उत्तर दूंगा ? कदापि नहीं। 4तू
इन्हें यह बात बता, और इनसे कह, स्वामी–प्रभु
यों कहता है, 'इस्राएली कुल का जो व्यक्ति

---

14 : 1 यहेज 20 : 1

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अपने देवता की मूर्ति अपने हृदय में प्रतिष्ठित
करेगा, और यों धर्म-मार्ग पर चलने के पूर्व
अपने सम्मुख अधर्म के रोड़े डालेगा, और मेरी
इच्छा जानने के लिए नबी के पास आएगा, तो
उसको मैं अपने ढंग से उत्तर दूंगा : वह अपनी
असंख्य मूर्तियों के अनुरूप अपार दण्ड पाएगा।
5ओ मानव, इस इस्राएली कुल ने अपनी मूर्तियों
के कारण मुझे त्याग दिया है, और यह मुझ से
दूर हो गया है। जिस हृदय में इस्राएली कुल ने
अपने देवताओं की मूर्तियां प्रतिष्ठित की हैं, उस
हृदय को मैं अपने दण्ड से आतंकित करूंगा।

6 'इसलिए, तू इस्राएली कुल से यह बोल :
स्वामी-प्रभु यों कहता है, ओ इस्राएली कुल!
पश्चात्ताप करो। अपनी घृणित मूर्तियों से मुंह
मोड़ो और अपने घृणित कार्यों को छोड़ो। ओ
इस्राएल के वंशजो, मेरी ओर लौटो।

7 'यदि इस्राएली कुल का व्यक्ति, अथवा
इस्राएली समाज में रहनेवाला विदेशी, अपने
देवता की मूर्ति अपने हृदय में प्रतिष्ठित करेगा,
और मुझ से अलग होगा, धर्म-मार्ग पर चलने
के पूर्व अपने सम्मुख अधर्म के रोड़े डालेगा
और मेरी इच्छा जानने के लिए नबी के पास
आएगा, तो मैं उसको अपने ढंग से उत्तर दूंगा :
8मैं उस व्यक्ति से विमुख हो जाऊंगा। मैं दूसरों
को सीख देने के लिए उसको चिह्न बनाऊंगा।
वह अपनी दुर्दशा के कारण जनसमाज में
कहावत बन जाएगा। मैं उसको अपने निज
लोगों के मध्य से निकाल दूंगा। तब तुम्हें मालूम
होगा कि मैं ही प्रभु हूं।

9 'और यदि कोई नबी धोखा खाकर मेरी
ओर से उस व्यक्ति को सन्देश देगा, तो मैं प्रभु
ही उस सन्देश को झूठा सिद्ध कर उस नबी को
धोखे में फंसाऊंगा। मैं उस पर अपना हाथ
उठाऊंगा, और अपने निज लोग इस्राएलियों के
मध्य से उसको नष्ट कर दूंगा। 10मूर्तिपूजक और
नबी—दोनों अपने-अपने कुकर्म का दण्ड
भोगेंगे। नबी का दण्ड और मूर्तिपूजक का दण्ड
समान होगा। 11मैं उनको दण्ड दूंगा जिससे
इस्राएली कुल मेरा अनुसरण करना न छोड़े,
और मेरे पास से दूर न हो, और न अनेक प्रकार
के अपराध कर स्वयं को अशुद्ध करे। तब वे
मेरे निज लोग होंगे, और मैं उनका परमेश्वर
हूंगा,' स्वामी-प्रभु की यही वाणी है।

व्यक्ति के आचरण का प्रतिफल

12 प्रभु का यह सन्देश मुझे मिला। उसने
मुझसे कहा, 13 'ओ मानव, जब किसी देश के
निवासी अधर्म करने लगते हैं, और यों मुझ से
विश्वासघात कर पाप करते हैं, तब मैं उनको
दण्ड देने के लिए उन पर हाथ उठाता हूँ। मैं
उनका "रोटी का आधार" तोड़ देता हूँ और
उन पर अकाल भेजता हूं। मैं वहां से मनुष्य और
पशु दोनों को नष्ट कर देता हूँ। 14यदि ऐसे
अधर्मी देश में नूह, दानिएल और अय्यूब जैसे
धार्मिक व्यक्ति होते हैं, तो वे अपने धर्म के
कारण अपने ही प्राण बचाते हैं, दूसरों के नहीं।
' स्वामी-प्रभु की यही वाणी है।

15 'ओ मानव, सुन। यदि मैं अधर्मी देश में
जंगली पशुओं को भेजता हूं, जो उसको रौंद
देते हैं, और वह उजड़ जाता है, उन जंगली
पशुओं के कारण वहां से कोई भी नहीं गुजरता,
16तो यदि नूह, दानिएल और अय्यूब, ये तीन
धार्मिक व्यक्ति भी वहां होते, तो वे अपने
धार्मिक आचरण के कारण केवल अपने ही
प्राण बचा पाते, अपने पुत्रों और पुत्रियों के
नहीं। मेरे जीवन की सौगन्ध! केवल धार्मिक
व्यक्ति ही बचेंगे, और सम्पूर्ण देश नष्ट हो
जाएगा।' स्वामी-प्रभु की यही वाणी है।

17 'ओ मानव, यदि मैं उस अधर्मी देश पर
उसके शत्रु द्वारा तलवार चलवाऊं, उसके शत्रु
को यह आदेश दूं, "इस देश के निवासियों को
एक छोर से दूसरे छोर तक तलवार से मौत के
घाट उतार दे" और यों मैं वहां से मनुष्य और
पशु दोनों को नष्ट कर दूं ; 18और वहां ये तीन
धार्मिक व्यक्ति हों, तो मेरे जीवन की सौगन्ध !
वे अपने धार्मिक आचरण के कारण केवल
अपने ही प्राण बचा पाएंगे, अपने पुत्रों या
पुत्रियों के नहीं।' स्वामी-प्रभु की यही वाणी
है।

---

14 : 14 उत 18 : 22-33

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

19 'ओ मानव, यदि मैं उस अधर्मी देश के
मनुष्य और पशु दोनों को नष्ट करने के लिए
उस पर महामारी का प्रकोप रूपी प्याला
उण्डेलूं, क्रोध में आकर वहां खून की नदियां
बहाऊं, 20और वहां नूह, दानिएल और अय्यूब
हों तो मेरे जीवन की सौगन्ध ! वे अपने धार्मिक
आचरण के कारण अपने पुत्र या पुत्री के प्राण
नहीं, केवल अपने ही प्राण बचा पाएंगे।'
स्वामी-प्रभु की यही वाणी है।
21 'स्वामी-प्रभु यों कहता है : मैं यरूशलेम
नगर को दण्ड देने के लिए उस पर चार
विपत्तियां भेजूंगा : शत्रु की तलवार, अकाल,
खूंखार पशु और महामारी। ये चारों विपत्तियां
वहां से मनुष्य और पशु दोनों को नष्ट कर देंगी।
22यदि उनमें से कुछ लोग बच जाएंगे, और वे
अपने पुत्र-पुत्रियों को यरूशलेम से निकाल
कर तुम्हारे पास लाएंगे, तो तुम स्वयं उनके
आचरण और व्यवहार को देखोगे, और अपने
हृदय को सांत्वना दोगे कि मैंने उनके साथ जो
कठोर व्यवहार किया है और यरूशलेम का जो
अनिष्ट किया है, वह ठीक है। 23उनके आचरण
और व्यवहार को देखकर तुम्हें शान्ति मिलेगी,
और तुम्हें मालूम होगा कि जो मैंने यरूशलेम
नगर में किया है, उसका कोई कारण है।'
स्वामी-प्रभु की यही वाणी है।

यहूदा राज्य की उपयोगिता समाप्त हो गई

15 प्रभु का यह सन्देश मुझे मिला। प्रभु ने
मुझसे कहा, 2 'ओ मानव, मुझे बता :
अंगूर-लता की लकड़ी की क्या उपयोगिता है ?
क्या अंगूर की शाखा ईंधन की दृष्टि से जंगल
के पेड़ों की लकड़ी से उत्तम होती है ? 3क्या बढ़ई
उसकी लकड़ी से कुछ सामान बनाता है ? क्या
लोग उसकी खूंटी बनाते और उससे बरतन
टांगते हैं ? 4नहीं, मानव, अंगूर-लता की लकड़ी
केवल आग में जलाने के काम आती है। आग
उसके दोनों छोरों को भस्म कर देती, और
उसका बीच का भाग अधजला रह जाता है।
बता, क्या वह किसी काम में आ सकती है ?
5इस प्रकार जब वह जली न थी, तब भी वह
किसी काम की न थी। और अब जब आग में
भस्म हो गई है, तब क्या वह किसी काम में आ
सकती है ? 6इसलिए मैं ! स्वामी-प्रभु यह कहता
हूं : जैसे मैंने जंगल के सब पेड़ों की लकड़ी
मनुष्य-जाति को ईंधन के लिए दी है, वैसे ही
मैं यरूशलेम के निवासियों को शत्रु के हाथ में
दे दूंगा; क्योंकि वे अंगूर-लता की लकड़ी के
सदृश अनुपयोगी हो गए हैं। 7मैं उनसे मुंह फेर
लूंगा और उन पर मेरी क्रोधाग्नि भड़केगी। यदि
वे आग से बच निकलेंगे, तो भी आग उन को
भस्म कर देगी। जब मैं क्रोध में उनसे विमुख
हूंगा, तब तुम्हें मालूम होगा कि मैं ही प्रभु हूं।
8उन्होंने अधर्म कर मेरे प्रति विश्वासघात किया
है। मैं उनके देश को उजाड़ दूंगा।' स्वामी-प्रभु
की यही वाणी है।

यरूशलेम नगर का व्यभिचार

16 प्रभु का यह वचन मुझे मिला। प्रभु ने
मुझसे कहा, 2 'ओ मानव, तू राजधानी
यरूशलेम को उसके घृणित कार्य बता, जो
उसने किए हैं। 3तू उससे यह कह: स्वामी-प्रभु
यरूशलेम से यों कहता है : तेरा जन्म और तेरी
उत्पत्ति कनानी जाति के देश में हुई है। तेरा पिता
अमोरी जाति का था और मां हित्ती जाति की
थी। 4क्या तू अपने जन्म के विषय में यह जानती
है ? जिस दिन तेरा जन्म हुआ, उस दिन न तेरी
नाल काटी गयी, और न तुझे शुद्ध करने के लिए
पानी से नहलाया गया। सुन, उस दिन तेरे शरीर
पर नमक नहीं मला गया, और न तुझे कपड़ों
में लपेटा ही गया था। 5तुझ पर किसी ने दया
नहीं की, और न तेरे प्रति करुणा कर के किसी
ने तेरी नाल काटी। तुझे शुद्ध करने के लिए पानी
से नहीं नहलाया, और न तुझ पर नमक की
मालिश की, और न तुझे कपड़ों में लपेटा। नहीं,
तू तो उसी दिन, जिस दिन तू पैदा हुई, तुझे
घृणित वस्तु समझकर खेत में फेंक दिया गया।
6 'जब मैं तेरे पास से गुजरा, तब मैंने तुझे
खून में लथपथ देखा। मैंने तुझ से कहा, ''ओ

---

14 : 21 प्रक 6 : 8 **16** यहेज 23 ; हो 1-2 ; यश 1 : 21 ; मत 22 : 2-14 ; यो 3 : 29 ; इफ 5 : 25-33 ; प्रक 17 **16 : 3** यहेज 16 : 45

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
खून में लोटनेवाली! जीवित रह, 7और खेत के
पौधे के समान बढ़!'' अतः तू बढ़ी और
बढ़ते-बढ़ते जवान हो गई। तेरे वक्ष सुडौल हो
गए। तेरे सिर के बाल एड़ियों को छूने लगे। तो
भी, ओ यरूशलेम, तू नग्न थी! तेरे शरीर पर
कोई वस्त्र नहीं था।
8 'मैं फिर तेरे पास से गुजरा, और तुझ पर
दृष्टि की, तो देखा कि तेरी उम्र प्रेम करने के
लायक हो गई है। मैंने तेरे शरीर पर अपनी
चादर डाल दी, और यों तेरी नग्नता ढांप दी। मैंने
सौगन्ध खाकर तुझे वचन दिया, और तेरे साथ
विधान स्थापित किया, और इस प्रकार तू मेरी
पत्नी बन गई।' स्वामी-प्रभु की यही वाणी है।
9 'तब मैंने तुझको जल से नहलाया और तेरे
शरीर से खून को धोया। मैंने तेरे शरीर पर तेल
मला। 10मैंने तुझे साड़ी पहनायी, जिस पर
बेल-बूटे काढ़े गए थे। मैंने तेरे पैरों में चप्पल
पहनायी। मैंने तुझे सूती शाल ओढ़ाया, और
तुझ पर रेशम का बुरका डाला। 11मैंने तुझे गहनों
से सजा दिया। तेरी बाहों में बाजूबन्द और गले
में माला पहनायी। 12मैंने तेरी नाक में नत्थ
डाली, कानों में बुन्दे पहनाए और सिर पर
सुन्दर मुकुट रखा। 13यों मैंने तुझे सोने-चांदी
के आभूषणों से सजा दिया। तेरे वस्त्र सूती
मलमल और रेशम के थे, जिन पर कसीदा
काढ़ा गया था। तू मैदे की रोटी, तथा शहद और
तेल में पका भोजन खाती थी। तू अत्यन्त सुन्दर
और रानी बनने के योग्य हो गई। 14तेरी सुन्दरता
की कीर्ति सब जातियों में फैल गई। मैंने तुझे
शोभा में संवारा था। इस शोभा के कारण तू
सुन्दरी बन गई थी जिसमें कोई कलंक न था।'
स्वामी-प्रभु की यही वाणी है।
15 'लेकिन तूने मुझ पर भरोसा न कर
अपनी सुन्दरता पर भरोसा किया। तू अपने रूप
की ख्याति के कारण व्यभिचार करने लगी। तू
राह-चलते पुरुषों को पकड़ कर उनसे व्यभिचार
करवाती थी। 16तूने अपनी साड़ियां लीं, और
उनसे रंग-बिरंगे, व्यभिचार के पूजास्थल
बनाए। तू वहां व्यभिचार-कर्म करती थी। तूने
वहां ऐसे कुकर्म किए, जो न कभी किसी ने
किए थे, और न कभी कोई करेगा। 17जो सोने-
चांदी के सुन्दर आभूषण मैंने तुझे दिए थे, तूने
उनसे मनुष्यों की आकृतियां बनाईं, और उन
आकृतियों के साथ कुकर्म किया। 18तूने अपनी
बेल-बूटेदार साड़ियां उतार कर उनको ढांप
दिया, और मेरे तेल और सुगंधित धूप-द्रव्य को
उनके सम्मुख चढ़ाया। 19ओ व्यभिचारिणी
यरूशलेम नगरी! मैंने मैदे की रोटी, तेल और
शहद से तेरा भरण-पोषण किया था। जो भोजन
मैंने तुझे दिया था, तूने उसको सुगन्ध-बलि के
रूप में उन आकृतियों के सम्मुख चढ़ा दिया।
मैं, स्वामी-प्रभु यह कहता हूं।
20 'तूने मेरे लिए पुत्र और पुत्रियां उत्पन्न
किये थे। तूने इन पुत्र-पुत्रियों की बलि चढ़ा दी
ताकि वे आकृतियां उनको खा लें। क्या ये तेरे
कुकर्म संगीन नहीं हैं? 21तूने अग्नि-बलि में
चढ़ाने के लिए मेरे बच्चों का वध किया, और
उनको आग में झोंक दिया। 22ये सब घृणित
कार्य और व्यभिचार करते समय तुझे अपने
बचपन के दिन याद नहीं आए, जब तू नग्न थी,
तेरे शरीर पर वस्त्र का टुकड़ा भी नहीं था, और
तू खून में लथपथ पड़ी थी।
23 'तुझे तेरे कुकर्मों के लिए धिक्कार है!
धिक्कार है तुझे!' स्वामी-प्रभु की यही वाणी
है। 24'तूने अपने अधर्म के बाद क्या किया?
अपने लिए पूजा का एक कक्ष बनाया, हर
चौराहे पर पूजा के लिए ऊंची वेदी स्थापित
की। 25ओ यरूशलेम, तूने हर गली के प्रवेश-
द्वार पर ऊंची वेदी स्थापित की, और वहां अपने
सौन्दर्य पर व्यभिचार का दाग लगाया। तू वहां
खड़ी होकर प्रत्येक राहगीर से कुकर्म करती
थी, और यों अपने कुकर्मों का ढेर लगाती थी।
26तूने अपने कामातुर पड़ोसी राष्ट्रों से, मिस्र से
भी व्यभिचार-कर्म किया, और यों अपने
असंख्य व्यभिचारों द्वारा मेरे क्रोध को भड़काया।
27इसलिए, देख, मैंने तुझ पर हाथ उठाया, और
तुझे दण्ड दिया। मैंने तुझे तेरे निज भाग से
वंचित कर दिया, तुझे तेरे देश से निकाल दिया,

16 : 8-14 व्य 32 : 10 ; भज 113 : 7-8 16 : 13 व्य 32 : 13 16 : 15 व्य 32 : 15

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और तुझे तेरी भूखी शत्रु पलिश्ती कन्याओं के
हाथ में सौंप दिया। ये तेरा दुराचरण देखकर
लजाती थीं। [28]ओ यरूशलेम, तेरी कामाग्नि तो
बुझती ही नहीं थी, इसलिए तूने असीरिया से
भी व्यभिचार किया। किन्तु उससे व्यभिचार
करने पर भी तेरी भूख नहीं मिटी। [29]व्यापारी
जाति कसदी से भी तूने व्यभिचार किया। फिर
भी तेरी तृष्णा न बुझी और यों तू अपने
व्यभिचार कर्मों को बढ़ाती गई।'

30 स्वामी-प्रभु की यह वाणी है : 'तेरा हृदय
कैसा कामातुर है ! तू निर्लज्ज वेश्या के समान
यह सब कुकर्म करती है। [31]हर एक गली के
प्रवेश-द्वार पर तू पूजा-कक्ष बनाती है। तू
प्रत्येक चौराहे पर ऊंची वेदी प्रतिष्ठित करती है।
तो भी, सुन, तू वेश्या से भी नीच है, क्योंकि तू
वेश्यावृत्ति के मूल्य का मजाक भी उड़ाती है।
[32]सुन, तू क्या है ? तू व्यभिचारिणी पत्नी है, जो
पति के स्थान पर पराए पुरुष को अपना शरीर
सौंपती है। [33]पुरुष वेश्या को उसका मूल्य
चुकाते हैं। लेकिन तू तो पराए पुरुषों को, अपने
प्रेमियों को लुभाने के लिए स्वयं रुपये देती है
कि वे सब जगह से तेरे पास आएं और तुझ से
व्यभिचार करें। [34]इस प्रकार तू वेश्याओं से
भिन्न और निकृष्ट है। पुरुष तेरे साथ व्यभिचार
करने के लिए तुझे फुसलाता नहीं, तुझे वेश्यावृत्ति
के लिए दाम नहीं देता, किन्तु स्वयं तू उसको
दाम देती है। इसलिए तेरा व्यवहार अन्य
वेश्याओं के विपरीत है।

35 'इसलिए, ओ वेश्या, मुझ-प्रभु का यह
सन्देश सुन: [36]मैं, स्वामी-प्रभु कहता हूँ, तूने
निर्लज्ज होकर ये घृणित कार्य किए हैं : तूने
अपने प्रेमियों के सम्मुख अपना आंचल हटाया,
व्यभिचार करते समय उनके सामने नग्न हुई।
तूने मूर्तियों के सामने पूजा-पाठ किया, उन
मूर्तियों को अपने बच्चों की बलि चढ़ाई।
[37]इसलिए मैं तेरे उन सब प्रेमियों को एकत्र
करूंगा जिनके साथ तूने भोग-विलास किया
है। मैं उन सबको इकट्ठा करूंगा, जिनको तू
प्यार करती थी, और उनको भी एकत्र करूंगा,
जो तुझसे घृणा करते थे। मैं तेरे विरुद्ध इन
सबको चारों दिशाओं से एकत्र करूंगा, और
उनके सामने तुझे नग्न करूंगा ताकि वे तेरी नग्नता
को अपनी आंखों से देखें। [38]जो दण्ड
व्यभिचारिणी पत्नी और हत्यारिणी स्त्री को
दिया जाता है, वही दण्ड मैं तुझको दूंगा। मैं
क्रोध और ईर्ष्या से तेरी हत्या करवाऊंगा। [39]ओ
यरूशलेम, मैं तुझको तेरे प्रेमियों के हाथ में
सौंप दूंगा, और वे तेरे साथ मनमाना व्यवहार
करेंगे : वे तेरे पूजा-कक्ष ध्वस्त कर देंगे। वे तेरी
ऊंची-ऊंची वेदियों को तोड़-फोड़ कर गिरा
देंगे। वे तेरा अपमान करने के लिए तेरे वस्त्र
उतारेंगे। वे तुझसे तेरे कीमती गहने छीन लेंगे,
और तुझको नग्न करके छोड़ देंगे। [40]वे विशाल
सेना के साथ तुझ पर आक्रमण करेंगे। वे तुझे
पत्थर से मारेंगे और तलवार से तेरे टुकड़े-
टुकड़े करेंगे। [41]वे तेरे मकानों में आग लगा देंगे,
और अन्य औरतों के सामने तुझे दण्ड देंगे। मैं
तेरी वेश्यावृत्ति बन्द कर दूंगा, और तू पराए
पुरुषों को अपनी वेश्यावृत्ति का दाम नहीं देगी।
[42]इस प्रकार तेरे प्रति अपनी क्रोधाग्नि को शान्त
करूंगा, और तेरे प्रति मेरी ईर्ष्या का अन्त हो
जाएगा। मैं शान्त हो जाऊंगा, और फिर कभी
तुझसे नाराज नहीं हूंगा।

43 'ओ यरूशलेम, तू अपने बचपन के दिन
भूल गई, और तूने ये कुकर्म किये, और यों मुझे
क्रोध दिलाया। सुन, मैं निस्सन्देह तेरे कुकर्मों
का प्रतिफल तेरे सिर पर डालूंगा,' स्वामी-प्रभु
की यही वाणी है।

'तूने अनेक घृणित कुकर्म तो किए ही थे।
उनके अतिरिक्त तूने यह व्यभिचार कर्म भी
किया। [44]देख, कहावत कहनेवाले तेरे विषय में
यह कहावत कहेंगे, "जैसी मां वैसी बेटी !"
[45]तू अपनी मां की सच्ची बेटी है : तेरी मां भी
अपने पति और बच्चों से घृणा करती थी। तू
अपनी बहिनों की सच्ची बहिन है। तेरी बहिनें
भी अपने-अपने पति और बच्चों से घृणा करती
थीं। तेरी मां जाति की हित्ती थी, और तेरा पिता
अमोरी जाति का था। [46]तेरी उत्तरी सीमा पर
अपनी पुत्रियों के साथ रहनेवाली तेरी बहिन
"सामरी-नगर" तेरी बड़ी बहिन है। और जो

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तेरी दक्षिणी सीमा पर अपनी पुत्रियों के साथ
रहती है, वह "सोदोम-नगर" है। वह तेरी छोटी
बहिन है। [47]ओ यरूशलेम, तूने आरम्भ में उनके
समान दुराचरण नहीं किया और न ही उनके
समान घृणित कर्म किए थे। किन्तु थोड़े ही समय
में कुकर्म करने में तूने उनको हरा दिया : तू
उनसे अधिक भ्रष्ट हो गई। [48]ओ यरूशलेम, मैं
स्वामी-प्रभु अपने जीवन की सौगन्ध खाकर
सच कहता हूं : सोदोम और उसकी पुत्रियों ने
उतने कुकर्म नहीं किये, जितने तूने और तेरी
पुत्रियों ने किए। [49]तेरी बहिन सोदोम का केवल
यही अधर्म था कि उसने और उसकी पुत्रियों
ने घमण्ड किया। उन्होंने आवश्यकता से
अधिक अनाज जमा किया, खाया-पीया,
मौज-मजा किया लेकिन गरीबों और अभावग्रस्त
अपने जाति-भाई-बहिनों की चिन्ता नहीं की।
[50]अहंकार से उनकी आंखें चढ़ी रहती थीं।
उन्होंने मेरी आंखों के सामने पूजा-पाठ के
घृणित कार्य किए। इसलिए जब मैंने उनके इन
कार्यों को देखा तब उनको अपने सामने से हटा
दिया। [51]तूने जितने पाप-कर्म किए हैं, उनके
आधे भी तेरी बहिन सामरी ने नहीं किए थे। तूने
उससे अधिक घृणित कार्य किए और अपने इन
घृणित कार्यों की दृष्टि से तेरी बहिन तेरी अपेक्षा
निर्दोष ठहरती है। [52]ओ यरूशलेम ! तू सोचती
थी कि तेरी बहिनों को उनके पापों का दण्ड
मिलेगा, तूने उनका न्याय किया था। अब तेरा
भी न्याय होगा : तेरा अभिमान तोड़ा जाएगा,
तूने उनसे अधिक घोर घृणित कार्य किए हैं।
इसलिए तू उनकी अपेक्षा अधिक दोषी है। ओ
यरूशलेम, चुल्लू-भर पानी में डूब मर। अब
तू अपमान की ज्वाला में जल ; क्योंकि तूने
अपने घोर घृणित कार्यों के कारण अपनी
बहिनों को कम दोषी ठहराया है।

यरूशलेम के दिन फिरेंगे

53 मैं तेरी बहिनों—सोदोम और सामरी—
को तथा उनकी पुत्रियों को पुनः समृद्ध
करूंगा। मैं स्वयं तुझको भी उनके मध्य पुनः
प्रतिष्ठित करूंगा। [54]तब तेरा अभिमान टूट जाएगा,
और तू शर्म से पानी-पानी हो जाएगी। वे
तुझको देखकर अपनी पीठ थपथपाएंगी कि
उनके कुकर्म तुझसे कम हैं। [55]तेरी
बहिनें—सोदोम और सामरी—अपनी पूर्व दशा
में लौट आएंगी। इसी प्रकार उनकी पुत्रियां भी
अपनी-अपनी पूर्व दशा प्राप्त कर लेंगी। ओ
यरूशलेम, तू भी अपनी पुत्रियों के साथ पूर्व
दशा में आ जाएगी। [56-57] जब तेरी आंखें
अहंकार से चढ़ी हुई थीं, जब तेरे कुकर्मों से
परदा नहीं हटा था, तब तू अपनी बहिन का नाम
भी नहीं लेती थी। लेकिन अब तू भी उसी के
समान निन्दा का पात्र बन गई है। एदोम* की
पुत्रियां तथा उसके पास-पड़ोस की औरतें,
पलिश्ती की पुत्रियां तथा उसके पास-पड़ोस
की स्त्रियां तेरी निन्दा करतीं और तुझे नीच
समझती हैं। [58]ओ यरूशलेम, अपने व्यभिचार
का फल भोग ! तूने घृणित कार्य किए हैं।
उनका दण्ड तुझे भोगना ही पड़ेगा।' प्रभु की
यही वाणी है।

59 स्वामी-प्रभु यों कहता है: 'ओ यरूशलेम,
तूने शपथ खाकर मुझसे विवाह का विधान**
स्थापित किया था। किन्तु तूने अपनी शपथ को
तुच्छ समझा, और विधान को तोड़ दिया। अतः
जैसा तूने किया है वैसा ही मैं तुझ से व्यवहार
करूंगा।

60 'किन्तु, नहीं ! मैंने तेरे बचपन के दिनों
में तेरे साथ विधान स्थापित किया था। मुझे
उसका स्मरण है। अतः मैं तेरे साथ शाश्वत
विधान स्थापित करूंगा। [61]तब तुझे अपने बीते
हुए दिनों के आचरण का स्मरण होगा, और
जब तू अपनी बड़ी और छोटी बहिनों को
स्वीकार करेगी तब तू लज्जित होगी। क्योंकि मैं
उनको तेरी पुत्रियों के रूप में तुझे सौंपूंगा ;
किन्तु यह कार्य तेरे बचपन के विधान के कारण
नहीं, वरन् शाश्वत विधान के कारण करूंगा।
62 'ओ यरूशलेम, मैं तेरे साथ अपना
विधान स्थापित करूंगा। तब तुझे मालूम होगा

---

* पाठभेद, 'अराम' अर्थात् सीरिया। ** अथवा, 'वाचा'

16 : 49 उत 19 16 : 60 हो 2 : 15; यिर 31 : 3

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कि मैं ही प्रभु हूं।63मैं तेरे सब कुकर्मों को क्षमा
कर दूंगा ताकि तू अपने कुकर्मों को स्मरण करे,
और उनके लिए लज्जित हो। तब तू अपनी इस
लज्जा के कारण अपना मुंह फिर खोलने का
साहस नहीं करेगी।' स्वामी-प्रभु की यही
वाणी है।

एक पहेली : एक दृष्टांत

17 प्रभु का यह वचन मुझे मिला। उसने
मुझसे कहा, 2 'ओ मानव, तू इस्राएली
कुल से यह पहेली और दृष्टांत कह : 3स्वामी-
प्रभु यों कहता है :
'एक विशाल बाज पक्षी लबानोन प्रदेश में
आया।
वह देवदार वृक्ष की फुनगी पर बैठ गया।
उसके डैने लम्बे-लम्बे, रंग-बिरंगे और
पंखों से भरे थे।
4उसने फुनगी की नयी टहनी को तोड़ा,
और उसको व्यापारियों के देश में ले गया।
उसने नयी टहनी को लेनदेन करनेवालों के
महानगर में रोप दिया।
5तब उसने देश के बीज को लिया
और उसको उपजाऊ भूमि में बो दिया।
उसने बीज बोया,
उमड़ते जलाशय के तट पर बोया ;
उसने मजनू वृक्ष के सदृश बीज को बोया।
6बीज में अंकुर फूटे,
और वह छोटी फैलनेवाली अंगूर-बेल में
बदल गया।
बेल की शाखाएं बाज की ओर झुकीं,
किन्तु उसकी जड़ें वहीं रहीं, जहां बीज बोया
गया था,
यों वह अंगूर-बेल बन गया ;
उसमें शाखाएं फूटीं और पत्ते निकले।
7 'एक और विशाल बाज था।
उसके डैने भी लम्बे-लम्बे
और सघन परों से भरे थे।
अंगूर-बेल ने अपनी जड़ें उसकी ओर फैलाईं
उसने वहां से अपनी शाखाएं उसकी ओर
झुकाईं,
जहां वह लगाई गई थी,
कि वह उसको पानी से सींचे।
8बाज ने उसको उपजाऊ भूमि पर लगाया था,
उसने उसको उमड़ते जलाशय के तट पर
बोया था,
कि उसके अंकुर फूटें,
बेल बने, और बेल में शाखाएं निकलें,
और वह अंगूर के गुच्छों से भर जाए
और फलवंत अंगूर-बेल बने।
9किन्तु स्वामी-प्रभु कहता है,
क्या यह बेल फूलेगी-फलेगी ?
कदापि नहीं !
क्या उसको जड़-मूल से नहीं उखाड़ा
जाएगा ?
वह उसकी शाखाएं काट कर आग में झोंक
देगा,
और यों उसकी हरी-हरी पत्तियां सूख
जाएंगी।
बेल को जड़ से उखाड़ने के लिए
अधिक बल की जरूरत नहीं पड़ेगी,
और न ही अनेक लोगों की आवश्यकता
होगी।
10यदि उसको उखाड़कर
दूसरे स्थान पर लगाया जाए,
तो क्या वह पुनः लग सकेगी ?
क्या वह फूलेगी-फलेगी ? नहीं !
जब पूर्वी पवन बहेगा तब उसके प्रहार से
वह पूर्णतः सूख जाएगी,
उसी में वह सूख जाएगी।'
11तब प्रभु का यह सन्देश मुझे मिला। उसने
मुझसे कहा, 12 'अब तू विद्रोही इस्राएली कुल
से यह कह : क्या तुम अब भी इस पहेली और
दृष्टांत का अर्थ नहीं समझे ? सुनो, इसका यह
अर्थ है : बेबीलोन देश का राजा यरूशलेम में
आया। उसने यरूशलेम के राजा, और उसके
उच्चाधिकारियों को बन्दी बनाया, और उनको
अपने देश में ले गया। 13उसने राजवंश के एक
पुरुष को लिया, और उससे सन्धि स्थापित की।
उसने उससे वचन लिया कि वह उसके अधीन

17 : 12 2 रा 24 : 11-16 17 : 15 2 रा 24 : 20

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रहेगा। (वह देश के प्रमुख व्यक्तियों को भी
बन्दी बनाकर ले गया था। [14]उसका उद्देश्य यह
था कि इस्राएली राज्य उसके पैरों के नीचे दबा
रहे, और अपना सिर न उठा सके, और सन्धि
की शर्तों का पालन करते हुए बना रहे।)
[15]किन्तु उसने बेबीलोन के विरुद्ध विद्रोह कर
दिया, और मिस्र देश को अपने दूत भेजे ताकि
वह उसकी मदद करे, और उसको घोड़े और
विशाल सेना भेजे। क्या वह अपने विद्रोह में
सफल होगा? ऐसे काम करनेवाला मुनष्य क्या
भाग कर अपना प्राण बचा सकेगा? सन्धि की
शर्तों को तोड़नेवाला क्या बच सकेगा? [16]मेरे
जीवन की सौगन्ध! मैं, स्वामी-प्रभु यह कहता
हूं, जिस देश के राजा ने उसको राजा बनाया था,
और जिस देश के राजा के वचन को वह तुच्छ
समझता है, और जिसकी सन्धि को उसने तोड़ा
है, उसी राजा के देश में वह मरेगा!

17 'जब युद्ध में हजारों लोगों का वध करने
के लिए बेबीलोन के राजा की सेना नगर के
चारों ओर मोर्चाबन्दी करेगी और दमदमा
बांधेगी, तब मिस्र देश के राजा फरओ की
शक्तिशाली और विशाल सेना भी यरूशलेम के
राजा की सहायता नहीं कर पाएगी। [18]उसने
बेबीलोन के राजा के वचन को तुच्छ समझा,
सन्धि की शर्तों का उल्लंघन किया; उसने हाथ
पर हाथ रख कर वचन दिया था कि वह
बेबीलोन के राजा के अधीन रहेगा, तो भी उसने
विद्रोह के ये कार्य किए, इसलिए वह प्राण
बचाकर भाग नहीं सकेगा। [19]स्वामी-प्रभु यों
कहता है: मेरे जीवन की सौगन्ध! उसने मेरी
शपथ को तुच्छ समझा, और मेरी संधि* का
उल्लंघन किया; इसलिए, मैं इनका प्रतिफल
उसके सिर पर डालूंगा। [20]मैं उस पर अपना
जाल फैलाऊंगा, और वह मेरे फन्दे में फंस
जाएगा। मैं उसको बेबीलोन देश में लाऊंगा,
और जो विश्वासघात उसने मेरे साथ किया है,
उसके लिए मैं उस पर बेबीलोन में मुकदमा
चलाऊंगा। [21]उसके सैन्य-दल का प्रत्येक नायक
तलवार से मौत के घाट उतारा जाएगा, और बचे
हुए सैनिक सब दिशाओं में तितर-बितर हो
जाएंगे। तब तुम्हें मालूम होगा कि मैं ही प्रभु हूं,
जिसने यह कहा है।' [22]स्वामी-प्रभु यों कहता
है:

'मैं भी देवदार वृक्ष की ऊंची फुनगी से
एक टहनी लूंगा,
और उसको भूमि पर लगाऊंगा।
मैं उसकी सबसे ऊंची शाखा में से
एक टहनी तोड़ूंगा,
और उसको एक बहुत ऊंचे पहाड़ पर
लगाऊंगा।
[23]सुनो, मैं उसको इस्राएल प्रदेश के उच्चतम
पर्वत पर रोपूंगा;
तब उसमें डालियां फूटेंगी,
और उसमें फल लगेंगे।
वह एक शानदार देवदार वृक्ष बन जाएगी।
उसके नीचे सब जाति के पशु आश्रय लेंगे;
उसकी घनी शाखाओं में सब प्रकार के पक्षी
अपना घोंसला बनाएंगे।
[24]तब विश्व के सब वृक्षों को ज्ञात होगा
कि मैं-प्रभु छोटे वृक्ष को बड़ा बनाता हूं,
और बड़े वृक्ष को छोटा!
मैं हरे वृक्ष को सुखा डालता हूं
और सूखे हुए वृक्ष को हरा-भरा कर देता हूं।
मेरी यही वाणी है।
मैं-प्रभु जो कहता हूं, उसको पूरा करता हूं।'

प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्म के लिए जिम्मेदार है

18 मुझे प्रभु का सन्देश पुनः प्राप्त हुआ।
प्रभु ने मुझसे कहा, [2]'ओ मानव, तुम
लोग अपने देश इस्राएल में यह कहावत क्यों
कहते हो कि, "खट्टे अंगूर खाए बाप-दादों
ने, लेकिन दांत खट्टे हुए उनके बच्चों के"।
[3]मैं, स्वामी-प्रभु यह कहता हूँ: मेरे जीवन की
सौगन्ध! अब से इस्राएल देश में तुम यह
कहावत नहीं कहोगे। [4]देखो, सब प्राणी मेरे ही

---

* अथवा, "विधान" अथवा 'वाचा'।

17 : 20 यहेज 12 : 13 **17 : 23** यहेज 31 : 6; मत 13 : 32 **17 : 24** भज 113 : 7-9 **18 : 2** यिर 31 : 29
18 : 4 यहेज 18 : 20

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हैं। पिता का प्राण और पुत्र का प्राण, दोनों पर
मेरा ही अधिकार है। इसलिए जो प्राणी पाप
करता है, केवल वही मरेगा।
5 यदि कोई मनुष्य धार्मिक है, और वह
न्याय और धर्म के अनुसार यह आचरण करता
है : 6वह पहाड़ी शिखर की वेदी के सम्मुख
बलि-पशु का मांस नहीं खाता। वह इस्राएल के
कुल द्वारा अपनायी गयी देव-मूर्तियों की ओर
सहायता के लिए आंखें नहीं उठाता। वह अपने
पड़ोसी की पत्नी के साथ व्यभिचार नहीं
करता। वह ऋतुमति स्त्री के साथ सम्भोग नहीं
करता। 7वह किसी का शोषण नहीं करता, वरन्
कर्जदार को उसके कर्ज से मुक्त करता है,
और उसकी गिरवी में रखी वस्तु को लौटा
देता है। वह चोरी नहीं करता। वह भूखे व्यक्ति
को अपना भोजन देता है। वह नंगे व्यक्ति
को अपना कपड़ा पहनाता है। 8वह अपना धन
ब्याज पर नहीं देता और न ही सूद खाता है।
वह किसी कुकर्म में हाथ नहीं डालता। वह
वादी और प्रतिवादी के बीच सच्चाई से न्याय
करता है। 9वह मेरी संविधियों पर चलता है,
और मेरे आदेशों का पालन निष्ठापूर्वक करता
है। ऐसा व्यक्ति निस्सन्देह धार्मिक है, और
वह जीवित रहेगा।' स्वामी-प्रभु की यही
वाणी है।
10 'अब मान लो: उस धार्मिक मनुष्य का
पुत्र उत्पन्न होता है। पुत्र न्याय और धर्म के
अनुरूप आचरण नहीं करता है। वह चोर-डाकू
है। वह खूनी-हत्यारा है। 11वह अपने भाई-
बहिन के प्रति इन कुकर्मों में से एक भी करता
है—यद्यपि उसके पिता ने ये सब कुकर्म नहीं
किये : वह पहाड़ी शिखर की वेदी के सम्मुख
बलि-पशु का मांस खाता है। वह अपने पड़ोसी
की पत्नी को भ्रष्ट करता है। 12वह दीन-दरिद्रों
पर अत्याचार करता है। वह चोरी करता है। वह
कर्जदार की गिरवी की वस्तु को हड़प जाता है।
वह सहायता के लिए देव-मूर्तियों की ओर
आंखें उठाता है और घृणित मूर्ति-पूजा करता
है। 13वह ब्याज पर रुपया उधार देता है, और
सूदखोर है। क्या उस धार्मिक मनुष्य का ऐसा
पुत्र जीवित रहेगा? कदापि नहीं। वह निश्चय
ही मरेगा; क्योंकि उसने ये घृणित कार्य किये
हैं। उसकी हत्या का दोष उसी के सिर पर
होगा।
14 'किन्तु अब मान लो: जिस पिता ने न्याय
और धर्म के अनुरूप आचरण नहीं किया है,
और उसका कोई पुत्र है। वह पुत्र अपने पिता
के पापमय आचरण को देखता है; वह प्रभु से
डरता है, और अपने पिता के समान पापमय
आचरण नहीं करता है: 15वह पहाड़ी शिखर
की वेदी के सम्मुख बलि-पशु का मांस नहीं
खाता। वह इस्राएल के कुल द्वारा अपनायी गयी
देव-मूर्तियों की ओर सहायता के लिए आंखें
नहीं उठाता। वह अपने पड़ोसी की पत्नी को
भ्रष्ट नहीं करता। 16किसी पर अत्याचार नहीं
करता। वह कर्जदार की गिरवी की वस्तु को
नहीं हड़पता। वह चोरी नहीं करता। वह भूखे
को अपना भोजन देता और नंगे को अपना
कपड़ा ओढ़ाता है। 17वह कुकर्म में हाथ नहीं
डालता। वह रुपया ब्याज पर नहीं देता, और
न सूदखोरी करता है। वह मेरे आदेशों का
पालन करता है, और मेरी संविधियों के
अनुसार आचरण करता है। ऐसा पुत्र अपने
पिता के कुकर्मों के कारण नहीं मरेगा; बल्कि
वह निस्सन्देह जीवित रहेगा। 18किन्तु उसका
पिता, जिसने गरीबों पर अत्याचार किया, अपने
जाति-भाई-बहिनों को लूटा, और जनता में
भलाई का काम नहीं किया, निस्सन्देह अपने
कुकर्मों का फल भोगेगा: वह निश्चय ही
मरेगा।
19 'किन्तु तुम प्रश्न करते हो, "पुत्र अपने पिता
के अधर्म का दण्ड क्यों न भोगे?" सुनो; यदि
पुत्र ने न्याय और धर्म के अनुरूप आचरण
किया है, और वह मेरी संविधियों का पालन
करने के लिए सदा तत्पर था तो वह निस्सन्देह
जीवित रहेगा। 20केवल पाप करनेवाला प्राणी
ही मरेगा। पिता के अधर्म का फल पुत्र कदापि
नहीं भोगेगा, और न ही पुत्र के अधर्म का दण्ड

18 : 5 भज 15; 24 : 3-6 18 : 7 मत 25 : 35 18 : 9 लेव 18 : 5 18 : 20 व्य 24 : 16

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पिता को मिलेगा। किन्तु धार्मिक व्यक्ति को
उसके धर्म का फल और दुर्जन को उसके पाप
का फल मिलेगा।
21 'किन्तु यदि पाप करनेवाला दुर्जन अपने
कुकर्म के मार्ग को छोड़ दे, और मेरी संविधियों
का पालन करने लगे; यदि वह न्याय और धर्म
के अनुरूप आचरण करने लगे तो वह मरेगा
नहीं, वरन् जीवित रहेगा। 22 न्याय के दिन
उसके अपराधों का लेखा न लिया जाएगा, जो
उसने किए हैं। वह अपने धर्म के कामों के
कारण जीवित रहेगा।
23 'सुनो, मैं, स्वामी-प्रभु यह कहता हूँ:
क्या मैं दुर्जन की मृत्यु से प्रसन्न होता हूं? नहीं,
जब कोई दुर्जन अपने दुराचरण को छोड़ देता
और जीवित रहता है, तब मुझे प्रसन्नता होती है।
24 किन्तु दूसरी ओर, जब धार्मिक व्यक्ति अपने
सदाचरण को छोड़कर अधर्म के काम करने
लगता है, वह दुर्जन के समान दुराचरण करने
लगता है, तो क्या ऐसा व्यक्ति जीवित रहेगा?
न्याय के दिन उसका एक भी पुण्य कर्म स्मरण
नहीं किया जाएगा। उसने मेरे प्रति विश्वासघात
किया है, इसलिए वह दोषी है। उसने पाप
किया है; अत: वह निस्सन्देह मरेगा।
25 'फिर भी तुम कहते हो, "प्रभु का
व्यवहार न्यायपूर्ण नहीं है।" ओ इस्राएल के
कुल, सुन और देख: क्या मेरा व्यवहार न्याय
का व्यवहार नहीं है? इसके विपरीत, तुम अपने
आचरण को धर्म का आचरण कहते हो, जब
कि तुम्हारा आचरण न्याय के अनुरूप नहीं है।
26 यदि कोई धार्मिक व्यक्ति अपने धर्म के
आचरण से विमुख हो जाता है और अधर्म के
काम करता है, तो वह अपने इस पाप के कारण
निस्सन्देह मरेगा। जो पाप वह करता है, उसका
फल मृत्यु है।
27 'इसके विपरीत, यदि कोई दुर्जन अपने
दुराचरण को छोड़ देता है, जो अधर्म के काम
वह करता है, उनसे विमुख हो जाता है और
न्याय तथा धर्म के अनुरूप आचरण करने
लगता है, तो वह निस्सन्देह अपने प्राण बचा
लेता है। 28 क्योंकि वह अपने कार्यों पर पुन:
विचार करता है, अपने अपराधों पर सोचता है
और उनसे विमुख हो जाता है। ऐसा दुर्जन
निस्सन्देह अपने प्राण बचाएगा, और वह नहीं
मरेगा। 29 फिर भी इस्राएल का कुल यह कहता
है कि प्रभु का व्यवहार न्यायपूर्ण नहीं है। ओ
इस्राएल के वंशजो, मेरा व्यवहार न्यायपूर्ण है,
किन्तु तुम्हारा आचरण न्यायपूर्ण नहीं है।
30 'इसलिए मैं तुम में से प्रत्येक व्यक्ति का
न्याय उसके आचरण के अनुरूप करूंगा। मैं,
स्वामी-प्रभु यही कहता हूँ। ओ इस्राएलियो!
अपने कुकर्मों के लिए पश्चात्ताप करो, और
अपने दुराचरण को छोड़ दो। ऐसा न हो कि
तुम्हारा अधर्म तुम्हारे पतन का कारण बन जाए।
31 तुमने मेरे विरुद्ध अनेक कुकर्म किए हैं। उन-
सब को अपने से दूर करो; और तब अपने
भीतर नया हृदय और नई आत्मा धारण करो।
'ओ इस्राएल के कुल, तू क्यों मरना चाहता
है? 32 मैं किसी भी दुर्जन की मृत्यु से प्रसन्न नहीं
होता। इसलिए तुम अपना दुराचरण छोड़कर
मेरी ओर लौटो, और सदा जीवित रहो।'
स्वामी-प्रभु की यही वाणी है।

दो शोक गीत

इस्राएली कौम शेरनी थी!

19 'ओ मानव, तू इस्राएली उच्चाधिकारियों
के सम्बन्ध में यह शोक गीत गा:
2 ओ इस्राएल के उच्चाधिकारियो,
तुम्हारी मां सिंहों के मध्य एक सिंहनी थी।
वह जवान सिंहों से घिरी रहती थी,
और अपने बच्चों का लालन-पालन करती थी।
3 अपने बच्चों में से एक बच्चे को
उसने बड़ा किया,
और वह तरुण सिंह बन गया।
उसने शिकार पकड़ना सीख लिया।
वह आदमियों का शिकार करने लगा।
4 आसपास के राष्ट्र चौकन्ने हो गए।
उन्होंने उसके विरुद्ध जाल फैलाया

18 : 22 यहेज 33 : 16 18 : 23 2 पत 3 : 9; रोम 11 : 32; लू 15 : 7; यहेज 18 : 32 ; 33 : 11 18 : 30 मत
16 : 27 18 : 31 यहेज 36 : 26 18 : 32 प्रज्ञा 1 : 13 19 : 4 2 रा 23 : 33

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और वह उनके गड्ढे में फंस गया।
वे उसकी नाक में नकेल डालकर
उसको मिस्र देश ले गए।
5जब उसकी मां ने यह देखा
कि उसका श्रम व्यर्थ हो गया,
उसकी आशा पर पानी फिर गया,
तो उसने अपने एक और बच्चे को लिया.
और उसको बड़ा किया,
उसने उसको जवान सिंह बनाया।
6वह सिंहों के मध्य गरजने लगा ;
वह जवान हो गया।
उसने शिकार पकड़ना सीख लिया;
वह आदमियों का शिकार करने लगा।
7उसने अपने पड़ोसी राष्ट्रों के गढ़ उजाड़ दिए;
उनके नगर निर्जन कर दिए।
उसकी दहाड़ सुन कर
सारा देश और उसके निवासी
डर से कांप उठे।
8तब पड़ोसी राष्ट्रों ने चारों ओर से
उसको पकड़ने के लिए जाल बिछाया;
उन्होंने उस पर फन्दा फेंका;
और वह उनके गड्ढे में फंस गया।
9उन्होंने उसको अंकुश से मारा,
और कठघरे में बन्द कर दिया।
वे उसको बेबीलोन के राजा के पास ले गए।
उन्होंने उसको पिंजरे में डाल दिया
कि उसकी दहाड़
इस्राएल के पहाड़ों पर फिर कभी सुनाई न
दे।

इस्राएली कौम फलवंत अंगूर लता थी

10 'ओ इस्राएली कौम, तेरी मां
मानो अंगूर-उद्यान की एक अंगूर लता थी।
वह जलाशय के तट पर लगी थी।
भरपूर पानी मिलने के कारण
वह शाखाओं और फलों से लदी थी।
11उसकी मोटी-मोटी टहनियां
राजा के राज-दण्ड बनने के योग्य थीं।
वह इतनी ऊंची थी, कि आकाश को छूने लगी।
अपनी ऊंचाई और घनी शाखाओं के कारण
वह राहगीरों को विस्मित करने लगी।
12किन्तु उसके शत्रुओं ने
क्रोध में भरकर उसको उखाड़ लिया,
और भूमि पर फेंक दिया।
पूरवी वायु ने उसको सुखा दिया।
उसके फल तोड़ लिये।
उसकी मोटी टहनियां सूख गईं,
आग में वे झोंक दी गईं।
13ओ इस्राएली कौम! अब तेरी अंगूर-बेल
एक निर्जन, निर्जल स्थल में लगाई गई।
14किन्तु उसकी मोटी टहनी में से आग
निकली,
जिसने उसकी शाखाओं और फल को जला
दिया।
अब अंगूर लता में
एक भी मोटी टहनी नहीं रही,
जो राजा का राज-दण्ड बन सके!
(यह एक शोक गीत है, और समाज में शोकगीत
के रूप में प्रचलित है।)

प्रभु मूर्तिपूजा से घृणा करता है

20 निष्कासन के सातवें वर्ष के पांचवें
महीने के दसवें दिन की यह घटना है।
इस्राएली राष्ट्र के कुछ धर्मवृद्ध मेरे पास आए।
वे मेरे सामने बैठ गए। उन्होंने मेरे माध्यम से
प्रभु की इच्छा पूछी। 2तब प्रभु का यह सन्देश
मुझे मिला। प्रभु ने मुझसे कहा, 3 'ओ मानव,
तू इस्राएली राष्ट्र के धर्मवृद्धों से बोल, उनसे
यह कह: "स्वामी-प्रभु यों कहता है : क्या तुम
मेरी इच्छा जानने के लिए आए हो ? मैं, स्वामी-
प्रभु यह कहता हूँ: मेरे जीवन की सौगन्ध, तुम
मेरी इच्छा कभी नहीं जान पाओगे।" 4ओ
मानव-सन्तान, तू ही उनका न्याय कर। तू स्वयं
न्याय-निर्णय कर कि कौन दोषी है। उनके
पूर्वजों ने जो घृणित कार्य किए हैं, वे उनको
बता, 5और तब उनसे यह कह : स्वामी-प्रभु
यों कहता है : जिस दिन मैंने इस्राएल को चुना
था, उस दिन मैंने याकूब के वंश से शपथ खाई
थी। मैंने मिस्र देश में उन पर स्वयं को प्रकट
किया था। मैंने उनसे सौगन्ध खाकर कहा था,

---

19 : 12 यो 15 : 6 20 : 5 नि 6 : 7

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मैं ही तुम्हारा प्रभु परमेश्वर हूं। 6उसी दिन मैंने
उनसे यह भी शपथ खाई थी: "ओ इस्राएलियो,
मैंने तुम्हारे लिए एक देश ढूंढ़ लिया है, जो
विश्व के देशों में सर्वश्रेष्ठ है। उसमें दूध और
शहद की नदियां बहती हैं। मैं तुम को मिस्र
देश की गुलामी से मुक्त कर उस देश में ले
जाऊंगा।" 7मैंने उनसे यह भी कहा था, "मिस्र
देश की घृणित मूर्तियों पर तुम्हारी आंखें लगी
हैं। तुम इन मूर्तियों को फेंक दो, और इन मूर्तियों
से स्वयं को अशुद्ध मत करो; क्योंकि मैं ही
तुम्हारा प्रभु-परमेश्वर हूं।" 8किन्तु उन्होंने मुझ
से विद्रोह किया। मेरी बात नहीं सुनी। किसी
ने भी मिस्र देश की घृणित मूर्तियों को अपने से
दूर नहीं किया। वे उनसे चिपके रहे, और
उनको नहीं छोड़ा; क्योंकि उन पर उनकी आंखें
लगी थीं।

'तब मैंने निश्चय किया कि मैं उनको दण्ड
देने के लिए मिस्र देश में उन पर अपनी क्रोधाग्नि
की वर्षा करूंगा। 9किन्तु मैंने अपने नाम के हेतु
अपना यह निश्चय त्याग दिया। मैंने अपना
क्रोध कार्य-रूप में परिणत नहीं किया, जिससे
मेरा नाम उन राष्ट्रों की आंखों में अपवित्र न हो
जाए, जिन के मध्य इस्राएली रहते थे। मैंने उन
राष्ट्रों की आंखों के सामने इस्राएलियों को मिस्र
देश से बाहर निकाला था, और यों मैंने
इस्राएलियों पर स्वयं को प्रकट किया था।

10 'अत: मैं उनको मिस्र देश से निकालकर
निर्जन प्रदेश में ले गया। 11वहां मैंने उनको
अपनी संविधियां प्रदान कीं। मैंने उनको अपने
न्याय-सिद्धान्त बताए, जिनके अनुसार आचरण
करने पर मनुष्य जीवित रहता है।

12 'मैंने उनको विश्राम-दिवस* भी प्रदान
किया, जो मेरे और उनके मध्य एक चिह्न है
कि उनको ज्ञात हो कि मैं प्रभु ही उनको पवित्र
करता हूं। 13लेकिन इस्राएल के वंशजों ने
निर्जन प्रदेश में मुझ से विद्रोह किया। उन्होंने
मेरी संविधियों के अनुरूप आचरण नहीं किया,
बल्कि मेरे न्याय-सिद्धान्तों को ताक पर रख
दिया, जिनके अनुरूप आचरण करने से मनुष्य
जीवित रहता है। उन्होंने मेरे विश्राम-दिवस की
घोर उपेक्षा कर उसको अपवित्र कर दिया।

'अत: मैंने सोचा कि मैं उनको निर्जन प्रदेश
में दण्ड देने के लिए उन पर अपनी क्रोधाग्नि की
वर्षा करूंगा और उनको पूर्णत: नष्ट कर दूंगा।
14किन्तु मुझे अपने नाम के हेतु अपना निश्चय
त्यागना पड़ा। मैंने अपना क्रोध कार्य-रूप में
परिणत नहीं किया, जिससे मेरा नाम उन राष्ट्रों
की दृष्टि में अपवित्र न हो जाए, जिनके सामने
से मैं इस्राएलियों को निकालकर लाया था।
15इसके अतिरिक्त मैंने निर्जन प्रदेश में उनसे
शपथ खाई कि जो देश मैंने उनको दे दिया है,
जो विश्व का सर्वश्रेष्ठ देश है, जहां दूध और
शहद की नदियां बहती हैं, उस देश में मैं उनको
नहीं लाऊंगा, 16क्योंकि उन्होंने मेरे न्याय-
सिद्धान्तों की उपेक्षा की, मेरी संविधियों के
अनुसार आचरण नहीं किया, और मेरे विश्राम-
दिवस को अपवित्र किया है। निर्जन प्रदेश में
भी उन्होंने मूर्तियों पर मन लगाया। 17फिर भी
मैंने उन पर दयादृष्टि की, और उनका वध नहीं
किया, उनका निर्जन प्रदेश में पूर्ण अंत नहीं
किया।

18'मैंने उस पीढ़ी की सन्तान से कहा,
"अपनी पिछली पीढ़ी के समान आचरण मत
करो, उन की संविधियों और न्याय-सिद्धान्तों
को मत मानो, और न ही उनकी मूर्तियों से स्वयं
को अशुद्ध करो। 19किन्तु मैं तुम्हारा प्रभु परमेश्वर
हूं। मेरी संविधियों पर चलो, मेरे न्याय-
सिद्धान्तों का पालन करने के लिए तत्पर रहो।
20मेरे विश्राम-दिवस को पवित्र मानो, ताकि
वह मेरे और तुम्हारे बीच एक चिह्न ठहरे, और
तुम्हें अनुभव हो कि मैं ही तुम्हारा प्रभु परमेश्वर
हूं।"

21'किन्तु इस्राएलियों की नयी पीढ़ी ने भी
मुझसे विद्रोह किया। उन्होंने मेरी संविधियों के
अनुरूप आचरण नहीं किया। मेरे न्याय-
सिद्धान्तों का पालन करने में तत्परता नहीं

---

* अथवा, 'सबत'

20 : 12 नि 31 : 13-17 20 : 15 गण 14 : 28; भज 95 : 11

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दिखाई, जिनका पालन करके मनुष्य जीवित
रहता है। उन्होंने मेरे विश्राम-दिवस को
अपवित्र किया।
'अत: मैंने निश्चय किया कि मैं उनको दण्ड
देने के लिए निर्जन प्रदेश में उन पर अपनी
क्रोधाग्नि की वर्षा करूंगा, मैं उन पर घातक
प्रहार करूंगा। 22किन्तु प्रहार के लिए उठा हुआ
अपना हाथ मैंने रोक लिया। यह मैंने अपने नाम
के हेतु किया जिससे मेरा नाम उन राष्ट्रों की
दृष्टि में अपवित्र न हो जाए, जिनके सामने से
मैं इस्राएलियों को निकाल कर लाया था।
23इसके अतिरिक्त, मैंने निर्जन प्रदेश में उनसे
शपथ खाई कि मैं उनको राष्ट्रों के मध्य बिखेर
दूंगा, विश्व के देशों में उनको तितर-बितर कर
दूंगा। 24क्योंकि उन्होंने मेरे न्याय-सिद्धान्तों का
पालन नहीं किया; उन्होंने मेरी संविधियों के
अनुरूप आचरण नहीं किया। उन्होंने मेरे
विश्राम-दिवस को अपवित्र किया। उनकी
आंखें अपने पूर्वजों की इष्ट मूर्तियों पर लगी
रहीं। 25मैंने उनको ऐसी संविधियां भी दीं, जो
अच्छी न थीं। मैंने उनको ऐसे न्याय-सिद्धान्त
भी दिए, जिनका पालन करने पर वे जीवन नहीं
प्राप्त कर सकते थे। 26मैंने उनको उकसाया कि
वे अपने पहिलौठे पुत्र की अग्नि-बलि चढ़ाएं,
और यों मैंने उनको आतंकित किया। मैंने
उनकी इस बलि के कारण उनको अशुद्ध जाति
बना दिया। मैंने ये सब कार्य इसलिए किये
ताकि उनको मालूम हो कि मैं ही प्रभु हूं।
27'ओ मानव, तू इस्राएल के वंशजों से
बोल। तू उनसे यह कह, स्वामी-प्रभु यों कहता
है : तुम्हारे पूर्वजों ने मेरे साथ विश्वासघात
किया था, और यों मेरी और अधिक निन्दा की
थी। 28जब मैं उन्हें उस देश में ले आया जिसको
देने की शपथ मैंने खायी थी, तब उन्हें जहां-
कहीं भी पहाड़ी शिखर दिखाई दिए और
जहां-कहीं उन्होंने हरे वृक्ष देखे, वहां वे बलि
चढ़ाने लगे, पूजा करने लगे, और अपनी बलि
और पूजा से मुझे चिढ़ाया। वहां वे सुगन्धित
धूपद्रव्य जलाते थे, और अपनी पेयबलि
उण्डेलते थे। 29(तब मैंने उन से पूछा, 'जिस
पहाड़ी शिखर पर तुम जाते हो, वह क्या है?'
इसलिए आज तक ऐसे स्थान का नाम ''पहाड़ी
शिखर का पूजास्थल''* है।) 30इसलिए, ओ
मानव-पुत्र, तू इस्राएल के वंशजों से यह कह,
स्वामी-प्रभु यों कहता है: जैसे तुम्हारे पूर्वजों
ने मूर्तिपूजा कर के स्वयं को अशुद्ध किया था,
वैसे ही क्या तुम स्वयं को अशुद्ध करोगे? क्या
तुम भी अपने पूर्वजों की घृणित मूर्तियों का
अनुसरण करोगे, और पथ-भ्रष्ट होगे? 31जब
तुम इन मूर्तियों के सामने उपहार-भेंट चढ़ाते
हो, जब तुम अपने पुत्रों की अग्नि-बलि चढ़ाते
हो, तब इस मूर्ति-पूजा के कारण तुम आज तक
स्वयं को अशुद्ध करते हो। ऐसे घृणित काम
करने के पश्चात् भी तुम आशा करते हो कि मैं
तुम्हारे प्रश्नों के उत्तर में तुम पर अपनी इच्छा
प्रकट करूंगा? ओ इस्राएल के वंशजो, मुझे
अपने जीवन की सौगन्ध है, तुम मेरी इच्छा नहीं
जान सकोगे।' स्वामी-प्रभु की यही वाणी है।
32'तुम्हारे हृदय में यह इच्छा उठती है, ''आओ,
हम भी अन्य राष्ट्रों के समान, भिन्न-भिन्न देशों की
जातियों के समान पत्थर और लकड़ी की प्रतिमाएं
पूजें।'' ओ इस्राएल के वंशजो, तुम्हारी यह इच्छा
कभी पूरी नहीं होगी।

इस्राएल का शुद्धिकरण

33'ओ इस्राएल के वंशजो, मैं, स्वामी-प्रभु
कहता हूँ : मेरे जीवन की सौगन्ध! मैं अपने
बाहुबल से, अपना हाथ बढ़ाकर और तुम्हें
गुलाम बनानेवाले राष्ट्रों पर अपना क्रोध
उण्डेल कर तुम्हारा उद्धार करूंगा, और मैं स्वयं
तुम्हारा राजा हूंगा। 34मैं तुम्हें राष्ट्रों के मध्य से
निकालूंगा। जिन देशों में तुम तितर-बितर हो
गए हो, वहां से मैं अपनी सामर्थ्यपूर्ण भुजा,
और उद्धार के हेतु बढ़ाए गए अपने हाथ से तुम्हें
निकालूंगा, और उन पर अपनी क्रोधाग्नि की
वर्षा करूंगा। 35वहां से निकाल कर मैं तुम्हें
''राष्ट्रों के निर्जन प्रदेश'' में लाऊंगा, और वहां

---

* मूल में ''बामा''

20 : 23 लेव 26 : 33

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मैं आमने-सामने तुम्हारा न्याय करूंगा। 36जैसे
मैंने "मिस्र के निर्जन प्रदेश" में तुम्हारे पूर्वजों
का न्याय किया था, और उन्हें दण्ड दिया था
वैसे ही मैं तुम पर मुकदमा चलाऊंगा, और तुम्हें
दण्ड दूंगा।' स्वामी-प्रभु की यही वाणी है।
37 'मैं चरवाहे के समान तुम्हें छांटने और
गिनने के लिए तुम्हें अपने डण्डे के नीचे से
निकालूंगा, और तुम्हें विधान के बन्धन में
बांधूंगा। 38जो विद्रोही तुम्हारे मध्य में हैं, जो
मेरे प्रति अपराध करते हैं, उनको मैं अलग
करूंगा, और तुम्हें शुद्ध करूंगा। जिन देशों में
वे अस्थायी रूप से प्रवास करेंगे, वहां से भी मैं
उनको निकालूंगा। किन्तु मैं उन्हें इस्राएल देश
में प्रवेश नहीं करने दूंगा। तब तुम्हें ज्ञात होगा
कि मैं ही प्रभु हूं।
39 'मैं, स्वामी-प्रभु कहता हूँ: यदि तुम भी,
ओ इस्राएल के वंशजो, मेरी बात सुनना नहीं
चाहते, और मूर्ति-पूजा करना चाहते हो, तो
जाओ, और अपने-अपने गृह-देवता की मूर्ति
को गले लगाओ, उसकी पूजा करो! लेकिन
अपनी भेंटों और मूर्तियों द्वारा तुम मेरे पवित्र
नाम को अपवित्र नहीं कर पाओगे।

प्रभु परमेश्वर का पवित्र पर्वत

40 'स्वामी-प्रभु यों कहता है: इस्राएल के
सब वंशज अपने देश में, इस्राएल देश के उच्च
पहाड़ी शिखर पर, मेरे पवित्र पर्वत पर मेरी
आराधना करेंगे। वहां मैं उनकी सेवा-आराधना
को स्वीकार करूंगा। वहीं मैं तुम्हारी सब प्रकार
की बलि, सर्वोत्तम वस्तुएं, उपहार, तुम्हारी
पवित्र भेंट लूंगा। 41जब मैं राष्ट्रों के मध्य से
तुम्हें निकाल कर लाऊंगा, जिन देशों में तुम
बिखरे हुए हो, मैं वहां से तुम्हें एकत्र करूंगा,
तब मैं तुम्हें सुगन्धित धूप-द्रव्य के रूप में ग्रहण
करूंगा। मैं सब राष्ट्रों के सम्मुख स्वयं की
पवित्रता प्रकट करूंगा, जिसके द्वारा तुम्हें ज्ञात
होगा कि मैं पवित्र हूं। 42जब मैं तुम्हें इस्राएल
देश में लाऊंगा, जिस को देने की प्रतिज्ञा मैंने
तुम्हारे पूर्वजों से की थी, तब तुम्हें ज्ञात होगा
कि मैं ही प्रभु हूं। 43वहां तुम्हें स्मरण होगा कि
तुमने अपने आचरण और कार्यों से स्वयं को
भ्रष्ट किया था। तब तुम अपने आप से घृणा
करोगे कि तुमने ऐसे बुरे काम किए थे। 44ओ
इस्राएल के वंशजो, मैं तुम्हारे दुराचरण और बुरे
व्यवहार के अनुसार तुम्हें दण्ड नहीं दूंगा,
बल्कि अपने नाम के अनुरूप तुमसे दयापूर्ण
व्यवहार करूंगा। तब तुम्हें ज्ञात होगा कि मैं ही
प्रभु हूं।' स्वामी-प्रभु की यही वाणी है।
45 *प्रभु का यह सन्देश मुझे मिला। प्रभु ने
मुझसे कहा, 46'ओ मानव, तू अपना मुख
दक्षिण की ओर कर, और दक्षिणी प्रदेश के
विरुद्ध उपदेश दे तथा नेगेब-क्षेत्र की वन-भूमि
के विरुद्ध नबूवत कर। 47तू नेगेब-क्षेत्र में
रहनेवाले वनवासियों +से यह कह, ओ
वनवासियो, प्रभु का यह सन्देश सुनो: स्वामी-
प्रभु यों कहता है, देखो, मैं तुम्हारे वन में आग
लगानेवाला हूं। यह आग वन के प्रत्येक हरे
और सूखे वृक्ष को भस्म कर देगी। यह दावानल
कभी नहीं बुझेगा, और उसकी धधकती ज्वाला
से उत्तर से दक्षिण तक समस्त वन-प्रदेश झुलस
जाएगा। 48तब सब प्राणी जान लेंगे कि यह आग
मैं-प्रभु ने ही लगाई है, और यह कभी नहीं
बुझेगी।' 49मैंने कहा, 'हे स्वामी-प्रभु, ये लोग
कहते हैं कि मैं नए-नए दृष्टांत गढ़ता हूं।'

परमेश्वर की तलवार

21 **प्रभु का यह सन्देश मुझे मिला। प्रभु ने
मुझसे कहा, 2 'ओ मानव, तू अपना
मुख यरूशलेम की ओर कर, और पवित्र स्थानों
के विरुद्ध उपदेश दे। तू इस्राएल देश के विरुद्ध
नबूवत कर, 3और उससे यह कह, प्रभु यों
कहता है: देख, मैं तेरे विरुद्ध हूं, और मियान
से अपनी तलवार निकाल रहा हूं। मैं तेरे
धार्मिक व्यक्ति और दुर्जन दोनों को नष्ट
करूंगा। 4मैं मियान से तलवार निकालूंगा, और
दक्षिण से उत्तर तक सब प्राणियों का वध
करूंगा, चाहे वे धार्मिक हों और चाहे दुर्जन।
5तब सब प्राणियों को ज्ञात होगा कि मैं-प्रभु ने

* मूल में अध्याय 21 : 1 + अर्थात् यहूदा के निवासी। ** मूल में अध्याय 21 : 6

20 : 41 इफ 5 : 2; फिल 4 : 18 **20 : 43** यहेज 6 : 9; 36 : 31 **20 : 47** यिर 21 : 14 लू 23 : 31

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अपनी तलवार मियान से बाहर निकाली है। मैं
उसको फिर मियान में नहीं रखूंगा। 6इसलिए,
ओ मानव, तू आह भर! इस्राएल देश के
निवासियों के सामने तू अत्यन्त पश्चात्तापी
हृदय के साथ दु:ख मना। 7जब वे तुझ से पूछेंगे,
"आप क्यों दु:ख मना रहे हैं?" तब तू उनको
बताना, "समाचार के कारण; क्योंकि ऐसी
घटना घटनेवाली है जिसको देखकर सब लोगों
का हृदय कांप उठेगा, उनके हाथ सुन्न पड़
जाएंगे। वे भय से मूर्च्छित हो जाएंगे। वे अपने
पैरों पर खड़े न हो सकेंगे। देखो, महाविनाश
आ रहा है। यह विनाशकारी घटना अवश्य
घटेगी," स्वामी-प्रभु की यही वाणी है।'

खड्ग-गान

8प्रभु का यह सन्देश मुझे मिला। प्रभु ने मुझ
से कहा, 9'ओ मानव, तू नबूवत कर और यह
कह, प्रभु यों कहता है:

देखो, एक तलवार!
सान पर चढ़ाकर उसकी धार तेज की गई,
उसको चमकाया गया है।
10वह संहार करने के लिए तेज की गई,
बिजली की तरह चमकने के लिए
उसको चमकाया गया है।
यह सुन कर क्या हम हर्ष मनाएं?
नहीं! मेरे पुत्र,
तूने छड़ी की मार को तुच्छ समझा था,
तू सोंठी से घृणा करता था।**
11इसलिए तलवार को चमकाया गया
कि वह हाथ में पकड़ी जा सके।
वधिक के हाथ में देने के लिए
उसको तेज किया गया और चमकाया गया।
12ओ मानव, छाती पीटकर रो, और शोक मना;
क्योंकि मेरी तलवार
मेरे ही निज लोगों के विरुद्ध,
मियान से निकली है।
इस्राएल के समस्त उच्चाधिकारी भी
मेरे निज लोगों के साथ
तलवार से मौत के घाट उतारे जाएंगे।
इसलिए तू छाती पीट-पीटकर रो।
13यह परीक्षा का समय है।
यदि तू छड़ी की मार को तुच्छ समझे
तो उससे क्या?'
स्वामी-प्रभु की यही वाणी है।

14'ओ मानव, इसलिए नबूवत कर और
ताली बजा-बजाकर तलवार का प्रहार दोबारा
नहीं, तिबारा होने दे। यह तलवार उनके लिए
है जिनका वध होना है। यह महावध की
तलवार है। जो कोठरियों में छिप कर बैठे हैं,
वे भी इसकी मार से नहीं बच सकते। 15उन के
हृदय डर से कांप उठेंगे। वे प्रवेश-द्वारों पर
लड़खड़ाकर गिर पड़ेंगे; क्योंकि मैंने चमकीली
तलवार दी है। देखो, वह बिजली के सदृश
चमकीली है। मैंने महावध के लिए उसको
चमकाया है।

16'ओ मेरी तलवार, दुधारी बन,
और दाहिनी ओर प्रहार कर!
मियान से बाहर आ, और बाईं ओर प्रहार कर!
जिस ओर तेरी धार हो, उसी ओर वध कर।

17मैं भी ताली बजाऊंगा, और महावध से
अपना क्रोध शान्त करूंगा। मुझ-प्रभु की यही
वाणी है।'

बेबीलोन के राजा की तलवार

18मुझे प्रभु का सन्देश फिर मिला। प्रभु ने
मुझ से कहा, 19'ओ मानव, तू दो मार्ग का
मानचित्र बना, जहां से बेबीलोन के राजा की
तलवार आएगी। दोनों मार्गों का उद्गम स्थल
एक ही देश होगा। जहां से मार्ग नगर की ओर
शुरू होगा, वहां तू एक पथ-प्रदर्शक चिह्न
बनाना। 20फिर उस तलवार के आने के लिए
एक मार्ग बना: यह "अम्मोन देश के रब्बा
नगर" तक जाएगा; और दूसरा "यहूदा प्रदेश
के सुदृढ़ नगर यरूशलेम" तक जाएगा।
21बेबीलोन का राजा इन दोनों मार्गों के उद्गम
स्थल पर खड़ा है, और वह शकुन विचार रहा
है कि वह किस मार्ग पर जाए: वह तीरों को
हिलाता है; वह तराफीम गृह-देवताओं से

** मूल में, 'अस्पष्ट'

21 : 12 यिर 31 : 19

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पूछता है; वह कलेजे को देखता है। [22]उसके
दाहिने हाथ में यरूशलेम के नाम पर चिट्ठी
निकली है। वह मुंह खोल कर पुकारता है। वह
अत्यन्त उच्च स्वर में आदेश देता है कि प्रवेश-
द्वारों पर युद्ध-यंत्र लगाओ, दमदमा बान्धो,
और मोर्चाबन्दी करो। [23]लेकिन यरूशलेम के
निवासियों को यह शकुन झूठ प्रतीत हो रहा है।
उन्होंने तो गंभीर शपथ खाई है। किन्तु यह
उनका अधर्म स्मरण करा रहा है ताकि उनको
बन्दी बना ले!

[24]'ओ यरूशलेम-वासियो, स्वामी-प्रभु
यों कहता है: तुम्हारा अधर्म तुम्हें स्मरण हुआ,
तुम्हारे अपराध प्रकट हो गए; जो कुकर्म तुमने
किए हैं, उन पर से परदा हट गया। तुम्हें इन सब
का स्मरण हो गया, इसलिए तुम इन्हीं के द्वारा
बन्दी बनाए जाओगे।

[25]'और तू, ओ महा-अशुद्ध दुर्जन, इस्राएल
के शासक! तेरा अन्तकाल आ गया, तेरे अन्तिम
दण्ड का समय निकट आ गया। [26]स्वामी-प्रभु
यों कहता है: तू अपनी पगड़ी उतार दे। अपने
सिर से मुकुट अलग कर। तू पहले जैसा
अधिपति नहीं रहा। जो नीचा है, उसे ऊंचा कर;
और जो ऊंचा है, उसे नीचा। [27]मैं तेरे मुकुट को
नष्ट कर दूंगा, हां निस्सन्देह मैं उसको नष्ट कर
दूंगा। मैं उसका नामोनिशान मिटा दूंगा। हां,
जब उसका वास्तविक स्वामी आएगा तब मैं
वह उसको दे दूंगा।

अम्मोन देश का भविष्य

[28]'ओ मानव, तू अम्मोन देश के विरुद्ध
नबूवत कर। स्वामी-प्रभु अम्मोन के निवासियों
के सम्बन्ध में यह कहता है; क्योंकि उन्होंने प्रभु
की निन्दा की थी।

'महावध के लिए मियान से बाहर निकली
तलवार!
वह खूब चमचमा रही है!
वह बिजली के सदृश चमक रही है।
[29]वे तेरे कुशल-मंगल के लिए
झूठे दर्शन देखते हैं,
तेरे लिए झूठे शकुन विचारते हैं।
ओ तलवार, तू महा-अशुद्ध दुर्जनों की गर्दन
पर चल!
उनका अन्तकाल आ गया,
उनके अंतिम दण्ड का समय आ गया।
[30]अब तू मियान में लौट आ।
ओ अम्मोनी कौम! जिस स्थान पर तू बनाई
गई,
जिस देश में तेरी उत्पत्ति हुई,
उसी में मैं तेरा न्याय करूंगा, तुझे दण्ड दूंगा।
[31]मैं अपनी क्रोधाग्नि की वर्षा तुझ पर करूंगा,
मैं तुझे अपने क्रोध से भस्म कर दूंगा।
मैं तुझ को उन लोगों के हाथ में सौंप दूंगा,
जो खून करने में हिचकते नहीं,
जो हत्या करने वाले कुशल सैनिक हैं।
[32]तू आग का कौर बनेगी!
देश में तेरा खून बहाया जाएगा,
तेरा नामोनिशान मिट जाएगा,
और तुझे कोई स्मरण नहीं करेगा।
मुझ-प्रभु की यही वाणी है।'

यरूशलेम नगर हत्यारा है

22 प्रभु का यह सन्देश मुझे मिला। प्रभु ने
मुझ से कहा, [2]'ओ मानव, तू ही न्याय
कर। हत्यारे यरूशलेम नगर के अपराधों का तू
ही न्याय कर। उसने जो घृणित कार्य किए हैं,
उन सब को उसे बता। [3]तू उस से यह कहना,
स्वामी-प्रभु यों कहता है: ओ यरूशलेम, तू
अपने मध्य में हत्या-रक्तपात करता है, और यों
अपने विनाश को स्वयं निमंत्रण देता है। तू
मूर्तियां बनाता है, और यों स्वयं को अशुद्ध
करता है। [4]तूने हत्या का दुष्कर्म करके स्वयं को
दोषी सिद्ध किया है। तूने मूर्तियां बनाकर स्वयं
को अशुद्ध किया है। ओ यरूशलेम, तूने ये
कुकर्म किए और अपने अन्तकाल को समीप
बुलाया। तेरे विनाश का निर्धारित समय आ गया
है। मैंने इसीलिए सब राष्ट्रों की दृष्टि में तुझे
निन्दनीय बना दिया है। सब देश तेरा मजाक
उड़ाते हैं। [5]ओ बदनाम नगर! ओ अशान्त नगर!
जो देश तेरे निकट हैं, और जो तुझ से दूर हैं,
वे सब तेरी हंसी उड़ाएंगे।

21 : 22 यहेज 4 : 2 **21 : 27** उत 49 : 10 **21 : 28–32** यहेज 25 : 1–7; यिर 49 : 1–6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

6 'तेरे उच्चाधिकारी हत्या करने के लिए
सदा तत्पर रहते हैं। इस्राएल का हर एक
उच्चाधिकारी अपने बल के अनुसार हत्या
करता है। 7तेरे निवासी अपने माता-पिता का
आदर नहीं करते। तुझ में अस्थायी रूप से
प्रवास करनेवाले विदेशियों पर अत्याचार होता
है। अनाथ बच्चों और विधवाओं को न्याय नहीं
मिलता है। 8जो बातें मेरी दृष्टि में पवित्र हैं, तेरे
निवासी उनको तुच्छ समझते हैं। वे मेरे पवित्र
विश्राम-दिवस को अपवित्र करते हैं। 9तुझमें ऐसे
लोग निवास करते हैं, जो हत्या करने के लिए
दूसरों पर दोष लगाते हैं, जो पहाड़ी शिखर के
पूजास्थलों पर भोजन करते हैं और जो
व्यभिचार करते हैं। 10ओ यरूशलेम, तुझ में
ऐसे भी लोग रहते हैं, जो अपने पिता की स्त्री
के साथ संभोग करते हैं, जो ऋतुमति स्त्री के
साथ बलात् सहवास करते हैं। 11वे अपने पड़ोसी
की पत्नी के साथ कुकर्म करते हैं। तुझमें
रहनेवाले ऐसे भी ससुर हैं जो अपनी बहू पर
बलात्कार करते और यों उसका शील भ्रष्ट
करते हैं। कुछ भाई ऐसे भी हैं, जो अपनी
सौतेली बहिन से कुकर्म करते हैं।
12 'ओ यरूशलेम, तेरे निवासी, हत्या करने
के लिए घूस लेते हैं। वे ब्याज पर धन देते हैं,
और सूद खाते हैं। वे अपने पड़ोसियों का
शोषण करते हैं।
'ओ यरूशलेम, तूने मुझे भुला दिया है,'
स्वामी-प्रभु की यही वाणी है। 13'अन्याय और
शोषण से तूने जो धन कमाया है, तेरी चहारदीवारी
के मध्य जो रक्तपात बहाया गया है, उसके
कारण मेरी क्रोधाग्नि भड़क उठी है, और मैं
तुझ पर हाथ उठाऊंगा। 14जब मैं तेरे कुकर्मों के
अनुसार तेरा न्याय करूंगा, और तुझको दण्ड
दूंगा, तब क्या तू मेरे न्याय को सह सकेगा? क्या
तुझ में इतना साहस है? क्या तेरी भुजाओं में
इतना बल है कि मेरे प्रहार को झेल सके? जो
मैं करने जा रहा हूं, वह मै-प्रभु ने तुझसे कह
दिया, और मैं अपने निश्चय के अनुसार तुझे
दण्ड दूंगा।
15 'ओ यरूशलेम, मैं तेरे निवासियों को
विश्व के राष्ट्रों में बिखेर दूंगा। मैं उनको भिन्न-
भिन्न देशों में तितर-बितर कर दूंगा, और यों
मैं तेरी अशुद्धता को तुझ से दूर करूंगा। 16तू स्वयं
अपने कुकर्मों के कारण सब राष्ट्रों की दृष्टि में
अशुद्ध ठहरेगा। ओ यरूशलेम, तब तुझे मालूम
होगा कि मैं ही प्रभु हूँ।'

प्रभु की क्रोधाग्नि

17 प्रभु का यह सन्देश मुझे मिला। प्रभु ने
मुझ से कहा, 18 'ओ मानव, इस्राएल का वंश,
मेरी दृष्टि में धातु का मैल हो गया है। इस्राएल
के वंशज मानो चांदी, पीतल, रांगा, सीसा और
लोहा हैं, और उन पर मैल जम गया है। 19इस
कारण मैं स्वामी-प्रभु कहता हूँ: ओ इस्राएल
के वंशजो, तुम सब के सब धातु का मैल हो
गए हो, इसलिए मैं तुम्हें यरूशलेम नगर के
भीतर एकत्र करूंगा। 20जैसे सुनार चाँदी, पीतल,
लोहा, रांगा और सीसे का मैल साफ करने के
लिए उनको भट्टी में डालता है; धातु पिघलाने
के लिए वह धोंकनी से आग धधकाता है, उसी
प्रकार मैं अपनी क्रोधाग्नि तुम पर भड़काऊँगा,
और तुम्हें एकत्र करूंगा। मैं तुम्हें भट्टी में झोंक
दूंगा, और तुम्हें गला दूंगा। 21मैं तुम्हें एकत्र
करूंगा; और अपनी क्रोधाग्नि रूपी धोंकनी तुम
पर फूंकूंगा और तुम गल जाओगे। 22जैसे भट्ठी
में चांदी गल जाती है वैसे ही तुम भी उसके
अन्दर गल जाओगे। तब तुम्हें अनुभव होगा कि
मैंने, तुम्हारे प्रभु ने तुम पर अपनी क्रोधाग्नि की
वर्षा की है।'

सबने पाप किया है

23 प्रभु का यह सन्देश मुझे मिला। प्रभु ने
मुझ से कहा, 24 'ओ मानव, तू यरूशलेम से
यह कहः तू परती भूमि है, जिस पर वर्षा नहीं
हुई। प्रभु के कोप-दिवस पर तुझ पर वर्षा नहीं
हुई। 25तेरे उच्चाधिकारी दहाड़ते हुए सिंह हैं,
जो अपने शिकार को चीर-फाड़ रहे हैं। उन्होंने
मनुष्यों को खा लिया है। उन्होंने जनता के धन

22 : 7 नि 22 : 21-22 ; व्य 5 : 16 **22 : 8** लेव 19 : 30 **22 : 10** लेव 18 : 19 **22 : 12** व्य 16 : 19 ; नि 22 : 25 **22 : 20** मला 3 : 3 **22 : 25** सप 3 : 3

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और कीमती वस्तुओं को हड़प लिया है।
उन्होंने नगर में अनेक विवाहित स्त्रियों को
विधवा बना दिया है। 26ओ यरूशलेम, तेरे
पुरोहित मेरे नियम-विधियों का उल्लंघन करते
हैं। उन्होंने मेरी पवित्र वस्तुओं को अपवित्र
किया है। वे मुझ-प्रभु को अर्पित पवित्र वस्तु,
और जन-साधारण की वस्तु में कोई भेद नहीं
करते। उन्होंने लोगों को यह भी नहीं सिखाया
कि कौन-सी वस्तु मेरी दृष्टि में शुद्ध है, और
कौन-सी अशुद्ध। उन्होंने मेरे पवित्र विश्राम-
दिवस की उपेक्षा की है जिसके कारण मैं
अपवित्र समझा गया हूँ। 27सच तो यह है कि
तेरे उच्चाधिकारी भेड़िये हैं। वे भेड़ियों के
समान शिकार को चीरते-फाड़ते हैं, खून बहाते
हैं, अनुचित लाभ के लिए हत्या करते हैं।

28 'ओ यरूशलेम, तेरे नबी अपने लोगों के
लिए मानो झूठ पर सफेदी चढ़ाते हैं। वे झूठे
दर्शन देखते हैं, और उनके लिए मिथ्या सगुन
विचारते हैं। वे मेरे नाम से झूठ बोलते हैं, कि
मैं, स्वामी-प्रभु ने यह कहा है जब कि मैं उनसे
कुछ कहता भी नहीं हूँ।

29 'देश के साधारण-जन भी शोषण-
अन्याय करते और चोरी-डकैती करते हैं।
उन्होंने गरीबों और दीन-दरिद्रों पर अत्याचार
किया है। उन्होंने प्रवासियों को अन्यायपूर्वक
लूटा है। 30मैंने उनके मध्य में ऐसे मनुष्य की
तलाश की, जो मेरे और देश के बीच दीवार बन
कर खड़ा हो जाए, जो बाड़े को सुधारे, और मेरे
सामने ऐसा खड़ा हो कि मुझे देश का नाश न
करना पड़े। लेकिन सम्पूर्ण देश में मुझे एक भी
ऐसा मनुष्य नहीं मिला। 31अत: मैंने अपनी
क्रोधाग्नि उन पर उण्डेल दी। मैंने अपने क्रोध
की ज्वाला से उनको भस्म कर दिया। मैंने उनके
आचरण का प्रतिफल उन्हीं के सिर पर लौटा
दिया।' स्वामी-प्रभु की यही वाणी है।

दो व्यभिचारिणी बहिनें: यरूशलेम और सामरी

23 प्रभु का यह सन्देश मुझे मिला। प्रभु ने
मुझ से कहा, 2'ओ मानव, सुन: दो
स्त्रियाँ थीं। दोनों सगी बहिनें थीं। 3वे बचपन
से ही वेश्या का काम करती थीं। उन्होंने मिस्र
देश में वेश्यावृत्ति की थी। वहीं उनकी छातियाँ
दबाई गईं। वहीं उनके कुंवारे पेट पर हाथ फेरे
गए।

4 'बड़ी बहिन का नाम ओहोला* और
छोटी बहिन का नाम ओहोलीबा** था। मैंने उन
दोनों बहिनों को अपना लिया। उनके पुत्र-
पुत्रियाँ उत्पन्न हुए।

'ओहोला मानो सामरी नगर है, और
यरूशलेम ओहोलीबा है।

5 'जब ओहोला मेरी थी तब भी उसने
व्यभिचार-कर्म किया। वह अपने पड़ोसी
असीरियाओं पर जो उसके प्रेमी थे, मोहित हो
गई। 6ये बैंगनी पोशाक से सजे असीरियाई
योद्धा, राज्यपाल और सेनापति थे; सब सुन्दर
जवान थे, और घोड़ों पर सवारी करते थे।
7ओहोला ने उन सब सैनिकों के साथ व्यभिचार
किया। ये असीरिया देश के परमवीर सैनिक थे।
ओहोला उन पर मोहित हो गई, और उनकी
मूर्तियों से स्वयं को अशुद्ध कर लिया। 8जो
व्यभिचार-कर्म वह मिस्र देश में करती थी,
उसको उसने नहीं छोड़ा। बचपन में भी पुरुषों
ने उसके साथ सहवास किया था। उसकी
कुंआरी छातियों पर हाथ फेरे थे, और उसके
साथ सम्भोग कर अपनी कामाग्नि बुझाई थी।
9अत: मैंने उसको उसके प्रेमियों के हाथ में,
असीरियाई सैनिकों के हाथ में सौंप दिया, जिन
पर वह मोहित हुई थी। 10असीरियाई सैनिकों
ने उसको नग्न किया, और अन्त में तलवार से
उसका वध कर दिया। यह उसके कुकर्मों का
दण्ड था। इस न्याय-दण्ड के पश्चात् उसका
नाम स्त्रियों में कुख्यात हो गया। असीरियाई
सैनिकों ने उसके पुत्र-पुत्रियों को बन्दी बना
लिया।

11 'ओहोला की बहिन ओहोलीबा ने अपनी
बहिन का विनाश देखा, तो भी उसने मोहित
होकर अपनी बहिन से अधिक व्यभिचार

---

* अर्थात् 'तम्बूवाली ** अर्थात् 'जिसमें मेरा तम्बू है।'

22 : 26 लेव 10 : 10 22 : 28 यहेज 13 : 10 अध्याय 23 यहेज 16; यिर 3 : 6-13 23 : 3 यहेज 20 : 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

किया। वह अपनी बहिन से एक कदम आगे
बढ़ गई। 12वह असीरियाई राज्यपालों और
सेनापतियों पर, अस्त्र-शस्त्र से सज्जित योद्धाओं
और घुड़सवारों पर, मोहित हो गई। ये सब
सुन्दर जवान थे। 13मैंने देखा कि वह अशुद्ध हो
गई है। वस्तुत: दोनों बहिनों का आचरण एक-
जैसा था। 14किन्तु नहीं, ओहोलीबा ने व्यभिचार
कुकर्म में अपनी बहिन को पीछे छोड़ दिया।
उसने कसदी कौम के पुरुषों के चित्र देखे, जो
दीवार पर लालरंग से अंकित थे। 15पुरुषों की
कमर में फेंटा बन्धा था। उनके सिर पर पगड़ी
थी, जिसका छोर लहलहा रहा था। वे सब
पुरुष उच्चाधिकारी दिखाई दे रहे थे। ये चित्र
बेबीलोन के रहनेवालों के थे, जिनकी
मातृभूमि कसदी देश है।

16'ओहोलीबा ने उनको देखा और वह उन
पर मोहित हो गई। उसने बेबीलोन के पास
अपने दूत भेजे। 17बेबीलोन के लोग उसकी
प्रेम-शैया पर आए, और उसके साथ सम्भोग
कर उसको अशुद्ध किया। जब वह उनसे भ्रष्ट
हो गई तब उसका मन उनसे ऊब गया, और
उसने उनसे मुंह फेर लिया।

18'जब वह खुले-आम व्यभिचार करने
लगी, और अपना शरीर सब के सामने उघाड़ने
लगी, तब मैंने घृणा से उसकी ओर से मुंह फेरा,
जैसा मैंने उसकी बहिन से मुंह फेरा था। 19फिर
भी वह दिन-प्रतिदिन व्यभिचार करती रही।
वह अपने बचपन के दिन याद करती थी, जब
वह मिस्र देश में व्यभिचार करती थी। 20वहां
वह ऐसे प्रेमियों पर मोहित हुई थी, जिनके लिंग
गधों के समान, और वीर्य घोड़ों के समान था।

21'ओ ओहोलीबा, तू अपने बचपन के
व्यभिचार-कर्म की पुन: कामना करती थी,
जब मिस्र निवासी तेरे कुंवारे पेट पर हाथ फेरते
थे, जब वे तेरी कुंवारी छातियों को दबाते थे।

22'ओ ओहोलीबा, स्वामी-प्रभु यों कहता
है, तेरे प्रेमी तुझ से ऊब गए हैं। मैं इन्हीं प्रेमियों
को तेरे विरुद्ध उभाड़ूंगा और उनसे तुझ पर चारों
ओर से आक्रमण कराऊँगा। वे तुझ पर चढ़ाई
करेंगे: 23बेबीलोन के निवासी कसदी सैनिक,
पकोद, शो और कोआ कबीले के सैनिक और
उनके साथ सब असीरियाई सैनिक, आकर्षक
युवक, राज्यपाल, सेनापति, नायक और योद्धा।
ये सब घोड़ों पर सवार होंगे। 24ये रथों, छकड़ों
और विशाल जनसमूह के साथ उत्तरी दिशा से
तुझ पर हमला करेंगे। ये फरियां, ढालें और
शिरस्त्राण धारण किए हुए तेरे चारों ओर
मोर्चाबन्दी करेंगे। मैं उनके हाथ में न्याय-
निर्णय करने का दायित्व सौंपूंगा, और वे अपने
न्याय-सिद्धान्तों के अनुसार तेरा न्याय करेंगे।
25मैं तुझ पर अपना क्रोध प्रेषित करूंगा, ताकि
वे क्रोध में डूबकर तेरे साथ कठोरतम व्यवहार
करें। वे तेरे नाक-कान काट लेंगे और जो तेरे
नगरवासी बच जाएंगे उनको वे तलवार से मौत
के घाट उतार देंगे। वे तेरे पुत्र और पुत्रियों को
बन्दी बना लेंगे, और तेरे बचे हुए लोगों को
आग में झोक देंगे। 26वे तेरे वस्त्र उतार लेंगे और
तेरे कीमती गहने तुझ से छीन लेंगे। 27यों मैं तेरी
कामुकता और तेरे व्यभिचार-कर्म का अन्त
कर दूंगा, जो तूने मिस्र निवासियों से सीखे थे,
और वहां से उनको अपने साथ लाई थी। तब
तू मिस्र-निवासियों की ओर नहीं देखेगी, और
न फिर कभी उनका स्मरण करेगी। 28मैं स्वामी-
प्रभु यह कहता हूँ: ओ ओहोलीबा, तू जिन से
घृणा करती है, उन्हीं के हाथ में मैं तुझको सौंप
दूंगा। जिन लोगों से तू ऊब कर विमुख हो गई
थी, उन्हीं के अधिकार में मैं तुझ को कर दूंगा।
29वे तुझ से शत्रुता का व्यवहार करेंगे, तेरे
परिश्रम का फल तुझ से छीन लेंगे, और तेरे
वस्त्र उतारकर तुझको नग्न छोड़ जाएंगे। तेरे
नग्न किए जाने पर तेरे व्यभिचार का कुकर्म
प्रकट हो जाएगा। 30तेरे साथ क्यों ऐसा व्यवहार
किया जाएगा? क्योंकि तूने अन्य राष्ट्रों के साथ
व्यभिचार किया है, और उनकी मूर्तियों से स्वयं
को भ्रष्ट किया है। तेरी कामुकता और वेश्यावृति
के कारण ही तेरे साथ यह व्यवहार किया
जाएगा। 31तू अपनी बहिन के मार्ग पर चली,
अत: मैं उसका प्याला तेरे हाथ में दूंगा।

32 'सुन, मैं स्वामी-प्रभु यह कहता हूँ:
तू भी अपनी बहिन के प्याले में से

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मेरे कोप की मदिरा पियेगी;
यह प्याला गहिरा और चौड़ा है।
उसमें मेरे कोप की मदिरा
अपार मात्रा में समाई हुई है।
उसको पीने पर लोग तुझ पर हंसेंगे,
वे तेरा मजाक उड़ाएंगे।
33तू मतवालेपन में डूब जाएगी,
तू दु:ख से छक जाएगी।
तेरी बहिन सामरी का प्याला,
आतंक और विध्वंस का प्याला है!
34तू उसकी मदिरा पियेगी,
मदिरा की अन्तिम बूंद तक पियेगी
और मतवाली होकर
अपने सिर के बाल नोचेगी,
तू अपनी छातियों में नाखून गड़ाएगी।
देख, मैंने तुझ से कह दिया।' स्वामी-प्रभु
की यही वाणी है।

35 स्वामी-प्रभु यों कहता है, 'तूने मुझे भुला
दिया, अपना मुंह मुझ से फेर लिया, और
कीचड़ के समान मुझे फेंक दिया। अत: अब
तू अपनी कामुकता और व्यभिचार के कुकर्म
का फल भोग।'

ओहोला और ओहोलीबा को दण्ड

36 प्रभु ने मुझसे कहा, 'ओ मानव, तू
ओहोला और ओहोलीबा का न्याय कर, और
उसके पश्चात् उनके घृणित कर्म उन्हें बता।
37उन्होंने व्यभिचार का कुकर्म किया है:
उन्होंने मेरी आराधना न कर अन्य देवताओं की
पूजा की है, और उनको प्रसन्न करने के लिए
मुझसे उत्पन्न अपने पुत्रों की बलि चढ़ाई है।
उनके हाथों में खून लगा है। 38इतना ही नहीं,
उन्होंने मेरे साथ यह व्यवहार किया: उन्होंने
अपने पूजा-दिवस पर मेरे पवित्र स्थान को
अशुद्ध किया, और मेरे पवित्र विश्राम-दिवस
को अपवित्र। 39जिस दिन उन्होंने अपने देवताओं
की मूर्तियों के सामने अपने पुत्रों की बलि
चढ़ाई, उसी दिन वे मेरे पवित्र स्थान में आयीं,
और उसको अशुद्ध कर दिया। ओ मानव-पुत्र,
देख, उन्होंने मेरे भवन के भीतर क्या किया है।

40 'ओ ओहोलीबा, ओहोला के साथ तूने
दूर-दूर के पुरुषों को निमंत्रण देकर बुलाया।
तूने दूत भेजे, और वे आए। तूने उनके लिए
स्नान किया, आंखों में काजल भरा। तूने गहने
पहने और स्वयं को सजाया-संवारा। 41तू गाव-
तकिए के सहारे लेट गई। तेरे सामने एक मेज
थी, जिस पर तूने मेरा सुगन्धित धूप-द्रव्य और
पवित्र तेल रखा था। 42तेरे चारों ओर भोग-
विलास में मस्त लोगों की भीड़ मंडरा रही थी।
जन-साधारण के साथ भयंकर पियक्कड़ भी
थे, जिन को तूने निर्जन प्रदेश से बुलाया था।
उन्होंने तुझे और तेरी बहिन की कलाइयों में
चूड़ियाँ पहिनाईं और तेरे और तेरी बहिन के
सिर पर भव्य मुकुट रखे।

43 'मैंने सोचा: यह व्यभिचारिणी औरत है!
यह व्यभिचार करते-करते बुढ़ा गई। फिर भी
लोग इसके साथ व्यभिचार करते हैं। 44ये इसके
साथ सम्भोग करते हैं। जैसे पुरुष वेश्या के साथ
करते हैं ऐसे ही वे महापापिनी ओहोला और
ओहोलीबा के पास गए और उनसे सम्भोग
किया। 45अत: धार्मिक मनुष्य ओहोला और
ओहोलीबा का न्याय-निर्णय करेंगे, और जो
दण्ड व्यभिचारिणी स्त्रियों और हत्या करने
वाली स्त्रियों को दिया जाता है, वही दण्ड
उनको भी मिलेगा। निस्सन्देह ओहोला और
ओहोलीबा व्यभिचारिणी हैं। उनके हाथों में
खून लगा है।'

46 स्वामी-प्रभु यों कहता है, 'मैं ओहोला
और ओहोलीबा पर आक्रमण करने के लिए
एक विशाल भीड़ लाऊंगा। मैं दोनों बहिनों को
आतंक और लूट का शिकार बना दूंगा। 47भीड़
के लोग उनको पत्थर से मारेंगे, अपनी तलवार
से उनके टुकड़े-टुकड़े करेंगे। वे उनके पुत्र-
पुत्रियों का वध करेंगे, और उनके घरों में आग
लगा देंगे। 48इस प्रकार मैं देश में होनेवाले
व्यभिचार के कुकर्म का अन्त कर दूंगा। इससे
देश की सब स्त्रियां सावधान हो जाएंगी, और
वे तुम्हारे समान व्यभिचार न करेंगी और
कामुकता से बची रहेंगी। 49तुम्हारी कामुकता

---

23 : 34 भज 75 : 8 **23 : 45** यो 8 : 4-7

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

का फल तुम्हारे सिर पर पड़ेगा। तुम अपनी
पापपूर्ण मूर्तिपूजा का दण्ड भोगोगे। तब तुम्हें
मालूम होगा कि मैं ही स्वामी-प्रभु हूँ।''

हण्डे का दृष्टान्त

24 निष्कासन के नौवें वर्ष के दसवें महीने
की दसवीं तारीख को प्रभु का यह
सन्देश मुझे मिला। प्रभु ने मुझसे कहा, 2 'ओ
मानव, आज कौन-सा दिन है? आज के दिन
का नाम तू लिख; क्योंकि आज के दिन ही
बेबीलोन के राजा ने यरूशलेम नगर को घेर
लिया था। 3 तू इस्राएल के विद्रोही वंशजों को
यह दृष्टांत सुनाना। तू उनसे यह कहना, स्वामी-
प्रभु यों कहता है:

हण्डे को आग पर रखो, चूल्हे पर रखो;
और उसमें पानी उण्डेलो।
4-5 पशुशाला से मोटा ताजा पशु लो,
और हण्डे में मांस के सर्वोत्तम टुकड़े डालो:
जांघ और कंधे का गोश्त।
हण्डे में नरम हड्डियाँ भी भर दो।
हण्डे के नीच चूल्हे में लकड़ियों का ढेर
लगाओ और मांस को खूब उबालो,
यहां तक की हड्डियां भी पक जाएं।

6 'स्वामी-प्रभु यों कहता है:
यह नगरी मानो हण्डा है।
धिक्कार है इसको!
यह हत्या करने वाली नगरी है।
धिक्कार है इस हण्डे को!
इसमें जंग लगा है,
और यह जंग इससे छूटा नहीं है।
एक-एक टुकड़ा इसमें से निकाल लो,
चुनने की आवश्यकता नहीं।
7 जो हत्या इस नगरी ने की है,
उसका खून अब तक विद्यमान है।
उसने खून को रेत से ढांपने के लिए
भूमि पर नहीं उण्डेला है।
वरन् उसको नंगी चट्टान पर उण्डेला है।
8 इसलिए मैंने भी उसका खून,
जो खून उसने बहाया है,
नंगी चट्टान पर उण्डेला है, भूमि पर नहीं;
अन्यथा रेत उसको ढक लेती!
चट्टान पर उसका खून देखकर
मेरा क्रोध भड़केगा,
और मैं उससे प्रतिशोध लूंगा।'

9 स्वामी-प्रभु यों कहता है:
'धिक्कार है इस खूनी नगरी को,
इस हण्डे को!
मैं हण्डे की आग को और धधकाऊँगा।
10 चूल्हे में और लकड़ी डालो,
और आग धधकाओ।
मांस को और पकाओ, उसमें मसाला भूनो।
हड्डियों को भी गला दो।
11 उसके बाद हण्डे को खाली करो,
और खाली हण्डा अंगारों पर रखो
जिससे वह गर्म हो, उसका पीतल लाल हो
जाए,
उसका मैल पिघले,
और उसके अन्दर का जंग जल जाए।
12 चाहो तो तुम प्रयत्न करके देख लो,
मैं जंग न निकाल सका, और थक गया।
जंग की तह मोटी है, वह आग से भी नहीं छूटेगी।
13 ओ यरूशलेम नगरी!
यह जंग तेरी कामुकता है, जो गन्दा मैल है।
मैंने तुझसे यह अशुद्धता,
यह कामुकता छुड़वाने की
बार-बार कोशिश की;
पर मैं अपने प्रयत्न में सफल नहीं हुआ!
तू शुद्ध नहीं हुई।
अत: अब, जब तक मैं तुझे दण्ड देकर
अपना क्रोध शान्त न कर लूंगा,
तब तक तू शुद्ध न होगी।
14 देख, मैं-प्रभु ने यह कहा है,
और यह अवश्य पूरा होगा।
मैं अपने निश्चय को नहीं बदलूंगा।
मैं तुझ पर तरस खा कर
तुझे जीवित नहीं छोड़ूंगा,
और न ही अपने निश्चय के लिए

---

24 : 2 2 रा 25 : 1; यिर 39 : 1 **24 : 3** यहेज 11 : 3

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मैं पछताऊँगा।
ओ यरूशलेम नगरी,
तेरे आचरण और व्यवहार के अनुरूप
मैं तेरा न्याय करूंगा।’
स्वामी–प्रभु की यही वाणी है।

नबी यहेजकेल की पत्नी की मृत्यु

15 प्रभु का यह सन्देश भी मुझे मिला। प्रभु
ने मुझ से कहा, 16 ‘ओ मानव, मैं तेरी आंखों
का तारा, तेरी अत्यन्त कीमती वस्तु तुझ से
छीनने वाला हूँ। मैं अचानक यह करूंगा। सुन,
तू रोना मत; आंसू मत बहाना, और न शोक
मनाना। 17आहें भरना, किन्तु सुनाई न पड़े। तू
मृतक के लिए शोक मत मनाना। सिर पर पगड़ी
बाँधे रहना, और पैरों में जूती पहने रहना। ओंठों
को मत ढांपना; और न मृत जन की स्मृति के
लिए रोटी खानेवालों के समान रोटी खाना।’
18 मैंने सबेरे लोगों से बातें कीं और शाम
को मेरी पत्नी मर गई। दूसरे दिन सबेरे मैंने प्रभु
के आदेश के अनुसार ही काम किया, और
अपनी मृत पत्नी के लिए शोक नहीं मनाया।

पत्नी की मृत्यु का अर्थ

19 यह देखकर लोगों ने मुझसे पूछा, ‘आप
की पत्नी का अचानक देहान्त हो गया, किन्तु
आपने शोक नहीं मनाया। आपने ऐसा क्यों
किया? क्या आप हमें नहीं बताएंगे? क्या हमारे
लिए इस घटना का कोई विशेष अर्थ है?’
20 तब मैंने उनसे कहा, ‘प्रभु का यह सन्देश
मुझे मिला है। प्रभु ने मुझसे कहा, 21 “ओ मानव,
तू इस्राएल के वंशजों से यह कह, स्वामी–प्रभु
यों कहता है: मेरा पवित्र स्थान तुम्हारे लिए
अत्यन्त प्रिय है। वह तुम्हारी आंखों का तारा है।
तुम्हारा प्राण–प्रिय है। तुम उसके बल पर गर्व
करते हो। मैं अपने उस पवित्र स्थान को अशुद्ध
कर दूंगा। जिन पुत्र–पुत्रियों को तुम वहां छोड़
आए हो, वे शत्रु की तलवार से मौत के घाट
उतारे जाएंगे। 22और जैसा मैंने किया है वैसा
तुम भी करोगे: तुम ओंठों को नहीं ढांपोगे और
न अपने मृत जन की स्मृति में रोटी खाओगे।
23तुम्हारी पगड़ी तुम्हारे सिर पर रहेगी और पैरों
में जूती। तुम न शोक मनाओगे और न रोओगे।
तुम अपने अधर्म में घुलते जाओगे, और एक–
दूसरे की ओर देख–देखकर विलाप करोगे।
24इस प्रकार यहेजकेल तुम्हारे लिए एक
संकेत–चिह्न है: जैसा उसने अपनी पत्नी की
मृत्यु के पश्चात् किया, वैसा ही तुम अपने
पुत्र–पुत्रियों के लिए करोगे। जब यह घटना
घटेगी तब तुम्हें ज्ञात होगा कि मैं ही स्वामी–
प्रभु हूँ।”

यरूशलेम के पतन की खबर

25‘ओ मानव, वह दिन अवश्य आएगा,
जब मैं उनका गढ़, जो उनके हर्ष और गौरव
का प्रतीक है, उनका पवित्र स्थान जो उनकी
आंखों का तारा और प्राण–प्रिय है, और उनके
पुत्र–पुत्रियाँ छीन लूंगा। 26जिस दिन एक व्यक्ति
यरूशलेम से भाग कर तेरे पास आएगा, और
तुझे यरूशलेम के पतन की खबर देगा, 27उस
दिन तेरा मुंह खुल जाएगा। तू अब तक
यरूशलेम के सम्बन्ध में मौन था, पर अब तू
उस व्यक्ति से यरूशलेम के सम्बन्ध में पूछताछ
करेगा। इस प्रकार तू इस्राएल के वंशजों के
लिए एक संकेत–चिह्न है। तब उनको ज्ञात
होगा कि मैं ही प्रभु हूँ।’

अन्य राष्ट्रों के विरुद्ध नबूवतें

अम्मोन राष्ट्र के विरुद्ध

25 प्रभु का यह सन्देश मुझे मिला। प्रभु ने
मुझ से कहा, 2‘ओ मानव–सन्तान,
अम्मोन देश की ओर अपना मुख कर और वहां
के निवासियों के विरुद्ध नबूवत कर। 3तू उनसे
यह कह, “ओ अम्मोनियो, स्वामी–प्रभु का
सन्देश सुनो। जब मेरा पवित्र स्थान अशुद्ध
किया गया, जब इस्राएल देश उजाड़ा गया, जब
यहूदा के वंशज बन्दी हो कर अपने देश से
निष्कासित हुए, तब तुमने प्रसन्न होकर,
“अहा! हा!!” कहा था। अतः मैं स्वामी–प्रभु
यह कहता हूँ: 4देखो, मैं तुम्हें गुलाम बनाने के
लिए पूर्व देश के निवासियों के हाथ में सौंप रहा
हूँ। वे तुम्हारे देश में शिविर डालेंगे, और तुम्हारे
मध्य तम्बू गाड़ेंगे। वे तुम्हारे वृक्षों के फल

24 : 21 यिर 7 : 14 **24 : 24** यहेज 12 : 6 **24 : 27** यहेज 3 : 26 **25 : 1–7** यहेज 21 : 28–32

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

खाएंगे, और तुम्हारी गाय, भेड़, बकरियों का दूध पीएंगे। 5मैं तुम्हारे देश की राजधानी रब्बानगर को ऊँटों का चरागाह, और अन्य नगरों को भेड़शाला बना दूंगा। तब तुम्हें मालूम होगा कि मैं ही प्रभु हूँ। 6मैं स्वामी-प्रभु यों कहता हूँ: तुमने इस्राएल देश के विनाश पर आनन्द मनाया। तुम नाचे-कूदे। तुमने ताली बजाई, तुम्हारे हृदय में उसके प्रति घोर द्वेष था। उस द्वेष को तुमने आनन्द मनाकर प्रकट किया। 7इसलिए, मैंने तुमको दण्ड देने के लिए अपना हाथ उठाया है। मैं तुम्हें अन्य राष्ट्रों के हाथ में सौंप दूंगा, और वे तुम्हें लूट लेंगे। जिन देशों और राष्ट्रों में तुम रहते हो, वहाँ से मैं तुम्हें निकाल दूंगा, और तुम्हारा नामोनिशान मिटा डालूंगा। ओ अम्मोनियो, मैं तुम्हें पूर्णत: नष्ट कर दूंगा। तब तुम्हें मालूम होगा कि मैं ही प्रभु हूं।

मोआब एवं एदोम के विरुद्ध नबूवत

8 'स्वामी-प्रभु यों कहता है: मोआब देश के निवासियों ने कहा है कि यहूदा के वंशज अन्य जातियों के समान ही हैं। उनको भी अन्य राष्ट्रों के समान दण्ड मिला है। 9इसलिए, मैं मोआबियों को दण्ड दूंगा। मैं उनके देश के किनारे का भाग शत्रुओं के लिए खोल दूंगा। ये नगर उनके देश के गौरव हैं: बेत-यशीमोत, बअलमोन और किर्यातईम। मैं इन नगरों की सीमा शत्रुओं के लिए खोल दूंगा। 10मैं अम्मोन देश के साथ ही साथ मोआब देश को पूर्व देश के निवासियों के हाथ में सौंप दूंगा, और वे उस पर अधिकार कर लेंगे। अन्य राष्ट्रों में अम्मोनी और मोआबी राष्ट्रों का स्मरण तक न किया जाएगा। 11इस प्रकार मैं मोआब को दण्ड दूंगा। तब उन्हें मालूम होगा कि मैं ही प्रभु हूँ।

12'स्वामी-प्रभु यों कहता है: एदोमी राष्ट्र ने यहूदा के वंशजों से प्रतिशोध लिया है, और यों प्रतिशोध लेकर उसने गंभीर अपराध किया है। 13इसलिए स्वामी-प्रभु यों कहता है, मैं एदोम को दण्ड देने के लिए उस पर अपना हाथ उठाऊंगा, और उसके मनुष्य और पशु दोनों को नष्ट कर दूंगा। मैं उस को उजाड़ दूंगा। तेमान नगर से ददान नगर तक वे तलवार से मौत के घाट उतारे जाएंगे। 14मैं प्रतिशोध लेने का अधिकार इस्राएलियों को दूंगा, और वे मेरी क्रोधाग्नि और प्रकोप के अनुसार एदोम से बदला लेंगे। तब एदोम के निवासियों को मालूम होगा कि मैं प्रतिशोध लेता हूँ। स्वामी-प्रभु की यही वाणी है।

पलिश्तीन के विरुद्ध नबूवत

15'स्वामी-प्रभु यों कहता है: पलिश्तियों के हृदय में इस्राएल के वंशजों के प्रति युग-युग से शत्रुता की भावना है। इसलिए उन्होंने शत्रुता और द्वेष की भावना से इस्राएलियों से प्रतिशोध लिया, और उनको नष्ट कर दिया। 16अत: मैं स्वामी-प्रभु यह कहता हूँ: मैं पलिश्तियों को दण्ड देने के लिए अपना हाथ उठाऊंगा। मैं करेती जाति तथा समुद्र तट के शेष सब राष्ट्रों को नष्ट कर दूंगा। 17मैं उन्हें महादण्ड दूंगा। क्रोध के साथ मैं उनसे बदला लूंगा, तब उन्हें मालूम होगा कि मैं ही प्रभु हूं।

सोर नगर के विरुद्ध नबूवत

26 निष्कासन के ग्यारहवें वर्ष के पहिले महीने की पहली तारीख को प्रभु का यह सन्देश मुझे मिला। प्रभु ने मुझसे कहा, 2'ओ मानव, सोर नगर ने यरूशलेम नगर का मजाक उड़ाया है। उसने यह कहा है, ''राष्ट्र-द्वार टूट गया! वह मेरे लिए खुल गया है। यरूशलेम नगर उजड़ गया। उसके विनाश से अब मैं फूलूंगा-फलूंगा।'' 3इस कारण स्वामी-प्रभु यों कहता है: ओ सोर नगर-राज्य! मैं तेरे विरुद्ध हूँ। जैसे सागर में अनंत लहरें उठती हैं, वैसे ही मैं तुझ पर अनेक शत्रु-राष्ट्रों से आक्रमण कराऊंगा। 4वे तेरी शहरपनाह को तोड़ देंगे, और तेरी मीनारों को भूमि पर गिरा देंगे। मैं तेरी मिट्टी को खुरचकर तुझे मानो नंगी चट्टान बना दूंगा। 5तू समुद्र के मध्य में स्थित ऐसा टापू बन जाएगा जहाँ मछुए अपने जाल सुखाने के लिए जाल फैलाएंगे। देख, मैं, स्वामी-प्रभु, तुझ से कह चुका हूँ। मैं अपने निश्चय को अवश्य पूरा

---

25 : 8-11 यश 15-16 25 : 12-14 यश 34 25 : 15-17 यश 14 : 29-31 26 : 1-28 : 19 यश 23

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

करूंगा। तुझे राष्ट्र लूट लेंगे। 6मुख्य भूमि पर तेरे
नगर-निवासी तलवार से मौत के घाट उतार
दिए जाएंगे। तब तुझे और तेरे निवासियों को
मालूम होगा कि मैं ही प्रभु हूँ।

राजा नबूकदनेस्सर सोर को नष्ट करेगा

7 'स्वामी-प्रभु यों कहता है: देख, मैं उत्तर
दिशा से बेबीलोन के राजा, राजाधिराज
नबूकदनेस्सर द्वारा तुझ पर आक्रमण कराऊँगा।
उसके साथ असंख्य सैनिक और घुड़सवार
होंगे। इनके अतिरिक्त घोड़े और रथ होंगे।
8वह तेरे भूमि-तट के निवासियों को तलवार
से मौत के घाट उतार देंगे। वह तेरे विरुद्ध
मोर्चाबन्दी करेगा, दमदमा बांधेगा, और ढालों
की छत खड़ी करेगा। 9वह तेरी शहरपनाह को
तोड़ने के लिए दीवार तोड़नेवाला यन्त्र लगाएगा।
वह तेरी लकड़ी की मीनारों को फरसों से ढाह
देगा। 10उसकी सेना में इतने घोड़े होंगे कि
उनकी टापों से उड़ी धूल से तेरा सम्पूर्ण नगर
ढक जाएगा। जब बेबीलोन का राजा तेरे नगर
के प्रवेश-द्वारों से प्रवेश करेगा, जैसे नाकेवाले
नगर में दरार करते-करते प्रवेश किया जाता है,
तब तेरी शहरपनाह उसके घुड़सवारों, छकड़ों
और रथों की आवाज से कांप उठेगी। 11वह अपने
घोड़ों की टापों से तेरी सब सड़कों को रौंद
डालेगा। वह तेरे नगर-निवासियों को तलवार
से मौत के घाट उतार देगा। तेरे विशाल खम्भों
को वह भूमि पर गिरा देगा। 12उसके सैनिक
तेरी धन-सम्पत्ति को लूट लेंगे। वे तेरे व्यापार
की वस्तुओं को छीन लेंगे। वे तेरी शहरपनाह
को ढाह देंगे, और तेरे भव्य और सुन्दर मकानों
को खण्डहर बना देंगे। वे तेरे पत्थरों, लकड़ियों
और मलवों का ढेर समुद्र में फेंक देंगे। 13ओ
सोर नगर, मैं तेरा संगीत-गान बन्द कर दूंगा।
तेरे सितार-वीणा की ध्वनि नगर में फिर कभी
न सुनाई देगी। 14मैं तुझे नंगी चट्टान बना दूंगा।
तू समुद्र-तट का ऐसा नगर बन जाएगा, जहाँ
मछुए अपने जाल फैलाकर सुखाएंगे। तू फिर
कभी आबाद नहीं होगा, और सदा खण्डहर
बना रहेगा। देख, मैं-प्रभु ने तुझ से यह कहा
है।' स्वामी-प्रभु की यही वाणी है।

समुद्र-तट के सामन्तों का शोकगीत

15 'स्वामी-प्रभु सोर नगर-राज्य से यों
कहता है: जब तेरा पतन होगा, जब तेरे नगर-
निवासी तलवार से मौत के घाट उतारे जाएंगे,
जब घायल कराहेंगे, तब क्या समुद्र-तट के देश
डर से नहीं कांप उठेंगे? 16समुद्र-तटीय देशों
के सामंत अपने सिंहासन से नीचे उतरेंगे। वे
अपनी राजकीय पोशाक और कसीदा कढ़े
वस्त्र उतार देंगे। वे डरते और थरथराते हुए
शोकवस्त्र पहिनेंगे, और भूमि पर बैठेंगे। वे हर
पल कांपते रहेंगे, और तेरे पतन पर आश्चर्य-
चकित होंगे। 17वे तेरे विषय में शोक-गीत
रचेंगे, और वे तुझसे यह कहेंगे:

ओ विख्यात महानगर!
महा सागर के तट से तू लोप हो गया!
समुद्र पर तेरा और तेरे निवासियों का
एकछत्र अधिकार था।
तेरे निवासियों के आतंक से
भूमि-तट के निवासी कांप उठते थे।
18तेरे पतन के दिन पर
समुद्र के द्वीप कांप उठे।
तेरा अन्त देखकर द्वीप स्तब्ध रह गए!

सोर नगर प्राचीन युग का खण्डहर बनेगा

19 'स्वामी-प्रभु यों कहता है: ओ सोर
नगर, जब मैं निर्जन नगरों के समान तुझ को
उजाड़ दूंगा, जब मैं तुझे अतल गहरे सागर में
डुबो दूंगा, और समुद्र की लहरें तुझे अपने में
समा लेंगी 20तब मैं अधोलोक के जानेवालों के
समान तुझको भी गड्ढे में फेंक दूंगा। मैं तुझे
प्राचीन युग के लोगों के पास उतार दूंगा। ओ
सोर नगर, मैं प्राचीन काल के उजड़े हुए
खण्डहरों के समान तुझे एक खण्डहर नगर बना
दूंगा। तू अधोलोक में निवास करेगा। तू कभी
आबाद नहीं होगा, और तेरी गणना फिर कभी
जीवलोक में नहीं की जाएगी। 21तेरा अन्त
भयानक होगा, तेरा अस्तित्व ही समाप्त हो
जाएगा। ढूंढ़ने पर भी तेरा पता न लगेगा।'
स्वामी-प्रभु की यही वाणी है।

---

26 : 13 प्रक 18 : 22 **26 : 17** प्रक 18 : 9

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सोर नगर का शोक-गीत

27 प्रभु का यह सन्देश मुझे मिला। प्रभु ने
मुझसे कहा, 2 'ओ मानव, सोर नगर के
विषय में एक शोक-गीत रच, 3और उस से
कहः ओ सोर, तू समुद्र के प्रवेश-द्वार पर स्थित
है। समुद्रतटीय देशों से तेरा व्यापारिक सम्बन्ध
है। स्वामी-प्रभु तुझसे यों कहता हैः
'ओ सोर, तूने यह कहा है, कि
तू सर्वांग सुन्दर है।
4 तेरे नगर की सीमाएं समुद्र के मध्य में हैं।
मानो तू जलयान हैः
तेरे बनानेवालों ने
तुझे सर्वांग सुन्दर बनाया है।
5 तेरे तख्ते सनौवर की लकड़ी के हैं,
जो सनीर पहाड़ पर होती है।
तेरे कारीगरों ने तेरे मस्तूल
लबानोन पहाड़ के देवदार की लकड़ी से
बनाए हैं।
6 और तेरी पतवारें?
वे बाशान प्रदेश के बांज वृक्षों की लकड़ी से
बनाई गयी हैं।
तेरे पटरे के लिए
कुप्रुस द्वीप की चीड़ की लकड़ी प्रयुक्त की
गई,
और इन पटरों पर हाथीदांत जड़ा गया।
7 तेरा पाल मिस्र देश के महीन सूती-वस्त्र का
है,
जिस पर कसीदा कढ़ा है।
तेरा पाल तेरी ध्वजा भी है।
तेरे बनानेवालों ने तेरा चंदोवा
एलीशा द्वीप के कीमती नीले बैंगनी वस्त्र से
बनाया है।
8 सीदोन और अर्वद नगरों के रहनेवाले तेरे
मांझी हैं।
तेरे नाविक सेमेर जाति के निपुण कारीगर हैं
जो तुझ में प्रवास करते हैं।
9 तेरी मरम्मत करनेवाले कारीगर
गेबेल नगर के बुद्धिमान और अनुभवी लोग
हैं।
तुझ से व्यापार करने के लिए समुद्र के सब
जहाज
अपने सब नाविकों के साथ तेरे पास आते हैं।

सोर के सैनिक

10 'ओ सोर, तेरी सेना में
फारस, लूद और पूत देशों के सैनिक
युद्ध के लिए भरती हुए थे।
तेरी दीवारों से
उनके शिरस्त्राण और ढाल लटकते थे।
उनकी वीरता से तेरा प्रताप बढ़ा था।
11 तेरी शहरपनाह की चौकसी
अर्वद नगर के सैनिक करते थे,
जो तेरी सेना में भरती हुए थे।
गम्मद नगर के निवासी भी तेरी सेवा में थे
जो तेरी मीनारों में पहरा देते थे।
तेरी दीवारों से
उनके शिरस्त्राण और ढाल लटकते थे।
उनके कारण तेरा सौन्दर्य परिपूर्ण हुआ था।

सोर के व्यापार के केन्द्र

12 'ओ सोर नगर-राज्य! तू अत्यन्त धन-
सम्पन्न था, इसलिए तर्शीश देश के व्यापारी तुझ
से व्यापार करते थे। वे चांदी, लोहा, रांगा और
सीसा दे कर तेरा माल मोल लेते थे।
13 यावान, तूबल और मेशेक देश के
व्यापारी भी तेरे साथ व्यापार करते थे। वे तेरे
माल के बदले में तुझ को गुलाम और पीतल
के बर्तन देते थे। 14बेत-तोगर्मा के रहने वाले
भी तेरे साथ व्यापार करते थे। वे तेरे माल के
बदले में तुझको युद्ध के घोड़े, सवारी के घोड़े
और खच्चर देते थे। 15ददान नगर के व्यापारी
भी तेरे साथ व्यापार करते थे। अनेक समुद्र-
तटीय देश तेरे व्यापार की मण्डी थे। तू उनसे
अपने माल के बदले में हाथी-दांत और
आबनूस की लकड़ी लेता था। 16तेरे नगर-राज्य
में अनेक प्रकार की वस्तुओं का बहुत उत्पादन
होता था। इसलिए एदोम देश भी तेरे साथ
व्यापार करता था। एदोम देश के व्यापारी तेरे
माल के बदले में तुझ को ये वस्तुएं देते थेः
मरकत मणि, बैंजनी रंग के बढ़िया कपड़े,

27 : 13 प्रक 18 : 13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

परदा जिस पर कसीदा कढ़ा होता था, महीन
सूती वस्त्र, मूंगा और गोमेद मणि। [17]यहूदा और
इस्राएल प्रदेश भी तेरे माल के खरीददार थे। वे
तेरे माल के बदले में तुझ को जैतून, प्रथम
फसल के अंजीर, गेहूं, शहद, तेल और मरहम
देते थे। [18]तू हर प्रकार के माल से अत्यन्त
समृद्ध था। तेरे पास व्यापार के लिए बहुत
वस्तुएं थीं। इसलिए दमिश्क नगर के व्यापारी
भी तुझ से व्यापार करते थे। वे तुझ को हेलबोन
नगर की शराब और सफेद ऊन, [19]और ऊजल
नगर की विख्यात शराब देते थे। वे तेरे माल के
बदले में इस्पात, तेजपात और अगर देते थे।
[20]ददान नगर के व्यापारी तुझसे घोड़ों की काठी
के लिए जीन के कपड़े का व्यापार करते थे।
[21]अरब के व्यापारी और केदार के शेख-सामंत
तेरे माल के बदले में तुझ को मेमने, मेढ़े और
बकरे देते थे। वे पशुओं के लेन-देन में तेरे मुख्य
व्यापारी थे। [22]शबा और रामाह नगर के व्यापारी
भी तेरे साथ व्यापार करते थे। वे तेरी वस्तुओं
के बदले में तुझ को अपने देश का सर्वोत्तम
मसाला, अनेक प्रकार की मणि-माणिक्य और
सोना देते थे। [23]हारान, कन्ने, अदन, शबा,
असीरिया और किलमद राष्ट्र भी तेरे साथ
व्यापार करते थे। [24]वे तेरे माल के बदले में तुझ
को यह माल देते थे: बढ़िया कपड़े, नीले रंग
के वस्त्र, परदा जिस पर कसीदा कढ़ा होता था,
बटी हुई रस्सियों से बंधे रंगीन गलीचे। वे तेरे
बाजार में ये ही वस्तुएं बेचते थे। [25]तर्शीश के
जलयान तेरे माल को लेकर भिन्न-भिन्न देश
जाते थे।

जलयान रूपी सोर का विनाश

'तू समुद्र के मध्य एक जलयान था,
और तू माल-असबाब से भरा था,
उसके बोझ से लदा था।
[26]तेरे मांझी तुझे गहरे सागर में ले गए।
तभी पूरवी पवन बहा, और उसने तुझको
सागर के मध्य में डुबो दिया।
[27]तेरी धन-सम्पत्ति, तेरा माल-असबाब,
तेरी व्यापारिक सामग्री, तेरे नाविक, तेरे
मांझी,
जलयान की मरम्मत करनेवाले कारीगार,
तेरे व्यापारी, तेरे सब सैनिक,
तेरा सम्पूर्ण जन समूह, जो तुझ में था,
वह तेरे विनाश के दिन
समुद्र के गर्भ में समा गया।
[28]तेरे मांझियों और मल्लाहों की चीख-पुकार
से आस-पास के इलाके* कांप उठे।
[29]वे जलयान की डोंगियों से
समुद्र में उतर पड़े,
और समुद्र के तट पर खड़े हो गए।
[30]वे तुझको जल में डूबता हुआ देख
जोर-जोर से चिल्ला रहे हैं;
वे फूट-फूटकर रो रहे हैं।
वे शोक प्रकट कर रो रहे हैं।
वे अपने सिर पर धूल डाल रहे हैं,
और राख में लोट रहे हैं।
[31]उन्होंने तेरे विनाश के कारण
अपना सिर मुंड़ा लिया है;
और मृत्यु-शोक प्रकट करने के लिए
कमर में टाट का वस्त्र पहिना है।
वे शोक-संतप्त हृदय से
तेरे लिए रो रहे हैं;
वे छाती पीट-पीटकर शोक मना रहे हैं।
[32]उन्होंने तेरे प्रति अपना शोक प्रकट करने के
लिए
तुझ पर एक शोक-गीत रचा है।
वे यह शोक-गीत गा रहे हैं:
"सोर के सदृश समुद्र के मध्य में
और किसका विनाश हुआ है?
[33]समुद्र के जलमार्ग से
देश-विदेश की सामग्री तेरे पास आती थी,
तू अनेक जातियों-राष्ट्रों को तृप्त करता था।
तेरे प्रचुर माल और धन से
पृथ्वी के अनेक राजा अत्यन्त समृद्ध हो गए
थे।
[34]अब तू समुद्र के मध्य में डूब गया,

* मूल में अस्पष्ट
27 : 29 प्रक 18 : 17

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सागर की अतल गहराइयों में समा गया।
तेरा माल-असबाव और तेरे सब नाविक तेरे
साथ डूब गए।
35समुद्र-तटीय देशों के निवासी
तेरा विनाश देखकर
आतंक से स्तम्भित हो गए।
उनके राजाओं के डर से रोएं खड़े हो गए।
उनके मुख भय से सफेद पड़ गए।
36विश्व की अन्य जातियों के व्यापारी
तुझ पर ताना मार रहे हैं।
ओ सोर, भयानक रूप से तेरा अन्त हुआ;
अब तेरा कभी पुनर्निर्माण नहीं होगा।'' '

सोर के राजा के विरुद्ध नबूवत

28 प्रभु का यह सन्देश मुझे मिला। प्रभु ने
मुझसे कहा, 2 'ओ मानव-सन्तान, तू
सोर नगर-राज्य के शासक से यों कह: स्वामी-
प्रभु यों कहता है:
''तेरा हृदय अहंकार से भरा है।
तू कहता है कि तू ईश्वर है,
और समुद्र के मध्य में,
देवताओं के दरबार में
उच्चासन पर बैठता है।
नहीं, तू ईश्वर नहीं, बल्कि केवल मनुष्य है।
तू अपने को ईश्वर के सदृश
बुद्धिमान समझता है।
3 निस्सन्देह तू दानिएल से अधिक बुद्धिमान है।
कोई भी रहस्य तुझसे छिपा नहीं है।
4 तूने अपनी समझ और बुद्धि से
अपने लिए अपार धन-सम्पत्ति एकत्र की है;
अपने खजाने में
सोनो-चांदी का ढेर लगा लिया है।
5 तू बुद्धिमान व्यापारी है;
तूने व्यापार से अपनी धन-सम्पत्ति बढ़ाई है।
इस धन-सम्पत्ति के कारण
तेरा हृदय घमण्ड से फूल उठा है।
6 अत: स्वामी-प्रभु यों कहता है:
तू अपने को ईश्वर के समान बुद्धिमान
समझता है;
7 इसलिए मैं तुझ पर एक ऐसे विदेशी राष्ट्र से
आक्रमण कराऊंगा,
जो विश्व के सब राष्ट्रों में
सब से अधिक निर्दयी है।
उसके सैनिक तेरी बुद्धि के सौन्दर्य को, तेरे
देश की शोभा को
तहस-नहस करने के लिए तलवार चलाएंगे।
8 वे तुझे मौत के गड्ढे में फेंक देंगे;
वे तलवार से तेरा वध करेंगे,
और तेरा शव समुद्र के मध्य में पड़ा होगा।
9 ओ सोर नगर-राज्य के शासक,
क्या तू अपने वधिकों के सामने दावा करेगा
कि तू ईश्वर है?
नहीं, जब तू अपने हत्यारों के हाथ में पड़
जाएगा,
तब उनकी दृष्टि में ईश्वर नहीं, वरन् मनुष्य
ठहरेगा।
10तू विदेशी सैनिकों के हाथ से
बेख़तना मनुष्य के समान
घृणित मौत से मरेगा।
देख, मैंने तुझ से यह कह दिया,
और मैं अपने वचन को अवश्य पूरा
करूंगा।'''
स्वामी-प्रभु की यही वाणी है।

सोर नगर के राजा के लिए शोक-गीत

11 फिर प्रभु का यह सन्देश मुझे मिला। प्रभु
ने मुझसे कहा, 12 'ओ मानव, तू सोर नगर के
राजा के लिए एक शोक-गीत लिख, और
उसको सुना। तू उससे कहना, स्वामी-प्रभु यों
कहता है:
''तू सिद्ध राजा का प्रतीक था।
तू बुद्धि से परिपूर्ण था। तू सर्वांग सुन्दर था।
13तू मानो परमेश्वर के उद्यान
अदन में रहता था।
तू मणि-मुक्ताओं से जड़े वस्त्र पहिनता था:
माणिक, पद्मराग, हीरा,
फिरोजा, सुलेमानी मणि,
यशब, नील-मणि, मरकत, और लाल-मणि।

---

28 : 2 उत 3 : 5; दान 11 : 36; 2 थिस 2 : 4 प्रक 13 : 5 28 : 3 यहेज 14 : 14 28 : 9 यश 31 : 3 28 : 13 उत 3 : 23-24

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तेरे आभूषण और तेरी पोशाक सोने से मढ़ी
थी।
जिस दिन तेरा जन्म हुआ
उसी दिन वे भी तैयार किए गए।
14मैंने तेरी सुरक्षा के लिए
एक प्रकाशवान* करूब दूत नियुक्त किया था।
तू परमेश्वर के 'पवित्र पर्वत' पर निवास
करता था।
तू अग्नि के सदृश चमकनेवाले मणियों के
मध्य घूमता-फिरता था।
15तेरा आचरण तेरे जन्म के दिन से
उस दिन तक निर्दोष था,
जब तक तेरे जीवन में
अधर्म का प्रवेश नहीं हुआ।
16जब तेरा व्यापार बढ़ा,
तब तुझ में हिंसावृत्ति भर गई,
और तू पाप करने लगा।
मैंने तुझको अपवित्र प्राणी के सदृश
परमेश्वर के पर्वत से हटा दिया।
तेरे अंगरक्षक करूब ने भी
अग्नि सदृश चमकनेवाली मणियों के मध्य
से तुझ को निकाल दिया।
17तुझे अपने रूप का घमण्ड था;
तूने अपने वैभव के कारण
अपनी बुद्धि भ्रष्ट कर ली थी।
अत: मैंने तुझको
तेरे उच्चासन से उतार कर
भूमि पर पटक दिया।
मैंने तुझे राजाओं के सामने रखा
कि वे तुझे देखें, और तेरा मजाक उड़ाएं।
18तूने लेन-देन और व्यापार में
धोखा-धड़ी की थी,
और अधर्म के कामों को दोगुना-चौगुना
बढ़ा दिया था।
धोखा-धड़ी और अधर्म के कामों के कारण
तूने अपने पवित्र स्थान को अपवित्र कर दिया।
अत: मैंने तेरे मध्य में
विद्रोह की आग भड़कायी,
जिसने तुझको भस्म कर दिया।
तेरे सब दर्शकों के सामने
मैंने तुझको भूमि पर राख कर दिया।
19तेरे परिचित राष्ट्र
तुझे देखकर आतंक से व्याकुल हो उठे।
तेरा भयानक अन्त हुआ।
तू सदा के लिए लुप्त हो गया।'' '

सीदोन नगर-राज्य के विरुद्ध नबूवत

20 प्रभु का यह सन्देश मुझे मिला। प्रभु ने
मुझ से कहा, 21'ओ मानव, अपना मुख सीदोन
नगर-राज्य की ओर कर, और उसके विरुद्ध
नबूवत कर। 22तू उससे बोल, स्वामी-प्रभु यों
कहता है:
''ओ सीदोन, देख, मैं तुझसे विमुख हूँ।
मैं तेरे मध्य में
अपने सामर्थ्यपूर्ण कार्य करूंगा,
और यों अपनी महिमा प्रकट करूंगा।
जब मैं तेरे अधर्म के लिए
तुझे दण्ड दूंगा,
जब मैं तुझ में अपनी पवित्रता प्रकट करूंगा;
तब तुझे ज्ञात होगा कि
मैं ही प्रभु हूं।
23ओ सीदोन, देख,
मैं तुझ पर महामारी भेज रहा हूं।
मैं तेरे शत्रु के माध्यम से
तेरे गली-कूचों में रक्त बहाऊंगा।
तेरी सड़कों पर शवों का ढेर लग जाएगा।
चारों दिशाओं से तेरे लोगों पर
शत्रु की तलवार चलेगी।
तब उनको मालूम होगा कि
मैं ही प्रभु हूं।''

इस्राएल के वंशज पुनः प्रतिष्ठित होंगे

24 'इस्राएल राष्ट्र के चारों ओर बसनेवाली
कौमें उसके लिए मानो चुभनेवाला कांटा थीं,
बेधनेवाला शूल थीं। इस्राएलियों के ये पड़ोसी
उनके साथ बुरा व्यवहार करते थे। किन्तु अब
वे ऐसा नहीं करेंगे। तब इस्राएलियों को ज्ञात
होगा कि मैं ही स्वामी-प्रभु हूं।

* अथवा, 'अभिषिक्त'

28 : 20-26 योए 3 : 4-8; जक 9 : 2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

25 'स्वामी-प्रभु यों कहता है: जिन देशों
और कौमों में इस्राएली बिखरे हुए हैं, जब मैं
उनको वहां से इकट्ठा करूंगा और सब
जातियों के सम्मुख उनमें अपनी पवित्रता प्रकट
करूंगा, तब इस्राएली अपने उस देश में पुन:
बसेंगे, जो मैंने अपने सेवक याकूब को प्रदान
किया था। 26इस्राएली अपने देश में निश्चिंत
निवास करेंगे। वे मकान बनाएंगे। वे अंगूर के
उद्यान लगाएंगे। जिस-जिस पड़ोसी राष्ट्र ने
उनके साथ शत्रुता का व्यवहार किया था,
उसको मैं दण्ड दूंगा। उसके पश्चात् इस्राएली
अपने देश में निर्भय होकर निवास करेंगे। तब
उनको ज्ञात होगा कि मैं ही उनका प्रभु परमेश्वर
हूं।'

मिस्र के राजा फरओ के विरुद्ध नबूवत

29 निष्कासन के दसवें वर्ष के दसवें
महीने की बारहवीं तारीख को मुझे प्रभु
का यह सन्देश मिला। प्रभु ने मुझ से कहा,
2 'ओ मानव, मिस्र देश के राजा फरओ के
विरुद्ध अपना मुख कर, और उसके तथा समस्त
मिस्र-निवासियों के विरुद्ध नबूवत कर। 3तू उनसे
यह कहना, स्वामी-प्रभु यों कहता है:

''ओ मिस्र देश के राजा फरओ,
ओ नील नदी की जलधाराओं में
शयन करनेवाले महा जलचर!
तू कहता है कि नील नदी तेरी है
और तूने उसको बनाया है।
सुन, मैं तेरे विरुद्ध हूं।
4 मैं तेरे जबड़ों में कांटे डालूंगा;
और तेरी खाल पर
तेरी जलधाराओं की मछलियों को
गोंच की तरह चिपकाऊंगा।
उसके पश्चात् मैं तुझको
और तेरे साथ तेरी जलधारा की सब मछलियों
को
जो तेरी खाल पर चिपकी होंगी,
बाहर खींचूंगा,
5 और तुझे और तेरी उन सब मछलियों को
निर्जन प्रदेश में फेंक दूंगा।
तू खुले मैदान में पड़ा रहेगा;
तुझको न कोई उठाएगा,
और न कबर में गाड़ेगा।
मैंने तुझको आकाश के पक्षियों
और पृथ्वी के पशुओं का आहार बना दिया
है।

6 ''तब मिस्र के सब निवासियों को ज्ञात
होगा कि मैं ही प्रभु हूं। ओ फरओ, तूने
इस्राएलियों को पक्का सहारा नहीं दिया। तू
उनके लिए मानो नाजुक सरकण्डा था। 7जब
उन्होंने तुझे हाथ से पकड़ा तो तू टूट गया, और
वे गिर पड़े। उनके कन्धे घायल हो गए। जब
वे तुझ से टिके, तब तू टूट गया। अत: उनकी
कमर की सब नसें चढ़ गईं।

8 ''इसलिए ओ राजा फरओ, मैं स्वामी-
प्रभु, यह कहता हूं: मैं तुझ पर शत्रु की तलवार
चलवाऊंगा, और तेरा शत्रु तेरे मनुष्य और पशु
दोनों का पूर्ण संहार कर देगा। 9सम्पूर्ण मिस्र-
देश उजाड़ और निर्जन हो जाएगा। तब मिस्र
निवासियों को ज्ञात होगा कि मैं ही प्रभु हूं।

''ओ फरओ, तूने यह कहा है कि नील नदी
तेरी है, और तूने उसको बनाया है। 10इसलिए
देख, मैं तेरे और तेरी जलधाराओं के विरुद्ध हो
गया हूं। मैं सम्पूर्ण मिस्र देश को, मिग्दोल नगर
से सबेने नगर तक—वस्तुत: कूश* देश तक,
उजाड़ दूंगा, तुझे पूर्णत: उजाड़ दूंगा। 11कोई
आदमी उस पर पैर भी नहीं रखेगा, और न वहां
से गुजरेगा। वहां किसी पशु का पांव भी न
पड़ेगा। वह चालीस वर्ष तक उजाड़ पड़ा
रहेगा। 12मैं उजाड़ देशों के मध्य मिस्र देश को
भी उजाड़ दूंगा। उसके भी नगर उजाड़ पड़े नगरों
के समान उजाड़ हो जाएंगे, और वे चालीस वर्ष
तक उजाड़ पड़े रहेंगे। मैं मिस्र देश के निवासियों
को अन्य राष्ट्रों में बिखेर दूंगा; मैं उनको भिन्न-
भिन्न देशों में तितिर-बितर कर दूंगा।

13 ''स्वामी-प्रभु यों कहता है: जिन कौमों
के मध्य मिस्र-निवासी तितर-बितर होंगे, मैं

---

* अथवा, 'इथियोपिआ,' अथवा 'सूडान'

29 : 3 यश 19 **29 : 6** 2 रा 18 : 21; यश 36 : 6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वहां से उनको चालीस वर्ष की समाप्ति पर
इकट्ठा करूंगा, 14और उनको उनकी जन्म-
भूमि में, पत्रोस देश में वापस लाऊंगा, और वहां
उनको पुनः स्थापित करूंगा। वहां वे मिस्र देश
में एक छोटे-से राज्य के रूप में निवास करेंगे।
15उनका राज्य सब राज्यों में सबसे छोटा राज्य
होगा। वह अन्य राष्ट्रों के सामने अपना सिर न
उठा सकेगा। मैं मिस्री जाति की जन-संख्या
इतनी कम कर दूंगा कि वे अन्य राष्ट्रों पर फिर
कभी शासन न कर सकेंगे। 16वे इतने निर्बल
होंगे कि इस्राएली उन पर कभी भरोसा नहीं
करेंगे। जब कभी वे सहायता के लिए उनकी
ओर ताकेंगे, तब उन्हें मिस्रियों का अधर्म
स्मरण हो जाएगा। तब इस्राएलियों को मालूम
होगा कि मैं ही स्वामी-प्रभु हूं।'' '

राजा नबूकदनेस्सर मिस्र देश को पराजित करेगा

17 निष्कासन के सत्ताईसवें वर्ष के पहले
महीने की पहली तारीख को प्रभु का यह सन्देश
मुझे मिला। प्रभु ने मुझसे कहा, 18'ओ मानव,
बेबीलोन के राजा नबूकदनेस्सर ने सोर देश को
पराजित करने के लिए एड़ी-चोटी तक पसीना
बहाया: उसके सैनिकों के सिर गंजे हो गए,
उनके कंधों की चमड़ी छिल गई। किन्तु न उसे
और न उसके सैनिकों को अपने इस कठोर
परिश्रम की मजदूरी सोर देश से प्राप्त हुई।
19इसलिए मैं स्वामी-प्रभु यों कहता हूं: देख,
मैं मिस्र देश को बेबीलोन के राजा नबूकदनेस्सर
के हाथ में सौंप दूंगा। वह उसको लूट लेगा,
उसकी धन-सम्पत्ति अपने कब्जे में कर लेगा।
वह उसका धन अपने देश में ले जाएगा। यह
उसकी सेना की मजदूरी होगी। 20मैंने मिस्र देश
बेबीलोन के राजा नबूकदनेस्सर को इसलिए दे
दिया है, क्योंकि उसने मेरी ओर से सोर देश को
दण्ड दिया है, और यों मेरी सेवा की है। मिस्र
देश उसकी सेवा का फल है।' स्वामी-प्रभु की
यही वाणी है।

सामर्थ्य का सींग

21'उस दिन मैं इस्राएल के कुल में सामर्थ्य
का सींग उत्पन्न करूंगा, और उन लोगों के
मध्य में तेरे होंठों को खोल दूंगा। तब वे जान
लेंगे कि मैं ही प्रभु हूं।'

मिस्र देश पर संकट के बादल

30 प्रभु का यह सन्देश मुझे मिला। प्रभु ने
मुझसे कहा, 2'ओ मानव, तू यह नबूवत
कर, और कह: स्वामी-प्रभु यों कहता है:
''छाती पीट कर रोओ:
हाय! विनाश का दिन आ गया।
3 विनाश का दिन आ गया।
प्रभु का दिन समीप आ गया।
उस दिन संकट के बादल छा जाएंगे—
समस्त राष्ट्रों के लिए
वह दण्ड का दिन होगा।
4 दोधारी तलवार
मिस्र देश पर टूट पड़ेगी
जब मिस्र-देश में लोग
तलवार से कट-कटकर गिरेंगे,
जब मिस्र देश की समस्त धन-सम्पत्ति लूट
ली जाएगी,
जब उसकी आधार-शिला टुकड़े-टुकड़े हो
जाएगी,
तब उसके विनाश को देखकर
कूश देश डर से आतंकित हो उठेगा।
5 मिस्र निवासियों के पतन के साथ कूश, पूत,
लूद, अरब और कूब* देशों के तथा उस देश के
निवासी भी जो संघ में सम्मिलित हैं, तलवार
से मौत के घाट उतारे जाएंगे।''

मिस्र के सहायक

6 'प्रभु यों कहता है:
मिस्र की सहायता करनेवालों का पतन
होगा;
जो मिस्र पर घमण्ड करते हैं,
वे भी भूमि पर धराशायी होंगे।
स्वामी-प्रभु यह कहता है:
मिग्दोल से सबेने तक
समस्त मिस्र देश के निवासी
तलवार से मौत के घाट उतारे जाएंगे।
7 उजाड़ देशों के मध्य वह भी उजाड़ रहेगा;

* पाठांतर ''लूब'' अर्थात् लीबिया।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उसके नगर उजाड़ पड़े नगरों के समान
उजाड़ हो जाएंगे।
8 जब मैं मिस्र देश में आग लगा दूंगा,
जब मैं उसके सहायकों को नष्ट कर दूंगा,
तब मिस्र-निवासियों को ज्ञात होगा कि
मैं ही प्रभु हूं।
9 'उस दिन मैं अपने पास से सन्देश-वाहक
दूत भेजूंगा। वे जलयानों पर चढ़कर कूश देश
जाएंगे, और उसके निश्चिंत निवासियों को
डराएंगे। वे मिस्र देश के विनाश को देखकर
उस दिन भय से आतंकित हो उठेंगे।
'देखो, विनाश का दिन आ रहा है।

राजा नबूकदनेस्सर मिस्र देश को नष्ट करेगा

10 'स्वामी-प्रभु यों कहता है:
मैं मिस्र देश के धन-वैभव को समाप्त कर
दूंगा,
बेबीलोन का राजा नबूकदनेस्सर
उसको अपने अधिकार में कर लेगा।
11 मिस्र देश को उजाड़ने के लिए
वह और उसके राष्ट्र के लोग
जो विश्व की कठोरतम कौम है,
मिस्र देश में प्रवेश करेंगे।
वे मिस्र देश पर तलवार उठाएंगे,
और समस्त देश को लाशों से पाट देंगे।
12 मैं नील नदी को सुखा दूंगा,
मैं मिस्र देश को दुर्जनों के हाथ में बेच दूंगा।
मैं विदेशियों के हाथ से
सम्पूर्ण देश को, प्रत्येक वस्तु को, देश के
समस्त प्राणियों को उजाड़ दूंगा।'
मुझ-प्रभु की यही वाणी है।'
13 स्वामी प्रभु यों कहता है:
'मैं समस्त मूर्तियों को,
मेम्फिस नगर की सब मूर्तियों को
नष्ट कर दूंगा।
समस्त मिस्र देश में
एक भी शासक जीवित नहीं रहेगा;
और यों मैं
समस्त देश में आतंक उत्पन्न कर दूंगा।
14 मैं पत्रोस नगर को उजाड़ दूंगा,
सोअन नगर में आग लगा दूंगा;
मैं नो नगर को दण्ड दूंगा।
15 सीन नगर मिस्र देश का गढ़ है,
मैं उस पर भी अपनी क्रोधाग्नि बरसाऊंगा;
और नो नगर की विशाल आबादी
मौत के घाट उतर जाएगी।
16 मैं मिस्र देश में आग लगाऊंगा,
और सीन नगर थरथरा उठेगा।
नो नगर की दीवारों में दरार पड़ जाएगी,
और वे भर-भरा कर भूमि पर गिर पड़ेंगी।
17 ओन और पीवेसेत नगरों के जवान
तलवार से वध किए जाएंगे;
और उनकी स्त्रियाँ
गुलाम बनकर विदेश जाएंगी।
18 जब मैं मिस्र के राज्य का अन्त करूंगा,
और जब उसका घमण्ड चूर-चूर हो जाएगा,
तब तहपन्हेस नगर में
दिन का प्रकाश अन्धकार में बदल जाएगा,
सम्पूर्ण मिस्र देश बादल से ढक जाएगा;
और उसकी सब पुत्रियां
गुलाम बनकर विदेश चली जाएंगी।
19 इस प्रकार मैं मिस्र देश को दण्ड दूंगा।
तब मिस्र-निवासियों को मालूम होगा कि
मैं ही प्रभु हूं।',

राजा फरओ की भुजा तोड़ी जाएगी

20 निष्कासन के ग्यारहवें वर्ष के पहले
महीने की सातवीं तारीख को प्रभु का यह
सन्देश मुझे मिला। प्रभु ने मुझसे कहा,
21 'ओ
मानव, सुन, मैंने मिस्र के राजा की भुजा तोड़
दी। देख, भुजा को किसी ने जोड़ा नहीं। और
न ही उसको स्वस्थ करने के लिए उस पर
किसी ने पट्टी बांधी। उसमें इतना बल नहीं है
कि वह तलवार उठा सके।
22 इसलिए मैं, स्वामी-
प्रभु, यों कहता हूँ: देख, मैं मिस्र देश के राजा
फरओ के विरुद्ध हूं। मैं उसकी दोनों भुजाएं
तोड़ डालूंगा: स्वस्थ भुजा और टूटी हुई भुजा,
दोनों को, और यों उसके हाथ से तलवार गिरा
दूंगा।
23 मैं मिस्र-निवासियों को उनके देश से
उखाड़ दूंगा, और विश्व की कौमों में बिखेर
दूंगा। मैं उनको अन्य देशों में तितर-बितर कर
दूंगा।
24 किन्तु मैं बेबीलोन के राजा की भुजा

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मजबूत करूंगा। मैं उसके हाथ में अपनी
तलवार दूंगा। निस्सन्देह, मैं फरओ की भुजाओं
को तोड़ दूंगा, और वह बेबीलोन के राजा के
सामने ऐसे कराहेगा जैसा बुरी तरह घायल
व्यक्ति कराहता है। 25निश्चय ही मैं बेबीलोन
के राजा की भुजाओं को मजबूत करूंगा,
लेकिन फरओ की भुजाएं तोड़ दी जाएंगी, और
वे कन्धे से लटकती रहेंगी। तब मिस्र के
निवासियों को ज्ञात होगा कि मैं ही प्रभु हूं।

'जब मैं बेबीलोन के राजा के हाथ में तलवार
दूंगा, तब वह उसको मिस्र देश पर चलाएगा,
26और मैं विश्‍व की सब कौमों में मिस्र के
निवासियों को तितर-बितर कर दूंगा। मैं उनको
अन्य देशों में बिखेर दूंगा। तब उनको ज्ञात होगा
कि मैं ही प्रभु हूं।'

देवदार का वृक्ष: राजा फरओ

31 निष्कासन के ग्यारहवें वर्ष के तीसरे
महीने की पहली तारीख को प्रभु का
यह सन्देश मुझे मिला। प्रभु ने मुझसे कहा,
2'ओ मानव, तू मिस्र देश के राजा फरओ और
उसकी विशाल प्रजा से यों बोल:

"तुम अपनी विशालता में किसके समान हो?
3 मैंने तुमको लबानोन के देवदार के
विशाल वृक्ष के समान विकसित किया है,
जिसकी सुन्दर शाखाएं होती हैं,
जो सघन वन के समान शीतल छाया देता है;
जिसकी ऊँचाई आसमान को छूती है,
जिसकी चोटी बादलों में छिप जाती है।
4 जल उसको हरा-भरा रखता है;
भूमितल का जल उसको बढ़ाता है।
जहां वह रोपा जाता है,
उसके आस-पास नदियाँ बहती हैं।
नदियों की नहरें
वन के सब वृक्षों तक पहुंचती हैं।
5 यों देवदार बढ़ता जाता है,
और जंगल के सब वृक्षों में
सबसे ऊंचा हो जाता है।
उसकी टहनियां खूब बढ़ती हैं;
शाखाएं लम्बी-लम्बी हो जाती हैं;
क्योंकि उसकी जड़ों को भरपूर पानी मिलता
है।
6 आकाश के पक्षी,
उसकी टहनियों पर घोंसले बनाते हैं।
उसकी छाया में
जंगल के पशु अपने बच्चों के साथ
बसेरा करते हैं।
संसार की जातियां भी
उसकी छाया में निवास करती हैं।
ओ फरओ, तू और तेरी प्रजा ऐसा ही विशाल
देवदार वृक्ष हैं।
7 उसकी ऊंचाई देखने योग्य है।
उसकी लम्बी-लम्बी शाखाएं सुन्दर हैं।
उसकी जड़ें भूमि के बहुत भीतर पहुँची हुई
हैं, जहां विपुल मात्रा में जल है।
8 इस देवदार की तुलना में
परमेश्‍वर के उद्यान के देवदार
कुछ भी नहीं हैं;
और न सनोवर के पेड़
उसकी टहनियों की बराबरी कर सकते हैं।
उसकी शाखाओं की तुलना में चिनार पेड़ भी
तुच्छ हैं।
वह इतना सुन्दर है कि
परमेश्‍वर के उद्यान का एक भी वृक्ष
उसकी सुन्दरता की बराबरी नहीं कर सकता
है।
9 मैं-प्रभु ने ही उसको सुन्दर बनाया;
मैंने ही उसकी शाखाओं को सघन किया।
मैंने उसको इतना सुन्दर बनाया कि
अदन की वाटिका के सब वृक्ष,
मुझ-परमेश्‍वर के उद्यान के वृक्ष,
उससे ईर्ष्या करते हैं।

10 "स्वामी-प्रभु यों कहता है:
ओ देवदार, तेरी ऊंचाई आसमान को छू रही
है;
तेरी चोटी बादलों से ढक गई है।
अपनी ऊंचाई के कारण तेरा हृदय घमण्ड से
फूल उठा है।

---

31 : 6 यहेज 17 : 23; दान 4 : 12; मत 13 : 32 31 : 8 उत 2 : 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

11 अत: मैं तुझको तेरे शत्रु के हाथ में सौंप दूंगा,
जो सब राष्ट्रों में महा बलवान है।
वह तेरे दुष्कर्मों के अनुरूप
तेरे साथ व्यवहार करेगा।
मैंने तुझको निकाल दिया है।
12 राष्ट्रों में क्रूरतम विदेशी राष्ट्र
तुझे काट कर फेंक देगा।
सब पहाड़ों और घाटियों में
तेरी शाखाएं गिर पड़ेंगी।
तेरी टहनियां टूट-टूटकर
देश की सब नहरों में बह जाएंगी।
विश्व की जातियां
जो तेरी छाया में निवास करती हैं,
उससे निकल जाएंगी,
और उसको त्याग देंगी।
13 तेरे गिरे हुए तने पर
आकाश के पक्षी बसेरा करेंगे;
तेरी शाखाओं पर जंगली पशु रहने लगेंगे।
14 ओ देवदार, यह इसलिए होगा,
ताकि जल के सपीप रोपे गए वृक्ष
बहुत ऊँचाई तक न बढ़ें,
और न उसकी टहनियां बादलों से ढकें,
और न वे वृक्ष,
जिनको भरपूर जल मिलता है,
बादलों की ऊंचाई के बराबर सिर उठाएं।
क्योंकि घमण्ड के कारण वे मृत हो जाते हैं,
मैं उनको मृत मनुष्यों के मध्य
मृत्यु के हाथ में, अधोलोक में सौंप देता हूं।
वे भी कबर में जानेवालों के समान मृत हो
जाते हैं।

15 "स्वामी-प्रभु यों कहता है: जब देवदार
अधोलोक में चला जाएगा, तब मैं उसके लिए
गहरे सागर से विलाप करवाऊंगा। मैं उसकी
नदियों का जल-प्रवाह रोक दूंगा, अनेक
जलाशयों का मुंह बन्द कर दूंगा। उसके विनाश
को देख कर समस्त लबानोन प्रदेश शोक में डूब
जाएगा। जंगल के वृक्ष मुरझा जाएंगे।
16 जब वह
जड़ से उखड़ेगा और भूमि पर गिरेगा तब उसके
धमाके से सब राष्ट्रों के दिल कांप उठेंगे। मैं
कबर में जानेवाले मृतक के समान उसको
अधोलोक में फेंक दूंगा। तब अदन की वाटिका
के वृक्ष तथा लबानोन के सर्वोत्तम वृक्ष, जिनको
भरपूर पानी मिलता है, अधोलोक में शान्ति की
सांस लेंगे।
17 वे भी उसके साथ अधोलोक में
जाएंगे। वहां जाएंगे, जहां तलवार से वध किए
हुए मृतक पड़े होंगे। उसके पतन से उसकी
छाया में रहनेवाले राष्ट्र भी नष्ट हो जाएंगे।
18 "ओ देवदार, तेरी महानता और गौरव
की तुलना में अदन की वाटिका के वृक्ष कुछ
भी नहीं हैं। किन्तु तू भी उनके समान अधोलोक
में काट कर फेंक दिया जाएगा, और वहां तू
तलवार से वध की गई बेख़तना जातियों के
मध्य पड़ा रहेगा।"

'फरओ और उसकी विशाल प्रजा का यही
हाल होगा।' स्वामी-प्रभु की यही वाणी है।

मगरमच्छ फरओ के लिए शोक-गीत

32 निष्कासन के बारहवें वर्ष के बारहवें
महीने की पहली तारीख को प्रभु का
यह सन्देश मुझे मिला। प्रभु ने मुझसे कहा,
2 'ओ मानव, मिस्र के राजा फरओ के सम्बन्ध
में एक शोक-गीत गा। तू उससे यह कहना:
"ओ फरओ, तू राष्ट्रों में
अपने को सिंह समझता था।
लेकिन तू तो समुद्र के मगर के समान है!
तू नदियों में फूत्कारें मारता है,
पैरों से जल को मथकर
उनको गंदला करता है।
3 स्वामी-प्रभु यों कहता है:
मैं अनेक जातियों की सेना के द्वारा
तुझको पकड़ने के लिए
तुझ पर जाल फेंकूंगा,
और वे तुझको मेरे महाजाल में फंसा कर
पानी से बाहर खींच लेंगे।
4 ओ मगरमच्छ फरओ!
मैं तुझको भूमि पर फेंक दूंगा,
तुझको खुले मैदान में छोड़ दूंगा;
तब आकाश के सब पक्षी
तुझ पर बैठेंगे,
और धरती के सब पशु
तेरा मांस नोंच-नोंच कर खाएंगे,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और अपना पेट भरेंगे।
5 मैं तेरा मांस पहाड़ों पर बिखेर दूंगा,
और घाटियों को तेरे शव से भर दूंगा।
6 मैं तेरे शरीर से बहते हुए खून से
पहाड़ों और मैदानों को सींच दूंगा,
और नदी-नाले तेरे रक्त से भर जाएंगे।
7 जब मैं तुझको भूमि की सतह से मिटा दूंगा,
तब मैं आकाश को ढक दूंगा।
उसके तारों को प्रकाशहीन बना दूंगा।
मैं सूर्य को मेघों से ढक दूंगा।
और चन्द्रमा अपना प्रकाश न देगा।
8 ओ फरओ, मैं आकाश के सब प्रकाशवान
तारों और नक्षत्रों को अंधकारमय कर दूंगा,
और वे तुझ पर नहीं चमकेंगे;
वे तेरे देश को अन्धकार में डाल देंगे,
स्वामी-प्रभु की यही वाणी है।
9 "ओ फरओ, जब मैं तुझ को बन्दी
बनाकर तेरे देश से निष्कासित करूंगा, तुझको
उन राष्ट्रों और देशों में ले जाऊंगा, जिनको तू
जानता भी नहीं है, तब तेरी यह दशा देखकर
अनेक जातियों का हृदय कांप उठेगा। 10मैं अनेक
जातियों को तेरे विनाश से विस्मित करूंगा। मैं
उनके राजाओं के सामने अपनी तलवार भेजूंगा,
और वे तेरे कारण भय से आतंकित हो उठेंगे।
वे हर क्षण कांपेंगे। और जिस दिन तेरा पतन
होगा, वे अपने प्राण के लिए कांप उठेंगे। 11मैं,
स्वामी-प्रभु यों कहता हूँ: ओ फरओ, बेबीलोन
के राजा की तलवार तुझ पर चलेगी। 12मैं तेरी
विशाल प्रजा को उसके योद्धाओं के हाथ में
सौंप दूंगा, और वे उनकी तलवार से मारे
जाएंगे। वे विश्व के क्रूरतम राष्ट्र के योद्धा हैं।
"वे मिस्र के गौरव को धूल में मिला देंगे;
और उसकी विशाल प्रजा का अन्त हो
जाएगा।
13 मैं उसके समस्त पशुओं को,
नदी-नालों के तट पर रहनेवाले जीव-
जन्तुओं को नष्ट कर दूंगा।
तब न किसी मनुष्य का पैर,
और न किसी पशु का खुर
नदी-नालों के जल को गंदला करेगा।
14 इसके पश्चात् मैं उनका जल स्वच्छ कर
दूंगा,
और उनकी नदियों का पानी
तेल के सदृश बहेगा।
स्वामी-प्रभु की यही वाणी है।
15 जब मैं मिस्र देश को उजाड़ दूंगा,
जिस धन-धान्य से वह भरपूर है,
उससे उसको वंचित कर दूंगा,
जब मैं उसके सब निवासियों का वध कर
दूंगा,
तब उनको ज्ञात होगा कि
मैं ही प्रभु हूं।"
16 'यही वह शोक-गीत है, जो फरओ के
विनाश पर गाया जाएगा। मिस्र राष्ट्र की कन्याएं
इसको गाएंगी। प्रभु-स्वामी कहता है, वे मिस्र
देश और उसकी विशाल प्रजा के पतन पर यही
शोक-गीत गाएंगी।'
17 निष्कासन के बारहवें वर्ष के पहले
महीने की पन्द्रहवीं तारीख को प्रभु का यह
सन्देश मुझे मिला। प्रभु ने मुझसे कहा, 18 'ओ
मानव, मिस्र की विशाल प्रजा के विनाश के
कारण विलाप कर। मिस्र देश और प्रतापी राष्ट्रों
की कन्याओं को अधोलोक में कबर में पड़े हुए
मृतकों के पास उतार दे।
19 'ओ मिस्र, तू किससे श्रेष्ठ है, मनोहर है?
अधोलोक में जा,
और बेख़तना लोगों के मध्य पड़ा रह!
20 'वे तलवार से वध किए गए मृतकों के
बीच गिरेंगे, और उसके साथ उसकी विशाल
प्रजा भी मरकर पड़ी रहेगी। 21सेनापति अपने
सहायकों के माध्यम से अधोलोक के भीतर
उनके विषय में यह कहेंगे, "ये बेख़तना लोग
भी अधोलोक में आ गए। देखो, ये निर्जीव पड़े
हैं। ये तलवार से मारे गए हैं।"
22 'देखो, असीरिया भी पड़ा है, और उसके
साथ हैं उसके योद्धा। उसके चारों और कबरों
का ढेर है। ये सब तलवार से मारे गए हैं।
23इनकी कबरें अधोलोक के कोने में हैं।

---

32 : 7 यश 13 : 10; मत 24 : 29; प्रक 6 : 12 **32 : 23** यश 14 : 15

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

असीरिया की कबर के चारों ओर उसकी सेना
है। ये सब तलवार से मारे गए हैं। इनका वध
तलवार से हुआ है। ये जीवलोक में आतंक
फैलाते थे।
24 'देखो, यहां एलाम भी पड़ा है। उसकी
कबर के चारों ओर उसकी प्रजा है। ये सब
तलवार से मारे गए हैं। इनका वध तलवार से
हुआ है। ये जीवलोक में आतंक फैलाते थे,
और अब बेख़तना दशा में अधोलोक में पड़े हैं।
ये कबर में जानेवालों के साथ अपमान का भार
ढो रहे हैं। 25 उन्होंने एलाम और उसकी सेना
को वध किए हुओं के बीच सुला दिया है। चारों
ओर उनकी कबरें हैं। ये सब बेख़तना हैं और
तलवार से मारे गए हैं। इन्होंने जीवलोक में
आतंक फैला रखा था, और अब कबर में
जानेवालों के साथ अपमान का भार ढो रहे हैं।
इनको वध किए हुओं के बीच स्थान मिला है।
26 'देखो, यहां मेशेक और तूबल भी हैं,
और उनके साथ उनकी विशाल सेना भी है।
चारों ओर उनकी कबरें हैं। वे बेख़तना हैं, और
तलवार से मारे गए हैं। उन्होंने जीवलोक में
आतंक फैला रखा था। 27 उन्हें उन वीर योद्धाओं
के मध्य गौरव का स्थान नहीं मिला, जो अपने
अस्त्रों-शस्त्रों के साथ अधोलोक में दफनाए
गए थे, जिनके सिर के नीचे उनकी तलवारें
दफनाई गई थीं, जिनकी हड्डियों के ऊपर
ढालें रखी गई थीं। मेशेक और तूबल के
योद्धाओं का आतंक जीवलोक में फैला हुआ
था। 28 ओ फरओ, तेरा भी अंग-भंग होगा, और
तू बेख़तना लोगों के मध्य लेटेगा, जो तलवार
से मारे गए हैं।
29 'देखो, यहां एदोम, और उसके राजा तथा
उसके उच्चाधिकारी भी पड़े हैं। ये वीर योद्धा
थे, किन्तु अब उन लोगों के साथ पड़े हैं,
जिनका वध तलवार से हुआ है। ये बेख़तना
और कबर में जानेवाले मृतकों के मध्य पड़े हैं।
30 'देखो, यहां उत्तरी क्षेत्रों के सब
उच्चाधिकारी भी हैं। उनके साथ सीदोन के भी
उच्चाधिकारी हैं। ये भी अपमान का भार ढोते
हुए तलवार से मारे गए लोगों के साथ
अधोलोक में उतरे हैं। इन्होंने अपनी शक्ति से
देश में आतंक फैलाया था। किन्तु अब ये
बेख़तना दशा में उन लोगों के साथ पड़े हैं,
जिनका वध तलवार से हुआ है। ये कबर में
जानेवालों के साथ अपमान का भार ढो रहे हैं।'
31 स्वामी-प्रभु कहता है: 'जब फरओ यह
देखेगा, तब उसको अपनी विशाल सेना के
लिए शान्ति प्राप्त होगी। उसका और उसकी
विशाल सेना का वध तलवार से होगा। 32 उसने
भी जीवलोक में आतंक फैला रखा है।
इसलिए वह उन लोगों के मध्य दफनाया
जाएगा, जो तलवार से मारे गए हैं। वह और
उसके साथ उसकी विशाल प्रजा बेख़तना लोगों
के मध्य दफन होगी।' स्वामी-प्रभु की यही
वाणी है।

नबी, राष्ट्र का पहरेदार

33 प्रभु ने मुझे यह सन्देश दिया। उसने
कहा, 2 'ओ मानव, तू अपने जाति-
भाई-बहिनों से बोल। तू उनसे यह कहना: जब
मैं किसी देश पर उसके शत्रु के द्वारा आक्रमण
करवाता हूं, तब वहां की जनता अपने में से
किसी व्यक्ति को चुनती है, और उसको अपने
देश का पहरेदार नियुक्त करती है। 3 यदि यह
पहरेदार देखेगा कि उसके देश पर शत्रु का
आक्रमण होने वाला है, और यदि वह जनता
को सावधान करने के लिए नरसिंगा फूंकेगा
4 और चेतावनी के नरसिंगे की आवाज सुनने पर
भी यदि कोई व्यक्ति सावधान नहीं होगा, और
शत्रु का आक्रमण होने पर वह उसकी तलवार
से मारा जाएगा, तो उसके खून का दोष उसके
ही सिर पड़ेगा। 5 क्योंकि उसने नरसिंगे की
आवाज सुनी थी, फिर भी वह सावधान नहीं
हुआ। अत: वह अपनी हत्या का जिम्मेदार
स्वयं ठहरा। किन्तु यदि वह पहरेदार की
चेतावनी पर ध्यान देता, तो वह अपने प्राण बचा
लेता।
6 'यदि पहरेदार यह देखता है कि उसके
देश पर शत्रु का आक्रमण होनेवाला है और वह

33 : 1-9 यहेज 3 : 16-21

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जनता को सावधान करने के लिए नरसिंगा नहीं
फूंकता है, और लोग सावधान नहीं होते हैं,
और शत्रु का आक्रमण होने पर यदि एक भी
व्यक्ति उसकी तलवार से मारा जाएगा, तो
मरनेवाला यद्यपि अपने अधर्म में मरेगा तो भी
मैं पहरेदार को उसकी मौत का जिम्मेदार
ठहराऊंगा और उससे उसके खून का लेखा
लूंगा।
7 'इसी प्रकार ओ मानव, मैंने तुझको
इस्राएल के वंश का पहरेदार नियुक्त किया है।
जब कभी तू मेरे मुंह से इस्राएल के लिए
चेतावनी के वचन सुनता है, यह तेरा दायित्व
है कि तू मेरी ओर से उनको सावधान करे।
8यदि मैं दुर्जन से कहूंगा, "ओ दुर्जन, तू
निस्सन्देह मरेगा", और यदि तू दुर्जन को
सावधान नहीं करेगा कि वह अपना बुरा मार्ग
छोड़ दे, तो ओ मानव-पुत्र, वह दुर्जन तो अपने
अधर्म में मरेगा ही, किन्तु मैं उसकी मौत का
जिम्मेदार तुझे ठहराऊंगा, और उसके खून का
लेखा तुझ से लूंगा। 9यदि तू उसको चेतावनी
देगा कि वह अपना बुरा आचरण छोड़ दे, और
वह तेरी चेतावनी पर ध्यान न देगा, बुरे मार्ग से
मुंह नहीं मोड़ेगा, तो वह निस्सन्देह अपने
अधर्म में मरेगा, परन्तु तेरा प्राण बच जाएगा।

नबी यहेजकेल का उपदेश

10 'ओ मानव, तू यह बात इस्राएल के वंश
से कह : तुम लोगों ने कहा है, "हमारे अपराधों
और हमारे पापों का बोझ हमारे ऊपर है, और
उनको ढोते-ढोते हम क्षीण हो गए हैं। हम कैसे
जीवित रह सकते हैं ?" 11ओ मानव, तू उनसे
यह कह : "मैं स्वयं स्वामी-प्रभु बोल रहा हूँ:
मुझे अपने जीवन की सौगान्ध है! मैं किसी भी
दुर्जन की मृत्यु से प्रसन्न नहीं होता हूँ। किन्तु
मुझे तब प्रसन्नता होती है, जब दुर्जन अपना
बुरा आचरण छोड़ देता है और मरने से बच
जाता है। इसी प्रकार ओ इस्राएल के वंशजो,
अपने बुरे आचरण को छोड़ दो, अपने बुरे मार्ग
से पीठ फेर लो। तुम क्यों मरना चाहते हो ?"
12 'ओ मानव, तू अपने जाति-भाई-
बहिनों से बोल : जब कोई धार्मिक मनुष्य
अपराध करता है तब उसकी धार्मिकता उसको
अपराध के दण्ड से नहीं बचा सकती। यदि
दुर्जन अपना बुरा आचरण छोड़ दे तो वह
निस्सन्देह पाप के दण्ड से बचेगा। यदि धार्मिक
मनुष्य पाप करे तो उसकी धार्मिकता उसको
मरने से नहीं बचा सकेगी।
13 'यदि मैं धार्मिक मनुष्य से कहूँ कि तू
जीवित रहेगा, और वह अपनी धार्मिकता पर
भरोसा करके अधर्म करे, तो उस के सत्कर्म
उसको नहीं बचा सकेंगे। मैं उन को स्मरण नहीं
करूंगा। वह अपने अधर्म में मरेगा।
14 'मैं दुर्जन से यह कहूँ, "तू निस्सन्देह
मरेगा," और वह अपना पापमय आचरण छोड़
दे, न्याय और धर्म का यह आचरण अपना ले:
15गिरवी की वस्तु लौटा दे, और उनका माल
लौटा दे जिनसे उसने लूट लिया है, वह दुष्कर्मों
को त्याग कर जीवन देनेवाले धर्म-नियमों के
अनुसार आचरण करने लगे और फिर अधर्म के
कामों में हाथ न डाले, तो वह निस्सन्देह जीवित
रहेगा, और मरेगा नहीं। 16उसने जितने दुष्कर्म
किए हैं, मैं उनको स्मरण नहीं करूंगा, और
उसको दण्ड नहीं दूंगा। उसने न्याय और धर्म
के काम किए हैं, वह निस्सन्देह जीवित रहेगा।
17 'फिर भी तेरे जाति-भाई-बहिन कहते
हैं: "प्रभु का व्यवहार न्यायपूर्ण नहीं है।"
किन्तु स्वयं उनका आचरण न्यायपूर्ण नहीं है।
18यदि कोई धार्मिक मनुष्य न्याय और धर्म के
आचरण को छोड़कर अधर्म के कार्य करेगा, तो
वह उसके कारण अवश्य मरेगा। 19किन्तु यदि
दुर्जन अपने बुरे आचरण को छोड़कर न्याय-
धर्म के कार्य करेगा, तो वह अपने इस आचरण
के कारण जीवित रहेगा। 20फिर भी तुम, ओ
इस्राएल के वंशजो, कहते हो, "प्रभु का
व्यवहार न्यायपूर्ण नहीं है।" जबकि मैं तुम में
से प्रत्येक व्यक्ति का न्याय उसके आचरण के
अनुसार करता हूँ।'

नबी यहेजकेल का गूंगापन दूर होना

21 बेबीलोन में निष्कासन के बारहवें वर्ष

33 : 11 यहेज 18 : 23 33 : 16 यहेज 18 : 22 33 : 21 यहेज 24 : 26 ; 2 रा 25 : 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

के दसवें महीने की पांचवीं तारीख को एक
आदमी मेरे पास आया। वह यरूशलेम नगर से
प्राण बचा कर भाग आया था। उसने मुझ से
कहा, 'यरूशलेम नगर का पतन हो गया।'
22जिस दिन यरूशलेम से भागा हुआ आदमी
मेरे पास आया, उससे पूर्व सन्ध्या के समय प्रभु
की सामर्थ्य मुझ पर प्रबल हुई थी, और जब वह
मनुष्य सबेरे मुझ से मिला, तब प्रभु ने उसी
समय मेरा मुंह खोल दिया। प्रभु की सामर्थ्य से
मेरा मुंह खुल गया और मेरा गूंगापन दूर हो
गया।

यहूदा प्रदेश में बचे हुए लोगों को दण्ड

23 प्रभु का यह सन्देह मुझे मिला। प्रभु ने
मुझसे कहा, 24 'ओ मानव, इस्राएली देश के
उजड़े हुए प्रदेशों के निवासी अब तक यह कह
रहे हैं: "हमारे कुल-पिता अब्राहम तो अकेले
आदमी थे, तो भी उन्होंने सम्पूर्ण कनान देश पर
कब्जा कर लिया था। हम तो अनेक हैं। यह देश
निस्सन्देह हमारे पैतृक-अधिकार के लिए दिया
गया है।"25इसलिए तू उनसे यह कह, स्वामी-
प्रभु यों कहता है: जिन कामों को न करने का
मैंने तुम्हें आदेश दिया था, वही तुम करते हो:
तुम रक्त के साथ मांस खाते हो। तुम सहायता
के लिए देवी-देवताओं की मूर्तियों की ओर
दृष्टि करते हो। तुम हत्या करते हो। फिर भी तुम
सोचते हो कि तुम इस्राएल देश पर कब्जा कर
सकोगे? 26तुम्हें मुझ पर नहीं, बल्कि अपनी
तलवार पर भरोसा है। तुम पूजा-पाठ करते हो।
अपने पड़ोसी की पत्नी की इज्जत लूटते हो।
फिर भी तुम सोचते हो कि तुम इस्राएल देश पर
अधिकार कर सकोगे? 27ओ मानव, तू उनसे
यह कह, स्वामी-प्रभु यों कहता है: मुझे अपने
जीवन की सौगन्ध है: इस्राएल देश के उजाड़
प्रदेशों में रहनेवाले निस्सन्देह तलवार से मौत
के घाट उतारे जाएंगे। जो आदमी खेत में होगा,
उसको मैं जंगली पशु के मुंह में डाल दूंगा, और
वह उसको खा जाएगा। जो गढ़ों और गुफाओं
में रहते होंगे, वे महामारी से मारे जाएंगे। 28मैं
उनके देश को निर्जन और उजाड़ कर दूंगा और
यों उनके बल का गर्व चूर-चूर हो जाएगा।
इस्राएल देश के पहाड़ इतने उजाड़ हो जाएंगे
कि वहाँ से कोई भी नहीं गुजरेगा। 29जब मैं
उन बचे हुए इस्राएलियों के घृणित कार्यों के
कारण उन के देश को निर्जन और उजाड़ कर
दूंगा, तब उनको मालूम होगा कि मैं ही प्रभु हूँ।

नबी यहेजकेल के प्रति लोगों की उदासीनता

30 'ओ मानव, इन लोगों की दृष्टि में तू क्या
है? ये चहारदीवारी पर बैठे हुए, घरों की ड्योढ़ी
पर बैठे हुए एक-दूसरे से तेरे विषय में बातें
करते हैं। वे आपस में एक-दूसरे को निमन्त्रण
दे कर कहते हैं, "आओ चलें, और नबी के मुंह
से प्रभु का सन्देश सुनें।" 31वे झुण्ड के झुण्ड
तेरे पास आते हैं। वे मेरे निज लोगों के समान
तेरे सामने बैठते हैं। वे तेरी बातें सुनते हैं, पर
मेरे सन्देश के अनुसार आचरण नहीं करते।
"वाह! कितने सुन्दर वचन हैं!", वे मुंह से यह
कहते हैं, किन्तु उनका हृदय स्वार्थ में डूबा हुआ
है। 32सुन, तू उन के लिए क्या है? प्रेम के गीत
गानेवाला गायक, जिसके गले में मीठी आवाज
है, जो वाद्य-यन्त्र को कुशलता से बजाता है!
ओ मानव, वे तेरी बातें सुनते हैं, किन्तु उनके
अनुसार आचरण नहीं करते। 33जब मेरा कथन
पूरा होगा, वह निस्सन्देह पूरा होगा, तब उनको
पता चलेगा कि उन के मध्य में एक नबी हुआ
था।

आदर्श राजा अपनी प्रजा का अच्छा मेषपाल (चरवाहा) होता है

34 प्रभु का यह सन्देश मुझे मिला। प्रभु ने
मुझसे कहा, 2 'ओ मानव! इस्राएल
देश के राजाओं-नेताओं के विरुद्ध नबूवत कर।
उनसे तू यह कहना, स्वामी-प्रभु यों कहता है:
ओ इस्राएल देश के चरवाहो, तुम अपनी भेड़ों
की चिन्ता न कर स्वयं का पेट भर रहे हो। क्या
चरवाहा पहले अपनी भेड़ों का पेट नहीं भरता
है? 3ओ इस्राएली राष्ट्र के चरवाहो, तुम बढ़िया
भोजन करते हो। तुम कीमती ऊनी वस्त्र पहनते

---

33 : 22 यहेज 3 : 26-27 **33 : 24** मत 3 : 9 **33 : 31** मत 7 : 26 **33 : 32** लू 7 : 32 **33 : 33** व्य 18 : 21
अध्याय 34 यिर 23 : 1-6 जक 11 : 4-17 ; मत 18 : 12-14; लू 15 : 4-7 ; यो 10 : 1-18

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हो। सबसे मोटे-ताजे पशु का मांस खाते हो। किन्तु अपनी जनता के मुंह में अन्न का दाना भी नहीं डालते! [4]तुमने निर्बल को बलवान नहीं बनाया। तुमने बीमार को स्वस्थ नहीं किया। तुमने घायल के घावों की मलहम-पट्टी नहीं की। तुम भटकी हुई भेड़ को वापस नहीं लाए। जो खो गई है, उसको नहीं खोजा। किन्तु तुमने जनता पर जोर-जबरदस्ती से शासन किया। [5]चरवाहा न होने के कारण भेड़ें तितर-बितर हो गईं, और जंगली जानवरों का आहार बन गईं।

6 'मेरी भेड़ें तितर-बितर हो गई हैं। वे पहाड़ों पर, ऊंची-ऊंची पहाड़ियों पर भटक रही हैं।

'मेरी भेड़ें पृथ्वी के सब देशों में तितर-बितर हो गई हैं। उनकी खोज-खबर लेनेवाला, उनको ढूंढ़कर लानेवाला कोई चरवाहा नहीं है।

7 'इसलिए, ओ इस्राएल देश के चरवाहो ! मुझ-प्रभु का यह वचन सुनो : [8]मुझे अपने जीवन की सौगन्ध है ! मेरी भेड़ों को शिकारियों ने मार डाला। वे जंगली पशुओं का आहार बन गईं; क्योंकि उनकी देखभाल करनेवाला चरवाहा नहीं था। मैंने जिन को उनका चरवाहा नियुक्त किया था, उन चरवाहों ने भी भेड़ों की खोज-खबर नहीं ली। उन्होंने उनको चराया नहीं, बल्कि अपना ही पेट भरा। [9]इसलिए ओ इस्राएल देश के चरवाहो! मुझ-प्रभु का यह वचन सुनो : [10]मैं, स्वामी-प्रभु यों कहता हूं: देखो, मैं तुम-चरवाहों के विरुद्ध हूँ। मैं तुमसे अपनी भेड़ों का हिसाब लूंगा। मैं अपनी भेड़ों को चराने की जिम्मेदारी तुमसे वापस ले लूंगा, और तुम उनको फिर न चरा सकोगे। मैं तुम को पेट भर खाना न दूंगा। मैं तुम्हारे मुंह से अपनी भेड़ों को छुड़ाऊंगा। वे फिर तुम्हारा आहार न बनेंगी।

स्वयं प्रभु मेषपाल बनेगा

11 'स्वामी-प्रभु यों कहता है: देखो, मैं स्वयं अपनी भेड़ों की सुधि लूंगा, और उनको ढूंढ़ने जाऊंगा। [12]जब किसी चरवाहे की भेड़ें झुण्ड में से निकल कर यहां-वहां खो जाती हैं, तब चरवाहा उन खोई हुई भेड़ों को ढूंढ़ता है। वैसे ही मैं चरवाहे की तरह अपनी भेड़ों को खोजूंगा। वे सघन अंधकार के दिन, घोर घटाओं के दिन भटक गई थीं। मैं उनको सब स्थानों से छुड़ा कर लाऊंगा। [13]मैं अपने निज लोगों को, अपनी भेड़ों को भिन्न-भिन्न जातियों के मध्य से निकाल कर लाऊंगा। मैं उनको सब देशों से एकत्र करूँगा, और उनको उनके देश में लाऊंगा। मैं अपनी भेड़ों को इस्राएल देश के पहाड़ों पर और इस्राएल देश के सब आबाद स्थानों में चराऊंगा। [14]मैं उनको हरे-भरे चरागाह में चराऊंगा। इस्राएल देश के ऊंचे पठारों पर उनके चरागाह होंगे। वहां वे हरे-भरे घास के मैदान में आराम करेंगी। उन्हें इस्राएल के पहाड़ों के उत्तम चरागाह में पेटभर आहार प्राप्त होगा। [15]मैं स्वयं अपनी भेड़ों का मेषपाल होऊंगा, और, मैं उनको हरे-भरे चरागाह में विश्राम कराऊंगा। मैं, स्वामी-प्रभु, यही कहता हूँ : [16]मैं खोई हुई भेड़ को ढूंढ़ूंगा। भटकी हुई भेड़ के घावों पर पट्टी बांधूंगा। मैं निर्बल को बलवान बनाऊंगा। मैं मोटी-ताजी, स्वस्थ भेड़ की रक्षा करूंगा*। मैं उनको उचित रीति से चराऊंगा।

भेड़ों का न्याय

17 'ओ मेरी भेड़ो**! मैं, तुम्हारा स्वामी-प्रभु, तुमसे यों कहता हूं: देखो, मैं भेड़ों और भेड़ों तथा मेढ़ों और बकरों के मध्य न्याय कर रहा हूँ। [18]क्या यह उचित बात है कि तुम हरे-भरे चरागाह को चर लो और पेट भरने के बाद शेष चरागाह को अपने पैरों से रौंद दो? स्वच्छ जल को पीने के बाद पैरों से उसको गंदला कर दो? क्या तुम्हारा यह कार्य ठीक है? [19]जिसको तुमने अपने पैरों से रौंद दिया, क्या मेरी भेड़ें उसको खाएंगी? जिस स्वच्छ जल को तुमने गंदला कर दिया, क्या उस को मेरी भेड़ें पीएंगी?

---

* पाठांतर, 'का वध करूंगा'। ** मूल में, 'रेवड़'

34 : 5 मत 9 : 36 ; गण 27 : 17 ; 2 इति 18 : 16 ; यश 56 : 9 34 : 16 यश 40 : 11 ; लू 19 : 10 34 : 17 मत 25 : 32

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

20 'इसलिए स्वामी-प्रभु उनसे यह कहता
है: देखो, मैं स्वयं मोटी और दुबली भेड़ों के
मध्य न्याय करूंगा। 21तुम दुर्बल भेड़ों को
पांजर और सींग से मार-मार कर भगा देते हो,
और वे यहां-वहां बिखर जाती हैं। 22अत: मैं
अपनी भेड़ों की रक्षा करूंगा, और वे तुम्हारा
शिकार नहीं होंगी। मैं भेड़ों और भेड़ों के मध्य
न्याय करूंगा। 23मैं उनके ऊपर एक ही चरवाहे,
अपने सेवक दाऊद को नियुक्त करूंगा और
वह उनको चराएगा। दाऊद ही उनका चरवाहा
होगा, और उनको चराएगा। 24मैं स्वयं प्रभु
उनका परमेश्वर होऊंगा, और मेरा सेवक
दाऊद उनके मध्य में प्रशासक होगा। मैं-प्रभु
ने यह कहा है।

शान्ति का विधान (वाचा)

25 'मैं अपनी भेड़ों के साथ शान्ति का
विधान स्थापित करूंगा। मैं उनके देश से
जंगली पशुओं को निकाल दूंगा। तब वे निर्जन
प्रदेश में निश्चिन्त होकर निवास करेंगी, और
जंगल में सोएंगी। 26मैं उनको और अपनी
पहाड़ी के आसपास के स्थानों को आशिष का
कारण बनाऊंगा। मैं वर्षा के मौसम पर वर्षा
करूंगा, और यह वर्षा आशिष की वर्षा होगी।
27मैदान और उद्यानों के वृक्षों में फल लगेंगे,
और खेतों में भरपूर फसल होगी। भूमि अपनी
उपज देगी। मेरे निज लोग अपने देश में निरापद
निवास करेंगे। जब मैं उनकी गुलामी के जूए
को तोड़कर उन्हें स्वतन्त्र करूंगा, जब मैं उनको
गुलाम बनाने वाले शत्रु के हाथ से मुक्त करूंगा,
तब उन्हें ज्ञात होगा कि मैं ही प्रभु हूं। 28तब वे
विश्व के राष्ट्रों का शिकार नहीं बनेंगे, और
जंगली जानवर उनको मार कर नहीं खाएंगे।
निस्सन्देह वे अपने देश में निरापद निवास
करेंगे, और उनको फिर कोई भयभीत नहीं
करेगा। 29मैं अपने निज लोगों के लिए उपजाऊ
खेतों और उद्यानों की व्यवस्था करूंगा। तब वे
अपने देश में भूख से नहीं मरेंगे, और न ही
उनके पड़ोसी राष्ट्र उन का मजाक उड़ाएंगे।
30तब उनको मालूम होगा कि मैं-प्रभु, उनका
परमेश्वर, उनके साथ हूं, और वे इस्राएल के
वंशज मेरे निज लोग हैं। मैं, स्वामी-प्रभु यही
कहता हूं। 31ओ मेरे निज लोगो, तुम मेरी भेड़ें
हो, मेरे चरागाह की भेड़ें हो, और मैं तुम्हारा
परमेश्वर हूं।' स्वामी-प्रभु की यही वाणी है।

एदोम राष्ट्र के विरुद्ध नबूवत

35 प्रभु का यह सन्देश मुझे मिला। प्रभु ने
मुझसे कहा, 2'ओ मानव, सेईर पहाड़
की ओर, एदोम राष्ट्र की ओर मुख कर, और
उसके विनाश की नबूवत कर। 3तू यह कहना :
स्वामी-प्रभु यों कहता है, ओ सेईर पहाड़, मैं
तेरे विरुद्ध हूं। तुझ पर प्रहार करने के लिए मैंने
अपना हाथ बढ़ाया है। मैं तुझ को उजाड़ दूंगा।
तेरा देश निर्जन हो जाएगा। 4मैं तेरे नगरों को
उजाड़ दूंगा। तू उजड़ जाएगा। तब तुझे मालूम
होगा कि मैं प्रभु हूं।

5 'तू सदा से इस्राएलियों के साथ शत्रुता
रखता रहा है। जब वे अपने अधर्म के कारण
संकट में पड़े हुए थे और उनके अन्तिम दण्ड
का समय आ गया था, तब तूने तलवार से
उनको मारा था। 6अत: मैं, स्वामी-प्रभु कहता
हूँ: मुझे अपने जीवन की सौगन्ध है ! मैं तुझको
वध के लिए तैयार करूंगा, और उनकी हत्या
का पाप तेरा पीछा करेगा ! तूने हत्या की है,
और दोषी ठहरा है; अत: हत्या का पाप तेरा
पीछा करेगा। 7ओ एदोम राष्ट्र, ओ सेईर के
पहाड़ी देश, मैं तुझको उजाड़ दूंगा, निर्जन बना
दूंगा। जो भी यात्री तुझ में से होकर आएगा, मैं
उसको नष्ट कर दूंगा। 8ओ एदोम राष्ट्र, मैं तेरे
पहाड़ों को लोथों से पाट दूंगा। तेरे टीलों,
घाटियों और गड्ढों में तलवार से वध हुए लोगों
के शव पड़े होंगे। 9मैं तुझको युग-युग के लिए
उजाड़ दूंगा, और तेरे नगर फिर कभी आबाद
नहीं होंगे। तब तुझको मालूम होगा कि मैं ही
प्रभु हूँ।

10 'तूने कहा था, ''ये दो राज्य, ये दो
प्रदेश—इस्राएल और यहूदा मेरे हैं। हम इन पर
अधिकार करेंगे,'' यद्यपि मैं, प्रभु वहाँ था।
11मैं, स्वामी-प्रभु, अपने जीवन की सौगन्ध

34 : 23 यहेज 37 : 24 **34 : 25** यश 11 : 6 ; यिर 23 : 6 **अध्याय 35** ओब पद 1-14

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

खाता हूं: तूने उनके प्रति घृणा की। अपनी घृणा
के कारण उनसे क्रोध किया और उनसे शत्रुता
का व्यवहार किया, इसलिए मैं भी तुझसे ऐसा
ही व्यवहार करूंगा। मैं तेरा न्याय करूंगा, और
तुझको दण्ड दूंगा, और यों स्वयं को तुझ पर
प्रकट करूंगा। 12ओ एदोम, तूने इस्राएल देश
के पहाड़ी क्षेत्रों के विरुद्ध तिरस्कारपूर्ण वचन
कहे हैं, और मैं-प्रभु ने उन सबको सुना है। तूने
कहा है, "इस्राएल के ये पहाड़ी क्षेत्र उजाड़
पड़े हैं। ये हमें हड़पने के लिए दिए गए
हैं।" 13तूने मेरे विरुद्ध अपने मुंह से बड़ी-बड़ी
बातें कीं, अपने आप को गर्व से फुलाया। मैंने
स्वयं यह सब सुना है। 14इसलिए मैं, स्वामी-
प्रभु यह कहता हूँ: मैं तुझको उजाड़ दूंगा, और
सारी दुनिया आनन्द मनाएगी। 15जब इस्राएल-
वंशियों की पैतृक भूमि उजड़ गई थी, तब तू
उनके विनाश से आनन्दित हुआ था। ऐसा ही
व्यवहार मैं तेरे साथ करूंगा। ओ सेईर पहाड़,
ओ समस्त एदोम राष्ट्र, तू एकदम उजाड़ हो
जाएगा। तब तुझे ज्ञात होगा कि मैं ही प्रभु हूं।

इस्राएली समाज की पुनः स्थापना

36 'और तू, ओ मानव, इस्राएल के पहाड़ों
से यह नबूवत कर। तू उनसे कहना, ओ
इस्राएली राष्ट्र के पहाड़ो! प्रभु का यह सन्देश
सुनो। 2स्वामी-प्रभु यों कहता है: तुम्हारे शत्रु
ने यह कहा था, "अहा! अब ये प्राचीन पहाड़
हमारे अधिकार में आ गए!" 3इसलिए ओ
मानव, तू इस्राएली राष्ट्र के पहाड़ों से यह
नबूवत कह, स्वामी-प्रभु यों कहता है, शत्रुओं
ने तुमको उजाड़ा, चारों ओर से तुम्हें रौंदा, और
तुम अन्य राष्ट्रों के अधिकार में आ गए। विश्व
की कौमें तुम्हारे विषय में बुरी-बुरी बातें कहती
हैं, वे तुम्हारी चर्चा करती हैं। 4इसलिए ओ
इस्राएली राष्ट्र के पहाड़ो! स्वामी-प्रभु का
सन्देश सुनो। स्वामी-प्रभु इस्राएली राष्ट्र के
पहाड़ों, पहाड़ियों, घाटियों, खोहों, उजाड़
क्षेत्रों और निर्जन नगरों से यह कहता है: तुम
अपने आसपास के राष्ट्रों की दृष्टि में मजाक का
कारण बन गए हो, और राष्ट्रों ने तुम्हें लूट लिया
है। 5अत: मैं, स्वामी-प्रभु, इन राष्ट्रों से और
एदोम राष्ट्र से अत्यन्त क्रोध में कह रहा हूं:
इन्होंने हर्ष-उल्लास से मेरे देश पर अधिकार
किया और उसके प्रति घृणा प्रकट करते हुए
उसको लूट लिया और उस पर पूर्ण कब्ज़ा कर
लिया। 6ओ मानव, तू इस्राएल देश के सम्बन्ध
में नबूवत कर। तू उसके पहाड़ों-पहाड़ियों,
खोहों और घाटियों से कह, स्वामी-प्रभु यों
कहता है: तुमने राष्ट्रों की कटु निन्दा सही है,
इसलिए मैं क्रोधाग्नि से भड़क उठा हूं, और यह
कह रहा हूं। 7मैं, स्वामी-प्रभु, यह शपथ खाता
हूँ: तेरे आस-पास के ये राष्ट्र, जिन्होंने तेरी
निन्दा की है, स्वयं दूसरों की निन्दा के पात्र
बनेंगे।

8'किन्तु, तुम ओ इस्राएल देश के पहाड़ो,
तुममें से नई-नई शाखाएं फूटेंगी, और मेरे निज
लोग इस्राएलियों के लिए तुम फलवंत होगे;
क्योंकि देखो, वे शीघ्र स्वदेश लौटेंगे। 9मैं तुम्हारे
पक्ष में हूं, और मैं तुम पर आशिष की वर्षा करने
के लिए तुम्हारी ओर मुड़ूंगा। तुम्हारी भूमि पर
खेती की जाएगी, वह फिर बोई जाएगी। 10मैं
तुम्हें फिर बसाऊंगा, और तुम्हारे निवासियों को
असंख्य करूंगा। मैं सम्पूर्ण इस्राएली राष्ट्र को
पुन: आबाद करूंगा। निर्जन नगर पुन: आबाद
होंगे, खण्डहरों का पुन: निर्माण होगा। 11मैं तुम
पर निवास करनेवाले मनुष्यों और पशुओं दोनों
को असंख्य करूंगा। वे बढ़ेंगे और फलेंगे-
फूलेंगे। जैसे तुम प्राचीन काल में आबाद थे वैसे
ही मैं तुम्हें फिर आबाद करूंगा। मैं पहले से
अधिक तुम्हारी भलाई करूंगा। तब तुम्हें
अनुभव होगा कि मैं ही प्रभु हूं। 12अन्य मनुष्य
तथा मेरे निज लोग इस्राएली तुम पर चलेंगे-
फिरेंगे। वे तुम्हारे मालिक होंगे, और तुम
उनकी पैतृक सम्पत्ति बनोगे। तुम फिर कभी
उनको उनकी सन्तान से वंचित नहीं करोगे।'

13स्वामी-प्रभु की यह वाणी है: 'ओ
इस्राएली भूमि, लोग तेरे विषय में कहते हैं, "तू
मनुष्यों को खा जाती है, अपने राष्ट्र को निर्वंश
कर देती है।" 14लेकिन अब तू मनुष्यों को
नहीं खाएगी, और न ही अपने राष्ट्र को उसकी
सन्तान से वंचित करेगी।' स्वामी-प्रभु की यही

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वाणी है। 15 'मैं फिर कभी राष्ट्रों में तेरी निन्दा नहीं होने दूंगा, उनके निन्दापूर्ण वचन तेरे कानों में नहीं पड़ेंगे। जातियां तेरा अपमान नहीं करेंगी, और तू उनके अपमान का बोझ नहीं सहेगी। तू पुन: अपने राष्ट्र का पतन नहीं होने देगी।' स्वामी-प्रभु की यही वाणी है।'

इस्राएली अपने दण्ड का अनुभव कर चुके

16 प्रभु का यह सन्देश मुझे मिला। प्रभु ने मुझसे कहा, 17 'ओ मानव, जब इस्राएली अपने देश में रहते थे, तब उन्होंने अपने आचरण और व्यवहार से उसको अशुद्ध कर दिया था। ऋतुमति स्त्री की अशुद्धता के समान उनका आचरण अशुद्ध था। 18 उन्होंने अपने देश में हत्याएं की थीं। मूर्तियों की पूजा कर अपने देश को अशुद्ध किया था। अत: मैंने अपनी क्रोधाग्नि की उन पर वर्षा की। 19 मैंने विश्व के राष्ट्रों में उनको तितर-बितर कर दिया। वे भिन्न-भिन्न देशों में बिखर गए। मैंने उनके आचरण और व्यवहार के अनुरूप उनका न्याय किया था। 20 वे जिस-जिस देश में गए, वहाँ भी उन्होंने मेरे पवित्र नाम को अपवित्र किया। उस देश के लोग उनके बारे में यह कहते थे, ''ये प्रभु के निज लोग हैं, फिर भी उसके देश से इनको निकाल दिया गया।'' 21 किन्तु मुझे अपने पवित्र नाम का ध्यान था, यद्यपि इस्राएलियों ने अपने निष्कासन के देशों में मेरे नाम को अपवित्र किया था।

22 'ओ मानव, तू इस्राएल के वंशजों से यह कह, स्वामी-प्रभु यों कहता है: ओ इस्राएल वंशियो, जो कार्य मैं करने वाला हूं, वह मैं तुम्हारे कारण नहीं, बल्कि अपने पवित्र नाम के हेतु करूंगा, जिसको तुमने अपने निष्कासन के देश में अपवित्र किया है। 23 मैं अपने महान नाम को पवित्र सिद्ध करूंगा, क्योंकि वह अन्य जातियों में अपवित्र किया गया है; तुमने ही उनके मध्य में उसको अपवित्र किया है। जब मैं उनके सामने, तुम्हारे माध्यम से अपनी पवित्रता को सिद्ध करूंगा, तब सब राष्ट्रों को ज्ञात होगा कि मैं ही प्रभु हूं,' स्वामी-प्रभु की यही वाणी है।

24 'मैं तुम्हें भिन्न-भिन्न राष्ट्रों में से निकालूंगा, और सब देशों में से एकत्र करूंगा, और तुमको तुम्हारे अपने देश में पुन: लाऊंगा। 25 मैं तुम्हें शुद्ध करने के लिए तुम पर शुद्ध जल छिड़कूंगा। तब तुम अपनी समस्त अशुद्धता से शुद्ध हो जाओगे। मैं तुम्हें तुम्हारी सब मूर्तियों से मुक्त करूंगा, और तुम्हें शुद्ध करूंगा। 26 मैं तुम्हें एक नया हृदय दूंगा, और तुम्हारे भीतर एक नई आत्मा उत्पन्न करूंगा। मैं तुम्हारी देह से तुम्हारा पाषाण हृदय निकाल कर तुम्हें संवेदनशील* हृदय दूंगा 27 मैं तुम्हारे भीतर अपना आत्मा प्रतिष्ठित करूंगा। तब तुम मेरी संविधियों के अनुसार आचरण करोगे, और मेरे आदेशों का तत्परतापूर्वक पालन करोगे। 28 जो देश मैंने तुम्हारे पूर्वजों को दिया था, उसमें तुम पुन: निवास करोगे। तुम मेरे निज लोग होगे, और मैं तुम्हारा परमेश्वर हूंगा। 29 मैं तुम्हारी सब अशुद्धताओं से तुम्हें मुक्त करूंगा। मैं प्रचुर मात्रा में अनाज उपजाऊंगा और तुम्हारे देश में अकाल नहीं पड़ने दूंगा। 30 मैं प्रचुर मात्रा में पेड़ों में फल और खेतों में अन्न उत्पन्न करूंगा। तब तुम्हारे देश में कभी अकाल नहीं पड़ेगा, और न राष्ट्रों में तुम्हारा अपमान होगा। 31 तब तुम्हें अपने दुराचरण और दुष्कर्मों का स्मरण होगा; तुम्हें अपने अधर्म और घृणित कामों के लिए ग्लानि होगी। 32 किन्तु स्मरण रखो, स्वामी-प्रभु कहता है, 'इस बात को तुम अच्छी तरह समझ लो कि मैं ये सब कार्य तुम्हारे कारण नहीं करूंगा। ओ इस्राएल के वंश! तू अपने आचरण के लिए शर्म कर, लज्जित हो।'

33 स्वामी-प्रभु यों कहता है: 'जिस दिन मैं तुम्हारी समस्त अशुद्धताओं से तुम्हें शुद्ध करूंगा, तब तुम्हारे नगरों को पुन: बसाऊंगा। खण्डहरों का पुन: निर्माण होगा। 34 जो भूमि

---

* अक्षरश: 'मांस का'

36 : 17 लेव 15 : 19 **36 : 20** रोम 2 : 24 **36 : 26** यहेज 11 : 19 ; 2 कुर 3 : 3 **36 : 27** यहेज 37 : 14 ; 1 थिस 4 : 8 ; गल 5 : 5 ; 1 यो 3 : 23-24 **36 : 31** यहेज 6 : 9 ; 20 : 43

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उजाड़ पड़ी थी, वह पुनः जोती जाएगी। वहां
से गुजरनेवाले राहगीरों की दृष्टि में वह उजाड़
नहीं रहेगी। 35वे तुम्हारे देश के विषय में कहेंगे,
"देखो, यह देश, जो अब तक उजाड़ पड़ा था,
अदन-उद्यान के समान हरा-भरा हो गया।
उजाड़, निर्जन और खण्डहर पड़े हुए नगर पुनः
आबाद हो गए। उनमें गढ़ों का निर्माण हो
गया।" 36तब तुम्हारे आसपास के बचे हुए
राष्ट्रों को यह मालूम होगा कि मैं-प्रभु ने ही
खण्डहर पड़े नगरों को पुनः आबाद किया है;
जो उजाड़ हो गया था, उसको हरा-भरा किया
है। मैं-प्रभु ने यह कहा है। अतः मैं इसको
अवश्य पूरा करूंगा।'

37 स्वामी-प्रभु यों कहता है, 'मैं इस्राएल
वंशियों को अनुमति दूंगा कि वे मुझसे विनती
करें और मैं उनके लिए उस कार्य को करूं।
निस्सन्देह वे मुझसे विनती करेंगे, और मैं उनके
मनुष्यों की संख्या भेड़-बकरियों की तरह बढ़ा
दूंगा। 38जैसे पवित्र बलि की भेड़-बकरियां
होती हैं, जैसे निर्धारित पर्वों के समय यरूशलेम
में असंख्य भेड़-बकरियां होती हैं, वैसे ही
निर्जन पड़े हुए नगर असंख्य मनुष्यों की भीड़
से भर जाएंगे। तब उन्हें ज्ञात होगा कि मैं ही प्रभु
हूं।'

सूखी हड्डियों की घाटी

37 प्रभु की सामर्थ्य** मुझ पर प्रबल हुई।
प्रभु ने अपने आत्मा के माध्यम से मुझे
बाहर निकाला और घाटी के मध्य में खड़ा कर
दिया। मैंने देखा कि घाटी हड्डियों से भरी है।
2प्रभु ने मुझे घाटी के चारों ओर घुमाया। मैंने
देखा कि घाटी की सतह पर बहुत हड्डियां हैं,
और वे पूर्णतः सूखी हुई हैं। 3प्रभु ने मुझसे पूछा,
'ओ मानव, क्या इन सूखी हड्डियों में प्राण आ
सकते हैं?' मैंने उत्तर दिया, 'हे स्वामी-प्रभु,
यह तो केवल आप जानते हैं।' 4प्रभु ने मुझ से
फिर कहा, 'तू इन हड्डियों से नबूवत कर। तू
इनसे यह कह: ओ सूखी हड्डियो! प्रभु का
यह सन्देश सुनो। 5स्वामी-प्रभु सूखी हड्डियों
से यह कहता है: "मैं तुममें प्राण† फूंकूंगा, और
तुम जीवित हो जाओगी। 6मैं तुममें नसें भरूंगा
और तुम्हारे कंकाल पर मांस चढ़ाऊंगा। मैं
उसको त्वचा से ढकूंगा, और तुम्हें प्राण से
परिपूर्ण कर दूंगा। तब तुम जीवित हो जाओगी
और तुम्हें अनुभव होगा कि मैं ही प्रभु हूं।"'

7 अतः प्रभु ने जैसा मुझे आदेश दिया था
वैसा ही मैंने किया। मैंने नबूवत की। जब मैं
नबूवत कर रहा था तब आवाज सुनाई दी, मानो
हड्डियां खड़खड़ा रही हैं। मैंने देखा कि
हड्डियां पास आईं और अपनी-अपनी हड्डी
से जुड़ गईं। 8मैं उनको देखता रहा: उन पर नसें
भर गईं, उन पर मांस चढ़ गया, और मांस त्वचा
से ढक गया। किन्तु उनमें जीवन का सांस+ नहीं
था। 9तब प्रभु ने मुझे आदेश दिया, 'ओ मानव,
नबूवत कर! तू जीवन के सांस को मेरा यह
सन्देश सुना। तू उससे यह कहना: ओ जीवन
के सांस, तुझसे स्वामी-प्रभु यों कहता है: चारों
पवनों से आ, और इन शवों में प्राण फूंक कि
ये जीवित हो जाएं।' 10अतः मैंने जीवन के
सांस को प्रभु का सन्देश सुनाया, जैसा प्रभु ने
मुझे आदेश दिया था। तब शवों में जीवन का
सांस भर गया और वे जीवित हो गए। वे अपने
पैरों पर खड़े हो गए! वे संख्या में इतने अधिक
थे मानो विशाल सेना हो!

आश्चर्यपूर्ण कर्म का अर्थ

11 तब प्रभु ने मुझसे कहा, 'ओ मानव, ये
हड्डियां मानो इस्राएल के सब वंशज हैं। देख,
वे कहते हैं, "हमारी हड्डियां सूख गईं। हमारी
आशा टूट गई। हम पूर्णतः नष्ट हो चुके हैं।"
12अतः तू उनको मेरा यह सन्देश सुना। तू उनसे
यह नबूवत करना, स्वामी-प्रभु यों कहता है:
ओ मेरे निज लोगो, मैं तुम्हारी कबरें खोलूंगा
और उनमें से तुमको निकालूंगा।* मैं तुमको
तुम्हारे देश इस्राएल में वापस लाऊंगा। 13जब
मैं तुम्हारी कबरें खोलूंगा, और उनमें से तुमको
निकालूंगा तब तुम्हें ज्ञात होगा कि मैं ही प्रभु
हूँ।

** शब्दशः, "हाथ"। † अथवा 'आत्मा'। +अथवा, 'प्राण, आत्मा' * अथवा, 'उठाऊंगा'।

36 : 35 यश 51 : 3 37 : 5 भज 104 : 30 37 : 10 प्रक 11 : 11; रोम 8 : 11 37 : 12 यहेज 36 : 24

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

14 'मैं अपना आत्मा तुममें प्रतिष्ठित करूंगा,
और तुम जीवित हो जाओगे! मैं तुम्हें तुम्हारे
अपने देश में पुन: बसाऊंगा। तब तुम्हें अनुभव
होगा कि मैंने, तुम्हारे प्रभु ने ही यह कहा था;
और मैंने अपने वचन के अनुसार उसको पूरा
भी किया है।' प्रभु की यह वाणी है।

इस्राएल और यहूदा प्रदेशों की पुन: स्थापना

15 प्रभु का यह सन्देश मुझे मिला। प्रभु ने
मुझसे कहा, 16 'ओ मानव, तू लकड़ी की एक
पट्टी** ले, और उस पर यह लिख: "यह
पट्टी यहूदा की और उसके साथी इस्राएल की
सन्तान की है।" इसके बाद तू दूसरी पट्टी
लेना, और उस पर यह लिखना: "यह पट्टी
यूसुफ की अर्थात् एफ्रइम की तथा उसके साथी
समस्त इस्राएल वंशियों की है।" 17 लिखने के
पश्चात् तू उनको परस्पर जोड़ देना ताकि वे तेरे
हाथ में एक पट्टी बन जाएं। 18 जब तेरे जाति-
बन्धु तुझसे पूछेंगे, "कृपया, हमें समझाइए, इन
पट्टियों का क्या अर्थ है?" 19 तब तू उन से यह
कहना, स्वामी-प्रभु यों कहता है: सुनो, मैं
यूसुफ की पट्टी को (जो एफ्रइम के हाथ में
है) तथा उसके संगी-साथी इस्राएल के कुलों
को लेनेवाला हूं। उसके पश्चात् मैं उसको
यहूदा की पट्टी से जोड़ दूंगा, मैं उन्हें एक ही
पट्टी बनाऊंगा, और वे दोनों मेरे हाथ में एक
हो जाएंगे। 20 ओ मानव, जिन पट्टियों पर तू
लिखेगा, उनको अपने हाथ में उनके सामने
रखना ताकि वे देख सकें। 21 इसके पश्चात् तू
उनसे यह कहना, स्वामी-प्रभु यों कहता है:
देखो, इस्राएल-वंशी जिन-जिन देशों में चले
गए हैं, मैं उनको वहां से, चारों ओर के देशों
से एकत्र करूंगा, और उनको उनकी अपनी
भूमि पर लाऊंगा। 22 मैं उनके देश में, इस्राएल
के पहाड़ों पर, उनको एक राष्ट्र के रूप में पुन:
प्रतिष्ठित करूंगा। उनके ऊपर एक ही राजा
राज्य करेगा, और वे फिर कभी दो राष्ट्रों के रूप
में विभाजित नहीं होंगे। उनके अलग-अलग
दो राज्य नहीं होंगे। 23 वे घृणित मूर्तियों की पूजा
कर स्वयं को अशुद्ध नहीं करेंगे, और न ही मेरी
आज्ञाओं का उल्लंघन कर किसी पाप से स्वयं
को अपवित्र करेंगे। उन्होंने अपना धर्म त्याग
दिया था और यों पाप किया था। मैं उनको धर्म-
त्याग के पाप से छुड़ाऊंगा, और उनको शुद्ध
करूंगा। तब वे मेरे निज लोग होंगे, और मैं
उनका परमेश्वर होऊंगा।

24 'मेरा सेवक दाऊद उनका राजा होगा,
और उन-सब का एक ही चरवाहा होगा। वे मेरे
आदेशों के अनुसार जीवन व्यतीत करेंगे, और
मेरी संविधियों के अनुरूप आचरण करेंगे।
25 जो देश मैंने अपने सेवक याकूब को दिया था,
वहां वे अपने पूर्वजों के देश में पुन: निवास
करेंगे। वे और उनके वंशज, पीढ़ी से पीढ़ी तक
वहीं स्थायी रूप से रहेंगे; और मेरे सेवक
दाऊद के वंशज युग-युगांतर उनके प्रशासक
होंगे। 26 मैं उनके साथ शान्ति का विधान
स्थापित करूंगा। यह विधान उनके साथ
शाश्वत विधान होगा। मैं उनको आशिष दूंगा,
और उनकी आबादी बढ़ाऊंगा। मैं उनके मध्य
में स्थायी रूप से अपना पवित्र निवास-स्थान
बनाऊंगा।

27 'मेरा निवास-स्थान उनके मध्य में सदा
विद्यमान रहेगा। वे मेरे निज लोग होंगे, और मैं
उनका परमेश्वर होऊंगा। 28 जब मेरा पवित्र
स्थान उनके मध्य में सदा विद्यमान रहेगा, तब
सब राष्ट्रों को ज्ञात होगा कि मैं-प्रभु ही इस्राएल
को पवित्र करता हूँ।'

परमेश्वर की विश्व-विजय

38 प्रभु का यह सन्देश मुझे मिला। उसने
मुझसे कहा, 2 'ओ मानव, तू अपना
मुख मागोग देश के राजा गोग की ओर कर,
और उसके विरुद्ध नबूवत कर। यह मेशेक और
तूबल नगर-राज्यों का मुख्य शासक है। 3 तू उससे
यह कहना, स्वामी-प्रभु यों कहता है: ओ गोग,
मेशेक और तूबल नगर-राज्यों के मुख्य प्रशासक,

** अथवा, 'तख्ती † अथवा, 'वाचा'।

37 : 19 जक 11 : 7 37 : 22 यिर 3 : 18 37 : 24 यहेज 34 : 23-24 ; यो 10 : 16 37 : 26 इब्र 13 : 20 ; नि 25 : 8 ; 29 : 45 37 : 27 लेव 26 : 12 ; यिर 31 : 31 ; 2 कुर 6 : 16 ; प्रक 21 : 3 38 : 2 प्रक 20 : 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
मैं तेरे विरुद्ध हूं। 4मैं तेरे मुंह में लगाम दूंगा।
मैं तेरे जबड़ों में आंकड़े डालकर तुझे घुमाऊंगा।
मैं तुझे घसीट कर लाऊंगा। तेरे साथ तेरी समस्त
सेना होगी; घोड़े और घुड़सवार होंगे, जो पूरी
तरह कवच से ढके होंगे। सैनिकों का विशाल
दल होगा। हर एक सैनिक के हाथ में फरी और
ढाल होगी। ये सब तलवार चलाने में निपुण
होंगे। 5इन सैनिकों के साथ फारस, कूश और
पूत देशों के सैनिक होंगे, जो सबके सब हाथों
में ढाल लिये और सिर पर शिरस्त्राण लगाए
होंगे। 6इनके अतिरिक्त, ओ गोग, तेरे साथ इन
राष्ट्रों के सैनिक मेरे सम्मुख आएंगे: गोमेर और
उसके सब सैनिक-दल, उत्तरी सीमांत पर
स्थित बेत-तोगर्मा और उसके सब सैनिक-
दल। ओ गोग, तेरे साथ अनेक देशों के सैनिक
होंगे।

7 'ओ गोग, तू और तेरे आसपास एकत्र हुई
अन्य देशों की सेनाएं तैयार हों। तू उनका रक्षक
बनना। 8अनेक दिन के पश्चात् मैं तेरी सुधि
लूंगा, और तुझे मेरा आदेश प्राप्त होगा। अनेक
वर्ष के पश्चात् मैं तुझको उस देश पर आक्रमण
करने के लिए भेजूंगा, जो युद्ध के बाद पुन:
निर्मित हुआ है। इस देश में अनेक देशों से लोग
आकर बसे हैं। ये इस्राएल के पहाड़ी इलाके में
निवास करते हैं, जो अब तक स्थायी रूप से
निर्जन और उजाड़ पड़ा था। ये लोग भिन्न-
भिन्न देशों की गुलामी से मुक्त होकर यहाँ लाए
गए हैं, और अब, वे-सब इस देश में निश्चिन्त
हो निवास कर रहे हैं। 9तू और तेरे सैनिक-दल
तथा तेरे साथ अन्य कौमों के सैनिक इस देश
पर आंधी के समान आक्रमण करेंगे, और काले
बादल के समान उसको ढक लेंगे।

गोग का षड्यन्त्र

10 'स्वामी-प्रभु यों कहता है: ओ गोग, उस
दिन तेरे मन में ये विचार उत्पन्न होंगे, और तू
यह दुष्कर्म करने की योजना बनाएगा। 11तू यह
सोचेगा, "मैं ऐसे ग्रामीण देश पर आक्रमण
करूंगा, जो शहरपनाह से नहीं घिरा है। मैं उन
लोगों पर हमला करूंगा, जो निश्चिंत निवास
करते हैं। वे ऐसे मकानों में रहते हैं, जिनके चारों
ओर दीवार नहीं है, जिन के घरों में सांकल और
नगर के प्रवेश-द्वारों में अर्गलाएं नहीं हैं।"
12ओ गोग, तू उनको लूटना और उनकी धन-
सम्पत्ति छीनना चाहेगा। जो निर्जन स्थान अब
आबाद हो गए हैं, उनको फिर उजाड़ना
चाहेगा। तू उनको लूटना चाहेगा जो भिन्न-
भिन्न देशों से निकालकर स्वदेश में एकत्र किए
गए हैं; जो अब पशु-पालन कर रहे हैं; जिन्होंने
सम्पत्ति जमा कर ली है; यरूशलेम में निवास
कर रहे हैं, जो पृथ्वी की नाभि है। 13शबा और
ददान देशों के निवासी तथा तर्शीश महानगर
तथा उसके गांवों के व्यापारी, वस्तुत: सब
व्यापार करने वाले तुझसे पूछेंगे, "क्या आप
लूटने के लिए आए हैं? जो आपने यह विशाल
सेना इकट्ठी की है, वह क्या केवल लूट का
माल ढोने के लिए है? क्या आपने इस सेना को
सोना, चांदी, पशु, माल-सम्पत्ति ढोने, यह
बड़ी लूट ले जाने के लिए एकत्र किया है?"

गोग इस्राएल देश पर आक्रमण करेगा

14 'इसलिए, ओ मानव, नबूवत कर, और
गोग से यह कह, स्वामी-प्रभु यों कहता है: जब
मेरे निज लोग इस्राएली अपने देश में निश्चिंतता
से निवास करते होंगे, तब तू उन पर आक्रमण
करने के लिए उत्तेजित होगा 15और उत्तरी सीमांत
से, जहां तेरा निवास-स्थान है, निकलेगा। तेरे
साथ विशाल सेना होगी, असंख्य सैनिक होंगे,
जो घोड़ों पर सवार होंगे। 16जैसे काली घटाएं
आकाश को ढक लेती हैं, तू और तेरी सेना वैसे
ही मेरे निज लोग इस्राएलियों के देश को ढक
लेगी। तू उन पर चढ़ाई करेगा। ओ गोग, जब
मेरे निज लोग इस्राएली अपने देश में बस चुके
होंगे, उसके पश्चात् मै स्वयं तुझसे अपने देश
पर आक्रमण कराऊंगा, जिससे सब राष्ट्र जानेंगे
कि मैं तेरे माध्यम से सब राष्ट्रों की आंखों के
सामने अपनी पवित्रता प्रमाणित करता हूं।

गोग की विशाल वाहिनी का विनाश

17 'स्वामी-प्रभु यों कहता है: ओ गोग,
क्या तू वही राजा नहीं है, जिसके विषय में मैंने

38 : 6 उत 10 : 2 ; यहेज 27 : 14 38 : 16 नि 14 : 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
अपने सेवकों, इस्राएल के नबियों के माध्यम
से कहा था ? मेरे ये सेवक अनेक वर्षों तक यह
नबूवत करते रहे कि मैं तुझसे अपने निज लोग
इस्राएलियों पर आक्रमण कराऊंगा।' 18किन्तु
स्वामी-प्रभु यह भी कहता है: जिस दिन गोग
इस्राएल देश पर आक्रमण करेगा, मेरी क्रोधाग्नि
गोग के प्रति भड़क उठेगी। 19मैं अपनी ईर्ष्या
और क्रोधाग्नि के कारण यह घोषित करता हूं:
उस दिन इस्राएल देश में बड़ा भूकम्प आएगा।
20मेरी उपस्थिति के कारण सागर की मछलियां,
आकाश के पक्षी, और जंगल के पशु, भूमि पर
रेंगनेवाले जीव-जन्तु, तथा पृथ्वी की सतह पर
रहने वाले सब मनुष्य कांप उठेंगे। पहाड़
फटकर नीचे गिर पड़ेंगे। खड़ी चट्टानें ढह
जाएंगी, तथा मकानों और नगरों की सब दीवारें
भूमि पर गिर पड़ेंगी। 21स्वामी-प्रभु की यह
वाणी है: मैं गोग के ऊपर सब प्रकार के आतंक
भेजूंगा। भाई, भाई को तलवार से मौत के घाट
उतारेगा। 22मैं महामारी और रक्तपात के रूप
में उसको दण्ड दूंगा। मैं उस पर, उसके असंख्य
सैनिक-दलों पर और उसके साथ की अनेक
जातियों पर मूसलाधार वर्षा करूंगा। मैं उन पर
ओले, आग और गन्धक की वर्षा करूंगा।
23इस प्रकार मैं अपनी महानता और पवित्रता
प्रकट करूंगा, और सब राष्ट्रों की आंखों के
सामने स्वयं को प्रकट करूंगा। तब उनको ज्ञात
होगा कि मैं ही प्रभु हूं।

39 'और तू, ओ मानव, गोग के विरुद्ध
नबूवत कर। तू उससे यह कहना,
स्वामी-प्रभु यों कहता है: ओ गोग, मेशेक और
तूबल नगर-राज्यों के मुख्य प्रशासक! देख, मैं
तेरे विरुद्ध हूं। 2मैं तुझे लगाम डालकर घुमा ले
जाऊंगा। तुझ को उत्तरी सीमांत से लाऊंगा, और
तुझ से इस्राएल देश के पहाड़ी क्षेत्रों पर चढ़ाई
कराऊंगा। 3किन्तु मैं तेरे हाथों पर प्रहार करूंगा,
और तेरे बाएं हाथ से धनुष नीचे गिर जाएगा।
मैं तेरे दाहिने हाथ से तेरे तीरों को नीचे गिरा
दूंगा। 4तू, तेरी समस्त सेना और अन्य जातियों
के सैनिक जो तेरे साथ हैं, सब के सब इस्राएल
के पहाड़ी क्षेत्रों में मारे जाएंगे। मैं तुम्हारे शवों
को हर प्रकार के शिकारी पक्षी और जंगली पशु
को खाने के लिए दे दूंगा। 5तू मैदान में मरेगा,
और तेरा शव पड़ा रहेगा। मैंने, स्वामी प्रभु ने
यह कहा है, यही मेरी वाणी है। 6मैं मागोग नगर
में तथा समुद्र तटीय नगरों में निश्चिंत निवास
करनेवालों पर अग्नि की वर्षा करूंगा। तब उन्हें
ज्ञात होगा कि मैं ही प्रभु हूं।

7 'मैं अपने पवित्र नाम को अपने निज लोग
इस्राएलियों के मध्य प्रकट करूंगा। मैं अपने
पवित्र नाम को फिर कभी अपवित्र न होने दूंगा।
तब सब राष्ट्रों को मालूम होगा कि मैं ही प्रभु
हूं, मैं ही इस्राएल में पवित्र परमेश्वर हूं। 8देखो,
यह होनेवाला है, और यह निस्सन्देह होगा; मैं,
स्वामी-प्रभु यह कहता हूँ। यह वही दिन है
जिसकी चर्चा मैंने की है।

9 'इस्राएल देश के नगरों के निवासी अपने-
अपने नगर से बाहर निकलेंगे, और वे अपने
शत्रुओं के अस्त्र-शस्त्रों को छीन कर उनमें
आग लगा देंगे, और उनको जला देंगे। वे सात
वर्ष तक ढाल, फरी, धनुष, तीर, लाठी और
बरछे जलाते रहेंगे। 10अस्त्र-शस्त्रों से उन्हें
इतनी लकड़ी मिलेगी कि उन्हें जंगल में लकड़ी
बीनने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी, और न ही
वे जंगलों के पेड़ों से लकड़ी काटेंगे। वे शत्रुओं
के हथियारों को ही जलाया करेंगे। जिन्होंने
उनको लूटा था, अब वे उनको लूटेंगे। जिन्होंने
उनकी धन-सम्पत्ति छीनी थी, अब वे उनकी
धन-सम्पत्ति छीनेंगे; स्वामी-प्रभु की यही
वाणी है।

11 'उस दिन मैं गोग को उसकी कबर के
लिए इस्राएल देश में एक स्थान दूंगा: ''यात्रियों
की घाटी'' जो सागर के पूर्व में है। वहीं गोग
और उसके असंख्य सैनिक गाड़े जाएंगे। अतः
यात्रियों के लिए उसका मार्ग बन्द हो जाएगा।
वह ''हमोन-गोग की घाटी'' कहलाएगी।
12अपने देश को लाशों से शुद्ध करने और
उनको दफनाने के लिए इस्राएलियों को सात
महीने लग जाएंगे। 13इस्राएल देश के सब

38 : 22 प्रक 8 : 7 ; 14 : 10 **39 : 1** यहेज 38 : 2 **39 : 4** प्रक 19 : 17-21

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

निवासी उनको दफनाएंगे। जिस दिन मैं अपनी
महिमा प्रकट करूंगा, वह दिन इस्राएलियों के
लिए गौरव का दिन होगा। स्वामी-प्रभु की यही
वाणी है। 14इस्राएल देश के निवासी शव गाड़ने
के लिए लोगों को नियुक्त करेंगे। ये लोग
समस्त देश में निरन्तर भ्रमण करेंगे, और जो
शव अब तक गाड़े नहीं गए होंगे, और भूमि पर
पड़े होंगे, वे उनको दफनाएंगे, और यों अपने
देश को शुद्ध करेंगे। वे सात महीने के पश्चात्
लाशों को ढूंढ़ना आरम्भ करेंगे। 15जब ये लोग
देश में लाशों की तलाश में निकलेंगे, और
किसी को मनुष्य का कंकाल कहीं दिखाई देगा,
तब वह अस्थि-पंजर के पास एक चिह्न खड़ा
करेगा। यह संकेत-चिह्न तब तक वहां बना
रहेगा जब तक गाड़नेवाले अस्थि-पंजर को
''हमोन-गोग की घाटी'' में न गाड़ देंगे। 16इस
प्रकार सम्पूर्ण देश शुद्ध किया जाएगा। (हमोन-
गोग की घाटी में हमोन* नामक नगर भी है)

17 'और तू, ओ मानव, स्वामी-प्रभु तुझसे
यों कहता है: तू आकाश के प्रत्येक प्रकार के
पक्षी और सब वन-पशुओं से यह कहना: चारों
दिशाओं से आओ, और मेरे महा बलिभोज में
सम्मिलित हो। मैं तुम्हारे लिए इस्राएल के
पहाड़ी क्षेत्रों में एक महा बलिभोज तैयार कर
रहा हूं। वहां तुम्हें खाने के लिए मनुष्य का मांस
और पीने को उसका रक्त मिलेगा। 18ओ आकाश
के पक्षियो और वन-पशुओ, मेरे भोज में तुम
योद्धाओं का मांस खाओगे, और पृथ्वी के
प्रशासकों का रक्त पीओगे। ये मानो बाशान देश
के मोटे-ताजे मेढ़े, मेमने, बकरे और बैल हैं।
19मैं यह महा बलिभोज तुम्हारे लिए तैयार कर
रहा हूँ। इस भोज में तुम चर्बीयुक्त मांस खा कर
अघा जाओगे, और रक्त पी कर मतवाले हो
जाओगे। 20मेरी भोजन की मेज पर तुम्हें घोड़ों,
घुड़सवारों, योद्धाओं और शूरवीर सैनिकों का
मांस पेट-भर मिलेगा, और तुम तृप्त हो
जाओगे, स्वामी-प्रभु की यही वाणी है।

21 'मैं सब राष्ट्रों में अपनी महिमा प्रकट
करूंगा, और वे मेरे न्यायपूर्ण कार्यों को देखेंगे।
उनको अनुभव होगा कि मैंने अपने सामर्थ्यपूर्ण
हाथ से उनको दण्ड दिया है। 22उस समय के
पश्चात् इस्राएल के वंशज यह अनुभव करेंगे
कि मैं ही उनका प्रभु-परमेश्वर हूं। 23इस्राएल
के पड़ोसी राष्ट्र भी यह जान लेंगे कि इस्राएल
के वंशज अपने अधर्म के कारण अपने देश से
निष्कासित हुए थे, और बन्दी होकर विदेश गए
थे। उन्होंने अपने प्रभु परमेश्वर से विश्वासघात
किया था। अत: उसने उनसे मुंह फेर लिया,
और उनको उनके बैरियों के हाथ में सौंप दिया
था। उनके बैरियों ने उनको तलवार से मौत के
घाट उतारा था।

24 'इस्राएली अशुद्ध थे। उन्होंने अपराध
किया था। अत: मैंने उनकी अशुद्धता और
अपराध के अनुरूप उनसे व्यवहार किया और
उनसे मुंह फेर लिया था।

इस्राएली कौम के गौरव की पुन: स्थापना

25 'स्वामी-प्रभु यों कहता है: मैं याकूब के
वंशजों को गुलामी से छुड़ाकर वापस लाऊंगा,
और उनको पुन: समृद्ध करूंगा। मैं सम्पूर्ण
इस्राएल वंशियों पर दया करूंगा। मैं अपने
पवित्र नाम के लिए ईर्ष्यालु होऊंगा। 26जब वे
अपने देश में पुन: निश्चिन्त निवास करने लगेंगे
और उनको किसी भी शत्रु के आक्रमण का डर
न होगा, तब वे अपने अपमानपूर्ण अतीत को
भूल जाएंगे। वे भूल जाएंगे कि उन्होंने मेरे प्रति
विश्वासघात किया था। 27मैं उनको भिन्न-भिन्न
देशों से वापस लाऊंगा, उनके शत्रुओं के देश
से बाहर निकालूंगा। मैं उनके माध्यम से सब
राष्ट्रों के सामने अपनी पवित्रता प्रमाणित
करूंगा। 28तब इस्राएलियों को ज्ञात होगा कि
मैं ही उनका प्रभु-परमेश्वर हूं। मैंने ही उनको
विश्व के राष्ट्रों में गुलाम बना कर भेजा था, और
मैं ही उनको उनके अपने देश में वापिस ले
आया हूं। मैं उनमें से किसी भी व्यक्ति को फिर
कभी विदेश में नहीं छोड़ूंगा।

29 'मैं इस्राएल के वंशजों पर अपना आत्मा

---

* अर्थात्, 'जनसमूह'

39 : 20 प्रक 19 : 18

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उण्डेलूंगा, और फिर कभी उनसे अपना मुंह
नहीं मोड़ूंगा। स्वामी-प्रभु की यही वाणी है।'

भावी मंदिर के संबंध में दर्शन

मन्दिर का पूर्वी फाटक

40 हमारे निष्कासन का पच्चीसवां वर्ष
था। यरूशलेम नगर के पतन को
चौदह वर्ष हो चुके थे। इसी वर्ष के आरम्भ में,
पहले महीने की दसवीं तारीख को प्रभु की
सामर्थ्य मुझ पर प्रबल हुई, और वह मुझे वहां
लाया। 2मैंने परमेश्वर के दर्शन देखे। परमेश्वर
ने अपने दर्शन में मुझे इस्राएल देश में पहुंचाया,
और वहां एक अत्यन्त ऊंचे पहाड़ पर खड़ा कर
दिया। मैंने देखा कि मेरे सामने नगर के
आकार-सा कुछ है।
3 जब परमेश्वर अपने दर्शन में मुझे वहां
लाया तब मैंने एक आदमी को देखा। उसका
रूप-रंग पीतल का था, और उसके हाथ में सन
का फीता और नापने का बांस था। वह नगर के
प्रवेश-द्वार पर खड़ा था। 4उस आदमी ने मुझसे
कहा, 'ओ मानव, जो कुछ तू सुनेगा, जो कुछ
देखेगा, तू उसको ध्यान से देखना, और कान
लगाकर सुनना। जो मैं तुझको दिखाऊंगा, उस
पर मन लगाना। तुझे यहां इसीलिए लाया गया
है कि मैं तुझको यह सब-कुछ दिखाऊं। जो
कुछ तू यहां देखेगा, वह इस्राएल वंशियों को
बताना।'
5 मैंने यह देखा: मन्दिर की सीमा के चारों
ओर एक दीवार है। जो नापने का बांस उस
आदमी के हाथ में है, वह छ: हाथ, अर्थात्
लगभग तीन मीटर* लम्बा है।
अत: उसने दीवार की मोटाई और ऊंचाई
नापी। मोटाई तीन मीटर और ऊंचाई तीन मीटर
निकली।
6 वह मन्दिर के पूर्वी फाटक पर गया। वह
उसकी सीढ़ी पर चढ़ा, और उसने ड्योढ़ी की
लम्बाई नापी। फाटक की ड्योढ़ी की लम्बाई
तीन मीटर निकली। 7उसने बाजू की पहरेदारों
की कोठरियां नापीं। प्रत्येक कोठरी तीन मीटर
लम्बी और तीन मीटर चौड़ी थी। बाजू की
कोठरियों के मध्य में अढ़ाई मीटर की दूरी थी।
उसने फाटक की दूसरी ड्योढ़ी नापी। यह
ड्योढ़ी फाटक के ओसारे के पास, भवन के
भीतर की ओर थी। उसकी लम्बाई तीन मीटर
थी।
8 उसने फाटक का ओसारा भी नापा।
उसकी लम्बाई चार मीटर निकली। 9ओसारे में
दो खम्भे थे। प्रत्येक खम्भा एक मीटर मोटा था।
वह ओसारा मन्दिर की ओर था।
10 पूर्वी फाटक के दोनों ओर पहरेदारों की
तीन कोठरियां थीं। इन-सब की नाप एक-
जैसी थी। इनके खम्भे भी एक ही नाप के थे,
जो दोनों ओर थे।
11 इसके पश्चात् उसने फाटक के प्रवेश-
द्वार की चौड़ाई को नापा। वह पांच मीटर थी।
उसने सम्पूर्ण प्रवेश-द्वार की चौड़ाई नापी। वह
साढ़े छ: मीटर निकली। 12दोनों ओर की
कोठरियों के सामने एक चबूतरा** था। वह
दोनों ओर से आधा-आधा मीटर ऊंचा था।
कोठरियां दोनों ओर तीन-तीन मीटर लम्बी
थीं।
13 इसके बाद उसने एक ओर की कोठरियों
के पिछले भाग से दूसरे ओर की कोठरियों के
पिछले भाग तक फाटक को नापा। इस प्रकार
कोठरियों के दरवाजों से होकर फाटक की
चौड़ाई साढ़े बारह मीटर निकली।
14 उसने ओसारे को भी नापा। उसकी
चौड़ाई दस मीटर थी। फाटक के ओसारे के
चारों ओर आंगन था। 15फाटक के बाहरी द्वार
के सामने से उसके भीतरी ओसारे के अन्त तक
की लम्बाई पच्चीस मीटर थी। 16फाटक में चारों
ओर खिड़कियां थीं, जो भीतर की ओर बाजू
के कोठरियों के खम्भों तक संकरी होती चली
गई थीं। इसी प्रकार ओसारे में भी भीतर की
ओर चारों तरफ खिड़कियां थीं। खम्भों पर

---

* मूल में, 'हाथ की यह नाप साधारण हाथ से चार अंगुल बड़ी है', अर्थात् प्राय: आधा मीटर ** अथवा, 'खुला स्थान'

40 : 1 यहेज 1 : 3 **40 : 2** प्रक 21 : 10 **40 : 3** प्रक 11 : 1 ; 21 : 15 **40 : 5 : 42 : 20** 1 रा 6 ; 1-38
2 इत 3-4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

खजूर के वृक्ष खुदे थे।

मन्दिर का बाहरी आंगन

17 तत्पश्चात् वह मुझे बाहरी आंगन में ले
गया। वहां मैंने यह देखा: आंगन के चारों ओर
कमरे और एक फर्श है। फर्श पर तीस कमरे बने
हुए हैं। 18यह निचला फर्श था, और फाटकों
से सटा था। फर्श की लम्बाई और फाटकों की
लम्बाई समान थी। 19तब उसने निचले फाटक
के सामने से भीतरी आंगन के बाहरी भाग तक
की दूरी नापी। दूरी पचास मीटर निकली।

बाहरी आंगन के उत्तरी और दक्षिणी फाटक

वह मेरे आगे-आगे उत्तर की ओर गया।
20वहाँ एक फाटक था। उसका मुख उत्तर की
ओर था। यह मन्दिर के बाहरी आंगन का
फाटक था। उसने फाटक की लम्बाई और
चौड़ाई नापी। 21फाटक के दोनों ओर तीन-
तीन कोठरियां थीं। इस फाटक की कोठरियों,
खम्भों और ओसारे की नाप पहले फाटक के
समान थी। फाटक की लम्बाई पच्चीस मीटर
और चौड़ाई साढ़े बारह मीटर थी। 22इसकी भी
खिड़कियों, ओसारे, तथा खम्भों पर खुदे खजूर
के वृक्षों की नाप पूर्वमुखी फाटक के समान थी।
इस पर चढ़ने के लिए सात सीढ़ियां बनी थीं।
फाटक का ओसारा भीतर की ओर था।
23पूर्वमुखी फाटक की तरह ही उत्तरी फाटक
के सामने एक फाटक था, जिस से भीतरी
आंगन में प्रवेश करते थे। उसने दोनों फाटकों
की दूरी नापी। वह पचास मीटर निकली।

24 वह मुझे दक्षिण की ओर ले गया। मैंने
देखा कि वहां एक फाटक है। उसने दक्षिण के
फाटक के खम्भों और ओसारे को नापा। उनकी
नाप उतनी ही निकली जितनी दूसरे फाटकों के
खम्भों और ओसारे की थी। 25जैसी खिड़कियां
दूसरे फाटकों में थीं, वैसे ही इस दक्षिणी फाटक
और उसके ओसारे में भी चारों तरफ थीं।
उसकी लम्बाई पच्चीस मीटर और चौड़ाई साढ़े
बारह मीटर थी। 26दक्षिणी फाटक पर जाने के
लिए सात सीढ़ियां थीं। उसका ओसारा भीतर
की ओर था। फाटक के दोनों ओर, प्रत्येक
खम्भे पर खजूर के वृक्ष खुदे थे। 27मैं ने देखा
कि मन्दिर के भीतरी आंगन के दक्षिण में एक
फाटक है। उसने दोनों फाटकों की दूरी नापी।
वह पचास मीटर निकली।

भीतरी आंगन के तीन फाटक

28 वह मुझे दक्षिणी फाटक से मन्दिर के
भीतरी आंगन में ले गया, और उसने दक्षिणी
फाटक को नापा। उसकी भी वही नाप निकली
जो अन्य फाटकों की थी। 29-30उसकी पहरेदारों
की कोठरियों, खम्भों और ओसारे की नाप
अन्य फाटकों की कोठरियों, खम्भों और
ओसारे की नाप के बराबर थी। दक्षिणी फाटक
पर चारों ओर खिड़कियां थीं। उसके ओसारे में
भी खिड़कियां थीं। फाटक की लम्बाई पच्चीस
मीटर और चौड़ाई साढ़े बारह मीटर थी।
31उसके ओसारे का मुंह मन्दिर के बाहरी
आंगन के सामने था। उसके खम्भों पर भी
खजूर के वृक्षों की आकृति खुदी थी। फाटक
पर चढ़ने के लिए आठ सीढ़ियां थीं।

32 फिर वह मुझे भीतरी आंगन के पूर्वी भाग
में ले गया, और उसने फाटक को नापा। उसकी
भी वही नाप निकली जो अन्य फाटकों की थी।
33उसकी पहरेदारों की कोठरियों, खम्भों और
ओसारे की नाप अन्य फाटकों की कोठरियों,
खम्भों और ओसारे की नाप के तुल्य थी। इस
फाटक तथा उसके ओसारे के चारों ओर
खिड़कियां थीं। उसकी लम्बाई पच्चीस मीटर
और चौड़ाई साढ़े बारह मीटर थी। 34उसके
ओसारे का मुंह मन्दिर के बाहरी आंगन के
सामने था। उसके दोनों खम्भों पर भी खजूर के
वृक्षों की आकृति खुदी थी। फाटक पर चढ़ने
के लिए आठ सीढ़ियां थीं।

35 फिर वह मुझे उत्तरी फाटक पर ले गया
और उसने उसको नापा। उसकी भी वही नाप
निकली जो अन्य फाटकों की थी। 36उसकी
पहरेदारों की कोठरियों, खम्भों और ओसारे की
नाप अन्य फाटकों की कोठरियों, खम्भों और
ओसारे की नाप के बराबर थी। इस फाटक के
चारों ओर खिड़कियां थीं। उसकी लम्बाई
पच्चीस मीटर और चौड़ाई साढ़े बारह मीटर
थी। 37उसके ओसारे का मुंह मन्दिर के बाहरी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आंगन के सामने था। उसके दोनों खम्भों पर भी
खजूर के वृक्षों की आकृति खुदी थी। फाटक
पर चढ़ने के लिए आठ सीढ़ियां थीं।

बलि-कक्ष

38 वहां एक कक्ष था। उसका दरवाजा
फाटक के ओसारे से लगा हुआ था। इस कक्ष
में अग्नि-बलि में चढ़ाए जाने वाले पशु को
धोया जाता था। 39फाटक के ओसारे में ही
उसके दोनों ओर, दो-दो तख्ते थे। इन तख्तों
पर अग्नि-बलि, पाप-बलि और दोष-बलि में
चढ़ाए जानेवाले पशु वध किए जाते थे।
40उत्तरी फाटक के प्रवेश-द्वार पर, ओसारे के
बाहर उसके दोनों ओर, दो-दो तख्ते रखे थे।
41इस प्रकार फाटक के ओसारे में चार तख्ते
और उसके बाहर भी चार तख्ते थे। इन आठ
तख्तों पर बलि-पशु वध किए जाते थे।

42 वहां अग्नि-बलि चढ़ाने के लिए तराशे
हुए पत्थरों की चार चौकियां थीं। प्रत्येक चौकी
पचहत्तर सेन्टीमीटर लम्बी, पचहत्तर सेन्टीमीटर
चौड़ी, और पचास सेन्टीमीटर ऊंची थी। इन
चौकियों पर विशेष औजार रखे जाते थे, जिनसे
अग्नि-बलि तथा अन्य बलि के पशुओं का वध
किया जाता था। 43उनके किनारों पर, भीतर की
ओर, चारों तरफ आंकड़ियां* लगी थीं। ये
आठ-आठ सेन्टीमीटर ऊंची थीं। चौकियों के
ऊपर बलि-पशु का मांस रखा जाता था।

दो अन्य कक्ष

44 इसके पश्चात् वह मुझे बाहर से भीतरी
आंगन में ले गया। वहाँ मैंने दो कमरे देखे। एक
कमरा उत्तरी फाटक के दक्षिण में था, और
दूसरा कमरा दक्षिणी फाटक के उत्तर में था।
45उसने मुझसे कहा, 'यह कमरा, जिसका द्वार
दक्षिण दिशा में है, उन पुरोहितों के लिए है जो
मन्दिर का दायित्व सम्भालते हैं। 46दूसरा कमरा,
जिसका द्वार उत्तर दिशा में खुलता है, उन
पुरोहितों के लिए है, जो वेदी का दायित्व
सम्भालते हैं। ये सादोक-वंशी पुरोहित हैं। ये
लेवी कुल में से चुने गए पुरोहित हैं, और केवल
ये पुरोहित ही प्रभु की सेवा करने के लिए उसके
निकट आ सकते हैं।'

47 उसने आंगन को नापा। आंगन वर्गाकार
था। वह पचास मीटर लम्बा और पचास मीटर
चौड़ा था। वेदी मन्दिर के सामने थी।

मन्दिर की ड्योढ़ी

48 फिर वह मुझे मन्दिर की ड्योढ़ी में ले
गया। उसने ड्योढ़ी के दोनों ओर के खम्भों को
नापा। प्रत्येक खम्भा अढ़ाई मीटर मोटा था।
प्रवेश-द्वार की चौड़ाई सात मीटर थी। द्वार के
दोनों ओर दीवारें थीं। प्रत्येक दीवार डेढ़ मीटर
चौड़ी थी। 49ड्योढ़ी की लम्बाई दस मीटर
और चौड़ाई छः मीटर थी। उस पर चढ़ने के
लिए दस सीढ़ियां थीं। उसके खम्भों के पास,
दोनों ओर स्तम्भ थे।

मन्दिर का मध्यभाग

41 इसके पश्चात् वह मुझे मन्दिर के
मध्यभाग में लाया। उसके दोनों ओर
खम्भे थे जिन की मोटाई तीन-तीन मीटर थी।
2प्रवेश-द्वार की चौड़ाई पांच मीटर थी। प्रवेश-
द्वार के दोनों ओर दीवारें थीं। प्रत्येक दीवार
अढ़ाई मीटर चौड़ी थी। इसके पश्चात् उसने
मध्यभाग को नापा। मन्दिर के मध्यभाग की
लम्बाई बीस मीटर और चौड़ाई दस मीटर
निकली।

3 तब वह अन्तर्गृह में गया, और उसके
प्रवेश-द्वार के खम्भों को नापा। प्रत्येक खम्भा
एक मीटर मोटा था। प्रवेश-द्वार की चौड़ाई
तीन मीटर थी। दोनों ओर की दीवारें साढ़े तीन
मीटर की थीं। 4उसने मध्यभाग के सामने अन्तर्गृह
की लम्बाई नापी। उसकी लम्बाई दस मीटर
और चौड़ाई दस मीटर निकली। उसने मुझे
बताया, 'यह महा पवित्र स्थान है।'

मन्दिर के कमरे

5 तत्पश्चात् उसने मन्दिर की दीवार को
नापा। उसकी मोटाई तीन मीटर थी। मन्दिर के
आसपास और दीवार से संलग्न कमरे थे।
प्रत्येक कमरा दो मीटर चौड़ा था। 6ये कमरे तीन

---

* मूल अस्पष्ट

40 : 38 लेव 1 : 9 40 : 46 यहेज 44 : 15 40 : 49 1 रा 6 : 3 ; 7 : 21

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मंजिलों पर थे: पहली के ऊपर दूसरी और दूसरी के ऊपर तीसरी मंजिल। प्रत्येक मंजिल में तीस कमरे थे। इन कमरों को सहारा देने के लिए मन्दिर की दीवार के चारों ओर मोड़ थे, और उन्हीं में कमरों की कड़ियां डाली गई थीं, और उनका भार मन्दिर की दीवार पर नहीं पड़ता था। 7कमरे ऊपर की मंजिलों की ओर क्रमशः चौड़े होते गए थे, क्योंकि मन्दिर की दीवारों के मोड़ भी ऊपर की मंजिल की ओर क्रमशः चौड़े होते गए थे। मोड़ों की चौड़ाई और कमरों की चौड़ाई समान अनुपात में थी। मन्दिर के एक ओर जीना था, जो ऊपर की ओर गया था। उसी से होकर कोई भी व्यक्ति नीचे की मंजिल से दूसरी, तीसरी मंजिल पर जा सकता था।

8 मैंने मन्दिर के चारों ओर एक चबूतरा देखा। इस प्रकार कमरों की सतह तीन मीटर ऊंची थी। 9कमरों की बाहरी दीवार की मोटाई अढ़ाई मीटर थी। चबूतरे का जो स्थान खाली रह गया था, वह अढ़ाई मीटर चौड़ा था। 10मन्दिर के आसपास एक आंगन था। उसमें पुरोहितों के कक्ष थे। मन्दिर के चबूतरे और आंगन के कक्षों के बीच की दूरी दस मीटर थी। 11कमरों के दरवाजे चबूतरे के खाली स्थान की ओर खुलते थे: एक दरवाजा उत्तर की ओर, और दूसरा दरवाजा दक्षिण की ओर खुलता था। जो स्थान खाली रह गया था, उसकी चौड़ाई चारों ओर अढ़ाई मीटर ही थी।

मन्दिर का एक भवन

12 मन्दिर के पश्चिम में, आंगन की ओर एक भवन था। वह पैंतीस मीटर चौड़ा था। भवन के चारों ओर एक दीवार थी। वह अढ़ाई मीटर मोटी थी। भवन की लंबाई पैंतालीस मीटर थी।

13 इसके पश्चात् उसने मन्दिर को नापा। मन्दिर पचास मीटर लम्बा था। पश्चिमी भवन और उसकी दीवारों की तथा मन्दिर के आसपास आंगन की लम्बाई सब मिलाकर पचास मीटर थी। 14मन्दिर के सामनेवाला पूर्वी भाग और भीतरी आंगन की चौड़ाई भी पचास मीटर थी। 15फिर उसने आंगन के सामने पश्चिमी भवन की तथा उसके दोनों ओर की दीवारों की चौड़ाई नापी। वह भी पचास मीटर निकली।

मन्दिर की सजावट

मन्दिर के अन्तर्गृह, मध्यभाग और बाहरी ड्योढ़ी 16-17की दीवारों पर चारों ओर तख्ते जड़े हुए थे। तीनों में खिड़कियां थीं, जो चौखटों के नीचे की ओर क्रमशः संकरी होती गई थीं। सम्पूर्ण मन्दिर पर, ड्योढ़ी से छज्जे तक, फर्श से खिड़कियों तक, और खिड़कियों के आसपास, दरवाजे के ऊपर की जगह, अन्तर्गृह में और बाहर की ओर सब जगह, तख्ते जड़े थे। खिड़कियां ढकी हुई थीं। अन्तर्गृह तथा मध्यभाग की दीवारों पर चारों ओर 18करूबों और खजूर के वृक्षों के चित्र खुदे थे: एक करूब की आकृति और उसके बाद खजूर के वृक्ष की आकृति; यों दो करूबों के मध्य खजूर के वृक्ष की आकृति अंकित थी। प्रत्येक करूब के दो मुख थे: 19एक खजूर के वृक्ष की ओर आदमी का मुख था, और दूसरे खजूर के वृक्ष की ओर जवान सिंह का मुख था। मन्दिर की दीवारों पर चारों ओर ऐसे ही चित्र बने थे: 20फर्श के दरवाजों के ऊपर की समस्त दीवारों पर करूब और खजूर के वृक्षों की आकृतियां खुदी थीं।

21 मध्यभाग की चौखटें वर्गाकार थीं। पवित्र स्थान के सम्मुख वेदी के सदृश कुछ था। 22वह लकड़ी की वेदी के समान था। वह डेढ़ मीटर ऊंचा, एक मीटर लम्बा और एक मीटर चौड़ा था। उसके कोने, उसका आधार और उसके अलंग लकड़ी के थे। उसने मुझसे कहा, 'यह प्रभु के सम्मुख की मेज है।'

23 पवित्र स्थान और मध्यभाग में दुहरे किवाड़ थे। 24प्रत्येक किवाड़ के दो पल्ले थे, जो मुड़ सकते थे। 25जैसे दीवारों पर करूबों और खजूर के वृक्षों के चित्र खुदे थे, वैसे ही मध्यभाग के किवाड़ों पर भी अंकित थे। सामने

41 : 22 नि 30 : 1.8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

की ड्योढ़ी में लकड़ी के छज्जे थे, जो बाहर
की ओर निकले हुए थे। 26ड्योढ़ी के दोनों ओर
की दीवारों पर भी खजूर के वृक्षों के चित्र
अंकित थे। ड्योढ़ी के दोनों ओर खिड़कियां
थीं, जो क्रमशः नीचे की ओर संकरी होती गई
थीं।

पुरोहितों के कक्ष

42 फिर वह मुझे भीतरी आंगन में, उत्तर
की ओर ले गया। मन्दिर के आसपास
के आंगन और पश्चिमी भवन के सामने, उत्तर
की ओर कमरे बने हुए थे। वह मुझे इन कमरों
में ले गया। 2कमरों के क्षेत्र* की लम्बाई पचास
मीटर थी, और चौड़ाई पच्चीस मीटर। 3मन्दिर
के आसपास दस मीटर चौड़े आंगन के सामने
तथा बाहरी आंगन के फर्श के सामने तीन
मंजिलों के छज्जे थे। 4उन कमरों के सामने एक
मार्ग था, जो भीतर की ओर गया था। वह पांच
मीटर चौड़ा और पचास मीटर लम्बा था।
कमरों के द्वार उत्तर की ओर थे।
5 ऊपर के कमरे छोटे थे। छज्जों के कारण
ऊपर के कमरे, बीच वाले और निचले कमरों
से क्रमशः कम चौड़े होते गए थे। 6कमरे तीनों
मंजिलों पर थे, लेकिन बाहरी आंगन के भवनों
के समान उनके खम्भे नहीं थे। इसलिए ऊपर
के कमरे निचली और मध्यवर्ती मंजिलों के
कमरों से छोटे थे, और पीछे हटकर बने थे।
7 बाहर की ओर एक दीवार थी, जो निचले
कमरों के समानान्तर बनी थी। उसकी लम्बाई
पच्चीस मीटर तक थी। यह दीवार उन निचले
कमरों के सामने बाहरी आंगन की ओर थी।
8बाहरी आंगन के सामने शेष कमरे पच्चीस
मीटर लम्बे थे, जबकि मन्दिर के सामने कमरों
की लम्बाई पचास मीटर ही थी। 9इन कमरों के
नीचे, पूर्व की ओर एक प्रवेश-मार्ग था, जहां
से लोग बाहरी आंगन से इनमें चढ़ सकते थे।
10यहीं, बाहरी आंगन से, दीवार शुरू होती थी।
मन्दिर के आसपास के आंगन और पश्चिमी
भवन के सामने, दक्षिण की ओर भी कमरे थे।
11उनके सामने भी एक मार्ग था। वे उत्तर के
कमरों की तरह थे। उनके बराबर ही उनकी
लम्बाई-चौड़ाई थी। उनमें भी वैसे ही निकास-
मार्ग था। उनके द्वार भी वैसे थे। उनका प्रबन्ध
भी उत्तर के कमरों के समान था। 12दक्षिणी कमरों
के नीचे, पूर्व की ओर भी प्रवेश-मार्ग था, जहां
से लोग कमरों के सामनेवाले मार्ग पर चढ़ते थे।
सामने एक विभाजक-दीवार+ थी।
13 उसने मुझे बताया, 'आंगन के सामने के
ये उत्तरी और दक्षिणी कमरे पवित्र कक्ष हैं। प्रभु
की सेवा में संलग्न पुरोहित परम पवित्र वस्तुएं
इन्हीं कक्षों में खाया करेंगे। यह स्थान पवित्र है,
इसलिए वे बलि में चढ़ाई गई ये वस्तुएं यहां
रखेंगे: अन्न-बलि, पाप-बलि और दोष-बलि
में चढ़ाई गई वस्तुएं।
14 'पवित्र स्थान से निकलकर पुरोहित
सीधे बाहर आंगन में नहीं जाएंगे। पहले वे यहां
अपने उन वस्त्रों को उतारेंगे, जिन्हें पहिन कर
उन्होंने पुरोहित का सेवा-कार्य किया था।
पुरोहित के ये वस्त्र पवित्र हैं। जन-साधारण के
लिए नियुक्त स्थान में जाने के पूर्व पुरोहित
अपने पवित्र वस्त्र उतार कर दूसरे वस्त्र पहिन
लेंगे।'

मन्दिर का सम्पूर्ण क्षेत्र

15 मन्दिर के भीतरी क्षेत्र को नापने के
पश्चात् वह मुझे पूर्वी फाटक से बाहर ले गया।
वह वहां चारों ओर मन्दिर का बाहरी क्षेत्र नापने
लगा। 16उसने नापनेवाले बांस से पूर्वी सीमा
को नापा। उस बांस के अनुसार उसकी लम्बाई
अढ़ाई सौ मीटर निकली। 17फिर वह मुड़ा।
उसने उत्तरी सीमा को नापा। नापने के बांस के
अनुसार वह भी अढ़ाई सौ मीटर निकली।
18वह फिर मुड़ा। उसने दक्षिणी सीमा को
नापा। नापने के बांस के अनुसार वह भी अढ़ाई
सौ मीटर निकली। 19वह फिर मुड़ा। उसने
पश्चिम की सीमा को नापा। वह भी नापने के
बांस के अनुसार अढ़ाई सौ मीटर निकली।
20इस प्रकार उसने चारों ओर की सीमाएं नापीं।
उसके चारों ओर एक वर्गाकार दीवार थी। यह
दीवार पवित्र स्थान को जन-साधारण के क्षेत्र

* मूल अस्पष्ट। + मूल अस्पष्ट।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

से अलग करती थी। उसकी लम्बाई अढ़ाई सौ मीटर और चौड़ाई अढ़ाई सौ मीटर थी।

प्रभु के तेज [उसकी महिमा] की वापसी

43 इसके पश्चात् वह मुझे पूर्व-मुखी फाटक पर ले गया। 2तब मैंने देखा कि पूर्व दिशा से इस्राएल के परमेश्वर का तेज* आया। परमेश्वर के आगमन का स्वर सागरों के गर्जन के सदृश था। परमेश्वर के तेज से पृथ्वी ज्योतिर्मय हो गई। 3अब मैंने एक दर्शन देखा। यह उसी दर्शन के समान था जो मैंने उस समय देखा था जब परमेश्वर का तेज नगर का विनाश करने आया था। यह दर्शन कबार नदी के तट पर देखे गए दर्शन के समान था। यह दर्शन देख कर मैं श्रद्धा और भक्ति से मुंह के बल भूमि पर गिर पड़ा।

4 जब प्रभु के तेज ने पूर्व-मुखी फाटक से भवन में प्रवेश किया 5तब आत्मा ने मुझे उठा कर भीतरी आंगन में पहुंचा दिया। मैंने देखा कि प्रभु के तेज से भवन भर गया।

प्रभु की वाणी

6 जिस समय वह पुरुष मेरे पास खड़ा था, उसी समय मैंने मन्दिर में से किसी को मुझ से बातें करते हुए सुना। 7उसने मुझसे कहा, 'ओ मानव, यह मेरे सिंहासन का स्थान है। यही मेरे चरणों की चौकी है। इसी स्थान में मैं युग-युगांत इस्राएली लोगों के मध्य निवास करूंगा। अब इस्राएल के वंशज मेरे पवित्र नाम को अपवित्र+ नहीं करेंगे: न वे और न उनके राजा दूसरे देवताओं का अनुसरण कर मेरे प्रति विश्वासघात** करेंगे, और न अपने मृत राजाओं की समाधि बना कर मेरे पवित्र नाम को अपवित्र करेंगे। 8वे अपने घर की ड्योढ़ी मेरे गृह की ड्योढ़ी से, और अपने द्वार के खम्भे मेरे द्वार के खम्भों से लगा कर बनाते थे। मेरे गृह और उनके घर के मध्य केवल दीवार थी। उन्होंने अत्यन्त घृणित कार्य किए थे, और इन घृणित कार्यों से मेरे पवित्र नाम को अपवित्र कर दिया था। अत: मैंने अपने क्रोध में उनको पूर्णत: नष्ट कर दिया था। 9अब वे विश्वासघात करना बन्द करें, मेरे पवित्र भवन के पास से मृत राजाओं की समाधियां दूर करें; तब मैं उनके बीच युग-युगांत निवास करूंगा।

10 'और तू, ओ मानव, इस्राएल के वंशजों को मेरे गृह का नमूना, उसकी बनावट बता, जिससे वे अपने अधर्म के लिए लज्जित हों। 11यदि वे अपने कार्यों के लिए लज्जित होंगे, तब तू उनके सामने मेरे मन्दिर का सम्पूर्ण चित्र अंकित करना: मन्दिर की योजना, बाहर-भीतर आने-जाने के मार्ग, उसका सम्पूर्ण आकार। उन्हें मन्दिर के रीति-रिवाज, और नियम-विधियां भी बताना। तू इन सब बातों को उनके सामने ही लिख लेना जिससे वे मन्दिर के समस्त नियम-कानूनों तथा धर्म-विधियों को स्मरण रखें, और आराधना में उनका पालन करें। 12मन्दिर का धर्म-नियम यह है: पहाड़ के शिखर के चारों ओर का सम्पूर्ण भूमि-क्षेत्र परम पवित्र माना जाएगा। ओ मानव, देख, मेरे भवन का यही धर्म-नियम है।

वेदी की बनावट

13 'वेदी की नाप इस प्रकार होगी: हाथ की नाप के अनुसार वेदी का आधार हाथ-भर ऊंचा और हाथ-भर चौड़ा होगा, अर्थात् आधा मीटर***। उसके चारों ओर का किनारा पच्चीस सेन्टीमीटर का होगा। 14वेदी की ऊंचाई इस प्रकार होगी: भूमि पर रखे हुए आधार से निचले कगर तक एक मीटर, और वेदी की चौड़ाई आधा मीटर होगी। यह छोटे कगर से बड़े कगर तक दो मीटर ऊंची और आधा मीटर चौड़ी होगी। 15वेदी का अग्निकुण्ड दो मीटर ऊंचा होगा। वेदी के अग्निकुण्ड के ऊपर आधा मीटर ऊंचे सींग होंगे। 16अग्निकुण्ड वर्गाकार होगा— छ: मीटर लम्बा और छ: मीटर चौड़ा।

---

* अथवा, 'महिमा' + अथवा, 'अशुद्ध'। ** अक्षरश: 'वेश्यागमन' *** मूल में, 'हाथ की यह नाप साधारण हाथ से चार अंगुल बड़ी है'। देखिए 40 : 5 की टिप्पणी।

43 : 1 यहेज 10 : 19 **43 : 2** यहेज 1 : 24; 10 : 18-19; प्रक 1 : 15 **43 : 5** 1 रा 8 : 10 **43 : 7** नि 25 : 8; यहेज 37 : 26 - 27

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

17कगर भी वर्गाकार होगा—सात मीटर लम्बा
और सात मीटर चौड़ा। उसके चारों ओर का
किनारा पच्चीस सेन्टीमीटर का होगा। चारों
ओर का आधार आधा मीटर का होगा। वेदी की
सीढ़ियां पूर्व दिशा में होंगी।'

वेदी की प्रतिष्ठा

18 उसने मुझसे कहा, 'ओ मानव, स्वामी-
प्रभु यों कहता है: वेदी के सम्बन्ध में मेरे ये
आदेश हैं: वेदी पर अग्नि-बलि अर्पित की
जाएगी, और उस पर बलि-पशु का रक्त
छिड़का जाएगा। जिस दिन वह इस कार्य के
लिए बन कर तैयार होगी, उस दिन 19तू लेवी
कुल के पुरोहितों को, जो सादोक के वंशज हैं,
पाप-बलि चढ़ाने के लिए एक बछड़ा देना। वे
ही पुरोहित मेरी धर्म-सेवा करने के लिए मेरे
निकट आ सकते हैं। मुझ-स्वामी प्रभु की यही
वाणी है। 20तू उस बछड़े का रक्त लेना और
उसको वेदी के चारों सींगों, कगर के चारों
कोनों और चारों ओर के किनारे पर लगा देना।
यों तू उसको शुद्ध करेगा और यह उसका
प्रायश्चित होगा।

21 'इसके पश्चात् तू पाप-बलि में चढ़ाए
गए बछड़े को पवित्र स्थान के बाहर, मन्दिर की
सीमा में निर्धारित स्थान पर जला देना। 22दूसरे
दिन पाप की प्रायश्चित-बलि में एक निर्दोष
बकरा चढ़ाना। वेदी जैसे बछड़े की बलि से
शुद्ध हुई थी वैसे ही बकरे की बलि से भी शुद्ध
होगी। 23वेदी को शुद्ध करने के बाद तू एक
निर्दोष बछड़ा और रेवड़ में से एक निर्दोष मेढ़ा
बलि करना। 24तू उनको प्रभु की वेदी के सामने
लाना। पुरोहित उन पर नमक छिड़केंगे, और
उनको अग्निबलि के रूप में प्रभु को अर्पित
करेंगे। 25सात दिन तक प्रतिदिन पाप की
प्रायश्चित-बलि के रूप में एक बकरा प्रभु को
अर्पित करना। इसी प्रकार प्रतिदिन एक निर्दोष
बछड़ा और रेवड़ में से एक निर्दोष मेढ़ा भी
चढ़ाना। 26सात दिन तक पुरोहित वेदी को शुद्ध
करने के लिए पाप की प्रायश्चित-बलि चढ़ाएंगे।
इस प्रकार प्रभु के लिए उसकी प्रतिष्ठा होगी।
27जब पुरोहित सात दिन पूरे कर लेंगे तब
आठवें दिन से वे तुम्हारी अग्नि-बलि और
सहभागिता-बलि* वेदी पर चढ़ाने लगेंगे। तब
मैं तुमको स्वीकार करूंगा।' स्वामी-प्रभु की
यही वाणी है।

पुरोहितों के सम्बन्ध में प्रभु के आदेश

44 फिर वह मुझे पवित्र स्थान से बाहर,
पूर्वमुखी फाटक पर वापस ले गया।
वह बन्द था। 2उसने** मुझसे कहा, 'यह
फाटक अब से बन्द रहेगा। यह खोला नहीं
जाएगा, और न कोई मनुष्य इसको खोल कर
मन्दिर में प्रवेश करेगा। इस्राएल के प्रभु
परमेश्वर ने इससे होकर प्रवेश किया है।
इसलिए यह फाटक अब से बन्द रहेगा।
3केवल शासक, शासक होने के कारण, प्रभु के
सामने चढ़ावे की रोटी खाने के लिए वहां
बैठेगा। वह फाटक के ओसारे से हो कर वहां
प्रवेश करेगा, और इसी से बाहर निकलेगा।'

4 इसके पश्चात् वह मुझे उत्तरी फाटक से
मन्दिर के सम्मुख ले गया। तब मैंने देखा कि
प्रभु का भवन प्रभु के तेज से भर गया है। मैं
श्रद्धा और भक्ति से भूमि पर मुंह के बल गिरा।
5प्रभु ने मुझसे कहा, 'ओ मानव, आंखें खोल
कर देख, और कान लगाकर सुन। जो कुछ मैं
तुझसे कहूंगा, उसको ध्यान से सुनना। मैं
तुझको अपने भवन के सारे आदेश और उसकी
सब धर्म-विधियों के सम्बन्ध में बताऊंगा।
ध्यान दे: मैं बताऊंगा कि कौन व्यक्ति भवन में
प्रवेश कर सकता है, और किस व्यक्ति के लिए
पवित्र स्थान में प्रवेश निषिद्ध है। 6ओ मानव,
तू इस्राएल के विद्रोही वंश से, इस्राएलियों से
यह कहना, स्वामी-प्रभु यों कहता है: ओ
इस्राएल के वंशजो ! तुम अपने सब घृणित
कार्यों से हाथ धो लो। 7तुमने अन्य जाति के
लोगों को, जो मन और शरीर दोनों से बेख़तना
थे, मेरे भवन में प्रवेश करने दिया था, जिससे
वे मेरे पवित्र स्थान में उपस्थित हुए। इस प्रकार,

* अथवा, ''शांति-बलि'' ** मूल में, 'प्रभु ने'

43 : 17 नि 27 : 1-2 43 : 18 1 मक 4 : 52-56 43 : 25 नि 29 : 35 44 : 4 प्रक 15 : 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
जब तुम मुझे मेरा भोजन, बलि-पशु की चर्बी
'और रक्त चढ़ाते थे, तब तुम मेरे भवन को
अशुद्ध कर देते थे। इन घृणित कार्यों को करके
तुमने मेरे विधान का उल्लंघन किया है। 8तुमने
स्वयं मेरी पवित्र वस्तुओं की देखभाल नहीं
की; किन्तु मेरे पवित्र स्थान में सेवा-कार्य करने
के लिए अन्य जाति के लोगों को नियुक्त किया
है।
9 'इसलिए मैं स्वामी-प्रभु यह कहता हूँ:
इस्राएली समाज के मध्य रहनेवाला अन्य कौम
का कोई भी व्यक्ति, मन और शरीर से बेख़तना
विजातीय मनुष्य, मेरे पवित्र स्थान में प्रवेश नहीं
करेगा। 10किन्तु लेवी कुल के संबंध में मेरा यह
कथन है: जब इस्राएली राष्ट्र मुझे छोड़ कर अन्य
देवताओं के पीछे भटक गया था, तब उसके
साथ लेवी कुल के पुरोहित भी मुझसे दूर भटक
गए थे। निस्सन्देह वे अपने अधर्म का दण्ड
भोगेंगे। 11वे मेरे पवित्र स्थान के सेवक होंगे।
वे मेरे भवन के द्वारपाल होंगे, और भवन में
सेवा-कार्य करेंगे। वे अग्निबलि के पशु का
वध करेंगे। वे लोगों के लिए किसी भी अन्य
बलि के पशु का वध करेंगे। वे आराधकों की
सेवा करने के लिए उनके सामने खड़े रहेंगे।
12उन्होंने अन्य देवी-देवताओं की मूर्तियों के
सामने इस्राएलियों की सेवा की थी। वे इस्राएल
के वंशजों के लिए उनके अधर्म का कारण तथा
ठोकर का कारण बन गए थे। अत: मैंने उनके
विषय में यह शपथ खायी थी : लेवीय पुरोहित
निस्सन्देह अपने अधर्म का दण्ड भोगेंगे। मैं,
स्वामी-प्रभु यही कहता हूँ। 13वे पुरोहित के
रूप में मेरी सेवा करने के लिए मेरे समीप नहीं
आएंगे। वे मेरी पवित्र तथा परम पवित्र वस्तु को
स्पर्श भी नहीं करेंगे। उन्होंने अन्य देवी-
देवताओं की पूजा कर घृणित कार्य किया है।
वे अपने इस घृणित कार्य की लज्जा का भार
उठाएँ! 14फिर भी मैं उन्हें पुरोहित-पद से
वंचित कर अपने भवन के सेवक नियुक्त करता
हूँ। वे मन्दिर के सब कामों को करेंगे। जो भी
सेवा-कार्य मन्दिर में सम्पन्न होगा, उसको ये
सेवक ही करेंगे।
15 'किन्तु लेवी कुल के पुरोहित, जो
सादोक के वंशज हैं, मेरी सेवा करने के लिए
मेरे समीप आएंगे। ये सादोक के वंशज मेरी
सेवा में बलि-पशु की चर्बी और रक्त चढ़ाएंगे।
जब इस्राएली मुझे छोड़कर भटक गए थे, तब
सादोक-वंशीय पुरोहित ही मेरे पवित्र स्थान में
सेवा-कार्य करते रहे। मैं, स्वामी-प्रभु यही
कहता हूँ। 16वे मेरे पवित्र स्थान में प्रवेश करेंगे।
वे मेरी सेवा के लिए मेरी मेज के समीप आएंगे।
वे ही मेरी सेवा का दायित्व संभालेंगे।

पुरोहितों के वस्त्र

17 'जब वे मन्दिर के भीतरी आंगन के
फाटकों में प्रवेश करेंगे, तब वे सूती वस्त्र
पहिनेंगे। भीतरी आंगन के फाटकों पर और
भीतर सेवा करते समय वे ऊनी वस्त्र नहीं
पहिनेंगे। 18वे सिर पर सूती टोपी, और कमर
में सूती जांघिया बान्धेंगे। वे ऐसे कपड़े का
जांघिया नहीं पहिनेंगे, जिसके कारण पसीना
निकलता है।
19 'जब वे सेवा-कार्य समाप्त कर चुकेंगे,
तब जन-सामान्य के बाहरी आंगन में जाने के
पूर्व वे अपने पुरोहिताई के वस्त्र उतार देंगे,
उनको पवित्र कक्षों में रख देंगे, और अपने
साधारण वस्त्र पहिन लेंगे। ऐसा न हो कि उनके
पुरोहिताई के वस्त्रों का स्पर्श जन-साधारण से
हो जाए, और वे भी पवित्र हो जाएं।

पुरोहितों का आचरण

20 'सादोक-वंशीय पुरोहित न तो सिर
मुंड़ाएंगे, और न ही सिर के बाल लम्बे रखेंगे।
वे समय-समय पर अपने सिर के बाल
कटाएंगे। 21कोई भी सादोक-वंशीय पुरोहित
शराब पीकर मन्दिर के भीतरी आंगन में प्रवेश
नहीं करेगा।
22 'सादोक-वंशीय पुरोहित न तो विधवा,
और न तलाक पायी हुई स्त्री से विवाह करेगा।
वह केवल इस्राएली जाति की कुंवारी कन्या
अथवा मृत पुरोहित की विधवा से विवाह
करेगा।

44 : 13 गण 18 : 3 44 : 17 नि 28 : 39 44 : 19 लेव 16 : 23 44 : 20 लेव 21 : 5 44 : 21 लेव 10 : 9

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

23 'वे मेरे निज लोगों को सिखाएंगे कि
कौन-सी वस्तु मेरी दृष्टि में पवित्र है, और
कौन-सी वस्तु अपवित्र*। वे उनको शुद्ध और
अशुद्ध वस्तुओं का अन्तर बताएंगे।
24 'मेरे निज लोगों में परस्पर लड़ाई-
झगड़ा, वाद-विवाद होने पर वे न्यायाधीश
होंगे, और मेरे न्याय-सिद्धान्तों के अनुसार
मुकदमे का फैसला करेंगे।
'वे मेरे निर्धारित पर्वों से सम्बन्धित मेरी सब
विधियों, संविधियों का पालन करेंगे। वे मेरे
विश्राम दिवस को पवित्र करेंगे।
25 'वे शव के समीप नहीं जाएंगे, अन्यथा
वे अशुद्ध हो जाएंगे। किन्तु यदि शव किसी
पुरोहित के पिता, माता, पुत्र, पुत्री, भाई अथवा
अविवाहित बहिन का है, तो वह उसको स्पर्श
कर सकता है। 26 शव के स्पर्श से अशुद्ध होने
के दिन से सात दिन तक तक वह अशुद्ध रहेगा।
तत्पश्चात् वह शुद्ध हो जाएगा। 27 जब वह
पवित्र-स्थान में, भीतरी आंगन में सेवा-कार्य
करने के लिए प्रवेश करेगा, तब वह प्रायश्चित
के लिए पाप-बलि चढ़ाएगा।' स्वामी-प्रभु की
यही वाणी है।

पुरोहित की आमदनी का स्रोत

28 'पुरोहितों की पैतृक धन-सम्पत्ति नहीं
होगी, क्योंकि मैं ही उनकी पैतृक सम्पत्ति हूँ।
तुम उनको इस्राएल देश में पैतृक उत्तराधिकार
के लिए भूमि मत देना; क्योंकि मैं ही उनकी
निज भूमि हूँ। 29 जो अन्नबलि, पापबलि, और
दोषबलि मुझे चढ़ाई जाएगी, वे उसको खाएंगे।
जो भी वस्तु इस्राएल देश में संकल्प मानकर
मुझको अर्पित की जाएगी, वह उनको प्राप्त
होगी। 30 सब प्रकार की प्रथम उपज में से
सर्वोत्तम उपज, मुझे चढ़ाई गई सब प्रकार की
भेंटों पर पुरोहितों का हक होगा। तुम नए
अन्न का पहिला गूंधा हुआ आटा भी पुरोहित
को देना जिससे तुम्हारे घर पर आशिष की
वर्षा हो। 31 पुरोहित न तो स्वाभाविक मृत्यु से
मरे हुए पक्षी या पशु का मांस खाएगा, और न
किसी जानवर के द्वारा मारे गए पक्षी या पशु
का मांस।

मन्दिर का भूमि-क्षेत्र

45 'जब तुम चिट्ठी डालकर इस्राएल
देश की भूमि का आबंटन अपने
विभिन्न कुलों में करोगे, तब भूमि का एक क्षेत्र
प्रभु के लिए पवित्र मान कर अलग कर देना:
प्रभु के लिए अर्पित भूमि की लम्बाई साढ़े बारह
किलोमीटर और चौड़ाई दस+ किलोमीटर होगी।
यह सारा भूमि-क्षेत्र पवित्र माना जाएगा।
2 इसमें अढ़ाई सौ मीटर का एक वर्गाकार भाग
पवित्र-स्थान के लिए होगा। उसके चारों ओर
पच्चीस मीटर चौड़ा एक खुला स्थान होगा।
3 'पवित्र भूमि-क्षेत्र में से साढ़े बारह
किलोमीटर लम्बा और पांच किलोमीटर चौड़ा
एक भाग अलग कर देना। इस अलग किए हुए
भूमि-भाग पर प्रभु का पवित्र निवास-स्थान
बनाना। यह परम पवित्र होगा। 4 यह सम्पूर्ण
देश में प्रभु को अर्पित पवित्र भाग होगा। यह
पुरोहितों के लिए होगा, जो प्रभु के सम्मुख
पवित्र-स्थान में जाएंगे और उसकी सेवा
करेंगे। यह भूमि-क्षेत्र पुरोहितों के निवास-
स्थान और पवित्र-स्थान के लिए पवित्र
होगा।++
5 'एक और भाग मन्दिर के अन्य सेवा-
कार्य करनेवाले लेवीय सेवकों के लिए सुरक्षित
रहेगा। यहाँ लेवीय अपने निवास-स्थान के
लिए "लेवीय नगर" बसाएंगे**। यह साढ़े
बारह किलोमीट लम्बा, और पांच किलोमीटर
चौड़ा भूमि-भाग होगा।
6 'इस निर्धारित पवित्र भाग के समीप एक
भूमि-क्षेत्र सुरक्षित कर देना। यह नगर बसाने
के लिए होगा। यह अढ़ाई किलोमीटर चौड़ा
और साढ़े बारह किलोमीटर लम्बा होगा। इस
भूमि-क्षेत्र पर समस्त इस्राएल के वंश का
अधिकार होगा।

* अथवा, 'जनसाधारण की वस्तु'। + प्राचीन अनुवाद के अनुसार। ++ अथवा, 'उनके पशुओं के चरागाह के लिए सुरक्षित होगा।' ** अथवा, 'अपने मकान बनाएंगे'

44 : 25 लेव 21 : 1-4 **44 : 28** गण 18 : 20 **44 : 31** लेव 22 : 8 **45 : 1** यहेज 48 : 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शासकों का भूमिक्षेत्र

7 'पवित्र भूमि-भाग और नगर के क्षेत्र के
दोनों ओर की भूमि पर शासक का अधिकार
होगा। शासक की यह भूमि पवित्र भूमिभाग
तथा नगर के भूमि-क्षेत्र के पश्चिम और पूर्व में
होगी। यह देश की पश्चिमी सीमा से पूर्वी सीमा
तक इस्राएल के एक कुल-भाग की लम्बाई के
बराबर होगी। 8शासक का इस्राएल देश में
इतनी ही भूमि पर अधिकार होगा। तब मेरे
शासक मेरे निज लोगों पर अत्याचार नहीं
करेंगे। किन्तु वे इस्राएलियों को उनके कुलों के
अनुसार भूमि पर अधिकार करने देंगे।
9 'स्वामी-प्रभु यों कहता है : ओ इस्राएल
के शासको, बहुत हुआ! अब शोषण और
अत्याचार करना बन्द करो, और धर्म तथा न्याय
से शासन करो। मेरे निज लोगों की भूमि लूटना
बन्द करो।' स्वामी-प्रभु की यही वाणी है।

नाप-तौल के बांट

10 'तुम्हारा तराजू, नाप-तौल के बांट* और
द्रव्य पदार्थ नापने का पात्र** सच्चा और खरा
होना चाहिए। 11तुम्हारा एपा और बत दोनों एक
ही परिमाण के होना चाहिए। बत में होमेर का
दसवां अंश समाए, और एपा में भी होमेर का
दसवां अंश समाए। होमेर ही प्रामाणिक माप
होगा।
12 'शेकेल बीस गेरा*** का होगा। पांच
शेकेल पांच ही शेकेल हों और दस शेकेल दस
ही शेकेल। तुम्हारा मानेह+ पचास शेकेल का
होगा।

विभिन्न भेंटों की तौल

13 'जब तुम मन्दिर में भेंट चढ़ाओगे तब
उसकी तौल इस प्रकार होगी: गेहूं के प्रति एक
सौ किलो से पौने दो किलो का अंश; जौ के
प्रति एक सौ किलो से भी पौने दो किलो का
अंश। 14तेल का निश्चित किया गया अंश यह
होगा: प्रति चार सौ पचास लिटर से साढ़े चार
लिटर का अंश। (चार सौ पचास लिटर एक
कोर-माप होता है, जो एक होमेर के बराबर है।
होमेर दस बत का होता है।) 15इस्राएल के
पितृकुलों में से प्रत्येक कुल दो सौ भेड़ पीछे
एक भेड़ भेंट में चढ़ाएगा। स्वामी-प्रभु यह
कहता है: तुम अपने प्रायश्चित के लिए अन्न-
बलि और सहभागिता-बलि++ में यह ही चढ़ाना।
16इस्राएल देश के शासक को समस्त जनता
इसी अनुपात में भेंट चढ़ाएगी। इस्राएली समाज
में पर्व और त्योहार निर्धारित हैं। 17इस्राएल देश
के शासक का यह कर्त्तव्य है कि वह इन नियत
पर्वों, नवचन्द्र दिवसों, और विश्राम-दिवसों
पर अग्नि-बलि, अन्न-बलि और पेय-बलि
का प्रबंध करे। वह इस्राएली जनता की ओर
से प्रायश्चित करने के लिए पाप-बलि, अन्न-
बलि, अग्नि-बलि और सहभागिता-बलि का
प्रबंध करेगा।'

पास्का (फसह) का पर्व

18 स्वामी-प्रभु यों कहता है : 'पहले महीने
की पहली तारीख को तू एक निर्दोष बछड़ा
बलि करना और यों पवित्र स्थान को शुद्ध
करना। 19यह प्रायश्चित की पाप-बलि है।
पुरोहित बलिपशु के रक्त में से थोड़ा रक्त लेगा,
और उसको मन्दिर की चौखट के खम्भों, वेदी
के चारों कोनों के कगर पर तथा भीतरी आंगन
के दरवाजों पर लगाएगा। 20तुम उसी महीने की
सातवीं तारीख को भी ऐसा ही करना। यह
प्रायश्चित-बलि उन लोगों के लिए होगी
जिन्होंने भूल से अथवा अज्ञानवश पाप किया
है। इस प्रकार तुम मन्दिर को शुद्ध करना।+++
21 'तुम पहले महीने की चौदहवीं तारीख
को पास्का (फसह) का पर्व मनाना। वह सात
दिन तक मनाया जाएगा। तुम सात दिन तक
बेखमीर रोटी खाना। 22उस दिन इस्राएल देश
का शासक अपने तथा अपने देश की जनता के
प्रायश्चित के लिए पाप-बलि में एक बछड़े का
प्रबंध करेगा। 23पर्व के सातों दिन वह प्रति-
दिन प्रभु को अग्नि-बलि चढ़ाने के लिए सात

* अथवा, 'एपा', लगभग दस किलो। ** अथवा, 'बत', लगभग पैंतालीस लिटर। *** अथवा, 'बारह ग्राम' + अथवा 'छः सौ ग्राम' ++ अथवा, 'शांति-बलि' +++ अथवा, 'प्रायश्चित-बलि चढ़ाना'

45 : 9 यि 22 : 3 45 : 10 लेव 19 : 35 45 : 13 नि 30 : 13; मत 23 : 23 45 : 21 नि 12 : 18

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

निर्दोष बछड़ों और सात निर्दोष मेढ़ों का प्रबंध
करेगा। वह पाप-बलि में प्रतिदिन एक बकरे
का प्रबंध भी करेगा। [24]वह प्रत्येक बछड़े और
मेढ़े की बलि के साथ दस किलो अन्न और
प्रत्येक दस किलो के साथ साढ़े सात लिटर तेल
देगा।

मण्डपों का पर्व

25 'सातवें महीने के पन्द्रहवें दिन के उत्सव
तथा पर्व के सातों दिन वह प्रायश्चित के लिए
पाप-बलि, अग्नि-बलि और अन्न-बलि तथा
तेल की भेंट का इसी प्रकार प्रबंध करेगा।'

विश्राम-दिवस तथा नवचन्द्र पर्व

46 स्वामी-प्रभु यों कहता है : 'भीतरी
आंगन का पूर्व-मुखी फाटक सप्ताह
के छ: दिन बन्द रहेगा, किन्तु वह सातवें दिन
अर्थात् विश्राम-दिवस तथा नवचन्द्र-दिवस
पर खुला रहेगा। [2]इस्राएल देश का शासक
बाहर से फाटक के ओसारे के मार्ग से प्रवेश
करेगा, और खंभे के पास खड़ा हो जाएगा।
पुरोहित उसकी ओर से अग्नि-बलि और
सहभागिता-बलि चढ़ाएंगे। वह फाटक की
ड्योढ़ी पर ही आराधना कर लौट जाएगा। वह
फाटक से बाहर निकल जाएगा, किन्तु फाटक
शाम तक बन्द नहीं किया जाएगा। [3]इस्राएल देश
की जनता भी विश्राम-दिवसों और नवचन्द्र-
दिवसों पर इस फाटक के द्वार पर ही प्रभु के
सम्मुख आराधना करेगी।

4 'इस्राएल देश का शासक प्रभु को
विश्राम-दिवस पर अग्नि-बलि में छ: निर्दोष
मेमने और एक निर्दोष मेढ़ा चढ़ाएगा। [5]मेढ़े की
अग्नि-बलि के साथ वह अन्न-बलि में दस
किलो अन्न चढ़ाएगा। मेमनों की अग्नि-बलि
के साथ वह अन्न-बलि में यथाशक्ति अन्न और
हर दस किलो अन्न के साथ साढ़े सात लिटर
तेल चढ़ाएगा।

6 'इस्राएल देश का शासक नवचन्द्र दिवस
पर एक निर्दोष बछड़ा , छ: मेमने और एक
मेढ़ा चढ़ाएगा। ये मेमने और मेढ़ा निर्दोष होने
चाहिए। [7]वह इस अग्नि-बलि के साथ अन्न-
बलि भी चढ़ाएगा: प्रत्येक बछड़े और मेढ़े के
साथ दस किलो अन्न, और मेमनों के साथ
यथाशक्ति अन्न और हर दस किलो पीछे साढ़े
सात लिटर तेल। [8]वह फाटक के ओसारे के
मार्ग से प्रवेश करेगा, और उसी मार्ग से वह
बाहर जाएगा।

मन्दिर के भीतर आने और जाने के मार्ग

9 'जब इस्राएल के साधारण जन, निर्धारित
पर्वों पर प्रभु की आराधना करने के लिए मन्दिर
में उसके सम्मुख आएंगे तब वे जिस फाटक से
प्रवेश करेंगे, उसी फाटक से बाहर नहीं
निकलेंगे। यदि कोई व्यक्ति उत्तरी फाटक से
प्रवेश करेगा तो वह दक्षिणी फाटक से बाहर
निकलेगा। ऐसे ही दक्षिणी फाटक से प्रवेश
करनेवाला उत्तरी फाटक से निकलेगा। प्रत्येक
व्यक्ति सीधा निकल जाएगा।

10 'इस्राएल देश का शासक साधारण-
जनता के साथ ही प्रभु के भवन में प्रवेश करेगा।
जब वे बाहर निकलेगें तब वह भी बाहर
निकलेगा।

बलि चढ़ाने के नियम

11 'जब त्योहारों और नियत पर्वों पर
अग्नि-बलि अर्पित की जाएगी, तब उसके
साथ अन्न-बलि चढ़ाने का यह नियम है:
प्रत्येक बछड़े और मेढ़े के साथ दस किलो
अन्न, और मेमनों के साथ यथाशक्ति अन्न और
प्रत्येक दस किलो के साथ साढ़े सात लिटर
तेल। [12]जब इस्राएल देश का शासक स्वेच्छा-
बलि के रूप में प्रभु को अग्नि-बलि अथवा
सहभागिता-बलि चढ़ाने की इच्छा करेगा तब
पूर्वमुखी फाटक उसके लिए खोला जाएगा।
जैसे वह विश्राम-दिवस पर अग्नि-बलि और
सहभागिता-बलि चढ़ाता है वैसे ही वह
स्वेच्छा-बलि के रूप में अग्नि-बलि अथवा
सहभागिता-बलि चढ़ाएगा। तब वह फाटक से
बाहर निकलेगा, और उसके निकलने के
पश्चात् फाटक बन्द कर दिया जाएगा।

13 'इस्राएल देश का शासक प्रतिदिन प्रभु
को अग्नि-बलि चढ़ाने के लिए एक एक-

---

45 : 25 लेव 23 : 33 46 : 1 यहेज 45 : 17 46 : 9 नि 23 : 14,17

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वर्षीय निर्दोष मेमने का प्रबंध करेगा। वह प्रतिदिन सबेरे उसका प्रबंध करेगा। 14वह उसके साथ प्रतिदिन सबेरे अन्न-बलि का भी प्रबंध करेगा : पौने दो किलो मैदा, और उसको गूंधने के लिए अढ़ाई लिटर तेल। यह प्रभु के लिए अन्न-बलि होगी। नित्य अग्नि-बलि की यही विधि है। 15इस प्रकार प्रतिदिन सबेरे मेमना, अन्न-बलि और तेल नित्य अग्नि-बलि में चढ़ाया जाएगा।'

16 स्वामी-प्रभु यों कहता है: 'यदि इस्राएल देश का शासक अपनी भूमि में से कुछ अंश अपने किसी पुत्र को देगा, तो यह अंश उस पुत्र की पैतृक सम्पत्ति हो जाएगी। उस पर उस पुत्र का हक होगा। 17परन्तु यदि शासक अपनी भूमि में से कुछ अंश अपने किसी गुलाम को देगा, तो उस अंश पर गुलाम का अधिकार "दासत्व-मुक्ति के वर्ष" तक ही रहेगा। दासत्व से मुक्त होने पर गुलाम का यह अंश शासक को वापस हो जाएगा। केवल उसके पुत्रों को ही उनकी पैतृक भूमि पर हक होगा। 18इस्राएल देश का शासक किसी भी नागरिक की पैतृक भूमि से उसको वंचित नहीं करेगा, और यों उसकी पैतृक सम्पत्ति को नहीं हड़प लेगा। वह अपने पुत्रों को अपनी भूमि में से कुछ अंश देगा जिससे ऐसा न हो कि वह अथवा उसके पुत्र मेरे निज लोगों को उनकी पैतक भूमि से वंचित कर दें।'

पवित्र बलि-सामग्री को पकाने की व्यवस्था

19 फिर वह मुझे द्वार से ले गया। यह फाटक के एक अलंग पर था। वह मुझे पुरोहितों के उत्तर-मुखी पवित्र कक्षों में ले गया। वहाँ मैंने देखा कि उन कक्षों से दूर पश्चिमी कोने पर एक स्थान है। 20उसने मुझसे कहा, 'यही वह स्थान है, जहाँ पुरोहित दोष-बलि और पाप-बलि के पशुओं का मांस पकाएंगे। इसी स्थान पर वे अन्न-बलि में चढ़ाए गए अन्न की रोटी सेकेंगे। ऐसा न हो कि वे बलि-पशु का मांस और अन्न-बलि का पवित्र अन्न बाहर आंगन में ले जाएं और साधारण जनों को उनका स्पर्श हो जाए और वे भी पवित्र हो जाएं।'

21 तब वह मुझे बाहरी आंगन में ले गया। वहाँ उसने मुझे आंगन के चारों कोनों में फिराया। आंगन के हर कोने में एक ओट बना था। 22चारों कोनों में चार ओट थे। प्रत्येक ओट की लम्बाई बीस मीटर और चौड़ाई पन्द्रह मीटर थी। यों चारों ओटों की नाप समान थी। 23चारों ओटों में चारों ओर एक-एक दीवार थी और दीवार से सटे हुए उसके नीचे चूल्हे थे। 24तब उसने मुझसे कहा, 'ये रसोईघर हैं। यहाँ मन्दिर के सेवक जनता द्वारा चढ़ाई गई बलि का मांस और अन्न पकाएंगे।'

मन्दिर की पवित्र सरिता

47 फिर वह मुझे मन्दिर के द्वार पर वापस ले गया। वहाँ मैंने यह देखा: मन्दिर की ड्योढ़ी के नीचे से पानी निकल रहा है, और पूर्व की ओर बह रहा है (क्योंकि मन्दिर का मुंह पूर्व दिशा में था)। पानी मन्दिर की दाहिनी ओर नीचे से और वेदी के दक्षिणी ओर से निकल रहा था।

2 तब वह मुझे उत्तरी फाटक से बाहर ले गया। वह मुझे बाहर ही बाहर घुमाता हुआ पूर्वमुखी फाटक पर ले आया। मैंने वहाँ देखा कि पानी दक्षिणी अलंग से पसीज-पसीज कर निकल रहा है।

3 उस पुरुष ने हाथ में नापने की डोरी ली, और वह पूर्व की ओर गया। तब उसने मन्दिर से लेकर पांच सौ मीटर तक सरिता को नापा। तत्पश्चात् उसने मुझे पानी में चलाया। पानी टखनों तक गहरा था। 4उसने फिर पांच सौ मीटर नापा, और मुझे पानी में चलाया। पानी घुटनों तक गहरा था। उसने फिर पांच सौ मीटर नापा, और मुझे पानी में चलाया। पानी कमर तक गहरा था। 5उसने फिर पांच सौ मीटर नापा, और मुझे पानी में चलाया। किन्तु मैं उसमें चल न सका; क्योंकि वह एक नदी थी, और उसका पानी बढ़ गया था। वह इतना गहरा था कि उसको केवल तैर कर पार किया जा सकता था। नदी इतनी गहरी थी कि उसको कोई पैदल

---

46 : 17 लेव 25 : 10 **47 : 1** योए 3 : 18; जक 14 : 8 ; यो 7 : 38; प्रक 22 : 1

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

चलकर पार नहीं कर सकता था। 6तब उसने मुझसे कहा, 'ओ मानव, क्या तूने यह ध्यान से देखा?'

वह मुझे नदी के किनारे-किनारे चलाता हुआ लौटा लाया। 7जब मैं लौट रहा था, तब मैंने देखा कि नदी के दोनों किनारों पर बहुत पेड़ हैं। 8उसने मुझे बताया, 'यह नदी पूर्वी क्षेत्र+ की ओर बहती हुई अराबा में उतरती है। जब यह लवण-सागर* के स्थिर जल में मिलती है, तब वह भी स्वच्छ और मीठा हो जाता है! 9जहां-जहां से यह नदी गुजरती है, वहां झुण्ड के झुण्ड प्राणियों को जीवन मिलता है। वहां असंख्य मछलियां होती हैं; क्योंकि जब यह नदी वहां पहुंचती है तब लवण-सागर का खारा जल भी स्वच्छ और मीठा हो जाता है। इस प्रकार जहां-कहीं से यह नदी गुजरेगी, वहां के प्राणियों को जीवन मिलेगा। 10सागर के तट पर मछली पकड़ने के लिए मछुए खड़े होंगे। वे एनगदी जलस्रोत से लेकर एनेग्लैम जलस्रोत तक जाल फैलाएंगे, और उन्हें भूमध्य-सागर की मछलियों के समान अनेक जाति की मछलियाँ मिलेंगी। 11किन्तु लवण-सागर के पास के गड्ढों और दलदल का जल मीठा न होगा। उनका पानी खारा ही रहेगा, जिससे नमक उपलब्ध हो सके। 12नदी के दोनों किनारों पर अनेक प्रकार के पेड़ होंगे, जो आहार के लिए फल देंगे। उनके पत्ते कभी नहीं मुरझाएंगे, और न ही उनमें फल लगना बन्द होगा। किन्तु ये पेड़ हर महीने नए फल दिया करेंगे, क्योंकि उनको सींचनेवाला जल पवित्र-स्थान से निकला है! उनके फल आहार के, और पत्ते औषधि के काम आएंगे।'

देश की सीमाएं

13 स्वामी-प्रभु यों कहता है: 'जिन सीमाओं के भीतर तुम इस्राएल के बारह कुलों में यह देश पैतृक कुल-क्षेत्र के रूप में बांटोगे, वे इस प्रकार हैं: यूसुफ के दो गोत्र हैं। उनको दो भाग मिलेंगे। 14तुम सब कुलों को बराबर-बराबर भूमि-क्षेत्र देना। मैंने तुम्हारे पूर्वजों से शपथ खाई थी कि यह देश उनको दूंगा। अतः इस देश पर तुम्हारा पैतृक अधिकार होगा।

15'देश की सीमाएं ये होंगी: उत्तरी सीमा—यह उत्तर में भूमध्य-सागर से हेतलोन नगर होती हुई हमात के प्रवेश-द्वार पर, सदाद की घाटी तक जाएगी। 16फिर सदाद से बेरोत और सिब्रैम नगर तक जाएगी। सिब्रैम दमिश्क और हमात के मध्य स्थित है। सिब्रैम से यह सीमा हसर्हत्तीकोन तक जाएगी, जो हौरान की सीमा पर स्थित है। 17इस प्रकार यह सीमा भूमध्यसागर से हसर-एनोन नगर तक जाएगी, जो दमिश्क की उत्तरी सीमा पर स्थित है, और उत्तर की ओर हमात की सीमा पर भी है। यही उत्तर की सीमा होगी।

18'पूर्वी सीमा—यह हौरान और दमिश्क के मध्य स्थित हसर-एनोन नगर से आरम्भ होगी। फिर गिलआद और इस्राएल प्रदेश के बीच, मृत सागर+ और तामार तक यर्दन नदी सीमा बनाती है। यही पूर्व की सीमा होगी।

19'दक्षिणी सीमा—दक्षिणी सीमा तामार से आरम्भ होगी। वह मरीबा-कादेश के जलाशय से होती हुई मिस्र की बरसाती नदी के किनारे-किनारे भूमध्यसागर तक जाएगी। यही दक्षिण की सीमा होगी।

20'पश्चिमी सीमा—पश्चिमी सीमा दक्षिणी सीमा से लेकर हमात की घाटी के सामने भूमध्यसागर तक होगी। यही पश्चिम की सीमा होगी।

21'इस प्रकार ओ इस्राएलियो, तुम देश की भूमि अपने बारह कुलों के मध्य विभाजित करना। 22इस देश की भूमि तुम आपस में तथा उन प्रवासियों के मध्य बांटना, जो तुम्हारे समाज में रहते हैं, और यहीं रहते हुए उनके बाल-बच्चे उत्पन्न हुए हैं। ऐसे प्रवासियों को तुम अपने समान ही इस्राएल देश का निवासी मानना। वे भी इस्राएल के पितृकुलों के भूमिक्षेत्र में पैतृक अधिकार के लिए भूमि प्राप्त करेंगे। 23जिस पितृकुल के भूमि-क्षेत्र में वे

+ अथवा, 'गलील' * अथवा, 'मृत सागर'; मूल अस्पष्ट + अक्षरशः 'पूर्वी समुद्र'।

47 : 7 प्रक 22 : 2 **47 : 9** यो 21 : 11 **47 : 14** गण 34 : 2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रहते होंगे उसी भूमि में से उनको पैतृक
अधिकार के लिए भूमि देना।' यही स्वामी-प्रभु
की वाणी है।

उत्तरी कुलों के भूमि-क्षेत्र

48 पैतृक कुलों के भूमिक्षेत्र के नाम इस
प्रकार हैं—
दान कुल का भूमिक्षेत्र: उत्तरी सीमा से,
अर्थात् समुद्र से लेकर हेतलोन की ओर हमात
की घाटी तक, और दमिश्क की उत्तरी सीमा पर
स्थित हसर-एनोन तक जो हमात के पास है।
पूर्व से पश्चिम तक का यह भूमिक्षेत्र दान कुल
का होगा।
2 आशेर कुल का भूमिक्षेत्र: दान के भूमि-
क्षेत्र से लगा हुआ पूर्व से पश्चिम तक का क्षेत्र
आशेर कुल का होगा।
3 नफ्ताली कुल का भूमिक्षेत्र: आशेर के
भूमिक्षेत्र से लगा हुआ पूर्व से पश्चिम तक का
क्षेत्र नफ्ताली कुल का होगा।
4 मनश्शे गोत्र का भूमिक्षेत्र : नफ्ताली के
भूमिक्षेत्र से लगा हुआ पूर्व से पश्चिम तक का
क्षेत्र मनश्शे गोत्र का होगा।
5 एफ्रइम गोत्र का भूमिक्षेत्र: मनश्शे के
भूमिक्षेत्र से लगा हुआ पूर्व से पश्चिम तक का
क्षेत्र एफ्रइम गोत्र का होगा।
6 रूबेन कुल का भूमिक्षेत्र: एफ्रइम के
भूमिक्षेत्र से लगा हुआ पूर्व से पश्चिम तक का
क्षेत्र रूबेन कुल का होगा।
7 यहूदा कुल का भूमिक्षेत्र : रूबेन के
भूमिक्षेत्र से लगा हुआ पूर्व से पश्चिम तक का
क्षेत्र यहूदा कुल का होगा।

पुरोहितों, लेवियों, शासकों और नगरों के भूमिक्षेत्र

8' यहूदा के भूमिक्षेत्र से लगा हुआ पूर्व से
पश्चिम तक का भूमिक्षेत्र एक विशेष भाग
होगा, जिसे तुम अलग करोगे। यह साढ़े बारह
किलोमीटर चौड़ा, और पूर्व से पश्चिम तक
किसी एक कुल के भूमिक्षेत्र के बराबर लम्बा
होगा। पवित्र-स्थान इसी के बीच में होगा। 9जो
भूमिक्षेत्र तुम प्रभु के लिए अर्पित करोगे, उसकी
लम्बाई साढ़े बारह किलोमीटर और चौड़ाई
दस* किलोमीटर होगी। 10पवित्र भूमि का
विभाजन इस प्रकार करना : जो भूमि पुरोहितों
को प्राप्त होगी, वह उत्तर में साढ़े बारह
किलोमीटर लम्बी, पश्चिम में पांच किलोमीटर
चौड़ी, पूर्व में पांच किलोमीटर चौड़ी और
दक्षिण में साढ़े बारह किलोमीटर लम्बी होगी।
उसके मध्य में प्रभु का पवित्र-स्थान होगा।
11यह भूमि मेरे अभिषिक्त पुरोहितों के लिए
होगी, जो सादोक के वंशज हैं। जब इस्राएली
मुझे छोड़कर अन्य देवी-देवताओं के पीछे
भटक गए थे, और उनके साथ लेवी कुल के
पुरोहित भी भटक गए थे, तब मेरे ये पुरोहित
मेरी सेवा करते रहे। 12लेवी कुल-क्षेत्र के समीप
ही उन्हें देश के पवित्र भाग में से एक विशेष
पवित्र भूमि-भाग मिलेगा।
13' पुरोहितों के भूमि-भाग से लगा हुआ
भूमिक्षेत्र लेवियों को मिलेगा। यह साढ़े बारह
किलोमीटर लम्बा और पांच किलोमीटर चौड़ा
होगा। इस प्रकार पूरा भाग साढ़े बारह किलोमीटर
लम्बा और दस किलोमीटर चौड़ा होगा। 14वे
अपनी इस भूमि का कोई अंश न तो बेचेंगे, और
न दूसरी भूमि से अदला-बदली करेंगे। वे देश
के इस पवित्र भाग को किसी दूसरे के अधिकार
में नहीं देंगे; क्योंकि यह प्रभु को अर्पित है।
15' शेष अढ़ाई किलोमीटर चौड़ी और साढ़े
बारह किलोमीटर लम्बी भूमि नगर, बस्ती और
चरागाह के सामान्य प्रयोग के लिए सुरक्षित
होगी। नगर+ उसके बीच में होगा। 16नगर का
क्षेत्रफल यह होगा: वह उत्तर, दक्षिण, पूर्व और
पश्चिम में सवा दो किलोमीटर होगा। 17नगर
के समीप उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम में
चरागाह होंगे। प्रत्येक चरागाह एक सौ पच्चीस
मीटर चौड़ा होगा। 18पवित्र भूमि भाग की
लम्बाई में से बचा हुआ भाग पूर्व की ओर पांच
किलोमीटर और पश्चिम की ओर भी पांच
किलोमीटर होगा। यह भाग पवित्र, अर्पित

---

* मूल में 'पांच'। + अथवा 'यरूशलेम'।

48 : 16 प्रक 21 : 16

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

किए हुए भाग से संलग्न होगा। उसकी उपज
से उन लोगों को भोजन मिलेगा जो नगर में
काम करते हैं। 19इस्राएल के सब कुलों के लोग
जो नगर में काम करेंगे, वे उस पर खेती करेंगे।
20इस प्रकार जो भूमिक्षेत्र तुम विशेष भाग के
रूप में अलग करोगे, वह साढ़े बारह किलोमीटर
वर्गाकार होगा। इस भूमिक्षेत्र में पवित्र-स्थान
की भूमि और नगर का क्षेत्र, दोनों सम्मिलित
हैं।
21'पवित्र अर्पित भूमिक्षेत्र और नगर के क्षेत्र
के दोनों ओर का बचा हुआ भाग इस्राएल देश
के शासक को मिलेगा। शासक की भूमि-सीमा
यह होगी: पवित्र अर्पित भूमि-भाग की साढ़े
बारह किलोमीटर भूमि से पूर्वी सीमा तक का
लगा हुआ भाग तथा पश्चिम में, पश्चिमी सीमा
तक, साढ़े बारह किलोमीटर की भूमि से लगा
हुआ भाग, जो कुलों के भूमि-भागों के
समानान्तर होगा। यही भूमिक्षेत्र इस्राएल देश
के शासक का होगा। उसके बीच में पवित्र
अर्पित भूमि-भाग और मन्दिर का पवित्र स्थान
होगा। 22लेवियों की पैतृक भूमि और नगर की
विशेष भूमि भी शासक के भूमि-भाग के
बीचोंबीच होगी। इस्राएल देश के शासक का
भूमि-भाग यहूदा और बिन्यामिन कुल-क्षेत्रों
की सीमा के बीच होगा।

दक्षिणी कुलों के भूमिक्षेत्र

23'शेष कुलों का भूमिक्षेत्र: बिन्यामिन का
भूमिक्षेत्र पूर्व से पश्चिम तक। 24शिमोन का
भूमिक्षेत्र, बिन्यामिन के भूमिक्षेत्र से लगा हुआ,
पूर्व से पश्चिम तक। 25इस्साकार का भूमिक्षेत्र,
शिमोन के भूमिक्षेत्र से लगा हुआ, पूर्व से
पश्चिम तक। 26जबूलून का भूमिक्षेत्र, इस्साकार
के भूमिक्षेत्र से लगा हुआ, पूर्व से पश्चिम तक।
27गाद का भूमिक्षेत्र, जबूलून के भूमिक्षेत्र से
लगा हुआ, पूर्व से पश्चिम तक। 28गाद के
भूमिक्षेत्र से लगी हुई दक्षिण ओर की सीमा,
तामार से मरीबा-कादेश के जलाशयों से होती
हुई, मिस्र की बरसाती नदी के किनारे-किनारे
भूमध्य-सागर तक जाएगी।
29'जो देश तुम इस्राएल के कुलों में पैतृक
अधिकार के लिए विभाजित करोगे, वह यही
है। ये ही उसके भिन्न-भिन्न भूमि-भाग होंगे।'
स्वामी-प्रभु की यही वाणी है।

यरूशलेम के फाटक

30'नगर से निकलने के लिए ये मार्ग होंगे।
उत्तरी सीमा पर एक मार्ग होगा। उसकी लम्बाई
सवा दो किलोमीटर होगी। 31उसमें तीन दरवाजे
होंगे, जिन के नाम इस प्रकार होंगे: रूबेन का
दरवाजा, यहूदा का दरवाजा, और लेवी का
दरवाजा; क्योंकि नगर के दरवाजों के नाम
इस्राएल के कुलों के नाम पर रखे जाएंगे।
32'पूर्वी सीमा पर एक मार्ग होगा। उसकी
लम्बाई सवा दो किलोमीटर होगी। उसमें तीन
दरवाजे होंगे: यूसुफ का दरवाजा, बिन्यामिन
का दरवाजा, और दान का दरवाजा।
33'दक्षिणी सीमा पर एक मार्ग होगा। वह
सवा दो किलोमीटर लम्बा होगा। उसमें तीन
दरवाजे होंगे: शिमोन का दरवाजा, इस्साकार
का दरवाजा और जबूलून का दरवाजा।
34'पश्चिमी सीमा पर एक मार्ग होगा। वह
सवा दो किलोमीटर लम्बा होगा। उसमें तीन
दरवाजे होंगे: गाद का दरवाजा, आशेर का
दरवाजा और नफ्ताली का दरवाजा।
35'नगर का घेरा नौ किलोमीटर होगा।
आज से इस नगर का नाम होगा: ''प्रभु यहाँ
है!''

---

48 : 31 प्रक 21 : 12 48 : 35 यश 1 : 26; प्रक 21 : 3

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नबी दानिएल का ग्रंथ

पुस्तक-परिचय

प्रस्तुत ग्रंथ उस समय लिखा गया जब किसी विधर्मी तानाशाह के शासन में यहूदियों पर अत्यधिक अत्याचार किया जा रहा था। लेखक वास्तविक घटनाओं का उल्लेख दर्शनों के रूप में करता है। अन्य यहूदी साहित्य से अनुमान लगाया जा सकता है कि इस ग्रंथ में सीरिया देश के यूनानी राजा अन्तियोखुस चतुर्थ की ओर अप्रत्यक्ष संकेत है, जिसने सन् 167 ईसवी पूर्व में यरूशलेम के मंदिर में "घृणित वस्तु" (अर्थात् अपने राष्ट्रदेवता की मूर्ति) प्रतिष्ठित की। लेखक अपने युग के लोगों को आशा का सन्देश देता है कि वे सताव को सह जाएं, क्योंकि परमेश्वर निरंकुश शासक का पतन करेगा और अपने भक्त लोगों की राज्य-सत्ता पुनः स्थापित करेगा।

मूल "दानिएल ग्रंथ" के इब्रानी संस्करण में कुछ अरामी अंश भी शेष रह गये हैं, जब कि इसका यूनानी अनुवाद अधिक विस्तृत है। विषय-वस्तु को हम दो मुख्य खण्डों में बाँट सकते हैं : **पहले खण्ड** में दानिएल तथा उनके साथी-मित्रों के विषय में घटनाएँ हैं। ये परमेश्वर पर अटूट विश्वास करते हैं, और उसके प्रति आज्ञाकारी बने रहते हैं। अपने विश्वास तथा आज्ञाकारिता से ये अपने विरोधियों को पराजित करते हैं। वे घटनाएँ बेबीलोनी तथा मादी-फारसी साम्राज्य-काल में घटित दिखायी जाती हैं।

दूसरे खण्ड में दानिएल के अनेक दर्शनों का विवरण है। ये दर्शन एक-के-बाद-एक होनेवाले साम्राज्यों के उत्थान और पतन की घटनाओं को प्रतीक रूप में प्रकट करते हैं। दर्शनों में बताया गया है कि साम्राज्यों का पतन होगा, और उनके साथ अत्याचारी शासक का भी। अन्त में परमेश्वर के भक्त लोगों को राजसत्ता पुनः प्राप्त होगी।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

दानिएल और उनके मित्रों की कथाएँ	1 : 1 — 6 : 28
दानिएल के दर्शन	7 : 1 — 12 : 13
(क) चार विशाल पशु	7 : 1-28
(ख) मेढ़ा और बकरा	8 : 1 — 9 : 27
(ग) दिव्य पुरुष का दर्शन	10 : 1 — 11 : 45
(घ) युगांत कब होगा	12 : 1-13

दानिएल और उनके मित्र

1 यहूदा प्रदेश के राजा यहोयाकीम के
राज्यकाल के तीसरे वर्ष में बेबीलोन देश
के राजा नबूकदनेस्सर ने यहूदा की राजधानी
यरूशलेम पर आक्रमण कर दिया, और उसको
घेर लिया। 2तब प्रभु परमेश्वर ने राजा यहोयाकीम
और उसके नगर को नबूकदनेस्सर के हाथ में
सौंप दिया। नबूकदनेस्सर ने परमेश्वर के मन्दिर
के कुछ पवित्र पात्रों पर भी अधिकार कर
लिया, और वह उनको शिनार देश में स्थित
अपने देवता के मन्दिर में ले गया। उसने पात्रों
को अपने देवता के भंडारगृह में रख दिया।

3 राजा नबूकदनेस्सर ने अपने मुख्य खोजा
अशपनज को आदेश दिया, 'जाओ और
इस्राएली कौम के उन बंदियों को लाओ जो
राजपरिवार तथा कुलीन वंश के हैं। 4वे जवान
होने चाहिए तथा उनमें किसी प्रकार का
शारीरिक दोष न हो। वे देखने में सुन्दर हों और

1 : 1 2 रा 24 : 1 1 : 2 उत 10 : 10 1 : 3 2 रा 20 : 17

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सब प्रकार से बुद्धिमान हों। वे ज्ञान से परिपूर्ण
और विद्वान हों। वे राजभवन में सेवा करने
के योग्य हों। जब वे बेबीलोन में आ जायें तब
उन्हें कसदी कौम का साहित्य और भाषा
सिखाना।'

मुख्य खोजा अशपनज ने राजा नबूकदनेस्सर
के आदेश का पालन किया।

5 राजा ने आदेश दिया कि इस्राएली कौम
के उन जवानों को वही राजकीय भोजन दिया
जाए जो वह स्वयं खाता है; वही शराब उनको
पिलाई जाए जो वह स्वयं पीता है। इसके
अतिरिक्त उन्हें तीन वर्ष तक प्रशिक्षित किया
जाए। इस अवधि के बाद वे राजा नबूकदनेस्सर
की सेवा में उपस्थित हों।

6 इन इस्राएली जवानों में से यहूदा कुल के
ये चार जवान थे : दानिएल, हनन्याह, मीशाएल
और अजर्याह। 7मुख्य खोजा अशपनज ने उन्हें
नए नाम दिए। उसने दानिएल का नाम
बेलतशस्सर, हनन्याह का शद्रक, मीशाएल का
मेशक और अजर्याह का अबेदनगो रखा।

8 किन्तु दानिएल ने अपने हृदय में यह
निश्चय किया कि वह राजा का न तो भोजन
खाएगा और न शराब पीएगा जो राजा पीता है;
और यों अपने को अशुद्ध नहीं करेगा। इसलिए
उसने मुख्य खोजा अशपनज से निवेदन किया,
"आप मुझे महाराज के आदेश से मुक्त रखें
जिससे मैं अशुद्ध न होऊँ।"

9 परमेश्वर ने मुख्य खोजा अशपनज के
हृदय में दानिएल के प्रति कृपा और दया उत्पन्न
की। 10पर मुख्य खोजा ने दानिएल से कहा,
'मुझे इस बात का भय है कि यदि तुम मेरे
महाराज द्वारा निश्चित किया हुआ खान-पान
नहीं लोगे तो तुम्हारा स्वास्थ्य तुम्हारे जवान
साथियों की अपेक्षा गिर जाएगा। जब मेरे
स्वामी तुम्हारा मुख उतरा हुआ देखेंगे, तब तुम
मेरे सिर को खतरे में डाल दोगे। महाराज मेरा
सिर धड़ से अलग कर देंगे।'

11 मुख्य खोजा अशपनज ने दानिएल,
हनन्याह, मीशाएल और अजर्याह की भोजन-
व्यवस्था करने के लिए एक भंडारी को नियुक्त
किया था। दानिएल ने भंडारी से कहा, 12'आप
अपने इन सेवकों को दस दिन तक भोजन में
साग-सब्जी और पीने के लिए पानी दीजिए।
13तब आप हमारे चेहरे महाराज के द्वारा
निश्चित किए गए राजकीय भोजन करनेवाले
युवकों के चेहरों से मिलाइए और तब आप
जैसा देखें और ठीक समझें वैसा ही व्यवहार
अपने इन सेवकों के साथ कीजए।'

14 भंडारी ने इस सम्बन्ध में दानिएल और
उसके साथियों की बात मान ली और दस दिन
तक उनको जांचा-परखा। 15दस दिन के बाद
भंडारी ने देखा कि दानिएल और उसके
साथियों के चेहरे राजकीय भोजन करनेवाले
सब युवकों के चेहरों से अधिक खिले हुए हैं,
और उनका वजन भी बढ़ गया है। 16अत: भोजन
की व्यवस्था करनेवाले भंडारी ने राजा के द्वारा
निश्चित किए गए खान-पान को देना बन्द कर
दिया और उनके स्थान पर वह उनको साग-
सब्जी देने लगा।

17 परमेश्वर ने इन चार इस्राएली जवानों
को सब प्रकार के शास्त्रों और सब प्रकार की
विद्याओं को समझने के लिए बुद्धि और
प्रवीणता प्रदान की। दानिएल प्रत्येक प्रकार के
दिव्य-दर्शन और स्वप्न का अर्थ समझने लगा।
उसमें यह समझ आ गई। 18राजा नबूकदनेस्सर
ने यह आदेश दिया था कि इस्राएली कौम के
सब जवान तीन वर्ष बाद उसके सम्मुख
राजमहल में प्रस्तुत किए जाएं। जब यह समय
पूरा हुआ तब मुख्य खोजा अशपनज उनको
राजमहल में ले गया। उसने उनको राजा के
सम्मुख पेश किया। 19राजा नबूकदनेस्सर ने
उन जवानों से बात-चीत की और उसे यह
अनुभव हुआ कि दानिएल, हनन्याह, मीशाएल
और अजर्याह उन सब जवानों में सर्वश्रेष्ठ हैं।
अत: उसने उन्हें अपनी सेवा में नियुक्त कर
दिया।

20 वे चारों राजा की सेवा में उपस्थित होने
लगे। जब कभी राजा बुद्धि और समझ के

---

1 : 9 उत 39 : 21 1 : 17 उत 41 : 12 1 : 20 1 रा 10 : 3-4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

विषय में उनसे कोई प्रश्न पूछता, तब उनका उत्तर सुनकर राजा को यह अनुभव होता कि वे उसके राज्य भर के सब ज्योतिषियों और तांत्रिकों से दस गुना अधिक प्रवीण हैं।

21 दानिएल बेबीलोन के दरबार में सम्राट कुस्रू* के राज्यकाल के प्रथम वर्ष तक रहा।

दानिएल राजा नबूकदनेस्सर के स्वप्न का अर्थ बताता है

2 राजा नबूकदनेस्सर के राज्य का दूसरा वर्ष था। उसने ऐसे स्वप्न और दृश्य देखे जिनके कारण उसकी आत्मा अशान्त हो गयी और उसकी आंखों से नींद उड़ गई।

2 राजा नबूकदनेस्सर ने आदेश दिया कि ज्योतिषी, तांत्रिक, शकुन विचारनेवाले तथा कसदी पंडित बुलाए जाएं ताकि वे राजा को उसका स्वप्न बताएं। अत: वे आए और राजा के सम्मुख खड़े हो गए। 3राजा ने उनसे कहा, 'मैंने ऐसे स्वप्न और दृश्य देखे हैं जिनके कारण मेरी आत्मा अशान्त है। मैं स्वप्न और उनका अर्थ जानना चाहता हूँ।'

4 कसदी पंडितों ने (अरामी भाषा में**) राजा से निवेदन किया, 'महाराज लाखों वर्ष जीएं! आप हमें अपना स्वप्न बताइए, और हम आपको उसका अर्थ समझा देंगे।' 5राजा नबूकदनेस्सर ने कसदी पंडितों को उत्तर दिया, 'मेरा वचन अटल है! यदि तुम मेरा स्वप्न और उसका अर्थ मुझे नहीं बताओगे, तो तुम निश्चय जानो कि तुम्हारे शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर दिए जाएंगे, और तुम्हारे घर खण्डहर बना दिए जाएंगे। 6पर यदि तुम अर्थ-सहित मेरा स्वप्न मुझे बता दोगे तो मैं तुम्हें पुरस्कारों-उपहारों से लाद दूंगा, और तुम्हारा बड़ा सम्मान करूंगा। अच्छा, अब मुझे मेरा स्वप्न और उसका अर्थ बताओ।'

7 कसदी पंडितों ने राजा से दूसरी बार निवेदन किया, 'महाराज, अपने सेवकों को अपना स्वप्न बताएं और हम, आपके सेवक, महाराज को उसका अर्थ समझा देंगे।' 8राजा ने उत्तर दिया, 'मैं निश्चयपूर्वक जानता हूं कि तुम ये बातें केवल समय काटने के लिए कह रहे हो; क्योंकि तुम जानते हो कि मेरा यह वचन अटल है 9कि यदि तुम मेरा स्वप्न मुझे नहीं बताओगे, तो तुम्हारे लिए प्राणदण्ड निश्चित् है। तुम परस्पर इस बात में एकमत हो गए हो कि उस समय तक तुम मुझसे झूठ बोलो, मुझे झूठे उत्तर दो जब तक मेरा ध्यान न बंट जाए। इसलिए अब तुरन्त मुझे मेरा स्वप्न बताओ जिससे मुझे मालूम हो जाए कि तुम मुझे उसका अर्थ भी बता सकोगे।'

10 कसदी पंडितों ने राजा को उत्तर दिया, 'महाराज, संसार में ऐसा कोई मनुष्य नहीं है जो आपकी बात को पूरा कर सके। किसी भी महान और शक्तिशाली सम्राट ने ज्योतिषियों, तांत्रिकों, और कसदी पंडितों से कभी ऐसी बात नहीं पूछी। 11जो बात महाराज हमसे पूछ रहे हैं, वह कठिन है, और केवल देवता ही महाराज को उनका स्वप्न बता सकते हैं। पर देवता तो मनुष्य के मध्य नहीं रहते।'

12 यह बात सुनकर राजा नबूकदनेस्सर नाराज हो गया। उसका क्रोध भड़क उठा। उसने राजाज्ञा दी कि बेबीलोन देश के समस्त दरबारी विद्वान—ज्योतिषी, तांत्रिक, शकुन विचारनेवाले और कसदी पंडित—मौत के घाट उतार दिए जाएंगे। 13यह राजाज्ञा समस्त देश में प्रसारित की गई कि दरबार के सब विद्वानों का वध कर दिया जाएगा। राजा के अंगरक्षक दानिएल और उसके साथियों का वध करने के लिए उनको ढूंढ़ रहे थे। 14तब दानिएल ने राजा के अंगरक्षकों के नायक अर्योक से सोच-समझकर, बुद्धिमानी से बातें कीं। अर्योक बेबीलोन देश के समस्त दरबारी विद्वानों का वध करने निकला था।

15 दानिएल ने नायक अर्योक से पूछा, 'महाराज ने इतनी निष्ठुर राजाज्ञा क्यों प्रसारित की?' तब अर्योक ने दानिएल को कारण बताया। 16अत: दानिएल राजमहल में गया,

*अथवा, 'साइरस । ** यहाँ से सातवें अध्याय के अंत तक मूल में अरामी भाषा प्रयुक्त हुई है।

2 : 11 उत 41 : 16

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
और उसने राजा नबूकदनेस्सर से निवेदन किया, "महाराज, आप मेरे लिए कोई समय निश्चित कर दें; क्योंकि मैं इस निश्चित समय पर महाराज का स्वप्न और उसका अर्थ बता दूंगा।"

17 तत्पश्चात् दानिएल अपने घर गया, और
वहाँ उसने अपने साथियों—हनन्याह, मीशाएल
और अजर्याह—को यह बात बताई, 18और उसने
उनसे कहा कि वे इस रहस्य के सम्बन्ध में स्वर्गिक परमेश्वर से प्रार्थना कर उसकी दया प्राप्त करें ताकि बेबीलोन के सब दरबारी विद्वानों के साथ हम भी नष्ट न किए जाएं।

दानिएल के साथियों ने ऐसा ही किया।
19और रात के समय दर्शन के माध्यम से
दानिएल पर रहस्य प्रकट किया गया। दानिएल ने स्वर्गिक परमेश्वर को धन्यवाद दिया।
20उसने कहा:

'परमेश्वर का नाम युग-युगांत धन्य है,
बुद्धि और पराक्रम उसी के हैं।
21परमेश्वर ही काल का नियंता
और ऋतुओं का परिवर्तनकर्त्ता है।
वही राजाओं को सिंहासन पर बैठाता,
और वही उनको पदच्युत करता है।
परमेश्वर ही बुद्धिमान को बुद्धि
और समझदार को समझ देता है।
22परमेश्वर ही रहस्यमय भेदों को प्रकट करता है;
वह अन्धकार में छिपे भेद को जानता है;
उसके साथ ज्योति का निवास है।

23'हे परमेश्वर, मेरे पूर्वजों के परमेश्वर,
मैं तुझे धन्यवाद देता, और तेरी स्तुति करता हूं।
तूने ही मुझे बुद्धि और बल प्रदान किया है;
और अब तूने उस रहस्य को हम पर प्रकट किया, जो हमने तुझ से मांगा था;
तूने हमें राजा का स्वप्न बता दिया।'

24 दानिएल अर्योक के पास गया, जिसको
राजा नबूकदनेस्सर ने बेबीलोन के दरबारी विद्वानों का वध करने के लिए नियुक्त किया था। दानिएल ने उससे निवेदन किया, 'आप बेबीलोन के दरबारी विद्वानों की हत्या मत कीजिए। कृपया, आप मुझे राजमहल में महाराज के पास ले चलिए। मैं महाराज को उनका स्वप्न और उसका अर्थ बताऊँगा।'

25 अत: अर्योक दानिएल को अविलम्ब
राजा के महल में ले गया। उसने राजा से यों कहा, 'महाराज, मुझे यहूदा प्रदेश के प्रवासियों में यह व्यक्ति मिला है, जो आपका स्वप्न और
उसका अर्थ आपको बता सकता है।' 26दानिएल
से, जिसका विदेशी नाम बेलतशस्सर था, राजा नबूकदनेस्सर ने पूछा, 'क्या तुम में इतनी सामर्थ्य है कि तुम मेरे देखे हुए स्वप्न को और उसका अर्थ मुझे बता सको?'

27 दानिएल ने राजा को उत्तर दिया,
'महाराज, जो रहस्य की बात आपने पूछी है, उसको न पंडित, न तांत्रिक, न ज्योतिषी और न शकुन विचारनेवाले बता सकते हैं, यह किसी
मनुष्य से संभव नहीं है। 28किन्तु स्वर्ग में
विराजमान परमेश्वर सब रहस्यों पर से परदा हटाता है। उसी ने महाराज को भविष्य में घटनेवाली घटनाओं का दर्शन स्वप्न में कराया है। आपका स्वप्न और आपके मन में अंकित दृश्य जो आपने पलंग पर सोते समय देखे हैं,
वे ये हैं: 29महाराज, जब आप पलंग पर लेटे
हुए थे तब आपके मन में यह विचार आया कि भविष्य में क्या होगा। तब सब रहस्यों पर से परदा हटाने वाले परमेश्वर ने भविष्य में घटनेवाली बातों का दृश्य आपको दिखाया।
30महाराज, मुझ पर यह रहस्य इसलिए नहीं
प्रकट किया गया कि मैं अन्य सब प्राणियों से अधिक बुद्धिमान हूं। नहीं, महाराज; बल्कि परमेश्वर ने यह रहस्य मुझ पर इसलिए प्रकट किया है कि मैं महाराज को इसका अर्थ बता सकूं और आप अपने मन के विचारों को समझ सकें।

31'महाराज, आपने दृष्टि ऊपर की तो
आपने अपने सम्मुख एक विशाल मूर्ति देखी।

2 : 20 अय्य 12 : 13 **2 : 22** अय्य 12 : 21 ; भज 139 : 11-12 **2 : 28** 1 कुर 2 : 10-11

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
यह मूर्ति बहुत ऊँची थी और खूब चमक रही
थी। उसका रूप भयंकर था। 32इस मूर्ति का
सिर शुद्ध सोने का था। उसका वक्ष और भुजाएं
चांदी की थीं। उसका पेट और जांघें पीतल की
थीं। 33उसकी टांगें लोहे की, और पांव का
कुछ भाग लोहे का और कुछ भाग मिट्टी का
था।
34 'महाराज, जब आप मूर्ति को देख रहे
थे तब अचानक पत्थर का एक टुकड़ा आप-
से-आप उखड़ा, (उसको किसी मनुष्य के
हाथ ने नहीं उखाड़ा था) और मूर्ति के लोहे
और मिट्टी के बने पांवों पर गिरा, और उनको
चकनाचूर कर दिया। 35तत्पश्चात् लोहा, मिट्टी,
पीतल, चांदी और सोना भी एक साथ चूर-चूर
हो गए, और वे ग्रीष्म ऋतु के खलियान के भूसे
के समान कण-कण हो गए। पवन ने उनको
उड़ा दिया, और वे लुप्त हो गए, उनका चिह्न
भी शेष न रहा।
'परन्तु जिस पत्थर ने मूर्ति के पांवों पर प्रहार
किया था, वह एक विशाल पर्वत के रूप में
बदल गया, और सम्पूर्ण पृथ्वी में फैल गया।
36'महाराज का स्वप्न यही है। अब हम
महाराज को इसका अर्थ बताएंगे।
37'महाराज, राजाओं के राजा, आपको
स्वर्ग में विराजमान परमेश्वर ने यह राज्य,
पराक्रम, सामर्थ्य और महिमा प्रदान की है।
38परमेश्वर ने आपके हाथों में पृथ्वी के समस्त
मनुष्य, वन के पशु और आकाश के पक्षी सौंपे
हैं। महाराज, परमेश्वर ने ही आपको इन पर
शासन करने की सामर्थ्य दी है। महाराज, आप
ही मूर्ति के सोने का सिर हैं। 39आपके बाद एक
दूसरे राज्य का उदय होगा। वह आपसे कम
वैभवशाली राज्य होगा। उसके बाद पीतल का
राज्य उदित होगा जो समस्च पृथ्वी पर शासन
करेगा। 40तब चौथा राज्य उदित होगा जो लोहे
की तरह मजबूत होगा। जैसे लोहा सब वस्तुओं
को टुकड़े-टुकड़े कर डालता, उनको चूर-चूर
कर देता है, वैसे ही यह राज्य इन सबको चूर-
चूर और टुकड़े-टुकड़े कर देगा।
41'महाराज, जैसा कि आपने मूर्ति के पांवों
और उंगलियों को देखा है कि वे कुछ कुम्हार
की मिट्टी की और कुछ लोहे की बनी थीं,
उसी प्रकार यह चौथा राज्य अलग-अलग बंटा
हुआ होगा। जैसा आपने देखा कि लोहे में
लसदार मिट्टी मिली हुई थी, वैसे ही उसमें भी
लोहे की तरह मजबूती होगी। 42जिस तरह पांवों
की उंगलियां कुछ लोहे की और कुछ मिट्टी
की थीं, वैसे ही वह राज्य कुछ मजूबत और
कुछ कमजोर होगा। 43महाराज, जैसा कि आपने
देखा कि लोहा लसदार मिट्टी के साथ मिला
हुआ था, वैसा ही इस राज्य के लोग आपस में
वैवाहिक सम्बन्धों के द्वारा परस्पर मिलेंगे-
जुड़ेंगे; किन्तु जिस तरह लोहा और मिट्टी में
एकमेल नहीं हो पाता, वैसे ही इस राज्य के
लोग आपस में मिल-घुल नहीं पाएंगे। 44उन
राजाओं के राज्य-काल में स्वर्ग में विराजमान
परमेश्वर एक ऐसा राज्य उदय करेगा जो
अनंतकाल तक न नष्ट होगा और न उसकी
राज्य-सत्ता किसी दूसरी कौम के हाथ में सौंपी
जाएगी। यह राज्य सब राज्यों का अंत कर देगा,
उनको मिटा डालेगा; पर वह स्वयं सदा-सर्वदा
सुदृढ़ बना रहेगा। 45महाराज, आपने देखा कि
एक पत्थर को किसी अज्ञात हाथ ने (मनुष्य के
हाथ ने नहीं) पहाड़ से खोदा और उस पत्थर
ने लोहा, पीतल, मिट्टी, चांदी और सोने को
चूर-चूर कर डाला। महान परमेश्वर ने महाराज
पर यह बात प्रकट की है कि भविष्य में क्या
होनेवाला है। महाराज, आपका स्वप्न सच्चा
और उसका अर्थ भी निश्चित है।'
46यह सुनकर राजा नबूकदनेस्सर ने मुंह के
बल गिर कर दानिएल के प्रति सम्मान प्रकट
किया और उसने आदेश दिया कि दानिएल को
भेंट चढ़ाओ और उसके सम्मुख सुगंधित धूप
चढ़ाई जाए। 47राजा ने दानिएल से कहा,
'निस्सन्देह तुम्हारा परमेश्वर ही सब देवताओं
का ईश्वर और राजाओं का स्वामी है, वही सब
रहस्यों का भेद खोलनेवाला है। केवल तुम ही
मेरे रहस्य पर से परदा उठा सके।'

2 : 44 लू 1 : 32; प्रक 11 : 15; 1 कुर 15 : 24-25 2 : 45 यश 28 : 16

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

48 राजा नबूकदनेस्सर ने दानिएल को अपने दरबार में उच्च पद पर नियुक्त किया और उसे अनेक बहुमूल्य उपहार दिए। उसने दानिएल को बेबीलोन देश के समस्त क्षेत्र पर शासक नियुक्त कर दिया और उसे बेबीलोन की दरबारी विद्वान-मंडली का अध्यक्ष बना दिया। 49दानिएल के निवेदन पर राजा नबूकदनेस्सर ने शद्रक, मेशक और अबेदनगो को बेबीलोन देश के शासन-कार्यों की व्यवस्था करने के लिए नियुक्त किया। पर स्वयं दानिएल राजदरबार में ही रहता था।

नबी दानिएल के साथी संकट में

3 राजा नबूकदनेस्सर ने सोने की एक विशाल मूर्ति बनवायी। वह प्रायः पचीस मीटर ऊंची और अढ़ाई मीटर चौड़ी+ थी। उसने मूर्ति को बेबीलोन देश के दूरा नामक मैदान में स्थापित किया। 2उसके बाद उसने अपने साम्राज्य के सब प्रदेशों के क्षत्रपों, हाकिमों, राज्यपालों, मंत्रियों, खजांचियों, न्यायाधीशों, दंडाधिकारियों तथा प्रदेशों के सब उच्चाधिकारियों के पास सन्देश भेजा कि वे महाराज नबूकदनेस्सर द्वारा स्थापित स्वर्ण-मूर्ति के प्रतिष्ठान के अवसर पर उपस्थित हों। 3अत: सम्राट के आदेशानुसार बेबीलोन साम्राज्य के सब प्रदेशों के क्षत्रप, हाकिम, राज्यपाल, मंत्री, खजांची, न्यायाधीश, दंडाधिकारी तथा अन्य उच्चाधिकारी अपने महाराज द्वारा स्थापित स्वर्ण-मूर्ति के प्रतिष्ठान पर्व पर उपस्थित होने के उद्देश्य से एकत्र हुए। वे मूर्ति के सम्मुख खड़े हुए।

4 तब घोषणा करनेवाले उद्घोषक ने उच्च स्वर में कहा, 'ओ विश्व की भिन्न-भिन्न कौमों, राष्ट्रों और भाषाओं के लोगो! तुम्हें यह आदेश दिया जाता है 5कि जिस क्षण तुम नरसिंगे, बांसुरी, वीणा, सारंगी, सितार, शहनाई तथा अन्य सब प्रकार के वाद्य-यंत्रों का स्वर सुनो, तब तुम उसी क्षण राजा नबूकदनेस्सर द्वारा स्थापित स्वर्ण-मूर्ति के सम्मुख गिरकर उसका सम्मान करना। 6जो व्यक्ति मूर्ति के सम्मुख गिर कर उसका सम्मान नहीं करेगा, वह उसी क्षण धधकती हुई अग्नि की भट्ठी में फेंक दिया जाएगा।'

7 अत: विश्व की भिन्न-भिन्न कौमों, राष्ट्रों और भाषाओं के लोगों ने ऐसा ही किया। उन्होंने जिस क्षण नरसिंगे, बांसुरी, वीणा, सारंगी, सितार, शहनाई तथा अन्य सब प्रकार के वाद्ययंत्रों का स्वर सुना, वे तत्काल राजा नबूकदनेस्सर द्वारा स्थापित स्वर्ण-मूर्ति के सम्मुख गिरे, और यों उन्होंने मूर्ति के प्रति सम्मान प्रकट किया।

8 पर उसी समय कुछ कसदी पंडित राजा नबूकदनेस्सर के पास गए, और उन्होंने यहूदियों के प्रति द्वेष के कारण राजा से उनकी चुगली खाई। 9उन्होंने उससे कहा, 'महाराज लाखों वर्ष जीएं! 10महाराज, आपने राजाज्ञा दी थी कि प्रत्येक व्यक्ति नरसिंगे, बांसुरी, वीणा, सारंगी, सितार, शहनाई तथा अन्य सब प्रकार के वाद्ययन्त्रों का स्वर सुनते ही स्वर्ण-मूर्ति के सम्मुख गिर कर उसके प्रति सम्मान प्रकट करेगा; 11और जो व्यक्ति मूर्ति के सम्मुख गिरकर उसका सम्मान नहीं करेगा, वह धधकती हुई अग्नि की भट्ठी में फेंक दिया जायेगा। 12महाराज, आपने जिन यहूदियों को बेबीलोन देश के राजकीय कार्यों की व्यवस्था करने के लिए नियुक्त किया है, वे आपके आदेशों का पालन नहीं करते हैं। उनके नाम हैं : शद्रक, मेशक और अबेदनगो। वे आपकी उपेक्षा करते हैं। महाराज, वे न तो आपके देवताओं की सेवा-आराधना करते हैं, और न आपके द्वारा स्थापित स्वर्ण-मूर्ति के प्रति सम्मान प्रकट करते हैं।'

13 यह सुनते ही नबूकदनेस्सर का क्रोध भड़क उठा। उसने रोष में आकर आदेश दिया कि शद्रक, मेशक और अबेदनगो को पेश किया जाए। सैनिकों ने तीनों व्यक्तियों को राजा के सम्मुख प्रस्तुत किया। 14नबूकदनेस्सर ने उनसे पूछा, 'शद्रक, मेशक और अबेदनगो, क्या यह

+ मूल में 'साठ हाथ' और 'छह हाथ'।
3 : 6 यिर 29 : 22; प्रक 13 : 15

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सच है कि तुम न तो मेरे देवताओं की सेवा-
आराधना करते हो, और न मेरे द्वारा स्थापित
स्वर्ण-मूर्ति के प्रति सम्मान प्रकट करते हो?
15अब यदि तुम नरसिंगे, बांसुरी, वीणा, सारंगी,
सितार, शहनाई और अन्य सब प्रकार के वाद्यों
का स्वर सुनकर मेरे द्वारा स्थापित मूर्ति के
सम्मुख गिरकर उसका सम्मान करने को तैयार
हो, तो ठीक है; तुम्हारा अनिष्ट न होगा। पर यदि
तुम मूर्ति के प्रति सम्मान प्रकट नहीं करोगे, तो
तुम अविलम्ब धधकती हुई अग्नि की भट्‌ठी
में फेंक दिए जाओगे। तब मैं देखूंगा कि कौन-
सा ईश्वर तुम्हें मेरे हाथ से बचाएगा?'

16 शद्रक, मेशक और अबेदनगो ने राजा
को उत्तर दिया, 'महाराज, इस सम्बन्ध में हम
उत्तर देना आवश्यक नहीं समझते। 17यदि हमारे
साथ ऐसा व्यवहार किया जाएगा, तो हम जिस
परमेश्वर की सेवा-आराधना करते हैं, वह हमें
धधकती हुई अग्नि की भट्‌ठी में से भी छुड़ा
लेगा। महाराज, वह हमें आपके हाथ से भी
छुड़ा सकता है। 18महाराज, यदि आप हमें
धधकती हुई अग्नि की भट्‌ठी में नहीं डालेंगे,
तो भी+ हम आपके देवताओं की सेवा-
आराधना नहीं करेंगे, और न आपके द्वारा
स्थापित स्वर्ण-मूर्ति के सम्मुख झुककर उसके
प्रति सम्मान प्रकट करेंगे।'

19 नबूकदनेस्सर क्रोध से भर गया। उसके
चेहरे का रंग बदल गया। उसका क्रोध शद्रक,
मेशक और अबेदनगो के प्रति भड़क उठा।
उसने आदेश दिया कि भट्‌ठी की अग्नि सात
गुना अधिक तेज की जाए। 20तत्पश्चात् उसने
अपनी सेना के कुछ बलिष्ठ योद्धाओं को आदेश
दिया कि वे शद्रक, मेशक और अबेदनगो को
बाँधकर धधकती हुई अग्नि की भट्‌ठी में फेंक
दें।

बलिष्ठ योद्धाओं ने ऐसा ही किया। 21उन्होंने
इन तीनों व्यक्तियों को उनके पायजामों,
अंगरखों, पगड़ियों तथा अन्य वस्त्रों सहित
बाँध दिया और उनको धधकती हुई अग्नि की
भट्‌ठी में फेंक दिया।

22 राजा नबूकदनेस्सर की कठोर आज्ञा के
कारण भट्‌ठी की आंच और तेज कर दी गई।
भट्‌ठी अत्यन्त धधक रही थी। उसमें से लपटें
निकल रही थीं। अत: जिन लोगों ने शद्रक,
मेशक और अबेदनगो को भट्‌ठी में फेंकने के
लिए उठाया, उनको भट्‌ठी की लपटों ने भस्म
कर दिया, 23और ये तीनों व्यक्ति—शद्रक,
मेशक और अबेदनगो बन्धे-बंधाए उस धधकती
हुई अग्नि की भट्‌ठी में गिर पड़े।++

24 राजा नबूकदनेस्सर को आश्चर्य हुआ।
वह शीघ्र उठा। उसने अपने मंत्रियों से पूछा,
'क्या हमने तीन ही व्यक्तियों को भट्‌ठी में
डाला था?' उन्होंने राजा को उत्तर दिया, 'हां,
महाराज।' 25राजा ने कहा, 'किन्तु मैं चार
व्यक्तियों को आग के ऊपर चलते-फिरते देख
रहा हूं। वे बन्धन-मुक्त हैं। उनका शरीर तनिक
भी झुलसा नहीं है। चौथे व्यक्ति का रूप ईश-
पुत्र के सदृश है।'

26 नबूकदनेस्सर धधकती हुई अग्नि की
भट्‌ठी के द्वार के पास आया। उसने पुकारा,
'ओ सर्वोच्च परमेश्वर के सेवको—शद्रक,
मेशक और अबेदनगो, बाहर निकलो, यहां
आओ!'

अत: शद्रक, मेशक और अबेदनगो आग से
बाहर निकल आए। 27क्षत्रप, हाकिम, राज्यपाल
और राज-मंत्री एकत्र हो गए। उन्होंने देखा कि
उन तीनों व्यक्तियों के शरीर पर आग का कुछ
भी प्रभाव नहीं पड़ा था। उनके सिर का एक
बाल भी नहीं झुलसा था, उनके पायजामे ज्यों
के त्यों थे। उनके शरीर से जलने की गंध तक
नहीं आ रही थी।

28 नबूकदनेस्सर ने कहा, 'धन्य है शद्रक,
मेशक और अबेदनगो का परमेश्वर, जिसने दूत

+ अनुवाद इस प्रकार भी हो सकता है, "यदि परमेश्वर हमें धधकती हुई अग्नि की भट्‌ठी से नहीं छुड़ाएगा, तो भी........."

++ प्राचीन अनुवादों में यहाँ 68 अतिरिक्त पद मिलते हैं: अग्नि की भट्‌ठी में अजर्याह की प्रार्थना और तीनों युवकों का गीत।

3 : 23 अजर्याह 1-68

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भेजकर अपने विश्वस्त सेवकों को बचाया,
जिन्होंने मेरी राजाज्ञा की उपेक्षा की, और
अपना शरीर आग को अर्पण कर दिया कि वे
किसी अन्य देवता की आराधना न कर केवल
अपने ही परमेश्वर की आराधना करें। 29इसलिए
मैं यह राजाज्ञा प्रसारित करता हूं : यदि किसी
भी कौम, राष्ट्र और भाषा का व्यक्ति शद्रक,
मेशक और अबेदनगो के परमेश्वर के विरुद्ध
कुछ कहेगा, तो उसके शरीर के टुकड़े-टुकड़े
किये जाएंगे, और उसका घर खण्डहर बना
दिया जाएगा; क्योंकि उनके परमेश्वर के
अतिरिक्त और कोई ईश्वर नहीं है जो इस ढंग
से अपने सेवकों को बचा सके।'
30 तब राजा नबूकदनेस्सर ने बेबीलोन देश
में शद्रक, मेशक और अबेदनगो की पदोन्नति
कर दी।*

नबूकदनेस्सर का विश्व-पत्र

4 नबूकदनेस्सर का परिपत्र: 'पृथ्वी के सब
कौमों, राष्ट्रों और भाषाओं के लोगो!
तुम्हारी सुख-समृद्धि दिन दूनी रात चौगुनी
बढ़े।
2 'सर्वोच्च परमेश्वर ने मुझे अद्भुत चिह्न
और चमत्कार दिखाए हैं। मुझे यह अच्छा लगा
कि मैं उनका अर्थ तुम्हें समझाऊँ।
3 परमेश्वर के चिह्न कितने भव्य हैं,
उसके अद्भुत कार्य कितने सामर्थ्यपूर्ण हैं!
उसका राज्य शाश्वत राज्य है,
उसका शासन पीढ़ी से पीढ़ी तक बना रहता
है।
4 'मैं, नबूकदनेस्सर अपने निवास-स्थान में
सुख-चैन से था और अपने महल में सुख-
समृद्धि भोग रहा था। 5मैंने एक स्वप्न देखा।
उस स्वप्न ने मुझे डरा दिया। जब मैं पलंग पर
लेटता तब मेरे मन के विचार, और स्वप्न के
दृश्य मुझे परेशान करते थे। 6अतः मैंने एक
राजाज्ञा प्रसारित की कि बेबीलोन देश के सब
दरबारी विद्वान मेरे सम्मुख प्रस्तुत हों और मुझे
मेरे स्वप्न का अर्थ बताएं। 7तब मेरे आदेश के
अनुसार ज्योतिषी, तांत्रिक, शकुन विचारनेवाले
और कसदी पंडित मेरे महल में आए। मैंने उन्हें
अपना स्वप्न बताया, किन्तु वे उसका अर्थ मुझ
पर प्रकट नहीं कर सके। 8तत्पश्चात् दानिएल
आए, जिनका नाम मेरे ईश-देवता के नाम पर
बेलतशस्सर रखा गया है, और जिनमें पवित्र
परमेश्वर का आत्मा निवास करता है। मैंने
दानिएल को अपना स्वप्न बताया और उनसे
यह कहा, 9 ''ओ ज्योतिषियों के अगुए,
बेलतशस्सर ! मैं जानता हूं कि तुममें पवित्र
परमेश्वर का आत्मा निवास करता है, और
तुम्हारे लिए किसी भी रहस्य का भेद बताना
कठिन नहीं है। सुनो, मैंने यह स्वप्न देखा है।
मुझे इसका अर्थ बताओ। 10जब मैं पलंग पर
लेटा हुआ था, तब मैंने ये दर्शन देखे: मैंने देखा
कि पृथ्वी के बीचोंबीच एक पेड़ है और उस
पेड़ की ऊँचाई बहुत ऊंची है। 11वह पेड़ बढ़ता
ही गया और मजबूत होता गया। वह इतना बढ़ा
कि उसका शिखर आकाश को छूने लगा। वह
इतना ऊंचा हो गया कि पृथ्वी के छोर से दिखाई
देने लगा। 12उसकी पत्तियां दिखने में सुन्दर थीं
और वह फलों से लदा था। उसमें इतने फल
थे कि सब प्राणी उनको खाकर तृप्त हो सकते
थे। उसकी छांव में सब वन-पशु बसेरा कर रहे
थे। उसकी शाखाओं पर आकाश के पक्षियों
ने घोंसले बना लिये थे। पृथ्वी के प्राणी उसका
फल खाकर अपना भरण-पोषण करते थे।
13 ''जब मैं पलंग पर लेटा हुआ अपने मन
में यह दर्शन देख रहा था, तब मैंने दर्शन में एक
प्रहरी* को देखा। वह पवित्र दूत था, जो स्वर्ग
से नीचे उतरा। 14उसने उच्च स्वर में पुकारा,
और यह कहा, 'इस वृक्ष को काट डालो, और
इसकी शाखाओं को छांट दो। इसकी पत्तियों
को झड़ा दो, और इसके फल बिखेर दो। इसकी
छांव में बैठे हुए वनपशुओं को भगा दो। इसकी
शाखाओं में बसेरा करनेवाले पक्षियों को उड़ा
दो। 15किन्तु भूमि पर उसके तने को छोड़ दो,
और उसकी जड़ मत उखाड़ो। तने को लोहे

---

* मूल में, अध्याय 3 : 31 * अथवा, 'पहरेदार'।

4 : 12 यहेज 17 : 23; 32 : 6; मत 13 : 32

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और पीतल की जंजीर से बांधो, और उसको
मैदान में हरी घास के बीच छोड़ दो, ताकि वह
आकाश की ओस से सींचा जाए और वनपशु
की तरह भूमि की घास खाए। 16उसका हृदय
बदल जाए! उसको मनुष्य के हृदय के बदले
पशु का हृदय मिले। वह सात वर्ष + तक इसी
दशा में रहे।'

17 'यह दण्ड प्रहरियों के आदेश के
अनुसार दिया गया। यह निर्णय पवित्र दूतों के
वचन के अनुरूप है। यह इसलिए दिया गया कि
जीव-लोक के प्राणी जान लें कि सर्वोच्च
परमेश्वर मनुष्यों के राज्य पर शासन करता है,
और वह जिस को चाहता है, उसको यह राज्य
देता है, और उस पर शासन करने के लिए
छोटे-से-छोटे मनुष्य को भी नियुक्त करता
है।'

18 "राजा नबूकदनेस्सर ने, मैंने यह स्वप्न
देखा। अब, तुम, ओ बेलतशस्सर, इसका अर्थ
बताओ; क्योंकि मेरे राज्य का कोई भी दरबारी
विद्वान इसका अर्थ मुझे नहीं बता सका। पर तुम
मेरे स्वप्न का अर्थ बता सकते हो; क्योंकि
पवित्र परमेश्वर का आत्मा तुममें निवास करता
है।"

19 'यह सुनकर दानिएल, जो बेलतशस्सर
कहलाते हैं, बहुत समय तक स्तब्ध खड़े रहे।
उनके हृदय में अनेक विचार उठे, जिन्होंने
उनको व्याकुल कर दिया। मैंने कहा, "ओ
बेलतशस्सर, मेरे स्वप्न, अथवा उसके अर्थ से
तुम व्याकुल मत हो।" बेलतशस्सर ने उत्तर
दिया, "महाराज, मेरे स्वामी! काश, यह स्वप्न
आपके बैरियों के लिए हो, इसका अर्थ आपके
शत्रुओं पर पड़े!

20 "महाराज, जो वृक्ष आपने देखा, और
जो बढ़कर मजबूत हो गया, और जो इतना बढ़ा
कि उसका शिखर आकाश को छूने लगा, और
इतना ऊंचा हो गया कि आकाश के छोर से
दिखाई देने लगा; 21जिसकी पत्तियां दिखने में
सुन्दर थीं, और जो फलों से लदा था; जिसमें
इतने फल लगे थे कि उनको खाकर सब प्राणी
तृप्त हो सकते थे; जिसकी छांव में सब वन-
पशु बसेरा कर रहे थे; और जिसकी शाखाओं
पर आकाश के पक्षियों ने घोंसले बनाए थे,
22वह वृक्ष आप हैं, महाराज! आप ही बढ़कर
शक्तिशाली हो गए हैं। आपकी महानता
बढ़कर आकाश को छूने लगी है। आपका राज्य
पृथ्वी के छोरों तक पहुंच गया है।

23 "महाराज, जो पवित्र प्रहरी आपने
देखा, जो स्वर्ग से नीचे उतरा और जिसने उच्च
स्वर में यह कहा कि 'इस वृक्ष को काट कर नष्ट
कर दो, पर भूमि पर इसके तने को छोड़ दो,
और इसकी जड़ मत उखाड़ो। किन्तु तने को
लोहे और पीतल की जंजीरों से बांधो, और
उसको मैदान में हरी घास के बीच छोड़ दो,
ताकि वह आकाश की ओस से सींचा जाए,
और वन-पशु की तरह वह भूमि की घास
खाए। वह सात वर्ष तक इसी दशा में रहे',
24महाराज, उसका यह अर्थ है: सर्वोच्च परमेश्वर
का आदेश है; उसने महाराज के प्रति यह निर्णय
किया है, और यह महाराज पर घटित होगा:
25आप मनुष्य-समाज के बीच से निकाल दिए
जायेंगे, और आपको वन-पशुओं के साथ
रहना पड़ेगा। आप बैल के समान घास चरेंगे,
और आकाश की ओस में भीगा करेंगे। सात वर्ष
तक आपकी यही दशा रहेगी। उसके बाद
आपको अनुभव होगा कि सर्वोच्च परमेश्वर ही
मनुष्यों के राज्य पर शासन करता है, और वह
जिसको चाहता है, उसको यह राज्य दे देता है।

26 "पवित्र प्रहरी ने यह आदेश दिया था कि
तने को जड़ के साथ छोड़ दो। उसका यह अर्थ
है : जिस समय आपको अनुभव हो जाएगा कि
स्वर्ग में विराजमान परमेश्वर ही मानव-जाति
पर राज्य करता है, उस समय ही आपका राज्य
आपको प्राप्त हो जाएगा। 27महाराज, मैं आपसे
निवेदन करता हूं, आप मेरा यह परामर्श
स्वीकार कीजिए: सद् आचरण कर अपने पाप
के बन्धनों को तोड़ दीजिए। आप पीड़ितों के

+ अक्षरशः 'अवधि'।

4 : 25 यिर 27 : 5 **4 : 27** तोब 12 : 9; प्रव 3 : 30

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रति दया कर अधर्म से मुक्त हो जाइए। तब
संभव है कि आपकी शांति के ये दिन लम्बे हो
जाएं।''
28 'स्वप्न का यह अर्थ राजा पर, अर्थात्
मुझ- नबूकदनेस्सर पर घटा। 29बारह महीने के
बाद मैं बेबीलोन के राजमहल की छत पर टहल
रहा था। 30तब मैंने सोचा, ''क्या यह बेबीलोन
नगर महान नहीं है? मैंने इसको अपनी बड़ी
ताकत से बनाया है ताकि यह मेरी राजधानी बने
और इसके माध्यम से मेरे वैभव की चहुं ओर
प्रशंसा हो।'' 31ये शब्द मेरे मुंह में ही थे कि
अचानक स्वर्ग से यह आवाज सुनाई दी: ''ओ
राजा नबूकदनेस्सर, यह बात तुझसे ही कही जा
रही है। तेरा राज्य तेरे हाथ से निकल गया! 32तू
मनुष्य-समाज के बीच से निकाल दिया जाएगा,
और तुझको वन-पशुओं के साथ रहना पड़ेगा।
तू बैल के समान घास चरेगा। सात वर्ष तक तेरी
यही दशा रहेगी। उसके बाद ही तुझको अनुभव
होगा कि सर्वोच्च परमेश्वर ही मनुष्यों के राज्य
पर शासन करता है, और वह जिसको चाहता
है, उसको यह राज्य दे देता है।''
33 'तत्काल ही यह वाणी मुझ पर पूर्ण हुई।
मैं मनुष्य-समाज के बीच से निकाल दिया
गया। मैंने बैल के समान घास खाई। मेरा शरीर
आकाश की ओस की बूंदों से भीगा। मेरे बाल
गरुड़ के पैरों के समान लम्बे-लम्बे बढ़ गए।
मेरे नाखून चिड़ियों के चंगुलों के समान बड़े-
बड़े हो गए।
34 'सात वर्ष बीतने के बाद मैं नबूकदनेस्सर
ने स्वर्ग की ओर दीनता से आंखें उठाईं, और
मेरा विवेक लौट आया। मैंने सर्वोच्च परमेश्वर
को धन्य कहा, जो सदा-सर्वदा जीवित है। मैंने
इन शब्दों में उसकी महिमा और स्तुति की:
''परमेश्वर का राज्य शाश्वत है;
उसका शासन पीढ़ी से पीढ़ी बना रहता है।
35पृथ्वी के समस्त निवासी
उसके सम्मुख नगण्य हैं;
वह स्वर्ग की सेना में,
पृथ्वी के प्राणियों के मध्य,
अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करता है।
कोई उसका हाथ रोक नहीं सकता,
और न प्रश्न पूछने का साहस कर सकता है,
कि 'तूने यह क्या किया?'''
36 'उसी समय मेरा विवेक लौट आया। मेरे
राज्य की कीर्ति के लिए मेरा प्रताप और वैभव
मुझे पुन: प्राप्त हो गए। मेरे मंत्रियों और सामंतों
ने मुझे जंगल में से ढूंढ़ निकाला, और मैं पुन:
अपने राज्य के ऊपर राजा के रूप में प्रतिष्ठित
हो गया। मेरी महानता और बढ़ गई।
37 'अब मैं, नबूकदनेस्सर, स्वर्ग के राजा
की स्तुति और महिमा करता हूं, उसके गुणों का
गान करता हूं; क्योंकि उसके सब कार्य सच्चे,
और प्रत्येक व्यवहार न्यायपूर्ण है।
'जो मनुष्य घमण्ड से सिर ऊंचा करके
चलता है, उसको वह नीचा कर सकता है।'

बेबीलोन के नये राजा के भोज में दीवार पर लिखा गया दिव्य लेख

5 एक दिन राजा बेलशस्सर ने अपने एक
हजार सामंतों को भव्य भोज दिया। उसने
अपने सामंतों के साथ शराब पी। 2शरीब पीने
के पश्चात् उसने अपने कर्मचारियों को आदेश
दिया कि उसके पिता नबूकदनेस्सर द्वारा
यरूशलेम के मन्दिर से लाए गए सोने-चांदी के
पात्र उसके सम्मुख लाए जाएं, ताकि उन पात्रों
में वह, उसके सामंत, उसकी रानियां और
रखेल शराब पीएं।
3 कर्मचारियों ने आदेश का पालन किया।
जो सोने-चांदी के पात्र यरूशलेम में परमेश्वर
के मन्दिर से लूट लिये गए थे, उनको कर्मचारियों
ने राजा बेलशस्सर के सामने पेश किया। तब
राजा ने तथा उसके सामंतों, रानियों और रखेलों
ने उन पात्रों में शराब डालकर पी। 4वे शराब
पीकर स्वर्ण, चांदी, पीतल, लोहे, लकड़ी और
पाषाण की देवताओं की मूर्तियों की स्तुति करने
लगे।
5 उसी क्षण अनेक उंगलियां दिखाई दीं। ये
मनुष्य के हाथ की उंगलियों के समान थीं।
उन्होंने दीपाधार के सामने राजमन्दिर की दीवार

4 : 34 प्रव 18 : 1 **4 : 35** यश 40 : 15 **5 : 4** प्रक 9 : 20

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
पर, जो चूने से पुती हुई थी, कुछ लिखा। जब
हाथ दीवार पर लिख रहा था तब राजा ने हथेली
को देखा। 6राजा के मुख का रंग बदल गया।
उसके हृदय में अनेक विचार उठे, जिन्होंने
उसको व्याकुल कर दिया। उसके हाथ-पैर
कांपने लगे, और घुटने आपस में टकराने लगे।
7उसने उच्च स्वर में आदेश दिया कि तांत्रिक,
कसदी पंडित और शकुन विचारनेवाले उसके
सम्मुख प्रस्तुत किए जाएं।
तांत्रिक, कसदी पंडित और शकुन विचारने
वाले आए। राजा ने बेबीलोन के इन ज्ञानियों से
कहा, 'जो व्यक्ति दीवार के इस लेख को पढ़
लेगा, और उसका अर्थ मुझे बताएगा, मैं उसको
राजसी वस्त्र से विभूषित करूंगा। उसके गले
में सोने की माला डालूंगा, और वह मेरे राज्य
का तीसरा प्रमुख शासक होगा।' 8राजा के ज्ञानी
राजमन्दिर में आए, पर वे दीवार पर लिखे हुए
लेख को न पढ़ सके और न राजा को उसका
अर्थ बता सके। 9अत: राजा बेलशस्सर अत्यन्त
घबरा गया और उसके मुख का रंग बदल गया।
उसके सामन्त भी किंकर्तव्यविमूढ़ हो गए और
समझ न पाए कि क्या करें और क्या न करें।
10 राजा और सामन्तों की आवाज सुनकर
राजमाता भोज-भवन में आयी। उसने अपने
पुत्र से कहा, 'महाराज, लाखों वर्ष जीएं! आप
अपने हृदय के विचारों के कारण व्याकुल न हों
और न ही आपके मुख का रंग बदले। 11आपके
राज्य में एक ऐसा व्यक्ति है जिसमें पवित्र
परमेश्वर का आत्मा निवास करता है। आपके
पिता के राज्यकाल में एक ऐसी घटना घटी थी
जिससे यह पता चला कि उस व्यक्ति में ज्योति
और समझ है, देवताओं की बुद्धि के सदृश
उसमें भी बुद्धि है। अत: आपके पिता राजा
नबूकदनेस्सर ने उसको ज्योतिषियों, तांत्रिकों,
कसदी पंडितों और शकुन विचारनेवालों का
मुखिया बना दिया था; 12क्योंकि उसमें उत्कृष्ट
आत्मज्ञान और समझ थी, और वह सपनों का
अर्थ बता सकता था, पहेलियों को समझा
सकता था और समस्याएं सुलझा सकता था।
यह सब गुण दानिएल में थे, जिसका नाम
आपके पिता ने बेलतशस्सर रखा था। अत:
अब आप दानिएल को बुलाएं। वह आपको
दीवार पर लिखे हुए लेख का अर्थ बताएगा।'
13 कर्मचारियों ने दानिएल को राजा
बेलशस्सर के सम्मुख प्रस्तुत किया। राजा ने
दानिएल से कहा, 'क्या तुम वही निष्कासित
दानिएल हो जो यहूदा प्रदेश से बन्दी बन कर
आए थे, और जिसको मेरे पिता यहूदा प्रदेश से
लाए थे? 14मैंने सुना है कि पवित्र परमेश्वर का
आत्मा तुममें निवास करता है और तुममें
ज्योति, समझ और उत्कृष्ट बुद्धि भी है। 15मेरे
देश के ज्ञानी लोग, ज्योतिषी मेरे सम्मुख
राजमन्दिर में लाए गए कि वे इस लेख को पढ़ें
और मुझको इसका अर्थ बताएं। पर वे अर्थ न
बता सके। 16मैंने सुना है कि तुम न केवल
सपनों के अर्थ बता सकते हो बल्कि समस्याओं
को सुलझा भी सकते हो। यदि तुम दीवार के
इस लेख को पढ़ लोगे और इसका अर्थ मुझे
बताओगे तो मैं तुमको राजसी वस्त्र से विभूषित
करूंगा, तुम्हारे गले में सोने की माला डालूंगा
और तुमको अपने राज्य का तीसरा प्रमुख
शासक बना दूंगा।'
17 तब दानिएल ने राजा के सम्मुख आकर
यह उत्तर दिया, 'महाराज, आप अपने यह
पुरस्कार अपने पास ही रखिए और किसी दूसरे
व्यक्ति को दे दीजिए। फिर भी मैं आपके लिए
इस लेख को पढ़ूंगा और इसका अर्थ बताऊंगा।
18 'महाराज, सर्वोच्च परमेश्वर ने आपके
पिता नबूकदनेस्सर को राज्य, महानता, कीर्ति
और वैभव प्रदान किया था। 19क्योंकि परमेश्वर
ने आपके पिता को महान बनाया था इसलिए
विश्व की सब कौमें, राष्ट्र और भिन्न-भिन्न
भाषाएं बोलनेवाले लोग उनके सम्मुख कांपते
और डरते थे। आपके पिता जिसको चाहते
उसका वध करवा देते और जिसको चाहते,
उसको जीवित छोड़ देते थे। वह अपनी इच्छा
के अनुसार जिस व्यक्ति को चाहते उसकी
पदोन्नति कर देते, और जिसको चाहते उसको
पद से नीचे उतार देते थे। 20पर जब आपके
पिता का हृदय अहंकार से भर गया, जब आपके

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पिता की आत्मा कठोर बन गई और वह घमण्ड
में आकर अनुचित कार्य करने लगे, तब
परमेश्वर ने उनको उनके राजसिंहासन से उतार
दिया और उनसे उनका ऐश्वर्य छीन लिया।
21वह मनुष्य-समाज से बहिष्कृत कर दिए गये
और उनका हृदय पशु के हृदय के सदृश बन
गया। वह जंगली गधों के साथ जंगल में रहते
थे। वह बैल के समान घास खाया करते थे।
उनका शरीर आकाश की ओस से भीगा करता
था। तब उन्हें अनुभव हुआ कि केवल सर्वोच्च
परमेश्वर ही मनुष्यों के राज्य पर शासन करता
है और वह जिसको चाहता है, उसको राजा के
रूप में प्रतिष्ठित करता है।

22 'ओ बेलशस्सर, तुम उनके पुत्र हो,
किन्तु तुमने अपने हृदय को नम्र नहीं बनाया,
यद्यपि तुम अपने पिता के इतिहास से अपरिचित
नहीं थे। 23तुमने स्वर्ग में विराजमान अधिपति
के प्रति अहंकार में सिर उठाया और उसके
मन्दिर के पवित्र पात्र तुम्हारे सम्मुख प्रस्तुत
किए गये, और तुमने, तुम्हारे सामन्तों ने,
तुम्हारी रानियों और रखेलों ने उन पात्रों में
शराब डाल कर पी। तुमने शराब पीकर चांदी-
सोना, पीतल, लोहे, लकड़ी और पाषाण के
देवताओं की मूर्तियों की स्तुति की, जो न तो
देख सकती हैं, न सुन सकती हैं, और न कुछ
समझती ही हैं। ओ बेलशस्सर ! जिस परमेश्वर
के हाथ में तुम्हारे प्राण हैं, जो तुम्हारे जीवन को
अपने नियंत्रण में रखता है, उसका सम्मान
तुमने नहीं किया।

24 'अत: सर्वोच्च परमेश्वर ने अपने दरबार
से एक हाथ प्रेषित किया और यह लेख
लिखवाया। 25जो लेख लिखा गया उसका
विवरण यह है : ''मने, मने, तकेल'' और
''पर्सीन''। 26इस वाक्य का यह अर्थ है :
''मने'' अर्थात् गिना हुआ; परमेश्वर ने तुम्हारे
राज्य-काल के दिनों की गणना कर उसका
अन्त कर दिया है। 27''तकेल'' अर्थात् तौला
हुआ; तुम कसौटी रूपी तराजू पर तौले गए,
और हल्के सिद्ध हुए। 28''परेस''+अर्थात् बांटा
हुआ; तुम्हारा राज्य मादी और फारसी कौमों के
मध्य बांटकर उनको दे दिया गया।'

29 यह सुनते ही बेलशस्सर ने आदेश दिया
कि दानिएल को राजसी वस्त्र पहिनाया जाए,
उनके गले में सोने की माला डाली जाए। राजा
के आदेश का पालन किया गया। बेबीलोन में
घोषणा की गई कि दानिएल राज्य के तीसरे
प्रमुख शासक हैं।

30 किसी ने उसी रात को कसदी कौम के
राजा बेलशस्सर की हत्या कर दी, 31*और उसका
राज्य मादी कौम के दारा को प्राप्त हो गया। उस
समय दारा की उम्र लगभग बासठ वर्ष की थी।

नबी दानिएल सिंहों की मांद में

6 सम्राट दारा ने अपने सम्पूर्ण साम्राज्य में
शासन करने के लिए एक सौ बीस क्षत्रप
नियुक्त किए। उसको अपना यह कार्य उचित
लगा। 2उसने इन एक सौ बीस क्षत्रपों के ऊपर
तीन अध्यक्ष नियुक्त किए, जिनमें से एक
अध्यक्ष दानिएल थे। क्षत्रप उन अध्यक्षों को
लेखा-जोखा देते थे। इस प्रकार सम्राट को
शासन कार्य में किसी प्रकार की आर्थिक हानि
नहीं होती थी।

3 दानिएल में एक उत्कृष्ट आत्मा थी,
इसलिए वह अध्यक्षों और क्षत्रपों में प्रतिष्ठित
हो गए। सम्राट दारा ने एक योजना बनाई कि
वह समस्त राज्य के ऊपर दानिएल को
प्रशासक नियुक्त करे। अत: अध्यक्ष और क्षत्रप
दानिएल के प्रति ईर्ष्यालु बन गए। 4उन्होंने
प्रशासन के सम्बन्ध में दानिएल के विरुद्ध
शिकायत करने का आधार ढूंढ़ा, किन्तु उन्हें
शिकायत का न तो कोई आधार मिला और न
दानिएल का कोई भ्रष्ट कार्य। दानिएल एक
ईमानदार प्रशासक थे। अत: अध्यक्षों और
क्षत्रपों को उनके कार्यों के सम्बन्ध में कोई
भूल-चूक नहीं मिली। 5इसलिए उन्होंने परस्पर
यह कहा, 'दानिएल के प्रशासन-कार्य के सम्बन्ध
में शिकायत का कोई आधार हमें नहीं मिलेगा;
पर हम उसके परमेश्वर की व्यवस्था के
सम्बन्ध में कोई न कोई त्रुटि ढूंढ़ सकते हैं।'

+ 'पर्सीन' का एकवचन रूप। * मूल में 6 : 1

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

6 अत: ये अध्यक्ष और क्षत्रप एक मत होकर सम्राट दारा के पास आए और उन्होंने उससे यह कहा, 'महाराज दारा, आप लाखों वर्ष जीएं!
7आपके राज्य के अध्यक्षों, हाकिमों, क्षत्रपों, मन्त्रियों और राज्यपालों ने एक मत से यह निर्णय लिया है कि महाराज को यह परामर्श दें कि आप यह आदेश और निषेधाज्ञा प्रसारित करें कि जो व्यक्ति तीस दिन की अवधि के दौरान आपके अतिरिक्त किसी देवता अथवा मनुष्य से विनती करेगा तो वह सिंहों की मांद
में डाला जाएगा। 8अब, महाराज, इस निषेधाज्ञा को पक्का कर दीजिए और इस पत्र पर हस्ताक्षर कर दीजिए जिससे, मादी और फारसी संविधान के अनुसार उसमें न परिवर्तन हो सकता है और
न उसको रद्द ही किया जा सकता है।' 9अत:
सम्राट दारा ने उस पत्र पर हस्ताक्षर कर निषेधाज्ञा जारी कर दी।

10 जब दानिएल को यह मालूम हुआ कि निषेधाज्ञा के पत्र पर सम्राट दारा का हस्ताक्षर हो गया, तब वह अपने घर गए। उनके घर की ऊपरी मंजिल के कमरे की खिड़कियां यरूशलेम नगर की दिशा में खुलती थीं। वह दिन में तीन बार घुटने टेककर परमेश्वर से प्रार्थना करते और उसको धन्यवाद दिया करते थे। आज भी उन्होंने वैसा ही किया।

11 उसी समय अध्यक्ष और क्षत्रप आए जो एक मत हो गए थे। उन्होंने दानिएल को अपने परमेश्वर से निवेदन करते और विनती करते
हुए पाया। 12अत: वे सम्राट दारा के पास आए,
और उन्होंने निषेधाज्ञा के सम्बन्ध में उसके सामने कहा, 'महाराज, क्या आपने निषेधाज्ञा-पत्र पर हस्ताक्षर नहीं किया था कि जो व्यक्ति तीस दिन की अवधि के दौरान आपके अतिरिक्त किसी देवता अथवा मनुष्य से विनती करेगा, तो वह सिंहों की मांद में डाला जाएगा?' सम्राट ने उत्तर दिया, 'मादी और फारसी संविधान के अनुसार यह निषेधाज्ञा पक्की है, और उसमें न परिवर्तन हो सकता है, और न उसको रद्द
किया जा सकता है।' 13अध्यक्षों और क्षत्रपों
ने सम्राट दारा के सम्मुख कहा, 'महाराज, वह दानिएल, जो यहूदा प्रदेश के निष्कासितों में से एक हैं, आपकी उपेक्षा करते हैं। जिस निषेधाज्ञा-पत्र पर आपने हस्ताक्षर किया है, वह उस पर ध्यान नहीं देते। महाराज, वह अपने परमेश्वर से दिन में तीन बार विनती करते हैं।'

14 ये बातें सुनकर सम्राट दारा को बड़ा दु:ख हुआ। वह दानिएल को बचाने के लिए उपाय सोचने लगा। वह सबेरे से शाम तक दानिएल की रक्षा के लिए मन ही मन प्रयत्न करता रहा।

15 तब अध्यक्ष और क्षत्रप जो एक मत हो गए थे सम्राट दारा के पास फिर आए। उन्होंने सम्राट से कहा, 'महाराज, स्मरण रखिए: मादी और फारसी संविधान का यह कानून है: राजा द्वारा ठहराए गए अध्यादेश अथवा निषेधाज्ञा में न परिवर्तन हो सकता है और न उसको रद्द किया जा सकता है।'

16 अत: सम्राट दारा ने दानिएल को बन्दी बनाने का आदेश दे दिया। दानिएल को पकड़कर लाया गया, और उनको सिंहों की मांद में डाल दिया गया। सम्राट ने दानिएल से कहा, 'ओ दानिएल, जिस परमेश्वर की तुम निरन्तर सेवा करते हो, वह तुम्हारी रक्षा करे!'

17 तब सम्राट के कर्मचारी एक बड़ा पत्थर लाए। उन्होंने उसको मांद के मुंह पर रख दिया। इसके बाद सम्राट दारा ने अपनी अंगूठी तथा सामंतों की अंगूठियों से मांद के मुंह पर मोहर लगा दी कि दानिएल की दशा को बदला न जा
सके। 18तत्पश्चात् सम्राट दारा अपने महल में चला गया। उसने उस रात भोजन नहीं किया। उसने अपने मनोरंजन करनेवालों को मना कर दिया; अत: उस रात में उसके पास कोई नहीं आया। उसकी आंखों से नींद उड़ गई।

19 सबेरे, सूरज निकलते ही सम्राट दारा पलंग से उठा और अविलम्ब सिंहों की मांद की
ओर गया। 20वह मांद के पास पहुँचा, जहां दानिएल बन्द थे। उसने दु:ख भरी आवाज में दानिएल को पुकारा, 'ओ दानिएल, जीवित

6 : 8 एस्तर 1 : 19 6 : 16 बेल 31-42

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

परमेश्वर के सेवक! क्या तुम्हारे परमेश्वर ने
जिसकी तुम निरन्तर सेवा करते हो, तुम्हें सिंहों
के मुंह से बचा लिया?'
21 दानिएल ने सम्राट से कहा, 'महाराज,
आप लाखों वर्ष जीएं! 22मेरे परमेश्वर ने अपना
एक दूत भेजा, जिसने सिंहों का मुंह बन्द कर
दिया; क्योंकि मैं परमेश्वर की दृष्टि में निर्दोष
था, इसलिए सिंहों ने मेरा अनिष्ट नहीं किया।
महाराज, इसी प्रकार मैं आपके सम्मुख भी
निरापराध हूँ; क्योंकि मैंने कोई गलती नहीं की
है।'
23 यह सुनकर सम्राट दारा बहुत प्रसन्न
हुआ। उसने दानिएल को मांद से बाहर
निकालने का आदेश दिया।
सम्राट के कर्मचारियों ने दानिएल को मांद
से बाहर निकाला। दानिएल के शरीर पर खरोंच
भी नहीं लगी थी; क्योंकि वह अपने परमेश्वर
पर भरोसा करते थे।
24 तब सम्राट दारा के आदेश से वे लोग
लाए गए जिन्होंने दानिएल पर दोष लगाया था।
वे अपनी पत्नियों और बाल-बच्चों के साथ
सिंहों की मांद में फेंक दिए गए। वे मांद के तल
पर अभी पहुँचे भी न थे कि सिंहों ने ऊपर उछल
कर उनको अपने-अपने मुंह में पकड़ लिया,
और उनकी हड्डियों सहित उनको चबा
डाला।
25 सम्राट दारा ने अपने साम्राज्य के अन्तर्गत
पृथ्वी की सब कौमों, राष्ट्रों और भाषाओं के
लोगों को यह परिपत्र लिखा:
'तुम्हारी सुख-समृद्धि दिन दूनी रात चौगुनी
बढ़े!
26मैं यह राजाज्ञा प्रसारित कर रहा हूं कि मेरे
साम्राज्य के समस्त स्त्री-पुरुष दानिएल के
परमेश्वर के सम्मुख कांपते और डरते रहेंगे,
क्योंकि
केवल वही जीवित परमेश्वर है;
वह युगानुयुग विद्यमान है।
उसका राज्य कभी नष्ट न होगा,
उसके शासन का कभी अन्त न होगा।
27वह संकट से मुक्त करता,
और प्राणों की रक्षा करता है;
वह आकाश में अद्भुत चिह्न दिखाता,
और पृथ्वी पर आश्चर्यकर्म करता है।
उसी ने सिंहों के मुंह से दानिएल को
बचाया।'
28 इस प्रकार दानिएल सम्राट दारा और
फारसी सम्राट कुस्रू के राज्यकाल में सुख-चैन
से जीवन व्यतीत करते रहे।

नबी दानिएल के दर्शन—पहला दर्शन: चार विशाल पशु और उनका अर्थ

7 बेबीलोन देश के राजा बेलशस्सर के
राज्यकाल के प्रथम वर्ष में दानिएल ने एक
स्वप्न तथा अनेक दर्शन देखे जब वह पलंग पर
सो रहे थे। उन्होंने स्वप्न को लिख लिया तथा
स्वप्न का सारांश बताया। 2दानिएल ने कहा,
'मैंने रात में यह दर्शन देखा। मैंने देखा कि
आकाश की चारों दिशाओं से हवाएं महासागर
को मथ रही हैं। 3तब महासागर में से चार बड़े-
बड़े पशु निकले। ये चारों पशु एक-दूसरे से
भिन्न थे। 4पहला पशु सिंह के सदृश था, पर
उस में गरुड़ के पंख उगे हुए थे। जब मैं उसको
देख रहा था तब उसके पंख उखाड़ दिए गए।
उसको भूमि पर से उठाया गया और मनुष्य के
समान उसको दो पैरों पर खड़ा किया गया।
उसको मनुष्य का हृदय दिया गया।
5 'दूसरा पशु रीछ के समान था। वह एक
ओर तनकर खड़ा था। उसके दांतों के मध्य तीन
पसलियां थीं। किसी ने उससे कहा, ''उठ और
बहुत मांस खा।''
6 'तत्पश्चात् मैंने एक और पशु को देखा।
वह चीते के समान था। पर उसकी पीठ पर
पक्षियों के सदृश चार पंख थे। उसके चार सिर
थे। उसे शासन करने का अधिकार दिया गया।
7 'इसके बाद मैंने रात के दर्शनों में चौथा
पशु देखा। वह देखने में भयानक, डरावना और
अत्यन्त विशाल था। उसके मुंह में लोहे के
बड़े-बड़े दांत थे। वह सब कुछ खाता और
टुकड़े-टुकड़े कर देता था। जो उसके मुंह से

6 : 22 2 तिम 4 : 17; तोब 4 : 17; 12 : 14-15 7 : 3 प्रक 13 : 1 7 : 7 प्रक 12 : 3

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बच जाता, उसको वह अपने पंजों से रौंद
डालता था। वह पहलेवाले तीनों पशुओं से
भिन्न था। उसके दस सींग थे। 8मैंने उसके सींगों
को ध्यान से देखा। उसी समय उन सींगों के
मध्य से एक और सींग निकला, जिसके कारण
तीन सींग जड़ से उखड़ गए। यह सींग छोटा
था, और इसमें मनुष्य की आंखों के समान
आंखें थीं। इसमें मुंह भी था, जो बड़े बोल
बोल रहा था।

9 'मैंने दर्शन में देखा कि सिंहासन रखे गए,
और एक प्राचीन युग-पुरुष* विराजमान हुआ।
उसका परिधान बर्फ के सदृश सफेद था;
और सिर के केश शुद्ध ऊन के समान
उज्ज्वल थे।
उसका सिंहासन अग्निमय था;
और सिंहासन के पहिये धधकती हुई ज्वालाएं।
10उसके सामने से अग्नि-ज्वाला निकल रही थी,
उसके सम्मुख लपटें निकल रही थीं।
हजारों-हजार सेवक उसकी परिचर्या कर
रहे थे;
और लाखों-लाख लोग उसके सम्मुख
हाथ-जोड़े खड़े थे।
न्याय करने के लिए दरबार लगा था;
और संविधान के ग्रंथ खुले थे।

11 'जब वह सींग बड़े बोल बोल रहा था,
तब उसकी आवाज से मेरा ध्यान पशु की ओर
गया। मैंने देखा कि पशु का वध कर दिया गया
है। उसका शरीर नष्ट कर दिया गया, और
उसका शव आग में जलाने के लिए दे दिया गया
है। 12अन्य तीनों पशुओं से राज्य-सत्ता छीन ली
गई, पर उनका जीवन एक काल और एक ऋतु
तक निश्चित कर दिया गया।

13 'मैंने रात के दर्शन में यह देखा:
आकाश के मेघों के साथ
मानव-पुत्र के सदृश कोई आ रहा है।
वह प्राचीन युग-पुरुष के पास आया,
और उसके सम्मुख प्रस्तुत हुआ।
14तब प्राचीन युग-पुरुष ने उसको
शासन का अधिकार, महिमा और राज्य
प्रदान किया
ताकि पृथ्वी की समस्त कौमें, राष्ट्र और
भिन्न-भिन्न भाषाएं बोलने वाले लोग
उसकी सेवा करें।
उसका शासन शाश्वत शासन है;
जो कभी समाप्त न होगा;
उसका राज्य युगानुयुग अटल है,
जिसका कभी नाश न होगा।

15 'मुझ-दानिएल का अन्तःकरण चिंतित
हो गया। मन में देखे गए इन दर्शनों ने मुझे
व्याकुल कर दिया। 16अतः मैं सेवा करने वालों
में से किसी एक के समीप गया और उससे इन
दर्शनों की वास्तविकता के विषय में पूछा।
उसने मुझे बताया और मुझ पर इन दर्शनों का
अर्थ प्रकट किया। 17उसने कहा, "ये चार बड़े
पशु चार महान राजा हैं, जो पृथ्वी पर उदय
होंगे। 18किन्तु सर्वोच्च परमेश्वर के भक्त + ही
राज्य को प्राप्त करेंगे। वे सदा-सर्वदा उस राज्य
पर अधिकार करेंगे, युगानुयुग तक।"

19 'तब मेरी इच्छा हुई कि मैं चौथे पशु के
सम्बन्ध में उससे वास्तविक बात पूछूं। यह पशु
अन्य तीनों पशुओं से भिन्न था। वह देखने में
बड़ा भयानक था। उसके दांत लोहे के और नख
पीतल के थे। वह सब कुछ खाता और टुकड़े-
टुकड़े कर देता था। जो उसके मुंह से बच जाता
था, उसको वह अपने पंजों से रौंद डालता था।
20मैंने उसके दस सींगों के विषय में भी पूछा,
जो उसके सिर पर थे। मैंने उससे उस छोटे
सींग के बारे में भी पूछा जो दस सींगों के मध्य
निकला था, और जिसके कारण तीन सींग गिर
गए थे, जिसकी आंखें थीं, और जिसमें बड़े
बोल बोलनेवाला मुंह था, और अन्य साथी-
सींगों में बहुत बड़ा प्रतीत हो रहा था।

21 'जब मैंने इस सींग पर दृष्टि की, तब मुझे
दिखाई दिया कि इस सींग ने परमेश्वर के भक्तों

---

* अथवा, 'वयोवृद्ध'। + अथवा, 'सन्त'

7 : 9 प्रक 20 : 4; 1 : 14 **7 : 10** प्रक 5 : 11; 20 : 12; यो 5 : 22 **7 : 13** मत 24 : 30; 26 : 64; प्रक 1 : 7 **7 : 14** प्रक 11 : 15 **7 : 18** प्रक 22 : 5 **7 : 21** प्रक 13 : 7

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

से युद्ध छेड़ दिया और यह उन पर प्रबल हो
गया। 22प्राचीन युग-पुरुष का आगमन हुआ
और उसने सर्वोच्च परमेश्वर के भक्तों के पक्ष
में न्याय-निर्णय किया। निर्धारित समय आया,
और भक्तों को राज्य प्राप्त हुआ।
23'पूछने पर उस व्यक्ति ने मुझसे यह कहा :
"चौथे पशु का अर्थ है चौथा राज्य
जो पृथ्वी पर उदय होगा,
जो अन्य राज्यों से भिन्न होगा।
वह समस्त पृथ्वी को खा जाएगा।
वह उसको अपने पंजों से रौंदेगा,
वह उसके खण्ड-खण्ड करेगा।
24उसके दस सींगों का यह अर्थ है :
इस राज्य में से दस राजा उदय होंगे,
और उनके पश्चात् एक और राजा जन्म
लेगा।
यह अपने पहले के राजाओं से भिन्न होगा,
और अपने उदय से तीन राजाओं को खत्म
कर देगा।
25यह राजा सर्वोच्च परमेश्वर की निन्दा करेगा,
और उसके भक्तों को पीस डालेगा।
यह निर्धारित पर्व-कालों और विधि-विधानों
को बदलने का प्रयत्न करेगा;
सर्वोच्च परमेश्वर के भक्त
साढ़े तीन वर्ष* तक इसके हाथ में
सौंप दिए जाएंगे।
26तब सर्वोच्च परमेश्वर का दरबार
न्याय के लिए बैठेगा;
और उस राजा के हाथ से
उसकी राज्य-सत्ता छीन ली जाएगी,
उसका शासन पूर्णतः नष्ट हो जाएगा,
उसका पूर्ण अन्त हो जाएगा।
27राज्य और शासन,
समस्त आकाश के नीचे पृथ्वी के सब राज्यों
की महानता,
सर्वोच्च परमेश्वर के भक्तों के जन-समूह
को दी जाएगी।
उनका राज्य शाश्वत राज्य होगा;
पृथ्वी के सब शासक उनकी सेवा करेंगे
वे उनकी आज्ञा का पालन करेंगे।"
28 'दर्शन के वास्तविक अर्थ की चर्चा यहाँ
समाप्त हुई। पर जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, मेरे
विचारों ने मुझे व्याकुल कर दिया। मेरे चेहरे
का रंग बदल गया। किन्तु यह बात मैंने अपने
मन में ही रखी, और किसी को नहीं बताई।'

दूसरा दर्शन : मेढ़ा और बकरा तथा उनका अर्थ

8 'उपरोक्त दर्शन के बाद मुझ-दानिएल को
राजा बेलशस्सर के राज्यकाल के तीसरे
वर्ष में एक और दर्शन दिखाई दिया। 2मैंने दर्शन
में यह देखा :
'मैं एलाम प्रदेश की राजधानी शूशनगढ़ में
हूं। यह मैंने दर्शन में देखा। इसके बाद मैंने देखा
कि मैं ऊलै नदी के किनारे खड़ा हूं। 3मैंने दृष्टि
ऊपर की, तो देखा कि नदी के तट पर एक मेढ़ा
खड़ा है। उसके दो सींग हैं। ये दोनों सींग बड़े-
बड़े थे, पर एक सींग-दूसरे सींग से बड़ा था।
जो सींग बड़ा था, वह छोटे सींग के बाद में
निकला था। अस्तु।
4 'मैंने देखा कि मेढ़े ने पश्चिम, उत्तर और
दक्षिण दिशाओं में आक्रमण कर दिया है, और
उसके सामने कोई पशु टिक नहीं पा रहा है।
उसके हाथ से बचानेवाला कोई न था। उसने
मनमाना व्यवहार किया, और स्वयं को खूब
उन्नत किया।
5-6 'जब मैं उस पर विचार कर रहा था तो
मैंने देखा कि एक बकरा पश्चिम दिशा से
आया। उसने भूमि को स्पर्श किये बिना ही
समस्त पृथ्वी की परिक्रमा की, और उसके
पश्चात् वह मेढ़े के समीप आया। उस बकरे की
दोनों आंखों के मध्य एक विचित्र सींग था।
'जिस दो सींगवाले मेढ़े को मैंने नदी तट पर
खड़े देखा था, उसकी ओर यह बकरा क्रोध में
भरकर दौड़ा। 7मैंने देखा कि वह मेढ़े के
एकदम पास पहुंच गया है, और उसके प्रति वह
क्रोध में उबल रहा है। वह उस पर टूट पड़ा,
और उसने उसके दोनों सींग तोड़ डाले। मेढ़े

* अक्षरशः, 'एक काल, दो काल और अर्धकाल'।

7 : 22 प्रक 20 : 4 **7 : 24** प्रक 17 : 12 **7 : 25** प्रक 12 : 14 **7 : 27** प्रक 20 : 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

में इतना बल नहीं रहा कि वह बकरे का सामना
कर सके। बकरे ने मेढ़े को भूमि पर पटक दिया
और उसको अपने खुरों से रौंद डाला। बकरे के
हाथ से उस मेढ़े को बचानेवाला कोई न था।
8 'अब बकरा अत्यधिक शक्तिसम्पन्न हो
गया। पर जब वह अपनी शक्ति के शिखर पर
था तब उसका बड़ा सींग टूट गया, और उसके
स्थान पर चार विचित्र सींग उग आए, और वे
आकाश की चारों दिशाओं की ओर बढ़ने लगे।
9 'इन चार सींगों में से एक सींग से एक और
छोटा सींग निकला। वह दक्षिण, पूर्व और हमारे
''वैभव सम्पन्न देश'' की ओर बढ़ता गया, और
अत्यन्त शक्तिशाली बन गया। 10वह बढ़ता-
बढ़ता स्वर्ग की सेना तक पहुंच गया, और
उसने तारागणों में से कुछ तारों को पृथ्वी पर
फेंक दिया, और उनको रौंद डाला। 11उसने स्वर्ग
की सेना के अध्यक्ष से भी अधिक स्वयं को
सर्वोच्च घोषित कर दिया; और जो नित्य
अग्निबलि स्वर्ग की सेना के अध्यक्ष को चढ़ाई
जाती थी, उसको बन्द करा दिया। उसने उसका
पवित्र निवास-स्थल तोड़-फोड़ डाला 12और
अपनी सेना को सौंप दिया+। पवित्र स्थान में
नित्य अग्निबलि के बदले अधर्ममय उपासना
की जाने लगी। सींग ने सत्य को धूल में मिला
दिया और वह अपने अन्यायपूर्ण कार्य में सफल
हो गया।
13 'तब मैंने एक भक्त को बोलते हुए सुना।
एक और भक्त इस बोलनेवाले भक्त से पूछ
रहा था, ''नित्य अग्निबलि और विध्वंसकारी
अधर्म के विषय में जो दर्शन दिखाया गया है
वह कब पूरा होगा? पवित्र स्थान के तोड़-फोड़
तथा स्वर्ग की सेना के तारागणों का रौंदा जाना
कब तक होता रहेगा?'' 14पहले भक्त ने उसको
यह बताया, ''जब तक तेईस सौ संध्या और
सबेरा* न बीत जाएंगे, तब तक यह अधर्म होता
रहेगा। इस अवधि के पश्चात् पवित्र स्थान शुद्ध
किया जाएगा।''

15 'जब मैं, दानिएल, यह दर्शन देख चुका
तब मैंने इसके अर्थ को समझने का प्रयत्न
किया। मैंने देखा कि सहसा मेरे सम्मुख कोई
आकर खड़ा हो गया; वह मनुष्य जैसा दिखाई
दे रहा था। 16मैंने किसी मनुष्य की वाणी सुनी।
वह ऊलै नदी के दोनों तटों के मध्य में से
निकली थी। उस वाणी ने उच्च स्वर में कहा,
''ओ गब्रिएल** इस मनुष्य को दर्शन का अर्थ
समझा दे।'' 17अत: गब्रिएल मेरे समीप आया,
जहाँ मैं खड़ा था। जब वह मेरे समीप आया तब
मैं डर गया और भूमि पर मुंह के बल गिर पड़ा।
उसने मुझसे कहा, ''ओ मानव, जो दर्शन तूने
देखा है उसका अर्थ समझ। यह दर्शन युगान्त
के विषय में है।''
18 'वह मुझसे बोल ही रहा था कि मैं
अचेतन हो गया और भूमि पर औंधे-मुंह गिर
पड़ा। पर उसने मुझे स्पर्श किया, और मुझको
पैरों पर खड़ा कर दिया। 19उसने कहा, ''सुन,
इस कोप-युग के अन्तिम दिनों में जो घटनाएँ
घटेंगी, उनको मैं तुझ पर प्रकट कर रहा हूं। ये
ठहराए हुए युगान्त के सम्बन्ध में हैं।
20 ''जो मेढ़े के दो सींग तूने देखे, वे मादी
और फारसी साम्राज्यों के दो राजा हैं; 21और
यूनान देश का राजा बकरा है। इस बकरे की
दोनों आंखों के मध्य स्थित सींग का अर्थ है :
यूनान का पहला राजा। 22जो चार सींग इस
सींग के टूटने के पश्चात् इसके स्थान पर
निकले, उसका यह अर्थ है: यूनानी राष्ट्र में से
चार राज्यों का उद्गम होगा, पर वे उसके समान
शक्तिशाली नहीं होंगे। 23इन चारों राज्यों के
अन्तिम दिनों में, जब उनके पाप का घड़ा भर
जाएगा, एक राजा उदित होगा। उसका चेहरा
कठोर और स्वभाव कुटिल होगा। वह दोमुंही
बातें करेगा। 24वह शक्तिशाली होगा, और हर
जगह विनाश का भयानक ढेर लगा देगा। जो
भी कार्य वह हाथ में लेगा, उसमें वह सफल
होगा। वह शक्तिशाली नेताओं और भक्तों के

+ मूल अस्पष्ट। * अथवा 'ग्यारह सौ पचास दिन' अथवा 'साढ़े तीन वर्ष'; नित्य अग्निबलि प्रतिदिन संध्या और सबेरे चढ़ायी जाती थी। ** अथवा, 'जिब्राएल'।

8 : 10 प्रक 12 : 4 8 : 13 लू 21 : 24 8 : 16 लू 1 : 19-26 8 : 17 प्रक 1 : 17

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जनसमुदायों को नष्ट करेगा। 25वह अपनी धूर्तता
में अपने हरएक कपटपूर्ण कार्य में सफल
होगा। अपनी सफलता से वह मन ही मन फूल
कर कुप्पा हो जाएगा। वह बिना चेतावनी दिए
ही अनेक लोगों का वध कर देगा। यहाँ तक कि
वह ''शासकों के शासक'' का भी विरोध
करेगा। किन्तु वह अन्त में बिना किसी व्यक्ति
के हाथ लगाए ही टूट जाएगा।

26 ''जो तूने संध्या और सबेरे का दर्शन
देखा है, जो तुझे बताया गया है, वह सच है।
किन्तु तू उसे मुंहरबन्द कर सुरक्षित रखना,
किसी को मत बताना; क्योंकि वह आज से
अनेक दिन बाद घटित होगा।''

27 'मैं, दानिएल, यह दर्शन पाकर इतना
कमजोर हो गया कि कुछ दिनों तक बीमार पड़ा
रहा।

जब मैं स्वस्थ हुआ तब शैया से उठा और
राजकाज में व्यस्त हो गया। किन्तु मैं दर्शन के
कारण स्तब्ध था; क्योंकि मैं उसको समझ नहीं
पाया था।'

अपनी कौम के लिए नबी दानिएल की प्रार्थना

9 'मादी कौम के सम्राट क्षयर्ष का पुत्र दारा
कसदी कौम के देश पर राज्य करने
लगा था। 2उसके राज्य-काल के प्रथम वर्ष में
मैं-दानिएल ने धर्मग्रन्थों में उल्लिखित उन
वर्षों की संख्या की गणना कर ली, जिनके
दौरान यरूशलेम नगर उजाड़ पड़ा रहेगा, जैसा
प्रभु ने नबी यिर्मयाह के माध्यम से बताया था।
यह संख्या थी सत्तर वर्ष।

3 'तब मैं अपने स्वामी परमेश्वर की ओर
उन्मुख हुआ। मैंने पश्चात्ताप प्रकट करने के
लिए टाट के वस्त्र पहिने, और अपने सिर पर
राख डाली। मैंने उपवास रखा। मैं परमेश्वर की
कृपा-दृष्टि पाने के लिए प्रार्थना और विनती
करने लगा। 4मैंने प्रभु परमेश्वर से अपना पाप
स्वीकार किया, और तब उससे इन शब्दों में
प्रार्थना की :

''हे स्वामी, तू महान और भययोग्य परमेश्वर
है। जो लोग तुझसे प्रेम करते हैं, और तेरी
आज्ञाओं का पालन करते हैं, उन पर तू करुणा
करता है, और उनके साथ अपने विधान* को
पूरा करता है। 5हमने पाप किया। हमने दुष्कर्म
किए, और तेरे प्रति दुष्ट व्यवहार किया। तेरी
आज्ञाओं और आदेशों की अवहेलना कर तुझसे
विद्रोह किया। 6हमने तेरे सेवक नबियों के
सन्देश को नहीं सुना। उन्होंने हमारे राजाओं,
शासकों, और हमारे पूर्वजों को तथा देश की
समस्त जनता को तेरे नाम से सन्देश सुनाया था।
7हे स्वामी, केवल तू ही धार्मिक है, और हमारा
सिर** शर्म से झुका हुआ है। आज भी हम,
यहूदा प्रदेश के निवासी, यरूशलेम नगर के
रहने वाले, वस्तुत: समस्त इस्राएली कौम के
लोग जो दूर और नजदीक के देशों में प्रवास कर
रहे हैं, जहाँ तूने उनको अपने प्रति विश्वासघाती
आचरण के कारण रहने को विवश किया है,
शर्म के कारण अति लज्जित हैं। 8हमारे भाग्य
में केवल शर्म है। हे प्रभु! हम-सब— हमारे
राजा, हमारे शासक और हमारे पिता—अपने
पाप के कारण लज्जित हैं; क्योंकि हमने तेरे
प्रति पाप किया है। 9हे स्वामी हमारे परमेश्वर,
केवल तू ही दयालु और क्षमाशील है। हमने तेरे
प्रति विद्रोह किया था, 10और तेरे धर्म के नियम-
कानूनों के अनुसार आचरण नहीं किया था, जो
तूने अपने सेवक नबियों के माध्यम से हमारे
सम्मुख रखे थे। प्रभु, इस प्रकार हमने अपने
स्वामी परमेश्वर की वाणी नहीं सुनी। 11समस्त
इस्राएली कौम ने तेरी वाणी को सुनने से इन्कार
किया। उन्होंने तेरी व्यवस्था का उल्लंघन
किया और तेरी ओर से मुंह फेर लिया। अत:
जो शाप और शपथ तेरे सेवक मूसा की
व्यवस्था में लिखे हुए हैं, वे हम पर बरसने लगे;
क्योंकि हमने तेरे प्रति पाप किया था। 12हे
परमेश्वर, जो वचन तूने हमारे प्रति और हम पर
शासन करने वाले प्रशासकों के प्रति कहे थे,

---

*अथवा, 'वाचा' ** मूल में 'मुख'

9 : 2 यिर 25 : 11-12 9 : 5 1 रा 8 : 47; नह 9 : 33-34 9 : 7 बारू 1 : 15-17 9 : 11 व्य 27 : 15-26; बारू 1 : 19-23

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उनको तूने पूरा किया। तूने हम पर महा विपत्ति
ढाही। वस्तुत: जैसी विपत्ति यरूशलेम पर ढाही
गई वैसी समस्त आकाश के नीचे धरती पर और
कहीं नहीं पड़ी। 13मूसा की व्यवस्था में लिखित
समस्त विपत्तियाँ हम पर पड़ीं, तो भी हमने
अपने प्रभु परमेश्वर की कृपा-दृष्टि प्राप्त करने
का प्रयत्न नहीं किया और न हम अपने
अधर्ममय आचरण को छोड़कर तेरे सत्य वचन
सुनने को तत्पर हुए। 14अत, हे प्रभु, तूने हमारे
लिए विपत्ति तैयार रखी और हम पर उण्डेल
दी; क्योंकि हमारा प्रभु परमेश्वर अपने हरएक
आचरण में धर्ममय है, उसका प्रत्येक कार्य
न्यायपूर्ण होता है। हमने उसकी वाणी को नहीं
सुना था, इसलिए हम पर यह विपत्ति आई।

15 "हे स्वामी हमारे परमेश्वर, तूने अपने
भुजबल से अपने निज लोगों को मिस्र देश की
गुलामी से मुक्त किया था और इस प्रकार अपने
नाम को महान बनाया था, जैसा वह आज भी
है। प्रभु, हमने पाप किया है। हमने दुष्ट आचरण
किया है। 16स्वामी, अपने धर्ममय आचरण के
अनुरूप अपना क्रोध और प्रकोप यरूशलेम से
हटा ले। प्रभु, यरूशलेम नगर तेरा ही पवित्र
पहाड़ी नगर है। हमारे पूर्वजों के पापमय और
हमारे ही अधर्ममय आचरण के कारण यरूशलेम
नगर और तेरे निज लोग आसपास के राष्ट्रों में
बदनाम हो गए हैं। 17अत: हे हमारे परमेश्वर,
अपने इस सेवक की प्रार्थना और विनती को
सुन। हे स्वामी, उजाड़ पड़े हुए पवित्र स्थान पर
अपनी ही महिमा के लिए अपने मुख का
प्रकाश चमका। 18हे मेरे परमेश्वर, मेरी प्रार्थना
की ओर अपना कान लगा और उसको सुन।
अपनी आंखों को खोल और हमारे विनाश पर
दृष्टि कर। जो नगर तेरे नाम से पुकारा जाता है,
उसको देख। प्रभु, अपनी धार्मिकता के कारण
नहीं बल्कि तेरी महान दया पर भरोसा रखकर
हम यह प्रार्थना, यह विनती तेरे सम्मुख प्रस्तुत
कर रहे हैं। 19हे स्वामी, हमारी प्रार्थना को सुन।
हे स्वामी, हमारे अपराध को क्षमा कर। हे
स्वामी, हम पर ध्यान दे और हमें मुक्त कर। हे
मेरे परमेश्वर, अपनी ही महिमा के लिए
विलम्ब मत कर, क्योंकि तेरा नगर और तेरे
निज लोग तेरे ही नाम से पुकारे जाते हैं।"

सत्तर सप्ताहों के विषय में नबूवत

20 'इस प्रकार मैं बोल रहा था। मैं प्रार्थना
कर रहा था। मैं अपने और अपनी इस्राएली
कौम के पाप को स्वीकार कर रहा था। जब मैं
अपने प्रभु परमेश्वर के सम्मुख उसके पवित्र
पहाड़ी नगर के लिए याचना प्रस्तुत कर रहा था;
21वस्तुत: जब मैं प्रार्थना के शब्दों को बोल ही
रहा था, तब वही गब्रिएल स्वर्गदूत द्रुतगति से
मेरे पास आया, जिसको मैंने प्रथम दर्शन में
देखा था। संध्या-बलि का समय था। 22उसने
मुझे समझाते हुए यह कहा, "दानिएल, मैं तुझे
बुद्धि और समझ देने के लिए आया हूं। 23तूने
याचना करना आरम्भ किया था कि मुझे आदेश
प्राप्त हुआ। मैं तुझको वही बताने आया हूं,
क्योंकि तू परमेश्वर को परमप्रिय है। अब तू मेरे
शब्दों को ध्यान से सुन और अपने दर्शन को
समझ।

24 "तेरी कौम और तेरे पवित्र नगर के लिए
वर्षों के सत्तर सप्ताह निश्चित किए गए हैं। इन
वर्षों के व्यतीत होने में सब प्रकार के अपराध
समाप्त हो जाएँगे, पाप का अन्त हो जाएगा,
अधर्म का प्रायश्चित कराया जाएगा, धार्मिकता
शाश्वत बना दी जाएगी, दर्शन और नबूवत
सत्य प्रमाणित होगी और 'परम पवित्र*' को
अभ्यंजित किया जाएगा। 25दानिएल, इसलिए
तू यह बात जान और इसको समझ कि जिस
क्षण यरूशलेम नगर के पुनर्निर्माण और उसको
पुन: बसाने की आज्ञा प्रसारित की जाएगी, उस
समय से लेकर 'अभिषिक्त'+, जो 'नेता' **भी
है, के आगमन के समय तक वर्षों के सात
सप्ताह होंगे। तब वर्षों के बासठ सप्ताहों तक
संकट काल आएगा। इस संकट-काल में नगर
पुन: निर्मित होगा। उसके चौक पुन: बनेंगे और
खाई फिर खोदी जाएगी। 26बासठ सप्ताहों के

---

* स्थान अथवा व्यक्ति + अथवा, 'मसीह' **अथवा, 'अगुवा'

9 : 13 यो 8 : 32 9 : 15 बारू 2 : 11-13 9 : 17 बारू 2 : 14 9 : 18 बारू 2 : 19

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पश्चात् एक दूसरा 'अभिषिक्त' होगा। वह
काटा जाएगा, और उसके पास कुछ नहीं रह
जाएगा। एक अगुआ आएगा। उस की सेना
नगर और पवित्र स्थान को खण्डहर बना देगी।
उसका अन्त बाढ़ से होगा, और अन्त तक युद्ध
होता रहेगा। विनाश ठहराया जा चुका है।
27 ''अगुआ अनेक लोगों के साथ पक्की
सन्धि करेगा। इस सन्धि की अवधि वर्षों के
एक सप्ताह की होगी और इन वर्षों के आधे
सप्ताह तक अगुआ पशुबलि और अन्नबलि
चढ़ाना बन्द करा देगा। तब घृणित मूर्तिपूजा
के छा जाने से** वह अगुआ विनाशक सिद्ध
होगा। वह उस समय तक विनाश करता रहेगा
जब तक उसके अन्त का निश्चित समय न
आएगा।'' '

तीसरा दर्शन : युगान्त कब होगा?

10 फारस देश के सम्राट कुस्रू के राज्य-
काल के तीसरे वर्ष में दानिएल को जो
बेलतशस्सर भी कहलाते हैं, परमेश्वर की ओर
से एक वाक्य सुनाया गया, और यह वाक्य सच
था, और वाक्य का सम्बन्ध एक बड़े संघर्ष से
था। दानिएल ने वाक्य का अर्थ समझ लिया।
उनमें दर्शन को समझने की सामर्थ्य थी।
2 'उन दिनों, मैं-दानिएल तीन सप्ताह तक
आत्म-शुद्धि के लिए शोक मना रहा था। 3पूरे
तीन सप्ताह तक मैंने राजसी भोजन नहीं किया।
न तो मैंने मांस खाया और न मुंह में शराब ही
डाली। मैंने तीन सप्ताह तक शरीर पर तेल की
मालिश भी नहीं की।
4 'पहले महीने के चौबीसवें दिन मैं
महानदी दजला के तट पर खड़ा था। 5सहसा
मैंने अपनी आंखें ऊपर उठाईं तो मैंने देखा कि
एक पुरुष खड़ा है। वह सन का वस्त्र पहिने हुए
है। उसकी कमर में ऊफाज देश के सोने का
पटुका बन्धा है। 6उसका शरीर स्वर्णमणि के
सदृश चमक रहा है। उसका रूप विद्युत की
चमक के समान है। उसकी आंखें ज्वाला
उगलती हुई मशालों के समान हैं। उसकी
भुजाएँ और पैर चमकते हुए पीतल के सदृश हैं।
उसके शब्दों की आवाज भीड़ की आवाज के
समान भारी है।
7 'मेरे साथ कुछ मनुष्य थे। उनको यह
दर्शन दिखाई नहीं दिया। यह दर्शन केवल मैं-
दानिएल ने देखा। पर वे कांपने लगे, और
छिपने के लिए भाग गए। 8मैं अकेला रह गया,
और मैंने यह महादर्शन देखा। पर दर्शन देखने
के पश्चात् मुझमें शक्ति नहीं बची। मेरा
दमकता हुआ चेहरा भय से सूख गया, और मैं
निर्बल हो गया।
9 'तब मैंने उसके शब्दों की आवाज सुनी।
मैं आवाज सुनते ही अचेतन हो गया, और भूमि
पर औंधे-मुंह गिर पड़ा। 10पर किसी के हाथ
ने मुझे स्पर्श किया, और मुझे हाथों और घुटनों
के बल बैठाया। मेरे हाथ और घुटने कांप रहे
थे।
11 'उसने मुझसे कहा, ''ओ दानिएल,
परमेश्वर के परमप्रिय पुरुष! जो शब्द मैं तुझसे
कहने जा रहा हूं, उनको ध्यान से सुन, और
सीधा खड़ा हो; क्योंकि मैं तुझको सन्देश सुनाने
के लिए तेरे पास भेजा गया हूं।'' वह मुझसे ये
शब्द कह ही रहा था कि मैं कांपता हुआ खड़ा
हो गया।
12 'उसने मुझसे कहा, ''दानिएल, मत डर,
क्योंकि तूने दर्शन का अर्थ समझने का दृढ़
निश्चय किया, और उपवास के द्वारा आत्मशुद्धि
कर स्वयं को परमेश्वर के सम्मुख विनम्र
बनाया है। उस दिन ही तेरी प्रार्थना के शब्द
परमेश्वर ने सुन लिये। मैं तेरी प्रार्थना के कारण
ही यहाँ आया हूं।
13 ''फारस देश का स्वर्गदूत मुझे इक्कीस
दिन तक संघर्ष में उलझाए रहा, और मैं आ न
सका। तब मीखाएल, जो एक मुख्य स्वर्गदूत
है, मेरी सहायता के लिए आया। मैं उसको
फारस देश के स्वर्गदूत के साथ संघर्ष में
छोड़कर आया हूं 14ताकि तुझे वे बातें समझाऊं
जो युगान्त में तेरी कौम के लोगों के साथ

** अक्षरशः, 'पंख फैलाने से'

9 : 27 मत 24 : 15; दान 11 : 31; 1 मक 1 : 44-50,54 **10 : 6** प्रक 1 : 14-15 **10 : 13** यहू 9; प्रक 12 : 7

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

घटेंगी। जो दर्शन तूने देखा है वह आगामी कुछ
दिनों के बाद पूरा होगा।''
15 'जब वह मुझसे ये बातें कह चुका, तब
मैंने भूमि की ओर सिर झुका लिया और चुप
हो गया। मेरी जीभ तालू से चिपक गई। 16तब
उसने, जो मनुष्य के समान दिखाई दे रहा था,
मेरे ओंठों को स्पर्श किया। तब मैंने अपने ओंठ
खोले और यह कहा, ''हे मेरे स्वामी, इस दर्शन
के कारण मैं दु:खित हूं। मुझमें शक्ति शेष नहीं
रह गई है। 17मेरे स्वामी का यह सेवक अपने
स्वामी से बातें करने का साहस कैसे जुटा
सकता है ? स्वामी, मेरे शरीर में न तो शक्ति है
और न प्राण ही।''
18 'उसने, जो मनुष्य के समान दिखाई दे
रहा था, मुझे स्पर्श किया, और मुझे बल प्रदान
किया। 19उसने मुझसे कहा, ''ओ परमेश्वर के
परमप्रिय पुरुष! मत डर, तुझे शान्ति मिले, तू
शक्तिशाली और साहसी बन।'' जब उसने
मुझसे ये बातें कहीं तब मुझे शक्ति प्राप्त हुई।
मैंने कहा, ''स्वामी, अब आप बोलिए, क्योंकि
आपने मुझे शक्ति प्रदान की है।'' 20उसने कहा,
''तू तो जानता ही है कि मैं तेरे पास क्यों आया
हूं। पर अब मुझे फारस के स्वर्गदूत से लड़ने
के लिए लौटना होगा। जब मैं उससे निपट
चुकूंगा, तब यूनान का स्वर्गदूत आएगा। 21फिर
भी जो बातें 'सत्य ग्रंथ' में लिखी हुई हैं वे मैं
तुझे बताता हूं। तेरी कौम के स्वर्गदूत मीखाएल
के अतिरिक्त और कोई स्वर्गदूत नहीं है, जो
उनके विरुद्ध मेरी सहायता करे।

11 ''मैं मादी कौम के सम्राट दारा के
राज्यकाल के प्रथम वर्ष से उसकी
सहायता करता आ रहा हूं, और मैंने उसको
शक्ति भी प्रदान की है।

मिस्र (दक्षिण देश) और सीरिया (उत्तर देश) के राजाओं का संघर्ष

2 ''अब मैं तुझे सत्य के दर्शन कराऊंगा।
देख, फारस साम्राज्य में तीन नए सम्राट उदित
होंगे, पर एक और सम्राट उदित होगा। यह
चौथा सम्राट अन्य तीनों सम्राटों से अधिक
धनवान होगा। जब वह अपने धन के बल पर
शक्तिशाली हो जाएगा, तब वह यूनान राज्य के
विरोध में अन्य राज्यों को भड़काएगा। 3तब एक
नया राजा उत्पन्न होगा जो महायोद्धा होगा। वह
एक विशाल साम्राज्य की स्थापना करेगा और
अपनी इच्छा के अनुसार उस पर शासन करेगा।
4पर साम्राज्य में उसके पैर जम ही नहीं पाएंगे
कि उसका साम्राज्य बिखर जाएगा, और चारों
दिशाओं में बंट जाएगा। यह साम्राज्य उसके
वंशजों को नहीं मिलेगा और न ही वे इतने
शक्तिशाली होंगे जितना वह था। उसका राज्य
उखड़ जाएगा और उसके वंशजों को नहीं
बल्कि दूसरों को प्राप्त होगा।
5 ''तब दक्षिण देश का राजा शक्तिशाली
बनेगा। किन्तु उसके सामन्तों में से एक सामन्त
उससे भी अधिक शक्तिशाली हो जाएगा, और
वह एक नया राज्य स्थापित करेगा, और उसका
राज्य विशाल साम्राज्य बन जाएगा। 6कुछ वर्ष
के पश्चात् वे परस्पर सन्धि करेंगे। उनमें रोटी-
बेटी का सम्बन्ध स्थापित होगा। सम्बन्ध
स्थापित करने के लिए दक्षिण देश का राजा
अपनी कन्या का विवाह उत्तर देश के राजा से
करेगा। किन्तु वहां उसकी पुत्री की शक्ति सदा
बनी नहीं रहेगी और उसके वंशज टिक नहीं
पाएंगे। उसकी पुत्री, पुत्री की सेविकाएँ, उसका
नाती और उसकी पुत्री को संकट-काल में
शक्ति देनेवाला, ये सब मौत के घाट उतार दिए
जाएंगे।
7 ''तब उसकी पुत्री के वंश-वृक्ष में एक
टहनी निकलेगी। यह वंशज उसके स्थान पर
बढ़ेगा। वह उत्तर देश की सेना पर आक्रमण
करेगा, और राजा के गढ़ पर कब्जा कर लेगा।
वह उनसे अपनी इच्छा के अनुसार व्यवहार
करेगा और उन पर प्रबल होगा। 8वह उनके
देवताओं की मूर्तियाँ, ढाली गई प्रतिमाएँ,
मन्दिरों के सोना-चांदी के बहुमूल्य पात्र मिस्र
देश को ले जाएगा। तब वह कुछ वर्ष तक उत्तर
देश के राजा पर आक्रमण नहीं करेगा। 9परन्तु
उत्तर देश का राजा उस पर आक्रमण करेगा, पर
उसको पराजय का मुंह देखना पड़ेगा और वह
स्वदेश को लौट जाएगा।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

10 ''फिर उत्तर देश के राजा के पुत्र युद्ध
छेड़ देंगे। वे विशाल सेनाओं का समूह एकत्र
करेंगे, जो बाढ़ की तरह दक्षिण देश को ढक
लेंगी। वे उसमें से गुजरती हुई उसके गढ़ तक
पहुंच जाएंगी। 11तब दक्षिण देश का राजा क्रोध
में भर कर उठेगा। वह गढ़ के बाहर निकलेगा,
और उत्तर देश के राजा से युद्ध करेगा। उत्तर देश
का राजा विशाल सेना खड़ी करेगा। पर उसकी
सेना दक्षिण देश के राजा के हाथ में सौंप दी
जाएगी।

12 ''जब दक्षिण देश का राजा उसकी सेना
को पराजित कर देगा, तब उसका हृदय घमण्ड
से फूल उठेगा। वह लाखों सैनिकों का वध
करेगा, परन्तु वह उस पर प्रबल न होगा;
13क्योंकि उत्तर देश का राजा पुन: विशाल सेना
एकत्र करेगा; और यह सेना प्रथम विशाल सेना
से अधिक विशाल होगी। उत्तर देश का राजा
कई वर्षों बाद अपनी इस महाविशाल सेना के
साथ और अपार रसद-सामग्री लेकर दक्षिण
देश के राजा पर आक्रमण करेगा।

14 ''उन दिनों में दक्षिण देश के राजा के
विरुद्ध अनेक सामन्त विद्रोह करेंगे। स्वयं तेरी
कौम के कुछ लोग जो हिंसक होंगे, किसी
दिव्य दर्शन को पूर्ण करने की आशा से, विद्रोह
करेंगे। पर तेरी कौम के ये हिंसक व्यक्ति अपने
लक्ष्य में सफल न होंगे।

15 ''तब उत्तर देश का राजा चढ़ाई करेगा,
और मोर्चाबन्दी कर एक सुदृढ़ नगर पर कब्जा
कर लेगा। दक्षिण देश की सेनाएँ उसके सामने
टिक न पाएंगी, और न उसके चुने हुए योद्धाओं
के दलों में इतनी शक्ति होगी कि वे उसका
सामना कर सकें। 16इसलिए उत्तर देश का
आक्रमणकारी राजा अपनी इच्छा के अनुसार
सब राज्यों के साथ व्यवहार करेगा; उसका
सामना करनेवाला कोई न होगा। वह हमारे
'वैभव-सम्पन्न देश' में पैर जमा लेगा, और
समस्त देश पर उसका अधिकार हो जाएगा।
17इसके बाद वह अपने राज्य की सम्पूर्ण शक्ति
को संचित करेगा और दक्षिण देश के साम्राज्य
को अपने अधिकार में करने के लिए इच्छुक
होगा। पहले वह राजा के साथ सन्धि करेगा
और फिर उसको नष्ट करने के उद्देश्य से उसके
साथ अपनी सुकुमारी पुत्री का विवाह भी कर
देगा। फिर भी उसकी यह कूटनीति सफल न
होगी और उसे कुछ लाभ न होगा।

18 ''तत्पश्चात् वह समुद्रतट के राज्यों पर
चढ़ाई करेगा। वह वहां के अनेक राज्यों पर
अधिकार कर लेगा; किन्तु एक सेनाध्यक्ष
उसके अहंकार को खत्म कर देगा। वह उसके
अहंकार के अनुकूल उसको बदला देगा।
19उत्तर देश का राजा अपने देश के गढ़ों की
ओर लौटने के लिए मुंह मोड़ेगा। पर वह मार्ग
में ठोकर खाकर गिरेगा और उसका कहीं पता
तक न चलेगा।

20 ''तब उसके स्थान पर एक ऐसा राजा
आएगा जो हमारे 'महिमामंडित राज्य' में कर
एकत्र करनेवाले को भेजेगा। किन्तु कुछ दिन
बाद ही उसका पतन हो जाएगा। उसका पतन
न क्रोध के कारण होगा और न युद्ध में हारने
के कारण होगा।

21 ''उसके स्थान पर एक तुच्छ व्यक्ति गद्दी
पर बैठेगा जो राज्य-प्रतिष्ठा के योग्य नहीं
होगा। वह चापलूसी के माध्यम से राज्य प्राप्त
करेगा। जब जनता असावधान होगी तब वह
बिना चेतावनी दिए गद्दी पर बैठ जाएगा।
22सेनाएँ उसके सामने पूर्णत: नष्ट और छिन्न-
भिन्न हो जाएँगी, हमारा 'विधान का प्रमुख
व्यक्ति' भी उसकी बाढ़ में बह जाएगा। 23जो
राज्य उसके साथ सन्धि करेगा, वह उस राज्य
से भी कपटपूर्ण व्यवहार करेगा। वह कुछ
लोगों के बल पर शक्तिशाली बन जाएगा।
24वह बिना चेतावनी दिए प्रदेश के समृद्ध भागों
पर हमला करेगा। वह ऐसे-ऐसे दुष्कर्म करेगा
जो कई पीढ़ियों तक उसके पूर्वजों ने कभी नहीं
किए थे। वह लूट का माल और धन-सम्पत्ति
अपने लोगों में बांट देगा। वह कुछ समय तक
सुदृढ़ गढ़ों के विरुद्ध षड्यंत्र रचेगा। 25उसके
बाद वह अपनी ताकत और अपने साहस के
कारण इतना उत्तेजित होगा कि वह एक विशाल
सेना को लेकर दक्षिण देश पर हमला कर देगा।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दक्षिण देश का राजा भी महाविशाल सेना के
साथ युद्ध में उसका सामना करेगा, किन्तु वह
उसके सम्मुख टिक न पाएगा; क्योंकि स्वयं
उसके देश में उसके विरुद्ध षड्यंत्र रचे जाएँगे।
26यहाँ तक कि वे लोग जो उसके साथ एक ही
थाली में खाते हैं, उसके पतन में हाथ बटाएंगे।
उसकी सेना नष्ट हो जाएगी। अनेक सैनिक
मौत के घाट उतार दिए जाएंगे। 27तब दोनों
राजाओं के मन कुकर्म करने पर उतारू हो
जाएंगे। वे एक ही मेज पर बैठकर भी एक दूसरे
से झूठ बोलेंगे। परन्तु उससे कुछ लाभ न होगा;
क्योंकि निश्चित किए गए युगान्त की अवधि
अब तक समाप्त नहीं हो पायी है।

28 "तब उत्तर देश का राजा दक्षिण देश की
विशाल लूट लिये हुए अपने देश लौटेगा। किन्तु
उसका हृदय पवित्र विधान के विरुद्ध होगा। वह
अपनी इच्छा के अनुसार महिमा-मंडित पवित्र नगर
में कार्य करेगा और फिर अपने देश लौटेगा।

29 "निश्चित समय पर वह पुनः दक्षिण
देश पर आक्रमण करेगा, किन्तु इस बार की
स्थिति पहले की स्थिति से भिन्न होगी।
30समुद्रतट के निवासी कित्तियों के जहाजी बेड़े
उसके विरुद्ध दक्षिण देश में आएंगे और वह डर
कर वापस लौटेगा। वह लौटते समय अपना
क्रोध महिमामंडित पवित्र नगर पर उतारेगा
और पवित्र विधान के विरुद्ध अपनी इच्छा पूरी
करेगा। लौटने के बाद वह उन लोगों को ढूंढ़ेगा
जिन्होंने पवित्र विधान को त्याग दिया है।
31उसके द्वारा भेजे गए सैन्यदल पवित्र-स्थान
और गढ़ को अशुद्ध कर देंगे। वे निरन्तर
अग्नि-बलि को बन्द कर देंगे। वे उस घृणित
वस्तु को प्रतिष्ठित करेंगे जो विध्वंस का कारण
होगी। 32जो व्यक्ति विधान को तोड़ेगा, उसको
वह मीठी-मीठी बातों से बहका देगा। किन्तु
जिन लोगों को परमेश्वर का ज्ञान होगा वे अपने
विश्वास में अटल रहेंगे और उचित कार्य
करेंगे। 33जो लोग समझदार हैं, वे जनता के
अनेक लोगों को समझाएंगे। किन्तु अपने इस
कार्य के लिए उन्हें शहीद होना पड़ेगा: वे
तलवार से मौत के घाट उतारे जाएंगे; वे जलती
हुई आग में फेंके जाएंगे; वे बन्दीगृह में डाले
जाएंगे और उनकी धन-सम्पत्ति लूट ली
जाएगी। यह कष्ट केवल कुछ दिनों के लिए
होगा। 34जब उन पर कष्ट आएगा, तब उन्हें
कुछ सहायता प्राप्त होगी; किन्तु अनेक लोग
उनकी चापलूसी करके उनसे मिल जाएंगे।
35कुछ समझदार लोग भी विधान से गिर
जाएंगे। वे इसलिए गिरेंगे कि वे अपने विश्वास
के लिए जांचे और परखे जाएं, वे अपने
विश्वास में शुद्ध और उज्ज्वल किए जाएं। यह
स्थिति युगान्त तक बनी रहेगी; क्योंकि इन सब
बातों का अन्त ठहराए हुए समय पर होगा।

36 "और वह राजा अपनी इच्छा के
अनुसार कार्य करेगा। वह स्वयं को सब
देवताओं से ऊपर प्रतिष्ठित करेगा और अपने
आपको उनसे बड़ा बताएगा। वह ईश्वरों के
ईश्वर, परमेश्वर के विरुद्ध भी अनोखी बातें
बोलेगा। वह तब तक सफल होता रहेगा जब
तक कि उसके पाप का घड़ा भर न जाए;
क्योंकि जो निश्चित है, वह तो होगा ही। 37वह
अपने पूर्वजों के देवताओं की परवाह भी नहीं
करेगा और न स्त्रियों के प्रिय इष्ट देव की भी।
वस्तुतः वह किसी भी देवता की परवाह नहीं
करेगा, क्योंकि वह सब देवताओं से ऊपर स्वयं
को प्रतिष्ठित करेगा। 38वह इन देवताओं के
स्थान पर 'गढ़ के देवता' की पूजा करेगा। इस
देवता को उसके पूर्वज भी नहीं जानते थे। वह
सोना, चांदी, बहुमूल्य मणि तथा कीमती भेंट
अपने इस गढ़ देवता को चढ़ाएगा। 39वह एक
विदेशी देवता की सहायता से सब सुदृढ़ गढ़ों
पर आक्रमण करेगा। जो लोग उसको अपना
शासक स्वीकार कर लेंगे, उनको वह बहुत
सम्मान देगा। वह उनको अनेक लोगों पर
शासक नियुक्त करेगा और उनको पुरस्कार में
भूमि प्रदान करेगा।

40 "अन्तिम समय में दक्षिण देश का राजा
उस पर आक्रमण करेगा। किन्तु उत्तर देश का
राजा रथों, घुड़सवारों और जहाजी बेड़ों के

---

11 : 30 2 मक 5 : 11 **11 : 31** मत 24 : 15 **11 : 36** 2 थिस 2 : 4; यहेज 28 : 2; प्रक 13 : 5-6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

साथ बवंडर के समान उस पर टूट पड़ेगा। वह
अनेक देशों में घुस जाएगा। वह उनको उलट-
पुलट देगा और उनमें से गुजरता हुआ आगे बढ़
जाएगा। 41वह हमारे 'वैभव-सम्पन्न देश' में
भी आएगा। हमारे देश के लाखों निवासी मौत
के घाट उतारे जाएंगे। किन्तु एदोम और मोआब
तथा अम्मोन देश का मुख्य भाग उसके
विनाशकारी हाथ से बच जाएंगे। 42वह अन्य
देशों को दबोचने के लिए अपना हाथ बढ़ाएगा
और मिस्र देश उसके हाथ से बच नहीं सकेगा।
43वह मिस्र देश के सोने-चांदी तथा अन्य
कीमती वस्तुओं का मालिक बन जाएगा।
लीबिया और इथियोपिआ देश के निवासी भी
उसके अधीन हो जाएंगे। 44किन्तु पूर्व और
उत्तर से समाचार आएगा, जिसे सुनकर वह
व्याकुल हो जाएगा और क्रोध में भरा हुआ
अनेक लोगों का नाश करने और उनको निर्वंश
करने के लिए वहां से निकलेगा। 45वह समुद्र
और तेजोमय पवित्र पर्वत के मध्य अपने
राजसी तम्बू गाड़ेगा। तो भी उसका अन्त होगा
ही। उसको बचाने वाला कोई न होगा।

युगांत कब होगा?

12 ''उस समय महा स्वर्गदूत मीखाएल,
जो तेरी कौम का रक्षक-दूत है, रक्षा के
लिए आएगा। वह संकट का समय होगा। राष्ट्र
की उत्पत्ति से लेकर अब तक ऐसा संकट कभी
नहीं हुआ। परन्तु इसी संकट-काल में तेरी
कौम का उद्धार भी किया जाएगा। जिन लोगों
के नाम ग्रन्थ में लिखे हुए हैं, वे मुक्त किए
जाएंगे। 2जो भूमि के नीचे कबर में सोए हुए
हैं, उनमें से अनेक जाग उठेंगे : कुछ को
शाश्वत जीवन प्राप्त होगा, कुछ को अपमान
और स्थायी घृणा का पात्र बनना होगा। 3जो
समझदार होंगे, वे आकाशमण्डल के उज्ज्वल
नक्षत्रों के सदृश आलोकित होंगे। जिन्होंने
अनेक व्यक्तियों को सद्मार्ग पर उन्मुख किया
है, वे सदा-सर्वदा तारों के समान प्रकाशवान
होंगे। 4दानिएल, तू इस ग्रन्थ पर मुहर लगा,
और युगांत तक के लिए इन बातों को सुरक्षित
रख। अनेक लोग पूछताछ के लिए यहाँ-वहाँ
भाग-दौड़ करेंगे, और अपने ज्ञान की वृद्धि
करेंगे* ।''

5 'जब मैं-दानिएल ने ऊपर देखा, तो मुझे
और दो व्यक्ति दिखाई दिए। एक व्यक्ति नदी
के इस पार खड़ा था और दूसरा व्यक्ति नदी के
उस पार। 6मैंने** नदी के जल के ऊपर खड़े
तथा सन के वस्त्र पहिने हुए व्यक्ति से पूछा,
''इन आश्चर्यपूर्ण कार्यों के घटित होने में
कितना समय शेष है?'' 7उसने अपना दाहिना
और बायाँ हाथ आकाश की ओर उठाया, और
मैंने उसको शाश्वत और जीवित परमेश्वर की
शपथ लेते हुए सुना : ''साढ़े तीन वर्ष+ तक यह
दशा रहेगी। जब पवित्र लोगों का बल टूटते-
टूटते समाप्त हो जाएगा, तब ये बातें पूरी
होंगी।'' 8मैंने उसकी यह बात सुनी किन्तु मैं
नहीं समझा। अत: मैंने उससे फिर पूछा, ''मेरे
स्वामी, इन बातों का अन्तिम परिणाम क्या
होगा?'' 9परन्तु उसने उत्तर दिया, ''दानिएल,
अब जा! ये बातें युगान्त के लिए मुहर-बन्द कर
दी गई हैं। 10इस अवधि में अनेक विश्वासी जन
स्वयं को शुद्ध, निर्मल और उज्ज्वल कर लेंगे,
किन्तु दुर्जन दुष्कर्म ही करते रहेंगे, और कोई
भी दुष्कर्मी इन बातों को नहीं समझ पाएगा। पर
जो समझदार हैं, वे ही इसको समझेंगे। 11जिस
दिन पवित्र मन्दिर में नित्य अग्नि-बलि चढ़ाना
बन्द कर दिया जाएगा और घृणित वस्तु वहाँ
प्रतिष्ठित की जाएगी, जो विनाश का कारण
होगी, उस दिन से बारह सौ नब्बे दिन व्यतीत
होंगे। 12धन्य है वह मनुष्य जो धीरज के साथ
एक हजार तीन सौ पैंतीस दिन पूरे करेगा।
13दानिएल, अब तू जा। अपने जीवन के अन्त-
समय तक अपने मार्ग पर चलता रह और तुझे
विश्राम प्राप्त होगा। युगांत में तुझे तेरा निर्धारित
स्थान प्राप्त होगा।'' '

* प्राचीन अनुवाद के अनुसार : ''और अधर्म बढ़ जाएगा''। ** मूल में, 'उसने' + देखिए 7 : 25 की टिप्पणी।

12 : 1 मत 24 : 21; प्रक 7 : 14; यिर 30 : 7 **12 : 2** मत 25 : 46; यो 5 : 29; यश 66 : 24; 2 मक 7 : 9-11 **12 : 3** 1 कुर 15 : 41; मत 13 : 43 **12 : 4** प्रक 22 : 10 **12 : 7** प्रक 10 : 5 **12 : 10** प्रक 22 : 11 **12 : 11** मत 24 : 15 **12 : 13** इसके बाद सूस 1-64

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नबी होशे

पुस्तक-परिचय

इब्रानी बाइबिल के क्रम में दानिएल ग्रंथ को नबी ग्रंथों में स्थान नहीं मिला, किन्तु उसे "अन्य लेखों" के साथ रखा गया है। इसलिए इब्रानी शीर्षक के अनुसार "बारह नबियों का ग्रंथ" नबी यहेजकेल के ग्रंथ के तुरन्त बाद मिलता है। इन बारहों में नबी होशे को प्रथम स्थान दिया गया है।

नबी होशे ने इस्राएल देश के उत्तरी राज्य में नबूवतें की थीं। असीरियाई साम्राज्य के बढ़ते प्रभाव के कारण उत्तरी राज्य दबता जा रहा था। उत्तरी राज्य के ईसवी पूर्व 721 में हुए पतन के कुछ पहले तथा नबी आमोस के नबूवत-काल के पश्चात् नबी होशे का नबूवत-काल माना जाता है।

नबी होशे ने उत्तरी इस्राएली राज्य ("इस्राएल" अथवा "एफ्रइम") की जनता में व्याप्त मूर्ति-पूजा तथा परमेश्वर के प्रति अभक्ति के विरुद्ध नबूवतें कीं। इस अनिष्ठा के विरुद्ध नबूवत करते हुए नबी होशे स्वयं अपने असफल विवाहित जीवन को दृष्टांत के रूप में प्रयुक्त करते हैं। उनकी पत्नी बेवफा है। जैसे उनकी पत्नी उनके प्रति बेवफा है, वैसे ही परमेश्वर के निज लोग हैं, जिन्होंने अपने "पति" स्वामी-परमेश्वर को छोड़ दिया है और अन्य जातियों के देवी-देवताओं को अपना लिया है। इस "वेश्यावृत्ति" का दण्ड परमेश्वर उनको देगा। फिर भी, क्योंकि परमेश्वर अपार करुणामय है, वह अपने निज लोगों पर करुणा करेगा, और वह उनको अपने पास लौटा ले आएगा, और टूटे हुए बन्धन को पुन: जोड़ लेगा। अपने निज लोगों के प्रति परमेश्वर के हृदयग्राही प्रेम की अभिव्यक्ति इन शब्दों में हुई है, "मैं तुझे कैसे त्याग दूं? ओ इस्राएल, मैं तुझे कैसे शत्रु के हाथ सौंप दूं?.... मेरा हृदय बदल गया! मेरी दया प्रज्वलित हो उठी है" (11 : 8)।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

नबी होशे का विवाह तथा उनका परिवार	1 : 1—3 : 5
इस्राएल के विरुद्ध नबूवतें	4 : 1—13 : 16
इस्राएल का पश्चात्ताप तथा परमेश्वर की प्रतिज्ञा	14 : 1—9

परिचय

1 यहूदा प्रदेश के राजाओं उज्जियाह, योताम, आहाज और हिजकियाह के राज्य-काल में तथा इस्राएल प्रदेश के राजा यारोबआम बेन-योआश* के राज्य-काल में प्रभु के सन्देश होशे बेन-बएरी को मिले थे।

नबी होशे की बेवफा पत्नी

2 प्रभु का सन्देश होशे के माध्यम से यों आरम्भ हुआ : प्रभु ने होशे को आदेश दिया, 'जा, किसी वेश्या स्त्री से विवाह कर और उससे सन्तान उत्पन्न कर। यह सन्तान भी अपनी मां के समान निष्ठावान नहीं होगी। इस देश ने मुझ-प्रभु का अनुसरण करना छोड़ दिया है, और यह अन्य देवताओं की पूजा करने लगा है। यह देश वेश्या के समान मेरे प्रति निष्ठावान नहीं रहा।'

3 अत: होशे गया। उसने गोमेर नामक स्त्री से विवाह किया। उसके पिता का नाम दिब्लाइम था। गोमेर गर्भवती हुई। उसने एक पुत्र को जन्म दिया।

* अर्थात् 'योआश का पुत्र', यारोबआम द्वितीय।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

4 प्रभु ने होशे से यह कहा :
'तू अपने पुत्र का नाम यिज्रएल† रख;
क्योंकि कुछ समय पश्चात्
मैं राजा येहू के परिवार को
यिज्रएल घाटी में बहाए गए रक्त के लिए
दण्ड दूंगा।
मैं इस्राएल वंश के राज्य का अंत करूंगा।
5 उस दिन मैं यिज्रएल घाटी में
इस्राएल-राज्य की शक्ति को,
उसके धनुष को तोड़ूंगा।'

6 गोमेर पुनः गर्भवती हुई। उसने एक पुत्री
को जन्म दिया। प्रभु ने होशे से यह कहा, 'तू
पुत्री का नाम लो-रूहामाह++ रख, क्योंकि मैं
फिर कभी इस्राएल वंश पर दया नहीं करूंगा;
उसे कदापि क्षमा नहीं करूंगा।
7 पर मैं यहूदा वंश पर दया करूंगा।
मैं उसको मुक्त करूंगा;
धनुष से नहीं, तलवार से नहीं,
युद्ध से नहीं, अश्व से नहीं,
घुड़सवार सैनिकों से नहीं,
वरन् मैं स्वयं, उसका प्रभु परमेश्वर,
उसे मुक्त करूंगा।'

8 लो-रूहामाह का दूध छुड़ाने के पश्चात्
गोमेर गर्भवती हुई। उसने एक पुत्र को जन्म
दिया। 9प्रभु ने होशे से यह कहा,
'तू पुत्र का नाम लो-अम्मी+++ रख;
क्योंकि तुम अब मेरे निज लोग नहीं रहे,
और न मैं तुम्हारा परमेश्वर रहा।'

जीवन्त परमेश्वर की संतान

10* इस्राएली राष्ट्र की जनसंख्या
सागर-तट के रेत कणों के सदृश
असंख्य हो जाएगी,
जिनको न मापा जा सकता है
और न जिनकी गणना ही की जा सकती है।
जिस स्थान में उनको 'लो-अम्मी'
अर्थात् 'मेरे लोग नहीं' कहा गया था,
वहीं उन्हें कहा जाएगा,
'जीवित परमेश्वर की संतान'।
11यहूदा प्रदेश के निवासी,
और इस्राएल प्रदेश के निवासी
परस्पर संगठित होंगे;
वे अपने लिए एक नेता को नियुक्त करेंगे;
तत्पश्चात् वे इस देश में ऊंचे उठते जाएंगे।
यिज्रएल का वह दिन, महा दिवस होगा।

2 *तुम अपने जाति-भाइयों को
इस नाम से सम्बोधित करो,
'अम्मी', 'मेरे अपने लोग'!
तुम अपनी बहिनों को
इस नाम से सम्बोधित करो :
'रूहामाह', 'जिन पर दया की गई'!

बेवफा इस्राएल

2 मेरे बच्चो, अपनी मां इस्राएल को समझाओ;
वह मेरी पत्नी नहीं रही, और न मैं उसका
पति।
उसे समझाओ कि वह
अपने चेहरे से वेश्यापन दूर करे;
और अपने स्तनों के मध्य से
वेश्यावृत्ति के चिह्नों को!
3अन्यथा मैं उसके कपड़े उतार कर
उसको नग्न कर दूंगा,
जैसे वह नग्न थी,
उस दिन जब वह पैदा हुई थी!
मैं उसे उजाड़ प्रदेश के सदृश उजाड़ दूंगा;
शुष्क प्रदेश के सदृश सुखा दूंगा;
मैं उसे एक-एक बूंद पानी के लिए
तड़पाकर मार डालूंगा।
4मैं उसकी सन्तान पर भी दया नहीं करूंगा;
क्योंकि वे जारज सन्तान हैं।
5उनकी मां वेश्या थी;
उनकी जननी निर्लज्ज थी।
उनकी मां ने यह कहा था,
'मैं अपने प्रेमियों के साथ अभिसार करूंगी।
वे ही तो मुझे रोटी देते हैं,
पीने को पानी देते हैं;

† अर्थात् 'परमेश्वर बोएगा' ++ अर्थात् ''जिस पर दया नहीं की गई।'' +++ अर्थात् ''मेरे लोग नहीं''। * मूल में अध्याय 2 : 1 * मूल में 2 : 3

1 : 4 2 रा 9 1 : 6 हो 2 : 23 1 : 10 रोम 9 : 27 2 : 2 यिर 3 : 1; यहेज 16 : 25 2 : 3 यिर 13 : 22

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ऊन, पटसन, तेल और पेय भी
उन्हीं की कृपा से मुझे प्राप्त होते हैं।'
6अत: मैं उसके मार्ग में कांटे बोऊंगा;
उसके मार्ग में बाधा की दीवार खड़ी करूंगा;
ताकि वह अपने अभिसार-मार्ग पर न जा सके।
7वह अपने प्रेमियों का पीछा करेगी,
पर वह उन्हें पकड़ न पाएगी;
वह उन्हें खोजेगी, पर वह उन्हें पा न सकेगी।
तब वह यह कहेगी :
'मैं अपने पुराने पति के पास लौट जाऊंगी;
क्योंकि मेरी उस समय की स्थिति
आज की स्थिति से अच्छी थी।'
8वह नहीं जानती थी कि मैं ही उसको
अन्न, अंगूर-रस और तेल देता था।
मैंने ही उसके सोना-चांदी की समृद्धि की थी,
जिसको उन्होंने बअल देवता** के लिए प्रयुक्त किया।
9अत: अब मैं अन्न-ऋतु में अन्न,
अंगूर-मौसम पर अंगूर की फसल उसे नहीं दूंगा।
जिस ऊन और पटसन वस्त्र से
वह अपनी नग्नता ढांपती है,
उसको मैं वापस ले लूंगा।
10अब मैं उसके प्रेमियों के सम्मुख
उसके तन को उघाड़ूंगा,
मेरे हाथ से उसे कोई न छुड़ा सकेगा।
11उसके आनन्द-उत्सवों का,
यात्रा-पर्वों, नवचंद्र-पर्वों, विश्राम-दिवसों
और सब निर्धारित पर्वों का
मैं अन्त कर दूंगा।

12 जिन अंगूर-उद्यानों और अंजीर-कुंजों के
विषय में उसने यह कहा था,
'यह मेरी कमाई है,
मेरे प्रेमियों ने मुझे यह उपहार में दिया है',
उनको मैं उजाड़ दूंगा, जंगल बना दूंगा,
जंगली जानवर उनको चर जाएंगे।
13बअल देवताओं के पर्व-दिवसों पर
उसने उनके लिए धूप-द्रव्य जलाए थे;
उसने नत्थ और हार पहिनकर
स्वयं को सजाया था;
और मुझ-प्रभु को भूलकर
अपने प्रेमियों से अभिसार करने गई थी।
मैं उसको इन सब कार्यों के लिए दण्ड दूंगा।
यह प्रभु की वाणी है।

परमेश्वर अब भी प्रेम करता है

14 देख, अब मैं उसे मोहित करके,
निर्जन प्रदेश में ले जाऊंगा;
मैं वहाँ उससे प्रेम से बातें करूंगा।
15वहाँ उसके अंगूर-उद्यान उसे लौटा दूंगा;
मैं कष्ट की घाटी+ को
आशा के द्वार में बदल दूंगा।
वहाँ वह मेरे प्रेम का प्रत्युत्तर देगी;
जैसे वह किशोरावस्था में मुझे प्रत्युत्तर देती थी,
जब वह मिस्र देश से बाहर निकली थी।
16उस दिन वह मुझे 'मेरा पति' कहेगी;
और मुझे 'मेरा बअल' नाम से फिर कभी नहीं पुकारेगी।
17मैं उसके ओंठों पर से बअल देवताओं का नाम हटा दूंगा।
उनका नाम फिर कभी स्मरण नहीं किया जाएगा। यह प्रभु की वाणी है।
18 तब मैं उस दिन इस्राएली राष्ट्र की ओर
से वन-पशुओं, आकाश के पक्षियों और भूमि
पर रेंगनेवाले जीव-जंतुओं से सन्धि स्थापित
करूंगा। मैं पृथ्वी पर से युद्ध के शस्त्र, तलवार
और धनुष—तोड़ दूंगा। मैं तुझे सुख-चैन की
नींद प्रदान करूंगा। 19मैं तेरे साथ शाश्वत विवाह-
सम्बन्ध स्थापित करूंगा। तेरे साथ धार्मिकता,

** बअल देवता कनानी जाति का राष्ट्रीय देवता था। 'बअल' शब्द का अर्थ इब्रानी भाषा में स्वामी अथवा पति भी है।
+ अथवा, 'आकोर की घाटी'

2 : 7 लू 15 : 18; यहेज 16 : 8 2 : 12 यश 5 : 5 2 : 14 यिर 2 : 2; यश 54 : 7 2 : 15 यहो 7 : 26 2 : 18 यहेज 34 : 25

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

न्याय, करुणा और दया के बन्धन में विवाह-
सम्बन्ध स्थापित करूंगा। [20]मैं तुझसे सच्चाई के
साथ विवाह करूंगा। तब तुझे मुझ-प्रभु का
अनुभव** प्राप्त होगा।

21 प्रभु की यह वाणी है :
मैं उस दिन आकाश को आदेश दूंगा,
और आकाश पृथ्वी पर वर्षा करेगा।
22 तब पृथ्वी अन्न, अंगूर-रस और तेल उत्पन्न
करेगी,
और वे यिज्रएल को समृद्ध करेंगे।
23 मैं इस्राएली राष्ट्र को स्वयं भूमि पर बोऊंगा।
मैं लो-रूहामाह+ पर दया करूंगा।
मैं लो-अम्मी++ से यह कहूंगा :
'तू मेरा अपना है+++';
और वह मुझसे यह कहेगा,
'तू मेरा परमेश्वर है।'

नबी होशे व्यभिचारिणी पत्नी को पुनः स्वीकार करते हैं

3 प्रभु ने मुझे यह आदेश दिया, 'पुनः जा,
और प्रेम कर उस परकीया* और
व्यभिचारिणी स्त्री से, जैसे मैं-प्रभु भी इस्राएली
लोगों से प्रेम करता हूं; यद्यपि वे अन्य देवताओं
की ओर उन्मुख हो उनकी पूजा करते हैं, और
किशमिश की रोटियाँ पसन्द करते हैं जो मूर्तियों
के सम्मुख चढ़ाई जाती हैं।'

2 अत: मैंने चांदी के पन्द्रह सिक्कों, और
डेढ़ सौ किलो जौ में उसको पुन: प्राप्त किया।
3 मैंने उससे यह कहा, 'तुम्हें बहुत दिन तक मेरी
बन कर रहना होगा। तुम वेश्यावृत्ति नहीं
करोगी। तुम परपुरुष से सहवास नहीं करोगी;
मैं भी तुम्हारे साथ ऐसा ही व्यवहार करूंगा।'

4 इसी प्रकार इस्राएली बहुत दिनों तक बिना
राजा के निवास करेंगे। न उनका कोई शासक
होगा, और न वे बलि चढ़ा सकेंगे। उनके न
पूजा-स्तम्भ होंगे, और न एपोद और न गृह-
देवताओं की मूर्तियाँ। 5 तत्पश्चात् इस्राएली
लौटेंगे, और अपने प्रभु परमेश्वर तथा अपने
राजा दाऊद को खोजेंगे। वे प्रभु की आशिष के
लिए, जो वह आनेवाले दिनों में उन्हें देगा, भय
से कांपते हुए प्रभु के पास आएंगे।

प्रभु की इस्राएली राष्ट्र से शिकायत

4 ओ इस्राएली राष्ट्र! प्रभु के ये शब्द सुन :
प्रभु ने इस देश के निवासियों के विरुद्ध
मुकदमा किया है।
इस देश में न सच्चाई है, और न करुणा।
इस देश में परमेश्वर का ज्ञान भी नहीं है।
2 यहाँ लोग झूठी शपथ खाते हैं।
वे धोखा देते हैं।
वे हत्यारे, चोर और व्यभिचारी हैं।
वे व्यवस्था की सीमा का उल्लंघन करते हैं,
यहाँ हत्या के बाद हत्या होती है।
3 इस कारण देश मृत्यु-शोक मना रहा है,
सब निवासी कष्ट से मुरझा गए हैं;
वन-पशु, आकाश के पक्षी;
समुद्र की मछलियाँ भी मर गई हैं।
4 फिर भी कोई मनुष्य मुकदमा न करे,
कोई मनुष्य दोषारोपण न करे।
ओ पुरोहित, मुझे तुझसे शिकायत है।
5 तू दिन-दोपहर ठोकर खाता है;
और रात में नबी भी
तेरे साथ ठोकर खाता है।
तेरे अपने लोग*** नष्ट हो गए।
6 मेरे निज लोग ईश्वरीय ज्ञान के अभाव में नष्ट
हो गए।
तूने मेरा ज्ञान प्राप्त करना स्वीकार नहीं किया,
इसलिए मैं भी तुझे पुरोहित-पद पर स्वीकार
नहीं करूंगा।
तू मुझ-परमेश्वर की व्यवस्था भूल गया,
अत: मैं भी तेरे पुरोहित-वंश को भूल
जाऊंगा।
7 जैसे-जैसे पुरोहितों की संख्या बढ़ती जाती
है,
वैसे ही मेरे प्रति उनका पाप भी।
मैं उनके सम्मान को अपमान में बदल दूंगा।

** अथवा 'ज्ञान' + अर्थात् 'जिस पर दया नहीं की गई'। ++ अर्थात् 'मेरे लोग नहीं'। +++ अथवा, 'मेरे अपने लोग'।
* अर्थात् 'वह स्त्री जो परपुरुष से प्रेम करती है।'। *** अक्षरश: 'तेरी माता'

2 : 23 रोम 9 : 25; 1 पत 2 : 10 3 : 4 नि 28 : 6 3 : 5 यिर 30 : 9 4 : 1 मी 6 : 2 4 : 3 सप 1 : 3

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

8 वे मेरी प्रजा के पाप पर पलते हैं;
वे उनके अधर्म के भूखे-प्यासे हैं।
9 जो दशा लोगों की होगी वही पुरोहितों की भी
होगी!
मैं उनके आचरण के लिए उन्हें दण्ड दूंगा,
मैं उनके कामों के अनुरूप उन्हें प्रतिफल
दूंगा।
10 वे खाएंगे, पर सन्तुष्ट न होंगे।
सन्तान-उत्पत्ति के लिए अन्य देवताओं की
पूजा करेंगे,
पर उनको सन्तान न होगी;
क्योंकि उन्होंने अपनी वेश्यावृत्ति के लिए
मुझ-प्रभु को त्याग दिया है।

11 शराब, नई शराब पीने से
समझ पर परदा पड़ जाता है।
12 मेरे निज लोग काठ के पुतले से
सलाह लेते हैं,
वे पूजा के डण्डों से शकुन पूछते हैं!
वेश्यावृत्ति की आत्मा ने
उन्हें पथभ्रष्ट कर दिया है।
उन्होंने मुझ-परमेश्वर को त्याग कर
अन्य देवताओं पर विश्वास किया है।
13 वे पहाड़ी शिखर की वेदियों पर बलि चढ़ाते
हैं;
वे पहाड़ियों पर, बांज, चिनार और एला
वृक्षों के नीचे धूप जलाते हैं;
क्योंकि उन्हें इन वृक्षों की छाया भली लगती
है।
तुम्हारी पुत्रियाँ भी वेश्यावृत्ति करती हैं।
तुम्हारी बहुएँ भी व्यभिचार करती हैं।
14 पर मैं तुम्हारी पुत्रियों की वेश्यावृत्ति के लिए,
तुम्हारी बहुओं के व्यभिचार के लिए,
उन्हें दण्ड नहीं दूंगा;
क्योंकि स्वयं पुरुष वेश्याओं के साथ गमन
करते हैं।
वे देवालयों की वेश्याओं के साथ बलि
चढ़ाते हैं।
ये नासमझ लोग नष्ट हो जाएंगे।

15 ओ इस्राएल प्रदेश!
यद्यपि तूने मेरे साथ विश्वासघात किया,
तथापि यहूदा प्रदेश अधर्म न करे।
गिलगाल नगर में प्रवेश मत करो।
बेत-आवेन+ पर पूजा के लिए मत चढ़ो।
वहाँ 'जीवित परमेश्वर की सौगन्ध' मत लो।
16 हठीली कलोर के समान
इस्राएली जाति भी हठीली है।
अतः क्या अब प्रभु विशाल चरागाह में
चरते हुए मेमने के समान
उन्हें चरा सकता है? कदापि नहीं।
17 एफ्रइम मूर्तियों से चिपका है,
उसे चिपका रहने दो।
18 वे अब शराबियों का गिरोह बन गए हैं;
वे वेश्यावृत्ति में लग गये हैं।
उन्हें सम्मान से अधिक अपना अपमान प्रिय
है।
19 पवन अपने पंखों में लपेट कर उन्हें उड़ा ले
जाएगा;
वे अपने बलि-कर्मों के लिए लज्जित होंगे।

स्वधर्म त्याग के लिए इस्राएली राष्ट्र को दण्ड

5 ओ पुरोहितो, यह सुनो।
ओ इस्राएल वंश, ध्यान दे।
ओ राज-परिवार, कान दे।
तेरा न्याय किया जाएगा।
तुम मिस्पाह नगर में एक फन्दा हो,
ताबोर पर्वत पर बिछे एक जाल हो।
2 उन्होंने शिट्टीम का गड्ढा गहरा किया है!
मैं उन सब को दण्ड दूंगा।
3 मैं एफ्रइम को जानता हूं,
इस्राएल भी मुझसे छिपा नहीं है।
ओ एफ्रइम, अभी तूने वेश्यावृत्ति की है;
ओ इस्राएल, तू अशुद्ध हुआ है।
4 तेरे कर्म तुझे मुझ-परमेश्वर की ओर
लौटने नहीं देते;
क्योंकि वेश्यावृत्ति की आत्मा तेरे भीतर है।

+ अर्थात् "अधर्म का घर"; "बेतएल" के लिए निन्दात्मक प्रयोग।
4 : 10 मी 6 : 14 4 : 12 यिर 2 : 27 4 : 15 आमो 4 : 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तूने मुझ-प्रभु का अनुभव नहीं किया।

5 इस्राएल प्रदेश का अहंकार उसके मुंह पर
साक्षी दे रहा है!
एफ्रइम अपने अधर्म के कारण ठोकर
खाएगा।
यहूदा प्रदेश भी उनके साथ ठोकर खाएगा!
6 वे अपने गाय-बैल, भेड़-बकरियों को लेकर
प्रभु की खोज में निकलेंगे,
पर वे उसे पा नहीं सकेंगे,
क्योंकि प्रभु ने स्वयं को उनसे अलग कर
लिया है।
7 उन्होंने प्रभु से विश्वासघात किया है।
उन्होंने जारज सन्तान उत्पन्न की है।
अब आक्रमणकारी* उनके खेत-खलियान
खा जाएंगे।

8 गिबआ नगर में नरसिंगा फूंको।
रामा नगर में तुरही बजाओ।
बेत-आवेन में युद्ध-नाद करो :
'ओ बिन्यामिन, हम तेरे साथ हैं।'
9 मैं इस्राएली कुलों के सम्बन्ध में
यह भविष्यवाणी घोषित करता हूं,
जो सच सिद्ध होगी :
दण्ड-दिवस पर एफ्रइम पूर्णतः नष्ट होगा।
10 यहूदा प्रदेश के शासक
भूमि की सीमाओं को तोड़नेवाले बन गए हैं।
मैं उन पर जल के सदृश
अपने क्रोध की वर्षा करूंगा।
11 एफ्रइम अत्याचारी है,
वह न्याय का गला घोंट रहा है।
वह निस्सारता के पीछे हाथ धोकर पड़ा है।
12 परन्तु मैं एफ्रइम की देह में सड़ा घाव हूं,
यहूदा के घर में लगा घुन हूं!
13 जब एफ्रइम ने अपना घाव देखा,
और यहूदा ने अपना रोग,
तब एफ्रइम असीरिया देश को गया।
उसने अविलम्ब सम्राट से सहायता मांगी।
पर वह उसे स्वस्थ नहीं कर सकता है,
वह उसके घाव नहीं भर सकता है।
14 मैं एफ्रइम के लिए एक सिंह हूं;
यहूदा प्रदेश के लिए युवा सिंह हूं;
मैं, हां मैं, उन्हें फाड़ दूंगा,
मैं उन्हें मुंह में उठाकर ले जाऊंगा।
उन्हें मुझसे कोई न छुड़ा सकेगा।
15 मैं जा रहा हूं,
मैं अपने स्थान को लौट रहा हूं,
जब तक वे अपना अपराध स्वीकार न करेंगे
और मेरा दर्शन पाने का प्रयत्न न करेंगे;
जब तक अपने संकट में मुझे नहीं ढूंढ़ेंगे,
मैं उनसे विमुख रहूंगा।

इस्राएली राष्ट्र का पश्चात्ताप दिखावा मात्र है

6 लोग यह कहते हैं :
'आओ, हम प्रभु के पास लौटें।
उसने हमें क्षत-विक्षत किया है,
अब वही हमें स्वस्थ करेगा।
उसने हमें घायल किया है,
अब वही हमारे घावों पर पट्टी बांधेगा।
2 दो दिन पश्चात् वह हमें पुनर्जीवित करेगा,
और तीसरे दिन वह हमें खड़ा कर देगा,
ताकि हम उसके सम्मुख जीवित रहें।
3 आओ, हम प्रभु का अनुभव प्राप्त करें।
आओ, हम प्रभु के ज्ञान की तलाश करें।
ऊषा की तरह उसका प्रकट होना निश्चित
है।
वर्षा की बूंदों के सदृश वह हमारे पास
आएगा;
भूमि को सींचनेवाली वसंत की वर्षा
के समान वह हमारे पास आएगा।'

4 प्रभु यह कहता है : ओ एफ्रइम,
मैं तेरे साथ कैसा व्यवहार करूं?
ओ यहूदा, मैं तेरे साथ क्या करूं?
मेरे प्रति तेरा प्रेम सबेरे के बादल के समान
भाप बनकर उड़नेवाली ओस की बूंद के
सदृश क्षणभंगुर है।

---

* मूल में, 'नवचन्द्र पर्व'

5 : 6 यो 7 : 34 **5 : 10** व्य 19 : 14 **5 : 15** यिर 29 : 13 **6 : 1** यिर 30 : 10; यहेज 34 : 16 **6 : 2** 1 कुर 15 : 4 **6 : 3** नीति 2 : 1-9

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

5 अत: मैंने नबियों के माध्यम से
तेरे लोगों पर कठोर प्रहार किए;
अपने मुंह के वचनों से मैंने उनका वध किया।
सूर्य के सदृश मेरा न्याय प्रकट होता है।
6 मुझे करुणा चाहिए, पशु-बलि नहीं।
मैं अग्नि-बलि से प्रसन्न नहीं होता,
वरन् इस बात से प्रसन्न होता हूं
कि तुम मुझ-परमेश्वर का ज्ञान प्राप्त करो।
7 उन्होंने आदम घाट में विधान का उल्लंघन किया;
वहाँ उन्होंने मेरे साथ विश्वासघात किया।
8 गिलआद नगर कुकर्मियों का गढ़ है;
वह रक्त रंजित नगर है।
9 जैसे डाकू-दल मार्ग में घात लगाकर
राहगीर की प्रतीक्षा करते हैं,
वैसे ही पुरोहित भी दल बनाकर
शेकेम नगर के मार्ग पर हत्या करते हैं।
वे महापाप करते हैं।
10 इस्राएल के पवित्र स्थान में
मैंने घृणास्पद वस्तु देखी!
वहाँ एफ्रइम वेश्यावृत्ति करता है।
इस्राएल अशुद्ध हो गया है।
11 ओ यहूदा, तेरे लिए भी
दण्ड का समय निश्चित है।

इस्राएली राष्ट्र का अधर्म और विद्रोह

जब-जब मैं अपने निज लोगों की समृद्धि लौटाना चाहता हूं,
जब-जब मैं इस्राएल को स्वस्थ करना चाहता हूं,
7 तब-तब एफ्रइम का भ्रष्टाचार,
तब-तब सामरी राज्य के कुकर्म
मेरे सम्मुख प्रकट हो जाते हैं।
लोग विश्वासघात करते हैं।
चोर घरों में सेंध लगाते हैं;
और डाकू घर के बाहर लूटते हैं।
2 किन्तु वे अपने हृदय में यह नहीं विचारते,
कि मैं उनके समस्त कुकर्मों को स्मरण रखता हूं।
अब उनके कर्मों ने उन्हें चारों ओर से घेर लिया है;
उनके कर्म मेरे सम्मुख हैं।
3 वे अपने कुकर्मों से राजा को प्रसन्न करते हैं,
और अपने विश्वासघात से शासकों को।
4 वे सब व्यभिचारी हैं।
वे धधकता हुआ तन्दूर हैं;
जिसकी आग को रसोइया तब तक नहीं उकसाता
जब तक वह आटा गूंध नहीं लेता,
और आटा खमीर से फूल नहीं उठता!
5 राजा के उत्सव-दिवस पर
शासक शराब की गर्मी से बीमार पड़ जाते हैं।
राजा हास-परिहास करनेवालों के साथ
अपना भी हाथ फैलाता है।
6 षड्यंत्रकारियों के दिन
षड्यंत्र की आग में धधकते रहते हैं,
सारी रात उनका क्रोध भभकता रहता है।
सबेरे वह धधकती ज्वाला की तरह फूट पड़ता है।
7 वे सब तन्दूर की तरह भभक रहे हैं।
वे अपने शासकों को भस्म कर रहे हैं।
एक के बाद एक राजा गिरता है;
पर कोई भी मुझे नहीं पुकारता।

8 एफ्रइम अन्य राष्ट्रों में घुल-मिल गया है।
वह न घर का रहा और न घाट का*।
9 ये विदेशी राष्ट्र उसकी शक्ति चूस रहे हैं;
पर एफ्रइम यह बात नहीं जानता।
उसके सिर के बाल सफेद हो गए,
पर वह इससे अनजान है।
10 इस्राएल का अहंकार
उसके विरुद्ध गवाही दे रहा है!
फिर भी इस्राएली अपने प्रभु परमेश्वर की ओर नहीं लौट रहे हैं :
इन सब बातों के होते हुए भी
वे उसको नहीं ढूंढ़ रहे हैं।

---

* अक्षरश:, ''वह ऐसी चपाती है, जो उलट नहीं दी गई है—जो एक ही ओर सिंकी है''।

6 : 5 यिर 1 : 10; इब्र 4 : 12 **6 : 6** आमो 5 : 24; मत 9 : 13; 12 : 7 **7 : 2** भज 90 : 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

11 एफ्रइम मूर्ख और नासमझ कबूतर है;
वह सहायता के लिए पुकारता तो है
मिस्र देश को,
पर जाता है असीरिया देश के पास!
12 जब वे आएंगे
तब मैं उन पर अपना जाल फेंकूंगा।
आकाश के पक्षियों के समान
मैं उनको फंसाकर नीचे लाऊंगा।
मैं उनके कुकर्मों के लिए उन्हें दण्ड दूंगा।
13 धिक्कार है उन्हें!
वे मेरे मार्ग से भटक गए हैं।
सर्वनाश हो उनका!
उन्होंने मुझसे विद्रोह किया है।
मैं उनका उद्धार करना चाहता हूं;
पर वे मेरे विरुद्ध झूठ बोलते हैं।
14 वे हृदय से मेरी दुहाई नहीं देते;
वे शय्या पर पड़े-पड़े हाय-हाय करते हैं।
वे अन्न और अंगूर की फसल के लिए
विधर्मियों के समान
अपने शरीर को घायल करते हैं;
और यों मुझसे विद्रोह करते हैं।
15 मैंने ही युद्ध के लिए
उनकी भुजाओं को प्रशिक्षित किया था,
मैंने ही उनकी भुजाओं में बल भरा था;
फिर भी वे मेरे विरुद्ध षड्यन्त्र रचते हैं।
16 वे बअल देवता की ओर लौटते हैं;
वे धोखेबाज धनुष की तरह हैं।
उनके शासक अपने अहंकारपूर्ण वचनों के
कारण तलवार से मौत के घाट उतारे जाएंगे।
यह सुनकर मिस्र देश में
उनका मजाक उड़ाया जाएगा।

मूर्तिपूजा के लिए इस्राएली राष्ट्र को चेतावनी

8 चेतावनी के लिए नरसिंगा फूंको,
प्रभु के निवास के ऊपर एक गिद्ध मंडरा
रहा है!
ओ इस्राएलियो, तुमने मेरे विधान का
उल्लंघन किया;
मेरी व्यवस्था के विरुद्ध विद्रोह किया।
2 अब तुम मेरी यह दुहाई दे रहे हो :
'ओ परमेश्वर!
हम तुझे जानते हैं। हम तो इस्राएली हैं।'
3 तुमने भलाई को ठुकरा दिया;
अत: शत्रु तुम्हारा पीछा करेगा।

4 तुम राजा चुनते हो, पर मेरे माध्यम से नहीं।
तुम शासक नियुक्त करते हो,
पर बिना मेरी जानकारी के।
तुम अपने ही विनाश के लिए
सोना-चांदी की मूर्तियाँ बनाते हो।
5 ओ सामरी राज्य!
मैं तेरे बछड़े की मूर्तियों को ठुकराता हूं;
मेरा क्रोध तेरे विरुद्ध भड़क रहा है।
ओ इस्राएल, तू कब स्वयं को शुद्ध करेगा?
6 कारीगर ने इस बछड़े की मूर्ति बनाई है।
यह मूर्ति ईश्वर नहीं है।
सामरी राज्य का यह बछड़ा
टुकड़े-टुकड़े किया जाएगा।

7 उन्होंने हवा को बोया है,
वे आंधी को काटेंगे।
गेहूं के डंठलों में बालें नहीं फूटेंगी;
बालें फूटेंगी भी तो उनमें दाने नहीं आएंगे;
दाने आएंगे भी तो विदेशी उन्हें खा जाएंगे।
8 इस्राएली राष्ट्र हड़प लिया गया,
अन्य राष्ट्रों में उसका अस्तित्व उपेक्षित हो
गया।
9 वह जंगली गधा है,
जो रेवड़ को छोड़कर अकेला भटकता है।
वह असीरिया के पास गया था।
एफ्रइम के प्रेमी, किराए के टट्टू हैं।
10 एफ्रइम ने अन्य राष्ट्रों से
सौदेबाजी कर मित्रता प्राप्त की है;
पर मैं एफ्रइम-वासियों को
दण्डित करने के लिए एकत्र करूंगा।
वे राजाओं और शासकों को
नियुक्त करना अविलम्ब रोक देंगे।*

---

* अथवा, "के बोझ से तड़पेंगे"।

8 : 2 मत 7 : 21 8 : 4 1 रा 12 : 16-20

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

11पाप कर्म के उद्देश्य से
एफ्रइम ने वेदियों की संख्या बढ़ाई है,
ये वेदियां एफ्रइम के लिए पाप-वेदियां बन
गईं।
12यदि मैं अपनी व्यवस्था को लाखों रूप में
लिखता
तो भी वह उसके लिए अज्ञात रहती!
13इस्राएली बलि चढ़ाना पसंद करते हैं।
वे मुझे पशु-बलि चढ़ाते हैं,
और स्वयं मांस खा जाते हैं!
पर मैं-प्रभु बलि पसंद नहीं करता।
अब मैं उनके अधर्म को स्मरण करूंगा,
और उनके पाप-कर्मों के लिए उन्हें दण्ड
दूंगा।
वे मिस्र देश की गुलामी में लौट जाएंगे।
14इस्राएल अपने बनानेवाले को भूल गया;
इस्राएल ने केवल भवन बनाए!
यहूदा ने किलाबन्द नगरों की संख्या में वृद्धि
की,
मैं उसके नगरों पर अग्नि की वर्षा करूंगा,
और अग्नि उसके किलों को खण्डहर बना
देगी।

प्रभु इस्राएली राष्ट्र को पुनः दण्ड देगा

9 ओ इस्राएल, आनन्द मत मना,
अन्य राष्ट्रों के समान आनन्दित मत हो।
तूने अपने परमेश्वर को त्यागकर
अन्य देवताओं के प्रति विश्वास प्रकट किया
है। यों तूने वेश्यावृत्ति की।
तूने सभी खलियानों में
वेश्या की कमाई आनन्द से ली।
2 पर तू खलियान के अन्न से,
अंगूर के कुण्ड से भी तृप्त न होगा।
नया अंगूर-रस भी तुझे तृप्त न कर सकेगा।
3 तू मुझ-प्रभु के देश में रह न सकेगा;
ओ एफ्रइम, तुझे मिस्र देश की गुलामी में
लौटना होगा।
तू असीरिया देश में अशुद्ध वस्तुएँ खाएगा।
4इस्राएली लोग प्रभु को अंगूर-रस की पेयबलि
न चढ़ा सकेंगे।
वे प्रभु को अपने बलि-पशुओं से प्रसन्न न
कर पाएंगे।
उनकी रोटी शोक करनेवालों की रोटी बनेगी;
जो व्यक्ति उसको खाएगा, वह अशुद्ध हो
जाएगा।
उनकी रोटी केवल भूख बुझाने के काम आएगी।
उसे प्रभु के भवन में नहीं चढ़ाया जाएगा।
5वे प्रभु के निर्धारित पर्व-दिन पर,
अथवा यात्रा-पर्व के दिन क्या करेंगे?
6देखो, वे विनाश से डरकर भाग रहे हैं।
पर मिस्र देश उनको एकत्र करेगा,
और मेमफिस नगर उनको दफनाएगा!
बिच्छूपौधे उनकी चांदी की बहुमूल्य वस्तुओं
के मालिक बनेंगे,
कांटे उनके तम्बूओं पर अधिकार करेंगे!

7 दण्ड-दिवस समीप आ गए;
प्रतिकार के दिन आ गए।
इस्राएल इसका अनुभव करेगा।
तुम्हारे महा अधर्म के कारण,
तुम्हारी अत्यधिक घृणा के कारण
नबी मूर्ख बन गया है,
और जिस पुरुष पर आत्मा उतरता है,
वह पागल हो गया है।
8मेरे परमेश्वर के निज लोगों का,
एफ्रइम का प्रहरी है—नबी!
पर उसके मार्ग पर बहेलिए का जाल बिछाया
गया।
उसके परमेश्वर के भवन में घृणा फैलाई गई।
9गिबआ नगर के दिनों में
जैसे उन्होंने स्वयं को भ्रष्ट किया था,
वैसे ही उन्होंने आज बहुत भ्रष्टाचार किया
है।
प्रभु उनके अधर्म को स्मरण करेगा,
वह उनके पाप-कर्म के लिए उन्हें दण्ड देगा।
10 निर्जन प्रदेश में अंगूर के समान

अथवा, "के बोढ से तड़पेंगे" । 8 : 14 आमो 2 : 5 9 : 4 व्य 26 : 14 9 : 7 लू 21 : 22; यो 10 : 20 9 : 9 शास 19 : 22 9 : 10 व्य 32 : 10; गण 25 : 3

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मैंने इस्राएल को पाया था;
अंजीर के वृक्ष पर, उसके मौसम पर
प्रथम फल के सदृश
मैंने तुम्हारे पूर्वजों को देखा था।
जब वे बअल-पओर नगर में आए,
तब उन्होंने बअल के
सम्मुख स्वयं को अर्पित कर दिया।
जिस घृणित देवता से उन्होंने प्रेम किया,
वे उसी के समान स्वयं घृणित बन गए!
11एफ्रइम का वैभव
पक्षी के समान उड़ जाएगा;
स्त्रियों को न सन्तान होगी,
न गर्भधारण होगा और न गर्भ रहेगा।
12यदि एफ्रइम-निवासी
अपने पुत्र-पुत्रियों का पालन-पोषण कर
उन्हें बड़ा करने का प्रयत्न करेंगे,
तो मैं उनके पुत्र-पुत्रियों को
बालिग बनने के पूर्व ही समाप्त कर दूंगा।
जब मैं उनके पास से चला जाऊंगा,
उनकी दशा दयनीय होगी!
13सिंह के बच्चे केवल शिकार बनने के लिए
अपनी मांद से बाहर निकलते हैं।
ऐसे ही एफ्रइम भी केवल वध के लिए
अपने बच्चों का पालन कर रहा है।
14हे प्रभु, उनको दे..! पर क्या देगा तू उन्हें?
गर्भपात करनेवाले गर्भाशय, और सूखे स्तन!
15 उनके कुकर्मों का आरम्भ
गिलगाल नगर में हुआ था,
वहाँ से ही मैं उनसे घृणा करने लगा था।
मैं उनके कुकर्मों के कारण
अपने निवास से उन्हें निकाल दूंगा।
मैं उनसे फिर प्रेम नहीं करूंगा।
उनके सब शासक विद्रोही हैं।
16एफ्रइम का वृक्ष कट गया,
उसकी जड़ें सूख गईं।
अब उसमें फल नहीं लगेगा।
यदि एफ्रइम सन्तान उत्पन्न करेगा भी
तो मैं उसके गर्भ के प्रिय फलों का
नाश कर दूंगा।

मूर्ति पूजकों को नबी की चेतावनी

17 एफ्रइम ने मेरे परमेश्वर की बात नहीं
सुनी :
अत: वह उसको अपने देश से निकाल देगा;
वह एक राष्ट्र से दूसरे राष्ट्र में भटकता रहेगा।

10 इस्राएल एक लहलहाती दाख-लता
है। उसमें फल भी लगते हैं।
पर जैसे-जैसे उसके फलों की वृद्धि होती है
वह देवी-देवताओं की वेदियों की संख्या
बढ़ाता जाता है।
जैसे-जैसे उसका देश उन्नति करता है,
वह पूजा-स्तम्भों को सुन्दर बनाता है।
2इस्राएलियों की निष्ठा विभाजित है;
अत: अब उन्हें अपने कुकर्मों का फल
भुगतना होगा।
प्रभु उनकी वेदियों को तोड़ देगा
उनके पूजा-स्तम्भों के टुकड़े-टुकड़े करेगा।
3 अब वे यह कहेंगे, 'हमारा कोई राजा नहीं है।
हम प्रभु से नहीं डरते।
राजा? वह हमारे लिए क्या कर सकता है?'
4वे सिर्फ बातें बनाते हैं;
वे झूठी शपथ खाकर झूठा समझौता करते हैं।
जैसे जुते हुए खेतों में धतूरे के पौधे फूलते
हैं,
वैसे ही न्याय-दण्ड अंकुरित होगा!
5सामरी राज्य के निवासी
बेत-आवेन के बछड़े की मूर्ति के लिए
चिंतित हैं;
बछड़े के आराधक उसके लिए शोक मना
रहे हैं।
पुजारी मूर्ति की महिमा के लिए विलाप कर
रहे हैं;
क्योंकि वह वहाँ से निष्कासित हो गई है।
6उनके शत्रु बछड़े की मूर्ति को
असीरिया देश ले जाएंगे;
वे उसको अपने सम्राट के सम्मुख
भेंट के रूप में प्रस्तुत करेंगे।
तब एफ्रइम अपमानित होगा;

9 : 14 लू 23 : 29

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इस्राएल अपनी मूर्ति के कारण लज्जित
होगा।
7 सामरी राज्य का राजा
जल के बुलबुले के समान मिट जाएगा।
8 इस्राएल के पाप-कर्मों के चिह्न,
आवेन* के पहाड़ी शिखर की वेदियां उजड़
जाएंगी।
इस्राएल की वेदियों पर झाड़-झंखाड़ उगने
लगेंगे।
तब इस्राएली लोग पहाड़ों से कहेंगे :
'हमें ढक लो!'
और पहाड़ियों से कहेंगे, 'हम पर गिरो।'

प्रभु के दण्ड की घोषणा

9 गिबआ नगर के दिनों से
इस्राएली पाप करते आ रहे हैं;
वहाँ उन्होंने मेरे विरुद्ध विद्रोह किया था।
गिबआ में उन्हें विवश हो युद्ध करना पड़ा।
10 मैं उन कुकर्मियों को दण्ड देने के लिए आया
हूं†।
उनके विरुद्ध अनेक राष्ट्रों की सेनाएँ एकत्र
होंगी।
वे अपने पाप और विद्रोह के लिए** दण्डित
होंगे।
11 एफ्रइम सीखी हुई कलोर है,
जो अन्न दांवना पसन्द करती है।
मैंने उसकी सुन्दर गरदन पर
अब तक जूआ नहीं रखा था,
पर अब मैं एफ्रइम की गरदन पर जूआ रखूंगा;
यहूदा को खेत जोतना ही होगा।
याकूब हेंगा खींचेगा।
12 अपनी भलाई के लिए धार्मिकता के बीज
बोओ,
तब करुणा की फसल काटोगे।
अपनी परती भूमि को जोतो।
प्रभु को ढूंढ़ने का यह समय है,
जिससे वह तुम्हारे पास आए,
और तुम पर धार्मिकता की वर्षा करे।
13 तुमने अधर्म का बीज बोया था;
अत: तुमने अन्याय की फसल काटी
और झूठ का फल खाया।
तुमने अपने रथों पर भरोसा किया।
तुम्हें अभिमान है कि तुम्हारे पास
हजारों-हजार महायोद्धा हैं।
14 अब तुम्हारे नगरों में युद्ध का स्वर उठेगा;
तुम्हारे किले खण्डहर हो जाएंगे,
जैसे शल्मान ने युद्ध के दिन
बेत-अर्बेल को नष्ट किया था,
मांएं अपने बच्चों के साथ
मौत के घाट उतारी गई थीं।
15 ओ इस्राएल, तेरी घोर दुष्टता के लिए
तेरे साथ भी ऐसा ही व्यवहार किया जाएगा।
तूफान में इस्राएल के राजा का पूर्ण विनाश
होगा।

प्रभु पथभ्रष्ट लोगों पर तरस खाता है

11 जब इस्राएली राष्ट्र बच्चा ही था
तब से मैं उससे प्रेम कर रहा हूं।
मैंने मिस्र देश से उसको निकाला था
और उसको अपना पुत्र कहा था।
2 जितना अधिक मैं+ उसे बुलाता था,
वह मेरे सम्मुख से भाग जाता था।
वह बअल देवता को पशु-बलि चढ़ाता रहा;
वह मूर्तियों के सम्मुख धूप-द्रव्य जलाता
रहा।
3 मैंने ही एफ्रइम को चलना सिखाया था;
मैं उसको अपनी गोद में लेकर घुमाता था।
परन्तु वह यह नहीं जानता है कि
मैं ही उसे पाल रहा हूं।
4 मैंने ही करुणा की डोरी से,
प्रेम के बंधन से उसको अपने पास खींचा
था।
मैंने ही उसकी गरदन के जूए को हलका
किया++ था,

---

* अथवा 'अधर्म' † मूल अस्पष्ट ** अक्षरश: 'दूने अपराध के लिए' + मूल में 'वे' ++ अथवा, 'जैसे कोई शिशु को उठाकर गले लगाता है, वैसे ही मैंने उसके लिए किया'

10 : 8 लू 23 : 30; प्रक 6 : 16 10 : 11 यिर 2 : 20 10 : 12 यिर 4 : 3; 2 कुर 9 : 10 11 : 1 मत 2 : 15; नि 4 : 22 11 : 3 व्य 1 : 31 +अथवा, 'दया की भीख' ++मूल में, 'हम'

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मैंने ही झुककर उसको खिलाया था।

5 इस्राएल को मिस्र देश की गुलामी में लौटना
पड़ेगा; और असीरिया उसका राजा होगा;
क्योंकि इस्राएल मेरे पास नहीं लौटा।
6उसके नगरों में युद्ध होगा।
उनके प्रवेश-द्वारों की अर्गलाएँ टूट जाएंगी।
युद्ध उसे उसके किलों में खा जाएगा!
7मेरे अपने लोग तुले बैठे हैं
कि वे मेरे पास नहीं लौटेंगे;
अतः उनको जूए में जोता जाएगा;
उनको जूए से कोई भी अलग नहीं कर
सकेगा।*

8 ओ एफ्रइम, मैं तुझे कैसे त्याग दूं?
ओ इस्राएल, मैं तुझे कैसे शत्रु के हाथ में सौंप
दूं?
मैं तुझे कैसे अदमा नगर के सदृश राख बना
दूं?
मैं तुझे कैसे सबोईम नगर के समान नष्ट कर
दूं?
मेरा हृदय बदल गया है!
मेरी दया प्रज्वलित हो उठी है।
9मैं अपनी क्रोधाग्नि को आदेश नहीं दूंगा;
मैं एफ्रइम को पुनः नष्ट नहीं करूंगा।
मैं मनुष्य नहीं, ईश्वर हूं,
तेरे मध्य पवित्र परमेश्वर हूं।
मैं नष्ट करने के लिए
तेरे नगर में नहीं आऊंगा**।
10 इस्राएली प्रभु का अनुसरण करेंगे;
प्रभु सिंह के सदृश गर्जन करेगा।
निस्सन्देह वह गर्जन करेगा;
तब उसके पुत्र, पश्चिम से कांपते हुए आएंगे।
11वे मिस्र देश से पक्षी के समान,
असीरिया देश से कबूतर के सदृश
कांपते हुए आएंगे।
मैं उन्हें उनके देश में पुनः बसा दूंगा —
प्रभु यों कहता है।

झूठ और दमन के लिए एफ्रइम को फटकार

12† एफ्रइम ने मेरे चारों ओर
झूठ का जाल बुना है;
इस्राएल मुझसे छल-कपट करता है।
पर मैं यहूदा को जानता हूं :
वह मुझ-पवित्र परमेश्वर के प्रति सच्चा है।

12 एफ्रइम हवा को चराता है,
और दिन भर पूर्वी हवा का पीछा करता
है। वह झूठ और हिंसा की वृद्धि करता है।
वह असीरिया देश से सन्धि करता
और मिस्र देश को तेल की भेंट चढ़ाता है।

2 प्रभु ने यहूदा पर एक अभियोग लगाया है।
यह याकूब को उसके आचरण के अनुसार
दण्ड देगा;
वह उसके कार्यों के अनुरूप उसको फल
देगा।
3अपनी मां के पेट में ही
याकूब ने अपने भाई को अड़ंगा मारा था।
वह प्रौढ़ावस्था में परमेश्वर से लड़ा था।
4वह दूत से लड़ा, और उससे जीता भी था।
वह रोया, और उससे आशिष+ मांगी।
परमेश्वर बेत-एल में याकूब से मिला;
और वहां उसने याकूब++ से बात की।
5वही प्रभु है, स्वर्गिक सेनाओं का परमेश्वर,
जिसका स्मरण प्रभु-नाम से होता है।
6ओ याकूब की सन्तान,
तू अपने परमेश्वर की सहायता से लौट आ;
करुणा और न्याय का पालन कर;
अपने परमेश्वर की निरन्तर प्रतीक्षा कर।

7 एफ्रइम व्यापारी है।
उसके हाथ में खोटा तराजू है।
उसे अत्याचार पसन्द है।
8एफ्रइम ने कहा, 'अरे, मैं धनवान हूं।
मैंने अपने लिए धन कमाया है।'
पर उसकी सारी सम्पत्ति भी
उसके पाप नहीं मिटा सकती

---

* मूल अस्पष्ट ** अथवा, 'मैं क्रोध में तेरे पास नहीं आऊंगा' † मूल में 12 : 1 + अथवा, 'दया की भीख' ++ मूल में, 'हम'
11 : 8 व्य 29 : 23; यिर 31 : 20 **11 : 9** गण 23 : 19; यहेज 18 : 23 **12 : 3** उत 25 : 26; 32 : 24-26
12 : 4 उत 28 : 12 **12 : 8** प्रक 3 : 17; लू 12 : 16-21

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जो उसने किए हैं।
9मैं मिस्र देश से ही तेरा प्रभु परमेश्वर हूं।
जैसा तू निर्धारित पर्व के दिन में
तम्बूओं में रहता है
वैसा ही करने के लिए मैं तुझे विवश करूंगा।

10मैंने नबियों के माध्यम से तुझे सन्देश दिए
थे।
मैंने ही तुझे एक के बाद एक दर्शन दिए थे।
मैंने ही नबियों के द्वारा तुझे दृष्टांत दिए थे।
11यदि गिलआद में अधर्म है,
तो उनका विनाश निश्चित है।
यदि वे गिलगाल में बैल की बलि चढ़ाते हैं
तो उनकी वेदियों के ढेर लग जाएंगे,
जैसे जुते हुए खेत के समीप पत्थरों के ढेर।
12याकूब सीरिया देश को भाग गया था।
वहाँ इस्राएल ने पत्नी प्राप्त करने के लिए
गुलामी की।
स्त्री प्राप्त करने के लिए वह चरवाहा बना।
13प्रभु ने नबी के द्वारा
इस्राएल को मिस्र देश से बाहर निकाला,
नबी के द्वारा ही उसने इस्राएल को सुरक्षित
रखा।
14एफ्रइम ने प्रभु को उकसाया है
कि वह उससे बहुत नाराज हो।
अतः उसका स्वामी उसकी हत्या के लिए
उसे ही दोषी ठहराएगा!
ईश-निंदा का प्रतिफल उसके ही माथे पर
मढ़ेगा।

एफ्रइम राज्य के विनाश की भविष्यवाणी

13 जब एफ्रइम बोलता था,
तब लोग कांपते थे।
वह इस्राएली राष्ट्र में श्रेष्ठ था।
उसने बअल देवता की पूजा की,
और यों अपराध किया और मर गया।
2एफ्रइम राज्य के लोग अब भी अधिकाधिक
पाप कर रहे हैं।
वे अपने लिए देवताओं की मूर्तियाँ ढाल रहे
हैं।
ये चांदी की मूर्तियाँ
कलात्मक ढंग से गढ़ी गई हैं,
ये कारीगरी का उत्तम नमूना हैं।
लोग कहते हैं, 'इन मूर्तियों के सम्मुख बलि
चढ़ाओ।'
वे बछड़े की मूर्तियों को चूमते हैं।
3अतः वे सबेरे के कुहरे के समान
अथवा प्रातःकाल की ओस की बूंद के सदृश
लुप्त हो जाएंगे।
वे खलियान से उड़नेवाले भूसे के समान
या चिमनी से निकलनेवाले धुएँ के सदृश
उड़ जाएंगे।

4 जब तुम मिस्र देश में थे
तब से मैं तुम्हारा प्रभु परमेश्वर हूं।
तुम मेरे अतिरिक्त किसी को ईश्वर नहीं
मानते।
मेरे अतिरिक्त तुम्हें बचानेवाला कोई नहीं
है।
5निर्जन प्रदेश में, निर्जल प्रदेश में
मैंने तुम्हारी देखभाल की।
6पर चरागाह में पहुंचते ही
जब तुम्हारा गले तक पेट भर गया,
जब तुम्हारा हृदय अहंकार से फूल उठा,
तुम मुझे भूल गए।
7मैं तुम्हारे साथ सिंह-सा व्यवहार करूंगा;
मैं चीते के समान मार्ग में घात लगाकर
बैठूंगा।
8जैसे रीछनी अपना बच्चा छिनने पर
शिकारी पर टूटती है,
वैसे ही मैं तुम पर टूट पड़ूंगा
और तुम्हारा कलेजा फाड़ डालूंगा।
मैं सिंह के समान तुम्हें खा जाऊंगा,
जंगली जानवर के सदृश तुम्हें चीर-फाड़
दूंगा।

9 ओ इस्राएल, मैं तुझे नष्ट करूंगा;
तेरी सहायता कौन कर सकता है?

---

12 : 9 लेव 23 : 42-43 12 : 12 उत 29 : 1-20 12 : 13 नि 3 : 7-10; व्य 18 : 15 13 : 1 2 रा 17 : 16
13 : 5-6 व्य 8 : 11-17

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

10तुझे बचानेवाला तेरा राजा कहां है?
तेरी रक्षा करनेवाले तेरे शासक कहां हैं;
जिनके विषय में तूने मुझसे कहा था,
'हमें राजा दे; हमें शासक दे'?
11मैंने तुझे क्रोध में राजा दिए थे;
पर अब मैंने रोष में उन्हें वापस ले लिया।

12 एफ्रइम का कुकर्म गठरी में बंधा हुआ रखा है।
उसका पाप भंडारगृह में संचित है।
13प्रसव-पीड़ा उसे होती है,
पर उत्पन्न होनेवाला शिशु मूर्ख है।
वह गर्भ के मुख से बाहर ही नहीं निकलता।

14 क्या मैं उसका मूल्य चुकाकर
अधोलोक के हाथ से उसे मुक्त करूं?
क्या मैं उसे मृत्यु से छुड़ाऊं?
ओ मृत्यु, तेरी महामारियां कहां हैं?
ओ अधोलोक, कहां है तेरी संहार-शक्ति?
मेरी आंखों में दया की भावना नहीं रही।

15 एफ्रइम अपने भाई-बन्धुओं के मध्य फले-फूलेगा,
पर पूरवी वायु, प्रभु का पवन उस पर बहेगा,
वह निर्जन प्रदेश से उठेगा।
एफ्रइम का जल-कुण्ड सूख जाएगा;
उसका झरना निर्जल हो जाएगा।
वह उसके बहुमूल्य वस्तुओं का भण्डार खाली कर देगा।
16* सामरी राज्य ने अपने परमेश्वर से विद्रोह किया था,
अत: उसे अपने कुकर्म का फल भुगतना पड़ेगा।
सामरी राज्य के निवासी
तलवार से मौत के घाट उतारे जाएंगे,
शत्रु उनके बच्चों को भूमि पर पटकेंगे,
वे गर्भवती स्त्रियों का पेट चीरेंगे।

इस्राएली राष्ट्र की पश्चात्ताप-पूर्ण प्रार्थना

14 ओ इस्राएल, अपने प्रभु परमेश्वर के पास लौट!
तेरे पतन का कारण तेरा अधर्म है।
2ओ इस्राएल, प्रभु के पास लौट,
और पश्चात्तापपूर्ण प्रार्थना के साथ
उससे यह निवेदन कर:
'हे प्रभु, मेरे समस्त अधर्म को
मुझसे दूर कर,
तू केवल मेरी अच्छाई को स्वीकार कर।
तब हम बलि में
बैल नहीं, वरन् स्तुतिगान तुझे चढ़ाएँगे।
3असीरिया हमें बचा नहीं सकता;
युद्ध जीतने के लिए
अब हम अश्वों पर भरोसा नहीं करेंगे।
हाथों से बनाई गई मूर्तियों को
अब हम "अपना ईश्वर" नहीं मानेंगे।
प्रभु, तू ही हम अनाथों पर दया करता है।'

क्षमा का आश्वासन

4 प्रभु कहता है: 'मैं उनके विश्वासघात के रोग को स्वस्थ करूंगा;
मैं मुक्त रूप से उनसे प्रेम करूंगा।
मेरा क्रोध उनसे दूर हो गया है।
5मैं इस्राएल के लिए ओस की बूंद बनूंगा,
जो वनस्पति को जीवन प्रदान करती है।
वह सोसन पुष्प की तरह खिल उठेगा।
देवदार वृक्ष के सदृश वह जड़ पकड़ लेगा।
6इस्राएल कौम की शाखाएं दूर-दूर तक फैल जाएंगी,
वह जैतून वृक्ष के सदृश सुन्दर बनेगा,
लबानोन की तरह उसकी सुगंध फैलेगी।
7इस्राएली मेरे पास लौटेंगे,
वे मेरी छत्र-छाया में निवास करेंगे।
वे फिर खेती-बारी करेंगे।
वे अंगूर की बेलों के सदृश फलेंगे-फूलेंगे;
उनकी कीर्ति लबानोन देश के अंगूर-रस के समान प्रसिद्ध होगी।

* मूल में 14 : 1
13 : 11 1 शम 8 : 7; 15 : 26 **13 : 14** यश 25 : 8; 1 कुर 15 : 54 **14 : 2** इब्र 13 : 15

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

8ओ एफ्रइम, अब तेरा मूर्तियों के साथ क्या
सम्बन्ध?
मैं ही तेरी प्रार्थनाओं का उत्तर तुझे देता हूं,
मैं ही तेरी देखभाल करता हूं।
मैं सदा-बहार सनोवर वृक्ष के समान हूं;
तू मुझ से ही फल पाता है।'
9 जो मनुष्य बुद्धिमान है, वह इन बातों को
समझे।
जो व्यक्ति समझदार है,
वह इन बातों को जाने :
कि प्रभु का मार्ग सीधा है,
और धार्मिक जन उस पर चलते हैं।
पर अपराधी लड़खड़ाकर गिरते हैं।

14 : 9 प्रे 13 : 10; भज 107 : 43

नबी योएल

पुस्तक-परिचय

नबी योएल के विषय में हम अधिक नहीं जानते हैं। हम यह भी नहीं जानते हैं कि वह कब हुए थे। यह सम्भव है कि प्रस्तुत ग्रन्थ का रचना-काल ईसवी पूर्व पाँचवीं-चौथी शताब्दी हो। इस समय फारसी साम्राज्य फैला हुआ था। लेकिन यूनान देश से उसकी पराजय के सूचक-चिह्न दिखाई देने लगे थे। नबी योएल टिड्डियों के भयंकर आक्रमण तथा पलिश्ती देश के दुर्भिक्ष का वर्णन करते हैं। इन घटनाओं को नबी योएल ''प्रभु के आनेवाले दिन'' का चिह्न मानते हैं। यह प्रभु का प्रकोप-दिवस है, जब प्रभु परमेश्वर उन लोगों को दण्ड देगा जो उसकी धार्मिक इच्छा का विरोध करते हैं। नबी योएल प्रभु परमेश्वर का सन्देश इस्राएलियों को सुनाते हैं कि वे सियोन पर्वत पर मन्दिर के आंगन में आ कर पश्चात्ताप करें। परमेश्वर प्रतिज्ञा करता है कि वह उनको पुनः समृद्ध करेगा, और उनको आशिष देगा। महत्वपूर्ण पद यह है कि परमेश्वर प्रतिज्ञा करता है कि वह सब मनुष्यों पर, स्त्री-पुरुष, बाल-वृद्ध, सब पर अपना आत्मा उंडेलेगा (2 : 28)।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

टिड्डियों का प्रकोप	**1 : 1—2 : 17**
पुनः समृद्धि की प्रतिज्ञा	**2 : 18—27**
प्रभु का प्रकोप-दिवस	**2 : 28—3 : 21**

देश पर टिड्डियों का प्रकोप

1 प्रभु का यह संदेश योएल बेन-पतूएल* को
मिला :
2 'ओ वृद्धो, सुनो!
ओ देशवासियो, तुम सब ध्यान से सुनो!
क्या तुम्हारे जीवन-काल में
अथवा तुम्हारे पूर्वजों के जीवन-काल में
ऐसी विपत्ति कभी आयी थी?
3तुम अपनी सन्तान से इसकी चर्चा करो;
और तुम्हारी सन्तान अपनी सन्तान से,
और वे आगामी पीढ़ी से
इस विपत्ति का वर्णन करें।
4 जो कुतरनेवाली** टिड्डी से बचा
उसको उड़नेवाली+ टिड्डी ने खा लिया।

* अथवा, 'पतूएल का पुत्र' ** मूल में विभिन प्रकार की टिड्डियों के नाम क्रमशः 'गाजाम' + 'अर्बे'
1 : 4 व्य 28 : 38

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जो उड़नेवाली टिड्डी से बचा
उसे फुदकनेवाली* टिड्डी खा गई।
जो फुदकनेवाली टिड्डी से बचा
उसको छीलनेवाली** टिड्डी ने खा लिया।

5 ओ शराबियो, जागो, और रोओ!
ओ शराब पीनेवालो,
अंगूर-रस के लिए विलाप करो।
वह तुम्हारे मुंह से छिन गया।
6 एक राष्ट्र ने मेरे देश पर आक्रमण किया है,
वह शक्तिशाली है,
उसके पास असंख्य सेना है।
उसके सिंह के समान दांत,
और सिंहनी के समान दाढ़ हैं।
7 उसने मेरे अंगूर-उद्यान को उजाड़ दिया,
उसने मेरे अंजीर के वृक्ष काट दिए।
उसने उनकी छालें छील-छीलकर गिरा दीं,
उनकी शाखाएँ सफेद हो गईं।

8 विधवा कन्या, जिसका गौना नहीं हुआ,
कमर में टाट-वस्त्र पहिनकर
जैसे अपने युवा पति के लिए रोती है,
वैसे तुम भी रोओ।
9 प्रभु के भवन में
अब अन्नबलि और पेयबलि
अर्पित नहीं की जातीं।
प्रभु के सेवक, पुरोहित भी शोक मना रहे हैं।
10 खेत उजड़ गए, भूमि रो रही है।
अन्न नष्ट हो गया,
अंगूर की नई फसल बर्बाद हो गई।
अंजीर का तेल सूख गया।
11 ओ किसानो,
गेहूं और जौ की फसल के लिए,
तुम व्याकुल हो,
ओ अंगूर-उद्यान के मालियो, तुम विलाप
करो, खेतों की फसल नष्ट हो गई।
12 अंगूर-उद्यान सूख गए।
अंजीर के वृक्ष मुरझा गए।
अनार, खजूर, सेब, मैदान के सब वृक्ष
सूख गए।
लोगों के चेहरों पर मुर्दनी छा गई।

13 ओ पुरोहितो, पश्चात्ताप के लिए,
टाट-वस्त्र पहिनो, और रोओ।
ओ प्रभु-वेदी के सेवको, विलाप करो।
ओ मेरे परमेश्वर के सेवको,
पवित्र स्थान में जाओ,
और रात-भर पश्चात्ताप के लिए
टाट-वस्त्र पहिने रहो,
क्योंकि विपत्ति के कारण अब आराधक
तुम्हारे परमेश्वर के भवन में
अन्नबलि और पेयबलि नहीं चढ़ाते।
14 उपवास का दिन घोषित करो,
धर्म-महासभा की बैठक बुलाओ।
प्रभु परमेश्वर के भवन में
धर्मवृद्धों और देशवासियों को एकत्र करो।
सब प्रभु की दुहाई दें।

15 हाय! हाय! विशेष दिन,
प्रभु का दिन समीप आ गया।
सर्वशक्तिमान परमेश्वर की ओर से
मानो महाविनाश का दिन आ गया।
16 क्या हमारी आंखों के सामने से
भोजन की थाली नहीं हटाई गई?
क्या हमारे परमेश्वर के भवन से
हर्षोल्लास और आनन्द विदा नहीं हो गया?
17 मिट्टी के ढेलों के नीचे बीज झुलस गए।
खलियान उजड़ गए,
भण्डार-गृह खाली पड़ गए,
क्योंकि फसल बर्बाद हो गई।
18 पशु कैसे कराह रहे हैं।
रेवड़ के पशु विकल हैं,
क्योंकि उनके लिए चरागाह नहीं हैं।
भेड़-बकरियाँ भी विपत्ति का शिकार हो गईं।

19 हे प्रभु, मैं तेरी दुहाई देता हूं।
आग ने निर्जन प्रदेश के चरागाहों को भस्म
कर दिया है।

* मूल में 'येलेक' ** 'हासिल'।
1 : 5 यश 5 : 11; 32 : 10 1 : 6 प्रक 9 : 8 1 : 7 यश 5 : 6 1 : 15 यश 13 : 6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अग्नि-ज्वाला ने मैदान के वृक्षों को जला
डाला है।
20मैदान के पशु भी तेरी ओर ताक रहे हैं;
क्योंकि जल-स्रोत सूख गए,
निर्जन प्रदेश के चरागाहों को आग ने भस्म
कर दिया।

2 सियोन पर्वत पर नरसिंगा फूंको!
मेरे पवित्र पर्वत पर चेतावनी का डंका
बजाओ।
देश के सब निवासी भय से कांपें,
क्योंकि प्रभु का दिन आ रहा है,
वह समीप है।
2वह अंधकार का, घोर अंधकार का दिन है।
उस दिन बादल छा जाएंगे,
और सघन अंधकार फैल जाएगा।
गहन कालिमा के सदृश
शक्तिशाली असंख्य टिड्डी-सेना पहाड़ी पर
बिछी है।
ऐसी सेना प्राचीनकाल में न हुई थी,
और न इसके पश्चात् आगामी पीढ़ियों में
कभी होगी।

3 सेना का अग्रिम दस्ता आग है,
और पश्च दस्ता ज्वाला!
उसके आने के पूर्व
अदन-वाटिका के सदृश देश हरा-भरा था;
उसके जाने के बाद वह निर्जन, उडाड़ हो
गया।
टिड्डियों ने कुछ भी नहीं छोड़ा।

4टिड्डियों के सिर ऐसे दिखाई दे रहे हैं,
मानो अश्व आ रहे हैं।
युद्ध के घोड़ों के समान टिड्डी-दल दौड़ रहे
हैं।
5वे पहाड़ों की चोटियों पर कूद रहे हैं।
उनके पंखों की सरसराहट
रथों की खड़खड़ाहट जैसी सुनाई दे रही है;
अथवा आग में धधकती खूँटियों की
चटचटाहट है।
टिड्डी-दल मानो युद्ध में पंक्तिबद्ध असंख्य
सेना है।

6उनके सम्मुख लोग व्यथित हो गए,
सब के चेहरे पीले पड़ गए।
7योद्धा के सदृश वे आक्रमण करते,
सैनिकों के समान वे दीवार पर चढ़ते हैं।
प्रत्येक टिड्डी-दल अपने मार्ग पर जाता है;
वह अपना मार्ग नहीं बदलता।
8वह मार्ग में दूसरे से टकराता नहीं,
सब अपने-अपने मार्ग पर चलते हैं।
वे अस्त्र-शस्त्रों की बौछार को भेदते हैं,
और उन्हें कोई रोक नहीं पाता।
9वे नगर पर टूट पड़ते, वे दीवारों पर दौड़ते हैं।
वे मकानों पर चढ़ते,
और चोर के समान खिड़कियों से घर के
भीतर घुस जाते हैं।

10उनके सम्मुख पृथ्वी थर्राती है,
आकाश कांपता है।
सूर्य और चन्द्रमा काले पड़ गए, तारे बुझ
गए।
11प्रभु अपनी सेना के सम्मुख गरजता है।
उसकी सेना महाविशाल है।
प्रभु के आदेश का पालन करनेवाली सेना
शक्तिशाली है।
प्रभु का दिन महान और अति आतंकमय है।
उसको कौन सह सकता है?

प्रभु की दया

12 प्रभु का यह सन्देश है :
'अब भी तुम पूर्ण हृदय से उपवास करते,
शोक मनाते और रोते हुए मेरे पास लौटो।
पश्चात्ताप करने के लिए
13अपने वस्त्र नहीं,
वरन् अपना हृदय विदीर्ण करो।'
ओ यहूदा देश,
अपने प्रभु परमेश्वर की ओर लौट।
वह कृपालु और दयालु है।
वह विलम्ब क्रोधी और महा करुणा सागर

2 : 1 1 थिस 4 : 16 17 2 : 2 आमो 5 : 18 2 : 4-5 प्रक 9 : 7-9 2 : 10 प्रक 8 : 12; 9 : 2 2 : 11 प्रक 6 : 17 2 : 13 यश 57 : 15; 58 : 5-7; नि 34 : 6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

है। वह दु:ख देकर पछताता है।
14कौन जानता है, प्रभु लौटे और पछताए,
और अपने पीछे आशिष छोड़ जाए?
तब तुम अपने प्रभु परमेश्वर को
अन्नबलि और पेयबलि चढ़ा सकोगे।

15 सियोन पर्वत पर नरसिंगा फूंको।
उपवास का दिन घोषित करो।
धर्म महासभा की बैठक बुलाओ।
16लोगों को एकत्र करो!
आराधकों की मंडली को शुद्ध करो।
धर्मवृद्धों को एकत्र करो।
बच्चों को, दूध पीते शिशुओं को एकत्र करो।
नववधू अपनी सेज छोड़कर,
वर अपने कमरे से निकल कर आए।
17मन्दिर के आंगन और वेदी के मध्य
खड़े होकर, रोते हुए प्रभु के सेवक,
पुरोहित यह कहें :
'हे प्रभु, अपने निज लोगों पर दया कर।
अपनी मीरास को बदनाम मत कर।
वे अन्य राष्ट्रों में कहावत न बनें।
अन्य राष्ट्रों के लोग यह क्यों कहें,
"कहां है उनका ईश्वर?"',

18 तब प्रभु का अपने देश के प्रति प्रेम+ जागा,
उसने अपने लोगों पर दया की।
19प्रभु ने उनकी प्रार्थना का उत्तर दिया।
उसने कहा, 'देखो, मैं
अन्न, अंगूर-रस और जैतून का तेल
तुम्हें भेज रहा हूं।
तुम उन्हें खा-पीकर तृप्त होंगे।
मैं तुम्हें अन्य राष्ट्रों में और अधिक
बदनाम न होने दूंगा।

20 'मैं उत्तर दिशा से आई हुई सेना को
तुम्हारे पास से हटा दूंगा;
उसे शुष्क और निर्जन प्रदेश में भगा दूंगा।
उसके अग्र दस्ते को मृत सागर में,
और पश्च दस्ते को भूमध्यसागर में
डुबा दूंगा।
उससे दुर्गन्ध और सड़ायंध उठेगी;
क्योंकि मैं-प्रभु ने महाकार्य किए हैं।

21 'ओ भूमि, मत डर, प्रसन्न हो, आनन्द मना,
क्योंकि मैं-प्रभु ने महाकार्य किए हैं।
22ओ मैदान के पशुओ, मत डरो,
क्योंकि निर्जन प्रदेश के चरागाह
हरे-भरे हो गए हैं।
पेड़ में फल लगने लगे हैं।
अंजीर के वृक्ष और अंगूर की लता में
भरपूर फसल होने लगी है।

23 'ओ सियोन के निवासियो, प्रसन्न हो;
अपने प्रभु परमेश्वर में आनन्द मनाओ।
मैंने धार्मिकता के लिए तुम्हें एक गुरु* प्रदान
किया है।
फिर, मैंने तुम्हारे लिए अपार वर्षा की है।
पहले के समान
मैंने शरदकालीन और वसंतकालीन वर्षा की
है।
24खलियान अन्न से भर जाएंगे,
तेल और अंगूर-रस से मटके लबालब हो
जाएंगे।
25मेरी विशाल टिड्डी-सेना ने,
जो मैंने तुम्हारे मध्य भेजी थी,
उड़नेवाली, फुदकनेवाली, छीलनेवाली और
कुतरनेवाली टिड्डियों ने**
जितनी फसल खाई थी, उसका दुगुना मैं
तुम्हें दूंगा।
26तुम पेट-भर खाओगे, और सन्तुष्ट होगे।
तुम अपने प्रभु परमेश्वर के नाम की स्तुति
करोगे, जिसने तुम्हारे साथ अद्भुत व्यवहार
किया है।
मेरे निज लोग फिर कभी लज्जित न होंगे।
27तब तुम्हें अनुभव होगा कि मैं ही इस्राएल के
मध्य में उपस्थित हूं।

+ अथवा, 'ईर्ष्या, उत्साह' * अथवा, "शरदकालीन वर्षा" ** देखिए 1 : 4 की टिप्पणी।

2 : 14 योए 3 : 9; हाग 2 : 19 **2 : 16** 1 कुर 7 : 5 **2 : 17** नि 32 : 11; 1 मक 7 : 36-38 **2 : 19** मला 3 : 10 **2 : 23** व्य 11 : 14 **2 : 27** यश 45 : 5

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तुम जानोगे कि मैं ही तुम्हारा प्रभु परमेश्वर
हूं।
मेरे अतिरिक्त और कोई ईश्वर नहीं है।
मेरे निज लोग फिर कभी लज्जित नहीं होंगे।

प्रभु-आत्मा का अवतरण

28** 'इसके पश्चात् यह घटना घटेगी:
मैं सब मनुष्यों पर अपना आत्मा उण्डेलूंगा;
तुम्हारे पुत्र और तुम्हारी पुत्रियां नबूवत
करेंगी।
तुम्हारे वृद्धजन स्वप्न-द्रष्टा होंगे;
तुम्हारे युवक दर्शन देखेंगे।
29 उन दिनों मैं दास-दासियों पर भी
अपना आत्मा उण्डेलूंगा।
30 मैं आकाश और पृथ्वी पर
यह आश्चर्यपूर्ण चिह्न दिखाऊंगा:
रक्त, अग्नि और धुएं के स्तम्भ।
31 मुझ-प्रभु के महान और आतंकपूर्ण दिन के
आने के पूर्व
सूर्य अंधकार में बदल जाएगा, और चन्द्रमा
रक्त में।
32 उस दिन यह होगा:
जो भी व्यक्ति मुझ-प्रभु का नाम लेगा,
वह संकट से मुक्त होगा।
सियोन पहाड़ पर संकटमुक्त व्यक्ति रहेंगे।
जैसा मैंने कहा है: यरूशलेम नगर में बचे
हुए वे लोग होंगे, जिन्हें मैं-प्रभु ने बुलाया है।

प्रभु सब राष्ट्रों का न्याय करेगा।

3 ++ 'जब मैं यहूदा प्रदेश और यरूशलेम
नगर की समृद्धि लौटा दूंगा, देखो, उस
समय, उन दिनों में 2 मैं सब कौमों को एकत्र
करूंगा, और उन्हें यहोशापाट की घाटी में ले
जाऊंगा। उन्होंने मेरे निज लोग, मेरी मीरास
इस्राएल को अन्य राष्ट्रों में तितर-बितर किया
था; मेरे देश इस्राएल को आपस में बांट लिया
था, अत: मैं वहां उन कौमों का न्याय करूंगा।
3 उन्होंने मेरे निज लोगों पर चिट्ठी डालकर
उनको आपस में बांट लिया था।
वे वेश्या से सम्भोग करते और उसके बदले
में एक लड़का देते;
वे शराब पीते, और उसका मूल्य एक लड़की
देकर चुकाते थे।

4 'ओ सोर और सीदोन नगर-राज्यो,
ओ पलिश्तीन देश के पंच राज्यो!
तुम्हारा मुझसे क्या सम्बन्ध?
क्या तुम मेरे काम का प्रतिफल मुझे दोगे?
यदि तुम मुझे मेरा प्रतिफल चुका रहे हो
तो मैं अविलम्ब, तुरन्त, तुम्हारे सिर पर
तुम्हारे कामों का प्रतिफल मढ़ूंगा।
5 तुम मेरे मन्दिर का सोना-चांदी ले गए,
तुमने मेरी बहुमूल्य वस्तुएं अपने मन्दिर में
रख लीं।
6 तुमने यहूदा प्रदेश और यरूशलेम नगर के
निवासियों को यूनान देश के लोगों के हाथ
में बेच दिया।
तुमने उनके सीमा-क्षेत्र से उखाड़कर
उन्हें बहुत दूर फेंक दिया।
7 जिस देश में तुमने उन्हें बेचा है,
वहां से मैं अब उन्हें उभाड़ूंगा,
और यों तुम्हारे सिर पर
तुम्हारे कामों का प्रतिफल मढ़ूंगा।
8 मैं तुम्हारे पुत्रों और पुत्रियों को
यहूदा प्रदेश के निवासियों के हाथ में बेचूंगा
और वे उनको सुदूर राष्ट्र के हाथ में,
शबाई राष्ट्र के हाथ में बेच देंगे,
मुझ-प्रभु का यह सन्देश है।'

9 तुम राष्ट्रों में यह घोषित करो:
'युद्ध की तैयारी करो,
योद्धाओं को उत्तेजित करो।
सैनिक एकत्र हों, और वे चढ़ाई करें।
10 अपने हल की फालों से तलवार बनाओ,
अपने हंसियों को भालों में बदलो।

** मूल में अध्याय 3 : 1 ++ मूल में अध्याय 4 : 1

2 : 28-32 प्रे 2 : 17-21 **2 : 28** यो 7 : 39 **2 : 29** 1 कुर 12 : 13; गल 3 : 28 **2 : 30** मक 13 : 24 ; प्रक 6 : 12-13 **2 : 32** प्रे 2 : 21 ; रोम 10 : 13 ; ओब 17 **3 : 2** प्रक 16 : 13-16 **3 : 4-8** यश 23 ; 14 : 29-31 **3 : 10** यश 2 : 4; मी 4 : 3

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दुर्बल व्यक्ति भी यह कहे:
''मैं योद्धा हूं।'' '

11ओ चारों ओर की कौमो, अविलम्ब आओ।
वहां एकत्र हो।
हे प्रभु, अपने योद्धाओं को वहां ले जा।

12 'कौमें अपने को उत्तेजित करें,
वे यहोशापाट की घाटी में जाएं।
वहां मैं न्याय-सिंहासन पर बैठूंगा,
और चारों ओर की कौमों का न्याय करूंगा।
13फसल पक गई, उसको हंसिए से काटो।
आओ, अंगूर का रस निकालने के लिए
उनको रौंदो।
अंगूर-कुण्ड मुंह तक भरे हैं।
रस के मटके लबालब भरे हैं।
उनके पाप के घड़े भी भर चुके हैं।'
14निर्णय की घाटी में
भीड़ की भीड़ जमा हो गई।
निर्णय की घाटी में
प्रभु का दिन समीप आ गया।
15सूर्य और चन्द्रमा काले पड़ गए!
तारे बुझ गए!

यहूदा प्रदेश की जनता का उद्धार

16 प्रभु सियोन पर्वत से हुंकार रहा है,
वह यरूशलेम नगर से गरज रहा है।
आकाश और पृथ्वी कांप उठे।
प्रभु अपने निज लोगों का शरण-स्थल
है। इस्राएली कौम का वह गढ़ है।

17'तब तुम्हें अनुभव होगा,
कि मैं तुम्हारा प्रभु परमेश्वर हूं,
और मैं अपने पवित्र पर्वत
सियोन पर निवास करता हूं।
यरूशलेम पवित्र नगर बनेगा,
और उसके मार्ग से
विदेशी कभी नहीं जा सकेंगे।

18'उस दिन यह घटना घटेगी:
पहाड़ों से अंगूर-रस चूएगा,
पहाड़ियों पर दूध की नदियां बहेंगी,
यहूदा प्रदेश की बरसाती नदियां
जल से भर जाएंगी।
प्रभु के भवन से एक झरना फूटेगा,
जो शिट्टीम घाटी को सींचेगा।
19मिस्र देश और एदोम देश ने
यहूदा प्रदेश के निवासियों की हत्या की,
उन्होंने उनके देश में
निरपराध लोगों का खून बहाया,
अत: मिस्र देश उजड़ जाएगा,
एदोम देश निर्जन मरुस्थल हो जाएगा।
20पर यहूदा प्रदेश सदा आबाद रहेगा,
पीढ़ी से पीढ़ी तक यरुशलेम नगर बसा
रहेगा।
21जिन राष्ट्रों ने उनकी हत्या की है,
उनसे मैं प्रतिशोध लूंगा,
मैं उनकी हत्या के अपराध को
क्षमा नहीं करूंगा।'
प्रभु सियोन पर्वत पर निवास करता है।

---

3 : 13 मक 4 : 29 ; प्रक 14 : 15 3 : 16 आमो 1 : 2 3 : 18 यहेज 47 : 1 12; आमो 9 : 13 ; जक 14 : 8 ; प्रक 22 : 1

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नबी आमोस

पुस्तक-परिचय

बाइबिल में वर्णित नबियों के सन्देशों में सब से पहले नबी आमोस की नबूवतों को लेखबद्ध किया गया था। यद्यपि वह इस्राएल देश के दक्षिणी राज्य यहूदा प्रदेश के रहनेवाले थे, तथापि उन्होंने उत्तरी राज्य इस्राएल में परमेश्वर का सन्देश सुनाया था। वह देहात के परिश्रमी चरवाहा-किसान थे और उन्होंने विलासी नगर-वासियों को रूखे स्वर में संबोधित किया। उनका सेवा-कार्य ईसवी पूर्व आठवीं शताब्दी के मध्यकाल में, राजा यारोबआम द्वितीय के दीर्घ शासनकाल में सम्पन्न हुआ। यह काल इस्राएल देश का समृद्धि-काल था। चारों ओर शांति-सुरक्षा का वातावरण था। जनता दान-दया, भक्ति-भावना से पूर्ण थी। किन्तु नबी आमोस ने ध्यान दिया कि जो धनवान है, वही समृद्ध है। उसकी समृद्धि दरिद्रों पर निर्भर है। धनवान गरीबों का शोषण करते हैं। वे उन पर अत्याचार करते हैं। न्याय-धर्म को धारण नहीं किया जाता। व्रत-तीर्थ-पर्व आदि केवल दिखावा हैं। सुरक्षा वास्तविक नहीं है। नबी आमोस साहस-पूर्वक शोषक वर्ग से कहते हैं कि गरीबों तथा महिलाओं पर किये गये अत्याचार और व्यापक अधार्मिक आचरण के कारण इस्राएली राष्ट्र पर दण्ड-दिवस आयेगा। वह सामाजिक न्याय का सन्देश देते हैं, और जनता को आवाहन देते हैं कि "न्याय को जलधारा-सा बहने दो"। तब "सम्भवतः प्रभु परमेश्वर इस्राएल के बचे हुए, शेष वंशजों पर दया करे" (5 : 15, 24)। परिशिष्ट में नबी का संदेश दक्षिणी राज्य पर लागू किया गया है और उसे भावी पुनर्निर्माण का आश्वासन दिया गया है।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

इस्राएल प्रदेश के सात पड़ोसी देशों को दण्ड	1 : 1 — 2 : 5
इस्राएल प्रदेश को दण्ड	2 : 6 — 6 : 14
पांच दृश्य	7 : 1 — 9 : 10
परिशिष्ट : नयी आशा	9 : 11-15

परिचय

1 आमोस तकोअ गांव का एक चरवाहा था। भूकम्प के दो वर्ष पूर्व उसने इस्राएली राष्ट्र के सम्बन्ध में दर्शन देखा। उन दिनों में यहूदा प्रदेश का राजा ऊज्जियाह और इस्राएल प्रदेश का राजा यारोबआम बेन-योआश* था। आमोस के ये शब्द हैं:

2 आमोस ने कहा,
'प्रभु सियोन से हुंकार रहा है,
वह यरूशलेम से गरज रहा है।
चरवाहों के चरागाह शोक मना रहे हैं,
कर्मेल पर्वत की चोटी सूख गई है।'

इस्राएल प्रदेश के पड़ोसी देशों को दण्ड

3 प्रभु यों कहता है:
'मैं दमिश्क राजधानी के तीन अपराधों,
नहीं, उसके चार अपराधों के लिए
निस्सन्देह उसे दण्डित करूंगा:
मैं उसे नहीं छोड़ूंगा।
उसने गिलआद नगर को
दंवरी के लौह-पहियों से दांवा था।
4 मैं राजा हजाएल के राजवंश पर
अग्नि प्रेषित करूंगा;
आग उसके पुत्र बेन-हदद के गढ़ों को
भस्म कर देगी।

* अथवा, 'योआश का पुत्र'

1 : 1 2 रा 3 : 4; जक 14 : 5; 2 रा 14 : 23 1 : 2 योए 3 : 16 1 : 3-5 यश 17 : 1-3

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

5मैं दमिश्क के प्रवेश-द्वार की अर्गला को
तोड़ूंगा;
मैं आवेन घाटी के निवासियों को,
बेत-एदेन के राजदण्डधारी शासक को मिटा
दूंगा।
सीरिया देश के निवासी कीर में निर्वासित
होंगे।' प्रभु ने यह कहा है।

6 प्रभु यों कहता है:
'मैं गाजा नगर-राज्य के तीन अपराधों,
नहीं, उसके चार अपराधों के लिए,
निस्सन्देह उसे दण्डित करूंगा,
मैं उसे नहीं छोड़ूंगा।
उसने पूरी कौम को
उसकी मातृ-भूमि से निर्वासित कर
एदोम राज्य के हाथ में सौंपा था।
7मैं गाजा नगर-राज्य की शहरपनाह पर
अग्नि प्रेषित करूंगा;
वह उसके गढ़ों को भस्म कर देगी।
8मैं अश्दोद नगर-राज्य के निवासियों को,
अश्कलोन नगर-राज्य के राजदण्ड-धारी
शासक को मिटा दूंगा।
मैं एक्रोन नगर-राज्य पर हाथ उठाऊंगा।
पलिश्ती संघ-राज्य के बचे हुए निवासी भी
समाप्त हो जाएंगे।'
स्वामी-प्रभु ने यह कहा है।

9 प्रभु यों कहता है:
'मैं सोर नगर-राज्य के तीन अपराधों,
नहीं, उसके चार अपराधों के लिए
निस्सन्देह उसे दण्डित करूंगा,
मैं उसे नहीं छोड़ूंगा।
उसने पूरी कौम को कैद कर
एदोम राज्य के हाथ में सौंपा था;
और भाई-चारे के समझौते को भुला दिया
था।
10मैं सोर नगर की शहरपनाह पर
अग्नि प्रेषित करूंगा;
वह उसके गढ़ों को भस्म कर देगी।'

11प्रभु यों कहता है:
'मैं एदोम राज्य के तीन अपराधों,
नहीं, उसके चार अपराधों के लिए
निस्सन्देह उसको दण्डित करूंगा।
मैं उसे नहीं छोड़ूंगा।
एदोम ने हाथ में तलवार लेकर
अपने भाई का पीछा किया था,
उसने दया को एकदम भुला दिया था।
उसका क्रोध निरन्तर उबलता रहा,
उसने अपनी क्रोधाग्नि बुझने नहीं दी।
12मैं तेमान जिले पर अग्नि प्रेषित करूंगा;
वह बोस्रा नगर के गढ़ों को भस्म कर
देगी।'

13प्रभु यों कहता है:
'मैं अम्मोनी राष्ट्र के तीन अपराधों,
नहीं, उसके चार अपराधों के लिए
निस्सन्देह उसको दण्ड दूंगा;
मैं उसको नहीं छोड़ूंगा।
उसने गिलआद क्षेत्र तक
अपने राज्य की सीमा को बढ़ाने के लिए
युद्ध में गर्भवती स्त्रियों के पेट चीरे थे।
14मैं उसकी राजधानी रब्बा की शहरपनाह में
आग लगाऊंगा;
वह उसके गढ़ों को भस्म कर देगी।
युद्ध के दिन कोलाहल के समय,
झंझावत के दिन तूफान में यह आग लगेगी।
15उसका राजा, राजा के साथ उसके शासक भी
अपने देश से निर्वासित होंगे।'
प्रभु ने यह कहा है।

2 प्रभु यों कहता है:
'मैं मोआब राष्ट्र के तीन अपराधों,
नहीं, उसके चार अपराधों के लिए
निस्सन्देह उसको दण्ड दूंगा;
मैं उसको नहीं छोड़ूंगा।
उसने एदोम राज्य के राजा की
हड्डियां जलाकर भस्म कर दी थीं।
और यों उसका अपमान किया था।

1 : 6-8 यश 14 : 29 31 1 : 9-10 यश 23 1 : 11-12 यश 34 1 : 13-15 यिर 49 : 1 6 2 : 1-3 यश 15 16

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

2मैं मोआब देश पर अग्नि प्रेषित करूंगा;
वह करियोत नगर के गढ़ों को भस्म कर
देगी।
मोआब राष्ट्र युद्ध के कोलाहल में,
युद्धघोष और नरसिंगे के स्वर में
नष्ट हो जाएगा।
3मैं उसके मध्य से शासक को मिटा दूंगा;
शासक के साथ उच्चाधिकारियों का भी वध
कर दूंगा।' प्रभु ने यह कहा है।

4 प्रभु यों कहता है:
'मैं यहूदा प्रदेश के तीन अपराधों,
नहीं, उसके चार अपराधों के लिए
निस्सन्देह उसको दण्ड दूंगा;
मैं उसको नहीं छोड़ूंगा।
उसके निवासियों ने प्रभु की व्यवस्था को
ठुकरा दिया।
उन्होंने प्रभु की संविधियों का पालन नहीं
किया।
जैसा उनके पूर्वजों ने झूठे देवताओं का
अनुसरण किया था,
वैसा ही उन्होंने भी किया,
और उनके झूठे देवताओं ने उन्हें भटका
दिया!
5मैं यहूदा प्रदेश पर अग्नि प्रेषित करूंगा,
वह यरूशलेम नगर के गढ़ों को भस्म कर
देगी।'

इस्राएल प्रदेश का न्याय

6 प्रभु यों कहता है:
मैं इस्राएल प्रदेश के तीन अपराधों,
नहीं, उसके चार अपराधों के लिए
निस्सन्देह उसको दण्ड दूंगा;
मैं उसको नहीं छोड़ूंगा।
इस्राएल प्रदेश के निवासी चांदी के सिक्कों में
निरपराध व्यक्ति को,
केवल एक जोड़ी जूती के बदले
गरीब को बेच देते हैं!
7वे जमीन की धूल पर
निर्धन का सिर रौंदते हैं;
वे सीधे-सादे व्यक्ति को
उसके मार्ग से फेर देते हैं।
पिता और पुत्र, दोनों
एक ही कन्या से सम्भोग करते हैं।
यों उन्होंने मेरे पवित्र नाम को
अपवित्र कर दिया है।
8वे गिरवी रखे वस्त्रों को
वेदी के पास बिछाते,
और स्वयं उन पर लेटते हैं।
वे अपने परमेश्वर के मन्दिर में
जुर्माने के पैसे की शराब पीते हैं।

9 'मैंने कनान देश में उन्हें बसाने के पूर्व
एमोरी कौम को नष्ट किया था;
जिनका कद देवदार के वृक्ष के सदृश
ऊँचा था,
जो बांज वृक्ष के समान मजबूत थे।
मैंने ऊपर से उनके फलों को
और नीचे से उनकी जड़ों को नष्ट किया था।
10ओ इस्राएली कौम!
मैंने ही तुझे मिस्र देश से बाहर निकाला,
और चालीस वर्ष तक निर्जन प्रदेश में
तेरा मार्गदर्शन करता रहा
ताकि तू एमोरी कौम के देश पर कब्जा कर
सके।
11मैंने तेरे कुछ पुत्रों को नबी बनाया;
तेरे कुछ युवकों को नाजीर* बनने का अवसर
दिया।
क्या यह सच नहीं है?' प्रभु ने यह कहा है।
12 'परन्तु, तूने नाजीरों को शराब पिलाई,
जिन्हें शराब पीना मना था;
तूने नबियों को आदेश दिया,
"खबरदार! नबूवत मत करना।"

13 'देख, मैं तेरे भार के नीचे तुझे दबा रहा हूँ,

* अथवा, 'परमेश्वर के लिए समर्पित व्यक्ति' जो विशेष व्रत लेते, सिर का बाल नहीं मुंड़ाते, शराब नहीं पीते और शव स्पर्श नहीं करते थे।

2 : 4 लेव 26 : 14 **2 : 5** हो 8 : 14 **2 : 7** याक 1 : 6 **2 : 8** व्य 24 : 12-13 **2 : 9** व्य 3 : 8-11 **2 : 11** गण 6 : 1-8; व्य 18 : 18 **2 : 12** यश 30 : 10; प्रे 4 : 18

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जैसे पूलों के भार से गाड़ी नीचे दबती है।
14वेग से दौड़नेवाला धावक भी
मृत्यु की पहुंच से भाग नहीं सकेगा;
बलवान का बल भी उसके काम न आएगा;
योद्धा भी अपने प्राण को बचा न सकेगा।
15धनुर्धारी सैनिक भी टिक नहीं सकेगा;
न तेज कदमोंवाला, और न घुड़सवार
अपने प्राण बचा सकेंगे।
16उस दिन तगड़े दिलवाले भी
अपना प्राण बचाने के लिए
नंगे ही भाग जाएंगे!' प्रभु ने यह कहा है।

परमेश्वर का सन्देश सुनाना ही होगा!

3 'ओ इस्राएली कौम!
मुझ-प्रभु का यह सन्देश सुन।
मैं यह तेरे विरुद्ध,
तेरी सारी कौम के विरुद्ध सुनाता हूं,
जिसको मैं मिस्र देश से निकाल कर लाया था।
2पृथ्वी की सारी कौमों में से
मैंने केवल तुझे ही चुना था।
अत: मैं तेरे समस्त कुकर्मों के लिए
तुझे ही दण्ड दूंगा।'

3 जब तक दो व्यक्ति पहले से समझौता न करें
क्या वे एक-साथ चल सकते हैं?
4क्या सिंह बिना शिकार पाए
जंगल में दहाड़ता है?
क्या जवान सिंह भूखे पेट मांद में गुर्राता है?
5क्या पक्षी भूमि पर बिछे फंदे में बिना लासा
के फंसता है?
क्या बहेलिया पक्षी को फंदे में बिना फंसाए
ही अपने जाल को समेटता है?
6क्या यह संभव है?
नगर में नरसिंगा फूंका जाए
और नागरिक भयभीत न हों?
जब तक प्रभु किसी नगर पर विपत्ति नहीं
ढाहता
क्या उस नगर पर विपत्ति आ सकती है?
7निस्सन्देह स्वामी-प्रभु अपने सेवक नबियों
पर अपना भेद प्रकट किए बिना कोई कार्य
नहीं करता।
8जंगल में सिंह गरजा; कौन नहीं डरेगा?
स्वामी-प्रभु ने सन्देश दिया; कौन नबूवत
नहीं करेगा?

सामरी राज्य का पतन

9 असीरिया देश* के गढ़ों में,
मिस्र देश के किलों में यह घोषणा सुनाओ:
'सामरी पहाड़ियों पर एकत्र हो,
और वहाँ से सामरी राज्य के भीतर
अशान्ति का नज़ारा देखो,
अत्याचार और दमन के दृश्य देखो।'
10प्रभु का यह कथन है:
'वे सद्आचरण करना जानते ही नहीं।
उन्होंने अपने गढ़ों में
केवल हिंसा और लूट एकत्र की है।'
11अत: स्वामी-प्रभु ने यों कहा है:
'एक बैरी इस देश को घेर लेगा;
वह तेरी रक्षा-पंक्ति को छिन्न-भिन्न करेगा,
वह तेरे गढ़ों को लूटेगा।'

12प्रभु यों कहता है:
'जैसे चरवाहा सिंह के मुंह से
अपनी भेड़ के दो पैर अथवा
कान का एक टुकड़ा ही बचा पाता है,
वैसे ही प्रभु सामरी राज्य में रहनेवाले
केवल कुछ इस्राएलियों को ही बचा सकेगा;
यह अल्पांश मानो मसनद का एक कोना
अथवा पलंग के पाए का एक टुकड़ा है!'**

13स्वर्गिक सेनाओं का परमेश्वर,
स्वामी-प्रभु यों कहता है:
'सुनो, और याकूब के वंश के विरुद्ध साक्षी
दो।
14 जिस दिन मैं इस्राएली कौम को
उसके अपराधों के लिए दण्ड दूंगा,
उस दिन मैं बेतएल की वेदियों को भी दण्ड
दूंगा,

* मूल में 'अश्दोद' ** मूल अस्पष्ट

3 : 2 मत 11 : 22 3 : 6 यहेज 33 : 3 3 : 7 उत 18 : 17; यिर 7 : 25; प्रक 10 : 7 3 : 11 2 रा 17 : 6 3 : 12 नि 22 : 12 3 : 14 2 रा 23 : 15

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मैं वेदियों के कंगूरों को तोड़कर
जमीन पर फेंक दूंगा।
15मैं सामरी नगर के ग्रीष्म महल
और शीत महल को ध्वस्त कर दूंगा;
मैं हाथी-दांत से सजे भवन और
अन्य कोठियों को खण्डहर बना दूंगा।' प्रभु
ने यह कहा है।

4 ओ सामरी राज्य की समृद्ध नारियो**!
ओ सामरी पहाड़ की महिलाओ!
यह सन्देश सुनो!
तुम गरीबों का दमन करती हो,
तुम दरिद्रों को रौंदती हो।
तुम अपने पतियों+ को आदेश देती हो :
'शराब लाओ, ताकि हम पीएं।'
2स्वामी-प्रभु ने अपनी पवित्रता की यह सौगन्ध
खाई है :
'तुम्हारे ऐसे दिन आएंगे,
जब सैनिक तुम्हें कांटों से फांसकर ले जाएंगे,
और जो शेष रह जाएंगी,
उन्हें मछली के सदृश
बंसी के कांटों में फंसाकर ले जाएंगे।
3तुम शहरपनाह की दरारों से निकलोगी;
जो दरार सामने पड़ेगी, उसी से तुम्हें जाना
होगा;
तुम शत्रु के हरम में++ डाली जाओगी।'
प्रभु ने यह कहा है।

दण्ड के पश्चात् भी इस्राएली नहीं सुधरे

4'बेतएल नगर की वेदी के सम्मुख आओ,
और अपराध करो;
गिलगाल नगर की वेदी के सम्मुख आओ,
और अपराधों का ढेर लगाओ।
अपने बलि-पशु सबेरे-सबेरे,
और हर तीसरे दिन अपना दशमांश लाओ।
5स्तुति-बलि में खमीर का चढ़ावा चढ़ाओ,
स्वेच्छा-बलि घोषित करो,
लोगों में उसकी चर्चा करो।
ओ इस्राएली राष्ट्र, तुझे यही तो पसन्द है।'
स्वामी-प्रभु ने यह कहा है।

6'मैंने तुम्हारे नगरों में अकाल का प्रकोप भेजा;
तुम्हारे सब स्थानों में भोजन का अभाव
किया,
फिर भी तुम मेरी ओर नहीं लौटे।'
प्रभु ने यह कहा है।

7'फसल की कटनी के तीन महीने शेष थे,
और मैंने तुम पर वर्षा नहीं की।
मैंने एक नगर में वर्षा की,
पर दूसरे नगर को सूखा रखा।
एक खेत को पानी मिला,
पर दूसरा खेत पानी के अभाव में सूख गया।
8अत: दो-तीन नगरों के निवासी
भटकते हुए पानी की तलाश में
उस नगर में आए जहाँ पानी था।
उन्होंने पानी पिया, परन्तु वह पर्याप्त नहीं था।
फिर भी तुम मेरी ओर नहीं लौटे।'
प्रभु ने यह कहा है।

9'मैंने तुम्हारे खेतों को पाले और गेरुए कीड़े
से मारा,
तुम्हारे उद्यान, अंगूर-उद्यान उजाड़ दिए,
तुम्हारे अंजीर और जैतून के वृक्ष
टिड्डियाँ चाट गईं।
फिर भी तुम मेरी ओर नहीं लौटे।'
प्रभु ने यह कहा है।

10'मैने जैसे मिस्र देश में महामारियाँ भेजी थीं,
वैसे तुम पर भी भेजीं;
मैंने तलवार से तुम्हारे जवानों को मार डाला
तुम्हारे घोड़ों को लुटा दिया,
मैंने तुम्हारे सैनिक-शिविरों को अग्नि से
फूंक दिया;
और दुर्गंध तुम्हारी नाकों में भर गई।
फिर भी तुम मेरी ओर नहीं लौटे।'
प्रभु ने यह कहा है।

11'जैसे मैंने सदोम और गमोरा नगरों को
उलट-पुलट दिया था,

** मूल में 'बाशान क्षेत्र की गायो' + अथवा, 'उनके मालिकों' ++ मूल में 'हरमोन (पर्वत) की ओर'।
4 : 1 यश 3 : 16 24; 5 : 11-12 4 : 5 मत 6 : 2 4 : 6 प्रज्ञा 12 : 2-10 4 : 9 व्य 28 : 22 4 : 11 उत 19 : 24

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वैसे ही तुम्हारे कुछ नगरों का पूर्ण ध्वंस
किया।
तुम आग से निकाली गई लकड़ी के समान
झुलस गए।
फिर भी तुम मेरी ओर नहीं लौटे।'
प्रभु ने यह कहा है।

12 'ओ इस्राएली राष्ट्र,
निस्सन्देह मैं तेरे साथ यह व्यवहार करूंगा।
क्योंकि मैं तेरे साथ यह व्यवहार करूंगा,
इसलिए, ओ इस्राएली राष्ट्र, अपने परमेश्वर
से भेंट करने की तैयारी कर।'

13 देखो, जो पहाड़ों को आकार देता है,
और हवा को उत्पन्न करता है,
जो मनुष्य के विचारों को उस पर प्रकट
करता है,
जो प्रकाश और अन्धकार को रचता है,
और पृथ्वी के पहाड़ों पर चलता है,
वह प्रभु है। उसका नाम प्रभु, स्वर्गिक
सेनाओं का परमेश्वर है।

पश्चात्ताप की पुकार

5 ओ इस्राएल के वंशजो, यह संदेश सुनो।
यह मैं तुम्हारे विषय में कह रहा हूं। यह
एक शोक गीत है।
2 'इस्राएली राष्ट्र एक कन्या है, जो पतित हो
गई!
वह फिर कभी न उठेगी।
वह अपनी ही भूमि पर त्याग दी गई;
उसे उठानेवाला कोई नहीं है।'

3 स्वामी-प्रभु यों कहता है:
'इस्राएल के वंशज, यदि नगर से
युद्ध के लिए हजार सैनिक निकलेंगे
तो वे युद्ध के पश्चात् सौ रह जाएंगे!
यदि सौ सैनिक जाएंगे
तो बचकर केवल दस लौटेंगे।'

4 प्रभु इस्राएल के वंशजों से यों कहता है:
'मुझे खोजो तब तुम जीवित रहोगे।
5 पर तुम बेत-एल की वेदी को मत खोजो,
और न गिलगाल की वेदी को जाओ,
और न सीमा के पार बएर-शेबा को जाओ।
क्योंकि गिलगाल का निष्कासन होगा,
और बेत-एल खण्डहर बनेगा।'

6 प्रभु को खोजो तब तुम जीवित रहोगे।
ऐसा न हो कि वह यूसुफ के वंशजों पर
आग के सदृश बरसने लगे!
आग तुम्हें भस्म कर देगी।
बेत-एल में उसे बुझानेवाला कोई न होगा।
7 तुम न्याय को चिरायते-सा कड़वा बनानेवाले
लोग हो।
तुम धर्म को मिट्टी में मिलाने वाले लोग हो!

8 जो कृत्तिका और मृगशीर्ष नक्षत्रों को
बनानेवाला है;
जो मृत्यु की छाया को
सबेरे के प्रकाश में बदलता है;
जो दिन को रात के अंधकार में ढालता है;
जो सागरों के जल को भाप में बदलकर
भूमि की सतह पर वर्षा के रूप में उण्डेलता
है, उसका नाम प्रभु है।
9 वही शत्रु के गढ़ पर विनाश की वर्षा करता,
और उसके किले को खण्डहर बनाता है।

10 जो व्यक्ति कचहरी में सच्चाई से न्याय
करता है, उससे तुम घृणा करते हो;
और जो सच बोलता है, उससे नफरत।
11 तुम गरीब को रौंदते हो,
उससे भेंट के रूप में जबरदस्ती अनाज लेते
हो।
तुमने घूस की कमाई से पत्थरों के भव्य
मकान बनाए हैं;
पर तुम उन मकानों में रह नहीं सकोगे!
तुमने अंगूर के हरे-भरे उद्यान लगाए हैं;
लेकिन तुम उनका रस न पी सकोगे!
12 मैं जानता हूं कि तुमने कितने अपराध किए
हैं,
तुम्हारे पाप कितने गम्भीर हैं।

---

4 : 12 मला 3 : 2 5 : 4 हो 10 : 12 5 : 5 आमो 4 : 4; 8 : 14 5 : 8 अय्य 38 : 31

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तुम धार्मिक व्यक्ति को दु:ख देते हो,
और उससे घूस लेते हो।
तुम न्यायालय के द्वार से
दीन-हीन व्यक्ति को भगा देते हो।
13अत: समझदार व्यक्ति ऐसे समय में चुप रहेगा;
क्योंकि समय बुरा है।

14 भलाई को खोजो, बुराई को नहीं!
तब तुम जीवित रहोगे;
स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु परमेश्वर
तुम्हारे साथ रहेगा, जैसा तुमने कहा है।
15बुराई से घृणा करो, पर भलाई से प्यार!
अदालतों में न्याय को प्रतिष्ठित करो।
तब संभवत: स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु परमेश्वर
तुम, यूसुफ के शेष वंशजों पर कृपा करे।

महाविनाश का दिन

16 स्वर्गिक सेनाओं का परमेश्वर,
स्वामी-प्रभु यों कहता है:
'नगर के सब चौराहों पर रोना-पीटना होगा;
गली-गली में हाय-हाय मच जाएगी।
वे किराए पर किसानों को विलाप करने के
लिए बुलाएंगे:
वे कुशल शोक-गीत गायकों को शोक
मनाने के लिए लाएंगे।
17अंगूर के सब उद्यानों में
रोदन का स्वर सुनाई देगा;
क्योंकि मैं तुम्हारे मध्य से गुजरूंगा।'
प्रभु ने यह कहा है।

18तुम्हें धिक्कार है,
तुम प्रभु के दिन की कामना करते हो।
तुम्हें प्रभु का दिन क्यों चाहिए?
प्रभु का दिन अन्धकारमय है, ज्योतिर्मय नहीं!
19इस दिन से बचना असंभव है!
वह यों आएगा:
जैसे सिंह के सम्मुख से कोई चरवाहा भागे,
तो उसके सामने रीछ आ जाए!
अथवा जब वह झोंपड़ी में प्रवेश करे,
और दीवार पर अपने हाथ टेके
तो सांप उसको डस ले!
20 निस्सन्देह प्रभु का दिन अंधकारमय है,
ज्योतिर्मय नहीं।
घोर अंधकार, जिसमें तिलमात्र भी प्रकाश
नहीं!

प्रभु को धर्म और न्याय का आचरण चाहिए

21'मैं तुम्हारे बलि-पर्वों से घृणा करता हूँ,
मुझे वे पसन्द नहीं।
मुझे तुम्हारी धर्म-महासभाओं में कुछ भी
रुचि नहीं।
22तुम मुझे अग्नि-बलि और अन्न-बलि चढ़ाते
हो,
पर मैं उनको स्वीकार नहीं करूंगा।
सहभागिता-बलि के रूप में चढ़ाए गए
तुम्हारे मोटे-ताजे पशुओं की चर्बी पर
मैं नजर भी नहीं डालूंगा।
23मुझे अपने भजन मत सुनाओ,
उन्हें मुझसे दूर रखो;
मैं तुम्हारी सारंगी का सुर नहीं सुनूंगा।
24परन्तु न्याय को जलधारा-सा
और धर्म को निरन्तर बहनेवाले
झरने की तरह सदा बहने दो!

25 'ओ इस्राएल के वंशजो! क्या तुम्हारे
पूर्वजों ने चालीस वर्ष तक निर्जन प्रदेश में पशु-
बलि और अन्न-बलि चढ़ाई थी? कदापि नहीं!
26अत: तुम्हें अपने देवराज सक्कूत और
नक्षत्र-देवता केवान की उन मूर्तियों को ढ़ोना
पड़ेगा, जिनको तुमने अपने लिए बना रखा है*।
27मैं दमिश्क नगर के उस पार तुम्हें निष्कासित
कर दूंगा।' प्रभु ने यह कहा। प्रभु का नाम
'स्वर्गिक सेनाओं का परमेश्वर' है।

सामरी राज्य का विनाश

6 'धिक्कार है तुम्हें,
ओ राष्ट्रों के प्रमुख इस्राएली राष्ट्र के
नेताओ!

---

* अथवा, 'तुम्हें अपने राजा की छतरी को और अपनी मूर्तियों के आसन को ढोना पड़ेगा, और अपने देवताओं के उस तारे को भी जिसको तुमने अपने लिए बना रखा है'।

5 : 14 भज 34 : 12-16; मत 7 : 7 **5 : 27** नि 12 : 12 **5 : 21** यश 1 : 11; हो 8 : 13 **5 : 25** प्रे 7 : 42

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तुम्हारे ही पास इस्राएली जनता न्याय के लिए
आती है;
पर तम सियोन पर्वत पर निश्चिंत निवास करते
हो;
तुम्हें सामरी पहाड़ पर सुरक्षा का भरोसा है।
2कलनेह नगर को जाओ, और उसको देखो,
और वहाँ से महानगर हमात को।
तत्पश्चात् पलिश्ती देश के गत नगर को जाओ
क्या तुम इन नगर-राज्यों से श्रेष्ठ हो?
क्या तुम्हारी राज्य-सीमाएं
इन राज्यों की सीमाओं से बड़ी हैं?
3तुम जनता से कहते हो, 'दुर्दिन बहुत दूर हैं';
यों तुम हिंसा का शासन समीप ला रहे हो।

4 'धिक्कार है तुम्हें,
ओ हाथी-दांत के पलंग पर सोनेवालो!
शय्या पर आराम से पांव फैलाकर लेटनेवालो!
भेड़शाला के मेमनों का कोमल मांस
खानेवालो!
पशुशाला के बछड़ों का मांस खानेवालो!
5तुम सारंगी की तान पर नए-नए गीत रचते हो।
दाऊद के समान नए-नए बाजों का आविष्कार
करते हो।
6तुम प्याले-पर-प्याला शराब पीते हो;
और सर्वोत्तम तेल से सिर की मालिश कराते
हो!
पर तुम्हें यूसुफ वंश के विनाश का कुछ भी
दुःख नहीं।
7अत: तुम सबसे पहले अपने देश से निष्कासित
होगे;
पैर फैलाकर रंगरलियां मनानेवालो,
तुम्हारी रंगरलियां समाप्त हो जाएंगी!

8 स्वयं स्वामी प्रभु ने अपनी शपथ खाई है।
स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु परमेश्वर यों कहता
है: 'मैं याकूब की अहं-भावना से नफरत
करता हूं।
मैं उसके महलों से घृणा करता हूं।
मैं सामरी नगर और उसका सब कुछ
शत्रु के हाथ में सौंप दूंगा।'
9यदि किसी परिवार में दस पुरुष शेष बचेंगे,
तो वे भी मारे जाएंगे।
10मृतक पुरुष का चाचा
और शव पर मसाला लगानेवाला**
उसको उठाएंगे, और गाड़ने के लिए
घर से बाहर ले जाएंगे।
वे घर के कोने में छिपे हुए व्यक्ति से
पूछेंगे, 'क्या वहां और है?'
वह उत्तर देगा, 'नहीं।'
वह आगे कहेगा, 'चुप रहो!
क्योंकि प्रभु का नाम उच्चरित नहीं होना
चाहिए।'

11देखो, प्रभु के आदेश से
ऊँचे भवन ध्वस्त हो जाते हैं,
और छोटे मकान टुकड़े-टुकड़े।
12क्या घोड़े चट्टानों पर दौड़ते हैं?
क्या बैलों से समुद्र पर हल चलाया जाता है?
परन्तु तुमने न्याय-व्यवस्था को जहर,
और धर्म को चिरायता-सा कड़ुवा बना दिया
है।
13तुम व्यर्थ ही प्रसन्न हो रहे हो,
और अहंकार में डूबे हुए यह कह रहे हो,
'हमने अपने बल से करनईम नगर जीता
है।'
14'ओ इस्राएल! मैं तेरे विरुद्ध
एक राष्ट्र को खड़ा करूंगा।
वह तुझे हमात नगर के प्रवेश द्वार से
अराबा घाटी के मार्ग तक तंग करेगा।'
स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु परमेश्वर ने यह
कहा है।

विनाश के तीन दृश्य

7 स्वामी प्रभु ने मुझे यह दृश्य दिखाया: जब
राजा के चारे की फसल के बाद रबी फसल
में अंकुर फूटने लगे, तब टिड्डी-दल उन पर
छा गया। 2जब टिड्डियाँ भूमि की घास-पात
को चट कर गईं तब मैंने कहा, 'ओ स्वामी-
प्रभु! कृपया क्षमा कर। इस विनाश के बाद

** अथवा, 'द्रव्य जलानेवाला'

6 : 10 सफ 1 : 7 7 : 2 यिर 18 : 20

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

याकूब कैसे खड़ा हो सकेगा ? वह बहुत छोटा
है।'
3 विनाश के सम्बन्ध में प्रभु को पश्चात्ताप
हुआ। स्वामी-प्रभु ने कहा, 'अब ऐसा न होगा।'
4 स्वामी-प्रभु ने मुझे यह दृश्य दिखाया: मैंने
देखा कि प्रभु दण्ड देने के लिए आग को बुला
रहा है। आग ने अतल सागर को सुखा दिया।
तब वह भूमि को भस्म करने लगी।
5 मैंने कहा, 'ओ स्वामी-प्रभु! कृपया, दण्ड
देना रोक दे। इस विनाश के बाद याकूब कैसे
खड़ा हो सकेगा ? वह बहुत छोटा है।'
6 विनाश के सम्बन्ध में प्रभु को पश्चात्ताप
हुआ। स्वामी-प्रभु ने कहा, 'अब यह भी न
होगा।'
7 स्वामी-प्रभु ने मुझे यह दृश्य दिखाया: मैंने
देखा कि स्वामी एक ऊँची दीवार* के पास
खड़ा है। उसके हाथ में साहुल है। [8]प्रभु ने मुझसे
पूछा, 'आमोस, तू क्या देख रहा है ?' मैंने उत्तर
दिया, 'एक साहुल।' तब स्वामी ने कहा, 'देख,
मैं अपने निज लोग इस्राएल की सीधाई नापने
के लिए साहुल लगाऊंगा। अब मैं उन्हें बिना
दण्ड दिए नहीं छोड़ूंगा। [9]इसहाक की पहाड़ी
शिखर की वेदियाँ उजड़ जाएंगी। इस्राएल के
पवित्र स्थान खण्डहर बन जाएंगे। मैं हाथ में
तलवार ले यारोबआम राजवंश के विरुद्ध खड़ा
होऊंगा।'

नबी आमोस और पुरोहित अमस्याह

10 बेत-एल की वेदी के पुरोहित अमस्याह
ने राजा यारोबआम के पास यह सन्देश भेजा,
'आमोस आपके विरुद्ध इस्राएल प्रदेश के
लोगों में षड्यन्त्र रच रहा है। अब देश उसके
शब्दों को और अधिक नहीं सह सकता।
[11]आमोस यों कहता है: ''यारोबआम तलवार
से मृत्यु के घाट उतारा जाएगा। इस्राएली
निस्सन्देह अपने देश से निष्कासित होंगे।'' '
12 अमस्याह ने आमोस से कहा, 'द्रष्टा,
अपना प्राण बचाकर यहूदा प्रदेश भाग जा। वहीं
अपना गुजारा करना और वहीं नबूवत करना।
[13]बेत-एल की वेदी राज-वेदी है। यह इस्राएल
राज्य का राज-मन्दिर है। यहाँ फिर कभी
नबूवत मत करना।'
14 आमोस ने अमस्याह को यह उत्तर दिया,
'न तो मैं नबी था, और न नबी का पुत्र*। मैं मात्र
एक चरवाहा था, और गूलर वृक्षों के फल
इकट्ठा कर उन्हें बेचता था। [15]मैं रेवड़ को
चराता था। प्रभु ने मुझे अपना नबी बनाने के
लिए वहां से चुना। उसने मुझे यह आदेश दिया,
''जा, मेरे लोग इस्राएलियों का नबी बन।''
16 'अब तुम प्रभु का यह संदेश सुनो:
तुमने मुझसे यह कहा कि
मैं इस्राएलियों को नबूवत नहीं सुनाऊँ,
मैं इसहाक वंशियों के विरुद्ध प्रवचन नहीं
सुनाऊँ।
[17]अत: प्रभु यों कहता है:
तेरी पत्नी इस नगर में वेश्या बनेगी।
तेरे पुत्रों और पुत्रियों का तलवार से वध
किया जाएगा।
तेरी भूमि को डोरी से नापकर आपस में बांट
लिया जाएगा।
तू स्वयं अपवित्र देश में मरेगा।
इस्राएली निस्सन्देह अपने देश से निष्कासित
होंगे।'' '

विनाश का चौथा दृश्य

8 स्वामी-प्रभु ने मुझे यह दृश्य दिखाया:
ग्रीष्म ऋतु के पके हुए फलों की एक
टोकरी है। [2]प्रभु ने मुझसे पछा, 'आमोस, तू
क्या देख रहा है ?' मैंने उत्तर दिया, 'ग्रीष्म ऋतु
के पके हुए फलों की एक टोकरी।' तब प्रभु
ने मुझ से कहा, 'मेरे लोग इस्राएलियों के दिन
पक गए। अब मैं उन्हें बिना दण्ड दिये नहीं
छोड़ूंगा। [3]उस दिन मन्दिर के स्तुति-गीत
शोक-गीत में बदल जाएंगे।' स्वामी-प्रभु ने
यह कहा है, 'असंख्य लाशें पड़ी होंगी। सब
जगह मौत का सन्नाटा होगा।'।

---

* अक्षरश: 'साहुल की दीवार' अथवा 'टिन धातु की दीवार'।, अथवा 'न तो मैं नबी हूँ, और न नबी दल का सदस्य'

7 : 3 योए 1 : 4 7 : 7 यश 30 : 13; शोक 2 : 8 7 : 9 2 रा 15 : 10 7 : 10 2 रा 14 : 23 7 : 13 आमो 2 : 12
7 : 14 आमो 1 : 1; 3 : 8 ; 2 रा 2 : 5; जक 13 : 5 8 : 2 प्रक 14 : 15

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इस्राएल का विनाश समीप है

4ओ निर्धनों को रौंदनेवालो,
ओ गरीबों को मृत्यु के घाट उतारनेवालो, यह सुनो:
5तुम चाहते हो कि नवचन्द्र पर्व कब खत्म हो,
और तुम अनाज बेचो।
विश्राम दिवस कब बीते,
और तुम गेहूं को बेचना आरंभ करो।
तुम अनाज मापने की माप को छोटा रखते हो,
पर जब खरीदार से तौलकर मुद्राएं लेते हो तो तौल को भारी कर देते हो!
तुम खोटी तराजू रखकर खरीदारों को ठगते हो।
6तुम गरीब को चांदी से
और निर्धन को एक जोड़ी जूतों के दाम पर खरीदते हो।
तुम घुन लगा गेहूं बेचते हो।

7 प्रभु ने याकूब के अहं की शपथ खाई है:
'मैं निस्सन्देह तुम्हारे किसी काम को कभी न भूलूंगा।'
8क्या इस कारण भूमि कंपित न होगी?
क्या इस धरती पर रहनेवाले विलाप न करेंगे?
यह प्रदेश नील नदी की बाढ़ के समान,
उफनेगा, उछलेगा:
और मिस्र देश की नील नदी के समान
वह फिर शान्त हो जाएगा।'

9 स्वामी-प्रभु यह कहता है:
'उस दिन मैं दोपहर को सूर्यास्त कर दूंगा;
दिन-दहाड़े समस्त पृथ्वी पर
अंधकार छा जाएगा।
10मैं तुम्हारे आनन्द के उत्सव-पर्वों को
शोक-दिवसों में परिणत कर दूंगा;
मैं तुम्हारे स्तुति गीतों को विलाप गीतों में बदल दूंगा।
शोक प्रदर्शित करने के लिए
तुम-सबको कमर में टाट के वस्त्र पहनने पड़ेंगे,
तुम्हें सिर मुंड़ाना होगा।
मैं तुमसे ऐसा शोक कराऊंगा,
जैसा इकलौते पुत्र का मृत्यु शोक होता है।
वह दिन अन्त तक भयावह होगा।'

11स्वामी-प्रभु यह कहता है:
'देखो, वह समय आ रहा है
जब मैं तुम्हारे देश पर अकाल भेजूंगा;
पर यह अकाल न रोटी का होगा,
और न पीने के पानी का,
वरन् प्रभु के शब्दों का अकाल!
लोग प्रभु का शब्द सुनने को तरसेंगे।
12वे एक सागर से दूसरे सागर को,
उत्तर से पूर्व को जाएंगे,
वे प्रभु के शब्द की तलाश में
एक स्थान से दूसरे स्थान को भटकेंगे,
पर वे उसको न सुन सकेंगे।
13उस दिन सुन्दर कन्याएं,
और जवान पुरुष भी प्यास से मर जाएंगे।
14 जो लोग सामरी राज्य के देवता
अशीमा की शपथ खाते हैं,
जो यह कहते हैं, 'हे दान,
तेरे जीवित देवता की कसम,'
'हे बएर-शेबा, तेरे इष्ट देवता की शपथ,'
उनका पतन होगा, वे फिर उठ नहीं सकेंगे।

प्रभु के दण्ड से बचना असंभव है: पांचवां दृश्य

9 मैंने प्रभु को वेदी के समीप खड़े हुए देखा। उसने आदेश दिया,
'खम्भों के शीर्ष पर प्रहार कर
ताकि ड्योढ़ियाँ हिलने लगें;
तू खम्भों को ध्वस्त कर;
उन्हें लोगों के सिर पर गिरा।
जो उससे बच जाएंगे, मैं उनको
तलवार से मौत के घाट उतारूंगा।
उनमें एक भी व्यक्ति नहीं बचेगा।
वह प्राण बचाकर भाग न सकेगा।
2यदि वे गड्ढा खोदकर अधोलोक में छिपेंगे
तो मैं अपना हाथ बढ़ाकर
उन्हें वहां से खींच लूंगा।

---

8 : 5 मी 6 : 10 8 : 8 आमो 9 : 5 8 : 10 यिर 6 : 26; जक 12 : 10; यश 3 : 24 8 : 11 व्य 8 : 3; मत 5 :6
9 : 2 भज 139 : 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यदि वे आकाश में चढ़ेंगे
तो मैं उन्हें पकड़कर धरती पर उतार दूंगा।
3यदि वे कर्मेल पर्वत के शिखर पर छिपेंगे
तो मैं वहां भी उन्हें खोज कर पकड़ लूंगा।
यदि वे मेरी आंखों से छिपकर
सागर के तल में चले जाएंगे,
तो मैं सर्प को आदेश दूंगा,
और वह उनको डस लेगा।
4यदि उनके शत्रु उनके देश से
उन्हें निर्वासित कर अपने देश में ले जाएंगे,
तो मैं तलवार को आदेश दूंगा,
और वह उनको मौत के घाट उतार देगी।
मैं उनकी भलाई के उद्देश्य से नहीं,
वरन् हानि पहुँचाने के लिए
उन पर दृष्टिपात करूंगा।'

5 स्वर्गिक सेनाओं के स्वामी-प्रभु के स्पर्श से
धरती पिघलती है,
और उस पर रहनेवाले सब शोक करते हैं।
नील नदी की बाढ़ के समान धरती उछलती;
और मिस्र देश की नील नदी के समान वह
फिर शान्त हो जाती है।
6प्रभु ने स्वर्ग में अपने उपरले कक्ष बनाए हैं,
उसने आकाशमण्डल को पृथ्वी पर खड़ा
किया है।
वह सागर के जल को भाप के रूप में बुलाता
है,
और फिर वर्षा के रूप में उसको
पृथ्वी की सतह पर उण्डेल देता है।
उसका नाम प्रभु है।

7 'ओ इस्राएल वंशियो,
तुम मेरे लिए इथियोपिओं के समान हो।'
प्रभु यह कहता है, 'क्या मैंने तुम्हें मिस्र देश
से,
पलिश्तियों को कफ्तोर देश से
सीरिया-वासियों को कीर देश से
नहीं निकाला था?
8देखो, मैं तुम्हारा स्वामी-प्रभु,
तुम्हारे पापमय राज्य को देख रहा हूं।
मैं पृथ्वी की सतह से
तुम्हारे राज्य को मिटा दूंगा।
पर हां, मैं याकूब वंश को
पूर्णतः नष्ट नहीं करूंगा।' प्रभु ने यह कहा है।

9 'मैंने यह निश्चय किया है:
मैं इस्राएली राष्ट्र को अन्य राष्ट्रों में
सूपे से छानूंगा;
जैसे तुम छलनी से गेहूं और कंकड़ छानते हो,
और एक भी कंकड़ भूमि पर नहीं गिरता।
10मेरी प्रजा में उपस्थित समस्त पापी
तलवार से मौत के घाट उतारे जाएंगे।
वे यह दावा करते हैं:
"संकट हम पर नहीं आएगा,
अनिष्ट हमारे पास तक नहीं फटकेगा।" '

इस्राएल का पुनः निर्माण

11 'उस दिन मैं दाऊद की ध्वस्त झोपड़ी को
खड़ा कर दूंगा,
मैं उसकी दीवारों की दरारों को भरूंगा,
उसके मलवे को उठाऊंगा,
और प्राचीनकाल के समान
उसका पुनः निर्माण करूंगा।
12तब दाऊद के वंशज शेष एदोम-वंशियों पर,
और मेरे कहलानेवाले सब राष्ट्रों पर अधिकार
करेंगे।' प्रभु ने यह कहा है,
वह निस्सन्देह अपना यह वचन पूरा करेगा।

13प्रभु यह कहता है:
'देखो, समय आ रहा है जब हरित क्रांति
होगी,
फसल काटनेवाला कटाई समाप्त भी न कर
पाएगा कि हल चलानेवाला आ पहुँचेगा;
बीज बोनेवाले की बोआई पूरी भी न होगी
कि दाखरस निकालने वाला आ जाएगा,
पहाड़ों से मीठा अंगूर-रस टपकेगा,
और सब पहाड़ियां उसमें डूब जाएंगी।
14मैं अपने निज लोग इस्राएलियों की समृद्धि
लौटा दूंगा।

9 : 3 यिर 23 : 24 9 : 10 यश 28 : 15 9 : 11 प्रे 15 : 16 9 : 12 गण 24 : 18 9 : 13 लेव 26 : 5; योए 3 : 18 9 : 14 यश 61 : 4; हो 14 : 7

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वे उजाड़ नगरों का पुनःनिर्माण करेंगे,
और उनको आबाद करेंगे।
वे अंगूर-उद्यान लगाएंगे,
और उनके फलों का रस पीएंगे।
वे साग-सब्जी के बगीचे लगाएंगे,
और उनके फल खाएंगे।
15मैं उनके देश में उन्हें पुनः रोपूंगा।
जो देश मैंने उन्हें दिया है,
उन्हें वहां से फिर कभी नहीं उखाड़ूंगा'
तुम्हारे प्रभु परमेश्वर ने यह कहा है।

नबी ओबद्याह

पुस्तक-परिचय

इक्कीस पदों की इस अत्यंत संक्षिप्त पुस्तिका का रचनाकाल अज्ञात है। समझा जाता है कि ईसवी पूर्व 586 में यरूशलेम के पतन के पश्चात् यह लिखी गयी थी। इस्राएल के दक्षिण-पूर्व दिशा में स्थित एदोम राज्य, जो यहूदा प्रदेश का जन्म-जात शत्रु था, यहूदा प्रदेश के पतन से बहुत प्रसन्न हुआ। उसने इस अवसर से लाभ उठाया। उसने यरूशलेम नगर को लूटा और आक्रमणकारियों की सहायता की।

एदोम का पूर्वज ''एसाव'' माना जाता था, जो ''याकूब'' अर्थात् इस्राएल का भाई था। नबी ओबद्याह ने नबूवत की कि ''एदोम'' को इस भ्रातृ-हत्या के दुष्कर्म के लिए दण्ड मिलेगा। वह पराजित होगा। उन सब राष्ट्रों को भी दण्ड मिलेगा जो शत्रुभाव से दूसरे राष्ट्र पर भ्रातृ-घातक आक्रमण करते हैं!

विषय-वस्तु की रूपरेखा

एदोम का पतन	**पद 1—14**
प्रभु का प्रकोप-दिवस	**पद 15—21**

एदोम का पतन

1 ओबद्याह का दर्शनः
प्रभु ने हमें यह संदेश दिया।
स्वामी-प्रभु ने एदोम राष्ट्र के संबंध में यों कहाः
'मैंने राष्ट्रों में इस समाचार के साथ एक दूत भेजा है :
''युद्ध के लिए तत्पर हो।
एदोम से युद्ध करने के लिए तैयार हो।''
2ओ एदोम, मैं तुझे विश्व के राष्ट्रों में अत्यन्त तुच्छ बनाऊंगा।
तुझसे सब राष्ट्र अत्यधिक घृणा करेंगे।
3ओ पहाड़ों की कंदराओं में रहनेवाले,
ओ ऊंचे स्थानों में निवास करनेवाले,
तेरे हृदय के घमण्ड ने तुझे धोखा दिया।
तू अपने हृदय में यह कहता थाः
''कौन मुझे जमीन पर उतार सकता है?''
4यद्यपि तू बाज के समान ऊंचा उड़ता है;
यद्यपि तेरा घोंसला तारों के मध्य है;
तो भी मैं तुझे जमीन पर उतारूंगा।'
प्रभु ने यह कहा है।

5 'यदि चोर तेरे घर में घुसते,
या लुटेरे रात में डाका डालते,
तो वे इतना ही लूटते
जितना उनके लिए काफी होता!
यदि अंगूर तोड़नेवाले तेरे पास आते
तो वे निस्सन्देह कुछ छोड़ देते।
6किन्तु उन्होंने एसाव को कितनी बुरी तरह लूटा!

पद 1 – 21 यश 34 1 यिर 49 : 14 3 यश 14 : 13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उसके खजाने कैसे ढूँढ़ कर निकाले गए।
7 तेरे सब सन्धिबद्ध राजाओं ने तुझे धोखा दिया;
उन्होंने तुझे सीमा तक खदेड़ दिया।
तेरे संघ के राजा तुझ पर प्रबल हो गए।
जो तेरे साथ तेरी थाली में भोजन करते थे,
उन्होंने तुझे फांसने के लिए जाल बिछाया है।
वे तेरे विषय में कहते हैं:
''उसमें कुछ समझ नहीं है।''
8 मैं-प्रभु यह कहता हूँ : उस दिन मैं
एदोम राष्ट्र में बुद्धिमान मनुष्यों का अन्त कर
दूंगा; एसाव पर्वत से समझ को हटा दूंगा।
9 ओ तेमान नगर,
तेरे योद्धाओं का साहस समाप्त हो जाएगा।
अत: एसाव पर्वत के निवासी कट-कट कर
गिरेंगे।
10 'ओ एसाव, तूने अपने भाई याकूब के साथ
हिंसापूर्ण व्यवहार किया था।
अत: लज्जा से तुझे सिर झुकाना होगा;
तू सदा-सर्वदा के लिए नष्ट हो जाएगा।
11 जिस दिन विदेशी राष्ट्र तेरे भाई की सम्पत्ति
लूट कर ले गए,
जिस दिन विदेशी सैनिक
उसके नगर के प्रवेश-द्वारों में घुसे थे,
यरूशलेम को परस्पर बांटने के लिए
उन्होंने चिट्ठी डाली थी,
उस दिन तू अलग खड़ा था,
मानो तू भी उन लुटेरों में एक था।
12 अपने भाई के दुर्दिन में, उसके संकट के दिन में
तू उसकी ओर ताकता भर रहा।
यहूदा प्रदेश के विनाश के दिन
तुझे आनन्दित नहीं होना था।
उनके संकट के दिन तुझे डींग नहीं मारना
था।
13 जब मेरे निज लोग संकट में थे,
उस दिन तुझे उनके नगर में प्रवेश नहीं करना
था।
उनके विपत्ति के दिन
तुझे उनकी ओर केवल ताकना नहीं था।
जब उन पर विपत्ति आई थी,
तब तुझे उनकी धन-सम्पत्ति लूटनी नहीं थी।
14 जब वे प्राण बचाकर भाग रहे थे
तब तुझे चौराहे पर खड़े होकर
भागनेवालों का वध नहीं करना था।
तुझे संकट के दिन
अपने बचे हुए जाति-भाइयों को
शत्रु के हाथ में नहीं सौंपना था।
15 'प्रभु का दिन समस्त राष्ट्रों के समीप आ
पहुंचा।
और एसाव, जैसा तूने अपने भाई के साथ
किया, वैसा ही तेरे साथ किया जाएगा।
तेरे दुष्कर्म तेरे सिर पर ही पड़ेंगे।

इस्राएल का पुन: प्रतिष्ठित होना

16 'इस्राएल, जैसा तूने मेरे पवित्र पर्वत पर
मेरे क्रोध का प्याला पीया,
वैसा ही तेरे चारों ओर के राष्ट्र पियेंगे;
वे पियेंगे, और लड़खड़ा कर गिरेंगे।
उनका अस्तित्व भी समाप्त हो जाएगा।
17 सियोन पर्वत पर बचे हुए लोग निवास करेंगे।
सियोन पर्वत पुन: पवित्र होगा,
याकूब वंशीय पुन: अपना अधिकार प्राप्त
करेंगे।
18 याकूब वंश अग्नि के सदृश होगा,
और यूसुफ वंश एक ज्वाला।
एसाव वंश भूसा होगा।
वे उसमें आग लगाएंगे
और उसको भस्म कर देंगे।
एसाव वंशीय एक भी व्यक्ति शेष नहीं
रहेगा। प्रभु ने ऐसा ही कहा है।
19 नेगेब क्षेत्र के लोग
एसाव पर्वत पर अधिकार करेंगे;
शफेलाह क्षेत्र के लोग
पलिश्ती देश पर अधिकार करेंगे।
वे एफ्रइम प्रदेश तथा सामरी प्रदेश पर भी
अधिकार करेंगे।

---

* मूल में, ''इस्राएल के पुत्रों की सेना''
17 योए 2 : 32 **21** मी 4 : 7

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बिन्यामिन कुल गिलआद क्षेत्र पर अधिकार
करेगा।
20इस्राएली जो हाला जिले में बन्दी थे,
वे कनान देश से सारफत नगर तक अधिकार
करेंगे।
यरूशलेम निवासी, जो सपाराद नगर में हैं,
वे नेगेब क्षेत्र के नगरों पर अधिकार करेंगे।
21बचाये हुए व्यक्ति सियोन पर्वत पर जाएंगे,
और वे एसाव पर्वत पर शासन करेंगे।
यह राज्य प्रभु का होगा।'

नबी योना

पुस्तक-परिचय

प्रस्तुत नबी-ग्रंथ बाइबिल में संकलित नबी-ग्रंथों से भिन्न है। यह भिन्नता इस अर्थ में है कि प्रस्तुत पुस्तिका में एक जीवन-वृतांत को सन्देश माना गया है। उसमें एक ऐसे नबी के पलायन एवं उसके जीवन में घटी घटनाओं का विवरण दिया गया है, जो परमेश्वर के आदेश की उपेक्षा कर उससे भागता है। परमेश्वर ने नबी योना को आदेश दिया कि वह असीरियाई साम्राज्य की राजधानी नीनवे महानगर जाएं। असीरियाई साम्राज्य इस्राएल का कट्टर दुश्मन था। नबी योना परमेश्वर का सन्देश सुनाने के लिए नीनवे नहीं जाना चाहते। परमेश्वर ने नबी योना को यह सन्देश सुनाने को कहा था कि यदि नीनवे-निवासी पश्चत्ताप नहीं करेंगे, तो वे नष्ट कर दिये जायेंगे। पर नबी योना भागते हैं। तब उनके जीवन में एक-के-बाद-एक नाटकीय घटनाएं घटती हैं, और अन्त में वह मन मारकर परमेश्वर के आदेश का पालन करते हैं। किन्तु जब नबी योना द्वारा दिया गया महानगर के विनाश का सन्देश पूरा नहीं होता, परमेश्वर नीनवे को दण्ड नहीं देता, तब नबी योना परमेश्वर से नाराज हो जाते हैं।

वास्तव में, जब पांचवीं सदी ईसवी पूर्व में इस ग्रंथ की रचना हुई, तब नीनवे का विनाश हो चुका था; परन्तु वह दुष्टता का प्रतीक बना रहा।

यह लघु ग्रंथ सिखाता है कि समस्त सृष्टि पर परमेश्वर की सर्वोच्च सत्ता है। वह प्रेम का परमेश्वर है। वह सब पर करुणा करता है। वह किसी का विनाश नहीं चाहता है। वह दण्ड देना नहीं चाहता है। वह सब को क्षमा करता, और बचाता है।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

नबी योना को आवाहन तथा उनका पलायन	**1 : 1 — 17**
नबी योना का पश्चात्ताप-पूर्ण स्तुतिगान तथा छुटकारा	**2 : 1 — 10**
नीनवे महानगर के विरुद्ध नबूवत	**3 : 1 — 10**
परमेश्वर का एक उदाहरण द्वारा योना को समझाना	**4 : 1 — 11**

नबी योना का भागना

1 योना बेन-अमित्तय* को प्रभु का यह
सन्देश मिला: 2'तैयार हो, और महानगर
नीनवे को जा। उसके विरुद्ध सन्देश सुना;
क्योंकि उसके नागरिकों के दुष्कर्मों की चर्चा
मुझ तक पहुंची है।' 3योना उठा। वह प्रभु के
सम्मुख से भागा। वह समुद्र पार तर्शीश नगर
जाने के लिए याफा बन्दरगाह गया। वहां उसे
एक जलयान मिला जो तर्शीश नगर जा रहा था।
अत: उसने जलयान का किराया चुकाया, और

* अर्थात् "अमित्तय का पुत्र"
1 : 1 2 रा 14 : 25

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उस पर चढ़ गया। वह नाविकों के साथ तर्शीश
नगर जाना चाहता था ताकि वह प्रभु के सम्मुख
से दूर हो जाए। [4]परन्तु प्रभु ने समुद्र पर एक
प्रचण्ड आंधी उत्पन्न की। तब समुद्र पर
भयंकर तूफान उठा और जलयान के टूटने का
भय उत्पन्न हो गया। [5]नाविक डर गए, और
अपने-अपने देवता की दुहाई देने लगे। उन्होंने
जलयान का भार कम करने के लिए जलयान
का माल-असबाव समुद्र में फेंक दिया।
योना जलयान के निचले भीतरी भाग में
गया। वह शय्या पर लेट गया, और निश्चिंत सो
गया।

6 जलयान का कप्तान उसके पास आया।
उसने पुकारा, 'ओ सोनेवाले, यह क्या? उठो,
अपने ईश्वर को पुकारो, कदाचित ईश्वर हमारी
ओर ध्यान दे और हम बच जाएं।'

7 नाविकों ने परस्पर कहा, 'आओ, हम
चिट्ठियाँ डालें, और यह पता लगाएं कि यह
विपत्ति किस व्यक्ति के कारण हम पर आई
है।' अत: उन्होंने चिट्ठियाँ डालीं, और
चिट्ठी योना के नाम पर निकली। [8]उन्होंने योना
से पूछा, 'हमें बताओ, यह विपत्ति हम पर क्यों
पड़ी है? तुम क्या काम-धन्धा करते हो? तुम
कहां से आ रहे हो? तुम किस देश के रहनेवाले
हो? तुम किस जाति के हो?'

9 तब योना ने उन्हें यह बताया, 'मैं यहूदी*
हूँ। मैं समुद्र और भूमि के बनानेवाले स्वर्गिक
प्रभु परमेश्वर का आराधक हूँ।' [10]यह सुनकर
नाविक अत्यन्त डर गए। उन्होंने योना से कहा,
'यह तुमने क्या किया!' योना प्रभु के सम्मुख
से भाग रहा है, यह बात वे जानते थे; क्योंकि
स्वयं योना ने उन्हें बताया था। [11]उन्होंने योना
से पूछा, 'समुद्र शांत हो जाए, इसके लिए हमें
तुम्हारे साथ क्या करना चाहिए?' समुद्र हर क्षण
विकराल होता जा रहा था।

12 योना ने उनसे कहा, 'मुझे उठा कर समुद्र
में फेंक दो। तब समुद्र शान्त हो जाएगा। मैं
जानता हूँ : यह भयंकर तूफान मेरे कारण तुम
पर आया है।' [13]नाविकों ने जलयान को तट पर
लाने की पूरी कोशिश की, पर वे उस को तट
पर न ले जा सके। समुद्र का रुख उनके विरुद्ध
भयंकर होता गया।

14 अन्त में नाविकों ने प्रभु से प्रार्थना की,
'हे प्रभु, हम तुझसे विनती करते हैं। इस मनुष्य
के प्राण के बदले में हमें मत नष्ट कर। निर्दोष
व्यक्ति की हत्या का दोष हम पर मत लगाना।
प्रभु, तूने अपनी इच्छानुसार यह कार्य किया
है।' [15]तब नाविकों ने योना को उठाया और
समुद्र में उसको फेंक दिया। समुद्र का क्रोध
तत्काल शान्त हो गया। [16]यह देखकर नाविक
प्रभु से अत्यन्त डर गए। उन्होंने प्रभु को बलि
चढ़ाई और मन्नतें मानीं।

17 प्रभु के आदेश से एक बड़ा मच्छ योना
को निगल गया। योना तीन दिन और तीन रात
उस मच्छ के पेट में पड़ा रहा।

योना का प्रभु को धन्यवाद देना

2 योना ने मच्छ के पेट में अपने प्रभु परमेश्वर
से प्रार्थना की।

2 उसने कहा: 'हे प्रभु,
मैंने अपने संकट में तुझे पुकारा,
और तूने मुझे उत्तर दिया।
मैंने अधोलोक के उदर में तेरी दुहाई दी,
और तूने निस्सन्देह मेरी पुकार सुनी।
[3]तूने मुझे गहरे सागर में,
सागर के हृदय में फेंका था;
मैं धाराओं से घिरा हुआ था।
तेरी लहरों और तरंगों ने मुझे लपेट लिया था।
[4]तब मैंने यह सोचा: मैं प्रभु के
सम्मुख से निकाल दिया गया हूँ।
अब मैं कैसे प्रभु के पवित्र मन्दिर के दर्शन
कर सकूंगा?
[5]मैं समुद्र में डूब रहा था।
मेरे चारों ओर जल ही जल था।
मेरे सिर में सिवार लिपट गई थी।

---

* मूल में "इब्रानी"

1 : 4 भज 107 : 23 **1 : 15** प्रे 27 : 18 **1 : 6** मत 8 : 25 **1 : 13** यिर 26 : 15 **1 : 17** मत 12 : 40 **2 : 2** भज 130 : 1 **2 : 4** भज 31 : 22

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

6मैं पहाड़ों की जड़ तक पहुंच गया था।
मैं अधोलोक में आ गया था,
जहां अर्गलाओं ने मुझे
सदा के लिए बन्द कर लिया था।
फिर भी, हे प्रभु मेरे परमेश्वर,
तू मेरे जीवन को
मृत्यु के गड्ढे से ऊपर ले आया।
7जब मेरे प्राण मूर्छित थे,
मैंने प्रभु को स्मरण किया।
प्रभु, मेरी प्रार्थना तुझ तक,
तेरे पवित्र मन्दिर में पहुंची।
8जो उपासक झूठे देवताओं की पूजा करते हैं,
वे अपनी सच्ची भक्ति को त्याग देते हैं।
9पर मैं धन्यवाद-रूपी स्तुति-बलि
तुझे अर्पित करूंगा।
जो मन्नत मैंने मानी है, उसको पूरा करूंगा।
निस्सन्देह प्रभु ही उद्धार करता है।'

10 प्रभु ने मच्छ को आदेश दिया और उसने
योना को समुद्र तट पर उगल दिया।

नीनवे नगर का पश्चात्ताप

3 प्रभु का सन्देश योना को दूसरी बार मिला:
2'तैयार हो, और महानगर नीनवे को जा।
जो सन्देश मैं तुझे दूंगा, तू उसको सुनाना।'
3योना उठा। वह प्रभु के आदेश के अनुसार
नीनवे नगर को गया।

नीनवे एक महानगर था। नगर के एक छोर
से दूसरे छोर तक जाने में तीन दिन लगते थे।
4योना ने नगर की यात्रा करना आरम्भ किया।
उसने एक दिन की दूरी तय की। उसने यह
प्रचार किया, 'केवल चालीस दिन शेष हैं, और
तब नीनवे नगर का विनाश हो जाएगा।' 5नीनवे
के नागरिकों ने परमेश्वर पर विश्वास किया।
उन्होंने पश्चात्ताप करने के लिए उपवास की
घोषणा की। छोटे-बड़े सब नागरिकों ने टाट के
वस्त्र पहिने।

6 यह खबर नीनवे के राजा को मिली। वह
तत्काल अपने सिंहासन से उठा। उसने अपनी
राजसी पोशाक उतारी, और टाट के वस्त्र पहिन
लिये। तब वह राख के ढेर पर बैठ गया। 7उसने
समस्त नीनवे नगर में यह राजाज्ञा प्रचारित की:
'राजा और मंत्री-मण्डल की ओर से यह
आदेश है: मनुष्य और पशु, भेड़-बकरी और
गाय-बैल अपने मुंह में अनाज का दाना भी नहीं
रखेंगे। वे न भोजन करेंगे और न पानी पियेंगे।
8हर एक मनुष्य और पशु अपने शरीर पर टाट
के वस्त्र लपेटेगा। मनुष्य छाती पीट-पीटकर
परमेश्वर की दुहाई देंगे। प्रत्येक मनुष्य अपने
दुराचरण को त्याग दे, और दुष्कर्मों को छोड़
दे। 9कौन जानता है, कदाचित परमेश्वर अपने
निर्णय को बदल दे और अपनी क्रोधाग्नि शांत
करे और हम नष्ट होने से बच जाएं?'

10 जब परमेश्वर ने यह देखा कि नीनवे के
निवासियों ने पश्चात्ताप किया है, और उन्होंने
अपना दुराचरण छोड़ दिया है, तब उसने उन
पर विपत्ति ढाहने का विचार त्याग दिया।
परमेश्वर ने कहा था कि वह उन पर विपत्ति
ढाहेगा। पर उसने ऐसा नहीं किया।

परमेश्वर से योना की शिकायत

4 किन्तु योना को परमेश्वर का यह निर्णय
बहुत बुरा लगा। वह प्रभु परमेश्वर से
नाराज हो गया। 2उसने प्रभु से प्रार्थना की।
उसने कहा, 'प्रभु, मेरी तुझसे यह प्रार्थना है:
जब मैं अपने देश में था, तब मैंने तुझ से यही
तो कहा था; अब तो वही बात हुई। इसी कारण
मैं तुरन्त तर्शीश नगर को भागा था। मैं जानता
था कि तू कृपालु और दयालु परमेश्वर है। तू
विलम्ब से क्रोध करने वाला और करुणा का
सागर है। तू विपत्ति ढाहने के अपने निर्णय को
बदलता भी है। 3इसलिए अब मैं तुझसे यह
विनती करता हूं: हे प्रभु, तू मेरा प्राण मुझसे ले
ले। मेरे लिए जीवित रहने की अपेक्षा मरना
अच्छा है।'

4 प्रभु ने योना से कहा, 'क्या तेरा यह क्रोध
उचित है?''

5 तब योना नगर से बाहर निकला। वह नगर
के पूर्व में रहने लगा। उसने अपने सिर पर एक

---

2 : 9 भज 50 : 14 **3 : 5** मत 12 : 41; लू 11 : 32 **3 : 6** यहेज 26 : 16 **3 : 9** योए 2 : 14 **4 : 1** लू 15 : 28
4 : 2 नि 34 : 6 **4 : 3** 1 रा 19 : 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

छप्पर डाला। वह छप्पर की छाया में बैठ गया
और देखने लगा कि नगर का अब क्या होगा।
6 प्रभु परमेश्वर ने योना के सिर के ऊपर
अंडी का एक पेड़ उगाया कि वह योना के सिर
पर छाया करे और उसे आराम दे सके। योना
इस पेड़ को देख कर बहुत प्रसन्न हुआ।
7 दूसरे दिन जब प्रातःकाल हुआ, तब
परमेश्वर ने एक कीड़े को भेजा। कीड़े ने अंडी
के पेड़ को काटा और अंडी का पेड़ सूख गया।
8जब सूरज निकला तब परमेश्वर ने पूर्व दिशा
से गरम हवा बहाई। योना के सिर पर सूरज की
किरणें पड़ीं और वह बेहोश हो गया। योना
मृत्यु की इच्छा करने लगा। उसने कहा, 'मेरे
लिए जीवित रहने की अपेक्षा मरना अच्छा
है।' 9तब परमेश्वर ने योना से पूछा, 'क्या यह
उचित है कि तू अंडी के पेड़ के कारण नाराज
हो?' योना ने उत्तर दिया, 'मेरा क्रोध उचित है।
इसलिए मैं नाराज हूं। मैं मर जाना चाहता
हूं।' 10प्रभु ने उसे उत्तर दिया, 'तू उस अंडी के
पेड़ के लिए दुःखित है जिसके लिए तूने कोई
परिश्रम नहीं किया। तूने उसको न लगाया था
और न बड़ा किया था। वह एक रात में उगा और
दूसरी रात में नष्ट हो गया। 11सुन, इस महानगर
नीनवे में एक लाख बीस हजार से ज्यादा अबोध
बच्चे हैं, जो अपने दाएं-बाएं हाथ का भी अन्तर
नहीं पहचानते। इसके अतिरिक्त निर्दोष पशु भी
हैं। तब क्या मुझे इस महानगर के लिए दुःखी
नहीं होना चाहिए?'

नबी मीका

पुस्तक-परिचय

नबी मीका नबी यशायाह के समकालीन थे। वह इस्राएल देश के दक्षिणी राज्य यहूदा के एक गांव में रहते थे। उन्हें दृढ़ निश्चय था कि जो नबूवत नबी आमोस ने उत्तरी राज्य इस्राएल के विरुद्ध की है, वह यहाँ भी लागू होगी। इतना ही नहीं, जैसे उत्तरी राजधानी सामरी नगर का पतन हुआ, वैसे राजधानी यरूशलेम का भी पतन होगा। कारण भी वही है: धनी वर्ग द्वारा गरीब इस्राएलियों पर अन्याय, अत्याचार तथा शोषण। लेकिन मीका ने नबी आमोस की अपेक्षा और स्पष्ट शब्दों में समाज के धर्म-गुरुओं को दोषी ठहराया। साथ ही वह आशा का सुस्पष्ट संदेश देते हैं। संभवतः इस संदेश का कुछ अंश परवर्ती काल में जोड़ा गया।

कुछ पद ध्यान देने योग्य हैं, जैसे अध्याय 4 : 1-4। इन पदों में विश्व-शांति का चित्रण किया गया है जब अस्त्र-शस्त्र, तलवार-भालों के स्थान पर हल, हंसिए और खेती-क़िसानी के औजार बनाये जायेंगे। एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र के विरुद्ध तलवार नहीं उठायेगा। सब राष्ट्र परमेश्वर की ओर लौटेंगे। नबी मीका नबूवत करते हैं कि राजा दाऊद के वंश में इस्राएल के नये राजा का जन्म होगा। उसके आगमन से शान्ति का युग आरम्भ होगा (5 : 2-4)।

नबी मीका के सब सन्देशों का सार-तत्व बलि-विधि के संबंध में है — और इसी सन्देश को अन्य नबियों ने भी कर्मकाण्डी अनुष्ठानों के संबंध में बारबार कहा है! नबी मीका बलि चढ़ाने वालों से कहते हैं: "ओ मानव, प्रभु ने तुझे बताया है कि वह तुझ से क्या चाहता है कि तू न्याय का पालन करे, करुणा से प्रेम करे, और नम्रता पूर्वक अपने परमेश्वर के मार्ग पर चले" (6 : 8)।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

यहूदा तथा इस्राएल प्रदेशों को दण्ड	1 : 1 — 3 : 12
सुख-समृद्धि की पुनः स्थापना	4 : 1 — 5 : 15
दोषारोपण	6 : 1 — 7 : 6
आशा का सन्देश	7 : 7 - 20

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

1 प्रभु ने अपना सन्देश मोरेशेत नगर के
रहनेवाले मीका को यहूदा प्रदेश के
राजाओं योताम, आहाज और हिजकियाह के
राज्य-काल में दिया। मीका ने सामरी नगर और
यरूशलेम नगर के सम्बन्ध में यह दर्शन देखा:

सामरी नगर और यरूशलेम नगर का शोक गीत

2 हे लोगो, तुम सब सुनो;
हे पृथ्वी, और पृथ्वी के निवासियो, ध्यान दो।
स्वामी-प्रभु तुम्हारे विरुद्ध साक्षी देगा।
स्वामी अपने पवित्र मन्दिर से बाहर आए।
3 देखो, प्रभु अपने स्थान से बाहर निकल रहा है। वह नीचे आएगा।
वह पृथ्वी के ऊंचे स्थानों पर विचरण करेगा।
4 उसके पैरों तले पहाड़ पिघल जाएंगे,
जैसे आग से मोम पिघल जाता है।
घाटियाँ और गहरी बनेंगी,
जैसे पानी ढाल को काटकर उसे गहरा बनाता है।
5 यह सब याकूब-वंशियों के अपराध के कारण,
इस्राएल-वंशियों के पाप के कारण होगा।
याकूब-वंशियों का अपराध क्या है?
निस्सन्देह सामरी नगर!
यहूदा-वंशियों का पाप क्या है?
निस्सन्देह यरूशलेम नगर!
6 अत: प्रभु कहता है : 'मैं सामरी नगर को
खुले मैदान के मलवे के सदृश बना दूंगा;
ऐसा स्थान जहां लोग अंगूर के उद्यान लगाएंगे।
मैं उसके खण्डहरों के पत्थर घाटी में फेंक दूंगा, और उसकी नींव उखाड़ दूंगा।
7 उसके देवताओं की मूर्तियों के टुकड़े-टुकड़े किए जाएंगे।
उसकी वेश्यावृत्ति+ के उपहार आग में झोंके जाएंगे।
मैं उसके देवताओं की प्रतिमाओं को चूर-चूर करूंगा।
उसने वेश्यावृत्ति की कमाई से उन्हें एकत्र किया था,
अत: वेश्यावृत्ति की कमाई के सदृश उनका विनाश भी होगा!'

8 नबी ने कहा: 'मैं इस विनाश के लिए शोक मना रहा हूँ; मैं रो रहा हूं।
मैं नंगे पैर, नंगे बदन घूमता फिरूंगा।
मैं गीदड़ की तरह रोऊंगा,
मैं शुतुरमुर्ग के समान विलाप करूंगा।
9 सामरी का घाव असाध्य है,
उसका जहर यहूदा तक पहुंच गया है।
वह मेरे लोगों तक, यरूशलेम के प्रवेश-द्वार तक आ गया है।'

10 उसकी चर्चा गत नगर में मत करो; वहां तुम मत रोओ*,
पर बेत-ल-अपरा की धूल में लोटो।
11 ओ शापीर के रहनेवालो,
नंगे बदन, लज्जा से भरे, अपने मार्ग पर जाओ, और यहां मत रुको।
ओ सानान के निवासियो, अपने नगर से मत निकलो।
बेत-एसेल का विलाप तुम्हें वहां खड़ा नहीं रहने देगा।
12 मारोत के निवासी उत्सुकतापूर्वक
कुशल-मंगल की प्रतीक्षा कर रहे हैं,
क्योंकि प्रभु ने विपत्ति ढाही है,
और वह यरूशलेम के प्रवेश-द्वार तक पहुंच गयी है।
13 ओ लाकीश के रहनेवालो
रथों में घोड़े जोतो, और भाग जाओ;
क्योंकि सियोन ने पाप करना तुझसे ही सीखा था।
तुझ में ही इस्राएल के अपराधों का बीज है।
14 मोरेशेत-गत को विदाई की भेंट दी जाए,
अकजीब राजवंश इस्राएल के राजाओं को धोखा देगा।
15 ओ मरीशा के रहनेवालो,
मैं तुम पर एक विजेता के द्वारा आक्रमण

+ इस शब्द के मूल अर्थ के लिए देखिए होशे 1 : 2 * मूल अस्पष्ट।
1 : 2 1 रा 22 : 28 1 : 3 यश 26 : 21

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कराऊंगा।
इस्राएल के वैभव का प्रतीक राजा
अदुल्लाम की गुफा में शरण लेगा।
16अपने प्रिय पुत्रों के लिए सिर मुंड़ा;
गिद्द के सदृश अपने सिर मुंड़ा;
क्योंकि वे बन्दी होकर अपने देश से
निष्कासित होंगे।

गरीबों पर अत्याचार करनेवालों को धिक्कार

2 धिक्कार है उनको, जो कुचक्र रचते हैं,
जो रात में पलंग पर पड़े-पड़े
दुष्कर्म सोचा करते हैं।
वे सबेरा होने पर अपनी योजना को
कार्यरूप में परिणत भी करते हैं,
क्योंकि ऐसा करने की शक्ति
उनके हाथ में है।
2वे पराए खेतों का लालच करते हैं,
और उन्हें हड़प लेते हैं;
वे दूसरे के मकानों की लालसा करते हैं,
और उन्हें हथिया लेते हैं।
वे पड़ोसी और उसके परिवार पर अत्याचार
करते हैं,
वे अन्य व्यक्ति और उसकी पैतृक सम्पत्ति का
शोषण करते हैं।
3अत: प्रभु यों कहता है:
'मैं शोषण करनेवाले इस वर्ग के विरुद्ध
विनाश की योजना बना रहा हूं।
तुम इस योजना से अपना गला नहीं छुड़ा
सकोगे।
वह बुरा समय होगा,
तुम अहंकार से सिर उठाकर चल नहीं सकोगे।
4उस समय तुम्हारे वर्ग का कवि
तुम्हारी ओर से निन्दात्मक कहावत कहेगा,
वह छाती पीट-पीटकर विलाप करेगा।
वह कहेगा, "हम बर्बाद हो गए!
प्रभु के लोगों की पैतृक भूमि का अधिकार
दूसरों के हाथ में जा रहा है,
प्रभु उसको हमारे हाथ से छीन रहा है।
हमें बन्दी बनानेवालों के हाथ में
वह हमारे खेतों को बांट रहा है।"
5प्रभु की धर्ममहासभा में
चिट्ठी डालकर और रस्सी से नापकर
भूमि का वितरण करनेवाला कोई न होगा
और तुम्हें भूमि का टुकड़ा भी नहीं
मिलेगा।'

6 वे उपदेश करते हैं, 'हमें उपदेश मत सुना;
तुझे ऐसी नबूवत का उपदेश नहीं करना
चाहिए,
क्योंकि हमें पतन का अपमान सहना नहीं
पड़ेगा।'
7 प्रभु कहता है, 'ओ याकूब के वंशजो,
क्या मनुष्य मुझ से यह प्रश्न पूछ सकता है,
"क्या प्रभु का आत्मा धीरज खो बैठा है?
क्या यह उसके कार्य हैं?
क्या सदाचारी के प्रति
उसके वचन हितकर नहीं होते?"
8किन्तु तुम शत्रु के समान
मेरे अपने लोगों के विरुद्ध खड़े हो।
जो लड़ाई की इच्छा भी नहीं रखते,
जो तुम पर विश्वास करके राह से गुजरते हैं,
उन शान्तिप्रिय लोगों के कपड़ें तुम उतार लेते
हो।
9मेरे अपने लोगों की स्त्रियों को
तुम उनके प्रिय घरों से निकालते हो,
तुम उनके बच्चों से मेरी महिमा को छीनते हो।
10उठो, और जाओ, यह विश्राम-स्थल नहीं है।
तुम्हारी अशुद्धता के कारण
निस्सन्देह उसका महासंहार होगा!'

11यदि कोई खाली बातें करता
और झूठ बोलता हुआ, इधर-उधर फिरता है,
और यह कहता है, 'मैं तुम्हें
मदिरा और शराब के पक्ष में उपदेश दूंगा'
तो ये लोग उसको अपना उपदेशक स्वीकार
कर लेते हैं!

प्रभु ही तुम्हारा नेता है!

12 प्रभु कहता है, 'ओ याकूब-वंशियो!
मैं निस्सन्देह तुम सबको पुन: एकत्र करूंगा;

2 : 1 भज 36 : 4 2 : 6 आमो 2 : 12

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मैं बचे हुए इस्राएल-वंशियों को फिर
इकट्ठा करूंगा।
जैसे बाड़े में भेड़ों को,
या चरागाह में पशुओं को
एक साथ रखा जाता है
वैसे ही मैं तुमको रखूंगा।
तुम्हारी संख्या हजारों-हजार होगी।'
13बन्दीगृह की दीवार तोड़नेवाला प्रभु,
तुम्हारे आगे-आगे जाएगा;
तुम दीवार को तोड़ोगे,
और नगर के प्रवेश-द्वार की ओर जाओगे।
तुम उससे नगर के बाहर निकलोगे।
तुम्हारा राजा तुम्हारा मार्ग-दर्शन करेगा।
प्रभु ही तुम्हारा अगुआ होगा।

इस्राएली नेताओं की भर्त्सना

3 'मेरी बात सुनो:
ओ याकूब-वंशियों के अगुओ,
ओ इस्राएल-वंशियों के शासको,
क्या तुम्हें न्याय के सिद्धान्त नहीं जानना
चाहिए?
2तुम भलाई से घृणा करते, पर बुराई से प्रेम।
तुम मेरे अपने लोगों की खाल खींचते हो,
उनकी हड्डियों से मांस नोंच लेते हो।
3तुम मेरे निज लोगों का मांस खाते हो,
तुम उनकी चमड़ी उधेड़ लेते हो।
हांडी के गोश्त की तरह
कड़ाह के मांस के समान
तुम उनकी हड्डियों को चूर-चूर करते हो,
उनकी बोटी-बोटी करते हो।'

4 संकट के समय, तुम प्रभु की दुहाई दोगे,
पर वह तुम्हारी दुहाई का उत्तर नहीं देगा।
उस समय वह तुमसे अपना मुंह छिपाएगा
क्योंकि तुमने दुष्कर्म किए हैं।

5 प्रभु ने नबियों के विषय में यह कहा है:
'इन नबियों ने मेरे लोगों को पथभ्रष्ट किया है:
जब इनके पेट भरे रहते हैं
तब वे आश्वासन देते हैं,
कि युद्ध नहीं होगा!
पर जब लोग उन्हें खाने को नहीं देते
तब वे उनको युद्ध की धमकी देते हैं।'
6अत: ओ नबियो!
रात में तुम्हें दर्शन नहीं मिलेगा,
और न ही अन्धकार में
तुम शकुन विचार सकोगे।
तुम-नबियों का सूर्य अस्त हो जाएगा,
तुम्हारे दिन भी अन्धकार में बदल जाएंगे।
7द्रष्टाओं का अनादर होगा,
शकुन विचारनेवाले अपमानित होंगे।
वे अपने मुंह छिपाएंगे;
क्योंकि परमेश्वर उनको उत्तर नहीं देगा।
8पर मैं परमेश्वर की सामर्थ्य से,
प्रभु के आत्मा से परिपूर्ण हूं;
मुझ में न्याय और बल है,
ताकि मैं याकूब को उसके अपराध,
इस्राएल को उसके पाप बता सकूं।

9 ओ याकूब वंश के अगुओ,
ओ इस्राएल-वंशियों के शासको,
यह सुनो!
क्योंकि तुम न्याय से घृणा करते हो,
तुम सरल को कुटिल बनाते हो,
10तुम सियोन को रक्तपात से,
यरूशलेम को अन्याय से निर्मित कर रहे हो।
11तुम्हारे अगुए घूस लेकर न्याय करते,
पुरोहित पैसे लेकर धर्म की बातें सिखाते,
और नबी धन के लिए शकुन विचारते हैं;
फिर भी वे प्रभु का सहारा लेते,
और यह कहते हैं, 'निस्सन्देह प्रभु हमारे
मध्य है! हम विपत्ति में नहीं पड़ेंगे।'
12अत: तुम्हारे कारण सियोन नगर
जोते गए खेत के समान दिखाई देगा;
यरूशलेम मलवों का ढेर बनेगा,
और मन्दिर का पहाड़
पूजा-स्थल का जंगल!

समृद्धि की वापसी

4 आनेवाले दिनों में यह होगा:
प्रभु-भवन का पहाड़

2 : 13 यो 10 : 4 3 : 11 यश 1 : 23 3 : 12 मी 1 : 6; यिर 26 : 18 4 : 1-3 यश 2 : 2-4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पहाड़ों में सर्वश्रेष्ठ माना जाएगा;
वह पहाड़ियों में ऊपर रहेगा।
हर राष्ट्र के लोग
जल-धारा के समान उसकी ओर बहेंगे।
2वे आकर यह कहेंगे,
'आओ, हम प्रभु के पर्वत पर चढ़ें,
याकूब के परमेश्वर के भवन में जाएं,
ताकि वह हमें अपने मार्ग की शिक्षा दे;
और हम उसके पथ पर चलें।'
सियोन पर्वत से व्यवस्था प्रकट होगी,
यरूशलेम से ही प्रभु का शब्द सुनाई देगा।
3प्रभु भिन्न-भिन्न कौमों का न्याय करेगा,
वह दूर-दूर के शक्तिशाली राष्ट्रों का निर्णय करेगा।
अत: राष्ट्र अपनी तलवारों को हल के फाल बनाएंगे।
वे अपने भाले को हंसिए में बदल देंगे,
एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र के विरुद्ध तलवार नहीं उठाएगा, और न ही वे युद्ध-विद्या सीखेंगे।
4हर आदमी अपने अंगूर-उद्यान में,
अपने अंजीर वृक्ष के नीचे निश्चिंत बैठेगा,
उसे शत्रु के आक्रमण का डर नहीं होगा।
स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु ने स्वयं यह कहा है।

5 राष्ट्र के लोग
अपने-अपने देवता के नाम पर चलते हैं;
पर हम सदा-सर्वदा
अपने प्रभु परमेश्वर के नाम पर चलेंगे।

इस्राएली राष्ट्र का पुनर्निर्माण

6 प्रभु यह कहता है:
'उस दिन मैं लंगड़े-लूलों को एकत्र करूंगा,
बिखरे हुओं को बटोरूंगा;
और जिन्हें मैंने दु:ख दिया था,
उन्हें भी इकट्ठा करूंगा।
7लंगड़े-लूलों को मैं इस्राएल का शेष-राष्ट्र बनाऊंगा।
जिन्हें त्याग दिया गया था,
उन्हें मैं एक शक्तिशाली राष्ट्र बनाऊंगा।
आज से युगानुयुग तक
मैं-प्रभु सियोन पर्वत से उन पर राज्य करूंगा।'

8 ओ रेवड़ के बुर्ज! ओ सियोन के गढ़+!
तुझे पहले-जैसा शासन प्राप्त होगा,
तुझे यरूशलेम का राज्य प्राप्त होगा।
9ओ यरूशलेम नगरी!
तू गला फाड़कर चिल्लाती क्यों है?
क्या तेरे यहाँ कोई राजा नहीं है?
क्या तेरे सलाहकार मर गए
जिसके कारण तू गर्भवती स्त्री के समान
प्रसव-पीड़ा से तड़प रही है?
10ओ सियोन की जनता!
गर्भवती स्त्री के समान छटपटा और कराह!
तू नगर से बाहर निकलेगी,
और तुझे खुले मैदान में रहना पड़ेगा।
तू बेबीलोन देश को जाएगी।
वहां प्रभु तुझे छुड़ाएगा;
तेरे शत्रुओं के हाथ से प्रभु तुझे मुक्त करेगा।

11अनेक राष्ट्र तेरे विरुद्ध एकत्र हुए हैं।
वे यह कह रहे हैं, 'इसे भ्रष्ट कर दो।
और हम अपनी आंखों से सियोन का पतन देखें।'
12पर ये राष्ट्र प्रभु के विचारों को नहीं जानते।
ये प्रभु की योजना को नहीं समझते।
जैसे पूले खलियान में इकट्ठे किए जाते हैं
वैसे ही प्रभु ने उन्हें रौंदने के लिए एकत्र किया है।
13ओ सियोन नगरी! उठ, और दंवरी कर।
मैं तेरे सींग लोहे के,
और तेरे खुर पीतल के बनाऊंगा।
तब तू अनेक देशों को रौंदेगी।
तू उनकी लूट प्रभु के सम्मुख अर्पित करेगी,
तू उनकी धन-सम्पत्ति सम्पूर्ण पृथ्वी के स्वामी को चढ़ाएगी।

5 *ओ सैन्य-नगरी!
अब तू दीवार से घिर गई है,

+ अक्षरश:, 'सियोन की पुत्री के ओपेल' * मूल में, 4 : 14

4 : 3 योए 3 : 10 **4 : 4** जक 3 : 10 **4 : 6** यहेज 34 : 13; सफ़ 3 : 19

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शत्रुओं ने हमारे विरुद्ध घेराबन्दी की है।
वे छड़ी से इस्राएल के शासक के गाल पर
प्रहार करेंगे।

इस्राएल के नये राजा का जन्म

2 'ओ बेतलेहम एप्राता,
तू निस्सन्देह यहूदा प्रदेश के सब नगरों में**
छोटा है;
पर तुझसे ही वह व्यक्ति निकलेगा,
जो मुझ-प्रभु के लिए इस्राएली राष्ट्र पर
शासन करेगा।
उसका उद्‌गम प्राचीन काल से,
पुराने जमाने से है।'
3 जब तक गर्भवती स्त्री बालक को जन्म न देगी,
तब तक प्रभु इस्राएल को त्यागा रहेगा।
उसके पश्चात् शेष इस्राएली
अपने जाति-भाई-बहिनों के पास लौट
आएंगे।
4 आनेवाला व्यक्ति प्रभु की सामर्थ्य से,
अपने प्रभु परमेश्वर के महान नाम से प्रकट
होगा और अपने रेवड़ को चराएगा।
इस्राएली सुरक्षित जीवन व्यतीत करेंगे,
क्योंकि वह पृथ्वी के सीमांतों तक
महान होगा।
5 उसके आगमन से शान्ति का युग आरम्भ
होगा!

जब असीरियाई सेना हमारे देश पर
आक्रमण करेगी, हमारी भूमि को रौंदेगी
तब हम सात चरवाहों और जनता के
आठ नेताओं को उसके विरुद्ध भेजेंगे।
6 वे असीरिया देश पर तलवार से,
राजा निमरोद के देश पर
नंगी तलवार से शासन करेंगे।
जब असीरियाई सेना हमारे देश पर शासन
करेगी, हमारी सीमा पर पैर रखेगी
तब वे+ उसमें से हमें मुक्त करेंगे।
7 तब अनेक राष्ट्रों से घिरे हुए
शेष याकूब-वंशीय
प्रभु-प्रेषित ओस की बूंद के सदृश,
घास पर बरसती वर्षा के समान होंगे,
जो लोगों की पुकार की प्रतीक्षा नहीं करती,
जो मनुष्यों की राह नहीं देखती।
8 तब अनेक राष्ट्रों से घिरे हुए,
अनेक देशों से घिरे हुए शेष याकूब-वंशीय
जंगल में जानवरों के राजा सिंह के समान
होंगे,
भेड़-बकरियों के मध्य जवान सिंह होंगे
जो जहां-जहां जाता है, वहां-वहां तहलका
मचाता है।
वह हर पशु को चीर-फाड़ देता है।
उसके हाथ से बचाने वाला कोई नहीं होता।
9 इस्राएल अपने बैरियों पर हाथ उठाएगा;
उसके सब शत्रु नष्ट हो जाएंगे।

10 प्रभु यों कहता है: 'उस दिन मैं तेरे मध्य से
तेरे सब घोड़ों को मार डालूंगा,
तेरे सब रथों को तोड़ूंगा।
11 मैं तेरे देश के सब नगरों को नष्ट करूंगा।
मैं तेरे देश के सब किलों को खण्डहर
बनाऊंगा।
12 मैं तेरे हाथ के जादू-टोने समाप्त करूंगा,
तेरे यहां भविष्यफल बतानेवाले जीवित नहीं
रहेंगे।
13 मैं तेरे मध्य से देवताओं की मूर्तियां,
पूजा-स्तंभ ध्वस्त कर दूंगा।
तब तू हाथ की बनाई गई वस्तुओं के आगे
अपना सिर नहीं झुकाएगा।
14 मैं तेरे मध्य से अशेराह देवी के पूजा-स्तम्भ
जड़-मूल सहित उखाड़ दूंगा।
मैं तेरे नगरों को नष्ट कर दूंगा।
15 जो राष्ट मेरे आदेश का पालन नहीं करते हैं,
उनसे मैं भयंकर क्रोध में बदला लूंगा।'

इस्राएल पर प्रभु का अभियोग

6 सुन, प्रभु क्या कहता है!
उठ, पहाड़ों के सम्मुख अपना पक्ष प्रस्तुत
कर,

** अक्षरशः, 'यहूदा के वंशों में' + मूल में, 'वह'

5 : 2 मत 2 : 6; यो 7 : 42 5 : 6 उत 10 : 8 5 : 10 जक 9 : 10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पहाड़ियां भी तेरी बात सुनें।
2ओ पहाड़ो, प्रभु का अभियोग सुनो,
ओ पृथ्वी की शाश्वत नींवो,
प्रभु का अभियोग सुनो।
प्रभु को इस्राएल से एक शिकायत है।
वह उस पर मुकदमा चलाएगा।

3 'ओ मेरे निज लोगो,
मैंने तुम्हारा क्या बुरा किया है?
किस बात से मैंने तुम्हें दु:ख दिया है?
मुझे उत्तर दो।
4मैंने तुम्हें मिस्र देश से बाहर निकाला।
मैंने तुम्हें गुलामी के बन्धन से मुक्त किया।
मैंने तुम्हारा नेतृत्व करने के लिए
मूसा, हारून, और मिर्याम* को भेजा।
5ओ मेरे निज लोगो,
याद करो, मोआब के राजा बालाक ने
कैसा कुचक्र रचा था,
पर बिलआम बेन-बओर ने उसे कैसा उत्तर
दिया था।
याद करो, शिट्टीम नगर से गिलगाल नगर तक
क्या घटनाएं घटी थीं,
ताकि तुम प्रभु के उद्धार के कार्यों को
समझ सको।'

मनुष्यों से परमेश्वर क्या चाहता है?

6 मैं हाथ में कौन-सी भेंट लेकर
प्रभु के सामने जाऊं
और उच्च सिंहासन पर विराजमान
परमेश्वर के सम्मुख आराधना करूं?
क्या मैं उसके सम्मुख अन्नबलि,
और एक-वर्षीय बछड़ा लेकर जाऊं?
7क्या प्रभु हजार मेढ़ों की बलि से,
क्या वह तेल की लाखों नदियों की भेंट से
प्रसन्न होगा?
क्या मुझे अपने अपराध की क्षमा के लिए
ज्येष्ठ पुत्र की बलि देना चाहिए?
क्या मुझे अपने ही पाप के लिए
अपने पौरुष के प्रथम फल को चढ़ाना
चाहिए? कदापि नहीं!
8ओ मानव, प्रभु ने तुझे बताया है कि उचित क्या
है, और वह तुझसे क्या चाहता है।
यही न कि तू न्याय-सिद्धान्त का पालन करे
करुणा से प्रेम करे, और नम्रतापूर्वक
अपने परमेश्वर के मार्ग पर चले?

व्यापार में धोखा-धड़ी करनेवालों को चेतावनी

9 प्रभु की वाणी नगर में सुनाई दे रही है,
(प्रभु-नाम का भय मानना ही बुद्धिमानी
है:)
'ओ यहूदा के कुल! ओ नगर-सभा के
सदस्यो!
10क्या मैं दुष्कर्मी के घर में संचित दुष्कर्म के
धन को,
और उसकी घृणित छोटी माप को भुला
सकता हूं?
11क्या मैं खोटी तराजू रखनेवाले को,
अपनी थैली में खोटे बाट रखनेवालों को
बिना दण्ड दिए छोड़ दूंगा?
12ओ यहूदा कुल, तेरे धनवान लोगों में
हिंसावृत्ति है,
तेरे नागरिक झूठ बोलते हैं;
उनकी बातें कपटपूर्ण होती हैं।
13अत: मैंने तुझको वध करना आरम्भ किया
है।
मैं तेरे पाप के कारण तुझे उजाड़ दूंगा।
14तू भोजन करेगा, पर तृप्त नहीं होगा,
तेरा पेट हमेशा खाली रहेगा।
तू बचाएगा तो भी तू जमा नहीं कर पाएगा।
जो कुछ तू बचाएगा,
मैं उसे तेरे तलवारधारी शत्रु को दे दूंगा।
15तू बोएगा पर फसल काट नहीं पाएगा।
तू जैतून का तेल निकालेगा,
पर उसको सिर पर नहीं लगा पाएगा।
तू अंगूर से रस निकालेगा,
पर उसको पी नहीं पाएगा।
16ओ यहूदा कुल!
तूने राजा ओमरी की संविधियों को माना,
तूने अहाब के राजवंश के कार्यों के अनुरूप

* अथवा, 'मरियम'

6 : 5 गण 22 : 5 **6 : 8** आमो 5 : 24

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कार्य किया।
तूने उनके परामर्श के अनुसार आचरण किया।
अतः मैं तुझे उजाड़ दूंगा।
तेरे नागरिकों को उपहास का पात्र बना दूंगा।
तू अन्य कौमों की निन्दा सहेगा।'

इस्राएल का नैतिक पतन

7 धिक्कार है मुझे, मैंने अवसर खो दिया!
मैं ग्रीष्म काल के फल तब तोड़ने गया
जब वे झड़ा लिये गए।
मैं अंगूरों को चुनने तब गया
जब वे तोड़ लिये गए।
न अंगूर का एक गुच्छा और न अंजीर का
एक फल मुझे मिला,
जिन्हें खाने को मेरा दिल चाहता था।
2पृथ्वी से भक्त उठ गए,
मनुष्यों में सत्यनिष्ठ व्यक्ति नहीं रहे।
सब लोग हत्या के उद्देश्य से घात लगाते हैं।
हर आदमी अपने भाई के लिए जाल बिछाता
है।
3उनके हाथ में दुष्कर्म हैं,
वे कुकर्म करने में निपुण हैं।
शासक और न्यायाधीश घूस मांगते हैं।
बड़े लोग मनमानी करते हैं।
यों ये सब मिलकर कुचक्र रचते हैं।
4उनकी अच्छाई का अर्थ है—कंटीली झाड़ी!
उनकी ईमानदारी का मतलब है—कांटे!
उनके प्रहरियों द्वारा सूचित दिन,
उनके दण्ड का दिन समीप आ गया।
अब आतंक उनके निकट है।
5अपने पड़ोसी का भी विश्वास मत करो,
अपने मित्र का भी भरोसा मत करो,
अपनी प्रिय पत्नी से बोलने में भी सावधान
रहो।
6 क्योंकि पुत्र अपने पिता को तुच्छ समझता है;
पुत्री अपनी मां का विरोध करती है;
बहू अपनी सास का विरोध करती है;
घर के ही लोग घरवाले के शत्रु बन गए हैं!

उद्धार का आगमन

7 मैं प्रभु की ओर दृष्टि लगाए हूं;
मैं अपने उद्धारकर्त्ता परमेश्वर की प्रतीक्षा में
हूं,
मेरा परमेश्वर मेरी आवाज सुनेगा।
8ओ मेरी बैरिन! मेरे पतन से आनन्दित मत हो।
यदि मेरा पतन हुआ है, तो मेरा उत्थान भी
होगा।
यद्यपि मैं अन्धकार में पड़ी हूं,
तो भी प्रभु मेरी ज्योति होगा।
9मैंने प्रभु के प्रति पाप किया है;
जब तक प्रभु मेरा पक्ष नहीं लेगा,
और मेरे पक्ष में निर्णय नहीं देगा,
तब तक मुझे प्रभु का कोप सहना ही होगा।
वह मुझे प्रकाश तक पहुंचाएगा;
और मैं उसके उद्धार के दर्शन करूंगी।
10यह देखकर मेरी बैरिन लज्जित होगी,
क्योंकि उसने कहा था,
'कहां है तेरा प्रभु परमेश्वर ?'
जब वह गली के कीचड़ की तरह रौंद दी
जाएगी,
तब मेरी आंखें उसकी पतित दशा देखकर
तृप्त होंगी।

पुनःस्थापना की नबूवत

11ओ यरूशलेम, तेरी शहरपनाह के निर्माण
का दिन आएगा।
उस दिन तेरी सीमा का विस्तार होगा।
12उस दिन असीरिया से मिस्र देश तक
मिस्र से फरात नदी तक,
एक समुद्र से दूसरे समुद्र तक,
एक पहाड़ से दूसरे पहाड़ तक के निवासी
तेरे पास आएंगे।
13किन्तु पृथ्वी अपने निवासियों के कारण,
उनके दुष्कर्म के फलों के कारण उजाड़ हो
जाएगी।

इस्राएल पर प्रभु की अनुकंपा

14प्रभु, तू अपनी लाठी लेकर अपने निज लोगों
को,
अपनी मीरास को, अपनी भेड़ों को चरा।
वे जंगल में अकेले निवास कर रहे हैं।
वे उपजाऊ भूमि के मध्य अकेले पड़े हैं।

7 : 2 भज 14 : 1-3 **7 : 6** मत 10 : 35-36 **7 : 14** भज 23

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जैसा तू पुराने समय में
बाशान और गिलआद क्षेत्र में उन्हें चराता
था, वैसा ही उन्हें अब इन क्षेत्रों में चरा।
15 जब तू मिस्र देश से हमें बाहर निकाल लाया,
तब तूने आश्चर्यपूर्ण कार्य दिखाए थे।
वैसे ही हमें फिर दिखा दे।'
16 सब राष्ट्र चाहे कितने ही शक्तिशाली क्यों न
हों,
वे इस्राएली राष्ट्र को देखकर
आश्चर्यचकित हो जाएंगे।
उनके कान के परदे फट जाएंगे;
उनके मुंह से आवाज नहीं निकलेगी।
17 वे रेंगनेवाले जीव-जन्तुओं की तरह,
सांप के समान धूल चाटेंगे।
वे कांपते हुए अपने किलों से बाहर निकलेंगे।
वे डरते हुए हमारे प्रभु परमेश्वर के पास
जाएंगे; वे तेरे कारण भय से कांपेंगे।
18 हे प्रभु, तेरे समान अधर्म को क्षमा करनेवाला,
अपनी मीरास के बचे हुए लोगों के अपराध
क्षमा करनेवाला और कौन ईश्वर है?
तू सदा क्रोध नहीं करता,
क्योंकि तू करुणा से प्रसन्न होता है।
19 तू हम पर पुनः दया करेगा।
तू हमारे अधर्म को अपने पैरों तले रौंद
डालेगा,
प्रभु, तू हमारे समस्त पापों को
सागर की अतल गहराई में फेंक देगा।
20 तू याकूब-वंशियों पर अपनी सच्चाई प्रकट
करेगा, और अब्राहम के कुल पर करुणा,
जैसी तूने प्राचीन काल में
हमारे पूर्वजों से शपथ खाई थी।

7 : 16 यश 26 : 11 7 : 18 नि 34 : 6; भज 103 : 9 7 : 20 लू 1 : 55,73

नबी नहूम

पुस्तक-परिचय

"नहूम" वास्तव में एक कविता है जो असीरियाई साम्राज्य की राजधानी नीनवे के पतन के उपलक्ष्य में गायी गयी थी। असीरिया प्राचीनकाल से भूमध्यसागर के तटीय देशों पर अत्याचार करता आया था। वह इस्राएलियों का भी सनातन शत्रु था। उसके पतन से पड़ोसी राष्ट्रों के साथ इस्राएलियों का प्रसन्न होना स्वाभाविक था। नीनवे का ह्रास और पतन ईसवी पूर्व सातवीं शताब्दी के अंतिम वर्षों में हुआ था। उस अतिक्रूर विश्वशत्रु के पतन की व्याख्या नबी नहूम ने परमेश्वर के दण्ड के रूप में की : परमेश्वर ने एक अत्याचारी और अहंकारी राष्ट्र को दण्ड दिया है।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

नीनवे महानगर को दण्ड	**1 : 1-15**
नीनवे महानगर का पतन	**2 : 1—3 : 19**

1 नीनवे नगर के सम्बन्ध में नबूवत : एल-कोश नगर में रहनेवाले नहूम के दर्शन की पुस्तक।

प्रभु का स्वभाव

2 प्रभु ईर्ष्यालु परमेश्वर है;
वह प्रतिशोधी है। प्रभु प्रतिशोधी है;
वह क्रोध से परिपूर्ण है।
प्रभु अपने बैरियों से प्रतिशोध लेता है;
वह अपने शत्रुओं से क्रोधपूर्ण व्यवहार करता
है।
3 प्रभु विलम्ब-क्रोधी और महाशक्तिशाली है।
प्रभु निस्सन्देह अपराधी को बिना दण्ड दिए

अध्याय 1-3 यश 10 : 5-34 1 : 3 नि 34; 6-7; गण 11 : 33; 2 शम 7 : 7

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नहीं छोड़ेगा।

प्रभु का राजमार्ग चक्रवात और तूफान हैं,
उसके चरणों की धूल मेघों के दल हैं।
4वह जल को सुखानेवाला है;
उसकी डांट से समुद्र,
और समस्त नदियाँ सूख जाती हैं।
तब बाशान का कछार
और कर्मेल का हरित पहाड़ी क्षेत्र
मुरझा जाते हैं,
लबानोन का हरा-भरा प्रदेश
कुम्हला जाता है।
5प्रभु के सम्मुख पहाड़ कांपते हैं,
पहाड़ियाँ हिलने लगती हैं।
उसकी उपस्थिति से,
पृथ्वी और उस पर रहनेवाले प्राणी,
उजड़ जाते हैं।
6 प्रभु के क्रोध के सम्मुख
कौन खड़ा रह सकता है?
उसकी क्रोधाग्नि को कौन सह सकता है?
उसका कोप अग्नि की तरह बरसता है,
और प्रभु के सामने चट्टानें फूट जाती हैं।
7प्रभु भला है।
वह संकट-काल में आश्रय-स्थल है।
वह अपने शरणागत को जानता है।
8वह जलप्रलय से
अपने बैरियों का पूर्ण संहार करता है;
वह महाअंधकार में
अपने शत्रुओं को खदेड़ देता है।

प्रतिशोध

9 तुम प्रभु के खिलाफ
क्या षड्‌यंत्र रच रहे हो?
वह तुम्हारा पूर्ण संहार करेगा।
अपने शत्रुओं से दुबारा प्रतिशोध लेने की
उसे आवश्यकता नहीं पड़ती।
10वे अपनी रंगरलियों में*
उलझे हुए कांटों की तरह,
सूखे भूसे की तरह भस्म हो जाएंगे।
11ओ नीनवे महानगर! तुझ में क्या कभी ऐसा
व्यक्ति हुआ है,
जो प्रभु के प्रति कुचक्र रचनेवाला न हो,
दुर्विचारी गुंडा न हो?
12प्रभु यों कहता है : 'चाहे वे संख्या में असंख्य
और बल में अपार क्यों न हों,
मैं उन्हें नष्ट कर दूंगा और वे मिट जाएंगे।
ओ मेरे निज लोगो, मैंने तुम्हें पीड़ित किया,
पर अब मैं तुम्हें पीड़ित नहीं करूंगा।
13मैं तेरी गर्दन से तेरे शत्रु का जूआ तोड़ूंगा,
मैं तेरी जंजीरों को काटूंगा।'

14ओ नीनवे के राजा! तेरे सम्बन्ध में
प्रभु ने मुझे यह आदेश दिया है :
'तेरे नाम को चलानेवाला
अब तेरे वंश में उत्पन्न न होगा।
धातु की मूर्तियों को,
पत्थर और लकड़ी की प्रतिमाओं को
मैं तेरे देवालयों में नष्ट कर दूंगा।
मैं तेरे लिए कबर खोदूंगा; क्योंकि तू दुराचारी
है।'

नीनवे का पतन

15**देखो, पहाड़ों से शुभ-सन्देश
सुनानेवाला, शान्ति की घोषणा करनेवाला आ
रहा है। ओ यहूदा वंशियो! अब अपने यात्रा-
पर्व मनाओ, अपनी मन्नतों को पूरा करो। अब
अधम व्यक्ति तुम्हारे प्रदेश से कभी नहीं
गुजरेगा। वह पूर्णतः नष्ट कर दिया गया।

2 ओ नीनवे महानगर! विध्वंसक ने तुझ पर
आक्रमण कर दिया। अतः परकोटों पर
पहरेदार नियुक्त कर। मार्ग की चौकसी कर
युद्ध के लिए तैयार हो। अपनी समस्त सैनिक
शक्ति को एकत्र कर।

2 प्रभु याकूब वंशियों का वैभव,
इस्राएल के वंशजों का वैभव लौटा रहा है।
लुटेरे आक्रमणकारियों ने उन्हें लूट लिया था,
उनकी अंगूर-लताओं को नष्ट कर दिया था।

* मूल में अस्पष्ट : "तथा मदिरा के नशे में चूर" ** मूल में, अध्याय 2 : 1

1 : 8 उत 6 : 7-8 1 : 15 यश 52 : 7; प्रे 10 : 36; रोम 10 : 15

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

3 विध्वंसक के योद्धाओं की ढाल लाल है।
उसके सैनिक किरमिजी रंग की वरदी पहिने
हुए हैं।
रथ पंक्तिबद्ध हैं।
वे ज्वाला की तरह चमक रहे हैं।
घोड़े कूद-फांद रहे हैं।
4रथ सड़कों पर अंधाधुन्ध दौड़ने लगे।
वे चौराहों पर इधर-उधर दौड़ रहे हैं।
वे मशालों की तरह चमक रहे हैं।
वे बिजली की गति से झपटते हैं।
5सेनाधिकारियों को बुलाया गया।
वे गिरते-पड़ते जा रहे हैं,
वे शहरपनाह की ओर भाग रहे हैं।
वहाँ रक्षा-मंडप तैयार किया गया है।
6नदी-बांध के फाटक खोल दिए गए;
महल में निराशा छा गई।
7उसकी स्वामिनी बंदी बना ली गई।
उसे ले जा रहे हैं।
उसकी सेविकाएँ रो रही हैं।
वे चकई की तरह विलाप कर रही हैं।
वे अपनी छाती पीट रही हैं।
8नीनवे एक ऐसा तालाब है, जिसका पानी बह
गया!
वे आदेश देते हैं, 'रुको रुको।'
पर कौन रुकता है!
9चांदी लूटो, सोना लूटो, खजाने का अन्त नहीं।
कीमती वस्तुओं के ढेर लगे हैं।

10 नीनवे महानगर उजड़ गया।
विध्वंस और विनाश!
हृदय डूब रहा है, घुटने कांप रहे हैं।
कमर टूट गई; चेहरे पीले पड़ गए।
11सिंह की गुफा कहां है,
जवान सिंह की मांद कहां गई,
जहाँ सिंह अपना शिकार लाया करता था,
जहाँ उसके बच्चे थे, और उन्हें सतानेवाला
कोई न था?
12सिंह अपने बच्चों के लिए बहुत शिकार लाता
और उन्हें फाड़ता था,
वह अपनी सिंहनियों के लिए शिकार का
गला घोंटता था।
वह अपनी मांदों को अपने शिकार से,
अपनी गुफाओं को शिकार के मांस से भर
देता था।

नीनवे महानगर का पूर्ण विनाश

13स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु यों कहता है :
देख, मैं तेरे विरुद्ध हूं,
मैं तेरे रथों को आग में फूंक दूंगा,
तलवार तेरे जवान सिंहों को
मौत के घाट उतार देगी।
मैं पृथ्वी से तेरे शिकार का अंत कर दूंगा।
तेरे राजदूतों का स्वर फिर कभी सुनाई नहीं
देगा।

3 धिक्कार है तुझे, ओ खूनी नगरी नीनवे!
तू झूठ और लूट से भरी है,
तेरी लूट का कोई अन्त नहीं।
2चाबुक की आवाज, पहियों के घूमने की
आवाज सुनाई दे रही है।
घोड़े दौड़ रहे हैं, रथ भाग रहे हैं।
3घुड़सवार सरपट दौड़ रहे हैं,
तलवारें चमक रही हैं, भाले चमचमा रहे हैं,
हजारों लोग मरे पड़े हैं,
लाशों का ढेर लगा है, लोथों का अन्त नहीं।
लोग लोथों से ठोकर खाकर गिरते हैं।
4यह विनाश क्यों हुआ? इसलिए कि वेश्या ने
उस सुन्दर और जादूगरनी वेश्या ने
अत्यधिक वेश्यावृत्ति की थी।
उसने अपनी वेश्यावृत्ति से राष्ट्रों को फंसाया
था, अपने जादू से अनेक देशों को लुभाया था।
5देख, मैं तेरे विरुद्ध हूं;
स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु यह कहता है,
मैं तेरा वस्त्र तेरे मुंह तक उठाऊंगा,
मैं तेरी नग्नता राष्ट्रों को दिखाऊंगा;
राज्य तेरे गुप्तांगों को देखेंगे।
6मैं तुझ पर कूड़ा-कर्कट फेंकूंगा;
मैं तुझे मूर्ख सिद्ध करूंगा;
मैं सबसे तेरी हंसी कराऊंगा।
7तुझे देखनेवाले तेरे पास से भाग जाएंगे;

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वे यह कहेंगे :
'नीनवे का सौन्दर्य नष्ट हो गया;
तेरे लिए कौन विलाप करेगा ?
मैं कहां से तुझे सांत्वना देनेवाला लाऊं ?'

8 क्या तू नो-आमोन नगरी से बेहतर है ?
वह नील नदी के तट पर,
जल से घिरी हुई थी।
उसका परकोटा सागर था,
और उसकी शहरपनाह नदी का जल।
9इथियोपिआ और मिस्र देश
उसके अपार शक्ति-स्रोत थे।
पूट और लीबिया देश उसके मित्र-राष्ट्र थे।

10फिर भी शत्रु नो-आमोन नगरी को कैद कर ले गए, वह बन्दिनी बनी और अपने देश से निर्वासित हुई।
प्रत्येक सड़क के छोर पर
शिशुओं को पटक-पटक कर मारा गया।
नगरी के प्रतिष्ठित व्यक्तियों को गुलाम बनाने के लिए उनके नाम पर चिट्ठी डाली गई।
उसके बड़े लोग जंजीरों में जकड़े गए।
11ओ नीनवे, तू प्रभु के कोप की मदिरा पियेगी
तू स्तम्भित हो जाएगी;
तू शत्रु से भागकर आश्रय की तलाश करेगी।
12तेरे समस्त गढ़ फल से लदे अंजीर के पेड़ की तरह हैं,
वे हिलाने पर खाने वाले के मुंह में टपक जाते हैं।
13देख, देख, तेरे सैनिकों ने
हाथ में चूड़ी पहिन ली है।
तेरे देश के सीमा-द्वार
शत्रुओं के लिए खुले पड़े हैं।
अग्नि ने तेरे प्रवेश-द्वार की अर्गलाएँ
भस्म कर दी हैं।

14चाहे तू घेराबन्दी के समय के लिए,
पानी की व्यवस्था कर ले,
सुदृढ़ मोर्चाबन्दी कर ले,
ईंट बनाने के लिए मिट्टी गूंध ले,
ईंटों के सांचे ले आए,
15फिर भी अग्नि तुझे भस्म करेगी।
तलवार तुझे मौत के घाट उतारेगी।
अग्निज्वाला टिड्डी-दल के सदृश
तुझे चाट जाएगी।

चाहे तू भी टिड्डियों के सदृश अपने को असंख्य बनाए,
चाहे तू टिड्डी-दल के समान अनगिनत हो जाए,
16चाहे तेरे व्यापारियों की संख्या
आकाश के तारों से भी अधिक हो जाए :
फिर भी तेरी ये टिड्डियाँ बढ़कर उड़ जाएंगी।
17तेरे शासक टिड्डियों की तरह हैं,
तेरे सचिव टिड्डी-दल के बादल हैं,
जो ठंड के दिनों में दीवारों की आड़ में पड़े रहते हैं;
जब सूर्य निकलता है तब वे उड़ जाते हैं;
किसी को मालूम नहीं होता कि वे कहां गए।

18 ओ असीरिया के राजा, तेरे चरवाहे सो रहे हैं,
तेरे सामन्त ऊंघ रहे हैं।
तेरी प्रजा पर्वतों पर बिखरी पड़ी है,
उन्हें इकट्ठा करनेवाला कोई नहीं है।
19तेरी चोट का कोई इलाज नहीं,
तेरा घाव बहुत गहरा है।
जो लोग तेरी खबर सुनते हैं,
वे खुश होकर तुझ पर ताली पीटते हैं;
क्योंकि तेरे निरन्तर अत्याचारों को
किसने नहीं भोगा है ?

---

3 : 13 यश 19 : 16 3 : 18 1 रा 22 : 17

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नबी हबक्कूक

पुस्तक-परिचय

नबी हबक्कूक का सेवा-काल ईसवी-पूर्व सातवीं शताब्दी का अंतिम दशक है। इस समय चारों ओर 'कसदी' अर्थात् बेबीलोनी साम्राज्य फैल रहा था। बेबीलोनी सैनिक अपनी क्रूरता के लिए कुख्यात थे। नबी हबक्कूक उनके अत्याचार से 'त्राहि! त्राहि!' करते हैं। वह प्रभु को उलाहना देते हैं, 'हे प्रभु, तू निर्मल आंखों वाला है! तू अन्याय को देख नहीं सकता। तब तू, प्रभु, बेईमान लोगों को क्यों देखता है? दुर्जन अपने से अधिक धार्मिक जन को निगल जाता है; तब तू चुप है! क्यों?' (1 : 13)।

प्रभु अपने नबी को आश्वासन देता है कि वह निर्धारित समय पर अवश्य हस्तक्षेप करेगा। किन्तु निर्धारित समय आने तक "धार्मिक जन अपने विश्वास से जीवित रहेगा" (2 : 4)। इस प्रकार प्रश्नोत्तर द्वारा ईश्वरीय न्याय का मंडन किया गया है।

शेष पुस्तक में नबी हबक्कूक की दण्ड से सम्बन्धित नबूवतें हैं, कि दुर्जनों का विनाश अवश्य होगा। पुस्तक के अन्त में नबी का स्तुतिगान है। वह उद्धारकर्त्ता परमेश्वर की महानता का प्रशंसा-गान गाते हैं। इन पदों में परमेश्वर पर नबी के अटूट विश्वास की झलक मिलती है: कष्ट-संकट की स्थिति में भी "मैं प्रभु में आनन्दित रहूंगा—प्रभु परमेश्वर मेरा बल है" (3 : 18-19)।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

नबी का उलाहना और प्रभु का आश्वासन	1 : 1—2 : 4
दुर्जन का विनाश अवश्य होगा	2 : 5-20
नबी की प्रार्थना	3 : 1-19

1 नबी हबक्कूक ने दर्शन में परमेश्वर की वाणी सुनी।

नबी की प्रभु से शिकायत

2 नबी हबक्कूक ने कहा, 'प्रभु, मैं कब तक
सहायता के लिए तुझे पुकारता रहूंगा,
और तू मेरी पुकार को अनसुनी करता रहेगा?
मैं "त्राहि-त्राहि" करता हूं,
पर तू मुझे नहीं बचाता।
3 तू मुझे दुष्कर्म क्यों दिखाता है?
समाज में ये आपदाएँ क्यों हैं?
मैं अपनी आंखों से विनाश और हिंसा को
देखता हूं।
लड़ाई-झगड़े होते हैं।
4 व्यवस्था कमजोर पड़ गई,
न्याय का प्रभाव समाप्त हो गया।
दुर्जनों ने धार्मिक जन को घेर लिया;
न्याय का गला घोंट दिया गया।'

कसदी राष्ट्र प्रभु के न्याय-दण्ड का साधन

5 प्रभु ने कहा, 'राष्ट्रों की ओर दृष्टि डालो;
आंखें फाड़कर देखो;
तब तुम विस्मित होगे, तुम्हें आश्चर्य होगा।
मैं तुम्हारे जीवन-काल में ऐसा कार्य करूंगा
जिसे सुनकर तुम्हें विश्वास नहीं होगा।
6 मैं कसदी राष्ट्र को युद्ध के लिए उभारूंगा;
वह खूंखार और वेगवान है।
वह पृथ्वी के कोने-कोने में जाकर
उन स्थानों पर कब्जा करता है,
जो उसके नहीं हैं।
7 वह भयानक और विकराल राष्ट्र है।
उसके अपने न्याय-सिद्धान्त और अपनी
मर्यादा है।
8 उसके घोड़े चीतों से भी वेगवान हैं,

1-2 यश 13 : 1-14 : 23 1 : 2 भज 13 1 : 3 यिर 14 : 9.19 1 : 4 यश 59 : 14 1 : 5 प्रे 13 : 41 1 : 6 प्रक 20 : 9; बेल 33

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वे शाम को शिकार की तलाश में निकलनेवाले
भेड़ियों से भी खूंखार हैं।
उसके घुड़सवार शान में दुलकी चाल से
बढ़ते हैं।
वे दूर से आ रहे हैं;
वे बाज की गति से
शिकार खाने के लिए दौड़ते हैं।
9वे सब हिंसा करने के लिए आते हैं।
उनके आतंक की खबर उनसे पहले पहुंचती
है।
वे रेतकणों की तरह असंख्य लोगों को बंदी
बनाते हैं।
10वे राजाओं की हंसी उड़ाते,
और शासकों का उपहास करते हैं।
वे किलों को देखकर हंसते हैं।
वे दमदमा बांधकर उनको जीत लेते हैं।
11तब वे आंधी की तरह आगे बढ़ जाते हैं।
वे लोग दोषी हैं, जो अपने बल को ही अपना
ईश्वर समझते हैं।'

नबी का प्रभु को उलाहना देना

12 'हे प्रभु, मेरे परमेश्वर,
मेरे पवित्र परमेश्वर, तू अनादि है।
इस कारण हम नहीं मरेंगे*।
हे प्रभु, तूने न्याय के लिए
कसदी राष्ट्र को नियुक्त किया है।
हे हमारी चट्टान,
तूने हमें ताड़ित करने के लिए
उसे निश्चित किया है।
13हे प्रभु, तू निर्मल आंखोंवाला है,
अतः तू बुराई को देख नहीं सकता।
तू अन्याय को देख नहीं सकता।
तब तू, प्रभु, बेईमान लोगों को क्यों देखता है?
दुर्जन अपने से अधिक धार्मिक जन को
निगल जाता है;
तब भी तू चुप है। क्यों?
14समुद्र की मछलियों की तरह,
रेंगनेवाले जीव-जन्तुओं की तरह,
जिनका कोई शासक नहीं होता,
तूने मनुष्यों को बनाया है।
15मछुआ उन सबको कांटे से ऊपर खीचता है,
अपने जाल से उन्हें घसीटता है।
वह महाजाल में उन्हें फंसाता है।
तब वह आनन्दित और प्रसन्न होता है।
16अतः मछुआ अपने जाल के सम्मुख बलि
चढ़ाता है।
वह महाजाल के सामने धूप जलाता है।
जाल और महाजाल के द्वारा ही
वह सुख से जीवन बिताता है,
घी-चुपड़ी रोटी खाता है।
17प्रभु, क्या वह जाल में मछली सदा पकड़ता
रहेगा?
क्या वह निर्दयता से राष्ट्रों का वध हमेशा
करता रहेगा?'

प्रभु का हबक्कूक को उत्तर देना

2 मैं अपनी चौकी पर खड़ा होऊंगा,
मैं मीनार पर स्वयं को खड़ा करूंगा।
मैं प्रतीक्षा करूंगा
और सुनूंगा कि प्रभु मुझसे क्या कहेगा,
पर मैं अपनी शिकायत का स्पष्टीकरण कैसे
करूंगा?
2प्रभु ने मुझे यह उत्तर दिया, 'दर्शन को लिख,
पट्टियों पर उसको स्पष्ट अंकित कर,
ताकि दौड़नेवाला भी उसको सरलता से पढ़
सके।
3दर्शन के पूर्ण होने में कुछ देर है,
पर वह अवश्य पूरा होगा,
वह झूठा नहीं होगा।
यदि उसके पूर्ण होने में देर हो,
तो प्रतीक्षा कर।
यह दर्शन अवश्य सिद्ध होगा,
उसमें अधिक विलम्ब न होगा।'
4देख, जो कुटिल है, उसका पतन अवश्य होगा;

* अथवा, 'तू ही अमर है' + मूल में, 'वह घमण्ड में फूला हुआ है'

1 : 13 भज 5 : 4–5; 35 : 22 ; प्रव 14 : 19 **1 : 14** यिर 16 : 16;यहेज 12 : 13 **2 : 1** यश 21 : 8; यहेज 3 : 17 **2 : 2** यश 8 : 1; प्रक 1 : 19 **2 : 3** दान 10 : 14; इब्र 10 : 37 **2 : 4** यश 3 : 10; नीति 10 : 25; रोम 1 : 17; गल 3 : 11; इब्र 10 : 38

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

परन्तु धार्मिक जन अपने विश्वास से जीवित
रहेगा।
5धन* धोखेबाज है!
अहंकारी व्यक्ति टिक नहीं सकता।
उसका लोभ अधोलोक की तरह मुंह फाड़े
रहता है,
मृत्यु के समान उसका पेट कभी नहीं भरता।
वह अपने में सारे राष्ट्रों को समेटता है,
वह सब कौमों को अपने पास एकत्रित रखता
है।'

पांच अभिशाप

6 लोग दुष्ट राष्ट्र पर व्यंग्य बाण छोड़ेंगे।
वे ताना मारेंगे और यह कहेंगे:
'धिक्कार है तुझे!
तू उस धन को संचित करता है,
जो तेरा नहीं है।
तू गिरवी की वस्तुओं से
अपने को लाद लेता है। पर कब तक?
7तेरे कर्जदार अचानक उठेंगे,
जागनेवाले तुझे संकट में डालेंगे।
वे तुझको लूट लेंगे।
8तूने अनेक राष्ट्रों को लूटा था;
बचे हुए लोग तुझे लूटेंगे,
क्योंकि तूने पृथ्वी के लोगों का रक्त बहाया
है।
तूने पृथ्वी पर, देशों की राजधानियों में,
उनके निवासियों में हिंसात्मक कार्य किए हैं।

9 'धिक्कार है तुझे! तू अपने परिवार के लिए
पाप की कमाई करता है।
तू पाप की पकड़ से बचने के लिए
पहाड़ पर गुप्त निवास-स्थान बनाता है।
10तूने अनेक लोगों की हत्या की;
यों अपने परिवार को नष्ट करने का कुचक्र
रचा;
तू स्वयं अपने जीवन से हाथ धो बैठा।
11तेरे पाप के विरुद्ध दीवार की ईंट पुकारेगी;
छत की कड़ी तुझे उत्तर देगी।

12'धिक्कार है तुझे! तू मनुष्यों की हत्या से
शहर का निर्माण करता है;
तू अधर्म की नींव पर नगर को बसाता है।
13स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु की ओर से यह
निर्धारित है:
ये कौमें अग्नि में स्वाहा होने के लिए
परिश्रम करती हैं,
राष्ट्र व्यर्थ कष्ट झेलते हैं;
क्योंकि उनका परिश्रम निष्फल होगा।
14जैसे जल से सागर पूर्ण है,
वैसे पृथ्वी भी प्रभु की महिमा के ज्ञान से
परिपूर्ण होगी।

15'धिक्कार है तुझे!
तू अपने पड़ोसियों को शराब पिलाता है,
उनकी शराब में विष मिलाता है,
ताकि वे होश-हवास खो दें,
और तू उनकी नग्नता देखे।
16तू महिमा से नहीं,
वरन् नीचता से भर जाएगा।
तू स्वयं पी, और अपनी नग्नता देख।
प्रभु के दाहिने हाथ में प्याला है।
वह तेरे हाथ में आएगा,
और घोर नीचता तेरी महिमा को ढांप लेगी।
17तूने लबानोन पर हिंसात्मक कारवायी की
थी,
वह हिंसा तुझ पर टूट पड़ेगी;
लबानोन के पशुओं पर किया गया विनाश
तुझे डराएगा;
क्योंकि तूने पृथ्वी के लोगों का रक्त बहाया
है,
तूने पृथ्वी पर देशों की राजधानियों में,
उनके निवासियों में हिंसात्मक कार्य किए
हैं।

18'जब मूर्तिकार मूर्ति को ढालता है,
अथवा पत्थर पर खोदकर मूर्ति बनाता है,
तब मूर्तिकार को क्या मिलता है?
मूर्ति केवल मूर्ति है, असत्य का स्रोत है।

---

* पाठभेद, 'शराब'

2 : 14 यश 11 : 9

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जब मूर्तिकार अपनी बनाई हुई गूंगी मूर्ति पर
विश्वास करता है,
तब उसे क्या मिलता है?
19धिक्कार है तुझे! तू लकड़ी की प्रतिमा से
कहता है "जाग!"
तू गूंगे पत्थर से कहता है : "उठ!"
क्या यह तुझे सिखा सकता है?
यद्यपि उस पर सोना-चांदी मढ़ा है,
तथापि उसमें प्राण कहाँ है?'

20प्रभु अपने पवित्र भवन में है।
समस्त पृथ्वी उसके सम्मुख शान्त रहे।

नबी की प्रार्थना

3 शिग्योनोत* के तर्ज पर नबी हबक्कूक का
प्रार्थना-गीत :

2 प्रभु, तूने मुझे जो सुनाया, वह मैंने सुना।
प्रभु, तूने जो कार्य किया, वह मैंने देखा।
प्रभु, इस कठिन समय में** उसे पुनः कर।
प्रभु, कठिन समय पर तू स्वयं को प्रकट
करता है;
क्रोध के समय तू अपनी दया को नहीं
भूलता।
3परमेश्वर तेमान क्षेत्र से आया,
पवित्र परमेश्वर परान पर्वत से उतरा। (सेलाह)
उसके तेज से आसमान ढक गया।
उसके जयजयकार से पृथ्वी गूंज उठी।
4सूर्य के प्रकाश के सदृश उसकी ज्योति थी।
उसके हाथ से किरणें निकल रही थीं।
उसके हाथ में उसका बल छिपा था।
5उसके आगे-आगे महामारी गई,
और पीछे-पीछे महाज्वर।
6वह रुका, उसने पृथ्वी को नापा।
उसने देखा, राष्ट्र हिल गए।
युग-जुग से खड़े पहाड़ बिखर गए।
शाश्वत पहाड़ियाँ डूब गईं।
उसकी गति आदि काल से एक-सी है।

7 मैंने यह देखा :
कूशान के तम्बू दुःख के भार से दब गए;
मिद्यान के खेमे डोलने लगे।
8प्रभु, तू अपने अश्वों पर,
अपने विजयी रथों पर क्यों सवार है?
क्या तेरा कोप सरिताओं के प्रति है?
क्या तू नदियों से नाराज है?
क्या तू समुद्र से क्रुद्ध है?
9तूने अपने धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाई
प्रत्यंचा पर बाण रखे। (सेलाह)
तूने भूमि को चीरकर नदियाँ बहाईं।
10पहाड़ों ने तुझे देखा, वे कांप उठे।
जल-प्रलय की धाराएँ फूट पड़ीं।
अथाह सागर चिल्ला पड़ा,
उसने अपने हाथ ऊपर उठा लिये।
11तेरे उड़नेवाले बाणों की चमक से,
तेरे चमकीले भाले की कौंध से
सूर्य परिक्रमा करना भूल गया;
चांद अपनी परिधि में ठहर गया!
12तू क्रोधोन्मत हो
पृथ्वी पर विचरण कर रहा है,
तू रोष से राष्ट्रों को रौंद रहा है।
13तू अपने निज लोगों के उद्धार के लिए,
अपने अभिषिक्त की मुक्ति के निमित्त
निकला है।
तूने दुर्जन+ का सिर कुचला,
उसे सिर से पैर तक नग्न कर दिया।
(सेलाह)
14तूने उसके योद्धाओं के सिर++
अपने भाले से छेद दिए;
जो हमें बिखेरने के लिए बवंडर-जैसे आए
थे;
जो गुप्त स्थानों में गरीब की हत्या के लिए
हंसते हुए आए थे।
15तूने सागर के उफनते जल को,
सागर को अपने अश्वों से रौंद डाला।
16 यह मैंने सुना, और मेरा शरीर कांपने लगा।
आवाज सुनते ही मेरे ओंठ कांपने लगे।
सड़ायंध मेरी हड्डियों तक घुस गई।

---

* अथवा 'शोकगीत'। ** मूल में, "वर्षों के मध्य में" + मूल में 'दुर्जन के घर' अथवा 'दुष्ट वंश'। ++ अथवा, 'प्रमुख'
2 : 20 सफ 1 : 7; जक 2 : 13 **3 : 3** व्य 33 : 2; शास 5 : 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मेरे पैरों तले की जमीन खिसक गई।
मैं चुपचाप उस दिन की प्रतीक्षा करूंगा,
जब हमारे आक्रमणकारियों पर संकट आएगा।
17यद्यपि अंजीर वृक्ष में फूल नहीं आए,
अंगूर-लताओं में फल नहीं लगे,
जैतून के फलों की फसल नहीं हुई,
खेतों में भी अन्न नहीं उपजा,
बाड़ों में भेड़-बकरी नहीं रही,
और पशुशालाओं में गाय-बैल नहीं रहे,
18तो भी मैं प्रभु में आनन्दित होऊंगा;
मैं अपने उद्धारकर्त्ता परमेश्वर में हर्षित होऊंगा।
19प्रभु, स्वामी मेरा बल है;
वह मेरे पैरों को हिरण के पैरों के सदृश गतिवान बनाता है।
वह मुझे ऊंचे-ऊंचे स्थानों पर चलने का सामर्थ्य देता है।
(मुख्य वादक के लिए। तांतयुक्त वाद्ययन्त्रों के साथ।)

3 : 18 लू 1 : 47 3 : 19 2 शम 22 : 34; भज 18 : 33

नबी सफन्याह

पुस्तक-परिचय

नबी सफन्याह (अथवा सपन्याह) ने ईसवी पूर्व सातवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में सन्देश सुनाया था। यहूदा प्रदेश के धार्मिक राजा योशियाह ने सन् 621 ईसवी पूर्व में आम जनता में धर्म-सुधार लाने का प्रयास किया। लेकिन सफन्याह के सन्देश में ऐसा कोई संकेत नहीं है कि देश में धर्म-व्यवस्था का पालन किया जा रहा था। इसके विपरीत अधर्म का राज्य था! इसलिए सफन्याह का नबूवतकाल धर्मसुधार से कुछ पूर्व माना जाता है।

अन्य सुधारवादी नबियों की तरह नबी सफन्याह भी अभियोग की शैली अपनाते हैं : प्रभु का प्रकोप-दिवस, उलट-पुलट का दिन निकट है, क्योंकि यहूदा प्रदेश की जनता डर से अन्य देवताओं को शान्त करने के लिए उनकी पूजा कर रही है। यदि इस्राएली लोग विनम्रता से उपने प्रभु परमेश्वर की खोज नहीं करेंगे, तो वे दण्ड मोल लेंगे। प्रभु परमेश्वर अन्य देशों को भी दण्ड देगा। यद्यपि यरूशलेम नगर का पतन अवश्य होगा, फिर भी निर्धारित समय पर यरूशलेम पुनः समृद्ध होगा, उसका पुनःनिर्माण होगा। यरूशलेम के निवासी विनम्र और धार्मिक होंगे।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

प्रभु का "न्याय दिवस"	1 : 1—2 : 3
इस्राएल देश के पड़ोसी राष्ट्रों को धमकी	2 : 4—15
यरूशलेम का पतन और भावी उद्धार	3 : 1—20

सफन्याह का परिचय

1 सफन्याह[†] के पिता का नाम कूशी और दादा का नाम गदल्याह था। सफन्याह का परदादा अमर्याह था। सफन्याह के परदादा के पिता का नाम हिजकियाह था।

प्रभु का सन्देश सफन्याह को यहूदा प्रदेश के राजा योशियाह बेन-आमोन के राज्य-काल में मिला।

प्रभु का दिन

2 प्रभु ने कहा, 'मेरी यह वाणी है :
मैं पृथ्वी की सतह से सब कुछ मिटा डालूंगा।
3मैं मनुष्य और पशु
दोनों को पूर्णतः नष्ट करूंगा।
मैं आकाश के पक्षियों का,

[†]अथवा 'सपन्याह'
1 : 2 2 पत 3 : 10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और समुद्र के जलचरों का अन्त करूंगा।
मैं दुर्जनों को घुटने टेकने पर विवश करूंगा*।
मैं समस्त मानव जाति को,
पृथ्वी की सतह से खत्म कर दूंगा।'
प्रभु की यही वाणी है।
4 'मैं यहूदा प्रदेश पर,
राजधानी यरूशलेम के निवासियों पर
विनाश के लिए हाथ उठाऊंगा।
बअल देवता के बचे हुए आराधकों को,
मूर्तिपूजक पुरोहितों के नाम को
इस स्थान से मिटा डालूंगा।
5 ये अपने घर की छत पर चढ़कर
आकाश की शक्तियों की पूजा करते हैं,
और मिलकोम देवता के नाम पर शपथ खाते हैं।
ये मेरी भी वन्दना करते हैं;
और मुझ-प्रभु के नाम पर भी शपथ खाते हैं!
6 इन्होंने मेरा अनुसरण करना छोड़ दिया है।
ये मुझ-प्रभु की खोज नहीं करते;
ये मुझसे विमुख हो गए हैं;
ये मेरी इच्छा जानने के लिए
मेरे पास नहीं आते।'

7 स्वामी-प्रभु के सम्मुख शान्त रहो।
प्रभु का दिन समीप आ गया।
प्रभु ने बलि चढ़ाने की तैयारी पूर्ण की;
उसने अपने अतिथियों को शुद्ध किया।
8 वह यह कहता है :
'मुझ-प्रभु के बलि-दिवस पर
मैं सामन्तों और राजकुमारों को,
विदेशी वस्त्रों से स्वयं को सजानेवालों को दण्ड दूंगा।
9 उस दिन मैं
मन्दिर की ड्योढ़ी लांघनेवालों को;
अपने मालिक के मकान में
हिंसा और छल-कपट करनेवालों को
दण्ड दूंगा।' प्रभु की यही वाणी है।

10 प्रभु यह कहता है: 'उस दिन
मत्स्य द्वार से चीत्कार सुनाई देगी।
नए मुहल्ले में रोदन का स्वर होगा,
ऊंचे टीलों पर हाहाकार सुनाई देगा।
11 ओ खरल मुहल्ले के निवासियो, रोओ;
तुम्हारे सब व्यापारियों का अन्त हो गया।
एक भी शेष नहीं रहा।
चांदी के सिक्के तौलनेवाले समाप्त हो गए।
12 उस दिन मैं हाथ में दीपक लेकर
यरूशलेम नगर में खोज-बीन करूंगा।
जिन लोगों पर गुनाहों की परत चढ़ गई है,
जो अपने हृदय में यह कहते हैं:
"प्रभु न भला करेगा, और न बुरा,"
उनको मैं दण्ड दूंगा।
13 शत्रु उनकी सम्पत्ति लूटेंगे;
उनके आबाद घर उजड़ जाएंगे।
यद्यपि वे मकान बनाएंगे,
तथापि वे उनमें रह नहीं पाएंगे।
यद्यपि वे अंगूर-उद्यान लगाएंगे
तथापि वे उसका अंगूर-रस पी नहीं सकेंगे।'

14 प्रभु का महा दिवस समीप है।
वह अत्यन्त वेग से पास आ रहा है।
प्रभु के दिन का स्वर कितना कड़ुवा है।
वीर योद्धा भी डर से चिल्ला रहा है।
15 वह दिन प्रकोप का दिन है।
वह संकट और दुःख का दिन है।
वह विध्वंस और विनाश का दिन है।
वह अंधकार और तिमिर का दिन है।
वह सघन मेघों और घोर अंधकार का दिन है।
16 उस दिन किलाबंद नगरों के विरुद्ध,
ऊंचे-ऊंचे परकोटों के विरुद्ध
युद्ध के नरसिंगे फूंके जाएंगे।
युद्ध का कोलाहल सुनाई देगा।
17 प्रभु लोगों पर संकट के बादल लाएगा,
वे अन्धों के समान टटोलकर चलेंगे।

---

* मूल में, 'मैं दुर्जनों समेत रोड़ा हटाऊंगा'

1 : 5 2 रा 21 : 3 1 : 7 हब 2 : 20; जक 2 : 13 1 : 12 भज 10 : 4,13 1 : 13 व्य 28 : 30 1 : 14 आमो 5 : 18; योए 2 : 1

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उन्होंने प्रभु के प्रति पाप किया है।
उनका खून पानी के समान बहेगा,
उनकी लोथ कचरे के समान फेंकी जाएगी।
18प्रभु के प्रकोप-दिवस पर
न उनका सोना, और न चांदी
उन्हें प्रभु के प्रकोप से मुक्त कर सकेगी।
प्रभु की ईर्ष्या-अग्नि से
सम्पूर्ण पृथ्वी भस्म हो जाएगी।
वह पृथ्वी के समस्त निवासियों को
अचानक पूर्णतः नष्ट कर देगा।

पश्चात्ताप का आह्वान

2 ओ निर्लज्ज राष्ट्र के लोगो:
सब मिलकर आओ, यहाँ एकत्र हो।
2इसके पूर्व कि तुम
भूसे के सदृश उड़ा दिए जाओ,
इसके पहले कि तुम पर
प्रभु का भयंकर क्रोध टूट पड़े,
इसके पहले कि प्रभु का प्रकोप-दिवस
तुम पर छा जाए।
3ओ देश के सब विनम्र लोगो,
प्रभु के आज्ञाकारी लोगो,
प्रभु को खोजो; धार्मिकता को, नम्रता को
ढूंढ़ो।
तब सम्भवतः तुम प्रभु के प्रकोप-दिवस पर
सुरक्षित रह सको।

पड़ोसी राष्ट्रों का पतन

4 गाजा नगर-राज्य निर्जन क्षेत्र बनेगा,
अश्कलोन नगर-राज्य उजड़ जाएगा।
अश्दोद के निवासी दिन-दोपहर खदेड़ दिये
जाएंगे,
एक्रोन के नागरिक अपने नगर से उखाड़े
जाएंगे।
5ओ समुद्र-तट पर रहनेवालो,
ओ करेती राष्ट्र, धिक्कार है तुझे।
ओ पलिश्ती देश, ओ कनान!
प्रभु तेरे विरुद्ध बोल रहा है:
'मैं तुझे पूर्णतः नष्ट करूंगा,
तुझमें एक भी निवासी शेष नहीं रहेगा।'
6ओ समुद्र-तट के देश,
तू विशाल चरागाह बनेगा;
तू चरवाहों का घर होगा,
भेड़ों का बाड़ा बनेगा।
7यहूदा प्रदेश के बचे हुए लोग
समुद्र-तट के देश पर अधिकार करेंगे;
वे उसको चरागाह बनाएंगे।
अश्कलोन नगर-राज्य के घरों में
वे संध्या समय आराम से लेटेंगे,
क्योंकि उनका प्रभु परमेश्वर
उनकी सुधि लेगा, और उनकी समृद्धि लौटाएगा।

8 प्रभु ने कहा, 'मैंने मोआब राष्ट्र के ताने सुने;
मैंने अम्मोनी राष्ट्र के अपशब्द भी सुने।
उन्होंने मेरे निज लोगों पर व्यंग्य बाण छोड़े,
मेरी सीमाओं में घुसकर शेखी बघारी।'
9अतः इस्राएल का परमेश्वर,
स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु कहता है,
'मेरे जीवन की सौगन्ध!
मोआब का विनाश सदोम की तरह,
अम्मोन का संहार गमोरा के समान होगा।
इन देशों की भूमि पर बिच्छू पौधे उगेंगे।
उनकी भूमि नोनी बन जाएगी
और सदा के लिए उजड़ जाएगी।
मेरी निज प्रजा के बचे हुए लोग उनको लूटेंगे,
मेरे राष्ट्र के अवशिष्ट लोग
उनपर अधिकार करेंगे।'
10उनके अहंकार का फल यही होगा।
उन्होंने स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु के निज
लोगों को ताने मारे
और उनसे शेखी बघारी थी।
11प्रभु उनके लिए भयानक सिद्ध होगा।
वह पृथ्वी के सब देवताओं को भूखों मार
डालेगा।
सब राष्ट्रों के लोग और द्वीप-निवासी,
अपने-अपने स्थान में प्रभु की वन्दना करेंगे।

12 'ओ इथियोपिआ! मैं अपनी तलवार से तेरा
भी वध करूंगा।'

1 : 18 यहेज 7 : 19 2 : 3 आमो 5 : 6; यश 57 : 15; 66 : 2; भज 149 : 4 2 : 4-7 यश 14 : 29-31 2 : 8-11 यश 15-16 2 : 9 उत 19 : 24 2 : 12 यश 18 : 1

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

13प्रभु उत्तर की ओर अपना हाथ उठाएगा,
और असीरिया देश को नष्ट करेगा,
वह नीनवे नगर को उजाड़ देगा,
नीनवे नगर मरुस्थल के समान शुष्क बनेगा।
14पशुओं के झुण्ड, जाति-जाति के पशु
नगर के मध्य पड़े रहेंगे।
धनेश और साही पक्षी खम्भों के शीर्ष में
बसेरा करेंगे।
खिड़कियों में उल्लू हू-हू बोलेंगे।
ड्योढ़ियों में कौवे कांव-कांव करेंगे।
देवदार की कीमती लकड़ी में कीड़े लगेंगे।
15यह वैभवपूर्ण नगरी है।
इसे अपनी सुरक्षा पर विश्वास था।
यह अपने हृदय में सोचती थी:
'बस मैं ही हूं, मेरे समान कोई अन्य नगरी
नहीं है।'
इसका कैसा विनाश हुआ!
यह जंगली पशुओं की मांद बन गई।
यहां से गुजरनेवाले थू-थू करते हैं,
वे हाथों से उपेक्षा जताते हैं।

यरूशलेम नगर का पाप

3 धिक्कार है विद्रोहिणी और अशुद्ध नगरी
को,
अत्याचार करनेवाली नगरी को!
2वह किसी की बात पर ध्यान नहीं देती,
वह ताड़ना पाने पर भी नहीं सुधरी।
वह प्रभु पर भरोसा नहीं करती।
वह परमेश्वर की आराधना के लिए
उसके मन्दिर में नहीं आती।*
3उसके अधिकारी गरजते सिंह हैं,
जो शिकार की तलाश में रहते हैं;
उसके न्यायाधीश शाम को निकलनेवाले
भेड़ियों की तरह हैं,
जिन्हें सुबह तक खाने को कुछ नहीं मिला।
4उसके नबी बकवादी हैं, वे धोखेबाज हैं।
उसके पुरोहित पवित्र को अपवित्र करते हैं।
वे व्यवस्था का उल्लंघन करते हैं।
5उसके मध्य में रहनेवाला प्रभु धार्मिक है,
वह अनुचित कार्य नहीं करता;
वह हर सुबह सूर्य की किरणों की तरह
न्याय प्रकट करता है।
वह अपना यह कार्य कभी नहीं भूलता;
पर जो अन्यायी है, उसके लिए शर्म क्या!

6 प्रभु यह कहता है: 'मैंने राष्ट्रों को खत्म कर
दिया।
उनके परकोटे ध्वस्त हो गए।
मैंने उनकी सड़कों को निर्जन बना दिया,
अब उनपर कोई नहीं चलता।
मैंने उनके नगर उजाड़ दिए,
उनमें एक भी आदमी नहीं रहता;
वहां रहनेवाला कोई नहीं है।
7मैंने यह सोचा था, "वह मुझसे अवश्य डरेगी,
वह ताड़ना से सुधर जाएगी।
उसकी दृष्टि से वे दण्ड भी नहीं छिपे थे,
जो मैंने उसे दिए थे।"
फिर भी वह अधिकाधिक दुष्कर्म करती गई।'

8 प्रभु यों कहता है:
'अब तू उस दिन की प्रतीक्षा कर,
जब मैं तेरे विरुद्ध स्वयं गवाह के रूप में
खड़ा होऊंगा।
मैंने यह निर्णय किया है:
मैं राष्ट्रों को एकत्र करूंगा,
मैं राज्यों को इकट्ठा करूंगा;
मैं उन पर अपना क्रोध उण्डेलूंगा;
उन पर अपनी क्रोधाग्नि बरसाऊंगा।
मेरी ईर्ष्या की अग्नि से
समस्त पृथ्वी भस्म हो जाएगी।

यरूशलेम का उद्धार

9 'उस समय मैं कौमों की बोली बदल दूंगा।
मैं उन्हें शुद्ध बोली प्रदान करूंगा।
लोग मुझ-प्रभु का नाम पुकारेंगे,
और कंधे से कंधा मिलाकर मेरी सेवा करेंगे।
10इथियोपिआ देश की नदियों के उस पार से,
मेरे आराधकों, मेरे बिखरे हुए लोगों का समूह
मुझे भेंट चढ़ाने आएंगे।

* शब्दशः, 'वह परमेश्वर के निकट नहीं आती'
2 : 13-15 यश 10 : 5-34 2 : 15 यश 47 : 8 3 : 4 यहेज 22 : 26 3 : 5 व्य 32 : 4 3 : 10 मला 1 : 11

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

11 'यद्यपि तूने अपने कार्यों से
मेरे प्रति विद्रोह किया,
तथापि तुझे उस दिन लज्जित नहीं होना
पड़ेगा;
क्योंकि मैं तेरे मध्य से अहंकारियों को,
शेखी मारनेवालों को दूर कर दूंगा।
उसके बाद तू मेरे पवित्र पर्वत पर
अपना अहंकार नहीं दिखाएगी।
12मैं तेरे मध्य में विनम्र और विनीत लोगों का
एक समूह छोड़ूंगा।
वे मुझ-प्रभु के नाम का आश्रय खोजेंगे।
13ये इस्राएल के बचे हुए लोग होंगे।
ये अनुचित कार्य नहीं करेंगे,
ये झूठ नहीं बोलेंगे,
और न उनके मुंह में कपटपूर्ण जीभ होगी।
वे आराम से चरागाह में भेड़ चराएंगे।
वे निश्चिन्त हो, विश्राम करेंगे;
उन्हें डरानेवाला कोई न होगा।'

आनन्द-हर्ष गान

14 ओ सियोन के निवासियो! उच्च स्वर में
गाओ,
ओ इस्राएली राष्ट्र, जयजयकार कर।
ओ यरूशलेम नगरी*, अपने सम्पूर्ण हृदय से
आनन्द मना
और उल्लसित हो।
15प्रभु ने तेरे विरुद्ध दण्ड की आज्ञा वापस ले
ली;
उसने तेरे शत्रुओं को भगा दिया।
इस्राएल का राजा, प्रभु
तेरे मध्य में विराजमान है।
अब तुझे अनिष्ट का डर नहीं होगा।
16उस दिन यरूशलेम से यों कहा जाएगा,
'ओ सियोन, मत डर। तेरे हाथ ढीले न पड़ें।
17-18तेरा प्रभु परमेश्वर तेरे मध्य में विराजमान
है। वह महायोद्धा है।
वही विजय+ प्रदान करता है।
वह तुझसे प्रसन्न होगा, आनन्दित होगा।
वह अपने प्रेम में तुझे पुनः संजीव करेगा।**
तुझे आनन्दित देख, उत्सव के दिन की तरह
वह आनन्द-विभोर हो उठेगा।'
प्रभु कहता है, 'मैं तुझसे विनाश को दूर
करूंगा,
जिससे तुझे उसके कारण अपमान न सहना
पड़े।
19देख, उस समय मैं तुझ पर अत्याचार
करनेवालों का अन्त कर दूंगा।
उस दिन मैं उनको भी बचाऊंगा
जो अपंग होंगे।
मैं समाज से निकाले गए लोगों को
एकत्र करूंगा,
जिन लोगों ने देश-देश में अपमान सहा था;
उनके अपमान को यश और कीर्ति में
बदल दूंगा।
20ओ इस्राएली कौम !
उस समय जब मैं तुझे एकत्र करूंगा
तब मैं तुझे घर वापस लाऊंगा;
जब मैं तेरी समृद्धि तेरी आंखों के सामने
तुझे लौटाऊंगा,
तब मैं निस्सन्देह पृथ्वी की समस्त कौमों में
तुझे यश और कीर्ति प्रदान करूंगा।'
प्रभु की यही वाणी है।

---

*-अक्षरशः, 'पुत्री'। + अथवा, 'उद्धार'। ** मूल में, 'वह अपने प्रेम में मौन रहता है'।

3 : 12 भज 74 : 19,21; मत 5 : 3 3 : 13 प्रक 14 : 5 3 : 14 यश 12 : 6; लू 1 : 28 3 : 15 यश 40 : 2; यहेज 48 : 35 3 : 16 यश 35 : 3 3 : 20 भज 22 : 25-31

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नबी हग्गय

पुस्तक-परिचय

प्रस्तुत ग्रंथ में प्रभु परमेश्वर के नाम से छोटे-छोटे संदेश संकलित हैं, जो कुछ ही महीनों के भीतर नबी हग्गय के माध्यम से इस्राएली लोगों को मिलते रहे। यह सन् 520 ईसवी पूर्व का समय था। फारसी सम्राट कुस्रू ने घोषित किया था कि बेबीलोन में निष्कासित इस्राएली लोग स्वतंत्र हो कर स्वदेश लौट सकते हैं। एक उत्साही दल यरूशलेम लौट आया। कुछ वर्ष बीत गये। किन्तु यरूशलेम का मन्दिर अब भी ध्वस्त पड़ा था। अतः इन सन्देशों में नबी हग्गय जनता के नेताओं, अर्थात् राज्यपाल जरूब्बाबेल और महापुरोहित यहोशुअ से अनुरोध करते हैं कि वे खण्डहर पड़े प्रभु मन्दिर का पुनर्निर्माण करें। तब प्रभु परिष्कृत तथा आत्म-जागृत कौम को समृद्धि तथा शांति प्रदान करेगा।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

प्रभु का आदेश : ''मेरे भवन का पुनर्निर्माण करो''	1:1-15
शान्ति और आशा के सन्देश	2 : 1-23

प्रभु का आदेश : 'मेरे भवन का पुनर्निर्माण करो'

1 जरूब्बाबेल बेन-शालतिएल यहूदा प्रदेश
का राज्यपाल था। यहोशुअ* बेन-योसादाक
महापुरोहित था। सम्राट दारा का शासन-काल
था। उसके शासन के दूसरे वर्ष के छठे महीने
की पहली तारीख को प्रभु का संदेश नबी
हग्गय+ के माध्यम से जरूब्बाबेल और यहोशुअ
को मिला: 2 'स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु यों
कहता है : ये लोग कहते हैं कि प्रभु के भवन
के पुनर्निर्माण का अभी समय नहीं आया है।'
3 तब नबी हग्गय के द्वारा प्रभु ने यह सन्देश
दिया: 4 'क्या यह समय तुम्हारे लिए तख्ते जड़े
मकान में रहने का है, जबकि यह मन्दिर ध्वस्त
पड़ा है? 5 इसलिए मैं प्रभु, स्वर्गिक सेनाओं का
प्रभु, यह कहता हूँ: अपने आचरण पर ध्यान
दो। 6 तुमने बहुत बोया, पर काटा थोड़ा। तुम
खाते हो, पर तृप्त नहीं होते। पानी पीते हो, पर
प्यास नहीं बुझती। तुम कपड़े पहिनते हो, पर
उससे तुम्हारी ठण्ड दूर नहीं होती। मजदूर
कमाता है, पर अपनी कमाई को ऐसी थैली में
रखता है, जिसमें छेद है।'
7 स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु यों कहता है:
'अपने आचरण पर ध्यान दो। 8 पहाड़ पर जाओ;
वहां से इमारती लकड़ी लाओ और मेरे भवन
को बनाओ। तब मैं भवन को देखकर प्रसन्न
होऊंगा, और अपनी महिमा प्रकट करूंगा। मैं-
प्रभु तुमसे यह कह रहा हूं: 9 तुमने फसल अधिक
पाने की आशा की थी, पर वह तुम्हें मिली
थोड़ी। जब तुम फसल घर में लाए तब मैंने उसे
फूंक दिया। क्यों? सुनो, मैं, स्वर्गिक सेनाओं
का प्रभु तुमसे यह कह रहा हूं: मैंने अपने भवन
के कारण यह किया है। मेरा भवन ध्वस्त पड़ा
है, और तुम सब अपना-अपना घर बनाने में
व्यस्त हो। 10 सुनो, इसलिए तुम्हारे सिर के
ऊपर का आकाश ओस नहीं बरसाता और नीचे
की धरती उपज पैदा नहीं करती। 11 मैंने मैदान
और पहाड़ों पर अकाल को प्रेषित किया है।
मैंने अन्न, अंगूर के रस और तेल का, तथा भूमि
पर उपजनेवाली सब प्रकार की वनस्पति का
अकाल किया है। मैंने मनुष्य और पशु पर,
उनके कामों और परिश्रम पर सूखा डाला है।'

---

* अथवा ''येशुआ'' + अथवा, 'हागै'

1 : 3 एज्रा 5 : 1-2 1 : 6 हो 4 : 3 1 : 10 यिर 3 : 3

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'प्रभु, तेरी आज्ञा हमें स्वीकार्य है।'
12राज्यपाल जरूब्बाबेल बेन-शालतिएल
और महापुरोहित यहोशुअ बेन-योसादाक तथा
इस्राएली कौम के सब बचे हुए लोगों ने अपने
प्रभु परमेश्वर की आज्ञा मानी। जिस सन्देश के
साथ प्रभु परमेश्वर ने नबी हग्गय को उनके
पास भेजा था, उसे उन्होंने स्वीकार किया। वे
प्रभु के कारण भयभीत हो गए। 13प्रभु का सन्देश
सुनाने वाले ईश-दूत हग्गय ने लोगों से कहा,
'प्रभु यों कहता हैं: "मैं तुम्हारे साथ हूं।" '
14 तब प्रभु ने यहूदा प्रदेश के राज्यपाल
जरूब्बाबेल, महापुरोहित यहोशुअ और सब
बचे हुए लोगों की आत्मा को उभाड़ा। वे आए
और 15उन्होंने छठे महीने की चौबीस तारीख
को अपने प्रभु परमेश्वर, स्वर्गिक सेनाओं के
प्रभु के भवन का पुनर्निर्माण-कार्य आरम्भ
किया।

प्राचीन भवन की भव्यता

2 सम्राट दारा के शासन-काल के दूसरे वर्ष
के सातवें महीने की इक्कीस तारीख को
प्रभु ने नबी हग्गय के द्वारा यह सन्देश दिया :
2 'तू यहूदा प्रदेश के राज्यपाल जरूब्बाबेल
बेन-शालतिएल, महापुरोहित यहोशुअ बेन-
योसादाक तथा इस्राएली कौम के सब बचे हुए
लोगों से यह कह : 3 "तुम में से कौन लोग
जीवित बचे हैं जिन्होंने इस भवन का पहले
वाला भव्य रूप देखा है? अब उन्हें यह कैसा
लगता है? क्या तुम्हें यह महसूस नहीं होता कि
यह रूप उसके सम्मुख कुछ भी नहीं है?।4फिर
भी, ओ राज्यपाल जरूब्बाबेल, साहसी बन!
मैं-प्रभु यह कहता हूँ। ओ महापुरोहित यहोशुअ
बेन-योसादाक, साहसी बन! ओ देश के सब
लोगो, साहसी बनो! मैं-प्रभु यह कहता हूं :
काम करो! मैं स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु तुम्हारे
साथ हूं, 5जैसा मैंने तुम्हें वचन दिया था, जब
तुम मिस्र देश से बाहर निकले थे। मेरा आत्मा
तुम्हारे मध्य निवास करता है। मत डरो।"
6स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु की यह वाणी सुनो:
एक बार फिर मैं पलक झपकाते ही आकाश
और पृथ्वी को, जल और थल को कंपा दूंगा।
7मैं समस्त राष्ट्रों को कंपा दूंगा; और तब उनकी
समस्त धन-सम्पत्ति इस भवन में अर्पित की
जाएगी, और मैं इसको ऐश्वर्य से भर दूंगा। मैं,
स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु ने यह कहा है। 8सोना
मेरा है, चांदी भी मेरी है। स्वर्गिक सेनाओं के
प्रभु की यह वाणी है। 9स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु
यह भी कहता है : मेरे मन्दिर की यह भव्यता
पहले वाली भव्यता से अधिक भव्य होगी।
मुझ-प्रभु का यह कथन है: मैं इस स्थान को
समृद्धि प्रदान करूंगा। स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु
की यही वाणी है।'

नबी हग्गय और पुरोहितों में विचार-विमर्श

10 सम्राट दारा के शासन-काल के दूसरे वर्ष
के नवें महीने की चौबीस तारीख को प्रभु ने
नबी हग्गय के द्वारा यह संदेश दिया : 11'स्वर्गिक
सेनाओं का प्रभु यों कहता है: पुरोहितों से इस
समस्या का निदान पूछ: 12"यदि कोई व्यक्ति
अपने वस्त्र के छोर में पवित्र मांस को बांध कर
ले जाता है और उस छोर से रोटी, पका हुआ
भोजन, अंगूर का रस, तेल या अन्य खाद्य पदार्थ
छू जाता है, तो क्या वह भी पवित्र हो जायगा?" '
पुरोहितों ने उत्तर दिया, 'नहीं।'
13 हग्गय ने पूछा, 'यदि कोई व्यक्ति लाश
को छूने के कारण अशुद्ध हो गया है, और वह
इन वस्तुओं में से किसी वस्तु को छू लेता है,
तो क्या वह अशुद्ध हो जाएगी?'
पुरोहितों ने जवाब दिया, 'हां, अशुद्ध हो
जाएगी।'
14 तब हग्गय ने कहा, 'प्रभु का यह कथन
है: मेरी दृष्टि में यह कौम, यह राष्ट्र भी ऐसा ही
अशुद्ध है। इसका हर काम भी अशुद्ध है। जो
चढ़ावा यह चढ़ाता है, वह भी अशुद्ध है।
15अब अपने हृदय में विचार करो, आगे क्या
होगा? जब प्रभु-मन्दिर के निर्माण के समय
पत्थर की जोड़ाई होने लगी थी, उससे पूर्व
तुम्हारी स्थिति कैसी थी? 16उन दिनों में जब

---

1 : 13 यहो 1: 5-6 ; मत 28 : 20 **2 : 3** एज्रा 3 : 12 **2 : 4** नह 4 : 19-20; भज 34 : 18 **2 : 5** नि 29 : 45-46 **2 : 6** इब्र 12 : 26 **2 : 7** यश 60 : 5 **2 : 13** गण 19 : 11 **2 :**

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कोई व्यक्ति अन्न के ढेर के पास दो सौ किलो*
की आशा से जाता था, तब उसे एक सौ प्राप्त
होता था। जब वह अंगूर-रस के कुण्ड के पास
जाता और सोचता था कि वह एक सौ लिटर**
रस निकालेगा तब उसे चालीस ही मिलता था।
17मैंने तुम्हारे हर काम को, तुम्हारी समस्त
फसल को पाला, गेरूआ और ओलों से नष्ट कर
दिया, तो भी तुम मेरी ओर नहीं मुड़े। मुझ-प्रभु
का यह कथन है।

18 'अपने हृदय में विचार करो: आगे क्या
होगा? जिस दिन मुझ-प्रभु के मन्दिर की नींव
डाली गई थी, उस दिन से, अर्थात् नवें महीने
की चौबीसवीं तारीख से, आगे की स्थिति पर
विचार करो। 19क्या बीज अब तक बखार में
है? क्या अंगूर, अंजीर, अनार और जैतून के
वृक्षों में फल नहीं लगे? आज के दिन से मैं तुम्हें
आशिष देता रहूंगा।'

* मूल में, 'बीस माप' ** मूल में, 'पचास माप'
17 आमो 4 : 6-11 2 : 23 यिर 22 : 24

जरूब्बाबेल को प्रभु का संदेश

20 उसी महीने की चौबीस तारीख को
हग्गय को दूसरी बार प्रभु का सन्देश प्राप्त
हुआ। 21प्रभु ने यह कहा, 'यहूदा प्रदेश के
राज्यपाल जरूब्बाबेल से यह कह: मैं आकाश
और पृथ्वी को कंपानेवाला हूं। 22मैं पृथ्वी के
राज्य-सिंहासनों को उलट-पुलट दूंगा। मैं राष्ट्रों
की राज्य-सत्ता को नष्ट कर दूंगा। रथों और
सारथियों को, घोड़ों और घुड़सवारों को पटक
दूंगा और वे गिर जाएंगे। वे अपने साथी की
तलवार से मौत के घाट उतारे जाएंगे 23मैं, स्वर्गिक
सेनाओं का प्रभु यह कहता हूं: ओ जरूब्बाबेल
बेन-शालतिएल, मेरे सेवक, उस दिन मैं तुझे
स्वीकार करूंगा। मैं-प्रभु यह कहता हूं: मैं
उत्तराधिकार की अंगूठी के सदृश तुझे बनाऊंगा,
क्योंकि मैंने तुझे चुना है।' स्वर्गिक सेनाओं के
प्रभु की यही वाणी है।

नबी जकर्याह

पुस्तक-परिचय

नबी जकर्याह के प्रस्तुत ग्रंथ को स्पष्टतः दो खण्डों में विभाजित किया जा सकता है। **पहला खण्ड:** अध्याय 1-8। इनमें वास्तविक नबी जकर्याह की नबूवतें हैं, जिनका समय ईसवी पूर्व 520 से 518 तक है। निष्कासनोत्तर काल में यहूदी समाज की वापसी और पुनः स्थापना का यह समय था। इस कठिन परिस्थिति में हग्गय और जकर्याह सहयोगी नबी थे। नबी जकर्याह आठ दर्शनों के रूप में नबूवत करते हैं। इन दर्शनों के माध्यम से वह परमेश्वर के उद्देश्यों का प्रकाशन अथवा रहस्योद्घाटन प्रस्तुत करते हैं। इनका विषय है: यरूशलेम नगर का जीर्णोद्धार, मन्दिर का पुनर्निर्माण, प्रभु परमेश्वर के निज लोगों का शुद्धीकरण, और दाऊद वंशज जरूब्बावेल को आशा-दीप समझते हुए आनेवाले मसीह का युग जताना।

दूसरा खण्ड (तथा-कथित ''द्वितीय जकर्याह'') : अध्याय 9-14। इस खण्ड में सन् 518 ईसवी पूर्व के पश्चात् दी गयी नबूवतों का संकलन है। संभवतः राजा सिकन्दर महान द्वारा स्थापित यूनानी साम्राज्य का आरंभिक काल इन नबूवतों के लिए उपयुक्त रचनाकाल ठहराया जा सकता है। उस समय यहूदियों का नेतृत्व करने के लिए योग्य ''चरवाहे'' नहीं थे। महापुरोहितीय पद भी भ्रष्टाचार और भाई-भतीजावाद से कलंकित था। नबी-सन्देश का मुख्य विषय है: सच्चे मसीह का आगमन और अंतिम न्याय। किसी प्रिय व्यक्ति के ''बेधित'' होने का शोक-सूचक कथन (12 : 10) अत्यंत रहस्यपूर्ण है, जो भविष्य के लिए अर्थगर्भित ही बना (यो 19 : 34)।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

विषय-वस्तु की रूपरेखा

पहला खण्ड :	1 : 1—8 : 23
आठ दर्शन	1 : 1—6 : 15
आशा के सन्देश और चेतावनियां	7 : 1—8 : 23
दूसरा खण्ड :	9 : 1—14 : 21
पड़ोसी देशों पर महासंकट	9 : 1-8
अराजकता एवं आशांति में भावि शांति-राज्य की तैयारी	9 : 9—11 : 17
यरूशलेम का नवीकरण और विश्व-कल्याण	12 : 1—14 : 21

प्रभु की ओर लौटने का आह्वान

1 सम्राट दारा के शासन-काल के दूसरे वर्ष
के आठवें महीने में प्रभु का यह सन्देश
इद्दो के पौत्र और बेरेकयाह के पुत्र नबी
जकर्याह को मिला: 2 'मैं-प्रभु तुम्हारे पूर्वजों
से बहुत क्रुद्ध था। 3 तू लोगों से यह कह :
स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु यों कहता है: मेरे पास
लौटो ! मुझ-प्रभु का यह कथन है; तो मैं तुम्हारे
पास लौटूंगा।'' स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु की
यह वाणी है। 4 अपने पूर्वजों के सदृश मत बनो।
प्राचीन काल के नबियों ने उनसे कहा था,
''स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु यों कहता है: अपने
बुरे मार्ग से लौटो, अपने दुष्कर्मों को छोड़
दो।'' पर उन्होंने मुझ-प्रभु की बात नहीं सुनी,
मेरी ओर ध्यान नहीं दिया। मुझ-प्रभु की यह
वाणी है। 5 तुम्हारे पूर्वज कहां गए ? नबी कहां
हैं ? क्या वे अमर हैं ? 6 नहीं, अमर हैं तो मेरे शब्द
और मेरी संविधियां जो मैंने अपने सेवक
नबियों को दी थीं। क्या वे तुम्हारे पूर्वजों पर
सच सिद्ध नहीं हुईं ? अतः तुम्हारे पूर्वजों ने
पश्चात्ताप किया और यह कहा: ''स्वर्गिक
सेनाओं के प्रभु ने हमारे साथ जैसा व्यवहार
करने का निश्चिय किया था, वैसा ही उसने
किया। उसने हमारे बुरे मार्गों और दुष्कर्मों के
अनुरूप हमारे साथ व्यवहार किया और हमें
दण्ड दिया।'' '

नबी जकर्याह का पहला दर्शन : घोड़ों का

7 सम्राट दारा के शासन-काल के दूसरे वर्ष
के ग्यारहवें महीने (शबाट महीने) की चौबीसवीं
तारीख को प्रभु का यह सन्देश इद्दो के पौत्र
और बेरेकयाह के पुत्र नबी जकर्याह को मिला।
जकर्याह ने कहा : 8 मैंने रात में यह दर्शन देखा:
एक मनुष्य लाल घोड़े पर सवार है। वह सघन
घाटी में मेंहदी वृक्षों के मध्य खड़ा है। उसके
पीछे लाल, [काले], सुरंग* और सफेद घोड़े
हैं। 9 मैंने पूछा, 'स्वामी, ये क्या हैं ?'
जो स्वर्गदूत मुझसे बात कर रहा था, उसने
मुझे उत्तर दिया, 'मैं तुझे दिखाऊंगा कि ये क्या
हैं।'
10 परन्तु मेंहदी वृक्षों के मध्य खड़े हुए
मनुष्य ने उत्तर दिया, 'ये वे हैं, जिनको प्रभु ने
पृथ्वी पर गश्त लगाने के लिए भेजा है।'
11 उन्होंने प्रभु के दूत को, अर्थात् उस मनुष्य
को जो मेंहदी वृक्षों के मध्य खड़ा था, उत्तर
दिया: 'हमने पृथ्वी पर गश्त लगाई और हमने
देखा कि समस्त पृथ्वी में शान्ति और चैन
है।'
12 तब प्रभु के दूत ने कहा, 'हे स्वर्गिक
सेनाओं के प्रभु, तू कब तक यरूशलेम पर और
यहूदा प्रदेश के नगरों पर दया नहीं करेगा ? तू
उनसे पिछले सत्तर वर्षों से नाराज है।'
13 जो स्वर्गदूत मुझसे बात कर रहा था,
उसको प्रभु ने कृपापूर्वक उत्तर दिया। प्रभु ने
उससे सांत्वनापूर्ण शब्द कहे।
14 उस स्वर्गदूत ने मुझसे कहा, 'यह घोषित
कर: ''स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु यों कहता है:
मैं यरूशलेम नगर और सियोन पर्वत के लिए
बड़ा ईर्ष्यालु हूं। 15 पर मैं अहंकार में डूबे हुए

* अथवा 'पिंगल'। यूनानी पाठ और अध्याय 6 : 2 के आधार पर चौथे रंग के 'काले घोड़े' जोड़ दिये गये हैं।

1 : 1 एज्रा 4 : 24 ; 5 : 1 1 : 3 मला 3 : 7 ; लू 15 : 20 1 : 6 यश 40 : 8 ; 55 : 11 1 : 8 प्रक 6 : 4 1 : 15 यश 47 : 6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

राष्ट्रों के प्रति क्रोध से भरा हूं। जितना ही कम
मैंने क्रोध किया, उतना ही अधिक ये बुराइयों
के ढेर लगाते गए। 16अत: मैं, स्वर्गिक सेनाओं
का प्रभु यों कहता हूं: मैं दया से भरा हुआ
यरूशलेम नगर को लौटा हूं। यहाँ मेरा भवन
पुन: निर्मित होगा। यरूशलेम नगर पर नापने
की डोरी डाली जाएगी, मैं-प्रभु ने यह कहा
है।'' 17पुन: यह घोषित कर: ''सेनाओं का
प्रभु यों कहता है: मेरे नगर समृद्धि से पुन:
परिपूर्ण होंगे। मैं-प्रभु सियोन पर पुन: दया
करूंगा और अपने निवास-स्थान के लिए
यरूशलेम नगर को पुन: चुनूंगा।'' '

दूसरा दर्शन: शक्ति के प्रतीक सींग, और विनाश के प्रतीक लोहार

18** मैंने आंखें ऊपर कीं तो यह देखा: चार
सींग! 19जो दूत मुझसे बात कर रहा था, उससे
मैंने पूछा, 'ये क्या हैं?'

उसने मुझे उत्तर दिया, 'इन्हीं सींगों ने यहूदा,
तथा इस्राएल प्रदेश के निवासियों को और
यरूशलेम के नागरिकों को तितर-बितर किया
है।'

20 उसके बाद प्रभु ने मुझे चार लोहार
दिखाए।

21 मैंने पूछा, 'ये क्या करने के लिए आ रहे
हैं?'

उसने बताया, 'इन सींगों ने यहूदा को तितर-
बितर किया था। एक भी पुरुष सिर न उठा
सकता था। ये लोहार उन्हें आतंकित करने के
लिए आए हैं। जिन राष्ट्रों ने यहूदा को तितर-
बितर करने के लिए अपने सींगों को उन्नत किया
था, ये लोहार उनके सींगों को तोड़ेंगे।'

तीसरा दर्शन: साहुल का

2 मैंने अपनी आंखें ऊपर कीं तो यह देखा:
एक आदमी के हाथ में नापने की डोरी है।
2मैंने उससे पूछा, 'आप कहां जा रहे हैं।' उसने
मुझे बताया, 'यरूशलेम को नापने के लिए, यह
देखने के लिए कि उसकी चौड़ाई कितनी है,
उसकी लम्बाई कितनी है।'

3 जो दूत मुझसे बातें कर रहा था, वह आगे
बढ़ा। उससे भेंट करने के लिए एक और दूत
आगे आया।

4 दूत ने उससे कहा, 'दौड़, और उस जवान
से यह कह: ''यरूशलेम नगर की आबादी
इतनी बढ़ जाएगी, उसमें इतने मनुष्य और पशु
बसेंगे कि वह गाँवों के सदृश बिना दीवारों का
नगर बन जाएगा! 5प्रभु यह कहता है: मैं ही
उसके चारों ओर अग्नि की दीवार बनूंगा, मैं ही
उसके भीतर महिमा होऊंगा।'' '

बन्दियों को बुलाना

6 भाग जाओ, भाग जाओ! प्रभु यों कहता
है: 'बेबीलोन देश* से भाग जाओ। मैं-प्रभु ने
ही तुम्हें आकाश के चारों पवनों के सदृश चारों
ओर फैलाया था।' प्रभु की यह वाणी है।
7भागो, ओ बेबीलोनियों के साथ रहने वालो,
सियोन की ओर भागो। 8जब स्वर्गिक सेनाओं
के प्रभु ने मुझे अपनी महिमा के लिए तुम्हें लूटने
वाले राष्ट्रों के पास भेजा था, तब प्रभु ने यों कहा
था: 'जो तुम्हें स्पर्श करता है, वह मेरी आंख
की पुतली को स्पर्श करता है। 9मैं उन पर अपना
हाथ उठाऊंगा, और उनके गुलाम स्वयं उन्हें
लूट लेंगे।' तब तुम्हें ज्ञात होगा कि स्वर्गिक
सेनाओं के प्रभु ने मुझे भेजा है।

10 ओ सियोन पर्वत के निवासियो, गाओ
और आनन्द मनाओ। प्रभु यों कहता है: 'मैं आ
रहा हूँ। मैं तुम्हारे मध्य में रहूंगा। 11उस दिन
अनेक राष्ट्र मुझ-प्रभु से मिल जाएंगे, और वे
मेरे निज लोग बन जाएंगे। मैं तुम्हारे मध्य में
रहूंगा।'

तब तुम्हें ज्ञात होगा कि स्वर्गिक सेनाओं के
प्रभु ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है। 12प्रभु पवित्र
भूमि में यहूदा प्रदेश को अपनी मीरास बनाकर
पुन: उस पर अधिकार करेगा। वह अपने
निवास-स्थान के लिए यरूशलेम नगर को पुन:
चुनेगा।

** मूल में अध्याय 2 : 1 * मूल में ''उत्तरी दिशा का देश''

2 : 1 यहेज 40 : 3 ; प्रक 11 : 1 **2 : 11** यश 45 : 22

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

13 ओ सब प्राणियो, प्रभु के सम्मुख मौन
रहो। प्रभु उत्तेजित हो कर अपने पवित्र
निवास-स्थान से बाहर निकल रहा है।

चौथा दर्शन : महापुरोहित यहोशुअ का अभिषेक

3 तत्पश्चात् उसने मुझे महापुरोहित यहोशुअ
को दिखाया। वह प्रभु के दूत के सम्मुख
खड़ा था, और शैतान उस पर दोष लगाने के
लिए उसकी दाहिनी ओर खड़ा था। 2प्रभु ने
शैतान से कहा, 'शैतान, मैं तुझे डांट रहा हूँ।
यरूशलेम को अपना निवास-स्थान चुननेवाला
प्रभु, मैं-प्रभु, तुझे डांट रहा हूं। क्या यह आदमी
आग से निकाला हुआ लुक्का नहीं है?'
3 यहोशुअ दूत के सम्मुख खड़ा था। वह
गंदे-मैले वस्त्र पहिने था। 4तब दूत ने अपने
सेवकों को आदेश दिया, 'इनके गन्दे वस्त्र
उतारो।' तब उसने यहोशुअ से कहा, 'देख,
मैंने तेरा अधर्म दूर कर दिया। अब मैं तुझे
राजसी पोशाक पहिनाऊंगा।'
5 मैंने कहा, 'आपके सेवक कृपया, महा-
पुरोहित के सिर पर साफ पगड़ी भी बांध दें।'
अतः सेवकों ने यहोशुअ के सिर पर एक
साफ पगड़ी बांध दी। उन्होंने उसे वस्त्र भी
पहिना दिए। प्रभु का दूत समीप खड़ा था।
6 प्रभु के दूत ने यहोशुअ को यह चेतावनी
दी: 7'स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु यों कहता है:
यदि तू मेरे मार्ग पर चलेगा, जो दायित्व मैंने तुझे
सौंपा है, उसको पूरा करेगा, तब तू मेरे मन्दिर
का व्यवस्थापक होगा, मेरे मन्दिर के आंगनों
का दायित्व संभालेगा। तब मैं तुझे इन सेवकों
के मध्य, जो यहाँ खड़े हैं, आने-जाने का
अधिकार दूंगा। 8महापुरोहित यहोशुअ, सुन!
तेरे साथ तेरे पुरोहित मित्र भी सुनें, जो तेरे
सम्मुख बैठे हैं, क्योंकि ये शुभ शकुन हैं। मैं
अपने सेवक को, राजवंश की एक "शाखा"
को लाऊंगा। 9देख यह पत्थर, जो मैंने यहोशुअ
के सम्मुख रखा है। इस एक ही पत्थर के ऊपर
सात आंखें हैं। इस पर मैं, स्वर्गिक सेनाओं का
प्रभु, यह लेख अंकित करूंगा और इस देश के
अधर्म को एक ही दिन में दूर कर दूंगा। 10उस
दिन तुम सब अपने पड़ोसियों को आनन्द
उत्सव के लिए अंगूर-उद्यानों में और अंजीर
वृक्ष के नीचे आमंत्रित करोगे', स्वर्गिक सेनाओं
के प्रभु का यह कथन है।

पाँचवां दर्शन : दीवट और जैतून वृक्ष

4 जो दूत मुझसे बात कर रहा था, वह फिर
आया। उसने मुझे जगाया, जैसा नींद में
सोया हुआ व्यक्ति नींद से जगाया जाता है।
2उसने मुझसे पूछा, 'तुम्हें क्या दिखाई दे रहा
है?'
मैंने बताया, 'एक दीवट है। वह पूर्णतः सोने
का है। उसके शिखर पर एक कटोरा है। कटोरे
पर सात दीपक हैं। प्रत्येक दीपक में बत्ती के
लिए सात नालियाँ हैं। 3दीवट के पास जैतून के
दो वृक्ष हैं: एक वृक्ष कटोरे की दाहिनी ओर
है, और दूसरा वृक्ष उसकी बाईं ओर।'
4 मैंने दूत से, जो मुझसे बात कर रहा था,
पूछा: 'स्वामी, इनका क्या अर्थ है?'
5 दूत ने मुझसे कहा, 'क्या तुम नहीं जानते?'
मैंने कहा, 'नहीं, मेरे स्वामी।'
6 तब दूत ने मुझे बताया, 'जरूब्बाबेल के
लिए प्रभु का यह सन्देश है: स्वर्गिक सेनाओं
का प्रभु यों कहता है: बल से नहीं, शक्ति से
नहीं, वरन् मेरे आत्मा के द्वारा। 7ओ महापर्वत,
जरूब्बाबेल के सामने तू क्या है? तू सपाट
मैदान हो जाएगा। जरूब्बाबेल शिखर का पत्थर
लाएगा, और लोग यह जय-जयकार करेंगे:
"प्रभु की कृपा ...... प्रभु की कृपा इस पत्थर
पर हो।"'
8 इसके अतिरिक्त प्रभु का यह सन्देश मुझे
मिला: 9'जरूब्बाबेल ने स्वयं अपने हाथों से
इस भवन की नींव रखी है। वह अपने हाथों से
इस भवन को पूरा भी करेगा।'

---

2 : 13 यहेज 43 : 1-5; हब 2 : 20 ; सफ 1 : 7 **3 : 1** अय्य 1 : 6 प्रक 12 : 10 **3 : 2** यहू 9 **3 : 4** यश 6 : 7 **3 : 7** यश 4 : 2 ; यिर 23 : 5; 33 : 15 ; जक 6 12 **3 : 9** यश 18 : 16 ; प्रक 5 : 6 **3 : 10** मी 4 : 4 **4 : 2** नि 25 : 31, 37 **4 : 3** प्रक 11 : 4 **4 : 6** एज्रा 5 : 2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तब तुम्हें ज्ञात होगा कि स्वर्गिक सेनाओं के
प्रभु ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है। 10कौन व्यक्ति
छोटी बातों के दिन को तुच्छ समझता है? वह
जरूब्बाबेल के हाथ में नापने के साहुल को*
देखकर आनन्दित होगा।
दूत ने मुझे बताया, 'ये सात दीपक प्रभु की
आंखें हैं। वह इन आंखों से सम्पूर्ण पृथ्वी की
सब ओर देखता है।'
11 तब मैंने उससे पूछा, 'दीवट की दाहिनी
और बाईं ओर जैतून के वृक्ष क्यों हैं?'
12 मैंने उससे दूसरी बार पूछा, 'जैतून की
इन दो शाखाओं का क्या अर्थ है, जो दो स्वर्ण
नालियों के समीप हैं, जिनसे सुनहला तेल
उण्डेला जाता है?'
13 दूत ने मुझसे कहा, 'क्या तुम इनका अर्थ
नहीं समझते हो?' मैंने कहा, 'नहीं, मेरे स्वामी।'
14तब उसने मुझे बताया, 'ये दो अभिषिक्त
पुरुष हैं, जो समस्त पृथ्वी के स्वामी के समीप
खड़े रहते हैं।'

छठवां दर्शन : उड़ता हुआ कुंडलपत्र

5 मैंने अपनी आंखें ऊपर कीं, तो यह देखा:
एक कुंडलपत्र हवा में उड़ रहा है।
2 उसने मुझसे पछा, 'तुम्हें क्या दिखाई दे
रहा है?'
मैंने यह उत्तर दिया, 'एक कुंडलपत्र, जो
हवा में उड़ रहा है। उसकी लम्बाई लगभग नौ
मीटर और चौड़ाई साढ़े चार मीटर** है।'
3 तब उसने मुझे यह बताया, 'इस पर उस
श्राप के विषय में लिखा है, जो सारे देश पर
पड़ने वाला है। इसकी एक ओर लिखे विवरण
के अनुसार वह व्यक्ति जो चोरी करता है, दूध
की मक्खी के समान निकाल कर फेंक दिया
जाएगा। इसकी दूसरी ओर लिखे हुए विवरण
के अनुसार वह व्यक्ति जो झूठी शपथ खाता है,
वह भी दूध की मक्खी के समान निकाल कर
फेंक दिया जाएगा। 4स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु
यों कहता है: मैं यह कुंडलपत्र प्रेषित करूंगा।
यह चोर के घर में तथा मेरे नाम से झूठी शपथ
खाने वाले व्यक्ति के घर में प्रवेश करेगा। यह
उनके घर में ठहरेगा और लकड़ी तथा पत्थर
सहित घर को भस्म कर देगा।'

सातवां दर्शन: एपा माप के भीतर एक स्त्री

5 जो दूत मुझसे बात कर रहा था, वह बाहर
आया। उसने मुझसे यह कहा, 'अपनी आंखें
ऊपर उठाओ और देखो, तुम्हारे सामने क्या जा
रहा है।'
6 मैंने कहा, 'वह क्या है?'
उसने बताया, 'जो जा रहा है, वह एपा माप+
है।' उसने फिर कहा, 'यह इस देश के अधर्म
का प्रतीक है।'
7 उसी समय एपा माप का ढक्कन खोला
गया। वह सीसे का बना था। मैंने देखा कि
उसके भीतर एक स्त्री बैठी है। 8दूत ने मुझसे
कहा, 'यह स्त्री दुष्कर्म का प्रतीक है।' दूत ने
स्त्री को एपा के भीतर दबा दिया और सीसे के
ढक्कन से एपा का मुंह बन्द कर दिया।
9 मैंने अपनी आंखें ऊपर कीं तो यह देखा:
दो स्त्रियां बाहर निकल रही हैं। लगलग के
पंखों के समान उनके भी पंख हैं। वे हवा में
फैले हुए हैं। उन्होंने अपने पंखों से एपा को
आकाश और पृथ्वी के मध्य अधर में उठा
दिया। 10मैंने दूत से, जो मुझसे बात कर रहा था,
पूछा, 'ये एपा को कहाँ ले जा रही हैं?'
11 उसने मुझे बताया, 'शिनार देश को। वे
उसके लिए वहाँ एक मन्दिर बनाएंगी। जब
मन्दिर तैयार हो जाएगा, तब वे एपा को उसके
मंच पर प्रतिष्ठित कर देंगी।'

आठवां दर्शन: चार रथ

6 मैंने अपनी आंखें ऊपर कीं, तो यह देखा:
चार रथ दो पहाड़ों के बीच से निकल रहे
हैं। ये पहाड़ पीतल के हैं। 2पहले रथ में लाल
घोड़े जुते हैं, और दूसरे रथ में काले घोड़े।
3तीसरे रथ में सफेद घोड़े और चौथे रथ में
बादामी चितकबरे घोड़े जुते हैं। 4जो दूत मुझसे

---

* अथवा 'टिन धातु का पत्थर', 'उत्तम पत्थर'। ** मूल में 'बीस हाथ' और 'दस हाथ'। + प्रायः पैंतालीस लिटर की माप

4 : 10 प्रक 5 : 6 4 : 11–14 प्रक 11 : 4 5 : 2 यहेज 2 : 9–10 ; प्रक 10 : 9–11 6 : 2 प्रक 6 : 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बात कर रहा था, उससे मैंने पूछा, 'मेरे स्वामी,
इनका क्या अर्थ है?'
5 दूत ने मुझे उत्तर दिया, 'ये आकाश के चार
पवन हैं। ये समस्त पृथ्वी के स्वामी के सम्मुख
उपस्थित रहते हैं और इस समय वहाँ से निकल
रहे हैं। 6काले घोड़ोंवाला रथ उत्तरी देश को जा
रहा है, और सफेद घोड़ोंवाला रथ पश्चिमी देश
को+। बादामी चितकबरे घोड़ोंवाला रथ दक्षिणी
देश को जा रहा है और लाल घोड़ोंवाला रथ
पूर्वी देश को।' 7रथ बाहर आए। घोड़े पृथ्वी पर
गश्त लगाने के लिए बेचैन थे। प्रभु ने कहा,
'जाओ, पृथ्वी पर गश्त लगाओ।' अत: उन्होंने
ऐसा ही किया।
8 दूत ने मुझे पुकार कर कहा, 'देखो, जो
उत्तरी देश की ओर गए, उन्होंने वहां प्रभु की
क्रोधाग्नि शान्त की।'

राजतिलक

9 प्रभु का यह सन्देश मुझे प्राप्त हुआ:
10 'हेल्दई, तोबियाह और यदायाह के हाथ से
भेंट ग्रहण कर। ये बेबीलोन देश में निष्कासित
थे और अब वहां से आए हैं। और उसी दिन
योशियाह बेन-सफन्याह के घर जा। 11उनसे
सोना और चांदी ले और एक मुकुट बना और
यह मुकुट महापुरोहित यहोशुअ बेन-
योसादाक** के सिर पर रख, 12 और उससे यह
कह: "स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु कहता है, उस
पुरुष को देख जिसका नाम 'शाखा' है। जिस
स्थान पर वह है, वहां से वह उगेगा और प्रभु
के मन्दिर का निर्माण करेगा। 13केवल वही मुझ-
प्रभु के मन्दिर का निर्माण करेगा और वही
राजसी गौरव को प्राप्त करेगा। वह सिंहासन पर
बैठेगा और शासन करेगा। उसके सिंहासन की
दाहिनी ओर पुरोहित बैठेगा और उन दोनों के
मध्य विचारों में तालमेल होगा।"' 14प्रभु के
मन्दिर में यह मुकुट रहेगा और यह हेल्दई,
तोबियाह, यदायाह और योशियाह बेन-
सफन्याह की यादगार होगा।

15 'जो मेरे निज लोग दूर-दूर के देशों में
तितर-बितर हैं, वे भी आएंगे और प्रभु के
मन्दिर का निर्माण करने में सहायता करेंगे।'
तब तुम्हें ज्ञात होगा कि स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु
ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है। यदि तुम अपने प्रभु
परमेश्वर की आज्ञाओं का तत्परतापूर्वक पालन
करोगे, तो यह कार्य निश्चय ही पूरा होगा।

झूठे उपवास की ताड़ना

7 सम्राट दारा के शासन-काल के चौथे वर्ष
के नवें महीने (किसलेव महीने) की चार
तारीख को प्रभु का यह सन्देश जकर्याह को
मिला। 2बेतएल नगर के निवासियों ने सम्राट के
उच्चाधिकारी, शरेसेर और उसके सहयोगियों
को प्रभु की इच्छा जानने के लिए भेजा।
3उन्होंने उसे स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु के भवन
में पुरोहितों और नबियों से यह पूछने के लिए
भेजा, 'क्या मैं पांचवें महीने में उपवास रखूं
और शोक मनाऊं जैसा कि मैं पिछले अनेक
वर्षों से करता आ रहा हूं?'
4 तब स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु का यह
सन्देश मुझे मिला: 5 'समस्त देशवासियों और
पुरोहितों से यह कह: जो उपवास और शोक
पिछले सत्तर वर्षों से वर्ष के पांचवें और सातवें
महीने में तुम करते आ रहे हो, क्या तुम यह मेरे
लिए करते हो? 6जब तुम खाते और पीते हो,
तो क्या यह तुम अपने लिए ही नहीं करते?
7जब यरूशलेम नगर, उसके आस-पास के
नगर, उसका नेगेब और शफेलाह क्षेत्र आबाद
और समृद्ध थे, तब क्या प्रभु ने प्राचीन काल के
नबियों के द्वारा यह नहीं कहा था?'

बन्दी बनने का कारण: प्रभु की आज्ञा का उल्लंघन

8 प्रभु का यह सन्देश जकर्याह को मिला:
9 'स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु यों कहता है:
"प्रत्येक व्यक्ति अपने जाति-भाई के साथ सच्चाई
से न्याय करे, उसके प्रति करुणा और दया का
व्यवहार करे। 10विधवा, अनाथ, विदेशी यात्री*

+ मूल में 'उसके पीछे'। इस पद का अन्तिम वाक्यांश मूल में अस्पष्ट है। ** संभवत: पहले यहां दाऊद वंशज का नाम था: जरूब्बाबेल बेन-शालतीएल * अथवा 'प्रवासी'

6 : 5 प्रक 7 : 1 6 : 12 यश 4 : 2 ; यिर 23 : 5 ; जक 3 : 8 7 : 3 2 रा 25 : 8 7 : 5 2 रा 25 : 25; यश 58 : 4 7 : 9 यश 1 : 17

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और गरीब पर अत्याचार न करे। तुम में से कोई
भी व्यक्ति अपने भाई-बन्धु के प्रति अपने हृदय
में बुराई की कल्पना भी न करे।'' [11]परन्तु उन्होंने
इन बातों बर ध्यान नहीं दिया। उन्होंने प्रभु की
ओर पीठ फेर ली और अपने कानों में रूई ठूंस
ली। उन्होंने उसके सन्देश को अनसुना कर
दिया। [12]उन्होंने अपने हृदय को पत्थर बना
लिया ताकि वे स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु की
व्यवस्था को न मानें, और न उसके सन्देश को
सुनें, जो उसने अपने आत्मा के द्वारा प्राचीन
काल के नबियों के माध्यम से दिए थे। अत:
स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु का भयंकर क्रोध उन
पर भड़क उठा। [13]स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु यों
कहता है, ''जब मैंने उन्हें पुकारा, तब उन्होंने
मेरी आवाज नहीं सुनी। अत: मैंने भी उनकी
पुकार नहीं सुनी, जब उन्होंने मुझे पुकारा।
[14]मैंने उन्हें बवण्डर के द्वारा अनेक राष्ट्रों में
जिन्हें वे नहीं जानते थे, बिखेर दिया। उनका
देश जिसको उन्हें छोड़ना पड़ा, उजड़ गया।
उस उजड़े देश में किसी ने कदम भी नहीं रखा।
हरा-भरा देश उजाड़ हो गया।'' '

यरूशलेम के पुनः निर्माण की प्रतिज्ञा

8 स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु का यह सन्देश
मुझे मिला: [2]'स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु यों
कहता है। मैं अपने सियोन पर्वत के लिए
अत्यन्त व्याकुल हूं। उसके लिए मैं अत्यन्त
ईर्ष्यालु हो गया हूं। [3]प्रभु यों कहता है: मैं
सियोन पर्वत को लौटूंगा। मैं यरूशलेम के मध्य
निवास करूंगा और यरूशलेम ''सत्य नगर''
कहलाएगा। स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु का पर्वत
''पवित्र पर्वत'' होगा। [4]स्वर्गिक सेनाओं का
प्रभु यों कहता है: यरूशलेम की हर स्त्री और
पुरुष को दीर्घायु प्राप्त होगी। वृद्ध स्त्री-पुरुष
अपने हाथ में लाठी लिये पुनः सड़क के किनारे
बैठेंगे। [5]नगर के गली-कूचे लड़कों और
लड़कियों से भर जाएंगे। वे वहां खेलेंगे-
कूदेंगे। [6]स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु यों कहता है:
उन दिनों यह संभवत: इस्राएल के शेष वंशजों
की दृष्टि में अद्भुत प्रतीत होगा। पर मैं, स्वर्गिक
सेनाओं का प्रभु पूछता हूँ: क्या यह मेरी दृष्टि
में अद्भुत है ? नहीं। [7]स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु
यों कहता है: देखो, मैं पूर्व और पश्चिम के
देशों से अपने निज लोगों को छुड़ाऊंगा। [8]मैं उन्हें
वापस लाऊंगा और यरूशलेम के मध्य बसाऊंगा।
वे मेरे निज लोग होंगे और मैं उनका सत्य और
धार्मिक परमेश्वर होऊंगा।

9 'स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु यों कहता है:
नबियों के माध्यम से इन दिनों मेरा सन्देश
सुननेवाले लोगो! तुम्हारे हाथ मजबूत हों,
ताकि मेरा मन्दिर पुनः निर्मित हो सके। तुम यह
सन्देश उस दिन से सुनते आ रहे हो, जिस दिन
स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु के भवन की नींव रखी
गई थी। [10]उन दिनों में अराजकता थी: न तो
मजदूर को उसकी मजदूरी मिलती थी और न
उसके पशु का किराया। घर से बाहर निकलने-
वाले और घर लौटनेवाले को शत्रु का भय बना
रहता था; क्योंकि मैंने सब लोगों को एक दूसरे
के प्रति भड़का दिया था। [11]मैं, स्वर्गिक सेनाओं
का प्रभु यों कहता हूं: अब मैं इस्राएल के
वंशजों के साथ ऐसा व्यवहार नहीं करूंगा जैसा
मैंने प्राचीन काल में किया था। [12]वे पूर्ण
निश्चिन्तता के साथ खेती-किसानी करेंगे, और
समृद्ध होंगे। अंगूर-उद्यानों में फल लगेंगे।
भूमि पर प्रचुरता से फसल होगी और आकाश
से ओस की वर्षा होगी। मैं इस्राएल के शेष
वंशजों को ये सब वस्तुएं प्रदान करूंगा और वे
इन्हें प्राप्त करेंगे। [13]ओ यहूदा के वंशजो, ओ
इस्राएल के वंशजो! तुम्हारे नाम से राष्ट्र श्राप देते
थे, पर अब मैं तुम्हें बचाऊंगा और तुम आशिष
का माध्यम बनोगे। मत डरो, पर अपने हाथों
को मजबूत बनाओ।

14 'स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु यों कहता है:
जैसे तुम्हारे पूर्वजों ने अपने दुष्कर्मों से मेरे क्रोध
को उभाड़ा था और मैंने तुम्हारा अनिष्ट करने
का निश्चय किया था, और अपने निश्चय को
नहीं बदला, [15]वैसे ही अब मैंने यरूशलेम नगर

---

7 : 11 यश 48 : 4 **7 : 24** व्य 4 : 27 **8 : 3** यश 2 : 2-3 यिर 31 : 23 **8 : 4** यश 65 : 20 **8 : 6** अय्य 42 : 2
8 : 8 यहेज 11 : 17-20; यिर 31 : 31; प्रक 21 : 3 **8 : 9** एज्रा 5 : 1 **8 : 13** यिर 42 : 18 ; उत 12 : 2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और यहूदा के वंशजों के साथ भलाई करने का
निश्चय किया है। स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु का
यह कथन है। मत डरो! 16तुम्हें ये कार्य करने
हैं: एक-दूसरे से सच बोलो। तुम न्यायालयों
में सच्चाई से न्याय करो, और शान्ति की
स्थापना करो। 17तुम एक-दूसरे के प्रति अपने
हृदय में बुराई की कल्पना भी न करो। झूठी
शपथ से घृणा करो क्योंकि मैं इन बातों से घृणा
करता हूं;' प्रभु ने यही कहा है।

18 स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु का यह सन्देश
मुझे मिला: 19'स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु यों
कहता है: चौथे, पांचवें, सातवें और दसवें
महीने के उपवास-दिवस यहूदा के वंशजों के
लिए आनन्द और हर्ष के दिन होंगे, उत्सव के
पर्व होंगे। अत: सच्चाई और शान्ति से प्रेम करो।

20 'स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु यों कहता है:
अनेक राष्ट्रों और अनेक नगरों के निवासी
आएंगे। 21एक नगर का रहनेवाला दूसरे नगर
के रहनेवाले से यह कहेगा, "आओ, हम इसी
क्षण प्रभु की कृपा प्राप्त करने के लिए उसके
मन्दिर चलें। आओ, हम स्वर्गिक सेनाओं के
प्रभु को खोजें। मैं तो जा रहा हूँ।" 22महान राष्ट्र
और बड़ी-बड़ी कौमें स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु
को खोजने के लिए यरूशलेम में जाएंगी। वे
प्रभु की कृपा के लिए निवेदन करेंगे। 23स्वर्गिक
सेनाओं का प्रभु यों कहता है: उन दिनों में पृथ्वी
की भिन्न-भिन्न भाषा बोलनेवाली सब कौमों
में से दस-दस व्यक्ति एक यहूदी * व्यक्ति के
वस्त्र का छोर पकड़कर यह कहेंगे, "हम भी
आपके साथ चलेंगे, क्योंकि हमने सुना है कि
परमेश्वर आपके साथ है।"'

अन्य नबूवतें

गैर-यहूदी राष्ट्रों को गम्भीर चेतावनी

9 प्रभु की ओर से यह एक गंभीर चेतावनी
है। हद्राक** के देश के विरुद्ध प्रभु का यह
सन्देश है: प्रभु ने दमिश्क नगर में स्वयं को
प्रतिष्ठित किया है।

जैसे इस्राएल के सब कुल प्रभु के हैं,
वैसे ही सीरिया देश के सब नगर+ प्रभु के हैं।
2हमात नगर जो सीरिया की सीमा पर स्थित है,
सोर और सीदोन नगर-राज्य भी प्रभु के हैं;
यद्यपि वे बड़े चालाक हैं।
3सोर ने अपने लिए एक गढ़ बनाया है,
उसने धूल-कणों के सदृश चांदी का ढेर
लगाया है।
उसने कच्ची सड़क के कीचड़ के सदृश
सोना एकत्र किया है।
4पर देख, स्वामी इन सबसे उसे वंचित कर
देगा,
उसके वैभव को समुद्र में फेंक देगा,
यह नगर आग में भस्म हो जाएगा।

5 अश्कलोन नगर-राज्य
यह देख कर भयभीत होगा,
गाजा नगर भी पीड़ा से छटपटाएगा,
और एक्रोन भी,
क्योंकि उसकी आशाएं धूल में मिल गई हैं।
गाजा नगर का राजवंश समाप्त हो जाएगा।
अश्कलोन नगर उजड़ जाएगा।
6वर्णसंकर जाति अश्दोद नगर में बसेगी।
प्रभु कहता है: 'मैं पलिश्ती कौम का घमण्ड
चूर-चूर करूंगा।
7मैं उसके मुंह में से पशु-बलि का रक्त,
और उसके दांतों के मध्य से घृणित चढ़ावा
छीनूंगा।
पलिश्ती कौम मुझ-परमेश्वर के लिए
इस्राएल के शेष वंशजों के सदृश अवशेष
रहेगी,
वह यहूदा कुल के सदृश एक कुल मात्र रह
जाएगी,
एक्रोन नगर के निवासी यबूसियों के सदृश
रहेंगे।

---

* अथवा, 'यहूदा वासी' ** सीरिया का राजा अथवा सीरिया का इष्ट-देवता या एक जिला + मूल में, 'आदम नगर का स्रोत'

8 : 16 मत 5 : 9; इफ 4 : 25 8 : 19 जक 7 : 3,5; 2 रा 25 : 1,4 ; मत 9 : 14-15 8 : 21 यश 2 : 3 8 : 23 लू 9 : 44 9 : 7 यश 65 : 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

8मैं अपने भवन में
प्रशासक के सदृश पड़ाव डालूंगा,
एक भी व्यक्ति इधर से उधर नहीं जाएगा।
कोई भी अत्याचारी राजा
तुम पर चढ़ाई नहीं करेगा,
क्योंकि अब मैंने अपनी आंखों से देख लिया।'

सियोन का आगामी राजा

9 ओ सियोन के निवासियो, अत्यधिक आनन्द मनाओ!
ओ यरूशलेम के निवासियो, जय-जयकार करो!
देखो, तुम्हारा राजा तुम्हारे पास आ रहा है,
वह धार्मिक है, उसने विजय प्राप्त की है*।
वह विनम्र है,
और विनम्रता के प्रतीक गदहे पर,
उसके बछेरू पर,
नहीं, वह लद्दू के बछेरू पर बैठा है।
10वह एफ्रइम-राज्य के रथों को
यरूशलेम के युद्ध के घोड़ों को नष्ट करेगा।
वह युद्ध के धनुषों को तोड़ेगा,
और सब राष्ट्रों में शान्ति स्थापित करेगा।
उसका साम्राज्य भूमध्यसागर से मृतसागर तक,
फरात नदी से दक्षिणी सीमान्त,
पृथ्वी की सीमांत तक होगा।

सियोन की पुनः प्रतिष्ठा

11प्रभु कहता है: 'मैंने तुझ से रक्त के द्वारा
विधान का संबंध स्थापित किया है:
अत: मैं तेरे बन्दियों को अन्धे कुंओं से मुक्त करूंगा।
12ओ आशा रखनेवाले बन्दियो,
अपने गढ़ में लौट आओ।
आज मैं यह घोषित करता हूं:
मैं तुम्हें दुहरी समृद्धि लौटाऊंगा।
13ओ यहूदा, मैंने अपना धनुष ताना है।
ओ एफ्रइम, मैंने अपने धनुष पर तीर रखा है।
ओ सियोन, मैंने तेरे पुत्रों को
यूनान के विरुद्ध युद्ध के लिए उभाड़ा है।
मैं तुझे महायोद्धा की तलवार बनाऊंगा।'

14तब प्रभु उनके ऊपर दिखाई देगा,
विद्युत के सदृश उसके तीर छूटेंगे,
स्वामी-प्रभु नरसिंगा फूंकेगा,
और वह दक्षिणी बवन्डर में प्रस्थान करेगा।
15स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु उनकी ढाल बनेगा,
वे अपने शत्रुओं पर प्रबल होंगे।
वे उनके गोफन के पत्थरों को कुचलेंगे,
वे मदिरा के सदृश उनका रक्तपान करेंगे।
वे चषक के समान छलकेंगे।
वे वेदी के कोने के सदृश लबालब भर जाएंगे।
16उस दिन उनका प्रभ परमेश्वर उन्हें बचाएगा;
क्योंकि वे उसके निज लोग हैं,
उसके रेवड़ की निज भेड़ें हैं।
वे मुकुट के हीरों के सदृश
उसके देश में चमकेंगे।
17वह दिन कितना भला और सुन्दर होगा,
युवा भरपेट भोजन करेंगे,
और युवतियां नव अंगूर-रस से तृप्त होंगी।

प्रभु का उद्धार-कार्य

10 वसंतकालीन वर्षा के समय,
प्रभु से वर्षा मांगो,
क्योंकि प्रभु ही वर्षा के बादल बनाता है,
वही लोगों को वर्षा की बौछार देता है,
वही खेतों में सबके लिए वनस्पति उपजाता है।
2गृह-देवता बकवास करते हैं,
शकुन विचारने वाले झूठे शकुन विचारते हैं।
स्वप्न दर्शी झूठे स्वप्न देखते हैं,
और झूठी शान्ति देते हैं।
अत: जनता भेड़ के सदृश भटक गई है,
उनका चरवाहा नहीं है, अत: वे संकट में हैं।

---

* अथवा, "उद्धार पाया हुआ है", "उद्धारकर्त्ता"।

9 : 9 मत 21 : 5; यो 12 : 15 ; उत 49 : 11; 1 रा 1 : 38 ; यश 45 : 21 **9 : 10** 1 रा 1 : 5; यिर 17 : 25 ; यश 9 : 6 ; 11 : 10 ; भज 72 : 8 **9 : 11** नि 24 : 5 **9 : 16** यहेज 34 : 11 **10 : 1** व्य 11 : 14 **10 : 2** मत 9 : 36; यहेज 34 : 5

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

3 प्रभु कहता है, 'मेरा क्रोध चरवाहों के विरुद्ध
भड़क उठा है ;
मैं नेताओं को दण्ड दूंगा।'
स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु अपने रेवड़,
यहूदा वंश की चिंता करता है।
वह उन्हें राजसी युद्ध-अश्व बनाएगा।
4उनसे ही नींव का पत्थर निकलेगा,
उनसे ही शिविर की खूंटी निकलेगी,
उनसे ही युद्ध का धनुष निकलेगा,
उनसे ही वस्तुतः देश का प्रत्येक शासक
निकलेगा।
5वे संगठित रूप में युद्ध के
महाबलवान सैनिक के सदृश बनेंगे,
वे सड़कों के बीच में अपने बैरियों को रौंदेंगे।
प्रभु उनके साथ है, अतः वे युद्ध करेंगे;
वे घुड़सवार सैनिकों को
पीठ दिखाने पर विवश करेंगे।

6 प्रभु कहता है: 'मैं यहूदा के वंशजों को बल
प्रदान करूंगा,
मैं यूसुफ के वंश को बचाऊंगा।
मैंने उन पर दया की है,
अतः मैं उन्हें वापस लाऊंगा।
वे ऐसे रहेंगे मानो मैंने उन्हें
कभी छोड़ा न था।
मैं उनका प्रभु परमेश्वर हूं,
मैं उन्हें निस्सन्देह उत्तर दूंगा।
7एफ्रइमवंशीय पुरुष महाबलवान योद्धा बनेंगे;
जैसे अंगूर-रस पीने से हृदय आनन्दित होता
है,
वैसे उनका हृदय आनन्दित होगा।
उनकी सन्तान यह देखेगी और आनन्द
मनाएगी।
उनका हृदय मुझ-प्रभु में हर्षित होगा।

8 'मैं सीटी बजाकर उन्हें एकत्र करूंगा;
क्योंकि मैंने उनको छुड़ाया है।
वे संख्या में बढ़ जाएंगे।
जैसे वे प्राचीन काल में असंख्य थे।
9यद्यपि मैंने उन्हें अनेक राष्ट्रों में तितर-बितर
किया है,
तो भी वे उन दूर देशों में भी मुझे स्मरण करेंगे।
वे वहां जीवित रहेंगे,
और अपने बच्चों के साथ लौटेंगे।
10मैं उन्हें मिस्र देश से वापस लाऊंगा,
मैं उन्हें असीरिया देश से एकत्र करूंगा,
मैं उन्हें गिलआद और लबानोन देशों में
लाऊंगा;
उन्हें बसाने के लिए स्थान पर्याप्त नहीं होगा।
11वे मिस्र देश के सागर से होकर गुजरेंगे,
वे सागर की लहरों को चीरेंगे।
नील नदी की गहराइयां भी सूख जाएंगी।
मैं असीरिया का घमण्ड तोड़ूंगा।
मैं मिस्र से उसका राज-दण्ड छीन लूंगा।
12इस्राएलियों को मुझ-प्रभु से शक्ति प्राप्त
होगी,
और वे मुझ-प्रभु के नाम की महिमा करेंगे',
प्रभु ने यह कहा है।

11 ओ लबानोन ! अपने प्रवेश-द्वार खोल,
जिससे अग्नि तेरे नगरों में प्रवेश करे,
और तेरे देवदार के वृक्षों को भस्म कर दे।
2ओ सनोवर के वृक्षो, विलाप करो;
क्योंकि देवदार के वृक्ष गिर गए;
बड़े-बड़े वृक्ष नष्ट हो गए।
ओ बाशान क्षेत्र के बांज वृक्षो, छाती पीटो;
क्योंकि शत्रुओं ने सघन वन को काट दिया।
3सुनो, चरवाहे छाती पीट रहे हैं;
क्योंकि उनका वैभव धूल में मिल गया।
सुनो, सिंह दहाड़ रहे हैं; क्योंकि यर्दन नदी
का वन-प्रदेश उजड़ गया।

आलसी चरवाहा

4 मेरे प्रभु परमेश्वर ने यों कहा: 'इस रेवड़
का वध होगा। तू इसका चरवाहा बन। 5जो लोग
इस रेवड़ की भेड़-बकरियां खरीदते हैं, वे
उनका वध करते हैं; फिर भी वे स्वयं दण्ड से
बचे रहते हैं। उनको बेचनेवाले यह कहते हैं,
"प्रभु को धन्यवाद, मैं धनी बन गया।" उनके
चरवाहे भी उन पर दया नहीं करते। 6प्रभु यों
कहता है, मैं इस देश के निवासियों पर फिर दया

10 : 9 व्य 30 : 2 ; बारू 2 : 20-32 लू 15 : 17 11 : 5 हो 12 : 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नहीं करूंगा। मैं इनमें से प्रत्येक का पतन उसके ही चरवाहे के हाथ से कराऊंगा, उसके राजा के हाथ से ही कराऊंगा। वे इस देश को नष्ट करेंगे, पर मैं उनमें से किसी को भी उनके हाथ से मुक्त नहीं करूँगा।'

7 अत: मैं भेड़-बकरियों के व्यापारियों के पास मजदूरी करने लगा और वध होने वाले रेवड़ का चरवाहा बन गया। मैं रेवड़ की भेड़-बकरियों को चराने लगा।

मैंने दो लाठियां लीं। मैंने एक लाठी का नाम "कृपा" और दूसरी का नाम "एकता" रखा। मैं उनको लेकर भेड़-बकरियां चराने लगा।

8 मैंने एक महीने की अवधि में उनके तीन चरवाहों की हत्या कर दी। परन्तु मैं भेड़-बकरियों के कारण अधीर हो गया। वे मुझसे
घृणा करती थीं। 9अत: मैंने यह कहा, 'मैं
तुम्हारा चरवाहा नहीं रहूंगा। जिसको वध होना है, वह वध हो; जिसको भटकना है, वह भटके; और जो बच जाएंगे, वे एक-दूसरे को खा लें।'

10 मैंने कृपा नामक अपनी लाठी ली और उसको तोड़ा। इसका यह अर्थ है: जो विधान+ प्रभु ने सब राष्ट्रों के साथ स्थापित किया था,
उसको उसने तोड़ दिया। 11उस दिन विधान+
तोड़ा गया। भेड़-बकरियों के व्यापारी मुझे ताकते रहे। वे यह बात जानते थे कि यह प्रभु का आदेश है।

12 तब मैंने उनसे यह कहा, 'अगर तुम यह बात उचित समझते हो, तो अभी मुझे मेरी मजदूरी दो; यदि नहीं तो उसे अपने पास रख लो।' अत: उन्होंने चांदी के तीस सिक्के* तौल कर मुझे दिए। मेरी पूरी मजदूरी में इतना ही दिया!

13 तब प्रभु ने मुझसे कहा, 'तू ये सिक्के मन्दिर के कोष में** डाल दे।' वाह! उन्होंने मेरी मजदूरी का मूल्य कितना बढ़िया लगाया! मैंने चांदी के तीस सिक्के लिये और उन्हें प्रभु-मन्दिर के कोष में डाल दिया।

14 उसके बाद मैंने एकता नामक दूसरी लाठी तोड़ी। उसका यह अर्थ है: यहूदा प्रदेश और इस्राएल प्रदेश के मध्य भाई-चारे की भावना टूट गई।

15 प्रभु ने मुझसे यों कहा, 'अब तू चरवाहे के हथियार ले और आलसी चरवाहा बन।
16देख, मैं इस देश में एक ऐसा चरवाहा उत्पन्न कर रहा हूं, जो वध होनेवाली भेड़ों की न चिन्ता करेगा और न भटकी हुई भेड़ों को खोजेगा। वह न घायल भेड़ की मरहम-पट्टी करेगा और न भूखी भेड़ के सम्मुख चारा डालेगा, बल्कि वह मोटी-ताजी भेड़ों का मांस खाएगा; वह उनके खुरों को भी नहीं छोड़ेगा।

17 'धिक्कार है मेरे आलसी चरवाहे को,
जो मेरे रेवड़ को त्यागता है।
तलवार उसकी भुजा को काटे,
उसकी दायीं आंख को फोड़े।
उसकी भुजा पूर्णत: सूख जाए,
उसकी दायीं आंख पूर्णत: फूट जाए!'

यरूशलेम मुक्त होगा

12 प्रभु की ओर से यह एक गंभीर चेतावनी है। जिस प्रभु ने आकाश को ताना है, जिसने पृथ्वी की नींव डाली है और जिसने मानव के भीतर की आत्मा को निर्मित किया है, उस प्रभु की इस्राएल के सम्बन्ध में
यह वाणी है। प्रभु यों कहता है: 2 'देखो, मैं
यरूशलेम को शराब का प्याला बना रहा हूं। यरूशलेम के चारों ओर के राष्ट्र उसको पीकर लड़खड़ाएंगे। यरूशलेम की घेराबन्दी के
समय यहूदा प्रदेश भी लड़खड़ाएगा। 3उस दिन
विश्व की सब कौमों के लिए मैं यरूशलेम को भारी चट्टान बनाऊंगा। जो उसे उठाएगा, वह स्वयं को गम्भीर चोट पहुंचाएगा। विश्व के सब
राष्ट्र संगठित रूप से उसे उठाने आएंगे। 4प्रभु
यों कहता है, उस दिन मैं प्रत्येक घोड़े में आतंक उत्पन्न करूँगा और घुड़सवार सैनिक को पागल बनाऊंगा। मैं प्रत्येक राष्ट्र के हर एक घोड़े

+ अथवा, 'वाचा', 'समझौता', 'संधि' * गुलाम का यही मूल्य था। ** मूल में, 'कुम्हार के यहाँ' अथवा संभवत: 'ढलाई के स्थान पर'

11 : 12 मत 26 : 15 11 : 13 मत 27 : 9 11 : 15 यहेज 34 : 2 11 : 17 यो 10 : 12 12 : 1 यश 42 : 5

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

को अन्धा कर दूंगा। किन्तु मैं यहूदा प्रदेश पर
नजर रखूंगा। 5तब यहूदा प्रदेश के कुल परस्पर
यह कहेंगे, ''यरूशलेम के निवासियों ने अपने
परमेश्वर से, स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु से, यह
शक्ति प्राप्त की है।''
6 'उस दिन मैं यहूदा वंश के कुलों को
लकड़ी के ढेर में भभकती हुई अंगीठी या पूले
में जलती हुई मशाल बना दूंगा और वे आस-
पास के राष्ट्रों को भस्म कर डालेंगे। पर
यरूशलेम अपने स्थान पर आबाद रहेगा।'
7 सर्वप्रथम प्रभु यहूदा कुल के परिवारों को
बचाएगा, जिससे दाऊद के वंशज और यरूशलेम
के निवासी यहूदा कुल पर प्रबल होकर गर्व न
करें। 8प्रभु यरूशलेम नगर के निवासियों के
लिए मानो ढाल बनेगा और उनकी रक्षा करेगा।
फलतः उस दिन यरूशलेम वासियों का दुर्बल
से दुर्बल व्यक्ति राजा दाऊद के समान बलवान
बनेगा। दाऊद का परिवार ईश्वर के समान, प्रभु
के दूत के समान उनका नेतृत्व करेगा।
9 प्रभु कहता है: 'उस दिन मैं उन राष्ट्रों को
नष्ट करूंगा, जो यरूशलेम पर आक्रमण करते
हैं। 10मैं दाऊद के परिवार और यरूशलेम के
निवासियों पर कृपा और प्रार्थना की आत्मा
उण्डेलूंगा। अतः वे मुझ पर दृष्टि डालेंगे। जिस
व्यक्ति को उन्होंने बेधा है* उसके लिए वे
विलाप करेंगे, जैसे कोई अपने मृत इकलौते पुत्र
के लिए विलाप करता है। वे रोएंगे, जैसे कोई
अपने ज्येष्ठ पुत्र की मृत्यु पर रोता है।
11 'उस दिन यरूशलेम नगर में महा रोदन
होगा, जैसा मगिद्दो की तराई में हदद-रिम्मोन
देवता के लिए किया जाता है। 12सारा देश, प्रत्येक
परिवार, दाऊद वंश के सब परिवार और उनकी
स्त्रियां, नातान वंश के सब परिवार और उनकी
स्त्रियां, 13लेवी कुल के सब परिवार और
उनकी स्त्रियां, शिमई वंश के सब परिवार और
उनकी स्त्रियां, 14और शेष सब परिवार और
उनकी स्त्रियां विलाप करेंगी।

13 'उस दिन दाऊद के वंशजों तथा
यरूशलेम के निवासियों को उनके पाप
तथा अशुद्धता से धोने के लिए एक झरना
फूटेगा।'
2 स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु यों कहता है:
'उस दिन मैं देश से मूर्तियों के नाम भी मिटा
दूंगा, और लोग उनके नाम भूल जाएंगे। मैं देश
से नबियों और अशुद्ध आत्मा को भी निकाल
दूंगा। 3यदि फिर कोई व्यक्ति नबी के रूप में
उदित होगा तो उसको जन्म देनेवाले माता-
पिता उससे यह कहेंगे : ''तू जीवित नहीं रहेगा;
क्योंकि तू प्रभु के नाम में झूठी नबूवत करता
है।'' अतः जब वह नबूवत करेगा तब उसे जन्म
देनेवाले माता-पिता ही उसको बेधेंगे। 4उस दिन
सब नबी नबूवत करने पर अपने-अपने दर्शन
के लिए लज्जित होंगे। नबी धोखा देने के लिए
कम्बल का वस्त्र नहीं पहिनेगा। 5परन्तु वह यह
कहेगा, ''मैं नबी नहीं हूं, बल्कि मैं तो किसान
हूँ। बचपन से ही यह जमीन मेरे अधिकार में
है।'' 6जब कोई व्यक्ति उससे यह पूछेगा,
''तुम्हारे शरीर पर ये घाव कैसे हुए?'' वह
उससे यह कहेगा, ''अपने प्रियजनों के घर पर
मुझे ये घाव लगे हैं।!''

आलसी चरवाहे का वध

7 'ओ मेरी तलवार, जाग!
मेरे चरवाहे पर,
मेरे समीप खड़े हुए व्यक्ति पर प्रहार कर!'
स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु ने यों कहा है:
'चरवाहे पर प्रहार कर,
जिससे भेड़ें तितर-बितर हो जाएं।
मैं भेड़ों के बच्चों पर हाथ उठाऊंगा।'
8प्रभु का यह कथन है: 'समस्त देश में
दो तिहाई आबादी मर-कट जाएगी,
केवल एक तिहाई जीवित रहेगी।
9जैसे भट्ठी में चांदी शुद्ध की जाती है,

* अथवा 'वे मुझ पर उस व्यक्ति के कारण दृष्टि डालेंगे, जिसको उन्होंने बेधा है' अथवा 'वे मुझपर दृष्टि डालेंगे, जिसको उन्होंने बेधा है।'

12 : 10 भज 22 : 16 ; यो 19 : 34,37; प्रक 1 : 7; यो 3 : 14 **13 : 1** यश 1 : 16-17 ; यहेज 47 : 1 ; 36 : 25 ; यो 7 : 38 ; 19 : 34 **13 : 4** 2 रा 1 : 8 **13 : 6** 1 रा 18 : 28 ; यो 20 : 27 **13 : 7** यहेज 5 : 1-4; मक 14 : 27 **13 : 9** यश 48 : 10; 1 पत 1 : 6-7 ; यिर 31 : 31

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वैसे ही मैं इस एक तिहाई आबादी को
आग में झोंक कर उसे शुद्ध करूंगा।
जैसे सोना परखा जाता है
वैसे ही मैं उनको परखूंगा।
वे मेरे नाम की दुहाई देंगे,
और मैं उनको उत्तर दूंगा।
मैं यह कहूंगा, ''ये मेरे निज लोग हैं'',
और वे यह कहेंगे, ''प्रभु ही हमारा परमेश्वर
है।'''

यरूशलेम और अन्य राष्ट्र

14 देखो, प्रभु का ऐसा दिन आनेवाला है,
जब तुम्हारे शत्रु तुम्हें लूट लेंगे, और
लूट को तुम्हारे सामने परस्पर बांट लेंगे। 2प्रभु
युद्ध के लिए यरूशलेम के विरुद्ध सब राष्ट्रों को
एकत्र करेगा। यरूशलेम नगर पर शत्रु का
कब्जा होगा और वे घरों को लूट लेंगे और वे
स्त्रियों को भ्रष्ट करेंगे। नगर की आधी आबादी
बन्दी बनकर शत्रु के देश में जाएगी। किन्तु बचे
हुए लोग नगर से निष्कासित नहीं होंगे। 3तब
प्रभु उत्तेजित होकर बाहर निकलेगा। जैसे वह
युद्ध के दिन युद्ध करता है वैसे ही वह उन राष्ट्रों
से युद्ध करेगा। 4यरूशलेम नगर के पूर्व में जैतून
पहाड़ है। प्रभु उस दिन उस पहाड़ पर खड़ा
होगा। तब पूर्व से पश्चिम तक जैतून पहाड़ के
दो टुकड़े हो जाएंगे और उनके मध्य एक
विस्तृत घाटी हो जाएगी। पर्वत का आधा
टुकड़ा उत्तर की ओर और दूसरा आधा टुकड़ा
दक्षिण की ओर सरक जाएगा। 5पहाड़ियों के
मध्य की घाटी अवरुद्ध हो जाएगी+, क्योंकि
उनके मध्य की यह नई घाटी आसाल नदी तक
जाएगी।* यह अवरुद्ध हो जाएगी जैसे यहूदा
के राजा उज्जियाह के राज्यकाल में भूकम्प के
कारण अवरुद्ध हो गयी थी। तब मेरा प्रभु
परमेश्वर अपने सब पवित्र संतों के साथ आएगा।
6 उस दिन न ठण्ड पड़ेगी, न गर्मी और न
पाला पड़ेगा। 7उस दिन का अन्त नहीं होगा:
न दिन बीतेगा और न रात आएगी, संध्या के
समय भी प्रकाश रहेगा। यह प्रभु का दिन कहा
जाता है।
8 उस दिन जीवन का जल यरूशलेम से
बाहर बहेगा : उसका आधा जल पूर्वी सागर की
ओर और आधा जल पश्चिमी सागर की ओर
बहेगा। जैसे वह शीत ऋतु में बहता है वैसे ही
ग्रीष्म ऋतु में भी निरन्तर बहता रहेगा।
9 प्रभु समस्त पृथ्वी का राजा होगा। उस दिन
एक ही प्रभु होगा और उसका नाम भी एक ही
होगा।
10 समस्त देश एक मैदान के रूप में बदल
जाएगा: देश गेबा नगर से यरूशलेम के दक्षिण
में स्थित रिम्मोन नगर तक एक विस्तृत सपाट
भूमि हो जाएगा। परन्तु यरूशलेम अपने ऊंचे
स्थान पर बसा रहेगा। उसकी नगर-सीमा
बिन्यामिन-द्वार से नुक्कड़वाले फाटक तक
(जहां प्राचीन काल में प्रवेश-द्वार था), हननएल
मीनार से राजा के अंगूर-रस कुण्डों तक होगी।
11यरूशलेम नगर आबाद रहेगा। वह विनाश
का शाप नहीं भोगेगा। यरूशलेम के निवासी
सुख-चैन से निवास करेंगे।
12 जिन राष्ट्रों ने यरूशलेम के विरुद्ध युद्ध
छेड़ा था, उनको प्रभु इस महामारी से मारेगा:
खड़े-खड़े उनका शरीर गल जाएगा। उनकी
आंखें उनके गोलकों में सड़ जाएंगी। उनकी
जीभ उनके मुंह में सड़-गल जाएगी। 13उस दिन
प्रभु की ओर से एक महा आतंक उन पर
उतरेगा। आतंक के कारण हर व्यक्ति अपने
साथी का गला दबोचेगा। वे एक दूसरे पर प्रहार
करने के लिए हाथ उठाएंगे। 14यहूदा भी
यरूशलेम में युद्ध करेगा। यरूशलेम नगर के
चारों ओर के राष्ट्रों की धन-सम्पत्ति, सोना-
चांदी और अपार मात्रा में बहुमूल्य वस्त्र एकत्र
किए जाएंगे। 15इसी महामारी के सदृश एक
और महामारी उनके घोड़ों, खच्चरों, ऊंटों और
गधों में तथा उनके शिविर के तमाम पशुओं में
फैलेगी।

+ मूल में, ''से होकर भागोगे''। * मूल अस्पष्ट।

14 : 2 योए 3 : 2 **14 : 4** यहेज 11 : 23 ; प्रे 1 : 11–12 **14 : 5** आमो 1 : 1 **14 : 7** प्रक 21 : 23 **14 : 8** यहेज 47 : 1 ; यो 7 : 38 ; प्रक 22 : 3 **14 : 11** यिर 31 : 40

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

16 यरूशलेम नगर पर आक्रमण करने वाले राष्ट्रों में जो राष्ट्र नष्ट होने से बच जाएगा, वह प्रति वर्ष स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु, समस्त पृथ्वी के राजा की आराधना करने के लिए यरूशलेम में आएगा। वह झोपड़ियों का पर्व मनाएगा।
17यदि विश्व का कोई परिवार स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु, समस्त पृथ्वी के राजा की आराधना करने के लिए यरूशलेम नहीं आएगा, तो उसके देश में वर्षा नहीं होगी।

18 यदि मिस्र देश का कोई परिवार वहां नहीं जाएगा और प्रभु को भेंट नहीं चढ़ाएगा, तो प्रभु उन पर उसी महामारी को भेजेगा, जो वह उन राष्ट्रों पर भेजता है जो झोपड़ियों का पर्व मनाने के लिए यरूशलेम नगर नहीं जाते।
19यह महामारी मिस्र देश को दण्ड और उन तमाम राष्ट्रों को दण्ड स्वरूप मिलेगी, जो झोपड़ियों का पर्व मनाने के लिए यरूशलेम नगर नहीं जाते।

20 उस दिन घोड़ों की घंटियों पर भी यह लिखा होगा : 'प्रभु के लिए पवित्र'। जैसे वेदी के सम्मुख कटोरे पवित्र होते हैं, वैसे ही प्रभु के मन्दिर की हंडियां पवित्र होंगी।
21यरूशलेम और यहूदा प्रदेश की सब हंडियां स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु के लिए पवित्र होंगी। जब पशु-बलि चढ़ाने वाले आराधक प्रभु के भवन में आएंगे, तब वे स्वयं हंडियां लेंगे और बलि-पशु का मांस उनमें पकाएंगे। उस दिन से स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु के भवन में कोई भी व्यापारी नहीं होगा।

14 : 16 यश 66 : 23 ; लेव 23 : 39-43 14 : 18-19 यश 19 14 : 21 यो 2 : 16

नबी मलाकी

पुस्तक-परिचय

नबी मलाकी की पुस्तक का रचना-काल ईसवी पूर्व पांचवीं शताब्दी का मध्यकाल है। इस समय तक यरूशलेम के मन्दिर का पुनर्निर्माण हो चुका था। सन् 516 ईसवी पूर्व में नवनिर्मित मन्दिर का प्रतिष्ठापन भी सम्पन्न हुआ था। लेकिन धीरे-धीरे आराधना में धार्मिक शिथिलता फिर आ गई।

नबी मलाकी के सन्देश की मुख्य विषय-वस्तु यह है : उन्होंने पुरोहितों और इस्राएली जनता का आवाहन किया कि वे परमेश्वर के साथ स्थापित विधान में पूर्ण विश्वास करें। जनता परमेश्वर की व्यवस्था के अनुरूप जीवन-यापन नहीं करती है। परमेश्वर की आराधना के प्रति वह उदासीन हो गयी है। इसकी तुलना में अन्य राष्टों के यहां आराधना में प्रभु-नाम की स्तुति होती है (1 : 11)। इस्राएल की धर्मसेवा में भ्रष्टाचार का प्रवेश हो गया है। पुरोहित और आराधक परमेश्वर को जो चढ़ाना चाहिए, उसमें वे धोखा-धड़ी, चोरी करते हैं। उनका जीवन परमेश्वर की शिक्षाओं-आज्ञाओं के अनुकूल नहीं है। प्रभु परमेश्वर आयेगा। वह उनका न्याय करेगा, और अपने निज लोगों को पवित्र करेगा। किन्तु वह अपने आगमन के पूर्व अपने सन्देश-वाहक को भेजेगा, जो उसका मार्ग तैयार करेगा और उसके विधान [अथवा वाचा] की घोषणा करेगा।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

इस्राएल के पाप	1 : 1 — 2 : 16
परमेश्वर का दण्ड तथा दया-दृष्टि	2 : 17 — 4 : 6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इस्राएल के प्रति प्रभु का प्रेम

1 प्रभु की ओर से यह एक गंभीर चेतावनी
है। इस्राएल के विषय में प्रभु का यह कथन
है, जो उसने मलाकी* के माध्यम से कहा:
2प्रभु कहता है, 'मैंने तुमसे प्रेम किया, पर तुम
मुझसे पूछते हो, "तूने हमसे कैसा प्रेम
किया?" ' प्रभु कहता है, 'क्या याकूब+ का
भाई एसाव नहीं था? पर मैंने याकूब से प्रेम
किया 3और एसाव से घृणा की। मैंने एसाव वंश
के पहाड़ी प्रदेश को उजाड़ दिया, और उनकी
पैतृक भूमि मरुस्थल के गीदड़ों को सौंप दी।'
4यदि एदोम** यह कहेगा, 'हमारा देश उजड़
गया, पर हम खण्डहरों को फिर बसाएंगे' तो
स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु की यह वाणी है: 'वे
अपने देश का पुन: निर्माण करेंगे, पर मैं उनके
मकानों को ढाह दूंगा। उनका नाम "दुष्ट
राज्य" पड़ेगा, ऐसा राष्ट्र जिससे प्रभु सदा
नाराज रहता है।' 5तुम स्वयं अपनी आंखों से
यह देखोगे, और यह कहोगे, 'निस्सन्देह प्रभु
महान है। प्रभु की महानता इस्राएल राष्ट्र की
सीमा से महान है।'

पुरोहितों को प्रभु की ताड़ना

6 प्रभु कहता है, 'पुत्र अपने पिता का आदर
करता है, सेवक अपने स्वामी से डरता है। यदि
मैं तुम्हारा पिता हूं तो कहां है मेरा आदर? यदि
मैं तुम्हारा स्वामी हूं तो तुम मुझसे डरते क्यों
नहीं हो? मैं, स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु तुमसे यों
कहता हूं। ओ पुरोहितो, मेरे नाम को अपमानित
करने वालो! तुम कहते हो, "हमने तेरे नाम का
अपमान कैसे किया?" 7तुम मेरी वेदी पर
दूषित भोजन चढ़ाकर मेरा अपमान करते हो,
और फिर मुझसे कहते हो, "हमने कैसे उसे++
दूषित किया?" तुमने अपने हृदय में यह सोचा
कि प्रभु की मेज का कोई महत्व नहीं है।
8 'जब तुम पशु-बलि में अंधा पशु चढ़ाते
हो, तब क्या यह दुष्कर्म नहीं है? जब लंगड़े
अथवा रोगी पशु की बलि चढ़ाते हो, तब क्या
इसमें कोई बुराई नहीं है? यदि तुम अपने
राज्यपाल को ऐसा पशु भेंट करोगे, तो क्या वह
तुमसे प्रसन्न होगा, और तुम पर कृपादृष्टि
करेगा?' स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु की यह वाणी
है। 9ओ पुरोहितो, अब परमेश्वर को प्रसन्न
करने का प्रयत्न करो, जिससे वह हम पर कृपा
करे। क्या वह तुम्हारे हाथ से अशुद्ध भेंट ग्रहण
कर तुम पर कृपा कर सकता है? कदापि नहीं!
स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु यों कहता है,
10 'काश! तुम्हारे मध्य कोई ऐसा व्यक्ति होता
जो मेरे मन्दिर के दरवाजों को बन्द कर देता,
जिससे तुम मेरी वेदी पर व्यर्थ अग्नि नहीं
जलाते। मैं, स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु यह कहता
हूं: मुझे तुममें कोई रुचि नहीं रही। मैं तुम्हारे
हाथ से भेंट स्वीकार नहीं करूंगा। 11उदयाचल
से अस्ताचल तक, समस्त राष्ट्रों में मेरा नाम
महान है। हर स्थान में मेरे नाम पर धूप-द्रव्य
और शुद्ध भेंट चढ़ाई जाती है। मैं, स्वर्गिक
सेनाओं का प्रभु यह कहता हूं: समस्त राष्ट्रों में
मेरा नाम महान है। 12परन्तु तुम अपने इस
विचार से कि प्रभु की मेज पवित्र नहीं है, उसे
अपवित्र कर देते हो। अत: जो भोजन स्वयं
तुम्हारी दृष्टि में तुच्छ है, वह तुम मेरी मेज पर
चढ़ाते हो।' 13स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु कहता
है: 'ओ पुरोहितो! तुम यह भी कहते हो, "यह
सब उबानेवाला काम है।" तुम घृणा से मुझ पर
नाक-भौं सिकोड़ते हो। बल-प्रयोग से लूटी-
छीनी गई वस्तु, लंगड़ा-रोगी पशु तुम मन्दिर में
लाते हो—मुझे चढ़ाने के लिए। क्या यह मैं
तुम्हारे हाथ से ग्रहण करूंगा? कदापि नहीं!'
प्रभु ने यह कहा है।
14 धोखा देनेवाला व्यक्ति शापित हो।
उसके रेवड़ में स्वस्थ नर पशु है। उसने उसे
चढ़ाने की मन्नत मांगी, पर चढ़ाया अपने प्रभु
को—वर्जित विकृत पशु! स्वर्गिक सेनाओं का
प्रभु यों कहता है: 'मैं समस्त पृथ्वी का सम्राट
हूँ। समस्त राष्ट्र मेरे नाम के प्रति श्रद्धा-भक्ति

---

* अर्थात् "मेरा दूत"। + अथवा "इस्राएल"। ** अथवा "एसाव-वंश"। ++ मूल में "तुझे"।

1 : 2 हो 11 : 1 ; व्य 7 : 7 ; उत 25 : 23 ; रोम 9 : 13 ; यश 34 **1 : 6** नि 20 : 12 ; लू 18 : 20 **1 : 8** व्य 15 : 21 **1 : 11** सफ 3 : 9 ; एज्रा 1 : 2 ; 6 : 10 ; यो 4 : 21 ; 1 तिम 2 : 8 **1 : 13** लेव 22 : 20

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रकट करते हैं।

2 'ओ पुरोहितो, अब तुम्हारे लिए यह आज्ञा
है: 2यदि तुम मेरी यह बात नहीं सुनोगे,
मेरे नाम की महिमा करने पर ध्यान नहीं दोगे,
तो मैं, स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु, यह कहता हूं:
मैं तुम पर शाप प्रेषित करूंगा। मैं तुम्हारे
वरदानों को शापों में बदल दूंगा। निस्सन्देह
मैंने उन्हें शाप में बदल दिया है, क्योंकि तुमने
मेरे नाम की महिमा करने पर ध्यान नहीं दिया।
3देखो, मैं तुम्हारी संतान को ताड़ित करूंगा।
तुम्हारे मुंह पर तुम्हारे बलि-पशुओं की अंतड़ियां
फेंकूंगा। मैं अपने सम्मुख से तुम्हें निकाल
दूंगा। 4मैं, स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु यह कहता
हूं: तब तुम्हें ज्ञात होगा कि यह आज्ञा मैंने तुम्हें
दी है जिससे लेवी के साथ स्थापित मेरा विधान
न टूटे। 5लेवी से स्थापित मेरा विधान जीवन
और शान्ति का विधान था। मैंने उसे जीवन
और शान्ति दी थी जिससे वह मेरे प्रति श्रद्धा-
भक्ति रखे। उसने ऐसा किया भी था। वह मेरे
नाम के प्रति श्रद्धा-भक्ति रखता था। 6वह सत्य
व्यवस्था उच्चारता था। उसके ओंठों से झूठ
कभी नहीं निकलता था। वह शान्ति और
धार्मिकता के साथ मेरा अनुसरण करता था।
उसने अनेक लोगों को अधर्म से विमुख
किया था।

7 'पुरोहित को अपने मुंह से ज्ञान की रक्षा
करनी चाहिए। उसके मुंह से लोगों को
व्यवस्था प्राप्त होनी चाहिए। पुरोहित स्वर्गिक
सेनाओं के प्रभु का सन्देशवाहक है। 8परन्तु
ओ पुरोहितो! तुमने मेरा मार्ग त्याग दिया।
तुम्हारी शिक्षा के कारण अनेक लोगों को ठोकर
लगी। स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु, मैं यह कहता
हूं: तुमने लेवी के साथ स्थापित मेरे विधान
को भ्रष्ट किया। 9अत: मैंने भी सब लोगों के
सम्मुख तुम्हें भी निकृष्ट और अधम बनाया;
क्योंकि तुमने मेरी व्यवस्था के अनुसार आचरण
नहीं किया, तुम मेरी व्यवस्था के प्रति निष्पक्ष
नहीं हो।'

इस्राएल को उसके अविश्वास के लिए ताड़ना

10 क्या हम-सब का एक ही पिता नहीं है?
क्या हम-सब को एक ही परमेश्वर ने नहीं रचा
है? तब हम अपने पूर्वजों के विधान का
उल्लंघन कर क्यों एक-दूसरे के प्रति अविश्वास
प्रकट करते हैं?

11 यहूदा प्रदेश के निवासी अविश्वासी हैं।
यरूशलेम नगर और इस्राएल प्रदेश में घृणित
कार्य किए गए। यहूदा के निवासियों ने विदेशी
देवता के अनुयायियों की पुत्रियों से प्रेम किया
और विवाह किया, और यों प्रभु के पवित्र स्थान
को अपवित्र किया। 12प्रभु ऐसा कार्य करने
वाले को, चाहे वह प्रवासी हो या स्थायी
निवासी*, यहूदा प्रदेश से निष्कासित करे, चाहे
वह स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु को चढ़ाने के लिए
भेंट ही क्यों न लाए।

13 ओ पुरोहितो, तुम यह कार्य भी करते हो:
तुम रोते हो, कराहते हो और अपने आंसुओं से
प्रभु की वेदी को भिगोते हो; क्योंकि प्रभु तुम्हारे
आंसुओं पर ध्यान नहीं देता, तुम्हारे हाथ से भेंट
को स्वीकार नहीं करता और तुम पर कृपा नहीं
करता। 14तुम यह पूछते हो, 'प्रभु ऐसा क्यों कर
रहा है?' सुनो, जब तुमने युवावस्था में विवाह
किया था, तब तुम्हारी युवावस्था की पत्नी और
तुम्हारे मध्य स्थापित विवाह की प्रतिज्ञा में प्रभु
भी साक्षी था। अब तुम अपनी युवावस्था की
पत्नी के प्रति विश्वासघात कर रहे हो, जबकि
वह विवाह की प्रतिज्ञा के अनुसार तुम्हारी
जीवन-साथी और पत्नी है। 15क्या प्रभु ने पति
और पत्नी को एक हो जाने के लिए नहीं
बनाया? तो क्या आत्मा इस में सम्मिलित नहीं
है?+ और पति-पत्नी के एक होने का क्या
उद्देश्य है? यही कि वे धर्मपरायण सन्तान
उत्पन्न करें। अत: अपने प्रति सावधान रहो।
कोई भी पति अपनी युवावस्था की पत्नी के प्रति
विश्वासघात न करे।

---

* मूल में अस्पष्ट + अथवा, 'तो क्या वे शरीर और आत्मा में एक नहीं हैं?'

2 : 2 व्य 28 : 15 **2 : 5** गण 25 : 12 ; व्य 33 : 8 **2 : 7** व्य 17 : 9 ; यश 42 : 19 **2 : 8** मत 23 : 13-15
2 : 10 इफ 4 : 6 **2 : 15** मत 19 : 4-5 ; इफ 5 : 25-32

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

16 इस्त्राएल का प्रभु परमेश्वर यों कहता है,
'मैं तलाक से घृणा करता हूँ; मैं उस पति से
नफरत करता हूँ जो दूसरी स्त्री को चादर
ओढ़ाकर अपनी पत्नी बनाता है और यों अपनी
पूर्व-पत्नी पर अत्याचार करता है।' स्वर्गिक
सेनाओं का प्रभु यों कहता है, 'अपने प्रति
सावधान रहो। अपनी पत्नी के प्रति विश्वासघात
मत करो।'

न्याय का दिन समीप है

17 ओ पुरोहितो! तुमने अपनी बातों से प्रभु
को उकता दिया है। फिर भी तुम पूछते हो,
'हमने कैसे प्रभु को उकता दिया?' तुम यह
कहकर उसे उकता देते हो, 'जो बुराई करता है,
वह प्रभु की दृष्टि में भला है, क्योंकि प्रभु बुरे
कार्यों से प्रसन्न होता है।' तुम यह भी पूछते हो,
'न्याय करने वाला परमेश्वर कहां है?'

3 स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु यों कहता है, 'मैं
अपने दूत को अपने आगमन के पूर्व भेज
रहा हूं। वह मेरे मार्ग को तैयार करेगा। और वह
स्वामी, जिसको तुम ढूंढ़ रहे हो, अपने मन्दिर
में अचानक आएगा। विधान का वह दूत,
जिससे तुम प्रसन्न हो, देखो, वह आ रहा है।
2पर उसके आगमन-दिवस को कौन व्यक्ति
सह सकता है? जब वह दिखाई देगा तब कौन
व्यक्ति उसके सम्मुख खड़ा हो सकेगा?

'क्योंकि वह सुनार की शोधन-भट्ठी के
समान परिष्कर्त्ता है, वह धोबी के साबुन के
समान गन्दगी को धोनेवाला है। 3वह सोने के
परिष्कर्त्ता और चांदी के शुद्धकर्त्ता के रूप में
सिंहासन पर बैठेगा, और लेवीय पुरोहितों को
सोना-चांदी के सदृश शुद्ध करेगा। तब वे प्रभु
को विधिवत् भेंट चढ़ाएंगे। 4यहूदा प्रदेश और
यरूशलेम नगर के निवासियों की यह भेंट प्रभु
को पसन्द आएगी, जैसे बीते दिनों में प्राचीनकाल
में उसे पसन्द आती थी।'

5 स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु यों कहता है,
'तब मैं अदालत में तुम्हारे सम्मुख उपस्थित
होऊंगा। मैं इन सब लोगों के विरुद्ध तुरन्त
साक्षी दूंगा: झाड़-फूंक करनेवाले ओझा,
व्यभिचारी, झूठी शपथ खानेवाले, मजदूर की
मजदूरी दबानेवाले, विधवाओं और अनाथों पर
अत्याचार करनेवाले, प्रवासी के अधिकारों को
छीननेवाले और मुझसे न डरनेवाले।

दशमांश की चोरी

6 'मैं अपरिवर्तनीय प्रभु हूं: इसलिए ओ
याकूब के वंशजो, तुम अब तक जीवित हो।
7तुम अपने पूर्वजों के समय से मेरी संविधियों
का उल्लंघन करते आ रहे हो, तुमने उनका
पालन नहीं किया। मैं, स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु
यह कहता हूं: मेरी ओर लौटो, तो मैं भी तुम्हारी
ओर लौटूंगा। तुम पूछते हो, "हमने क्या किया
है जिससे हम लौटें?" 8क्या मनुष्य मुझ-
परमेश्वर को धोखा दे सकता है? पर तुम मुझे
धोखा दे रहे हो। तुम पूछते हो, "हम तुझे किस
प्रकार धोखा दे रहे हैं?" तुम अपने दशमांश
और विधिवत् भेंटों में मुझे धोखा दे रहे हो।
9तुम-सब, सारा राष्ट्र महाशाप से शापित है,
क्योंकि तुम मुझे धोखा दे रहे हो।

10 'मेरे भण्डार-गृह में पूर्ण दशमांश लाओ,
जिससे मेरे भवन में भोजन-वस्तु रहे। तब मुझे
परखो कि मैं आकाश के झरोखे खोलकर
तुम्हारे लिए वर्षा करता हूँ कि नहीं, मैं तुम पर
आशिष की वर्षा करता हूँ कि नहीं।'

11 स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु यों कहता है,
'मैं विनाशक-जीव को डांटूंगा, ताकि वह
तुम्हारी भूमि की फसल को नष्ट न करे। मैं,
स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु यह कहता हूं: तुम्हारे
अंगूर-उद्यान में अंगूर की भरपूर फसल होगी।
12तब सब राष्ट्र तुम्हें सुखी राष्ट्र कहेंगे, क्योंकि
तुम्हारा देश एक मनोहर देश होगा।' स्वर्गिक
सेनाओं के प्रभु ने यह कहा है।

धार्मिक और अधार्मिक व्यक्ति

13 प्रभु यों कहता है, 'तुमने मेरे विरुद्ध
कड़ी-कड़ी बातें कहीं। फिर भी तुम कहते हो,
"हमने तेरे विरुद्ध क्या कहा है?" 14तुमने क्या
यह नहीं कहा है, "परमेश्वर की सेवा करना

---

3 : 1 मत 11 : 10 ; मक 1 : 2 ; लू 1 : 17,76 ; 7 : 27 **3 : 2** प्रक 6 : 17 ; सफ 1 : 14 **3 : 5** याक 5 : 4, 8-9 **3 : 6** गण 23 : 19 ; प्रव 42 : 10 **3 : 7** जक 1 : 3 **3 : 10** नीति 3 : 9 ; लेव 27 : 30 ; व्य 12 : 6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

व्यर्थ है। हमने उसके आदेशों का पालन किया,
हम स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु के सम्मुख शोक-
संतप्त चलते रहे। हमें क्या लाभ हुआ? 15अब
हम अभिमानी लोगों को धन्य कहेंगे। दुष्कर्मी
न केवल जीवन में सफल होते हैं, वरन् जब वे
परमेश्वर को परखते हैं तब भी वे बच जाते
हैं।'' ?'

16 जो प्रभु के प्रति श्रद्धा-भक्ति रखते थे,
उन्होंने आपस में बात की। प्रभु ने ध्यान दिया,
उनकी बात सुनी। उसके सम्मुख एक स्मरण-
पुस्तिका लिखी गई। इसमें उन लोगों के नाम
लिखे गए, जो प्रभु के प्रति श्रद्धा-भक्ति रखते
थे, उसके नाम का चिंतन करते थे। 17स्वर्गिक
सेनाओं का प्रभु यों कहता है, 'जिस दिन मैं
कार्रवाई करूँगा उस दिन ये मेरे निज लोग
बनेंगे, मेरी मीरास बनेंगे। जैसे पिता सेवा
करनेवाले अपने पुत्र को छोड़ देता है, और उसे
दण्ड नहीं देता, वैसे ही मैं उन्हें छोड़ दूंगा।
18तुम धार्मिक और अधार्मिक में पुनः भेद
पहचानोगे; तुम जानोगे कि कौन व्यक्ति मुझ-
परमेश्वर की सेवा करता है, और कौन व्यक्ति
मेरी सेवा नहीं करता।'

प्रभु-दिवस का आगमन

4 देखो, वह दिन आ रहा है, जो धधकते
तन्दूर के समान है। उस दिन सब अभिमानी
और दुष्कर्मी भूसे के सदृश भस्म हो जाएंगे।
स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु यह कहता है:
'आनेवाला दिन उन्हें जलाकर राख कर देगा,
वे जड़-मूल से नष्ट हो जाएंगे। 2पर तुम मेरे नाम
के प्रति श्रद्धा-भक्ति रखते हो, इसलिए तुमपर
धार्मिकता का सूर्य उदय होगा, उसके पंखों में
रोग-निवारण की किरणें होंगी, जिनके स्पर्श से
तुम स्वस्थ होगे। जैसे पशुशाला से छूटकर
बछड़ा आनन्द से कूदता-फांदता है, वैसे ही
तुम मुक्त होकर आनन्द से विचरण करोगे।
3तुम अपने पैरों से दुर्जनों को रौंदोगे, और वे
तुम्हारे पैरों के नीचे की राख बन जाएंगे। यह
उस दिन होगा, जब मैं कार्रवाई करूँगा,'
स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु ने यह कहा है।

4 'मेरे सेवक मूसा की व्यवस्था, संविधियों
और न्याय-सिद्धान्तों को स्मरण रखो। यह मैंने
उसे होरेब पर्वत पर समस्त इस्राएली लोगों के
लिए दिए थे।

5 'देखो, प्रभु के आतंकमय महादिवस के
आगमन के पूर्व मैं नबी एलियाह को तुम्हारे
पास भेजूंगा। 6वह माता-पिता के हृदय को
उनकी सन्तान की ओर और सन्तान का हृदय
उसके माता-पिता की ओर उन्मुख करेगा,
ताकि सब लोग पश्चात्ताप करें। ऐसा न हो कि
मैं पृथ्वीं पर आऊं और उसका पूर्ण संहार कर
दूं।'

---

4 : 2 लू 1 : 78 **4 : 5** मत 11 : 4 ; 17 : 10-13 ; यो 1 : 21 **5 : 6** लू 1 : 17

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

[illegible]

को पसन्द आएगी, जैसे बीते दिनों में प्राचीनकाल
में उसे पसन्द आती थी।'
5 क्योंकि सेनाओं का प्रभु यों कहता है,
'तब मैं अदालत में तुम्हारे सम्मुख उपस्थित
होऊंगा। मैं इन सब लोगों के विरुद्ध तुरन्त

[illegible]

अंगूर-उद्यान में अंगूर की भरपूर फसल होगी।
12 सब राष्ट्र तुम्हें 'सुखी राष्ट्र' कहेंगे, क्योंकि
तुम्हारा देश एक मनोहर देश होगा।' स्वर्गिक
सेनाओं के प्रभु ने यह कहा है।

धार्मिक और अधार्मिक व्यक्ति

13 प्रभु यों कहता है, 'तुमने मेरे विरुद्ध
कड़ी-कड़ी बातें कहीं। फिर भी तुम कहते हो,
''हमने तेरे विरुद्ध क्या कहा है?'' 14 तुमने कहा

[illegible]

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अन्य-प्रामाणिक ग्रंथ

(प्राचीन यूनानी बाइबिल-अनुवाद में पुराना विधान के साथ)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रस्तावना

जब से प्राचीन इस्राएली समाज को अनेक देशों में बिखेर दिया गया, तब से प्रवासी यहूदी अपनी इब्रानी भाषा के साथ अन्य भाषाओं का प्रयोग करने लगे। उनके विशाल धार्मिक साहित्य में कुछ रचनाएं अरामी और प्राचीन यूनानी भाषा में उपलब्ध हैं। ईसवी पूर्व तीसरी सदी से लेकर पहली सदी तक यूनानी भाषा-भाषी यहूदियों ने अपने शास्त्रों का एक वृहद् यूनानी अनुवाद तैयार किया, जिसे सत्तर अनुवादकों की परम्परागत संख्या के कारण "सप्तति अनुवाद" कहते हैं। अनेक परमेश्वर-भक्त गैर-यहूदी भी, जो धर्मशास्त्र के नैतिक मूल्यों से प्रभावित थे, इस अनुवाद को महत्व देते थे। प्रभु येशु मसीह के जीवनकाल के बाद उनके शिष्य प्राय: इसी यूनानी अनुवाद को पढ़ते थे। "नया विधान" के लेखकों ने यूनानी पाठ के आधार पर ही "पुराना विधान" के वचनों का उल्लेख किया है।

लगभग 90 सन् ईसवी को यहूदी धर्मगुरुओं ने अपने प्रामाणिक धर्मशास्त्र की एक ग्रंथ-सूची बनायी, जिसमें केवल इब्रानी ग्रंथ और कुछ अरामी अंश मान्य ठहराये गये। इस इब्रानी-अरामी ग्रंथ-सूची में तीन खण्ड हैं :

1. "तौरेत" अथवा व्यवस्था ग्रंथ,
2. "नबी" ग्रंथ, और
3. रचनाएँ अथवा "किताबें" (भजन-संहिता आदि ग्रंथ)

लेकिन इस निर्णय से यूनानी भाषा-भाषी यहूदियों के लिए समस्या उठ खड़ी हुई, क्योंकि वृहद् यूनानी अनुवाद में अनेक अतिरिक्त ग्रंथ मिलते हैं, जिनको यहूदी धर्मगुरुओं ने प्राथमिक सूची में स्वीकार नहीं किया। मसीही भक्तों के लिए भी समस्या थी, क्योंकि वे अपने धर्मग्रंथों को सप्तति अनुवाद के भिन्न क्रम और संख्या में तथा अपने विश्वास के नवप्रकाश में पढ़ने अथवा सुनाने के आदी हो गये थे। सन्त येरोम ने अपने प्रसिद्ध लातीनी "वुलगाता", अर्थात् सामान्य भाषा के अनुवाद में उन अतिरिक्त यूनानी ग्रंथों को "पुराना विधान" के अन्त में एक अलग खण्ड में रखा, जबकि अन्य धर्माचार्यों ने उन्हें चाहे "पुराना विधान" में "मिश्रित" अथवा "गुप्त" ही (अपॉक्रिफा) रखा। विडम्बना की बात है कि आधुनिक पुरातत्वीय अनुसंधान से अब उन तथा-कथित यूनानी ग्रंथों के कुछ मूल इब्रानी अथवा अरामी अंश भी प्राप्त हुए हैं।

इस प्रकार प्राथमिक प्रामाणिक सूची के इब्रानी-अरामी ग्रंथों के साथ, द्वितीय प्रामाणिक (ड्यूटेरो-कैनॉनिकल) ग्रंथ अथवा अंश गिने जाते हैं, जो यूनानी अनुवाद में मिलते हैं :

1. तोबीत .... [=1]
2. यहूदीत .... [=2]
शेष एस्तर (इब्रानी एस्तर ग्रंथ के साथ) .... [=3]
3. मक्काबियों का पहला ग्रंथ .... [=4]
4. मक्काबियों का दूसरा ग्रंथ .... [=5]
5. प्रज्ञा ग्रंथ .... [=6]

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

6. **प्रवक्ता ग्रंथ** ....[=7]
7. **बारूक (जिसमें यिर्मयाह का पत्र सम्मिलित है)** ....[=8-9]
शेष दानिएल (इब्रानी-अरामी दानिएल ग्रंथ के साथ) अर्थात्
(1) **अजर्याह की प्रार्थना और तीन युवकों का गीत**...................[=10]
(2) **सूसन्नाह** ....[=11]
(3) **बेल-देवता और अजगर** ....[=12]

रोमन काथलिक कलीसिया ने सन् 1546 की ट्रेंट नामक धर्म-परिषद में इन्हीं अतिरिक्त ग्रंथों को "पुराना विधान" और "नया विधान" के साथ पवित्र और प्रामाणिक मान लिया, क्योंकि वह संपूर्ण बाइबिल को "समान रूप से भक्ति एवं श्रद्धा के साथ ग्रहण करती है और आदर देती है"। यूनानी-रूसी ऑर्थडॉक्स कलीसिया ने "पुराना विधान" की ग्रंथ-सूची में और अधिक अनूदित यूनानी ग्रंथों को स्वीकार कर लिया है (जैसे एस्द्रास का प्रथम ग्रंथ और मक्काबियों का तीसरा ग्रंथ)। धर्मसुधारक मार्टिन लूथर ने, अपने जर्मन अनुवाद में, संत येरोम के मतानुसार ऐसे अतिरिक्त ग्रंथों को "ज्ञानवर्धक" माना था और प्रामाणिक ग्रंथों से अलग रखा था। उसी प्रकार आंग्लिकन कलीसिया के अधिकृत "किंग जेम्स संस्करण" (सन् 1611) में अतिरिक्त "अपॉक्रिफा" ग्रंथ "पुराना नियम" तथा "नया नियम" के मध्य में मिलते हैं। उत्तर भारत की कलीसिया (सी एन आई) ने भी अपने "पंचांग" (अलमनक) में इन ग्रंथों से चुने हुए पाठों का प्रावधान किया है।

बाइबिल अध्ययन की दृष्टि से अन्य-प्रामाणिक ग्रंथों का महत्व सर्वमान्य है, क्योंकि प्रभु येशु मसीह के जीवन-काल की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि समझने के लिए ये ही यहूदी ग्रंथ सहायक हैं। इन्हीं ग्रंथों से ईसवी पूर्व की अंतिम सदियों में इस्राएली समाज के इतिहास, जीवन-संघर्ष, विचार-धारा, आराधना-विधि और धार्मिक प्रथाओं के संबंध में अच्छी जानकारी मिलती है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तोबीत

पुस्तक-परिचय

यह शिक्षाप्रद धर्म-कथा संभवत: दूसरी सदी ईसवी पूर्व के दौरान किसी प्रवासी यहूदी के द्वारा इब्रानी या अरामी भाषा में लिखी गयी थी, लेकिन अब तक उस आरंभिक मूल पाठ का केवल कुछ अंश ही उपलब्ध हो सका है। संपूर्ण रचना यूनानी ''सप्तति अनुवाद'' में सुरक्षित है। तोबीत-ग्रंथ के उस यूनानी रूपान्तर में भी बहुत-से पाठभेद हैं, क्योंकि उसके हस्तलेखों में कहीं संक्षिप्त वर्णन, कहीं विस्तृत वर्णन मिलता है।

तोबीत-ग्रंथ से यह शिक्षा मलती है कि परमेश्वर अपने त्रस्त भक्त-जनों को आश्चर्यजनक ढंग से सहायता करता है। कहानी के प्रसंग के अनुसार तोबीत नामक व्यक्ति उत्तरी राज्य इस्राएल के विनाश के बाद असीरिया देश में निष्कासित है, लेकिन विपत्ति के समय भी वह व्यवस्था-पालन और परोपकार में संलग्न रहता है। कहानी के माध्यम से यहूदी लेखक अपनी समकालीन पीढ़ी के लिए भक्तिमय जीवन का आदर्श प्रस्तुत करता है। नैतिक मूल्यों के इस सजीव चित्रण में, ''नया-विधान'' काल के कुछ ही पहले, यहूदियों के धार्मिक एवं सामाजिक वातावरण की झलक मिलती है।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

1. पात्रों का परिचय : एक परिवार में तोबीत, दूसरे परिवार में सारा	1 : 1 — 3 : 15
2. मुख्य घटनाक्रम : दोनों की प्रार्थना की सुनवाई	3 : 16 — 11 : 18
(क) स्वर्गदूत रफाएल का प्रस्तुत होना	3 : 16-17
(ख) पुत्र तोबियाह को आदेश	4 : 1-21
(ग) यात्रा - विवरण	5 : 1 — 7 : 12
(घ) तोबियाह और सारा का विवाह	7 : 13 — 9 : 6
(ङ) वापसी यात्रा और उपचार	10 : 1 — 11 : 18
3. उपसंहार : रफाएल के रहस्य का उद्घाटन	12 : 1 - 22
4. परिशिष्ट : अंतिम परामर्श	13 : 1 — 14 : 15

तोबीत और उसके पूर्वज

1 तोबीत का जीवन-चरित: तोबीत तोबीएल
का पुत्र था। तोबीएल अनानीएल का,
अनानीएल अदुएल का, अदुएल गबाएल का और
गबाएल रफाएल का पुत्र था, जो असीएल के वंश
और नफ्ताली के कुल का था। 2वह असीरिया देश
के राजा शलमन-एसेर के राज्यकाल में तिसबे
नगर से बन्दी बना कर निष्कासित किया गया
था। यह नगर ऊपरी गलील-प्रदेश के कादेश-
नफ्ताली के दक्षिण में, आशेर के उत्तर-पश्चिम
में तथा फोगोर के उत्तर में स्थित है।

स्वदेश में तोबीत के सत्कार्य

3 मैं, तोबीत, जीवन-भर सन्मार्ग पर चलता
रहा और धर्माचरण करता रहा।
मैंने अपने उन भाई-बन्धुओं को बहुत-से
भिक्षादान दिये, जो मेरे साथ असीरिया देश के
नीनवे नगर में निष्कासित किये गये थे। 4जब
मैं छोटा था और स्वदेश इस्राएल में रहता था,
तो मेरे पूर्वज नफ्ताली का पूरा कुल, दाऊद के
राजवंश और येरूशलेम से अलग हो गया था,
यद्यपि येरूशलेम नगर इस्राएल के सब कुलों
के भूमि-क्षेत्रों में से चुना गया था और वहाँ

---

1 : 2 2 रा 17 : 3 1 : 3 लेव 25 : 35 ; प्रे 9 : 36 1 : 4 1 रा 12 : 29

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मन्दिर का, परमेश्वर के निवास-स्थान का
निर्माण और प्रतिष्ठान किया गया था, जिससे
इस्राएल के सब कुल वहाँ युग-युगों तक बलि
चढ़ायें। 5मेरे सब भाई-बंधु और मेरे पूर्वज
नफ्ताली के सब वंशज गलील प्रदेश के सब
पहाड़ों पर उस बछड़े को बलि चढ़ाते थे, जिसे
इस्राएल के राजा यारोबआम ने दान नगर में
बनवाया था। 6परन्तु मैं अकेला बार-बार पर्वों
के अवसर पर यरूशलेम जाया करता था, जैसा
कि इस्राएल को स्थायी आदेश है। मैं खेतों की
उपज के प्रथम फल, भेड़-बकरियों के पहलौठे
बच्चे, पशुओं का दशमांश और भेड़ों का पहला
कटा हुआ ऊन ले जाया करता 7और वेदी पर
ये भेंटें हारून-वंशी पुरोहितों को दिया करता।
मैं गेहूँ, दाखरस, जैतून का तेल, अनार, अंजीर
और अन्य फलों का दशमांश यरूशलेम में सेवा
करने वाले लेवीय उपपुरोहितों को दिया
करता। सातवाँ विश्राम-वर्ष को छोड़कर मैं
दूसरा दशमांश बेच देता और प्रति वर्ष यरूशलेम
में खर्च करता। 8तीसरा दशमांश मैं अनाथों,
विधवाओं और इस्राएलियों के यहाँ रहने वाले
नवदीक्षित परदेशियों को दिया करता। मैं उसे ला
कर प्रत्येक तीन वर्ष बाद उन्हें देता था और हम
मूसा की व्यवस्था के आदेश के अनुसार उसे
खाते थे। मेरी दादी दबोरा ने मुझे ऐसा करने का
आदेश दिया था; क्योंकि मेरे पिता तोबीएल मुझे
अनाथ छोड़ गये थे। 9जब मैं बड़ा हुआ, तो मेरा
विवाह अपने कुटुम्ब की हन्नाह नाम की कन्या
से हुआ। उससे मुझे एक पुत्र उत्पन्न हुआ। मैंने
उसका नाम तोबियाह रखा।

मादय देश में तोबीत के सत्कार्य

10 जब मैं बन्दी बना कर असीरिया देश
लाया गया, तो मैं नीनवे महानगर में आया। मेरे
सभी भाई-बन्धु और मेरे सब कुटुम्बी
अन्यजातियों का भोजन खाते थे ; 11परन्तु मैं
ऐसा नहीं करता था, 12क्योंकि मैं अपनी सम्पूर्ण
आत्मा से अपने परमेश्वर को स्मरण करता था।
13इसलिए सर्वोच्च परमेश्वर ने मुझे शलमन-
एसेर का कृपापात्र बनाया और मैं उसके लिए
सब सामान खरीदने लगा। 14मैं मादय देश में
यात्रा करते हुए उसकी मृत्यु के समय तक
उसके लिए सामान खरीदता रहा। एक बार मैंने
मादय* में गब्रिया के भाई गबाएल के यहाँ
थैलियों में लगभग तीन सौ पचास किलो चांदी
की मुद्राएं अमानत के रूप में रखीं। 15शलमन-
एसेर की मृत्यु के बाद उसका पुत्र सनहेरिब
उसके स्थान पर राजा बना। उस समय राजमार्ग
अरक्षित थे; इसलिए मैं फिर मादय नहीं जा सका।

16 शलमन-एसेर के शासनकाल में मैंने
अपनी जाति के भाई-बन्धुओं का बड़ा उपकार
किया। 17मैं भूखों को अपना भोजन दिया
करता और नंगों को अपने वस्त्र। जब मेरी जाति
का कोई व्यक्ति मर जाता और मैं देखता कि वह
नीनवे की शहरपनाह के बाहर फेंक दिया गया
है, तो मैं उसे दफनाता। 18जब राजा सनहेरिब
को यहूदा-प्रदेश से भागना पड़ा, क्योंकि स्वर्ग
के राजेश्वर ने उसे उसकी ईशनिन्दा के कारण
दण्डित किया था, तो उसने क्रुद्ध होकर बहुत-
से इस्राएलियों को मरवा डाला और मैंने उनके
शव छिपा कर दफना दिए। जब राजा ने उनके
शव ढुंढ़वाए, तो वे उसे नहीं मिले। 19नीनवे-
निवासियों में से किसी ने जा कर राजा को
बताया कि मैंने उन को दफनाया है; इसलिए मैं
छिप गया। जब मुझे मालूम हुआ कि मुझे मारने
के लिए ढूँढ़ा जा रहा है, तो मैं डर के मारे भाग
खड़ा हुआ। 20अब मेरी सारी सम्पत्ति जब्त कर
ली गयी और राजकोष में डाल दी गयी। अपनी
पत्नी हन्नाह और अपने पुत्र तोबियाह के सिवा
अब मेरे पास कुछ न रहा।

21 चालीस दिन भी नहीं बीते थे कि राजा
के दो पुत्रों ने उसका वध कर दिया और वे
अराराट पर्वतश्रेणी को भाग गये। उसके स्थान
पर उसका पुत्र एसरहद्दोन राजा बना। उसने मेरे
भाई हनाएल के पुत्र अहीकार को अपने समस्त

---

* पाठान्तर, ''रामय नगर में''

1 : 6 नि 22 : 29; व्य 16 : 16; 18 : 4 **1 : 10** यहेज 4 : 13 **1 : 15** 2 रा 18 : 13 **1 : 17** अय्य 31 : 16-20
1 : 21 1 इत 32 : 21

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

राजकोष का प्रबन्धक बनाया, जिससे वह सारे
क्षेत्र का प्रशासक बना। 22अहीकार ने मेरी
सिफारिश की और मुझे फिर से नीनवे आने की
अनुमति मिल गयी। अहीकार असीरिया के
राजा सनहेरिब का भोज-प्रबन्धक*, दीवान+
और खजांची रह चुका था और एसरहद्दोन ने
उसे फिर नियुक्त किया था। वह मेरा भतीजा
था और यों मेरा निकट सम्बन्धी था।

तोबीत का अन्धापन

2 एसरहद्दोन के राज्यकाल में मैं फिर अपने
घर वापस आया और मुझे फिर अपनी
पत्नी हन्नाह और अपना पुत्र तोबियाह मिले।
जब पेंतिकोस्त,** अर्थात् सप्त-सप्ताह के पर्व
के दिन मेरे लिए उत्तम भोजन तैयार किया गया,
तो मैं खाने बैठा। 2भोजन परोसा गया। मैंने
बहुत-से खाद्य-पदार्थ देख कर अपने पुत्र
तोबियाह से कहा, "पुत्र! जाओ और नीनवे में
निष्कासित अपने प्रभु-भक्त भाई-बहिनों में
जो भी गरीब व्यक्ति मिलें, उन्हें ले आओ,
जिससे वे मेरे साथ भोजन करें। मैं तुम्हारी
प्रतीक्षा करूँगा।" 3तोबियाह हमारे भाई-बंधुओं
के मध्य किसी गरीब को ढूंढ़ने निकला। वह
लौट कर बोला, "पिताजी!" मैंने उत्तर दिया,
"क्या बात है, पुत्र?" तब उसने बताया कि
एक इस्राएली की गला घोंट कर हत्या कर दी
गयी है और वह बाजार में पड़ा हुआ है।" 4मैं
तुरन्त उठ कर खड़ा हुआ और अपना भोजन
छोड़ कर शव के पास पहुँचा। मैंने उसे चौक
से हटा लिया और सूर्यास्त के बाद दफनाने के
लिए छिपे-छिपे अपने घर ले गया। 5शव को
छिपाने के बाद मैं नहा-धोकर उदास मन से
भोजन करने बैठा। 6मुझे नबी आमोस की यह
वाणी याद आयी, जो उन्होंने बेतएल में कही
थी, "तुम्हारे पर्व के दिन दुःख में और तुम्हारे
गीत विलाप में बदल जायेंगे" और मैं रोने लगा।

7 सूर्यास्त के बाद मैंने कबर खोद कर उस
शव को दफनाया। 8मेरे सभी पड़ोसी यह कहते
हुए मेरा उपहास कर रहे थे, "यह व्यक्ति अब
भी नहीं डरता। इस काम के लिए इसे मार
डालने के लिए ढूँढ़ा गया और इसे भागना पड़ा।
देखो, यह फिर मुरदों को दफना रहा है।" 9उस
रात मैं शव को दफनाने के बाद घर लौटा,
नहाया और आँगन की दीवार के पास लेट कर
सो गया। गरमी के कारण मेरा चेहरा ढका नहीं
था। 10मुझे मालूम नहीं था कि दीवार पर गौरैयाँ
रहती थीं। उनकी गरम बीट मेरी आँखों पर गिर
पड़ी, जिससे मेरी आँखों में मोतियाबिन्द हो
गया। मैं इलाज के लिए वैद्यों के पास गया,
किन्तु उन्होंने मेरी आँखों पर जितना अधिक
मरहम लगाया, मैं मोतियाबिन्द के कारण उतना
ही कम देखने लगा और अन्त में मैं अन्धा हो
गया। मैं चार वर्ष तक अन्धा रहा और मेरे सभी
भाई-बहिन मेरे कारण दुःखी थे। जब तक
अहीकार एलिमईस नगर को नहीं गया, तब
तक अर्थात् दो वर्ष तक वह मेरी जीविका का
प्रबन्ध करता रहा।

हन्नाह की फटकार

11 उस समय मेरी पत्नी हन्नाह रोटी कमाने
के लिए सिलाई-बुनाई का काम करती थी।
12वह कपड़ा तैयार कर मालिकों को भेज देती
थी और मालिक उसे मजदूरी देते थे। एक दिन,
दिस्त्रुस अर्थात् ग्यारहवें महीने की सातवीं
तारीख को वह सिलाई का काम पूरा कर उसे
मालिकों को देने गयी और उन्होंने पूरी मजदूरी
के अतिरिक्त घर ले जाने के लिए बकरी का
बच्चा भी दिया। 13जब वह घर पहुँची तो बकरी
का बच्चा मिमियाने लगा। पत्नी को बुलाकर
मैंने पूछा, "यह बच्चा कहाँ से आया? कहीं
चोरी का तो नहीं है? इसे इसके मालिक को
लौटा दो। हम चोरी की चीज नहीं खा सकते।
" 14उसने उत्तर दिया, "यह मुझे मजदूरी के
साथ बख्शीश में मिला है।" परन्तु मैंने उसका
विश्वास नहीं किया और उसे उसके मालिक
को लौटा देने को कहा। मुझे उसके इस काम
से शर्म आयी। किन्तु उसने मुझे यह उत्तर दिया,
"कहाँ हैं तुम्हारे भिक्षादान? कहाँ है तुम्हारा

* अथवा "मुख्य साकी"। + शब्दशः "राज-मोहर धारण करने वाला"। ** अर्थात् पचासवाँ दिन।
2 : 1.नि 34 : 22; प्रे 2 : 1 ; 20 : 16

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

धर्माचरण ? अब पता चला कि तुम कितने पानी में हो !''

तोबीत की प्रार्थना

3 मैं बड़ा दु:खी हो कर कराहते और आँसु
बहाते हुए इस प्रकार प्रार्थना करने लगा,
2 ''प्रभु ! तू न्यायी* है और तेरे समस्त कार्य
न्यायपूर्ण हैं। तेरे सभी मार्ग दया और सच्चाई के
हैं। तू संसार का न्याय करता है। 3प्रभु ! अब
मेरी सुधि ले, और मुझ पर कृपापूर्ण दृष्टि डाल।
मेरे पापों और भूल-चूकों के लिए मुझे दण्ड न
दे। मेरे पूर्वजों ने तेरे सम्मुख पाप किये थे। तू
उनके अपराधों को भूल जा। 4हम लोगों ने तेरी
आज्ञाओं का पालन नहीं किया, इसलिए हम
लूट, निष्कासन एवं मृत्यु के शिकार बने हुए हैं
और तूने हमें जिन राष्ट्रों में बिखेरा, वहाँ हम
अपमानित हुए हैं और निन्दा-उपहास के पात्र
बन गए हैं। 5किन्तु तेरे सब न्याय-निर्णय सत्य
हैं और मेरे प्रति तेरी दण्डाज्ञा न्यायोचित है;
क्योंकि हमने तेरी आज्ञाओं का पालन नहीं किया
और हम तेरे प्रति सदाचारी नहीं रहे। 6इसलिए
जैसी तेरी इच्छा हो, मेरे साथ वैसा ही व्यवहार
कर। आदेश दे ताकि मेरा प्राण मुझसे ले लिया
जाए। मैं मर जाऊँ और फिर से मिट्टी में मिल
जाऊँ। मुझे पृथ्वी से उठा लेने की कृपा कर,
क्योंकि मेरे लिए जीवन की अपेक्षा मरण अच्छा
है। मैं झूठी निन्दा सुनते-सुनते तंग आ गया हूँ।
मैं बड़ा दु:खी हूँ। प्रभु ! मुझ से यह कष्ट दूर कर।
मुझे अपने शाश्वत निवास में प्रवेश करने दे।
प्रभु ! मुझ से अपना मुख न छिपा। जीवन भर
इस प्रकार का कष्ट सहते और निन्दा सुनते रहने
की अपेक्षा मेरे लिए मर जाना अच्छा है।''

सारा की वेदना

7 उसी दिन, मादय देश के एकबतना नामक
नगर में, रागुएल की पुत्री सारा को भी अपने
पिता की एक नौकरानी की फटकार सुननी
पड़ी। 8 सारा का विवाह सात बार हुआ था और
सारा से पति का संसर्ग होने के पहले ही
अस्मोदेव नामक पिशाच** ने क्रमशः सातों को
उसके पास आते ही मार डाला था। नौकरानी
ने सारा से कहा, ''पतियों की हत्यारिन ! तुम
को सात पति मिल चुके हैं और तुम किसी की
नहीं बन सकीं। 9अपने मरे हुए पतियों के
कारण हमको क्यों डाँटती हो ? उनके पास
चली जाओ। अच्छा हो कि हम तुम्हारे पुत्र या
तुम्हारी पुत्री को कभी नहीं देखें।''
10 उस दिन सारा को बड़ा दु:ख हुआ। वह
रोते हुए पिता के घर की छत पर जाकर अपने
को फाँसी लगाना चाहती थी। फिर वह सोचने
लगी: ''कहीं ऐसा न हो कि लोग यह कहते
हुए मेरे पिता का अपमान करें: 'तुम्हारी एक ही
प्यारी पुत्री थी और उसने दु:ख के कारण फाँसी
लगा ली।' और इस तरह मैं अपने बूढ़े पिता की
मृत्यु का कारण बनूँगी। मेरे लिए अच्छा यह है
कि मैं अपने को फाँसी न लगाऊँ, बल्कि
परमेश्वर से प्रार्थना करूँ कि मैं मर जाऊँ,
जिससे मुझे अपने जीवन में और निन्दापूर्ण बातें
नहीं सुननी पड़ें।''

सारा की प्रार्थना

11 इसके बाद वह खिड़की के पास हाथ
फैलाकर इस प्रकार प्रार्थना करने लगी: ''दयालु
प्रभु-परमेश्वर ! तू धन्य है। तेरा नाम+ सदा-
सर्वदा धन्य है। तेरे सभी कार्य सदा-सर्वदा तुझे
धन्य कहें। 12प्रभु ! अब मैं तेरी ओर अभिमुख
हो कर तुझ पर अपनी आँखें लगाती हूँ। 13मुझे
इस पृथ्वी पर से उठाने की कृपा कर, जिससे
मुझे अपनी निन्दा और न सुननी पड़े। 14स्वामी !
तू जानता है कि मैंने किसी पुरुष के अपवित्र
संसर्ग द्वारा कभी पाप नहीं किया। 15मैंने अपने
निष्कासन के देश में न अपना और न अपने
पिता का नाम कलंकित किया। मैं अपने पिता
की एकमात्र सन्तान हूँ। उसके कोई पुत्र नहीं
है, जो उत्तराधिकारी बने। उसका कोई सम्बन्धी
नहीं है और न सम्बन्धी का कोई ऐसा पुत्र,
जिसके साथ मैं विवाह कर सकूँ। मेरे सातों
पतियों की मृत्यु हो चुकी है। मैं क्यों जीवित
रहूँ ? प्रभु ! यदि तू मुझे उठाना नहीं चाहता, तो

* अथवा, ''धार्मिक'' ** शब्दशः, ''दुष्ट भूत''। + पाठांतर, ''पवित्र और सम्मानीय नाम''।

3 : 11 दान 6 : 10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ऐसा कर कि लोग मेरा आदर करें और मुझे
अपनी निन्दा और न सुननी पड़े।''

दोनों प्रार्थनाओं को परमेश्वर ने सुना

16 महिमामय परमेश्वर ने एक ही समय में
उन दोनों की प्रार्थनाएँ सुनीं। 17 स्वर्गदूत रफाएल
उनके पास भेजा गया, जिससे वह उन दोनों को
स्वस्थ करे—एक ओर वह तोबीत का
मोतियाबिन्द दूर करे, जिससे वह अपनी आंखों
से परमेश्वर की ज्योति देख सके, और दूसरी
ओर वह रागुएल की पुत्री सारा का विवाह
तोबीत के पुत्र तोबियाह से कराये। साथ ही
अस्मोदेव पिशाच के बंधन से उसे मुक्ति
दिलाए। वास्तव में, पूर्व पतियों से पहले सारा
पर तोबियाह का अधिकार था, कि वह उससे
विवाह करे। इधर तोबीत आंगन से घर के भीतर
आया और उधर रागुएल की पुत्री सारा छत से
नीचे उतरी।

तोबियाह को पिता की सीख

4 उसी दिन तोबीत को उन मुद्राओं की याद
आयी, जो उसने मादय देश में रागय-
निवासी गबाएल के पास अमानत के रूप में
रखी थीं। 2 वह मन-ही-मन सोचने लगा कि
मैंने मृत्यु के लिए प्रार्थना की है। अब मैं क्यों
न अपने पुत्र तोबियाह को बुला कर अपनी मृत्यु
के पहले उसे उस धन के विषय में बता दूं?''
3 उसने उसे बुलाया और उस से कहा, ''पुत्र!
मैं मर जाऊँ, तो मुझे उचित रीति से दफना देना।
अपनी माँ का आदर करना। उसे जीवन भर नहीं
छोड़ना। वही करते रहना, जो उसे प्रिय हो और
उसे कभी दुःख नहीं देना। 4 पुत्र! यह याद रखो
कि उसे तुम्हारे जन्म से पहले तुम्हारे कारण
कितने कष्ट झेलने पड़े। तुम उसे मृत्यु के बाद
मेरी ही कबर में दफना देना। 5 पुत्र! प्रभु को
जीवन भर स्मरण रखना। तुम इच्छा से भी नहीं
पाप करना और न उसकी आज्ञाएँ भंग करना।
जीवन-भर धर्माचरण करना और कुमार्ग पर
नहीं चलना; 6 क्योंकि जो सन्मार्ग पर चलते हैं,
वे अपने सब कामों में सफल होते हैं।* 7 अपनी
सम्पत्ति में से धर्माचरण करने वालों को ही
भिक्षादान देना और ऐसा न लगे कि तुम
अनिच्छा से दान दे रहे हो! किसी गरीब की
उपेक्षा नहीं करना, जिससे परमेश्वर भी तुम्हारी
उपेक्षा नहीं करे। 8 अपनी सम्पत्ति के अनुसार
दान देना : यदि तुम्हारे पास बहुत हो, तो
अधिक देना; यदि तुम्हारे पास कम हो, तो कम
देने में नहीं हिचकना। 9 तुम्हारा यह दान विपत्ति
के दिन तुम्हारे लिए एक अच्छी निधि प्रमाणित
होगा; 10 क्योंकि भिक्षादान मृत्यु से बचाता और
अन्धकार में प्रवेश करने से रोकता है। 11 हर
भिक्षादान सर्वोच्च प्रभु की दृष्टि में सर्वोत्तम
चढ़ावा है।

12 ''पुत्र! हर प्रकार के व्यभिचार+ से दूर
रहना। विवाह के संबंध में पहली बात यह है
कि अपने पूर्वजों के कुल में ही विवाह करना।
किसी भी विजातीय कन्या से, जो तुम्हारे
पितृकुल की नहीं है, विवाह नहीं करोगे;
क्योंकि हम नबियों की सन्तान हैं। पुत्र! स्मरण
रखो कि हमारे पूर्वज नूह, अब्राहम, इसहाक
और याकूब ने प्राचीन काल में अपने ही कुल
में विवाह किया था। उन्हें आशीर्वादस्वरूप
संतान प्राप्त हुई और उनके वंशज पृथ्वी के
अधिकारी बने। 13 पुत्र! अपने सगे-संबंधियों
को प्यार करना। अपने मन में अपनी जाति के
भाई-बहिनों और उनके पुत्र-पुत्रियों से घृणा
नहीं करना, बल्कि उनकी कन्याओं के साथ
विवाह करने में नहीं हिचकना; क्योंकि घमण्ड
पतन और अशान्ति की जड़ है।

''अकर्मण्यता से हानि होती है और बड़े-
बड़े अभाव पैदा होते हैं। अकर्मण्यता भुखमरी
की जननी है। 14 अपने यहाँ काम करने वाले की
मजदूरी रात भर के लिए भी नहीं रखना, बल्कि
तुरन्त देना। यदि तुम परमेश्वर की सच्ची सेवा

---

* पद 7 से पद 18 तक का पाठ विभिन्न हस्तलेखों के आधार पर पुनः रचा गया है। + अथवा अवैध संबंध।

3 : 17 प्रे 9 : 18 **4 : 3** नि 20 : 12 **4 : 4** प्रव 7 : 27 **4 : 7** व्य 15 7-8; नीति 3 : 9; 19 : 17; प्रव 3 : 30-4 : 6; 1 यो 3 : 17 **4 : 8** प्रव 35 : 10 **4 : 9** 1 तिम 6 : 19 **4 : 12** उत 24 : 3-4 ; 26 : 34-35 ; 27 : 46; 28 : 6-9 ; गण 12 : 1; एज्रा 9 : 2 ; नह 13 : 23 - 30

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
करोगे, तो तुम्हें इसका प्रतिफल मिलेगा। पुत्र!
तुम अपने सभी कार्य सावधानी से करना और
अपने सम्पूर्ण व्यवहार में समझदारी का परिचय
देना। 15तुम्हें जो बात अप्रिय है, उसे किसी दूसरे
के साथ नहीं करना। इतनी मदिरा नहीं पीना कि
नशा आ जाये। तुम शराबी नहीं बनना। 16तुम
अपनी रोटी में से भूखों को खिलाना और अपने
कपड़ों में से नंगों को पहनाना। तुम्हारे पास यदि
आवश्यकता से अधिक हो, तो वह सब दान में
दे देना; किन्तु ऐसा न लगे कि तुम अनिच्छा से
भिक्षादान दे रहे हो! 17धर्मी के दफन के समय
उदारतापूर्वक भोजन की व्यवस्था करना, किन्तु
पापियों को उसमें सम्मिलित नहीं करना।

18 "जो समझदार है, उस से सलाह लेना
और किसी भी सत्परामर्श की उपेक्षा नहीं
करना। 19हर समय प्रभु परमेश्वर को धन्य
कहना और उससे प्रार्थना करना, जिससे वह
तुम्हें सन्मार्ग पर ले जाये और तुम्हें सद्बुद्धि
आये; क्योंकि सभी लोग अज्ञानी हैं। प्रभु के
अतिरिक्त और कोई सत्परामर्श नहीं देता। प्रभु
जिसे चाहता है, उसे ऊपर उठाता और जिसे
नहीं चाहता है, उसे अधोलोक तक नीचे गिरा
देता है। पुत्र! मेरी शिक्षा याद रखना और उसे
अपने हृदय से अलग नहीं करना।

तोबियाह को धन ले आने का आदेश

20 "अब मैं तुम्हें तीन सौ पचास किलो
चाँदी के विषय में बताता हूँ, जो मैंने मादय-
देश के रागय-निवासी गब्रिया के भाई गबाएल
के पास अमानत के रूप में रखी है। 21पुत्र! इस
बात से मत घबराओ कि हम गरीब हो गये हैं।
यदि तुम परमेश्वर पर श्रद्धा रखोगे, हर प्रकार
के पाप से दूर रहोगे और वही करोगे, जो प्रभु,
अपने परमेश्वर की दृष्टि में उचित है, तो यह
समझ लो कि तुम बड़े धनी हो।"

5 इस पर तोबियाह ने अपने पिता तोबीत को
उत्तर दिया। उसने कहा, "पिताजी! आपने
मुझसे जो कुछ कहा, मैं वह सब करूँगा।
2परन्तु मैं वह धन कैसे प्राप्त करूँ, जब न तो
मैं उस व्यक्ति को जानता हूँ और न वह मुझे।
मैं उसे क्या प्रमाण दूँ, जिससे वह मुझे पहचाने,
मुझ पर विश्वास करे और वह धन मुझे
लौटाये? इसके अतिरिक्त मैं मादय देश को
जाने वाला रास्ता भी नहीं जानता।" 3तोबीत
ने अपने पुत्र तोबियाह को उत्तर दिया, "उसने
मुझे अपना अनुबन्ध-पत्र दिया, और मैंने
उसको अनुबन्ध-पत्र दिया। मैंने उसके
अनुबन्ध-पत्र के दो टुकड़े किये; और हम
दोनों ने एक-एक टुकड़ा ले लिया। इसके बाद
मैंने चाँदी के साथ एक टुकड़ा रख दिया। अब
तो बीस वर्ष हो गये हैं कि मैंने वह धन उसके
पास अमानत के रूप में रखा। बेटा! अब तुम
एक ईमानदार व्यक्ति का पता लगाओ, जो
तुम्हारे साथ जाये और तुम्हारे लौटने पर हम
उसे पारिश्रमिक दे देंगे। अब तुम जाओ और
गबाएल से वह धन प्राप्त करो।"

तोबियाह और स्वर्गदूत का प्रस्थान

4 तब तोबियाह एक ऐसे व्यक्ति की खोज
में निकला, जो उसके साथ मादय देश जाने को
तैयार हो और वहाँ का मार्ग जानता हो। उसे
स्वर्गदूत रफाएल मिला, किन्तु उसे मालूम नहीं
था कि जो उसके सामने खड़ा है, वह परमेश्वर
का दूत है। 5तोबियाह उस से बोला, "युवक!
तुम कहाँ के हो?" उसने उत्तर दिया, "मैं
इस्राएली, तुम्हारा भाई हूँ। यहाँ काम की खोज
में आया हूँ।" तोबियाह ने पूछा, "क्या तुम
मादय देश का मार्ग जानते हो?" 6उसने कहा,
"मैं वहाँ कई बार जा चुका हूँ।। मैं वहाँ के सब
मार्ग जानता हूँ। मैंने कई बार मादय देश की
यात्रा की है। और हमारे भाई गबाएल के यहाँ
रहा हूं, जो मादय के रागय नगर का निवासी है।
एकबतना से रागय दो दिन का रास्ता है, क्योंकि
रागय पर्वत पर स्थित है, जब कि एकबतना
मैदान में।" 7इस पर तोबियाह उस से यह
बोला, "युवक! मेरी प्रतीक्षा करो। मैं घर
जाकर अपने पिता को इसकी सूचना दूँगा। वहाँ
जाने के लिए मुझे तुम्हारे साथ की जरूरत है।
इसके लिए मैं तुम को पारिश्रमिक दूँगा।"
8युवक ने कहा, "मैं तुम्हारा इन्तजार करूँगा,

---

4 : 15 मत 7 : 12; लू 6 : 31 4 : 17 यिर 16 : 7 ; व्य 26 : 14 4 : 21 1 तिम 6 : 6-8 5 : 4 इब्र 13 : 2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

किन्तु देर मत करना।'' [9]तोबियाह ने घर जा कर अपने पिता तोबीत से कहा, ''मुझे अपने इस्राएली भाइयों में से एक व्यक्ति मिल गया है, जो मेरे साथ जायेगा।'' पिता ने उत्तर दिया, ''पुत्र! उसे अन्दर बुलाओ। मैं जरा पता कर लूँ कि वह किस कुल और वंश का है; और यह देख लूँ कि वह ईमानदार है, और तुम्हारे साथ जाने योग्य है।''

10 तोबियाह ने बाहर जा कर उसे बुलाया और कहा, ''युवक! पिताजी तुम से मिलना चाहते हैं।'' वह अन्दर गया और तोबीत ने पहले उसे प्रणाम किया। उसने तोबीत से कहा, ''आप को आनन्द मिले।'' तोबीत ने उत्तर में कहा, ''मुझे आनन्द कहाँ से मिलेगा? अन्धा होने के कारण मैं आकाश की ज्योति नहीं देख सकता और अन्धकार में बैठने के कारण मैं मृतकों की तरह फिर कभी प्रकाश नहीं देख पाऊँगा। मैं जीवित होते हुए भी मृतकों-जैसा हूँ। मैं मनुष्यों की आवाज सुनते हुए भी उन्हें नहीं देखता।'' उसने उत्तर दिया, ''साहस कीजिए। निकट भविष्य में परमेश्वर आप को स्वस्थ करेगा। साहस कीजिए।'' तोबीत ने उस से कहा, ''भाई! मेरा पुत्र तोबियाह मादय देश जाना चाहता है। क्या तुम उसके साथ जा कर उसे मार्ग दिखा सकते हो? मैं तुमको पारिश्रमिक दूँगा।'' उसने उत्तर दिया, ''मैं आपके पुत्र के साथ जा सकता हूँ। मैं सब मार्ग जानता हूँ और कई बार मादय देश जा चुका हूँ। मैं वहाँ के सब मैदानों और पर्वतों का भ्रमण कर चुका हूँ और सब मार्ग जानता हूँ।'' [11]तोबीत ने उस से कहा, ''भाई! मुझे बताओ, तुम किस कुल और वंश के हो?'' [12]उसने उत्तर दिया, ''आप मेरा कुल क्यों जानना चाहते हैं?'' तोबीत ने कहा, ''मैं सही-सही यह जानना चाहता हूँ कि तुम किसके पुत्र हो और तुम्हारा नाम क्या है।'' [13]उसने उत्तर दिया, ''मैं आपके सम्बन्धी बड़े हनन्याह का पुत्र अजर्याह हूँ।'' [14]तोबीत ने कहा, ''भाई! तुम्हारा स्वागत है! परमेश्वर तुम्हारा कल्याण करे! इस बात पर बुरा न मानना कि मैं तुम्हारे परिवार का सही परिचय जानना चाहता था। अब पता चला कि तुम मेरे भाई और अच्छे परिवार के सदस्य हो। मैं शमल्याह के दोनों पुत्र हनन्याह और नातान को जानता था। वे आराधना करने मेरे साथ यरूशलेम जाया करते थे। वे अपने धर्म से विमुख नहीं हुए। तुम्हारे भाई कुलीन हैं और तुम्हारा वंश उत्तम है। तुम्हारा स्वागत है।'' [15]उसने फिर कहा, ''मैं तुम को प्रतिदिन एक दीनार के हिसाब से पारिश्रमिक दूंगा, और तुम्हें एवं अपने पुत्र को यात्रा-खर्च के लिए भी दूँगा। उसके साथ जाओ [16]और मैं वेतन के अतिरिक्त तुम्हें और कुछ दूँगा।'' [17]रफाएल ने कहा, ''आप निश्चिन्त रहें, मैं उसके साथ जाऊँगा। हम सकुशल जायेंगे और सकुशल लौटेंगे। मार्ग सुरक्षित है।'' तोबीत ने उस से कहा, ''भाई! परमेश्वर तुम्हारा भला करे!'' उसने अपने पुत्र को बुला कर कहा, ''यात्रा के लिए तैयारी करो और अपने भाई के साथ जाओ। स्वर्ग में विराजमान परमेश्वर मादय देश में तुम्हारी रक्षा करे और तुम दोनों को मेरे पास सकुशल लौटा लाए। पुत्र! परमेश्वर का दूत तुम्हारे साथ रहे और तुम्हारी रक्षा करे।'' तोबियाह ने यात्रा के लिए तैयार होकर अपने माता-पिता का चुम्बन किया। तोबीत ने कहा, ''तुम्हारी यात्रा सफल हो!''

18 तोबियाह की माता रोने लगी और तोबीत से बोली, ''आपने मेरे पुत्र को दूर क्यों भेजा? वह हमारे बुढ़ापे की लाठी है। अब कौन हमारी देखभाल करेगा? [19]धन का ढेर मत लगाइए; बल्कि हमारे पुत्र के विमोचन के मूल्य में वह धन छोड़ दीजिए। [20]परमेश्वर ने हमारी जीविका के लिए जो दिया है, वह हमारे लिए बहुत है।'' [21]इस पर तोबीत ने उस से कहा, ''चिन्ता मत करो। हमारा पुत्र सकुशल जायेगा और हमारे पास सकुशल लौटेगा। जिस दिन वह सकुशल लौटेगा, तुम्हारी आँखें उसे फिर देखेंगी। प्रिय! बस, अब और बातें मत करो। तुम उनके लिए नहीं डरो। [22]एक अच्छा स्वर्गदूत उसके साथ

5 : 16 उत 24 : 7.40

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जायेगा। उसकी यात्रा सफल होगी और वह
सकुशल लौटेगा।''

मछली का सुझाव

6 अत: तोबियाह की मां ने रोना बन्द कर
दिया। तोबियाह ने प्रस्थान किया और
उसके साथ स्वर्गदूत भी गया। 2तोबीत का कुत्ता
उसके साथ निकल कर दोनों के पीछे हो
लिया। वे दोनों आगे बढ़ते गए। चलते-चलते
शाम हो गयी और उन्होंने पहली रात दजला
नदी के तट पर बितायी। 3जब युवक तोबियाह
स्नान करने नदी पर गया, तो नदी से एक बड़ी
मछली निकली और उसने लपक कर उसका
पैर पकड़ लिया, और उसको निगलना चाहा।
युवक चिल्लाने लगा। 4स्वर्गदूत ने उस से कहा,
''मछली को मजबूती से पकड़ लो।'' युवक
ने वह मछली पकड़ ली, और उसे सूखी भूमि
पर खींच लिया। 5स्वर्गदूत ने उस से कहा,
''मछली का पेट चीर कर उसका दिल, कलेजा
और पित्तकोष सुरक्षित रख लो। उसकी अँतड़ियाँ
फेंक दो। दिल, कलेजा और पित्तकोष दवा के
काम आते हैं।'' 6युवक ने मछली का पेट चीर
कर उसका दिल, कलेजा और पित्तकोष
इकट्ठा किया, और उनको अलग रखा। उसने
मछली का कुछ अंश भून कर खाया और कुछ
अंश पर नमक छिड़क कर रख लिया।

इसके बाद वे दोनों आगे बढ़ते रहे। मादय*
के पास पहुँच कर 7युवक ने स्वर्गदूत से यह
प्रश्न किया, ''भाई अजर्याह! मछली के दिल,
कलेजे और पित्त किस रोग की दवा हैं?''
8उसने उत्तर दिया, ''जो पुरुष या स्त्री किसी
भूत या दुष्ट आत्मा से सताया जाता है, उसके
सामने यदि मछली का दिल और कलेजा जला
दिया जाये, तो सारी बुराई उसे छोड़ कर फिर
कभी उसके पास नहीं फटकेगी। 9यदि पित्त
ऐसे मनुष्य की आँखों पर लगाया जाये, जिस
को मोतियाबिन्द हो गया हो, तो मोतियाबिन्द-
वाली आंखों पर फूंकने पर वे अच्छी हो जाती
हैं।''

तोबियाह से सारा की चर्चा

10 मादय देश में प्रवेश करने के बाद और
एकबतना नगर के पास पहुँच कर 11रफाएल
ने युवक से कहा, ''भाई तोबियाह!'' उसने
उत्तर दिया, ''मैं प्रस्तुत हूँ।'' रफाएल ने कहा,
''हमें यह रात रागुएल के यहाँ बितानी है। वह
तुम्हारा सम्बन्धी है और उसके सारा नामक एक
पुत्री है। 12उसके कोई पुत्र नहीं है और सारा
के सिवा उसके कोई पुत्री भी नहीं है। तुम
उसके सब से निकट सम्बन्धी हो। तुम को
उसके साथ विवाह करने और उसके पिता की
सम्पत्ति का पहला अधिकार है। कन्या समझदार,
साहसी और बहुत सुन्दर है। उसका पिता
सज्जन पुरुष है।'' 13उसने फिर कहा, ''उचित
है कि तुम उसे स्वीकार करो। भाई! मेरी बात
सुनो। मैं इस रात उस कन्या के विषय में
बातचीत करूँगा, जिससे उसके साथ तुम्हारा
विवाह निश्चित हो जाये। हम रागय से लौट
कर उस से तुम्हारा विवाह करेंगे। मैं जानता हूँ
कि वह उसे तुम को देना अस्वीकार नहीं
करेगा। वह जानता है कि यदि वह उसे अन्य
पुरुष को देगा, तो वह मूसा की व्यवस्था के
अनुसार मृत्युदण्ड का भागी होगा; क्योंकि यह
उचित है कि किसी भी अन्य मनुष्य की अपेक्षा
तुम्हें उसकी विरासत और उसकी पुत्री प्राप्त
हो। भाई! अब मेरी बात मानो। हम इस रात
उस कन्या के विषय में बात करें और उसकी
मँगनी तुम से करायें। रागय से लौट कर उसका
विवाह सम्पन्न करें और उसे अपने साथ तुम्हारे
घर ले चलें।''

14 इस पर तोबियाह ने रफाएल से कहा,
''भाई अजर्याह! मैंने सुना है कि उस कन्या का
विवाह क्रमश: सात पुरुषों से हुआ, किन्तु
उनकी कमरे में सुहागरात को ही मृत्यु हो गयी।
जब वे उसके पास सुहागरात बिताने के लिए
अन्दर आते तो उनकी मृत्यु हो जाती थी। मैंने
कुछ लोगों को यह कहते सुना है कि एक भूत
ने उनका वध किया है। 15मुझे डर लगता है।

---

* पाठांतर, ''एकबतना''। + पाठांतर, ''रागय''।

6 : 12 गण 15 : 30; 27 : 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भूत उस कन्या को नहीं सताता है; किन्तु जो
पुरुष उसके पास जाना चाहता, भूत उसका वध
कर देता है। मैं अपने पिता का इकलौता पुत्र हूँ।
कहीं ऐसा न हो कि मेरी मृत्यु हो जाए, और
मेरी मृत्यु के शोक के कारण मेरे माता-पिता
भी मर जाएं और इस प्रकार मैं उनकी मृत्यु का
कारण बनूं। उनके कोई और पुत्र नहीं, जो उन्हें
दफनाये।''
16 रफाएल ने उस से कहा, ''क्या तुम को
अपने पिता का आदेश याद नहीं है? उन्होंने तुम
से कहा है कि तुम अपने पिता के कुटुम्ब की
किसी कन्या से विवाह करोगे। भाई! अब मेरी
बात सुनो। उस भूत की चिन्ता मत करो और
सारा से विवाह कर लो। मैं जानता हूँ कि वह
इस रात तुम्हारी पत्नी हो जायेगी। [17]जब तुम
सुहाग-सेज के कमरे में जाओगे, तब ऐसा
करना : उस मछली के दिल और कलेजे का
कुछ अंश लोबान के साथ जलते हुए धूपदान
पर रखकर कमरे में प्रवेश करना। [18]भूत उसकी
गन्ध सूँघ कर भाग जायेगा और उसके निकट
फिर कभी नहीं आयेगा। वधू के साथ सुहागरात
मनाने से पूर्व तुम दोनों शैया से पहले उठना और
प्रार्थना करना, जिससे स्वर्ग का प्रभु तुम दोनों
पर दया करे और तुम्हारी रक्षा करे। डरो मत।
सृष्टि-रचना से पूर्व वह तुम्हारी पत्नी बनने के
लिए अलग की गई है। तुम उसे बचा लोगे और
वह तुम्हारे साथ जायेगी। मुझे विश्वास है कि
तुम्हें उस से बच्चे उत्पन्न होंगे, जो तुम्हारे भाई-
बहिनों का अभाव पूरा करेंगे। तुम चिन्ता मत
करो।'' [19]जब तोबियाह रफाएल की बातों से
यह जान गया कि वह उसकी संबंधी** है और
उसके पिता के वंश के नाते उसके कुटुम्ब की
है, तो वह उसको बहुत प्यार करने लगा और
उसका हृदय उसके प्रति आकर्षित हुआ।

रागुएल को तोबियाह का परिचय

7 एकबतना पहुँच कर तोबियाह ने कहा,
''भाई अजर्याह! मुझे सीधे हमारे भाई
रागुएल के पास ले जाओ।'' वह उसे रागुएल
के घर ले गया। रागुएल अपने आँगन के द्वार
पर बैठा हुआ था। उन्होंने उसे पहले प्रणाम
किया। रागुएल ने उन से कहा, ''भाइयो!
आपका आनन्द-मंगल हो! आप स्वस्थ रहें।
आपका स्वागत है।'' वह उन्हें घर के अन्दर ले
गया [2]और उसने अपनी पत्नी एदना से कहा,
''यह युवक मेरे चचेरे भाई तोबीत-जैसा
दिखता है।।'' [3]एदना ने उन से पूछा, ''भाइयो!
आप-लोग कहाँ के रहने वाले हैं?'' उन्होंने
उत्तर दिया, ''हम नफ्ताली कुल के वंशज हैं,
जो नीनवे महानगर में निष्कासित हैं।''
4 रागुएल ने कहा, ''तुम हमारे भाई तोबीत
को जानते हो?'' जब उन्होंने उत्तर दिया, ''हम
उन्हें जानते हैं'', तो उसने पूछा, ''वह सकुशल
तो हैं?'' [5]उन्होंने कहा, ''वह जीवित और
सकुशल हैं।'' तोबियाह ने कहा, ''वह मेरे
पिताजी हैं।'' [6]यह सुनते ही रागुएल ने लपक
कर उसका चुम्बन किया और रोते हुए [7]कहा,
''पुत्र, तुम धन्य हो! तुम एक अच्छे और कुलीन
पिता के पुत्र हो।* यह कितने दुर्भाग्य की बात
है कि इतना धार्मिक और परोपकारी मनुष्य
अन्धा हो गया है।'' उसने अपने भाई के पुत्र
तोबियाह को गले लगाया और रोने लगा। [8]उसकी
पत्नी एदना और उनकी पुत्री सारा भी रोने
लगीं। [9]रागुएल ने अपनी भेड़ों में से एक मेढ़े
का वध किया और उनका सहर्ष स्वागत किया।

विवाह का प्रस्ताव

उन्होंने नहाया और अपने को शुद्ध किया।
जब वे भोजन करने बैठे, तो तोबियाह ने
रफाएल से कहा, ''भाई अजर्याह! रागुएल से
कहो कि वह मुझे मेरी रिश्तेदार** सारा को दे
दें।'' [10]रागुएल ने यह सुन कर युवक से कहा,
''भाई! इस रात आनन्द मनाते हुए खाओ-
पिओ। तुम्हारे सिवा कोई पुरुष मेरी पुत्री सारा
से विवाह करने योग्य नहीं है। तुम को छोड़ कर
उसे दूसरे पुरुष को देने का मुझे अधिकार भी

---

* कुछ प्राचीन प्रतियों में ये शब्द भी मिलते हैं : ''पर जब उसको मालूम हुआ कि तोबीत की आंखें जाती रही हैं, तो उसको बहुत दुःख हुआ और उसने और अधिक रोते हुए कहा:'' ** मूल में 'बहिन'।

7 : 6 उत 33 : 4 ; लू 15 : 20

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नहीं है, क्योंकि तुम सब से अधिक निकट
सम्बन्धी हो। पर पुत्र! मैं तुम से सच्ची बात नहीं
छिपाऊँगा। 11मैं उसे अपने जाति-भाइयों में से
क्रमशः सात पुरुषों को दे चुका हूँ और जिस
रात वे उसके पास गये, उसी रात सब की मृत्यु
हो गयी। पुत्र! अब खाओ-पिओ! प्रभु तुम
दोनों का भला करेगा।'' परंतु तोबियाह ने उत्तर
दिया, ''जब तक आप मुझे अपनी पुत्री सारा
को देने की प्रतिज्ञा नहीं करेंगे, तब तक मैं कुछ
नहीं खाऊँगा-पिऊँगा।'' रागुएल ने उस से
कहा, ''मैं प्रतिज्ञा करता हूँ। मूसा की व्यवस्था
के निर्णय के अनुसार वह तुम्हारी है। उसके
साथ तुम्हारा विवाह स्वर्ग में निश्चित किया
गया है। अपनी चचेरी बहिन को अपनाओ।
अब से तुम इसके भाई हो और वह तुम्हारी
बहिन है। आज वह सदा के लिए तुम्हें दी जाती
है। मेरे पुत्र! स्वर्ग का परमेश्वर तुम दोनों का
कल्याण करे और इस रात तुम पर दया करे और
शान्ति प्रदान करे।''

विवाह

12 रागुएल ने अपनी पुत्री सारा को बुलाया
और वह उसके पास आयी। उसने उसका हाथ
पकड़ कर यह कहते हुए उसे तोबियाह को
दिया, ''मूसा के ग्रन्थ में निर्धारित विवाह-
विधि के अनुसार इसे अपनाओ। यह तुम्हारी
पत्नी है। इसे सकुशल अपने पिता के घर ले
जाओ। स्वर्ग का परमेश्वर तुम लोगों को
सुरक्षित यात्रा और शान्ति प्रदान करे।'' 13उसने
उसकी माता को बुलाकर कागज मँगवाया,
जिससे वह विवाह के अनुबन्ध-पत्र पर यह
लिखे कि उसने मूसा की व्यवस्था के अनुसार
उसे तोबियाह को पत्नी के रूप में दिया है।
[माता कागज लायी और रागुएल ने अनुबन्ध-
पत्र लिख कर उस पर मुहर लगा दी*] 14इसके
बाद वे खाने-पीने लगे।

15 रागुएल ने अपनी पत्नी एदना को बुला
कर उस से कहा, ''प्रिय**! दूसरा कमरा तैयार
करो और सारा को वहाँ ले जाओ।'' 16उसने
जा कर उसके कहने के अनुसार पलंग तैयार
किया और अपनी पुत्री को शयन-कक्ष में ले
गई, और वहां उसके लिए रोने लगी। तब उसने
आँसू पोंछ कर उस से कहा, ''मेरी पुत्री!
साहस कर! स्वर्ग का परमेश्वर तुझ को दुःख
के बदले आनन्द प्रदान करे। साहस कर!''
इसके बाद वह चली गयी।

वर-वधू की प्रार्थना

8 वे भोजन के बाद विश्राम करना चाहते थे।
उन्होंने युवक को ले जा कर शयन-कक्ष
में पहुँचा दिया। 2तोबियाह को रफाएल की
बात याद आयी और उसने अपने थैले से मछली
का दिल और कलेजा निकाल कर जलते हुये
धूपदान पर रख दिया। 3भूत मछली की गन्ध
सूँघते ही मिस्र देश के सीमान्त तक भाग गया!
रफाएल ने वहाँ जा कर भूत के हाथ-पैर बाँध
दिये और तुरन्त वापस आया। 4माता-पिता ने
कमरे से बाहर आ कर उसका दरवाजा बन्द कर
दिया। तोबियाह ने पलंग से उठ कर सारा से
कहा, ''प्रिय! उठो। हम प्रार्थना करें और अपने
प्रभु से निवेदन करें कि वह हम पर दया करे
और हमें सुरक्षित रखे।'' 5वह उठी और दोनों
प्रार्थना करने लगे। उन्होंने प्रभु से निवेदन किया
कि वह उन्हें सुरक्षित रखे। तोबियाह ने कहा,
''हमारे पूर्वजों के परमेश्वर! तू धन्य है! तेरा
नाम सदा-सर्वदा धन्य है। आकाश और सारी
सृष्टि तुझे युग-युगों तक धन्य कहे। 6तूने आदम
की सृष्टि की और उसे एक सहायक और साथी
के रूप में हव्वा को प्रदान किया। उन दोनों से
मानवजाति की उत्पत्ति हुई। तूने कहा कि
'अकेला रहना मनुष्य के लिए अच्छा नहीं है।
इसलिए हम उसके लिए उसके सदृश एक
सहायक बनायें'। 7अब मैं काम-वासना से
प्रेरित हो कर नहीं, बल्कि सद्धर्म के अनुसार
अपनी इस चचेरी बहिन को पत्नी के रूप में
ग्रहण करता हूँ। इस पर और मुझ पर दया कर
और ऐसा कर कि हम दोनों बुढ़ापे तक सकुशल
साथ रहें।'' 8दोनों ने कहा, ''आमेन! आमेन!''

* कुछ प्रतियों में यह वाक्य नहीं पाया जाता है। ** मूल में 'बहिन'।

7 : 11 उत 24 : 33 **7 : 13** उत 24 : 59 ; गण 36 : 6 **8 : 3** प्रक 20 : 2 ; मत 12 : 43 **8 : 5** अजर्याह 3 **8 : 6** उत 2 : 7.22

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
9और वे रात बिताने के लिए पलंग पर लेट गये।

रागुएल का धन्यवाद

10 परन्तु रागुएल ने उठ कर अपने सेवकों
को बुलाया। वे उसके साथ कबर खोदने गये;
क्योंकि वह सोचता था, "कहीं ऐसा न हो कि
तोबियाह की मृत्यु हो गयी हो और लोग हमारा
उपहास और अपमान करें।" 11रागुएल कबर
खोदने के बाद लौटा और अपनी पत्नी को बुला
कर 12उस से बोला, "एक सेविका को भेजो।
वह अन्दर जा कर पता लगाये कि वह जीवित
है या नहीं। यदि उसकी मृत्यु हो गयी हो, तो
हम चुपचाप उसको दफनायें ताकि किसी को
मालूम न हो।" 13उन्होंने सेविका को भेजा
और एक दीपक जलाया। सेविका दरवाजा
खोलकर अन्दर गयी। उसने देखा कि दोनों
गहरी नींद में सो रहे हैं! 14उसने लौट कर यह
समाचार दिया कि वह जीवित और सकुशल
है। 15उन्होंने स्वर्ग के परमेश्वर को धन्यवाद
दिया। रागुएल ने कहा, "परमेश्वर ! तू धन्य
है! तू हर प्रकार की पावन स्तुति के योग्य है।
तेरे सभी भक्त तुझे धन्य कहें और सदा-सर्वदा
तेरी स्तुति करें। 16तू धन्य है, क्योंकि तूने मुझे
आनन्द प्रदान किया। जिस बात की मुझे
आशंका थी, वह घटित नहीं हुई। तूने अपनी
महती दया के अनुसार हमारे साथ व्यवहार किया
है। 17तू धन्य है, क्योंकि तूने हमारी एकमात्र दो
सन्तानों पर दया की है। हे स्वामी! उन्हें कृपा
और सुरक्षा प्रदान कर। वे आनन्द में जीवन
बितायें और अन्त तक तेरे कृपापात्र बने रहें।"
18 इसके बाद रागुएल ने अपने सेवकों को
भोर से पहले कबर भरने का आदेश दिया।
19उसने अपनी पत्नी को बहुत-सी रोटियाँ
सेंकने को कहा। वह अपने पशुओं में से दो मोटे
पशु और चार मेढ़े चुनने गया। वह उन्हें वहां
से लाया और उन्हें पकाने का आदेश दिया।
इसके बाद सेवक विवाह-भोज की तैयारी
करने लगे। 20रागुएल ने तोबियाह को बुलाया
और शपथ खाते हुए कहा, "तुम चौदह दिन
तक यहाँ से नहीं जाओगे। तुम यहाँ रह कर मेरे
साथ खाओगे-पिओगे और मेरी बेटी का जी
बहलाओगे; क्योंकि उसे बहुत दुःख सहना
पड़ा है। 21मेरी आधी सम्पत्ति स्वीकार करो
और अपने पिता के पास सकुशल लौटो। शेष
सम्पत्ति तुम्हें मेरी और मेरी पत्नी की मृत्यु के
बाद मिलेगी। पुत्र! साहसी बनो। मैं तुम्हारा
पिता हूँ और एदना तुम्हारी माता है। हम अब
से और सदा के लिए तुम्हारे और तुम्हारी पत्नी
के अपने हैं। पुत्र! साहसी बनो।"

स्वर्गदूत की रागय-यात्रा

9 तोबियाह ने रफाएल को बुला कर उस से
कहा, 2 "भाई अजर्याह! यहाँ के चार
सेवक और दो ऊँट ले कर रागय के लिए
प्रस्थान करो। गबाएल के यहाँ जाओ और उसे
परचा दो। अपने साथ धन ले कर विवाहोत्सव
में पधारो। 3मैं जानता हूँ कि मेरे पिताजी दिन
गिन रहे हैं और यदि मैं लौटने में एक दिन की
भी देर करूँगा, तो उन्हें बहुत दुःख होगा।
4तुमने रागुएल की शपथ सुनी है, मैं उसका
तिरस्कार नहीं कर सकता।" 5इस पर रफाएल
ने चार सेवकों और दो ऊँटों के साथ मादय के
रागय के लिए प्रस्थान किया, जहाँ वे गबाएल
के यहाँ ठहरे। रफाएल ने उसे उसका परचा
दिया और बताया कि तोबीत के पुत्र तोबियाह
ने रागुएल की पुत्री से विवाह किया और उसे
विवाहोत्सव में निमन्त्रित किया है। गबाएल ने
उठ कर मुहर-लगी थैलियाँ निकालीं और
मुद्राएं गिन कर ऊँटों पर रखवायीं। 6उन्होंने बहुत
सबेरे उठ कर विवाहोत्सव में सम्मिलित होने
के लिए प्रस्थान किया। जब वे रागुएल के यहाँ
पहुँचे, तो तोबियाह भोजन के लिए बैठा हुआ
था। उसने उठ कर गबाएल को नमस्कार
किया। गबाएल रो पड़ा और उसने यह कहते
हुए तोबियाह को आशीर्वाद दिया, "तुम एक
अच्छे, कुलीन धार्मिक और परोपकारी मनुष्य
के पुत्र हो। स्वर्ग का प्रभु-परमेश्वर तुम्हें और
तुम्हारी पत्नी को, तुम्हारे माता-पिता और
तुम्हारे सास-ससुर को आशिष प्रदान करे।
परमेश्वर धन्य है, क्योंकि मैंने अपने भतीजे

---

8 : 14 भज 103 : 20; 145 : 10 **8 : 20** उत 24 : 50 **8 : 21** गण 27 : 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तोबियाह को देखा, जो अपने पिता तोबीत के
सदृश है।''

तोबियाह के लिए माता-पिता की चिन्ता

10 जब से तोबियाह गया था, तब से उसका
पिता तोबीत उसके जाने और लौटने के
दिन गिन रहा था। जब दिन पूरे हुए और पुत्र
नहीं लौटा, 2तो उसने कहा, ''क्या उसे वहाँ
रोका गया है? क्या गबाएल की मृत्यु हो गयी
है और कोई उसे वह धन देने के लिए नहीं रह
गया है?''3और वह चिन्तित हो गया। 4उसकी
पत्नी हन्नाह ने कहा, ''मेरा पुत्र मर गया है। वह
जीवितों में नहीं रहा।'' वह रोने और यह कहते
हुए विलाप करने लगी, 5''ओ मेरे पुत्र! धिक्कार
है मुझे, क्योंकि मैंने तुझ को, अपनी आँखों की
ज्योति को जाने दिया!''6तोबीत उस से कहता
था, ''प्रिय! चुप रहो! चिन्ता मत करो! हमारा
लड़का सकुशल है। वहाँ उन दोनों को देर हो
गयी होगी। जो व्यक्ति उसके साथ गया, वह
ईमानदार है और हमारे जाति-भाइयों में से एक
है। प्रिय! उसकी चिन्ता मत करो। वह आ रहा
है।''7वह उस से बोली, ''चुप रहो। मुझे धोखा
न दो। मेरा पुत्र मर गया है।'' तोबियाह की मां
प्रतिदिन बाहर जा कर उस मार्ग को देखती,
जिस से उसका पुत्र गया था। वह दिन भर कुछ
नहीं खाती।* वह सूर्य डूबने के बाद घर आती,
रात भर रोते हुए विलाप करती और नहीं सोती।

रागुएल ने चौदह दिन तक अपनी पुत्री का
विवाहोत्सव मनाने की शपथ खायी थी। उतने
दिनों के पूरे हो जाने पर तोबियाह ने उसके पास
जा कर कहा, ''मुझे जाने की आज्ञा दीजिए। मैं
जानता हूँ कि मेरे माता-पिता को विश्वास नहीं
है कि वे मुझे फिर देखेंगे। ससुर जी! मैं आप
से प्रार्थना करता हूँ कि आप मुझे विदा करें,
जिससे मैं अपने पिता के पास जाऊँ। मैं आप
को बता चुका हूँ कि मैंने उन्हें किस हालत में
छोड़ा था।'' 8इस पर रागुएल ने तोबियाह से
कहा, ''नहीं, पुत्र! ठहरो, मेरे पास रहो। मैं
तुम्हारे पिता तोबीत के पास दूत भेजूँगा, जो उन्हें
तुम्हारे विषय में समाचार देंगे।''

9 उसने उत्तर दिया, ''नहीं, मैं आप से
प्रार्थना करता हूँ कि आप मुझे यहाँ से विदा कर
पिता के पास जाने दें''। 10रागुएल ने उठ कर
तोबियाह को उसकी पत्नी और आधी सम्पत्ति
के अतिरिक्त दास-दासियाँ, भेड़ें और बैल,
गधे और ऊँट, कपड़े, रुपया और पात्र दिये।
11उसने उन्हें विदा कर जाने दिया और
तोबियाह से यह कहा, ''पुत्र! स्वस्थ रहो,
सकुशल जाओ। स्वर्ग का प्रभु तुमको और
तुम्हारी पत्नी सारा को सुख-समृद्धि दे। आशा
है, मुझे मरने से पहले तुम दोनों की संतान देखने
का सौभाग्य प्राप्त होगा।'' 12उसने अपनी पुत्री
सारा का चुम्बन किया और उस से कहा,
''पुत्री! अपने सास-ससुर का आदर करना;
क्योंकि वे अब से उसी तरह तुम्हारे माता-पिता
हैं, जैसे हम हैं, जिन्होंने तुम को उत्पन्न किया
है। शान्ति से जाओ। पुत्री, मैं तुम्हारे विषय में
जीवन भर अच्छी बातें सुनता रहूँ।'' उसने
उनका चुम्बन किया और दोनों को विदा किया।
एदना ने तोबियाह से कहा, ''पुत्र और प्रिय
दामाद! स्वर्ग का प्रभु तुम्हें सकुशल घर
पहुँचाये और तुम्हारी रक्षा करे, जिससे मैं मरने
से पहले तुम्हारे और अपनी पुत्री सारा के बाल-
बच्चे देख सकूँ और अपने जीवनकाल में प्रभु
के सामने आनन्द मनाऊँ। मैं तुम को अपनी
बेटी सौंपती हूँ। उसे जीवन भर कभी कष्ट नहीं
देना। शान्ति से जाओ। पुत्र, अब से मैं तुम्हारी
माता हूँ और सारा तुम्हारी पत्नी है। हम सब का
जीवन-भर कुशल-मंगल हो।'' उसने दोनों
का चुम्बन किया और उन्हें सकुशल विदा
किया। 13तब तोबियाह ने सुख और आनन्द के
साथ रागुएल के यहां से प्रस्थान किया। उसने
स्वर्ग तथा पृथ्वी के राजेश्वर प्रभु का धन्यवाद
किया, जिसने उसका पथप्रदर्शन किया था।
उसने रागुएल और एदना के प्रति यह कहते हुए
शुभकामना प्रकट की, ''मुझे यह सौभाग्य प्राप्त
हो कि जब तक आप जीते रहें, मैं आपका

* पाठांतर, ''और वह किसी की बात नहीं मानती।''

10 : 5 नीति 15 : 30 ; बारू 3 : 14 10 : 11 यहूदी 5 : 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आदर माता-पिता की तरह करता रहूं।''+

तोबीत को स्वास्थलाभ

11 वे वहाँ से चल कर नीनवे महानगर के
सम्मुख कासरीन गांव के निकट आये।
2तब रफाएल ने कहा, ''तुम जानते हो कि हम
तुम्हारे पिता को किस हालत में छोड़ गये थे।
3हम दोनों तुम्हारी पत्नी के पहले चलें और घर
में इन लोगों के पहुँचने की तैयारी करें।''4दोनों
साथ आगे बढ़े। रफाएल ने कहा, ''अपने साथ
पित्त ले आओ।'' कुत्ता रफाएल और तोबियाह
के पीछे दौड़ता हुआ गया। 5इस बीच हन्नाह
बाहर बैठी हुई अपने पुत्र की राह देख रही थी।
6उसने उसे आते हुए देखा और उसके पिता से
कहा, ''देखो, तुम्हारा पुत्र और वह व्यक्ति, जो
उसके साथ गया था, आ रहे हैं।'' 7पिता के
पास पहुँचने से पहले रफाएल ने तोबियाह से
कहा, ''मैं जानता हूँ कि उनकी आँखें अच्छी
हो जायेंगी। 8उनकी आँखों पर मछली का पित्त
लगाओ। यह औषध का काम करेगा। इससे
मोतियाबिन्द की झिल्ली उनकी आँखों पर से
निकल जायेगी और तुम्हारे पिता को पुनः
ज्योति प्राप्त हो जाएगी, और वह फिर देखने
लगेंगे।''

हन्नाह अपने पुत्र की ओर दौड़कर गई, और
उसको गले से लगा लिया। उसने कहा, ''ओ
मेरे पुत्र! मैंने तुझको देख लिया; अब मैं मरने
को तैयार हूँ।'' और वह रोने लगी। 10-11तोबीत
उठ कर लड़खड़ाता हुआ अपने आँगन के द्वार
से निकला। तोबियाह हाथ में मछली का पित्त
लिये उसके पास आया। उसने उसे सँभालते
हुए उसकी आँखों पर फूँक मारी और बोला,
''पिताजी! साहस कीजिए!'' इसके बाद उसने
उसकी आँखों पर दवा लगायी, 12जिससे वे
चुनचुनाने लगीं। 13तब उसने अपने दोनों हाथों
से अपने पिता की आँखों के कोरों से मोतियाबिन्द
की झिल्ली निकाली। तोबीत ने अपने पुत्र का मुँह
देखा, उसे गले लगाया 14और रोते हुए उससे
कहा, ''पुत्र! मैं तुझ को, अपनी आँखों की
ज्योति को देख रहा हूँ।'' उसने फिर कहा,
''धन्य है परमेश्वर, धन्य है उसका महान् नाम
और उसके सब स्वर्गदूत धन्य हैं। उसका पवित्र
नाम युग-युगों तक धन्य है; 15यद्यपि उसने मुझे
पीड़ित किया, फिर भी उसने मुझ पर दया की।
अब मैं अपने पुत्र तोबियाह को देख रहा हूं।''।
तोबीत आनन्दित होकर और ऊँचे स्वर में
परमेश्वर को धन्यवाद देते हुए घर के अन्दर
आया। तोबियाह ने अपने पिता को बताया कि
उसकी यात्रा सफल रही, वह धन ले आया,
उसने रागुएल की पुत्री सारा से विवाह किया
और यह कि वह आने वाली है, क्योंकि वह
नीनवे के प्रवेश-द्वार पर पहुँच रही है। 16यह
सुन कर तोबीत आनन्दित होकर और परमेश्वर
को धन्यवाद देते हुए अपनी बहू की अगवानी
करने नीनवे के प्रवेश-द्वार पर पहुंचा। जब
नीनवे के निवासियों ने देखा कि तोबीत पूर्ण
स्वस्थ होकर चलता-फिरता है और कोई
उसका हाथ पकड़ कर उसे नहीं ले चलता, तो
उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। 17सब के सामने तोबीत
ने यह साक्षी दी कि परमेश्वर ने उस पर कैसे
दया की और उसकी आँखों को कैसे अच्छा
किया। तोबीत ने अपने पुत्र तोबियाह की पत्नी
सारा के पास आ कर उसे यह कहते हुए
आशीर्वाद दिया, ''पुत्री। सकुशल पधारो।
तुम्हारा स्वागत है। धन्य है तुम्हारा परमेश्वर,
जो तुम को हमारे पास ले आया! पुत्री! धन्य
हैं तुम्हारे माता-पिता और धन्य है मेरा पुत्र
तोबियाह और धन्य हो तुम, पुत्रीः तुमको
आशीर्वाद। सानन्द अपने घर में प्रवेश करो।
तुम्हारा स्वागत है। आओ, मेरी पुत्री!'' उस
दिन नीनवे में रहने वाले यहूदियों ने बड़ा
आनन्द मनाया। 18तोबीत के भाइयों में अहीकार
और नादाब आनन्दित होकर उसके पास आये।
सात दिन तक विवाहोत्सव मनाया गया और
तोबियाह को बहुत-से उपहार मिले।

रफाएल के रहस्य का उद्घाटन

12 तोबीत ने विवाहोत्सव के बाद अपने
पुत्र तोबियाह को बुला कर उस से
कहा, ''पुत्र, हमें उस व्यक्ति को, जो तुम्हारे

\+ मूल अस्पष्ट

11 : 9 उत 46 : 29 ; लू 15 : 20 11 : 13 प्रे 9 : 18 11 : 18 उत 29 : 27 ; शास 14 : 12

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

साथ गया था, उसका पारिश्रमिक तथा पारि-
श्रमिक के अतिरिक्त कुछ और देना चाहिए।''
2उसने कहा, ''पिताजी! मैं उसे कितना
पारिश्रमिक दूँ? मैं जो सम्पत्ति अपने साथ
लाया, यदि मैं उसे उसका आधा भाग भी दूं तो
भी मुझे कोई कमी नहीं होगी। 3उसने मुझे सुरक्षित
वापस पहुँचाया, मेरी पत्नी को स्वस्थ किया,
मेरे साथ धन ले आया और आप को स्वस्थ
किया। मैं उसे और कितना दे दूँ?'' 4तोबीत ने
उस से कहा, ''पुत्र! यह उचित है कि तुम जो
धन-सम्पत्ति लाये हो, उसका आधा भाग उसे
दे दिया जाये। वह इसके योग्य है।'' 5तोबियाह
ने उसे बुलाया और कहा, ''जो कुछ तुम अपने
साथ लाये हो, उसका आधा भाग पारिश्रमिक के
रूप में स्वीकार करो और सकुशल विदा हो।''
6 इस पर रफाएल ने दोनों को एकान्त में
बुला कर उन से कहा, ''परमेश्वर का धन्यवाद
कीजिए और सब प्राणियों के सामने यह घोषित
कीजिए कि उसने आपका कितना उपकार
किया है। उसके नाम के आदर में धन्यवाद और
स्तुतिगान कीजिए। श्रद्धापूर्वक परमेश्वर के
कार्यों का वर्णन कीजिए। सबके सामने उसके
सत्कार्य प्रकट करने में संकोच मत कीजिए।
7राजा का रहस्य अवश्य गुप्त रखना चाहिए,
किन्तु परमेश्वर के कार्य घोषित करना और
योग्य रीति से उसकी स्तुति करना उचित है।
भलाई कीजिए और बुराई आपके पास नहीं
फटकेगी। 8उपवास के साथ प्रार्थना करना
उत्तम है, लेकिन उन दोनों से कहीं अधिक
सर्वोत्तम है धार्मिकता के साथ भिक्षादान। दुष्टता
से संचित धन-सम्पदा की अपेक्षा धार्मिकता से
कमाया हुआ थोड़ा धन भी अच्छा है। भिक्षादान
स्वर्ण-संचय से श्रेष्ठ है। 9भिक्षादान मृत्यु से
बचाता और हर प्रकार का पाप हरता है। जो
भिक्षादान करता है, उसे पूर्ण जीवन प्राप्त होगा।
10जो पाप और अन्याय करते हैं, वे अपने को
हानि पहुँचाते हैं।
11''अब मैं आपके लिए पूरा सत्य प्रकट
करूँगा और आप लोगों से कुछ भी नहीं
छिपाऊँगा। मैं आप से कह चुका हूँ कि राजा
का रहस्य अवश्य गुप्त रखना चाहिए, किन्तु
श्रद्धापूर्वक परमेश्वर के कार्य घोषित करना
उचित है। 12हे तोबीत, जब आप और सारा
प्रार्थना कर रहे थे, तो मैं आपकी प्रार्थना
महिमामय प्रभु के सामने प्रस्तुत कर रहा था।
जब आप मुरदों को दफनाते थे, तो मैं यही
करता था। 13जब आप आगा-पीछा किये बिना
अपना भोजन छोड़ कर मुरदा दफनाने गये, तो
मुझे आपकी परीक्षा करने भेजा गया। 14परमेश्वर
ने मुझे फिर भेजा, जिससे मैं आपको और
आपकी बहू सारा को स्वस्थ करूँ। 15मैं स्वर्गदूत
रफ़ाएल हूँ। मैं उन सात स्वर्गदूतों में से एक हूँ,
जो प्रभु की महिमा के सम्मुख सदा तत्पर और
उपस्थित रहते हैं।''
16 यह सुन कर दोनों घबरा कर मुँह के बल
गिर पड़े और भयभीत हो गये। 17स्वर्गदूत ने
उन से कहा, ''मत डरिए। आप को शान्ति
मिले! सदा-सर्वदा परमेश्वर की स्तुति कीजिए।
18जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, मैं अपनी इच्छा से
नहीं, बल्कि परमेश्वर की इच्छा से आपके साथ
रहा। आप दिन-प्रतिदिन उसको धन्य-धन्य
कहिए और उसका स्तुतिगान कीजिए। 19यद्यपि
आपने मुझे खाते-पीते देखा, फिर भी मैं न खाता
था, न पीता था। आप ने जो देखा, वह केवल
दर्शन था। 20अब पृथ्वी पर प्रभु का धन्यवाद
कीजिए* और परमेश्वर के महान कार्यों का
गुणगान कीजिए। मैं अब उसके पास जा रहा
हूँ, जिसने मुझे भेजा है। आपके साथ जो कुछ
घटित हुआ, वह सब लिख लीजिए।'' और
वह ऊपर चला गया। 21जब वे ज़मीन से उठे,
तो उन्होंने उसको फिर नहीं देखा। 22वे परमेश्वर
को धन्यवाद देते रहे और उसका स्तुतिगान
करते रहे। वे परमेश्वर के महान कार्यों का
गुणगान करते रहे; क्योंकि उन्हें परमेश्वर का
दूत दिखाई दिया था।

* पाठांतर, ''अब आप उठ खड़े होइए''।

12 : 6 भज 92 : 1 **12 : 7** नीति 12 : 21 **12 : 8** भज 37 : 16 ; नीति 15 : 16 ; मत 6 : 1-18 ; प्रव 29 : 11 **12 : 9** नीति 11 : 4 ; दान 4 : 17 ; प्रव 3 : 30 **12 : 12** अय्य 33 : 23-24; प्रे 10 : 4 ; प्रक 8 : 3-4 **12 : 15** जक 4 : 10; लू 1 : 19 **12 : 20** यो 16 : 15

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तोबीत का स्तुतिगान

13 तोबीत ने यह कहा :
"शाश्वत परमेश्वर धन्य है !
उसका राज्य सदा-सर्वदा बना रहता है।
2 वह पीड़ित करता, और दया करता है।
वह निम्नतम अधोलोक में उतारता और फिर महागर्त्त से निकालता है।
उसके हाथ से कोई नहीं बचता।
3 इस्राएल के लोगो ! राष्ट्रों में उसका स्तुतिगान करो,
क्योंकि उसने तुम को उन के बीच में बिखेर दिया है।
4 उसने वहाँ भी अपनी महानता दिखलायी है।
समस्त प्राणियों के सामने उसकी स्तुति करो;
क्योंकि वह हमारा प्रभु है, हमारा परमेश्वर और हमारा पिता है।
वह सदा-सर्वदा ईश्वर है।
5 वह तुम्हारे अधर्म के कारण तुम को दण्ड देता है,
किन्तु वह तुम सब पर दया करेगा
और तुम को उन सब राष्ट्रों से एकत्र करेगा,
जिन में तुम बिखेर दिये गये हो।
6 यदि तुम सारे हृदय और सारी आत्मा से उसके पास लौट आओगे
और उसके सामने सत्य के मार्ग पर चलोगे,
तो वह तुम्हारे पास लौटेगा
और फिर तुम से अपना मुख नहीं छिपायेगा।
देखो, उसने तुम्हारे लिए क्या किया;
और ऊँचे स्वर में उसकी महानता को स्वीकार करो।
न्याय-धर्म के प्रभु को धन्य कहो
और युग-युगों के राजा का स्तुतिगान करो।
"जिस देश में निष्कासित हूँ,
वहाँ मैं उसकी स्तुति करता हूँ।
मैं एक पापी राष्ट्र के सामने
उसकी सामर्थ्य और उसकी महिमा प्रकट करता हूँ।
पापियो ! प्रभु के पास लौटो
और उसके सामने धर्माचरण करो।
क्या जाने, वह तुम पर प्रसन्न हो जाये
और तुम पर दया करे।
7 मैं स्वर्ग के राजेश्वर का स्तुतिगान करता हूँ
और उसके कारण जीवन भर आनन्द मनाता हूँ।
8 सभी लोग उसकी महिमा का गुणगान करें
और यरूशलेम में उसका स्तुतिगान करें।
पवित्र यरूशलेम नगरी !
उसने तेरे पापकर्मों के कारण तुझे यन्त्रणा दी
और फिर वही अपने भक्तों की संतान पर दया करेगा।
10 प्रभु की महानता को स्वीकार कर;
क्योंकि वह भला है; और युग-युगों के अधीश्वर को धन्य कह,
जिससे तुझ में उसके निवास-स्थान का पुनर्निर्माण हो,
वह तेरे निष्कासितों को लौटा कर
तुझे आनन्दित करे
और जो दुःखी थे, उन सब को
युग-युग तक प्यार करे।
11 एक उज्जवल ज्योति पृथ्वी के सीमान्तों तक चमकेगी,
दूर-दूर के राष्ट्र तेरे पास आयेंगे।
प्रभु के पवित्र नाम के कारण वे पृथ्वी के सीमान्तों से आयेंगे,
और हाथ में उपहार लिये स्वर्ग के राजा को अर्पित करेंगे।
सब पीढ़ियाँ तुझ में आनन्द मनायेंगी
और तुझे युग-युग तक प्रभु की कृपापात्र नगरी कहेंगी।
12 वे सभी शापित हों, जो तेरी निन्दा करेंगे !
वे सभी शापित हों, जो तेरा विनाश करते
और तेरी शहरपनाह तोड़ते हैं,
जो तेरी मीनारें गिराते और तेरे घर जलाते हैं !
धन्य हैं वे सभी, जो तुझ पर श्रद्धा रखते हैं !
13 तू धर्मियों की संतान के कारण आनन्द मनायेगी,

---

13 : 4 यश 63 : 16 ; यिर 3 : 4 ; मत 6 : 9; प्रज्ञा 14 : 3 ; प्रत 23 : 1-4 **13 : 6** 2 शम 12 : 22 ; आमो 5 : 15
13 : 9 दान 9 : 24 **13 : 11** भज 86 : 9 **13 : 12** उत 12 : 3 ; भज 122 : 6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

क्योंकि तुझ में सभी एकत्र होंगे
और शाश्वत प्रभु को धन्य कहेंगे।
14धन्य हैं, वे जो तुझे प्यार करते हैं!
धन्य हैं वे, जो तेरी शान्ति के कारण आनन्द मनाते हैं!
वे सब मनुष्य धन्य हैं, जो तेरी विपत्ति के कारण शोक मनाते हैं;
क्योंकि वे तेरी सुख-शान्ति देख कर
सदा के लिए आनन्द मनाते रहेंगे।

15"हे मेरी आत्मा! राजाधिराज प्रभु को धन्य कह;
16क्योंकि यरूशलेम नगर सदा-सर्वदा के लिए उसके निवास-स्थान के रूप में पुनर्निर्मित होगा।
यदि मेरे वंशज भविष्य में उसकी महिमा देखेंगे
और स्वर्ग के राजा का स्तुतिगान करेंगे,
तो मैं अपने को सौभाग्यशाली मानूँगा।
यरूशलेम के फाटक नीलम और मरकत से
और उसके सब परकोटे बहुमूल्य मणियों से सुशोभित होंगे।
यरूशलेम की मीनारें स्वर्ण से
और उसके प्राचीर शुद्ध सोने से निर्मित किये जायेंगे।
17यरूशलेम के चौकों में माणिक और ओफीर की मणियाँ जड़ी जायेंगी।
18यरूशलेम के प्रवेश-द्वार आनन्द के गीत गायेंगे
और उसके सभी निवासी बोल उठेंगे:
'प्रभु की स्तुति करो!'
धन्य है इस्राएल का परमेश्वर!
और धन्य हैं वे, जो उसके परमपावन नाम की स्तुति करते हैं,
अभी और अनन्तकाल तक!''
यहाँ समाप्त हुआ तोबीत का स्तुतिगान।

14

तोबीत के अन्तिम वचन

तोबीत की मृत्यु एक सौ बारह वर्ष की आयु
में शान्तिपूर्वक हुई और वह नीनवे महानगर में
सम्मानपूर्वक दफनाया गया। 2जब वह अन्धा
हुआ, तब उसकी आयु बासठ वर्ष थी। दृष्टि
मिलने के बाद उसने समृद्धि में जीवन बिताया।
वह भिक्षादान किया करता और परमेश्वर का
स्तुतिगान तथा उसकी महिमा का गुणगान
करता था। 3मरते समय उसने अपने पुत्र तोबियाह
को बुला कर उसे यह आदेश दिया, "पुत्र!
अपने बच्चों के साथ 4मादय की ओर शीघ्र
प्रस्थान करो; क्योंकि मैं परमेश्वर की उस वाणी
पर विश्वास करता हूँ, जिसे नबी नहूम ने नीनवे
में प्रकट किया है—परमेश्वर द्वारा भेजे हुए
इस्राएल के नबियों ने असीरिया और नीनवे के
विषय में जो कुछ कहा है, वह सब उन पर
बीतेगा। यह सब घटित होगा! उन बातों में ऐसा
कुछ नहीं, जो पूरा नहीं होगा। सब कुछ अपने
समय में घटित होगा। असीरिया और बेबीलोन
की अपेक्षा मादय में अधिक सुरक्षा होगी!
क्योंकि मैं जानता हूँ और विश्वास करता हूँ कि
परमेश्वर ने जो कुछ कहा, वह पूरा होगा। उन
नबूवतों में एक शब्द भी नहीं है, जो पूरा नहीं
होगा: इस्राएल में रहने वाले हमारे सभी भाई-
बहिन तितर-बितर कर दिये जायेंगे और बन्दी
बना कर अपनी उत्तम भूमि से निष्कासित किये
जायेंगे। समस्त इस्राएल देश, और सामरी तथा
यरूशलेम नगर उजड़ जायेंगे। परमेश्वर का
मन्दिर जलाया जायेगा और कुछ समय तक
उजाड़ पड़ा रहेगा। 5परमेश्वर फिर उन पर दया
करेगा और उन्हें इस्राएल वापस ले जायेगा। वे
मन्दिर का पुनर्निर्माण करेंगे! वह पहले मन्दिर-
जैसा नहीं होगा और समय पूरा हो जाने तक
बना रहेगा। जब वे सब अपने निष्कासन से
लौटेंगे, तो वे उसकी पूर्व भव्यता के अनुसार
यरूशलेम का निर्माण करेंगे और उस में
परमेश्वर का मन्दिर बनाया जायेगा, जैसा कि
उसके सम्बन्ध में इस्राएल के सभी नबियों ने
कहा है। 6समस्त पृथ्वी के राष्ट्र परमेश्वर की
ओर अभिमुख होंगे, उस पर सच्ची श्रद्धा रखेंगे
और अपनी सभी देव-मूर्तियाँ छोड़ देंगे, जो
उन्हें कपटपूर्वक भटकाती थीं। 7वे धर्माचरण
करते हुए शाश्वत परमेश्वर का स्तुतिगान
करेंगे। जो इस्राएली उन दिनों बचाये जायेंगे

---

13 : 16-17 यश 54 : 11-12 ; प्रक 20 : 10-21 14 : 5 एज्रा 3 : 12 ; यिर 50 : 4-5 14 : 6 यश 2 : 18

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और परमेश्वर की सच्ची भक्ति करेंगे, वे एकत्र किये जायेंगे। वे यरूशलेम की यात्रा करेंगे। उन्हें अब्राहम की भूमि दी जायेगी और वे उस में सुरक्षित हो कर सदा के लिए निवास करेंगे। जो लोग सच्चाई से परमेश्वर से प्रेम करते हैं, वे आनन्दित होंगे, किन्तु जो अधर्म और पाप करते हैं, वे सब देशों से लुप्त हो जायेंगे।

8 "बच्चो ! मैं तुम्हें यह आदेश देता हूँ: सच्चाई से परमेश्वर की सेवा करो और उसके सामने वह करो, जो उसे प्रिय है। अपने वंशजों को भी यह आदेश दो कि वे धर्माचरण और भिक्षादान करें, परमेश्वर का स्मरण करें और सच्चाई और सारी शक्ति से हर समय उसका नाम धन्य कहें। [9]पुत्र तोबियाह ! तुम नीनवे महा नगर से बाहर चले जाओ, यहाँ मत रहो। [10]जिस दिन तुम मेरे पास अपनी माता का दफन करोगे, उसी दिन यह नगर छोड़ दो और सबेरे तक मत ठहरो; क्योंकि मैं देखता हूँ कि लोग यहाँ निर्लज्ज हो कर हर प्रकार का पाप और अधर्म करते हैं। पुत्र! इस पर विचार करो कि नादाब ने अपने पालक पिता अहीकार के साथ कैसा व्यवहार किया और उसे कालकोठरी में डाल दिया। किन्तु परमेश्वर ने उस से विश्वासघात का बदला चुकाया और अहीकार को प्रकाश में ले आकर मुक्त किया, जब कि नादाब सदा के लिए कालकोठरी में चला गया; क्योंकि वह अहीकार का वध करना चाहता था। अहीकार भिक्षादान किया करता था, इसलिए वह मृत्यु के उस फन्दे से बच गया, जिसे नादाब ने उसके लिए बिछाया था; किन्तु नादाब उस फन्दे में फँस गया और उसकी मृत्यु हो गयी। [11]बच्चो ! इस प्रकार तुम देखते हो कि भिक्षादान और अधर्म का परिणाम क्या है। अधर्म विनाश की ओर ले जाता है.... । अब मेरे प्राण निकल रहे हैं।" उन्होंने अपने पिता तोबीत को पलंग पर लिटाया; तब उसकी मृत्यु हो गयी और वह सम्मानपूर्वक दफनाया गया।

तोबियाह के अन्तिम दिन

12 जब तोबियाह की माता की मृत्यु हुई, तो उसने उसे अपने पिता के पास दफ़नाया। तोबियाह अपनी पत्नी के साथ मादय देश चला गया, जहाँ वह अपने ससुर रागुएल के यहाँ एकबतना नगर में रहने लगा। [13]उसने अपने बूढ़े सास-ससुर का आदर करते हुए उनकी सेवा की और उनकी मृत्यु के उपरांत मादय के एकबतना में उन को दफ़नाया। उसे रागुएल और अपने पिता तोबीत की सम्पत्ति विरासत के रूप में मिली। [14]उसकी मृत्यु एक प्रतिष्ठित नागरिक के रूप में एक सौ सत्रह वर्ष की आयु में हुई। [15]उसने मरने के पूर्व नीनवे महानगर के पतन के विषय में सुना और मादय में नीनवे के निष्कासितों को देखा, जिन्हें मादय का राजा क्षयर्ष* बन्दी बना कर वहाँ ले आया था। परमेश्वर ने नीनवे महानगर और असीरिया देश के साथ जो किया था, उसने उसके लिए उसे धन्यवाद दिया। वह अपनी मृत्यु से पहले नीनवे के कारण आनन्दित हुआ और सदा-सर्वदा प्रभु परमेश्वर को धन्य कहता रहा।+

* पाठांतर, "राजा नबूकदनेस्सर तथा क्षयर्ष" + कुछ प्रतियों में "आमेन" शब्द जोड़ा गया।

14 : 8 योना 3 : 4 14 : 9 व्य 4 : 4014 : 15 नहू 3 : 7

यहूदीत

पुस्तक-परिचय

वीरांगना यहूदीत की मूल कथा संभवत: इब्रानी भाषा में दूसरी सदी ईसवी पूर्व की किसी यहूदिनी लेखिका की रचना है। अब केवल इसका यूनानी रूपांतर सप्तति अनुवाद में सुरक्षित है।

घटनाक्रम के अनुसार विशाल "असीरियाई" कहलाने वाली शत्रुसेना (जिसका नेतृत्व बेबीलोनी सम्राट नबूकदनेस्सर की ओर से एक फारसी सेनापति होलोफरनिस कर रहा था!)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इस्राएली राष्ट्र पर आक्रमण करने वाली है। किन्तु मार्ग में बेतूलिया-नगरवासी उसे रोकने का प्रयास करते हैं। युद्ध के चक्र-व्यूह में नगर का पतन होने वाला ही है कि यहूदीत नामक एक धर्मिणी विधवा, जो रूपवती और बुद्धिमती भी है, शत्रु के पड़ाव में घुस कर सेनापति का सिर धड़ से अलग कर देती है।

देश-भक्ति से भरपूर इस ग्रंथ का विषय है कि परमेश्वर एक अबला के हाथों से भी महादुष्ट को पराजित कर अपनी दीन प्रजा की रक्षा करता है। धार्मिक शिक्षा यह है कि संसार-यात्रा में अंततः धर्मनिष्ठा ही विजयिनी होती है।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

1	शत्रु-सेना का आक्रमण	1 : 1 – 7 : 32
2	एक महिला द्वारा राष्ट्र का संरक्षण	8 : 1 – 14 : 19
3	यहूदियों की विजय	15 : 1 – 16 : 25

नबूकदनेस्सर और अरपक्षद का युद्ध

1 महानगर नीनवे में असीरियों पर शासन
करने वाले राजा नबूकदनेस्सर के राज्य के
बारहवें वर्ष की बात है। उस समय एकबतना
नगर में मादी लोगों पर अरपक्षद राज्य करता
था। [2](इस अरपक्षद ने एकबतना के चारों ओर
सवा मीटर चौड़े और अढ़ाई मीटर लम्बे गढ़े
पत्थरों से एक शहरपनाह बनवायी थी। उसने
वह शहरपनाह तीस मीटर ऊँची और बीस
मीटर चौड़ी बनवायी थी। [3]उसने फाटकों के
ऊपर पैंतालीस मीटर ऊँची मीनारें बनवायी थीं,
जिनकी नींव पचीस मीटर चौड़ी थी। [4]उसने
फाटकों को तीस मीटर ऊँचा और अठारह मीटर
चौड़ा बनवाया था, जिससे उसके रथ और पैदल
सैनिक पंक्तिबद्ध हो कर बाहर जा सकें।)

5 उस समय राजा नबूकदनेस्सर ने उस
विशाल मैदान में, जो रागौ के प्रदेश में है, राजा
अरपक्षद के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया। [6]पहाड़ी प्रदेश
के सब निवासियों ने, फ़रात, दजला और
हिदास्पिस नदियों के तटों पर तथा एलामियों
के राजा आर्योक के अधीनस्थ मैदानों में रहने
वाले सभी लोगों ने उसका पक्ष लिया। इस
प्रकार कसदी लोगों के पक्ष में लड़ने के लिए
अनेक राष्ट्र एकत्र हुए।

नबूकदनेस्सर का अन्य राजाओं को आवाहन विफल

7 तब असीरिया के राजा नबूकदनेस्सर ने
फ़ारस के सभी निवासियों और पश्चिम दिशा
में रहने वाले सब लोगों, अर्थात् किलिकिया,
दमिश्क, लबानोन तथा पूर्व-लबानोन के
निवासियों और समुद्रतट पर रहने वाले सब
लोगों को, [8]कर्मेल और गिलआद में रहने वाले
और ऊपरी गलील के विशाल मैदान एस्द्रालोन
में रहने वाले लोगों को [9]तथा सामरी-प्रदेश और
उसके नगरों में रहने वाले सब लोगों और यर्दन
के इस पार यरूशलेम, बेतनियाह, खलूस,
कादेश, मिस्र की बरसाती नदी पर तफ़ने,
रामसेस और गोशेन के समस्त प्रदेशों में,
[10]तानिस और मेमफ़िस नगरों के आगे के
ऊपरी प्रदेशों तक तथा मिस्र के लोगों को और
इथियोपिया देश की सीमा तक के सब लोगों
को सन्देश भेजा। [11]परन्तु उन सभी देशों के
लोगों ने असीरियों के राजा नबूकदनेस्सर के
सन्देश पर ध्यान नहीं दिया और युद्ध में उसका
साथ नहीं दिया। वे उस से नहीं डरते थे, क्योंकि
वे उसे अकेला समझते थे जो दूसरों पर निर्भर
था। उन्होंने उसके दूतों को अपमानित किया
और खाली हाथ लौटा दिया।

12 इस पर नबूकदनेस्सर उन सभी देशों पर
क्रुद्ध हो उठा। उसने अपने सिंहासन और अपने
राज्य की शपथ खायी कि वह उन सभी देशों
से, किलिकिया, दमिश्क और सीरिया से
बदला लेगा और सब मोआबियों, अम्मोनियों,
सारे यहूदियों और दोनों समुद्रों के तटों तक के
सभी मिस्रवासियों को तलवार से मौत के घाट
उतारेगा।

1 : 1 योना 1 : 2 1 : 12 जक 9 : 10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अरपक्षद पर नबूकदनेस्सर की विजय

13 सत्रहवें वर्ष में राजा नबूकदनेस्सर ने अपनी सेना ले कर राजा अरपक्षद पर आक्रमण किया। उसने विजयी हो कर अरपक्षद की सारी पैदल सेना, उसकी सारी अश्वसेना और उसके रथों को पराजित किया और उसके सब नगरों पर अधिकार कर लिया। 14उसने एकबतना पहुँच कर उसके बुर्जों को जीता, उसके बाज़ार लूटे और उसकी शोभा मिट्टी में मिला दी। 15फिर उसने रागौ के पर्वतों में अरपक्षद को पकड़ा और उसे अपनी साँगों से छेद कर उसका सदा के लिए सर्वनाश कर दिया।

16 इसके बाद नबूकदनेस्सर और उसकी विशाल सेना लूट का माल साथ ले कर नीनवे महानगर लौट आयी। वहाँ उसने और उसकी सेना ने विश्राम किया और वे एक सौ बीस दिन तक विजय का उत्सव मनाते रहे।

पश्चिमी प्रदेशों से प्रतिशोध-युद्ध

2 अठारहवें वर्ष के पहले महीने के बाईसवें दिन, असीरियों के राजा नबूकदनेस्सर के महल में इस बात की चर्चा हुई कि वह अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार उन सभी देशों से बदला लेगा। 2नबूकदनेस्सर ने अपने सब दरबारियों और अपने सब उच्च पदाधिकारियों को एकत्रित कर एकान्त में उन्हें अपना निर्णय बताया कि वह अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार उन सब देशों का विनाश करेगा। 3उन्होंने भी इस निर्णय का समर्थन किया कि उन सब का सर्वनाश किया जाये, जिन्होंने उसकी आज्ञा की अवहेलना की थी।

4 इस सभा के बाद असीरियों के राजा नबूकदनेस्सर ने अपने प्रधान सेनापति होलोफरनिस को, जिसका उसके बाद दूसरा स्थान था, बुलाया 5और उस से कहा, "समस्त पृथ्वी के राजाधिराज महाराज की आज्ञा है: तुम यहाँ से विदा हो और अपने साथ ऐसे व्यक्तियों को ले जाओ, जिन को अपने बल पर भरोसा हो। तुम एक लाख बीस हज़ार पैदल सैनिकों और बारह हज़ार घुड़सवारों को ले कर 6सारे पश्चिमी देशों पर इसलिए आक्रमण करोगे कि उन्होंने मेरे आदेश की अवहेलना की थी। 7तुम उन्हें यह आज्ञा भी दोगे कि वे अधीनता स्वीकार करें*; नहीं तो मैं क्रुद्ध हो कर उन पर आक्रमण करूँगा और धरती को अपनी सेना से पाट कर उन्हें लुटवाऊँगा। 8उनके घायलों से घाटियाँ भर जायेंगी और उनके मृतकों की लाशों से नाले और नदियाँ इस प्रकार पट जायेंगे कि पानी उनके तट के ऊपर से बहने लगेगा। 9मैं उनके बन्दियों को पृथ्वी के कोनों तक ले जाऊँगा। 10तुम जाओ और मेरे लिए उन लोगों के सभी सीमान्तों पर अधिकार करो। जब वे तुम्हें अपने को समर्पित करेंगे, तो उन्हें मेरे लिए उस दिन तक रख छोड़ना, जिस दिन मैं स्वयं उन को दण्ड देने आऊंगा। 11जो तुम्हारा विरोध करेंगे, तुम उन पर दया मत दिखाना। उन्हें सब जगह वध और लूट का शिकार होने देना; 12क्योंकि मैंने अपने जीवन और राज्याधिकार की शपथ खा कर जो कहा है, मैं उसे अवश्य पूरा करूँगा। 13तुम अपने स्वामी की इन आज्ञाओं में एक का भी उल्लंघन नहीं करोगे, बल्कि जैसा मैंने आदेश दिया है, उसका बिना विलम्ब किये अवश्य पालन करोगे।"

14 होलोफरनिस ने अपने स्वामी से विदा ली और सब सामन्तों और असीरियों की सेना के सेनापतियों और अध्यक्षों को बुलाया 15और अपने स्वामी के आदेशानुसार युद्ध के लिए उत्तम सैनिकों को चुना — एक लाख बीस हज़ार पैदल सैनिकों और बारह हजार घुड़सवार तीरन्दाजों को—16और उसने युद्ध के लिए उस विशाल सेना की व्यूहरचना की। 17वह उनके साथ बहुत-से ऊँटों, गधों और खच्चरों को माल-असबाब लादने के लिए तथा असंख्य भेड़ों, गायों और बकरियों को रसद के लिए ले गया। 18उसने प्रत्येक सैनिक के लिए भरपूर भोज्य-पदार्थ का प्रबन्ध किया और राजभवन से प्रचुर मात्रा में सोना-चाँदी निकलवायी।

* शब्दशः, "(पराधीनता प्रकट करने के लिए) मिट्टी और पानी तैयार रखें"

2 : 5 1 मक 15 : 13 **2 : 8** यहेज 35 : 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

होलोफ़रनिस द्वारा युद्ध का प्रारम्भ

19 इस प्रकार होलोफरनिस अपनी सारी
सेना के साथ राजा नबूकदनेस्सर से पहले
नीनवे से चल पड़ा, जिससे वह सभी पश्चिमी
देशों को अपने रथों, घुड़सवारों और चुने हुए
पैदल सैनिकों से भर दे। 20उनके साथ हर प्रकार
के अन्य लोग भी थे, जो टिड्डियों और पृथ्वी के
रेतकणों की तरह असंख्य थे। 21वे नीनवे से
तीन दिन की यात्रा की दूरी तक, बेक्टिलेत के
मैदान तक गये और उन्होंने बेक्टिलेत के पास,
जो उस पर्वतश्रेणी के निकट है जो किलिकिया
के ऊपरी भाग में स्थित है, पड़ाव डाला। 22फिर
होलोफरनिस अपनी सारी सेना के पैदल
सैनिक, घुड़सवार और रथ ले कर वहाँ से
पहाड़ी प्रदेश की ओर आगे बढ़ा। 23पूद और
लूद वालों को पराजित कर उसने रस्सीस के
सभी वंशजों और यिश्माएलियों को लूटा, जो
खलैयों के देश के दक्षिण में उजाड़खण्ड के
निकट रहते हैं। 24इसके बाद वह फ़रात नदी
पार कर मेसोपोतामिया हो कर गया और समुद्र
तक आगे बढ़ कर अब्रोना नदी के पास के सब
किलाबन्द नगरों को ध्वस्त कर दिया। 25उसने
किलिकिया प्रदेश पर अधिकार कर लिया और
अपने सब विरोध करने वालों का वध किया।
इस प्रकार वह याफ़ेत की सीमा तक आया, जो
दक्षिण में अरब के सामने है। 26इसके बाद उसने
मिद्यान के सभी वंशजों को घेर कर उनके खेमों
को जला दिया और उनके रेवड़ों को लूटा।
27तब वह गेहूँ की फ़सल के समय दमिश्क के
मैदान में उतरा और उसने उनके सब खेत जला
दिये, उनका पशुधन नष्ट किया, उनके नगरों को
लूटा, उनके मैदान उजाड़ दिये और उनके सब
युवकों को तलवार से मौत के घाट उतार दिया।

तटीय प्रदेशों पर विजय

28 तब समुद्रतट के लोग, सीदोन और सोर
के निवासी, सूर और ओकीना के निवासी तथा
यमनिया के सब निवासी भयभीत होकर काँपने
लगे। अशदोद और अश्कलोन के निवासी भी
होलोफ़रनिस से बहुत डरने लगे।

3 उन्होंने उसके पास सन्धि के लिए दूत भेजे।
उन्होंने कहा, 2"हम, राजाधिराज नबूकदने-
स्सर के दास, आपके पैर पड़ते हैं। आप जैसा
चाहें, हमारे साथ वैसा ही करें। 3हमारे बाड़े,
हमारे सब घर-द्वार, हमारे गेहूँ के सभी खेत,
हमारा पशुधन और हमारी गोशालाएँ—यह
सब आपका है। आप जैसा चाहें, उनके साथ
वैसा ही करें। 4हमारे नगर आपके हैं, उनके
निवासी आपके दास हैं। आप हमारे यहाँ पधारें
और वही करें, जो आप को उत्तम जान पड़े।"
5वे दूत होलोफरनिस के पास गये और उसे यह
सन्देश सुनाया।
6 इसके बाद उसने अपनी सेना-सहित
समुद्रतट के क्षेत्र में प्रवेश किया। उसने
किलाबन्द नगरों में रक्षक-सेना रख दी और
उन जातियों में से सहायक सैनिकों का चुनाव
किया। 7उन्होंने और आसपास के सब लोगों ने
मालाएँ लिये, नाचते और डफली बजाते हुए
उसका स्वागत किया। 8परन्तु उसने उनके पूजा-
स्थान+ उजाड़ दिये और उनके पूजा-कुंज
कटवा दिए; क्योंकि उसने पृथ्वी भर के
देवताओं का विनाश करने का संकल्प किया
था, जिससे सब राष्ट्र केवल नबूकदनेस्सर की
आराधना करें और सभी जातियाँ एक स्वर से
उसे देवता के रूप में स्वीकार करें। 9इसके बाद
होलोफरनिस दोतान नगर के पास एस्द्रालोन
आया, जो यहूदा-प्रदेश की पर्वतश्रेणी के
सामने है। 10उसने गेबा और स्कूतापुलिस के
बीच पड़ाव डाला। वहाँ अपनी सेना का रसद
एकत्र करने के लिए वह महीना भर रुका रहा।

यहूदियों द्वारा होलोफ़रनिस का विरोध

4 यहूदा प्रदेश में रहने वाले इस्राएलियों ने
सुना कि असीरियों के राजा नबूकदनेस्सर
के प्रधान सेनापति होलोफ़रनिस ने उन लोगों
के साथ क्या-क्या किया है, अर्थात् उसने किस
प्रकार उनके सब देवालयों को लुटवा कर नष्ट
कर दिया है। 2यह सुन कर वे उस से भयभीत

+ मूल में, "सीमा-क्षेत्र"।

2 : 20 उत 13 : 16 ; शास 7 : 12 ; योएल 2 : 2-11 **2 : 26** शास 6 : 1.5 **3 : 8** यश 14 : 12-14 ; नि 34 : 13
3 : 10 2 मक 12 : 29

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हुए और यरूशलेम और प्रभु-परमेश्वर के
मन्दिर के कारण घबरागये; 3क्योंकि थोड़े समय
पहले ही वे निष्कासन से लौटे थे, यहूदा प्रदेश
की जनता एकत्र हो गयी थी और पवित्र पात्रों,
वेदी तथा मन्दिर का दूषण दूर कर इन सब की
शुद्धि की गयी थी।

4 इसलिए उन्होंने समस्त सामरी प्रदेश,
कोना, बेत-होरोन, बेलमैन, यरीहो, खोबा,
ऐसोरा और सालेम के मैदान के निवासियों को
एक सन्देश भेजा। 5उन्होंने ऊँचे पर्वतों के सब
शिखर अपने अधिकार में कर लिये, उन पर
स्थित सब गाँवों के चारों ओर दीवारें बनवायीं
और, क्योंकि हाल में फ़सल कटी थी, उन्होंने
युद्ध के लिए रसद एकत्र की। 6यरूशलेम के
तत्कालीन महापुरोहित योआकीम ने बेतूलिया
और एस्द्रालोन के सामने, दोतान के निकटवर्ती
मैदान में स्थित बेतोमेस्ताईम के निवासियों को
लिखा 7कि वे पहाड़ों की सब घाटियाँ अपने
अधिकार में कर लें; क्योंकि उन से हो कर
यहूदा प्रदेश जाया जा सकता था। वहाँ किसी
को आगे बढ़ने से रोकना आसान था; क्योंकि
प्रवेश-मार्ग इतना सँकरा था कि केवल दो आदमी
एक साथ जा सकते थे। 8इस पर इस्राएलियों
ने महापुरोहित योआकीम और यरूशलेम में
रहने वाले समस्त इस्राएली जनता के धर्मवृद्धों
की समिति* के आदेश का पालन किया।

परमेश्वर से इस्राएलियों की दुहाई

9सभी इस्राएलियों ने आग्रहपूर्वक परमेश्वर
की दुहाई दी और परमेश्वर के सामने दीन बन
कर कठोर उपवास किया। 10वे, उनकी पत्नियाँ,
उनके बाल-बच्चे, उनके पशु, उनके सब
प्रवासी, मजदूर और दास — सब ने टाट ओढ़
लिये। 11यरूशलेम के प्रत्येक इस्राएली पुरुष,
स्त्री और बच्चे — सब ने मन्दिर के सामने
दण्डवत् किया। उन्होंने अपने-अपने सिर पर
राख डाली और अपने टाट के वस्त्र प्रभु के
सामने फैला दिये। 12उन्होंने वेदी को भी टाट
से ढक दिया। वे एक स्वर से आग्रहपूर्वक
इस्राएल के परमेश्वर की दुहाई देते रहे, जिससे
वह यह न होने दे कि उनके बच्चों का अपहरण
हो, उनकी पत्नियों को बन्दी बनाया जाये,
उनके पैतृक भूमि-भाग के नगरों का विनाश हो
और विजयी राष्ट्रों द्वारा उनके मन्दिर का
अपवित्रीकरण और अपमान किया जाये।
13प्रभु ने उनकी पुकार सुनी और उनकी विपत्ति
पर ध्यान दिया। समस्त यहूदा-प्रदेश में और
यरूशलेम के सर्वशक्तिमान प्रभु के मन्दिर के
सामने लोग कई दिनों तक उपवास करते रहे।
14महापुरोहित योआकीम, प्रभु के सामने
उपस्थित सब पुरोहित और प्रभु के मन्दिर के
सब सेवक कमर में टाट बाँधे दैनिक अग्नि-
बलि और मन्नत में अथवा स्वेच्छा से लोगों
द्वारा अर्पित बलिदान चढ़ाते रहे। 15वे अपनी
पगड़ियों पर राख डाल कर जोर-जोर से प्रभु
की दुहाई दे रहे थे, जिससे वह इस्राएल के
समस्त वंशजों पर कृपादृष्टि करे।

होलोफ़रनिस को अहीओर का परामर्श

5 असीरियाई सेना के प्रधान सेनापति
होलोफ़रनिस को यह सूचना मिली कि
इस्राएली लोग युद्ध की तैयारियाँ कर रहे हैं,
पहाड़ी घाटियों में जाने वाले मार्ग बन्द कर रहे
हैं, प्रत्येक पर्वत-शिखर की किलेबन्दी कर रहे
हैं और मैदानों में रुकावटें खड़ा कर रहे हैं।
2यह सुन कर वह आगबबूला हो उठा। उसने
मोआब के सब सामन्तों, अम्मोन के सेनाध्यक्षों
और तटीय प्रदेशों के सब क्षत्रपों को एकत्रित
कर 3उन से कहा, "कनानियो! मुझे बताओ
कि वह कौन-सी जाति है, जो पर्वतीय-प्रदेश
में रहती है और वे कौन-से नगर हैं, जिन में वह
निवास करती है? उसकी सेना कितनी बड़ी है
और उसकी सामर्थ्य और शक्ति किस बात में
है? उसकी सेना का नेता और राजा कौन है?
4और पश्चिमी देशों के निवासियों में क्यों
अकेले वही मुझ से मिलने नहीं आयी?"

5 इस पर सारे अम्मोनियों के नेता अहीओर
ने उस से कहा, "यदि मेरे स्वामी मुझसे, अपने

* अथवा, "धर्मवृद्धों की सभा"

4 : 10 2 इत 20 : 13 ; योएल 2 : 16 4 : 11 एज्रा 10 : 1 4 : 15 नि 28 : 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दास से जानना चाहें, तो मैं इन पहाड़ों में आपके सामने रहने वाली इस जाति के विषय में आप को सच-सच बताऊँगा। आपके दास के मुँह से कुछ भी झूठ नहीं निकलेगा। [6]यह जाति कसदियों की एक शाखा है। [7]यह पहले मेसोपोतामिया में बस गयी थी, क्योंकि यह कसदी देश में रहने वाले अपने पूर्वजों के देवताओं को नहीं मानना चाहती थी। [8]यह अपने पूर्वजों का मार्ग छोड़ कर स्वर्ग के उस परमेश्वर की आराधना करने लगी थी, जिसका ज्ञान इसे प्राप्त हुआ था। इसलिए वहाँ के लोगों ने इसे अपने देवताओं के सामने से भगा दिया था। इस पर यह मेसोपोतामिया जा कर बहुत दिनों तक वहाँ रही। [9]इसके परमेश्वर ने इसे आदेश दिया कि यह अपना निवासस्थान छोड़ कर कनान देश जाये। यह वहाँ बस गयी और इसने बहुत-सा सोना-चाँदी और पशुधन प्राप्त किया। [10]जब समस्त कनान में अकाल पड़ा, तो यह जाति मिस्र देश चली गयी। वहाँ रहते समय इसे भरण-पोषण मिला और यह इस प्रकार फूलती-फलती रही कि इसकी संख्या की गिनती असम्भव हो गयी। [11]मिस्र का राजा इसके विरुद्ध हो गया। उसने गारा और ईंट बनाने का काम दे कर इस जाति को नीचा दिखाया और दास बना लिया। [12]परन्तु इसने अपने परमेश्वर की दुहाई दी और परमेश्वर ने समस्त मिस्र पर ऐसी विपत्तियाँ ढाहीं, जिन से मिस्री अपनी रक्षा नहीं कर सके और उन्होंने इस जाति को अपने देश से भगा दिया। [13]परमेश्वर इसके लिए लाल समुद्र सुखा कर [14]इसे सीनय पर्वत और कादेश-बरनेअ मरूद्यान के मार्ग पर ले गया। इस जाति ने निर्जन-प्रदेश में रहने वाले सब लोगों को भगा दिया [15]और यह एमोरियों के देश में बस गयी; फिर इसने अपने बाहुबल से हेशबोन के सब निवासियों का विनाश किया। इसके बाद इसने यर्दन नदी पार कर समस्त पहाड़ी क्षेत्र अपने अधिकार में कर लिया। [16]यह कनानी, परिज्जी, यबूसी, शकेमी और सब गिर्गाशी जातियों को अपने सामने से भगा कर बहुत समय तक वहीं बसी रही। [17]जब तक यह अपने परमेश्वर के विरुद्ध पाप नहीं करती थी, तब तक यह सकुशल रही; क्योंकि इसका परमेश्वर, जो अधर्म से घृणा करता है, इसके साथ था। [18]परन्तु जब यह निर्दिष्ट मार्ग से भटक गयी, तो यह बहुत-से युद्धों द्वारा निर्बल होती गयी, और अन्त में बन्दी बना कर अपने देश से निष्कासित की गयी। इसके परमेश्वर का मन्दिर ध्वस्त किया गया और इसके शत्रुओं ने इसके नगर अपने अधिकार में कर लिये। [19]अब यह फिर अपने परमेश्वर की ओर अभिमुख हुई और जहाँ यह बिखरी हुई पड़ी थी, वहाँ से लौट आई। इसने फिर यरूशलेम अपने अधिकार में कर लिया, जहाँ इसका मन्दिर है और यह उस पहाड़ी प्रदेश में बस गयी, जो उजाड़ था।

अहीओर की चेतावनी

20 "स्वामी और प्रभु! अब यदि यह जाति दोषी है और अपने परमेश्वर के विरुद्ध पाप करती और हमें इसके अपराध का पता चल जाता है, तो हम ऊपर चढ़ कर इसे पराजित कर दें। [21]किन्तु यदि इस जाति में कोई अधर्म नहीं, तो मेरे स्वामी इस से दूर रहें। कहीं ऐसा न हो कि इसका प्रभु-परमेश्वर इसकी रक्षा करे और समस्त पृथ्वी की दृष्टि में हमारा अपमान हो।"

22 अहीओर का कहना समाप्त होने पर तम्बू के आसपास खड़े सब लोगों ने इस पर आपत्ति उठायी। होलोफ़रनिस के उच्च पदाधिकारी, समुद्रतट के निवासी और मोआबी उसका वध करना चाहते थे। [23]उन्होंने कहा, "हम इन इस्राएलियों से नहीं डरेंगे। इस जाति में न तो घमासान युद्ध करने का साहस है और न बल। [24]इसीलिए, स्वामी होलोफ़रनिस! हम आगे बढ़ें और आपकी सेना इसका भक्षण करेगी।"

अहीओर को दण्डाज्ञा

6 सभा के आसपास के लोगों का कोलाहल बन्द हो जाने पर असीरियाई सेना के प्रधान

5 : 7 यहो 24 : 2 5 : 9 उत 12 : 1 ; 13 : 2 5 : 10 उत 42 : 5 5 : 11 प्रे 7 : 19 5 : 12 नि 2 : 23 5 : 15 गण 21 : 15

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सेनापति होलोफ़रनिस ने अन्य सभी जातियों
और मोआबियों के सामने कहा, 2 "अहीओर!
तुम कौन होते हो; और एफ्रइम के भाड़े के सब
सैनिको! तुम कौन होते हो, जो तुम आज हमारे
सामने भविष्यवाणी करते हो और कहते हो कि
हम इस्राएलियों से नहीं लड़ें, क्योंकि उनका
ईश्वर उनकी रक्षा करेगा? नबूकदनेस्सर के
सिवा और कौन ईश्वर है? वही अपनी सेनाएँ
भेज कर अपनी शक्ति का परिचय देगा, उन्हें
पृथ्वीतल से मिटा देगा और उनका ईश्वर
उनका उद्धार नहीं कर सकेगा! 3 हम, उसके
दास, उन्हें यों मार गिरायेंगे, जैसे वे एक आदमी
भर हों। वे हमारे घुड़सवार सैनिक-बल का
सामना कभी नहीं कर सकेंगे। 4 हम इसके द्वारा
उन्हें पराजित करेंगे। उनकी पहाड़ियाँ उनके
रक्त से भर जायेंगी और उनके मैदान उनकी
लाशों से पट जायेंगे। उनके पैर हमारे सामने
नहीं टिक पायेंगे। उनका सर्वनाश किया
जायेगा। यह समस्त पृथ्वी के स्वामी राजा
नबूकदनेस्सर का कहना है। उसने यही कहा था
और उसके शब्द व्यर्थ नहीं जायेंगे।

5 "अहीओर! तुम अम्मोन के भाड़े के टट्टू
हो! तुम्हारे दुर्भाग्य ने ही तुम से ये शब्द
कहलवाये हैं। तुम मेरा मुँह आज से तब तक
नहीं देखोगे, जब तक मैं मिस्र से आयी इस
जाति से बदला न ले लूँ। 6 तब मेरे लौटने पर
मेरे सैनिकों और सेवकों के भाले तुम्हारी बगल
छेदेंगे और तुम उन लोगों के घायलों के बीच
गिर कर पड़े रहोगे। 7 अब मेरे दास तुम्हें पहाड़ों
पर ले जायेंगे और वहाँ घाटी के मार्ग पर स्थित
किसी नगर में तुम्हें छोड़ देंगे। 8 तुम्हारा वध
तभी होगा, जब उन लोगों का विध्वंस हो
जायेगा। 9 यदि तुम अपने मन में आशा करते हो
कि उनकी हार नहीं होगी, तो तुम्हारे उदास होने
का कोई कारण नहीं। मेरा एक शब्द भी व्यर्थ
नहीं जायेगा।"

बेतूलिया में अहीओर

10 होलोफ़रनिस ने अपने तम्बू के पास खड़े
अपने दासों को अहीओर को पकड़ कर
बेतूलिया ले जाने और वहाँ उसे इस्राएलियों के
सुपुर्द करने की आज्ञा दी। 11 उसके दास उसे
पकड़ कर पड़ाव के बाहर मैदान में ले गये।
उन्होंने मैदान पार किया और पहाड़ पर चढ़
कर वे उन जलस्रोतों के पास आये, जो
बेतूलिया की तलहटी में हैं। 12 जैसे ही पर्वत की
चोटी पर बसे नगरवासियों ने उन्हें आते देखा,
वे अपने अस्त्र-शस्त्र ले कर नगर के बाहर,
पहाड़ की चोटी पर दौड़ पड़े और सभी गोफन
चलाने वालों ने पत्थर मार-मार कर उनका
रास्ता रोक दिया। 13 तब वे पर्वत के नीचे छिप
गये और उन्होंने अहीओर को बाँध कर पर्वत
की तलहटी में छोड़ दिया। इसके बाद वे अपने
स्वामी के पास लौट गये।

14 इस्राएली अपने नगर से नीचे उतरे और
उन्होंने उसके पास जा कर उसके बन्धन खोल
दिये। फिर उन्होंने उसे बेतूलिया ले जा कर
अपने नगर के अध्यक्षों के सामने उपस्थित
किया। 15 उन दिनों शिमोन कुल के वंशज
मीका का पुत्र उज्जीया, गोतोनीएल का पुत्र
काब्रीस और मलकीएल का पुत्र करमीस —
ये तीनों मिलकर नगर के अध्यक्ष थे। 16 उन्होंने
नगर के सब धर्मवृद्धों को एकत्र किया। सब
युवक और स्त्रियाँ भी सभा में उपस्थित हुए।
अब उज्जीया ने अहीओर को सब लोगों के
बीच खड़ा कर उससे पूछा कि उसके साथ क्या
हुआ। 17 तब उसने उन्हें वह सब कुछ बताना
आरम्भ किया, जो होलोफ़रनिस के मन्त्रियों
की सभा में हुआ था। और उसने वह सारा
भाषण भी सुनाया, जो उसने असीरियों के
सेनापतियों के सामने दिया था और वह भी, जो
होलोफ़रनिस ने शेखी मारते हुए इस्राएल के
विरुद्ध कहा था। 18 यह सुन कर लोग परमेश्वर
के सामने नतमस्तक हो कहने लगे, 19 "प्रभु!
स्वर्गेश्वर! उनका अहंकार देख और हमारी
जाति की दुर्गति पर दया कर। आज तू उन पर
दयादृष्टि कर, जिन्होंने अपने को तुझे समर्पित
कर दिया है।"

20 इसके बाद उन्होंने अहीओर को सान्त्वना

---

6 :3 गण 14 : 14 6 : 4 भज 110 : 6 ; यश 34 : 7 6 : 9 2 रा 10 : 10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दी और उसकी बड़ी प्रशंसा की। 21उज्जीया उसे
सभा से अपने घर ले गया और उसने धर्मवृद्धों
को एक भोज दिया। वे इस्राएल के परमेश्वर
से सहायता के लिए रात भर प्रार्थना करते रहे।

बेतूलिया की घेराबन्दी

7 दूसरे दिन होलोफ़रनिस ने अपनी सारी
सेना तथा संधिबद्ध राष्ट्रों के अपने सब
सहायक सैनिकों को बेतूलिया पर आक्रमण
करने, पहाड़ी घाटों को जाने वाले मार्गों पर
अधिकार करने और इस्राएलियों के विरुद्ध युद्ध
छेड़ने की आज्ञा दी। 2उसके सारे सैनिक उसी
दिन चल पड़े। उसकी सेना में एक लाख सत्तर
हजार पैदल सैनिक और बारह हजार घुड़सवार
थे। उनके साथ बहुत सारा सामान था और
उनके साथ चलने वाले असैनिकों की बहुत
बड़ी संख्या भी थी। 3उन्होंने बेतूलिया के सामने
के मैदान में जलस्रोत के पास, एक ऐसे क्षेत्र में
पड़ाव डाला, जो दोतान की ओर बलबइम तक
चौड़ा और बेतूलिया से एस्द्रालोन के सामने
स्थित क्यामोन तक लम्बा था।

4 इस्राएली उनकी भारी संख्या देख कर
भयभीत हो गये और एक दूसरे से कहने लगे,
"अब ये पूरा देश चाट कर साफ़ कर देंगे।
इनका भार बड़े-बड़े पर्वत, घाटियाँ और
पहाड़ियाँ भी वहन न कर सकेंगी।" 5प्रत्येक
व्यक्ति ने अपने अस्त्र-शस्त्र हाथ में लिये।

उन्होंने बुर्जों पर आग सुलगायी और रात भर
पहरा देते रहे। 6दूसरे दिन होलोफ़रनिस बेतूलिया
में रहने वाले इस्राएलियों के देखते-देखते
अपने सारे घुड़सवार सैनिकों को बाहर ले
गया। 7उसने उनके नगर की ओर जाने वाले
मार्गों का निरीक्षण किया, उनके जलस्रोतों को
ढूँढ़-ढूँढ़ कर अपने अधिकार में ले लिया और
पहरे के लिए उन पर सैनिक नियुक्त कर दिये।
तब वह स्वयं अपनी सेना के पास लौटा।

8 अब एसाव-वंशियों के सब मुखिया,
मोआबी सेना के सब नेता और समुद्रतट के
सेनाध्यक्ष उसके पास जा कर बोले, 9"हमारे
स्वामी हमारी एक बात सुनें, जिससे आपकी
सेना की क्षति न हो। 10इस्राएली अपने भालों
पर उतना भरोसा नहीं रखते, बल्कि उन शिखरों
का भरोसा करते हैं, जिन पर वे रहते हैं; क्योंकि
सच पूछिए, तो उनके पर्वत-शिखरों पर
पहुँचना सरल नहीं है। 11स्वामी! इसलिए इन
से वैसी लड़ाई मत कीजिए, जैसी खुले युद्धक्षेत्र
में होती है और आपकी सेना के एक भी आदमी
की मृत्यु नहीं होती। 12आप अपनी सेना के
प्रत्येक सैनिक को अपने पास सुरक्षित रखते
हुए अपने पड़ाव में ही रहें और हम, आपके
सेवक, उस जल-स्रोत को अधिकार में कर
लें, जो पहाड़ की तलहटी से निकलता है;
13क्योंकि बेतूलिया के सभी निवासी वहीं पानी
भरते हैं। इस प्रकार वे प्यास से मर जायेंगे और
अपना नगर आपको सौंप देंगे। इस बीच हम
अपने लोगों को ले कर पास वाले पर्वत-
शिखरों पर चढ़ जायेंगे और वहाँ पहरा देते हुये
पड़े रहेंगे। नगर से एक भी आदमी नहीं भाग
पायेगा। 14तब वे, उनकी पत्नियाँ और उनके
बाल-बच्चे भूखों मर जायेंगे और तलवार के
प्रहार से पहले ही अपने नगर की सड़कों पर
बिछ जायेंगे। 15इस प्रकार आप उन्हें इसलिए
कठोर दण्ड देंगे कि उन्होंने आपके विरुद्ध
विद्रोह किया और आप से सन्धि नहीं की।"

16 होलोफ़रनिस और उसके सब सेनापतियों
को उनका यह परामर्श अच्छा लगा और उसने
उसके अनुसार काम करने का आदेश दिया।
17अम्मोनियों का एक दल पाँच हज़ार असीरियों
के साथ निकल पड़ा और मैदान में उतर कर
उसने जलाशयों और इस्राएलियों के जलस्रोतों
पर अधिकार कर लिया। 18इधर एदोमी और
अम्मोनी सैनिक ऊपर चढ़ कर दोतान के सामने
की पर्वतश्रेणी पर जम गये और अपने आदमियों
में से कुछ को दक्षिण और पूर्व की ओर एग्रेबेल
के पास भेज दिया, जो मोखमूर नाले पर स्थित
खूस के पास है। असीरियों की शेष सेना मैदान
में पड़ाव डाले रही और समस्त प्रदेश उस से
भर गया। उनके तम्बू और माल-असबाब के
ढेर दूर-दूर तक बिखरे थे; क्योंकि उनकी

7: 5 1 मक 12 : 28-29

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

संख्या बहुत बड़ी थी।

नगर में निराशा

19उधर इस्राएली प्रभु, अपने परमेश्वर की
दुहाई दे रहे थे। उनका साहस घटता जा रहा था;
क्योंकि उनके सभी शत्रु उन्हें घेरे हुए थे और
उन से बचना असम्भव लग रहा था। 20असीरियों
की समस्त सेना, उनके पैदल सैनिक, रथ और
घुड़सवार उन्हें चौंतीस दिन तक घेरे पड़े रहे।
बेतूलिया के निवासियों के सारे जलाशय सूखने
लगे 21और कुण्ड खाली होने लगे। लोग एक
दिन भी इच्छा भर पानी नहीं पी सकते थे,
क्योंकि उन्हें जल माप कर दिया जाता था।
22उनके बाल-बच्चे निर्बल होते जा रहे थे,
उनके युवक-युवतियाँ प्यास के मारे मूर्च्छित
हो जाते थे। वे नगर की सड़कों और दरवाजों
पर निर्जीव पड़े थे; क्योंकि उन्हें कोई आशा
नहीं थी*।

23 समस्त जनता उज्जीया और नगर के
अध्यक्षों के पास एकत्र हो गयी। युवक, स्त्रियाँ
और बच्चे चिल्ला-चिल्ला कर सब धर्मवृद्धों
से कहने लगे, 24"परमेश्वर आपके और हमारे
बीच न्याय करे। आप लोगों ने हम पर बड़ी
विपत्ति ढाही है, क्योंकि आपने असीरियों से
सन्धि नहीं की। 25अब हमारा कोई सहायक
नहीं रहा। परमेश्वर हमें उनके हाथ सौंप रहा
है। हम प्यास और घोर विपत्ति के शिकार बन
कर उनके सामने निर्जीव पड़े हैं। 26अब
होलोफ़रनिस को बुला कर सारे नगर को
उसकी सेना तथा सहायक दल की लूट का
शिकार होने दीजिए। 27हमारे लिए अच्छा यही
है कि हम उनके द्वारा लूटे जायें और उनके
दास-दासियाँ बन जायें, और इस प्रकार जीवित
रहें और अपनी आँखों से अपनी सन्तान की
मृत्यु और अपनी पत्नियों और पुत्रों की दयनीय
दशा न देखें। 28हम स्वर्ग एवं पृथ्वी को और
अपने पूर्वजों के उस प्रभु-परमेश्वर को साक्षी
बना कर, जो हमारे अपराधों एवं हमारे पूर्वजों
के पापों के कारण हमें दण्ड दे रहा है, आप से
निवेदन करते हैं कि आप आज हमारा कहना
मान लीजिए।"

29 इसके बाद धर्मसभा के सब लोग विलाप
करने लगे और उन्होंने ऊँचे स्वर में प्रभु-
परमेश्वर की दुहाई दी। 30उज्जीया ने उन से
कहा, 'भाइयो एवं बहिनो! साहसी बनो! हम
पाँच दिन और ठहरेंगे। इस बीच प्रभु, हमारा
परमेश्वर अवश्य ही हम पर दया करेगा;
क्योंकि वह हमें अन्त तक नहीं छोड़ेगा। 31यदि
इस अवधि में हमें सहायता प्राप्त नहीं होती, तो
मैं तुम्हारा कहना मानूँगा।" 32तब उसने लोगों
को विदा किया, कि वे अपने-अपने स्थान पर
चले जाएं। पुरुष नगर के परकोटों और बुर्जों
पर चले गये; स्त्रियां और बच्चे अपने-अपने घर
लौटे। नगर में बड़ी निराशा छा गयी।

यहूदीत का परिचय

8 उस समय यहूदीत* बेतूलिया नगर में रहती
थी। वह मरारी की पुत्री थी; मरारी ओक्ष
का पुत्र था, ओक्ष यूसुफ़ का, यूसुफ़ ओजीएल
का, ओजीएल हिलकीया का, हिलकीया
हनन्या का, हनन्या गिद्ओन का, गिद्ओन
रफ़ाईन का, रफ़ाईन अहीटूब का, अहीटूब
एलियाह का, एलियाह हिलकीया का, हिलकीया
एलीआब का, एलीआब नतनएल का, नतनएल
सलामीएल का, सलामीएल सरासदय का और
सरासदय शिमोन का और शिमोन इस्राएल का
पुत्र था। 2यहूदीत का पति मनश्शे उसके कुल
और वंश का था। जौ की फ़सल के समय
उसका देहान्त हो गया था। 3वह खेत में पूले
बाँधने वालों का काम देख रहा था कि उसे लू
लग गयी। उसे पलंग पकड़ना पड़ा और वह
अपने नगर बेतूलिया में मर गया। लोगों ने उसे
दोतान तथा बलामोन के बीच वाले भूमिभाग में
अपने पूर्वजों के साथ दफ़ना दिया था।

4 विधवा बनने के बाद यहूदीत ने तीन वर्ष
चार महीने अपने घर में बिताये। 5उसने अपने

---

* अथवा, "वे बहुत निर्बल हो गये थे"। * अर्थात् "यहूदिनी"।

7 : 25 शास 2 : 14 **7 : 27** उत 12 : 13 **7 : 21** यहेज 4 : 11.16 **7 : 22** शोक 2 : 11 **7 : 24** उत 16 : 5
8 : 3 2 रा 4 : 18-19

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

घर की छत पर अपने लिए एक छोटा-सा
कमरा बनवाया। वह टाट ओढ़े थी और वैधव्य
के वस्त्र पहनती थी। 6विधवा बनने के बाद वह
विश्राम-दिवस के पूर्वदिन, विश्राम-दिवस,
अमावस+ के पूर्वदिन, अमावस और इस्राएली
यात्रा-पर्वों तथा अन्य आनन्द-उत्सवों को
छोड़ कर प्रतिदिन उपवास करती थी। 7वह
सुडौल और अत्यन्त सुन्दर थी।** उसका पति
मनश्शे उसके लिए सोना-चाँदी, दास-दासियाँ,
पशुधन और खेत छोड़ गया था और वह अपनी
सम्पत्ति का प्रबन्ध करती थी। 8कोई भी उसकी
बुराई नहीं करता था; क्योंकि वह परमेश्वर पर
बहुत श्रद्धा रखती थी।

नगर के नेताओं और यहूदीत की मन्त्रणा

9 जनता ने जल के अभाव के कारण निराश
होकर शासक से जो कटु शब्द कहे थे, यहूदीत
ने उनके विषय में सुना और वह सब भी सुना,
जो उज्जीया ने लोगों से कहा था और किस
प्रकार उसने शपथ खा कर उन्हें आश्वासन
दिया था कि वह पाँच दिन बाद नगर को
असीरियों के हाथ दे देगा। 10इस पर उसने
अपनी सेविका को, जो उसकी सारी सम्पत्ति
की देखरेख करती थी, भेज कर नगर के अध्यक्ष
उज्जीया, काब्रीस और करमीस को बुलवाया।
11वे उसके पास आये। तब उसने उन से कहा,
"बेतूलियावासियों के नेताओ! मेरी बात सुनिए।
आपने लोगों के सामने जो भाषण दिया, वह
उचित नहीं है। आपने प्रभु को साक्षी बना कर
शपथ खायी है कि यदि प्रभु, हमारे परमेश्वर
ने निश्चित अवधि तक हमारी सहायता नहीं
की, तो आप नगर को हमारे शत्रुओं के हाथ दे
देंगे। 12आप कौन होते हैं, जो आपने आज
परमेश्वर की परीक्षा ली और मनुष्यों के मामले
में ईश्वर का स्थान लिया? 13आप सर्वशक्तिमान
प्रभु की परीक्षा लेते हैं। आप उसके विषय में
कभी कुछ नहीं समझेंगे। 14जब आप न तो
मनुष्य के हृदय की थाह ले सकते हैं और न
उसके मन के विचार समझ सकते हैं, तो आप
कैसे परमेश्वर की थाह पा सकते हैं जिसने यह
सब किया? आप कैसे उसके विचार जान
सकते हैं और उसका उद्देश्य समझ सकते हैं?
कभी नहीं! भाइयो! आप हमारे प्रभु-परमेश्वर
को अप्रसन्न नहीं कीजिए। 15यदि वह पाँच
दिन के अन्दर हमें सहायता देना नहीं चाहता,
तो वह जितने दिनों के अन्दर चाहता है, वह
हमारी रक्षा करने में अथवा हमारे शत्रुओं द्वारा
हमारा विनाश करवाने में समर्थ है। 16आप हमारे
प्रभु-परमेश्वर को निर्णय के लिए बाध्य करने
का प्रयत्न मत कीजिए; क्योंकि परमेश्वर को
मनुष्य की तरह डराया नहीं जा सकता और न
उसे निरे मनुष्य* की तरह फुसलाया जा सकता
है। 17इसलिए हम रक्षा के लिए धैर्यपूर्वक
उसकी प्रतीक्षा करें और अपनी सहायता के
लिए उस से प्रार्थना करें। यदि वह उचित
समझेगा, तो हमारी पुकार सुनेगा; 18क्योंकि
आजकल हमारे बीच कोई कुल या वंश या गाँव
या नगर ऐसा नहीं, जहाँ लोग हाथ से निर्मित
देवी-देवताओं की पूजा करते हों, जैसे पहले
की जाती थी 19और जिसके कारण हमारे पूर्वज
तलवार और लूट के शिकार हो गये और हमारे
शत्रुओं द्वारा बुरी तरह पराजित किये गये।
20हम तो उसके सिवा किसी अन्य ईश्वर को
नहीं मानते। इसीलिए हमें आशा है कि वह
हमारा तिरस्कार नहीं करेगा और न हम से और
न हमारी जाति पर से अपनी कृपादृष्टि हटायेगा;
21क्योंकि यदि हम पराधीन हुए, तो सारा यहूदा
प्रदेश पराधीन किया जायेगा और हमारा
पवित्र-स्थान लूटा जायेगा और हमें रक्त बहा
कर उसके अपवित्रीकरण का प्रायश्चित करना
पड़ेगा। 22हमारे भाई-बन्धुओं के वध का, देश
से हमारी जाति के निष्कासन का और हमारी
विरासत की भूमि के उजाड़ हो जाने का दोष
हमारे सिर पड़ेगा! और अन्यजातियों में, जहाँ
कहीं हम गुलाम बनाये जाएंगे, हमारे स्वामी

+ अथवा "नवचन्द्र"। ** कुछ प्रतियों में ये शब्द भी मिलते हैं, "वह समझदार और व्यवहारकुशल थी"। * शब्दशः, "मानव-पुत्र"।

8 : 12 व्य 6 : 16 ; अय्य 38 : 2 8 : 14 यिर 17 : 9 ; रोम 11 : 33; 1 कुर 2 : 11 8 : 17 1 मक 3 : 60

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हम से घृणा करेंगे और हमारा उपहास करेंगे;
23क्योंकि हम अपनी गुलामी में कृपापात्र नहीं
बनेंगे, बल्कि हमारा प्रभु-परमेश्वर हमें उपेक्षित
अवस्था में ही रखे रहेगा।

24 "भाइयो, हम अपने भाई-बन्धुओं के
सामने एक आदर्श रखें, क्योंकि उनका जीवन
हम पर निर्भर है; पवित्र-स्थान, मन्दिर और
वेदी की सुरक्षा हमारे हाथ में है। 25इस कठिन
परिस्थिति में भी हम अपने प्रभु-परमेश्वर को
धन्यवाद दें। वह हमारी परीक्षा लेता है, जैसे
उसने हमारे पूर्वजों की परीक्षा ली थी। 26याद
रखिए कि उसने अब्राहम के साथ क्या किया
और इसहाक की कैसी परीक्षा ली और याकूब
पर क्या-क्या बीती, जब वह सीरियाई
मेसोपोतामिया में अपने मामा लाबान की भेड़ें
चराते थे; 27क्योंकि जिस प्रकार प्रभु ने उनके
हृदय परखने के लिए उनकी घोर परीक्षा ली थी,
उसी प्रकार उसने हमारी अग्नि-परीक्षा नहीं
की। प्रभु हमें तो दण्ड नहीं दे रहा है, बल्कि
शिक्षा देने के उद्देश्य से वह उन्हीं लोगों को
कोड़ों से मारता है, जो उसकी ओर अभिमुख
होते हैं।"

28 इस पर उज्जीया ने यहूदीत से कहा,
"तुमने जो कुछ कहा, उसे तुमने सच्चे हृदय
से कहा और कोई भी व्यक्ति तुम्हारे कथन का
विरोध नहीं करेगा। 29सच पूछो, तो यह पहली
बार नहीं है कि तुम अपने विवेक का परिचय
दे रही हो। सारी जनता तुम्हारे जीवन के प्रारम्भ
से तुम्हारी बुद्धिमानी और तुम्हारे हृदय के
सद्भाव जानती है। 30परन्तु लोग इतने प्यासे थे
कि उन्होंने हमें उन बातों के लिए और उस
शपथ के लिए विवश किया, जिसे हम भंग नहीं
कर सकते। 31अब तुम हमारे लिए प्रार्थना करो,
क्योंकि तुम ईश्वर-भक्त महिला हो, जिससे
प्रभु हमारे जलकुण्ड भरने के लिए पानी
बरसाये और हम प्यास के कारण शिथिल न
पड़ें।"

32 यहूदीत ने उन्हें उत्तर दिया, "मेरी बात
सुनिए। मैं एक ऐसा काम करूँगी, जिसकी
चर्चा पीढ़ी-दर-पीढ़ी हमारी जाति की सन्तानों
के बीच होती रहेगी। 33आप लोग आज रात
नगर के प्रवेश-द्वार पर खड़े होइए ताकि मैं
अपनी सेविका के साथ नगर के बाहर जा सकूं
और उन दिनों की अवधि के भीतर, जिस में
आपने नगर को हमारे शत्रुओं के हाथ में देने का
वचन दिया है, मेरे द्वारा प्रभु इस्राएल का उद्धार
करायेगा। 34लेकिन आप लोग मुझ से यह नहीं
पूछें कि मैं क्या करने जा रही हूँ। मैं जो करने
वाली हूँ, जब तक वह बात पूरी नहीं होगी, तब
तक मैं आप को उसके विषय में कुछ नहीं
बताऊँगी।" 35इस पर उज्जीया और प्रशासकों
ने उस से कहा, "सकुशल जाओ! प्रभु-
परमेश्वर हमारे शत्रुओं से बदला लेने के लिए
तुम्हारे आगे जाए!" 36इसके बाद वे यहूदीत
के निवास से निकल कर अपनी चौकियों पर
चले गये।

यहूदीत की प्रार्थना

9 यहूदीत अपने सिर पर राख डाले और मात्र
टाट के वस्त्र ओढ़े मुँह के बल गिर पड़ी।
जब यरूशलेम में परमेश्वर के मन्दिर में उस
दिन सन्ध्या की धूप चढ़ायी जा रही थी, ठीक
उसी समय यहूदीत ने उच्च स्वर में प्रभु से
प्रार्थना करते हुए कहा, 2 "प्रभु! मेरे पूर्वज
शिमोन के परमेश्वर! तूने उसके हाथ में तलवार
दी थी, जिससे वह उन अधर्मियों से बदला ले,
जिन्होंने एक कुँवारी कन्या को दूषित और
अपमानित करने के लिए उसका कमरबन्द
खोला था और उसके वस्त्र चीर कर उसका
शीलभंग किया था। और यह उन्होंने तेरे मना
करने पर किया था। 3इसीलिए तूने उनके नेताओं
को वध के लिए छोड़ दिया और उनकी उस
शय्या को रक्त से सींचा, जिस पर उन्होंने यह
निन्दनीय कार्य किया था। तूने दासों के साथ
शासकों को उनकी गद्दियों पर ही मारा। 4तूने
उनकी पत्नियों को लुटने के लिए और उनकी
पुत्रियों को बन्दी बनने के लिए छोड़ दिया और

---

8 : 26 उत 25 : 21; 29 : 13-31 : 16 **8 : 27** नीति 3 : 12 **8 : 35** 1 शम 1 : 17 **9 : 1** नि 30 : 8 **9 : 4** उत 34 : 28-29

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तूने उनकी सम्पत्ति अपनी उन प्रिय सन्तानों को
दे दी, जिन में तेरे लिए बड़ा उत्साह था, जो
अपनी सगी बहिन पर किये गये बलात्कार* से
हतप्रभ हुए और जिन्होंने तेरी सहायता माँगी
थी। हे परमेश्वर! मेरे परमेश्वर! मुझ विधवा
की प्रार्थना स्वीकार कर। 5पहले जो हुआ था
और बाद में जो हुआ, यह सब तेरा ही कार्य है।
तूने वर्तमान और भविष्य की योजना बनाई। तू
जिन घटनाओं की योजना बनाता है, वे पूरी हो
जाती हैं। 6वे तेरे सामने आ कर कहती हैं,
'देख! हम प्रस्तुत हैं।' तेरे सभी मार्ग प्रशस्त हैं
और तू पूर्वज्ञान के आधार पर निर्णय करता है।
7असीरियों की सेना कितनी विशाल है; उन्हें
अपने घोड़ों और घुड़सवारों पर अभिमान है।
वे अपने पैदल सैनिकों पर घमण्ड करते हैं।
उन्हें ढाल, भाले, तीर और गोफन का भरोसा
है। वे यह नहीं जानते कि तू वह प्रभु है, जो
युद्ध समाप्त करता है। तेरा नाम 'प्रभु' है।
8उनकी सामर्थ्य को नष्ट कर, अपने बाहुबल से
उनकी सेना तितर-बितर कर और क्रुद्ध हो कर
उनका साहस तोड़ दे; क्योंकि उन्होंने तेरे पवित्र
स्थान को दूषित करने का, तेरे महिमामय नाम
के निवास-स्थल को अपवित्र करने का और
तेरी वेदी के कंगूरों को लोहे से काटने का
निश्चय किया है। 9उनका अहंकार देख और
उनके सिरों पर अपना क्रोध प्रकट कर। मुझ
विधवा को वह महान् कार्य सम्पन्न करने की
शक्ति दे, जिसकी योजना मैंने अपने मन में
बनायी है। 10मेरे कपटपूर्ण शब्दों द्वारा दास के
साथ स्वामी को और स्वामी के साथ दास को
मार गिरा। विधवा के हाथ से उनका घमण्ड
तोड़। 11तेरी शक्ति न तो विशाल संख्या पर
निर्भर है और न तेरी सामर्थ्य शूरवीरों पर। तू
दीन-हीन लोगों का परमेश्वर है, दलितों का
सहायक, बलहीनों का प्रतिपालक, उपेक्षितों
का संरक्षक और निराश जनों का उद्धारकर्ता है।
12हाँ, मेरे कुल-पिता के परमेश्वर! इस्राएल
की मीरास के परमेश्वर! स्वर्ग और पृथ्वी के
स्वामी! समुद्रों के सृष्टिकर्ता! समस्त सृष्टि के
अधीश्वर! तू मेरी प्रार्थना सुन। 13तू मेरे कपटपूर्ण
शब्दों द्वारा उन लोगों पर प्रहार कर, जिन्होंने तेरे
विधान, तेरे पवित्र मन्दिर, सियोन पर्वत और
तेरी प्रजा के निवास के विरुद्ध कुचक्र रचा है।
14अपनी सारी प्रजा, अपने सभी कुलों पर यह
प्रकट कर कि तू ही परमेश्वर है, समस्त सामर्थ्य
और बल का ईश्वर है और तेरे सिवा इस्राएली
जाति का कोई अन्य रक्षक नहीं है।''

यहूदीत का शत्रु के पड़ाव की ओर प्रस्थान

10 इस्राएल के परमेश्वर की दुहाई देने
और यह प्रार्थना समाप्त करने के बाद
2यहूदीत भूमि पर से उठी। उसने अपनी
सेविका को बुलाया और ऊपरी कमरे से उतर
कर अपने घर में प्रवेश किया, जिस में वह
विश्राम-दिवसों और पर्व-दिवसों में रहा करती
थी। 3वहाँ उसने टाट और वैधव्य के वस्त्र
उतारे। उसने स्नान किया, उत्तमोत्तम तेल
लगाया, अपने सिर के केश सँवारे, फीता बाँधा
और पर्व के वे वस्त्र पहने, जिन्हें वह उस समय
पहनती थी, जब उसका पति मनश्शे जीवित
था। 4उसने अपने पाँवों में चप्पलें डालीं और
नूपुर, बाजूबन्द, अँगूठियाँ, कर्णफूल आदि
आभूषण पहने। उसने अपने को इस प्रकार
आकर्षक बनाया कि उसे देख कर कोई भी
पुरुष मुग्ध हो सकता था। 5इसके बाद उसने
अपनी सेविका को एक कुप्पा दाखरस और
एक कुप्पी तेल दिया; फिर थैली में भूना हुआ
जौ, अंजीर की रोटी, मैदे की रोटियाँ और पनीर
रख दिया और रसोई के अपने सब पात्र बाँध
कर अपनी सेविका को सौंप दिये।

6 इसके बाद वे दोनों बेतूलिया नगर के
प्रवेश-द्वार पर गयीं। वहाँ उन्होंने उज्जीया,
काब्रीस और करमीस, नगर के शासकों को
खड़ा देखा। 7यहूदीत के रूपरंग और वस्त्रों में
इस प्रकार का परिवर्तन देख कर वे उसके
सौंदर्य पर चकित हो उठे और उस से बोले,
8 ''इस्राएल की महिमा और येरूशलेम के

---

* शब्दश: ''अपने रक्त के कलंकित होने से''

9 : 5 यश 41 : 22-23 9 : 8 नि 27 : 2 9 : 13 दान 11 : 28

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गौरव के लिए हमारे पूर्वजों का परमेश्वर तुम
पर दया करे और तुम्हारी योजना सफल करे।''
9इस पर यहूदीत ने मुँह के बल गिर कर
परमेश्वर की आराधना की और उन से कहा,
''मेरे लिए नगर का प्रवेश-द्वार खोलने की
आज्ञा दीजिए, जिससे मैं जा कर वह कार्य पूरा
करूँ, जिसके विषय में आपने मेरे साथ
बातचीत की।'' तब उन्होंने युवकों को आज्ञा
दी कि वे उसके निवेदन के अनुसार उसके लिए
प्रवेश-द्वार खोल दें, और उन्होंने ऐसा ही
किया। 10यहूदीत अपनी सेविका के साथ बाहर
निकली। जब तक वह पर्वत के नीचे न उतरी
और मैदान पार कर उनकी दृष्टि से ओझल न
हो गयी, तब तक नगर के लोग उस को देखते
रहे।

11 दोनों मैदान में चलती जा रही थीं कि
उन्हें असीरियाई सैनिकों की एक चौकी मिली।
12वहाँ उसे रोक दिया गया और उस से यह पूछा
गया, ''तुम किस पक्ष की हो, कहाँ से आ रही
हो और कहाँ जा रही हो ?'' उसने उत्तर दिया,
''मैं इब्रानी स्त्री हूँ और उनके पास से इसलिए
भागी जा रही हूं कि वे तुम्हारा शिकार हो गये
हैं। 13मैं तुम्हारी सेना के प्रधान सेनापति
होलोफ़रनिस से भेंट करना चाहती हूं, जिससे
मैं उन्हें एक सच्चा समाचार दूं और एक ऐसा
मार्ग बता दूँ, जिस से हो कर जाने पर वह समस्त
पहाड़ी प्रदेश पर अधिकार कर सकते हैं और
उनके किसी सैनिक की क्षति या मृत्यु नहीं
होगी।'' 14जब उन सैनिकों ने उसके शब्द सुने
और यह देखा कि वह अत्यन्त सुन्दर है, तो
उन्होंने उस से कहा, 15''तुमने हमारे स्वामी
से मिलने के लिए पहाड़ से उतर कर अपने
प्राणों की रक्षा की। अब उनके तम्बू में चली
जाओ। हम में से कुछ व्यक्ति तुम्हारे साथ तुम्हें
उनके यहाँ पहुँचा देंगे। 16तुम उनके सामने
खड़ी होने से मत डरना। तुमने अभी जो कहा,
उसे उनके सामने दुहरा देना और वह तुम्हारे
साथ अच्छा व्यवहार करेंगे।''

17 उन्होंने अपने बीच में से एक सौ सैनिक
चुने, और उन्हें उसके और उसकी सेविका के
साथ कर दिया। सैनिकों ने उन को होलोफ़रनिस
के शिविर के पास पहुँचा दिया। 18उसके आने
की खबर पूरे पड़ाव में फैल चुकी थी और बहुत
लोग एकत्र हो गये थे। वे आकर उसके चारों
ओर खड़े हो गये; क्योंकि वह तब तक
होलोफ़रनिस के तम्बू के बाहर प्रतीक्षा करती
रही, जब तक होलोफ़रनिस को उसके आने
की सूचना न मिली। 19लोग उसकी सुन्दरता पर
आश्चर्य प्रकट कर रहे थे और उसके सौंदर्य के
कारण इस्राएलियों की प्रशंसा करते हुए एक-
दूसरे से कह रहे थे, ''कौन इस जाति को तुच्छ
समझ सकता है, जिसके यहाँ ऐसी स्त्रियाँ
विद्यमान हैं ? उनके पुरुषों में किसी को जीवित
रहने देना उचित नहीं है; क्योंकि यदि यह जाति
बच जाएगी, तो सारी दुनिया ही मोहित हो
सकती है !''

20 होलोफ़रनिस के अंगरक्षक और उसके
सब सहायक अधिकारी बाहर आये और
यहूदीत को तम्बू के भीतर ले गये। 21होलोफ़रनिस
अपने पलंग पर एक बैंगनी मसहरी के अन्दर*
लेटा हुआ था। पलंग सोना, चाँदी, मरकत और
अन्य मणियों से अलंकृत था। 22जब उसे यहूदीत
के आने की सूचना दी गयी, तो चाँदी के दीप
धारण किये अनेक सेवकों के पीछे-पीछे वह
ड्योढ़ी में आया। 23जब यहूदीत उसके और
उसके सेवकों के सामने आयी, तो वे सभी
मन-ही-मन उसके सौंदर्य की प्रशंसा करने
लगे। यहूदीत ने उसके सामने मुँह के बल गिर
कर उसे दण्डवत् किया और होलोफ़रनिस के
सेवकों ने उसे खड़ा किया।

यहूदीत और होलोफ़रनिस की भेंट

11 होलोफ़रनिस ने यहूदीत से कहा,
''भद्रे! धीरज धरो; तुम्हारा हृदय भयभीत
न हो। मैंने कभी किसी भी ऐसे मनुष्य का बुरा
नहीं किया है, जो सारी पृथ्वी के राजाधिराज
नबूकदनेस्सर की सेवा करने को तैयार हो।
2यदि पहाड़ी प्रदेश में रहने वाली तुम्हारी जाति
ने मेरा अपमान न किया होता, तो मैं उसके

* अथवा, ''चंदोवे के नीचे''

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विरुद्ध अपना भाला न उठाता। इसका दायित्व
उसी पर है। 3अब तुम बताओ कि तुम उसके
यहाँ से भाग कर हमारी शरण में क्यों आयी हो।
तुम अपने प्राणों की रक्षा के लिए आयी होगी।
साहस करो! तुम इस रात जीवित रहोगी और
बाद में भी। 4कोई भी तुम्हारी हानि नहीं करेगा।
तुम्हारे साथ अच्छा व्यवहार किया जायेगा,
जैसा मेरे स्वामी राजा नबूकदनेस्सर के दासों के
साथ किया जाता है।''

5 यहूदीत ने उस से कहा, ''अपनी दासी का
कहना मानिए और यदि आपकी दासी को कुछ
कहने की आज्ञा मिले, तो मैं इस रात श्रीमान् से
कुछ झूठ नहीं कहूँगी। 6यदि आप अपनी इस
दासी की बात मानेंगे, तो परमेश्वर आपके द्वारा
अपनी योजना पूरी करेगा। स्वामी को जीवन
भर अपने सब कामों में सफलता मिलेगी।
7सारी पृथ्वी के राजा नबूकदनेस्सर की जय,
जिन्होंने आप को प्रत्येक प्राणी का कल्याण
करने भेजा है, उनकी शक्ति की जय! क्योंकि
आपके कारण न केवल मनुष्य, बल्कि जंगल
के जानवर, घरेलू पशु और आकाश के पक्षी
नबूकदनेस्सर की सेवा करेंगे और वे आपकी
सामर्थ्य के प्रभाव से नबूकदनेस्सर और उनके
वंश की छत्रछाया में निवास करेंगे।

8 ''हमने आपकी बुद्धि और व्यवहार-
कुशलता के विषय में सुना है और सारी पृथ्वी
पर यह चर्चा हो रही है कि समस्त साम्राज्य में
आप ही योग्य, ज्ञानी, शक्तिशाली और युद्धकला
में निपुण हैं। 9हम आपकी सभा में अहीओर
के भाषण के शब्द सुन चुके हैं; क्योंकि बेतूलिया
के लोगों ने उसे शरण दी है और उसने उन्हें वह
सब बताया, जो उसने आपके सामने कहा था।
10इसलिए स्वामी और प्रभु! आप उसके शब्दों
की उपेक्षा नहीं करें; उन पर अवश्य ध्यान दें।
वे सच हैं; क्योंकि हमारी जाति को तब तक न
तो दण्डित किया जा सकता है और न उसके
विरुद्ध तलवार उठायी जा सकती है जब तक
वह परमेश्वर के विरुद्ध पाप न करे। 11किन्तु
अब मेरे स्वामी की योजना निष्फल नहीं होगी
और न वह पराजित होगी। बल्कि मेरी जाति
मृत्यु का शिकार होगी और एक महापाप के
जाल में फँसेगी, जिसके द्वारा वह अपने प्रभु का
क्रोध भड़कायेगी। ज्यों ही वह पाप करेगी, वह
आपके द्वारा नष्ट हो जायेगी। 12जब उसके यहाँ
खाद्य-वस्तु का अभाव हुआ और पानी की
कमी हो गयी, तो उसने ऐसे पशुओं को मारने
और ऐसी चीजें खाने का निश्चय किया, जिन्हें
परमेश्वर ने अपनी व्यवस्था में यहूदियों को
खाने से मना किया है। 13उन्होंने अनाज का
प्रथम फल, दाखरस और तेल का दशमांश, जो
समर्पित होकर यरूशलेम में हमारे परमेश्वर की
सेवा करने वाले पुरोहितों के लिए संचित किया
गया है, खाने का निश्चय किया है, जब कि
लोगों में किसी को भी उसे हाथ से स्पर्श तक
करने का अधिकार नहीं है। 14अब उन्होंने दूतों
द्वारा यरूशलेम के धर्मवृद्धों की समिति से वह
सब खाने की अनुमति माँगी है; क्योंकि वहाँ के
निवासियों ने भी वही किया है। 15जिस दिन
मेरी जाति को यह अनुमति मिलेगी और वह
उसका उपयोग करेगी, उसी दिन वह विनाश
के लिए आपके हाथ में दे दी जायेगी।

16 ''यह सब जान कर मैं, आपकी यह
दासी, उनके यहाँ से भाग निकली हूँ। परमेश्वर
ने मुझे इसलिए यहाँ भेजा है कि मैं आपके साथ
ऐसे-ऐसे कार्य करूँ कि उन्हें सुन कर पृथ्वी के
सब लोग दाँतों तले अंगुली दबायें। 17आपकी
दासी ईश्वर-भक्त है और दिन-रात स्वर्ग के
परमेश्वर की सेवा करती रहती है। श्रीमान्! मैं
अब आपके यहाँ रहना चाहती हूँ। आपकी यह
दासी अब रात को घाटी जायेगी और वहाँ
परमेश्वर से प्रार्थना करेगी। वह मुझे वह समय
बता देगा, जब उनके पाप का घड़ा भर जायेगा।
18तब मैं आपके पास आ कर आप को सूचित
करूँगी। इसके बाद आप अपनी सारी सेना ले
कर निकलेंगे। उन में कोई भी आपका सामना
नहीं कर पायेगा। 19मैं स्वयं आप को यहूदा
प्रदेश से होकर यरूशलेम नगर तक ले चलूँगी।
मैं आपका सिंहासन नगर के बीचोबीच स्थापित

11 : 7 बारू 3 : 16 ; दान 2 :38 **11 : 13** गण 18 : 12 **11 : 19** नि 11 : 7 ; गण 27 : 17

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

करूँगी और आप उन्हें उन भेड़ों की तरह
हाँकते जायेंगे, जिनका कोई चरवाहा नहीं होता।
आप पर कोई कुत्ता भी नहीं भूँकेगा। यह बात
मुझ पर पहले से ही प्रकट की गयी और मैं
इसलिए भेजी गयी कि आप को सूचित करूँ।''
20 होलोफ़रनिस और उसके सभी सेवकों
को ये बातें पसन्द आयीं। उन्होंने यहूदीत की
बुद्धि पर चकित हो कर कहा, 21''पृथ्वी के
एक कोने से दूसरे कोने तक कोई भी स्त्री इसके
समान सुन्दर और समझ के साथ बोलने वाली
नहीं है।'' 22होलोफ़रनिस ने उस से कहा,
''ईश्वर ने यह तो अच्छा किया कि उसने
तुम्हारी जाति से तुम्हें निकाल कर यहाँ पहले
ही भेज दिया, जिससे हमारी भुजाओं में बल
आ जाये और मेरे स्वामी की निन्दा करने वालों
का विनाश हो।23तुम रूपवती हो और सुभाषिणी
भी। जैसा तुमने कहा है, यदि तुम वैसा करोगी,
तो तुम्हारा ईश्वर मेरा ईश्वर होगा। तुम राजा
नबूकदनेस्सर के महल में रहोगी और तुम्हारी
कीर्ति पृथ्वी पर फैलेगी।''

12 तब उसने उसे अन्दर वहाँ ले जाने की
आज्ञा दी, जहाँ चाँदी के पात्र रखे थे
और उसे अपनी मेज़ का भोजन परोसने और
अपनी मदिरा पिलाने को कहा। 2परन्तु यहूदीत
ने कहा, ''मैं आपका भोजन नहीं खा सकती।
कहीं ऐसा न हो कि मैं पाप करूँ। मैं जो लायी
हूँ, वही खाऊँगी।'' 3इस पर होलोफ़रनिस ने
उस से कहा, ''परन्तु यदि तुम जो लायी हो, वह
खत्म हो जाये, तो फिर तुम्हें वैसा भोजन कहाँ
से मिलेगा; क्योंकि हमारे यहाँ एक भी व्यक्ति
ऐसा नहीं, जो तुम्हारी जाति का हो और जिसके
पास वही भोजन हो।'' 4यहूदीत ने उस से
कहा, ''श्रीमान्, आश्वस्त रहें। जब तक प्रभु
मेरे द्वारा वह कार्य, जिसको करने का उसने
निश्चय कर रखा है, पूरा न करेगा, तब तक
आपकी दासी के पास जो भोजन है, वह समाप्त
नहीं होगा।''
5 इसके बाद होलोफ़रनिस के सेवकों ने
उसे उसके तम्बू में पहुँचा दिया। वह वहाँ आधी
रात तक सोती रही। 6उसने प्रातःकालीन प्रार्थना
से पहले उठ कर होलोफ़रनिस से कहलवाया
था, ''श्रीमान्, आज्ञा दें कि आपकी दासी प्रार्थना
करने बाहर जा सके।'' 7अतः होलोफ़रनिस ने
पहरेदारों को आज्ञा दी थी कि वे उसे न रोकें।
इस प्रकार वह तीन दिन तक पड़ाव में रही। वह
रोज़ रात बेतूलिया की घाटी जाती और पड़ाव
के जलस्रोत में स्नान करती। 8स्नान करने के
बाद वह इस्राएल के प्रभु-परमेश्वर से प्रार्थना
करती कि वह उसकी जाति के लोगों की विजय
के लिए उसका मार्ग-निर्देशन करे। 9इसके बाद
वह लौट आती और शुद्ध हो कर तम्बू में रहती,
जहाँ सन्ध्याकाल वह अपना भोजन खाती थी।

होलोफ़रनिस का भोज-उत्सव

10 चौथे दिन होलोफ़रनिस ने अपने सेवकों
को एक भोज दिया। उस में एक भी उच्चाधिकारी
को नहीं बुलाया गया। 11उसने अपनी सारी
सम्पत्ति की देखरेख करने वाले कंचुकी बगोआस
से कहा, ''जाओ और उस इब्रानी स्त्री को, जो
तुम्हारी निगरानी में है, हमारे पास आने और
हमारे साथ खाने-पीने को राज़ी करो। 12यह तो
हमारे लिए लज्जा की बात होगी कि हम ऐसी
स्त्री को भोगे बिना उसे यों ही जाने दें। यदि हम
उसे अपने प्रति आकर्षित नहीं करेंगे, तो वह
हमारा मज़ाक उड़ायेगी।'' 13अतः बगोआस
होलोफ़रनिस की उपस्थिति से निकल कर
यहूदीत के पास गया, और उस से बोला,
''सुन्दरी! मेरे स्वामी के पास जाने में संकोच
न कीजिए। उनके यहाँ आपका सम्मान होगा।
आप हमारे साथ आनन्द मनाते हुए मदिरा-पान
कीजिए और नबूकदनेस्सर के महल में रहने
वाली प्रतिष्ठित असीरियाई नागरिकों की पुत्रियों-
सी बनिए।'' 14यहूदीत ने उस से कहा, ''मैं
श्रीमान् का विरोध कैसे कर सकती हूँ? उन्हें जो
अच्छा लगेगा, वह मैं तुरन्त करूँगी और यह मेरे
लिए जीवन भर गौरव की बात होगी।''
15यहूदीत ने उठ कर अपने वस्त्र और अपने
सब नारीसुलभ आभूषण पहन लिये। उसकी
सेविका ने जा कर उसके लिए होलोफ़रनिस के

12 : 2 तोब 1 : 11 ; दान 1 : 8 12 : 4 1 शम 1 : 26 12 : 6 भज 119 : 147

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सामने वह ऊनी कालीन ज़मीन पर बिछा दिया,
जो बगोआस ने उसे उसके दैनिक उपयोग के
लिए दिया था, जिससे वह उस पर बैठ कर
भोजन करे। 16यहूदीत भीतर जा कर बैठ गयी।
उसे देख कर होलोफ़रनिस मुग्ध हो कर
उत्तेजित हो उठा और उससे संभोग करने की
प्रबल कामना करने लगा; क्योंकि उसने जब से
उसे देखा था, तब से वह उसे भ्रष्ट करने का अवसर
ढूँढ़ रहा था। 17होलोफ़रनिस ने उससे कहा,
"पिओ और हमारे साथ आनन्द मनाओ।"
18यहूदीत ने कहा, "श्रीमान्! मैं ज़रूर पिऊँगी,
क्योंकि मेरे जन्म के बाद मुझे किसी भी दिन
आज की तरह सम्मान नहीं मिला।*"

19 तब होलोफ़रनिस के सामने उसने वह
खाया-पिया, जो उसकी सेविका ने उसके लिए
तैयार किया था। 20होलोफ़रनिस उसके कारण
बहुत प्रसन्न था। उसने बहुत अधिक मदिरा पी
— इतनी अधिक, जितनी उसने जन्म से आज
तक किसी भी दिन नहीं पी थी।

यहूदीत द्वारा होलोफ़रनिस की हत्या

13 काफ़ी देर बाद उसके सेवक उठ कर
चले गये और बगोआस ने बाहर से
तम्बू को बन्द कर दिया और होलोफ़रनिस के
अंगरक्षकों को विदा किया। सब सैनिक जा कर
अपनी-अपनी शय्या पर लेट गये; वे थक गये
थे, क्योंकि भोज-उत्सव बहुत देर तक होता
रहा था। 2यहूदीत तम्बू में अकेली रह गयी।
होलोफ़रनिस मद्यपान से बिलकुल बेहोश हो
कर अपनी शय्या पर पड़ा था। 3यहूदीत ने अपनी
सेविका को आज्ञा दे रखी थी कि वह शयनकक्ष
के निकट रहे और वह जैसे हर दिन करती थी,
वैसे ही उसके बाहर निकलने की प्रतीक्षा करे।
उसने उस से कहा था कि वह प्रार्थना करने
जायेगी। बगोआस से भी उसने यही कहा था।

4 अब होलोफ़रनिस के पास से सब लोग
जा चुके थे। क्या छोटा क्या बड़ा — कोई भी
उसके शयन-कक्ष में नहीं रह गया था। यहूदीत
ने उसके सिरहाने के पास खड़ी होकर कहा,
"प्रभु! सर्वशक्तिमान परमेश्वर! यरूशलेम की
महिमा के लिए, इसी घड़ी मेरे हाथों के कार्य
पर ध्यान दे; 5क्योंकि अब अपनी विरासत की
सहायता करने और उन शत्रुओं के विनाश के
लिए मेरी योजना पूरी करने का समय आ गया,
जिन्होंने हम लोगों पर आक्रमण किया है।"
6उसने होलोफ़रनिस के सिरहाने के पाये के
पास जा कर उस पर से उसकी तलवार उठा
ली। 7फिर पलंग के निकट जा कर और उसके
सिर के बाल पकड़ कर बोली, "इस्राएल के
प्रभु-परमेश्वर! मुझे आज शक्ति प्रदान कर।"
8इसके बाद उसने पूरी शक्ति से उसकी गरदन
पर तलवार से दो बार प्रहार किया और उसका
सिर धड़ से अलग कर दिया। 9तब उसने उसका
धड़ पलंग से नीचे गिरा दिया और डण्डों पर
से मसहरी खींच ली। इसके तुरन्त बाद वह
बाहर निकली और उसने होलोफ़रनिस का
सिर अपनी सेविका को दिया। 10सेविका ने उसे
भोजन का सामान रखने की अपनी थैली में
डाल लिया। इसके बाद वे दोनों पहले की ही
तरह प्रार्थना करने के बहाने निकल पड़ीं।
पड़ाव पार कर वे घाटी के किनारे-किनारे गयीं
और बेतूलिया के पहाड़ पर चढ़ कर उसके
प्रवेश-द्वार पर पहुँचीं।

बेतूलिया में वापसी

11 यहूदीत ने दूर से ही प्रवेश-द्वार के
पहरेदारों को पुकारा, "खोलिए, फाटक खोलिए!
परमेश्वर, हमारा परमेश्वर सचमुच हमारे साथ
है, जिससे वह इस्राएल में अपनी सामर्थ्य और
हमारे शत्रुओं के विरुद्ध अपना बाहुबल प्रदर्शित
करे, जैसा कि उसने आज किया है।" 12उसके
नगरवासी उसकी आवाज पहचान कर जल्दी-
जल्दी नगर के प्रवेश-द्वार की ओर दौड़े और
उन्होंने नगर के धर्मवृद्धों को बुलाया। 13छोटे
से बड़े तक, सब-के-सब एकत्र हो गये!
क्योंकि उन्हें यह बात असम्भव-जैसी लगी कि
वह लौट आयी है। उन्होंने नगर का प्रवेश-द्वार
खोल कर उन्हें अन्दर आ जाने दिया और उजाले

---

* अथवा "आज का दिन मेरे लिए सब से अधिक मूल्यवान है।"

12 : 20 प्रव 19 : 2 13 : 8 1 शम 17 : 51

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

के लिए आग जलायी। वे उन्हें घेर कर खड़े हो
गये। [14]यहूदीत ने उच्चस्वर में उन से कहा,
"परमेश्वर की स्तुति करो, उसका स्तुतिगान
करो; क्योंकि उसने इस्राएल के घराने पर से
अपनी कृपा दृष्टि नहीं हटायी, बल्कि आज रात
मेरे हाथ से हमारे शत्रुओं को रौंदा है।"
15 इसके बाद उसने होलोफ़रनिस का सिर
थैली से निकाला और उसे दिखलाते हुए उन
से कहा, "यह असीरियाई सेना के प्रधान
सेनापति होलोफ़रनिस का सिर है और यह वह
मसहरी है, जिसके अन्दर वह मदिरा पी कर
बेहोश पड़ा था। प्रभु ने एक स्त्री के हाथ से उसे
मारा है। [16]उस प्रभु की जय, जिसने मार्ग में मेरी
रक्षा की! मेरे सौन्दर्य ने उसे मुग्ध किया और
वह उसके विनाश का कारण बना। वह मुझे भ्रष्ट
और कलंकित करने के लिए मेरे साथ कोई पाप
नहीं कर पाया।"
17 सब लोग बड़े विस्मित हुए और
नतमस्तक हो कर परमेश्वर की आराधना करने
लगे। वे एक स्वर में यह कहने लगे, "हमारे
परमेश्वर! धन्य है तू! आज तूने अपनी प्रजा के
शत्रुओं को नीचा दिखाया है।"
18 तब उज्जीया ने यहूदीत से कहा, "पुत्री!
तुम सर्वोच्च परमेश्वर की कृपापात्री हो। तुम
पृथ्वी की सब नारियों में धन्य हो। धन्य है
हमारा प्रभु-परमेश्वर, स्वर्ग तथा पृथ्वी का
सृष्टिकर्ता! उसी ने हमारे शत्रुओं के नेता का
सिर काटने में तुम्हें सफलता दी है। [19]जब लोग
हमारे परमेश्वर की सामर्थ्य का स्मरण करेंगे,
तो वे अनन्त काल तक तुम्हारी प्रशंसा+ करेंगे।
[20]परमेश्वर तुम्हारी कीर्ति सदा बनाये रखे और
तुम्हें आशिष प्रदान करता रहे; क्योंकि अपनी
जाति की दुर्गति देख कर तुमने अपने प्राणों की
चिन्ता नहीं की, बल्कि तुम हमारी विपत्ति दूर
करने के लिए हमारे परमेश्वर द्वारा निर्दिष्ट मार्ग
पर निस्संकोच आगे बढ़ीं।" और सारी जनता
बोल उठी, "आमेन! आमेन!"

यहूदीत का परामर्श

14 अब यहूदीत ने लोगों से कहा, "भाइयो!
मेरी बात मानिए। यह सिर अपने नगर
के परकोटे पर लटका दीजिए। [2]सबेरे जैसे ही
धरती पर सूर्योदय हो, आप में से प्रत्येक वीर
पुरुष अपने अस्त्र-शस्त्र धारण कर नगर के
बाहर जाये और ऐसा दिखाइए, मानो आप
मैदान में असीरियों की चौकियों पर आक्रमण
करने वाले हों; [3]परन्तु आप लोग नीचे नहीं
उतरेंगे। यह देख कर वे लोग अपने अस्त्र-शस्त्र
ले कर असीरियाई सेना के सेनापतियों को
जगाने अपने पड़ाव पर जायेंगे। वे होलोफ़रनिस
के तम्बू की ओर दौड़ेंगे, पर उसे नहीं देख
पायेंगे। तब वे भयभीत होंगे और आपके सामने
से भाग खड़े होंगे। [4]इसके बाद आप और वे
सभी, जो इस्राएल देश में रहते हैं, उनका पीछा
करेंगे और वे जहाँ कहीं जायेंगे, उन्हें मार
गिरायेंगे।
5 "किन्तु ऐसा करने के पहले अम्मोनी
अहीओर को मेरे पास बुलाइए। वह उस
आदमी को देख कर पहचाने, जो इस्राएल के
घराने की निन्दा करता था और जिसने अहीओर
को हमारे यहाँ यह सोच कर भेजा था, जैसे वह
उसे मृत्यु के मुख में भेज रहा हो।"
6 अहीओर को उज्जीया के घर से बुलाया
गया। वह आया और उसने जैसे ही होलोफ़रनिस
का सिर जनसभा में किसी व्यक्ति के हाथ में
देखा, वह मुँह के बल गिरा और बेहोश हो
गया। [7]उसे उठाया गया और तब वह यहूदीत
के पैरों पर गिर पड़ा और यह कहते हुए उस
को प्रणाम किया, "धन्य है आप — यहूदा के
घर-घर में और सब राष्ट्रों में! वे सब आपका
नाम सुन कर घबरा जायेंगे।
8 "अब मुझे बताइए कि आपने उन दिनों
क्या-क्या किया।" तब जिस समय से यहूदीत
बाहर गयी थी, उस समय से लेकर अब तक,
जब वह उन से बोल रही है, उसने लोगों के

+ पाठांतर, "तुम्हारे कारण आशा"

13 : 14 2 शम 7 : 15 13 : 16 रन्त 3 : 13 13 : 17 नि 4 : 31 13 : 18 शास 5 : 14; लू 1 : 42 14 : 1 2 मक 15 : 35 14 : 7 शास 5 : 14

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सामने वह सब बताया, जो उसने किया था। 9जब
उसकी बात समाप्त हुई, तो सब लोग ऊँचे स्वर
में जयकार करने लगे और उनका नगर आनन्द
के स्वरों से गूँज उठा। 10इस्राएल के परमेश्वर
का यह कार्य देख अहीओर को परमेश्वर पर
दृढ़ विश्वास हो गया। उसने अपना खतना-
संस्कार करवाया और वह आज तक इस्राएल
के घराने का सदस्य है।

होलोफ़रनिस की हत्या का पता लगा

11 जैसे ही पौ फटने लगी, उन्होंने
होलोफ़रनिस का सिर परकोटे से लटका दिया
और सब इस्राएली पुरुष अपने-अपने अस्त्र-
शस्त्र धारण कर, अपने-अपने दलों के अनुसार
पर्वत से नीचे की ओर जाने वाले मार्गों पर चल
पड़े। 12जब असीरियों ने उन्हें देखा, तो उन्होंने
अपने दल-नेताओं को सूचित किया और दल
नेताओं ने अपने सेनापतियों, अध्यक्षों और सब
पदाधिकारियों को सूचित किया। 13उन्होंने
होलोफरनिस के तम्बू के पास एकत्र हो कर
उसके प्रबन्धक बगोआस से कहा, "हमारे
स्वामी को जगाइए; क्योंकि यहूदियों ने हम से
युद्ध करने के लिए पहाड़ से उतरने का साहस
किया है, जिससे उनका सर्वनाश हो जाये।"
14इस पर बगोआस ने भीतर जा कर तम्बू के
परदे के पास ताली बजायी। वह सोचता था कि
होलोफरनिस यहूदीत के साथ सो रहा है।
15लेकिन जब किसी ने कोई उत्तर नहीं दिया,
तब वह परदा खोल कर शयन-कक्ष के भीतर
गया। उसने देखा कि होलोफ़रनिस पाव-दान
पर नंगा* और मरा हुआ पड़ा है और उसका
सिर गायब है। 16तब वह ऊँचे स्वर से चिल्ला
उठा तथा रोता-पीटता और आहें भरता रहा।
वह ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला कर अपने वस्त्र
फाड़ने लगा। 17इसके बाद वह उस तम्बू में
गया, जहाँ यहूदीत रहती थी; किन्तु वह वहाँ
नहीं थी। फिर वह लोगों के पास बाहर आ कर
चिल्ला उठा, 18"उन टुकड़खोरों ने विश्वासघात
किया है! एक इब्रानी स्त्री ने राजा नबूकदनेस्सर
के राजवंश को अपमानित किया है। देखो,
होलोफ़रनिस भूमि पर पड़े हैं और उनके धड़
से सिर गायब है।" 19जब असीरियाई सेना के
अध्यक्षों ने ये शब्द सुने, तो उन्होंने अपने वस्त्र
फाड़ डाले और वे बहुत घबरा गये। उनकी
चिल्लाहट और उनका रोना-पीटना पड़ाव में
सब जगह सुनाई पड़ रहा था।

असीरियों का पलायन

15 जो लोग अभी तक तम्बुओं में थे, वे इस
घटना के विषय में सुन कर दंग रह गये।
2वे इतने भयभीत और आतंकित हो उठे कि
कोई भी अपने सैनिक दल के साथियों के साथ
नहीं रहा। सब-के-सब तितर-बितर होकर
मैदान और पहाड़ी प्रदेश के सब मार्गों पर भाग
निकले। 3वे लोग भी भाग निकले, जो बेतूलिया
के आसपास के पर्वतों पर तम्बू डाले पड़े थे।
अब सब इस्राएली सैनिक उन पर टूट पड़े।
4उज्जीया ने बतोमेस्ताईम, बेबय, खोबय,
कोला और समस्त इस्राएल में दूतों द्वारा इन
घटनाओं की सूचना भेजी और आदेश दिया कि
सब लोग शत्रुओं पर आक्रमण कर उनका
संहार करें। 5इस्राएलियों ने जैसे ही यह सुना,
वैसे ही वे सभी एक साथ उन पर टूट पड़े, और
उन को खोबा तक खदेड़ दिया। यरूशलेम और
पहाड़ी प्रदेश के निवासी भी आ पहुँचे; क्योंकि
उन्हें शत्रुओं के पड़ाव की घटनाओं की सूचना
दे दी गयी थी। गिलआद और गलील के
निवासी भी अगल-बगल उन पर कठोर प्रहार
करते हुए उन्हें दमिश्क और उसके सीमांतों
तक खदेड़ते रहे। 6बेतूलिया के निवासियों ने
असीरियों के पड़ाव में घुस कर उन्हें लूटा और
उनके हाथ बहुत सारा धन लगा। 7युद्ध से लौटने
वाले इस्राएलियों ने शेष सामान हथिया लिया।
पहाड़ी प्रदेश और मैदान के गाँवों और बस्तियों
के लोगों को भी लूट का बहुत धन मिला,
क्योंकि वहाँ अपार सामग्री पड़ी हुई थी।

यहूदीत को बधाइयाँ

8महापुरोहित योआकीम और यरूशलेम में

---

* अथवा, "अंग पसारकर"

14 : 10 उत 17 : 23 **14 : 14 - 15** शास 3 : 24-25 **14 : 16** उत 37 : 29 **15 : 5** 1 मक 7 : 46

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रहने वाले धर्मवृद्ध यह देखने आये कि प्रभु ने
इस्राएल के लिए क्या भला कार्य किया है और
इसलिए भी कि वे यहूदीत के दर्शन करें और
उसे बधाई दें। 9उसके पास आ कर सब ने एक
स्वर में उसे आशीर्वाद देते हुए कहा, "तुम
यरूशलेम की महिमा, इस्राएल का गौरव और
हमारी जाति की कीर्ति हो। 10तुमने यह सब
अपने ही हाथ से किया। तुमने इस्राएल का
कल्याण किया और परमेश्वर तुम्हारे कार्य से
प्रसन्न है। भद्रे! सर्वशक्तिमान परमेश्वर की
आशिष तुम्हें अनन्त काल तक प्राप्त हो!" इस
पर सारी जनता ने कहा, "आमेन!"

11 जनता तीस दिनों तक पड़ाव लूटती रही।
लोगों ने यहूदीत को होलोफ़रनिस का तम्बू,
उसकी समस्त चाँदी, पलंग, पात्र और सारा
सामान दे दिया। उसने यह सब स्वीकार किया
और अपनी गाड़ियों पर लदवा कर उन में अपने
खच्चर जुतवाये। 12इस्राएल की सब स्त्रियाँ
उसे देखने के लिए एकत्र हुईं। उन्होंने उसकी
प्रशंसा की और उसके सम्मान में नृत्य किया।
यहूदीत ने हाथ से टहनियाँ तोड़ कर अपने साथ
की स्त्रियों को दीं 13और उन सब ने जैतून की
टहनियों का मुकुट पहना। यहूदीत नृत्य करती
हुई सब स्त्रियों के आगे-आगे चल रही थी,
और इस्राएल के सब सैनिक अस्त्र-शस्त्र धारण
किये, मुकुट पहने और भजन गाते हुए उनके
पीछे-पीछे चल रहे थे।

यहूदीत का विजय-गान

14 तब यहूदीत सब इस्राएलियों के सामने
धन्यवाद का यह गीत गाने लगी और सब लोग
प्रभु का यह स्तुतिगान ऊँचे स्वर में गाने लगे।

16 यहूदीत ने कहा:
"डफली बजाते हुए मेरे परमेश्वर के
आदर में भजन गाओ,
झाँझ बजाते हुए मेरे प्रभु के आदर में गीत
गाओ,
उसके लिए स्तुति के भजन की रचना करो,
उसका नाम लेते हुए उसका यशोगान करो।
2प्रभु ही ऐसा ईश्वर है,
जो युद्ध समाप्त करने वाला है,
जो अपनी प्रजा के बीच में
अपना पड़ाव डालता है,
जिससे वह मेरा पीछा करने वालों के हाथ
से मुझे छुड़ाये।
3उत्तर के पर्वतों की ओर से
असीरियाई सेना आई,
वह लाखों की संख्या में सैन्य दल ले कर
आई।
असीरियों के समूह ने नदियों का प्रवाह
रोका,
उनकी घुड़सवार-सेना ने पहाड़ों को ढक
दिया।
4सेनापति ने कहा कि वह मेरा देश जला कर
उजाड़ेगा।
मेरे यहाँ के युवकों को तलवार से मौत के
घाट उतारेगा,
मेरे दुधमुँहे बच्चों को भूमि पर पटकेगा,
मेरे शिशुओं को चुरा कर ले जायेगा
और मेरी कन्याओं का अपहरण करेगा।
5सर्वशक्तिमान प्रभु ने उन लोगों का तिरस्कार
किया,
उसने एक स्त्री के हाथ से उनको पराजित
किया।
6उनका अध्यक्ष युवकों से नहीं मारा गया,
उस पर दानव के पुत्रों ने प्रहार नहीं किया,
उस पर दैत्याकार वीर विजयी नहीं हुए,
बल्कि मरारी की पुत्री यहूदीत ने
अपने सौन्दर्य द्वारा उसे पराजित किया।
7इस्राएल के पीड़ितों की रक्षा के लिए उसने
अपने वैधव्य के वस्त्र उतारे,
सुगन्धित तेल से अपने मुख का विलेपन किया,
8अपने केशों में पट्टी* बाँधी
और सेनापति को लुभाने के लिए
छालटी के वस्त्र धारण किये।
9उसकी चप्पल ने उसकी आँखें ललचायीं,
उसके सौन्दर्य ने उसका मन मुग्ध किया

---

* अथवा, "किरीट"।

15 : 12 शास 11 : 34 ; 2 मक 10 : 7 **16 : 2** भज 150 : 4–5 **16 : 3** भज 34 : 7 **16 : 7** बारू 3 : 26

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

और तलवार ने उसका सिर काट दिया।
10फ़ारसी लोग उसकी निर्भीकता पर चकित हो गये,
मादी लोग उसका साहस देख कर घबरा गये।
11मेरे दीन-हीन और निर्बल देशभाई
ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगे
और शत्रु भयभीत हो उठे।
वे ज़ोर-ज़ोर से ललकारने लगे
और शत्रु भाग खड़े हुए।
12मेरी दास-जाति के पुत्रों ने उन्हें छेद दिया,
शत्रु कायरों की तरह मारे गये।
मेरे प्रभु की सेना ने उनका विनाश किया।

13"मैं अपने परमेश्वर के आदर में नया गीत गाऊँगी।
प्रभु! तू महान् और महिमान्वित है,
तेरी सामर्थ्य आश्चर्यजनक और अविजेय है।
14समस्त सृष्टि तेरी सेवा करे,
क्योंकि तेरे शब्द-मात्र से सब कुछ अस्तित्व में आया है।
तूने अपना आत्मा भेजा
और सब कुछ बन गया।
तेरी वाणी का विरोध कोई भी नहीं कर सकता।
15समुद्र और पर्वत के आधार हिल जायेंगे,
तेरे आगमन पर चट्टानें मोम की तरह पिघल जायेंगी,
परन्तु जो तुझ पर श्रद्धा रखते हैं,
तू उन पर दया करेगा।
16तेरी दृष्टि में हर सुगन्धयुक्त बलि तुच्छ है
और अग्नि-बलि की सारी चरबी नगण्य।
परन्तु जो प्रभु पर श्रद्धा रखता है,
वह उसकी दृष्टि में महान् है।

17 "धिक्कार मेरी जाति पर आक्रमण करने वाले राष्ट्रों को!
सर्वशक्तिमान प्रभु उन से बदला चुकायेगा,
वह न्याय के दिन उन्हें दण्डित करेगा,
वह उनके शरीर में आग और कीड़े भर देगा
और वे अनन्त काल तक जलते और दुःख भोगते रहेंगे।"

यरूशलेम में विजयोत्सव

18 यरूशलेम पहुँच कर उन्होंने परमेश्वर
की आराधना की। लोगों ने अपने को शुद्ध
किया और अपनी अग्नि-बलि, स्वेच्छा-बलि
तथा भेंट चढ़ायी। 19यहूदीत ने लोगों द्वारा
अपने को दिये होलोफ़रनिस के सब पात्र
अर्पित किये और उस मसहरी को, जिसे उसने
होलोफ़रनिस के शयन-कक्ष से ले लिया था,
मन्नत के रूप में चढ़ाया। 20लोग यरूशलेम में,
पवित्र स्थान पर, तीन महीने तक आनन्द मनाते
रहे और यहूदीत उनके साथ रही।

यहूदीत के शेष दिन

21 इसके बाद सब अपने-अपने पैतृक
भूमि-भाग पर लौट गये। यहूदीत भी बेतूलिया
नगर लौटी और अपने भूमि-भाग पर रहने
लगी। वह जीवन भर पूरे संसार में प्रसिद्ध रही।
22कई पुरुषों ने उस से विवाह करना चाहा,
किन्तु जब से उसके पति मनश्शे की मृत्यु हुई
और वह अपने पूर्वजों से जा मिला, तब से
उसका किसी पुरुष से संसर्ग नहीं हुआ।
23उसकी प्रसिद्धि बढ़ती गयी और वह अपने
पति मनश्शे के घर में एक सौ पाँच वर्ष तक
जीवित रही। उसने अपनी सेविका को विमुक्त
कर दिया। बेतूलिया में ही यहूदीत का देहान्त
हुआ और वह अपने पति मनश्शे की गुफा में
दफ़नायी गयी। 24इस्राएलियों ने सात दिन तक
उसके लिए शोक मनाया। अपनी मृत्यु के पूर्व
उसने अपने पति मनश्शे के और अपने कुटुम्ब
के सम्बन्धियों के बीच अपनी सम्पत्ति बांट दी।
25यहूदीत के जीवनकाल में और उसकी मृत्यु
के बाद भी बहुत समय तक ऐसा कोई शत्रु नहीं
हुआ, जिसने इस्राएलियों को संत्रस्त किया हो।

---

16 : 13 भज 96 : 1 **16 : 14** भज 104 : 30 **16 : 16** प्रव 10 : 24 ; यश 15 : 22 ; भज 51 : 16; होशे 6 : 6
16 : 17 अय्य 14 : 22

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शेष-एस्तर

(यूनानी एस्तर-ग्रंथ के अन्तर्गत)

पुस्तक-परिचय

यहूदियों के बृहद् यूनानी बाइबिल अनुवाद में मूल इब्रानी एस्तर-ग्रंथ का यूनानी अनुवाद भी किया गया है। लेकिन उस यूनानी एस्तर-ग्रंथ के पाठ में कुछ भिन्न अथवा अतिरिक्त अंश मिलते हैं। एस्तर-ग्रंथ के इब्रानी और यूनानी रूपों में प्राय: एक ही घटना-क्रम है, यद्यपि नामों के स्वरूप में थोड़ा-बहुत अन्तर है। यूनानी एस्तर-ग्रंथ में धार्मिक दृष्टिकोण अधिक स्पष्ट है।

यूनानी एस्तर-ग्रंथ के अतिरिक्त अंश ''शेष-एस्तर'' कहलाते हैं। उन्हें इब्रानी एस्तर-ग्रंथ के साथ पढ़ने के लिए छ: अध्यायों में रखा जाता है :

अध्याय क : प्रस्तावना (इब्रानी एस्तर-ग्रंथ के प्रथम अध्याय के पहले)।
अध्याय ख: राजाज्ञा का प्रथम प्रतिलेख (अध्याय 3 : 13 के बाद)।
अध्याय ग : प्रार्थनाएं (अध्याय 4 : 17 के बाद)।
अध्याय घ : रानी एस्तर का साहस (अध्याय 5 : 1-2 के स्थान पर)।
अध्याय ङ: राजाज्ञा का दूसरा प्रतिलेख (अध्याय 8 : 12 के बाद)।
अध्याय च : उपसंहार (अध्याय 10 : 3 के बाद)।

सुविधा के लिए उन छ: अतिरिक्त अध्यायों को यहां सम्पूर्ण यूनानी एस्तर-ग्रंथ के अन्तर्गत प्रस्तुत किया गया है। रानी एस्तर की कथा का रोचक घटनाक्रम इब्रानी एस्तर-ग्रंथ के पुस्तक-परिचय में देखें।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

प्रस्तावना	क : 1 — 17
एस्तर का भाग्योदय	[1] : 1 — [2] : 23
हामान द्वारा यहूदियों के बिनाश का षड्‌यंत्र	[3] : 1 — [5] : 14
यहूदियों का प्रतिरोध	[6] : 1 — [10] : 3
उपसंहार	च : 1 — 11

मोरदकय का स्वप्न

क सम्राट क्षयर्ष महान के शासनकाल
के दूसरे वर्ष, नीसान महीने के पहले
दिन, मोरदकय ने एक स्वप्न देखा। मोरदकय
याईर का पुत्र था, याईर शिमई का और शिमई
कीश का। वह बिन्यामिन कुल का था। 2वह
शूशन नगर में रहने वाला यहूदी था; वह
प्रतिष्ठित नागरिक था और राजा के दरबार में
सेवक था। 3वह उन बन्दियों में एक था, जिन्हें
बेबीलोन का राजा नबूकदनेस्सर यहूदा राज्य के
राजा यहोयाकीन के साथ यरूशलेम से ले
आया था।

मोरदकय का स्वप्न यह था : 4कोलाहल और
हंगामा सुनाई पड़ा, बादलों का गर्जन, भूकम्प
और पृथ्वी पर बड़ा उपद्रव। 5फिर दो बड़े पंखदार
सर्प दिखाई दिये, जो एक दूसरे से लड़ने को
तैयार थे। वे ज़ोर-ज़ोर से फुफकारते थे।
6उनकी फुफकार सुनते ही सभी राष्ट्र धर्मी राष्ट्र
के लोगों से युद्ध करने को तैयार हो गये। 7वह
अन्धकारमय और विषादपूर्ण दिन था। पृथ्वी
पर विपत्ति और घबराहट, दु:ख और भारी
आतंक था! 8धर्मी राष्ट्र के सभी लोग आने

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वाली विपत्तियों के कारण भयभीत हो कर अपने विनाश की आशंका से परमेश्वर की दुहाई देने लगे। 9उनकी पुकार पर मानो एक छोटे स्रोत से एक बड़ी नदी, एक उमड़ती हुई जलधारा फूट पड़ी। 10सूर्योदय के साथ प्रकाश हुआ। दीनहीन लोग प्रतिष्ठित किये गये और वे शक्तिशाली लोगों को निगल गये।

11 जागने पर मोरदकय उस स्वप्न और परमेश्वर की योजनाओं पर अपना पूरा ध्यान केन्द्रित कर, दिन भर उसका अर्थ तरह-तरह से समझने का प्रयत्न करता रहा।

राजा के विरुद्ध षड्यन्त्र

12 उस समय मोरदकय बिगतान और तेरेश के साथ, जो राजा के कंचुकी* और महल-रक्षक थे, प्रांगण में विश्राम कर रहा था। 13उसने उनकी गुप्त बातचीत सुनी और उनके षड्यन्त्रों की छानबीन करने पर उसे यह पता चला कि वे सम्राट क्षयर्ष का वध करना चाहते हैं। उसने सम्राट को उनके विषय में यह सूचना दी। 14सम्राट ने उन दो कंचुकियों से पूछताछ करायी और उनके दोष स्वीकार करने पर उनका वध कराया। 15उसने इस घटना का उल्लेख वर्णन-ग्रन्थ में कराया। स्वयं मोरदकय ने भी इसे अपने लिए लिखा। 16इसके बाद सम्राट ने मोरदकय को राजकीय सेवा में नियुक्त किया और पुरस्कार के रूप में उसे उपहार दिये। 17हम्मदाता का पुत्र अगागी+ हामान, जो सम्राट का प्रिय पात्र था, मोरदकय और उसकी जाति के लोगों को उन दो राजकीय कंचुकियों के कारण हानि पहुँचाने का विचार करने लगा।

रानी वशती द्वारा सम्राट की आज्ञा का उल्लंघन

[1] सम्राट क्षयर्ष के समय की घटना है, जिसने भारतवर्ष से इथियोपिआ देश तक एक सौ सत्ताइस प्रदेशों पर राज्य किया। 2जब वह शूशन नगर में अपने सिंहासन पर विराजमान था, 3तो उसने अपने शासन के तीसरे वर्ष में अपने राजमित्रों, विदेशी अतिथियों, फारस और मादय देशों के सामन्तों और क्षत्रपों को एक महाभोज दिया। 4इसके बाद वह एक सौ अस्सी दिनों तक उन्हें अपने साम्राज्य का वैभव और अपने भव्य विलास का प्रताप दिखाता रहा। 5विवाह-उत्सव के दिन पूरे हो जाने पर सम्राट ने शूशन नगर में रहने वाले, सभी कौम के लोगों के लिए राजमहल के प्रांगण में छह दिन के भोज का प्रबंध किया। 6वहां सोने और चाँदी की छड़ों में, संगमरमर और सिलखड़ी के खम्भों में, बैंगनी रंग की छालटी की डोरियों पर सफेद रंग के महीन सूती परदे टंगे थे। मरकत तथा पीले-काले संगमरमर के फर्श पर सोने और चांदी के पलंग रखे गये थे। चमकदार बेल-बूटेदार चादरें बिछायी गयीं, जिनके किनारों पर गुलाब काढ़े हुए थे। 7मेज़ पर सोने और चांदी के पात्र थे। लाल माणिक्य से सुशोभित एक चषक का मूल्य तीस हजार चांदी के सिक्कों से कम नहीं था! भरपूर अत्युत्तम मदिरा परोसी जा रही थी, जिसको सम्राट ने भी पिया। 8खाने-पीने में कोई रोक-टोक नहीं थी; क्योंकि सम्राट ने महल के भंडारियों को आज्ञा दे रखी थी कि उन्हें उसकी तथा अतिथियों की रुचि पर ध्यान देना चाहिए। 9रानी वशती ने भी सम्राट क्षयर्ष के महल में स्त्रियों को भोज दिया।

10 सातवें दिन सम्राट आनन्दमग्न था। उसने अपने यहां सेवा करने वाले सात कंचुकियों को, अर्थात् हामान, मजान, तेरेश, बोरजे, जथोलथा, अबतजा और थरबा को, आज्ञा दी 11कि वे रानी वशती को सिंहासन के सामने लाएं ताकि वह उसे राजकीय मुकुट पहना सके। सम्राट अपने पदाधिकारियों और विदेशी अतिथियों को उसका सौन्दर्य दिखाना चाहता था; क्योंकि वह बहुत ही सुन्दर थी। 12परन्तु रानी वशती ने कंचुकियों के साथ चलना अस्वीकार कर दिया। इस पर सम्राट अप्रसन्न हुआ और उसका क्रोध भड़क उठा। 13उसने राजमित्रों से कहा, "रानी वशती ने मेरी बात नहीं मानी। अब तुम कानून को ध्यान में रखते हुए निर्णय दो।"

---

* अथवा, "खोजा" + मूल में "बुगयुस", अर्थात् बड़बोल, शेखी-बाज़।

क : 1-13 2 रा 24 : 10-16 **क : 7** योएल 2 : 2 **क : 11** शेष एस च : 2-6 **[1] : 1-2** एज्र 4 : 6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

14अत: अर्केसयुस, सर्सथयुस और मलिसेअर
आए। वे तीनों फारस और मादय देशों के
प्रशासक थे और सम्राट से कभी दूर नहीं रहते
थे। वे उसके निकट प्रमुख आसन पर ही बैठते
थे। 15उन्होंने सम्राट को बताया कि कानून के
अनुसार रानी वशती के लिए क्या करना
चाहिए, क्योंकि उसने उस आदेश का पालन
नहीं किया, जिसे सम्राट ने कंचुकियों के द्वारा
दिया था। 16तब मुखयुस ने सम्राट और प्रशासकों
के सामने आकर कहा, "रानी वशती ने न
केवल महाराज के विरुद्ध अपराध किया,
बल्कि सभी प्रशासकों और राज्यपालों के
विरुद्ध भी!" 17-18मुखयुस ने वे शब्द दुहराये
जो रानी वशती ने सम्राट को प्रत्युत्तर देते हुए
कहे थे। तत्पश्चात् उसने अपना विचार प्रकट
किया, "रानी के ये शब्द जब फारस और मादय
के प्रशासकों की स्त्रियों के कानों में पड़ेंगे, तब
वे भी अपने-अपने पतियों को ऐसा तिरस्कार
करेंगी और उन्हें घमण्डपूर्ण उत्तर देंगी। 19यदि
महाराज उचित समझें, तो राजाज्ञा प्रसारित करें
जो मादियों और फारसियों के विधि-ग्रंथ में
लिखी जाए। कोई दूसरा उपाय नहीं दीखता।
आज से महारानी फिर कभी महाराज के
सम्मुख न आएं। पटरानी का पद आप किसी
अन्य महिला को दें, जो अधिक योग्य हो।
20जब महाराज का यह न्याय-निर्णय समस्त
साम्राज्य में सुनाया जाएगा, तब सब पत्नियां
अपने-अपने पतियों का सम्मान करेंगी—चाहे
वे धनवान हों या निर्धन।" 21सम्राट और
प्रशासकों को यह परामर्श उत्तम लगा और
सम्राट ने मुखयुस के कथनानुसार कदम उठाया।
22उसने समस्त साम्राज्य में, प्रत्येक प्रदेश की
अपनी भाषा में, राजाज्ञा की घोषणा करायी,
जिससे हर घर में दंपति सहम गये।

रानी के पद पर एस्तर

[2] कुछ दिन बीत जाने पर सम्राट क्षयर्ष
का क्रोध शान्त हुआ। उसने वशती का
नाम तक नहीं लिया, क्योंकि उसे स्मरण था कि
राजाज्ञा के अनुसार उसने वशती को क्या दण्ड
दिया है। 2सम्राट के सेवकों ने सुझाव दिया,
"महाराज के लिए सुन्दर-सुन्दर कुंवारी कन्याएं
ढूँढ़ी जाएं। 3महाराज साम्राज्य के सब प्रदेशों में
पदाधिकारियों को नियुक्त करें, जो सुन्दर
कुंवारी कन्याओं का पता लगाकर उन्हें शूशन
नगर के रनिवास में ले आएं। उन्हें रनिवास-
संरक्षक, मुख्य कंचुकी को सौंप दिया जाए।
सब कन्याओं को प्रसाधन की सामग्री दी जाए
और हर एक की आवश्यकताओं के लिए उत्तम
प्रबंध किया जाए। 4महाराज को जो कन्या
पसंद आ जाए, वही वशती के स्थान पर पटरानी
बने।" सम्राट को यह सुझाव अच्छा लगा और
उसने यही किया।

5 राजधानी शूशन में एक यहूदी रहता था।
उसका नाम मोरदकय था। वह याईर का पुत्र
था, याईर शिमई का और शिमई कीश का। वह
बिन्यामिन कुल का था। 6वह यरूशलेम के
उन्हीं बन्दियों में से एक था, जिन्हें बेबीलोन का
राजा नबूकदनेस्सर निष्कासन में ले आया था।
7मोरदकय ने अपने चाचा अमीनादब की बेटी
का पालन-पोषण किया था, क्योंकि वह
अनाथ थी। कन्या का नाम एस्तर था। मोरदकय
ने उसको इसलिए पाला-पोसा था, कि वह एक
दिन योग्य पत्नी बन जाए। एस्तर देखने में
सुन्दर थी। 8जब सम्राट की आज्ञा की घोषणा
की गयी, तब बहुत-सी कन्याएं शूशनगढ़ में
मुख्य कंचुकी हेगय के संरक्षण में लायी गयीं।
एस्तर भी रनिवास-संरक्षक हेगय के पास लायी
गयी। 9कन्या उसे पसन्द आयी और उसकी
कृपापात्री बनी। हेगय ने तुरन्त एस्तर को
प्रसाधन की सामग्री प्रदान की और उसके लिए
विशेष भोजन का प्रबंध किया। उसने राजमहल
से सात युवतियों को उसकी सेवा में नियुक्त
किया। इस प्रकार हेगय रनिवास में एस्तर और
उसकी सहेलियों की अच्छी देखरेख कर रहा
था। 10लेकिन एस्तर ने अपनी जाति और
पितृकुल के संबंध में कुछ नहीं बताया; क्योंकि

[2] : 6 2 राजा 24 : 10-16 ; 2 इत 36 : 10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मोरदकय ने उसे आदेश दिया था कि इस विषय में कुछ प्रकट न करना। 11मोरदकय प्रतिदिन रनिवास के आंगन तक आया-जाया करता था, यह जानने के लिए कि एस्तर का क्या होगा।

12 बारह महीनों की अवधि के बाद ही कोई नयी कन्या सम्राट के पास जा सकती थी। अतः सौन्दर्य-उपचार की इस अवधि में प्रथम छह महीनों तक गन्धरस के तेल से कन्या का विलेपन होता था, फिर छह महीनों तक सुगंधित द्रव्य और सौन्दर्य-शृंगार के उबटन से उसका विलेपन किया जाता था। 15तभी वह सम्राट के पास जा सकती थी। केवल अधिकृत व्यक्ति कन्या को रनिवास से राजमहल तक ले जा सकता था। 14संध्या-समय वह भीतर चली जाती और प्रातःकाल वह द्वितीय रनिवास में आ जाती, जो मुख्य कंचुकी हेगय के अधिकार में था। इसके बाद जब तक सम्राट उसे नाम लेकर नहीं बुलाता, तब तक कन्या दूसरी बार सम्राट के पास नहीं जा सकती थी।

15 अब मोरदकय के चाचा अमीनादब की पुत्री एस्तर की बारी आई कि वह सम्राट के पास जाए। जब तकवह निर्धारित अवधि पूर्ण कर रही थी, तब तक वह रनिवास के प्रबंधक हेगय के सभी आदेशों का पालन करती थी। वस्तुतः सभी देखभाल करने वालों की कृपा उसे प्राप्त थी। 16सम्राट क्षयर्ष के शासन के सातवें वर्ष, अदार नामक बारहवें महीने में, एस्तर उसके पास गयी। 17सम्राट ने उसको प्यार किया। अन्य सब कन्याओं से अधिक एस्तर ने ही सम्राट की कृपादृष्टि प्राप्त की। उसने उसके सिर पर भूतपूर्व पटरानी का राजमुकुट रख दिया। 18तब सम्राट ने सात दिनों तक राजमित्रों तथा पदाधिकारियों को भोज दिया और एस्तर के साथ विवाह-उत्सव मनाया। उसने साम्राज्य की समस्त प्रजा के लिए करों की छूट की घोषणा की।

मोरदकय द्वारा सम्राट की प्राण-रक्षा

19 मोरदकय राजमहल के प्रांगण में सेवक बना। 20एस्तर ने अपने पितृकुल के विषय में कुछ नहीं कहा, जैसा कि मोरदकय ने उसे आदेश दिया था : "तुम परमेश्वर पर श्रद्धा रखो और उसकी आज्ञाओं का पालन करो।" एस्तर वैसा ही व्यवहार करती थी, जैसा वह मोरदकय के यहाँ रहते समय करती आ रही थी। 21राजमहल के दो कंचुकी, जो अंगरक्षक-दल के अध्यक्ष थे और मोरदकय के बढ़ते प्रभाव से अप्रसन्न थे, सम्राट क्षयर्ष को मार डालने की योजना बना रहे थे। 22मोरदकय को उनके षड्यन्त्र का पता चला और उसने एस्तर को सूचित किया। एस्तर ने सम्राट को षड्यन्त्रकारियों के संबंध में सतर्क कर दिया। 23सम्राट ने उन दो कंचुकियों की जांच करायी और दोनों को फांसी पर लटका दिया। प्रसन्न होकर सम्राट ने राजकीय ग्रंथालय में इस घटना का विवरण रखवा दिया, ताकि मोरदकय का सत्कर्म स्मरण रहे।

हामान द्वारा यहूदियों के विनाश का षड्यन्त्र

[3] कुछ दिनों बाद सम्राट ने हम्मदाता के पुत्र अगागी हामान को उच्च पद पर नियुक्त किया और उसे अपने राजमित्रों में भी उच्चासनों का प्रथम स्थान दिया। 2सम्राट की आज्ञा के अनुसार सभी दरबारी हामान को दण्डवत् किया करते थे। लेकिन मोरदकय उसे इस प्रकार प्रणाम नहीं करता था। 3राजदरबारियों ने मोरदकय से कहा, "तुम महाराज के आदेश का पालन क्यों नहीं करते?" 4वे प्रतिदिन उससे यही कहते रहे; तब भी उसने उनकी बात नहीं मानी। अन्त में उन्होंने हामान को बताया कि मोरदकय महाराज के आदेश का उल्लंघन करता है, यद्यपि मोरदकय ने उन्हें समझाया था कि यहूदी होने के कारण वह दण्डवत् नहीं कर सकता। 5जब हामान को मालूम हुआ कि मोरदकय उसे दण्डवत् नहीं करता, तो वह क्रुद्ध हो उठा। 6उसने संकल्प किया कि वह सम्राट क्षयर्ष के साम्राज्य में सभी यहूदियों का सर्वनाश करेगा। 7सम्राट क्षयर्ष के बारहवें वर्ष में उसने आदेश-पत्र तैयार किया और इसलिए चिट्ठी डाली कि किस दिन और किस महीने एक ही दिन में मोरदकय की जाति का सर्वनाश किया जाए। चिट्ठी अदार नामक महीने के

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

चौदहवें दिन पर निकली। [9]इसके बाद हामान ने सम्राट क्षयर्ष से कहा, "महाराज, साम्राज्य की समस्त कौमों के मध्य यहां-वहाँ एक ऐसी कौम फैल गयी, जिसके विधि-विधान अन्य कौमों से भिन्न हैं और जो राजाज्ञा नहीं मानती। अतः यह महाराज के हित में नहीं है कि उस कौम को शान्ति से रहने दिया जाए। [9]यदि महाराज उचित समझें, तो उस कौम के विनाश का निर्णय दें; तब मैं अपनी ओर से, राजकीय कोष में दस हजार चाँदी के सिक्कों की धनराशि जमा करूंगा।" [10]सम्राट ने मुहर-लगी अंगूठी उतार कर हामान के हाथ में दे दी, ताकि वह यहूदियों के विरुद्ध अपने आदेश-पत्रों पर मुहर लगा सके। [11]सम्राट ने हामान से कहा, "वे सिक्के अपने पास रखो, और उस कौम के साथ तुम जो चाहो वही करो!" [12]पहले महीने के तेरहवें दिन राजसचिव बुलाये गये और, हामान के आदेशानुसार, उन्होंने सम्राट क्षयर्ष के नाम में भारतवर्ष से इथियोपिआ देश तक एक सौ सत्ताईस प्रदेशों के सेनापतियों तथा राज्यपालों और प्रत्येक कौम के शासकों को, उनकी अपनी-अपनी भाषा में, लिखा। [13]तब समस्त साम्राज्य में पत्र-वाहक भेजे गये, जिससे अदार नामक बारहवें महीने के एक ही दिन में यहूदी जाति का संहार किया जाए और यहूदियों की सम्पत्ति लूट ली जाए।

राजाज्ञा

ख राजाज्ञा की प्रतिलिपि इस प्रकार है: "भारतवर्ष की सीमा से ले कर इथियोपिआ देश की सीमा तक एक सौ सत्ताईस प्रदेशों के क्षत्रपों और उनके अधीनस्थ पदाधिकारियों को महाराजा क्षयर्ष यह लिखते हैं: [2]बहुत-सी जातियों पर शासन और सारी पृथ्वी का अधिकार प्राप्त होने पर भी मैं यह नहीं चाहता कि मैं प्रभुता प्राप्त कर अहंकारी बन जाऊँ, बल्कि यह चाहता हूँ कि मैं अपनी प्रजा पर सदा दया और उदारता से शासन करता रहूँ, जिससे मेरी प्रजा भयरहित हो कर जीवन बिताये और राज्य के सीमान्तों तक सुरक्षित यात्रा कर सके और मैं वह शान्ति पुनः स्थापित कर सकूँ, जो सब को प्रिय है। [3]जब मैंने अपने मन्त्रियों से पूछा कि यह उद्देश्य किस प्रकार पूरा किया जा सकता है, तो हामान ने, जो निर्णय करने में सब से योग्य हैं, अचल राजभक्ति और अटल विश्वसनीयता में दूसरों से श्रेष्ठ हैं और जो राज्य में राजा के बाद सर्वोच्च पद पर हैं, [4]हमें यह बताया कि पृथ्वी पर रहने वाली सब जातियों में एक जाति ऐसी भी है, जो दुष्ट है, जिसके विधि-विधान अन्य सभी जातियों से भिन्न हैं और जो सदा राजाओं के आदेशों का तिरस्कार करती है। इस से हम सहृदयता से अपने राज्य में जातियों का जो मेल स्थापित करना चाहते हैं, वह नहीं हो पाता है। [5]हमें मालूम हो गया है कि मात्र यही जाति सब अन्य जातियों के प्रतिकूल है, दुष्टता से चित्र-विचित्र प्रथाओं एवं विधियों का अनुसरण करती, हमारे उद्देश्य का विरोध करती, अपराध करती रहती और राज्य की शान्ति में बाधा डालती है। [6]इसलिए हमारा आदेश है कि हमारे प्रशासक और पितृतुल्य हामान अपने पत्र में जिन लोगों का उल्लेख करते हैं, उनका, उनकी पत्नियों और बच्चों के साथ, किसी पर दया दिखलाये बिना, इस वर्ष के बारहवें महीने, अर्थात् अदार महीने के चौदहवें दिन, उनके शत्रुओं की तलवार से सर्वनाश किया जाये। [7]इस प्रकार ये नित्य विरोध करने वाले दुष्ट लोग सब-के-सब एक ही दिन बलपूर्वक अधोलोक उतारे जायें, जिससे भविष्य में हमारे राज्य में सुरक्षा और शान्ति रहे।*"

[3] [14]इस आदेश-पत्र की प्रतिलिपि हर प्रदेश में घोषित की गयी, सभी कौमों को यह आदेश मिला कि वे उसी एक दिन के लिए तैयार रहें। [15]समाचार शूशन नगर में तेजी से फैल गया। सम्राट और हामान खाने-पीने में

* कुछ हस्तलेखों में यह पद भी मिलता है : "जो व्यक्ति उन लोगों को छिपा रखेगा, उसे न तो मनुष्यों के बीच और न पक्षियों के बीच रहने दिया जाएगा। वह पवित्र आग में जलाया जाएगा और राज्य उसकी धन-सम्पत्ति जब्त करेगा। शेष शुभ-कामना!"

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

व्यस्त थे, परन्तु राजधानी में आतंक छाया हुआ था।**

एस्तर से मोरदकय का निवेदन :

[4] जब मोरदकय को इन बातों का पता चला, तब उसने शोक प्रकट करने के लिए अपने वस्त्र फाड़े, टाट ओढ़ा और अपने ऊपर राख डाली। वह नगर के मुख्य मार्ग से होकर जाता हुआ, ऊंचे स्वर में विलाप कर रहा था, "एक निर्दोष कौम का संहार किया जा रहा है!" 2तब वह राजमहल के प्रवेश-द्वार पर पहुँचा और वहां खड़ा हो गया; क्योंकि टाट पहनकर और राख लगा कर प्रांगण में आना मना था। 3हर प्रदेश में जहां-जहां आदेश-पत्र की घोषणा हुई, वहां-वहां यहूदियों ने विलाप किया और छाती पीटकर महाशोक मनाया। उन्होंने टाट ओढ़े राख पर शयन किया। 4जब रानी एस्तर की सहेलियों तथा खोजों ने भी उसे यह बात बतायी, तब वह बहुत दुःखी हुई। उसने मोरदकय को पहनने के वस्त्र भेजे, जिससे वह टाट उतारकर उन्हें पहन ले; परन्तु उसने स्वीकार नहीं किया। 5तब रानी एस्तर ने हताख नामक खोजे को बुलाया, जो उसकी सेवा में तैनात था। उसने उसे मोरदकय के पास भेजा, जिससे वह ठीक पता लगाए कि बात क्या है। 6-7मोरदकय ने हताख को सारा मामला बता दिया। उसने यह भी कह दिया कि हामान ने सम्राट को वचन दिया था कि वह यहूदियों के सर्वनाश के लिए राजकोष में दस हजार सिक्के जमा करेगा। 8उसने उसे यह कहते हुए उस आदेश-पत्र की एक प्रतिलिपि भी दी, जो शूशन नगर में उनके सर्वनाश के लिए घोषित किया गया था। उसने कहा, "इसे रानी को दिखाइए, और उनसे अनुरोध कीजिए कि वह सम्राट के पास जाकर निवेदन करें और अपनी जाति के लोगों के लिए प्रार्थना करें। मेरी ओर से इन शब्दों में रानी से आग्रह कीजिए : 'मैं मोरदकय बोल रहा हूँ। तुम अपने बचपन की दीन दशा याद करो, जब मैं तुम्हारा पालन-पोषण करता था। अब हामान, जो राज्य में सम्राट के बाद दूसरे स्थान पर है, हमारे विरुद्ध उठा है। वह हमारा विनाश चाहता है। प्रभु से प्रार्थना करो! सम्राट से हमारी चर्चा करो! हमें मृत्यु से बचाओ!'"

9 हताख ने आकर एस्तर को यह सब बताया जो मोदकय ने उसके द्वारा कहलाया था। 10एस्तर ने हताख से कहा, "मोरदकय को यह उत्तर देना : 11'साम्राज्य के सभी लोग जानते हैं कि जो भी पुरुष या स्त्री बिना बुलाये सम्राट के पास भीतरी प्रांगण में जाएगी, उसके बच जाने की कोई आशा नहीं रहती; केवल, यदि सम्राट अपना स्वर्ण राजदण्ड उसकी ओर बढ़ाएं, तो वह बच सकती है। किन्तु मैं तीस दिन से सम्राट के पास नहीं बुलायी गयी हूँ।'" 12तब हताख एस्तर की बातें मोरदकय को बताने गया, 13और मोरदकय ने हताख को उत्तर दिया, "लौटकर रानी से कह दीजिए: 'तुम यह न सोचो कि साम्राज्य में सभी यहूदियों की अपेक्षा तुम अकेली ही अपने प्राण बचा सकोगी। 14यदि तुम इस समय मेरी बात अनसुनी करोगी, तो भी यहूदियों को कहीं-न-कहीं से सहायता और सुरक्षा प्राप्त हो जाएगी। किन्तु तुम्हारा और तुम्हारे परिवार का विनाश होगा। सोचो, शायद इस अवसर के लिए तुम्हीं को रानी का पद प्राप्त हुआ है!'" 15एस्तर ने संदेशवाहक को फिर वापस भेजा, ताकि वह मोरदकय को यह प्रत्युत्तर दे: 16"अब जाइए।

** कुछ हस्तलेखों में यह अतिरिक्त पाठ मिलता है: "1सब जातियों ने उत्सव मनाया। राजा और हामान राजभवन में प्रवेश कर राजमित्रों के साथ भोग-विलास करते रहे। 2जहां कहीं भी पत्र की प्रतिलिपि प्रदर्शित की जाती, वहाँ सभी यहूदी रोते हुए भारी शोक मनाते। 3वे यह कहते हुए अपने पूर्वजों के परमेश्वर से प्रार्थना करते थे : 4'प्रभु-परमेश्वर! तू ऊपर, स्वर्ग में एकमात्र परमेश्वर है। तेरे सिवा और कोई परमेश्वर नहीं। 5यदि हमने तेरी व्यवस्था और तेरे आदेशों का पालन किया होता, तो हम जीवन-भर सुरक्षा और शान्ति में निवास करते। 6अब यह सारी विपत्ति हम पर इसलिए आ पड़ी है कि हमने तेरे आदेशों का पालन नहीं किया। 7प्रभु! तू न्यायी, दयालु, सर्वोच्च और महान है। तेरे सभी मार्ग न्यायपूर्ण हैं। 8प्रभु! बंदीगृह से अपने पुत्रों की, बलात्कार और सर्वनाश से हमारी स्त्रियों की रक्षा कर; क्योंकि तू मिस्र की दासता के समय से अब तक हम पर कृपा करता रहा है। 9अपनी प्रिय प्रजा पर दया कर; अपनी विरासत को कलंकित न होने दे। हमारे शत्रु हम पर हावी न हों!'"

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शूशन में रहनेवाले यहूदियों को एकत्र कीजिए
और आप-सब मेरे लिए उपवास कीजिए: तीन
दिन, तीन रात कुछ न खाएं-पिएं। मैं भी अपनी
सहेलियों के साथ उपवास करूंगी। फिर मैं
आज्ञा का उल्लंघन करते हुए सम्राट के पास
जाऊंगी, चाहे मुझे इस के कारण मरना क्यों न
पड़े!'' 17मोरदकय ने जाकर वैसा ही किया,
जैसा एस्तर ने उसे कहलाया था।

परमेश्वर से मोरदकय की प्रार्थना

ग प्रभु के सब कार्यों का स्मरण कर
मोरदकय ने प्रभु से यह प्रार्थना की* :
2''प्रभु! सर्वशक्तिमान अधिपति! सब कुछ
तेरे अधिकार में है। यदि तू इस्राएल को बचाना
चाहे, तो तेरे सामने कोई नहीं टिकेगा। 3तूने
आकाश और पृथ्वी बनायी और आकाश के
नीचे सब आश्चर्यों को। 4प्रभु! तू विश्व का
अधिपति है। तेरा सामना कोई नहीं कर सकता।
5प्रभु, तू सब कुछ जानता है। तू जानता है कि
मैंने घमंड या अभिमान से नहीं और न आत्म-
प्रशंसा की इच्छा से अहंकारी हामान को
दण्डवत् नहीं किया था। मैं तो इस्राएल के
कल्याण के लिए हामान के चरणों का तलवा
सहर्ष चूमने को तैयार हूँ। 6किन्तु मैंने ऐसा
व्यवहार इसलिए किया, क्योंकि मैं परमेश्वर
की प्रतिष्ठा की अपेक्षा मनुष्य की प्रतिष्ठा को
अधिक महत्व नहीं देना चाहता था। 7प्रभु! मेरे
परमेश्वर! मैं तुझको छोड़ किसी अन्य को
दण्डवत् नहीं करूँगा। सचमुच, मेरा व्यवहार
अभिमान से प्रेरित नहीं था।

8''प्रभु-परमेश्वर! हे अधिपति! अब्राहम
के परमेश्वर! अब अपनी प्रजा की रक्षा कर;
क्योंकि हमारे शत्रु हमको मिटाने पर उतारू हैं।
आदि काल से जो तेरी विरासत है, उसे वे नष्ट
करना चाहते हैं। 9उस प्रजा का तिरस्कार न
कर, जिसका तूने मिस्र से उद्धार किया है और
पूर्ण रूप से अपना लिया है। 10प्रभु! मेरी प्रार्थना
सुन, अपनी विरासत पर दया कर! हमारा शोक
आनन्द में बदलने की कृपा कर, जिससे हम
जीते रहें और तेरे नाम के गीत गा सकें। जो मुख
तेरी स्तुति करते हैं, उनका विनाश न होने दे।''

11 सभी इस्राएली भी सारी शक्ति से प्रभु
की दुहाई दे रहे थे, क्योंकि उनकी आंखों के
सामने मृत्यु खड़ी थी।

परमेश्वर से एस्तर की प्रार्थना

12 रानी एस्तर ने भी मृत्यु के भय से पीड़ित
होकर प्रभु की शरण ली। 13उसने राजसी वस्त्र
उतारकर शोक और विलाप के वस्त्र धारण
किये; बहुमूल्य विलेपन के बदले अपने सिर
पर राख-धूल** डाली और कठोर उपवास द्वारा
अपना शरीर तपाया। उसने अपने उन अंगों पर
अपनी लटें बिखेर लीं, जिन्हें सजाने में उसे
प्रसन्नता होती थी। 14उसने इस्राएल के प्रभु
परमेश्वर से प्रार्थना करते हुए कहा,+

''हे प्रभु, केवल तू हमारा राजा है। मुझ
एकाकिनी की सहायता कर। तेरे सिवा अन्य
कोई मेरी सहायता नहीं कर सकता है। 15मेर

---

* कुछ हस्तलेखों में इस पद के स्थान पर यह पद मिलता है : ''मोरदकय अपने वस्त्र फाड़कर और टाट ओढ़कर जनता के धर्मवृद्धों के साथ प्रातः से संध्या तक मुंह के बल पड़ा रहा। उसने कहा, ''अब्राहम, इसहाक और याकूब के प्रभु-परमेश्वर! तू धन्य है!'' ** शब्दशः, ''गोबर''। + कुछ हस्तलेखों में इस प्रार्थना के आरंभ का अन्य रूप मिलता है: ''एस्तर अपनी दासियों के साथ प्रातः से संध्या तक मुँह के बल पड़ी रही। उसने कहा, 'अब्राहम, इसहाक और याकूब के परमेश्वर! तू धन्य है! मुझ एकाकिनी की सहायता कर। प्रभु! तेरे सिवा मेरा कोई रक्षक नहीं। मैं हथेली पर जान रखने जा रही हूं। प्रभु! मुझे अपने पूर्वजों के ग्रंथों से यह पता चला कि तूने जलप्रलय में नूह की रक्षा की। प्रभु! मुझे अपने पूर्वजों के ग्रंथों से यह भी पता चला कि जब अब्राहम तीन सौ अठारह वीरों के साथ युद्ध करने निकले, तो तूने नौ राजाओं को उनके हाथ में सौंप दिया। प्रभु! मुझे अपने पूर्वजों के ग्रंथों से यह पता चला कि तूने योना को मच्छ के पेट से निकाला। प्रभु! मुझे अपने पूर्वजों के ग्रंथों से यह पता चला कि तूने हनन्याह, अजर्याह और मिशाएल को आग की भट्ठी से निकाला। प्रभु! मुझे अपने पूर्वजों के ग्रंथों से यह पता चला कि तूने दानिएल को सिंहों के खड्ड से निकाला। प्रभु! मुझे अपने पूर्वजों के ग्रंथों से यह पता चला कि जब यहूदियों का राजा हिज़कियाह मरने पर था और अपने जीवन के लिए प्रार्थना कर रहा था, तो तूने उस पर दया की और उसे पन्द्रह वर्ष और जीवित रहने दिया। प्रभु! मुझे अपने पूर्वजों के ग्रंथों से यह पता चला कि जब हन्नाह ने सम्पूर्ण हृदय से प्रार्थना की, तो तूने उसे पुत्र प्रदान किया। प्रभु! मुझे अपने पूर्वजों के ग्रंथों से यह पता चला कि जिन लोगों पर तू प्रसन्न होता है, तू-प्रभु! उन सब की सदा रक्षा करता है।''

ग : 2 नि 19 : 5 **ग : 5** रोम 9 : 3 **ग : 8** उत 31 : 42 ; योएल 2 : 17 **ग : 9** नि 3 : 6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सिर पर संकट मंडरा रहा है। 16अपने जन्म से
मैंने अपने जाति-बन्धुओं में सुना है कि हे प्रभु,
तूने सब राष्ट्रों में से इस्राएल को और उनके सब
पूर्वजों में से हमारे पूर्वजों को अपनी स्थायी
विरासत के रूप में अपनाया है और उनके प्रति
तू अपने वचनानुसार सब कुछ करता आया है।
17अब हमारे अपराध करने पर तूने हमारे
शत्रुओं के हाथों में हमें सौंप दिया है। यह
इसलिए हुआ कि हमने उनके देवताओं की
वंदना की है। 18हे प्रभु, तू न्यायपूर्ण है। 19देख,
अब हमारी इस भयंकर दासावस्था से भी उन्हें
संतोष नहीं है। 20तेरे मुख से उच्चरित आदेशों
को भंग करने के लिए, तेरी विरासत को नष्ट
करने के लिए, तेरा स्तुति-गान करने वालों के
मुंह बंद करने और तेरी वेदी और तेरे मंदिर की
भव्यता मिटाने के लिए वे अपनी देवमूर्तियों के
समक्ष प्रतिज्ञाबद्ध हो चुके हैं। 21वे एक नश्वर
सम्राट को शाश्वत महानता प्रदान करने के लिए
सब जातियों के मुख खोलना चाहते हैं ताकि
वे उनके झूठे देवताओं की प्रशंसा करें।
22 "हे प्रभु! तू अपना राजदंड अस्तित्वहीन
देवताओं को मत दे और शत्रुओं को हमारे पतन
पर हमारी हंसी न उड़ाने दे। उनका षड्यंत्र
उन्हीं के सिर पड़े। और जो हमारे विरोधियों में
सब से आगे है उसे ऐसा दंड दे कि वह एक
उदाहरण बन जाये। 23हे प्रभु, हमारी सुधि ले,
अब हमारे कष्टों के समय में अपने को प्रकट
कर। प्रभु, हे राजाधिराज, हे सर्वाधिकारी
स्वामी, मुझे साहस दे। 24उस सिंह के सामने
मेरे मुख में उपयुक्त शब्द रख और उसका हृदय
इतना बदल दे कि वह हमारा विरोध करने वाले
मनुष्य से घृणा करने लगे, जिससे उसका और
उसके समर्थकों का विनाश हो जाये। 25तू स्वयं
हमारी रक्षा कर और मुझ एकाकिनी की,
जिसका हे प्रभु, तेरे सिवा और कोई नहीं है,
सहायता कर। 26तू सब कुछ का ज्ञाता है। तू यह
भी जानता है कि मैं विधर्मियों के बैभव से घृणा
करती हूं और बेखतना लोगों अथवा किसी
अन्यजातीय के सहवास से मुझे बड़ी अरुचि
है। 27पर तू तो मेरी विवशता को पहचानता है।
मुझे अपने गौरवमय इस पद, इस ऐश्वर्य से भी
अरुचि है। जब मैं सब के सामने निकलती हूं
तो मुझे यह राजसी वस्त्र पहनाया जाता है। मैं
इससे रजस्वला के कपड़े की तरह घृणा करती
हूं। एकांत में मैं यह सब धारण नहीं करती।
28तेरी दासी ने हामान की मेज पर कभी भोजन
नहीं किया है और न कभी किसी राजकीय
भोज में भाग लिया है। मैंने कभी देवताओं को
अर्पित दाखरस नहीं पिया है। 29जब से तेरी यह
दासी यहां लायी गयी है, तब से आज तक तू
ही, हे प्रभु! हे अब्राहम के परमेश्वर! मेरा
सम्पूर्ण आनन्द रहा है। 30हे सर्वशक्तिमान
परमेश्वर, निराश जनों की पुकार सुन और दुष्टों
के हाथों से हमें बचा। मुझ में जो बड़ा डर है,
उससे मुझे मुक्त कर!"

एस्तर का सम्राट के पास जाना

घ तीसरे दिन, अपनी प्रार्थना समाप्त कर
चुकने के बाद, रानी एस्तर ने अपने वे
वस्त्र उतार दिये जो उसने आराधना करते समय
पहन रखे थे और फिर वह सज-धज कर तैयार
हो गयी। 2कान्ति से उद्दीप्त होकर उसने सर्वद्रष्टा
और उद्धारकर्ता परमेश्वर से प्रार्थना की। इसके
बाद उसने दो दासियों को अपने साथ लिया।
3रानी एस्तर सुकुमारी की तरह एक दासी पर
हलका-सा भार दे कर आगे बढ़ी। 4दूसरी दासी
अपनी स्वामिनी के वस्त्र का पुछल्ला सँभालते
हुए उसके पीछे-पीछे चली। 5एस्तर का मुख
गुलाबी रंग से प्रदीप्त था और उसकी आँखें
मानो उल्लास से चमक रही थीं, किन्तु उसका
उदास मन मृत्यु के डर से काँप रहा था। 6वह
क्रमशः सब द्वार पार कर भीतरी दर्शन-कक्ष में
सम्राट क्षयर्ष के सामने उपस्थित हुई, जहाँ वह
स्वर्ण और बहुमूल्य रत्नों से सुसज्जित, राजसी
वस्त्र पहने, अपने सिंहासन पर विराजमान था।

---

* यह सम्पूर्ण अध्याय इब्रानी एस्तर 5 : 1-2 के बदले में मिलता है।

ग : 16 यहो 24 : 2-3 **ग : 17** एज्रा 9 : 15 **ग : 24** नीति 19 : 12 **ग : 25** यहूदी 9 : 13 **ग : 28** व्य 32 : 38 ; दान 1 : 8 ; यहूदी 12 : 2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उसे देखकर अत्यंत भय उत्पन्न होता था।
7 जब सम्राट ने अपना सिर ऊपर उठाया, तो
वह वैभव के तेज से दमक उठा। उसने एस्तर
पर भीषण क्रोधयुक्त दृष्टि डाली। रानी
लड़खड़ायी। उसका रंग उड़ गया और वह
बेहोश हो कर अपने सामने की दासी के सिर
पर झुक गयी। 8परमेश्वर ने सम्राट का मन
कोमल कर दिया। वह घबरा कर अपने
सिंहासन से तुरन्त उठा। उसने एस्तर को अपनी
बाँहों में सँभाला और जब तक वह होश में न
आयी, उसे शान्तिपूर्ण शब्दों से इस प्रकार
आश्वासन देता रहा, 9"रानी एस्तर! क्या बात
है? मैं तुम्हारा भाई ही हूँ। साहस करो।
10तुम्हारा वध नहीं होगा। हमारा यह कानून
तुम्हारे लिए नहीं, बल्कि अन्य सब लोगों के
लिए है। आओ।"
11 फिर सम्राट ने सोने का राजदण्ड उठा कर
उसकी गर्दन पर रखा 12और उसका आलिंगन
कर उस से कहा, "मेरे साथ बात करो।"।
13तब एस्तर ने उस से कहा, "स्वामी! आप
मुझे देवदूत-सदृश लगे। आपकी महिमा देख
कर मेरा मन भय से घबरा उठा। 14स्वामी! आप
तो अद्‌भुत हैं, और आपका मुख-मण्डल
कितना कृपापूर्ण है!" 15ऐसा कह वह फिर
बेहोश हो गिर पड़ी। 16इस से सम्राट व्याकुल
हो उठा। उसके सब अनुचरों ने भी रानी को
ढारस बंधाने का प्रयत्न किया।

भोज के लिए सम्राट और हामान को निमन्त्रण

[5] 1-3सम्राट ने पूछा, "रानी एस्तर! तुम
क्या चाहती हो? क्या मांगने आई हो?
यदि तुम मेरे साम्राज्य का आधा भाग भी
मांगोगी, तो वह तुम्हें दिया जाएगा।" 4एस्तर
ने उत्तर दिया, "आज का यह दिन मेरे लिए
महान दिवस है। यदि महाराज उचित समझें,
तो आप और हामान, दोनों आज मेरे भोज में
सम्मिलित होने की कृपा करें।" 5सम्राट ने आदेश
दिया, "हामान को जल्दी बुलाओ, जिससे हम
रानी एस्तर का निमन्त्रण स्वीकार करें।" सम्राट
और हामान, दोनों एस्तर द्वारा दिये हुए भोज में
सम्मिलित हुए। 6भोजन करने के बाद सम्राट
ने एस्तर से फिर प्रश्न किया, "रानी एस्तर! क्या
बात है? तुम जो कुछ मांगोगी, वह तुम्हें दिया
जाएगा।" 7उसने उत्तर दिया, "मेरा
निवेदन... मेरी प्रार्थना...? 8यदि मुझे महाराज
की कृपादृष्टि प्राप्त है, तो आप और हामान कल
भी उस भोज में सम्मिलित हों, जो मैं दोनों को
दूंगी। कल मैं अवश्य बताऊंगी।"

मोरदकय के लिए फांसी का प्रबंध

9 हामान आनन्दित और प्रसन्नचित राजमहल
से बाहर आया। किन्तु उस यहूदी मोरदकय को
प्रांगण में देख कर हामान क्रोध से भर गया।
10घर पहुँचने पर, उसने अपने मित्रों और
अपनी पत्नी ज़ेरेश को बुलाया 11और उनके
सामने अपनी उस सजधज का प्रदर्शन किया,
जो उसे सम्राट से प्राप्त हुई। उसने बताया कि
सम्राट ने उसे सर्वोच्च पद प्रदान किया और परम
अधिकार सौंप दिया। 12हामान ने यह भी कहा,
"महारानी एस्तर ने अपने भोज में महाराज के
अतिरिक्त केवल मुझको बुलाया और कल भी
मैं ही आमंत्रित हूँ। 13परन्तु जब मैं उस यहूदी
मोरदकय को प्रांगण में देखता हूँ, तो यह सब
आदर-सम्मान मुझे प्रसन्न नहीं कर पाता है।"
14इस पर उसकी पत्नी ज़ेरेश और उसके मित्रों
ने कहा, "बीस मीटर ऊंचा फांसी का खम्भा
बनवाइए, और कल सबेरे महाराज से कहिए
कि उस खम्भे पर मोरदकय को लटका दिया
जाए। तत्पश्चात् आप महाराज के साथ भोज में
जाइए और आनन्द मनाइए।" यह सुझाव
हामान को अच्छा लगा और उसने फांसी का
खंभा तैयार करने का आदेश दिया।

[6] **मोरदकय का सम्मान**
उस रात प्रभु ने सम्राट को नींद नहीं दी,
और वह सो न सका। सम्राट ने अपने सचिव
से कहा कि वह दैनिक विवरण-ग्रंथ ले आए

+ पाठान्तर, "सम्राट ने आंख उठा कर एस्तर को देखा। उसका क्रोध मदान्ध साँड़ की तरह भड़क उठा और उसे पहचाने बिना उसका बिनाश करने के विचार से बोल उठा, 'किसने बिना बुलाये दर्शन-कक्ष में प्रवेश करने का साहस किया?' "

घ : 2 यहूदी 9 : 11 **घ : 8** नीति 21 : 1 **घ : 13** 1 शम 29 : 9 ; 2 शम 14 : 17 **[5] : 3** मक 6 : 23

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और उसे पढ़कर सुनाए। 2सचिव को वह स्थल मिला जहां मोरदकय के संबंध में यह लिखा था कि उसने सम्राट पर उन दो राज-कंचुकियों का षड्यन्त्र प्रकट किया था, जो पहरा देते समय सम्राट क्षयर्ष पर प्रहार करना चाहते थे। 3सम्राट ने पूछा, "इसके लिए हमने मोरदकय को कौन-सा सम्मान या पुरस्कार दिया?" राजदरबारी, जो सम्राट की सेवा में उपस्थित थे, बोले, "आपने इसके लिए कुछ नहीं किया।" 4जिस समय सम्राट मोरदकय की सद्भावना के विषय में पूछताछ कर रहा था, उसी समय हामान प्रांगण में आया। सम्राट ने पूछा, "प्रांगण में कौन है?" हामान सम्राट से यह निवेदन करने आया था कि मोरदकय को उस खम्भे पर लटकाया जाये, जो उसने तैयार किया था। 5राजदरबारियों ने सम्राट से कहा, "हामान प्रांगण में खड़े हैं।" सम्राट ने उसे अन्दर बुलाने की आज्ञा दी। 6अब सम्राट ने हामान से पूछा, "यदि मैं किसी को सम्मानित करना चाहूँ, तो उसके लिए मुझे क्या करना चाहिए?" हामान मन ही मन सोचने लगा कि महाराज मेरे अतिरिक्त और किसको सम्मान देना चाहेंगे। 7इसलिए उसने उत्तर दिया, "जिस व्यक्ति को महाराज सम्मानित करना चाहते हैं, 8उसके लिए महाराज के सेवक महाराज के पहने राजसी वस्त्र और वह घोड़ा लाएं, जिस पर महाराज सवार थे। 9तब महाराज के किसी प्रतिष्ठित राजमित्र को यह शुभ कार्य सौंपा जाए, कि वह महाराज के कृपापात्र को वह वस्त्र पहनाएं, घोड़े पर बैठाएं और नगर के मुख्यमार्ग से होते हुए उसके सामने घोषित करें, 'महाराज जिसको सम्मान देते हैं, उसके लिए ऐसा ही किया जाता है।' " 10सम्राट ने हामान से कहा, "तुमने ठीक कहा। अब यहीं प्रांगण में सेवा करने वाले यहूदी मोरदकय के लिए यही करो। तुमने जो कुछ कहा, उसे पूर्ण करने में कोई बात अधूरी न रह जाए।" 11इसलिए हामान को वस्त्र और घोड़ा ले आना पड़ा। उसने वह वस्त्र मोरदकय को पहनाया। फिर उसे घोड़े पर सवार कर नगर के मुख्य मार्ग से घुमाते हुए उसने घोषित किया, "महाराज जिसको सम्मान देना चाहते हैं, उसके लिए ऐसा ही किया जाता है।" 12मोरदकय प्रांगण में वापस आया और हामान दृष्टि नीचे कर उदास मन घर चला गया। 13उसने अपनी पत्नी जेरेश और अपने मित्रों को बताया कि उसके साथ क्या घटित हुआ। तब उसके मित्रों और उसकी पत्नी ने कहा, "यदि यह मोरदकय एक यहूदी है, तो समझिए उसके सामने आपकी अवनति प्रारंभ हो गयी। आपका पतन निश्चित है। आप उसको न घटा और न हटा सकेंगे, क्योंकि जीवन्त परमेश्वर उसके साथ है।" 14अभी वे यह बात कह ही रहे थे, कि राजखोजे आ पहुंचे और हामान को शीघ्र ही रानी एस्तर द्वारा दिये हुए भोज में ले गये।

हामान का पतन

[7] सम्राट और हामान दोनों, रानी एस्तर के भोज में सम्मिलित हुए। 2यह दूसरा दिन था। भोजन करने के बाद सम्राट ने एस्तर से पूछा, "रानी एस्तर! क्या बात है? तुम्हारी प्रार्थना क्या है? तुम क्या चाहती हो? मेरे साम्राज्य का आधा भाग तक भी तुम्हें दिया जा सकता है।" 3इस बार एस्तर ने कहा, "महाराज, यदि मुझे आपकी कृपादृष्टि प्राप्त है, तो सुनिए: मेरी विनती यह है कि मुझे जीवनदान मिले और मेरी कौम के लोगों को भी, जिनके लिए मैं आप से प्रार्थना करती हूँ। 4क्योंकि सचमुच, मुझे और मेरी कौम के लोगों को विनाश के लिए बेच दिया गया है, ताकि हमें लूटपाट और अत्याचार का शिकार बनाया जाए, हमें और हमारे बच्चों को दास या दासी के रूप में काम में लगाया जाए। मैं ये सब बातें और आगे नहीं सुनना चाहती हूँ। जो इस प्रकार अभियोग लगा रहा है, वह महाराज के दरबार में रहने के योग्य नहीं है!" 5यह सुनकर सम्राट ने कहा, "यह व्यक्ति कौन है? किसने ऐसी योजना बनाने का दुस्साहस किया?" 6एस्तर बोली, "यह महाशत्रु! यह दुष्ट हामान!" इस पर हामान सम्राट और रानी के सामने अत्यन्त भयभीत हो उठा। 7सम्राट भी भोज पर से उठ खड़ा हुआ और वाटिका में चला गया। तब हामान रानी से

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रार्थना करने लगा, क्योंकि वह समझ गया कि
उस पर संकट आ पड़ा है। [8]जब सम्राट वाटिका
से लौटा, तो हामान रानी से गिड़गिड़ाकर उसके
पलंग पर झुका हुआ था। यह देखकर सम्राट ने
कहा, "क्या तू मेरे ही घर में मेरी पत्नी के साथ
बलात्कार करेगा?" हामान ने तुरन्त मुंह छिपा
लिया। [9]उसी समय बुगथान नामक कंचुकी ने
सम्राट को सूचित किया, "बीस मीटर ऊंचा
फांसी-स्तंभ हामान के घर के सामने खड़ा है,
जिसे हामान ने मोरदकय के लिए तैयार किया
है। मोरदकय ने ही महाराज पर होनेवाले
षड्यन्त्र का भेद प्रकट किया था।" सम्राट ने
आज्ञा दी, "अब हामान को उसी पर लटका
दो!" [10]इस प्रकार हामान उसी फांसी-स्तंभ
पर लटका दिया गया, जो उसने मोरदकय के
लिए बनवाया था। इसके साथ सम्राट का क्रोध
शान्त हुआ।

यहूदियों की प्राण-रक्षा का आदेश

[8] सम्राट क्षयर्ष ने उसी दिन अभियोगी
हामान की सारी जायदाद रानी एस्तर
को भेंट कर दी। मोरदकय को भी बुलाया गया,
क्योंकि एस्तर ने सम्राट को बता दिया था कि
वह उसका रिस्तेदार है। [2]सम्राट ने वह अंगूठी
मोरदकय को दी, जो उसने हामान से उतरवा
ली थी।

एस्तर ने हामान की सारी जायदाद मोरदकय
के संरक्षण में सौंप दी। [3]लेकिन एस्तर को संतोष
नहीं हुआ। वह सम्राट के चरणों पर गिरकर
उससे फिर प्रार्थना करने लगी, "महाराज!
हामान द्वारा सोचा गया अनिष्ट और यहूदियों
के विरुद्ध उसका दुष्कर्म रोक दीजिए।"
[4]सम्राट ने सोने का राजदण्ड एस्तर की ओर
बढ़ा दिया। एस्तर उठी और सम्राट के सामने
खड़ी होकर बोली, [5]"यदि आप उचित समझें,
यदि मुझे आपकी कृपादृष्टि प्राप्त हो, तो एक
राजाज्ञा प्रसारित करें, जिसके द्वारा हामान के वे
पत्र रद्द कर दिये जाएं, जिनमें आपके साम्राज्य
में यहूदियों के विनाश का आदेश है। [6]मैं अपनी
कौम के लोगों पर पड़नेवाली विपत्ति कैसे देख
सकती हूँ? मैं अकेली कैसे बच सकती हूँ, जब
मेरे जाति-भाई-बहिनों का सर्वनाश होगा?"
[7]सम्राट ने एस्तर को उत्तर दिया, "देखो, मैंने
तुम्हें हामान की सारी जायदाद दे दी; मैंने
तुम्हारी प्रार्थना सुनकर हामान को फांसी के
खंभे पर लटकाने का आदेश दिया, क्योंकि
उसने यहूदियों के विरुद्ध कार्य किया था। तुम
और क्या चाहती हो? [8]अब तुम लोग मेरे नाम
से वही लिख दो, जो तुम ठीक समझते हो, और
उस लेख पर मेरी अंगूठी की मुहर लगा दो;
क्योंकि जो कुछ सम्राट की आज्ञा से लिखा गया
है और जिस पर उसकी मुहर अंकित हो चुकी
है, उसे अमान्य नहीं किया जा सकता है।"

9 इसलिए उसी वर्ष, नीसान नामक प्रथम
महीने के तेईसवें दिन, राजसचिव बुलाये गये।
भारतवर्ष से इथियोपिआ देश तक के एक सौ
सत्ताईस प्रदेशों के प्रबंधकों और क्षत्रपों के नाम
जो आदेश, उनकी अपनी-अपनी भाषा में,
लिखवाये गये, वे ही आदेश यहूदियों को भी
लिखे गये। [10]सब पत्र सम्राट की ओर से
लिपिबद्ध थे और उन पर उसकी मुहर अंकित
थी। तब पत्र-वाहक भेजे गये। [11]यहूदियों को
अनुमति दी गयी कि वे हर नगर में अपनी
धर्मविधियों का पालन कर सकते हैं। वे अपनी
इच्छा के अनुसार आत्मरक्षा में अपने विरोधियों
और शत्रुओं के विरुद्ध उपाय कर सकते हैं।
[12]लेकिन सम्राट क्षयर्ष के समस्त साम्राज्य में,
केवल एक ही दिन, अर्थात् अदार नामक
बारहवें महीने के तेरहवें दिन को, ऐसा किया
जा सकता है।

राजाज्ञा का प्रतिलेख

ङ सम्राट क्षयर्ष के आज्ञापत्र की प्रतिलिपि
इस प्रकार है: "महाराजा क्षयर्ष की
ओर से भारतवर्ष की सीमा से ले कर इथियोपिआ
देश की सीमा तक के एक सौ सत्ताईस क्षत्रपों
और उनके अधीन रहने वाले सब राजभक्तों
को आशीर्वाद। [2]बहुत-से लोग ऐसे हैं, जो
उपकारी राजाओं द्वारा अपने को प्रदत्त उपकार
और सम्मान के कारण अहंकारी बन गये हैं।

[8] : 8 दान 6 : 8 ङ : 2 लू 22 : 22

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

3वे न केवल हमारी प्रजा को हानि पहुँचाना
चाहते, वरन् जिन उपकारियों से सम्मान मिला,
उनके विरुद्ध षड्यन्त्र रचते हैं। 4वे न केवल
मानव समाज से कृतज्ञता की भावना को ही
निर्मूल करते, बल्कि मूर्ख मनुष्यों की झूठी
प्रशंसाओं से घमण्डी बन कर यह सोचने लगते
हैं कि वे सर्वज्ञ ईश्वर के दण्ड से बच सकेंगे,
जो बुराई से घृणा करता है। 5बहुत-से शासक
प्राय: निर्दोष रक्त बहाने के दोषी बने और
अपरिहार्य विपत्तियों में फँस गये; क्योंकि
उन्होंने अपने द्वारा उच्च पदों पर नियुक्त उन
मित्रों का परामर्श सुना, 6जो अपनी दुष्ट और
कपटपूर्ण बातों द्वारा सच्चे उपकारी शासकों को
धोखा देते हैं। 7इसका प्रमाण न केवल प्राचीन
इतिहास में मिलता है, बल्कि अयोग्य और दुष्ट
प्रशासकों द्वारा हमारे बीच किये गये कुकर्मों पर
विचार करने से भी। 8इसलिए हमें भविष्य में
सब देशों में शान्ति बनाये रखने का प्रयास
करना चाहिए। 9यदि परिवर्तित परिस्थितियों
के आधार पर हम नये आदेश देंगे, तो हम सदा
उचित विचार करने के बाद ही निर्णय करेंगे।
10हम्मदाता का पुत्र मकिदूनी हामान फ़ारसवंशी
नहीं था और हमारे उदार स्वभाव के नितान्त
विपरीत था, फिर भी हमने अतिथि के रूप में
उसका स्वागत किया। 11हम प्रत्येक जाति के
प्रति जो सद्भाव दिखलाते हैं, हामान को
उसका इतना अनुभव हुआ कि वह सार्वजनिक
तौर पर 'हमारा पिता' कहलाता था। सब लोग
उसे प्रणाम करते थे और उसका स्थान राजा के
बाद दूसरा था। 12किन्तु वह इतना अहंकारी बन
गया था कि उसने हम को राज्य और जीवन से
वंचित करने का प्रयास किया। 13उसने हमारे
प्राणरक्षक एवं स्थायी उपकारी मोरदकय,
हमारी निर्दोष महारानी एस्तर और उसकी
समस्त जाति की हत्या करने का कपटपूर्ण और
गूढ़ षड्यन्त्र रचा था। 14वह सोचता था कि
उसकी मृत्यु के बाद हमारा कोई सहायक नहीं
रहेगा और वह फ़ारसियों का राज्य मकिदूनियों
के हाथ में दे देगा।

15लेकिन वह दुष्ट जिन यहूदियों का विनाश
करना चाहता था, उन में हमने कोई दोष नहीं
पाया। 16उलटे, वे न्यायसंगत विधि-विधान
का पालन करते थे और उस सर्वोच्च महिमामय
जीवन्त ईश्वर की सन्तान हैं, जो हमारे और
हमारे पूर्वजों के कल्याण के लिए हमारे राज्य
का संचालन करता आ रहा है। 17इसलिए आप
लोग हम्मदाता के पुत्र हामान द्वारा भेजे गए पत्र
पर ध्यान नहीं दें; 18क्योंकि उस पत्र का लेखक
अपने समस्त परिवार के साथ इस नगर शूशन
के प्रवेश-द्वार के सामने फाँसी पर लटका दिया
गया है। इस प्रकार विश्व के विधाता ईश्वर ने
उसे तुरन्त यथायोग्य दण्ड दिया।

19जो राजाज्ञा हम अब भेज रहे हैं, आप
उसकी प्रतिलिपि सब नगरों में घोषित करें और
यहूदियों को उनके अपने विधि-विधान के
अनुसार जीवन बिताने की अनुमति प्रदान करें।
20आप लोग उनकी सहायता करें, जिससे वे
अपने विनाश के दिन, अर्थात् अदार नामक
बारहवें महीने के तेरहवें दिन अपने आक्रामकों
से अपनी रक्षा कर सकें; 21क्योंकि सर्वशक्तिमान
ईश्वर ने अपनी चुनी हुई प्रजा के विनाश का
दिन आनन्द के दिन में परिवर्तित कर दिया है।
22इसलिए आप अपने महान् उत्सवों में इस
दिन को विशेष स्थान दे कर इसे उल्लास के
साथ मनायें, 23जिससे यह आज और भविष्य
में हमारे और राजभक्त फ़ारसियों के लिए
कल्याण का दिन हो और हमारे विरुद्ध षड्यन्त्र
रचने वालों के लिए विनाश का स्मृति-दिवस।
24ऐसे हर एक नगर और प्रदेश का, जो इस
उत्सव में सम्मिलित नहीं होना चाहेगा, तलवार
और आग द्वारा निर्दयता से विनाश किया जाये
और वह इस प्रकार मिटा दिया जाये कि वहाँ
केवल मनुष्य ही नहीं जायें, बल्कि जानवर और
पक्षी भी उसे घृणित समझ कर त्याग दें।

[8] 13"पत्र की प्रतिलिपियाँ समस्त
साम्राज्य में जनसाधारण को अवगत
कराने के लिए प्रत्यक्ष रूप से प्रदर्शित की जाएं,
जिससे सभी यहूदी उस निश्चित दिन पर अपने

ङ: 5 मत 23 : 30

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

विरोधियों से लड़ने के लिए तैयार रहें।
14सम्राट की आज्ञा का पालन करते हुए
हरकारे शीघ्र निकल पड़े और उन्होंने सब नगरों
में आदेश-पत्र पहुंचा दिया। शूशन नगर में भी
इसकी घोषणा हुई। 15मोरदकय राजसी वस्त्र
पहने, सिर पर स्वर्णमुकुट धारण किये और
बैंगनी छालटी की चादर ओढ़े, महल से बाहर
निकला। उसे देखकर शूशन-निवासी आनन्दित
हुए। 16विशेषकर यहूदियों के लिए नवज्योति
और उल्लास का समय आया। 17सभी नगर-
बस्तियों और प्रदेशों में, जहाँ राजाज्ञा की
घोषणा हुई अथवा आदेश-पत्र प्रदर्शित हुआ,
वहाँ यहूदियों ने आनन्द मनाया मानो वे
हर्षोल्लास के नशे में चूर थे। यहूदियों के प्रति
श्रद्धा-भाव के कारण अन्यजातियों में से अनेक
लोगों ने खतना-संस्कार करवाया और यहूदी
धर्म स्वीकार किया।

बारहवें महीने का तेरहवाँ दिन

[9] अदार नामक बारहवें महीने के तेरहवें
दिन सम्राट का आदेश सर्वत्र प्रसारित
हो चुका। 2उस दिन यहूदियों के विरोधी नष्ट
हुए। यहूदियों के सामने कोई भी टिक नहीं
सका। सभी पर यहूदियों का आतंक छा गया।
3क्षत्रप, पदाधिकारी और राज-सचिव उनका
सम्मान करने लगे, क्योंकि मोरदकय के भय से
वे इसके लिए बाध्य हुए। 4राजाज्ञा के कारण
समस्त साम्राज्य में मोरदकय का नाम फैल
गया। 5-6उस दिन यहूदियों ने शूशन नगर में
पांच सौ विरोधियों को मार डाला और उन्हें लूट
लिया। 7-10उनमें यहूदियों के महाशत्रु हम्मदाता
के पुत्र, शेखी-बाज़ हामान के ये दसों पुत्र भी
थे: फ़रसनेस्तैन, दलफ़ोन, फ़सगा, फरदाता,
बरेअ, सरबखा, मर्मसिमा, अरुफयुस, अरसयुस
और जबुथयुस। 11उसी दिन सम्राट को शूशन
में मारे हुए लोगों की संख्या बतायी गयी।
12सम्राट ने एस्तर से कहा, "राजधानी शूशन में
यहूदियों ने पाँच सौ पुरुषों का वध कर दिया।
तुम समझ सकती हो कि अन्य प्रदेशों में भी
बहुत कुछ हुआ होगा! अब तुम्हारा और क्या
निवेदन है? वह भी पूरा किया जाएगा।"
13एस्तर बोली, "महाराज, यहूदियों को अनुमति
दीजिए कि कल भी वे अपने विरोधियों का
काम तमाम कर सकें। हामान के दसों पुत्रों के
शव चेतावनी-स्वरूप लटका दिये जाएं।"
14तब सम्राट ने अनुमति दे दी। राजधानी के
यहूदियों के हित में राजाज्ञा घोषित की गयी
और हामान के दस पुत्रों के शव लटकाये गये।
15इसलिए अदार महीने के चौदहवें दिन शूशन
के यहूदियों ने दल बनाकर तीन-सौ पुरुषों को
मार डाला; लेकिन उन्होंने उनकी सम्पत्ति नहीं
लूटी। 16साम्राज्य के सब अन्य यहूदियों ने भी
दल बनाकर आत्मरक्षा का उपाय किया था। इस
प्रकार उन्हें अपने शत्रुओं से छुटकारा प्राप्त
हुआ। उन्होंने अदार की तेरहवीं तारीख को
पन्द्रह हजार आक्रामकों का वध किया; लेकिन
कोई सम्पत्ति नहीं लूटी। 17चौदहवीं तारीख को
उन्होंने विश्राम किया और विश्राम के उस दिन
सोल्लास आनन्द मनाया। 18राजधानी के यहूदियों
ने, जिन्होंने दल बनाकर चौदहवीं तारीख को
विश्राम नहीं किया था, अब पन्द्रहवीं तारीख को
आनन्द-उल्लास मनाया। 19यही कारण है कि
बाह्य प्रदेशों में निवास करने वाले यहूदी अदार
की चौदहवीं तारीख को उत्सव मनाते हैं और
एक-दूसरे को भोज का कुछ अंश भेज देते हैं;
जबकि महानगरों के यहूदी अदार की पन्द्रहवीं
तारीख को आनन्द-दिवस मनाते हैं और एक-
दूसरे को भोज का कुछ अंश भेजते हैं।

पूरीम का पर्व

20मोरदकय ने इन घटनाओं का वर्णन एक
पुस्तिका में लिखा और उसे सम्राट क्षयर्ष के
साम्राज्य में रहने वाले यहूदियों को भेज दिया,
चाहे वे समीप हों या दूर, 21ताकि वे अदार की
चौदहवीं तथा पंद्रहवीं तारीख का उत्सव
भविष्य में भी मनाएं। 22उन्हीं दिनों में यहूदियों
को अपने शत्रुओं से छुटकारा मिला था। अदार
वही महीना है, जिसमें यहूदियों के हितार्थ
पासा उलट गया : उनका शोक हर्ष में बदल
गया और संकट-दिवस उत्सव-दिवस में।

[9] : 1 1 मका 7 : 49 ; 2 मका 15 : 36

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अत: उन्हें पूरा महीना विवाह-उत्सव और
उल्लास में बिताना चाहिए, मित्रों और दरिद्रों
को भोज्य-पदार्थ पहुंचाना चाहिए। 23यहूदियों
ने मोरदकय के लेख के अनुसार आचरण
किया। 24मोरदकय ने वर्णन किया था कि
हम्मदाता के पुत्र, मकिदुनिया-निवासी हामान
ने यहूदियों पर कैसे आक्रमण किया; कैसे
उसने चिट्‌ठी डालकर उनके विनाश के लिए
आदेश-पत्र प्रसारित किया था; 25और कैसे उसने
मोरदकय को फांसी देने के लिए सम्राट से
अनुरोध किया था। परन्तु जो-जो विपत्तियां वह
यहूदियों पर ढाहना चाहता था, वे उसी के सिर
पड़ीं, जिससे वह स्वयं और उसके बच्चे भी
लटका दिये गये। 26उन चिट्‌ठियों के कारण वे
दिन "पूरीम" अथवा भाग्य-दिवस कहलाते हैं,
क्योंकि उनकी भाषा में "पूरीम" का अर्थ
"चिट्ठियां" है। मोरदकय के पत्र में यहूदियों
का यह "भाग्य" वर्णित है कि उन्हें कितना
कष्ट और अत्याचार सहना पड़ा। 27मोरदकय
ने जो कुछ निर्धारित किया था, उसे यहूदियों ने
अपने आप के लिए, अपने वंशजों के लिए तथा
यहूदी धर्म में दीक्षित होने वाले लोगों के लिए
भी ग्रहण किया। उन्होंने उसके विपरीत कभी आचरण
नहीं किया। वे दिन प्रत्येक प्रदेश, प्रत्येक नगर
और प्रत्येक परिवार में पीढ़ी-दर-पीढ़ी अविस्म-
रणीय रहेंगे। 28'पूरीम' के भाग्य-दिवस हमेशा
उत्सव के रूप में मनाये जाएंगे। हाँ, आशा है
कि भावी वंशज वे दिन कभी नहीं भुलायेंगे।
29 सारांश यह है कि अमीनादब की पुत्री,
रानी एस्तर और यहूदी मोरदकय ने अपने
कार्यकलापों का वर्णन करने के द्वारा "पूरीम"
के संबंध में अपने पत्र का अनुमोदन किया। 30-
31मोरदकय तथा रानी एस्तर ने जो कुछ
निर्धारित किया, उसे उन्होंने पहले स्वयं
कार्यान्वित किया। अपने स्वास्थ्य की चिन्ता न
कर उन्होंने अपनी योजना के अनुसार आचरण
किया। 32एस्तर ने अपने मुंह के वचन से एक
चिरस्थायी निर्णय किया था और उसी को
स्मरण रखने के लिए यह सब लिखा गया।

मोरदकय का व्यापक प्रभाव

[10] सम्राट क्षयर्ष ने अपने विश्वव्यापी
साम्राज्य में देश-देश के प्रदेशों
और समुद्रों के द्वीपों पर कर लगाया। 2उसके
शक्तिशाली और प्रतापी कार्यों का, उसके वैभव
और महिमामय शासन का विवरण फारस और
मादय के राजाओं के इतिहास-ग्रंथ में लिखा
हुआ है, जिससे उसका नाम स्मरण रखा जाए।
3मोरदकय सम्राट क्षयर्ष की ओर से अधिकार
के साथ कार्य करता था। साम्राज्य में वही महान
व्यक्ति था और यहूदियों द्वारा सम्मानित। वह
लोकप्रिय था और अपनी कौम के लोगों को
सदाचार की बातें सिखाता था।

मोरदकय का एस्तर से निवेदन

च मोरदकय ने कहा, "यह सब परमेश्वर
की ओर से ही हुआ है।" 2मोरदकय को
अपना देखा हुआ स्वप्न याद आया, जिसका
सम्बन्ध इन्हीं घटनाओं से था। उसकी हर बात
सच निकली : 3"वह छोटा झरना बड़ी नदी
बन गया, फिर प्रकाश, सूर्य और अपार
जलधारा! झरना और नदी एस्तर है, जिसके
साथ राजा ने विवाह किया और उसे रानी
बनाया। 4वे दोनों पंखदार सर्प मैं और हामान
हैं। 5एक ओर अन्यजातीय लोग हैं, जो यहूदियों
का नाम मिटाने के लिए एकत्र हुए थे। 6दूसरी
ओर मेरी जाति इस्राएल है, जिसने परमेश्वर की
दुहाई दी और जिसका उद्धार किया गया। प्रभु
ने अपनी प्रजा का उद्धार किया, हमें सब विपत्तियों
से मुक्त किया और राष्ट्रों में अपूर्व चिह्न और
आश्चर्यपूर्ण कार्य दिखाये। 7इसलिए उसने दो
चिट्‌ठियों का आदेश दिया, एक परमेश्वर की
प्रजा के लिए और एक सब अन्य जातियों के
लिए। 8वे दोनों चिट्‌ठियाँ उस घड़ी और उस
समय निकलीं जब परमेश्वर ने सब जातियों के
विचार का दिन निश्चित किया। 9परमेश्वर ने
अपनी प्रजा की सुध ली और अपनी विरासत
को न्याय दिलाया। 10इसलिए इस्राएली लोग
अदार महीने के चौदहवें और पन्द्रवें दिन एकत्र
हो कर पीढ़ी-दर-पीढ़ी उल्लास और आन-

[9] : 24-28 यूनानी एस [3] : 7 च : 2-6 शेष-एस क : 4-10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

के साथ परमेश्वर के सामने उन दिनों का उत्सव मनायेंगे।"

पत्र का यूनानी अनुवाद

11 राजा पतोलेमैउस और रानी क्लेओपात्रा के राज्य के चौथे वर्ष दोसिथेउस, जो अपने को पुरोहित और लेवी कहता था, और उसका पुत्र पतोलेमैउस पूरीम-सम्बन्धी यह पत्र ले कर आये। उन्होंने इसकी सत्यता प्रमाणित की और इसे यरूशलेम के समुदाय के सदस्य पतोलेमैउस के पुत्र लिसीमाखुस द्वारा अनूदित बतलाया।

मक्काबियों का पहला ग्रंथ

पुस्तक-परिचय

मक्काबियों के पहले ग्रंथ का मूल पाठ इब्रानी में था। लेकिन अब उसका केवल यूनानी अनुवाद उपलब्ध है। देश-भक्ति से ओतप्रोत यह ग्रंथ यहूदियों की धर्मनिष्ठा का आदर्श-काल उपस्थित करता है। स्वतंत्रता-संग्राम की छिटपुट लड़ाइयों के इस वर्णन में दिखाया गया है कि एक धर्मनिष्ठ परिवार के वीर सदस्यों के नेतृत्व में और व्यवस्था-पालन के अनुशासन में यहूदी जनता, मानो "स्वर्ग" से अनुसंचालित हो कर, विकास के पथ पर आगे बढ़ने लगी थी।

ऐतिहासिक प्रसंग इस प्रकार है। सिकन्दर महान के आकस्मिक उत्थान के कारण फारसी साम्राज्य नष्ट हो गया और यूनानी साम्राज्य स्थापित हुआ। लेकिन सिकन्दर की मृत्यु (323 ईसवी पूर्व) के बाद उसका विशाल साम्राज्य, जो मकिदूनिया देश से भारतवर्ष तक फैला हुआ था, उसके सेनापतियों में बंट गया। यहूदा प्रदेश यूनानी सेनापति पतोलेमैउस के हिस्से में आया, जिसका राजवंश मिस्र की नयी राजधानी "सिकन्दरिया" से शासन कर रहा था। पतोलेमी शासन में यहूदियों को अपने धर्म के अनुसार जीने की स्वतंत्रता प्राप्त थी; और उनका महापुरोहित, यूनानी राजा के प्रतिनिधि के रूप में स्थानीय शासक था। फिर भी यहूदियों पर यूनानी भाषा एवं विदेशी संस्कृति का प्रभाव पड़ा। इससे दो यहूदी सम्प्रदाय—समन्वयवादी तथा असमन्वयवादी—विकसित हुए। पहले सम्प्रदाय का नाम सदूकी था और दूसरे का नाम हसीदी, जो बाद में फरीसी कहा जाने लगा।

197 ईसवी पूर्व में सीरिया के यूनानी राजा अंतियोखुस प्रथम ने मिस्र के राजा को पराजित कर दिया। तब से यहूदा प्रदेश सीरिया के सिल्यूकी राजवंश के अधीन हो गया। आरंभ में यहूदियों को इस नये शासन में भी पहले की तरह धार्मिक स्वतंत्रता प्राप्त थी, लेकिन राजा अंतियोखुस चतुर्थ के शासनकाल में (175-164 ईसवी पूर्व) यहूदियों पर घोर धार्मिक अत्याचार हुए। पुरोहित मतित्याह ने विद्रोह का नेतृत्व किया। वह मोदीन का निवासी और हस्मोन नामक एक यहूदी का वंशज था। उसका पुत्र यहूदा, जिसे "मक्काबी" (अर्थात् हथौड़ेबाज) कहते थे, अनेक छापामार लड़ाइयों के बाद यहूदियों को मुक्त करने में सफल हो गया। यहूदा मक्काबी की मृत्यु के बाद उसका भाई योनातन और बाद में उसका भाई शिमोन महा-पुरोहितीय शासक बना। जब उसी शिमोन का पुत्र योहन सन् 134 ईसवी पूर्व में शासक बना, तब यहूदा प्रदेश में "हस्मोनी राजवंश" आरंभ हुआ जो रोम के सेनापति पोम्पेय के यरूशलेम-प्रवेश तक (63 ई० पू०) स्वतंत्रतापूर्वक शासन करता रहा।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

1	**मतित्याह के नेतृत्व में विद्रोह**	1 : 1—2 : 70
2	**यहूदा मक्काबी**	3 : 1—9 : 22
3	**योनातन**	9 : 23—12 : 53
4	**शिमोन**	13 : 1 —16 : 24

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सिकन्दर महान्

1 मकिदूनिया देश के राजा फ़िलिप का पुत्र
सिकन्दर कित्तियों के देश से चला और
फ़ारसियों और मादियों के सम्राट दारा को
पराजित कर उसकी जगह स्वयं वहाँ का राजा
बन बैठा। इसके पहले वह यूनान देश का राजा
बना था। 2राजा सिकन्दर ने बहुत-से युद्ध
किये, क़िलों पर अधिकार कर लिया और
पृथ्वी के राजाओं का वध किया। 3वह दुनिया
के छोर तक गया और उसने बहुत-सी जातियों
को लूटा। पृथ्वी उसके सामने मौन रही। वह
घमण्ड से फूल उठा और अहंकारी हो गया।
4उसने एक बड़ी सेना तैयार की थी और कितनी
ही जातियों के देश और उनके शासक अपने
अधीन कर लिये और वे उसे कर देते थे।
5 इसके बाद वह बीमार पड़ा और वह समझ
गया कि मृत्यु निकट है। 6उसने उन कुलीन
उच्चपदाधिकारियों को बुलाया, जो बचपन से
उसके साथी थे। उसने जीवित रहते अपना
राज्य उनमें बाँट दिया। 7सिकन्दर ने बारह वर्ष
तक राज्य किया। तत्पश्चात् उसकी मृत्यु हुई।
8इसके बाद उसके उच्चपदाधिकारी अपने
शासित क्षेत्रों में राज्य करने लगे। 9उसकी मृत्यु
के बाद उन सब ने अपने सिर पर मुकुट धारण
किया और उनके बाद उनके पुत्रों ने बहुत वर्षों
तक ऐसा ही किया। उनके कारण पृथ्वी की
दुर्गति हो गयी। 10उन में एक दुष्ट जड़ भी
निकली, अर्थात् राजा अन्तियोखुस का पुत्र
अन्तियोखुस एपीफ़ानेस*। वह रोम नगर में
बन्धक के रूप में रह चुका था। वह यूनानी
साम्राज्य के एक सौ सैंतीसवें वर्ष** राजा बना।

इस्राएल में यूनानी रीति-रिवाज

11 उन दिनों इस्राएल में ऐसे लोग थे, जो
धर्म-व्यवस्था की परवाह नहीं करते थे और
यह कहते हुए बहुतों को बहकाते थे, ''आओ!
हम अपने चारों ओर के राष्ट्रों के साथ सन्धि
करें, क्योंकि जब से हम उन से अलग हुए, हमें
अनेक विपत्तियों का सामना करना पड़ा।''
12यह बात उन्हें अच्छी लगी। 13उन में से कुछ
उत्साही व्यक्ति तुरन्त राजा से मिलने गये और
राजा ने उन्हें गैर-यहूदी जीवनचर्या के अनुसार
चलने की अनुमति दे दी। 14इसलिए उन्होंने
गैर-यहूदियों की प्रथा के अनुसार यरूशलेम में
एक व्यायामशाला बनवायी। 15उन्होंने अपने
को बेख़तना कर लिया और पवित्र विधान को
त्याग दिया। वे गैर-यहूदियों से मेल-जोल
रखने लगे और पाप के दास बन गये।+

मिस्र पर एपीफ़ानेस का अधिकार

16 जब राजा अन्तियोखुस ने अपना राज्य
सुदृढ़ कर लिया, तो उसकी इच्छा हुई कि वह
मिस्र का भी राजा बन जाये और इस प्रकार दो
राज्यों पर शासन करे। 17वह रथों, हाथियों,
घोड़ों और जहाज़ी बेड़ों की विशाल सेना ले
कर मिस्र पहुँचा। 18उसने मिस्र के राजा
पतोलेमैउस पर आक्रमण किया। बहुत-से
लोग घायल हुए अथवा मारे गए और पतोलेमैउस
अन्तियोखुस से डर कर भाग निकला। 19उसने
मिस्र के बहुत-से किलाबंद नगरों पर अधिकार
कर लिया और मिस्र का बहुत-सा धन लूटा।

यरूशलेम की लूट

20 अन्तियोखुस ने मिस्र पर अधिकार करने
के बाद वहाँ से लौट कर एक सौ तैंतीसवें वर्ष++
इस्राएल पर आक्रमण किया। वह एक विशाल
सेना ले कर यरूशलेम पर चढ़ आया। 21उसने
गर्व के मद में पवित्र-स्थान में प्रवेश किया।
सोने की धूप-वेदिका, दीपाधार और दीप
प्रज्वलन की सारी सामग्रियाँ, 22भेंट की रोटियों
की मेज़, पेयार्पण की सुराहियाँ और पात्र, सोने
के धूपदान, परदा और कंगूरे—सब उसके हाथ
में पड़ गया, यहाँ तक कि उसने मन्दिर के
बाहरी द्वार पर जड़ा हुआ सोना भी निकाल
लिया। 23उसने चाँदी, सोना, बहुमूल्य पात्र

* अर्थात् 'प्रकट (ईश्वर)'। ** अर्थात् 175 ई० पू०। + शब्दशः 'उन्होंने दुष्कर्म के हाथ अपने को बेच दिया'। ++ 169 ई० पू०

1 : 7 दान 8 : 21-22 1 : 10 व्य 29 : 18 ; दान 8 : 9 ; 2 मक 4 : 6-7 1 : 11 व्य 13 : 13 1 : 14 2 मक 4 : 9.12 1 : 15 1 कुर 7 : 18 1 : 17 दान 11 : 25 ; 2 मक 5 : 1 1 : 20 2 मक 5 : 11-14 1 : 21-23 2 मक 5 : 15-16

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और छिपे हुए खजाने, जो उसे मिले — यह सब अपने अधिकार में कर लिया। 24यह सारा धन-माल ले कर वह अपने देश लौट गया। उसने बहुत-से लोगों की हत्या की और गर्व-भरे नारे लगाये।

25 तब इस्राएल के समस्त समुदाय में महान् शोक मनाया गया। 26प्रशासक और धर्मवृद्ध कराहते रहे, युवक और युवतियाँ निरुत्साह हो गये और स्त्रियों का सौन्दर्य नष्ट हो गया। 27हर एक वर शोक मनाता था और नववधू अपने कक्ष में बैठी विलाप करती थी। 28पृथ्वी अपने निवासियों की दशा पर काँप उठी और याकूब के सब वंशज अपमान से लज्जित हुए।

यरूशलेम की पुनः लूट

29 दो वर्ष बाद राजा अन्तियोखुस ने यहूदा के नगरों में एक कर-अधिकारी भेजा। वह एक भारी दल ले कर यरूशलेम में आया। 30उसने धोखा देने के लिए पहले तो लोगों से मीठी-मीठी बातें कीं। जब लोग आश्वस्त हो गये, वह एकाएक नगर पर टूट पड़ा। उसने उसे पूरी तरह ध्वस्त कर दिया और बहुत-से इस्राएलियों का वध किया। 31उसने नगर को लूटा और उसको जला दिया। उसने उसके मकान और उसकी शहरपनाह गिरा दी। 32शत्रु स्त्रियों और बच्चों को बन्दी बना कर ले गये और उन्होंने पशुओं को भी अधिकार में कर लिया। 33तब उन्होंने दाऊद-पुर के चारों ओर क़िलों के साथ एक बड़ी सुदृढ़ दीवार बनायी, जो उनका अपना गढ़ बन गया। 34उन्होंने वहाँ दुष्ट लोगों को बसाया — ऐसे लोगों को, जो धर्मविधि का पालन नहीं करते थे। वे वहीं बस गये। 35उन्होंने वहाँ शस्त्र और खाद्य-सामग्री जमा की और यरूशलेम का लूटा हुआ सारा माल वहाँ एकत्र किया। इस प्रकार वह गढ़ एक बड़ा फन्दा बन गया। 36वह पवित्र-स्थान के लिए घात-स्थल बन गया और इस्राएल में उसकी एक नित्य विरोधी शक्ति खड़ी हो गई। 37उन्होंने पवित्र-स्थान के निकट निर्दोष रक्त बहाया और पवित्र क्षेत्र को अपवित्र कर दिया। 38इस कारण यरूशलेम के निवासी भाग खड़े हुए और वह विदेशियों का नगर बन गया। वह अपने ही निवासियों के लिए अपरिचित-जैसा हो गया। उसकी सन्तान ने उसका त्याग कर दिया। 39उसका पवित्र-स्थान मरुभूमि की तरह उजड़ गया, उसके पर्व विलाप में, उसके विश्राम-दिवस कलंक में और उसका सम्मान अपमान में बदल गया। 40वह पहले जितना प्रतिष्ठित था, अब उतना ही अपमानित हुआ और उसकी महिमा शोक में बदल गयी।

यहूदियों के धार्मिक पतन का प्रयास

41 राजा अन्तियोखुस ने अपने समस्त राज्य के लिए यह लिखित आदेश निकाला कि सब लोग एक ही कौम बन जायें 42और सब अपनी विशेष प्रथाओं का परित्याग कर दें। 43सब विजातियों ने राजा के आदेश का पालन किया। इस्राएलियों में भी बहुतों ने, देवमूर्तियों को बलि चढ़ा कर और विश्राम-दिवस को अपवित्र कर, राजा का धर्म सहर्ष स्वीकार कर लिया। 44राजा ने यरूशलेम और यहूदा प्रदेश के अन्य नगरों में दूतों से कहला भेजा कि वे अपने-अपने यहाँ पृथ्वी की जातियों के विधि-विधान अपनायें, 45मन्दिर में अग्नि-बलि, पशु-बलि और पेयार्पण न चढ़ायें, विश्राम-दिवस और पर्व न मनायें, 46मन्दिर और मन्दिर के सेवकों को अपवित्र कर दें, 47वेदियाँ, पूजास्थान और देवमूर्ति तैयार करें, सूअरों और अन्य अशुद्ध पशुओं की बलि चढ़ायें, 48अपने बच्चों का ख़तना न करें और हर प्रकार के दूषण और अशुद्धता से अपने को अपवित्र कर दें। 49इस तरह वे व्यवस्था भूल जायें और अपनी परम्पराओं को बदल दें। 50जो व्यक्ति राजा के इन आदेशों का पालन नहीं करेगा, उसे प्राणदण्ड दिया जायेगा। 51ऐसे कितने ही शब्दों में राजा अन्तियोखुस ने अपने राज्य भर के लिए अपनी आज्ञा प्रसारित करायी। उसने इन बातों के लिए लोगों पर निरीक्षक नियुक्त किये और यहूदा प्रदेश के नगरों को आदेश दिया कि हर नगर में बलि चढ़ायी जाये।

---

1 : 29-32 2 मक 5 : 24-26 **1 : 37** भज 79 : 1-3 **1 : 39** आमो 8 : 10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

52 इस तरह बहुत-से लोगों ने निरीक्षकों
का साथ दिया और प्रभु की व्यवस्था का
परित्याग किया। उन्होंने देश में पापाचरण
किया 53और इस्राएलियों को गुप्त स्थानों में
छिपने के लिए विवश किया। 54एक सौ
पैंतालीसवें वर्ष* के किसलेव महीने के पन्द्रहवें
दिन राजा ने**अग्नि-बलि की वेदी पर
विनाशकारी घृणित वस्तु+ स्थापित की। यहूदा
प्रदेश के नगरों में चारों ओर वेदियाँ बनायी गयीं
55और लोग घरों के द्वार के सामने तथा चौकों
में धूप चढ़ाने लगे। 56जब उन्हें व्यवस्था-ग्रंथ
की पोथियाँ मिलती थीं, तो वे उन्हें फाड़ कर
आग में डाल देते थे। 57जिसके यहाँ विधान का
ग्रन्थ पाया जाता अथवा जो व्यवस्था का पालन
करता, उसे राजा के आदेशानुसार प्राणदण्ड
दिया जाता था। 58शक्ति की बागडोर निरीक्षकों
के हाथ में थी, इसलिए उन्होंने हर महीने उन
इस्राएलियों के साथ जिन्हें वे दोषी पाते थे, ऐसा
ही किया। 59वे महीने के पच्चीसवें दिन अग्नि-
बलि की वेदी के ऊपर बनायी गई घृणित वेदी
पर बलि चढ़ाते थे। 60-61जिन माताओं ने अपने
बच्चों का ख़तना कराया था, उन्हें राजाज्ञा के
अनुसार अपनी गर्दन में लटके शिशुओं के साथ
तथा अपने निकट सम्बन्धियों और ख़तना करने
वाले लोगों के साथ वध कर दिया जाता।

62 फिर भी बहुत-से इस्राएली दृढ़ बने रहे
और उन्होंने दृढ़ संकल्प किया कि वे अशुद्ध
भोजन नहीं खायेंगे। 63वे मृत्यु को स्वीकार
करते थे, जिससे वे अवैध भोजन खा कर दूषित
न हो जायें और पवित्र विधान भंग न करें। इस
प्रकार बहुत-से इस्राएली मर गये। 64परमेश्वर
का भीषण प्रकोप इस्राएल पर छाया हुआ था।

मतित्याह का आगमन

2 उन्हीं दिनों योहन के पुत्र एवं शिमोन के
पौत्र मतित्याह का उदय हुआ, जो योयारीब
वंश का एक पुरोहित था। वह था तो येरूशलेम
का, किन्तु मोदीन नगर में बस गया था। 2उसके
पाँच पुत्र थे: योहन, जो गद्दी कहलाता था;
3शिमोन, जो थास्सी कहलाता था; 4यहूदा, जो
मक्काबी++ कहलाता था; 5एलआज़ार, जो
अवरन कहलाता था और योनातन, जो अफ़ूस
कहलाता था। 6जब मतित्याह ने यहूदा प्रदेश
और येरूशलेम में होने वाली ये घृणित बातें
देखीं, 7तो उसने कहा, ''धिक्कार है मुझे! क्या
मेरा जन्म इसलिए हुआ कि मैं अपनी जाति का
नाश और पवित्र नगर का पतन देखूँ और जब
नगर शत्रुओं के हाथ में आ गया और पवित्र-
स्थान विदेशियों के पंजे पड़ गया, तब भी हाथ-
पर-हाथ धरे बैठा रहूँ? 8येरूशलेम का मन्दिर
उस व्यक्ति के समान हो गया है, जिसकी
प्रतिष्ठा छिन गयी है। 9उसके महिमामय पात्र
लूट लिये गये, उसके बच्चों की हत्या उसकी
गलियों में की गयी है, उसके युवक और
युवतियाँ तलवार से मौत के घाट उतारे गये हैं।
10ऐसा कौन-सा राष्ट्र है, जिसने उसके राजकीय
वैभव का कुछ लिया न हो और उस से कुछ
लूटा न हो? 11उसकी सारी शोभा उस से छीन
ली गयी। जो स्वतन्त्र थी, अब वह दासी बन
गयी। 12हमारा मन्दिर, हमारा सौन्दर्य और
हमारी महिमा नष्ट हो गयी। गैर-यहूदियों ने
उसे अपवित्र किया। 13तो हमें जीवन से क्या?''
14तब मतित्याह और उसके पुत्रों ने अपने वस्त्र
फाड़े और टाट पहन कर भारी विलाप किया।

मतित्याह—व्यवस्था का पालक

15 राजा के पदाधिकारी, जो लोगों को
स्वधर्मत्याग के लिए बाध्य करते थे, बलिदानों
का प्रबन्ध करने मोदीन नामक नगर में आये।
16बहुत-से इस्राएली उन से मिल गये, किन्तु
मतित्याह और उसके पुत्र अलग रहे।+ 17राजा
के पदाधिकारियों ने मतित्याह को सम्बोधित
करते हुए कहा, ''आप इस नगर के प्रतिष्ठित
और शक्तिशाली नेता हैं। आप को अपने पुत्रों
और भाइयों का समर्थन प्राप्त है। 18आप
सर्वप्रथम आगे बढ़ कर राजाज्ञा का पालन

---

* 167 ई० पू० ** पाठांतर, ''उन्होंने''। + राजा ने मन्दिर की बलि-वेदी पर जिस देवमूर्ति की स्थापना करवायी, लेखक उसका नाम तक लेना घृणित समझता है। ++ इसका अर्थ ''हथौड़ा'' माना जाता है। + अथवा, ''सभा में उपस्थित थे''।

1 : 53 इब्र 11 : 38 1 : 54 दान 11 : 31 ; मत 24 : 15 1 : 63 2 मक 6 : 19 2 : 1 1 इति 9 : 10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कीजिए, जैसा कि सभी राष्ट्र, यहूदा प्रदेश के
लोग और यरूशलेम के अवशिष्ट निवासी कर
चुके हैं। ऐसा करने पर आप और आपके पुत्र
राजा के मित्र बनेंगे और सोना, चाँदी और
बहुत-से उपहारों द्वारा आपका और आपके
पुत्रों का सम्मान किया जायेगा।'' 19मतित्याह
ने पुकार कर यह उत्तर दिया, ''साम्राज्य के
सभी राष्ट्र भले ही राजा की बात मान लें, सभी
इस्राएली अपने पूर्वजों का धर्म छोड़ दें और
राजा के आदेशों का पालन करें, 20किन्तु मैं,
मेरे पुत्र और मेरे भाई — हम अपने पूर्वजों के
विधान के अनुसार ही चलेंगे। 21परमेश्वर हमारी
रक्षा करे, जिससे हम उसकी व्यवस्था और
उसके नियमों का परित्याग न करें। 22हम राजा
की आज्ञाओं का पालन नहीं करेंगे और अपने
धर्म का किसी भी प्रकार से++ उल्लंघन नहीं
करेंगे।''

23मतित्याह के इन शब्दों के तुरन्त बाद एक
यहूदी व्यक्ति राजा के आदेशानुसार मोदीन की
वेदी पर बलि चढ़ाने के लिए सब के सामने
आगे बढ़ा। 24इस पर मतित्याह का धर्मोत्साह
भड़क उठा और वह आगबबूला हो गया।
उसने क्रोध के आवेग में आगे बढ़ कर उस
व्यक्ति को वेदी पर मार डाला। 25उसने बलि
के लिए लोगों को बाध्य करने वाले पदाधिकारी
का भी वध कर दिया और वेदी का विध्वंस कर
डाला। 26इस प्रकार मतित्याह ने पीनहास के
सदृश व्यवस्था के प्रति अपना उत्साह प्रदर्शित
किया—पीनहास ने इसी तरह सालू के पुत्र
ज़िम्री का वध किया था। 27इसके बाद मतित्याह
ने नगर में घूमते हुए ऊँचे स्वर से पुकार कर यह
कहा, ''जो व्यवस्था के प्रति उत्साही हैं और
विधान को बनाये रखने के पक्ष में हैं, वे मेरे पीछे
चले आयें।'' 28इसके बाद वह और उसके पुत्र
नगर में अपनी सारी सम्पत्ति छोड़ कर पहाड़ों
पर भाग गये।

भक्त इस्राएलियों पर आक्रमण

29 उस समय बहुत-से लोग, जिन्हें धर्म
और न्याय प्रिय था, निर्जन प्रदेश जाकर वहाँ
बस गये। 30वे अपने बच्चों, पत्नियों और
पशुओं को भी साथ लेते गये; क्योंकि वे
अत्याचार के बोझ से दबे जा रहे थे। 31जब
यरूशलेम के दाऊद-पुर में रहने वाले राजकीय
पदाधिकारियों और सेना को यह बात बतलायी
गयी कि कुछ लोगों ने राजाज्ञा की अवहेलना
कर निर्जन प्रदेश के गुप्त स्थानों में शरण ली है,
32तो उन में एक बड़ा दल उनका पीछा करने
निकला और उनके पास पहुँच कर उनके सामने
पड़ाव डाला। उन्होंने विश्राम के दिन उन पर
आक्रमण किया। 33उन्होंने उन से कहा, ''बहुत
हुआ। निकलो और राजा की आज्ञा मानो, तभी
जीवित रह सकोगे।'' 34उन्होंने उत्तर दिया,
''हम नहीं निकलेंगे। हम न तो राजा की आज्ञा
मानेंगे और न विश्राम-दिवस को अपवित्र
करेंगे।'' 35तब उस शत्रु दल ने उन पर
आक्रमण कर दिया; 36किन्तु उन्होंने उनका
सामना नहीं किया। उन्होंने न उन पर पत्थर मारे
और न अपने छिपने के स्थान बन्द किये;
37क्योंकि उनका कहना था, ''हम सब निर्दोष
मरना चाहते हैं। आकाश और पृथ्वी इस बात
के साक्षी हैं कि तुम हमें अन्याय से मार रहे
हो।'' 38उस दल ने विश्राम के दिन उन पर
आक्रमण किया और वे, उनकी पत्नियाँ, उनके
बच्चे और उनके पशु—सभी मार डाले गये।
प्रायः एक हजार लोग मारे गये।

मतित्याह की सफलता

39 जब मतित्याह और उसके मित्रों को इस
बात का पता चला, तो उन्होंने उनके लिए
विलाप किया। 40वे एक दूसरे से कहने लगे,
''यदि हम भी वैसा ही करेंगे, जैसा हमारे भाई-
बहिनों ने किया; यदि हम अपने प्राणों और
रीति-रिवाजों के लिए गैर-यहूदियों से नहीं
लड़ेंगे, तो पृथ्वीतल से हमारा सर्वनाश शीघ्र हो
जायेगा।'' 41इसलिए उस दिन उन्होंने यह
निश्चय किया: ''यदि कोई विश्राम के दिन हम
पर चढ़ाई करेगा, तो हम उस दिन भी उसका

++ शब्दशः, ''न दाएं मुड़कर न बाएं''।

2 : 22 व्य 5 : 32 **2 : 26** गण 25 : 7-8; भज 106 : 30; प्रव 45 : 23 **2 : 32** 2 मक 6 : 11

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सामना करेंगे, जिससे हम सब की मृत्यु न हो, जैसे हमारे भाई-बहिनों की मृत्यु उन गुप्त स्थानों में हुई थी।''

42 उसी समय हसीदियों* का समुदाय भी उन में आ मिला। वे इस्राएल के वीर पुरुष थे और सब व्यवस्था के उत्साही अनुगामी थे। 43जो लोग भीषण अत्याचार के कारण भाग गये, वे उन से मिले और इस प्रकार उनका शक्ति बढ़ती गई। 44उन्होंने एक सेना का संगठन किया। उन्होंने क्रुद्ध हो कर अपने धर्मोत्साह में पापियों और धर्मत्याग करने वालों का वध किया। जो शेष रह गये, उन्होंने अपनी प्राण-रक्षा के लिए गैर-यहूदियों की शरण ली। 45मतित्याह और उसके मित्र इधर-उधर घूम-घूम कर वेदियों को ढाहने लगे 46और इस्राएल की सीमा में जो भी बालक ऐसा मिलता, जिसका खतना नहीं हुआ था, उसका बलपूर्वक खतना कराते थे। 47उन्होंने अहंकारियों को भगा दिया और वे अपना उद्देश्य पूरा करने में सफल हुए। 48उन्होंने राष्ट्रों और राजाओं से व्यवस्था की रक्षा की और पापी को अपने ऊपर हावी नहीं होने दिया।

मृत्यु के समय मतित्याह का पुत्रों को उपदेश

49 जब मतित्याह की मृत्यु का समय निकट आया, तो उसने अपने पुत्रों से कहा, ''इन दिनों घमण्ड तथा अवज्ञा का बोलबाला है। यह विपत्ति तथा भीषण प्रकोप का समय है। 50मेरे पुत्रो! तुम व्यवस्था के पालन में उत्साह दिखाओ और अपने पूर्वजों के विधान के लिए अपने प्राण अर्पित करो। 51याद रखो कि उन्होंने अपने समय में क्या-क्या किया था और तुम्हें बड़ी प्रतिष्ठा तथा अमर यश मिलेगा। 52क्या अब्राहम परीक्षा के समय दृढ़ नहीं रहे और इस कारण वह धार्मिक नहीं माने गये? 53यूसुफ़ ने विपत्ति में नियम का पालन किया और वह मिस्र के शासक बन गये। 54हमारे पूर्वज पीनहास में धर्म के प्रति उत्साह था और इसलिए यह विधान निर्धारित किया गया कि उन्हें और उनके वंशजों को सदा पुरोहित-पद प्राप्त होगा। 55यहोशुअ ने आदेशों का पालन किया और इसलिए वह इस्राएल के न्यायाधीश हो गये। 56कालेब ने सभा में सच्चा साक्ष्य दिया और उन्हें देश में विरासत मिली। 57दाऊद दयालु थे और उन्हें एक चिरस्थायी राज्य का सिंहासन प्राप्त हुआ। 58व्यवस्था के लिए एलियाह का उत्साह कभी मन्द नहीं हुआ और वह स्वर्ग में आरोहित कर लिये गये। 59हनन्याह, अज़र्याह और मीशएल अपने विश्वास के कारण जलती हुई भट्ठी से बच निकले। 60दानिएल निर्दोष थे और सिंहों के जबड़ों से बच निकले। 61इस प्रकार सब पीढ़ियों पर विचार कर देख लो कि जो परमेश्वर पर भरोसा रखते हैं, वे विचलित नहीं होते। 62पापी मनुष्य की धमकियों से मत डरो, क्योंकि उसका वैभव घूरे और कीड़ों के लिए है। 63वह आज प्रतिष्ठित है, किन्तु कल उसका कहीं पता नहीं चलेगा; क्योंकि जहाँ से वह आया था, उसी धूल में वह मिल गया है और उसकी सब योजनाएँ व्यर्थ हो जायेंगी। 64मेरे पुत्रो! तुम व्यवस्था की रक्षा में साहसी और दृढ़ रहो, क्योंकि वह तुम्हें महिमा प्रदान करेगी। 65देखो, मैं जानता हूँ कि तुम्हारा भाई शिमोन बुद्धिमान है। तुम सदा उसकी बात मानना, वही तुम्हारा पिता होगा। 66यहूदा मक्काबी बचपन से ही शारीरिक शक्ति में सब से बढ़कर है; वही तुम्हारा सेनापति होगा और वह जनता के लिए युद्ध करेगा। 67तुम उन सब को अपने पास एकत्र करो, जो व्यवस्था का पालन करते हैं और अपनी जाति का बदला चुकाओ। 68तुम गैर-यहूदियों को जैसे का तैसा दण्ड दो और व्यवस्था का पालन करो।'' 69इसके बाद मतित्याह ने उन्हें आशीर्वाद दिया और वह अपने पूर्वजों से जा मिला। उसकी मृत्यु एक सौ

---

* ''हसीदी'', अर्थात् भक्त लोग, जो उन दिनों व्यवस्था के सच्चे पालक थे।

2 : 52 प्रज्ञ 10 : 5; इब्र 11 : 17 ; उत 15 : 6 ; प्रव 44 : 20 **2 : 54** गण 25 : 13 **2 : 56** गण 13 : 30 **2 : 57** 2 शम 7 **2 : 58** 1 रा 19 ; 2 रा 2 **2 : 59** अजर्याह; दान 3 **2 : 60** दान 6 ; बेल 31 **2 : 61** प्रव 2 : 10 **2 : 64** व्य 31 : 6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

छियालीसवें वर्ष* में हुई। 70उसे उसके पूर्वजों के मोदीन में स्थित कब्रिस्तान में दफ़नाया गया। सारे इस्राएल ने उसकी मृत्यु पर बड़ा शोक मनाया।

यहूदा की यश-गाथा

3 मतित्याह का पुत्र यहूदा, जो मक्काबी कहलाता था, उसका उत्तराधिकारी बना। 2उसके सभी भाइयों और उन सब लोगों ने, जो उसके पिता के पक्ष में थे, उसका साथ दिया। वे इस्राएल के लिए सहर्ष लड़ते रहे। 3उसने अपनी जाति के लिए यश कमाया, उसने भीमकाय योद्धा की तरह कवच पहना और अपने अस्त्र-शस्त्र धारण किये। वह लड़ता और अपनी तलवार से शिविर की रक्षा करता रहा। 4वह युद्ध में सिंह-जैसा था, सिंहशावक-जैसा, जो शिकार पर गरजता है। 5उसने जगह-जगह विधर्मियों का पता लगाया और उनका पीछा किया। जो लोग उसकी जाति पर अत्याचार करते थे, उसने उन्हें जला दिया। 6उसके आतंक से विधर्मी लोग दब गये और सब कुकर्मी घबरा गये। उसने अपने बाहु-बल से उद्धार का मार्ग प्रशस्त किया। 7उसने बहुत-से राजाओं को तंग किया, किन्तु याकूब के वंशजों को उस से सुख मिला। उसके नाम का यश सदा गाया जायेगा।** 8उसने यहूदा प्रदेश के नगरों में जा-जा कर दुष्टों को वहाँ से भगाया और इस्राएल पर से परमेश्वर का प्रकोप दूर किया। 9उसका नाम संसार के सीमान्तों तक फैल गया। उसने उन निस्सहायों को संगठित किया, जिनका विनाश निकट था।

यहूदा की प्रारम्भिक विजय

10 अपुल्लोनियस ने इस्राएल से लड़ने के लिए ग़ैर-यहूदियों और सामरी प्रदेश के निवासियों की एक बड़ी सेना तैयार की। 11जैसे ही यहूदा को इस बात का पता चला, वह उसका सामना करने निकला। उसने उसे पराजित किया और उसका वध किया। बहुत-से लोग घायल हुए और मारे गये। शेष योद्धा भाग खड़े हुए। 12इस्राएलियों ने उनका सामान लूटा। यहूदा ने अपुल्लोनियस की तलवार ले ली और बाद में जीवन भर युद्ध में उसका उपयोग किया। 13जब सीरिया के सेनापति सेरोन ने सुना कि यहूदा ने अपने युद्धरत अनुयायियों का स्थायी सेनादल तैयार किया है, 14तो उसने कहा, "मैं नाम कमाऊँगा, राज्य में ख्याति प्राप्त करूँगा। मैं यहूदा और उसके अनुयायियों को पराजित करूँगा, जो राजाज्ञा की अवहेलना करते हैं।" 15इसलिए उसने इस्राएलियों से बदला लेने के लिए विधर्मियों की एक बड़ी सेना तैयार की और उसके साथ प्रस्थान किया। 16वह बेत-होरोन के चढ़ाव तक ही पहुंचा था कि उस समय यहूदा अपना छोटा-सा दल ले कर उसका सामना करने आ गया। 17यहूदा के योद्धाओं ने अपने विरुद्ध आयी सेना को देख कर उस से कहा, "हमारी संख्या बहुत कम है। हम इतनी बड़ी और शक्तिशाली सेना से कैसे युद्ध करेंगे? इसके सिवा हमें खाने को आज कुछ भी नहीं मिला है और हम थके-माँदे हैं।" 18यहूदा ने उत्तर दिया, "यह आसानी से हो सकता है कि एक बड़ा दल थोड़े लोगों से हार जाये; क्योंकि थोड़े लोग हों या बहुत बड़ी सेना हो, रक्षा करने वाला स्वर्गिक परमेश्वर+ ही है। उसके लिए संख्या का कोई महत्व नहीं। 19युद्ध में विजय सेना की विशालता पर नहीं, बल्कि उस शक्ति पर निर्भर है, जो स्वर्ग से मिलती है। 20ये अहंकारी और धर्मभ्रष्ट लोग हमारी पत्नियों और हमारे बच्चों का नाश करने, हमें लूटने और हम पर आक्रमण करने आ रहे हैं; 21किन्तु हम अपने प्राणों और अपने धर्मनियमों की रक्षा के लिए लड़ रहे हैं। 22स्वर्गिक परमेश्वर हमारी आँखों के सामने इनका नाश करेगा। तुम इन से मत डरो।" 23यहूदा अपनी बात समाप्त कर अचानक शत्रु पर टूट पड़ा। उसके सामने सेरोन और उसकी

---

* अर्थात् 166 ई० पू०। ** अथवा "उसका स्मरण आशीर्वाद के रूप में सदा बना रहेगा"। + मूल में "स्वर्ग"। ग्रंथ-लेखक आदरभाव से परमेश्वर अथवा प्रभु शब्द के स्थान पर "स्वर्ग" का ही प्रयोग करता है।

3 : 4 2 मक 11 : 11 3 : 18 शास 7 : 7 ; 1 शम 14 : 6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सेना का विनाश हो गया। 24उन्होंने बेत-होरोन
के उतार से मैदान तक उनका पीछा किया। शत्रु
के आठ सौ आदमी मारे गये और शेष लोग
पलिश्तियों के देश भाग गये। 25तब लोग यहूदा
और उसके भाइयों से डरने लगे और आसपास
के ग़ैर-यहूदियों पर उनका आतंक छा गया।
26यहूदा की ख्याति राजा के कानों तक पहुँच
गयी। उस की युद्धकुशलता की चर्चा सर्वत्र
होने लगी।

यरूशलेम पर आक्रमण की तैयारियाँ

27 यह सुन कर राजा अन्तियोखुस आग-
बबूला हो उठा। उसने अपने राज्य के सब
योद्धाओं को बुलाया और एक विशाल सेना
एकत्र हो गयी। 28उसने अपने कोष से सैनिकों
को वर्ष भर का वेतन दिया और यह आज्ञा दी
कि वे हर स्थिति के लिए तैयार हो जायें।
29उसने देखा कि कोष में पैसा समाप्त हो रहा
है और प्रदेशों से कर कम मिल रहा है; क्योंकि
देश भर में इसलिए अशान्ति और आतंक फैल
रहा था कि उसने प्राचीन काल से चले आ रहे
विधि-विधान को रद्द कर दिया था। 30उसे डर
था कि अब दैनिक खर्च और उन उपहारों के
लिए उसके पास धन नहीं बचेगा, जिन्हें वह
अब तक इस प्रकार खुले हाथों लुटाता था, जिस
प्रकार उसके पहले किसी राजा ने नहीं किया
था। 31इस से वह बहुत घबरा गया और फ़ारस
के प्रदेशों से कर वसूलने और बहुत-सा धन
एकत्र करने के उद्देश्य से उसने वहाँ जाने का
निश्चय किया। 32उसने लीसियस नामक कुलीन
और राजवंशी मनुष्य को फ़रात नदी से ले कर
मिस्र की सीमा तक के राज्य पर प्रशासक
नियुक्त किया 33और लौटने तक उसे अपने पुत्र
अन्यितोखुस की शिक्षा-दीक्षा का भार सौंपा।
34उसने उसके हाथ आधी सेना और अपने
हाथी दिये और उसे अपनी सब योजनाएँ,
विशेष कर यहूदा प्रदेश और यरूशलेम के
निवासियों के सम्बन्ध में, बता दीं। 35उसने कहा
कि वह उनके विरुद्ध एक ऐसी सेना भेजे, जो
इस्राएल की शक्ति और यरूशलेम के बचे हुए
लोगों का सर्वनाश करने और वहाँ उनकी स्मृति
मिटाने में समर्थ हो। 36इसके बाद वह उनके
क्षेत्र में विदेशियों को बसा दे और चिट्ठियाँ डाल
कर उनका देश बांट दे। 37सेना का शेष आधा
भाग राजा ने अपने साथ लिया और एक सौ
सैंतालीसवें वर्ष+ अपनी राजधानी आन्ताकिया
से प्रस्थान किया। उसने फ़रात नदी पार की और
वह फ़ारस के पठार की ओर बढ़ा।

यहूदा प्रदेश में शत्रुओं का प्रवेश

38 लीसियस ने राजा के मित्रों में से इन
शक्तिशाली व्यक्तियों को चुना : दोरमेनस के
पुत्र पतोलेमैउस, निकानोर और गोरगियस को।
39उसने उन्हें चालीस हज़ार पैदल सैनिक और
सात हज़ार घुड़सवार दिये, जिससे वे यहूदा देश
पर आक्रमण कर राजा की आज्ञानुसार उसका
विनाश कर दें। 40अत: वे अपनी सारी सेना ले
कर निकल पड़े और उन्होंने इम्माऊस नगर के
पास के मैदान में पड़ाव डाला। 41जब उस प्रदेश
के व्यापारियों ने इस विषय में सुना, तो वे बहुत
सोना-चाँदी तथा हथकड़ियाँ लिये उनके शिविर
पहुँचे, जिससे वे इस्राएली दासों को खरीदें।
एदोम++ से और पलिश्तियों के देश से एक-
एक दल उनका साथ देने आया। 42इधर यहूदा
मक्काबी* और उसके भाइयों ने देखा कि
स्थिति गम्भीर है और शत्रुओं की सेना उनके
देश में आ गयी है। उन्होंने यह भी सुना कि राजा
ने आदेश दे रखा है कि उनकी जाति का
सर्वनाश कर दिया जाये। 43वे आपस में कहने
लगे, "हम अपनी जाति को विनाश से बचायें।
हम अपनी कौम और अपने पवित्र-स्थान के
लिए लड़ें।" 44लोगों की सभा बुलायी गयी,
जिससे वे युद्ध की तैयारी करें और दया और
अनुकम्पा के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करें।
45यरूशलेम निर्जन-प्रदेश की तरह उजाड़ पड़ा
था। उसके निवासियों में न तो कोई व्यक्ति नगर

+ अर्थात् 165 ई॰ पू॰ ++ मूल में "सीरिया" * स्पष्टीकरण के लिए यहूदा के नाम के साथ उपनाम के रूप में "मक्काबी" जोड़ा गया (देखिए 2 : 4 पर)।

3 : 24 यहो 10 : 11 **3 : 32** 2 मक 10 : 11

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आता और न कोई वहाँ से जाता था। मन्दिर रौंदा
गया था। गैर-यहूदी गढ़ में बस गये थे; वह
विदेशियों का अड्डा बन गया था। याकूब से
आनन्द का विलोप हो गया था और बाँसुरी-
सितार सब मौन हो गया था।

मिस्पा के निकट यहूदियों की सभा

46यदूही लोग एकत्र हो कर मिस्पा में आये
जो यरूशलेम के सामने है। मिस्पा में पहले
इस्राएलियों का एक प्रार्थना-स्थान था। 47उन्होंने
उस दिन वहाँ उपवास किया, टाट ओढ़ा, सिर
पर राख डाली और अपने वस्त्र फाड़े। 48जिन
बातों के विषय में ग़ैर-यहूदी अपनी देवमूर्तियों
के सामने शकुन विचारते हैं, उनके विषय में
जानकारी प्राप्त करने के लिए यहूदियों ने अपना
व्यवस्था-ग्रंथ खोला। 49वे पुरोहितीय वस्त्र ले
आये। उन्होंने प्रथम फल और दशमांश चढ़ाये।
उन्होंने उन समर्पण-व्रतधारियों को बुलाया,
ज़िनका नाज़ीर-व्रत पूरा हो चुका था। 50तब
उन्होंने स्वर्गिक परमेश्वर की दुहाई देते हुए
पूछा, "हम इन लोगों के लिए क्या करें, हम
इन्हें कहाँ ले जायें? 51तेरा मन्दिर रौंदा और
अपवित्र किया गया है। तेरे पुरोहित अपमानित
हो कर शोक मना रहे हैं। 52ग़ैर-यहूदी हमारा
विनाश करने एकत्र हो गये हैं। तू जानता है कि
वे हमारे साथ क्या करना चाहते हैं। 53हम तेरी
सहायता के बिना उनका सामना कैसे कर
पायेंगे?" 54इसके बाद उन्होंने तुरहियाँ फूंकीं
और ऊँचे स्वर में रण-नाद किया।

55 इसके बाद यहूदा मक्काबी ने लोगों पर
सेनानायक नियुक्त किये : प्रति हज़ार, सौ,
पचास और दस पर एक-एक अध्यक्ष। 56जो
व्यक्ति घर बना रहे थे, जिनका विवाह हाल में
हुआ था या जो अंगूर-उद्यान लगा रहे थे या जो
कायर थे, उन से उसने व्यवस्था के अनुसार यह
कहा कि वे घर लौट सकते हैं। 57सेना ने प्रस्थान
कर इम्माऊस के दक्षिण में पड़ाव डाला।
58यहूदा ने कहा, "शस्त्र धारण करो, वीरों की
सन्तान की तरह दृढ़ रहो और कल सुबह उन
विदेशियों से लड़ने के लिए तैयार रहो, जो
हमारा और हमारे पवित्र-स्थान का विनाश करने
हम पर आक्रमण करने आये हैं। 59अपनी जाति
और पवित्र-स्थान का विनाश देखने से तो यह
कहीं अच्छा है कि हम युद्ध में मारे जायें। 60स्वर्गिक
परमेश्वर जो चाहता है, वह पूरा हो कर रहेगा।"

इम्माऊस की लड़ाई

4 गोरगियस पाँच हज़ार पैदल सैनिक और
एक हज़ार चुने हुए घुड़सवार लेकर रात
को ही निकल पड़ा, 2जिससे वह अचानक
यहूदियों के पड़ाव पर आक्रमण कर बैठे और
उनका विनाश करे। गढ़ में रहने वाले व्यक्ति
उनके पथप्रदर्शक बने। 3यहूदा को इसका पता
चला और वह अपने वीरों के साथ निकला,
जिससे वह इम्माऊस में राजा के शिविर पर उस
समय आक्रमण करे, 4जब उसके सैनिक शिविर
के बाहर बिखरे हुए हों। 5उधर जब गोरगियस
रात में यहूदा के पड़ाव में घुसा, तो वहाँ उसे
कोई नहीं मिला। वह पहाड़ों पर यहूदियों को
ढूँढ़ने लगा। उसका विचार था कि वे हमें देख
कर भाग गये हैं। 6पौ फटते ही यहूदा तीन हज़ार
सैनिकों के साथ मैदान में दिखाई पड़ा, किन्तु
उनके पास ऐसे कवच और तलवारें नहीं थीं,
जैसे वे चाहते थे। 7उन्होंने देखा कि विदेशियों
का शिविर पक्का और सुरक्षित है और युद्ध के
अनुभवी घुड़सवार उसके चारों ओर पहरा दे
रहे हैं।

8 यहूदा ने अपने अनुयायियों से कहा,
"इनकी बड़ी संख्या देख कर हताश मत हो।
इनके आक्रमण से मत डरो। 9याद करो कि
हमारे पूर्वज लाल समुद्र के तट पर तब बच
निकले थे, जब फरओ ने अपनी सेना लेकर
उनका पीछा किया था। 10अब हम स्वर्गिक
परमेश्वर की दुहाई दें, जिससे वह हम पर दया
करे, हमारे पूर्वजों के साथ स्थापित अपना विधान
का संबंध याद करे और आज हमारे सामने उस
सेना को रौंद डाले। 11इससे सब विदेशी जान
जायेंगे कि कोई ऐसा है, जो इस्राएल का

---

3 : 49 गण 6 : 2. 13; प्रे 21 : 23 - 26 3 : 56 व्य 20 : 5-8 ; शास 7 : 3 ; लू 14 : 18-20 4 : 8 2 मक
8 : 16 4 : 9 नि 14 : 10-31

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उद्धारकर्ता और रक्षक है।''

12 विदेशियों ने जब अपनी आँखें ऊपर उठायीं तो उन्होंने यहूदियों को आक्रमण के लिए आते देखा [13]और वे उनका सामना करने पड़ाव से बाहर आये। यहूदा के आदमियों ने तुरहियाँ फूंकीं [14]और वे शत्रु पर टूट पड़े। विदेशी सेना हार गयी और मैदान की ओर भाग खड़ी हुई। [15]जो पिछली पंक्ति में थे, उन्हें तलवार से मौत के घाट उतारा गया। अन्य सैनिकों को गेजर नगर और इदूमिया प्रदेश के मैदानों, अश्दोद और यमनिया नगरों तक खदेड़ दिया गया। उन में लगभग तीन हज़ार शत्रु सैनक मारे गये।

16 जब यहूदा अपने सैनिकों के साथ उनका पीछा करने के बाद लौटा, [17]तो उसने लोगों से कहा, ''लूट का लालच मत करो। हमें और भी लड़ना है, [18]क्योंकि गोरगियस और उसकी सेना पहाड़ पर हमारे निकट है। तुम अब हमारे शत्रुओं का डट कर सामना करो और उन्हें पराजित करो। इसके बाद निश्चिन्त हो कर लूट जमा करो।'' [19]यहूदा बोल ही रहा था कि शत्रुओं का दल पहाड़ पर से उनका निरीक्षण करता हुआ दिखाई पड़ा। [20]उस दल के लोगों ने देखा: सेना भाग गई है और शिविर जल रहा है! वे शिविर से उठता हुआ धूआँ देख समझ गये कि क्या हुआ है। [21]वे इस दृश्य से बड़े भयभीत हुए। जब उन्होंने यह भी देखा कि यहूदा की सेना मैदान में लड़ने के लिए तैयार खड़ी है, [22]तो वे सब-के-सब पलिश्तियों के देश भाग गये। [23]इसके बाद यहूदा ने पड़ाव लूटना प्रारम्भ किया। उन्हें बहुत सोना और चाँदी, असली रंग के नीले और लाल वस्त्र तथा बहुत सारा माल मिला। [24]उन्होंने लौट कर भजन गाया और स्वर्गिक परमेश्वर को धन्यवाद दिया : ''प्रभु भला है; क्योंकि उसकी करुणा सदा-सर्वदा बनी रहती है।''। [25]उस दिन इस्राएल का अपूर्व ढंग से उद्धार हुआ।

लीसियस का पहला आक्रमण निष्फल

26 विदेशियों में जो बच निकले थे, वे लीसियस के यहाँ गये और उन्होंने उसे यह सारा हाल बताया। [27]वह यह सुन कर घबराया और हताश हो गया; क्योंकि उसने इस्राएल के विषय में जैसा सोचा था, वैसा नहीं हो सका और राजा ने जो आज्ञा दी थी, वह पूरी नहीं हो सकी। [28]उसने दूसरे वर्ष यहूदियों से लड़ने के लिए साठ हज़ार चुने हुए पैदल सैनिक और पाँच हज़ार घुड़सवार एकत्र किये। [29]उन सब ने इदूमिया प्रदेश पहुँच कर बेत-सूर के पास पड़ाव डाला। यहूदा मक्काबी दस हज़ार आदमियों को ले कर उनका सामना करने आया । [30]वह उस विशाल सेना को देख कर इस प्रकार प्रार्थना करने लगा, ''धन्य है तू, इस्राएल के उद्धारकर्ता! तूने अपने सेवक दाऊद द्वारा भीमकाय योद्धा का प्रहार विफल कर दिया था और शाऊल के पुत्र योनातन और उसके शस्त्रवाहक के हाथ में पलिश्तियों की सेना दे दी थी। [31]अब इस सेना को भी अपनी प्रजा इस्राएल के हाथ में दे दे, जिससे ये लोग अपनी सेना और अपने घुड़सवारों से लज्जित हो जायें। [32]उन्हें भयभीत कर, उनका अहंकार चूर-चूर कर दे। उन्हें इस तरह पराजित कर कि वे हताश हो जायें। [33]उन्हें अपने भक्तों की तलवार के शिकार होने दे, जिससे वे सब, जो तुझे जानते हैं, भजन गा कर तेरी स्तुति कर सकें।'' [34]इसके बाद वे एक दूसरे से जूझ गये। लीसियस की सेना के लगभग पाँच हजार सैनिक युद्ध में मारे गये। [35]जब लीसियस ने अपनी सेना की हार और यहूदा की सेना की निर्भीकता देखी और यह भी देखा कि य़हूदी जीवन या मरण का विचार किये बिना साहसपूर्वक लड़ रहे है, तो वह अन्ताकिया नगर लौट गया। वहाँ वह यहूदा प्रदेश पर फिर आक्रमण करने के लिए किराये के सैनिकों की और बड़ी सेना एकत्र करने लगा।

मन्दिर का शुद्धीकरण

36 उस समय यहूदा मक्काबी और उसके भाइयों ने यह कहा, ''हमारे शत्रु हार गये। हम ऊपर चढ़ कर मन्दिर का शुद्धीकरण और

4 : 24 भज 136 : 1 ; 2 इति 20 : 21 **4 : 30** 1 शम 17 : 41-54 ; 14 : 1 - 23

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
प्रतिष्ठान करें।'' [37]समस्त सेना एकत्र हो गयी
और सियोन पर्वत की ओर चल पड़ी। [38]वहाँ
उन्होंने देखा कि मन्दिर उजाड़ पड़ा है, वेदी
अपवित्र की गयी है और प्रवेश-द्वार जला दिये
गये हैं। आँगनों में जंगल या पहाड़ की तरह
झाड़-झंखाड़ उग आये हैं और पुरोहितों के
कक्ष भी ध्वस्त पड़े हैं। [39]यह देख उन्होंने अपने
वस्त्र फाड़े, सिर पर राख डाली और भारी
विलाप किया। [40]वे मुँह के बल गिर पड़े और
तुरहियों के फूंके जाने पर उन्होंने स्वर्गिक
परमेश्वर की दुहाई दी। [41]उसी समय यहूदा ने
सैनिकों को आदेश दिया कि जब तक मन्दिर
का शुद्धीकरण पूरा नहीं होता, तब तक वे गढ़
में रहने वाले लोगों से लड़ते रहें। [42]उसने ऐसे
पुरोहित चुने, जो अनिन्द्य थे और व्यवस्था के
उत्साही समर्थक थे। [43]तब उन्होंने मन्दिर को
शुद्ध किया और दूषित पत्थरों को ले जा कर
अशुद्ध स्थान पर फेंक दिया।

44 इसके बाद उन्होंने आपस में विचार-
विमर्श किया कि अपवित्र की गयी अग्नि-बलि
की वेदी का क्या किया जाये। [45]उनके मन में
यह अच्छा विचार आया कि वे उसे गिरा दें,
जिससे वह उनके कलंक का कारण न बने;
क्योंकि विदेशियों ने उसे अपवित्र कर दिया
था। [46]उन्होंने वह वेदी गिरा दी और उसके
पत्थर मन्दिर की पहाड़ी पर तब तक के लिए
किसी सुविधाजनक स्थान पर रख दिये, जब
तक कोई नबी आ कर उनके विषय में उन्हें नहीं
बताता। [47]इसके बाद उन्होंने अनगढ़े पत्थरों
से, जैसा कि व्यवस्था में निर्धारित है, पहली
वेदी के नमूने पर नयी वेदी बनायी। [48]उन्होंने
मन्दिर और मन्दिर का भीतरी भाग बनाया और
आँगनों को पवित्र किया। [49]फिर उन्होंने नयी
पवित्र सामग्रियाँ बनवा कर दीपाधार, धूप की
वेदी और मेज़ मन्दिर के बीचवाले खण्ड में रख
दी। [50]इसके बाद उन्होंने वेदी पर धूप चढ़ायी
और दीपाधार के दीये जलाये, जिससे मन्दिर
जगमगा उठा। [51]उन्होंने मेज़ पर रोटियाँ रखीं
और परदे लटकाये। इस प्रकार उन्होंने वह सारा
काम पूरा किया, जिसे उन्होंने प्रारम्भ किया था।

52 एक सौ अड़तालीसवें वर्ष* के नौवें
महीने—अर्थात् किसलेव—के पच्चीसवें दिन,
लोग पौ फटते ही उठे [53]और उन्होंने अग्नि-
बलि की जो नयी वेदी बनायी थी, उस पर
व्यवस्था के अनुसार बलि चढ़ायी। [54]जिस
समय और जिस दिन ग़ैर-यहूदियों ने वेदी को
अपवित्र कर दिया था, उसी समय और उसी
दिन भजन गाते और सितार, वीणा तथा झाँझ
बजाते हुए उन्होंने वेदी का प्रतिष्ठान किया।
[55]सब लोगों ने दण्डवत् कर आराधना की और
स्वर्गिक परमेश्वर को धन्य कहा, जिसने उन्हें
सफलता दी थी। [56]वे आनन्द के साथ अग्नि-
बलि, सहभागिता-बलि और स्तुति-बलि चढ़ा
कर आठ दिन तक वेदी के प्रतिष्ठान का पर्व+
मनाते रहे। [57]उन्होंने मन्दिर का अग्रभाग सोने
की मालाओं तथा ढालों से विभूषित किया,
प्रवेश-द्वारों तथा पुरोहितों के कक्षों की मरम्मत
की और उन में दरवाज़े लगाये। [58]लोगों में
उल्लास था और उन पर लगा हुआ ग़ैर-
यहूदियों का कलंक मिट गया। [59]यहूदा ने अपने
भाइयों तथा इस्राएल के समस्त समुदाय के
साथ यह निर्णय किया कि प्रति वर्ष इसी समय,
अर्थात् किसलेव के पच्चीसवें दिन से ले कर
आठ दिन तक वेदी के पुनःप्रतिष्ठान का पर्व
उल्लास तथा आनन्द के साथ मनाया जायेगा।

60 उसी समय उन्होंने सियोन पर्वत के चारों
ओर ऊँची दीवार और सुदृढ़ बुर्ज बनाये,
जिससे विदेशी वहां न आ सकें, और उनको न
रौंध सकें, जैसा वे पहले कर चुके थे। [61]यहूदा
ने उस की चौकसी करने के लिए वहाँ एक
रक्षक-सेना रखी। इसके अतिरिक्त उसने बेत-
सूर को भी किलाबन्द कर दिया, जिससे वह
इदूमिया प्रदेश के विरुद्ध जनता का एक सुदृढ़
गढ़ हो।

---

* 164 ई० पू० + यहूदी परम्परा में इसे ''हनूका'' अथवा ज्योतिपर्व के रूप में मनाते हैं।

4 : 40 1 शम 14 4 : 46 1 मक 14 : 41 **4 : 47** नि 20 : 25; व्य 27 : 5-6 **4 : 50** 2 मक 10 : 3 **4 : 52** 1 मक 1 : 54 **4 : 56** 2 इति 7 : 8 - 9

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इदूमिया और अम्मोन से यहूदा का युद्ध

5 आसपास के ग़ैर-यहूदी लोग यह जान कर
बहुत क्रुद्ध हुए कि वेदी बनायी गयी है और
पहले की ही तरह मन्दिर का प्रतिष्ठान हुआ है।
2उन्होंने निश्चय किया कि वे अपने यहाँ रहने
वाले याकूब-वंशियों को निर्मूल कर देंगे। अत:
वे इधर-उधर बिखरे हुए यहूदियों का वध
करने और उन को नष्ट करने लगे। 3इसलिए
यहूदा मक्काबी ने इदूमिया प्रदेश के अक्रबत्तेने
में निवास करने वाले एसाव-वंशियों पर
आक्रमण किया, क्योंकि वे इस्राएलियों पर
घात लगा कर हमला करते थे। उसने उन पर
जबरदस्त प्रहार किया, और उन्हें पराजित कर
उनको लूट लिया। 4उसे बयान-वंशियों की
दुष्टता की भी याद आयी, जो लोगों के लिए
फन्दा-जैसे हो गये थे; क्योंकि वे रास्तों पर
उनकी घात में बैठे रहते थे। 5यहूदा ने उन्हें
उनके बुर्जों में बन्द कर घेर लिया और उनका
सर्वनाश करने का निश्चय किया। तब उसने
बुर्जों और उन में रहने वाले लोगों को, अर्थात
सब कुछ को जला दिया। इसके बाद वह
अम्मोनियों के विरुद्ध आगे बढ़ा। 6वहाँ उसे
एक बड़ी सेना और बहुत लोग मिले। तिमोथी
उनका नेता था। 7उसने उन से कई लड़ाइयाँ
लड़ीं, उन्हें हराया और उनका विनाश कर
डाला। 8उसने येजेर नगर और उसके आसपास
के गाँव भी अधिकार में कर लिये। तब वह
यहूदा प्रदेश लौट गया।

यहूदियों के रक्षार्थ दो दलों का प्रस्थान

9 तब गिलआद में रहने वाले ग़ैर-यहूदी
लोग उस देश के निवासी यहूदियों के विरुद्ध
इस उद्देश्य से एकत्र हुए कि वे उनका सर्वनाश
कर दें। इस पर यहूदियों ने दथेमा गढ़ में शरण
ली। 10उन्होंने यहूदा मक्काबी तथा उसके
भाइयों के नाम पत्र भेजे। उन्होंने लिखा :
"हमारे आस-पास के ग़ैर-यहूदी हमारा सर्वनाश
करने के लिए एकत्र हुए हैं। 11वे वह गढ़ घेर
लेने की तैयारियाँ कर रहे हैं, जिस में हमने
शरण ले रखी है। तिमोथी उनका सेनाध्यक्ष है।
12इसलिए आप लोग आ कर हमें उनके हाथ
से छुड़ायें; क्योंकि हममें बहुत लोग मारे जा
चुके हैं। 13और तोबियाह के क्षेत्र में रहने वाले
हमारे सभी भाइयों का वध किया गया है।
उनकी पत्नियों और बच्चों को बन्दी बना कर
ले जाया गया है। उनकी सम्पत्ति ज़ब्त कर ली
गयी है। वहाँ लगभग एक हज़ार व्यक्ति मारे
जा चुके हैं।" 14वे पत्र पढ़ ही रहे थे कि फटे
कपड़े पहने गलील प्रदेश से दूसरे दूत आये।
वे भी वैसा ही सन्देश लाये। 15उन्होंने कहा,
"प्तुलिमयिस, सोर और सीदोन नगरों से तथा
अन्य-जातियों के समस्त गलील प्रदेश से लोग
हमारा विनाश करने जमा हो गये हैं।" 16जब
यहूदा और जनता ने यह सुना, तो एक बड़ी
सभा बुलायी गयी, जिससे वे इस बात पर
विचार-विमर्श करें कि वे अपने उन भाई-बहिनों
के लिए क्या करें, जो कष्ट में हैं और जिन पर
प्रहार हो रहा है। 17यहूदा ने अपने भाई शिमोन
से कहा, "अपने आदमी साथ लो और गलील
जा कर वहाँ अपने भाई-बन्धुओं की रक्षा करो।
मैं भाई योनातन को ले कर गिलआद जाऊँगा।"
18उसने रक्षा के लिए जकर्याह के पुत्र यूसुफ़
को और जनता के अध्यक्ष अज़र्याह को, सेना
के शेष लोगों के साथ, वहीं यहूदा प्रदेश में छोड़
दिया। 19उसने उन्हें यह आज्ञा दी, "आप इन
लोगों के प्रधान रहिए, किन्तु जब तक हम नहीं
लौटें, आप गैर-यहूदियों के साथ लड़ाई नहीं
छेड़ें।" 20गलील जाने के लिए शिमोन को तीन
हज़ार आदमी दिये गये और गिलआद जाने के
लिए यहूदा को आठ हज़ार।

गलील और गिलआद में युद्ध

21 शिमोन गलील प्रदेश में पहुँचा और
उसने ग़ैर-यहूदियों से कई युद्ध किये। वे उस
से पराजित हो कर भाग गये 22और उसने उन्हें
प्तुलिमयिस के प्रवेश-द्वार तक खदेड़ दिया।
गैर-यहूदियों के लगभग तीन हज़ार आदमी
मारे गये। उसने उन्हें लूट भी लिया। 23शिमोन
गलील और अरबत्ता के यहूदियों को, उनकी
पत्नियों, बाल-बच्चों और उनकी सारी सम्पत्ति

---

5 : 3 गण 34 : 4 ; यहो 15 : 3 5 : 13 2 मक 12 : 17

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

के साथ, बड़ी धूमधाम से यहूदा प्रदेश ले गया।
24 इधर यहूदा मक्काबी और उसका भाई
योनातन यर्दन नदी पार कर निर्जन प्रदेश में तीन
दिन तक यात्रा करते रहे। 25वहाँ उनकी भेंट
नबातैयी लोगों से हुई। उन्होंने उनका शान्तिपूर्वक
स्वागत किया और उन्हें बतलाया कि गिलआद
में उनके भाई-बन्धुओं पर क्या बीती तथा उन
में 26कितने लोग बसोरा, बोसोर, अलेमा,
ख़सफ़ो, मकेद और करनईम में घिरे पड़े हैं।
वे सब बड़े किलाबन्द नगर हैं। 27उन्होंने यह
भी बतलाया कि गिलआद के अन्य नगरों में भी
यहूदी लोग घिरे पड़े हैं और शत्रुओं ने यह
निश्चय किया है कि वे अगले दिन उन गढ़ों पर
आक्रमण करेंगे, और उन्हें अधिकार में कर
लेंगे और एक ही दिन में उन सब का संहार कर
डालेंगे।
28 यहूदा तुरन्त अपनी सेना के साथ मुड़ा
और निर्जन-प्रदेश के मार्ग से बसोरा की ओर
चल पड़ा। उसने उस नगर पर अधिकार कर
लिया और वहाँ के सभी पुरुषों को तलवार से
मौत के घाट उतार दिया। उसने नगर को पूरी
तरह लूट लिया और उसे जला दिया। 29वहां
से रात को चल कर वह दथेमा के गढ़ पर
पहुँचा। 30सुबह हुई, तो उसके सैनिकों ने यह
देखा कि वहाँ असंख्य लोग इकट्ठे हैं। वे उस
समय गढ़ पर अधिकार करने के उद्देश्य से
सीढ़ियाँ और अन्य यन्त्र ठीक कर रहे थे। गढ़
पर आक्रमण होने ही जा रहा था। 31जब यहूदा
ने यह देखा कि आक्रमण प्रारम्भ हो गया है और
युद्ध का भीषण कोलाहल और तुरहियों की
ध्वनि नगर से आकाश तक गूँज उठी है, 32तो
उसने अपने आदमियों से यह कहा, "आज
तुम्हें अपने भाई-बंधुओं के लिए युद्ध करना
होगा।" 33वह अपनी सेना को तीन दलों में
बांट कर शत्रुओं पर पीछे से टूट पड़ा। वे
तुरहियाँ फूंकते और ऊँचे स्वर में प्रार्थना कर रहे
थे। 34जैसे ही तिमोथी के आदमियों ने देखा कि
यह मक्काबी की सेना है, तो वे उसके सामने
से भाग खड़े हुए। यहूदा ने उन्हें इतनी बुरी तरह
हराया कि उस दिन उनके लगभग आठ हज़ार
आदमी मारे गये। 35इसके बाद यहूदा अलेमा
की ओर मुड़ कर उस पर आक्रमण किया और
उसे अधिकार में कर लिया। उसने वहाँ के सभी
पुरुषों को मार डाला। उसने अलेमा को लूटा
और उसे जला दिया। 36वहाँ से चल कर यहूदा
ने खसफ़ो, मकेद, बोसोर और गिलआद के
अन्य नगरों पर अधिकार किया। 37इसके बाद
तिमोथी ने एक दूसरी सेना एकत्र की और नदी
के उस पार रफोन नगर के सामने पड़ाव डाला।
38यहूदा ने पड़ाव की जाँच-पड़ताल के लिए
आदमी भेजे और उन्होंने उसे यह सूचना दी,
"हमारे आसपास के सभी ग़ैर-यहूदी उसके
साथ हैं। उसकी सेना बहुत बड़ी है 39और किराये
पर लिये गये अरबी लोग भी उसके सहायक
हैं। वे नदी के उस पार पड़ाव डाले पड़े हैं और
आप पर आक्रमण करने को तैयार हैं।" यह
सुन कर यहूदा उनका सामना करने निकल
पड़ा। 40यहूदा और उसके सैनिकों को नदी के
पास आते देख तिमोथी अपने सेनापतियों से
बोला, "यदि वह हम से पहले नदी पार कर
हम पर आक्रमण करता है, तो हम उसके सामने
नहीं टिक सकेंगे, वह हमें पराजित कर देगा।
41किन्तु यदि वह डरता और नदी के उस पार
पड़ाव डाले पड़ा रहता है, तो हम नदी पार करेंगे
और उसे जीत लेंगे।"
42यहूदा धारा के किनारे पहुँचा और उसने
नदी के पास जनता के अधिकारियों* का पहरा
बैठा कर उन्हें यह आदेश दिया, "कोई भी यहाँ
डेरा नहीं डाले; सबों को युद्ध करने जाना है।"
43सेना के पहले ही वह स्वयं नदी पार कर गया
और सब लोग उसके पीछे हो लिये। ग़ैर-यहूदी
उन से पूरी तरह पराजित हुए। उन्होंने अपने
शस्त्र फेंक कर करनईम के मन्दिर में शरण ली।
44यहूदियों ने नगर को अपने अधिकार में कर
लिया और मन्दिर तथा उस में रहने वालों को,
अर्थात् सब को जला दिया। इस प्रकार करनईम
यहूदियों के अधीन हो गया और फिर यहूदा का
सामना नहीं कर पाया।

* शब्दश: "शास्त्रियों"

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

45 इसके बाद यहूदा मक्काबी ने यहूदा
प्रदेश लौटने के लिए गिलआद में रहने वाले
सभी इस्राएलियों को, उनकी पत्नियों, बच्चों
और सम्पत्ति के साथ, एकत्र किया। वे बड़ी
संख्या में जमा हो गये। 46वे चलते-चलते एफ्रोन
पहुँचे, जो एक बड़ा क़िलाबन्द नगर था। उसके
दायें-बायें कोई मार्ग नहीं था। उसे पार करना
ज़रूरी था। 47उस नगर के निवासियों ने उन्हें
रोक दिया और प्रवेश-द्वार बन्द कर पत्थर लगा
दिये। 48यहूदा ने उसके यहाँ दूत भेज कर शान्ति
का यह प्रस्ताव किया, "अपने देश पहुँचने के
लिए हम आपकी भूमि पार करना चाहते हैं।
कोई आप को हानि नहीं पहुँचायेगा। हम उसे
केवल पैदल पार करना चाहते हैं।" किन्तु वे
उसके लिए प्रवेश-द्वार खोलने को राजी नहीं
हुए। 49तब यहूदा ने पड़ाव में घोषणा की कि
जो जहाँ हो, वहाँ तैयार हो जाये। 50अत: सैनिक
तैयार हो गये। यहूदा पूरे दिन और पूरी रात उस
नगर से युद्ध करता रहा। इसके बाद नगर उसके
हाथ आ गया। 51उसने सभी पुरुषों को तलवार
से मौत के घाट उतार दिया। उसने नगर का
सर्वनाश किया और उसे लूट लिया। उसने
लाशों पर पैर रख कर नगर में प्रवेश किया।
52इसके बाद वे यर्दन पार कर बेत-शान के
विस्तृत मैदान की ओर बढ़े। 53यहूदा बार-बार
पीछे के लोगों को इकट्ठा करता और जब तक
वे यहूदा देश नहीं पहुँचे, तब तक वह मार्ग में
लोगों का साहस बंधाता रहा। 54वे हर्ष और
उल्लास के साथ सियोन पर्वत पर चढ़े और
उन्होंने अग्नि-बलि चढ़ायी; क्योंकि सभी
सकुशल लौट आये थे और उन में एक भी खेत
नहीं रहा था।

यमनिया के पास यहूदियों की हार

55 जब यहूदा और योनातन गिलआद प्रदेश
में थे और उनका भाई शिमोन गलील प्रदेश में
प्तुलिमयिस नगर के सामने पड़ाव डाले पड़ा
था, 56तब ज़कर्याह के पुत्र यूसुफ़ और अज़र्याह
ने, जो सेनापति थे, उनके साहसी कार्यों और
उनकी लड़ाइयों के सम्बन्ध में सुना। 57उन्होंने
कहा, "चलो, हम भी अपना नाम कमायें और
आसपास के ग़ैर-यहूदियों से युद्ध करने चलें।"
58उन्होंने अपनी सेना को आदेश दिया और वे
यमनिया नगर पर आक्रमण के उद्देश्य से निकल
पड़े। 59गोरगियस और उसके सैनिक उन से
लड़ने नगर से बाहर आये। 60यूसुफ़ और
अज़र्याह हार गये और यहूदा प्रदेश की सीमा
तक खदेड़ दिये गये। उस दिन इस्राएल के
लगभग दो हज़ार आदमी मारे गये। 61इस तरह
लोग बुरी तरह पराजित हुए; क्योंकि उन्होंने
यहूदा और उसके भाइयों की बात की चिन्ता
नहीं की थी और सोचा था कि वे अपनी
बहादुरी का परिचय दे सकेंगे। 62किन्तु वे ऐसे
लोग नहीं थे, जिनके हाथों इस्राएल का उद्धार
हो सके।

यहूदा मक्काबी दक्षिण और पश्चिम की ओर

63 इस्राएल भर में और सारे ग़ैर-यहूदियों
के बीच, जहाँ कहीं वीर यहूदा और उसके
भाइयों की चर्चा होती, उन्हें सर्वत्र सम्मान की
दृष्टि से देखा जाता। 64लोग आते और उन्हें
बधाइयाँ देते। 65यहूदा अपने भाइयों के साथ
चल पड़ा और उसने दक्षिण में रहने वाले
एसाव-वंशियों से युद्ध किया। उसने हेब्रोन
और उसके निकटवर्ती नगरों को पराजित
किया, उनके मोर्चे ध्वस्त कर दिये और उनके
आसपास के बुर्ज जला दिये।

66 इसके बाद वह मरीसा होते हुए पलिश्तियों
के देश की ओर चल पड़ा। 67उस दिन लड़ाई
में कई पुरोहितों की मृत्यु हो गयी, जो अपनी
वीरता का परिचय देने के लिए दु:साहस से
लड़ाई में गये थे। 68फिर यहूदा अज़ोत की ओर
गया, जो पलिश्तियों के अधिकार में था। उसने
उनकी वेदियाँ ध्वस्त कर दीं, उनकी देवमूर्तियाँ
जला डालीं, नगर लूटे और यहूदा प्रदेश लौट
आया।

राजा अन्तियोखुस की मृत्यु

6 जब राजा अन्तियोखुस ऊपरी प्रदेशों का
दौरा कर रहा था, तो उसने सुना कि फ़ारस
देश का एलिमइस नगर अपनी सम्पत्ति और

5 : 32 नहे 4 : 14 5 : 46 2 मक 12 : 17 6 : 1 2 मक 9 : 1

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
सोना-चाँदी के लिए प्रसिद्ध है [2]और यह कि
वहाँ का मन्दिर अत्यन्त समृद्ध है और उस में
वे स्वर्ण ढालें, कवच और अस्त्र-शस्त्र सुरक्षित
हैं, जिन्हें फ़िलिप के पुत्र सिकन्दर, मकिदूनिया
के राजा और यूनानियों के प्रथम शासक, ने वहाँ
छोड़ दिया था। [3]इसलिए वह उस नगर पर
अधिकार करने और उसे लूटने के उद्‌देश्य से
चल पड़ा, किन्तु वह ऐसा नहीं कर पाया; क्योंकि
नागरिकों को उस अभियान का पता चल गया
था। [4]उन्होंने हथियार ले कर उसका सामना
किया और उसे भागना पड़ा। उसने दुःखी हो
कर वहाँ से बेबीलोन के लिए प्रस्थान किया।
5 राजा अन्तियोखुस फारस में ही था, जब
उसे यह समाचार मिला कि जो सेना यहूदा
प्रदेश पर आक्रमण करने निकली थी, वह
पराजित होकर भाग रही है। [6]सेनाध्यक्ष लीसियस
एक विशाल सेना लेकर वहाँ गया था, किन्तु
उसे यहूदियों के सामने से पीछे हट जाना पड़ा।
अब यहूदी अपने अस्त्रों, अपने सैनिकों की
संख्या और पराजित सेनाओं की लूट के कारण
शक्तिशाली बन गये थे। [7]उन्होंने यरूशलेम की
वेदी पर राजा द्वारा स्थापित घृणित मूर्ति को ढाह
दिया, पहले की तरह मन्दिर के चारों ओर ऊँची
दीवार बनवायी और राजा के नगर बेत-सूर की
भी किलाबन्दी कर दी।
8 राजा यह सुन कर चकित रह गया। वह
बहुत घबरा गया और पलंग पर लेट गया। वह
निराशा के कारण बीमार हो गया; क्योंकि वह
जो चाहता था, वह नहीं हो पाया था। [9]वह इस
तरह बहुत दिनों तक पड़ा रहा, क्योंकि एक
गहरा विषाद उस पर छा गया था। तब उसे बोध
हुआ कि वह मर रहा है। [10]उसने अपने सब
मित्रों को बुला कर उन से कहा, "मुझे नींद नहीं
आती और मेरा हृदय शोक में डूब गया है।
[11]मैंने पहले अपने मन में कहा, 'मैं कितना कष्ट
सह रहा हूँ और मुझ पर दुःख का कितना बड़ा
पहाड़ टूट पड़ा है! मैं तो अपने शासन के दिनों
में दयालु और लोकप्रिय था। [12]किन्तु अब मुझे
याद आ रहा है कि मैंने यरूशलेम के साथ
कितना अन्याय किया—मैं वहाँ के चाँदी और
सोने के सब पात्र चुरा कर ले गया और मैंने
अकारण यहूदा के निवासियों को मारने का
आदेश दिया। [13]मुझे लगता है कि मैं इसी से ये
कष्ट भोग रहा हूँ और गहरे शोक के कारण यहाँ
विदेश में मर रहा हूँ।"
14 राजा अन्तियोखुस ने अपने मित्र फ़िलिप
को बुलाया और उसे अपने समस्त राज्य का
प्रधान नियुक्त किया। [15]उसने उसे अपना मुकुट,
अपने राजकीय वस्त्र तथा अपनी अँगूठी दी
और उसे अपने पुत्र अन्तियोखुस को सुयोग्य
राजा बनने की शिक्षा देने को कहा। [16]राजा
अन्तियोखुस की मृत्यु एक सौ उनचासवें वर्ष
में* हुई। [17]इधर जब लीसियस ने सुना कि राजा
की मृत्यु हो गयी है, तो उसने उसके पुत्र
अन्तियोखुस को राजगद्दी पर बैठाया। उसने
बचपन से उसकी शिक्षा का प्रबन्ध किया था
और अब उसने उसका नाम यूपातोर रखा।

यरूशलेम के गढ़ का घेरा

18 यरूशलेम के गढ़ की रक्षक-सेना मन्दिर
के आसपास के रहनेवाले इस्राएलियों को तंग
करते, हर समय उन को हानि पहुँचाते और
ग़ैर-यहूदियों की सहायता करते थे। [19]इसलिए
यहूदा मक्काबी ने उनका संहार करने का
निश्चय किया और उन्हें घेरने के लिए सब
लोगों को इकट्ठा किया। [20]लोग आये और
उन पर घेरा डाल दिया। तब एक सौ पचासवाँ
वर्ष* चल रहा था। शिला-प्रक्षेपक और अन्य
यन्त्र तैयार किये गये; [21]किन्तु घिरे हुए सैनिकों
में से कुछ निकल कर भाग गये। [22]इस्राएली
कौम के कुछ अधार्मिक लोगों ने उनका साथ
दिया और राजा के पास जाकर कहा, "हमें
न्याय दिलाने और हमारे भाइयों का प्रतिशोध
लेने में आप कब तक देर करेंगे? [23]हम आपके
पिता के विश्वस्त सेवक रह चुके हैं। हम उनके
हर वचन पर ध्यान देते और उनके सभी आदेशों
का पालन करते आये हैं। [24]इसीलिए हमारी

* 163 ई० पू० * 162 ई० पू०
6 : 7 1 मक 1 : 54

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जाति के लोगों ने हमें घेर लिया है और वे हमारे
शत्रु बन गये हैं। हम में जो भी उन्हें मिल जाता
है, वे उसे मार डालते हैं। हमारी सम्पत्ति लूट
ली गयी है। 25और उन्होंने न केवल हम पर,
बल्कि आपके अधीन के क्षेत्रों पर भी आक्रमण
किया। 26वे अब यरूशलेम के गढ़ पर अधिकार
करने के लिए उस पर घेरा डाले हुए हैं और
उन्होंने मन्दिर और बेत-सूर को क़िलाबन्द
किया है। 27यदि आप उन्हें जल्द ही नहीं
रोकेंगे, तो वे आगे न जाने क्या कर बैठेंगे। फिर
वे आपके वश में नहीं रहेंगे।"

बेत-जकर्या के पास लड़ाई

28 यह सुनकर राजा क्रुद्ध हो गया। उसने
अपने सब मित्रों, सेनापतियों और रसद के
अधिकारियों को** बुला भेजा। 29अन्य राजाओं
और समुद्र के द्वीपों से भी उसके यहाँ किराये
के सैनिक आये। 30उसके सैनिक-बल में एक
लाख पैदल सैनिक, बीस हज़ार घुड़सवार और
बत्तीस युद्धकुशल हाथी थे। 31वे इदूमिया देश
से होते हुए आगे बढ़े और उन्होंने बेत-सूर के
सामने पड़ाव डाला। वे बहुत दिनों तक युद्ध-
यन्त्रों के सहारे उनके विरुद्ध युद्ध करते रहे।
किन्तु जो लोग घिरे पड़े थे, वे निकल कर टूट
पड़ते और यन्त्र जला देते थे। वे वीरतापूर्वक
लड़ते रहे। 32यहूदा मक्काबी ने गढ़ से चलकर
बेत-ज़कर्या के पास राजा के पड़ाव के सामने
पड़ाव डाला। 33दूसरे दिन सुबह होते ही राजा
ने सेना को सीधे बेत-जकर्या की ओर प्रस्थान
करने का आदेश दिया। वहाँ दोनों सेनाएँ
पंक्तिबद्ध खड़ी कर दी गयीं और तुरहियाँ
फूंकी जाने लगीं। 34हाथियों को दाखरस और
जैतून के रस द्वारा युद्ध के लिए उत्तेजित किया
गया। 35ये हाथी सेना के विभिन्न जत्थों में बाँटे
गये। एक-एक हाथी के साथ पाँच सौ घुड़सवारों
के अतिरिक्त एक हज़ार सैनिक खड़े किये गये,
जो कवच और काँसे के टोप पहने थे।
36घुड़सवार हाथी के आगे-आगे चलते थे और
जहाँ वह जाता था, वे उसके साथ-साथ जाते
थे और सदा उसके पास रहते थे। 37सुरक्षा के
लिए प्रत्येक हाथी की पीठ पर लकड़ी का एक
मज़बूत हौदा बड़ी कुशलता से बँधा था और
प्रत्येक के ऊपर चार-चार सशस्त्र सैनिक और
एक भारतीय महावत था। 38शेष घुड़सवारों को
सेना के दोनों छोरों पर खड़ा कर दिया गया।
वे बीच-बीच में शत्रु पर छापा मारते और दलों
की रक्षा करते थे।

39 जब सूर्य की किरणें सोने और काँसे की
ढालों पर चमकतीं, तो पर्वत उन से जगमगाने
लगते। ऐसा लगता कि वहाँ मशालें जल रही
हैं। 40राजकीय सेना का एक दल पहाड़ियों पर
और दूसरा मैदान में था। वे सुव्यवस्थित रूप
से आगे की ओर बढ़ते थे। 41जो कोई आती हुई
भीड़ का कोलाहल और शस्त्रों की झंकार
सुनता, वह घबरा जाता था। सेना बहुत बड़ी
और शक्तिशाली थी। 42यहूदा अपनी सेना के
साथ आक्रमण करने आगे बढ़ा और राजा की
सेना के लगभग छह सौ आदमी मारे गये।
43तभी एलआज़ार, उपनाम अवरन, की दृष्टि
राजकीय कवच पहने सब से बड़े हाथी पर
पड़ी। इसलिए उसने सोचा कि राजा उसी पर
सवार है। 44तब वह अपनी जाति की रक्षा करने
और अपना नाम अमर करने के लिए अपने प्राण
न्योछावर करने को तैयार हो गया। 45वह दल
के बीच से साहसपूर्वक अपने दायें-बायें के
सैनिकों पर प्रहार करते हुए, उस पशु की ओर
बढ़ा। 46उसने हाथी के नीचे जा कर और उसके
पेट में शस्त्र मार कर उसका वध किया। हाथी
उसके ऊपर आ गिरा और इस तरह वह भी वहीं
दब कर मर गया।

अन्तियोखुस और यहूदियों की सन्धि

47यहूदी राजकीय सेना की शक्ति और
उत्साह देख कर पीछे हट गये। 48इसके बाद
राजकीय सेना उन से लड़ने के लिए यरूशलेम
तक आ पहुँची। राजा यहूदा प्रदेश और सियोन
पर्वत पर आक्रमण की तैयारियाँ करने लगा।
49इसी बीच राजा ने बेत-सूर के लोगों से सन्धि

** अथवा, "घुड़सवारों के नायकों को"।

6 : 31 2 मक 13 : 19 - 22

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कर ली। वे नगर के बाहर आ गये। उन दिनों
देश का विश्राम-वर्ष चल रहा था, इसलिए
उनके पास खाद्य-सामग्री की कमी थी और वे
अधिक दिन वहाँ घेरे में नहीं रह सकते थे।
50इसलिए राजा ने बेत-सूर पर अधिकार कर
लिया और उसे एक दल की निगरानी में रख
दिया। 51वह बहुत दिन तक मन्दिर पर घेरा
डाले रहा, उसके सामने मंच बनाया और युद्ध-
यन्त्र लगाये, जो आग, पत्थर और बाण फेंकते
थे। उसने गोफन-जैसे यन्त्र भी लगाये। 52इधर
घेरे में पड़े हुए लोगों ने भी उनके विरुद्ध युद्ध-
यन्त्र लगाये। और इस तरह लड़ाई बहुत दिनों
तक चलती रही। 53भण्डारों में खाद्य-सामग्री
समाप्त हो गयी ; क्योंकि सातवाँ वर्ष चल रहा
था और ग़ैर-यहूदियों के यहाँ से आये यहूदियों
ने भी भोजन खाया था। 54 अब मन्दिर के पास
थोड़े ही सैनिक रह गये थे, क्योंकि जब वे भूख
से छटपटाने लगे, तो वे अपने-अपने घर लौट
गये।

55 लीसियस को पता चला कि फ़िलिप,
जिसे राजा अन्तियोखुस एपीफानेस ने मरते
समय अपने पुत्र अन्तियोखुस को सुयोग्य राजा
बनने की शिक्षा देने को कहा था, 56फ़ारस और
मादय देश से लौट आया है और उसके साथ
वह सेना भी है, जो राजा के साथ गयी थी।
उसने यह भी सुना कि वह राज्य पर अधिकार
कर लेना चाहता है। 57इसलिए लीसियस शीघ्र
ही वहाँ से चले जाने की तैयारियाँ करने लगा।
उसने राजा, सेनापतियों और सैनिकों से कहा,
"हम प्रतिदिन कमज़ोर पड़ते जा रहे हैं, दिन-
पर-दिन सामग्री कम होती जा रही है और यह
जगह, जिसका हम घेरा डाल कर पड़े हैं, बहुत
सुदृढ़ है। इसके अतिरिक्त हमें अपने राज्य का
भी ध्यान रखना चाहिए। 58इसलिए हम इन
लोगों से हाथ मिला कर इन से और इस समस्त
राष्ट्र से सन्धि क्यों न कर लें ? 59हम उन्हें यह
अनुमति दें कि वे पहले की तरह, अपने रीति-
रिवाजों के अनुसार जीवन बितायें; क्योंकि
हमने उनके रीति-रिवाजों को समाप्त करने का
प्रयत्न किया और इस कारण उनका क्रोध
भड़क उठा और उन्होंने विद्रोह किया।"
60राजा और सेनापति यह प्रस्ताव मान गये।
राजा ने यहूदियों के पास सन्धि का सन्देश भेजा
और वे लोग राजी हो गये। 61जब राजा और
सेनापतियों ने उन्हें शपथपूर्वक वचन दिया, तब
यहूदी अपने सुरक्षित स्थान से बाहर आये।
62राजा सियोन पर्वत गया। उसने उस स्थान की
क़िलाबन्दी देख कर अपनी शपथ भंग कर दी
और आदेश दिया कि चारदीवारी गिरा दी जाये।
63इसके बाद वह जल्द ही वहाँ से महानगर
अन्ताकिया की ओर चल पड़ा। वहाँ उसने देखा
कि फिलिप नगर का अध्यक्ष बन गया है।
इसलिए वह उस पर टूट पड़ा और बलपूर्वक
नगर पर अधिकार कर लिया।

देमेत्रियुस प्रथम

7 जब सिलूकस का पुत्र देमेत्रियुस रोम से
लौटा, तो एक सौ इक्यावनवाँ वर्ष* चल
रहा था। वह अपने कुछ सैनकों के साथ
समुद्रतट के एक नगर गया और वहाँ राज्य करने
लगा। 2उसने अपने पूर्वजों के राजमहल में
प्रवेश किया और उसकी सेना अन्तियोखुस
और लीसियस को गिरफ्तार कर उन्हें उसके
सामने उपस्थित करना चाहती थी। 3उसने यह
जान कर कहा, "मैं उनका मुँह भी देखना नहीं
चाहता।" 4इस पर सैनिकों ने उन्हें मार डाला
और देमेत्रियुस अपने राजसिंहासन पर बैठा।
5इसके बाद अलकिमस के नेतृत्व में, जो
महापुरोहित बनना चाहता था, इस्राएली कौम
के सब स्वधर्म-त्यागी तथा निरीश्वरवादी
इस्राएली आये। 6उन्होंने राजा के पास जा कर
लोगों पर यह अभियोग लगाया, "यहूदा और
उसके भाइयों ने आपके सब मित्रों को मार
डाला और अपने देश से हमें भी भगा दिया।
7आप अपने एक विश्वासपात्र व्यक्ति को भेज
कर पता लगायें कि यहूदा ने हमारे और राजा
के देश के साथ कैसा अनर्थ किया है। वह

* 161 ई० पू०
7 : 5 2 मक 14 : 3

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

व्यक्ति उन्हें तथा उनके साहयकों को दण्ड दिलाये।''

यहूदा प्रदेश में बक्खीदेस और अलकिमस

8 राजा ने अपने मित्रों में बक्खीदेस को चुना, जो नदी-पार के प्रदेश का राज्यपाल था तथा राज्य भर में सम्मानित और राजा का विश्वासपात्र था। 9राजा ने उसे तथा उसके साथ विधर्मी अलकिमस को भेजा, जिसे उसने महापुरोहित के पद पर नियुक्त किया। राजा ने बस्खीदेस को आदेश दिया कि वह इस्राएलियों से बदला ले। 10वे बड़ी भारी सेना ले कर चल पड़े और यहूदा प्रदेश पहुँचे। उन्होंने यहूदा मक्काबी और उसके भाइयों के पास दूतों द्वारा शान्ति का कपटपूर्ण सन्देश भेजा ; 11लेकिन उन्होंने उनकी बातों पर विश्वास नहीं किया, क्योंकि उन्होंने देखा कि वे विशाल सेना के साथ आये हैं। 12उस समय अलकिमस और बक्खीदेस के पास शास्त्रियों का एक दल इस उद्देश्य से एकत्र हो गया था कि उपस्थित समस्या का न्यायपूर्वक समाधान किया जाये। 13इस्राएलियों में हसीदी-समुदाय* पहला ऐसा दल था, जो शान्तिपूर्वक समस्या का समाधान चाहता था। 14उन लोगों का कहना था कि वह पुरोहित, जो सेना के साथ आया है, हारून का वंशज है; इसलिए वह हमारे साथ निश्चय ही अन्यायपूर्ण व्यवहार नहीं करेगा। 15अलकिमस ने उन्हें शान्ति का सन्देश दिया और शपथ खा कर यह वचन दिया, ''हम आप को या आपके मित्रों को कोई हानि नहीं पहुँचायेंगे।'' 16उन्होंने उस पर विश्वास किया, पर उसने उन में साठ व्यक्तियों को गिरफ्तार किया और उन्हें एक ही दिन मार डाला — जैसा कि धर्मग्रन्थ में लिखा है : 17 ''उन्होंने यरूशलेम के चारों ओर तेरे सन्तों के शव फेंक दिये और उनका रक्त बहाया। उन को दफ़नाने के लिए कोई नहीं रहा।'' 18इस पर सब लोगों पर भय और आतंक छा गया और उन्होंने कहा, ''उनके पास न तो सत्य है और न न्याय। वे अपने वचन और अपनी शपथ से मुकर गये।''

19 बक्खीदेस यरूशलेम से आगे बढ़ा और उसने बेत-जैथ के पास पड़ाव डाला। वहाँ से उसने आदमी भेज कर उन लोगों में से, जो उसके दल में सम्मिलित हो गये थे, और जनता में से भी कई लोगों को गिरफ्तार किया, और उनका वध कर उनके शव बड़े कुएँ में डाल दिये। 20इसके बाद बक्खीदेस देश को अलकिमस के अधीन छोड़ कर और उसकी सुरक्षा के लिए उसे एक सेना दे कर राजा के पास लौट आया। 21अलकिमस ने महापुरोहितीय पद पाने के लिए बड़ा यत्न किया। 22वे सब लोग, जो जनता में अशान्ति फैलाते थे, उसके पीछे हो लिये। उन्होंने यहूदा प्रदेश को अपने अधिकार में कर लिया और इस्राएली कौम को बड़ी हानि पहुँचायी। 23यहूदा मक्काबी ने देखा कि अलकिमस और उसके सहचर ग़ैर-यहूदियों से भी अधिक इस्राएलियों के साथ बुरा व्यवहार कर रहे हैं, 24इसलिए उसने यहूदा प्रदेश के सीमावर्ती क्षेत्रों का दौरा करते हुए विश्वासघाती यहूदियों से बदला लिया और उन्हें प्रदेश की ओर निकलने से रोक दिया। 25जब अलकिमस ने देखा कि यहूदा और उसके सैनिक शक्तिशाली होते जा रहे हैं और यह समझ लिया कि वह भविष्य में उनका सामना नहीं कर पायेगा, तो वह राजा के पास लौट गया और उन पर भारी अपराधों का अभियोग लगाया।

यहूदा प्रदेश में निकानोर की पराजय

26 इसलिए राजा देमेत्रियुस ने प्रसिद्ध सेनापति निकानोर को, जो इस्राएलियों का घोर शत्रु था, वहाँ भेजा और उसे उन लोगों का संहार करने का आदेश दिया। 27निकानोर एक बड़ी सेना ले कर यरूशलेम आया। उसने धोखा देने के लिए यहूदा और उसके भाइयों को शान्ति का यह कपटपूर्ण सन्देश भेजा, 28 ''मेरे और आपके बीच लड़ाई नहीं होनी चाहिए। इसलिए मैं अपने कुछ लोगों के साथ आप लोगों से शान्तिपूर्वक मिलने आऊँगा।'' 29अतः

* देखिए 2 : 42 की टिप्पणी।

7 : 17 भज 79 : 2-3

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वह यहूदा से मिलने गया और उन दोनों ने एक
दूसरे का मित्र-भाव से अभिवादन किया;
किन्तु शत्रु यहूदा को ज़बरदस्ती उठा ले जाना
चाहते थे। 30यहूदा यह देख कर कि निकानोर
उसके साथ विश्वासघात करने के विचार से
उसके पास आया है, पीछे हट गया और उसने
उस से फिर भेंट करने से इनकार कर दिया। 31
जब निकानोर को पता चला कि उसका
अभिप्राय प्रकट हो गया है, तो वह उस से लड़ने
निकल पड़ा। खफरसलामा के निकट वे एक
दूसरे के विरुद्ध आ डटे। 32निकानोर के आदमियों
में लगभग पाँच सौ मारे गये; शेष लोग
विदेशियों की बस्ती दाऊदपुर को भाग गए।

निकानोर द्वारा मन्दिर की निन्दा

33 इसके बाद निकानोर सियोन पर्वत गया।
कुछ पुरोहित और जनता के कई धर्मवृद्ध
सद्भाव से उसे नमस्कार करने मन्दिर के पवित्र
क्षेत्र से बाहर आये। वे उसे राजा के कल्याण
के लिए चढ़ायी जाने वाली बलि दिखाना
चाहते थे। 34लेकिन उसने उनकी हँसी उड़ायी,
उनका अपमान किया और घमण्ड-भरी बातें
कीं। 35फिर उसने गुस्से में यह शपथ ली: ''इस
बार यदि यहूदा और उसकी सेना तुरन्त मेरे हाथ
में नहीं दी जाती, तो मैं सकुशल लौटने पर यह
मन्दिर जला कर रहूँगा।'' ऐसा कह वह क्रुद्ध
हो कर वहाँ से चला गया। 36इसके बाद पुरोहित
अन्दर गये और बलि-वेदी और मन्दिर के
सामने खड़े हो कर सजल नेत्रों से कहने लगे,
37''हे परमेश्वर ! तूने यह मन्दिर इसलिए चुना
था कि तेरा नाम यहाँ प्रतिष्ठित हो और यह तेरी
प्रजा के लिए प्रार्थना और विनती का घर हो।
38अब तू ही इस व्यक्ति और इसकी सेना से
बदला ले। वे तलवार से मौत के घाट उतारे
जायें। स्मरण रख कि इन लोगों ने तेरी निन्दा
किस तरह की है। अब इन्हें यहाँ न रहने दे।''

निकानोर की पराजय

39 निकानोर यरूशलेम से चल पड़ा और
उसने बेत-होरोन नगर के निकट पड़ाव डाला।
वहाँ सीरिया से एक और सैनिक दल उस से
आ मिला। 40इधर यहूदा तीन हज़ार सैनिकों के
साथ अदासा के पास पड़ाव डाले पड़ा था।
यहूदा ने इस प्रकार परमेश्वर से प्रार्थना की:
41''एक बार जब राजकीय दूतों ने तेरी निन्दा
की थी, तो तेरा एक दूत आया था और उनके
एक लाख पचासी हज़ार सैनिकों को मार
गिराया था। 42तू आज भी उसी प्रकार हमारे
सामने इसकी सेना का संहार कर, जिससे अन्य
लोग यह जान जायें कि उसने तेरे पवित्र स्थान
की निन्दा की है। तू उसके कुकर्म के अनुसार
उसका न्याय कर।''

43 इसके बाद दोनों सेनाओं में युद्ध छिड़
गया। अदार मास की तेरहवीं तिथि थी।
निकानोर की सेना की करारी हार हो गयी और
वह लड़ाई के आरम्भ में ही मारा गया। 44जैसे
ही निकानोर के सैनिकों ने देखा कि वह गिर
गया है, वे अपने शस्त्र फेंक कर भाग खड़े हुए।
45यदूदी अदासा से गेजेर नगर तक दिन भर
तुरहियाँ फूंकते हुए उनका पीछा करते रहे।
46तुरहियाँ सुन कर लोगों ने चारों ओर से यहूदा
प्रदेश के सभी गाँवों से आ कर सैनिकों को घेर
लिया। वे पीछा करने वालों की चपेट में आ गए
और तलवार से मौत के घाट उतार दिये गये।
उन में एक भी जीवित नहीं रहा। 47उनका माल
लूट लिया गया। निकानोर का सिर और उसका
दाहिना हाथ, जिसे उसने गर्व से ऊपर उठाया
था, काट दिए गये और उन्हें ले जा कर यरूशलेम
के पास लटका दिया गया। 48लोगों को अपार
आनन्द हुआ और उन्होंने वह दिन उल्लास-
पर्व के रूप में मनाया। 49यह निश्चित हुआ कि
उस दिन, अर्थात् अदार मास की तेरहवीं तिथि
को प्रति वर्ष उत्सव मनाया जाये। 50इसके बाद
कुछ दिन तक यहूदा प्रदेश में शान्ति रही।

रोमियों की प्रशंसा

8 तब यहूदा मक्काबी ने रोमियों के विषय में
सुना कि वे शक्तिशाली हैं, अपने पक्ष में
रहने वालों के हितैषी हैं और अपने से मिलने

7 : 33 एज्रा 6 : 10; बारू 1 : 11 7 : 37 व्य 12 : 5 7 : 41 यश 36-37; 2 रा 19 : 35 7 :47 2 मक 15 : 30
8 : 1 2 मक 11 :34

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वालों से मैत्रीपूर्ण सन्धि करते हैं। वे महायोद्धा
हैं। [2]उसे गलातियों के देश* में उनकी लड़ाइयों
और उनकी वीरता के सम्बन्ध में भी बताया
गया और किस प्रकार उन्होंने वहाँ के लोगों को
अपने अधीन कर लिया और उन्हें कर देने के
लिए बाध्य किया। [3]यहूदा ने यह भी सुना कि
रोमियों ने सोने और चाँदी की खानों को अपने
अधिकार में करने के लिए स्पेन देश में क्या
किया था। [4]यद्यपि वह देश उन से दूर था, तो
भी उन्होंने अपने कौशल और निरन्तर प्रयत्न
द्वारा उसे अपने अधीन कर लिया। पृथ्वी के
सीमान्तों से राजा उनके विरुद्ध लड़ने आये थे,
लेकिन उन्होंने उन्हें बुरी तरह पराजित किया,
उनका विनाश कर डाला और अन्य राजाओं को
वार्षिक कर देने को बाध्य किया।

5 कित्तियों+ के राजा फिलिप और उसके पुत्र
परसूस तथा जिन्होंने उनके विरुद्ध विद्रोह
किया, वे सब हार गये और उनके अधीन हो
गये। [6]अन्तियोखुस महान, जो एशिया का
महाराजा था और जो एक सौ बीस हाथियों,
घुड़सवारों, रथों और विशाल सेना के साथ
रोमियों से युद्ध करने आया था, उनके द्वारा
पराजित किया गया [7]और जीवित ही उनके
हाथ आ गया था। उसे तथा उसके उत्तराधिकारियों
को बहुत अधिक कर चुकाना पड़ा था और उसे
विपुल धनराशि के साथ बन्धक के रूप में
आदमियों को रखना पड़ा था। [8]उन्होंने उसके
राज्य के कुछ उत्तम भूभाग, अर्थात् हिन्द** का
क्षेत्र, मादय तथा लीदिया प्रदेश, उस से छीन
कर राजा यूमेनस को दे दिये थे। [9]यहूदा ने यह
भी सुना कि यूनानी लोग भी रोमियों का संहार
करने चले थे, लेकिन जब उन्हें उनका यह
उद्देश्य मालूम हुआ, तो उन्होंने अपने एक
सेनापति को यूनानियों के विरुद्ध भेज कर उन
से युद्ध आरम्भ कर दिया। [10]यूनानियों में कितने
ही लोग मारे गये, उनकी पत्नियों और उनके
बच्चों को बन्दी बनाया गया, उन्हें लूटा गया
और उनका देश रोमियों के हाथ चला गया।
उनके गढ़ ध्वस्त कर दिये गये और वे स्वयं
अधीन हो गये, जैसी आज तक उनकी स्थिति
बनी हुई है। [11]जो अन्य राज्य और द्वीप उनका
सामना करते थे, उन्होंने उन्हें हराया और अपने
अधीन कर लिया, किन्तु वे अपने मित्रों के प्रति
और उनके साथ, जो उन पर निर्भर रहते थे,
मैत्रीपूर्ण व्यवहार करते थे।

12 उन्होंने निकट और दूर के राजाओं को
अपने अधीन कर लिया। लोग उनका नाम सुन
कर भयभीत होते हैं। [13]वे जिन्हें सँभालते और
राज्य करते रहने देते हैं, केवल वे ही राज्य कर
सकते हैं। परन्तु रोमी यदि ऐसा नहीं चाहते, तो
उन्हें अपदस्थ कर देते हैं। वे अत्यन्त शक्तिशाली
हैं। [14]इन सारी बातों के बावजूद उन में एक भी
ऐसा नहीं निकला, जिसने अपने सिर पर
राजकीय मुकुट पहनना चाहा या अपने बड़प्पन
का प्रदर्शन करने के लिए कभी राजसी बैंगनी
वस्त्र पहने हों। [15]उनके यहाँ एक परिषद् है,
जिस में प्रतिदिन तीन सौ बीस सभासद जनता
की भलाई के लिए विचार-विमर्श करते हैं।
[16]वे प्रति वर्ष एक व्यक्ति को स्वयं पर शासन
करने के लिये नियुक्त करते हैं, जिससे वह
सम्पूर्ण देश का शासक हो। सब केवल उसी
व्यक्ति की बात मानते हैं। उन में आपस में ईर्ष्या
और द्वेष का नाम नहीं है।

रोमियों के साथ यहूदा की सन्धि

17 यहूदा मक्काबी ने योहन के पुत्र,
अक्कोस के पौत्र यूपोलेमस को और एलआजर
के पुत्र यासोन को चुन कर मित्रता और सम्पर्क
स्थापित करने के लिए रोम भेजा। [18]उसका
विचार यह था: जब रोमी सुनेंगे कि यूनानियों
का राज्य इस्राएल को गुलाम बना कर हमारा
शोषण करता है, तो वे हम पर से उनका जूआ
हटा देंगे। [19]वे बड़ी लम्बी यात्रा कर रोम पहुँचे
और वहाँ परिषद् में उपस्थित किये गये।
[20]उन्होंने पूछने पर यह बताया: "यहूदा, जिसको
लोग मक्काबी नाम से भी पुकारते हैं, उसके
भाइयों और यहूदी जनता ने हमें आपके साथ

---

* अथवा "गौलों के देश"। + अथवा, 'मकिदूनियों'। ** अथवा भारत।

8 : 17 2 मक 4 : 11

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मैत्री और सन्धि स्थापित करने आपके पास
भेजा है। हम आप लोगों का सन्धिबद्ध राष्ट्र और
आपके मित्र बनना चाहते हैं।'' 21रोमियों ने यह
प्रस्ताव पसन्द किया। 22उस लेख की प्रतिलिपि
यह है, जिसे उन्होंने काँसे की पट्टियों पर अंकित
कर यरूशलेम भेजा, जिससे वह वहाँ इस सन्धि
और मैत्री के प्रमाण के रूप में बना रहे:
23 ''रोमी और यहूदी समुद्र में और भूमि पर
सदा सकुशल रहें! शत्रु और तलवार उन से दूर
रहें। 24यदि कोई रोमियों या उनके साम्राज्य से
सम्बद्ध लोगों पर आक्रमण करेगा, 25तो यहूदी,
जहाँ तक सम्भव होगा, सारे हृदय से लड़ाई में
उनका साथ देंगे। 26जैसा रोमी उचित समझें,
वे उनके शत्रुओं को न तो अन्न देंगे, न शस्त्र,
न धन और न जलयान। उन्हें बिना कुछ लिये
अपनी शर्त पूरी करनी होगी। 27यदि कोई
यहूदियों पर आक्रमण करेगा, तो जहाँ तक
सम्भव होगा, रोमी उनकी सहायता सारे हृदय
से करेंगे। 28आक्रमणकारी को न तो अन्न दिया
जायेगा, न शस्त्र, न धन और न जलयान। रोम
का निर्णय यही है। वे भी बिना कुछ लिये ये
शर्तें पूरी करेंगे।
29 ''रोमियों ने यहूदियों से इन्हीं शब्दों में
सन्धि की। 30यदि कोई पक्ष इन बातों में कुछ
घटाना-बढ़ाना चाहे, तो वह अपी इच्छानुसार
ऐसा कर सकता है और उसका बढ़ाना-घटाना
मान्य समझा जायेगा। 31हमने राजा देमेत्रियुस
को उसके द्वारा यहूदियों को पहुँचायी क्षति के
सम्बन्ध में यह लिखा है-'तुमने हमारे मित्र
और सन्धिबद्ध यहूदियों के कन्धे पर इतना भारी
जूआ क्यों रखा है? 32यदि उन्हें तुम्हारे सम्बन्ध
में फिर कोई शिकायत होगी, तो हम उनके
अधिकारों की रक्षा करेंगे और तुम से समुद्र और
भूमि पर लड़ेंगे।''

यहूदा की मृत्यु

9 इसी बीच देमेत्रियुस ने सुना कि निकानोर
और उसकी सेना युद्ध में हार गयी है। तब
उसने बक्खीदेस और अलकिमस को फिर
यहूदा प्रदेश में भेजने का निश्चय किया और
उसने उन्हें सेना का पार्श्व-भाग दिया। 2वे गलील
प्रदेश से हो कर चल पड़े और अरबेला प्रदेश
के मैसालोथ नगर पहुंचे। उन्होंने उसे अधिकार
में कर लिया और बहुत लोगों का वध किया।
3वे एक सौ बावनवें वर्ष* के पहले महीने
यरूशलेम के सामने आ पहुँचे। 4वहाँ से वे बीस
हजार पैदल सैनिक और दो हजार घुड़सवार ले
कर बेरआ नगर की ओर आगे बढ़े। 5इधर तीन
हजार चुने हुए योद्धाओं को ले कर यहूदा
मक्काबी एलासा नगर के पास पड़ाव डाले पड़ा
था। 6जब उसके आदमियों ने एक विशाल सेना
को आते देखा—सचमुच वह सेना बहुत बड़ी
थी—तो वे बहुत अधिक डर गये। बहुत-से
लोग पड़ाव से भाग गये। उन में केवल आठ
सौ रह गये। 7जब यहूदा ने देखा कि उसकी
सेना भाग रही है और लड़ाई एकदम सिर पर
आ गयी है, तो उसका साहस टूट गया; क्योंकि
अब लोगों को एकत्र करने का समय भी नहीं
था। 8उसने निराशा में उन शेष लोगों से कहा,
''चलो, हम अपने विरोधियों से लड़ने चलें।
सम्भव है, हम उनका सामना कर सकें।''
9लेकिन वे उस से असहमति प्रकट करते हुए
कहने लगे, ''नहीं, हम असमर्थ हैं। इस बार
हम अपने प्राणों की रक्षा की ही सोच सकते हैं।
हम अपने भाइयों को ले कर शत्रुओं से लड़ने
फिर लौटेंगे। हमारी संख्या बहुत थोड़ी रह गयी
है।'' 10यहूदा ने कहा, ''ऐसा नहीं होगा! हम
उन्हें पीठ क्यों दिखायें? मरना ही है, तो हम
अपने भाइयों के लिए लड़ते हुए मरें। हम अपने
सम्मान पर आँच क्यों आने दें?''
11 उस समय शत्रुओं की सेना उनका
मुकाबला करने के लिए पड़ाव से बाहर आ रही
थी। उनके घुड़सवार दो दलों में विभक्त थे;
गोफन चलाने वाले और तीर चलाने वाले लोग
सेना में आगे-आगे चल रहे थे। सर्वोत्तम
सैनिक सब से आगे थे। बक्खीदेस दाहिनी ओर
था। 12सैनिक दल तुरहियाँ फूंकते हुए दोनों

---
* अर्थात् 160 ई० पू०

8 : 22 1 मक 14 : 18

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ओर से आगे बढ़ रहे थे। इधर यहूदा के लोगों
ने भी तुरहियाँ फूंकीं। सेनाओं के कोलाहल से
पृथ्वी डोल उठी। 13लड़ाई सबेरे से शाम तक
चलती रही।
14 जब यहूदा ने देखा कि बक्खीदेस और
उसकी सेना का प्रधान अंग दाहिनी ओर है, तो
उसने अपने सब साहसी लोगों को अपने पास
बुलाया 15और उन्होंने उस दाहिने अंग को पीस
डाला। वे उन्हें अजोत की पहाड़ियों तक खदेड़
ले गये। 16जब बायीं ओर के सैनिकों ने देखा
कि दाहिना अंग पिस रहा है, तो वे मुड़ कर
यहूदा और उसके आदमियों का पीछा करने
गये। 17घमासान युद्ध हुआ और दोनों ओर से
बहुत-से लोग मारे गये। 18यहूदा भी खेत रहा।
शेष लोग प्राण बचा कर भाग गये।
19 तब योनातन और शिमोन अपने भाई
यहूदा का शव उठा कर ले गये और उन्होंने उसे
मोदीन के अपने पूर्वजों के कब्रिस्तान में
दफ़नाया। 20उन्होंने उसके लिए शोक मनाया
और समस्त इस्राएल के लोगों ने उसके लिए
विलाप किया। वे उसके लिए कई दिनों तक
शोक मनाते और कहते रहे, 21"यह वीर योद्धा
कैसे मारा गया ? यही तो इस्राएल का उद्धारकर्ता
था।"
22यहूदा मक्काबी का शेष इतिहास, उसकी
लड़ाइयाँ और उसके द्वारा किये गये वीरता के
कार्य तथा उसकी महानता—यह सब लेखबद्ध
नहीं है, क्योंकि वह अत्यंत विशाल है।

योनातन सद्धर्मियों का नेता

23 यहूदा की मृत्यु के बाद व्यवस्था के
विरोधी समस्त इस्राएल में फिर दिखाई पड़ने
लगे और सारे अधर्मी लोग फिर उठने लगे।
24उन दिनों घोर अकाल पड़ा मानो भूमि भी उन
कुकर्मियों का साथ देने लगी। 25बक्खीदेस ने
अधर्मियों को चुन-चुन कर उन्हें देश के
अधिकारी बनाया। 26वे यहूदा के समर्थकों को
ढूँढ़-ढूँढ़ कर बक्खीदेस के पास ले जाते और
बक्खीदेस उन्हें दण्ड देता और उनकी हँसी
उड़ाता था। 27इस तरह इस्राएल की स्थिति
ऐसी दु:खद हो गयी, जैसी वह तब से कभी
नहीं हुई थी, जब से उनके यहाँ कोई नबी नहीं
रहा। 28इसलिए यहूदा के सब मित्रों ने आ कर
योनातन से कहा, 29"जब से आपके भाई यहूदा
की मृत्यु हुई, उनके समान ऐसा कोई नहीं हुआ,
जो शत्रुओं के विरुद्ध, बक्खीदेस और हमारी
जाति के विरोधियों से युद्ध कर सके। 30इसलिए
आज हम आपका चुनाव करते हैं, जिससे आप
यहूदा के स्थान पर हमारे नेता बनें और हमारी
ओर से युद्ध करें।" 31योनातन ने उसी समय
नेता बनना स्वीकार कर लिया और अपने भाई
यहूदा का पद ग्रहण किया।

तकोअ नगर के पास योनातन

32 जैसे ही बक्खीदेस को इस बात का पता
चला, वह उसकी हत्या करने की सोचने लगा।
33जब योनातन, उसके भाई शिमोन और उनके
सभी साथियों को यह बात मालूम हुई तो वे
तकोअ के निर्जन क्षेत्र की ओर भाग गये और
उन्होंने अस्फ़ार के जल-कुण्ड के पास पड़ाव
डाला। 34बक्कीदेस को विश्राम के दिन उसका
पता चल गया और वह अपनी सारी सेना ले कर
यर्दन नदी को पार कर भाग गया। 35इधर योनातन
ने अपने भाई योहन को युद्ध की सामग्री के साथ
अपने मित्र नबातैयी लोगों के पास भेजा और
उन से निवेदन किया कि वे यह विपुल युद्ध-
सामग्री अपने पास सुरक्षित रखें। 36किन्तु मेदेबा
के यमब्री लोगों ने छापा मार कर योहन को
गिरफ़्तार कर लिया और उसका सारा सामान
लूट लिया और लूट के साथ चले गये।
37 योनातन और उसके भाई शिमोन को कुछ
दिनों बाद मालूम हुआ कि यमब्री लोगों के यहाँ
भारी धूमधाम से विवाह हो रहा है और प्रतिष्ठित
सामन्त की कन्या नदाबाथ नगर से विशाल
बारात के साथ लायी जा रही है। 38उन्हें अपने
भाई योहन की हत्या की याद आयी। अतः वे
पहाड़ पर गये, और उन्होंने अपने को उस की
ओट में छिपा लिया। 39जब उन्होंने आँखें उठायीं,
तो यह देखा कि भारी धूमधाम से बड़ी भीड़
चली आ रही है। वर, उसके मित्र और उसके

---

9 : 21 2 शम 1 : 19.25.27 **9 : 22** यो 21 : 25

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भाई बाजों, संगीतकारों और बहुत-से अस्त्र-
शस्त्रों के साथ उनकी ओर आ रहे हैं। 40तब
यहूदी ओट से निकलकर उन पर टूट पड़े
और उन को मार गिराया। बहुत लोग मारे गये
और शेष पहाड़ियों पर भाग गये। उन्होंने उनका
सारा सामान लूट लिया। 41विवाह शोक में और
उनका वाद्य-संगीत विलाप में बदल गया।
42इस तरह उन्होंने अपने भाई की हत्या का
बदला लिया और वे फिर यर्दन नदी के निकट
दलदल भूमि-क्षेत्र में लौट आये।

यर्दन नदी के तट पर बक्खीदेस और योनातन

43 बक्खीदेस को इसका पता लगा। वह एक
विशाल दलबल के साथ यर्दन के तट पर आया।
वह दिन विश्राम-दिवस था। 44योनातन ने अपने
सैनिकों से कहा, ''चलो, हम जा कर अपनी
प्राण-रक्षा के लिए लड़ें। आज हमारी स्थिति
वही नहीं रही, जो कल तक थी। 45हम पर सामने
से या पीछे से आक्रमण हो सकता है। हमारी
एक ओर यर्दन नदी फैली है, दूसरी ओर
दलदल है, झाड़ियाँ हैं। भाग निकलने का
कोई रास्ता नहीं। 46अब स्वर्ग के परमेश्वर की
दुहाई दो, जिससे तुम शत्रुओं के हाथ से बच
सको।''

47 युद्ध आरम्भ हुआ। योनातन ने बक्खीदेस
को मार गिराने के लिए हाथ उठाया, लेकिन वह
पीछे हट गया। 48तब योनातन और उसके
सैनिक यर्दन के जल में कूद पड़े, जिससे वे तैर
कर उस पार हो जायें। शत्रुओं ने उनका पीछा
नहीं किया, वे यर्दन के पार नहीं गये। 49उस
दिन बक्खीदेस के लगभग एक हज़ार सैनिक
मारे गये। 50तब वह यरूशलेम की ओर चल
पड़ा और उसने यहूदा प्रदेश में अनेक क़िलाबन्द
नगरों का निर्माण किया। उसने यरीहो, इम्माऊस,
बेत-होरोन, बेत-एल, थमनाथा, फ़ारथोन और
तेफ़ोन के गढ़ बनवाये और उन्हें ऊँची दीवारों,
प्रवेश-द्वारों और अर्गलाओं से सुदृढ़ किया।
51उन सब में उसने एक-एक सेना-दल रखा,
जिससे वह इस्राएलियों पर छापा मारता रहे।
52उसने बेत-सूर और गेजेर नगरों और यरूशलेम
के गढ़ को भी सुदृढ़ किया तथा उन में सैनिक
और खाद्य-सामग्री रखी। 53उसने देश के प्रमुख
लोगों के पुत्रों को पकड़ा, और उन्हें बंधक बना
लिया। उसने उन्हें यरूशलेम के गढ़ में बन्द कर
उन पर पहरा बैठा दिया।

महापुरोहित अलकिमस की मृत्यु

54 महापुरोहित अलकिमस ने एक सौ
तिरपनवें वर्ष* के दूसरे महीने में मन्दिर के
भीतरी आँगन की दीवार गिराने की आज्ञा दी।
उसने नबियों द्वारा निर्मित भवन का विनाश
करना चाहा। 55जैसे ही विध्वंस शुरू हुआ,
अलकिमस को दौरा पड़ा और काम रुक गया।
अलकिमस का मुँह बन्द हो गया। उसे ऐसा
लकुवा मार गया कि वह न एक शब्द बोल
सकता था और न अपनी गृहस्थी के विषय में
कोई आदेश दे सकता था। 56अलकिमस का
कष्ट बढ़ता गया और उन्हीं दिनों उसकी मृत्यु
हो गयी। 57जब बक्खीदेस ने देखा कि
अलकिमस की मृत्यु हो गयी है, तो वह राजा
के पास लौट गया। इसके बाद यहूदा प्रदेश में
दो साल तक शान्ति रही।

बक्खीदेस और योनातन की भिड़न्त

58 इसके बाद सब अधर्मियों ने एक षड्यंत्र
रचा। उन्होंने कहा, ''देखो, योनातन और
उसके सैनिक शान्ति का जीवन बिता रहे हैं। वे
अपने को सुरक्षित समझते हैं। अब हम
बक्खीदेस को बुलायें। वह रात भर में ही सब
को पकड़ लेगा।'' 59इसलिए वे बक्खीदेस के
पास गये और उसे ऐसा करने का परामर्श दिया।
60बक्खीदेस ने एक बड़ी सेना ले कर चलने का
निश्चय किया। उसने यहूदा प्रदेश में अपने
मित्रों के पास छिपे तौर पर चिट्ठियाँ भी लिख
भेजीं, जिससे वे योनातन और उसके दल को
पकड़ लें। किन्तु वे ऐसा नहीं कर सके, क्योंकि
योनातन तथा उसके सैनिकों को इस बात का
पता चल गया था। 61योनातन के सैनिकों ने देश
में यह षड्यन्त्र रचने वालों के लगभग पचास

* अर्थात् 159 ई० पू०।

9 : 41 आमो 8 : 10 **9 : 54** यहेज 42 : 20

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नेताओं को पकड़ कर मार डाला।
62 इसके बाद योनातन और शिमोन अपने
सारे सैनिकों के साथ बेत-बासी गये, जो
निर्जन प्रदेश में स्थित नगर है। उसने वहाँ नगर
के कुछ भागों का पुनर्निर्माण किया, जो ढाह
दिये गये थे। उन्होंने उस जगह को सुदृढ़
किया। 63जब बक्खीदेस को इस बात का पता
चला, तो उसने अपनी सारी सेना एकत्र की
और यहूदा प्रदेश से भी सैनिक बुलाये। 64उसने
आकर बेत-बासी को घेर लिया और बहुत
दिनों तक उसके लिए युद्ध करता रहा और
उसने युद्ध-यन्त्र भी बनवाये। 65योनातन ने अपने
भाई शिमोन को नगर में ही छोड़ दिया और कुछ
सैनिकों को ले कर खुले मैदान में निकल पड़ा।
66उसने अदोमेर और उसके भाई-बन्धुओं को
हराया और फ़सीरी लोगों के शिविर में घुस कर
उन्हें पराजित किया। इन विजयों के फलस्वरूप
उसकी सेना की वृद्धि होती गयी। 67उधर शिमोन
और उसके आदमी नगर के बाहर टूट पड़े और
युद्ध-यन्त्र जला डाले। 68वे बक्खीदेस के विरुद्ध
लड़ते रहे, जो बुरी तरह हार गया और अपनी
योजना की असफलता देख कर बहुत उदास
हुआ। 69इसलिए उसका क्रोध उन अधर्मियों
पर भड़क उठा, जिन्होंने उसे यहाँ बुलाया था।
उसने उन में से बहुतों को मार डाला और अपने
देश लौट जाने का निश्चय किया।

इस्राएल में शान्ति

70 जब योनातन को इसका पता चला, तो
उसने उसके पास दूत भेजे, जिससे वह उसके
साथ सन्धि कर ले और युद्धबन्दियों को लौटाने
का प्रबन्ध करे। 71बक्खीदेस ने यह प्रस्ताव
स्वीकार कर उसके अनुसार कार्य किया और
यह शपथ खायी कि वह आजीवन उसकी हानि
नहीं करेगा। 72उसने उन युद्धबन्दियों को लौटा
दिया, जिन्हें उसने यहूदा प्रदेश में पकड़ा था।
फिर वह मुड़ा और अपने देश सीरिया को लौट
गया। उसने यह निश्चित किया कि वह उनके
देश में फिर कभी नहीं आयेगा। 73इस प्रकार
इस्राएल में तलवार को विश्राम मिला। योनातन
मिकमास में रहने लगा और वहाँ रह कर लोगों
का न्याय करता था। उसने इस्राएल देश से
समस्त अधर्मियों को मिटा डाला।

योनातन और सिकन्दर बालास

10 एक सौ साठवें वर्ष+ अन्तियोखुस के
पुत्र सिकन्दर एपीफानेस ने जलयान से
उतरा और प्तुलिमयिस बन्दरगाह पर अधिकार
कर लिया। वहाँ के लोगों ने उसका स्वागत
किया और वह वहाँ राज्य करने लगा। 2जब
राजा देमेत्रियुस ने यह बात सुनी, तो वह एक
बड़ी सेना ले कर उस से लड़ने चल पड़ा।
3इसके साथ देमेत्रियुस ने योनातन के नाम
सद्भावपूर्ण पत्र लिखा, जिस में उसने योनातन
की भूरि-भूरि प्रशंसा की। 4उसने सोचा कि
जब तक सिकन्दर हमारे विरुद्ध उन से मित्रता
स्थापित करता है, उसके पहले ही हम उन्हें
मित्र बना लें; 5क्योंकि योनातन निश्चय ही याद
करेगा कि हमने उसके, उसके भाइयों और
लोगों के साथ कैसा बुरा व्यवहार किया था।
6इसलिए उसने योनातन को सेना एकत्र करने,
युद्ध-सामग्री जुटाने और अपने को उसका मित्र
घोषित करने की अनुमति दी। उसने जिन लोगों
को गढ़ में बन्धक के रूप में रखा था, उन्हें उसे
लौटाने का आदेश दिया।
7 योनातन येरूशलेम आया और वहाँ सब
लोगों को और जो गढ़ में थे, उन्हें भी बुला कर
उनके सामने वह चिट्ठी पढ़कर सुनायी। 8जब
लोगों ने यह सुना कि राजा ने उसे सैनिक
इकट्ठा करने की अनुमति दे दी है, तो वे भय
से काँप उठे। 9गढ़ के लोगों ने उन आदमियों
को, जो बन्धक के रूप में बन्दी थे, योनातन के
हवाले कर दिया और उसने उन्हें उनके माता-
पिता को लौटा दिया। 10अब योनातन येरूशलेम
में बस गया और नगर के निर्माण और उसकी
मरम्मत में लग गया। 11उसने कारीगरों को
आज्ञा दी कि वे चारदीवारी फिर से उठायें और
सियोन पर्वत के चारों ओर गढ़े पत्थरों से
क़िलाबन्दी करें। उन्होंने ऐसा ही किया। 12तब
वे गैर-यहूदी भाग गये, जो उन गढ़ों में रहते थे,

+ 152 ई० पू० में

9 : 73 व्य 19 : 19 10 : 18 2 मक 11 : 22

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जिन्हें बक्खीदेस ने बनवाया था। 13प्रत्येक व्यक्ति
अपना स्थान छोड़ कर स्वदेश लौट गया।
14केवल बेत-सूर में कुछ ऐसे लोग रह गये,
जिन्होंने व्यवस्था और आज्ञाओं का परित्याग
किया था; क्योंकि यह शरण-नगर था।
15 राजा सिकन्दर ने देमेत्रियुस द्वारा योनातन
से की हुई प्रतिज्ञाओं के विषय में सुना। उसे उन
लड़ाइयों और वीरता के कार्यों के विषय में भी
बताया गया, जो योनातन और उसके भाइयों ने
किये थे और उन कष्टों के सम्बन्ध में भी, जो
उन्हें झेलने पड़े थे। 16वह यह सुन कर बोल
उठा, "हम इसके-जैसा आदमी कहाँ पा सकते
हैं? हम इसे अपना मित्र बनाएंगे और इस से
सन्धि करेंगे।" 17उसने योनातन के नाम एक
चिट्ठी भेजी। उस में लिखा था: 18 "राजा
सिकन्दर का भाई योनातन को नमस्कार।
19हमने सुना है कि आप एक वीर और
शक्तिशाली योद्धा हैं और हमारे मित्र होने के
सर्वथा योग्य हैं। 20आज हम आप को आपकी
जाति का महापुरोहित नियुक्त कर रहे हैं और
आप को 'राजा का मित्र' की उपाधि देते हैं।
(उसने उसे एक बैंगनी वस्त्र और सोने का
मुकुट भी भेजा।) आप हमारा पक्ष लें और
हमारे मित्र बने रहें।"
21 एक सौ साठवें वर्ष* के सातवें महीने में,
मंडप-पर्व के दिन, योनातन ने पवित्र वस्त्र
धारण किया। उसने सेना इकट्ठी की और
बहुत-से अस्त्र-शस्त्रों से उसे सुसज्जित किया।

देमेत्रियुस प्रथम द्वारा यहूदियों को प्रलोभन

22 देमेत्रियुस ने जब यह सुना, तो उसने
दुःखी हो कर कहा: 23 "हमने यह क्यों होने
दिया कि हमारे पहले ही सिकन्दर ने यहूदियों
को अपना मित्र बना कर अपने पक्ष में कर
लिया? 24मैं अभी उनके नाम मैत्री-पूर्ण पत्र
लिख कर उन्हें सम्मान और उपहार देने का
आश्वासन दूँगा, जिससे वे मुझे अपना सहयोग
दें।" 25इसलिए उसने यहूदियों को इस प्रकार
लिखा: "राजा देमेत्रियुस का यहूदी लोगों को
नमस्कार। 26हमने सुना है कि आप हमारे साथ
हुए समझौते की शर्तों पर कायम रहे, आपने
मित्रता का निर्वाह किया और हमारे शत्रुओं का
पक्ष नहीं लिया। हम इस से बहुत प्रसन्न हैं।
27आगे भी आप इस तरह हमारे विश्वासी बने
रहें। आप हमारे लिए जो करेंगे, हम उपकारों
द्वारा उसका बदला चुकायेंगे। 28हम आप को
कर में छूट और अन्य उपहार देंगे। 29आज से
मैं आप को स्वतन्त्र घोषित करता हूँ और सारे
यहूदियों पर से व्यक्तिगत कर, नमक का
महसूल और राज-उपहार हटा रहा हूँ। 30उपज
का एक तिहाई भाग और फलों का आधा भाग,
जिस पर मेरा अधिकार था, आज से और आगे
कभी आप से नहीं लिया जायेगा! यह बात
यहूदा प्रदेश तथा उन तीनों जनपदों पर भी लागू
होगी, जो आज से सदा के लिए सामरी तथा
गलील प्रदेश से अलग कर यहूदा में मिलाये
जाते हैं। 31यरूशलेम की पवित्रता बनी रहेगी
और वह तथा उसकी सीमा में निवास करने
वाले लोग दशमांश तथा करों से एकदम मुक्त
रहेंगे। 32मैं यरूशलेम के गढ़ पर अपने अधिकार
का परित्याग कर रहा हूँ और उसे महापुरोहित
को दे देता हूँ। वह उस में अपने चुने हुए
सैनिकों को रखे, जो उसकी रक्षा करें। 33मैं यहूदा
देश के सभी यहूदियों को बिना कुछ लिये मुक्त
करता हूं जो मेरे राज्य में कहीं भी युद्धबन्दी के
रूप में रहते हैं। वे सभी अपने घर और अपने
पशुओं पर लगाये हुए करों से मुक्त किये जाते
हैं। 34सभी महापर्वों, विश्राम-दिवसों, नये
चांद-दिवसों* तथा अन्य पर्वों में और महापर्वों
के तीन दिन पहले और तीन दिन बाद तक मेरे
राज्य के सभी यहूदी बेगार और चुंगी से मुक्त
रहेंगे। 35इन दिनों किसी को यह अधिकार नहीं
होगा कि वह उन में किसी पर मुक़दमा चलाये
या किसी कारण से उसे तंग करे। 36यहूदियों
के तीस हज़ार पुरुष राजकीय सेना में भरती
किये जायेंगे। और जैसा अन्य सभी राजकीय
सैनिकों के लिए निर्धारित है, उन्हें भी वेतन

---

* 152 ई० पू० * अथवा, 'अमावस्या'।

10 : 21 लेव 23 : 34 **10 : 30** 1 मक 11 : 34 **10 : 34** यश 1 : 13-14

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दिया जायेगा। 37उन में कई लोग प्रमुख राजकीय
क़िलों में नियुक्त किये जायेंगे और अन्य लोगों
को भरोसे के राजकीय पद दिये जायेंगे। उनके
अध्यक्ष और अधिकारी उन्हीं में से चुने जायेंगे
और जैसा राजा ने यहूदा के लिए निश्चित किया
है, वे अपने रीति-रिवाजों का पालन भी कर
सकेंगे। 38सामरी प्रदेश से अलग कर यहूदा में
मिलाये हुए तीनों जनपद यहूदा देश का ही भाग
माने जायेंगे और उनका एक ही अध्यक्ष होगा,
और वह केवल महापुरोहित के अधीन होगा।
39 "मैं प्तुलिमयिस नगर और उसके आस-
पास की भूमि यरूशलेम के मन्दिर को भेंट
स्वरूप दे रहा हूँ जिससे मन्दिर के आवश्यक
खर्च का प्रबन्ध हो। 40मैं स्वयं उपयुक्त स्थानों
से प्राप्त राजस्व में से प्रति वर्ष चाँदी के पन्द्रह
हज़ार सिक्के+ दूँगा। 41सभी प्रकार का शेष
चन्दा जिसे अधिकारियों ने पिछले वर्षों नहीं
दिया, वह फिर मन्दिर की व्यवस्था के लिए
चुकाया जायेगा। 42इसके अतिरिक्त चाँदी के
पाँच हज़ार सिक्कों की वह राशि, जो प्रति वर्ष
मन्दिर से प्राप्त होती थी, सेवा करने वाले
पुरोहितों को प्रदान की जायेगी। 43जो लोग
राज्य-ऋण या अन्य कारण से, यरूशलेम के
मन्दिर अथवा उसके आसपास के क्षेत्र में शरण
ले चुके हैं, वे ऋण-मुक्त होंगे और मेरे राज्य
में होने वाली उनकी सम्पत्ति सुरक्षित रहेगी।
44मन्दिर बनाने और उसकी मरम्मत करने में
जो कुछ लगेगा, वह राजकीय कोष से दिया
जायेगा। 45यरूशलेम की शहरपनाह के निर्माण
और किलाबन्दी में जो कुछ लगेगा, वह भी
राजकीय कोष से दिया जायेगा। यही बात यहूदा-
प्रदेश के किलों की दीवारों पर भी लागू होगी।"

देमेत्रियुस का प्रस्ताव अस्वीकृत

46 जब योनातन और जनता ने ये बातें सुनीं,
तो उन्हें विश्वास नहीं हुआ। इस लिए उन्होंने
इन्हें अस्वीकार कर दिया; क्योंकि वे यह नहीं
भूले थे कि देमेत्रियुस ने इस्राएल के साथ कैसा
दुर्व्यवहार किया और उन्हें कितना सताया था।
47उन्होंने सिकन्दर का पक्ष लेना अधिक उचित
समझा, जिसने पहले मित्र होने का प्रस्ताव
किया था और उन्होंने उसके जीवन भर उसका
साथ दिया।

देमेत्रियुस की मृत्यु

48 तब राजा सिकन्दर ने एक बड़ी सेना
तैयार की और देमेत्रियुस से युद्ध करने चला।
49दोनों राजाओं की लड़ाई आरंभ हो गयी।
देमेत्रियुस की सेना भाग खड़ी हुई। सिकन्दर ने
उसका पीछा किया और उसे हरा दिया। 50युद्ध
सूर्यास्त तक चलता रहा, किन्तु अन्त में
देमेत्रियुस उसी दिन मारा गया।

क्लेओपात्रा से सिकन्दर का विवाह

51 इसके बाद सिकन्दर ने मिस्र के राजा
पतोलेमैउस के पास दूतों द्वारा यह संदेश भेजा:
52 "मैं अपने राज्य लौट आया और मुझे अपने
पूर्वजों का राजसिंहासन प्राप्त हो गया। देमेत्रियुस
को हरा कर मैं यहाँ का शासक बन गया हूँ और
हमारा देश अब मेरे हाथ आ गया है। 53मैंने उसके
विरुद्ध युद्ध किया और वह अपनी सेना के साथ
पराजित हो गया। इसके बाद मैं उसके
राजसिंहासन पर बैठ गया। 54आइए, अब हम
एक दूसरे के मित्र बन जायें। आप अपनी पुत्री
का मेरे साथ विवाह कर दें। मैं आपका दामाद
बनने का इच्छुक हूँ। मैं आप को और उसे भी
आपके योग्य उपहार दूँगा।"

55 राजा पतोलेमैउस ने यह उत्तर भेजा:
"धन्य है वह दिन, जब आप अपने पूर्वजों के
देश में लौट आये और उनके राजसिंहासन पर
बैठे! 56आपने जो लिखा है, मैं अब वही
करूँगा। किन्तु आप प्तुलिमयिस नगर तक
आयें, जिससे हम एक दूसरे से मिलें और एक-
दूसरे को देखें। तब मैं आपका ससुर बनूँ, जैसा
आपने कहा है।"

57 पतोलेमैउस एक सौ बासठवें वर्ष*
अपनी पुत्री क्लेओपात्रा के साथ मिस्र से रवाना
हुआ और प्तुलिमयिस नगर आया। 58राजा
सिकन्दर ने उस से भेंट की और पतोलेमैउस ने
उसे अपनी पुत्री क्लेओपात्रा को दे दिया। उसने
प्तुलिमयिस नगर में ही, राजाओं की प्रथा के

+ मूल में 'शेकेल'। * सन् 150 ई० पू०

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अनुसार, बड़ी धूमधाम से विवाहोत्सव मनाया।

राज्यपाल के पद पर योनातन

59 राजा सिकन्दर ने योनातन को पत्र लिखा,
जिससे वह उस से मिलने आये। 60तब वह
धूमधाम से प्तुलिमयिस नगर आया और दोनों
राजाओं से मिला। उसने उन्हें और उनके मित्रों
को चाँदी-सोना और बहुत सारे उपहार दिये
और वह उनका कृपापात्र बन गया। 61उस समय
इस्राएल के कुछ असन्तुष्ट और स्वधर्मत्यागी
लोग राजा से योनातन की शिकायत करने आये;
किन्तु राजा ने उन पर ध्यान नहीं दिया, 62बल्कि
उसने आज्ञा दी कि योनातन अपने वस्त्र उतार
कर बैंगनी वस्त्र धारण करे। ऐसा ही हुआ।
63राजा ने उसे अपने पास बिठाया और अपने
पदाधिकारियों से कहा, "इनके साथ नगर
जाओ और वहाँ घोषणा करो कि कोई किसी
मामले में इनकी शिकायत न करे और इन्हें
किसी तरह कष्ट न पहुंचाये"। 64जब उन लोगों
ने, जो उस पर अभियोग लगाना चाहते थे, यह
देखा कि उसका सम्मान किया जा रहा है,
उसके लिए यह घोषणा हो रही है और उसे
बैंगनी वस्त्र पहनाया गया है, तो वे सब चले
गये। 65राजा ने उसे सम्मानित किया और
उसका नाम अपने घनिष्ठ मित्रों की सूची में
लिखवाया। उसने उसे सेनापति और राज्यपाल
बना दिया। 66इसके बाद योनातन शान्ति और
आनन्द के साथ यरूशलेम लौट गया।

अपल्लोनियुस पर योनातन की विजय

67 एक सौ पैंसठवें वर्ष में+ देमेत्रियुस प्रथम
का पुत्र देमेत्रियुस क्रेते द्वीप से अपने पूर्वजों के
देश आया। 68जब राजा सिकन्दर ने यह सुना,
तो उसे बड़ा दुःख हुआ और वह महानगर
अन्ताकिया लौट आया। 69देमेत्रियुस ने
अपल्लोनियुस को केले-सीरिया प्रदेश का
राज्यपाल नियुक्त किया। उसने एक विशाल
सेना एकत्र की और यमनिया नगर के निकट
पड़ाव डाला। तब उसने महापुरोहित योनातन
को यह संदेश भेजा : 70"केवल आप हमारा
विरोध कर रहे हैं। आपके कारण लोग मेरा
उपहास और मेरी निन्दा करते हैं। आप पहाड़ी
क्षेत्र पर अधिकार कर हमारा विरोध क्यों करते
हैं? 71यदि आप को अपनी सेना का गर्व है, तो
आप मैदान में उतर आइए। वहीं हम दोनों की
शक्ति की परीक्षा हो। नगरों का सेना-बल मेरे
पक्ष में है। 72पता कीजिए, आप को स्वयं
मालूम हो जायेगा कि मैं कौन हूँ और हमारे
सहायक कौन हैं। आप को बताया जायेगा कि
आप हमारे सामने नहीं टिक सकते। आपके
पूर्वज अपने देश में ही दो बार पराजित हो चुके
हैं। 73आप हमारे घुड़सवारों और विशाल सेना
के सामने मैदान में टिक नहीं सकेंगे। वहाँ न
पत्थर हैं, न कंकड़ और न कहीं ऐसा स्थान,
जहाँ कोई भाग कर शरण ले।"

74 अपल्लोनियुस की यह बात सुन कर
योनातन घबरा गया। उसने दस हजार आदमियों
के साथ यरूशलेम से प्रस्थान किया। उसका
भाई शिमोन भी उसकी सहायता के लिए उसके
पास गया। 75योनातन ने याफ़ा बन्दरगाह के
पास पड़ाव डाला। नगरवासियों ने प्रवेश-द्वार
बन्द कर दिये, क्योंकि अपल्लोनियुस का एक
दल याफा के भीतर था। 76जब योनातन ने उस
पर आक्रमण किया, तो नगरवासियों ने डर कर
प्रवेश-द्वार खोल दिये और योनातन ने याफ़ा पर
अधिकार कर लिया। 77यह सुन कर
अपल्लोनियुस तीन हज़ार घुड़सवार और एक
विशाल सेना ले कर अजोत नगर की ओर चल
पड़ा, यह दिखाते हुए कि वह उससे आगे जाने
वाला है; किन्तु वह वास्तव में मैदान की ओर
बढ़ना चाहता था; क्योंकि उसे अपने बहुसंख्यक
घुड़सवारों पर भरोसा था। 78योनातन अज़ोत
तक उसका पीछा करता रहा और वहाँ दोनों
सेनाओं में युद्ध आरम्भ हो गया। 79अपल्लोनियुस
ने छिपे-छिपे एक हज़ार घुड़सवार मार्ग में छोड़
दिये, जिससे वे पीछे से योनातन पर आक्रमण
करें। 80योनातन को इस बात का पता चला।
उसकी सेना घिर गयी और सबेरे से शाम तक

+ सन् 147 ई० पू०।

10 : 63 उत 41 : 43 ; एस 6 : 9 **10 : 69** 2 मक 3 : 5 ; 4 : 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उसके आदमी बाणों का शिकार बनते रहे।
81फिर भी, जैसा योनातन ने आदेश दिया था,
उसके आदमी डटे रहे। शत्रु के घोड़े थकने
लगे। 82इसी बीच शिमोन भी अपनी सेना ले
कर आ पहुँचा और उसने पैदल सैनिकों पर
आक्रमण कर दिया। घोड़े तो थक चुके थे।
शिमोन ने शत्रुओं को हरा दिया और वे भाग
खड़े हुए। 83घुड़सवार भी मैदान में तितर-
बितर हो गये। भागने वाले सैनिकों ने अज़ोत
नगर पहुँच कर बेत-दागोन में , अपने देवालय
में शरण ली। 84योनातन ने अज़ोत और उसके
आसपास के नगरों में आग लगा दी और उन्हें
लूट लिया। दागोन देवता का मन्दिर और उसके
शरणार्थी जल कर राख हो गये। 85तलवार से
मारे गये और जलने वाले सैनिकों की संख्या
सब मिला कर लगभग आठ हज़ार थी।
86योनातन ने यहां से आगे बढ़ कर अशकलोन
नगर के निकट पड़ाव डाला। नगर के लोग बड़ी
धूम-धाम से उस से मिलने आये। 87लूट के
माल से लदा योनातन अपने लोगों के साथ
यरूशलेम लौट आया। 88जब राजा सिकन्दर ने
यह बात सुनी, तो उसने योनातन को और
सम्मान देने का विचार किया। 89उसने उसे सोने
का एक बकसुआ दिया, जो केवल राजकीय
सम्बन्धियों को दिया जाता था। इसके अतिरिक्त
उसने उसे एक्रोन नगर और उसके आसपास
का भूभाग व्यक्तिगत सम्पत्ति के रूप में देदिया।

पतोलेमैउस और सिकन्दर की मृत्यु

11 मिस्र के राजा पतोलेमैउस ने एक
विशाल सेना तैयार की, जो समुद्रतट के
रेतकणों की तरह असंख्य थी और उसने बहुत-
से जलयान भी तैयार किये। उसने सोचा कि वह
धोखे से सिकन्दर के राज्य पर अधिकार कर
उसे अपने राज्य में मिला ले। 2वह शान्ति की
बातें करते हुए सीरिया देश गया। नगरों के
निवासियों ने उसके लिए अपने प्रवेश-द्वार
खोले और उसका स्वागत किया; क्योंकि राजा
सिकन्दर ने आज्ञा दी थी कि वे उसके ससुर के
लिए ऐसा करें। 3लेकिन पतोलेमैउस जिस किसी
नगर में प्रवेश करता था, उस में अपना एक दल
छोड़ देता था। 4जब वह अज़ोत नगर के पास
आया, लोगों ने उसे दागोन देवता का जलाया
हुआ मन्दिर दिखाया। उन्होंने अज़ोत और
उसके आसपास के खँडहर और लोगों की वे
अस्थियाँ दिखायीं, जो लड़ाई में जलायी गयी
थीं; क्योंकि उन्होंने उसके रास्ते पर ही इनके
ढेर लगा दिये थे। 5लोगों ने योनातन की शिकायत
करते हुए राजा को वह सब बताया जो उसने
किया था। किन्तु राजा मौन रहा। 6योनातन राजा
से मिलने बड़ी धूमधाम से याफा बन्दरगाह
आया। उन्होंने एक दूसरे को नमस्कार किया
और वहीं एक साथ रात बितायी। 7योनातन राजा
के साथ एलूथरस नदी के पास तक गया और
उसके बाद यरूशलेम लौट गया। 8राजा
पतोलेमैउस ने मन में सिकन्दर के विरुद्ध
षड्यन्त्र रच कर सिलूकिया बन्दरगाह तक
समुद्रतट के सब नगरों पर अधिकार कर लिया।
9उसने दूतों द्वारा राजा देमेत्रियुस को यह संदेश
भेजा: "आइए, हम परस्पर सन्धि करें। मैं
अपनी पुत्री आप को दूँगा, जो सिकन्दर की
पत्नी है और आप अपने पिता के राज्य के राजा
बन जायेंगे। 10मुझे दुःख है कि मैंने उसे अपनी
पुत्री दी और उसने मेरा वध करना चाहा।"
11उसने सिकन्दर पर यह अभियोग लगाया,
क्योंकि वह उसका राज्य छीनना चाहता था।
12उसने उस से अपनी पुत्री वापस ले ली और
उसे देमेत्रियुस को दे दिया। उसने सिकन्दर से
अपनी मित्रता भंग कर दी और दोनों की शत्रुता
स्पष्ट हो गयी। 13पतोलेमैउस ने राजधानी
अन्ताकिया में प्रवेश कर एशिया का राजमुकुट
अपने सिर पर धारण किया। इस तरह उसने दो
मुकुट धारण कर लिये—एक मिस्र का और
दूसरा एशिया का। 14उन दिनों राजा सिकन्दर
किलीकिया प्रदेश में था, क्योंकि उस प्रदेश के
लोगों ने विद्रोह किया था। 15सिकन्दर को जैसे
ही यह पता चला, वह उसके विरुद्ध लड़ने
चला। पतोलेमैउस ने एक विशाल सेना के साथ
उसका सामना किया और उसे भगा दिया।

---

10 : 83 1 शम 5 : 2 10 : 89 1 मक 11 : 58 ; 14 : 43 -44

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
16सिकन्दर शरण के लिए अरब देश भागा और
पतोलेमैउस पूर्ण रूप से विजयी हुआ। 17अरबी
जब्दीएल ने सिकन्दर का सिर कटवा कर उसे
पतोलेमैउस के पास भेज दिया। 18इसके तीसरे
ही दिन राजा पतोलेमैउस की भी मृत्यु हो गयी
और उसने जो दल किलाबन्द नगरों में रख छोड़े
थे, वहाँ के निवासियों ने उनकी हत्या कर दी।
19देमेत्रियुस एक सौ सड़सठवें वर्ष* राजा बना।

यहूदियों को भारी छूट

20 उन्हीं दिनों योनातन ने यरूशलेम के गढ़
पर अधिकार करने के लिए यहूदा प्रदेश के
लोगों को इकट्ठा किया। उसने उसके विरुद्ध
बहुत सारे युद्ध-यन्त्रों का निर्माण किया। 21इस
पर कुछ स्वधर्मत्यागी यहूदी, जो अपनी जाति
से बैर रखते थे, राजा देमेत्रियुस द्वितीय के पास
गये और उस से बोले कि योनातन ने गढ़ को
घेर लिया है। 22यह सुन कर राजा क्रुद्ध हुआ
और शीघ्र ही प्रस्थान कर प्तुलिमयिस नगर आ
पहुँचा। उसने चिट्ठी भेज कर योनातन को
आदेश दिया कि वह घेरा उठा कर जितनी
जल्दी हो सके, उस से मिलने प्तुलिमयिस
आये। 23योनातन ने यह सुन कर भी घेरा बनाये
रखने को कहा और इस्राएल के कुछ धर्मवृद्धों
और पुरोहितों को ले कर स्वयं जोखिम का
सामना करने गया। 24वह उपहार के रूप में
चाँदी-सोना, वस्त्र और अन्य बहुत-सी चीजें
ले कर राजा के पास प्तुलिमयिस नगर गया। इस
प्रकार वह उसका कृपापात्र बन गया। 25तब कुछ
स्वधर्मत्यागी यहूदी उस पर अभियोग लगाने
आये, 26किन्तु राजा ने अपने पहले के शासकों
की तरह अपने सभी मित्रों के सामने योनातन
का सम्मान किया। 27उसने महापुरोहित के पद
पर उसकी नियुक्ति की पुष्टि की। जो उपाधियाँ
उसे प्राप्त हो चुकी थीं, उन्हें फिर प्रदान किया
और उसका नाम अपने घनिष्ठ मित्रों की सूची
में लिखवाया। 28योनातन ने राजा से निवेदन
किया कि वह यहूदा प्रदेश और सामरी प्रदेश
के तीन जनपदों को कर-मुक्त कर दे और उस
से प्रतिज्ञा की कि वह उसे तीन सौ सिक्के**
दिया करेगा।

29 राजा ने यह सब स्वीकार कर लिया और
योनातन को इस सम्बन्ध में यह पत्र दिया: 30
"भाई योनातन और यहूदियों को राजा देमेत्रियुस
का नमस्कार। 31हमने आप लोगों के विषय में
अपने सम्बन्धी लस्थेनस को जो पत्र भेजा है,
उसकी प्रतिलिपि हम आपके पास भेज रहे हैं,
जिससे आप उसकी जानकारी प्राप्त करें: 32
'पिता लस्थेनस को राजा देमेत्रियुस का प्रणाम।
33यहूदी हमारे साथ मित्रता रखते हैं और वे
आज तक हमारे अधिकारों की रक्षा करते आ
रहे हैं। इसलिए हमने निश्चय किया है कि
हमारे प्रति उनका जो सद्भाव है, हम उनका
मूल्य चुकायें। 34हमने उन्हें यहूदा प्रदेश दिया
है; साथ ही अफैरेमा, लिद्दा और रामतईम के
तीनों जनपद और उनके निकटवर्ती भाग भी
सामरी प्रदेश से अलग कर यहूदा प्रदेश में मिला
दिये हैं। यरूशलेम में बलि-भेंट चढ़ाने वाले
सभी लोग अपनी भूमि की उपज एवं पेड़-
पौधों के फलों पर परम्परागत वार्षिक राज-कर
से मुक्त किये जाते हैं। 35अन्य सभी देय करों
से, जैसे दशमांश, लगान के भुगतान, नमक-
कुण्ड के महसूल, राज-उपहार आदि करों से
हम आज से ही उन्हें मुक्त करते हैं। 36इस में
आज से कभी कोई परिवर्तन नहीं होगा।
37कृपया इस पत्र की एक प्रतिलिपि तैयार करा
कर योनातन को दे दें, जिससे वह पवित्र पर्वत
के किसी सार्वजनिक स्थान पर रखा जाये।' "

देमेत्रियुस द्वितीय को योनातन की सहायता

38 जब राजा देमेत्रियुस ने देखा कि उसके
शासन में अब देश में शान्ति है और कोई उसका
विरोध नहीं कर रहा है, तो उसने उन विदेशियों
के सिवा, जिन्हें उसने द्वीपों से ला कर भरती
किया था, अपनी सारी सेना को सेवा से मुक्त
कर, सभी को अपने-अपने घर जाने को कहा।
इस से उसके पूर्व-राजाओं के सब सैनिक उस
से बैर करने लगे। 39जब त्रीफ़ोन ने, जो सिकन्दर
का पक्षधर रह चुका था, यह देखा कि सब
सैनिक देमेत्रियुस के विरुद्ध भुनभुना रहे हैं, तो

* अर्थात् 145 ई० पू० ** मूल में "तलन्त"। प्रायः दस हजार क़िलो चाँदी।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वह अरबी इमलकुए के पास गया, जो सिकन्दर
के पुत्र कुमार अन्तियोखुस को दीक्षा दे रहा था।
40उसने उस से अनुरोध किया कि वह उसे
राजकुमार को दे दे, जिससे वह अपने पिता की
जगह राजा बने। उसने राजकुमार को यह सब
बताया कि देमेत्रियुस ने क्या-क्या किया और
यह भी कि सैनिक उस से कैसे बैर करते थे।
त्रीफोन बहुत दिनों तक रुका रहा। 41इस बीच
योनातन ने राजा देमेत्रियुस से निवेदन किया कि
वह यरूशलेम के गढ़ और अन्य किलाबन्द
नगरों से अपने सैनिक हटा ले; क्योंकि वे
इस्राएल के विरुद्ध लड़ते थे। 42देमेत्रियुस ने
योनातन को संदेश भेजाः "मैं आप और
आपकी जाति के लिए न केवल यह करूँगा,
बल्कि उचित अवसर आने पर आपका और
आपकी जाति का सम्मान करूँगा। 43किन्तु इस
समय आप ऐसे सैनिक भेजें, जो मेरी ओर से
युद्ध करें, क्योंकि मेरी सारी सेना मेरे विरुद्ध हो
गयी है।"

44 इसलिए योनातन ने तीन हजार युद्ध-
कुशल सैनिकों को अन्ताकिया नगर भेजा। जब
वे राजा के पास पहुँचे, तो राजा बहुत प्रसन्न
हुआ। 45लेकिन वहाँ के एक लाख बीस हज़ार
नागरिक राजा का वध करने के लिए नगर के
भीतर जमा हो गये। 46राजा ने अपने महल में
शरण ली और नगरवासी राजपथों पर अधिकार
कर लड़ने लगे। 47राजा ने यहूदियों को सहायता
के लिए बुलाया। वे सब उसके पास आये और
पूरे नगर में चारों ओर फैल गये। उन्होंने उसी
दिन एक लाख आदमियों का वध किया।
48उन्होंने उसी दिन पूरा नगर लूटा और उस में
आग लगा दी। इस प्रकार उन्होंने राजा की रक्षा
की। 49जब नगरवासियों ने देखा कि नगर पर
यहूदियों का अधिकार हो गया और अब यहूदी
जैसा चाहें, वैसा कर सकते हैं, तो उनका साहस
टूट गया और उन्होंने राजा से दया की याचना
की। उन्होंने कहा, 50 "अपना दाहिना हाथ
बढ़ा कर हमारी सहायता कीजिए। यहूदी हम
से और हमारे नगर से लड़ना बन्द कर दें।"
51उन्होंने अपने शस्त्र डाल कर सन्धि कर ली।
राजा और उसके राज्य के सभी लोगों की ओर
से यहूदियों का बड़ा सम्मान किया गया और
वे लूट से लद कर यरूशलेम लौट गये। 52जब
राजा देमेत्रियुस राजसिंहासन पर फिर बैठ गया
और देश भर में शान्ति हो गयी, 53तो उसने अपना
वचन भंग कर दिया और योनातन के प्रति
उसका रुख बदल गया। उसने उसके किये हुए
उपकारों का प्रतिदान नहीं दिया बल्कि उसके
साथ कठोरता से दुर्व्यवहार करने लगा।

योनातन द्वारा कुमार अन्तियोखुस को सहायता

54 इन घटनाओं के बाद त्रीफ़ोन राजकुमार
अन्तियोखुस के साथ लौटा, जो अभी बहुत
छोटा था। उसने उसे राजा बनाया और
उसके सिर पर राजमुकुट पहना दिया।
55उसके पास वे सभी सैनिक आये, जिन्हें
देमेत्रियुस ने निकाल दिया था। ये सैनिक उसके
विरुद्ध लड़ने लगे। देमेत्रियुस पराजित हो कर
भाग गया। 56त्रीफ़ोन ने हाथियों को अपने
अधिकार में किया और राजधानी अन्ताकिया
को जीत लिया।

57तब कुमार अन्तियोखुस ने योनातन को यह
पत्र लिखाः "मैं आप को महापुरोहितीय पद
पर स्थायी करता हूं, आपको चारों जनपदों पर
नियुक्त करता हूँ और आपको राजा के मित्रों
में सम्मिलित करता हूँ।" 58उसने उसे स्वर्ण
थाल और खाने-पीने के लिए पात्र भेजे तथा
उसे स्वर्ण-कटोरों में पीने, बैंगनी वस्त्र पहनने
और स्वर्ण बकसुआ लगाने की अनुमति दी।
59उसने उसके भाई शिमोन को सोर नगर की
'सीढ़ी' से लेकर मिस्र की सीमा तक के
समुद्रतटीय क्षेत्र का सेनापति नियुक्त किया।
60इसके बाद योनातन ने प्रस्थान कर फरात नदी
के पार के प्रदेश और उसके नगरों का भ्रमण
किया। सीरिया की सारी सेना उसकी सहायता
करने आयी। वह अश्कलोन आया, तो नागरिकों
ने उसका सादर स्वागत किया। 61वह वहाँ से
आगे गाज़ा तक गया, लेकिन गाज़ा-वासियों ने
प्रवेश-द्वार नहीं खोले। इसलिए उसने नगर को
घेर लिया, उसके आसपास की जगहों को लूटा
और उसके बाद उन में आग लगा दी। 62गाज़ा-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वासियों ने योनातन से प्रार्थना की और उसने
उन से सन्धि कर ली। उसने उनके कुलीन पुत्रों
को बन्धक के रूप में ले लिया और उन्हें
यरूशलेम भेजा। इसके बाद उसने दमिश्क तक
उस क्षेत्र का भ्रमण किया।

63 योनातन ने सुना कि देमेत्रियुस के
सेनापति एक बड़ी सेना के साथ गलील प्रदेश
के कादेश नगर तक आ गये हैं और उसे
अपदस्थ करना चाहते हैं। 64वह अपने भाई
शिमोन को अपने देश में छोड़ कर उनका
सामना करने चला। 65शिमोन ने बेत-सूर नगर
के पास पड़ाव डाला था। वह बहुत दिनों तक
नगर के विरुद्ध लड़ता रहा और उसे घेर लिया।
66अन्त में वहाँ के निवासी उसकी अधीनता
स्वीकार करने को तैयार हो गये और उसने उन
से सन्धि कर ली। उसने उन्हें नगर से निकाल
कर उस पर अधिकार कर लिया और उस में
एक रक्षक-सेना को रख दिया। 67योनातन अपनी
सेना के साथ गिनेसरेत झील के किनारे पड़ाव
डालने के बाद मुँह-अँधेरे हासोर के मैदान में
पहुँचा। 68तभी अन्यजातियों की सेना उन्हें
मैदान में दिखाई पड़ी। उन्होंने पहाड़ियों की
ओट में कुछ सैनिक घात में बिठा रखे थे।
69जब योनातन ने सेना का सामना किया, तो जो
घात में बैठे थे, वे निकल पड़े और उस पर टूट
पड़े। 70योनातन के सभी सैनिक भाग खड़े हुए।
मतित्याह बेन-अबशलोम और यहूदा बेन-
खल्फी के सिवा जो सेनापति थे, उन में एक भी
पीछे नहीं रहा। 71योनातन ने अपने वस्त्र फाड़
दिये, सिर पर राख डाली और प्रार्थना की।
72इसके बाद वह लड़ाई में कूद पड़ा। शत्रु पीछे
हटने और भागने लगे। 73जब उसकेसैनिकों ने,
जो भाग रहे थे, यह देखा, तो वे फिर उसके पास
लौट आये और शत्रुओं को कादेश नगर में
उनके पड़ाव तक खदेड़ ले गये। तब योनातन
के सैनकों ने वहां पड़ाव डाला। 74उस दिन
लगभग तीन हजार अन्यजातीय सैनिक मारे
गये। इसके बाद योनातन यरूशलेम लौट
आया।

रोम और स्पार्ता के साथ पुनः मित्रता

12 योनातन ने देखा कि स्थिति उसके
अनुकूल है; इसलिए उसने कुछ लोगों
को चुन कर रोम भेजा, जिससे वह रोमियों के
साथ मित्रता का सम्बन्ध फिर स्थापित करे।
2उसने स्पार्ता-वासियों और अन्य स्थानों के
लोगों को इस आशय के पत्र भेजे। 3यहूदी
प्रतिनिधि रोम आये और वहाँ उन्होंने परिषद् में
यह कहा, "महापुरोहित योनातन और यहूदी
लोगों ने हमें आपके पास भेजा है, जिससे हम
आपके साथ मित्रता का सम्बन्ध फिर स्थापित
करें और सन्धि करें।"

4 परिषद् ने उन्हें हर स्थान के अधिकारियों
के नाम पत्र दिये, जिससे वे सकुशल यहूदा
प्रदेश पहुँचने में उनकी सहायता करें।

5 योनातन ने स्पार्ता-वासियों के नाम जो पत्र
लिखा, उसकी प्रतिलिपि इस प्रकार है: 6
"महापुरोहित योनातन, राजसभा, पुरोहितों
और यहूदी प्रजा का स्पार्ता के भाइयों एवं
बहिनों को नमस्कार। 7आज से पहले भी आप
लोगों के राजा अरीयुस ने हमारे महापुरोहित
ओनियस को पत्र भेजा था, जिसकी प्रतिलिपि
इस पत्र के साथ-साथ भेजी जा रही है। उसमें
लिखा था कि आप हमारे भाई-बहिन हैं।
8ओनियस ने राजा के दूत का सादर स्वागत
किया था। उस से वह पत्र मिला था, जिस में
सन्धि और मित्रता का प्रस्ताव किया गया था।
9यह सच है कि हमें इस प्रकार के सम्बन्ध की
आवश्यकता नहीं है, क्योंकि हमारे हाथ में जो
पवित्र ग्रन्थ विद्यमान हैं, उन से हमें सान्त्वना
मिलती है। 10फिर भी हमने अपना दूत भेज कर
बन्धुत्व और मित्रता फिर स्थापित करने का
प्रयत्न किया, जिससे हम आपकी दृष्टि में पराये
न हो जायें; क्योंकि आपके पिछले पत्र के बाद
बहुत समय बीत गया है। 11हम महापर्वों और
अन्य निश्चित दिवसों पर अपने बलि-चढ़ावों
और प्रार्थनाओं में सदा आप लोगों को याद
करते हैं, जैसे अपने भाई-बहिनों का स्मरण
करना उचित और आवश्यक है। 12हमें आपकी

12 : 9 रोम 15 : 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

महिमा पर गर्व है। 13इस बीच हमारे बुरे दिन
आये; हम पर अनेक आक्रमण हुए और हमारे
पड़ोसी राजाओं ने हम से युद्ध किये। 14लेकिन
इन लड़ाइयों में हमने अपने सन्धिबद्ध मित्रों को
कष्ट नहीं देना चाहा; 15क्योंकि हमारी सहायता
का स्रोत स्वर्ग* था; वहीं से हमें सहायता मिलती
रही। अब हम अपने शत्रुओं से मुक्त हो गये।
हमने अपने शत्रुओं को नीचा दिखाया।
16इसलिए हम अन्तियोखुस के पुत्र नूमेनियुस
और यासोन के पुत्र अन्तीपतेर को चुन कर
रोमियों के यहाँ भेज रहे हैं, जिससे वे वहाँ जा
कर उनके साथ सन्धि और मित्रता का सम्बन्ध
पहले की तरह स्थापित करें। 17हमने उन्हें आदेश
दिया है कि वे आप लोगों के पास भी जायें,
आप को नमस्कार करें और हमारा पत्र आप को
दें, जिस में सन्धि के नवीकरण और मित्रता का
सम्बन्ध फिर स्थापित करने का प्रस्ताव है।
18आप इसका उत्तर देने की कृपा करें।''

19 स्पार्ता-वासियों ने जो पत्र महापुरोहित
ओनियस को भेजा, उसकी प्रतिलिपि इस
प्रकार है: 20''स्पार्ता-वासियों के राजा अरीयुस
का महापुरोहित ओनियस को प्रणाम। 21स्पार्ता-
वासियों और यहूदियों के सम्बन्ध में एक
अभिलेख से मालूम हुआ है कि दोनों भाई-
भाई हैं और दोनों अब्राहम के वंशज हैं। 22जब
हम लोग यह जानते हैं, तो आपकी हम पर बड़ी
कृपा होगी, यदि आप अपने कुशल-क्षेम के
विषय में हमें पत्र दें। 23हम आप से यह कहते
हैं कि आपके पशु और आपकी सम्पत्ति हमारी
है और जो कुछ हमारा है, वह आपका है। हम
अपने संदेशवाहकों को यह आदेश देते हैं कि
वे आपको इसकी सूचना दें।''

सीरिया में योनातन

24 योनातन ने सुना कि देमेत्रियुस के
सेनापति पहले से भी बड़ी सेना ले कर उस से
लड़ने आ रहे हैं। 25अत: वह येरूशलेम से चल
पड़ा और हमात प्रदेश में उनका सामना करने
गया। वह उन्हें अपने देश में पैर रखने का
अवसर नहीं देना चाहता था। 26उसने उनके
पड़ाव में गुप्तचर भेजे, जिन्होंने लौट कर उसे
बताया कि वे यहूदियों पर इसी रात आक्रमण
करने की तैयारियाँ कर रहे हैं। 27योनातन ने
सूर्यास्त के बाद अपने सैनिकों को आदेश दिया
कि वे जागते रहें और सारी रात अस्त्र-शस्त्र से
लैस लड़ने को तैयार बैठे रहें। उसने पड़ाव के
आसपास पहरे बिठा दिये। 28जब शत्रुओं ने
देखा कि योनातन और उसके सैनिक युद्ध के
लिए तैयार हैं, तो वे भयभीत और निरुत्साहित
हो गये और उन्होंने अपने पड़ाव में जगह-
जगह आग जलायी। 29योनातन और उसके
सैनिकों को सबेरे तक यह पता नहीं चला कि
शत्रु खिसक गये हैं; क्योंकि वे आग जलते
देखते रहे। 30योनातन ने उनका पीछा किया,
किन्तु वह उन्हें पकड़ नहीं पाया; क्योंकि वे
एलूथरस नदी के पार जा चुके थे। 31इसलिए
योनातन उन अरबों की ओर चल पड़ा, जो
जबादी कहलाते हैं। उसने उन्हें हरा दिया और
उनको लूट लिया। 32वह पड़ाव उठा कर
दमिश्क पहुंचा और उसने उस समस्त प्रदेश का
भ्रमण किया।

पलिश्ती प्रदेश में शिमोन

33 उधर शिमोन भी प्रस्थान कर अश्कालोन
नगर और उसके आसपास के गढ़ों तक आ
पहुंचा था। फिर उसने याफा बन्दरगाह की ओर
मुड़ कर उस पर अधिकार कर लिया; 34क्योंकि
उसने यह सुना था कि वहाँ के निवासी वह गढ़
देमेत्रियुस के लोगों को देना चाहते हैं। इसलिए
उसने उसकी रक्षा करने के लिए वहाँ एक
सेना-दल रख दिया।

पुनर्निर्माण-कार्य

35 योनातन ने लौट कर जनता के धर्मवृद्धों
की एक सभा बुलायी और यह निश्चय किया
कि यहूदा प्रदेश के गढ़ों का पुनर्निर्माण किया
जाये, 36येरूशलेम की शहरपनाह और ऊंची
कर दी जाये तथा गढ़ और नगर के बीच एक
बड़ी ऊंची दीवार उठायी जाये, जिससे गढ़
नगर से एकदम अलग हो जाये और वहाँ बसने
वाले लोग नगर में न कुछ खरीद सकें और न

* अथवा, ''स्वर्गिक परमेश्वर''।

12 : 23 1 रा 22 : 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बेच सकें। 37उन्होंने मिल कर नगर का पुनर्निर्माण
किया, क्योंकि नाले वाली दीवार का, जो पूर्व
की ओर थी, एक भाग गिर गया था। योनातन
ने खफेनाथा नामक खण्ड की मरम्मत करायी।
38शिमोन ने भी निचले प्रदेश के अदीदा का
निर्माण किया और उसे सुदृढ़ बनाया। उसने
उसमें प्रवेश-द्वार और अर्गलाएँ लगायीं।

योनातन की गिरफ्तारी

39 त्रीफोन एशिया का राजा बनना, अपने
सिर पर मुकुट पहनना और राजा अन्तियोखुस
के विरुद्ध हाथ उठाना चाहता था। 40किन्तु यह
सोच कर कि योनातन उसे ऐसा नहीं करने देगा
और सम्भवत: उसके विरुद्ध युद्ध करेगा, उसने
उसे बन्दी बनाने और उसे मार डालने की
योजना बनायी। इसलिए वह प्रस्थान कर बेत-
शान नगर पहुंचा। 41योनातन उससे मिलने के
लिए चालीस हजार चुने हुए योद्धा ले कर बेत-
शान गया। 42त्रीफोन ने जब देखा कि वह इतनी
बड़ी सेना ले कर उससे मिलने आया है, तो उसे
उस पर आक्रमण करने का संकोच हुआ।
43त्रीफोन ने उसका आदरपूर्वक स्वागत किया,
अपने मित्रों से उसका परिचय कराया, उसे
उपहार दिये और अपने सभी मित्रों एवं अपनी
सेना को आदेश दिया, "तुम लोग मेरी बात की
तरह योनातन की बात भी मानो।" 44उसने
योनातन से कहा, "आपने इतने सैनिकों को
क्यों कष्ट दिया, जब कि हम दोनों में कोई युद्ध
नहीं है? 45सैनिकों को अपने-अपने घर भेज
दीजिए। अपना साथ देने के लिए कुछ सैनिक
चुन लें और मेरे साथ प्तुलिमयिस नगर चलें।
मैं वह नगर और अन्य गढ़, शेष सैनिक और
सभी पदाधिकारी आपके हाथ दूंगा और इसके
बाद मैं घर लौट जाऊंगा। मैं तो इसीलिए यहाँ
आया हूं।"

46 योनातन ने त्रीफोन पर विश्वास कर
लिया और जैसा उसने कहा था, वैसा ही किया।
उसने अपने सैनिकों को चले जाने का आदेश
दिया कि वे यहूदा प्रदेश लौट जायें। 47उसने
केवल तीन हजार सैनिकों को अपने पास रखा।
उसने उन में दो हजार को गलील प्रदेश में रखने
का निश्चय किया और एक हजार को अपने
साथ ले जाने का। 48योनातन ने जैसे ही
प्तुलिमयिस में प्रवेश किया, नगरवासियों ने
प्रवेश-द्वार बन्द कर दिये। उन्होंने उसे पकड़
लिया और उन सब को तलवार से मौत के घाट
उतार दिया, जो उसके साथ अन्दर आये थे।
49इसके बाद त्रीफोन ने सैनिकों और घुड़सवारों
को गलील प्रदेश और यिज्रएल की घाटी+ की
ओर भेजा, जिससे वे वहाँ योनातन के सब
सैनिकों का संहार कर दें। 50उधर उन लोगों ने
यह सुना कि योनातन बन्दी बना लिया गया है
और अपने सैनिकों के साथ उसका वध कर
दिया गया है। तब वे एक दूसरे को प्रोत्साहन
देते हुए शत्रु का सामना करने के लिए पंक्तिबद्ध
खड़े हो गये। 51जिन्होंने उनका पीछा किया, वे
यह देखकर लौट गये कि यहूदी अपनी प्राण-
रक्षा के लिए लड़ने के लिए तैयार हैं। 52इस प्रकार
सब यहूदी सकुशल यहूदा प्रदेश लौट आये।
उन्होंने योनातन और उसके सैनिकों के लिए
विलाप किया। समस्त इस्राएल ने महान् शोक
मनाया। वे बहुत भयभीत थे। 53आसपास जितनी
अन्य जातियाँ थीं, वे सब यहूदियों का संहार
करना चाहती थीं। 54वे कहती थीं, "उनका न
तो कोई नेता है और न कोई सहायक। अब हम
उनसे लड़ेंगी और मनुष्यों के बीच से उनका
नाम तक मिटा देंगी।"

देश की बागडोर शिमोन के हाथों में

13 शिमोन ने सुना कि त्रीफोन ने एक भारी
सेना एकत्र कर रखी है, जिससे वह
यहूदा प्रदेश का विनाश करने वहाँ जाये। 2जब
शिमोन ने यह देखा कि लोग भयभीत हैं, तब
वह सभा बुलाने के लिए येरूशलेम गया।
3उसने लोगों को सान्त्वना दे कर उन से कहा,
"आप जानते हैं कि मैंने, मेरे भाइयों और मेरे
कुटुम्बियों ने व्यवस्था और पवित्र स्थान की
रक्षा के लिए क्या किया है, कितना संघर्ष किया
है और कितने कष्ट झेलें हैं। 4इस्राएल के नाम
पर मेरे सब भाइयों ने अपने प्राण न्योछावर

+ शब्दश:, 'बड़े मैदान' 12 : 49 यहूदी 1 : 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

किये। अब अकेले मैं ही जीवित हूं, [5]लेकिन
इस विपत्ति के समय अपने प्राण बचाने का
विचार मुझसे कोसों दूर है। मैं अपने भाइयों से
बढ़ कर नहीं हूं। [6]मैं अपनी जाति का, पवित्र
स्थान का, आपकी पत्नियों और सन्तान का
बदला चुकाऊंगा; क्योंकि सभी गैर-यहूदी
जातियाँ हम से बैर रखतीं और हमारा संहार
करने एकत्र हो गयी हैं।''

7 ये बातें सुन कर लोगों में नया जीवन आ
गया। [8]उन्होंने ऊंचे स्वर में कहा, ''अब यहूदा
मक्काबी और अपने भाई योनातन की जगह
आप हमारे नेता बनें। [9]आप हमारी ओर से युद्ध
करें। आप जो कुछ कहेंगे, हम वह करने को
तैयार रहेंगे।'' [10]इसके बाद शिमोन ने सभी
युद्धकुशल लोगों को एकत्रित किया, शीघ्र ही
यरूशलेम की दीवारें ठीक कर दीं और नगर को
चारों ओर से सुदृढ़ कर दिया। [11]उसने
अबशालोम के पुत्र योनातन को पर्याप्त सेना के
साथ याफा बन्दरगाह भेजा। वह नगर-वासियों
को भगा कर स्वयं वहाँ रह गया।

यहूदा प्रदेश पर त्रीफोन का आक्रमण

12 तब त्रीफोन एक बड़ी सेना ले कर
प्तुलिमयिस नगर से यहूदा प्रदेश की ओर चल
दिया। योनातन भी बन्दी के रूप में उसके साथ
था। [13]इधर शिमोन मैदान के एक छोर पर
अदीदा नगर में पड़ा था। [14]जब त्रीफोन ने सुना
कि शिमोन ने अपने भाई योनातन का स्थान ले
लिया और वह उससे लड़ने को तैयार है, तो
उसने दूत भेज कर उसे [15]संदेश भेजा : ''मैंने
योनातन को बन्दी बना कर इसलिए रखा है कि
अब तक उसने अपने पदों का राज-कर नहीं
चुकाया था। [16]यदि आप चांदी के एक सौ
सिक्कों⁺⁺ को और बन्धक के रूप में योनातन
के दो पुत्रों को भेजें, जिससे वह मुक्त होने पर
हमारा शत्रु न बने, तो हम उसे छोड़ देंगे।''
[17]यद्यपि शिमोन को इस कपटपूर्ण सन्देश पर
विश्वास नहीं था, फिर भी उसने यह बात मान
ली और चांदी तथा बच्चों को ले आने का
आदेश दिया, जिससे उसके अपने लोग उससे
बैर न करने लगें [18]और उन्हें यह कहने का
अवसर न मिले, ''उसने चांदी और बच्चों को
नहीं भेजा, इसलिए योनातन मारा गया।''
[19]अत: शिमोन ने योनातन के दो पुत्रों और
चांदी के एक सौ सिक्कों को भेजा; लेकिन
त्रीफोन ने धोखा दिया। उसने योनातन को मुक्त
नहीं किया।

20 इसके बाद त्रीफोन ने देश का विनाश
करने के लिए उस पर आक्रमण कर दिया। वह
चक्कर लगा कर अदोरा नगर की ओर बढ़ा।
वह जहाँ-जहाँ जाता था, शिमोन और उसकी
सारी सेना वहाँ-वहाँ उसका सामना करती।
[21]यरूशलेम के गढ़ के लोगों ने त्रीफोन के पास
आदमी भेज कर संदेश भेजा कि वह निर्जन
प्रदेश के मार्ग से जल्दी ही आ जाये और उनके
लिए खाद्य-सामग्री भेजे। [22]त्रीफोन ने वहाँ
जाने के लिए सब घुड़सवार तैयार कर लिये,
किन्तु उस रात इतनी बर्फ गिरी कि वे वहाँ नहीं
जा सके। तब वह पड़ाव उठा कर गिलआद
प्रदेश गया। [23]जब वह बसकामा नगर के
निकट पहुंचा, तो उसने योनातन का वध कराया
और योनातन वहीं दफनाया गया। [24]इसके बाद
त्रीफोन मुड़ कर अपने देश रवाना हुआ।

मोदीन का मकबरा

25 शिमोन ने आदमी भेज कर अपने भाई
योनातन की अस्थियाँ मँगवायीं और उन्हें अपने
पिता के नगर मोदीन में दफना दिया। [26]उसके
लिए सभी इस्राएलियों ने बड़ा भारी शोक
मनाया और वे उसके लिए बहुत दिन तक
विलाप करते रहे। [27]शिमोन ने अपने पिता और
अपने भाइयों की कबरों पर एक मकबरा
बनवाया, जिसके पीछे और सामने के पत्थर
चमकदार थे और वह इतना ऊंचा था कि वह
बहुत दूर से दिखाई देता था। [28]उसने अपने पिता,
अपनी माता और अपने चार भाइयों के नाम पर
एक पंक्ति में⁺ सात पिरामिड बनवाये। [29]उसने
कलात्मक ढंग से उन पिरामिडों के चारों ओर
ऊंचे स्तम्भ बनवाये और मृतकों की स्थायी
स्मृति के लिए उन स्तम्भों पर अस्त्र-शस्त्र और

⁺⁺ लगभग तीन हजौर चार सौ सौ किलो का मूल्य। ⁺ अथवा, ''दो-दो आमने-सामने''

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जलयान खुदवाये, जिससे समुद्र की यात्रा करने
वाले सभी लोग उनके दर्शन करें। 30वह मकबरा,
जिसे उसने मोदीन में बनवाया था, आज भी
वहाँ विद्यमान है।

सीरिया से इस्राएल की स्वतन्त्रता

31 त्रीफोन ने राजा अन्तियोखुस को, जो
अभी वयस्क नहीं था, धोखा दे कर मरवा डाला
32और उसके स्थान पर स्वयं राजा बन गया।
इस तरह उसने एशिया का मुकुट अपने सिर पर
धारण किया और देश पर भारी विपत्तियाँ ढाहीं।
33इधर शिमोन ने यहूदा प्रदेश के गढ़ों का
पुनर्निर्माण किया और उन्हें ऊंचे बुर्जो, बड़ी
दीवारों और अर्गलाएँ-लगे प्रवेश-द्वारों से घेर
दिया। उसने उन गढ़ों में खाद्य-सामग्री रखवायी।
34इसके बाद शिमोन ने आदमी चुन कर राजा
देमेत्रियुस से यह निवेदन करने को भेजा कि
वह इस प्रदेश को कर में छूट दिलायें, क्योंकि
त्रीफोन ने जो कुछ किया है, वह लूट के
अलावा कुछ भी नहीं था!

35 राजा देमेत्रियुस ने उसे अनुकूल उत्तर
दिया और उसके नाम यह पत्र लिखा : 36
''राजाओं के मित्र महापुरोहित शिमोन, यहूदियों
के धर्मवृद्धों और जनता को राजा देमेत्रियुस का
नमस्कार। 37आप लोगों ने जो सोने का मुकुट
और खजूर की डाली हमें भेजी है, वह हमें
मिल गयी है। हम आपके साथ स्थायी शान्ति
की सन्धि करने और आप को छूट देने के लिए
अपने पदाधिकारियों को लिखने को तैयार हैं।
38हम आप लोगों को जो छूट दे चुके हैं, वह
वैसी ही रहेगी। आप लोगों ने जो गढ़ बनवाये
हैं, उन पर आप लोगों का अधिकार रहेगा।
39यदि आपने आज तक किसी बात में ढिलाई
की हो, या आप से कोई भूल हो गयी हो और
आपने राज-उपहार नहीं भेजा हो, तो हम उन
सब की माफी देते हैं। यदि यरूशलेम में और
कोई लगान वसूल किया जा रहा हो, तो वह
आगे नहीं लिया जायेगा। 40यदि आपके बीच
ऐसे व्यक्ति हों, जो हमारे अंगरक्षक बनने के
योग्य हैं, तो वे भरती होने के लिए आयें। हमारे
और आप लोगों के बीच शान्ति बनी रहे।''

41 एक सौ सत्तरवें वर्ष* यहूदियों पर से
अन्यजातियों का जूआ उठा लिया गया। 42उस
समय से लोगों ने लेखों में इस प्रकार लिखना
आरंभ कर दिया : ''यहूदियों के सर्वश्रेष्ठ
महापुरोहित, सेनापति और शासक शिमोन के
पहले वर्ष में।''

गेजेर नगर पर शिमोन का अधिकार

43 उस समय शिमोन ने गेजेर नगर के विरुद्ध
प्रस्थान किया और उसे अपनी सेना के द्वारा घेर
लिया। उसने एक युद्ध-यन्त्र बनवा कर उसे
नगर की दीवार से सटा कर खड़ा कर दिया,
एक बुर्ज पर आक्रमण किया और उसे अपने
अधिकार में कर लिया। 44जब उस यन्त्र के
आदमी नगर में घुसे, तो नगर में भारी कोलाहल
मचा। 45नगरवासी स्त्रियों और बच्चों को ले
कर दीवार पर चढ़ गये, अपने कपड़े फाड़ने
लगे और ऊंचे स्वरों में शिमोन से निवेदन करने
लगे कि वह उनसे शान्ति स्थापित करे।+
46उन्होंने कहा, ''आप हमारी दुष्टता के अनुसार
नहीं, बल्कि अपनी दया के अनुसार हमारे साथ
व्यवहार करें।'' 47शिमोन ने उनकी बात मान
ली और उन पर आक्रमण नहीं किया। किन्तु
उसने उन्हें नगर से भगा दिया और उन घरों का
शुद्धीकरण करवाया, जिन में देवमूर्तियाँ थीं।
फिर उसने भजन और धन्यवाद के गीत गाते हुए
नगर में प्रवेश किया। 48उसने नगर से सारी
अपवित्र वस्तुएँ हटा दीं और उस में ऐसे लोगों
को बसाया, जो व्यवस्था का पालन करते थे।
फिर उसने उसे किलाबन्द किया और वहाँ
अपने लिए एक आवास बनवाया।

यरूशलेम के गढ़ पर अधिकार

49 यरूशलेम के गढ़ में पड़े हुए लोगों को
देहात में आने-जाने और खरीद-बिक्री करने
से रोका जाता था। उन्हें इतनी तकलीफ होने
लगी कि उन में कई लोग भूखों मर गये।
50इसलिए उन्होंने शिमोन से शान्ति का निवेदन

---

* सन् 142 ई० पू० + शब्दशः, ''दाएँ हाथ दे''

13 : 37 2 मक 14 : 4 **13 : 38** 2 मक 10 : 25-45 **13 : 43** 2 मक 10 : 32-38

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
किया और उसने उनकी बात मान ली। उसने
उन्हें गढ़ से निकाल दिया और मूर्तिपूजा के
दूषण से गढ़ का शुद्धीकरण किया। 51उन्होंने
एक सौ इकहत्तरवें वर्ष**, इस वर्ष के दूसरे
महीने के तेईसवें दिन स्तुतिगान करते, हाथ में
खजूर की डालियाँ लिये, सितार, मंजीरा और
वीणा बजाते हुए, स्तोत्र और भजन गाते हुए
उस में प्रवेश किया; क्योंकि इस्राएल से एक
विकट शत्रु हटा कर नष्ट कर दिया गया था।
52शिमोन ने प्रति वर्ष उल्लास के साथ यह दिन
मनाने का आदेश दिया। उसने पर्वत का वह
भाग, जिस पर मन्दिर स्थित था और जो गढ़
से सटा हुआ था, पूरी तरह सुदृढ़ कर दिया और
वहीं अपने सैनिकों के साथ रहने लगा। 53जब
शिमोन ने देखा कि अब उसका पुत्र योहन बड़ा
हो गया है, तो उसने उसे अपनी समस्त सेना
का अध्यक्ष नियुक्त किया और वह गेजेर नगर
में रहने लगा।

शिमोन की यश-गाथा

14 राजा देमेत्रियुस एक सौ बहत्तरवें वर्ष++
अपनी सेना एकत्र कर मादय देश गया,
जिससे वह त्रीफोन से लड़ने में वहाँ से सहायता
प्राप्त करे। 2जब फारस और मादय के राजा
अर्साकिस ने यह सुना कि देमेत्रियुस उसके देश
के भीतर आ गया है, तो उसने अपना एक
सेनापति भेजा, जिससे वह उसे जीवित ही
पकड़ लाये। 3सेनापति चल पड़ा और उसने
देमेत्रियुस की सेना को पराजित कर देमेत्रियुस
को बन्दी बनाया और उसे अर्साकिस के सामने
ले आया। उसने उसे बन्दीगृह में डाल दिया।

4 शिमोन के शासनकाल में यहूदा देश में
शान्ति का साम्राज्य था।
वह लोगों के कल्याण के लिए सक्रिय रहता
था।
जनता उसके जीवन-भर
उसके अधिकार और वैभव से सन्तुष्ट थी।
5 उसने याफा को अधिकार में कर
अपने यशस्वी राज्य का विस्तार किया,
उसे बन्दरगाह बनाया और समुद्र के द्वीपों
का मार्ग खोला।
6 उसने अपने राष्ट्र की सीमाओं का विस्तार
किया;
और अपने देश का दृढ़तापूर्वक शासन किया।
7 उसने बहुत-से निष्कासितों को पुन: एकत्र
किया।
उसने गेजेर और बेत-सूर नगरों पर अधिकार
किया।
उसने यरूशलेम का गढ़ जीतकर उस का
शुद्धीकरण किया।
ऐसा कोई नहीं रह गया, जो उसका सामना
करे।
8 सब शान्तिपूर्वक अपने खेत जोतते थे।
भूमि अपनी फसल उगाती थी,
मैदान के पेड़ अपने फल देते थे।
9 चौकों में बैठ कर बड़े-बूढ़े
अपनी समृद्धि की चर्चा करते थे।
नवयुवक भड़कीले आभूषण
और युद्ध के वस्त्र पहनते थे।
10 वह नगरों को खाद्य-सामग्री देता
और उनकी किलाबन्दी करता था।
इस प्रकार उसके महिमामय नाम की चर्चा
पृथ्वी के सीमान्तों तक होती थी।
11 वह देश में शान्ति बनाये रखता था;
और इस्राएल में बड़ा आनन्द था।
12 प्रत्येक व्यक्ति अपनी दाखलता
और अंजीर के पेड़ के नीचे बैठता था।
ऐसा कोई नहीं था, जो उन्हें डर दिखाये।
13 ऐसा कोई नहीं था, जो उनके देश पर
आक्रमण करे।
उन दिनों राजाओं को रौंदा जाता था।
14 वह अपनी प्रजा के सब दीन-हीन लोगों
की सहायता करता था।
वह व्यवस्था के लिए उत्साह दिखाता
और सब अधर्मियों एवं दुष्टों का दमन
करता था।
15 उसने पवित्र स्थान की शोभा बढ़ायी
और उसे बहुसंख्यक पात्रों से समृद्ध किया।

** 141 ई० पू० ++ 140 ई० पू०

13 : 51 यो 12 : 13 14 : 8 भज 67 : 6; जक 8 : 12 14 : 12 1 रा 4 : 25; मी 4 : 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

स्पार्ता और रोम के साथ यहूदियों की सन्धि

16 रोम और स्पार्ता के लोग भी योनातन की मृत्यु का समाचार सुन कर बहुत दु:खी हुए।
17जब उन्होंने यह सुना कि उसका भाई शिमोन उसकी जगह महापुरोहित बन गया है और देश तथा उसके नगरों का शासक है,
18तो उन्होंने उसके भाई यहूदा मक्काबी और योनातन के साथ मित्रता और सन्धि का जो सम्बन्ध स्थापित किया था, उसे दोहराने के लिए उसके पास कांसे की पट्टियों पर लिखा हुआ पत्र भेजा।
19उसे यरूशलेम में सभा के सामने सुनाया गया।

20 स्पार्ता-वासियों के पत्र की प्रतिलिपि इस प्रकार है : ''महापुरोहित शिमोन, धर्मवृद्धों, पुरोहितों और अन्य यहूदियों—अपने भाई-बहिनों को स्पार्ता के पदाधिकारियों और नगर-वासियों का नमस्कार।
21आप लोगों ने हमारे यहाँ जो दूत भेजे, उन्होंने हमें आपके यश और आपकी प्रतिष्ठा के विषय में बताया। उनके आगमन से हमें बड़ी प्रसन्नता हुई।
22उन्होंने हमें जो बताया, उसे हमने परिषद् के कार्य-विवरण में इस प्रकार लिपिबद्ध किया : अन्तियोखुस के पुत्र नूमेनियुस और यासोन के पुत्र अन्तीपतेर हमारे यहाँ यहूदियों के दूतों के रूप में इस उद्देश्य से आये कि वे हमारे साथ मित्रता का सम्बन्ध फिर से स्थापित करें।
23जनता ने उन दूतों का सम्मान के साथ स्वागत करने और उनके वक्तव्य की प्रतिलिपि राज्य के अभिलेखागार में रखने का निश्चय किया, जिससे स्पार्ता के लोगों को उसकी याद कायम रहे। उसकी एक प्रतिलिपि महापुरोहित शिमोन को भेजी गयी।''

24 इसके बाद शिमोन ने नूमेनियुसा को पांच सौ सत्तर किलो सोने की एक बड़ी-सी ढाल के साथ रोम भेजा, जिससे रोमियों के साथ सन्धि स्थायी हो जाये।

शिमोन की कीर्ति-विषयक स्मृति-पत्र

25 जब लोगों ने इस विषय में सुना, तो वे कहने लगे, ''हम शिमोन और उनके पुत्रों के प्रति अपना आभार कैसे प्रकट करें?
26वह स्वयं एक वीर योद्धा हैं, उनके भाई और उसके सारे कुटुम्बी हमारी ओर से इस्राएल के शत्रुओं के विरुद्ध लड़ते रहे और उन्होंने हमें स्वतन्त्रता प्रदान की।'' उन्होंने कांसे की पट्टियों पर एक अभिलेख अंकित किया और उसे सियोन पर्वत के स्तम्भों पर लगाया।

27 उस अभिलेख की प्रतिलिपि इस प्रकार है : ''एक सौ बहत्तरवें वर्ष* के एलूल मास के अठारहवें दिन, परमश्रद्धेय महापुरोहित शिमोन के तीसरे वर्ष,
28परमेश्वर की प्रजा के आंगन में+, पुरोहितों, जनता, राष्ट्र के नेताओं और प्रदेश के धर्मवृद्धों की बड़ी सभा में निम्नलिखित बातों को घोषित किया गया:
29जब देश-भर में लड़ाइयाँ चल रही थीं, तब शिमोन ने, जो मतित्याह के पुत्र और यहोयारीब के वंशज हैं, और उनके भाइयों ने पवित्रस्थान और व्यवस्था की रक्षा के लिए अपने को खतरे में डाल कर अपने राष्ट्र के शत्रुओं का सामना किया और इस प्रकार उन्होंने अपना राष्ट्र गौरवमय बनाया।
30योनातन ने राष्ट्र में एकता की स्थापना की और वह उनके महापुरोहित बन गये। जब वह अपने पूर्वजों के पास दफनाये गये,
31तो यहूदियों के शत्रु घुस कर उनका देश लूटना और मन्दिर पर अधिकार करना चाहते थे।
32उस समय शिमोन अपने राष्ट्र के लिए लड़ने को उठ खड़े हुए। उन्होंने राष्ट्रीय सेना की सज्जा और सैनिकों के वेतन के लिए अपनी व्यक्तिगत सम्पत्ति का एक बड़ा भाग खर्च किया।
33उन्होंने यहूदा प्रदेश के नगर किलाबन्द किये और सीमा पर स्थित बेत-सूर को भी किलाबन्द किया, जहाँ पहले शत्रुओं का शस्त्रागार था, और वहाँ यहूदियों की एक रक्षक-सेना भी रखी।
34उन्होंने समुद्रतट पर स्थित याफा को किलाबन्द किया और गेजेर को भी, जो अजोत के पास है और जहाँ पहले शत्रु निवास करते थे। उन्होंने वहाँ यहूदियों को बसाया और उनकी जीविका का पूरा प्रबन्ध किया।

---

* सन् 140 ई० पू० + मूल में ''हसेर-आम-एल''।

14 : 18 1 मक 8 : 22

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

35 "लोगों ने देखा कि शिमोन ईमानदार है
और वह अपने राष्ट्र को गौरवशाली बनाना
चाहते थे। उन्होंने शिमोन को अपना शासक
और महापुरोहित नियुक्त किया; क्योंकि उन्होंने
यह सब किया था और उन्होंने अपनी कौम को
न्याय दिलाया था। वह उसके प्रति ईमानदार थे
और वह हर तरह अपने लोगों की उन्नति करना
चाहते थे। 36शिमोन उस समय गैर-यहूदियों
को देश से निकालने में सफल हुए—उन लोगों
को, जिन्होंने यरूशलेम के दाऊदपुर में अपने
लिए एक गढ़ बनवाया था, जहाँ से वे छापा
मारा करते, मन्दिर के आसपास का क्षेत्र दूषित
करते और मन्दिर की पवित्रता को बड़ी हानि
पहुंचाते थे। 37उन्होंने वहाँ यहूदी सैनिक रखे
और देश तथा नगर की सुरक्षा के लिए उसे
सुदृढ़ बनाया तथा यरूशलेम की शहरपनाह
और ऊंची करायी।

38 "राजा देमेत्रियुस ने महापुरोहित के पद
पर शिमोन की नियुक्ति की पुष्टि की, 39उन्हें
अपना मित्र बनाया और बड़ा सम्मान दिया।
40उसने सुन रखा था कि रोमी यहूदियों को
अपने सन्धिबद्ध मित्र और भाई-बहिन मानते
हैं और शिमोन के राजदूतों का वहाँ बड़े आदर
से स्वागत किया गया था; 41यह भी कि यहूदी
और उनके पुरोहित इस बात पर सहमत हैं कि
जब तक कोई निष्ठावान नबी नहीं होगा, तब
तक शिमोन ही लोगों के अगुए और महापुरोहित
रहेंगे। 42उसने यह भी सुना था कि वही उनके
सेनापति और पवित्र स्थान के प्रबन्धक हैं,
उनके सब निर्माण-कार्यों, प्रदेश, शस्त्र-भण्डार
और गढ़ों के अध्यक्ष हैं; वही आराधना-सामग्री
की देख-रेख करते हैं; 43सभी उनकी बात मानते
हैं, देश भर की राजाज्ञाएँ उनके नाम पर
निकाली जाती हैं और वह बैंगनी वस्त्र और
सोने के आभूषण पहनते हैं। 44जनता और
पुरोहितों में किसी को अधिकार नहीं कि वह
इन निर्णयों में परिवर्तन करे या शिमोन के
आदेशों का उल्लंघन करे, उनकी अनुमति के
बिना देश में सभा का आयोजन करे और बैंगनी
वस्त्र पहने या सोने का बकसुआ लगाये। 45जो
इस अभिलेख के नियमों का उल्लंघन करेगा या
उन में कोई परिवर्तन करेगा, वह दोषी माना
जायेगा।"

46 सभी लोग शिमोन को यह अधिकार
प्रदान करने के पक्ष में थे कि वह उन नियमों
के अनुसार कार्य करे। 47शिमोन ने सहमति
प्रकट की और उसने महापुरोहित, सेनापति,
यहूदियों एवं उनके पुरोहितों का संजातीय
अध्यक्ष और सब का संरक्षक बनना स्वीकार
किया। 48यह भी निश्चित किया गया कि इन
बातों को कांसे की पट्टियों पर लिखा जाये और
उन्हें मन्दिर के किसी सार्वजनिक स्थान पर
लगाया जाये, 49उनकी एक प्रतिलिपि शिमोन
और उसके वंशजों के लिए कोष में रख दी
जाये।

अन्तियोखुस की शिमोन के प्रति अनुकूलता

15 राजा देमेत्रियुस के पुत्र अन्तियोखुस ने
समुद्र के द्वीपों से यहूदियों के संजातीय
अध्यक्ष, पुरोहित शिमोन तथा समस्त राष्ट्र के
नाम एक पत्र लिखा। 2उस में यह लिखा था:
"संजातीय अध्यक्ष, महापुरोहित शिमोन तथा
समस्त यहूदी राष्ट्र को राजा अन्तियोखुस का
नमस्कार। 3कुछ दुष्ट लोगों ने हमारे पूर्वजों के
राज्य पर अधिकार कर लिया है, किन्तु मैं उस
राज्य को पुन: अपने हाथ में लेने और उसे पहले
की तरह प्रतिष्ठित बनाने का प्रयत्न कर रहा हूं।
इसलिए मैंने बड़ी संख्या में सैनिक इकट्ठे कर
लिये हैं और युद्ध-नौकाएँ तैयार की हैं। 4अब
मैं देश की भूमि पर उतर कर उन लोगों से
बदला लेना चाहता हूं, जिन्होंने हमारे देश का
विनाश किया है और मेरे राज्य के अनेकानेक
नगरों को उजाड़ डाला है। 5मेरे पहले के राजाओं
ने आप को कर-सम्बन्धी जो छूट और अन्य
विशेषाधिकार प्रदान किये हैं, वे सब मुझे भी
स्वीकार्य हैं। 6मैं आप को देश में प्रचलित
सिक्के ढालने का अधिकार देता हूं। 7यरूशलेम
और मन्दिर स्वतन्त्र होंगे। आपने जो अस्त्र-
शस्त्र जमा किये हैं, जो गढ़ बनवाये हैं और जो

---

14 : 41 व्य 18 : 15

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
आपके अधिकार में हैं, वे सब आपके हाथ में
रहेंगे। 8आप पर राजकोष का जो ऋण इस
समय है या बाद में होगा, उस से आप अब और
सदा के लिए मुक्त किये जाते हैं। 9हम जैसे ही
अपने राज्य पर फिर अधिकार कर लेंगे, हम
आपका, आपके राष्ट्र और आपके मन्दिर का
इतना सम्मान करेंगे कि आप लोगों की कीर्ति
संसार के सीमान्तों तक फैल जायेगी।''

अन्तियोखुस का स्वदेश आगमन

10 अन्तियोखुस ने एक सौ चौहत्तरवें वर्ष*
अपने पूर्वजों के देश के लिए प्रस्थान किया।
सारी सेना आ कर उससे इस तरह मिल गयी
कि त्रीफोन के पास थोड़े ही सैनिक बच गये।
11अन्तियोखुस ने उसका पीछा किया और वह
भागते-भागते समुद्रतटवर्ती दोरा नामक नगर
पहुंचा। 12उसने देखा कि उस पर विपत्ति टूटने
ही वाली है। उसकी समस्त सेना उससे विमुख
हो गयी 13और उधर बारह हजार पैदल सैनिक
और आठ हजार घुड़सवार ले कर अन्तियोखुस
दोरा नगर के पास आ पहुंचा। 14उसने नगर को
घेर लिया और समुद्र की ओर से जलयान भी
पास आ गये। इस तरह उसने थल और समुद्र,
दोनों ओर से नगर पर आक्रमण किया। अब न
कोई व्यक्ति बाहर जा सकता था और न कोई
अन्दर आ सकता था।

विभिन्न राजाओं और देशों के नाम रोम का पत्र

15 उन दिनों नूमेनियुस और उसके साथी
विभिन्न राजाओं और देशों के नाम पत्र ले कर
रोम से आये। पत्र की प्रतिलिपि इस प्रकार
थी : 16 ''राजा पतोलेमैउस को रोम के
द्विशासक+ लूसियुस का नमस्कार। 17हमारे
सन्धिबद्ध यहूदी मित्रों के यहाँ से हमारे पास
दूत आये हैं, जिससे वे हमारे साथ पहले की
तरह मित्रता और सन्धि का सम्बन्ध स्थापित
करें। वे महापुरोहित शिमोन और यहूदी लोगों
की ओर से भेजे गये हैं। 18वे एक ढाल भी
लाये, जिसका मूल्य पांच सौ इकहत्तर किलो
सोना है। 19इसलिए हमें यह उचित जान पड़ा
कि हम विभिन्न राजाओं और देशों के नाम इस
आशय का पत्र लिखें कि वे न तो उन्हें हानि
पहुंचायें, न उन पर और न उनके नगरों या क्षेत्रों
पर आक्रमण करें और न उन लोगों की सहायता
करें, जो उनसे युद्ध करते हैं। 20हमने उनकी
भेजी हुई ढाल स्वीकार करने का निश्चय किया
है। 21यदि उनके देश से कुछ दुष्ट लोग आपके
यहाँ भाग कर आये हों, तो उन्हें महापुरोहित
शिमोन के हवाले कर दें, जिससे वह अपने
कानून के अनुसार उन्हें दण्ड दें।''

22 रोम के द्विशासक लूसियुस ने राजा
देमेत्रियुस, अत्तालुस, अर्याराथेस और अर्सकेस
को भी यही लिखा। 23वास्तव में उसने सब
देशों के नाम; संप्सामेस, स्पार्ता, मिन्दुस,
सिक्योन, हलीकरनासुस, फसेलिया, सीदे और
गोर्तिना नगरों को; देलुस, सामोस, रोदुस, कोस
और अरादुस द्वीपों को; क्नीदुस प्रायद्वीप को;
कारिया, पंफुलिया और लुकियो प्रदेशों को;
तथा कुप्रुस द्वीप एवं कुरेने देश को भी यही बात
लिखी। 24इसकी एक प्रतिलिपि महापुरोहित
शिमोन को भी दी गयी।

शिमोन से अन्तियोखुस का विरोध

25 उधर राजा अन्तियोखुस ने दोरा नगर के
निकट दुबारा पड़ाव डाल कर अपनी सेना और
युद्धयन्त्रों के साथ उस पर आक्रमण कर दिया।
उसने त्रीफोन को इस तरह घेर लिया कि न कोई
व्यक्ति बाहर जा सकता था और न कोई अन्दर
आ सकता था। 26शिमोन ने अन्तियोखुस की
सहायता के लिए दो हजार चुनिन्दे सैनिक भेजे
और उनके साथ चांदी, सोना और विपुल युद्ध-
सामग्री। 27किन्तु उसने यह सब स्वीकार नहीं
किया। यही नहीं, उसने शिमोन के साथ जो भी
समझौते पहले किये थे, सब को रद्द कर दिया
और शिमोन के प्रति उसका रुख बदल गया।
28उसने अपने एक मित्र अथेनोबियुस के द्वारा
शिमोन को यह संदेश भेजा : ''तुम लोगों ने
मेरे राज्य के याफा और गेजेर नगर तथा
यरूशलेम के गढ़ पर अधिकार कर लिया।
29तुमने उन नगरों के क्षेत्र उजाड़े, देश को भारी
क्षति पहुंचायी और मेरे राज्य के अनेक स्थानों

* सन् 138 ई० पू० + रोमन गणतंत्र के दो प्रमुख पदाधिकारियों में से एक।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पर अधिकार कर लिया है। [30]अब तुम उन
नगरों को लौटा दो, जिन्हें तुमने छीना है और
उन स्थानों का कर दो, जो यहूदा प्रदेश की
सीमा के बाहर हैं, किन्तु जिन्हें तुमने अपने देश
में मिला लिया है। [31]नहीं तो तुम उनके बदले
चांदी के पांच सौ सिक्के* दो और इसके
अतिरिक्त अपने द्वारा किये हुए विनाश की
क्षतिपूर्ति और नगरों के कर के रूप में और पांच
सौ सिक्के दो। यदि तुम ऐसा नहीं करोगे, तो
हम आ कर तुम से युद्ध करेंगे।"

32 राजा का मित्र अथेनोबियुस यरूशलेम
आया। उसे शिमोन की महिमा, उसकी मेज पर
चांदी-सोने के पात्र और उसका भव्य वैभव
देखकर आश्चर्य हुआ। उसने उसे राजा का
सन्देश सुनाया। [33]शिमोन ने उसे उत्तर दिया,
"हमने न तो दूसरे की भूमि पर अधिकार किया
है और न दूसरे की सम्पत्ति छीनी है। वह तो
हमारे पूर्वजों का दायभाग है। हमारे शत्रुओं ने
उस पर अन्याय से कुछ समय पहले अधिकार
कर लिया था। [34]जब परिस्थिति हमारे अनुकूल
हुई, तो हमने फिर अपने पूर्वजों का वह
दायभाग वापस ले लिया। [35]आप हम से जो
याफा और गेजेर नगर मांगते हैं, इसके विषय
में हमारा उत्तर यह है कि वे नगर हमारी जनता
और हमारे देश को बड़ी हानि पहुंचाते थे। हम
उनके लिए एक सौ सिक्के देंगे।"
[36]अथेनोबियुस ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह
बड़े क्रोध में राजा के पास लौटा और उसने उसे
शिमोन का उत्तर सुनाया। उसने शिमोन के
वैभव और उन सब बातों का वर्णन किया,
जिन्हें उसने उसके यहाँ देखा था। इस पर राजा
के क्रोध की सीमा न रही।

यहूदा प्रदेश में कन्देबैयुस का आतंक

37 त्रीफोन जलयान पर चढ़ कर अर्थोसिया
नगर भाग निकला। [38]तब राजा ने कन्देबैयुस
को समुद्रतटवर्ती प्रदेश का सेनापति नियुक्त
किया और उसे पैदल सैनिक और घुड़सवार
दिये। [39]उसने उसे आज्ञा दी कि वह यहूदा
प्रदेश की सीमा पर पड़ाव डाले, किद्रोन नगर
का पुनर्निर्माण करे, उसके प्रवेश-द्वार मजबूत
करे और जनता पर छापा मारता रहे। इसके बाद
राजा स्वयं त्रीफोन का पीछा करने चला।
[40]इधर कन्देबैयुस यमनिया नगर आ कर वहाँ
के लोगों को सताने लगा। वह यहूदा प्रदेश पर
छापा मारता रहा और लोगों को बन्दी बनाता
और उनका वध करता रहा। [41]उसने किद्रोन
नगर का पुनर्निर्माण किया और वहाँ घुड़सवार
और पैदल सैनिक रखे, जिससे वे, जैसी कि
राजा ने आज्ञा दी थी, यहूदा प्रदेश के मार्गों पर
छापा मारते रहें।

कन्देबैयुस से लोगों की रक्षा

16 तब योहन गेजेर नगर से अपने पिता
शिमोन के पास गया और उसे कन्देबैयुस
के आतंक के विषय में बताया। [2]शिमोन ने अपने
दो बड़े पुत्रों यहूदा और योहन से कहा, "मैं,
मेरे भाई और मेरे कुटुम्बी अपने बचपन से आज
तक इस्राएल के लिए लड़ते आये हैं। न जाने
कितनी बार हमारे हाथों ने इस्राएल की रक्षा की
है। [3]अब मैं वृद्ध हो चला हूं, लेकिन तुम
स्वर्गिक परमेश्वर की दया से युद्ध करने योग्य
हो गये हो। तुम मेरी तथा मेरे भाई की जगह
हमारे राष्ट्र के लिए लड़ने जाओ। स्वर्ग से
परमेश्वर की सहायता तुम्हारे साथ हो।"

4 तब योहन ने देश से बीस हजार सैनिक
और घुड़सवार चुने और वे कन्देबैयुस के
विरुद्ध युद्ध करने चले। उन्होंने मोदीन में रात
बितायी। [5]फिर वे भोर को मैदान की ओर आगे
बढ़े। वहाँ उन्होंने यह देखा कि घुड़सवारों और
पैदल सैनिकों की एक विशाल सेना उनके
सामने है। दोनों के बीच एक नदी थी। [6]योहन
ने अपने आदमियों के साथ शत्रुओं के सामने
पड़ाव डाला। जब उसे पता चला कि उसके
सैनिक नदी पार करने से डर रहे हैं, तो उसने
सब से पहले नदी पार की। यह देख कर उसके
सैनिक भी उसके बाद पार हुए। [7]उसने अपनी
सेना को दो दलों में बांट दिया और पैदल
सैनिकों के बीच घुड़सवार रखे; क्योंकि शत्रुओं
के घुड़सवारों की संख्या बहुत बड़ी थी।

* लगभग सत्रह हजार किलो का मूल्य।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

[8]तुरहियाँ बज उठीं। कन्देबैयुस और उसकी सेना भाग निकली। उनके कितने ही लोग मारे गये और जो बच गये, उन्होंने भाग कर गढ़ में शरण ली। [9]उस समय योहन का भाई यहूदा घायल हो गया; किन्तु योहन ने शत्रुओं को किद्रोन नगर तक खदेड़ दिया, जिसका कन्देबैयुस ने पुनर्निर्माण किया था। [10]भागने वालों ने अजोत के मैदान के बुर्जों में शरण ली। योहन ने नगर को जला दिया। शत्रुओं में लगभग दो हजार मारे गये। योहन सकुशल यहूदा प्रदेश लौट आया।

शिमोन की हत्या

11 अबूबुस का पुत्र पतोलेमैउस यरीहो के मैदान की सेना का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। [12]उसके पास बहुत चांदी-सोना था, क्योंकि वह महापुरोहित शिमोन का दामाद था। [13]वह घमण्डी हो गया और देश पर अधिकार करने की सोचने लगा। उसने शिमोन और उसके पुत्रों का वध करने की कपटपूर्ण योजना बनायी।

14 शिमोन प्रशासक के रूप में देश के नगरों का भ्रमण करता था। एक सौ सत्तरवें वर्ष* के ग्यारहवें महीने में, अर्थात् शबाट महीने में वह, उसके पुत्र मतित्याह और यहूदा, यरीहो नगर आये। [15]अबूबुस के पुत्र ने अपने बनवाये दोक नामक छोटे गढ़ में उनका कपटपूर्ण स्वागत-सत्कार किया। उसने उन्हें दावत दी और पास ही सैनिकों को छिपा रखा। [16]जब शिमोन और उसके पुत्र मदिरा के नशे में थे तब पतोलेमैउस और उसके सैनिक उठे और हथियार लिये भोज-गृह में घुस आये। वे शिमोन पर टूट पड़े और उसे, उसके दो पुत्रों तथा उसके साथियों में अनेक का वध कर दिया। [17]इस प्रकार उसने भलाई का बदला बुराई से चुका कर घोर विश्वासघात किया। [18]इसके बाद पतोलेमैउस ने इस विषय में राजा को लिखित विवरण भेजा और निवेदन किया कि वह उसकी सहायता के लिए सैनिक भेजे, जिससे वह नगरों के साथ देश को राजा के हाथ दे सके।

19 उसने कुछ अन्य लोगों को गेजेर नगर भेजा, जिससे वे योहन को समाप्त करें। उसने सेनापतियों के नाम पत्र भेज कर उन्हें अपने यहाँ आने का निमन्त्रण दिया, जिससे वह उन्हें चांदी, सोना और उपहार दे। [20]उसने अन्य लोगों को यरूशलेम और मन्दिर के पर्वत पर अधिकार करने भेजा। [21]किन्तु उन में एक सैनिक आगे दौड़ कर गेजेर में योहन के पास यह सन्देश लाया कि उसके पिता और उसके भाई मार डाले गये हैं और उसे सावधान किया कि पतोलेमैउस ने आपका भी वध करने आदमी भेजे हैं। [22]यह सुन कर योहन भयभीत हो उठा। उसने उन आदमियों को पकड़वाया और मरवा डाला, जो उसका वध करने आये थे; क्योंकि उसे मालूम हो गया था कि वे उसकी हत्या करने आये थे।

योहन हिरकानुस का शासनकाल

23 योहन का शेष इतिहास—उसकी लड़ाइयों, उसकी वीरता, उसके द्वारा दीवारों का निर्माण और उसके अन्य कार्यों का वर्णन—यह सब, [24]उस दिन से ले कर जब वह अपने पिता के स्थान पर महापुरोहित बना, उसके महापुरोहितीय पद के इतिहास-ग्रन्थ में लिखा हुआ है।

---

* सन् 134 ई० पू०

16 : 16 2 शम 13 : 28

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मक्काबियों का दूसरा ग्रन्थ

पुस्तक-परिचय

मक्काबियों का "दूसरा" ग्रन्थ मक्काबियों के "पहले" ग्रन्थ का पूरक नहीं है, बल्कि उसमें उन्हीं बातों का फिर से उल्लेख किया गया है, जो मक्काबियों के पहले ग्रन्थ के आरम्भ में (अध्याय 1-7) मिलती हैं। ऐतिहासिक प्रसंग उन बीस वर्षों के संकट-काल तक सीमित है, जो दानिएल के ग्रन्थ की पृष्ठभूमि समझने के लिए महत्वपूर्ण हैं—अर्थात् महापुरोहित ओनियाह के समय से (लगभग 180 ईसवी पूर्व) सेनाध्यक्ष निकानोर के अन्तिम आक्रमण तक (लगभग 160 ईसवी पूर्व)। इस ग्रन्थ का मूल पाठ यूनानी भाषा में है। लेखक ने इस ग्रन्थ के लिए आधार के रूप में यासोन द्वारा रचित "यहूदियों का इतिहास" नामक रचना का उपयोग किया है। यासोन का यह ग्रन्थ अप्राप्य है।

मक्काबियों के पहले ग्रन्थ के विपरीत इस दूसरे ग्रन्थ में बार-बार परमेश्वर का नाम लिया गया है और चमत्कारपूर्ण घटनाओं की भरमार है। लेखक श्रद्धायुक्त व्यवस्था-पालन पर बल देता है और अपने धर्म के कारण हताहत शहीदों के अनन्त पुरस्कार पर पूर्ण विश्वास रखता है।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

1	मिस्र के यहूदियों के नाम दो पत्र और प्राक्कथन	1 : 1 — 2 : 32
2	महापुरोहितीय पद के लिए प्रतिस्पर्धा	3 : 1 — 4 : 50
3	राजा अंतियोखुस एपीफानेस द्वारा यहूदियों पर अत्याचार	5 : 1 — 7 : 42
4	यहूदा मक्काबी का विद्रोह	8 : 1 — 15 : 39

मिस्र के यहूदियों के नाम पहला पत्र : मण्डप-पर्व मनाने का अनुरोध

1 मिस्र के यहूदी भाई-बहिनों को नमस्कार।
यरूशलेम और यहूदा प्रदेश में रहने वाले यहूदी
भाई-बहिनों की ओर से शान्ति और कुशलक्षेम
की शुभकामनाएँ! 2परमेश्वर आपका भला करे
और अपने उस विधान का ध्यान रखे, जो उसने
अपने भक्त सेवक अब्राहम, इसहाक और
याकूब के लिए निर्धारित किया था। 3वह आप
सब को ऐसा मनोभाव प्रदान करे कि आप
उसकी आराधना करते रहें और सारे हृदय और
मन से उसकी आज्ञाओं का पालन करें। 4वह
आपके हृदय में अपनी व्यवस्था और आज्ञाओं
के प्रति प्रेम भर दे, आप को शान्ति प्रदान करे,
5आपकी प्रार्थनाएँ स्वीकार कर ले, आप को
क्षमा करे और विपत्ति के समय आपका त्याग
न करे। 6हम इस समय आपके लिए यही
प्रार्थना करते हैं।
7 एक सौ उनहत्तरवें वर्ष* जब देमेत्रियुस
द्वितीय राज्य कर रहा था, हम यहूदियों ने
आपको यह लिखा था: "इन दिनों हम पर घोर
विपत्तियाँ पड़ी हैं। यासोन और उसके अनुयायियों
ने पवित्र देश और राज्य के विरुद्ध विद्रोह कर
दिया है। 8उन्होंने मन्दिर का प्रवेश-द्वार
जला दिया और निर्दोष व्यक्तियों की हत्या की
है। तब हमने प्रभु से प्रार्थना की और उसने
हमारी सुनी। हमने होम-बलि और अन्न-बलि
चढ़ायी, दीप जलाये और भेंट की रोटियाँ
मन्दिर में रखीं।" 9 अब हम आप को फिर पत्र
लिख कर एक सौ अठासीवें वर्ष+ के किसलेव
महीने में मण्डप-पर्व मनाने का अनुरोध करते
हैं।

* सन् 143 ई० पू० + सन् 124 ई० पू०

1 : 2 लेव 26 : 42 **1 : 3** 1 इत 28 : 9 **1 : 4** प्रे 16 : 14 **1 : 7** 1 मक 10 : 67

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मिस्र के यहूदियों के नाम दूसरा पत्र : शुभकामना

10 अरिस्तोबूलुस को, जो अभ्यंजित पुरोहितों
के वंशज तथा राजा पतोलेमैउस के गुरु हैं, और
मिस्र के यहूदियों को, यरूशलेम नगर और
यहूदा प्रदेश के निवासियों तथा यहूदा मक्काबी
और परिषद् का नमस्कार। आप स्वस्थ और
सानन्द रहें।

राजा अन्तियोखुस की हत्या का वर्णन

11 परमेश्वर ने घोर विपत्तियों से हमारी रक्षा
की और वह राजा के विरुद्ध हमारा सहायक
रहा, इसलिए हम उसके बहुत कृतज्ञ हैं।
12उसने स्वयं उन लोगों को भगा दिया, जो
पवित्र नगर पर आक्रमण करने आये थे। 13उस
सेना का सेनापति अन्तियोखुस एक ऐसी सेना
ले कर, जो अजेय-जैसी लगती थी, फारस देश
गया था और वहाँ वह ननैया देवी के मन्दिर में
पुजारियों द्वारा टुकड़े-टुकड़े कर दिया गया।
ननैया के पुजारियों ने षड्यन्त्र रचा।
14अन्तियोखुस, देवी के साथ विवाह करने के
बहाने, अपने सहचरों के साथ वहाँ आया।
उसने सोचा कि इस तरह दहेज रूप में मन्दिर
कीभारी सम्पत्ति उसके हाथ आ जायेगी। 15ननैया
के पुजारियों ने मन्दिर की सम्पत्ति निकाल कर
प्रदर्शित की और अन्तियोखुस ने थोड़े ही लोगों
के साथ मन्दिर के क्षेत्र में प्रवेश किया। उसके
प्रवेश करते ही पुजारियों ने द्वार बन्द कर दिया।
16फिर वे छत का गुप्त दरवाजा खोल कर उन
पर पत्थर फेंकने लगे और सेनापति अन्तियोखुस
को और उसके सैनिकों को मार डाला। इसके
बाद उन्होंने उनके टुकड़े-टुकड़े कर और
उनके सिर काट कर उन्हें बाहर खड़े लोगों के
सामने फेंक दिया। 17हमारा परमेश्वर सदा-
सर्वदा धन्य है। उसने अधर्मियों को मृत्यु के
हवाले कर दिया।

नफ़्थार—एक अनोखे द्रव की प्राप्ति

18 किसलेव मास के पच्चीसवें दिन हम
मन्दिर के शुद्धीकरण का उत्सव मना रहे हैं।
आप को इसकी सूचना देना हमने उचित
समझा, जिससे आप मण्डप-पर्व और उस
अग्नि का स्मरणोत्सव मनायें, जो उस समय
प्रकट हुई, जब मन्दिर और वेदी के निर्माता
नहेम्याह बलि चढ़ाते थे। 19 जब हमारे पूर्वज
फ़ारस देश में निष्कासित किये जा रहे थे, तब
उस समय के भक्त पुरोहितों ने चुपके से वेदी
की अग्नि को एक सूखे कुएँ की एक ऐसी गुफा
में छिपा दिया, जिसका पता किसी को नहीं चल
सका। 20बहुत वर्ष बाद परमेश्वर को यह
उचित जान पड़ा कि फ़ारस के राजा द्वारा वापस
भेजे हुए नहेम्याह ने उन पुरोहितों के वंशजों को
बुलाया, जिन्होंने आग छिपायी थी और उसे ले
आने का आदेश दिया। लेकिन उन्होंने आ कर
कहा कि हमें वहाँ आग नहीं, बल्कि गँदला द्रव
मिला है, तो नहेम्याह ने उन्हें उसे ले आने को
कहा। 21जब अग्नि-बलि की पूरी सामग्री रखी
जा चुकी, तब नहेम्याह ने पुरोहितों से कहा कि
वे लकड़ी और उस पर रखे हुए चढ़ावों पर वह
द्रव उँडेल दें। 22उन्होंने वैसा ही किया। कुछ
देर बाद बादलों के हट जाने से सूर्य प्रकट हुआ
और वेदी पर से आग की पलटें जोरों से उठने
लगीं। सब लोग आश्चर्य करने लगे। 23जिस
समय अग्नि-बलि जल रही थी, पुरोहित और
सब लोग प्रार्थना कर रहे थे। योनातन पहले
प्रार्थना सुनाते थे और अन्य लोग नहेम्याह के
साथ उसके शब्द दोहराते थे। 24प्रार्थना इस प्रकार
थी:

"प्रभु! हे प्रभु-परमेश्वर! सब के रचयिता!
भयप्रदायी, शक्तिशाली, न्यायी और करुणामय!
तू ही राजा है, तू ही भला है। 25तू ही सर्व-दाता
है, तू ही सर्व-न्यायी है, सर्वशक्तिशाली और
शाश्वत है। तू सभी विपत्तियों से इस्राएल की
रक्षा करता है। तूने हमारे पूर्वजों को चुना और
पवित्र किया। 26तू अपनी समस्त प्रजा इस्राएल
के लिए चढ़ाई हुई यह बलि स्वीकार कर। तू
अपनी विरासत सुरक्षित रख और उसे पवित्र
कर। 27हममें से जो बिखरे पड़े हैं, उन्हें एकत्र
कर। जो अन्यजातीय राष्ट्रों में गुलाम हैं, उन्हें
मुक्त कर। जो तिरस्कृत और उपेक्षित हैं, उन
पर दया-दृष्टि कर, जिससे गैर-यहूदी लोग
जान जायें कि तू हमारा परमेश्वर है। 28जो हम
पर अत्याचार करते और घमण्ड के आवेश में

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हमारा अपमान करते हैं, तू उन्हें दण्डित कर।
29जैसा मूसा ने कहा था, तू अपनी प्रजा को फिर
इस पवित्र भूमि पर स्थापित कर।* ''
30 इस प्रार्थना के बाद पुरोहितों ने भजन
गाये। 31जब अग्नि-बलि जल चुकी थी, तब
नहेम्याह ने बचा हुआ द्रव बड़े पत्थरों पर
उँडेलने का आदेश दिया। 32जैसे ही ऐसा किया
गया, पत्थरों से एक ज्वाला निकली, जो
अग्नि-बलि की वेदी से उठने वाली प्रखर
ज्योति में विलीन हो गयी। 33इस घटना की
चर्चा फैल गयी। फ़ारसियों के राजा को भी
बताया गया कि उस स्थान पर, जहाँ पुरोहितों
ने आग छिपा रखी थी, वहाँ वह द्रव मिला है,
जिससे नहेम्याह और उसके साथियों ने अग्नि-
बलि की सामग्री का शुद्धीकरण किया। 34इस
पर राजा ने घटना की जांच कराने के बाद उस
स्थान को घेर दिया और उसे पवित्र घोषित
किया। 35राजा को उस स्थान से बहुत आमदनी
होती थी और उस में से वह उन लोगों को एक
बढ़ा हिस्सा देता, जिन्हें उसने उस स्थान की
देखरेख का प्रबन्ध सौंपा था। 36नहेम्याह के
आदमियों ने उस द्रव का नाम 'नफ़थार' रखा,
जिसका अर्थ है—शुद्धीकरण। प्रायः लोग इसे
'नफ़था' कहते हैं।

नबी यिर्मयाह द्वारा पवित्र सामग्री की व्यवस्था

2 अभिलेखों में इसका वर्णन मिलता है कि
नबी यिर्मयाह ने उन लोगों से, जो निष्कासन
में ले जाये जा रहे थे, कहा था कि वे वेदी की
अग्नि का थोड़ा-सा अंश अपने साथ ले जायें,
जैसा कि उसका उल्लेख किया जा चुका है।
2नबी ने उन निष्कासितों को धर्मव्यवस्था दे दी
और उन से अनुरोध किया कि वे प्रभु की
आज्ञाएँ नहीं भूलें और सोने-चांदी की अलंकृत
मूर्तियाँ देख कर उनकी ओर आकर्षित न हों।
3नबी ने इस प्रकार की अन्य बातों के साथ-
साथ उन से आग्रह किया कि वे व्यवस्था को
अपने हृदय से दूर न होने दें। 4उसी विवरण में
यह भी लिखा है कि नबी ने परमेश्वर की प्रेरणा
से विधान का पवित्र शिविर और मंजूषा लाने
और अपने पीछे ले जाने का आदेश दिया। तब
वह उस पर्वत पर गया, जिस पर चढ़ कर मूसा
ने परमेश्वर की विरासत के दर्शन किये थे।
5वहाँ यिर्मयाह को एक बड़ी गुफा मिली। उसने
उसमें शिविर, मंजूषा और धूपवेदी रखी और
6इसके बाद उसका द्वार बन्द कर दिया। बाद में
उसके साथियों के कई व्यक्ति वहाँ गये, जिससे
वे उस मार्ग पर चिह्न लगा दें, लेकिन वे उस
स्थान का पता नहीं लगा सके। 7जब यिर्मयाह
ने यह बात सुनी, तो उसने उन्हें इस प्रकार डाँटा,
''यह स्थान तब तक गुप्त रहेगा, जब तक
परमेश्वर अपनी प्रजा को फिर एकत्र न करे
और उन पर तरस न खाये। 8उस समय प्रभु
स्वयं ये वस्तुएँ दिखायेगा। तब मेघ के साथ-
साथ प्रभु की महिमा प्रकट होगी, जैसी वह
मूसा के समय प्रकट हुई थी और उस समय,
जब सुलेमान ने मन्दिर के भव्य प्रतिष्ठान के
लिए प्रार्थना की थी।'' 9इसका वर्णन किया
गया है कि प्रज्ञासम्पन्न सुलेमान ने मन्दिर के
निर्माण की समाप्ति पर प्रतिष्ठान की बलि
चढ़ाई। 10जिस तरह मूसा ने प्रभु से प्रार्थना की
थी और स्वर्ग से उतरी अग्नि ने चढ़ावे भस्म कर
दिये, उसी तरह सुलेमान ने भी प्रार्थना की थी
और अग्नि ने उतर कर बलि भस्म कर दी।
11मूसा ने कहा था, ''पाप-बलि खायी नहीं जा
सकती, इसलिए वह भस्म की गयी है।''
12सुलेमान ने भी आठ दिन तक इसी तरह पर्व
मनाया था।

नहेम्याह द्वारा पुस्तकालय का निर्माण

13 उपर्युक्त बातों के अतिरिक्त उन अभिलेखों
और नहेम्याह के संस्मरणों में यह भी लिखा है
कि नहेम्याह ने एक पुस्तकालय बनवाया, जिस
में उसने राजाओं और नबियों के ग्रन्थों, दाऊद
की रचनाओं और मन्दिर में अर्पित की गयी
भेंटों से सम्बन्धित राजाओं के पत्रों का संग्रह

* अक्षरशः, ''रोप दे'' + अर्थात् मन्दिर के विनाश के कुछ पहले।

1 : 29 व्य 30 : 3-8 **2 : 2** बारू 6 : 4-5 **2 : 4** व्य 32 : 49 **2 : 8** नि 40 : 34; 1 रा 8 :10-11 **2 : 10** 2 इत 7 : 1; लेव 9 : 24 **2 : 11** लेव 10 : 16-17

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

किया था। [14]इस प्रकार यहूदा मक्काबी ने भी उन सब ग्रन्थों को संग्रहीत किया, जो हमारे साथ की गयी लड़ाई के कारण इधर-उधर बिखर गये थे। वे इस समय हमारे पास हैं। [15]यदि आप को उनकी आवश्यकता है, तो दूत भेजें, जो उन ग्रन्थों को आपके पास ले जायेंगे।

प्रतिष्ठान-पर्व के लिए निमन्त्रण

16 हम मन्दिर के शुद्धीकरण का पर्व मनाने जा रहे हैं, इसलिए हम आप को लिख रहे हैं। अच्छा होगा कि आप भी यह पर्व मनायें। [17]परमेश्वर ने अपनी समस्त प्रजा की रक्षा की, सब को विरासत, राजत्व, पुरोहिताई और पवित्रीकरण प्रदान किया, [18]जैसा कि उसने व्यवस्था में इसकी प्रतिज्ञा की थी। हमें आशा है कि वही परमेश्वर शीघ्र ही हम पर दया करेगा और आकाश के नीचे के सब स्थानों से हमें अपने पवित्र देश में एकत्र करेगा; क्योंकि उसने हमें बड़ी-बड़ी विपत्तियों से मुक्त किया है और मन्दिर का शुद्धीकरण किया है।

लेखक का प्राक्कथन

19 यहूदा मक्काबी और उसके भाइयों का इतिहास, महामन्दिर का शुद्धीकरण और वेदी का प्रतिष्ठान, [20]राजा अन्तियोखुस एपीफ़ानेस और उसके पुत्र यूपातोर के साथ हुई लड़ाइयाँ, [21]यहूदी धर्म की रक्षा के लिए संघर्ष करने वाले लोगों को स्वर्ग की ओर से दिखाये हुए संकेत-चिह्न, जिससे वे अपनी अल्प संख्या के बावजूद इतनी उदारता और साहस के साथ लड़ते रहे और करुणामय प्रभु की उन पर इतनी कृपादृष्टि रही कि उन्होंने समस्त देश को लूटा, विदेशियों को भगाया, [22]सारे संसार में सुव्यवस्थित मन्दिर को अपने अधिकार में कर लिया, नगर को मुक्त किया और उस विधि-विधान का पुनरुद्धार किया, जिसका उन्मूलन किया जा रहा था— [23]इन सब बातों का विस्तृत वर्णन कुरेने नगर के यासोन ने पांच ग्रन्थों में किया है। हम एक ही ग्रन्थ में उनका संक्षेप प्रस्तुत करने का प्रयत्न करेंगे।

24 हमारी दृष्टि में उन ग्रन्थों में इतने आँकड़ों का उल्लेख किया गया है और उन में इतनी सामग्री का समावेश किया गया है कि वे उन लोगों के लिए कठिनाई उत्पन्न करते हैं, जो उन ऐतिहासिक ग्रन्थों का अध्ययन करना चाहते हैं। [25]इसलिए हमें यह उचित प्रतीत हुआ कि हम उनका रोचक संक्षेप प्रस्तुत करें, जिससे पढ़ने वाला लाभ उठा सके— चाहे वह साधारण पाठक हो या वह ऐतिहासिक घटनाओं की स्मृति अपने मन पर अंकित करना चाहता हो। [26]इस संक्षेप की रचना हमारे लिए सरल नहीं, बल्कि कठिन कार्य था, जिसके लिए रात-रात भर जाग कर पसीना बहाना पड़ा। [27]मेरा यह कार्य उन लोगों-जैसा है, जो भोज की तैयारी करना चाहते हैं, किन्तु वे बिना परिश्रम किये सभी अतिथियों को सन्तुष्ट नहीं कर सकेंगे। फिर भी हमने यह जान कर परिश्रम किया कि बहुत-से लोग इस से लाभ उठायेंगे। [28]हमने ऐतिहासिक घटनाओं का अनुसन्धान मूल लेखक पर छोड़ कर बड़ी सावधानी से संक्षेपण प्रस्तुत किया। [29]नये भवन के वास्तुपति पर समस्त भवन का उत्तरदायित्व है, जब कि जिसने दीवारों पर चित्र अंकित करने का भार लिया, उसे केवल अलंकरण का ध्यान रखना है। मैं समझता हूं कि यह मुझ पर भी लागू होता है। [30]विषय के अध्ययन और सर्वांगपूर्ण निरीक्षण के अतिरिक्त एक-एक घटना की सूक्ष्म जांच करना इतिहासकार का कार्य है। [31]किन्तु जो किसी अन्य ग्रन्थ का संक्षेपण करता है, उसे समास-शैली का प्रयोग करने और विषय का पूर्ण विवरण छोड़ देने का अधिकार है। [32]अब हम कुछ कहने के बजाय अपनी रचना प्रारम्भ करें; क्योंकि इतिहास-ग्रन्थ का संक्षेपण करते समय उसकी लम्बी-चौड़ी भूमिका प्रस्तुत करना मूर्खता होगी।

शिमोन का विश्वासघात

3 पवित्र नगर में शान्ति का साम्राज्य था और जनता विधि-विधान का अच्छी तरह पालन करती थी; क्योंकि महापुरोहित ओनियाह ईश्वरभक्त था और वह बुराई से घृणा करता था। [2]राजा लोग भी पवित्र-स्थान का सम्मान

---

2 : 17 1 पत 2 : 9; नि 19 : 5-6 **2 : 18** यहेज 39 : 27-28 **2 : 27** प्रव 32 : 1-2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

करते थे और मन्दिर को बहुमूल्य उपहार चढ़ाते
थे। [3]एशिया का राजा सिलूकस तो अपने
राजस्व से बलि की धर्मविधियों का आवश्यक
ख़र्च देता था।

4 किन्तु शिमोन नामक एक व्यक्ति, जो
बिन्यामिन कुल+ का था, मन्दिर का प्रबन्धक
नियुक्त किया गया। नगर के बाज़ारों के
निरीक्षण के विषय में उसका महापुरोहित
ओनियाह से मतभेद हो गया। [5]जब वह ओनियाह
को प्रभावित नहीं कर सका, तो थरसेउस के
पुत्र* अपल्लोनियुस के पास गया, जो उस
समय केले-सीरिया और फ़ेनीके प्रदेश का
शासक था। [6]शिमोन ने उसे यह बताया कि
यरूशलेम के कोषागार में इतनी सम्पत्ति भरी है
कि उसका कुल जोड़ निकालना असम्भव है
और बलि-विधियों के ख़र्च से उसकी कोई
तुलना नहीं है। उसने यह भी कहा कि वह
सम्पत्ति राजा को दिलायी जा सकती है। [7]जब
अपल्लोनियुस राजा सिलूकस से मिला, तो
कोष के सम्बन्ध में उसे जो कुछ बताया गया
था, उसने वह सब राजा से कहा। राजा ने अपने
प्रधान मन्त्री हेल्योदोरस को बुला कर उसे
आज्ञा दी कि वह वहाँ जा कर यह कथित
सम्पत्ति जब्त करे। [8]हेल्योदोरस तुरन्त चल पड़ा।
उसने यह बहाना किया कि वह केले-सीरिया
और फेनीके के नगरों के दौरे पर जा रहा है,
लेकिन सच तो यह था कि वह राजा का उद्देश्य
पूरा करने गया।

यरूशलेम में हेल्योदोरस

9 जब हेल्योदोरस यरूशलेम पहुंचा, तो नगर
के महापुरोहित ओनियाह ने सद्भाव से उसका
स्वागत किया। हेल्योदोरस ने बताया कि उसने
क्या सुना है और यह भी स्पष्ट किया कि वह
क्यों आया है। उसने पूछा कि सुनी हुई बात
कहाँ तक सच है। [10]महापुरोहित ने उसे बताया
कि यह कोष विधवाओं और अनाथों का है।
[11]और इसका कुछ भाग तोबियाह के पुत्र
हिर्कानस का है, जो एक बड़ा पदाधिकारी है।
बात वैसी नहीं है, जैसी अधर्मी शिमोन ने
बतायी है। कोष में कुल मिला कर चांदी के चार
सौ सिक्के और सोने के दो सौ सिक्के** हैं।
[12]यह भी बिलकुल असम्भव था कि उन लोगों
के साथ अन्याय किया जाये, जिन्होंने इस स्थान
की पवित्रता और संसार-भर में प्रसिद्ध मन्दिर
की परम पावन अनुल्लंघनीयता पर विश्वास
किया था। [13]किन्तु हेल्योदोरस ने राजा का
आदेश दृष्टि में रख कर इस बात पर बल दिया
कि वह सम्पत्ति राजकोष में रखी जानी चाहिए।
[14]उसने मन्दिर में प्रवेश करने और कोष के
निरीक्षण के लिए जो दिन निश्चित किया, उसने
उसी दिन मन्दिर में प्रवेश किया।

इस पर सारे नगर में हुल्लड़ मच गया।
[15]पुरोहित अपने पुरोहितीय वस्त्र धारण कर
और वेदी के सामने मुंह के बल गिर कर
स्वर्गिक परमेश्वर से, जिसने मन्दिर-कोष में
रखी हुई सम्पत्ति के विषय में नियम बनाया था,
यह प्रार्थना करने लगे कि वह उन लोगों की
सम्पत्ति की रक्षा करे, जिन्होंने उसे मन्दिर-
कोष में रखवाया था। [16]महापुरोहित को देख
कर कोई भी व्यक्ति अप्रभावित नहीं रह सका।
उसके चेहरे का मनोभाव और पीला रंग उसकी
आत्मा का दुःख व्यक्त कर रहा था। [17]वह
अत्यन्त भयभीत था और उसका सारा शरीर इस
प्रकार कांप रहा था कि जो भी उसे देखता, वह
समझ जाता कि उसके हृदय में कितनी तीव्र
वेदना है। [18]लोग बड़ी संख्या में अपने घरों से
निकल कर सामूहिक प्रार्थना में सम्मिलित हो
गये, जिससे मन्दिर का अपवित्रीकरण रोका जा
सके। [19]स्त्रियाँ छाती के नीचे टाट के वस्त्र पहन
कर गलियों में एकत्र हो गईं। लड़कियाँ, जो
प्रायः घर के अन्दर ही रहती थीं, अब झुण्ड बना
कर मन्दिर के प्रवेश-द्वारों या दीवारों की ओर
दौड़ीं या खिड़कियों से बाहर देख रही थीं। [20]वे
स्वर्ग की ओर हाथ फैला कर प्रार्थना कर रही

+ पाठांतर, ''बिलगा वंश''। * अथवा, ''तरसुस-निवासी''। ** अर्थात् लगभग 13,600 किलो चांदी तथा 6,800 किलो सोना।

3 : 20 नि 9 : 29.33; एज्रा 9 : 5

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

थीं। 21यह दृश्य कितना करुणाजनक था—सभी लोग मुंह के बल गिर कर प्रार्थना कर रहे थे। महापुरोहित भावी अनिष्ट की आशंका से अत्यन्त व्याकुल था। 22जिस समय सब प्रार्थना कर रहे थे कि सर्वशक्तिमान प्रभु उन लोगों की सम्पत्ति की पूरी-पूरी रक्षा करें, जिन्होंने उसे मन्दिर-कोष में रखवाया था, 23उसी समय हेल्योदोरस ने अपना संकल्प पूरा किया।

प्रभु द्वारा कोष की रक्षा

24 जब वह अपने अंगरक्षकों के साथ कोष के पास पहुंचा, तो आत्माओं के स्वामी, सर्वाधिकारी प्रभु उसके सामने इतनी तेज के साथ प्रकट हुआ कि जितने लोगों ने मन्दिर में प्रवेश करने का साहस किया था, वे सभी परमेश्वर की सामर्थ्य से भौचक्के हो गये और आतंक से अशक्त हो गये। 25उन्हें सुसज्जित घोड़े पर एक भयानक आकार वाला घुड़सवार दिखाई पड़ा। वह घोड़ा हेल्योदोरस पर टूट पड़ा और उसने उस पर अपनी अगली टापों से प्रहार किया। घुड़सवार सोने का कवच पहने था। 26तब भड़कीले वस्त्र पहने दो अत्यन्त बलवान् और सर्वांग-सुन्दर नवयुवक दिखाई पड़े। वे हेल्योदोरस के दोनों ओर खड़े हो कर उसे निरन्तर कोड़े लगाने लगे,और इस प्रकार उन्होंने उसको बहुत मारा। 27हेल्योदोरस अचानक ज़मीन पर गिर पड़ा। उसकी आंखों के सामने गहरा अन्धकार छा गया। तब उसे उठा कर एक तख्ते पर रखा गया। 28वह, जो दलबल और अंगरक्षकों के साथ उपर्युक्त कोष के पास पहुंचा था, अब अशक्त हो कर बाहर ले जाया जा रहा था। उसने ईश्वरीय सामर्थ्य का अनुभव किया। 29वह ईश्वरीय सामर्थ्य के प्रभाव के कारण बोलने में असमर्थ हो कर पड़ा रहा और उसके बचने की कोई आशा नहीं रही।

हेल्योदोरस की प्राणरक्षा

30 उधर लोगों ने प्रभु को धन्यवाद दिया, जिसने अपने मन्दिर की महिमा की रक्षा की थी। वह मन्दिर जो अभी-अभी भय और आतंक से आच्छादित था, अब हर्ष और उल्लास से गूंज उठा, क्योंकि सर्वशक्तिमान् प्रभु वहाँ दिखाई दिया था। 31हेल्योदोरस के कुछ साथियों ने ओनियाह से तुरन्त यह निवेदन किया कि वह सर्वोच्च प्रभु से प्रार्थना करे, जिससे वह मरणासन्न हेल्योदोरस को जीवन प्रदान करे।

32 राजा कहीं यह न सोचे कि यहूदियों ने हेल्योदोरस को छल-कपट से मारा है, इसलिए महापुरोहित ने उसकी प्राणरक्षा के लिए बलि चढ़ाई। 33महापुरोहित अभी प्रायश्चित्त-बलि चढ़ा ही रहा था कि उसी समय हेल्योदोरस को वे दोनों नवयुवक वही वस्त्र पहने दिखाई पड़े। उन्होंने उसके सामने आ कर उस से कहा, "तुम्हें महापुरोहित ओनियाह को बहुत धन्यवाद देना चाहिए, क्योंकि उनकी प्रार्थना के कारण प्रभु ने तुम को जीवन प्रदान किया है। 34स्वर्गिक परमेश्वर ने तुम को दण्ड दिया, इसलिए तुम को सब के सामने ईश्वरीय सामर्थ्य की महिमा घोषित करनी चाहिए।" इतना कह कर वे अन्तर्धान हो गये।

हेल्योदोरस द्वारा प्रभु की महिमा का वर्णन

35 हेल्योदोरस ने भी प्रभु को बलि चढ़ायी और उसके लिए बड़ी मन्नतें मानीं क्योंकि उसने उसे जीवित रहने दिया। इसके बाद उसने ओनियाह से विदा ली और अपनी सेना के साथ राजा के पास लौटा। 36उसने सब के सामने सर्वोच्च परमेश्वर के उन कार्यों की साक्षी दी जिन्हें उसने अपनी आंखों से देखा था। 37जब राजा ने हेल्योदोरस से पूछा कि अब किसे यरूशलेम भेजा जाना चाहिए, तो उसने उत्तर दिया, 38"यदि कोई आपका शत्रु या राजद्रोही हो, तो उसे वहाँ भेजिए। यदि वह जीवित रह गया, तो वह कोड़े खाने के बाद आपके पास लौटेगा; क्योंकि एक ईश्वरीय शक्ति वहाँ निवास करती है। 39जो स्वर्ग में विराजमान है, वह उस स्थान की रक्षा करता और उसे सहायता देता है। जो उसे हानि पहुंचाने आते हैं, वह उन पर प्रहार करता और उनका संहार करता है।"

---

3 : 39 भज 2 : 4; 123 : 1

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

40 यह हेल्योदोरस और कोष की रक्षा का
वृत्तान्त है।

शिमोन का षड्यन्त्र

4 शिमोन ने, जिसके विषय में पहले यह
कहा जा चुका है कि उसने कोष के विषय
में सूचना दी और अपने देश के साथ विश्वासघात
किया था, महापुरोहित ओनियाह पर यह झूठा
अभियोग लगाया कि उसने हेल्योदोरस पर
आक्रमण किया था और कि वह सब विपत्तियों
के लिये उत्तरदायी है। 2उसने नगर के उपकारक,
जाति के रक्षक और व्यवस्था के उत्साही
पालनकर्ता को राजद्रोही घोषित करने का
साहस किया। 3शिमोन की शत्रुता यहाँ तक बढ़
गयी कि उसके अनुयायियों द्वारा हत्याएँ होने
लगीं। 4जब ओनियाह ने देखा कि शिमोन की
यह शत्रुता खतरनाक है और कि केले-सीरिया
और फेनीके प्रदेश का शासक, मनेस्थेस का पुत्र
अपल्लोनियुस शिमोन की शत्रुता को प्रोत्साहन
देता है, 5तो वह राजा के पास गया—इसलिए
नहीं कि वह अपने नागरिकों पर दोष लगाये,
बल्कि इसलिए कि उसे समस्त राष्ट्र और प्रत्येक
व्यक्ति के कल्याण की चिन्ता थी; 6क्योंकि उसने
देखा कि जब तक राजा हस्तक्षेप नहीं करेगा,
तब तक न तो प्रशासन में शान्ति होगी और न
शिमोन अपनी हरकतें बन्द करेगा।

यूनानी सभ्यता का बोलबाला

7 सिलूकस की मृत्यु के बाद अन्तियोखुस
जो ''एपीफानेस*'' कहलाता है, राजा बना।
तब ओनियाह के भाई यासोन ने अनुचित ढंग
से महापुरोहित के पद पर अधिकार कर लिया;
8क्योंकि वह राजा से मिलने गया और उसने
चांदी के तीन सौ साठ सिक्के+ और किसी अन्य
सूत्र से प्राप्य अस्सी सिक्के देने का वचन
दिया। 9इसके सिवा उसने इस शर्त पर और डेढ़
सौ सिक्के देने का वादा किया कि राजा उसे यह
अधिकार दे कि वह एक व्यायामशाला और
एक अखाड़ा स्थापित करे और यरूशलेम के
निवासियों को अन्ताकिया की नागरिकता
प्रदान करे। 10राजा ने अनुमति दे दी। प्रशासन
की बागडोर अपने हाथ में लेने के बाद यासोन
तुरन्त अपने जाति-भाइयों में यूनानी रीति-
रिवाजों के प्रचलन का प्रवर्तन करने लगा।
11उसने वे छूटें रद्द कर दीं, जो उदार-मना
राजाओं ने यूपोलेमस के पिता योहन के निवेदन
पर यहूदियों को दे रखी थीं (यह वही
यूपोलेमस है, जिसे बाद में मित्रता और सन्धि
का सम्बन्ध स्थापित करने रोम भेजा गया था)।
यासोन ने नागरिकों के व्यवस्था-सम्मत
अधिकार समाप्त कर व्यवस्था-विरोधी रीति-
रिवाजों का प्रवर्तन किया। 12उसने बिना विलम्ब
किये मन्दिर के पर्वत के ठीक नीचे एक
व्यायामशाला बनवायी, जिस में उसने कुलीन
युवकों को भरती किया।++ 13अधर्मी यासोन के
कारण—जो महापुरोहित नहीं, बल्कि महा-
दुष्कर्मी था—यूनानीकरण और विदेशी रीति-
रिवाजों का इतना बोलबाला हो गया 14कि
पुरोहितों को वेदी की सेवा करने की चिन्ता नहीं
रही। वे मन्दिर को तुच्छ समझते और बलि
चढ़ाना छोड़ देते, किन्तु चक्र फेंकने की घंटी
बजते ही वे व्यवस्था-विरोधी खेलों में सम्मिलित
होने के लिए व्यायामशाला की ओर दौड़
पड़ते। 15वे अपने पूर्वजों द्वारा सम्मानित
मर्यादाओं की उपेक्षा करते और यूनानियों द्वारा
प्रदत्त सम्मान को बड़ा महत्त्व देते। 16इन सब
बातों के कारण उनकी दुर्गति हो गयी; क्योंकि
वे जिन लोगों के रीति-रिवाजों का अनुकरण
करना और हर तरह जिनके सदृश बनना चाहते
थे, वे उनके शत्रु और अत्याचारी बन गये।
17आगे की घटनाएँ इस बात को प्रमाणित
करेंगी कि ईश्वरीय नियमों का उल्लंघन करना
कोई साधारण बात नहीं है।

सोर नगर का खेल-कूद

18 सोर नगर में हर पांचवें वर्ष राजा की
उपस्थिति में खेल-कूद होता था। 19नीच यासोन

---

* अर्थात् ''प्रकटित (ईश्वर)'' + मूल में, 'तलन्त'। यूनानी काल में एक तलन्त का मूल्य छब्बीस किलो चाँदी के बराबर था। ++ शब्दश: ''(खेल-कूद प्रतियोगिता के देवता) हिरमेस की टोपी पहनने के लिए बाध्य किया''।

4 : 5 प्रे 28 : 19 4 : 10 1 मक 1 : 13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ने यरूशलेम के प्रतिनिधियों के रूप में कुछ ऐसे
लोगों को भेजा, जिन्हें अन्ताकिया की नागरिकता
प्राप्त हो गयी, और उसने उन्हें हेराक्लेस देवता
को बलि चढ़ाने के लिए तीन सौ चांदी के
सिक्के* दिये। किन्तु वहाँ पहुंच कर प्रतिनिधियों
को लगा कि यह रुपया बलि चढ़ाने के लिए
देना अनुचित था। अतः उन्होंने उसे एक अन्य
कार्य में खर्च कर दिया। 20भेजने वाले ने इसे
इसलिए भेजा था कि इसे हेराक्लेस देवता को
बलि चढ़ाने में खर्च किया जाये, लेकिन लाने
वालों को यह बात उचित नहीं लगी, इसलिए
इसे विशिष्ट जलयानों+ के निर्माण के लिए
अर्पित कर दिया।

यरूशलेम में राजा अन्तियोखुस का स्वागत

21 मनेस्थेस के पुत्र अपल्लोनियुस को
फिलोमेतोर के राज्याभिषेक के अवसर पर
मिस्र देश भेजा गया। अप्पलोनियुस से
अन्तियोखुस को मालूम हुआ कि फिलोमेतोर
उसकी राजनीति का विरोधी है और इसलिए
वह अपने राज्य की सुरक्षा का प्रबन्ध करने
लगा। इस सिलसिले में वह याफा बन्दरगाह
गया और वहाँ से यरूशलेम। 22यासोन और
नगर के लोगों ने बड़ी धूमधाम से उसका
स्वागत किया। जैसे ही उसने नगर में प्रवेश
किया, नगर के लोगों ने मशालें जलायीं और
उसका जय-जयकार किया। इसके बाद वह
अपनी सेना के साथ फेनीके लौट आया।

महापुरोहित मनेलास

23 तीन वर्ष बाद यासोन ने मनेलास को, जो
उपर्युक्त शिमोन का भाई था, राजा को रुपया
देने और प्रशासन की कुछ आवश्यक समस्याओं
के सम्बन्ध में राजा का निर्णय ले आने को
भेजा। 24मनेलास ने राजा से मिलने पर उसे यह
विश्वास दिलाया कि वह एक प्रभावशाली
व्यक्ति है। राजा ने उसे महापुरोहित के पद पर
नियुक्त कर दिया; क्योंकि उसने यासोन से
चांदी के तीन सौ सिक्के* अधिक देने की प्रतिज्ञा
की। 25वह अपनी नियुक्ति का राज्यादेश ले कर
यरूशलेम पहुंचा, यद्यपि वह उस पद के
नितान्त अयोग्य था; क्योंकि उसकी प्रकृति क्रूर
तानाशाही की जैसी थी और वह क्रोध के
आवेश में जंगली जानवर-जैसा व्यवहार करता
था। 26इस प्रकार यासोन, जिसने अपने भाई को
पदच्युत किया था, अब स्वयं दूसरे के द्वारा
पदच्युत कर दिया गया और उसे अम्मोनियों के
देश भागना पड़ा। 27मनेलास ने पद-भार ग्रहण
किया, लेकिन उसने राजा को जो रुपया देने का
वचन दिया था, वह नहीं दिया— 28तब भी नहीं
दिया, जब गढ़ के प्रधान सोस्त्रातस ने, जो
राजकर वसूलने का अधिकारी था, उसे ऐसा
करने को कहा। इस कारण राजा ने दोनों को
स्पष्टीकरण के लिए बुलाया। 29मनेलास ने
स्थानापन्न महापुरोहित के रूप में अपने भाई
लिसीमाखस को नियुक्त किया और सोस्त्रातस
ने कुप्रुस द्वीप के सैनिकों के अध्यक्ष क्रातेस को
अपने स्थान पर।

ओनियाह की हत्या

30 इस बीच तरसुस और मल्लोस नगरों में
राजद्रोह हो रहा था, क्योंकि वे नगर राजा की
उपपत्नी अन्तियोखिस को दिये गये थे। 31राजा
शीघ्र ही स्थिति सुलझाने वहाँ गया। उसने
अन्द्रोनिकुस को, जो एक प्रतिष्ठित व्यक्ति था,
अपनी जगह पर नियुक्त किया। 32मनेलास ने
सोचा कि यह अच्छा अवसर है। उसने मन्दिर
के कुछ सोने के पात्र चुरा कर उन्हें अन्द्रोनिकुस
को भेंट में दे दिये। उसने कुछ अन्य पात्र सोर
और आसपास के नगरों में भी बेचे।

33 ओनियाह ने इसकी निश्चित जानकारी
प्राप्त कर उसे बहुत फटकारा। वह उस समय
दफ़ने में था, जो अन्ताकिया के पास एक
शरण-नगर है। 34इस कारण मनेलास ने
अन्द्रोनिकुस को एकान्त में बुला कर उस से
अनुरोध किया कि वह ओनियाह की हत्या कर
दे। अतः अन्द्रोनिकुस ओनियाह के पास

---

* मूल में ''चांदी के द्रख्मे''। एक सिक्के का मूल्य एक दिन की मजदूरी माना जाता था। + अथवा खेनेवालों की तीन पंक्तियों से लैस युद्धपोत। * मूल में ''तलन्त''

4 : 32 1 रा 15 : 18; 2 रा 16 : 8 **4 : 34** दान 9 : 26

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

विपत्तियों का सहभागी बनना पड़ा, जिस तरह
वह बाद में उनके सौभाग्य का भागी बनने वाला
था। सर्वशक्तिमान् के क्रोध के कारण अब उस
स्थान का त्याग किया गया, किन्तु सर्वोच्च
स्वामी के क्रोध के शान्त होने के बाद उसे फिर
से प्रतिष्ठा प्राप्त होने वाली थी।
21 अन्तियोखुस मन्दिर से लगभग छियालीस
हज़ार किलो चांदी** ले कर अपनी राजधानी
अन्ताकिया लौटा। उसका अहंकार इतना बढ़
गया कि वह धरती पर नाव चलाने और समुद्र
पर पैदल रास्ता बनाने की सोचने लगा! 22उसने
प्रस्थान करने से पहले यहूदियों पर अत्याचार
करने के लिए इन राज्यपालों को नियुक्त किया :
येरूशलेम में फिलिप को, जो फ्रुगिया प्रदेश का
था और जिसका दिल अपने मालिक से भी
अधिक बर्बर था; 23गरिज्जीम पहाड़ी क्षेत्र पर
अन्द्रोनिकुस को; इनके अतिरिक्त मनेलास
को, जो इन से भी अधिक दुष्ट था और अपने
यहूदी सहनागरिकों पर रोब दिखाता था।

येरूशलेम में अपल्लोनियुस का आतंक

24 राजा अन्तियोखुस ने सेनापति
अपल्लोनियुस को मुसिया-दल के बाईस
हज़ार सैनिकों के साथ भेजा और उसे सभी
वयस्क पुरुषों का वध करने और स्त्रियों तथा
किशोरों को बेचने का आदेश दिया। 25उसने
येरूशलेम आकर शान्तिप्रिय व्यक्ति होने का
स्वांग रचा। वह पवित्र विश्राम-दिवस तक
निष्क्रिय बैठा रहा और जिस दिन यहूदी
विश्राम-दिवस मनाने लगे, उस दिन उसने
अपने सैनिकों को शस्त्रों से सुसज्जित हो कर
कवायद करने को कहा। 26जब लोग सैनिकों
को देखने निकले, तो उसने उनका वध करने
का आदेश दिया और इसके बाद उसने अपने
सशस्त्र सैनिकों के साथ नगर में प्रवेश कर
कितने ही लोगों को मार डाला।
27 इस पर यहूदा मक्काबी नौ आदमियों को
साथ लेकर निर्जन प्रदेश की ओर भाग गया।
वहाँ वह अपने साथियों के साथ पहाड़ियों पर
जंगली जानवरों की तरह रहने लगा। वे
अपवित्र होने के डर से केवल सब्जी खाते थे।

अत्याचार

6 कुछ समय बाद राजा ने एक अथेने निवासी
वृद्ध पुरुष* को इसलिए भेजा कि वह
यहूदियों को अपने पूर्वजों के विधि-विधान का
परित्याग करने और परमेश्वर के नियमों का
उल्लंघन करने को बाध्य करे। 2वह येरूशलेम
के मन्दिर को अपवित्र करे और अब उसे
"ओलिम्पस-पर्वत पर निवास करने वाले
ज्यूस देवता" के नाम पर प्रतिष्ठित करे। उसी
तरह वह गरिज्जीम पर्वत के मन्दिर को "आतिथेय
ज्यूस देवता" के नाम पर प्रतिष्ठित करे, क्योंकि
वहाँ के निवासी अपने आतिथ्य-सत्कार के
लिए प्रसिद्ध हैं।
3 अधर्म का यह बोलबाला जनसाधारण को
भी खलने लगा। यह उनके लिए दु:सह हो
गया। 4मन्दिर में दुराचरण और रंगरेलियाँ होने
लगीं। गैर-यहूदी वहाँ वेश्याओं के साथ
मनोरंजन और पवित्र प्रांगणों में स्त्रियों के साथ
रमण करते। वे मन्दिर में ऐसी वस्तुएँ अन्दर
लाते, जो वर्जित थीं। 5वेदी ऐसी वस्तुओं से भर
गयी, जो अपवित्र और व्यवस्था द्वारा वर्जित
थीं। 6न विश्राम-दिवस मनाया जा सकता था
और न परम्परागत उत्सव मनाये जा सकते थे।
कोई अपने को यहूदी कहने का साहस नहीं
करता था। 7राजा के हर महीने मनाये जाने वाले
जन्म-दिवस पर बलि का प्रसाद खाने के लिए
लोगों को बाध्य किया जाता और दियोनीसियुस
देवता के पर्व के अवसर पर उन्हें इसके लिए
मजबूर किया जाता कि वे मारवल्ली का मुकुट
सिर पर पहन कर दियोनीसियुस के जुलूस में
सम्मिलित हों। 8 पतोलेमैउस के आदेश पर+
यह निर्णय किया गया कि निकटवर्ती यूनानी
नगरों में भी यहूदियों के साथ वही व्यवहार
किया जाये और उन्हें बलि-प्रसाद खाने को
बाध्य किया जाये। 9जो व्यक्ति यूनानी रीति-
रिवाजों को अपनाने से इनकार करे, उसका वध

** मूल में अठारह सौ तलन्त। * अथवा "गेरोन" नामक व्यक्ति। + अथवा "प्तुलिमयिस नगर-वासियों के सुझाव पर"।
5 : 21 2 मक 9 : 8 6 : 5 1 मक 1 : 46-47

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कर दिया जाये। इससे स्पष्ट था कि यहूदियों
पर कितनी विपत्तियाँ पड़ने वाली थीं।
10 एक दिन दो माताएँ कचहरी में पेश की
गयीं, जिन्होंने अपने बच्चों का खतना करवाया
था। उनके शिशु उनकी छाती पर लटका दिये
गये। उन्हें इसी रूप में नगर में घुमाया गया और
इसके बाद उन्हें दीवार से नीचे फेंक दिया गया।
11कुछ लोग पास वाली गुफाओं में छिप गये थे,
जिससे वहीं विश्राम-दिवस मनायें। किन्तु यह
बात फिलिप को बता दी गयी और उन्हें वहीं
जला दिया गया। वे पवित्र विश्राम-दिवस पर
श्रद्धा रखने के कारण अपनी रक्षा करना नहीं
चाहते थे।

लेखक की ओर से

12 मैं इस ग्रन्थ के पाठकों से यह निवेदन
करता हूं कि वे इन विपत्तियों के कारण निराश
न हों, बल्कि यह समझें कि ये विपत्तियाँ हमारे
विनाश के लिए नहीं, वरन् हमारी जाति के
सुधार के लिए आयी हैं। 13यदि पापी लोगों को
दण्ड मिलने में कुछ समय नहीं लगता है, यदि
उन्हें तत्काल दण्ड मिलता है, तो यह बड़ी कृपा
का प्रमाण है। 14स्वामी प्रभु अन्य जातियों के
साथ ढिलाई करता और उन्हें तब दण्ड देता है,
जब उनके पाप का घड़ा भर जाता है। किन्तु वह
हमारे साथ ऐसा नहीं करता, 15जिससे उसे तब
हमें और कठोर दण्ड न देना पड़े, जब हमारे
पाप चरमसीमा तक पहुंच गये हों। 16वह हमें
अपनी दया से कभी वंचित नहीं करता। वह
विपत्तियों द्वारा अपनी प्रजा को शिक्षा देता है,
लेकिन उसका पूरी तरह त्याग नहीं करता।
17हमने थोड़े ही शब्दों में इस सत्य का स्मरण
दिलाया और अब हम अपना कथानक आगे
बढ़ाते हैं।

एलआज़र की शहादत

18 एलआज़र मुख्य शास्त्रियों में एक था।
वह बहुत बूढ़ा हो गया था, किन्तु उसकी
आकृति भव्य तथा प्रभावशाली थी। वह अपना
मुंह खोलने और सूअर का मांस खाने के लिए
बाध्य किया गया। 19-20किन्तु उसने कलंकित
जीवन की अपेक्षा गौरवपूर्ण मृत्यु को चुना। वह
सूअर का मांस उगल कर स्वेच्छा से उस स्थान
की ओर बढ़ा, जहाँ कोड़े लगाये जाते थे। ऐसा
उन लोगों को करना चाहिए, जिन्हें जीवन का
मोह छोड़ कर वर्जित भोजन अस्वीकार करने
का साहस है। 21उस अवैध भोजन का प्रबन्ध
करने वाले अधिकारी एलआज़र के पुराने
परिचित थे। उन्होंने उसे अलग ले जा कर
उससे अनुरोध किया कि वह ऐसा मांस मँगवा
कर खाये, जो वर्जित न हो और जिसे उसने
स्वयं पकाया हो और राजा के आदेश के
अनुसार बलि का मांस खाने का स्वांग मात्र
करे। 22इस प्रकार वह मृत्यु से बच सकेगा और
पुरानी मित्रता के कारण उसके साथ अच्छा
व्यवहार किया जायेगा। 23किन्तु उसने एक
उत्तम निश्चय किया, जो उसकी उमर, उसकी
वृद्धावस्था की मर्यादा, उसके सफेद बालों,
बचपन से उसके निर्दोष आचरण और विशेष
कर परमेश्वर द्वारा प्रदत्त पवित्र नियमों के
अनुकूल था। उसने उत्तर दिया, "मुझे तुरन्त
अधोलोक पहुंचा दो। 24मेरी अवस्था में इस
प्रकार का स्वांग अनुचित है। कहीं ऐसा न हो
कि बहुत-से युवक यह समझें कि एलआज़र
ने नब्बे वर्ष की उमर में अन्यधर्मियों के रीति-
रिवाज़ अपनाये हैं। 25मेरे जीवन का बहुत कम
समय रह गया है। यदि मैं उसे बचाने के लिए
इस प्रकार का स्वांग करता, तो वे शायद मेरे
कारण भटक जाते और मेरी वृद्धावस्था पर दोष
और कलंक लग जाता। 26यदि मैं इस प्रकार
अभी मनुष्यों के दण्ड से बच जाता, तो भी, चाहे
जीवित रहूं अथवा मर जाऊँ, मैं सर्वशक्तिमान्
के हाथ से नहीं छूट पाता। 27इसलिए यदि मैं
अभी साहस के साथ अपना जीवन अर्पित
करूंगा, तो मैं अपनी वृद्धावस्था की प्रतिष्ठा बनाये
रखूंगा 28और युवकों के लिए एक अच्छा उदाहरण
प्रस्तुत करूंगा कि किस प्रकार पूज्य तथा पवित्र
विधियों की रक्षा के लिए कोई स्वेच्छा से और
आनन्द के साथ मर सकता है।" यह कह कर
एलआज़र सीधे उस स्थान की ओर बढ़ा, जहाँ

6 : 12 हब 1 : 12 **6 : 14** उत 15 : 16; प्रज्ञा 19 : 4; 12 : 2; 1 थिस 2 : 16 **6 : 16** शोक 3 : 31-32

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
कोड़े लगाये जाते थे।
29 जो पहले उसके साथ सहानुभूति दिखला
रहे थे, अब वे उसके साथ दुर्व्यवहार करने लगे;
क्योंकि एलआजर ने उन से जो कहा था, वह
उन्हें मूर्खता ही लगी। 30कोड़ों की मार से मरते
समय एलआज़र ने आह भर कर यह कहा,
"प्रभु सब कुछ जानता है। वह जानता है कि
मैं मृत्यु से बच सकता था। मैं कोड़ों की मार
की जो असह्य पीड़ा अपने शरीर में भोग रहा
हूं, उसे अपनी आत्मा में स्वेच्छा से स्वीकार
करता हूं, क्योंकि मैं प्रभु पर श्रद्धा रखता हूं।"
31इस प्रकार वह मर गया और उसने मरते समय
न केवल युवकों के लिए, बल्कि राष्ट्र के
अधिकांश लोगों के लिए साहस तथा धैर्य का
आदर्श प्रस्तुत किया।

माँ के साथ सात पुत्रों की शहादत

7 किसी अवसर पर सात भाई अपनी माता
के साथ गिरफ्तार हो गये थे। राजा उन्हें
कोड़े लगवा कर और यन्त्रणा दिला कर बाध्य
करना चाहता था कि वे सूखर का मांस खायें,
जो व्यवस्था में मना किया गया है। 2उन में से
एक ने दूसरों का प्रतिनिधि बन कर कहा, "तुम
हम लोगों से क्या चाहते हो? अपने पूर्वजों की
व्यवस्था का उल्लंघन करने की अपेक्षा हम मर
जाना अधिक पसन्द करेंगे।" 3इस पर राजा
क्रुद्ध हो उठा और उसने कड़ाह और हण्डे आग
पर चढ़ाने की आज्ञा दी। 4जब ऐसा किया गया,
तो उसने फिर आदेश दिया कि जो व्यक्ति सब
से पहले बोला था, उसकी जीभ काट दी जाये,
उसके सिर की चमड़ी उतार ली जाये और
उसके हाथ-पाँव काट दिये जायें। उसके दूसरे
भाइयों और मां की आंखों के सामने ही ऐसा
किया गया। 5वह व्यक्ति अभी जिन्दा ही था,
तभी उसकी क्षत-विक्षत देह को आग के पास
ले जाया गया और उसे कड़ाह में तपाया गया।
जब कड़ाह से धूआं ऊपर उठने लगा, तो दूसरे
भाइयों और उनकी माता ने एक दूसरे को
उत्साहित किया, जिससे वे साहस के साथ मृत्यु
का सामना करें। उन्होंने कहा, 6"प्रभु-परमेश्वर
हमें देख रहा है और जैसा कि मूसा ने अपने गीत
में सुस्पष्ट शब्दों में कहा : 'वह अपने सेवकों
पर दया करेगा', वह निश्चय ही हमें सान्त्वना
प्रदान करेगा।"
7 जब पहला भाई इस प्रकार मारा गया, तो
दूसरे को लाया गया, जिससे उसे भी घोर यातना
दी जाये। उसके सिर की चमड़ी बालों-सहित
उतार दी गयी और उस से कहा गया, "क्या तू
भी नहीं खायेगा? तो समझ ले कि तेरे शरीर के
एक-एक अंग को यन्त्रणा दी जायेगी।"
8उसने अपनी मातृभाषा में कहा, "मैं नहीं
खाऊंगा।" इस पर पहले की ही तरह उसे भी
यातनाएँ दी गयीं। 9उसने प्राण त्यागते समय
कहा, "दुष्ट! तुम हम से यह जीवन छीन सकते
हो, किन्तु संसार का राजा, जिसके नियमों के
लिए हम मर रहे हैं, हमें पुनर्जीवित कर शाश्वत
जीवन प्रदान करेगा।"
10 इसके बाद वे तीसरे भाई को उत्पीड़ित
करने लगे। जब उस से जीभ निकालने को कहा
गया, तो उसने ऐसा ही किया 11और यह कह
कर निधड़क अपने हाथ बढ़ाये, "स्वर्गिक
परमेश्वर की ओर से मुझे ये अंग मिले और
उसके नियमों की रक्षा के लिए मैं इनकी परवाह
नहीं करता। मेरा विश्वास है कि परमेश्वर इन्हें
मुझ को लौटा देगा।" 12राजा और उसके परिजन
युवक का साहस तथा यातनाओं में उसका धैर्य
देख कर अचम्भे में पड़ गये।
13 जब वह मर गया, तो वे चौथे भाई को
इसी प्रकार की घोर यातनाएँ देने लगे। 14वह
मरते समय चिल्ला उठा, "यह अच्छा ही है कि
हम मनुष्यों के हाथ मर जायें, क्योंकि हमें
परमेश्वर की इस प्रतिज्ञा पर भरोसा है कि वह
हमें पुनर्जीवित करेगा। किन्तु जीवन के लिए
तुम्हारा पुनरुत्थान नहीं होगा।"
15 इसके बाद पांचवें को लाया गया और
उसे भी यातना दी गयी। 16उसने राजा की ओर
देख कर कहा, "तुम नश्वर हो, फिर भी तुम
को यह सामर्थ्य दी गयी है कि तुम जैसा चाहो,
कर सकते हो। किन्तु यह मत समझो कि

---

6 : 30 इब्र 11 : 35 **7 : 6** व्य 31 : 21, 26; 32 : 36 **7 : 9** दान 12 : 2; इब्र 11 : 35

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

परमेश्वर ने हमारी जाति का त्याग कर दिया है।
17तुम धीरज के साथ प्रतीक्षा करोगे, तो देखोगे
कि उसकी महिमामय सामर्थ्य तुम को और
तुम्हारे वंशजों को किस प्रकार उत्पीड़ित
करेगी।''

18 तब छठा लाया गया। उसने प्राण त्यागते
समय कहा, ''तुम धोखा मत खाओ। हमें ये
दण्ड इसलिए मिल रहे हैं कि हमने अपने
परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया है। इसी कारण
हम पर ये असाधारण विपत्तियाँ पड़ रही हैं।+
19किन्तु तुम यह न सोचो कि परमेश्वर के
विरुद्ध लड़ने का साहस करने के बाद तुम दण्ड
से बच जाओगे।''

20 माता विशेष रूप से प्रशंसनीय तथा प्रातः-
स्मरणीय है। एक ही दिन में अपने सात पुत्रों
को अपनी आंखों के सामने मरते देख कर भी
वह विचलित नहीं हुई; क्योंकि वह प्रभु पर
भरोसा रखती थी। 21वह अपने पूर्वजों की भाषा
में हर एक का साहस बंधाती रही। उच्च संकल्प
से प्रेरित हो कर तथा अपने नारी-हृदय में पुरुष
का तेज भर कर, उसने अपने पुत्रों से यह कहा
था, 22''मुझे नहीं मालूम कि तुम कैसे मेरे गर्भ
में आये। मैंने न तो तुम्हें प्राण तथा जीवन प्रदान
किया और न तुम्हारे अंगों की रचना की।
23संसार का सृष्टिकर्ता मानवजाति की रचना
करता और सब कुछ उत्पन्न करता है। वह दया
कर तुम्हें अवश्य ही फिर प्राण तथा जीवन
प्रदान करेगा; क्योंकि तुमने उसकी विधियों के
लिए अपने आपको भुला दिया है।''

24 राजा अन्तियोखुस को लगा कि वह मां
अपनी भाषा में अवश्य उसका तिरस्कार और
निन्दा कर रही है। अब केवल उसका सब से
छोटा पुत्र जीवित बचा। अन्तियोखुस ने उसे
समझाया ही नहीं, बल्कि शपथ खा कर
आश्वासन भी दिया कि ''यदि तुम अपने
पूर्वजों के रीति-रिवाजों का परित्याग करोगे,
तो मैं तुम को धन और सुख प्रदान करूंगा, तुम्हें
अपना मित्र बना कर उच्च पद पर नियुक्त
करूंगा''। 25जब नवयुवक ने उसकी बातों पर
ध्यान ही नहीं दिया, तो अन्तियोखुस ने माता
को बुलाया और उस से अनुरोध किया कि वह
नवयुवक को समझाये, जिससे वह जीवित रह
सके। 26राजा के कई बार अनुरोध करने के बाद
वह अपने पुत्र को समझाने को राजी हो गयी।
27वह उस पर झुक गयी और क्रूर तानाशाह की
अवज्ञा करते हुए उसने पूर्वजों की भाषा में उस
से यह कहा, ''पुत्र! मुझ पर दया करो। मैंने
तुम्हें नौ महीनों तक गर्भ में धारण किया और
तीन वर्षों तक दूध पिलाया। मैंने तुम्हें खिलाया
और तुम्हारी इस उमर तक तुम्हारा पालन-
पोषण किया। 28पुत्र! मैं तुम से अनुरोध करती
हूं। तुम आकाश तथा पृथ्वी की ओर देखो—उन
में जो कुछ है, उसका निरीक्षण करो और यह
समझ लो कि परमेश्वर ने शून्य से उसकी सृष्टि
की है*। मनुष्य भी इस प्रकार उत्पन्न हुआ है।
29इस जल्लाद से मत डरो। अपने भाइयों के
योग्य बनो और मृत्यु स्वीकार करो, जिससे मैं
परमेश्वर की दया से तुम्हें अपने भाइयों के साथ
फिर पा सकूं।''

30 जब वह ऐसा कह चुकी थी, तो नवयुवक
तुरन्त ही बोल उठा, ''तुम देर क्यों करते हो?
मैं राजा का आदेश नहीं मानूंगा। मैं अपने पूर्वजों
को मूसा द्वारा प्रदत्त व्यवस्था के नियमों का
पालन करता हूं। 31और तुम, राजा अन्तियोखुस!
जिसने इब्रानियों पर हर प्रकार का अत्याचार
किया, तुम परमेश्वर के हाथ से नहीं बच
सकोगे। 32हम अपने पापों के कारण दुःख झेल
रहे हैं। 33यदि हमारा जीवन्त प्रभु हमें दण्ड देने
और हमारा सुधार करने के लिए थोड़े ही समय
तक हम पर क्रोध प्रकट करता है, तो वह फिर
अपने सेवकों पर दया भी करेगा। 34किन्तु तुम,
जो मनुष्यों में सब से दुष्ट और नीच हो और
स्वर्ग की संतान पर हाथ उठाते हो, घमण्डी बन
कर व्यर्थ आशा मत करो। 35तुम सर्वशक्तिमान्
और सर्वज्ञ परमेश्वर के न्याय से नहीं बच
सकोगे। 36हमारे भाई थोड़े समय के लिए

+ अथवा, ''अद्भुत घटनाएँ घटी हैं''। * अथवा ''अस्तित्व-सत्ता से उसकी सृष्टि नहीं की''।

7 : 19 प्रे 5 : 39 **7 : 22** भज 139 : 13; सभ 11 : 5; अय्य 10 : 8-12 **7 : 28** रोम 4 : 17

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
दु:ख सहने के बाद अब परमेश्वर के विधान के कारण शाश्वत जीवन का जल पीते हैं। लेकिन परमेश्वर की ओर से तुम्हें अपने अहंकार का उचित दण्ड मिलेगा। 37मैं अपने भाइयों की तरह अपने पूर्वजों की व्यवस्था पर शरीर और जीवन—सब कुछ न्योछावर कर रहा हूं और परमेश्वर से यह निवेदन कर रहा हूं कि वह शीघ्र ही मेरी जाति पर फिर से दया करे और तुम को भी विपत्तियों की मार से यह समझा दे कि वह एकमात्र ईश्वर है। 38यह उचित ही था कि सर्वशक्तिमान् का क्रोध हमारी जाति पर भड़क उठे। वह क्रोध मेरे और मेरे भाइयों के कारण अब शान्त हो जाये।"

39 राजा को इस तिरस्कार का बहुत तीखा अनुभव हुआ और उसने क्रोध के आवेश में आ कर उसके साथ दूसरों से कहीं अधिक क्रूर व्यवहार करने को कहा। 40इस प्रकार वह निर्दोष युवक केवल प्रभु पर भरोसा रखते हुए इस संसार से चल बसा। 41अन्त में माता का अपने पुत्रों के बाद देहान्त हो गया।

42 बलि-प्रसाद के सेवन और असाधारण यातनाओं का यह विवरण यहाँ समाप्त किया जाता है।

यहूदियों का विद्रोह

8 यहूदा, जो मक्काबी कहलाता है, अपने आदमियों को साथ ले कर छिपे-छिपे गांवों का दौरा करता था। वे अपने सम्बन्धियों को बुलाते और उन लोगों को अपने दल में भरती कर लेते थे, जो यहूदी धर्म के प्रति ईमानदार रहे थे। इस प्रकार उन्होंने लगभग छ: हज़ार लोगों को एकत्र किया। 2उन्होंने प्रभु से प्रार्थना की कि वह उस प्रजा पर कृपादृष्टि करे, जिस पर चारों ओर से अत्याचार किया जा रहा है; उस मन्दिर पर दया करे, जो विधर्मियों द्वारा अपवित्र किया गया है; 3उस नगर पर सहानुभूति दिखाये, जिसका विनाश और पूर्ण संहार किया जा रहा है; उस रक्त की पुकार पर ध्यान दे, जो उसकी दुहाई दे रहा है; 4उन निर्दोष बच्चों को याद करे, जिनका अधर्म से वध किया गया है और उन अधर्मी लोगों को दण्डित करे, जिन्होंने उस के नाम की निन्दा की है। 5जब यहूदा मक्काबी ने अपनी सेना संगठित कर ली, तो गैर-यहूदी उसके सामने नहीं टिक पाते थे; क्योंकि अब प्रभु का कोप दया बन गया था। 6वह अचानक नगरों और गाँवों में घुसता और उन्हें जला देता। उसने उन स्थानों पर अधिकार कर लिया, जो उसके काम के थे। इस तरह उसने कई शत्रुओं को भगा दिया। 7वह इस प्रकार के आक्रमण प्राय: रात में किया करता था। उसकी वीरता की चर्चा दूर-दूर तक फैल गयी।

निकानोर का अभियान

8 जब यहूदा प्रदेश के शासक फिलिप ने देखा कि यहूदा मक्काबी धीरे-धीरे शक्तिशाली होता जा रहा है और उसकी विजयों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही थी, तो उसने केले-सीरिया और फेनीके प्रदेश के शासक पतोलेमैउस को पत्र लिख कर निवेदन किया कि वह राजा का पक्ष सुदृढ़ करने के लिए सहायता भेजे। 9उसने तुरन्त पत्रक्लस के पुत्र निकानोर को, जो राजा का एक घनिष्ठ मित्र था, बुला भेजा। उसने उसे विभिन्न जातियों के कम-से-कम बीस हज़ार सैनिकों का सेनापति नियुक्त किया और समस्त यहूदी जाति का संहार करने भेजा। उसने सेनापति गोरगियस को भी उसके साथ कर दिया, जो अनुभवी एवं युद्धनिपुण सेनापति था। 10निकानोर ने सोचा कि राजा रोमियों को कर के रूप में जो चांदी के दो हज़ार सिक्के* चुकाता था, वह राशि यहूदी युद्ध-बंदियों की बिक्री से प्राप्त हो सकेगी। 11उसने तुरन्त समुद्रतट के नगरों में घोषणा की कि यहूदी दासों को बेचा जायेगा और आश्वासन दिया कि एक सिक्के** में नब्बे दास मिलेंगे। उसने उस दण्ड की कल्पना नहीं कि, जो उसे सर्वशक्तिमान् की ओर से मिलने वाला था।

12 यहूदा को निकानोर के अभियान का पता चल गया और उसने अपने साथियों को सेना

* अथवा लगभग 52,000 किलो का मूल्य। ** एक तलन्त का मूल्य उस समय प्राय: 26 किलो था।

8 : 3 उत 4 : 10

©CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

के आगमन की सूचना दी। 13उनमें जो कायर थे और जिन्हें परमेश्वर के न्याय का भरोसा नहीं था, वे लोग दूसरी जगह भाग गये। 14शेष लोगों ने वह सब कुछ बेच दिया, जो उनके पास था और प्रभु से प्रार्थना की कि वह उन्हें उस विधर्मी निकानोर के हाथों से बचाये, जिसने उन्हें युद्ध से पहले ही दास के रूप में बेच दिया है। 15यदि वे बचाये जाने के योग्य न हों, तो प्रभु उनके पूर्वजों के लिए निर्धारित विधान के कारण उन्हें बचाये और इसलिए भी कि वे प्रभु के पवित्र और महिमामय नाम को समर्पित हैं।

युद्ध की तैयारियाँ

16 यहूदा मक्काबी ने अपनी सेना एकत्र की, जिसकी संख्या छः हज़ार थी। उसने उन्हें समझाया कि वे शत्रु से नहीं डरें और गैर-यहूदियों की संख्या से भयभीत न हों, जो अन्याय से उन पर चढ़े आ रहे हैं, बल्कि उनका साहसपूर्वक सामना करें। 17वे यह याद रखें कि उन विधर्मियों ने किस प्रकार धृष्टतापूर्वक पवित्र-स्थान को दूषित किया, कितनी क्रूरता से नगर को उजाड़ा और पूर्वजों के रीति-रिवाजों को समाप्त किया। 18उसने यह भी कहा, "दूसरे लोगों को अपने अस्त्र-शस्त्र और अपनी वीरता का भरोसा है, किन्तु हमें उस सर्वशक्तिमान् परमेश्वर का भरोसा है, जो न केवल हम पर आक्रमण करने वालों का, बल्कि पलक झपकाते ही समस्त संसार का विनाश कर सकता है।" 19उसने उन्हें उनके पूर्वजों को प्रदत्त सहायता का स्मरण दिलाया : किस प्रकार असीरिया देश के राजा सनहेरिब के एक लाख पचासी हज़ार आदमी मर गये थे। 20उसने उस लड़ाई की भी याद दिलायी जो बेबीलोन देश में गलातियों के साथ हुई थी। उस समय मकिदुनिया के चार हज़ार सैनिकों के साथ कुल आठ हज़ार यहूदी थे और जब मकिदुनियों का दल विचलित हो रहा था, तो उन आठ हज़ार आदमियों ने स्वर्गिक परमेश्वर की सहायता से एक लाख बीस हज़ार गलातियों को पराजित किया और लूट का भी बहुत धन प्राप्त किया।

21 ऐसी बातों द्वारा यहूदा ने उनका साहस बँधाया और उन्हें अपने विधि-विधान और अपने देश के लिए जीवन अर्पित करने को तैयार किया। इसके बाद उसने सेना को चार दलों में बांटा 22और अपने भाइयों को, अर्थात् शिमोन, यूसुफ और योनातन को, एक-एक दल का अध्यक्ष बनाया। उसने प्रत्येक को पन्द्रह सौ आदमी दिये। 23उसने एलआजर को पवित्र ग्रन्थ का एक अंश पढ़ने को कहा। इसके बाद उसने उन्हें यह संकेत-वाक्य दिया : "परमेश्वर सहायक है!" और पहले दल के नेता के रूप में उसने निकानोर पर आक्रमण किया।

निकानोर की पराजय

24 यहूदियों ने शत्रुओं के नौ हज़ार से अधिक सैनिकों का वध किया, निकानोर की सेना के अधिकांश सैनिकों को घायल और पंगु बना दिया और उसकी सेना को भगा दिया। यह इसलिए हुआ कि सर्वशक्तिमान् उनका सहायक था। 25निकानोर के साथ जो उनके खरीदार आये थे, उन्होंने उनका पैसा लूटा और काफ़ी दूर तक शत्रुओं को खदेड़ा, किन्तु दिन ढलने के कारण उन्हें लौटना पड़ा। 26यह विश्राम-दिवस का पूर्व दिन था, इसलिए उन्होंने उन्हें दूर तक खदेड़ना उचित नहीं समझा। 27उन्होंने शत्रुओं के अस्त्र-शस्त्र एकत्र किये और उनके कवच उतार लिये।

इसके बाद उन्होंने विश्राम-दिवस मनाया और उल्लास के साथ प्रभु का स्तुतिगान और धन्यवाद किया, जिसने उस दिन उनकी सहायता की थी और इस प्रकार फिर उन पर दया दिखाने लगा था। 28उन्होंने विश्राम-दिवस के बाद अत्याचार-पीड़ितों, विधवाओं और अनाथों के बीच लूट का अंश बांट दिया। जो बचा, उसे अपने और अपने बच्चों के बीच बांट लिया। 29इसके बाद उन्होंने सामूहिक प्रार्थना की और कृपालु प्रभु से निवेदन किया कि वह अन्त तक अपने सेवकों पर दयादृष्टि रखे।

---

8 : 18 1 शम 17 : 45; भज 20 : 7 8 : 19 2 रा 19 : 35

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तिमोथी और बक्खीदेस की पराजय

30 यहूदियों ने तिमोथी और बक्खीदेस की
सेना का भी सामना किया और युद्ध में उन में
बीस हज़ार से अधिक लोगों को मार गिराया।
इसके अतिरिक्त उन्होंने कुछ ऊँचे गढ़ों को
अपने अधिकार में कर लिया और लूट का बहुत
बड़ा माल दो बराबर भागों में विभाजित
किया—एक अपने लिए और दूसरा भाग
अत्याचार-पीड़ित लोगों, अनाथों, विधवाओं
और बूढ़ों में बांट दिया। 31उन्होंने सावधानी से
अपने सभी हथियार जमा किये और उन्हें
सुविधाजनक स्थानों पर रख दिया। लूट का
बाक़ी माल वे यरूशलेम ले गये। 32उन्होंने
तिमोथी की सेना के उपसेनापति का भी वध
किया। वह घोर कुकर्मी था और यहूदियों का
बहुत अपकार कर चुका था। 33जब वे अपने
पूर्वजों के नगर में विजय का उत्सव मना
रहे थे, तो उन्होंने उन लोगों को जला दिया,
जिन्होंने मन्दिर के प्रवेश-द्वारों में आग
लगा दी थी। उन लोगों में कल्लिस्थनेस भी था,
जिसने किसी छोटे घर में शरण ली थी। इस
तरह उस से अपने अधर्म का उचित बदला
चुकाया गया।

निकानोर का पलायन

34 अभिशप्त महादुष्ट निकानोर, जो एक
हज़ार व्यापारियों को ले आया था, जिससे वह
उनके हाथ यहूदियों को बेचे, 35प्रभु की सहायता
से उन्हीं लोगों द्वारा नीचा दिखाया गया, जिन्हें
वह तुच्छ समझता था। उसे अपने भड़कीले
वस्त्र उतारने पड़े और वह भगोड़े दास की तरह
देहाती रास्तों से अकेला राजधानी अन्ताकिया
पहुंचा। उसे अपनी सेना का विनाश कराने में
ही अपूर्व सफलता मिली! 36उसने प्रण किया
था कि वह यरूशलेम के जिन लोगों को युद्ध
में दास बना लेगा, उन्हें बेच कर, रोमियों को
कर चुका देगा; लेकिन अब उसे यह मानना
पड़ा कि यहूदियों का एक परम सहायक है और
वे तब तक अजेय हैं, जब तक वे उसके दिये
हुए विधि-विधान का पालन करते हैं।

अन्तियोखुस एपीफ़ानेस का दुःखद अन्त

9 उसी समय राजा अन्तियोखुस को भी
फारस के प्रदेशों से बुरी तरह पराजित हो
कर हट जाना पड़ा। 2वह फारसीपुलिस नामक
नगर में घुस आया था। वह मन्दिर को लूटने
और नगर पर अधिकार करने ही वाला था कि
वहाँ की जनता ने अपनी रक्षा के लिए अस्त्र
उठा लिये। अन्तियोखुस को देशवासियों द्वारा
भगा दिया गया और उसे अपमानपूर्वक हटना
पड़ा। 3एकबतना नगर पहुंचने पर उसे सन्देश
मिला कि निकानोर, तिमोथी और उसके
आदमियों पर क्या बीती। 4उसने क्रोध के आवेश
में शपथ खायी कि भगाये जाने से उसका अभी
जो अपमान हुआ है, वह इसका बदला
यहूदियों से अवश्य लेगा। इसलिए उसने अपने
सारथी को बिना रुके रथ चलाने का आदेश
दिया, किन्तु स्वर्गिक परमेश्वर का दण्ड उसके
साथ-साथ चल रहा था। उसने अपने अहंकार
में यह कहा था, "मैं वहाँ पहुंच कर यरूशलेम
को यहूदियों का कब्रिस्तान बना दूंगा।" 5किन्तु
प्रभु ने, जो सब कुछ देखता है और जो इस्राएल
का परमेश्वर है, उसे असाध्य एवं अज्ञात रोग
का शिकार बना दिया। जैसे ही उसने ये बातें
कहीं, उसे अपनी अंतड़ियों में एक असह्य
पीड़ा का अनुभव हुआ और उसके शरीर में तेज
दर्द होने लगा। 6यह उसका उचित दण्ड था,
क्योंकि उसने क्रूर यन्त्रणाओं से दूसरों की
अंतड़ियों को उत्पीड़ित किया था। 7इसके
बावजूद उसने अपना अहंकार नहीं छोड़ा।
उसने यहूदियों पर क्रोध में आ कर जल्दी करने
को कहा, किन्तु वह तेजी से चलते रथ से
अचानक गिर पड़ा और इतने जोर से जमीन पर
पटक दिया गया कि उसके सभी अंग टूट गये।
8जो अभी-अभी अहंकार के आवेश में समुद्र
की लहरों पर अधिकार करने और बड़े-बड़े
पर्वतों को तराजू पर तौलने की सोच रहा था,
उसे अब भूमि पर से उठा कर पालकी पर
बिठाया जा रहा था। यह परमेश्वर के सामर्थ्य
का सुस्पष्ट प्रमाण था। 9उस विधर्मी की हालत

---

8 : 30 1 मक 7 : 8 9 : 8 यश 40 : 12; 2 मक 5 : 21 9 : 9 प्रे 12 : 23

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इतनी खराब हुई कि उसकी आंतों से कीड़े
निकल आये, उसके जिन्दा रहते ही उसका
मांस गल-गल कर गिरने लगा और उसे घोर
पीड़ा सहनी पड़ी। उसके शरीर की दुर्गन्ध से
उसकी सारी सेना परेशान थी। 10जो व्यक्ति
अभी-अभी आकाश के तारों की ओर हाथ
बढ़ाने की सोच रहा था, उसकी असहनीय
दुर्गन्ध के कारण कोई उसके साथ नहीं रह
सकता था।

11 जब उसका शरीर टूट गया था और वह
परमेश्वर से दण्डित हो कर निरन्तर पीड़ा झेल
रहा था, तो उसका घमण्ड कम हो गया और
उस में सद्बुद्धि आ गयी। 12जब वह अपने
शरीर की दुर्गन्ध सहने में असमर्थ हो गया, तो
उसने कहा, ''मरणशील मनुष्य को ईश्वर की
अधीनता स्वीकार कर ईश्वर-तुल्य होने का
घमण्ड* नहीं करना चाहिए।'' 13वह घृणित
व्यक्ति तभी प्रार्थना करने लगा, जब स्वामी प्रभु
की दया प्राप्त करने का समय बीत गया।
14उसने अपनी प्रार्थना में यह प्रतिज्ञा की कि
वह उस नगर को स्वतन्त्रता प्रदान करेगा,
जिसकी ओर वह शीघ्रता से यात्रा कर रहा था,
जिससे वह उसे धूल में मिलाये और कब्रिस्तान
बनाये। 15जिन यहूदियों को उसने दफ़नाये
लायक भी नहीं समझा था और जिन्हें वह उनके
बाल-बच्चों के साथ पक्षियों और जंगली
जानवरों का आहार बनाना चाहता था, उन्हें
उसने अथेने नगर की नागरिकता प्रदान करने
की प्रतिज्ञा की। 16जिस पवित्र मन्दिर को उसने
पहले लूटा था, उसे उसने सर्वोत्तम उपहारों से
सजाने, उसके पवित्र पात्र अत्यधिक मात्रा में
लौटाने और अपने राजस्व से बलि-चढ़ावों का
ख़र्च चुकाने का वचन दिया। 17इसके सिवा
उसने स्वयं यहूदी बनने और हर जगह जा कर
परमेश्वर की सामर्थ्य घोषित करने की प्रतिज्ञा
की।

18 जब दर्द किसी तरह कम नहीं हुआ,
क्योंकि परमेश्वर उसे उचित दण्ड दे रहा था,
तो उसको अपनी हालत से निराश हो कर
यहूदियों के नाम बड़े विनम्र शब्दों में यह पत्र
लिखा : 19''राजा और सेनापति अन्तियोखुस
की ओर से आदरणीय यहूदी नागरिकों को
अनेकानेक नमस्कार! आप स्वस्थ और सकुशल
रहें। 20यदि आप और आपके बच्चे कुशल-
क्षेम से हैं और आपके सभी कार्य आपकी इच्छा
के अनुकूल सफल हैं, तो मैं इसके लिए ईश्वर
को हार्दिक धन्यवाद देता हूं : क्योंकि मुझे
ईश्वर का भरोसा है। 21मैं पलंग पर बीमार पड़ा
हुआ आप लोगों द्वारा दिये हुए सम्मान और
सद्भाव का स्मरण प्रेम से करता हूं। जब मैं
फारस से लौटते समय एक कष्टदायक बीमारी
का शिकार बना, तो मुझे सारे देश की सुरक्षा का
प्रबन्ध करना पड़ा। 22मैं अपनी हालत से निराश
नहीं हूं, बल्कि मुझे पक्का विश्वास है कि मैं
इस बीमारी से अच्छा हो जाऊंगा। 23किन्तु मेरे
पिता का उदाहरण मेरे सामने है। जब वह उत्तरी
प्रदेशों में अपनी सेना को ले कर युद्ध करने जाते
थे, तो वह सदा अपना उत्तराधिकारी नियुक्त
करते थे। 24इस तरह अप्रत्याशित घटना या
अशुभ समाचार के कारण किसी देश-वासी को
चिन्ता नहीं रहती थी : क्योंकि सब जानते थे
कि शासन किसके हाथ में होगा। 25यह भी जानता
हूं कि हमारे निकटवर्ती शासक और हमारे राज्य
के पड़ोसी अवसर की ताक में हैं और किसी
क्रांति की प्रतीक्षा कर रहे हैं। इसलिए मैंने अपने
पुत्र अन्तियोखुस को राजा नियुक्त कर दिया है।
जब पहले कभी-कभी मैं उत्तरी प्रदेशों की
यात्रा करता था, तो मैंने उसे आपके अधिकांश
लोगों के सामने प्रस्तुत किया था और उसकी
सिफ़ारिश की थी। मैंने उसके नाम एक पत्र भी
लिखा है, जिसे मैं भेज रहा हूं। 26मैं आप लोगों
से निवेदन करता हूं और यह चाहता हूं कि आप
उन उपकारों को स्मरण रखें जो जनता और
प्रत्येक व्यक्ति के साथ किये गये हैं और आप
मेरे और मेरे पुत्र के प्रति सद्भाव बनाये रखें।
27मुझे विश्वास है कि वह मेरी इच्छा के

* अथवा, ''ईश्वर-जैसे विचार''

9 : 12 प्रव 10 : 9-10 **9 :** 13 नीति 1 : 28

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अनुसार आप लोगों के साथ विनम्र और सहृदय व्यवहार करेगा।''

28 जिस तरह उस हत्यारे और ईशनिन्दक ने दूसरों को उत्पीड़ित किया था, उसी तरह वह असह्य पीड़ा झेलने के बाद परदेश के पर्वतों के बीच चल बसा। यही उसका दुःखद अन्त था। 29फ़िलिप, जिसके साथ उसका पालन-पोषण हुआ था, उसका शव साथ ले गया। किन्तु फिलिप ने उसके पुत्र अन्तियोखुस से भयभीत हो कर राजा पतोलेमैउस फिलोमेतोर के यहाँ मिस्र देश में शरण ली।

यरूशलेम में मन्दिर का शुद्धीकरण

10 यहूदा मक्काबी और उसके सैनिकों ने प्रभु के मार्ग-निर्देशन में मन्दिर और नगर पर फिर अधिकार कर लिया। 2गैर-यहूदियों ने चौराहे पर जो अन्य वेदियाँ स्थापित की थीं, उन्होंने उन्हें गिरा दिया और अन्य पूजास्थानों को भी नष्ट कर दिया। 3उन्होंने मन्दिर के शुद्धीकरण के बाद एक नयी वेदी बनायी, चकमक पत्थरों से आग निकाली और उस से बलि जलायी, जिसे वे दो साल के अन्तराल के बाद चढ़ा सके। उन्होंने धूप चढ़ायी, दीप जलाये और भेंट की रोटियाँ रखीं। 4इसके बाद उन्होंने मुंह के बल गिर कर प्रभु से प्रार्थना की कि वह भविष्य में उन पर फिर कभी ऐसी विपत्तियाँ न पड़ने दे। यदि वे फिर कभी पाप करें, तो वह उन्हें अपनी दया के अनुरूप दण्ड दिलाये, किन्तु उन्हें विधर्मी और बर्बर गैर-यहूदियों के हाथ फिर कभी नहीं पड़ने दे। 5जिस दिन मन्दिर गैर-यहूदियों द्वारा अपवित्र किया गया, ठीक उसी दिन मन्दिर का शुद्धीकरण भी किया गया, अर्थात् किसलेव मास के पच्चीसवें दिन। 6मण्डप-पर्व की विधि के अनुसार वे आठ दिन तक उल्लास के साथ उत्सव मनाते रहे और यह याद करते रहे कि कैसे थोड़े ही समय पहले वे पहाड़ियों और गुफाओं में मण्डप-पर्व मनाया करते थे, मानो वे जंगली जानवर हों। 7किन्तु अब वे अपने हाथ में सजे हुए डण्डे, हरी टहनियाँ और खजूर की डालियाँ लिये हुये थे और उस प्रभु के आदर में भजन गा रहे थे, जिसने अपने मन्दिर का शुद्धीकरण सम्पन्न कराया था। 8उन्होंने सर्वसम्मति से एक राजाज्ञा निकाली कि सारी यहूदी जाति प्रति वर्ष मन्दिर के शुद्धीकरण का पर्व मनायेगी।

अन्तियोखुस यूपातोर का राज्यारोहण

9 ये हैं अन्तियोखुस एपीफानेस की मृत्यु के समय की घटनाएँ। 10अब हम उन घटनाओं का वर्णन करेंगे, जो उस दुष्ट के पुत्र अन्तियोखुस यूपातोर के राज्यकाल में हुईं। हम संक्षेप में उस समय के युद्धों की विपत्तियों का वर्णन करेंगे।

11 राजपद ग्रहण करते ही अन्तियोखुस यूपातोर ने लीसियस को प्रमुख शासक के रूप में नियुक्त किया, जो केले-सीरिया और फ़ेनीके का राज्यपाल था। 12पतोलेमैउस, जो माक्रोन कहलाता है, यहूदियों के साथ किये हुए अधर्म के कारण उनके प्रति न्याय-संगत और शान्तिपूर्ण व्यवहार करना चाहता था। 13इसलिए दरबारियों ने यूपातोर से उसकी शिकायत की। इसके अतिरिक्त पतोलेमैउस के सुनने में बार-बार आता था कि लोग उसे विश्वासघाती कहते हैं, क्योंकि उसने कुप्रुस द्वीप छोड़ दिया, जिसे मिस्र के राजा फ़िलोमेतोर ने उसे सौंपा था और वह अन्तियोखुस एपीफ़ानेस के पक्ष मे चला गया था। जब उसने देखा कि वह सम्मान के साथ अपना कार्य-भार नहीं सम्भाल सका, तो उसने विष पी कर आत्महत्या कर ली।

इदूमिया प्रदेश पर आक्रमण

14 जब गोरगियस यर्दन-पार के प्रदेशों का शासक बना, तो उसने किराये के सैनिक इकट्ठे किये और वह सर्वत्र यहूदियों के विरुद्ध लड़ने का अवसर ढूंढ़ने लगा। 15उन्हीं दिनों इदूमिया-वासी भी, जिनके हाथ कई उपयुक्त स्थानों पर गढ़ थे, यहूदियों को तंग करते थे। वे यरूशलेम से निर्वासित अपराधियों को शरण देते और युद्ध जारी रखने का प्रयत्न करते थे। 16यहूदा मक्काबी के सैनिकों ने सामूहिक प्रार्थना में परमेश्वर से निवेदन किया कि वह उनका सहायक बने और

10 : 4 2 शम 24 : 14; प्रव 2 : 18 **10 : 7** लेव 23 : 40; नह 8 : 15

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इसके बाद उन्होंने इदूमिया के गढ़ों पर
आक्रमण कर दिया। 17उन्होंने उन पर जोरदार
चढ़ाई की और उन गढ़ों को अधिकार में कर
लिया। जो लोग दीवारों पर से उन से लड़ रहे
थे, उन्होंने उन्हें भगा दिया और जिन लोगों को
पकड़ा, उन्हें तलवार से मौत के घाट उतार
दिया। इस प्रकार उन्होंने कम-से-कम बीस
हज़ार सैनिकों का वध किया। 18लगभग नौ
हजार सैनिकों ने दो ऐसे बड़े बुर्जों में शरण ली,
जहाँ वह सब कुछ था, जिसके सहारे वे घेरे का
सामना कर सकते थे। 19यहूदा मक्काबी ने
बुर्जों पर घेरा डालने के लिए शिमोन, यूसुफ
और जक्कई को बहुत-से सैनिकों के साथ
वहाँ छोड़ दिया। वह खुद ऐसे स्थान पर चला
गया, जहाँ उसकी अधिक आवश्यकता थी।
20लेकिन शिमोन के सैनिकों ने, जो पैसे के
लालची थे, उन लोगों से घूस ली, जो बुर्जों में
पड़े थे। उन्होंने सत्तर हज़ार सिक्के* ले कर
कुछ लोगों को बाहर जाने दिया। 21जैसे ही यहूदा
मक्काबी को इस बात का पता चला, उसने
जनता के नेताओं को बुलाया और उन पर यह
अभियोग लगाया कि उन्होंने पैसे के लोभ में
अपने भाइयों को बेच दिया और उनके शत्रुओं
को हाथ से निकल जाने दिया। 22उसने उन
विश्वासघातियों को प्राणदण्ड दिया और शीघ्र
ही उन बुर्जों को अपने अधिकार में कर लिया।
23उसे लड़ाई में अपूर्व सफलता मिली और
उसने उन बुर्जों में बीस हजार से अधिक
सैनिकों का वध किया।

तिमोथी के विरुद्ध लड़ाई

24 तिमोथी ने, जो पहले यहूदियों से
पराजित हो गया था, विदेशी सैनिकों की एक
बड़ी सेना और एशिया से बहुत-से घोड़े एकत्र
किये। वह शस्त्रों के बल पर यहूदा-प्रदेश को
अपने अधिकार में करना चाहता था। 25वह पास
आ ही रहा था कि यहूदा मक्काबी के आदमियों
ने परमेश्वर से सहायता के लिए प्रार्थना की।
उन्होंने सिर पर राख डाली, टाट के वस्त्र ओढ़े
26और वेदी के सामने चबूतरे पर मुंह के बल
गिर कर परमेश्वर से प्रार्थना की कि वह उनके
अनुकूल हो और व्यवस्था-ग्रन्थ के कथन के
अनुसार उनके शत्रुओं का शत्रु और उनके
विरोधियों का विरोधी प्रमाणित हो।

27 उन्होंने प्रार्थना समाप्त कर हथियार
उठाये और नगर से काफी दूर निकल गये। वे
शत्रु के पास आ कर रुक गये। 28पौ फटने पर
दोनों सेनाएँ एक-दूसरे से लड़ने लगीं। कुशल-
क्षेम और विजय के लिए एक दल को अपनी
वीरता के सिवा प्रभु परमेश्वर का भरोसा था,
दूसरे दल को लड़ने के अपने उत्साह का!
29जब लड़ाई का रूप विकट हो गया, तो
शत्रुओं ने देखा कि भड़कीले वस्त्र पहने ऐसे
पांच घुड़सवार आकाश से उतरे, जिनके घोड़ों
की लगामें सोने की थीं। वे घुड़सवार यहूदी
सेना के आगे-आगे चलने लगे। 30वे यहूदा
मक्काबी को अपने बीच में ले चले और अपने
शस्त्रों से उसकी रक्षा करते रहे, जिससे वह
घायल न हो। वे शत्रु पर तीर चलाते और
वज्रपात करते रहे, जिससे उसके सैनिकों की
आंखें चौंधिया गयीं और वे आतंकित हो कर
पीछे हट गये। 31उनके बीस हज़ार पांच सौ
पैदल सैनिक और छः सौ घुड़सवार मारे गये।

32 तिमोथी ने गेज़र नामक एक सुदृढ़ गढ़
में शरण ली, जिसका नायक खैरअस था।
33यहूदा मक्काबी के सैनिक चार दिन तक बड़े
उत्साह से उस गढ़ को घेरे रहे। 34जो लोग भीतर
थे, उन्हें उस स्थान की किलाबन्दी का भरोसा
था और वे घोर ईश-निन्दा और अशोभनीय
शब्दों का प्रयोग करते रहे। 35जब पांचवाँ दिन
आया, तो मक्काबी के दल के बीस नौजवान
ईश-निन्दा के कारण उत्तेजित होकर अदम्य
साहस और खूंखार जानवरों-जैसे क्रोध के
आवेश में दीवार पर टूट पड़े और जो भी मिला
उसे उन्होंने मार गिराया। 36एक दूसरे दल ने
उसी प्रकार पीछे की ओर से आक्रमण किया,
बुर्जों में आग लगायी और उन निन्दकों को

* "द्रख्मे" नामक छोटी सिक्कियाँ।

10 : 26 नि 23 : 22

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जीवित जला दिया। एक तीसरे दल ने फाटक
तोड़ दिये, जिससे शेष सेना घुस कर नगर को
अपने अधिकार में कर सकी। [37]उन्होंने तिमोथी
को मार डाला, जो उस समय एक अन्धे कुएँ
में छिप गया था। उन्होंने उसके भाई खैरअस
तथा अपल्लोफ़ानेस को भी मार दिया। [38]इसके
बाद उन्होंने भजन गाते और प्रार्थना करते हुए
प्रभु को धन्यवाद दिया, जिसने इस्राएल के साथ
इतना बड़ा उपकार किया और उन्हें विजय
दिलायी।

लीसियस का आक्रमण

11 लीसियस को इन घटनाओं से बड़ा
क्षोभ हुआ। वह राजा का अभिभावक
और सम्बन्धी था और उसे राज्य का प्रबन्ध
सौंपा गया था। [2]कुछ दिन बाद वह अस्सी
हज़ार पैदल सैनिक और अपना सारा घुड़सवार
दल ले कर यहूदियों से लड़ने चल पड़ा। वह
यरूशलेम में यूनानियों को बसाना चाहता था।
[3]उसका विचार था कि दूसरी जातियों के
मन्दिरों की तरह उस मन्दिर पर भी कर लगेगा
और वह प्रति वर्ष महापुरोहित का पद बेच
देगा। [4]उसने परमेश्वर के सामर्थ्य का ध्यान
नहीं रखा, उसे केवल अपने लाखों पैदल सैनिकों,
हज़ारों घुड़सवारों और अपने अस्सी हाथियों
का भरोसा था। [5]वह यहूदा-प्रदेश में प्रवेश कर
बेत-सूर के पास पहुंचा। वह एक किलाबन्द
नगर है, जो यरूशलेम से लगभग साढ़े पांच
किलोमीटर* दूर है। उसने उसका घेराव किया।

लीसियस की पराजय

6 जैसे ही यहूदा मक्काबी के सैनिकों ने सुना
कि लीसियस ने किलाबन्द नगर पर घेरा डाला
है, तो वे सारी जनता के साथ रोते और विलाप
करते हुए प्रभु से प्रार्थना करने लगे कि वह
इस्राएल की रक्षा के लिए उन्हें एक सहायक
दूत भेजे। [7]यहूदा मक्काबी ने स्वयं सब से
पहले शस्त्रों से सुसज्जित हो कर दूसरों को
उत्साहित किया कि वे जोखिम का सामना
करते हुए अपने भाई-बहिनों की सहायता करें।
तब वे एक साथ पूरे उत्साह से निकल पड़े।
[8]अभी वे यरूशलेम के पास ही थे कि उन्हें
उज्ज्वल वस्त्र पहने और सोने के शस्त्र भांजते
हुए एक घुड़सवार दिखाई पड़ा, जो उनके
आगे-आगे चल रहा था। [9]उन्होंने दयालु
परमेश्वर को एक स्वर में धन्यवाद दिया और
इसके बाद उन में इतना साहस भर आया कि
वे न केवल मनुष्यों, बल्कि उग्र जानवरों का
सामना करने और लोहे की दीवारों पर भी
आक्रमण करने को तैयार हो गये। [10]वे पंक्तिबद्ध
हो कर आगे बढ़ते गये। उनके साथ स्वर्ग का
वह सहायक था, जिसे दयालु प्रभु ने उन्हें भेजा
था। [11]वे सिंहों की तरह शत्रुओं पर टूट पड़े
और ग्यारह हज़ार पैदल सैनिकों तथा सोलह
सौ घुड़सवारों को मार गिराया। बचे हुए लोगों
को उन्होंने खदेड़ दिया। [12]उन में जो भागने में
सफल हुए, वे अधिकांश घायल थे और उन्हें
अपने हथियार खोने पड़े। लीसियस को भी
लज्जित हो कर भागना पड़ा।

यहूदियों से सन्धि

13 लीसियस नासमझ व्यक्ति नहीं था। जब
उसने अपनी पराजय पर विचार किया, तो वह
समझ गया कि इब्रानी लोग केवल इसलिए
अजेय हैं कि सर्वशक्तिमान् परमेश्वर उनके
लिए युद्ध करता है। [14]इसलिए उसने उचित
शर्तों पर यहूदियों के साथ सन्धि करने दूत भेजे।
उसने उन्हें यह आश्वासन दिया कि वह राजा
को उनके पक्ष में कर लेगा। [15]यहूदा मक्काबी
ने लीसियस के ये सभी प्रस्ताव स्वीकार कर
लिये; क्योंकि उसने देखा कि लोगों का हित
इसी में है। राजा ने भी वे सभी शर्तें स्वीकार कर
लीं; जिन्हें यहूदा मक्काबी ने यहूदियों की ओर
से लिख कर लीसियस को दिया था।

सन्धि-सम्बन्धी पत्र

16 यहूदियों के नाम लीसियस का पत्र इस
प्रकार था : "लीसियस का यहूदियों को
नमस्कार! [17]आपके दूत योहन और अबशालोम
ने मुझे आपका पत्र दिया और निवेदन किया कि

---

* मूल अस्पष्ट।
11 : 6 नि 23 : 20

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मैं उस में लिखित प्रस्तावों का अनुमोदन करूँ। 18राजा के सामने जो कुछ प्रस्तुत करना था, उसे मैंने प्रस्तुत किया और उन्होंने जो उचित था, उसे स्वीकार किया। 19यदि भविष्य में आप लोग राज्य के प्रति सद्‌भाव बनाये रखेंगे, तो मैं भी आपके कल्याण के लिए प्रयत्न करता रहूँगा। 20मैंने अपने और आप लोगों के दूतों को आज्ञा दी है कि वे एक-एक विषय पर आप से बातचीत करें। 21आप लोगों का कल्याण हो! एक सौ अड़तालीसवें वर्ष* के दियोस्कुरिन्थियुस मास के चौबीसवें दिन।''

22 राजा का पत्र इस प्रकार था : ''भाई लीसियस को राजा अन्तियोखुस का नमस्कार! 23हमारे पिता देवलोक सिधार गये। हमारी इच्छा है कि हमारे राज्य के लोग विश्वस्त हो कर अपने-अपने कामों में लगे रहें। 24हम सुनते हैं कि यहूदी हमारे पिता की इच्छा के अनुसार यूनानी रीति-रिवाज अपनाना स्वीकार नहीं करते हैं। वे अपनी ही रीति के अनुसार रहना चाहते हैं और इसलिए वे निवेदन करते हैं कि उन्हें अपने विधि-विधान के पालन की अनुमति दी जाये। 25हम चाहते हैं कि उस जाति को तंग नहीं किया जाये, इसलिए हमने यह निर्णय किया कि उन्हें मन्दिर लौटा दिया जाये और उन्हें अपने पूर्वजों के परम्परागत रीति-रिवाजों के अनुसार जीवन बिताने की अनुमति दी जाये। 26अच्छा हो, यदि आप दूत भेज कर उन से सन्धि कर लें, जिससे वे हमारे विचार जान कर निश्चिन्त हो जायें और अपने कामों में शान्तिपूर्वक लगे रहें।''

27 यहूदा-वासियों के नाम राजा का पत्र इस प्रकार था : ''यहूदियों की परिषद् तथा शेष यहूदियों को राजा अन्तियोखुस का नमस्कार! 28हम आपका कल्याण चाहते हैं। हम सकुशल हैं। 29मनेलास ने हमें बताया है कि आप लोग अपने यहाँ लौट कर अपने काम-काज में लग जाना चाहते हैं। 30इसलिए जो यहूदी जंथिकस मास की तीसवीं तारीख़ तक ऐसा करेंगे, उन्हें आश्वासन दिया जाता है कि 31वे पहले की तरह भोजन-सम्बन्धी अपने नियमों और अपने विधि-विधान का पालन कर सकते हैं। उन में किसी को भी अनजान में किये हुए अपराधों के लिए तंग नहीं किया जायेगा। 32मैंने मनेलास को भेजा, जिससे वह आप लोगों को आश्वासन दे। 33आप लोगों का कल्याण हो! एक सौ अड़तालीसवें वर्ष के जंथिकस मास के पन्द्रहवें दिन।''

34 रोमियों ने भी उन्हें एक पत्र भेजा। वह इस प्रकार था : ''यहूदियों को क्विन्तुस मम्मियुस और तीतुस मानियुस नामक राजदूतों का नमस्कार! 35राजा के सम्बन्धी लीसियस ने आप लोगों को जिन बातों की अनुमति दी है, उस से हम भी सहमत हैं। 36जिन बातों के सम्बन्ध में उन्होंने राजा की राय लेना उचित समझा, आप उन पर विचार कर लेने के बाद किसी को शीघ्र हमारे पास भेज दें, जिससे हम वे बातें आपकी ओर से राजा के सामने प्रस्तुत कर सकें। कारण यह है कि हम राजधानी अन्ताकिया जाने वाले हैं। 37इसलिए आप शीघ्र ही कुछ लोगों को हमारे पास भेजें, जिससे हमें आपके विचारों का पता चले। 38आप लोग स्वस्थ रहें! एक सौ अड़तालीसवें वर्ष के जंथिकस मास के पन्द्रहवें दिन।''

याफ़ा और यमनिया-वासियों से प्रतिशोध

12 समझौते की इन बातों के बाद लीसियस राजा के पास लौट गया और यहूदी लोग अपनी खेती-बाड़ी में लग गये। 2किन्तु उस प्रदेश के कई सेनापति—तिमोथी, गन्नैयस का पुत्र अपल्लोनियुस, हीरोनिमस, और देमोफोन—तथा कुप्रुस द्वीप का राज्यपाल निकानोर अब भी यहूदियों को शान्ति से रहने नहीं देते थे।

3 याफ़ा-वासियों ने यह दुष्टता की : उन्होंने अपने साथ रहने वाले यहूदियों से कहा कि वे अपनी पत्नियों और बाल-बच्चों के साथ जलयानों पर सवार हो जायें, जो उन्होंने तैयार रखे थे। उन्होंने उन्हें आश्वासन दिया कि उनके प्रति उनमें कोई बैर नहीं है। 4यह नगरपालिका

* सन् 164 ई० पू०

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

का प्रबन्ध है। इस पर यहूदियों ने उनका
निमन्त्रण स्वीकार कर लिया; क्योंकि वे उनके
साथ शान्ति-पूर्वक रहना चाहते थे और उन्हें
लगा कि इस में धोखे की कोई बात नहीं है।
जब वे खुले समुद्र में आ गये, तो उन जलयानों
को डुबा दिया गया, जिन पर लगभग दो सौ
यहूदी सवार थे।
5 जैसे ही यहूदा मक्काबी को अपने जाति-
भाई-बहिनों के साथ की हुई क्रूरता का पता
चला, उसने अपने सैनिकों को बुलाया। [6]उसने
निष्पक्ष न्यायकर्ता परमेश्वर की दुहाई दी और
अपने भाई-बहिनों के हत्यारों के विरुद्ध चल
पड़ा। उसने रातोंरात बन्दरगाह में आग लगा दी,
जलयान जला दिये और जिन लोगों ने वहाँ
शरण ली थी, उनका वध कर दिया। [7]नगर के
प्रवेश-द्वार बन्द कर दिये गये थे, इसलिए वह
इस विचार से चला गया कि वह बाद में लौट
कर सारा याफ़ा नष्ट कर देगा। [8]जब उसने सुना
कि यमनिया के लोग भी अपने साथ रहने वाले
यहूदियों के साथ वैसा ही करना चाहते थे, [9]तो
उसने यमनिया के निवासियों पर रात में
आक्रमण किया और उस बन्दरगाह तथा वहाँ
के जलयानों को जला दिया। उस आग की
ज्वाला येरूशलेम तक दिखाई दी, जो वहाँ से
पचास किलोमीटर दूर है।

गिलआद पर आक्रमण

10 यहूदियों ने वहाँ से तिमोथी के विरुद्ध
प्रस्थान किया। वे दो किलोमीटर भी पूरे नहीं
कर सके कि उन पर अरब-वासी टूट पड़े,
जिनकी संख्या कम-से-कम पांच हज़ार पैदल
सैनिक और पांच सौ घुड़सवार थे। [11]घमासान
युद्ध हुआ, किन्तु अन्त में यहूदा के सैनिक
परमेश्वर की कृपा से विजयी हुए। पराजित
खानाबदोश लोग यहूदा से दया+ की याचना
करने लगे। उन्होंने उसे पशु देने का वचन दिया
और यह वादा किया कि वे हर प्रकार से उसकी
सहायता करेंगे। [12]यहूदा जानता था कि वे
सचमुच बहुत-सी बातों में उसकी सहायता
कर सकते हैं, इसलिए उसने उनकी शान्ति की
बात स्वीकार कर ली। वे उस से हाथ मिला कर
अपने तम्बुओं में लौट गये।
13 इसके बाद यहूदा ने एक ऐसे नगर पर
आक्रमण किया, जो बांध और चार-दीवारी से
घिरा था। उस में कई जातियों के लोग रहते थे।
उसका नाम कस्पिन था। [14]उस नगर के
निवासियों को चार-दीवारी की सुदृढ़ता पर
और नगर में खाद्य-सामग्री के भण्डारों का
भरोसा था, इसलिए वे यहूदा के सैनिकों पर
ताना मारने, उनका अपमान करने, ईशनिन्दा
और अशोभनीय शब्दों का प्रयोग करने लगे।
[15]इस पर यहूदा के सैनिकों ने संसार के
सर्वमहान् प्रभु की दुहाई दी, जिसने यहोशुअ
के समय भित्तिपातकों और घेरे के अन्य यन्त्रों
का प्रयोग किये बिना येरीहो की चारदीवारी
गिरा दी थी। वे जंगली पशुओं की तरह दीवार
पर टूट पड़े। [16]उन्होंने परमेश्वर की इच्छा से
नगर अपने अधिकार में कर लिया और उस में
इतने लोगों का वध किया कि नगर के पास का
तालाब, जो आधा किलोमीटर चौड़ा था, रक्त
से भरा हुआ दिखाई देने लगा।
17 वे वहाँ से एक सौ चालीस किलोमीटर
आगे बढ़ कर उन यहूदियों के यहाँ खारक्स
पहुंचे, जो तूबी कहलाते हैं। [18]उन्हें वहाँ तिमोथी
नहीं मिला, क्योंकि वह किसी से कुछ कहे
बिना वहाँ से चला गया था; किन्तु उसने वहाँ
के किसी स्थान पर एक बड़ी रक्षक-सेना रख
दी थी। [19]दोसिथियुस और सोसीपतेर ने, जो
यहूदा मक्काबी के सेनापति थे, उस स्थान पर
आक्रमण किया और तिमोथी के उस गढ़ में रखे
हुए लोगों को समाप्त कर दिया। उनकी संख्या
दस हज़ार से अधिक थी। [20]अब यहूदा मक्काबी
ने अपनी सेना को दलों में विभाजित किया,
उनके अध्यक्ष नियुक्त किये और तिमोथी की
ओर प्रस्थान किया, जिसके पास एक लाख
बीस हज़ार पैदल सैनिक और ढाई हज़ार
घुड़सवार थे।

+ शब्दशः, ''हाथ मिलाने''
12 : 6 भज 7 : 11 12 : 15 यहो 6 : 20; इब्र 11 : 30

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

21 जैसे ही यहूदा पास आया, तिमोथी ने
स्त्रियों और बच्चों को अपने सामान के साथ
करनियन नामक स्थान में भेज दिया। वहाँ एक
अजेय दुर्गम गढ़ था, क्योंकि वहाँ तक पहुंचने
की घाटियाँ सँकरी थीं। 22जैसे ही यहूदा का
प्रथम दल पहुँचा, शत्रुओं पर आतंक छा गया,
क्योंकि सर्वद्रष्टा परमेश्वर के दिव्य दर्शन ने
उन्हें डरा दिया। उन में भागदौड़ मच गयी। वे
इधर-उधर इस तरह भागने लगे कि वे अपने
ही आदमियों के हाथों घायल हो जाते और
अपनी ही तलवारों की धार के शिकार बन
जाते। 23यहूदा ने उन्हें बुरी तरह खदेड़ा और
उन दोषियों को—लगभग तीस हजार लोगों
को—मार गिराया। 24तिमोथी स्वयं ही
दोसिथियुस और सोसीपतेर के सैनिकों के हाथ
में पड़ गया। उसने कपटपूर्ण बातें करते हुए
जीवनदान माँगा। उसने यह कहा कि उन में
कितनों के माता-पिता और भाई-बहिन उसके
वश में हैं; अगर वे उसे मुक्त नहीं करेंगे, तो
उनके सम्बन्धियों के साथ बहुत बुरा व्यवहार
होगा। 25जब तिमोथी ने उन्हें पूर्ण विश्वास
दिलाया कि वह उनके सम्बन्धियों को सकुशल
जाने देगा, तो उन्होंने उसे मुक्त कर दिया,
जिससे उनके भाई-बन्धुओं की रक्षा हो सके।
26 वहाँ से यहूदा करनियन के गढ़ और
अतरगातिस देवी के मन्दिर की ओर बढ़ा।
उसने वहाँ पहुंच कर पच्चीस हज़ार सैनिकों
का वध किया। 27इन शत्रुओं की पराजय और
विनाश के बाद यहूदा ने अपनी सेना के साथ
क़िलाबन्द नगर एफ्रोन की ओर प्रस्थान किया,
जहाँ कई जातियों+ के बहुत-से लोग निवास
करते थे। तगड़े युवकों की सेना परकोटे के
बाहर पंक्तिबद्ध थी और उसने वीरतापूर्वक
विरोध किया। नगर के अन्दर युद्धयन्त्रों और
अस्त्रक्षेपकों की भरमार थी। 28यहूदियों ने उस
महाप्रभु की दुहाई दी, जो अपनी सामर्थ्य से
शत्रुओं को रौंदता है। इसके बाद उन्होंने नगर
को अपने अधिकार में किया और वहाँ लगभग
पच्चीस हज़ार निवासियों का वध किया।
29 वे वहाँ से स्कूतापुलिस नगर** की ओर
बढ़े, जो यरूशलेम से एक सौ चालीस
किलोमीटर दूर है। 30वहाँ के रहने वाले यहूदियों
ने यह साक्षी दी कि स्कूतापुलिस के निवासी
उनके साथ अच्छा व्यवहार करते हैं और कि
उन्होंने विपत्ति के समय उनका मैत्रीपूर्ण स्वागत
किया था। 31इसलिए यहूदा और उसके साथियों
ने नागरिकों को धन्यवाद दिया और उन से
अनुरोध किया कि वे भविष्य में भी यहूदियों के
साथ अच्छा व्यवहार करते रहें। इसके बाद वे
यरूशलेम लौट गये; क्योंकि सप्त-सप्ताह पर्व
निकट था।

गोरगियस से लड़ाई

32 उस पर्व के बाद, जो यूनानी में पेंतेकोस्त++
कहलाता है, यहूदा और उसके साथी इदूमिया
के शासक गोरगियस के विरुद्ध चल पड़े।
33वह तीन हज़ार पैदल सैनिकों और चार सौ
घुड़सवारों के साथ उनका सामना करने आया।
34वे एक दूसरे से भिड़ गये और युद्ध में थोड़े
ही यहूदी खेत रहे। 35बकेनोर के सैनिकों में***
दोसिथियुस नामक यहूदी व्यक्ति ने, जो शूरवीर
घुड़सवार था, गोरगियस को उसके लबादे से
पकड़ कर ज़ोरों से अपनी ओर खींचा, जिससे
वह उस अभिशप्त को जीवित ही पकड़ ले।
लेकिन एक थ्राकी घुड़सवार ने दोसिथियुस पर
प्रहार कर उसकी बांह काट दी। इस प्रकार
गोरगियस निकल कर मरीसा नगर भागने में
सफल हो गया। 36एसद्रिस के दल में यहूदी
सैनिक देर तक लड़ते-लड़ते थक गये। तब
यहूदा मक्काबी ने प्रभु से प्रार्थना की कि वह
अपने को यहूदियों का सहायक और सेनापति
प्रमाणित करे! 37उसने अपनी मातृभाषा में
भजन गाया और युद्ध का नारा लगा कर वह
एकाएक गोरगियस के आदमियों पर टूट पड़ा
और उन्हें भगा दिया।

+ पाठांतर, ''लीसियस और कई जातियों'' ** अथवा, ''बेतशान''। ++ अर्थात् पचासवां दिन। *** पाठांतर, ''तूबीय लोगों में''

12 : 31 व्य 16 : 9-10; 2 इत 8 : 13 **12 : 32** तोब 2 : 1; प्रे 2 : 1; 20 : 16 **12 : 35** यहो 15 : 44

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मृतकों के लिए प्रार्थना

38 यहूदा मक्काबी अपनी सेना ले कर
अदुल्लाम नगर पहुंचा। सप्ताह का अन्त निकट
था; अतः उन्होंने प्रथा के अनुसार अपने को
पवित्र कर, वहीं विश्राम-दिवस मनाया। 39दूसरे
दिन यहूदा और उसके साथी वध किये गये
लोगों के शव एकत्र करने और उन्हें पूर्वजों की
कबरों में उनके सम्बन्धियों के साथ दफनाने
लगे। इस कार्य में अब देर नहीं की जा सकती
थी। 40अब पता चला कि प्रत्येक मारे हुए
व्यक्ति के कपड़ों के नीचे ताबीज़ थे, जो
यमनिया-नगर की देवमूर्तियों के नाम अर्पित
थे। व्यवस्था के अनुसार यहूदी ऐसी वस्तुएँ
अपने पास नहीं रख सकते थे। अब सब के
सामने यह स्पष्ट हो गया कि वे इसी पाप के
कारण मारे गये हैं। 41इस पर सब ने निष्पक्ष
न्यायकर्ता प्रभु का धन्यवाद किया, जो गुप्त
बातें प्रकाश में लाता है। 42इसके बाद उन्होंने
प्रार्थना की और यह निवेदन किया कि उनके
किये हुए अपराध पूर्णतः क्षमा कर दिये जायें*।
वीर यहूदा ने लोगों से अनुरोध किया कि वे
अपने को पाप से बचाये रखें; क्योंकि उन्होंने
अपनी आंखों से देखा था कि मारे हुए लोगों के
पाप के कारण उन पर क्या बीती थी। 43इसके
बाद यहूदा ने दान एकत्र किया। उसे लगभग
दो हज़ार चांदी के सिक्के+ प्राप्त हुए। उसने यह
दान यरूशलेम भेज दिया, जिससे वहाँ पाप-
बलि चढ़ायी जाये। उसने पुनरुत्थान का ध्यान
रख कर यह उत्तम तथा सराहनीय कार्य सम्पन्न
किया। 44यदि उसे मृत सैनिकों के पुनरुत्थान
की आशा नहीं होती, तो मृतकों के लिए प्रार्थना
करना मूर्खतापूर्ण तथा निरर्थक होता। 45उसका
उद्देश्य पवित्र तथा पुनीत था, क्योंकि वह
जानता था कि प्रभु-भक्ति में मरने वालों के
लिए एक अपूर्व पुरस्कार सुरक्षित है। 46इसलिए
उसने मृतक लोगों के लिए प्रायश्चित-बलि का
प्रबन्ध किया, जिससे उन्हें उस पाप से छुटकारा
मिले।

यहूदियों पर अन्तियोखुस का धावा

13 एक सौ उनचासवें वर्ष** यहूदा मक्काबी
और उसके सैनिकों को यह खबर
मिली कि राजा अन्तियोखुस यूपातोर भारी सेना
ले कर यहूदा प्रदेश पर आक्रमण करने आ रहा
है 2और उसके साथ उसका संरक्षक तथा
राजप्रशासक लीसियस भी है। उनके पास++
उत्तम यूनानी सेनाबल था, अर्थात् एक लाख
दस हज़ार पैदल सैनिक थे, पांच हज़ार तीन सौ
घुड़सवार, बाईस हाथी तथा तीन सौ ऐसे रथ,
जिनके पहियों में हँसिये लगे थे।
3मनेलास भी उन से जा मिला। वह कपटपूर्ण
बातों से अन्तियोखुस को प्रोत्साहित करता था।
उसे अपने देश के कल्याण की चिन्ता नहीं थी,
किन्तु वह आशा करता था कि ऐसा करने से
उसे अपनी पहली प्रतिष्ठा*** प्राप्त होगी। 4किन्तु
राज-राजेश्वर के विधान से अन्तियोखुस का
कोप उस दुष्ट पर भड़क उठा। लीसियस ने उसे
बताया कि केवल मनेलास सारे उपद्रव का मूल
है; इसलिए राजा ने उसे बिरीया नगर ले जाने
और वहाँ के रिवाज के अनुसार उसे प्राण-दण्ड
देने का आदेश दिया। 5वहाँ बाईस मीटर ऊंची
एक मीनार थी, जो जलती राख से भरी थी।
उसके शिखर पर घूमने वाली एक कीप थी और
जो कुछ भी उसमें डाला जाता, वह राख में गिर
जाता था। 6मन्दिरों के लुटेरों और अन्य घोर
कुकर्मियों को उस मीनार के ऊपर ले जा कर
कीप में डाला और इस प्रकार प्राणदण्ड दिया
जाता था। 7व्यवस्था का उल्लंघन करने वाले
मनेलास को ऐसा ही प्राणदण्ड दिया गया। उसे
मिट्टी में नहीं दफनाया गया। 8यह उचित भी
था, क्योंकि उसने वेदी के विरुद्ध, जिसकी राख
और आग पवित्र है, बहुत-से अपराध किये थे।
अतः उसे राख में तप कर मरना पड़ा।

राजा के शिविर पर आक्रमण

9 राजा आगबबूला था। वह उस उद्देश्य से

---

* अथवा "मिटा दिये जाएं"। + देखिए 4 : 19 की टिप्पणी। ** सन् 163 ई० पू०। ++ अथवा "प्रत्येक के पास"।
*** अर्थात् महापुरोहितीय पद।

12 : 43 लेव 4 : 2-35

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आगे बढ़ा कि वह यहूदियों के साथ उस से भी
अधिक बुरा व्यवहार करे, जैसा उसके पिता के
समय हुआ था। 10जब यहूदा मक्काबी को
इसका पता चला, तो उसने लोगों को आदेश
दिया कि वे दिन-रात प्रभु से प्रार्थना करते रहें,
जिससे वह पहले की तरह उनकी सहायता
करे; क्योंकि वह समय आ गया, जब वे
व्यवस्था, स्वदेश और पवित्र मन्दिर से वंचित
किये जायेंगे। 11प्रभु अपनी प्रजा को, जिस में
थोड़े दिनों से नया जीवन आने लगा था,
ईशनिन्दक गैर-यहूदियों के हाथ न पड़ने दे।
12सब ने यहूदा का प्रस्ताव स्वीकार किया। वे
भूमि पर मुँह के बल गिर कर तीन दिन तक
आँसू बहाते और उपवास करते हुए निरन्तर
दयालु प्रभु से प्रार्थना करते रहे। इसके बाद
यहूदा ने उन्हें साहस बँधाया और तैयार रहने को
कहा। 13धर्मवृद्धों के साथ परामर्श करने के
बाद, इस से पहले कि राजा की सेना यहूदियों
में घुस आये और नगर पर अधिकार कर ले,
उसने प्रस्थान करने और परमेश्वर की सहायता
से निर्णयात्मक युद्ध करने का निश्चय किया।
14उसने युद्ध का परिणाम संसार के सृष्टिकर्ता
के हाथ दे कर, अपने आदमियों को उत्साहित
किया किये व्यवस्था, मन्दिर, नगर, स्वदेश
और उसकी संस्थाओं के लिए मरण तक
साहसपूर्वक युद्ध करें। उसने मोदीन नगर के
पास पड़ाव डाला। 15वह अपने सैनिकों को
संकेत-शब्द 'परमेश्वर की विजय' देने के
बाद, चुने हुए शूरवीर युवकों के साथ रात को
राजा के तम्बू पर टूट पड़ा। उन्होंने शिविर में
लगभग दो हजार लोगों को मार गिराया और
महावत के साथ प्रमुख हाथी का वध किया।
16वे शिविर में इस प्रकार डर और आतंक
फैलाने के बाद 17दिन निकलते ही सकुशल
लौटे। यह आक्रमण इसलिए सफल हुआ कि
प्रभु ही यहूदा की रक्षा करता था।

यहूदियों से राजा की सन्धि

18 राजा को यहूदियों के आक्रमण से उन की
वीरता का पता चला। इसलिए अब उसने कपट
से किलाबन्द नगर अपने अधिकार में करने का
प्रयत्न किया। 19उसने उनके किलाबन्द बेत-
सूर पर आक्रमण किया, किन्तु उसे भागना
पड़ा। उसने फिर उस पर आक्रमण किया, तो
उसे फिर पराजित होना पड़ा। 20यहूदा ने वहाँ
आवश्यक हथियार भेजे थे। 21लेकिन यहूदी
सेना के एक व्यक्ति रदोकस ने शत्रुओं पर
अपनी सेना के भेद प्रकट कर दिये। इसलिए
उसकी खोज की गयी, उसे पकड़ा गया और
प्राणदण्ड दिया गया। 22जब राजा ने फिर बेत-
सूर के निवासियों से बातचीत और सन्धि करनी
चाही, तो उन्होंने यह स्वीकार किया। राजा ने
वहाँ से चल कर यहूदा के सैनिकों पर आक्रमण
किया, किन्तु वह पराजित हो गया। 23उसी समय
उसे यह समाचार मिला कि फिलिप विद्रोही
बन गया है, जिसे वह राजप्रशासक बना कर
राजधानी अन्ताकिया में छोड़ आया था। इस से
वह इतना घबरा गया कि उसने यहूदियों को
बुला कर उन से सन्धि करने का प्रस्ताव किया।
उसने उनकी उचित माँगों को स्वीकार किया
और शपथ खा कर उन्हें पूरा करने का वचन
दिया। इस सन्धि के समर्थन में उसने बलि
चढ़ायी; उसने यरूशलेम के मन्दिर का सम्मान
किया और उसे उदारतापूर्वक दान दिये।
24उसने यहूदा मक्काबी का स्वागत किया,
पतुलिमयिस नगर से गेरार नगर तक के प्रदेशों
पर हेगेमोनीदेस को राज्यपाल के रूप में नियुक्त
किया 25और स्वयं पतुलिमयिस नगर के लिए
प्रस्थान किया। पतुलिमयिस के निवासी इस
सन्धि से सन्तुष्ट नहीं थे। उन्होंने इस पर
असन्तोष प्रकट किया और वे इसे रद्द करना
चाहते थे। 26तब लीसियस मंच पर आया।
उसने प्रभावशाली वक्तव्य-कला का प्रयोग
किया। उसने तर्कों द्वारा सन्धि के औचित्य पर
प्रकाश डाला और लोगों को शान्त एवं अपने
पक्ष में प्रोत्साहित भी किया। इसके बाद वह
अन्ताकिया लौटा। यह है राजा के आगमन और
प्रस्थान का वृत्तान्त।

13 : 12 योए 2 : 12 13 : 19 1 मक 4 : 29

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अलकिमस का षड्यन्त्र

14 तीन वर्ष बाद यहूदा मक्काबी और
उसके सैनिकों को यह मालूम हुआ कि
सिलूकस का पुत्र देमेत्रियुस एक बड़ी सेना और
जलयानों के एक बेड़े के साथ त्रीपुलिस
बन्दरगाह पहुँच गया है 2तथा उसने राजा
अन्तियोखुस और उसके प्रशासक लीसियस
को मरवा कर देश पर अधिकार कर लिया है।
3 अलकिमस नामक एक यहूदी था, जो
पहले तो महापुरोहित बन गया था; परन्तु उसने
हमारे धार्मिक विद्रोह के समय स्वेच्छा से
यूनानी प्रथाएं अपना कर अपने को अपवित्र
किया। जब उसने देखा कि वह फिर कभी
पवित्र वेदी की सेवा नहीं कर पायेगा, 4तब वह
एक सौ इक्यानबेवें वर्ष* में राजा देमेत्रियुस के
पास पहुँचा। उसने उसे सोने का एक मुकुट,
खजूर की डाली और इनके अतिरिक्त मन्दिर
में प्रयुक्त ** जैतून की कुछ टहनियाँ भेंट कीं।
उसने उस दिन और कुछ नहीं किया। 5लेकिन
एक दिन उसे तब अपने उन्माद की सफलता
का अवसर मिला, जब देमेत्रियुस ने उसे अपनी
सभा में बुलाया और उस से पूछा कि यहूदियों
के क्या मनोभाव और क्या योजनाएँ हैं। 6उसने
उत्तर दिया, "जो यहूदी हसीदी कहलाते हैं और
जिनका नेता यहूदा मक्काबी है, वे युद्ध और
विद्रोह का अवसर ढूँढ़ते रहते हैं और राज्य में
अशान्ति फैलाते हैं। 7इस कारण मुझे अपने
पूर्वजों की प्रतिष्ठा, अर्थात् महापुरोहित के पद
से वंचित किया गया है और 8मैं इसलिए आया
हूँ कि मैं हृदय से राजा का हित और अपने देश
के भाई-बहिनों का कल्याण चाहता हूँ; क्योंकि
उन लोगों के मुर्खतापूर्ण व्यवहार के कारण,
जिनका उल्लेख कर चुका हूँ, हमारी समस्त
जनता को बहुत-से कष्ट झेलने पड़ते हैं।
9महाराज! आप को अब उन सब बातों की
जानकारी प्राप्त हो गयी है, इसलिए मैं आप से
निवेदन करता हूँ कि आप सब के प्रति अपने
सद्भाव के अनुसार हमारे देश और हमारी
पददलित जनता का कल्याण करें। 10जब तक
यहूदा उनका नेता है, राज्य में शान्ति रहे, यह
असम्भव है।"

यहूदा प्रदेश पर निकानोर का आक्रमण

11 अलकिमस के इन शब्दों के तुरन्त बाद
राजा के अन्य मित्र, जो यहूदा मक्काबी के शत्रु
थे, देमेत्रियुस का क्रोध भड़काने लगे। 12इस पर
उसने निकानोर को, जो हाथी-सेना का अध्यक्ष
रह चुका था, यहूदा प्रदेश का राज्यपाल नियुक्त
किया 13और उसे यह आदेश दे कर भेजा कि
वह यहूदा मक्काबी को समाप्त कर दे, उसके
आदमियों को तितर-बितर कर दे और
अलकिमस को महामन्दिर का महापुरोहित
नियुक्त करे। 14जो गैर-यहूदी यहूदा मक्काबी
के कारण यहूदा प्रदेश से भाग गये थे, अब वे
झुण्ड-के-झुण्ड निकानोर के पास यह सोच
कर आने लगे कि यहूदियों के दुर्भाग्य और
विपत्तियों से हमें लाभ होगा।
15 जैसे ही यहूदियों को निकानोर के
आगमन और गैर-यहूदियों के आक्रमण की
योजना का पता चला, वे अपने सिर पर राख
डाल कर उस परमेश्वर से प्रार्थना करने लगे,
जिसने सदा के लिए अपनी प्रजा को बसाया था
और जो सुस्पष्ट चमत्कारों से अपनी विरासत
की सहायता करता रहता है। 16वे अपने सेनापति
के आदेश पर तुरन्त वहाँ से चल कर दस्साव
नामक गाँव के पास शत्रुओं पर टूट पड़े।
17यहूदा के भाई शिमोन ने निकानोर की सेना
पर आक्रमण तो किया, किन्तु शत्रु के अप्रत्याशित
विरोध के कारण उसे धीरे-धीरे पीछे हट जाना
पड़ा।

निकानोर और यहूदियों की सन्धि

18 फिर भी यह जान कर कि यहूदा के
सैनिकों में कितनी बहादुरी है और स्वदेश की
रक्षा के लिए वे कितने उत्साह के साथ लड़
सकते हैं, निकानोर रक्तरंजित निर्णयात्मक युद्ध
करने से डरता था। 19उसने पस्सिदोनियुस,
थिओदतुस और मत्तित्याह को भेज कर सन्धि

---

* 161 ई० पू०। ** अथवा, "मन्दिर की ओर से देय"

14 : 6 1 मक 2 : 42; 7 : 13 **14 : 7** 1 मक 7 : 14

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

का प्रस्ताव किया। 20प्रस्ताव की शर्तों का
अध्ययन करने के बाद सेनापति यहूदा ने उन्हें
सैनिकों को समझाया। उन्होंने सर्वसम्मति से
प्रस्ताव स्वीकार किया 21और एक दिन निश्चित
किया, जब दोनों सेनापति एक दूसरे से अकेले
में मिलेंगे। दोनों सेनाओं की ओर से एक-एक
रथ आगे बढ़ा और दोनों के बीच आसन रखे
गये। 22उधर यहूदा ने उपयुक्त जगहों पर
सशस्त्र सैनिक छोड़ रखे थे, जिससे शत्रु
अचानक विश्वासघात न कर पाये। मामला पूरी
तरह तय हो गया।

23 बाद में निकानोर यरूशलेम में आया,
और वहां रहा; लेकिन उसने व्यवस्था के
प्रतिकूल कभी कदम नहीं उठाया। उसने उन
लोगों को विदा किया, जो उसके साथ आये थे।
24वह प्रत्येक अवसर पर यहूदा को अपने साथ
रखने लगा, क्योंकि वह उसे हृदय से चाहने
लगा था। 25उसने उसे विवाह करने और बाल-
बच्चों के साथ गृहस्थ जीवन बिताने की सलाह
दी। यहूदा ने विवाह कर लिया और वह शान्ति
में सामान्य जीवन का आनन्द उठाने लगा।

निकानोर की प्रतिकूलता

26 जब अलकिमस ने उनकी मित्रता देखी,
तो वह सन्धि की एक प्रति ले कर राजा
देमेत्रियुस के पास गया। उसने उस से कहा कि
निकानोर देशद्रोही बन गया है, क्योंकि उसने
विद्रोही यहूदा को अपना उत्तराधिकारी बना
लिया है। 27राजा क्रुद्ध हुआ और उस दुष्ट के
मिथ्या अभियोगों से उत्तेजित हो कर निकानोर
को लिखा कि वह उस सन्धि से सहमत नहीं
है और उसे आज्ञा देता है, कि वह उस मक्काबी
को बँधवा कर अविलम्ब राजधानी अन्ताकिया
भेजे।

28 जब निकानोर को यह आदेश मिला, तो
उसे बड़ा दुःख हुआ। सन्धि रद्द करना उसे
अच्छा नहीं लगा, क्योंकि यहूदा ने कोई
अनुचित बात नहीं की थी। 29राजा के आदेश
की अवज्ञा करना उसके लिए सम्भव नहीं था,
इसलिए वह उसे कपटपूर्ण ढंग से पूरा करने का
अवसर ढूँढ़ने लगा। 30इधर जब यहूदा मक्काबी
ने देखा कि निकानोर अब उस से कतराने-सा
लगा है और उसकी घनिष्ठता अब रूखाई में
बदल गयी है, तो वह समझने लगा कि इस
रूखाई का परिणाम अच्छा नहीं होगा। उसने
बड़ी संख्या में अपने सैनिकों को अपने पास
बुलाया और निकानोर से छिप कर रहने लगा।
31जब निकानोर को पता चला कि वह व्यक्ति
बड़ी चालाकी से उसके हाथ से निकल भागा,
तो वह परम-पावन मन्दिर जा कर पुरोहितों
को, जो नियमित बलियाँ चढ़ा रहे थे, यह
आदेश दिया कि वे यहूदा को उसके हवाले कर
दें। 32उन्होंने शपथ खा कर कहा कि वे नहीं
जानते थे कि वह व्यक्ति कहाँ है, जिसे वह ढूँढ़
रहा है। 33इस पर उसने मन्दिर की ओर अपना
दाहिना हाथ उठा कर यह शपथ खायी, "यदि
तुम लोग यहूदा को बाँध कर मेरे हवाले नहीं
करोगे, तो मैं यह ईश-मन्दिर ढा कर और
बलि की वेदी गिरा कर इसी स्थान पर
दियोनीसियुस देवता के लिए एक विशाल
मन्दिर बनवाऊँगा।" 34यह कह कर वह वहाँ
से चला गया। पुरोहितों ने स्वर्ग की ओर हाथ
उठा कर यह कहते हुए उस परमेश्वर से प्रार्थना
की, जो सदा हमारी प्रजा का सहायक रहा, 35
"सर्वेश्वर प्रभु! तुझे किसी बात की कमी नहीं,
फिर भी तूने हमारे बीच मन्दिर के रूप में अपना
निवास बनावाना चाहा है। 36परमपावन प्रभु!
समस्त पवित्रता के स्रोत! इस मन्दिर को कभी
अपवित्र नहीं होने देना, जिसका अभी-अभी
शुद्धीकरण हुआ है।"

देशभक्त राजिस का आत्मघात

37 निकानोर के यहाँ राजिस पर अभियोग
लगाया गया। वह यरूशलेम के धर्मवृद्धों में से
एक था, नगर का शुभचिन्तक और जनता में
सम्मानित था। वह अपने उपकारों के कारण
'यहूदियों का पिता' कहलाता था। 38हमारे
धार्मिक विद्रोह के आरंभिक दिनों में उसे यहूदी
राष्ट्रवादी होने के कारण दण्ड दिया गया था
और उसने यहूदी धर्म के लिए बहुत दृढ़तापूर्वक
तन-मन से संघर्ष किया था। 39निकानोर ने
यहूदियों के प्रति बैर का प्रमाण देने के उद्देश्य

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

से पाँच सौ से अधिक सैनिकों को उसे गिरफ्तार
करने भेजा। 40उसका विचार था कि इस
गिरफ्तारी से यहूदियों को भारी धक्का लगेगा।
41जब सैनिक बुर्ज पर अधिकार करने के लिए
फाटकों पर प्रहार करने लगे और उन्हें प्रवेश-
द्वार में आग लगाने का आदेश मिला, तो यह
देख कर कि अब उसके बचने का कोई उपाय
नहीं है, राजिस ने स्वयं अपन पेट में तलवार
भोंक ली। 42उन दुष्टों के हाथ पड़ने और
अपनी कुलीनता के प्रतिकूल घोर अपमान का
शिकार बनने की अपेक्षा उसने गौरव के साथ
मरना उचित समझा। 43किन्तु उसने हड़बड़ी में
अपने पर घातक प्रहार नहीं किया। जब उसने
देखा कि वे लोग प्रवेश-द्वार से घुस रहे हैं, तो
वह शूरवीर की तरह दीवार पर चढ़ गया और
वहाँ से साहसपूर्वक नीचे खड़े लोगों के बीच
कूद पड़ा। 44वे लोग तुरन्त हट गये, जिससे वह
एक खाली जगह पर आ गिरा। 45यद्यपि उसके
भारी घावों से खून बह रहा था, फिर भी वह
अभी जीवित था। वह क्रोध में उठा और भीड़
पार कर एक ऊँची चट्टान पर खड़ा हो गया।
46उसका रक्त बह गया था, तो उसने दोनों हाथों
से अपनी अँतड़ियाँ निकाल कर लोगों के बीच
फेंक दी। उसने अपने जीवन और अपनी आत्मा
के स्वामी प्रभु से प्रार्थना की कि वह उन्हें किसी
दिन उसे लौटा दे, और यों उसकी मृत्यु हो गयी।

निकानोर की योजना की असफलता

15 जब निकानोर को पता चला कि यहूदा
मक्काबी और उसके साथी सामरी
प्रदेश में एकत्र हैं, तो उसने सुरक्षा के विचार से
विश्राम के दिन ही उन पर आक्रमण करने का
निश्चय किया। 2दबाव के कारण जो यहूदी
उसके साथ थे, उन्होंने उस से कहा, ''आप क्रूर
और बर्बर रीति से उनका वध न करें। आप उस
दिन का आदर करें, जिसे सर्वज्ञ परमेश्वर ने
प्रारम्भ से सम्मानित और पवित्र किया है।''
3लेकिन उस अभिशप्त व्यक्ति ने पूछा, ''क्या
स्वर्ग में कोई महाप्रभु है, जिसने विश्राम का दिन
मनाने का आदेश दिया है?'' 4उन्होंने स्पष्ट शब्दों
में उत्तर दिया, ''स्वयं जीवन्त प्रभु, स्वर्ग के
एकमात्र महाप्रभु ने सातवाँ दिन पवित्र करने का
आदेश दिया है।'' 5इस पर उसने कहा, ''तो
मैं इस पृथ्वी का महाप्रभु हूँ और मैं यह आज्ञा
देता हूँ कि तुम अस्त्र-शस्त्र धारण कर राजाज्ञा
का पालन करो।'' किन्तु वह दुष्ट अपनी
योजना में सफल नहीं हुआ।

6 निकानोर ने उत्कट घमण्ड में निश्चय
किया कि वह यहूदा और उसके आदमियों की
लूट से एक भव्य स्मारक का निर्माण करेगा।
7किन्तु यहूदा मक्काबी अटल विश्वास से प्रभु
की सहायता की प्रतीक्षा करता रहा। 8उसने अपने
आदमियों को समझाया कि वे विदेशियों के इस
आक्रमण से नहीं डरें, बल्कि याद रखें कि उन्हें
कितनी ही बार स्वर्ग की ओर से सहायता मिल
चुकी है। इसलिए वे अब भी विश्वास करें कि
सर्वशक्तिमान् उन्हें विजय दिलायेगा। 9उसने
व्यवस्था और नबियों का हवाला देते हुए उन्हें
उत्साहित किया। उसने उन्हें यह याद दिलाया
कि वे कितनी लड़ाइयाँ लड़ चुके हैं। 10उसने
उन में लड़ने का उत्साह भर कर यह भी
बतलाया कि वे विदेशी कैसे विश्वासघाती हैं
और कैसे अपनी शपथें भंग करते रहे हैं। 11इस
प्रकार उसने न केवल ढालों और भालों से,
बल्कि अपनी प्रभावशाली बातों से प्रत्येक
व्यक्ति को तैयार किया। इसके बाद उसने उन्हें
एक विश्वासयोग्य स्वप्न के विषय में भी
बताया, जिससे सभी अत्यधिक आनन्दित हो
उठे। 12उसका वह दर्शन इस प्रकार था : उसने
देखा कि ओनियाह, जो कभी महापुरोहित रह
चुका था, जो कुलीन और विनम्र व्यक्ति था तथा
जिसका व्यवहार बड़ा मधुर था, जो शुभु
बोलता था और बचपन से ही सभी सद्गुणों से
सम्पन्न था, हाथ उठा कर समस्त यहूदी प्रजा के
लिए प्रार्थना कर रहा है। 13इसके बाद यहूदा को
एक ऐसा पुरुष दिखाई पड़ा, जो उसी तरह
प्रार्थना कर रहा था। वह वृद्ध था और उसकी
आकृति गौरव, ऐश्वर्य और प्रताप से समन्वित
थी। 14तब ओनियाह ने यहूदा से कहा, ''यह

14 : 42 1 शम 31 : 4 **15 : 2** प्रव 15 : 18 **15 : 5** यहेज 28 : 2.9 **15 : 9** मत 5 : 17

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

परमेश्वर के नबी यिर्मयाह हैं, जो अपने लोगों
को प्यार करते और अपने देश के भाई-बहिनों
और पवित्र नगर के लिए नित्य प्रार्थना करते
हैं।'' 15इसके बाद यिर्मयाह ने दाहिना हाथ
बढ़ा कर यहूदा को सोने की एक तलवार दी,
और कहा, 16''यह पवित्र तलवार लो, यह
परमेश्वर का उपहार है। इस से तुम शत्रुओं को
कुचल दोगे।''

17 यहूदा की प्रभावशाली बातों ने उनका
साहस बँधाया और युवकों के हृदयों को उत्साह
से भर दिया। इसलिए यहूदियों ने निश्चय किया
कि वे पड़ाव डाल कर सीधे साहस के साथ
आक्रमण करेंगे और पूरी शक्ति से लड़ कर
निर्णयात्मक युद्ध करेंगे; क्योंकि नगर, स्वधर्म
और मन्दिर खतरे में थे। 18उन्हें अपनी पत्नियों,
बाल-बच्चों और भाई-बहिनों की भी चिन्ता
थी, लेकिन यह चिन्ता उतनी नहीं थी, जितनी
ईश्वर-समर्पित मन्दिर की। यहीं उनके लिए
परम और प्रथम बात थी। 19वे लोग भी बड़ी
चिन्ता में थे, जो नगर में थे। वे इस बात से घबरा
रहे थे कि लड़ाई खुले मैदान में होने जा रही थी।
20युद्ध का परिणाम जानने को सभी उत्सुक थे।
इतने में शत्रु की सेना एकत्र हो गयी और व्यूहरचना
कर चुकी। हाथियों को उपयुक्त स्थानों पर रखा
गया और घुड़सवारों को पार्श्वभागों में।

यहूदा की प्रार्थना

21 जब यहूदा मक्काबी ने शक्तिशाली शत्रु
को निकट आते देखा और यह देखा कि उनके
पास कितने प्रकार के अस्त्र-शस्त्र हैं और उनके
हाथी कितने डरावने हैं, तो वह स्वर्ग की ओर
हाथ उठा कर उस प्रभु की दुहाई देने लगा, जो
आश्चर्यकर्म करता है। उसे पूरा विश्वास था कि
विजय अस्त्र-शस्त्रों से प्राप्त नहीं होती, बल्कि
विजय उनकी होती है, जिन्हें प्रभु इसके योग्य
मानता है। 22उसने यह प्रार्थना की, ''स्वामी
प्रभु! तूने यहूदा प्रदेश के राजा हिजकियाह की
सहायता के लिए अपना दूत भेजा, जिसने
असीरिया देश के राजा सनहेरिब के पड़ाव में
लगभग एक लाख पचासी हजार सैनिकों का
वध किया था। 23स्वर्ग के महाप्रभु! अब फिर
अपना एक उत्तम दूत भेज, जो हमारे आगे-
आगे चल कर शत्रुओं में भय और आतंक
उत्पन्न करे। 24जो लोग ईशनिंदा करते हुए तेरी
पवित्र प्रजा पर आक्रमण करने आ रहे हैं, उन्हें
अपने भुजबल से मार गिरा।'' उसने इन शब्दों
के साथ अपनी प्रार्थना समाप्त की।

यहूदियों की विजय

25 निकानोर के सैनिक तुरहियां फूंकते और
गीत गाते आगे बढ़े। 26यहूदा के आदमी प्रार्थना
करने के बाद प्रभु की दुहाई देते हुए शत्रुओं पर
टूट पड़े। 27वे हाथों से लड़ रहे थे और हृदय
से परमेश्वर की प्रार्थना कर रहे थे। उन्होंने
कम-से-कम पैंतीस हजार सैनिकों को मार
गिराया। परमेश्वर के प्रकटन का अनुभव करते
हुए वे अत्यन्त उल्लसित हो उठे। 28जब लड़ाई
समाप्त हुई और वे आनन्द के साथ पीछे हटे
तो उन्होंने देखा कि निकानोर कवच पहने मरा
पड़ा है। 29इस पर वे गगनभेदी नारे लगाने और
अपनी मातृभाषा में महाप्रभु को धन्य कहने
लगे। 30तब यहूदा ने, जो अपने सहनागरिकों के
लिए सदा तन-मन से प्रथम पंक्ति में लड़ता रहा
और बाल्यावस्था से अपने देश के भाई-बहिनों
को प्यार करता था, निकानोर का सिर और
उसकी पूरी दाहिनी बाँह काट देने और उन्हें
यरूशलेम ले जाने का आदेश दिया। 31वहाँ पहुँच
पर उसने अपने देशभक्त भाई-बहिनों को
एकत्र किया और पुरोहितों को वेदी के सामने
खड़ा किया। उसने गढ़ के अन्यजातीय लोगों
को बुला भेजा 32और उन्हें दुष्ट निकानोर का
सिर और उस ईशनिंदक का हाथ दिखाया,
जिसे उसने घमण्ड के आवेश में सर्वेश्वर के
पवित्र मन्दिर के विरुद्ध उठाया था। 33उसने
विधर्मी निकानोर की जीभ कटवा कर आदेश
दिया कि उसके टुकड़े करें और पक्षियों को
खिला दें और निकानोर के उन्माद के पुरस्कार
के रूप में उसका हाथ मन्दिर के सामने
लटकाएं! 34तब सब ने स्वर्ग की ओर आँखें
उठा कर प्रभु को धन्यवाद दिया, जिसने प्रकट

---

15 : 21 भज 72 : 18; 136 : 4; दान 4 : 3 **15 : 22** 2 रा 19 : 35 **15 : 27** भज 149 : 6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रूप से उनकी सहायता की थी। उन्होंने कहा,
"धन्य है वह, जिसने अपने निवास को दूषित
होने से बचाया है!" 35यहूदा ने निकानोर का
सिर गढ़ की दीवार पर लटकवा दिया, जिससे
वह सब के लिए एक स्पष्ट प्रमाण हो कि प्रभु
ने उनकी सहायता की थी। 36यह निर्णय
सर्वसम्मति से किया गया कि उस दिन को नहीं
भुलाया जाये, बल्कि (सीरिया की अरामी
भाषा में अदार नामक) बारहवें महीने के तेरहवें
दिन, मोरदेकय-दिवस के पूर्वदिन, समारोह के
साथ उसका उत्सव मनाया जाये।

लेखक का निवेदन

37 ये हैं—निकानोर के समय की घटनाएँ।
उस समय से नगर इब्रानियों के ही अधिकार में
रहा। अब यहाँ मैं भी अपनी रचना समाप्त
करता हूँ। 38यदि यह सुन्दर और सुगठित है,
तो मैं समझूँगा कि मेरा उद्देश्य सफल हुआ।
किन्तु यदि यह शिथिल और बहुत साधारण है,
तो मैं इतना ही कर सकता था। 39जिस तरह
केवल दाखरस या केवल पानी पीना हानिकर
है, जब कि पानी-मिला हुआ दाखरस रुचिकर
होता और मन प्रसन्न कर देता है, उसी तरह कोई
रचना सुन्दर वस्तु-विन्यास के कारण पाठकों
के लिए श्रुतिमधुर हो जाती है। यही मेरे वृत्तान्त
का अन्त है।

प्रज्ञा ग्रंथ

(सुलेमान का प्रज्ञा ग्रंथ)

पुस्तक-परिचय

प्रस्तुत ग्रंथ का परम्परागत शीर्षक है "सुलेमान का प्रज्ञा ग्रंथ"। लेखक पाठकों को अपना अनुभव बताने के लिए मानो राजा सुलेमान के मुंह से अन्य राजाओं को संबोधित करता है। वास्तव में, इस ग्रंथ का मूल पाठ इब्रानी में नहीं, बल्कि यूनानी में है। सम्भवतः इसकी रचना प्रथम शताब्दी ईसवी पूर्व के मध्य में मिस्र देश के प्रवासी यहूदियों के लिए हुई थी।

यह ग्रंथ अमूर्त "प्रज्ञा" की महत्ता प्रतिपादित करता है। यहूदी लेखक ने मुक्त भाव से कहीं-कहीं यूनानी दर्शन की शब्दावली का प्रयोग किया है; उदाहरणार्थ उसने प्रज्ञा के इक्कीस गुण बताये हैं (7: 22-23)। इस यूनानी प्रभाव के कारण यहाँ "प्रज्ञा" शब्द, इब्रानी "पुराना विधान" में प्रयुक्त पर्यायवाची शब्द "बुद्धि" की तुलना में, कुछ कम व्यावहारिक मालूम पड़ता है। फिर भी, बाइबिल के अन्य बुद्धि-साहित्य के समान (नीति 8: 22 ; प्रवक्ता 24: 1), "प्रज्ञा" को कभी मानवीय रूप में मानो अलग अस्तित्व दिया गया है (उदाहरणार्थ, प्रज्ञा 18 : 15)। कुछ ऐसे कथन भी हैं, जो "संत योहन के अनुसार शुभ समाचार" की भाषा से अधिक समता रखते हैं, जैसे: "प्रज्ञा से प्रेम करने का अर्थ है आज्ञाओं का पालन करना" (6 : 18); "हे परमेश्वर, तूने अपने शब्द के द्वारा सब कुछ उत्पन्न किया है" (9 : 1)।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

प्रस्तावना	1:1-15
धर्मियों के लिए अमरता और अधर्मियों के लिए दण्डाज्ञा	1: 16 — 5: 23
प्रज्ञा का विवेचन	6 : 1 — 9: 18
प्रज्ञा का महत्व	10:1 —12: 27
ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में प्रज्ञा	13: 1 — 19:22

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रस्तावना

1 पृथ्वी के शासको! धार्मिकता से प्रेम रखो।
प्रभु के विषय में सत्कर्म के साथ विचार करो
और निष्कपट हृदय से उसे खोजते रहो;
2क्योंकि जो उसकी परीक्षा नहीं लेते,
वे उसे प्राप्त करते हैं।
प्रभु अपने को उन लोगों पर प्रकट करता है,
जो उस पर विश्वास करते हैं।
3कुटिल विचार मनुष्य को परमेश्वर से दूर करते हैं।
सर्वशक्तिमत्ता उन मूर्खों को पराजित करती है,
जो उसकी परीक्षा लेते हैं।
4प्रज्ञा* उस आत्मा में प्रवेश नहीं करती,
जो बुराई की बातें सोचती है;
और उस शरीर में निवास नहीं करती,
जो पाप के अधीन है।
5क्योंकि अनुशासन का पवित्र आत्मा
छल-कपट से दूर भागता है
और मूर्खतापूर्ण विचारों से अलग रहता है।
जब अधार्मिकता फैलती है,
तो वह व्याकुल हो जाता है।

6प्रज्ञा मनुष्य का हित तो चाहती है,
किन्तु वह ईशनिन्दक को उसके शब्दों का दण्ड दिये बिना नहीं छोड़ेगी;
क्योंकि परमेश्वर मनुष्य के अन्तरतम का साक्षी है।
वह उसके हृदय की थाह लेता
और उसके मुख के सभी शब्द सुनता है।
7प्रभु का आत्मा संसार में व्याप्त है।
वह सब कुछ को एकता में बाँधे रखता है;
और मनुष्य जो कुछ कहते हैं,
वह सब जानता है।
8इसलिए जो दुष्टतापूर्ण बातें करते हैं,
वे छिप नहीं सकते
और न्यायकर्ता उन्हें अवश्य दण्ड देगा।
9दुर्जन की योजनाओं की जाँच की जायेगी
और उसके शब्दों की चर्चा प्रभु तक पहुँचेगी,
जिससे उसे उसके अपराधों का दण्ड दिया जाये।

10 ईर्ष्यालु+ कान सब कुछ सुनता है;
धीमी फुसफुसाहट भी उस से नहीं छिप सकती।
11इसलिए व्यर्थ फुसफुसाहट से बचते रहो;
अपनी जीभ को परनिन्दा नहीं करने दो;
क्योंकि गुप्त में कही बात व्यर्थ नहीं जाती
और झूठ बोलने वाला मुख आत्मा का विनाश करता है।
12अपने भ्रष्ट जीवन से मृत्यु को मत बुलाओ;
अपने कर्मों से अपने विनाश का कारण मत बनो।
13परमेश्वर ने मृत्यु नहीं बनायी;
वह प्राणियों की मृत्यु से प्रसन्न नहीं होता।
14उसने सब कुछ की सृष्टि इसलिए की है कि वह अस्तित्व में आए।
संसार में जो उद्भावक ** तत्व है,
वह हितकर है;
उस में कहीं भी घातक विष नहीं।
अधोलोक पृथ्वी पर शासन नहीं करता;
15क्योंकि धार्मिकता अमर है।

दुष्टों का जीवन-दर्शन

16 दुर्जनों ने अपने कर्मों और वचनों से मृत्यु को निमन्त्रण दिया।
वे उसे मित्र समझ कर उसकी लालसा करते रहे।
उन्होंने उसके साथ सन्धि कर ली;
इसलिए वे उसके शिकार बनने योग्य हैं।

2 विधर्मी कुतर्क करते हुए आपस में यह कहते थे :
"हमारा जीवन अल्पकालिक और दुःखमय है।

---

* अथवा, "बुद्धि" + अथवा, "धर्मोत्साही" ** अथवा, "सृष्ट"

1: 1 व्य 1: 16 मत 6:33 **1:2** नीति 8: 17; यश 65: 1 **1:3** भज 125:5 **1:4** प्रव 15:7 **1:6** नीति 8:31; तीत 3:41 **: 7** भज 139: 7; प्रव 39 : 19 **1 : 11** रोम 1 : 30 **1 :13** यहेज 18 : 32; 33 : 11; 2 पत 3 : 9 **1: 16** यश 28 : 15; प्रव 14 : 12 **2 : 1** अय्य 14 : 1-2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जब मनुष्य मरने को हो,
तो कोई उपचार नहीं;
और हमारी जानकारी में
कोई कभी अधोलोक से नहीं लौटा।
2हमने संयोग से जन्म लिया
और बाद में ऐसा होगा, मानो हम कभी थे ही नहीं!
हमारी साँस मात्र धूआँ है
और हमारे विचार हमारे हृदय की धड़कन की चिनगारी!
3चिनगारी बुझ जाने पर शरीर राख बनेगा
और प्राण शून्य आकाश में लुप्त हो जायेंगे।
4हमारा नाम समय के साथ भुला दिया जायेगा।
हमारे कार्यों को कोई भी याद नहीं करेगा।
हमारा जीवन बादल के मार्ग की तरह मिट जायेगा।
वह कुहरे की तरह विलीन हो जायेगा,
जो सूर्य की किरणों से छितराता
और उसकी गरमी से लुप्त हो जाता है।
5हमारा जीवनकाल छाया की तरह गुजरता है;
हमारा अन्त टाला नहीं जा सकता :
उस पर मुहर लग चुकी है
और उससे कोई नहीं लौटता।

6 "इसलिए आओ, हम जब तक जवान हैं, उत्सुकता से वर्तमान की अच्छी चीजों का उपभोग करें,
सृष्टि का उपयोग करें!
7 हम उत्तम मदिरा और इत्र का पूरा-पूरा आनन्द उठायें;
हम वसन्त के फूल हाथ से न जाने दें।
8इस से पहले कि गुलाब की कलियाँ मुरझायें,
हम उनका मुकुट गूँथ कर पहन लें।
9कोई भी हमारे आनन्दोत्सव से अलग न रहे;
हम सर्वत्र अपने आमोद-प्रमोद की निशानी छोड़ें;
क्योंकि यही हमारा हिस्सा है;
यही हमारा भाग्य है।
10 "हम दरिद्र धर्मात्मा पर अत्याचार करें।
हम विधवा को भी नहीं छोड़ें
और वृद्ध के पके बालों का आदर नहीं करें।
11हमारी शक्ति हमारे न्याय का मापदण्ड हो,
क्योंकि दुर्बलता किसी काम की नहीं।

धर्मात्मा पर अत्याचार

12 "हम धर्मात्मा के लिए फन्दा लगायें,
क्योंकि वह हमें परेशान करता
और हमारे आचरण का विरोध करता है,
वह हमें व्यवस्था भंग करने के कारण फटकारता है।
और हम पर हमारी शिक्षा को त्यागने का अभियोग लगाता है।
13वह समझता है कि वह परमेश्वर को जानता है
और अपने को प्रभु की संतति* कहता है।
14वह हमारे विचारों के लिए एक जीवित चुनौती है।
उसे देखने मात्र से हमें अरुचि होती है।
15उसका आचरण दूसरों-जैसा नहीं
और उसके मार्ग भिन्न हैं।
16वह हमें खोटा और अशुद्ध समझ कर
हमारे सम्पर्क से दूर रहता है।
वह धर्मियों की अन्त-गति को सौभाग्यशाली बताता
और शेखी मारता है कि परमेश्वर उसका पिता है।
17हम यह देखें कि उसका दावा कहाँ तक सच है;
हम यह पता लगायें कि अन्त में उसका क्या होगा।
18यदि वह धर्मात्मा परमेश्वर की संतान है,
तो ईश्वर उसकी सहायता करेगा
और उसे उसके विरोधियों के हाथ से छुड़ायेगा।

* अथवा "सेवक"

2 : 2 ओब 16; प्रव 44 : 9; भज 102 : 4 **2 : 4** सभ 2 : 16; अय्य 18 : 17-19 **2 : 6** यश 22 : 13 ; 1 कुर 15 : 32 **2 : 9** सभ 3 :22 **2 : 11** नीति 1 : 11 **2 : 12** यिर 11 : 19; मत 26 : 3-4 **2 : 16** यो 5 : 18 **2 : 18** मत 27 : 43

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

19हम अपमान और अत्याचार से उसकी परीक्षा लें,
जिससे हम उसकी विनम्रता जानें
और उसका धैर्य परख सकें।
20हम उसे घिनौनी मृत्यु का दण्ड दिलायें;
क्योंकि उसका दावा है कि परमेश्वर उसकी रक्षा करेगा।''
21दुर्जन ऐसा सोचते थे,
किन्तु यह उनकी भूल थी।
उनकी दुष्टता ने उन्हें अन्धा बना दिया था।
22वे परमेश्वर के रहस्य नहीं जानते थे।
वे न तो पवित्र आचरण के प्रतिफल में विश्वास करते थे,
और न धर्मात्माओं के पुरस्कार में।
23परमेश्वर ने मनुष्य को अनश्वरता के लिए बनाया है;
उसने उसे अपने ही स्वरूप का प्रतिरूप बनाया है।
24किन्तु शैतान की ईर्ष्या के कारण ही
मृत्यु संसार में आयी है।
जो लोग शैतान का साथ देते हैं,
वे अवश्य ही मृत्यु का शिकार हो जाते हैं।

धर्मियों और विधर्मियों की नियति

3 धर्मियों की आत्माएँ परमेश्वर के हाथ में हैं।
उन्हें कभी कोई कष्ट नहीं होगा।
2मूर्ख लोगों को लगा कि वे मर गये हैं।
वे उनका संसार से उठ जाना घोर विपत्ति मानते थे।
3वे यह समझते थे कि हमारे बीच से चले जाने के बाद
उनका सर्वनाश हो गया है; किन्तु धर्मियां को शान्ति का निवास मिला है।
4मनुष्यों को लगा कि उन धर्मियों को दण्ड मिल रहा है,
किन्तु वे अमरत्व की आशा करते थे।
5थोड़ा कष्ट सहने के बाद
उन्हें महान् पुरस्कार दिया जायेगा।
परमेश्वर ने उनकी परीक्षा ली
और उन्हें अपने योग्य पाया है।
6परमेश्वर ने घरिया में सोने की तरह उन्हें परखा
और अग्नि-बलि की तरह उन्हें स्वीकार किया।
7महापरीक्षा के दिन वे ठूँठी के खेत में
धधकती चिनगारियों की तरह चमकेंगे।
8वे राष्ट्रों का शासन करेंगे;
वे देशों पर राज्य करेंगे,
किन्तु प्रभु सदा-सर्वदा उनका राजा बना रहेगा।
9जो परमेश्वर पर भरोसा रखते हैं,
वे सत्य को जान जायेंगे;
जो प्रेम में दृढ़ रहते हैं,
वे उसके पास रहेंगे;
क्योंकि जिन्हें परमेश्वर ने चुना है,
उन्हीं का परीक्षण-निरीक्षण होता है;
उसके पवित्र भक्तों को कृपा तथा दया प्राप्त होगी।*
10किन्तु अधर्मियों को उनके विचारों के योग्य दण्ड दिया जायेगा;
क्योंकि उन्होंने धर्मी का तिरस्कार
और प्रभु का परित्याग किया।
11जो प्रज्ञा और अनुशासन को तुच्छ समझते, वे अभागे हैं;
उनकी आशा निराधार है, उनका परिश्रम व्यर्थ है
और उनके कार्य निष्फल हैं।
12उनकी पत्नियाँ मूर्ख,
उनके बच्चे दुष्ट,
उनके वंशज अभिशप्त हैं।
13धन्य है बाँझ स्त्री, जो अशुद्ध नहीं हुई,
जिसने व्यभिचार नहीं किया!
आत्माओं की महापरीक्षा में वह फलवती होगी।

---

* मूल में अस्पष्ट।

2 : 20 याक 5 : 6 **2 : 21** रोम 1 : 21 **2 : 23** प्रव 17 : 3; 1 पत 1 : 4 **2 : 24** उत 3 : 13; रोम 5 : 12 **3 : 1** यो 10 : 29 **3 : 3** यश 57 : 1-2 **3 : 4** रोम 8 : 24 **3 :5** 2 कुर 4 : 17 **3 : 7** दान; 12 : 3 ; मत 13 : 43 **3 : 8** दान 7 : 27; 1 कुर 6 : 2; प्रक 5 : 10 **3 : 9** 1 यो 3 : 2 **3 : 12** प्रव 41 : 5 **3 : 13** यश 54 : 1 ; इब्र 13 : 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

14धन्य है नपुंसक जिसके हाथ ने बुराई नहीं
की,
जिसने प्रभु के विरुद्ध दुष्ट विचार नहीं पाले!
उसे अपनी ईमानदारी का विशिष्ट पुरस्कार
और प्रभु के मन्दिर में सुखद भाग प्राप्त होगा;
15क्योंकि भले कामों का फल महिमामय है
और सद्बुद्धि की जड़ अनश्वर है।
16व्यभिचारियों की सन्तान प्रौढ़ता तक नहीं
पहुँचेगी।
अवैध संसर्ग से उत्पन्न वंशज नष्ट हो
जायेंगे।
17यदि उन्हें लम्बी आयु मिली,
तो उन्हें सम्मान नहीं मिलेगा
और वे अन्त तक, बुढ़ापे तक तिरस्कृत होंगे।
18यदि वे शीघ्र ही मर जायेंगे,
तो न्याय के दिन उन्हें न आशा होगी
और न सान्त्वना मिलेगी;
19क्योंकि दुष्ट वंश का अन्त दुःखद है।

4 इसकी अपेक्षा सद्गुणी हो कर निस्सन्तान
रहना कहीं अच्छा है,
क्योंकि सद्गुण की स्मृति बनी रहती है।
परमेश्वर और मनुष्य, दोनों उसका सम्मान
करते हैं।
2जब तक सद्गुण विद्यमान है,
लोग उसका अनुसरण करते हैं।
जब वह चला जाता है,
तो लोग उसकी अभिलाषा करते हैं।
युग-युग उसकी शोभा-यात्रा मनायी जाती
है,
जिसमें में वह विजय का मुकुट पहन कर
चलता है;
क्योंकि उसे विशुद्ध वीरकर्मों की प्रतियोगिता
में सफलता मिली है।
3किन्तु दुष्टों की बहुसंख्यक सन्तति व्यर्थ
होगी।
उनकी जारज सन्तान जड़ नहीं पकड़ेगी,
उसे कोई सदृढ़ आधार नहीं मिलेगा।
4यदि उसकी शाखाओं में कुछ समय तक
टहनियाँ फूटेंगी,
तो वे सुदृढ़ नहीं होंगी;
हवा उन्हें झकझोर देगी
और आँधी उन्हें उखाड़ फेंकेगी।
5उनकी अविकसित टहनियाँ टूट जायेंगी,
उनका फल बेकार होगा।
वह इतना कच्चा होगा कि खाया नहीं जा
सकेगा।
वह किसी काम का नहीं होगा।
6जाँच होने पर जारज सन्तान
अपने माता-पिता की दुष्टता की साक्षी देती है।

धर्मी की मृत्यु और अधर्मी की लम्बी आयु

7यदि धर्मी मनुष्य असमय मर जाये,
तो वह शान्ति पायेगा,
8क्योंकि जो वृद्धावस्था आदरणीय है,
वह न तो लम्बी आयु पर निर्भर करती है
और न केवल वर्षों की संख्या पर।
9जो मनुष्य बुद्धिमान् है,
उसी के बाल सफेद समझो;
और जिसका जीवन निर्दोष है,
उसी को वयोवृद्ध मान लो।
10परमेश्वर ऐसे व्यक्ति पर प्रसन्न था
और उसे प्यार करता था,
इसलिए परमेश्वर ने उसे पापियों के बीच में
से उठा लिया।
11वह इसीलिए उठा लिया गया
कि कहीं उसकी बुद्धि का विकार न हो जाये
और कपट उसकी आत्मा को नहीं बहकाये;
12क्योंकि बुराई का सम्मोहन भलाई को धुँधलाता
है,
और लालच की तीव्रता सरल हृदय को दूषित
करती है।
13वह थोड़े समय में पूर्ण बन कर
लम्बी आयु तक पहुँच गया है।
14उसकी आत्मा प्रभु को प्रिय थी
इसलिए प्रभु ने उसे शीघ्र ही
चारों ओर की बुराई में से निकाल लिया है।
लोग यह बात देख कर नहीं समझे।
15वे यह नहीं जानते हैं कि प्रभु अपने चुने हुओं
पर कृपा तथा दया करता है,

---

3 : 16 2 शम 12 : 14 **4 : 1** नीति 10 : 7 **4 : 3** प्रव 23 : 25 **4 : 10** उत 5 : 24; प्रव 44 : 16; इब्र 11: 5

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और अपने भक्तों की रक्षा करता है।
16मरने वाला धर्मी
जीवित रहने वाले दुष्ट को दोषी ठहराता है।
और शीघ्र पूर्णता प्राप्त करने वाला नवयुवक
दुष्ट की लम्बी आयु पर दोष लगाता है।
17लोग ज्ञानी की मृत्यु देखेंगे;
किन्तु वे उसके विषय में प्रभु का प्रयोजन
नहीं समझेंगे
और यह भी नहीं कि प्रभु ने उसे क्यों सुरक्षित
रखा।
18अधर्मी यह देखेंगे और उसकी उपेक्षा करेंगे,
किन्तु प्रभु उनका उपहास करेगा।
19बाद में वे तिरस्कृत शव बनेंगे,
और मृतकों में सदा के लिए निन्दा के पात्र
होंगे।
प्रभु उन्हें टुकड़े-टुकड़े कर देगा,
और वे मुंह के बल गिरकर
एक शब्द भी नहीं बोल पायेंगे।
वह उन्हें उखाड़ कर फेंक देगा।
उनका सर्वनाश किया जायेगा,
उन्हें दुःख भोगना पड़ेगा
और उनकी स्मृति तक शेष नहीं रहेगी।

धर्मी और अधर्मी के विषय में भिन्न निर्णय

20जब उनके पापों का लेखा लगाया जायेगा,
तो वे डरते-काँपते आयेंगे।
उनके कुकर्म उनके सामने खड़े हो कर
उन पर दोष लगायेंगे।

5 उस समय धर्मी आत्मविश्वास के साथ
उन लोगों के सामने खड़ा हो जाएगा,
जो उस पर अत्याचार करते
और उसके परिश्रम को तुच्छ समझते थे।
2दुष्ट उसे देख आतंकित हो कर काँपने लगेंगे,
और वे उसके अप्रत्याशित कल्याण पर
आश्चर्यचकित होंगे।
3वे मन-ही-मन पश्चात्ताप करेंगे
और दुःखी होकर कराहते हुए कहेंगे :
4"यह वही है, जिसकी हम हँसी उड़ाते थे,
जिस पर हम ताना मारते थे।
हम मूर्खतावश उसके जीवन को पागलपन
और उसकी मृत्यु को अपमानजनक समझते
थे।
5वह परमेश्वर की संतति में कैसे सम्मिलित
किया गया?
वह कैसे सन्तों का सहभागी बना?
6इसलिए हम सत्य के मार्ग से भटक गये,
सद्धर्म के प्रकाश ने हमें आलोकित नहीं किया
और सूर्य हम पर उदित नहीं हुआ।
7हम अन्याय और विनाश के पथ पर भटकते
रहे,
हमने मार्गहीन मरुभूमियों को पार किया,
किन्तु हमें प्रभु के मार्ग का पता नहीं था।
8घमण्ड से हमें क्या लाभ हुआ?
जिस सम्पत्ति पर हमें गर्व था,
उसने हमें क्या दिया?

9"यह सब छाया की तरह,
उड़ती अफवाह की तरह बीत गया,
10समुद्र की लहरों पर चलने वाले जहाज की
तरह,
जिसके पारगमन का कहीं निशान नहीं,
जिसके पेंदे के मार्ग की कहीं खोज नहीं;
11या पक्षी की तरह, जो हवा में उड़ता है,
जिसके मार्ग की कोई खोज नहीं।
वह मंद वायु में पंख फड़फड़ाता
और अपने पंखों के बल तीव्र गति से
हवा चीरते हुए आगे निकलता है;
किन्तु बाद में वहाँ उसकी उड़ान का कोई
निशान नहीं मिलता।
12या बाण की तरह, जो निशाने पर चलाया
जाता है।
हवा उस से चिर जाती है,
किन्तु वह तुरन्त फिर जुड़ जाती है,
जिससे उस बाण के मार्ग का कोई पता नहीं
चलता है।
13इसी तरह हम जन्म के बाद तुरन्त लुप्त हो गये
और अपने सद्गुणों का कोई चिह्न नहीं

4 : 16 यश 65 : 20 4 :18 भज 2: 4 4: 19 भज 9 : 6; प्रे 1 : 18 5 : 4 भज 69 : 11 5 : 7 नीति 2 : 13; 14 : 14 5 : 10 अय्य 9 : 26

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दिखा सके।
हम अपने दुर्गुणों द्वारा समाप्त हो गये।''
14सच! दुष्ट की आशा भूसी-जैसी है, जो पवन
द्वारा उड़ायी जाती है;
हलके फेन-जैसी है,
जो आँधी द्वारा छितराया जाता है;
धूएँ-जैसी है, जिसे पवन उड़ा ले जाता है;
एक दिन के मेहमान-जैसी है,
जिसे कोई याद नहीं करता।

धर्मियों का उज्ज्वल भविष्य

15किन्तु धर्मी सदा के लिए जीवित रहेंगे।
उनका पुरस्कार प्रभु के हाथ में है
और सर्वोच्च परमेश्वर उनकी देखरेख करता
है।
16वे प्रभु के हाथ से महिमामय राजत्व
और भव्य मुकुट ग्रहण करेंगे;
क्योंकि वह अपने दाहिने हाथ से
और अपने भुजबल से उनकी रक्षा करेगा।
17वह अपने धर्मोत्साह के शस्त्र पहनेगा
और अपनी सृष्टि द्वारा अपने शत्रुओं को
दण्ड दिलाएगा।
18वह धार्मिकता का कवच धारण करेगा
और निष्पक्ष न्याय का टोप पहनेगा।
19वह अजेय पवित्रता की ढाल
20और अनम्य क्रोध की तलवार धारण करेगा।
समस्त सृष्टि उसके साथ उन निर्बुद्धियों के
विरुद्ध युद्ध करेगी।
21चढ़े हुए धनुष से जैसे बाण सीधे लक्ष्य पर
लग जाते हैं,
वैसे ही बादलों से बिजली निकलेगी।
22उसका क्रोध गोफन की तरह भारी ओले
बरसायेगा।
समुद्र की लहरें उन पर आक्रमण करेंगी
और नदियों की बाढ़ उन को ढक देगी।
23घोर आँधी उन पर टूट पड़ेगी
और बवण्डर उन्हें छितरा देगा।
अराजकता पृथ्वी को उजाड़ कर देगी और
कुकर्म शासकों के सिंहासन गिरा देंगे।

शासक शिक्षा ग्रहण करें

6 राजाओ! सुनो और समझो।
पृथ्वी भर के शासको! शिक्षा ग्रहण करो।
2तुम, जो बहुसंख्यक लोगों पर अधिकार जताते
हो
और बहुत-से राष्ट्रों का शासन करने पर गर्व
करते हो,
मेरी बातों पर कान दो;
3क्योंकि प्रभु ने तुम्हें प्रभुत्व प्रदान किया,
सर्वोच्च परमेश्वर ने तुम्हें अधिकार दिया।
वही तुम्हारे कार्यों का लेखा लेगा
और तुम्हारे विचारों की जाँच करेगा।
4तुम उसके राज्य के सेवक मात्र हो।
इसलिए यदि तुमने सच्चा न्याय नहीं किया,
विधि का पालन नहीं किया
और परमेश्वर की इच्छा पूरी नहीं की,
5तो वह भीषण रूप में अचानक तुम्हारे सामने
प्रकट होगा;
क्योंकि उच्च अधिकारियों का कठोर न्याय
किया जायेगा।
6जो दीन-हीन है, वह क्षमा और दया का पात्र
है;
किन्तु जो शक्तिशाली हैं, उनकी कड़ी
परीक्षा ली जायेगी।
7सबका प्रभु पक्षपात नहीं करता
और बड़ों के सामने नहीं झुकता;
क्योंकि उसी ने छोटे और बड़े, दोनों को
बनाया
और वह सब का समान ध्यान रखता है,
8किन्तु शक्तिशालियों की कठोर परीक्षा ली
जायेगी।
9इसलिए हे अधिनायको! मैं तुम्हें शिक्षा देता
हूँ,
जिससे तुम प्रज्ञा प्राप्त करो और विनाश से
बचे रहो;
10क्योंकि जो पवित्र नियमों का श्रद्धापूर्वक
पालन करते हैं,
वे पवित्र माने जायेंगे

---

5 : 14 अय्य 8 : 14; भज 1 : 4 **5 : 15** उत 15 : 1; यश 62 : 11 **5 : 18** यश 59 : 17; इफ 6 : 14-17 **5 : 22** यहो 10 : 11 **6 : 3** नीति 8 : 15; दान 2 : 21; रोम 13 : 1; यो 19 : 11 **6 : 7** अय्य 34 : 19; प्रव 35 : 12

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और जो उन नियमों से शिक्षा ग्रहण करेंगे,
वे उनके आधार पर अपनी सफाई दे सकेंगे।
11इसलिए मेरी इन बातों को अपनाओ
और इनका मनन करो, जिससे तुम्हें शिक्षा
प्राप्त हो।

प्रज्ञा मनुष्य से मिलने आती है

12प्रज्ञा देदीप्यमान है।
वह कभी मलिन नहीं होती।
जो लोग उसे प्यार करते हैं,
वे उसे सहज ही पहचानते हैं।
जो उसे खोजते हैं, वे उसे प्राप्त कर लेते हैं।
13जो उसे चाहते हैं,
वह स्वयं आ कर उन्हें अपना परिचय देती
है।
14जो उसे खोजने के लिए बड़े सबेरे उठते हैं,
उन्हें परिश्रम नहीं करना पड़ेगा।
वे उसे अपने द्वार के सामने बैठा हुआ पायेंगे।
15उस पर मनन करना बुद्धिमानी की परिपूर्णता
है।
जो उसके लिए जागरण करेगा,
वह शीघ्र ही पूर्ण शान्ति प्राप्त करेगा।
16वह स्वयं उन लोगों की खोज में निकलती है,
जो उसके योग्य हैं।
वह कृपापूर्वक उन्हें मार्ग में दिखाई देती है,
और उनके प्रत्येक विचार में उन से मिलने
आती है।
17शिक्षा की सदिच्छा प्रज्ञा का प्रारम्भ है।
18शिक्षा के लिए चिन्ता करना प्रज्ञा का प्रेम है।
और प्रज्ञा से प्रेम करना उसकी आज्ञाओं का
पालन है।
आज्ञाओं पर ध्यान देने से
अमरता अवश्य प्राप्त होती है।
19अमरता परमेश्वर के निकट पहुँचाती है,
20इसलिए प्रज्ञा की सदिच्छा राजत्व दिलाती
है।
21राष्ट्रों के अधिनायको! यदि तुम्हें सिंहासन
और मुकुट प्रिय हैं,
तो प्रज्ञा पर श्रद्धा रखो,
जिससे तुम अनन्त काल तक राज्य कर
सको।

प्रज्ञा की शिक्षा

22प्रज्ञा क्या है और वह कहाँ से उत्पन्न होती
है—
मैं यह प्रकट करूँगा।
मैं तुम से रहस्य नहीं छिपाऊँगा।
मैं उसकी उत्पत्ति के रहस्य का पता लगाऊँगा।
मैं उसके विषय में अपनी जानकारी प्रकाश
में लाऊँगा
और सत्य के मार्ग से नहीं भटकूँगा।
23मैं घुलाने वाली ईर्ष्या का साथ नहीं दूँगा,
क्योंकि इसका प्रज्ञा से कोई सम्बन्ध नहीं।
24बुद्धिमानों की भारी संख्या में संसार का
कल्याण है
और बुद्धिमान् राजा अपनी प्रजा का आश्रय
है;
25इसलिए मेरी शिक्षा ग्रहण करो,
उस से तुम्हें लाभ होगा।

सुलेमान साधारण मनुष्य है

7 मैं सभी अन्य लोगों की तरह नश्वर मनुष्य
हूँ।
मैं उसका वंशज हूँ, जो सब से पहले मिट्टी
से रचा गया।
मेरा शरीर अपनी माता के गर्भ में गढ़ा गया।
2मैं संभोग के सुख के पश्चात्
वीर्य द्वारा दस महीनों तक रक्त में बनता रहा।
3मैंने जन्म लेते ही सर्वसुलभ हवा में साँस ली,
मैं सब के समान पृथ्वी पर गिरा।
और सर्वसामान्य रूप से मैं भी रोने लगा।
यही मेरा पहला शब्द था।
4मैं शिशु-वस्त्रों में लपेटा गया
और बड़ी सावधानी से मेरा पालन-पोषण
हुआ।
5सभी राजाओं का जीवन
इसी तरह प्रारम्भ होता है।
6जीवन में प्रवेश सब के लिए एक-जैसा है
और जीवन से प्रस्थान भी एक-जैसा।

---

6 : 12 नीति 14 : 6; मत 7 : 7-11 6 : 14 नीति 8 : 17 6 : 16 यश 65 : 1-2; यो 4 : 10 6 : 20 रोम 5 : 17
6 : 24 नीति 11 : 14; 29 : 4; प्रव 10 : 1-3 7 : 1 प्रव 17 : 1; उत 2 : 7 7 : 4 लू 2 : 7 7 : 6 अय्य 1: 21

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रज्ञा-प्राप्ति का निवेदन

7मैंने प्रार्थना की और मुझे विवेक मिला।
मैंने विनती की और मुझ पर प्रज्ञा का आत्मा उतरा।
8मैंने उसे राजदण्ड और सिंहासन से ज्यादा पसन्द किया
और उसकी तुलना में धन-दौलत को कुछ नहीं समझा।
9मैंने उसकी तुलना अमूल्य रत्न से भी नहीं करना चाहा;
क्योंकि उसके सामने पृथ्वी का समस्त सोना मुट्ठी भर बालू के सदृश है
और उसके सामने चाँदी कीच ही समझी जायेगी।
10मैंने उसे स्वास्थ्य और सौन्दर्य से अधिक प्यार किया
और उसे अपनी ज्योति बनाने का निश्चय किया;
क्योंकि उसकी दीप्ति कभी नहीं बुझती।
11मुझे उसके साथ-साथ सब उत्तम वस्तुएँ मिल गयीं
और उसके हाथों से अपार धन-सम्पत्ति।
12मैंने यह सब प्राप्त कर आनन्द मनाया,
क्योंकि सब वस्तुएँ मुझे प्रज्ञा द्वारा मिली थीं;
यद्यपि मैं उस समय नहीं जानता था
कि प्रज्ञा ही उन सब की जन्मदात्री है।
13मैंने सरल हृदय से प्रज्ञा की शिक्षा ग्रहण की
और मैं खुले हाथ से बाँटता हूँ,
मैं उसकी समृद्धि नहीं छिपाता।
14वह मनुष्यों के लिए एक अक्षय भण्डार है।
जो लोग उसे प्राप्त करते हैं,
वे परमेश्वर के मित्र बनते हैं;
क्योंकि प्रज्ञा की शिक्षा द्वारा प्राप्त सद्गुण उसे प्रिय हैं।

प्रभु से प्रार्थना

15परमेश्वर मुझे यह कृपा दे कि मैं सही बातें बोलूँ
और उसके वरदानों का मूल्य समझूँ;
क्योंकि वह प्रज्ञा का पथप्रदर्शक है
और ज्ञानियों को मार्ग दिखाता है।
16हम उसी के हाथ में हैं-हम और हमारे शब्द,
हमारी समस्त बुद्धि और शिल्प-विज्ञान भी।
17जो कुछ अस्तित्व में है, उसने मुझे उसका पूरा सद्ज्ञान दिया :
विश्व की संरचना और तत्त्वों की गतिविधियाँ,
18काल का आदि, मध्य और अन्त,
सूर्य का प्रत्यावर्तन और ऋतुओं का परिवर्तन,
19वर्षों के चक्र और नक्षत्रों के स्थान,
20पशुओं की प्रकृति और जंगली जानवरों का हिंसक स्वभाव,
आत्माओं की शक्ति और मनुष्यों के विचार,
पौधों की विभिन्न जातियाँ और जड़ी-बूटियों के गुण।
21मैंने सब कुछ की जानकारी प्राप्त की,
चाहे वह गुप्त हो या प्रकट;
क्योंकि विश्व की रचना करने वाली प्रज्ञा ने मुझे शिक्षा प्रदान की।

प्रज्ञा का स्वभाव

22प्रज्ञा में एक आत्मा विद्यमान है,
जो विवेकशील, पवित्र,
अद्वितीय, बहुविध, सूक्ष्म,
स्फूर्तिमय, प्रत्यक्ष, निष्कलंक,
स्वच्छ, अपरिवर्तनीय, हितकारी, तत्पर,
23अदम्य, उपकारी, जनहितैषी,
सुदृढ़, आश्वस्त, प्रशान्त,
सर्वशक्तिमान् और सर्वनिरीक्षक है।
वह सभी विवेकशील, शुद्ध तथा अतिसूक्ष्म आत्माओं में व्याप्त है;
24क्योंकि प्रज्ञा किसी भी गति से अधिक गतिशील है।
वह इतनी परिशुद्ध है कि वह सब कुछ में प्रवेश करती और व्याप्त रहती है।
25वह परमेश्वर की शक्ति का निःसरण* है,
सर्वशक्तिमान् की महिमा का परिशुद्ध प्रस्फुरण+ है,

---

* अथवा 'प्रश्वास' + अथवा 'प्रदीप्ति'

7 : 7 1 रा 3 : 9 **7 : 9** बारू 3: 30 **7 : 11** 1 रा 3: 13; नीति 3 : 16; मत 6 : 33 **7 : 22** याक 3 : 17 **7 : 25** प्रव 24 : 3

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
इसलिए कोई अशुद्धता प्रज्ञा में प्रवेश नहीं
कर पाती।
26वह शाश्वत ज्योति का प्रतिबिम्ब है,
परमेश्वर की सक्रियता का परिशुद्ध दर्पण
और उसकी उदारता का प्रतिरूप है।
27वह अकेली होते हुए भी सब कुछ कर
सकती है।
वह सम-रसता में रहते हुए भी सब कुछ को
नवीन बनाती है।
वह पीढ़ी-दर-पीढ़ी पवित्र आत्माओं में
प्रवेश कर
उन्हें परमेश्वर के मित्र और नबी बनाती है;
28क्योंकि परमेश्वर केवल उसी से प्रेम करता
है,
जो प्रज्ञा के साथ निवास करता है।
29प्रज्ञा सूर्य से भी रमणीय है,
सभी नक्षत्रों से श्रेष्ठ है;
यदि प्रकाश से तुलना की जाए, तो वह
अधिक देदीप्यमान है।
30क्योंकि प्रकाश रात्रि के सामने दूर हो जाता
है,
किन्तु प्रज्ञा पर दुष्टता का वश नहीं चलता।
8 प्रज्ञा की शक्ति पृथ्वी के एक छोर से दूसरे
छोर तक सक्रिय है।
और वह सुचारू रूप से विश्व का संचालन
करती है।

प्रज्ञा-प्राप्ति की अभिलाषा

2मैंने प्रज्ञा को ही प्यार किया
और युवावस्था से उसे प्राप्त करने का प्रयत्न
करता रहा।
मैंने उसे अपनी दुलहन बना कर अपने घर
में लाना चाहा,
क्योंकि मैं उसके सौन्दर्य का उपासक बन
गया था।
3वह अपनी कुलीनता पर गर्व करती है, क्योंकि
वह परमेश्वर के यहाँ निवास करती है
और सबका प्रभु उससे प्रेम करता है।
4वह ईश्वर-सम्बन्धी ज्ञान में दीक्षित हो चुकी
है।
और ईश्वर के कार्य निर्धारित करती है।
5यदि जीवन में सम्पत्ति वांछनीय है,
तो प्रज्ञा से बड़ी सम्पत्ति क्या है,
जो सब कार्य सम्पन्न करती है?
6यदि हमारा विवेक कार्यकुशल है,
तो प्रज्ञा कहीं अधिक कार्यकुशल है,
क्योंकि वह सब कुछ की संस्थापिका है।
7यदि कोई धार्मिकता से ही प्रेम करता है, तो
सद्गुण प्रज्ञा के परिश्रम से उत्पन्न होते हैं;
क्योंकि वह संयम, विवेक, न्याय और धैर्य
की शिक्षा देती है
और मानव जीवन में इन से लाभदायक कुछ
नहीं हो सकता।
8और यदि कोई प्रचुर मात्रा में अनुभव प्राप्त
करना चाहता है,
तो प्रज्ञा अतीत जानती और भविष्य का
अनुमान लगाती है।
वह सूक्तियों की व्याख्या करती
और पहेलियाँ सुलझाती है।
उसे चिह्नों, चमत्कारों, एवं शुभ कालों और
युगों का पूर्वज्ञान है।
9इसलिए मैंने उसे अपनी जीवन-संगिनी बनाने
का संकल्प किया;
क्योंकि मैं जानता था कि इस प्रकार मुझे उस
से कल्याणकारी परामर्श
और चिन्ताओं एवं दुःख में सान्त्वना मिलती।
10उसी के कारण मुझे जनता में यश
और युवक होते हुए भी बड़ों का सम्मान
प्राप्त होता।
11मैं निर्णय देने में प्रवीण बनता
और मुझे शासकों की प्रशंसा प्राप्त होती।
12यदि मैं मौन रहता, तो लोग प्रतीक्षा करते;
यदि मैं बोलता, तो वे ध्यान से सुनते।
यदि मैं बहुत देर तक भाषण देता,
तो वे दाँत तले उँगली दबाते।
13मैं प्रज्ञा द्वारा अमरत्व प्राप्त करता
और आने वाली पीढ़ियों में मेरी स्मृति सदा

---

7 : 26 इब्र 1 : 3; कुल 1 : 15; यो 1 : 9 **7 : 27** भज 104 : 30 **7 : 30** यो 1 : 5 **8 : 3** नीति 8 : 30 **8 : 8** नीति 1 : 6 ; प्रव 23 : 6 **8 : 10** 1 रा 4 : 34; प्रव 47 : 14-5

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बनी रहती।
14मैं जातियों पर राज्य करता
और राष्ट्र मेरे अधीन हो जाते।
15मेरा नाम सुनते ही दुर्जेय निरंकुश शासक भी काँपते।
मैं जनता के बीच भला और युद्ध में वीर दिखता।
16अपने यहाँ लौटने पर मैं उसके पास विश्राम करता;
क्योंकि उसकी संगति में न तो कोई कटुता है
और न उसके सान्निध्य में कोई क्लान्ति।
वहाँ केवल सुख और आनन्द मिलता है।

प्रज्ञा के लिए प्रार्थना

17मन–ही–मन विचार कर और हृदय में यह सोच कर
कि प्रज्ञा के रिश्ते से अमरता प्राप्त होती है,
18उसकी मित्रता से शुभ आनन्द,
उसके हाथ के कार्यों से अक्षय सम्पत्ति,
उसके नित्याभ्यास के साहचर्य से विवेक
और उसके साथ वार्तालाप से सुयश मिलता है।
मैं उसे चारों ओर ढूँढ़ता रहा,
जिससे मैं उसे अपनाऊँ।
19बाल्यावस्था में मैं स्वभाव से प्रतिभाशाली था
और मुझे सद्गुणी हृदय प्राप्त हुआ;
20या ऐसा कहें कि सद्गुणी होने के कारण मैं अदोष शरीरधारी बना *।
21किन्तु यह जान कर कि यदि परमेश्वर मुझे प्रज्ञा प्रदान नहीं करेगा,
तो मैं उसे प्राप्त नहीं कर पाऊँगा—
हालाँकि यह जानना भी प्रज्ञा था कि वह किसका वरदान है।
मैंने प्रभु की ओर अभिमुख हो कर
सारे हृदय से यह कहते हुए प्रार्थना की :

9 ''पूर्वजों के परमेश्वर! दयासागर प्रभु!
तूने अपने शब्द से सब कुछ बनाया
2और अपनी प्रज्ञा से मनुष्य को गढ़ा,
जिससे वह तेरी बनायी हुई सृष्टि पर प्रभुत्व प्राप्त करे,
3पवित्रता और धार्मिकता से संसार का शासन करे और निष्कपट हृदय से निर्णय दे।
4मुझे अपने सिंहासन के पास पार्श्वासीन प्रज्ञा प्रदान कर
और अपनी संतति में से मुझे अलग न कर।
5क्योंकि मैं तेरा सेवक, तेरी दासी का पुत्र हूँ,
दुर्बल और अल्पायु मनुष्य हूँ,
मुझ में न्याय एवं विधि के ज्ञान का अभाव है।
6वास्तव में यदि मनुष्यों में कोई पूर्ण हो,
किन्तु उस में तेरी प्रज्ञा न हो,
तो वह कुछ भी नहीं समझा जायेगा।
7तूने मुझे अपनी प्रजा का राजा
और अपने पुत्र–पुत्रियों का न्यायाधीश चुना है;
8तूने मुझे अपने पवित्र पर्वत पर एक मन्दिर
और तू जिस नगर में निवास करता है,
उस में एक वेदी बनवाने का आदेश दिया।
वह उस पवित्र शिविर–जैसा हो,
जिसे तूने प्रारम्भ से तैयार करवाया था।
9 ''प्रज्ञा तेरे पास रहती है,
वह तेरे कार्य जानती है।
वह विद्यमान थी, जब तूने संसार बनाया।
वह जानती है कि तुझे क्या प्रिय है
और वह भी, जो तेरी आज्ञाओं के अनुकूल है।
10प्रज्ञा को अपने पवित्र स्वर्ग से प्रेषित कर
उसे अपने महिमामय सिंहासन से भेज,
जिससे वह मेरे साथ रह कर क्रियाशील हो
और मैं जानूँ कि तुझे क्या प्रिय है;
11क्योंकि वह सब कुछ जानती और समझती है।
वह मेरे कार्यों में सावधानी से मेरा पथप्रदर्शन करेगी

* शब्दशः 'अदोष शरीर में आया'।

8 : 14 1 रा 4 : 21 8 : 21 भज 119 : 145; नीति 2 : 6 9 : 1 भज 33 : 6-9; यो 1 : 3 9 : 2 उत 1 : 26-28
9 : 5 1 रा 3 : 7; भज 86 : 16 9 : 7 1 इत 28 : 5 9 : 9 यो 1 : 3.10 9 : 10 भज 20 : 6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और अपनी महिमा से मेरी रक्षा करेगी।
12 इस प्रकार मेरे कार्य ग्राह्य होंगे,
मैं तेरी प्रजा का निष्पक्षता से न्याय करूँगा
और अपने पिता के सिंहासन के योग्य बनूँगा।

13 "ऐसा कौन मनुष्य है, जो परमेश्वर के मन की थाह ले सकता है?
कौन प्रभु की इच्छा जान सकता है?
14 मरणशील मनुष्यों के विचार अनिश्चित हैं
और हमारे उद्देश्य अस्थिर हैं;
15 क्योंकि नश्वर शरीर आत्मा के लिए भार-स्वरूप है
और मिट्टी की यह काया+ मन की विचारशक्ति घटा देती है।
16 हम पृथ्वी पर की चीजें कठिनाई से जान पाते हैं।
जो हमारे सामने है, उसे हम मुश्किल से समझ पाते हैं;
तो स्वर्ग में क्या है, इसका पता कौन लगा सकता है?
17 "यदि तूने प्रज्ञा का वरदान नहीं दिया होता
और उच्च स्वर्ग से अपने पवित्र आत्मा को नहीं भेजा होता,
तो तेरी इच्छा कौन जान पाता?
18 इस तरह पृथ्वी पर रहने वालों के पथ सीधे कर दिये गये हैं।
जो बात तुझे प्रिय है, उसकी शिक्षा मनुष्यों को मिल गयी
और प्रज्ञा के द्वारा उनका उद्धार हुआ है।"

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में प्रज्ञा का महत्त्वः

आदम, काइन और नूह

10 जब अकेले आदि मानव, संसार के
पिता की ही सृष्टि हुई थी, तो प्रज्ञा ने
उसकी रक्षा की थी और उसके पतन के बाद
उसका उद्धार किया था। 2 प्रज्ञा ने उसे समस्त
सृष्टि पर शासन करने की शक्ति प्रदान की
थी।

3 जब एक अधर्मी मनुष्य अपने क्रोधावेश
में उस से विमुख हो गया था, तो उसका विनाश
हुआ, क्योंकि उसने क्रुद्ध हो कर अपने भाई की
हत्या की थी।

4 जब उसके कारण पृथ्वी पर जलप्रलय
हुआ था, तो प्रज्ञा ने फिर पृथ्वी की रक्षा की थी
और एक भंगुर लकड़ी पर धर्मी को बिठा कर
पार कराया था।

अब्राहम

5 जब सर्वत्र फैली हुई दुष्टता के कारण राष्ट्रों
में उलझन पैदा हुई थी, तो प्रज्ञा ने धर्मी को
पहचान कर उसे परमेश्वर की दृष्टि में अनिन्द्य
बनाये रखा और उसे पुत्र के प्रति वात्सल्य पर
विजय की सामर्थ्य प्रदान की थी।

सदोम और गमोरा

6 जब अधर्मी नष्ट हो रहे थे और पाँच नगरों
पर आग बरस रही थी, तो प्रज्ञा ने भागने वाले
धर्मी+ को बचाया था। 7 उन लोगों की दुष्टता
की साक्षी के रूप में अब तक वहाँ एक
उजाड़भूमि विद्यमान है, जिस में से धूआँ उठता
है, जहाँ वृक्ष अनिश्चित समय तक फल देते हैं
और एक अविश्वासी आत्मा की स्मृति में नमक
का खम्भा खड़ा है। 8 जिन लोगों ने प्रज्ञा की
उपेक्षा की थी, वे न केवल भलाई पहचानने में
असमर्थ हो गये, बल्कि उन्होंने आने वाली
पीढ़ियों के लिए अपनी मूर्खता का स्मारक छोड़
दिया था, जिससे उनके भ्रमपूर्ण कार्य गुप्त न
रहें। 9 किन्तु जो प्रज्ञा के अनुयायी बने, उसने
उन्हें उनके कष्टों से मुक्त किया।

याकूब

10 प्रज्ञा धर्मी को सीधे मार्गों पर ले चली,
जब वह अपने भाई के क्रोध से भाग रहा था।
उसने उसे परमेश्वर के राज्य के दर्शन कराये
और पवित्रता का ज्ञान प्रदान किया। उसने उसे

+ शब्दशः 'तम्बू'। + अर्थात् "लोट"

9 : 13 प्रव 1 : 6; रोम 11 : 34; 1 कुर 2 : 16 9 : 16 यो 3 : 12 9 : 18 बारू 4 : 4 10 : 1 उत 2 : 18 10 : 4 1 पत 3 : 20-21 10 : 5 उत 11 : 9; प्रव 44 : 20 10 : 7 उत 19 : 24-26 10 : 10 उत 28 : 10-12; 30 : 43

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उसके कार्यों द्वारा सम्पन्न बनाया और उसके परिश्रम का प्रचुर पुरस्कार दिया। 11उसने लोभी शोषकों के विरुद्ध उसकी सहायता की और उसे धनी बनाया। 12उसने उसके शत्रुओं से उसकी रक्षा की और उसे फन्दा बिछाने वालों से बचा लिया। उसने उसे घोर संघर्ष में विजय दिलायी, जिससे वह समझ सके कि भक्ति सब से शक्तिशाली है।

यूसुफ

13 प्रज्ञा ने बेचे हुए धर्मी का परित्याग नहीं किया, बल्कि उसे पाप से बचाया। 14वह उसके साथ कुएँ में उतरी और उसने बन्दीगृह में उसे अकेला नहीं छोड़ा, बल्कि उसे देश का राजदण्ड दिलाया। उसने उस को अत्याचारियों पर अधिकार दिया। उसने उसके निन्दकों को झूठा सिद्ध किया और उसे अमर यश प्रदान किया।

मूसा और इस्राएली

15 प्रज्ञा ने एक पवित्र प्रजा और निर्दोष प्रजाति को उस पर अत्याचार करने वाले राष्ट्र से मुक्त किया। 16उसने प्रभु के सेवक की आत्मा में प्रवेश किया और चमत्कारों एवं चिह्नों द्वारा विकट राजाओं का सामना किया। 17उसने सन्तों को उनके परिश्रम का पुरस्कार दिलाया। वह उन्हें एक आश्चर्यजनक मार्ग से ले चली। वह दिन में उनके लिए आच्छादन और रात में तारों की ज्योति बनी। 18उसने उन्हें लाल सागर के पार उतारा; वह उन्हें विशाल जलाशय के उस पार ले गयी। 19उसने उनके शत्रुओं को जल में बहा दिया और उन्हें गर्त्त की गहराई से निकाल कर ऊपर फेंक दिया। 20इसलिए धर्मियों ने दुष्टों को लूटा। प्रभु! उन्होंने तेरे पवित्र नाम की स्तुति की और एक स्वर से तेरी विजयी भुजा का गुणगान किया; 21क्योंकि प्रज्ञा ने गूँगों का मुख खोला और शिशुओं की जिह्वा को वाणी दी।

11 उसने एक पवित्र नबी के हाथ से उनकी योजना को सफल बनाया। 2उन्होंने निर्जन उजाड़खण्ड पार किया और दुर्गम स्थानों पर अपने तम्बू खड़े किये। 3उन्होंने अपने शत्रुओं का डट कर सामना किया और विरोधियों को मार भगाया।

जल द्वारा इस्राएलियों का कल्याण और मिस्रियों का दण्ड

4 जब लोगों को प्यास लगी, तो उन्होंने तेरी दुहाई दी और उन्हें एक खड़ी चट्टान से पानी मिला, एक कठोर पत्थर ने उनकी प्यास बुझायी; 5क्योंकि जिसके द्वारा उनके शत्रुओं को दण्ड दिया गया, उसी के द्वारा अभाव में उनका उपकार किया गया। 6-7शिशुओं के वध की राजाज्ञा के दण्डस्वरूप नील की सदा प्रवाहित धारा रक्त और कीच से दूषित हो गयी। उसके बदले तूने अपनी प्रजा का अप्रत्याशित रूप में भरपूर जल दिया। 8तूने उस समय की प्यास द्वारा अपनी प्रजा को यह दिखाया कि उनके विरोधियों को किस प्रकार का दण्ड दिया गया था। 9यद्यपि वे नरमी से सुधारे गये, फिर भी वे इस परीक्षा द्वारा अधर्मियों की घोर यन्त्रणा समझ गये, जब उन को क्रोध में दण्ड दिया गया था। 10तूने अपनी प्रजा के साथ पिता का-सा व्यवहार किया, जो उसकी परीक्षा लेता और चेतावनी देता है; किन्तु दूसरों के साथ तूने कठोर राजा की तरह जाँच करने के बाद उन्हें दण्ड दिया। 11वे तेरी प्रजा से दूर या निकट रहते, समान रूप से उत्पीड़ित किये जाते थे। 12वे बीती घटनाओं की याद करते हुए विलाप करते थे। उन्हें दोहरा दुःख भोगना पड़ा: 13क्योंकि जब उन्होंने सुना कि जिसके द्वारा उन्हें दण्ड दिया गया वही धर्मियों के लिए कल्याण का कारण बना, तो वे समझ गये कि उस में प्रभु का हाथ है। 14उन्होंने जिस व्यक्ति को पहले बाहर रखवाया था और उपहास करते हुए अस्वीकार किया था, उसने ही बाद में उन्हें आश्चर्यचकित किया; क्योंकि उनकी प्यास धर्मियों की प्यास-जैसी नहीं थी।

---

10 : 12 उत 32 ; 25-31; हो 12 : 4-5; 1 तिम 4 : 8 **10 : 14** उत 41 : 14 **10 : 16** नि 14 : 31 **10 : 20** नि 12 : 36; 15 : 1-18 **10: 21** मत 21 : 16; भज 8 : 3 **11 : 2** नि 16 : 1 **11 : 3** नि 17 : 10 **11 : 6** नि 7 : 19

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मिस्त्रियों के दण्ड में दयालुता का प्रदर्शन

15 देशवासियों के मूर्खतापूर्ण अधार्मिक
विचारों के दण्ड-स्वरूप, जिन से प्रेरित हो कर
वे भटक कर गूँगे साँपों और तुच्छ पशुओं की
पूजा करने लगे थे, तूने उनके यहाँ गूँगे पशुओं
को भारी संख्या में भेज दिया। 16इससे वे समझ
सके कि कोई मनुष्य जिसके द्वारा पाप करता
है, उसी के द्वारा उसे यन्त्रणा दी जाती है। 17हे
प्रभु! तेरी सर्वशक्तिमान् भुजा, जिसने निराकार
पदार्थ से संसार की सृष्टि की थी, उन पर
भालुओं या हिंसक सिंहों के झुण्ड या नये सृष्ट
किये हुए और क्रोध से भरे ऐसे अपूर्व पशु
छोड़ने में असमर्थ नहीं थी, 18जो या तो आग
उगलते, या गरजता हुआ धूआँ फैलाते या अपनी
आँखों से भयंकर चिनगारियाँ निकालते
थे—19ऐसे पशु, जिनके प्रहार से उनका विनाश
हो जाता, बल्कि जिन्हें देखने मात्र से आतंक
के मारे उनकी मृत्यु हो जाती। 20यद्यपि इन सब
के अभाव में वे तेरे दण्ड के शिकार बन कर या
तेरी शक्तिशाली आत्मा द्वारा छिन्न-भिन्न हो
कर तेरे श्वास मात्र द्वारा मारे जा सकते थे।
किन्तु तूने सब कुछ नाप-तौल और गणना के
अनुसार किया।

21 तेरी सर्वशक्तिमत्ता सदा तेरे पास रहती
है, कौन तेरे भुजबल के सामने टिक सकता है?
22प्रभु! तेरी दृष्टि में समस्त संसार तराजू के
पासंग के बराबर है अथवा प्रातःकाल भूमि पर
गिरने वाली ओस की बूँद की तरह। 23 तू सब
पर दया करता है, क्योंकि तू सर्वशक्तिमान् है।
तू मनुष्य के पापों को इसलिए अनदेखा करता
है कि वह पश्चात्ताप करे। 24तू सब प्राणियों से
प्रेम करता है और अपनी बनायी हुई किसी वस्तु
से घृणा नहीं करता। यदि तुझे किसी वस्तु से
घृणा हुई होती, तो तूने उसे नहीं बनाया होता।
25यदि तू उसे नहीं चाहता, तो कुछ भी अस्तित्व
में नहीं बना रहता; यदि तूने उसे नहीं बुलाया
होता, तो कुछ भी सुरक्षित नहीं रहता। 26महाप्रभु!
तू सारी सृष्टि की रक्षा करता है, क्योंकि वह तेरी
है। तू सब प्राणियों को प्यार करता है।

12 तेरा अविनाशी आत्मा सब में व्याप्त है।
2तू अपराधियों को थोड़ा-थोड़ा कर के
दण्ड देता है। तू उन्हें चेतावनी देता और उन्हें
उनके पापों का स्मरण दिलाता है, जिससे वे
बुराई से दूर रहें और तुझ पर भरोसा रखें।

कनानियों के दण्ड में भी नरमी

3 हे प्रभु! तूने अपनी पवित्र भूमि के पुराने
निवासियों के साथ ऐसा ही व्यवहार किया।
4उनके घृणित कार्यों के कारण तू उनसे अत्यन्त
अप्रसन्न हुआः उनका जादू-टोना, उनकी
निन्दनीय धर्मरीतियाँ, 5बच्चों की निर्मम हत्याएँ,
मनुष्य के मांस और रक्त की वे दावतें, जिन में
अँतड़ियाँ तक खायी जाती थीं, दीक्षितों के
रहस्यात्मक धर्मानुष्ठानों की रंगरलियाँ। 6तूने
असहाय बच्चों की हत्या करने वाले उन माता-
पिताओं को हमारे पूर्वजों के हाथों द्वारा मिटाना
चाहा, 7जिससे वह भूमि, जो तुझे सब से प्रिय
है, परमेश्वर के सुयोग्य पुत्र-पुत्रियों से बसायी
जाये। 8किंतु तूने उन पुराने निवासियों पर दया
की; क्योंकि वे निरे मनुष्य थेः तूने अपनी सेना
के अग्रदूतों के रूप में उनके पास बर्रे भेजे,
जिससे वे उनका धीरे-धीरे विनाश करें। 9तू उन
अधर्मियों को एक ही युद्ध में धर्मियों के हाथ
दे सकता था; या हिंसक जानवरों या एक ही
कठोर शब्द द्वारा उनका क्षणमात्र में सर्वनाश
कर सकता था, 10 किन्तु तूने धीरे-धीरे दण्ड
दे कर उन्हें पश्चात्ताप करने का अवसर
दिया—हालाँकि तू उनका विकृत स्वभाव और
जन्मजात दुष्टता जानता था और यह भी कि वे
अपने विचार कभी भी नहीं बदलेंगे। 11क्योंकि
यह जाति प्रारम्भ से ही अभिशप्त थी।

तूने इसलिए उनके पापों का दण्ड नहीं दिया
कि तू किसी से डरता था। 12 क्योंकि कौन तुझ
से कहेगा, "तूने यह क्या किया?" या कौन तेरे
निर्णय का विरोध करेगा? जिन राष्ट्रों की तूने

---

11 : 15 रोम 1 : 21 **11: 17** उत 1 :1 **11 : 21** 2 इत 20 : 6 **11: 22** यश 40 :15 **11 : 23** प्रव 18 : 13; 2 पत 3: 9; रोम 3 : 25 **12 : 1** भज 104: 29-30; अय्य 34 : 14-15 **12 : 3** 2 मक 1 : 7 **12 : 6** व्य 20 :17 **12:7** व्य 11 : 12 **12 :8** नि 23 :28 **12 : 3** व्य 32:39 12:20 रोम 9:22-24

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

स्वयं सृष्टि की है, उनके विनाश के कारण तुझ
पर कौन अभियोग लगायेगा? कौन अधर्मी
लोगों का पक्ष ले कर तुझे चुनौती देगा? 13तुझे
छोड़ कर और कोई ईश्वर नहीं। तू ही समस्त
सृष्टि की रक्षा करता है। यह आवश्यक नहीं कि
तू किसी को इसका प्रमाण दे कि तेरे निर्णय सही
हैं। 14ऐसा कोई राजा या निरंकुश शासक नहीं
है, जो तेरे द्वारा दण्डित लोगों के कारण तेरा
विरोध कर सकता है।
15 तू धार्मिक है और धार्मिकता से विश्व
का शासन करता है। तू इस बात को अपने
सामर्थ्य के अयोग्य समझता है कि निर्दोष को
दण्ड दिया जाये। 16तेरी धार्मिकता तेरे सामर्थ्य
पर आधारित है। तू सब का स्वामी है और
इसलिए सब पर दया करता है। 17तू तभी अपनी
सामर्थ्य प्रकट करता है, ज़ब तेरी सर्वशक्तिमत्ता
पर सन्देह किया जाता है। तू उसी को दण्ड देता
है, जो तेरी प्रभुता जान कर तुझे चुनौती देता है।
18तू शक्तिशाली महाप्रभु होते हुए भी
उदारतापूर्वक न्याय करता और बड़ी कृपा एवं
सहनशीलता से हम पर शासन करता है,
क्योंकि तू इच्छानुसार अपनी सामर्थ्य दिखा
सकता है।
19 इस प्रकार तूने अपनी प्रजा को यह शिक्षा
दी है कि धर्मी को अपने भाई-बहिनों के प्रति
सहृदय होना चाहिए और तूने अपने पुत्र-
पुत्रियों को यह भरोसा दिलाया कि पाप के बाद
तू उन्हें पश्चात्ताप का अवसर देगा। 20यदि तूने
अपनी संतति के शत्रुओं को, जिन्हें प्राणदण्ड
मिलने वाला था, इतनी सावधानी और नम्रता से
दण्डित किया और उन्हें अपनी दुष्टता से
विमुख होने का समय और अवसर दिया है,
21तो तूने अपने पुत्र-पुत्रियों का कहीं अधिक
सावधानी से न्याय किया है, जिनके पूर्वज़ों के
लिए तूने शपथ खा कर विधान निर्धारित किया
और उन से मंगलमय प्रतिज्ञाएँ की थीं। 22इस
प्रकार तूने हमें शिक्षा देने के लिए हमारे शत्रुओं
को नरमी से दण्ड* दिया, जिससे हम भी न्याय
करते समय तेरी दया का स्मरण करें और ज़ब
तू हमारा न्याय करता है, तो हम तेरी दया पर
भरोसा रखें।

मिस्रियों के लिए दया और दण्ड

23 जो लोग मूर्खतावश अधर्म का जीवन
बिता चुके थे, तूने उन्हें उनके अपने घृणित
कार्यों द्वारा दण्ड दिया। 24वे बहुत दूर तक भटक
गये थे। वे नासमझ बच्चों की तरह धोखा खा
कर सब से नीच और घृणित जानवरों को देवता
मानने लगे थे। 25इसलिए तूने उन्हें नासमझ
बच्चे मान कर दण्डस्वरूप हँसी के पात्र बना
दिया। 26उपहास के इस दण्ड द्वारा जिनका
सुधार नहीं हुआ, उन्हें परमेश्वर के योग्य दण्ड
दिया जायेगा। 27जिन प्राणियों को वे देवता
मानते थे, उनके द्वारा उन्हें दण्ड दिया गया और
उन्हें कष्ट एवं यातनाएँ सहनी पड़ीं। इस प्रकार
वे उस सच्चे ईश्वर को पहचान गये, जिसका
ज्ञान वे पहले अस्वीकार करते रहे। इस कारण
उन्हें कठोर-से-कठोर दण्ड दिया गया।

प्रकृति की पूजा

13 वे मनुष्य स्वभावतः कितने नासमझ थे,
जो ईश्वर को जानना नहीं चाहते थे।
दृश्य जगत् की अच्छी वस्तुएं देख कर भी वे
परम 'सत्' को नहीं जान सके। उनका ध्यान
उसके कार्यों पर था, पर वे सृष्टिकर्ता को
पहचानने में असमर्थ रहे! 2किन्तु उन्होंने अग्नि,
पवन, सूक्ष्म वायु, तारामण्डल, जल का तीव्र
प्रवाह अथवा आकाश के ज्योति-पिण्डों को
संसार का संचालन करने वाले देवता समझा।
3 यदि उन्होंने इन वस्तुओं के सौन्दर्य से
मोहित हो कर इन्हें देवता समझ लिया है, तो
वे यह जान जायें कि इन सब का स्वामी इन से
कितना श्रेष्ठ है; क्योंकि समस्त सौन्दर्य के
मूलस्रोत द्वारा इनकी सृष्टि हुई है। 4और यदि
वे इन वस्तुओं की शक्ति और क्रियाशीलता से
प्रभावित हुए, तो वे इन वस्तुओं से अनुमान
लगायें कि इनका निर्माता कितना अधिक
शक्तिशाली है 5क्योंकि सृष्ट वस्तुओं की महानता

* मूल में "दस हजार गुना दण्ड"।

12:21 व्य 7:8 **12:27** नि 8:8.28 **13:1** रोम 1:20-21 **13:3** प्रव 43:9

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
और सौन्दर्य के आधार पर इनके मूलकर्ता का
अनुमान लगाया जा सकता है।
6 किन्तु उन लोगों का दोष बड़ा नहीं है;
क्योंकि वे ईश्वर को ढूँढ़ते और उसे पाने के
इच्छुक थे, किन्तु वे भटक गये। 7वे ईश्वर के
कार्यों के बीच जीवन बिता कर उनकी छानबीन
करते और दृश्य वस्तुओं के सौन्दर्य के कारण
भ्रम में फँस जाते हैं।
8 फिर भी वे लोग क्षम्य नहीं हैं; 9क्योंकि
यदि वे ज्ञान में इतना आगे बढ़ गये थे कि विश्व
के विषय में चिन्तन कर सके, तो वे शीघ्र ही
इसके स्वामी को क्यों नहीं पहचान सके?

मूर्तिपूजा

10 अभागे हैं वे लोग, जिनकी आशा
निर्जीव वस्तुओं पर आधारित है! जिन्होंने
मनुष्य के हाथों की कृतियों को देवता माना है:
पशुओं की मूर्तियों को, सोने और चाँदी की
कलाकृतियों को या प्राचीन काल के गढ़े हुए
रद्दी पत्थर को।
11कोई बढ़ई उपयुक्त पेड़ चुन कर उसे
गिराता, चतुराई से उसकी छाल उतारता और
कौशल से उसे गढ़ कर कोई घरेलू समान बनाता
है। 12वह लकड़ी की काट-छाट से भोजन
पकाता और खा कर तृप्त हो जाता है। 13जो रद्दी
बच गयी, वह उस में से एक टेढ़ी गाँठदार
लकड़ी उठाता और फुरसत के समय चतुराई से
उसे काट-काट कर कोई रूप देता है। वह उस
से मनुष्य की मूर्ति बनाता 14या किसी तुच्छ पशु
की प्रतिमा। वह उस पर गेरू लगाता, लाल रंग
पोतता और उसका हर दोष छिपाता है। 15वह
उसके लिए एक उपयुक्त निवास बनाता, उसे
दीवार पर लगाता और कील से ठोंक देता है।
16वह सावधानी से उसे गिरने से बचाता है;
क्योंकि वह जानता है कि वह अपने को सँभाल
नहीं पायेगी; वह मात्र मूर्ति है और उसे सहारे
की आवश्यकता है।
17 यदि वह सम्पत्ति, विवाह या सन्तान के
लिए प्रार्थना करता है, तो उसे एक निर्जीव वस्तु
को सम्बोधित करने में लज्जा का अनुभव नहीं
होता। जो शक्तिहीन है, वह उस से स्वास्थ्य
माँगता है; 18जो मृत है, वह उस से जीवन
माँगता है; जो सर्वथा निस्सहाय है, वह उस से
सहायता चाहता है; जो चल नहीं सकता, वह
उस से शुभ यात्रा चाहता है। 19वह अपनी
जीविका, अपने परिश्रम और अपने हाथों की
सफलता के लिए एक ऐसी वस्तु से सहायता
माँगता है, जिसके हाथ नितान्त शक्तिहीन हैं।

14 कोई व्यक्ति समुद्री यात्रा करना चाहता
है और उसे प्रचण्ड लहरों को पार
करना है, तो वह ऐसी लकड़ी से प्रार्थना करता
है, जो उस जहाज़ से भी जर्जर है, जिस पर वह
सवार है; 2क्योंकि लाभ की लालसा से वह
जहाज बनवाया गया और वह एक कुशल
कारीगर द्वारा निर्मित हुआ है। 3किन्तु परम पिता
और विधाता! तू जहाज का संचालन करता है;
क्योंकि तूने समुद्र में उसका मार्ग प्रशस्त किया
और लहरों में उसके लिए एक सुरक्षित पथ
बनाया है। 4इस प्रकार तू दिखाता है कि तू हर
जोखिम से बचाने में समर्थ है, उस समय भी,
जब कोई अनाड़ी जहाज चलाता है। 5तू यह
नहीं चाहता कि तेरी प्रज्ञा की कृतियाँ व्यर्थ रहें।
इसलिए मनुष्य लकड़ी के छोटे टुकड़े को
अपने प्राण सौंपते और एक बेड़े पर लहरें पार
करते हुए सुरक्षित रहते हैं। 6प्राचीन काल में
भी, जब घमण्डी भीमकाय जाति का विनाश हो
रहा था, तो पृथ्वी की आशा ने एक जलयान की
शरण ली और तेरे हाथ से संचालित हो कर
उसने संसार के लिए एक नयी पीढ़ी का बीज
छोड़ा। 7धन्य है वह लकड़ी जिसके द्वारा
धार्मिकता प्रकट होती है*।
8 किन्तु हाथ से बनी हुई वस्तु अभिशप्त है,
और मूर्ति को बनाने वाला भी, क्योंकि उसने
उसे बनाया और मूर्ति नश्वर होते हुए भी ईश्वर
कहलाती है! 9परमेश्वर को ऐसे दुष्ट और

---

* अथवा, "जिसके द्वारा धर्म की रक्षा होती है" अथवा "न्याय होता है।"

13:6 प्रे 17:27 13:10 बारु 6:4.51; प्रे 17:29 13:12 यश 44:15-16 13:16 यिर पत्र 25-27 13:17 यिर 2:27 14:1 योन 1:5 14 : 6 उत 6-9; प्रव 16:7

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उसकी दुष्टता, दोनों से समान रूप से घृणा है।
[10]कृति को और कृतिकार को, दोनों को दण्ड
दिया जायेगा। [11]इसलिए राष्ट्रों की देवमूर्तियों
का भी महापरीक्षण होगा, क्योंकि वे परमेश्वर
की सृष्टि में घृणा के पात्र, मनुष्यों की आत्माओं
के लिए पाप का कारण और मूर्खों के पैरों के
लिए फन्दे बन गयी हैं।

देवमूर्तियों की उत्पत्ति

12 मूर्तियों की कल्पना से धर्मत्याग+
प्रारम्भ हुआ और उनके निर्माण ने जीवन को
भ्रष्ट कर दिया; [13]क्योंकि वे न तो आदि में
विद्यमान थीं और न सदा बनी रहेंगी। [14]मनुष्यों
की व्यर्थ कल्पना के कारण उनका पृथ्वी पर
आगमन हुआ था और इसलिए उनका
आकस्मिक अन्त निश्चित किया गया है।

15 अप्रत्याशित शोक से दुःखी हो कर
किसी पिता ने अपने उस बच्चे की मूर्ति
बनवायी, जिसकी असमय में मृत्यु हो गयी थी।
जो बच्चा मनुष्य के रूप में मर गया था, वह उसे
अब देवता का आदर देने और अपने अधीन
लोगों द्वारा गुह्य पूजा-पाठ कराने लगा।
[16]इसके बाद इस धर्मविरुद्ध प्रथा को बल
मिला, उसका विधिवत् पालन होने लगा और
अधिनायकों के आदेश पर गढ़ी मूर्तियों की
पूजा होती रही।

17 लोग राजाओं को अपने सामने आदर
नहीं दे सकते थे; क्योंकि वे उन से दूर रहा करते
थे। इसलिए उन्होंने दूरवर्ती आकृति का प्रतिरूप
बना कर समादृत राजा की प्रत्यक्ष मूर्ति की
रचना की, जिससे वे अपने उत्साह से अनुपस्थित
की चापलूसी कर सकें, मानो वह विद्यमान हो।
[18]जो लोग राजा को नहीं जानते थे, वे भी
कलाकार के अपूर्व उत्साह से प्रेरित हो कर मूर्ति
की पूजा में सम्मिलित हो जाते थे; [19]क्योंकि
कलाकार ने शासक का कृपापात्र बनने के
उद्देश्य से अपने कौशल से मूर्ति को वास्तविकता
से सुन्दर बनाया था। [20]भीड़ ने मूर्ति के सौन्दर्य
से मोहित हो कर उसे, जो पहले समादृत मनुष्य
था, अपनी आराधना का विषय बनाया। [21]इस
प्रकार यह प्रथा मानव जीवन के लिए फन्दा बन
गयी; क्योंकि मनुष्यों ने, चाहे अपने दुर्भाग्य से
या शासकों के दबाव से, पत्थर या लकड़ी के
टुकड़ों को वही नाम दिया, जो किसी दूसरे को
नहीं दिया जा सकता है।

मूर्तिपूजा का परिणाम

22 मनुष्य न केवल ईश्वर के ज्ञान के विषय
में भटक गये, बल्कि वे अपने अज्ञान के कारण
जो घोर संघर्ष का जीवन बिताते हैं, अपनी उस
दयनीय दशा को शान्ति का नाम देते हैं। [23]वे
अपने पुत्रों की बलि चढ़ाते , रहस्यानुष्ठान
मनाते और रंगरलियों के साथ दावतें उड़ाते हैं।
[24]वे न तो जीवन का आदर करते और न विवाह
की पवित्रता का। वे षड्यन्त्र रच कर एक दूसरे
का वध करते और व्यभिचार द्वारा एक दूसरे
को दुःख देते हैं। [25]चारों ओर अव्यवस्था है :
रक्त और वध, चोरी और छलकपट, प्रलोभन
और बेईमानी, दंगा और झूठी शपथ, [26]मूल्यों
का विघटन, परोपकार की कृतघ्नता, आत्माओं
का दूषण, अप्राकृतिक संभोग, विवाह का
व्यतिक्रम और लम्पटता; [27]क्योंकि अवक्तव्य
देवमूर्तियों की पूजा सभी बुराइयों का प्रारम्भ,
कारण और पराकाष्ठा है। [28]मूर्तिपूजक या तो
आनन्दातिरेक में प्रलाप करते, या झूठी भविष्य-
वाणी करते, या अवैध जीवन व्यतीत करते या
झूठी शपथ खाने में संकोच नहीं करते। [29]वे
निर्जीव देवमूर्तियों पर भरोसा रखते हैं, इसलिए
उन्हें अपनी झूठी शपथों के कारण किसी अनर्थ
की आशंका नहीं है। [30]किन्तु उन्हें दोहरा दण्ड
दिया जायेगा; क्योंकि उन्होंने देवमूर्तियों के
अनुयायी बनने के कारण ईश्वर के विषय में
भ्रान्तिपूर्ण विचार रखा और पवित्रता की उपेक्षा
करते हुए कपट से झूठी शपथ खायी। [31]शपथ
के समय जिनका नाम लिया जाता, उनकी
शक्ति नहीं, बल्कि न्याय ही पापियों को सदा

+ शब्दशः, "व्यभिचार"।

14 : 8 व्य 27 : 15 **14 : 11** नि 12 : 12 **14 : 16** दान 3 : 4-6 **14 : 19** प्रव 38 : 27 **14 : 23** लेव 18 : 21; 2 मक 6: 4 **14 : 29** बारू 6 : 35

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उनके अपराध का दण्ड देता है।

इस्राएल के विश्वास के कारण मूर्तिपूजा से उसकी रक्षा

15 हमारे परमेश्वर, तू सचमुच कृपालु और
सच्चा है। तू सहिष्णु है और दया से सब
कुछ का संचालन करता है। 2जब हम पाप
करते हैं, तो भी हम तेरे हैं; क्योंकि हम तेरी
सामर्थ्य जानते हैं। किन्तु हम पाप नहीं करेंगे;
क्योंकि हम तेरे कहलाते हैं। 3तेरा ज्ञान हमें पूर्ण
धार्मिकता तक पहुँचाता है और तेरी सामर्थ्य की
पहचान अमरत्व की जड़ है; 4क्योंकि हम न तो
मनुष्यों की कपटी कल्पना द्वारा भटके, न चित्रकारों
की व्यर्थ कृति द्वारा और न विविध रंगों से पुती
हुई मूर्ति द्वारा, 5जिसका दृश्य नासमझ व्यक्ति
में आशा उत्पन्न करता है: वह एक मृत मूर्ति की
निर्जीव आकृति पर मुग्ध होता है। 6जो मूर्तियाँ
बनाते हैं, जो उन पर मुग्ध होते और उनकी पूजा
करते हैं, वे उनकी बुराइयों के प्रेमी होते हैं और
इस प्रकार की व्यर्थ आशा के योग्य हैं।

7 कुम्हार परिश्रम से गीली मिट्टी गूँधता और
हमारे उपयोग के लिए सब प्रकार के पात्र
बनाता है। वह एक ही मिट्टी से समान रूप से
उच्च प्रयोजन के पात्र भी बनाता है और दूसरे
प्रयोजन के लिए भी। कुम्हार निश्चित करता है
कि कौन-सा पात्र किस काम आयेगा। 8वह
अनर्थ परिश्रम से उसी मिट्टी से एक निरर्थक
देवमूर्ति गढ़ता है, यद्यपि वह स्वयं कुछ समय
पहले मिट्टी से जन्मा और शीघ्र ही उस मिट्टी
में लौटने वाला है, जहाँ से वह लाया गया है,
जब उस से उसका जीव वापस माँगा गया
होगा। 9उसे कोई चिन्ता नहीं कि उसे मरना
होगा और उसका जीवन अल्पकालिक है;
बल्कि वह स्वर्ण और रजतकारों से होड़
लगाता, काँसा ढालने वालों का अनुकरण
करता और मिथ्या मूर्तियाँ बनाने पर गर्व करता
है। 10उसका हृदय राख है। उसकी आशा धूल
से अधिक व्यर्थ और उसका जीवन मिट्टी से
अधिक तुच्छ है; 11क्योंकि वह अपने निर्माता
को नहीं पहचानता, जिसने उस में सक्रिय
आत्मा को डाला और जीवनदायक प्राण फूँके।
12वह हमारे जीवन को लीला समझता है, हमारे
अस्तित्व को एक लाभकारी मेला! वह कहता
है कि सब कुछ से, बुराई से भी लाभ उठाना
चाहिए। 13वह किसी भी व्यक्ति से यह अच्छी
तरह जानता है कि वह पाप करता है, जब वह
मिट्टी से भंगुर पात्र और देवमूर्तियाँ दोनों ही
बनाता है।

इस्राएल के शत्रुओं की मूर्तिपूजा

14 वे लोग सब से अधिक बुद्धिहीन और
निर्दोष बच्चे से भी अधिक अभागे हैं, जो तेरी
प्रजा के शत्रु बन कर उस पर अत्याचार करते
थे। 15उन्होंने राष्ट्रों की सब मूर्तियों को देवता
माना है, जो अपनी आँखों से नहीं देखतीं, अपने
नथनों से साँस नहीं लेतीं, अपने कानों से नहीं
सुनतीं, अपने हाथ की उँगलियों से नहीं
टटोलतीं और अपने पैरों से नहीं चलतीं;
16क्योंकि एक मनुष्य ने उन्हें बनाया, एक
व्यक्ति ने उन्हें गढ़ा, जिसे उधार के रूप में प्राण
मिले थे। कोई भी मनुष्य अपने-जैसे कोई
जीवित देवता बनाने में असमर्थ है। 17मर्त्य होने
के कारण वह अपने अपवित्र हाथों से वही बना
सकता है, जो मृत है। वह अपनी आराध्य
वस्तुओं से श्रेष्ठ है; क्योंकि वह जीवित है,
किन्तु उन्हें कभी जीवन नहीं मिलेगा।

मिस्रियों और इस्रालियों की तुलना

18 वास्तव में, वे लोग सब से घृणित
जन्तुओं की पूजा करते हैं; यदि जड़ता की
तुलना की जाए, तो ये जन्तु अन्य पशुओं से भी
अधिक जड़ हैं। 19ये जन्तु सुन्दर भी नहीं हैं कि
कोई इन पर मोहित हो, जैसा कि अन्य पशुओं
के विषय में सम्भव है; क्योंकि इन्हें न तो ईश्वर
का समर्थन मिला और न उसका आशीर्वाद।

16 उन्हें इस प्रकार के जन्तुओं के माध्यम
से उचित दण्ड मिला और कीड़ों के
दलों द्वारा कष्ट दिया गया। 2उस दण्ड के विपरीत
तूने अपनी प्रजा का उपकार किया। तूने उसकी

---

15 : 1 नि 34 : 6 15 : 2 यश 63 : 19 15 : 3 यो 17 : 3 15 : 7 यश 45 : 9; यिर 18 : 3-4; रोम 9 : 21
15 : 8 लू 12 : 20 15 : 12 याक 4 : 13 15 : 14 भज 115 : 4-7; 135 : 15-17 16 : 2 नि 16 : 13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भूख शान्त करने के लिए उसे बटेरों का स्वादिष्ट
भोजन प्रदान किया। 3इसके विपरीत जब वे
लोग भोजन करने की इच्छा करते थे, तो उन्हें
अपने पर भेजे हुए घृणित जन्तु देख कर सब
प्रकार के भोजन से वितृष्णा हुई, जब कि तेरी
प्रजा को थोड़े समय के अभाव के बाद उत्तम
व्यंजनों का स्वाद मिला। 4उन अत्याचारियों को
एक विकट भुखमरी सहनी पड़ी, जब कि तेरी
प्रजा को दिखाया गया कि उसके शत्रुओं को
किस प्रकार की यन्त्रणा दी गयी थी।

टिड्डों की विपत्ति और पीतल का सर्प

5 जब तेरी प्रजा पर जन्तुओं का प्रकोप
भड़क उठा और वह कुटिल साँपों के दंश से
नष्ट हो रही थी, तो तेरा क्रोध बहुत समय तक
नहीं बना रहा। 6उसे चेतावनी के रूप में कुछ
समय तक डराया गया और तेरी व्यवस्था की
आज्ञाओं का स्मरण दिलाने के लिए उसे मुक्ति
का चिह्न* दिखाया गया। 7जो उस चिह्न की ओर
अभिमुख हुआ, उसकी उस दृश्य द्वारा नहीं,
बल्कि तेरे, सबों के मुक्तिदाता द्वारा रक्षा हुई।
8इस प्रकार तूने हमारे शत्रुओं को यह प्रमाण
दिया कि तू ही सब बुराई से मुक्त करता है। 9वे
लोग टिड्डों और डाँसों के काटने से मर गये
और उनके जीवन की रक्षा का कोई उपाय नहीं
था, क्योंकि वे उस प्रकार के जानवरों द्वारा दण्ड
पाने के योग्य थे। 10किन्तु विषैले साँपों के दाँत
भी तेरी प्रजा पर विजयी नहीं हुए, क्योंकि तेरी
दया ने आ कर उसे स्वस्थ किया। 11वह तेरी
आज्ञाओं का स्मरण दिलाने के लिए डँसी गयी,
किन्तु उसे शीघ्र ही बचाया गया। कहीं ऐसा न
हो कि वह उन आज्ञाओं को इस प्रकार भुला
दे कि वह तेरे उपकारों के प्रति उदासीन बन
जाये! 12क्योंकि उसे किसी जड़ी-बूटी या लेप
से स्वास्थ्य-लाभ नहीं हुआ, बल्कि प्रभु! तेरे
शब्द ने उसे स्वस्थ कर दिया, जो सब को स्वस्थ
कर सकता है। 13जीवन और मृत्यु पर तेरा ही
अधिकार है। तू अधोलोक के द्वारों तक
पहुंचाता और फिर ऊपर उठाता है। 14मनुष्य
अपनी दुष्टता के कारण वध कर सकता है,
किन्तु वह न तो छूटे हुए प्राणों को वापस लाने
में समर्थ है और न अधोलोक में बन्द आत्मा का
उद्धार करने में।

ओलों की विपत्ति और मन्ना-रोटी

15 कोई तेरे हाथ से भाग कर निकल नहीं
सकता। 16जो अधर्मी तुझे स्वीकार करना नहीं
चाहते थे, वे तेरे बाहुबल द्वारा मारे गये: वे
असाधारण वर्षा, ओलों और भीषण आँधी से
सताये और बिजली की आग से नष्ट किये गये।
17सब से आश्चर्यजनक बात यह थी कि पानी
में, जो सब कुछ बुझाता है, आग बल पकड़
रही थी; क्योंकि सृष्टि धर्मियों की ओर से युद्ध
करती है। 18ज्वाला कभी-कभी शान्त हो जाती
थी, जिससे दुष्टों के विनाश के लिए भेजे जन्तु
नहीं मरें और वे स्वयं यह देख कर समझें कि
परमेश्वर का न्याय उनका पीछा कर रहा है।
19कभी-कभी पानी के बीच में ही ज्वाला
धधक उठती थी और आग की स्वाभाविक
शक्ति से भी अधिक तेज जलती थी, जिससे
वह उस दूषित भूमि की फसल नष्ट कर दे।

20 इसके विपरीत, तूने अपनी प्रजा को
स्वर्गदूतों का भोजन खिलाया, बिना परिश्रम
किये उन्हें तेरी ओर से स्वर्ग से पकी-पकायी
रोटी+ मिली, जिस में हर प्रकार की मिठास थी
और जो सब को रुचिकर लगी। 21तेरा दिया
हुआ पदार्थ तेरी संतति के प्रति तेरा वात्सल्य
प्रकट करता था, फिर भी वह खाने वाले की
इच्छा के अनुसार अपने को हर एक की रुचि
के अनुकूल बनाता था। 22यह हिम और बर्फ
रूपी भोजन चूल्हे की आग में नहीं पिघलता
था, जिससे लोग जान जायें कि शत्रुओं की
फसल तो ओले में जलती और वर्षा में चमकती
बिजली से आग द्वारा नष्ट हो गयी थी; 23किन्तु
दूसरी ओर वही आग अपनी शक्ति भूल जाती
थी, जिससे धर्मियों को भोजन मिले।

* अर्थात् प्रसंग के अनुसार पीतल का सर्प। + अर्थात् "मन्ना रोटी"।

16 : 6 गण 21 : 8 **16 : 7** यो 3 : 14-15 **16 : 9** नि 8 : 24; 10 : 12 **16 : 11** प्रे 7 : 38 **16 : 15** व्य 32 : 39; तोब 13 : 2 **16 : 16** व्य 4 : 34 **16 : 20** नि 16 : 13-14; गण 11 : 7; भज 78 : 25

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

24 प्रकृति तेरे अधीन है, जिसने उसे बनाया
है, इसलिए वह अधर्मियों को दण्ड देने के लिए
अपनी शक्ति बढ़ाती और तुझ पर भरोसा रखने
वालों का कल्याण करने के लिए उसे मन्द कर
देती है। 25इस कारण वह अपने को बदलते हुए
तेरे उस वरदान की सेवा करती है, जो अभाव
में रहने वालों की इच्छा के अनुसार भोजन-
सम्बन्धी उनकी सब आवश्यकताओं को पूरा
करता था। 26प्रभु! इस प्रकार तेरे प्रिय पुत्र-
पुत्रियों को अनुभव हुआ कि मनुष्यों का पोषण
विभिन्न फलों द्वारा नहीं होता, बल्कि तेरा वचन
उन सब को सँभालता है, जो तुझ पर विश्वास
करते हैं। 27जो पदार्थ चूल्हे की आग द्वारा नष्ट
नहीं होता था, वह सूर्य की किरण के स्पर्श मात्र
से पिघल जाता था, 28जिससे लोग जान जायें
कि सूर्योदय से पहले तुझे धन्यवाद देना और
प्रभात के समय तेरे सामने उपस्थित होना
चाहिए। 29जो धन्यवाद नहीं देता, उसकी आशा
शीतकालीन पाले की तरह नष्ट हो जाती है और
अप्रयोज्य जलधारा की तरह बह जाती है।

अन्धकार की विपत्ति और अग्निमय स्तम्भ

17 तेरे निर्णय महान् और अनिर्वचनीय हैं;
इसलिए तेरी शिक्षा अस्वीकार करने
वाले भटक गये। 2अनाज्ञाकारी लोग एक पवित्र
राष्ट्र को अपने अधीन करना चाहते थे, किन्तु
वे अन्धकार के कैदी बने और लम्बी रात्रि की
बेड़ियों से बाँधे गये। वे शाश्वत विधाता द्वारा
बहिष्कृत हो कर अपने घरों में बन्द थे। 3वे अपने
गुप्त पापों के साथ विस्मृति के काले परदे के
पीछे छिप जाना चाहते थे, किन्तु वे भयभीत हो
कर तितर-बितर कर दिये गये और
मृगमरीचिकाओं से आतंकित किये गये; 4क्योंकि
वे जिस स्थान में छिप गये थे, वह उन्हें भय से
मुक्त नहीं करता था। डरावनी आवाजें चारों
ओर से आती थीं और उन्हें शोकाकुल आकृतियों
के भयानक दृश्य दिखाई देते थे।

5 धधकती आग भी उन्हें प्रकाश देने में
असमर्थ थी और नक्षत्रों की चमकती ज्योति को
इस अशुभ काली रात को प्रकाशमान करने का
साहस नहीं था। 6उन्हें केवल एक अग्निपुंज
दिखाई देता था, जो अपने आप प्रज्वलित हो
कर उन्हें भयभीत करता था। जब वह दृश्य
उनकी आँखों के सामने ओझल हो जाता था,
तो उन पर आंतक छाया रहता और वे उस दृश्य
को वास्तविकता से अधिक भयानक समझते
थे। 7इस प्रकार उनके जादू-टोने के तन्त्र-मन्त्र
व्यर्थ सिद्ध हुए और उस ज्ञान की कटु भर्त्सना
की गयी, जिसका उन्हें गर्व था। 8जो लोग दावा
करते थे कि हम त्रस्त आत्माओं को डर और
उलझन से मुक्त करने में समर्थ हैं, वे स्वयं एक
हास्यास्पद भय के शिकार बन गये। 9जब कोई
भीषण दृश्य उन्हें नहीं डराता, तो वे अपने पास
जन्तुओं के गुजरने और साँपों की फुफकार से
आतंकित हो जाते थे। 10वे डर के मारे मर रहे
थे और उस अन्धकार पर आँख गड़ाना नहीं
चाहते थे, जो उन्हें घेरे रहता था। 11दुष्टता तो
स्वभाव से भीरू है और अपने विरुद्ध साक्षी देती
है। जब अन्तःकरण उसे दोषी ठहराता है, तो
वह विपत्तियों को बढ़ा कर देखती है; 12क्योंकि
भय इसके सिवा और कुछ नहीं कि मनुष्य
विवेक द्वारा प्रस्तुत उपायों का परित्याग करता
है। 13मन में सहायता की जितनी कम आशा
है, यन्त्रणा के कारण का अज्ञान उतना ही
दुःखदायी है।

14 वे सब-के सब उस असह्य रात्रि में सो
गये, जो अशक्त अधोलोक की गहराइयों से
निकली थी। 15वे कभी भयानक दृश्यों से सताये
जाते और कभी निराशा से निष्प्राण पड़े रहते थे;
क्योंकि एक अप्रत्याशित भय उन को अचानक
घेरे रहता था। 16इस प्रकार प्रत्येक जहाँ गिर
पड़ा, वहाँ रोका गया, मानो वह बिना बेड़ियों
के कैद में बन्द हो : 17चाहे वह किसान हो या
चरवाहा या उजाड़स्थान के बेगार का मजदूर,
वह अचानक पकड़ा गया और अदम्य बलप्रयोग
का शिकार बना; क्योंकि सभी एक ही जंजीर
अर्थात् अन्धकार से जकड़े हुए थे। 18-19हर एक
आवाज उन्हें भयभीत और निष्प्राण बनाती
थी : चाहे वह हवा की सरसराहट हो, या घनी

16 : 26 व्य 8 : 3 17 : 11 रोम 2 : 15 17 : 16 नि 10 : 23 17 : 19 भज 53 : 5

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

झाड़ियों में चिड़ियों की चहचहाहट, या तेज
जलधाराओं की घरघराहट, या गिरने वाले
पत्थरों की गड़गड़ाहट, या कूदने वाले पशुओं
की अगोचर धपधप, या हिंसक जानवरों की
दहाड़, या पहाड़ों की गुफा की प्रतिध्वनि।
[20]वास्तव में सारी पृथ्वी तेज प्रकाश से आलोकित
थी और कार्यकलाप सर्वत्र निर्बाध चल रहा था।
[21]केवल उन पर ही एक गहरी रात छायी हुई
थी, जो उस अन्धकार की प्रतीक थी, जो उन्हें
समेट लेने वाली थी। किन्तु वे अन्धकार से भी
अधिक अपने आप के लिए भारस्वरूप थे।

18 इसके विपरीत, तेरे सन्तों पर एक महती
ज्योति चमक रही थी। उनके शत्रु, जो
उनकी आवाज तो सुनते, किन्तु उनका रूप नहीं
देखते थे, उन्हें धन्य समझते थे, क्योंकि उन्हें
वह विपत्ति नहीं झेलनी पड़ी। [2]अब वे अपनी
शत्रुता के लिए उन से क्षमा माँगते और धन्यवाद
देते थे, क्योंकि तेरे सन्त अपने अत्याचारियों को
हानि नहीं पहुँचाते थे। [3]हे प्रभु, तूने उन्हें अज्ञात
मार्ग के पथप्रदर्शक के रूप में और महिमामय
यात्रा में मन्द सूर्य के रूप में एक अग्निमय
स्तम्भ दिया। [4]उनके शत्रु प्रकाश से वंचित हो
कर अन्धकार के कैदी बनने के योग्य थे;
क्योंकि उन्होंने तेरे उन पुत्र-पुत्रियों को कैद में
बन्द किया, जिनके द्वारा धर्म-व्यवस्था की
अमर ज्योति संसार को प्राप्त होने वाली थी।

पास्का (फसह) की रात

5 जब उस देश के निवासियों ने तेरे सन्तों
के बाल-बच्चों का वध करने का निश्चय
किया था और जब एक शिशु* की रक्षा उसको
छोड़ दिये जाने के बाद भी की गयी, तो तूने
दण्ड के रूप में उनके बहुत-से शिशुओं को
छीन लिया और तेज जलधारा में उन सब का
एक साथ विनाश किया। [6]उस रात के विषय में
हमारे पूर्वजों को पहले से इसलिए बताया गया
था कि वे यह जान कर हिम्मत बाँधें कि हमने
किस प्रकार की शपथों पर विश्वास किया है।
[7]तेरी प्रजा धर्मियों की रक्षा तथा अपने शत्रुओं
के विनाश की प्रतीक्षा करती थी। [8]जिस साधन
से तूने हमारे शत्रुओं को दण्ड दिया, उसी के
द्वारा हमें अपने पास बुला कर गौरवान्वित किया
है।

9 धर्मियों की भक्त सन्तान ने छिप कर बलि
चढ़ायी और पूर्वजों के भजन गाने के बाद उसने
एकमत हो कर यह ईश्वरीय विधान स्वीकार
किया कि सन्त-जन साथ रह कर भलाई और
बुराई, दोनों समान रूप से भोगेंगे। [10]दूसरी ओर
शत्रुओं की कर्कश चीख और मारे हुए शिशुओं
के कारण सर्वत्र विलाप सुनाई पड़ा। [11]दास और
स्वामी, दोनों को एक ही दण्ड दिया गया। प्रजा
और राजा, दोनों को समान दुःख भोगना पड़ा।
[12]सब के पास एक ही प्रकार की मृत्यु के कारण
असंख्य शव थे; उनके दफन के लिए जीवितों
की संख्या पर्याप्त नहीं थी, क्योंकि क्षणमात्र में
उनकी सब से प्रिय सन्तान का विनाश हुआ था।
[13]वे अपने जादू-टोने के कारण अविश्वासी बने
रहे थे, किन्तु अपने पहलौठों का विनाश देख
कर उन्होंने स्वीकार किया कि यह प्रजा
परमेश्वर की सन्तान है।

14 जब सारी पृथ्वी पर शान्त सन्नाटा छाया
हुआ था और रात्रि तीव्र गति से आधी बीत चुकी
थी, [15-16]तब तेरा सर्वशक्तिमान् वचन, तेरे
अपरिवर्तनीय निर्णय की तलवार ले कर, स्वर्ग
में तेरे राजकीय सिंहासन पर से एक दुर्दम्य
योद्धा की तरह उस अभिशप्त देश में कूद पड़ा।
वह उठ खड़ा हुआ और उसने सर्वत्र मृत्यु का
आतंक फैला दिया। उसका सिर आकाश को
छू रहा था और उसके पैर पृथ्वी पर थे।
[17]भयानक दृश्यों ने देश-वासियों को भयभीत
किया और उन पर अचानक आतंक छा गया।
[18]वे इधर-उधर अधमरे गिर पड़े और उन्होंने
अपनी मृत्यु का कारण प्रकट किया। [19]क्योंकि
डरावने स्वप्नों ने उन्हें पहले से ही सूचित किया
था, जिससे अपनी विपत्ति का कारण जाने बिना

---

*अर्थात् मूसा

17 : 20 नि 10 : 22–23 **18 : 2** नि 11 : 8 **18 : 3** नि 13 : 21; भज 121 : 6 **18 : 7** नि 14 : 13 **18 : 13** नि 4 : 22; 7 : 11; 12 : 29–32 **18 : 16** नि 12 : 23; 1 इत 21 : 16; इब्र 4: 21 ; प्रक 19: 15

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
उनकी मृत्यु न हो।

निर्जन-प्रदेश में हारून द्वारा बीच-बचाव

20 धर्मियों की भी मृत्यु द्वारा परीक्षा की
गयी, जब निर्जन-प्रदेश में बहुतों की मृत्यु हो
गयी; किन्तु क्रोध बहुत समय तक नहीं बना
रहा। 21एक अनिन्द्य व्यक्ति ने शीघ्र ही उनकी
रक्षा की। वह अपनी धर्मसेवा के शस्त्रों से,
अर्थात् प्रार्थना और प्रायश्चित-बलि की धूप से
सुसज्जित था। उसने क्रोध का सामना किया,
विपत्ति को समाप्त किया और अपने को तेरा
सेवक प्रमाणित किया। 22वह शारीरिक बल या
शस्त्रों की सहायता से विपत्ति पर विजयी नहीं
हुआ, बल्कि उसने अपने शब्द द्वारा दण्ड देने
वाले को पराजित किया। उसने हमारे पूर्वजों
को शपथ खा कर दी हुई प्रतिज्ञाओं और उनके
लिए ठहराये हुए विधानों का स्मरण दिलाया।
23जब शवों के ढेर पड़े थे, तो उसने बीच में खड़े
हो कर आक्रमण रोक दिया और जीवितों की
ओर जाने वाले मार्ग अवरुद्ध किये; 24क्योंकि
जो अंगरखा + वह पहने था, उस पर समस्त
विश्व का प्रतीक था। मणियों की चार पंक्तियों
में पूर्वजों के महिमामय नाम अंकित थे और
उसके सिर के किरीट पर तेरी महिमा विद्यमान
थी। 25यह देख कर विनाशक डर कर हट गया;
इस प्रकार क्रोध का प्रदर्शन पर्याप्त था।

लाल समुद्र का पारगमन

19 किन्तु अधर्मियों पर निर्दय प्रकोप अन्त
तक छाया रहा, क्योंकि परमेश्वर पहले
से जानता था कि वे क्या करने वाले हैं। 2तेरे लोगों
को निकल जाने की अनुमति देने और उन्हें
जल्दी में विदा करने के बाद वे अपना मन बदल
कर उनका पीछा करने वाले थे। 3जब वे शोक
मना रहे थे और मृतकों की कबरों के पास
विलाप कर रहे थे, तो उन्होंने एक मूर्खतापूर्ण
निश्चय किया। उन्होंने जिन लोगों से चले जाने
के लिए निवेदन किया, वे उनका भगोड़ों की
तरह पीछा करने लगे। 4एक विवशता उन्हें
इसके लिए प्रेरित करती थी और बीती हुई
घटनाओं का उन्हें विस्मरण करा देती थी,
जिससे उनकी यन्त्रणाओं में जिस दण्ड की
कमी थी, वह उन्हें पूरा-पूरा दिया जाये। 5तेरी
प्रजा एक आश्चर्यजनक यात्रा का साहस करने
वाली थी, किन्तु उन्हें एक अपूर्व मृत्यु मिलने
वाली थी।

6 समस्त सृष्टि का, सभी तत्त्वों के साथ,
नवीकरण किया गया और वह तेरे आदेशों का
पालन करती थी, जिससे तेरे पुत्र-पुत्रियां
सुरक्षित रह सकें। 7बादल उनके शिविर पर
छाया करते थे। जहाँ पहले जलाशय था, वहाँ
सूखी भूमि, लाल समुद्र के पार जाने वाला
अबाध मार्ग और तूफानी लहरों में एक हरा
मैदान दिखाई पड़ा। 8इस प्रकार सारी प्रजा ने तेरे
अपूर्व कार्य देखने के बाद, तेरे हाथ का संरक्षण
पा कर, लाल समुद्र पार किया। 9प्रभु! वे तेरी,
अपने मुक्तिदाता की स्तुति करते हुए घोड़ों की
तरह विचरते और मेमनों की तरह उछलते-
कूदते थे। 10वे याद करते थे कि विदेश में उन
पर क्या बीती थी। उस समय मच्छड़ अन्य
प्राणियों से नहीं, बल्कि पृथ्वी से उत्पन्न हुए थे;
मेंढकों के झुण्ड जलचरों से नहीं, बल्कि नदी
से उत्पन्न हुए थे। 11बाद में उन्होंने पक्षियों का
नया प्रजनन देखा, जब वे लालसा से प्रेरित हो
कर स्वादिष्ट भोजन की माँग करते थे; 12क्योंकि
उन्हें सांत्वना देने के लिए बटेरें समुद्र से निकलीं।

13 पापी देश-वासियों को गरजती बिजलियों
की चेतावनी के बाद दण्ड दिया गया। उन्हें
अपनी दुष्टता का उचित दण्ड मिला, क्योंकि
उन्होंने परदेशियों से क्रूर बैर किया था। 14बीते
दिनों में ऐसा भी कुछ हुआ कि नगर-निवासियों
ने++ अपरिचित अतिथियों का स्वागत नहीं
किया; लेकिन इस देश के निवासियों ने उन
परदेशियों को दास बनाया, जिन्होंने उनका
उपकार किया था। 15नगर-निवासियों को अवश्य
न्याय के दिन दण्ड मिलेगा, क्योंकि उन्होंने

+ अथवा उरावरण का वस्त्र। ++ अर्थात् सदोम नगर के निवासी।

18 : 21 गण 16 : 47 **18 : 24** नि 28 : 15-39 **19 : 2** नि 14 : 5.8 **19 : 3** नि 12 : 31-33; 14: 5 **19 : 6** अय्य 37 : 12 **19 : 9** यश 63 : 13 **19 : 14** उत 19 : 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अपरिचित अतिथियों के साथ शत्रुतापूर्ण व्यवहार
किया था; 16किन्तु इन देश-वासियों ने विदेशियों
का धूमधाम से स्वागत किया और उन्हें समान
अधिकार देने के बाद ही उन्हें कठोर बेगार से
कष्ट दिया। 17जिस तरह वे नगर-निवासी
धर्मी++ के द्वार पर अन्धे बनाये गये थे, उसी
तरह ये देश-वासी घोर अन्धकार से घिरे हुए
थे, तब उन में प्रत्येक को टटोलते-टटोलते
अपना द्वार ढूँढ़ना पड़ा।

निष्कर्ष

18 घटनाओं पर विचार करने पर लगता है
कि जिस प्रकार वीणा के स्वरों के परिवर्तन से
लय बदलती है, किन्तु संगीत बना रहता है,
इसी प्रकार प्रकृति के तत्त्वों में भी परिवर्तन हुआ;
19क्योंकि थलचर+ जलचर बन गये और तैरने
वाले जन्तु भूमि पर चलने लगे। 20आग पानी
में बल पकड़ती थी और पानी आग बुझाने की
सामर्थ्य भूल जाता था। 21दूसरी ओर ज्वाला उन
नाशमान जन्तुओं का विनाश नहीं करती थी, जो
उस में आते-जाते थे, और वह दिव्य भोजन
नहीं गलाती थी, जो पाले की तरह आसानी से
गलता था। 22प्रभु! तूने अपनी प्रजा को सब
तरह से महान् और महिमामय बनाया और तू
हर क्षण और हर स्थान में सबकी सहायता
करता रहा।

++ अर्थात् लोट। * अर्थात् इस्राएली, जिन्होंने लाल समुद्र पार किया। अथवा मिस्री घुड़सवार जो समुद्र में डूब गये।
19 : 18 प्रव 40 : 21

प्रवक्ता ग्रंथ

(येशूअ बेन-सीराह का प्रवक्ता ग्रंथ)

पुस्तक-परिचय

बहुत समय तक यह माना जाता रहा था कि प्रस्तुत काव्य ग्रंथ का मूल इब्रानी पाठ अप्राप्य है, किन्तु ईसवी सन् 1952 में कुमरान की गुफाओं से इस ग्रंथ के दो-तिहाई अंश तक के पुराने इब्रानी हस्तलेख प्राप्त हुए। इस ग्रंथ के यूनानी अनुवाद का प्रचार आरंभिक मसीही कलीसियाओं में इतना अधिक था, कि इसका शीर्षक ''इक्लेसियस्तिकुस'' अर्थात् ''कलीसियाई ग्रंथ'' रखा गया था! इस ग्रंथ के ऊंचे नैतिक सिद्धान्तों और अत्यन्त व्यावहारिक परामर्शों के कारण यह नव-शिष्यों की शिक्षा-दीक्षा में प्रयुक्त होता था। इस ग्रंथ के शिक्षक अथवा दीक्षक को हिन्दी में ''प्रवक्ता'' कहना रूढ़ हो गया है। वास्तव में लेखक का नाम ज्ञात है : वह ''सीराह का पुत्र येशूअ'' कहलाता है। वह दूसरी शताब्दी ईसवी पूर्व के आरंभ में यरूशलेम का एक सामान्य यहूदी शास्त्री था। वह ''व्यवस्था-ग्रंथ, नबी-ग्रंथों तथा अन्य ग्रंथों'' के प्रति निष्ठावान था और उसने नीति-वचन की शैली में नई पीढ़ी के लिए आचार-संहिता का यह नया ग्रंथ लिखा। तरह-तरह की स्थितियों एवं व्यक्तियों (जैसे आदर्श मित्र, वैद्य, शास्त्री, महापुरोहित) का विवेचन करते हुए वह धर्म-शिक्षा में कर्त्तव्याकर्त्तव्य का सामाजिक पक्ष उभारकर सामने रखता है।

येशूअ बेन-सीराह के पौत्र ने अपने ज्ञानी पितामह की इस रचना का यूनानी रूपांतर तैयार किया, जैसे उसने स्वयं प्राक्कथन में स्पष्ट किया है। यह अनुवाद ईसवी पूर्व सन् 132 के आसपास मिस्र देश के सिकन्दरिया नगर में संपन्न हुआ। प्रवक्ता-ग्रंथ के मुख्य संस्करण में कुछ कम पद हैं; अतिरिक्त पद (जो यहां हिन्दी अनुवाद में कोष्टक में दिये गये हैं) मौलिक हो सकते हैं, उदाहरणार्थ 24 : 18, ''मैं मंजुल प्रेम की जननी हूँ; श्रद्धा, ज्ञान और पावन आशा की माँ हूँ!''

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

विषय-वस्तु की रूपरेखा

प्रज्ञा और जीवन	1 : 1 — 16 : 23
परमेश्वर और सृष्टि	16 : 24 — 23: 28
प्रज्ञा और व्यवस्था	24 : 1 — 32 : 13
विभिन्न परामर्श	32 : 14 — 42 : 14
परमेश्वर की महिला एवं प्रज्ञा	42 : 15 — 50 : 29
परिशिष्ट	51 : 1 — 30

प्राक्कथन

[धर्म-व्यवस्था और नबियों से तथा उनके बाद आनेवाले ग्रन्थकारों से भी हमें जो अनेक महत्वपूर्ण बातें प्राप्त हुई हैं, उनकी शिक्षा और प्रज्ञा के लिए इस्राएल प्रशंसनीय है। किन्त प्रज्ञा के प्रेमियों को न केवल ग्रंथों के अध्ययन द्वारा ज्ञान अर्जित करना चाहिए, बल्कि वचन और लेखन द्वारा बाहर के लोगों को भी लाभ पहुँचाना चाहिए। लम्बे समय तक व्यवस्था, नबी-ग्रंथों और हमारे पूर्वजों से प्राप्त अन्य ग्रन्थों का सावधानी से अध्ययन कर और उनका पर्याप्त ज्ञान प्राप्त कर मेरे पितामह येशूअ भी शिक्षा और प्रज्ञा पर कुछ लिखने के लिए प्रेरित हुए। उनकी यह इच्छा थी कि ज्ञान-प्रेमी इन विषयों का परिचय प्राप्त कर और अच्छी तरह से व्यवस्था के अनुसार जीवन बितायें।

अब आप लोगों से मेरी प्रार्थना है कि आप सद्भाव एवं बड़े ध्यान के साथ इस रचना का पाठ करें और यदि हम अपने कठिन परिश्रम के बावजूद कहीं-कहीं सही अनुवाद न कर पाये हों, तो हम उसके लिए क्षमा चाहते हैं। सच पूछिए तो मूल इब्रानी भाषा में जो कुछ लिखा गया है, वह किसी अन्य भाषा के अनुवाद में उतना प्रभावशाली नहीं रह जाता। यह बात न केवल इस पर, बल्कि व्यवस्था, नबियों तथा अन्य ग्रन्थों के विषय में भी लागू होती है—रूपान्तर और मूल भाषा में पर्याप्त अन्तर पड़ जाता है।

मैं राजा यूएरगेतेस के अड़तीसवें वर्ष * में मिस्र देश में आया। वहाँ रहते हुए मुझे प्रस्तुत महत्त्वपूर्ण शिक्षा-ग्रन्थ की एक प्रति प्राप्त हुई। अत: मैंने मनोयोग और परिश्रम से इसका अनुवाद करना अपना कर्तव्य समझा। मैंने विदेश में रहने वाले ज्ञान-प्रेमियों के लिए, जो व्यवस्था के अनुसार जीवन बिताना चाहते हैं, बहुत समय तक जागरण और ज्ञान की साधना से यह ग्रन्थ पूरा और सम्पादित करने में कोई कसर उठा नहीं रखी।]

प्रज्ञा का रहस्य

1 समस्त प्रज्ञा प्रभु से उत्पन्न हुई है,
वह सदा उसके पास विद्यमान है।
2समुद्रतट के बालू-कण, वर्षा की बूँदें
और शाश्वत काल के दिन कौन गिन सकता है?
3आकाश की ऊँचाई, पृथ्वी का विस्तार
और महागर्त्त की गहराई कौन नाप सकता है?
किसने कभी प्रज्ञा का अनुसंधान किया है?
4सब से पहले प्रज्ञा की सृष्टि हुई थी।
विवेकपूर्ण बुद्धि अनादिकाल से बनी हुई है।
5[प्रज्ञा का स्रोत है—उच्च स्वर्ग में परमेश्वर का शब्द।
प्रज्ञा के मार्ग हैं—शाश्वत आदेश।]
6प्रज्ञा की जड़ तक कौन पहुंचा है?
उसकी बारीकियाँ कौन समझता है?
7[प्रज्ञा की शिक्षा किस को मिली है?
उसके विविध मार्ग कौन जानता है?]

---

* अर्थात् 132 ई० पू०।

1 : 1 नीति 2 : 6; 8 : 22; प्रज्ञा 8 : 21; रोम 11 : 33 **1 : 2** भज 139 : 18 **1 : 3** नीति 30 : 4; बारू 3 : 29 **1 : 4** नीति 3 : 19 **1 : 6** प्रज्ञा 9 : 13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
8परमश्रद्धेय प्रभु ही प्रज्ञासम्पन्न है,
वह अपने सिंहासन पर विराजमान है।
9प्रभु ने ही प्रज्ञा की सृष्टि की है।
उसने उसका अवलोकन एवं मूल्यांकन किया
और उसे अपने सभी कार्यों में सन्निविष्ट किया है।
10उसने उसे अपनी उदारता के अनुरूप
सब प्राणियों और अपने उन भक्तों को
प्रचुर मात्रा में प्रदान किया है,
जो उससे प्रेम करते हैं।
[क्योंकि प्रभु के प्रति प्रेम सम्मान्य प्रज्ञा है;
इसका वरदान प्रभु का अनुभव करने वालों को मिला है,
जिससे वे उसके दर्शन कर सकें।]

प्रभु पर श्रद्धा

11 प्रभु पर श्रद्धा करने में महिमा और गौरव है,
उसमें आनन्द है और उल्लास का मुकुट प्राप्त होता है।
12प्रभु पर श्रद्धा हृदय में स्फूर्ति भरती
और आनन्द, प्रसन्नता एव दीर्घ जीवन प्रदान करती है।
[प्रभु पर श्रद्धा करना प्रभु के वरदान से ही सम्भव है;
वही प्रेम का मार्ग भी प्रशस्त करता है।]
13जो प्रभु पर श्रद्धा रखता है, उसका अन्त में भला होगा,
वह अपनी मृत्यु के दिन धन्य माना जायेगा।
14प्रज्ञा का मूल स्रोत प्रभु पर श्रद्धा है।
वह भक्तों को जन्म से प्राप्त होती है।
15उसने अपने लिए मनुष्यों के बीच
सदा के लिए अपना निवास बनाया
और वह उनके वंशजों के प्रति ईमानदार रहेगी।
16प्रभु पर श्रद्धा प्रज्ञा की परिपूर्णता है :
वह अपने फलों से मनुष्यों को तृप्त करती है।
17वह उनके घर बहुमूल्य वस्तुओं से
और उनके बखार उपज से भर देती है।
18प्रभु पर श्रद्धा प्रज्ञा का मुकुट है,
उसके द्वारा शान्ति और स्वास्थ्य की वृद्धि होती है।
[श्रद्धा एवं प्रज्ञा, ये दोनों शान्ति के निमित्त परमेश्वर के वरदान हैं;
उसके भक्तों को इनसे पूर्ण गौरव प्राप्त होता है।]
19* प्रज्ञा वर्षा की तरह ज्ञान और विवेक बरसाती है :
जो उससे सम्पन्न हैं, वह उनके यश की वृद्धि करती है।
20प्रभु पर श्रद्धा प्रज्ञा की जड़ है,
उसकी शाखाएँ लम्बी आयु हैं।
21[प्रभु पर श्रद्धा पाप हरती
और जब तक वह विद्यमान है, प्रभु का क्रोध दूर करती है।]

धैर्य

22 जो अकारण क्रोध करता है, वह दोषी है;
क्रोध का आवेग उसके विनाश का कारण बनता है।
23धैर्यवान् यथासमय तक धैर्य रखता है,
और बाद में वह प्रसन्नता से खिल उठता है।
24वह यथासमय तक अपने विचार प्रकट नहीं करता,
बाद में बहुत-से लोग उसके विवेक की चर्चा करते हैं।

प्रज्ञा और निष्कपटता

25 प्रज्ञा के भण्डार में ज्ञानपूर्ण सूक्तियां हैं,
किन्तु पापी भक्ति से घृणा करता है।
26यदि तुम प्रज्ञा चाहते हो, तो आज्ञाओं का पालन करो।
और प्रभु उसे तुम को प्रदान करेगा।
27प्रभु की श्रद्धा प्रज्ञा और अनुशासन में निहित है।

---

* कुछ प्रतियों में यह पद भी मिलता है : ''प्रभु ने प्रज्ञा को देखा और उसे नाप-तौल के बांट दिया।''

1 : 9 योए 3 : 1-2; प्रे 2 : 17 **1 : 10** सभ 2 : 26 **1 : 13** भज 37 : 37 **1 : 14** भज 111 : 10 **1 : 20** नीति 9 : 11

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
निष्ठा और विनम्रता प्रभु को प्रिय है।
28प्रभु पर श्रद्धा का विरोध नहीं करो,
कपटपूर्ण हृदय से उसके पास नहीं जाओ।
29मनुष्यों के सामने पाखण्डी मत बनो,
अपने शब्दों पर नियन्त्रण रखो।
30घमण्डी मत बनो; नहीं तो तुम्हारा पतन होगा
और तुम स्वयं पर कलंक लगाओगे।
प्रभु तुम्हारे गुप्त कार्य प्रकट करेगा
और तुम को भरी सभा में नीचा दिखायेगा;
क्योंकि तुम में प्रभु के प्रति श्रद्धा नहीं है
और तुम्हारा हृदय कपट से भरा है।

परमेश्वर के प्रति कर्तव्य

2 शिष्य![+] यदि तुम प्रभु की सेवा करना चाहते हो,
तो विपत्ति[*] का सामना करने को तैयार हो जाओ।
2तुम्हारा हृदय निष्कपट हो, तुम दृढ़संकल्प बने रहो,
विपत्ति के समय तुम्हारा जी नहीं घबराये।
3परमेश्वर से लिपटे रहो, उसे मत त्यागो,
जिससे अन्त में तुम्हारा कल्याण हो।
4जो कुछ तुम पर बीतेगा, उसे स्वीकार करो
तथा दु:ख-अपमान की बदलती परिस्थितियों में धीर बने रहो;
5क्योंकि अग्नि में स्वर्ण की परख होती है
और दीन-हीनता की घरिया में परमेश्वर के कृपापात्रों की।
[इसलिए तुम बीमारी और गरीबी में प्रभु पर आस्था रखो।]
6उस पर भरोसा रखो और वह तुम्हारी सहायता करेगा।
सन्मार्ग पर आगे बढ़ते जाओ और प्रभु पर आशा की दृष्टि लगाये रखो।

7 प्रभु के श्रद्धालु भक्तो! उसकी दया पर भरोसा रखो।
मार्ग से मत भटको; कहीं पतित न हो जाओ।
8प्रभु के श्रद्धालु भक्तो! उस पर भरोसा रखो
और तुम्हें निश्चय ही पुरस्कार मिलेगा।
9प्रभु के श्रद्धालु भक्तो! उसके उपकारों की,
चिरस्थायी आनन्द और दया की प्रतीक्षा करो।
[उसका प्रतिदान तो आनन्द का शाश्वत वरदान है!]
10पिछली पीढ़ियों पर विचार कर देखो:
किसने प्रभु पर भरोसा रखा और वह निराश हुआ?
किसने प्रभु पर श्रद्धा रखी और वह परित्यक्त हुआ?
किसने प्रभु से प्रार्थना की और वह उपेक्षित रहा?
11क्योंकि प्रभु अनुकम्पा और दया से परिपूर्ण है।
वह पापों को क्षमा करता और संकट के दिन हमें बचाता है।

12 धिक्कार है कायर हृदय वालों को, निष्क्रिय हाथों और उस पापी को, जो दो मार्गों पर चलता है।
13धिक्कार है निरुत्साह हृदय को, जो भरोसा नहीं रखता। इसलिए उसकी रक्षा नहीं की जायेगी!
14धिक्कार है तुम लोगों को, जो धैर्य खो चुके हो!
तुम क्या करोगे, जब प्रभु लेखा लेने आयेगा?

15जो प्रभु पर श्रद्धा रखते हैं,
वे उसकी आज्ञाओं की अवज्ञा नहीं करते।
जो उस से प्रेम रखते हैं,
वे उसके मार्गों पर चलते हैं।
16जो प्रभु पर श्रद्धा रखते हैं,
वे वही करते हैं, जो उसे प्रिय है।
जो उस से प्रेम रखते हैं,
उसकी व्यवस्था उनका सम्बल है।
17जो प्रभु पर श्रद्धा रखते हैं,
उनका हृदय प्रस्तुत रहता है।

+ शब्दश: 'पुत्र'। * अथवा, 'परीक्षा'।

1 : 28 याक 1 : 6-8 **1 : 30** मत 23 : 12 **2 : 1** प्रज्ञा 3 : 6; याक 1 : 2-4 **2 : 6** भज 37 : 35; नीति 3 : 5-6 **2 : 10** भज 37 : 25; 22 : 4-5 **2 : 11** नि 34 : 6 **2 : 16** भज 119 : 97.103; यो 14 : 15; 1 यो 5 : 3

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वे उसके सामने अपनी आत्मा को विनम्र
बना लेते हैं।*
18वे कहते हैं, "हम मनुष्यों के हाथों नहीं,
बल्कि प्रभु के हाथ पड़ जायेंगे;
क्योंकि वह जितना महान् है,
उतना ही दयालु भी।"

माता-पिता के प्रति कर्तव्य

3 बच्चो! पिता की शिक्षा ध्यान से सुनो;
उसका पालन करने में तुम्हारा कल्याण है।
2प्रभु का आदेश है कि सन्तान अपने पिता का
आदर करे।
उसने माता को अपने बच्चों पर अधिकार
दिया है।
3जो अपने पिता पर श्रद्धा रखता है,
वह अपने पापों का प्रायश्चित करता है
4और जो अपनी माता का आदर करता है,
वह मानो धन का संचय करता है।
5जो अपने पिता का सम्मान करता है,
उसे अपनी ही सन्तान से सुख मिलेगा
और जब वह प्रार्थना करता है,
तब परमेश्वर उसकी प्रार्थना सुनता है।
6जो अपने पिता का आदर करता है,
वह दीर्घायु होगा।
जो प्रभु का आज्ञाकारी है,
वह अपनी माता को सुख+ देता है।
7 [जो प्रभु पर श्रद्धा रखता है,
वह अपने माता-पिता का आदर करता]
और उनकी सेवा वैसे ही करता है,
जैसे सेवक अपने-अपने स्वामी की सेवा
करते हैं।
8वचन और कर्म से अपने पिता का आदर करो,
जिससे तुम को उसका आशीर्वाद प्राप्त हो।
9पिता का आशीर्वाद उसके बच्चों का घर सुदृढ़
बनाता है,
किन्तु माता का अभिशाप उसकी नींव
उखाड़ देता है।
10अपने पिता के अपमान पर गौरव मत करो,
उसका अपयश तुम को शोभा नहीं देता।
11पिता का सम्मान मनुष्य का गौरव है
और माता का अपयश बच्चों के लिए
लज्जास्पद है।

12 शिष्य! अपने वृद्ध पिता की सहायता करो।
जब तक वह जीता है, उसे उदास मत करो।
13यदि उसका मन दुर्बल हो जाए, तो उस से
सहानुभूति रखो।
अपने स्वास्थ्य की उमंग में उसका अनादर
मत करो;
14क्योंकि पिता की सेवा-सुश्रूषा नहीं भुलायी
जायेगी,
वह तुम्हारे पापों का प्रायश्चित
और तुम्हारी धार्मिकता समझी जायेगी।
15विपत्ति के दिन उसका स्मरण किया जाएगा,
और तुम्हारे पाप धूप में पाले की तरह गल
जायेंगे।
16जो अपने पिता का त्याग करता,
वह ईश-निन्दक के बराबर है।
जो अपनी माता को दुःख देता है,
वह प्रभु द्वारा अभिशिप्त है।

विनम्रता

17 शिष्य! नम्रता से अपना कार्य करो
और लोग तुम्हें दानशील व्यक्ति से भी
अधिक प्यार करेंगे।
18तुम जितने अधिक बड़े हो, उतने ही अधिक
नम्र बनो।
इस प्रकार तुम प्रभु के कृपापात्र बन जाओगे।
19[बहुत लोग घमण्डी और गर्वीले हैं,
किन्तु प्रभु दीनों पर अपने रहस्य प्रकट करता
है।]
20प्रभु की सामर्थ्य अत्यधिक महान् है,
किन्तु वह विनम्र लोगों की श्रद्धा-भक्ति
स्वीकार करता है।

---

* कुछ प्राचीन अनुवादों में यह पाठ भी मिलता है: "जो प्रभु पर श्रद्धा रखते हैं, वे उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं, और उसके आगमन के दिन तक धैर्य रखेंगे।" + पाठांतर, 'आदर'।

2 : 18 2 शम 24 : 14 **3 : 2-3** नि 20 : 12 **3 : 7** इफ 6 : 1 **3 : 8** मत 21 : 28-31 **3 : 9** उत 27 : 27-29 **3 : 11** नीति 17 : 6 **3 : 16** नि 21 : 17

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
21 न तो अपनी बुद्धि के परे की बातें समझने
का प्रयत्न करो
और न गूढ़ रहस्यों का अनुसन्धान करो।
22 जो आदेश तुम्हें मिले हैं, उन पर विचार करो
गुप्त रहस्यों को अपनी आंखों से देखने की
तुम्हें कोई आवश्यकता नहीं।
23 जो कार्य तुम्हारी क्षमता से परे हैं, उनकी फेर
में मत पड़ो।
जो कुछ तुम्हें बताया गया है, वही तुम्हारे
लिए बहुत है—
वह तो मानव बुद्धि से परे है।
24 बहुत लोग अपने-अपने विचारों के कारण
भटक गये
और निराधार कल्पनाओं ने उनकी बुद्धि भ्रष्ट
कर दी।
25 [यदि तुम्हें आँखें नहीं हैं, तो प्रकाश से
वंचित रहोगे;
यदि तुम्हें ज्ञान नहीं, तो तुम में प्रज्ञा का
अभाव होगा।]

घमण्ड

26 कठोर हृदय अन्त में बुरे दिन देखेगा।
जो जोखिम से प्यार करता है, वह उस में नष्ट
हो जायेगा।
27 कठोर हृदय बहुत कष्ट पायेगा।
पापी पाप-पर-पाप करता रहेगा।
28 अहंकारी के रोग का कोई इलाज नहीं है,
क्योंकि बुराई ने उस में जड़ पकड़ ली है।
29 समझदार मनुष्य दृष्टान्तों पर विचार करता
है।
जो कान लगा कर सुनता है, वह प्रज्ञा की
कामना करता है।

दानशीलता

30 पानी प्रज्वलित आग बुझाता है,
और भिक्षादान पाप मिटाता है।
31 जो परोपकार के बदले में परोपकार करता,
वह भविष्य का ध्यान रखता है।
गिरने पर उसे सहारा मिलेगा।

4 शिष्य! दरिद्र की जीविका मत छीनो
और प्रतीक्षा करने वाली आंखों को निराश
मत करो।
2 भूखे को मत सताओ
और अभावग्रस्त व्यक्ति को मत चिढ़ाओ।
3 कटु हृदय को और अधिक उत्पीड़ित मत करो
और मांगनेवाले को देने में विलम्ब मत करो।
4 संकट में पड़े की याचना मत ठुकराओ,
कंगाल से अपना मुंह मत मोड़ो।
5 गरीब से आंखें मत फेरो,
उसे अवसर मत दो कि वह तुम को अभिशाप
दे।
6 यदि वह अपनी आत्मा की कटुता के कारण
तुम को अभिशाप दे,
तो उसका सृष्टिकर्ता उसकी प्रार्थना सुनेगा।
7 सभा में मिलनसार बनो
और बड़े को प्रणाम करो।
8 कंगाल की बात पर कान दो
और सौजन्य से उसके नमस्कार का उत्तर
दो।
9 अत्याचारी के हाथों से उत्पीड़ित को छुड़ाओ
और न्याय करने में आगा-पीछा मत करो।
10 अनाथों के दयालु पिता बनो
और पति की तरह उनकी विधवा माता के
सहायक बनो।
तब तुम मानो सर्वोच्च प्रभु की सन्तान बनोगे
और वह तुम को माता से भी अधिक प्यार
करेगा।

शिक्षा देने वाली प्रज्ञा

11 प्रज्ञा अपनी प्रजा को महान् बनाती है।
जो उसकी खोज में लगे रहते हैं,
वह उनकी देखरेख करती है।
12 जो उससे प्रेम करता है, वह जीवन से ही प्रेम
करता है।
जो प्रातःकाल से ही उसे ढूंढ़ने लगते हैं, वे
आनन्दित होंगे।
13 जो उसे पकड़े रहता है, वह महिमा का

---

3 : 17 मत 20 : 26-28; फिल 2 : 3-8 **3 : 26** नीति 28 : 14 **3 : 30** भज 41 : 1-2; तोब 12 : 9 **4 : 1** लेव 9 : 13 **4 : 4** तोब 4 : 7 **4 : 6** व्य 15 : 9; अय्य 34 : 28 **4 : 9** यश 1 : 17; यिर 22 : 3 **4 : 10** लू 6 : 35; यो 14 : 21 **4 : 11** दान 4 : 27

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भागीदार होगा।
वह जहाँ कहीं जायेगा, प्रभु उसे वहाँ आशिष
प्रदान करेगा।
14जो उसकी सेवा करते हैं, वे परमपावन प्रभु
की धर्मसेवा करते हैं।
जो उससे प्रेम करते हैं, प्रभु उन से प्रेम करता
है।
15जो उसकी बात मानता है, वह लोगों के प्रति
न्याय करता है।
जो उसके मार्ग पर चलता है, उसका निवास
सुरक्षित है।
16जो उस पर भरोसा रखता है, वही उसे प्राप्त
करेगा
और उसका वंश भी उसका अधिकारी
होगा।
17प्रारम्भ में प्रज्ञा मानव को टेढ़े-मेढ़े रास्ते पर
ले जाती है
और उसकी परीक्षा लेती है।
वह उस में भय तथा संकोच उत्पन्न करती।
वह अपने अनुशासन से उसे उत्पीड़ित करती
और तब तक अपने नियमों से उसकी परीक्षा
करती रहती है,
जब तक वह उस पर पूर्णतया विश्वास नहीं
करती।
18कभी वह सीधे ही मानव के पास आती है
और उसे आनन्दित कर देती है।
तब वह उस पर अपने रहस्य प्रकट करती है*।
19किन्तु यदि मानव भटक जाता है,
तो प्रज्ञा उसका त्याग करती
और उसे विनाश के मार्ग पर आगे बढ़ने के
लिए छोड़ देती है।

निर्भीक धार्मिकता

20 परिस्थिति को देखकर आचरण करो,
अपने को बुराई से दूर रखो;
तब तुम्हें अपने पर लज्जा नहीं होगी;
21क्योंकि एक प्रकार की लज्जा पाप की ओर
ले जाती
और दूसरे प्रकार की लज्जा महिमा और
सम्मान की ओर।
22पक्षपात के कारण अपनी हानि मत करो,
अथवा खुशामदी के कारण अपना नाश मत
करो।
23अवसर आने पर बोलने में संकोच मत करो
[और अपनी प्रज्ञा को मत छिपाओ];
24क्योंकि प्रज्ञा भाषा में
और ज्ञानार्जन मुंह से निकले शब्दों से प्रकट
होता है।
25सत्य का विरोध मत करो
और नम्रता से अपना अज्ञान स्वीकार करो।
26अपने पाप स्वीकार करने में संकोच मत
करो।
नदी के प्रवाह का सामना मत करो।
27किसी मूर्ख के सामने अपने को नीचा मत
समझो,
न किसी शक्तिशाली के प्रति पक्षपात करो।
28मृत्यु तक सत्य के लिए संघर्ष करो
और प्रभु-परमेश्वर तुम्हारे लिए युद्ध करेगा।
29जब तुम करनी में आलसी और निष्क्रिय हो,
तो कथनी में धृष्ट मत बनो!
30अपने घरवालों पर मनमाने ढंग से अत्याचार
कर
अपने घर में सिंह मत बनो।
31लेने के लिए अपने हाथ मत पसारो
और देने के लिए उसे बन्द मत रखो।

धनवान् और पापी की दुराशा

5 अपनी धन-सम्पत्ति पर भरोसा मत रखो
और यह मत कहो, ''मुझे किसी बात की
कमी नहीं।''
2प्रबल नैसर्गिक प्रवृत्तियों से हार कर
अपने हृदय की वासनाओं को पूरा मत करो।
3यह मत कहो, ''मुझ पर किसी का अधिकार
नहीं'',
क्योंकि प्रभु तुम्हें अवश्य दण्ड देगा।
4यह मत कहो, ''मैंने पाप किया, तो मेरा क्या

---

* कुछ प्राचीन अनुवादों में यह पद भी मिलता है : ''वह उसे ज्ञान और न्याय का विवेक प्रदान करती है।''

4 : 12 नीति 8 : 17 **4 : 15** प्रज्ञा 3 : 8 **4 : 18** भज 25 : 14; दान 2 : 21-22 **4 : 26** नीति 28 : 13; याक 5 : 16 **4 : 31** प्रे 20 : 35 **5 : 1** भज 62 : 10; लू 12 : 15-21 **5 : 2** नीति 3 : 5

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
बिगड़ा?''
क्योंकि प्रभु बड़ा सहनशील है।
5सहज क्षमा पाने की आशा में
पाप-पर-पाप मत करते जाओ।
6यह मत कहो, "प्रभु की दया असीम है।
वह मेरे असंख्य पाप क्षमा करेगा";
क्योंकि दया के अतिरिक्त उस में क्रोध भी है
और उसका कोप पापियों पर भड़क उठता है।
7प्रभु के पास शीघ्र ही लौट आओ,
दिन-पर-दिन उस में विलम्ब मत करो;
क्योंकि प्रभु का क्रोध अचानक भड़क उठेगा;
दण्ड के दिन तुम्हारा विनाश होगा।
8अधर्म की कमाई पर भरोसा मत रखो,
विपत्ति के दिन इस से तुम्हें कोई लाभ नहीं होगा।

जिह्वा पर नियंत्रण

9 हर हवा में मत ओसाओ,
हर मार्ग पर मत चलो;
ऐसा दोमुँहा पापी करता है।
10अपनी धारणा पर दृढ़ रहो
और एक बार वचन देने पर अपनी प्रतिज्ञा पूरी करो।
11दूसरों की बात सुनने के लिए तत्पर रहो
और सोच-विचार कर उत्तर दो।
12जानकारी होने पर अपने पड़ोसी को उत्तर दो।
यदि नहीं है, तो मुँह पर हाथ रखो।
13बोलने से सम्मान और अपमान, दोनों मिलते हैं;
जिह्वा मनुष्य के पतन का कारण बनती है।
14चुगलखोर मत बनो
और किसी को फंसाने के लिए उसकी बदनामी मत करो;
क्योंकि यदि चोर को लज्जित होना पड़ेगा,
तो दोमुँहें का कठोर दण्ड-निर्णय होना निश्चित है।
15बड़ी या छोटी, किसी भी बात में अपराध मत करो।

6 मित्र से शत्रु मत बनो।
बदनामी से लज्जा और कलंक मिलता है,
यही दोमुँहे पापी का भाग्य है।
2अपने मनोबल का घमण्ड मत करो;
कहीं ऐसा न हो कि साँड़ के सदृश वह तुम्हें खींच ले जाए,
3तुम्हारे पत्ते खाये, तुम्हारे फल तोड़े
और तुम को सूखे पेड़ की तरह छोड़ दे।
4वासना उन सब का विनाश करती है, जो उसके वश में हैं;
वह उन्हें उनके शत्रुओं के उपहास का पात्र बनाती है।

मित्रता

5 प्रिय शब्दों से मित्रों की संख्या बढ़ती है
और मधुर वाणी से मैत्रीपूर्ण व्यवहार।
6हाथ जोड़नेवाले तुम्हारे परिचित अनेक हों,
किन्तु तुम्हारा परामर्शदाता हजारों में एक हो।
7परीक्षा लेने के बाद किसी को मित्र बना लो,
पर उस पर तुरन्त विश्वास मत करो।
8कोई मित्र अवसरवादी होता है,
वह विपत्ति के दिन तुम्हारा साथ नहीं देगा।
9कोई मित्र शत्रु बन जाता है
और अलगाव का दोष तुम्हें ही देता है।
10कोई मित्र तुम्हारे यहाँ खाता-पीता है,
किन्तु विपत्ति के दिन दिखाई नहीं देता।
11समृद्धि के दिनों में वह तुम्हारा अंतरंग मित्र बन कर
तुम्हारे घरवालों पर रोब जमाता है,
12किन्तु दुर्दिन आते ही वह तुम्हारा विरोधी बन कर
तुम से मुँह फेर लेगा।
13तुम अपने शत्रुओं से दूर रहो
और अपने मित्रों से सावधान।
14सच्चा मित्र प्रबल सहायक है;
जिसे मिल जाता है, तो मानो उसे ख़जाना

---

5 : 3 भज 12 : 4 **5 : 7** यश 55 : 6 **5 : 8** यहेज 7 : 19 **5 : 11** याक 1 : 19 ; **5 : 12** **5 : 13** नीति 18 : 21
6 : 2 नीति 3 : 7 **6 : 6** सभ 7 : 28 **6 : 14** नीति 17 : 17

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्राप्त है।
15सच्चा मित्र एक अमूल्य निधि है,
उसकी क़ीमत धन से चुकायी नहीं जा सकती।
16सच्चा मित्र संजीवनी है,
वह प्रभु-भक्तों को ही प्राप्त होता है।
17प्रभु-भक्त मित्रता का निर्वाह करता है;
वह जैसा है, उसका घनिष्ठ मित्र वैसा ही होगा।

प्रज्ञा की प्राप्ति

18 शिष्य! बचपन से शिक्षा ग्रहण करो।
तब तुम्हें बुढ़ापे में प्रज्ञा प्राप्त होगी।
19तुम हल चलाने और बोने वाले की तरह
प्रज्ञा प्राप्त करने का प्रयत्न करो
और उसके अच्छे फलों की प्रतीक्षा करो।
तुम्हें कुछ समय तक उसकी खेती में परिश्रम करना पड़ेगा,
किन्तु तुम शीघ्र उसकी उपज का स्वाद लोगे।
20अनभ्यस्त के लिए प्रज्ञा बहुत कठिन होती है
और नासमझ उसकी साधना में दृढ़ नहीं रहता।
21प्रज्ञा भारी पत्थर की तरह उसकी परीक्षा लेती है
और वह उसे फेंक देने में देर नहीं करता;
22क्योंकि प्रज्ञा अपने नाम के अनुरूप प्रगाढ़ है।
बहुत कम लोग उसे प्रकट देख पाते हैं।
23शिष्य ! ध्यान दो और मेरी बात मानो;
मेरा परामर्श मत ठुकराओ।
24प्रज्ञा की बेड़ियाँ अपने पैरों में पहनो
और उसका जूआ अपनी गरदन पर रखो,
25अपने कन्धे पर झुका कर उसे धारण करो
और उसके बन्धनों से मत चिढ़ो।
26उस को सारे हृदय से अपनाओ
और सारी शक्ति से उसके मार्गों पर चलते रहो।
27उसको ढूँढ़ो, उसकी खोज करो
और वह तुम को मिल जायेगी;
उसे पाने पर तुम उसे मत जाने दो।
28अन्त में तुम्हें उस में विश्रान्ति मिलेगी
और वह तुम्हारे लिए आनन्द का कारण बनेगी।
29उसकी बेड़ियाँ तुम्हारा सुदृढ़ आश्रय बनेंगी
और उसका जूआ एक महिमामय आभूषण।
30वह सोने से अलंकृत है
और उसके बन्धन बैंगनी फ़ीते-जैसे हैं।
31तुम उसे महिमामय आभूषण की तरह पहनोगे
और उसे आनन्द* के मुकुट की तरह धारण करोगे।
32शिष्य! यदि तुम सुनना चाहो, तो शिक्षा प्राप्त करोगे;
यदि उस में मन लगाओगे, तो समझदार बनोगे।
33यदि तुम रुचि से सुनोगे, तो ज्ञान प्राप्त करोगे;
यदि कान दोगे, तो बुद्धिमान् बनोगे।
34बड़े-बूढ़ों की संगति करो
और उनकी प्रज्ञा की बातों पर ध्यान दो।
35धर्म-सम्बन्धी चर्चा उत्सुकता से सुनो
और ज्ञान-सम्बन्धी सूक्तियाँ मत भुलाओ।
36यदि तुम को समझदार व्यक्ति का पता चले,
तो सबेरे ही उस से मिलने जाओ।
उसके द्वार की देहली तुम्हारे पैरों से घिस जाये!
37प्रभु की आज्ञाओं का चिन्तन करो,
उसके आदेशों का मनन करो।
वह तुम्हारा मन दृढ़ करेगा
और तुम को वह प्रज्ञा देगा,
जिसकी तुम कामना करते हो।

विविध परामर्श

7 बुराई मत करो तो बुराई तुम पर हावी नहीं होगी।
2अन्याय से दूर रहो तो वह तुम्हारे पास नहीं फटकेगा।
3अधर्म के कूँड़ों में बीज न बोओ,
तो उसकी सात-गुनी फ़सल नहीं काटोगे।

---

* इब्रानी पाठ के अनुसार, "प्रताप"।

6 : 17 आमो 3 : 3 **6 : 21** जक 12 : 3 **6 : 24** नीति 1 : 9 **6 : 27** नीति 4 : 13 **6 : 36** नीति 8 : 34 **6 : 37** भज 1 : 2 **7 : 1** 1 पत 3 : 13 **7 : 3** गल 6 : 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

[4]तुम न तो प्रभु से अधिकार माँगो
और न राजा से सम्मान का आसन।
[5]तुम न तो प्रभु के सामने धार्मिकता का
और न राजा के सामने प्रज्ञा का स्वाँग भरो।
[6]न्यायाधीश बनने का प्रयत्न मत करो।
कहीं ऐसा न हो कि तुम अन्याय नहीं दूर कर सको,
या डर के मारे शासक का पक्ष लो
और अपनी सत्यनिष्ठा पर कलंक लगाओ।
[7]सार्वजनिक हित+ के विरुद्ध पाप मत करो
और भीड़ की दृष्टि में कलंकित मत बनो।
[8]एक ही पाप में दो बार मत फँसो,
क्योंकि एक के दण्ड से भी नहीं बचोगे।
[9]यह मत कहो, "ईश्वर मेरे असंख्य चढ़ावों पर ध्यान देगा।
जब मैं प्रभु को चढ़ावे अर्पित करूँगा, तो वह उन्हें स्वीकार करेगा।"
[10]प्रार्थना करते समय मांगने में संकोच मत करो
और स्वयं भिक्षादान की उपेक्षा मत करो।
[11]दुःखी मनुष्य का उपहास मत करो,
क्योंकि परमेश्वर नीचा भी दिखाता और ऊपर भी उठाता है।
[12]अपने भाई-बहिन के विरुद्ध झूठी बातों का प्रचार मत करो
और अपने मित्र के साथ भी ऐसा मत करो।
[13]किसी भी प्रकार से झूठ मत बोलो,
इस बुरी आदत से कोई लाभ नहीं होता।
[14]बड़े-बूढ़ों की सभा में बकवास मत करो
और प्रार्थना करते समय रट मत लगाओ।
[15]कठोर परिश्रम से घृणा मत करो
और न खेती-बारी से, जो सर्वोच्च प्रभु द्वारा निर्धारित है।
[16]पापियों की संगति मत करो।
याद रखो कि क्रोध में देर नहीं होगी।
[17]अपने को बहुत विनम्र बनाये रखो;
क्योंकि विधर्मी को आग और कीड़ों से दण्डित किया जायेगा।

मित्र और परिवार

[18] रुपये-पैसे के लिए अपने मित्र को न बेचो
और न ओपीर के सोने के लिए सच्चे भाई को।
[19]समझदार और साध्वी पत्नी का परित्याग मत करो,
क्योंकि वह स्वर्ण से भी अधिक वांछनीय है।
[20]ईमानदारी से काम करने वाले सेवकों के साथ दुर्व्यवहार मत करो
और न किसी मज़दूर के साथ, जो पूरी लगन से काम करता है।
[21]तुम बुद्धिमान दास को अपने समान++ प्यार करो
और उसे मुक्त करना अस्वीकार मत करो।
[22]यदि तुम्हारे पशु हों, तो उनकी देखरेख करो।
यदि उन से लाभ है, तो उन्हें पालो।
[23]यदि तुम्हारे बाल-बच्चे हों, तो उन्हें शिक्षा दिलाओ
और बचपन से ही उन्हें अनुशासन में रखो।
[24]यदि तुम्हारे पुत्रियाँ हों, तो उनके शील की रक्षा करो
और उनके साथ ढिलाई मत करो।
[25]अपनी पुत्री के विवाह का प्रबन्ध करो—
यह एक महत्वपूर्ण कार्य है।
किन्तु उसे एक समझदार व्यक्ति को सौंपो।
[26]यदि तुम्हारी पत्नी मनपसन्द है, तो उसका परित्याग मत करो।
यदि वह अप्रिय हो, तो उस पर इतना विश्वास मत करो।
[27]सारे हृदय से अपने पिता का आदर करो
और अपनी माता का दुःख मत भुलाओ।
[28]याद रखो कि माँ-बाप से ही तुम्हारा जन्म हुआ है;
उनके उपकार का बदला कैसे दे सकते हो ?

+ अक्षरशः "नगर की भीड़"। ++ यूनानी पाठ के अनुसार, "अपनी आत्मा से"।
7 : 5 अय्य 9 : 2 **7 : 6** लेव 19 : 15 **7 : 9** नीति 21 : 27 **7 : 10** लू 18 : 1 ; याक 1 : 6 **7 : 14** सम 5 : 2; मत 6 : 7 **7 : 15** उत 3 : 19 **7 : 17** यश 66 : 24 ; मक 9 : 48 **7 : 21** नि 21 : 2 ; फिले 16 **7 : 25** 1 कुर 7 : 36 -38 **7 : 27** तोब 4 : 3-4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पुरोहित

29 सारे हृदय से प्रभु पर श्रद्धा रखो
और उसके पुरोहितों का आदर करो।
30सम्पूर्ण शक्ति के साथ अपने सृष्टिकर्ता से प्रेम करो,
और उसके जन-सेवकों को निराश मत करो।
31प्रभु के प्रति श्रद्धा-भाव रखो
और पुरोहित का सम्मान करो।
आज्ञा के अनुसार उसे उसका भाग दो :
अर्थात् प्रथम फल, प्रायश्चित्त-बलि, बलि-पशु का स्कन्धभाग, समर्पण-बलि और पवित्र चढ़ावों के प्रथम फल।

दरिद्र और दुःखी

32 हाथ बढ़ा कर दरिद्र को दान दो,
जिससे तुम्हें पूर्ण आशीर्वाद प्राप्त हो।
33सब जीवितों के प्रति उदार बनो,
मृतकों को भी अपनी उदारता से वंचित मत करो।
34रोने वालों से विमुख मत हो,
और शोक मनाने वालों के साथ शोक मनाओ।
35बीमारों से मिलने में लापरवाही मत करो।
इस से तुम सर्वप्रिय बनोगे।
36सब बातों में अपनी अन्तगति याद रखो
तो तुम जीवन भर पाप नहीं करोगे।

दुनियादारी और सावधानी

8 शक्तिशाली मनुष्य का बात-बात में विरोध मत करो;
कहीं ऐसा न हो कि तुम उसके हाथों पड़ जाओ।
2धनी व्यक्ति से झगड़ा मत करो;
कहीं ऐसा न हो कि वह तुम पर हावी हो जाये।
सोने के लोभ ने बहुत लोगों का विनाश किया है
और राजाओं का हृदय भटकाया है।
3बकवादी से वादविवाद मत करो :
आग पर लकड़ी मत रखो।
4अशिक्षित व्यक्ति के साथ मज़ाक मत करो,
जिससे तुम्हारे पूर्वजों पर कलंक न लगे।
5पश्चात्ताप करने वाले पापी की निन्दा मत करो;
याद रखो कि हम सब दण्ड के योग्य हैं।
6वृद्ध मनुष्य का तिरस्कार मत करो,
क्योंकि हम भी बूढ़े हो रहे हैं।
7किसी की मृत्यु पर आनन्द मत मनाओ।
याद रखो कि हम सब को भी मरना है।

8 ज्ञानियों के वचनों-प्रवचनों का तिरस्कार मत करो
और उनकी सूक्तियों पर विचार करो;
क्योंकि तुम उन से अनुशासन प्राप्त करोगे
और बड़े लोगों की सेवा करने की शिक्षा भी।
9वृद्धों के उपदेशों का तिरस्कार मत करो;
क्योंकि उन्होंने भी अपने पूर्वजों से शिक्षा प्राप्त की है।
तुम उन से ज्ञान प्राप्त करोगे
और उपयुक्त उत्तर देने की शिक्षा भी।

10 पापी की क्रोधाग्नि मत भड़काओ,
नहीं तो उसकी ज्वाला में भस्म हो जाओगे।
11उपहास करने वाले का सामना मत करो,
नहीं तो वह तुम को तुम्हारी बात के फन्दे में फँसा देगा।
12अपने से शक्तिशाली व्यक्ति को रुपया उधार मत दो।
यदि उधार दोगे, तो अपना रुपया खोया समझो।
13अपनी शक्ति से परे ज़मानत मत दो।
यदि ऐसा करते हो, तो समझो कि उसे तुम्हें चुकाना पड़ेगा।

14 न्यायाधीश पर मुक़दमा मत चलाओ;
क्योंकि उसकी प्रतिष्ठा निर्णय को प्रभावित करेगी।
15दुःसाहसी व्यक्ति के साथ कहीं मत जाओ:

---

7 : 30 व्य 6 : 5 **7 : 32** व्य 15 : 8 **7 : 34** रोम 12 : 15 **8 : 3** नीति 26 : 20 ; याक 3 : 5-6 **8 : 5** 2 कुर : 6-7 **8 : 6** लेव 19 : 32 ; प्रज्ञ 4 : 8 **8 : 9** कुल 4 : 6 ; 1 पत 3 : 15

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उसके कारण तुम पर घोर विपत्ति पड़ सकती है;
क्योंकि वह किसी की बात नहीं सुनेगा और
उसकी मूर्खता के कारण तुम्हारा भी विनाश हो जायेगा।
16क्रोधी व्यक्ति से झगड़ा मत करो
और उसके साथ मरुभूमि मत पार करो;
क्योंकि रक्तपात उसके लिए साधारण-सी बात है।
जहाँ तुम्हें सहायता नहीं मिल सकेगी,
वहाँ वह तुम पर टूट पड़ेगा।
17मूर्ख से परामर्श मत करो;
क्योंकि वह तुम्हारी बात छिपाये नहीं रख सकता।
18अपरिचित के सामने कोई ऐसा काम मत करो,
जिसे तुम गुप्त रखना चाहते हो;
क्योंकि तुम नहीं जानते कि इसका परिणाम क्या होगा।
19हर किसी के सामने अपना हृदय मत खोलो
और न प्रत्येक से कृपा की याचना करो*।

स्त्रियों-सम्बन्धी परामर्श

9 तुम अपनी प्रिय पत्नी से ईर्ष्या मत करो;
नहीं तो तुम उसे अपने विरुद्ध बुरा उदाहरण सिखाओगे!
2किसी स्त्री के प्रति इस तरह आसक्त मत हो
कि वह तुम बलवन्त पर भी शासन करने लगे।
3किसी चरित्रहीन स्त्री के निकट मत जाओ;
कहीं ऐसा न हो कि तुम उसके जाल में फँस जाओ।
4किसी गायिका की संगति मत करो,
कहीं ऐसा न हो कि तुम उस की कला-केलि पर आसक्त हो जाओ।
5किसी युवती पर कुदृष्टि मत डालो;
कहीं ऐसा न हो कि उसका सौन्दर्य तुम्हारे पतन का कारण बन जाये।
6वेश्याओं पर आसक्त मत हो;
कहीं ऐसा न हो कि तुम अपनी विरासत खो दो।
7नगर की गलियों में मत मारा-मारा फिरो
और उसके एकान्त स्थानों में मत भटको।
8सुडौल रूपवती स्त्री से अपनी दृष्टि हटा लो
और परायी सुन्दरी को मत निहारो।
स्त्री के सौन्दर्य ने बहुतों को मोहित कर दिया;
उसके कारण वासना आग की तरह भड़क उठती है।
9विवाहित परस्त्री के शयनासन पर मत बैठो;
रंगरेलियों में उसके साथ मदिरा मत पियो।
कहीं ऐसा न हो कि तुम उस पर आसक्त हो जाओ
और रक्तपात में ही तुम्हारा विनाश हो जाये।

मानवीय सम्बन्ध

10 पुराने मित्र का परित्याग मत करो,
क्योंकि नया मित्र उसकी बराबरी नहीं कर सकता।
नया मित्र नयी मदिरा के सदृश है :
पुरानी हो जाने पर तुम उसे रुचि से पियोगे।
11पापी की सफलता से ईर्ष्या मत करो:
तुम नहीं जानते कि उसका अन्त कितना दुखमय होगा।
12दुष्टों की समृद्धि की प्रशंसा मत करो।
याद रखो कि मृत्यु से पहले उन्हें दण्ड दिया जायेगा।
13प्राणदण्ड का अधिकार रखने वाले से दूर रहो
तो तुम्हें मृत्यु के भय का अनुभव नहीं होगा।
उसके निकट आने पर अपराध मत करो;
कहीं ऐसा न हो कि वह तुम्हारे प्राण हर ले।
समझ लो कि तुम फन्दों के बीच चलते हो
और नगर के प्राचीर पर टहलते हो।
14इस में सावधान रहो कि किसके साथ मेल-जोल रखते हो;

---

* इब्रानी पाठ के अनुसार, "और इस प्रकार अपनी सुख-शान्ति मत खो देना"।

9 : 1 व्य 13 : 6 ; गण 5 : 11-15 **9 : 3** नीति 7 : 10-23 **9 : 5** व्य 22 : 29 **9 : 8** 2 शम 11 : 2 ; मत 5 : 28
9 : 10 नीति 27 : 10 **9 : 12** भज 1 : 1 ; नीति 11 : 21 **9 : 14** तोब 4 : 18

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ज्ञानियों से परामर्श करो।
15विद्वानों से वार्तालाप करो
और सर्वोच्च प्रभु की आज्ञाओं की ही चर्चा करो।
16धर्मियों के साथ भोजन करो
और प्रभु के प्रति श्रद्धा पर गौरव करो।
17शिल्पकार की कुशलता के कारण कृति की प्रशंसा होती है
और अपने वचनों के कारण शासक ज्ञानी माना जाता है।
18बकवादी अपने नगर में संकट पैदा करता है
और अन्धाधुन्ध बोलने वाले व्यक्ति से लोग बैर करते हैं।

शासन

10 प्रज्ञासम्पन्न शासक अपनी प्रजा को शिक्षा देता है;
समझदार व्यक्ति का शासन सुदृढ़ रहता है।
2जैसा शासक, वैसे ही उसके पदाधिकारी;
जैसा नगराध्यक्ष, वैसे ही उसके निवासी।
3मूर्ख राजा अपनी प्रजा का विनाश करता है।
नगरों की सुव्यवस्था उसके शासकों की समझदारी पर निर्भर है।
4पृथ्वी का शासन प्रभु के हाथ में है।
वह सुयोग्य व्यक्ति को उपयुक्त समय पर भेजता है।
5मनुष्य की समृद्धि प्रभु के हाथ में है।
वह शास्त्री को महिमा प्रदान करता है।

घमण्ड

6छोटे-मोटे अपराध के कारण अपने पड़ोसी से बैर मत रखो
और घमण्ड के आवेश में कोई काम मत करो।
7प्रभु और मनुष्यों को घमण्ड से बैर है;
अन्याय से दोनों को घृणा है।
8अन्याय, अत्याचार और लोभ के कारण
राजसत्ता एक राष्ट्र से दूसरे राष्ट्र के हाथ चली जाती है।
[कंजूस व्यक्ति से अधिक बुरा कोई नहीं।
वह अपनी आत्मा को भी बेच सकता है।]
9मिट्टी और राख का पुतला घमण्ड क्यों करता है?
जीवित रहते भी उसकी अँतड़ियों में कीड़े होते हैं।*
10दीर्घकालीन बीमारी वैद्य को निराश
और अल्पकालीन बीमारी उसे प्रसन्न करती है।
हर राज्याधिकार अल्पकालीन है।
आज का राजा कल मर जाता है।
11ज्यों ही मनुष्य मर जाता है,
कीड़े, पीड़क जन्तु और कृमि उसकी विरासत बनते हैं!
12मनुष्य का घमण्ड इस से प्रारम्भ होता है:
वह प्रभु का परित्याग करता
और अपने सृष्टिकर्ता से विमुख हो जाता है;
13क्योंकि हर पाप घमण्ड से प्रारम्भ होता है।+
जो मनुष्य पाप को नहीं छोड़ता वह घृणित बुराइयां करने लगता है।
इसलिए प्रभु ने घमण्डियों पर अद्भुत विपत्तियाँ ढाहीं
और उनका सर्वनाश किया है।
14प्रभु ने शासकों के सिंहासन गिराये
और उनके स्थान पर दीनों को बैठाया है।
15प्रभु ने राष्ट्रों की जड़ उखाड़ी
और उनके स्थान पर विनम्रों को रोपा है।
16प्रभु ने राष्ट्रों की भूमि उजाड़ दी
और उनका समूल विनाश किया है।
17उसने उन्हें मनुष्यों के बीच से उखाड़ दिया
और पृथ्वी पर उनकी स्मृति तक मिटा दी है।
18घमण्ड मनुष्यों को शोभा नहीं देता
और न स्त्री की सन्तान को क्रोध का आवेश।

सच्चा सुयश

19 कौन-सी प्रजाति सम्माननीय है?

---

* मूल अस्पष्ट। + शब्दशः, "अहंकार पाप से आरम्भ होता है"।

10 : 2 नीति 29 : 12 10 : 4 भज 47 : 7 10 : 8 अय्य 12 : 23 10 : 11 यश 14 : 11 10 : 14 1 शम 2 : 4-8 ; लू 1 : 51-52 10 : 16 व्य 31 : 3-4 10 : 19 भज 8 : 5-6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

—मानव प्रजाति।
कौन-सी प्रजाति सम्माननीय है?
—वही जो प्रभु पर श्रद्धा रखती है।
कौन-सी प्रजाति अपमाननीय है?
—मानव प्रजाति।
कौन-सी प्रजाति अपमाननीय है?
—वही जो प्रभु की आज्ञाओं का उल्लंघन करती है।

20जैसे भाई-बन्धुओं में ज्येष्ठ को सम्मान मिलता है,
वैसे ही प्रभु की दृष्टि में ईश-भक्त को।
21[प्रभु पर श्रद्धा करना ग्राह्य होने का प्रमुख कारण है;
दुराग्रह और घमण्ड त्याज्य बनने के मुख्य कारण हैं।]
22चाहे कोई शरणार्थी, परदेशी अथवा गरीब हो,
उसका गौरव इस में है कि वह प्रभु पर श्रद्धा रखता हो।
23ज्ञानी यदि दरिद्र हो, तो उसका तिरस्कार नहीं करना चाहिए;
परन्तु पापी की महिमा करना अनुचित है।
24महाधिकारी, न्यायाधीश और शासक का सम्मान किया जाता है,
किन्तु उन में कोई उस व्यक्ति से महान् नहीं, जो प्रभु पर श्रद्धा रखता है।
25स्वाधीन व्यक्ति प्रज्ञाशील दास के हित में भी सेवा करेंगे
और इस पर किसी विवेकी को आपत्ति नहीं होगी।

नम्रता और सच्चाई

26 अपने व्यवसाय में प्रज्ञा का और
तंगहाली में बड़प्पन का स्वाँग मत रचो।
27घुमक्कड़ शेखीबाज़ की अपेक्षा, जिसके पास रोटी नहीं,
वह कर्मशील व्यक्ति अच्छा है, जिसे किसी बात की कमी नहीं।
28शिष्य! विनम्रता से अपने स्वाभिमान की रक्षा करो और अपने को अपनी योग्यता के अनुसार ही श्रेय दो।
29जो व्यक्ति स्वयं को दोषी बताता है*
उसे कौन निर्दोष ठहरायेगा?
जो व्यक्ति अपना ही अपमान करता है,
उस को कौन सम्मान देगा?
30ज्ञान के कारण दरिद्र का
और धन के कारण धनी का सम्मान किया जाता है।
31दरिद्रता में जिसका सम्मान किया जाता है,
उसका समृद्धि में कहीं अधिक सम्मान किया जायेगा।
समृद्धि में जिसका अपमान किया जाता है,
उसका दरिद्रता में कहीं अधिक अपमान किया जायेगा।

11 प्रज्ञा दीन का सिर ऊँचा करती
और उसे प्रतिष्ठित व्यक्तियों के बीच बैठाती है।
2सौन्दर्य के कारण किसी की प्रशंसा मत करो
और रूप-रंग के कारण किसी की उपेक्षा मत करो।
3पंख वाले जीवों में मधुमक्खी छोटी है,
किन्तु वह जो उत्पन्न करती है, वह सब से मधुर है।
4अपने वस्त्रों पर गौरव मत करो
और सम्मान मिलने पर घमण्डी मत बनो;
क्योंकि प्रभु के कार्य ही प्रशंसनीय हैं,
यद्यपि वे मनुष्य से छिपे रहते हैं।
5कई तानाशाहों को भूमि पर बैठ जाना पड़ा
और जिसपर कोई ध्यान नहीं देता था,
उसने किरीट धारण किया।
6कई शासकों को बहुत अपमानित किया गया
और सुप्रसिद्ध व्यक्तियों को शत्रुओं के हवाले कर दिया गया है।
7जानकारी के अभाव में किसी को दोष मत दो;
सोच-विचार करने के बाद ही किसी को डाँटो।

---

* यूनानी पाठ: "अपने आप के प्रति पाप करता है।"

10 : 25 नीति 17 : 2 **11 : 1** उत 41 : 39-40 **11 : 2** 1 शम 16 : 7 **11 : 3** शास 14 : 18 **11 : 6** 1 शम 15 : 28

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

8सुनने के बाद ही उत्तर दो
और बोलने वाले को मत टोको।
9जो मामला तुम से सम्बन्ध नहीं रखता,
उसके विषय में झगड़ा मत करो
और पापियों के विवाद निपटाने के लिए
उनके संग मत बैठो।

धन और दरिद्रता

10 शिष्य! बहुत बातों के फेर में मत पड़ो:
ऐसा करने पर तुम निर्दोष नहीं रहोगे।
जिसका पीछा करोगे, उसे नहीं पकड़ पाओगे
और जिस से भाग जाओगे, उस से नहीं बचोगे।
11कुछ लोग परिश्रम और संघर्ष करते हुए दौड़ते हैं,
किन्तु तब भी पिछड़ जाते हैं।
12कुछ लोग कमज़ोर और निस्सहाय,
साधनहीन और अति दरिद्र हैं,
किन्तु प्रभु की कृपादृष्टि उन्हें प्राप्त है
और वह उन्हें उनकी दयनीय दशा से ऊपर उठाता है।
13वह उनका सिर ऊँचा करता
और इस पर बहुतों को आश्चर्य होता है।
14दुःख और सुख, जीवन और मृत्यु,
गरीबी और अमीरी—यह सब कुछ प्रभु के हाथ है।
15[प्रज्ञा, सद्बुद्धि, और व्यवस्था का ज्ञान,
भ्रातृप्रेम और परोपकार का मार्ग—
यह सब प्रभु का वरदान है।
16भ्रम और अन्धकार पापियों का भाग्य है।
जो बुराई को प्यार करते हैं, वे उसे बुढ़ापे तक नहीं छोड़ते।]
17भक्तों को प्रभु के वरदान मिलते हैं;
उसकी कृपादृष्टि उनका सदा पथप्रदर्शन करेगी।
18कुछ लोग परिश्रम और मितव्यय से धनी बनते हैं,
किन्तु अन्त में उनका यह भाग्य होगा:
19वे कहेंगे, ''मुझे शान्ति प्राप्त हो गयी है।
अब मैं अपनी सम्पत्ति का उपभोग करूँगा''
जब कि वे नहीं जानते कि उनकी घड़ी कब आयेगी।
वे मर जायेंगे और अपनी सम्पत्ति दूसरों के लिए छोड़ जायेंगे।

मृत्यु का महत्व

20 कर्तव्यपालन में दृढ़ बने रहो
और बुढ़ापे तक अपना काम करते जाओ।
21पापी के कर्मों पर आश्चर्य मत करो;
प्रभु पर भरोसा रखते हुए अपना काम करते जाओ;
क्योंकि प्रभु सुगमता से
किसी दरिद्र को अचानक धनी बना सकता है।
22प्रभु का आशीर्वाद धर्मी का पुरस्कार है;
उसकी सुयोजना क्षण भर में पूरी होती है।
23यह मत कहो, ''मुझे और क्या चाहिए?
मुझे और कौन सुख मिल सकता है?''
24यह मत कहो, ''मुझे किसी बात की कमी नहीं,
भविष्य में मुझ पर कौन विपत्ति आ सकती है?''
25सुख के दिनों में दुःख
और दुःख के दिनों में सुख भुलाया जाता है।
26प्रभु आसानी से मृत्यु के दिन मनुष्य को
उसके समस्त कर्मों का फल दे सकता है।
27घड़ी भर का दुःख समृद्धि को भुला देता है;
मनुष्य का अन्त उसके कर्म प्रकट करता है।
28किसी को मृत्यु के पूर्व सौभाग्यशाली मत कहो;
मृत्यु के समय+ ही मनुष्य को पहचाना जाता है।

दुष्ट से सावधान

29 हर किसी को अपने घर में मत आने दो;
क्योंकि कपटी मनुष्य के बहुत-से जाल होते हैं।

+ यूनानी पाठ : ''उसकी संतान में''।

11 : 8 नीति 18 : 13 **11 : 10** लू 10 : 41-42 **11 : 14** 1 शम 2 : 7 **11 : 19** भज 49 : 10 ; लू 12 : 20

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

30अहंकारी का हृदय पिंजड़े में बन्द तीतर के
सदृश है।
वह गुप्तचर की तरह तुम्हारे पतन की ताक
में रहता है।
31चुग़लख़ोर अच्छाई को बुराई में बदल देता
है
और अच्छी-से-अच्छी बातों में भी दोष
निकालता है।
32एक चिनगारी कोयले के ढेर में आग लगा
सकती है।
पापी रक्तपात की ताक में रहता है।
33दुष्ट से सावधान रहो, वह बुराई ही सोचता है;
वह सदा के लिए तुम पर कलंक लगा सकता
है।
34यदि परदेशी को अपने यहाँ ठहराओगे,
तो वह तुम को परेशानी में डालेगा
और तुम्हारे अपनों से विमुख करेगा।

परोपकार में विवेक

12 अपने परोपकार का पात्र अच्छी तरह
चुनो और तुम को अपने परोपकार का
धन्यवाद दिया जायेगा।
2यदि तुम भक्त मनुष्य का उपकार करोगे,
तो तुम को उस से या सर्वोच्च प्रभु से पुरस्कार
मिलेगा।
3जो बुराई करता रहता और भिक्षादान करना
नहीं चाहता,
उसका कल्याण नहीं होगा;
4दयालु मनुष्य को दान दो
और पापी की सहायता मत करो।
5दीन का उपकार करो और विधर्मी को कुछ
नहीं दो।
उसे हथियार मत दो; कहीं ऐसा न हो
कि उनके बल पर वह तुम पर हावी हो
जाये;*
क्योंकि तुम उसका जो उपकार करोगे,
उस से दुगुनी बुराई तुम को भोगनी पड़ेगी।
6सर्वोच्च प्रभु को पापियों से घृणा है
और वह दुष्टों को उचित दण्ड देता है।
[फिर भी प्रतिशोध के दिन तक वह उन्हें
संभालता रहता है।]
7भले मनुष्य को दान दो,
और पापी की सहायता मत करो।

मित्रों की पहचान

8 सुख के दिनों में मित्र की पहचान नहीं
होती।++
और दुःख के दिनों में शत्रु छिपा नहीं रहता।
9सुख के दिनों में मनुष्य के शत्रु भी उसके मित्र
बनते हैं**
और दुःख के दिनों में उसके मित्र अलग हो
जाते हैं।
10अपने शत्रु पर कभी विश्वास मत करो;
उसकी दुष्टता धातु पर जंग की तरह प्रकट
होती है।
11यदि वह नम्र बन कर तुम्हारे सामने झुक
जाये,
तो सतर्क हो और उस से सावधान रहो;
और उस मनुष्य के समान बनो, जिसने दर्पण
साफ किया,
किन्तु जो जानता है कि उस पर फिर जंग जम
जायेगा।
12उसे अपने पास खड़ा न होने दो।
कहीं ऐसा न हो कि वह तुम को गिरा दे और
तुम्हारा स्थान ले ले।
उसे अपने दाहिने न बैठने दो।
कहीं ऐसा न हो कि वह तुम्हारे आसन पर
बैठ जाये
और तुम अन्त में समझो कि मैंने ठीक ही
कहा
और तुम को मेरी चेतावनी याद कर दुःख हो।
13यदि साँप सँपेरे को काटे,

---

*यूनानी अनुवाद में, ''उसे रोटी तक न दो; कहीं ऐसा न हो कि तुम उसके वश में आ जाओ।'' ++ पाठांतर, ''मित्र को दण्डाज्ञा नहीं मिलती''। ** यूनानी पाठ में : ''शत्रु दुःखी होते हैं''।

11 : 30 यिर 5 : 26 11 : 32 नीति 1 : 11 12 : 2 मत 10 : 41 12 : 4 तोब 4 : 17 12 : 6 भज 11 : 5-6; मत 5 : 43-45 12 : 9 नीति 19 : 4-7

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तो उस से कौन सहानुभूति रखेगा,
या उन लोगों से,
जो हिंसक जानवरों के निकट जाते हैं ?
14यही दशा उस की भी है, जो पापी की संगति करता
और उसके पापों में फँस जाता है।
15पापी थोड़े समय तक तुम्हारा साथ देगा,
किन्तु यदि तुम्हारी स्थिति डाँवाडोल होगी,
तो वह नहीं टिकेगा।
16शत्रु के होंठों से मधु टपकता है,
किन्तु उसके हृदय में तुम को गड्ढे में गिराने का भाव है।
भले ही उसकी आँखों से आँसू निकलते हों,
अवसर मिलने पर वह रक्त बहाने में भी नहीं हिचकेगा।
17यदि तुम पर विपत्ति आ पड़ी,
तो उसे अपने पास पाओगे;
वह सहायता देने के बहाने
तुम को लंगी मारेगा।
18वह सिर हिलायेगा, ताली बजायेगा
और सीटी बजाते हुए अपना असली रूप प्रकट करेगा।

सम्पर्क में सावधानी

13 जो अलकतरा छूता, वह मैला हो, जाता है
और जो घमण्डी की संगति करता, वह उसके सदृश बन जाता है।
2ऐसा बोझ मत उठाओ, जो तुम्हारे लिए अधिक भारी है।
ऐसे व्यक्ति की संगति मत करो,
जो तुम से शक्तिशाली या धनी है।
मिट्टी के बरतन और धातु-पात्र का क्या मेल?
टकराने पर मिट्टी का बरतन टूट जायेगा।
3जब धनी अन्याय करता, तो वह शेख़ी मारता है।
जब दरिद्र के साथ अन्याय होता है,
तो उसे क्षमा भी माँगनी पड़ती है।
4यदि तुम धनी के लिए उपयोगी हो,
तो वह तुम से काम लेगा।
यदि तुम्हारी दुर्गति हो जायेगी,
तो वह तुम को छोड़ देगा।
5जब तक तुम समृद्ध हो,
वह तुम्हारे साथ खा-पी कर तुम्हारी सम्पत्ति उड़ायेगा।
और उसे तुम्हारी दुर्गति पर कोई दुःख नहीं होगा।
6यदि उसे तुम्हारी जरूरत होगी, तो वह तुम को मूर्ख बनायेगा।
वह मुस्कराते हुए तुम्हें आशा दिलाता रहेगा
और चिकनी-चुपड़ी बातें करते हुए पूछेगा :
"मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?"
7वह तुम्हें अपनी दावत में बुला कर तुम्हारा अपमान करेगा।
वह दो-तीन बार तुम्हारी सम्पत्ति उड़ाएगा
और अन्त में तुम्हारा उपहास करेगा।
यदि वह बाद में तुम को देखेगा,
तो कन्नी काट कर सिर हिलाते हुए आगे बढ़ जायेगा।
8सावधान रहो कि कहीं धोखा न खाओ
और बाद में मूर्खता* के कारण तुम को नीचा न दिखाया जाये।

9 शक्तिशाली व्यक्ति का निमन्त्रण आसानी से स्वीकार मत करो;
तब वह तुम से अधिक आग्रह करेगा।
10ढीठ मत बनो, नहीं तो तुम हटा दिये जाओगे;
अधिक दूर मत रहो, नहीं तो तुम भुला दिये जाओगे।
11उस से बराबरी के स्तर पर बात मत करो
और उसकी अनेकानेक बातों पर विश्वास मत करो;
क्योंकि वह देर तक बात कर तुम्हारी परीक्षा लेता
और मुस्कराते हुए तुम्हारा भेद जान जाता है।

* पाठांतर, "संतोष"।

12 : 16 नीति 26 : 24 12 : 17 भज 41 : 9 13 : 1 यश 52 : 11 13 : 3 नीति 18 : 23 13 : 10 नीति 25 : 6-7

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
12प्रतिज्ञाभंग करनेवाला व्यक्ति निर्दय होता है;
वह हानि पहुँचाने और पकड़ने-जकड़ने में
नहीं हिचकेगा।
13अपने को संभाले रहो, अति सावधान रहो;
क्योंकि तुम्हारा पतन तुम्हारे साथ-साथ
चलता है।+
14[यदि तुम इसके विषय में स्वप्न में भी सुनो,
तो जागने पर सावधान हो जाओ।
आजीवन प्रभु से प्रेम करते रहो,
और अपने उद्धार के लिए उसकी ही दुहाई
दो।]
15हर प्राणी उस प्राणी से सहज प्रेम करता है,
जो उसके सदृश हो;
और हर मनुष्य अपने पड़ोसी से।
16हर प्राणी अपनी जाति की ओर खिंचता है
और हर मनुष्य अपने-जैसे व्यक्ति की
संगति करता है।
17क्या भेड़िया मेमने के साथ रह सकता है?
ऐसे ही भक्त के साथ पापी नहीं रह सकता।
18क्या लकड़बग्घे और कुत्ते का मेल सम्भव
है?
उसी तरह धनी और दरिद्र का मेल नहीं हो
सकता।
19उजाड़खण्ड के गधे सिंहों के शिकार बनते
हैं,
इसी तरह निर्धन धनियों के चरागाह हैं।
20घमण्डी को विनम्रता से घृणा होती है,
इसी तरह धनी को निर्धन से घृणा होती है।
21जब धनी ठोकर खाता, तो उसके मित्र उसे
सँभालते हैं;
किन्तु जब दीन-हीन व्यक्ति गिरता, तो
उसके मित्र उसे लात मारते हैं।
22जब धनी लड़खड़ाता, तो बहुत लोग उसे
सँभालते हैं;
जब वह अशोभनीय बातें कहता, तो लोग
उसकी सफाई देते हैं।
जब दीन-हीन लड़खड़ाता, तो लोग उसे
दोष देते हैं;
जब वह पते की बात कहता, तो कोई ध्यान
नहीं देता।
23जब धनी बोलता, तो सब चुप रहते
और उसकी बातों को आसमान पर चढ़ाते
हैं।
जब निर्धन बोलता, तो लोग पूछते हैं:
'यह कौन है?'
जब वह डगमगाने लगता है, तो लोग उसे
धक्का देते हैं।
24वह धन अच्छा है, जो पाप की कमाई नहीं
हो।
किन्तु अधर्मी की समझ में निर्धनता ही बुरी
है।

धर्मी की सुख-शान्ति

25 मनुष्य का हृदय उसका चेहरा बदल देता
है—
या तो अच्छाई की ओर, या बुराई की ओर।
26प्रसन्न मुख अच्छे हृदय का लक्षण है।
सूक्तियों की रचना के लिए गम्भीर चिन्तन
की अपेक्षा है।

14 धन्य है वह मनुष्य, जिसने अपनी वाणी
से पाप नहीं किया
और जो अपने पुराने पापों के कारण दुःखी
न हो!
2धन्य है वह मनुष्य, जिसका अन्तःकरण उसे
दोषी नहीं ठहराता
और जिसने आशा नहीं छोड़ी है!

ईर्ष्या और कृपणता

3 क्षुद्र मनुष्य को धन शोभा नहीं देता
और कंजूस की संपत्ति किसी काम की नहीं।
4जो अपना पेट काट कर धन संचित करता है,
वह उसे दूसरों के लिए संचित करता है;
पराये लोग उसका धन भोगेंगे।
5जो अपने प्रति कठोर है, वह किसका हित
करेगा?
वह अपने ही धन का उपभोग नहीं करता।

+ मूल इब्रानी पाठ : ''उग्र व्यक्तियों की संगति मत करो।''

13 : 17 नीति 29 : 27 13 : 19 आमो 8 : 4 13 : 21 नीति 19 : 7 13 : 26 नीति 15 : 13 14 : 2 रोम 14 : 22 ; 1 यो 3: 21 14 : 3 सभ 4 : 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

6जो अपने लिए भी कंजूसी करता, उस से
अधिक अभागा कोई नहीं;
वह अपने से अपनी बुराई का बदला चुकाता
है।
7यदि वह भलाई करता, तो अनजाने ऐसा करता
और अन्त में अपनी बुराई प्रकट करता है।
8जिसकी दृष्टि ईर्ष्यालु है, वह दुष्ट है।
वह मुँह मोड़ कर दूसरों का तिरस्कार करता
है।
9लालची अपने भाग से सन्तुष्ट नहीं होता।
वह अन्याय के लिए आतुर है
और उसका लालच उसे खा जाता है।
10कृपण रोटी का लालच करता,*
किन्तु अपनी मेज़ पर भूखा रहता है।

धन का सदुपयोग

11 शिष्य! जो कुछ तुम्हारे पास हो,
उसी का स्वयं सदुपयोग करो
और प्रभु को उचित भेंट चढ़ाओ।
12याद रखो कि मृत्यु के आने में देर नहीं है
और तुम अधोलोक का निर्णय नहीं जानते।
13मरने से पहले अपने मित्र की भलाई करो
और जहाँ तक बन पड़े, उसे उदार दान दो।
14वर्तमान की अच्छी चीज़ों से अपने को वंचित
मत रखो
और वांछित सुख का अपना भाग हाथ से न
जाने दो।
15क्या तुम को अपना कष्ट से अर्जित धन दूसरों
के लिए नहीं छोड़ना पड़ेगा?
क्या तुम्हारे परिश्रम का फल चिट्ठी डाल
कर नहीं बांटा जायेगा?
16दे दो, ले लो और खुश बने रहो;
क्योंकि अधोलोक में तुम को सुख-सन्तोष
नहीं मिलेगा।
17हर शरीर वस्त्र की तरह जीर्ण हो जाता है
और यह निर्णय अपरिवर्तनीय है: "तुम मर
जाओगे।"
18जिस तरह हरे पेड़ के पत्ते
कुछ फूट कर निकलते और कुछ गिर जाते
हैं,
उसी तरह शरीरधारियों की पीढ़ियों में होता
है—
कोई पीढ़ी मरती और कोई उत्पन्न होती है।
19कोई भी नश्वर कृति अन्त में नहीं टिकेगी
और उसका निर्माता भी उसके साथ चला
जायेगा।+

प्रज्ञा की खोज

20 धन्य है वह मनुष्य, जो प्रज्ञा पर मनन-
चिन्तन करता रहता है
और विवेक द्वारा उस पर सोच-विचार
करता है।
21जो अपने मन में प्रज्ञा के मार्गों पर ध्यान देता
है
और उसके रहस्य समझने का प्रयत्न करता
है;
22जो शिकारी की तरह उसका पीछा करता
और उसकी गति-विधि की ताक में रहता है;
23जो उसकी खिड़की के अन्दर झाँकता
और उसके द्वार पर कान लगा कर सुनता है;
24जो उसके घर के पास निवास करता
और उसकी दीवार में अपने तम्बू की खूँटी
गाड़ता है;
25जो उसके निकट अपना तम्बू खड़ा करता
और सुखद स्थान में निवास करता है;
26जो अपने बच्चों को उसके आश्रय में रखता
और उसकी डालियों के नीचे रहता है!
27वह उसकी छाया में गरमी से बचता
और उसकी महिमा में विश्राम पाता है।

प्रज्ञा का पुरस्कार

15 जो प्रभु पर श्रद्धा रखता है,
वह ऐसा आचरण करता है।
जो धर्मव्यवस्था का पालन करता,
उसे प्रज्ञा प्राप्त होगी।

---

* अथवा, "कृपण व्यक्ति कठिनाई से किसी को रोटी देता है।" + प्राचीन लातीनी अनुवाद में यह पद भी मिलता है: "हर सत्कार्य टिका रहेगा, और उसके कर्त्ता का सम्मान किया जाएगा।"

14 : 8 तोब 4 : 7 14 : 10 नीति 23 : 6-7 14 : 18 उत 2 : 17 ; यश 40 : 6 ; याक 1 : 10 14 : 19 प्रक
14 : 13 14 : 20 भज 1 : 2 14 : 23 नीति 8 : 34

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

2प्रज्ञा माता की तरह उसकी अगवानी करने
जायेगी,
वह उसका नववधू-जैसा स्वागत करेगी।
3वह उसे बुद्धि की रोटी खिलायेगी
और उसे ज्ञान का जल पिलायेगी।
4ज्ञानी उसके सहारे चलेगा और नहीं गिरेगा।
वह उस पर निर्भर रहेगा और कभी लज्जित
नहीं होगा।
5प्रज्ञा उसे उसके साथियों के ऊपर उठायेगी
और सभा में बोलने की शक्ति देगी।
6उसे सुख-शान्ति तथा आनन्द का मुकुट प्राप्त
होगा
और उसका नाम सदा बना रहेगा।
7मूर्ख लोग प्रज्ञा को नहीं प्राप्त करेंगे,
पापी उसके दर्शन नहीं करेंगे।
8वह घमण्डी और कपटी से दूर रहती है।
मिथ्यावादी उस पर ध्यान नहीं देंगे;
सत्यवादी उसे प्राप्त करेंगे।
9पापी के मुँह में प्रशंसा अशोभनीय है;
क्योंकि वह प्रभु से प्रेरित नहीं है।
10प्रशंसा प्रज्ञा के अनुकूल होनी चाहिए,
पर प्रभु ही उसे प्रेरित करता है।

मनुष्य का उत्तरदायित्व

11 यह मत कहो, ''प्रभु के कारण मैं भटक
गया;''
क्योंकि जिस से वह घृणा करता है, उसे
प्रेरित नहीं करता।
12यह मत कहो, ''उसी ने मुझे भटकाया;''
क्योंकि उसे पापी से क्या काम?
13प्रभु को हर कुत्सित कर्म से घृणा होती है;
और प्रभु के भक्त भी ऐसे कर्म नहीं चाहते।
14परमेश्वर ने प्रारम्भ में मनुष्य की सृष्टि की
और उसे निर्णय करने की स्वतन्त्रता प्रदान
की।
15यदि तुम चाहते हो, तो आज्ञाओं का पालन
कर सकते हो;
परमेश्वर के प्रति ईमानदार रहना तुम्हारी
इच्छा पर निर्भर है।
16उसने तुम्हारे सामने अग्नि और जल, दोनों
रख दिये।
हाथ बढ़ा कर उन में एक का चुनाव करो।
17मनुष्य के सामने जीवन और मरण, दोनों रखे
हुए हैं।
जिसे मनुष्य चुनता, वही उसे मिलता है।
18प्रभु की प्रज्ञा अपार है।
वह सर्वशक्तिमान् और सर्वज्ञ है।
19प्रभु अपने श्रद्धालु भक्तों की देखरेख करता
है।
मनुष्य जो भी करते हैं, वह सब देखता रहता
है।
20उसने न तो किसी को अधर्म करने का आदेश
दिया
और न किसी को पाप करने की छूट।

पापियों का दण्ड

16 अधिक संतान की इच्छा मत करो, जो
निकम्मी हो;
पुत्रों के कारण आनन्द मत मनाओ, यदि वे
अधर्मी हों।
2यदि वे प्रभु पर श्रद्धा नहीं रखते,
तो उनकी बढ़ती संख्या पर प्रसन्न मत हो।
3उनकी लम्बी आयु का भरोसा मत करो
और उनकी संख्या पर निर्भर मत रहो;
[क्योंकि उनके आकस्मिक निधन से तुम
अपार दुःख से कराहते रहोगे।]
हज़ार की अपेक्षा
एक ही भक्त संतान अच्छी है।
अधर्मी संतान की अपेक्षा
निस्सन्तान मरना अच्छा है।
4एक समझदार व्यक्ति से नगर-निवासियों की
रक्षा होती है,
किन्तु दुष्टों की पीढ़ी नष्ट हो जायेगी।
5मैंने यह सब अपनी आँखों से बार-बार देखा,
और इस से अधिक प्रभावकारी उदाहरण
सुने।
6पापियों की सभा में आग प्रज्वलित होती है
और विद्रोही राष्ट्र में कोप भड़कता है।

15 : 2 प्रज्ञा 8 : 2-9 15 : 7 प्रज्ञा 1 : 4 15 : 11 याक 1 : 13-15 15 : 14 उत 1 : 26 15 : 17 व्य 30 : 15.19
15 : 18 भज 14 7 : 5 16 : 3 प्रज्ञा 4 : 1 16 : 6 भज 78 : 21

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

7प्रभु ने प्राचीन काल के भीमकाय दानवों को
क्षमा नहीं किया,
जिन्होंने अपनी शक्ति के बल पर विद्रोह
किया था।
8उसने लोट के पड़ोसियों की रक्षा नहीं की;
क्योंकि उसे उनके घमण्ड से घृणा थी।
9उसने उन पतनोन्मुख लोगों पर दया नहीं की;
वे अपने पापों के कारण जड़ से उखाड़ डाले
गये।
[यह सब उसने उन हठीली जातियों के साथ
किया,
क्योंकि वह अपने पवित्र जनों की संख्या से
संतुष्ट नहीं हुआ।]
10प्रभु ने उन छः लाख पैदल सैनिकों पर भी
दया नहीं की,
जो हठपूर्वक उसके विरुद्ध इकट्ठे हुए थे।
[मारते हुए भी प्रभु दया दर्शाता है
और प्रहार करते हुए भी स्वास्थ्य प्रदान
करता है।
प्रभु यों ही अपनी अनुकम्पा में सबको
सुधारता रहता है।]
11यदि केवल एक ही हठीला विद्रोही हुआ
होता
और वह दण्ड से बच गया होता,
तो बड़े आश्चर्य की बात होती;
क्योंकि प्रभु के पास दया और क्रोध है;
वह बड़ा दयालु है, किन्तु अपने क्रोध को भी
भड़कने देता है।
12उसकी दया जितनी बड़ी है, उतनी ही महान्
है उसकी डाँट।
वह कर्मों के अनुसार मनुष्यों का न्याय करता
है।
13पापी अपनी लूट के साथ नहीं भाग सकेगा
और धर्मी की आशा पूर्ण हो जायेगी।
14जो भलाई करता है, उसे पुरस्कार मिलेगा
और सब को अपने कर्मों का फल दिया
जायेगा।
15[प्रभु ने फरओ का हृदय कठोर बना दिया,
जिससे वह प्रभु को नहीं पहचाने
और प्रभु के कार्य सर्वत्र ज्ञात हों।
16सारी सृष्टि पर प्रभु की कृपा प्रकट हो गयी
है।
उसने प्रकाश और अन्धकार, दोनों को
मनुष्यों में* बाँट दिया।]
17यह मत कहो, "मैं प्रभु के सामने से छिप
जाऊँगा,
वहाँ आकाश में मुझे कौन याद करेगा?
बड़ी भीड़ में मुझे कौन पहचानेगा?
अपार संसार में मैं क्या हूँ?"
18प्रभु के आगमन पर
आकाश, सर्वोच्च आकाश,
महागर्त्त और पृथ्वी
सब-के-सब हिलाये जायेंगे।
[सम्पूर्ण विश्व, भूत अथवा वर्तमान में,
उसकी इच्छा पर निर्भर है।]
19जब प्रभु उनपर दृष्टि डालेगा, तो पर्वत और
पृथ्वी के आधार डर के मारे कांप उठेंगे।
20लेकिन इन बातों पर लोगों का ध्यान नहीं
जाता,
और फिर प्रभु के मार्गों की चिन्ता कौन करता
है?
21जैसे तूफान के आकार को मनुष्य नहीं देख
सकता,
वैसे ही उसके बहुत-से कार्य भी अदृश्य
रहते हैं।+
22यह मत कहो, "प्रभु के धार्मिक कार्यों को
कौन बता सकता है?
कौन प्रतीक्षा करेगा? निर्णय का दिन दूर
भविष्य में होगा।
[सब की अन्तिम परीक्षा का समय अभी दूर
है]"
23ये नासमझ के विचार हैं,
अविवेकी एवं भ्रष्ट मनुष्य ऐसी मूर्खतापूर्ण
बातें सोचता है।

---

* मूल में, "आदम"। + अथवा इब्रानी पाठ के अनुसार : "जब मैं पाप करता, तो कोई नहीं देखता; जब मैं गुप्त में अपराध करता, तो कौन जानता है?"

16 : 8 उत 19 : 24 16 : 10 गण 14 : 35 16 : 14 अय्य 34 :11 16 : 18 2 पत 3 : 12

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

परमेश्वर ने मनुष्य को अपनी सृष्टि पर अधिकार दिया

24–25 शिष्य! मेरी बात सुनो और ज्ञान ग्रहण करो।
मैं तुम को सन्तुलित शिक्षा प्रदान करूँगा
और अपना ज्ञान अच्छी तरह समझाऊँगा।
मेरी बातों में मन लगाओ।
26प्रभु ने प्रारम्भ से अपने सृष्टि-कार्य सम्पन्न किये
और प्रत्येक कृति का अपना-अपना स्थान निर्धारित किया।
27उसने सदा के लिए उन सब कृतियों का कार्यक्षेत्र सुव्यवस्थित किया,
और उनकी अपनी प्रकृति के अनुसार उन को अधिकार दिया।
उन्हें न तो भूख लगती और न थकावट होती,
वे अपने कार्य नहीं छोड़तीं।
28कोई न तो अपनी निकटवर्ती कृति से टकराती
और न उसके आदेश की अवज्ञा करती।
29इसके बाद प्रभु ने पृथ्वी पर दृष्टि डाली
और उसे अपने वरदानों से भर दिया।
30उसने पृथ्वीतल हर प्रकार के प्राणियों से ढांक दिया
और उन्हें इस पृथ्वी में समा जाना होगा।

17 प्रभु ने मिट्टी से मनुष्य को गढ़ा,
और वह उसे फिर मिट्टी में मिला देता है।
2उसने मनुष्यों की आयु की सीमा निर्धारित की
और उन्हें पृथ्वी की सब वस्तुओं पर अधिकार दिया।
3उसने उन्हें अपने सदृश शक्ति प्रदान की,
और अपने ही स्वरूप में रचा।
4उसने सब प्राणियों में मनुष्य के प्रति भय उत्पन्न किया
और उसे सब पशुओं तथा पक्षियों पर अधिकार दिया।
5[अपने उपयोग के लिए मनुष्यों को प्रभु से पाँच ज्ञान-इन्द्रियाँ मिलीं,
और वे छठे वरदान, अर्थात् मन-शक्ति के भी अधिकारी बने,
तथा सातवाँ वरदान, अर्थात् विवेक-शक्ति भी उन्हें प्राप्त हुआ,
जो ज्ञान-इन्द्रियों के विषयों का विवेचन करती है।]
6उसने मनुष्यों को बुद्धि, जिह्वा, आँखें तथा कान दिये
और सोच-विचार करने के लिए हृदय भी दिया।
7उसने उन्हें जानने और समझने की शक्ति से संपन्न किया,
और भलाई तथा बुराई की पहचान से भी।
8उसने उनके हृदय में श्रद्धा-भक्ति रख दी,
ताकि वह अपने कार्यों की महिमा उन पर प्रकट कर सके।
[प्रभु ने मनुष्यों के लिए यह सब इसलिए किया,
कि वे युगानुयुग उसके अदभुत कार्यों की प्रशंसा करें]
9–10और उसके पवित्र नाम का स्तुतिगान
एवं महिमामय कार्यों का बखान करें।
11इसके अतिरिक्त उसने उन्हें ज्ञान का वरदान दिया
और जीवनप्रद व्यवस्था को
उन्हें विरासत के रूप में सौंप दिया,
[जिससे उन्हें याद रहे कि वे इस लोक में मरणशील हैं।]
12उसने उनके लिए स्थायी विधान निर्धारित किया
और उन्हें अपनी आज्ञाओं की शिक्षा दी।
13उनकी आँखों ने उसके महिमामय ऐश्वर्य को देखा
और उनके कानों ने उनकी महिमामय वाणी सुनी।
14उसने उन से यह कहा, ''हर प्रकार की बुराई से दूर रहो।''
उसने प्रत्येक को दूसरों के प्रति कर्तव्य सिखाया।

---

16 : 24 नीति 4 : 20 16 : 28 भज 148 : 6 16 : 30 सभ 3 : 20 17 : 1 उत 3 : 19 ; प्रज्ञा 7 : 1 17 : 2 उत 6 : 3 ; भज 90 : 10 17 : 3 प्रज्ञा 2 : 23 17 : 10 भज 107 : 8 17 : 14 नि 20 : 12 –17

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सर्वज्ञ प्रभु

15 मनुष्य जो कुछ करता है, वह सदा प्रभु की
जानकारी में रहता है
और उसकी आँखों से छिपा हुआ नहीं रह
सकता।
16[मनुष्य के पथ बचपन ही से उसे बुराई की
ओर ले जाते हैं;
वह अपना पाषाण-हृदय रक्त-मांस के हृदय
में बदल पाने में असमर्थ है।
17जब सम्पूर्ण धरती पर राष्ट्रों को विभाजित कर
दिया गया,]
तब प्रभु ने प्रत्येक राष्ट्र के लिए एक शासक
नियुक्त किया,
किन्तु इस्राएल प्रभु की विरासत है।
18[ज्येष्ठ पुत्र होने के कारण प्रभु ने अनुशासन
में उसका पालन-पोषण किया;
उसे अपनी प्रेम-ज्योति का भागीदार बना
दिया,
कभी उसे परित्यक्त नहीं किया।]
19मनुष्यों के सभी कार्य दिन के प्रकाश की तरह
प्रभु के सामने प्रकट हैं;
वह उनके मार्गों पर निरन्तर दृष्टि दौड़ाता है।
20उनका अधर्म उस से छिपा नहीं है;
उनके सभी पाप प्रभु के सामने हैं।
21[प्रभु भला है और अपनी सृष्टि को चाहने
वाला है,
वह उन्हें विनष्ट नहीं करता और न उन्हें
त्यागता है,
वरन् उनके साथ धैर्यपूर्ण बर्ताव करता है।]
22मनुष्य का भिक्षादान मुहर की तरह उसकी
रक्षा करता है।
प्रभु मनुष्य का परोपकार आँख की पुतली
की तरह सुरक्षित रखता है।
[वह अपने पुत्र-पुत्रियों को अवश्य पश्चात्ताप
का अवसर देता है।]
23वह अन्त में उठ कर उन्हें प्रतिफल प्रदान
करेगा।
वह उनका पुरस्कार उनके सिर पर रख देगा।
24परमेश्वर पश्चात्ताप करने वालों को अपने
पास लौटने देता
और निराश लोगों को हिम्मत बँधाता है।

25 पाप छोड़ कर प्रभु के पास लौट जाओ।
उस से प्रार्थना करो और आगे उसे अप्रसन्न
मत करो।
26अन्याय छोड़ कर सर्वोच्च प्रभु के पास लौट
जाओ,
[क्योंकि वह तुम्हें अंधकार से स्वास्थ्यप्रद
प्रकाश की ओर ले जाएगा।]
अतः तुम अधर्म से अत्यधिक घृणा करो।
27जीवित लोग ही सर्वोच्च प्रभु को धन्यवाद दे
सकते हैं;
अधोलोक में कौन उसका स्तुतिगान करेगा?
28जो मर चुका है, वह प्रभु का स्तुतिगान नहीं
करता।
जो जीवित और सकुशल है,
वही प्रभु को धन्य कहता है।
29कितनी महान् है प्रभु की अनुकम्पा
और उसके पास लौटने वालों के लिए
उसकी क्षमाशीलता!
30सब कुछ मनुष्य के लिए सम्भव नहीं है,
क्योंकि मनुष्य अमर नहीं है।
31सूर्य से अधिक प्रकाशमय क्या है?
किन्तु उस पर भी ग्रहण लग जाता है।
रक्त-मांस का मनुष्य तो बुराई की बात
सोचता है।
32परमेश्वर आकाशमण्डल के तारागण को
सुव्यवस्थित रखता है,
किन्तु सारे मनुष्य मिट्टी और राख मात्र हैं।

परमेश्वर की महिमा

18 जो सदा जीवित रहता है,
उसने सब कुछ की सृष्टि की है।
2प्रभु ही धार्मिक माना जा सकता है;
[उसके अतिरिक्त अन्य कोई नहीं है।
3वह अपने हाथ के संकेत मात्र से
विश्व का शासन करता है,
और समस्त सृष्टि उसकी इच्छा-पूर्ति करती
है;

17 : 17 व्य 32 : 9 17 : 22 यिर 22 : 24 17 : 25 यिर 3 : 12 17 : 28 यश 38 : 19

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वह सर्वसामर्थी राजाधिराज है
और सब में पवित्र और अपवित्र का भेद करता है।]
4कौन उसके कार्यों का पूरा वर्णन कर सकता है?
कौन उसकी महिमा का अनुसन्धान कर सकता है ?
5कौन उसके महिमामय सामर्थ्य को नाप सकता है ?
कौन उसकी दयालुता का पूरा बखान करेगा ?
6उन में न तो कुछ घटाया और न कुछ बढ़ाया जा सकता है।
प्रभु के अद्भुत कार्यों की थाह कोई नहीं ले सकता।
7जहाँ मनुष्य उनके वर्णन का अन्त करता है,
वहाँ उनका प्रारम्भ मात्र है।
जब वह रुकता है, तो असमंजस में पड़ा रहता है।

मनुष्य की नगण्यता

8 मनुष्य क्या है ? वह किस काम का है ?
उसके अच्छे और बुरे कामों का क्या अर्थ है ?
9यदि मनुष्य की आयु एक सौ वर्ष है,
तो वह बहुत मानी जाती है;
[सब को मरना ही है; लेकिन कब-कैसे ? यह कोई नहीं जानता।]
10किन्तु अनन्त काल की तुलना में ये थोड़े वर्ष
समुद्र में बूँद की तरह, रेतकण की तरह हैं।
11इसलिए प्रभु मनुष्यों के प्रति सहिष्णु है
और उन पर अपनी दया बरसाता है।
12वह देखता और जानता है कि उनका अन्त दुःखद होता है,
इसलिए वह उन्हें और अधिक क्षमा प्रदान करता है।
13मनुष्य अपने पड़ोसी पर ही दया दिखा सकता है,
किन्तु प्रभु की दया सब शरीरधारियों पर प्रकट होती है।
वह मनुष्यों को डाँटता, अनुभव कराता और शिक्षा देता है।
वह उन्हें वापस ले जाता है,
जिस तरह चरवाहा अपने झुण्ड का पथ-प्रदर्शन करता है।
14वह उन लोगों पर दया करता है, जो उसकी शिक्षा ग्रहण करते
और उसकी आज्ञाओं का उत्सुकता से पालन करते हैं।

समझदारी

15 शिष्य! भलाई करते समय किसी को दोष मत दो
और दान देते समय कटु शब्द मत बोलो।
16क्या गर्मी के दिनों में ओस शीतल नहीं करती ?
इसी प्रकार उपहार से भी अच्छा एक शब्द हो सकता है।
17एक मधुर शब्द महँगे उपहार से अच्छा है।
स्नेही मनुष्य एक साथ दोनों को देता है।
18मूर्ख कटु शब्दों से डाँटता है
और क्रोधी मनुष्य का उपहार दुःखदायी होता है।*

19बोलने से पहले जानकार बनो,
और बीमारी से पहले ही अपना स्वास्थ्य संभालो।
20निर्णय से पहले अपनी ही जाँच करो
और जांच के समय तुम को क्षमा मिलेगी।
21बीमारी से पहले विनम्र बनो
और समय रहते अपने पापों पर पश्चात्ताप करो।
22मन्नत पूरी करने में विलम्ब मत करो।
मृत्यु तक यह काम मत टालते रहो;
23मन्नत मानने से पहले सोच-विचार करो।
उस मनुष्य के समान मत बनो, जो प्रभु की परीक्षा लेता है।
24अन्तिम समय भड़कने वाला क्रोध और दण्ड याद रखो,

---

* शब्दशः "अनिच्छा से देनेवाले का दान आँखों को दुःखता है"।

18 : 4 भज 106 : 2 18 : 8 भज 8 : 4 18 : 10 2 पत 3 : 8 18 : 13 भज 145 : 9 18 : 22 व्य 23 : 21; सभ 5 : 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जब प्रभु अपना मुंह फेर लेता है।
25बहुतायत के दिनों में भुखमरी
और समृद्धि के दिनों में दरिद्रता और अभाव
याद रखो।
26 सुबह से शाम तक मौसम बदलता है,
प्रभु की दृष्टि में यह सब क्षणभंगुर है।
27बुद्धिमान् सब समय सावधान रहता है
और जब पाप का बोलबाला हो,
तो वह अपराध से बचता है।
28हर विवेकशील व्यक्ति प्रज्ञा पहचानता
और प्रज्ञासम्पन्न मनुष्य की प्रशंसा करता है।
29नीति-वचन जानने वाले अपनी प्रज्ञा का
प्रमाण देते हैं
और वर्षा की तरह सूक्तियाँ बरसाते हैं।
[मरणशील हृदय को मरणोन्मुख व्यक्ति पर
लगाने की अपेक्षा
अच्छा है कि तुम एक ही स्वामी परमेश्वर
पर पूर्ण भरोसा रखो।]

आत्मसंयम+

30अपनी वासनाओं का दास मत बनो
और अपनी लालसाओं पर संयम रखो।
31यदि तुम अपनी वासनाओं की भूख मिटाते
रहोगे,
तो तुम्हारे शत्रु तुम्हारा उपहास करेंगे।
32दावतों में रुचि मत लो,
इन के खर्च से दुगुनी दरिद्रता आ जाती है।
33यदि तुम्हारी जेब में एक भी पैसा न रहे,
तो उधार का खा-पीकर अपने को और
गरीब मत बनाओ;
[कहीं ऐसा न हो कि तुम अपनी हानि कर
बैठो।]

19 पीने वाला मजदूर धनी नहीं बनेगा।
जो छोटी बातों की उपेक्षा करता,
वह धीरे-धीरे कंगाल हो जाएगा।
2मदिरा और स्त्रियाँ समझदार लोगों को भी
भटकाती हैं।
वेश्यागामी बड़ी जोखिम उठाता है।
3वह सड़ाँध और कीड़ों का शिकार होगा।
उसका दुःसाहस उसके विनाश का कारण
बनेगा।

बकवाद

4जो जल्दी विश्वास करता, वह छिछोरा है।
जो पाप करता, वह अपने को हानि पहुंचाता
है।
5जो बुराई में रुचि लेता, उसे कलंक लगेगा।
[जो भोग-विलास से निर्लिप्त रहता है, वह
अपने जीवन को मुकुट-मंडित करता है।
6जो अपनी जिह्वा को वश में रखता है,
वह निर्विघ्न जीवन-यापन करता है।]
जो बकवाद से घृणा करता,
उसकी बात मन में रह जाती है।++
7चुगली मत दोहराओ
और तुम को हानि नहीं उठानी पड़ेगी।
8जब तक चुप रहने में तुम्हारा कोई दोष न हो,
तो न मित्र और न शत्रु का कोई भेद प्रकट
करो :
9क्योंकि जो तुम्हारी इस प्रकार की बात सुनेगा,
वह तुम से सावधान रहेगा
और अवसर पा कर तुम पर बैर प्रकट करेगा।
10तुमने कोई बात सुनी है ?
तो उसे अपने में ही अन्त पा जाने दो;
मत डरो, ऐसा करने पर तुम फट नहीं
जाओगे।
11मूर्ख कोई बात सुनने पर परेशान होता है,
उस स्त्री की तरह, जिसका प्रसव निकट है।
12मूर्ख के पेट में रहस्य की बात
जाँघ में लगे बाण की तरह होती है।

मित्रों का सुधार

13अपने मित्र से पूछो—सम्भव है, उसने वह
अपराध नहीं किया हो;
यदि उसने किया है, तो उसे फिर ऐसा करने
से रोको।
14अपने पड़ोसी से पूछो—सम्भव है, उसने वह
बात नहीं कही हो।

+ यह उपशीर्षक मूल पाठ का अंश है। ++ पाठांतर, "उसका कष्ट कम होता है"।

18 : 30 रोम 13 : 14 **19 : 2** हो 4 : 11; नीति 31 : 3-5 **19 : 3** यश 51 : 8 **19 : 4** नीति 8 : 36 **19 : 13** लेव 19 : 17

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
और यदि उसने कही है, तो उसे वह बात
दोहराने से रोको।
15अपने मित्र से पूछो, क्योंकि लोग बहुत
चुगली खाते हैं।
हर बात पर विश्वास मत करो।
16कोई अनजान में बातचीत में गलती कर
सकता है।
किसने कभी बातचीत में गलती नहीं की?
17डाँटने से पहले पड़ोसी से पूछो,
और सर्वोच्च प्रभु की व्यवस्था को सामने
रखो।

प्रज्ञा की पहचान

18 [प्रभु पर श्रद्धा रखना उसकी दया पाने का
पहला सोपान है,
और प्रज्ञा उसका प्रेम दिलाने वाली है।
19प्रभु के आदेशों का ज्ञान जीवन का अनुशासन
है,
जो उसको पसन्द करते हैं, वे अमरता के वृक्ष
का फल प्राप्त करते हैं।]
20प्रभु पर श्रद्धा प्रज्ञा की परिपूर्णता है और सच्ची
प्रज्ञा व्यवस्था का पालन करती है।
[उसमें परमेश्वर की सर्वशक्तिमत्ता का
अनुभव है।
21जो सेवक अपने स्वामी की मांग पूरी करने
से इनकार करता है,
वह बाद में उसे करने पर भी अपने पोषक
को क्षुब्ध करता है।]
22दुष्टता की जानकारी प्रज्ञा नहीं है,
और पापियों की योजनाएँ समझदारी का
परिचय नहीं देतीं।
23एक प्रकार की चतुराई घृणास्पद है।
जिस व्यक्ति में प्रज्ञा का अभाव है,
वास्तव में वही मूर्ख है।
24व्यवस्था का उल्लंघन करने वाले चतुर
व्यक्ति की अपेक्षा
वह कम समझदार व्यक्ति अच्छा है, जो प्रभु
पर श्रद्धा रखता है।
25एक चतुराई ऐसी भी होती है,
जो तेज होते हुए भी दुष्ट है।
कोई अपना पक्ष उचित सिद्ध करने के लिए
छल-कपट का सहारा लेता है।
[और ऐसे बुद्धिमान भी हैं;
जो केवल धर्मियों की आलोचना करते हैं।]
26कोई शोक के वस्त्र पहनकर दुःखी होने का
स्वांग रचता है,
किन्तु उसका अन्तरतम कपट से भरा होता
है।
27कोई सिर झुका कर नम्रता प्रदर्शित करता
और बहरा होने का स्वांग रचता है;
किन्तु जब कोई ध्यान नहीं देता,
तो वह तुम को धोखा देता है।
28कोई सामर्थ्य के अभाव में पाप से परहेज़
करता है,
किन्तु अवसर मिलते ही वह अपराध करेगा।
29मनुष्य मुखाकृति से पहचाना जाता है
और बुद्धिमान् अपने चेहरे के भाव से।
30मनुष्य कैसा है—इसका पता चलता है
उसके पहनावे, उसकी मुस्कराहट और
उसकी चाल से।

मूर्ख और समझदार की तुलना

20 डांट-डपट कभी बेमौके पर दे दी जाती
है;
कभी चुप रहना ही मनुष्य की बुद्धिमानी है।
क्रोध करने की अपेक्षा
2किसी को समझाना अच्छा है।
3पाप स्वीकार करने वाले को बोलने देना
चाहिए।*
4जो न्याय को बलपूर्वक स्थापित करना चाहता
है,
वह उस नपुंसक पुरुष के सदृश है,
जो किसी कुँवारी का शील भंग करना चाहता
है।
5कोई चुप रहता और बुद्धिमान् समझा जाता है।
कोई अधिक बोलता है और लोग उस से बैर

---

* अथवा, "जो गलती स्वीकार करता है, वह अवमानना से बचता है"।

19 : 17 मत 18 : 15 **19 : 21** मत 21 : 28-32 **19 : 30** सभ 7 : 6; 2 मक 15 : 12 **20 : 1** सभ 3 : 7; आमो 5 : 13 **20 : 2** नीति 28 : 13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

करते हैं।
6कोई चुप रहता, क्योंकि उसके पास उत्तर नहीं
और कोई चुप रहता, क्योंकि वह बोलने का
उचित समय जानता है।
7बुद्धिमान् सुअवसर के समय तक मौन रहेगा,
किन्तु बकवादी और मूर्ख सुअवसर का
ध्यान नहीं रखते।
8लोग बकवादी से घृणा करते हैं
और जो अधिकार जताता है, लोग उस से बैर
करते हैं।
[जब तुम पर डांट पड़ती है,
तब पश्चात्ताप करना कितना भला है,
जिससे तुम पाप की प्रवृत्ति से बच जाओ]

विरोधाभास

9 कभी तो मनुष्य अपनी विपत्ति से
लाभ उठाता है
और कभी अप्रत्याशित लाभ उसे हानि
पहुंचाता है।
10किसी उपहार से तुम को कोई लाभ नहीं होगा
और किसी उपहार से तुम को दुगुना लाभ
होगा।
11कभी ख्याति से अपमान मिलता
और नीचा दिखाये जाने के बाद सिर ऊंचा
उठता है।
12कोई कम दाम में बहुत-सी वस्तुएँ खरीदता
और कोई सात गुना दाम देता है।
13बुद्धिमान् थोड़े-से शब्दों द्वारा लोकप्रिय
बनता,
किन्तु मूर्ख व्यर्थ ही बहुत-से प्यार के शब्द
बोलता है।
14मूर्ख के उपहार से तुम को कोई लाभ नहीं
होगा,
क्योंकि वह अपने उपहार का सात गुना
प्रतिदान चाहता है।
[यही बात ईर्ष्यालु व्यक्ति पर लागू होती है,
जो केवल मजबूरी से ही देता है।]
15कोई कम देता है, किन्तु उसकी बड़ी चर्चा
करता है
और मुनादी करने वाले की तरह उसका
ढिंढोरा पीटता है।
जो आज उधार देता और कल वापस मांगता
है,
ऐसा मनुष्य तिरस्कार के योग्य है।
16मूर्ख कहता है, "मेरा कोई मित्र नहीं
और कोई मेरे उपकारों के लिए धन्यवाद
नहीं देता।"
जो उसकी रोटी खाते, वे उसकी निन्दा करते
हैं।
17कितने ही लोग कितनी ही बार उसकी हँसी
उड़ाते हैं;
[क्योंकि जो उसके पास है,
उसने उसे सद्भाव से नहीं ग्रहण किया;
और यदि उसके पास नहीं है, तो वह उस
बात की परवाह नहीं करता।]

बातचीत में सावधानी

18जीभ के फिसलने की अपेक्षा ज़मीन पर
फिसलना अच्छा है।
दुष्टों का पतन इस प्रकार जल्दी हो जाता है।
19बेमौके की बात अप्रिय व्यक्ति की तरह होती
है,
वह अज्ञानियों के मुंह से निकलती रहती है।
20सूक्ति मूर्ख के मुंह को शोभा नहीं देती;
क्योंकि वह उसे बेमौके बोलता है।
21कुछ लोग दरिद्रता के कारण पाप नहीं करते;
विश्राम के समय उन्हें पश्चात्ताप नहीं होता।
22कुछ लोग संकोचवश पाप करते,
और लोकलज्जा के कारण अपनी आत्मा का
विनाश करते हैं।
23कुछ लोग संकोचवश अपने मित्र से प्रतिज्ञा
करते,
और इस प्रकार उसे व्यर्थ ही शत्रु बना लेते
हैं।

झूठ

24झूठ मनुष्य का कलंक है;
वह अनुशासनहीन लोगों के मुंह से निकलता
रहता है।
25आदतन् झूठ बोलने वाले की अपेक्षा चोर
अच्छा है,

20 : 6 नीति 15 : 3; सभ 3 : 7 **20 : 11** मत 23 : 12

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

किन्तु विनाश दोनों की विरासत है।
26झूठ बोलने वाले का आचरण अपमानजनक
होता है,
और उसे निरन्तर लज्जित होना पड़ता है।

विशेष सूक्तियाँ*

27 प्रज्ञासम्पन्न व्यक्ति सहज उन्नति करता है।
बुद्धिमान् बड़े लोगों का कृपापात्र बनता है।
28जो खेती करता, वह अपने अनाज का ढेर
बढ़ाता है;
जो बड़े लोगों का कृपापात्र है, उसका
अन्याय माफ़ किया जाता है।
29दान और उपहार ज्ञानियों की भी आंखें अन्धी
बना देते हैं,
और मुंह पर मोहरे की तरह डांट को रोकते
हैं।
30गुप्त प्रज्ञा और अनदेखा ख़ज़ाना,
ये दोनों किस काम के होते हैं?
31अपनी प्रज्ञा छिपाये रखने वाले मनुष्य की
अपेक्षा
अपनी मूर्खता छिपाने वाला मनुष्य अच्छा
है।
32[अपना जीवन-रथ स्वेच्छा से चलाने की
अपेक्षा
प्रभु की खोज में अथक परिश्रम करना
अच्छा है।]

पाप का त्याग

21 शिष्य! क्या तुमने पाप किया है?
तो फिर ऐसा मत करो,
और अपने पुराने पापों के लिए क्षमा
मांगो।
2सांप के सामने पड़ने की तरह पाप से दूर भाग
जाओ।
यदि पास आओगे, तो वह तुम को काटेगा।
उसके दांत सिंह के दांतों-जैसे हैं।
वे मनुष्यों की आत्माओं का विनाश करते हैं।
3प्रत्येक अपराध दुधारी तलवार-जैसा है :
उसके घाव का इलाज नहीं होता।
4डांट-डपट और अक्खड़पन सम्पत्ति का
विनाश करते हैं;
इनके द्वारा घमण्डी का घर उजाड़ा जाता है।
5दरिद्र की प्रार्थना सीधे परमेश्वर के कान तक
पहुंचती है;
उसे शीघ्र ही न्याय प्राप्त होता है।
6जो सुधार नापसन्द करता, वह पापी के मार्ग
पर चलता है;
किन्तु जो प्रभु पर श्रद्धा रखता है, वह हृदय
से पश्चात्ताप करता है।
7सब लोग डींग मारने वाले को पहचानते हैं;
किन्तु समझदार व्यक्ति अपनी गलतियाँ
जानता है।
8जो पराये धन से अपना घर बनाता है,
वह मानो अपने मकबरे के लिए पत्थर
बटोरता है।
9पापियों की सभा सन की गठरी-जैसी है।
उसका अन्त प्रज्वलित आग में होता है।
10पापियों का मार्ग प्रशस्त है, उस में रोड़े नहीं
हैं,
किन्तु वह मृतकों के निवास के गर्त्त में ले
जाता है।

बुद्धिमान और मूर्ख

11 व्यवस्था के पालनकर्ता की बुद्धि स्थिर है।
प्रज्ञा प्रभु पर श्रद्धा की परिपूर्णता है।
12जो चतुर नहीं है, वह सुशिक्षित नहीं बन
सकता।
किन्तु एक ऐसी चतुराई होती है,
जो कटुता उत्पन्न करती है।
13बुद्धिमान का ज्ञान बाढ़ की तरह बढ़ता है
और उसका परामर्श संजीवन जल का स्रोत
है।
14मूर्ख का मन टूटे घड़े के सदृश है;
उस में कुछ भी ज्ञान नहीं ठहर पाता।
15जब समझदार व्यक्ति ज्ञान की बात सुनता,
तो वह उसकी प्रशंसा करता
और अपनी ओर से उस में कुछ जोड़ देता

---

* यह उपशीर्षक मूल पाठ में है।

20 : 28 नीति 12 : 11 **20 : 30** प्रव 41 : 15; मत 13 : 52 **21 : 2** नीति 23 : 32 **21 : 5** नि 3 : 9 **21 : 6** नीति 12 : 1 **21 : 8** हब 2 : 6 **21 : 10** मत 7 : 13-14 **21 : 13** नीति 10 : 11

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

है;
किन्तु लम्पट उसे सुन कर नापसन्द करता
और उसे अपनी पीठ पीछे फेंक देता है।
16मूर्ख की बकवाद यात्रा में बोझ-जैसी है,
किन्तु बुद्धिमान की बातें मनोहर होती हैं।
17लोग सभा में बुद्धिमान् की सम्मति को महत्व देते
और उसके शब्दों पर विचार करते हैं।
18मूर्ख की दृष्टि में प्रज्ञा टूटे-फूटे मकान-जैसी है।
बेसमझ का ज्ञान है : बेसिर-पैर की बातें!
19मूर्ख के लिए अनुशासन पैरों में बेड़ियों जैसा
या दाहिने हाथ में हथकड़ियों-जैसा है।
20मूर्ख खिलखिला कर हंसता है,
किन्तु समझदार अधिक-से-अधिक मुस्कराता है।
21बुद्धिमान के लिए अनुशासन सोने के आभूषण-जैसा
या दाहिनी बांह में भुजबन्द-जैसा है।
22मूर्ख किसी के घर निधड़क घुस जाता,
किन्तु अनुभवी व्यक्ति सविनय खड़ा रहता है।
23मूर्ख द्वार पर घर के अन्दर झांकता,
किन्तु सभ्य मनुष्य बाहर खड़ा रहता है।
24असभ्य मनुष्य द्वार पर कान लगा कर सुनता,
किन्तु समझदार व्यक्ति उसे लज्जा की बात समझता है।
25गप्पी के होंठ बकवाद करते हैं,*
किन्तु समझदार व्यक्ति के शब्द तराजू पर तौले हुए होते हैं।
26मूर्खों का मन उनकी जीभ पर बसता है,
किन्तु ज्ञानियों की जीभ उनके मन में बसती है।
27जब दुष्ट अपने विरोधी+ को कोसता है,
तो वह अपने को कोसता है।
28चुगलखोर अपने को दूषित करता
और स्वयं को पड़ोस में घृणा का पात्र बना लेता है।

आलसी

22 आलसी कीचड़ में पड़े हुए
पत्थर-जैसा है।
सब कोई उसके कलंक की निन्दा करते हैं।
2आलसी मल के टुकड़े-जैसा है;
सब कोई उसे छू कर हाथ झटकारते हैं।

अनुशासनहीन संतान

3 अनुशासनहीन** पुत्र पिता का कलंक है
और ऐसी पुत्री पिता को हानि पहुंचाती है।
4समझदार पुत्री को उपयुक्त पति मिलेगा,
किन्तु कलंकित पुत्री पिता को दु:ख देती है।
5निर्लज्ज कन्या अपने पिता और पति का कलंक है।
दोनों उसका तिरस्कार करते हैं।
6बेमौक़े की बात शोक के समय संगीत-जैसी है।
प्रताड़ित और अनुशासित रहना हर समय समझदारी की बात है।
7[यदि बच्चों का पालन-पोषण सुयोग्य जीवन में परिणत होता है,
तो वे अपने माता-पिता की अकुलीन, निम्न उत्पत्ति का भी लोप करते हैं।
8जो बच्चे लापरवाही एवं अशिक्षा के
कारण अशिष्टता का जीवन अपनाते हैं,
वे अपने संबंधियों की कुलीन, उच्च उत्पत्ति
को भी कलंकित करते हैं।]

मूर्ख का सुधार असम्भव है

9 मूर्ख को शिक्षा देना
फूटे घड़े के ठीकरे जोड़ने-जैसा है।
अनसुनी करने वाले से बात करना
गहरी नींद में सोने वाले को जगाने-जैसा है।
10मूर्ख को समझाना सोने वाले से बातचीत करने-जैसा है।
अन्त में वह पूछेगा : "बात क्या है?"
11मृतक के लिए रोओ : वह ज्योति से वंचित है।
मूर्ख के लिए रोओ : वह बुद्धि से वंचित है।
मृतक के लिए कम रोओ : उसे शान्ति मिली है;

---

* पाठांतर, "पराये लोग अपनी बात समझाने के लिए जबान चलाते रहते हैं।" + अथवा "शैतान"।
21 : 16 सभ 10 : 12 21 : 20 सभ 7 : 6 22 : 3 नीति 10 : 1

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

किन्तु मूर्ख का जीवन मौत से भी बदतर है।
12मृतक के लिए सात दिन तक शोक मनाया
जाता है,
किन्तु मूर्ख और नास्तिक के लिए उनके
जीवन भर।
13मूर्ख से अधिक बातचीत मत करो,
और बेसमझ की संगति मत करो।
[अविवेकी तुम्हारी सभी उपलब्धियों को
महत्वहीन बताएगा।]
उस से सावधान रहो, जिससे तुम मुसीबत में
न पड़ो;
और जब वह अपने कपड़े झटकारता हो, तो
तुम पर उसकी गर्द पड़े।
उस से दूर रहो : तुम को शान्ति मिलेगी,
और उसकी नासमझी से कष्ट नहीं होगा।
14सीसे से भारी क्या होता है?
क्या उसका नाम 'मूर्ख' नहीं?
15मूर्ख व्यक्ति की अपेक्षा
बालू, नमक और लोहे का पिण्ड ढोना सरल
है।
16जैसे भवन में कड़ियों का पक्का बन्धन
भूकम्प से ढीला नहीं पड़ता,
वैसे ही सोच-विचार के बाद मन का संकल्प
निर्णयात्मक समय पर विचलित नहीं होता।
17जो मन सोच-समझ पर दृढ़ हो गया है,
वह पक्की दीवार पर गचकारी के अलंकरण-
जैसा है।
18जैसे ऊंची दीवार पर पड़ी कंकड़ियाँ+
हवा में नहीं टिक पातीं,
वैसे ही मूर्खतापूर्ण दुर्बल संकल्प
किसी भय के सामने नहीं टिक पाता।

मित्रता

19आंख पर चोट लगने पर आंसू टपकते हैं
और हृदय पर चोट लगने पर मित्रता चली
जाती है।*
20जो पक्षियों पर पत्थर मारता, वह उन्हें भगाता
है
और जो मित्र की निन्दा करता, वह मित्रता
भंग करता है।
21यदि तुमने अपने मित्र के विरुद्ध तलवार
खींची है,
तो चिन्ता मत करो, उस से तुम्हारा सम्बन्ध
पहले-जैसा सम्भव है।
22यदि तुमने अपने मित्र से कटु बात कही है,
तो डरो मत, मेल-मिलाप सम्भव है।
किन्तु अपमान, अहंकार, विश्वासघात और
कपटपूर्ण आक्रमण के कारण
कोई भी मित्र भाग जायेगा।
23अपने मित्र का उसकी दरिद्रता में साथ दो
तो तुम उसकी समृद्धि के साझेदार बनोगे।
उसकी विपत्ति में उसके प्रति ईमानदार रहो
तो तुम उसकी विरासत के साझेदार बनोगे।
[ध्यान दो कि सीमित परिस्थितियाँ सदा नहीं
रहतीं;
और न उस धनवान से आकर्षित होना
चाहिए जिसमें सद्बुद्धि है ही नहीं।]
24आग से पहले चूल्हे से धूआँ निकलता है;
इसी प्रकार रक्तपात के पहले गाली-गलौज
होता है।
25मुझे अपने मित्र की रक्षा करने में लज्जा का
अनुभव नहीं होगा
और उसके आने पर मैं उस से मुंह नहीं
छिपाऊंगा।
26यदि मुझे उस से हानि उठानी पड़ेगी,
तो सब सुनने वाले उस से सावधान रहेंगे।

पाप से बचने की प्रार्थना

27 कौन मेरे मुंह पर पहरा बैठायेगा
और मेरे होंठों पर सावधानी की मुहर लगायेगा,
जिससे मैं उनके द्वारा पाप न करूं
और मेरी जीभ मेरा विनाश नहीं करे?

23 प्रभु! मेरे जीवन के पिता और स्वामी!
मुझे उनके वश में न पड़ने दे
और उनके द्वारा मेरा पतन न होने दे।
2कौन मेरे विचारों पर कोड़ों का अंकुश लगायेगा

+ पाठांतर, "पाटन" (बल्ले, धरन आदि)। * मूल में, "भावनाएँ उमड़ती हैं"।

22 : 13 सभ 10 : 13 **22 : 15** नीति 27 : 3 **22 : 16** भज 112 : 7 **22 : 20** व्य 28 : 26; यिर 7 : 33 **22 : 27** भज 39 : 1; 141 : 3 **23 : 2** तोब 3 : 3

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और मेरे हृदय पर प्रज्ञा का अनुशासन,
जिससे मेरे अपराधों की अनदेखी न हो
और मेरे पापों के लिए झिड़की दी जाये ?
3कहीं ऐसा न हो कि मेरे अपराधों में वृद्धि हो,
मेरे पापों की संख्या बढ़ती जाये,
मैं अपने विरोधियों के हाथ पड़ूं
और मेरे शत्रु मुझ पर हँसें।
[वे तेरी दया का अनुमान कभी नहीं लगा सकते।]
4प्रभु! मेरे जीवन के पिता और ईश्वर!
मेरी दृष्टि में अहंकार न आने दे
5और लालच मुझ से दूर कर।
6मुझ पर पेटूपन और वासना का अधिकार न होने दे
और मुझे निर्लज्ज मनोवेगों का शिकार न बनने दे।

जीभ पर नियन्त्रण**

7शिष्यो! सुनो, किस प्रकार मुंह को वश में रखना चाहिए।
जो इस शिक्षा का पालन करता है, वह कभी नहीं फँसेगा।
8पापी अपने ही होंठों का शिकार बनता है।
निन्दक और घमण्डी का इसी कारण पतन होता है।
9अपने मुंह को शपथ खाने का आदी मत बनने दो;
परमपावन परमेश्वर का नाम मत लिया करो।
नहीं तो पाप से नहीं बच सकोगे।
10जिस प्रकार वह नौकर कोड़ों की मार से नहीं बचेगा,
जिस पर निरन्तर निगरानी रखी जाती है,
उसी प्रकार वह व्यक्ति पाप से नहीं बच सकेगा,
जो हर समय शपथ खाता और परमपावन का नाम लेता है।
11जो व्यक्ति बार-बार शपथ खाता, वह अपराध करता है,
और उसके घर पर से दण्ड की छाया नहीं हटती।
यदि वह बिना सोचे-समझे शपथ खाता है,
तो उसे पाप लगता है।
यदि वह उसे तुच्छ समझता,
तो वह दुगुना पाप करता है।
यदि उसने अकारण शपथ खायी,
तो वह निर्दोष नहीं माना जायेगा
और उसके घर पर विपत्तियाँ आ पड़ेंगी।
12एक ऐसी भाषा होती है, जो मृत्युदण्ड के योग्य है।
वह याकूब की विरासत में सुनाई नहीं पड़े।
भक्तजन ऐसी भाषा का प्रयोग नहीं करते
और इस प्रकार पापों से दूषित नहीं होते।
13अपने मुंह को अशोभनीय, अश्लील बातों का आदी न बनने दो,
क्योंकि इस प्रकार तुम शब्दों द्वारा पाप करते हो।
14जब तुम बड़े लोगों के बीच बैठे हो,
तो अपने माता-पिता को याद रखो।
कहीं ऐसा न हो कि तुम उनके सामने अपने को भूल जाओ
और अपने आचरण द्वारा कोई मूर्खता कर बैठो।
तब तुम चाहोगे कि तुम्हारा जन्म नहीं हुआ होता
और अपने जन्म के दिन को अभिशाप दोगे।
15जो निन्दात्मक आलोचना करने का आदी बन गया है,
वह जीवन भर अनुशासन में नहीं रह सकता है।

व्यभिचारी

16 दो प्रकार के लोग पाप करते जाते हैं
और तीसरे प्रकार के लोग अपने ऊपर परमेश्वर का क्रोध बुलाते हैं।
प्रबल वासना जो आग-जैसी प्रज्वलित है,
वह भस्म हो जाने से पहले नहीं बुझती।
जो मनुष्य अपना शरीर* व्यभिचार को अर्पित करता है,

** यह उपशीर्षक मूल पाठ में है। * शब्दशः, "अपने शरीर की देह", सम्भवतः "निकट संबंधी"।
23 : 3 भज 13 : 4 23 : 8 भज 59 : 12 23 : 9 मत 5 : 34; याक 5 : 12 23 : 14 अय्य 3 : 3

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वह तब तक नहीं सम्भलेगा,
जब तक आग उसे जला न दे।
17व्यभिचारी को हर प्रकार का चारा मीठा लगता है;
वह तब तक उसे नहीं छोड़ता,
जब तक वह नहीं मरता।
18व्यभिचारी व्यक्ति वैवाहिक संबंध को दूषित करता है,
और मन-ही-मन कहता है, "मुझे कौन देखता है?
मेरे चारों ओर अंधेरा है,
मुझे दीवारें छिपा रही हैं।
मुझे कोई नहीं देख सकता;
चिन्ता की बात ही क्या है?
सर्वोच्च प्रभु मेरे पापों पर ध्यान नहीं देगा।"
19वह नहीं समझता कि उसकी आंखें सब कुछ देखती हैं।
वह मनुष्यों की आंखों से डरता
और नहीं जानता कि प्रभु की आंखें सूर्य से कहीं अधिक प्रकाशमान हैं।
वे मनुष्यों के सभी मार्ग देखतीं
और गुप्त-से-गुप्त स्थानों तक पहुंचती हैं।
20प्रभु सब वस्तुएँ उनकी सृष्टि से पहले जानता
और उनके बनने के बाद भी उन्हें देखता रहता है।
21व्यभिचारी को नगर के चौकों पर दण्ड दिया जाएगा,
और वह उस समय पकड़ा जाएगा,
जब उसे उसकी कोई आशंका नहीं थी।

व्यभिचारिणी

22 उस स्त्री को भी वही दण्ड दिया जाएगा,
जो अपने पति के साथ विश्वासघात करती
और उसे ऐसा वारिस देती है,
जो उसकी अपनी सन्तान न हो।
23यह है कि उसने सर्वोच्च प्रभु की व्यवस्था का उल्लंघन किया,
दूसरा, अपने पति के साथ अन्याय किया,
तीसरा, व्यभिचार के कारण दूषित हो गयी
और परपुरुष की सन्तान को उत्पन्न किया।
24वह सभा के सामने प्रस्तुत की जायेगी
और उसकी सन्तान दुःखी होगी।+
25उसकी सन्तान जड़ नहीं पकड़ेगी।
और उसकी टहनियाँ फल नहीं उत्पन्न करेंगी।
26उसकी स्मृति अभिशप्त होगी
और उसका कलंक सदा बना रहेगा।
27इस प्रकार बाद के लोग जान जायेंगे
कि प्रभु पर श्रद्धा से बढ़ कर कोई बात नहीं
और उसकी आज्ञाओं के पालन से अधिक मधुर कुछ नहीं।
28[परमेश्वर का नेतृत्व मानना मनुष्य की महानता है,
उसका कृपापात्र बनने पर मनुष्य चिरजीवी होता है।]

प्रज्ञा की आत्मश्लाघा++

24 प्रज्ञा अपनी ही प्रशंसा कर रही है,
वह अपने लोगों के बीच अपना ही गुणगान करती है।
2वह सर्वोच्च की सभा में बोलती है,
और उसके सामर्थ्य के सामने अपना यश गाती है:
3 "मैं प्रभु के मुख से निकली,*
और मैंने कुहरे की तरह समस्त पृथ्वी को ढक लिया।
4मैंने ऊंचे आकाश में डेरा डाला।
मेरा सिंहासन बादल का खम्भा था।
5मैंने अकेले ही आकाशमण्डल का चक्कर लगाया
और महागर्त्त की गहराई का भ्रमण किया।
6मुझे समुद्र की लहरों पर, समस्त पृथ्वी पर,
सभी प्रजातियों और राष्ट्रों पर अधिकार मिला।
7मैं उन सब में विश्राम का स्थान ढूंढ़ती रही:
मैं किसके यहाँ निवास करूं?

+ शब्दशः "की सुधि होगी" ++ यह उपशीर्षक मूल पाठ में है। * कुछ हस्तलेखों में यह वाक्य भी मिलता है: "समस्त सृष्टि में मैं पहिलौठी हूं" (सब से पहले मेरी सृष्टि हुई)।

23 : 18 नीति 7 : 9 **23 : 19** नीति 5 : 21 **23 : 23** नि 20 : 14 **24 : 1-22** नीति 8 : 1-36; अय्य 28; बारू 3 : 9 — 4 : 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

8 "तब विश्व के स्रष्टा ने मुझे आदेश दिया,
मेरे सृष्टिकर्ता ने मेरे रहने का स्थान निश्चित किया।
उसने मुझ से कहा, 'याकूब में डेरा डालो,
इस्राएल ही में तुझे दायभाग मिले।'
9 उसने आदि में, युगों से पहले मेरी सृष्टि की थी,
और मैं अन्त काल तक बनी रहूंगी।
10 मैं उसके सामने, पवित्र शिविर में सेवा करती रही,
और इस प्रकार सियोन मेरा निवास स्थान बन गया है।
11 मुझे परमप्रिय नगर में विश्राम मिला।
यरूशलेम मेरा अधिकारक्षेत्र बन गया है।
12 एक गौरवशाली प्रजा में, प्रभु के विशेष भूमिभाग में
मेरी जड़ जम गयी है।
13 मैं लबानोन के देवदार की तरह बढ़ती रही,
हेर्मोन की पर्वत-श्रेणियों पर सनोवर की तरह।
14 मैं एन-गेदी के खजूर की तरह बढ़ती रही,
यरीहो के गुलाब के पौधों की तरह।
मैं मैदान में सुन्दर जैतून वृक्ष की तरह
और जलाशय पर चिनार वृक्ष की तरह बढ़ती रही।*
15 मैं दारचीनी, गुलमेहँदी
और उत्कृष्ट गन्धरस की तरह
अपनी सुगन्ध फैलाती रही,
गन्धराल, लौंग, अगरू
और पवित्र शिविर के लोबान के बादल की तरह।
16 मैंने बलूत वृक्ष की तरह
अपनी शाखाएँ फैलायीं,
मेरी शाखाएँ सुन्दर और मनोहर हैं।
17 मुझ में दाखलता की तरह
सुन्दर बेलें फूट निकलीं,
मेरी बौंड़ियों ने मनोहर और रसदार फल उत्पन्न किये।
18 [मैं मंजुल प्रेम की जननी हूं;
श्रद्धा, ज्ञान और पावन आशा की मां हूं।
प्रभु द्वारा जो आदि काल से निर्धारित कर दिये गये हैं,
मैं अपने उन्हीं सब बच्चों को दे दी गयी हूं।**]
19 "तुम सब जो मेरे लिए तरसते हो, मेरे पास आओ
और मेरे फल खा कर तृप्त हो जाओ।
20 मेरी स्मृति मधु से भी मधुर है,
मैं छत्ते से टपकने वाले मधु से भी वांछनीय हूं।
21 जो मुझे खाते हैं, उन्हें और खाने की इच्छा होगी;
जो मेरा पान करते हैं, वे और पीना चाहेंगे।
22 जो मेरी आज्ञा का पालन करते हैं, उन्हें लज्जित नहीं होना पड़ेगा ;
और जो मेरे निर्देशानुसार चलते हैं, वे नहीं भटकेंगे।"

प्रभु की व्यवस्था

23 यह सब सर्वोच्च परमेश्वर के विधान के ग्रन्थ में लिपिबद्ध है,
उस व्यवस्था में, जिसे मूसा ने याकूब की धर्मसभाओं में
विरासत के रूप में हमें प्रदान किया है।
24 [प्रभु में सुदृढ़ रहना मत छोड़ो;
उसमें अनुरक्त बने रहो,
ताकि वह तुम्हें शक्तिसम्पन्न रखे।
सर्वशक्तिमान प्रभु अनन्य परमेश्वर है;
उसके अतिरिक्त अन्य कोई उद्धारकर्ता नहीं है।]
25 व्यवस्था पीशोन नदी की तरह प्रज्ञा से परिपूर्ण है;
नये फलों के समय+ दजला नदी की तरह।
26 वह फ़रात नदी की तरह मन को आप्लावित करती,
फसल के समय++ यर्दन नदी की तरह।

---

* मूल अस्पष्ट। ** पाठांतर, "मुझमें सन्मार्ग और सत्य का सारा अनुग्रह, जीवन और सामर्थ्य की सम्पूर्ण आशा विद्यमान है।" + अर्थात् मार्च महीने में। ++ अर्थात् अप्रैल महीने में।

24 : 23 नि 24 : 7; बारू 4 : 1

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

27वह नील नदी की तरह शिक्षा की बाढ़ बहाती है,
दाख की फ़सल के समय++ गीहोन नदी की तरह।
28प्रथम मनुष्य उसका सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त नहीं कर सका
और अन्तिम मनुष्य उसकी थाह नहीं ले सकेगा;
29क्योंकि उसका भाव-भण्डार समुद्र से विस्तृत
और उसके अभिप्राय महागर्त्त से गम्भीर हैं।

लेखक की अपनी बात

30मैं तो नदी से निकली नहर के सदृश हूं,
वाटिका सींचने वाली नाली के सदृश।
31मैंने कहा, "मैं अपनी वाटिका सींचूंगा,
मैं अपनी क्यारियाँ पानी से भर दूंगा।"
और देखो : मेरी नाली नदी के रूप में,
मेरी नदी समुद्र के रूप में बदल गयी।
32मैं अपनी शिक्षा उषा की तरह चमकाऊंगा
और उसका प्रकाश दूर-दूर तक प्रसारित करूंगा।
33मैं नबूवत की तरह अपनी शिक्षा प्रसारित करूंगा,
उसे आने वाली पीढ़ियों को प्रदान करूंगा।
34तुम देखते हो कि मैंने न केवल अपने लिए परिश्रम किया,
बल्कि उन सबों के लिए, जो प्रज्ञा की खोज में लगे रहते हैं।

कौन प्रशंसा के योग्य है

25 मैं तीन बातें पसन्द करता हूं;
वे प्रभु और मनुष्यों को प्रिय हैं :
भाई-बहिनों की एकता,
पड़ोसियों की मैत्री
और पति-पत्नी का सामंजस्य।
2मैं तीन प्रकार के लोगों से घृणा करता है
और मुझे उनके आचरण से चिढ़ है :
घमण्डी दरिद्र, मिथ्यावादी धनी और मूर्ख एवं व्यभिचारी बूढ़ा।
3तुमने युवावस्था में जो इकट्ठा नहीं किया,
उसे वृद्धावस्था में कैसे पाओगे?
4कितना अच्छा लगता है,
जब पके बाल वाले न्याय करते
और बूढ़े परामर्श देते हैं!
5कितना अच्छा लगता है,
जब बूढ़ों में प्रज्ञा होती है
और प्रतिष्ठित लोगों में विवेक और सत्यपरामर्श!
6प्रचुर अनुभव वृद्धों का मुकुट है
और प्रभु पर श्रद्धा उनका गौरव।
7मैं अपने मन में नौ बातों की प्रशंसा करता हूं
और दसवीं की भी चर्चा करूंगा :
वह मनुष्य, जिसे अपने बच्चों में आनन्द आता है;
वह, जो अपने जीवनकाल में अपने शत्रुओं का पतन देखता है;
8धन्य है वह, जिसके एक समझदार पत्नी है,
वह, जो बैल और गधे के जोड़े से नहीं जोतता,***
वह जो अपने जीभ से पाप नहीं करता,
वह जिसे अपने से छोटे मनुष्य की नौकरी नहीं करनी पड़ती!
9धन्य है वह, जिसे सच्चा मित्र+++ प्राप्त है
और वह, जो ध्यान से सुनने वालों को सम्बोधित करता है।
10वह कितना महान् है, जिसे प्रज्ञा प्राप्त है!
किन्तु जो प्रभु पर श्रद्धा रखता, उस से महान् कोई नहीं!
11प्रभु पर श्रद्धा सर्वश्रेष्ठ है।
जिसे वह प्राप्त है, उसकी तुलना किसी से नहीं हो सकती।
12[भक्ति प्रभु पर श्रद्धा से प्रारम्भ होती है,
किन्तु मनुष्य विश्वास द्वारा प्रभु से संयुक्त हो जाता है।]

+ यह पाठ पुराने सूरी अनुवाद के अनुसार है। यूनानी पाठ: "वह प्रकाश की तरह शिक्षा फैलाती है"। ++ सितम्बर में। *** इब्रानी पाठ के अनुसार। +++ पाठांतर "बुद्धिमत्ता"।

24 : 31 यहेज 47 : 1-8 **25 : 1** लेव 19 : 18 **25 : 4** अय्य 32 : 7 **25 : 6** नीति 16 : 31 **25 : 7** नीति 23 : 24 **25 : 9** नीति 3 : 13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

स्त्री के विषय में पुरुष के अपने अनुभव

13 हृदय के घाव के बराबर कोई घाव नहीं।
स्त्री की दुष्टता के बराबर कोई दुष्टता नहीं।
14 बैरियों द्वारा दिये गये कष्ट के बराबर कोई कष्ट
नहीं।
शत्रुओं के प्रतिशोध के बराबर कोई प्रतिशोध
नहीं।
15 सांप के विष** के बराबर कोई विष नहीं।
स्त्री के क्रोध के बराबर कोई क्रोध नहीं।
16 दुष्ट पत्नी के साथ रहने की अपेक्षा
मैं सिंह और पंखदार सर्प के साथ रहना
अधिक पसन्द करूंगा।
17 स्त्री की दुष्टता उसकी आकृति बदल देती
और उसका चेहरा रीछनी की तरह निस्तेज
बना देती है।
18 उसका पति पड़ोसियों के बीच बैठता है
और न जाने क्यों दु:खभरी आह भरता है।
19 स्त्री की दुष्टता की तुलना में हर दुष्टता छोटी
है।
उसे पापियों की गति प्राप्त हो!
20 शान्तिप्रिय पति के लिए बकवादी पत्नी
बूढ़े के पैरों के लिए रेत के चढ़ाव के समान
है।
21 स्त्री के सौन्दर्य के जाल में मत फंसो
और स्त्री+ का लालच मत करो।
22 यदि पत्नी पति का भरण–पोषण करती है,
तो यह पति के लिए कठोर दासता++ और
कलंक है।
23 टूटा हुआ दिल, उतरा हुआ चेहरा
और मन की व्यथा—यह दुष्ट पत्नी का
परिणाम है।
पति के निष्क्रिय हाथ और कांपते पैर : यह
उस पत्नी का कार्य है, जो अपने पति को
सुख नहीं देती।
24 स्त्री के द्वारा पाप का प्रारम्भ हुआ था,
हम सब उसी के कारण मर जाते हैं।
पानी नहीं बहने दो,
और दुष्ट पत्नी को बोलने की छूट मत दो।
25 यदि वह तुम्हारे हाथ के संकेत पर नहीं
चलती,
तो उसको अपने से दूर कर दो।

सुखी गृहस्थ का सौभाग्य

26 साध्वी स्त्री का पति धन्य है!
उसकी आयु दुगुनी हो जाती है।
2 सुयोग्य पत्नी अपने पति को आनन्दित करती
है,
वह अपने जीवन का पूरा समय शान्ति में
बिताता है।
3 साध्वी पत्नी शुभ वरदान है,
वह प्रभु के श्रद्धालु भक्तों को ही प्राप्त होती
है।
4 वे धनी हों या दरिद्र, किन्तु दोनों सन्तुष्ट हैं,
और उनके चेहरे पर मुस्कान बनी रहती है।

दुश्चरित्र पत्नी

5 मेरा हृदय तीन बातों से कांप जाता है
और मैं चौथी से डरता हूँ:
नगर में बदनामी, उत्तेजित भीड़
और झूठा दोषारोपण—ये सब मृत्यु से भी
बदतर हैं;
6 किन्तु जो पत्नी अपनी सौत से ईर्ष्या करती
और अपनी कटु बातचीत से झगड़ा पैदा
करती है,
वह मनोव्यथा और विपत्ति का कारण है।
7 दुष्ट पत्नी ढीले जूए की तरह दु:खदायी है।
जो उस पर नियन्त्रण रखना चाहता है,
वह मानो हाथ से बिच्छू उठाता है।
8 मदिरा पीने वाली पत्नी घृणा उत्पन्न करती है,
वह अपना कलंक नहीं छिपा सकेगी।
9 निर्लज्ज आंखों और कनखियों से
व्यभिचारिणी पत्नी पहचानी जा सकती है।
10 चंचल पुत्री पर सख्त निगरानी रखो।
वह अवसर पाते ही उस से लाभ उठाती है।
11 उसकी निर्लज्ज आंखों से सावधान रहो।
जब वह तुम्हारे साथ विश्वासघात करे,

** अथवा, "सिर"। + अथवा इब्रानी पाठ के अनुसार : "स्त्री की सम्पति" ++ यूनानी पाठ : "क्रोध एवं उद्दंडता"

25 : 14 भज 64 : 1 **25 : 24** उत 3 : 6; 1 तिम 2 : 14 **26 : 1** नीति 31 : 10–31 **26 : 4** नीति 15 : 13
26 : 9 नीति 6 : 25

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तो आश्चर्य मत करो।
12वह प्यासे यात्री की तरह मुंह खोल कर
अपने पड़ोस का हर पानी पीती है।
वह तम्बू की हर खूंटी के सामने बैठती
और बाण के लिए अपना तरकश खोलती है।

सच्चरित्र पत्नी

13पत्नी का लावण्य पति को मोहित करता
है।
उसकी कार्यकुशलता उसे स्वस्थ बनाती है।
14कम बोलने वाली पत्नी प्रभु का वरदान है।
सुशिक्षित पत्नी अमूल्य है।
15शालीन पत्नी का लावण्य असीम है।
जो साध्वी है, उसका मूल्य अपार है।
16व्यवस्थित घर में साध्वी का सौन्दर्य
प्रभु के उच्च गगन में उदीयमान सूर्य के सदृश
है।
17उसके स्वस्थ शरीर पर उसके मुख का
सौन्दर्य
पवित्र दीपवृक्ष पर चमकते हुए दीपक की
तरह शोभायमान है।
18उसकी सुदृढ़ एड़ियों पर उसके सुन्दर पैर
चांदी की पीठिका पर स्वर्ण खम्भों की तरह
शोभायमान है।
19[हे शिष्य, अपनी तरुणावस्था में सचेत रहो,
अपरिचितों में अपनी शक्ति का अपव्यय मत
करो।
20सारे देश में से अपने लिए एक उपजाऊ खेत
चुन लो,
और उसमें विश्वासपूर्वक अपने उत्तम कुल
के बीज बोओ।
21इससे तुम्हारे चारों ओर तुम्हारे वंशज होंगे,
और निश्चय ही सुकुल के सदृश उनकी
वृद्धि होगी।
22यद्यपि वेश्या को लोग थूक के बराबर समझते
हैं,
तथापि वह स्त्री भी घातक दुर्ग के समान है,
जो विवाहिता होकर भी दूसरे के साथ संभोग
करती है।
23दुराचारी को अधर्मी पत्नी मिलेगी,
और प्रभु के श्रद्धालु भक्त को धार्मिक पत्नी।
24निर्लज्ज स्त्री शर्म की कुछ परवाह नहीं करती,
पर जो पुत्री लज्जावती है वह अपने भावी
पति से भी लजाएगी।
25हठीली स्त्री कुतिया समझी जाती है,
और शरमीली प्रभु पर श्रद्धा रखती है।
26जो पत्नी पति का आदर करती है
वह सब की दृष्टि में बुद्धिमती है,
और जो उसका अनादर करती है
उसे सब लोग अधर्मी मानते हैं।
वह पति सौभाग्यशाली है जिसे साध्वी पत्नी
मिली है,
उसकी आयु के वर्षों की संख्या दुगुनी हो
जाती है।
27जो पत्नी तेज बोलती है और बकवादी है,
वह उस रणसिंघे के समान है, जो शत्रु को
भगा देता है;
और पुरुष जो उसके सम्पर्क में है,
मानो युद्ध के कोलाहल में अपना जीवन
बिता रहा है।]

अप्रिय बातें

28 दो बातें मेरा दिल दुखाती हैं
और तीसरी मुझ में क्रोध उत्पन्न करती है:
सैनिक, जो तंगी में दरिद्र बनता है,
समझदार व्यक्ति, जिसका तिरस्कार किया
जाता है
और सद्धर्मी, जो पाप की ओर झुकता है;
प्रभु उसे तलवार का शिकार बनने देगा।

लेन-देन

29 व्यापारी शायद ही अपराध से बच सकेगा,
और दुकानदार पाप से मुक्त नहीं रहेगा।

27 लाभ के लालच में बहुत लोगों ने पाप
किया है;
और जो धनी बनना चाहता है, वह आज्ञाओं
पर ध्यान नहीं देता।*
2जैसे दो पत्थरों के बीच खूंटी गाड़ी जाती है,
वैसे ही क्रय-विक्रय के बीच पाप निवास

---

* शब्दश: "दृष्टि हटा लेता"।
26 : 17 लेव 24 : 2-4 **26 : 28** यहेज 18 : 24

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

करता है।
3जो दृढ़तापूर्वक प्रभु पर श्रद्धा नहीं रखता,
उसका घर शीघ्र उजड़ जायेगा।

बातचीत से मनुष्य की पहचान

4 छलनी हिलाने से कचरा रह जाता है,
बातचीत में मनुष्य के दोष व्यक्त हो जाते हैं।
5भट्ठी में कुम्हार के बरतनों की,
और बातचीत में मनुष्य की परख होती है।
6पेड़ के फल बाग की कसौटी होते हैं,
और मनुष्य के शब्दों से उसके स्वभाव का
पता चलता है।
7किसी की प्रशंसा मत करो, जब तक वह नहीं
बोले;
क्योंकि यही मनुष्य की कसौटी है।

न्याय

8 यदि तुम न्याय की खोज करोगे, तो उसे पा
जाओगे,
और उसे बहुमूल्य वस्त्र की तरह ओढ़ लोगे।
9जैसे पक्षी अपनी जाति के पक्षियों के साथ
रहते हैं,
वैसे ही सत्य उनके पास लौटता है, जो उसे
चरितार्थ करते हैं।
10सिंह हमेशा शिकार की घात में बैठता है,
इसी तरह पाप अन्याय करने वालों की घात
में बैठा रहता है।
11भक्त सदा ज्ञान की बातों की चर्चा करता है,
जब कि मूर्ख की बातचीत चन्द्रमा की तरह
बदलती है।
12तुम मूर्खों के साथ कम समय बिताओ,
किन्तु समझदार लोगों के साथ देर तक बैठे
रहो।
13मूर्खों की बातचीत घिनावनी है,
और उनकी हंसी पापमय लम्पटता।
14बारम्बार शपथ खाने वाले की बातचीत सुन
कर
रोंगटे खड़े हो जाते हैं
और उनके लड़ाई-झगड़े सुन कर
लोग अपने कान बन्द कर लेते हैं।
15घमण्डियों के झगड़े रक्तपात को बुलावा देते
हैं
और उनकी फटकारें कर्णकटु होती हैं।

भेद

16जो भेद प्रकट करता, उस पर विश्वास नहीं
किया जाता है,
और उसे फिर कभी सच्चा मित्र नहीं मिलेगा।
17अपने मित्र को प्यार करो और उसके प्रति
ईमानदार रहो;
यदि तुमने उसका भेद प्रकट किया,
तो फिर उसके पीछे मत दौड़ो;
18क्योंकि जिसने अपने पड़ोसी की मित्रता गंवा
दी है,
वह उस व्यक्ति के सदृश है, जिसने अपनी
विरासत+ गँवायी।
19जिस तरह तुम पक्षी को अपने हाथ से जाने
देते हो,
उसी तरह तुमने अपने पड़ोसी को जाने दिया
और तुम उसे फिर नहीं प्राप्त करोगे।
20उसके पीछे मत दौड़ो, क्योंकि वह दूर तक
निकल गया।
वह हरिण की तरह फन्दे से निकल भागा।
21घावों पर पट्टी बांधी जा सकती है,
अपमान क्षम्य हो सकता है;
किन्तु जिसने अपने मित्र का भेद प्रकट
किया,
उसके लिए कोई आशा नहीं।

पाखण्ड

22 जो आंख मारता, वह षड्यंत्र रचता है;
किन्तु जो उस को जानता है, वह उस से दूर
रहता है।
23तुम्हारे साथ रहते समय वह मीठी-मीठी बातें
करता
और तुम्हारी बातों पर मुग्ध हो जाता है,
किन्तु पीठ पीछे अपनी भाषा बदलता
और तुम्हारे शब्दों में दोष निकालता है।*

+ पाठांतर, ''अपने शत्रु'' * अथवा, ''तुम्हें क्षति पहुंचाता है।''

27 : 3 यहेज 33 : 13 **27 : 6** मत 7 : 17; 12 : 33 **27 : 8** अय्य 29 : 14 **27 : 13** सभ 7 : 5-6 **27 : 19** भज 124 : 7 **27 : 22** नीति 6 : 13; 10 : 10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

24मैं बहुत-सी बातों से घृणा करता हूं,
किन्तु ऐसे व्यक्ति से सब से अधिक।
प्रभु को भी उस से घृणा है।
25जो पत्थर ऊपर फेंकता, वह उसे अपने सिर
पर गिराता है,
जो षड्यंत्र रचता, वह उस से घायल हो
जायेगा।
26जो गड्ढा खोदता, वह स्वयं उसी में गिरेगा,
और जो जाल बिछाता, वह उसी में फंसेगा।
27जो बुराई करता, उसे उस से हानि होती है,
यद्यपि वह नहीं जानता कि वह कहाँ से आती
है।
28घमण्डी का उपहास और अपमान किया
जायेगा।
और घात में बैठे हुए सिंह की तरह प्रतिशोध
उसकी प्रतीक्षा करता है।
29जो धर्मियों के पतन पर आनन्दित होते हैं, वे
स्वयं जाल में फंसेंगे, और वे मृत्यु से
पहले वेदना से क्षीण हो जायेंगे।

प्रतिशोध

30विद्वेष और क्रोध घृणित हैं,
तो भी पापी मनुष्य दोनों को कसकर पकड़े
रहता है।

28 बदला लेने वाले से प्रभु इसका बदला
चुकाएगा,
क्योंकि वह उसके पापों का पूरा-पूरा लेखा
रखता है।
2अपने पड़ोसी का अपराध क्षमा कर दो,
तब प्रार्थना करने पर तुम्हारे पाप क्षमा किये
जायेंगे।
3यदि कोई अपने मन में दूसरों के प्रति क्रोध का
भाव रखता है,
तो वह प्रभु से क्षमा की आशा कैसे कर
सकता है?
4यदि वह अपने सह-मानव पर दया नहीं करता,
तो वह अपने पापों के लिए क्षमा कैसे माँग
सकता है?
5निरा मनुष्य होते हुए भी यदि वह बैर बनाये
रखता है,
तो उसके पापों के प्रायश्चित के लिए कौन
प्रार्थना करेगा?
6अन्तिम बातों का ध्यान रखो और बैर रखना
छोड़ दो।
विकृति तथा मृत्यु को याद रखो और प्रभु
कीआज्ञाओं का पालन करो।
7आज्ञाओं का ध्यान रखो और अपने पड़ोसी से
बैर न करो।
सर्वोच्च प्रभु के विधान का ध्यान रखो,
और दूसरों के अपराध क्षमा कर दो।

झगड़े

8तुम झगड़े से दूर रहोगे, तो कम पाप करोगे;
क्योंकि क्रोधी व्यक्ति झगड़ा करता है।
9पापी अपने मित्रों में फूट डालता,
और शान्तिप्रिय लोगों में शत्रुता उत्पन्न करता
है।
10आग में जितनी अधिक लकड़ी है,
वह उतनी अधिक तेज होती है;
कलह में जितना अधिक आवेश है,
वह उतना अधिक उग्र होता है;
मनुष्य में जितनी अधिक सामर्थ्य है,
उसका क्रोध उतना अधिक बड़ा है;
वह जितना अधिक धनी है,
वह उतना अधिक अपना क्रोध बढ़ाता है।
11तीक्ष्ण लड़ाई-झगड़ा++ आग भड़काता है,
और उग्र वाद-विवाद रक्तपात कराता है।
12चिनगारी पर फूंक मारो और वह भड़केगी,
उस पर थूक दो तो वह बुझ जायेगी :
दोनों तुम्हारे मुंह से निकलते हैं।

जिह्वा

13चुगली और कपटपूर्ण बातें करने वाले
अभिशप्त हों,
उन्होंने बहुत-से शान्तिप्रिय लोगों का विनाश
किया है।
14चुगलखोर* ने बहुतों की शान्ति भंग की
और उन्हें एक राष्ट्र से दूसरे राष्ट्र में भगाया।
उसने क़िलाबन्द नगरों का विनाश किया

++ अन्य प्राचीन अनुवाद में : "राल और अलकतरा"। * शब्दश: "तीसरी जिह्वा"।
27 : 26 भज 9 : 15; 35 : 8 **28 : 2** मत 6 : 14; मक 11 : 25 **28 : 9** नीति 6 : 12.14.19 **28 : 12** याक 3 : 10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और बड़े लोगों के घर गिरा दिये।
15चुगलखोर ने सुयोग्य स्त्रियों को उनके घर से
निकाला,
और उन्हें उनके परिश्रम के फल से वंचित
कर दिया।
16जो उसकी बात पर ध्यान देगा,
उसे न तो शान्ति मिलेगी
और न कहीं आराम से वह डेरा डाल
सकेगा।
17कोड़े की मार से सांट उभड़ जाती है,
किन्तु जिह्वा की मार हड्डियाँ तोड़ती है।
18बहुतों को तलवार के घाट उतारा गया,
किन्तु जिह्वा ने कहीं अधिक लोगों का
विनाश किया।
19धन्य है वह, जो उस से बचता रहता है
और उसके प्रकोप का शिकार नहीं बनता है;
जो उसके जूए में नहीं जोता गया,
और उसकी बेड़ियों में नहीं जकड़ा गया;
20क्योंकि उसका जूआ लोहे का
और उसकी बेड़ियाँ कांसे की हैं।
21जिह्वा के कारण जो मृत्यु होती है, वह दारुण
है;
उसकी अपेक्षा अधोलोक अच्छा है।
22धर्मियों पर उसका वश नहीं चलता,
वे उसकी ज्वाला में नहीं जलाये जायेंगे।
23जो प्रभु का परित्याग करते हैं,
वे उसके शिकार बनेंगे।
वे उसकी आग में सदा के लिए जलेंगे।
वह उन पर सिंह की तरह टूट पड़ेगी,
और चीते की तरह उन को फाड़ खायेगी।
24-25तुम अपनी दाखबारी के चारों ओर घेरा
लगाओ,
कपटी जिह्वा की बात मत सुनो।
अपने मुंह पर दरवाज़ा और ताला लगाओ।
अपना सोना-चांदी ताला लगा कर बन्द रखो,
अपने शब्दों के लिए तराजू और बाट बनवाओ।
26सावधान रहो, कहीं ऐसा न हो
कि तुम्हारी जिह्वा फिसल जाये,
और तुम घात में बैठे हुए शत्रुओं के सामने
गिर जाओ।

उधार

29 जो अपने पड़ोसी को उधार देता है
वह दयालु है।
जो उसकी सहायता करता,
वह प्रभु की आज्ञाओं का पालन करता है।
2पड़ोसी को जरूरत हो, तो उसे उधार दो।
और समय पर अपने पड़ोसी के ऋण चुका
दो।
3अपनी प्रतिज्ञा पूरी करो और पड़ोसी के प्रति
ईमानदार रहो।
इस प्रकार तुम को हर ज़रूरत में सहायता
मिलेगी।
4अनेक लोग उधार को संयोग से मिला ख़ज़ाना
समझते हैं
और जिन्होंने उनकी सहायता की है, उन्हें
कष्ट पहुंचाते हैं।
5ऐसे लोग उधार पाने से पहले देने वाले का
हाथ चूमते
और रुपये के कारण विनय से बात करते हैं,
किन्तु लौटाने का समय आने पर विलम्ब
करते,
बहाना बनाते और असमर्थता प्रकट करते हैं।
6यदि वे लौटाते हैं, तो उधार देने वाला मुश्किल
से आधा पाता है
और वह समझता है कि उसे संयोग से
ख़ज़ाना मिला है।
यदि वे नहीं लौटाते, तो देने वाला अपना पैसा
खो देता,
और अकारण उन्हें शत्रु बना लेता।
वे उसकी निन्दा तथा भर्त्सना करेंगे
और सम्मान के बदले उसका अपमान
करेंगे।
7कुछ लोग उधार नहीं देते, वे दुष्ट नहीं हैं;
किन्तु व्यर्थ धोखा खाने से डरते हैं।

भिक्षा

8 फिर भी तुम दरिद्र के प्रति उदार बनो,

28 : 18 याक 3 : 1-12 28 : 23 हो 13 : 7 29 : 1 लेव 25 : 35; भज 37 : 26 29 : 2 व्य 15 : 8; तोब 4 : 9
29 : 8 नीति 19 : 17; तोब 12 : 8-9.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और उसे देर तक अपने दान की प्रतीक्षा मत
करने दो।
9आज्ञा का पालन करने के लिए दरिद्र की
सहायता करो,
और उसे अपनी ज़रूरत में ख़ाली हाथ मत
जाने दो।
10अपने धन का त्याग भाई और मित्र के लिए
कर दो
और ज़मीन के नीचे उस में ज़ंग न लगने दो।
11सर्वोच्च प्रभु की आज्ञा के अनुसार अपने धन
का उपयोग करो
और तुम सोने की अपेक्षा उस से अधिक
लाभ उठाओगे।
12अपनी भिक्षा दरिद्र के हृदय में* संचित करो
और वह हर प्रकार की बुराई से तुम्हारी रक्षा
करेगी।
13वह पक्की ढाल और भारी भाले की अपेक्षा
अधिक अच्छी तरह से तुम्हारे लिए शत्रु से
लड़ेगी।

जमानत

14भला आदमी पड़ोसी की ज़मानत देता,
किन्तु निर्लज्ज व्यक्ति से धोखा खाता है।
15अपने लिए जमानत देने वाले का उपकार मत
भुलाओ;
उसने तुम्हारे लिए अपने को अर्पित किया।
16जो अपनी ज़मानत देने वाले का धन गँवाता,
वह पापी है
17और जो अपने उद्धारकर्ता का परित्याग
करता, वह कृतघ्न है।
18ज़मानत ने बहुत-से धनियों का विनाश किया
और उन्हें समुद्र की लहरों की तरह बहा
दिया।
उसने शक्तिशालियों को निर्वासित किया
और उन्हें पराये राष्ट्रों में भटकाया।
19पापी व्यक्ति प्रभु की आज्ञाओं का उल्लंघन
करते हुए+
लाभ की आशा में ज़मानत देता है
और मुक़दमा मोल लेता है।
20अपनी शक्ति के अनुसार अपने पड़ोसी की
जमानत दो,
किन्तु सावधान रहो कि कहीं धोखा न खाओ।

बुद्धिमान की आत्मनिर्भरता

21जीवन की प्राथमिक आवश्यकताएँ जल,
भोजन, वस्त्र हैं
और उचित एकान्त के लिए अपना घर।
22पराये घर में दावत की अपेक्षा
अपनी ही कुटिया में रूखा-सूखा भोजन
अच्छा है।
23तुम्हारे पास बहुत हो या कम, उस से सन्तुष्ट
रहो
और तुम को परदेश में डांट-फटकार नहीं
सुननी पड़ेगी।
24एक घर से दूसरे घर में भटकना
और परदेशी होने के कारण मुंह नहीं खोल
सकना—
यह एक दयनीय जीवन है।
25तुम को दूसरों को खिलाना-पिलाना पड़ता
है
और वे तुम्हारा आभार नहीं मानेंगे,
बल्कि तुम को कटु शब्द सुनने पड़ेंगे :
26 "परदेशी! आओ और मेज़ तैयार करो;
यदि तुम्हारे पास कुछ हो, तो हमें खिला दो।"
27 "परदेशी ! चले जाओ, अपने से बड़े
आदमी को जगह दो।
मेरे भाई आ गये हैं। मुझे मकान की ज़रूरत
है।"
28कोमल हृदय व्यक्ति के लिए ये दो बातें
दुःखदायी हैं :
तुच्छ परदेशी समझा जाना
और ऋणदाता का अपमान।

बच्चों के संबंध में**

30 जो अपने पुत्र को प्यार करता,
वह उसे कोड़े लगाता है,
जिससे बाद में उसको पुत्र से सुख मिले।

---

* शब्दशः "अपने कोषागार में" + मूल अस्पष्ट। ** यह उपशीर्षक मूल में भी है।
29 : 10 मत 6 : 19-20; याक 5 : 3 **29 : 11** मत 19 : 21 **29 : 18** नीति 6 : 1-2 **29 : 23** 1 तिम 6 : 6-8
29 : 27 लू 14 : 9

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

2 जो अपने पुत्र को अनुशासन में रखता है,
उसे सन्तोष मिलेगा,
और वह अपने सम्बन्धियों में उस पर गौरव कर सकेगा।
3 जो अपने पुत्र को शिक्षा देता है,
वह अपने शत्रु से ईर्ष्या उत्पन्न करेगा
और अपने मित्रों में उस पर गौरव करेगा।
4 यदि ऐसे पुत्र के पिता की मृत्यु हो जाती है,
तो भी वह मानो अब तक जीवित है;
क्योंकि वह अपना प्रतिरूप छोड़ गया है।
5 वह जीवन में पुत्र को देख कर आनन्दित रहा
और मरते समय उसे दुःख नहीं हुआ।
6 वह ऐसा व्यक्ति छोड़ गया, जो शत्रुओं से उसके घर की रक्षा करेगा
और उसके मित्रों को उनके उपकार का बदला देगा।
7 जो अपने पुत्र को सिर पर चढ़ाता है,
उसे अपने घावों पर पट्टी बांधनी होगी
और उसका हृदय हर चिल्लाहट पर कांप उठेगा।
8 जो घोड़ा पालतू नहीं बनाया गया,
वह वश में नहीं रहता।
यदि पुत्र भी स्वच्छन्द छोड़ा गया,
तो उद्दण्ड बन जाता है।
9 अपने पुत्र से अधिक लाड़-प्यार करो
और वह तुम को चकरा देगा;
उसके साथ खेलो
और वह तुम को दुःख पहुंचायेगा।
10 उसके साथ हंसी-मजाक मत करो,
नहीं तो तुम्हें दुःख उठाना पड़ेगा
और तुम अन्त में उस पर दांत पीसते रह जाओगे।
11 तुम उसे जवानी में पूरी स्वतन्त्रता मत दो
[और उसके अपराधों की अनदेखी मत करो।
12 तुम जवानी में उसकी गरदन झुकाओ]
और बचपन में उसकी पसलियाँ तोड़ दो।
नहीं तो वह हठी बन कर तुम्हारी बात नहीं मानेगा,
[और तुम को उसके कारण दुःख होगा।]
13 तुम अपने पुत्र को अनुशासन में रखो
और उसे काम पर लगाओ;
नहीं तो तुम को उसकी निर्लज्जता के कारण ठेस पहुंचेगी।

स्वास्थ्य

14 रोग से दुर्बल धनी की अपेक्षा
स्वस्थ और हृष्ट-पुष्ट दरिद्र अच्छा है।
15 संसार भर के सोने-चांदी की अपेक्षा
स्वास्थ्य और संतोष मूल्यवान है।
अपार सम्पत्ति की अपेक्षा
सुदृढ़ मन अच्छा है।+
16 स्वस्थ शरीर के बराबर कोई सम्पत्ति नहीं
और प्रसन्नचित्त रहने से कोई बड़ा सुख नहीं।
17 दयनीय जीवन की अपेक्षा मृत्यु अच्छी है
और दीर्घकालीन रोग की अपेक्षा अनन्त विश्राम।
18 रोगी के बन्द मुख के सामने रखा स्वादिष्ट व्यंजन
कबर पर चढ़ाये गये भोजन के बराबर है।
19 देवमूर्ति को अर्पित भोजन से क्या लाभ,
क्योंकि वह न तो खा सकती है और न सूँघ सकती है!
यह उस रोगी की दशा है,
जिसे प्रभु उत्पीड़ित करता है।
20 वह उसी तरह भोजन देखता रहता और आहें भरता है,
जिस प्रकार नपुंसक पुरुष किसी युवती का आलिंगन करने में करता है।
[यही दशा उस व्यक्ति की है,
जो विवश होकर दण्ड भोगता है।]

आनन्द

21 उदासी के शिकार मत बनो
और चिन्ता से अपने को तंग मत करो।

+ मूल में यहाँ अलग उपशीर्षक है : "भोजन के सम्बन्ध में"

30 : 1 नीति 13 : 24 30 : 3 व्य 4 : 9 30 : 6 1 रा 2 : 5-9 30 : 14 सभ 5 : 12 30 : 18 तोब 4 : 17; यिर पत्र 26

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

22हृदय की प्रसन्नता मनुष्य में जीवन का संचार करती
और आनन्द उसे लम्बी आयु प्रदान करता है।
23अपना मन बहलाओ, अपने हृदय को सान्त्वना दो
और उदासी को अपने से दूर करो।
उदासी ने बहुतों का विनाश किया है
और उस से कोई लाभ नहीं!
24ईर्ष्या और क्रोध जीवन के दिन घटाते हैं
और चिन्ता समय से पहले किसी को बूढ़ा बनाती है।
25आनन्दमय हृदय खाने की रुचि बढ़ाता है,
ऐसा व्यक्ति अपने भोजन का बहुत ध्यान रखता है।

धन

31 धन के कारण अनिद्रा मनुष्य को छिजाती है।
सम्पत्ति की चिन्ता मनुष्य को सोने नहीं देती।
2जीविका की चिन्ता आंख लगने नहीं देती,
जिस प्रकार भारी रोग निद्रा हर लेता है।
3धनवान सम्पत्ति एकत्र करने में परिश्रम करता
और यदि विश्राम करता, तो भोग-विलास में डूब जाता है।
4दरिद्र जीवन-निर्वाह के लिए परिश्रम करता
और यदि विश्राम करता, तो तंगहाल हो जाता है।
5जिसे सोने-चांदी का मोह होता है,
वह धार्मिक नहीं रह पाता
और जो लाभ के पीछे पड़ता,
वह पथभ्रष्ट हो जाता है।
6सोने के कारण अनेकों का पतन हो गया
और उनका अचानक विनाश हुआ है।
7जो सोने-चांदी के लालची हैं,
वह उनके लिए फन्दा बनता है;
बहुत-से मूर्ख उस में फँस जाते हैं।
8धन्य है वह धनवान् जो निर्दोष रह गया
और सोने-चांदी के पीछे नहीं दौड़ा!
9वह कौन है? हम उसे धन्य कहेंगे,
क्योंकि उसने अपने लोगों के बीच प्रशंसनीय आचरण किया है।
10जो उस परीक्षा में निर्दोष सिद्ध हुआ,
उसे सदा बना रहने वाला यश प्राप्त होगा।
वह पाप कर सकता था,
किन्तु उसने ऐसा नहीं किया!
वह बुराई कर सकता था,
किन्तु उसने ऐसा नहीं किया!
11इस कारण उसकी समृद्धि सदा बनी रहेगी
और सभा उसके उपकारों का गुणगान करेगी।

दावतें

12 यदि तुम किसी दावत की मेज़ पर बैठो,
तो खाने के लिए लालच मत करो और यह मत कहो:
"उस पर कितने व्यंजन रखे हुए हैं?"
13याद रखो कि लालची आँख बुरी है।
सृष्टि में लालची आँख से बुरा क्या है?
इसलिए वह हर समय आँसू बहाती है।
14यदि कोई किसी चीज़ की ओर देखता,
तो तुम उसकी ओर हाथ मत बढ़ाओ
और थाली में साथी का हाथ मत छुओ।
15सोचो कि वह साथी क्या चाहता है
और सावधानी से काम करो।
16जो तुम्हारे सामने रखा जाता है,
उसे भद्र मनुष्य की तरह खाओ।
अधिक मत खाओ, जिससे लोग तुम से घृणा न करें।
17शिष्टाचार के लिए सब से पहले खाना बन्द करो,
पेटू मत बनो; लोग इसका बुरा मानते हैं।
18यदि तुम अनेक लोगों के साथ खाने पर बैठो,
तो सबसे पहले हाथ मत बढ़ाओ।
19भद्र मनुष्य कम से सन्तोष पाता है,
इस प्रकार वह सांस फूले बिना आराम से सो जाता है।
20सीमित भोजन के बाद अच्छी नींद आती
और सुबह उठने पर मन में ताज़गी रहती है।

---

30 : 22 नीति 17 : 22 **31 : 3** लू 12 : 19 **31 : 6** 1 तिम 6 : 9 **31 : 8** अय्य 31 : 24 **31 : 15** तोब 4 : 15 **31 : 16** लू 10 : 8 **31 : 20** सभ 5 : 12

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जो अधिक खाता है, वह नहीं सो पाता
और उसे अपचन और पेट का दर्द होता है।
21यदि तुम को अधिक खाने के लिए बाध्य
किया गया हो,
तो उठ कर वमन करो और तुम्हारा जी हल्का
हो जायेगा।
22 शिष्य! मेरी बात सुनो और मेरा तिरस्कार मत
करो।
तुम बाद में मेरी बात समझोगे।
तुम अपने सब कामों में संयम रखो
और तुम कभी बीमार नहीं होगे।
23जो भोज दिया करता है, उसकी सभी लोग
प्रशंसा करते हैं
और उसकी उदारता की ख्याति बनी रहती
है।
24जो भोजन देने में कंजूस है, उसकी सभी
नगरवासी निन्दा करते हैं
और उसकी कंजूसी की बदनामी बनी रहती
है।

मद्यपान

25 मदिरा+ पीने में अपनी वीरता का प्रदर्शन
मत करो;
क्योंकि मदिरा ने बहुतों का विनाश किया है।
26भट्ठी इस्पात के उत्कर्ष की परीक्षा लेती है
जब तापने के बाद उसे भिगोया जाता है।
इसी प्रकार जब घमण्डी झगड़ते हैं,
तो मदिरा हृदयों की परीक्षा लेती है।
27मानव के लिए मदिरा जीवन-जैसी हो
सकती है।
यदि तुम उसका सेवन करते हो, तो संयम से
पीओ।
यदि मदिरा का अभाव हो, तो जीवन में क्या
रस?
वह तो आरंभ में आनन्द के लिए ही बनायी
गयी थी।
28अवसर के अनुसार संयम से पी गयी मदिरा
हृदय को उल्लास और आत्मा को आनन्द
प्रदान करती है।
29जो व्यक्ति असंयम से मदिरा पीता है,
वह क्रोध एवं झगड़ा करता
और उसकी आत्मा कटुता से भर जाती है।
30नशा मूर्ख का क्रोध भड़काता और उसे हानि
पहुँचाता है।
वह उसकी शक्ति घटाता और उसके घाव
बढ़ाता है।
31समारोह में मदिरा पान के अवसर पर अपने
पड़ोसी की आलोचना मत करो;
जब उसे आनन्द आता है, तो उसका
तिरस्कार मत करो।
तुम उसे मत डाँटो
और अपने प्रश्नों से* उसे तंग मत करो।

दावत के समय शिष्टाचार

32 यदि तुम को अध्यक्ष बनाया गया,
तो मत इतराओ;
अतिथियों के साथ उन में एक-जैसे आचरण
करो।
दूसरों को सुव्यवस्थित करने के बाद बैठ
जाओ।
2अपना कर्तव्य पूरा करने के बाद ही अपना
आसन ग्रहण करो।
तुम उनके साथ आनन्द मनाओगे
और अपने आतिथ्य-सत्कार के लिए तुम्हारा
सम्मान होगा।
3तुम वृद्ध हो, तो उन को सम्बोधित करो,
क्योंकि तुम इसके योग्य हो।
किन्तु सावधानी से अपने शब्दों का चयन
करो,
और गायन-वादन में बाधा मत डालो।
4संगोष्ठी के समय देर तक भाषण मत करो
और असमय अपनी बुद्धि का प्रदर्शन मत
करो।
5स्वर्ण आभूषण में जड़ी लाल मणि की तरह
मदिरा-समारोह में वादन-गायन शोभा देता है।
6मधुर मदिरा-पान के समय सुरीला संगीत
सोने के खाँचे में मरकत-मणि जैसा है।
7 तुम युवक हो, तो जरूरत पड़ने पर ही बोलो,

+ अथवा अंगूरी। अंगूर देश की मुख्य फसलोंमें एक था। * अथवा, "उस पर दावा कर"

31 : 25 यश 5 : 22 **31 : 28** सभ 10 : 17 ; तिम 5 : 23 **32 : 7** अय्य 32 : 6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

किन्तु अधिकतम दो बार बोलो और केवल पूछे जाने के बाद।
8उस व्यक्ति की तरह, जो बहुत जानता है, किन्तु कम बोलता है,
तुम संक्षिप्त, बल्कि सारगर्भित भाषण दो।
9बड़ों के बीच अपने को ऊँचा मत समझो,
और बूढ़ों के सामने कम बोलो।
10मेघगर्जन से पहले बिजली चमकती है,
इसी तरह विनम्र व्यक्ति के आगे सम्मान चलता है।
11समय पर मेज़ से उठ कर वहाँ देर मत करो।
सीधे अपने घर जाओ और लापरवाह मत बनो।
12वहाँ मन बहलाओ अथवा मनचाहे काम करो,
लेकिन घमण्डपूर्वक बातों द्वारा पाप मत करो।
13सब कुछ के लिए अपने सृष्टिकर्ता को धन्यवाद दो,
जिसने तुम पर इतने अच्छे उपकार किये।

परमेश्वर पर श्रद्धा

14 जो प्रभु पर श्रद्धा रखता है, वह उसकी शिक्षा स्वीकार करता है।
जो प्रातः उसकी खोज करता, वह उसकी कृपा प्राप्त करता है।
15जो व्यवस्था का अनुशीलन करता,
उसे तृप्ति मिलेगी;*
किन्तु पाखंडी के लिए वह फंदा बन जायेगी।
16जो प्रभु पर श्रद्धा रखते हैं, वे धर्म का मर्म समझेंगे
और उनके सत्कर्म प्रकाश की तरह चमकेंगे।
17पापी चेतावनी स्वीकार नहीं करता
और आज्ञाओं का मनमाना अर्थ लगाता है।
18विचारशील व्यक्ति परामर्श की अवहेलना नहीं करता,
किन्तु प्रमादी और घमण्डी कभी भय से नहीं थरकते।
19सोच-विचार किये बिना कुछ मत करो
और तुम बाद में नहीं पछताओगे।
20विघ्न-बाधाओं से भरे मार्ग पर मत चलो
और तुम पत्थरों से+ ठोकर नहीं खाओगे।
21अज्ञान मार्ग पर सँभल कर चलो
22और अपना जीवन जोखिम में मत डालो।**
23तुम सावधानी से अपने सभी कार्य करो।
इस प्रकार तुम आज्ञाओं का पालन कर सकोगे।
24जो व्यवस्था पर विश्वास रखता,
वह आज्ञाओं का पालन करता है।
जो प्रभु पर भरोसा रखता,
उसे कोई हानि नहीं होगी।

33 जो प्रभु पर श्रद्धा रखता, उस पर विपत्ति नहीं पड़ेगी।
प्रभु हर संकट में उसकी रक्षा करेगा
और उसे सब बुराइयों से बचायेगा।
2बुद्धिमान व्यक्ति व्यवस्था से घृणा नहीं करता;
परन्तु जो व्यवस्थापालन में पाखण्डी है,
वह आँधी में जहाज़ की तरह हचकोले खाता है।
3समझदार व्यक्ति प्रभु के वचन पर निर्भर रहता
और व्यवस्था को ईश-वाणी की तरह विश्वसनीय मानता है।
4अपने भाषण की तैयारी करो
और लोग तुम को ध्यान से सुनेंगे।
प्राप्त ज्ञान पर विचार करने के बाद ही उत्तर दो।
5मूर्ख का हृदय गाड़ी के पहिये-जैसा है
और उसका चिन्तन घूमती धुरी-जैसा।
6उपहास करने वाला मित्र उस सवारी के घोड़े-जैसा है,
जो हिनहिनाता है, जब कोई उस पर संवार होता है।

---

* अथवा, "वह उसमें पारंगत हो जाता है"। + अथवा इब्रानी पाठ के अनुसार, "दो बार"। ** यूनानी पाठ: "और अपनी सन्तान से भी सावधान रहो"।

32 : 8 नीति 17 : 27 **32 : 13** व्य 8 : 10 ; 1 तिम 4 : 3 **32 : 16** भज 37 : 6 ; मत 5 : 16 **33 : 1** नीति 12 : 21 ; 2 पत 2 : 9

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

असमानता

7 कोई दिन किसी दूसरे दिन से अधिक महत्व क्यों रखता है,
जब कि वर्ष भर के दिन सूर्य से ही प्रकाश पाते हैं ?
8प्रभु की प्रज्ञा उन में अन्तर उत्पन्न करती है।
उसने विभिन्न ऋतुएँ और पर्व निर्धारित किये।
9उसने कुछ दिनों को महत्व दे कर पवित्र किया
और कुछ को साधारण दिनों की श्रेणी में रखा।
10मिट्टी से सब मनुष्यों की उत्पत्ति हुई,
और पृथ्वी से आदम की सृष्टि हुई।
11प्रभु ने अपने अपार ज्ञान से उन्हें असमान बनाया
और उनके लिए भिन्न-भिन्न मार्ग निर्धारित किये।
12उसने कुछ को आशिष दी और महान् बनाया,
कुछ को पवित्र किया और अपने निकट आने दिया,
और कुछ को अभिशाप दिया, नीचा दिखाया
और उनके स्थान से उन्हें गिराया।
13जैसे कुम्हार अपने हाथ से मिट्टी गढ़ता
और अपनी इच्छा के अनुसार उसे आकार देता है,
वैसे ही सृष्टिकर्ता का हाथ मनुष्य को अपने निर्णय के अनुसार बनाता है।
14जिस तरह बुराई और भलाई में,
मृत्यु और जीवन में विरोध होता है,
उसी तरह सद्धर्मी और पापी में है।
15इस प्रकार सर्वोच्च प्रभु की सब कृतियों में
परस्पर-विरोधी दो-दो तत्व देखो।
16मैं तो सब के बाद जागा,
और अंगूर तोड़ने वाले के पीछे अंगूर बटोरता हूँ;
17किन्तु प्रभु की आशिष से मैं आगे बढ़ा
और अंगूर तोड़ने वाले की तरह
मैंने अपना अंगूरकुण्ड भर दिया।
18यह समझो कि मैंने अपने लिए ही नहीं,
बल्कि उन सब के लिए परिश्रम किया,
जो शिक्षा की खोज में लगे रहते हैं।

घर का प्रबन्ध

19प्रजा के शासको! मेरी बात सुनो,
सभा के नेताओ! ध्यान दो।
20तुम अपने जीवनकाल में किसी को अपने ऊपर अधिकार मत दो,
न तो अपने पुत्र को, न अपनी पत्नी, अपने भाई और अपने मित्र को।
किसी दूसरे को अपनी सम्पत्ति मत दो।
कहीं ऐसा न हो कि तुम को पछताकर उसे वापस माँगना पड़े।
21जब तक तुम जीते और साँस लेते हो,
किसी को अपने ऊपर हावी न होने दो।
22अपने पुत्र-पुत्रियों की इच्छा पर निर्भर रहने की अपेक्षा
यही अच्छा है कि तुम्हारे बच्चे तुम से माँगें।
23अपने सभी कार्य अच्छी तरह सम्पन्न करो
और अपने नाम पर कलंक न लगने दो।
24जब तुम्हारे अन्तिम दिन आ जायें
और तुम्हारी मृत्यु की घड़ी आ पहुँचे,
तो अपनी विरासत बाँट दो।

सेवक

25 गधे के लिए चारा, लाठी और बोझ;
सेवक के लिए रोटी, अनुशासन और परिश्रम।
26दास को काम में लगाओ* और तुम को आराम मिलेगा।
उसके हाथ ढीले पड़ने दो तो वह मुक्त होना चाहेगा।
27जूआ और लगाम गर्दन झुकाती हैं।
कुकर्मी सेवक के लिए यन्त्रणा और बेड़ियाँ!
28उससे परिश्रम कराओ, नहीं तो वह आलसी हो जायेगा।
29आलस्य अनेक बुराइयों की जड़ है।
30उसे ऐसे काम में लगाओ, जो उसके योग्य है।

---

* पाठांतर, "अनुशासन से काम करो"।

33 : 7 रोम 14 : 5 **33 : 10** प्रज्ञा 7 : 1 **33 : 12** गण 16 : 9 ; 1 शम 2 : 6-8 **33 : 13** यश 29 : 16 ; रोम 9 : 21 **33 : 24** नीति 26 : 3 **33 : 27** यहेज 16 : 49

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यदि वह आज्ञा नहीं मानता, तो उसे बेड़ियाँ पहनाओ,
किन्तु किसी से औचित्य से अधिक काम मत लो
और किसी के साथ अन्याय मत करो।
31यदि तुम्हारे एक सेवक हो, तो उसे अपने-जैसा समझो;
क्योंकि तुम उसे अपने रक्त-संबंधियों में ले आये हो**।
यदि तुम्हारे एक सेवक हो, तो उसके साथ भाई-जैसा व्यवहार करो।
क्योंकि तुमको अपने प्राणों-जैसी उसकी आवश्यकता है।
32यदि तुम उसके साथ अन्याय करोगे
और वह तुम को छोड़ कर भाग जायेगा,
33तो तुम उसे कहाँ ढूँढ़ोगे?

स्वप्नों की व्यर्थता

34 व्यर्थ आशा नासमझ व्यक्ति को धोखा देती है
और स्वप्नों के कारण मूर्खों का सिर फिर जाता है।
2जो स्वप्नों का ध्यान रखता,
वह मानो छाया पकड़ता या हवा का पीछा करता है।
3स्वप्न में छाया मात्र दिखाई देती है,
जैसे मुख के सामने दर्पण में उसका प्रतिबिम्ब।
4क्या दूषण से पवित्रता
और झूठ से सत्य निकल सकता है?
5भविष्य-फल, शकुन और स्वप्न—ये सब व्यर्थ हैं,
और प्रसव-पीड़िता की कल्पनाएँ मात्र हैं।
6यदि स्वप्न सर्वोच्च प्रभु द्वारा साक्षात् न भेजा गया हो,
तो उस पर कोई ध्यान मत दो।
7स्वप्नों के कारण बहुत-से लोग भटक गये
और उन पर भरोसा रख कर निराश हुए।
8इन झूठी बातों के बिना व्यवस्था प्रमाणित है
और सत्यनिष्ठ व्यक्ति के मुख में प्रज्ञा की परिपूर्णता है।

यात्राएँ

9जिसने परिभ्रमण किया है, उसने बहुत सीख लिया
और जो अनुभवी है, वह ज्ञान की बातें कहता है।
10जिसे अनुभव नहीं, वह कम जानता है।
11किन्तु जिसने यात्रा की है,
वह व्यवहार-कुशल है।
12मैंने अपनी यात्राओं में बहुत कुछ देखा
और इतना ज्ञान प्राप्त किया है कि मैं बता नहीं सकता।
13मुझे कई बार जीवन की जोखिम का सामना करना पड़ा,
किन्तु मैं अपने अनुभव के कारण बच गया।

प्रभु पर श्रद्धा

14जो प्रभु पर श्रद्धा रखते हैं, उनकी आत्मा जागरूक रहती है
15और उनकी आशा उनके उद्धारकर्ता में केन्द्रीभूत होती है।
16जो प्रभु पर श्रद्धा रखता, वह किसी से नहीं डरता।
वह कभी नहीं घबराता, क्योंकि उसे प्रभु का भरोसा है।
17जो प्रभु पर श्रद्धा रखता, उसकी आत्मा धन्य है।
18वह किस पर निर्भर रहता है?
उसे कौन सँभालता है?
19प्रभु की दृष्टि उन पर रहती है जो उससे प्रेम करते हैं,
प्रभु पक्की ढाल, सुदृढ़ आधार,
लू से बचने का आश्रय, दोपहर की धूप से बचाने वाली छाया है।
वही ठोकर खाने से बचाता,
और गिरने वालों की सहायता करता है।
20वही आत्मा को ऊपर उठाता,

** अथवा, "अपने जीवन-रक्त (के परिश्रम) से प्राप्त किया"

34 :1 व्य 13 : 1-5; 18 : 9-14 34 : 4 अय्य 14 : 4 34 : 16 भज 33 : 18 34 : 18 नीति 21 : 27
34 : 19 1 शम 15 : 22 ; नीति 15 : 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और आँखों में तेज भर देता है;
वही स्वास्थ्य, जीवन और आशिष प्रदान
करता है।

सच्चा धर्म

21अन्याय की कमाई का चढ़ावा दूषित है।
22पापियों की भेंटें प्रभु को स्वीकार नहीं होतीं।
23सर्वोच्च प्रभु को अधर्मियों के चढ़ावे प्रिय
नहीं होते,
वह बलि की बहुलता के कारण पाप क्षमा
नहीं करता।
24जो दरिद्रों की सम्पत्ति से बलि चढ़ाता है,
वह उस व्यक्ति-जैसा है,
जो पिता की आँखों के सामने उसके पुत्र का
वध करता है।
25भीख की रोटी से दरिद्र का निर्वाह होता है।
जो उसे छीनता है, वह रक्तपात करता है।
26जो अपने पड़ोसी की जीविका छीनता है,
वह मानो उसका वध करता है।
27जो मज़दूर का वेतन दबाता है,
वह हत्यारे के बराबर है।
28एक निर्माण करता और दूसरा ढा देता है।
उस से क्या लाभ? दोनों ने व्यर्थ परिश्रम
किया।
29एक आशीर्वाद और दूसरा अभिशाप देता है।
महाप्रभु को किसकी बात माननी चाहिए?
30कोई शव स्पर्श कर नहाता और फिर शव
स्पर्श करता है,
तो उसे नहाने से क्या लाभ?
31यही उस व्यक्ति की दशा है, जो अपने पापों
के लिए उपवास करता है
और उसके बाद जा कर फिर वही पाप करता
है।
तो उसकी प्रार्थना कौन स्वीकार करेगा?
और उसके इस तप से उसे लाभ क्या हुआ?

35 व्यवस्था के अनुसार आचरण
बहुत-सी बलियों के बराबर है।
2जो प्रभु की आज्ञाओं का पालन करता है,
वह सहभगिता-बलि चढ़ा है।
3परोपकार मैदे की अन्न-बलि चढ़ाने के
बराबर है।
4जो भिक्षादान करता है,
वह स्तुति-बलि चढ़ाता है।
5बुराई का त्याग प्रभु को प्रिय होता है,
और अधर्म से दूर रहना पाप का प्रायश्चित
ही है।
6फिर भी ख़ाली हाथ प्रभु के सामने मत जाओ,
7क्योंकि ये सब बलियाँ प्रभु के आदेश के
अनुकूल हैं।
8धर्मी का चढ़ावा वेदी की शोभा बढ़ाता है,
और उसकी सुगन्ध सर्वोच्च प्रभु तक पहुँचती
है।
9धर्मी की बलि स्वीकार होती है,
उसकी स्मृति सदा बनी रहेगी।
10उदारतापूर्वक प्रभु की स्तुति करते रहो।
प्रथम फलों के चढ़ावे में कमी मत करो,
11प्रसन्नमुख हो कर दान चढ़ाया करो
और खुशी से दशमांश दो।
12जिस प्रकार सर्वोच्च प्रभु ने तुम्हें दिया है,
उसी प्रकार तुम भी उसे सामर्थ्य के अनुसार
उदारतापूर्वक दो;
13क्योंकि प्रभु प्रतिदान करता है,
वह तुम्हें सात गुना लौटायेगा।
14उसे घूस मत दो,
वह उसे स्वीकार नहीं करता।
15पाप की कमाई के चढ़ावे पर भरोसा मत
रखो;
क्योंकि प्रभु वह न्यायाधीश है, जो पक्षपात
नहीं करता।
16वह दरिद्र के साथ अन्याय नहीं करता,
और पददलित की पुकार सुनता है।
17वह विनय करने वाले अनाथ
अथवा अपना दुखड़ा रोने वाली
विधवा का तिरस्कार नहीं करता।
18उसके आँसू उसके चेहरे पर झरते हैं,
19और उसकी आह अत्याचारी पर अभियोग
लगाती है।

---

34 : 26 यश 58 : 3 35 : 2 लेव 2 : 1 35 : 3 दान 4 : 27 35 : 7 इब्र 11 : 4 35 : 9 2 कुर 9 : 7 35 : 11 नीति 19 : 17 35 : 14 नि 22 : 22 35 : 17 शोक 3 : 44 35 : 18 यश 14 : 5

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

20जो सारे हृदय से प्रभु की* सेवा करता है,
उसकी सुनवाई होती है;
उसकी प्रार्थना स्वर्गद्वार तक पहुँचती है।
21विनयशील व्यक्ति की पुकार मेघों को चीर
कर स्वर्ग तक पहुँचती है।
जब तक वह अपने लक्ष्य प्राप्त नहीं करता,
वह संतुष्ट नहीं होता।
वह तब तक आग्रह करता रहता है,
जब तक सर्वोच्च प्रभु उस पर दयादृष्टि नहीं
करता
22और निर्णय कर धर्मियों को न्याय नहीं
दिलाता।
प्रभु देर नहीं करेगा।
वह धैर्य नहीं रखेगा और रणवीर की तरह
क्रूर लोगों की कमर तोड़ देगा।
23वह राष्ट्रों को बदला चुकायेगा,
घमण्डियों का झुण्ड ध्वस्त करेगा
और दुष्टों का राजदण्ड तोड़ेगा।
24वह मनुष्यों को उनके कर्मों का फल
और उनके उद्देश्य के अनुसार उनके कार्यों
का पुरस्कार प्रदान करेगा।
25वह अपनी प्रजा का पक्ष लेगा
और अपनी दया से उसे आनन्दित करेगा।
26सूखे के समय वर्षा के बादलों की तरह
विपत्ति के दिनों में प्रभु की दया का स्वागत
होता है।

इस्राएल के लिए प्रार्थना

36 हे सर्वेश्वर प्रभु! हम पर दया कर।
2सब राष्ट्रों में अपने प्रति श्रद्धा उत्पन्न
कर।
3अन्य राष्ट्रों पर अपना हाथ उठा,
जिससे वे तेरी सामर्थ्य देखें।
4जिस तरह तूने उनके सामने हम पर अपनी
पवित्रता को प्रदर्शित किया,
उसी तरह उन में अपनी महिमा को हमारे
सामने प्रदर्शित कर।
5प्रभु! वे तुझे उसी प्रकार जान जायें,
जिस प्रकार हम जान गये कि तेरे सिवा और
कोई ईश्वर नहीं।
6नये चिह्न प्रकट कर और नये आश्चर्यकर्म
दिखा।
7अपना हाथ और बाहुबल महिमान्वित कर।
8अपना क्रोध जगा, अपना प्रकोप प्रदर्शित कर,
9विरोधी को मिटा और शत्रु का विनाश कर।
10विलम्ब न कर, निश्चित समय याद कर,
जिससे लोग तेरे महान् कार्यों का गुणगान
करें।
11जो बचना चाहे, वह आग में भस्म हो जाये
और जो लोग तेरी प्रजा पर अत्याचार करते
रहते हैं,
उनका सर्वनाश हो।
12विरोधी शासकों का सिर तोड़ डाल,
जो कहते हैं, "हमारे बराबर कोई नहीं।"
13-16याकूब के सारे कुलों को एकत्र कर,
उन्हें पहले की तरह उनकी विरासत लौटा।
17प्रभु! उस प्रजा पर दया कर,
जो तेरी कहलाती है,
इस्राएल पर, जिसे तूने अपना पहलौठा माना
है।
18अपने पवित्र नगर,
अपने निवास-स्थान येरूशलेम पर दया
कर।
19अपने स्तुतिगान से सियोन को भर दे,
और अपनी महिमा से अपने मन्दिर को।
20अपनी पहली कृति+ का समर्थन कर,
और अपने नाम पर घोषित नबूवतें पूरी कर।
21जो तुझ पर भरोसा रखते हैं,
उन्हें पुरस्कार दे,
और अपने नबियों की वाणी सत्य प्रमाणित
कर।
22प्रभु! अपने सेवकों की प्रार्थना सुन।
अपनी प्रजा पर दया कर,
हमें धर्ममार्ग पर ले चल
और पृथ्वी के सभी लोग यह स्वीकार करें

---

* अथवा, "जो प्रभु की इच्छा के अनुरूप"। + अर्थात् इस्राएल।
36 : 3 भज 79 : 6 ; यिर 10 : 25 **36 : 5** यहो 4 : 24 ; 1 रा 8 : 43 **36 : 10** भज 68 : 21 **36 : 12** दान 9 : 18-19 **36 : 13** 1 इत 6 : 41 **36 : 17** 1 रा 8 : 60

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कि तू ही प्रभु और शाश्वत परमेश्वर है।

विवेक

23 मुँह सब प्रकार का भोजन निगलता है,
किन्तु एक भोजन दूसरे से अच्छा है।
24जिस प्रकार तालू, चख कर शिकार का मांस पहचान लेता है,
उसी प्रकार समझदार हृदय, झूठ जान जाता है।
25कपटपूर्ण हृदय दुःख पहुँचाता है,
किन्तु अनुभवी व्यक्ति उसे बदला चुकाता है।
26स्त्री किसी भी ओजस्वी पुरुष को पति के रूप में स्वीकार करती है
किन्तु एक पुत्री दूसरी पुत्री से अधिक सुयोग्य सिद्ध हो सकती है।
27स्त्री के सौन्दर्य से पुरुष का चेहरा खिल उठता है;
उससे अधिक उसकी और कोई इच्छा नहीं।
28यदि उसकी वाणी में मृदलता एवं नम्रता भी हो,
तो उसका पति दूसरे पतियों से कहीं अधिक सौभाग्यशाली है।
29जो ऐसी पत्नी प्राप्त करता है, उसे मानो खज़ाना मिलता है।
वह उसके लिए उपयुक्त सहायिका है और आश्रय का स्तंभ।
30जहाँ बाड़ नहीं, वहाँ दाख़बारी उजड़ती है;
और जिस मनुष्य के पास पत्नी नहीं, वह उदास भटकता रहता है।
31जो सशस्त्र डाकू नगर-नगर घूमता है,
उस पर कौन विश्वास करेगा?
यह उस व्यक्ति की दशा है, जिसके घर नहीं
और जो जहाँ रात हो जाती है, वहीं ठहर जाता है।

मित्र की पहचान

37 प्रत्येक मित्र कहता है : ''मैं भी तुम्हारा मित्र हूँ,''
किन्तु कुछ लोग नाम मात्र के मित्र हैं।
2क्या वह दुःख मृत्यु के सदृश नहीं,
जब कोई अभिन्न मित्र शत्रु बन जाता है?
3वह दुर्भाव कहाँ से उत्पन्न हुआ है,
जो पृथ्वी को कपट से ढक देता है?
4कोई मित्र सुख में अपने मित्र का साथ देता,
किन्तु विपत्ति में उसका विरोधी बन जाता है।
5कोई मित्र कष्ट में अपने मित्र का साथ देता है,
लेकिन अपना पेट भरने के लिए।
वह उसके साथ युद्ध में जाता है,
लेकिन केवल उसकी ढाल उठाता है।
6अपने मन में सच्चे मित्र को मत भुलाओ
और समृद्धि में भी उसे याद रखो।

परामर्शदाता

7 प्रत्येक परामर्शदाता अपनी सम्मति अच्छी समझता है,
किन्तु कुछ लोग अपने हित में परामर्श देते हैं।
8परामर्शदाता से सावधान रहो
और पहले पता करो कि उसका स्वार्थ किस में है;
क्योंकि वह अपने हित में परामर्श देगा
और तुम्हारे विरुद्ध चिट्ठी डालेगा।
9वह तुम से कहेगा : ''आप सही मार्ग पर चलते हैं;''
किन्तु वह मार्ग के किनारे से देखता है कि तुम को क्या होगा।
10जो तुम्हें संदेह की दृष्टि से देखे, उस से सलाह मत माँगो,
और ईर्ष्यालु व्यक्ति से अपनी योजना छिपाओ।
11तुम न तो पत्नी से उसकी सौत के विषय में सलाह माँगो
और न कायर से युद्ध के विषय में,
न व्यापारी से सौदे के विषय में,
न खरीददार से बिक्री के विषय में,
न विद्वेषी से कृतज्ञता के विषय में,
न निर्दयी से दया के विषय में,
न आलसी से किसी काम के विषय में,
न ठेके के मजदूर से किसी काम की समाप्ति के विषय में

37 : 1 नीति 20 : 9 37 : 6 नीति 27 : 10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और न सुस्त नौकर से कठिन काम के विषय
में।
इन लोगों के किसी परामर्श पर निर्भर मत
रहो,
12किन्तु धार्मिक व्यक्ति की संगति करो,
जिसके विषय में तुम जानते हो
कि वह प्रभु की आज्ञाओं का पालन करता
है,
जिसका स्वभाव तुम्हारे स्वभाव से मेल
खाता है ;
और जब तुम लड़खड़ाते हो,
तब वह तुम से सहानुभूति रखता।
13अपने अन्त:करण की आवाज़ पर भी ध्यान
दो,
क्योंकि वह तुम्हारे लिए किसी से भी अधिक
विश्वसनीय है।
14ऊँची मीनार पर बैठने वाले सात पहरेदारों से
भी अधिक,
मनुष्य को अधिक जानकारी अन्त:करण
देता है।
15सब से महत्वपूर्ण बात यह है
कि तुम सर्वोच्च प्रभु से प्रार्थना करो,
जिससे वह तुम को सत्य के मार्ग पर ले चले।

प्रज्ञा की परख

16 प्रत्येक योजना विचार-विमर्श से प्रारम्भ
होती है,
और प्रत्येक कार्य सोच-विचार से।
17हृदय में आचार-अनाचार की जड़ है,
18उस में से चार शाखाएं अंकुरित होती हैं:
भलाई और बुराई, जीवन और मृत्यु
और इन सब पर जिह्वा शासन करती है।
19कुछ लोग बहुतों को शिक्षा देने में सकुशल
होते हैं;
किन्तु अपनी आत्मा के लिए किसी काम के
नहीं।
20कुछ विद्वान् अपने शब्दों द्वारा अपने प्रति बैर
उत्पन्न करते हैं;
और इस कारण स्वादिष्ट+ भोजन से वंचित
रहते हैं।
21प्रभु ने उन्हें लोकप्रियता का वरदान नहीं
दिया;
उन में रत्ती भर प्रज्ञा नहीं।
22कुछ लोग अपनी बुद्धि से लाभ उठाते
और अपनी बुद्धि के फल से अपना शरीर पुष्ट
करते हैं।
23प्रज्ञासम्पन्न व्यक्ति अपने लोगों को शिक्षा
देता है,
और उसकी बुद्धि का परिणाम स्थायी होता
है।
24प्रज्ञासम्पन्न व्यक्ति को सभी आशीर्वाद देते
हैं
और जो उसे देखते हैं, वे उसे धन्य कहते हैं।
25मनुष्य के दिन गिने जा सकते हैं,
किन्तु इस्राएल के दिन असंख्य हैं।
26प्रज्ञासम्पन्न व्यक्ति को अपने लोगों से
सम्मान मिलेगा,
और उसका नाम सदा जीवित रहेगा।

संयम

27 शिष्य ! अपने जीवनकाल में स्वयं का
मूल्यांकन करो।
देखो कि तुम्हारे लिए क्या अहितकर है
और उस से अपने को दूर रखो;
28क्योंकि सब कुछ सब के लिए हितकर नहीं
है
और सब की सब कुछ में रुचि नहीं।
29हर सुख के लालची मत बनो,
और स्वादिष्ट भोजन पर मत टूटो।
30अधिक भोजन करने से मनुष्य अस्वस्थ हो
जाता,
और पेटूपन से मिचली आती है।
31अधिक खाने से बहुतों की मृत्यु हो गयी;
और जो संयम रखता है, वह अपने जीवन
के दिनों की संख्या बढ़ाता है।

चिकित्सक और रोग

38 चिकित्सक का सम्मान करो,
तुम को उसकी आवश्यकता है।

+ इब्रानी पाठ के अनुसार।

37 : 17 – 18 नीति 18 : 21; मत 12 : 37 ; याक 3 : 2 **37 : 25** भज 39 : 4; 90 : 12 **37 : 28** 1 कुर 6 : 12

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सर्वोच्च प्रभु ने उसको भी सृष्टि की है।
2सर्वोच्च प्रभु से स्वास्थ्यलाभ होता
और राजा की ओर से चिकित्सक को उपहार मिलता है।
3चिकित्सक का उसके विज्ञान के कारण सम्मान किया जाता है
और बड़े लोग उसकी प्रशंसा करते हैं।
4प्रभु पृथ्वी से जड़ी-बूटियाँ उत्पन्न करता है
और समझदार व्यक्ति उनकी उपेक्षा नहीं करता।
5क्या पानी लकड़ी द्वारा मीठा नहीं बना,
जिससे मनुष्य प्रभु की सामर्थ्य पहचान सकें?
6उसने मनुष्यों को विज्ञान प्रदान किया है,
जिससे वे उसके आश्चर्यकर्मों के कारण प्रभु की महिमा करें।
7चिकित्सक जड़ी-बूटियों द्वारा पीड़ा दूर करता है।
8भेषजज्ञ उनका मिश्रण तैयार करता है,
जिससे प्रभु की कृतियाँ नष्ट न हों।
उसी की कृपा से भूतल पर स्वास्थ्य बना रहता है।
9 शिष्य ! अपनी बीमारी में लापरवाह न बनो;
प्रभु से प्रार्थना करो और वह तुम्हें स्वास्थ्य प्रदान करेगा।
10अपने अपराधों पर पश्चात्ताप करो,
अपने हाथ निर्दोष रखो
और अपना हृदय हर पाप से शुद्ध रखो।
11सुगन्धयुक्त धूप एवं मैदे की स्मृति-बलि चढ़ाओ
और शक्ति-भर* तेल का अर्पण करो।
12चिकित्सक को भी अवसर+ दो,
क्योंकि प्रभु ने उसकी सृष्टि की है।
वह तुम से दूर न जाये,
क्योंकि तुम को उसकी ज़रूरत है;
13क्योंकि कभी-कभी तुम्हारा स्वास्थ्यलाभ
चिकित्सकों के हाथ में है।
14वे भी प्रभु से प्रार्थना करते हैं
कि वह उन्हें निदान पहचानने में
और जीवन की रक्षा करने में सफलता प्रदान करे।
15जो अपने सृष्टिकर्ता के सामने पाप करेगा,
वह चिकित्सक की अवज्ञा करता है।**

शोक

16 शिष्य! मृतक के लिए आँसू बहाओ
और पूर्ण संवेदना से विलाप करो।
उसका शरीर योग्य रीति से दफ़नाओ,
और उसकी कबर का ध्यान रखो।
17फूट-फूट कर रोओ,
और हार्दिक सहानुभूति दिखाओ।
लोगों की निन्दा से बचने के लिए एकाध दिन
मृतक की योग्यता के अनुसार शोक मनाओ,
और इसके बाद अपना दुःख शान्त हो जाने दो;
18क्योंकि शोक मृत्यु का कारण बन सकता है।
और मन का दुःख शक्ति घटाता है।
19शोक विपत्ति में बना रहता है,
और++ दरिद्रता का जीवन हृदय के लिए अभिशाप है।
20अपना हृदय शोक में मत डूबने दो,
उसे हटाओ और अपनी अन्तगति पर विचार करो।
21भूलो मत : मृतक लौट कर नहीं आयेगा।
उसे तुम से कोई लाभ नहीं होता,
और तुम अपने को हानि पहुँचाते हो।
22यह याद रखो कि उसकी गति तुम्हारी भी होगी—
कल मेरी हुई और आज तुम्हारी होगी!
23मृत्यु के बाद मृतक की स्मृति मिट जाने दो,
उसके प्राण निकलने के बाद अपना दुःख शान्त होने दो।

---

* इब्रानी पाठ के अनुसार। + अथवा, ''निवास''। ** इब्रानी पाठ के अनुसार। यूनानी अनुवाद में : ''वह चिकित्सक के हाथों पड़े!'' ++ पाठांतर: ''शव के साथ शोक भी चला जाता है, परन्तु.....''

38 : 4 2 रा 20 : 7; यहेज 47 : 12 38 : 5 नि 15 : 25 38 : 10 भज 73 : 13 38 : 16 तोब 12 : 13 38 : 18 नीति 12 : 25 38 : 21 अय्य 7 : 9

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शास्त्री और शिल्पकार

24 अवकाश मिलने के कारण ही शास्त्री को
प्रज्ञा प्राप्त होती है।
जो काम-धन्धों में नहीं फँसा रहता,
वही बुद्धिमान बन सकता है।
25 जो हल चलाता और आत्माभिमान से पैना
भाँजता है,
जो बैलों को जोतता है और उनके कामों में
लगा रहता है,
जो अपने साँड़ों की ही बात करता है,
उसे प्रज्ञा कैसे प्राप्त हो सकती है?
26 वह हल की रेखा खींचने की चिन्ता करता
रहता है
और रात में देर तक बछड़ों को चारा देता है।
27 यही हाल प्रत्येक शिल्पकार और हर कारीगर
का है,
जो दिन-रात अपने काम में लगा रहता है।
यही हाल उन लोगों का है, जो मुद्राएँ उकेरते
हैं।
और निरन्तर नयी आकृतियाँ बनाते रहते हैं।
ऐसा व्यक्ति सच्ची प्रतिकृति बनाने में
तल्लीन रहता है
और रात में देर तक अपनी कृति का परिष्कार
करता है।
28 यही हाल लोहार का है, जो निकाई के पास
बैठे
मन लगा कर लोहे का काम करता है।
आग की भाप उसका शरीर गलाती है;
वह भट्ठी की गरमी में परिश्रम करता रहता
है।
हथौड़े की आवाज़ उसके कानों में निरन्तर
गूँजती रहती है।
उसकी आँखें अपनी कृति के नमूने पर टिकी
रहती हैं।
वह दत्तचित्त हो कर अपने कार्य में लगा
रहता है,
और रात में देर तक उसका परिमार्जन करता
है।
29 यही हाल कुम्हार का है, जो अपने चाक के
पास बैठ कर
उसे अपने पैरों से घुमाता रहता है।
वह अपने काम पर निरन्तर ध्यान रखता
और समय पर उसे पूरा करने की चिन्ता
करता है।
30 वह अपने हाथों से मिट्टी के लोंदे बनाता
और पैरों से उसे गूँधता है।
वह दत्तचित्त होकर बरतनों पर रोग़न लगाता
और रात में देर तक अपना आँवा साफ़ करता
है।

31 इन सब को अपने हस्तकौशल पर भरोसा
है।
ये सभी अपने-अपने कार्य में निपुण हैं।
32 इनके बिना कोई भी नगर नहीं बसाया जा
सकता है।
इनके बिना यहाँ न तो कोई रह सकता
और न कोई आ-जा सकता है;
किन्तु नगर-परिषद् में इन से परामर्श नहीं
लिया जायेगा।
33 इन्हें सार्वजनिक सभाओं में प्रमुख स्थान नहीं
दिये जायेंगे।
ये न्यायाधीश के आसन पर नहीं बैठेंगे।
ये न तो विधि-विधान के निर्णय समझते
और न शिक्षा एवं न्याय के क्षेत्र में योग देते हैं।
शासकों में* इन में से कोई नहीं होगा,
34 किन्तु ये नित्य सृजन का कार्य संभालते रहते
हैं।
इनका काम-धन्धा ही इनकी प्रार्थना है।+
उस व्यक्ति की बात दूसरी है, जो पूरा ध्यान
लगा कर
सर्वोच्च प्रभु की व्यवस्था का मनन करता है!

शास्त्री की प्रशंसा

39 शास्त्री प्राचीन काल के प्रज्ञा-साहित्य
का अध्ययन करता है,
और नबियों के उद्गारों के चिन्तन में लीन
रहता है।

---

* मूल में, "दृष्टांतो में"। + अथवा, "इनकी प्रार्थना इनके काम-धन्धे के विषय में ही है।"

38 : 29 प्रज्ञा 15 : 7 39 : 1 यहो 1 : 8; भज 1 : 2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
2वह जाने-माने लोगों की उक्तियों को सुरक्षित
रखता
और दृष्टान्तों की गहराई तक पहुँचने का
प्रयत्न करता है।
3वह सूक्तियों के गूढ़ अर्थ समझने में लीन
रहता है,
और दृष्टान्तों की पहेलियों का अध्ययन
करता रहता है।
4वह उच्च पदाधिकारियों के मध्य सेवारत है,
और शासकों का द्वार उसके लिए खुला है।
वह विदेशी राष्ट्रों का भ्रमण करता,
और मनुष्यों की भलाई एवं बुराई की
जानकारी रखता है।
5वह बड़े सबेरे अपने सृष्टिकर्ता प्रभु की शरण
में जाता,
और सारे हृदय से सर्वोच्च परमेश्वर से विनय
करता है।
वह अपने होंठों से प्रार्थना करता,
और अपने पापों की क्षमा माँगता है।
6यदि महाप्रभु ऐसा चाहेगा,
तो उसे भरपूर बुद्धि की आत्मा प्राप्त होगी।
तब वह स्वयं प्रज्ञापूर्ण वचनों की बौछार
करेगा,
और अपनी प्रार्थना में प्रभु की स्तुति करेगा।
7उसका परामर्श और ज्ञान विवेकपूर्ण होगा,
और वह परमेश्वर के रहस्यों पर मनन
करेगा।
8जो शिक्षा उसे प्राप्त हुई, वह उसे प्रकट करेगा,
और प्रभु के विधान की व्यवस्था पर गर्व
करेगा।
9बहुत-से लोग उसकी बुद्धि की प्रशंसा करेंगे,
और वह कभी नहीं भुलायी जायेगी।
उसकी स्मृति नहीं मिटेगी।
उसका नाम पीढ़ी-दर-पीढ़ी बना रहेगा।
10राष्ट्रों में उसकी प्रज्ञा की चर्चा होगी,
और धर्मसभा में उसकी प्रशंसा की जायेगी।
11यदि वह बहुत दिनों तक जीवित रहेगा,
तो उसका नाम हज़ारों से महान् होगा।
और यदि उसकी मृत्यु हो जायेगी,
तो उसे कोई चिन्ता नहीं होगी।*

सृष्टिकर्ता की स्तुति

12 मैं एक बार और अपने विचार प्रकट
करूँगा,
क्योंकि मैं पूर्णिमा के चन्द्रमा की तरह पूर्ण
हूँ।
13भक्त शिष्यो! मेरी बात सुनो
और उस गुलाब की तरफ खिलो,
जो जलस्रोत के निकट लगाया गया है,
14लोबान की तरह सुगन्ध बिखेरो;
सोसन की तरह खिलो,
ऊँचे स्वर में भजन सुनाओ
और प्रभु के सभी कार्यों के कारण उसकी
स्तुति करो।
15उसके नाम की महिमा घोषित करो,
उसका स्तुतिगान करो,
गीत गाते और सितार बजाते हुए
इन शब्दों में उसकी स्तुति करो :
16 "प्रभु के सभी कार्य उत्तम हैं
और उसके सभी आदेश अपने समय पर पूर्ण
होते हैं।"
17यह मत पूछो, "यह क्या है? इस से क्या
लाभ?"
क्योंकि यथासमय सब प्रश्नों का उत्तर मिल
जाएगा।
उसके आदेश पर पानी एकत्र हो गया,
उसके शब्द मात्र से महासागर के भण्डार भर
गये।
18उसके आदेश पर उसकी इच्छा पूरी हुई,
क्योंकि उसके कल्याण-कार्य में कोई भी
बाधा नहीं डाल सकता।
19सभी मनुष्यों के कार्य उसके सामने हैं,
और कोई भी उसकी दृष्टि से नहीं छिप
सकता।
20वह आदि से काल के अन्त तक देखता रहता
है;
उसकी दृष्टि में कोई बात असाधारण नहीं।

* मूल अस्पष्ट।

39 : 6 प्रज्ञा 7 : 7 39 : 8 यिर 9 : 24 39 : 15 भज 98 : 5 39 : 16 उत 1 : 31 39 : 17 भज 147 : 18

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

21यह मत पूछो, "यह क्या है? इस से क्या
लाभ?"
क्योंकि सब कुछ का अपना-अपना प्रयोजन
है।
22प्रभु की आशिष उमड़ती नदी के सदृश है,
जो सूखी भूमि को प्रलय की तरह सींचती
है।
23जिन राष्ट्रों ने प्रभु की खोज नहीं की,
उसका क्रोध उनका इस तरह विनाश करेगा,
जिस तरह उसने पानी को खारा कर दिया।
24सन्तों के लिए उसके मार्ग सीधे हैं,
किन्तु दुष्टों के लिए वे काँटों से भरे हैं।
25प्रारम्भ से ही अच्छे लोगों के लिए अच्छी
चीज़ों की
और बुरे लोगों के लिए बुरी चीज़ों की सृष्टि
हुई।
26मनुष्यों के जीवन के लिए ये अत्यावश्यक हैं:
पानी, आग, लोहा, नमक,
गेहूँ का मैदा, दूध, मधु,
दाखरस, तेल और वस्त्र।
27यह सब भक्तों के लिए कल्याणकारी है,
किन्तु पापियों के लिए अहितकर होता है।
28दण्ड देने के लिए आँधियों की सृष्टि हुई:
प्रभु का कोप उनका संकट दुगुना कर देता
है।
समय आने पर वे विनाशलीला रचतीं
और अपने सृष्टिकर्ता का क्रोध शान्त करती
हैं।
29आग, ओले, अकाल और मृत्यु—
इनकी सृष्टि दण्ड देने के लिए हुई है।
30जंगली जानवरों के दाँत, बिच्छू, साँप
और प्रतिशोधी तलवार, जो दुष्टों का विनाश
करती है—
31ये सब सहर्ष प्रभु की आज्ञा मानते हैं,
इनकी उस समय के लिए सृष्टि की गयी है,
जब इनकी ज़रूरत पड़ेगी ;
समय आने पर ये उसकी आज्ञा का उल्लंघन
नहीं करेंगे।
32 इसलिए प्रारम्भ से मेरी यही धारणा थी,
मैंने सोच-विचार करने के बाद यह लिखा
है:
33 "प्रभु के सभी कार्य उत्तम हैं,
वह समय पर सब आवश्यकताएँ पूरी करता
है।"
34यह मत कहो, "यह उस से बुरा है",
क्योंकि सब कुछ अपने समय पर अच्छा
प्रमाणित होगा।
35और अब सम्पूर्ण हृदय से ऊँचे स्वर में गाओ
और प्रभु का नाम धन्य कहो।

मनुष्य की दयनीयता

40 जिस दिन से मनुष्य अपनी माता के गर्भ
से निकलते,
और उस दिन तक, जब वे मिट्टी—सब की
गोद—में लौटते हैं,
उन्हें बहुत-से कष्ट झेलने पड़ते हैं
और आदम की सन्तान पर भारी जूआ रखा
रहता है।
2उनके सोच-विचार और हृदय की आशंका
पर
भविष्य अर्थात् मृत्यु की चिन्ता छायी रहती
है।
3वे चाहे महिमामय सिंहासन पर विराजमान हों
या धूल और राख में पड़े हुए हों,
4वे चाहे बैंगनी वस्त्र पहने हों या मुकुट धारण
किये हों
या मामूली सन के कपड़े पहने हों,
5सब में क्रोध, ईर्ष्या, घबराहट और अशान्ति,
मृत्यु की आशंका, द्वेष और संघर्ष भरा है।
जब मनुष्य अपनी शय्या पर विश्राम करता,
तब भी रात की नींद उसे बेचैन कर देती है।
6उसे नाम-मात्र का विश्राम मिलता है,
और वह नींद में भी दिन की तरह परेशान
रहता है।
वह अपने हृदय की कल्पनाओं से आतंकित
रहता है।
उसकी दशा युद्ध से भागे योद्धा के सदृश है।

---
39 : 24 हो 14 : 9 39 : 26 व्य 32 : 14 39 : 29 भज 148 : 8; अजर्याह 34-48 39 : 30 व्य 8 : 15 40 : 1 अय्य 5 : 7; सभ 1 : 7 40 : 2 प्रज्ञा 17 : 11 40 : 6 प्रज्ञा 18 : 17

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

7सुरक्षित स्थिति में पहुँचते ही वह नींद से
जागता है
और आश्चर्य करता है कि डरने की कोई
बात नहीं थी!
8ये अनिष्ट हर प्राणी के लिए हैं, चाहे वह
मनुष्य हो या पशु—
किन्तु पापियों के लिए सात गुना अधिक हैं;
9मृत्यु, रक्त, संघर्ष और तलवार,
विपत्ति, भूख, अत्याचार और कोड़े।
10दुष्टों के लिए इन सब बातों की सृष्टि हुई
और उन्हीं के कारण जलप्रलय आया है।
11जो मिट्टी से निकलता है, वह सब मिट्टी
में मिल जाता है
और जो पानी से निकलता है, वह समुद्र में
मिल जाता है।*

अन्याय और न्याय की सम्पत्ति

12 हर घूस और अधर्म मिटाया जायेगा,
किन्तु ईमानदारी सदा बनी रहेगी।
13अधर्मियों की सम्पत्ति बरसाती नदी की तरह
सूख जायेगी,
और बरसात में बिजली की कड़क की तरह
लुप्त हो जायेगी।
14जो उदारतापूर्वक देता है, वह आनन्दित रहता
है,
किन्तु आज्ञाभंग करने वाले सदा के लिए नष्ट
हो जायेंगे।
15दुष्टों की सन्तति नहीं पनपेगी,
क्योंकि पापियों की जड़ें ऊँची चट्टान पर
लगी हैं।
16वे उस पौधे के सदृश हैं, जो नदी की धारा
के पास उगता है,
और सब से पहले उखाड़ा जाता है।
17परोपकार एक हरी-भरी वाटिका-जैसा है,
और भिक्षादान सदा के लिए बना रहता है।

परमेश्वर पर श्रद्धा सर्वोत्तम है

18 आत्मनिर्भर व्यक्ति और श्रमिक का जीवन
सुखद है,
किन्तु ख़जाने का पता लगाने वाला व्यक्ति
अधिक सुखी होता है।
19सन्तति और नगर-निर्माण से नाम बना रहता
है,
[किन्तु इन दोनों की अपेक्षा बुद्धि की प्राप्ति
श्रेष्ठ है।
पशु-पालन और उद्यान-कृषि सम्पन्नता के
साधन हैं,]
किन्तु इन दोनों की अपेक्षा साध्वी पत्नी श्रेष्ठ
है।
20मदिरा और संगीत हृदय को आनन्दित करते
हैं,
किन्तु इन दोनों की अपेक्षा प्रज्ञा+ का प्रेम
श्रेष्ठ है।
21बाँसुरी और सितार श्रुतिमधुर हैं,
किन्तु इन दोनों की अपेक्षा निष्कपट वाणी
श्रेष्ठ है।
22सौम्यता और सौन्दर्य आँखों को प्रिय हैं,
किन्तु इन दोनों की अपेक्षा खेतों की
हरियाली श्रेष्ठ है।
23मित्र और साथी समय के अनुसार ही आपस
में मिलते हैं,
किन्तु इन दोनों की अपेक्षा पति-पत्नी का
मिलन** श्रेष्ठ है।
24भाई और सहायक बुरे दिनों में रक्षा करते हैं,
किन्तु इन दोनों की अपेक्षा भिक्षादान हितकर
है।
25चाँदी और सोना आत्मविश्वास देते हैं,
किन्तु इन दोनों की अपेक्षा सत्यपरामर्श श्रेष्ठ
है।
26समृद्धि और सामर्थ्य की अपेक्षा प्रभु पर श्रद्धा
हृदय को अधिक आनन्द प्रदान करती है।
जो प्रभु पर श्रद्धा रखता, उसे किसी बात की
कमी नहीं होती,
और उसे किसी सहायक की आवश्यकता
नहीं।
27प्रभु पर श्रद्धा हरी-भरी वाटिका-जैसी

* पाठान्तर, ''जो ऊपर से उतर आया है, वह फिर ऊपर की ओर चढ़ेगा''। + इब्रानी पाठ: ''मित्रों'' अथवा ''दाम्पत्य''।
** इब्रानी पाठ : ''समझदार पत्नी''

40 : 13 नीति 10 : 25 40 : 19 नीति 19 : 14 40 : 23 नीति 31 : 10-11

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और महिमामय छतरी-जैसी है।

भिक्षा

28 शिष्य! भिखारी का जीवन मत बिताओ।
भीख माँगने की अपेक्षा मृत्यु अच्छी है।
29जो व्यक्ति रोटी के लिए पराये का मुँह ताकता है,
उसका जीवन, जीवन कहलाने योग्य नहीं।
वह पराये के भोजन से अपना गला अपवित्र करता है,
जब कि शिक्षित और भद्र मनुष्य उस से परहेज़ करता है।
30भीख माँगते समय निर्लज्ज के मुँह में मीठी बोली होती है,
किन्तु उसके अन्तरमन में आग की ज्वाला होती है।

मृत्यु

41 मृत्यु! उस मनुष्य के लिए तेरा स्मरण कितना कटु है,
जो अपनी सम्पत्ति का उपभोग करते हुए शान्ति का जीवन बिताता है,
उस निश्चिन्त मनुष्य के लिए, जो अपने सब कामों में सफल है,
और जिस में भोग-विलास करने की शक्ति रह गयी है!
2मृत्यु! वह मनुष्य तेरे दण्ड का स्वागत करता है,
जो तंगहाली में रहता और जिसकी शक्ति क्षीण हो रही है;
जो बूढ़ा हो चला है, चिन्ताओं से ग्रस्त है, हतोत्साह और निराश है।
3तुम उस निश्चित मृत्यु से मत डरो;
उन्हें याद करो, जो तुम से पहले आये
और जो तुम्हारे बाद आयेंगे।
4हर मनुष्य के विषय में प्रभु का यही निर्णय है।
सर्वोच्च प्रभु की इच्छा का विरोध क्यों करते हो?
तुम चाहे दस वर्ष जियो
या एक सौ या एक हज़ार वर्ष,
तुम अधोलोक में अपनी आयु के विषय में शिकायत नहीं कर सकोगे।

विधर्मियों का दण्ड

5 पापियों की सन्तति भी बुरी बन जाती है।
वह अधर्मियों की कुसंगति में रहती है।
6पापियों की सन्तति अपनी विरासत खो देगी,
और उनके वंशज सदा के लिए कलंकित होंगे।
7पुत्र-पुत्रियाँ अपने दुष्ट पिता की निन्दा करेंगे,
क्योंकि वे उसी के कारण कलंकित हैं।
8विधर्मियो! धिक्कार तुम लोगों को,
तुम सर्वोच्च प्रभु की व्यवस्था का परित्याग करते हो!
9[यदि तुम-जैसे लोगों की भर-मार हुई,
तो तुम्हारा संहार भी निश्चित है।]
तुम अभिशाप के लिए उत्पन्न हुए हो
और मरने के बाद तुम्हें अभिशाप प्राप्त होगा!
10जो मिट्टी से निकलता, वह सब मिट्टी में मिल जाता है
इसी प्रकार अभिशाप के बाद दुष्टों का नाश होता है।

नेकनामी

11 मनुष्य अपने शरीर के लिए शोक मनाते हैं।
लेकिन पापियों के नाम—जो कुनाम ही हैं—मिट जाएंगे।*
12अपने नाम की रक्षा करो,
क्योंकि वह सोने के हजारों कोषों की अपेक्षा अधिक समय तक बना रहेगा।
13सुखी जीवन थोड़े दिनों का है,
किन्तु सुनाम सदा बना रहता है।

लज्जा

14 शिष्यो! जो शिक्षा तुम को मिली है,
शान्तिपूर्वक उसके अनुसार आचरण करो।
छिपी हुई प्रज्ञा और गुप्त खजाना,
दोनों किस काम के हैं?
15अपनी प्रज्ञा छिपाने वाले मनुष्य की अपेक्षा
अपनी मूर्खता छिपाने वाला मनुष्य अच्छा है।

---

* इब्रानी पाठ : "लेकिन धर्मी का सुयश नहीं मिटेगा"।

41 : 1 सभ 11 : 7-8 41 : 11 भज 9 : 5 ; 109 : 13 41 :12 नीति 21 :1, सभ 7 : 142 : 14 नीति 5 : 3 ; 6 : 24 ; मत 5 : 14-16

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

16मेरे विचारों का सम्मान करो :
बहुत-सी बातों के लिए लज्जा नहीं करनी चाहिए।
और हर प्रकार की लज्जा उचित नहीं होती।+
17इन बातों को लज्जाजनक मानो :
माता-पिता के सामने व्यभिचार,
शासन और अधिकारी के सामने झूठ,
18न्यायाधीश और दण्डाधिकारी के सामने अपराध;
सभा और जनता के सामने विद्रोह,
साथी और मित्र के प्रति अन्याय,
19पड़ोस के लोगों के सामने चोरी,
परमेश्वर के सत्य और उसके विधान के प्रति शपथ-भंग,**
भोजन के समय मेज़ पर कोहनी टेकना,
लेन-देन में डाँट-फटकार करना,
20नमस्कार करने वाले को उत्तर नहीं देना,
वेश्या की ओर ताकना,
21रक्त-सम्बन्धी से मुँह फेरना,
किसी को दिया हुआ हिस्सा या उपहार छीन लेना,
परस्त्री की ओर आँख उठा कर देखना
22या उसकी नौकरानी के साथ घनिष्ठता स्थापित करना,
—तुम उसके पलंग के पास पैर मत रखो—
मित्रों को डाँटना,
दान देने के बाद फटकारना,

42 सुनी हुई बात को दूसरों से कहना
और भेद प्रकट करना।
इस प्रकार तुम सच्ची लज्जा का अनुभव करोगे
और सब में लोकप्रिय होगे।
निम्नलिखित बातों को लज्जाजनक मत मानो
और लोकलज्जा के कारण पाप मत करो :
2सर्वोच्च प्रभु की व्यवस्था और उसका विधान,
विधर्मी को न्यायोचित दण्ड,
3साथी और सहयात्री के साथ हिसाब,
दूसरों के साथ विरासत का विभाजन,
4तराजू और बाटों की सच्चाई,
बहुत या कम सम्पत्ति की कमाई,
5व्यापारी के साथ सौदा,
सन्तति का निरन्तर अनुशासन,
दुष्ट नौकर को कोड़ों की मार।
6जहाँ कुतूहली स्त्री हो, वहाँ मोहर का प्रयोग ठीक है।
जहाँ बहुत हाथ हों, वहाँ सामान पर ताला लगाओ।
7अमानत का माल गिनो और तौलो,
जो देते या लेते हो, उसका हिसाब रखो।
8नासमझ एवं मूर्ख और लम्पट बूढ़े को डाँटने में लज्जा का अनुभव मत करो।
इस से तुम सचमुच प्रशिक्षित समझे जाओगे,
और सभी लोग तुम्हारा समर्थन करेंगे।

पुत्री की चिन्ता

9 पिता के लिए पुत्री चिन्ता का कारण है,
उसकी चिन्ता उसे सोने नहीं देती।
जब छोटी है, तो वह डरता है कि कहीं अविवाहित न रह जाये,
और जब उसका विवाह हो गया है,
तो इसलिए कि कहीं उसका परित्याग न हो।
10जब कुँवारी है, तो शीलभंग
और पिता के घर में रहते गर्भवती होने की आशंका है।
जब विवाहिता है, तो अपने पति के प्रति विश्वासघात की
और उसके घर में बाँझपन की आशंका है।
11चंचल पुत्री पर सख़्त निगरानी रखो।
कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे शत्रु तुम्हारी निन्दा करें,
नगर में तुम्हारी बदनामी हो, लोग तुम को अभिशाप दें*
और तुम को भरी सभा में कलंक लगे।
12वह हर किसी पुरुष के सामने अपना सौन्दर्य प्रकट न करे।
और स्त्रियों के बीच नहीं बैठे;

+ यूनानी पाठः "न सब लोग अनुमानतः सब बातें पसंद करते हैं।" ** पाठ सुधार। * अथवा, "भीड़ का जमघट हो"।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

13क्योंकि कपड़ों से कीड़े निकलते हैं,
और एक स्त्री की दुश्चरित्रता दूसरी को
प्रभावित करती है।
14स्नेही स्त्री की अपेक्षा उसके लिए कठोर
पुरुष अच्छा है;
निर्लज्ज स्त्री उसके लिए अपमान का कारण
बन सकती है।

प्रकृति

15 अब मैं प्रभु के कार्यों का स्मरण करूँगा।
मैंने जो देखा है, उसका वर्णन करूँगा।
प्रभु ने अपने शब्द द्वारा अपने कार्य सम्पन्न
किये;
[और अपनी इच्छा के अनुसार निर्णय
किया।]
16सूर्य अपने प्रकाश से सब कुछ आलोकित
करता है।
समस्त सृष्टि प्रभु की महिमा से परिपूर्ण है।
17प्रभु के पवित्र स्वर्गदूतों को भी यह सामर्थ्य
नहीं मिली है
कि वे उन सब अद्भुत कार्यों का वर्णन करें,
जिन्हें सर्वशक्तिमान् प्रभु ने स्थिर कर दिया
है,
जिससे विश्वमण्डल उसकी महिमा पर
आधारित हो।
18वह समुद्र और मानव हृदय की थाह लेता,
और उनके सभी रहस्य जानता है;
क्योंकि सर्वोच्च प्रभु सर्वज्ञ है
और भविष्य भी उस से छिपा हुआ नहीं है+।
19वह भूत और भविष्य, दोनों को प्रकाश में
लाता
और गूढ़तम रहस्यों को प्रकट करता है।
20वह हमारे सभी विचार जानता है;
एक शब्द भी उस से छिपा नहीं रहता।
21उसकी प्रज्ञा के महान् कार्य व्यवस्थित हैं;
क्योंकि वह अनादि और अनन्त है।
उस में न तो कोई वृद्धि है
और न कोई ह्रास
और उसे किसी परामर्शदाता की आवश्यकता
नहीं।
22उसकी सृष्टि कितनी रमणीय है!
हम उसकी झलक मात्र देख पाते हैं।
23उसके समस्त कार्य अनुप्राणित और स्थायी
हैं;
वे किसी भी प्रयोग के लिए प्रस्तुत रहते
हैं।**
24सब चीज़ें दो-दो प्रकार की होती हैं :
एक दूसरी से ठीक विपरीत।
उसने कुछ भी ऐसा नहीं बनाया जो अपूर्ण
हो।++
25वे एक दूसरे की कमी पूरी करती हैं।
प्रभु की महिमा देखने पर कौन कभी तृप्त होगा?

सूर्य

43 स्वच्छ नक्षत्रमण्डल ऊर्ध्वलोक का
गौरव है;
हमारी आँखों के सामने आकाश अपनी
सम्पूर्ण महिमा में दृश्यमान है।
2सूर्य उदित होते ही मानो घोषित करता है:
"सर्वोच्च प्रभु की सृष्टि-रचना कितनी
अद्भुत है!"
3दोपहर के समय वह पृथ्वी को झुलसाता है;
उसका प्रखर ताप कौन सह सकता है?
4धातु गलाने वाली भट्ठी की आग तेज़ है;
पर्वतों को जलाने वाला सूर्य उस से तीन गुना
गर्म है।
वह भस्म करने वाला धूआँ उगलता है,
और उसकी प्रखर किरणें चकाचौंध उत्पन्न
करती हैं।
5वह प्रभु महान् है, जिसने उसकी सृष्टि की है;
और जिसके आदेश पर वह तेज़ी से परिक्रमा
करता है।

चन्द्रमा

6चन्द्रमा पक्ष के अनुसार दिखाई देता है;
वह युग-चिह्न के रूप में काल और ऋतु
निर्धारित करता है।

\+ शब्दश: "युग के लक्षण पर भी दृष्टि डालता है।" ** इब्रानी पाठ के अनुसार। ++ इब्रानी पाठ : "उसने कुछ भी व्यर्थ नहीं बनाया।"

42 : 18 दान 2 : 22 42 : 19 यश 46 : 10 42 : 20 भज 139 : 4 42 : 21 यश 40 : 13 43 : 1-5 भज 19 : 1-6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

7चन्द्रमा के आधार पर पर्व निश्चित किये जाते हैं;
उसका प्रकाश बढ़ता और घटता है।
8चन्द्रमा के अनुसार महीने का नाम रखा जाता है।
उसकी वृद्धि और ह्रास अद्भुत हैं।
9वह नभोमण्डल के नक्षत्रों की ध्वजा है,
और आकाश के शिखर पर शोभायमान है।

तारे

10 तारे आकाश की शोभा बढ़ाते हैं;
वे प्रभु की ऊँचाइयों के चमकते अलंकार हैं।
11वे परमपावन प्रभु की आज्ञा के अनुसार पंक्तिबद्ध हैं,
और अपने जागरण में कभी नहीं थकते।

इन्द्रधनुष

12 इन्द्रधनुष को देख कर उसके सृष्टिकर्ता को धन्य कहो।
उसकी भव्यता कितनी रमणीय है!
13वह आकाश में प्रकाशमान वृत्त खींचता है।
सर्वोच्च प्रभु के हाथों ने उसे ताना है।

प्रकृति के अन्य चमत्कार

14 प्रभु अपने आदेश द्वारा हिम गिराता,
और अपने निर्णय के अनुसार बिजली चमकाता है।
15-17वह अपने भण्डार खोलता
और पक्षियों की तरह बादल उड़ जाते हैं।
वह अपनी सामर्थ्य द्वारा बादलों को सघन करता और ओले नीचे गिरते हैं।
बिजली की कड़क पृथ्वी को कँपाती है।
प्रभु के दर्शन में पर्वत थर्रा उठते हैं।
उसके आदेश पर दक्षिणी हवा,
उत्तर की आँधी और बवण्डर आता है।
वह उतरने वाले पक्षियों की तरह हिम गिराता
और वह टिड्डी दल की तरह छा जाता है।
18वह अपने श्वेत सौन्दर्य से आँख में चकाचौंध उत्पन्न करता,
और उतरने पर हृदय को मुग्ध कर देता है।
19प्रभु नमक की तरह पृथ्वी पर पाला गिराता है,
जो जम कर काँटों की तरह नुकीला हो जाता है।
20ठण्डी उत्तरी हवा बहने लगती है,
और जल की सतह जमा कर बर्फ़ बना देती है।
वह हर जलाशय पर छा जाती,
और उसे मानो कवच से ढक देती है।
21लू पर्वतों को खा जाती, मरुभूमि को झुलसाती
और हरियाली को आग की तरह जलाती है।
22किन्तु कोहरा शीघ्र ही सब में नवजीवन का संचार करता है
और ओस ग्रीष्म के बाद सब को आनन्दित करती है।

23 प्रभु ने अपनी योजना के आनुसार महासागर को शान्त किया,
और उस में टापू लगा दिये।
24समुद्र पर यात्रा करने वाले उसकी जोखिमों का वर्णन करते,
और हम सुन कर आश्चर्यचकित हो जाते हैं।
25ये हैं प्रभु के महान् और अद्भुत कार्य,
हर प्रकार के जीव-जन्तु
और तिमिंगिल-जैसे विशेष जल-चर।
26प्रभु की सामर्थ्य से उसके दूत सकुशल विचरते हैं
और उसके आदेश के अनुसार सब सुसंघटित है।
27 हम कहाँ तक कहें! प्रभु के महान् कार्यों का अन्त नहीं।
हम अन्त में यह कहते हैं : "वही सब कुछ है!"
28हम उसकी महिमा का वर्णन करने में असमर्थ हैं;
क्योंकि वह अपने कार्यों से कहीं अधिक महान् है।
29प्रभु भय एवं श्रद्धा के योग्य और अत्यधिक

---

43 : 9 भज 8 : 3 ; प्रज्ञा 13 : 3 ; बारू 3 : 34-35 **43 : 13** अय्य 37 : 6 ; भज 147 : 16 **43 : 14** व्य 28 : 12
43 : 19 भज 147 : 16 **43 : 24** भज 107 : 23 **43 : 25**भज 104 : 25-26 **43 : 26** कुल 1 : 17 ; यश 44 : 26

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

महान् है,
उसकी सामर्थ्य आश्चर्यजनक है।
30शक्ति भर प्रभु की महत्ता गाओ,
क्योंकि वह तुम्हारी स्तुति के परे है।
पूरी शक्ति लगा कर उसकी अथक स्तुति करते जाओ।
तुम उसका पूरा-पूरा वर्णन नहीं कर पाओगे।
31किसने उसे देखा, जो उसका वर्णन कर सके?
कौन उसके तत्संत् महत्व के अनुसार उसकी महिमा कर सकता है?
32जो दिखता, उस से कहीं अधिक अप्रकट है;
क्योंकि हमने उसके कार्यों में से कुछ को ही देखा है।
33प्रभु ने सब कुछ बनाया है,
और भक्तों को प्रज्ञा का वरदान दिया है।

पूर्वजों का गुणगान

44 हम पीढ़ियों के क्रमानुसार
अपने प्रतिष्ठित पूर्वजों का गुणगान करें।
2प्रभु ने उन्हें प्रचुर यश प्रदान किया;
उसकी महिमा अनन्त काल से विद्यमान है।
3वे अपने राज्यों के महान् शासक थे,
अपनी तेजस्विता के लिए प्रसिद्ध थे:
अपनी बुद्धि के कारण परामर्शदाता,
अपनी उद्घोषणा के कारण नबी,
4अपने विवेकशील नेतृत्व के कारण प्रजा के प्रशासक,
अपनी बुद्धि के कारण लोक-शास्त्री
और अपनी ज्ञानपूर्ण बातों के कारण जन-शिक्षक।
5वे श्रुतिमधुर गीतों
और काव्यात्मक कलाओं के रचयिता थे।
6वे शक्तिसम्पन्न प्रभावशाली व्यक्ति थे,
जो अपने घरों में शान्तिपूर्ण जीवन बिताते थे।
7वे सब अपनी पीढ़ियों में महिमान्वित
और अपने जीवनकाल में प्रसिद्ध थे।
8उन में कुछ लोग अपना नाम छोड़ गये,
जिससे जनता अब तक उनका गुणगान करती है।
9कुछ लोगों की स्मृति शेष नहीं रही।
वे इस प्रकार लुप्त हो गये हैं, मानो कभी थे ही नहीं।
वे इस प्रकार चले गये हैं, मानो उनका कभी जन्म नहीं हुआ,
और उनकी सन्तति की भी यही दशा है।
10किन्तु कुछ विशिष्ट व्यक्ति ऐसे कृपापात्र थे कि उनकी सदाचारिता भुलायी नहीं जा सकी।
11उनकी सम्पत्ति उनके वंशजों के पास रहेगी,
और उनका दायभाग उनके कुटुम्बियों में।
12उनके वंशज विधानों की प्रतिष्ठा निभाते हैं
और उनके कारण उनकी सन्तति भी।
13उनका वंश सदा बना रहेगा,
और उनकी कीर्ति कभी नहीं मिटेगी।
14उनके शरीर शान्ति में दफ़नाये गये,
और उनके नाम पीढ़ी-दर-पीढ़ी बने रहेंगे।
15लोग उनकी प्रज्ञा की प्रशंसा करेंगे,
धर्मसभाओं में उनका गुणगान किया जायेगा।

हनोक और नूह

16 हनोक प्रभु को प्रिय था और वह उठा लिया गया।
वह पीढ़ियों के लिए पश्चात्ताप का आदर्श है।
17नूह को निर्दोष और सद्धर्मी पाया गया।
प्रकोप के दिन वह स्थानापन्न पुरुष* बना।
प्रलय के समय उसके माध्यम से
पृथ्वी पर मानवजाति का अवशेष कायम रहा।
18उसके लिए यह स्थायी विधान ठहराया गया
कि कोई भी प्राणी जलप्रलय से फिर नष्ट नहीं होगा।

अब्राहम

19 अब्राहम अनेक राष्ट्रों के महान् मूलपुरुष हैं।
उनके सुयश पर कोई कलंक नहीं लगा।

---

* अथवा : "रक्षा का मूल्य"।

44 : 9 प्रज्ञा 2 : 2 ; ओब 16 44 : 11 नीति 13 : 22 44 : 16 उत 5 : 24; इब्र 11 : 5 44 : 17 1 पत 3 : 20 ; 2 पत 2 : 5 44 : 18 उत 9 : 11

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

20उन्होंने सर्वोच्च प्रभु की व्यवस्था का पालन
किया
और प्रभु ने उनके लिए एक विधान निर्धारित
किया।
उन्होंने अपने शरीर में विधान का चिह्न
अंकित किया
और वह परीक्षा में विश्वासी सिद्ध हुए।
21इसलिए प्रभु ने शपथ खा कर प्रतिज्ञा की
कि उनके वंशजों+ द्वारा राष्ट्र आशिष प्राप्त
करेंगे,
कि वे पृथ्वी की धूल की तरह असंख्य होंगे;
उनके वंशजों को तारों की तरह ऊपर उठाया
जायेगा,
और उन्हें ऐसी विरासत प्राप्त होगी,
जो एक समुद्र से दूसरे समुद्र तक,
और फरात नदी से पृथ्वी के सीमान्तों तक
फैल जायेगी।

इसहाक और याकूब

22 प्रभु ने अब्राहम के कारण
उनके पुत्र इसहाक से वही प्रतिज्ञा की।
उसने मानवजाति का कल्याण और विधान
का संबंध
23याकूब को सौंप दिया*।
प्रभु ने उन्हें स्वीकार कर अपनी आशिष
और विरासत उन्हें प्रदान की,
जिससे वह उसे विभाजित करें
और बारह कुलों में बाँट दें।

मूसा

प्रभु ने याकूब के वंशजों में एक ऐसे महान्
भक्त को उत्पन्न किया,
जो सभी मनुष्यों के कृपापात्र बने,
45 जिन को पमेश्वर और मनुष्यों का प्रेम
प्राप्त हुआ :
वह मूसा थे, जिनकी स्मृति धन्य है।
2प्रभु ने उन्हें सन्तों-जैसी महिमा प्रदान की
और उन्हें महान् तथा शत्रुओं के लिएआतंक
बनाया।
3उसने उनके कहने पर तुरन्त अद्‌भुत चिह्न
दिखाये
और उन्हें राजाओं की दृष्टि में महिमान्वित
किया।
उसने उन्हें अपनी प्रजा के लिए आज्ञाएँ दीं
और उनके लिए अपनी महिमा प्रकट की।
4उसने उनकी निष्ठा और विनम्रता के कारण
उनका अभिषेक किया
और सब शरीरधारियों में से उन को चुना।
5उसने उन को अपनी वाणी सुनायी,
और उन्हें घने बादल में बुलाया।
उसने उन्हें आमने-सामने अपनी आज्ञाएँ,
जीवन और ज्ञान की व्यवस्था प्रदान की,
जिससे वह याकूब को प्रभु के विधान की
और इस्राएल को उसके निर्णयों की शिक्षा
दें।

हारून

6 प्रभु ने इसी तरह लेवी कुल में
मूसा के भाई हारून को पवित्र और प्रतिष्ठित
किया।
7उसने स्थायी विधान के रूप में उन्हें प्रजा का
पुरोहित बनाया,
उन्हें सुन्दर परिधान दे कर प्रसन्न किया,
और महिमामय वस्त्र पहनाये।
8उसने उन्हें अपूर्व आभूषण दिये,
और उन्हें अधिकारसूचक चिह्नों से अलंकृत
किया।
उसने उन्हें जाँघिया, कुरता और एपोद दिया।
9उसने उनके चारों ओर अनार
और सोने की अनेक घण्टियाँ लगवायीं,
जो उनके चलते समय टनटनायें
और उनके मन्दिर में प्रवेश करने पर सुनाई
पड़ें,
जिससे उसके निज लोग सावधान हो जाएं।
10उसने उनके लिए कलाकार द्वारा सोने के तारों
का,

+ अथवा, "वंशज"। *शब्दश: "सिर पर रखा"।

44 : 20 उत 17 : 10 ; 1 मक 2 : 52 ; इब्र 11 : 17-19 ; रोम 4 44 : 21 उत 22 : 16-18; गल 3 : 8 44 : 23 उत 35 : 10-12 45 : 1 नि 11 : 3 45 : 3 नि 8 : 13 45 : 4 गण 12 : 3 45 : 5 नि 24 : 18 45 : 8 नि 24 : 42 45 : 9 नि 28 : 33

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नीले और बैंगनी रंग का पवित्र वस्त्र
सिलवाया।
इसके अतिरिक्त उरावरण भी था,
जिसमें सत्य निर्णय हेतु चिट्ठियाँ थीं।**
11उरपट शिल्पकार द्वारा बटी हुई छालटी से
बनाया गया था।
नक्काशी किये हुए सोने के खाँचों में
इस्राएल के बारह कुलों की संख्या के
अनुसार
अक्षरों से अंकित मणियाँ सुशोभित थीं।
12हारून की पगड़ी पर एक स्वर्ण मुकुट था,
जिस पर अभिषेक+ की मुहर अंकित थी,
वह कलाकृति सम्मान का प्रतीक थी,
नयनाभिराम और अलंकृत।
13उनके पूर्व इतनी सुन्दर वस्तुएँ कभी नहीं हुईं
और बाद में कोई विदेशी उन्हें कभी नहीं
पहनेगा।
उनके पुत्र ही उन्हें पहनेंगे
और उनके बाद अनन्त काल तक उनके
वंशज।
14उनकी बलियाँ अनन्त काल तक
प्रतिदिन दो बार भस्म कर दी जायेंगी।
15मूसा ने उन्हें पुरोहित के रूप में नियुक्त कर
उनका अभिषेक पवित्र तेल से किया।
यह उनके लिए और उनके वंशजों के लिए
एक स्थायी विधान था:
जब तक आकाश बना रहेगा,
वे प्रभु की सेवा करेंगे और पुरोहित का कार्य
सम्पन्न करेंगे,
और प्रभु के नाम पर प्रजा को आशिष देंगे।
16उसने हारून को सभी लोगों में से चुना,
जिससे वह प्रभु को भेंट,
लोबान एवं सुगन्धयुक्त स्मृति-बलि चढ़ायें
और प्रजा के लिए प्रायश्चित-विधि सम्पन्न
करें।
17उसने उन्हें अपनी आज्ञाओं के अनुसार
विधि-विधानों की व्याख्या का अधिकार
दिया,
जिससे वह याकूब को उसके आदेशों की
शिक्षा दें
और इस्राएल को उसकी व्यवस्था के विषय
में ज्योति प्रदान करें।
18एक अन्य वंश के लोगों ने हारून के विरुद्ध
विद्रोह किया,
और मरुभूमि में उन से ईर्ष्या की :
वे दातान तथा अबीराम के साथी
और कोरह के दल के लोग थे,
जो क्रुद्ध हो कर उनके विरुद्ध खड़े हो गये।
19प्रभु ने यह देखा तो उसे अप्रिय लगा,
उसका क्रोध भड़क उठा और उसने उनका
विनाश कर दिया।
उसने उनके विरुद्ध चमत्कार दिखाये,
और उन्हें अपनी धधकती आग में भस्म
किया।
20उसने हारून का यश और बढ़ाया
और उन्हें एक दायभाग प्रदान किया।
उसने उन्हें खेतों के प्रथम फल दिलाये
और उन्हें सब से पहले भरपूर भोजन प्रदान
किया;
21क्योंकि वे प्रभु को अर्पित बलि खायेंगे,
जिन्हें उसने हारून और उनके वंशजों को
दिया।
22किन्तु प्रजा की भूमि में उन्हें विरासत नहीं
मिली,
प्रजा की तरह उन्हें कोई भूमि-भाग नहीं
मिला;
क्योंकि प्रभु स्वयं उनका भाग और उनकी
विरासत है।

पीनहास

23 एलआज़र के पुत्र पीनहास तीसरा* यशस्वी
व्यक्ति है।
उसने प्रभु-भक्ति में उत्साह का प्रदर्शन किया।
जब लोग प्रभु से विमुख हुए तो वह दृढ़ बना
रहा।

** अर्थात् ''ऊरीम और तुम्मीन'' (नि 28 : 30) + अथवा, '' 'पवित्र' शब्द'' * मूसा तथा हारून के पश्चात्।

45 : 11 प्रज्ञा 18 : 24 45 : 14 गण 28 : 3-4 45 : 16 गण 17 : 5 45 : 17 लेव 10 : 11; व्य 17 : 9; 33 : 10
45 : 23 गण 25 : 7-11; 1 मक 2 : 26

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उसने अपनी उदारता और साहस से
इस्राएल पर से प्रभु का क्रोध दूर किया।
24इसलिए प्रभु ने उसके लिए शान्ति-विधान निर्धारित किया
और उसे पवित्रस्थान और अपनी प्रजा का अध्यक्ष नियुक्त किया,
जिससे उसे और उसके वंशजों को
सदा के लिए महापुरोहित का पद प्राप्त हो।
25उसी प्रकार यहूदा-कुल में यिशय के पुत्र दाऊद के लिए भी
विधान निर्धारित होने वाला था।
उसके अनुसार राजा का उत्तराधिकार
उनके पुत्रों में एक को मिलता है,
जबकि हारून का उत्तराधिकार
उनके सभी वंशजों को मिलता है।
26ओ हारून के वंशजो !
प्रजा का उचित रीति से न्याय करने के लिए
प्रभु आपके हृदय को प्रज्ञा प्रदान करे,
जिससे आपकी समृद्धि लुप्त न हो
और आपका यश पीढ़ियों तक बना रहे!

यहोशुअ और कालेब

46 नून का पुत्र यहोशुअ शूरवीर योद्धा था
और नबी के रूप में मूसा का उत्तराधिकारी था।
वह अपने नाम के अनुरूप**
प्रभु के चुने हुए लोगों का महान् उद्धारकर्ता बना।
उसने इस्राएल को उसकी विरासत दिलाने के लिए
आक्रामक शत्रुओं को दण्ड दिया।
2जब वह अपने हाथ उठाता और नगरों के विरुद्ध तलवार खींचता था तब वह कितना महान योद्धा दिखाई देता था।
3कौन उसके विरुद्ध टिक सका ?+
क्योंकि वह प्रभु के लिए युद्ध लड़ता था।
4क्या सूर्य उसके हाथ से नहीं रोका गया
और एक दिन दो दिनों के बराबर नहीं बना ?
5जब शत्रु उस पर चारों ओर से टूट पड़े,
तो उसने सर्वशक्तिमान सर्वोच्च प्रभु की दुहाई दी।
महाप्रभु ने उसकी प्रार्थना सुनी
और ओले के बड़े-बड़े पत्थरों की वर्षा की।
6वह शत्रु-सेना पर टूट पड़ा,
और उसने पर्वतीय ढाल पर उतरने वालों का संहार किया,
जिससे राष्ट्र जान जायें कि उसके शस्त्र कितने शक्तिशाली हैं;
क्योंकि राष्ट्र तो प्रभु के विरुद्ध युद्ध कर रहे थे,
जबकि यहोशुअ सर्वशक्तिमान् का अनुगमन कर रहा था।
7मूसा के दिनों में उसने अपनी निष्ठा का उदाहरण दिया :
उसने यपून्नेह के पुत्र कालेब के साथ धर्मसभा का विरोध किया,
और प्रजा को पाप करने से रोका
और उनका दुष्टतापूर्ण भुनभुनाना समाप्त किया।
8इसलिए छः लाख पैदल सैनिकों में केवल ये दो बचे,
और उन्होंने नई पीढ़ी को उस विरासत की भूमि में पहुंचाया,
जहाँ दूध और मधु की नदियाँ बहती हैं।
9प्रभु ने कालेब को बल प्रदान किया,
जो उसकी वृद्धावस्था तक बना रहा।
वह पहाड़ी प्रदेश में बस गया,
जहाँ उसके वंशजों को विरासत मिली,
10जिससे सभी इस्राएली यह जान जायें
कि प्रभु का अनुगमन करना कितना अच्छा है।

प्रशासक (न्यायी)

11 शासकों के नाम भी उल्लेखनीय हैं:

** यहोशुअ के नाम का अर्थ है : प्रभु उद्धार प्रदान करता है। + यूनानी पाठ : ''उससे पहले कौन इतने दृढ़तापूर्वक खड़ा हुआ ?''

45 : 25 2 शम 23 : 5 **46 : 1** गण 27 : 18 ; व्य 34 : 9 **46 : 6** यहो 10 : 11 **46 : 8** गण 14 : 38 **46 : 11** शास 2 : 16 - 19

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उन में एक का भी मन विचलित नहीं हुआ।
वे प्रभु से विमुख नहीं हुए।
धन्य है उनकी स्मृति!
12जहाँ भी उनकी अस्थियाँ पड़ी हों,
उनसे अंकुर फूट निकलें।
इन यशस्वी पुरुषों के पुत्रों द्वारा उनका नाम फिर चमके!

शमूएल

13 शमूएल प्रभु का कृपापात्र और नबी था।
उसने राजत्व की स्थापना की
और अपनी जाति के अगुओं का अभिषेक किया।
14वह प्रभु की व्यवस्था के अनुसार समाज में न्याय करता था,
और प्रभु की कृपादृष्टि याकूब पर बनी रही।
15वह अपनी धर्मनिष्ठा द्वारा सच्चा नबी
और अपने शब्दों द्वारा विश्वसनीय द्रष्टा प्रमाणित हुआ।
16जब उसके शत्रुओं ने चारों ओर से आक्रमण किया,
तो उसने सर्वशक्तिमान् प्रभु से प्रार्थना की
और उसे दूध पीने वाला मेमना अर्पित किया।
17प्रभु ने आकाश में मेघगर्जन उत्पन्न किया
और उसकी वाणी का महानाद सुनाई पड़ा।
18उसने सोर-नगर++ के सेनापतियों का
और सभी पलिश्ती नेताओं का संहार किया।
19शमूएल ने अपनी चिरनिद्रा के पहले ही,
प्रभु और उसके अभिषिक्त को साक्षी बना कर कहा :
"मैंने कभी किसी का कुछ नहीं लिया,
यहाँ तक कि किसी की चप्पल तक नहीं।"
उस समय किसी ने उस पर अभियोग नहीं लगाया था।
20मरने के बाद भी उसने नबूवत की
और राजा को उसकी मृत्यु की सूचना दी।
उसने प्रजा की दुष्टता दूर करने के लिए
पृथ्वी की गोद में से अपनी नबी-वाणी सुनायी।

नबी नातान

47 शमूएल के बाद नातान प्रकट हुआ,
जो दाऊद के दिनों में नबी था।

राजा दाऊद

2 जिस प्रकार सहभागिता-बलि में से चरबी अलग की जाती है,
उसी प्रकार दाऊद को इस्राएलियों में से चुना गया था।
3वह सिंहों के साथ खेलता था, मानो वे बकरी के बच्चे हों
और भालुओं के साथ खेलता था, मानो वे छोटे मेमने हों।
4उसने अपनी जवानी में भीमकाय योद्धा को मारा
और अपने राष्ट्र का कलंक दूर किया।
उसने हाथ से गोफन का पत्थर फेंका।
और गोलियत का घमण्ड चूर-चूर कर दिया;
5क्योंकि उसने सर्वोच्च प्रभु से प्रार्थना की,
और प्रभु ने उसके दाहिने हाथ को शक्ति प्रदान की,
जिससे वह बलवान् योद्धा को पछाड़ कर
अपनी प्रजा को शक्तिशाली बना सके।
6लोगों ने दाऊद को 'दस हज़ार का विजेता' घोषित किया,
प्रभु की आशिष के कारण उसकी स्तुति की,
क्योंकि उसे महिमा का मुकुट पहनाया गया।
7उसने चारों ओर के शत्रुओं को पारजित किया,
और अपने पलिश्ती विरोधियों का सर्वनाश किया,
उसने उनकी शक्ति को चूर-चूर कर डाला,
और यही स्थिति उनकी आज तक बनी हुई है।

++ मूल में संभवत: "शत्रुओं"

46 : 13 प्रे 13 :20 **46 : 19** 1 शम 12 : 3 **47 : 1** 2 शम 7 : 1-17 ; 12 : 1-15 **47 : 2** लेव 3 : 3 **47 : 4** 1 शम 17 : 49 - 51 **47 : 6** 1 शम 18 : 7

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

8वह अपने सब कार्यों में धन्यवाद देते हुए
परमपावन सर्वोच्च परमेश्वर की स्तुति
करता रहा।
वह अपने सृष्टिकर्ता के प्रति अपना प्रेम प्रकट
करने के लिए
सारे हृदय से गीत गाया करता था।
9उसने भजन-गायकों को नियुक्त किया,
जिससे वे वेदी के सामने खड़े हो कर मधुर
गान सुनायें।
[अत: वे प्रतिदिन अपने भजनों में
प्रभु की स्तुति करते हैं।]
10दाऊद ने पर्वों के भव्य समारोह का प्रबन्ध
किया
और सदा के लिए पर्वचक्र निर्धारित
किया,
जिससे पवित्रस्थान प्रात:काल से ही
प्रभु के पवित्र नाम की स्तुति से गूँज उठे।
11प्रभु ने उसके पाप क्षमा किये
और सदा के लिए उसे शक्तिशाली बना
दिया।
प्रभु ने दाऊद को राज्य-संबंधी विधान
और इस्राएल का महिमामय सिंहासन प्रदान
किया।

राजा सुलेमान

12 दाऊद के बाद उसका एक प्रज्ञासम्पन्न पुत्र
प्रकट हुआ,
जो अपने पिता के कारण सुरक्षा में* जीवन
बिता सका।
13सुलेमान ने शान्ति के समय राज्य किया।
परमेश्वर ने उसे सब ओर से शान्ति प्रदान
की,
जिससे वह उसके नाम पर भवन बनवाये
और सदा के लिए पवित्रस्थान की स्थापना
करे।
14हे राजा सुलेमान! आप अपनी युवावस्था में
कितने प्रज्ञा-सम्पन्न थे,
और नदी की तरह विवेक से भरपूर!
15आपकी विद्वता ने पृथ्वी को ढक दिया
और उसे रहस्यात्मक नीति-वचनों+ से भर
दिया।
16आपका नाम दूर द्वीपों तक फैल गया,
और आप अपनी शान्ति के कारण लोकप्रिय
थे।
17सारी पृथ्वी आपके गीतों, सूक्तियों,
दृष्टान्तों और व्याख्याओं पर मुग्ध थी।
18आपने प्रभु-परमेश्वर के नाम पर,
जो इस्राएल का परमेश्वर कहलाता है,
राँगे की तरह सोने का
और सीसे की तरह चाँदी का ढेर लगाया।
19किन्तु आपने अपने को स्त्रियों पर अर्पित
किया
और उन्हें अपने शरीर पर अधिकार दिया।
20आपने अपने यश पर कलंक लगाया,
अपने वंशजों को दूषित किया,
और सन्तति पर क्रोध उत्पन्न किया
और उन्होंने आपकी मूर्खता पर शोक
मनाया।
21आपका राज्य दो भागों में विभाजित हो
गया,
जिससे एफ्रइम में एक विद्रोही राज्य उत्पन्न
हुआ।
22फिर भी प्रभु ने अपनी दया नहीं भुलायी
और अपने शब्दों में एक को भी व्यर्थ नहीं
होने दिया।
उसने अपने चुने हुए व्यक्ति की संतति को
मिटने नहीं दिया,
और अपने प्रेमपात्र के वंश का सर्वनाश नहीं
किया।
उसने याकूब का एक अवशेष
और दाऊद का एक वंश-मूल सुरक्षित रखा।

रहबआम और यारोबआम

23 सुलेमान अपने पूर्वजों से जा मिला
और अपने बाद एक ऐसे मूर्ख वंशज को
छोड़ गया,

* यूनानी पाठ: ''विस्तृत क्षेत्र में''। + अथवा, ''दृष्टांतों''।

47 : 11 2 शम 12 : 13 **47 : 14** 1 रा 4 : 29 - 30 **47 : 18** 1 रा 10 : 22-27 **47 : 22** 2 शम 7 : 15-16
47 : 23 1 रा 12

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जिस में कोई बुद्धि नहीं थी:
रहबआम, जिसने अपने निर्णय के कारण
जनता में विद्रोह उत्पन्न किया।
उसके बाद नबाट के पुत्र यारोबआम ने
इस्राएल से पाप करवाया,
और एफ्रइम को पाप का मार्ग दिखाया।
24उनके पापों की संख्या इस प्रकार बढ़ गयी
कि उन को अपने देश से निर्वासित किया
गया।
25जब तक उन को दण्ड नहीं दिया गया,
तब तक वे हर प्रकार के अपराध करते रहे।

नबी एलियाह

48 तब नबी एलियाह अग्नि की तरह
प्रकट हुए।
उनकी वाणी धधकती मशाल के सदृश थी।
2उन्होंने देश में अकाल भेजा
और अपने धर्मोत्साह में लोगों की संख्या
घटायी।
3उन्होंने प्रभु के वचन से आकाश के द्वार बन्द
किये।
और तीन बार आकाश से अग्नि गिरायी।
4एलियाह! आप अपने आश्चर्यकर्मों के कारण
कितने महान् हैं!
आपके सदृश होने का दावा कौन कर सकता
है!
5आपने सर्वोच्च प्रभु की आज्ञा से एक मनुष्य
को
मृत्यु और अधोलोक से वापस बुलाया।
6आपने राजाओं का सर्वनाश किया,
प्रतिष्ठित लोगों को गद्दी से गिरा दिया।
7आपने सीनय पर्वत पर डांट-डपट
और होरेब पर्वत पर पाप-दण्ड का निर्णय
सुना।
8आपने प्रतिशोध करने वाले राजाओं का
और अपने उत्तराधिकारियों के रूप में
नबियों का अभिषेक किया।
9आप अग्नि की आँधी में,
अग्निमय अश्वों के रथ में आरोहित कर
लिये गये।
10आपके विषय में लिखा है कि आप निर्धारित
समय पर
चेतावनी देने आयेंगे,
जिससे ईश्वरीय प्रकोप भड़कने से पहले ही
आप उसे शान्त करें,
पिता और पुत्र का मेल करायें,
और इस्राएल के वंशों का पुनरुद्धार करें।
11धन्य हैं वे, जिन्होंने आपके दर्शन किये,
और वे भी, जिनका प्रेम में प्राणांत हुआ।**
हम भी अवश्य ही जियेंगे!

नबी एलीशा

12 जब एलियाह बवण्डर में ओझल हो गये,
तो एलीशा को उनकी आध्यात्मिक शक्ति
प्राप्त हुई।
[उसने दुगुनी मात्रा में अद्भुत चिह्न दिखाये
और उसके प्रत्येक उद्‌गार के साथ
आश्चर्यकर्म हुए।]
वह अपने जीवनकाल में किसी भी शासक
से नहीं डरता था।
कोई भी मनुष्य उसे अपने वश में नहीं कर
सका।
13कोई भी कार्य उसकी शक्ति के परे नहीं
था,
और मृत्यु के बाद भी उसके शरीर में नबी
की सामर्थ्य विद्यमान थी।
14उसने अपने जीवनकाल में चमत्कार
और मृत्यु के बाद भी अपूर्व कार्य दिखाये।
15यह सब होते हुए भी लोगों ने पश्चात्ताप नहीं
किया,
और पाप करना नहीं छोड़ा।
इसलिए वे अपने देश से निर्वासित किये गये
और सारी पृथ्वी पर बिखेरे गये।
बहुत कम लोग बचे+
और दाऊद के घराने का एक शासक शेष
रहा।

** पाठांतर, "जो आपके प्रेम से सम्मानित हुए।" + इब्रानी पाठ स्पष्ट करता है : "यहूदा राज्य में"।

47 : 24 2 रा 17 : 6 ; 18 48 : 3 1 रा 17 : 1 ; 18 : 38 48 : 6 2 रा 1 : 16 48 : 9 2 रा 2 : 11 48 : 10 मल 4 : 6 ; लू 1 : 17 48 : 13 2 रा 13 : 21

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

16उन में कुछ लोगों ने वही किया, जो प्रभु को
प्रिय है,
किन्तु अन्य लोग पाप करते रहे।

राजा हिजकियाह और नबी यशायाह

17 राजा हिजकियाह ने अपने नगर को
क़िलाबन्द किया
और वह उसके भीतर पानी लाया।
उसने लोहे के औज़ारों से चट्टान खुदवा कर
जलाशय बनवाये।
18उसके राज्यकाल में असीरिया देश के राजा
सनहेरीब ने आक्रमण किया।
उसने वापस जाने के पहले
अपने प्रधान रसद-प्रबन्धक को भेजा,
जिसने सियोन पर हाथ उठाया
और अपने घमण्ड में ईश-निन्दा की।
19तब नगर-वासियों का हृदय और उनके हाथ
काँपने लगे
और उन्हें प्रसव-पीड़िता की-सी वेदना होने
लगी;
20उन्होंने हाथ ऊपर उठा कर दयालु प्रभु से
प्रार्थना की
और स्वर्ग से परमपावन प्रभु ने शीघ्र ही
उनकी प्रार्थना सुनी
और नबी यशायाह के द्वारा उनको मुक्त
किया।
21उसने असीरियों का शिविर उजाड़ा
और अपने दूत द्वारा उनका संहार किया।
22यह इसलिए हुआ कि हिजकियाह ने वही
किया, जो प्रभु को प्रिय है,
और वह अपने पिता दाऊद के उस मार्ग के
प्रति ईमानदार रहा,
जिसका निर्देश नबी यशायाह करते थे
जो एक महान् और विश्वसनीय द्रष्टा प्रमाणित
हुए।
23यशायाह के दिनों में सूर्य के पीछे हटने पर
राजा का जीवन बढ़ा दिया गया।
24नबी ने दिव्य शक्ति से प्रेरित हो कर
अन्तिम दिनों के दृश्यों का दर्शन किया,
उन्होंने सियोन में शोक मनाने वालों को
सान्त्वना दी,
25उन्होंने युगान्त तक होने वाली घटनाएँ
घोषित कीं,
और घटित होने के पूर्व गुप्त बातों को प्रकट
किया।

राजा योशियाह और नबी यिर्मयाह

49 राजा योशियाह की स्मृति एक सुगन्धित
मिश्रण है, जिसे अत्तार की कला ने
तैयार किया है।
उसकी स्मृति प्रत्येक के मुँह में मधु की तरह
मधुर है,
मदिरा की दावत में संगीत की तरह।
2उसने अपनी प्रजा को सुधारने की चेष्टा की++
और अधर्म की घृणित वस्तुएँ हटा दीं।
3उसने अपना हृदय प्रभु की ओर अभिमुख
किया
और अधर्मियों के युग में उसने भक्ति को
सुदृढ़ बना दिया।

4 दाऊद, हिज़कियाह और योशियाह को छोड़
कर
सब-के-सब पाप-पर-पाप करते रहे;
क्योंकि यहूदा प्रदेश के सभी राजाओं ने
सर्वोच्च प्रभु की व्यवस्था का परित्याग किया
और यों उनका अन्त हुआ।
5उनका राज्य दूसरों के हाथ चला गया,
और उनकी महिमा विदेशियों को दी गयी।
6विदेशियों ने मनोनीत नगर, पवित्र मन्दिर का
नगर, जलाया
और यिर्मयाह के कथनानुसार* उसकी सड़कें
उजाड़ीं;
7क्योंकि नगर-वासियों ने यिर्मयाह पर अत्याचार
किया था,

++ इब्रानी पाठ के अनुसार : "उसे हमारे धर्मत्याग का दुःख था"। * शब्दशः "के हाथ"।

48 : 17 2 इत 32 : 5 **48 : 18** 2 रा 18 : 13-19 : 36 **48 : 22** 2 रा 18 : 3 **48 : 23** 2 रा 20 : 10-11 ; यश 38 : 8 **49 : 1** 2 रा 22 : 1-2 ; 2 इत 34: 1-2 **49 : 3** 2 रा 23 : 3-25 **49 : 6** यिर 34 : 22 ; शोक 1 : 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यद्यपि माता के गर्भ में ही उनका अभिषेक
नबी के रूप में हुआ था,
जिससे उन्हें उखाड़ने, गिराने एवं नष्ट करने
का
और इसके बाद निर्माण करने और रोपने का
अधिकार मिला था।

नबी यहेजकेल और धर्मी अय्यूब

8 नबी यहेजकेल ने एक दिव्य दर्शन देखा,
जिसमें प्रभु उन्हें करूबों के रथ पर दिखाई
दिया।
9उन्होंने अय्यूब का भी स्मरण दिलाया,
जो अन्त तक सन्मार्ग से नहीं भटके।**

बारह गौण नबी

10 जहाँ भी बारह नबियों की अस्थियाँ पड़ी
हों,
उनसे अंकुर फूट निकलें;
क्योंकि उन्होंने याकूब-वंशियों को साहस
बँधाया
और विश्वास के साथ उन्हें आशा दिलाकर
उनका उद्धार किया।

शासक जरूब्बाबेल और पुरोहित येशूअ

11 हम जरूब्बाबेल की प्रशंसा कैसे करें?
वह दाहिने हाथ की मुद्रिका-जैसे था।+
12योसादाक का पुत्र येशूअ उसके सदृश था।
दोनों ने अपने जीवकाल में प्रभु-भवन का
निर्माण किया,
और प्रभु के नाम पर वह पवित्र मन्दिर
बनवाया,
जो उसकी अनन्त महिमा को अर्पित है।

नहेम्याह

13 नहेम्याह की स्मृति भी अमिट है।
उसने हमारी गिरायी हुई दीवारों का पुनर्निर्माण
किया,
उन में प्रवेश-द्वार एवं अर्गलाएं लगवाये
और हमारे ध्वस्त घर फिर से बनवाये।

सारांश

14 हनोक के सदृष पृथ्वी पर किसी की सृष्टि
नहीं हुई;
क्योंकि वह पृथ्वी पर से उठा लिया गया था।
15यूसुफ़ के सदृश भी कोई मनुष्य नहीं जन्मा।
वह अपने भाइयों का प्रधान और अपने लोगों
का सहायक था।
उसकी हड्डियों का भी सम्मान किया गया!
16शेम और शेत भी मनुष्यों में यशस्वी थे,
किन्तु आदम सृष्टि के सभी प्राणियों में
सर्वश्रेष्ठ हैं।

महापुरोहित शिमोन

50 ओनियाह के पुत्र महापुरोहित शिमोन
ने अपने जीवन काल में निवास का
पुनर्निर्माण किया,
और अपने दिनों में मन्दिर को सुदृढ़ बनाया।
2उनकी देखरेख में उपरले* महल की नींव
डाली गयी
और मन्दिर की चहारदीवारी की मीनारों का
निर्माण किया गया।
3उनके दिनों में एक जलकुण्ड खोदा गया,
एक तालाब, जो समुद्र-जैसा विस्तृत था।
4उन्होंने अपने लोगों को संहार से बचाने का
उपाय ढूँढ़ा
और शत्रुओं के विरुद्ध नगर को किलाबन्द
किया।
5वह कितने देदीप्यमान थे,
जब वह मन्दिर की परिक्रमा करते थे
अथवा मन्दिर के परदे के पीछे से निकलते थे!
6वह बादलों के बीच प्रभात-तारे के सदृश थे,
पूर्णिमा के दिनों में चन्द्रमा के सदृश,
7सर्वोच्च के मन्दिर पर चमकते हुए सूर्य के
सदृश,
महिमामय बादलों के बीच इन्द्रधनुष के
सदृश,

** इब्रानी पाठ के अनुसार (यहेज 14 : 14)। यूनानी पाठ इस प्रकार है (यहेज 38 : 22) : "उन्होंने वर्षा-संबंधी कथन में शत्रुओं के दण्ड का स्मरण किया, और सन्मार्ग-गामियों के अच्छे वरदानों का"। + अर्थात् अत्यधिक मूल्यवान्।
* पाठांतर, "दुहरी दीवार।"

49 : 7 यिर 1 : 5.10 ; 37 : 21 **49 : 8** यहेज 1 **49 : 11** हग 2 : 23 **49 : 12** एज्र 3 : 2 - 5:2 **49 : 13** नहे 2 : 11-4 : 23 ; 6 : 1-14 **49 : 14** उत 5 : 24 ; इब्र 11 : 5 **49 : 15** उत 49 : 29 - 30 ; 50 : 5 -14 **50 : 9** लेव 16 : 12-13 **50 : 11** प्रज्ञ 18 : 24 **50 : 16** गण 10 : 10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

8वसन्त के समय गुलाब के फूल के सदृश,
जलस्रोत के निकट सोसन के सदृश,
गीष्म-ऋतु में लेबानोन की हरियाली के सदृश,
9धूपदान में जलते लोबान के सदृश,
मणियों से जटित ठोस सोने के पात्र के सदृश,
10फलों से लदे जैतून-वृक्षों के सदृश,
गगनचुम्बी सरू-वृक्ष के सदृश।
11जब वह भव्य वस्त्र पहन कर
और अमूल्य आभूषण धारण कर
पवित्र वेदी की ओर बढ़ते थे,
तो वह मन्दिर के प्रांगण को महिमान्वित करते थे।
12जब वह वेदी के अग्निकुण्ड के निकट खड़े हो कर
पुरोहितों के चढ़ावे स्वीकार करते थे,
तो उनके भाई-बन्धुओं का वृंद फूलों की माला-जैसा बन जाता था।
वे लेबानोन के देवदारों की तरह,
खजूर के वृक्षों की तरह
उन्हें चारों ओर से घेरे रहते थे।
13सुन्दर वस्त्रों से सुशोभित हारून के सभी पुत्र,
प्रभु का चढ़ावा अपने हाथ में लिये
इस्राएल की बड़ी धर्मसभा के सामने एकत्र थे।
14महापुरोहित शिमोन वेदियों पर आराधना-विधि सम्पन्न करने हेतु,
सर्वशक्तिमान, सर्वोच्च परमेश्वर की भेंटें सजाते थे;
15फिर, बलि-पात्र की ओर हाथ बढ़ाते
और अंगूर-रस का अर्घ्य अर्पित करते थे।
वह उसे सर्वोच्च राजाधिराज को सुगन्ध चढ़ाने के रूप में
वेदी के आधार पर उंडेलते थे।
16तब हारून के पुत्र
सर्वोच्च प्रभु को स्मरण कराने के लिए
ऊँचे स्वर में पुकारते और धातु की तुरहियाँ फूंकते थे।
17इस पर सब लोग एक साथ मुँह के बल गिर कर
अपने प्रभु, सर्वशक्तिमान्, सर्वोच्च परमेश्वर की आराधना करते,
18और गायक अपने भजनों से उसकी स्तुति करते थे।
उनका मधुर गान दूर-दूर तक गूँजता था।
19जब तक प्रभु का समारोह समाप्त नहीं होता,
तब तक लोग दयासागर के सामने नतमस्तक होकर
सर्वोच्च प्रभु से प्रार्थना करते।
इस प्रकार समस्त आराधना-विधि सम्पन्न होती थी।
20महापुरोहित शिमोन नीचे उतर कर
और इस्राएली समाज की समस्त धर्मसभा के ऊपर हाथ फैला कर
अपने होंठों से प्रभु की ओर से आशिष देते थे,
और उसके नाम का उच्चारण कर अपने को धन्य समझते थे।
21लोग सर्वोच्च प्रभु की आशिष प्राप्त करने के लिए
दूसरी बार मुँह के बल गिरते थे।

प्रबोधन

22 आओ! सर्वेश्वर को धन्य कहो।
वह सर्वत्र महान् कार्य करता है।
वह माता के गर्भ से दिन-पर-दिन हमारा विकास करता है,
और अपनी दया के अनुसार हमारे साथ व्यवहार करता है।
23प्रभु हमारे हृदय को आनन्द प्रदान करे,
और हमारे समय में भी पहले की तरह
इस्राएल में सदा के लिए शान्ति बनाये रखे।
24वह हमें अपनी दया का विश्वास दिलाता रहे
और इन दिनों में हमारा उद्धार करे।

यहूदा प्रदेश के अत्याचारी पड़ोसी

25 मेरी आत्मा को दो राष्ट्रों से घृणा है और
तीसरा, राष्ट्र कहलाने योग्य ही नहीं।
26सेईर पर्वत के निवासी, पलिश्ती नगर-राज्य के लोग

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और शकेम नगर में रहने वाली मूर्ख जनता!

लेखक का अनुरोध

27 यरूशलेम-निवासी, एलआजर के पौत्र,
सीराह के पुत्र येशूअ ने,
अपने हृदय का भण्डार खोल कर
और प्रज्ञा की धारा को प्रवाहित कर,
इस ग्रन्थ में विवेकपूर्ण एवं ज्ञान-भरी शिक्षा
को लिपिबद्ध किया।
28धन्य है वह, जो इसका मनन करेगा!
जो इसे अपने हृदय में धारण करेगा, उसे प्रज्ञा
प्राप्त होगी।
29जो इसके अनुसार आचरण करेगा,
वह सब कुछ करने में समर्थ होगा;
क्योंकि प्रभु पर श्रद्धा उसका पथप्रदर्शन
करेगी।
[प्रभु ही अपने भक्तों को प्रज्ञा दिलाता है।
प्रभु सदा-सर्वदा स्तुत्य है। आमेन! आमेन!]

येशूअ बेन-सीराह की प्रार्थना*

51 प्रभु! मेरे राजा! मैं तुझे धन्य कहूँगा।
मेरे मुक्तिदाता परमेश्वर! मैं तेरी स्तुति
करूँगा।
मैं तेरे नाम का स्तुतिगान कर रहा हूँ,
2क्योंकि तू मेरी रक्षा और सहायता करता रहा।
तूने मुझे सर्वनाश से,
छल-कपट करने वालों के फन्दे से
और झूठ बोलने वालों के षड्यन्त्र से बचाया
है।
तू मेरे शत्रुओं के विरुद्ध मेरा सहारा रहा।
3अपनी असीम दया तथा महिमामय नाम के
अनुरूप
तूने इन सब बातों से मेरी रक्षा की है:
भक्षकों के दाँतों से, हत्या पर उतारू लोगों
के पंजों से,
आ पड़ने वाली असंख्य विपत्तियों से,
4घेरने वाली आग के धूएँ से,
उस अग्नि-ज्वाला से, जिसे मैंने नहीं जलाया,
5अधोलोक के गर्त्त से,
कपटी जिह्वा की अशुद्धता से
मुझ पर लगाये हुए मिथ्यापवाद से,
6और अधर्मी जिह्वा की बाणवृष्टि से।

मृत्यु मेरे निकट आ गयी थी,
मैं अधोलोक के द्वार तक पहुँच गया था।
7उन्होंने मुझे चारों ओर से घेर लिया था।
मेरा कोई सहायक नहीं था।
मैंने प्रतीक्षा की, पर कोई भी मनुष्य मुझे
सँभालने के लिए तैयार नहीं था।
8प्रभु! तब मैंने तेरी दया
और पहले किये हुए तेरे कार्यों का स्मरण
किया।
तू अपने पर भरोसा रखने वालों की रक्षा
करता
और उन्हें उनके शत्रुओं के पंजे से छुड़ाता
है।
9मैंने पृथ्वी पर से प्रभु की दुहाई दी
और मृत्यु से रक्षा की प्रार्थना की।
10मैंने कहा, "प्रभु! तू मेरा पिता है!+
घमण्डी शत्रुओं के सामने,
मुझे विपत्ति के दिन, असहाय नहीं छोड़।
11मैं निरन्तर तेरा नाम धन्य कहूँगा,
मैं धन्यवाद के गीत गाता रहूँगा।"
मेरी प्रार्थना सुनी गयी,
12क्योंकि तूने मुझे विनाश से बचाया
और विपत्ति से मेरा उद्धार किया।
इस कारण मैं तेरा धन्यवाद और तेरी स्तुति
करूँगा,
मैं प्रभु का नाम धन्य कहूँगा।++

प्रज्ञा की खोज

13 अपनी यात्राएँ प्रारम्भ करने से पहले मैं
युवावस्था में
आग्रह के साथ प्रज्ञा के लिए प्रार्थना करता
था।
14मैं मन्दिर के आंगन में उसके लिए अनुरोध
करता था

---

* यह उपशीर्षक मूल में है। + इब्रानी पाठ के अनुसार। यूनानी में : "मैंने प्रभु, अपने स्वामी के पिता को पुकारा"।
++ एक ही इब्रानी हस्तलेख में यहां करुणामय प्रभु की स्तुति में सोलह अतिरिक्त पद मिलते हैं।

50 : 29 यश 2 : 5 51 : 2 भज 120 : 2 ; नि 15 : 2 51 : 3 भज.57 : 4 51 : 6 भज 88 : 3 51 : 7 भज 22 : 11 51 : 14 भज 5 : 7

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और अन्त तक उसे प्राप्त करने का प्रयत्न
करता रहूँगा।
15वह फलते-फूलते हुए अंगूर की तरह मुझ में
विकसित हो कर
मुझे आनन्दित करती रही।
मैं सीधे मार्ग पर आगे बढ़ता गया
और बचपन से ही प्रज्ञा का अनुगामी बना।
16मैंने थोड़े समय तक उस पर कान दिया था
और मुझे प्रचुर मात्रा में शिक्षा मिली।
17मैं उसी के कारण प्रगति कर सका।
जिसने मुझे प्रज्ञा प्रदान की है,
मैं उसकी महिमा करूँगा।
18मैंने प्रज्ञा के अनुसार आचरण करने का
निश्चय किया।
मैं भलाई करता रहा; मुझे कभी लज्जित नहीं
होना पड़ा।
19मैं प्रज्ञा प्राप्त करने के लिए पूरी शक्ति से
प्रयास करता रहा
और व्यवस्था के पालन में मैं अति सावधान
रहा।
मैंने आकाश की ओर हाथ ऊपर उठाया
और अपनी नासमझी पर दुःख प्रकट किया।
20मैंने प्रज्ञा को अपना लक्ष्य बनाया,
और अपने सुधार के कारण मैंने उसे पाया।
मुझे प्रारम्भ से उसके द्वारा विवेक मिला,
इसलिए मुझे कभी परित्यक्त नहीं किया
जायेगा।
21मैं पूर्ण हृदय से उसकी खोज करता रहा
और मुझे एक अमूल्य निधि प्राप्त हुई।
22प्रभु ने पुरस्कार के रूप में मुझे कुशल जिह्वा
प्रदान की
और मैं उस से उसका यश गाऊँगा।
23 तुम, जो अशिक्षित हो, मेरे पास आओ
और शिक्षा के घर में एकत्र हो जाओ।
24देर क्यों करते हो,
जब कि तुम्हारी आत्मा उसके लिए तरस रही
है?
25मैं मुँह खोल कर बोलता हूँ :
"मुफ्त में प्रज्ञा प्राप्त करो।
26तुम जूए के नीचे गरदन झुकाओ।
तुम्हारा हृदय शिक्षा ग्रहण करे;
क्योंकि वह तुम्हारे निकट ही प्रस्तुत है।
27तुम अपनी आँखों से देख सकते हो
कि मुझे उसके लिए कम परिश्रम करना
पड़ा,
और मुझे बहुत शान्ति मिली।
28जितनी भी चांदी देनी पड़े शिक्षा अवश्य प्राप्त
करो,
तुम उसके द्वारा बहुत सोना प्राप्त करोगे।
29तुम प्रभु की दया के कारण आनन्द मनाओ,
और उसकी स्तुति करने में लज्जा का
अनुभव मत करो।
30समय समाप्त होने से पहले अपना कार्य पूरा
करो,
और समय आने पर प्रभु तुम को पुरस्कार
प्रदान करेगा।"

51 : 20 नीति 4 : 6 51 : 23 मत 11 : 28 51 : 24 यो 7 : 37; यश 55 : 1 51 : 26 व्य 30 : 14 51 : 30 यो 9 : 4

बारूक

पुस्तक-परिचय

प्रस्तुत ग्रंथ केवल यूनानी भाषा में उपलब्ध है; लेकिन इसका मूल रूप इब्रानी में था। इस ग्रंथ का रचयिता नबी यिर्मयाह का सचिव "बारूक" माना गया है (देखिए यिर 36 : 4), जो निष्कासन-काल में (587-538 पू०) एक नये भविष्य के लिए पुनर्जागरण की मांग करता है। वास्तव में बारूक के नाम में दूसरी सदी ईसवी पूर्व के दौरान तीन विभिन्न रचनाओं का संकलन किया गया था। पहली रचना में सामूहिक पाप-स्वीकरण का विवरण प्रस्तुत किया गया है। दूसरी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रचना काव्य है; इसमें धर्मव्यवस्था के अध्ययन को ही सच्ची ''प्रज्ञा'' का सोपान बताया गया है। तीसरी रचना में नबी-ग्रंथों की शैली अपनायी गई है : माँ -यरूशलेम अपने निष्कासित बच्चों को धैर्य सिखाती है और स्वयं आश्वस्त हो जाती है कि परमेश्वर उसके प्रति करुणामय व्यवहार करता रहेगा। इस प्रकार तीनों रचनाएं पश्चात्ताप की भावना से परिपूर्ण हैं और व्यवस्थापालन द्वारा प्रज्ञावान व्यक्ति को धार्मिक नवीकरण का मार्ग दर्शाती हैं।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

सामूहिक पाप-स्वीकरण	1 : 1 — 3 : 8
(क) ऐतिहासिक भूमिका: बेबीलोन में यहूदियों की सभा	1 : 1 — 9
(ख) यरूशलेम-निवासियाँ को सन्देश	1 : 10 — 3 : 8
प्रज्ञा-प्राप्ति का मार्ग	3 : 9 — 4 : 4
विलाप और सांत्वना के गीत	4 : 5 — 5 : 9

बेबीलोन में यहूदियों की सभा

1 यह वह ग्रन्थ है, जिसे बारूक ने बेबीलोन
नगर में लिखा था। बारूक नेरीयाह का पुत्र
था, नेरीयाह महसेयाह का, महसेयाह सिद्कियाह
का, सिद्कियाह हसद्याह का और हसद्याह
हिलकीयाह का। 2यरूशलेम नगर के कसदियों
के अधिकार में आने और उनके द्वारा जला दिये
जाने के पाँचवें वर्ष, ठीक उसी महीने के सातवें
दिन, उसने यह ग्रन्थ लिखा था।
3 उसने उसे यहोयाकीम के पुत्र, यहूदा
प्रदेश के राजा यकोन्याह के सामने पढ़ कर
सुनाया और उन सब लोगों के सामने, जो इस
ग्रन्थ का पाठ सुनने आये थे। 4वे ये थे:
पदाधिकारी, राजकुमार, धर्मवृद्ध और छोटों से
बड़ों तक अन्य सब लोग, जो बेबीलोन में सदू
नदी के तट पर बसे थे। 5उन लोगों ने शोक
मनाया, उपवास किया और प्रभु से प्रार्थना की।
6फिर उन्होंने अपनी-अपनी सामर्थ्य के अनुसार
चन्दा एकत्र किया 7और उसे शल्लूम के पौत्र,
हिलकीयाह के पुत्र, प्रधान पुरोहित यहोयाकीम
तथा अन्य पुरोहितों और उन सारे लोगों के पास
यरूशलेम भेजा, जो उसके साथ वहाँ थे। 8इस
से पूर्व बारूक ने प्रभु के मन्दिर से चुरायी हुई
सामग्रियाँ ग्रहण की थीं और इन्हें सीवान मास
के दसवें दिन यहूदा प्रदेश को लौटाना चाहता
था। वे चाँदी के पात्र थे, जिन्हें यहूदा प्रदेश के
राजा, योशियाह के पुत्र सिद्कियाह ने उस
समय बनवाया था, 9जब बेबीलोन का राजा
नबूकदनेस्सर राजा यकोन्याह को पदाधिकारियों,
कारीगरों+, प्रतिष्ठित नागरिकों और अन्य लोगों
के साथ यरूशलेम से ले कर बेबीलोन चला
गया था।

यरूशलेम को संदेश

10 बेबीलोन की सभा ने यह सन्देह भेजा:
देखिए, हम आप को यह चन्दा भेज रहे हैं। इस
द्रव्य से अग्नि-बलि, प्रायश्चित्त-बलि और
लोबान खरीदकर तथा अन्न-बलि तैयार कर
आप उन्हें अपने प्रभु-परमेश्वर की वेदी पर
चढ़ायें। 11बेबीलोन के राजा नबूकदनेस्सर और
उसके पुत्र बेलशस्सर की दीर्घायु के लिए
प्रार्थना करें कि वे तब तक जीते रहें, जब तक
आकाश पृथ्वी के ऊपर स्थिर रहे। 12आप प्रार्थना
करें कि प्रभु हमें शक्ति और विवेक प्रदान करे,
जिससे हम बेबीलोन के राजा नबूकदनेस्सर
और उसके पुत्र बेलशस्सर की छाया में सुरक्षित
रह सकें, दीर्घ काल तक उनकी सेवा करते हुए
उनके कृपापात्र बने रहें। 13आप हमारे लिए भी
प्रभु-परमेश्वर से प्रार्थना करें, क्योंकि हमने
उसके विरुद्ध पाप किये और आज तक प्रभु का
प्रकोप और क्रोध हम पर से दूर नहीं हुआ है।
14जो ग्रन्थ हम आपके पास भेज रह हैं, आप
उसे पर्व के दिन* और अन्य उचित दिनों के

+ मूल में, ''बंदियों''' * अर्थात् मण्डप-पर्व।

1 : 1 यिर 32 : 12; 36 : 4 1 : 2 2 रा 25 : 8 -9 1 : 4 यिर 24 : 1 1 : 11 एज्रा 6 : 10 1 : 14 व्य 28 : 15-68; यिर 11 : 3-5

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अवसर पर प्रभु के मन्दिर में पढ़ कर सुनायें।
तब आप अपने पाप स्वीकार करें।

पापों की स्वीकारोक्ति

15-16 आप लोग यह कहें : "हमारा
प्रभु-परमेश्वर न्यायी है। आज हम जिस स्थिति
में हैं, इसमें हमें लज्जित होना चाहिए। हम,
यहूदा प्रदेश के लोग, यरूशलेम के निवासी,
हमारे राजा और शासक, हमारे पुरोहित और
नबी, हमारे पूर्वज, हम सब-के-सब कलंकित
हैं; 17क्योंकि हमने प्रभु के विरुद्ध पाप किया
है। 18हमने उसके आदेशों का पालन नहीं
किया और हमने अपने प्रभु-परमेश्वर की
वाणी पर ध्यान नहीं दिया, जिससे हम उसकी
आज्ञाओं के अनुसार आचरण कर सकें, जो प्रभु
ने हमें दी थीं। 19जिस दिन प्रभु हमारे पूर्वजों
को मिस्र से निकाल लाया, उस दिन से आज
तक हम अपने प्रभु-परमेश्वर की आज्ञाएँ भंग
करते और उसकी वाणी का तिरस्कार करते आ
रहे हैं। 20इसलिए आज वे विपत्तियाँ और
अभिशाप हम पर आ पड़े हैं, जिन्हें प्रभु ने अपने
सेवक मूसा द्वारा घोषित किया था, जब वह
हमारे पूर्वजों को मिस्र से निकाल कर उस देश
में ले जा रहे थे, जहाँ पहले की तरह आज भी
दूध और मधु की नदियाँ बहती हैं। 21हमने प्रभु
द्वारा भेजे हुए नबियों के वचनों पर ध्यान नहीं
दिया, जो हमें प्रभु की वाणी सुनाते थे। 22हम
दुष्टतापूर्वक अपनी राह चलते रहे, पराये
देवताओं की उपासना और ऐसे कार्य करते रहे,
जो हमारे प्रभु-परमेश्वर की दृष्टि में बुरे हैं।

2 "इसलिए प्रभु ने अपनी चेतावनी पूरी की,
जो उसने हमें और इस्राएल पर शासन
करने वाले हमारे शासकों, हमारे राजाओं,
हमारे नेताओं और इस्राएल तथा यहूदा प्रदेश के
लोगों को दी थी, 2अर्थात् यह कि वह हम पर
ऐसी भयंकर विपत्तियाँ ढाह देगा, जैसी आज
तक पृथ्वी पर कभी नहीं हुईं, जैसी मूसा के
व्यवस्था-ग्रंथ के अनुसार यरूशलेम में हुई थीं:
3हम में कोई अपने पुत्र का मांस खायेगा और
अपनी पुत्री का! 4उसने हम लोगों को आसपास
के सब राष्ट्रों के अधिकार में दे दिया और हमें
आसपास के सब राष्ट्रों के बीच बिखेर कर
अपमान और आतंक का पात्र बनाया। 5हम उच्च
शासक नहीं, बल्कि नीच दास बन गये; क्योंकि
हमने उसकी वाणी का तिरस्कार किया और
अपने प्रभु-परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया।

6 "प्रभु, हमारे परमेश्वर के यहाँ न्याय है,
किन्तु हम और हमारे पूर्वज आज तक लज्जा
के साथ उसके सामने खड़े हैं। 7जैसे प्रभु ने
हमारे विरुद्ध कहा था, वैसे ही वे सारी विपत्तियाँ
हमारे ऊपर आ पड़ी हैं। 8हमने अपना कुविचार,
अपना कुमार्ग त्याग कर उस से प्रार्थना नहीं
की। 9इसलिए प्रभु ने उन विपत्तियों के ऊपर
दृष्टि दौड़ायी और उसने उन्हें हम पर आने
दिया। उसने हमारे साथ जो भी किया, वह न्याय
के अनुसार ही है। 10हमने उसकी वाणी पर
ध्यान नहीं दिया और उसके दिये हुए आदेशों
का पालन नहीं किया।

क्षमा-याचना

11 "प्रभु! इस्राएल के परमेश्वर! तू चिह्न
एवं चमत्कार दिखा कर और हाथ उठा कर
अपनी महान् सामर्थ्य से अपनी प्रजा को मिस्र
देश से निकाल लाया था। इस प्रकार तूने अपने
नाम का गौरव बढ़ाया। 12हमारे प्रभु-परमेश्वर!
तेरे सब आदेशों के बावजूद हमने पाप किया,
हमने दुष्टता और अन्याय किया। 13तेरा क्रोध
हम से दूर हो, क्योंकि हम में केवल कुछ ही
लोग-उन राष्ट्रों के बीच बच गये हैं जिन में तूने
हमें बिखेर दिया है। 14प्रभु! हमारी प्रार्थना और
हमारे निवेदन पर ध्यान दे और अपने नाम के
कारण हमारी रक्षा कर। ऐसा कर कि हम उन
लोगों के कृपापात्र बनें, जिन्होंने हमें निर्वासित
किया। 15इसी से सारा संसार जान जाये कि तू
ही हमारा प्रभु-परमेश्वर है; क्योंकि इस्राएल
और उसका वंश तेरा कहलाता है+। 16प्रभु! अपने

+ शब्दश: "उनपर तेरा नाम पुकारा जाता है"।

1 : 15 दान 9 : 7 **1 : 18** बारू 2 : 10; दान 9 : 6 **2 : 1** दान 9 : 12 **2 : 3** लेव 26 : 29; 2 रा 6 : 28-29
2 : 11 दान 9 : 15-17 **2 : 12** भज 106 : 6 **2 : 16** व्य 26 : 15 **2 : 21** यिर 27 : 11-12

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पवित्र निवासस्थान से नीचे देख और हमारी
सुधि ले। प्रभु! कान लगा कर हमारी सुन।
17प्रभु! अपनी आँखें खोल और देख। अधोलोक
के मृतक, जिनके प्राण छीन लिये गये हैं, प्रभु
की महिमा और न्याय का गुणगान नहीं करते,
18बल्कि वही तेरी महिमा और धार्मिकता का
गुणगान करता है, जिसकी आत्मा अत्यन्त
दु:खी है, जो दीन-हीन और दुर्बल है, जिसकी
आँखें क्षीण हो गयी हैं, जिसका हृदय भूखा है।

19 "हमारे प्रभु-परमेश्वर! हम अपने
पूर्वजों और राजाओं की धार्मिकता के भरोसे तेरे
सामने प्रार्थना नहीं करते। 20जैसा तूने अपने
सेवक, नबियों द्वारा घोषित किया था, तूने हमारे
विरुद्ध अपना क्रोध और प्रकोप यह कहते हुए
भेजा—21 'प्रभु यह कहता है: बेबीलोन के
राजा के सामने अपने सिर झुका कर उसके
अधीन हो जाओ। तभी तुम उस देश में रह
सकोगे, जिसे मैंने तुम्हारे पूर्वजों को दिया है।
22नहीं तो यदि तुम प्रभु की वाणी का तिरस्कार
कर बेबीलोन के राजा के अधीन नहीं होगे, 23तो
मैं यहूदा प्रदेश के नगरों और यरूशलेम की
गलियों में प्रसन्नता एवं आनन्द की ध्वनि और
वर-वधू के गीत समाप्त कर दूँगा और सारा देश
अपने निवासियों से वंचित हो कर उजड़
जायेगा।'

24 "किन्तु हमने तेरी वाणी पर ध्यान नहीं
दिया, जिसके अनुसार हमें बेबीलोन के राजा
के अधीन रहना चाहिए था। इसलिए तूने अपने
सेवक, नबियों द्वारा घोषित अपने इन शब्दों को
चरितार्थ किया कि हमारे राजाओं और हमारे
पूर्वजों की हड्डियां उनकी कबरों से निकाल ली
जायेंगी। 25अब वे दिन में ताप और रात में शीत
में बिखरी पड़ी हैं। लोग अकाल, तलवार और
महामारी के कारण घोर कष्ट सह कर मर गये।
26इस्राएल के घराने और यहूदा के घराने की
दुष्टता के कारण तूने उस "प्रभु-घर" की
वर्तमान दशा कर दी, जो तेरे नाम से प्रसिद्ध है।

27 "प्रभु! तूने अपने धैर्य और अपनी
महती दया के अनुरूप हमारे साथ व्यवहार
किया, 28जिस तरह तूने उस दिन अपने सेवक
मूसा के माध्यम से घोषित किया था, जब तूने
यह कहते हुए उन्हें इस्राएलियों के सामने
व्यवस्था को लिपिबद्ध करने का आदेश दिया
था: 29 'यदि तुम मेरी बात पर ध्यान नहीं दोगे,
तो मैं तुम्हें तितर-बितर कर दूँगा और तुम्हारी
यह बड़ी और विशाल जनसंख्या छोटे-छोटे
दलों में बँट जायेगी। 30मैं जानता हूँ कि वे मेरी
बात नहीं मानेंगे, क्योंकि वे लोग हठीले हैं।
किन्तु वे उस देश में, जहाँ निर्वासित हो कर
जायेंगे, पश्चात्ताप करेंगे। 31वहाँ वे जान जायेंगे
कि मैं ही प्रभु, उनका परमेश्वर हूँ। मैं उन्हें एक
नया हृदय प्रदान करूँगा और ऐसे कान, जो मेरी
बात सुनेंगे। 32तब वे अपने निष्कासन के देश
में मेरी स्तुति और मेरे नाम को स्मरण करेंगे।
33वे प्रभु के विरुद्ध पाप करने वाले अपने पूर्वजों
के मार्ग का स्मरण करते हुए अपनी हठधर्मी
और अपने पापाचरण का परित्याग करेंगे।
34तब मैं उन्हें उस देश में वापस ले चलूँगा,
जिसे मैंने शपथ खा कर उनके पूर्वज अब्राहम,
इसहाक और याकूब को देने का वचन दिया था
और वे उसे अपन अधिकार में करेंगे। मैं उनकी
संख्या बढ़ाऊँगा, उन्हें घटने नहीं दूँगा। 35मैं
उनके लिए एक स्थायी विधान निर्धारित
करूँगा; मैं उनका परमेश्वर होऊँगा और वे मेरी
प्रजा होंगे। तब मैं कभी भी अपनी प्रजा इस्राएल
को उस देश से नहीं निकालूँगा, जिसे मैंने उसे
दिया था।'

3 "सर्वशक्तिमान् प्रभु! इस्राएल के परमेश्वर!
हम अत्यन्त दु:खी और सन्त्रस्त हैं। 2प्रभु!
ध्यान दे और दया कर, क्योंकि हमने तेरे विरुद्ध
पाप किया है। 3तू तो सदा बना रहता है और
हम सदा के लिए नष्ट होते जा रहे हैं।
4सर्वशक्तिमान् प्रभु! इस्राएल के परमेश्वर!
मृत्यु के पंजे में पड़े इस्राएलियों की प्रार्थना
सुन—उन लोगों के पुत्र-पुत्रियों की, जिन्होंने
तेरे विरुद्ध पाप किया। उन्होंने अपने प्रभु-

2 : 23 यिर 7 : 34; 33 : 10-11 **2 : 25** यिर 36 : 30 **2 : 30** नि 32 : 9; व्य 28 : 58-62 **2 : 34** यिर 16 : 15; 32 : 38-40 **2 : 35** यिर 31 : 31

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

परमेश्वर की वाणी का तिरस्कार किया और
इसलिए हम विपत्तियों के शिकार बने। 5हमारे
पूर्वजों के कुकर्म भुला दे, किन्तु अब अपनी
सामर्थ्य और अपना नाम याद कर। 6तू ही हमारा
प्रभु-परमेश्वर है। प्रभु! हम तेरा स्तुतिगान
करेंगे। 7तूने हमारे मन में अपने प्रति श्रद्धा उत्पन्न
की, जिससे हम तेरे नाम की दुहाई दें। हम
अपने निष्कासन के देश में तेरा स्तुतिगान करेंगे;
क्योंकि हमने तेरे विरुद्ध पाप करने वाले अपने
पूर्वजों के सब कुकर्म अपने हृदय से निकाल
दिये। 8यदि हम आज निष्कासन के देश में,
जहाँ तूने हमें बिखेरा है, अपमान, अभिशाप
और दण्डाज्ञा के पात्र हैं, तो इसका कारण यह
है कि हमारे पूर्वजों ने अपने प्रभु-परमेश्वर का
परित्याग कर दिया था।''

प्रज्ञा-प्राप्ति का मार्ग

9 इस्राएल! जीवन देने वाली आज्ञाएँ सुनो।
कान लगा कर सच्चा ज्ञान प्राप्त करो।
10इस्राएल! तुम क्यों अपने शत्रुओं के देश में
हो?
तुम क्यों विदेश में बूढ़े हो गये हो?
तुम विदेश में दुःख के दिन काटते हो।
11तुम मृतकों द्वारा* अशुद्ध बन गये हो।
अधोलोक जाने वालों में तुम्हारी गिनती हो
गयी है।
12यह इसलिए हो रहा है कि तुमने प्रज्ञा का
स्रोत त्याग दिया है।
13यदि तुम परमेश्वर के मार्ग पर चले होते,
तो तुम सदा के लिए शान्ति में जीवन बिताते।
14यह समझ लो कि ज्ञान कहाँ है; सामर्थ्य कहाँ
है,
बुद्धिमानी कहाँ है, ताकि तुम जान जाओ
कि लम्बी आयु और जीवन कहाँ है,
आँखों की ज्योति और शान्ति कहाँ है।
15कौन प्रज्ञा के निवासस्थान तक पहुँचा है?
किसने उसके खजाने में प्रवेश किया है?
16राष्ट्रों के वे शासक कहाँ हैं,
जो पृथ्वी के जंगली पशु अपने वश में रखते
17और आकाश के पक्षियों का खेल दिखाते थे?
जो चाँदी और सोने का संचय करते थे,
जिन पर मनुष्य भरोसा रखते हैं?
कहाँ हैं वे मनुष्य, जिनकी सम्पत्ति अपार
थी?
18कहाँ हैं वे चाँदी के शिल्पकार,
जो चाँदी की ही चिन्ता करते,
और जिनकी कला कल्पनातीत थी?
19वे सब-के- सब नष्ट हो कर
अधोलोक में उतर चुके हैं
और दूसरे लोगों ने उनका स्थान ले लिया है।
20एक नयी पीढ़ी का उदय हुआ
और वह पृथ्वी पर बस गयी,
किन्तु उसने ज्ञान का मार्ग नहीं पहचाना,
और न उसके मार्गों को समझा,
और न उस पर ध्यान ही दिया।
21उसके पुत्र-पुत्रियां और भी दूर भटक गये।
22कनान देश में प्रज्ञा की चर्चा नहीं सुनाई पड़ी,
और वह तेमान में+ भी नहीं देखी गयी।
23हागार के वंशज, जो पृथ्वी पर ज्ञान की खोज
करते थे,
मेर्रान और तेमान के व्यापारी,
कथावाचक और ज्ञान के पिपासु—
उन में कोई प्रज्ञा का मार्ग नहीं जान सका,
उन में कोई प्रज्ञा के पथ याद नहीं रख सका।
24इस्राएल! तेरे परमेश्वर का निवास कितना
महान् है!
कितना विस्तृत है उसके सामर्थ्य का क्षेत्र!
25वह महान् है और असीम,
वह ऊँचा है और अपरिमेय!
26वहाँ प्राचीन काल में प्रख्यात दानव उत्पन्न हुए,
जो भीमकाय और युद्धकुशल थे।
27किन्तु परमेश्वर ने उन्हें नहीं अपनाया
और उन्हें ज्ञान का मार्ग नहीं बताया।
28उनका विनाश हुआ, क्योंकि वे स्वयं नासमझ
थे।

---

* मृतक का अर्थ वे लोग भी हैं, जो व्यवस्था की दृष्टि में अनुष्ठान के लिए अशुद्ध हैं। + एदोम देश में।

3 : 7 यिर 31 : 33 3 : 9 व्य 4 : 1 ; अय्य 28 : 23-28; नीति 8 : 22-31; प्रव 24 : 1-22 3 : 15 अय्य 28 : 12; प्रव 1 : 6 3 : 16 यिर 27: 6 3 : 22 यिर 49 : 7 3 : 23 भज 83 : 6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वे अपनी मूर्खता के कारण नष्ट हो गये।
29कौन प्रज्ञा लाने के लिए स्वर्ग गया?
किसने उसे बादलों के ऊपर से नीचे उतारा?
30किसने समुद्र पार कर उसका पता लगाया?
किसने शुद्ध सोने से उसे खरीदा?
31कोई उसके यहाँ का मार्ग नहीं जानता,
कोई उसके मार्ग की चिन्ता नहीं करता।

बुद्धिमान व्यक्ति ही प्रज्ञा को जानता है

32 सर्वज्ञ परमेश्वर ही उसका मार्ग जानता है,
उसने अपनी बुद्धि से उसका पता लगाया है।
उसने सदा के लिए पृथ्वी की नींव डाली है,
और उसे जीव-जन्तुओं से भर दिया है।
33वह प्रकाश भेज देता है
और वह फैल जाता है।
वह उसे वापस बुलाता है
और वह काँपते हुए उसकी आज्ञा मानता है।
34तारे अपने-अपने स्थान पर
आनन्दपूर्वक जगमगाते रहते हैं;
जब वह उन्हें बुलाता है,
तब वे उत्तर देते, ''हम प्रस्तुत हैं'';
और वे अपने निर्माता के लिए आनन्दपूर्वक
चमकते हैं।
35वही हमारा परमेश्वर है।
उसकी बराबरी कोई नहीं कर सकता।
36उसने ज्ञान के सभी मार्गों का पता लगाया है,
और उसे अपने सेवक याकूब को,
अपने परमप्रिय इस्राएल को बता दिया है।
37तत्पश्चात् प्रज्ञा पृथ्वी पर प्रकट हुई,
और उसने मनुष्यों के बीच निवास किया।

4 प्रज्ञा यह है—परमेश्वर की आज्ञाओं का
ग्रन्थ,
वह व्यवस्था, जो सदा बनी रहेगी।
जो उसका पालन करेगा, वह जीवित रहेगा;
जो उसे छोड़ देगा, वह मर जायेगा।
2याकूब! लौट कर उसे ग्रहण करो,
उसके प्रकाश में महिमा की ओर आगे बढ़ो।
3न तो दूसरों को अपना गौरव दो
और न विदेशियों को अपना विशेष अधिकार।
4इस्राएल! हम कितने सौभाग्यशाली हैं!
परमेश्वर की इच्छा हम पर प्रकट की गयी
है।

निर्वासितों को प्रबोधन

5 मेरी प्रजा! साहस बान्धो।
तुम इस्राएल का नाम बनाये रखती हो।
6तुम विनाश के लिए गैर-यहूदियों के हाथ नहीं
बिकी हो।
तुमने परमेश्वर का क्रोध भड़काया था,
इसलिए तुम अपने शत्रुओं के हवाले कर दी
गयी।
7तुमने अपने सृष्टिकर्ता को अप्रसन्न किया;
क्योंकि तुमने परमेश्वर को नहीं,
बल्कि देवताओं को बलि चढ़ायी थी।
8तुमने शाश्वत परमेश्वर को भुला दिया,
जो तुम्हारा भरण-पोषण करता था।
तुमने यरूशलेम को दुःख पहुँचाया,
जिसने तुम्हारा पालन किया है।

माँ यरूशलेम की वाणी

9 यरूशलेम ने परमेश्वर का क्रोध तुम पर आते
देखा
और कहा, ''सियोन की पड़ोसिनो** ! मेरी
बात सुनो!
परमेश्वर ने मुझ पर बड़ा शोक भेजा।
10मैंने देखा कि शाश्वत परमेश्वर ने मेरे पुत्र-
पुत्रियों को
बन्दी बना कर निर्वासित किया है।
11मैंने आनन्दित हो कर उनका पालन-पोषण
किया,
किन्तु मैंने उन को आँसू बहाते हुए और
दुःखी हो कर जाते हुए देखा।
12मैं विधवा तथा सब से परित्यक्ता हूँ—
कोई मेरा उपहास न करे।
मैं अपनी सन्तान के पापों के कारण अकेली
रह गयी हूँ,
क्योंकि उसने परमेश्वर की व्यवस्था का मार्ग

** पड़ोसी देशों के महानगर।

3 : 29 व्य 30 : 12; रोम 10 : 6-7 **3 : 30** प्रज्ञा 7 : 9 **3 : 34** प्रव 43 : 10 **3 : 36** प्रव 24 : 8 **3 : 37** यो 1 : : 5 **4 : 6** यश 50 : 1 **4 : 7** व्य 32 : 17; 1 कुर 10 : 20 **4 : 12** यश 47 : 8-9

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

छोड़ दिया है।
13उसने उसके आदेशों का तिरस्कार किया,
वह परमेश्वर की आज्ञाओं के मार्ग पर नहीं चली,
और वह उसकी धार्मिकता के अनुरूप
उसकी शिक्षा के मार्ग पर नहीं चली।

14 "सियोन की पड़ोसिनो! आओ।
उस निर्वासन को स्मरण करो,
जिसके द्वारा शाश्वत परमेश्वर ने मेरे पुत्र-पुत्रियों को दण्डित किया।
15उसने एक दूरवर्ती राष्ट्र को उसके विरुद्ध भेजा,
एक दुष्ट राष्ट्र को, जिसकी भाषा अबोधगम्य थी;
एक ऐसे राष्ट्र को, जिसे न तो बूढ़ों के प्रति श्रद्धा थी
और न बच्चों के प्रति कोई दया।
16वह विधवा के प्रिय पुत्रों को ले गया,
उसने उसे उसकी पुत्रियों से वंचित कर
उसे अकेली ही छोड़ दिया।

17 "मेरे बच्चो! मैं कैसे तुम्हारी सहायता कर सकती थी?
18जिसने तुम पर ये विपत्तियाँ ढाहीं,
वही तुम को अपने शत्रुओं के हाथ से छुड़ायेगा।
19तुम जाओ, मेरे बच्चो! जाओ!
मैं परित्यक्ता अकेली ही रह गयी हूँ।
20मैंने शान्ति का वस्त्र उतार कर प्रायश्चित्त
और प्रार्थना का टाट-वस्त्र पहन लिया।
मैं जीवन भर शाश्वत प्रभु को पुकारती रहूँगी।

21 "मेरे बच्चो! हिम्मत बान्धो, परमेश्वर की दुहाई दो;
वह तुम को हिंसा से, शत्रु के हाथ से छुड़ायेगा।
22मुझे शाश्वत परमेश्वर से तुम्हारे उद्धार का भरोसा है।
परमपावन परमेश्वर ने मुझे आनन्द प्रदान किया।
तुम्हारा उद्धारकर्ता, शाश्वत परमेश्वर+ शीघ्र ही तुम पर दया करेगा।
23जब मैंने तुम को जाते हुए देखा,
तो मैं दु:खी हो कर रो पड़ी थी;
किन्तु परमेश्वर तुम को मेरे पास लौटायेगा,
और मैं सदा के लिए आनन्दित और उल्लसित होऊँगी।
24सियोन की पड़ोसिनें अब तुम्हारा निष्कासन देखती हैं,
किन्तु वे शीघ्र ही तुम्हारे परमेश्वर का भेजा हुआ उद्धार देखेंगी।
वह उद्धार तुम को शाश्वत परमेश्वर की महिमा
और गौरव के साथ प्राप्त होगा।

25 "मेरे बच्चो! परमेश्वर का भेजा हुआ प्रकोप
धैर्य के साथ सहन करो।
जिन्होंने तुम पर अत्याचार किया,
तुम शीघ्र उनका विनाश देखोगे,
और तुम उनकी गर्दन पर पैर रखोगे।
26मेरे बिगड़े हुए बच्चों को
ऊबड़-खाबड़ मार्गों पर भटकना पड़ा।
वे शत्रुओं द्वारा लूटे रेवड़ की तरह ले जाये गये।
27मेरे बच्चो! हिम्मत बान्धो, परमेश्वर की दुहाई दो;
क्योंकि जिसने यह सब तुम पर आने दिया,
वही तुम्हारी सुध लेगा।
28तुमने पहले परमेश्वर से दूर हो जाने की बात सोची थी।
अब दस गुने उत्साह से उसके पास लौटने की चेष्टा करो;
29क्योंकि जिसने तुम पर इन विपत्तियों को आने दिया,
वही तुम्हारा उद्धार कर तुम्हें अनन्त आनन्द प्रदान करेगा।"

+ अथवा, "तुम्हारा शाश्वत उद्धारक"
4 : 23 भज 126 : 4-6; यिर 31 : 13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यरूशलेम को सान्त्वना

30 यरूशलेम! हिम्मत बान्ध!
जिसने तेरा नाम रखा, वह तुझे सान्त्वना देगा।
31उन लोगों पर शोक, जिन्होंने तुझ पर अत्याचार किया
और तेरे पतन पर आनन्द मनाया!
32उन नगरों पर शोक, जहाँ तेरी सन्तति दास थी!
उस नगर पर शोक, जिसने तेरे पुत्रों को कैद में रखा!
33उसने तेरे पतन पर आनन्द मनाया,
वह तेरे विनाश पर प्रसन्न हुआ,
किन्तु वह अपने उजाड़ पर शोक मनाएगा।
34मैं उसके बहुसंख्यक निवासियों का उल्लास मिटा दूँगा।
उसका घमण्ड दु:ख में बदल जायेगा;
35क्योंकि शाश्वत परमेश्वर बहुत दिनों तक
उस पर आग बरसायेगा,
और वह बहुत समय तक
भूतों का डेरा बना रहेगा।
36यरूशलेम! पूर्व की ओर दृष्टि डाल
और वह आनन्द देख,
जो परमेश्वर की ओर से तेरे पास आ रहा है!
37तेरे पुत्र-पुत्रियाँ जिन को तूने जाने दिया,
अब लौट रहे हैं।
तेरे पुत्र-पुत्रियाँ परमेश्वर की महिमा पर आनन्द मनाते हुए,
परमपावन के वचन पर
पूर्व और पश्चिम से तेरे पास आ रहे हैं।

5 यरूशलेम! अपने शोक और सन्ताप के वस्त्र उतार,
और सदा के लिए परमेश्वर की महिमा का सौंदर्य धारण कर।
2परमेश्वर से प्राप्त होने वाली धार्मिकता का लबादा पहन ले;
अपने सिर पर शाश्वत प्रभु का दिया हुआ गौरव का मुकुट रख ले;
3क्योंकि परमेश्वर समस्त पृथ्वी के लोगों पर तेरी महिमा प्रकट करेगा,
4और सदा के लिए तेरा यह नाम रखेगा :
"धार्मिकता की शान्ति" और "ईश-भक्ति की महिमा।"
5यरूशलेम! उठ खड़ा हो जा,
पर्वत पर चढ़ कर पूर्व की ओर दृष्टि लगा।
देख, परमपावन की आज्ञा से तेरे पुत्र-पुत्रियाँ
पश्चिम और पूर्व से एकत्र हो गये हैं।
वे आनन्द मना रहे है;
क्योंकि परमेश्वर ने उनकी सुध ली है।
6शत्रुओं ने उन्हें बाध्य किया था
कि वे तुझ को छोड़ कर पैदल ही चले जायें,
परन्तु परमेश्वर उन्हें राजसी पालकी में बैठा कर
तेरे पास वापस ला रहा है।
7परमेश्वर का आदेश है कि हर एक ऊँचा पहाड़,
और सभी सनातन पहाड़ियाँ समतल की जायें,
और हर एक घाटी पाट कर भर दी जाये,
जिससे इस्राएली लोग महिमामय परमेश्वर की रक्षा में सुरक्षित आगे बढ़ सकें।
8परमेश्वर के आदेश पर सभी वन और सुगन्धित वृक्ष
इस्राएल पर छाया करेंगे;
9क्योंकि परमेश्वर इस्राएल को आनन्द प्रदान करेगा
और अपनी महिमा के प्रकाश में उसका पथप्रदर्शन करेगा।
परमेश्वर की दया
एवं धार्मिकता भी उसके साथ-साथ जायेंगी।

---

4 : 30 यश 40 : 1; 43 : 1 ; 52 : 1-10 **4 : 34** यश 13 : 19-22 **4 : 37** यश 60 : 4 **5 : 2** यश 61 : 10 **5 : 5** यश 43 : 5 ; जक 8 : 7 **5 : 6** यश 66 : 20 **5 : 7** यश 40 : 4 **5 : 8** यश 41 : 19

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यिर्मयाह का पत्र

(अथवा बारूक, अध्याय 6)

पुस्तक-परिचय

यह उस पत्र की प्रतिलिपि मानी जाती है, जिसे नबी यिर्मयाह ने उन बंदियों के पास भेजा था जो बेबीलोन देश में निष्कासित होनेवाले थे। वास्तव में, यिर्मयाह-ग्रंथ के एक पद (यिर 10 : 11) के आधार पर ''सात पीढ़ियों के बाद'' (यिर पत्र, पद 3) यहूदी प्रवासियों को यह संदेश सुनाया जाता है कि वे अपने विश्वास में अटल रहें और अस्तित्वहीन देवमूर्तियों की पूजा न करें। पत्र में केवल एक अध्याय है और नौ बार दुहराया जाता है कि ''ये ईश्वर नहीं हैं''! बहुधा ''यिर्मयाह का पत्र'' बारूक-ग्रंथ के साथ छठे अध्याय के रूप में रखा जाता है, क्योंकि उस ग्रंथ में कृत्रिम नाम ''बारूक'' से भिन्न प्रकार की रचनाओं का संकलन हुआ है।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

प्राक्कथन	1 - 7
मूर्तिपूजा की व्यर्थता	8 - 40
देवमूर्तियों की असमर्थता	41 - 73

प्राक्कथन

1 यह उस पत्र की प्रतिलिपि है, जिसे नबी
यिर्मयाह ने उन बन्दियों के पास भेजा था, जो
बेबीलोन देश के राजा द्वारा बेबीलोन को ले
जाये जा रहे थे, जिससे वह उन्हें परमेश्वर का
दिया हुआ सन्देश सुनाये।

2 तुमने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किये, इस
कारण बेबीलोन-निवासियों के राजा
नबूकदनेस्सर द्वारा तुम बन्दी बना कर बेबीलोन-
देश ले जाये जाओगे। 3 बेबीलोन पहुँच कर तुम्हें
वहाँ बहुत वर्षों तक, दीर्घ काल तक, सात
पीढ़ियों तक रहना पड़ेगा। इसके बाद मैं, प्रभु
तुम्हें वहाँ से सकुशल लौटाऊँगा। 4 अब तुम
बेबीलोन में चाँदी, सोने और लकड़ी के बनाये
हुए देवताओं को देखोगे, जो कन्धों पर उठा कर
ले जाये जाते हैं और जिन पर गैर-यहूदी राष्ट्र
श्रद्धा रखते हैं। 5 तुम सावधान रहो। कहीं ऐसा
न हो कि तुम गैरयहूदियों-जैसे हो जाओ और
उन देवताओं पर श्रद्धा रखो। 6 जब तुम भीड़ को
उन देवताओं की आराधना करते और उन्हें
जुलूस में ले जाते देखोगे, तो मन में यह कहो,
''प्रभु! तेरी ही आराधना करनी चाहिए";
7 क्योंकि मेरा दूत तुम्हारे साथ है और वह तुम्हारे
जीवन की चिन्ता करेगा।

मूर्तिपूजा की व्यर्थता

8 उन देवताओं की जिह्वा शिल्पी द्वारा
गढ़ी हुई है। उनका शरीर चाँदी और सोने से
मढ़ा हुआ है। वे मिथ्या हैं और बोल नहीं
सकते। 9 वे लोग अपने देवताओं के लिए सोने
के मुकुट बनवाते हैं, मानो वे अलंकरणप्रिय
कन्याएँ हों। 10 पुजारी कभी-कभी वह सोना
और चाँदी अपने लिए काम में लाते और
11 छज्जे की देवदासियों को भी उपहार के रूप
में देते हैं। चाँदी, सोने और लकड़ी के उन
देवताओं को मनुष्यों की तरह वस्त्र पहनाये
जाते हैं, 12 किन्तु उन मूर्तियों पर जंग लगता है
अथवा वे कीड़ों का आहार बन जाती हैं। 13 वे
देवता बैंगनी वस्त्रों से सुसज्जित हैं, किन्तु
मन्दिर की धूल की मोटी परत उनके चेहरे पर
से पोंछनी पड़ती है। 14 कोई देवता क्षेत्रीय
दण्डाधिकारी की तरह हाथ में राजदण्ड धारण
किये है, यद्यपि वह अपने प्रति अपराध करने

1 यिर 29 : 14 - 5 2 मक 2 : 27 नि 23 : 20 8 भज 115 : 5; 135 : 16

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वाले को मृत्युदण्ड देने में असमर्थ है। 15कोई
दाहिने हाथ में तलवार और फरसा धारण किये
है, यद्यपि वह न तो युद्ध से और और न डाकुओं
से अपनी रक्षा कर सकता है। 16इस से पता
चलता है कि वे ईश्वर नहीं हैं। इसलिए उन से
मत डरो।

देवमूर्तियों की असमर्थता

17 जैसे किसी आदमी का घड़ा टूट जाने
पर बेकार हो जाता है, 18वैसे ही बेकार उनके
देवता हैं, जिनकी प्रतिष्ठा उन्होंने उनके मन्दिरों
में की है। उनकी आँखें दर्शन करने वालों के
पैरों से उड़ने वाली धूल से ढक जाती हैं। जिस
प्रकार राजा के प्रति अपराध करने वाले व्यक्ति
के चारों ओर सब दरवाजे बन्द कर दिये जाते
हैं, क्योंकि उसे प्राणदण्ड मिला है, उसी प्रकार
पुजारी द्वारों, अर्गलाओं और सिटकिनियों से
मन्दिर को सुदृढ़ बना देते हैं, जिससे कहीं डाकू
देवमूर्तियों की चोरी न कर लें। 19पुजारी अपने
लिए कम, मूर्तियों के लिए अधिक दीपक
जलाते हैं, यद्यपि वे उन में एक भी नहीं देख
सकतीं। 20उनकी दशा उनके मन्दिरों की किसी
धरन-जैसी है, जिसके विषय में यह कहा जाता
है कि वह भीतर से खायी हुई है। उन्हें पता भी
नहीं चलता कि उन्हें और उनके वस्त्र कीड़े
खाया करते हैं। 21मन्दिर के धूएँ से उनके चेहरे
काले हो जाते हैं। 22चमगादड, अबाबीलें और
अन्य पक्षी उनके शरीर और सिर के ऊपर
मँडराते हैं; बिल्लियाँ भी उन पर बैठ जाती हैं।
23इस से तुम जान जाओगे कि वे ईश्वर नहीं हैं।
इसलिए उन से मत डरो।

24 यदि कोई व्यक्ति उन पर मढ़ा हुआ
सोना साफ नहीं करे, तो वे स्वयं उसे नहीं
चमका सकतीं। जब वे मूर्तियाँ ढाली गयीं, तो
उन्हें इसका पता नहीं चला। 25निष्प्राण होने पर
भी वे मूर्तियाँ भारी दामों में खरीदी जाती हैं।
26उनके पैर नहीं होते, इसलिए वे मनुष्यों के
कन्धों पर उठायी जाती हैं और सब को उनकी
असमर्थता का पता चलता है। उनके उपासकों
को भी इस पर लज्जा होती है कि 27जब कोई
मूर्ति गिर जाती है, तो उन्हें उसे उठाना पड़ता
है। यदि वे उन्हें खड़ा कर देते हैं, तो वे हिल
नहीं सकतीं; यदि वे झुकती हैं, तो वे स्वयं खड़ी
नहीं हो सकतीं। फिर भी उन्हें मृतकों की तरह
भेंट चढ़ायी जाती है। 28पुजारी उन पर चढ़ाये
हुए बलि-पशु बेचते और उन से लाभ उठाते
हैं। उनकी पत्नियाँ कुछ अंश खारे पानी में डाल
कर सड़ने से बचातीं, किन्तु भिखारी या
असहाय को कुछ नहीं देतीं। 29रजस्वला और
प्रसूता भी* उनके अर्पित चढ़ावे छूती हैं। इस
से तुम जान सकते हो कि वे ईश्वर नहीं हैं; उन
से मत डरो। 30स्त्रियाँ+ उन चाँदी, सोने और
लकड़ी के देवताओं की सेवा करती हैं, तो उन
मूर्तियों को ईश्वर क्यों माना जाये? 31पुजारी फटे
कपड़े पहने, सिर और दाढ़ी मूँड़े, नंगे सिर
उनके मन्दिरों में बैठते हैं। 32वे मृतक-भोजों में
सम्मिलित अतिथियों की तरह अपने देवताओं
के सामने चिल्लाते और शोर मचाते हैं।
33पुजारी उनके वस्त्र चुरा कर ले जाते हैं और
उन्हें अपनी पत्नियों और बच्चों को पहनाते हैं।
34यदि कोई उन देवताओं के साथ अच्छा या
बुरा व्यवहार करे, तो वे उसके विषय में कुछ
नहीं कर सकते। वे न तो किसी को राजा बना
सकते हैं और न किसी को सिंहासन से उतार
सकते हैं। 35वे न तो धन दे सकते हैं और न कोई
सिक्का। यदि कोई व्यक्ति उनके लिए मन्नत
माने और उसे पूरा न करे, तो वे उस से लेखा
नहीं माँगेंगे। 36वे न तो मृत्यु से किसी मनुष्य
की रक्षा कर सकते हैं और न बलवान् के हाथ
से दुर्बल को छुड़ा सकते हैं। 37वे न तो अन्धे
को दृष्टि प्रदान कर सकते हैं और न निस्सहाय
को सहारा दे सकते हैं। 38वे विधवाओं पर दया
नहीं करते और अनाथों की सुधि नहीं लेते। 39वे
पर्वत के पत्थरों के सदृश हैं, लकड़ी के ऐसे
टुकड़े हैं, जो सोने और चाँदी से मढ़ दिये गये

---

* जो व्यवस्था की दृष्टि में अशुद्ध थीं। + इस्राएल में पुरुष ही पुरोहित का कार्य कर सकते थे।

19 भज 115 : 5 **27** प्रज्ञा 13 : 16; बेल 3 **29** लेव 15 : 19; 12 : 2 **35** प्रज्ञा 14 : 29 **38** भज 146 :9 **39** यश 42 : 17; हब 2 : 19

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हैं। जो लोग उनकी उपासना करते हैं, उन्हें
लज्जित होना पड़ेगा। 40इसलिए लोग यह कैसे
सोच या कह सकते हैं कि वे ईश्वर हैं?

लज्जाजनक प्रथाएँ

41विडंबना की बात यह है कि स्वयं
कसदी लोग अपनी मूर्तियों का अपमान करते
हैं। जब वे किसी गूँगे को देखते, जो बोल नहीं
सकता, तो वे उसे बेल-देवता के सामने ले जा
कर प्रार्थना करते हैं कि वह उसे बोलने की
शक्ति दे, मानो बेल-देवता उनकी प्रार्थना सुन
सकता है। 42वे इस पर विचार-विमर्श और इन
देवताओं का परित्याग नहीं कर पाते, क्योंकि
उन में समझ नहीं है। 43वहाँ की भक्त स्त्रियाँ
सिर पर डोरियाँ लपेट कर गलियारों में बैठी हुई
भूसी की धूप जलाती हैं। जब उन में किसी को
कोई पथिक ले जाता और उस से संभोग करता
है, तो वह लौट कर अपनी पड़ोसिन की हँसी
उड़ाती है, जो नहीं चुनी गयी और जिसकी
डोरियाँ सिर पर से नहीं उतारी गयीं। 44उन
देवताओं से जो कुछ सम्बन्धित है, वह सब
धोखा है। तो लोग यह कैसे सोच या कह सकते
हैं कि वे ईश्वर हैं?

45 बढ़इयों और सुनारों ने उन्हें जैसा
बनाना चाहा, उस से भिन्न वे और कुछ नहीं हो
सकतीं। 46उन मूर्तियों के रचयिता बहुत समय
तक जीवित नहीं रहते; 47इसलिए उनके द्वारा
बनायी वस्तुएँ ईश्वर कैसे हो सकती हैं? इस
प्रकार वे लोग अपने बाद की पीढ़ियों के लिए
धोखा और कलंक छोड़ जाते हैं। 48जब उन
देवताओं को युद्ध या विपत्तियों का सामना
करना पड़ता है, तो पुजारी आपस में यह
परामर्श करते हैं कि हम उन्हें ले जा कर कहाँ
छिपायें। 49वे क्यों नहीं समझते कि जो मूर्तियाँ
युद्ध या विपत्तियों से अपनी रक्षा करने में
असमर्थ हैं, वे ईश्वर नहीं हो सकतीं? 50वे सोने
और चाँदी से मढ़ी हुई वस्तुएँ हैं; इसलिए बाद
में यह प्रकट होगा कि वे धोखा मात्र हैं। 51सभी
राष्ट्रों और राजाओं के लिए यह स्पष्ट होगा कि
वे देवता नहीं, बल्कि मनुष्यों के हाथों की
कृतियाँ हैं, जिन में कोई दिव्य शक्ति विद्यमान
नहीं। 52कौन और प्रमाण चाहता है कि वे ईश्वर
नहीं हैं?

53 वे न तो देश पर किसी राजा को नियुक्त
करतीं और न मनुष्यों को वर्षा प्रदान करती हैं।
54वे न तो किसी को न्याय दिलातीं और न
अन्याय रोकती हैं। 55वे आकाश और पृथ्वी के
बीच उड़ने वाले कौओं की तरह असमर्थ हैं।
यदि सोने और चाँदी से मढ़ी हुई लकड़ी की उन
देवमूर्तियों के मन्दिर में आग लग जाती है, तो
उनके पुजारी भाग कर बच जाते हैं, किन्तु वे
स्वयं धरनों के समान भस्म हो जाती हैं। 56वे
राजा या शत्रु का विरोध करने में असमर्थ हैं।
तो लोग यह कैसे सोच या कह सकते हैं कि वे
ईश्वर हैं?

57सोने और चाँदी से मढ़ी हुई लकड़ी की
वे देवमूर्तियाँ न तो चोरों और न लुटेरों से बच
सकती हैं। 58ये लोग, जो उन से अधिक
बलवान् हैं, सोना, चाँदी और उन्हें ढकने वाले
वस्त्र उतार कर ले जाते हैं और वे उन से अपनी
रक्षा नहीं कर पातीं। 59वह राजा, जो अपने
अधिकार की रक्षा करने में समर्थ है; या घर का
वह कलश, जो मालिक के काम आता है; या
वह द्वार, जिस से घर का सामान सुरक्षित रहता
है; या राजमहल में लकड़ी का खम्भा— ये सब
उन झूठी देवमूर्तियों से श्रेष्ठ हैं। 60सूर्य, चन्द्रमा
और तारे चमकते हैं और प्रभु के आदेश के
अनुसार मनुष्यों की सेवा करते हैं। 61कौंधती
हुई बिजली भी, जो देखने में सुन्दर है, और हवा
भी, जो हर प्रदेश में बहती है, उसकी आज्ञा
मानती है। 62जब परमेश्वर बादलों को समस्त
पृथ्वी पर मँडराने का आदेश देता है, तो वे
उसका पालन करते हैं। 63जो आग ऊपर से आ
कर पहाड़ और वन को जलाती है, वह भी वही
काम करती है, जो उसे सौंपा गया है। सौन्दर्य
या सामर्थ्य की दृष्टि से वे मूर्तियाँ इन में से
किसी का मुकाबला नहीं कर सकतीं। 64वे न
तो न्याय दिला सकतीं और न किसी का उपकार
कर सकतीं। इस से पता चलता है कि उनके

45 यश 40 : 19-20 **60** भज 104 : 19 **70** यिर 10 : 5

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

विषय में न तो माना अथवा कहा जा सकता है
कि वे ईश्वर हैं। 65इसलिए तुम जानते हो कि
वे ईश्वर नहीं हैं; उन से मत डरो।
66 वे किसी राजा को न तो अभिशाप दे
सकतीं और न आशिष। 67वे न तो राष्ट्रों को
आकाश में चिह्न दिखा सकतीं, न सूर्य की तरह
चमक सकतीं और न चन्द्रमा की तरह प्रकाश
दे सकती हैं। 68जंगली पशु उन से श्रेष्ठ हैं;
क्योंकि वे संकट के समय कहीं भाग कर अपनी
रक्षा करने में समर्थ हैं। 69इन सब बातों से किसी
भी तरह ज्ञात नहीं होता कि वे ईश्वर हैं।
इसलिए उन से मत डरो। 70जैसे ककड़ी के खेत
का चंचा-पुरुष किसी की रक्षा नहीं कर सकता,
वैसे ही सोने और चाँदी से मढ़ी हुई लकड़ी की
वे देवमूर्तियाँ भी। 71सोने और चाँदी से मढ़ी हुई
उन लोगों की लकड़ी की देवमूर्तियाँ बगीचे की
उस कँटीली झाड़ी के सदृश हैं, जिस पर पक्षी
बैठ जाते हैं, या उस शव के समान, जो अँधेरी
कबर में रखा हुआ है। 72यदि तुम देखोगे कि
बैंगनी और मलमल* के उनके वस्त्र सड़ जाते
हैं, तो समझोगे कि वे ईश्वर नहीं हैं। अन्त में
वे भी कीड़ों का आहार बन जायेंगी। वे देश के
लिए कलंक का कारण हैं। 73धार्मिक मनुष्य के
लिए यही अच्छा है कि उसके यहां देवमूर्तियाँ
नहीं हों : ऐसे व्यक्ति को लज्जित नहीं होना
पड़ेगा।

* मूल में "संगमरमर"।

शेष-दानिएल

दानिएल ग्रंथ के यूनानी संस्करण में मुख्यतः तीन अतिरिक्त अंश मिलते हैं :

(1) अजर्याह की प्रार्थना और तीन युवकों का गीत (दानिएल 3 : 24- 90)

(2) सूसन्नाह (दानिएल अध्याय 13)

(3) बेल-देवता और अजगर (दानिएल अध्याय 14)

स्पष्ट नहीं है कि ये अतिरिक्त अंश यूनानी पाठ के प्रेक्षप मात्र हैं अथवा इब्रानी-अरामी पाठ की मौलिक रचनाएं हैं। इससे यह संकेत मिलता है कि दानिएल ग्रंथ "पुराना विधान" के रचनाकाल के अन्तिम चरण की एक पुस्तक है।

(1) अजर्याह की प्रार्थना और तीन युवकों का गीत

(शेष-दानिएल 3 : 24-90)

पुस्तक-परिचय

यहूदियों के आराधना-गीतों के आधार पर यह एक भक्ति-रचना है, जो साधारणतः दानिएल-ग्रंथ के तीसरे अध्याय में पद 24-90 के रूप में सम्मिलित की जाती है। हनन्याह, अजर्याह और मीशाएल (जिनका दरबारी नाम क्रमशः शद्रक, अबेदनगो और मेशक है) युवक दानिएल के साथ हैं।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

अजर्याह का भजन	1-22
भट्ठी का वर्णन	23-27
तीन युवकों का भजन	28-68

[बेबीलोन के राजा नबूकदनेस्सर ने सोने की एक विशाल मूर्ति बनवायी और उसे दूरा नामक मैदान में स्थापित किया। तब उसने आदेश दिया कि साम्राज्य के सभी उच्चाधिकारी उपस्थित हों और मूर्ति के सम्मुख गिरकर उसका सम्मान करें। सभी अधिकारियों ने आकर मूर्ति के प्रति

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सम्मान प्रकट किया। लेकिन यहूदियों में से नियुक्त तीन युवा दरबारियों ने राजाज्ञा का पालन नहीं किया। उनके नाम हैं : हनन्याह, मीशाएल और अजर्याह। राजा का क्रोध भड़क उठा। उसने आदेश दिया कि तीनों को धधकती हुई अग्नि की भट्ठी में फेंक दिया जाए।]

भट्ठी में अजर्याह की प्रार्थना

1 परमेश्वर की स्तुति गाते हुए और प्रभु
का गुणगान करते हुए तीनों युवक लपटों के
बीच टहलने लगे। 2अजर्याह खड़ा हो कर
प्रार्थना करने लगा और उसने आग की लपटों
के बीच यह कहना आरम्भ किया :

3 "हमारे पूर्वजों के प्रभु-परमेश्वर!
तू धन्य है;
तेरा नाम सदा-सर्वदा प्रशंसनीय और महिमामय है।

4 "तूने हमारे साथ जो कुछ किया,
उसे तूने न्याय के अनुसार किया;
तेरी प्रतिज्ञाएँ पूरी हो जाती हैं,
तेरे मार्ग सीधे और तेरे विचार उचित होते हैं।
5 हमारे पूर्वजों के पावन नगर यरूशलेम पर
और हम पर जो विपत्तियाँ तूने पहुँचायी हैं,
वे न्यायसंगत हैं, क्योंकि हमने पाप किये हैं।
हमारे अपने पापों के अनुसार
तूने हमारे साथ उचित व्यवहार किया है;
6 क्योंकि हमने पाप किया,
तुझे त्याग कर कुकर्म किया
और हर तरह के अपराध किये।
7 हमने तेरी आज्ञाओं पर ध्यान नहीं दिया,
न उनका पालन ही किया,
और न तेरे आदेशानुसार अपने हित के ही काम किये।
8 हम पर जो घोर विपदा तूने ढा दी है,
और हमारे साथ जो कुछ किया है,
वह सही और न्यायसंगत है।
9 तूने हमें ऐसे शत्रुओं के हाथों सौंप दिया है,
जो अन्यायी और अधर्मी हैं,
ऐसे दुष्ट राजा के हाथों में दे दिया है, जो सब से अन्यायी है।
10 अब हम अपना मुँह तक खोलने का साहस नहीं कर सकते;
तेरे भक्त सेवकों को लज्जा और अपमान सहने पड़ते हैं।

11 "तू अपने नाम का ध्यान रख कर
हमें सदा के लिए न त्याग;
हमारे लिए अपना विधान रद्द न कर।
12 अपने प्रेमपात्र अब्राहम,
अपने सेवक इसहाक और अपने भक्त इस्राएल का स्मरण कर।
अपनी कृपा-दृष्टि हम पर से न हटा।
13 तूने उन से यह प्रतिज्ञा की थी
कि 'आकाश के तारों की तरह
और समुद्रतट के रेतकणों की तरह
तुम्हारे वंशजों को असंख्य बना दूँगा।'
14 स्वामी! संख्या की दृष्टि से,
हम सब राष्ट्रों से छोटे हो गये हैं,
और हमारे पापों के कारण
समस्त संसार में हमारा अपमान हो रहा है।
15 अब तो हममें न कोई शासक है, न नबी, न नेता,
हमारे पास न अग्नि-बलि है, न अन्न-बलि;
न कोई भेंट, न धूपदान।
कोई स्थान ऐसा नहीं, जहाँ तेरी कृपादृष्टि प्राप्त करने के लिए
हम तुझे प्रथम फल अर्पित करें।
16 हमारा पश्चात्तापी हृदय और हमारा विनम्र मन
मेढ़ों, साँड़ों और हजारों पुष्ट भेड़ों की बलि-जैसे तुझे स्वीकार हों।
आज तेरे लिए यही हमारी बलि हो।
17 ऐसा कर कि हम पूर्ण रूप से तेरे मार्ग पर चलें,

---

4 एज्रा 9 : 15 **5** तोब 13 : 9; दान 9 : 16 **10** भज 39 : 9 **12** 2 इत 20 : 7; यश 41 : 8 **15** हो 3 : 4; शोक 2 : 9 **16** भज 51 : 16–17; हो 6 : 6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

क्योंकि तुझ पर भरोसा रखने वाले कभी
निराश नहीं होते।
18अब हम यह दृढ़ संकल्प करते हैं
कि हम तेरे मार्ग पर चलेंगे,
तुझ पर श्रद्धा रखेंगे,
और तेरे दर्शनों की कामना करते रहेंगे।
19हमें निराश न होने दें, बल्कि हम पर अपनी
सहनशीलता
तथा महती दया प्रदर्शित कर।
20प्रभु! अपने अपूर्व कार्यों द्वारा हमारी रक्षा कर
और अपने नाम को महिमान्वित कर।
जो तेरे सेवकों का बुरा करते हैं,
वे सब लज्जित हों।
21वे कितने ही शक्तिशाली क्यों न हों,
वे निराश हो जायें
और उनकी शक्ति टूट जाये।
22वे जान जायें कि प्रभु, तू ही एक अनन्य
परमेश्वर है,
और तेरी महिमा सारी पृथ्वी पर व्याप्त है।''

अग्नि-भट्ठी में संरक्षण

23 इस बीच राजा के नौकर, जिन्होंने उन्हें
भट्ठी में डाल दिया था, भट्ठी में तेल, डामर, सन
के रेशे और इन्धन झोंक रहे थे। 24आग की लपटें
भट्ठी से बारह मीटर+ ऊपर उठ रही थीं 25और
उन्होंने फैल कर आसपास खड़े कसदियों को
भस्म कर दिया। 26किन्तु अजर्याह और उसके
साथियों के साथ प्रभु का दूत भी भट्ठी में उतर
आया। उसने आग की लपटें बाहर की ओर कर
दीं और 27भट्ठी के बीचोंबीच ऐसी ठण्डी हवा
भर दी, जैसी ओसभरी भोर में चलती है।
इसलिए आग उन्हें छू तक नहीं पायी, न ही उन्हें
कोई हानि या कष्ट हुआ।

तीन युवकों का स्तुतिगान

28तब वे तीनों युवक एक स्वर से, भट्ठी में ही,
परमेश्वर की महिमा, उसकी स्तुति और
सराहना इस प्रकार गाने लगे:

29 ''हमारे पूर्वजों के प्रभु परमेश्वर!
तू धन्य है,
सदा-सर्वदा प्रशंसनीय और सर्वोच्च है।
30तेरा महिमामय पवित्र नाम धन्य है,
सदा-सर्वदा परम स्तुत्य और सर्वोच्च है।
31तू अपने महिमामय पवित्र मन्दिर में धन्य है
सदा-सर्वदा परम सराहनीय और अत्यन्त
महिमान्वित है।
32++तू अपने राज्य के सिंहासन पर धन्य है,
सदा-सर्वदा सराहनीय और सर्वोच्च है।
33तू महागर्त्त की थाह लेता और करूबों पर
विराजमान है।
तू धन्य है, सदा-सर्वदा स्तुत्य और महिमान्वित
है।
34आकाश के मेहराब में विराजमान प्रभु!
तू धन्य है, सदा-सर्वदा सराहनीय और
महिमान्वित है।

35 ''प्रभु की समस्त कृतियो!
प्रभु को धन्य कहो। उसकी स्तुति करो और
सदा-सर्वदा उसकी महिमा गाओ।*
36प्रभु के स्वर्ग-दूतो! प्रभु को धन्य कहो।
उसकी स्तुति करो और सदा-सर्वदा उसकी
महिमा गाओ।
37आकाश और उच्चतर आकाश! प्रभु को धन्य
कहो।
उसकी स्तुति करो और सदा-सर्वदा उसकी
महिमा गाओ।
38आकाश के ऊपर के जल! प्रभु को धन्य
कहो।
उसकी स्तुति करो और सदा-सर्वदा उसकी
महिमा गाओ।
39विश्वमण्डल!** प्रभु को धन्य कहो।
उसकी स्तुति करो और सदा-सर्वदा उसकी
महिमा गाओ।
40सूर्य और चन्द्रमा! प्रभु को धन्य कहो।

+ मूल में, ''उनचास हाथ''। ++ पदों के क्रम में मुख्य हस्तलेखों में थोड़ा अन्तर है। * अथवा इस ग्रंथ में प्रयुक्त शब्दावली के अनुसार : ''सदा-सर्वदा उसकी सराहना और सर्वोच्च स्तुति करो''। ** शब्दशः ''प्रभु की समस्त सेनाओ''।

19 भज 119 : 124 **22** भज 59 : 13 **26** दान 3 : 25 **33** यश 37 : 16 **37** भज 148 : 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उसकी स्तुति करो और सदा-सर्वदा उसकी
महिमा गाओ।
41आकाश के तारामण्डल! प्रभु को धन्य कहो।
उसकी स्तुति करो और सदा-सर्वदा उसकी
महिमा गाओ।
42वर्षा और ओस! तुम दोनों प्रभु को धन्य
कहो।
उसकी स्तुति करो और सदा-सर्वदा उसकी
महिमा गाओ।
43पवनो! तुम सब प्रभु को धन्य कहो।
उसकी स्तुति करो और सदा-सर्वदा उसकी
महिमा गाओ।
44अग्नि और ताप! प्रभु को धन्य कहो।
उसकी स्तुति करो और सदा-सर्वदा उसकी
महिमा गाओ।
45शीत और ग्रीष्म! प्रभु को धन्य कहो।
उसकी स्तुति करो और सदा-सर्वदा उसकी
महिमा गाओ।
46ओस और तुषार! प्रभु को धन्य कहो।
उसकी स्तुति करो और सदा-सर्वदा उसकी
महिमा गाओ।
47ठण्ड और पाले! प्रभु को धन्य कहो।
उसकी स्तुति करो और सदा-सर्वदा उसकी
महिमा गाओ।
48बर्फ और हिमपात! प्रभु को धन्य कहो।
उसकी स्तुति करो और सदा-सर्वदा उसकी
महिमा गाओ।
49रात और दिन! प्रभु को धन्य कहो।
उसकी स्तुति करो और सदा-सर्वदा उसकी
महिमा गाओ।
50प्रकाश और अन्धकार! प्रभु को धन्य कहो।
उसकी स्तुति करो और सदा-सर्वदा उसकी
महिमा गाओ।
51बिजली और बादलो! प्रभु को धन्य कहो।
उसकी स्तुति करो और सदा-सर्वदा उसकी
महिमा गाओ।
52पृथ्वी! प्रभु को धन्य कहे,
उसकी स्तुति करे और सदा-सर्वदा उसकी
महिमा गाये।
53पर्वतो और पहाड़ियो! प्रभु को धन्य कहो।
उसकी स्तुति करो और सदा-सर्वदा उसकी
महिमा गाओ।
54पृथ्वी के सब वनस्पतियो! प्रभु को धन्य
कहो।
उसकी स्तुति करो और सदा-सर्वदा उसकी
महिमा गाओ।
55झरनो! प्रभु को धन्य कहो।
उसकी स्तुति करो और सदा-सर्वदा उसकी
महिमा गाओ।
56समुद्रो और नदियो! प्रभु को धन्य कहो।
उसकी स्तुति करो और सदा-सर्वदा उसकी
महिमा गाओ।
57मकर और जलचरगण! प्रभु को धन्य कहो।
उसकी स्तुति करो और सदा-सर्वदा उसकी
महिमा गाओ।
58आकाश के समस्त पक्षियो! प्रभु को धन्य
कहो।
उसकी स्तुति करो और सदा-सर्वदा उसकी
महिमा गाओ।
59सब जंगली और पालतू पशुओ! प्रभु को धन्य
कहो।
उसकी स्तुति करो और सदा-सर्वदा उसकी
महिमा गाओ।
60मनुष्य की सन्तति! प्रभु को धन्य कहो।
उसकी स्तुति करो और सदा-सर्वदा उसकी
महिमा गाओ।
61इस्राएलियो! प्रभु को धन्य कहो।
उसकी स्तुति करो और सदा-सर्वदा उसकी
महिमा गाओ।
62प्रभु के पुरोहितो! प्रभु को धन्य कहो।
उसकी स्तुति करो और सदा-सर्वदा उसकी
महिमा गाओ।
63प्रभु के सेवको! प्रभु को धन्य कहो।
उसकी स्तुति करो और सदा-सर्वदा उसकी
महिमा गाओ।
64धर्मियों की आत्माओ और उनके प्राणो! प्रभु
को धन्य कहो।
उसकी स्तुति करो और सदा-सर्वदा उसकी

48 यश 45 : 7 53 भज 148 : 9 61 भज 135 : 19 64 इब्र 12 : 23

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

महिमा गाओ।
65सन्तो और हृदय के दीन लोगो! प्रभु को धन्य कहो।
उसकी स्तुति करो और सदा-सर्वदा उसकी महिमा गाओ।
66"हनन्याह, अजर्याह और मीशाएल! प्रभु को धन्य कहो।
उसकी स्तुति करो और सदा-सर्वदा उसकी महिमा गाओ।
उसने हमें अधोलोक से छुड़ाया है
और मृत्यु के गर्त्त से बचाया है;
उसने धधकती हुई भट्ठी में हमें सुरक्षित रखा,
और अग्निकुण्ड से हमें मुक्त किया।
67प्रभु की सराहना करो; क्योंकि वह भला है।
उसकी करुणा सदा बनी रहती है।
68प्रभु के सब आराधको!
सर्वेश्वर परमेश्वर को धन्य कहो;
उसका स्तुतिगान और गुणगान किया करो,
क्योंकि उसकी करुणा सदा बनी रहती है।"

65 भज 18 : 25; सप 2 : 3 **66** 116 : 8 **67** भज 136 : 26; 1 मक 4 : 24 **68** भज 136 : 2

(2) सूसन्नाह

(शेष-दानिएल, अध्याय 13)

पुस्तक-परिचय

यह पुस्तिका दानिएल ग्रंथ के यूनानी संस्करण का 13वाँ अध्याय मानी जाती है। इसे कभी बाइबिल का "लघु उपन्यास" कहा गया है, और सचमुच यह यहूदियों की कथा-शैली का अनुपम उदाहरण है। इसमें प्रतीक-भाषा का प्रयोग हुआ है। "सूसन्नाह" का अर्थ है "सोसन पुष्प" और "दानिएल" का "परमेश्वर न्याय करता है"। धर्मिणी तथा सुषमा-शालिनी सूसन्नाह एक युवा नबी द्वारा दो कुकर्मी वयोवृद्ध न्यायियों के हाथ से छुड़ायी जाती है।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

दो धर्मवृद्ध न्यायाधीशों की कुवासना	1-27
सूसन्नाह पर झूठा दोषारोपण	28-41
दानिएल का हस्तक्षेप और न्याय की विजय	42-64

सूसन्नाह की सुन्दरता

1 बेबीलोन नगर में योआकीम नामक एक
व्यक्ति रहता था। 2उसका विवाह हिलकीयाह
की पुत्री सूसन्नाह से हुआ था। वह अत्यन्त
सुन्दर और प्रभु-भक्त थी। 3उसके माता-पिता
धार्मिक थे और उन्होंने अपनी पुत्री को मूसा की
व्यवस्था के अनुसार बढ़ाया-सिखाया था।
4योआकीम बहुत धनी था और उसके घर से
लगी हुई एक सुन्दर वाटिका थी। यहूदी लोग
उसके यहाँ आया-जाया करते थे, क्योंकि वह
उन में सब से अधिक प्रतिष्ठित था। 5उस वर्ष
लोगों ने जनता में से दो धर्मवृद्धों को न्यायकर्ताओं
के रूप में नियुक्त किया था। वे ऐसे व्यक्ति थे,
जिनके विषय में प्रभु ने कहा था, "बेबीलोन
में अधर्म उन धर्मवृद्धों से प्रारम्भ हुआ, जो
न्यायकर्ता थे और जनता पर शासन करने का
ढोंग रचते थे"। 6वे योआकीम के यहाँ आया
करते थे और जिनका कोई मुकदमा रहता, वे
सब उनके पास आते थे।

दो धर्मवृद्धों की कुचेष्टा

7 जब दोपहर के समय लोग चले जाते,
तो सूसन्नाह अपने पति की वाटिका में टहलने
आया करती थी। 8दोनों धर्मवृद्ध उसे प्रतिदिन
वाटिका में जाते और टहलते देखते थे और उन

3 लू 1 : 6 **5** यिर 29 : 21-23

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

में सूसन्नाह के लिए प्रबल काम–वासना उत्पन्न हुई। [9]उनका मन इतना विकृत हो गया कि उन्होंने स्वर्ग की ओर नहीं देखा और नैतिकता के नियम भुला दिये। [10-11]उसके प्रति काम–वासना तो दोनों में थी, किन्तु वे लज्जा के कारण एक दूसरे पर यह प्रकट नहीं कर सके। दोनों उसके पास जाने के इच्छुक थे। [12]अत: वे प्रतिदिन बड़ी उत्सुकता से उसे देखने का अवसर ढूँढ़ते थे।

13 एक दिन उन्होंने एक दूसरे से कहा, "भोजन का समय हो गया; हम घर चलें।" [14]वे चल दिये और अपने–अपने रास्ते गये, किन्तु जल्द ही घूम कर वे वहीं आमने–सामने हो गये। एक दूसरे से पूछने पर उन्होंने उसके प्रति अपनी–अपनी काम–पीड़ा स्वीकार की। तब वे इस पर सहमत हो गये कि हम किस समय उसे अकेला पा सकें।

15 वे उपयुक्त अवसर की ताक में ही थे कि सूसन्नाह दो सेविकाओं के साथ अपनी आदत के अनुसार वाटिका में आयी। उस दिन बहुत गरमी थी, इसलिए वह स्नान करना चाहती थी।

16 उन दोनों धर्मवृद्धों को छोड़ कर, जो छिप कर उसे ताक रहे थे, वहां कोई नहीं था। [17]सूसन्नाह ने अपनी सेविकाओं से कहा, "जा कर तेल और उबटन ले आओ और वाटिका का फाटक बन्द कर दो, जिससे मैं स्नान कर सकूँ।" [18]उन्होंने ऐसा ही किया और वाटिका के फाटक बन्द कर वे आज्ञानुसार चीजें लाने के लिए पार्श्व फाटक से हो कर बाहर निकलीं। वे उन धर्मवृद्धों को नहीं देख पायीं, क्योंकि वे छिपे थे।

19 सेविकाओं बाहर गयी ही थीं कि दोनों धर्मवृद्ध उठे, और सूसन्नाह के पास दौड़ते हुए आये और उस से बोले, [20]"देखो, वाटिका का फाटक बन्द है, कोई भी हमें नहीं देख सकता। हम तुम पर आसक्त हैं। [21]हमारे साथ रमण करना स्वीकार करो, नहीं तो हम तुम्हारे विरुद्ध यह साक्षी देंगे कि कोई युवक तुम्हारे साथ था और इसलिए तुमने अपनी सेविकाओं को बाहर भेज दिया।" [22]सूसन्नाह ने आह भर कर कहा, "मुझे कोई रास्ता नहीं दिखता। यदि मैं ऐसा करूँगी तो प्राणदण्ड के योग्य हो जाऊँगी। यदि मैं ऐसा नहीं करूँगी, तो आपके हाथों से नहीं बच पाऊँगी। [23]फिर भी प्रभु के सामने पाप करने की अपेक्षा निर्दोष ही आपके हाथ पड़ जाना मेरे लिए अच्छा है। अत: मैं ऐसा नहीं करूँगी।" [24]इस पर सूसन्नाह ऊँचे स्वर से चिल्लाने लगी; किन्तु दोनों धर्मवृद्ध उसके विरुद्ध चिल्लाने लगे और [25]उन में एक ने दौड़ कर वाटिका का फाटक खोल दिया। [26]जब घर के लोगों ने वाटिका में चिल्लाने की आवाज सुनी, तो यह देखने के लिए कि सूसन्नाह को क्या हुआ, वे दौड़ते हुए आये और उन्होंने पार्श्व फाटक से वाटिका में प्रवेश किया। [27]जब धर्मवृद्धों ने अपना बयान दिया, तो सेवकों को बड़ा धक्का लगा; क्योंकि सूसन्नाह पर इस प्रकार का अभियोग कभी नहीं लगाया गया था।

सूसन्नाह पर झूठा दोषारोपण

28 दूसरे दिन, जब जनता उसके पति योआकीम के यहाँ एकत्र हुई, तो वे दुष्ट धर्मवृद्ध सूसन्नाह को प्राणदण्ड दिलाने का षड्यन्त्र रच कर आ पहुँचे। [29]उन्होंने जनता के सामने कहा, "हिलकीयाह की पुत्री, योआकीम की पत्नी, सूसन्नाह को बुलाओ।" लोगों ने उसे बुला भेजा। [30]वह अपने माता–पिता, अपने बच्चों और अपने सब कुटुम्बियों के साथ आयी। [31]सूसन्नाह अत्यन्त सुडौल और रूपवती थी। वह घूँघट डाली हुई थी। [32]अत: उन दुष्टों ने उसका सौन्दर्य देखने और आँखों को तृप्त करने के लिए घूँघट हटाने को कहा। [33]उसके सम्बन्धी और जितने भी लोग उसे देख रहे थे, वे सब–के–सब रोने लगे। [34]उन दो धर्मवृद्धों ने सभा में खड़े हो कर उसके सिर पर अपने हाथ रख दिये। [35]वह रोती हुई स्वर्ग की ओर देखती रही; क्योंकि उसका हृदय प्रभु पर भरोसा रखता था। [36]धर्मवृद्धों ने यह कहा, "जब हम अकेले वाटिका में टहल रहे थे, तब यह दो सेविकाओं

10 अय्य 24 : 15 **22–23** 2 शम 24 : 14; यो 8 : 4–5; लेव 20 : 10 **34** लेव 24 : 14

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

के साथ वाटिका में आयी। इसने वाटिका का
फाटक बन्द करा दिया और सेविकाओं को
बाहर भेजा। 37तब एक युवक, जो छिपा हुआ
था, पास आ कर इसके साथ लेट गया। 38हम
वाटिका के एक कोने से यह पाप देख कर
दौड़ते हुए उनके पास आये और 39हमने दोनों
को रमण करते देखा। हम उस युवक को नहीं
पकड़ पाये; क्योंकि वह हम से बलवान् था और
वाटिका का फाटक खोल कर भाग गया।
40हमने इसे पकड़ लिया और पूछा कि वह
युवक कौन है, किन्तु इसने उसका नाम नहीं
बताया। 41हम इन बातों के साक्षी हैं।'' सभा
ने उन पर विश्वास किया, क्योंकि वे धर्मवृद्ध
और न्यायकर्ता थे। लोगों ने सूसन्नाह को
प्राणदण्ड की आज्ञा दी।

दानिएल द्वारा सूसन्नाह की रक्षा

42 इस पर सूसन्नाह ने ऊँचे स्वर से पुकार
कर कहा, ''शाश्वत परमेश्वर! तू सब रहस्य
और भविष्य में होने वाली घटनाएँ जानता है।
43तू जानता है कि इन्होंने मेरे विरुद्ध झूठी
गवाही दी है। इन्होंने जिन बुरी बातों का
अभियोग मुझ पर लगाया है, मैंने उन में से एक
भी नहीं किया—फिर भी मुझे मरना होगा।''

44 प्रभु ने उसकी प्रार्थना सुन ली। जब
लोग उसे प्राणदण्ड के लिए ले जा रहे थे, 45तो
परमेश्वर ने दानिएल नामक युवक में एक दिव्य
प्रेरणा उत्पन्न की।* 46वह पुकार कर कहने
लगा, ''मैं इसके रक्त का दोषी नहीं हूँ।''47इस
पर सब लोग उसकी ओर देखने लगे और बोले,
''तुम्हारे कहने का अभिप्राय क्या है?''48उसने
उन के मध्य खड़ा हो कर कहा, ''इस्राएलियो!
आप लोगों की बुद्धि कहाँ है, जो आप जाँच
और पूरी जानकारी के बिना इस्राएल की पुत्री
को प्राणदण्ड दे रहे हैं? 49आप न्यायालय लौट
जायें, क्योंकि धर्मवृद्धों ने इसके विरुद्ध झूठी
गवाही दी है।'' 50इस पर लोग तुरन्त लौट गये
और वृद्ध जनों ने दानिएल से कहा, ''आइए,
हमारे बीच बैठिए और हमें अपनी बात बताइए;
क्योंकि परमेश्वर ने आप को धर्मवृद्ध-जैसा
अधिकार प्रदान किया है।'' 51दानिएल ने उन
से कहा, ''इन दोनों को एक-दूसरे से अलग कर
दीजिए और मैं इन से पूछताछ करूँगा।'' 52जब
दोनों को अलग कर दिया गया, तो दानिएल ने
एक को बुला कर उस से कहा, ''अधर्म करते-
करते तेरे बाल पक गये। अब तुझे अपने पुराने
पापों का दण्ड मिलने वाला है। 53तू निर्दोषों को
दण्ड दे कर और दोषियों को निर्दोष ठहरा कर
अन्यायपूर्वक विचार किया करता था, जब कि
प्रभु ने कहा है : 'तुम निर्दोष और धर्मी को
प्राणदण्ड नहीं दोगे।' 54अब, यदि तूने इसे
देखा, तो हमें बता कि तूने किस वृक्ष के नीचे
दोनों को एक साथ देखा।'' उसने उत्तर दिया,
''बाबुल के नीचे।'' 55दानिएल ने कहा, ''रे
बगुला-भगत!** इतना बड़ा झूठ बोल कर तूने
अपना सिर गँवा दिया है! परमेश्वर के दूत को
परमेश्वर से यह आदेश मिल चुका है कि वह
तुझे दो टुकड़े कर दे।''

56दानिएल ने उसे ले जाने की आज्ञा दे कर
दूसरे धर्मवृद्ध को बुलाया और उस से कहा, ''तू
यहूदा की नहीं, कनान की सन्तान है। सौन्दर्य
ने तुझे पथभ्रष्ट किया और वासना ने तेरा हृदय
दूषित कर दिया है। 57तुम लोग इस्राएल की
पुत्रियों के साथ इस प्रकार का व्यवहार करते
थे और वे डर के मारे तुम्हारा अनुरोध स्वीकार
करती थीं। किन्तु यह यहूदा की पुत्री है, जो
तुम्हारे अधर्म के सामने नहीं झुकी है। 58तो, मुझे
बता: तूने किस वृक्ष के नीचे दोनों को साथ
देखा?'' उसने उत्तर दिया, ''बलूत के नीचे।''
59इस पर दानिएल ने कहा, ''रे बालू की भीत!
तूने भी इतना बड़ा झूठ बोल कर अपना सिर
गँवा दिया है! परमेश्वर का दूत, हाथ में तलवार
लिये, प्रतीक्षा कर रहा है। वह तुझे दो भागों में

---

* शब्दशः, ''युवक के पवित्र आत्मा को जगाया।'' ** मूल में वृक्ष के नामों (बाबुल, बलूत) तथा दंडाज्ञा (टुकड़े करना, चीर डालना) में समध्वनि है; इसे अनुवाद में संबोधन के द्वारा व्यक्त किया गया है।

42 भज 44 : 21; 139 : 1–4 ; इब्र 4 : 13 **45** 2 इत 36 : 22 **46** मत 27 : 24 ; प्रे 18 : 6 **49** प्रज्ञा 4 : 8–9 ; प्रव 25 : 4 **53** नि 23 : 7 ; नीति 18 : 5

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

चीर डालेगा और इस प्रकार वह तुम दोनों का सर्वनाश करेगा।"

60 तब समस्त सभा ऊँचे स्वर से जयकार करते हुए परमेश्वर की स्तुति करने लगी, जो अपने पर भरोसा रखने वालों की रक्षा करता है।
61दानिएल ने उनके अपने शब्दों द्वारा दोनों धर्मवृद्धों की गवाही असत्य प्रमाणित कर दी,
इसलिए लोग उन पर टूट पड़े और 62उन्होंने मूसा
की व्यवस्था के अनुसार उन दुष्टों को वह दण्ड दिया, जिसे वे अपने पड़ोसी को दिलाना चाहते थे और लोगों ने दोनों का वध कर डाला। इस प्रकार उस दिन एक निर्दोष महिला की जीवन-रक्षा हुई।

63हिलकीयाह और उसकी पत्नी ने अपनी पुत्री सूसन्नाह के लिए परमेश्वर का स्तुतिगान किया और ऐसा ही उसके पति योआकीम और उसके सब सम्बन्धियों ने किया; क्योंकि उस में कोई अनौचित्य नहीं
पाया गया था। 64उस दिन के बाद दानिएल
लोगों के बीच बड़े सम्मान का पात्र बन गया।

62 व्य 19 : 19 ; नीति 19 : 5

(3) बेल देवता और अजगर

(शेष-दानिएल, अध्याय 14)

पुस्तक-परिचय

दानिएल-ग्रंथ के यूनानी अनुवाद के अन्त में ये दो लोकप्रिय कथाएं सम्मिलित हैं। इनसे ग्रंथ का 14वाँ अध्याय बनता है।

प्रथम कथा दानियल की सूझ-बूझ को स्पष्ट दिखाती है, जब वह जासूस की तरह बेल-देवता के संबंध में निरर्थक अंधविश्वासों का पर्दाफाश करते हैं। दूसरी कथा में काल्पनिक तत्व अधिक है : दानिएल बेबीलोन-निवासियों द्वारा पूजित आसुरी अजगर* को निर्जीव कर देते हैं और स्वयं चमत्कारिक ढंग से काल के ग्रास से बच जाते हैं। शिक्षा यह है कि धर्मनिष्ठ प्रभु-भक्त को किसी भी विपत्ति से नहीं डरना चाहिए।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

बेल देवता के पुजारी और दानिएल	1—22
दानिएल द्वारा अजगर का अन्त	23—27
दानिएल सिंह के खड्ड में से बचाये जाते हैं	28—42

बेल देवता के पुजारी

1 बेबीलोन का राजा अस्तयागेस अपने मृत पूर्वजों से जा मिला और फारस देश का सम्राट कुस्रू उसके राज्य का उत्तराधिकारी
हुआ। 2दानिएल उस समय सम्राट का मन्त्री
और उसके सब मित्रों में अधिक प्रतिष्ठित था।
3बेबीलोन के निवासी एक बेल देवता नामक मूर्ति की पूजा करते और उसे प्रतिदिन छः सौ किलो+ मैदा, चालीस भेड़ें और ढाई सौ लिटर
मदिरा चढ़ाया करते थे। 4सम्राट की भी उस में आस्था थी और वह प्रतिदिन उसकी पूजा करने जाया करता था। किन्तु दानिएल अपने ही परमेश्वर की आराधना करता था।
5 एक दिन सम्राट ने दानिएल से पूछा,

* अथवा पंखदार सर्प + मूल में "बारह अरतबै"

3 : यश 46 : 1; यिर पत्र 40 5 भज 115 : 4; व्य 4 : 16-17

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

"तुम बेल देवता की पूजा क्यों नहीं करते ?"
उसने उत्तर दिया, "मैं हाथ की बनायी मूर्तियों
की पूजा नहीं करता। मैं तो जीवन्त परमेश्वर,
स्वर्ग और पृथ्वी के स्रष्टा और जिसका अधिकार
सारे शरीरधारियों पर है, उसकी आराधना करता
हूँ।" 6सम्राट ने उस से पूछा, "क्या तुम बेल
देवता को जीवन्त ईश्वर नहीं मानते ? क्या तुम
यह नहीं देखते कि वह प्रतिदिन कितना खाता-
पीता है ?" 7तब दानिएल ने मुस्कुराते हुए
उत्तर दिया "महाराज ! धोखा मत खाइए। वह
तो भीतर से मिट्टी और बाहर से काँसा है;
उसने न तो कभी कुछ खाया और न पिया
है।"

8 इस पर सम्राट ने क्रोधित हो कर अपने
पुजारियों को बुला कर उन से कहा, "यदि तुम
मुझे यह नहीं बताओगे कि यह भोजन कौन
खाता है, तो तुम्हें मरना होगा। 9और यदि तुम
यह प्रमाणित कर दोगे कि स्वयं बेल देवता उसे
खाता है, तो दानिएल को मरना होगा; क्योंकि
उसने बेल देवता का उपहास किया है।" तब
दानिएल ने सम्राट से कहा, "जैसा आप कहते
हैं, वैसा ही हो।"

10 अपनी पत्नियों और बच्चों के अतिरिक्त
बेल-देवता के पुजारियों की संख्या सत्तर थी।
इसके बाद सम्राट स्वयं दानिएल के साथ बेल-
देवता के मन्दिर पहुँचा। 11बेल-देवता के
पुजारियों ने कहा, "देखिए, जब हम लोग
बाहर चले जायें तब महाराज ! आप भोजन मेज़
पर रखें और उसके साथ मदिरा को भी रख दें
और फिर दरवाज़ा बन्द कर उस पर अपनी
मुहर वाली अंगूठी की मुद्रा लगा दें। 12दूसरे दिन
सबेरे जब आप वापस आयें और यह न पायें
कि बेल देवता सब कुछ खा गया है, तो हमें मार
डालें, नहीं तो दानिएल को, जो हमारी निन्दा
कर रहा है।" 13वे निश्चिन्त थे, क्योंकि उन्होंने
मेज़ के नीचे गुप्त द्वार बना रखा था। उस में से
वे अन्दर चले जाया करते और चढ़ायी सामग्री
ले कर खा लिया करते थे।

दानिएल के कारण पोल खुल गई

14 पुजारियों के बाहर निकलने पर सम्राट
ने भोज्य-सामग्री बेल देवता के सामने रख दी।
इसके बाद दानिएल ने अपने सेवकों के द्वारा
राख मँगवा कर, केवल सम्राट की ही उपस्थिति
में, उसे सारे मन्दिर में छितरा दिया। बाहर
निकल कर उन्होंने दरवाज़ा बन्द कर लिया,
उस पर सम्राट की मुहर वाली अंगूठी की मुद्रा
लगा दी और चले गये। 15रात में पुजारी अपनी
पत्नियों और बच्चों के साथ हमेशा की तरह
आये और सब कुछ खा-पी गये।

16 दूसरे दिन सम्राट बड़े सबेरे उठा, और
मन्दिर पर आया। दानिएल भी उसके साथ था।
17सम्राट ने पूछा, "दानिएल ! मुहरें टूटी तो नहीं
हैं ?" उसने उत्तर दिया, "नहीं, टूटी नहीं हैं,
राजन् !" 18किवाड़ खुले, तो सम्राट ने मेज़ की
ओर देखा और उच्च स्वर से बोल उठा, "बेल
देवता ! तू महान् है ! तेरे सम्बन्ध में कोई धोखे
की बात नहीं, बिल्कुल नहीं !" 19किन्तु दानिएल
हँसा और उसने यह कहते हुए सम्राट को अन्दर
जाने से रोक लिया, "ज़रा फर्श की ओर तो
ध्यान दीजिए; देखिए कि ये पदचिह्न किन के
हैं।" 20सम्राट ने कहा, "हाँ, मैं पुरुषों, स्त्रियों
और बच्चों के पदचिह्न देख रहा हूँ।" 21इस
पर सम्राट बहुत कुपित हुआ और उसने उनकी
पत्नियों और बच्चों-सहित पुजारियों को
गिरफ़्तार करवाया। उन्हें उन गुप्त द्वारों के बारे
में बतलाना पड़ा, जिन में से आ कर वे मेज़ पर
रखी चीज़ें खाते थे। 22इस पर सम्राट ने उन्हें
मरवा डाला और बेल देवता की मूर्ति दानिएल
को सौंप दी। दानिएल ने उसे तथा उसका
मन्दिर नष्ट कर दिया।

अजगर का विनाश

23वहाँ एक बड़ा अजगर+ भी था, जिसकी
बेबीलोन के निवासी पूजा करते थे। 24सम्राट
ने दानिएल से कहा, "तुम इसके विषय में यह
नहीं कह सकते हो कि यह देवता जीवन्त नहीं
है। इसलिए इसकी पूजा करो।" 25पर दानिएल

+ अथवा, पंखदार सर्प।

25 मत 4 : 10 ; व्य 6 : 13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ने कहा, "मैं अपने प्रभु-परमेश्वर की ही
आराधना करता हूँ, क्योंकि वही जीवन्त
परमेश्वर है। 26महाराज! आप मुझे अनुमति दें,
तो मैं इस सर्प को बिना तलवार या डण्डे के ही
मार डालूँ।" सम्राट ने कहा, "मैं तुम्हें अनुमति
देता हूँ।" 27इस पर दानिएल ने डामर, चरबी
और केशों को एक साथ उबाला और उनके
लड्डू बना कर उन्हें अजगर के मुँह में डाल
दिया। उन्हें खा कर सर्प फूल कर फट गया।
तब दानिएल ने कहा, "देखिए, आप किसकी
पूजा करते रहे हैं!"

सिंहों की मांद में दानिएल की रक्षा

28 जब बेबीलोन-निवासियों ने ये बातें
सुनीं, तो वे क्रोध से उबल पड़े और सम्राट का
विरोध कर कहने लगे, "महाराज यहूदी बन
गया है। उसने बेल देवता को नष्ट कर डाला,
अजगर को मरवा दिया और पुजारियों का वध
करा दिया।" 29इसलिए वे सम्राट के पास जा
कर कहने लगे, "दानिएल को हमारे हवाले
कर दीजिए, नहीं तो हम परिवार-सहित आप
को मार डालेंगे।" 30जब सम्राट ने उनका
आग्रह सुना, तो उसने विवश हो कर दानिएल
को उनके हवाले कर दिया। 31उन्होंने दानिएल
को सिंहों की माँद में डाल दिया, जहाँ वह छः
दिन पड़ा रहा। 32उस माँद में सात सिंह थे। रोज़
उन्हें दो आदमी और दो भेड़ें दी जाती थीं; किन्तु
इस बीच वे नहीं दी गयीं, जिससे वे दानिएल
को ही फाड़ खायें।

33 उसी समय यहूदा प्रदेश में हबक्कूक
नाम का एक नबी रहता था। उसने एक बतरन
में शोरबा और रोटी का चूरमा बनाया और वह
उसे लेकर लुनेरों के पास खेत में ले गया।
34तभी प्रभु के एक दूत ने हबक्कूक से कहा,
"अपने पास का यह भोजन बेबीलोन को ले
जाओ। उसे सिंहों की माँद में दानिएल के पास
पहुंचाओ।" 35हबक्कूक ने कहा, "स्वामी!
मैंने तो कभी बेबीलोन नगर देखा ही नहीं और
न उस माँद का मुझे पता है।" 36तब प्रभु के दूत
ने उसके सिर की चोटी पकड़ ली और केशों
से उठाकर उसे अपनी पवन-शक्ति के एक ही
झोंके में+ बेबीलोन नगर को ले गया तथा माँद
के पास उतार दिया। 37हबक्कूक ने पुकारा,
"दानिएल, दानिएल! यह भोजन लो, जिसे
परमेश्वर ने तुम्हारे लिए भेजा है।" 38दानिएल
ने कहा, "हे परमेश्वर! तूने मेरी ओर ध्यान
दिया। तू अपने भक्तों को नहीं त्यागता।"
39दानिएल उठ कर भोजन करने लगा। परमेश्वर
के दूत ने हबक्कूक को फिर उसके स्थान पर
पहुँचा दिया।

40सातवें दिन सम्राट दानिएल के लिए
शोक मनाने वहाँ पहुँचा। किन्तु जब उसने
सिंह-माँद के पास जा कर अन्दर दृष्टि डाली,
तो देखा कि दानिएल बैठा है। 41इस पर वह
ज़ोर से चिल्ला उठा, "दानिएल के प्रभु-
परमेश्वर! तू महान् है और तेरे सिवा कोई दूसरा
ईश्वर नहीं है।" 42फिर उसने दानिएल को
बाहर निकालने की आज्ञा दी और उन लोगों
को, जो उसे मिटा डालना चाहते थे, उसी माँद
में डलवा दिया। उसकी आँखों के सामने ही वे
सिंहों के द्वारा तुरन्त निगल लिये गये।

+ अथवा, "अपने श्वास की एक फूंक में"।

31 दान 6 : 16 36 यहेज 8 : 3 37 1 रा 17 : 4 38 भज 9 : 10 2 दान 6 : 23 - 24

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नया विधान

(नया नियम)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

[illegible]
[illegible] या हाथ के ही
[illegible] ''मैं तुम्हें अनुमति
[illegible] दानिएल ने अजगर, चर्बी
[illegible] उबाला और उसके
[illegible]
[illegible] ने कहा, ''देखिए, आप जिसकी
[illegible] रहे हैं।''

सिंहों की माँद में दानिएल की रक्षा

28 जब बेबीलोन-निवासियों ने ये बातें
सुनीं, तो वे क्रोध से उबल पड़े और सम्राट का
विरोध कर कहने लगे, ''महाराज यहूदी बन
गये हैं। उसने बेल देवता को नष्ट कर डाला,
अजगर को मरवा दिया और पुजारियों का वध
करा दिया।'' 29 [illegible] सम्राट के पास आ
कर कहने लगे, ''दानिएल को हमारे हवाले
कर दीजिए, नहीं तो हम परिवार-सहित आप
को मार डालेंगे।'' 30 जब सम्राट ने [illegible]
आग्रह सुना, तो उसने विवश हो कर दानिएल
को उनके हवाले कर दिया। 31 उन्होंने दानिएल
को सिंहों की माँद में डाल दिया, जहाँ वह छः
दिन रहा। 32 उस माँद में सात सिंह थे। रोज
उन्हें दो आदमी और दो भेड़ें दी जाती थीं, किन्तु
इस बीच वे नहीं दी गयीं, जिससे वे दानिएल
को ही फाड़ खायें।

33 उसी समय [illegible]
[illegible] एक नबी रहता [illegible]
में [illegible] और रोटी का चूरमा बनाया और वह
उसे लेकर लुनेरों के पास खेत में ले गया।
34 प्रभु के एक दूत ने हबक्कूक से कहा,
''अपने पास का यह भोजन बेबीलोन को ले
जाओ। उसे सिंहों की माँद में दानिएल के पास
पहुँचाओ।'' 35 हबक्कूक ने कहा, ''स्वामी!
मैंने तो कभी बेबीलोन नगर देखा ही नहीं और
[illegible] पता है।'' 36 तब प्रभु के दूत
[illegible] की चोटी पकड़ ली और केशों
[illegible] उसे अपनी पवन-शक्ति के एक ही
[illegible] बेबीलोन नगर को ले गया तथा माँद
के [illegible] दिया। 37 हबक्कूक ने पुकारा,
''दानिएल, दानिएल! यह भोजन लो, जिसे
परमेश्वर ने तुम्हारे लिए भेजा है।'' 38 दानिएल
ने कहा, ''हे परमेश्वर! तूने मेरी ओर ध्यान
दिया। [illegible] भक्तों को नहीं त्यागता।''
39 दानिएल उठ कर भोजन करने लगा। परमेश्वर
के दूत ने हबक्कूक को फिर उसके स्थान पर
पहुँचा दिया।

40 सातवें दिन सम्राट दानिएल के लिए
शोक [illegible] वहाँ पहुँचा। किन्तु जब उसने
सिंह-माँद के पास जा कर अन्दर दृष्टि डाली,
तो देखा कि दानिएल बैठा है। 41 इस पर वह
ज़ोर से चिल्ला उठा, ''दानिएल के प्रभु-
परमेश्वर! तू महान् है और तेरे सिवा कोई दूसरा
ईश्वर नहीं है।'' 42 फिर उसने दानिएल को
बाहर निकालने की आज्ञा दी और उन लोगों
को, जो उसे मिटा डालना चाहते थे, उसी माँद
में डलवा दिया। उनकी आँखों के सामने ही वे
सिंहों के द्वारा तुरन्त निगल लिये गये।

* अथवा, ''अपने श्वास की एक फूंक से''।
31 दान 6 : 16 36 यहेज 8 : 3 37 1 रा 17 : 4 38 भज 9 : 10 2 दान 6 : 23 ; 24

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

संत मत्ती के अनुसार शुभ समाचार

पुस्तक परिचय

प्रस्तुत पुस्तक कोई साधारण जीवनी नहीं है, वरन् विश्वास के आधार पर एक शुभ समाचार (सुसमाचार, इंजील) है। शुभ संदेश यह विश्वास है कि प्रभु येशु ही मानव जाति के मुक्तिदाता हैं। इन्हीं के विषय में परमेश्वर ने प्राचीनकाल में कहा था कि वह एक ऐसे व्यक्ति को भेजेगा, जिसके माध्यम से वह अपनी समस्त प्रतिज्ञाओं को पूरा करेगा जो उसने अपने निज लोगों इस्राएलियों से की थीं। प्रभु येशु जन्म से यहूदी थे। उनका जन्म प्राचीन इस्राएल देश में हुआ था। उनका सम्पूर्ण जीवन यहूदी समाज में व्यतीत हुआ था। फिर भी परमेश्वर का यह शुभ संदेश केवल समस्त यहूदी जाति के लिए नहीं है, बल्कि समस्त मानव जाति के लिए है।

अब स्पष्ट है कि सभी लोग परमेश्वर के लोग होते हैं। इस्राएली लोग उस अर्थ में परमेश्वर के "निज लोग" माने जाते हैं कि प्राचीन धर्मग्रन्थों के अनुसार परमेश्वर ने अपना अनन्त और असीम प्रेम प्रकट करने के लिए उनके साथ "विधान" (व्यवस्थान, वाचा) स्थापित किया है। जिस व्यक्ति के माध्यम से प्रेम-विधान की प्रतिज्ञाएं सभी लोगों के लिए पूर्ण हो जाती हैं, उसे "मसीह", अर्थात् अभिषिक्त व्यक्ति कहते हैं। प्रभु येशु के शिष्यों ने यह साक्षी दी है कि प्रभु येशु ही वह "मसीह" हैं, जिनके जीवन-दान द्वारा परमेश्वर के विधान का नया और पूर्ण अर्थ प्रकट हुआ। इसलिए, जिन ग्रंथों में शिष्यों की साक्षी लिपिबद्ध हुई, वे **"नया विधान"** के ग्रन्थ कहलाते हैं। उन ग्रन्थों के क्रम में चार आरंभिक ग्रन्थ **"चार शुभ समाचार"** हैं।

प्रस्तुत पुस्तक, **"संत मत्ती के अनुसार शुभ समाचार"**, को सुनियोजित ढंग से, क्रमबद्ध रीति से, सावधानी से व्यवस्थित किया गया है। पुस्तक का आरंम्भ प्रभु येशु के जन्म से होता है। उसके पश्चात् प्रभु येशु के बपतिस्मा (स्नान), और तीनों परीक्षाओं का वर्णन हुआ है। तत्पश्चात् येशु के द्वारा गलील प्रदेश में की गई धर्म-सेवा का विस्तार से उल्लेख है। प्रभु येशु गलील प्रदेश के जनसमुदाय को प्रवचन सुनाते, शिक्षा देते और उनके रोगियों को स्वस्थ करते हैं। पुस्तक के अंतिम अध्यायों में लेखक लिखता है कि प्रभु येशु यहूदा प्रदेश के यरूशलेम नगर की यात्रा करते हैं। इन्हीं अंतिम अध्यायों में प्रभु येशु के जीवन के अंतिम सात दिनों में घटी घटनाओं का वर्णन है: प्रभु येशु को मृत्यु-दंड दिया जाता है; वह क्रूस (सलीब) पर चढ़ाये जाते हैं और क्रूस पर उनकी मृत्यु होती है। वह कबर में दफनाये जाते हैं, और तीसरे दिन जीवित हो उठते हैं।

संत मत्ती के अनुसार शुभ समाचार में प्रभु येशु को एक महान गुरु के रूप में चित्रित किया गया है। गुरु येशु के पास परमेश्वर की व्यवस्था की व्याख्या करने का अधिकार है। वह स्वर्ग-राज्य, अर्थात् परमेश्वर के प्रेमपूर्ण शासनाधिकार की शिक्षा देते हैं। उनकी अधिकांश शिक्षाएं विषय-अनुसार पांच संग्रहों में एकत्र की गई हैं: (1) **पर्वतीय प्रवचन**, जिस में मनुष्य के चरित्र, आचार-व्यवहार, कर्त्तव्य-कर्म, विशेषाधिकार और स्वर्ग-राज्य के नागरिकों की नियति का उल्लेख है (अध्याय 5-7)। (2) **बारह प्रेरितों को उनके प्रेषण (मिशन) की शिक्षा** (अध्याय 10)। (3) **स्वर्ग-राज्य के दृष्टान्त** (अध्याय 13)। (4) **मसीह के अनुयायी, शिष्य बनने का अर्थ** (अध्याय 18)। (5) **युगांत तथा आने वाले स्वर्ग-राज्य के विषय में शिक्षा** (अध्याय 24-25)।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यदि मारकुस (अथवा मरकुस) द्वारा रचित शुभ समाचार से तुलना की जाए, तो **मत्ती के अनुसार शुभ समाचार** में वर्णित घटनाक्रम एक-समान लगता है। फिर भी सन्त मत्ती की रचना अधिक विस्तृत है, क्योंकि उसने, तीसरे शुभसमाचार-लेखक लूकस के सदृश, अपनी रचना में प्रभु येशु के गुरुवचनों के विपुल स्रोत से अधिक सामग्री सम्मिलित कर दी है।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

प्रभु येशु मसीह की वंशावली और जन्म	1 : 1—2: 23
योहन बपतिस्मादाता की धर्म-सेवा	3 : 1-12
प्रभु येशु का बपतिस्मा तथा परीक्षाएं	3 : 13—4 : 11
प्रभु येशु का गलील प्रदेश में जनता की सेवा करना	4 : 12—18 : 35
गलील प्रदेश से यहूदा प्रदेश के यरूशलेम नगर को प्रस्थान	19 : 1—20 : 34
यरूशलेम नगर तथा उसके आसपास के गांवों में प्रभु येशु के जीवन के अंतिम सात दिन	21 : 1—27 : 66
प्रभु येशु का पुनरुत्थान तथा शिष्यों को दर्शन	28 : 1-20

प्रभु येशु मसीह की वंशावली

1 अब्राहम के वंशज, दाऊद के वंशज येशु
मसीह* की वंशावली:
2अब्राहम से इसहाक उत्पन्न हुए। इसहाक
से याकूब उत्पन्न हुए। याकूब से यहूदा और
उसके भाई उत्पन्न हुए। 3यहूदा से तामार द्वारा
पेरेस और जेरह उत्पन्न हुए। पेरेस से हेस्रोन
उत्पन्न हुआ। हेस्रोन से राम उत्पन्न हुआ। 4राम
से अम्मीनादाब उत्पन्न हुआ। अम्मीनादाब से
नहशोन उत्पन्न हुआ। नहशोन से सलमोन
उत्पन्न हुआ। 5सलमोन से राहाब द्वारा बोअज
उत्पन्न हुआ। बोअज से रूत द्वारा ओबेद उत्पन्न
हुआ। ओबेद से यिशय उत्पन्न हुआ, 6और यिशय
से राजा दाऊद उत्पन्न हुआ।
ऊरियाह की विधवा स्त्री द्वारा दाऊद से
सुलेमान उत्पन्न हुआ। 7सुलेमान से रहबआम
उत्पन्न हुआ। रहबआम से अबिय्याह उत्पन्न
हुआ। अबिय्याह से आसाफ** उत्पन्न हुआ।
8आसाफ से यहोशाफट उत्पन्न हुआ। यहोशाफट
से योराम उत्पन्न हुआ। योराम से अजर्याह
उत्पन्न हुआ। 9अजर्याह से योताम उत्पन्न हुआ।
योताम से आहाज उत्पन्न हुआ। आहाज से
हिजकियाह उत्पन्न हुआ। 10हिजकियाह से
मनश्शे उत्पन्न हुआ। मनश्शे से आमोस+ उत्पन्न
हुआ। आमोस से योशियाह उत्पन्न हुआ।
11और जब इस्राएलियों को बेबीलोन नगर में
निष्कासित किया गया, उस समय योशियाह से
यकोन्याह और उसके भाई उत्पन्न हुए।
12बेबीलोन नगर में निष्कासन के पश्चात्
यकोन्याह से शालतिएल उत्पन्न हुआ।
शालतिएल से जरूब्बाबेल उत्पन्न हुआ।
13जरूब्बाबेल से अबीहूद उत्पन्न हुआ। अबीहूद
से एलयाकीम उत्पन्न हुआ। एलयाकीम से
अजोर उत्पन्न हुआ। 14अजोर से सदोक उत्पन्न
हुआ। सदोक से अखीम उत्पन्न हुआ। अखीम
से एलीहूद उत्पन्न हुआ। 15एलीहूद से एलआजर
उत्पन्न हुआ। एलआजर से मत्तान उत्पन्न हुआ।
मत्तान से याकूब उत्पन्न हुआ। 16और याकूब से
यूसुफ उत्पन्न हुआ, जो मरियम का पति था।
मरियम से येशु उत्पन्न हुए, जो मसीह कहलाते
हैं।
17इस प्रकार अब्राहम से दाऊद तक कुल

---

* अथवा 'ख्रिस्त'', अर्थात् जिसका अभिषेक किया गया। ** पाठांतर 'आसा' + पाठान्तर 'आमोन'

1 : 1-17 लू 3 : 23-38 **1 : 1** 1 इति 17 : 11; उत 5 : 1; 22 : 18 **1 : 2** उत 21 : 3.12; 25 : 26; 29 : 35; 49 : 10; 1 इति 1 : 34 **1 : 3** 1 इति 2 : 5.9; उत 38 : 29-30; रूत 4 : 18-22; 1 इति 2 : 10-12 **1 : 5** रूत 4 : 13-17 **1 : 6** 2 शम 12 : 24 **1 : 7** 1 इति 3 : 10-14 **1 : 11** 1 इति 3 : 15-16 **1 : 12** 1 इति 3 : 17; एज्र 3 : 2 **1 : 16** मत 27 : 17.22

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
चौदह पीढ़ियाँ, दाऊद से बेबीलोन-निष्कासन
तक चौदह पीढ़ियाँ और बेबीलोन-निष्कासन
से मसीह तक चौदह पीढ़ियाँ हुईं।

प्रभु येशु का जन्म

18येशु मसीह का जन्म इस प्रकार हुआ।
उनकी माता मरियम की मँगनी यूसुफ से हुई
थी, परन्तु ऐसा हुआ कि उनके एक साथ रहने
से पहले ही मरियम पवित्र आत्मा से गर्भवती
पाई गई। 19 उसका पति यूसुफ चुपके से उसका
परित्याग करने की सोच रहा था, क्योंकि वह
धर्मी था और मरियम को बदनाम नहीं करना
चाहता था। 20 वह इस पर विचार कर ही रहा
था कि उसे स्वप्न में प्रभु का दूत दिखाई दिया।
दूत ने उससे कहा, "यूसुफ! दाऊद के वंशज!
अपनी पत्नी मरियम को अपने यहाँ लाने में नहीं
डरें, क्योंकि उनके जो गर्भ है, वह पवित्र आत्मा
से है। 21वह पुत्र को जन्म देंगी और आप
उसका नाम येशु* रखेंगे, क्योंकि वह अपने
लोगों को उनके पापों से मुक्त करेगा।"
22 यह सब इसलिए हुआ कि नबी के मुख
से प्रभु ने जो कहा था, वह पूरा हो जाये:
23"देखो, एक कुंवारी गर्भवती होगी और पुत्र
को जन्म देगी, और उसका नाम 'इम्मानुएल'
रखा जायेगा"— जिसका अर्थ है, "परमेश्वर
हमारे साथ है।"
24यूसुफ नींद से उठ कर प्रभु के दूत की
आज्ञानुसार अपनी पत्नी को अपने यहाँ ले
आया; 25किन्तु यूसुफ ने उससे तब तक
संसर्ग नहीं किया, जब तक उसने पुत्र को
जन्म नहीं दिया। यूसुफ ने पुत्र का नाम येशु
रखा।

ज्योतिषियों का आगमन

2 येशु का जन्म यहूदा प्रदेश के बेतलेहम नगर
में हुआ। उस समय हेरोदेस राजा था। येशु
के जन्म के बाद ज्योतिषी पूर्व के देशों से
यरूशलेम नगर में आये 2और यह बोले,
"यहूदियों के नवजात राजा कहाँ हैं? हमने
उनका तारा उदित होते+ देखा है। हम उनकी
वन्दना करने आये हैं।"
3यह सुन कर राजा हेरोदेस और उसके साथ
सारा यरूशलेम घबरा गया। 4राजा ने सब
महापुरोहितों और समाज के सब शास्त्रियों की
सभा बुला कर उनसे पूछा, "मसीह कहाँ जन्म
लेंगे?" 5उन्होंने उत्तर दिया, "यहूदा प्रदेश के
बेतलेहम नगर में; क्योंकि नबी ने इसके विषय
में यह लिखा है: 6"ओ बेतलेहम, यहूदा प्रदेश
के नगर! तू यहूदा प्रदेश के प्रमुख नगरों में
किसी से कम नहीं है; क्योंकि तुझ में एक नेता
उत्पन्न होगा, जो मेरी प्रजा इस्राएल का चरवाहा
बनेगा।"
7हेरोदेस ने बाद में ज्योतिषियों को चुपके से
बुलाया और उन से पूछताछ कर यह पता कर
लिया कि वह तारा ठीक किस समय उन्हें
दिखाई दिया था। 8फिर उसने उन्हें बेतलेहम
नगर भेज दिया, और उनसे कहा, "जाइए,
बालक का ठीक-ठीक पता लगाइए और जब
वह मिला जाए तब मुझे खबर दीजिए, जिससे
मैं भी जा कर उसकी वंदना करूँ।"
9वे राजा की बात मान कर चल दिये। उन्होंने
जिस तारे को उदित होते देखा था, वह उनके
आगे-आगे चलता रहा, और जहाँ बालक था,
उस जगह के ऊपर पहुँचने पर ठहर गया। 10वे
तारा देख कर अत्यन्त आनन्दित हुए। 11घर में
प्रवेश कर उन्होंने बालक को उसकी माता
मरियम के साथ देखा और उसे साष्टांग प्रणाम
किया। फिर अपना-अपना सन्दूक खोल कर
उन्होंने उसे सोना, लोबान और गन्धरस की भेंट
चढ़ायी। 12उन्हें स्वप्न में यह चेतावनी मिली
कि वे हेरोदेस के पास नहीं लौटें, इसलिए वे
दूसरे रास्ते से अपने देश चले गये।

मिस्र में प्रवास

13उनके जाने के बाद प्रभु का दूत यूसुफ को
स्वप्न में दिखाई दिया और यह बोला, "उठिए!
बालक और उसकी माता को लेकर मिस्र देश

* यहोशुअ का संक्षिप्त रूप जिसका अर्थ है, "प्रभु उद्धारकर्ता है।" +अथवा "पूर्व में"।

1 : 18 लू 1 : 35 **1 : 20** मत 1 : 18 **1 : 21** लू 1 : 31; मत 2 : 21; प्रे 4 : 12; प्रव 46 : 1 **1 : 22** यश 7 : 14 (यू० पाठ) **1 : 25** लू 2 : 7 **2 : 1** लू 2 : 1-7 **2 : 2** गण 24 : 17 **2 : 5** मी 5 : 2; यो 7 : 42 **2 : 11** भज 72 : 10,15; यश 60 : 66 **2 : 13** नि 2 : 15

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भाग जाइए। जब तक मैं आप से न कहूँ, वहीं
रहिए; क्योंकि हेरोदेस इस बालक को मरवा
डालने के लिए इस को ढूँढ़ने वाला है।''
14यूसुफ उठा और उसी रात बालक और
उसकी माता को लेकर मिस्र देश चला गया।
15वह हेरोदेस की मृत्यु तक वहीं रहा, जिससे
नबी के मुख से प्रभु ने जो कहा था, वह पूरा
हो जाये: ''मैंने मिस्र देश से अपने पुत्र को
बुलाया।''

बालकों की हत्या

16हेरोदेस को यह देख कर बहुत क्रोध
आया कि ज्योतिषियों ने मुझे धोखा दिया है।
उसने सिपाहियों को भेजा और बेतलेहम तथा
उसके आसपास के गांवों में उन सभी बालकों
को मरवा डाला, जो ज्योतिषियों से पता लगाए
समय के अनुसार दो वर्ष के या उससे कम आयु
के थे। 17तब नबी यिर्मयाह का यह कथन पूरा
हुआ: 18''रामाह में रुदन और दारुण विलाप
सुनाई दिया। राहेल अपने बच्चों के लिए रो रही
है, और अपने आँसू किसी को पोंछने नहीं देती,
क्योंकि वे अब नहीं रहे।''

मिस्र देश से लौटना

19राजा हेरोदेस की मृत्यु के बाद प्रभु का दूत
मिस्र देश में यूसुफ को स्वप्न में दिखाई दिया
और 20यह बोला, ''उठिए! बालक और
उसकी माता को ले कर इस्राएल देश चले
जाइए, क्योंकि जो बालक के प्राण लेना चाहते
थे, वे अब मर चुके हैं।''
21यूसुफ उठा और बालक तथा उसकी माता
को लेकर इस्राएल देश चला आया। 22किन्तु
जब उसने सुना कि अरखिलाउस अपने पिता
हेरोदेस के स्थान पर यहूदा प्रदेश में राज्य कर
रहा है, तब वह वहाँ जाने से डर गया और स्वप्न
में चेतावनी पा कर गलील प्रदेश चला गया।
23वहाँ वह नासरत नामक नगर में जा कर बस
गया। इस प्रकार नबियों का यह कथन पूरा
हुआ: ''वह नासरी* कहलायेगा।''

योहन बपतिस्मादाता और उनका उपदेश

3 उन दिनों योहन बपतिस्मादाता+ यहूदा
प्रदेश के निर्जन प्रदेश में आए, और वहाँ
यह प्रचार करने लगे: ''2पश्चात्ताप करो, क्योंकि
स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है।'' 3योहन वही
व्यक्ति थे जिनके विषय में नबी यशायाह ने
कहा था, ''निर्जन प्रदेश में पुकारने वाले की
आवाज : प्रभु का मार्ग तैयार करो; उसके पथ
सीधे कर दो।''
4योहन ऊँट के रोओं का वस्त्र पहने और
कमर में चमड़े का पट्टा बाँधे रहते थे। उनका
भोजन टिड्डियाँ और वन का मधु था। 5यरूशलेम
नगर, समस्त यहूदा प्रदेश और यर्दन नदी के
आसपास के क्षेत्रों से लोग योहन के पास आते
6और अपने पाप स्वीकार करते हुए यर्दन नदी
में उनसे बपतिस्मा ग्रहण करते थे।
7बहुत से फरीसियों और सदूकियों** को
बपतिस्मा के लिए आते देख कर योहन ने उन
से कहा, ''साँप के बच्चो! किसने तुम लोगों को
परमेश्वर के आने वाले कोप से भागने के लिए
सचेत कर दिया? 8पश्चात्ताप का उचित फल
उत्पन्न करो 9और अपने मन में यह न सोचो कि
'हम अब्राहम की सन्तान हैं'। मैं तुम से कहता
हूँ- परमेश्वर इन पत्थरों से अब्राहम के लिए
सन्तान उत्पन्न कर सकता है। 10अब पेड़ों की
जड़ पर कुल्हाड़ा लग चुका है। जो पेड़ अच्छा
फल नहीं देता, वह काटा और आग में झोंक
दिया जायेगा। 11मैं तो तुम लोगों को जल से
पश्चात्ताप का बपतिस्मा देता हूँ; किन्तु जो मेरे

* मूल शब्द में श्लेष है। उसका दूसरा अर्थ है, '' परमेश्वर को अर्पित व्यक्ति'' + अर्थात, ''बपतिस्मा देनेवाला'' जो दीक्षार्थी का बपतिस्मा अथवा स्नान कराता है ** यहूदी धर्म के दो सम्प्रदायों के अनुयायी, जो आपस में कट्टर मतभेद रखते थे।

2 : 15 हो 11 : 1 **2 : 17** यिर 31 : 15 **2 : 15** उत 35 : 19 **2 : 20** नि 4 : 19 **2 : 23** लू 1 : 26; 2 : 39; यश 11 : 1; 53 : 2; शास 13 : 5; यो 1 : 46 **3 : 1-12** मक 1 : 1-8; लू 3 : 3-18 **3 : 1** लू 1 : 13 **3 : 2** मत 4 : 17 **3 : 3** यश 40 : 3 (यू० पाठ); यो 1 : 23; **3 : 4** 2 रा 1 : 8 **3 : 7** मत 12 : 34; 23 : 33; उत 3 : 15 **3 : 9** रो 2 : 28-29; 4 : 12; यो 8 : 33, 39 **3 : 10** लू 13 : 6-9; यो 15 : 6 **3 : 11** यो 1 : 15.26-27, 33; प्रे 1 : 5; दान 9 : 4; मल 3 : 2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बाद आने वाले हैं, वह मुझ से अधिक शक्ति-
शाली हैं। मैं उनके जूते उठाने योग्य भी नहीं हूँ।
वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा
देंगे। 12वह हाथ में सूप ले चुके हैं। वह अपना
खलिहान ओसा कर साफ़ करेंगे और अपना
गेहूँ बखार में जमा करेंगे। किन्तु वह भूसी को
कभी न बुझने वाली आग में जला देंगे।''

प्रभु येशु का बपतिस्मा

13उस समय येशु योहन से बपतिस्मा लेने के
लिए गलील प्रदेश से यर्दन नदी के तट पहुँचे।
14योहन ने यह कहते हुए उन्हें रोकना चाहा,
''मुझे तो आप से बपतिस्मा लेने की आवश्यकता
है और आप मेरे पास आये हैं ?'' 15परन्तु येशु
ने उन्हें उत्तर दिया, ''अभी ऐसा ही होने
दीजिए। यह हमारे लिए उचित है कि हम इसी
तरह सब धार्मिकता को+ पूरा करें।'' इस पर
योहन ने येशु की बात मान ली।

16बपतिस्मा लेने के बाद येशु तुरन्त जल से
बाहर निकले। उसी समय उनके लिए स्वर्ग
खुल गया और उन्होंने परमेश्वर के आत्मा को
कपोत के सदृश उतरते और अपने ऊपर आते
हुए देखा। 17और देखो, स्वर्ग से यह वाणी
सुनाई दी, ''यह मेरा प्रिय पुत्र है। मैं इस पर
अत्यन्त प्रसन्न हूँ।''

प्रभु येशु की परीक्षा

4 उस समय आत्मा येशु को निर्जन प्रदेश में
ले गया कि शैतान* उनकी परीक्षा ले।
2येशु चालीस दिन और चालीस रात उपवास
करते रहे। इसके बाद उन्हें भूख लगी। 3तब
परीक्षक ने पास आकर उनसे कहा, ''यदि आप
परमेश्वर के पुत्र हैं, तो कह दीजिए कि ये पत्थर
रोटियाँ बन जायें।'' 4येशु ने उत्तर दिया,
''धर्मग्रन्थ में लिखा है,: 'मनुष्य केवल रोटी से
ही नहीं जीता है। बल्कि वह परमेश्वर के
मुख से निकलने वाले हर एक शब्द से जीवित
रहता है।' ''
5तब शैतान येशु को पवित्र नगर में ले गया
और उन्हें मन्दिर के शिखर पर खड़ा कर 6उनसे
कहा, ''यदि आप परमेश्वर के पुत्र हैं, तो नीचे
कूद जाइए; क्योंकि धर्मग्रन्थ में लिखा है:
'आपके विषय में परमेश्वर अपने दूतों को
आदेश देगा', और 'वे आपको अपने हाथों पर
संभाल लेंगे कि कहीं आपके पैरों को पत्थर से
चोट न लगे।' '' 7येशु ने उससे कहा, ''यह भी
धर्मग्रन्थ में लिखा है: 'अपने प्रभु-परमेश्वर की
परीक्षा मत लो।' ''

8फिर शैतान उनको एक अत्यन्त ऊँचे पहाड़
पर ले गया और संसार के सभी राज्य और
उनका वैभव दिखला कर 9उनसे बोला, ''यदि
आप मेरे सम्मुख घुटने टेक कर मेरी आराधना
करें, तो मैं आप को यह सब दे दूंगा!'' 10येशु
ने उत्तर दिया, ''हट जा, शैतान! क्योंकि
धर्मग्रथ में लिखा है: 'अपने प्रभु परमेश्वर की
आराधना करो और केवल उसी की सेवा
करो।' '' 11इस पर शैतान उन्हें छोड़ कर चला
गया और स्वर्गदूत आ कर उनकी सेवा-
परिचर्या करने लगे।

गलील में सेवा-कार्य आरम्भ

12येशु ने जब यह सुना कि योहन गिरफ्तार
हो गये हैं, तो वह गलील प्रदेश को चले गये।
13वह नासरत नगर छोड़ कर, कफरनहूम नगर
में रहने लगे। यह नगर जबूलून और नफ्ताली
कुलों के सीमा-क्षेत्र में झील के तट पर स्थित
है। 14इस तरह नबी यशायाह का यह कथन पूरा
हुआ : 15''जबूलून और नफ्ताली कुलों के
भूमि क्षेत्र! समुद्र के पथ पर, यर्दन के उस पार,
गैर-यहूदियों के गलील! 16अन्धकार में रहने
वाले लोगों ने एक महती ज्योति देखी; मृत्यु के
अन्धकारमय प्रदेश में रहने वालों पर ज्योति का
उदय हुआ।''

+ अथवा, 'परमेश्वर के सम्पूर्ण अभिप्राय को '* अथवा, 'इबलीस'

3 : 12 मत 13 : 30; यश 17 : 12; प्रज्ञ 5 : 14.23 **3 : 13-17** मक 1 : 9-11; लू 3 : 21-22; यो 1 : 31-34 **3 : 16** उत 1 : 2; 8 : 8 **3 : 17** मत 17 : 5; भज 2 : 7; यश 42 : 1; 2 शम 7 : 14 **4 : 1-11** मक 1 : 12-13; लू 4 : 1-13 **4 : 1** इब्र 4 : 15 **4 : 2** नि 34 : 28; गण 14 : 34; 1 रा 19 : 8 **4 : 3** उत 3 : 1-7 **4 : 4** व्य 8 : 3 **4 : 5** मत 27 : 53 **4 : 6** भज 91 : 11-12 **4 : 7** व्य 6 : 16 **4 : 10** व्य 6 : 13 **4 : 11** यो 1 : 51; इब्र 1 : 6.14 **4 : 12-17** मक 1 : 14-15; लू 4 : 14-15 **4 : 12** मत 14 : 3 **4 : 13** यो 2 : 12 **4 : 14** यश 8 : 23; 9 : 1

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

17उस समय से येशु प्रचार करने और यह
संदेश सुनाने लगे, ''हृदय-परिवर्तन करो,
क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है।''

प्रथम शिष्यों का बुलाया जाना

18येशु गलील की झील के किनारे टहल रहे
थे। उन्होंने दो भाइयों को देखा—सिमोन, जो
पतरस कहलाता है, और उसके भाई अन्द्रेयास
को। वे झील में जाल डाल रहे थे, क्योंकि वे
मछुए थे। 19येशु ने उन से कहा, ''मेरे पीछे
आओ। मैं तुम्हें मनुष्यों के मछुए बनाऊंगा।''
20वे तुरन्त अपने जाल छोड़ कर उनके पीछे हो
लिये।

21वहाँ से आगे बढ़ने पर येशु ने और दो
भाइयों को देखा—जबदी के पुत्र याकूब और
उसके भाई योहन को। वे अपने पिता जबदी के
साथ नाव में अपने जालों की मरम्मत कर रहे
थे। येशु ने उन्हें बुलाया। 22वे तुरन्त नाव और
अपने पिता को छोड़ कर उनके पीछे हो लिये।

गलील प्रदेश में सेवा-कार्य के लिए भ्रमण

23येशु समस्त गलील प्रदेश में भ्रमण कर
उनके सभागृहों में शिक्षा देते, राज्य के शुभ-
समाचार का प्रचार करते और लोगों की हर
तरह की बीमारी और निर्बलता दूर करते थे।
24उनका नाम सारे सीरिया देश में फैल गया।
लोग मिर्गी, लकवा आदि नाना प्रकार की
बीमारियों और कष्टों से पीड़ित सब रोगियों को
और भूतग्रस्तों को येशु के पास ले आते और
वह उन्हें स्वस्थ कर देते थे। 25गलील प्रदेश,
दिकापोलिस*, यरूशलेम, यहूदा प्रदेश और
यर्दन नदी के उस पार से आया हुआ एक
विशाल जनसमूह येशु के पीछे हो लिया।

पहाड़ी-उपदेश

5 येशु विशाल जनसमूह को देखकर पहाड़ी
पर चढ़े और वहाँ बैठ गये। उनके शिष्य
उनके पास आये 2और वह यह कहते हुए उन्हें
शिक्षा देने लगे:

धन्य-वचन

3''धन्य हैं वे, जो मन के दीन हैं;
क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।
4धन्य हैं वे, जो शोक करते हैं;
क्योंकि उन्हें सान्त्वना मिलेगी।
5धन्य हैं वे जो नम्र हैं;
क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे।
6धन्य हैं वे, जो धार्मिकता के भूखे और प्यासे
हैं;
क्योंकि वे तृप्त किये जायेंगे।
7धन्य हैं वे,जो दयालु हैं;
क्योंकि उन पर दया की जायेगी।
8धन्य हैं वे, जिनका हृदय निर्मल है;
क्योंकि वे परमेश्वर के दर्शन करेंगे।
9धन्य हैं वे, जो मेल-मिलाप कराते हैं;
क्योंकि वे परमेश्वर की संतान कहलायेंगे।
10धन्य हैं वे, जो धार्मिकता के कारण अत्याचार
सहते हैं;
क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।

11''धन्य हो तुम, जब लोग मेरे कारण
तुम्हारा अपमान करते हैं, तुम पर अत्याचार
करते और तरह-तरह के झूठे दोष लगाते हैं।
12खुश हो और आनन्द मनाओ; क्योंकि स्वर्ग
में तुम्हें महान पुरस्कार प्राप्त होगा। तुम्हारे
पहले के नबियों पर भी उन्होंने इसी तरह
अत्याचार किया था।

पृथ्वी का नमक

13''तुम पृथ्वी का नमक हो। यदि नमक
अपना गुण खो दे, तो वह किस वस्तु से नमकीन
किया जायेगा? वह किसी काम का नहीं रह
जाता। वह बाहर फेंका और मनुष्यों के पैरों तले
रौंदा जाता है ।

* अथवा, 'दस नगर-क्षेत्र'

4 : 17 मत 3 : 2 **4 : 18-22** मक 1 : 16-20; लू 5 : 1-11; यो 21 : 1-19 **4 : 18** यो 1 : 40 **4 : 19** मत 13 : 47; यहेज 47 : 10 **4 : 20** मत 19 : 27 **4 : 23** मक 1 : 39; लू 4 : 15.44; प्रे 10 : 38 **4 : 24** मक 6 : 55 **4 : 25** मक 3 : 7-8; लू 6 : 17-19 **5-7** लू 6 : 20-49 **5 : 1** लू 6 : 17; मक 3 : 13; यो 6 : 3 **5 : 3** यश 57 : 15; भज 34 : 19; 40 : 18 **5 : 4** भज 126 : 5; यश 61 : 3; प्रक 7 : 17 **5 : 5** भज 37 : 11; मत 11.29 तीत 3 : 2 **5 : 6** यश 55 : 1-2; प्रवं 24 : 21 **5 : 7** याक 2 : 13 **5 : 8** भज 24 : 4; 51 : 10; 73 : 1; 1 यो 3 : 2-3 **5 : 9** इब्र 12 : 14 **5 : 10** 1 पत 3 : 14; 4 : 13; याक 1 : 2,12 **5 : 11** 1 पत 4 : 14 **5 : 12** याक 5 : 10; इब्र 11 : 33-38; 2 इत 36 : 16; प्रव 2 : 8 **5 : 13** मक 9 : 50, लू 14 : 34-35; अय्य 6 : 6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

संसार की ज्योति

14“तुम संसार की ज्योति हो। पहाड़ पर
बसा हुआ नगर छिप नहीं सकता। 15लोग दीपक
जला कर पैमाने के नीचे नहीं, बल्कि दीवट पर
रखते हैं, जहाँ से वह घर के सब लोगों को
प्रकाश देता है। 16इसी प्रकार तुम्हारी ज्योति
मनुष्यों के सामने चमकती रहे, जिससे वे
तुम्हारे भले कामों को देख कर तुम्हारे स्वर्गिक
पिता की महिमा करें।

व्यवस्था-पालन

17“यह न समझो कि मैं व्यवस्था अथवा
नबियों के लेखों को रद्द करने आया हूँ। उन्हें
रद्द करने नहीं, बल्कि पूरा करने आया हूँ।
18मैं तुम लोगों से सच कहता हूँ—आकाश और
पृथ्वी भले ही टल जायें, किन्तु व्यवस्था की
एक मात्रा अथवा एक बिन्दु भी पूरा हुए बिना
नहीं टलेगा।* 19इसलिए जो उन छोटी-से-
छोटी आज्ञाओं में एक को भी भंग करता और
दूसरों को ऐसा करना सिखाता है, वह स्वर्गराज्य
में सबसे छोटा समझा जायेगा। किन्तु जो उनका
पालन करता और उन्हें सिखाता है, वह
स्वर्गराज्य में बड़ा समझा जायेगा। 20मैं तुम लोगों
से कहता हूँ, यदि तुम्हारी धार्मिकता शास्त्रियों
और फरीसियों की धार्मिकता से गहरी नहीं हुई,
तो तुम स्वर्गराज्य में प्रवेश नहीं कर सकोगे।

क्रोध और हत्या

21“तुम लोगों ने सुना है कि पूर्वजों से कहा
गया था: ‘हत्या मत करना।’ यदि कोई हत्या
करे, तो वह कचहरी में दण्ड के योग्य ठहराया
जायेगा। 22परन्तु मैं तुम से कहता हूँ, जो कोई
अपने भाई अथवा बहिन+ पर क्रोध करता है,
वह कचहरी में दण्ड के योग्य ठहराया जायेगा।
यदि वह अपने भाई अथवा बहिन से अपशब्द
कहे, तो वह धर्म-महासभा में दण्ड के योग्य
ठहराया जायेगा और जो कोई अपने भाई
अथवा बहिन से कहेगा, ‘अरे मूर्ख’, तो वह
नरक की आग के योग्य ठहराया जायेगा।

भाई-बहिन से मेल मिलाप

23“जब तुम वेदी पर अपनी भेंट चढ़ा रहे
हो और तुम्हें वहाँ याद आये कि मेरे भाई अथवा
बहिन को मुझ से कोई शिकायत है, 24तो अपनी
भेंट वहीं वेदी के सामने छोड़कर पहले अपने
भाई-बहिन से मेल करने जाओ और तब आ
कर अपनी भेंट चढ़ाओ।

25“कचहरी जाते समय रास्ते में ही अपने
मुद्दई से समझौता कर लो। कहीं ऐसा न हो कि
वह तुम्हें न्यायाधीश के हवाले कर दे, न्यायाधीश
तुम्हें सिपाही के हवाले कर दे और सिपाही
तुम्हें बन्दीगृह में डाल दे। 26मैं तुम से सच
कहता हूँ, जब तक कौड़ी-कौड़ी न चुका दोगे,
तब तक तुम वहाँ से छूटने नहीं पाओगे।

दुराचार

27“तुम लोगों ने सुना है कि कहा गया था:
‘व्यभिचार मत करना’। 28परन्तु मैं तुम से कहता
हूँ: जो कोई बुरी इच्छा से किसी स्त्री पर दृष्टि
डालता है, वह अपने मन में उसके साथ
व्यभिचार कर चुका है।

29“यदि तुम्हारी दाहिनी आँख तुम्हारे लिए
पाप का कारण बनती है, तो उसे निकाल कर
फेंक दो। अच्छा यही है कि तुम्हारे अंगों में से
एक नष्ट हो जाये, किन्तु तुम्हारा सारा शरीर
नरक में न डाला जाये। 30और यदि तुम्हारा
दाहिना हाथ तुम्हारे लिए पाप का कारण बनता
है, तो उसे काट कर फेंक दो। अच्छा यही है
कि तुम्हारे अंगों में से एक नष्ट हो जाये, किन्तु
तुम्हारा सारा शरीर नरक में न जाये।

विवाह का बन्धन

31“यह भी कहा गया था: ‘जो अपनी पत्नी

---

* अथवा, ‘जब तक आकाश और पृथ्वी न टल जाएं और सब कुछ पूरा न हो जाए, तब तक व्यवस्था की एक मात्रा अथवा एक बिन्दु भी नहीं टल सकता।’ + मूल में, ‘भाई’।

5 : 15 मक 4 : 21 **5 : 16** इफ 5 : 8-9; 1 पत 2 : 12 **5 : 17** मत 3 : 15; रोम 3 : 31; 10 : 4 **5 : 18** लू 16 : 17; 21 : 33 **5 : 19** याक 2 : 10; 1 कुर 15 : 9 **5 : 21** नि 20 : 13; 21 : 12; लेव 24 : 17; व्य 17 : 8 **5 : 22** 1यो 3 : 15 **5 : 23** मक 11 : 25 **5 : 25** मत 6 : 14-15; 18 : 35; लू 12 : 58-59 **5 : 27** नि 20 : 14 **5 : 28** अय्य 31 : 1; 2 पत 2 : 14 **5 : 29** मत 18 : 8-9; मक 9 : 42.47; कुल 3 : 5 **5 : 31** मत 19 : 3-9; व्य 24 : 1

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

का परित्याग करता है, वह उसे त्याग-पत्र दे
दे।' 32परन्तु में तुम से कहता हूँ—व्यभिचार**
को छोड़ किसी अन्य कारण से जो कोई अपनी
पत्नी का परित्याग करता है, वह उस से
व्यभिचार कराता है और जो परित्यक्ता से
विवाह करता है, वह व्यभिचार करता है।

सौगंध और सच्चाई

33"तुम लोगों ने यह भी सुना है कि पूर्वजों
से कहा गया था: 'झूठी शपथ मत खाना।
परन्तु प्रभु के सामने खायी हुई शपथ को पूरा
करना।' 34परन्तु मैं तुम से कहता हूँ: शपथ
कभी नहीं खाना—न स्वर्ग की, क्योंकि वह
परमेश्वर का सिंहासन है; 35न पृथ्वी की, क्योंकि
वह उसका पायदान है; न यरूशलेम की,
क्योंकि वह राजाधिराज का नगर है। 36और न
अपने सिर की शपथ खाना, क्योंकि तुम इसका
एक भी बाल सफेद या काला नहीं कर सकते।
37तुम्हारी बात इतनी हो—हाँ की हाँ, नहीं की
नहीं। जो इस से अधिक है, वह बुराई से उत्पन्न
हुआ है।

प्रतिकार न करना

38"तुम लोगों ने सुना है कि कहा गया था:
आँख के बदले आँख, और दाँत के बदले
दाँत।' 39परन्तु मैं तुम से कहता हूँ—दुष्ट का
सामना नहीं करो। यदि कोई तुम्हारे दाहिने गाल
पर थप्पड़ मारे, तो दूसरा भी उसके सामने कर
दो। 40जो मुकदमा लड़ कर तुम्हारा कुरता लेना
चाहता है, उसे अपनी चादर भी ले लेने दो।
41और यदि कोई तुम्हें एक किलोमीटर* बेगार
में ले जाये, तो तुम उसके साथ दो किलोमीटर
चले जाओ। 42जो तुम से माँगता है, उसे दे दो
और जो तुम से उधार लेना चाहता है, उससे मुँह
न मोड़ो।

शत्रुओं से प्रेम

43"तुम लोगों ने सुना है कि कहा गया था:
'अपने पड़ोसी से प्रेम करना और अपने बैरी से
बैर।' 44परन्तु मैं तुम से कहता हूँ—अपने
शत्रुओं से प्रेम करो और जो तुम पर अत्याचार
करते हैं, उनके लिए प्रार्थना करो। 45इससे तुम
अपने स्वर्गिक पिता की सन्तान बन जाओगे;
क्योंकि वह भले और बुरे, दोनों पर अपना सूर्य
उगाता तथा धर्मी और अधर्मी, दोनों पर पानी
बरसाता है। 46यदि तुम उन्हीं से प्रेम करते हो,
जो तुम से प्रेम करते हैं, तो तुम्हें क्या पुरस्कार
मिलेगा? क्या चुंगी-अधिकारी भी ऐसा नहीं
करते? 47और यदि तुम अपने भाइयों और
बहिनों को ही नमस्कार करते हो, तो क्या बड़ा
काम करते हो? क्या गैर-यहूदी भी ऐसा नहीं
करते? 48इसलिए तुम पूर्ण बनो, जैसे तुम्हारा
स्वर्गिक पिता पूर्ण है।

भिक्षा-दान

6 "सावधान रहो, लोगों का ध्यान आकर्षित
करने के लिए अपने धर्मकार्यों का प्रदर्शन
न करो; नहीं तो तुम अपने स्वर्गिक पिता के
पुरस्कार से वंचित रह जाओगे।

2"जब तुम दान देते हो तो इसका ढिंढोरा
नहीं पीटो, जैसे ढोंगी सभागृहों और गलियों में
करते हैं, जिससे लोग उनकी प्रशंसा करें। मैं
तुम लोगों से सच कहता हूँ, वे अपना पुरस्कार
पा चुके हैं। 3जब तुम दान देते हो, तो तुम्हारा
बायाँ हाथ यह न जानने पाये कि तुम्हारा दायाँ
हाथ क्या कर रहा है। 4तुम्हारा दान गुप्त रहे और
तुम्हारा पिता, जो गुप्त कार्य को भी देखता है,
तुम्हें पुरस्कार देगा।

प्रार्थना

5"जब तुम प्रार्थना करते हो तब ढोंगियों की
तरह प्रार्थना नहीं करो। वे सभागृहों में और
चौकों पर खड़ा हो कर प्रार्थना करना पसन्द
करते हैं, जिससे लोग उन्हें देखें। मैं तुम लोगों
से सच कहता हूँ, वे अपना पुरस्कार पा चुके

** अथवा, 'अवैध संबंध' * मूल में, 'एक हजार कदम'

5 : 32 लू 16 : 18; 1 कुर 7 : 10-11 5 : 33 नि 20 : 7; लेव 19 : 12; गण 30 : 2 5 : 34 मत 23 : 16-22; यश 66 : 1 प्रे 7 : 49 5 : 35 भज 48 : 2 5 : 37 2 कुर 1 : 17; याक 5 : 12 5 : 38 लेव 24 : 19-20 5 : 39-48 लू 6 : 27-36 5 : 39 यो 18 : 22-23; लेव 19 : 18 5 : 40 1 कुर 6 : 7 5 : 43 लेव 19 : 18; प्रव 12 : 4-7 5 : 44 नि 23 : 4-5; लू 23 : 34; प्रे 7 : 59-60; रोम 12 : 14-20 5 : 45 इफ 5 : 1; प्रव 4 : 10 5 : 48 लेव 19 : 2 6 : 3 मत 25 : 37-40; रो 12 : 8 6 : 5 मत 23 : 5-6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हैं। 6जब तुम प्रार्थना करते हो, तो अपने कमरे
में जाओ, द्वार बन्द करो और गुप्त में अपने पिता
से प्रार्थना करो। तुम्हारा पिता, जो गुप्त कार्य को
भी देखता है, तुम्हें पुरस्कार देगा।

आदर्श प्रार्थना

7"प्रार्थना करते समय गैर-यहूदियों की
तरह व्यर्थ बातों की रट नहीं लगाओ। वे
समझते हैं कि लम्बी-लम्बी प्रार्थनाएं करने से
उनकी प्रार्थना सुनी जाएगी। 8उनके समान नहीं
बनो, क्योंकि तुम्हारे माँगने से पहले ही तुम्हारा
पिता जानता है कि तुम्हें किन-किन चीजों की
जरूरत है। 9 अत: तुम इस प्रकार प्रार्थना किया
करो:

हे स्वर्ग में विराजमान हमारे पिता!
तेरा नाम पवित्र माना जाये।
10तेरा राज्य आये।
तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग में,
वैसे पृथ्वी पर भी पूरी हो।
11हमारा प्रतिदिन का भोजन* आज हमें दे।
12हमारे अपराध क्षमा कर, जैसे हमने भी अपने
अपराधियों को क्षमा किया है।
13और हमें परीक्षा में न डाल,
बल्कि बुराई से हमें बचा।
[क्योंकि राज्य, सामर्थ्य और महिमा सदा तेरे
हैं। आमेन**]

14"यदि तुम दूसरों के अपराध क्षमा करोगे,
तो तुम्हारा स्वर्गिक पिता भी तुम्हें क्षमा करेगा।
15परन्तु यदि तुम दूसरों को क्षमा नहीं करोगे,
तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा नहीं
करेगा।

उपवास

16"जब तुम उपवास करते हो तब ढोंगियों
की तरह मुंह उदास बना कर उपवास नहीं
करो। वे अपना मुँह मलिन बना लेते हैं, जिससे
लोग यह समझें कि वे उपवास कर रहे हैं। मैं
तुम लोगों से सच कहता हूँ, वे अपना पुरस्कार
पा चुके हैं। 17जब तुम उपवास करते हो, तो
अपने सिर में तेल लगाओ और अपना मुँह धो
लो, 18जिससे लोगों को नहीं, केवल तुम्हारे
पिता को, जो अदृश्य है, यह दिखाई दे कि तुम
उपवास कर रहे हो। तुम्हारा पिता, जो अदृश्य
को भी देखता है, तुम्हें पुरस्कार देगा।

सच्चा धन

19 "पृथ्वी पर अपने लिए धन जमा नहीं
करो, जहाँ मोरचा लगता है, कीड़े खाते हैं और
चोर सेंध लगा कर चुरा लेते हैं। 20परन्तु स्वर्ग
में अपने लिए धन जमा करो, जहाँ न तो मोरचा
लगता है, न कीड़े खाते हैं और न चोर सेंध लगा
कर चुराते हैं। 21क्योंकि जहाँ तुम्हारा धन है,
वहीं तुम्हारा मन भी लगा रहेगा।

शरीर की ज्योति

22"आँख शरीर का दीपक है। यदि तुम्हारी
आँखें अच्छी हैं, तो तुम्हारा सारा शरीर प्रकाशमान
होगा; 23किन्तु यदि तुम्हारी आँखें खराब हो
जाएँ, तो तुम्हारा सारा शरीर अन्धकारमय
होगा। इसलिए यदि तुम्हारे भीतर की ज्योति ही
अन्धकार हो, तो यह कितना घोर अन्धकार
होगा!

धर्म और धन

24"कोई भी मनुष्य दो स्वामियों की सेवा
नहीं कर सकता। वह या तो एक से बैर और
दूसरे से प्रेम करेगा, या एक का आदर और दूसरे
का तिरस्कार करेगा। तुम परमेश्वर और धन,
दोनों की सेवा नहीं कर सकते।

परमेश्वर पर भरोसा

25"मैं तुम लोगों से कहता हूँ, चिन्ता मत

---

* अथवा, 'दिन-भर का भोजन', 'आवश्यक भोजन', 'आने वाले दिन का भोजन', 'उत्तम भोजन', 'रोटी', 'आहार'
** कुछ प्राचीन प्रतियों में यह पंक्ति नहीं पाई जाती।

6 : 6 2 रा 4 : 33 **6 : 7** यश 1 : 15; प्रव 7 : 14 **6 : 8** मत 6 : 32 **6 : 9** लू 11 : 2-4; यो 17 : 6; 12 : 28; यहेज 20 : 41; 36 : 23 **6 : 10** मत 7 : 21; लू 22 : 42 **6 : 12** मत 14 : 15; 18 : 21-35 **6 : 13** 1 इति 29 : 11-13; यो 17 : 11.15; प्रव 23: 1, 33 : 1 **6 : 14** प्रव 28 : 1-5 **6 : 15** मक 11 : 25-26 **6 : 16** यश 58 : 5-9; योए 2 : 13 **6 : 17** यहूदी 10 : 3 **6 : 20** मत 19 : 21; लू 1,2 : 33-34; कुल 3 : 1-2; प्रव 29 : 11 **6 : 22** लू 11 : 34-36 **6 : 23** मत 20 : 15 **6 : 24** लू 16 : 9-13 **6 : 25-33** लू 12 : 22-31 **6 : 25** फिल 4 : 6 ; 1 पत 2 : 7; 1 तिम 6 : 6; इब्र 13 : 5

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

करो—न अपने जीवन-निर्वाह की, कि हम
क्या खायें अथवा क्या पीयें और न अपने शरीर
की, कि हम क्या पहनें। क्या जीवन भोजन से
बढ़ कर नहीं ? और क्या शरीर कपड़े से बढ़ कंर
नहीं ? 26आकाश के पक्षियों को देखो। वे न तो
बोते हैं, न लुनते हैं और न बखारों में जमा करते
हैं। फिर भी तुम्हारा स्वर्गिक पिता उन्हें खिलाता
है। क्या तुम उन से बढ़ कर नहीं हो ? 27चिन्ता
करने से तुम में से कौन अपनी आयु एक घड़ी
भर भी बढ़ा सकता है ?* 28और कपड़ों की
चिन्ता क्यों करते हो ? खेत के फूलों से सीखो।
वे कैसे बढ़ते हैं ! वे न तो श्रम करते हैं और न
कातते हैं। 29फिर भी मैं तुमसे कहता हूँ कि
राजा सुलेमान अपने समस्त वैभव में उन में से
किसी एक के समान विभूषित नहीं था। 30ओ
अल्पविश्वासियो ! यदि परमेश्वर मैदान की
घास को, जो आज भर है और कल आग में
झोंक दी जायेगी, इस प्रकार पहनाता है, तो वह
तुम्हें क्यों नहीं पहनायेगा ?

31"इसलिए चिन्ता मत करो। यह मत कहो
कि हम क्या खायेंगे, क्या पियेंगे, क्या पहनेंगे।
32इन सब वस्तुओं की खोज तो अन्यजातियाँ
करती हैं। तुम्हारा स्वर्गिक पिता जानता है कि
तुम्हें इन सभी वस्तुओं की जरूरत है। 33तुम सब
से पहले परमेश्वर के राज्य और उसकी
धार्मिकता की खोज करो तो ये सब वस्तुएं भी
तुम्हें मिल जायेंगी। 34अत: कल की चिन्ता मत
करो। कल अपनी चिन्ता स्वयं कर लेगा। आज
का दु:ख आज के लिए ही बहुत है।

दूसरों पर दोष नहीं लगाना

7 "दोष नहीं लगाओ, जिससे तुम पर भी
दोष न लगाया जाये; क्योंकि 2जिस प्रकार
तुम दोष लगाते हो, उसी प्रकार तुम पर भी दोष
लगाया जायेगा और जिस नाप से तुम नापते हो,
उसी से तुम्हारे लिए भी नापा जायेगा। 3जब तुम्हें
अपनी ही आँख के लट्ठे का पता नहीं, तो तुम
अपने भाई-बहिन की आँख का तिनका क्यों
देखते हो ? 4जब तुम्हारी ही आँख में लट्ठा है,
तो तुम अपने भाई-बहिन से कैसे कह सकते
हो, 'लाओ, मैं तुम्हारी आँख का तिनका
निकाल दूँ ?' 5ओ ढोंगी ! पहले अपनी ही आँख
का लट्ठा निकाल। तभी तू अपने भाई-बहिन
की आँख से तिनका निकालने के लिए अच्छी
तरह देख सकेगा।

अपवित्रीकरण

6"पवित्र वस्तु कुत्तों को मत दो और अपने
मोती सूअरों के सामने मत फेंको। कहीं ऐसा
न हो कि वे उन्हें अपने पैरों तले रौंदें और पलट
कर तुम्हें फाड़ डालें।

प्रार्थना का प्रभाव

7"मांगो तो तुम्हें दिया जायेगा; ढूँढ़ो तो तुम
पाओगे; खटखटाओ तो तुम्हारे लिए खोला
जायेगा। 8क्योंकि जो माँगता है, उसे मिलता है;
जो ढूँढ़ता है, वह पाता है और जो खटखटाता
है, उसके लिए द्वार खोला जाता है।

9"यदि तुम्हारा पुत्र तुम से रोटी माँगे, तो तुम
में ऐसा कौन पिता है जो उसे पत्थर देगा
10अथवा मछली माँगे, तो उसे साँप देगा ? 11बुरे
होने पर भी यदि तुम अपने बच्चों को सहज ही
अच्छी वस्तुएं देते हो, तो तुम्हारा स्वर्गिक पिता
अपने माँगने वालों को अच्छी वस्तुएं क्यों नहीं
देगा ?

स्वर्णिम नियम

12"हर समय दूसरों से अपने प्रति जैसा
व्यवहार चाहते हो, तुम भी उनके प्रति वैसा ही
व्यवहार किया करो; क्योंकि व्यवस्था-ग्रन्थ
और नबियों की यही शिक्षा है।

दो मार्ग

13"सँकरे द्वार से प्रवेश करो। चौड़ा है वह
फाटक और विस्तृत है वह मार्ग, जो विनाश की
ओर ले जाता है। उस पर चलने वालों की
संख्या बड़ी है। 14किन्तु सँकरा है वह द्वार और

---

* इस पद का अनुवाद इस प्रकार भी हो सकता है: "अपने शरीर की लम्बाई एक हाथ और बढ़ा सकता है ?"

6 : 26 मत 10 : 29-31 **6 : 29** 1 रा 10 : 4-7 **6 : 32** मत 6 : 8 **6 : 33** रो 14:17; 1 रा 3: 13-14; भज 37 : 4, 25 **6 : 34** नि 16 : 19 **7 : 1** रो 2 : 1; 1 कुर 4 : 5 **7 : 2** मक 4 : 24 **7 : 6** मत 10 : 11; नीति 9 : 7 **7 : 7** मक 11: 24; लू 11 : 9-13; यिर 29 : 13-14; यो 14 : 13; 16 : 23 **7 : 11** याक 1 : 17 **7 : 12** मत 22 : 39-40; रो 13 : 8-10; तोब 4 : 15 **7 : 13** लू 13 : 24; यो 10 : 7-9; प्रव 15 : 17 **7 : 14** मत 19 : 24; प्रे 14 : 22

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

संकीर्ण है वह मार्ग, जो जीवन की ओर ले जाता
है। जो उसे पाते हैं, उनकी संख्या थोड़ी है।

झूठे नबी

15“झूठे नबियों से सावधान रहो। वे भेड़ों
के वेश में तुम्हारे पास आते हैं, किन्तु वे भीतर
से खूँखार भेड़िये हैं। 16उनके फलों से तुम उन्हें
पहचान जाओगे। क्या लोग कँटीली झाड़ियों से
अंगूर या ऊँट-कटारों से अंजीर तोड़ते हैं?
17इस तरह हर अच्छा पेड़ अच्छे फल देता है
और बुरा पेड़ बुरे फल देता है। 18अच्छा पेड़
बुरे फल नहीं दे सकता और न बुरा पेड़ अच्छे
फल। 19जो पेड़ अच्छा फल नहीं देता, उसे
काटा और आग में झोंक दिया जाता है।
20इसलिए उनके फलों से ही तुम उन्हें पहचान
जाओगे।

कथनी और करनी

21“जो लोग मुझे ‘प्रभु! प्रभु!’ कह कर
पुकारते हैं, उन में सब-के-सब स्वर्गराज्य में
प्रवेश नहीं करेंगे। जो मेरे स्वर्गिक पिता की
इच्छा पूरी करता है, वही स्वर्गराज्य में प्रवेश
करेगा। 22उस दिन बहुत-से लोग मुझ से
कहेंगे, ‘प्रभु! प्रभु! क्या हमने आपके नाम से
नबूवत नहीं की? आपके नाम से भूतों को नहीं
निकाला? आपके नाम से सामर्थ्य के अनेक
कार्य नहीं किए?’ 23तब मैं उन्हें साफ-साफ
बता दूँगा, ‘मैंने तुम लोगों को कभी नहीं जाना।
कुकर्मियो! मुझ से दूर हटो।’

पक्की और कच्ची नींव

24“जो मेरी ये बातें सुनता और उन पर
चलता है, वह उस समझदार मनुष्य के सदृश
है, जिसने चट्टान पर अपना घर बनवाया था।
25पानी बरसा, नदियों में बाढ़ आयी, आँधियाँ
चलीं और वेगपूर्वक उस घर से टकरायीं। तब
भी वह घर नहीं ढहा; क्योंकि उसकी नींव
चट्टान पर डाली गयी थी।
26“जो मेरी ये बातें सुनता है, किन्तु उन पर
नहीं चलता, वह उस मूर्ख के सदृश है, जिसने
बालू पर अपना घर बनवाया। 27पानी बरसा,
नदियों में बाढ़ आयी, आँधियाँ चलीं और उस
घर से टकरायीं। वह घर ढह गया और उसका
सर्वनाश हो गया।”
28जब येशु ने अपना यह उपदेश समाप्त
किया, तब जनसमूह उनकी शिक्षा सुनकर
आश्चर्यचकित हो गया; 29क्योंकि येशु उनके
शास्त्रियों की तरह नहीं बल्कि अधिकार के
साथ उन्हें शिक्षा देते थे।

कुष्ठ-रोगी को स्वास्थ्य-लाभ

8 येशु पहाड़ी से उतरे। एक विशाल जनसमूह
उनके पीछे हो लिया। 2उस समय एक
कुष्ठरोगी उनके पास आया और उसने यह
कहते हुए उन्हें दण्डवत किया, “प्रभु! आप
चाहें, तो मुझे शुद्ध* कर सकते हैं।” 3येशु ने
हाथ बढ़ा कर उसको स्पर्श किया और कहा,
“मैं यही चाहता हूँ। तुम शुद्ध हो जाओ।”
उसी क्षण वह कुष्ठरोग से शुद्ध हो गया। 4येशु
ने उस से कहा, “सावधान! किसी से कुछ न
कहना। जाकर अपने आपको पुरोहित को
दिखाओ और मूसा द्वारा निर्धारित भेंट चढ़ाओ,
जिससे सब लोगों को मालूम हो जाए कि तुम
स्वस्थ हो गए हो।”

शतपति के सेवक को स्वास्थ्य-लाभ

5येशु कफरनहूम नगर में प्रवेश कर ही रहे
थे कि एक रोमन शतपति उनके पास आया और
उसने उन से यह निवेदन किया, 6“प्रभु! मेरा
सेवक घर में पड़ा हुआ है। उसे लकुवा हो गया
है और वह घोर पीड़ा सह रहा है।” 7येशु ने
उससे कहा, “मैं आ कर उसे स्वस्थ कर
दूँगा।” 8शतपति ने उत्तर दिया, “प्रभु! मैं इस

---

*प्रभु येशु के समय में विशेष चर्मरोग से पीड़ित व्यक्ति यहूदी धर्मविधि के लिए अशुद्ध माना जाता था।

7 : 15 मत 24 : 4-5.24; प्रे 20 : 29 **7 : 16** मल 5 : 19-22; याक 3 : 12; प्रव 27 : 6 **7 : 17** मत 12 : 33 **7 : 19** मत 3 : 10; यू 15 : 2.6 **7 : 21** मत 21 : 29; रो 2 : 13; याक 1 : 22.25; 2 : 14; 1 कुर 12 : 3 **7 : 22** यिर 14 : 14; 27 : 15; लू 13 : 25-27; 1 कुर 13 : 1-2 **7 : 23** मत 13 : 41; 25 : 41; 2 तिम 2 : 19; भज 6 : 8 **7 : 24** मत 7 : 21 **7 : 27** यहेज 13 : 10-11 **7 : 28** मत 11 : 1; 13 : 53; 19 : 1; 26 : 1; मक 1 : 22; लू 4 : 32 **7 : 29** यो 7 : 46 **8 : 1-4** मक 1 : 40-44; लू 5 : 12-14 **8 : 4** मत 9 : 30; मक 7 : 36; लू 17 : 14; लेव 13 : 49; 14 : 2-32 **8 : 5-13** लू 7 : 1-10 **8 : 5** यो 4 : 47

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

योग्य नहीं हूँ कि आप मेरे यहाँ आयें । आप
एक ही शब्द कह दीजिए और मेरा सेवक
स्वस्थ हो जायेगा। 9मैं स्वयं शासन के अधीन
हूँ और सैनिक मेरे अधीन हैं। जब मैं एक से
कहता हूँ—'जाओ', तो वह जाता है और दूसरे
से—'आओ', तो वह आता है और अपने
सेवक से—'यह करो', तो वह करता है।''
10येशु यह सुनकर चकित हो गये और उन्होंने
अपने पीछे आने वालों से कहा, ''मैं तुम लोगों
से सच कहता हूँ, इस्राएल में भी मैंने किसी में
इतना दृढ़ विश्वास नहीं पाया।
11''मैं तुम से कहता हूँ, बहुत लोग पूर्व और
पश्चिम से आ कर अब्राहम, इसहाक और
याकूब के साथ स्वर्गराज्य के भोज में सम्मिलित
होंगे, 12परन्तु राज्य की सन्तान को बाहर,
अन्धकार में फेंक दिया जायेगा। वहाँ वे लोग
रोयेंगे और दाँत पीसेंगे।''
13शतपति से येशु ने कहा, ''जाओ, तुमने
जैसा विश्वास किया है वैसा ही तुम्हारे लिए हो
जाये।'' और उसी घड़ी उसका सेवक स्वस्थ
हो गया।

पतरस की सास

14जब येशु पतरस के घर पहुँचे, तब उन्होंने
देखा कि पतरस की सास बुखार में पड़ी हुई है।
15उन्होंने उसका हाथ स्पर्श किया और उसका
बुखार उतर गया और वह उठ कर उनका सेवा-
सत्कार करने लगी।

बहुतों को स्वास्थ-लाभ

16सन्ध्या होने पर लोग बहुत-से भूतग्रस्त
मनुष्यों को येशु के पास ले आये। येशु ने शब्द
मात्र से उन आत्माओं को निकाला और सब
रोगियों को स्वस्थ कर दिया। 17इस प्रकार नबी
यशायाह का यह कथन पूरा हुआ : ''उसने
हमारी दुर्बलताओं को स्वयं भोगा* और हमारे
रोगों का बोझ उठा लिया।''

शिष्य बनने की शर्तें

18अपने को भीड़ से घिरा देख कर येशु ने
झील के उस पार चलने का आदेश दिया।
19उसी समय एक शास्त्री आ कर येशु से बोला,
''गुरुवर! आप जहाँ कहीं भी जायेंगे, मैं आपके
पीछे-पीछे चलूँगा''। 20येशु ने उससे कहा,
''लोमड़ियों के लिए माँदें हैं और आकाश के
पक्षियों के लिए घोंसले, परन्तु मानव पुत्र के
लिए सिर रखने को भी कहीं स्थान नहीं है।''
21शिष्यों में किसी ने उन से कहा, ''प्रभु!
मुझे पहले अपने पिता को दफनाने के लिए जाने
दीजिए।'' 22परन्तु येशु ने उससे कहा, ''तुम
मेरे पीछे चले आओ; मुरदों को अपने मुरदे
दफनाने दो।''

तूफान को शान्त करना

23येशु नाव पर सवार हुए तो उनके शिष्य
उनके साथ हो लिये । 24उस समय झील में
एकाएक इतना प्रचंड तूफान उठा कि नाव
लहरों से ढकी जा रही थी। परन्तु येशु सो रहे
थे। 25शिष्यों ने पास आ कर उन्हें जगाया और
कहा, ''प्रभु! हमें बचाइए! हम डूब रहे हैं!''
26येशु ने उन से कहा, ''अल्पविश्वासियो!
डरते क्यों हो ?'' तब उन्होंने उठ कर वायु और
झील को डाँटा और पूर्ण शान्ति छा गयी। 27इस
पर वे लोग अचम्भे में पड़ गये, और बोल उठे,
''आखिर यह कैसे मनुष्य हैं ? वायु और समुद्र
भी इनकी आज्ञा मानते हैं।''

दो भूतग्रस्त मनुष्यों को स्वस्थ करना

28जब येशु झील के उस पार गदरेनियों के
प्रदेश पहुँचे, तो दो भूतग्रस्त मनुष्य कबरों से
निकल कर उनके पास आये। वे इतने उग्र थे
कि उस रास्ते से कोई भी आ-जा नहीं सकता
था। 29वे चिल्ला उठे, ''परमेश्वर के पुत्र! हम

* अथवा, ''दुर्बलताओं को दूर किया।''

8 : 9 बारू 3 : 33-35 **8 : 10** मत 15 : 28 **8 : 11** लू 13 : 28-29; यश 49 : 12; 59 : 19 मला 1 : 11; भज 107 : 3 **8 : 12** मत 22 : 13; 24 : 51; 25 : 30 **8 : 13** मत 9 : 29; 15 : 28 **8 : 14-16** मक 1 : 29-34; लू 4 : 38-41 **8 : 14** 1 कुर 9 : 5 **8 : 17** यश 53 : 4 **8 : 18** मक 4 : 35; लू 8 : 22 **8 : 19-22** लू 9 : 57-60 **8 : 20** 2 कुर 8 : 9 **8 : 21** 1 रा 19 : 20; तोब 4 : 3-4 **8 : 22** यो 1 : 43; मत 5 : 25; रोम 6 : 13 **8 : 23-27** मक 4 : 23-41; लू 8 : 23-25 **8 : 23** भज 4 : 8 **8 : 26** मत 14 : 31; 16 : 8; भज 65 : 7 **8 : 28-34** मक 5 : 1-17; लू 8 : 26-37 **8 : 29** लू 4 : 41; 2 पत 2 : 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

से आप को क्या काम ? क्या आप यहाँ समय
से पहले हमें सताने आये हैं ?'' 30वहाँ कुछ दूरी
पर सूअरों का एक बड़ा झुण्ड चर रहा था।
31भूतों ने निवेदन किया, ''यदि आप हम को
निकाल ही रहे हैं, तो हमें सूअरों के झुण्ड
में भेज दीजिए। ।'' 32येशु ने उन से कहा,
''जाओ।'' तब भूत उन मनुष्यों से निकल कर
सूअरों में समा गए और सारा झुण्ड तेजी से ढाल
पर से झील की ओर झपटा और पानी में डूब
कर मर गया।
33सूअर चराने वाले भागे और नगर में
जाकर पूरा समाचार सुनाया। उन्होंने उन दो
मनुष्यों के विषय में भी बताया जो भूतों से
जकड़े थे। 34इस पर सारा नगर येशु से मिलने
निकला और उन्हें देख कर लोगों ने निवेदन
किया कि वह उनके प्रदेश से चले जायें।

लकुवे के रोगी को स्वस्थ करना

9 येशु नाव पर बैठ गये और झील को पार
कर अपने नगर में* आये। 2उस समय कुछ
लोग खाट पर पड़े हुए लकुवे के एक रोगी को
उनके पास लाये। उनका विश्वास देख कर येशु
ने लकुवे के रोगी से कहा, ''पुत्र, धैर्य रखो!
तुम्हारे पाप क्षमा हो गये।'' 3कुछ शास्त्रियों ने
मन में सोचा—यह तो ईश-निन्दा करता है।
4उनके ये विचार जान कर येशु ने कहा, ''तुम
लोग मन में बुरे विचार क्यों ला रहे हो?
5अधिक सहज क्या है—यह कहना, 'तुम्हारे
पाप क्षमा हो गये हैं' अथवा यह कहना, 'उठो
और चलो-फिरो'? 6किन्तु इसलिए कि तुम
लोग यह जान लो कि मानव पुत्र को पृथ्वी पर
पाप क्षमा करने का अधिकार है''—तब वह
लकुवे के रोगी से बोले—''उठो और अपनी
खाट उठा कर घर जाओ।'' 7और वह उठा और
अपने घर चला गया। 8यह देख कर लोग डर
गए और परमेश्वर की स्तुति करने लगे, जिसने
मनुष्यों को ऐसा अधिकार प्रदान किया है।

मत्ती को आहवान

9येशु वहाँ से आगे बढ़े। उन्होंने मत्ती नामक
व्यक्ति को चुंगी-घर में बैठा हुआ देखा और
उससे कहा, ''मेरे पीछे आओ'', और वह उठ
कर उनके पीछे हो लिया।
10जब येशु घर में भोजन करने बैठे तब
अनेक चुंगी-अधिकारी और पापी जन आए।
वे भी येशु और उनके शिष्यों के साथ भोज में
सम्मिलित हो गए।
11यह देख कर फरीसियों ने उनके शिष्यों से
कहा, ''तुम्हारे गुरु चुंगी-अधिकारियों और
पापियों के साथ क्यों भोजन कर रहे हैं?''
12येशु ने यह सुन कर उन से कहा, ''नीरोगों
को नहीं, किन्तु रोगियों को वैद्य की आवश्यकता
होती है। 13जा कर सीखो कि इस कथन का
क्या अर्थ : 'मैं बलिदान नहीं, बल्कि दया
चाहता हूँ।' मैं धार्मिकों को नहीं, पापियों को
बुलाने आया हूँ।''

उपवास का प्रश्न

14तब योहन के शिष्य आये और यह बोले,
''क्या कारण है कि हम और फरीसी बहुत
उपवास करते हैं, किन्तु आपके शिष्य उपवास
नहीं करते?'' 15येशु ने उन से कहा, ''जब तक
दूल्हा साथ है, क्या बाराती शोक मना सकते हैं?
किन्तु वे दिन आयेंगे, जब दूल्हा उन से ले लिया
जायेगा। तब वे उपवास करेंगे।
16''कोई पुराने कपड़े पर कोरे कपड़े का
पैबंद नहीं लगाता, क्योंकि वह पैबंद सिकुड़
कर पुराना कपड़ा फाड़ देता है और चीर बढ़
जाती है। 17इसी प्रकार लोग पुरानी मशकों में
नया दाखरस नहीं भरते। नहीं तो मशकें फट
जाती हैं, दाखरस बह जाता है और मशकें
बरबाद हो जाती हैं। लोग नया दाखरस नयी
मशकों में भरते हैं। इस प्रकार दोनों ही सुरक्षित
रहते हैं।''

* अर्थात् 'कफरनहूम' (4 : 13) में आए।

9 : 1-8 मक 2 : 1-12; लू 5 : 17-26 **9 : 1** मत 4 : 13 **9 : 3** मक 2 : 7 **9 : 4** मत 12 : 25; यो 2 : 25 **9 : 9-13** मक 2 : 13-17; लू 5 : 27-32 **9 : 11** लू 15 : 2 **9 : 13** हो 6 : 6; 1 शम 15 : 22; 18 : 11 **9 : 14-17** मक 2 : 18-22; लू 5 : 33-38 **9 : 14** लू 18 : 12 **9 : 15** यो 3 : 29 **9 : 16** यो 1 : 17 **9 : 18-26** मक 5 : 22-43; लू 8 : 41-56

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अधिकारी की पुत्री और रक्तस्राव-पीड़िता

18येशु उन से ये बातें कह ही रहे थे कि एक
अधिकारी आया। उसने येशु के सामने घुटने
टेक कर यह कहा, "मेरी बेटी की अभी-अभी
मृत्यु हुई है। फिर भी आप चल कर उस पर हाथ
रखिए और वह जीवित हो जायेगी।" 19येशु
उठ कर अपने शिष्यों के साथ उसके पीछे
गए।

20उस समय एक स्त्री, जो बारह बरस से
रक्तस्राव से पीड़ित थी, पीछे से आई और उसने
येशु के वस्त्र के सिरे को छू लिया; 21क्योंकि
उसने अपने मन में यह कहा था—यदि मैं
उनका वस्त्र ही छू लूंगी तो स्वस्थ हो जाऊँगी।
22येशु ने मुड़ कर उसे देखा और कहा,
"पुत्री, धैर्य रखो। तुम्हारे विश्वास ने तुम्हें
स्वस्थ कर दिया है।" और वह स्त्री उसी क्षण
स्वस्थ हो गयी।

23जब येशु अधिकारी के घर पहुँचे और
बाँसुरी बजाने वालों को और लोगों को रोते-
पीटते देखा 24 तो बोले, "हट जाओ, बालिका
नहीं मरी है वरन् सो रही है।" इस पर वे उनकी
हँसी उड़ाने लगे। 25जब भीड़ बाहर कर दी
गयी, तब येशु घर के भीतर गए। उन्होंने हाथ
पकड़ कर बालिका को उठाया और वह उठ
खड़ी हुई। 26इस बात की चर्चा उस इलाके के
कोने-कोने में फैल गयी।

दो अन्धों को दृष्टिदान

27येशु वहाँ से आगे बढ़े तो दो अन्धे यह
पुकारते हुए उनके पीछे हो लिये, "दाऊद के
वंशज! हम पर दया कीजिये।" 28जब येशु घर
पहुँचे, तो ये अन्धे उनके पास आये। येशु ने उन
से पूछा, "क्या तुम्हें विश्वास है कि मैं यह कर
सकता हूँ?" उन्होंने कहा, "जी हाँ, प्रभु!"
29तब येशु ने यह कहते हुए उनकी आँखों का
स्पर्श किया, "जैसा तुमने विश्वास किया, वैसा
ही तुम्हारे लिए हो जाये।" 30और उनकी आँखें
खुल गयीं। येशु ने यह कहते हुए उन्हें कड़ी
चेतावनी दी, "सावधान! यह बात कोई न
जानने पाये।" 31परन्तु उन्होंने जाकर उस पूरे
इलाके में येशु का नाम फैला दिया।

भूतग्रस्त गूंगा

32दोनों बाहर निकल ही रहे थे कि कुछ
लोग भूत से जकड़े हुए एक गूंगे मनुष्य को येशु
के पास लाये। 33येशु ने भूत को निकाल दिया
और वह गूँगा बोलने लगा। लोग अचम्भे में पड़
कर बोल उठे, "इस्राएल में ऐसा कभी नहीं
देखा गया है।" 34परन्तु फरीसियों ने कहा,
"यह भूतों के नायक की सहायता से भूतों को
निकालता है।"

येशु की अनुकम्पा

35येशु सब नगरों और गाँवों में भ्रमण कर
उनके सभागृहों में शिक्षा देते, राज्य के
शुभसमाचार का प्रचार करते, और हर तरह की
बीमारी और दुर्बलता दूर करते रहे।

36जनसमूह को देख कर येशु को उन पर
तरस आया, क्योंकि वे उत्पीड़ित और निस्सहाय
थे। वे उन भेड़ों के समान थे जिनका कोई
चरवाहा न हो। 37येशु ने अपने शिष्यों से कहा,
"फसल तो बहुत है, परन्तु मजदूर थोड़े हैं।
38इसलिए फसल के स्वामी से विनती करो कि
वह अपनी फसल काटने के लिए मजदूरों को
भेजे।"

बारह प्रेरितों के नाम

10 येशु ने अपने बारह शिष्यों को अपने
पास बुला कर उन्हें अशुद्ध आत्माओं
को निकालने तथा हर तरह की बीमारी और
दुर्बलता दूर करने का अधिकार प्रदान किया।
2बारह प्रेरितों* के नाम इस प्रकार हैं—पहला,
सिमोन जो पतरस कहलाता है, और उसका
भाई अन्द्रेयास; जबदी का पुत्र याकूब और
उसका भाई योहन; 3फिलिप और बरतोलोमी;
थोमस और चुंगी-अधिकारी मत्ती; हलफई का
पुत्र याकूब और तद्दै; 4शिमोन कनानी और यूदस**
इस्करियोती, जिसने येशु को पकड़वाया।

* अर्थात्, भेजा गया व्यक्ति, प्रेषित **अथवा, 'यहूदा'

9 : 21 मत 14 : 36 **9 : 24** यो 11 : 11.14.25 **9 : 29** मत 8 : 13 **9 : 30** मत 8 : 4 **9 : 34** मत 12 : 24 **9 : 35** मत 4 : 23 **9 : 36** मत 14 : 14; मक 6 : 34; गण 27 : 17; यहेज 34 : 5; यहूदी 11 : 19 **9 : 37** लू 10 : 2 **10 : 1–15** मक 6 : 7–13; लू 9 : 1–5 **10 : 2–4** मक 3 : 14–19; लू 6 : 13–16; यो 1 : 40–49

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रेरितों का प्रेषण

5येशु ने इन बारहों को यह आदेश दे कर
भेजा, ''अन्यजातियों के यहाँ मत जाओ और
न सामरियों के नगरों में प्रवेश करो, 6बल्कि
इस्राएल के घराने की खोयी हुई भेड़ों के पास
जाओ। 7राह चलते यह संदेश सुनाओ: 'स्वर्ग
का राज्य निकट आ गया है।' 8रोगियों को स्वस्थ
करो, मुरदों को जिलाओ, कुष्ठरोगियों को शुद्ध
करो, भूतों को निकालो। तुम्हें मुफ्त में मिला
है, मुफ्त में दे दो।
9''अपनी थैली+ में सोना, चाँदी या पैसा
नहीं लो। 10रास्ते के लिए न झोली, न दो कुरते,
न जूते, और न लाठी लो; क्योंकि मजदूर को
उसका भोजन मिलना चाहिए।
11''जिस किसी नगर या गाँव में प्रवेश करो,
तो पता लगाओ कि वहाँ कौन सुपात्र है और
विदा होने तक उसी के यहाँ ठहरो। 12घर में
प्रवेश करते समय उसे शान्ति की आशिष दो।
13यदि वह घर योग्य है, तो अपनी शान्ति उस
पर रहने दो। यदि वह घर योग्य नहीं है, तो
अपनी शान्ति अपने पास लौट आने दो। 14यदि
कोई तुम्हारा स्वागत न करे और तुम्हारी बातें
न सुने, तो उस घर या उस नगर से निकलने पर
अपने पैरों की धूल झाड़ दो। 15मैं तुम से सच
कहता हूँ—न्याय के दिन उस नगर की दशा की
अपेक्षा सदोम और गमोरा नगरों की दशा कहीं
अधिक सहनीय होगी।

भावी संकट

16''देखो, मैं तुम्हें भेड़ियों के बीच भेड़ों की
तरह भेज रहा हूँ। इसलिए साँप की तरह चतुर
और कपोत की तरह निष्कपट बनो।
17''मनुष्यों से सावधान रहो। वे तुम्हें
धर्मसभाओं के हाथ में सौंप देंगे और अपने
सभागृहों में तुम्हें कोड़े लगायेंगे। 18तुम मेरे कारण
शासकों और राजाओं के सामने पेश किये
जाओगे, जिससे मेरे विषय में तुम उन्हें और
गैर-यहूदियों को साक्षी दे सको।
19''जब वे तुम्हें पकड़वाएँ तब यह चिन्ता
नहीं करना कि तुम कैसे बोलोगे और क्या
कहोगे; क्योंकि जो शब्द तुमको कहने होंगे वे
उस समय तुम्हें दिये जाएंगे। 20क्योंकि बोलने
वाले तुम नहीं हो, बल्कि तुम्हारे पिता का
आत्मा है, जो तुम्हारे द्वारा बोलता है। 21भाई अपने
भाई को मृत्यु के लिए सौंप देगा और पिता
अपनी सन्तान को। सन्तान अपने माता-पिता
के विरुद्ध उठ खड़ी होगी और उन्हें मरवा
डालेगी। 22मेरे नाम के कारण सब लोग तुम से
बैर करेंगे, किन्तु जो अन्त तक सहता रहेगा,
उसे मुक्ति मिलेगी++
23''जब वे तुम्हें एक नगर में सताएं, तो तुम
दूसरे नगर में भाग जाना। मैं तुम से सच कहता
हूँ, तुम इस्राएल देश के सब नगरों का भ्रमण
समाप्त भी नहीं कर पाओगे कि मानव पुत्र आ
जायेगा।
24''न शिष्य गुरु से बड़ा होता है और न
सेवक अपने स्वामी से। 25शिष्य के लिए अपने
गुरु-जैसा और सेवक के लिए अपने स्वामी-
जैसा बन जाना ही बहुत है। यदि लोगों ने घर
के स्वामी को बअलजबूल* कहा है, तो वे
उसके घर वालों को क्या कुछ नहीं कहेंगे?

शिष्यों की निर्भीकता

26''इसलिए उन से नहीं डरो। ऐसा कुछ भी
गुप्त नहीं है, जो प्रकाश में नहीं लाया जायेगा
और ऐसा कुछ भी छिपा हुआ नहीं है, जो प्रकट
नहीं किया जायेगा। 27जो मैं तुम से अँधेरे में
कहता हूँ, उसे तुम उजाले में सुनाओ। जो तुम्हें

+ शब्दश: 'अपने फेंटे में' ++ अथवा, 'स्थिर रहेगा, वही बचाया जाएगा' * भूतों के नायक का एक अपमानजनक नाम

10 : 6 मत 15 : 24; प्रे 13 : 46; यिर 50 : 6 **10 : 7** मत 4 : 17; लू 10 : 9 **10 : 8** प्रे 20 : 33 **10 : 10** लू 10 : 4; 1 तिम 5 : 18; गण 18 : 31 **10 : 12** लू 10 : 5-6 **10 : 14** लू 10-12; प्रे 13 : 51; 18 : 6 **10 : 15** मत 11 : 24; लू 20 : 47 **10 : 16** लू 10 : 3; यो 10 : 12; प्रे 20 : 29 रोम 16 : 19; इफ 5 : 15 **10 : 17-22** मक 13 : 9-13; लू 21 : 12-17 **10 : 17** मत 24 : 9 **10 : 18** मत 24 : 14; प्रे 25 : 23; 27 : 24 **10 : 19** लू 12 : 11-12 **10 : 20** यो 14-26 1 कुर 2 : 4 **10 : 21** मत 10 : 35; मी 7 : 6 **10 : 22** मत 24 : 9, 13; यो 15 :21 **10 : 23** मत 16 : 28 **10 : 24** लू 6 : 40; यो 13 : 16; 15 : 20 **10 : 25** मत 12 : 24 **10 : 26-33** लू 12 : 2-9 **10 : 26** मक 4 : 22; लू 8 : 17

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कानों में कहा जाता है, उसे तुम छतों पर से
पुकार-पुकार कर कहो।
28 "उन से नहीं डरो, जो शरीर को मार
डालते हैं, किन्तु आत्मा को नहीं मार सकते;
बल्कि उससे डरो, जो शरीर और आत्मा, दोनों
को नरक में नष्ट कर सकता है।
29 "क्या एक पैसे में दो गौरैयाँ नहीं बिकतीं?
फिर भी तुम्हारे पिता के जाने बिना उन में से एक
भी धरती पर नहीं गिरती। 30 तुम्हारे तो सिर के
बाल भी सब गिने हुए हैं। 31 इसलिए नहीं
डरो। तुम बहुत गौरैयों से बढ़ कर हो।
32 "जो मुझे मनुष्यों के सामने स्वीकार
करेगा, उसे मैं भी अपने स्वर्गिक पिता के सामने
स्वीकार करूँगा 33 और जो मुझे मनुष्यों के
सामने अस्वीकार करेगा, उसे मैं भी अपने
स्वर्गिक पिता के सामने अस्वीकार करूँगा।

फूट का कारण

34 "यह न समझो कि मैं पृथ्वी पर शान्ति ले
कर आया हूँ। मैं शान्ति नहीं, बल्कि तलवार ले
कर आया हूँ। 35 मैं पुत्र और पिता में, पुत्री और
माता में, बहू और सास में फूट डालने आया हूँ।
36 मनुष्य के शत्रु उसके घर के लोग ही होंगे।

आत्मत्याग

37 "जो पुत्र अपने पिता या अपनी माता को
मुझ से अधिक प्रेम करता है, वह मेरे योग्य
नहीं। जो पिता अपने पुत्र या अपनी पुत्री को
मुझ से अधिक प्रेम करता है, वह मेरे योग्य
नहीं। 38 जो शिष्य अपना क्रूस+ उठा कर मेरा
अनुसरण नहीं करता, वह मेरे योग्य नहीं। 39 जो
मनुष्य अपना प्राण बचाए हुए है, वह उसे
खोएगा; और जो मेरे कारण अपना प्राण खो
चुका है, वह उसे बचाएगा।

पुरस्कार

40 "जो तुम्हारा स्वागत करता है, वह मेरा
स्वागत करता है और जो मेरा स्वागत करता है,
वह उसका स्वागत करता है, जिसने मुझे भेजा
है। 41 जो नबी का इसलिए स्वागत करता है कि
वह नबी है, वह नबी का पुरस्कार पायेगा और
जो धर्मी का इसलिए स्वागत करता है कि वह
धर्मी है, वह धर्मी का पुरस्कार पायेगा।
42 "जो कोई इन छोटों में से किसी को
शिष्य मान कर केवल कटोरा भर ठंडा पानी
पिलायेगा, तो मैं तुम से सच कहता हूँ कि वह
अपना पुरस्कार कदापि नहीं खोएगा।"

11 अपने बारह शिष्यों को ये आदेश देने
के बाद येशु वहाँ से चले गए, और वह
यहूदियों के नगरों में शिक्षा देने और शुभ-
समाचार का प्रचार करने लगे।

योहन बपतिस्मादाता का प्रश्न

2 योहन ने, बन्दीगृह में मसीह के कार्यों की
चरचा सुनकर, अपने शिष्यों को उनके पास यह
पूछने भेजा, 3 "क्या आप वही हैं, जो आने वाले
थे या हम किसी और की प्रतीक्षा करें?" 4 येशु
ने उन्हें उत्तर दिया, "जाओ, तुम जो सुनते और
देखते हो, उसे योहन को बता दो- 5 अन्धे देखते
हैं और लंगड़े चलते हैं, कुष्ठरोगी शुद्ध किये
जाते हैं और बहरे सुनते हैं, मुरदे जिलाये जाते
हैं और गरीबों को शुभसमाचार सुनाया जाता
है। 6 धन्य है वह, जो मेरे विषय में भ्रम में नहीं
पड़ता।"*
7 वे विदा हो ही रहे थे कि येशु जनसमूह से
योहन के विषय में कहने लगे, "तुम लोग
निर्जन प्रदेश में क्या देखने गये थे? हवा से
हिलते हुए सरकण्डे को? नहीं! 8 तो, तुम क्या
देखने गये थे? बढ़िया कपड़े पहने मनुष्य को?
नहीं! बढ़िया कपड़े पहनने वाले राजमहलों में
रहते हैं। 9 फिर तुम क्या देखने निकले थे?
किसी नबी को? निश्चय ही! मैं तुम से कहता

+ अथवा, 'सलीब' * अथवा, "जिसका विश्वास मेरे कारण विचलित नहीं होता।" अथवा, "जो मुझ पर संदेह नहीं करता।"

10 : 28 याक 4 : 12 **10 : 31** मत 12 : 12 **10 : 33** लू 9 : 26 **10 : 34-36** लू 12 : 51-53 **10 : 34** यहेज 21 : 3 **10 : 35** मी 7 : 6 **10 : 37** व्य 33 : 9 लू 14 : 26-27 **10 : 38** मत 16 : 24-25 **10 : 39** लू 17 : 33 यो 12 : 25 **10 : 40** मत 18 : 5; लू 10 : 16 यो 12 : 44; 13 : 20 **10 : 42** मत 25 : 40; मक 9 : 41 **11 : 1** मत 7 : 28; 13 : 53; 19 : 1; 26 : 1 **11 : 2-19** लू 7 : 18-35 **11 : 2** मत 14 : 3 **11 : 3** मला 3 : 1; दन 9 : 26 **11 : 5** यश 35 : 5-6; 61 : 1 **11 : 6** मत 13 : 57; 26 : 31 **11 : 7** मत 3 : 1.5 **11 : 9** लू 1 : 76

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हूँ, नबी से भी महान व्यक्ति को। 10यह वही
है, जिसके विषय में धर्मग्रन्थ में लिखा है,
'परमेश्वर कहता है : देखो , मैं अपने दूत को
तुम्हारे आगे भेज रहा हूँ। वह तुम्हारे आगे
तुम्हारा मार्ग तैयार करेगा।' 11मैं तुम लोगों से
सच कहता हूँ, जो स्त्रियों से उत्पन्न हुए हैं, उनमें
योहन बपतिस्मादाता से महान कोई नहीं हुआ।
फिर भी, स्वर्गराज्य में जो सब से छोटा है, वह
योहन से बड़ा है।

12"योहन बपतिस्मादाता के समय से आज
तक स्वर्गराज्य में बलपूर्वक प्रवेश** हो रहा है,
और बल प्रयोग करने वाले उस पर अधिकार
कर रहे हैं; 13क्योंकि सब नबी और व्यवस्था-
ग्रन्थ योहन के समय तक नबूवत करते रहे।
14यदि तुम मानना चाहो, तो मेरी बात मान लो
कि योहन वही एलियाह हैं, जो आने वाले थे।
15जिसके कान हों, वह सुन ले।

16"मैं इस पीढ़ी की तुलना किस से करूँ ?
वे बाजार में बैठे हुए बालकों के सदृश हैं, जो
अपने साथियों को पुकार कर कहते हैं:

17'हमने तुम्हारे लिए बाँसुरी बजायी
पर तुम नहीं नाचे,
हमने विलाप किया
किन्तु तुमने छाती नहीं पीटी';

18क्योंकि योहन आये, पर वह साधारण
मनुष्य के समान खाते-पीते नहीं थे। और लोग
कहते हैं, 'उन में भूत है।' 19मानव पुत्र आया।
वह साधारण मनुष्य के समान खाता-पीता है
और लोग कहते हैं: 'देखो, यह आदमी पेटू
और पियक्कड़ है। चुंगी-अधिकारियों और
पापियों का मित्र है।' किन्तु परमेश्वर की प्रज्ञा
अपने कर्मों से प्रमाणित होती है।+"

अविश्वासी नगरों को धिक्कार

20तब येशु उन नगरों को धिक्कारने लगे
जिनमें उन्होंने सामर्थ्य के बहुत कार्य किये थे,
किन्तु उनके निवासियों ने ये सामर्थ्य के कार्य
देख कर भी पश्चात्ताप नहीं किया था। 21येशु
ने कहा, "धिक्कार तुझे, खुराजिन! धिक्कार
तुझे, बेतसैदा! जो सामर्थ्य के कार्य तुम में किये
गये हैं, यदि वे सोर और सदोम में किये गये
होते, तो उन्होंने न जाने कब से टाट ओढ़ कर
और भस्म रमा कर पश्चात्ताप कर लिया होता।
22इसलिए मैं तुम से कहता हूँ, न्याय के दिन तेरी
दशा की अपेक्षा सोर और सदोम की दशा कहीं
अधिक सहनीय होगी।

23"और तू, कफरनहूम! क्या तू आकाश
तक ऊँचा उठाया जायेगा ? नहीं! तू अधोलोक
में नीचे गिरा दिया जायेगा; क्योंकि जो सामर्थ्य
के कार्य तुझ में किये गये हैं, यदि वे सदोम में
किये गये होते, तो वह आज तक बना रहता।
24इसलिए मैं तुझ से कहता हूँ, न्याय के दिन
तेरी दशा की अपेक्षा सदोम की दशा कहीं
अधिक सहनीय होगी।"

निर्दोष हृदय की प्रशंसा

25उस समय येशु ने कहा, "पिता! स्वर्ग
और पृथ्वी के प्रभु! मैं तेरी स्तुति करता हूँ;
क्योंकि तूने इन सब बातों को ज्ञानियों और
बुद्धिमानों से गुप्त रखा; किन्तु बच्चों पर
प्रकट किया है। 26हाँ, पिता! यही तुझे अच्छा
लगा।"

प्रेमपूर्ण निमंत्रण

27"मेरे पिता ने मुझे सब कुछ सौंपा है। पुत्र
को कोई नहीं जानता, पर केवल पिता; और न
कोई पिता को जानता है, पर केवल पुत्र और
वह, जिस पर पुत्र उसे प्रकट करना चाहे।

28"हे सब थके-माँदे और बोझ से दबे हुए
लोगो! मेरे पास आओ। मैं तुम्हें विश्राम दूँगा।
29मेरा जूआ अपने ऊपर ले लो और मुझ से

** अथवा, 'स्वर्गराज्य प्रबलता से प्रकट हो रहा है।' + अथवा, "किन्तु परमेश्वर की बुद्धि परिणामों द्वारा सही प्रमाणित हुई है।"

11 : 10 मला 3 : 1; मक 1 : 2 यो 3 : 28 **11 : 11** मत 13 : 17 **11 : 12** लू 16 : 16; 13 : 24; यो 6 : 15 **11 : 14** मला 4 : 5; मत 17 : 10-13 **11 : 17** नीति 29 : 9 **11 : 18** मत 3 : 4 **11 : 19** मत 9 : 14-15 **11 : 20-24** लू 10 : 12-15 **11 : 21** योना 3 : 6 **11 : 23** मत 4 : 13; 8 : 5; 9 : 1; यश 14 : 13-15 **11 : 24** मत 10 : 15 **11 : 25-27** लू 10 : 21-22; तोब 7 : 17 **11 : 25** 1 कुर 1 : 26-29 **11 : 27** मत 28 : 18; यो 3 : 35; 17 : 2 फिल 2 : 9 **11 : 28-30** प्रव 6 : 24-30; 24 : 19; 51 : 23-26 **11 : 28** मत 12 : 20; यिर 31 : 25 **11 : 29** यिर 6 : 16

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सीखो; क्योंकि मैं स्वभाव से नम्र और विनीत
हूँ। इस तरह तुम अपनी आत्मा में शान्ति
पाओगे, 30क्योंकि मेरा जूआ सहज है और मेरा
बोझ हलका है।''

विश्राम दिवस का प्रश्न

12 येशु किसी विश्राम के दिन* गेहूँ के
खेतों से हो कर जा रहे थे। उनके शिष्यों
को भूख लगी और वे बालें तोड़-तोड़ कर खाने
लगे। 2यह देख कर फरीसियों ने येशु से कहा,
''देखिए, जो काम विश्राम के दिन करना मना
है, आपके शिष्य वही कर रहे हैं।'' 3येशु ने उनसे
कहा,'' क्या तुम लोगों ने यह नहीं पढ़ा कि जब
दाऊद और उसके साथियों को भूख लगी, तो
दाऊद ने क्या किया था? 4उसने परमेश्वर के
भवन में प्रवेश किया और अपने साथियों के
साथ भेंट की रोटियाँ खायीं, जिनका खाना
उसके और उसके साथियों के लिए मना था।
भेंट की रोटियाँ केवल पुरोहित खा सकते थे।
5''अथवा क्या तुम लोगों ने मूसा की
व्यवस्था में यह नहीं पढ़ा कि पुरोहित विश्राम
के दिन मन्दिर में विश्राम के नियम का उल्लंघन
करने पर भी दोषी नहीं होते?
6''मैं तुम से कहता हूँ; यहाँ वह है, जो मन्दिर
से भी महान है। 7'मैं बलिदान नहीं, बल्कि दया
चाहता हूँ'—यदि तुम लोगों ने इस कथन का
अर्थ समझ लिया होता, तो निर्दोष को दोषी
नहीं ठहराते; 8क्योंकि मानव-पुत्र विश्राम के
दिन का स्वामी है।''

सूखे हाथ वाले मनुष्य को स्वास्थ्य-लाभ

9येशु वहाँ से आगे बढ़े और उनके सभागृह
में आये। 10वहाँ एक मनुष्य था, जिसका हाथ
सूख गया था। येशु पर दोष लगाने के लिए
लोगों ने उनसे यह पूछा, ''क्या विश्राम के दिन
किसी रोगी को स्वस्थ करना व्यवस्था के
अनुसार उचित है?'' 11येशु ने उन से कहा,
''यदि तुम्हारे एक ही भेड़ हो और वह विश्राम
के दिन गड्ढे में गिर जाये, तो तुम लोगों में ऐसा
कौन होगा, जो उसे पकड़ कर निकाल नहीं
लेगा? 12मनुष्य तो भेड़ से कहीं श्रेष्ठ है।
इसलिए विश्राम के दिन भलाई करना व्यवस्था
की दृष्टि में उचित है।'' 13तब येशु ने उस मनुष्य
से कहा, ''अपना हाथ बढ़ाओ।'' उसने अपना
हाथ बढ़ाया और वह दूसरे हाथ की तरह स्वस्थ
हो गया। 14इस पर फरीसी सभागृह से बाहर
निकले, और उन्होंने येशु के विरुद्ध यह परामर्श
किया कि हम किस तरह उनका विनाश करें।
15येशु यह जान कर वहाँ से चले गये।

मसीह की नम्रता

बहुत लोग येशु के पीछे हो लिये। येशु ने
सब को स्वस्थ कर दिया, 16किन्तु उन्हें यह
चेतावनी दी, ''तुम मुझे प्रकट मत करना।''
17इस प्रकार नबी यशायाह का यह कथन पूरा
हुआ:
18''यह मेरा सेवक है, इसे मैंने चुना है;
यह मेरा परमप्रिय है, मैं इस पर अति प्रसन्न
हूँ।
मैं इसे अपना आत्मा प्रदान करूँगा
और यह गैर-यहूदियों को मेरा न्याय-
सिद्धान्त घोषित करेगा।
19यह न तो विवाद करेगा और न चिल्लायेगा
और न चौराहों में कोई इसकी आवाज
सुनेगा।
20यह न तो कुचला हुआ सरकण्डा ही तोड़ेगा।
और न बुझता हुआ दीपक ही बुझायेगा,
जब तक वह न्याय को विजयी न बनाए।
21इसके नाम पर सब जातियाँ आशा रखेंगी।''

येशु पर आरोप

22तब लोग एक अन्धे-गूंगे भूतग्रस्त मनुष्य

* मूल में 'सबत का दिन' यहूदी पंचांग के अनुसार सप्ताह का सातवां दिन अर्थात् शनिवार। उस दिन यहूदी लोग किसी प्रकार का शारीरिक श्रम नहीं करते।

11 : 30 1 यो 5 : 3 **12 : 1-8** मक 2 : 23-28; लू 6 : 1-5 **12 : 1** व्य 5 : 14; 23 : 25 **12 : 2** नि 20 : 10 **12 : 3** 1 शम 21 : 1-6 **12 : 4** लेव 24 : 9 **12 : 5** गण 28 : 9 **12 : 7** मत 9 : 13; हो 6 : 6 **12 : 9-14** मक 3 : 1-6; लू 6 : 6-11 **12 : 10** लू 14 : 3 **12 : 12** लू 14 : 5 **12 : 14** यो 5 : 16 **12 : 15** मक 3 : 7-12 **12 : 16** मत 8 : 4 **12 : 17** यश 42 : 1-4; (यू० पाठ) 41 : 9 **12 : 18** मत 3 : 17 **12 : 22-45** मक 3 : 22-30; लू 11 : 14-26, 29-32

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

को येशु के पास लाये। येशु ने उसे स्वस्थ कर
दिया और वह गूंगा बोलने और देखने लगा।
23सब लोग आश्चर्य में पड़ कर यह कहने लगे,
"कहीं यही तो दाऊद के वंशज नहीं हैं?"
24यह सुन कर फरीसियों ने कहा, "यह भूतों
के नायक बअलजबूल की सहायता से भूतों को
निकालता है।"
25येशु ने उनके विचार जान कर उन से कहा,
"जिस राज्य में फूट पड़ जाए, तो वह उजड़
जाता है और जिस नगर या घर में फूट पड़ जाए,
तो वह टिक नहीं सकता। 26यदि शैतान ही
शैतान को निकालता है, तो उसके यहाँ फूट पड़
गयी है। तब उसका राज्य कैसे टिका रहेगा?
27यदि मैं बअलजबूल की सहायता से भूतों को
निकालता हूँ, तो तुम्हारे पुत्र किसकी सहायता
से उन्हें निकालते हैं? इसलिए वे ही तुम लोगों
का न्याय करेंगे। 28परन्तु यदि मैं परमेश्वर के
आत्मा की सहायता से भूतों को निकालता हूँ,
तो निस्सन्देह परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास
आ पहुंचा है।
29"फिर, कौन मनुष्य किसी बलवान के घर
में घुस कर उसकी सम्पत्ति लूट सकता है, जब
तक वह उस बलवान को न बाँध ले? उसके
बाद ही वह उसका घर लूट सकता है।
30"जो मेरे साथ नहीं है, वह मेरे विरोध में
है और जो मेरे साथ नहीं बटोरता, वह बिखेरता
है।

पवित्र आत्मा के विरुद्ध पाप

31"इसलिए मैं तुम लोगों से कहता हूँ,
मनुष्यों को सब पापों और ईशनिन्दा की भी
क्षमा मिल जायेगी, परन्तु पवित्र आत्मा की
निन्दा की क्षमा नहीं मिलेगी। 32जो कोई मानव-
पुत्र के विरुद्ध कुछ कहेगा, उसे क्षमा मिल
जायेगी; परन्तु जो पवित्र आत्मा के विरुद्ध
बोलेगा, उसे क्षमा नहीं मिलेगी—न इहलोक में
और न परलोक में।

फल से पेड़ की पहचान

33यदि तुम किसी पेड़ को अच्छा मानते हो,
तो उसके फल को भी अच्छा मानो। अथवा
यदि पेड़ को बुरा मानते हो, तो उसके फल को
भी बुरा मानो; क्योंकि पेड़ तो अपने फल से
पहचाना जाता है। 34साँप के बच्चो! तुम बुरे
हो कर अच्छी बातें कैसे कह सकते हो? जो
हृदय में भरा है, वही तो मुंह से बाहर आता है।
35अच्छा मनुष्य अपने अच्छे भण्डार से अच्छी
वस्तुएं निकालता है और बुरा मनुष्य अपने बुरे
भण्डार से बुरी वस्तुएं।
36"मैं तुम लोगों से कहता हूँ— न्याय के
दिन मनुष्यों को मुंह से निकली अपनी हर
निकम्मी बात का लेखा देना पड़ेगा, 37क्योंकि
तुम अपनी ही बातों से निर्दोष या दोषी ठहराये
जाओगे।"

नबी योना का चिह्न

38तब कुछ शास्त्री और फरीसी संप्रदाय के
लोग येशु से बोले, "गुरुवर! हम आपके द्वारा
प्रस्तुत कोई चिह्न देखना चाहते हैं।" 39येशु
ने उन्हें उत्तर दिया, "यह दुष्ट और व्यभिचारिणी
पीढ़ी चिह्न ढूंढ़ रही है, परन्तु नबी योना के
चिह्न को छोड़ कर इसे और कोई चिह्न नहीं
दिया जायेगा। 40जिस प्रकार योना तीन दिन
और तीन रात मच्छ के पेट में रहा, उसी प्रकार
मानव-पुत्र भी तीन दिन और तीन रात पृथ्वी के
गर्भ में रहेगा। 41न्याय के दिन नीनवे महानगर
के निवासी इस पीढ़ी के साथ खड़े होंगे और
इसे दोषी ठहरायेंगे, क्योंकि उन्होंने योना का
संदेश सुनकर पश्चात्ताप किया था, और देखो,
यहाँ वह है, जो योना से भी महान है। 42न्याय
के दिन दक्षिण की रानी इस पीढ़ी के साथ खड़ी
होगी और इसे दोषी ठहरायेगी; क्योंकि वह
सुलेमान की बुद्धिमत्तापूर्ण बातें सुनने के लिए
पृथ्वी के सीमान्तों से आयी थी, और देखो, यहाँ
वह है, जो सुलेमान से भी महान है!

---

12 : 24 मत 9 : 34 **12 : 28** 1 यो 3 : 8 **12 : 29** यश 49 : 24; 1 यो 4 : 4; तोब 8 : 3 **12 : 30** मक 9 : 40; यो 11 : 52 **12 : 31** इब्र 6 : 4, 6; 10 : 26; 1 यो 5 : 16 **12 : 32** लू 12 : 10; 1 तिम 1 : 13 **12 : 33** मत 7 : 17; प्रव 27 : 6 **12 : 34** मत 3 : 7; यो 8 : 43; 12 : 39; रोम 8 : 7 **12 : 35** लू 6 : 45 **12 : 38** मत 16 : 1; 1 कुर 1 : 22 **12 : 40** योना 2 : 1-2 **12 : 41** योना 3 : 5 **12 : 42** 1 रा 10 : 1-10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अधूरे सुधार से विपत्ति

43 "जब अशुद्ध आत्मा किसी मनुष्य से
निकल जाती है, तो वह विश्राम की खोज में
सूखे स्थानों में भटकती फिरती है; किन्तु उसे
विश्राम नहीं मिलता। 44 तब वह कहती है,
'जहाँ से मैं आयी हूँ वहीं अपने उसी घर वापस
जाऊँगी।' लौटने पर वह उस घर को खाली,
झाड़ा-बुहारा और सजा-सजाया हुआ पाती है।
45 तब वह जाकर अपने से भी बुरी सात
आत्माओं को अपने साथ ले आती है और वे
उस घर में प्रवेश कर वहीं बस जाती हैं। इस
तरह उस मनुष्य की यह पिछली दशा पहली से
भी बुरी हो जाती है। ऐसा ही इस दुष्ट पीढ़ी के
साथ होगा।"

येशु के यथार्थ सम्बन्धी

46 येशु लोगों को उपदेश दे रहे थे कि उनकी
माता और भाई* आये। वे घर के बाहर थे और
उन से मिलना चाहते थे। 47 किसी ने येशु से
कहा, "देखिए, आपकी माता और आपके भाई
बाहर हैं। वे आप से बात करना चाहते हैं।"
48 येशु ने उससे कहा, "कौन है मेरी माता?
कौन हैं मेरे भाई?" 49 और हाथ से अपने शिष्यों
की ओर संकेत करते हुए उन्होंने कहा, "देखो,
ये हैं मेरी माता और मेरे भाई! 50 क्योंकि जो
मेरे स्वर्गिक पिता की इच्छा के अनुसार कार्य
करता है, वही है मेरा भाई, मेरी बहन और मेरी
माता।"

बोने वाले का दृष्टान्त

13 येशु उसी दिन घर से निकले और झील
के किनारे बैठ गए। 2 उनके पास इतनी
बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गयी कि उन्हें नाव पर चढ़
कर बैठना पड़ा और सारी भीड़ तट पर खड़ी
रही।

3 उन्होंने दृष्टान्तों द्वारा उन्हें बहुत-सी बातों
की शिक्षा दी। उन्होंने कहा, "एक किसान
बीज बोने निकला। 4 बोते समय कुछ बीज मार्ग
के किनारे गिरे और पक्षियों ने आकर उन्हें चुग
लिया। 5 कुछ बीज पथरीली भूमि पर गिरे, जहाँ
उन्हें अधिक मिट्टी नहीं मिली। वे जल्दी ही उग
गये, क्योंकि उनकी मिट्टी गहरी नहीं थी।
6 सूरज चढ़ने पर वे झुलस गये और जड़ न
पकड़ने के कारण सूख गये। 7 कुछ बीज काँटों
में गिरे और काँटों ने बढ़ कर उन्हें दबा दिया।
8 कुछ बीज अच्छी भूमि पर गिरे और फल
लाये: कुछ सौ गुना, कुछ साठ गुना और कुछ
तीस गुना। 9 जिसके कान हों, वह सुन ले।"

दृष्टान्तों का उद्देश्य

10 येशु के शिष्यों ने आ कर उन से कहा,
"आप क्यों लोगों को दृष्टान्तों में शिक्षा देते
हैं?" 11 उन्होंने उत्तर दिया, "यह इसलिए है
कि स्वर्गराज्य के रहस्यों का ज्ञान तुम्हें दिया
गया है, उन लोगों को नहीं; 12 क्योंकि जिसके
पास है, उसी को और दिया जायेगा और उसके
पास बहुत हो जायेगा। लेकिन जिसके पास
नहीं है, उससे वह भी ले लिया जायेगा, जो
उसके पास है। 13 मैं उन्हें दृष्टान्तों में शिक्षा देता
हूँ, क्योंकि वे देखते हुए भी नहीं देखते और
सुनते हुए भी न तो सुनते और न समझते हैं।
14 उनके विषय में नबी यशायाह की यह नबूवत
पूरी होती है:

'तुम सुनोगे अवश्य, परन्तु नहीं समझोगे।
तुम देखोगे अवश्य, परन्तु तुम्हें सूझ नहीं
पड़ेगा;
15 क्योंकि इन लोगों की बुद्धि मारी गयी है।
ये कानों से ऊंचा सुनने लगे हैं;
इन्होंने अपनी आँखें बन्द कर ली हैं;
जिससे कहीं ऐसा न हो कि ये आँखों से
देखें,
कानों से सुनें,
बुद्धि से समझें
और मेरी ओर लौट आयें
और मैं इन्हें स्वस्थ कर दूँ।+'

---

* अथवा, "भाई-बहन" + अथवा, "तब मैं इन्हें स्वस्थ कर देता।"

12 : 45 2 पत 2 : 20 **12 : 46-50** मक 3 : 31-35; लू 8 : 19-21 **12 : 46** मत 13 : 55 **12 : 48** लू 2 : 49 **12 : 50** रोम 8 : 29; यो 15 : 14 **13 : 1-23** मक 4 : 1-20; लू 8 : 4-15 **13 : 12** मत 25 : 29 मक 4 : 25; लू 8 : 18 **13 : 13** व्य 29 : 4 **13 : 14** यश 6 : 9-10 (यू० पाठ); यो 12 : 40; प्रे 28 26-27

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

16''परन्तु धन्य हैं तुम्हारी आँखें, क्योंकि वे
देखती हैं और धन्य हैं तुम्हारे कान, क्योंकि वे
सुनते हैं ! 17मैं तुम लोगों से सच कहता हूँ : तुम
जो बातें देख रहे हो, उन्हें कितने ही नबी और
धर्मात्मा देखना चाहते थे; परन्तु उन्होंने उन्हें
नहीं देखा और तुम जो बातें सुन रहे हो, वे
उन्हें सुनना चाहते थे, परन्तु उन्होंने उन्हें नहीं
सुना।

बीज बोने वाले दृष्टान्त की व्याख्या

18''अब तुम बीज बोने वाले किसान के
दृष्टान्त का अर्थ सुनो: 19जब कोई 'राज्य' का
वचन सुनता है, लेकिन समझता नहीं, तब
उसके मन में जो बोया गया है, उसे शैतान आ
कर छीन ले जाता है: यह वह है, जो रास्ते के
किनारे बोया गया है। 20जो पथरीली भूमि में
बोया गया है : यह वह है, जो वचन सुनते ही
प्रसन्नता से ग्रहण करता है; 21परन्तु उसकी जड़
गहरी नहीं होती और वह थोड़े ही दिन स्थिर
रहता है। वचन के कारण कष्ट या अत्याचार आ
पड़ने पर वह तुरन्त विचलित हो जाता है। 22जो
काँटों में बोया गया है: यह वह है, जो वचन
सुनता है; परन्तु संसार की चिन्ता और धन का
मोह वचन को दबा देता है और वह फल नहीं
लाता। 23जो अच्छी भूमि में बोया गया है: यह
वह है, जो वचन सुनता और समझता है और
फल लाता है—कोई सौ गुना, कोई साठ गुना
और कोई तीस गुना।''

गेहूँ और जंगली बीज का दृष्टान्त

24येशु ने उनके सामने एक और दृष्टान्त
प्रस्तुत किया, ''स्वर्ग का राज्य उस मनुष्य के
सदृश है, जिसने अपने खेत में अच्छा बीज
बोया था। 25परन्तु जब लोग सो रहे थे तब
उसका शत्रु आया और गेहूँ में जंगली बीज बो
कर चला गया। 26जब अंकुर फूटा और बालें
लगीं, तब जंगली बीज के पौधे भी दिखाई पड़े।
27इस पर गृह-स्वामी के सेवकों ने आ कर
उससे कहा, 'मालिक, क्या आपने अपने खेत
में अच्छा बीज नहीं बोया था ? तो उस में जंगली
बीज के पौधे कहाँ से आ गए ?' 28स्वामी ने
उनसे कहा, 'यह किसी शत्रु का काम है।' तब
सेवकों ने उससे पूछा, 'क्या आप चाहते हैं कि
हम जाकर जंगली बीज के पौधे एकत्र कर लें ?'
29स्वामी ने उत्तर दिया, 'नहीं, कहीं ऐसा न हो
कि जंगली बीज के पौधे एकत्र करते समय तुम
गेहूँ भी जड़ से उखाड़ डालो। कटनी तक दोनों
को साथ-साथ बढ़ने दो। 30कटनी के समय मैं
लुनने वालों से कहूँगा—पहले जंगली बीज के
पौधे एकत्र कर लो और जलाने के लिए
इनके गट्ठे बाँधो। तब गेहूँ मेरे बखार में जमा
करो।' ''

राई का दाना

31येशु ने उनके सामने एक और दृष्टान्त
प्रस्तुत किया, ''स्वर्ग का राज्य राई के दाने के
सदृश है जिसे ले कर किसी मनुष्य ने अपने खेत
में बोया। 32राई का बीज तो सब बीजों से छोटा
होता है, परन्तु बढ़कर सब पौधों से बड़ा हो
जाता है और ऐसा पेड़ बनता है कि आकाश
के पक्षी आ कर उसकी डालियों में बसेरा करते
हैं।''

ख़मीर

33 येशु ने उन्हें एक और दृष्टान्त सुनाया,
''स्वर्ग का राज्य उस खमीर के सदृश है, जिसे
ले कर किसी स्त्री ने दस किलो+ आटे में मिलाया
और होते-होते सारा आटा खमीर हो गया।''

दृष्टान्तों का प्रयोग

34येशु ने दृष्टान्तों में ही ये सब बातें लोगों से
कहीं। वह बिना दृष्टान्त के उन से कुछ नहीं
कहते थे, 35जिससे नबी का यह कथन पूरा हो
जाये, ''मैं दृष्टान्तों में बोलूँगा। सृष्टि के आरम्भ
से जो गुप्त है, उसे मैं प्रकट करूँगा।''

जंगली बीज के दृष्टान्त की व्याख्या

36येशु लोगों को विदा कर घर आए। उनके

+ अथवा, 'तीन पसेरी'; मूल में 'तीन सेअ' माप।

13 : 16 लू 10 : 23-24 **13 : 22** मत 6 : 19-34; 1 तिम 6 : 9 **13 : 24** मत 13 : 36-43 **13 : 30** मत 3 : 12 **13 : 31-32** मक 4 : 30-32; लू 13 : 18-19; मत 17 : 20 **13 : 22** दान 4 : 12,21; यहेज 17 : 23; 31 : 6; भज 104 : 12 **13 : 33** लू 13 : 20-21 **13 : 34** मक 4 : 33-34 **13 : 35** भज 78 : 2 **13 : 36** मत 13 : 24-30

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शिष्यों ने उनके पास आ कर कहा, ''खेत के
जंगली बीज का दृष्टान्त हमें समझा दीजिए।''
37येशु ने उन्हें उत्तर दिया, ''अच्छा बीज बोने
वाला मानव-पुत्र है; 38खेत संसार है। अच्छा
बीज राज्य की संतान है; जंगली बीज दुष्ट
आत्मा की संतान है। 39बोने वाला शत्रु शैतान
है। कटनी संसार का अन्त है। लुनने वाले
स्वर्गदूत हैं। 40जिस तरह लोग जंगली बीज के
पौधे एकत्र कर आग में जला देते हैं, वैसा ही
संसार के अन्त में होगा। 41मानव- पुत्र अपने
स्वर्गदूतों को भेजेगा और वे उसके राज्य के सब
बाधक तत्वों और कुकर्मियों को एकत्र कर
42आग के कुण्ड में झोंक देंगे। वहाँ वे लोग
रोयेंगे और दाँत पीसते रहेंगे। 43तब धर्मी अपने
पिता के राज्य में सूर्य की तरह चमकेंगे। जिसके
कान हों, वह सुन ले।

छिपा खजाना

44''स्वर्ग का राज्य खेत में छिपे हुए खजाने
के सदृश है, जिसे कोई मनुष्य पाता है और
छिपा देता है। तब वह उमंग में जाता और
अपना सब कुछ बेच कर उस खेत को खरीद
लेता है।

बहुमूल्य मोती

45''फिर , स्वर्ग का राज्य उस व्यापारी के
सदृश है जो उत्तम मोतियों की खोज में था।
46जब उसे एक बहुमूल्य मोती मिला तब उसने
जाकर अपना सब कुछ बेच दिया और उस
मोती को मोल ले लिया।

जाल का दृष्टान्त

47''फिर, स्वर्ग का राज्य समुद्र में डाले हुए
उस जाल के सदृश है, जो हर तरह की
मछलियाँ बटोर लाता है। 48जाल के भर जाने
पर मछुए उसे किनारे खींच लेते हैं। तब वे बैठ
कर अच्छी मछलियाँ चुन-चुन कर टोकरियों
में जमा करते हैं और खराब मछलियाँ फेंक देते
हैं। 49संसार के अन्त में ऐसा ही होगा। स्वर्गदूत
आकर धर्मियों में से दुष्टों को अलग करेंगे
50और उन्हें आग के कुण्ड में झोंक देंगे। वहाँ
वे लोग रोयेंगे और दाँत पीसते रहेंगे।

पुरानी और नई शिक्षा

51''क्या तुम लोग ये सब बातें समझ गये?''
शिष्यों ने उत्तर दिया, ''जी हाँ।'' 52येशु ने उन
से कहा, ''इस कारण प्रत्येक शास्त्री, जो स्वर्ग
के राज्य के विषय में शिक्षा पा चुका है, उस
गृहस्थ के सदृश है, जो अपने भंडार से नयी
और पुरानी वस्तुएं निकालता है।'' 53येशु इन
दृष्टान्तों को समाप्त कर वहाँ से चले गये।

गृहनगर नासरत की यात्रा

54येशु अपने नगर में आये, और लोगों को
उनके सभागृह में शिक्षा देने लगे। लोगों को
आश्‍चर्य हुआ। उन्होंने कहा, ''इसे यह बुद्धि
और आश्‍चर्यपूर्ण कार्य करने का यह सामर्थ्य
कहाँ से मिला? 55क्या यह बढ़ई का पुत्र नहीं
है? क्या मरियम इसकी माँ नहीं ? क्या याकूब,
यूसुफ़, शिमोन और यहूदा इसके भाई नहीं?
56क्या इसकी सब बहनें हमारे बीच नहीं
रहतीं? तो यह सब इसे कहाँ से मिला?'' 57इस
प्रकार लोगों को येशु के विषय में भ्रम हुआ।
येशु ने उन से कहा, ''अपने नगर और अपने
घर को छोड़कर नबी का अपमान कहीं नहीं
होता।'' 58लोगों के अविश्‍वास के कारण
उन्होंने वहाँ सामर्थ्य के अधिक कार्य नहीं
किए।

योहन बपतिस्मादाता की हत्या

14 उस समय शासक* हेरोदेस ने येशु की
ख्याति सुनी। 2उसने अपने दरबारियों
से कहा, ''यह योहन बपतिस्मादाता है। यह
मृतकों में से जी उठा है। इस कारण इसमें ये
चमत्कारिक शक्तियाँ क्रियाशील हैं।''
3हेरोदेस ने अपने भाई फिलिप की पत्नी

* मूल में, 'तेत्र-अर्खेस' अर्थात् देश के चौथाई भाग का शासक।

13 : 38 1 कुर 3 : 9 **13 : 40** यो 15 : 6 **13 : 41** सप 1 : 3; मत 25 : 31-46; 7 : 23 **13 : 42** मत 8 : 12 **13 : 43** दान 12 : 3 **13 : 44** मत 19 : 29; लू 14 : 33; फिल 3 : 7; नीति 2 : 4 **13 : 46** नीति 8 : 10-11 **13 : 47** मत 22 : 9-10 **13 : 49** मत 25 : 32 **13 : 53-58** मक 6 : 1-6; लू 4 : 15-30 **13 : 54** मत 7 : 28; 11 : 1; 19 : 1; 26 : 1 **13 : 56** यो 7 : 15, 52 **13 : 57** यो 4 : 44 **14 : 1-12** मक 6 : 14, 17-30; लू 9 : 7-9 **14 : 1** लू 3 : 19-20 **14 : 3** मत 11 : 2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हेरोदियस के कारण योहन को गिरफ्तार किया
और उन्हें बाँध कर बन्दीगृह में डाल दिया था;
4क्योंकि योहन ने उससे कहा था, "भाई की
पत्नी को रखना आपके लिए उचित नहीं है।"
5हेरोदेस योहन को मार डालना चाहता था;
किन्तु वह जनता से डरता था, जो योहन को
नबी मानती थी।
6हेरोदेस के जन्मदिवस के अवसर पर
हेरोदियस की पुत्री ने अतिथियों के सामने नृत्य
किया और हेरोदेस को मुग्ध कर दिया।
7इसलिए उसने शपथ खा कर वचन दिया,
"जो कुछ तुम मांगोगी, उसे मैं दे दूँगा।"
8उसकी माँ ने उसे पहले से सिखा दिया था।
इसलिए वह बोली, "मुझे इसी समय थाली में
योहन बपतिस्मादाता का सिर दीजिए।"9हेरोदेस
को धक्का लगा, परन्तु अपनी शपथ और
अतिथियों के कारण उसने आदेश दिया,
"योहन का सिर इसे दे दिया जाये।" 10और
सैनिकों को भेज कर उसने बन्दीगृह में योहन
का सिर कटवा दिया। 11उनका सिर थाली में
लाया गया और लड़की को दे दिया गया और
वह उसे अपनी माँ के पास ले गयी। 12योहन
के शिष्य आये, और वे उनका शव ले गये।
उन्होंने उसे कबर में रखा और जाकर येशु को
इसकी सूचना दी।

पाँच हजार को भोजन कराना

13येशु यह समाचार सुन कर वहाँ से हट गये
और नाव पर चढ़ कर एक निर्जन स्थान की ओर
एकान्त में चले गए। जब लोगों को इसका पता
चला, तब वे नगर-नगर से निकल कर पैदल
ही उनकी खोज में चल पड़े।
14नाव से उतर कर येशु ने एक विशाल
जनसमूह को देखा। उन्हें उन लोगों पर तरस
आया और उन्होंने उनके रोगियों को स्वस्थ कर
दिया।
15सन्ध्या होने पर शिष्य उनके पास आ कर
बोले, "यह स्थान निर्जन है और दिन ढल चुका
है। आप इन लोगों को विदा कीजिए, जिससे ये
गाँवों में जाकर अपने लिए भोजन खरीद लें।"
16येशु ने उत्तर दिया, "उन्हें जाने की जरूरत
नहीं। तुम लोग ही उन्हें भोजन दो।" 17इस पर
शिष्यों ने कहा, "यहाँ हमारे पास केवल पाँच
रोटियाँ और दो मछलियाँ हैं।" 18येशु ने कहा,
"उन्हें यहाँ मेरे पास लाओ।" 19येशु ने लोगों
को घास पर बैठा देने का आदेश दिया। तब
उन्होंने वे पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ लीं,
और आकाश की ओर आँखें उठाकर आशिष
मांगी। तब उन्होंने रोटियाँ तोड़ कर शिष्यों को
दीं और शिष्यों ने लोगों को। 20सब ने खाया
और वे खा कर तृप्त हो गये। शिष्यों ने बचे हुए
टुकड़ों से भरे बारह टोकरियाँ उठाईं। 21भोजन
करने वालों में स्त्रियों और बच्चों के अतिरिक्त
लगभग पाँच हजार पुरुष थे।

येशु झील पर चलते हैं

22इसके तुरन्त बाद येशु ने अपने शिष्यों को
इसके लिए बाध्य किया कि वे नाव पर चढ़ कर
उनसे पहले झील के उस पार चले जायें; इतने
में वह स्वयं लोगों को विदा कर देंगे।
23येशु लोगों को विदा कर एकान्त में प्रार्थना
करने पहाड़ी पर चढ़े। सन्ध्या होने पर वह वहाँ
अकेले थे।
24नाव उस समय तट से एक-दो किलोमीटर*
दूर जा चुकी थी। वह लहरों से डगमगा रही थी,
क्योंकि वायु प्रतिकूल थी। 25रात के चौथे पहर
येशु झील पर चलते हुए शिष्यों की ओर आये।
26जब उन्होंने येशु को झील पर चलते हुए
देखा, तब वे बहुत घबरा गये और यह कहते
हुए, "यह कोई प्रेत है", डर के मारे चिल्ला
उठे। 27येशु ने तुरन्त उन से कहा, "धैर्य रखो।
मैं हूँ। डरो मत।"
28पतरस ने उत्तर दिया, "प्रभु! यदि आप ही
हैं, तो मुझे पानी पर अपने पास आने की आज्ञा
दीजिए।" 29येशु ने कहा, " आ जाओ।"
पतरस नाव से उतरा और पानी पर चलते हुए

* मूल में 'अनेक स्तदियन' : एक स्तदियन लगभग 185 मीटर होता है

14 : 4 लेव 18 : 16; 20 : 21 **14 : 5** मत 21 : 26 **14 : 10** मत 17 : 12 **14 : 13-21** मक 6 : 31-44 लू 9 : 10-17; यो 6 : 1-13 **14 : 14** मत 9 : 36 **14 : 20** 2 रा 4 : 44 **14 : 22-36** मक 6 : 45-56; यो 6 : 15-21 **14 : 23** लू 6 : 12; 9 : 18 **14 : 25** भज 77 : 19 **14 : 26** लू 24 : 37

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

येशु की ओर बढ़ा; [30]किन्तु वह प्रचण्ड वायु
देख कर डर गया और जब डूबने लगा, तो
पुकार उठा, "प्रभु! मुझे बचाइए।" [31]येशु ने
तुरन्त हाथ बढ़ा कर उसे थाम लिया और कहा,
"अल्प-विश्वासी! तुमने संदेह क्यों किया?"
[32]दोनों नाव पर चढ़े और वायु थम गयी। [33]जो
शिष्य नाव में थे, वे येशु के चरणों पर गिर
पड़े। वे बोले, "आप सचमुच परमेश्वर के पुत्र
हैं।"

गिनेसरेत नगर में रोगियों को स्वस्थ करना

[34] वे पार उतर कर गिनेसरेत नगर के क्षेत्र
में आए। [35]वहाँ के लोगों ने येशु को पहचान
लिया और आसपास के सब गाँवों में इसकी
खबर फैला दी। वे सब रोगियों को येशु के पास
लाए [36]और उनसे निवेदन किया कि वह उन्हें
अपने वस्त्र का सिरा ही स्पर्श करने दें। जितनों
ने उनका स्पर्श किया, वे सब स्वस्थ हो गये।

परम्परा-पालन का प्रश्न

15 यरूशलेम के कुछ फरीसी और शास्त्री
येशु के पास आये [2]और यह बोले,
"आपके शिष्य धर्मवृद्धों की परम्परा क्यों
तोड़ते हैं? वे बिना हाथ धोये भोजन करते
हैं।" [3]येशु ने उन्हें उत्तर दिया, "और तुम लोग
अपनी ही परम्परा के नाम पर परमेश्वर की
आज्ञा क्यों भंग करते हो? [4]परमेश्वर ने कहा:
'अपने पिता और अपनी माता का आदर करो,
और जो अपने पिता या अपनी माता को बुरा
कहे, उसे प्राण-दण्ड दिया जाये।' [5]परन्तु तुम
लोग कहते हो कि यदि कोई अपने पिता या
अपनी माता से कहे, 'आप को मुझ से जो लाभ
हो सकता था, वह परमेश्वर को अर्पित है,' [6]तो
उसके लिए माता-पिता का आदर करना आव-
श्यक नहीं है। इस प्रकार तुम अपनी परम्परा का
पालन कर परमेश्वर का वचन रद्द कर देते हो।
[7]ढोंगियो! नबी यशायाह ने यह कह कर तुम्हारे
विषय में ठीक ही नबूवत की है:

[8]'ये लोग मुख से मेरा आदर करते हैं, परन्तु
इनका हृदय मुझ से दूर है।
[9]ये व्यर्थ ही मेरी उपासना करते हैं;
क्योंकि ये मनुष्यों के बनाए हुए नियमों को
ऐसे सिखाते हैं,
मानो वे धर्म-सिद्धान्त हों।'"

शुद्ध और अशुद्ध की व्याख्या

[10]येशु ने लोगों को अपने पास बुला कर
कहा, "तुम लोग मेरी बात सुनो और समझो।
[11]जो मुँह में जाता है, वह मनुष्य को अशुद्ध
नहीं करता; बल्कि जो मुँह से बाहर निकलता
है, वही मनुष्य को अशुद्ध करता है।"
[12]तब शिष्य येशु के पास आ कर उन से
बोले, "क्या आप जानते हैं कि आपके इस
कथन से फरीसियों को बुरा लगा है?" [13]येशु
ने उत्तर दिया, "जो पौधा मेरे स्वर्गिक पिता ने
नहीं रोपा है, वह उखाड़ा जायेगा। [14]उन्हें रहने
दो; वे अन्धों के अन्धे पथप्रदर्शक हैं। यदि
अन्धा अन्धे को मार्ग दिखाए तो दोनों ही गड्ढे
में गिरेंगे।"
[15]इस पर पतरस ने कहा, "यह दृष्टान्त हमें
समझा दीजिए।" [16]येशु ने उत्तर दिया, "क्या
तुम लोग भी अब तक नासमझ हो? [17]क्या तुम
यह नहीं समझते कि जो मुँह में जाता है, वह
पेट से होकर शौच में निकल जाता है? [18]परन्तु
जो मुँह से बाहर निकलता है, वह मन से आता
है और वही मनुष्य को अशुद्ध करता है।
[19]क्योंकि बुरे विचार, हत्या, परस्त्री-गमन,
व्यभिचार, चोरी, झूठी गवाही और निन्दा—ये
सब मन से निकलते हैं। [20]ये ही बातें मनुष्य को
अशुद्ध करती हैं; बिना हाथ धोये भोजन करना
मनुष्य को अशुद्ध नहीं करता।"

कनानी स्त्री का विश्वास

[21]येशु ने वहाँ से विदा हो कर सोर और
सदोम प्रदेशों के लिए प्रस्थान किया। [22]उस क्षेत्र
की एक कनानी स्त्री आयी और पुकार-पुकार

---

14 : 31 मत 8 : 26; यश 43 : 2 **14 : 36** मत 9 : 21; लू 6 : 19 **15 : 1-20** मक 7 : 1-23 **15 : 2** व्य 4 : 2; लू 11 : 38 **15 : 4** नि 20 : 12; 21 : 17; व्य 5 : 16 **15 : 7** यश 29 : 13 (यू॰ पाठ) **15 : 11** मत 12 : 34; 1 तिम 4 : 4 **15 : 13** यो 15 : 2 **15 : 14** मत 23 : 24; लू 6 : 39 यो 9 : 40; रोम 2 : 19 **15 : 19** उत 8 : 21 **15 : 21-28** मक 7 : 24-30

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कर कहने लगी, "प्रभु! दाऊद के वंशज! मुझ
पर दया कीजिए। मेरी पुत्री बुरी तरह भूत से
जकड़ी हुई है।" 23येशु ने उसे उत्तर नहीं दिया।
उनके शिष्यों ने पास आ कर उन से यह निवेदन
किया, "उसकी बात मान कर उसे विदा कर
दीजिए, क्योंकि वह हमारे पीछे-पीछे चिल्लाती
आ रही है।" 24येशु ने उत्तर दिया, "मैं केवल
इस्राएल के घराने की खोयी हुई भेड़ों के पास
भेजा गया हूँ।" 25परन्तु वह स्त्री येशु के सामने
आयी और उनके चरणों पर गिर पड़ी। उसने
कहा, "प्रभु! मेरी सहायता कीजिए।" 26येशु
ने उत्तर दिया, "बच्चों की रोटी ले कर कुत्तों*के
सामने डालना ठीक नहीं है।" 27उसने कहा,
"जी हाँ प्रभु! फिर भी कुत्ते स्वामी की मेज से
गिरा हुआ चूर-चार खाते ही हैं।" 28इस पर
येशु ने उत्तर दिया "नारी! तुम्हारा विश्वास
महान है। जैसा तुम चाहती हो, वैसा ही तुम्हारे
लिए हो।" और उसी क्षण उसकी पुत्री स्वस्थ
हो गयी।

बहुतों को स्वास्थ्य-लाभ

29येशु वहाँ से चले गये और गलील की
झील के तट पर पहुँचे। वह एक पहाड़ी पर चढ़े
और वहाँ बैठ गये। 30भीड़-की-भीड़ उनके
पास आने लगी। वे लँगड़े, अन्धे, लूले, गूँगे
और बहुत- से दूसरे रोगियों को अपने साथ
लाये थे। उन्होंने उनको येशु के चरणों में रख
दिया और येशु ने उन्हें स्वस्थ कर दिया।
31जनसमूह ने देखा कि गूँगे बोल रहे है, लूले
भले-चंगे हो रहे हैं, लँगड़े चल रहे हैं और
अन्धे देखने लगे हैं। वे बड़े अचम्भे में पड़ गये
और उन्होंने इस्राएल के परमेश्वर की स्तुति की।

चार हजार लोगों को भोजन कराना

32येशु ने अपने शिष्यों को अपने पास बुला
कर कहा, "मुझे इन लोगों पर तरस आता है।
ये तीन दिनों से मेरे साथ रह रहे हैं और इनके
पास खाने को कुछ भी नहीं है। मैं इन्हें भूखा
ही विदा करना नहीं चाहता। कहीं ऐसा न हो
कि ये रास्ते में मूर्च्छित हो जायें।" 33शिष्यों ने
उनसे कहा, "इस निर्जन स्थान में हमें इतनी
रोटियाँ कहाँ से मिलेंगी कि हम इतनी बड़ी
भीड़ को खिला सकें?"
34येशु ने उन से पूछा, "तुम्हारे पास कितनी
रोटियाँ हैं?" उन्होंने कहा, "सात, और
थोड़ी-सी छोटी मछलियाँ।" 35येशु ने लोगों
को भूमि पर बैठ जाने का आदेश दिया। 36येशु
ने वे सात रोटियाँ और मछलियाँ लीं; परमेश्वर
को धन्यवाद दिया, उनको तोड़ा और अपने
शिष्यों को दिया और फिर शिष्यों ने लोगों को
दिया। 37सब ने खाया और वे खा कर तृप्त हो
गये और शिष्यों ने बचे हुए टुकड़ों से भरे सात
टोकरे उठाये। 38भोजन करने वालों में स्त्रियों
और बच्चों के अतिरिक्त चार हजार पुरुष थे।
39येशु ने लोगों को विदा किया और वह नाव
पर चढ़ कर मगदान नगर के क्षेत्र में आए।

ईश्वरीय चिह्न की माँग

16 फरीसी और सदूकी येशु के पास आये।
उन्होंने येशु की परीक्षा लेने के लिए उन
से निवेदन किया, "आप हमें स्वर्ग का** कोई
चिह्न दिखाइए।" 2येशु ने उत्तर दिया, "शाम
को तुम लोग कहते हो, 'मौसम अच्छा रहेगा,
क्योंकि आकाश लाल है।' 3सबेरा होने पर
कहते हो, 'आज आँधी आएगी, क्योंकि आकाश
लाल और बादलों से घिरा हुआ है।' तुम लोग
आकाश के लक्षण तो पहचान लेते हो, पर
समय के लक्षण नहीं पहचान सकते। 4यह दुष्ट
और व्यभिचारिणी पीढ़ी एक चिह्न ढूंढ़ती है,
परन्तु नबी योना के चिह्न को छोड़ कर इसे
और कोई चिह्न नहीं दिया जायेगा।" और येशु
उन्हें छोड़ कर चले गये।

फरीसियों का खमीर

5शिष्य झील के उस पार पहुँचे। वे अपने
साथ रोटियाँ लाना भूल गये थे। 6इसलिए जब
येशु ने उन से कहा, "देखो, फरीसियों और
सदूकियों के खमीर से सावधान रहना" 7तो वे

* मूल में छोटा कुत्ता, अथवा कुत्ते का बच्चा, पिल्ला। ** मूल में 'स्वर्ग से'।

15 : 24 मत 10 : 6 **15 : 28** मत 8 : 10, 13 **15 : 29** मक 7 : 31 **15 : 31** मक 7 : 37 **15 : 32-39** मक 8 : 1-10 **15 : 32** मत 14 : 14 **16 : 1-12** मक 8 : 11-21 **16 : 1** मत 12 : 38 **16 : 2** लू 12 : 54-56 **16 : 3** मत 11 : 4 **16 : 4** योना 2 : 1 मत 12 : 39-40 **16 : 6** लू 12 : 1; 1 कुर 5 : 6-8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आपस में कहने लगे, ''हम रोटियाँ नहीं लाये,
इसलिए यह ऐसा कह रहे हैं।'' 8यह जान कर
येशु ने उन से कहा, ''अल्पविश्वासियो ! तुम
यह क्यों सोचते हो कि हमारे पास रोटियाँ नहीं
हैं। 9क्या तुम अब तक नहीं समझते ? क्या उन
पाँच हजार लोगों के लिए पाँच रोटियाँ तुम्हें
याद नहीं हैं ? और तुमने रोटियों से भरी कितनी
टोकरियां एकत्र की थीं ? 10और उन चार हजार
लोगों के लिए सात रोटियाँ, और तुमने कितने
टोकरे इकट्ठे किए थे ? 11तुम क्यों नहीं समझते
कि मैंने रोटियों के बारे में यह नहीं कहा, बल्कि
फरीसियों और सदूकियों के खमीर से सावधान
रहने को कहा है।'' 12तब शिष्य समझ गये कि
येशु ने रोटी के खमीर से नहीं, बल्कि फरीसियों
और सदूकियों की शिक्षा से सावधान रहने को
कहा था।

पतरस का विश्वास

13जब येशु कैसरिया-फिलिप्पी प्रदेश में
आए तब उन्होंने अपने शिष्यों से पूछा, ''मानव
पुत्र कौन है, इस विषय में लोग क्या कहते हैं ?''
14शिष्यों ने उत्तर दिया, ''कुछ लोग कहते हैं,
योहन बपतिस्मादाता; कुछ कहते हैं, नबी एलि-
याह और कुछ लोग कहते हैं, नबी यिर्मयाह
अथवा नबियों में से कोई एक नबी।'' 15इस
पर येशु ने कहा, ''और तुम क्या कहते हो कि
मैं कौन हूँ?'' 16सिमोन पतरस ने उत्तर दिया,
''आप मसीह हैं, आप जीवन्त परमेश्वर के पुत्र
हैं।'' 17इस पर येशु ने उससे कहा, ''सिमोन,
योना के पुत्र! तुम धन्य हो, क्योंकि किसी निरे
मनुष्य* ने नहीं, बल्कि मेरे स्वर्गिक पिता ने तुम
पर यह प्रकट किया है। 18मैं तुम से कहता हूँ
कि तुम 'पतरस' अर्थात् 'चट्टान' हो और इस
'चट्टान' पर मैं अपनी कलीसिया** बनाऊँगा और
अधोलोक के फाटक इस पर प्रबल नहीं हो
पायेंगे। 19मैं तुम्हें स्वर्गराज्य की कुंजियाँ+
प्रदान करूँगा। जो कुछ तुम पृथ्वी पर बाँधोगे++
वह स्वर्ग में बंधा रहेगा। और जो कुछ पृथ्वी
पर खोलोगे, वह स्वर्ग में खुला रहेगा।'' 20तब
येशु ने अपने शिष्यों को कड़ी चेतावनी दी,
''तुम किसी को भी यह नहीं बताना कि मैं
मसीह हूँ।''

दु:खभोग और पुनरुत्थान की प्रथम भविष्यवाणी

21उस समय से येशु अपने शिष्यों को यह
समझाने लगे कि ''मुझे यरूशलेम जाना ही
होगा। यह अनिवार्य है कि मैं वहाँ धर्मवृद्धों,
महापुरोहितों और शास्त्रियों के हाथ से बहुत
दु:ख उठाऊँ, मार डाला जाऊँ और तीसरे दिन
जीवित हो उठूं+।''
22पतरस येशु को अलग ले गया और उन्हें
यह कहते हुए डांटने लगा, ''परमेश्वर ऐसा न
करे। प्रभु! यह आप पर कभी नहीं बीतेगी।''
23इस पर येशु ने मुड़कर, पतरस से कहा, ''मेरे
सामने से हट जाओ, शैतान! तुम मेरे रास्ते में
बाधा बन रहे हो। तुम परमेश्वर की बातें नहीं,
बल्कि मनुष्यों की बातें सोचते हो।''

आत्मत्याग की आवश्यकता

24इसके पश्चात् येशु ने अपने शिष्यों से
कहा, ''जो मेरा अनुसरण करना चाहता है, वह
आत्मत्याग करे और अपना क्रूस उठा कर मेरे
पीछे हो ले; 25क्योंकि जो कोई अपना प्राण
सुरक्षित रखना चाहता है, वह उसे खो देगा और
जो मेरे कारण अपना प्राण खोएगा वह उसे
बचाएगा। 26मनुष्य को इससे क्या लाभ यदि

* मूल में, 'माँस और रक्त' ** कलीसिया यूनानी शब्द 'एक्लेसिया' का हिन्दी रूपान्तर और इब्रानी शब्द 'काहाल' का अनुवाद है, अर्थात् (एकत्रित) समाज, विश्वासियों का समूह। + कुंजियाँ : सर्वोच्च अधिकार का प्रतीक ++ बाँधना और खोलना: यहूदी धर्मशास्त्रियों की भाषा में 'मना करना' और 'अनुमति देना' अथवा, समाज से 'बहिष्कृत करना' और समाज में 'स्वीकृत करना' + अथवा ''जीवित उठाया जाऊँ''

16 : 8 मत 6 : 30 **16 : 9** मत 14 : 17-21 **16 : 10** मत 15 : 34-38 **16 : 12** यो 6 : 27 **16 : 13-20** मक 8 : 27-30; लू 9 : 18-21 **16 : 14** मत 14 : 2; 17 : 10 **16 : 16** यो 6 : 69; गल 1 : 15-16 **16 : 17** मत 17 : 4-5 **16 : 18** यो 1 : 42; इफ 2 : 20; यश 28 : 16 **16 : 19** मत 18 : 18; यश 22 : 22; अय्य 38 : 17 **16 : 20** मत 17 : 9 **16 : 21-28** मक 8 : 31-9 : 1; लू 9-22-27 **16 : 21** यो 2 : 19; मल 12 : 40 **16 : 24** मत 10 : 38-39; लू 14 : 27 **16 : 26** मत 4 : 8; लू 17 : 33; यो 12 : 25 **16 : 27** यो 5 : 29; रो 2 : 6; भज 62 : 12; नीति 24 : 12; प्रव 35 : 22

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वह सारा संसार तो प्राप्त कर ले, लेकिन अपना
प्राण ही गँवा दे ? अपने प्राण के बदले में मनुष्य
क्या देगा ? 27क्योंकि मानव-पुत्र अपने स्वर्गदूतों
के साथ अपने पिता की महिमा में आयेगा और
वह प्रत्येक मनुष्य को उसके कर्मों के अनुसार
फल देगा। 28मैं तुम से सच कहता हूँ, यहाँ खड़े
लोगों में कुछ ऐसे लोग हैं, जो तब तक मृत्यु
का स्वाद नहीं चखेंगे जब तक वे मानव-पुत्र
को अपने राज्य में आता हुआ न देख लेंगे।''

प्रभु येशु का रूपान्तरण

17 छः दिन बाद येशु ने पतरस, याकूब
और उसके भाई योहन को अपने साथ
लिया और वह उन्हें एक ऊँचे पहाड़ पर एकान्त
में ले गए। 2वहाँ उनके सामने येशु का रूपान्तरण
हो गया। उनका मुखमण्डल सूर्य की तरह
दमक उठा और उनके वस्त्र प्रकाश के समान
उज्ज्वल हो गये। 3 और वहाँ शिष्यों को मूसा
और नबी एलियाह उनके साथ बातचीत करते
दिखाई दिये। 4तब पतरस ने येशु से कहा,
''प्रभु! यह हमारे लिए कितना अच्छा है कि
हम यहाँ हैं! आप चाहें, तो मैं यहाँ तीन तम्बू
खड़ा करूँ: एक आपके लिए, एक मूसा के
लिए और एक एलियाह के लिए।'' 5वह बोल
ही रहा था कि उन सब पर एक चमकीला
बादल छा गया और उस बादल में से यह वाणी
सुनाई पड़ी, ''यह मेरा प्रिय पुत्र है। मैं इस पर
अत्यन्त प्रसन्न हूँ । इसकी बात सुनो।'' 6यह
वाणी सुन कर शिष्य मुँह के बल गिर पड़े और
बहुत डर गये। 7तब येशु ने पास आकर उनका
स्पर्श किया और कहा, ''उठो, डरो मत।''
8उन्होंने आँखें ऊपर उठायीं, तो येशु के
अतिरिक्त और किसी को नहीं देखा।

नबी एलियाह के विषय में प्रश्न

9येशु ने पहाड़ से उतरते समय उन्हें यह
आदेश दिया, ''जब तक मानव-पुत्र मृतकों में
से न जी उठे, तब तक तुम किसी को भी इस
दर्शन के विषय में मत बताना।'' 10इस पर शिष्यों
ने उन से पूछा, ''शास्त्री यह क्यों कहते हैं कि
पहले एलियाह का आना अनिवार्य है ?'' 11येशु
ने उत्तर दिया, ''अवश्य, एलियाह आने वाले
हैं और वह सब कुछ ठीक करेंगे। 12परन्तु मैं
तुमसे कहता हूँ, एलियाह आ चुके हैं। उन्होंने
एलियाह को नहीं पहचाना और उनके साथ
मनमाना व्यवहार किया। इसी प्रकार मानव-
पुत्र भी उनके हाथों दुःख उठायेगा।'' 13तब शिष्य
समझ गये कि येशु योहन बपतिस्मादाता के
विषय में कह रहे हैं।

भूतग्रस्त बालक को स्वस्थ करना

14जब वे जनसमूह के पास पहुँचे तब एक
मनुष्य आया। वह येशु के सामने घुटने टेक कर
बोला, 15''प्रभु! मेरे पुत्र पर दया कीजिए। वह
मिरगी का रोगी है। जब उसे दौरा पड़ता है, तब
उसे बहुत कष्ट होता है। वह अक्सर आग या
पानी में गिर जाता है। 16मैं उसे आपके शिष्यों
के पास लाया, किन्तु वे उसे स्वस्थ नहीं कर
सके।'' 17येशु ने कहा, ''अविश्वासी और भ्रष्ट
पीढ़ी! मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूँगा ? कब तक
तुम्हें सहता रहूँगा? उसे मेरे पास लाओ।''
18येशु ने भूत को डांटा और वह उस में से
निकल गया। वह लड़का उसी घड़ी स्वस्थ हो
गया।

19बाद में शिष्यों ने एकान्त में येशु के पास
आ कर पूछा, ''हम लोग उसे क्यों नहीं निकाल
सके ?'' 20येशु ने उन से कहा, ''अपने विश्वास
की कमी के कारण। मैं तुम से सच कहता
हूँ—यदि तुम्हारा विश्वास राई के दाने के
बराबर भी हो, तो यदि तुम इस पहाड़ से यह
कहोगे, 'यहां से वहाँ हट जा', तो यह हट
जायेगा; और तुम्हारे लिए कुछ भी असम्भव
नहीं होगा। 21[परन्तु भूतों की यह जाति प्रार्थना
तथा उपवास के सिवा किसी और उपाय से नहीं
निकाली जा सकती*]।''

* कुछ प्राचीन प्रतियों में यह पद नहीं मिलता

16 : 28 मत 10 : 23 **17 : 1-13** मक 9 : 2-13; लू 9 : 28-36 **17 : 2** 2 पत 1 : 16-18 **17 : 5** मत 3 : 17; 16 : 16-17; व्य 18 : 15 **17 : 9** मत 16 : 20 **17 : 10** मत 11 : 14; मला 4 : 5 **17 : 11** प्रव 48 : 10 **17 : 12** मत 14 : 9-10; लू 1 : 17 **17 : 14-21** मक 9 : 14-29; लू 9 : 37-42 **17 : 17** व्य 32 : 5; यो 14 : 9 **17 : 19** मत 10 : 1 **17 : 20** मत 21 : 21; लू 17 : 6; मक 11 : 23

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दुःखभोग और पुनरुत्थान की द्वितीय भविष्यवाणी

22जब वे गलील प्रदेश में एकत्र हुए तब येशु
ने अपने शिष्यों से कहा, "मानव-पुत्र मनुष्यों के
हाथ पकड़वाया जाने वाला है। 23वे उसे मार
डालेंगे, परन्तु वह तीसरे दिन जीवित हो उठेगा"।
यह सुन कर शिष्यों को बहुत दुःख हुआ।

मन्दिर का कर

24जब वे कफरनहूम नगर में आये, तब
मन्दिर का कर उगाहने वालों ने पतरस के पास
आ कर पूछा, "क्या तुम्हारे गुरु मन्दिर का कर+
नहीं देते?" 25उसने उत्तर दिया, "हाँ, देते
हैं।" जब पतरस घर पहुँचा, तो उसके कहने
से पहले ही येशु ने पूछा, "सिमोन! तुम्हारा
क्या विचार है? दुनिया के राजा किन लोगों से
चुंगी या कर लेते हैं? अपने ही पुत्रों से या परायों
से?" 26पतरस ने उत्तर दिया, "परायों से।"
इस पर येशु ने उससे कहा, "तब तो पुत्र कर
से मुक्त हैं। 27फिर भी हम उन लोगों के लिए
बुरा उदाहरण न बनें; इसलिए तुम झील के
किनारे जा कर बंसी डालो। जो मछली पहले
फंसेगी, उसे पकड़ लेना और उसका मुँह
खोलना। उसमें तुम्हें चाँदी का एक सिक्का*
मिलेगा। उसे ले लेना और मेरे तथा अपने लिए
उन को दे देना।"

स्वर्गराज्य में बड़ा कौन?

18 उस समय शिष्य येशु के पास आ कर
बोले, "स्वर्ग के राज्य में सब से बड़ा
कौन है?" 2येशु ने एक बालक को बुलाया
और उसे शिष्यों के बीच में खड़ा कर 3कहा,
"मैं तुम से सच कहता हूँ, जब तक तुम में
परिवर्तन न हो और तुम बच्चों के समान न बनो,
तो तुम स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकते।
4इसलिए जो अपने-आप को इस बालक-
जैसा छोटा समझता है, वह स्वर्ग के राज्य में
सब से बड़ा है 5और जो कोई मेरे नाम पर ऐसे
बालक का स्वागत करता है, वह मेरा स्वागत
करता है।

दूसरों के लिए बुरा उदाहरण बनना

6"जो कोई मुझ पर विश्वास करने वाले इन
छोटों में से किसी एक को विश्वास से विचलित
करता है**, उसके लिए अच्छा यही होता कि
उसके गले में चक्की का भारी पाट बाँधा जाता
और वह गहरे समुद्र में डुबा दिया जाता।
7प्रलोभनों के कारण संसार को धिक्कार! प्रलोभन
अनिवार्य है, किन्तु धिक्कार उस मनुष्य को, जो
प्रलोभन का कारण बनता है!
8"यदि तुम्हारा हाथ अथवा तुम्हारा पैर
तुम्हारे लिए पाप का कारण बनता है, तो उसे
काट कर फेंक दो। अच्छा यही है कि तुम लूले
अथवा लँगड़े हो कर जीवन में प्रवेश करो,
किन्तु दोनों हाथों अथवा दोनों पैरों के रहते
अनन्त आग में न डाले जाओ। 9यदि तुम्हारी
आँख तुम्हारे लिए पाप का कारण बनती है, तो
उसे निकाल कर फेंक दो। अच्छा यही है कि
तुम काने हो कर जीवन में प्रवेश करो, किन्तु
दोनों आँखों के रहते आग के नरक में न डाले
जाओ।
10"देखो, इन छोटों में से किसी एक को भी
तुच्छ न समझना; क्योंकि मैं तुम से कहता
हूँ—इनके दूत स्वर्ग में निरन्तर मेरे स्वर्गिक
पिता के सम्मुख उपस्थित रहते हैं।

भटकी हुई भेड़

11"[जो खो गया था उसी को बचाने के
लिए मानव-पुत्र आया है।*]
12"तुम्हारा क्या विचार है? यदि किसी के
पास एक सौ भेड़ें हों और उन में से एक भेड़
भटक जाये, तो क्या वह उन निन्यानबे भेड़ों को
पहाड़ी पर छोड़कर उस भटकी हुई भेड़ को
खोजने नहीं जायेगा? 13और यदि वह उसे मिल

+ मूल में 'दिद्रख्मा' अथवा, 'दो दिन की मजदूरी' * मूल में, 'स्तातेर' अर्थात् 'दिद्रख्मा' का दुगुना ** अथवा, 'किसी एक के लिए पाप का कारण बनता है' * कुछ प्राचीन प्रतियों में यह पद नहीं पाया जाता है।

17 : 22-23 मक 9 : 30-32; लू 9 : 43-45 **17 : 22** मत 16 : 21 **17 : 24** नि 30 : 13 **18 : 1-9** मक 9 : 33-47; लू 9 : 46-48 **18 : 3** मत 19 : 14; यो 3 : 3-5 **18 : 5** मत 10 : 40 यो 13 : 20 **18 : 6** लू 17 : 1-2 **18 : 8** मत 5 : 29-30 **18 : 10** इब्र 1 : 14; तोब 12 : 15 **18 : 12-13** लू 15 : 4-7

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जाये, तो मैं तुम से सच कहता हूँ कि वह उन निन्यानबे भेड़ों की अपेक्षा, जो भटकी नहीं थीं, उस भेड़ के लिए अधिक आनन्द मनाएगा। 14इसी तरह तुम्हारा स्वर्गिक पिता नहीं चाहता है कि इन छोटों में से एक भी नष्ट हो जाये।

भाई-बहिन का सुधार

15"यदि तुम्हारा भाई तुम्हारे विरुद्ध कोई अपराध करता है, तो जाओ और उसे अकेले में, जहाँ वह और तुम दोनों हो, समझाओ। यदि वह तुम्हारी बात मान लेता है, तो तुमने अपने भाई को बचा लिया। 16यदि वह तुम्हारी बात नहीं मानता है, तो अपने साथ दो-एक व्यक्तियों को ले जाओ ताकि दो या तीन गवाहों के सामने सब कुछ प्रमाणित हो जाये। 17यदि वह उनकी भी नहीं सुनता, तो कलीसिया को बता दो और यदि वह कलीसिया की भी नहीं सुनता है, तो उसे विधर्मी और चुंगी-अधिकारी जैसा समझो।

18"मैं तुम लोगों से सच कहता हूँ, जो कुछ तुम पृथ्वी पर बांधोगे, वह स्वर्ग में बंधा रहेगा और जो कुछ तुम पृथ्वी पर खोलोगे, वह स्वर्ग में खुला रहेगा* ।

सामूहिक प्रार्थना

19"यह भी मैं तुम से सच कहता हूँ : यदि तुममें से दो व्यक्ति एकमत हो कर पृथ्वी पर कुछ भी मांगेंगे, तो वह उन्हें मेरे स्वर्गिक पिता की ओर से निश्चय ही मिलेगा; 20क्योंकि जहाँ दो या तीन व्यक्ति मेरे नाम पर इकट्‌ठे होते हैं, वहाँ मैं उनके बीच उपस्थित रहता हूँ।"

अपराध की क्षमा

21तब पतरस ने पास आ कर येशु से कहा, "प्रभु! यदि मेरा भाई अथवा बहिन** मेरे विरुद्ध अपराध करता जाये, तो मैं कितनी बार उसे क्षमा करूँ? क्या सात बार तक?" 22येशु ने उत्तर दिया, "मैं तुम से नहीं कहता—सात बार तक, बल्कि सत्तर गुना सात बार तक।

निर्दय सेवक का दृष्टान्त

23"यही कारण है कि स्वर्ग का राज्य उस राजा के सदृश है, जो अपने सेवकों से लेखा लेना चाहता था। 24जब वह लेखा लेने लगा, तब उसके सामने एक सेवक लाया गया। उस पर दस हजार सोने के सिक्कों+ का कर्ज था। 25कर्ज चुकाने के लिए उसके पास कुछ भी नहीं था, इसलिए स्वामी ने आदेश दिया कि उसे, उसकी पत्नी, उसके बच्चों और उसकी सारी जायदाद को बेच दिया जाये और ऋण अदा कर लिया जाये। 26इस पर वह सेवक उसके पैरों पर गिर पड़ा और यह कहते हुए अनुनय-विनय करने लगा, 'धैर्य रखिए। मैं आपको सब कुछ चुका दूँगा।' 27उस सेवक के स्वामी को उस पर तरस आया और उसने उसे मुक्त कर जाने दिया और उसका कर्ज माफ कर दिया। 28जब वह सेवक बाहर निकला, तब वह अपने एक सह-सेवक से मिला, जिस पर उसका लगभग एक सौ चाँदी के सिक्कों++ का कर्ज था। उसने उसे पकड़ लिया और उसका गला दबा कर कहा, 'अपना कर्ज चुका दो।' 29सह-सेवक उसके पैरों पर गिर पड़ा और यह कहते हुए अनुनय-विनय करने लगा, 'धैर्य रखिए, मैं आप को कर्ज चुका दूँगा।' 30परन्तु उसने नहीं माना और जा कर उसे तब तक के लिए बन्दीगृह में डलवा दिया, जब तक वह अपना कर्ज न चुका दे। 31यह सब देख कर उसके दूसरे सह-सेवक बहुत दु:खी हुए और उन्होंने अपने स्वामी के पास जा कर सारी बातें बता दीं। 32तब स्वामी ने उस सेवक को बुला कर कहा, 'दुष्ट सेवक! तुम्हारी अनुनय-विनय पर मैंने तुम्हारा सारा कर्ज माफ कर दिया था, 33तो जिस प्रकार मैंने तुम पर दया की थी, क्या उसी प्रकार तुम्हें भी अपने सह-सेवक पर दया नहीं करनी चाहिए थी?' 34और स्वामी ने क्रुद्ध हो कर उसे तब तक के लिए यंत्रणा देने वालों

---

* मत्ती 16 : 19 की टिप्पणी देखिए ** मूल में, 'भाई'। + मूल में 'तलंत'; एक सिक्के का मूल्य प्राय: पन्द्रह वर्ष की मजदूरी है। ++ मूल में 'दीनार'; एक सिक्के का मूल्य एक ही दिन की मजदूरी है।

18 : 15 लेव 19 : 17; लू 17 : 3; गल 6 : 1 **18 : 16** व्य 19 : 15 **18 : 17** 1 कुर 5 : 13 **18 : 18** मत 16 : 19 यो 20 : 23 **18 : 19** मक 11 : 24 **18 : 20** मत 28 : 20; यो 14 : 23 **18 : 22** लू 17 : 4 **18 : 34** मत 5 : 26

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

के हवाले कर दिया, जब तक वह कौड़ी-
कौड़ी न चुका दे। 35इसी प्रकार यदि तुम में हर
एक जन अपने भाई-बहिन को पूरे हृदय से
क्षमा नहीं करेगा, तो मेरा स्वर्गिक पिता भी
तुम्हारे साथ ऐसा ही करेगा।''

19 अपना यह उपदेश समाप्त कर येशु
गलील प्रदेश से चले गये और यर्दन
नदी के पार यहूदा प्रदेश के सीमा-क्षेत्र में आए।
2एक विशाल जनसमूह उनके पीछे हो लिया
और येशु ने वहाँ लोगों को स्वस्थ किया।

विवाह का बन्धन

3कुछ फरीसी येशु के पास आये और उनकी
परीक्षा लेने के उद्देश्य से बोले, ''क्या किसी भी
कारण से अपनी पत्नी का परित्याग करना
उचित है?'' 4येशु ने उत्तर दिया, ''क्या तुम
लोगों ने धर्मग्रन्थ में यह नहीं पढ़ा कि सृष्टिकर्ता
ने प्रारम्भ ही से उन्हें नर और नारी बनाया 5और
कहा कि 'इस कारण पुरुष अपने माता-पिता
को छोड़ेगा और अपनी पत्नी के साथ रहेगा,
और वे दोनों एक शरीर होंगे'? 6इस प्रकार अब
वे दो नहीं, बल्कि एक शरीर हैं। इसलिए जिसे
परमेश्वर ने जोड़ा है, उसे मनुष्य अलग नहीं
करे।''

7उन्होंने येशु से कहा, ''तब मूसा ने पत्नी
का परित्याग करते समय त्यागपत्र देने का
आदेश क्यों दिया?''

8येशु ने उत्तर दिया, ''मूसा ने तुम्हारे हृदय
की कठोरता के कारण ही तुम्हें पत्नी का
परित्याग करने की अनुमति दी थी; किन्तु
प्रारम्भ से ऐसा नहीं था। 9मैं तुम लोगों से कहता
हूँ कि व्यभिचार* के अतिरिक्त किसी अन्य
कारण से जो पति अपनी पत्नी का परित्याग
करता और किसी दूसरी स्त्री से विवाह करता
है, वह व्यभिचार करता है।''

10शिष्यों ने येशु से कहा, ''यदि पति और
पत्नी का सम्बन्ध ऐसा है, तो विवाह नहीं करना
ही अच्छा है।'' 11येशु ने उनसे कहा, ''सब इस
शिक्षा को ग्रहण नहीं कर सकते। केवल वे ही
ग्रहण कर सकते हैं जिन्हें यह वरदान मिला है;
12क्योंकि कुछ लोग माता के गर्भ से ही नपुंसक
उत्पन्न हुए हैं, कुछ लोगों को मनुष्यों ने नपुंसक
बना दिया है। किन्तु कुछ लोगों ने स्वर्गराज्य के
निमित्त अपने आप को नपुंसक बना दिया है।
जो यह शिक्षा ग्रहण कर सकता है, वह ग्रहण
कर ले।''

बच्चों को आशीर्वाद

13उस समय लोग येशु के पास बच्चों को
लाये, जिससे वह उन पर हाथ रखें और प्रार्थना
करें। परन्तु शिष्यों ने लोगों को डाँटा। 14येशु
ने कहा, 'बच्चों को आने दो और उन्हें मेरे पास
आने से मत रोको, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन
-जैसे लोगों का ही है।'' 15और वह बच्चों के
सिर पर हाथ रखकर वहाँ से चले गये।

धन-सम्पत्ति या शाश्वत जीवन

16एक व्यक्ति येशु के पास आ कर बोला,
''गुरुवर! शाश्वत जीवन प्राप्त करने के लिए
मैं कौन-सा भला कार्य करूँ?'' 17येशु ने उत्तर
दिया, ''भलाई के विषय में मुझ से क्यों पूछते
हो? एक ही तो भला है। यदि तुम जीवन में
प्रवेश करना चाहते हो, तो आज्ञाओं का पालन
करो।'' 18उसने पूछा, ''कौन-सी आज्ञाएं?''
येशु ने कहा, ''हत्या मत करो; व्यभिचार मत
करो; चोरी मत करो; झूठी गवाही मत दो;
19अपने माता-पिता का आदर करो; और अपने
पड़ोसी को अपने समान प्यार करो।''
20नवयुवक ने उनसे कहा, ''मैंने इन सब का
पालन किया है। मुझ में किस बात की कमी
है?'' 21येशु ने उसे उत्तर दिया, ''यदि तुम पूर्ण
होना चाहते हो, तो जाओ, अपनी सम्पत्ति बेच
कर गरीबों को दे दो और स्वर्ग में तुम्हारा धन

---

* अथवा, 'अवैध सम्बन्ध'

18 : 35 मत 6 : 14-15 **19 : 1-9** मक 10 : 1-12 **19 : 1** मत 7 : 28; 11 : 1; 13 : 53; 26 : 1 **19 : 3** मत 5 : 31-32 **19 : 4** उत 1 : 27 **19 : 5** उत 2 : 24; इफ 5 : 31 **19 : 6** 1 कुर 7 : 10-11 **19 : 7** व्य 24 : 1 **19 : 9** लू 16 : 18 **19 : 11** 1 कुर 7 : 7, 17 **19 : 13-15** मक 10 : 13-16; लू 18 : 15-17 **19 : 14** मत 18 : 2-3 **19 : 16-30** मक 10 : 17-31; लू 18 : 18-30 **19 : 17** लू 10 : 26-28 **19 : 18** नि 20 : 12-16; व्य 5 : 17-20 **19 : 19** नि 20 : 12; लेव 19 : 18; व्य 5 : 16 **19 : 21** लू 12 : 33; मत 6 : 20

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

होगा। तब आ कर मेरा अनुसरण करो।'' 22यह
बात सुनकर वह नवयुवक उदास होकर चला
गया, क्योंकि उसके पास बहुत धन-सम्पत्ति
थी।

धन के कारण बाधा

23तब येशु ने अपने शिष्यों से कहा, ''मैं
तुम लोगों से सच कहता हूँ : धनवान के लिए
स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना कठिन है। 24मैं
तुमसे फिर कहता हूँ कि परमेश्वर के राज्य में
धनवान के प्रवेश करने की अपेक्षा सूई के छेद
से हो कर ऊँट का निकलना अधिक सरल
है।'' 25यह सुन कर शिष्य बहुत अधिक
विस्मित हो गये और बोले, ''तो फिर किसका
उद्धार हो सकता है?'' 26येशु ने उन्हें एकटक
देखा और कहा, ''मनुष्यों के लिए तो यह
असम्भव है; किन्तु परमेश्वर के लिए सब कुछ
सम्भव है।''

स्वैच्छिक निर्धनता

27इस पर पतरस ने येशु से कहा, ''देखिए,
हम लोग अपना सब कुछ छोड़ कर आपके
अनुयायी बन गये हैं। तो, हमें क्या मिलेगा?''
28येशु ने अपने शिष्यों से कहा, ''मैं तुम से सच
कहता हूँ, नई सृष्टि में जब मानव-पुत्र अपने
महिमामय सिंहासन पर विराजमान होगा, तब
तुम जिन्होंने मेरा अनुसरण किया है, बारह
सिंहासनों पर बैठ कर इस्राएल के बारह कुलों
का न्याय करोगे। 29और जिस किसी ने मेरे नाम
के लिए घरबार, भाइयों, बहिनों, पिता, माता,
बाल-बच्चों अथवा खेतों को छोड़ दिया है, वह
सौ गुना पायेगा और शाश्वत जीवन का
अधिकारी होगा।

30''परन्तु बहुत लोग जो प्रथम हैं, अंतिम
हो जाएंगे; और जो अंतिम हैं, वे प्रथम हो
जाएंगे।

अंगूर-उद्यान के मजदूरों का दृष्टान्त

20 ''स्वर्ग का राज्य उस गृहस्वामी के
सदृश है, जो अपने अंगूर-उद्यान में
मजदूरों को लगाने के लिए बहुत सबेरे घर से
निकला। 2उसने मजदूरों के साथ एक सिक्का*
प्रतिदिन मजदूरी तय की और उन्हें अपने
अंगूर-उद्यान में भेजा। 3लगभग नौ बजे वह
बाहर निकला और उसने दूसरों को चौक में
बेकार खड़ा देख कर 4उनसे कहा, 'तुम लोग
भी मेरे अंगूर-उद्यान में जाओ, मैं तुम्हें उचित
मजदूरी दूँगा'। 5और वे वहाँ गये। लगभग
बारह बजे और तीन बजे भी उसने बाहर निकल
कर ऐसा ही किया। 6वह संध्या पाँच बजे फिर
बाहर निकला। उसने वहाँ कुछ और मजदूरों
को खड़ा देखा। वह उनसे बोला, 'तुम यहाँ दिन
भर क्यों बेकार खड़े रहे?' 7उन्होंने उत्तर दिया,
'इसलिए कि किसी ने हमें मजदूरी में नहीं
लगाया।' उसने उन से कहा, 'तुम भी मेरे
अंगूर-उद्यान में जाओ।'

8''सन्ध्या होने पर अंगूर-उद्यान के मालिक
ने अपने प्रबन्धक से कहा, 'मजदूरों को
बुलाओ। अंत में आने वालों से लेकर पहले
आने वालों तक, सब को मजदूरी दे दो।' 9जब
वे मजदूर आये, जो सन्ध्या पाँच बजे काम पर
लगाये गये थे, तो उन्हें एक-एक सिक्का
मिला। 10इस पर मजदूरी में जो पहले लगाये
गये थे, जब वे आये तो उन्होंने समझा कि उन्हें
अधिक मिलेगा; लेकिन उन्हें भी एक-एक
सिक्का मिला। 11उसको उन्होंने स्वीकार किया,
किन्तु वे मालिक के विरुद्ध भुनभुनाकर यह
कहने लगे, '12इन पिछले मजदूरों ने केवल
घण्टे भर काम किया। तब भी आपने इन्हें हमारे
बराबर बना दिया। हम दिन भर कठोर परिश्रम
करते और धूप सहते रहे।' 13उसने उनमें से
एक को यह कहते हुए उत्तर दिया, 'मित्र! मैं
तुम्हारे साथ अन्याय नहीं कर रहा हूँ। क्या तुमने
मेरे साथ एक सिक्का नहीं तय किया था?
14अपनी मजदूरी लो और जाओ। मैं इस पिछले
मजदूर को भी तुम्हारे जितना देना चाहता हूँ।
15जो मेरा है, क्या मैं अपनी इच्छा के अनुसार

---

* मूल में 'दीनार'

19 : 22 भज 62 : 10 19 :26 उत 18 : 14; अय्य 42 : 2; जक 8 : 6 19 : 28 लू 22 : 30; दान 7 : 9-10
19 : 29 इब्र 10 : 34 19 : 30 मत 20 : 16; लू 13 : 30 20 : 1 मत 21 : 33

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उस का उपयोग नहीं कर सकता? क्या मेरा
उदार होना तुम्हारी आँखों में खटकता है?'
16इस प्रकार जो अंतिम हैं, वे प्रथम हो जायेंगे
और जो प्रथम हैं वे अंतिम हो जायेंगे।''

दु:खभोग और पुनरुत्थान की तीसरी भविष्यवाणी

17यरूशलेम जाते समय येशु अपने बारह
शिष्यों को एकान्त में ले गए, और मार्ग में उनसे
बोले, 18''देखो, हम यरूशलेम जा रहे हैं।
मानव-पुत्र महापुरोहितों और शास्त्रियों के
हाथ में सौंप दिया जायेगा। वे उसे प्राणदण्ड के
योग्य ठहराएंगे 19और अन्यजातियों के हाथ में
सौंप देंगे, जिससे वे उसका उपहास करें, उसे
कोड़े लगायें और क्रूस पर चढ़ायें; लेकिन
तीसरे दिन वह जीवित हो उठेगा।''

एक माँ की इच्छा

20तब जबदी के पुत्रों की माता अपने पुत्रों
के साथ येशु के पास आयी। उसने वंदना कर
उन से कुछ मांगना चाहा। 21येशु ने उससे कहा,
''क्या चाहती हो?'' उसने उत्तर दिया, ''आप
आज्ञा दीजिए कि आपके राज्य में मेरे ये दोनों
पुत्र एक आपके दायें बैठे और दूसरा आपके
बायें।'' 22येशु ने उसके पुत्रों से कहा, ''तुम
नहीं जानते कि तुम क्या माँग रहे हो। जो प्याला
मैं पीने वाला हूँ, क्या तुम उसे पी सकते हो?''
उन्होंने उत्तर दिया, ''हाँ, हम पी सकते हैं।''
23इस पर येशु ने उनसे कहा, ''मेरा प्याला तो
तुम पिओगे, किन्तु तुम्हें अपने दायें या बायें
बैठाना, यह मेरा काम नहीं है। ये स्थान उन
लोगों के लिए हैं जिनके लिए मेरे पिता ने इन्हें
तैयार किया है।''

सेवाभाव का महत्त्व

24जब दस प्रेरितों को यह मालूम हुआ, तब
वे दोनों भाइयों पर नाराज हो गये। 25येशु ने
अपने शिष्यों को अपने पास बुला कर उनसे
कहा, ''तुम जानते हो कि संसार के अधिपति
अपनी प्रजा पर निरंकुश शासन करते हैं और
उनके सत्ताधारी उन पर अधिकार जताते हैं।
26परन्तु तुम में ऐसी बात नहीं होगी। जो तुम
में बड़ा होना चाहता है, वह तुम्हारा सेवक बने
27और जो तुम में प्रधान होना चाहता है, वह
तुम्हारा दास बने; 28जैसे मानव-पुत्र अपनी
सेवा कराने नहीं, बल्कि सेवा करने तथा बहुतों
के बदले* उनकी मुक्ति के मूल्य में अपने प्राण
देने आया है।''

दो अन्धों को दृष्टिदान

29जब येशु और उनके शिष्य यरीहो नगर से
निकल रहे थे, तब एक विशाल जनसमूह येशु
के पीछे हो लिया। 30सड़क के किनारे दो अन्धे
बैठे हुए थे। जब उन्होंने यह सुना कि येशु
सामने से गुजर रहे हैं, तब वे पुकार-पुकार कर
कहने लगे, ''हे प्रभु! दाऊद के वंशज! हम पर
दया कीजिए''। 31लोगों ने उन्हें डांटा कि वे
चुप हो जाएं। किन्तु वे और भी जोर से पुकारने
लगे, ''हे प्रभु! दाऊद के वंशज! हम पर दया
कीजिए।'' 32येशु रुक गये। उन्होंने उनको
बुलाया और कहा, ''तुम क्या चाहते हो? मैं
तुम्हारे लिए क्या करूँ?'' 33उन्होंने उत्तर दिया,
''प्रभु! हमारी आँखें खुल जायें।'' 34येशु को
उन पर दया आयी और उन्होंने उनकी आँखों
का स्पर्श किया। उसी क्षण उनकी दृष्टि लौट
आयी और वे येशु के पीछे हो लिये।

यरूशलेम में येशु का प्रवेश

21 जब येशु यरूशलेम के निकट पहुँचे
और जैतून पहाड़ पर बेतफगे के समीप
आये, तब येशु ने दो शिष्यों को यह कहते हुए
भेजा, 2''सामने के गाँव में जाओ। वहाँ पहुँचते
ही तुम्हें खूंटे से बंधी हुई एक गदही मिलेगी
और उसके साथ उसका एक बछेरू होगा। उन्हें
खोल कर मेरे पास ले आओ। 3यदि कोई तुमसे

* अथवा, 'बहुतों के लिए'

20 : 15 रोम 9: 16, 21 ; मत 6 : 23 **20 : 16** मत 19 : 30 **20 : 17-19** मक 10 : 32-34; लू 18 : 31-33 **20 : 18** मत 16 : 21; 17 : 22-23 **20 : 20-28** मक 10 : 35-45 **20 : 20** मत 10 : 2 **20 : 21** मत 19 : 28 **20 : 22** मत 26 : 39; यो 18 : 11; लू 12 : 50 **20 : 24** लू 22 : 24-26 **20 : 26** मत 23 : 11 **20 : 27** मक 9 : 35 **20 : 28** लू 22 : 27; फिल 2 : 7; 1 तिम 2 : 6 **20 : 29-34** मक 10 : 46-52; लू 18 : 35-43 **20 : 30** मत 15 : 22 **21 : 1-11** मक 11 : 1-10; लू 19 : 29-38; यो 12 : 12-19 **21 : 3** मत 26 : 18

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कुछ बोले, तो कह देना, 'प्रभु को इनकी
जरूरत है।' और वह उन्हें तुरन्त भेज देगा*।''
4यह इसलिए हुआ कि नबी का यह कथन पूरा
हो जाये:
5''सियोन नगरी से कहो:
देख! तेरा राजा तेरे पास आ रहा है।
वह विनम्र है।
वह गदही पर और उसके बछेरू पर,
वरन् लद्दू जानवर के बच्चे पर सवार
है।''
6दोनों शिष्य चले गए। येशु ने जैसा आदेश
दिया, उन्होंने वैसा ही किया। 7वे गदही और
उसके बछेरू को ले आए। उन्होंने उन पर अपनी
चादरें बिछा दीं, जिन पर येशु बैठ गए। 8भीड़
में से बहुत-से लोगों ने अपनी चादरें रास्ते में
बिछा दीं। कुछ लोगों ने पेड़ों की डालियाँ काट
कर रास्ते में फैला दीं। 9येशु के आगे-आगे और
उनके पीछे आनेवाले लोग यह नारा लगा रहे
थे, ''दाऊद के वंशज की जय हो! जय हो!+
धन्य है वह, जो प्रभु के नाम पर आता है!
सर्वोच्च स्वर्ग में जय हो! जय हो!'' 10जब येशु
ने यरूशलेम में प्रवेश किया तब समस्त नगर
में हलचल मच गयी। लोग पूछने लगे, ''यह
कौन हैं?'' 11जनसमूह ने कहा, ''यह गलील
प्रदेश के नासरत-निवासी नबी येशु हैं।''

मन्दिर से बिक्री करने वालों को निकालना

12येशु ने मन्दिर में प्रवेश किया और वहाँ से
उन सब को बाहर निकाल दिया, जो मन्दिर
में क्रय-विक्रय कर रहे थे। उन्होंने सराफों की
मेजें और कबूतर बेचने वालों की चौकियाँ
उलट दीं 13और उन से कहा, ''धर्मग्रन्थ में
लिखा है: 'मेरा घर प्रार्थना का घर कहलायेगा,'
परन्तु तुम लोग उसे लुटेरों का अड्डा बना रहे
हो।''

बालकों के मुंह से जय-जयकार

14अन्धे और लंगड़े येशु के पास मन्दिर में
आये और येशु ने उन को स्वस्थ कर दिया।
15जब महापुरोहितों और शास्त्रियों ने उनके
आश्चर्यपूर्ण कार्य देखे और बालकों को मन्दिर
में यह जयघोष करते सुना—''दाऊद के वंशज
की जय!'', तो वे क्रुद्ध हो गए। 16वे येशु से
बोले, ''क्या तुम सुन रहे हो कि ये क्या कह
रहे हैं?'' येशु ने उन्हें उत्तर दिया, ''हाँ, सुन रहा
हूं। क्या तुम लोगों ने धर्मग्रन्थ में यह नहीं पढ़ा,
'बालकों और दुधमुँहे बच्चों के मुख से तूने
अपना गुणगान कराया'?'' 17तब येशु उन्हें
छोड़कर नगर के बाहर बेतनियाह गाँव को चले
गए और रात वहीं व्यतीत की।

अंजीर का पेड़

18सबेरे नगर को लौटते समय येशु को भूख
लगी। 19उन्होंने मार्ग के किनारे अंजीर का एक
पेड़ देखा। वह उसके पास आये। परन्तु उन्होंने
उस में पत्तों को छोड़कर और कुछ नहीं पाया।
येशु ने पेड़ से कहा, ''अब से तुझ में फिर कभी
फल न लगे'' और उसी क्षण अंजीर का वह पेड़
सूख गया। 20यह देख कर शिष्य अचम्भे में पड़
गये और बोले, ''अंजीर का यह पेड़ तुरन्त कैसे
सूख गया है?'' 21येशु ने उन्हें उत्तर दिया, ''मैं
तुम लोगों से सच कहता हूँ: यदि तुम विश्वास
करो और सन्देह न करो, तो तुम न केवल वह
करोगे, जो मैंने अंजीर के पेड़ के साथ किया
है; परन्तु यदि तुम इस पहाड़ से यह कहोगे,
'उठ और समुद्र में जा गिर', तो वैसा ही हो
जायेगा। 22और जो कुछ तुम विश्वास के साथ
प्रार्थना में माँगोगे, वह तुम्हें मिल जायेगा।''

येशु के अधिकार पर शंका

23येशु मन्दिर में लौटे। जब वह लोगों को
शिक्षा दे रहे थे, तब महापुरोहित और समाज के

---

* अथवा, 'और वह (अर्थात् प्रभु) उन्हें शीघ्र ही भेज देंगे।' + मूल में, 'होशाना' अर्थात् 'हमें बचा'। इस शब्द का प्रयोग जय-जयकार के अर्थ में होता है।

21 : 5 जक 9 : 9; यश 62 : 11 **21 : 8** 2 रा 9 : 13 **21 : 9** भज 118 : 25-26; 2 शम 14 : 4 **21 : 11** मत 21 : 46 **21 : 12-22** मक 11 : 11-24; लू 19 : 45-48; यो 2 : 14-16 **21 : 12** मत 3 : 1 **21 : 13** यश 56 : 7; यिर 7 : 11 **21 : 15** भज 118 : 25 **21 : 16** भज 8 : 2 (यू० पाठ) **21 : 19** लू 13 : 6 **21 : 21** मत 17 : 20 **21 : 23-27** मक 11 : 27-33; लू 20 : 1-8 **21 : 23** यो 2 : 18

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
धर्मवृद्ध उनके पास आ कर बोले, "आप किस
अधिकार से ये कार्य कर रहे हैं? किसने आप
को यह अधिकार दिया है?" [24]येशु ने उन्हें
उत्तर दिया, "मैं भी आप लोगों से एक प्रश्न
पूछना चाहता हूँ। यदि आप मुझे इसका उत्तर
देंगे, तो मैं भी आप को बता दूँगा कि मैं किस
अधिकार से ये कार्य कर रहा हूँ।—[25]योहन का
बपतिस्मा किस की ओर से था? स्वर्ग की ओर
से या मनुष्यों की ओर से?* "

वे यह कहते हुए आपस में तर्क-वितर्क
करने लगे, "यदि हम कहें: 'स्वर्ग की ओर से',
तो वह हमसे कहेंगे, 'तब आप लोगों ने योहन
पर विश्वास क्यों नहीं किया?' [26]यदि हम कहें:
'मनुष्यों की ओर से', तो हमें जनता से डर
लगता है; क्योंकि सब योहन को नबी मानते
हैं।" [27]इसलिए उन्होंने येशु को उत्तर दिया,
"हम नहीं जानते।" इस पर येशु ने उन से कहा,
"तब मैं भी आप लोगों को नहीं बताऊँगा कि
मैं किस अधिकार से ये कार्य कर रहा हूँ।

दो पुत्रों का दृष्टान्त

[28]"तुम लोगों का क्या विचार है? किसी
मनुष्य के दो पुत्र थे। उसने पहले के पास जा
कर कहा, 'बेटा! जाओ, आज अंगूर-उद्यान में
काम करो।' [29]उसने उत्तर दिया, 'मैं नहीं
जाऊँगा', किन्तु बाद में उसे पश्चात्ताप हुआ
और वह गया। [30]पिता ने दूसरे पुत्र के पास जा
कर यही कहा। उसने उत्तर दिया, 'जी हाँ,
पिताजी! मैं जाता हूँ।' किन्तु वह नहीं गया।
[31]दोनों में से किसने अपने पिता की इच्छा पूरी
की?" उन्होंने येशु को उत्तर दिया, "पहले
ने।" इस पर येशु ने उन से कहा, "मैं तुम लोगों
से सच कहता हूँ: चुंगी-अधिकारी और
वेश्याएँ तुम लोगों से पहले परमेश्वर के राज्य
में प्रवेश कर रहे हैं। [32]योहन धर्म का मार्ग
दिखाते हुए तुम्हारे पास आए और तुम लोगों ने
उन पर विश्वास नहीं किया, परन्तु चुँगी-
अधिकारियों और वेश्याओं ने उन पर विश्वास
किया। तुमने यह देखा; फिर भी तुमने बाद में
पश्चात्ताप नहीं किया और न उन पर विश्वास
किया।

अंगूर-उद्यान का दृष्टान्त

[33]"एक और दृष्टान्त सुनो: एक जमींदार
था। उसने अंगूर का एक उद्यान लगाया और
उसके चारों ओर बाड़ा बांधा। उसने उसमें रस
का कुण्ड खुदवाया और पक्का मचान बनवाया।
तब उसे किसानों को पट्टे पर दे कर वह परदेश
चला गया। [34]फसल का समय आने पर उसने
अपनी फसल का हिस्सा वसूल करने के लिए
किसानों के पास अपने सेवकों को भेजा।
[35]किन्तु किसानों ने उसके सेवकों को पकड़
कर उन में से किसी को मारा-पीटा, किसी की
हत्या कर दी और किसी को पत्थरों से मार
डाला। [36]इसके बाद उसने पहले से अधिक
सेवकों को भेजा और किसानों ने उनके साथ
भी वैसा ही किया। [37]अन्त में उसने यह सोच
कर अपने पुत्र को उनके पास भेजा कि वे मेरे
पुत्र का आदर करेंगे। [38]किन्तु पुत्र को देख कर
किसानों ने एक दूसरे से कहा, 'यह तो
उत्तराधिकारी है। चलो, हम इसे मार डालें और
इसकी पैतृक-सम्पत्ति पर कब्जा कर लें।'
[39]उन्होंने उसे पकड़ लिया और अंगूर-उद्यान
से बाहर निकाल कर मार डाला। [40]जब अंगूर-
उद्यान का स्वामी लौटेगा, तो वह उन किसानों
का क्या करेगा?" [41]उन्होंने येशु से कहा,
"वह उन दुष्टों का सर्वनाश करेगा और अपने
अंगूर-उद्यान का पट्टा दूसरे किसानों को देगा,
जो समय पर फसल का हिस्सा देते रहेंगे"।
[42]येशु ने उनसे कहा, "क्या तुम लोगों ने
धर्मग्रन्थ में कभी यह नहीं पढ़ा: 'कारीगरों ने
जिस पत्थर को बेकार समझ कर फेंक दिया था,

---

* इस पद का अनुवाद इस प्रकार भी किया जा सकता है, 'बपतिस्मा देने का अधिकार योहन को कहाँ से प्राप्त हुआ था? परमेश्वर की ओर से या मनुष्यों की ओर से?'

21 : 26 मत 14 : 5 **21 : 29** मत 7 : 21 **21 : 31** लू 18 : 14 **21 : 32** लू 7 : 29 **21 : 33–46** मक 12 : 1–12; लू 20 : 9–19 **21 : 33** मत 25 : 14; यश 5 : 1–2 **21 : 38** मत 27 : 18 **21 : 42** भज 118 : 22–23; प्रे 4 : 11; रोम 9 : 33; 1 पत 2 : 6–8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वही कोने की नींव का पत्थर बन गया है। यह
प्रभु का कार्य है और हमारी दृष्टि में अद्भुत
है।' ? 43इसलिए मैं तुम लोगों से कहता हूँ :
परमेश्वर का राज्य तुम से ले लिया जायेगा और
ऐसे राष्ट्र को दिया जायेगा, जो उसका उचित
फल उत्पन्न करेगा।
44"[जो इस पत्थर पर गिरेगा, वह चूर-चूर
हो जायेगा और जिस पर यह पत्थर गिरेगा, उस
को पीस डालेगा।]"*
45महापुरोहित और फरीसी येशु के दृष्टान्तों
को सुनकर समझ गये कि वह हमारे विषय में
कह रहे हैं। 46वे उन्हें गिरफ्तार करना चाहते थे,
किन्तु वे जनता से डरते थे; क्योंकि वह येशु को
नबी मानती थी।

विवाह-भोज का दृष्टान्त

22 येशु उन्हें फिर दृष्टान्त सुनाने लगे।
उन्होंने कहा, 2"स्वर्ग का राज्य उस
राजा के सदृश है, जिसने अपने पुत्र के विवाह
में भोज दिया। 3उसने उत्सव में आमन्त्रित
लोगों को बुला लाने के लिए अपने सेवकों को
भेजा, लेकिन अतिथि आना नहीं चाहते थे।
4राजा ने फिर दूसरे सेवकों को यह कहते हुए
भेजा, 'अतिथियों से कहना—देखिए! मैंने
अपने भोज की तैयारी कर ली है। मेरे बैल और
मोटे-मोटे पशु मारे जा चुके हैं। सब कुछ तैयार
है; विवाह-भोज में पधारिए।' 5अतिथि राजा
के निवेदन की उपेक्षा कर चल दिए। कोई अपने
खेत की ओर चला गया, तो कोई अपना व्यापार
देखने। 6दूसरे अतिथियों ने राजा के सेवकों को
पकड़ कर उनका अपमान किया और उन्हें मार
डाला। 7राजा को बहुत क्रोध आया। उसने
अपनी सेना भेज कर उन हत्यारों का संहार कर
दिया और उनका नगर जला डाला।
8"तब राजा ने अपने सेवकों से कहा,
'विवाह-भोज तो तैयार है, किन्तु अतिथि
इसके योग्य नहीं ठहरे। 9इसलिए चौराहों पर
जाओ और जितने भी लोग मिल जायें, सब को
विवाह-भोज में बुला लाओ। 10सेवक सड़कों
पर गये और भले-बुरे जो भी मिले, सब को
एकत्र कर ले आये और विवाह-मण्डप
अतिथियों से भर गया।
11"राजा अतिथियों को देखने भीतर आया,
तो वहाँ उसकी दृष्टि एक ऐसे मनुष्य पर पड़ी,
जो विवाहोत्सव के वस्त्र नहीं पहने था।
12उसने उससे कहा, 'मित्र विवाहोत्सव के
वस्त्र पहने बिना तुम यहाँ कैसे आ गये?' वह
मनुष्य चुप रहा। 13तब राजा ने अपने सेवकों
से कहा, 'इसके हाथ-पैर बाँध कर इसे बाहर,
अन्धकार में फेंक दो। वहाँ यह रोयेगा और दाँत
पीसता रहेगा।' 14क्योंकि बुलाये हुए तो बहुत
हैं, लेकिन चुने हुए थोड़े हैं।"

रोमन सम्राट को कर देने का प्रश्न

15उस समय फरीसियों ने जा कर आपस में
परामर्श किया कि हम किस प्रकार येशु को
उनकी अपनी बात के फन्दे में फँसायें।
16उन्होंने येशु के पास हेरोदेस-दल के सदस्यों
के साथ अपने शिष्यों को यह प्रश्न पूछने भेजा,
"गुरुवर! हम यह जानते हैं कि आप सच्चे हैं
और सच्चाई से परमेश्वर के मार्ग की शिक्षा देते
हैं। आप किसी की परवाह नहीं करते, क्योंकि
आप मुँह-देखी बात नहीं कहते। 17इसलिए हमें
बताइए, आपका क्या विचार है—रोमन सम्राट+
को कर देना उचित है या नहीं?" 18उनकी दुष्टता
भाँप कर येशु ने कहा, "ढोंगियो! मेरी परीक्षा
क्यों लेते हो? 19राज-कर का सिक्का मुझे
दिखाओ।" वे उनके पास एक रोमन सिक्का**
लाए। 20येशु ने उन से कहा, "यह किसकी
आकृति और किसका लेख है?" 21उन्होंने उत्तर
दिया, "रोमन सम्राट का।" इस पर येशु ने उन
से कहा, "तो, जो सम्राट का है, वह सम्राट को
दो और जो परमेश्वर का है, वह परमेश्वर को
दो।" 22यह सुन कर वे अचम्भे में पड़ गये और

---

* कुछ प्राचीन प्रतियों में यह पद नहीं मिलता + मूल में, 'कैसर' ** मूल में, 'दीनार'

21 : 44 दान 2 : 34-35.44-45 **22 : 2-14** लू 14 : 16-24 **22 : 2** यो 3 : 29 **22 : 4** मत 21 : 36 **22 : 7** मत 24 : 2 **22 : 9** मत 13 : 47; 21 : 43 **22 : 13** मत 8 : 12 **22 : 15-22** मक 12 : 13-17; लू 20 : 20-26 **22 : 15** यो 8 : 6 **22 : 16** मक 3 : 6; यो 3 : 2 **22 : 21** रोम 13 : 7 **22 : 22** यो 8 : 9

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

येशु को छोड़कर चले गये।

पुनरुत्थान का प्रश्न

23उसी दिन सदूकी सम्प्रदाय के लोग येशु
के पास आये। उनकी धारणा है कि मृत व्यक्ति
का पुनरुत्थान नहीं होता। 24उन्होंने येशु के
सामने यह प्रश्न रखा, "गुरुवर! मूसा ने कहा
है कि यदि कोई मनुष्य निस्सन्तान मर जाये, तो
उसका भाई उसकी विधवा को ब्याह कर अपने
भाई के लिए सन्तान उत्पन्न करे। 25अब, हमारे
यहाँ सात भाई थे। पहले ने विवाह किया किन्तु
वह निस्सन्तान मर गया और अपनी पत्नी को
अपने भाई के लिए छोड़ गया। 26 इसी प्रकार
दूसरे और तीसरे भाई ने भी किया, और सातों
भाइयों के साथ यही हुआ। 27सब के अन्त में
वह स्त्री मर गयी। 28अब पुनरुत्थान होने पर
वह सातों भाइयों में से किसकी पत्नी होगी?
वह तो सब भाइयों की पत्नी रह चुकी है।"
29येशु ने उन्हें उत्तर दिया, "तुम लोग न तो
धर्मग्रन्थ जानते हो और न परमेश्वर का
सामर्थ्य, इसलिए भ्रम में पड़े हुए हो। 30पुनरुत्थान
होने पर न तो पुरुष विवाह करते और न स्त्रियाँ
विवाह में दी जाती हैं, बल्कि वे स्वर्गदूतों के
सदृश होते हैं।—31जहाँ तक मृतकों के पुनरुत्थान
का प्रश्न है, क्या तुम लोगों ने कभी यह वचन
नहीं पढ़ा जो परमेश्वर ने तुम से कहा है : 32'मैं
अब्राहम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर
और याकूब का परमेश्वर हूँ'?" वह मृतकों का
नहीं, जीवितों का परमेश्वर है।" 33यह सुन
कर लोग उनकी शिक्षा पर बहुत चकित हुए।

सब से बड़ी आज्ञा

34जब फरीसियों ने यह सुना कि येशु ने
सदूकियों का मुँह बन्द कर दिया है, तब वे
इकट्ठे हो गये 35और उन में से एक व्यवस्था के
आचार्य ने येशु की परीक्षा लेने के लिए उन से
पूछा, 36"गुरुवर! व्यवस्था- ग्रन्थ में सब से
बड़ी आज्ञा कौन-सी है?" 37येशु ने उस से
कहा, "'अपने प्रभु परमेश्वर को अपने सम्पूर्ण
हृदय, सम्पूर्ण प्राण और सम्पूर्ण बुद्धि से प्रेम
करो।' 38यह सब से बड़ी और पहली आज्ञा
है। 39दूसरी आज्ञा इसी के सदृश है: 'अपने
पड़ोसी को अपने समान प्रेम करो।' 40इन्हीं दो
आज्ञाओं पर समस्त व्यवस्था और नबियों की
शिक्षा अवलम्बित है।"

मसीह, राजा दाऊद के वंशज

41फरीसी अभी वहाँ एकत्र थे। येशु ने
फरीसियों से पूछा, 42"मसीह के विषय में तुम
लोगों का क्या विचार है; वह किसके वंशज
हैं?" उन्होंने उत्तर दिया, "दाऊद के।" 43इस
पर येशु ने उनसे कहा, "तब दाऊद आत्मा की
प्रेरणा से उन्हें प्रभु क्यों कहते हैं? उनका कथन
है:

44'प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा,
तुम सिंहासन की दाहिनी ओर बैठो,
जब तक मैं तुम्हारे शत्रुओं को
तुम्हारे पैरों तले न डाल दूँ।'

45"यदि दाऊद उन्हें प्रभु कहते हैं, तो वह
उनके वंशज कैसे हो सकते हैं?" 46इसके उत्तर
में कोई भी फरीसी येशु से एक शब्द भी नहीं
बोल सका और उस दिन से किसी को उन से
और प्रश्न करने का साहस नहीं हुआ।

शास्त्रियों और फरीसियों का पाखण्ड

23 उस समय येशु ने जनसमूह तथा अपने
शिष्यों से कहा, 2"शास्त्री और फरीसी
मूसा की गद्दी पर बैठे हैं। 3इसलिए वे तुम लोगों
से जो कुछ कहें, वह करते और मानते रहो;
परन्तु उनके जैसे कार्य मत करना, 4क्योंकि वे
कहते तो हैं, पर करते नहीं। वे धर्म-नियमों के
ऐसे भारी बोझ बाँध कर लोगों के कन्धों पर
लाद देते हैं जिन्हें ढोना कठिन है; परन्तु स्वयं
उंगली से भी उन्हें उठाना नहीं चाहते। 5वे अपना
हर काम लोगों का ध्यान आकर्षित करने के
लिए ही करते हैं। वे अपने तावीजों को चौड़ा

---

22 : 23-33 मक 12 : 18-27; लू 20 : 27-40 **22 : 23** प्रे 23 : 6, 8 **22 : 24** व्य 25 : 5-6; उत 38 : 8 **22 : 30** प्रज्ञ 5 : 5 **22 : 32** मत 8 : 11; नि 3 : 6 **22 : 34-40** मक 12 : 28-31; लू 10 : 25-28 **22 : 37** व्य 6 : 5 **22 : 39** लेव 19 : 18 **22 : 40** मत 7 : 12; रोम 13 : 10 गल 5 : 14 **22 :41-46** मक 12 : 35-37; लू 20 : 41-44 **22 : 42** यो 7 : 42 **22 : 44** मत 26 : 64; भज 110 : 1 **23 : 1-39** मक 12 : 38-40; लू 20 : 45-47; 11 : 39-52 **23 : 3** मला 2 : 7-8 **23 : 5** मत 6 : 1; नि 13 : 9; गण 15 : 38-39

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और अपने वस्त्रों की झालरों को लम्बा बनाते
हैं। 6भोजों में सम्मानित स्थानों पर और सभागृहों
में प्रमुख आसनों पर बैठना, 7बाजारों में प्रणाम-
प्रणाम सुनना और जनता द्वारा 'गुरुवर'*
कहलाना—यह सब उन्हें प्रिय लगता है।
8"पर तुम 'गुरुवर' न कहलाना, क्योंकि
तुम्हारा एक ही गुरु है और तुम सब भाई-बहिन
हो। 9पृथ्वी पर किसी को अपना 'पिता' न
कहना, क्योंकि तुम्हारा एक ही पिता है, जो
स्वर्ग में है। 10तुम 'धर्म-शिक्षक**' भी न
कहलाना, क्योंकि तुम्हारा एक ही धर्म-शिक्षक
है अर्थात् मसीह। 11जो तुम में से सब से बड़ा
है, वह तुम्हारा सेवक बने। 12क्योंकि जो अपने-
आपको ऊँचा करेगा, वह नीचा किया जाएगा,
और जो अपने-आप को नीचा करेगा, वह
ऊंचा किया जाएगा।

पाखंड के लिए धिक्कार

13"ढोंगी शास्त्रियो और फरीसियो! धिक्कार
है तुम्हें! तुम मनुष्यों के लिए स्वर्ग-राज्य का
द्वार बन्द कर देते हो; न तो तुम स्वयं प्रवेश करते
हो और न प्रवेश करने वालों को प्रवेश करने
देते हो।
14["ढोंगी शास्त्रियो और फरीसियो!
धिक्कार है तुम्हें! तुम विधवाओं की सम्पत्ति
हड़प जाते हो और दिखावे के लिए लम्बी-
लम्बी प्रार्थनाएं करते हो। इस कारण तुम्हें
अधिक दण्ड मिलेगा। +]
15"ढोंगी शास्त्रियो और फरीसियो! धिक्कार
है तुम्हें! तुम एक मनुष्य को अपने सम्प्रदाय
में लाने के लिए जमीन-आसमान एक कर देते
हो; परन्तु जब वह तुम्हारे सम्प्रदाय में आ जाता
है, तो उसे अपने से दुगुना नारकीय बना देते हो।
16"अन्धे पथ-प्रदर्शको! धिक्कार है तुम्हें!
तुम कहते हो: यदि कोई मन्दिर की शपथ खाता
है, तो इसका कोई महत्व नहीं; परन्तु यदि कोई
मन्दिर के सोने के पात्र की शपथ खाता है, तो
वह शपथ से बँध जाता है। 17अरे मूर्खो और
अन्धो! कौन बड़ा है— सोने का पात्र अथवा
मन्दिर, जिस से वह सोने का पात्र पवित्र हो
जाता है? 18तुम यह भी कहते हो: यदि कोई
वेदी की शपथ खाता है, तो इसका कोई महत्त्व
नहीं; परन्तु यदि कोई वेदी पर रखी हुई भेंट की
वस्तु की शपथ खाता है, तो वह बंध जाता है।
19अन्धो! कौन बड़ा है—भेंट की वस्तु अथवा
वेदी, जिस से वह वस्तु पवित्र हो जाती है?
20इसलिए जो वेदी की शपथ खाता है, वह
उसकी और उस पर रखी हुई सभी वस्तुओं की
शपथ खाता है। 21जो मन्दिर की शपथ खाता
है, वह उसकी और उस में निवास करने वाले
की शपथ खाता है 22और जो स्वर्ग की शपथ
खाता है, वह परमेश्वर के सिंहासन और उस
पर बैठने वाले की शपथ खाता है।
23"ढोंगी शास्त्रियो और फरीसियो! धिक्कार
है तुम्हें! तुम पुदीने, सौंफ और जीरे का दशमांश
तो देते हो, किन्तु धर्म-व्यवस्था की मुख्य
बातों—न्याय, करुणा और विश्वास की उपेक्षा
करते हो। तुम्हारे लिए उचित तो यह था कि तुम
इन्हें करते रहते और उन को भी नहीं छोड़ते!
24अन्धे पथ-प्रदर्शको! तुम मच्छर को तो छान
देते हो, किन्तु ऊँट को निगल जाते हो।
25"ढोंगी शास्त्रियो और फरीसियो! धिक्कार
है तुम्हें! तुम कटोरे और थाली को बाहर से तो
माँजते हो, किन्तु भीतर वे लूट-खसौट और
असंयम से भरे हुए हैं। 26अन्धे फरीसी! पहले
भीतर से कटोरे को साफ कर, जिससे वह बाहर
से भी साफ हो जाये।
27"ढोंगी शास्त्रियो और फरीसियो! धिक्कार
है तुम्हें! तुम पुती हुई कबरों के सदृश हो, जो
बाहर से तो सुन्दर दीख पड़ती हैं, किन्तु भीतर
से मुरदों की हड्डियों और हर तरह की गन्दगी
से भरी हुई हैं। 28इसी तरह तुम भी बाहर से
लोगों को धार्मिक दीख पड़ते हो, किन्तु भीतर
से तुम पाखण्ड और अधर्म से भरे हुए हो।
29"ढोंगी शास्त्रियो और फरीसियो! धिक्कार

*मूल में 'रब्बी' + कुछ प्राचीन प्रतियों में यह पद नहीं मिलता। **मूल शब्द के अन्य अर्थ हैं, 'आचार्य', 'अगुवा', 'प्रशिक्षक'

23 : 6 लू 14 : 7 मत 6 : 5 **23 : 11** मत 20 : 26-27 **23 : 12** नीति 29 : 23; अय्य 22 : 29; यहेज 21 : 26; लू 18 : 14; 1 पत 5 : 5 **23 : 16** मत 15 : 14 **23 : 19** नि 29 : 37 **23 : 22** मत 5 : 34 **23 : 23** लेव 27 : 30; मी 6 : 8 **23 : 25** मक 7 : 4 **23 : 26** तीत 1 : 15; यो 9 : 40 **23 : 27** प्रे 23 : 3 **23 : 28** लू 16 : 15

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

है तुम्हें! तुम नबियों के मकबरे बनाते और
धर्मात्माओं के स्मारक सँवारते हो 30और यह
कहते हो, 'यदि हम अपने पूर्वजों के युग में
होते, तो हम नबियों की हत्या करने में उनका
साथ नहीं देते'। 31इस तरह तुम लोग अपने
विरुद्ध यह गवाही देते हो कि तुम नबियों के
हत्यारों की सन्तान हो। 32तो, अपने पूर्वजों की
कसर पूरी कर लो।

फरीसियों और शास्त्रियों का दण्ड

33"अरे साँपो! करैतों की संतान! तुम नरक
के दण्ड से कैसे बचोगे? 34सुनो! मैं तुम्हारे पास
नबियों, ज्ञानियों और शास्त्रियों को भेजता हूँ।
तुम उन में से कितनों को मार डालोगे और क्रूस
पर चढ़ाओगे, कितनों को अपने सभागृहों में
कोड़े लगाओगे और नगर-नगर में उनका पीछा
करोगे, 35जिससे पृथ्वी पर धर्मात्माओं का
जितना रक्त बहाया गया—धर्मी हाबिल के
रक्त से ले कर बेरेकयाह के पुत्र जकर्याह के
रक्त तक, जिसे तुम लोगों ने मन्दिर और वेदी
के बीच मार डाला था—वह सब तुम्हारे सिर
पर पड़े। 36मैं तुम से सच कहता हूँ, यह सब
इस पीढ़ी के सिर पर पड़ेगा।

यरूशलेम पर विलाप

37"ओ यरूशलेम नगरी! यरूशलेम नगरी!
तू नबियों की हत्या करती है और अपने पास
भेजे हुए संदेश-वाहकों को पत्थरों से मार
डालती है। मैंने कितनी बार चाहा कि तेरी
सन्तान को वैसे ही एकत्र कर लूँ, जैसे मुर्गी
अपने बच्चों को अपने पंखों के नीचे एकत्र कर
लेती है, परन्तु तूने मुझे यह करने नहीं दिया।
38देखो, अब तुम्हारा घर तुम्हारे लिए उजाड़
छोड़ दिया जायेगा। 39मैं तुम से कहता हूँ, अब
से तुम मुझे तब तक नहीं देखोगे, जब तक तुम
यह न कहोगे: 'धन्य है वह, जो प्रभु के नाम
से आता है।'"

मन्दिर के विनाश की भविष्यवाणी

24 जब येशु मन्दिर से निकल कर जा रहे
थे, तब उनके शिष्य उनके पास आये
और उन्होंने मन्दिर की इमारतों की ओर उनका
ध्यान आकर्षित किया। 2येशु ने उनसे कहा, "तुम
यह सब देख रहे हो न? मैं तुम से सच कहता
हूँ, यहाँ एक पत्थर पर दूसरा पत्थर पड़ा नहीं
रहेगा—सब ध्वस्त हो जायेगा।"

3जब येशु जैतून पहाड़ पर बैठे थे, तब शिष्य
एकान्त में उनके पास आये और बोले, "हमें
बताइए, यह कब होगा? आपके आगमन और
युग के अन्त का चिह्न क्या होगा?"

विपत्तियों का प्रारम्भ

4येशु ने उन्हें उत्तर दिया, "सावधान रहो।
तुम्हें कोई नहीं बहकाये। 5बहुत-से लोग मेरे
नाम में आयेंगे और कहेंगे: 'मैं मसीह हूँ', और
वे बहुतों को बहका देंगे। 6तुम युद्धों की चर्चा
सुनोगे और युद्धों के बारे में अफवाहें सुनोगे।
पर देखो, इस से मत घबराना, क्योंकि ऐसा
होना अनिवार्य है। परन्तु यही अन्त नहीं है।
7जाति के विरुद्ध जाति और राज्य के विरुद्ध
राज्य उठ खड़ा होगा। जहाँ-तहाँ अकाल पड़ेंगे
और भूकम्प आएंगे। 8यह सब मानो प्रसव-
पीड़ा का आरम्भ मात्र होगा।

9"उस समय लोग तुम्हें पकड़वा कर घोर
यन्त्रणा देंगे और मार डालेंगे। मेरे नाम के कारण
सब जातियाँ तुम से घृणा करेंगी। 10उन दिनों
बहुत-से विश्वासियों के विश्वास का पतन
होगा! वे एक दूसरे को पकड़वायेंगे और एक
दूसरे से घृणा करेंगे। 11बहुत-से झूठे नबी प्रकट
होंगे और बहुतों को बहकायेंगे। 12अधर्म बढ़ने
से लोगों में प्रेम-भाव घट जायेगा, 13किन्तु जो
अन्त तक स्थिर रहेगा, वही बचाया जाएगा।
14राज्य का यह शुभ समाचार सारे संसार में
सुनाया जायेगा, जिससे सब राष्ट्रों को इसकी

---

23 : 31 प्रे 7 : 52 **23 : 33** मत 3 : 7 **23 : 34** मत 13 : 52; 10 : 23; 1 थिस 2 : 15 **23 : 35** उत 4 : 8; 2 इति 24 : 20-21 **23 : 37** लू 13 : 34-35; प्रे 7 : 59; 1 थिस 2 : 15 **23 : 38** यिर 22 : 5; 12 : 7; 1 रा 9 : 7-8; तोब 14 : 4 **23 : 39** मत 21 : 9; भज 118 : 26 **24 : 1-51** मक 13 : 1-37; लू 21 : 5-36 **24 : 2** लू 19 : 44 **24 : 5** मत 24 : 24 यो 5 : 43; प्रे 5 : 36-37; 1 यो 2 : 18 **24 : 6** दान 2 : 28 **24 : 7** यश 19 : 2; 2 इति 15 : 6 **24 : 9** मत 10 : 17, 22; यो 16 : 2 **24 : 10** दान 11 : 41 **24 : 11** मत 7 : 15; 1 यो 4 : 1 **24 : 12** 2 थिस 2 : 10; 2 तिम 3 : 1-5 **24 : 13** मत 10 : 22; प्रक 13 : 10 **24 : 14** मत 28 : 19; 10 : 18

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
साक्षी मिले; और तब अन्त आ जायेगा।

महासंकट

15"इसलिए जब तुम पवित्र स्थान में
'विनाशकारी घृणित वस्तु' खड़ी हुई देखोगे,
जिसकी चर्चा नबी दानिएल ने की है—पढ़ने
वाला इसे समझ ले—16तो, जो लोग यहूदा
प्रदेश में हों वे पहाड़ों पर भाग जायें; 17जो छत
पर हो, वह अपने घर का सामान लेने नीचे न
उतरे; 18जो खेत में हो, वह अपनी चादर ले
आने के लिए पीछे न लौटे। 19उन स्त्रियों के
लिए शोक, जो उन दिनों गर्भवती या दूध
पिलाती होंगी! 20प्रार्थना करो कि तुम लोगों को
शीतकाल में अथवा विश्राम दिवस को भागना
न पड़े; 21क्योंकि उन दिनों ऐसा घोर संकट
होगा, जैसा सृष्टि के आरम्भ से अब तक न कभी
हुआ है और न कभी होगा। 22यदि वे दिन घटाये
न जाते, तो कोई भी प्राणी नहीं बचता; किन्तु
चुने हुए लोगों के कारण वे दिन घटा दिये
जायेंगे।

23"यदि उस समय कोई तुम से कहे,
'देखो! मसीह यहाँ हैं', अथवा 'वह वहाँ हैं',
तो विश्वास नहीं करना; 24क्योंकि झूठे मसीह
तथा झूठे नबी प्रकट होंगे और ऐसे महान चिह्न
तथा चमत्कार दिखायेंगे कि यदि सम्भव हो, तो
वे चुने हुए लोगों को भी बहका दें। 25देखो, मैंने
तुम्हें पहले ही सचेत कर दिया है।

मानव-पुत्र का पुनरागमन

26"यदि वे तुम से कहें, 'देखो, वह निर्जन
प्रदेश में हैं', तो वहाँ नहीं जाना; अथवा, 'देखो,
वह यहाँ कोठरी में हैं', तो विश्वास नहीं करना;
27क्योंकि जैसे बिजली पूर्व से निकल कर
पश्चिम तक चमकती है, वैसे ही मानव-पुत्र
का आगमन होगा।

28"जहाँ कहीं लाश होगी, वहाँ गिद्ध
इकट्ठे हो जायेंगे।

29"उन दिनों के संकट के तुरन्त बाद सूर्य
अन्धकारमय हो जायेगा, चन्द्रमा प्रकाश नहीं
देगा, तारे आकाश से गिर जायेंगे और आकाश
की शक्तियाँ विचलित हो जायेंगी। 30तब आकाश
में मानव-पुत्र का चिह्न दिखाई देगा। पृथ्वी की
समस्त जातियाँ छाती पीटेंगी और मानव-पुत्र
को सामर्थ्य और अपार महिमा के साथ आकाश
के बादलों पर आते हुए देखेंगी। 31वह तुरही
की तुमुल ध्वनि के साथ अपने दूतों को भेजेगा
और वे चारों दिशाओं से, विश्व के कोने-कोने
से, उसके चुने हुए लोगों को एकत्र करेंगे।

यह कब होगा

32"अंजीर के पेड़ से यह शिक्षा लो : जैसे
ही उसकी टहनियाँ कोमल बन जाती हैं और
उन में अंकुर फूटने लगते हैं, तो तुम जान जाते
हो कि ग्रीष्मकाल निकट है। 33इसी तरह जब
तुम ये सब घटनाएं देखोगे, तब जान लेना कि
वह निकट है, वरन् द्वार पर ही है। 34मैं तुम से
सच कहता हूँ कि इस पीढ़ी का अन्त तब तक
नहीं होगा जब तक ये सब बातें घटित नहीं हो
जायेंगी। 35आकाश और पृथ्वी टल जायें, तो
टल जायें, परन्तु मेरे शब्द कदापि नहीं टल
सकते।

जागते रहो

36"उस दिन और उस घड़ी के विषय में
कोई नहीं जानता—न स्वर्गदूत और न पुत्र। यह
केवल पिता ही जानता है।

37"जैसा नूह के दिनों में हुआ था, वैसा ही
मानव-पुत्र के आगमन के समय होगा।
38जलप्रलय होने के पहले, नूह के जलयान पर
चढ़ने के दिन तक, लोग खाते-पीते और
शादी-ब्याह करते रहे। 39जब तक जलप्रलय
नहीं आया और उसने सब को बहा नहीं दिया,
तब तक किसी को इसका कुछ भी पता नहीं
था। मानव-पुत्र के आगमन के समय वैसा ही

---

24 : 15 दान 9 : 26-27; 12 : 11; 1 मक 1 : 54; 6 : 7 **24 : 17** लू 17 : 31 **24 : 20** प्रे 1 : 12 **24 : 21** दान 12 : 1; योए 2 : 2 **24 : 24** मत 5 : 11; व्य 13 : 1-3; 2 थिस 2 : 8-9 **24 : 27** लू 17 : 23-24 **24 : 28** अय्य 39 : 30; हब 1 : 8; लू 17 : 37 **24 : 29** यश 13 : 10; 34 : 4; 2 पत 3 : 10 **24 : 30** जक 12 : 10; दान 7 : 13-14; मत 26 : 64; प्रक 19 : 11; 1 : 7 **24 : 31** 1 कुर 15 : 52; 1 थिस 4 : 16; प्रक 8 : 1-2; यश 27 : 13; जक 2 : 6 व्य 30 : 4 **24 : 35** मत 5 : 18 **24 : 36** 1 थिस 5 : 1-2 **24 : 37** उत 6 : 11-13; लू 17 : 26-27 **24 : 38** 2 पत 3 : 5-6; उत 7 : 7

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

होगा। 40उस समय दो पुरुष खेत में होंगे—एक
उठा लिया जायेगा और दूसरा छोड़ दिया
जायेगा। 41दो स्त्रियाँ चक्की पीसती होंगी-
एक उठा ली जायेगी और दूसरी छोड़ दी
जायेगी।

42"इसलिए जागते रहो, क्योंकि तुम नहीं
जानते कि तुम्हारे प्रभु किस दिन आयेंगे। 43यह
अच्छी तरह समझ लो : यदि घर के स्वामी को
मालूम होता कि चोर रात के किस पहर आयेगा,
तो वह जागता रहता और अपने घर में सेंध
लगने नहीं देता। 44इसलिए तुम भी तैयार रहो,
क्योंकि जिस घड़ी की तुम कल्पना भी नहीं
करते, उसी घड़ी मानव-पुत्र आ जाएगा।

विश्वास-पात्र सेवक और दुष्ट सेवक का दृष्टान्त

45"वह विश्वास-पात्र और बुद्धिमान सेवक
कौन है, जिसे उसके स्वामी ने अपने घर के
अन्य सेवक-सेविकाओं पर नियुक्त किया है,
ताकि वह निश्चित् समय पर उन्हें भोजन
सामग्री बाँटा करे? 46धन्य है वह सेवक, जिसका
स्वामी लौटने पर उसे ऐसा करता हुआ पाये!
47मैं तुम से सच कहता हूँ : वह उसे अपनी सारी
सम्पत्ति पर अधिकारी नियुक्त करेगा।

48"परन्तु यदि वह दुष्ट सेवक अपने मन में
कहे, 'मेरा स्वामी देर कर रहा है' 49और वह
अपने साथी-सेवकों को पीटने लगे और
शराबियों के साथ खाए-पिये, 50तो उस सेवक
का स्वामी ऐसे दिन आयेगा, जब वह उसकी
प्रतीक्षा नहीं कर रहा होगा और ऐसी घड़ी, जिसे
वह नहीं जानता होगा। 51तब स्वामी उसे कठोर
दंड देगा।* इस प्रकार उसका अन्त वही होगा
जो ढोंगियों का होता है। वहाँ वह रोएगा और
दाँत पीसेगा।

दस कुँआरियों का दृष्टान्त

25 तब स्वर्ग का राज्य उन दस कुँआरियों
के सदृश होगा, जो अपनी-अपनी
मशाल+ ले कर दूल्हे की अगवानी करने
निकलीं। 2उन में से पाँच मूर्ख थीं और पाँच
बुद्धिमती। 3मूर्ख कुँआरियाँ अपनी मशाल के
साथ तेल नहीं लायीं। 4बुद्धिमती कुँआरियाँ
अपनी मशाल के साथ-साथ कुप्पियों में तेल
भी लायीं। 5दूल्हे के आने में देर हो जाने पर सब
ऊँघने लगीं और सो गयीं। 6आधी रात को पुकार
होने लगी, 'देखो, दूल्हा आ रहा है। उसकी
अगवानी करने जाओ।' 7तब सब कुँआरियाँ
उठीं और अपनी-अपनी मशाल सँवारने लगीं।
8मूर्ख कुँआरियों ने बुद्धिमतियों से कहा, 'अपने
तेल में से थोड़ा हमें दे दो, क्योंकि हमारी
मशालें बुझ रही हैं'। 9बुद्धिमतियों ने उत्तर दिया,
'क्या जाने, कहीं हमारे और तुम्हारे लिए तेल
पूरा न हो। अच्छा हो, तुम लोग दुकान जाकर
अपने लिए तेल खरीद लो।' 10वे तेल खरीदने
गयी ही थीं कि दूल्हा आ पहुँचा। जो तैयार थीं,
उन्होंने उसके साथ विवाह-भवन में प्रवेश
किया और द्वार बन्द हो गया। 11बाद में शेष
कुँआरियाँ आयीं और बोलीं, 'प्रभु! प्रभु! हमारे
लिए द्वार खोल दीजिए।' 12इस पर उसने उत्तर
दिया, 'मैं तुम से सच कहता हूँ : मैं तुम्हें नहीं
जानता।'

13"इसलिए जागते रहो, क्योंकि तुम न तो
उस दिन को जानते हो और न उस घड़ी को।

सोने के सिक्कों का दृष्टान्त

14"स्वर्ग का राज्य उस मनुष्य के सदृश है,
जिसने विदेश जाते समय अपने सेवकों को
बुलाया और उन्हें अपनी सम्पत्ति सौंप दी।
15उसने प्रत्येक को उसकी योग्यता के अनुसार
दिया: एक सेवक को सोने के पाँच सिक्के**
दूसरे को सोने के दो सिक्के और तीसरे को सोने
का एक सिक्का दिया। इसके बाद वह विदेश
चला गया। 16जिसे पाँच सिक्के मिले थे, उसने
तुरन्त जा कर उनके साथ लेन-देन किया तथा
और पाँच सिक्के कमा लिये। 17इसी तरह जिसे
दो सिक्के मिले थे, उसने और दो सिक्के कमा

---

* अथवा, 'उसको निकाल देगा' अथवा 'उसके टुकड़े-टुकड़े कर डालेगा' + अथवा, 'दीया' ** मूल में 'तलन्त'

24 : 40 लू 17 : 35-36 **24 : 42** मत 25 : 13 **24 : 43** लू 12 : 39-46 **24 : 44** प्रक 16 : 15 **24 : 47** मत 25 : 21-23 **24 : 48** सभ 8 : 11 **24 : 51** मत 8 : 12 **25 : 1** लू 12 : 35-36; प्रक 19 : 7 **25 : 11** लू 13 : 25, 27 **25 : 12** मत 7 : 23 **25 : 13** मत 24 : 42 **25 : 14-30** लू 19 : 12-27 **25 : 14** मत 21 : 33 **25 : 15** रोम 12 : 6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लिये। 18लेकिन जिसे एक सिक्का मिला था,
वह गया और उसने भूमि खोद कर अपने
स्वामी का धन छिपा दिया।

19"बहुत समय बाद उन सेवकों के स्वामी
ने लौट कर उन से लेखा लिया। 20जिसे पाँच
सिक्के मिले थे, उसने और पाँच सिक्के ला कर
कहा,'स्वामी! आपने मुझे पाँच सिक्के सौंपे
थे। देखिए, मैंने और पाँच सिक्के कमाये।'
21उसके स्वामी ने उससे कहा, 'शाबाश, भले
और ईमानदार सेवक! तुम थोड़े में ईमानदार
रहे, मैं तुम्हें बहुत वस्तुओं पर अधिकार दूँगा।
अपने स्वामी के आनन्द में सहभागी हो।'
22इसके बाद वह आया, जिसे दो सिक्के मिले
थे। उसने कहा, 'स्वामी! आपने मुझे दो सिक्के
सौंपे थे। देखिए, मैंने और दो सिक्के कमाये।'
23उसके स्वामी ने उससे कहा, 'शाबाश, भले
और ईमानदार सेवक! तुम थोड़े में ईमानदार
रहे, मैं तुम्हें बहुत वस्तुओं पर अधिकार दूँगा।
अपने स्वामी के आनन्द में सहभागी हो।'
24अन्त में वह आया, जिसे एक सिक्का मिला
था। उसने कहा, 'स्वामी! मुझे मालूम था कि
आप कठोर व्यक्ति हैं। आपने जहाँ नहीं बोया,
वहाँ काटते हैं और जहाँ नहीं बिखेरा, वहाँ
बटोरते हैं। 25इसलिए मैं डर गया और मैंने जा
कर आपका धन भूमि में छिपा दिया। देखिए,
यह रहा आपका धन!' 26स्वामी ने उसे उत्तर
दिया, 'दुष्ट और आलसी सेवक! तुझे मालूम था
कि मैंने जहाँ नहीं बोया, वहाँ काटता हूँ और
जहाँ नहीं बिखेरा, वहाँ बटोरता हूँ, 27तो तुझे
मेरा धन महाजनों के यहाँ जमा करना चाहिए
था। तब मैं लौटने पर उसे ब्याज सहित ले लेता।
28सेवको! यह सिक्का इस से ले लो और
जिसके पास दस सिक्के हैं, उस को दे दो;
29क्योंकि जिसके पास है, उस को और दिया
जायेगा और उसके पास बहुत हो जायेगा;
लेकिन जिसके पास नहीं है, उससे वह भी ले
लिया जायेगा, जो उसके पास है। 30और इस
निकम्मे सेवक को बाहर, अन्धकार में फेंक
दो। वहाँ यह रोयेगा और दाँत पीसेगा।

अंतिम न्याय का दिन

31"जब मानव-पुत्र अपनी महिमा में आएगा
और सब स्वर्गदूत उस के साथ आयेंगे, तब वह
अपने महिमामय सिंहासन पर विराजमान
होगा। 32और सब जातियाँ उसके सम्मुख
एकत्र की जायेंगी। जिस तरह चरवाहा भेड़ों को
बकरियों से अलग करता है, उसी तरह वह उन
लोगों को एक दूसरे से अलग करेगा। 33वह भेड़ों
को अपनी दाहिनी ओर और बकरियों को
अपनी बायीं ओर खड़ा करेगा।

34"तब राजा अपनी दाहिनी ओर के लोगों
से कहेगा, 'मेरे पिता के कृपापात्रो! आओ और
उस राज्य के अधिकारी बनो, जो सृष्टि के
आरम्भ से तुम्हारे लिए तैयार किया गया है;
35क्योंकि मैं भूखा था और तुमने मुझे भोजन
खिलाया। मैं प्यासा था और तुमने मुझे पानी
पिलाया। मैं परदेशी था और तुमने मुझे अपने
यहाँ ठहराया। 36मैं नंगा था और तुमने मुझे वस्त्र
पहिनाया। मैं बीमार था और तुम ने मेरी
देखभाल की। मैं बन्दी था और तुम मुझ से
मिलने आये।'

37"इस पर धर्मी उस से कहेंगे, 'प्रभु! हमने
कब आप को भूखा देखा और भोजन खिलाया?
कब प्यासा देखा और पानी पिलाया? 38हमने
कब आप को परदेशी देखा और अपने यहाँ
ठहराया? कब नंगा देखा और वस्त्र पहिनाया?
39कब आप को बीमार या बन्दी देखा और आप
से मिलने आये?'

40"राजा उन्हें यह उत्तर देगा, 'मैं तुम से सच
कहता हूँ, जो कुछ तुमने मेरे इन छोटे से छोटे
भाई-बहिनों में से* किसी एक के लिए किया,
वह तुमने मेरे लिए ही किया।'

41"तब राजा अपनी बायीं ओर के लोगों से

---

* अथवा, 'भाइयों में से'।

25 : 21 मत 25 : 23; 24-47; लू 16 : 10 **25 : 23** मत 25 : 21 **25 : 29** मत 13 : 12 **25 : 30** मत 8 : 12 **25 : 31** मत 16 : 27; जक 14 : 5; प्रक 20 : 11-13 **25 : 32** रोम 14 : 10 **25 : 33** यहेज 34 : 17 **25 : 35** यश 58 : 7; प्रव 7 : 32-36 **25 : 37** मत 6 : 3 **25 : 40** नीति 19 : 17; इब्र 2 : 11 **25 : 41** मत 7 : 23; प्रक 20 : 10, 15

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कहेगा, 'शापित लोगो ! मुझ से दूर हो और उस
अनन्त आग में जा पड़ो, जो शैतान और उसके
दूतों के लिए तैयार की गयी है; 42क्योंकि मैं
भूखा था और तुम लोगों ने मुझे भोजन नहीं
खिलाया। मैं प्यासा था और तुमने मुझे पानी
नहीं पिलाया। 43मैं परदेशी था और तुमने मुझे
अपने यहाँ नहीं ठहराया। मैं नंगा था और तुमने
मुझे वस्त्र नहीं पहिनाया। मैं बीमार और बन्दी
था और तुम ने मेरी देखभाल नहीं की।'

44''इस पर वे पूछेंगे, 'प्रभु! हमने कब आप
को भूखा, प्यासा, परदेशी, नंगा, बीमार या बन्दी
देखा और आपकी सेवा नहीं की?''

45''तब राजा उन्हें उत्तर देगा, 'मैं तुम लोगों
से सच कहता हूँ: जो कुछ तुमने मेरे इन छोटे
से छोटे भाई-बहिनों में से किसी एक के
लिए नहीं किया, वह तुमने मेरे लिए भी नहीं
किया।' 46और ये अनन्त दण्ड भोगने जायेंगे,
परन्तु धर्मी जन शाश्वत जीवन में प्रवेश
करेंगे।''

येशु की हत्या का षड्यन्त्र

26 इन सब उपदेशों को समाप्त करने के
पश्चात् येशु ने अपने शिष्यों से कहा,
2''तुम जानते हो कि दो दिन बाद पास्का
(फसह)* का पर्व है। तब मानव-पुत्र क्रूस पर
चढ़ाये जाने के लिए पकड़वाया जायेगा।''

3अब काइफा नामक प्रधान महापुरोहित के
महल में अन्य महापुरोहित और समाज के
धर्मवृद्ध एकत्र हुए। 4उन्होंने आपस में यह
परामर्श किया कि हम किस प्रकार येशु को छल
से गिरफ्तार करें और उन्हें मार डालें। 5परन्तु
वे कहते थे, ''पर्व के दिनों में नहीं। कहीं ऐसा
न हो कि जनता में दंगा हो जाये।''

बेतनियाह में येशु का अभ्यंजन

6जब येशु बेतनियाह गाँव में शिमोन कुष्ठरोगी
के यहाँ थे, 7तब एक महिला संगमरमर के पात्र
में बहुमूल्य इत्र ले कर आयी। येशु भोजन कर
ही रहे थे कि उसने उनके सिर पर इत्र उंडेल
दिया। 8शिष्य यह देख कर झुँझला उठे और
बोले, ''यह अपव्यय क्यों? 9यह इत्र ऊँचे दामों
पर बिक सकता था और इसकी बिक्री से प्राप्त
धनराशि गरीबों में बाँटी जा सकती थी।''

10येशु को इसका पता चला और उन्होंने उन
से कहा, ''तुम इस महिला को क्यों तंग कर रहे
हो? इसने मेरे लिए भला काम किया है।
11गरीब तो सदा तुम लोगों के साथ रहेंगे, किन्तु
मैं सदा तुम्हारे साथ नहीं रहूँगा। 12मेरे शरीर पर
यह इत्र लगाकर इसने मेरे गाड़े जाने की तैयारी
में कार्य किया है। 13मैं तुम से सच कहता हूँ:
सारे संसार में जहाँ कहीं यह शुभ समाचार
सुनाया जायेगा, वहाँ इस स्त्री की स्मृति में इसके
इस कार्य की भी चर्चा की जाएगी।''

यूदस (अथवा यहूदा) का विश्वासघात

14तब बारह प्रेरितों में से एक, जो यूदस**
इस्करियोती कहलाता है, महापुरोहितों के पास
गया 15और उनसे कहा, ''यदि मैं येशु को आप
लोगों के हाथ पकड़वा दूँ, तो आप मुझे क्या
देंगे?'' उन्होंने यूदस को चाँदी के तीस सिक्के
तौल कर दिए। 16उस समय से वह येशु को
पकड़वाने का अनुकूल अवसर ढूँढ़ने लगा।

पास्का (फसह) पर्व के भोज की तैयारी

17बेखमीर रोटी के पर्व के पहले दिन+ शिष्य
येशु के पास आ कर बोले, ''आप क्या चाहते
हैं? हम कहाँ आपके लिए पास्का पर्व के भोज
की तैयारी करें?'' 18येशु ने उत्तर दिया, ''नगर
में अमुक के पास जाओ और उससे कहो,
'गुरुवर कहते हैं—मेरा समय निकट आ गया
है, मैं अपने शिष्यों के साथ तुम्हारे यहाँ
पास्का-पर्व का भोजन करूँगा।' ''

19येशु ने जैसा आदेश दिया, शिष्यों ने वैसा
ही किया और पास्का-पर्व के भोज की तैयारी

---

* पाठक स्थानीय कलीसिया की परम्परा के अनुसार 'फसह' अथवा 'पास्का' शब्द का प्रयोग कर सकता है। ** अथवा 'यहूदा' + पास्का-पर्व के भोज से आरम्भ कर सात दिन तक ''बेखमीर रोटी का पर्व'' मनाया जाता है।

25 : 46 यो 5 : 29; दान 12 : 2 **26 : 1** मत 7 : 28; 11 : 1; 13 : 53; 19 : 1 **26 : 2-5** मक 14 : 1-2; लू 22 : 1-2 **26 : 2** मत 20 : 18 **26 : 6-13** मक 14 : 3-9; लू 7 : 36-50; यो 12 : 1-8 **26 : 10** लू 11 : 7 **26 : 11** व्य 15 : 11 **26 : 14-16** मक 14 : 10-11; लू 22 : 3-6 **26 : 15** यो 11 : 57; जक 11 : 12 **26 : 16** 1 तिम 6 : 9-10 **26 : 17-19** मक 14 : 12-16; लू 22 : 7-13 **26 : 17** नि 12 : 18-20 **26 : 18** मत 21 : 3

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कर ली।

यूदस के विश्वासघात का संकेत

20सन्ध्या हो जाने पर येशु बारहों शिष्यों के
साथ भोजन करने बैठे। 21उनके भोजन करते
समय येशु ने कहा, "मैं तुम लोगों से सच
कहता हूँ: तुम में से एक मुझे पकड़वा देगा।"
22यह सुनकर शिष्य बहुत उदास हो गये और
एक-एक कर उनसे पूछने लगे, "प्रभु! कहीं
वह मैं तो नहीं हूँ?" 23येशु ने उत्तर दिया, "जो
मेरे साथ थाली में हाथ डाल रहा है, वही मुझे
पकड़वायेगा । 24मानव-पुत्र तो जा रहा है,
जैसा कि उसके विषय में धर्मग्रन्थ में लिखा है;
परन्तु धिक्कार है उस मनुष्य को, जो मानव-
पुत्र को पकड़वा रहा है! उस मनुष्य के लिए
अच्छा यही होता कि वह उत्पन्न ही नहीं हुआ
होता।" 25येशु के विश्वासघाती शिष्य यूदस ने
उनसे पूछा, "गुरुवर! कहीं वह मैं तो नहीं
हूँ?" येशु ने उसे उत्तर दिया, "तुमने ही कह
दिया!"

प्रभु-भोज (परमप्रसाद) की स्थापना

26शिष्यों के साथ भोजन करते समय येशु ने
रोटी ली, आशिष मांग कर तोड़ी और शिष्यों
को दी, और कहा, "लो, खाओ। यह मेरी देह
है।" 27तब उन्होंने कटोरा लिया और परमेश्वर
को धन्यवाद दिया और यह कहते हुए उसे
शिष्यों को दिया, "तुम सब इस में से पियो;
28क्योंकि यह विधान** का मेरा रक्त है, जो
बहुतों की पापक्षमा के लिए बहाया जा रहा है।
29मैं तुम से कहता हूँ : मैं दाख का यह रस उस
दिन तक नहीं पिऊंगा, जब तक मैं अपने पिता
के राज्य में तुम्हारे साथ नया रस न पिऊँ।"
30भजन गाने के बाद येशु और उनके शिष्य
जैतून पहाड़ पर चले गए।

शिष्यों के पतन की भविष्यवाणी

31उस समय येशु ने शिष्यों से कहा, "आज
रात को मेरे विषय में तुम सब के विश्वास का
पतन होगा; क्योंकि धर्मग्रन्थ में यह लिखा है:
'मैं चरवाहे को मारूँगा और झुण्ड की भेड़ें तितर-
बितर हो जायेंगी', 32किन्तु अपने पुनरुत्थान के
पश्चात् मैं तुम लोगों से पहले गलील प्रदेश को
जाऊँगा।" 33इस पर पतरस ने येशु से कहा,
"चाहे आपके विषय में सब के विश्वास का
पतन हो जाए; किन्तु मेरे विश्वास का पतन
कभी नहीं होगा।" 34येशु ने उसे उत्तर दिया,
"मैं तुम से सच कहता हूँ : आज रात को, मुर्गे
के बाँग देने से पहले ही, तुम मुझे तीन बार
अस्वीकार करोगे।" 35पतरस ने उन से कहा,
"मुझे आपके साथ चाहे मरना ही क्यों न पड़े,
मैं आप को कभी अस्वीकार नहीं करूँगा।"
इसी प्रकार अन्य सब शिष्यों ने भी कहा।

गतसमनी बाग में येशु की प्राणपीड़ा

36तब येशु अपने शिष्यों के साथ गतसमनी
नामक स्थान पर आए। वह उन से बोले, "तुम
लोग यहाँ बैठो। मैं तब तक वहाँ प्रार्थना करने
जाता हूँ।" 37वह पतरस और जबदी के दोनों
पुत्रों को अपने साथ ले गये।

येशु उदास तथा व्याकुल होने लगे 38और उन
से बोले, "मैं अत्यन्त व्याकुल हूँ मानो मेरे प्राण
निकल रहे हों! तुम यहाँ ठहरो और मेरे साथ
जागते रहो।"

39येशु कुछ आगे बढ़े और उन्होंने भूमि पर
मुँह के बल गिर कर यह प्रार्थना की, "मेरे
पिता! यदि हो सके, तो यह प्याला मुझ से टल
जाये। फिर भी मेरी नहीं, बल्कि तेरी इच्छा पूरी
हो।" 40तब वह अपने शिष्यों के पास गये और
उन्हें सोया हुआ देख कर पतरस से बोले, "क्या
तुम लोग घण्टे भर भी मेरे साथ नहीं जाग सके?
41जागते रहो और प्रार्थना करते रहो, जिससे
तुम परीक्षा में न पड़ो। आत्मा तो तत्पर है, परन्तु
शरीर दुर्बल।"

** अथवा, 'वाचा, व्यवस्थान'

26 : 20-30 मक 14 : 17-26 ; लू 22 : 14-23; यो 13 : 21-26 **26 : 26** मत 14 : 19; 1 कुर 11 : 23-25 **26 : 28** नि 24 : 8; यिर 31 : 31; जक 9 : 11 **26 : 30** भज 113-118; लू 22 : 39; यो 18 : 1 **26 : 31-35** मक 14 : 27-31; लू 22 : 31-34 **26 : 31** जक 13 : 7 यो 16 : 32 **26 : 32** मत 28 : 7 **26 : 34** यो 13 : 28 **26 : 35** मत 26 : 56 **26 : 36-48** मक 14 : 32-42; लू 22 : 40-46 **26 : 37** इब्र 5 : 7 **26 : 38** भज 43 : 5; यो 12 : 27 **26 : 39** यो 18 : 11; इब्र 5 : 8 **26 : 41** इब्र 2 : 14; 4 : 15

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

42वह फिर दूसरी बार गये और उन्होंने यह
प्रार्थना की, "मेरे पिता! यदि यह प्याला मेरे
पिये बिना नहीं टल सकता, तो तेरी ही इच्छा
पूरी हो।"
43लौटने पर उन्होंने अपने शिष्यों को फिर
सोया हुआ पाया, क्योंकि उनकी आँखें नींद से
भारी हो रही थीं। 44येशु उन्हें छोड़ कर फिर
गये और उन्हीं शब्दों को दोहराते हुए उन्होंने
तीसरी बार प्रार्थना की।
45इसके पश्चात् वह अपने शिष्यों के पास
आए और उनसे कहा, "अब तक सो रहे हो?
आराम कर रहे हो?* देखो! वह घड़ी निकट आ
गयी है। मानव-पुत्र पापियों के हाथ पकड़वाया
जा रहा है। 46उठो! हम चलें। देखो, मुझे
पकड़वाने वाला निकट आ गया है।"

येशु की गिरफ्तारी

47येशु यह कह ही रहे थे कि बारहों में से
एक, अर्थात् यूदस आ गया। उसके साथ
तलवारें और लाठियाँ लिये एक बड़ी भीड़ थी,
जिसे महापुरोहितों और समाज के धर्मवृद्धों ने
भेजा था। 48पकड़वाने वाले ने उन्हें यह कहते
हुए संकेत दिया था, "मैं जिसका चुम्बन
करूँगा, वही है। उसे पकड़ लेना।"
49उसने तुरन्त येशु के पास आ कर कहा,
"गुरुवर! प्रणाम!" और उनका चुम्बन किया।
50येशु ने उससे कहा, "मित्र! जो करने आये
हो, उसे कर लो**।" तब लोग आगे बढ़ आये
और उन्होंने येशु पर हाथ डाले और उन्हें
गिरफ्तार कर लिया।
51इस पर येशु के एक साथी ने अपनी
तलवार खींच ली और प्रधान महापुरोहित के
सेवक पर चला कर उसका कान उड़ा दिया।
52येशु ने उससे कहा, "तलवार म्यान में कर
लो, क्योंकि जो तलवार उठाते हैं, वे तलवार
से ही मारे जाते। 53क्या तुम यह समझते हो कि
मैं अपने पिता से सहायता नहीं माँग सकता?
क्या वह इसी क्षण मेरे लिए स्वर्गदूतों की बारह
से भी अधिक सेनाएँ नहीं भेज देगा? 54लेकिन
तब धर्मग्रन्थ का लेख कैसे पूरा होगा, जिसके
अनुसार ऐसा होना अनिवार्य है?"
55उस समय येशु ने भीड़ से कहा, "क्या तुम
लोग मुझे डाकू समझते हो, जो तलवारें और
लाठियाँ ले कर मुझे पकड़ने आये हो? मैं तो
प्रतिदिन मन्दिर में बैठ कर शिक्षा दिया करता
था, फिर भी तुमने मुझे गिरफ्तार नहीं किया।"
56यह सब इसलिए हुआ कि नबियों के ग्रन्थों
में जो लिखा है, वह पूरा हो जाये।" तब सब
शिष्य येशु को छोड़कर भाग गये।

धर्म-महासभा के सामने

57जिन्होंने येशु को गिरफ्तार किया था, वे
उन्हें प्रधान महापुरोहित काइफा के यहाँ ले गये,
जहाँ शास्त्री और धर्मवृद्ध इकट्ठे हो गये थे।
58पतरस कुछ दूरी पर येशु के पीछे-पीछे गया।
वह प्रधान महापुरोहित के भवन के आंगन तक
गया और परिणाम जानने के लिए भीतर जाकर
सेवकों के साथ बैठ गया।
59महापुरोहित और सारी धर्म-महासभा
येशु को मार डालने के उद्देश्य से उनके विरुद्ध
झूठी गवाही खोज रही थी, 60परन्तु वह मिली
नहीं, यद्यपि बहुत-से झूठे गवाह सामने आये।
अन्त में दो गवाह आकर बोले, 61"इस व्यक्ति
ने कहा था, 'मैं परमेश्वर का मन्दिर ढा सकता
हूँ और तीन दिनों में उसे फिर बना सकता
हूँ।'" 62इस पर प्रधान महापुरोहित ने खड़ा
हो कर येशु से कहा, "ये लोग तुम्हारे विरुद्ध
जो गवाही दे रहे हैं, क्या इसका उत्तर तुम्हारे
पास नहीं है?" 63परन्तु येशु चुप रहे।
तब प्रधान महापुरोहित ने येशु से कहा,
"तुम्हें जीवन्त परमेश्वर की शपथ! यदि तुम
मसीह हो, परमेश्वर के पुत्र हो, तो हमें बता
दो।" 64येशु ने उत्तर दिया, "आपने कह दिया।
मैं आप लोगों से यह भी कहता हूँ, अब से आप

---

*अथवा, "अब से सोते रहो और विश्राम करते रहो।" **अथवा, 'तुम क्या करने आए हो?'

26 : 44 2 कुर 12 : 8 **26 : 46** यो 14 : 31 **26 : 47-56** मक 14 : 43-50; लू 22 : 47-53; यो 18 : 3-12 **26 : 52** उत 9 : 6; प्रक 13 : 10 **26 : 53** योए 3 : 11 **26 : 56** मत 26 : 31 **26 : 57-75** मक 14 : 53-72 लू 22 : 54-71; यो 18 : 12-27 **26 : 61** यो 2 :19-21

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मानव-पुत्र को सर्वशक्तिमान परमेश्वर की
दाहिनी ओर विराजमान और आकाश के
बादलों पर आता हुआ देखेंगे।''
65इस पर प्रधान महापुरोहित ने अपने वस्त्र
फाड़े और कहा, ''इसने ईश-निन्दा की है। तो
अब हमें गवाहों की जरूरत ही क्या है ? अभी-
अभी आप लोगों ने ईश-निन्दा सुनी है। 66आप
लोगों का क्या विचार है ?'' उन्होंने उत्तर दिया,
''यह प्राणदण्ड के योग्य है।''
67तब उन्होंने येशु के मुँह पर थूका और उन्हें
घूँसे मारे। कुछ लोगों ने उन्हें थप्पड़ मारते हुए
यह कहा, 68''मसीह! यदि तू नबी है, तो हमें
बता कि तुझे किसने मारा ?''

पतरस का इन्कार

69 पतरस उस समय बाहर आंगन में बैठा
हुआ था। एक सेविका ने पास आ कर उस से
कहा, ''तुम भी गलील-निवासी येशु के साथ
थे।'' 70किन्तु उसने सब के सामने अस्वीकार
करते हुए कहा, ''मैं नहीं जानता कि तुम क्या
कह रही हो।''
71इसके बाद पतरस बाहर प्रवेश-द्वार पर
चला गया। किन्तु एक दूसरी सेविका ने उसे
देख लिया और वहाँ खड़े हुए लोगों से कहा,
''यह व्यक्ति येशु नासरी के साथ था।'' 72पतरस
ने शपथ खा कर फिर अस्वीकार किया और
कहा, ''मैं उस मनुष्य को नहीं जानता।''
73 इसके थोड़ी देर बाद आसपास खड़े लोग
पतरस के पास आये और बोले, ''निश्चय ही
तुम भी उन्हीं लोगों में से एक हो। यह तो
तुम्हारी बोली से ही स्पष्ट है।'' 74तब पतरस
अपने आप को कोसने और शपथ खा कर
कहने लगा, ''मैं उस मनुष्य को जानता तक
नहीं।'' ठीक उसी समय मुर्गे ने बाँग दी।
75अब पतरस को येशु के वे शब्द स्मरण हुए
जो उन्होंने उससे कहे थे: ''मुर्गे के बाँग देने
से पहले ही तुम मुझे तीन बार अस्वीकार
करोगे'', और वह बाहर निकल कर फूट-फूट
कर रोने लगा।

रोमन राज्यपाल पिलातुस के सामने

27 जब प्रात:काल हुआ तब सब
महापुरोहितों और समाज के धर्मवृद्धों
ने परस्पर परामर्श किया कि येशु को मार डाला
जाए। 2उन्होंने येशु को बाँधा और उन्हें ले जा
कर राज्यपाल पिलातुस को सौंप दिया।

यूदस की आत्महत्या

3जब येशु के पकड़वाने वाले यूदस ने देखा
कि उन्हें दण्डाज्ञा मिली है, तब उसे पश्चात्ताप
हुआ और वह महापुरोहितों और धर्मवृद्धों के
पास चाँदी के तीस सिक्के वापस ले आया, और
बोला, 4''मैंने निर्दोष रक्त का सौदा कर पाप
किया है।'' उन्होंने उत्तर दिया, ''हमें इस से
क्या! तुम जानो।'' 5इस पर यूदस ने चाँदी के
सिक्के मन्दिर में फेंक दिये और वहाँ से चला
गया। तब जा कर उसने फाँसी लगा ली।
6महापुरोहितों ने चाँदी के सिक्के उठा कर
कहा, ''इन्हें खजाने में जमा करना उचित नहीं
है, यह तो रक्त की कीमत है।'' 7इसलिए आपस
में परामर्श करने के बाद उन्होंने परदेशियों को
दफनाने के लिए उन सिक्कों से कुम्हार की
जमीन खरीद ली। 8यही कारण है कि वह
जमीन आज तक रक्त की जमीन कहलाती है।
9इस प्रकार नबी यिर्मयाह का यह कथन पूरा हो
गया : ''उन्होंने चाँदी के तीस सिक्के लिये।
वही मूल्य इस्राएल के वंशजों ने उस अमूल्य
व्यक्ति के लिए निर्धारित किया था; 10और उन्होंने
ये सिक्के कुम्हार की जमीन के लिए दे दिये,
जैसा कि प्रभु ने मुझे आदेश दिया था।''

प्राणदण्ड की आज्ञा

11अब येशु राज्यपाल के सामने खड़े थे।
राज्यपाल ने उन से पूछा, ''क्या तुम यहूदियों
के राजा हो ?'' येशु ने उत्तर दिया, ''आप स्वयं
यह कह रहे हैं।'' 12महापुरोहित और धर्मवृद्ध

26 : 63 मत 27 : 12 **26 : 64** भज 110 : 1; मत 16 : 27; 24 : 30; दान 7 : 13 **26 : 65** मत 9 : 3; यो 10 : 33 **26 : 66** यो 19 : 7; लेव 24 : 16 **26 : 67** यश 50 : 6 **26 : 75** मत 26 : 34 **27 : 1–2** मक 15 : 1; लू 22 : 66 यो 18 : 28 **27 : 2** लू 23 : 1; यो 18 : 31–32 **27 : 3** मत 26 : 15 **27 : 5** प्रे 1 : 18; 2 शम 17 : 23 **27 : 6** मक 12 : 41 **27 : 8** प्रे 1 : 19; जक 11 : 12–13; यिर 32 : 6–9 **27 : 11–14** मक 15 : 2–5; लू 23 : 2–3; यो 18 : 29–38 **27 : 12** मत 26 : 63; यश 53 : 7

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उन पर अभियोग लगाते रहे, परन्तु येशु ने कोई
उत्तर नहीं दिया। 13इस पर पिलातुस ने येशु से
कहा, "क्या तुम नहीं सुनते कि ये तुम्हारे विरुद्ध
कितनी गवाहियाँ दे रहे हैं?" 14फिर भी येशु
ने उत्तर में एक शब्द भी नहीं कहा। इस पर
राज्यपाल को बहुत आश्चर्य हुआ।
15पर्व के ऐसे अवसर पर राज्यपाल लोगों
की इच्छानुसार एक बन्दी को रिहा किया करता
था। 16उस समय बरअब्बा* नामक एक कुख्यात
व्यक्ति बन्दीगृह में था। 17पिलातुस ने इकट्ठे
हुए लोगों से कहा, "तुम क्या चाहते हो? मैं
तुम्हारे लिए किसे रिहा करूँ—बरअब्बा को,
अथवा येशु को जो मसीह कहलाता है। + ?"
18वह जानता था कि उन्होंने येशु को ईर्ष्या से
पकड़वाया है।
19इसके अतिरिक्त जब पिलातुस न्यायासन
पर बैठा हुआ था, तब उसकी पत्नी ने यह संदेश
भेजा था, "इस धर्मात्मा के मामले में हाथ नहीं
डालना, क्योंकि इसी के कारण मुझे आज स्वप्न
में बहुत कष्ट हुआ है।"
20इसी बीच महापुरोहितों और धर्मवृद्धों ने
लोगों को बहका दिया कि वे बरअब्बा की
मुक्ति और येशु की मृत्यु की माँग करें।
21राज्यपाल ने लोगों से फिर पूछा, "तुम क्या
चाहते हो? दोनों में किसे तुम्हारे लिए रिहा
करूँ?" उन्होंने उत्तर दिया, "बरअब्बा को।"
22इस पर पिलातुस ने उन से कहा, "तो, मैं येशु
का क्या करूँ, जो मसीह कहलाता है?" सब
ने उत्तर दिया, "इसे क्रूस पर चढ़ाया जाये।"
23पिलातुस ने पूछा, "क्यों? इसने कौन-सा
अपराध किया है?" किन्तु वे और भी जोर से
चिल्ला उठे, "इसे क्रूस पर चढ़ाया जाये!"
24जब पिलातुस ने देखा कि येशु को बचाने
में उसे सफलता नहीं मिल रही है, वरन् उपद्रव
बढ़ता ही जा रहा है, तो उसने पानी मँगा कर
लोगों के सामने हाथ धोये और कहा, "मैं इस
मनुष्य के रक्त का दोषी नहीं हूँ। तुम लोग
जानो।" 25सारी भीड़ ने उत्तर दिया, "इसका
रक्त हम पर और हमारी सन्तान पर हो!"
26तब पिलातुस ने उनके लिए बरअब्बा को
मुक्त कर दिया और येशु को कोड़े लगवा कर
क्रूस पर चढ़ाने के लिए सैनिकों के हवाले कर
दिया।

काँटों का मुकुट

27इसके बाद राज्यपाल के सैनिक येशु को
राजभवन के अन्दर ले गए और उन्होंने येशु के
पास सारा सैन्य-दल एकत्र कर लिया। 28उन्होंने
येशु के कपड़े उतार कर उन्हें लाल चोगा
पहनाया, 29काँटों का मुकुट गूँथ कर उनके सिर
पर रखा और उनके दाहिने हाथ में सरकण्डा
थमा दिया। तब उनके सामने घुटने टेक कर
उन्होंने यह कहते हुए उनका उपहास किया,
"यहूदियों के राजा, प्रणाम!" 30उन्होंने उन
पर थूका और सरकण्डा ले कर उनके सिर पर
मारा। 31इस प्रकार उनका उपहास करने के
बाद, उन्होंने येशु का चोगा उतार लिया और
उन्हें उनके निजी कपड़े पहना दिये। तत्पश्चात्
वे येशु को क्रूस पर चढ़ाने ले चले।

क्रूस पर चढ़ाया जाना

32नगर से निकलते समय सैनिकों को
शिमोन नामक कुरेने देश का एक निवासी
मिला। उन्होंने उसे बेगार में पकड़ा कि वह येशु
का क्रूस उठा कर ले चले।
33वे उस स्थान पहुँचे, जो गुलगुता अर्थात्
'खोपड़ी' का स्थान कहलाता है। 34वहाँ लोगों
ने येशु को पित्त मिला हुआ दाखरस पीने को
दिया। येशु ने उसे चखा, पर उसे पीना न चाहा।
35सैनिकों ने येशु को क्रूस पर चढ़ाया और
चिट्ठी डाल कर उनके वस्त्र आपस में बाँट
लिये। 36इसके बाद वे वहाँ बैठकर उन पर
पहरा देने लगे। 37येशु के सिर के ऊपर उनका
दोषपत्र लटका दिया गया। वह इस प्रकार था:

---

* पाठान्तर, "येशु-बरअब्बा" + पाठांतर, "येशु-बरअब्बा को अथवा मसीह कहलाने वाले येशु को?"

27 : 14 यो 19 : 9 **27 : 15-26** मक 15 : 6-15; लू 23 : 13-25; यो 18 : 39-19 : 1 **27 : 18** यो 11 : 47-48; 12 : 19 **27: 24** व्य 21 : 6 **27 : 25** प्रे 5 : 28 **27 : 27-30** मक 15 : 16-19; यो 19 : 2-3 **27 : 30** यश 50 : 6 **27 : 31-56** मक 15 : 21-41; लू 23 : 26, 33-49; यो 19 : 16-30 **27 : 34** भज 69 : 21 **27 : 35** भज 22 : 18

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

''यह यहूदियों का राजा येशु है।''
38येशु के साथ ही उन्होंने दो डाकुओं को
क्रूस पर चढ़ाया—एक को उनकी दाहिनी ओर
और दूसरे को उनकी बायीं ओर।

अपमान और उपहास

39उधर से आने-जाने वाले लोग येशु की
निन्दा करते और सिर हिलाते हुए 40यह कह
रहे थे, ''हे मन्दिर ढाने वाले और तीन दिनों में
उसे फिर बना देने वाले! यदि तू परमेश्वर का
पुत्र है, तो अपने को बचा और क्रूस से उतर
आ''। 41इसी तरह शास्त्रियों और धर्मवृद्धों के
साथ महापुरोहित भी यह कहते हुए उनका
उपहास कर रहे थे, 42''इसने दूसरों को बचाया,
किन्तु यह अपने को नहीं बचा सकता। यह तो
इस्राएल का राजा है। अब यह क्रूस से उतरे,
तो हम इस में विश्वास करेंगे। 43यह परमेश्वर
पर निर्भर रहा। यदि परमेश्वर इससे प्रसन्न है,
तो अब इसे छुड़ाये; क्योंकि इसने कहा था, 'मैं
परमेश्वर का पुत्र हूँ।' '' 44जो डाकू येशु के
साथ क्रूस पर चढ़ाये गये थे, वे भी इसी तरह
येशु को भला-बुरा कह रहे थे।

येशु की मृत्यु

45दोपहर से लेकर तीन बजे तक समस्त
पृथ्वी पर अँधेरा छाया रहा। 46लगभग तीन बजे
येशु ने ऊँचे स्वर से पुकारा, ''एली! एली! लेमा
सबकतानी?'' अर्थात् ''हे मेरे परमेश्वर! हे मेरे
परमेश्वर! तूने मुझे क्यों त्याग दिया है?'' 47यह
सुन कर पास खड़े लोगों में से कुछ बोले, ''यह
नबी एलियाह को पुकार रहा है।'' 48उन में से
एक तुरन्त दौड़ कर पनसोख्ता* ले आया। उसने
उसे अम्लरस+ में डुबोया और सरकण्डे में लगा
कर येशु को पीने को दिया। 49कुछ लोगों ने
कहा, ''रहने दो! देखें, एलियाह इसे बचाने
आते हैं या नहीं।'' 50तब येशु ने फिर ऊँचे स्वर
से चिल्ला कर अपना प्राण त्याग दिया।
51उसी समय मन्दिर का परदा ऊपर से नीचे
तक फट कर दो टुकड़े हो गया। पृथ्वी काँप
उठी। चट्टानें फट गयीं। 52कबरें खुल गयीं और
बहुत-से मृत सन्तों के शरीर पुनर्जीवित हो
गये। 53वे येशु के पुनरुत्थान के बाद कबरों से
निकले और पवित्र नगर जा कर बहुतों को
दिखाई दिये। 54शतपति और उसके साथ येशु
पर पहरा देने वाले सैनिक भूकम्प और इन सब
घटनाओं को देख कर अत्यन्त भयभीत हो गये
और बोल उठे, ''निश्चय ही, यह परमेश्वर का
पुत्र था।''
55वहाँ बहुत-सी स्त्रियाँ भी दूर से देख
रही थीं। वे येशु की सेवा-परिचर्या करते हुए
गलील प्रदेश से उनके साथ-साथ आयी थीं।
56उनमें मरियम मगदलेनी, याकूब और यूसुफ
की माता मरियम और जबदी के पुत्रों की माता
थीं।

कबर में रखा जाना

57सन्ध्या हो जाने पर अरिमतियाह नगर का
एक धनी सज्जन आया। उसका नाम यूसुफ था।
वह स्वयं येशु का शिष्य बन गया था। 58उसने
पिलातुस के पास जाकर येशु का शव+ माँगा
और पिलातुस ने आदेश दिया कि शव उसे सौंप
दिया जाये। 59यूसुफ ने शव ले जाकर उसे
स्वच्छ मलमल के कफन में लपेटा 60और उस
नई कबर में रख दिया, जिसे उसने अपने लिए
चट्टान में खुदवाया था। वह कबर के द्वार पर
बड़ा पत्थर लुढ़का कर चला गया। 61मरियम
मगदलेनी और दूसरी मरियम वहाँ कबर के
सामने बैठी हुई थीं।

कबर पर पहरा

62दूसरे दिन अर्थात् शुक्रवार* के बाद विश्राम
दिवस पर, महापुरोहित और फरीसी एक साथ
पिलातुस के यहाँ गये 63और बोले, ''श्रीमान!
हमें याद है कि उस धोखेबाज ने अपने

---

*अथवा 'स्पंज' + अथवा 'सिरका' + अथवा 'शरीर' * शब्दश: '' तैयारी के दिन''

27 : 38 यश 53 : 12 **27 : 39** भज 22 : 7; 109 : 25; प्रव 12 : 17-18; 13 : 7 **27 : 40** मत 26 : 61; यो 2 : 19 **27 : 43** भज 22 : 8; प्रज्ञ 2 : 18-20 **27 : 46** भज 22 : 1 **27 : 48** भज 69 : 21 **27 : 51** नि 26 : 31; इब्र 10 : 19-20 **27 : 53** प्रे 26 : 23; दान 12 : 2 **27 : 55** लू 8 : 2-3 **27 : 56** मत 20 : 20 **27 : 57-61** मक 15 : 42-47; लू 23 : 50-55; यो 19 : 38-42 **27 : 57** नि 34 : 25 **27 : 60** यश 53 : 9 **27 : 63** मत 27 : 40; 12 : 40

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जीवनकाल में कहा था कि मैं तीन दिन बाद जी
उठूँगा। 64इसलिए तीसरे दिन तक कबर की
सुरक्षा का आदेश दिया जाये। कहीं ऐसा न हो
कि उसके शिष्य उसे चुरा कर ले जायें और
जनता से कहें कि वह मृतकों में से जी उठा है।
यह पिछला धोखा तो पहले से भी बुरा होगा।
'' 65पिलातुस ने कहा, ''तुम्हारे पास पहरेदार
हैं। जाओ, और जैसा उचित समझो, सुरक्षा का
प्रबन्ध करो।'' 66वे चले गये और उन्होंने कबर
के मुंह पर रखे पत्थर पर मुहर लगायी और
पहरा बैठा कर कबर को सुरक्षित कर दिया।

येशु का मृतकोत्थान

28 विश्राम-दिवस के बाद, सप्ताह के
प्रथम दिन, पौ फटते ही मरियम
मगदलेनी और दूसरी मरियम कबर देखने
आयीं। 2एकाएक भारी भूकम्प हुआ और प्रभु
का एक दूत स्वर्ग से उतरा। वह कबर के पास
आया और पत्थर लुढ़का कर उस पर बैठ गया।
3उसका मुखमण्डल बिजली की तरह चमक
रहा था और उसके वस्त्र हिम के समान उज्ज्वल
थे। 4दूत को देख कर पहरेदार थर-थर काँपने
लगे और मृतक-जैसे हो गये। 5स्वर्गदूत ने स्त्रियों
से कहा, '' डरिए नहीं। मैं जानता हूँ कि आप
लोग येशु को ढूँढ़ रही हैं, जो क्रूस पर चढ़ाये
गये थे। 6वह यहाँ नहीं हैं। वह जी उठे हैं, जैसा
कि उन्होंने कहा था। आइए और वह जगह देख
लीजिए, जहाँ वह रखे गये थे। 7अब आप तुरन्त
उनके शिष्यों के पास जाकर कहिए, 'वह
मृतकों में से जी उठे हैं। वह आप लोगों से पहले
गलील प्रदेश जायेंगे। वहाँ आप लोग उनके
दर्शन करेंगे।' देखिए, मैंने आप लोगों को संदेश
दे दिया है।''

8स्त्रियाँ शीघ्र ही कबर के पास से चली
गयीं और विस्मय तथा बड़े आनन्द के
साथ उनके शिष्यों को यह समाचार सुनाने
दौड़ीं।

स्त्रियों को दर्शन

9येशु एकाएक मार्ग में उन स्त्रियों से मिले
और बोले, ''सुखी रहो!''** वे येशु के समीप
गईं और उनके चरणों को पकड़ कर उनकी
वंदना की।

10येशु ने उनसे कहा, ''डरो नहीं। जाओ
और मेरे भाइयों को यह सन्देश दो कि वे गलील
प्रदेश को जायें। वहाँ वे मेरे दर्शन करेंगे।''

पहरेदारों को रिश्वत

11स्त्रियाँ मार्ग में ही थीं कि कुछ पहरेदार
नगर आये। उन्होंने महापुरोहितों को सब
घटनाएं सुनाईं। 12महापुरोरितों ने धर्मवृद्धों से
मिल कर परामर्श किया और सैनिकों को एक
मोटी रकम देकर कहा, 13''लोगों से कहना कि
रात को जब हम सोये हुए थे, तो येशु के शिष्य
आये और उसे चुरा ले गये। 14यदि यह बात
राज्यपाल के कान में पड़ गयी, तो हम उन्हें
समझा देंगे और तुम्हारे लिए चिन्ता की कोई
बात न होगी।'' 15पहरेदारों ने रुपया ले लिया
और वैसा ही किया, जैसा उन्हें सिखाया गया
था। यही कहानी फैल गयी और अब तक यहूदी
लोगों में प्रचलित है।

शिष्यों का प्रेषण

16तब ग्यारह शिष्य गलील प्रदेश में उस
पहाड़ी पर गये, जहाँ जाने का येशु ने उन्हें
आदेश दिया था। 17उन्होंने येशु को देख कर
उनकी वंदना की; किन्तु किसी-किसी को
सन्देह भी हुआ।

18तब येशु ने उनके पास आकर कहा, ''मुझे
स्वर्ग में और पृथ्वी पर पूरा अधिकार दिया गया
है। 19इसलिए तुम जा कर सब जातियों+ को
शिष्य बनाओ और उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र
आत्मा के नाम पर बपतिस्मा दो। 20मैंने तुम्हें
जो-जो आदेश दिये हैं, उन सबका पालन
करना उन्हें सिखाओ। देखो, मैं संसार के अन्त
तक सदा तुम्हारे साथ हूँ।''

** अथवा ''आनन्दित हो।'' + अथवा, 'राष्ट्रों'

27 : 66 दान 6 : 17 **28 : 1-10** मक 16 : 1-10; लू 24 : 1-10; यो 20 : 1-18 **28 : 3** मत 17 : 2; प्रे 1 : 10 **28 : 6** मत 12 : 40; 16 : 21; 17 : 23; 20 : 19; प्रे० 2 : 36 **28 : 7** मत 26 : 32 **28 : 10** इब्र 2 : 11; उत 45 : 4; 50 : 19 **28 : 13** मत 27 : 64 **28 : 16** मत 28 : 7 **28 : 18** मत 11 : 27; इफ 1 : 20-22; दान 7 : 14 **28 : 19** मक 16 : 15-16 **28 : 20** मत 1 : 23; 18 : 20; यो 14 : 23

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

संत मारकुस [मरकुस] के अनुसार शुभ समाचार

पुस्तक परिचय

सन्त मारकुस के अनुसार शुभ समाचार का आरम्भ इस वाक्य से होता है: ''परमेश्वर के पुत्र येशु मसीह के शुभ संदेश का आरम्भ।'' प्रस्तुत शुभ समाचार में प्रभु येशु को कर्मठ, और अधिकार के साथ प्रवचन देने और सेवा-कार्य करनेवाला व्यक्ति दिखाया गया है। उनकी शिक्षाओं में यह अधिकार अभिव्यक्त हुआ है। वह हर प्रकार की दु:ख-पीड़ा दूर करने का अधिकार रखते हैं और तुरन्त उनका उपचार करते हैं। परमेश्वर ने उन्हें लोगों के पाप क्षमा करने का अधिकार दिया है। अत: वह अधिकार के साथ शैतानी प्रवृत्तियों का सामना कर लोगों के पाप क्षमा करते हैं। येशु स्वयं को विनम्रतापूर्वक मानव-पुत्र के रूप में प्रस्तुत करते हैं, और घोषित करते हैं कि वह लोगों को उनके पापों से मुक्त करने के लिए अपने प्राण अर्पित करेंगे। वह राजनीतिक अर्थ में ''मसीह'' बनने से इन्कार करते हैं।

लेखक संत मारकुस [मरकुस] प्रभावपूर्ण ढंग से किन्तु स्पष्ट एवं सीधे -सादे शब्दों में प्रभु येशु का जीवन संदेश प्रस्तुत करते हैं। उन्होंने प्रभु येशु के कार्यों पर बल दिया है, और उन के उपदेशों और शिक्षाओं पर अपेक्षाकृत कम प्रकाश डाला है। योहन बपतिस्मादाता द्वारा येशु के बपतिस्मा और परीक्षाओं का संक्षिप्त वर्णन कर संत मारकुस तुरन्त प्रभु येशु के द्वारा की गई सेवा तथा शिक्षा का विस्तार से वर्णन करते हैं। जैसे-जैसे समय बीतता जाता है, प्रभु येशु के अनुयायी उन्हें धीरे-धीरे समझने लगते हैं, किन्तु उन के विरोधी उनका और अधिक विरोध करने लगते हैं। प्रस्तुत शुभ समाचार के अंतिम अध्यायों में प्रभु येशु के जीवन के अंतिम सप्ताह में घटी घटनाओं, विशेष कर क्रूस पर चढ़ाये जाने तथा उनके पुनरुत्थान का वर्णन हुआ है।

प्रस्तुत शुभ समाचार के अन्त में दो उपसंहार दिये गये हैं। ये पाठान्तर हैं। विद्वानों के मतानुसार संत मारकुस ने नहीं, किन्तु किसी अन्य लेखक ने इन्हें लिखा है। चारों शुभ समाचारों में मारकुस रचित शुभ समाचार सब से पुराना लिखित शुभसमाचार माना जाता है, जो यरूशलेम के विनाश के कुछ पहले, अर्थात् सन् ईस्वी 70 के पूर्व लिखा गया। यह अनुमान लगाया जाता है कि मत्ती और लूकस ने अपने-अपने शुभसमाचार की रचना में **मारकुस के अनुसार शुभ समाचार** को आधार-रूप में प्रयुक्त किया है।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

योहन बपतिस्मादाता से येशु के शुभ संदेश का आरम्भ	**1 : 1 - 13**
गलील प्रदेश में येशु की धर्म-सेवा	**1 : 14 -9 : 50**
गलील प्रदेश से यरूशलेम की ओर प्रस्थान	**10 : 1 - 52**
यरूशलेम नगर में तथा आसपास के गाँवों में जीवन का अंतिम सप्ताह	**11 : 1-15 : 47**
येशु का पुनरुत्थान	**16 : 1 - 8**
[उपसंहार : मृत्युंजय प्रभु के दर्शन तथा उनका स्वर्गारोहण	**16 : 9 - 20]**
[एक अन्य उपसंहार:	**16 : 9 -10]**

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

योहन बपतिस्मादाता का उपदेश

1 परमेश्वर के पुत्र येशु मसीह के शुभ
समाचार का आरम्भ। 2नबी यशायाह के
ग्रन्थ में लिखा है, "परमेश्वर कहता है:
देखो, मैं अपने दूत को तुम्हारे आगे भेज रहा
हूँ।
वह तुम्हारा मार्ग तैयार करेगा।
3निर्जन प्रदेश में पुकारने वाले की आवाज:
'प्रभु का मार्ग तैयार करो;
उसके पथ सीधे कर दो।' "
4इसी के अनुसार योहन बपतिस्मादाता
निर्जन प्रदेश में प्रकट हुए। वह पापक्षमा के
लिए पश्चात्ताप के बपतिस्मा का उपदेश देते
थे। 5समस्त यहूदा प्रदेश और सब यरूशलेम-
निवासी योहन के पास आते और अपने पाप
स्वीकार करते हुए यर्दन नदी में उन से
बपतिस्मा ग्रहण करते थे।
6 योहन ऊँट के रोओं का वस्त्र पहने और
कमर में चमड़े का पट्टा बाँधे रहते थे। उनका
आहार टिड्डियां और वन का मधु था। 7वह अपने
उपदेश में कहते थे, "मुझसे अधिक शक्तिशाली
व्यक्ति मेरे बाद आने वाले हैं। मैं तो झुक कर
उनके जूते का फीता खोलने योग्य भी नहीं हूँ।
8मैंने तुम लोगों को जल से बपतिस्मा दिया है,
परन्तु वह तुम्हें पवित्र आत्मा से बपतिस्मा
देंगे।"

प्रभु येशु का बपतिस्मा

9उन दिनों येशु गलील प्रदेश के नासरत नगर
से आये। उन्होंने यर्दन नदी में योहन से
बपतिस्मा ग्रहण किया। 10वह पानी से निकल
ही रहे थे कि उन्होंने स्वर्ग को खुलते* और
आत्मा को अपने ऊपर कपोत के सदृश उतरते
देखा 11और स्वर्ग से यह वाणी सुनाई दी, "तू
मेरा प्रिय पुत्र है। मैं तुझ पर अत्यन्त प्रसन्न
हूँ+।"

प्रभु येशु की परीक्षा

12तुरन्त आत्मा ने येशु को निर्जन प्रदेश जाने
को बाध्य किया। 13वह चालीस दिन निर्जन
प्रदेश में रहे और शैतान ने उनकी परीक्षा ली।
वह वन-पशुओं के साथ रहते थे और स्वर्गदूत
उनकी सेवा-परिचर्या करते थे।

उपदेशों का आरम्भ

14योहन के गिरफ्तार हो जाने के बाद येशु
गलील प्रदेश में आए और यह कहते हुए
परमेश्वर के शुभ-समाचार का प्रचार करने
लगे, 15"समय पूरा हो चुका है। परमेश्वर का
राज्य निकट आ गया है। पश्चात्ताप करो और
शुभ समाचार पर विश्वास करो।"

प्रथम शिष्यों का बुलाया जाना

16गलील की झील के तट पर जाते हुए येशु
ने सिमोन और उसके भाई अन्द्रेयास को देखा।
वे झील में जाल डाल रहे थे, क्योंकि वे मछुए
थे। 17येशु ने उन से कहा, "मेरे पीछे आओ।
मैं तुम्हें मनुष्यों के मछुए बनाऊँगा।" 18और वे
तुरन्त अपने जाल छोड़ कर उनके पीछे हो
लिये।
19कुछ आगे बढ़ने पर येशु ने जबदी के पुत्र
याकूब और उसके भाई योहन को देखा। वे नाव
में अपने जालों की मरम्मत कर रहे थे। 20येशु
ने उन्हें उसी समय बुलाया। वे अपने पिता
जबदी को मजदूरों के साथ नाव में छोड़ कर
उनके पीछे हो लिये।

कफरनहूम का अशुद्धात्मा-ग्रस्त मनुष्य

21येशु और उनके शिष्य कफरनहूम नगर में
आये। विश्राम दिवस पर येशु तुरन्त सभागृह
गये और वहाँ शिक्षा देने लगे। 22लोग उनकी
शिक्षा सुन कर आश्चर्यचकित हो गये; क्योंकि
वह शास्त्रियों की तरह नहीं, बल्कि अधिकार
के साथ उन्हें शिक्षा देते थे।
23उस समय उनके सभागृह में एक मनुष्य

---

* शब्दश: 'आकाश को फटते' + 'अथवा, 'मैंने तुझे पसन्द किया है।'

1 : 2-8 मत 3 : 1-12; लू 3 : 1-18; यो 1: 19-30 **1 : 2** मला 3 : 1; मत 11: 10; यो 3 : 28 **1 : 3** यश 40:3 (यू. पाठ) **1 : 6** 2 रा 1 : 8; जक 13 : 4 **1 : 7** प्रे13 : 25 **1 : 9-11** मत 3 : 13-17; लू 3 : 21-22 यो 1 : 31-34 **1 : 9** लू 2 : 51 **1 : 11** मक 9 : 7; भज 2 : 7; यश 42 : 1 **1 :12-13** मत 4 : 1-11; लू 4 : 1-13 **1 : 13** भज 91 : 13; यो 1 : 51 **1 : 14-15** मत 4 : 12-17; लू 4 : 14-15 **1 : 15** गल 4 : 4 **1 : 16-20** मत 4 : 18-22; लू 5 : 1-11 **1 : 17** मत 13 : 47 **1 : 21-28** लू 4 : 31-37 **1 : 21** मत 4 : 13 **1 : 22** मत 7 : 28-29

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

था जो अशुद्ध आत्मा के वश में था। वह
चिल्लाया, 24 “नासरत-निवासी येशु! हमें आपसे
क्या काम? क्या आप हमें नष्ट करने आये हैं?
मैं जानता हूँ कि आप कौन हैं: परमेश्वर के भेजे
हुए पवित्र जन!” 25 येशु ने यह कहते हुए उसे
डाँटा, “चुप रह! इस मनुष्य से बाहर निकल
जा।” 26 अशुद्ध आत्मा उस मनुष्य को झकझोर
कर ऊँचे स्वर से चिल्लाती हुई उसमें से निकल
गयी। 27 सब चकित रह गये और एक दूसरे से
पूछने लगे, “यह क्या है? यह तो नये प्रकार की
शिक्षा है। वह अधिकार के साथ बोलते हैं। वह
अशुद्ध आत्माओं को भी आदेश देते हैं और वे
उनकी आज्ञा मानती हैं।”

28 येशु की चर्चा शीघ्र ही गलील प्रदेश के
कोने-कोने में फैल गयी।

सिमोन पतरस की सास

29 वे सभागृह से निकले और येशु याकूब
और योहन के साथ सीधे सिमोन और अन्द्रेयास
के घर गये। 30 सिमोन की सास बुखार में पड़ी
हुई थी। लोगों ने तुरन्त उसके विषय में उन्हें
बताया। 31 येशु उसके पास आये और उन्होंने
हाथ पकड़ कर उसे उठाया। उसका बुखार
उतर गया और वह उन लोगों के सेवा-सत्कार
में लग गयी।

बहुतों को स्वास्थ्यलाभ

32 सन्ध्या समय, सूरज डूबने के बाद लोग
सब रोगियों और भूतग्रस्तों को येशु के पास ले
आये। 33 सारा नगर द्वार पर एकत्र हो गया।
34 येशु ने नाना प्रकार की बीमारियों से पीड़ित
बहुत-से रोगियों को स्वस्थ किया और लोगों
में से बहुत-से भूतों को निकाला। येशु भूतों को
बोलने से रोकते थे, क्योंकि भूत जानते थे कि
वह कौन हैं।

गलील प्रदेश का दौरा

35 प्रात:काल, जब अंधेरा ही था, येशु उठे
और घर से बाहर निकले। वह किसी एकान्त
स्थान जा कर प्रार्थना करने लगे। 36 सिमोन और
उसके साथी उनकी खोज में निकले, 37 और उन्हें
पाते ही यह बोले, “सब लोग आप को ढूँढ़ रहे
हैं।” 38 येशु ने उन्हें उत्तर दिया, “आओ, हम
आसपास के अन्य कस्बों में चलें। मुझे वहाँ भी
संदेश सुनाना है, क्योंकि इसीलिए तो मैं आया
हूँ।” 39 और वह उनके सभागृहों में उपदेश देते
और भूतों को निकालते हुए समस्त गलील
प्रदेश में घूमने लगे।

कुष्ठरोगी को स्वास्थ्यलाभ

40 एक कुष्ठरोगी येशु के पास आया और
घुटने टेक कर उन से अनुनय-विनय करते हुए
बोला, “आप चाहें, तो मुझे शुद्ध कर सकते
हैं।” 41 येशु को उस पर दया* आयी। उन्होंने
हाथ बढ़ाकर यह कहते हुए उसका स्पर्श किया,
“मैं यही चाहता हूँ—तुम शुद्ध हो जाओ।”
42 उसी क्षण उसका कुष्ठरोग दूर हुआ और वह
शुद्ध हो गया। 43 येशु ने उसे यह कड़ी चेतावनी
देते हुए तुरन्त विदा किया, 44 “सावधान! किसी
से कुछ भी न कहना, किन्तु जाओ और अपने
आप को पुरोहित को दिखाओ और अपने
शुद्धीकरण के लिए मूसा द्वारा निर्धारित भेंट
चढ़ाओ, जिससे सब लोगों को मालूम हो जाए
कि तुम स्वस्थ हो गए हो।”

45 परन्तु वह बाहर जा कर खुल कर इसकी
चर्चा करने लगा और चारों ओर इस समाचार
को फैलाने लगा। परिणाम यह हुआ कि येशु
प्रकट रूप से नगरों में प्रवेश नहीं कर सके, वरन्
वह निर्जन स्थानों में रहे। फिर भी लोग चारों
ओर से उनके पास आते रहे।

लकुवे के रोगी को स्वस्थ करना

2 जब कुछ दिनों बाद येशु कफरनहूम नगर
लौटे, तो यह खबर फैल गयी कि वह घर
पर हैं। 2 और इतने लोग इकट्ठे हो गये कि द्वार
के सामने भी जगह नहीं रही। येशु उन्हें शुभ
संदेश सुना ही रहे थे कि 3 कुछ लोग एक लकुवे

---

* पाठांतर ‘येशु क्रुद्ध हुए’

1 : 24 मक 5 : 7; भज 16 : 10 **1 : 26** मक 9 : 26 **1 : 29-34** मत 8 : 14-16; लू 4 : 38-41 **1 : 34** लू 4 : 41; प्रे 16 : 17-18 **1 : 35-39** लू 4 : 42-44 **1 : 40-45** मत 8 : 2-4; लू 5 : 12-16 **1 : 43** मक 3 : 12; 7 : 36 **1 : 44** लेव 13 : 49; 14 : 2-32 **2 : 1-12** मत 9 : 1-8, लू 5 : 17-26

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

के रोगी को चार आदमियों से उठवा कर उनके
पास लाये। 4भीड़ के कारण वे उसे येशु के
सामने नहीं ला सके; इसलिए जहाँ येशु थे,
उसके ऊपर की छत उन्होंने खोल दी और छेद
से लकुवे के रोगी की चारपाई नीचे उतार दी।
5येशु ने उन लोगों का विश्वास देख कर लकुवे
के रोगी से कहा, "पुत्र! तुम्हारे पाप क्षमा हो
गये।"
6वहाँ कुछ शास्त्री बैठे हुए थे। वे मन में
तर्क-वितर्क करने लगे, "यह मनुष्य ऐसे क्यों
बोलता है? 7यह ईश-निन्दा करता है। परमेश्वर
के अतिरिक्त कौन पाप क्षमा कर सकता है?"
8येशु ने तुरन्त अपनी आत्मा में जाना कि वे
मन-ही-मन क्या सोच रहे हैं। उन्होंने शास्त्रियों
से कहा, "तुम अपने मन में तर्क-वितर्क क्यों
कर रहे हो? 9अधिक सहज क्या है—लकुवे के
रोगी से यह कहना, 'तुम्हारे पाप क्षमा हो गये',
अथवा यह कहना, 'उठो, अपनी चारपाई उठा
कर चलो-फिरो?' 10परन्तु इसलिए कि तुम
लोग यह जान लो कि मानव पुत्र को पृथ्वी पर
पाप क्षमा करने का अधिकार है"—येशु लकुवे
के रोगी से बोले—11"मैं तुम से कहता हूँ, उठो
और अपनी चारपाई उठा कर घर जाओ।"
12वह उठ खड़ा हुआ और तुरन्त चारपाई उठा
कर सब लोगों के देखते-देखते बाहर चला
गया। सब-के-सब बड़े अचम्भे में पड़ गये
और उन्होंने यह कहते हुए परमेश्वर की स्तुति
की, "हमने ऐसा कभी नहीं देखा।"

लेवी का बुलाया जाना

13येशु फिर बाहर निकल कर झील के तट
पर गये। सब लोग उनके पास आ गये और येशु
ने उन्हें शिक्षा दी।
14मार्ग में येशु ने हलफई के पुत्र लेवी को
चुंगीघर में बैठा हुआ देखा और उससे कहा,
"मेरे पीछे आओ", और वह उठ कर उनके
पीछे हो लिया।
15एक दिन येशु लेवी के घर भोजन करने
बैठे। अनेक चुंगी-अधिकारी और पापी येशु
और उनके शिष्यों के साथ भोज में सम्मिलित
हुए—क्योंकि वे बड़ी संख्या में येशु के
अनुयायी बन गये थे। 16जब फरीसी दल के
शास्त्रियों ने देखा कि येशु पापियों और चुंगी-
अधिकारियों के साथ भोजन कर रहे हैं, तब
उन्होंने उनके शिष्यों से कहा, "वह चुंगी-
अधिकारियों और पापियों के साथ क्यों भोजन
करते हैं?" 17येशु ने यह सुनकर उन से कहा,
"नीरोगों को नहीं, बल्कि रोगियों को वैद्य की
आवश्यकता होती है। मैं धार्मिकों को नहीं,
पापियों को बुलाने आया हूँ।"

उपवास का प्रश्न

18योहन के शिष्य और फरीसी किसी दिन
उपवास कर रहे थे। कुछ लोग आ कर येशु से
बोले, "योहन के शिष्य और फरीसी उपवास
कर रहे हैं। आपके शिष्य उपवास क्यों नहीं
करते?" 19येशु ने उत्तर दिया, "जब तक दूल्हा
साथ है, क्या बाराती उपवास कर सकते हैं?
जब तक दूल्हा उनके साथ है, वे उपवास नहीं
कर सकते हैं। 20किन्तु वे दिन आयेंगे, जब
दूल्हा उनसे ले लिया जायेगा और उस दिन वे
उपवास करेंगे।
21"कोई व्यक्ति पुराने कपड़े पर कोरे कपड़े
का पैबन्द नहीं सिलता। नहीं तो नया पैबन्द
सिकुड़ कर पुराना कपड़ा फाड़ देता है और चीर
बढ़ जाती है। 22इसी प्रकार कोई व्यक्ति पुरानी
मशकों में नया दाखरस नहीं भरता। नहीं तो
दाखरस मशकों को फाड़ देता है और दाखरस
तथा मशकें, दोनों बरबाद हो जाते हैं। नये
दाखरस को नयी मशकों में ही रखते हैं।"

विश्राम दिवस का प्रश्न

23येशु किसी विश्राम के दिन गेहूँ के खेतों
से हो कर जा रहे थे। उनके शिष्य राह चलते
बालें तोड़ने लगे। 24फरीसियों ने येशु से कहा,
"देखिए, जो काम विश्राम के दिन मना है, ये
क्यों वही कर रहे हैं?" 25येशु ने उन्हें उत्तर
दिया, "क्या तुम लोगों ने कभी यह नहीं पढ़ा
कि जब दाऊद और उनके साथी भूखे थे और

2 : 7 यश 43 : 25 **2 : 13-17** मत 9 : 9-13; लू 5 : 27-32 **2 : 14** यो 1 : 43 **2 : 18-22** मत 9 : 14-17; लू 5 : 33-38 **2 : 23-28** मत 12 : 1-8; लू 6 : 1-5

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

खाने को उनके पास कुछ नहीं था, तो दाऊद
ने क्या किया था ? 26उसने महापुरोहित एबयातर
के समय परमेश्वर के भवन में प्रवेश कर भेंट
की रोटियाँ खायीं और अपने साथियों को भी
खिलायीं। पुरोहितों को छोड़ किसी और को
उन्हें खाने की आज्ञा तो नहीं थी।''
27येशु ने उन से यह भी कहा, ''विश्राम-
दिवस मनुष्य के लिए बना है, न कि मनुष्य
विश्राम-दिवस के लिए। 28इसलिए मानव-पुत्र
विश्राम-दिवस का भी स्वामी है।''

सूखे हाथ वाले मनुष्य को स्वस्थ करना

3 येशु फिर सभागृह में गये। वहाँ एक मनुष्य
था, जिसका हाथ सूख गया था। 2कुछ लोग
इस बात की ताक में थे कि येशु विश्राम के दिन
उसे स्वस्थ करें, और वे उन पर दोष लगायें।
3येशु ने सूखे हाथ वाले मनुष्य से कहा, ''बीच
में खड़े हो जाओ।'' 4तब येशु ने लोगों से पूछा,
''विश्राम-दिवस पर भलाई करना उचित है या
बुराई, प्राण बचाना या हत्या करना ?'' वे मौन
रहे। 5उनके हृदय की कठोरता देख कर येशु को
दुःख हुआ और वह उन पर क्रोध भरी दृष्टि
दौड़ा कर उस मनुष्य से बोले, ''अपना हाथ
बढ़ाओ।'' उसने अपना हाथ बढ़ाया और
उसका हाथ अच्छा हो गया। 6इस पर फरीसी
बाहर निकल कर तुरन्त हरोदेस-दल के साथ
येशु के विरुद्ध परामर्श करने लगे कि हम किस
तरह उनका विनाश करें।

झील के किनारे विशाल जनसमूह

7येशु अपने शिष्यों के साथ झील की ओर
चले गये। एक विशाल जनसमूह उनके पीछे-
पीछे हो लिया। ये लोग गलील प्रदेश, यहूदा
प्रदेश, 8यरूशलेम नगर, इदूमिया देश और
यर्दन नदी के उस पार तथा सोर और सीदोन के
आसपास के प्रदेश से उनके पास आए थे;
क्योंकि उन्होंने उनके कार्यों की चर्चा सुनी थी।
9भीड़ के दबाव से बचने के लिए येशु ने अपने
शिष्यों से कहा कि वे उनके लिए एक नाव
तैयार रखें; 10क्योंकि उन्होंने बहुत-से लोगों
को स्वस्थ किया था और रोगी उनका स्पर्श
करने के लिए उन पर गिरे पड़ रहे थे। 11अशुद्ध
आत्माएं भी येशु को देखते ही उनके सम्मुख
गिर पड़तीं और चिल्लाकर कहती थीं, ''आप
परमेश्वर के पुत्र हैं।'' 12किन्तु वह उन्हें यह
कड़ी चेतावनी देते थे, ''तुम मुझे प्रकट मत
करो।''

बारह प्रेरितों का चुनाव

13येशु पहाड़ी पर चढ़े और जिन को चाहा,
उन को अपने पास बुला लिया। वे उनके पास
आये। 14-15येशु ने उन में से बारह को नियुक्त
किया, और उन्हें प्रेरित* नाम दिया, जिससे वे
लोग उनके साथ रहें और वह उन्हें भूतों को
निकालने का अधिकार देकर शुभ-समाचार
का प्रचार करने के लिए भेजें।
16येशु ने इन बारहों को नियुक्त किया:
सिमोन को, जिसका नाम उन्होंने 'पतरस'**
रखा; 17जबदी के पुत्र याकूब और उसके भाई
योहन को, जिनका नाम उन्होंने बुअनेरगिस,
अर्थात् गर्जन के पुत्र रखा; 18अन्द्रेयास, फिलिप,
बरतोलोमी, मत्ती, थोमस, हलफई के पुत्र
याकूब, तदै और शिमोन 'कनानी'+ को 19और
यूदस+++ इस्करियोती को, जिसने येशु को
पकड़वाया।

येशु के सम्बन्धी

20येशु घर आए और फिर इतनी भीड़ एकत्र
हो गयी कि उन लोगों को भोजन करने की भी
फुरसत नहीं रही। 21जब येशु के सम्बन्धियों ने
यह सुना, तो वे उन को बलपूर्वक ले जाने के
लिए निकले; क्योंकि वे कहते थे++ कि उन्हें
अपनी सुध-बुध नहीं रह गयी है।

पवित्र आत्मा अथवा शैतान की आत्मा?

22यरूशलेम से आये हुए शास्त्रियों ने भी
यह कहा, ''उसे बअलजबूल सिद्ध है'' और

---

* अर्थात् 'भेजा हुआ' 'प्रेषित' ** अर्थात् 'चट्टान' + अर्थात् 'धर्मोत्साही' ++ अथवा, 'कहा जाता था' +++ अथवा 'यहूदा'

2 : 26 1 शम 21 : 1-6; लेव 24 : 9 **2 : 27** व्य 5 : 14 **3 : 1-6** मत 12 : 9-14; लू 6 : 6-11 **3 : 5** यो 11 : 33 **3 : 6** मत 22 : 16 **3 : 7-12** मत 12 : 15-16; लू 6 : 17-19 **3 : 8** मत 4 : 25 **3 : 11** लू 4 : 41 **3 : 12** मक 1 : 34 **3 : 13-19** मत 10 : 1-4; लू 6 : 12-16 **3 : 16** यो 1 : 42 **3 : 17** लू 9 : 54 **3 : 21** यो 7 : 20; 8 : 48, 52; 10 : 20

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

"वह भूतों के नायक की सहायता से भूतों को
निकालता है।" 23येशु ने उन्हें अपने पास बुला
कर दृष्टान्तों में उनसे कहा, "शैतान, शैतान को
कैसे निकाल सकता है ? 24यदि किसी राज्य में
फूट पड़ जाए तो वह राज्य टिक नहीं सकता।
25यदि किसी घर में फूट पड़ जाए तो वह घर
टिक नहीं सकता। 26यदि शैतान अपने ही
विरुद्ध विद्रोह करे तो उसके यहाँ फूट पड़ गयी
और वह टिक नहीं सकता, बल्कि उसका अंत
हो जाता है।
27"कोई किसी बलवान् के घर में घुस कर
उसकी सम्पत्ति तब तक नहीं लूट सकता, जब
तक कि वह उस बलवान् को न बाँध ले। इसके
बाद ही वह उसका घर लूट सकता है।

पवित्र आत्मा के विरुद्ध पाप

28"मैं तुम से सच कहता हूँ, मनुष्य चाहे जो
भी पाप या ईश-निन्दा करें, उन्हें सब की क्षमा
मिल जायेगी; 29परन्तु पवित्र आत्मा की निन्दा
करने वाले को कभी भी क्षमा नहीं मिलेगी। वह
अनन्त पाप का अपराधी है।"
30येशु ने यह इसीलिए कहा कि शास्त्रियों
ने उनके बारे में यह कहा था, "उसमें अशुद्ध
आत्मा है।"

सच्चा नाता

31उस समय येशु की माता और भाई-बहिन*
आये। उन्होंने घर के बाहर से उन्हें बुला भेजा।
32लोग येशु के चारों ओर बैठे हुए थे। उन्होंने
येशु से कहा, "देखिए, आपकी माता, आपके
भाई और आपकी बहिनें बाहर हैं। वे आप को
पूछ रहे हैं।" 33येशु ने उत्तर दिया, "कौन है
मेरी माता, कौन हैं मेरे भाई-बहिन ?" 34फिर
उन्होंने अपने चारों ओर बैठे हुए लोगों पर दृष्टि
दौड़ायी और कहा, "ये हैं मेरी माता और मेरे
भाई-बहिन। 35जो व्यक्ति परमेश्वर की इच्छा
पूरी करता है, वही है मेरा भाई, मेरी बहिन और
मेरी माता।"

बीज बोने वाले किसान का दृष्टान्त

4 येशु फिर झील के किनारे शिक्षा देने लगे
और उनके पास इतनी भीड़ इकट्ठी हो
गयी कि उन्हें झील में एक नाव में चढ़कर
बैठना पड़ा और सारी भीड़ झील की ओर मुख
किए भूमि पर रही।
2उन्होंने दृष्टान्तों में उन्हें बहुत-सी बातों की
शिक्षा दी। शिक्षा देते हुए उन्होंने कहा—
3"सुनो ! कोई किसान बीज बोने निकला।
4बोते-बोते कुछ बीज मार्ग के किनारे गिरे और
पक्षियों ने आ कर उन्हें चुग लिया। 5कुछ बीज
पथरीली भूमि पर गिरे, जहाँ उन्हें अधिक
मिट्टी नहीं मिली। वे जल्दी ही उग गये,
क्योंकि उनकी मिट्टी गहरी नहीं थी। 6जब सूरज
चढ़ने लगा, तो वे झुलस गये और जड़ न
पकड़ने के कारण सूख गये। 7कुछ बीज काँटों
में गिरे और काँटों ने बढ़ कर उन्हें दबा दिया,
इसलिए वे फल नहीं लाये। 8कुछ बीज अच्छी
भूमि पर गिरे। वे उग कर फले-फूले और तीस
गुना या साठ गुना या सौ गुना फल लाये।"
9अन्त में उन्होंने कहा, "जिसके सुनने के
कान हों, वह सुन ले!"

दृष्टान्तों का उद्देश्य

10जब येशु एकांत में थे तब उनके अनुयायियों
और बारह प्रेरितों ने उन से दृष्टान्तों का अर्थ
पूछा। 11येशु ने उत्तर दिया, "परमेश्वर के राज्य
का भेद तुम्हें दिया गया है; पर उन के लिए जो
बाहर हैं प्रत्येक बात पहेली** है, 12जिससे 'वे
देखते हुए भी नहीं देखें और सुनते हुए भी नहीं
समझें। कहीं ऐसा न हो कि वे प्रभु की ओर
लौट आयें और क्षमा प्राप्त करें।' "

दृष्टान्त की व्याख्या

13येशु ने उन से कहा, "क्या तुम यह दृष्टान्त
नहीं समझते? तो अन्य दृष्टान्तों को कैसे
समझोगे ? 14बोने वाला परमेश्वर का वचन
बोता है। 15जो मार्ग के किनारे हैं, जहाँ वचन

---

* अथवा, 'भाई'। ** मूल भाषा में यहाँ द्विअर्थक शब्द का प्रयोग हुआ है, जिसके 'दृष्टान्त' और 'पहेली' दोनों अर्थ हैं।

3 : 22-30 मत 12 : 24-32; लू 11 : 15-22; 12 : 10 **3 : 30** मक 3 : 22 **3 : 31-35** मत 12 : 46-50; लू 8 : 19-21 **4 : 1-20** मत 13 : 1-28; लू 8 : 4-15 **4 :11** 1 कुर 5 : 12 **4 : 12** यश 6 : 9-10 (यू० पाठ); यो 12 : 40; प्रे 28 : 26

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बोया जाता है : ये वे लोग हैं जिन्होंने परमेश्वर
का वचन सुना, परन्तु शैतान तुरन्त ही आकर
वह वचन ले जाता है, जो उन में बोया गया है।
16इसी प्रकार, जो पथरीली भूमि में बोये जाते
हैं: ये वे लोग हैं, जो वचन सुनते ही उसे
प्रसन्नता से ग्रहण करते हैं; 17किन्तु उन में जड़
नहीं है और वे थोड़े ही दिन दृढ़ रहते हैं। वचन
के कारण कष्ट या अत्याचार आ पड़ने पर, वे
तुरन्त विचलित हो जाते हैं। 18दूसरे बीज जो
काँटों में बोये जाते हैं: ये वे लोग हैं, जो वचन
सुनते हैं; 19परन्तु संसार की चिन्ताएँ, धन का
मोह और अन्य बातों की इच्छाएँ उन में प्रवेश
कर वचन को दबा देती हैं और वह फल नहीं
लाता। 20जो अच्छी भूमि में बोये गये हैं: ये वे
लोग हैं, जो वचन सुनते हैं, उसे ग्रहण करते हैं
और फल लाते हैं—कोई तीस गुना, कोई साठ
गुना, कोई सौ गुना।''

दीपक का दृष्टान्त

21येशु ने उन से कहा, ''क्या लोग इसलिए
दीपक जलाते हैं कि उसे पैमाने अथवा पलंग
के नीचे रखें? क्या वे उसे दीवट पर नहीं रखते?
22ऐसा कुछ भी छिपा हुआ नहीं है, जो प्रकट
नहीं किया जायेगा और कुछ भी गुप्त नहीं है,
जो प्रकाश में नहीं लाया जायेगा। 23जिसके सुनने
के कान हों, वह सुन ले!''

नाप का दृष्टान्त

24येशु ने उन से कहा, ''जो कुछ तुम सुनते
हो, उसे ध्यान से सुनो। जिस नाप से तुम नापते
हो, उसी नाप से तुम्हारे लिए भी नापा जायेगा
बल्कि तुम्हें उससे कुछ अधिक ही दिया जायेगा;
25क्योंकि जिसके पास है, उसी को और दिया
जायेगा और जिसके पास नहीं है, उससे वह भी
ले लिया जायेगा, जो उसके पास है।''

उगने वाले बीज का दृष्टान्त

26येशु ने उन से कहा, ''परमेश्वर का राज्य
उस मनुष्य के सदृश है, जो भूमि में बीज बोता
है। 27वह रात-दिन सोता-जागता है। और
उधर बीज उगता है और बढ़ता जाता है। वह
नहीं जानता है कि यह कैसे हो रहा है। 28भूमि
अपने आप फसल उत्पन्न करती है—पहले
अंकुर, फिर बालें और तब बालों में पूर्ण
विकसित दाने। 29फसल तैयार होते ही वह
हँसिया चलाने लगता है, क्योंकि कटनी का
समय आ गया है।''

राई का दाना

30येशु ने कहा, ''हम परमेश्वर के राज्य
की तुलना किस से करें? हम किस दृष्टान्त द्वारा
उसका वर्णन करें? 31वह राई के दाने के
सदृश है। जब वह भूमि में बोया जाता है तब
वह पृथ्वी के सब बीजों में सब से छोटा बीज
होता है। 32परन्तु बोए जाने पर वह उगता है
और सब पौधों से बड़ा हो जाता है, और उस
में इतनी बड़ी-बड़ी शाखाएं निकल आती हैं
कि आकाश के पक्षी उसकी छाया में बसेरा कर
सकते हैं।''

दृष्टान्तों का प्रयोग

33येशु ऐसे अनेक दृष्टान्तों द्वारा लोगों को
उनकी समझ के अनुसार वचन सुनाते थे।
34वह बिना दृष्टान्त के लोगों से कुछ नहीं कहते
थे, लेकिन एकान्त में अपने शिष्यों को सब बातें
समझा देते थे।

तूफान को शान्त करना

35उसी दिन, सन्ध्या हो जाने पर येशु ने
अपने शिष्यों से कहा, ''आओ, हम झील के
उस पार चलें।'' 36लोगों को विदा करने के
बाद शिष्य येशु को उसी नाव पर ले गये, जिस
पर वह बैठे हुए थे।* दूसरी नावें भी येशु के साथ
चलीं। 37तब झील में एक प्रचंड झंझावात
उठा। लहरें इतने जोर से नाव से टकराईं कि
वह पहले ही पानी से भर गई। 38येशु नाव के
पिछले भाग** में तकिया लगाये सो रहे थे।
शिष्यों ने उन्हें जगा कर कहा, ''गुरुवर! हम

---

* अथवा, ''शिष्य येशु को, जैसे थे वैसे ही, नाव पर साथ ले चले''। ** अथवा, 'दुम्बाल'

4 : 19 मक 10 : 23.34 **4 : 21-25** लू 8 :16-18 **4 : 21** मत 5 : 15 **4 : 22** मत 10 : 26; लू 12 : 2 **4 : 24** मत 7 : 2 **4 : 25** मत 13 : 12 **4 : 27** याक 5 : 7 **4 : 29** योए 3 : 13 **4 : 30-34** मत 13 : 31-32.34; लू 13 : 18-19 **4 : 32** दान 4 : 12.21; यहेज 17 : 23; 31 : 6 **4 : 35-41** मत 8 : 18.23-27; लू 8 : 22-25

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

डूब रहे हैं ! क्या आप को इसकी कोई चिन्ता
नहीं ?'' 39येशु उठे और उन्होंने वायु को डाँटा
और झील से कहा, ''शान्त हो ! थम जा !'' वायु
मन्द हो गयी और पूर्ण शान्ति छा गयी।
40उन्होंने अपने शिष्यों से कहा, ''तुम क्यों
डरते हो ? क्या तुम्हें अब तक विश्वास नहीं
है ?'' 41उन पर बड़ा भय छा गया और वे आपस
में यह कहने लगे, ''न जाने यह कौन हैं कि
वायु और झील भी इनकी आज्ञा मानते हैं !''

गेरासेन का अशुद्धात्मा-ग्रस्त व्यक्ति

5 वे झील के उस पार गेरासेनियों के प्रदेश में
आए। 2येशु ज्यों ही नाव से उतरे, एक
अशुद्धात्मा-ग्रस्त मनुष्य मकबरों से निकल कर
उनके पास आया। 3वह मकबरों में रहा करता
था। अब कोई उसे जंजीर से भी नहीं बाँध पाता
था; 4क्योंकि वह बारम्बार बेड़ियों और जंजीरों
से बाँधा गया था, किन्तु उसने जंजीरों को तोड़
डाला और बेडियों को टुकड़े-टुकड़े कर दिया
था। उसे कोई भी वश में नहीं रख पाता था।
5वह दिन-रात निरन्तर मकबरों में और पहाड़ों
पर चिल्लाता और पत्थरों से अपने को घायल
करता था। 6वह येशु को दूर से देख कर दौड़ता
हुआ आया और उन्हें दण्डवत् कर 7ऊँचे स्वर
से चिल्लाया, ''हे येशु! सर्वोच्च परमेश्वर के
पुत्र! मुझ से आप को क्या काम ? आप को
परमेश्वर की शपथ, मुझे न सताइए।'' 8क्योंकि
येशु उससे कह रहे थे, ''अशुद्ध आत्मा ! इस
मनुष्य से निकल जा'' 9येशु ने उससे पूछा,
''तेरा नाम क्या है ?'' उसने उत्तर दिया, ''मेरा
नाम 'सेना' है, क्योंकि हम बहुत हैं।'' 10और
वह येशु से बहुत अनुनय-विनय करता रहा कि
हमें इस प्रदेश से नहीं निकालिए।
11वहाँ पहाड़ी पर सूअरों का एक बड़ा झुण्ड
चर रहा था। 12अशुद्ध आत्माओं ने यह कहते
हुए येशु से प्रार्थना की, ''हमें सूअरों में भेज
दीजिए। हमें उनमें प्रवेश करने दीजिए।''
13येशु ने अनुमति दे दी। तब अशुद्ध आत्माएँ
उस मनुष्य से निकल कर सूअरों में प्रविष्ट हो
गईं, और लगभग दो हजार का वह झुण्ड ढाल
पर से झील की ओर झपटा और उस में डूब कर
मर गया।
14सूअर चराने वाले भाग गये। उन्होंने नगर
और बस्तियों में जाकर इसकी खबर फैला दी।
लोग यह सब देखने आए कि क्या बात है। 15वे
येशु के पास आये और यह देख कर भयभीत
हो गये कि वह भूतग्रस्त, जिस में पहले अशुद्ध
आत्माओं की सेना थी, बैठा हुआ है। वह कपड़े
पहिने हुए है, और स्वस्थमन है। 16जिन्होंने यह
सब अपनी आँखों से देखा था, उन्होंने लोगों
को बताया कि भूतग्रस्त मनुष्य के साथ क्या
हुआ और सूअरों पर क्या बीती।
17तब गेरासेनी येशु से निवेदन करने लगे कि
वह उनके प्रदेश से चले जायें। 18येशु नाव पर
चढ़ ही रहे थे कि उस मनुष्य ने, जो पहले
भूतग्रस्त था, उनसे अनुरोध किया, ''मुझे अपने
साथ रहने दीजिए।'' 19उसका अनुरोध
अस्वीकार करते हुए येशु ने उससे कहा,
''अपने लोगों के पास अपने घर जाओ और
उन्हें बताओ कि प्रभु ने तुम्हारे लिए कितना
अधिक किया है और तुम पर किस तरह कृपा
की है।'' 20वह चला गया और सारे दिकापुलिस
क्षेत्र* में यह सुनाने लगा कि येशु ने उसके लिए
कितना अधिक किया है। और सब लोग चकित
रह गए।

याईर की पुत्री और रक्तस्राव-पीड़िता

21जब येशु नाव से झील के उस पार फिर
आए, तो उनके पास एक विशाल जनसमूह
एकत्र हो गया। वह झील के तट पर थे 22कि
सभागृह का एक अधिकारी आया। उसका नाम
याईर था। वह येशु को देखते ही उनके चरणों
पर गिर पड़ा 23और यह कहते हुए अनुनय-
विनय करने लगा, ''मेरी बेटी मरने पर है।
कृपया चलिए, और उस पर हाथ रखिए,
जिससे वह स्वस्थ हो जाये और जीवित रह

* अर्थात् 'दस नगर'

5 : 1–22 मत 8 : 28–34; लू 8 : 26–40 **5 : 7** मक 1 : 24. **5 : 20** मक 7 : 31; मत 4 : 5 **5 : 22–43** मत 9 : 18–26; लू 8 : 40–56 **5 : 23** मक 7 : 32

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सके।'' 24येशु उसके साथ चले। एक बड़ी
भीड़ उनके पीछे हो ली। लोग चारों ओर से उन
पर गिरे पड़ रहे थे।
25एक स्त्री बारह वर्ष से रक्तस्राव से पीड़ित
थी। 26अनेकानेक वैद्यों के इलाज के कारण
उसे बहुत कष्ट सहना पड़ा था और सब कुछ
खर्च करने पर भी उसे कोई लाभ नहीं हुआ था,
बल्कि उसकी दशा और भी बिगड़ गयी थी।
27उसने येशु के विषय में सुना था। वह भीड़
में पीछे से आई और उनका वस्त्र छू लिया,
28क्योंकि वह कहती थी, ''यदि मैं उनका वस्त्र
ही छू लूंगी तो स्वस्थ हो जाऊँगी।'' 29उसका
रक्तस्राव उसी क्षण सूख गया और उसने अपने
शरीर में अनुभव किया कि वह रोग से मुक्त हो
गयी है। 30येशु ने भी उसी क्षण अपने में अनुभव
किया कि उन से शक्ति† निकली है। भीड़ में
मुड़ कर उन्होंने पूछा, ''किसने मेरा वस्त्र
छुआ?'' 31उनके शिष्यों ने उन से कहा, ''आप
देख रहे हैं कि भीड़ आप पर गिरी पड़ रही है।
तब भी आप पूछ रहे हैं, 'किसने मेरा स्पर्श
किया?'-'' 32जिसने ऐसा किया था, उसका
पता लगाने के लिए येशु ने चारों ओर दृष्टि
दौड़ायी। 33वह स्त्री, यह जान कर कि उसके
साथ क्या हुआ है, डरती-काँपती हुई आयी
और येशु के चरणों पर गिर पड़ी और सब कुछ
सच-सच बता दिया। 34येशु ने उससे कहा,
''पुत्री! तुम्हारे विश्वास ने तुम्हें स्वस्थ किया
है। शान्ति से जाओ और अपने रोग से मुक्त
रहो।''
35येशु यह कह ही रहे थे कि सभागृह के
अधिकारी के यहाँ से लोग आये और बोले,
''आपकी बेटी मर गयी है। अब गुरु जी को
कष्ट देने की जरूरत ही क्या है?'' 36येशु ने उनकी
बातचीत सुनी* और सभागृह के अधिकारी से
कहा, ''डरिए नहीं। बस, विश्वास कीजिए।''
37अब येशु ने पतरस, याकूब और याकूब के
भाई योहन के अतिरिक्त अन्य किसी को भी
अपने साथ आने नहीं दिया।
38जब वे सभागृह के अधिकारी के घर
पहुँचे, तो येशु ने देखा कि कोलाहल मचा हुआ
है और बड़ा रोना-चिल्लाना हो रहा है। 39येशु
भीतर गए और लोगों से बोले, ''तुम लोग क्यों
रो रहे हो? कोलाहल मचा रहे हो? लड़की मरी
नहीं, बल्कि सो रही है।'' 40इस पर वे उनकी
हँसी उड़ाने लगे। तब येशु ने सब को बाहर कर
दिया और वह लड़की के माता-पिता और
अपने साथियों के साथ उस जगह आये, जहाँ
लड़की थी। 41उन्होंने लड़की का हाथ पकड़
कर उससे कहा : ''तलिथा कूम**!'' इसका
अर्थ है: ''ओ बालिका! मैं तुझ से कहता हूँ,
उठ!'' 42बालिका उसी क्षण उठ खड़ी हुई और
चलने-फिरने लगी, क्योंकि वह बारह वर्ष की
थी। इस पर उन लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ।
43येशु ने उन्हें दृढ़तापूर्वक आदेश दिया कि यह
बात कोई न जान पाये और कहा, ''इसे कुछ
खाने को दो।''

गृहनगर नासरत में येशु का अपमान

6 येशु वहाँ से चले गए और अपने नगर में
आये। उनके शिष्य भी उनके साथ गए।
2वह विश्राम-दिवस पर सभागृह में शिक्षा देने
लगे। बहुत-से लोगों ने सुना तो वे अचम्भे
में पड़ कर कहने लगे, ''यह सब इसे कहाँ से
मिला? यह कौन-सी बुद्धि है, जो इसे दी गई
है? यह कौन-सी शक्ति† है, जिससे यह ऐसे
आश्चर्यपूर्ण कार्य करता है? 3क्या यह वही
बढ़ई नहीं है जो मरियम का पुत्र और याकूब,
योसेस, यहूदा और शिमोन का भाई है? क्या
इसकी बहिनें हमारे बीच नहीं रहतीं हैं?'' इस
प्रकार लोगों को येशु के विषय में भ्रम हो गया।
4येशु ने उन से कहा, ''अपने नगर, अपने
कुटुम्ब और अपने घर को छोड़कर नबी का
अपमान कहीं नहीं होता।'' 5वहाँ वह कोई
सामर्थ्य का कार्य नहीं कर सके। उन्होंने केवल
कुछ रोगियों पर हाथ रख कर उन्हें स्वस्थ

† अथवा, 'सामर्थ्य' * अथवा, 'उनकी बातचीत पर ध्यान नहीं दिया' ** पाठांतर 'कुमी'

5 : 26 तोब 2 : 10 **5 : 30** लू 6 : 19 **5 : 39** यो 11 : 11 **5 : 41** लू 7 : 14 **5 : 43** मक 1 : 44 **6 : 1-6** मत 13 : 53-58; लू 4 : 15-30 **6 : 2** यो 7 : 15 **6 : 5** मक 6 : 13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

किया। 6उन लोगों के अविश्वास पर येशु को
बड़ा आश्चर्य हुआ।

प्रेरितों का प्रेषण

7येशु शिक्षा देते हुए गाँव-गाँव में भ्रमण कर
रहे थे। उन्होंने बारहों प्रेरितों को अपने पास
बुलाया, और उन्हें अशुद्ध आत्माओं पर अधिकार
देकर वह उन्हें दो-दो करके भेजने लगे। 8येशु
ने आदेश दिया कि वे लाठी के अतिरिक्त मार्ग
के लिए कुछ भी नहीं ले जायें—न रोटी, न
झोली, न फेंटे में पैसा। 9वे पैरों में चप्पल पहिन
सकते हैं, परन्तु दो कुरते नहीं पहिनें। 10उन्होंने
उन से कहा, ''जहाँ कहीं तुम किसी घर में
प्रवेश करो, तो उस स्थान से विदा होने तक वहीं
रहो। 11यदि किसी स्थान पर लोग तुम्हारा
स्वागत न करें और तुम्हारी बातें न सुनें, तो वहाँ
से निकलने पर उनके विरुद्ध प्रमाण के लिए
अपने पैरों की धूल झाड़ दो।''

12वे चले गये। उन्होंने लोगों को पश्चात्ताप
का संदेश सुनाया, 13बहुत-से भूतों को निकाला
और अनेक रोगियों पर तेल मल कर उन्हें
स्वस्थ किया।

राजा हेरोदेस और प्रभु येशु

14राजा हेरोदेस ने येशु की चर्चा सुनी,
क्योंकि उनका नाम प्रसिद्ध हो गया था। लोग
कहते थे, ''योहन बपतिस्मादाता मृतकों में से
जी उठे हैं, इसलिए उनमें ये चमत्कारिक
शक्तियाँ क्रियाशील हैं।'' 15कुछ लोग कहते
थे, ''यह नबी एलियाह हैं।'' अन्य लोग कहते
थे, ''यह नबियों की तरह ही कोई नबी हैं।''
16हेरोदेस ने यह सब सुन कर कहा, ''यह
योहन ही है, जिसका सिर मैंने कटवाया था।
वह जी उठा है।''

योहन बपतिस्मादाता की हत्या

17हेरोदेस ने अपने भाई फिलिप की पत्नी
हेरोदियस के कारण सिपाही भेजकर योहन को
गिरफ्तार किया और बन्दीगृह में डाल दिया था।
हेरोदेस ने हेरोदियस से विवाह कर लिया था।
18क्योंकि योहन ने हेरोदेस से कहा था, ''अपने
भाई की पत्नी को रखना आपके लिए उचित
नहीं है'', 19इस कारण हेरोदियस योहन से बैर
करती थी और उसे मार डालना चाहती थी;
किन्तु वह ऐसा नहीं कर पाती थी, 20क्योंकि
हेरोदेस योहन को धर्मात्मा और पवित्र पुरुष
जान कर उनसे डरता था और उनकी रक्षा करता
था। हेरोदेस उनके उपदेश सुन कर बड़े
असमंजस में पड़ जाता था। फिर भी, वह
उनकी बातें आनन्द से सुनता था।

21हेरोदेस के जन्मदिवस पर हेरोदियस को
एक सुअवसर मिला। अपने जन्मदिवस के
उपलक्ष्य में हेरोदेस ने अपने दरबारियों,
सेनापतियों और गलील प्रदेश के प्रतिष्ठित
व्यक्तियों को भोज दिया। 22उस अवसर पर
हेरोदियस की बेटी ने* अन्दर आ कर नृत्य
किया और हेरोदेस तथा उसके अतिथियों को
मुग्ध कर लिया। राजा ने लड़की से कहा, ''जो
भी चाहो, मुझ से माँगो। मैं तुम्हें दे दूँगा'',
23और उसने बार-बार शपथ खा कर कहा,
''जो भी माँगो, चाहे मेरा आधा राज्य ही क्यों
न हो, मैं तुम्हें दे दूँगा।'' 24लड़की ने बाहर जा
कर अपनी माँ से पूछा, ''मैं क्या माँगू?'' उसने
कहा, ''योहन बपतिस्मादाता का सिर।''
25वह तुरन्त राजा के पास दौड़ती हुई आयी और
बोली, ''मैं चाहती हूँ कि आप मुझे इसी समय
एक थाल में योहन बपतिस्मादाता का सिर दे
दें।'' 26राजा को धक्का लगा, परन्तु अपनी
शपथ और अतिथियों के कारण वह उसकी
माँग अस्वीकार करना नहीं चाहता था। 27राजा
ने तुरन्त जल्लाद को भेज कर योहन का सिर
ले आने का आदेश दिया। वह गया। उस ने
बन्दीगृह में उनका सिर काटा 28और उसे थाल
में ला कर लड़की को दिया और लड़की ने उसे
अपनी माँ को दे दिया। 29जब योहन के शिष्यों
को इसका पता चला, तो वे आ कर उनका शव
ले गये और उन्होंने उसे कबर में रख दिया।

---

* पाठांतर, 'उसकी बेटी हेरोदियस ने'

6 : 7-11 मत 10 : 1.9-15; लू 9 : 1-6 **6 : 7** लू 10 : 1 **6 : 13** याक 5 : 14-15 **6 : 14-29** मत 14 : 1-12; लू 9 : 7-9 **6 : 14** लू 3 : 19-20 **6 : 18** लेव 18 : 16 **6 : 23** एस्त 5 : 3-6; 7 : 2 **6 : 30** लू 9 : 10; 10 : 17

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रेरितों का लौटना

30प्रेरित लौट कर येशु के पास एकत्र हुए।
उन्होंने येशु को वह सब कुछ बताया कि हम
लोगों ने क्या-क्या किया और क्या-क्या
सिखाया है। 31तब येशु ने उनसे कहा, "तुम
लोग अकेले ही मेरे साथ निर्जन स्थान में चलो
और थोड़ा विश्राम कर लो"; क्योंकि इतने
लोग आया-जाया करते थे कि उन्हें भोजन
करने की भी फुरसत नहीं रहती थी। 32इसलिए
वे नाव पर चढ़ कर निर्जन स्थान की ओर एकांत
में चले गए। 33बहुत लोगों ने उन्हें जाते हुए
देखा, और वे उन्हें पहचान गए**। वे नगर-
नगर से निकल कर पैदल ही उधर दौड़ पड़े
और उन से पहले ही वहाँ पहुँच गये। 34येशु
ने नाव से उतर कर एक विशाल जनसमूह
देखा। उन्हें उन लोगों पर तरस आया, क्योंकि
वे बिना चरवाहे की भेड़ों की तरह थे और वह
उन्हें बहुत-सी बातों की शिक्षा देने लगे।

पाँच हजार लोगों को भोजन कराना

35जब दिन बहुत ढल गया, तो येशु के
शिष्यों ने उनके पास आ कर कहा, "यह स्थान
निर्जन है और दिन बहुत ढल चुका है। 36लोगों
को विदा कीजिए, जिससे वे आसपास की
बस्तियों और गाँवों में जा कर अपने भोजन के
लिए कुछ खरीद लें।" 37येशु ने उन्हें उत्तर
दिया, "तुम लोग ही उन्हें भोजन दो।" शिष्यों
ने कहा, "क्या हम जा कर दो सौ चाँदी के
सिक्कों** की रोटियाँ खरीद कर लाएं और उन्हें
लोगों को खाने को दें?" 38येशु ने पूछा, "तुम्हारे
पास कितनी रोटियाँ हैं? जा कर देखो।"
उन्होंने पता लगा कर कहा, "पाँच रोटियाँ और
दो मछलियाँ।" 39इस पर येशु ने सब को
अलग-अलग समूह में हरी घास पर बैठाने का
आदेश दिया। 40लोग सौ-सौ और पचास-
पचास के झुंड में बैठ गये।
41येशु ने वे पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ
लीं और आकाश की ओर आँखें उठा कर
आशिष माँगी। उन्होंने रोटियाँ तोड़ीं और
शिष्यों को दीं, ताकि वे लोगों को परोसते जाएँ।
उन्होंने उन दो मछलियों को भी सब में बाँट
दिया। 42सब ने खाया और खा कर तृप्त हो
गये। 43शिष्यों ने रोटी के टुकड़ों और मछलियों
से भरी हुई बारह टोकरियाँ उठाईं। 44रोटी खाने
वाले पुरुषों की संख्या पाँच हजार थी।

येशु पानी पर चलते हैं

45इसके तुरन्त बाद येशु ने अपने शिष्यों को
इसके लिए बाध्य किया कि वे नाव पर चढ़कर
उन से पहले उस पार, बेतसैदा गाँव चले जायें।
इतने में वह स्वयं लोगों को विदा कर देंगे।
46तब येशु उन्हें विदा कर पहाड़ी पर प्रार्थना
करने चले गये।
47सन्ध्या हो गयी थी। नाव झील के बीच में
थी और येशु अकेले स्थल पर थे। 48येशु ने देखा
कि शिष्य बड़ी कठिनाई से नाव खे रहे हैं,
क्योंकि वायु प्रतिकूल थी। इसलिए वे रात के
लगभग चौथे पहर झील पर चलते हुए उनकी
ओर आये। वह उनसे कतरा कर आगे निकल
जाना चाहते थे। 49शिष्यों ने उन्हें झील पर
चलते देखा। वे उन्हें प्रेत समझ कर चिल्ला उठे,
50क्योंकि सब-के-सब उन्हें देख कर घबरा
गये थे। पर येशु तुरन्त उनसे बोले, "धैर्य रखो,
मैं हूँ। डरो मत।" 51तब वह उनके पास आ कर
नाव पर चढ़े और वायु थम गयी। शिष्य
आश्चर्य-चकित रह गये, 52क्योंकि वे रोटियों
से संबंधित घटना नहीं समझ पाये थे। उनका
हृदय कठोर हो गया था।

गिनेसरेत में रोगियों को स्वस्थ करना

53वे झील को पार कर गिनेसरेत के सीमा-
क्षेत्र में पहुँचे। उन्होंने नाव किनारे लगा दी।
54ज्यों ही वे भूमि पर उतरे, लोगों ने येशु को
पहचान लिया। 55वे उस सारे प्रदेश में दौड़ गए,
और जहाँ-जहाँ उन्होंने सुना कि वह हैं, वहाँ

**अथवा, 'समझ गए कि वे कहाँ जा रहे हैं' ** मूल में 'दीनार'

6:32-44 मत 14 : 13-21; लू 9 : 11-17; यो 6 : 1-13 **6 : 34** गण 27 : 17; यहेज 34 : 5; मत 9 : 36 **6 : 35** मक 8 : 1-9 **6 : 41** मक 7 : 34 **6 : 43** व्य 28 : 5 **6 : 45-56** मत 14 : 22-36; यो 6 : 15-21 **6 : 48** भज 77 : 19 **6 : 51** मक 4 : 39

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वे चारपाइयों पर पड़े रोगियों को उनके पास
लाने लगे। 56गाँव, नगर या बस्ती, जहाँ कहीं
भी येशु आते, वहाँ लोग रोगियों को सार्वजनिक
स्थानों पर रख कर उनसे अनुनय-विनय करते
थे कि वह उन्हें अपने वस्त्र का सिरा ही छूने
दें। जितनों ने उनका* स्पर्श किया, वे सब-के-
सब स्वस्थ्य हो गये।

परम्परा-पालन का प्रश्न

7 जब फरीसी और यरूशलेम से आये हुए
कुछ शास्त्री येशु के पास एकत्र हुए, 2तो
उन्होंने देखा कि येशु के कुछ शिष्य अशुद्ध
अर्थात् बिना धोये हाथों से भोजन कर रहे हैं।
3क्योंकि फरीसी और सामान्य यहूदी धर्मवृद्धों
की प्राचीन परम्परा का पालन करते हैं और
विधि के अनुसार बिना हाथ** धोये भोजन नहीं
करते। 4बाजार से लौट कर वे बिना स्नान किये+
भोजन नहीं करते और अन्य बहुत-सी परम्परागत
प्रथाओं का पालन करते हैं—जैसे प्यालों,
सुराहियों, काँसे के बरतनों और खाट-खटियाओं
का शुद्धीकरण। 5इसलिए फरीसियों और
शास्त्रियों ने येशु से पूछा, "आपके शिष्य
धर्मवृद्धों की परम्परा का पालन क्यों नहीं
करते? वे क्यों अशुद्ध हाथों से भोजन करते
हैं?" 6येशु ने उत्तर दिया, "नबी यशायाह ने
तुम ढोंगियों के विषय में ठीक ही नबूवत की
है। जैसा कि धर्मग्रन्थ में लिखा है:

'ये लोग मुख से मेरा आदर करते हैं,
परन्तु इनका हृदय मुझ से दूर है।
7ये व्यर्थ ही मेरी उपासना करते हैं,
क्योंकि ये मनुष्यों के बनाये हुए नियमों को
ऐसे सिखाते हैं मानो वे धर्मसिद्धान्त
हों।'

8तुम लोग मनुष्यों की परम्परा का तो पालन
करते हो, किन्तु परमेश्वर की आज्ञा टालते
हो!"
9येशु ने उनसे कहा, "तुम लोग अपनी ही
परम्परा बनाये रखने के लिए परमेश्वर की
आज्ञा का उल्लंघन किस सुन्दर रीति से कर देते
हो! 10क्योंकि मूसा ने कहा, 'अपने पिता और
अपनी माता का आदर करो'; और 'जो अपने
पिता या अपनी माता को बुरा कहे, उसे
प्राणदण्ड दिया जाये।' 11परन्तु तुम लोग यह
मानते हो कि यदि कोई अपने पिता या अपनी
माता से कहे—'आप को मुझ से जो लाभ हो
सकता था, वह कुरबान (अर्थात् परमेश्वर को
अर्पित) है', 12तो फिर तुम उसे अपने पिता या
अपनी माता के लिए कुछ नहीं करने देते हो।
13इस तरह तुम लोग अपनी परम्परा के नाम पर,
जिसे तुम आगे बढ़ाते हो, परमेश्वर का वचन
रद्द करते हो और ऐसे ही अनेक कार्य तुम करते
रहते हो।"

शुद्ध और अशुद्ध की व्याख्या

14येशु ने लोगों को फिर अपने पास बुलाया
और कहा, "तुम सब, मेरी बात सुनो और
समझो। 15ऐसा कुछ नहीं है, जो बाहर से मनुष्य
में प्रवेश कर उसे अशुद्ध कर सके; बल्कि जो
मनुष्य में से बाहर निकलता है, वही उसे अशुद्ध
करता है। [16जिसके सुनने के कान हों. वह
सुन ले!]*"

17जब येशु लोगों को छोड़ कर घर के भीतर
आए, तो उनके शिष्यों ने इस दृष्टान्त का अर्थ
पूछा। 18येशु ने कहा, "क्या तुम लोग भी इतने
नासमझ हो? क्या तुम यह नहीं समझते कि जो
कुछ बाहर से मनुष्य में प्रवेश करता है, वह उसे
अशुद्ध नहीं कर सकता? 19क्योंकि वह तो उसके
मन में नहीं, बल्कि उसके पेट में चला जाता है
और शौच द्वारा बाहर निकल जाता है।" इस
तरह येशु ने सब खाद्य पदार्थों को शुद्ध ठहराया।
20येशु ने फिर कहा, "जो मनुष्य में से बाहर
निकलता है, वही उसे अशुद्ध करता है।
21क्योंकि बुरे विचार भीतर से, अर्थात् मनुष्य
के मन से निकलते हैं। व्यभिचार, चोरी, हत्या,

* अथवा, 'उसका' ** मूल यूनानी भाषा में 'पुग्मे' शब्द है। इस शब्द के अनेक प्रस्तावित अर्थ विचारणीय हैं जैसे कुहनी, कलाई, मुट्ठी, हथेली के बीच का भाग + पाठांन्तर, 'पानी छिड़के बिना' * कुछ प्राचीन प्रतियों में 16 वां पद नहीं पाया जाता।

6 : 56 मक 5 : 27-28; प्रे 5 : 15; 19 : 11-12 **7 : 1-23** मत 15 : 1-20 **7 : 2** लू 11 : 38 **7 : 6** यश 29 : 13 (यू० पाठ) **7 : 10** नि 20 : 12; 21 : 27; व्य 5 : 16 **7 : 15** प्रे 10 : 14-15

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

22परस्त्री-गमन, लोभ, विद्वेष, छल-कपट,
लम्पटता, ईर्ष्या, झूठी निन्दा, अहंकार और
धर्महीनता*—23ये सब बुराइयाँ मनुष्य के
भीतर से निकलती हैं और उसको अशुद्ध करती
हैं।''

गैरयहूदी जाति की बालिका को स्वस्थ्य करना

24तब येशु उस स्थान को छोड़कर सोर के
सीमा-क्षेत्र में गये। वहाँ वह किसी घर में ठहरे
और वह चाहते थे कि किसी को इसका पता
न चले, किन्तु वह अज्ञात नहीं रह सके। 25एक
स्त्री ने, जिसकी छोटी लड़की एक अशुद्ध
आत्मा के वश में थी, तुरन्त ही येशु के विषय
में सुनकर आई और उनके चरणों पर गिर पड़ी।
26वह स्त्री यूनानी जाति की थी। वह जन्म से
सूरुफिनीकी थी। उसने येशु से विनती की कि
वह उसकी बेटी में से भूत को निकाल दें।
27येशु ने उससे कहा, ''पहले बच्चों को तृप्त
हो जाने दो। बच्चों की रोटी ले कर कुत्तों** के
सामने डालना ठीक नहीं है।'' 28उसने उत्तर
दिया, ''प्रभु! कुत्ते भी मेज के नीचे बच्चों की
रोटी का चूर-चार खाते ही हैं।'' 29इस पर येशु
ने कहा, ''जाओ। तुम्हारे ऐसा कहने के कारण
भूत तुम्हारी पुत्री से निकल गया है।'' 30अपने
घर लौट कर उसने देखा कि बच्ची खाट
पर लेटी हुई है और भूत उस में से निकल
चुका है।

बहरे-गूँगे को स्वास्थ्यलाभ

31येशु सोर के इस सीमा-क्षेत्र से चले गये।
वह सीदोन से होते हुए और दिकापुलिस के
सीमा-क्षेत्र को पार कर गलील की झील के तट
पर पहुँचे। 32वहाँ लोग उनके पास एक मनुष्य
को लाए। वह बहरा था और बोलते समय बहुत
हकलाता था। उन्होंने येशु से अनुरोध किया,
''आप उस पर हाथ रख दीजिए।'' 33येशु ने
उसे भीड़ से अलग एकान्त में ले जा कर उसके
कानों में अपनी उँगलियाँ डालीं और उसकी
जीभ पर अपना थूक लगाया। 34फिर आकाश
की ओर आँखें उठा कर उन्होंने आह भरी और
उससे कहा, ''एफ्फथा'' अर्थात् ''खुल जा''।
35उसी क्षण उसके कान खुल गये और उसकी
जीभ का बन्धन भी छूट गया, जिससे वह
अच्छी तरह बोलने लगा। 36येशु ने लोगों को
आदेश दिया कि वे यह बात किसी से नहीं कहें,
परन्तु वह जितना ही अधिक मना करते थे, लोग
उतना ही अधिक इसका प्रचार करते थे।
37लोगों के आश्चर्य की सीमा न रही। वे कहते
थे, ''वह जो कुछ करते हैं, अच्छा ही करते हैं।
वह बहरों को कान और गूँगों को वाणी देते
हैं।''

चार हजार लोगों को भोजन कराना

8 उस समय फिर एक विशाल जनसमूह
एकत्र हो गया था और लोगों के पास खाने
को कुछ भी नहीं था। येशु ने अपने शिष्यों को
अपने पास बुला कर कहा, 2''मुझे इन लोगों
पर तरस आता है। ये तीन दिनों से मेरे साथ रह
रहे हैं और इनके पास खाने को कुछ भी नहीं
है। 3यदि मैं इन्हें भूखा ही घर भेजूँ, तो ये रास्ते
में मूर्च्छित हो जायेंगे। इन में कुछ लोग तो दूर
से आये हैं।'' 4उनके शिष्यों ने उत्तर दिया,
''इस निर्जन स्थान में इन लोगों को खिलाने के
लिए कहाँ से रोटियाँ मिलेंगी?'' 5येशु ने उनसे
पूछा, ''तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ हैं?''
उन्होंने कहा, ''सात।'' 6येशु ने लोगों को भूमि
पर बैठ जाने का आदेश दिया। येशु ने वे सात
रोटियाँ लीं, परमेश्वर को धन्यवाद दिया,
उनको तोड़ा और फिर अपने शिष्यों को दिया
कि वे उनको परोसें। शिष्यों ने उनको जनसमूह
के सम्मुख परोस दिया। 7उनके पास कुछ छोटी
मछलियाँ भी थीं। येशु ने उनके लिए आशिष
मांगी, और उन्हें भी परोसने को कहा। 8लोगों
ने खाया और खा कर तृप्त हो गये और उन्होंने
बचे हुए टुकड़ों से भरे सात टोकरे उठाये।

---

* अथवा, 'नास्तिकता, मूर्खता' ** मूल में 'छोटा कुत्ता', 'कुत्ते का बच्चा' अथवा, 'पिल्ला'।

7 : 24-30 मत 15 : 21-28. **7 : 31-37** मत 15 : 29-31 **7 : 32** मक 5 : 23 **7 : 33** मक 8 : 23 **7 : 34** मक 6 : 41; यो 11 : 41 **7 : 36** मक 1 : 43-45 **7 : 37** यश 35 : 5 **8 : 1-10** मत15 : 32-39 **8 : 2** मक 6 : 34-44 **8 : 8** व्य 28 : 5 **8 : 11-21** मत 16 : 1-12

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

9लोगों की संख्या लगभग चार हजार थी। येशु
ने उन्हें विदा कर दिया। 10वह तुरन्त नाव पर
चढ़े और अपने शिष्यों के साथ दलमनूथा-क्षेत्र
पहुँचे।

चिह्न की माँग

11फरीसी आ कर येशु से विवाद करने लगे।
येशु की परीक्षा लेने के उद्देश्य से उन्होंने उन से
स्वर्ग का कोई चिह्न माँगा। 12येशु ने गहरी
आह भर कर कहा, "यह पीढ़ी चिह्न क्यों
माँगती है ? मैं तुम लोगों से सच कहता हूँ, इस
पीढ़ी को कोई भी चिह्न नहीं दिया जायेगा।"
13और येशु उन्हें छोड़ कर पुनः नाव पर चढ़े
और झील के उस पार चले गये।

फरीसियों का खमीर

14शिष्य रोटियाँ ले जाना भूल गये थे, और
नाव में उनके पास एक ही रोटी थी। 15उस समय
येशु ने उन्हें यह चेतावनी दी, "देखो, फरीसियों
के खमीर और हेरोदेस के खमीर से सावधान
रहना!" 16इस पर वे आपस में कहने लगे,
"हमारे पास रोटियाँ नहीं हैं, इसलिए यह ऐसा
कह रहे हैं।" 17येशु ने यह जान कर उन से
कहा, "तुम लोग यह क्यों सोचते हो कि हमारे
पास रोटियाँ नहीं हैं। क्या तुम अब तक नहीं
जान सके हो ? क्या अब भी तुम्हारी समझ में
नहीं आया है ? क्या तुम्हारा मन जड़ हो गया है ?
18क्या आँखें रहते भी तुम देखते नहीं ? और
कान रहते भी तुम सुनते नहीं ? क्या तुम्हें याद
नहीं है: 19जब मैंने पांच हजार लोगों के लिए
पाँच रोटियाँ तोड़ीं, तो तुमने टुकड़ों से भरी
कितनी टोकरियाँ उठाई थीं ?" शिष्यों ने उत्तर
दिया, "बारह।" 20येशु ने पुनः पूछा, "और
जब मैंने चार हजार लोगों के लिए सात रोटियाँ
तोड़ीं, तो तुमने टुकड़ों से भरे कितने टोकरे
उठाए थे ? " उन्होंने उत्तर दिया, "सात"
21इस पर येशु ने उन से कहा, " क्या तुम अब
भी नहीं समझ सके ?"

बेतसैदा के अन्धे को दृष्टिदान

22वे बेतसैदा गाँव में आए। कुछ लोग एक
अन्धे को येशु के पास लाये और उन से यह
अनुरोध किया, "आप उसे स्पर्श कर दें।"
23वह अन्धे का हाथ पकड़ कर उसे गाँव के
बाहर ले गये। वहाँ उन्होंने उसकी आँखों पर
लगाने के लिए थूका और उस पर अपना हाथ
रख कर उस से पूछा, "क्या तुम्हें कुछ दिखाई
दे रहा है ?" 24उसने आंखें उठाकर उत्तर दिया,
"मैं लोगों को देख सकता हूँ, पर वे पेड़ जैसे
लगते हैं जो चल रहे हैं।" 25तब उन्होंने फिर
अन्धे की आँखों पर अपने हाथ रखे। अन्धे ने
यत्नपूर्वक देखा और उसे दृष्टि पुनः प्राप्त हो
गई। वह सब-कुछ साफ-साफ देखने लगा।
26येशु ने यह कहते हुए उसे घर भेज दिया,
"इस गाँव में पैर मत रखना।"

पतरस का विश्वास

27येशु अपने शिष्यों के साथ कैसरिया
फिलिप्पी के गाँवों की ओर गये। मार्ग में उन्होंने
अपने शिष्यों से पूछा, "मैं कौन हूँ, इस विषय
में लोग क्या कहते हैं ?" 28उन्होंने उत्तर दिया,
"योहन बपतिस्मादाता; पर कुछ लोग कहते
हैं एलियाह और अन्य लोग कहते हैं नबियों
में से कोई एक नबी।" 29इस पर येशु ने पूछा,
"और तुम क्या कहते हो कि मैं कौन हूँ ?"
पतरस ने उत्तर दिया, "आप मसीह हैं।" 30इस
पर उन्होंने अपने शिष्यों को चेतावनी दी,
"तुम लोग मेरे विषय में किसी को नहीं
बताना।"

दुःखभोग और पुनरुत्थान की प्रथम भविष्यवाणी

31उस समय से येशु अपने शिष्यों को शिक्षा
देने लगे कि मानव-पुत्र को बहुत दुःख उठाना
होगा : यह अनिवार्य है कि वह धर्मवृद्धों,
महापुरोहितों और शास्त्रियों द्वारा ठुकराया
जाए, मार डाला जाए और तीन दिन के बाद

---

8 : 11 यो 6 : 30 **8 : 15** लू 12 : 1; मक 3 : 6 **8 : 17** मक 6 : 52 **8 :18** यिर 5 : 21; यहेज 12 : 2 **8 : 19** मक 6 : 41-44 **8 : 20** मक 8 : 6-9 **8 : 22** मक 6 : 56 **8 : 23** मक 7 : 32-33; यो 9 : 6 **8 : 26** मक 7 : 36 **8 : 27-9 : 1** मत 16 : 13-28; लू 9 : 18-28 **8 : 28** मक 6 : 15 **8 : 29** यो 6 : 67-69 **8 : 30** मक 9 : 9

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

फिर जी उठे। [32]येशु ने यह बात स्पष्ट रूप से कही। इस पर पतरस येशु को अलग ले जाकर डाँटने लगा, [33]किन्तु येशु ने मुड़ कर अपने शिष्यों की ओर देखा, और पतरस को डाँटते हुए कहा, ''मेरे सामने से हट जा, शैतान! तुम परमेश्‍वर की बातें नहीं, बल्कि मनुष्यों की बातें सोचते हो।''

आत्मत्याग की आवश्यकता

[34]येशु ने अपने शिष्यों के अतिरिक्त अन्य लोगों को भी अपने पास बुला कर कहा, ''जो मेरा अनुसरण करना चाहता है, वह आत्मत्याग करे और अपना क्रूस उठा कर मेरे पीछे हो ले। [35]क्योंकि जो कोई अपना प्राण सुरक्षित रखना चाहता है, वह उसे खो देगा और जो मेरे तथा शुभ-समाचार के कारण अपना प्राण खो देता है, वह उसे सुरक्षित रखेगा। [36]मनुष्य को इससे क्या लाभ यदि वह सारा संसार तो प्राप्त कर ले, लेकिन अपना प्राण ही गँवा दे? [37]अपने प्राण के बदले मनुष्य दे ही क्या सकता है? [38]जो इस व्यभिचारिणी और पापी पीढ़ी के सामने मुझे तथा मेरी शिक्षा को स्वीकार करने में लज्जा अनुभव करेगा, मानव-पुत्र भी उसे स्वीकार करने में लज्जा अनुभव करेगा, जब वह पवित्र स्वर्गदूतों के साथ अपने पिता की महिमा में आयेगा।''

9 येशु ने यह भी कहा, ''मैं तुमसे सच कहता हूँ, यहाँ खड़े लोगों में कुछ ऐसे लोग हैं, जो तब तक मृत्यु का स्वाद नहीं चखेंगे, जब तक वे परमेश्‍वर का राज्य सामर्थ्य के साथ आया हुआ न देख लेंगे।''

येशु का रूपान्तरण

[2]छः दिन बाद येशु ने पतरस, याकूब और योहन को अपने साथ लिया और वह उन्हें अलग एक ऊँचे पहाड़ पर एकान्त में ले गए। वहाँ उनके सामने येशु का रूपान्तरण हो गया। [3]उनके वस्त्र ऐसे चमकीले और उज्ज्वल हो गये कि पृथ्वी का कोई भी धोबी उन्हें उतना उज्ज्वल नहीं कर सकता। [4]शिष्यों को एलियाह और मूसा दिखाई दिये। वे येशु के साथ बातचीत कर रहे थे। [5]उस समय पतरस ने येशु से कहा, ''गुरुवर! यह हमारे लिए कितना अच्छा है कि हम यहां हैं! आइए, हम तीन तम्बू खड़ा करें: एक आपके लिए, एक मूसा के लिए और एक एलियाह के लिए।'' [6]उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या कहे, क्योंकि वे सब बहुत डर गये थे। [7]तब एक बादल आकर उन पर छा गया और उस बादल में से यह वाणी सुनाई दी, ''यह मेरा प्रिय पुत्र है। इसकी बात सुनो।'' [8]एकाएक जब शिष्यों ने अपने चारों ओर दृष्टि दौड़ायी, तो उन्होंने अपने साथ येशु के अतिरिक्त और किसी को नहीं देखा।

नबी एलियाह के विषय में प्रश्‍न

[9]येशु ने पहाड़ से उतरते समय उन्हें आदेश दिया, ''जब तक मानव-पुत्र मृतकों में से न जी उठे, तब तक यह जो तुम लोगों ने देखा है, किसी को न बताना।'' [10]उन्होंने येशु की यह बात मान ली, परन्तु वे आपस में विचार-विमर्श करने लगे कि 'मृतकों में से जी उठने' का अर्थ क्या हो सकता है।

उन्होंने येशु से पूछा, ''शास्त्री यह क्यों कहते हैं कि पहले एलियाह का आगमन अनिवार्य है?'' [12]येशु ने उत्तर दिया, ''अवश्य, एलियाह पहले आकर सब ठीक करेंगे। परन्तु मानव-पुत्र के विषय में धर्मग्रन्थ में यह क्यों लिखा है कि वह बहुत दुःख उठायेगा और तिरस्कृत किया जायेगा? [13]मैं तुम से कहता हूँ: एलियाह आ चुके हैं और उनके विषय में जैसे धर्मग्रन्थ में लिखा है, उन्होंने उनके साथ मनमाना व्यवहार किया।''

अशुद्धात्मा-ग्रस्त बालक

[14]जब येशु और उनके तीनों शिष्य अन्य शिष्यों के पास लौटे, तो उन्होंने देखा कि बहुत-से लोग उनके चारों ओर इकट्ठे हो गये हैं और शास्त्री उन से विवाद कर रहे हैं। [15]येशु

---

8 : 35 मत 10 : 39 **8 : 38** मत 10 : 33 **9 : 2-13** मत 17 : 1-13; लू 9 : 28-36 **9 : 7** मक 1 : 11; 2 पत 1 : 17; व्य 18 : 15, प्रे 3 : 22 **9 : 9** मक 8 : 30 **9 : 12** मला 4 : 5; यश 53 : 3; प्रव 48 : 10 **9 : 13** मत 11 : 14; 1 रा 19 : 2, 10 **9 : 14-29** मत 17 : 14-21 लू 9 : 37-42

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

को देखते ही लोग अचम्भे में पड़ गये। वे दौड़कर उनके पास आए और उन्हें प्रणाम किया। 16येशु ने उन से पूछा, "तुम लोग इनके साथ क्या विवाद कर रहे हो?" 17भीड़ में से एक ने उत्तर दिया, "गुरुवर! मैं अपने पुत्र को आपके पास लाया हूँ। उसमें एक गूँगी आत्मा है। 18वह जहाँ कहीं उसे पकड़ती है, उसे वहीं पटक देती है। वह फेन उगलता है, दाँत पीसता है और अकड़ जाता है। मैंने आपके शिष्यों से उसे निकालने को कहा, परन्तु वे ऐसा नहीं कर सके।" 19येशु ने उत्तर दिया, "अविश्वासी पीढ़ी! मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूँगा? कब तक मैं तुम्हें सहता रहूँगा? उस लड़के को मेरे पास लाओ।" 20वे उसे येशु के पास ले आये। येशु को देखते ही अशुद्ध आत्मा ने लड़के को मरोड़ दिया। लड़का गिर गया और फेन उगलता हुआ भूमि पर लोटने लगा। 21येशु ने उसके पिता से पूछा, "इसकी ऐसी दशा कब से है?" उसने उत्तर दिया, "बचपन से। 22अशुद्ध आत्मा ने इसका विनाश करने के लिए इसे बार-बार आग तथा पानी में गिराया है। यदि आप कुछ कर सकें, तो हम पर तरस खा कर हमारी सहायता कीजिए।" 23येशु ने उससे कहा, "यदि आप कुछ कर सकें? विश्वास करने वाले के लिए सब कुछ सम्भव है।" 24इस पर लड़के के पिता ने तुरन्त पुकार कर कहा, "मैं विश्वास करता हूँ; मेरे अल्पविश्वास को दूर करने में मेरी सहायता कीजिए+!" 25येशु ने देखा कि भीड़ बढ़ती जा रही है, इसलिए उन्होंने अशुद्ध आत्मा को यह कहते हुए डाँटा, "हे बहरी-गूंगी आत्मा! मैं तुझे आदेश देता हूँ: इस में से निकल जा और इस में फिर कभी प्रवेश नहीं करना।" 26अशुद्ध आत्मा चिल्ला कर और लड़के को मरोड़ कर उसमें से निकल गयी। लड़का मुरदा-सा हो गया। इसलिए बहुत-से लोग कहने लगे, "यह मर गया है।" 27परन्तु येशु ने उसका हाथ पकड़ कर उसे उठाया और वह खड़ा हो गया।

28जब येशु घर में आए तो उनके शिष्यों ने एकान्त में उन से पूछा, "हम लोग उसे क्यों नहीं निकाल सके?" 29उन्होंने उत्तर दिया, "प्रार्थना के अतिरिक्त++ और किसी उपाय से इस प्रकार की आत्मा नहीं निकाली जा सकती।"

दुःखभोग और पुनरुत्थान की द्वितीय भविष्यवाणी

30येशु और उनके शिष्य वहाँ से चले गये। वे गलील प्रदेश से होकर जा रहे थे। येशु नहीं चाहते थे कि किसी को इसका पता चले, 31क्योंकि वह अपने शिष्यों को ही शिक्षा दे रहे थे। वह उन से कह रहे थे, "मानव पुत्र मनुष्यों के हाथ पकड़वाया जायेगा। वे उसे मार डालेंगे और मार डाले जाने के तीन दिन बाद वह फिर जी उठेगा।"

32किन्तु शिष्य येशु की यह बात नहीं समझ सके और वे येशु से प्रश्न पूछने से डरते थे।

स्वर्गराज्य में बड़ा कौन है?

33वे कफरनहूम नगर में आये। घर में प्रवेश कर येशु ने शिष्यों से पूछा, "तुम लोग मार्ग में किस विषय पर विवाद कर रहे थे?" 34वे चुप रहे, क्योंकि उन्होंने मार्ग में इस पर वाद-विवाद किया था कि उन में सब से बड़ा कौन है। 35येशु बैठ गये और बारहों को बुला कर उन्होंने उनसे कहा, "यदि कोई प्रथम होना चाहता है, तो उसे चाहिए कि वह सब से अंतिम बने और सब का सेवक बने।"

36तब येशु ने एक बालक को लेकर शिष्यों के बीच खड़ा किया और उसे अपनी बाहों में भर कर उन से कहा, 37"जो मेरे नाम पर ऐसे बालकों में किसी एक का भी स्वागत करता है, वह मेरा स्वागत करता है और जो मेरा स्वागत करता है, वह मेरा नहीं, बल्कि उसका स्वागत करता है, जिसने मुझे भेजा है।"

+ शब्दश: 'मेरे अविश्वास की सहायता करते रहें' ++ पाठान्तर, 'प्रार्थना और उपवास के अतिरिक्त'

9 : 23 मक 11 : 23 **9 : 24** लू 17 : 5 **9 : 26** मक 1 : 26 **9 : 30-32** मत 17 : 22-23; लू 9 : 43-45 **9 : 30** यो 7 : 1 **9 : 31** मक 8 : 31, 10 : 32-34 **9 : 32** लू 9 : 45; 18 : 34 **9 : 33-50** मत 18 : 1-9; लू 9 : 46-50 **9 : 33** मत 17 : 24 **9 : 35** मक 10 : 44 **9 : 36** मक 10 :16 **9 : 37** मत 10 : 40; यो 13 : 20

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सहिष्णुता

38योहन ने उन से कहा, ''गुरुवर! हमने
एक मनुष्य को आपका नाम ले कर भूतों को
निकालते देखा तो हमने उसे रोकने की चेष्टा
की, क्योंकि वह हमारा अनुसरण नहीं करता
है।'' 39परन्तु येशु ने उत्तर दिया, ''उसे मत
रोको; क्योंकि कोई ऐसा नहीं, जो मेरा नाम ले
कर सामर्थ्य का कार्य दिखाये और तुरन्त मेरी
निन्दा करे। 40जो हमारे विरुद्ध नहीं है, वह
हमारे पक्ष में है।
41''जो तुम्हें एक कटोरा पानी पिलायेगा,
इसलिए कि तुम मसीह के शिष्य हो*, मैं तुम
से सच कहता हूँ कि वह अपना पुरस्कार
कदापि नहीं खोएगा।''

दूसरों के लिए गड्ढा खोदने वालों को चेतावनी

42''जो मनुष्य मुझ पर विश्वास करने वाले
इन छोटों में से किसी एक को विश्वास से
विचलित करता है**, तो उसके लिए अधिक
अच्छा यही होता कि उसके गले में चक्की का
भारी पाट बाँधा जाता और वह समुद्र में फेंक
दिया जाता।
43''और यदि तुम्हारा हाथ तुम्हारे लिए पाप
का कारण बनता है, तो उसे काट डालो। अच्छा
यही है कि तुम लूले हो कर जीवन में प्रवेश
करो, किन्तु दोनों हाथों के रहते नरक की न
बुझने वाली आग में न डाले जाओ। 44-45यदि
तुम्हारा पैर तुम्हारे लिए पाप का कारण बनता
है, तो उसे काट डालो। अच्छा यही है कि तुम
लँगड़े हो कर जीवन में प्रवेश करो, किन्तु दोनों
पैरों के रहते नरक में न डाले जाओ। 46-47यदि
तुम्हारी आँख तुम्हारे लिए पाप का कारण बनती
है, तो उसे निकाल दो। अच्छा यही है कि तुम
काने हो कर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करो,
किन्तु दोनों आँखों के रहते नरक में न डाले
जाओ, 48जहाँ उनका कीड़ा नहीं मरता और न
आग बुझती है।*
49''क्योंकि हर व्यक्ति आग द्वारा सलोना
किया जायेगा।**
50''नमक अच्छा है; किन्तु यदि वह अपना
सलोनापन खो बैठे तो तुम उसे किस वस्तु से
स्वादिष्ट करोगे?
''अपने में नमक बनाये रखो और आपस में
मेल रखो।''

तलाक का प्रश्न

10 वहाँ से विदा हो कर येशु यहूदा प्रदेश
के सीमा-क्षेत्र और यर्दन नदी के उस
पार के प्रदेश में आए। एक विशाल जनसमूह
फिर उनके पास एकत्र हो गया और उन्होंने
अपनी आदत के अनुसार लोगों को फिर शिक्षा
दी।
2फरीसी सम्प्रदाय के सदस्य येशु के पास
आये और उनकी परीक्षा लेने के उद्देश्य से
उन्होंने यह प्रश्न किया, ''क्या अपनी पत्नी का
परित्याग करना पुरुष के लिए उचित है?''
3येशु ने उन्हें उत्तर दिया, ''मूसा ने तुम्हें क्या
आदेश दिया है?'' 4उन्होंने कहा, ''मूसा ने तो
त्यागपत्र लिख कर पत्नी का परित्याग करने की
अनुमति दी है।'' 5येशु ने उन से कहा, ''उन्होंने
तुम्हारे हृदय की कठोरता के कारण ही यह
आदेश लिखा है। 6किन्तु सृष्टि के आरम्भ ही
से परमेश्वर ने उन्हें नर और नारी बनाया; 7इस
कारण पुरुष अपने माता-पिता छोड़ेगा और
अपनी पत्नी के साथ ही रहेगा और वे दोनों एक
शरीर होंगे। 8इस प्रकार अब वे दो नहीं, बल्कि
एक शरीर हैं। 9इसलिए जिसे परमेश्वर ने जोड़ा
है, उसे मनुष्य अलग नहीं करे।''
10शिष्यों ने, घर पहुँच कर, इस सम्बन्ध में
येशु से फिर प्रश्न किया 11और उन्होंने यह उत्तर

* शब्दशः 'इस नाम के कारण कि तुम मसीह के हो' ** अथवा, ''किसी एक के लिए पाप का कारण बनता है।''
* पद 44 और 46 यूनानी मूल पाठ में नहीं मिलते। ये पद 48 की आवृत्ति मात्र हैं। ** पाठांतर में स्पष्टीकरण मिलता है, ''जैसे अन्न-बलि को नमक से नमकीन किया जाता है''

9 : 38 गण 11 : 27–28 **9 : 39** 1 कुर 12 : 3 **9 : 40** मत 12 : 30 **9 : 41** मत 10 : 42; **9 : 43** मत 5 : 30 **9 : 47** मत 5 : 29 **9 : 48** यश 66 : 24 **9 : 49** लेव 2 : 13 **9 : 50** मत 5 : 13; लू 14 : 34; कुल 4 : 6 **10 : 1–12** मत 19 : 1–9 **10 : 1** मक 9 : 33 **10 : 4** व्य 24 : 1; मत 5 : 31–32 **10 : 6** उत 1 : 27 **10 : 7** उत 2 : 24 **10 : 11** लू 16 : 18

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दिया, "जो अपनी पत्नी का परित्याग करता
और किसी दूसरी स्त्री से विवाह करता है, वह
पहली के विरुद्ध व्यभिचार करता है। 12और यदि
पत्नी अपने पति का परित्याग करती और किसी
दूसरे पुरुष से विवाह करती है, तो वह भी
व्यभिचार करती है।"

बच्चों को आशीर्वाद

13कुछ लोग येशु के पास बच्चों को लाए कि
वह उन्हें स्पर्श करें; परन्तु शिष्यों ने लोगों को
डांटा। 14येशु यह देख कर बहुत अप्रसन्न हुए
और उन्होंने कहा, "बच्चों को मेरे पास आने
दो। उन्हें मत रोको, क्योंकि परमेश्वर का राज्य
उन-जैसे लोगों का ही है। 15मैं तुम से सच
कहता हूँ; जो मनुष्य छोटे बालक की तरह
परमेश्वर का राज्य ग्रहण नहीं करता, वह उस
में प्रवेश नहीं करेगा।" 16तब येशु ने बच्चों को
गोद में लिया और उन पर हाथ रख कर उन्हें
आशीर्वाद दिया।

धनी युवक

17येशु यात्रा पर निकल ही रहे थे कि एक
व्यक्ति दौड़ता हुआ आया और उनके सामने
घुटने टेक कर उसने यह पूछा, "भले गुरु!
शाश्वत जीवन का उत्तराधिकारी बनने के लिए
मुझे क्या करना चाहिए?" 18येशु ने उससे कहा,
"मुझे भला क्यों कहते हो? परमेश्वर को छोड़
और कोई भला नहीं। 19तुम आज्ञाओं को जानते
हो: हत्या मत करो, व्यभिचार मत करो, चोरी
मत करो, झूठी गवाही मत दो,किसी को मत
ठगो, अपने माता पिता का आदर करो।"

20उसने उत्तर दिया, "गुरुवर! इन सब का
पालन तो मैं अपने बचपन से करता आया
हूँ।" 21येशु ने उसे ध्यानपूर्वक देखा और उनके
हृदय में प्रेम उमड़ पड़ा। उन्होंने उससे कहा,
"तुम में एक बात की कमी है। जाओ; जो
तुम्हारा है, उसे बेच कर गरीबों को दे दो और
स्वर्ग में तुम्हें धन मिलेगा। तब आ कर मेरा
अनुसरण करो।" 22यह सुन कर उसका चेहरा
उतर गया और वह उदास हो कर चला गया,
क्योंकि उसके पास बहुत धन-सम्पत्ति थी।

धन के कारण विघ्न-बाधा

23येशु ने चारों ओर दृष्टि दौड़ायी और अपने
शिष्यों से कहा, "धनवानों के लिए परमेश्वर
के राज्य में प्रवेश करना कितना कठिन होगा!"
24शिष्य यह बात सुन कर चकित रह गये।
परन्तु येशु ने उनसे फिर कहा, "बच्चो!
परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कितना
कठिन है! 25परमेश्वर के राज्य में धनवान के
प्रवेश करने की अपेक्षा ऊँट का सूई के छेद से
होकर निकलना अधिक सरल है।" 26शिष्य और
भी विस्मित हो गये और एक-दूसरे से बोले,
"तो फिर किसका उद्धार हो सकता है?"
27येशु ने उन्हें एकटक देखा और कहा,
"मनुष्यों के लिए तो यह असम्भव है, किन्तु
परमेश्वर के लिए नहीं; क्योंकि परमेश्वर के
लिए सब कुछ सम्भव है।"

स्वैच्छिक निर्धनता का पुरस्कार

28पतरस बोल उठा, "देखिए, हम लोग
अपना सब कुछ छोड़कर आपके अनुयायी बन
गये हैं।" 29येशु ने कहा, "मैं तुम से सच
कहता हूँ: ऐसा कोई नहीं, जिसने मेरे और
शुभसमाचार के लिए घर, भाइयों, बहिनों,
माता, पिता, बाल-बच्चों अथवा खेतों को छोड़
दिया हो 30और जो अब, इस लोक में सौ गुना
न पाये—घर, भाई, बहिनें, माताएँ, बाल-बच्चे
और खेत, साथ-ही-साथ अत्याचार और
आनेवाले युग में शाश्वत जीवन। 31परन्तु अनेक
जो प्रथम हैं, वे अंतिम हो जायेंगे और जो
अंतिम हैं, वे प्रथम हो जायेंगे।"

दुःखभोग और पुनरुत्थान की तीसरी भविष्यवाणी

32वे यरूशलेम के मार्ग पर जा रहे थे। येशु
शिष्यों के आगे-आगे चल रहे थे। शिष्य बहुत

---

10 : 13-16 मत 19 : 13-15; लू 18 : 15-17 **10 : 15** मत 18 : 3 **10 : 16** मक 9 : 36 **10 : 17-31** मत 19 : 16-30; लू 18 : 18-30 **10 : 19** नि 20 : 12-17; व्य 5 : 16-20; 24 : 14 **10 : 21** मक 8 : 34; मत 10 : 38 **10 :24** भज 62 : 10 1 तिम 6 : 17 **10 : 27** उत 18 : 14; अय्य 42 : 2 **10 : 32-34** मत 20 : 17-19; लू 18 :31-34 **10 : 32** यो 11 : 16, 55; मक 9 : 31

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
घबराये हुए थे और पीछे आने वाले लोग
भयभीत थे। येशु बारहों को फिर अलग ले जा
कर उन्हें बताने लगे कि मुझ पर क्या-क्या
बीतेगी: 33"देखो, हम यरूशलेम जा रहे हैं।
मानव-पुत्र महापुरोहितों और शास्त्रियों के
हाथ में सौंप दिया जायेगा। वे उसे प्राणदण्ड के
योग्य ठहराएंगे और अन्य-जातियों के हाथ में
सौंप देंगे। 34 वे उसका उपहास करेंगे, उस पर
थूकेंगे, उसे कोड़े लगायेंगे और मार डालेंगे; पर
वह तीन दिन के बाद फिर जी उठेगा।"

याकूब और योहन का निवेदन

35जबदी के पुत्र याकूब और योहन येशु के
पास आए और उनसे बोले, "गुरुवर, हम
चाहते हैं कि जो कुछ हम आपसे मांगें, आप
उसे पूरा करें।" 36येशु ने उत्तर दिया, "तुम
लोग क्या चाहते हो? मैं तुम्हारे लिए क्या
करूँ?" 37उन्होंने कहा, "जब आपकी महिमा
हो, तब हम दोनों को अपने साथ बैठने
दीजिए—एक को अपने दायें और दूसरे को
अपने बायें।"। 38येशु ने उन से कहा, "तुम
नहीं जानते कि तुम क्या माँग रहे हो। जो प्याला
मुझे पीना है, क्या तुम उसे पी सकते हो और
जो बपतिस्मा मुझे लेना है, क्या तुम उसे ले
सकते हो?" 39उन्होंने उत्तर दिया, "हाँ, हम
ले सकते हैं।" इस पर येशु ने कहा, "जो प्याला
मुझे पीना है, उसे तुम पियोगे और जो बपतिस्मा
मुझे लेना है, उसे तुम लोगे। 40किन्तु तुम्हें अपने
दायें या बायें बैठाना मेरा काम नहीं है। ये स्थान
उन लोगों के लिए हैं, जिनके लिए वे तैयार
किये गये हैं।"

सेवाभाव का महत्त्व

41जब दस प्रेरितों को यह मालूम हुआ तो
वे याकूब और योहन पर क्रुद्ध हो गये। 42येशु
ने शिष्यों को अपने पास बुला कर उनसे कहा,
"तुम जानते हो कि जो संसार के अधिपति माने
जाते हैं, वे अपनी प्रजा पर निरंकुश शासन करते
हैं और उनके सत्ता-धारी उन पर अधिकार
जताते हैं। 43किन्तु तुम में ऐसी बात नहीं होगी।
जो तुम लोगों में बड़ा होना चाहता है, वह
तुम्हारा सेवक बने 44और जो तुम में प्रधान होना
चाहता है, वह सब का दास बने; 45क्योंकि मानव
पुत्र अपनी सेवा कराने नहीं, बल्कि सेवा करने
और बहुतों के बदले उनकी मुक्ति के मूल्य में
अपने प्राण देने आया है।"

अंधे बरतिमाई को दृष्टिदान

46वे यरीहो नगर पहुँचे। जब येशु अपने
शिष्यों तथा एक विशाल जनसमूह के साथ
यरीहो से निकल रहे थे, तब तिमाई का पुत्र
बरतिमाई, एक अन्धा भिखारी, सड़क के
किनारे बैठा हुआ था। 47जब उसने सुना कि यह
नासरत-निवासी येशु हैं, तो वह पुकार-पुकार
कर कहने लगा, "हे येशु, दाऊद के वंशज! मुझ
पर दया कीजिए!" 48बहुत-से लोगों ने उसे
चुप रहने के लिए डाँटा; किन्तु वह और भी जोर
से पुकारने लगा, "हे दाऊद के वंशज! मुझ पर
दया कीजिए।" 49येशु रुक गए। उन्होंने कहा,
"उसे बुलाओ।" लोगों ने अन्धे को बुलाया
और कहा, "धैर्य रखो। उठो! वह तुम्हें बुला
रहे हैं।" 50वह अपनी चादर फेंक कर उछल
पड़ा और येशु के पास आया। 51येशु ने उससे
पूछा, "क्या चाहते हो? मैं तुम्हारे लिए क्या
करूँ?" अन्धे ने उत्तर दिया, "गुरुवर! मैं फिर
देखने लगूं"। 52येशु ने उससे कहा, "जाओ,
तुम्हारे विश्वास ने तुम्हें स्वस्थ कर दिया।"
उसी क्षण वह देखने लगा और मार्ग में येशु के
पीछे हो लिया।

यरूशलेम में येशु का प्रवेश

11 जब येशु और उनके शिष्य यरूशलेम
के निकट, जैतून पहाड़ के समीप
बेतफगे और बेतनियाह गाँव के पास पहुँचे, तो
येशु ने अपने दो शिष्यों को यह कह कर भेजा,
2"सामने के गाँव में जाओ। वहाँ प्रवेश करते
ही तुम्हें खूंटे से बँधा हुआ गदहे का एक बछेरू
मिलेगा, जिस पर अब तक कोई नहीं सवार

---

10 : 35-45 मत 20 : 20-28 **10 : 38** मक 14 : 36; लू 12 : 50; रोम 6 : 3 **10 : 39** प्रे 12 : 2; प्रक 1 : 9
10 : 42 लू 22 : 25-27 **10 : 43** मक 9 : 35 **10 : 46-52** मत 20 : 29-34; लू 18 : 35-43 **11 : 1-10** मत
21 : 1-9; लू 19 : 29-38; यो 12 : 12-16

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
हुआ है। उसे खोल कर ले आओ। 3यदि कोई
तुम से कहे, 'यह क्या कर रहे हो,' तो कह देना,
'प्रभु को इसकी जरूरत है। वह इसे शीघ्र ही
यहाँ वापस भेज देंगे।' '' 4शिष्य चले गये और
उन्होंने बछेरू को बाहर सड़क के किनारे एक
घर के दरवाजे पर बंधा हुआ पाया। वे उसे
खोलने लगे। 5वहाँ खड़े लोगों में कुछ ने पूछा,
''यह क्या कर रहे हो? बछेरू क्यों खोल रहे
हो?'' 6येशु ने जैसा बताया था, शिष्यों ने वैसा
ही कहा और लोगों ने उन्हें जाने दिया।
7वे बछेरू को येशु के पास लाए और उस
पर अपनी चादरें बिछा दीं। येशु उस पर बैठ
गये। 8बहुत-से लोगों ने मार्ग में भी अपनी
चादरें बिछा दीं। कुछ लोगों ने खेतों से हरी-
हरी डालियाँ काट कर फैला दीं। 9येशु के
आगे-आगे जाने वाले और पीछे-पीछे आने
वाले लोग यह नारा लगा रहे थे, ''जय हो! जय
हो!* धन्य है वह, जो प्रभु के नाम पर आता है!
10धन्य है हमारे पूर्वज दाऊद का आने वाला
राज्य! सर्वोच्च स्वर्ग में जय हो! जय हो!''
11येशु ने यरूशलेम नगर में प्रवेश किया
और वह मन्दिर में गए। वहाँ सब कुछ अच्छी
तरह देख कर वह बारह प्रेरितों+ के साथ
बेतनियाह गाँव चले गये, क्योंकि उस समय
सन्ध्या हो गई थी।

फलहीन अंजीर का पेड़

12दूसरे दिन जब येशु और उनके शिष्य
बेतनियाह से आ रहे थे, तो येशु को भूख लगी।
13वह कुछ दूरी पर पत्तेदार अंजीर का एक पेड़
देख कर उसके पास गये कि शायद उस पर
कुछ फल मिलें; किन्तु पेड़ के पास आने पर
उन्होंने उसमें पत्तों के अतिरिक्त और कुछ नहीं
पाया, क्योंकि वह अंजीर का मौसम नहीं था।
14येशु ने पेड़ से कहा, ''अब से तेरे फल कोई
कभी न खाये।'' उनके शिष्यों ने उन्हें यह कहते
सुना।

मन्दिर से बिक्री करने वालों को निकालना

15तब येशु और उनके शिष्य यरूशलेम
आए। येशु ने मन्दिर में प्रवेश किया और मन्दिर
में क्रय-विक्रय करने वालों को वहाँ से बाहर
निकालने लगे। उन्होंने सराफों की मेजें और
कबूतर बेचने वालों की चौकियाँ उलट दीं
16और किसी को भी मन्दिर से होकर सामान
आदि ले जाने नहीं दिया। 17उन्होंने लोगों को
शिक्षा देते हुए कहा, ''क्या धर्मग्रन्थ में यह
नहीं लिखा है: 'मेरा घर सब जातियों के लिए
प्रार्थना का घर कहलाएगा'? परन्तु तुम लोगों
ने उसे लुटेरों का अड्डा बना दिया है।''
18महापुरोहितों तथा शास्त्रियों ने यह सुना, तो
वे येशु का विनाश करने का उपाय ढूँढ़ने लगे।
पर वे उन से डरते थे, क्योंकि समस्त जनसमुदाय
येशु की शिक्षा से चकित था। 19सन्ध्या हो जाने
पर येशु और उनके शिष्य नगर के बाहर चले
गए।

विश्वास की शक्ति

20प्रात:काल जब वे उधर से जा रहे थे तो
शिष्यों ने देखा कि अंजीर का वह पेड़ जड़ से
सूख गया है। 21पतरस को वह बात याद आयी
और उसने कहा, ''गुरुवर! देखिए, अंजीर का
वह पेड़, जिसे आपने शाप दिया था, सूख गया
है।'' 22येशु ने उत्तर दिया, ''परमेश्वर में
विश्वास करो। 23मैं तुम लोगों से सच कहता
हूँ, यदि कोई इस पहाड़ से यह कहे, 'उठ और
समुद्र में जा गिर', और मन में सन्देह न करे,
बल्कि यह विश्वास करे कि मैं जो कह रहा हूँ
वह पूरा होगा, तो उसके लिए वैसा ही हो
जायेगा। 24इसलिए मैं तुम से कहता हूँ, तुम जो
कुछ प्रार्थना में माँगते हो, विश्वास करो कि
वह तुम्हें मिल गया है और वह तुम्हें दिया
जायेगा।
25''जब तुम प्रार्थना के लिए खड़े हो और
तुम्हें किसी से कोई शिकायत हो, तो उसे क्षमा

---

* मूल में, 'होशाना!' + मूल में, 'बारहों'

11 : 3 मक 14 : 14 **11 : 9** भज 118 : 25-26 **11 : 11-24** मत 21 : 12-22; लू 19 : 45-48 **11 : 13** लू 3 : 9; 13 : 6-9 **11 : 14** मक 11 : 20 **11 : 15** यो 2 : 14-16 **11 : 17** यश 56 : 7; यिर 7 : 11 **11 : 20** मक 11 : 14 **11 : 22** यो 14 : 1 **11 : 23** मत 17 : 20; लू 17 : 6 **11 : 24** मत 7 : 7 यो 14 : 13; 16 : 23 **11 : 25** मत 5 : 23

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कर दो, जिससे तुम्हारा स्वर्गिक पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा कर दे।''*

येशु के अधिकार पर शंका

27वे फिर यरूशलेम में आये। जब येशु मन्दिर में टहल रहे थे, तब महापुरोहित, शास्त्री और धर्मवृद्ध उनके पास आए। 28उन्होंने येशु से प्रश्न किया, ''आप किस अधिकार से ये कार्य कर रहे हैं? किसने आप को यह सब करने का अधिकार दिया है?'' 29येशु ने उन्हें उत्तर दिया, ''मैं आप लोगों से एक प्रश्न पूछता हूँ। यदि आप मुझे इसका उत्तर देंगे, तो मैं भी आप को बता दूँगा कि मैं किस अधिकार से ये कार्य करता हूँ। 30योहन का बपतिस्मा स्वर्ग की ओर से था अथवा मनुष्यों की ओर से** ? आप मुझे उत्तर दीजिए।'' 31वे यह कहते हुए आपस में तर्क-वितर्क करने लगे, ''यदि हम कहें, 'स्वर्ग की ओर से', तो वह कहेंगे, 'तब आप लोगों ने योहन पर विश्वास क्यों नहीं किया?' 32यदि हम कहें, 'मनुष्यों की ओर से', तो......।'' वे जनता से डरते थे, क्योंकि सब लोग मानते थे कि योहन सचमुच नबी थे। 33इसलिए उन्होंने येशु को उत्तर दिया, ''हम नहीं जानते।'' इस पर येशु ने उनसे कहा, ''तब मैं भी आप लोगों को नहीं बताऊँगा कि मैं किस अधिकार से ये कार्य कर रहा हूँ।''

अंगूर-उद्यान का दृष्टान्त

12 येशु महापुरोहितों, शास्त्रियों और धर्मवृद्धों से दृष्टान्तों में कहने लगे: ''किसी मनुष्य ने अंगूर का उद्यान लगाया। उसने उसके चारों ओर बाड़ा बांधा; उस में रस का कुण्ड खुदवाया और पक्का मचान बनवाया। तब उसे किसानों को पट्टे पर देकर वह परदेश चला गया। 2समय आने पर उसने अंगूर की फसल का हिस्सा वसूल करने के लिए किसानों के पास एक सेवक को भेजा। 3किसानों ने सेवक को पकड़ कर मारा-पीटा और खाली हाथ लौटा दिया। 4उसने एक दूसरे सेवक को भेजा। उन्होंने उसका सिर फोड़ दिया और उसे अपमानित किया। 5उसने एक और सेवक को भेजा और उन्होंने उसे मार डाला। इसके बाद उसने और बहुत सेवकों को भेजा। उन्होंने उनमें से कुछ लोगों को पीटा और कुछ को मार डाला। 6अब उसके पास केवल एक बच रहा—उसका प्रिय पुत्र। अन्त में उसने यह सोच कर उसे उनके पास भेजा कि वे मेरे पुत्र का आदर करेंगे। 7किन्तु किसानों ने आपस में कहा, 'यह तो उत्तराधिकारी है। चलो, हम इसे मार डालें और तब इसकी पैतृक-सम्पत्ति हमारी हो जायेगी।' 8अत: उन्होंने उसे पकड़ कर मार डाला और अंगूर-उद्यान के बाहर फेंक दिया। 9अब अंगूर-उद्यान का स्वामी क्या करेगा? वह आ कर उन किसानों का वध करेगा और अपना अंगूर-उद्यान दूसरों को दे देगा।

10''क्या तुम लोगों ने धर्मग्रन्थ में यह नहीं पढ़ा? 'कारीगरों ने जिस पत्थर को बेकार समझ कर फेंक दिया था, वही कोने की नींव का पत्थर बन गया है। 11यह प्रभु का कार्य है और हमारी दृष्टि में अद्‌भुत है।' ''

12वे समझ गये कि येशु का यह दृष्टान्त हमारे ही विषय में है। अत: वे उन्हें गिरफ्तार करने का उपाय ढूँढ़ने लगे। किन्तु वे जनता से डरते थे, इसलिए वे उन्हें छोड़ कर चले गये।

रोमन सम्राट को कर देने का प्रश्न

13उन्होंने येशु के पास फरीसी और हेरोदेस-दल के कुछ लोगों को भेजा, जिससे वे उन्हें उनकी अपनी बात के जाल में फँसायें। 14वे आ कर उनसे बोले, ''गुरुवर! हम यह जानते हैं कि आप सच्चे हैं और आप किसी की परवाह नहीं करते। आप मुँह-देखी बात नहीं कहते, बल्कि सच्चाई से परमेश्वर के मार्ग की शिक्षा देते हैं।

---

* कुछ प्राचीन प्रतियों में पद 26 भी पाया जाता है: ''परन्तु यदि तुम क्षमा नहीं करोगे तो तुम्हारा स्वर्गिक पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा नहीं करेगा।'' ** इस पद का अनुवाद इस प्रकार भी किया जा सकता है: ''बपतिस्मा देने का अधिकार योहन को परमेश्वर की ओर से प्राप्त हुआ था अथवा मनुष्यों की ओर से ?''

11 : 26 मत 6 : 14–15 **11 : 27–33** मत 21 : 23–27; लू 20 : 1–8 **12 : 1–12** मत 21 : 23–46; लू 20 : 9–19 **12 : 1** यश 5 : 1–2 **12 : 8** इब्र 13 : 12 **12 : 10** भज 118 : 22–23 **12 : 13–17** मत 22 : 15–22; लू 20 : 20–26 **12 : 13** मक 3 : 6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बताइए, व्यवस्था की दृष्टि में रोमन सम्राट* को
कर देना उचित है या नहीं ? 15हम उन्हें दें या
नहीं दें ?'' उनका छल-कपट भाँप कर येशु ने
कहा, ''मेरी परीक्षा क्यों लेते हो ? एक सिक्का**
लाओ और मुझे दिखाओ।'' 16वे एक सिक्का
लाये। येशु ने उन से पूछा, ''यह किसकी
आकृति और किसका लेख है ?'' उन्होंने उत्तर
दिया, ''रोमन सम्राट का।'' 17इस पर येशु ने
उनसे कहा, ''जो सम्राट का है, वह सम्राट को
दो और जो परमेश्वर का है, वह परमेश्वर को
दो।'' येशु की यह बात सुन कर वे आश्चर्य-
चकित हो गये।

पुनरुत्थान का प्रश्न

18सदूकी सम्प्रदाय के कुछ लोग येशु के
पास आये। उनकी धारणा है कि मृतकों का
पुनरुत्थान नहीं होता। उन्होंने येशु से यह प्रश्न
पूछा, 19''गुरुवर! मूसा ने हमारे लिए यह
नियम बनाया है: यदि किसी का भाई, अपनी
पत्नी के रहते निस्सन्तान मर जाये, तो वह अपने
भाई की विधवा से विवाह करे और अपने भाई
के लिए सन्तान उत्पन्न करे। 20सात भाई थे।
पहले ने विवाह किया और वह निस्सन्तान मर
गया। 21दूसरा भाई भी, उसकी विधवा से
विवाह कर, निस्सन्तान मर गया। तीसरे के साथ
भी वही हुआ। 22इस प्रकार सातों भाई निस्सन्तान
मर गये। सबके अंत में वह स्त्री भी मर गयी।
23जब वे पुनरुत्थान में जी उठेंगे, तो वह
किसकी पत्नी होगी ? वह तो सातों भाइयों की
पत्नी रह चुकी है।'' 24येशु ने उन्हें उत्तर दिया,
''क्या तुम इस कारण भ्रम में नहीं पड़े हुए हो
कि तुम न तो धर्मग्रन्थ जानते हो और न
परमेश्वर की शक्ति+ ? 25क्योंकि जब वे मृतकों
में से जी उठते हैं, तब न तो पुरुष विवाह करते
और न स्त्रियाँ विवाह में दी जाती हैं; बल्कि वे
स्वर्गदूतों के सदृश होते हैं।
26''जहाँ तक मृतकों के जी उठने का प्रश्न
है, क्या तुम ने मूसा के ग्रन्थ में, जलती झाड़ी
की कथा में, यह नहीं पढ़ा कि परमेश्वर ने मूसा
से कहा, 'मैं अब्राहम का परमेश्वर, इसहाक
का परमेश्वर और याकूब का परमेश्वर हूँ'?
27वह मृतकों का नहीं वरन् जीवितों का
परमेश्वर है। तुम भ्रम में पड़े हुए हो!''

प्रमुख आज्ञा

28एक शास्त्री यह शास्त्रार्थ सुन रहा था।
उसने देखा कि येशु ने सदूकियों को ठीक उत्तर
दिया है। वह आगे बढ़ा और उसने येशु से पूछा,
''सब से पहली आज्ञा कौन-सी है ?'' 29येशु
ने उत्तर दिया, ''पहली आज्ञा यह है: 'इस्राएल
सुनो! हमारा प्रभु परमेश्वर एकमात्र प्रभु है।
30अपने प्रभु परमेश्वर को अपने सम्पूर्ण हृदय,
सम्पूर्ण प्राण, सम्पूर्ण बुद्धि और सम्पूर्ण शक्ति
से प्रेम करो।' 31दूसरी आज्ञा यह है, 'अपने
पड़ोसी को अपने समान प्रेम करो।' इन से बड़ी
कोई आज्ञा नहीं।'' 32शास्त्री ने उन से कहा,
''हे गुरुवर! क्या सुन्दर बात है! आपने सच
कहा कि एक ही परमेश्वर है। उसके अतिरिक्त
और कोई परमेश्वर नहीं है। 33उसे अपने सम्पूर्ण
हृदय, सम्पूर्ण ज्ञान और सम्पूर्ण शक्ति से प्रेम
करना और अपने पड़ोसी को अपने समान प्रेम
करना, यह हर प्रकार की अग्नि-बलि और
पशु-बलि चढ़ाने से अधिक महत्वपूर्ण है।''
34जब येशु ने देखा कि उसने विवेकपूर्ण उत्तर
दिया है, तो उन्होंने उससे कहा, ''तुम परमेश्वर
के राज्य से दूर नहीं हो।'' इसके बाद किसी को
येशु से और प्रश्न पूछने का साहस नहीं हुआ।

मसीह, राजा दाऊद के वंशज

35येशु ने, मन्दिर में शिक्षा देते समय, यह
प्रश्न उठाया, ''शास्त्री कैसे कह सकते हैं कि
मसीह दाऊद के वंशज हैं ? 36दाऊद ने स्वयं
पवित्र आत्मा की प्रेरणा से कहा,

---

* मूल में, 'कैसर' ** मूल में, 'दीनार' + अथवा, 'सामर्थ्य'

12 : 17 रोम 13 : 7 **12 : 18-27** मत 22 : 23-33; लू 20 : 27-38 **12 : 19** व्य 25 : 5-6; 38 : 8 **12 : 26** नि 3 : 2, 6; मत 8 : 11; लू 16 : 22 **12 : 28-34** मत 22 : 34-40; लू 10 : 25-28 **12 : 28** लू 20 : 39-40 **12 : 29** व्य 6 : 4-5 **12 : 30** यो 15 : 12 **12 : 31** लेव 19 : 18 **12 : 32** व्य 4 : 35; 6 : 4 **12 : 33** 1 शम 15 : 22 **12 : 34** प्रे 26 : 27-29 **12 : 35-37** मत 22 : 41-46; लू 20 : 41-44 **12 : 36** भज 110 : 1; यो 7 : 42; 2 शम 23 : 2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा :
तुम मेरे सिंहासन की दाहिनी ओर बैठो,
जब तक मैं तुम्हारे शत्रुओं को
तुम्हारे पैरों तले न डाल दूँ।'
37“दाऊद स्वयं उन्हें प्रभु कहते हैं, तो वह
उनके वंशज कैसे हो सकते हैं?” विशाल
जनसमूह येशु की बातें सुनने में रस ले रहा था।

शास्त्रियों के विरुद्ध चेतावनी

38येशु ने शिक्षा देते समय कहा, “शास्त्रियों
से सावधान रहो। लम्बे लबादे पहन कर घूमना,
बाजारों में प्रणाम-प्रणाम सुनना, 39सभागृहों में
प्रमुख आसनों पर और भोजों में सम्मानित
स्थानों पर बैठना—यह सब उन्हें पसन्द है।
40किन्तु वे विधवाओं की सम्पत्ति चट कर जाते
और दिखावे के लिए लम्बी-लम्बी प्रार्थनाएँ
करते हैं। उन को बड़ा कठोर दण्ड मिलेगा।”

गरीब विधवा का दान

41येशु मन्दिर के खजाने के सामने बैठ कर
लोगों को उसमें सिक्के डालते हुए देख रहे थे।
अनेक धनवान व्यक्ति बहुत भेंट चढ़ा रहे थे।
42एक गरीब विधवा आयी और उसने दो
अधेले अर्थात् एक पैसा खजाने में डाला। 43इस
पर येशु ने अपने शिष्यों को बुला कर कहा, “मैं
तुम से सच कहता हूँ; खजाने में भेंट चढ़ाने
वालों में इस गरीब विधवा ने सब से अधिक
डाला है; 44क्योंकि सब ने अपनी समृद्धि से
कुछ चढ़ाया, परन्तु इसने तंगी में रहते हुए भी,
इसके पास जो कुछ था, वह सब अर्थात् अपनी
सारी जीविका ही अर्पित कर दी!”

मन्दिर के विनाश की भविष्यवाणी

13 येशु मन्दिर से निकल रहे थे कि उनके
शिष्यों में से एक ने उन से कहा,
“गुरुवर! देखिए; ये बड़े-बड़े पत्थर! कैसे
भव्य भवन!” 2येशु ने उसे उत्तर दिया, “तुम
इन विशाल भवनों को देख रहे हो न? यहाँ एक
पत्थर पर दूसरा पत्थर पड़ा नहीं रहेगा—सब
ध्वस्त हो जायेगा।”

3जब येशु जैतून पहाड़ पर मन्दिर के सामने
बैठ गये, तब पतरस, याकूब, योहन और
अन्द्रेयास ने एकान्त में उनसे पूछा, 4“हमें
बताइए, यह कब होगा और किस चिह्न से पता
चलेगा कि यह सब पूरा होने को है?”

विपत्तियों का प्रारम्भ

5येशु अपने शिष्यों से यह कहने लगे,
“सावधान रहो, तुम्हें कोई नहीं बहकाये।
6बहुत-से लोग मेरे नाम में आयेंगे और
कहेंगे, 'मैं वही हूँ', और वे बहुतों को बहका
देंगे।

7“जब तुम युद्धों की चर्चा सुनोगे और युद्धों
के बारे में अफवाहें सुनोगे, तो इससे मत
घबराना; क्योंकि ऐसा होना अनिवार्य है। परन्तु
अन्त अभी नहीं होगा। 8जाति के विरुद्ध जाति
और राज्य के विरुद्ध राज्य उठ खड़ा होगा।
जहाँ-तहाँ भूकम्प आएंगे और अकाल पड़ेंगे।
यह मानो प्रसव-पीड़ा का आरम्भ मात्र होगा।

9“अपने विषय में सावधान रहो। लोग तुम्हें
धर्मसभाओं के हाथ में सौंप देंगे और तुम्हें
सभागृहों में पीटेंगे। वे तुम्हें मेरे कारण शासकों
और राजाओं के सामने खड़ा करेंगे, जिससे तुम
मेरे विषय में उन्हें साक्षी दे सको। 10यह
आवश्यक है कि पहले सब जातियों को शुभ-
समाचार सुनाया जाए।

11 “जब वे तुम्हें पकड़वाकर ले जा रहे
होंगे, तब यह चिन्ता न करना कि तुम क्या
कहोगे। पर उस समय जो शब्द तुम्हें दिये
जायेंगे, उन्हें कह देना; क्योंकि बोलने वाले तुम
नहीं हो, बल्कि पवित्र आत्मा है। 12भाई अपने
भाई को मृत्यु के लिए सौंप देगा और पिता
अपनी सन्तान को। सन्तान अपने माता-पिता
के विरुद्ध उठ खड़ी होगी और उन्हें मरवा
डालेगी। 13मेरे नाम के कारण सब लोग तुम से
बैर करेंगे, किन्तु जो अन्त तक स्थिर रहेगा, वही
बचाया जाएगा।

---

12 : 38-40 मत 23 : 1-39; लू 20 : 45-47 **12 : 41-44** लू 21 :1-4 **12 : 41** 2 रा 12 : 9 **12 : 44** 2 कुर 8 : 12 **13 : 1-37** मत 24 : 1-51; लू 21 : 5-36 **13 : 8** यश 19 : 2; 2 इति 15 : 6 **13 :9-13** मत 10 : 17-22; लू 21 : 12-17 **13 : 10** मक 16 : 15 **13 : 12** मी 7 : 6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

महासंकट

14''जब तुम विनाशकारी घृणित व्यक्ति को
वहाँ खड़ा हुआ देखोगे, जहाँ उसका होना
उचित नहीं है—पढ़ने वाला इसे समझ ले—
तो, जो लोग यहूदा प्रदेश में हों, वे पहाड़ों पर
भाग जायें। 15जो छत पर हो, वह नीचे न उतरे
और अपना कुछ सामान लेने घर के अन्दर न
जाये। 16जो खेत में हो, वह अपनी चादर लाने
के लिए पीछे न लौटे। 17उन स्त्रियों के लिए
शोक, जो उन दिनों गर्भवती होंगी; और उनके
लिए शोक जो दूध पिलाती होंगी! 18प्रार्थना करो
कि यह सब शीतकाल में घटित न हो;
19क्योंकि उन दिनों ऐसा दु:ख-कष्ट होगा,
जैसा परमेश्वर-रचित सृष्टि के प्रारम्भ से अब
तक न कभी हुआ है और न कभी होगा। 20यदि
प्रभु ने उन दिनों को घटाया न होता, तो कोई
भी प्राणी नहीं बचता; किन्तु अपने मनोनीत
लोगों के कारण, जिन्हें उसने चुना है, उसने उन
दिनों को घटा दिया है।

21''यदि उस समय कोई तुम लोगों से कहे
'देखो, मसीह यहाँ हैं', अथवा 'देखो, वह वहाँ
हैं', तो विश्वास नहीं करना; 22क्योंकि झूठे मसीह
तथा झूठे नबी प्रकट होंगे और ऐसे चिह्न तथा
चमत्कार दिखायेंगे कि यदि सम्भव हो तो चुने
हुए लोगों को बहका दें। 23तुम सावधान रहना।
मैंने तुम्हें पहले ही सब कुछ बता दिया है।

मानव-पुत्र का पुनरागमन

24''उन दिनों इस संकट के बाद सूर्य
अन्धकारमय हो जायेगा, चन्द्रमा प्रकाश नहीं
देगा, 25तारे आकाश से गिरने लगेंगे और
आकाश की शक्तियाँ विचलित हो जायेंगी।
26तब लोग मानव-पुत्र को अपार सामर्थ्य और
महिमा के साथ बादलों पर आते हुए देखेंगे।
27वह अपने दूतों को भेजेगा और पृथ्वी के इस
छोर से आकाश के उस छोर तक चारों दिशाओं
से अपने चुने हुए लोगों को एकत्र करेगा।

यह कब होगा?

28''अंजीर के पेड़ से यह शिक्षा लो। जैसे
ही उसकी टहनियाँ कोमल हो जाती हैं और उन
में अंकुर फूटने लगते हैं, तो तुम जान जाते हो
कि ग्रीष्मकाल निकट है। 29इसी तरह, जब तुम
इन बातों को होते देखोगे, तो जान लेना कि वह
निकट है, वरन् द्वार पर ही है। 30मैं तुम से सच
कहता हूँ : इस पीढ़ी का अन्त नहीं होगा जब
तक ये सब बातें घटित नहीं हो जायेंगी।
31आकाश और पृथ्वी टल जायें, तो टल जायें,
परन्तु मेरे शब्द कदापि नहीं टल सकते।

32''उस दिन और उस घड़ी के विषय में
कोई नहीं जानता—न स्वर्ग के दूत और न पुत्र।
केवल पिता ही जानता है।

जागते रहो!

33''सावधान रहो। जागते रहो, क्योंकि तुम
नहीं जानते कि वह समय कब आयेगा। 34यह
कुछ ऐसा है, जैसे कोई मनुष्य अपना घर
छोड़कर विदेश चला गया हो। उसने अपने घर
का भार अपने सेवकों को सौंप दिया हो, हर एक
को उसका काम बता दिया हो और द्वारपाल को
जागते रहने का आदेश दिया हो। 35तुम नहीं
जानते कि घर का स्वामी कब आयेगा—शाम
को, आधी रात को, मुर्गे के बाँग देते समय
अथवा प्रात:काल। इसलिए जागते रहो। 36कहीं
ऐसा न हो कि वह अचानक आ जाए और तुम्हें
सोता हुआ पाये। 37जो बात मैं तुम से कहता
हूँ, वही सब से कहता हूँ: जागते रहो!''

येशु की हत्या का षड्यन्त्र

14 पास्का (फसह) तथा बेखमीर रोटी के
पर्व में दो दिन रह गये थे। महापुरोहित
और शास्त्री येशु को छल से गिरफ्तार करने
और उनको मार डालने का उपाय ढूँढ़ रहे थे।
2फिर भी वे कहते थे, ''पर्व के दिनों में नहीं।
कहीं ऐसा न हो कि जनता में दंगा हो जाये।''

बेतनियाह गाँव में अभ्यंजन

3जब येशु बेतनियाह गाँव में शिमोन
'कुष्ठरोगी' के घर में भोजन कर रहे थे, तो एक

---

13 : 14 दान 9 : 27; 11-31; 12 : 11; 1 मक 1 : 54; 6 : 7 13 :19 दान 12 : 1; योए 2 : 2 13 : 22 व्य 13 : 1 13 : 24 यश 13 : 10 13 : 25 यश 34 : 4 13 : 26 दान 7 : 13 13 :27 जक 2 : 6; व्य 30 : 4; मत 13 : 41 13-34 मत 25 :14; लू 19 : 12 13 : 35 लू 12 : 3814 : 1-2 मत 26 : 1-5; लू 22 :1-2 14 : 3-9 मत 26 : 6-13; यो 12 : 1-8 14 : 3 लू 7 : 36-38

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

महिला संगमरमर के पात्र में असली जटामांसी
का बहुमूल्य इत्र ले कर आयी। उसने पात्र तोड़
कर येशु के सिर पर इत्र उंडेल दिया। 4इस पर
कुछ लोग झुंझला कर एक दूसरे से बोले, "इत्र
का यह अपव्यय क्यों ? 5यह इत्र तीन सौ चांदी
के सिक्कों* से अधिक मूल्य में बेचा जा सकता
था और उससे प्राप्त धन गरीबों में बाँटा जा
सकता था।" और वे उसे झिड़कने लगे। 6येशु
ने कहा, "इसे छोड़ दो। इसे क्यों तंग करते हो ?
इसने मेरे लिए एक सुन्दर कार्य किया है।
7गरीब तो सदा तुम लोगों के साथ रहेंगे। तुम
जब चाहो, उनका उपकार कर सकते हो; किन्तु
मैं सदा तुम्हारे साथ नहीं रहूँगा। 8यह जो कुछ
कर सकती थी, इसने कर दिया। इसने मेरे गाड़े
जाने की तैयारी में पहले ही से मेरे शरीर पर इत्र
लगाया। 9मैं तुम से सच कहता हूँ : सारे संसार
में जहाँ कहीं शुभ-समाचार सुनाया जायेगा,
वहाँ इसकी स्मृति में इसके इस कार्य की भी
चर्चा की जायेगी।"

यूदस [यहूदा] का विश्वासघात

10बारहों में से एक, यूदस [यहूदा]
इस्करियोती, महापुरोहितों के पास गया और
उसने येशु को उनके हाथ पकड़वा देने का
प्रस्ताव किया। 11वे यह सुन कर बहुत प्रसन्न
हुए। उन्होंने उसे धन देने का वायदा किया और
यूदस येशु को पकड़वाने का अवसर ढूँढ़ने लगा।

पास्का (फसह) पर्व के भोज की तैयारी

12बेखमीर रोटी के पर्व के पहले दिन, जब
पास्का-पर्व के मेमने की बलि चढ़ायी जाती है,
शिष्यों ने येशु से कहा, "आप क्या चाहते हैं ?
हम कहाँ जा कर आपके लिए पास्का-पर्व के
भोज की तैयारी करें ?" 13येशु ने दो शिष्यों को
यह कहकर भेजा, "नगर में जाओ। तुम्हें एक
मनुष्य मिलेगा। वह पानी से भरा घड़ा लिये हुए
जा रहा होगा। तुम उसके पीछे-पीछे जाना।
14जिस घर में वह प्रवेश करे, उस घर के स्वामी
से तुम यह कहना, "गुरुवर कहते हैं: मेरे लिए
अतिथिशाला कहाँ है, जहाँ मैं अपने शिष्यों के
साथ पास्का का भोजन करूँगा ?" 15वह तुम्हें
ऊपर एक सजा-सजाया बड़ा कमरा दिखा
देगा। वहीं तुम हमारे लिए भोज की तैयारी
करना।" 16शिष्य चले गए। येशु ने जैसा कहा
था, उन्होंने नगर में पहुँच कर सब कुछ वैसा
ही पाया और पास्का-पर्व के भोज की तैयारी
कर ली।

यूदस [यहूदा] के विश्वासघात का संकेत

17सन्ध्या हो जाने पर येशु बारहों के साथ
आये। 18जब वे बैठ कर भोजन कर रहे थे, तो
येशु ने कहा, "मैं तुम लोगों से सच कहता हूँ:
तुम में से एक, जो मेरे साथ भोजन कर रहा है,
मुझे पकड़वा देगा"। 19शिष्य उदास हो गये
और एक-एक कर उनसे पूछने लगे, "कहीं
वह मैं तो नहीं हूँ ?" 20येशु ने उत्तर दिया, "वह
बारहों में से एक है, और मेरे साथ एक ही थाली
में हाथ डाल रहा है। 21मानव-पुत्र तो जा रहा
है, जैसा कि उसके विषय में धर्मग्रन्थ में लिखा
है; परन्तु धिक्कार है उस मनुष्य को, जो
मानव-पुत्र को पकड़वा रहा है ! उस मनुष्य के
लिए अच्छा यही होता कि वह उत्पन्न ही नहीं
हुआ होता।"

प्रभु-भोज (परमप्रसाद) की स्थापना

22शिष्यों के साथ भोजन करते समय येशु ने
रोटी ली, और आशिष मांग कर तोड़ी, शिष्यों
को दी, और कहा, "लो, यह मेरी देह है।"
23तब उन्होंने कटोरा लिया, परमेश्वर को
धन्यवाद दिया और उसे शिष्यों को दिया और
सब ने उस में से पीया। 24येशु ने उन से कहा,
"यह विधान [वाचा] का मेरा रक्त है, जो
बहुतों के लिए बहाया जा रहा है। 25मैं तुम से
सच कहता हूँ : मैं दाख का रस उस दिन तक
फिर नहीं पिऊँगा, जब तक परमेश्वर के राज्य
में नया रस न पिऊँ।"

---

* मूल में 'दीनार', एक सिक्के का मूल्य एक ही दिन की मजदूरी है।

14 : 7 व्य 15 : 11 **14 : 10-11** मत 26 : 14-16; लू 22 : 3-6 **14 : 12-16** मत 26 : 17-19; लू 22 : 7-13 **14 : 14** मक 11 : 3 **14 : 17-25** मत 26 : 20-29; लू 22 : 14-23; यो 13 : 21-26 **14 :18** भज 41 : 9 **14 : 22** 1 कुर 11 : 23-25 **14 : 24** नि 24 : 8; जक 9 : 11 **14 : 26-31** मत 26 : 30-35; लू 12 : 31-34, 39

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

26भजन गाने के बाद येशु और उनके शिष्य
जैतून पहाड़ पर चले गए।

शिष्यों के विषय में भविष्यवाणी

27येशु ने शिष्यों से कहा, "तुम सब के
विश्‍वास का पतन होगा।* क्योंकि धर्मग्रन्थ में
लिखा है: 'मैं चरवाहे को मारूँगा और भेड़ें
तितर-बितर हो जायेंगी।' 28किन्तु अपने पुन-
रुत्थान के पश्चात् मैं तुम लोगों से पहले गलील
प्रदेश को जाऊँगा।" 29इस पर पतरस ने कहा,
"चाहे सब के विश्‍वास का पतन हो जाए,
किन्तु मेरे विश्‍वास का पतन नहीं होगा।"
30येशु ने उत्तर दिया, "मैं तुम से सच कहता
हूँ: आज, इसी रात को, मुर्गे के दो बार बाँग
देने से पहले ही तुम मुझे तीन बार अस्वीकार
करोगे।" 31किन्तु उसने जोर देकर यह कहा,
"मुझे आपके साथ चाहे मरना ही क्यों न पड़े,
मैं आप को कभी अस्वीकार नहीं करूँगा।"
अन्य सब शिष्यों ने भी ऐसा ही कहा।

गतसमनी बाग में प्राणपीड़ा

32वे गतसमनी नामक स्थान में आए। येशु
ने अपने शिष्यों से कहा, "तुम लोग यहाँ बैठे
रहो। मैं तब तक प्रार्थना करूँगा।" 33वह पतरस,
याकूब और योहन को अपने साथ ले गये। वह
व्यथित तथा व्याकुल होने लगे 34और उनसे
बोले, "मैं अत्यन्त व्याकुल हूँ मानो मेरे प्राण
निकल रहे हों! तुम यहाँ ठहरो और जागते
रहो।" 35वह कुछ आगे बढ़े और भूमि पर मुँह
के बल गिर कर यह प्रार्थना करने लगे कि यदि
संभव हो, तो यह घड़ी उन से टल जाये।
36उन्होंने कहा, "अब्बा! पिता! तेरे लिए सब
कुछ सम्भव है। यह प्याला मुझ से हटा ले;
किन्तु मेरी इच्छा नहीं, तेरी इच्छा पूरी हो।"
37येशु अपने शिष्यों के पास गये और उन्हें
सोया हुआ देख कर पतरस से बोले, "सिमोन!
सोते हो? तुम घण्टे भर भी नहीं जाग सके?
38तुम सब जागते रहो और प्रार्थना करते रहो,
जिससे तुम परीक्षा में न पड़ो। आत्मा तो तत्पर
है, परन्तु शरीर दुर्बल।" 39उन्होंने फिर जा कर
उन्हीं शब्दों को दुहराते हुए प्रार्थना की।
40लौटने पर उन्होंने अपने शिष्यों को फिर सोया
हुआ पाया, क्योंकि उनकी आँखें बहुत भारी हो
रही थीं। वे नहीं जानते थे कि क्या उत्तर दें।
41येशु जब तीसरी बार अपने शिष्यों के पास
आये, तो उन्होंने उन से कहा, "अब तक सो
रहे हो? अब तक आराम कर रहे हो? बस!
बहुत हुआ! वह घड़ी आ गयी है। देखो!
मानव-पुत्र पापियों के हाथ पकड़वाया जा रहा
है। 42उठो! हम चलें। देखो, मुझे पकड़वाने
वाला निकट आ गया है।"

येशु की गिरफ्तारी

43येशु यह कह ही रहे थे कि बारहों में से
एक, यूदस [यहूदा] आ गया। उसके साथ
तलवारें और लाठियाँ लिये एक भीड़ थी, जिसे
महापुरोहितों, शास्त्रियों और धर्मवृद्धों ने भेजा
था। 44पकड़वाने वाले ने उन्हें यह चिह्न दिया
था, "मैं जिसका चुम्बन करूँगा, वही है। उसे
पकड़ लेना और सावधानी से ले जाना।"
45जैसे ही यूदस [यहूदा] आया, वह तुरन्त येशु
के पास गया और कहा, "गुरुवर!" और
उनका चुम्बन किया। 46तब लोगों ने येशु पर
हाथ डाले और उन्हें गिरफ्तार कर लिया।
47इस पर पास खड़े शिष्यों में से एक ने
अपनी तलवार खींच ली और उसे प्रधान
महापुरोहित के सेवक पर चला कर उसका
कान उड़ा दिया। 48येशु ने भीड़ से कहा, "क्या
तुम लोग मुझे डाकू समझते हो, जो तलवारें
और लाठियाँ ले कर मुझे पकड़ने आये हो?
49मैं प्रतिदिन तुम्हारे साथ था, मन्दिर में शिक्षा
दिया करता था, फिर भी तुमने मुझे गिरफ्तार
नहीं किया। खैर, धर्मग्रन्थ में जो लिखा है, वह
पूरा हो जाये।"
50तब सब शिष्य येशु को छोड़ कर भाग
गये। 51एक युवक, अपने नंगे बदन पर मलमल
की चादर ओढ़े येशु के पीछे हो लिया। किन्तु

* अथवा, 'तुम सब विचलित हो जाओगे।'

14 : 26 भज 113-118 **14 : 27** जक 13 : 7 **14 : 28** मक 16 : 7 **14 : 30** यो 13 :38 **14 : 31** यो 11 : 16
14 : 32-42 मत 26 : 36-46; लू 22 : 40-46**14 : 32** यो 18 : 1 **14 : 34** यो 12 : 27; भज 43 : 5 **14 : 36**
मक 10 : 38 **14 : 42** यो 14 : 31 **14 : 43-54** मत 26 : 47-58; लू 22 : 47-55 यो 18 : 2-18

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जब भीड़ ने उसे पकड़ा, 52तो वह चादर छोड़
कर नंगा ही भाग गया।

धर्ममहासभा के सामने

53वे येशु को प्रधान महापुरोहित के यहाँ ले
गये। सब महापुरोहित, धर्मवृद्ध और शास्त्री
वहाँ एकत्र हुए थे। 54येशु से कुछ दूरी रखते हुए
पतरस उनके पीछे-पीछे प्रधान महापुरोहित के
भवन के आंगन तक गया था और वहाँ पहरेदारों
के साथ बैठ कर आग ताप रहा था।

55महापुरोहित और सारी धर्ममहासभा येशु
को मरवा डालने के उद्देश्य से उनके विरुद्ध
गवाही खोज रही थी, परन्तु वह मिली नहीं।
56बहुत-से लोगों ने तो उनके विरुद्ध झूठी
गवाही दी, किन्तु उनके बयान मेल नहीं खाते
थे। 57तब कुछ लोग उठे और उन्होंने येशु के
विरुद्ध यह झूठी गवाही दी, 58 "हमने इस
व्यक्ति को ऐसा कहते सुना है: 'मैं हाथ का
बनाया हुआ यह मन्दिर ढा दूँगा और तीन दिन
में दूसरा खड़ा कर दूंगा, जो हाथ का बनाया
हुआ नहीं होगा' "। 59किन्तु इसके विषय में
भी उनके बयान मेल नहीं खाये थे।

60तब प्रधान महापुरोहित ने सभा के बीच में
खड़े होकर येशु से पूछा, "ये लोग तुम्हारे
विरुद्ध जो गवाही दे रहे हैं, क्या इसका कोई
उत्तर तुम्हारे पास नहीं है?" 61परन्तु येशु चुप
रहे। उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया।

इसके बाद प्रधान महापुरोहित ने येशु से
पूछा, "क्या तुम परमस्तुत्य के पुत्र मसीह
हो?" 62येशु ने उत्तर दिया "मैं हूँ। और आप
लोग मानव-पुत्र को सर्वशक्तिमान परमेश्वर
की दाहिनी ओर विराजमान और आकाश के
बादलों के साथ आता हुआ देखेंगे।" 63इस पर
प्रधान महापुरोहित ने अपने कुरते फाड़ कर
कहा, "अब हमें गवाहों की जरूरत ही क्या है?
64आप लोगों ने स्वयं ईश-निन्दा सुनी है। आप
लोगों का क्या विचार है?" सब का निर्णय यह
हुआ कि येशु प्राणदण्ड के योग्य हैं।

65तब कुछ लोग उन पर थूकने लगे और
उनकी आँखों पर पट्टी बाँध कर उन्हें घूँसे मारने
लगे और यह कहा, "यदि तू नबी है तो
बोल!" प्रधान महापुरोहित के पहरेदारों ने भी
उन्हें लेकर थप्पड़ मारे।

पतरस का अस्वीकार करना

66पतरस उस समय नीचे आंगन में था।
प्रधान महापुरोहित की एक सेविका वहाँ आई।
67उसने पतरस को आग तापते हुए देखा। उसने
उस पर दृष्टि गड़ा कर कहा, "तुम भी उस
नासरत वाले येशु के साथ थे।" 68किन्तु पतरस
ने अस्वीकार करते हुए कहा, "मैं न तो उसे
जानता हूँ और न ही तुम्हारी बात को मैं
समझा रहा हूं।" इसके बाद पतरस फाटक की
ओर चला गया और मुर्गे ने बाँग दी।

69सेविका उसे देखकर पास खड़े लोगों से
फिर कहने लगी, "यह व्यक्ति उन्हीं लोगों में
से एक है।" 70किन्तु पतरस ने फिर अस्वीकार
किया।

इसके थोड़ी देर बाद वहाँ खड़े हुए लोग
उससे बोले, "निश्चय ही तुम उन्हीं लोगों में
से एक हो, क्योंकि तुम गलील प्रदेश के रहने
वाले हो।" 71इस पर पतरस स्वयं को कोसने
और शपथ खा कर कहने लगा, "तुम जिस
मनुष्य की चर्चा कर रहे हो, मैं उसे जानता भी
नहीं।" 72ठीक उसी समय मुर्गे ने दूसरी
बार बाँग दी और पतरस को याद आया कि
येशु ने उससे कहा था: 'मुर्गे के दो बार बाँग देने
से पहले ही तुम मुझे तीन बार अस्वीकार
करोगे,' और वह फूट-फूट कर* रोने
लगा।

राज्यपाल पिलातुस के सामने

15 सबेरा होते ही महापुरोहितों, धर्मवृद्धों
और शास्त्रियों ने समस्त धर्ममहासभा
के साथ परामर्श किया। इसके बाद उन्होंने येशु
को बाँधा और उन्हें ले जा कर राज्यपाल
पिलातुस को सौंप दिया।

* अथवा, 'दबी आवाज से', 'भाग कर ही' अथवा, 'मुंह ढक कर'

14 : 55-65 मत 26 : 59-68; लू 22 : 63-71 यो 18 : 19-24 **14 : 58** यो 2 : 19; 4 : 21, 23 **14 : 61** मक 15 : 5; यश 53 : 7 **14 :62** दान 7 : 13; भज 110 : 1 **14 : 64** यो 19 : 7 **14 : 66-72** मत 26 : 69-75; लू 22 : 56-62; यो 18 : 25-27 **14 : 72** मक 14 : 30 **15 : 1** मत 27 : 1-2; लू 22 : 66; 23 : 1; यो 18 : 28

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

2पिलातुस ने येशु से पूछा, "क्या तुम
यहूदियों के राजा हो?" येशु ने उत्तर दिया,
"यह तो आप कह रहे हैं।" 3तब महापुरोहित
उन पर बहुत-से अभियोग लगाने लगे।
4पिलातुस ने फिर येशु से पूछा, "देखो, ये तुम
पर कितने अभियोग लगा रहे हैं। क्या इनका
कोई उत्तर तुम्हारे पास नहीं है?" 5फिर भी येशु
ने कुछ उत्तर नहीं दिया। इस पर पिलातुस को
आश्चर्य हुआ।

6पर्व के अवसर पर राज्यपाल लोगों की मांग
के अनुसार एक बन्दी को रिहा किया करता था।
7उस समय बरअब्बा नामक एक व्यक्ति
बन्दीगृह में था। वह उन विद्रोहियों के साथ
गिरफ्तार हुआ था, जिन्होंने राजद्रोह के समय
हत्या की थी। 8जब भीड़ ऊपर आ कर राज्यपाल
से निवेदन करने लगी कि वह जैसा करता आया
है, वैसा ही उनके लिए करे, 9तो पिलातुस ने
उन से कहा, "क्या तुम लोग चाहते हो कि मैं
तुम्हारे लिए यहूदियों के राजा को रिहा करूँ?"
10वह जानता था कि महापुरोहितों ने ईर्ष्या से
येशु को पकड़वाया है। 11किन्तु महापुरोहितों
ने लोगों को भड़काया कि वे मांग करें कि वह
बरअब्बा ही को उनके लिए रिहा करे।
12पिलातुस ने फिर भीड़ से पूछा, "तो तुम क्या
चाहते हो? मैं इस मनुष्य का क्या करूँ, जिसे
तुम यहूदियों का राजा कहते हो?" 13लोग फिर
चिल्लाए, "उसे क्रूस पर चढ़ाओ!" 14पिलातुस
ने कहा, "क्यों? उसने कौन-सा अपराध किया
है?" किन्तु वे और भी जोर से चिल्लाने लगे,
"उसे क्रूस पर चढ़ाओ।" 15तब पिलातुस ने
भीड़ को संतुष्ट करने की इच्छा से बरअब्बा को
मुक्त कर दिया और येशु को कोड़े लगवा कर
क्रूस पर चढ़ाने के लिए सैनिकों के हवाले कर
दिया।

सैनिकों द्वारा उपहास

16इसके बाद सैनिक येशु को भवन के
अन्दर, अर्थात् राजभवन में, ले गए और उन्होंने
वहाँ सारा सैन्य-दल एकत्र कर लिया। 17उन्होंने
येशु को बैंगनी वस्त्र पहनाया और काँटों का
मुकुट गूँथ कर उनके सिर पर लगा दिया। 18तब
वे उनका अभिवादन करने लगे, "यहूदियों के
राजा, प्रणाम!" 19उन्होंने उनके सिर पर सरकण्डे
से मारा, उन पर थूका और उनके सामने घुटने
टेक कर उनकी वन्दना की। 20इस प्रकार येशु
का उपहास करने के बाद सैनिकों ने बैंगनी
वस्त्र उतार लिया और उन्हें उनके निजी कपड़े
पहना दिये। तत्पश्चात् वे येशु को क्रूस पर
चढ़ाने के लिए नगर के बाहर ले गये।

क्रूस पर चढ़ाया जाना

21सिकन्दर और रूफस का पिता, कुरेने देश
का निवासी शिमोन, गाँव से नगर में आ रहा
था। वह उधर से निकला। सैनिकों ने उसे बेगार
में पकड़ा कि वह येशु का क्रूस उठाकर ले
चले।

22वे येशु को गुलगुता नामक स्थान पर लाए,
जिसका अर्थ है: 'खोपड़ी' का स्थान। 23वहाँ
लोग येशु को गन्धरस मिला दाखरस देने लगे,
किन्तु उन्होंने उसे नहीं लिया। 24तब सैनिकों
ने येशु को क्रूस पर चढ़ाया और—किसे क्या
मिले—इसके लिए चिट्ठी डालकर उनके वस्त्र
आपस में बांट लिये।

25जब उन्होंने येशु को क्रूस पर चढ़ाया, उस
समय सबेरे के नौ बजे थे। 26उनके दोषपत्र पर
यह लिखा था—'यहूदियों का राजा'। 27येशु
के साथ ही उन्होंने दो डाकुओं को क्रूस पर
चढ़ाया— एक को उनकी दाहिनी ओर और
दूसरे को उनकी बायीं ओर। 28[इस प्रकार
धर्मग्रन्थ का यह कथन पूरा हो गया: "वह
अपराधियों के साथ गिना गया।"]*

अपमान और उपहास

29उधर से आने-जाने वाले लोग येशु की
निन्दा करते और सिर हिलाते हुए यह कह रहे
थे, "वाह! मन्दिर ढाने वाले और तीन दिनों में
उसे फिर बना देने वाले! 30क्रूस से उतर कर

* कुछ प्रतियों में यह पद नहीं पाया जाता है।

15 : 2-19 मत 27 : 11-30; लू 23 : 2-25; यो 18 : 29-19 : 16 **15 : 5** मक 14 : 61; यश 53 : 7 **15 : 10** यो 11 : 48; 12 : 19; मत 21 : 38 **15 : 21-41** मत 27 : 32-56; लू 23 : 26-49; यो 19 : 16-30 **15 : 21** रोम 16 : 13 **15 : 23** भज 69 : 21 **15 : 24** भज 22 : 18 **15 : 29** भज 22 : 7; 109 : 25 मक 14 : 58

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अपने को बचा।" 31महापुरोहित भी आपस में
और शास्त्रियों के साथ उनका उपहास करते
हुए यह कह रहे थे, "इसने दूसरों को बचाया,
किन्तु यह अपने को नहीं बचा सकता। 32अब
यह मसीह, इस्राएल का राजा क्रूस से उतरे
ताकि हम देखें और विश्वास करें।" जो डाकू
येशु के साथ क्रूस पर चढ़ाये गये थे, वे भी येशु
को भला-बुरा कह रहे थे।

येशु की मृत्यु

33दोपहर होने पर समस्त पृथ्वी पर अंधेरा
छा गया और तीन बजे तक बना रहा। 34दोपहर
तीन बजे येशु ने ऊँचे स्वर से पुकारा, "एलोई!
एलोई! लमा सबकतानी?" इसका अर्थ है:
"हे मेरे परमेश्वर! हे मेरे परमेश्वर! तूने मुझे
क्यों छोड़ दिया?" 35यह सुन कर पास खड़े
लोगों में से कुछ ने कहा, "देखो! यह नबी
एलियाह को पुकार रहा है।" 36उन में से एक
ने दौड़ कर अम्लरस में पनसोख्ता डुबाया, उसे
सरकण्डे में लगाया और यह कहते हुए येशु को
पीने को दिया, "रहने दो! देखें, एलियाह इसे
उतारने आते हैं या नहीं।" 37तब येशु ने ऊँचे
स्वर से पुकार कर प्राण त्याग दिये।

38मन्दिर का परदा ऊपर से नीचे तक फट
कर दो टुकड़े हो गया। 39जो रोमन शतपति येशु
के सामने खड़ा था, वह उन्हें इस प्रकार प्राण
त्यागते देख कर बोल उठा, "निश्चय ही, यह
मनुष्य परमेश्वर का पुत्र था।"

40वहाँ कुछ स्त्रियाँ भी दूर से देख रही थीं।
उन में मरियम मगदलेनी, छोटे याकूब और
योसेस की माता मरियम और सलोमी थीं।
41जब येशु गलील प्रदेश में थे, वे उनके पीछे
हो ली थीं और उनकी सेवा-परिचर्या करती
थीं। वहाँ और भी अन्य स्त्रियाँ थीं, जो येशु के
साथ यरूशलेम आयी थीं।

कबर में रखा जाना

42अब सन्ध्या हो गयी थी। उस दिन
शुक्रवार था, अर्थात् विश्राम-दिवस के पूर्व का
दिन। 43इसलिए अरिमतियाह नगर का यूसुफ़
आया। वह धर्ममहासभा का एक सम्मानित
सदस्य था। वह परमेश्वर के राज्य की प्रतीक्षा
में था। वह साहस करके राजभवन के भीतर
पिलातुस के पास गया और उसने येशु का शरीर
माँगा। 44पिलातुस को आश्चर्य हुआ कि वह
इतने शीघ्र मर गये हैं। उसने शतपति को बुला
कर पूछा कि क्या येशु को मरे कुछ समय हो
गया है। 45शतपति से इसकी सूचना पाकर
पिलातुस ने यूसुफ़ को शव दिला दिया।
46यूसुफ़ ने मलमल का कफ़न ख़रीदा और येशु
को क्रूस से उतारा। उसने उन्हें कफ़न में लपेट
कर चट्टान में खोदी हुई कबर में रख दिया और
कबर के द्वार पर एक पत्थर लुढ़का कर लगा
दिया। 47मरियम मगदलेनी और योसेस की
माता मरियम यह देख रही थीं कि येशु कहाँ रखे
गये हैं।

मृतकोत्थान

16 विश्राम-दिवस के समाप्त होने पर
मरियम मगदलेनी, याकूब की माता
मरियम और सलोमी ने सुगन्धित द्रव्य ख़रीदा,
ताकि वे जा कर येशु के शरीर का विलेपन करें।
2वे सप्ताह के प्रथम दिन बहुत सबेरे, सूर्योदय
होते ही, कबर पर पहुँचीं।

3वे आपस में यह कह रही थीं, "कौन हमारे
लिए कबर के प्रवेश-द्वार पर से पत्थर लुढ़का
कर हटायेगा?" 4किन्तु जब उन्होंने ऊपर दृष्टि
की तो देखा कि वह पत्थर हटा हुआ है! यह
पत्थर बहुत बड़ा था। 5वे कबर के अन्दर गयीं
और यह देख कर आश्चर्य-चकित रह गयीं कि
श्वेत वस्त्र पहने एक नवयुवक दाहिनी ओर
बैठा हुआ है। 6किन्तु उसने उनसे कहा,
"आश्चर्य-चकित मत हो! आप लोग नासरत-
निवासी येशु को ढूँढ़ रही हैं, जो क्रूस पर चढ़ाये
गये थे। वह जी उठे हैं। वह यहाँ नहीं हैं।
देखिए, यही जगह है, जहाँ उन्होंने उनको रखा
था। 7परन्तु जाइए और उनके शिष्यों और

---

15 : 32 मत 16 : 1, 4 **15 : 33** आमो 8 : 9 **15 : 34** भज 22 : 1 **15 : 36** भज 69 : 21 **15 : 40** लू 8 : 2-3
15 : 42-47 मत 27 : 57-61; लू 23 : 50-55; यो 19 : 38-42 **16 : 1-8** मत 28 : 1-8; लू 24 : 1-12;
यो 20 : 1-10 **16 : 7** मक 14 : 28

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पतरस से कहिए कि वह आप लोगों से पहले
गलील प्रदेश जायेंगे। वहाँ आप लोग उनके
दर्शन करेंगे, जैसा कि उन्होंने आप लोगों से
कहा था।'' 8वे कबर से बाहर निकलीं, और
वहां से भाग गयीं; क्योंकि आतंक और अचंभे
ने उन्हें आक्रांत कर दिया था। उन्होंने किसी
से कुछ नहीं कहा; क्योंकि वे भयभीत थीं*...।

शुभ समाचार का एक प्राचीन उपसंहार

मरियम मगदलेनी को दर्शन

[9सप्ताह के प्रथम दिन प्रात:काल जी उठने
पर येशु ने पहले मरियम मगदलेनी को दर्शन
दिया। उसमें से उन्होंने सात भूतों को निकाला
था। 10उसने जा कर उनके अनुयायियों को यह
समाचार सुनाया, जो शोक में डूबे हुए थे और
विलाप कर रहे थे। 11किन्तु जब उन्होंने यह
सुना कि येशु जीवित हैंऔर उसे दिखाई दिये
हैं, तो उन्होंने इस बात पर विश्वास नहीं किया।

दो शिष्यों को दर्शन

[12इसके पश्चात् उनमें से दो शिष्य किसी
गाँव को जा रहे थे। येशु ने उन्हें मार्ग में भिन्न
रूप में दर्शन दिया। 13उन्होंने लौट कर शेष
शिष्यों को यह समाचार सुनाया, किन्तु शिष्यों
को उन दोनों पर भी विश्वास नहीं हुआ।

शिष्यों का प्रेषण

[14इसके बाद येशु ने 'ग्यारह' प्रेरितों को
उनके भोजन करते समय दर्शन दिया और
उनके अविश्वास और मन की कठोरता के
लिए उनकी भर्त्सना की; क्योंकि उन्होंने उन
लोगों पर विश्वास नहीं किया था, जिन्होंने येशु
को उनके जी उठने के बाद देखा था। 15तब येशु
ने उन से कहा, ''संसार के कोने-कोने में जाओ
और प्रत्येक प्राणी को शुभ समाचार सुनाओ।
16जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा ग्रहण
करेगा, वह बचाया जाएगा। जो विश्वास नहीं
करेगा, वह दोषी ठहराया जायेगा। 17विश्वास
करने वालों के साथ ये चिह्न होंगे: वे मेरा नाम
ले कर भूतों को निकालेंगे, वे नई-नई भाषा
बोलेंगे 18और साँपों को हाथ से उठा लेंगे। यदि
वे विष पियेंगे, तो उस से उन्हें कोई हानि नहीं
होगी। वे रोगियों पर हाथ रखेंगे और रोगी
स्वस्थ हो जायेंगे।''

स्वर्गारोहण

[19प्रभु येशु अपने शिष्यों से बातें करने के
बाद स्वर्ग में उठा लिये गये और परमेश्वर की
दाहिनी ओर विराजमान हो गये।

20तब शिष्य बाहर जाकर सब जगह संदेश
सुनाने लगे। प्रभु येशु उनके साथ कार्य करते रहे
और साथ-साथ घटित होने वाले चिह्नों द्वारा
शुभ समाचार को प्रमाणित करते रहे।]

एक और प्राचीन उपसंहार

[(9स्त्रियाँ पतरस तथा उसके साथियों के
पास गई और जो बातें उनसे कही गई थीं उनका
संक्षिप्त विवरण उन्हें दिया। 10इसके पश्चात्
स्वयं येशु ने शाश्वत उद्धार का पवित्र तथा अमर
शुभ संदेश अपने शिष्यों के द्वारा पूर्व से पश्चिम
तक भेजा।)]

---

* कुछ अति प्राचीन प्रतियों में 'सन्त मारकुस के अनुसार शुभ समाचार' का अन्त यहीं होता है।

16 : 9 लू 8 : 2; यो 20 : 11-18 **16 : 12** लू 24 : 13-35 **16 : 14-18** लू 24 : 36-49; यो 20 : 19-23 **16 : 14** 1 कुर 15 : 5 **16 :15** मत 28 : 18-20 **16 : 16** प्रे 2 : 38 **16 : 17** प्रे 16 : 18; 2 : 4, 11; 10 : 46 **16 : 18** लू 10 : 19; प्रे 28 : 3-6; याक 5 : 14-15 **16 : 19** लू 24 : 50-53; प्रे 1 : 4-11; 1 तिम 3 : 16; भज 110 : 1; प्रे 7 : 55; 2 रा 2 : 11 **16 : 20** इब्र 2 : 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सन्त लूकस [लूक] के अनुसार शुभ समाचार

पुस्तक परिचय

"संत लूकस [लूक] के अनुसार शुभ समाचार" प्रभु येशु मसीह को दोनों रूपों में प्रस्तुत करता है: इस्राएली अथवा यहूदी कौम का उद्धारकर्त्ता "मसीह", जिसको भेजने का वचन स्वयं परमेश्वर ने दिया था, तथा समस्त मावन जाति का मुक्तिदाता "येशु"। संत लूकस ने अपने शुभ समाचार में यह तथ्य लिपिबद्ध किया है कि परमेश्वर के आत्मा ने गरीबों, दरिद्रों, दलितों को शुभ संदेश सुनाने के लिए प्रभु येशु को मनोनीत किया था। प्रस्तुत शुभ समाचार में बार-बार तथा स्थान-स्थान पर लोगों की सब प्रकार की आवश्यकताओं के प्रति प्रभु येशु की चिन्ता पर प्रकाश डाला गया है। इसके अतिरिक्त, प्रस्तुत शुभ समाचार में आनन्द, हर्ष-उल्लास की मंगल भावना पर ध्यान दिया गया है; विशेषकर शुभ समाचार के आरंभिक और अंतिम अध्यायों में। आरंभिक अध्यायों में प्रभु येशु के आगमन का शुभ संदेश अत्यधिक आनन्द से सुनाया जाता है। इसी प्रकार उनके स्वर्गारोहण का वर्णन भी हर्ष-उल्लास की भावना से परिपूर्ण है।

लेखक ने अपनी सम्पूर्ण रचना "थिओफिलुस" नामक किसी नव-दीक्षित शिष्य को समर्पित की है। यह **"शुभ समाचार"** प्रथम खण्ड के रूप में प्रभु येशु के कार्यों एवं उनकी शिक्षाओं का क्रमबद्ध वर्णन है। सन्त लूकस ने मसीही विश्वास के विकास, प्रचार-प्रसार का ऐतिहासिक विवरण अपनी अन्य पुस्तक **"प्रेरितों के कार्य-कलाप"** में लिखा है।

संत लूकस ने अपने शुभ समाचार में प्रभु येशु के जीवन से सम्बन्धित कुछ ऐसी घटनाओं का उल्लेख किया है जो अन्य तीन शुभ समाचारों में नहीं पायी जाती हैं: जैसे स्वर्गदूतों का स्तुतिगान, शिशु येशु के दर्शन के लिए चरवाहों का बेतलेहम जाना, किशोर येशु का यरूशलेम के मन्दिर में पाया जाना, दयालु सामरी और गुमराह पुत्र के दृष्टान्त। यदि मत्ती एवं मारकुस द्वारा रचित शुभ समाचारों से तुलना की जाए, तो लूकस के अनुसार इस शुभ समाचार में वर्णित घटनाक्रम एक-समान लगता है। फिर भी संत लूकस ने अपनी विशिष्ट सामग्री को प्राय: अपनी रचना के मध्य में, प्रभु येशु की यरूशलेम-यात्रा के प्रसंग में (9:51-18:14) संकलित किया। संत लूकस के शुभ समाचार में आरम्भ से अन्त तक प्रार्थना, पवित्र आत्मा, मसीह के सेवा-कार्य में महिलाओं के योगदान और परमेश्वर द्वारा हमारे पापों की क्षमा पर अत्यधिक जोर दिया गया है।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

प्राक्कथन	1 : 1-4
योहन बपतिस्मादाता तथा प्रभु येशु का जन्म तथा बचपन	1 : 5-2 : 52
योहन बपतिस्मादाता का सेवा-कार्य	3 : 1 - 20
प्रभु येशु का बपतिस्मा तथा परीक्षा	3 : 21 - 4 : 13
प्रभु येशु का गलील प्रदेश में सेवा-कार्य	4 : 14 - 9 : 50
गलील से यहूदा प्रदेश के यरूशलेम नगर की ओर प्रस्थान	9 : 51- 19 : 27
प्रभु येशु के जीवन का अंतिम सप्ताह	19 : 28 - 23 : 56
प्रभु येशु का पुनरुत्थान, दर्शन तथा स्वर्गारोहण	24 : 1-53

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रस्तावना

1 1-2जो आरम्भ से प्रत्यक्षदर्शी थे और शुभ
संदेश के सेवक बने, उन से हमें जो परम्परा
मिली, उसके आधार पर बहुतों ने हमारे बीच
हुई घटनाओं का वर्णन प्रस्तुत करने का प्रयास
किया है। 3मैंने भी आरम्भ से सब बातों का
सावधानी से अध्ययन किया है। इसलिए
श्रीमान् थिओफिलुस, मुझे आपके लिए उनका
क्रमबद्ध विवरण लिखना उचित जान पड़ा,
4जिससे आप यह जान लें कि जिन बातों की
शिक्षा आप को मिली है, वे प्रामाणिक हैं।

योहन बपतिस्मादाता के जन्म का सन्देश

5यहूदा प्रदेश के राजा हेरोदेस के समय में
अबिय्याह के दल का जकर्याह नामक एक
पुरोहित था। उसकी पत्नी हारून वंश की थी।
उसका नाम एलीशेबा था। 6वे दोनों परमेश्वर
की दृष्टि में धार्मिक थे। वे प्रभु की सब आज्ञाओं
और नियमों का निर्दोष अनुसरण करते थे।
7उनके कोई सन्तान नहीं थी, क्योंकि एलीशेबा
बाँझ थी और दोनों बूढ़े हो चले थे।
8जब जकर्याह नियुक्ति के क्रम से अपने
दल के साथ परमेश्वर के सामने पुरोहित का
कार्य कर रहा था, 9तब पुरोहितों की प्रथा के
अनुसार उसके नाम चिट्ठी निकली कि वह प्रभु
के मन्दिर में प्रवेश कर धूप जलाये। 10धूप जलाने
के समय सब लोग बाहर प्रार्थना कर रहे थे।
11उस समय प्रभु का दूत उसे धूप की वेदी की
दायीं ओर दिखाई दिया। 12जकर्याह स्वर्गदूत
को देख कर घबरा गया और भयभीत हो उठा;
13परन्तु स्वर्गदूत ने उससे कहा, "जकर्याह!
डरिए नहीं। आपकी प्रार्थना सुनी गयी है।
आपकी पत्नी एलीशेबा को एक पुत्र उत्पन्न
होगा। आप उसका नाम 'योहन'* रखना 14आप
आनन्दित और उल्लसित होंगे और उसके जन्म
पर बहुत लोग आनन्द मनायेंगे, 15क्योंकि वह
प्रभु की दृष्टि में महान् होगा। वह दाखरस और
मदिरा नहीं पियेगा, वरन् अपनी माता के गर्भ
से ही पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होगा। 16वह
इस्राएल के बहुत लोगों को उनके प्रभु परमेश्वर
की ओर लौटा लाएगा। 17वह नबी एलियाह के
सदृश आत्मा और सामर्थ्य से सम्पन्न होकर प्रभु
का अग्रदूत बनेगा, जिससे वह माता-पिता और
उनकी संतान में मेल कराए और आज्ञा-
उल्लंघन करने वालों को धार्मिकों की सद्बुद्धि
प्रदान करे, और प्रभु के लिए एक सुयोग्य प्रजा
तैयार करे।"
18जकर्याह ने स्वर्गदूत से कहा, "मैं यह
कैसे जानूँ? क्योंकि मैं तो बूढ़ा हूँ और मेरी पत्नी
भी बूढ़ी हो चली है।" 19स्वर्गदूत ने उसे उत्तर
दिया, "मैं गब्रिएल स्वर्गदूत हूँ। परमेश्वर के
सामने उपस्थित रहता हूँ। मैं आप से बातें करने
और आप को यह शुभ समाचार सुनाने भेजा
गया हूँ। 20देखिए, जिस दिन तक ये बातें पूरी
नहीं होंगी, उस दिन तक आप गूंगे रहेंगे और
बोल नहीं सकेंगे; क्योंकि आपने मेरी बातों पर,
जो अपने समय पर पूरी होंगी, विश्वास नहीं
किया।"
21जनसमूह जकर्याह की बाट जोह रहा था
और आश्चर्य कर रहा था कि वह मन्दिर में
इतनी देर क्यों लगा रहा है। 22बाहर निकलने
पर जब वह उन से बोल नहीं सका, तो वे समझ
गये कि उस ने मन्दिर में कोई दर्शन देखा है।
वह उनसे हाथ से इशारा करता रहा, और मुंह
से बोल न सका।
23अपनी धर्म-सेवा के दिन पूरे हो जाने पर
वह अपने घर चला गया। 24कुछ समय बाद
उसकी पत्नी एलीशेबा गर्भवती हुई। उसने पाँच
महीने तक अपने को यह कहते हुए छिपाये
रखा, 25"प्रभु ने समाज में मेरा कलंक दूर करने
के लिए अब मुझ पर कृपा-दृष्टि की है।"

प्रभु येशु के जन्म का सन्देश

26छठे महीने स्वर्गदूत गब्रिएल परमेश्वर की
ओर से, गलील प्रदेश के नासरत नामक नगर
में एक कुँआरी के पास भेजा गया, 27जिसकी

* अर्थात् 'प्रभु कृपालु है।'

1 : 2 यो 15 : 27 **1 : 3** प्रे 1 : 1 **1 : 5** 1 इति 25 : 10 **1 : 9** नि 30 : 7 **1 : 15** गण 6 : 3; शास 13 : 4-5; 1 शम 1 : 11 **1 : 17** मत 17 : 11-13; मला 3 : 1; 4 : 5-6; प्रव 48.10-11 **1 : 18** उत 18 : 11 **1 : 19** दान 8 : 16; 9 : 21; इब्र 1 : 14; तोब 12 : 15 **1 : 20** लू 1 : 45 **1 : 25** उत 30 : 23 **1 : 27** लू 2 : 5; मत 1 : 16, 18

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मंगनी राजा दाऊद के वंशज यूसुफ़ नामक पुरुष
से हुई थी। उस कुँआरी का नाम मरियम था।
28स्वर्गदूत ने उसके पास आ कर उससे कहा,
"प्रणाम,* प्रभु की कृपापात्री! प्रभु आपके साथ
है।" 29वह इस कथन से बहुत घबरा गयी और
मन में सोचने लगी कि इस प्रणाम का अर्थ क्या
है। 30तब स्वर्गदूत ने उससे कहा, "मरियम!
डरिए नहीं। परमेश्वर ने आप पर कृपा की है।
31देखिए, आप गर्भवती होंगी, और एक पुत्र
को जन्म देंगी और उसका नाम 'येशु' **
रखेंगी। 32वह महान होगा और सर्वोच्च परमेश्वर
का पुत्र कहलाएगा। प्रभु परमेश्वर उसे उसके
पूर्वज दाऊद का सिंहासन प्रदान करेगा। 33वह
याकूब के वंश पर सदा-सर्वदा राज्य करेगा
और उसके राज्य का अन्त कभी नहीं होगा।"
34मरियम ने स्वर्गदूत से कहा, "यह कैसे
सम्भव होगा? क्योंकि मैं पुरुष को नहीं
जानती।" 35स्वर्गदूत ने उत्तर दिया, "पवित्र
आत्मा आप पर उतरेगा और सर्वोच्च परमेश्वर
का सामर्थ्य आप पर छाया करेगा। इसलिए जो
आप से उत्पन्न होगा, वह पवित्र होगा और
परमेश्वर का पुत्र कहलायेगा। 36देखिए, बुढ़ापे
में आपकी कुटुम्बिनी एलीशेबा को भी पुत्र होने
वाला है। अब उसका, जो बाँझ कहलाती थी,
छठा महीना हो रहा है; 37क्योंकि परमेश्वर के
लिए कुछ भी असम्भव नहीं है।"
38मरियम ने कहा, "देखिए, मैं प्रभु की
दासी हूँ। आपके कथन के अनुसार मेरे लिए
हो।" तब स्वर्गदूत उसके पास से चला गया।

मरियम और एलीशेबा का मिलन

39उन दिनों मरियम उठी और पहाड़ी क्षेत्र
में यहूदा प्रदेश के एक नगर को शीघ्रता से गई।
40उसने जकर्याह के घर में प्रवेश कर एलीशेबा
का अभिवादन किया। 41ज्यों ही एलीशेबा ने
मरियम का अभिवादन सुना, बच्चा उसके गर्भ
में उछल पड़ा और एलीशेबा पवित्र आत्मा से
परिपूर्ण हो गयी 42और ऊँचे स्वर से बोल उठी,
"आप नारियों में धन्य हैं और धन्य है आपके
गर्भ का फल! 43मुझे यह सौभाग्य कैसे प्राप्त
हुआ कि मेरे प्रभु की माता मेरे पास आयीं?
44क्योंकि देखिए, ज्यों ही आपका प्रणाम मेरे
कानों में पड़ा, बच्चा मेरे गर्भ में आनन्द के मारे
उछल पड़ा। 45धन्य हैं आप, जिन्होंने यह
विश्वास किया कि प्रभु ने आप से जो कहा, वह
पूरा होगा!"

मरियम का भजन

46इस पर मरियम ने यह कहा:
"मेरी आत्मा प्रभु का गुणगान करती है;
47मेरा प्राण अपने मुक्तिदाता परमेश्वर में
आनन्द मनाता है;
48क्योंकि उसने अपनी दासी की दीनता पर
कृपा-दृष्टि की है।
अब से सब पीढ़ियाँ मुझे धन्य कहेंगी;
49क्योंकि सर्वशक्तिमान ने मेरे लिए महान्
कार्य किये हैं।
पवित्र है उसका नाम!
50उसकी करुणा उसके भक्तों पर पीढ़ी-दर-
पीढ़ी बनी रहती है।

51"प्रभु ने अपना बाहुबल प्रदर्शित किया है,
उसने अक्खड़ घमण्डियों को तितर-बितर
कर दिया।
52उसने शक्तिशालियों को उनके सिंहासनों से
उतार दिया
और दीनों को महान् बनाया।
53उसने भूखों को अच्छी वस्तुओं से तृप्त किया
और धनवानों को खाली हाथ लौटा दिया।
54उसने अपनी करुणा को स्मरण कर, अपने

* अथवा 'आनन्द मनाइए'। ** अर्थात् 'प्रभु उद्धारकर्ता है'।

1 : 28 शास 5 : 24; सप 3 : 14 **1 : 31** शास 13 : 3; यश 7 : 14; मत 1 : 21-23 **1 : 32** यश 9 : 7; 2 शम 7 : 12-13, 16 **1 : 33** मी 4 : 7; दान 7 : 14 **1 : 35** नि 13 : 12; मत 1 : 18, 20 **1 : 37** उत 18 : 14 **1 : 41** लू 1 : 15; उत 25 : 22; 2 शम 6 : 14 **1 : 42** व्य 28 : 4; शास 5 : 24; यहूदी 13 : 18 **1 : 45** लू 1: 20; 11 : 28 **1 : 46** 1 शम 2 : 1-10 **1 : 48** लू 1 : 25; 1 शम 1 : 11; भज 113 : 5-6; लू 11 : 27; प्रव 11 : 12 **1 : 49** भज 111 : 9 **1 : 50** भज 103 : 13, 17; **1 : 51** भज 89 : 10; 2 शम 22 : 28 **1 : 52** भज 147 : 6; अय्य 12: 19, 5 : 11 1शम 2 : 7 प्रव 10 : 14 **1 : 53** 1शम 2 : 5; भज 34 : 10; 107 : 9 **1 : 54** यश 41 : 8; भज 98 : 3

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सेवक इस्राएल को संभाला;
55जैसी प्रतिज्ञा उसने हमारे पूर्वजों से की थी
कि अब्राहम तथा उनकी सन्तान के प्रति
उसकी करुणा सदा बनी रहेगी।''

56लगभग तीन महीने एलीशेबा के साथ रह
कर मरियम अपने घर लौट गयी।

योहन बपतिस्मादाता का जन्म

57एलीशेबा के प्रसव का समय पूरा हुआ
और उसने एक पुत्र को जन्म दिया। 58जब उसके
पड़ोसियों और सम्बन्धियों ने सुना कि प्रभु ने
उस पर इतनी बड़ी दया की है, तब उन्होंने
उसके साथ आनन्द मनाया।

59आठवें दिन वे बालक का खतना करने
आये। वे उसका नाम उसके पिता के नाम पर
जकर्याह रखना चाहते थे, 60परन्तु उसकी माँ
ने कहा, ''नहीं, इसका नाम 'योहन' रखा
जायेगा।' 61उन्होंने उससे कहा, ''तुम्हारे कुटुम्ब
में यह नाम तो किसी का भी नहीं है।'' 62तब
उन्होंने उसके पिता से इशारे से पूछा कि वह
उसका क्या नाम रखना चाहता है। 63उसने पाटी
मंगा कर लिखा, ''इसका नाम योहन है।'' सब
अचम्भे में पड़ गये। 64उसी क्षण जकर्याह के
मुख और जीभ के बन्धन खुल गये और वह
परमेश्वर की स्तुति करते हुए बोलने लगा।
65सब पड़ोसियों पर प्रभु का भय छा गया। और
यहूदा प्रदेश के पहाड़ी क्षेत्र में ये सब बातें चारों
ओर फैल गयीं। 66सब सुनने वालों ने उन पर
मन-ही-मन विचार कर कहा, ''पता नहीं, यह
बालक क्या बनेगा?'' क्योंकि सचमुच बालक
पर प्रभु का हाथ था।

जकर्याह का भजन

67योहन का पिता जकर्याह पवित्र आत्मा से
परिपूर्ण हो गया और उसने यह कहते हुए
नबूवत की:

68''धन्य है प्रभु, इस्राएल का परमेश्वर!
उसने अपनी प्रजा की सुध ली है
और उसका उद्धार किया है।
69उसने अपने सेवक दाऊद के वंश में हमारे
लिए एक शक्तिशाली मुक्तिदाता* उत्पन्न
किया है।
70वह अपने पवित्र नबियों के मुख से प्राचीन
काल से यह कहता आया है
71कि वह शत्रुओं और सब बैरियों के हाथ से
हमें छुड़ायेगा
72और अपने पवित्र विधान** को स्मरण कर
हमारे पूर्वजों पर दया करेगा।
73उसने शपथ खा कर हमारे पिता अब्राहम से
कहा था
74कि वह हमारे शत्रुओं के हाथ से हमें मुक्त
करेगा,
75जिससे हम निर्भयता, पवित्रता और धार्मिकता
से
जीवन भर उसके सम्मुख उसकी सेवा कर
सकें।
76''हे बालक! तू सर्वोच्च परमेश्वर का नबी
कहलायेगा;
तू प्रभु का अग्रदूत बनेगा
कि तू उसका मार्ग तैयार करे
77और उसकी प्रजा को पाप-क्षमा द्वारा मुक्ति
का ज्ञान प्रदान करे।
78हमारे परमेश्वर की इस प्रेमपूर्ण दया से
हमें स्वर्ग से प्रकाश प्राप्त होगा,
79जिससे वह अन्धकार और मृत्यु की छाया में
बैठने वालों को ज्योति प्रदान करे
और हमारे चरणों को शान्ति-पथ पर अग्रसर
करे।''

80बालक योहन बढ़ता गया और उसका
आत्मिक बल विकसित होता गया। वह इस्राएल

* अथवा, 'उद्धार का सींग' ** अथवा 'वाचा'

1 : 55 मी 7 : 20; उत 17 : 7; 18 : 18; 22 : 17 **1 : 59** उत 17 : 12 **1 : 60** लू 1 : 13 **1 : 68** लू 7 :16; भज 41 : 13; 72 : 18 **1 : 69** 1 शम 2 : 10; भज 18 : 2; 132 : 17 **1 : 71** भज 106 : 10 **1 : 72** भज 105 : 8; 106 : 45; उत 17 : 7; लेव 26 : 42 **1 : 73** उत 22 : 16-17; मी 7 : 20 **1 : 75** तीत 2 : 12 **1 : 76** मल 3 : 1; मत 3 : 3; मक 1 : 2 **1 : 77** यिर 31 : 34 **1 : 78** गण 24 : 17; यश 60 : 1-2; मल 4 : 2 **1 : 79** मत 4 : 16; यश 9 : 2; 58 : 8 **1 : 80** मत 3 : 1, 2 : 4 मी 5 : 2-4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

के सामने प्रकट होने के दिन तक निर्जन प्रदेश
में रहा।

प्रभु येशु का जन्म

2 उन दिनों रोमन सम्राट औगुस्तुस ने अपने
समस्त साम्राज्य की जनगणना की राजाज्ञा
निकाली। 2यह पहली जनगणना थी और उस
समय क्विरिनियुस सीरिया देश का राज्यपाल
था। 3सब लोग नाम लिखवाने के लिए अपने-
अपने नगर जाने लगे। 4यूसुफ़ दाऊद के घराने
और वंश का था; इसलिए वह गलील प्रदेश के
नासरत नगर से यहूदा प्रदेश में दाऊद के नगर
बेतलहेम को गया, 5जिससे वह अपनी गर्भवती
पत्नी मरियम के साथ नाम लिखवाये। 6जब वे
वहीं थे तब मरियम के गर्भ के दिन पूरे हो गये;
7और उसने अपने पहिलौठे पुत्र* को जन्म दिया
और उसे कपड़ों में लपेट कर चरनी** में लिटा
दिया; क्योंकि उनके लिए सराय+ में जगह नहीं
थी।

चरवाहों को स्वर्गदूत का सन्देश

8उस क्षेत्र में चरवाहे मैदानों में डेरा डाले हुये
थे और वे रात को अपने झुण्ड पर पहरा दे रहे
थे कि 9प्रभु का एक दूत उनके पास आ कर
खड़ाहोगया। प्रभु का तेज उनके चारोंओर चमक
उठा और वे बहुत डर गये। 10स्वर्गदूत ने उनसे
कहा, "मत डरो! देखो, मैं तुम्हें बड़े आनन्द का
शुभ समाचार सुना रहा हूँ जो सब लोगों के लिए
है। 11आज दाऊद के नगर में तुम्हारे मुक्तिदाता
ने जन्म लिया है— यही प्रभु मसीह हैं। 12यह
तुम्हारे लिए चिह्न होगा : तुम एक शिशु को
कपड़ों में लपेटा और चरनी में लिटाया हुआ
पाओगे।" 13एकाएक उस स्वर्गदूत के साथ
स्वर्गीय सेना का विशाल समूह दिखाई दिया,
जोयहकहते हुए परमेश्वरकी स्तुति कररहा था,
14"सर्वोच्च स्वर्ग में परमेश्वर की महिमा हो
और पृथ्वी पर उन मनुष्यों को शान्ति मिले,
जिनसे वह प्रसन्न है।"++

चरवाहों की भेंट

15जब स्वर्गदूत उन से विदा हो कर स्वर्ग
चले गये, तब चरवाहों ने एक-दूसरे से यह
कहा, "चलो, हम अभी बेतलेहम जा कर यह
घटना देखें, जिसे प्रभु ने हम पर प्रकट किया
है।" 16वे शीघ्र ही चल पड़े और उन्होंने
मरियम, यूसुफ तथा चरनी में लेटे हुए नवजात
शिशु को पाया। 17उसे देखने के बाद उन्होंने
बताया कि इस बालक के विषय में उन से क्या-
क्या कहा गया है। 18सब सुनने वाले लोग
चरवाहों की बातों पर चकित हो गए। 19पर
मरियम ने इन सब बातों को अपने हृदय में
संजोए रखा और वह इन पर विचार करती रही।
20जैसा चरवाहों से कहा गया था, वैसा ही
उन्होंने सब कुछ देखा और सुना; इसलिए वे
परमेश्वर का गुणगान और स्तुति करते हुए लौट
गये।

खतना

21आठ दिन के बाद जब बालक के खतने
का समय आया, तब उसका नाम "येशु" रखा
गया। स्वर्गदूत ने गर्भाधान के पहले ही यही
नाम दिया था।

मन्दिर में येशु का अर्पण किया जाना

22जब मूसा की व्यवस्था के अनुसार उनके
शुद्धिकरण का दिन आया, तब मरियम और
यूसुफ़ बालक को यरूशलेम नगर ले गये कि
उसे प्रभु को अर्पित करें। 23जैसा कि प्रभु की
व्यवस्था में लिखा है: "हर पहिलौठा पुत्र प्रभु
के लिए पवित्र माना जाये" 24और इसलिए भी
कि वे प्रभु की व्यवस्था की आज्ञा के अनुसार
पण्डुकों का एक जोड़ा या कपोत के दो बच्चे
बलिदान में चढ़ायें।

शिमोन का गीत

25उस समय यरूशलेम में शिमोन नामक

---

* पहिलौठा: यहूदी समाज में पहिलौठे पुत्र के विशेष अधिकार होते थे। इसलिए एकलौता पुत्र भी पहिलौठा कहलाता था। ** अथवा, 'पशुओं को चारा देने की नाँद' + अथवा, 'अतिथिशाला' ++ पाठान्तर, "और पृथ्वी पर शान्ति और मनुष्यों में सद्भावना हो!"

2 : 5 लू 1 : 27 **2 : 7** मत 1 : 25 **2 : 9** तोब 5 : 4 **2 : 12** यश 1 : 3 **2 : 13** दान 7 : 10 **2 : 14** लू 19 : 38; यश 57 : 19; इफ 2 : 14, 17 **2 : 17** लू 2 : 10-12 **2 : 19** लू 2 : 51 **2 : 21** लू 1 : 31, 59; लेव 12 : 3 **2 : 22** लेव 12 : 1-8 **2 : 23** नि 13 : 2,12, 15 **2: 24** लेव 5 : 11; 12 : 8 **2 : 25** यश 40 : 1; 49 : 13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

एक धर्मी तथा भक्त मनुष्य रहता था। वह
इस्राएल की सान्त्वना की प्रतीक्षा में था। पवित्र
आत्मा उस पर था 26और उसे पवित्र आत्मा से
यह प्रकाशन मिला था कि, जब तक वह प्रभु
के मसीह के दर्शन न कर लेगा, तब तक उसकी
मृत्यु न होगी। 27वह पवित्र आत्मा की प्रेरणा
से मन्दिर में आया। जब माता-पिता बालक
येशु के लिए व्यवस्था की विधियाँ पूरी करने
उसे भीतर लाये, 28तब शिमोन ने बालक को
अपनी गोद में लिया और परमेश्वर की स्तुति
करते हुए कहा,

29"हे स्वामी, अब तू अपने वचन के अनुसार
अपने सेवक को शान्ति के साथ विदा कर;
30क्योंकि मेरी आँखों ने उस मुक्ति को देख
लिया,
31जिसे तूने सब लोगों के सम्मुख प्रस्तुत किया
है।
32यह अन्य-जातियों को प्रकाशन
और तेरी प्रजा इस्राएल को गौरव देने वाली
ज्योति है।"

33बालक के विषय में ये बातें सुन कर उसके
माता-पिता अचम्भे में पड़ गये। 34शिमोन ने
उन्हें आशीर्वाद दिया और बालक की माता
मरियम से यह कहा, "देखिए, यह बालक एक
ऐसा चिह्न है जिसका लोग विरोध करेंगे। इस
के कारण इस्राएल में बहुतों का पतन और
उत्थान होगा 35और एक तलवार आपके हृदय
को आर-पार बेध देगी। इस प्रकार बहुत लोगों
के मनोभाव प्रकट हो जाएंगे।"

नबिया हन्नाह की साक्षी

36हन्नाह नाम एक नबिया थी जो आशेर-
वंशी फ़नूएल की पुत्री थी। वह बहुत बूढ़ी थी।
वह विवाह के बाद केवल सात वर्ष अपने पति
के साथ रही 37और फिर विधवा हो गयी थी।
अब वह चौरासी वर्ष की थी। वह मन्दिर से
बाहर नहीं जाती थी और उपवास तथा प्रार्थना
करते हुए दिन-रात परमेश्वर की सेवा में लगी
रहती थी। 38वह भी उसी समय आ कर
परमेश्वर को धन्यवाद देने लगी; और जो लोग
यरूशलेम की मुक्ति की प्रतीक्षा में थे, वह उन
सब को उस बालक के विषय में बताने लगी।

नासरत नगर में येशु का बचपन

39 प्रभु की व्यवस्था के अनुसार सब कुछ
पूरा कर लेने के बाद वे गलील प्रदेश में अपने
नगर नासरत को लौट गये।

40बालक येशु बढ़ता गया। वह सबल और
बुद्धि से परिपूर्ण होता गया। उस पर परमेश्वर
का अनुग्रह बना रहा।

मन्दिर में किशोर येशु

41येशु के माता-पिता प्रति वर्ष पास्का
(फसह) का पर्व मनाने के लिए यरूशलेम
नगर जाया करते थे। 42जब बालक बारह वर्ष
का था, तब वे प्रथा के अनुसार पर्व मनाने के
लिए तीर्थनगर यरूशलेम* गये। 43पर्व के दिन
समाप्त हुए तो वे लौटे; परन्तु किशोर येशु
यरूशलेम में ही रह गया। उसके माता-पिता
यह नहीं जानते थे। 44वे यह समझ रहे थे कि
वह यात्रीदल के साथ है। इसलिए वे एक दिन
की यात्रा पूरी करने के बाद उसे अपने
कुटुम्बियों और परिचितों के बीच ढूँढ़ने लगे।
45जब उन्होंने उसे नहीं पाया तब वे उसे ढूँढ़ते-
ढूँढ़ते यरूशलेम लौटे। 46तीन दिनों के बाद
उन्होंने येशु को मन्दिर में धर्मगुरुओं के बीच
बैठे, उनकी बातें सुनते और उनसे प्रश्न पूछते
हुए पाया। 47सभी सुनने वाले उसकी बुद्धि और
उसके उत्तरों पर चकित थे। 48उसके माता-
पिता उसे देख कर अचम्भे में पड़ गये। उसकी
माता ने उससे कहा, "पुत्र! तुमने हमारे साथ
ऐसा क्यों किया? देखो, तुम्हारे पिता और मैं
चिंतित थे, और तुम को ढूँढ़ रहे थे" 49उसने
अपने माता-पिता से कहा, "आप मुझे क्यों ढूँढ़
रहे थे? क्या आप यह नहीं जानते थे कि मैं
निश्चय ही अपने पिता के घर में होऊँगा?"+
50परन्तु येशु का यह कथन उनकी समझ में नहीं

* शब्दश: "चढ़ते हुए"। + अथवा, 'मुझे अपने पिता का कार्य अवश्य करना चाहिए?"

2 : 29 उत 46 : 30 **2 : 30** यश 40 : 5; 52 : 10 **2 : 32** यश 42 : 6; 49 : 6 **2 : 34** यश 8 : 14; मत 21 : 42; 1 कुर 1 : 23; 1 पत 2 : 8 **2 : 35** यहेज 14 : 17 **2 : 37** 1 तिम 5 : 5 यहूदी 8 : 4-5 **2 : 38** यश 52 : 9 **2 : 40** लू 1 : 80; 2 : 52; 1 शम 2 : 26 **2 : 41** नि 23 : 14-17 **2 : 43** नि 12 : 18 **2 : 49** यो 2 : 16

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आया।
51येशु उनके साथ तीर्थनगर यरूशलेम से*
नासरत नगर गया और उनके अधीन रहा।
उसकी माता ने इन सब बातों को अपने हृदय
में संजोए रखा। 52येशु बुद्धि में, डील-डौल†
में और परमेश्वर तथा मनुष्यों के अनुग्रह में
बढ़ता गया।

अग्रदूत योहन बपतिस्मादाता

3 सम्राट तिबेरियुस के शासनकाल का पन्द्रहवां
वर्ष था। पोंतियुस पिलातुस यहूदा प्रदेश का
राज्यपाल था। हेरोदेस गलील प्रदेश का शासक**,
उसका भाई फिलिप इतूरैया और त्रखोनीतिस
प्रदेशों का शासक तथा लुसानियस अबिलेने
प्रदेश का शासक था। 2हन्ना और काइफा
महापुरोहित थे। उन्हीं दिनों परमेश्वर का वचन
निर्जन प्रदेश में जकर्याह के पुत्र योहन के पास
पहुँचा। 3वह यर्दन नदी के आस-पास के
समस्त क्षेत्र में घूम-घूम कर पाप-क्षमा के लिए
पश्चात्ताप के बपतिस्मा का उपदेश देने लगे,
4जैसा कि नबी यशायाह के संदेशों की पुस्तक
में लिखा है:

"निर्जन प्रदेश में पुकारने वाले की आवाज:
प्रभु का मार्ग तैयार करो;
उसके पथ सीधे कर दो।
5हर एक घाटी भर दी जायेगी,
हर एक पहाड़ और पहाड़ी
नीची की जायेगी,
टेढ़े रास्ते सीधे और ऊबड़-खाबड़ मार्ग
समतल किये जायेंगे;
6और सब प्राणी परमेश्वर के उद्धार के दर्शन
करेंगे।"

7जो लोग योहन से बपतिस्मा लेने उनके
पास आते थे, वह उनसे कहते थे, "साँप के
बच्चो! किसने तुम लोगों को परमेश्वर के आने
वाले कोप से भागने के लिए सचेत कर दिया?
8पश्चात्ताप के उचित फल उत्पन्न करो और
अपने मन में यह न कहो कि हम अब्राहम की
सन्तान हैं।' मैं तुम से कहता हूँ, परमेश्वर इन
पत्थरों से अब्राहम के लिए सन्तान उत्पन्न कर
सकता है। 9अब पेड़ों की जड़ पर कुल्हाड़ा भी
लग चुका है। जो पेड़ अच्छा फल नहीं देता,
वह काटा और आग में झोंक दिया जायेगा।"

10जनसमूह ने योहन से पूछा, "तो हमें क्या
करना चाहिए?" 11उन्होंने उत्तर दिया, "जिसके
पास दो कुरते हों, वह एक कुरता उसे दे दे,
जिसके पास नहीं है और जिसके पास भोजन
है, वह भी ऐसा ही करे"।

12कुछ चुंगी-अधिकारी भी बपतिस्मा लेने
आए। उन्होंने योहन से पूछा, "गुरुवर! हमें
क्या करना चाहिए?" 13योहन ने उनसे कहा,
"जितना कर तुम्हारे लिए निश्चित है, उस से
अधिक मत वसूलो।" 14सिपाहियों ने भी उन
से पूछा, "और हम? हमें क्या करना चाहिए?"
वह उनसे बोले, "किसी को डरा-धमका कर
अथवा उस पर झूठा दोष लगा कर उससे
रुपया-पैसा मत वसूलो और अपने वेतन से
सन्तुष्ट रहो।"

15जनता में उत्सुकता बढ़ती जा रही थी और
सब लोग योहन के विषय में मन-ही-मन सोच
रहे थे कि कहीं यही तो मसीह नहीं हैं।
16इसलिए योहन ने उन सब से कहा, "मैं तो
तुम लोगों को जल से बपतिस्मा देता हूँ; परन्तु
एक आने वाले हैं, जो मुझ से अधिक
शक्तिशाली हैं। मैं उनके जूते का फीता खोलने
योग्य भी नहीं हूँ। वह तुम्हें पवित्र आत्मा और
आग से बपतिस्मा देंगे। 17वह हाथ में सूप ले
चुके हैं, जिससे वह अपना खलिहान ओसा कर
साफ करें और अपना गेहूँ अपने बखार में जमा
करें। वह भूसी को कभी न बुझने वाली आग
में जला देंगे।"

18इस प्रकार बहुत-से अन्य उपदेशों द्वारा
योहन ने जनता को शुभ-समाचार सुनाया।

योहन बपतिस्मादाता की गिरफ्तारी

19परन्तु जब योहन ने शासक हेरोदेस को

* शब्दश: "उतरते हुए"। †अथवा, 'आयु में' ** मूल में 'तेत्रअर्खेस', अर्थात् देश के चौथाई भाग का शासक।

2 : 51 लू 2 : 19 **2 : 52** 1 शम 2 : 26; नीति 3 : 4 **3 : 3–18** मत 3 : 1–12; मक 1 : 1–8 **3 : 4** यश 40 : 3–5 (यू० पाठ) **3 : 6** यश 52 : 10; 28 : 28 **3 : 7** मत 23 : 33; यो 3 : 36 **3 : 15** यो 1 : 19–28 **3 : 16** प्रे 13 : 25 **3 : 19** मत 14 : 3–4; मक 6 : 17–18

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उसके भाई की पत्नी हेरोदियस तथा उसके सब
अन्य कुकर्मों के कारण धिक्कारा, 20तब हेरोदेस
ने उन्हें बन्दीगृह में डलवा कर अपने कुकर्मों
की हद कर दी।

प्रभु येशु का बपतिस्मा

21जब सब लोग बपतिस्मा ले चुके थे और
जब येशु भी बपतिस्मा लेने के पश्चात् प्रार्थना
कर रहे थे, तब आकाश खुल गया 22और पवित्र
आत्मा मानो शारीरिक रूप से कपोत के सदृश
उन पर उतरा* और स्वर्ग से यह वाणी सुनाई
दी, "तू मेरा प्रिय पुत्र है। मैं तुझ पर अत्यन्त
प्रसन्न हूँ।"

वंशावली

23जब येशु ने शुभ-समाचार सुनाना आरम्भ
किया+, उस समय वह लगभग तीस वर्ष के थे।
लोग उन्हें यूसुफ का पुत्र समझते थे। यूसुफ
एली का पुत्र था, 24और वह मत्तात का, वह
लेवी का, वह मलकी का , वह यन्नई का, वह
यूसुफ का, 25वह मत्तित्याह का, वह आमोस
का, वह नहूम का, वह असल्याह का, वह
नग्गई का, 26वह महत का, वह मत्तित्याह का,
वह शिमी का, वह योसेख का, वह योदाह का,
27वह योहानान का, वह रेसा का, वह जरूब्बाबेल
का, वह शालतिएल का, वह नेरी का, 28वह
मलकी का, वह अद्दी का, वह कोसाम का, वह
एल्मदाम का, वह एर का, 29वह यहोशुअ का,
वह एलीएज़र का, वह योरीम का, वह मत्तात
का, वह लेवी का, 30वह शिमोन का, वह यहूदा
का, वह यूसुफ का, वह योनाम का, वह
एलयाकीम का, 31 वह मेलेआह का, वह
मिन्नाह का, वह मत्तता का, वह नातान का, वह
दाऊद का, 32वह यिशय का, वह ओबेद का,
वह बोअज का, वह शेलह का, वह नहशोन
का, 33वह अम्मीनांदाब का, वह अदमीन का,
वह अरनी का, वह हेस्रोन का, वह पेरेस का,
वह यहूदा का, 34वह याकूब का, वह इसहाक
का, वह अब्राहम का, वह तेरह का, वह नाहोर
का, 35वह सरूग का, वह रऊ का, वह पेलग
का, वह एबर का, वह शेलह का, 36वह केनान
का, वह अर्पक्षद का, वह शेम का, वह नूह का,
वह लामेक का, 37वह मथूशेलह का, वह
हनोक का, वह यारेद का, वह महल्लेल का,
वह केनान का, 38वह एनोश का, वह शेत का,
वह आदम का, और वह परमेश्वर का पुत्र था।

प्रभु येशु की परीक्षा

4 येशु पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो कर यर्दन
नदी के तट से लौटे, तो आत्मा उन्हें निर्जन
प्रदेश में ले गया 2जहाँ शैतान चालीस दिन तक
उनकी परीक्षा लेता रहा।

येशु ने उन दिनों कुछ भी नहीं खाया। जब
चालीस दिन बीत गए तब उन्हें बहुत भूख
लगी। 3शैतान ने उनसे कहा, "यदि आप
परमेश्वर के पुत्र हैं, तो इस पत्थर से कह दीजिए
कि यह रोटी बन जाये।" 4परन्तु येशु ने उत्तर
दिया, "धर्मग्रंथ में लिखा है: 'मनुष्य केवल
रोटी से ही नहीं जीता है।' "

5फिर शैतान उन्हें ऊपर उठा ले गया और
क्षण भर में संसार के सब राज्य दिखाये। 6शैतान
उनसे बोला, "मैं आप को इन सब राज्यों का
अधिकार और इनका वैभव दे दूँगा। यह सब
मुझे सौंपा गया है और मैं जिस को चाहता हूँ,
उस को यह देता हूँ। 7यदि आप मेरी आराधना
करें, तो यह सब आप का हो जायेगा।" 8पर
येशु ने उसे उत्तर दिया, "धर्मग्रन्थ में यह लिखा
है : 'अपने प्रभु परमेश्वर की आराधना करो
और केवल उसी की सेवा करो।' "

9तब शैतान येशु को यरूशलेम नगर में ले
गया और मन्दिर के शिखर पर उन्हें खड़ा कर
उनसे बोला, "यदि आप परमेश्वर के पुत्र हैं,
तो यहाँ से नीचे कूद जाइए; 10क्योंकि धर्मग्रन्थ

---

* अथवा, 'पवित्र आत्मा कपोत-जैसे शरीर के प्रतिरूप में उन पर उतरा, + अथवा, 'अपना सेवा-कार्य आरम्भ किया'

3 : 21-22 मत 3 : 13-17; मक 1 : 9-11; यो 1 : 32 **3 : 22** लू 9 : 35; भज 2 : 7; यश 42 : 1 **3 : 23-38** मत 1 : 1-17 **3 : 23** लू 4 : 22 **3 : 27** 1 इति 3 : 17; एज्र 3 : 2 **3 : 31** 1 शम16 :1.13; 2 शम 5 : 14 **3 : 32** रूत 4 : 22 **3 : 33** 1 इति 2 : 1-5; उत 29 : 35 **3 : 34** उत 21 : 2-3; 11 : 10-26; 1 इति 1 : 24-27 **3 : 36** उत 5 : 3-32; 1 इति 1 : 1-4; उत 4 : 25; 11 : 10 **3 : 38** उत 5 : 1-3 **4 : 1-13** मत 4 : 1-11; मक 1 : 12-13 **4 : 4** व्य 8 : 3 **4 : 8** व्य 6 : 13-14 **4 : 10** भज 91 : 11-12

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

में लिखा है: 'आपके विषय में परमेश्वर अपने
दूतों को आदेश देगा कि वे आपकी रक्षा करें।
11वे आपको अपने हाथों पर संभाल लेंगे कि
कहीं आपके पैरों को पत्थर से चोट न लगे।'
'' 12येशु ने उसे उत्तर दिया, ''यह भी कहा गया
है:'अपने प्रभु परमेश्वर की परीक्षा मत लो।' ''
13इस तरह सब प्रकार की परीक्षा लेने के
बाद शैतान, निश्चित समय पर लौटने के लिए,
येशु के पास से चला गया।
14आत्मा के सामर्थ्य से सम्पन्न हो कर येशु
गलील प्रदेश को लौटे और उनकी चर्चा आस-
पास के समस्त क्षेत्र में फैल गयी। 15वह उनके
सभागृहों में शिक्षा देने लगे और सब लोग
उनकी प्रशंसा करते थे।

गृहनगर नासरत की यात्रा

16जब येशु नासरत नगर में आये, जहाँ उनका
पालन-पोषण हुआ था तो वह विश्राम के दिन
अपनी आदत के अनुसार सभागृह गये। वह
धर्मग्रंथ से पाठ पढ़ने के लिए उठे, 17तो उन्हें
नबी यशायाह की पुस्तक दी गयी। पुस्तक खोल
कर येशु ने वह स्थल निकाला, जहाँ लिखा है:
18''प्रभु का आत्मा मुझ पर है,
क्योंकि उसने मेरा अभिषेक किया है कि मैं
गरीबों को शुभ-समाचार सुनाऊँ,*
उसने मुझे भेजा है जिससे मैं बन्दियों को
मुक्ति का और अन्धों को दृष्टि-प्राप्ति का
सन्देश दूँ,
मैं दलितों को स्वतन्त्र करूँ
19और प्रभु के अनुग्रह का वर्ष घोषित करूँ।''
20येशु ने पुस्तक बन्द कर सेवक को दे दी
और बैठ गये। सभागृह के सब लोगों की आँखें
उन पर टिकी हुई थीं। 21तब वह उन से कहने
लगे, ''धर्मग्रन्थ का यह कथन आज आप
लोगों के सामने पूरा हो गया।'' 22सब लोगों
ने उनकी प्रशंसा की। वे उनके मुख से निकले
अनुग्रहपूर्ण शब्द सुन कर अचम्भे में पड़ गए,
और पूछने लगे, ''क्या यह यूसुफ के पुत्र नहीं
हैं?''
23येशु ने उनसे कहा, ''तुम निश्चय ही मुझे
यह कहावत सुनाओगे: 'ओ वैद्य! पहले अपना
इलाज कर।' तुम मुझ से यह भी कहोगे:
'कफरनहूम नगर में जो कुछ हुआ है, हमने
उसके बारे में सुना है। अब वह यहाँ अपने नगर
में भी कीजिए।' '' 24फिर येशु ने कहा, ''मैं
तुम से सच कहता हूँ: नबी का स्वागत अपने
नगर में नहीं होता। 25सच्चाई की बात तो यह
है कि नबी एलियाह के दिनों में जब साढ़े तीन
वर्षों तक पानी नहीं बरसा और सारे देश में घोर
अकाल पड़ा था, तो उस समय इस्राएल देश में
बहुत-सी विधवाएँ थीं। 26फिर भी एलियाह
उन में किसी के पास नहीं भेजे गये—केवल
सीदोन देश के सारफत नगर में रहने वाली एक
विधवा के पास। 27और नबी एलीशा के दिनों
में इस्राएल देश में बहुत-से कुष्ठरोगी थे। फिर
भी उन में से कोई भी कुष्ठरोगी शुद्ध नहीं किया
गया—केवल सीरिया देश का निवासी नामान
शुद्ध किया गया।''
28यह सुन कर सभागृह के सब लोग बहुत
क्रुद्ध हो गये। 29वे उठ खड़े हुए और उन्होंने
येशु को नगर से बाहर निकाला और जिस
पहाड़ी पर उनका नगर बसा था, वे येशु को
उसकी चोटी पर ले चले, ताकि उन्हें नीचे
ढकेल दें; 30परन्तु येशु उनके बीच से निकल
कर चले गये।

कफरनहूम का अशुद्धात्मा-ग्रस्त मनुष्य

31येशु गलील प्रदेश के कफरनहूम नगर में
आये और विश्राम के दिन लोगों को शिक्षा देने
लगे। 32लोग उनकी शिक्षा सुन कर
आश्चर्यचकित हो गए, क्योंकि वह अधिकार
के साथ बोलते थे।
33सभागृह में एक मनुष्य था, जो अशुद्ध
भूतात्मा के वश में था। वह ऊँचे स्वर से चिल्ला

---

* अथवा, 'क्योंकि उसने मेरा अभिषेक किया है। उसने मुझे भेजा है कि मैं गरीबों को शुभ समाचार सुनाऊँ।'

4 : 12 व्य 6 : 16 **4 : 13** इब्र 4 : 15 **4 : 14-15** मत 4 : 12-17; मक 1 : 14-15 **4 : 16-30** मत 13 : 53-58; मक 6 : 1-6 **4 : 17** यश 61 : 1-2 (यू० पाठ); 58 : 6 **4 : 19** लेव 25 : 10 **4 : 22** यो 6 : 42 **4 : 23** मत 4 : 13 **4 : 24** यो 4 : 44 **4 :25** 1 रा 17 : 1.9; 18 : 1 याक 5 : 17 **4 : 27** 2 रा 5 : 1-14 **4 : 31-37** मक 1 : 21-28 **4 : 31** मत 4 : 13 यो 2 : 12 **4 : 32** मत 7 : 28-29 यो 7 : 46

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उठा, 34"हे येशु, नासरत-निवासी! हमें आपसे क्या काम? क्या आप हमें नष्ट करने आये हैं? मैं जानता हूँ कि आप कौन हैं— परमेश्वर के भेजे हुए पवित्र जन!" 35येशु ने यह कहते हुए उसे डांटा, "चुप रह, और इस मनुष्य से बाहर निकल जा।" भूत ने सब के सामने उस मनुष्य को भूमि पर पटका और उसकी कोई हानि किये बिना वह उस से निकल गया। 36सब विस्मित हो गये और आपस में कहते रहे, "यह क्या बात है! वह अधिकार तथा सामर्थ्य के साथ अशुद्ध आत्माओं को आदेश देते हैं और वे निकल जाते हैं।" 37इसके बाद येशु की चर्चा आस-पास के सब स्थानों में होने लगी।

सिमोन पतरस की सास

38येशु सभागृह से उठ कर सिमोन के घर गये। सिमोन की सास तेज बुखार में पड़ी हुई थी और लोगों ने उसके लिए येशु से निवेदन किया। 39येशु ने उसके पास जा कर बुखार को डांटा और बुखार उतर गया। वह उसी क्षण उठ कर उन लोगों की सेवा-सत्कार में लग गयी।

बहुतों को स्वास्थ्यलाभ

40जब सूरज डूब रहा था तो सब लोग नाना प्रकार की बीमारियों से पीड़ित अपने रोगियों को येशु के पास लाये। येशु ने एक-एक पर हाथ रख कर उन्हें स्वस्थ कर दिया। 41भूत बहुतों में से यह चिल्लाते हुए निकले, "आप परमेश्वर के पुत्र हैं।" परन्तु येशु ने उन को डाँटा और उन्हें बोलने से रोका, क्योंकि भूत जानते थे कि वह मसीह हैं।

येशु का सभागृहों में उपदेश

42येशु प्रातःकाल घर से निकल कर किसी एकान्त स्थान में चले गये। लोग उन को खोजते-खोजते उनके पास आये और उनसे अनुरोध किया कि वह उन को छोड़ कर नहीं जायें। 43किन्तु येशु ने उत्तर दिया, "मुझे दूसरे नगरों में भी परमेश्वर के राज्य का शुभ समाचार सुनाना है। मैं इसीलिए भेजा गया हूँ।" 44और वह यहूदा देश* के सभागृहों में शुभ संदेश सुनाने लगे।

प्रथम शिष्यों का बुलाया जाना

5 एक दिन येशु गिनेसरेत की झील के किनारे खड़े थे। लोग परमेश्वर का वचन सुनने के लिए उन पर गिरे पड़ रहे थे। 2उस समय उन्होंने झील के किनारे लगी दो नावों को देखा। मछुए उन पर से उतर कर जाल धो रहे थे। 3येशु उनमें से एक नाव पर, जो सिमोन की थी, चढ़ गए और उन्होंने उससे कहा, "नाव को किनारे से कुछ दूर ले चलो।" इसके बाद वह बैठ गए और नाव से लोगों को शिक्षा देने लगे।

4उपदेश समाप्त करने के बाद उन्होंने सिमोन से कहा, "नाव गहरे पानी में ले चलो और मछलियाँ पकड़ने के लिए अपने जाल डालो।" 5सिमोन ने उत्तर दिया, "स्वामी! रात भर मेहनत करने पर भी हम कुछ नहीं पकड़ सके। परन्तु आपके कहने पर मैं जाल डालूँगा।" 6ऐसा करने पर इतनी अधिक मछलियाँ जाल में फँस गयीं कि उनका जाल फटने लगा। 7उन्होंने दूसरी नाव के अपने साथियों को इशारा किया कि वे आ कर उनकी सहायता करें। वे आये और उन्होंने दोनों नावों को मछलियों से इतना भर लिया कि नावें डूबने लगीं। 8यह देख कर सिमोन पतरस ने येशु के चरणों पर गिर कर कहा, "प्रभु! मेरे पास से चले जाइए। मैं तो पापी मनुष्य हूँ।" 9क्योंकि जाल में इतनी मछलियों के फँसने के कारण वह और उसके साथी विस्मित हो गये थे। 10यही दशा याकूब और योहन की भी हुई। ये जबदी के पुत्र और सिमोन के साझेदार थे। येशु ने सिमोन से कहा, "डरो मत। अब से तुम मनुष्यों को पकड़ा करोगे।" 11जब उन्होंने अपनी नावों को किनारे लगा दिया तब वे सब कुछ छोड़ कर येशु के पीछे हो लिये।

कुष्ठरोगी को स्वस्थ करना

12एक बार जब येशु किसी नगर में थे, तब

* अथवा, 'यहूदियों के'; अन्य प्राचीन प्रतियों में, 'गलील प्रदेश'

4 : 38-44 मत 8 : 14-17; मक 1 29-39 **4 : 41** मत 8 : 29; मक 3 : 11-12 **4 : 43** लू 8 : 1 **4 : 44** मत 4 : 23 **5 : 1-11** मत 4 : 18-22; मक 1 : 16-20 **5 : 4** यो 21 : 6 **5 : 9** यहेज 47 : 10 **5 : 10** मत 13 : 47 **5 : 11** मत 19 : 27 **5 : 12-16** मत 8 : 1-4; मक 1 : 40-45

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उन के पास एक मनुष्य आया। उसका शरीर कुष्ठ-रोग से भरा हुआ था। वह येशु को देख कर मुँह के बल गिर पड़ा और उनसे सहायता के लिए विनती की, "प्रभु! आप चाहें, तो मुझे शुद्ध कर सकते हैं।" [13]येशु ने हाथ बढ़ा कर उसको स्पर्श किया और कहा, "मैं यही चाहता हूँ। तुम शुद्ध हो जाओ।" उसी क्षण उसका कुष्ठ-रोग दूर हो गया। [14]येशु ने उसे आदेश दिया, "किसी से न कहना, परन्तु जाओ और अपने आप को पुरोहित को दिखाओ और अपने शद्धीकरण के लिए मूसा की आज्ञानुसार भेंट चढ़ाओ, जिससे सब लोगों को मालूम हो जाए कि तुम स्वस्थ हो गए हो।"

[15]फिर भी येशु की चर्चा अधिकाधिक फैलती गई। भीड़-की-भीड़ उनका उपदेश सुनने और अपने रोगों से स्वस्थ होने के लिए उनके पास आने लगी। [16]परन्तु येशु प्रायः अलग जा कर एकान्त स्थानों में प्रार्थना किया करते थे।

लकुवे के रोगी को स्वस्थ करना

[17]एक दिन येशु शिक्षा दे रहे थे। फरीसी सम्प्रदाय के सदस्य और व्यवस्था के अध्यापक पास ही बैठे हुए थे। वे गलील तथा यहूदा प्रदेशों के हर एक गाँव से और यरूशलेम से आये थे। रोगियों को स्वस्थ करने के लिए प्रभु का सामर्थ्य येशु के साथ था।

[18]उसी समय कुछ लोग खाट पर एक लकुवे के रोगी को लाये। वे उसे अन्दर ले जा कर येशु के सामने रखना चाहते थे। [19]किन्तु जब भीड़ के कारण उस को भीतर ले जाने का कोई उपाय न दिखा, तो वे छत पर चढ़ गये और उन्होंने खपरैल हटा कर खाट के साथ लकुवे के रोगी को लोगों के बीच में येशु के सामने उतार दिया। [20]उन का विश्वास देख कर येशु ने कहा, "भाई! तुम्हारे पाप क्षमा हो गये।"

[21]इस पर शास्त्री और फरीसी एक-दूसरे से प्रश्न पूछने लगे, "ईश-निन्दा करने वाला यह कौन है? परमेश्वर के अतिरिक्त और कौन पाप क्षमा कर सकता है?" [22]उनके ये प्रश्न जान कर येशु ने उन्हें उत्तर दिया, "आप-लोग अपने हृदय में ये प्रश्न क्यों उठा रहे हो? [23]अधिक सहज क्या है—यह कहना, 'तुम्हारे पाप क्षमा हो गये'; अथवा यह कहना, 'उठो और चलो-फिरो'? ; [24]परन्तु इसलिए कि आप लोगों को मालूम हो जाये कि मानव-पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का अधिकार है," वह लकुवे के रोगी से बोले, "मैं तुम से कहता हूँ: उठो और अपनी खटिया उठा कर घर जाओ।" [25]उसी क्षण वह सब के सामने उठ खड़ा हुआ और जिस खाट पर वह लेटा था, उस को उठा कर परमेश्वर की स्तुति करते हुए अपने घर चला गया। [26]वे सब आश्चर्य में डूब गये और परमेश्वर की स्तुति करने लगे। उन पर भय छा गया। उन्होंने कहा, "आज हमने अद्भुत कार्य देखा।"

लेवी को आह्वान

[27]इसके बाद येशु बाहर निकले। उन्होंने लेवी नामक एक चुंगी-अधिकारी को चुंगीघर में बैठा हुआ देखा। उन्होंने उससे कहा, "मेरे पीछे आओ।" [28]वह उठ खड़ा हुआ और अपना सब कुछ छोड़ कर येशु के पीछे हो लिया। [29]लेवी ने अपने यहाँ येशु के सम्मान में एक बड़ा भोज दिया। चुंगी-अधिकारियों का विशाल समूह तथा अन्य अतिथि बड़ी संख्या में येशु और लेवी के साथ भोजन पर बैठे। [30]इस पर फरीसी और उनके ही सम्प्रदाय के शास्त्री भुनभुनाने और येशु के शिष्यों से यह कहने लगे, "तुम लोग चुंगी-अधिकारियों और पापियों के साथ क्यों खाते-पीते हो?" [31]येशु ने उन्हें उत्तर दिया, "स्वस्थ्य मनुष्यों को नहीं, बल्कि रोगियों को वैद्य की आवश्यकता होती है। [32]मैं धार्मिकों को नहीं, पापियों को पश्चात्ताप के लिए बुलाने आया हूँ।"

उपवास का प्रश्न

[33]उन्होंने येशु से कहा, "योहन के शिष्य बारम्बार उपवास करते हैं और प्रार्थना में लगे रहते हैं और फरीसियों के शिष्य भी ऐसा ही

5 : 14 लेव 13 : 49; 14 : 2-32 **5 : 16** मक 1 : 35 **5 : 17-26** मत 9 : 1-8; मक 2 : 1-12 **5 : 21** लू 7 : 49; यश 43 : 25; यो 5 : 12 **5 : 27-32** मत 9 : 9-13; मक 2 :13-17 **5 : 29** जू 15 : 1 **5 : 33-39** मत 9 : 14-17; मक 2 : 18-22

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

करते हैं, किन्तु आपके शिष्य खाते-पीते रहते
हैं।'' 34येशु ने उनसे कहा, ''जब तक दूल्हा
उनके साथ है, क्या तुम बारातियों से उपवास
करा सकते हो? 35किन्तु वे दिन आयेंगे, जब
दूल्हा उन से ले लिया जायेगा। उन दिनों वे
उपवास करेंगे।''
36येशु ने उन्हें यह दृष्टान्त भी सुनाया, ''कोई
व्यक्ति नया कपड़ा फाड़ कर पुराने कपड़े में
पैबंद नहीं लगाता। नहीं तो वह नया कपड़ा
फटेगा ही और नये कपड़े का पैबंद पुराने
कपड़े के साथ मेल भी नहीं खायेगा। 37उसी
प्रकार कोई व्यक्ति पुरानी मशकों में नया
दाखरस नहीं भरता। नहीं तो नया दाखरस
पुरानी मशकों को फाड़ देगा, दाखरस बह
जायेगा और मशकें भी बरबाद हो जायेंगी।
38नये दाखरस को नयी मशकों में ही भरना
चाहिए।
39''कोई पुराना दाखरस पी कर नया
नहीं चाहता। वह तो कहता है, 'पुराना ही
अच्छा है।' ''

विश्राम-दिवस के पालन का प्रश्न

6 येशु किसी विश्राम के दिन गेहूँ के खेतों से
हो कर जा रहे थे। उनके शिष्य अनाज की
बालें तोड़ कर और उन्हें हाथ से मसल-मसल
कर खाने लगे। 2कुछ फरीसियों ने कहा, ''जो
काम विश्राम के दिन मना है, तुम क्यों वही कर
रहे हो?'' 3येशु ने उन्हें उत्तर दिया, ''क्या तुम
लोगों ने यह नहीं पढ़ा कि जब दाऊद और
उसके साथियों को भूख लगी, तब दाऊद ने
क्या किया था? 4उसने परमेश्वर के भवन में जा
कर भेंट की रोटियाँ उठा लीं, उन्हें स्वयं खाया
तथा अपने साथियों को भी खिलाया। केवल
पुरोहितों को छोड़ किसी और को उन्हें खाने
की आज्ञा तो नहीं है।'' 5तब येशु ने उनसे कहा,
''मानव-पुत्र विश्राम के दिन का स्वामी है।''

सूखे हाथ वाले मनुष्य को स्वस्थ करना

6किसी दूसरे विश्राम के दिन येशु सभागृह
में जा कर शिक्षा दे रहे थे। वहाँ एक मनुष्य था,
जिसका दायाँ हाथ सूख गया था। 7शास्त्री और
फरीसी इस बात की ताक में थे कि यदि येशु
विश्राम के दिन किसी को स्वस्थ करें, तो वे उन
पर दोष लगा सकें। 8यद्यपि येशु उनके विचार
जानते थे, फिर भी उन्होंने सूखे हाथ वाले
मनुष्य से कहा, ''उठो और बीच में खड़े हो
जाओ।'' वह उठा और बीच में खड़ा हो गया।
9येशु ने उन से कहा, ''मैं तुम से पूछता
हूँ—विश्राम के दिन भलाई करना उचित है या
बुराई, प्राण बचाना या नष्ट करना?'' 10तब चारों
ओर उन सब पर दृष्टि दौड़ा कर उन्होंने उस
मनुष्य से कहा, ''अपना हाथ बढ़ाओ।'' उसने
ऐसा ही किया और उसका हाथ अच्छा हो
गया। 11वे बहुत नाराज हो गये और आपस में
परामर्श करने लगे कि हम येशु का क्या करें।

बारह प्रेरितों का चुनाव

12उन दिनों येशु प्रार्थना करने एक पहाड़ी
पर चढ़े और वे रात भर परमेश्वर की प्रार्थना
में लीन रहे। 13दिन होने पर उन्होंने अपने
शिष्यों को पास बुलाया और उन में से बारह को
चुन कर उन्हें 'प्रेरित*' नाम दिया: 14सिमोन
जिसे उन्होंने 'पतरस' नाम दिया और उसके
भाई अन्द्रेयास को; याकूब और योहन को;
फिलिप और बरतोलोमी को, 15मत्ती और थोमस
को; हलफई के पुत्र याकूब और शिमोन को,
जो 'धर्मोत्साही'** कहलाता है; 16याकूब के
पुत्र यहूदा और यूदस +इस्करियोती को, जो
विश्वासघाती निकला।

विशाल जनसमूह

17येशु उन बारह प्रेरितों के साथ पहाड़ी से
उतर कर एक मैदान में खड़े हो गये। वहाँ उनके
बहुत-से शिष्य थे और एक विशाल जनसमूह
भी था। वे लोग समस्त यहूदा प्रदेश, यरूशलेम
नगर और सोर तथा सीदोन के समुद्र-तट से
आए थे। 18वे येशु का उपदेश सुनने और अपने
रोगों से मुक्त होने के लिए आये थे। येशु ने

* अर्थात् 'भेजा हुआ' ** अथवा 'उग्र पंथी'। मूल में 'जेलोती'। +अथवा 'यहूदा'

6 : 1-5 मत 12 : 1-8; मक 2 : 23-28 **6 : 2** यो 5 : 10 **6 : 3** 1 शम 21 : 1-6 **6 : 4** लेव 24 : 9 **6 : 6-11** मत 12 : 9-14; मक 3 : 1-6 **6 : 7** लू 14 : 1 **6 : 12-16** मक 3 : 13-19 **6 : 13** मत 10 : 2-4; यो 6 : 70; प्रे 1 : 13 **6 : 17-19** मत 4 : 23—5 : 1; मक 3 : 7-12

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अशुद्ध आत्माओं से पीड़ित लोगों को स्वस्थ
किया। 19सब लोग येशु को स्पर्श करने का
प्रयत्न कर रहे थे, क्योंकि उन से शक्ति निकल
कर सब को स्वस्थ कर रही थी।

आशीर्वचन

20येशु ने अपने शिष्यों की ओर देखा और
यह कहा,

"धन्य हो तुम, जो गरीब हो;
क्योंकि परमेश्वर का राज्य तुम्हारा है।
21धन्य हो तुम, जो अभी भूखे हो;
क्योंकि तुम तृप्त किये जाओगे।
धन्य हो तुम, जो अभी रोते हो;
क्योंकि तुम हंसोगे।
22धन्य हो तुम,

जब मानव-पुत्र के कारण लोग तुम से बैर
करेंगे, तुम्हारा बहिष्कार और अपमान करेंगे,
और तुम्हारा नाम घृणित समझ कर निकाल
देंगे! 23उस दिन उल्लसित हो और आनन्द
मनाओ, क्योंकि स्वर्ग में तुम्हें महान् पुरस्कार
प्राप्त होगा। उनके पूर्वज नबियों के साथ ऐसा
ही किया करते थे।

धिक्कार

24"धिक्कार है तुम्हें, जो धनवान हो;
क्योंकि तुम अपना सुख-चैन पा चुके हो।
25धिक्कार है तुम्हें, जो अभी तृप्त हो;
क्योंकि तुम भूखे रहोगे।
धिक्कार है तुम्हें, जो अभी हँसते हो;
क्योंकि तुम शोक मनाओगे और रोओगे।
26धिक्कार है तुम्हें,

जब सब लोग तुम्हारी प्रशंसा करते हैं,
क्योंकि उनके पूर्वज झूठे नबियों के साथ ऐसा
ही किया करते थे।

शत्रुओं से प्रेम

27"मैं तुम लोगों से, जो मेरी बात सुन रहे
हो, यह कहता हूँ: अपने शत्रुओं से प्रेम करो।
जो तुम से बैर करते हैं, उनकी भलाई करो।
28जो तुम्हें शाप देते हैं, उन को आशीर्वाद दो।
जो तुम्हारे साथ दुर्व्यवहार करते हैं, उनके लिए
प्रार्थना करो। 29जो तुम्हारे एक गाल पर थप्पड़
मारता है, उसके सामने दूसरा भी कर दो। जो
तुम्हारी चादर छीनता है, उसे अपना कुरता भी
ले लेने दो। 30जो कोई तुम से माँगता है, उसे
दिया करो और जो तुम से तुम्हारी वस्तु छीनता
है, उसे वापस मत माँगो। 31दूसरों से अपने प्रति
जैसा व्यवहार चाहते हो, तुम उनके प्रति वैसा
ही व्यवहार किया करो। 32यदि तुम उन्हीं से
प्रेम करते हो, जो तुमसे प्रेम करते हैं, तो इस
में तुम्हारा पुण्य क्या है? पापी भी अपने प्रेम
करने वालों से प्रेम करते हैं। 33यदि तुम उन्हीं
की भलाई करते हो, जो तुम्हारी भलाई करते
हैं, तो इसमें तुम्हारा पुण्य क्या है? पापी भी ऐसा
करते हैं। 34यदि तुम उन्हीं को उधार देते हो,
जिन से वापस पाने की आशा करते हो, तो इस
में तुम्हारा पुण्य क्या है? पूरा-पूरा वापस पाने
की आशा में पापी भी पापियों को उधार देते हैं।
35परन्तु तुम अपने शत्रुओं से प्रेम करो, उनकी
भलाई करो और वापस पाने की आशा न रख
कर उधार दो। तभी तुम्हारा पुरस्कार महान्
होगा और तुम सर्वोच्च परमेश्वर की संतान बन
जाओगे, क्योंकि वह भी कृतघ्नों और दुष्टों पर
कृपा करता है। 36दयालु बनो, जैसे तुम्हारा
स्वर्गिक पिता दयालु है।

दूसरों पर दोष न लगाना

37"दोष न लगाओ तो तुम पर भी दोष नहीं
लगाया जायेगा। किसी के विरुद्ध निर्णय न दो
तो तुम्हारे विरुद्ध भी निर्णय नहीं दिया जायेगा।
क्षमा करो तो तुम्हें भी क्षमा मिल जायेगी। 38दो
तो तुम्हें भी दिया जायेगा। दबा-दबा कर,
हिला-हिला कर भरी हुई, ऊपर उठी हुई, पूरी-
की-पूरी नाप तुम्हारी गोद में डाली जायेगी;
क्योंकि जिस नाप से तुम नापते हो, उसी नाप
से तुम्हारे लिए भी नापा जायेगा।"

विविध परामर्श

39येशु ने उन्हें एक दृष्टान्त सुनाया, "क्या

6 : 20-23 मत 5 : 3-4, 6 : 11-12 **6 : 21** प्रक 7 : 16-17; भज 126 : 5-6; यश 61 : 3 **6 : 22** यो 15 : 19; 16 : 2 **6 : 24** याक 5 : 1 **6 : 25** यश 5 : 22 **6 : 26** याक 4 : 4; मी 2 : 11 **6 : 27-36** मत 5 : 39-48 **6 : 31** मत 7 : 12; तोब 4 : 15 **6 : 34** लेव 25 : 35-36; नीति 19 : 17 **6 : 35** प्रव 4 : 10-11 **6 : 37-49** मत 7 : 1-29 **6 : 37** मत 6 : 14 **6 : 38** मक 4 : 24 **6 : 39** मत 15 : 14; 23 : 16, 24

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अन्धा अन्धे को मार्ग दिखा सकता है ? क्या
दोनों ही गड्ढे में नहीं गिर पड़ेंगे ? 40शिष्य गुरु
से बड़ा नहीं होता, परन्तु पूरी शिक्षा प्राप्त करने
के बाद वह अपने गुरु-जैसा बन जाता है।
41"जब तुम्हें अपनी ही आँख के लट्ठे का
पता नहीं, तो तुम अपने भाई की आँख का
तिनका क्यों देखते हो ? 42जब तुम्हें अपनी ही
आँख का लट्ठा दिखाई नहीं देता, तब अपने भाई
से कैसे कह सकते हो, 'भाई ! लाओ, मैं तुम्हारी
आँख का तिनका निकाल दूँ ?' ओ ढोंगी ! पहले
अपनी ही आँख का लट्ठा निकाल। तभी तू
अपने भाई की आँख का तिनका निकालने के
लिए अच्छी तरह देख सकेगा।

फल से पेड़ की पहचान

43"कोई अच्छा पेड़ बुरा फल नहीं देता
और न कोई बुरा पेड़ अच्छा फल देता है।
44प्रत्येक पेड़ अपने फल से पहचाना जाता है।
लोग न तो कँटीली झाड़ियों से अंजीर तोड़ते हैं
और न ऊँटकटारों से अंगूर के गुच्छे बटोरते हैं !
45अच्छा मनुष्य अपने हृदय के अच्छे भण्डार
से अच्छी वस्तु निकालता है और जो बुरा है,
वह अपने बुरे भण्डार से बुरी वस्तु निकालता
है; क्योंकि जो हृदय में भरा है, वही तो मुँह से
बाहर आता है।

सुनना और करना

46"जब तुम मेरी बात पर नहीं चलते, तो
'प्रभु !प्रभु !' कह कर मुझे क्यों पुकारते हो ?
47जो मनुष्य मेरे पास आता है और मेरी बातें
सुनता तथा उन पर चलता है, वह किसके सदृश
है ? मैं तुम्हें बताता हूँ। 48वह उस मनुष्य के
सदृश है, जिसने घर बनाते समय भूमि को गहरा
खोदा और उसकी नींव चट्टान पर डाली है।
बाढ़ आई और नदी का जल उस मकान से
टकराया, किन्तु वह उसे ढा नहीं सका ; क्योंकि
वह घर बहुत मजबूत बना था।* 49परन्तु जो
मेरी बातें सुनता है और उन पर नहीं चलता, वह
उस मनुष्य के सदृश है, जिसने बिना नींव डाले
रेत** पर अपना घर बनाया है। जब नदी का
जल उससे टकराया तो वह ढह गया। उस घर
का विनाश भीषण था।"

कफ़रनहूम का शतपति

7 जनता को अपने ये सब उपदेश सुनाने के
बाद येशु कफरनहूम नगर में आये। 2वहाँ
किसी रोमन शतपति का अत्यन्त प्रिय सेवक
गंभीर रूप से बीमार था, और मृत्यु के निकट
था। 3जब शतपति ने येशु की चर्चा सुनी तो
उसने यहूदियों के कुछ धर्मवृद्धों को येशु के
पास यह निवेदन करने के लिए भेजा कि वह
आ कर उसके सेवक को स्वस्थ करें। 4वे येशु
के पास आये और आग्रह के साथ उनसे निवेदन
किया। उन्होंने कहा, "वह शतपति इस योग्य
है कि आप उसके लिए ऐसा करें। 5वह हमारी
कौम से प्रेम करता है और उसी ने हमारे लिए
सभागृह बनवाया है।" 6येशु उनके साथ चले।
वह उसके घर के निकट पहुँचे ही थे कि
शतपति ने मित्रों द्वारा येशु के पास यह कहला
भेजा, "प्रभु ! आप कष्ट न करें, क्योंकि मैं इस
योग्य नहीं हूँ कि आप मेरे यहाँ आयें। 7इसलिए
मैंने अपने को इस योग्य नहीं समझा कि आपके
पास आऊँ। आप एक शब्द ही कह दीजिए और
मेरा सेवक स्वस्थ हो जायेगा। 8मैं स्वयं शासन
के अधीन रहता हूँ और सैनिक मेरे अधीन हैं।
जब मैं एक से कहता हूँ—'जाओ', तो वह
जाता है और दूसरे से—'आओ', तो वह आता
है और अपने सेवक से— 'यह करो', तो वह
करता है।" 9यह सुन कर येशु को उस पर
आश्चर्य हुआ। उन्होंने अपने पीछे आते हुए
लोगों की ओर मुड़ कर कहा, "मैं तुम लोगों
से कहता हूँ: इस्राएल में भी मैंने इतना दृढ़
विश्वास नहीं पाया।" 10और भेजे हुए लोगों
ने घर लौट कर उस सेवक को स्वस्थ पाया।

विधवा के मृत पुत्र को जीवन-दान

11इसके कुछ समय बाद+ येशु नाईन नगर
को गये । उनके साथ उनके शिष्य और एक

* कुछ अन्य प्राजीन प्रतियों में, 'उसकी नींव चट्टान पर डाली गई थी।' **अथवा, 'मिट्टी', 'भूमि', + कुछ अन्य प्राचीन प्रतियों में, 'दूसरे दिन'

6 : 40 मत 10 : 24-25; यो 15 : 20 **6 : 45** मत 12 : 34-35 **6 : 46** मला 1 : 6; मत 7 : 21 **7 : 1-10** मत 8 : 5-13 **7 : 2** यो 4 : 47 **7 : 12** लू 8 : 42; 1 रा 17 : 17

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
विशाल जनसमूह भी गया। 12जब वे नगर के
प्रवेश-द्वार के निकट पहुँचे, तब लोग एक मुरदे
को बाहर ले जा रहे थे। वह अपनी माँ का
एकलौता पुत्र था और मां विधवा थी। नगर के
बहुत-से लोग उसके साथ थे। 13माँ को देख
कर प्रभु का हृदय दया से भर गया। उन्होंने
उससे कहा, "मत रोओ", 14और पास आ
कर उन्होंने अरथी को स्पर्श किया। इस पर
अरथी को कंधा देने वाले रुक गये। येशु ने
कहा, "युवक! मैं तुम से कहता हूँ, उठो!"
15मुरदा उठ बैठा और बोलने लगा। येशु ने
उसको उसकी माँ को सौंप दिया। 16सब लोगों
पर भय छा गया और वे यह कहते हुए परमेश्वर
की महिमा करने लगे, "हमारे बीच महान नबी
उत्पन्न हुए हैं और परमेश्वर ने अपनी प्रजा की
सुध ली है।" 17येशु के विषय में यह बात सारे
यहूदा देश और आसपास के समस्त क्षेत्र में
फैल गयी।

योहन बपतिस्मादाता का प्रश्न

18योहन के शिष्यों ने योहन को इन सब
बातों की खबर सुनायी। 19योहन ने अपने दो
शिष्यों को बुला कर प्रभु के पास यह पूछने
भेजा, " क्या आप वही हैं, जो आने वाले हैं
या हम किसी दूसरे की प्रतीक्षा करें?" 20इन
दो शिष्यों ने येशु के पास आकर कहा, "योहन
बपतिस्मादाता ने हमें आपके पास यह पूछने
भेजा है—क्या आप वही हैं जो आने वाले हैं
या हम किसी दूसरे की प्रतीक्षा करें?"

21 उसी समय येशु ने बहुतों को बीमारियों,
कष्टों और दुष्टात्माओं से मुक्त किया और
बहुत-से अन्धों को दृष्टि प्रदान की। 22उन्होंने
योहन के शिष्यों से कहा, "जाओ, तुम जो
सुनते और देखते हो, उसे योहन को बता दो कि
अन्धे देखते हैं, लँगड़े चलते हैं, कुष्ठ-रोगी शुद्ध
किये जाते हैं, बहरे सुनते हैं, मुरदे जिलाये जाते
हैं, और गरीबों को शुभ समाचार सुनाया जाता
है। 23धन्य है वह, जो मेरे विषय में भ्रम में नहीं
पड़ता।"*

24योहन द्वारा भेजे हुए शिष्यों के चले जाने
के बाद येशु लोगों से योहन के विषय में कहने
लगे, "तुम निर्जन प्रदेश में क्या देखने गये थे?
हवा से हिलते हुए सरकण्डे को? नहीं! 25तो,
तुम क्या देखने गये थे? बढ़िया कपड़े पहने
मनुष्य को? नहीं! कीमती वस्त्र पहनने वाले
और भोग-विलास में जीवन बिताने वाले लोग
महलों में रहते हैं। 26फिर तुम क्या देखने निकले
थे? किसी नबी को? निश्चय ही! मैं तुम से
कहता हूँ—नबी से भी महान् व्यक्ति को।
27यह वही है, जिसके विषय में धर्मग्रन्थ में
लिखा है: 'परमेश्वर कहता है—देखो, मैं
अपने दूत को तुम्हारे आगे भेज रहा हूँ। वह
तुम्हारे आगे तुम्हारा मार्ग तैयार करेगा।'
28"मैं तुम से कहता हूँ: जो स्त्रियों से उत्पन्न
हुए हैं, उन में योहन से महान् कोई नहीं। फिर
भी परमेश्वर के राज्य में जो सब से छोटा है,
वह योहन से बड़ा है।"

इस पीढ़ी को धिक्कार

29सारी जनता और चुंगी-अधिकारियों ने
जब यह सुना, तो उन्होंने योहन का बपतिस्मा
लेने के कारण परमेश्वर की धार्मिकता स्वीकार
की। + 30परन्तु फरीसियों और व्यवस्था के
आचार्यों ने उनका बपतिस्मा ग्रहण नहीं कर
अपने विषय में परमेश्वर की योजना व्यर्थ कर
दी।

31येशु ने आगे कहा, "मैं इस पीढ़ी के लोगों
की तुलना किस से करूँ? वे किसके सदृश हैं?
32वे बाजार में बैठे हुए बालकों के सदृश हैं, जो
एक-दूसरे को पुकार कर कहते हैं:

'हमने तुम्हारे लिए बाँसुरी बजायी,
पर तुम नहीं नाचे;
हमने विलाप किया,
किन्तु तुम नहीं रोये।'

* अथवा, 'जिसका विश्वास मेरे कारण विचलित नहीं होता।" अथवा, "जो मुझ पर संदेह नहीं करता।" + अथवा, 'परमेश्वर की इच्छा पूरी की'

7 : 15 1 रा 17 : 23; 2 रा 4 : 36 **7 : 16** लू 1 : 68; 19 : 44 **7 : 18-35** मत 11 : 2-19 **7 : 19** भज 40 : 7; 118 : 26; मला 3 : 1; दा 9 : 26 **7 : 22** यश 35 : 5; 61 : 1 **7 : 26** लू 1 : 76 **7 : 27** मला 3 : 1 **7 : 28** लू 1 : 15 **7 : 29** लू 3 : 7, 12; मत 21 : 32 **7 : 30** प्रे 13 : 46

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

33योहन बपतिस्मादाता आए। वह न रोटी
खाते और न दाखरस पीते हैं। इस पर भी तुम
कहते हो, 'उनमें भूत लगा है'। 34मानव-पुत्र
आया। वह आम आदमी के समान खाता-पीता
है और तुम कहते हो, 'देखो, यह आदमी पेटू
और पियक्कड़ है। चुंगी-अधिकारियों और
पापियों का मित्र है।' 35 किन्तु परमेश्वर की
प्रज्ञा उसकी समस्त प्रजा द्वारा प्रमाणित हुई
है।'' **

पापिनी स्त्री

36किसी फ़रीसी ने येशु को अपने साथ भोजन
करने के लिए निमन्त्रण दिया। वह उस फरीसी
के घर गए और भोजन करने के लिए आसन
ग्रहण किया। 37नगर की एक पापिनी स्त्री को
यह पता चला कि येशु उस फरीसी के यहां
भोजन कर रहे हैं। वह संगमरमर के पात्र में इत्र
ले कर आयी 38और रोती हुई येशु के पीछे उन
के चरणों के पास++ खड़ी हो गयी। वह अपने
आंसुओं से येशु के चरण धोने, और अपने
केशों से उन्हें पोंछने लगी। वह बार-बार उनके
चरणों को चूमती और उन पर इत्र लगा रही थी।
39जिस फरीसी ने येशु को निमन्त्रण दिया
था, उसने यह देख कर मन-ही-मन कहा,
''यदि यह आदमी नबी होता, तो अवश्य जान
जाता कि जो स्त्री इसे छू रही है, वह कौन और
कैसी है—वह तो पापिनी है।'' 40इस पर येशु
ने उससे कहा, ''शिमोन, मुझे तुम से कुछ
कहना है।'' उसने उत्तर दिया, ''गुरुवर!
कहिए।'' 41येशु ने कहा, ''किसी महाजन के
दो कर्ज़दार थे। एक पाँच सौ सिक्कों *का ऋणी
था और दूसरा, पचास का। 42उनके पास कर्ज
चुकाने के लिए कुछ नहीं था; इसलिए महाजन
ने दोनों को माफ कर दिया। उन दोनों में कौन
उससे अधिक प्रेम करेगा ?'' 43शिमोन ने उत्तर
दिया, ''मेरी समझ में तो वही, जिसका अधिक
ऋण माफ हुआ।'' येशु ने उससे कहा,
''तुम्हारा निष्कर्ष ठीक है।'' 44तब उन्होंने उस
स्त्री की ओर मुड़ कर शिमोन से कहा, ''इस
स्त्री को देखते हो ? मैं तुम्हारे घर आया। तुमने
मुझे पैर धोने के लिए पानी नहीं दिया; पर इसने
मेरे पैर अपने आँसुओं से धोये और अपने केशों
से उनको पोंछा। 45तुमने मेरा चुम्बन नहीं किया;
परन्तु जब से मैं भीतर आया हूँ, यह मेरे पैर
चूमती रही है। 46तुमने मेरे सिर में तेल नहीं
लगाया, पर इसने मेरे पैरों पर इत्र लगाया है।
47इसलिए मैं तुम से कहता हूँ, इसके पाप जो
बहुत हैं, क्षमा हो गये हैं, क्योंकि+ इसने बहुत
प्रेम किया है। पर जिसे थोड़ा क्षमा किया गया,
वह प्रेम भी थोड़ा करता है।'' 48तब येशु ने उस
स्त्री से कहा, ''तुम्हारे पाप क्षमा हो गये।''
49साथ भोजन करने वाले एक-दूसरे से कहने
लगे, ''यह कौन है, जो पापों को भी क्षमा करता
है ?'' 50पर येशु ने उस स्त्री से कहा, ''तुम्हारे
विश्वास ने तुम्हारा उद्धार किया है। शान्ति से
जाओ।''

प्रभु येशु की शिष्याएँ

8 इसके कुछ ही समय बाद येशु नगर-नगर
और गाँव-गाँव घूम कर उपदेश देने और
परमेश्वर के राज्य का शुभ समाचार सुनाने
लगे। बारह प्रेरित उनके साथ थे 2और कुछ
स्त्रियाँ भी, जो दुष्ट आत्माओं और रोगों से मुक्त
की गयी थीं— मरियम, जिसका उपनाम
मगदलेनी था और जिस से सात भूत निकले थे;
3हेरोदेस के गृह-प्रबन्धक खूजा की पत्नी
योअन्ना; सूसन्नाह और अनेक अन्य स्त्रियाँ भी,
जो अपनी सम्पत्ति से येशु और उनके शिष्यों की
सेवा-परिचर्या करती थीं।

बीज बोने वाले किसान का दृष्टान्त

4एक विशाल जनसमूह एकत्र हो रहा था
और नगर-नगर से लोग येशु के पास आ रहे

** अथवा, 'बुद्धि अपनी सब संतानों द्वारा प्रमाणित होती है।' ++ भोज के समय मेहमान सोफे पर शायित स्थिति में भोजन करते थे। उनके चरण बाहर की ओर होते थे। * मूल में, 'दीनार'। एक सिक्के का मूल्य एक दिन की मजदूरी है। + अथवा, 'यह इस बात से स्पष्ट है कि'

7 : 33 लू 15 : 2 **7 : 36** लू 11 : 37 **7 : 37** मत 26 : 7-13; यो 12 : 3-8 **7 : 44** उत 18 : 4 **7 : 45** रोम 16 : 16 **7 : 48** लू 5 : 20-21 **7 : 50** लू 8 : 48; 17 : 19; 18 : 42 **8 : 1** लू 4 : 43 **8 : 2** मक 15 : 40-41; 16 : 9 **8 : 4-15** मत 13 : 1-23; मक 4 : 1-20

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

थे। उस समय उन्होंने यह दृष्टान्त सुनाया,
5"एक किसान अपने बीज बोने निकला।
बोते- बोते कुछ बीज मार्ग के किनारे गिरे और
वे पैरों से रुंद गए और आकाश के पक्षियों ने
उन्हें चुग लिया। 6कुछ बीज पथरीली भूमि पर
गिरे। वे उगते ही नमी के अभाव में झुलस गये।
7कुछ बीज काँटों के बीच गिरे और साथ-साथ
बढ़ने वाले काँटों ने उन्हें दबा दिया। 8पर कुछ
बीज अच्छी भूमि पर गिरे और उग कर सौ गुना
फल लाये।" इतना कहने के बाद वह पुकार
कर बोले, "जिसके सुनने के कान हों, वह सुन
ले।"

दृष्टान्तों का उद्देश्य

9शिष्यों ने येशु से इस दृष्टान्त का अर्थ पूछा।
10उन्होंने कहा, "परमेश्वर के राज्य के रहस्यों
का ज्ञान तुम लोगों को दिया गया है; पर दूसरों
को केवल दृष्टान्त मिले, जिससे वे देखते हुए
भी नहीं देखें और सुनते हुए भी नहीं समझें।

बीज बोने वाले के दृष्टान्त की व्याख्या

11"दृष्टान्त का अर्थ इस प्रकार है। परमेश्वर
का वचन बीज है। 12मार्ग के किनारे गिरे हुए
बीज वे लोग हैं, जो वचन सुनते हैं, परन्तु कहीं
ऐसा न हो कि वे विश्वास करें और मुक्ति प्राप्त
कर लें; इसलिए शैतान आ कर उनके हृदय से
वचन ले जाता है। 13चट्टान पर गिरे हुए बीज
वे लोग हैं, जो वचन सुनते ही प्रसन्नता से उसे
ग्रहण कर लेते हैं, किन्तु उन में जड़ नहीं है।
वे कुछ ही समय तक विश्वास करते हैं और
परीक्षा के समय उनका पतन हो जाता है।
14काँटों में गिरे हुए बीज वे लोग हैं, जो वचन
सुनते हैं, परन्तु आगे चल कर वे चिन्ता, धन-
सम्पत्ति और जीवन के भोग-विलास से दब
जाते हैं और परिपक्वता तक नहीं पहुँच पाते हैं।
15अच्छी भूमि पर गिरे हुए बीज वे लोग हैं, जो
वचन सुन कर उसे सच्चे और निष्कपट हृदय
में सुरक्षित रखते और अपने धैर्य के कारण फल
लाते हैं।

दीपक का दृष्टान्त

16"कोई दीपक जला कर बरतन से नहीं
ढकता या पलंग के नीचे नहीं रखता, बल्कि वह
उसे दीवट पर रख देता है, जिससे भीतर आने
वालों को उसका प्रकाश मिले।
17"ऐसा कुछ भी छिपा हुआ नहीं है, जो
प्रकट नहीं होगा और ऐसा कुछ भी गुप्त नहीं
है, जो ज्ञात और प्रकाशित नहीं होगा। 18तो इसके
सम्बन्ध में सावधान रहो कि तुम किस तरह
सुनते हो; क्योंकि जिसके पास है, उसको और
दिया जायेगा और जिसके पास कुछ नहीं है,
उस से वह भी ले लिया जायेगा, जिसे वह
अपना समझता है।"

प्रभु येशु के सम्बन्धी

19येशु की माता और भाई* उन से मिलने
आये, किन्तु भीड़ के कारण उनके पास नहीं
पहुँच सके। 20लोगों ने येशु से कहा, "आपकी
माता और आपके भाई बाहर हैं। वे आप से
मिलना चाहते हैं।" 21किन्तु येशु ने उनसे कहा,
"मेरी माता और मेरे भाई वे हैं, जो परमेश्वर
का वचन सुनते और उसका पालन करते हैं।"

तूफान को शान्त करना

22एक दिन येशु अपने शिष्यों के साथ नाव
पर चढ़े और उनसे बोले, "आओ, हम झील
के उस पार चलें।" वे चल पड़े। 23जब नाव
चली जा रही थी तब येशु सो गये। इसी बीच
झील में झंझावात उठा। नाव में पानी भरने लगा
और वे संकट में पड़ गये। 24शिष्यों ने येशु के
पास आ कर उन्हें जगाया और कहा, "स्वामी!
स्वामी! हम डूब रहे हैं!" येशु उठे और उन्होंने
वायु तथा लहरों को डाँटा। वे थम गयीं और
शान्ति छा गयी। 25तब उन्होंने अपने शिष्यों से
कहा, "तुम्हारा विश्वास कहाँ है?" उन पर
भय छा गया और वे अचम्भे में पड़ कर आपस
में कहने लगे, "न जाने यह कौन हैं? यह वायु
और लहरों को भी आज्ञा देते हैं और वे इनकी
आज्ञा मानती हैं।"

---

* अथवा, "भाई-बहिन"

8 : 10 यश 6 : 9-10 (यू० पाठ) **8 : 11** 1 पत 1 : 23 **8 : 12** 1 कुर 1 : 21 **8 : 15** प्रे 16 : 14; इब्र 10 : 36; प्रक 3 : 10 **8 : 16-18** मक 4 : 21-25 **8 : 16** मत 5 : 15 **8 : 17** मत 10 : 26 **8 : 18** लू 19 : 26 **8 : 19-21** मत 12 : 46-50; मक 3 : 31-35 **8 : 22-25** मत 8 : 18, 23-27; मक 4 : 35-41

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गेरासेन का भूतग्रस्त व्यक्ति

26वे नाव से उतर कर गेरासेनियों के प्रदेश
में पहुँचे, जो झील के उस पार गलील प्रदेश के
सामने है। 27येशु ज्यों ही भूमि पर उतरे, उस
नगर का एक भूतग्रस्त मनुष्य उनके पास आया।
वह बहुत दिनों से कपड़े नहीं पहनता था और
घर में नहीं, बल्कि कबरों में रहा करता था।
28वह येशु को देख कर चिल्ला उठा और
दण्डवत् कर ऊँचे स्वर से बोला, "येशु!
सर्वोच्च परमेश्वर के पुत्र! मुझ से आप को क्या
काम? मैं आप से विनती करता हूँ, मुझे न
सताइए"; 29क्योंकि येशु अशुद्ध आत्मा को
उस मनुष्य से निकल जाने का आदेश दे रहे थे।
भूत उसे बार-बार पकड़ लेता था और वश
में रखने के लिए लोग उसे जंजीरों और बेड़ियों
से जकड़ देते थे; किन्तु वह अपने बन्धनों को
तोड़ देता था और भूत उसे निर्जन स्थानों में ले
जाया करता था।
30येशु ने उस से पूछा, "तेरा नाम क्या है?"
उसने कहा, "सेना," क्योंकि उस मनुष्य में
बहुत-से भूत लग गए थे। 31वे येशु से अनुनय-
विनय करने लगे कि वह उन को अथाह गर्त्त
में जाने का आदेश न दें।
32वहाँ पहाड़ी पर सूअरों का एक बड़ा झुण्ड
चर रहा था। उन्होंने येशु से विनती की कि वह
उन्हें सूअरों में घुसने की अनुमति दें। येशु ने
अनुमति दे दी। 33तब भूत उस मनुष्य से निकल
कर सूअरों में जा घुसे और वह झुण्ड ढाल पर
से झील की ओर झपटा और डूब कर मर गया।
34यह देख कर सूअर चराने वाले भाग गये
और उन्होंने नगर तथा बस्तियों में इसकी खबर
फैला दी। 35लोग यह सब देखने निकले। वे
येशु के पास आये और यह देख कर भयभीत
हो गये कि वह मनुष्य, जिसमें से भूत निकले
थे, कपड़े पहने शान्त भाव से येशु के चरणों के
समीप बैठा हुआ है। 36जिन्होंने यह सब अपनी
आँखों से देखा था, उन्होंने लोगों को बताया कि
किस तरह भूतग्रस्त मनुष्य स्वस्थ हुआ। 37तब
गेरासेन के आसपास के सब लोगों ने येशु से
यह निवेदन किया, "आप हमारे यहाँ से चले
जाइए;" क्योंकि वे बहुत डर गए थे। येशु नाव
पर चढ़ कर लौट गये।
38जिस मनुष्य से भूत निकले थे, वह येशु
से विनती करने लगा, "मुझे अपने साथ रहने
दीजिए", पर येशु ने उसे विदा करते हुए कहा,
39"अपने घर लौट जाओ और लोगों को यह
बताओ कि परमेश्वर ने तुम्हारे लिए क्या-क्या
किया है।" वह चला गया और सारे नगर में
प्रचार करने लगा कि येशु ने उसके लिए क्या-
क्या किया है।

याईर की पुत्री और रक्तस्राव से पीड़ित स्त्री

40जब येशु लौटे तब लोगों ने उनका स्वागत
किया, क्योंकि सभी उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे।
41उस समय सभागृह का याईर नामक एक
अधिकारी आया और येशु के चरणों पर गिरकर
उन से अनुनय-विनय करने लगा कि वह
उसके यहाँ चलने की कृपा करें, 42क्योंकि उसकी
लगभग बारह वर्ष की इकलौती बेटी मरने पर
थी। येशु उसके साथ चले।
रास्ते में भीड़ चारों ओर से येशु को दबा ही
रही थी। 43एक स्त्री बारह वर्ष से रक्तस्राव से
पीड़ित थी। वह अपनी सारी जीविका वैद्यों पर
खर्च कर चुकी थी, पर कोई भी उसे स्वस्थ नहीं
कर सका था। 44उसने पीछे से आ कर येशु के
वस्त्र के सिरे को छू लिया और उसका रक्तस्राव
उसी क्षण बन्द हो गया। 45येशु ने कहा, "किसने
मेरा स्पर्श किया?" सब के इन्कार करने पर
पतरस बोला, "स्वामी, आप भीड़ से घिरे हैं!
और लोग आप पर गिर पड़ रहे हैं।" 46येशु ने
कहा, "किसी ने अवश्य मेरा स्पर्श किया है,
क्योंकि मैंने अनुभव किया कि मुझ से शक्ति*
निकली है।" 47जब स्त्री ने देखा कि वह छिप
नहीं सकती, तब वह काँपती हुई आयी और
येशु के चरणों पर गिर कर उसने सब लोगों के
सामने बताया कि उसने क्यों उनका स्पर्श किया
और वह कैसे उसी क्षण स्वस्थ हो गयी।

* अथवा, 'सामर्थ्य'

8 : 26-39 मत 8 : 28-34; मक 5 : 1-20 8 : 40-56 मत 9 : 18-26; मक 5 : 21-43 8 : 42 लू 7 : 12

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

48येशु ने उस से कहा, "पुत्री, तुम्हारे विश्वास
ने तुम्हें स्वस्थ कर दिया है। शान्ति से
जाओ।"
49येशु यह कह ही रहे थे कि सभागृह के
अधिकारी के यहाँ से एक मनुष्य आया और
उससे बोला, "आपकी बेटी मर गयी है।
अब आप गुरुजी को कष्ट न दीजिए।" 50यह
सुन कर येशु ने उससे कहा, "डरिए नहीं।
बस, विश्वास कीजिए और वह स्वस्थ हो
जायेगी।"
51जब येशु याईर के घर पहुँचे तो उन्होंने
पतरस, योहन तथा याकूब और लड़की के
माता-पिता के सिवा किसी को अपने साथ
अन्दर नहीं आने दिया। 52सब रो रहे थे और
उसके लिए विलाप कर रहे थे। येशु ने कहा,
"मत रोओ! वह मरी नहीं, बल्कि सो रही
है।" 53वे उनकी हँसी उड़ाने लगे, क्योंकि वे
जानते थे कि वह मर गयी है।
54येशु ने लड़की का हाथ पकड़ कर पुकारा,
"हे लड़की! उठ!" 55लड़की के प्राण लौट
आये और वह उसी क्षण उठ बैठी। येशु ने
आदेश दिया कि उसे कुछ खाने को दिया जाए।
56उसके माता-पिता आश्चर्य-चकित हो गये,
किन्तु येशु ने आज्ञा दी कि वे इस घटना की चर्चा
किसी से नहीं करें।

बारह शिष्यों का प्रेषण

9 येशु ने बारह प्रेरितों को एक साथ बुलाया
और उन्हें सब भूतों और रोगों को दूर
करने की शक्ति और अधिकार प्रदान किया।
2तब येशु ने उन्हें परमेश्वर के राज्य का संदेश
सुनाने और रोगियों को स्वस्थ करने भेजा।
3उन्होंने उन से कहा, "रास्ते के लिए कुछ भी
न लो—न लाठी, न झोली, न रोटी, न रुपया।
अपने पास दो-दो कुरते भी न रखो। 4जिस घर
में प्रवेश करो वहीं रहो और वहीं से विदा हो।
5यदि लोग तुम्हारा स्वागत न करें, तो उनके
नगर से निकलने पर उनके विरुद्ध प्रमाण के
लिए अपने पैरों से धूल झाड़ दो।" 6प्रेरित चले
गये और सब कहीं शुभ समाचार सुनाते तथा
लोगों को स्वस्थ करते हुए गांव-गांव भ्रमण
करने लगे।

हेरोदेस उलझन में पड़ा

7शासक हेरोदेस इन सब बातों की चर्चा सुन
कर असमंजस में पड़ गया; क्योंकि कुछ लोग
कहते थे कि योहन मृतकों में से जी उठे हैं।
8कुछ कहते थे कि नबी एलियाह प्रकट हुए हैं
और कुछ कहते थे कि प्राचीन नबियों में से कोई
नबी पुनर्जीवित हो गया है। 9हेरोदेस ने कहा,
"योहन का तो मैंने सिर कटवा दिया था। फिर
यह कौन है, जिसके विषय में मैं ऐसी बातें सुन
रहा हूँ?" और वह येशु से मिलने की चेष्टा करने
लगा।

पाँच हजार को भोजन कराना

10प्रेरितों ने लौट कर येशु को बताया कि उन
लोगों ने क्या-क्या किया है। येशु उन्हें अपने
साथ ले कर बेतसैदा नगर की ओर एकांत में
चले गये, 11किन्तु लोगों को इसका पता चल
गया और वे भी उनके पीछे हो लिये। येशु ने
उनका स्वागत किया, परमेश्वर के राज्य के
विषय में उनको बताया और जिन्हें रोगमुक्त
होने की आवश्यकता थी, उनको स्वस्थ किया।
12अब दिन ढलने लगा था। इसलिए बारह
प्रेरितों* ने उनके पास आ कर कहा, "लोगों को
विदा कीजिए, जिससे वे आसपास के गाँवों
और बस्तियों में जा कर रहने और खाने का
प्रबन्ध कर सकें। क्योंकि यहाँ तो हम निर्जन
स्थान में हैं।" 13येशु ने उन्हें उत्तर दिया, "तुम
लोग ही उन्हें भोजन दो।" उन्होंने कहा,
"हमारे पास तो केवल पाँच रोटियाँ और दो
मछलियाँ हैं। क्या आप चाहते हैं कि हम स्वयं
जा कर इन सब लोगों के लिए भोजन खरीदें?"
14वहाँ लगभग पाँच हजार पुरुष थे। येशु ने

---

* मूल में 'बारहों'

8 : 48 लू 7 : 50 **8 : 52** लू 7 : 13 **8 : 56** लू 5 : 14; मक 7 : 36 **9 : 1-6** मत 10 : 1, 7, 9-14; मक 6 : 7-13 **9 : 4** लू 10 : 5-7 **9 : 5** लू 10 : 11; प्रे 13 : 51 **9 : 7-9** मत 14 : 1-2; मक 6 : 14-16 **9 : 9** लू 23 : 8 **9 : 10-17** मत 14; 13-21; मक 6 : 30-44; यो 6 : 1-13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अपने शिष्यों से कहा, "लगभग पचास-पचास
के झुण्ड में उन्हें बैठा दो।" 15उन्होंने ऐसा ही
किया औप सब को बैठा दिया।
16तब येशु ने वे पाँच रोटियाँ और दो.
मछलियाँ लीं और आकाश की ओर आँखें उठा
कर उन पर आशिष मांगी। फिर उन्हें तोड़ा और
अपने शिष्यों को दिया ताकि वे उन्हें लोगों को
परोसें। 17सब ने खाया और खा कर तृप्त हो
गये, और बचे हुए टुकड़ों से बारह टोकरियाँ
भर गईं।

पतरस के विश्वास की घोषणा

18येशु किसी दिन एकान्त में प्रार्थना कर रहे
थे और उनके शिष्य उनके साथ थे। येशु ने उन
से पूछा, "मैं कौन हूँ, इस विषय में जनता क्या
कहती है?" 19उन्होंने उत्तर दिया, "योहन
बपतिस्मादाता"; कुछ लोग कहते हैं,
'एलियाह'; और कुछ लोग कहते हैं, 'प्राचीन
नबियों में से कोई नबी जो पुनर्जीवित हो गया
है'।" 20येशु ने उन से कहा, "और तुम क्या
कहते हो कि मैं कौन हूँ?" पतरस ने उत्तर
दिया, "परमेश्वर के मसीह।" 21येशु ने अपने
शिष्यों को कड़ी चेतावनी एवं आज्ञा दी कि वे
यह बात किसी को नहीं बतायें।

दुःखभोग की प्रथम भविष्यवाणी

22येशु ने कहा, "मानव- पुत्र को बहुत
दुःख उठाना होगा। यह अनिवार्य है कि वह
धर्मवृद्धों, महापुरोहितों और शास्त्रियों द्वारा
ठुकराया जाए, मार डाला जाए और तीसरे दिन
जीवित हो उठे।"

आत्मत्याग की आवश्यकता

23तब येशु ने सब से कहा, "जो मेरा
अनुसरण करना चाहता है, वह आत्मत्याग करे
और प्रतिदिन अपना क्रूस उठा कर मेरे पीछे हो
ले; 24क्योंकि जो अपना प्राण सुरक्षित रखना
चाहता है, वह उसे खो देगा और जो मेरे कारण
अपना प्राण खोएगा, वही उसे सुरक्षित रखेगा।
25मनुष्य को इस से क्या लाभ, यदि वह सारा
संसार तो प्राप्त कर ले, लेकिन अपने आपको
नष्ट कर दे अथवा गँवा दे? 26जो मुझे तथा मेरी
शिक्षा को स्वीकार करने में लज्जा अनुभव
करेगा, मानव-पुत्र भी उसे स्वीकार करने में
लज्जा अनुभव करेगा, जब वह अपनी, अपने
पिता की तथा पवित्र स्वर्गदूतों की महिमा के
साथ आयेगा। 27मैं तुम लोगों से सच-सच
कहता हूँ—यहाँ खड़े लोगों में कुछ ऐसे लोग
हैं, जो तब तक मृत्यु का स्वाद नहीं चखेंगे, जब
तक वे परमेश्वर का राज्य न देख लेंगे।"

येशु का रूपान्तरण

28इन बातों के कोई आठ दिन बाद येशु
पतरस, योहन और याकूब को अपने साथ ले
गये और प्रार्थना करने के लिए एक पहाड़ पर
चढ़े। 29प्रार्थना करते समय येशु के मुखमण्डल
का रूपान्तरण हो गया और उनके वस्त्र उज्ज्वल
हो कर जगमगा उठे। 30अचानक शिष्यों ने दो
पुरुषों को उनके साथ बातचीत करते हुए देखा।
वे मूसा और एलियाह थे। 31वे दोनों तेजोमय
दिखाई दिए और वे येशु के उस निर्गमन के
विषय में बातें कर रहे थे जिसे वह यरूशलेम
में सम्पन्न करने वाले थे। 32पतरस और उसके
साथी नींद में डूबे हुए थे; किन्तु अब पूरी तरह
जाग गये। उन्होंने येशु की महिमा को और
उनके साथ खड़े उन दो पुरुषों को देखा। 33वे
पुरुष येशु से विदा हो ही रहे थे कि पतरस ने
येशु से कहा, "स्वामी! यह हमारे लिए कितना
अच्छा है कि हम यहां हैं! हम तीन तम्बू खड़ा
करें—एक आपके लिए, एक मूसा के लिए
और एक एलियाह के लिए।" उसे पता नहीं
था कि वह क्या कह रहा है। 34वह बोल ही रहा
था कि एक बादल आ कर उन पर छा गया और
बादल से घिर जाने के कारण वे भयभीत हो
गये। 35बादल में से यह वाणी सुनाई दी, "यह
मेरा पुत्र है, मेरा चुना हुआ। इसकी बात
सुनो।" 36वाणी समाप्त होने पर येशु अकेले
ही दिखाई दिये। शिष्य इस सम्बन्ध में चुप रहे

9 : 17 2 रा 4 : 44 **9 : 18-72** मत 16 : 13-28; मक 8 : 27—9 : 1 **9 : 19** लू 9 : 7 **9 : 20** यो 6 : 69 **9 : 22** लू 9 : 44; 18 : 32-33 **9 : 24** लू 17; 33; मत 10 : 39; यो 12 : 25 **9 : 26** मत 10 : 33 **9 : 28-36** मत 17 : 1-9; मक 9 : 2-9 **9 : 31** लू 9 : 22 **9 : 32** 2 पत 1 : 16-18; यो 1 : 14 **9 : 35** लू 3 : 22

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और उन्होंने जो देखा था, उस विषय पर वे उन
दिनों किसी से कुछ नहीं बोले।

अशुद्धात्मा-ग्रस्त लड़का

37दूसरे दिन जब वे पहाड़ से उतरे, तब एक
विशाल जनसमूह येशु से मिलने आया। 38उस
में एक मनुष्य ने पुकार कर कहा, "गुरुवर! आप
से मेरी यह प्रार्थना है कि आप मेरे पुत्र पर
कृपादृष्टि करें। वह मेरा एकलौता पुत्र है। 39उसे
एक आत्मा लग जाया करती है, जिससे वह
अचानक चिल्ला उठता है। वह इसे ऐसा
मरोड़ती है कि यह मुंह से झाग डालने लगता
है। वह इसे क्षत-विक्षत करती है और बड़ी
कठिनाई से इसको छोड़ती है। 40मैंने आपके
शिष्यों से उसे निकालने की प्रार्थना की, परन्तु
वे ऐसा नहीं कर सके।" 41येशु ने उत्तर दिया,
"अविश्वासी और भ्रष्ट पीढ़ी! मैं कब तक
तुम्हारे साथ रहूँगा और तुम्हें सहता रहूँगा?
अपने पुत्र को यहाँ लाओ।" 42लड़का पास आ
ही रहा था कि भूत उसे भूमि पर पटक कर
मरोड़ने लगा, किन्तु येशु ने अशुद्ध आत्मा को
डाँटा और लड़के को स्वस्थ कर उसके पिता
को सौंप दिया। 43परमेश्वर का यह प्रताप देख
कर सब भौचक्के हो गये।

दुःखभोग की द्वितीय भविष्यवाणी

सब लोग येशु के समस्त कार्यों को देख कर
अचम्भे में पड़ जाते थे; किन्तु उन्होंने अपने
शिष्यों से कहा, 44"तुम लोग कान लगा कर
ये शब्द सुनो! मानव-पुत्र मनुष्यों के हाथ
पकड़वाया जाने वाला है।" 45परन्तु यह बात
उनकी समझ में नहीं आई। इसका अर्थ उन से
छिपा रह गया कि कहीं वे समझ न लें। वे इसके
विषय में येशु से पूछने से डरते थे।

बड़ा कौन?

46शिष्यों में यह विवाद छिड़ गया कि उनमें
सबसे बड़ा कौन है। 47येशु ने उनके हृदय का
विचार जान कर एक बालक को लिया और उसे
अपने पास खड़ा कर 48उन से कहा, "जो मेरे
नाम पर इस बालक का स्वागत करता है, वह
मेरा स्वागत करता है और जो मेरा स्वागत करता
है, वह उसका स्वागत करता है, जिसने मुझे
भेजा है; क्योंकि तुम सब में जो सब से छोटा
है, वही बड़ा है।"

पक्ष-विपक्ष

49योहन ने कहा, "स्वामी! हमने एक
मनुष्य को आपका नाम ले कर भूतों को
निकालते देखा, तो उसे रोकने की चेष्टा की,
क्योंकि वह हमारी तरह आपका अनुसरण नहीं
करता।" 50येशु ने कहा, "उसे मत रोको। जो
तुम्हारे विरुद्ध नहीं है, वह तुम्हारे पक्ष में है।"

यरूशलेम-यात्रा का आरम्भ

51जब येशु के ऊपर उठा लिये जाने के दिन
निकट आए तब उन्होंने यरूशलेम जाने का दृढ़
निश्चय किया।

सामरियों द्वारा निरादर

52येशु ने संदेश देने वालों को अपने आगे
भेजा। वे पहले गए कि सामरियों के एक गाँव
में प्रवेश कर येशु के लिए तैयारी करें। 53परन्तु
वहाँ लोगों ने येशु का स्वागत नहीं किया,
क्योंकि वह यरूशलेम के मार्ग पर जा रहे थे।
54जब उनके शिष्य याकूब और योहन ने यह
देखा तब वे बोल उठे, "प्रभु! क्या आप चाहते
हैं कि हम आज्ञा दें कि आकाश से आग बरसे
और उन्हें भस्म कर दे।" 55पर येशु ने मुड़ कर
उन्हें डाँटा* 56और वे दूसरे गाँव को चले गये।

शिष्य बनने की शर्तें

57येशु अपने शिष्यों के साथ यात्रा कर रहे
थे कि मार्ग में किसी ने उनसे कहा, "आप
जहाँ कहीं भी जायेंगे, मैं आपके पीछे-पीछे
चलूँगा।" 58येशु ने उसे उत्तर दिया, "लोमड़ियों
के लिए माँदें हैं और आकाश के पक्षियों के
लिए घोंसले, परन्तु मानव-पुत्र के लिए सिर
रखने को भी कहीं स्थान नहीं है।"

---

*कुछ प्राचीन प्रतियों में ये शब्द भी पाए जाते हैं, "और कहा, 'तुम नहीं जानते हो कि किस आत्मा से प्रेरित हो। मानव-पुत्र मनुष्यों को नष्ट करने नहीं, बल्कि उन्हें बचाने आया है।'

9 : 37-45 मत 17 : 14-23; मक 9 : 14-32 **9 : 42** लू 7 : 15 **9 : 44** लू 9 : 22 **9 : 45** लू 18 : 34; मक 9 : 32 **9 : 46-50** मत 18 : 1-5; मक 9 : 33-40 **9 : 48** मत 10 : 40 **9 : 50** लू 11 : 23; फिल 1 : 18 **9 : 51** मक 10 : 32; यो 7 : 1 **9 : 52** यो 4 : 4 **9 : 53** यो 4 : 9 **9 : 54** 2 रा 1 : 10,12 **9 : 57-60** मत 8 : 19-22

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

59उन्होंने किसी दूसरे से कहा, "मेरे पीछे
चले आओ।" परन्तु उसने उत्तर दिया, "प्रभु!
मुझे पहले अपने पिता को दफनाने के लिए जाने
दीजिए।" 60येशु ने उससे कहा, "मुरदों को
अपने मुरदे दफनाने दो। किन्तु तुम जा कर
परमेश्वर के राज्य का प्रचार करो।"
61फिर कोई दूसरा बोला, "प्रभु! मैं आपका
अनुसरण करूँगा, परन्तु पहले मुझे अपने घर
वालों से विदा लेने दीजिए"। 62येशु ने उससे
कहा, "हल की मूठ पकड़ने के बाद जो मुड़
कर पीछे देखता है, वह परमेश्वर के राज्य के
योग्य नहीं।"

बहत्तर शिष्यों का प्रेषण

10 इसके बाद प्रभु ने अन्य बहत्तर**
शिष्यों को नियुक्त किया और जिस-
जिस नगर और गाँव में वे स्वयं जाने वाले थे,
वहाँ दो-दो करके उन्हें अपने आगे भेजा। 2येशु
ने उन से कहा, "फसल तो बहुत है, परन्तु
मजदूर थोड़े हैं। इसलिए फसल के स्वामी से
विनती करो कि वह अपनी फसल काटने के
लिए मजदूरों को भेजे। 3जाओ, मैं तुम्हें भेड़ियों
के बीच मेमनों की तरह भेज रहा हूँ। 4तुम न
थैली, न झोली और न जूते ले जाना और न रास्ते
में किसी को नमस्कार करना। 5जब किसी घर
में प्रवेश करोगे, तब सब से पहले यह कहना,
'इस घर में शान्ति हो!' 6यदि वहाँ कोई शान्ति
के योग्य होगा, तो उस पर तुम्हारी शान्ति
ठहरेगी, नहीं तो वह तुम्हारे पास लौट आयेगी।
7उसी घर में ठहरे रहना और उनके पास जो हो,
वही खाना-पीना; क्योंकि मजदूर को अपनी
मजदूरी मिलनी चाहिए। घर पर घर मत
बदलना। 8जब तुम किसी नगर में प्रवेश करो
और लोग तुम्हारा स्वागत करें, तो जो कुछ तुम्हें
परोसा जाये, वही खाना। 9वहाँ के रोगियों को
स्वस्थ करना और उन से कहना, 'परमेश्वर का
राज्य तुम्हारे निकट आ गया है'। 10परन्तु यदि
किसी नगर में प्रवेश करते हो और लोग तुम्हारा
स्वागत नहीं करें, तो वहाँ के बाज़ारों में जा कर
कहना, 11'अपने पैरों में लगी तुम्हारे नगर की
धूल तक हम तुम्हारे सामने झाड़ देते हैं। तब
भी यह जान लो कि परमेश्वर का राज्य निकट
आ गया है।' 12मैं तुम से यह कहता हूँ: उस
दिन उस नगर की दशा की अपेक्षा सदोम की
दशा कहीं अधिक सहनीय होगी।

अविश्वासी नगरों को धिक्कार

13"धिक्कार तुझे, खुराजिन! धिक्कार तुझे
बेतसैदा! जो सामर्थ्य के कार्य तुम में किये गये
हैं, यदि वे सोर और सीदोन में किये गये होते,
तो उन्होंने न जाने कब से टाट ओढ़ कर और
राख में बैठकर पश्चात्ताप कर लिया होता।
14इसलिए न्याय के समय तुम्हारी दशा की
अपेक्षा सोर और सीदोन की दशा कहीं अधिक
सहनीय होगी। 15और तू, कफरनहूम! क्या तू
स्वर्ग तक ऊँचा उठाया जायेगा? नहीं, तू तो
अधोलोक तक नीचे गिरा दिया जायेगा!
16"जो तुम्हारी सुनता है, वह मेरी सुनता है
और जो तुम्हारा तिरस्कार करता है, वह मेरा
तिरस्कार करता है। जो मेरा तिरस्कार करता है,
वह उसका तिरस्कार करता है जिसने मुझे भेजा
है।"

बहत्तर शिष्यों का लौटना

17बहत्तर* शिष्य सानन्द लौटे और बोले,
"प्रभु! आपके नाम के कारण भूत भी हमारे
अधीन हैं।" 18येशु ने उन्हें उत्तर दिया, "मैंने
शैतान को बिजली की तरह स्वर्ग से गिरते
देखा। 19मैंने तुम्हें साँपों, बिच्छुओं और बैरी
की सारी शक्ति को कुचलने का सामर्थ्य दिया
है। कुछ भी तुम्हें हानि नहीं पहुँचा सकेगा।
20लेकिन, इसलिए आनन्दित न हो कि आत्माएँ
तुम्हारे अधीन हैं, बल्कि इसलिए आनन्दित हो

** कुछ प्राचीन प्रतियों में 'सत्तर' * अथवा, 'सत्तर'

9 : 61 1 रा 19 : 20 **10 : 1-12** मत 10 : 7-16 **10 : 1** मक 6 : 7 **10 : 2** यो 4 : 35; मत 9 : 37-38 **10 : 4** लू 9 : 3-5; 2 रा 4 : 29 **10 : 7** 1 तिम 5 : 18; 1 कुर 9 : 5-14 **10 : 8** 1 कुर 10 : 27 **10 : 11** प्रे 18 : 6 **10 : 13** मत 11 : 21-23 **10 : 15** यश 14 : 13, 15 **10 : 16** मत 10 : 40; यो 5 : 23; 15 : 23 **10 : 18** यो 12 : 31; प्रक 12 : 8-9 **10 : 19** मक 16 : 18; भज 91 : 13 **10 : 20** नि 32 : 32; फिल 4 : 3; प्रक 3 : 5; मत 7 : 22

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
कि तुम्हारे नाम स्वर्ग में लिखे गए हैं।''

येशु का धन्यवाद देना

21उसी घड़ी येशु ने पवित्र आत्मा में
उल्लसित हो कर कहा, ''पिता! स्वर्ग और
पृथ्वी के प्रभु! मैं तेरी स्तुति करता हूँ, क्योंकि
तूने ये सब बातें ज्ञानियों और बुद्धिमानों से गुप्त
रखीं; किन्तु बच्चों पर प्रकट कीं। हाँ, पिता यही
तुझे अच्छा लगा। 22मेरे पिता ने मुझे सब कुछ
सौंपा है। कोई नहीं जानता कि पुत्र कौन है, पर
केवल पिता; और न कोई जानता है कि पिता
कौन है, पर केवल पुत्र और वह जिस पर पुत्र
उसे प्रकट करना चाहे।''
23तब उन्होंने अपने शिष्यों की ओर मुड़ कर
एकान्त में उन से कहा, ''धन्य हैं वे आँखें, जो
ये सब देख रही हैं जिन्हें तुम देख रहे हो!
24क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ—तुम जो कुछ
देख रहे हो, उन्हें कितने ही नबी और राजा
देखना चाहते थे, परन्तु उन्होंने उन्हें नहीं देखा
और जो बातें तुम सुन रहे हो, वे उन्हें सुनना
चाहते थे, परन्तु उन्होंने उन्हें नहीं सुना।''

सब से बड़ी आज्ञा

25तब व्यवस्था का एक आचार्य उठा और
येशु की परीक्षा करने के लिए उसने यह पूछा,
''गुरुवर! शाश्वत जीवन का उत्तराधिकारी
बनने के लिए मुझे क्या करना चाहिए?''
26येशु
ने उस से कहा, ''व्यवस्था-ग्रंथ में क्या लिखा
है? उसमें तुम क्या पढ़ते हो?''
27उसने उत्तर
दिया, ''अपने प्रभु परमेश्वर को अपने सम्पूर्ण
हृदय, सम्पूर्ण प्राण, सम्पूर्ण शक्ति और सम्पूर्ण
बुद्धि से प्रेम करो और अपने पड़ोसी को अपने
समान प्रेम करो।''
28येशु ने उससे कहा, ''तुमने ठीक
उत्तर दिया। यही करो और तुम जीवन प्राप्त
करोगे।''†

दयालु सामरी का दृष्टान्त

29इस पर व्यवस्था के आचार्य ने अपने प्रश्न
की सार्थकता दिखलाने के लिए येशु से पूछा,
''लेकिन मेरा पड़ोसी कौन है?''
30येशु ने उसे
उत्तर दिया, ''एक मनुष्य यरूशलेम से यरीहो
नगर जा रहा था। वह डाकुओं से घिर गया।
उन्होंने उसे लूट लिया और मार-पीट कर तथा
अधमरा छोड़ कर चले गये।
31संयोग से एक
पुरोहित उसी मार्ग से जा रहा था। वह उसे देख
कर कतरा कर चला गया।
32इसी प्रकार एक
उपपुरोहित* आया और उसे देख कर वह भी
कतरा कर चला गया।
33अब एक सामरी+
यात्री उसके समीप से निकला। उसे देखकर
वह दया से द्रवित हो उठा।
34वह उसके पास
गया और उसने उसके घावों पर तेल और
दाखरस डाल कर पट्टी बाँधी। तब वह उसे
अपनी ही सवारी पर बैठा कर एक सराय में ले
गया और उसने उसकी सेवा-सुश्रूषा की।
35दूसरे दिन उसने चाँदी के दो सिक्के**
निकाल कर सराय के मालिक को दिये और
उससे कहा, 'आप इसकी सेवा-सुश्रूषा करें।
यदि कुछ और खर्च हो जायेगा तो मैं लौटने पर
आप को चुका दूँगा।''
36येशु ने व्यवस्था के आचार्य से पूछा,
''तुम्हारे विचार में उन तीनों में से कौन डाकुओं
के हाथों पड़े उस मनुष्य का पड़ोसी सिद्ध
हुआ?''
37उसने उत्तर दिया, ''वही जिसने
उस पर दया की।'' येशु बोले, ''जाओ, तुम भी
ऐसे ही करो।''

मार्था और मरियम

38येशु और उनके शिष्य यात्रा कर रहे थे।
तब येशु एक गाँव में आये। वहाँ मार्था नामक
एक महिला ने अपने यहाँ उनका स्वागत
किया।
39उसकी मरियम नामक एक बहिन
थी। वह प्रभु येशु के चरणों में बैठ कर येशु की
शिक्षा सुन रही थी।
40परन्तु मार्था सेवा-सत्कार
के अनेक कार्यों में उलझी हुई थी। उसने सामने
आकर कहा, ''प्रभु! आपको कुछ भी चिन्ता

---

* मूल में 'लेवी' + यहूदी जाति से अलग हुई जाति के लोग। यहूदी इन्हें धर्म-च्युत मानते थे और धर्म-भ्रष्ट समझकर इनसे घृणा करते थे। ** मूल में 'दीनार' †अथवा, 'तुम जीवित रहोगे।'

10 : 21-22 मत 11 : 25-27 **10 : 23** मत 13 : 16-17 **10 : 24** 1 पत 1 : 10 **10 : 25-28** मत 22 : 35-40; मक 12 : 28-34 **10 : 25** लू 18 : 18-20 **10 : 27** व्य 6 : 5; लेव 19 : 18 **10 : 28** लेव 18 : 5; मत 19 : 17 **10 : 38** यो 11 : 1; 12 : 2-3

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नहीं कि मेरी बहिन ने सेवा-सत्कार का पूरा भार मुझ अकेली पर ही छोड़ दिया है? उस से कहिए कि वह मेरी सहायता करे।''
41प्रभु ने उसे उत्तर दिया, ''मार्था! मार्था! तुम बहुत-सी बातों के विषय में चिन्तित और परेशान हो;
42जबकि केवल एक ही बात आवश्यक है+। मरियम ने उस सर्वोत्तम भाग को चुना है। वह उससे नहीं छीना जायेगा।''

आदर्श प्रार्थना

11 एक समय येशु किसी स्थान पर प्रार्थना कर रहे थे। प्रार्थना समाप्त होने पर उनके एक शिष्य ने उनसे कहा, ''प्रभु! हमें प्रार्थना करना सिखाइए, जैसे योहन ने अपने शिष्यों को सिखाया है।''
2येशु ने शिष्यों से कहा, ''जब तुम प्रार्थना करते हो, तब यह कहो:
पिता! तेरा नाम पवित्र माना जाये।
तेरा राज्य आये।
3हमें प्रतिदिन हमारा दैनिक भोजन* दिया कर।
4हमारे पाप क्षमा कर,
क्योंकि हम भी अपने सब अपराधियों को क्षमा करते हैं
और हमें परीक्षा में न डाल।''

आग्रहपूर्ण प्रार्थना

5येशु ने उन से यह भी कहा, ''मान लो कि तुम में कोई आधी रात को अपने किसी मित्र के पास जा कर कहे, 'मित्र, मुझे तीन रोटियाँ उधार दो,
6क्योंकि मेरा एक मित्र सफर में मेरे यहाँ पहुँचा है और उसे खिलाने के लिए मेरे पास कुछ भी नहीं है'
7और वह घर के भीतर से उत्तर दे, 'मुझे तंग न करो। अब तो द्वार बन्द हो चुका है। मेरे बाल-बच्चे मेरे साथ बिस्तर पर हैं। मैं उठ कर तुम को कुछ नहीं दे सकता।'
8मैं तुम से कहता हूँ—वह मित्रता के नाते भले ही उठ कर उसे कुछ न दे, किन्तु उसके लज्जा छोड़कर मांगने के कारण वह उठेगा और उसकी आवश्यकता पूरी करेगा।

प्रार्थना का प्रभाव

9''मैं तुम से कहता हूँ—माँगो तो तुम्हें दिया जायेगा; ढूँढ़ो तो तुम पाओगे; खटखटाओ तो तुम्हारे लिए खोला जायेगा।
10क्योंकि जो मांगता है, उसे मिलता है; जो ढूँढ़ता है, वह पाता है और जो खटखटाता है, उसके लिए द्वार खोला जाता है।
11''यदि तुम्हारा पुत्र तुम से मछली मांगे, तो तुम में ऐसा कौन पिता है जो मछली के बदले उसे साँप देगा?
12अथवा अण्डा माँगे, तो उसे बिच्छू देगा?
13बुरे होने पर भी यदि तुम अपने बच्चों को सहज ही अच्छी वस्तुएं देते हो, तो स्वर्गिक पिता अपने माँगने वालों को पवित्र आत्मा क्यों नहीं देगा?''

पवित्र आत्मा अथवा शैतान की आत्मा

14येशु एक भूत को जो गूंगा था, निकाल रहे थे। भूत के निकलते ही गूँगा मनुष्य बोलने लगा और लोग अचम्भे में पड़ गये।
15परन्तु उन में से कुछ ने कहा, ''यह भूतों के नायक बअलजबूल की सहायता से भूतों को निकालता है।''
16कुछ लोगों ने येशु की परीक्षा लेने के लिए उन से स्वर्ग का कोई चिह्न माँगा।
17परंतु येशु जानते थे कि वे क्या सोच रहे हैं। अतः येशु ने उन से कहा, ''जिस राज्य में फूट पड़ जाती है, वह उजड़ जाता है और घर के घर ढह जाते हैं।
18यदि शैतान के यहाँ फूट पड़ गई हो, तो उसका राज्य कैसे टिका रहेगा? क्योंकि तुम कहते हो कि मैं बअलजबूल की सहायता से भूतों को निकालता हूँ।
19यदि मैं बअलजबूल की सहायता से भूतों को निकालता हूँ, तो तुम्हारे पुत्र किसकी सहायता से उन्हें निकालते हैं? इसलिए वे तुम लोगों का न्याय करेंगे।
20परन्तु यदि मैं परमेश्वर की अंगुली से भूतों को निकालता हूँ, तो निस्संदेह परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुँचा है।
21''जब बलवान मनुष्य हथियार बाँध कर

+ पाठान्तर, 'परन्तु थोड़ी ही वस्तुओं की आवश्यकता है, बल्कि एक ही वस्तु की आवश्यकता है'। * अथवा, 'दिन भर की रोटी', अथवा 'आवश्यक भोजन', 'आनेवाले दिन का भोजन'

10 : 42 मत 6 : 33 **11 : 1** लू 5 : 33**11 : 2-4** मत 6 : 9-13 **11 : 7** मत 26 : 10 **11 : 8** लू 18 : 5 **11 : 9-13** मत 7 : 7-11 **11 : 14-26** मत 12 : 22-30, 43-45; मक 3 : 22-27 **11 : 16** मक 8 : 11 **11 : 20** नि 8 : 19

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अपने भवन पर पहरा देता है, तो उसकी धन-
सम्पत्ति सुरक्षित रहती है। 22किन्तु यदि कोई
उस से भी अधिक बलवान उस पर टूट पड़े
और उसे हरा दे, तो जिन हथियारों पर उसे
भरोसा था, वह उन्हें उससे छीन लेता और
उसकी लूटी धन-सम्पत्ति को बाँट देता है।
23"जो मेरे साथ नहीं है, वह मेरे विरोध में
है और जो मेरे साथ नहीं बटोरता, वह बिखेरता
है।

अशुद्ध आत्मा का आक्रमण

24"जब अशुद्ध आत्मा किसी मनुष्य से
निकल जाती है, तो वह विश्राम की खोज में
सूखे स्थानों में भटकती फिरती है। विश्राम न
मिलने पर वह कहती है, 'जहाँ से मैं आई हूँ,
वहीं अपने घर वापस जाऊँगी'। 25लौटने पर
वह उस घर को झाड़ा-बुहारा और सजा-
सजाया हुआ पाती है। 26तब वह जाकर अपने
से भी अधिक बुरी सात आत्माओं को ले आती
है और वे उस घर में प्रवेश कर वहीं बस जाती
हैं। इस प्रकार उस मनुष्य की यह पिछली दशा
पहली से भी अधिक बुरी हो जाती है।"

सच्चा सुख

27येशु ये बातें कह ही रहे थे कि भीड़ में से
कोई स्त्री उन्हें सम्बोधित करते हुए ऊँचे स्वर
से बोल उठी, "धन्य है वह गर्भ, जिसने आप
को धारण किया और धन्य हैं वे स्तन जिनका
आपने पान किया है!" 28परन्तु येशु ने कहा,
"किन्तु वे कहीं अधिक धन्य हैं, जो परमेश्वर
का वचन सुनते और उसका पालन करते हैं।"

नबी योना का चिह्न

29जब और भीड़ एकत्र होने लगी तब येशु
कहने लगे, "यह दुष्ट पीढ़ी है। यह चिह्न
मांगती है, परन्तु नबी योना के चिह्न को छोड़
इसे और कोई चिह्न नहीं दिया जायेगा। 30जिस
प्रकार योना नीनवे महानगर के निवासियों के
लिए एक चिह्न बन गया था, उसी प्रकार
मानव-पुत्र भी इस पीढ़ी के लिए चिह्न बन
जायेगा। 31न्याय के दिन दक्षिण देश की रानी
इस पीढ़ी के लोगों के साथ खड़ी होगी और
इन्हें दोषी ठहरायेगी, क्योंकि वह सुलेमान की
बुद्धि से परिपूर्ण बातें* सुनने के लिए पृथ्वी के
छोर से आयी थी, और देखो—यहाँ वह है, जो
सुलेमान से भी महान् है! 32न्याय के दिन नीनवे
के लोग इस पीढ़ी के साथ खड़े होंगे और इसे
दोषी ठहरायेंगे, क्योंकि उन्होंने योना का संदेश
सुन कर पश्चात्ताप किया था, और देखो—यहां
वह है, जो योना से भी बड़ा है!

दीपक का दृष्टान्त

33"दीपक जला कर कोई उसे तहखाने में
या पैमाने के नीचे नहीं, बल्कि दीवट पर रखता
है, जिससे भीतर आने वालों को उसका प्रकाश
मिले। 34तुम्हारी आँख तुम्हारे शरीर का दीपक
है। यदि तुम्हारी आँखें अच्छी हैं, तो तुम्हारा
सारा शरीर भी प्रकाशमान है। किन्तु यदि वे
खराब हो जाएं, तो तुम्हारा शरीर भी अंधकारमय
है। 35इसलिए इस बात का ध्यान रखो कि जो
ज्योति तुम में है, वह अन्धकार न हो जाए।
36यदि तुम्हारा सारा शरीर प्रकाश में है और
उसका कोई अंश अन्धकार में नहीं, तो वह वैसा
ही सर्वथा प्रकाशमान होगा, जैसा जब दीपक
अपनी किरणों से तुम को आलोकित कर देता
है।"

फरीसियों और शास्त्रियों की भर्त्सना

37येशु बोल ही रहे थे कि किसी फरीसी ने
उन से यह निवेदन किया, "आप मेरे साथ
भोजन करें।" येशु भीतर जा कर भोजन करने
बैठे। 38फरीसी को यह देख कर आश्चर्य हुआ
कि येशु ने भोजन से पहले हाथ-पैर नहीं धोये।
39प्रभु ने उससे कहा, "तुम फरीसी लोग
कटोरों और थालियों को बाहर से तो माँजते हो,
परन्तु तुम्हारे भीतर लालच और दुष्टता भरी हैं।
40मूर्खो! जिसने बाहरी भाग बनाया, क्या उसी

---

* अथवा, 'प्रज्ञा'

11 : 22 कुल 2 : 15 **11 : 23** लू 9 : 50 **11 : 26** यो 5 : 14 **11 : 27** लू 1 : 28, 42, 48 **11 : 28** लू 8 : 15,21 **11 : 29-32** मत 12 : 38-42 **11 : 29** 1 कुर 1 : 22 **11 : 31** 1 रा 10 : 1 **11 : 32** योना 3 : 5 **11 : 33** लू 8 : 16; मत 5 : 15 **11 :34-36** मत 6 : 22-23 **11 : 37** लू 7 : 36; 14 : 1 **11 : 38** मत 15 : 2 **11 : 39-52** मत 23 : 1-36 **11 : 43** लू 20 : 46

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ने भीतरी भाग नहीं बनाया? 41जो भीतर है,
उसमें से दान कर दो, और देखो, सब कुछ
तुम्हारे लिए शुद्ध हो जायेगा।
42"फरीसियो! धिक्कार है तुम लोगों को!
क्योंकि तुम पुदीने, सदाब और हर प्रकार के
साग का दशमांश तो देते हो; लेकिन न्याय और
परमेश्वर के प्रति प्रेम की उपेक्षा करते हो।
तुम्हारे लिए उचित तो यह था कि तुम इन्हें भी
करते रहते और उनकी भी उपेक्षा नहीं करते।
43फरीसियो! धिक्कार है तुम लोगों को!
क्योंकि तुम सभागृहों में प्रथम आसन और
बाजारों में प्रणाम चाहते हो। 44धिक्कार है तुम
लोगों को! क्योंकि तुम उन कबरों के समान हो,
जो दीख नहीं पड़तीं और जिन पर लोग
अनजाने ही चलते-फिरते हैं।"
45इस पर व्यवस्था के एक आचार्य ने येशु
से कहा, "गुरवर! आप ऐसी बातें कह कर
हमारा भी अपमान करते हैं।" 46येशु ने उत्तर
दिया, " व्यवस्था के आचार्यो! धिक्कार है तुम
लोगो को भी! क्योंकि तुम मनुष्यों पर ऐसे बोझ
लादते हो जिन्हें ढोना कठिन है, परन्तु स्वयं
उन्हें उठाने के लिए अपनी एक उँगली भी नहीं
लगाते। 47धिक्कार है तुम लोगों को! क्योंकि
तुम नबियों के लिए मकबरे बनवाते हो, जब
कि तुम्हारे पूर्वजों ने उनकी हत्या की। 48इस प्रकार
तुम अपने पूर्वजों के कर्मों की गवाही देते हो
और उन कर्मों से सहमत भी हो, क्योंकि उन्होंने
तो उनकी हत्या की और तुम उनके मकबरे
बनवाते हो।
49"इसलिए परमेश्वर की प्रज्ञा** ने यह
कहा,' मैं उनके पास नबियों और प्रेरितों को
भेजूँगी; वे उन में से कितनों की हत्या करेंगे
और कितनों पर अत्याचार करेंगे। 50-51इसलिए
संसार के आरम्भ से जितने नबियों का रक्त
बहाया गया है—हाबिल के रक्त से ले कर
जकर्याह के रक्त तक, जो वेदी और मन्दिरगर्भ
के बीच मारा गया था—उसका हिसाब इस
पीढ़ी को चुकाना पड़ेगा। मैं तुम से कहता हूँ,
उसका हिसाब इसी पीढ़ी को चुकाना पड़ेगा।
52"व्यवस्था के आचार्यो, धिक्कार है तुम
लोगों को! क्योंकि तुमने ज्ञान की कुंजी ली तो
है। पर तुमने स्वयं प्रवेश नहीं किया और जो
प्रवेश कर रहे थे, उन्हें रोक दिया।"
53जब येशु उस घर से निकले, तब शास्त्री
और फरीसी बुरी तरह उनके पीछे पड़ गये और
बहुत-सी बातों के सम्बन्ध में उन से प्रश्न करने
लगे। 54वे इस ताक में थे कि येशु के मुंह से
निकली कोई बात पकड़ें।

पाखंड के विरुद्ध शिक्षा

12 इतने में हजारों लोगों की भीड़ लग गई,
यहाँ तक कि लोग एक दूसरे को कुचल
रहे थे। तब येशु पहले अपने शिष्यों से कहने
लगे, "फरीसियों के कपटरूपी खमीर से
सावधान रहो। 2ऐसा कुछ भी ढका हुआ नहीं
है, जो उघाड़ा नहीं जायेगा और ऐसा कुछ भी
छिपा हुआ नहीं है, जो प्रकट नहीं किया
जायेगा। 3इसलिए, तुमने जो अँधेरे में कहा है,
वह उजाले में सुना जायेगा और तुमने जो
कोठरियों में फुसफुसा कर कहा है, वह छतों
से पुकार-पुकार कर कहा जायेगा।

किससे डरना चाहिए?

4"मैं तुमसे, अपने मित्रों से कहता हूँ—जो
लोग शरीर को मार डालते हैं, परन्तु उसके बाद
और कुछ नहीं कर सकते, उन से नहीं डरो। 5मैं
तुम्हें बताता हूँ कि किस से डरना चाहिए। उस
से डरो, जिसमें तुम्हें मारने के बाद नरक में
डालने की शक्ति* है। हाँ, मैं तुम से कहता
हूँ, उसी से डरो।
6"क्या दो पैसे में पाँच गौरैयाँ नहीं बिकतीं?
फिर भी परमेश्वर उन में एक को भी नहीं
भुलाता है। 7हाँ, तुम्हारे सिर के बाल भी सब
गिने हुए हैं। डरो मत। तुम बहुत गौरैयों से बढ़
कर हो।
8"मैं तुम से कहता हूँ: जो मुझे मनुष्यों के

* अथवा, 'का अधिकार' ** अथवा, 'बुद्धि'

11 : 51 उत 4 : 8; 2 इति 24 : 20-21 11 : 54 लू 20 : 20 12 : 1 मत 16 : 6; मक 8 : 15 12 : 2-9 मत 10 : 26-23 12 : 2 लू 8 : 17 12 : 7 लू 21 : 18

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सामने स्वीकार करेगा, उसे मानव-पुत्र भी परमेश्वर के दूतों के सामने स्वीकार करेगा। 9परन्तु जो मुझे मनुष्यों के सामने अस्वीकार करेगा, वह परमेश्वर के दूतों के सामन अस्वीकार किया जायेगा।

10"जो मानव-पुत्र के विरुद्ध कुछ कहेगा, उसे क्षमा मिल जायेगी, परन्तु जो पवित्र आत्मा की निन्दा करेगा उसे क्षमा नहीं मिलेगी।

11"जब वे तुम्हें सभागृहों, न्यायाधीशों और शासकों के सामने खींच ले जायेंगे, तो यह चिन्ता न करना कि तुम कैसे और क्या उत्तर दोगे अथवा अपनी ओर से क्या कहोगे; 12क्योंकि उस घड़ी पवित्र आत्मा तुम्हें सिखा देगा कि तुम्हें क्या कहना चाहिए।"

मूर्ख धनवान का दृष्टान्त

13भीड़ में से किसी ने येशु से कहा, "गुरुवर! मेरे भाई से कहिए कि वह मेरे साथ पैतृक सम्पत्ति का बँटवारा कर ले।" 14उन्होंने उसे उत्तर दिया, "भाई! किसने मुझे तुम्हारा पंच या बँटवारा करने वाला नियुक्त किया है ?"

15तब येशु ने लोगों से कहा, "सावधान! हर प्रकार के लोभ से बचो; क्योंकि किसी के पास कितनी ही सम्पत्ति क्यों न हो, उस सम्पत्ति की प्रचुरता में उस का जीवन नहीं है।" 16फिर येशु ने उन को यह दृष्टान्त सुनाया, "किसी धनवान की भूमि पर बहुत फसल हुई। 17उसने अपने मन में इस प्रकार विचार किया, 'अब मैं क्या करूँ? मेरे पास अपनी उपज रखने के लिए जगह नही है।' 18तब उसने कहा, 'मैं यह करूँगा। अपने भण्डारगृह तोड़ कर उन से और बड़े भण्डारगृह बनवाऊँगा, और उन में अपना सारा अनाज और अपना माल इकट्ठा करूँगा 19और अपने प्राण से कहूँगा—ओ मेरे प्राण! तेरे पास बरसों के लिए बहुत-सी सम्पत्ति रखी है, इसलिए विश्राम कर, खा-पी और मौज उड़ा।' 20परन्तु परमेश्वर ने उस से कहा, 'मूर्ख! इसी रात तेरा प्राण तुझ से ले लिया जायेगा और तूने जो इकट्ठा किया है, वह अब किसका होगा?' 21यही दशा उन लोगों की होती है जो अपने लिए तो धन एकत्र करते हैं, किन्तु परमेश्वर की दृष्टि में वे धनी नहीं है।"

परमेश्वर पर भरोसा

22येशु ने अपने शिष्यों से कहा, "इसलिए मैं तुम लोगों से कहता हूँ, चिन्ता मत करो—न अपने जीवन-निर्वाह की, कि हम क्या खायेंगे और न अपने शरीर की, कि हम क्या पहनेंगे; 23क्योंकि जीवन भोजन से और शरीर वस्त्र से बढ़ कर है। 24कौओं पर ध्यान दो। वे न तो बोते हैं और न काटते हैं; उनके न तो भण्डारगृह हैं, न खलियान। फिर भी परमेश्वर उन्हें खिलाता है। तुम पक्षियों से कहीं बढ़ कर हो। 25चिन्ता करने से तुम में से कौन अपनी आयु घड़ी भर भी बढ़ा सकता है?* 26यदि तुम इतना छोटा काम भी नहीं कर सकते, तो फिर दूसरी बातों की चिन्ता क्यों करते हो?

27"फूलों पर ध्यान दो। वे कैसे बढ़ते हैं! वे न तो श्रम करते हैं और न कातते हैं। फिर भी मैं तुम से कहता हूँ कि राजा सुलेमान भी अपने समस्त वैभव में उन में से किसी एक के समान विभूषित नहीं था। 28यदि परमेश्वर घास को, जो आज मैदान में है और कल आग में झोंक दी जायेगी, इस प्रकार पहनाता है, तो अल्पविश्वासियो! वह तुम्हें क्यों नहीं पहनायेगा? 29इसलिए तुम भी इस खोज में न रहो कि तुम क्या खाओगे अथवा क्या पीओगे, और न चिन्ता करो। 30इन सब वस्तुओं की खोज तो संसार की जातियाँ करती हैं। तुम्हारा पिता जानता है कि तुम्हें इनकी जरूरत है। 31इसलिए उसके राज्य की खोज में लगे रहो और ये वस्तुएं भी तुम्हें मिल जायेंगी। 32हे छोटे झुण्ड! मत डर; क्योंकि तुम्हारे पिता ने तुम्हें राज्य देने की कृपा की है।

---

* इस पद का अनुवाद इस प्रकार भी हो सकता है: "अपने शरीर की लम्बाई एक हाथ और बढ़ा सकता है।"

12 : 9 लू 9 : 26 **12 : 10** मत 12 : 32; मक 3 : 28–29 **12 : 11** लू 21 : 14–15; मत 10 : 19–20 **12 : 14** नि 2 : 14; प्रे 7 : 27 **12 : 15** 1 तिम 6 : 9–10 **12 : 19** प्रव 11 : 19 **12 : 20** इब्र 9 : 27 **12 : 21** मत 6 : 20 **12 : 22–31** मत 6 : 25–33 **12 : 24** भज 147 : 9 **12 : 32** लू 22 : 29; यश 41 : 14 **12 : 33–34** मत 6 : 20–21

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सच्चा धन

33“अपनी सम्पत्ति बेच दो और दान कर
दो। अपने लिए ऐसे बटुए तैयार करो, जो कभी
छीजते नहीं। स्वर्ग में अक्षय धन जमा करो।
वहाँ न तो चोर पहुँचता है और न कीड़े खाते
हैं; 34क्योंकि जहाँ तुम्हारा धन है, वहीं तुम्हारा
मन भी लगा रहेगा।

चौकसी

35“तुम्हारी कमर कसी रहे और तुम्हारे
दीपक जलते रहें। 36तुम उन सेवकों के सदृश
बनो, जो अपने स्वामी की राह देखते रहते हैं
कि वह विवाह-भोज से कब लौटेगा, ताकि
जब स्वामी आ कर द्वार खटखटाये, तो वे तुरन्त
ही उसके लिए द्वार खोल दें। 37धन्य हैं वे सेवक,
जिन्हें स्वामी आने पर जागता हुआ पायेगा! मैं
तुम से सच कहता हूँ: स्वामी अपनी कमर
कसेगा, उन्हें भोजन के लिए बैठायेगा और
एक-एक को भोजन परोसेगा। 38और धन्य हैं
वे सेवक, जिन्हें स्वामी रात के दूसरे या तीसरे
पहर आने पर भी उसी प्रकार जागता हुआ
पायेगा! 39यह अच्छी तरह समझ लो—यदि
घर के स्वामी को मालूम होता कि चोर किस
घड़ी आयेगा, तो वह अपने घर में सेंध लगने
नहीं देता। 40तुम भी तैयार रहो, क्योंकि जिस
घड़ी तुम उसके आने की कल्पना भी नहीं
करते, उसी घड़ी मानव-पुत्र आ जाएगा।

ईमानदार और बेईमान प्रबंधक

41पतरस ने पूछा, “प्रभु! क्या आप यह
दृष्टान्त हमारे लिए कह रहे हैं या सब के
लिए?” 42प्रभु ने कहा, “कौन ऐसा ईमानदार
और बुद्धिमान प्रबंधक है, जिसे उसका स्वामी
अपने सेवक-सेविकाओं पर नियुक्त करे ताकि
वह निश्चित् समय पर उन्हें निर्धारित भोजन
दे? 43धन्य है वह सेवक, जिसका स्वामी लौटने
पर उसे ऐसा करता हुआ पायेगा! 44मैं तुम से
सच कहता हूँ, वह उसे अपनी सारी सम्पत्ति पर
अधिकारी नियुक्त करेगा। 45परन्तु यदि वह
सेवक अपने मन में कहे, ‘मेरा स्वामी आने में
देर कर रहा है’ और वह दास-दासियों को
पीटने, खाने-पीने और नशेबाजी करने लगे,
46तो उस सेवक का स्वामी ऐसे दिन आयेगा,
जब वह उसकी प्रतीक्षा नहीं कर रहा होगा और
ऐसी घड़ी जिसे वह नहीं जानता होगा। तब
स्वामी उसे कठोर दंड देगा*। इस प्रकार उसका
अंत वही होगा जो अविश्वासियों का होता है।

47“अपने स्वामी की इच्छा जान कर भी
जिस सेवक ने कुछ तैयार नहीं किया और न
उसकी इच्छा के अनुसार काम किया, वह बहुत
मार खायेगा। 48परन्तु जिसने अनजाने ही मार
खाने का काम किया, वह थोड़ी मार खायेगा।
जिसे बहुत दिया गया है, उस से बहुत माँगा
जायेगा और जिसे बहुत सौंपा गया है, उस से
और अधिक ले लिया जायेगा।

विभाजन का कारण

49“मैं पृथ्वी पर आग लगाने आया हूँ और
मैं कितना चाहता हूं कि यह अभी धधक उठे!
50मुझे एक बपतिस्मा लेना है+ और जब तक
वह पूर्ण नहीं हो जाता, मैं कितना व्याकुल हूँ!

51“क्या तुम लोग समझते हो कि मैं पृथ्वी
पर शान्ति ले कर आया हूँ? मैं तुम से कहता हूँ,
नहीं। मैं फूट डालने आया हूँ। 52क्योंकि अब
से यदि एक घर में पांच व्यक्ति होंगे, तो उन
में फूट होगी। तीन दो के विरुद्ध होंगे और दो
तीन के विरुद्ध। 53वे एक-दूसरे का विरोध
करेंगे: पिता अपने पुत्र के विरुद्ध होगा और पुत्र
अपने पिता के विरुद्ध। माता अपनी पुत्री के
विरुद्ध होगी और पुत्री अपनी माता के विरुद्ध।
सास अपनी बहू के विरुद्ध होगी और बहू
अपनी सास के विरुद्ध।”

समय की पहचान

54येशु ने भीड़ से यह भी कहा, “यदि तुम
पश्चिम से बादल उमड़ते देखते हो, तो तुरन्त
कहते हो, ‘वर्षा होने वाली है’ और ऐसा ही
होता है। 55जब दक्षिण की हवा चलती है, तो

---

* अथवा, “उसको निकाल देगा” अथवा, “उसके टुकड़े-टुकड़े कर डालेगा।” + शब्दशः, “डूबना, समा जाना”।

12 : 35-46 मत 24 : 42-51 **12 : 35** नि 12 : 11; 1 पत 1 : 13 **12 : 36** मत 25 : 1-13 **12 : 37** यो 13 : 4 **12 : 39** 1 यिस 5 : 2 **12 : 42** 2 तिम 2 : 15 **12 : 44** मत 25 : 21 **12 : 47** याक 4 : 17 **12 : 50** मत 20 : 22; 26 : 38 यो 12 : 27 **12 : 51-53** मत 10 : 34-36 **12 : 53** मी 7 : 6 **12 : 54** मत 16 : 2-3

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
कहते हो, 'लू चलेगी' और ऐसा ही होता है।
56ढोंगियो! यदि तुम आकाश और पृथ्वी के
लक्षण पहचान सकते हो, तो इस समय के
लक्षण क्यों नहीं पहचानते?

मुद्दई से समझौता

57"तुम स्वयं क्यों नहीं फैसला कर लेते कि
न्यायसंगत क्या है? 58जब तुम अपने मुद्दई के
साथ दण्डाधिकारी के पास जा रहे हो, तो मार्ग
में ही उस से समझौता करने की कोशिश करो।
कहीं ऐसा न हो कि वह तुम्हें न्यायाधीश के
पास खींच ले जाये और न्यायाधीश तुम्हें
सिपाही के हवाले कर दे और सिपाही तुम्हें
बन्दीगृह में डाल दे। 59मैं तुम से कहता हूँ, जब
तक तुम कौड़ी-कौड़ी न चुका दोगे, तब तक
वहाँ से नहीं छूटने पाओगे।"

अपने पापों से पश्चात्ताप करो

13 उस समय कुछ लोग येशु को उन
गलीलियों के विषय में बताने आये,
जिनका रक्त राज्यपाल पिलातुस ने उनके
बलि- पशुओं के रक्त में मिला दिया था। 2येशु
ने उन से कहा, "क्या तुम समझते हो कि ये
गलीली अन्य सब गलीलियों से अधिक पापी
थे, क्योंकि उन पर ही ऐसी विपत्ति पड़ी? 3मैं
तुम से कहता हूँ, ऐसा नहीं है; किन्तु यदि तुम
पश्चात्ताप नहीं करोगे, तो तुम सब भी उसी
तरह नष्ट हो जाओगे। 4अथवा क्या तुम समझते
हो कि शिलोह की मीनार के गिरने से जो
अठारह व्यक्ति दब कर मर गये, वे यरूशलेम
के सब निवासियों से अधिक अपराधी थे? 5मैं
तुम से कहता हूँ, ऐसा नहीं है। किन्तु यदि तुम
पश्चात्ताप नहीं करोगे, तो तुम सब भी उसी
तरह नष्ट हो जाओगे।"

फलहीन अंजीर का पेड़

6तब येशु ने यह दृष्टान्त सुनाया, "किसी
मनुष्य के अंगूर-उद्यान में एक अंजीर का पेड़
था। वह उस में फल खोजने आया, परन्तु उसे
एक भी नहीं मिला। 7तब उसने अंगूर-उद्यान
के माली से कहा, 'देखो, मैं तीन वर्षों से अंजीर
के इस पेड़ में फल खोजने आता हूँ, किन्तु मुझे
एक भी नहीं मिलता। इसे काट डालो। यह भूमि
को क्यों छेंके हुए है?' 8परन्तु माली ने उत्तर
दिया, 'मालिक! इस वर्ष भी इसे रहने दीजिए।
मैं इसके चारों ओर खोद कर खाद डालूंगा।
9यदि यह आगे फल दे, तो अच्छा; यदि नहीं
दे, तो इसे काट डालिएगा'।"

कुबड़ी स्त्री को विश्राम-दिवस पर स्वस्थ करना

10येशु विश्राम के दिन किसी सभागृह में
शिक्षा दे रहे थे। 11वहाँ एक स्त्री थी। उसे
अठारह वर्ष से दुर्बल करने वाली आत्मा लगी
थी। वह झुककर दुहरी हो गई थी और किसी
भी तरह सीधी नहीं हो पाती थी। 12येशु ने उसे
देख कर अपने पास बुलाया और उस से कहा,
"नारी! तुम अपने रोग से मुक्त हो गयी।"
13और उन्होंने उस पर हाथ रखे। उसी क्षण वह
सीधी हो गयी और परमेश्वर की स्तुति करने
लगी। 14सभागृह का अधिकारी रुष्ट हो गया,
क्योंकि येशु ने विश्राम के दिन उस स्त्री को
स्वस्थ किया था। वह लोगों से कहने लगा,
"छः दिन हैं, जिन में काम करना उचित है।
इसलिए उन्हीं दिनों स्वस्थ होने के लिए आओ,
विश्राम के दिन नहीं।" 15परन्तु प्रभु ने उसे
उत्तर दिया, "ढोंगियो! क्या तुम में से हर एक
व्यक्ति विश्राम के दिन अपना बैल या गधा थान
से खोल कर उसे पानी पिलाने नहीं ले जाता?
16शैतान ने इस स्त्री को, अब्राहम की इस पुत्री
को इतने वर्षों से, अठारह वर्षों से बाँध रखा था,
तो क्या इसे विश्राम के दिन उस बन्धन से
छुड़ाना उचित नहीं था?" 17येशु के इन शब्दों
से उनके सब विरोधी लज्जित हो गये; लेकिन
सारी जनता उनके समस्त महिमामय कार्यों को
देख कर आनन्दित हुई।

राई का दाना

18येशु ने कहा, "परमेश्वर का राज्य किसके

12 : 58 मत 5 : 25-26 **13 : 1** प्रे 5 : 37 **13 : 2** यो 9 : 2 **13 : 3** भज 7 : 12 **13 : 6** लू 3 : 9; मत 3 : 10; 21 : 19; मक 11 : 13 **13 : 8** 2 पत 3 : 9, 15 **13 : 13** मक 7 : 32 **13 : 14** नि 20 : 9; व्य 5 : 13 **13 : 15** लू 14 : 5 **13 : 16** लू 19 : 9; प्रे 3 : 25 **13 : 18-21** मत 13 : 31-33; मक 4 : 30-32 **13 : 19** दान 4 : 12, 21; यहेज 17 : 23; 31 : 6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

समान है ? मैं इसकी तुलना किस से करूँ ?
19वह उस राई के दाने के समान है, जिसे ले
कर किसी मनुष्य ने अपने उद्यान में बोया। वह
बढ़ते-बढ़ते पेड़ हो गया और आकाश के पक्षी
उसकी डालियों में बसेरा करने आये।''

ख़मीर का दृष्टान्त

20येशु ने फिर कहा, ''मैं परमेश्वर के राज्य
की तुलना किस से करूँ ? 21वह उस ख़मीर के
समान है, जिसे ले कर किसी स्त्री ने दस किलो*
आटे में मिला दिया और होते-होते सारा आटा
ख़मीर हो गया।''

संकीर्ण पथ

22येशु नगर-नगर, गाँव-गाँव, शिक्षा देते
हुए यरूशलेम की ओर आगे बढ़ रहे थे।
23किसी ने उन से पूछा, ''प्रभु! क्या थोड़े ही
लोग मुक्ति पाएंगे ?'' इस पर येशु ने उन से
कहा, 24''संकरे द्वार से प्रवेश करने का पूरा-
पूरा प्रयत्न करो, क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ—
प्रयत्न करने पर भी बहुत-से लोग प्रवेश नहीं
कर पायेंगे। 25जब घर का स्वामी उठ कर द्वार
बन्द कर चुका होगा, तो तुम बाहर रह कर द्वार
खटखटाओगे और कहोगे, 'प्रभु! हमारे लिए
खोल दीजिए'। वह तुम्हें उत्तर देगा, 'मैं नहीं
जानता कि तुम कहाँ से आए हो।' 26तब तुम
कहोगे, 'हमने आपके साथ खाया-पीया था
और आपने हमारे बाजारों में उपदेश दिया था'।
27परन्तु वह तुम से कहेगा, 'मैं नहीं जानता कि
तुम कहाँ से आए हो। कुकर्मियो! तुम सब मुझ
से दूर हटो।' 28जब तुम अब्राहम, इसहाक,
याकूब और सभी नबियों को परमेश्वर के राज्य
में देखोगे, परन्तु अपने को बहिष्कृत पाओगे,
तब तुम रोओगे और दाँत पीसोगे। 29पूर्व तथा
पश्चिम से और उत्तर तथा दक्षिण से लोग
आयेंगे और परमेश्वर के राज्य में भोज में
सम्मिलित होंगे। 30देखो, कुछ जो पिछले हैं,
वे अगले हो जायेंगे और कुछ जो अगले हैं, वे
पिछले हो जायेंगे।''

हेरोदेस का कपट

31उसी समय कुछ फरीसियों ने आ कर येशु
से कहा, ''विदा लीजिए और यहाँ से चले
जाइए, क्योंकि हेरोदेस आप को मार डालना
चाहता है।'' 32येशु ने उनसे कहा, ''जाकर उस
लोमड़ी से कहो— मैं आज और कल भूतों को
निकालता और रोगियों को स्वस्थ करता हूँ और
तीसरे दिन मेरा कार्य पूर्ण हो जायेगा। 33आज,
कल और परसों मुझे चलते रहना है, क्योंकि
यह हो नहीं सकता कि कोई नबी यरूशलेम के
बाहर मारा जाये।

यरूशलेम के लिए प्रभु येशु का प्रेम

34''ओ यरूशलेम! यरूशलेम नगरी ! तू
नबियों की हत्या करती और अपने पास भेजे
हुए संदेश-वाहकों को पत्थरों से मार डालती
है। मैंने कितनी बार चाहा कि तेरी सन्तान को
एकत्र कर लूँ, जैसे मुर्गी अपने बच्चों को अपने
पंखों के नीचे एकत्र कर लेती है, परन्तु तू ने मुझे
यह करने नहीं दिया। 35देखो, तुम्हारा घर तुम्हारे
लिए छोड़ दिया जायेगा। मैं तुम से कहता
हूँ, तुम मुझे तब तक नहीं देखोगे, जब तक समय
आने पर तुम यह न कहोगे, 'धन्य है वह, जो
प्रभु के नाम से आता है!' ''

विश्राम के दिन आतिथ्य-सत्कार

14 येशु एक विश्राम के दिन किसी फरीसी
अधिकारी के यहाँ भोजन करने गये। वे
लोग उनकी ताक में थे। 2येशु के सामने जलोदर
से पीड़ित एक मनुष्य आया। 3येशु ने अपनी
प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए व्यवस्था के आचार्यों
तथा फरीसियों से पूछा,'' विश्राम के दिन स्वस्थ
करना उचित है या नहीं ?'' 4वे चुप रहे। इस पर
येशु ने जलोदर-पीड़ित का हाथ पकड़ कर उसे
अच्छा कर दिया और विदा किया। 5तब येशु
ने उन से कहा, ''यदि तुम्हारा पुत्र या बैल कुएँ
में गिर पड़े, तो तुम लोगों में ऐसा कौन है, जो

* अथवा, 'तीन पसेरी' मूल में, 'तीन सेआ' माप।

13 : 24 मत 7 : 13-14; फिल 3 : 12; 1 तिम 6 : 12 **13 : 25** मन 25 : 11-12 **13 : 26** मत 7 : 22-23 **13 : 27** भज 6 : 8 **13 : 28-29** मत 8 : 11-12 **13 : 29** लू 14 : 15; मला 1 : 11; यश 49 : 12; 59 : 19; भज 107 : 3 **13 : 30** मत 19 : 30 **13 : 34-35** मत 23 : 37-39 **13 : 35** यिर 12 : 7; 22 : 5; भज 69 : 25; 118 : 26 **14 : 1** लू 6 : 6-11; 11 : 37 **14 : 5** लू 13 : 15; मत 12 : 11

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
उसे विश्राम के दिन ही तुरन्त बाहर न निकाल
ले ?'' 6और वे इसका कोई उत्तर नहीं दे सके।

नम्रता और आतिथ्य

7येशु ने निमंत्रित व्यक्तियों को मुख्य-मुख्य
स्थान चुनते देख कर उन्हें यह दृष्टान्त सुनाया,
8''विवाह में निमन्त्रित होने पर सब से अगले
स्थान पर मत बैठो। कहीं ऐसा न हो कि
मेजबान ने तुम से अधिक प्रतिष्ठित व्यक्ति को
निमन्त्रित किया हो 9और जिसने तुम दोनों को
निमन्त्रण दिया है, वह आ कर तुम से कहे, 'इन्हें
अपनी जगह दीजिए'। तब तुम्हें लज्जित हो कर
सबसे पिछले स्थान पर बैठना पड़ेगा। 10इसलिए
जब तुम्हें निमन्त्रण मिले, तो जा कर सबसे
पिछले स्थान पर बैठो, जिससे निमन्त्रण देने
वाला आ कर तुमसे यह कहे, 'बन्धु! आगे बढ़
कर बैठिए।' इस प्रकार सब अतिथियों के
सामने तुम्हारा सम्मान होगा; 11क्योंकि जो अपने
आप को बड़ा मानता है, वह छोटा किया
जायेगा और जो अपने आप को छोटा मानता
है, वह बड़ा किया जायेगा।''

परोपकार का उपदेश

12फिर येशु ने अपने निमन्त्रण देने वाले से
कहा, ''जब तुम दोपहर या रात का भोज दो,
तब न तो अपने मित्रों को बुलाओ और न अपने
भाइयों को, न अपने कुटुम्बियों को और न धनी
पड़ोसियों को। कहीं ऐसा न हो कि वे भी तुम्हें
निमन्त्रण दे कर बदला चुका दें। 13पर जब तुम
भोज दो, तो गरीबों, लूलों, लँगड़ों और अन्धों
को बुलाओ। 14तब तुम धन्य होगे; क्योंकि
बदला चुकाने के लिए उनके पास कुछ नहीं
होता और तुम्हें धार्मिकों के पुनरुत्थान के समय
बदला चुका दिया जायेगा।''

महाभोज का दृष्टान्त

15साथ भोजन करने वालों में किसी ने यह
सुन कर येशु से कहा, ''धन्य है वह, जो
परमेश्वर के राज्य में भोजन करेगा!'' 16येशु ने
उसे उत्तर दिया, ''किसी मनुष्य ने एक बड़े
भोज का आयोजन किया और बहुत-से लोगों
को निमन्त्रण दिया। 17भोजन के समय उसने
अपने सेवक द्वारा निमन्त्रित लोगों को यह
कहला भेजा कि आइए, क्योंकि अब सब कुछ
तैयार है। 18लेकिन सब के सब बहाना करने
लगे। पहले ने सेवक से कहा, 'मैंने खेत मोल
लिया है और मुझे उसे देखने जाना है। तुम से
मेरा निवेदन है, मेरी ओर से क्षमा माँग
लेना।' 19दूसरे ने कहा, 'मैंने पाँच जोड़े बैल
खरीदे हैं और उन्हें परखने जा रहा हूँ। तुम से
मेरा निवेदन है, मेरी ओर से क्षमा माँग लेना।'
20और एक ने कहा, 'मैंने विवाह किया है,
इसलिए मैं नहीं आ सकता।' 21सेवक ने लौट
कर यह सब अपने स्वामी को बताया। तब घर
के स्वामी ने क्रुद्ध होकर अपने सेवक से कहा,
'शीघ्र ही नगर के बाजारों और गलियों में जा
कर गरीबों, लूलों, अन्धों और लँगड़ों को यहां
ले आओ।' 22जब सेवक ने कहा, 'स्वामी!
आपकी आज्ञा का पालन किया गया है; किन्तु
और भी जगह शेष है' 23तो स्वामी ने सेवक से
कहा, 'सड़कों और बाड़ों की ओर जाओ और
लोगों को भीतर आने के लिए बाध्य करो,
जिससे मेरा घर भर जाये; 24क्योंकि मैं तुम
सबसे कहता हूँ, उन निमन्त्रित लोगों में कोई
भी मेरे भोजन का स्वाद नहीं चख पायेगा'।''

शिष्य बनने का मूल्य : आत्मत्याग

25येशु के साथ-साथ एक विशाल जनसमूह
चल रहा था। उन्होंने मुड़ कर लोगों से कहा,
26''यदि कोई मेरे पास आता है और अपने
माता-पिता, पत्नी, सन्तान, भाई-बहिनों और
यहाँ तक कि अपने जीवन से बैर नहीं करता,
तो वह मेरा शिष्य नहीं हो सकता। 27जो अपना
क्रूस उठा कर नहीं ले जाता और मेरा अनुसरण
नहीं करता, वह मेरा शिष्य नहीं हो सकता।
28''तुममें ऐसा कौन होगा, जो मीनार
बनवाना चाहे और पहले बैठ कर खर्च का
हिसाब न लगाये और यह न देखे कि क्या उसे

---

14 : 7 मत 23 : 6 14 : 8 नीति 25 : 6 14 : 11 लू 18 : 14; मत 23 : 12 14 : 13 व्य 14 : 29 14 : 14 यो 5 : 29 14 : 15 लू 13 : 29 14 : 16-24 मत 22 : 2-10 14 : 20 1 कुर 7 : 33 14 : 26-27 मत 10 : 37-38 14 : 26 व्य 33 : 9-10; लू 18 : 29-30; यो 12 : 25 14 : 27 लू 9 : 23

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पूरा करने की पूँजी उसके पास है ? 29कहीं ऐसा
न हो कि नींव डालने के बाद वह निर्माण-कार्य
पूरा न कर सके और देखने वाले यह कहते हुए
उसकी हँसी उड़ाने लगे, 30'इस मनुष्य ने
निर्माण-कार्य प्रारम्भ तो किया, किन्तु यह उसे
पूरा नहीं कर सका।'

31''अथवा कौन ऐसा राजा होगा जो दूसरे
राजा से युद्ध करने जाता हो और पहले बैठ कर
यह विचार न करे कि जो राजा बीस हजार
सैनिकों की फौज के साथ उस पर चढ़ा आ रहा
है, क्या वह दस हजार सैनिकों की फौज से
उसका सामना कर सकता है ? 32यदि वह सामना
नहीं कर सकता है तो जब तक दूसरा राजा दूर
है, वह राजदूतों को भेजकर उससे सन्धि का
प्रस्ताव करेगा।

33''इसी तरह तुम में से जो व्यक्ति अपना
सब कुछ नहीं त्याग देता, वह मेरा शिष्य नहीं
हो सकता।

नमक का दृष्टान्त

34''नमक अच्छा है, किन्तु यदि वह अपना
गुण खो दे ,तो वह किस प्रकार फिर सलोना
किया जायेगा ? 35वह न तो भूमि के किसी काम
का रह जाता है और न खाद के। लोग उसे बाहर
फेंक देते हैं। जिसके सुनने के कान हों, वह सुन
ले।''

भटकी हुई भेड़ का दृष्टान्त

15 येशु का उपदेश सुनने के लिए सब
चुंगी-अधिकारी और पापी उनके पास
आ रहे थे। 2फरीसी और शास्त्री यह देखकर
भुनभुनाने लगे, ''यह मनुष्य पापियों का
स्वागत करता है और उनके साथ खाता-पीता
है।'' 3इस पर येशु ने उनको यह दृष्टान्त सुनाया,
4''यदि तुम में से किसी के पास एक सौ भेड़ें
हों और उन में से एक खो जाये, तो क्या वह
निन्यानबे भेड़ों को निर्जन प्रदेश में छोड़ कर
नहीं जाता और उस खोई हुई भेड़ को तब तक
नहीं खोजता रहता, जब तक वह उसे नहीं मिल
जाती है ? 5मिल जाने पर वह आनन्दित हो कर
उसे अपने कन्धों पर बैठा लेता है 6और घर आ
कर अपने मित्रों और पड़ोसियों को बुलाता है
और उन से कहता है,'मेरे साथ आनन्द मनाओ,
क्योंकि मेरी खोई हुई भेड़ मुझे मिल गई है।'
7मैं तुम से कहता हूँ, इसी प्रकार निन्यानबे
धर्मियों की अपेक्षा, जिन्हें पश्चात्ताप करने की
आवश्यकता नहीं है, उस एक पापी के लिए
स्वर्ग में अधिक आनन्द मनाया जायेगा जो
पश्चात्ताप करता है।

खोया हुआ सिक्का

8''अथवा कौन ऐसी स्त्री होगी, जिसके
पास दस सिक्के* हों और उन में से एक खो
जाये, तो बत्ती जला कर और घर बुहार कर
सावधानी से तब तक न खोजती रहे, जब तक
वह उसे मिल नहीं जाये ? 9सिक्का मिल जाने
पर वह अपनी सखियों और पड़ोसिनों को बुला
कर कहती है, 'मेरे साथ आनन्द मनाओ,
क्योंकि मुझसे जो सिक्का खो गया था, वह मुझे
मिल गया है।' 10मैं तुमसे कहता हूँ, इसी प्रकार
परमेश्वर के दूत उस पापी के लिए आनन्द
मनाते हैं जो पश्चात्ताप करता है।''

भटका हुआ पुत्र

11येशु ने कहा, ''किसी मनुष्य के दो पुत्र थे।
12छोटे पुत्र ने अपने पिता से कहा, 'पिता जी!
सम्पत्ति का जो भाग मेरा है, वह मुझे दे
दीजिए',और पिता ने उन में अपनी सम्पत्ति बाँट
दी। 13थोड़े ही दिनों बाद छोटा पुत्र अपनी
समस्त सम्पत्ति एकत्र कर किसी दूर देश को
चला गया और वहाँ उसने भोग-विलास में
अपनी सम्पत्ति उड़ा दी। 14जब वह सब कुछ
खर्च कर चुका, तो उस देश में भारी अकाल
पड़ा और वह कंगाल** हो गया। 15इसलिए
उसने उस देश के एक नागारिक के यहाँ आश्रय
लिया, जिसने उसे अपने खेतों में सूअर चराने

* मूल में, 'द्रख्मे'। एक यूनानी द्रख्मे का मूल्य रोमन दीनार (लूक 7 : 41) के तुल्य है, अर्थात् 'एक दिन की मजदूरी' (मत्ती 20 : 2) ** अथवा, 'अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए दूसरों का मोहताज'

14 : 34 मत 5 : 13; मक 9 : 50 **15 : 2** लू 5 : 30 **15 : 4-7** मत 18 : 12-14 **15 : 4** लू 19 : 10; यहेज 34 : 11, 16 **15 : 10** इफ 3 : 10 **15 :13** नीति 29 : 3

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भेजा। 16जो फलियाँ सूअर खाते थे, उन्हीं से
वह अपना पेट भरने के लिए तरसता था, लेकिन
कोई उसे कुछ नहीं देता था। 17तब वह होश
में आया और यह सोचने लगा: 'मेरे पिता के
घर में कितने ही मजदूरों को आवश्यकता से
अधिक रोटी मिलती है और मैं यहाँ भूखों मर
रहा हूँ। 18मैं उठ कर अपने पिता के पास
जाऊँगा और उन से कहूँगा, ''पिताजी! मैंने
स्वर्ग के विरुद्ध और आपके प्रति पाप किया
है। 19मैं आपका पुत्र कहलाने के योग्य नहीं
रहा। मुझे अपने मजदूरों में से एक जैसा रख
लीजिए।'' ' 20तब वह उठ कर अपने पिता के
घर की ओर चल पड़ा। वह दूर ही था कि उसके
पिता ने उसे देख लिया और वह दया से द्रवित
हो उठा। उसने दौड़कर उसे गले लगा लिया
और उसका चुम्बन किया। 21तब पुत्र ने उससे
कहा, 'पिता जी! मैंने स्वर्ग के विरुद्ध और
आपके प्रति पाप किया है। मैं आपका पुत्र
कहलाने के योग्य नहीं रहा।' 22परन्तु पिता ने
अपने सेवकों से कहा, 'शीघ्र अच्छे-से-अच्छे
वस्त्र ला कर इस को पहनाओ और इसकी
उँगली में अँगूठी और इसके पैरों में जूते पहना
दो। 23मोटा पशु* ला कर काटो ताकि हम
खायें और आनन्द मनायें; 24क्योंकि मेरा यह
पुत्र मर गया था और फिर जी गया है, यह खो
गया था और फिर मिल गया है।' और वे
आनन्द मनाने लगे।

25''उसका ज्येष्ठ पुत्र खेत में था। जब वह
लौटकर घर के निकट पहुँचा, तो उसे गाने-
बजाने और नाचने की आवाज़ सुनाई पड़ी।
26उसने एक सेवक को बुलाया और उससे
पूछा, 'यह सब क्या हो रहा है?' 27सेवक ने
कहा, 'आपके भाई आये हैं और आपके पिता
ने मोटा पशु काटा है, क्योंकि उन्होंने उनको
भला-चंगा वापस पाया है'। 28इस पर वह क्रुद्ध
हो गया और उसने घर के भीतर जाना नहीं
चाहा। तब उसका पिता उसे मनाने के लिए
बाहर आया। 29परन्तु उसने अपने पिता को
उत्तर दिया, 'देखिए, मैं इतने वर्षों से एक गुलाम
के समान आपकी सेवा कर रहा हूँ। मैंने कभी
आपकी आज्ञा का उल्लंघन नहीं किया। फिर भी
आपने कभी मुझे बकरी का एक बच्चा तक नहीं
दिया, ताकि मैं अपने मित्रों के साथ आनन्द मना
सकूं। 30पर जैसे ही आपका यह पुत्र आया,
जिसने वेश्याओं के पीछे आपकी सम्पत्ति उड़ा
दी है, आपने उसके लिए मोटा पशु काट
डाला!' 31इस पर पिता ने उससे कहा, 'पुत्र,
तुम तो सदा मेरे साथ रहते हो और जो कुछ मेरा
है, वह तुम्हारा ही है। 32परन्तु हमें आनन्द मनाना
और उल्लसित होना उचित ही था; क्योंकि
तुम्हारा यह भाई मर गया था और फिर जी गया
है, यह खो गया था और फिर मिल गया है।' ''

अधर्मी भंडारी

16 येशु ने अपने शिष्यों से यह भी
कहा, ''किसी धनवान का एक प्रबंधक
था। लोगों ने उसके स्वामी के संमुख उस पर
यह दोष लगाया कि वह आपकी सम्पत्ति उड़ा
रहा है। 2इस पर स्वामी ने उसे बुला कर कहा,
'यह मैं तुम्हारे विषय में क्या सुन रहा हूँ, अपने
प्रबंध का हिसाब-किताब दो, क्योंकि तुम अब
से मेरे प्रबंधक नहीं रह सकते।' 3तब प्रबंधक
ने मन-ही-मन यह कहा, 'मैं क्या करूँ? स्वामी
मुझ से प्रबंधक का पद छीन रहा है। मिट्टी
खोदने का मुझमें बल नहीं; भीख माँगने में मुझे
लज्जा आती है। 4हाँ, अब समझ में आया कि
मुझे क्या करना चाहिए, जिससे प्रबंधक-पद से
हटाये जाने के बाद भी लोग अपने घरों में मेरा
स्वागत करें।' 5उसने अपने स्वामी के कर्जदारों
को एक-एक कर बुलाया और पहले कर्जदार
से कहा, 'तुम पर मेरे स्वामी का कितना ऋण
है?' 6उसने उत्तर दिया, 'सौ मन तेल।' प्रबंधक
ने कहा, 'अपना ऋण-पत्र लो, और बैठो, और
शीघ्र पचास लिख दो।' 7फिर उसने दूसरे से
पूछा, 'तुम पर कितना ऋण है?' उसने कहा,
'सौ मन गेहूँ।' प्रबंधक ने उससे कहा, 'अपना
ऋण-पत्र लो और अस्सी लिख दो।' 8स्वामी

* मूल में, 'बछड़ा'

15 : **16** नीति 23 : 31 15 : **18** यिर 3 : 12-13; भज 51 : 4 15 : **24** इफ 2 : 1, 5; 5 : 14 15 : **28** लू 15 : 2 15 : **31** यो 17 : 10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ने अधर्मी प्रबंधक की प्रशंसा की; क्योंकि उसने चतुराई से काम किया था। इस युग की सन्तान अपनी पीढ़ी के साथ आपसी लेन-देन में ज्योति की सन्तान से अधिक चतुर है।

धन का सदुपयोग

9 "इसलिए मैं तुम से कहता हूँ, सांसारिक धन से* अपने लिए मित्र बना लो, जिससे उसके समाप्त हो जाने पर वे शाश्वत निवास में तुम्हारा स्वागत करें।

10 "जो छोटी-से-छोटी बातों में ईमानदार है, वह बड़ी बातों में भी ईमानदार है और जो छोटी-से-छोटी बातों में बेईमान है, वह बड़ी बातों में भी बेईमान है। 11 यदि तुम सांसारिक धन में ईमानदार नहीं ठहरे, तो तुम्हें सच्चा धन कौन सौंपेगा? 12 और यदि तुम पराये धन में ईमानदार नहीं ठहरे, तो तुम्हें तुम्हारा अपना धन कौन देगा?

13 "कोई भी सेवक दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता; वह या तो एक से बैर और दूसरे से प्रेम करेगा, या एक का आदर और दूसरे का तिरस्कार करेगा। तुम परमेश्वर और धन — दोनों की सेवा नहीं कर सकते।"

फरीसियों का लोभ

14 फरीसी, जो धन-दौलत को प्यार करते थे, ये सब बातें सुन कर येशु की हँसी उड़ाने लगे। 15 इस पर येशु ने उनसे कहा, "तुम लोग मनुष्यों के सामने तो धर्मी होने का ढोंग रचते हो, परन्तु परमेश्वर तुम्हारा हृदय जानता है। जो बात मनुष्यों की दृष्टि में महत्त्व रखती है, वह परमेश्वर की दृष्टि में घृणित है।

परमेश्वर के राज्य के लिए उत्सुकता

16 "योहन बपतिस्मादाता** के आगमन तक मूसा की व्यवस्था+ और नबी प्रभावी रहे। अब योहन के आगमन के समय से परमेश्वर के राज्य का शुभ समाचार सुनाया जा रहा है और सब उसमें प्रवेश करने का बलपूर्वक प्रयत्न कर रहे हैं।

व्यवस्था का महत्त्व

17 "आकाश और पृथ्वी टल जायें, तो टल जायें, परन्तु व्यवस्था का एक बिन्दु भी नहीं मिट सकता।

विवाह का बन्धन

18 "जो पति अपनी पत्नी का परित्याग करता और किसी दूसरी स्त्री से विवाह करता है, वह व्यभिचार करता है और जो पति द्वारा परित्यक्ता से विवाह करता है, वह भी व्यभिचार करता है।

धनवान और निर्धन

19 "एक धनवान मनुष्य था। वह राजसी बैंगनी वस्त्र और मलमल पहनता था, और प्रतिदिन दावत उड़ाया करता था। 20 उसके भवन के फाटक पर लाजर नामक एक गरीब आदमी पड़ा रहता था। उसका शरीर फोड़ों से भरा हुआ था। 21 वह धनवान मनुष्य की मेज की जूठन से अपनी भूख मिटाने के लिए तरसता था। कुत्ते आ कर उसके फोड़े चाटा करते थे। 22 वह गरीब मनुष्य एक दिन मर गया और स्वर्गदूतों ने उसे ले जा कर अब्राहम की गोद में पहुँचा दिया। धनवान मनुष्य भी मरा और दफनाया गया। 23 उसने अधोलोक में जहां वह यन्त्रणाएँ भोग रहा था, अपनी आँखें ऊपर उठा कर दूर से अब्राहम और उनकी गोद में लाजर को देखा। 24 उसने पुकार कर कहा, 'पिता अब्राहम! मुझ पर दया कीजिए और लाजर को भेजिए, जिससे वह अपनी उँगली का सिरा पानी में भिगो कर मेरी जीभ को ठंडा करे; क्योंकि मैं इस ज्वाला में तड़प रहा हूँ।' 25 अब्राहम ने उससे कहा, 'पुत्र, याद करो कि तुम्हें जीवन में सुख-ही-सुख मिला था और लाजर को दुःख-ही-दुःख। अब उसे यहां सान्त्वना मिल रही है और तुम्हें यंत्रणा। 26 इसके अतिरिक्त हमारे और तुम्हारे बीच एक गहरी खाई अवस्थित है; इसलिए यदि कोई तुम्हारे पास जाना भी चाहे, तो वह नहीं जा सकता और कोई भी वहाँ से

* शब्दशः "अधर्म के धन से" ** मूल में "योहन"। +मूल में "व्यवस्था"।

16 : 8 इफ 5 : 8 1 थिस 5 : 5 16 : 9 लू 14 : 14; मत 6 : 20; 10 : 40; 19 : 21; तोब 4 : 9-11 16 : 10 लू 19 : 17 16 : 13 मत 6 : 24 16 : 14 मत 23 : 14 16 : 15 लू 18 : 9-14; मत 23 : 28; भज 7 : 9; नीति 6 : 16-17 16 : 16 मत 11 : 12-13 16 : 17 मत 5 : 18 16 : 18 मत 5 : 32; 19 : 9 16 : 21 मत 15 : 27

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
इस पार हमारे पास नहीं आ सकता।' 27धनवान
मनुष्य ने उत्तर दिया, 'पिता! आप से एक
निवेदन है। आप लाजर को मेरे पिता के घर
भेजिए, 28क्योंकि मेरे पाँच भाई हैं। लाजर उन्हें
चेतावनी दे। कहीं ऐसा न हो कि वे भी यन्त्रणा
के इस स्थान में आ जायें।' 29अब्राहम ने उससे
कहा, 'मूसा और नबियों की पुस्तकें उनके पास
हैं, वे उनकी सुनें।' 30धनवान मनुष्य ने कहा,
'पिता अब्राहम! वे कहाँ सुनते हैं! परन्तु यदि
मुरदों में से कोई उनके पास जाये, तो वे
पश्चात्ताप करेंगे।' 31पर अब्राहम ने उससे
कहा, 'जब वे मूसा और नबियों की नहीं सुनते,
तब यदि मुरदों में से कोई जी उठे, तो वे उसकी
बात भी नहीं मानेंगे।' "

प्रभु येशु के कुछ उपदेश : पाप

17 येशु ने अपने शिष्यों से कहा, "पाप
करने की परीक्षाएं मनुष्य के सामने
अवश्य आएंगी। किन्तु धिक्कार है उस व्यक्ति
को, जिसके कारण मनुष्य परीक्षा में पड़ता है।
2जो व्यक्ति इन छोटों में से किसी एक के लिए
पाप का कारण बनता है, उस के लिए अच्छा
यही होता कि उसके गले में चक्की का पाट
बाँधा जाता और वह समुद्र में फेंक दिया जाता।
3इसलिए सावधान रहो।

क्षमाशीलता

"यदि तुम्हारा भाई कोई अपराध करता है, तो
उसे मना करो। और यदि वह पश्चात्ताप करता
है, तो उसे क्षमा कर दो। 4यदि वह दिन में सात
बार तुम्हारे विरुद्ध अपराध करता और सात बार
आ कर कहता कि 'मुझे खेद है', तो तुम उसे
क्षमा करते जाओ।"

विश्वास

5प्रेरितों ने प्रभु से कहा, "हमारा विश्वास
बढ़ाइए।" 6प्रभु ने उत्तर दिया, "यदि तुम्हारा
विश्वास राई के दाने के बराबर भी होता, तो तुम
शहतूत के इस पेड़ से कहते, 'उखड़ कर समुद्र
में लग जा' और वह तुम्हारी बात मान लेता।

विनम्रता

7"यदि तुम्हारा सेवक हल जोत कर या भेड़
चरा कर खेत से लौटता है, तो तुम में ऐसा कौन
स्वामी है, जो उससे कहेगा, 'आओ, तुरन्त
भोजन करने बैठ जाओ?' 8क्या वह उससे यह
नहीं कहेगा, 'मेरा भोजन तैयार करो। जब तक
मेरा खाना-पीना न हो जाये, कमर कस कर
परोसते रहो। बाद में तुम भी खा-पी लेना?'
9क्या स्वामी को उस सेवक को इसीलिए
धन्यवाद देना चाहिए कि उसने उसके आदेश
का पालन किया है? 10तुम भी ऐसे ही हो। सब
आदेशों का पालन करने के बाद तुम को कहना
चाहिए, 'हम अयोग्य* सेवक भर हैं, हमने
अपना कर्त्तव्य मात्र पूरा किया है।"

दस कुष्ठ-रोगी

11येशु यरूशलेम की यात्रा करते हुए सामरी
और गलील प्रदेशों के सीमा-क्षेत्रों से हो कर
जा रहे थे। 12किसी गाँव में प्रवेश करने पर उन्हें
दस कुष्ठ-रोगी मिले। वे दूर खड़े हो कर 13ऊँचे
स्वर से बोले, 'हे येशु, स्वामी! हम पर दया
कीजिए।" 14येशु ने उन्हें देखा तो उनसे कहा,
"जाओ और अपने आप को पुरोहितों को
दिखलाओ।" जब वे जा रहे थे तब वे मार्ग में
ही शुद्ध हो गये। 15तब उन में से एक यह देख
कर कि वह स्वस्थ हो गया है, ऊँचे स्वर से
परमेश्वर की स्तुति करते हुए लौटा। 16वह येशु
को धन्यवाद देते हुए उनके चरणों पर मुँह के
बल गिर पड़ा, और वह सामरी* था। 17येशु ने
कहा, "क्या दसों शुद्ध नहीं हुए? तो बाकी नौ
कहाँ हैं? 18क्या इस परदेशी को छोड़ और कोई
ऐसा नहीं निकला, जो लौट कर परमेश्वर की
स्तुति करता?" 19तब येशु ने उससे कहा,
"उठो, जाओ। तुम्हारे विश्वास ने तुम्हें स्वस्थ
किया है।"

---

* अथवा, "अनुपयोगी" * यहूदियों की दृष्टि में सामरी लोगों को वर्ण-संकर जाति का समझा जाता था। अतः नीच, अधम आदि

16 : 29 2 तिम 3 : 16 **16 : 31** यो 11 : 45-53 **17 : 2** मत 18 : 6-7 **17 : 3** मत 18 : 15 **17 : 4** मत 18 : 21-22 **17 : 5** मक 9 : 24 **17 : 6** मत 17 : 20; 21 : 21 **17 : 11** लू 9 : 51; 13 : 22 **17 : 12** लेब 13 : 45-46 **17 : 14** लू 5 : 14; लेव 13 : 49; 14 : 2-3 **17 : 19** लू 7 : 50

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

परमेश्वर के राज्य का आगमन

20एक बार फरीसियों ने उन से पूछा कि
परमेश्वर का राज्य कब आयेगा, तब येशु ने उन्हें
उत्तर दिया, "परमेश्वर का राज्य प्रकट रूप से
नहीं आता कि लोग उसे देखें। 21लोग यह नहीं
कह सकेंगे, 'देखो; वह यहाँ है' अथवा 'वह
वहाँ है'; क्योंकि परमेश्वर का राज्य तुम्हारे
मध्य में** है।"

प्रभु का पुनरागमन

22 येशु ने अपने शिष्यों से कहा, "ऐसा
समय आयेगा, जब तुम मानव-पुत्र का एक
दिन भी देखना चाहोगे, किन्तु उसे नहीं देख
पाओगे। 23लोग तुम से कहेंगे, 'देखो— वह
वहाँ है' अथवा, 'देखो—वह यहाँ है', तो तुम
उधर नहीं जाना और उनके पीछे नहीं भागना;
24क्योंकि जैसे बिजली आकाश के एक छोर से
निकल कर दूसरे छोर तक चमकती है, वैसे ही
मानव-पुत्र अपने दिन में होगा। 25परन्तु पहले
उसे बहुत दुःख उठाना होगा और यह अनिवार्य
है कि वह इस पीढ़ी द्वारा ठुकराया जाए।

26"जो नूह के दिनों में हुआ था, वही
मानव-पुत्र के दिनों में भी होगा। 27नूह के
जलयान पर चढ़ने के दिन तक लोग खाते-पीते
और शादी-ब्याह करते रहे। तब जलप्रलय
आया और उसने सब को नष्ट कर दिया। 28लोट
के दिनों में भी यही हुआ था। लोग खाते-पीते,
लेन-देन करते, पेड़ लगाते और घर बनाते रहे;
29परन्तु जिस दिन लोट ने सदोम नगर छोड़ा,
परमेश्वर ने आकाश से आग और गन्धक की
वर्षा की और सब नष्ट हो गये। 30मानव-पुत्र
के प्रकट होने के दिन ऐसा ही होगा।

31"उस दिन जो छत पर हो और उसका
सामान घर में हो, वह उसे लेने नीचे न उतरे और
जो खेत में हो, वह भी पीछे न लौटे। 32लोट
की पत्नी की घटना को स्मरण रखो! 33जो अपना
प्राण सुरक्षित रखने का प्रयत्न करेगा, वह उसे
खो देगा, और जो उसे खो देगा, वह उसे जीवित
रखेगा।

34"मैं तुम से कहता हूँ, उस रात दो व्यक्ति
एक खाट पर होंगे; एक उठा लिया जायेगा और
दूसरा छोड़ दिया जायेगा। 35दो स्त्रियाँ साथ-
साथ चक्की पीसती होंगी; एक उठा ली जायेगी
और दूसरी छोड़ दी जायेगी।" 37इस पर शिष्यों
ने येशु से पूछा, "प्रभु! यह कहाँ होगा?"
उन्होंने उत्तर दिया, "जहाँ शव होगा, वहाँ गिद्ध
भी इकट्ठे हो जायेंगे।"

न्यायाधीश और विधवा का दृष्टान्त

18 येशु ने शिष्यों को यह बतलाने के लिए
कि उन्हें सदा प्रार्थना करना चाहिए,
और निराश नहीं होना चाहिए, एक दृष्टान्त
सुनाया। 2येशु ने कहा, "किसी नगर में एक
न्यायाधीश था, जो न तो परमेश्वर से डरता और
न किसी मनुष्य की परवाह करता था। 3उसी
नगर में एक विधवा थी। वह उसके पास आ
कर कहा करती थी, 'मेरे मुद्दई के विरुद्ध मुझे
न्याय दिलाइए।' 4बहुत समय तक वह अस्वीकार
करता रहा। बाद में उसने मन-ही-मन यह
कहा, 'मैं न तो परमेश्वर से डरता और न किसी
मनुष्य की परवाह करता हूँ, 5किन्तु यह विधवा
मुझे तंग करती है; इसलिए मैं इसके लिए न्याय
की व्यवस्था करूँगा, जिससे वह बार-बार आ
कर मेरी नाक में दम न करती रहे।' "

6प्रभु ने कहा, "सुनो, इस अधर्मी न्यायाधीश
ने क्या कहा? 7तो क्या परमेश्वर अपने चुने हुए
लोगों के लिए न्याय की व्यवस्था नहीं करेगा,
जो दिन-रात उसकी दुहाई देते रहते हैं? क्या
वह उनके विषय में देर करेगा? 8मैं तुम से कहता
हूँ, वह शीघ्र ही उनके लिए न्याय करेगा। परन्तु
जब मानव-पुत्र आयेगा, तब क्या वह पृथ्वी पर
विश्वास पायेगा?"

फ़रीसी और चुंगी-अधिकारी

9कुछ लोग बड़े आत्मविश्वास के साथ

** अथवा 'तुम्हारे भीतर'

17 : 20 यो 18 : 36; 3 : 317 : **21** मत 24 : 23 यो 1 : 26; 12 : 35 **17 : 23** लू 21 : 8 **17 : 24** मत 24 : 26-27 **17 : 25** लू 9 : 22 **17 : 26** मत 24 : 37-39 **17 : 27** उत 7 : 7-23 **17 : 28** उत 18 : 20 **17 : 29** उत 19 : 24-25 **17 : 31** मत 24 : 17-18; उत 16 : 26 **17 : 33** लू 9 : 24 **17 : 34** मत 24 : 40-41 **17 : 37** अय्य 39 : 30; मत 24 : 28 **18 : 1** रोम 12 : 12; कुल 4 : 2; 1 थिस 5 : 17 **18 : 5** लू 11 : 7-8 **18 : 7** प्रव 35 : 19

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
अपने को धर्मी मानते और दूसरों को तुच्छ
समझते थे। येशु ने ऐसे लोगों के लिए यह
दृष्टान्त सुनाया, [10]"दो मनुष्य प्रार्थना करने
मन्दिर में गये: एक फरीसी संप्रदाय का था और
दूसरा चुंगी-अधिकारी था। [11]फरीसी खड़े-
खड़े इस प्रकार प्रार्थना कर रहा था, 'परमेश्वर !
मैं तुझे धन्यवाद देता हूँ कि मैं दूसरे लोगों की
तरह लोभी, अन्यायी, व्यभिचारी नहीं हूँ और
न इस चुंगी-अधिकारी की तरह हूँ। [12]मैं सप्ताह
में दो बार उपवास करता हूँ और अपनी सारी
आय का दशमांश दान करता हूँ।' [13]चुंगी-
अधिकारी कुछ दूरी पर खड़ा था। उसे स्वर्ग
की ओर आँख उठाने तक का साहस नहीं
हुआ। वह अपनी छाती पीट-पीट कर यह कह
रहा था, 'परमेश्वर ! मुझ पापी पर दया कर।'"
[14]येशु ने कहा, "मैं तुमसे कहता हूँ, वह
पहला नहीं, बल्कि यह मनुष्य पापमुक्त हो
कर* अपने घर गया। क्योंकि जो कोई अपने
आपको ऊँचा करता है, वह नीचा किया
जाएगा; परन्तु जो अपने आप को नीचा करता
है, वह ऊँचा किया जाएगा।"

बच्चों को आशीर्वाद

[15]लोग येशु के पास छोटे बच्चों को भी लाए
कि वह उन्हें स्पर्श करें। शिष्यों ने यह देख कर
लोगों को डाँटा। [16]किन्तु येशु ने बच्चों को
अपने पास बुलाया और कहा, "बच्चों को मेरे
पास आने दो, उन्हें मत रोको; क्योंकि परमेश्वर
का राज्य उन जैसे लोगों का ही है। [17]मैं तुम
से सच कहता हूँ: जो मनुष्य छोटे बालक की
तरह परमेश्वर का राज्य ग्रहण नहीं करता, वह
उस में कभी प्रवेश नहीं करेगा।"

धनी युवक

[18]एक कुलीन मनुष्य ने येशु से यह पूछा,
"भले गुरु ! शाश्वत जीवन का उत्तराधिकारी
बनने के लिए मैं क्या करूँ ?" [19] येशु ने उससे
कहा, "मुझे भला क्यों कहते हो ? परमेश्वर को
छोड़ और कोई भला नहीं। [20]तुम आज्ञाओं को
जानते हो: व्यभिचार मत करो, हत्या मत करो,
चोरी मत करो, झूठी गवाही मत दो, अपने
माता-पिता का आदर करो।" [21]उसने उत्तर
दिया, "इन सब का पालन तो मैं अपने बचपन
से करता आया हूँ"। [22]येशु ने यह सुन कर उस
से कहा, "तुम में अब तक एक बात का अभाव
है। अपना सब कुछ बेच कर गरीबों में बाँट दो
और तुम्हारे पास स्वर्ग में धन होगा। तब आकर
मेरा अनुसरण करो।" [23]वह यह सुन कर बहुत
उदास हो गया, क्योंकि वह बहुत धनी था।

धन की जोखिम

[24]येशु ने उसे उदास देख कर कहा,
"धनवानों के लिए परमेश्वर के राज्य में प्रवेश
करना कितना कठिन है ! [25]परमेश्वर के राज्य
में धनवान के प्रवेश करने की अपेक्षा ऊँट का
सूई के छेद से हो कर निकलना अधिक सरल
है।" [26]इस पर सुनने वालों ने कहा, "तो फिर
किसका उद्धार हो सकता है ?" [27]येशु ने उत्तर
दिया, "जो मनुष्यों के लिए असम्भव है, वह
परमेश्वर के लिए सम्भव है।"

स्वैच्छिक निर्धनता

[28]तब पतरस ने कहा, "देखिए, हम लोग
तो अपना सब कुछ* छोड़ कर आपके अनुयायी
हो गये हैं।" [29]येशु ने उत्तर दिया, "मैं तुम
लोगों से सच कहता हूँ; ऐसा कोई नहीं, जिसने
परमेश्वर के राज्य के लिए घर, पत्नी, भाई-
बहिनों, माता-पिता या बाल-बच्चों को छोड़
दिया हो [30]और इस लोक में उसे कई गुना न
मिले और आने वाले युग में शाश्वत जीवन।"

दुःखभोग की तीसरी भविष्यवाणी

[31]बारह प्रेरितों+ को अलग ले जा कर येशु
ने उनसे कहा, "देखो, हम यरूशलेम जा रहे
हैं। मानव-पुत्र के विषय में नबियों ने जो कुछ
लिखा है, वह सब पूरा होने वाला है। [32]वह
अन्यजातियों के हाथ में सौंप दिया जायेगा। वे

* अथवा, "परमेश्वर की दृष्टि में धार्मिक ठहर कर" * अथवा, "घर-बार" + मूल में "बारहों"

18 : 11 लू 16 : 15; यश 58 : 2-3 **18 : 12** मत 23 : 23 **18 : 13** भज 51 : 1 **18 : 14** लू 14 : 11; मत 23 : 12; यहेज 21 : 31 **18 : 15-17** मत 19 : 13-15; मक 10 : 13-16 **18 : 17** मत 18 : 3 **18 : 18-30** मत 19 : 16-29; मक 10 : 17-30 **18 : 20** नि 20 : 12-16; व्य 5 : 16-20 **18 : 22** मत 6 : 20 **18 : 31-34** मत 20 : 17-19; मक 10 : 32-34 **18 : 31** लू 9 : 22, 44

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उसका उपहास और अपमान करेंगे और उस पर थूकेंगे। 33वे उसे कोड़े लगायेंगे और मार डालेंगे। लेकिन तीसरे दिन वह जी उठेगा।'' 34उन्हें ये बातें समझ में नहीं आईं। इन शब्दों का अर्थ उन से छिपा ही रहा और वे इनका तात्पर्य नहीं समझ सके।

अन्धे मनुष्य को दृष्टिदान

35येशु यरीहो नगर के पास पहुँचे। वहाँ एक अन्धा सड़क के किनारे बैठा भीख माँग रहा था। 36उसने भीड़ को गुजरते सुन कर पूछा कि क्या हो रहा है। 37लोगों ने उसे बताया कि येशु नासरी जा रहे हैं। 38इस पर वह यह कहते हुए पुकार उठा, ''येशु! दाऊद के वंशज! मुझ पर दया कीजिए।'' 39आगे चलने वाले लोगों ने उसे चुप करने के लिए डाँटा, किन्तु वह और भी जोर से पुकारने लगा, ''हे दाऊद के वंशज! मुझ पर दया कीजिए।'' 40येशु रुक गए और उसको अपने पास लाने की आज्ञा दी। जब वह पास आया, तो येशु ने उससे पूछा, 41''तुम क्या चाहते हो? मैं तुम्हारे लिए क्या करूँ?'' उसने उत्तर दिया, ''प्रभु! मैं फिर देख सकूँ।'' 42येशु ने उससे कहा, ''तुम फिर देखने लगो। तुम्हारे विश्वास ने तुम्हें स्वस्थ किया।'' 43उसी क्षण वह देखने लगा और वह परमेश्वर की स्तुति करते हुए येशु के पीछे हो लिया। सारी जनता भी यह देखकर परमेश्वर की स्तुति करने लगी।

चुंगी-अधिकारी जक्कई

19 येशु यरीहो नगर में प्रवेश कर आगे बढ़ रहे थे। 2वहाँ जक्कई नामक एक व्यक्ति था। वह चुंगी-अधिकारियों का प्रमुख था। वह धनवान था। 3वह इस प्रयत्न में था कि येशु को देखे कि वह कौन हैं। परन्तु वह नाटा था, इसलिए वह भीड़ में उन्हें नहीं देख सका। 4वह आगे दौड़ कर येशु को देखने के लिए गूलर के एक पेड़ पर चढ़ गया, क्योंकि येशु उसी मार्ग से जाने वाले थे। 5जब येशु उस जगह पहुँचे, तो उन्होंने आँखें ऊपर उठा कर जक्कई से कहा, ''जक्कई! जल्दी नीचे उतरो, क्योंकि आज मुझे तुम्हारे यहाँ ठहरना है।'' 6वह तुरन्त नीचे उतरा और आनन्द के साथ अपने यहाँ येशु का स्वागत किया। 7इस पर सब लोग यह कहते हुए भुनभुनाने लगे, ''वह एक पापी व्यक्ति का अतिथि बनने गये हैं।''

8जक्कई सबके सामने खड़ा हुआ और उसने प्रभु से कहा, ''प्रभु! देखिए, मैं अपनी आधी सम्पत्ति गरीबों को दिए देता हूँ और यदि मैंने किसी से अन्यायपूर्वक कुछ लिया है, तो उसे चौगुना लौटाए देता हूँ।'' 9येशु ने उससे कहा, ''आज इस घर में मुक्ति का आगमन हुआ है*, क्योंकि यह भी अब्राहम की संतान है। 10जो खो गया था, उसी को ढूंढ़ने और बचाने के लिए मानव-पुत्र आया है।''

अशर्फियों का दृष्टान्त

11जब लोग ये बातें सुन रहे थे, तब येशु ने एक दृष्टान्त भी सुनाया; क्योंकि वह यरूशलेम के निकट थे और क्योंकि लोग यह समझ रहे थे कि परमेश्वर का राज्य तुरन्त प्रकट होने वाला है। 12येशु ने कहा, ''एक कुलीन मनुष्य अपने लिए राजपद प्राप्त कर लौटने के विचार से दूर देश चला गया। 13उसने जाने से पहले अपने दस सेवकों को बुलाया और उन्हें एक-एक अशर्फी+ दे कर कहा, 'मेरे लौटने तक इनसे व्यापार करो।'

14''उसके नगर-निवासी उस से बैर करते थे। इसलिए उन्होंने उसके पीछे एक प्रतिनिधि-मण्डल भेजा और यह कहा, 'हम नहीं चाहते कि यह मनुष्य हम पर राज्य करे।'

15''वह राजपद पा कर लौटा और उसने जिन सेवकों को धन दिया था, उन्हें बुलाया और यह जानना चाहा कि प्रत्येक ने व्यापार से

---

* अथवा, ''उद्धार आया है।'' + मूल में 'म्ना'। यूनानी म्ना का मूल्य सौ द्रख्मे (लूक 15 : 8) था। साठ म्ना का मूल्य एक तलंत (मत्ती 25 :15) था।

18 : 34 मक 9 : 32 **18 : 35-43** मत 20 : 29-34; मक 10 : 46-52 **18 : 42** लू 17 : 19 **19 : 7** लू 15 : 2 **19 : 8** नि 22 : 1; गण 5 : 6-7 **19 : 9** लू 13 : 16; प्रे 3 : 25; 16 : 31 **19 :10** लू 5 : 32; यहेज 34 : 16; यो 3 : 17; 1 तिम 1 : 15 **19 : 11-27** मत 25 : 14-30 **19 : 11** लू 24 : 21; प्रे 1 : 6 **19 : 12** मक 13 : 34 **19 : 14** यो 1 : 11

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
कितना कमाया है। 16पहले ने आ कर कहा,
'स्वामी! आपकी अशर्फी से मैंने दस और
अशर्फियाँ कमायी हैं।' 17स्वामी ने उससे कहा,
'शाबाश, भले सेवक! तुम छोटी-से-छोटी
बात में ईमानदार निकले, इसलिए तुम दस
नगरों पर अधिकार करो।' 18दूसरे ने आ कर
कहा, 'स्वामी! आपकी अशर्फी से मैंने पाँच
और अशर्फियाँ कमायी हैं।' 19स्वामी ने उससे
भी कहा, 'तुम पाँच नगरों पर शासन करो।'
20अब तीसरे ने आ कर कहा, 'स्वामी! देखिए,
यह है आपकी अशर्फी। मैंने इसे एक अँगोछे
में बाँध रखा था। 21मैं आप से डरता था, क्योंकि
आप निर्दय व्यक्ति हैं। आपने जो जमा नहीं
किया, उसे आप निकालते हैं और जो नहीं
बोया, उसे काटते हैं!' 22स्वामी ने उससे कहा,
'दुष्ट सेवक! मैं तेरे ही शब्दों से तेरा न्याय
करूंगा। तू जानता था कि मैं निर्दय व्यक्ति हूँ।
मैंने जो जमा नहीं किया, उसे निकालता हूँ और
जो नहीं बोया, उसे काटता हूँ। 23तो, तूने मेरा
धन महाजन के यहाँ क्यों नहीं रख दिया? तब
मैं लौट कर उसे ब्याज सहित प्राप्त कर
लेता।' 24और स्वामी ने वहाँ उपस्थित लोगों से
कहा, 'इस से यह अशर्फी ले लो और जिसके
पास दस अशर्फियाँ हैं, उस को दे दो।'
25उन्होंने उससे कहा, 'स्वामी! उसके पास तो
दस अशर्फियाँ हैं।'

26"स्वामी बोला, 'मैं तुम से कहता हूं:
जिसके पास है, उस को और दिया जायेगा;
लेकिन जिसके पास नहीं है उससे वह भी ले
लिया जायेगा, जो उसके पास है। 27अच्छा, अब
मेरे बैरियों को, जो यह नहीं चाहते थे कि मैं
उन पर राज्य करूँ, यहाँ लाओ, और मेरे सामने
उनका वध करो।' "

28इतना कह कर येशु आगे बढ़े और
यरूशलेम की ओर चढ़ना आरम्भ किया।

यरूशलेम में येशु का प्रवेश

29जब येशु जैतून नामक पहाड़ के समीप,
बेतफगे और बेतनियाह गाँव के निकट पहुँचे,
तब उन्होंने दो शिष्यों को 30यह कहते हुए भेजा,
"सामने के गाँव में जाओ। जब तुम वहाँ
पहुँचोगे, तब तुम्हें खूंटे से बंधा हुआ गदहे का
एक बछेरू मिलेगा, जिस पर अब तक कोई
नहीं सवार हुआ है। 31उसे खोल कर यहाँ ले
आओ। यदि कोई तुम से पूछे कि तुम उसे क्यों
खोल रहे हो तो उत्तर देना, 'प्रभु को इसकी
जरूरत है।' "

32जो शिष्य भेजे गये थे, उन्होंने जा कर वैसा
ही पाया, जैसा येशु ने कहा था। 33जब वे बछेरू
खोल रहे थे, तब उसके मालिकों ने उनसे कहा,
"इस बछेरू को क्यों खोल रहे हो?" 34उन्होंने
उत्तर दिया, "प्रभु को इसकी जरूरत है।" 35वे
बछेरू को येशु के पास ले आये और उस बछेरू
पर अपनी चादरें बिछा कर उन्होंने येशु को उस
पर बैठा दिया।

36ज्यों-ज्यों येशु आगे बढ़ते गये, लोग मार्ग
में अपनी चादरें बिछाते रहे। 37जब वे जैतून
पहाड़ की ढाल पर पहुँचे, तो पूरा शिष्य-
समुदाय आनंदविभोर हो कर आंखों देखे सब
आश्चर्यपूर्ण कार्यों के लिए ऊँचे स्वर से इस
प्रकार परमेश्वर की स्तुति करने लगा:
38"धन्य है वह राजा,
जो प्रभु के नाम पर आता है!
स्वर्ग में शान्ति!
सर्वोच्च स्वर्ग में महिमा!"

39भीड़ में कुछ फरीसी थे। उन्होंने येशु से
कहा, "गुरुवर! अपने शिष्यों को रोकिए।"
40परन्तु येशु ने उत्तर दिया, "मैं तुम से कहता
हूँ, यदि वे चुप रहे, तो पत्थर ही चिल्ला
उठेंगे।"

यरूशलेम पर विलाप

41जब येशु निकट आये और नगर को देखा
तो वह उस पर रो पड़े 42और बोले, "हाय!
कितना अच्छा होता यदि तू, हां तू, आज के
दिन यह समझ पाता कि किन बातों में तेरी

---

19 : 26 लू 8 : 18; मत 13 : 12 **19 : 29-38** मत 21 : 1-9; मक 11 : 1-10; यो 12 : 12-16 **19 : 36** 2 रा 9 : 13 **19 : 38** लू 2 : 14; भज 118 : 26 **19 : 41** 2 रा 8 : 11; यो 11 : 35 **19 : 42** व्य 32 : 29; मत 13 : 14; यो 12 : 38

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शान्ति है! परन्तु अभी ये बातें तेरी आँखों से
छिपी हुई हैं। 43तुझ पर वे दिन आयेंगे, जब तेरे
शत्रु तेरे चारों ओर मोर्चा बाँध कर तुझे घेर लेंगे,
तुझ पर चारों ओर से दबाव डालेंगे, 44तुझे और
तुझमें निवास करने वाली तेरी सन्तान को मिट्टी
में मिला देंगे और तुझ में एक पत्थर पर दूसरा
पत्थर पड़ा नहीं रहने देंगे; क्योंकि तूने उस शुभ
घड़ी को नहीं पहचाना जब परमेश्वर ने तेरी
सुध ली।''

मन्दिर में बिक्री करने वालों को निकालना

45येशु ने मन्दिर में प्रवेश किया और बिक्री
करने वालों को यह कहते हुए बाहर निकालने
लगे, 46''लिखा है: 'मेरा घर प्रार्थना का घर
होगा, परन्तु तुम लोगों ने उसे लुटेरों का अड्डा
बना दिया है।' ''

मन्दिर में शिक्षा

47येशु प्रतिदिन मन्दिर में शिक्षा देते थे।
महापुरोहित, शास्त्री और जनता के नेता इस
प्रयत्न में थे कि येशु का विनाश करें। 48परन्तु
उन्हें नहीं सूझ रहा था कि क्या करें; क्योंकि
सारी जनता येशु की बातें सुनकर मुग्ध थी।

अधिकार का प्रश्न

20 एक दिन येशु मन्दिर में जनता को शिक्षा
दे रहे थे और शुभसमाचार सुना रहे थे
कि धर्मवृद्धों के साथ महापुरोहित और शास्त्री
उनके पास आये 2और उनसे पूछा, ''हमें
बताइए कि आप किस अधिकार से ये कार्य कर
रहे हैं? वह कौन है जिसने आप को यह
अधिकार दिया है?'' 3येशु ने उन को उत्तर
दिया, ''मैं भी आप लोगों से एक प्रश्न पूछता
हूँ। आप मुझे बताइए, 4योहन का बपतिस्मा
स्वर्ग की ओर से था अथवा मनुष्यों की ओर
से?'' 5वे यह कहते हुए आपस में परामर्श करने
लगे, ''यदि हम कहें, 'स्वर्ग की ओर से' तो
यह कहेगा, 'तब आप लोगों ने योहन पर
विश्वास क्यों नहीं किया?' 6यदि हम कहें,
'मनुष्यों की ओर से' तो सारी जनता हमें पत्थरों
से मार डालेगी, क्योंकि लोगों को निश्चय हो
चुका है कि योहन नबी थे।'' 7इसलिए उन्होंने
येशु को उत्तर दिया, ''हम नहीं जानते कि वह
किसकी ओर से थे।'' 8इस पर येशु ने उनसे
कहा, ''तब मैं भी आप लोगों को नहीं बताऊँगा
कि मैं किस अधिकार से ये कार्य कर रहा
हूँ।''

अंगूर-उद्यान

9तब येशु जनता को यह दृष्टान्त सुनाने लगे,
''किसी मनुष्य ने अंगूर-उद्यान लगाया और
उसे किसानों को पट्टे पर दे कर बहुत दिनों के
लिए परदेश चला गया। 10समय आने पर उसने
फसल का अपना हिस्सा प्राप्त करने के लिए
किसानों के पास एक सेवक को भेजा। किन्तु
किसानों ने उसे मारा-पीटा और खाली हाथ
लौटा दिया। 11तब उसने एक दूसरे सेवक को
भेजा और उन्होंने उसे भी मारा-पीटा, अपमानित
किया और खाली हाथ लौटा दिया। 12उसने एक
तीसरे सेवक को भेजा और उन्होंने उसे भी
घायल कर बाहर निकाल दिया। 13तब अंगूर-
उद्यान के स्वामी ने कहा, 'मैं क्या करूं? मैं
अपने प्रिय पुत्र को भेजूँगा। सम्भव है, वे उसका
आदर करें।' 14परन्तु उसे देख कर किसानों ने
आपस में परामर्श किया, 'यह तो उत्तराधिकारी
है। हम इसे मार डालें, जिससे इसकी पैतृक-
सम्पत्ति हमारी हो जाये।' 15अतः उन्होंने उसे
अंगूर-उद्यान से बाहर निकाल कर मार डाला।
अब अंगूर-उद्यान का स्वामी उनका क्या
करेगा? 16वह आ कर उन किसानों का वध
करेगा और अपना अंगूर-उद्यान दूसरों को दे
देगा।''

17उन्होंने यह सुन कर येशु से कहा,
''परमेश्वर करे कि ऐसा न हो।'' किन्तु येशु
ने उन पर आँखें गड़ा कर कहा, ''धर्मग्रन्थ के
इस कथन का क्या अर्थ है: 'कारीगरों ने जिस

---

19 : 44 लू 21 : 6; भज 137 : 9 **19 : 45-58** मत 21 : 12-16; मक 11 : 15-18; यो 2 : 13-16 **19 : 46** यश 56 : 7; यिर 7 : 11 **19 : 47** लू 21 : 37; 22 : 53; यो 18 : 20 **20 : 1-8** मत 21 : 23-27; मक 11 : 27-33 **20 : 9-19** मत 21 : 33-46; मक 12 : 1-12 **20 : 9** यश 5 : 1 **20 : 10** 2 इति 36 : 15-16 **20 : 17** भज 118 : 22

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पत्थर को बेकार समझ कर फेंक दिया था, वही
कोने की नींव का पत्थर बन गया है'? 18जो कोई
इस पत्थर पर गिरेगा, वह चूर-चूर हो जायेगा
और जिस पर यह पत्थर गिरेगा, उस को पीस
डालेगा।"

19शास्त्रियों और महापुरोहितों ने येशु को
उसी समय पकड़ना चाहा, क्योंकि वे समझ गये
थे कि येशु ने यह दृष्टान्त उनके ही विषय में
कहा है; परन्तु वे जनता से डरे।

कर देने का प्रश्न

20वे येशु को फँसाने की ताक में रहते थे।
उन्होंने उनके पास गुप्तचर भेजे, कि वे धर्मी
होने का ढोंग रच कर येशु को किसी न किसी
कथन में पकड़ लें, जिससे वे उन्हें राज्यपाल
के शासन और अधिकार में दे सकें। 21गुप्तचरों
ने येशु से पूछा, "गुरुवर! हम यह जानते हैं कि
आप सत्य बोलते और सत्य ही सिखलाते हैं।
आप मुँह-देखी नहीं कहते, बल्कि सच्चाई से
परमेश्वर के मार्ग की शिक्षा देते हैं। 22बताइए,
व्यवस्था की दृष्टि में रोमन सम्राट को कर देना
हमारे लिए उचित है या नहीं?" 23येशु ने उनकी
धूर्तता भाँप कर उनसे कहा, 24"मुझे एक सिक्का
दिखलाओ। इस पर किसकी आकृति और
किसका लेख है?" उन्होंने उत्तर दिया, "रोमन
सम्राट का।" 25येशु ने उनसे कहा, "तो, जो
सम्राट का है, उसे सम्राट को दो और जो
परमेश्वर का है, उसे परमेश्वर को दो।"

26इस प्रकार वे जनता के सामने येशु को इस
बात में न पकड़ सके। वे उनके उत्तर से
आश्चर्य-चकित हो चुप रह गए।

मृतकों का पुनरुत्थान

27इसके पश्चात् कुछ सदूकी येशु के पास
आये। सदूकी मृतकों के पुनरुत्थान को नहीं
मानते। उन्होंने येशु के सामने यह प्रश्न रखा,
28"गुरुवर! मूसा ने हमारे लिए यह नियम
बनाया है: यदि किसी का भाई अपनी पत्नी के
रहते हुए निस्सन्तान मर जाये, तो वह अपने
भाई की विधवा से विवाह करे और अपने भाई
के लिए सन्तान उत्पन्न करे। 29सात भाई थे।
पहले ने विवाह किया और वह निस्सन्तान ही
मर गया। 30दूसरा और 31तीसरा आदि सातों
भाई विधवा से विवाह कर निस्सन्तान मर गये।
32अन्त में वह स्त्री भी मर गयी। 33अब पुनरुत्थान
होने पर वह स्त्री किसकी पत्नी होगी? वह तो
सातों भाइयों की पत्नी रह चुकी है।" 34येशु
ने उन से कहा, "इस युग के पुरुष और स्त्री
विवाह करते और विवाह में दिये जाते हैं;
35परन्तु जो उस युग तथा मृतकों के पुनरुत्थान
के योग्य पाये जाते हैं, वे न तो विवाह करते और
न विवाह में दिये जाते हैं। 36वे फिर कभी नहीं
मरते। वे तो स्वर्गदूतों के तुल्य होते हैं और
पुनरुत्थान की सन्तति होने के कारण वे
परमेश्वर की सन्तति बन जाते हैं। 37किन्तु मृतक
अवश्य जी उठते हैं। मूसा ने भी जलती झाड़ी
की कथा में इसका संकेत किया है, जहाँ वह
प्रभु को अब्राहम का परमेश्वर, इसहाक का
परमेश्वर और याकूब का परमेश्वर कहते हैं।
38वह मृतकों का नहीं, जीवितों का परमेश्वर
है, क्योंकि उसके लिए वे सब जीवित हैं।"

39इस पर कई शास्त्रियों ने उनसे कहा,
"गुरुवर! आपने बहुत अच्छा कहा।" 40इसके
बाद उन्हें येशु से और कोई प्रश्न पूछने का
साहस नहीं हुआ।

मसीह, राजा दाऊद के वंशज

41येशु ने उनसे कहा, "मसीह, दाऊद के
पुत्र कैसे कहे जा सकते हैं? 42क्योंकि भजनों
के ग्रन्थ में दाऊद स्वयं कहते हैं: 'प्रभु ने मेरे
प्रभु से कहा: तुम मेरे सिंहासन की दाहिनी ओर
बैठो, 43जब तक मैं तुम्हारे शत्रुओं को तुम्हारे
चरणों की चौकी न बना दूँ।' 44इस तरह दाऊद
उन्हें प्रभु कहते हैं, तो वह उनके वंशज कैसे
हो सकते हैं?"

---

20 : 18 वश 8 : 14 **20 : 19** लू 19 : 48 **20 : 20–26** मत 22 : 15–22; मक 12 : 13–17 **20 : 20** लू 11 : 54 **20 : 27–40** मत 22 : 23–33, 46; मक 12 : 18–27, 34 **20 : 28** उत 38 : 8; व्य 25 : 5–6 **20 : 36** 1 यो 3 : 1–2 **20 : 37** नि 3 : 2, 6 **20 : 38** रोम 14 : 8 **20 : 41–44** मत 22 : 41–45; मक 12 : 35, 37 **20 : 42** भज 110 : 1; यो 7 : 42 **20 : 45–47** मत 23 : 1, 5–7, 14; मक 12 : 38–40

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शास्त्रियों को धिक्कार

45सारी जनता सुन रही थी, ज़ब येशु ने अपने
शिष्यों से कहा, 46"शास्त्रियों से सावधान रहो।
लम्बे लबादे पहन कर घूमना उन्हें पसन्द है।
बाजारों में प्रणाम-प्रणाम सुनना, सभागृहों में
प्रमुख आसनों पर और भोजों में सम्मानित
स्थानों पर बैठना—यह सब उन्हें प्रिय लगता
है। 47वे विधवाओं की सम्पत्ति चट कर जाते
और दिखावे के लिए लम्बी-लम्बी प्रार्थनाएँ
करते हैं। उनको बड़ा कठोर दण्ड मिलेगा।"

दरिद्र विधवा का दान

21 येशु ने आँखें ऊपर उठा कर देखा कि
धनी लोग मन्दिर के खजाने में अपना
दान डाल रहे हैं। 2उन्होंने एक गरीब विधवा को
दो अधेले डालते हुए देखा। 3येशु ने कहा, "मैं
तुम लोगों से सच कहता हूँ: इस गरीब विधवा
ने सब से अधिक डाला है। 4क्योंकि अन्य सब
ने अपनी समृद्धि से दान दिया, परन्तु इसने तंगी
में रहते हुए भी, जीविका के लिए उसके पास
जो कुछ था, वह सब अर्पित कर दिया।"

मन्दिर के विनाश की भविष्यवाणी

5कुछ लोग मन्दिर के विषय में कह रहे थे
कि वह सुन्दर पत्थरों और मनौती के उपहारों
से सजा है। इस पर येशु ने कहा, 6"वे दिन आ
रहे हैं, जब जो कुछ तुम देख रहे हो, उसका
एक पत्थर भी दूसरे पत्थर पर नहीं पड़ा रहेगा;
सब ध्वस्त हो जायेगा।" 7उन्होंने येशु से पूछा,
"गुरुवर! यह कब होगा और किस चिह्न से
पता चलेगा कि यह घटित होने को है?"

विपत्तियों का प्रारम्भ

8येशु ने उत्तर दिया, "सावधान रहो कि तुम
किसी के बहकावे में न आओ। बहुत-से लोग
मेरे नाम में आयेंगे और कहेंगे, 'मैं वही हूँ' और
'वह समय आ गया है।' परन्तु तुम उनके पीछे
न जाना। 9जब तुम युद्धों और विद्रोहों की चर्चा
सुनोगे, तो भयाकुल न होना; पहले ऐसा होना
अनिवार्य है। परन्तु अन्त शीघ्र नहीं होगा।"
10तब येशु ने उनसे कहा, "जाति के विरुद्ध
जाति और राज्य के विरुद्ध राज्य उठ खड़ा
होगा। 11भारी भूकम्प होंगे; जहाँ-तहाँ अकाल
पड़ेंगे और महामारियाँ फैलेंगी। आतंकित
करने वाले दृश्य दिखाई देंगे और आकाश में
महान् चिह्न प्रकट होंगे।

12"यह सब घटित होने के पूर्व लोग मेरे
नाम के कारण तुम पर हाथ डालेंगे, तुम पर
अत्याचार करेंगे, तुम्हें सभागृहों तथा बन्दीगृहों
के हवाले कर देंगे और राजाओं तथा शासकों
के सामने खींच ले जायेंगे। 13यह तुम्हारे लिए
साक्षी देने का अवसर होगा। 14अपने मन में
निश्चय कर लो कि तुम पहले से अपनी सफाई
की तैयारी नहीं करोगे, 15क्योंकि मैं तुम्हें ऐसी
वाणी और बुद्धि प्रदान करूँगा, जिसका सामना
अथवा खण्डन तुम्हारा कोई विरोधी नहीं कर
सकेगा। 16तुम्हारे माता-पिता, भाई-बहन,
कुटुम्बी और मित्र भी तुम्हें पकड़वायेंगे। तुम
में से कितनों को मार डाला जायेगा 17और मेरे
नाम के कारण सब लोग तुम से बैर करेंगे।
18फिर भी तुम्हारे सिर का एक बाल भी बाँका
नहीं होगा। 19अपनी सहनशीलता से तुम अपने
जीवन को बचा लोगे।

महासंकट

20"जब तुम देखोगे कि यरूशलेम सेनाओं
से घिर रहा है, तब जान लेना कि उसका विनाश
निकट है। 21उस समय जो लोग यहूदा प्रदेश
में हों, वे पहाड़ों पर भाग जायें; जो यरूशलेम
में हों, वे नगर से बाहर निकल जायें और जो
गाँव में हों, वे नगर में न जायें; 22क्योंकि वे दण्ड
के दिन होंगे, जिनमें धर्मग्रन्थ में लिखी सब
बातें पूरी हो जायेंगी। 23उन स्त्रियों के लिए
शोक, जो उन दिनों गर्भवती या दूध पिलाती
होंगी! क्योंकि देश में घोर संकट और इस प्रजा
पर प्रकोप आ पड़ेगा। 24लोग तलवार की धार

---

20 : 45 लू 11 : 43 **21 : 1-4** मक 12 : 41-44 **21 : 3** 2 कुर 8 : 12 **21 : 5-24** मत 24 : 1-21; मक 13 : 1-19 **21 : 6** लू 19 : 44 **21 : 8** दा 7 : 22 **21 : 9** दा 2 : 28 **21 : 10** यश 19 : 2; 2 इति 15 : 6 **21 : 12** लू 12 : 11 **21 : 14** मत 10 : 19 **21 : 15** प्रे 6 : 10 **21 : 17** मत 10 : 21-22 **21 : 18** लू 12 : 7; 1 शम 14 : 45 **21 : 19** इब्र 10 : 36; 2 इति 15 : 7 **21 : 22** व्य 32 : 35; हो 9 : 7; यिर 5 : 29 **21 : 23** 1 कुर 7 : 26 **21 : 24** व्य 28 : 64; जक 12 : 3; यश 63 : 18; भज 79 : 1 दान 88 : 10; रोम 11 : 25; प्रक 11 : 2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
से मृत्यु के घाट उतारे जायेंगे। उन को बन्दी बना
कर सब राष्ट्रों में ले जाया जायेगा और यरूशलेम
गैर-यहूदी राष्ट्रों द्वारा तब तक रौंदा जायेगा, जब
तक उन राष्ट्रों का समय पूरा न हो जाये।

मानव-पुत्र का पुनरागमन

[25]''सूर्य, चन्द्रमा और तारों में चिह्न प्रकट
होंगे। समुद्र के गर्जन और बाढ़ से व्याकुल हो
कर पृथ्वी के राष्ट्र व्यथित हो उठेंगे। [26]लोग विश्व
पर आने वाले संकट की आशंका से आतंकित
हो कर निष्प्राण हो जायेंगे, क्योंकि आकाश की
शक्तियाँ विचलित हो जायेंगी। [27]तब लोग
मानव-पुत्र को अपार सामर्थ्य और महिमा के
साथ बादल पर आते हुए देखेंगे।

[28]''जब ये बातें होने लगेंगी, तो सीधे खड़े
होकर अपना सिर ऊँचा करना; क्योंकि तुम्हारी
मुक्ति निकट होगी।''

यह कब होगा

[29]येशु ने उन्हें यह दृष्टान्त सुनाया, ''अंजीर
और दूसरे पेड़ों को देखो। [30]जब उन में अंकुर
फूटने लगते हैं, तब तुम सहज ही जान जाते हो
कि ग्रीष्म-ऋतु निकट है। [31]इसी तरह जब तुम
इन बातों को होते देखोगे, तो यह जान लेना कि
परमेश्वर का राज्य निकट है।

[32]''मैं तुम से सच कहता हूँ कि तब तक इस
पीढ़ी का अन्त नहीं होगा, जब तक सब बातें
घटित नहीं हो जायेंगी। [33]आकाश और पृथ्वी
टल जायें, तो टल जायें, परन्तु मेरे शब्द कदापि
नहीं टल सकते।

जागरूकता की आवश्यकता

[34]''अपने विषय में सावधान रहो। कहीं
ऐसा न हो कि भोग-विलास, नशे और इस
संसार की चिन्ताओं से तुम्हारा मन कुण्ठित हो
जाये और वह दिन फन्दे की तरह अचानक तुम
पर आ गिरे; [35]क्योंकि वह दिन समस्त पृथ्वी
के सभी निवासियों पर आ पड़ेगा। [36]इसलिए
सदा जागते रहो और प्रार्थना करते रहो, जिससे
तुम इन सब आने वाले संकटों से बचने और
मानव-पुत्र के सामने खड़े होने में समर्थ हो
सको।''

प्रभु येशु के अन्तिम दिनों का कार्यक्रम

[37]येशु दिन में मन्दिर में शिक्षा देते थे, परन्तु
रात को वह नगर के बाहर निकल कर जैतून
नामक पहाड़ पर रात बिताते थे। [38]और
प्रात:काल से ही सब लोग उनका उपदेश सुनने
के लिए मन्दिर में उनके पास आ जाते थे।

यूदस [यहूदा] का विश्वासघात

22 बेख़मीर रोटी का पर्व, जो पास्का
(फसह) का पर्व कहलाता है, निकट
आ रहा था। [2]महापुरोहित और शास्त्री येशु को
मार डालने का उपाय ढूँढ़ रहे थे, परन्तु वे जनता
से डरते थे।

[3]उस समय शैतान ने यूदस [यहूदा] में
प्रवेश किया। यूदस 'इस्करियोती' कहलाता
था और उसकी गणना बारह प्रेरितों में होती थी।
[4]उसने महापुरोहितों और मन्दिर-आरक्षी के
नायकों के पास जा कर उनके साथ यह परामर्श
किया कि वह किस प्रकार येशु को उनके हाथ
पकड़वा दे। [5]वे बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने
उसे धन देने को सहमत हो गए। [6]यूदस ने भी
वचन दिया और वह भीड़ की अनुपस्थिति में
उनके हाथ येशु को पकड़वाने का अवसर ढूँढ़ने
लगा।

पास्का (फसह) पर्व के भोज की तैयारी

[7]बेख़मीर रोटी का दिन आया, जब पास्का-
पर्व के मेमने की बलि चढ़ाना आवश्यक था।
[8]येशु ने पतरस और योहन को यह कहकर
भेजा, ''जाओ, और हमारे लिए पास्का-पर्व के
भोज की तैयारी करो ताकि हम उसे खा
सकें।'' [9]उन्होंने येशु से पूछा, ''आप क्या
चाहते हैं? हम कहाँ उसकी तैयारी करें?''

---

21 : 25-28 मत 24 : 29-30; मक 13 : 24-26 **21 : 25** भज 65 : 7 **21 : 26** यश 34 : 4; हाग 2 : 6; प्रव 16 : 18 **21 : 27** दान 7 : 13; मत 26 : 64 **21 : 28** फिल 4 : 4-5 **21 : 29-33** मत 24 : 32-35; मक 13 : 28-31 **21 : 33** लू 16 : 17 **21 :34** लू 17 : 27; मक 4 : 19; मत 24 : 49 **21 : 35** यश 24 : 17; 1 थिस 5 : 3 **21 : 36** मक 13 : 33 प्रक 6 : 17 **21 : 37** लू 19 : 47; यो 8 : 1 **22 : 1-2** मत 26 : 1-5; मक 14 : 1-2 **22 : 2** लू 20 : 19 **22 : 3-6** मत 26 : 14-16; मक 14 : 10-11 **22 : 3** यो 13 : 2, 27 **22 : 7-23** मत 26 : 17-29; मक 14 : 12-25 **22 : 7** नि 12 : 18-20

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

10येशु ने उत्तर दिया, "नगर में प्रवेश करते ही
तुम्हें एक मनुष्य मिलेगा, जो पानी से भरा घड़ा
लिये जा रहा होगा। उसके पीछे-पीछे जाना
और जिस घर में वह प्रवेश करे, 11उस घर के
स्वामी से कहना, 'गुरुवर ने आप से यह कहा
है: 'अतिथिशाला कहाँ है, जहाँ मैं अपने शिष्यों
के साथ पास्का-पर्व का भोजन करूँगा?'
12और वह तुम्हें ऊपर एक सजा-सजाया बड़ा
कमरा दिखा देगा। वहीं तैयार करना।" 13वे चले
गये। येशु ने जैसा कहा था, उन्होंने सब कुछ
वैसा ही पाया और पास्का-पर्व के भोज की
तैयारी की।

अन्तिम भोज

14जब समय हुआ तब येशु प्रेरितों के साथ
भोजन करने बैठे 15और उन्होंने उन से कहा,
"मैं कितना चाहता था कि दु:ख भोगने से
पहले पास्का-पर्व का यह भोजन तुम्हारे साथ
करूँ, 16क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ, जब तक
यह परमेश्वर के राज्य में पूर्ण न हो जाये, मैं इसे
फिर नहीं खाऊँगा।" 17इसके बाद येशु ने
कटोरा लिया, धन्यवाद की प्रार्थना की और
कहा, "इसे लो और आपस में बाँट लो;
18क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ, आज से लेकर
उस दिन तक मैं दाख का रस फिर नहीं पिऊँगा
जब तक परमेश्वर का राज्य न आये।"

19येशु ने रोटी ली और धन्यवाद की प्रार्थना
करने के बाद उसे तोड़ा और यह कहते हुए
शिष्यों को दिया, "यह मेरी देह है, जो तुम्हारे
लिए दी जा रही है। यह मेरी स्मृति में किया
करो"। 20इसी तरह उन्होंने भोजन के बाद यह
कहते हुए कटोरा दिया, "यह कटोरा मेरे रक्त
द्वारा स्थापित नया विधान* है। यह तुम्हारे लिए
बहाया जा रहा है।

यूदस [यहूदा] के विश्वासघात का संकेत

21"देखो, मेरा विश्वासघाती मेरे साथ है,
और उसका हाथ मेज पर है। 22मानव-पुत्र तो,
जैसा उसके लिए निश्चित किया गया है, चला
जा रहा है; किन्तु धिक्कार है उस मनुष्य को,
जो उसे पकड़वा रहा है!" 23वे एक दूसरे से
पूछने लगे कि हम लोगों में कौन यह काम करने
वाला है।

शिष्यों में बड़ा कौन

24शिष्यों में यह विवाद छिड़ गया कि हम
में किस को सब से बड़ा समझा जाना चाहिए।
25येशु ने उन से कहा, "संसार में राजा अपनी
प्रजा पर निरंकुश शासन करते हैं और उनके
अधिकारी 'उपकारी' कहलाना चाहते हैं।
26परन्तु तुम ऐसा न करना। जो तुम में बड़ा है,
वह सब से छोटा-जैसा बने और जो नेता है, वह
सेवक-जैसा बने। 27आखिर बड़ा कौन है—वह,
जो मेज़ पर बैठता है अथवा वह, जो परोसता
है? वही न, जो मेज पर बैठता है। परन्तु मैं
तुम्हारे बीच में सेवक-जैसा हूँ।

प्रेरितों का पुरस्कार

28"तुम ही हो जो मेरे संकट के समय मेरा
साथ देते रहे। 29जैसे मेरे पिता ने मेरे लिए एक
राज्य ठहराया है**; वैसे ही मैं तुम्हारे लिए
ठहराता हूँ 30कि तुम मेरे राज्य में मेरी मेज पर
खाओ-पियो और सिंहासनों पर बैठ कर
इस्राएल के बारह कुलों का न्याय करो।

पतरस की भावी निर्बलता

31"सिमोन! सिमोन! शैतान ने तुम लोगों
को गेहू की तरह फटकने की माँग की है।
32परन्तु सिमोन, मैंने तुम्हारे लिए प्रार्थना की है,
जिससे तुम्हारा विश्वास नष्ट न हो। समय आने
पर जब तुम फिरो, तब अपने भाइयों+ को भी
संभालना।" 33पतरस ने उनसे कहा, "प्रभु! मैं
आपके साथ बन्दीगृह जाने और मरने को भी
तैयार हूँ।" 34किन्तु येशु ने कहा, "पतरस!
मैं तुम से कहता हू कि आज, मुर्गे के बाँग देने
से पहले ही, तुम तीन बार यह अस्वीकार करोगे
कि तुम मुझे जानते हो।"

+ अथवा, "भाई-बहिनों" *अथवा, 'वाचा' **अथवा, 'सौंपना', 'प्रदान करना'

22 : 13 लू 19 : 32 **22 : 16** लू 13 : 29 **22 : 19** 1 कुर 11 : 23-25; प्रे 27 : 35 **22 : 20** नि 24 : 8; यिर 31 : 31; जक 9 : 11 **22 : 21** यो 13 : 21-22 **22 : 24** लू 9 : 46 **22 : 25-27** मत 20 : 25-27; मक 10 : 42-44 **22 : 27** यो 13 : 4-14 **22 : 29** लू 12 : 32 **22 : 30** मत 19 : 28 **22 : 31-34** मत 26 : 31-35; मक 14 : 27-31; यो 13 : 36-38 **22 : 31** 2 कुर 2 : 11; आमो 9 : 9 **22 : 32** यो 17 : 11, 15, 20; भज 51 : 13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भावी संकट

35येशु ने शिष्यों से कहा, "जब मैंने तुम्हें बटुये, झोली और जूतों के बिना भेजा था, तब क्या तुम्हें किसी वस्तु की कमी हुई थी?" 36उन्होंने उत्तर दिया, "किसी वस्तु की नहीं।" इस पर येशु ने कहा, "परन्तु अब जिसके पास बटुआ है, वह उसे ले ले और इसी प्रकार झोली भी। और जिसके पास नहीं है, वह अपना वस्त्र बेच कर तलवार खरीद ले; 37क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ, यह अनिवार्य है कि धर्मग्रन्थ का यह लेख मुझ में पूर्ण हो: 'वह कुकर्मियों में गिना गया।' और जो कुछ मेरे विषय में लिखा है, वह अवश्य पूरा होगा।" 38शिष्यों ने कहा, "प्रभु! देखिए, यहाँ दो तलवारें हैं।" येशु ने उत्तर दिया, "यह पर्याप्त है।*"

प्रभु की प्राणपीड़ा

39येशु बाहर निकल कर अपनी आदत के अनुसार जैतून पहाड़ पर गये। उनके शिष्य भी उनके साथ हो लिये। 40येशु ने वहाँ पहुँच कर उनसे कहा, "प्रार्थना करो, जिससे तुम परीक्षा में न पड़ो।" 41तब वह ढेला फेंकने की दूरी तक उन से अलग हो गये और घुटने टेक कर उन्होंने यह कहते हुए प्रार्थना की, 42"पिता! यदि तू चाहे, तो यह प्याला मुझ से हटा ले। फिर भी मेरी नहीं, किन्तु तेरी इच्छा पूरी हो।"

[43तब येशु को स्वर्ग का एक दूत दिखाई पड़ा, जिसने उन को बल प्रदान किया। 44येशु प्राणपीड़ा में पड़ने के कारण और भी एकाग्र हो कर प्रार्थना करते रहे और उनका पसीना रक्त की बूँदों की तरह धरती पर टपकता रहा।**] 45वे प्रार्थना से उठ कर अपने शिष्यों के पास आये। उन्होंने देखा कि वे शोक के कारण सो गये हैं। 46येशु ने उनसे कहा, "तुम लोग क्यों सो रहे हो? उठो और प्रार्थना करो, जिससे तुम परीक्षा में न पड़ो।"

येशु की गिरफ्तारी

47येशु यह कह ही रहे थे कि एक भीड़ आ पहुँची। बारहों में से एक, जिसका नाम यूदस था, भीड़ के आगे था। वह चुम्बन के द्वारा येशु का अभिवादन करने के लिए उनके पास आया। 48येशु ने उससे कहा, "यूदस! क्या तुम चुम्बन के द्वारा मानव-पुत्र के साथ विश्वासघात कर रहे हो?"

49येशु के साथियों ने यह देख कर कि क्या होने वाला है, उनसे कहा, "प्रभु! क्या हम तलवार चलायें?" 50और उन में एक ने प्रधान महापुरोहित के सेवक पर प्रहार किया और उसका दाहिना कान उड़ा दिया। 51किन्तु येशु ने कहा, "रहने दो, बहुत हुआ", और उसका कान छू कर उन्होंने उसे अच्छा कर दिया।

52जो महापुरोहित, मन्दिर-आरक्षी के नायक और धर्मवृद्ध येशु को पकड़ने आये थे, उनसे उन्होंने कहा, "क्या तुम मुझको डाकू समझ कर तलवारें और लाठियाँ ले कर निकले हो? 53मैं प्रतिदिन मन्दिर में तुम्हारे साथ रहा और तुमने मुझ पर हाथ नहीं डाला। परन्तु यह तुम्हारा समय है और उस पर अन्धकार का अधिकार है।"

पतरस का अस्वीकरण

54तब उन्होंने येशु को गिरफ्तार कर लिया और उन्हें ले जाकर प्रधान महापुरोहित के भवन में पहुँचा दिया। पतरस कुछ दूरी रखते हुए उनके पीछे-पीछे चला। 55जब लोग आंगन के बीच में आग जला कर उसके चारों ओर बैठे थे, तब पतरस भी उनके साथ बैठ गया। 56एक सेविका ने आग के प्रकाश में पतरस को बैठा हुआ देखा और उस पर दृष्टि गड़ा कर कहा, "यह भी उसी के साथ था।" 57किन्तु पतरस ने अस्वीकार करते हुए कहा, "बहिन! मैं उसे नहीं जानता।" 58थोड़ी देर बाद किसी दूसरे ने पतरस को देखकर कहा, "तुम भी उन्हीं लोगों

---

* अथवा, "बस करो!" ** कुछ प्रतियों में पद 43-44 नहीं पाए जाते।

22 : 35 लू 9 : 3; 10 : 4 **22 : 37** लू 22 : 52; यश 53 : 12 **22 : 39-46** मत 26 : 30, 36-46; मक 14 : 26, 32-42 **22 : 39** लू 21 : 37; यो 18 : 1 **22 : 42** मत 6 : 10 **22 : 43** 1 रा 19 : 5; यो 12 : 29 **22 : 47-53** मत 26 : 47-56; मक 14 : 43-49; यो 18 : 2-11 **22 : 52** लू 22 : 37 **22 : 53** यो 7 : 30; 8 : 20; कुल 1 : 13 **22 : 54-62** मत 26 : 57-58, 69-75; मक 14 : 53-54, 66-72; यो 18 : 12-18, 25-27

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

में से एक हो।'' पतरस ने उत्तर दिया, ''नहीं भई! मैं नहीं हूँ।'' 59करीब घण्टे भर बाद किसी और व्यक्ति ने दृढ़तापूर्वक कहा, ''निश्चय ही यह उसी के साथ था।यह भी तो गलीली है।'' 60 पतरस ने कहा, ''अरे भाई! मैं नहीं जानता कि तुम क्या कह रहे हो।'' वह बोल ही रहा था कि उसी क्षण मुर्गे ने बाँग दी। 61और प्रभु ने मुड़ कर पतरस की ओर देखा। तब पतरस को याद आया कि प्रभु ने उससे कहा था कि आज मुर्गे के बाँग देने से पहले ही तुम मुझे तीन बार अस्वीकार करोगे, 62और वह बाहर निकल कर फूट-फूट कर रोने लगा।

अत्याचार

63येशु पर पहरा देने वाले सिपाही उनका उपहास कर उन्हें मारने-पीटने लगे। 64उन्होंने उनकी आंखों पर पट्टी बाँधी और उनसे पूछने लगे, ''नबूवत कर, तुझे किसने मारा?'' 65वे उनका अपमान करते हुए उनके विरुद्ध और बहुत-सी निन्दाजनक बातें कहते रहे।

धर्म-महासभा के सामने

66जैसे ही दिन हुआ, समाज के धर्मवृद्ध, महापुरोहित और शास्त्री एकत्र हो गये और उन्होंने येशु को अपनी धर्म-महासभा में प्रस्तुत किया। 67उन्होंने येशु से कहा, ''यदि तुम मसीह हो, तो हमें बता दो।'' येशु ने उत्तर दिया, ''यदि मैं आप लोगों से कहूँगा, तो आप विश्वास नहीं करेंगे 68और यदि मैं प्रश्न करूँगा, तो आप लोग उत्तर नहीं देंगे। 69परन्तु अब से मानव-पुत्र सर्वशक्तिमान परमेश्वर की दाहिनी ओर विराजमान होगा।'' 70इस पर सब-के-सब बोल उठे, ''तो क्या तुम परमेश्वर के पुत्र हो?'' येशु ने उत्तर दिया, ''आप ही कहते हैं कि मैं हूँ।'' 71इस पर उन्होंने कहा, ''अब हमें और गवाही की जरूरत ही क्या है? हमने तो स्वयं इसके मुँह से सुन लिया है।''

23 तब सारी सभा उठी और वे उन्हें राज्यपाल पिलातुस के यहाँ ले गये।

रोमन राज्यपाल पिलातुस के सामने पहली पेशी

2वे यह कहते हुए येशु पर अभियोग लगाने लगे, ''हमने इस मनुष्य को हमारी जाति को पथभ्रष्ट करते, सम्राट को कर देने से लोगों को मना करते और अपने आप को मसीह एवं राजा कहते सुना है।'' 3पिलातुस ने येशु से यह प्रश्न किया, '' क्या तुम यहूदियों के राजा हो?'' येशु ने उत्तर दिया ''आप स्वयं कह रहे हैं।'' 4तब पिलातुस ने महापुरोहितों और भीड़ से कहा, ''मैं इस मनुष्य में कोई दोष नहीं पाता।'' 5उन्होंने यह कहते हुए आग्रह किया, ''यह गलील प्रदेश से ले कर यहाँ तक यहूदा प्रदेश के कोने-कोने में अपनी शिक्षा से जनता को विद्रोह के लिए भड़काता है।''

6पिलातुस ने यह सुन कर पूछा, ''क्या यह मनुष्य गलील-निवासी है?'' 7और यह जान कर कि वह गलील के शासक हेरोदेस के अधिकार-क्षेत्र से हैं, उसने येशु को हेरोदेस के पास भेज दिया। वह भी उन दिनों यरूशलेम में ही था।

शासक हेरोदेस के दरबार में

8हेरोदेस येशु को देख कर बहुत प्रसन्न हुआ। वह बहुत समय से उन्हें देखना चाहता था, क्योंकि उसने येशु की चर्चा सुनी थी और उनका कोई चमत्कार देखने की आशा करता था। 9वह येशु से बहुत-से प्रश्न करता रहा, परन्तु उन्होंने उसे उत्तर नहीं दिया। 10इस बीच महापुरोहित और शास्त्री वहाँ खड़े थे; वे येशु पर उग्रतापूर्वक अभियोग लगाते रहे। 11तब हेरोदेस ने अपने सैनिकों के साथ येशु का अपमान तथा उपहास किया और उन्हें भड़कीला वस्त्र पहना कर पिलातुस के पास वापस भेज दिया। 12उसी दिन हेरोदेस और पिलातुस परस्पर मित्र बन गये। इससे पहले उन में शत्रुता थी।

पिलातुस के सामने दूसरी पेशी

13अब पिलातुस ने महापुरोहितों, शासकों

---

22 : 61 लू 22 : 34 **22 : 63-65** मत 26 : 67-68; मक 14 : 65 **22 : 66-71** मत 26 : 59-66; मक 14 : 55-64 **22 : 67** यो 3 : 22, 8 : 45; 10 : 24 **22 : 69** दान 7 : 13; भज 110 : 1 **23 : 1-25** मन 27 : 2, 11-31; मक 15 : 1-20; यो 18 : 28—19 : 16 **23 : 2** लू 20 : 25 **23 : 3** 1 तिम 6 : 13 **23 : 7** लू 3 : 1 **23 : 8** लू 9 : 9

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और जनता को बुला कर 14उन से कहा, "आप
लोगों ने यह अभियोग लगा कर इस मनुष्य को
मेरे सामने पेश किया कि यह जनता को भ्रष्ट
करता है। मैंने आपके सामने इसकी जाँच की;
परन्तु आप इस मनुष्य पर जिन बातों का
अभियोग लगाते हैं, उनके विषय में मैंने इस में
कोई दोष नहीं पाया 15और हेरोदेस ने भी दोष
नहीं पाया; क्योंकि उन्होंने इसे मेरे पास वापस
भेज दिया है। आप देख रहे हैं कि इसने
प्राणदण्ड के योग्य कोई अपराध नहीं किया है।
16इसलिए मैं इसे पिटवा कर छोड़ दूँगा।"
[17पर्व के अवसर पर पिलातुस को
यहूदियों के लिए एक बन्दी को रिहा करना
पड़ता था।*] 18वे सब-के-सब एक साथ
चिल्ला उठे, "इसे हटाओ और हमारे लिए
बरअब्बा को छोड़ दो!" 19बरअब्बा नगर में
हुए विद्रोह के कारण तथा हत्या के अपराध में
कैद किया गया था। 20पिलातुस ने येशु को
मुक्त करने की इच्छा से लोगों को फिर
समझाया; 21किन्तु वे चिल्लाते रहे, "इसे क्रूस
पर चढ़ाओ! इसे क्रूस पर चढ़ाओ!"22पितातुस
ने तीसरी बार उन से कहा, "क्यों? इस मनुष्य
ने कौन-सा अपराध किया है? मैं इसमें
प्राणदण्ड के योग्य कोई दोष नहीं पाता।
इसलिए मैं इसे पिटवा कर छोड़ दूँगा।"
23परन्तु वे चिल्ला-चिल्ला कर पिलातुस के पीछे
पड़ गए कि इसे क्रूस पर चढ़ाओ! और उनका
चिल्लाना प्रबल हुआ। 24तब पिलातुस ने उनकी
माँग पूरी करने का निश्चय किया। 25उसने उस
मनुष्य को तो मुक्त कर दिया जो विद्रोह और
हत्या के कारण कैद किया गया था और जिसे
वे छोड़ने की मांग कर रहे थे, परन्तु येशु को
लोगों की इच्छा पर छोड़ दिया।

क्रूस पर चढ़ाया जाना

26जब वे येशु को ले जा रहे थे तब उन्होंने
गाँव से नगर में आते हुए शिमोन नामक कुरेने-
निवासी को पकड़ा और उस पर क्रूस रख दिया,
जिससे वह उसे येशु के पीछे-पीछे ले जाये।
27लोगों की भारी भीड़ उनके पीछे-पीछे
चल रही थी। उन में स्त्रियाँ भी थीं, जो अपनी
छाती पीटते हुए उनके लिए विलाप कर रही
थीं। 28येशु ने उनकी ओर मुड़ कर कहा,
"यरूशलेम की पुत्रियो! मेरे लिए मत रोओ।
किन्तु अपने लिए और अपने बच्चों के लिए
रोओ, 29क्योंकि वे दिन आ रहे हैं, जब लोग
कहेंगे, 'धन्य है वे स्त्रियाँ, जो बाँझ हैं; धन्य हैं
वे गर्भ, जिन्होंने जन्म नहीं दिया और धन्य हैं
वे स्तन, जिन्होंने दूध नहीं पिलाया!'30तब लोग
पहाड़ों से कहेंगे, 'हम पर गिर पड़ो' और
पहाड़ियों से 'हमें ढक लो'; 31क्योंकि यदि वे
हरे-भरे वृक्ष के साथ ऐसा करते हैं, तो उसके
सूख जाने पर उसके साथ क्या कुछ नहीं होगा?"
32वे येशु के साथ दो कुकर्मियों को भी
प्राणदण्ड के लिए ले गए।
33वे 'खोपड़ी' नामक स्थान पहुँचे। वहाँ
उन्होंने येशु को और उन दो कुकर्मियों को भी
क्रूस पर चढ़ाया—एक को उनकी दायीं ओर
और दूसरे को उनकी बायीं ओर। 34[येशु ने
कहा, "पिता! इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये नहीं
जानते कि क्या कर रहे हैं।"]** तब उन्होंने
चिट्ठियाँ डाल कर येशु के वस्त्र आपस में बांट
लिये।

अपमान और उपहास

35जनता खड़ी हो कर यह सब देख रही थी।
अधिकारी यह कहते हुए येशु का उपहास कर
रहे थे, "इसने दूसरों को बचाया। यदि यह
परमेश्वर का मसीह है, यदि इसको परमेश्वर
ने चुना है, तो यह अपने को बचाये।"
36सैनिकों ने भी उनका उपहास किया। वे पास
आए और उन्हें अम्लरस देते हुए बोले, 37"यदि
तू यहूदियों का राजा है, तो अपने को बचा।"
38येशु के क्रूस के ऊपर भी लिखा हुआ था,

---

* कुछ प्रतियों में यह पद नहीं पाया जाता है ** कुछ प्रतियों में यह पद नहीं पाया जाता है

23 : 26 मत 27 : 32; मक 15 : 21 **23 : 29** लू 21 : 23 **23 : 30** हो 10 : 8; प्रक 6 : 16; 9 : 6 **23 : 31** 1 पत 4 : 17 **23 : 33-49** मत 27 : 33-56; मक 15 : 22-41 यो 19 :17-30 **23 : 34** मत 5 : 44; यश 53 : 12; भज 22: 18 **23 : 35** भज 22 : 7 **23 : 36** भज 69 : 21

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

"यह यहूदियों का राजा है।"

पश्चात्तापी डाकू

39क्रूस पर टंगा एक कुकर्मी येशु की निन्दा
करने लगा, "तू मसीह है न ? तो अपने को और
हमें भी बचा।" 40पर दूसरे कुकर्मी ने उसे डाँट
कर कहा, "क्या तुझे परमेश्वर का भी डर
नहीं ? तू भी तो वही दण्ड भोग रहा है। 41हमारा
दण्ड न्यायसंगत है, क्योंकि हम अपनी करनी
का फल भोग रहे हैं; पर इन्होंने कोई अपराध
नहीं किया है।" 42तब उसने कहा, "येशु !
जब आप अपने राज्य में आएं *, तो मुझे स्मरण
करना।" 43येशु ने उससे कहा, "मैं तुम से सच
कहता हूँ, तुम आज ही स्वर्गधाम में मेरे साथ
होगे।"

येशु की मृत्यु

44लगभग दोपहर का समय था। उस समय
से तीसरे पहर तक सारे देश में अँधेरा छाया
रहा। 45सूर्य का प्रकाश जाता रहा और मन्दिर
का परदा बीच से फट कर दो टुकड़े हो गया।
46येशु ने ऊँचे स्वर से पुकार कर कहा, "पिता !
मैं अपनी आत्मा को तेरे हाथों में सौंपता हूँ",
और यह कह कर उन्होंने प्राण त्याग दिये।
47शतपति ने यह घटना देख कर परमेश्वर
की स्तुति की और यह कहा, "निश्चय ही, यह
मनुष्य धर्मात्मा था।" 48बहुत-से लोग यह
दृश्य देखने के लिए इकट्ठे हो गये थे। वे सब
इन घटनाओं को देख कर अपनी छाती पीटते
हुए लौट गये।
49येशु के सब परिचित व्यक्ति कुछ दूर खड़े
थे। उनमें स्त्रियाँ भी थीं, जो गलील प्रदेश से
येशु के पीछे-पीछे आयी थीं और यह सब देख
रही थीं।

कबर में रखा जाना

50धर्म-महासभा का यूसुफ नामक सदस्य
निष्कपट और धार्मिक था। 51उसने सभा की
योजना और उसके कार्य में अपना मत नहीं
दिया था। वह यहूदा प्रदेश** के नगर
अरिमतियाह का निवासी था और परमेश्वर के
राज्य की प्रतीक्षा में था। 52उसने पिलातुस के
पास जा कर येशु का शव+ माँग लिया। 53उसने
शव को क्रूस से उतारा और मलमल के कफन
में लपेट कर एक ऐसी कबर में रख दिया, जो
चट्टान में खुदी हुई थी और जिस में कभी किसी
को नहीं रखा गया था। 54उस दिन शुक्रवार++
था और विश्राम-दिवस आरम्भ हो रहा था।
55जो स्त्रियाँ येशु के साथ गलील प्रदेश से
आयी थीं, उन्होंने यूसुफ के पीछे-पीछे जा कर
कबर को देखा और यह भी देखा कि येशु का
शव किस तरह रखा गया है। 56तब उन्होंने लौट
कर सुगन्धित द्रव्य तथा विलेपन तैयार किया
और विश्राम के दिन नियम के अनुसार विश्राम
किया।

पुनरुत्थान

24 सप्ताह के प्रथम दिन, पौ फटते ही
स्त्रियाँ तैयार किये हुए सुगन्धित द्रव्य
ले कर कबर के पास गयीं। 2उन्होंने पत्थर को
कबर से अलग लुढ़काया हुआ पाया, 3किन्तु
शवकक्ष के भीतर जाने पर उन्हें प्रभु येशु का
शव नहीं मिला। 4वे इस पर आश्चर्य कर ही
रही थीं कि चमचमाते वस्त्र पहने दो पुरुष
उनके पास आ कर खड़े हो गये। 5स्त्रियों ने
भयभीत हो कर भूमि की ओर सिर झुका लिया।
उन पुरुषों ने उन से कहा, "आप लोग जीवित
को मृतकों में क्यों ढूँढ़ रही हैं ? 6वह यहाँ नहीं
हैं, पर वह जी उठे हैं। गलील प्रदेश में रहते
समय उन्होंने आप लोगों से जो कहा था, वह
याद कीजिए। 7उन्होंने यह कहा था कि मानव-
पुत्र का पापियों के हाथ सौंपा जाना, क्रूस पर
चढ़ाया जाना और तीसरे दिन जी उठना
अनिवार्य है।" 8तब स्त्रियों को येशु का यह
कथन स्मरण हुआ 9और वे कबर से लौट पड़ीं।
उन्होंने ग्यारह प्रेरितों को तथा अन्य सब शिष्यों

---

* पाठान्तर, 'प्रवेश करें' **अथवा, 'यहूदियों' + अथवा, 'शरीर' ++ शब्दश: "(विश्राम-दिवस की) तैयारी का दिन"

23 : 42 मत 16 :28 **23 : 44** आमो 8 : 9 **23 : 45** नि 36 : 35 **23 : 46** भज 31 : 5; प्रे 7 : 59 **23 : 49** लू 8 : 2; भज 38 : 11; 88 : 8 **23 : 50-56** मत 27 : 57-61; मक 15 : 42-47; यो 19 : 38-42 **23 : 51** लू 2 : 25, 38 **23 : 56** नि 12 : 16; 20 : 10; लेव 23 : 8 **24 : 1-12** मत 28 : 1-8; मक 16 : 1-8; यो 20 : 1-13 **24 : 7** मत 17 : 22-23

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

को ये सारी बातें कह सुनाईं। 10जिन्होंने प्रेरितों
से ये बातें कहीं, वे मरियम मगदलेनी, योअन्ना,
और याकूब की माता मरियम तथा उनके साथ
की अन्य स्त्रियाँ थीं। 11परन्तु प्रेरितों ने इन सब
बातों को प्रलाप मात्र ही समझा और स्त्रियों पर
विश्वास नहीं किया। 12फिर भी पतरस उठा
और दौड़ते हुए कबर के पास पहुँचा। उसने
झुक कर देखा कि पट्टियों के अतिरिक्त वहाँ
कुछ भी नहीं है और वह इस घटना पर आश्चर्य
करता हुआ लौट आया।

इम्माउस के मार्ग में शिष्यों को दर्शन

13-14उसी दिन उनमें से दो शिष्य इन सब
घटनाओं पर बातें करते हुए इम्माउस नामक
गाँव जा रहे थे। वह यरूशलेम से कोई दस
किलोमीटर* दूर है। 15वे आपस में बातचीत
और विचार-विमर्श कर ही रहे थे कि येशु स्वयं
आ कर उनके साथ हो लिये, 16परन्तु शिष्यों की
आँखें उन्हें पहचानने में असमर्थ रहीं। 17येशु
ने उन से कहा, "आप लोग राह चलते किस
विषय पर बातचीत कर रहे हैं?" वे उदास खड़े
रह गये। 18तब उन में एक, जिसका नाम
क्लियुपास था, बोला, "क्या यरूशलेम में
केवल आप ही एक ऐसे प्रवासी हैं, जो यह नहीं
जानते कि वहाँ इन दिनों क्या-क्या हुआ है?"
19येशु ने उन से कहा, "क्या हुआ है?" उन्होंने
उत्तर दिया, "बात येशु नासरी की है। वह
परमेश्वर और समस्त जनता की दृष्टि में कर्म
और वचन के शक्तिशाली नबी थे। 20हमारे
महापुरोहितों और शासकों ने उन्हें प्राणदण्ड
दिलाया और क्रूस पर चढ़वाया। 21हम तो आशा
करते थे कि वही इस्राएल का उद्धार करेंगे। इन
सब बातों के अतिरिक्त एक बात और : यह
आज से तीन दिन पहले की घटना है। 22हम में
से कुछ स्त्रियों ने हमें बड़े अचम्भे में डाल दिया
है। वे बड़े सबेरे कबर पर गयीं 23और उन्हें येशु
का शव नहीं मिला। उन्होंने लौट कर कहा कि
उन्हें स्वर्गदूत भी दिखाई दिये, जिन्होंने यह
बताया कि येशु जीवित हैं। 24इस पर हमारे कुछ
साथी कबर पर गये और उन्होंने सब कुछ वैसा
ही पाया, जैसा स्त्रियों ने कहा था; परन्तु उन्होंने
येशु को नहीं देखा।"

25तब येशु ने उन से कहा, "निर्बुद्धियो!
नबियों ने जो कुछ कहा है, तुम उस पर विश्वास
करने में कितने मन्दमति हो! 26क्या यह अनिवार्य
नहीं था कि मसीह यह सब दुःख भोगें और इस
प्रकार अपनी महिमा में प्रवेश करें?" 27तब येशु
ने मूसा एवं सब नबियों से आरम्भ कर संपूर्ण
धर्मग्रन्थ में अपने विषय में लिखी बातों की
व्याख्या उनसे की।

28इतने में वे उस गाँव के पास पहुँच गये,
जहाँ वे जा रहे थे। येशु ने ऐसा दिखाया कि वह
आगे जाना चाहते हैं। 29किन्तु शिष्यों ने यह
कह कर उन से आग्रह किया, "हमारे साथ रह
जाइए। संध्या हो रही है और अब दिन ढल
चुका है।" वह उनके साथ ठहरने के लिए
भीतर गये। 30जब येशु उनके साथ भोजन करने
बैठे, तब उन्होंने रोटी ली, आशिष मांगी और
वह रोटी तोड़ कर उन्हें देने लगे। 31इस पर शिष्यों
की आँखें खुल गयीं और उन्होंने येशु को
पहचान लिया......किन्तु येशु उनकी दृष्टि से
ओझल हो गये। 32तब शिष्यों ने एक दूसरे से
कहा, "हमारे हृदय कितने उद्दीप्त हो रहे थे,
जब वह मार्ग में हम से बातें कर रहे थे और हमें
धर्मग्रन्थ समझा रहे थे!"

33वे उसी समय उठे और यरूशलेम लौट
गये। वहाँ उन्होंने ग्यारहों और उनके साथियों
को एकत्र पाया, 34जो यह कह रहे थे, "प्रभु
सचमुच जी उठे हैं और सिमोन को दिखाई दिये
हैं।" 35तब दोनों शिष्यों ने भी बताया कि मार्ग
में क्या-क्या हुआ और उन्होंने येशु को रोटी
तोड़ते समय कैसे पहचाना।

---

* मूल में साठ स्तदियन। पाठान्तर 'एक सौ साठ स्तदियन'

24 : 10 लू 8 : 2-3 **24 : 13-35** मक 16 : 12-13 **24 : 15** मत 18 : 20 **24 : 19** मत 21 : 11 **24 : 21** लू 1 : 68; 2 : 38; 19 : 11; प्रे 1 : 6 **24 : 22** लू 24 : 1-11 **24 :24** लू 24 : 12; यो 20 : 3-10 **24 : 27** व्य 18 : 15; भज 22 : 1-21; यश 53 : 1-12 **24 : 30** लू 22 : 19 **24 : 34** 1 कुर 15 : 4-5

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

येशु का बहुत-से शिष्यों को दर्शन देना

36वे इन सब घटनाओं पर बातचीत कर ही
रहे थे कि येशु उनके बीच आ कर खड़े हो गये।
उन्होंने उन से कहा, "तुम्हें शान्ति
मिले!" 37परन्तु वे विस्मित हो गए और भयभीत
होकर सोचने लगे कि वे कोई प्रेत देख रहे हैं।
38येशु ने उन से कहा, "तुम लोग क्यों घबरा
रहे हो? तुम्हारे मन में सन्देह क्यों हो रहा है?
39मेरे हाथ और मेरे पैर देखो, मैं ही हूँ। मुझे
टटोल कर देखो, क्योंकि प्रेत के हाड़-मांस
नहीं होता जैसा तुम मुझमें देख रहे हो!"
40उन्होंने यह कह कर उन को अपने हाथ और
पैर दिखाये। 41जब इस पर भी शिष्यों को
आनन्द के मारे विश्वास नहीं हो रहा था और
वे आश्चर्य-चकित बने हुए थे, तब येशु ने
कहा, "क्या यहाँ तुम्हारे पास खाने को कुछ
है?" 42उन्होंने येशु को भूनी मछली का एक
टुकड़ा दिया। 43उन्होंने उसे लिया और उनके
सामने खाया।

अन्तिम निर्देश

44येशु ने शिष्यों से कहा, "मैंने तुम्हारे साथ
रहते समय तुम लोगों से कहा था कि जो कुछ
मूसा की व्यवस्था में और नबियों के ग्रंथों में
तथा भजन-संहिता में मेरे विषय में लिखा है,
सब का पूरा होना अनिवार्य है।" 45तब येशु ने
शिष्यों की बुद्धि खोल दी कि वे धर्मग्रन्थ को
समझ सकें, 46और उन से कहा, "धर्मग्रन्थ में
ऐसा ही लिखा है कि मसीह दुःख भोगेंगे, तीसरे
दिन मृतकों में से जी उठेंगे 47और उनके नाम
पर यरूशलेम से ले कर सभी राष्ट्रों को पापक्षमा
के लिए पश्चात्ताप का संदेश सुनाया जायेगा।
48तुम इन बातों के गवाह हो। 49देखो, मेरे पिता
ने जिस वरदान की प्रतिज्ञा की है, उसे मैं तुम
पर भेजूँगा। इसलिए जब तक तुम ऊपर के
सामर्थ्य से सम्पन्न न हो जाओ, तुम नगर में ठहरे
रहो।"

स्वर्गारोहण

50इसके पश्चात् येशु शिष्यों को बेतनियाह
गांव तक ले गये और उन्होंने अपने हाथ उठा
कर उन्हें आशीर्वाद दिया। 51आशीर्वाद देते-
देते वह उनसे अलग हो गये और स्वर्ग में उठा
लिये गये।

52शिष्य उनकी वंदना कर बड़े आनन्द के
साथ यरूशलेम लौट आये 53और वे मन्दिर में
सदा परमेश्वर की स्तुति करते रहे*।

---

* अथवा 'मन्दिर में सदा उपस्थित रहकर परमेश्वर की स्तुति करते थे।'

24 : 36-49 मक 16 : 14-18; यो 20 : 19-23; 1 कुर 15 : 5 **24 :37** मत 14 :26 **24 : 42** यो 21 : 5, 10 **24 : 44** लू 9 : 22, 45; 18 : 31-33; **24 : 46** 1 तिम 3 : 16 **24 : 49** यो 15 : 36; 16 : 7; प्रे 1 : 4 **24 : 50-53** मक 16 : 19; प्रे 1 : 4-14 **24 : 51** प्रव 50 : 20 **24 : 52** यो 16 : 22; 14 : 28

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सन्त योहन [यूहन्ना] के अनुसार शुभ समाचार

पुस्तक परिचय

सन्त योहन के अनुसार शुभ समाचार प्रभु येशु मसीह को परमेश्वर के शाश्वत 'शब्द' के रूप में प्रस्तुत करता है। मानव येशु वह शब्द हैं, जिसने देह धारण कर हमारे मध्य निवास किया (1: 14)। प्रस्तुत शुभ समाचार को लिखने का प्रयोजन स्वयं शुभ समाचार में इस प्रकार बताया गया है : ''येशु ही मसीह, परमेश्वर के पुत्र हैं'' और हम अपने इस विश्वास के द्वारा उनके नाम से जीवन प्राप्त कर सकते हैं (20 : 31)।

''शुभ समाचार'' के **पहले अध्याय के आरंभिक वाक्यों में** लेखक इस देहधारी शब्द के विषय में हमें बताता है कि अनुग्रह और सत्य से परिपूर्ण प्रभु येशु ने पिता को प्रकट किया है। शुभ समाचार के **प्रथम भाग में** (1 : 19—12 : 50) सात आश्चर्यपूर्ण चिह्नों अथवा महान घटनाओं का विवरण है, जिनसे प्रकट होता है कि प्रभु येशु ही जीवन-ज्योति और मुक्तिदाता हैं; वह परमेश्वर के पुत्र हैं, जिनको भेजने की प्रतिज्ञा परमेश्वर ने की थी। इन घटनाओं के विवरण के साथ-साथ प्रभु येशु के प्रवचन हैं। इन प्रवचनों के माध्यम से आश्चर्यपूर्ण घटनाओं के अर्थ और उद्देश्य को प्रकट किया गया है। प्रथम भाग के अन्त में पाठक को बताया गया कि एक ओर तो कुछ लोगों ने प्रभु येशु में विश्वास किया और उनके अनुयायी बन गए; किन्तु दूसरी ओर कुछ लोगों ने प्रभु येशु का विरोध किया और उन पर विश्वास करना अस्वीकार कर दिया (12 : 37-50)।

प्रथम भाग के पश्चात् अध्याय 13 से 17 में विस्तार से यह बताया गया है कि प्रभु येशु अपनी गिरफ्तारी के पूर्व अपने शिष्यों के साथ सत्संग करते हैं, और उन्हें आगामी घटनाओं के लिए मानसिक तौर पर तैयार करते हैं। वह उन्हें धैर्य बन्धाते हैं, उन्हें विश्वास में दृढ़ करते हैं, उन्हें प्रोत्साहित करते हैं कि जब वह क्रूस पर चढ़ाये जाएंगे, मार डाले जाएंगे , किन्तु महिमा में जी उठेंगे, तो शिष्य निराश और हतोत्साहित न हों।

अंतिम अध्यायों में (अध्याय 18 से 20 तक) प्रभु येशु की गिरफ्तारी, मुकद्दमा, क्रूस पर चढ़ाया जाना और उनकी मृत्यु, कबर में दफनाया जाना और तीसरे दिन पुनर्जीवित होना तथा शिष्यों को दर्शन देना—इन सब घटनाओं का विवरण है। **अध्याय 21 में,** परिशिष्ट के रूप में एक अतिरिक्त दर्शन एवं अद्‌भुत चिह्न मिलता है, और प्रिय शिष्य की साक्षी को सत्य माना गया।

सन्त योहन के अनुसार शुभसमाचार में इस बात पर जोर डाला गया है कि प्रभु येशु के माध्यम से परमेश्वर उस विश्वासी को शाश्वत जीवन प्रदान करता है, जो यह विश्वास करता है कि प्रभु येशु ही मार्ग, सत्य और जीवन हैं। इस शुभ समाचार ग्रन्थ को पढ़ते समय हमारा ध्यान इस ओर भी आकर्षित होता है कि लेखक हमारे दैनिक जीवन में काम आनेवाली सामान्य वस्तुओं को 'प्रतीक अथवा चिह्न' रूप में प्रयुक्त करता है, और उन सामान्य वस्तुओं द्वारा आत्मिक, शाश्वत सच्चाइयों को अभिव्यक्त करता है: जैसे जल, रोटी, ज्योति, चरवाहा और भेड़, दाखलता (अंगूर- लता) और दाख। न केवल इस आध्यात्मिक दृष्टिकोण के कारण, वरन् यरूशलेम के तीर्थ-पर्वों पर केन्द्रित अपने विशिष्ट घटनाक्रम के कारण भी यह चौथा शुभसमाचार तीन अन्य ''सहदर्शी'' शुभसमाचारों से अलग, एक अत्यन्त महत्वपूर्ण साक्षी के रूप में प्रकट हुआ है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

विषय वस्तु की रूपरेखा

प्राक्कथन	1 : 1-18
योहन बपतिस्मादाता की साक्षी तथा प्रभु येशु के प्रथम शिष्य	1 : 19-51
प्रभु येशु का सेवा-कार्य	2 : 1-12 : 50
यरूशलेम नगर में अन्तिम शिक्षाएं एवं जीवनदान	13 : 1-19 : 42
पुनरुत्थान तथा शिष्यों को दर्शन	20 : 1 -31
उपसंहार: गलील प्रदेश में शिष्यों को दर्शन	21 : 1-25

प्रस्तावना

1 आदि में शब्द* था,
शब्द परमेश्वर के साथ था
और शब्द परमेश्वर था।
2 वह आदि में परमेश्वर के साथ था।
3 उसके द्वारा सब कुछ उत्पन्न हुआ
और जो कुछ भी उत्पन्न हुआ,
वह उसके बिना उत्पन्न नहीं हुआ।
4 उसमें जीवन था**,
और यह जीवन मनुष्यों की ज्योति था।
5 वह ज्योति अन्धकार में चमकती रही,
और अन्धकार उसे नहीं बुझा सका।+

6 परमेश्वर ने एक मनुष्य को भेजा। उसका
नाम योहन था। 7 योहन साक्षी देने के लिए
आए, कि वह ज्योति के विषय में साक्षी दें,
जिससे सब लोग उनके द्वारा विश्वास करें।
8 वह स्वयं ज्योति नहीं थे; किन्तु वह ज्योति के
विषय में साक्षी देने आए थे।

9 सच्ची ज्योति,
जो प्रत्येक मनुष्य को प्रकाशित करती है,
संसार में आ रही थी।
10 शब्द संसार में था,
और संसार उसके द्वारा उत्पन्न हुआ;
किन्तु संसार ने उसे नहीं पहचाना।
11 वह अपनों के पास आया
और उसके अपने लोगों ने ही उसे नहीं
अपनाया,
12 किन्तु जितनों ने उसे अपनाया,
और उसके नाम में विश्वास किया,
उन सब को उसने परमेश्वर की संतान बनने
का अधिकार दिया।
13 वे न तो रक्त से,
न शरीर की वासना से,
और न किसी पुरुष की इच्छा से,
बल्कि परमेश्वर से उत्पन्न हुए हैं।
14 शब्द ने देह धारण कर++ हमारे बीच निवास
किया।
हमने उसकी ऐसी महिमा देखी
जैसी पिता के एकलौते पुत्र की महिमा,
जो अनुग्रह और सत्य से परिपूर्ण है।

15 योहन ने पुकार-पुकार कर उसके विषय
में यह साक्षी दी, ''यह वही हैं जिनके विषय
में मैंने कहा था कि जो मेरे बाद आने वाले हैं,
वह मुझ से श्रेष्ठ हैं; क्योंकि वह मुझ से पहले
विद्यमान थे।''

16 उसकी परिपूर्णता से हम सब को अनुग्रह पर
अनुग्रह मिला है।
17 व्यवस्था निश्चय ही मूसा द्वारा दी गयी थी,

---

* अथवा, 'वचन' ** अथवा, ''उसके द्वारा सब कुछ उत्पन्न हुआ, और उसके बिना कुछ भी उत्पन्न नहीं हुआ। जो कुछ भी उत्पन्न हुआ, 'वह उससे जीवन पाता,'' + अथवा, 'किन्तु अंधकार ने उसे स्वीकार नहीं किया।' ++ अथवा, ''शरीर धारण किया'', ''मनुष्य बना''

1 : 1 यो 17 : 5; 1 यो 1 : 1-2; प्रक 19 : 13; उत 1 : 1 **1 : 2** नीति 8 : 22 **1 : 3** कुल 1 : 16-17; इब्र 1 : 2 प्रज्ञ 9 : 1 **1 : 4** यो 5 : 26 **1 : 5** यो 3 : 19 **1 : 6** लू 1 : 13-17, 57-80; मत 3 : 1; मक 1 : 4 **1 : 7** 3 : 3 **1 : 8** यो 1 : 20 **1 : 10** यो 1 : 3-5 **1 : 12** गल 3 : 26 **1 :13** यो 3 : 5-6 **1 : 14** नि 25 : 8; यश 7 : 14; 2 पत 1 : 16-17; यश 60 : 1; लू 9 : 32 **1 :15** यो 1 : 27, 30; मत 3 : 11 **1 : 16** यो 3 : 34; कुल 1 : 19 **1 : 17** रोम 6 : 14; 10 : 4; नि 34 : 6; भज 25 : 10; 40 : 10; 85 : 10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

किन्तु अनुग्रह और सत्य
येशु मसीह द्वारा आए।
18किसी ने कभी परमेश्वर को नहीं देखा;
पर एकलौते पुत्र ने,
जो स्वयं परमेश्वर है और जो पिता की गोद
में है,
उसको प्रकट किया है।

योहन की साक्षी

19योहन की साक्षी यह है: जब यहूदी धर्म-
गुरुओं ने यरूशलेम से पुरोहितों और लेवियों+
को योहन के पास यह पूछने भेजा कि आप
कौन हैं, 20तब उन्होंने स्वीकार किया, अस्वीकार
नहीं वरन् स्वीकार किया कि मैं मसीह नहीं हूँ।
21उन लोगों ने योहन से पूछा, "तो फिर आप
कौन हैं? क्या आप नबी एलियाह हैं?" योहन
ने कहा, "मैं एलियाह नहीं हूँ।"—"क्या
आप वह नबी हैं जो आने वाले थे?" योहन ने
उत्तर दिया, "नहीं।" 22तब उन्होंने योहन से
कहा, "तो आप कौन हैं? जिन्होंने हमें भेजा है,
हम उन्हें कौन-सा उत्तर दें? आप अपने विषय
में क्या कहते हैं?" 23योहन ने उत्तर दिया, "मैं
हूँ, जैसा कि नबी यशायाह ने कहा है, 'निर्जन
प्रदेश में पुकारने वाले की आवाज़ : प्रभु का
मार्ग सीधा करो।' "

24कुछ लोग फरीसियों में से भेजे गये थे।
25उन्होंने योहन से पूछा, "यदि आप न तो
मसीह हैं, न एलियाह और न वह नबी, तो
बपतिस्मा क्यों देते हैं?" 26योहन ने उन्हें उत्तर
दिया, "मैं तो जल से++ बपतिस्मा देता हूँ।
तुम्हारे बीच एक व्यक्ति खड़े हैं, जिन्हें तुम नहीं
पहचानते। 27वह मेरे बाद आने वाले हैं। मैं
उनके जूते का फीता खोलने योग्य भी नहीं
हूँ।"

28ये बातें यर्दन नदी के पार बेतनियाह गाँव
में हुईं, जहाँ योहन बपतिस्मा दे रहे थे।

प्रभु येशु "परमेश्वर का मेमना"

29दूसरे दिन योहन ने येशु को अपनी ओर
आते देखा और कहा, "देखो, परमेश्वर का
मेमना, जो संसार का पाप हरता है। 30यह वही
हैं, जिनके विषय में मैंने कहा था, 'मेरे बाद एक
पुरुष आने वाले हैं। वह मुझ से श्रेष्ठ हैं, क्योंकि
वह मुझ से पहले विद्यमान थे।' 31मैं भी उन्हें
नहीं जानता था, परन्तु मैं इसलिए जल से
बपतिस्मा देने आया हूँ कि वह इस्राएल पर
प्रकट हो जायें।"

32फिर योहन ने यह साक्षी दी, "मैंने आत्मा
को स्वर्ग से कपोत के सदृश उतरते देखा और
वह उनपर ठहर गया। 33मैं भी उन्हें नहीं जानता
था; परन्तु जिसने मुझे जल से बपतिस्मा देने
भेजा, उसने मुझ से कहा था, 'तुम जिन पर
आत्मा को उतरते और ठहरते देखोगे, वही
पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देते हैं।' 34मैंने स्वयं
देखा और यह मेरी साक्षी है कि यह परमेश्वर
के पुत्र हैं।"

प्रभु येशु के प्रथम शिष्य

35दूसरे दिन योहन फिर अपने दो शिष्यों के
साथ खड़े थे। 36योहन ने येशु को जाते हुए देखा
और कहा, "देखो परमेश्वर का मेमना!"
37दोनों शिष्य उनकी यह बात सुन कर येशु के
पीछे हो लिये। 38येशु ने मुड़ कर उन्हें अपने
पीछे आते देखा, तो कहा, "तुम क्या चाहते
हो?" उन्होंने उत्तर दिया, "रब्बी! (अर्थात
गुरु) आप कहाँ रहते हैं?" 39येशु ने उनसे
कहा, "आओ और देखो।" उन्होंने जा कर
देखा कि वह कहाँ रहते हैं और उस दिन वे
उनके साथ रहे। उस समय शाम के लगभग चार
बजे थे।

40जो शिष्य योहन की बात सुन कर येशु के
पीछे हो लिये थे, उन दोनों में एक सिमोन
पतरस का भाई अन्द्रेयास था। 41वह पहले अपने

+ अथवा, "उपपुरोहितों" ++ अथवा, 'जल में'

1 : 18 यो 6 : 46; 1 यू 4 : 12; मत 11 : 27; लू 10 : 22; 1 तिम 6 : 16 **1 : 19** लू 3 : 15-16 **1 : 20** प्रे 13 : 25 **1 : 21** यो 6 : 14; 7 : 40; मत 17 : 10; व्य 18 : 15; प्रव 48 : 10-11 **1 : 23** यश 40 : 3 (यू० पाठ); मत 3 : 3 मक 1 : 3; लू 3 : 4 **1 : 25** मत 21 : 25 **1 : 26** मत 3 : 11; मक 1 : 7-8 **1 : 27** यो 3 : 26; प्रे 13 : 25 **1 : 28** मत 3 : 6, 13 **1 : 29** यो 1 : 36; यश 53 : 7; उत 22 : 13; नि 12 : 3 **1 : 30** यो 15 : 27 **1 : 32** मत 3 : 16; मक 1 : 10; लू 3 : 22 **1 : 34** मत 3 : 17 **1 : 36** यो 1 : 29; यश 53 : 7 **1 : 40** मत 4 : 18-22

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भाई सिमोन से मिला और उससे कहा, ''हमें
मसीह (अर्थात् परमेश्वर के अभिषिक्त जन*)
मिल गये हैं'' 42और वह उसे येशु के पास ले
गया। येशु ने उसे ध्यान से देखा और कहा,
''तुम योहन के पुत्र सिमोन हो। तुम केफा
(अर्थात् चट्टान**) कहलाओगे।''
43दूसरे दिन येशु ने गलील प्रदेश जाने का
निश्चय किया। उनकी भेंट फिलिप से हुई।
उन्होंने उससे कहा, ''मेरे पीछे आओ।''
44फिलिप बेतसैदा नगर का निवासी था। वहाँ
अन्द्रेयास और पतरस भी रहते थे। 45फिलिप
नतनएल से मिला और बोला, ''जिनके विषय
में मूसा ने व्यवस्था में और नबियों ने भी लिखा
है, वह हमें मिल गये हैं। वह नासरत-निवासी,
यूसुफ के पुत्र येशु हैं।'' 46नतनएल ने उत्तर
दिया, ''क्या नासरत से कोई अच्छी वस्तु
निकल सकती है ?'' फिलिप ने कहा, ''आओ
और स्वयं देख लो।''
47येशु ने नतनएल को अपने पास आते देखा,
तो उसके विषय में कहा, ''देखो, यह एक
सच्चा इस्राएली है। इस में कोई कपट नहीं।''
48नतनएल ने उन से कहा, ''आप मुझे कैसे
जानते हैं ?'' येशु ने उत्तर दिया, ''फिलिप द्वारा
तुम्हारे बुलाये जाने से पहले मैंने तुम को अंजीर
के पेड़ के नीचे देखा था।'' 49नतनएल ने उनसे
कहा, ''गुरु जी! आप परमेश्वर के पुत्र हैं,
आप इस्राएल के राजा हैं।'' 50येशु ने उत्तर
दिया, ''मैं ने तुम से कहा, 'मैंने तुम्हें अंजीर
के पेड़ के नीचे देखा'; क्या तुम इसीलिए
विश्वास करते हो ? तुम इस से भी महान कार्य
देखोगे।'' 51येशु ने उससे यह भी कहा, ''मैं
तुम लोगों से सच-सच कहता हूँ: तुम स्वर्ग
को खुला हुआ और परमेश्वर के दूतों को
मानव-पुत्र के ऊपर चढ़ते और उतरते हुए
देखोगे।''

काना नगर में विवाह

2 तीसरे दिन गलील प्रदेश के काना नगर में
एक विवाह था। येशु की माता वहीं थी।
2येशु और उनके शिष्य भी विवाह में निमन्त्रित
थे।
3दाखरस कम पड़ने पर येशु की माता ने उन
से कहा, ''उन लोगों के पास दाखरस नहीं है।''
4येशु ने उत्तर दिया, ''हे नारी, मुझे आप यह
क्यों बता रही हैं ?+ अभी मेरा समय नहीं आया
है।'' 5उनकी माता ने सेवकों से कहा, ''वह
तुम लोगों से जो कुछ कहें, वही करना।''
6वहाँ यहूदियों के शुद्धीकरण के लिए पत्थर
के छः मटके रखे थे। प्रत्येक मटके में सौ,
सवा-सौ लिटर पानी समाता था। 7येशु ने सेवकों
से कहा, ''मटकों में पानी भर दो।'' सेवकों ने
उन्हें लबालब भर दिया। 8फिर येशु ने उन से
कहा, ''अब निकाल कर भोज के प्रबन्धक के
पास ले जाओ।'' उन्होंने ऐसा ही किया।
9प्रबन्धक ने वह पानी चखा, जो दाखरस बन
गया था। उसे मालूम नहीं था कि यह दाखरस
कहाँ से आया है। किन्तु जिन सेवकों ने पानी
निकाला था, वे जानते थे। इसलिए प्रबन्धक ने
दूल्हे को बुलाया 10और उससे कहा, ''सब
कोई पहले बढ़िया दाखरस देते हैं, और लोगों
के पूर्ण तृप्त हो जाने पर घटिया। आपने बढ़िया
दाखरस अब तक रख छोड़ा है।''
11येशु ने अपना यह पहला आश्चर्यपूर्ण
चिह्न गलील के काना नगर में दिखाया। इस
प्रकार उन्होंने अपनी महिमा प्रकट की और
उनके शिष्यों ने उन में विश्वास किया।
12इसके बाद येशु अपनी माता, अपने
भाइयों++ और अपने शिष्यों के साथ कफरनहूम
नगर को गये और वहाँ कुछ दिन रहे।

मन्दिर से बिक्री करने वालों को निकालना

13यहूदियों का पास्का (फसह) पर्व निकट

* मुल में ''ख्रिस्त'' ** मूल में, ''पतरस'' + शब्दश: ''मुझको और आप को क्या ?'' ++ अथवा, ''भाई-बहिनों''

1 : 41 1 शम 2 : 10; भज 2 : 2 **1 : 42** मत 16 : 18; मक 3 : 16 **1 : 43** मत 8 : 22; मक 2 : 14 **1 : 45** व्य 18 : 18 यश 7 : 14; 53 : 2; यिर 23 : 5; यहेज 34 : 23 **1 : 46** यो 7 : 41.52 **1 : 47** भज 32 : 2; 73 : 1; उत 25 : 27 **1 : 49** 2 शम 7 : 14; यो 6 : 69; भज 2 : 7; मत 14 : 33; 16 : 16 **1 : 51** उत 28 : 12; मत 4 : 11; मक 1 : 13 **2 : 1** यो 1 : 43 **2 : 4** यो 19 : 26; मत 12 : 48; मक 1 : 24 **2 : 5** उत 41 : 55 **2 : 6** मक 7 : 3-4 **2 : 10** आमो 9 : 13-14; यश 62 : 5, 9 **2 : 11** यो 1 : 14; 11 : 40 **2 : 12** यो 7 : 3; मत 4 : 13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

था। अत: येशु यरूशलेम नगर को गये। 14वहाँ
उन्होंने मन्दिर में बैल, भेड़ें और कबूतर बेचने
वालों को तथा अपनी मेजों के सामने बैठे हुए
सराफों को देखा। 15येशु ने रस्सियों का कोड़ा
बना कर भेड़ों और बैलों-सहित सब को मन्दिर
से बाहर निकाल दिया। उन्होंने सराफों के
सिक्के छितरा दिये, उनकी मेजें उलट दीं
16और कबूतर बेचने वालों से कहा, "यह सब
यहाँ से हटा ले जाओ । मेरे पिता के घर को
बाजार मत बनाओ।"

17उनके शिष्यों को धर्मग्रन्थ का यह
कथन स्मरण हुआ "तेरे घर की धुन मुझे खा
जायेगी।"

यहूदी धर्मगुरुओं की चुनौती

18यहूदी धर्मगुरुओं ने येशु से कहा, "आप
हमें कौन-सा आश्चर्यपूर्ण चिह्न दिखा सकते
हैं, जिससे हम यह जानें कि आप को ऐसा करने
का अधिकार है ?" 19येशु ने उन्हें उत्तर दिया,
"इस मन्दिर को ढा दो और मैं इसे तीन दिन
में फिर खड़ा कर दूँगा।" 20इस पर उन यहूदियों
ने कहा, "इस मन्दिर के निर्माण में छयालीस
वर्ष लगे, और आप इसे तीन दिन में खड़ा कर
देंगे ?" 21येशु तो अपने देह-रूपी मन्दिर के
विषय में कह रहे थे। 22जब वह मृतकों में से
जी उठे, तब उनके शिष्यों को स्मरण हुआ कि
येशु ने ऐसा कहा था और उन्होंने धर्मग्रन्थ और
येशु के इस कथन पर विश्वास किया।

23जब येशु पास्का (फसह) पर्व के दिनों में
यरूशलेम में थे, तब बहुत-से लोगों ने उनके
किये हुए आश्चर्यपूर्ण चिह्न देख कर उनके
नाम पर विश्वास किया। 24परन्तु येशु ने अपने
आपको उनके भरोसे पर नहीं छोड़ा; क्योंकि
वह सब को जानते थे। 25उन्हें यह आवश्यकता
नहीं थी कि कोई उन्हें मनुष्य के विषय में
बताये; क्योंकि वह स्वयं जानते थे कि मनुष्य
के मन में क्या है।

निकोदेमुस के साथ संवाद

3 फरीसी सम्प्रदाय का एक मनुष्य था।
उसका नाम निकोदेमुस था। वह यहूदियों
का एक धर्मगुरु था। 2वह रात में येशु के पास
आया और बोला, "गुरुजी, हम जानते हैं कि
आप परमेश्वर की ओर से आये हुए गुरु हैं।
आप जो आश्चर्यपूर्ण चिह्न दिखाते हैं, उन्हें कोई
तब तक नहीं दिखा सकता, जब तक कि
परमेश्वर उसके साथ न हो।" 3येशु ने उसे
उत्तर दिया, "मैं आप से सच-सच कहता हूँ,
जब तक कोई ऊपर से* जन्म न ले, तब तक
वह परमेश्वर का राज्य नहीं देख सकता।"
4निकोदेमुस ने उनसे पूछा, "मनुष्य कैसे बूढ़ा
हो जाने पर जन्म ले सकता है ? क्या वह अपनी
माता के गर्भ में दूसरी बार प्रवेश कर जन्म ले
सकता है ?" 5येशु ने उत्तर दिया, "मैं आप से
सच-सच कहता हूँ; जब तक कोई जल और
आत्मा से जन्म न ले, तब तक वह परमेश्वर के
राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। 6जो शरीर से
उत्पन्न होता है, वह शरीर है और जो आत्मा से
उत्पन्न होता है, वह आत्मा है। 7आश्चर्य न
कीजिए कि मैंने यह कहा कि आप को ऊपर
से* जन्म लेना आवश्यक है। 8वायु** जिधर
चाहती, उधर बहती है। आप उसकी आवाज
सुनते हैं, किन्तु यह नहीं जानते कि वह किधर
से आती और किधर जाती है। जो आत्मा से
जन्मा है, वह ऐसा ही है।"

9निकोदेमुस ने उन से पूछा, "यह कैसे हो
सकता है ?" 10येशु ने उसे उत्तर दिया, "आप
इस्राएल के गुरु हैं और ये बातें भी नहीं समझते!
11मैं आप से सच-सच कहता हूँ: हम जो जानते
हैं, वही कहते हैं और हमने जो देखा है, उसी
की साक्षी देते हैं; किन्तु आप लोग हमारी साक्षी
स्वीकार नहीं करते। 12मैंने आप को पृथ्वी की

---

* अथवा, 'दुबारा' ** मूल यूनानी शब्द में श्लेष है। उसके अर्थ (1) वायु और (2) आत्मा दानों हैं।

2 : 14-16 मत 21 : 12-13; मक 11 : 15-17 ; लू 19 : 45-46 **2 : 16** यो 2 : 49 **2 : 17** भज 69 : 9 **2 : 18** यो 3 : 2; मत 21 : 23 **2 : 19** मत 26 : 61; 27 : 40 **2 : 21** 1 कुर 6 : 19 **2 : 25** मक 2 : 8 **3 : 1** यो 7 : 50; 19 : 39 **3 : 2** मत 22 : 16 **3 : 3** मत 18 : 3; लू 17 : 21; 1 पत 1 : 23 **3 : 5** यहेज 36 : 25-27; इफ 5 : 26; तीत 3 : 5 **3 : 6** यो 1 : 13; उत 5 : 3; भज 51 : 5 **3 : 8** मक 4 : 41; सभ 11 : 5; प्रव 16 : 19 **3 : 11** यो 7 : 16; 8 : 26, 28; 12 : 49 **3 : 12** लू 22 : 67; प्रज्ञ 9 : 16-17

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बातें बतायीं और आप विश्वास नहीं करते।
यदि मैं आप को स्वर्ग की बातें बताऊँ, तो आप
कैसे विश्वास करेंगे ?
13 "कोई व्यक्ति स्वर्ग पर नहीं चढ़ा। केवल
एक, अर्थात् मानव-पुत्र जो स्वर्ग से उतरा है।
14 जिस तरह मूसा ने निर्जन प्रदेश में साँप को
ऊपर उठाया था, उसी तरह मानव-पुत्र का भी
ऊपर उठाया जाना अनिवार्य है, 15 जिससे जो
कोई विश्वास करता है, वह उसमें शाश्वत
जीवन प्राप्त करे।+ "

येशु संसार के मुक्तिदाता

16 "परमेश्वर ने संसार से इतना प्रेम किया
कि उसने उसके लिए अपने एकलौते पुत्र को
अर्पित कर दिया, जिससे जो कोई उस में
विश्वास करता है, वह नष्ट न हो, बल्कि
शाश्वत जीवन प्राप्त करे। 17 परमेश्वर ने अपने
पुत्र को संसार में इसलिए नहीं भेजा कि वह
संसार को दोषी ठहराये। उसने उसे इसलिए
भेजा है कि संसार उसके द्वारा मुक्ति प्राप्त करे।
18 "जो पुत्र में विश्वास करता है, वह दोषी
नहीं ठहराया जाता है। जो विश्वास नहीं करता,
वह दोषी ठहराया जा चुका है; क्योंकि वह
परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास
नहीं करता। 19 दोषी ठहराने का कारण यह है
कि ज्योति संसार में आयी है और मनुष्यों ने
ज्योति की अपेक्षा अन्धकार को अधिक पसन्द
किया, क्योंकि उनके कार्य बुरे थे। 20 जो बुराई
करता है, वह ज्योति से बैर करता है और ज्योति
के पास इसलिए नहीं आता कि कहीं उसके
कार्यों के दोष प्रकट न हो जायें। 21 किन्तु जो
सत्य पर चलता है, वह ज्योति के पास आता
है, जिससे यह प्रकट हो कि उसके कार्य
परमेश्वर में किए गए हैं।"*

योहन की अन्तिम साक्षी

22 इसके पश्चात् येशु अपने शिष्यों के साथ
यहूदा प्रदेश में आये। वहाँ वह शिष्यों के साथ
रहकर बपतिस्मा देने लगे। 23 योहन भी सलीम
नगर के निकट एनोन में बपतिस्मा दे रहे थे,
क्योंकि वहाँ बहुत पानी था। लोग वहाँ आ कर
बपतिस्मा ग्रहण करते थे। 24 योहन अभी बंदीगृह
में नहीं डाले गए थे।
25 योहन के शिष्यों का किसी यहूदी धर्मगुरु
के साथ शुद्धीकरण के विषय में वाद-विवाद
छिड़ गया। 26 उन्होंने योहन के पास जा कर
कहा, "गुरुजी! देखिए, जो यर्दन नदी के उस
पार आपके साथ थे और जिनके विषय में
आपने साक्षी दी थी, वह बपतिस्मा देने लगे हैं
और सब लोग उनके पास जाने लगे हैं।"
27 योहन ने उत्तर दिया, "जब तक मनुष्य को
स्वर्ग से न दिया जाए, वह कुछ भी प्राप्त नहीं
कर सकता है। 28 तुम लोग स्वयं साक्षी हो कि
मैंने यह कहा था, 'मैं मसीह नहीं हूँ, किन्तु मैं
उनसे पहले भेजा गया हूँ।' 29 जिसकी दुलहिन
है वही दूल्हा है। दूल्हे का मित्र, जो उसके पास
खड़ा रहता है और उसकी बात सुनता है, वह
दूल्हे के स्वर से बहुत आनन्दित होता है। मेरा
आनन्द ऐसा ही है और अब वह परिपूर्ण है।
30 यह अनिवार्य है कि वह बढ़ते जायें और मैं
घटता जाऊँ।"

मसीह की श्रेष्ठता

31 जो ऊपर से आता है, वह सर्वोपरि है। जो
पृथ्वी से आता है, वह पृथ्वी का है और पृथ्वी
की बातें बोलता है। जो स्वर्ग से आता है, वह
सर्वोपरि है। 32 उसने जो कुछ देखा और सुना
है, वह उसी की साक्षी देता है; किन्तु उसकी
साक्षी कोई स्वीकार नहीं करता। 33 जो उसकी
साक्षी स्वीकार करता है, वह इस बात को
प्रमाणित कर चुका कि परमेश्वर सत्य है।

+ अथवा, "जो कोई उस पर विश्वास करता है, वह शाश्वत जीवन प्राप्त करे"। *कुछ विद्वानों के मतानुसार उद्धरण-चिन्ह पद 15 पर समाप्त होता है।

3 :13 नीति 30 : 4; इफ 4 : 9; बारू 3 : 29 **3 : 14** गण 21 : 8-9; प्रज्ञ 16 : 5-7 **3 : 16** रोम 5 : 8; 8 : 32; 1 यो 4 : 9 **3 : 17** यो 5 : 22; 12 : 47; लू 19 : 10; प्रे 17 : 31 **3 : 18** यो 3 : 36; 5 : 24 **3 : 19** यो 1 : 5, 9-11; 12 : 48 **3 : 20** इफ 5 : 13 **3 :21** 1यो 1 : 6; तोब 4 : 6 **3 : 22** यो 4 : 1-2 **3 : 23** मत 4 : 12 **3 : 24** मत 14 : 3 **3 : 26** यो 1 : 26-34 **3 : 27** इब्र 5 : 4 **3 : 28** यो 1 : 20, 23, 27; मक 1 : 2; मत 11 : 10 **3 : 29** मत 9 : 15; 22 : 2; यश 62 : 4 **3 : 30** 2 शम 3 : 1 **3 : 31** यो 8 : 23 **3 : 32** यो 3 : 11

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

34जिसे परमेश्वर ने भेजा है, वह परमेश्वर के
ही शब्द बोलता है; क्योंकि परमेश्वर नाप-तौल
कर पवित्र आत्मा प्रदान नहीं करता। 35पिता पुत्र
को प्यार करता है और उसने उसके हाथ में सब
कुछ दे दिया है। 36जो पुत्र में विश्वास करता
है, उसे शाश्वत जीवन प्राप्त है। परन्तु जो पुत्र
में विश्वास करने से इन्कार करता है, वह जीवन
का दर्शन नहीं करेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध
उस पर बना रहता है।

सामरी स्त्री से संवाद

4 फरीसियों को यह सूचना मिली कि येशु
योहन की अपेक्षा अधिक शिष्य बनाते और
बपतिस्मा देते हैं—2यद्यपि येशु स्वयं नहीं,
बल्कि उनके शिष्य बपतिस्मा देते थे। जब येशु
को इसका पता चला, 3तब वह यहूदा प्रदेश
छोड़ कर फिर गलील प्रदेश को चले गए।
4उन्हें सामरी प्रदेश हो कर जाना था। 5अत: वह
सामरी प्रदेश के सुखार नामक नगर पहुँचे। यह
नगर उस भूमि के निकट है, जिसे याकूब ने
अपने पुत्र यूसुफ को दिया था। 6वहाँ याकूब का
कुआँ है। येशु यात्रा से थक गये थे, इसलिए वह
कुएं के पास यों ही बैठ गये । यह लगभग
दोपहर का समय था।

7एक सामरी स्त्री पानी भरने आयी। येशु ने
उससे कहा, "मुझे पानी पिलाओ।" 8क्योंकि
उनके शिष्य नगर में भोजन खरीदने गये थे।
9यहूदी लोग सामरियों से कोई सम्बन्ध नहीं
रखते। इसलिए सामरी स्त्री ने येशु से कहा,
"यह क्या कि आप यहूदी हो कर भी मुझ
सामरी स्त्री से पीने के लिए पानी माँग रहे हैं?"
10येशु ने उत्तर दिया, "यदि तुम परमेश्वर का
वरदान पहचानतीं और यह जानतीं कि वह
कौन है, जो तुम से कह रहा है, 'मुझे पानी
पिलाओ', तो तुम उससे मांगतीं और वह तुम्हें
संजीवन जल देता ।" 11स्त्री ने उनसे कहा,
"महोदय! पानी खींचने के लिए आपके पास
कुछ भी नहीं है और कुआँ गहरा है; तो आप
को यह संजीवन जल कहाँ से मिलेगा? 12क्या
आप हमारे पिता याकूब से भी महान हैं? उन्होंने
हमें यह कुआँ दिया। वह स्वयं, उनके पुत्र और
उनके पशु भी इस कुएं से पानी पीते थे।"
13येशु ने कहा, "जो यह पानी पीता है, उसे
फिर प्यास लगेगी, 14किन्तु जो मेरा दिया हुआ
जल पीता है, उसे फिर कभी प्यास नहीं लगेगी।
जो जल मैं उसे प्रदान करूँगा, वह उस में जल-
स्रोत बन जायेगा, जो शाश्वत जीवन तक+
उमड़ता रहेगा।" 15इस पर स्त्री ने कहा,
"महोदय! मुझे वह जल दीजिए, जिससे मुझे
फिर प्यास न लगे और मुझे यहाँ पानी भरने के
लिए नहीं आना पड़े।"

16येशु ने उस से कहा, "जाओ, अपने पति
को यहाँ बुला लाओ।" 17स्त्री ने उत्तर दिया,
"मेरा कोई पति नहीं है।" येशु ने उससे कहा,
"तुमने ठीक ही कहा कि मेरा कोई पति नहीं
है। 18तुम्हारे पाँच पति रह चुके हैं और जिसके
साथ तुम अभी रहती हो, वह तुम्हारा पति नहीं
है। यह तुमने ठीक ही कहा।"

19स्त्री ने उन से कहा, "महोदय! मैं समझ
गयी। आप कोई नबी हैं। 20हमारे पूर्वज इस
पहाड़ पर आराधना करते थे और आप यहूदी
लोग कहते हैं कि यरूशलेम ही वह स्थान है
जहाँ आराधना करना चाहिए।" 21येशु ने उससे
कहा, "महिला! मेरा विश्वास करो। वह समय
आ रहा है, जब तुम लोग न तो इस पहाड़ पर
पिता की आराधना करोगे और न यरूशलेम में।
22तुम जिसकी आराधना करते हो, उसे नहीं
जानते। हम जिसकी आराधना करते हैं, उसे
जानते हैं, क्योंकि उद्धार यहूदियों में से है।

+ अथवा, 'शाश्वत जीवन के लिए'।

3 : 34 यो 1 : 33-34 **3 : 35** यो 5 : 20; 17 : 2; मत 11 : 27 **3 : 36** यो 3 : 18; लू 3 : 7; 1 यो 5 : 12 **4 : 1** यो 3 : 22, 26 **4 : 2** 1 कुर 1 : 17 **4 : 4** लू 9 : 52 **4 : 5** उत 48 : 22; यहो 24 : 32 **4 : 6** उत 24 : 13-14; 29 : 2; नि 2 : 15 **4 : 9** लू 9 : 53 **4 : 10** यश 44 : 3; 55 : 1, 3; यो 7 : 38-39 **4 : 12** यो 8 : 53 **4 : 13** यो 6 : 58 **4 : 14** यश 12 : 3; यिर 2 : 13 यो 6 : 27, 35; 7 : 37-39 **4 : 17** हो 2 : 16, 20; 2 रा 17 : 30 **4 : 19** यो 9 : 17; 1 कुर 14 : 24, 25 **4 : 20** व्य 12 : 5; भज 122 : 1-9 **4 : 21** मक 14 : 58 **4 : 22** 2 रा 17 : 29-31; यश 2 : 3

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

23परन्तु वह समय आ रहा है, वरन् आ ही गया
है, जब सच्चे आराधक आत्मा और सत्य में
पिता की आराधना करेंगे। पिता ऐसे ही
आराधकों को चाहता है। 24परमेश्वर आत्मा है
और यह आवश्यक है कि उसके आराधक
आत्मा और सत्य में उसकी आराधना करें।''
25स्त्री ने कहा, ''मैं जानती हूँ कि मसीह, जो
परमेश्वर के अभिषिक्त जन* कहलाते हैं, आने
वाले हैं। जब वह आयेंगे, तब हमें सब कुछ
बता देंगे।'' 26येशु ने उससे कहा, ''मैं, जो तुम
से बोल रहा हूँ, वही हूँ।''

27उसी समय शिष्य आ गये और येशु को
एक स्त्री के साथ बातें करते देख कर आश्चर्य
में पड़ गये; फिर भी किसी ने यह नहीं कहा,
''आप को क्या चाहिये ?'' अथवा ''आप इस
स्त्री से क्यों बातें कर रहे हैं ?'' 28उस स्त्री ने
अपना घड़ा वहीं छोड़ दिया और नगर जाकर
लोगों से कहा, 29''चलिए, एक मनुष्य को
देखिए, जिसने मुझे वह सब, जो मैंने किया,
बता दिया है। कहीं वह मसीह तो नहीं हैं ?''
30इसलिए वे लोग नगर से निकले और येशु के
पास आने लगे।

31इस बीच उनके शिष्यों ने उन से
यह अनुरोध किया, ''गुरुजी! भोजन कर
लीजिए।'' 32येशु ने उनसे कहा, ''खाने के
लिए मेरे पास वह भोजन है, जिसके विषय में
तुम नहीं जानते।'' 33इस पर शिष्य आपस में
बोले, ''क्या कोई इनके लिए भोजन ले आया
है ?'' 34इस पर येशु ने उन से कहा, ''जिसने
मुझे भेजा, उसकी इच्छा पर चलना और उसका
कार्य पूरा करना, यही मेरा भोजन है।

35''क्या तुम यह नहीं कहते कि अब कटनी
के चार महीने रह गये हैं ? परन्तु मैं तुम लोगों
से कहता हूँ ; आँखें उठा कर खेतों को देखो।
वे कटनी के लिए पक चुके हैं। 36अब काटने
वाला मजदूरी प्राप्त कर शाश्वत जीवन के लिए
फल संग्रह कर रहा है, जिससे बोने वाला और
काटने वाला, दोनों मिल कर आनन्द मनायें;
37क्योंकि यहाँ यह कहावत ठीक उतरती है:
एक बोता है और दूसरा काटता है। 38मैंने तुम
लोगों को वह खेत काटने भेजा, जिस में तुमने
परिश्रम नहीं किया है—दूसरों ने परिश्रम किया
और तुम्हें उनके परिश्रम का फल मिल रहा
है।''

39उस स्त्री ने यह गवाही दी थी, ''उन्होंने
मुझे वह सब, जो मैंने किया, बता दिया है।''
इस कथन के कारण उस नगर के बहुत-से
सामरियों ने येशु में विश्वास किया। 40इसलिए
जब वे येशु के पास आये, तब उन्होंने अनुरोध
किया, ''आप हमारे यहाँ रहिए।'' वह दो दिन
वहीं रहे। 41बहुत-से अन्य लोगों ने उनका
उपदेश सुन कर उनमें विश्वास किया। 42सामरी
लोग उस स्त्री से बोले, ''अब हम तुम्हारे कहने
के कारण ही विश्वास नहीं करते। हमने स्वयं
उन्हें सुन लिया है और हम जान गये कि वह
सचमुच संसार के मुक्तिदाता हैं।''

पदाधिकारी का पुत्र

43जब दो दिन बीत गये तब येशु वहाँ से
गलील प्रदेश को गये। (44येशु ने स्वयं साक्षी
दी थी कि अपने देश में नबी का आदर नहीं
होता।) 45जब वह गलील प्रदेश पहुँचे, तब
लोगों ने उनका स्वागत किया; क्योंकि येशु ने
पर्व के दिनों में यरूशलेम में जो कुछ किया था,
वह सब गलील प्रदेश के उन निवासियों ने देखा
था। पर्व के लिए वे भी वहाँ गये थे।

46येशु फिर गलील प्रदेश के काना नगर में
आये, जहाँ उन्होंने जल को दाखरस बनाया था।
वहाँ राज्य का एक पदाधिकारी था, जिसका पुत्र
कफरनहूम नगर में बीमार था। 47जब उस
पदाधिकारी ने सुना कि येशु यहूदा प्रदेश से
गलील प्रदेश में आ गये हैं, तब वह उनके पास
आया। उसने उनसे प्रार्थना की कि वह चल कर

* मूल में, 'ख्रिस्त'.

4 : 24 रोम 12 : 1; 2 कुर 3 ; 17 **4 : 25** यो 1 : 41 **4 26** यो 9 : 37; 10 : 25 **4 : 31** उस 24 : 33 **4 : 32** यो 4 : 34 **4 : 34** यो17 : 4 **4 : 35** मत 9 : 37; लू 10 : 2 **4 : 37** मी 6 : 15; प्रे 8 : 14-17 **4 : 42** 1 यो 4 : 14 **4 : 43** मत 4 : 12 **4 : 44** मत 13 : 57; मक 6 : 4; लू 4 : 24 **4 :45** यो 2 : 23 **4 : 46** यो 2 : 1,9 **4 : 47** लू 7 : 2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उसके पुत्र को स्वस्थ कर दें, क्योंकि वह मरने
पर था। 48 येशु ने उससे कहा, "आप लोग
चिह्न तथा चमत्कार देखे बिना विश्वास नहीं
करेंगे।" 49इस पर पदाधिकारी ने उनसे कहा,
"महोदय! कृपया मेरे पुत्र की मृत्यु के पूर्व
आइए।" 50येशु ने उत्तर दिया, "जाइए, आपका
पुत्र जीवित है।" वह येशु के वचन पर विश्वास
कर चला गया। 51वह मार्ग में ही था कि उसके
सेवक मिले और उस से बोले, "आपका
बालक जीवित है।" 52उसने उन से पूछा कि
वह किस समय से अच्छा होने लगा था। उन्होंने
कहा, "कल दिन के एक बजे उसका बुखार
उतर गया।" 53तब पिता समझ गया कि ठीक
उसी समय येशु ने उससे कहा था, "आपका
पुत्र जीवित है" और उसने अपने सारे परिवार
के साथ विश्वास किया।

54यह येशु का दूसरा आश्चर्यपूर्ण चिह्न था,
जो उन्होंने यहूदा प्रदेश से आकर गलील प्रदेश
में दिखाया।

यरूशलेम में एक रोगी को स्वास्थ्यलाभ

5 इसके कुछ समय पश्चात् येशु यहूदियों के
किसी पर्व के अवसर पर यरूशलेम गये।
2यरूशलेम में भेड़-फाटक के पास एक कुण्ड
है, जो इब्रानी भाषा में बेतजैता* कहलाता है।
उसके पाँच मण्डप हैं। 3उन में बहुत-से
रोगी—अन्धे, लँगड़े और अर्द्धांगरोगी पड़े रहते
थे। [वे पानी के लहराने की राह देखते थे,
4क्योंकि प्रभु का दूत समय-समय पर कुण्ड में
उतर कर पानी को हिला देता था। पानी के
हिलने के बाद जो व्यक्ति सब से पहले कुण्ड
में उतरता था—चाहे वह किसी भी रोग से
पीड़ित क्यों न हो, स्वस्थ हो जाता था।]+ 5वहाँ
एक मनुष्य था, जो अड़तीस वर्षों से बीमार था।
6येशु ने उसे पड़ा हुआ देखा और, यह जान कर
कि वह बहुत समय से इसी तरह पड़ा हुआ है,
उस से पूछा, "क्या तुम स्वस्थ होना चाहते
हो?" 7रोगी ने उत्तर दिया, "महोदय, मेरा
कोई नहीं है, जो पानी के हिलने पर मुझे कुण्ड
में उतार दे। मेरे पहुँचने से पहले ही उस में कोई
और उतर जाता है।" 8येशु ने उस से कहा,
"उठो अपना बिस्तर उठाओ और चलो।"
9उसी क्षण वह मनुष्य स्वस्थ हो गया और
अपना बिस्तर उठा कर चलने-फिरने लगा।

वह विश्राम का दिन था। 10इसलिए यहूदी
धर्मगुरुओं ने स्वस्थ हुए व्यक्ति से कहा,
"आज विश्राम का दिन है। बिस्तर उठाना
तुम्हारे लिए उचित नहीं है।" 11उसने उत्तर दिया,
"जिसने मुझे स्वस्थ किया, उसी ने मुझ से
कहा, 'अपना बिस्तर उठाओ और चलो।'"
12उन्होंने उस से पूछा, "कौन है वह,
जिसने तुम से कहा, 'अपना बिस्तर उठाओ
और चलो?'" 13स्वस्थ किया हुआ मनुष्य
नहीं जानता था कि वह कौन है, क्योंकि उस
जगह बहुत भीड़ होने के कारण येशु वहाँ से
हट गये थे। 14कुछ समय पश्चात् येशु को वह
मन्दिर में मिला। येशु ने उस से कहा, "देखो,
तुम स्वस्थ हो गये हो। फिर पाप मत करना।
कहीं ऐसा न हो कि तुम पर और भी भारी संकट
आ पड़े।" 15उस मनुष्य ने जा कर धर्मगुरुओं
को बताया कि जिन्होंने मुझे स्वस्थ किया है,
वह येशु हैं।

16यहूदी धर्मगुरु येशु को इसलिए सताने
लगे कि वह विश्राम के दिन ऐसे काम किया
करते थे। 17येशु ने उन्हें यह उत्तर दिया, "मेरा
पिता अब तक कार्य कर रहा है और मैं भी कार्य
कर रहा हूँ।" 18अब यहूदी धर्माधिकारी उन्हें
मार डालने का और भी प्रयत्न करने लगे,
क्योंकि वह न केवल विश्राम-दिवस का नियम
तोड़ते थे, बल्कि परमेश्वर को अपना पिता कह
कर अपने आपको परमेश्वर के बराबर भी
बताते थे।

पुत्र का अधिकार

19येशु ने उन धर्मगुरुओं से कहा, "मैं तुम
से सच-सच कहता हूँ; पुत्र स्वयं अपने से कुछ

* पाठांतर, "बेथिस्दा" अथवा, 'बेतसैदा' +कुछ प्राचीन प्रामाणित प्रतियों में यह पद नहीं पाया जाता है।

4 : 48 यो 2 : 18; 1 कुर 1 : 22; प्रज्ञ 8 : 8 **4 : 51** मत 8 : 6 **4 : 53** लू 19 : 9; प्रे 16 : 15, 31 **4 : 54** यो 2 : 11, 23 **5 : 8** मत 9 : 6 **5 : 9** यो 9 : 14 **5 : 10** यिर 17 : 21; लू 6 : 2 **5 : 12** लू 5 : 21 **5 : 14** यो 8 : 11 **5 : 16** मत 12 : 14 **5 : 17** यो 9 : 4 **5 : 18** यो 7 : 30; 10 : 33; प्रज्ञ 2 : 16 **5 : 19** यो 3 : 11, 32

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नहीं कर सकता। वह केवल वही कर सकता
है, जो पिता को करते हुये देखता है। जैसा पिता
करता है, ठीक वैसा ही पुत्र भी करता है;
20क्योंकि पिता पुत्र को प्यार करता है और वह
स्वयं जो कुछ करता है, उसे पुत्र को दिखाता
है। वह उसे और महान् कार्य दिखायेगा, जिन्हें
देख कर तुम लोग आश्चर्य में पड़ जाओगे।
21जिस तरह पिता मृतकों को उठाता और उन्हें
जीवन देता है, उसी तरह पुत्र भी जिसे चाहता,
उसे जीवन प्रदान करता है; 22क्योंकि पिता किसी
का न्याय नहीं करता। उसने न्याय करने का पूरा
अधिकार पुत्र को दे दिया है, 23जिससे सब लोग
जिस प्रकार पिता का आदर करते हैं, उसी
प्रकार पुत्र का भी आदर करें। जो पुत्र का आदर
नहीं करता, वह पिता का, जिसने पुत्र को भेजा
है, आदर नहीं करता।

24"मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ: जो मेरा
वचन सुनता और जिसने मुझे भेजा, उस में
विश्वास करता है, उसे शाश्वत जीवन प्राप्त है।
वह दोषी नहीं ठहराया जायेगा। वह तो मृत्यु को
पार कर जीवन में प्रवेश कर चुका है।

25"मैं तुम से सच-सच कहता हूँ: वह
समय आ रहा है, वरन् आ ही गया है, जब
मृतक परमेश्वर के पुत्र की वाणी सुनेंगे, और
जो सुनेंगे, उन्हें जीवन प्राप्त होगा, 26क्योंकि जिस
तरह पिता स्वयं में जीवन धारण किए हुए है,
उसी तरह उसने पुत्र को भी स्वयं में जीवन
धारण करने का अधिकार दिया है; 27और उसे
मानव-पुत्र होने के कारण न्याय करने का भी
अधिकार दिया है।

28"इस पर आश्चर्य न करो। वह समय आ
रहा है, जब वे सब, जो कबरों में हैं, उसकी
वाणी सुन कर 29बाहर निकल आयेंगे। सत्कर्म
करने वालों का जीवन के लिए पुनरुत्थान होगा
और कुकर्म करने वालों का दण्ड के लिए। 30मैं
स्वयं अपने से कुछ भी नहीं कर सकता। मैं जो
सुनता हूँ, उसी के अनुसार न्याय करता हूँ और
मेरा निर्णय न्यायसंगत होता है; क्योंकि मैं
अपनी इच्छा नहीं, बल्कि जिसने मुझे भेजा,
उसकी इच्छा पूरी करना चाहता हूँ।

मसीह के विषय में साक्षी

31"यदि मैं अपने विषय में साक्षी देता हूँ,
तो मेरी साक्षी मान्य नहीं है। 32कोई दूसरा मेरे
विषय में साक्षी देता है और मैं जानता हूँ कि वह
मेरे विषय में जो साक्षी देता है, वह मान्य है।
33तुम लोगों ने योहन से पुछवाया और उन्होंने
सत्य के सम्बन्ध में साक्षी दी है। 34यह नहीं कि
मुझे किसी मनुष्य की साक्षी की आवश्यकता
है; किन्तु मैं यह इसलिए कहता हूँ कि तुम लोग
मुक्ति पा सको। 35योहन जलते और चमकते
हुए दीपक थे। उनकी ज्योति में थोड़ी देर तक
आनन्द मनाना तुम लोगों को अच्छा लगा।
36परन्तु मुझे जो साक्षी प्राप्त है, वह योहन की
साक्षी से भी महान् है। पिता ने जो कार्य मुझे
पूरा करने को सौंपे हैं, जो कार्य मैं करता हूँ, वे
ही मेरे विषय में यह साक्षी देते हैं कि मुझे पिता
ने भेजा है। 37पिता ने भी, जिसने मुझे भेजा, मेरे
विषय में साक्षी दी है। तुम ने न तो कभी उसकी
वाणी सुनी और न उसका रूप ही देखा है।
38उसका वचन तुम लोगों के हृदय में घर नहीं
कर सका, क्योंकि तुम उस में विश्वास नहीं
करते, जिसे उसने भेजा है।

39"तुम लोग यह समझ कर धर्मग्रन्थ का
अनुशीलन करते हो कि उस में तुम्हें शाश्वत
जीवन का मार्ग मिलेगा। वही धर्मग्रन्थ मेरे
विषय में साक्षी देता है। 40फिर भी तुम लोग
जीवन प्राप्त करने के लिये मेरे पास आना नहीं
चाहते।

41"मैं मनुष्यों की ओर से सम्मान नहीं
चाहता। 42पर मैं तुम्हें जानता हूँ कि तुम में

---

5 : 20 यो 3 : 35 **5 : 22** प्रे 17 : 31; दास 7 : 13-14 **5 : 23** फिल 2 : 10-11; 1 यो 2 : 23; लू 10 : 16 **5 : 24** यो 3 : 16, 18; 8 : 51; 1 यो 3 : 14 **5 : 25** इफ 2 : 5-6; मत 8 : 22 **5 : 26** यो 1 : 1-4 **5 : 27** यो 5 : 22 दान 7 : 10, 14 **5 : 29** यो 6 : 40; दान 12 : 2; मत 16 : 27 **5 : 30** यो 5 : 19; 6 : 38 **5 : 31** यो 8 : 14 **5 : 32** यो 5 : 36, 37; 1 यो 5 : 9 **5 : 33** यो 1 : 19-34 **5 : 35** 2 पत 1 : 19; लू 1 : 17; प्रव 48 : 1 **5 : 36** यो 1 : 33; 3 : 2; 1 यो 5 : 9 **5 : 37** मत 3 : 17; व्य 4 : 12 **5 : 39** लू 24 : 27, 44; 2 तिम 3 : 15-17; 1 पत 1 : 11; बारू 4 : 1

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

परमेश्वर का प्रेम नहीं है। 43मैं अपने पिता के
नाम पर आया हूँ, फिर भी तुम लोग मुझे
स्वीकार नहीं करते। यदि कोई अन्य अपने ही
नाम पर आये, तो तुम लोग उस को स्वीकार
करोगे। 44तुम लोग एक-दूसरे से सम्मान
चाहते हो और उस सम्मान की खोज नहीं
करते, जो एकमात्र परमेश्वर से प्राप्त होता है।
तब तुम कैसे विश्वास कर सकते हो? 45यह न
समझो कि मैं पिता के सामने तुम लोगों पर
अभियोग लगाऊँगा। तुम पर अभियोग लगाने
वाले तो मूसा हैं, जिन पर तुम ने आशा बांध
रखी है। 46यदि तुमने मूसा पर विश्वास किया
होता, तो मुझ पर भी विश्वास करते; क्योंकि
उन्होंने मेरे विषय में लिखा है। 47यदि तुम लोग
उनके लेखों पर विश्वास नहीं करते, तो मेरे
कथन पर कैसे विश्वास करोगे?''

पांच हजार लोगों को भोजन कराना

6 इसके पश्चात् येशु गलील की झील,
अर्थात् तिबेरियस झील के उस पार चले
गये।

2एक विशाल जनसमूह उनके पीछे हो
लिया, क्योंकि लोगों ने वे अद्‌भुत चिह्न देखे
थे, जो येशु ने रोगियों पर दिखाए थे। 3येशु पहाड़ी
पर चढ़े और वहाँ अपने शिष्यों के साथ बैठ
गये। 4यहूदियों का पास्का [फसह] पर्व निकट
था।

5येशु ने अपनी आँखें ऊपर उठायीं और देखा
कि एक विशाल जनसमूह उनकी ओर आ रहा
है। उन्होंने फिलिप से यह कहा, ''हम इन्हें
खिलाने के लिए कहाँ से रोटियाँ खरीदें?''
6उन्होंने फिलिप की परीक्षा लेने के लिए यह
कहा। वह तो जानते ही थे कि वह क्या करेंगे।
7फिलिप ने उन्हें उत्तर दिया, ''दो सौ चांदी के
सिक्कों* की रोटियाँ भी इतनी नहीं होंगी कि
हर एक को थोड़ी-थोड़ी मिल सके।'' 8उनके
शिष्यों में से एक, सिमोन पतरस के भाई
अन्द्रेयास ने कहा, 9''यहाँ एक लड़के के पास
जौ की पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ हैं, पर
यह इतने लोगों के लिए क्या है?'' 10येशु ने
कहा, ''लोगों को बैठा दो।'' उस जगह बहुत
घास थी। लोग बैठ गये। पुरुषों की संख्या
लगभग पाँच हजार थी। 11येशु ने रोटियाँ ले लीं
और परमेश्वर को धन्यवाद देकर बैठे हुए
लोगों में उन्हें वितरित किया। इसी प्रकार
मछलियाँ भी, जितनी वे चाहते थे, वितरित
कीं। 12जब लोग खा कर तृप्त हो गये, तब येशु
ने अपने शिष्यों से कहा, ''बचे हुए टुकड़े बटोर
लो, जिससे कुछ भी बरबाद न हो।'' 13इसलिए
शिष्यों ने उन्हें बटोर लिया और उन टुकड़ों से
बारह टोकरियाँ भर लीं, जो लोगों के खाने के
बाद जौ की पाँच रोटियों से बच गये थे। 14लोग
येशु का यह आश्चर्यपूर्ण कार्य देख कर बोल
उठे, ''निश्चय ही यह वह नबी हैं, जो संसार
में आने वाले थे।''

15जब येशु ने यह देखा कि लोग आ कर
उन्हें राजा बनाने के लिए पकड़ना चाहते हैं, तो
वह अकेले ही पहाड़ी पर फिर चले गये।

येशु पानी पर चलते हैं

16सन्ध्या हो जाने पर शिष्य झील के तट पर
आये। 17वे नाव पर सवार हो कर कफरनहूम
नगर की ओर झील पार कर रहे थे। रात हो चली
थी और येशु अब तक उनके पास नहीं आये थे।
18इस बीच झील में लहरें उठने लगीं, क्योंकि
हवा जोरों से बह रही थी। 19लगभग पाँच-छह
किलो मीटर+ तक नाव खेने के बाद शिष्यों ने
देखा कि येशु झील पर चलते हुए, नाव के
समीप आ रहे हैं। वे डर गये, 20किन्तु येशु ने
उन से कहा, ''मैं हूँ। डरो मत।'' 21वे उन्हें नाव
में चढ़ाना चाहते ही थे कि नाव तुरन्त उस
किनारे, जहाँ वे जा रहे थे, लग गयी।

कफरनहूम में स्वर्ग की रोटी की प्रतिज्ञा

22जो लोग झील के उस पार रह गये थे,

---

* मूल में, ''दीनार'' + मूल में, ''पच्चीस-तीस स्तडियन''

5 : 43 मत 24 : 5 **5 : 44** यो 12 : 43; मत 23 : 5-7 **5 : 45** व्य 31 : 26 **5 : 46** व्य 18 : 15; लू 24 : 27; गण 21 : 9 **5 : 47** यो 7 : 19; लू 16 : 31 **6 : 1-15** मत 14 : 13-21; 15 : 32-39; मक 6 : 32-44; 8 : 1-10; लू 9 : 10-17 **6 : 4** यो 2 : 13; 11 : 55; लू 22 : 1 **6 : 9** 2 रा 4 : 42-43 **6 : 14** व्य 18 : 15 **6 : 15** यो 18 : 36 **6 : 16-21** मत 14 : 22-33; मक 6 : 45-52 **6 : 19** भज 77 : 19 **6 : 20** यश 43 : 11, 15-16

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उन्होंने दूसरे दिन देखा था कि वहाँ केवल एक
ही नाव थी और येशु अपने शिष्यों के साथ उस
नाव पर सवार नहीं हुए थे— उनके शिष्य
अकेले ही चले गये थे। 23अब तिबेरियस नगर
की ओर से कुछ अन्य नावें उस स्थान के समीप
आईं जहाँ प्रभु येशु की धन्यवाद की प्रार्थना के
बाद लोगों ने रोटी खायी थी। 24जब जनसमूह
न देखा कि वहाँ न तो येशु हैं और न उनके
शिष्य ही, तो वे नावों पर सवार हुए और येशु
को खोजते हुए कफरनहूम नगर की ओर गये।
25उन्होंने झील पार की और येशु को वहाँ पा
कर उन से कहा, "गुरुजी! आप यहाँ कब
आये?" 26येशु ने उत्तर दिया, "मैं तुम से सच-
सच कहता हूँ; तुम मुझे इस लिए नहीं खोज रहे
हो कि तुमने आश्चर्यपूर्ण चिह्न देखा, बल्कि
इसलिए कि तुमने पेट भर रोटियाँ खाई हैं।
27नश्वर भोजन के लिए नहीं, बल्कि उस
भोजन के लिए परिश्रम करो, जो शाश्वत जीवन
तक बना रहता है और जिसे मानव-पुत्र तुम्हें
देगा; क्योंकि पिता परमेश्वर ने मानव-पुत्र पर
अपनी स्वीकृति की मोहर लगाई है।" 28लोगों
ने उन से पूछा, "परमेश्वर के कार्य करने के
लिए हम क्या करें?" 29येशु ने उत्तर दिया,
"परमेश्वर का कार्य यह है कि जिसे उसने
भेजा है, उसमें विश्वास करो।"
30लोगों ने उन से कहा, "आप हमें कौन-
सा चिह्न दिखा सकते हैं, जिसे देख कर हम
आप में विश्वास करें? आप क्या कर सकते हैं?
31हमारे पूर्वजों ने निर्जन प्रदेश में मन्ना खाया
था, जैसा कि लिखा है: 'उसने खाने के लिए
उन्हें स्वर्ग से रोटी दी।' " 32येशु ने उत्तर दिया,
"मैं तुम से सच-सच कहता हूँ: मूसा ने तुम्हें
स्वर्ग से रोटी नहीं दी थी। मेरा पिता तुम्हें स्वर्ग
से सच्ची रोटी दे रहा है। 33परमेश्वर की रोटी
तो वह है, जो स्वर्ग से उतर कर संसार को
जीवन प्रदान करती है।"

जीवन की रोटी मैं हूँ

34लोगों ने येशु से कहा, "प्रभु! आप हमें
सदा वही रोटी दिया करें।" 35उन्होंने उत्तर दिया,
"जीवन की रोटी मैं हूँ। जो मेरे पास आता है,
उसे कभी भूख नहीं लगेगी और जो मुझ में
विश्वास करता है, उसे कभी प्यास नहीं
लगेगी। 36फिर भी, जैसा कि मैंने तुम से कहा,
तुम मुझे देख कर भी विश्वास नहीं करते।
37पिता जिन्हें मुझ को सौंप देता है, वे सब मेरे
पास आयेंगे और जो मेरे पास आता है, मैं उसे
कभी बाहर नहीं निकालूँगा; 38क्योंकि मैं अपनी
इच्छा नहीं, बल्कि जिसने मुझे भेजा, उसकी
इच्छा पूरी करने के लिए स्वर्ग से उतरा हूँ।
39जिसने मुझे भेजा, उसकी इच्छा यह है कि
जिन्हें उसने मुझे सौंपा है, मैं उन में से एक को
भी नष्ट न होने दूँ, बल्कि उन सब को अन्तिम
दिन पुनर्जीवित कर दूँ। 40मेरे पिता की इच्छा
यह है कि जो पुत्र को देखे और उस में विश्वास
करे, उसे शाश्वत जीवन प्राप्त हो। मैं उसे
अन्तिम दिन पुनर्जीवित कर दूँगा।"
41येशु ने कहा था, "स्वर्ग से उतरी हुई रोटी
मैं हूँ"। इस पर यहूदी लोग यह कहते हुए
भुनभुनाने लगे, 42"क्या यह यूसुफ का पुत्र येशु
नहीं है? हम इसके माँ-बाप को जानते हैं। तो
अब यह कैसे कह सकता है, 'मैं स्वर्ग से उतरा
हूँ'?" 43येशु ने उन्हें उत्तर दिया, "आपस में
मत भुनभुनाओ। 44जब तक पिता, जिसने मुझे
भेजा है, आकर्षित न करे, कोई मेरे पास नहीं
आ सकता है; और मैं उसे अंतिम दिन
पुनर्जीवित कर दूंगा। 45नबी-ग्रन्थों में लिखा
है, 'वे सब परमेश्वर से शिक्षा पायेंगे।' जिस
किसी ने पिता से सुना और सीखा है, वह मेरे
पास आता है।
46"यह न समझो कि किसी ने पिता को
देखा है; केवल उसी ने पिता को देखा है, जो
परमेश्वर की ओर से आया है। 47मैं तुम से

---

6 : 23 यो 6 : 11 **6 : 27** यो 4 : 14; 5 : 36; मत 16 : 12; प्रव 24 : 19-22 **6 : 29** 1 यो 3 : 23 **6 : 30** यो 2 : 18; मक 8 : 11 **6 : 31** नि 16 : 13-14; भज 78; 24; प्रज्ञ 16: 20-21 **6 : 32** यो 6 : 49 **6 : 33** यो 6 : 51 **6 : 35** यो 4 : 14; 6 : 48; 7 : 37 **6 : 36** यो 6 : 26, 29 **6 : 37** यो 17 : 6-8; मत 11 : 28 **6 : 38** यो 4 : 34; मत 26 : 39 **6 : 39** यो 10 : 28-29; 17 : 12 **6 : 40** यो 5 : 29; 11 : 24 **6 : 42** लू 4 : 22 **6 : 44** यो 6 : 37, 65 **6 : 45** यश 54 : 13; यिर 31 : 33-34 **6 : 46** यो 1 : 18 **6 : 47** यो 3 : 16

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सच-सच कहता हूँ: जो विश्वास करता है, उसे शाश्वत जीवन प्राप्त है। 48जीवन की रोटी मैं हूँ। 49तुम्हारे पूर्वजों ने निर्जन प्रदेश में मन्ना खाया; फिर भी वे मर गये। 50मैं जिस रोटी के विषय में कहता हूँ, वह स्वर्ग से उतरती है और जो उसे खाता है, वह नहीं मरता। 51स्वर्ग से उतरी हुई वह जीवन्त रोटी मैं हूँ। यदि कोई इस रोटी में से खायेगा, तो वह सदा जीवित रहेगा। और जो रोटी मैं दूंगा, वह मेरी देह* है जो मैं संसार के जीवन के लिए अर्पित करूंगा।"

52इस पर वे यहूदी लोग आपस में वाद-विवाद करने लगे, "यह हमें खाने के लिए अपनी देह कैसे दे सकता है?" 53इस लिए येशु ने उनसे कहा, "मैं तुम से सच-सच कहता हूँ; यदि तुम मानव-पुत्र की देह नहीं खाओगे और उसका रक्त नहीं पियोगे, तो तुम में जीवन नहीं होगा। 54जो मेरी देह खाता और मेरा रक्त पीता है, उसे शाश्वत जीवन प्राप्त है और मैं उसे अन्तिम दिन पुनर्जीवित कर दूँगा; 55क्योंकि मेरी देह सच्चा भोजन है और मेरा रक्त सच्चा पेय। 56जो मेरी देह खाता और मेरा रक्त पीता है, वह मुझ में रहता है और मैं उसमें। 57जिस तरह जीवन्त पिता ने मुझे भेजा है और मुझे पिता से जीवन मिलता है, उसी तरह जो मुझे खाता है, उस को मुझ से जीवन मिलेगा। 58यही वह रोटी है जो स्वर्ग से उतरी है। यह उस रोटी के सदृश नहीं है, जो पूर्वजों ने खायी थी। वे तो मर गये; किन्तु जो यह रोटी खायेगा, वह सदा जीवित रहेगा।"

अनेक शिष्यों द्वारा येशु को छोड़ना

59येशु ने कफरनहूम के सभागृह में शिक्षा देते समय यह कहा। 60यह सुनकर उनके बहुत-से शिष्यों ने कहा, "यह तो कठोर शिक्षा है। इसे कौन मान सकता है?" 61येशु ने मन में जाना कि मेरे शिष्य इस पर भुनभुना रहे हैं, तो उन्होंने उन से कहा, "क्या तुम इसी से विचलित हो रहे हो? 62जब तुम मानव-पुत्र को वहाँ आरोहण करते देखोगे, जहाँ वह पहले था, तो क्या कहोगे? 63आत्मा ही जीवन प्रदान करता है, शरीर से कुछ लाभ नहीं होता। मैंने तुम से जो वचन कहे हैं, वे आत्मा और जीवन हैं। 64फिर भी तुम में से अनेक मुझपर विश्वास नहीं करते।" येशु तो प्रारम्भ से ही यह जानते थे कि कौन मुझपर विश्वास नहीं करते और कौन मेरे साथ विश्वासघात करेगा।** 65उन्होंने कहा, "इसलिए मैंने तुम लोगों से कहा था कि जब तक पिता से यह वरदान न मिले, कोई मेरे पास नहीं आ सकता।"

66इसके पश्चात् येशु के बहुत-से शिष्य पीछे हट गये और उन्होंने उनका साथ छोड़ दिया। 67इसलिए येशु ने बारहों से कहा, "क्या तुम लोग भी चले जाना चाहते हो?" 68सिमोन पतरस ने उन्हें उत्तर दिया, "प्रभु! हम किसके पास जायें! आपके पास शाश्वत जीवन के वचन हैं। 69हम विश्वास करते और जानते हैं कि आप परमेश्वर के पवित्र व्यक्ति हैं।" 70येशु ने उनसे कहा, "क्या मैंने तुम बारहों को नहीं चुना? तब भी तुम में से एक शैतान+ है।" 71यह उन्होंने शिमोन इस्करियोती के पुत्र यूदस*** के विषय में कहा। वही उनके साथ विश्वासघात करने वाला था और वह बारहों में से एक था।

येशु के भाइयों का आग्रह

7 इसके पश्चात् येशु गलील प्रदेश में भ्रमण करने लगे। वह यहूदा प्रदेश में भ्रमण करना नहीं चाहते थे, क्योंकि यहूदी धर्मगुरु उन्हें मार डालने की ताक में थे।

2यहूदियों का मण्डप-पर्व निकट था। 3इसलिए येशु के भाइयों ने उनसे कहा, "यह प्रदेश छोड़ कर यहूदा प्रदेश जाइए, जिससे आप जो महान कार्य करते हैं, उन्हें आपके शिष्य भी देख सकें। 4जो नाम कमाना चाहता

---

* अथवा, 'शरीर' ** अथवा, "मुझे पकड़वाएगा" + अथवा, "विरोधी" ***अथवा, 'यहूदा'

6 : 48 यो 6 : 35 **6 : 49** यो 6 : 31-32; 1 कुर 10 : 3, 5 **6 : 51** इब्र 10 : 5, 10 **6 : 52** यो 6 : 60 **6 : 56** यो 15 : 4; 1 यो 3 : 24; 2 : 24 **6 : 62** यो 3 : 13 **6 : 63** 2 कुर 3 : 6; प्रज्ञ 9 : 13-18 **6 : 64** यो 13 : 11 **6 : 65** यो 4 : 44 **6 : 68** यो 6 : 63 **6 : 69** यो 1 : 49; 11 : 27; मत 14 : 33; 16 : 16 **7 : 1** मक 9 : 30; लू 9 : 51 **7 : 2** लेव 23 : 34 **7 : 3** प्रे 1 : 14; यो 2 : 12; मत 12 : 46

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

है, वह छिप कर काम नहीं करता। जब आप
ऐसे कार्य करते ही हैं, तो अपने को दुनिया के
सामने प्रकट कर दीजिए।'' (5येशु के भाई भी
उनमें विश्वास नहीं करते थे।) 6येशु ने उन से
कहा, ''अब तक मेरा समय नहीं आया है। पर
तुम लोगों का समय तो सदा अनुकूल है।
7संसार तुम से बैर नहीं कर सकता; किन्तु वह
मुझ से बैर करता है, क्योंकि मैं उसके विषय
में यह साक्षी देता हूँ कि उसके काम बुरे हैं।
8तुम पर्व के लिए जाओ। मैं++ इस पर्व के लिए
नहीं जाऊँगा, क्योंकि मेरा समय अब तक पूरा
नहीं हुआ है।'' 9यह कहकर येशु गलील प्रदेश
में ही रह गये। 10बाद में, जब उनके भाई पर्व
के लिए जा चुके थे, तब येशु भी प्रकट रूप में
नहीं, बल्कि गुप्त रूप में वहाँ गये।

मण्डप -पर्व में येशु का प्रवचन

11यहूदी धर्मगुरु पर्व में येशु को ढूँढ़ रहे थे,
और लोगों से पूछ रहे थे, ''वह कहाँ है?''
12जनता में उनके विषय में बड़ी कानाफूसी हो
रही थी। कुछ लोग कहते थे, ''वह भला मनुष्य
है।'' कुछ कहते थे, ''नहीं, वह लोगों को
पथभ्रष्ट कर रहा है।'' 13फिर भी धर्मगुरुओं के
भय के कारण कोई उनके विषय में खुल कर
बातें नहीं करता था।

14जब पर्व के आधे दिन बीत गए, तब येशु
मन्दिर में गए, और लोगों को शिक्षा देने लगे।
15यहूदी धर्मगुरु आश्चर्य में पड़ गये। उन्होंने
कहा, ''इसने कभी पढ़ा नहीं। तब इसे शास्त्र
का ज्ञान कहाँ से प्राप्त हुआ?'' 16येशु ने उन्हें
उत्तर दिया, ''मेरी शिक्षा मेरी नहीं है। यह
उसकी है, जिसने मुझे भेजा है। 17यदि कोई
उसकी इच्छा पूरी करने का संकल्प करेगा, तो
वह यह जान जायेगा कि मेरी शिक्षा परमेश्वर
की ओर से है अथवा मैं अपनी ओर से बोलता
हूँ। 18जो अपनी ओर से बोलता है वह अपने
लिए सम्मान चाहता है; किन्तु जो उसके लिए
सम्मान चाहता है, जिसने उसे भेजा, वह सच्चा
है और उस में कोई कपट नहीं है।

19''क्या मूसा ने तुम्हें व्यवस्था नहीं दी?
फिर भी तुम लोगों में कोई व्यवस्था का पालन
नहीं करता।

''तुम लोग मुझे मार डालने की ताक में क्यों
रहते हो?'' 20लोगों ने उत्तर दिया, ''आप को
भूत लगा है। कौन आप को मार डालने की ताक
में रहता है!' 21येशु ने उत्तर दिया, ''मैंने एक
कार्य किया है, और तुम सब आश्चर्य करते हो।
22सुनो, निश्चय मूसा ने तुम्हें ख़तना कराने का
नियम दिया—यद्यपि वह मूसा से नहीं, बल्कि
पूर्वजों से चला आ रहा है, और तुम विश्राम-
दिवस पर भी मनुष्य का खतना करते हो।
23यदि विश्राम-दिवस पर मनुष्य का खतना
इसलिए किया जाता है कि मूसा का नियम भंग
न हो, तो तुम लोग मुझ से इस बात पर क्यों रुष्ट
हो कि मैंने विश्राम-दिवस पर एक मनुष्य को
पूर्ण रूप से स्वस्थ किया? 24मुंह देखा न्याय मत
करो, वरन् निष्पक्ष न्याय करो।''

क्या यह मसीह है?

25इस पर यरूशलेम के कुछ लोगों ने कहा,
''क्या यह वही नहीं है, जिसे हमारे धर्माधिकारी
मार डालने की ताक में हैं? 26देखो तो, यह
प्रकट रूप से बोल रहा है और वे इस से कुछ
नहीं कहते। क्या उन्होंने सचमुच मान लिया कि
यह मसीह है? 27फिर भी हम जानते हैं कि यह
कहाँ का है; परन्तु जब मसीह प्रकट होंगे, तो
किसी को यह पता नहीं चलेगा कि वह कहाँ
के हैं।''

28येशु ने मन्दिर में शिक्षा देते हुए पुकार कर
कहा, ''तुम मुझे जानते हो और यह भी जानते
हो कि मैं कहाँ का हूँ। मैं अपनी इच्छा से नहीं
आया हूँ। जिसने मुझे भेजा है, वह सच्चा है
और तुम उसे नहीं जानते। 29मैं उसे जानता हूँ,
क्योंकि मैं उसके यहाँ से आया हूँ और उसी ने

++ पाठांतर, ''मैं अभी''

7 : 5 मत 13 : 55 **7 : 6** यो 2 : 4 **7 : 7** यो 15 : 18 **7 : 13** यो 9 : 22; 12 : 42; 19 : 38 **7 : 15** मत 13 : 54; लू 2 : 47 **7 : 16** यो 12 : 49 **7 : 18** यो 5 : 41, 44 **7 : 19** यो 5 : 16, 18, 47; प्रे 7 : 53; रोम 2 : 17-29 **7 : 20** यो 8 : 48, 52; 10 : 20; मक 3 : 21 **7 : 21** यो 5 : 16 **7 : 22** उत 17 : 10-12; लेव 12 : 3 **7 : 23** यो 5 : 8 **7 : 24** यो 8 : 15 **7 : 25** यो 7 : 19 **7 : 27** यो 7 : 41 **7 : 29** मत 11 : 27

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मुझे भेजा है।'' 30इस पर उन्होंने येशु को
गिरफ्तार करना चाहा, किन्तु किसी ने उन पर
हाथ नहीं डाला; क्योंकि अब तक उनका समय
नहीं आया था।

31फिर भी जनता में बहुतों ने येशु पर
विश्वास किया। उन्होंने कहा, ''जब मसीह
आयेंगे, तब क्या वह इन से भी अधिक
आश्चर्यपूर्ण चिह्न दिखायेंगे ?'' 32फरीसियों ने
सुना कि जनता में येशु के विषय में इस प्रकार
की कानाफूसी हो रही है। अतः महापुरोहितों
और फरीसियों ने येशु को गिरफ्तार करने के
लिए सिपाहियों को भेजा।

33उस समय येशु ने कहा, ''अब मैं कुछ ही
समय तक तुम्हारे साथ रहूँगा। इसके पश्चात् मैं
उसके पास चला जाऊँगा, जिसने मुझे भेजा है।
34तुम मुझे ढूँढ़ोगे, किन्तु नहीं पाओगे। मैं जहाँ
हूँ तुम लोग वहाँ नहीं आ सकते।'' 35इस पर
यहूदी धर्मगुरुओं ने आपस में कहा, ''इन्हें
कहाँ जाना है, जो हम इन को नहीं पा सकेंगे ?
क्या यह यूनानियों के बीच बसे हुए यहूदियों
के पास जायेंगे और यूनानियों को भी शिक्षा
देंगे ? 36इनके इस कथन का क्या अर्थ है: 'तुम
लोग मुझे ढूँढ़ोगे, किन्तु नहीं पाओगे' और 'मैं
जहाँ हूँ, तुम वहाँ नहीं आ सकते' ?''

संजीवन-जल की प्रतिज्ञा

37पर्व के अन्तिम और मुख्य दिन येशु खड़े
हुए और उन्होंने पुकार कर कहा, ''यदि कोई
प्यासा है, तो वह मेरे पास आये। 38जो मुझ में
विश्वास करता है, वह अपनी प्यास बुझाये।
जैसा कि धर्मग्रन्थ का कथन हैं: 'उसके
अन्तस्तल से संजीवन-जल की नदियाँ बह
निकलेंगी।'*'' 39उन्होंने यह बात उस आत्मा
के विषय में कही, जो उन में विश्वास करने
वालों को प्राप्त होगा। उस समय तक आत्मा
नहीं था**, क्योंकि येशु अभी महिमान्वित नहीं
हुए थे।

येशु के विषय में मतभेद

40ये शब्द सुन कर जनता में कुछ लोगों ने
कहा, ''यह सचमुच वही नबी हैं, जो आनेवाले
थे।'' 41कुछ ने कहा, ''यह मसीह हैं।'' किन्तु
कुछ लोगों ने कहा, ''क्या मसीह गलील प्रदेश
से आयेंगे ? 42क्या धर्मग्रन्थ यह नहीं कहता कि
दाऊद के वंश से और दाऊद के गाँव बेतलेहम
से मसीह का आगमन होगा ?'' 43इस प्रकार येशु
के विषय में लोगों में मतभेद हो गया। 44कुछ
लोग येशु को गिरफ्तार करना चाहते थे, किन्तु
किसी ने उन पर हाथ नहीं डाला।

निकोदेमुस येशु का पक्ष लेता है

45जब सिपाही महापुरोहितों और फरीसियों
के पास लौटे, तब फरीसियों ने उन से पूछा,
''उसे क्यों नहीं लाये ?'' 46सिपाहियों ने उत्तर
दिया, ''जैसा वह मनुष्य बोलता है, वैसा कभी
कोई नहीं बोला।'' 47इस पर फरीसियों ने
कहा, ''क्या उसने तुम्हें भी पथभ्रष्ट कर दिया ?
48क्या हमारे अधिकारियों अथवा फरीसियों में
किसी ने उस में विश्वास किया है ? 49भीड़ की
बात दूसरी है। वह व्यवस्था से अनभिज्ञ है और
शापित है।''

50 निकोदेमुस जो पहले एक बार येशु से
मिलने आये थे, उन फरीसियों में से एक था।
निकोदेमुस ने उन से कहा, 51''क्या हमारी
व्यवस्था किसी मनुष्य को, जब तक पहले
उसकी बात न सुन ले और यह न पता लगा ले
कि उसने क्या किया है, उसे दोषी ठहराती
है ?'' 52उन्होंने निकोदेमुस को उत्तर दिया,
''कहीं आप भी तो गलीली नहीं हैं ? शास्त्रों का

* अथवा, ''यदि कोई प्यासा है, तो वह मेरे पास आए और अपनी प्यास बुझाए। जैसा कि धर्मग्रन्थ का कथन है, 'जो मुझमें विश्वास करता है, उसके अन्तस्तल से संजीवन-जल की नदियाँ बह निकलेंगी' '' ** पाठांतर, ''पवित्र आत्मा प्रदान नहीं किया गया था''

7 : 30 यो 8 : 20; 13 : 1; लू 22 : 53 **7 : 31** यो 8 : 30; 10 : 42; यो 11 : 45; 12 : 42 **7 : 33** यो 13 : 33 **7 : 34** यो 8 : 21; 12 : 36; 17 : 24 **7 : 37** यो 4 : 10, 14; लेव 23 : 36 **7 : 38** यश 44 : 3; 55 : 1; 58 : 11; यहेज 47 : 1, 12; जक 13 : 1; 14 : 8; योए 2 : 28; 3 : 18 **7 : 39** यो 16 : 7; 2 कुर 3 : 17 **7 : 40** यो 6 : 14; व्य 18 : 15 **7 : 41** यो 1 : 46 **7 : 42** 2 शम 7 : 12; मी 5 : 2; मत 2 : 5-6; 22 : 42; भज 89 : 3 **7 : 43** यो 9 : 16 **7 : 44** यो 7 : 30 **7 : 45** यो 7 : 32 **7 : 46** मत 7 : 28-29 **7 : 48** यो 12 : 42 **7 : 50** यो 3 : 1-2 **7 : 51** व्य 1 : 16-17; 19 : 15 **7 : 52** यो 1 : 46; 7 : 41

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अनुशीलन कर पता लगा लीजिए कि गलील प्रदेश में नबी नहीं उत्पन्न होता।'' [*53इसके बाद सब अपने-अपने घर चले गए।

परन्तु येशु जैतून पहाड़ पर गए।]

8 व्यभिचारिणी स्त्री का उद्धार

[2येशु बड़े सबेरे फिर मन्दिर में आये। सारी जनता उनके पास इकट्ठी हो गयी और वह बैठ कर लोगों को शिक्षा देने लगे। 3उस समय शास्त्री और फरीसी व्यभिचार में पकड़ी गयी एक स्त्री को लाये, और उसे सब लोगों के सामने खड़ा कर 4उन्होंने येशु से कहा, ''गुरुवर! यह स्त्री व्यभिचार-कर्म में पकड़ी गयी है। 5व्यवस्था में मूसा ने हमें ऐसी स्त्रियों को पत्थरों से मार डालने का आदेश दिया है। आप इसके विषय में क्या कहते हैं?'' 6उन्होंने येशु की परीक्षा लेने के लिए यह कहा, जिससे उन्हें उन पर दोष लगाने का कोई आधार मिले। येशु ने झुक कर उँगली से भूमि पर लिखा। 7जब वे उन से उत्तर देने के लिए आग्रह करते रहे, तब येशु ने सिर उठा कर उनसे कहा, ''तुम में जो निष्पाप हो, वह इसे सब से पहले पत्थर मारे।'' 8और वह फिर झुक कर भूमि पर लिखने लगे। 9यह सुन कर वे बड़ों से ले कर+ एक-एक करके बाहर चले गए। केवल येशु और वह स्त्री, जो उनके सामने खड़ी थी, रह गए। 10तब येशु ने सिर उठा कर उससे कहा, ''नारी! वे लोग कहाँ हैं? क्या किसी ने भी तुम्हें दण्ड नहीं दिया?'' 11उसने उत्तर दिया, ''प्रभु! किसी ने भी नहीं।'' इस पर येशु ने उससे कहा, ''मैं भी तुम्हें दण्ड नहीं दूँगा। जाओ और अब से फिर पाप नहीं करना।'']

संसार की ज्योति

12येशु ने लोगों से फिर कहा, ''संसार की ज्योति मैं हूँ। जो मेरा अनुसरण करता है, वह अन्धकार में कभी नहीं चलेगा वरन् वह जीवन की ज्योति प्राप्त करेगा।''

13फरीसियों ने उनसे कहा, ''आप अपने विषय में साक्षी देते हैं। आपकी साक्षी मान्य नहीं है।'' 14येशु ने उत्तर दिया ''मैं अपने विषय में साक्षी देता हूँ। फिर भी मेरी साक्षी मान्य है, क्योंकि मैं जानता हूँ कि मैं कहाँ से आया और कहाँ जा रहा हूँ। परन्तु तुम लोग नहीं जानते कि मैं कहाँ से आया हूं और कहाँ जा रहा हूं। 15तुम मनुष्य की दृष्टि से न्याय करते हो। मैं किसी का न्याय नहीं करता 16और यदि न्याय भी करूँ, तो मेरा निर्णय सही होगा; क्योंकि मैं अकेला नहीं हूँ: पिता, जिसने मुझे भेजा है, मेरे साथ है। 17तुम लोगों की व्यवस्था में लिखा है कि दो व्यक्तियों की साक्षी मान्य है। 18मैं अपने विषय में साक्षी देता हूँ और पिता भी, जिसने मुझे भेजा है, मेरे विषय में साक्षी देता है।'' 19इस पर उन्होंने येशु से कहा, ''कहाँ है आपका पिता?'' उन्होंने उत्तर दिया, ''तुम लोग न तो मुझे जानते हो और न मेरे पिता को। यदि तुम मुझे जानते, तो मेरे पिता को भी जान जाते।''

20येशु ने मन्दिर में शिक्षा देते हुए कोषागार में यह कहा। किसी ने उन्हें गिरफ्तार नहीं किया, क्योंकि तब तक उनका समय नहीं आया था।

अविश्वासी धर्मगुरुओं को चेतावनी

21येशु ने लोगों से फिर कहा, ''मैं जा रहा हूँ। तुम लोग मुझे ढूँढ़ोगे, किन्तु तुम अपने पाप में मर जाओगे। मैं जहाँ जा रहा हूँ, तुम वहाँ नहीं आ सकते।'' 22इस पर यहूदी धर्मगुरुओं ने कहा, ''कहीं यह आत्महत्या तो नहीं करेगा? यह तो कहता है, 'मैं जहाँ जा रहा हूं, तुम वहाँ नहीं आ सकते।' '' 23येशु ने उन से कहा, ''तुम लोग नीचे के हो, मैं ऊपर का हूँ। तुम इस

---

* कुछ प्राचीन प्रतियों में 7:53 से 8:11 तक पद नहीं पाए जाते हैं। + कुछ प्रतियों के अनुसार ''छोटों तक'', अन्य के अनुसार, ''सब के सब''

8 : 1 लू 21 : 37 **8 : 5** लेव 20 : 10; व्य 22 : 22-24; मत 22 : 15 **8 : 7** रोम 2 : 1; व्य 17 : 7; सूस 34 **8 : 9** मत 22 : 22; रोम 2 : 22 **8 : 11** यो 5 : 14 **8 : 12** यो 1 : 5, 9; 12 : 46; यश 49 : 6; प्रज्ञ 7 : 26 **8 : 14** यो 5 : 31 **8 : 15** यो 7 : 24; 12 : 47 **8 : 16** यो 8 : 29 **8 : 17** व्य 17 : 6; 19 : 15 **8 : 18** 1 यो 5 : 9 **8 : 19** यो 14 : 7 **8 : 20** यो 7 : 30; 13 : 1; लू 22 : 53 **8 : 21** यो 7 : 34; 13 : 33 **8 : 22** यो 7 : 35 **8 : 23** यो 3 : 31

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

संसार के हो, मैं इस संसार का नहीं हूँ।
24इसलिए मैंने तुम से कहा कि तुम अपने पापों
में मर जाओगे। यदि तुम विश्वास नहीं करते
कि 'मैं वह हूँ*' तो तुम अपने पापों में मर
जाओगे।'' 25तब लोगों ने उन से पूछा, ''आप
कौन हैं ?'' येशु ने उत्तर दिया, ''वही, जो मैंने
आरम्भ से तुम से कहा है **। 26तुम्हारे विषय
में मुझे बहुत कुछ कहना है, और निर्णय करना
है, किन्तु जिसने मुझे भेजा है, वह सच्चा है;
और जो कुछ मैंने उससे सुना है, वही संसार
को बताता हूं।''

27किन्तु वे नहीं समझे कि येशु उन से पिता
के विषय में कह रहे हैं। 28इसलिए येशु ने कहा,
''जब तुम लोग मानव-पुत्र को ऊपर उठाओगे,
तब यह जान जाओगे कि 'मैं वह हूँ' और मैं
अपनी ओर से कुछ नहीं करता। परन्तु मैं जो
कुछ कहता हूँ, वैसे ही कहता हूँ, जैसे पिता ने
मुझे सिखाया है। 29जिसने मुझे भेजा है, वह मेरे
साथ है। उसने मुझको अकेला नहीं छोड़ा;
क्योंकि मैं सदा वही करता हूँ, जो उसे अच्छा
लगता है।'' 30वह जब ये बातें कह रहे थे तब
बहुतों ने उन में विश्वास किया।

सत्य तुम्हें स्वतन्त्र करेगा

31जिन यहूदियों ने उन में विश्वास किया,
उन से येशु ने कहा, ''यदि तुम मेरे वचन पर
दृढ़ रहोगे, तो सचमुच मेरे शिष्य सिद्ध होगे।
32तुम सत्य को जानोगे और सत्य तुम्हें स्वतन्त्र
करेगा।'' 33उन्होंने उत्तर दिया, ''हम अब्राहम
की सन्तान हैं, हम कभी किसी के गुलाम नहीं
रहे। आप यह क्या कहते हैं: 'तुम स्वतन्त्र हो
जाओगे'?'' 34येशु ने उनसे कहा, ''मैं तुम से
सच-सच कहता हूँ: जो पाप करता रहता है,
वह पाप का गुलाम है। 35गुलाम सदा घर में
नहीं रहता, पुत्र सदा रहता है। 36इसलिए यदि
पुत्र तुम्हें स्वतन्त्र करे, तो तुम सचमुच स्वतन्त्र
होगे।

37''मैं जानता हूँ कि तुम अब्राहम की
सन्तान हो। फिर भी तुम मुझे मार डालने की
ताक में रहते हो, क्योंकि मेरा वचन तुम्हारे हृदय
में घर नहीं कर सका। 38मैंने अपने पिता के यहाँ
जो देखा है, वही कहता हूँ और तुम लोगों ने
अपने पिता से जो सुना है, वही करते हो।''†
39उन्होंने उत्तर दिया, ''हमारे पिता अब्राहम
हैं।'' इस पर येशु ने उन से कहा, ''यदि तुम
अब्राहम के वंशज होते, तो अब्राहम के सदृश
कार्य करते। 40परन्तु तुम तो मुझे, अर्थात् ऐसे
व्यक्ति को जिसने परमेश्वर से सुना हुआ सत्य
तुम्हें बता दिया, मार डालने की ताक में रहते
हो। अब्राहम ने ऐसा नहीं किया। 41तुम तो
अपने पिता के कार्य कर रहे हो।'' उन्होंने येशु
से कहा, ''हम व्यभिचार से पैदा नहीं हुए।
हमारा एक ही पिता है और वह परमेश्वर
है।''

42येशु ने उन से कहा, ''यदि परमेश्वर
तुम्हारा पिता होता, तो तुम मुझसे प्रेम करते,
क्योंकि मैं परमेश्वर से निकला और यहाँ आया
हूँ। मैं अपनी इच्छा से नहीं आया हूँ, मुझे उसी
ने भेजा है। 43तुम मेरी बातें क्यों नहीं समझते ?
कारण यह है कि तुम मेरा वचन सहन नहीं कर
सकते।

44''तुम तो अपने पिता शैतान से हो और
अपने पिता की इच्छा पूरी करना चाहते हो। वह
तो प्रारम्भ से ही हत्यारा था। वह सत्य पर स्थिर
नहीं रहता, क्योंकि उसमें सत्य है ही नहीं। जब
वह झूठ बोलता है, तो अपने ही स्वभाव के
अनुसार बोलता है; क्योंकि वह झूठा है और
झूठ का पिता है। 45मैं सत्य बोलता हूँ, इसलिए
तुम मुझ पर विश्वास नहीं करते। 46तुम में से

* अथवा, 'मै ''वही'' हूँ' ** अथवा, 'आखिर, मैं तुम से क्या बोलूँ?' † अथवा, कुछ प्राचीन प्रतियों के अनुसार, 'और तुम लोग, तुम्हें तो वही करना चाहिये जो तुमने 'पिता' से सुना है।'

8 : 25 यो 8 : 14 **8 : 26** यो 8 : 38; 12 : 49 **8 : 28** यो 3 : 14; 12 : 32 **8 : 20** यो 8 : 16; मत 27 : 46 **8 : 30** यो 7 : 31; 10 : 42; 12 : 11 **8 : 33** मत 3 : 9; नह 9 : 36 **8 : 34** रोम 6 : 16, 20; 1 यो 3 : 8 **8 : 35** गल 4 : 30 **8 : 36** रोम 6 : 18, 22 **8 : 39** मत 3 : 9 **8 : 41** व्य 23 : 2 **8 : 42** 1 यो 5 : 1 **8 : 43** यो 12 : 39; मत 12 : 34; रोम 8 : 7 **8 : 44** 1यो 3 : 8-10; उत 3 : 4; 2 पत 2 : 4; प्रज्ञ 1 : 13; 2 : 24 **8 : 45** लू 22 : 67 **8 : 46** 2 कुर 5 : 21; 1 पत 2 : 22

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कौन मुझ पर पाप का दोष लगा सकता है ? यदि
मैं सत्य बोलता हूँ, तो तुम मुझ पर विश्वास क्यों
नहीं करते ? [47]जो परमेश्वर का है, वह परमेश्वर
के वचन सुनता है। तुम लोग इसलिए नहीं सुनते
कि तुम परमेश्वर के नहीं हो।''

येशु और अब्राहम

[48]यहूदी धर्मगुरुओं ने येशु से कहा, ''क्या
हमारा यह कहना ठीक नहीं कि तुम सामरी*
हो और तुम में भूत है ?'' [49]येशु ने उत्तर दिया,
''मुझ में भूत नहीं है। मैं अपने पिता का आदर
करता हूँ, पर तुम मेरा अनादर करते हो। [50]मैं
अपना सम्मान नहीं चाहता। एक है जो चाहता
है, और वही न्याय करता है। [51]मैं तुम से सच-
सच कहता हूँ: यदि कोई मेरे वचन का पालन
करेगा, तो वह कभी मृत्यु का स्वाद नहीं
चखेगा।''

[52]धर्मगुरुओं ने कहा, ''अब हमें पक्का
विश्वास हो गया है कि तुम में भूत है। अब्राहम
और नबी मर गये, किन्तु तुम कहते हो, 'यदि
कोई मेरे वचन का पालन करेगा, तो वह कभी
मृत्यु का स्वाद नहीं चखेगा।' [53]क्या तुम हमारे
पिता अब्राहम से भी महान् हो ? वह मर गये
और नबी भी मर गये। तुम अपने को समझते
क्या हो ?''

[54]येशु ने उत्तर दिया, ''यदि मैं स्वयं अपना
सम्मान करता, तो उस सम्मान का कोई महत्व
नहीं होता। मुझे सम्मानित करनें वाला मेरा
पिता है, जिसे तुम अपना परमेश्वर कहते हो,
[55]यद्यपि तुम उसे नहीं जानते—पर मैं उसे
जानता हूँ। यदि मैं कहता कि उसे नहीं जानता,
तो मैं तुम्हारी तरह झूठा बन जाता। किन्तु मैं उसे
जानता हूँ और उसके वचन का पालन करता
हूँ। [56]तुम्हारे पूर्वज अब्राहम यह जान कर
उल्लसित हुए कि वह मेरा दिन देखेंगे और वह
उसे देख कर आनन्दविभोर हुए।''

[57]धर्मगुरुओं ने उन से कहा, ''अभी तुम
पचास वर्ष के भी नहीं, और तुम अब्राहम को
देख चुके हो !'' [58]येशु ने उनसे कहा, ''मैं तुम
से सच-सच कहता हूँ: अब्राहम के जन्म लेने
के पहले से ही मैं हूँ।'' [59]इस पर लोगों ने येशु
को मारने के लिए पत्थर उठाये, किन्तु वह
छिपकर मन्दिर से निकल गये।

जन्मान्ध को दृष्टिदान

9 मार्ग में येशु ने एक मनुष्य को देखा, जो
जन्म से अन्धा था। [2]उनके शिष्यों ने उनसे
पूछा, ''गुरुजी ! किसने पाप किया था, इसने
अथवा इसके माता-पिता ने, कि यह अन्धा
जन्मा है ?'' [3]येशु ने उत्तर दिया, ''न तो इस
मनुष्य ने पाप किया और न इसके माता-पिता
ने। यह इसलिए जन्म से अन्धा है कि इसमें
परमेश्वर के कार्य प्रकट हों। [4]दिन रहते हमें
उसके कार्य में लगे रहना चाहिए, जिसने मुझे
भेजा है। रात आ रही है, जब कोई भी व्यक्ति
कार्य नहीं कर सकता। [5]मैं जब तक संसार में
हूँ, तब तक संसार की ज्योति हूँ।''

[6]यह कह कर येशु ने भूमि पर थूका, थूक
से मिट्टी का लेप बनाया और वह लेप अन्धे की
आँखों पर लगा कर [7]उससे कहा, ''जाओ,
शीलोह के कुण्ड में धो लो।'' शीलोह का अर्थ
है 'प्रेषित'। वह मनुष्य गया। उसने वहाँ आंखें
धोईं और वह देखता हुआ लौटा।

[8]उसके पड़ोसी और वे लोग, जो उसे पहले
भीख माँगते देखा करते थे, बोले, ''क्या यह
वही नहीं है, जो बैठकर भीख माँगा करता
था ?'' [9]कुछ लोगों ने कहा, ''हाँ, यह वही है।''
कुछ ने कहा, ''नहीं, यह उस-जैसा कोई और
है।'' उसने कहा, ''मैं वही हूँ।'' [10]इस पर लोगों
ने उससे पूछा, ''तो, तुम्हारी आंखें कैसे
खुलीं ?'' [11]उसने उत्तर दिया, ''जो मनुष्य येशु
कहलाते हैं, उन्होंने मिट्टी का लेप बनाया
और उसे मेरी आँखों पर लगा कर कहा,
'शीलोह के कुंड पर जाओ और धो लो।' मैं

---

* देखिए लूकस 10 : 33 की टिप्पणी

8 : 47 यो 18 : 37; 1 यो 4 : 6 **8 : 48** यो 7 : 20; मक 3 : 21 **8 : 50** यो 5 : 41 **8 : 51** यो 5 : 24; 6 : 40, 47; 11 : 25 **8 : 52** मक 9 : 1 **8 : 53** यो 4 : 12 **8 : 55** यो 7 : 28 **8 : 59** यो 10 : 31 **9 : 1** प्रे 3 : 2; 14 : 8 **9 : 2** लू 13 : 2; नि 20 : 5 **9 : 3** यो 11 : 4 **9 : 4** यो 5 : 17, 20; 11 : 9 **9 : 5** 8 : 12; 12 : 35 **9 : 6** मक 8 : 23

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गया और धोने के बाद देखने लगा।'' 12उन्होंने
उससे पूछा,''वह कहाँ है ?'' उसने उत्तर दिया,
''मैं नहीं जानता।''

फरीसियों की जाँच-पड़ताल

13लोग उस मनुष्य को, जो पहले अन्धा था,
फरीसियों के पास ले गये। 14जिस दिन येशु ने
मिट्टी का लेप बना कर उसकी आँखें खोली थीं,
वह विश्राम का दिन था। 15फरीसियों ने उससे
फिर पूछा कि वह कैसे देखने लगा। उसने उनसे
कहा, ''उन्होंने मेरी आँखों पर मिट्टी लगायी,
मैंने आँखें धोईं और अब मैं देख रहा हूँ।''
16इस पर कुछ फरीसियों ने कहा, ''वह मनुष्य
परमेश्वर के यहाँ से नहीं आया है; क्योंकि वह
विश्राम-दिवस के नियम का पालन नहीं
करता।'' कुछ लोगों ने कहा, ''पापी मनुष्य
ऐसे आश्चर्यपूर्ण चिह्न कैसे दिखा सकता
है ?'' इस तरह उनमें मतभेद हो गया। 17उन्होंने
फिर अन्धे से पूछा, ''जिस मनुष्य ने तुम्हारी
आँखें खोली हैं, उसके विषय में तुम क्या कहते
हो ?'' उसने उत्तर दिया, ''वह नबी है।''

18यहूदी धर्मगुरुओं को विश्वास नहीं हो
रहा था कि वह अन्धा था और अब देखने लगा
है। इसलिए उन्होंने उसके माता-पिता को
बुलाया 19और उनसे पूछा, ''क्या यह तुम्हारा
पुत्र है, जिसके विषय में तुम यह कहते हो कि
यह जन्म से अन्धा था ? तो अब यह कैसे देखने
लगा है ?'' 20उसके माता-पिता ने उत्तर दिया,
''हम जानते हैं कि यह हमारा पुत्र है और यह
जन्म से अन्धा था; 21किन्तु अब यह कैसे देखने
लगा है, हम यह नहीं जानते। हम यह भी नहीं
जानते कि किसने इसकी आँखें खोली हैं। यह
सयाना है, इसी से पूछ लीजिए। यह अपने
विषय में स्वयं ही बताएगा।'' 22उसके माता-
पिता ने यह इसलिए कहा कि वे धर्मगुरुओं से
डरते थे। यहूदी धर्मगुरु यह तय कर चुके थे कि
यदि कोई येशु को मसीह मानेगा, तो वह
सभागृह से बहिष्कृत कर दिया जायेगा।
23इसलिए उसके माता-पिता ने कहा, ''यह
सयाना है, इसी से पूछ लीजिए।''

24अत: फरीसियों ने उसे, जो पहले अन्धा
था, दूसरी बार बुलाया और उससे कहा,
''परमेश्वर की स्तुति करो। हम जानते हैं कि
वह मनुष्य पापी है।'' 25उसने उत्तर दिया, ''वह
पापी है या नहीं, इसके बारे में मैं कुछ नहीं
जानता। मैं केवल एक बात जानता हूँ कि मैं
अन्धा था और अब देख रहा हूँ।'' 26इस पर
उन्होंने उससे फिर पूछा, ''उसने तुम्हारे साथ
क्या किया ? उसने तुम्हारी आँखें कैसे खोलीं ?''
27उसने उत्तर दिया, ''मैं आप लोगों को बता
चुका हूँ, लेकिन आपने सुना ही नहीं ! अब आप
फिर क्यों सुनना चाहते हैं ? क्या आप लोग भी
उनके शिष्य बनना चाहते हैं ?'' 28वे उसे बुरा-
भला कहते हुए बोले, ''तू उसका शिष्य होगा !
हम तो मूसा के शिष्य हैं। 29हम जानते हैं कि
परमेश्वर ने मूसा से बात की है, किन्तु उस
मनुष्य के विषय हम नहीं जानते कि वह कहाँ
से आया है।''

30उसने उन्हें उत्तर दिया, ''यही तो आश्चर्य
की बात है। उन्होंने मेरी आँखें खोली हैं और
आप लोग यह भी नहीं जानते कि वह कहाँ
से आए हैं। 31हम जानते हैं कि परमेश्वर
पापियों की नहीं सुनता। वह उन लोगों की
सुनता है, जो उसके भक्त हैं और उसकी इच्छा
पूरी करते हैं। 32 यह कभी सुनने में नहीं आया
कि किसी ने जन्मान्ध की आँखें खोली हों।
33यदि यह मनुष्य परमेश्वर के यहाँ से नहीं
आये होते, तो वह कुछ भी नहीं कर सकते
थे।'' 34उन्होंने उससे कहा, ''तू तो बिलकुल
पाप में जन्मा है और हमें सिखाता है ?'' और
उन्होंने उसे बाहर निकाल दिया।

आत्मिक अंधापन

35येशु ने सुना कि फरीसियों ने उसे बाहर
निकाल दिया है; इसलिए मिलने पर उन्होंने
उससे कहा, ''क्या तुम मानव-पुत्र में विश्वास

---

9 : 14 यो 5 : 9 **9 : 16** यो 3 : 2; 7 : 43; 9 : 31.33 **9 : 17** यो 4 : 19 **9 : 22** यो 7 : 13; 12 : 42; 16 : 2
9 : 24 यहो 9 : 19 **9 : 31** यश 1 : 15; नीति 15 : 29; प्रे 10 : 35 **9 : 33** यो 9 : 16 **9 : 34** यो 9 : 2;
भज 51 : 5

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

करते हो ?'' 36उसने उत्तर दिया, ''महोदय!
मुझे बता दीजिए कि वह कौन है, जिससे मैं
उसमें विश्वास कर सकूँ''। 37येशु ने उससे
कहा, ''तुमने उसे देखा है और जो तुम से बातें
कर रहा है, वह वही है।''38उसने उन्हें दण्डवत्
करते हुए कहा, ''प्रभु! मैं विश्वास करता
हूँ।''
39येशु ने कहा, ''मैं संसार में न्याय के लिए
आया हूँ, जिससे जो अन्धे हैं, वे देखने लगें और
जो देखते हैं, वे अन्धे हो जायें।''40जो फरीसी
उनके साथ थे, वे यह सुन कर बोले, ''क्या हम
भी अन्धे हैं ?'' 41येशु ने उन से कहा, ''यदि
तुम लोग अन्धे होते, तो तुन्हें पाप नहीं लगता,
परन्तु तुम तो कहते हो कि हम देखते हैं;
इसलिए तुम्हारा पाप बना रहता है।

चरवाहा और उसकी भेड़ें

10 ''मैं तुम से सच-सच कहता हूँ: जो
फाटक से भेड़शाला में प्रवेश नहीं करता,
बल्कि दूसरे रास्ते से चढ़ कर आता है, वह चोर
और डाकू है। 2जो फाटक से प्रवेश करता है,
वही भेड़ों का चरवाहा है 3और उसके लिए
द्वारपाल फाटक खोल देता है। भेड़ें उसकी
आवाज पहचानती हैं। वह नाम ले-ले कर अपनी
भेड़ों को बुलाता और बाहर ले जाता है। 4अपनी
सब भेड़ों को बाहर निकाल लेने के बाद वह
उनके आगे-आगे चलता है और भेड़ें उसके
पीछे-पीछे आती हैं, क्योंकि वे उसकी आवाज
पहचानती हैं। 5वे अपरिचित के पीछे-पीछे
नहीं चलेंगी, बल्कि उससे दूर भागेंगी; क्योंकि
वे अपरिचितों की आवाज नहीं पहचानतीं।''
6येशु ने लोगों को यह दृष्टान्त सुनाया, किन्तु
उन्होंने नहीं समझा कि वह उनसे क्या कह रहे
हैं।

मैं भेड़शाला का द्वार हूँ

7इसलिए येशु ने फिर उनसे कहा, ''मैं तुम
से सच-सच कहता हूँ: भेड़शाला का द्वार मैं हूं।
8जो मुझ से पहले आये, वे सब चोर और डाकू
हैं; किन्तु भेड़ों ने उनकी नहीं सुनी। 9मैं ही द्वार
हूँ। यदि कोई मुझ से हो कर प्रवेश करेगा तो
उसे मुक्ति प्राप्त होगी। वह भीतर-बाहर
आया-जाया करेगा और उसे चरागाह मिलेगा।
10''चोर केवल चुराने, मारने और नष्ट करने
आता है। मैं इसलिए आया हूँ कि वे जीवन
प्राप्त करें—बल्कि प्रचुरता से जीवन प्राप्त करें।

अच्छा चरवाहा मैं हूँ

11''अच्छा चरवाहा मैं हूँ। अच्छा चरवाहा
भेड़ों के लिए अपना प्राण अर्पित करता है।
12मजदूर, जो न चरवाहा है और न भेड़ों का
मालिक, भेड़िये को आते देख भेड़ों को छोड़
कर भाग जाता है और भेड़िया उन्हें पकड़ता
और तितर-बितर कर देता है। 13मजदूर भाग
जाता है, क्योंकि वह तो मज़दूर है और उसे
भेड़ों की कोई चिन्ता नहीं।
14-15''अच्छा चरवाहा मैं हूँ। जिस तरह
पिता मुझे जानता है और मैं पिता को जानता हूँ,
उसी तरह मैं अपनी भेड़ों को जानता हूँ और
मेरी भेड़ें मुझे जानती हैं। मैं भेड़ों के लिए अपना
प्राण अर्पित करता हूँ। 16मेरी और भी भेड़ें हैं,
जो इस भेड़शाला की नहीं हैं। मुझे उन्हें भी
लाना है। वे मेरी आवाज सुनेंगी। तब एक ही
झुण्ड होगा और एक ही चरवाहा।
17''पिता मुझसे इसलिए प्रेम करता है कि
मैं अपना प्राण अर्पित करता हूँ ताकि मैं उसे
फिर प्राप्त करूं। 18कोई मुझ से मेरा प्राण नहीं
छीन सकता; मैं स्वयं उसे अर्पित करता हूँ। मुझे
अपना प्राण अर्पित करने और उसे फिर प्राप्त
करने का अधिकार है। मुझे अपने पिता की ओर
से यह आदेश मिला है।''

यरूशलेम के यहूदियों में मतभेद

19येशु के इन वचनों के कारण उन यहूदियों

---

9 : 37 यो 4 : 26; 10 : 25 **9 : 39** मत 13 : 11-15 **9 : 40** मत 15 : 14; 23 : 26 **9 : 41** नीति 26 : 12 **10 : 5** यो 10 : 27 **10 : 6** यो 16 : 25 **10 : 7** यो 14 : 6; भज 118 : 20; मत 7 : 13-14 **10 : 8** यिर 23 : 1-2 **10 : 9** यो 14 : 6; भज 118 : 20; 1 कुर 3 : 15 **10 : 11** भज 23 : 1; लू 15 : 4-7; प्रव 18 : 13 **10 : 12** यो 15 : 13; यश 40 : 11; यहेज 34 : 11-23; 37 : 24; मत 10 : 16; प्रे 20 : 29; ती 1 : 11; 1 पत 5 : 2-3 **10 : 14** 2 तिम 2 : 19 **10 : 15** मत 11 : 27 **10 : 16** यहेज 37 : 24; 34 : 23; यो 11 : 52; 1 पत 2 : 25; इफ 4 : 5 **10 : 17** फिल 2 : 8-9 **10 : 18** यो 5 : 26; 19 : 11 **10 : 19** यो 7 : 43; 9 : 16

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

में फिर मतभेद हो गया। [20]बहुत-से लोग कहते
थे, "उसमें भूत है। वह प्रलाप करता है। तुम
उसकी क्यों सुनते हो?"
[21]कुछ लोग कहते थे, "ये वचन भूतग्रस्त
मनुष्य के नहीं हैं। क्या भूत अन्धों की आँखें
खोल सकता है?"

मन्दिर का प्रतिष्ठान-पर्व

[22]उन दिनों यरूशलेम में मन्दिर का प्रतिष्ठान-
पर्व मनाया जा रहा था। शीत ऋतु का समय था।
[23]येशु मन्दिर में सुलेमान के मण्डप में टहल रहे
थे। [24]यहूदी धर्मगुरुओं ने उन्हें घेर लिया और
कहा, "आप हमें कब तक असमंजस में रखे
रहेंगे? यदि आप मसीह हैं, तो हमें स्पष्ट शब्दों
में बता दीजिए।" [25]येशु ने उन्हें उत्तर दिया,
"मैंने तुम लोगों को बताया और तुम विश्वास
नहीं करते। जो कार्य मैं अपने पिता के नाम पर
करता हूँ, वे ही मेरे विषय में साक्षी देते हैं।
[26]किन्तु तुम विश्वास नहीं करते, क्योंकि तुम
मेरी भेड़ों में से नहीं हो। [27]मेरी भेड़ें मेरी आवाज
पहचानती हैं। मैं उन्हें जानता हूँ और वे मेरा
अनुसरण करती हैं। [28]मैं उन्हें शाश्वत जीवन
प्रदान करता हूं। वे कभी नष्ट नहीं होंगी और
उन्हें मेरे हाथ से कोई नहीं छीन सकेगा। [29]जो
कुछ मेरे पिता ने मुझे दिया है, वह सब से महान्
है* और उसे पिता के हाथ से कोई नहीं छीन
सकता। [30]मैं और पिता एक हैं।"
[31]धर्मगुरुओं ने येशु को मार डालने के लिए
फिर पत्थर उठाये। [32]येशु ने उन से कहा, "मैंने
अपने पिता की ओर से तुम लोगों के सामने
बहुत-से अच्छे कार्य किये हैं। उन में किस
कार्य के लिए मुझे पत्थरों से मार डालना चाहते
हो?" [33]धर्मगुरुओं ने उत्तर दिया, "किसी
अच्छे कार्य के लिए नहीं, बल्कि ईश-निन्दा के
लिए हम तुम को पत्थरों से मार डालना चाहते
हैं; क्योंकि तुम मनुष्य हो कर अपने को
परमेश्वर मानते हो।" [34]येशु ने कहा, "क्या
तुम लोगों की व्यवस्था में यह नहीं लिखा है,
'मैंने कहा: तुम ईश्वर हो'? [35]जिन को परमेश्वर
का सन्देश दिया गया था, यदि व्यवस्था ने उन
को ईश्वर कहा—और धर्मग्रन्थ की बात टल
नहीं सकती—[36]तो जिसे पिता ने पवित्र ठहरा
कर संसार में भेजा है, उससे तुम लोग यह कैसे
कहते हो, 'तुम ईश-निन्दा करते हो'; क्योंकि
मैंने कहा, 'मैं परमेश्वर का पुत्र हूँ'?
[37]"यदि मैं अपने पिता के कार्य नहीं करता,
तो मुझ पर विश्वास न करो। [38]किन्तु यदि मैं
उन्हें करता हूँ, तो मुझ पर विश्वास नहीं करने
पर भी तुम कार्यों पर ही विश्वास करो, जिससे
तुम यह जान जाओ और समझ लो कि पिता
मुझ में है और मैं पिता में हूँ।"
[39]इस पर उन्होंने फिर येशु को गिरफ्तार
करने का प्रयत्न किया, परन्तु वह उनके हाथ
से निकल गये।

यर्दन नदी के उस पार

[40]येशु यर्दन नदी के पार उस जगह लौट
गये, जहाँ पहले योहन बपतिस्मा दिया करते थे,
और वह वहीं रहे। [41]बहुत लोग उनके पास
आये। वे कहते थे, "योहन ने तो कोई
आश्चर्यपूर्ण चिह्न नहीं दिखाया, परन्तु उन्होंने
इनके विषय में जो कुछ कहा, वह सब सच
निकला।" [42]और वहाँ बहुतों ने येशु पर
विश्वास किया।

लाजर की मृत्यु

11 लाजर नामक एक व्यक्ति बीमार पड़
गया। वह मरियम और उसकी बहिन
मार्था के गाँव बेतनियाह का निवासी था। [2]यह
वही मरियम थी, जिसने इत्र से प्रभु का
अभ्यंजन किया और अपने केशों से उनके
चरण पोंछे थे। उसका भाई लाजर बीमार था।
[3]दोनों बहिनों ने येशु को समाचार भेजा, "प्रभु!

---

* पाठान्तर, "मेरा पिता, जिसने उन्हें मुझे दिया है, वह सब से महान है"।

10 : 20 यो 7 : 20; 8 : 48; मक 3 : 21 **10 : 22** प्रे 3 : 11; 5 : 12; 1 मक 4 : 36, 52-59; 2 मक 1 : 18; 10 : 5 **10 : 24** लू 22 : 67 **10 : 25** यो 4 : 26; 5 : 36; 9 : 37 **10 : 26** यो 6 : 64; 8 : 45 **10 : 27** यो 8 : 47; 10 : 3-4 **10 : 28** यो 5 : 28; 6 : 39; 17 : 12; 18 : 9; **10 : 29** प्रज्ञ 3 : 1 **10 : 31** यो 8 : 59 **10 : 33** यो 5 : 18; मत 26 : 65 **10 : 34** भज 82 : 6 **10 : 35** मत 5 : 17-18 **10 : 36** यो 5 : 17-20 **10 : 39** यो 8 : 59; लू 4 : 30 **10 : 40** यो 1 : 28 **10 : 42** यो 8 : 30 **11 : 1** लू 10 : 38-39 **11 : 2** यो 12 : 3

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

देखिए, जिसे आप प्यार करते हैं, वह बीमार
है।" 4येशु ने यह सुन कर कहा, "इस बीमारी
का अन्त मृत्यु नहीं, बल्कि यह परमेश्वर की
महिमा के लिए है। इसके द्वारा परमेश्वर का पुत्र
महिमान्वित होगा।"
5येशु मार्था, उसकी बहन मरियम और
लाजर से प्रेम करते थे। 6यह सुन कर कि लाजर
बीमार है, वह जहाँ थे, वहाँ और दो दिन ठहर
गये; 7किन्तु इसके बाद उन्होंने अपने शिष्यों से
कहा, "आओ! हम फिर यहूदा प्रदेश को
चलें।" 8शिष्य बोले, "गुरुवर! कुछ ही दिन
पहले वहाँ के लोग आप को पत्थरों से मार
डालना चाहते थे और आप फिर वहीं जा रहे
हैं?" 9येशु ने उत्तर दिया, "क्या दिन के बारह
घण्टे नहीं होते? जो दिन में चलते हैं, वे ठोकर
नहीं खाते, क्योंकि वे इस संसार के प्रकाश को
देखते हैं। 10परन्तु जो रात में चलते हैं, वे ठोकर
खाते हैं, क्योंकि उनमें प्रकाश नहीं होता।"
11इतना कहने के बाद वह फिर उन से बोले,
"हमारा मित्र लाजर सो गया है। किन्तु मैं उसे
नींद से जगाने जा रहा हूँ।" 12 शिष्यों ने कहा,
"प्रभु! यदि वह सो रहा है, तो स्वस्थ हो
जायेगा।" 13येशु ने यह उसकी मृत्यु के विषय
में कहा था, लेकिन उनके शिष्यों ने समझा कि
वह नींद के विश्राम के विषय में कह रहे हैं।
14इसलिए येशु ने उन से स्पष्ट शब्दों में कहा,
"लाजर मर गया है, 15और मैं तुम्हारे कारण
प्रसन्न हूँ कि मैं वहाँ नहीं था, जिससे तुम लोग
विश्वास कर सको। आओ, हम उसके पास
चलें।" 16इस पर थोमस ने, जो दिदिमुस*
कहलाता था, अपने सहशिष्यों से कहा, "आओ,
हम भी इनके साथ मरने को चलें।"

येशु जीवन और पुनरुत्थान हैं

17वहाँ पहुँचने पर येशु को पता चला कि
लाजर को कबर में दफनाए चार दिन हो चुके
हैं। 18बेतनियाह यरूशलेम के समीप, लगभग
तीन किलोमीटर* दूर था। 19इसलिए भाई की
मृत्यु पर संवेदना प्रकट करने के लिए यहूदा
प्रदेश के बहुत-से लोग मार्था और मरियम से
मिलने आये थे। 20ज्यों ही मार्था ने यह सुना कि
येशु आ रहे हैं, वह उन से मिलने गयी। किन्तु
मरियम घर में ही बैठी रही।
21मार्था ने येशु से कहा, "प्रभु! यदि आप
यहाँ होते, तो मेरा भाई नहीं मरता। 22और मैं
जानती हूँ कि आप अब भी परमेश्वर से जो
कुछ माँगेंगे, परमेश्वर आप को वही प्रदान
करेगा।" 23येशु ने उस से कहा, "तुम्हारा भाई
फिर जी उठेगा।" 24मार्था ने उत्तर दिया, "मैं
जानती हूँ कि वह अन्तिम दिन पुनरुत्थान के
समय फिर जी उठेगा"। 25येशु ने कहा,
"पुनरुत्थान और जीवन मैं हूँ। जो मुझ में
विश्वास करता है, वह मरने पर भी जीवित
रहेगा 26और जो जीवित है, तथा मुझ में
विश्वास करता है, वह कभी नहीं मरेगा। क्या
तुम इस बात पर विश्वास करती हो?" 27उसने
उत्तर दिया, "हाँ, प्रभु! मैं विश्वास करती हूं कि
आप ही मसीह, परमेश्वर के पुत्र हैं, जो संसार
में आने वाले थे।"
28वह यह कह कर चली गयी और अपनी
बहिन मरियम को बुला कर उसने चुपके से
उससे कहा, "गुरुवर यहाँ हैं और तुम को बुला
रहे हैं।" 29यह सुनते ही वह उठ खड़ी हुई और
येशु से मिलने गयी। 30येशु अब तक गाँव नहीं
पहुँचे थे। वह उसी स्थान पर थे, जहाँ मार्था उन
से मिली थी। 31जो लोग संवेदना प्रकट करने
के लिए मरियम के साथ घर में थे, वे यह देख
कर कि वह अचानक उठ कर बाहर चली गयी,
उसके पीछे हो लिये; क्योंकि उन्होंने समझा कि
वह कबर पर रोने जा रही है।

येशु रोए

32मरियम उस जगह पहुँची, जहाँ येशु थे।
उन्हें देखते ही वह उनके चरणों पर गिर पड़ी

* अर्थात्, 'जुड़वां' * मूल में, 'पन्द्रह स्तदियन'

11 : 4 यो 9 : 3 **11 : 8** यो 8 : 59; 10 : 31 **11 : 9** यो 9 : 4-5; 1 यो 2 : 10 **11 : 10** यो 12 : 35; 1 यो 2 : 11 **11 : 11** मत 9 : 24; लू 8 : 52 **11 : 16** मक 10 : 32; 14 : 31 **11 : 21** यो 11 : 32 **11 : 24** यो 5 : 29; 6 : 40; लू 14 : 14; 2 मक 7 : 22-23; 12 : 44 **11 : 26** यो 5 : 24; 8 : 51 **11 : 27** यो 6 : 69 **11 : 30** यो 11 : 20 **11 : 32** यो 11 : 21

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और बोली, ''प्रभु! यदि आप यहाँ होते, तो मेरा
भाई नहीं मरता।'' 33येशु, उसे और उसके साथ
आये हुए लोगों को रोते देख कर, बहुत व्याकुल
हो उठे और गहरी सांस ले कर 34बोले, ''तुम
लोगों ने उसे कहाँ रखा है?'' उन्होंने कहा,
''प्रभु! आइए और देखिए।'' 35येशु रो पड़े।
36इस पर लोगों ने कहा, ''देखो! यह उसे
कितना प्यार करते थे''; 37किन्तु उनमें से कुछ
बोले, ''इन्होंने तो अन्धे की आँखें खोलीं। क्या
वह इतना नहीं कर सके कि यह मनुष्य नहीं
मरता?''

लाजर को जीवन-दान

38येशु ने फिर गहरी सांस ली और कबर पर
आए। वह कबर एक गुफा थी, जिसके मुँह पर
पत्थर रखा हुआ था। 39येशु ने कहा, ''पत्थर
हटा दो।'' मृतक की बहिन मार्था ने उन से
कहा, ''प्रभु! अब उसमें से दुर्गन्ध आती होगी;
क्योंकि उसे मरे चार दिन हो चुके हैं।'' 40येशु
ने उसे उत्तर दिया, ''क्या मैंने तुम से यह नहीं
कहा कि यदि तुम विश्वास करोगी, तो
परमेश्वर की महिमा देखोगी?'' 41इस पर लोगों
ने पत्थर हटा दिया।
येशु ने आँखें उपर उठा कर कहा, ''पिता!
मैं तुझे धन्यवाद देता हूँ; तूने मेरी प्रार्थना सुन ली
है। 42मैं जानता था कि तू सदा मेरी प्रार्थना
सुनता है। किन्तु मैंने आसपास खड़े लोगों के
कारण ऐसा कहा है, जिससे वे विश्वास करें कि
तूने मुझे भेजा है।'' 43यह कह कर येशु ने ऊँचे
स्वर से पुकारा, ''लाजर! बाहर निकल आओ!''
44मृतक बाहर निकल आया। उसके हाथ और
पैर पट्टियों से बंधे हुए थे और उसके मुख पर
अंगोछा लपेटा हुआ था। येशु ने लोगों से कहा,
''इसके बन्धन खोल दो और इसे जाने दो।''

येशु को मार डालने का षड्यन्त्र

45जो लोग मरियम से मिलने आये थे और
जिन्होंने येशु का यह कार्य देखा, उनमें से बहुतों
ने येशु में विश्वास किया। 46परन्तु उनमें से कुछ
व्यक्तियों ने फरीसियों के पास जा कर बताया
कि येशु ने क्या किया है।
47तब महापुरोहितों और फरीसियों ने धर्म-
महासभा बुला कर कहा, ''हम क्या करें? यह
मनुष्य बहुत आश्चर्यपूर्ण चिह्न दिखा रहा है।
48यदि हम उसे ऐसा करते रहने देंगे, तो सब
उसमें विश्वास कर लेंगे और रोमन लोग आ
कर हमारा मन्दिर और हमारी जाति को नष्ट कर
देंगे।'' 49उन में से एक ने, जिसका नाम काइफा
था और जो उस वर्ष प्रधान महापुरोहित था, उन
से कहा, ''आप लोग कुछ भी नहीं जानते
50और न आप समझते हैं कि आपका कल्याण
इसमें है कि जनता के लिए केवल एक मनुष्य
मरे और समस्त जाति नष्ट न हो।'' 51उसने यह
बात अपनी ओर से नहीं कही। किन्तु उसने उस
वर्ष के प्रधान महापुरोहित के रूप में नबूवत की
कि येशु यहूदी जाति के लिए मरेंगे 52और न
केवल यहूदी जाति के लिए, बल्कि इसलिए
भी कि वह परमेश्वर की बिखरी हुई सन्तान को
एकत्र कर एक करें। 53उसी दिन से वे येशु को
मार डालने का षड्यन्त्र रचने लगे। 54 इसलिए
येशु ने उस समय से यहूदा प्रदेश में प्रकट रूप
से आना-जाना बन्द कर दिया। वह निर्जन
प्रदेश के निकटवर्ती क्षेत्र के एफ्रइम नामक नगर
को चले गये और वहाँ अपने शिष्यों के साथ
रहने लगे।
55यहूदियों का पास्का (फसह) पर्व निकट
था। बहुत लोग पर्व से पहले अपने-आप को
शुद्ध करने के लिए देहात से यरूशलेम आये।
56वे येशु को ढूँढ़ रहे थे और मन्दिर में खड़े हुए
आपस में बात कर रहे थे, ''आपका क्या
विचार है? क्या वह पर्व के लिए नहीं आ रहे
हैं?'' 57महापुरोहितों और फरीसियों ने येशु
को गिरफ्तार करने के उद्देश्य से यह आदेश
दिया था कि यदि किसी व्यक्ति को मालूम हो
जाये कि येशु कहाँ हैं, तो वह इसकी सूचना
उनको दे।

---

11 : 33 यो 13 : 21 **11 : 35** लू 19 : 41 **11 : 38** मत 27 : 60 **11 : 39** यो 10 : 1 **11 : 42** यो 12 : 30 **11 : 45** यो 10 : 42; 12 : 42; लू 16 : 31 **11 : 50** यो 18 : 14 **11 : 51** उत 50 : 20; नि 28 : 30; गण 27 : 21 **11 : 52** यो 10 : 16; 1 यो 2 : 2; मत 12 : 30 **11 : 55** 2 इति 30 : 17; मक 10 : 32; प्रे 21 : 24, 26

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बेतनियाह गाँव में येशु का अभ्यंजन

12 पास्का (फसह) पर्व के छ: दिन पहले
येशु बेतनियाह गाँव में आये। वहाँ
लाजर रहता था, जिसे उन्होंने मृतकों में से
पुनर्जीवित किया था। 2लोगों ने वहाँ येशु के
सम्मान में एक भोज का आयोजन किया। मार्था
परोस रही थी। येशु के साथ भोजन करने वालों
में लाजर भी था। 3मरियम ने तीन सौ ग्राम+
असली जटामांसी का बहुमूल्य इत्र ले कर येशु
के चरणों का विलेपन किया और अपने केशों
से उनके चरण पोंछे। इत्र की सुगन्ध से सारा
घर महक उठा।

4इस पर येशु का एक शिष्य, यूदस***
इस्करियोती, जो उनके साथ विश्वासघात करने
वाला था, यह बोला, 5"यह इत्र तीन सौ चाँदी
के सिक्कों* में बेच कर इस से प्राप्त धन गरीबों
में क्यों नहीं बाँटा गया?" 6उसने यह इसलिए
नहीं कहा कि उसे गरीबों की चिन्ता थी, बल्कि
इसलिए कि वह चोर था। उसके पास थैली
रहती थी और उस में जो डाला जाता था, वह
उसे निकाल लेता था। 7येशु ने कहा, "इसे छोड़
दो। इसे यह कार्य मेरे गाड़े जाने के दिन के लिए
करने दो**। 8गरीब तो सदा तुम्हारे साथ रहेंगे,
किन्तु मैं सदा तुम्हारे साथ नहीं रहूँगा।"

9यहूदा प्रदेश के एक विशाल जनसमूह को
पता चला कि येशु वहाँ हैं। वे येशु के कारण
ही नहीं, बल्कि उस लाजर को भी देखने आये,
जिसे येशु ने मृतकों में से पुनर्जीवित किया था।
10महापुरोहितों ने लाजर को भी मार डालने का
निश्चय किया, 11क्योंकि उसके कारण अनेक
लोग उनसे अलग हो गए और येशु पर विश्वास
करने लगे।

यरूशलेम में विजय-उल्लास के साथ येशु का प्रवेश

12दूसरे दिन, पर्व के लिए आये हुए विशाल
जनसमूह ने सुना कि येशु यरूशलेम आ रहे हैं।
13इसलिए वे खजूर की डालियाँ लिये उनका
स्वागत करने निकले। वे यह नारा लगा रहे थे,
"जय हो! जय हो!++ धन्य है वह, जो प्रभु के
नाम पर आता है! धन्य है, इस्राएल का राजा!"
14येशु को गदही का बछेरू मिला और वह उस
पर सवार हो गये, जैसा कि धर्मग्रन्थ में लिखा
है: 15"सियोन नगर! नहीं डरना! देख, तेरा
राजा, गदही के बछेरू पर सवार हो कर, तेरे
पास आ रहा है।"

16येशु के शिष्य पहले यह नहीं समझे थे,
परन्तु येशु के महिमान्वित हो जाने के पश्चात्
उन्हें याद आया कि यह उनके विषय में लिखा
हुआ था और लोगों ने उनके साथ ऐसा ही किया
था।

17जब येशु ने लाजर को कबर से बाहर बुला
कर मृतकों में से जिलाया था, उस समय जो
लोग उनके साथ थे, वे उस घटना की साक्षी दे
रहे थे। 18इसलिए बहुत लोग येशु का स्वागत
करने निकले थे। उन्होंने सुना था कि येशु ने यह
आश्चर्यपूर्ण चिह्न दिखाया था। 19यह सब देख
कर फरीसियों ने एक दूसरे से कहा, "देख रहे
हो न, तुमसे कुछ नहीं हो सका। देखो, सारा
संसार उस के पीछे चल पड़ा है।"

येशु और यूनानी तीर्थयात्री

20जो लोग पर्व के अवसर पर आराधना
करने आये थे, उनमें कुछ यूनानी थे। 21उन्होंने
फिलिप के पास आ कर यह निवेदन किया,
"महाशय! हम येशु से मिलना चाहते हैं।"
फिलिप गलील प्रदेश के बेतसैदा नगर का
निवासी था। 22वह गया और उसने अन्द्रेयास
को यह बताया। तब अन्द्रेयास तथा फिलिप गये
और उन्होंने येशु को इसकी सूचना दी।

23येशु ने उनसे कहा, "वह समय आ गया
है, जब मानव-पुत्र महिमान्वित किया जायेगा।

+ मूल में, 'एक लित्रा' * मूल में 'दीनार' ** अथवा, 'ताकि यह उसे मेरे गाड़े जाने के दिन के लिए सुरक्षित रखे।' ++ मूल में, '"होशाना!"' *** अथवा, 'यहूदा'

12 : 1-8 मत 26 6-13; मक 14 : 3-9 **12 : 1** यो 11 : 1-43 **12 : 2** लू 10 : 40 **12 : 3** लू 7 : 38 **12 : 6** लू 8 : 3 **12 : 8** व्य 15 : 11 **12 : 12-19** मत 21 : 1-11 मक 11 : 1-10; लू 19 : 29-40 **12 : 13** भज 118 : 25-26; 1 मक 13 : 51 **12 : 14** जक 9 : 9 **12 : 16** यो 7 : 39 **12 : 19** यो 11 : 48 **12 : 20** यो 7 : 35; 11 : 55 **12 : 21** यो 1 : 44; लू 19 : 3; 23 : 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
24मैं तुम से सच-सच कहता हूँ—जब तक गेहूँ
का दाना मिट्टी में गिर कर नहीं मर जाता, तब
तक वह अकेला ही रहता है; परन्तु यदि वह
मर जाता है, तो बहुत फल देता है। 25जो अपने
प्राण को प्यार करता है, वह उसको नष्ट करता
है और जो इस संसार में अपने प्राण से बैर करता
है, वह उसे शाश्वत जीवन के लिए सुरक्षित
रखता है। 26यदि कोई मेरी सेवा करना चाहता
है, तो वह मेरा अनुसरण करे। जहाँ मैं हूँ, वहीं
मेरा सेवक भी होगा। यदि कोई मेरी सेवा करे,
तो पिता उसका सम्मान करेगा।

क्रूस की मृत्यु का संकेत

27"अब मेरी आत्मा व्याकुल है। क्या मैं यह
कहूँ, 'पिता! इस घड़ी के संकट से मुझे बचा'?
किन्तु इसी कारण मैं इस घड़ी तक पहुँचा हूँ।
28पिता! अपने नाम की महिमा कर।" उसी
समय स्वर्ग से यह वाणी सुनाई पड़ी, "मैंने
अपने नाम की महिमा की है, और फिर उसकी
महिमा करूँगा।" 29आसपास खड़े लोग यह
सुन कर बोले, "बादल गरजा।" कुछ लोगों
ने कहा, "एक स्वर्गदूत ने उनसे कुछ कहा।"
30येशु ने उत्तर दिया, "यह वाणी मेरे लिए नहीं,
बल्कि तुम लोगों के लिए हुई है। 31अब इस
संसार का न्याय हो रहा है। अब इस संसार का
अधिपति निकाल दिया जायेगा। 32और मैं, जब
भूमि से ऊपर उठाया जाऊँगा, तब सब मनुष्यों
को अपनी ओर आकर्षित करूँगा।" 33इन शब्दों
के द्वारा येशु ने संकेत किया कि उनकी मृत्यु
किस प्रकार की होगी।

34लोगों ने उन्हें उत्तर दिया, "व्यवस्था हमें
यह शिक्षा देती है कि मसीह सदा रहेंगे। फिर
आप यह क्या कहते हैं कि मानव-पुत्र को ऊपर
उठाया जाना अनिवार्य है? यह मानव-पुत्र कौन
है?" 35इस पर येशु ने उनसे कहा, "अब थोड़े
ही समय तक ज्योति तुम्हारे बीच रहेगी। जब
तक ज्योति तुम्हारे पास है, आगे बढ़ते रहो।
कहीं ऐसा न हो कि अन्धकार तुम को घेर ले।
जो अन्धकार में चलता है, वह नहीं जानता कि
वह कहाँ जा रहा है। 36जब तक ज्योति तुम्हारे
पास है, ज्योति में विश्वास करो, जिससे तुम
ज्योति की संतान बन सको।" येशु यह कह कर
चले गये और उनकी आँखों से छिप गये।

जनसमूह की प्रतिक्रिया

37यद्यपि येशु ने उनके सामने इतने आश्चर्यपूर्ण
चिह्न दिखाये थे, तो भी उन्होंने येशु में विश्वास
नहीं किया। 38यह अनिवार्य था कि नबी यशायाह
का यह कथन पूरा हो जाये: "प्रभु! किसने
हमारे सन्देश पर विश्वास किया? किस पर प्रभु
का बाहुबल प्रकट हुआ?" 39वे इस कारण
विश्वास नहीं कर सके; क्योंकि यशायाह ने यह
भी कहा है:

40"परमेश्वर ने उनकी आँखों को अन्धा कर
दिया
और उनकी बुद्धि कुण्ठित कर दी है।
परमेश्वर ने कहा: कहीं ऐसा न हो
कि वे आखों से देखें,
बुद्धि से समझें
और मेरी ओर लौट आयें
और मैं उन्हें स्वस्थ कर दूँ।"*

41यशायाह ने यह इसलिए बताया कि
उन्होंने स्वयं येशु की महिमा देखी थी और
उनके विषय में यह कहा था। 42फिर भी
अधिकारयों में से बहुतों ने येशु में विश्वास
किया। परन्तु वे फरीसियों के कारण येशु को
प्रकट रूप से इसलिए स्वीकार नहीं करते थे कि
कहीं सभागृह से उनका बहिष्कार न कर दिया
जाये। 43उन्हें परमेश्वर के सम्मान की अपेक्षा
मनुष्य का सम्मान अधिक प्रिय था।

---

* अथवा, "तब मैं उन्हें स्वस्थ कर देता!"

12 : 24 रो 14 : 9; 1 कुर 15 : 36 **12 : 25** मत 10 : 39; लू 14 : 26; 17 : 33 **12 : 26** यो 14 : 3; 17 : 24 **12 : 27** भज 6 : 3; 42 : 5; मत 26 : 38 **12 : 28** यो 5 : 37; मत 3 : 17; 17 : 5 **12 : 29** लू 22 : 43 **12 : 30** यो 11 : 42 **12 : 31** यो 14 : 30; 16 : 11; लू 10 : 18 **12 : 32** यो 8 : 28 **12 : 34** भज 110 : 4; यश 9 : 7; दान 7 : 14 **12 : 35** यो 8 : 12; 9 : 5; 11 : 10 **12 : 36** इफ 5 : 8; मत 23 : 39 **12 : 38** यश 53 : 1 (यू. पाठ); रोम 10 : 16 **12 : 39** यश 6 : 9-10 (यू० पाठ); मत 13 : 14-15 **12 : 41** यश 6 : 1 **12 : 42** यो 7 : 48; 9 : 22 **12 : 43** यो 5 : 44

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रभु येशु संसार की ज्योति

44येशु ने पुकार कर कहा, "जो मुझ में
विश्वास करता है, वह मुझ में नहीं, बल्कि
जिसने मुझे भेजा है उसमें विश्वास करता है
45और जो मुझे देखता है, वह उसको देखता है,
जिसने मुझे भेजा है। 46मैं ज्योति-जैसा संसार
में आया हूँ, जिससे जो कोई मुझमें विश्वास
करे, वह अन्धकार में नहीं रहे। 47यदि कोई मेरी
शिक्षा सुन कर उस पर नहीं चलता, तो मैं उसे
दोषी नहीं ठहराता हूँ; क्योंकि मैं संसार को
दोषी ठहराने नहीं, बल्कि संसार का उद्धार
करने आया हूँ। 48जो मेरा तिरस्कार करता और
मेरी शिक्षा ग्रहण करने से इन्कार करता है,
उसको दोषी ठहराने वाला एक है: जो वचन
मैंने कहा है, वही उसे अन्तिम दिन दोषी
ठहरायेगा। 49मैंने अपनी ओर से कुछ नहीं
कहा। किन्तु पिता ने, जिसने मुझे भेजा है,
आदेश दिया है कि मुझे क्या कहना और क्या
बोलना है। 50मैं जानता हूँ कि उसका आदेश
शाश्वत जीवन है। इसलिए मैं जो कुछ कहता
हूँ, उसे वैसे ही कहता हूँ, जैसे पिता ने मुझ से
कहा है।"

येशु अपने शिष्यों के पैर धोते हैं

13 पास्का (फसह) पर्व का दिन था। येशु
जानते थे कि मेरी घड़ी आ गयी है और
मुझे यह संसार छोड़ कर पिता के पास जाना है।
अत: येशु ने अपनों से, जो इस संसार में थे, और
जिनसे वह प्रेम करते आये थे, अंतिम सीमा तक
प्रेम किया।
2येशु अपने शिष्यों के साथ भोजन कर रहे
थे। शैतान शिमोन इस्करियोती के पुत्र यूदस*
के मन में येशु को पकड़वाने का विचार उत्पन्न
कर चुका था। 3येशु यह जानते थे कि पिता ने
सब कुछ उनके हाथों में दे दिया है और यह कि
वह परमेश्वर के पास से आए हैं और परमेश्वर
के पास जा रहे हैं। 4अत: वह भोजन से उठे।
उन्होंने अपने बाहरी वस्त्र उतारे और अपनी
कमर में अंगोछा बाँध लिया। 5तब वह परात
में पानी भर कर अपने शिष्यों के पैर धोने और
कमर में बँधे अंगोछे से उन्हें पोंछने लगे।
6जब वह सिमोन पतरस के पास आए, तब
पतरस ने उन से कहा, "प्रभु! आप मेरे पैर धो
रहे हैं?" 7येशु ने उत्तर दिया, "तुम अभी नहीं
समझते कि मैं क्या कर रहा हूँ। बाद में
समझोगे।" 8पतरस ने कहा, "मैं आप को
अपने पैर कभी नहीं धोने दूँगा।" येशु ने उससे
कहा, "यदि मैं तुम्हें नहीं धोऊँगा, तो तुम्हारा
मेरे साथ कोई भाग नहीं होगा।" 9इस पर सिमोन
पतरस ने उनसे कहा, "प्रभु! तो मेरे पैर ही
नहीं, मेरे हाथ और सिर भी धो दीजिए।"
10येशु ने उत्तर दिया, "जो स्नान कर चुका
है, उसे पैर के अतिरिक्त और कुछ धोने
की आवश्यकता नहीं। वह पूर्ण रूप से शुद्ध है।
तुम लोग शुद्ध हो, किन्तु सब-के-सब
नहीं।"
11वह जानते थे कि कौन उनके साथ
विश्वासघात करेगा। इसलिए उन्होंने कहा,
"तुम सब-के-सब शुद्ध नहीं हो।"
12जब येशु उन सब के पैर धो चुके, तब वह
अपने वस्त्र पहन कर फिर बैठ गये और उन से
बोले, "क्या तुम समझे कि मैंने तुम्हारे साथ
क्या किया? 13तुम मुझे गुरु और प्रभु कहते हो
और ठीक ही कहते हो, क्योंकि मैं वही हूँ।
14इसलिए यदि मैं, तुम्हारे प्रभु और गुरु ने
तुम्हारे पैर धोये हैं, तो तुम्हें भी एक दूसरे के पैर
धोने चाहिए। 15मैंने तुम्हें एक उदाहरण दिया
है, जिससे जैसा मैंने तुम्हारे साथ किया है, वैसा
ही तुम भी किया करो। 16मैं तुम से सच-सच
कहता हूँ: सेवक अपने स्वामी से बड़ा नहीं
होता और न भेजा हुआ+ अपने भेजने वाले से।

+ अथवा, "प्रेरित" * अथवा, 'यहूदा'

12 : 44 10 : 40 **12 : 45** यो 14 : 9 **12 : 46** यो 8 : 12; 12 : 35 **12 : 47** यो 3 : 17; 8 : 15; लू 9 : 56 **12 : 48** इब्र 4 : 12; प्रक 19 : 15 **12 : 50** यो 8 : 26, 28 **13 : 1** यो 7 : 30; 8 : 20; 15 : 13; गल 2 : 20; 1 यो 3 : 16 **13 : 2** लू 22 : 3 **13 : 3** यो 3 : 35; 16 : 28; 17 : 2 **13 : 4** मत 11 : 29; 20 : 28; लू 12 : 37 **13 : 6** 1 पत 5 : 3 **13 : 8** यो 13 : 12 **13 : 10** यो 15 : 3 **13 : 11** यो 6 : 64, 70-71 **13 : 13** मत 23 : 8, 10 **13 : 14** लू 22 : 27; 1 तिम 5 : 10 **13 : 15** फिल 2 : 5; कुल 3 : 13; 1 पत 2 : 21 **13 : 16** मत 10 : 24

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
17यदि तुम ये बातें जानते हो और इनके अनुसार
आचरण करते हो तो तुम धन्य हो।

यूदस [यहूदा] के विश्वासघात का संकेत

18"मैं तुम सब के विषय में यह नहीं कह
रहा हूँ। मैं जानता हूँ कि मैंने किन-किन लोगों
को चुना है; परन्तु यह इसलिए हो रहा है कि
धर्मग्रन्थ का यह कथन पूरा हो जाये: 'जो मेरी
रोटी खाता है, उसने ही मुझ पर लात उठाई
है।' 19अब मैं तुम्हें इस घटना के घटने से पूर्व
यह बताता हूँ, जिससे जब यह घटना घटे तब
तुम विश्वास करो कि वह मैं हूँ। 20मैं तुम से
सच-सच कहता हूँ: जो मेरे भेजे हुए का
स्वागत करता है, वह मेरा स्वागत करता है और
जो मेरा स्वागत करता है, वह उसका स्वागत
करता हैं, जिसने मुझे भेजा है।"
21जब येशु यह कह चुके, तब उन का मन
व्याकुल हो उठा और उन्होंने यह साक्षी दी ,
"मैं तुम से सच-सच कहता हूं, तुम में से एक
मुझे पकड़वाएगा।" 22शिष्य संशय में पड़कर
एक-दूसरे को देखने लगे कि वह किसके
विषय में कह रहे हैं। 23येशु का एक शिष्य,
जिसे वह प्यार करते थे, उनकी छाती की ओर
झुका हुआ बैठा था। 24सिमोन पतरस ने उस से
इशारे से यह कहा, "पूछो तो, वह किसके
विषय में कह रहे हैं।" 25उसने वैसे ही येशु की
छाती पर झुक कर उन से पूछा, "प्रभु! वह
कौन है ?" 26येशु ने उत्तर दिया, "मैं जिसे रोटी
का टुकड़ा थाली में डुबो कर दूंगा, वही है।"
और उन्होंने रोटी डुबो कर शिमोन इस्करियोती
के पुत्र यूदस को दी। 27रोटी का टुकड़ा लेते ही
यूदस में शैतान समा गया। तब येशु ने उससे
कहा, "तुम्हें जो करना है, वह शीघ्र करो।"
28भोजन करने वालों में कोई नहीं समझ पाया
कि येशु ने उससे यह क्यों कहा। 29यूदस के
पास बटुआ रहता था, इसलिए कुछ शिष्य यह
समझे कि येशु ने उससे कहा, "हमें पर्व के
लिए जो कुछ चाहिए, वह खरीद लो" अथवा
"गरीबों को कुछ दान दे दो।" 30अत: रोटी का
टुकड़ा लेकर यूदस तुरन्त बाहर चला गया।
और उस समय रात थी।

प्रभु येशु की नयी आज्ञा

31यूदस के चले जाने के बाद येशु ने कहा,
"अब मानव पुत्र महिमान्तिव हुआ और उसके
द्वारा परमेश्वर की महिमा हुई। 32यदि उसके
द्वारा परमेश्वर की महिमा हुई, तो परमेश्वर भी
उसे अपने में महिमान्वित करेगा और वह शीघ्र
ही उसे महिमान्वित करेगा। 33छोटे बच्चो! मैं
और थोड़े समय तक तुम्हारे साथ हूँ। तुम मुझे
ढूँढ़ोगे और जैसा मैंने यहूदी धर्मगुरुओं से कहा
है, तुम से भी वही कहता हूँ: मैं जहाँ जा रहा
हूं, वहाँ तुम नहीं आ सकते।
34"मैं तुम्हें एक नयी आज्ञा देता हूँ: तुम
एक-दूसरे से प्रेम करो। जिस प्रकार मैंने तुम
से प्रेम किया, उसी प्रकार तुम भी एक-दूसरे
से प्रेम करो। 35यदि तुम एक-दूसरे से प्रेम
करोगे, तो उसी से सब लोग जान जायेंगे कि
तुम मेरे शिष्य हो।"

पतरस की भावी निर्बलता

36सिमोन पतरस ने येशु से कहा, "प्रभु!
आप कहाँ जा रहे हैं ?" येशु ने उसे उत्तर दिया,
"मैं जहाँ जा रहा हूँ, वहाँ तुम इस समय मेरे
पीछे नहीं आ सकते किन्तु बाद में तुम मेरे पीछे
आओगे।" 37पतरस ने उन से कहा, "प्रभु! मैं
इस समय आपके पीछे क्यों नहीं आ सकता ?
मैं आपके लिए अपने प्राण दे दूँगा।" 38येशु ने
उत्तर दिया, "तुम मेरे लिए अपने प्राण दोगे ?
मैं तुम से सच-सच कहता हूँ: मुर्गे के बाँग देने
से पहले तुम मुझे तीन बार अस्वीकार करोगे।

अंतिम वार्ता का आरम्भ

14 "तुम्हारा मन व्याकुल न हो। परमेश्वर
में विश्वास करो और मुझ में भी
विश्वास करो! 2मेरे पिता के यहाँ बहुत निवास-

---

13 : 17 मत 7 : 24; याक 1 : 25 **13 : 18** भज 41 : 9 **13 : 19** यो 14 : 29 **13 : 20** मत 10 : 40 **13 : 21-30** मत 26 : 21-25; मक 14 : 18-21; लू 22 : 21-23 **13 : 21** यो 12 : 27 **13 : 23** यो 19 : 26; 20 : 2; 21 : 7, 20 **13 : 27** यो 13 : 2, **13 : 29** यो 12 : 6 **13 : 32** यो 12 : 23; 17 : 1-5 **13 : 33** यो 7 : 33 ; 8 : 21 **13 : 34** यो 15 : 12-13, 17; 1 यो 2 : 8, 10 **13 : 36-38** मत 26 : 33-35; मक 14 : 29-31; लू 22 : 31-34 **13 : 36** यो 7 : 34; 21 : 18-19 **14 : 1** यो 14 : 27; मक 11 : 22

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

स्थान हैं। यदि ऐसा नहीं होता, तो मैं तुम्हें बता
देता; क्योंकि मैं तुम्हारे लिए स्थान का प्रबन्ध
करने जा रहा हूँ।* 3यदि मैं जा कर तुम्हारे लिए
स्थान का प्रबन्ध करूँ, तो मैं फिर आऊँगा और
तुम्हें अपने यहाँ ले जाऊँगा, जिससे जहाँ मैं हूँ,
वहाँ तुम भी रहो। 4मैं जहाँ जा रहा हूँ, तुम वहाँ
का मार्ग जानते हो।''

5थोमस ने येशु से कहा, ''प्रभु! हम यह भी
नहीं जानते कि आप कहाँ जा रहे हैं, तो वहाँ
का मार्ग कैसे जान सकते हैं?'' 6येशु ने कहा,
''मार्ग, सत्य और जीवन मैं हूँ। मुझ से हो कर
गये बिना कोई पिता के पास नहीं आ सकता।

7''यदि तुम मुझे जानते, तो मेरे पिता को
भी जानते। अब से तुम उसे जानते हो, और
तुमने उसको देखा भी है।'' 8फिलिप ने उन से
कहा, ''प्रभु! हमें पिता के दर्शन कराइए। हमारे
लिए इतना ही बहुत है।'' 9येशु ने कहा,
''फिलिप! मैं इतने समय तक तुम लोगों के
साथ रहा, फिर भी तुमने मुझे नहीं जाना?
जिसने मुझे देखा है, उसने पिता को भी देखा
है। फिर तुम यह क्या कहते हो: 'हमें पिता के
दर्शन कराइए'? 10क्या तुम विश्वास नहीं करते
कि मैं पिता में हूँ और पिता मुझ में है? मैं जो
शिक्षा तुम्हें देता हूँ, वह मेरी अपनी शिक्षा नहीं
है। मुझ में निवास करने वाला पिता अपने कार्य
सम्पन्न कर रहा है। 11मेरी इस बात पर विश्वास
करो कि मैं पिता में हूँ और पिता मुझ में है, नहीं
तो उन कार्यों के कारण ही विश्वास करो।

12''मैं तुम से सच-सच कहता हूँ: जो मुझ
में विश्वास करता है, वह स्वयं वे कार्य करेगा,
जिन्हें मैं करता हूँ। वह उन से भी महान कार्य
करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जा रहा हूँ।
13जो कुछ तुम मेरे नाम से मांगोगे, मैं उसे पूरा
करूँगा, जिससे पुत्र के द्वारा पिता की महिमा
प्रकट हो। 14यदि तुम मेरे नाम में मुझ से कुछ
भी मांगोगे, तो मैं उसे पूरा करूँगा।

पवित्र आत्मा की प्रतिज्ञा

15''यदि तुम मुझसे प्रेम करते हो, तो मेरी
आज्ञाओं का पालन करोगे। 16मैं पिता से प्रार्थना
करूँगा और वह तुम्हें एक दूसरा सहायक+ प्रदान
करेगा, जो सदा तुम्हारे साथ रहेगा। 17वह सत्य
का आत्मा है, जिसे संसार ग्रहण नहीं कर
सकता, क्योंकि वह उसे न तो देखता है और
न जानता है। तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह
तुम्हारे साथ रहता है और तुम में रहेगा।**

18''मैं तुम को अनाथ नहीं छोड़ूंगा, मैं
तुम्हारे पास आ रहा हूं। 19थोड़ी देर और, फिर
संसार मुझे नहीं देखेगा। पर तुम मुझे देखोगे;
क्योंकि मैं जीवित हूँ, इसलिए तुम भी जीवित
होगे। 20उस दिन तुम जान जाओगे कि मैं अपने
पिता में हूँ, तुम मुझ में हो और मैं तुम में। 21जो
मेरी आज्ञाएँ मानते और उनका पालन करते हैं,
वे ही मुझसे प्रेम करते हैं और जो मुझ से प्रेम
करते हैं, उनसे मेरा पिता प्रेम करेगा और मैं भी
उनसे प्रेम करूँगा और उन पर अपने को प्रकट
करूँगा।''

22यहूदा ने (जो यूदस इस्करियोती से भिन्न
है) येशु से कहा, ''प्रभु! आप हम पर अपने
को प्रकट करेंगे, संसार पर नहीं; इसका कारण
क्या है?'' 23येशु ने उसे उत्तर दिया, ''जो मुझ
से प्रेम करेंगे, वे मेरे वचन का पालन करेंगे और
मेरा पिता उन से प्रेम करेगा और हम उनके पास
आएंगे और उनके साथ निवास करेंगे। 24जो मुझ
से प्रेम नहीं करता, वह मेरे वचनों का पालन

---

* अथवा, ''यदि ऐसा नहीं होता, तो क्या मैं तुम्हें यह बता देता कि मैं तुम्हारे लिए एक स्थान तैयार करने जा रहा हूं?'' + मूल भाषा में ''पराक्लेतुस'' जिसका अर्थ है अभिभावक, एड्वोकेट, शान्तिदाता, परामर्शदाता। ** पाठान्तर ''तुम में निवास करता है'' अथवा 'तुम्हारे मध्य रहेगा।'

14 : 3 12 : 26; 17 : 24 **14 : 6** यो 11 : 25; इब्र 10 : 20; मत 11 : 27; रोम 5 : 1-2; बारू 3 : 13-14 **14 : 9** यो 12 : 45; इब्र 1 : 3; मत 17 : 17 **14 : 10** यो 12 : 49 **14 : 11** यो 14 : 20; 10 : 25, 38 **14 : 12** मक 16 : 19-20 **14 : 13** यो 15 : 7; मक 11 : 24; 1 यो 5 : 14 **14 : 14** यो 16 : 23-24 **14 : 15** यो 15 : 10; 1 यो 5 : 3; प्रज्ञ 6 : 18 **14 : 16** यो 14 : 26; 15 : 26; 16 : 7; 1 यो 2 : 1 **14 : 17** यो 7 : 39; 16 : 13; मत 10 : 20, रोम 8 : 26; 1 कुर 2 : 14 **14 : 19** यो 16 : 16 **14 : 20** यो 17 : 21-23 **14 : 21** 2 कुर 3 : 18 ; 1 यो 5 : 3; प्रज्ञ 6 : 12, 18; प्रव 4 : 14 **14 : 22** प्रे 10 : 41 **14 : 23** यो 13 : 34; 14 : 21; नीति 8 : 17; मत 18 : 20; 28 : 20; इफ 3 : 17; 2 कुर 6 : 16 **14 : 24** यो 7 : 16; 1 यो 2 : 5

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नहीं करता। जो वचन तुम सुनते हो, वह मेरा नहीं, बल्कि उस पिता का है, जिसने मुझे भेजा है।

25 "तुम्हारे साथ रहते हुए मैंने तुम से ये बातें कही हैं। 26 परन्तु 'सहायक', अर्थात् पवित्र आत्मा, जिसे पिता मेरे नाम पर भेजेगा, तुम्हें सब कुछ सिखाएगा। जो कुछ मैंने तुम से कहा है, वह उसका स्मरण तुम्हें कराएगा।

27 "शान्ति मैं तुमको दिए जाता हूँ। अपनी शान्ति मैं तुम्हें प्रदान करता हूँ—जैसे संसार देता वैसे मैं तुम्हें नहीं देता। तुम्हारा मन व्याकुल और भयभीत न हो। 28 तुमने मुझ को यह कहते सुना, 'मैं जा रहा हूँ और फिर तुम्हारे पास आऊँगा।' यदि तुम मुझ से प्रेम करते, तो आनन्दित होते कि मैं पिता के पास जा रहा हूँ, क्योंकि पिता मुझ से महान है। 29 अभी, यह होने से पहले, मैंने तुम को बता दिया, जिससे जब यह हो तब तुम विश्वास करो।

30 "अब मैं तुम से और अधिक बातें नहीं करूँगा, क्योंकि इस संसार का अधिपति आ रहा है। वह मेरा कुछ नहीं कर सकता, 31 किन्तु यह आवश्यक है कि संसार जान जाये कि मैं पिता से प्रेम करता हूँ और पिता ने मुझे जैसा आदेश दिया, मैं वैसा ही करता हूँ। उठो! हम यहाँ से चलें।

'मैं सच्ची दाखलता हूँ'

15 "मैं सच्ची दाखलता हूँ और मेरा पिता किसान** है। 2 वह उस डाली को, जो मुझ में नहीं फलती, काट देता है और उस डाली को, जो फलती है, छाँटता है, जिससे वह और भी अधिक फल उत्पन्न करे। 3 उस वचन के कारण, जो मैंने तुमसे कहा है, तुम शुद्ध हो चुके हो। 4 तुम मुझ में रहो और मैं तुम में रहूँगा। जिस तरह डाली यदि दाखलता में न रहे स्वयं नहीं फल सकती, उसी तरह यदि तुम मुझ में न रहो तो तुम भी नहीं फल सकते।

5 "मैं दाखलता हूँ और तुम डालियाँ हो। जो मुझ में रहता है और मैं उस में, वह बहुत फलता है; क्योंकि मुझ से अलग रह कर तुम कुछ भी नहीं कर सकते। 6 यदि कोई मुझ में नहीं रहता, तो वह डाली की तरह फेंक दिया जाता है और सूख जाता है। लोग ऐसी सूखी डालियाँ बटोर लेते हैं और आग में झोंककर जला देते हैं। 7 यदि तुम मुझ में रहो और मेरी शिक्षा तुम में बनी रहती है, तो चाहे जो माँगो, वह तुम्हारे लिए हो जायेगा। 8 मेरे पिता की महिमा इसी में है कि तुम बहुत फल उत्पन्न करो। तभी तुम मेरे शिष्य होगे।

भ्रातृ-प्रेम की आज्ञा

9 "जिस प्रकार पिता ने मुझ से प्रेम किया है, उसी प्रकार मैंने भी तुम से प्रेम किया है। तुम मेरे प्रेम में बने रहो। 10 यदि तुम मेरी आज्ञाओं का पालन करोगे, तो मेरे प्रेम में बने रहोगे; जैसे मैंने भी अपने पिता की आज्ञाओं का पालन किया है और उसके प्रेम में बना रहता हूँ।

11 "मैंने तुम से यह इसलिए कहा है कि मेरा आनन्द तुममें हो और तुम्हारा आनन्द परिपूर्ण हो जाए। 12 मेरी आज्ञा यह है: जिस प्रकार मैंने तुम से प्रेम किया है, उसी प्रकार तुम भी एक-दूसरे से प्रेम करो। 13 इससे बड़ा प्रेम किसी का नहीं कि कोई अपने मित्रों के लिए अपने प्राण अर्पित कर दे। 14 यदि तुम मेरी आज्ञाओं का पालन करते हो, तो तुम मेरे मित्र हो। 15 अब से मैं तुम्हें सेवक नहीं कहूँगा। सेवक नहीं जानता कि उसका स्वामी क्या करने वाला है। मैंने तुम्हें मित्र कहा है, क्योंकि मैंने अपने पिता से जो कुछ सुना, वह सब तुम्हें बता दिया है। 16 तुमने मुझे नहीं चुना, बल्कि मैंने तुम्हें इसलिए चुना

** अथवा, 'बागवान'

14 : 26 यो 14 : 16; मत 10 : 19 **14 : 27** यो 1 : 16-33; फिल 4 : 7 **14 : 28** यो 14 : 3, 6, 18; लू 24 : 52 **14 : 29** यो 13 : 19 **14 : 30** यो 12 : 31; इफ 2 : 2 **14 : 31** यो 10 : 18; मत 26 : 46; मक 14 : 42 **15 : 1** यिर 2 : 21; भज 80 : 8 प्रव 24 : 17 **15 : 2** मत 15 : 13 **15 : 5** 1 कुर 12 : 12, 7; 2 कुर 3 : 5 **15 : 6** मत 3 : 10; 13 : 40 **15 : 7** मक 11 : 24 **15 : 8** मत 5 : 16 **15 : 10** यो 8 : 29; 14 : 15; 1 यो 2 : 4, 8 **15 : 11** यो 17 : 13 **15 : 12** यो 13 : 34; 1 यो 3 : 11; मक 12 : 30 **15 : 13** यो 10 : 12; यो 3 : 16 **15 : 14** यो 8 : 31 मत 12 : 50; 28 : 20 **15 : 16** यो 6 : 70; 13 : 18

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और नियुक्त किया कि तुम संसार में जाओ और
फलवंत हो तथा तुम्हारा फल बना रहे, जिससे
तुम मेरे नाम में पिता से जो कुछ माँगो, वह तुम्हें
प्रदान करे। [17]मैं तुम को ये आज्ञाएं इस लिए दे
रहा हूं कि तुम एक-दूसरे से प्रेम करो।

संसार का बैर

[18]"यदि संसार तुम से बैर करे, तो ध्यान
रखो कि तुम से पहले उसने मुझ से बैर किया।
[19]यदि तुम संसार के होते, तो संसार तुम्हें अपना
समझ कर प्यार करता। परन्तु तुम संसार के नहीं
हो, क्योंकि मैंने तुम्हें संसार में से चुन लिया है।
इसीलिए संसार तुम से बैर करता है। [20]मैंने तुम
से जो बात कही, उसे स्मरण रखो: सेवक अपने
स्वामी से बड़ा नहीं होता। यदि उन्होंने मुझे
सताया, तो वे तुम्हें भी सतायेंगे। यदि उन्होंने
मेरे वचन का पालन किया, तो वे तुम्हारे वचन
का भी पालन करेंगे। [21]वे यह सब मेरे नाम के
कारण तुम लोगों के साथ करेंगे, क्योंकि जिसने
मुझे भेजा है, उसे वे नहीं जानते।

[22]"यदि मैं नहीं आता और उन्हें शिक्षा नहीं
देता, तो उन्हें पाप नहीं लगता, परन्तु अब तो
उनके पास अपने पाप का कोई बहाना नहीं।
[23]जो मुझ से बैर करता है, वह मेरे पिता से भी
बैर करता है। [24]यदि मैंने उनके सामने वे महान्
कार्य नहीं किये होते, जिन्हें किसी और ने कभी
नहीं किया, तो उन्हें पाप नहीं लगता। परन्तु
अब तो उन्होंने देख कर भी मुझ से और मेरे
पिता से बैर किया है। [25]यह इसलिए हुआ कि
उनकी व्यवस्था का यह कथन पूरा हो जाये:
'उन्होंने अकारण ही मुझ से बैर किया।'

[26]"परन्तु जब सहायक आएगा, जिसे मैं
पिता के यहाँ से तुम्हारे पास भेजूंगा, अर्थात्
सत्य का आत्मा, जो पिता से निकलता है, तब
वह मेरे विषय में साक्षी देगा। [27]और तुम भी
साक्षी दोगे, क्योंकि तुम आरम्भ से मेरे साथ रहे
हो।

16 "मैंने तुम से यह सब इसलिए कहा है
कि तुम विचलित न हो। [2]वे तुम्हें
सभागृहों से निकाल देंगे। इतना ही नहीं, वह
समय आ रहा है, जब तुम्हारी हत्या करने वाला
यह समझेगा कि वह परमेश्वर की सेवा कर रहा
है। [3]वे यह इसलिए करेंगे कि उन्होंने न तो पिता
को जाना है और न मुझ को। [4]किन्तु मैंने तुम
से यह इसलिए कहा है कि जब इनका समय
आये तो तुम्हें यह स्मरण रहे कि मैंने तुम्हें उनके
बारे में पहले ही बता दिया था।

पवित्र आत्मा का आगमन

"मैंने आरम्भ में तुम लोगों को ये बातें नहीं
बताईं, क्योंकि मैं तुम्हारे साथ था। [5]अब मैं उसके
पास जा रहा हूँ, जिसने मुझे भेजा है और तुम
में से कोई मुझ से यह नहीं पूछता कि आप कहाँ
जा रहे हैं। [6]मैंने तुम्हें ये बातें बताई हैं, इसलिए
तुम्हारा हृदय शोक से भर गया है। [7]फिर भी मैं
तुम से सच कहता हूँ: तुम्हारा कल्याण इसमें
है कि मैं चला जाऊं। यदि मैं नहीं जाऊँगा, तो
सहायक तुम्हारे पास नहीं आयेगा। यदि मैं
जाऊँगा, तो मैं उसे तुम्हारे पास भेजूँगा। [8]जब
वह आयेगा, तो पाप, धार्मिकता और दण्डाज्ञा
के विषय में संसार को दोषी सिद्ध कर देगा—
[9]पाप के विषय में, क्योंकि वे मुझ में विश्वास
नहीं करते; [10]धार्मिकता के विषय में, क्योंकि
मैं पिता के पास जा रहा हूँ और तुम मुझे फिर
न देखोगे; [11]दण्डाज्ञा के विषय में, क्योंकि
इस संसार का अधिपति दोषी ठहराया जा चुका
है।

[12]"मुझे तुम से और बहुत कुछ कहना है,
परन्तु अभी तुम वह नहीं सह सकते। [13]जब वह,
अर्थात् सत्य का आत्मा आयेगा, तब वह सम्पूर्ण

---

15 : 18 यो 7 : 7; 1 यो 3 : 13 **15 : 19** यो 17 : 14; 1 यो 44 : 5 लू 6 : 22 **15 : 20** यो 13 : 16; मत 10 : 24 **15 : 21** यो 10 : 22; 16 : 3; मत 5 : 11; मक 13 : 13 **15 : 23** यो 5 : 23; 1 यो 2 : 23; लू 10 : 16 **15 : 24** यो 14 : 11 **15 : 25** भज 35 : 19; 69 : 4 **15 : 26** यो 14 : 26; लू 24 : 49 **15 : 27** लू 1 : 2; प्रे 1 : 8; 5 : 32 **16 : 1** यो 14 : 29 **16 : 2** यो 9 : 22 ; मत 5 : 11; 24 : 9; लू 6 : 22 **16 : 3** यो 15 : 21 **16 : 4** यो 17 : 12; लू 22 : 53 **16 : 5** यो 7 : 33 **16 : 7** यो 14 : 16, 26 **16 : 8** 1कुरि 14 : 24; इब्र 4 : 12 **16 : 9** यो 3 : 18; रोम 1 : 18 **16 : 10** प्रे 5 : 31; रोम 4 : 25 **16 : 11** यो 12 : 31; 14 : 30 **16 : 12** 1 कुर 3 : 1 **16 : 13** यो 14 : 26; 1 यो 2 : 27; प्रज्ञ 9 : 11

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सत्य में* तुम्हारा मार्गदर्शन करेगा; क्योंकि वह
अपनी ओर से नहीं कहेगा, बल्कि वह जो कुछ
सुनेगा, वही कहेगा और तुम्हें आने वाली बातों
के विषय में बतायेगा। 14वह मुझे महिमान्वित
करेगा, क्योंकि उसे मेरी ओर से जो मिला है,
वह तुम्हें वही बतायेगा। 15जो कुछ पिता का
है, वह मेरा है। इसलिये मैंने कहा कि उसे
मेरी ओर से जो मिला है, वह तुम्हें वही
बतायेगा।

दुःख, सुख में बदल जाएगा

16"थोड़े समय बाद तुम मुझे नहीं देखोगे
और फिर थोड़े ही समय बाद तुम मुझे
देखोगे।" 17इस पर येशु के कुछ शिष्यों ने
आपस में कहा, "वह हम से जो कह रहे हैं कि,
'थोड़े समय बाद तुम मुझे नहीं देखोगे और फिर
थोड़े समय बाद तुम मुझे देखोगे' और 'क्योंकि
मैं पिता के पास जा रहा हूँ' इसका क्या अर्थ
है?" 18शिष्यों ने कहा, "वह जो 'थोड़ा
समय' कहते हैं, इसका अर्थ क्या है? हम
उनकी बात नहीं समझ पा रहे हैं।"

19येशु जानते थे कि वे उनसे प्रश्न पूछना
चाहते हैं, अतः येशु ने उनसे कहा, "तुम
आपस में मेरे इस कथन के अर्थ पर विचार-
विमर्श कर रहे हो कि 'थोड़े समय बाद तुम मुझे
नहीं देखोगे और फिर थोड़े ही समय बाद मुझे
देखोगे'। 20मैं तुम से सच-सच कहता हूँ: तुम
रोओगे और विलाप करोगे, परन्तु संसार
आनन्द मनायेगा। तुम शोक करोगे, किन्तु
तुम्हारा शोक आनन्द में बदल जायेगा। 21प्रसव
निकट आने पर गर्भवती स्त्री को दुःख होता है,
क्योंकि उसका समय आ गया है; किन्तु शिशु
को जन्म देने के बाद वह अपनी वेदना भूल
जाती है, क्योंकि उसे आनन्द होता है कि संसार
में एक मनुष्य का जन्म हुआ है। 22इसी तरह
तुम लोग अभी दुःखी हो, किन्तु मैं तुम्हें फिर
देखूँगा और तुम्हारा मन आनन्दित होगा। तुम
से तुम्हारा आनन्द कोई छीन नहीं सकेगा।
23उस दिन तुम मुझ से कोई प्रश्न नहीं करोगे।
मैं तुम से सच-सच कहता हूँ: यदि तुम मेरे नाम
में पिता से कुछ मांगोगे, तो वह तुम्हें प्रदान
करेगा।+ 24अब तक तुमने मेरे नाम में कुछ नहीं
माँगा है। माँगो और तुम्हें मिलेगा, जिससे
तुम्हारा आनन्द परिपूर्ण हो।

मैंने संसार पर विजय पायी है

25"मैंने तुम से यह सब रूपकों में कहा है।
वह समय आ रहा है, जब मैं फिर तुम से रूपकों
में कुछ नहीं कहूँगा, बल्कि तुम्हें स्पष्ट शब्दों में
पिता के विषय में बताऊंगा। 26तुम उस दिन मेरे
नाम में मांगोगे। मैं नहीं कहता कि मैं तुम्हारे
लिए पिता से प्रार्थना करूँगा। 27पिता तो स्वयं
तुम्हें प्यार करता है, क्योंकि तुम मुझे प्यार करते
हो, और तुम ने यह विश्वास किया है कि मैं
परमेश्वर से आया हूँ। 28मैं पिता से निकल कर
संसार में आया हूँ। अब मैं फिर संसार को छोड़
कर पिता के पास जा रहा हूँ।"

29येशु के शिष्यों ने उन से कहा, "देखिए,
अब आप रूपकों में नहीं, बल्कि स्पष्ट शब्दों
में बोल रहे हैं। 30अब हम समझ गये हैं कि
आप सब कुछ जानते हैं और आपको
आवश्यकता नहीं कि कोई आपसे प्रश्न करे।
इसलिए हम विश्वास करते हैं कि आप
परमेश्वर से निकले हैं।

31येशु ने उन्हें उत्तर दिया, "क्या तुम अब
विश्वास करते हो? 32देखो! वह घड़ी आ रही
है, वरन् आ ही गयी है, जब तुम तितर-बितर
हो जाओगे और मुझे अकेला छोड़कर तुम सब
अपना-अपना मार्ग लोगे। फिर भी मैं अकेला
नहीं हूँ, क्योंकि पिता मेरे साथ है। 33मैंने तुम
से यह सब इसलिए कहा है कि तुम मुझ में
शान्ति प्राप्त कर सको। संसार में तुम्हें क्लेश

* पाठांतर "संपूर्ण सत्य तक" + पाठान्तर "यदि तुम पिता से कुछ मांगोगे, तो वह मेरे नाम में तुम्हें प्रदान करेगा।"

16 : 15 यो 17 : 10 **16 : 16** यो 14 : 19 **16 : 21** यश 26 : 17**16 : 22** यश 66 : 14 **16 : 23** यो 14 : 13-14, 20; 1 यो 5 : 14; मत 7 : 7; मक 11 : 24 **16 : 24** यो 15 : 11 **16 : 25** यो 10 : 6 **16 : 27** 14 : 21 **16 : 29** यो 16 : 25 **16 : 30** यो 2 : 25 **16 32** जक 13 : 7; मत 26 : 31, 45; मक 14 : 27, 50; यो 8 : 29 **16 : 33** यो 14 : 27; रोम 5 : 1; 1 यो 5 : 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सहना पड़ेगा। परन्तु धैर्य रखो; मैंने संसार पर
विजय पायी है।''

महापुरोहित मसीह की प्रार्थना

17 यह सब कहने के पश्चात् येशु अपनी
आँखें स्वर्ग की ओर उठा कर बोले,
''पिता! समय आ गया है। अपने पुत्र को
महिमान्वित कर, जिससे पुत्र तेरी महिमा करे।
2तूने उसे समस्त मानवजाति पर अधिकार दिया
है, जिससे वह उन सब को शाश्वत जीवन
प्रदान करे, जिन्हें तूने उसे सौंपा है। 3वे तुझे ,
एकमात्र सच्चे परमेश्वर को और येशु मसीह
को, जिसे तूने भेजा है, जान लें— यही शाश्वत
जीवन है।

4''जो कार्य तूने मुझे करने को दिया था, वह
मैंने पूरा किया और इस प्रकार पृथ्वी पर तेरी
महिमा की। 5अब तू, हे पिता! अपनी उपस्थिति
में मुझे उस महिमा से महिमान्वित कर, जो
संसार की उत्पत्ति से पहले तेरी उपस्थिति में
मेरी थी।

6''तूने जिन लोगों को संसार में से चुन कर
मुझे सौंपा, उन पर मैंने तेरा नाम प्रकट किया
है। वे तेरे थे। तूने उन्हें मुझे सौंपा और उन्होंने
तेरे वचन का पालन किया है। 7अब वे जानते
हैं कि जो कुछ तूने मुझे दिया है, वह तुझ से है।
8क्योंकि तूने जो सन्देश मुझे दिया, वह मैंने उन्हें
दे दिया। वे उसे ग्रहण कर सचमुच यह जान गये
कि मैं तुझ से आया हूँ और उन्होंने यह विश्वास
किया है कि तूने मुझे भेजा।

9''मैं उनके लिए प्रार्थना कर रहा हूँ। मैं
संसार के लिए नहीं, बल्कि उनके लिए प्रार्थना
कर रहा हूँ, जिन्हें तूने मुझे सौंपा है; क्योंकि वे
तेरे हैं। 10जो कुछ मेरा है, वह तेरा है और जो
तेरा है वह मेरा है। मैं उनमें महिमान्वित हुआ
हूँ।

11''अब मैं संसार में नहीं रहूँगा; परन्तु वे
संसार में रहेंगे और मैं तेरे पास आ रहा हूँ।
परमपावन पिता! अपने उस नाम में जो तूने मुझे
दिया है उन्हें सुरक्षित रख, जिससे वे एक हों
जैसे हम एक हैं। 12जब तक मैं उनके साथ रहा,
तेरे उस नाम में, जो तूने मुझे दिया है, मैंने उनकी
रक्षा की। विनाश के पुत्र को छोड़कर उन में
कोई भी नष्ट नहीं हुआ, जिससे धर्मग्रन्थ का
लेख पूरा हो।

13''परन्तु अब मैं तेरे पास आ रहा हूँ। जब
तक मैं संसार में हूँ, यह सब कह रहा हूँ जिससे
उन्हें मेरा आनन्द पूर्ण रूप से प्राप्त हो। 14मैंने
उन्हें तेरा वचन प्रदान किया है। संसार ने उनसे
बैर किया, क्योंकि जिस तरह मैं संसार का नहीं
हूँ, उसी तरह वे भी संसार के नहीं हैं। 15मैं यह
प्रार्थना नहीं करता कि तू उन्हें संसार से उठा ले,
बल्कि यह कि तू उन्हें बुराई* से बचा। 16वे संसार
के नहीं हैं, जिस तरह मैं संसार का नहीं हूँ।

17''तू सत्य से उन्हें पवित्र कर। तेरा वचन
सत्य है। 18जिस तरह तूने मुझे संसार में भेजा
है, उसी तरह मैंने भी उन्हें संसार में भेजा है।
19मैं उनके लिए अपने को समर्पित+ करता हूँ,
जिससे वे भी सत्य के द्वारा समर्पित हो जायें।

20''मैं न केवल उनके लिए प्रार्थना करता
हूँ, बल्कि उनके लिए भी जो उनका संदेश सुन
कर मुझ में विश्वास करेंगे, 21कि वे सब एक
हों। पिता! जिस तरह तू मुझ में है और मैं तुझ
में, उसी तरह वे भी हम में एक हों, जिससे
संसार यह विश्वास करे कि तूने मुझे भेजा है।

22''तूने मुझे जो महिमा प्रदान की, वह मैंने
उन्हें दे दी है, कि जैसे हम एक हैं, वैसे वे भी
एक हों: 23मैं उन में और तू मुझ में, जिससे वे
पूर्ण रूप से एक हो जायें और संसार यह जान
ले कि तूने मुझे भेजा है और जिस प्रकार तूने

* अथवा, ''दुष्ट शैतान'' + शब्दशः, ''पवित्र''

17 : 1 यो 11 : 41; 13 : 1 **17 : 2** मत 11 : 27 **17 : 3** 1 यो 5 : 20; 1 थिस 1 : 9; प्रज्ञ 15 : 3 **17 : 4** यो 4 : 34 **17 : 5** यो 1 : 1; 17 : 24; लि 2 : 6 **17 : 6** यो 17 : 9; मत 6 : 9 **17 : 8** यो 16 : 30 **17 : 9** यो 6 : 37, 44 **17 : 10** यो 16 : 15; लू 15 : 31 **17 : 11** यो 10 : 30; मत 6 : 13 **17 : 12** यो 6 : 39; भज 41 : 9; 109 : 8; 2 थिस 2 : 3 **17 : 13** यो 15 : 11 **17 : 14** यो 15 : 19 **17 : 15** 2 थिस 3 : 3; 1 यो 5 : 18; मत 6 : 13; लू 22 : 32 **17 : 17** यो 6 : 63 **17 : 18** यो 20 : 21 **17 : 19** इब्र 10 : 10 **17 : 20** यो 17 : 9**17 : 21** गल 3 : 28 **17 : 22** प्रे 4 : 32 **17 : 23** 1 कुर 6 : 17; गल 2 : 20

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
मुझ से प्रेम किया, उसी प्रकार उनसे भी प्रेम
किया है।
24“पिता! मैं चाहता हूँ कि तूने जिन्हें मुझे
सौंपा है, वे, जहाँ मैं हूँ, मेरे साथ रहें, जिससे
वे मेरी महिमा देख सकें, जो तूने मुझे प्रदान की
है; क्योंकि तूने संसार की नींव रखी जाने से पूर्व
मुझसे प्रेम किया है।
25“हे धर्ममय पिता! संसार ने तुझे नहीं
जाना। परन्तु मैंने तुझे जाना है और वे जान गये
कि तूने मुझे भेजा है। 26मैंने उन्हें तेरा नाम
बताया है और बताता रहूँगा, जिससे तूने जो प्रेम
मुझे दिया, वह प्रेम उनमें बना रहे और मैं भी
उन में बना रहूँ।”

येशु की गिरफ्तारी

18 यह सब कहने के पश्चात् येशु अपने
शिष्यों के साथ किद्रोन नाले के उस पार
गये। वहाँ एक उद्यान था। उन्होंने अपने शिष्यों
के साथ उसमें प्रवेश किया। 2उनके विश्वासघाती
यूदस को भी यह जगह मालूम थी, क्योंकि येशु
प्रायः अपने शिष्यों के साथ वहाँ जाते थे।
3इसलिए यूदस, सैन्यदल और महापुरोहितों
तथा फरीसियों के भेजे हुए सिपाहियों के साथ,
वहाँ आ पहुँचा। वे लालटेनें, मशालें और
हथियार लिये हुए थे। 4येशु, यह जान कर कि
उन पर क्या-क्या बीतेगी, आगे बढ़े और उन
से बोले, “किसे ढूँढ़ रहे हो?” 5उन्होंने उत्तर
दिया, “ येशु नासरी को।” येशु ने उनसे कहा,
“मैं वह हूँ।” वहाँ उनका विश्वासघाती यूदस
भी उन लोगों के साथ खड़ा था। 6जब येशु ने
उनसे कहा, “मैं वह हूँ”, तो वे पीछे हट कर
भूमि पर गिर पड़े। 7येशु ने उन से फिर पूछा,
“किसे ढूँढ़ रहे हो?” वे बोले, “येशु नासरी
को।” 8इस पर येशु ने कहा, “मैं तुम से कह
चुका हूँ कि वह मैं ही हूँ। यदि तुम मुझे ढूँढ़
रहे हो, तो इन्हें जाने दो।” 9यह इसलिए हुआ
कि येशु का यह कथन पूरा हो जाये: “तूने मुझ
को जिन्हें सौंपा, मैंने उनमें से एक को भी नष्ट
नहीं होने दिया।”
10सिमोन पतरस के पास एक तलवार थी।
उसने तलवार खींच ली और प्रधान महापुरोहित
के सेवक पर चला कर उसका दाहिना कान
उड़ा दिया। उस सेवक का नाम मलखुस था।
11येशु ने पतरस से कहा, “तलवार म्यान में रख
लो। जो प्याला पिता ने मुझे दिया है, क्या मैं
उसे नहीं पिऊँ?”
12तब सैन्यदल, सेना-नायक और यहूदी
सिपाहियों ने येशु को पकड़ कर बाँध लिया।
13वे उन्हें पहले महापुरोहित हन्ना के यहाँ ले
गये; क्योंकि वह उस वर्ष के प्रधान महापुरोहित
काइफा का ससुर था। 14यह वही काइफा था,
जिसने धर्मगुरुओं को यह परामर्श दिया था:
“अच्छा यही है कि जनता के लिए केवल एक
मनुष्य मरे।”

पतरस का अस्वीकरण

15सिमोन पतरस और एक दूसरा शिष्य येशु
के पीछे-पीछे चले। यह शिष्य महापुरोहित का
परिचित था। वह येशु के साथ महापुरोहित के
भवन के प्रांगण में गया, 16किन्तु पतरस द्वार के
पास बाहर खड़ा रहा। इसलिए वह दूसरा
शिष्य, जो महापुरोहित का परिचित था, फिर
बाहर गया और द्वारपाली से कह कर पतरस को
भीतर ले आया। 17लड़की ने, जो द्वारपाली थी,
पतरस से कहा, “कहीं तुम भी तो उस मनुष्य
के शिष्य नहीं हो?” उसने उत्तर दिया, “मैं नहीं
हूँ।” 18जाड़े के कारण सेवकों और सिपाहियों
ने कोयले की आग जला रखी थी, और खड़े-
खड़े आग ताप रहे थे। पतरस भी उनके साथ
आग ताप रहा था।

येशु प्रधान महापुरोहित के सामने

19महापुरोहित हन्ना ने येशु से उनके शिष्यों
और उनकी शिक्षा के विषय में पूछा। 20येशु ने
उत्तर दिया, “मैं संसार के सामने प्रकट रूप से

---

17 : 24 यो 10 : 29; 12 : 26; इफ 1 : 4 **18 : 1** मत 26 : 36; मक 14 : 32; लू 22 : 39; 2 शम 15 : 23 **18 : 2-11** मत 26 : 47-56; मक 14 : 43-52 लू 22 : 47-53 **18 : 2** लू 21 : 37 **18 : 4** यो 19 : 28 **18 : 9** यो 17 : 12 **18 : 11** मत 26 : 39 **18 : 12-27** मत 26 : 57-75; मक 14 : 53-72; लू 22 : 54-71 **18 : 14** यो 11 : 49-50 **18 : 15** यो 20 : 3; 21 : 20; प्रे 3 : 1 **18 : 20** यो 7 : 14, 26; मत 10 : 27

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बोला हूँ। मैंने सदा सभागृह और मन्दिर में, जहाँ
सब धर्मगुरु एकत्र हुआ करते हैं, शिक्षा दी है।
मैंने गुप्त रूप से कुछ नहीं कहा। 21यह आप
मुझ से क्यों पूछते हैं ? उन से पूछिए, जिन्होंने
मेरी शिक्षा सुनी है। वे जानते हैं कि मैंने क्या-
क्या कहा है।'' 22इस पर पास खड़े सिपाहियों
में से एक ने येशु को थप्पड़ मार कर कहा, ''तुम
महापुरोहित को इस तरह जवाब देते हो?''
23येशु ने उससे कहा, ''यदि मैंने अनुचित
कहा, तो सिद्ध करो कि मैंने अनुचित कहा और
यदि ठीक कहा, तो मुझे क्यों मारते हो?''
24इसके बाद हन्ना ने बाँधे हुए येशु को
प्रधान महापुरोहित काइफा के पास भेज दिया।

पतरस का पुनःअस्वीकरण

25सिमोन पतरस उस समय खड़ा-खड़ा
आग ताप रहा था। कुछ लोगों ने उससे कहा,
''कहीं तुम भी तो उसके शिष्य नहीं हो?''
उसने अस्वीकार करते हुए कहा, ''मैं नहीं
हूँ।'' 26महापुरोहित का एक सेवक उस व्यक्ति
का सम्बन्धी था, जिसका कान पतरस ने उड़ा
दिया था। उसने कहा, ''क्या मैंने तुम को उसके
साथ बगीचे में नहीं देखा था?'' 27पतरस ने
फिर अस्वीकार किया और उसी क्षण मुर्गे ने
बाँग दी।

रोमन राज्यपाल पिलातुस के सामने

28तब वे येशु को काइफा के यहाँ से राज-
भवन ले गये। अब प्रातःकाल हो गया था।
यहूदी धर्मगुरु राजभवन के अन्दर इसलिए नहीं
गये कि गैर-यहूदियों के सम्पर्क से अशुद्ध न
हो जायें, बल्कि पास्का (फसह) पर्व का भोज
खा सकें।
29इसलिए राज्यपाल पिलातुस बाहर आ
कर उनसे मिला और बोला, ''तुम लोग इस
मनुष्य पर कौन-सा अभियोग लगाते हो?''
30उन्होंने उत्तर दिया, ''यदि यह कुकर्मी नहीं
होता, तो हम इसे आपके हवाले नहीं करते।''
31पिलातुस ने उन से कहा, ''तुम लोग इसे ले
जाओ और अपनी व्यवस्था के अनुसार इसका
न्याय करो।'' यहूदी धर्मगुरुओं ने उत्तर दिया,
''हमें किसी को प्राणदण्ड देने का अधिकार
नहीं है।'' 32यह इसलिए हुआ कि येशु का वह
कथन पूरा हो जाये, जिसके द्वारा उन्होंने संकेत
किया था कि वह किस प्रकार की मृत्यु से
मरेंगे।
33तब पिलातुस फिर राजभवन में गया और
येशु को बुला कर उनसे पूछा ''क्या तुम
यहूदियों के राजा हो?'' 34येशु ने उत्तर दिया,
''क्या आप यह अपनी ओर से कह रहे हैं या
दूसरों ने आप से मेरे विषय में यह कहा है?''
35पिलातुस ने कहा, ''क्या मैं यहूदी हूँ? तुम्हारी
ही जाति के लोगों और महापुरोहितों ने तुम्हें मेरे
हवाले किया है। तुमने क्या किया है ?'' 36येशु
ने उत्तर दिया, ''मेरा राज्य इस संसार का नहीं
है। यदि मेरा राज्य इस संसार का होता, तो मेरे
अनुयायी लड़ते और मैं धर्मगुरुओं के हवाले
नहीं किया जाता। परन्तु मेरा राज्य यहाँ का नहीं
है।'' 37इस पर पिलातुस ने उनसे कहा, ''तो,
तुम राजा हो?'' येशु ने उत्तर दिया, ''आप ही
कह रहे हैं कि मैं राजा हूँ। मैं इसलिए जन्मा और
इसलिए संसार में आया हूँ कि सत्य के विषय
में साक्षी दूँ। जो सत्य का है, वह मेरी वाणी
सुनता है।'' 38पिलातुस ने उन से पूछा, ''सत्य
क्या है?'' वह यह कह कर फिर बाहर गया
और धर्मगुरुओं के पास आ कर बोला, ''मैं
उसमें कोई दोष नहीं पाता हूँ। 39तुम्हारी एक
प्रथा है: मैं तुम्हारे लिए पास्का (फसह) पर्व
के अवसर पर एक बन्दी को रिहा करता हूं।
क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए यहूदियों
के राजा को रिहा कर दूँ?'' 40वे पुनः चिल्लाकर
बोले, ''इसे नहीं, बल्कि बरअब्बा को।'' और
बरअब्बा एक डाकू था।

काँटों का मुकुट

19 तब पिलातुस ने येशु को ले जा कर
कोड़े लगवाए। 2सैनिकों ने काँटों का

---

18 : 22 यो 19 : 3; प्रे 23 : 2 **18 : 28-19 : 15** मत 27 : 2,11-30; मक 15 : 1-19; लू 23 : 1-25 **18 :31** यो 19 : 6-7; प्रे 18 : 15 **18 : 32** यो 12 : 32-33; मत 20 : 19 **18 : 34** मत 16 : 13 **18 : 35** यो : 11; मत 21 : 39 **18 : 37** यो 8 : 47; 10 : 27; 1 तिम 6 : 13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मुकुट गूँथ कर उनके सिर पर रखा और उन्हें राजसी बैंगनी वस्त्र पहनाया। 3फिर वे उनके पास आकर कहने लगे, "यहूदियों के राजा, प्रणाम!" उन्होंने येशु को थप्पड़ मारे।

प्राणदण्ड की आज्ञा

4पिलातुस फिर राजभवन के बाहर गया और लोगों से बोला, "देखो, मैं उसे तुम लोगों के सामने बाहर ला रहा हूँ, जिससे तुम यह जान लो कि मैं उसमें कोई दोष नहीं पाता।" 5तब येशु काँटों का मुकुट और राजसी बैंगनी वस्त्र पहने बाहर आये। पिलातुस ने लोगों से कहा, "देखो, यह मनुष्य!" 6महापुरोहित और सिपाही उन्हें देखते ही चिल्ला उठे, "इसे क्रूस पर चढ़ाओ! इसे क्रूस पर चढ़ाओ!" पिलातुस ने उन से कहा, "इसे तुम्हीं ले जाओ और क्रूस पर चढ़ाओ। मैं तो इस में कोई दोष नहीं पाता।" 7यहूदी धर्मगुरुओं ने उत्तर दिया, "हमारी एक व्यवस्था है और उस व्यवस्था के अनुसार यह प्राणदण्ड के योग्य है, क्योंकि यह स्वयं को परमेश्वर का पुत्र मानता है।" 8पिलातुस यह सुन कर और भी डर गया। 9उसने फिर राजभवन के अन्दर जा कर येशु से पूछा, "तुम कहाँ के हो?" किन्तु येशु ने उसे उत्तर नहीं दिया। 10इस पर पिलातुस ने उनसे कहा, "तुम मुझ से क्यों नहीं बोलते? क्या तुम यह नहीं जानते कि मुझे तुम को रिहा करने का अधिकार है और तुम को क्रूस पर चढ़ाने का भी अधिकार है?" 11येशु ने उत्तर दिया, "यदि आप को ऊपर से अधिकार न दिया गया होता, तो आपका मुझ पर कोई अधिकार नहीं होता। इसलिए जिसने मुझे आपके हाथ सौंपा है, उसका पाप अधिक है।"

12इस पर पिलातुस येशु को छोड़ देने का और भी प्रयत्न करने लगा। पर यहूदी धर्मगुरुओं ने चिल्लाकर कहा, "यदि आप इसे रिहा करते हैं, तो आप रोमन सम्राट के हितैषी नहीं हैं। जो अपने को राजा कहता है, वह सम्राट का विरोध करता है।" 13यह सुन कर पिलातुस ने येशु को बाहर ले आने का आदेश दिया। वह उस स्थान पर, जो "चबूतरा*" और इब्रानी में "गब्बथा" कहलाता है, न्यायासन पर बैठ गया** 14पास्का (फसह) पर्व की तैयारी का दिन था। लगभग दोपहर का समय था।

पिलातुस ने यहूदी धर्मगुरुओं से कहा, "यही है तुम्हारा राजा!" 15इस पर वे चिल्ला उठे, "इसे ले जाओ! इसे ले जाओ! इसे क्रूस पर चढ़ाओ!" पिलातुस ने उन से कहा, "क्या मैं तुम्हारे राजा को क्रूस पर चढ़ा दूँ?" महापुरोहितों ने उत्तर दिया, "रोमन सम्राट के अतिरिक्त हमारा कोई राजा नहीं है।" 16तब पिलातुस ने येशु को क्रूस पर चढ़ाने के लिए उनके हवाले कर दिया।

क्रूस पर चढ़ाया जाना

17वे येशु को ले चले। येशु अपना क्रूस उठाए हुए बाहर निकले, और उस स्थान को गए, जो "खोपड़ी" और इब्रानी में "गुलगुता" का स्थान कहलाता है। 18वहाँ उन्होंने येशु को और उनके साथ और दो व्यक्तियों को क्रूस पर चढ़ाया: एक को इस ओर, दूसरे को उस ओर और बीच में येशु को।

19पिलातुस ने एक दोषपत्र भी लिखवा कर क्रूस पर लगवा दिया। वह इस प्रकार था: "येशु नासरी, यहूदियों का राजा।" 20बहुत यहूदियों ने यह दोषपत्र पढ़ा; क्योंकि वह स्थान, जहाँ येशु क्रूस पर चढ़ाये गये थे, शहर के पास ही था और दोषपत्र इब्रानी, लातीनी और यूनानी भाषाओं में लिखा हुआ था। 21इसलिए यहूदी महापुरोहितों ने पिलातुस से कहा, "आप यह नहीं लिखिए: 'यहूदियों का राजा'; बल्कि 'इसने कहा था कि मैं यहूदियों का राजा हूँ'।" 22पिलातुस ने उत्तर दिया, "मैंने जो लिख दिया, वह लिख दिया।"

---

* मूल में, "लिथोस्त्रोतुस" अर्थात् "पत्थर बैठा कर बनाया गया पर्श" ** अथवा, "उसने .....येशु को न्यायासन पर बैठाया"

19 : 3 यो 18 : 22 **19 : 7** यो 5 : 18; 10 : 33; लेव 24 : 16 **19 : 11** यो 10 : 18; प्रे 2 : 23; प्रज्ञ 6 : 3
19 : 12 प्रे 17 : 7 **19 : 15** यो 19 : 6 **19 : 16-30** मत 27 : 31-50; मक 15 : 20-37; लू 23 : 26-46

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

23येशु को क्रूस पर चढ़ाने के बाद सैनिकों
ने उनके वस्त्र ले लिये और अंगरखा +को
छोड़कर उन वस्त्रों के चार भाग कर दिये—
सैनिक के लिए एक-एक भाग। इस अंगरखा
में सीवन नहीं था, वह ऊपर से नीचे तक पूरा-
का-पूरा बुना हुआ था। 24उन्होंने आपस में
कहा, "हम इसे नहीं फाड़ें, बल्कि इस पर
चिट्ठी डालें कि यह किस को मिले।" यह
इसलिए हुआ कि धर्मग्रन्थ का यह कथन पूरा
हो जाये: "उन्होंने मेरे कपड़े आपस में बाँट
लिये और मेरे वस्त्र पर चिट्ठी डाली।" सैनिकों
ने ऐसा ही किया।

येशु की माता

25येशु की माता, उनकी माँ की बहन,
क्लोपास की पत्नी मरियम और मरियम
मगदलेनी उनके क्रूस के पास खड़ी थीं। 26येशु
ने अपनी माता को और उनके पास खड़े
अपने उस शिष्य को, जिस से येशु प्रेम करते
थे, देखा । उन्होंने अपनी माता से कहा, "हे
नारी! देखिए, यह आपका पुत्र है।" 27इसके
पश्चात् उन्होंने उस शिष्य से कहा, "देखो, यह
तुम्हारी माँ हैं।" उसी समय से वह शिष्य
मरियम को अपने घर ++ले गया।

येशु की मृत्यु

28तब येशु ने यह जान कर कि अब सब कुछ
पूरा हो चुका है, धर्मग्रन्थ का लेख पूरा करने
के उद्देश्य से कहा, "मैं प्यासा हूँ।" 29वहां
अम्लरस* से भरा एक पात्र रखा हुआ था।
उन्होंने उसमें एक पनसोख्ता डुबाया और उसे
जूफे की डण्डी पर रख कर येशु के मुख से लगा
दिया। 30येशु ने अम्लरस ग्रहण कर कहा,
"सब पूरा हुआ।" और सिर झुका कर अपना
प्राण त्याग दिया। **

भाले से बेधा जाना

31यह विश्राम-दिवस से पूर्व तैयारी का
दिन*** था। यहूदी धर्मगुरु यह नहीं चाहते थे
कि शरीर विश्राम के दिन क्रूस पर टंगे रहें;
क्योंकि वह विश्राम-दिवस त्योहार के कारण
एक प्रमुख दिन था। इसलिए उन्होंने पिलातुस
से निवेदन किया कि उन व्यक्तियों की टांगें
तोड़ दी जायें और उनके मृत शरीर हटा दिये
जायें। 32इसलिए सैनिकों ने आ कर येशु के
साथ क्रूस पर चढ़ाये हुए पहले व्यक्ति की टांगें
तोड़ दीं, फिर दूसरे की। 33जब उन्होंने येशु के
पास आ कर देखा कि वह मर चुके हैं, तो
उन्होंने उनकी टाँगें नहीं तोड़ीं; 34लेकिन एक
सैनिक ने उनकी पसली में भाला मारा और
उसमें से तुरन्त रक्त और जल बह निकला।
35जिसने यह देखा है, उसने इसकी साक्षी
दी है और उसकी साक्षी सच्ची है। वह जानता
है कि वह सच बोल रहा है, जिससे आप भी
विश्वास करें। 36यह इसलिए हुआ कि धर्मग्रन्थ
का यह कथन पूरा हो जाये, "उसकी एक भी
हड्डी नहीं तोड़ी जायेगी;" 37फिर धर्मग्रन्थ का
एक दूसरा कथन इस प्रकार है, "उन्होंने जिसे
बेधा है वे उसी की ओर देखेंगे।"

कबर में रखा जाना

38इसके पश्चात् अरिमतियाह गाँव के यूसुफ
ने, जो यहूदी धर्मगुरुओं के भय के कारण येशु
का गुप्त शिष्य था, पिलातुस से येशु के शरीर
को उतार लेने की अनुमति माँगी। पिलातुस ने
अनुमति दे दी। अत: यूसुफ आ कर येशु के
शरीर को ले गया। 39निकोदेमुस भी पहुँचा, जो
पहले रात के समय येशु से मिलने आया था।
वह लगभग तैंतीस किलो गन्धरस और अगरु
का सम्मिश्रण लाया। 40उन्होंने येशु का शरीर
लिया और यहूदियों की गाड़ने की प्रथा के
अनुसार, उसे सुगन्धित द्रव्यों के साथ पट्टियों
में लपेटा।
41जहाँ येशु क्रूस पर चढ़ाये गये थे, वहाँ एक
उद्यान था और उस उद्यान में एक नयी कबर
थी, जिस में अब तक कोई नहीं रखा गया था।

+ अथवा, "कुरते" ++ शब्दश: "अपनों में" * अथवा, "सिरका" ** शब्दश:, "आत्मा को सौंप दिया"
*** अर्थात् शुक्रवार

19 : 24 भज 22 : 18 **19 : 26** यो 13 : 23 **19 : 28** यो 13 : 3; 18 : 4; भज 22 : 15 **19 : 29** भज 69 : 21
19 : 31 व्य 21 : 23 **19 : 36** नि 12 : 46; गण 9 : 12; भज 34 : 20 **19 : 37** जक 12 : 10; प्रक 1 : 7
19 : 38-42 मत 27 : 57-61; मक 15 : 42-47; लू 23 : 50-55 **19 : 39** यो 3 : 2; मत 2 : 11

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

42उन्होंने येशु को वहीं रख दिया, क्योंकि यह
यहूदियों के लिए विश्राम-दिवस की तैयारी का
दिन था और वह कबर निकट ही थी।

येशु का पुनरुत्थान

20 मरियम मगदलेनी सप्ताह के प्रथम
दिन, तड़के मुँह अंधेरे ही, कबर के
पास पहुँची। उसने देखा कि कबर पर से पत्थर
हटा हुआ है। 2यह देखकर वह दौड़ती हुई
सिमोन पतरस तथा उस दूसरे शिष्य के पास
आई, जिसे येशु प्यार करते थे। मरियम ने उनसे
कहा, ''वे प्रभु को कबर में से उठा ले गये हैं
और हम नहीं जानतीं कि उन्होंने उनको कहाँ
रखा है।''

3पतरस और वह दूसरा शिष्य कबर की ओर
चल पड़े। 4वे दोनों साथ-साथ दौड़े। दूसरा
शिष्य पतरस को पीछे छोड़कर आगे निकल
गया और कबर पर पहले पहुँचा। 5उसने झुक
कर यह देखा कि पट्टियां पड़ी हुई हैं, किन्तु वह
कबर के भीतर नहीं गया। 6सिमोन पतरस उसके
पीछे पहुँचा और कबर के अन्दर गया। उसने
देखा कि पट्टियाँ पड़ी हुई हैं 7और येशु के सिर
पर जो अँगोछा बंधा था, वह पट्टियों के साथ
नहीं, बल्कि दूसरी जगह तह किया हुआ अलग
रखा हुआ है। 8तब वह दूसरा शिष्य भी, जो
कबर पर पहले पहुँचा था, भीतर गया। उसने
देखा और विश्वास किया, 9क्योंकि वे अब तक
धर्मग्रन्थ का वह लेख नहीं समझ पाये थे,
जिसके अनुसार येशु का मृतकों में से जी उठना
अनिवार्य था। 10इसके पश्चात् शिष्य अपने-
अपने घर लौट गये।

मरियम मगदलेनी को दर्शन

11मरियम कबर के पास, बाहर रोती हुई
खड़ी रही। उसने रोते-रोते झुक कर कबर के
भीतर दृष्टि डाली 12और जहाँ येशु का शरीर
रखा हुआ था, वहाँ श्वेत वस्त्र पहने दो
स्वर्गदूतों को बैठा हुआ देखा: एक को सिरहाने
और दूसरे को पैताने। 13दूतों ने उस से कहा,
''हे महिला! आप क्यों रो रही हैं?'' उसने उत्तर
दिया, ''वे मेरे प्रभु को उठा ले गये हैं और मैं
नहीं जानती कि उन्होंने उन को कहाँ रखा
है।'' 14वह यह कह कर मुड़ी और उसने येशु
को वहाँ खड़े हुये देखा, किन्तु वह उन्हें पहचान
नहीं सकी कि वह येशु हैं। 15येशु ने उससे
कहा, ''हे महिला! आप क्यों रो रही हैं? आप
किसे ढूँढ़ रही हैं?'' मरियम ने उन्हें माली
समझा और यह कहा, ''महोदय! यदि आप
उन्हें उठा ले गये हैं, तो मुझे बता दीजिए कि
आपने उन्हें कहाँ रखा है और मैं उन्हें ले
जाऊँगी।'' 16इस पर येशु ने उससे कहा,
''मरियम!'' उसने मुड़ कर इब्रानी+ में उनसे
कहा, ''रब्बोनी'', अर्थात् ''गुरुवर''। 17येशु
ने उससे कहा, ''चरणों से लिपट कर मुझे मत
रोको*। मैं अब तक पिता के पास, ऊपर नहीं
गया हूँ। मेरे भाइयों के पास जाओ, और उनसे
यह कहो कि मैं अपने पिता और तुम्हारे पिता,
अपने परमेश्वर और तुम्हारे परमेश्वर के पास
ऊपर जा रहा हूँ।'' 18मरियम मगदलेनी ने जा
कर शिष्यों को यह संदेश दिया, ''मैंने प्रभु को
देखा है और उन्होंने मुझसे ये बातें कही हैं।''

प्रेरितों को दर्शन

19उसी दिन, अर्थात् सप्ताह के प्रथम दिन,
सन्ध्या समय, जब शिष्य यहूदी धर्मगुरुओं के
भय से द्वार बन्द किये एकत्र थे, येशु उनके बीच
आ कर खड़े हो गये। उन्होंने शिष्यों से कहा,
''तुम्हें शान्ति मिले!'' 20और यह कह कर उन्हें
अपने हाथ और अपनी पसली दिखायी। प्रभु
को देख कर शिष्य आनन्दित हो उठे। 21येशु
ने उन से फिर कहा, ''तुम्हें शान्ति मिले! जिस
प्रकार पिता ने मुझे भेजा है, उसी प्रकार मैं तुम्हें
भेजता हूँ।'' 22यह कर येशु ने उन पर श्वास
फूंका, और कहा, ''पवित्र आत्मा को ग्रहण
करो! 23तुम जिन लोगों के पाप क्षमा करोगे,

+ अथवा, ''अरामी'' *शाब्दशः, ''मुझे स्पर्श मत करो''

20 : 1-18 मत 28 : 1-10; मक 16 : 1-11; लू 24 : 1-12 20 : 2 यो 13 : 23 20 : 7 यो 11 : 44 20 : 9 1 कुर 15 : 4; प्रे 2 : 24-32 20 : 17 इब्र 2 : 11-12; रोम 8 : 29 20 : 19-23 मक 16 : 14-18; लू 24 : 36-49 20 : 20 1 यो 1 : 1 20 : 21 यो 17 : 18 20 : 22 उत 2 : 7 20 :23 मत 16 : 19; 18 : 18

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वे क्षमा किए गए और जिन लोगों के पाप क्षमा
नहीं करोगे, वे क्षमा नहीं होंगे।*''

थोमस को दर्शन

24किन्तु जब येशु आये थे, उस समय बारहों
में से एक, थोमस, जो दिदिमुस कहलाता था,
उनके साथ नहीं था। 25दूसरे शिष्यों ने उससे
कहा, ''हमने प्रभु को देखा है।'' उसने उत्तर
दिया, '' जब तक मैं उनके हाथों में कीलों का
निशान न देख लूँ, कीलों की जगह पर अपनी
उँगली न रख दूँ और उनकी पसली में अपना
हाथ न डाल दूँ, तब तक मैं विश्वास नहीं
करूंगा।''

26आठ दिन के पश्चात् येशु के शिष्य फिर
घर के भीतर एकत्र थे और थोमस उनके साथ
था। यद्यपि द्वार बन्द थे, फिर भी येशु आये और
उनके बीच खड़े हो गये और बोले, ''तुम्हें
शान्ति मिले!'' 27तब उन्होंने थोमस से कहा,
''अपनी उँगली यहाँ रखो। देखो, ये मेरे हाथ
हैं। अपना हाथ बढ़ा कर मेरी पसली में डालो
और अविश्वासी नहीं, बल्कि विश्वासी
बनो।'' 28थोमस ने उत्तर दिया, ''हे मेरे प्रभु!
हे मेरे परमेश्वर!'' 29येशु ने उससे कहा, ''क्या
तुम इसलिए विश्वास करते हो कि तुमने मुझे
देखा है? धन्य हैं वे जिन्होंने मुझे नहीं देखा,
तो भी विश्वास करते हैं!''

शुभ समाचार लिखने का प्रयोजन

30येशु ने अपने शिष्यों के सामने और अनेक
आश्चर्यपूर्ण चिह्न दिखाये, जिनका विवरण इस
पुस्तक में नहीं दिया गया है। 31 किन्तु इनका
विवरण इसलिए दिया गया है, जिससे आप
विश्वास करें कि येशु ही मसीह, परमेश्वर के
पुत्र हैं और अपने इस विश्वास के द्वारा उनके
नाम से जीवन प्राप्त करें।

तिबेरियस झील के तट पर दर्शन

21 इसके पश्चात् येशु ने तिबेरियस झील
के तट पर पुनः अपने आपको शिष्यों
पर प्रकट किया। यह इस प्रकार हुआ।

2सिमोन पतरस, थोमस जो दिदिमुस
कहलाता था, नतनएल जो गलील प्रदेश के
काना नगर का निवासी था, जबदी के दो पुत्र
और येशु के दो अन्य शिष्य एकत्र थे। 3सिमोन
पतरस ने उन से कहा, ''मैं मछली पकड़ने जा
रहा हूँ।'' वे उससे बोले, ''हम भी तुम्हारे साथ
चलते हैं।'' वे चल पड़े और नाव पर सवार
हुए, किन्तु उस रात उन्हें कुछ नहीं मिला।

4सबेरा हो ही रहा था कि येशु तट पर आ
खड़े हुए; किन्तु शिष्य उन्हें नहीं पहचान सके
कि वह येशु हैं। 5येशु ने उनसे कहा, ''बच्चो!
क्या तुम्हारे पास खाने को कुछ है?'' उन्होंने
उत्तर दिया, ''कुछ नहीं ।'' 6इस पर येशु ने
उनसे कहा, ''नाव की दाहिनी ओर जाल
डालो, तो तुम्हें मिलेगा।'' उन्होंने जाल डाला
और इतनी मछलिया फंस गयीं कि वे जाल नहीं
निकाल सके।

7तब उस शिष्य ने, जिस से येशु प्रेम करते
थे, पतरस से कहा, ''यह तो प्रभु हैं।'' जब
सिमोन पतरस ने सुना कि यह प्रभु हैं, तो उसने
कमर में अपना अंगरखा कस लिया, क्योंकि
वह वस्त्र नहीं पहने था; और वह झील में कूद
पड़ा। 8दूसरे शिष्य मछलियों से भरा जाल
खींचते हुए नाव+ पर आये। वे किनारे से
अधिक दूर नहीं, केवल सौ मीटर दूर थे।

9उन्होंने तट पर उतर कर वहाँ कोयले की
आग पर रखी हुई मछली और रोटी देखी।
10येशु ने उनसे कहा ''तुमने अभी जो मछलियाँ
पकड़ी हैं, उनमें से कुछ ले आओ।'' 11सिमोन
पतरस नाव पर चढ़कर जाल किनारे खींच
लाया। उस में एक सौ तिरपन बड़ी-बड़ी
मछलियाँ थीं और इतनी मछलियाँ होने पर भी
जाल नहीं फटा था। 12येशु ने उन से कहा,
''आओ, जलपान कर लो।'' शिष्यों में किसी
को भी येशु से यह पूछने का साहस नहीं हुआ

*अक्षरशः 'जिनके पाप तुम रखो वे रखे गए हैं।' + अथवा, ''डोंगी''

20 : 24 यो 11 : 16; 14 : 5 **20 : 25** यो 19 : 34 **20 : 26** यो 20 : 19 **20 : 28** यो 1 : 1 **20 : 29** 1 पत 1 : 8 **20 : 31** यो 5 : 13; रोम 1 : 17 **21 : 2** यो 1 : 45 **21 : 4** यो 20 : 14; लू 24 : 16 **21 : 5** लू 24 : 41 **21 :6** लू 5 : 4-7 **21 : 7** यो 13 : 23

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कि आप कौन हैं क्योंकि वे जानते थे कि वह
प्रभु हैं। [13]येशु आये। उन्होंने रोटी ले कर उन्हें
दी और इसी तरह मछली भी।
[14]इस प्रकार मृतकों में से जी उठने के
पश्चात् यह तीसरी बार येशु ने शिष्यों को दर्शन
दिया।

पतरस को अन्तिम आदेश

[15]जलपान के बाद येशु ने सिमोन पतरस से
कहा, "सिमोन, योहन के पुत्र! क्या इनकी
अपेक्षा तुम मुझसे अधिक प्रेम करते हो?"
उसने उन्हें उत्तर दिया, "जी हाँ, प्रभु! आप
जानते हैं कि मैं आप को प्यार करता हूँ।"
उन्होंने पतरस से कहा, "मेरे मेमनों को
चराओ।" [16]येशु ने दूसरी बार उससे कहा,
"सिमोन, योहन के पुत्र! क्या तुम मुझ से प्रेम
करते हो?" उसने उत्तर दिया, "जी हाँ, प्रभु!
आप जानते हैं कि मैं आप को प्यार करता
हूँ।" उन्होंने पतरस से कहा, "मेरी भेड़ों की
रखवाली करो।" [17]येशु ने तीसरी बार उससे
कहा, "सिमोन, योहन के पुत्र! क्या तुम मुझे
प्यार करते हो?" पतरस को इससे दु:ख हुआ
कि उन्होंने तीसरी बार उससे यह पूछा, "क्या
तुम मुझे प्यार करते हो?"। उसने येशु से कहा,
"प्रभु! आप तो सब कुछ जानते हैं। आप जानते
हैं कि मैं आप को प्यार करता हूँ।" येशु ने उससे
कहा, "मेरी भेड़ों को चराओ।
[18]"मैं तुम से सच-सच कहता हूँ: जब तुम
युवा थे तब तुम स्वयं अपनी कमर कस कर
जहाँ चाहते थे, वहाँ घूमते- फिरते थे। किन्तु
जब तुम वृद्ध होगे, तब तुम अपने हाथ
फैलाओगे और दूसरा व्यक्ति तुम्हारी कमर
कस कर तुम्हें वहाँ ले जायेगा, जहाँ तुम जाना
नहीं चाहते।"
[19]इन शब्दों से येशु ने संकेत किया कि किस
प्रकार की मृत्यु से पतरस परमेश्वर की महिमा
करेगा। येशु ने अन्त में पतरस से कहा, "मेरा
अनुसरण करो।"

प्रिय शिष्य का भविष्य

[20]पतरस ने मुड़ कर उस शिष्य को पीछे-
पीछे आते देखा, जिससे येशु प्रेम करते थे और
जिसने भोजन के समय उनकी छाती पर झुक
कर पूछा था, "प्रभु! वह कौन है, जो आप को
पकड़वायेगा?"
[21]पतरस ने उसे देख कर येशु से पूछा,
"प्रभु! इसका क्या होगा?" [22]येशु ने उसे
उत्तर दिया, "यदि मेरी इच्छा हो कि यह मेरे
आने तक रहे, तो इस से तुम्हें क्या? तुम मेरा
अनुसरण करो।"
[23]यह बात भाई-बहिनों में फैल गयी कि
वह शिष्य नहीं मरेगा। परन्तु येशु ने यह नहीं
कहा था कि "यह नहीं मरेगा", बल्कि यह कि
"यदि मेरी इच्छा हो कि यह मेरे आने तक रहे,
तो इससे तुम्हें क्या?"

उपसंहार

[24]यह वही शिष्य है, जो इन बातों के विषय
में साक्षी दे रहा है और जिसने इन बातों का
विवरण लिखा है। हम जानते हैं कि उसकी
साक्षी सत्य है।
[25]येशु ने और भी अनेक कार्य किये हैं। यदि
एक-एक कर उनका वर्णन किया जाता, तो मैं
समझता हूँ कि जो पुस्तकें लिखी जातीं, वे
संसार भर में भी नहीं समा पातीं।

---

21 :14 यो 20 : 19 : 26 **21 : 15** यो 1 : 42; मत 16 : 19; लू 22 : 32 **21 : 16** 1 पत 5 : 2, 4 **21 : 17** यो 13 : 38; 16 : 30 **21 : 18** मत 26 : 39; 16 : 22 **21 : 19** यो 13 : 36; 2 पत 1 : 14 **21 : 20** यो 13 : 23 **21 : 24** यो 15 : 27; 19 : 35; 1 :14 **21 : 25** यो 20 : 30

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रेरितों के कार्य-कलाप

पुस्तक परिचय

"संत लूकस के अनुसार शुभ समाचार" ग्रन्थ का अगला भाग है **"प्रेरितों के कार्य-कलाप"**। संत लूकस ने प्रस्तुत ग्रंथ में मुख्य रूप से यह बताया है कि प्रभु येशु का शुभ संदेश आरंभिक अनुयायियों द्वारा पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन में किस प्रकार "यरूशलेम में, समस्त यहूदा प्रदेश में, सामरी प्रदेश में और पृथ्वी के सीमांत तक फैल गया" (1: 8)। यह पुस्तक मसीही आंदोलन का क्रमबद्ध विवरण है, जो यहूदी लोगों में आरंभ हुआ था और बाद में भूमध्यसागर-तट के तीनों महाद्वीपों में नवीन धर्म-विश्वास, नये पंथ के रूप में फैल गया।

लेखक संत लूकस अपने पाठकों को यह विश्वास दिलाते हैं कि ये मसीही लोग राजनैतिक-क्रांतिकारी अथवा राज्य -विद्रोही नहीं थे, जिससे वे तत्कालीन रोमन साम्राज्य के लिए संकट बन जाते। वस्तुत: यह मसीही विश्वास यहूदी धर्मग्रंथों में निहित प्रतिज्ञाओं की परिपूर्णता है और अब ग़ैर-यहूदियों को भी परमेश्वर का मुक्ति-संदेश प्राप्त है (28 : 28)।

प्रस्तुत ग्रन्थ की विषय-सामग्री को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है। प्रत्येक भाग में यह बताया गया है कि प्रभु येशु का शुभ संदेश स्थान-विशेष में किस प्रकार सुनाया गया और वहाँ किस प्रकार कलीसिया की स्थापना हुई, और यह आंदोलन कैसे एक नगर से दूसरे नगर में फैलता गया।

पहला भाग : प्रभु येशु के स्वर्गारोहण के पश्चात् यरूशलेम नगर में मसीही धर्म-आन्दोलन का आरंभ (अध्याय 1 से 5)।

दूसरा भाग : इस्राएल देश तथा पड़ोसी देशों के अन्य नगरों की ओर मसीही धर्म-आंदोलन का प्रसार (अध्याय 6 से 12)।

तीसरा भाग : भूमध्यसागर के आसपास के नगरों में, रोमन साम्राज्य की राजधानी रोम तक मसीही धर्म-आन्दोलन का विस्तार (अध्याय 13 से 28 तक)।

प्रथम दो भागों में प्रेरित-सन्त पतरस के कार्यों एवं उपदेशों को अधिक महत्व दिया गया है। तीसरे भाग में धर्म-प्रचार की यात्राओं के विवरण में सन्त पौलुस को मुख्य पात्र बनाया गया है। लेकिन **"प्रेरितों के कार्य-कलाप"** ग्रन्थ की प्रमुख विशेषता है—**पवित्र आत्मा के कार्य-कलापों का उल्लेख।** पवित्र आत्मा पेंतेकोस्त (सप्त-सप्ताह) के पर्व पर यरूशलेम नगर में प्रभु येशु के अनुयायियों पर सामर्थ्य के साथ अवतरित हुआ, और पुस्तक के आदि से अन्त तक कलीसिया तथा उसके अगुओं का मार्गदर्शन करता रहा और घोर अत्याचार के समय भी उन्हें सबल बनाता रहा।

प्रस्तुत ग्रन्थ में अनेक प्रवचन हैं जो वास्तव में आरंभिक मसीही शुभ संदेश का सार-रूप हैं। इस ग्रंथ में जिन घटनाओं का उल्लेख किया गया है, उनमें मसीह के शुभ संदेश का सामर्थ्य प्रकट होता है। साथ ही यह भी कि विश्वासियों के जीवन और कलीसिया की सहभागिता पर शुभ संदेश का कितना अधिक प्रभाव पड़ा था। अत: पाठकों को आदर्श मसीही जीवन की व्यावहारिक शिक्षा मिलती है: "सब विश्वासी एक-हृदय थे। उनके पास जो कुछ था, उसमें सब का साझा था" (2:44; 4 : 32)।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

विषय-वस्तु की रूपरेखा

साक्षी देने की तैयारी	1 :1-26
(क) प्रभु येशु का अंतिम आदेश	1 :1-14
(ख) यूदस [यहूदा] इस्करियोती का उत्तराधिकारी	1 :15-26
यरूशलेम में साक्षी देना	2 :1-5 : 42
धर्मसेवक स्तीफनुस की हत्या से धर्मप्रचार का आरंभ	6 :1- 8 : 3
यहूदा और सामरी प्रदेशों में साक्षी देना	8 : 4-12: 25
प्रेरित पौलुस की धर्मसेवा	13 :1-28 : 31
(क) प्रथम धर्मप्रचार-यात्रा	13 :1- 14 : 28
(ख) यरूशलेम में धर्म-सम्मेलन	15 :1-35
(ग) द्वितीय धर्मप्रचार-यात्रा	15 : 36-18 : 22
(घ) तृतीय धर्मप्रचार-यात्रा	18 : 23-21 : 16
(ङ) यरूशलेम, कैसरिया तथा रोम नगर में बन्दी पौलुस	21 : 17-28 : 31

प्रस्तावना

1 हे थिओफिलुस ! मैंने अपना पहली पुस्तक
में उन सब बातों का वर्णन किया, जिन्हें येशु
आरंभ से उस दिन तक करते और सिखाते रहे
2जिस दिन वह स्वर्ग में उठा लिये गये। उस से
पहले येशु ने प्रेरितों को, जिन्हें उन्होंने स्वयं
चुना था, पवित्र आत्मा द्वारा* आदेश दिया।
3येशु ने अपने दु:ख-भोग के बाद उन प्रेरितों
के संमुख बहुत-से प्रमाण प्रस्तुत किए कि वह
जीवित हैं। वह चालीस दिन तक उन्हें दिखाई
देते रहे और उनसे परमेश्वर के राज्य के विषय
में बात करते रहे। 4येशु ने प्रेरितों के साथ भोजन
करते समय+ उन्हें आज्ञा दी कि वे यरूशलेम
नगर नहीं छोड़ें, बल्कि पिता ने जो प्रतिज्ञा की
है, उसकी प्रतीक्षा करते रहें। उन्होंने कहा,
"मैंने तुम लोगों को उस प्रतिज्ञा के विषय में
बता दिया है। 5योहन ने तो जल से बपतिस्मा
दिया था, परन्तु थोड़े ही दिनों बाद तुम्हें पवित्र
आत्मा से बपतिस्मा दिया जायेगा।"

येशु का स्वर्गारोहण

6जब प्रेरित येशु के साथ एकत्र थे, तब
उन्होंने यह प्रश्न किया, "प्रभु ! क्या आप इस
समय इस्राएलियों का राज्य पुनः स्थापित
करेंगे ?" 7येशु ने उत्तर दिया, "पिता ने जो
काल और निश्चित समय अपने निजी अधिकार
में रखे हैं, उन्हें जानना तुम्हारा काम नहीं है।
8किन्तु पवित्र आत्मा तुम पर उतरेगा और तुम्हें
सामर्थ्य प्रदान करेगा और तुम यरूशलेम में,
समस्त यहूदा और सामरी प्रदेशों में तथा पृथ्वी
के अन्तिम छोर तक मेरे साक्षी होगे।" 9इतना
कहने के पश्चात् येशु उनके देखते-देखते ऊपर
उठा लिये गये और एक बादल ने उन्हें शिष्यों
की आँखों से ओझल कर दिया।
10येशु के आरोहण के समय प्रेरित आकाश
की ओर एकटक देख रहे थे। तब उज्ज्वल वस्त्र
पहने दो पुरुष उनके पास अचानक आ खड़े हुए
और 11बोले, "गलीली पुरुषो ! आप खड़े-
खड़े आकाश की ओर क्यों देख रहे हो ? यही
येशु, जो आप के बीच से स्वर्ग में उठा लिये
गये हैं, उसी तरह फिर आयेंगे, जिस तरह आप
लोगों ने उन्हें स्वर्ग की ओर जाते देखा है।"

प्रेरितों का समुदाय

12प्रेरित जैतून नामक पहाड़ से यरूशलेम
लौटे। यह पहाड़ यरूशलेम के निकट, एक

---

* अथवा, "जिन्हें उन्होंने पवित्र आत्मा द्वारा चुन लिया था।" + अथवा, "उनके साथ रहते समय"

1 : 1 लू 1 : 3 **1 : 2** लू 6 : 13 **1 : 4** यो 15 : 26; लू 24 : 49; प्रे 1 : 4 **1 : 5** मत 3 : 11 **1 : 6** लू 24 : 21; प्रे 3 : 21 **1 : 7** मक 13 : 32 **1 : 9** मक 16 : 19; लू 24 : 51; यो 6 : 62; 2 रा 2 : 11; दान 7 : 13 **1 : 10** लू 24 : 4 **1 : 11** मत 26 : 64; लू 21 : 27; 1 तिम 3 : 16; प्रक 1 : 7 **1 : 12** लू 24 : 50-53

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

विश्राम-दिवस की यात्रा* की दूरी पर है।
13वहाँ पहुँच कर वे अटारी पर** चढ़े, जहाँ वे
ठहरे हुए थे। वे थे : पतरस तथा योहन, याकूब
तथा अन्द्रेयास, फिलिप तथा थोमस, बरतोलोमी
तथा मत्ती, हलफई का पुत्र याकूब तथा
"धर्मोत्साही"+ शिमोन और याकूब का पुत्र
यहूदा। 14ये सब, कई स्त्रियों के साथ, येशु की
माता मरियम तथा उनके भाइयों++ सहित, एक-
चित होकर प्रार्थना में लगे रहे।

मत्तियस की नियुक्ति

15उन्हीं दिनों पतरस विश्वासी भाई-बहिनों
के बीच खड़े हुए, जो लगभग एक सौ बीस
व्यक्तियों का समुदाय था। पतरस ने कहा,
16"भाइयो! यह अनिवार्य था कि धर्मग्रन्थ की
वह भविष्यवाणी पूरी हो जाये, जो पवित्र
आत्मा ने दाऊद के मुख से यूदस [यहूदा] के
विषय में की थी। यूदस तो येशु को गिरफ्तार
करने वालों का अगुआ बन गया। 17वह हम
लोगों में गिना जाता था और धर्मसेवा में हमारा
संभागी ठहराया गया था।

18"उसने अपने अधर्म की कमाई से एक
खेत खरीदा। वह उस में मुँह के बल गिरा,
उसका पेट फट गया और उसकी सारी अँतड़ियाँ
बाहर निकल आयीं। 19यह बात यरूशलेम के
सब निवासियों को मालूम हो गयी; इस कारण
वह खेत उनकी भाषा में 'हकेलदमा' अर्थात्
'रक्त का खेत' कहलाता है।

20"भजन-संहिता में यह लेख भी है :
'उसका निवास स्थान उजड़ जाये; उस में कोई
भी निवास नहीं करे' और 'कोई दूसरा उसका
पद ग्रहण करे।' 21इसलिए उचित है कि जितने
समय तक प्रभु येशु हमारे बीच आते-जाते रहे,
22अर्थात् योहन के बपतिस्मा से ले कर प्रभु
के स्वर्गारोहण के दिन तक जो लोग बराबर
हमारे साथ थे, उन में से एक हमारे साथ प्रभु
के पुनरुत्थान का साक्षी बने।" 23इस पर उन्होंने
दो व्यक्तियों को प्रस्तुत किया—यूसुफ को, जो
बरसब्बास कहलाता था और जिसका उपनाम
युस्तुस था, और मत्तियस को। 24तब उन्होंने
इस प्रकार प्रार्थना की, "प्रभु! तू सब का हृदय
जानता है। यह प्रकट कर कि तूने इन दोनों में
से किस को चुना है, 25 ताकि वह उस धर्मसेवा
तथा प्रेरित-पद का स्थान ग्रहण करे, जिस से
पतित हो कर यूदस अपने स्थान को चला गया।"
26 उन्होंने उन दोनों के लिए चिट्ठी डाली।
चिट्ठी मत्तियस के नाम निकली और वह ग्यारह
प्रेरितों के साथ सम्मिलित कर लिया गया।

पवित्र आत्मा का अवतरण

2 जब पेंतेकोस्त पर्व** का दिन आया और
सब शिष्य एक स्थान पर*** इकट्ठे थे, 2तो
अचानक बड़ी आँधी के झोंके जैसी आवाज
आकाश से सुनाई पड़ी और सारा घर, जहाँ वे
बैठे हुए थे, गूँज उठा। 3उन्हें एक प्रकार की
आग दिखाई पड़ी, जो जीभों में विभाजित हो
कर उन में से हर एक के ऊपर आ कर ठहर
गयी। 4वे सब पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गये
और जो वाणी का वरदान पवित्र आत्मा ने उन्हें
दिया, उस के अनुसार भिन्न-भिन्न भाषाओं में
बोलने लगे।

5पृथ्वी के सब देशों से आये हुए भक्त
यहूदी उस समय यरूशलेम में निवास कर रहे
थे। 6जब यह आवाज हुई, तो भीड़ लग गई।
लोग घबरा गये; क्योंकि हर एक अपनी-
अपनी भाषा में शिष्यों को बोलते सुन रहा था।
7वे चकित रह गये और विस्मित हो कहने लगे,
"क्या ये बोलने वाले सब-के-सब गलीली
नहीं हैं? 8तो फिर हम में हर एक अपनी-
अपनी जन्मभूमि की भाषा कैसे सुन रहा है?
9हम—पारथी, मादी और एलामी लोग;
मेसोपोतामिया, यहूदा और कप्पदूकिया, पोंतुस

---

* लगभग एक किलोमीटर। ** अथवा, "ऊपरी मंजिल के कमरे में"। + अथवा "उग्रपंथी" ++ अथवा, "भाई-बहिनों"।
** अथवा, 'पंचासवां दिन', 'सप्त सप्ताह पर्व'। *** अथवा, 'एक संघ में'।

1 :13 लू 6 : 13–16 **1 : 14** प्रे 2 : 1; यो 7 : 3–5; मत 13 : 55 **1 : 16** भज 41 : 9 **1 : 18** मत 27 : 3–10; प्रज्ञ 4 : 19 **1 : 20** भज 69 : 25; 109 : 8 **1 : 21** यो 15 : 27 **1 : 24** यो 2 : 24–25; 6 : 70 **1 : 26** नीति 16 : 33 **2 : 1** लेव 23 : 15–21; प्रे 1 : 14 **2 : 2** प्रे 4 : 31 **2 : 3** व्य 4 : 12; गण 11 : 25; मत 3 : 11 **2 : 4** प्रे 4 : 31; 10 : 44–46; 19: 6; 1 शम 10 : 6 **2 : 5** प्रे 13 : 26 **2 : 6** उत 11 : 9

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और आसिया, 10फ्रुगिया और पंफुलिया, मिस्र
और कुरेने के निकटवर्ती लीबिया के निवासी;
रोम के यहूदी तथा नवयहूदी* प्रवासी, 11क्रेती
और अरबी लोग—हम सब अपनी-अपनी
भाषा में इन्हें परमेश्वर के महान कार्यों की चर्चा
करते सुन रहे हैं।'' 12वे सब चकित रह गये
और दुविधा में पड़कर एक-दूसरे से कहने
लगे, ''यह क्या बात है?'' 13परंतु दूसरों ने
उपहास करते हुए कहा ''ये तो मदिरा पी कर
मतवाले हो रहे हैं।''

पतरस का भाषण

14 पतरस ने ग्यारहों के साथ खड़े हो कर
लोगों को सम्बोधित करते हुए ऊँचे स्वर से
कहा, ''यहूदी भाइयो और यरूशलेम के सब
निवासियो! आप मेरी बात ध्यान से सुनें और
यह जान लें कि 15ये लोग मतवाले नहीं हैं, जैसा
कि आप समझते हैं। अभी तो दिन के नौ बजे
हैं। 16परंतु यह वह बात है, जिसके विषय में
नबी योएल ने कहा है, 17परमेश्वर यह कहता
है:

'मैं अन्तिम दिनों में सब मनुष्यों पर अपना
आत्मा उंडेलूंगा।
तुम्हारे पुत्र और पुत्रियाँ नबूवत करेंगे,
तुम्हारे नवयुवक दिव्य दर्शन पायेंगे
और तुम्हारे बड़े-बूढ़े स्वप्न देखेंगे।
18मैं उन दिनों अपने दास-दासियों पर अपना
आत्मा उंडेलूगा
और वे नबूवत करेंगे।
19मैं ऊपर आकाश में अदुभुत कार्य
और नीचे पृथ्वी पर चिह्न दिखाऊंगा,
अर्थात् रक्त, अग्नि और उड़ता हुआ धुआँ।
20प्रभु के महान् तथा प्रकाशमान दिन के
आगमन से पहले
सूर्य अन्धकारमय हो जायेगा
और चन्द्रमा रक्तमय।
21तब जो कोई प्रभु के नाम की दुहाई देगा,
वह उद्धार पाएगा।'

22इस्राएली भाइयो! मेरी बातें ध्यान से
सुनिए! आप लोग स्वयं जानते हैं कि परमेश्वर
ने येशु नासरी के द्वारा आप लोगों के बीच
कितने सामर्थ्य एवं आश्चर्य के कार्य किए तथा
चिह्न दिखाये हैं। इस से यह प्रमाणित हुआ कि
येशु परमेश्वर की ओर से आप लोगों के पास
भेजे गये थे। 23वह परमेश्वर की निश्चित योजना
तथा पूर्वज्ञान के अनुसार पकड़वाये गये और
आप लोगों ने विधर्मियों के हाथों उन्हें क्रूस पर
चढ़ाया और मार डाला है। 24 किन्तु परमेश्वर
ने मृत्यु-पीड़ा के बन्धन खोल कर उन्हें
पुनर्जीवित किया। यह असम्भव था कि वह
मृत्यु के वश में रहें, 25क्योंकि उनके विषय में
दाऊद यह कहते हैं:

'प्रभु सदा मेरी आँखों के सामने रहता है।
वह मेरी दाहिनी ओर विराजमान है,
जिससे मैं विचलित न होऊं।
26इसलिए मेरा हृदय आनन्दित है,
मेरी जिह्वा प्रफुल्लित है
और मेरा शरीर आशा में विश्राम करेगा;
27क्योंकि तू मेरे प्राण को अधोलोक में नहीं
छोड़ेगा,
तू अपने पवित्रजन को कबर में गलने नहीं
देगा।
28तूने मुझे जीवन का मार्ग दिखाया है।
तू अपने मुख के दर्शन द्वारा
मुझे आनन्द-विभोर करेगा।'

29भाइयो! मैं कुलपति दाऊद के विषय में
आप लोगों से निस्संकोच यह कह सकता हूँ कि
वह मर गये और कबर में रखे गये। उनकी
कबर आज तक हमारे बीच विद्यमान है।
30राजा दाऊद नबी थे। वह जानते थे कि
परमेश्वर ने शपथ खा कर उन से यह कहा था
कि 'मैं तुम्हारे वंशजों में एक व्यक्ति को तुम्हारे
सिंहासन पर बैठाऊंगा।' 31इसलिए उन्होंने मसीह

* यहूदी धर्म को मानने वाले अन्य जातियों के लोग।

2 : 16 योए 2 : 28-32 (यू० पाठ) **2 : 21** रोम 10 : 13 **2 : 22** यो 3 : 2 **2 : 23** प्रे 4 : 28; 1 पत 1 : 20 **2 : 24** प्रे 3 : 15 **2 : 25** भज 16 : 8-11 (यू० पाठ) **2 : 27** प्रे 13 : 35 **2 : 29** प्रे 13 : 36; 1 रा 2 : 10 **2 : 30** भज 89 : 3-4; 2 शम 7 : 12-13, भज 132 : 11

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

के पुनरुत्थान के विषय में पहले से ही जानकर
कहा कि वह अधोलोक में नहीं छोड़े गये और
उनका शरीर गलने नहीं दिया गया। 32परमेश्वर
ने इन्हीं येशु को पुनर्जीवित किया है। हम सब
इस बात के साक्षी हैं। 33अब वह परमेश्वर के
दाहिने हाथ से** उन्नत हुए और उन्हें पिता से
पवित्र आत्मा प्राप्त हुआ, जिसकी प्रतिज्ञा की
गई थी। उन्होंने उसे उंडेल दिया, जैसा कि आप
देख और सुन रहे हैं। 34दाऊद स्वर्ग पर नहीं
चढ़े, किन्तु वह स्वयं कहते हैं:

'प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा,
तुम तब तक मेरे दाहिने बैठे रहो,
35जब तक मैं तुम्हारे शत्रुओं को
तुम्हारे चरणों की चौकी न बना दूँ।'

36"इस्राएल का सारा घराना यह निश्चित
रूप से जान ले कि जिन्हें आप लोगों ने क्रूस
पर चढ़ाया, परमेश्वर ने उन्हीं येशु को प्रभु और
मसीह दोनों बना दिया है।"

37यह सुनकर वे मर्माहत हो गये और उन्होंने
पतरस तथा अन्य प्रेरितों से पूछा, "भाइयो! हमें
क्या करना चाहिए?"

38पतरस ने उन्हें यह उत्तर दिया, "आप
लोग पश्चात्ताप करें। आप लोगों में से प्रत्येक
व्यक्ति अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए
येशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले। इस प्रकार
आप पवित्र आत्मा का वरदान प्राप्त करेंगे;
39क्योंकि वह प्रतिज्ञा आपके तथा आपकी
सन्तान के लिए है, और उन सब के लिए, जो
अभी दूर हैं और जिन्हें हमारा प्रभु परमेश्वर
अपने पास बुला रहा है।" 40पतरस ने और
बहुत-सी बातों द्वारा साक्षी दी और यह कहते
हुए उन से अनुरोध किया कि आप लोग अपने
को इस विधर्मी पीढ़ी से बचाये रखें।

41जिन्होंने पतरस की बातों को ग्रहण किया,
उन्होंने बपतिस्मा लिया। उस दिन लगभग तीन
हजार लोग शिष्यों में सम्मिलित हो गये। 42वे
प्रेरितों की शिक्षा, सत्संग, रोटी तोड़ने+ एवं प्रार्थना
में दत्तचित रहने लगे।

आरंभिक मसीही लोगों का धार्मिक जीवन

43सब लोगों पर भय छाया हुआ था, क्योंकि
प्रेरितों द्वारा बहुत अद्भुत कार्य एवं चिह्न
दिखाए गये थे। 44सब विश्वासी एक साथ**
रहते थे। उनके पास जो कुछ था, उस में सब
का साझा था। 45वे अपनी चल-अचल सम्पत्ति
बेच देते और उससे प्राप्त धनराशि हर एक की
जरूरत के अनुसार सब को बांट देते थे।

46वे प्रतिदिन मन्दिर में एक भाव से
उपस्थित होते, घर-घर में रोटी तोड़ते और
निष्कपट हृदय से आनन्दपूर्वक एक साथ
भोजन करते थे। 47वे परमेश्वर की स्तुति किया
करते थे और सारी जनता उन्हें बहुत मानती थी।
प्रभु प्रतिदिन उनके समुदाय में उन लोगों को
मिला देता था, जो मुक्ति प्राप्त करते थे।

लंगड़े को स्वास्थ्यलाभ

3 पतरस और योहन दोपहर तीन बजे की
प्रार्थना के समय मन्दिर जा रहे थे। 2लोग
एक मनुष्य को ले जा रहे थे, जो जन्म से लँगड़ा
था। वे उसे प्रतिदिन ला कर मन्दिर के 'सुन्दर'
नामक फाटक के पास छोड़ देते थे, जिससे वह
मन्दिर के अन्दर जाने वालों से भीख माँग सके।
3जब उसने पतरस और योहन को मन्दिर में
प्रवेश करते देखा, तो उन से भीख माँगी।
4पतरस और योहन ने उसे ध्यान से देखा।
पतरस ने कहा, "हमारी ओर देखो।" 5वह कुछ
पाने की आशा से उनकी ओर ताकने लगा।
6किन्तु पतरस ने कहा, "मेरे पास न तो चाँदी
है और न सोना। मेरे पास जो है, वही तुम्हें देता
हूँ: नासरत-निवासी येशु मसीह के नाम से
उठो और चलो-फिरो!" 7और उसने उसका
दाहिना हाथ पकड़ कर उसे उठाया। उसी क्षण

** अथवा, 'दाहिनी ओर'। + अथवा, 'सहभागिता', + अथवा, 'परम प्रसाद विधि', 'प्रभु-भोज'। ** अथवा, 'मिलजुल कर'।

2 : 31 भज 16 : 10 **2 : 33** प्रे 1 : 4 **2 : 34** भज 110 : 1 **2 : 36** प्रे 5 : 31 **2 : 37** प्रे 16 : 30 **2 : 38** प्रे 3 : 17-19; लू 24 : 47 **2 : 39** योए 2 : 32; यश 57 : 19 **2 : 40** व्य 32 : 5; फिल 2 : 15 **2 : 41** प्रे 4 : 4; 5 : 14 **2 : 42** प्रे 20 : 7 **2 : 44** प्रे 4 : 32 **2 : 46** प्रे 2 : 42 **2 : 47** प्रे 4 : 4; 5 : 14; 11 : 21; 14 : 1 **3 : 2** प्रे 14 : 8; यो 9 : 1 **3 : 4** प्रे 14 : 9 **3 : 6** प्रे 3 : 16

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लँगड़े के पैरों और टखनों में बल आ गया। 8वह
उछल कर खड़ा हो गया और चलने-फिरने
लगा। वह चलते, उछलते तथा परमेश्वर की
स्तुति करते हुए उनके साथ मन्दिर में आया।
9सारी जनता ने उस को चलते-फिरते तथा
परमेश्वर की स्तुति करते हुए देखा। 10लोग उसे
पहचान गये कि यह वही है, जो मन्दिर के
'सुन्दर' फाटक के पास बैठ कर भीख माँगा
करता था और यह देख कर कि उसके साथ क्या
हुआ है, वे अचम्भे में पड़ कर चकित हो गये।

मन्दिर में पतरस का भाषण

11वह मनुष्य पतरस और योहन के साथ
लगा हुआ था। इसलिए सारी जनता,
आश्चर्यचकित हो कर, सुलेमान नामक मण्डप
में उनकी ओर दौड़ पड़ी। 12पतरस ने यह देख
कर लोगों से कहा, "इस्राएली भाइयो! आप लोग
इस पर आश्चर्य क्यों कर रहे हैं और हमारी ओर
इस प्रकार क्यों ताक रहे हैं, मानो हमने अपने
सामर्थ्य या धर्म-सिद्धि से इस मनुष्य को
चलने-फिरने योग्य बना दिया है?

13 "अब्राहम, इसहाक और याकूब के
परमेश्वर ने, हमारे पूर्वजों के परमेश्वर ने अपने
सेवक येशु को महिमान्वित किया है। आप
लोगों ने उन्हें पकड़वा दिया और जब पिलातुस
उन्हें छोड़ देने का निश्चय कर चुका था, तब
आप लोगों ने उसके सामने उन्हें अस्वीकार
किया। 14आप लोगों ने सन्त तथा धर्मात्मा को
अस्वीकार कर हत्यारे की रिहाई की माँग की।
15जीवन के अधिनायक को आप लोगों ने मार
डाला ; किन्तु परमेश्वर ने उन्हें मृतकों में से
जिलाया। हम इस बात के साक्षी हैं। 16येशु के
नाम में विश्वास के कारण उसी नाम ने इस
मनुष्य को, जिसे आप देखते और जानते हैं,
बल प्रदान किया है। उसी विश्वास ने इसे आप
सब के सामने पूर्ण रूप से स्वस्थ किया है।

17"भाइयो ! मैं जानता हूँ कि आप लोग,
और आपके शासक भी, यह नहीं जानते थे कि
वे क्या कर रहे हैं। 18परमेश्वर ने इस प्रकार
अपना वह कथन पूरा किया, जिसके अनुसार
उसके मसीह को दु:ख भोगना था और जिसे
उसने सब नबियों के मुख से पहले ही घोषित
कर दिया था। 19अत: आप लोग पश्चात्ताप करें
और परमेश्वर के पास लौट आयें, जिससे
आपके पाप मिट जायें 20और प्रभु आप को
विश्रान्ति का समय प्रदान करे। तब वह
पूर्वनिर्धारित मसीह को, अर्थात् येशु को आप
लोगों के पास भेजेगा। 21यह आवश्यक है कि
वह उस समय तक स्वर्ग में रहें, जब तक उन
समस्त वस्तुओं की पुन: स्थापना न हो जाए,
जिनके विषय में परमेश्वर प्राचीन काल से
अपने पवित्र नबियों के मुख से बोला है।
22मूसा ने यह कहा था, 'तुम्हारा प्रभु परमेश्वर
तुम्हारे भाइयों में से तुम्हारे लिए मुझ-जैसा एक
नबी उत्पन्न करेगा। वह जो कुछ तुम से कहेगा,
तुम उस पर ध्यान देना। 23जो उस नबी की बात
नहीं सुनेगा, वह परमेश्वर के निज लोगों में से
नष्ट कर दिया जायेगा।' 24नबी शमूएल और
सभी परवर्त्ती नबियों ने अपने संदेशों में इन
दिनों की घोषणा की है।

25"आप लोग नबियों की संतान और उस
विधान के भागीदार हैं, जिसे परमेश्वर ने
आपके पूर्वजों के साथ उस समय निर्धारित
किया, जब उसने अब्राहम से कहा, 'तेरे वंश
के द्वारा संसार की समस्त जातियां आशिष
पायेंगी।' 26परमेश्वर ने सब से पहले आप
लोगों के लिए अपने सेवक येशु को पुनर्जीवित
किया और आपके पास भेजा, जिससे वह आप
लोगों में हर एक को कुमार्ग से विमुख करें और
आशिष प्रदान करें।"

धर्म-महासभा के सामने पतरस और योहन

4 पतरस और योहन लोगों से बोल ही रहे
थे कि पुरोहित, मन्दिर-आरक्षी का नायक
और सदूकी संप्रदायी उनके पास आ धमके।
2वे बहुत नाराज थे, क्योंकि प्रेरित जनता को

---

3 : 8 प्रे 14 : 10; यो 5 : 14 **3 : 11** प्रे 5 : 12 **3 : 13** नि 3 : 6; प्रे 5 : 30; यश 52 : 13; 53 : 11; प्रे 2 : 23 **3 :14** मत 27 : 20-21 **3 : 15** प्रे 4 : 10; 5 : 31; इब्र 2 : 10; 12 : 2 **3 : 17** लू 23 : 34; 1 तिम 1 : 13 **3 : 18** लू 24 : 27 **3 : 19** प्रे 2 : 38 **3 : 22** व्य 18 : 15 (यू० पाठ); प्रे 7 : 37 **3 : 23** लेव 23 : 29 **3 : 25** उत 12 : 3; 22 : 18; गल 3 : 8 **3 : 26** प्रे 13 : 46 **4 : 1** लू 22 : 4, 52 **4 : 2** प्रे 23 : 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शिक्षा दे रहे थे और येशु का उदाहरण दे कर
मृतकों के पुनरुत्थान का प्रचार कर रहे थे।
3सन्ध्या हो चली थी, इसलिए उन्होंने उन को
गिरफ्तार कर रात भर के लिए बन्दीगृह में डाल
दिया।

4जिन्होंने प्रेरितों का प्रवचन सुना था, उन में
बहुतों ने विश्वास किया। विश्वास करनेवाले
पुरुषों की संख्या अब लगभग पाँच हजार तक
पहुँच गयी।

5दूसरे दिन यरूशलेम में शासकों, धर्मवृद्धों
और शास्त्रियों की सभा हुई। 6प्रधान महापुरोहित
हन्ना, काइफा, योहानान*, सिकन्दर और
महापुरोहित-वंश के सभी सदस्य वहाँ उपस्थित
थे। 7वे पतरस तथा योहन को बीच में खड़ा कर
इस प्रकार उन से पूछ-ताछ करने लगे, "तुम
लोगों ने किस सामर्थ्य से या किसके नाम से यह
काम किया है?" 8 पतरस ने पवित्र आत्मा से
परिपूर्ण हो कर उन से कहा, "जनता के
शासको और धर्मवृद्धो! 9हमने एक दुर्बल मनुष्य
का उपकार किया है और आज हम से पूछ-
ताछ की जा रही है कि वह किस तरह रोग-
मुक्त हो गया है। 10आप सभी लोग और इस्राएल
की सारी प्रजा यह जान लें कि नासरत-निवासी
येशु मसीह के नाम से यह मनुष्य स्वस्थ हो कर
आप लोगों के सामने खड़ा है। उन्हीं येशु को
आप लोगों ने क्रूस पर चढ़ा दिया था, किन्तु
परमेश्वर ने उन्हें मृतकों में से पुनर्जीवित किया।
11यह वह पत्थर हैं, 'जिसे आप, कारीगरों ने
तुच्छ समझा था और जो कोने की नींव का
पत्थर बन गया है।' 12किसी दूसरे व्यक्ति द्वारा
मुक्ति नहीं है; क्योंकि समस्त संसार में मनुष्यों
को कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया है, जिसके
द्वारा हमें मुक्ति मिल सकती है।"

13पतरस और योहन की निर्भीकता देख कर
और यह जानकर कि वे अशिक्षित तथा
साधारण मनुष्य हैं, धर्म-महासभा के सदस्य
अचम्भे में पड़ गये। फिर, वे पहचान गये कि
ये तो येशु के साथ रह चुके हैं; 14किन्तु स्वस्थ
किये गये मनुष्य को इनके साथ खड़ा देख कर,
वे उत्तर में कुछ नहीं बोल सके। 15उन्होंने पतरस
और योहन को सभा से बाहर जाने का आदेश
दिया और यह कहते हुए आपस में विचार-
विमर्श किया कि, 16"हम इन लोगों के साथ
क्या करें? यरूशलेम में रहने वाले सभी लोगों
को यह मालूम हो गया कि इन्होंने एक अपूर्व
चमत्कार दिखाया है। हम यह अस्वीकार नहीं
कर सकते। 17फिर भी जनता में इसका और
अधिक प्रचार न हो, इसलिए हम इन्हें कड़ी
चेतावनी दें कि अब से तुम इस नाम पर किसी
से कुछ नहीं कहोगे।"

18उन्होंने पतरस तथा योहन को बुला भेजा
और उन्हें आदेश दिया कि वे येशु का नाम
लेकर न तो जनता को सम्बोधित करें और न
शिक्षा दें। 19इस पर पतरस और योहन ने उन्हें
यह उत्तर दिया, "आप लोग स्वयं निर्णय करें:
क्या परमेश्वर की दृष्टि में यह उचित होगा कि
हम परमेश्वर की नहीं, बल्कि आप लोगों की
बात मानें? 20क्योंकि हमने जो देखा और सुना
है, उसके विषय में नहीं बोलना हमारे लिए
सम्भव नहीं।"

21इस पर उन्होंने पतरस और योहन को फिर
धमका कर छोड़ दिया; क्योंकि जनता के
कारण उन्हें दंड देने का कोई दांव नहीं मिला।
सब लोग इस घटना के कारण परमेश्वर की
स्तुति कर रहे थे। 22 जिस मनुष्य को उस
आश्चर्य कर्म द्वारा स्वास्थ्य-लाभ हुआ था,
उसकी उम्र चालीस वर्ष से अधिक थी।

निर्भीकता के लिए प्रार्थना

23रिहा होने के बाद पतरस और योहन अपने
लोगों के पास लौटे और महापुरोहितों और
धर्मवृद्धों ने उन से जो कुछ कहा था, वह सब
बतलाया। 24वे उनकी बातें सुन कर एक स्वर

---

* अथवा, 'योनातन'

4 : 3 प्रे 3 : 1 **4 : 4** प्रे 2 : 47 **4 : 7** मत 21 : 23 **4 : 8** मत 10 : 19-20 **4 : 10** प्रे 3 : 6, 13-16 **4 : 11** मत 21 : 42; भज 118 : 22 **4 : 12** मत 1 : 21 **4 : 14** प्रे 3 : 8-9 **4 : 16** यो 11 : 47 **4 : 17** प्रे 5 : 28 **4 : 19** प्रे 5 : 29 **4 : 24** नि 20 : 11; भज 146 : 6; यश 37 : 16; लू 2 : 29; प्रक 6 : 10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

से परमेश्वर को सम्बोधित करते हुए बोले, "हे
स्वामी ! तूने ही आकाश और पृथ्वी तथा समुद्र
और जो कुछ उन में है सबको बनाया है। 25तूने
पवित्र आत्मा द्वारा हमारे पूर्वज, अपने सेवक
दाऊद के मुख से यह कहा है :
'अन्यधर्मी जातियां क्यों आग-बबूला हुईं;
राष्ट्रों ने क्यों षड्यन्त्र रचा ?
26प्रभु के विरुद्ध और उसके मसीह के विरुद्ध
पृथ्वी के राजा उठ खड़े हुए हैं,
और शासकगण परस्पर मिल गए हैं।'
27"वास्तव में शासक हेरोदेस और राज्यपाल
पोंतियुस पिलातुस ने, अन्य-जातियों तथा
इस्राएल की जनता के साथ, इस नगर में तेरे
परमपावन सेवक येशु के विरुद्ध, जिनका तूने
अभिषेक किया, षड्यन्त्र रचा था 28ताकि उसे
पूरा करें, जिसे तेरे सामर्थ्य और तेरी योजना ने
पहले से निर्धारित किया था। 29 प्रभु ! अब तू
उनकी धमकियों पर ध्यान दे और अपने सेवकों
को यह कृपा प्रदान कर कि वे निर्भीकता से तेरा
वचन सुनायें। 30तू अपना हाथ बढ़ा कर अपने
परमपावन सेवक येशु के नाम पर स्वास्थ्यलाभ,
चिह्न तथा आश्चर्यपूर्ण कार्य होने दे।"
31उनकी प्रार्थना समाप्त होने पर वह स्थान,
जहाँ वे एकत्र थे, हिल गया। सब पवित्र आत्मा
से परिपूर्ण हो गये और निर्भीकता के साथ
परमेश्वर का वचन सुनाने लगे।

विश्वासियों की एकता

32विश्वासियों का समुदाय एक हृदय और
एक प्राण था। उनमें कोई भी अपनी सम्पत्ति को
अपना नहीं समझता था। जो कुछ उनके पास
था, उस में सब का साझा था।
33प्रेरित बड़े सामर्थ्य से प्रभु येशु के
पुनरुत्थान की साक्षी देते थे और उन सब पर
परमेश्वर का महान अनुग्रह था।
34उन में कोई भी दरिद्र नहीं था ; क्योंकि
जिनके पास खेत या मकान थे, वे उन्हें बेच देते
और धनराशि ला कर 35प्रेरितों के चरणों में
अर्पित कर देते थे और प्रत्येक को उसकी
आवश्यकता के अनुसार बाँट दिया जाता था।
36उदाहरण के लिये यूसुफ नामक एक
व्यक्ति था। वह लेवी वंश का था। उसका जन्म
कुप्रुस* द्वीप में हुआ था। प्रेरितों ने उसका
उपनाम बरनबास अर्थात् "सान्त्वना-पुत्र"
रखा था। 37उसके पास कुछ जमीन थी। उसने
उसे बेच दिया और उससे प्राप्त धनराशि लाकर
प्रेरितों के चरणों में अर्पित कर दी।

हनन्याह और सफीरा

5 परंतु हनन्याह नामक व्यक्ति ने अपनी पत्नी
सफीरा के साथ परामर्श करने के बाद एक
खेत बेच दिया। 2उसने अपनी पत्नी के जानते
बिक्री से प्राप्त धनराशि का कुछ अंश अपने
पास रखा और शेष अंश ला कर प्रेरितों के
चरणों में रख दिया। 3इस पर पतरस ने कहा,
"हनन्याह! शैतान ने क्यों तुम्हारे हृदय पर इस
प्रकार अधिकार कर लिया है कि तुम पवित्र
आत्मा से झूठ बोलो और जमीन की बिक्री से
प्राप्त धनराशि का कुछ अंश रख लो ? 4बेचे जाने
से पहले क्या वह जमीन तुम्हारी अपनी नहीं
थी ? और इसके बाद भी क्या उसकी धनराशि
तुम्हारे अधिकार में नहीं थी ? तुमने ऐसा काम
करने का विचार अपने हृदय में क्यों किया ? तुम
मनुष्यों से नहीं, बल्कि परमेश्वर से झूठ बोले
हो।" 5हनन्याह ये बातें सुन कर गिर पड़ा और
उसके प्राण निकल गये। सब सुनने वालों पर
बड़ा भय छा गया। 6कुछ नवयुवकों ने उठ कर
उसे कफन में लपेटा और बाहर ले जा कर
दफना दिया।
7लगभग तीन घण्टे बाद उसकी पत्नी भीतर
आयी। वह इस घटना के बारे में कुछ नहीं
जानती थी। 8पतरस ने उस से यह प्रश्न किया,
"मुझे बताओ, क्या तुमने वह जमीन इतने में
ही बेची थी ?" उसने उत्तर दिया, "जी हाँ,

---

* अथवा, 'साइप्रस'

4 : 25 भज 2 : 1-2 (यू० पाठ) **4 : 27** लू 23 : 12 **4 : 28** प्रे 2 : 23 **4 : 29** इफ 6 : 19 **4 : 31** प्रे 2 : 2, 4
4 : 32 प्रे 2 : 44 **4 : 33** प्रे 2 : 47 **4 : 34** प्रे 2 : 45 **4 : 36** प्रे 11 : 22, 24; 13 : 2; 15 : 39; कुल 4 : 10
5 : 2 प्रे 4 : 37; यहो 7 : 1 **5 : 3** यो 13 : 2 **5 : 5** सूस 55

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इतने में ही।'' 9इस पर पतरस ने उस से
कहा, ''यह क्या बात है कि तुम दोनों प्रभु के
आत्मा की परीक्षा लेने के लिए एकमत हो गए?
देखो, जो लोग तुम्हारे पति को दफनाने गये थे,
वे द्वार पर आ गये हैं और अब तुम को भी ले
जायेंगे।'' 10वह उसी क्षण पतरस के चरणों पर
गिर गयी और उसके प्राण निकल गये।
नवयुवकों ने भीतर आ कर उसे मरा हुआ पाया
और उसे ले जा कर उसके पति की बगल में
दफना दिया। 11इससे सारी कलीसिया+ पर और
जितने लोगों ने इन बातों की चर्चा सुनी, उन सब
पर बड़ा भय छा गया।

चिह्न और चमत्कार

12प्रेरितों द्वारा जनता के बीच बहुत-से
चिह्न तथा चमत्कार हो रहे थे।

सब विश्वासी एक भाव से सुलेमान के
मण्डप में एकत्र हुआ करते थे। 13दूसरे लोगों
में किसी को भी उन में सम्मिलित होने का
साहस नहीं होता था, फिर भी जनता उनकी
प्रशंसा करती थी।

14प्रभु में विश्वास करने वालों की संख्या
बढ़ती गई*: स्त्री-पुरुषों का एक विशाल
समुदाय बन गया।

15सच तो यह है कि लोग रोगियों को मुख्य
सड़कों पर ले जा कर खटोलों तथा चारपाइयों
पर लिटा देते थे, ताकि जब पतरस उधर से
गुजरें, तो उनकी छाया ही उन में से किसी पर
पड़ जाये। 16यरूशलेम के आसपास के नगरों
से भी बहुत लोग एकत्र हो जाया करते थे। वे
अपने साथ रोगियों तथा अशुद्ध आत्माओं से
पीड़ित व्यक्तियों को लाते और वे सब स्वस्थ
हो जाते थे।

प्रेरितों पर सताव

17यह सब देख कर प्रधान महापुरोहित और
उसके सब संगी-साथी, अर्थात् सदूकी सम्प्रदाय
के सदस्य, ईर्ष्या से जलने लगे। 18उन्होंने प्रेरितों
को गिरफ्तार कर सार्वजनिक बन्दीगृह में डाल
दिया।

19परन्तु प्रभु के दूत ने रात को बन्दीगृह के
द्वार खोल दिये और प्रेरितों को बाहर ले जा कर
यह कहा, 20''जाइए और खड़े होकर मन्दिर में
जनता को इस जीवन की सब बातें सुनाइए।''
यह सुनकर वे सबेरा होते ही मन्दिर में गये और
शिक्षा देने लगे।

धर्म महासभा के सामने प्रेरित

21जब प्रधान महापुरोहित और उसके संगी-
साथी आये, तो उन्होंने धर्म महासभा अर्थात्
इस्राएली समाज की सर्वोच्च परिषद् बुलायी
और प्रेरितों को ले आने के लिए सिपाहियों को
बन्दीगृह भेजा। 22 जब सिपाही वहाँ पहुँचे, तो
उन्होंने प्रेरितों को बन्दीगृह में नहीं पाया।
उन्होंने लौट कर समाचार दिया, 23''हमने देखा
कि बन्दीगृह बड़ी सावधानी से बन्द किया हुआ
है और पहरेदार फाटकों पर तैनात हैं, किन्तु
खोलने पर हमें भीतर कोई नहीं मिला।''
24जब मन्दिर-आरक्षी के नायक और
महापुरोहितों ने यह समाचार सुना, तब वे
चिन्ता में पड़ गये कि प्रेरितों का क्या हुआ।

25इतने में किसी ने आकर उन्हें समाचार
दिया, ''देखिए, आप लोगों ने जिन व्यक्तियों
को बन्दीगृह में डाल दिया था, वे मन्दिर में खड़े
होकर जनता को शिक्षा दे रहे हैं।'' 26 इस पर
नायक अपने सिपाहियों के साथ जा कर प्रेरितों
को ले आया। वे प्रेरितों को बलपूर्वक नहीं
लाये, क्योंकि वे जनता से डरते थे कि कहीं वह
उन पर पथराव न करे।

27उन्होंने प्रेरितों को ला कर धर्म-महासभा
के सामने पेश किया। प्रधान महापुरोहित ने उन
से पूछताछ कर यह कहा, 28''क्या हमने तुम
लोगों को कड़ा आदेश नहीं दिया था कि इस
नाम से शिक्षा मत देना; परन्तु तुम लोगों ने सारा
यरूशलेम अपनी शिक्षा से भर दिया है और उस
मनुष्य की हत्या का दोष हमारे सिर पर मढ़ना
चाहते हो?'' 29इस पर पतरस और अन्य प्रेरितों

+ अथवा, ''मण्डली''। * अथवा, ''अधिक-से-अधिक विश्वासी प्रभु में आ मिले।''

5 : 12 प्रे 3 : 11 **5 : 14** प्रे 2 : 47; 6 : 7, 21 : 20 **5 : 15** प्रे 19 : 11-12; मक 6 : 56 **5 : 17** प्रे 4 : 1, 6
5 : 19 प्रे 12 : 7 **5 : 28** प्रे 4 : 18; मत 27 : 25 **5 : 29** प्रे 4 : 19; दान 3 : 18

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ने यह उत्तर दिया, "हमें मनुष्यों की आज्ञा की
अपेक्षा परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना
चाहिए। 30आप लोगों ने येशु को क्रूस के काठ
पर लटका कर मार डाला था, किन्तु हमारे
पूर्वजों के परमेश्वर ने उन्हें पुनर्जीवित किया।
31परमेश्वर ने उन्हें अधिनायक तथा मुक्तिदाता
का उच्च पद देकर अपने दाहिने हाथ से**
उन्नत किया, कि वह इस्राएल को पश्चात्ताप
और पापक्षमा प्रदान करें। 32इन बातों के साक्षी
हम हैं और पवित्र आत्मा भी, जिसे परमेश्वर
ने उन लोगों को प्रदान किया है, जो उसकी
आज्ञा का पालन करते हैं।"

33यह सुन कर धर्म-महासभा के सदस्य
आगबबूला हो गए और उन्होंने प्रेरितों को मार
डालना चाहा।

34परंतु गमलीएल नामक एक फरीसी, जो
व्यवस्था का अध्यापक और सारी जनता में
सम्मानित था, धर्म-महासभा में उठ खड़ा हुआ।
उसने प्रेरितों को थोड़ी देर के लिए बाहर ले
जाने का आदेश दिया 35 और धर्म-महासभा के
सदस्यों से यह कहा, "इस्राएली भाइयो! आप
सावधानी से विचार करें कि इन लोगों के साथ
क्या करने जा रहे हैं। 36कुछ समय पहले थेउदास
ने विद्रोह का झण्डा उठाया था। वह दावा करता
था कि मैं भी कुछ हूँ और लगभग चार सौ लोग
उसके अनुयायी बन गये। वह मारा गया, उसके
मानने वाले सब लोग बिखर गये और उनका
नाम-निशान भी नहीं रहा। 37उसके बाद,
जनगणना के समय, गलील-निवासी यहूदा ने
सिर उठाया। उसने बहुत-से लोगों को बहका
कर अपने विद्रोह में सम्मिलित कर लिया। वह
भी नष्ट हो गया और उसके मानने वाले सब
लोग बिखर गये। 38इसलिए इस मामले के
सम्बन्ध में मैं आप लोगों से यह कहना चाहता
हूँ कि आप इनके काम में दखल न दें और इन्हें
अपनी राह चलने दें। यदि यह योजना या कार्य
मनुष्य की ओर से है, तो यह अपने आप मिट
जायेगा। 39परन्तु यदि यह परमेश्वर की ओर से
है, तो आप इन्हें नहीं मिटा सकेंगे और यह बहुत
संभव है कि आप परमेश्वर के विरोधी प्रमाणित
होंगे।" 40 वे उसकी बात मान गये। उन्होंने
प्रेरितों को बुला भेजा, उन्हें कोड़े लगवाये और
यह कड़ा आदेश दे कर छोड़ दिया कि वे येशु
के नाम से कुछ न कहें।

41प्रेरित इसलिए आनन्दित हो कर धर्म-
महासभा के भवन से निकले कि उन्हें येशु के
नाम के लिए अपमानित होने का गौरव मिला।
42वे प्रतिदिन मन्दिर में और घर-घर जा कर
निरंतर शिक्षा देते रहे और येशु मसीह का शुभ
समाचार सुनाते रहे।*

सात धर्मसेवकों की नियुक्ति

6 उन दिनों जब शिष्यों की संख्या बढ़ती जा
रही थी, तो यूनानी-भाषी शिष्यों ने
इब्रानी-भाषी शिष्यों के विरुद्ध यह शिकायत
की कि दैनिक दान-वितरण में उनकी विधवाओं
की उपेक्षा हो रही है। 2इसलिए बारह प्रेरितों
ने शिष्यों की सभा बुला कर कहा, "यह उचित
नहीं है कि हम खिलाने-पिलाने की सेवा के
लिए+ परमेश्वर का वचन सुनाना छोड़ दें।
3अत: भाई-बहिनो, आप लोग अपने बीच से
सात सच्चरित्र पुरुषों को चुन लीजिए, जो
पवित्र आत्मा और बुद्धि से परिपूर्ण हों। हम
उन्हें इस कार्य के लिए नियुक्त करेंगे, 4और हम
लोग प्रार्थना में और वचन की सेवा में लगे
रहेंगे।" 5यह बात समस्त सभा को अच्छी
लगी। उन्होंने स्तीफनुस नामक व्यक्ति को, जो
विश्वास तथा पवित्र आत्मा से परिपूर्ण था, तथा
फ़िलिप, प्रोखुरुस, निकानोर, तीमोन, परमिनास
और अन्ताकिया-निवासी नवयहूदी निकोलास
को चुना 6और उन्हें प्रेरितों के सामने उपस्थित

---

* अथवा, 'और शुभ समाचार सुनाते रहे कि येशु ही मसीह हैं।' + अथवा, 'खिलाने-पिलाने की सेवा में'। ** अथवा, 'अपनी दाहिनी ओर'

5 : 30 प्रे 3 : 15; व्य 21 : 22 **5 : 31** प्रे 2 : 33; इब्र 2 : 10; 12 : 2 **5 : 32** लू 24 : 48; यो 15 : 26-27 **5 : 33** प्रे 7 : 54 **5 : 34** प्रे 22 : 3 **5 : 36** प्रे 21 : 38 **5 : 37** लू 2 : 2 **5 : 38** मत 15 : 13 **5 : 39** प्रे 9 : 5; 2 मक 7 : 19 **5 : 40** प्रे 22 : 19 **5 : 41** मत 5 : 10-12; 1 पत 4 : 13 **5 : 42** प्रे 18 : 5 **6 : 1** प्रे 4 : 35 **6 : 3** 1 तिम 3 : 7-8 **6 : 5** प्रे 8 : 5 **6 : 6** प्रे 1 : 24; 13 : 3; 14 : 23

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

किया। प्रेरितों ने*** प्रार्थना करने के बाद उन पर अपने हाथ रखे।

7 परमेश्वर का वचन फैलता गया। यरूशलेम में शिष्यों की संख्या बहुत अधिक बढ़ गई; और बहुत-से पुरोहितों ने इस विश्वास को स्वीकार कर लिया।

स्तीफनुस की गिरफ्तारी

8 स्तीफनुस अनुग्रह तथा सामर्थ्य से परिपूर्ण हो कर जनता के सामने आश्चर्य-कर्म तथा बड़े-बड़े चिह्न दिखाता था। 9 'दास्यमुक्त लोगों का सभागृह' कहलाने वाले सभागृह के कुछ सदस्य और कुरेने तथा सिकन्दरिया नगरों और किलिकिया तथा आसिया प्रदेशों के कुछ लोग स्तीफनुस का विरोध करने लगे। वे उससे वाद-विवाद करने आये। 10 किन्तु वे स्तीफनुस की बुद्धि तथा आत्मा का सामना न कर सके, क्योंकि वह आत्मा से प्रेरित हो कर बोलता था। 11 तब उन्होंने घूस दे कर कुछ व्यक्तियों को यह कहने के लिए फुसलाया, "हमने स्तीफनुस को मूसा तथा परमेश्वर की निन्दा करते सुना है।" 12 इस प्रकार जनता, धर्मवृद्धों तथा शास्त्रियों को भड़काने के बाद वे अचानक स्तीफनुस के पास आ धमके और उसे पकड़ कर धर्म-महासभा के सामने ले गये। 13 वहां उन्होंने झूठे गवाहों को खड़ा किया, जो बोले, "यह व्यक्ति सदा इस पवित्र मन्दिर तथा मूसा की व्यवस्था की निन्दा करता है। 14 हमने इसे यह कहते सुना है कि येशु नासरी यह स्थान नष्ट कर देगा और मूसा के द्वारा दी गई प्रथाओं को बदल देगा।" 15 धर्म-महासभा के सब सदस्य स्थिर दृष्टि से स्तीफनुस की ओर देख रहे थे। उसका मुखमण्डल उन्हें स्वर्गदूत के जैसा दीख पड़ा।

स्तीफनुस का भाषण

7 प्रधान महापुरोहित ने पूछा, "क्या ये बातें सही हैं?" 2 स्तीफनुस ने उत्तर दिया, "भाइयो और गुरुजनो! मेरी बात सुनिए। जब हमारे पूर्वज अब्राहम हारान देश में बसने से पहले मेसोपोतामिया में रहते थे, तो उस समय महिमामय परमेश्वर ने उन्हें दर्शन दिये 3 और कहा, 'तू अपना देश तथा अपना कुटुम्ब छोड़ दे और उस देश को जा, जिसे मैं तुझे दिखाऊंगा'। 4 इस पर वह कसदियों का देश छोड़ कर हारान देश में बस गये। उनके पिता के देहान्त के बाद, परमेश्वर उन्हें वहां से हटा कर इस देश में लाया, जहां आप आजकल रहते हैं। 5 इस देश में परमेश्वर ने उन्हें विरासत के रूप में पैर रखने को भी जगह नहीं दी; किन्तु उसने प्रतिज्ञा की कि मैं यह देश तुम्हारे अधिकार में और तुम्हारे पश्चात् तुम्हारे वंश के अधिकार में कर दूंगा, यद्यपि उस समय अब्राहम के कोई सन्तान नहीं थी। 6 परमेश्वर ने यह कहा, 'अब्राहम के वंशज पराये देश में परदेशी की तरह निवास करेंगे। वे लोग उन्हें दास बनायेंगे और चार सौ वर्ष तक उन पर अत्याचार करते रहेंगे।' 7 परमेश्वर ने फिर कहा, 'मैं उस राष्ट्र को दण्ड दूंगा' जिसके वे दास होंगे। इसके बाद वे वहां से बाहर निकल आयेंगे और इस स्थान में मेरी उपासना करेंगे।' 8 तब परमेश्वर ने अब्राहम के लिए ख़तने का विधान निर्धारित किया। और सचमुच, अब्राहम ने इसहाक को उत्पन्न किया और आठवें दिन उनका ख़तना किया। इसहाक से याकूब और याकूब से बारह कुलपति उत्पन्न हुए।

9 "इन कुलपतियों ने ईर्ष्या के कारण यूसुफ़ को मिस्र देश में बेच दिया, किन्तु परमेश्वर उसके साथ रहा। 10 उसने सब विपत्तियों से उसको छुड़ाया और उसे मिस्र देश के राजा फरओ की दृष्टि में प्रिय तथा बुद्धिमान् बना दिया। फरओ ने यूसुफ को मिस्र का तथा अपने

***मूल में 'उन्होंने'।

6 : 7 प्रे 19 : 20 6 : 10 लू 21 : 15 6 : 11 मत 26 : 60-66 6 : 13 यिर 26 : 11 7 : 2 भज 29 : 3; उत 11 : 31; 15 : 7 7 : 3 उत 12 : 1; 48 : 4 7 : 4 उत 11 : 32; 12 : 5 7 : 5 उत 12 : 7; 13 : 15; 17 : 8; 48 : 4; व्य 2 : 5 7 : 6 उत 15 : 13-14; नि 2 : 22; 12 : 40 7 : 7 नि 3 : 12 7 : 8 उत 17 : 10; 21 : 4 7 : 9 उत 37 : 11, 28; 39 : 1-2, 21; 45 : 4 7 : 10 उत 39 : 21; 41 : 38-45; भज 105 : 21 7 : 11 उत 41 : 54; 42 : 5

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

समस्त राजभवन का अधिकारी नियुक्त किया।
11उस समय सारे मिस्र तथा कनान देश में
अकाल और घोर संकट पड़ा। इस कारण हमारे
पूर्वजों को अन्न नहीं मिल रहा था। 12जब याकूब
ने यह सुना कि मिस्र देश में अनाज मिलता है,
तो उन्होंने हमारे पूर्वजों को वहां पहली बार
भेजा। 13दूसरी यात्रा के अवसर पर यूसुफ़ ने
अपने भाइयों को अपना परिचय दिया और
फ़रओ को भी यूसुफ़ के कुल का पता चला।
14तब यूसुफ़ ने अपने पिता याकूब और उनके
सारे परिवार को बुला भेजा। सब मिला कर वे
पचहत्तर व्यक्ति थे। 15याकूब मिस्र देश गये।
वहां उनका और हमारे पूर्वजों का भी देहान्त
हुआ। 16बाद में उनके अवशेष शकेम नगर
लाये गये और उस क़बर में रखे गये, जिसे
अब्राहम ने शकेम में हमोर के पुत्रों से चाँदी दे
कर खरीदा था।

17 ''परमेश्वर ने अब्राहम से जो प्रतिज्ञा की
थी, जब उसके पूर्ण होने का समय निकट
आया, तब हमारे लोगों की संख्या मिस्र देश में
बहुत अधिक बढ़ गई। 18अन्ततः मिस्र देश में
एक ऐसा राजा हुआ, जो यूसुफ के विषय में
कुछ नहीं जानता था। 19उसने हमारी जाति के
साथ कपटपूर्ण व्यवहार किया, और हमारे
पूर्वजों पर अत्याचार किया। उसने हमारे पूर्वजों
को बाध्य किया कि वे अपने नवजात शिशुओं
को बाहर फेंक दिया करें, जिससे वे जीवित न
रह सकें। 20ऐसे समय मूसा का जन्म हुआ। वह
अत्यन्त सुन्दर* थे और तीन महीने तक अपने
पिता के घर में पाले गये। 21इसके बाद जब वह
फेंक दिये गये, तब फरओ की पुत्री ने उन्हें गोद
ले लिया और अपने पुत्र की तरह उनका
पालन-षोषण किया। 22मूसा को मिस्रियों की
सब विद्याओं का प्रशिक्षण मिला। वह
शक्तिशाली वक्ता और कर्मवीर बने।

23''जब वह चालीस वर्ष के हुए, तब उनके
मन में आया कि अपने इस्राएली भाइयों से भेंट
करें। 24उन में से एक के साथ दुर्व्यवहार होते
देख कर, मूसा ने उसका पक्ष लिया और मिस्री
को मार कर अत्याचार का बदला चुकाया।
25मूसा का विचार यह था कि मेरे भाई समझ
जायेंगे कि परमेश्वर मेरे द्वारा उनका उद्धार
करेगा; किन्तु उन्होंने ऐसा नहीं समझा। 26दूसरे
दिन मूसा ने दो इस्राएलियों को लड़ते देखा।
उन्होंने यह कह कर उन में मेल कराने का
प्रयास किया, 'मित्रो! आप लोग भाई-भाई हैं।
आप क्यों एक दूसरे का अनिष्ट करना चाहते
हैं?' 27जो व्यक्ति अपने पड़ोसी के साथ
अन्याय कर रहा था, उसने मूसा को एक ओर
ढकेल दिया और कहा, 'किसने तुम को हमारा
शासक और न्यायकर्ता नियुक्त किया है?
28कल तुमने उस मिस्री का वध किया। क्या
तुम उसी तरह मुझको भी मार डालना चाहते
हो?' 29इस बात पर मूसा वहाँ से भाग निकले
और मिद्यान देश में परदेशी के रूप में रहने लगे।
वहाँ उनके दो पुत्र उत्पन्न हुए।

30 ''चालीस वर्ष पश्चात् सीनय पर्वत के
निर्जन प्रदेश में मूसा को जलती हुई झाड़ी की
ज्वाला में एक स्वर्गदूत दिखाई दिया। 31यह देख
कर मूसा अचम्भे में पड़ गये। जब वह इसका
निरीक्षण करने के लिए निकट आये, तो उन्हें
प्रभु की यह वाणी सुनाई दी, 32'मैं तेरे पूर्वजों
का परमेश्वर हूं—अब्राहम, इसहाक तथा
याकूब का परमेश्वर।' मूसा डर के मारे काँप
उठे। उन्हें फिर देखने का साहस नहीं हुआ।
33तब परमेश्वर ने उन से यह कहा, 'पैरों से जूते
उतार, क्योंकि जिस स्थान पर तू खड़ा है, वह
पवित्र भूमि है। 34 मैंने मिस्र देश में रहने वाली
अपनी प्रजा पर हो रहा अत्याचार अच्छी तरह
देखा और उसकी कराह सुनी है। मैं उसका

---

* शब्दशः 'परमेश्वर की दृष्टि में सुन्दर'

7 : 12 उत 42 : 2 **7 : 13** उत 45 : 3,16 **7 : 14** उत 45 : 9-11; 46 : 27 (यू० पाठ); नि 1 : 5; व्य 10 : 22 **7 : 15** उत 46 : 1; 49 : 33; नि 1 : 6 **7 : 16** उत 23 : 16-17; 33 : 19; यहो 24 : 32 **7 : 17** नि 1 : 7 **7 : 19** नि 1 : 9, 22; उत 24 : 7 **7 : 20** नि 2 : 2; इब्र 11 : 23 **7 : 21** नि 2 : 5, 10 **7 : 23** नि 2 : 11 **7 : 24** नि 2 : 12 **7 : 26** नि 2 : 13 **7 : 27** नि 2 : 14; लू 12 : 14 **7 : 29** नि 2 :15, 22; 18 : 3-4 **7 : 30** नि 3 : 2; व्य 33 : 16 **7 : 32** नि 3 : 6 **7 : 33** नि 3 : 5 **7 : 34** नि 2 : 24; 3 : 7,10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उद्धार करने उतरा हूँ। अब तैयार हो! मैं तुझे
मिस्र देश भेजूँगा।'
35''जिन मूसा को लोगों ने यह कहते हुए
अस्वीकार किया था कि किसने तुम को हमारा
शासक तथा न्यायकर्ता नियुक्त किया है?'
उन्हीं को परमेश्वर ने झाड़ी में दर्शन देने वाले
स्वर्गदूत के माध्यम से शासक तथा मुक्तिदाता
के रूप में उनके पास भेजा। 36वही मूसा उन्हें
बाहर निकाल लाये और मिस्र देश में, लाल
समुद्र के तट पर तथा निर्जन प्रदेश में चालीस
वर्ष तक आश्चर्य कर्म और चिह्न दिखाते रहे।
37यह वही मूसा हैं जिन्होंने इस्राएलियों से कहा
था, 'परमेश्वर तुम्हारे भाइयों में से तुम्हारे लिए
मुझ-जैसा एक नबी खड़ा करेगा।*' 38यह वही
मूसा हैं जो निर्जन प्रदेश की मंडली में उस
स्वर्गदूत के साथ थे, जिसने सीनय पर्वत पर उन
से वार्तालाप किया था। वह हमारे पूर्वजों के
साथ भी थे। मूसा को जीवन्त दिव्यवाणी प्राप्त
हुई, ताकि वह उसे हम लोगों को सुनायें।
39किन्तु हमारे पूर्वजों ने उनकी बात मानना नहीं
चाहा। उन्होंने मूसा को ठुकरा दिया। वे मिस्र
देश लौटना चाहते थे। 40उन्होंने हारून से कहा,
'हमारे लिए ऐसे देवतागण बनाइए, जो हमारे
आगे-आगे चलें; क्योंकि हम नहीं जानते कि
उस मूसा का क्या हुआ, जो हमें मिस्र देश से
निकाल लाया था।' 41उन दिनों उन्होंने बछड़े
की मूर्ति बनायी और उसके आगे बलि चढ़ायी
और अपने हाथों की बनायी हुई मूर्ति के लिये
एक उत्सव मनाया। 42तब परमेश्वर उनसे विमुख
हो गया और उसने उन्हें आकाश के नक्षत्रों की
उपासना करने के लिए छोड़ दिया, जैसा कि
नबियों की पुस्तक में लिखा है: 'इस्राएलियो!
क्या तुम लोगों ने निर्जन प्रदेश में चालीस वर्ष
तक मुझे पशु-बलि तथा अन्न-बलि चढ़ायी
थी? नहीं! 43तुम लोग तो मोलेक देवता के
तम्बू को और अपने ईश्वर रैफान के तारे को,
अर्थात् उन प्रतिमाओं को जिन्हें तुमने आराधना
के निमित्त बनाया था, अपने कन्धों पर उठाकर
ले जाते रहे। इसलिए मैं तुम लोगों को बेबीलोन
के पार निर्वासित करूँगा।'
44''वास्तव में, निर्जन प्रदेश में हमारे पूर्वजों
के पास साक्षी का तम्बू था। परमेश्वर ने मूसा
को इसके विषय में यह आदेश दिया था, 'तूने
जो नमूना देखा है, उसी के अनुसार उसे
बनाना।' 45वह तम्बू अगली पीढ़ी के पूर्वजों
को मिला और वे उसे यहोशुअ के नेतृत्व में इस
देश में ले आये। यह देश अन्यजातियों के हाथ
में था, किन्तु परमेश्वर ने उन्हें हमारे पूर्वजों के
सामने निकाल दिया। और दाऊद के समय तक
ऐसा ही रहा। 46दाऊद को परमेश्वर की कृपादृष्टि
प्राप्त थी और उसने याकूब के वंश के लिए*
एक निवास स्थान प्राप्त करने का वर मांगा;
47किन्तु सुलेमान ने परमेश्वर के लिए मन्दिर
बनवाया। 48फिर भी सर्वोच्च परमेश्वर मनुष्यों
द्वारा बनाये हुए भवनों में निवास नहीं करता,
जैसा कि नबी ने कहा है,
49'आकाश मेरा सिंहासन है
और पृथ्वी मेरे चरणों की चौकी।
प्रभु कहता है—
तुम मेरे लिए कैसा मन्दिर बनाओगे?
मेरा विश्राम-स्थल कहाँ होगा?
50क्या यह सब मेरे हाथ का बनाया हुआ नहीं
है?'
51''ओ हठधर्मियो! मन से विधर्मियो, और
कान से बहरे लोगो! आप लोग सदा ही पवित्र
आत्मा का विरोध करते हैं, जैसा कि आपके
पूर्वज भी किया करते थे। 52-53आपके पूर्वजों
ने किस नबी पर अत्याचार नहीं किया? उन्होंने

---

* अथवा, ''एक नबी उठाएगा जैसा उसने मुझे उठाया है।''। * पाठांतर, ''याकूब के परमेश्वर के लिए''

7 : 35 नि 2 : 14 **7 : 36** गण 14 : 33; नि 7 : 3,10; 14 : 21 **7 : 37** प्रे 3 : 22; व्य 18 : 15 **7 : 38** प्रे 7 : 53; नि 19 : 3; व्य 9 : 10 **7 : 39** गण 14 : 3 **7 : 40** नि 32 : 1, 23 **7 : 41** नि 32 : 4, 6 **7 : 42** यिर 19 : 13; आमो 5 : 25-27 (यू० पाठ) **7 : 44** नि 25 : 40 **7 : 45** उत 17 : 8; 48 : 4; व्य 32 : 49; यहो 3 : 14; 18 : 1 **7 : 46** 2 शम 7 : 2; भज 132 : 5 **7 : 47** 1 रा 6 : 1 **7 : 48** यश 66 : 1-2 **7 : 51** नि 32 : 9; लेव 26 : 41 गण 27 : 14; यिर 9 : 26; यश 63 : 10, **7 : 52** 2 इति 36 : 16; मत 23 : 31 **7 : 53** नि 20 : 1-26; गल 3 : 19; इब्र 2 : 2; प्रे 7 : 38

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उन लोगों का वध किया, जिन्होंने पहले से ही
धर्मात्मा के आगमन की घोषणा की थी। आप
लोगों को स्वर्गदूतों के माध्यम से व्यवस्था प्राप्त
हुई, किन्तु आपनें उसका पालन नहीं किया
और अब आप उस धर्मात्मा के पकड़वाने वाले
तथा हत्यारे बन गये हैं।''

स्तीफनुस की हत्या

54स्तीफनुस की बातें सुन कर लोग
आगबबूला हो गये और उस पर दांत पीसने
लगे। 55परन्तु स्तीफनुस ने, पवित्र आत्मा से
पूर्ण हो कर, स्वर्ग की ओर दृष्टि की और
परमेश्वर की महिमा को तथा परमेश्वर की
दाहिनी ओर खड़े येशु को देखा। 56वह बोल
उठा, ''मैं स्वर्ग को खुला और परमेश्वर की
दाहिनी ओर खड़े मानव-पुत्र को देख रहा
हूँ।'' 57इस पर उन्होंने ऊँचे स्वर से चिल्ला कर
अपने कान बन्द कर लिये। वे सब मिल कर
स्तीफनुस पर टूट पड़े 58और उसे नगर के बाहर
निकाल कर उस पर पत्थर मारने लगे। गवाहों
ने अपने कपड़े शाऊल नामक नवयुवक के पैरों
के पास रख दिये थे। 59जब लोग स्तीफनुस पर
पत्थर मार रहे थे, तो उसने यह प्रार्थना की,
''प्रभु येशु! मेरी आत्मा को ग्रहण कर!' 60तब
वह घुटने टेक कर ऊँचे स्वर से बोला, ''प्रभु!
यह पाप इन पर मत लगाना!'' और यह कह
कर उसने प्राण त्याग दिये।*

8 शाऊल इस हत्या का समर्थन करता था।
उसी दिन यरूशलेम में कलीसिया पर घोर
अत्याचार प्रारम्भ हुआ। प्रेरितों को छोड़ सब-
के-सब विश्वासीजन यहूदा तथा सामरी प्रदेशों
में बिखर गये।
2श्रद्धालु लोगों ने स्तीफनुस को कबर में
रखा और उसके लिए बहुत विलाप किया।
3शाऊल उस समय कलीसिया को सता रहा
था। वह घर-घर में घुस जाता और स्त्री-पुरुषों
को वहाँ से घसीट कर बन्दीगृह में डाल दिया
करता था।

सामरी प्रदेश में फ़िलिप

4जो लोग बिखर गये थे, वे घूम-घूम कर
शुभ समाचार का प्रचार करते रहे।
5फ़िलिप सामरी प्रदेश के एक नगर में गया
और वहां के लोगों को मसीह का संदेश सुनाने
लगा। 6जब लोगों ने स्वयं फ़िलिप की बातें
सुनीं और उसके द्वारा किये गये आश्चर्य चिह्न
देखे, तब वे एक चित हो उसके कथनों पर
ध्यान देने लगे। 7अशुद्ध आत्माएं ऊँचे स्वर से
चिल्लाती हुई बहुतों में से निकलीं, जो उनसे
ग्रस्त थे और लकवे के अनेक रोगी तथा लँगड़े
स्वस्थ हो गये। 8इस प्रकार उस नगर में आनन्द
ही आनन्द छा गया।

जादूगर शिमोन

9शिमोन नामक व्यक्ति उस नगर में रहता
था। वह कुछ समय से जादू के खेल दिखा कर
सामरियों को चकित करता और महान् होने का
दावा करता था। 10छोटों से लेकर बड़ों तक,
सभी लोग उसकी बात मानते थे और कहते थे,
''यह मनुष्य ईश्वर की वह शक्ति है, जो
'महाशक्ति' कहलाती है।'' 11उसने बहुत दिनों
से अपनी जादूगरी द्वारा लोगों को चकित कर
रखा था, इसलिए वे उसकी बात मानते थे;
12किन्तु जब वे फ़िलिप की बातों पर विश्वास
करने लगे, जो परमेश्वर के राज्य तथा येशु
मसीह के नाम के शुभसमाचार का प्रचार करता
था, तो स्त्री-पुरुष सब ने बपतिस्मा ग्रहण कर
लिया। 13स्वयं शिमोन ने भी विश्वास किया।
बपतिस्मा ग्रहण करने के बाद वह फ़िलिप के
साथ निरंतर रहने लगा। वह चिह्न तथा महान्
सामर्थ्य के कार्य होते देख कर बड़े अचम्भे में
पड़ जाता था।
14जब यरूशलेम में रहने वाले प्रेरितों ने यह
सुना कि सामरियों ने परमेश्वर का वचन
स्वीकार कर लिया है, तो उन्होंने पतरस और
योहन को उनके पास भेजा। 15वे दोनों वहां गये
और उन्होंने सामरियों के लिए यह प्रार्थना की

* अक्षरशः 'सो गए।'

7 : 54 प्रे 5 : 33 7 : 55 लू 22 : 69 7 : 58 प्रे 22 : 20 7 : 59 भज 31 : 5; लू 23 : 46 7 : 60 लू 23 : 34
8 : 1 प्रे 7 : 58; 11 : 19; 22 : 20 8 : 2 मत 14 : 12 8 : 3 प्रे 9 : 1; 22 : 4 8 : 5 प्रे 6 : 5 8 : 7 मक
16 : 17 8 : 8 यो 4 : 40-42 8 : 12 मत 28 : 19 8 : 14 प्रे 3 : 1

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कि उन्हें पवित्र आत्मा प्राप्त हो। 16पवित्र आत्मा
अब तक उनमें से किसी पर नहीं उतरा था।
उन्हें केवल प्रभु येशु के नाम पर बपतिस्मा दिया
गया था। 17अतः पतरस और योहन ने उन
पर हाथ रखे और उन्हें पवित्र आत्मा प्राप्त हो
गया।

18शिमोन ने यह देखा कि प्रेरितों के हाथ
रखने से लोगों को पवित्र आत्मा प्राप्त हो जाता
है, तो वह उनके पास रुपये ला कर 19बोला,
"मुझे भी यह शक्ति दीजिए कि मैं जिस पर
हाथ रखूँ, उसे पवित्र आत्मा प्राप्त हो जाये।"
20किन्तु पतरस ने उत्तर दिया, "नाश हो तेरा,
और तेरे रुपयों का! क्योंकि तूने परमेश्वर का
वरदान रुपयों से प्राप्त करने का विचार किया।
21इस बात में तेरा न तो कोई भाग है और न कोई
अधिकार; क्योंकि तेरा हृदय परमेश्वर की दृष्टि
में निष्कपट नहीं है। 22तू अपने इस पाप के
लिए पश्चात्ताप कर और प्रभु से प्रार्थना कर,
जिससे वह तेरा यह दुर्विचार क्षमा कर दे। 23मैं
देख रहा हूँ कि तू पित्त की कड़वाहट से कूट-
कूट कर भरा हुआ और अधर्म की बेड़ियों से
जकड़ा हुआ है।" 24शिमोन ने उत्तर दिया,
"आप लोग ही प्रभु से मेरे लिए प्रार्थना
कीजिए, जिससे आपने जो बातें कही हैं, उन
में एक भी मुझ पर न बीते।"

25जब पतरस और योहन साक्षी देकर प्रभु
का संदेश सुना चुके, तब वे यरूशलेम लौट
गये। उन्होंने इस यात्रा में सामरियों के बहुत-
से गाँवों में शुभ समाचार सुनाया।

इथियोपिया देश के उच्चाधिकारी का बपतिस्मा

26प्रभु के दूत ने फ़िलिप से कहा, "उठिए,
यरूशलेम से गाज़ा जाने वाले मार्ग पर दक्षिण
की ओर जाइए। यह मार्ग निर्जन है।" 27वह
उठ कर चल पड़ा। उस समय इथियोपिया देश*
का एक ख़ोजा इथियोपियाई महारानी कन्दाके
का उच्चाधिकारी तथा कोषाध्यक्ष था। वह
आराधना के लिए यरूशलेम आया था; 28और
अब लौट रहा था। वह अपने रथ पर बैठा हुआ
नबी यशायाह का ग्रन्थ पढ़ रहा था। 29आत्मा
ने फ़िलिप से कहा, "आगे बढ़िए और रथ के
साथ चलिए।" 30फ़िलिप दौड़ कर ख़ोजे के
पास पहुंचा और उसे नबी यशायाह का ग्रन्थ
पढ़ते सुन कर पूछा, "आप जो पढ़ रहे हैं, क्या
उसे समझते हैं?" 31उसने उत्तर दिया, "जब
तक कोई मेरा मार्गदर्शन न करे, तब तक मैं कैसे
समझ सकता हूँ?" उसने फिलिप से निवेदन
किया कि वह रथ पर चढ़ कर उसके साथ बैठ
जाये। 32वह धर्मग्रन्थ का यह प्रसंग पढ़ रहा
था :

'जैसे भेड़ को वध के लिए ले जाया जाता
है,
और मेमना ऊन कतरने वाले के सामने निः
शब्द रहता है,
वैसे ही उसने अपना मुँह नहीं खोला।
33उसकी दशा दयनीय थी,
उसके साथ न्याय नहीं किया गया।
उसकी वंशावली की चर्चा कौन कर सकेगा?
क्योंकि उसका जीवन पृथ्वी पर समाप्त
किया जा रहा है।'

34ख़ोजे ने फ़िलिप से पूछा, "आप कृपया
मुझे बताइए, नबी किसके विषय में यह कह रहे
हैं? अपने विषय में या किसी दूसरे के विषय
में?" 35तब फ़िलिप ने कहना आरंभ किया
और धर्मग्रन्थ के इस प्रसंग को आधार बना कर
उसे येशु का शुभ समाचार सुनाया। 36यात्रा करते-
करते वे मार्ग में एक जलाशय के पास पहुँचे।
ख़ोजे ने कहा, "यहाँ पानी है। अब मेरे
बपतिस्मा में क्या बाधा है?" [37फिलिप ने
उत्तर दिया, "यदि आप सम्पूर्ण हृदय से
विश्वास करते हैं, तो कोई बाधा नहीं।" इस पर
उसने कहा, "मैं विश्वास करता हूँ कि येशु
मसीह परमेश्वर के पुत्र हैं।"**] 38उसने रथ
रोकने का आदेश दिया। तब फ़िलिप और
ख़ोजा, दोनों जल में उतरे और फ़िलिप ने उसे

* अथवा, आफ्रिका महाद्वीप का 'कूश देश'। **कुछ प्राचीन प्रतियों में यह पद नहीं पाया जाता है।

8 : 17 1 तिम 4 : 14 **8 : 21** भज 78 : 37; इफ 5 : 5 **8 : 23** व्य 29 : 18; यश 58 : 6; इब्र 12 : 15 **8 : 27** यश 56 : 3-7 **8 : 31** यो 16 : 13 **8 : 32** यश 53 : 7-8 (यू० पाठ) **8 : 36** प्रे 10 : 47

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बपतिस्मा दिया। [39]जब वे जल से बाहर आये,
तो परमेश्वर का आत्मा फ़िलिप को उठा ले
गया। ख़ोजे ने उसे फिर नहीं देखा। वह आनन्द
के साथ अपने मार्ग पर चला गया। [40]फ़िलिप
ने अपने को अश्दोद नगर में पाया और वह
कैसरिया पहुँचने तक सब नगरों में शुभ-
समाचार का प्रचार करता रहा।

शाऊल का हृदय-परिवर्तन

9 शाऊल पर अब भी प्रभु के शिष्यों को
धमकाने तथा मार डालने की धुन सवार
थी। उसने प्रधान महापुरोहित के पास जा कर
[2]दमिश्क के सभागृहों के नाम पत्र माँगे, जिन
में उसे यह अधिकार दिया गया कि यदि वह
वहाँ इस पन्थ के अनुयायियों को पाये, तो वह
उन्हें—चाहे वे पुरुष हों या स्त्रियाँ—बाँध कर
यरूशलेम ले आये।
[3]जब वह यात्रा करते-करते दमिश्क नगर
के पास पहुँचा, तो एकाएक आकाश से एक
ज्योति उसके चारों ओर चमक उठी। [4]वह भूमि
पर गिर पड़ा और उसने एक आवाज सुनी।
कोई उससे कह रहा था, "शाऊल! शाऊल!
तू मुझे क्यों सता रहा है?" [5]उसने कहा, "प्रभु!
आप कौन हैं?" उत्तर मिला, "मैं येशु हूँ, जिस
को तू सता रहा है। [6]उठ और नगर में जा। तुझे
जो करना है, वह तुझे बताया जायेगा।" [7]उसके
साथ यात्रा करने वाले अवाक् रह गये; क्योंकि
उन्होंने आवाज तो सुनी, पर देखा किसी को
नहीं। [8]शाऊल भूमि से उठा। यद्यपि उसकी
आँखें खुली थीं, किन्तु वह कुछ नहीं देख
सका। इसलिए वे उसका हाथ पकड़ कर उसे
दमिश्क नगर ले गये। [9]वह तीन दिनों तक
अन्धा रहा और उसने कुछ खाया-पिया नहीं।
[10]दमिश्क में हनन्याह नामक एक शिष्य
रहता था। प्रभु ने उसे दर्शन दे कर कहा,
"हनन्याह!" उसने उत्तर दिया, "प्रभु! प्रस्तुत
हूँ।" [11]प्रभु ने उससे कहा, "तुरन्त 'सीधी'
नामक गली जाओ और यहूदा के घर में
तरसुस-निवासी शाऊल का पता लगाओ। वह
इस समय प्रार्थना कर रहा है। [12]उसने दर्शन में
देखा कि हनन्याह नामक मनुष्य उसके पास आ
कर उस पर हाथ रख रहा है, जिससे उसे दृष्टि
पुनः प्राप्त हो जाये।" [13]परन्तु हनन्याह ने कहा,
"प्रभु! मैंने अनेक लोगों से सुना है कि इस
व्यक्ति ने यरूशलेम में आपके सन्तों पर कितना
अत्याचार किया है। [14]उसे महापुरोहितों से यह
अधिकार मिला है कि वह यहाँ उन सब को
गिरफ़्तार कर ले, जो आपके नाम की दुहाई देते
हैं।" [15]प्रभु ने हनन्याह से कहा, "जाओ। वह
मेरा निर्वाचित पात्र है। वह अन्यजातियों,
राजाओं तथा इस्राएलियों के सम्मुख मेरे नाम
का प्रचार करेगा। [16]मैं स्वयं उसे बताऊंगा कि
उसे मेरे नाम के कारण कितना कष्ट भोगना
होगा।" [17]तब हनन्याह चला गया और उसने
घर में प्रवेश किया। उसने शाऊल पर हाथ रख
कर कहा, "भाई शाऊल! जिस प्रभु येशु ने
आप को यहां आते समय मार्ग में दर्शन दिये थे,
उन्होंने मुझे भेजा है, ताकि आप को दृष्टि
पुनः प्राप्त हो और आप पवित्र आत्मा से
परिपूर्ण हो जायें।" [18]तत्क्षण उसकी आंखों से
छिलके-जैसे गिरे और उसे दृष्टि पुनः प्राप्त हो
गयी। वह उठा और उसने बपतिस्मा ग्रहण
किया। [19]उसने भोजन किया और उसे बल
प्राप्त हुआ।

दमिश्क में शाऊल का धर्मप्रचार

शाऊल कुछ समय तक दमिश्क में शिष्यों
के साथ रहे। [20]वह शीघ्र ही सभागृहों में येशु
के विषय में प्रचार करने लगे कि वही परमेश्वर
के पुत्र हैं। [21]सब सुनने वाले अचम्भे में पड़ कर
कहते थे, "क्या यह वह व्यक्ति नहीं है, जो
यरूशलेम में इस नाम की भक्ति करने वालों को
नष्ट कर रहा था? क्या वह यहाँ इसलिए नहीं
आया था कि वह उन्हें बाँध कर महापुरोहितों
के पास ले जाये?" [22]किन्तु शाऊल और भी
सामर्थी होते गये। इस बात का प्रमाण दे कर कि

---

8 : 39 1 रा 18 : 12 **8 : 40** प्रे 21 : 8 -9 **9 : 1-29** प्रे 22 : 3-21; 26 : 9-20 **9 : 1** प्रे 8 : 3 **9 : 3** 1 कुर 15 : 8 **9 : 5** प्रे 5 : 39 **9 : 10** प्रे 10 : 17; 16 : 9 **9 : 11** प्रे 21 : 39 **9 : 14** 1 कुर 1 : 2; प्रे 22 : 16; 2 तिम 2 : 22 **9 : 15** प्रे 25 : 13; 17 : 24; रोम 1 : 5; 2 कुर 4 : 7 **9 : 16** प्रे 23 : 29; 2 कुर 11 : 23-28 **9 : 18** तोब 11 : 13-15 **9 : 21** प्रे 8 : 1; 9 : 1.14; 26: 10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

येशु ही मसीह हैं, उन्होंने दमिश्क में रहने वाले
यहूदियों का मुंह बन्द कर दिया।
23इस प्रकार बहुत दिन बीत गये। अब
यहूदियों ने उनकी हत्या करने का षड्यन्त्र
रचा, 24किन्तु शाऊल को उनके षड्यन्त्र का
पता चल गया। वे उन्हें मार डालने के उद्देश्य
से दिन-रात शहर के फाटकों पर कड़ा पहरा
दे रहे थे; 25परन्तु शाऊल के शिष्य उन्हें एक
रात को ले गये और उन्होंने शाऊल को टोकरे
में बैठा कर नगर की चारदीवारी के छेद से नीचे
उतार दिया।

शाऊल की यरूशलेम-यात्रा

26जब शाऊल यरूशलेम पहुँचे, तो उन्होंने
शिष्यों के समुदाय में सम्मिलित हो जाने का
प्रयत्न किया, किन्तु वे सब उन से डरते थे,
क्योंकि उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था कि वह
सचमुच येशु के शिष्य बन गये हैं। 27तब बरनबास
उनको प्रेरितों के पास ले गये और बताया कि
शाऊल ने मार्ग में किस प्रकार प्रभु के दर्शन
किये और प्रभु ने उन से बात की। बरनबास ने
उन्हें यह भी बताया कि किस प्रकार पौलुस ने
दमिश्क में निर्भीकता से येशु के नाम का प्रचार
किया। 28इसके पश्चात् शाऊल यरूशलेम में
प्रेरितों के साथ आने-जाने लगे और निर्भीकता
से येशु के नाम का प्रचार करने लगे। 29वह
यूनानी-भाषी यहूदियों से बात-चीत और
बहस किया करते थे, किन्तु वे लोग उन्हें मार
डालना चाहते थे। 30जब विश्वासी भाई-बहिनों
को इसका पता चला, तो वे शाऊल को
कैसरिया बन्दरगाह ले गये और वहां से तरसुस
नगर को भेज दिया।

कलीसिया का शान्तिपूर्ण विकास

31अब समस्त यहूदा, गलील तथा सामरी
प्रदेशों में कलीसिया को शान्ति मिली और
उसका निर्माण होता रहा। वह प्रभु के भय में
आचरण करती हुई और पवित्र आत्मा की
सान्त्वना प्राप्त कर वृद्धि करती गई।

लुद्दा नगर में पतरस

32पतरस, चारों ओर दौरा करते हुए, किसी
दिन लुद्दा नगर में रहने वाले संतों के यहाँ पहुँचे।
33वहाँ उन्हें एनियास नामक व्यक्ति मिला, जो
लकवा रोग से पीड़ित था और आठ वर्षों से
रोग-शैया पर पड़ा हुआ था। 34पतरस ने उससे
कहा, "एनियास! येशु मसीह तुम को स्वस्थ
कर रहे हैं। उठो और अपना बिस्तर स्वयं ठीक
करो।" और वह उसी क्षण उठ खड़ा हुआ।
35लुद्दा और शारोन के सब निवासियों ने उसे
देखा और वे प्रभु की ओर अभिमुख हो गये।

याफा नगर में तबिथा को जीवन-दान

36याफा नगर में तबिथा नामक शिष्या रहती
थी। तबिथा का यूनानी अनुवाद दोरकास
(अर्थात् हरिणी) है। वह पुण्य-कर्म और
दान-धर्म में लगी रहती थी। 37उन्हीं दिनों वह
बीमार पड़ी और चल बसी। लोगों ने उसे
नहला कर अटारी पर लिटा दिया। 38लुद्दा याफा
नगर के समीप है। इसलिए जब शिष्यों ने सुना
कि पतरस वहाँ हैं, तो उन्होंने दो आदमियों को
भेज कर उनसे यह अनुरोध किया कि आप
तुरन्त हमारे यहाँ आइए।
39अतः पतरस उसी समय उनके साथ चल
दिये। जब वह याफा पहुँचे, तो लोग उन्हें
अटारी पर ले गये। वहां सब विधवाएं रोती हुई
उनके चारों ओर आ खड़ी हुईं और वे कुरते
और कपड़े उन्हें दिखाने लगीं, जिन्हें दोरकास
ने उनके साथ रहते समय बनाए थे। 40पतरस
ने सब को बाहर किया और घुटने टेक कर
प्रार्थना की। इसके बाद वह शव की ओर मुड़
कर बोले, "तबिथा, उठो!" उसने आँखें खोल
दीं और पतरस को देखकर वह उठ बैठी।
41पतरस ने हाथ बढ़ा कर उसे उठाया और संतों
तथा विधवाओं को बुला कर उसे जीता-जागता
उनके सामने उपस्थित कर दिया। 42यह बात
समस्त याफा में फैल गयी और बहुत-से लोगों
ने प्रभु में विश्वास किया। 43पतरस बहुत दिनों

---

9 : 22 प्रे 18 : 28 **9 : 23** प्रे 23 : 12-29 **9 : 24** प्रे 23 : 16 **9 : 25** 2 कुर 11 : 32-33 **9 : 26** गल 1 : 17-19 **9 : 27** प्रे 9 : 20 **9 : 30** गल 1 : 21; प्रे 11 : 25 **9 : 40** मक 5 : 40-41 **9 : 41** प्रे 9 : 32 **9 : 43** प्रे 10 : 6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तक याफा में शिमोन नामक एक चर्मकार के
यहाँ रहे।

रोमन शतपति करनेलियुस

10 कैसरिया में करनेलियुस नामक एक
मनुष्य रहता था। वह इतालवी नामक
सेना-दल का शतपति था। 2वह, और उसका
समस्त परिवार भी, धर्मपरायण तथा ईश्वर-
भक्त था। वह जनता को बहुत दान दिया करता
और हर समय परमेश्वर की प्रार्थना में लगा
रहता था।

3उसने एक दिन दोपहर के लगभग तीन बजे
दर्शन में यह साफ़-साफ देखा कि परमेश्वर का
दूत उसके पास आ कर कह रहा है,
"करनेलियुस!" 4करनेलियुस ने उस पर आँखें
गड़ा दीं, और भयभीत हो कर कहा, "प्रभु!
क्या है?" स्वर्गदूत ने उत्तर दिया, "आपकी
प्रार्थनाएं और आपके दान परमेश्वर के सामने
पहुँचे हैं और उसने आपको स्मरण किया है।
5अब आप आदमियों को याफा नगर भेजिए
और सिमोन को, जो पतरस कहलाते हैं, बुला
लीजिए। 6वह चर्मकार शिमोन के यहाँ ठहरे
हुए हैं। उसका घर समुद्र के किनारे है।" 7जब
वह स्वर्गदूत, जो उससे बात कर रहा था, चला
गया तो करनेलियुस ने दो सेवकों और अपने
अनुचरों में से एक धर्मपरायण सैनिक को
बुलाया 8और उन्हें सारी बातें समझा कर याफा
नगर भेजा।

9दूसरे दिन जब वे यात्रा करते-करते नगर
के निकट पहुँच रहे थे, तब पतरस लगभग
दोपहर के समय छत पर प्रार्थना करने गये।
10उस समय उन्हें भूख लगी और भोजन करने
की इच्छा हुई। लोग भोजन बना ही रहे थे कि
पतरस आत्मा से आविष्ट हो गये। 11उन्होंने देखा
कि स्वर्ग खुल गया है और लम्बी-चौड़ी
चादर- जैसा कोई पात्र उतर रहा है और उसके
चारों कोने पृथ्वी पर रखे जा रहे हैं; 12उस में
सब प्रकार के चौपाये, पृथ्वी पर रेंगने वाले
जीव-जन्तु और आकाश के पक्षी हैं। 13तब उन्हें
यह वाणी सुनाई दी, जिसने कहा, "पतरस!
उठो, इन्हें मारो और खाओ।" 14किन्तु पतरस
ने कहा, "प्रभु! कभी नहीं! मैंने कभी कोई
अपवित्र अथवा अशुद्ध वस्तु नहीं खायी!"
15फिर वह वाणी दूसरी बार उन्हें सुनाई पड़ी,
"परमेश्वर ने जिसे शुद्ध घोषित किया, तुम उसे
अशुद्ध मत कहो।" 16तीन बार ऐसा ही हुआ
और इसके पश्चात् वह पात्र अचानक स्वर्ग में
ऊपर उठा लिया गया।

17पतरस अभी यह नहीं समझ पा रहे थे कि
उन्होंने जो दृश्य देखा है, उसका क्या तात्पर्य हो
सकता है। इतने में करनेलियुस द्वारा भेजे गये
मनुष्य शिमोन के घर का पता लगा कर द्वार पर
आ पहुँचे। 18उन्होंने ऊंचे स्वर में पुकारकर यह
पूछा, "क्या सिमोन, जो पतरस कहलाते हैं,
इसी घर में ठहरे हुए हैं?" 19पतरस अब भी
उस दर्शन के विषय में विचार कर रहे थे कि
आत्मा ने उनसे कहा, "देखो! तीन मनुष्य तुम
को ढूंढ़ रहे हैं। 20उठो, नीचे उतरो और
निस्संकोच* उनके साथ चले जाओ, क्योंकि
उन्हें मैंने भेजा है।" 21तब पतरस उन लोगों के
पास नीचे जाकर बोले, "आप जिसे ढूँढ़ रहे हैं,
मैं वही हूँ। आप लोगों के आने का क्या कारण
है?" 22उन्होंने यह उत्तर दिया, "शतपति
करनेलियुस धार्मिक तथा ईश्वर-भक्त हैं।
समस्त यहूदी जनता उनका सम्मान करती है।
उन्हें एक पवित्र स्वर्गदूत से यह आज्ञा मिली है
कि वह आप को अपने घर बुला भेजें और
आपका उपदेश सुनें।" 23पतरस ने उन्हें घर के
भीतर बुलाया और उनका आतिथ्य-सत्कार
किया।

दूसरे दिन पतरस उनके साथ चले, तो याफा
के कुछ भाई भी उनके साथ हो लिये। 24वह
अगले दिन कैसरिया पहुंचे। करनेलियुस अपने

---

* अथवा, 'बिना भेदभाव'।

10 : 1 प्रे 27 : 1; मत 8 : 5 10 : 3 प्रे 3 : 1 10 : 6 प्रे 9 : 43; 10 : 9 यहूदी 8 : 5 10 : 11 प्रे 11 : 5-17
10 :14 यहेज 4 : 14; लेव 11 : 1-47 10 : 15 मत 15 : 11; मक 7 : 15, 19 10 : 19 प्रे 13 : 2; 15 : 28
10 : 23 प्रे 11 : 12

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सम्बन्धियों और घनिष्ठ मित्रों को बुला कर उन
लोगों की प्रतीक्षा कर रहा था। 25जब पतरस
भीतर जाने वाले ही थे, तब करनेलियुस उन से
मिला और उसने पतरस के चरणों पर गिर कर
प्रणाम किया। 26किन्तु पतरस ने उसे यह कहते
हुए उठाया, "खड़े हो जाइए, मैं भी तो मनुष्य
हूँ" 27और उसके साथ बातचीत करते हुए घर
में प्रवेश किया। वहाँ बहुत-से लोगों को एकत्र
देख कर 28पतरस ने उनसे यह कहा, "आप
जानते हैं कि गैर-यहूदी से सम्पर्क रखना या
उसके घर में प्रवेश करना यहूदी के लिए मना
है; किन्तु परमेश्वर ने मुझ पर यह प्रकट किया
है कि किसी भी मनुष्य को अशुद्ध अथवा
अपवित्र नहीं कहना चाहिए। 29इसलिए आपके
बुलाने पर मैं बिना किसी आपत्ति के यहाँ आया
हूँ। अब मैं पूछना चाहता हूँ कि आपने मुझे क्यों
बुलाया ?" 30करनेलियुस ने उत्तर दिया, "चार
दिन पहले इसी समय मैं अपने घर में तीन बजे
की प्रार्थना कर रहा था कि उजले वस्त्र पहने
एक पुरुष मेरे सामने आ खड़ा हुआ। 31उसने
यह कहा, 'करनेलियुस! आपकी प्रार्थनाएँ
सुनी गयी हैं और परमेश्वर ने आपके दानों को
स्मरण किया है। 32अब आप आदमियों को
याफा नगर भेजिए और सिमोन को, जो पतरस
कहलाते हैं, बुलाइए। वह चर्मकार शिमोन के
यहाँ, समुद्र के किनारे, ठहरे हुए हैं।' 33मैंने आप
को तुरन्त बुला भेजा और आपने पधारने की
कृपा की है। प्रभु ने आप को जो-जो आदेश
दिये हैं, उन्हें सुनने के लिए हम सब परमेश्वर
के सम्मुख उपस्थित हैं।"

पतरस का भाषण

34पतरस ने कहना आरम्भ किया, "मैं अब
अच्छी तरह समझ गया कि परमेश्वर किसी के
साथ पक्षपात नहीं करता। 35मनुष्य किसी भी
जाति का क्यों न हो, यदि वह परमेश्वर की
भक्ति करता और धर्माचरण करता है, तो वह
परमेश्वर का कृपापात्र बन जाता है।

36"परमेश्वर ने इस्राएलियों को अपना
सन्देश भेजा और येशु मसीह द्वारा, जो सब के
प्रभु हैं, शान्ति का शुभसमाचार सुनाया।
37नासरत-निवासी येशु के विषय में समस्त
यहूदा देश में जो हुआ है, उसे आप लोग जानते
हैं। वह-सब गलील प्रदेश में प्रारम्भ हुआ—उस
बपतिस्मा के पश्चात्, जिसका प्रचार योहन ने
किया था। 38परमेश्वर ने उन्हीं येशु को पवित्र
आत्मा और सामर्थ्य से अभिषिक्त किया था
और वह चारों ओर घूम-घूम कर भलाई करते
रहे और शैतान के वश में आये हुए लोगों को
स्वस्थ करते रहे, क्योंकि परमेश्वर उनके साथ
था। 39उन्होंने जो कुछ यहूदा प्रदेश और
यरूशलेम में किया, उसके साक्षी हम हैं। उन्हीं
येशु को लोगों ने क्रूस के काठ पर चढ़ा कर मार
डाला; 40परन्तु परमेश्वर ने उन्हें तीसरे दिन
जीवित किया और प्रत्यक्ष दिखाया—41सब
लोगों को नहीं, बल्कि उन साक्षियों को, जिन्हें
परमेश्वर ने पहले ही से चुन लिया था। वे साक्षी
हम हैं। मृतकों में से उनके जी उठने के पश्चात्
हम लोगों ने उनके साथ खाया-पिया 42और
उन्होंने हमें आदेश दिया कि हम जनता को
उपदेश दे कर घोषित करें और स्पष्ट साक्षी दें
कि यह वही हैं, जिन्हें परमेश्वर ने जीवितों और
मृतकों का न्यायकर्ता नियुक्त किया है। 43उन्हीं
के विषय में सब नबी साक्षी देते हैं कि जो कोई
येशु में विश्वास करेगा, उसे उनके नाम द्वारा
पापों की क्षमा मिलेगी।"

गैर-यहूदियों पर पवित्र आत्मा का अवतरण

44पतरस बोल ही रहे थे कि पवित्र आत्मा
उन सब पर उतर आया, जो उनका प्रवचन सुन
रहे थे। 45पतरस के साथ आये हुए यहूदी*
विश्वासी यह देख कर चकित रह गये कि

* शब्दशः "खतना किये हुए"

10 : 26 प्रे 14 : 15; प्रक 19 : 10 **10 : 34** व्य 10 : 17; 1 शम 16 : 7; रोम 2 : 11 **10 : 35** यो 9 : 31; 10 : 16; रोम 14 : 18 **10 : 36** भज 107-20; 147 : 18; यश 52 : 7; नहूम 1 : 15; मत 28 : 18 **10 : 37** मत 4 : 12-17 **10 : 38** यश 61 : 1; मत 3 : 16 **10 : 39** व्य 21 : 22 **10 : 40** 1 कुर 15 : 4-7 **10 : 41** प्रे 1 : 4; यो 14 : 19, 22; 15 : 27 **10 : 42** प्रे 17 : 31; रोम 14 : 9-10; 1 पत 4 : 5; 2 तिम 4 : 1 **10 : 43** य 33 : 24; 53 : 5-6, यिर 31 : 34; यहेज 34 : 16; दान 9 : 24

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पवित्र आत्मा का वरदान गैर-यहूदियों पर भी उण्डेला गया; 46क्योंकि वे गैर-यहूदियों को अध्यात्म भाषाओं में बोलते और परमेश्‍वर की स्तुति करते सुन रहे थे। तब पतरस ने कहा, 47"इन लोगों ने हमारे ही समान पवित्र आत्मा प्राप्त किया है, तो क्या कोई इन्हें बपतिस्मा का जल देने से इन्कार कर सकता है?" 48और पतरस ने आदेश दिया कि वे येशु मसीह के नाम पर बपतिस्मा लें। तब उन्होंने पतरस से यह अनुरोध किया, "आप कुछ दिन हमारे यहाँ रहिए।"

यरूशलेम में पतरस का स्पष्टीकरण

11 प्रेरितों तथा यहूदा-प्रदेश के विश्‍वासी भाई-बहिनों को यह पता चला कि गैर-यहूदियों ने भी परमेश्‍वर का वचन स्वीकार कर लिया है। 2अत: जब पतरस यरूशलेम पहुँचे, तो यहूदी विश्‍वासियों ने आलोचना करते हुए कहा, 3"आपने खतना-विहीन व्यक्‍तियों के घर में क्यों प्रवेश किया और उनके साथ क्यों भोजन किया?" 4इस पर पतरस ने क्रम से सारी बातें समझाते हुए कहा, 5"मैं याफा नगर में प्रार्थना करते समय आत्मा से आविष्‍ट हो गया। मैंने दर्शन देखा कि लम्बी-चौड़ी चादर-जैसा कोई पात्र स्वर्ग से उतर रहा है और उसके चारों कोने मेरे पास नीचे रखे जा रहे हैं। 6मैंने उस पर दृष्‍टि गड़ायी और ध्यान से देखा कि उसमें पृथ्वी के चौपाये, जंगली जानवर, रेंगने वाले जीव-जन्तु और आकाश के पक्षी हैं। 7मुझे एक वाणी यह कहते हुए सुनाई दी, 'पतरस! उठो, इन्हें मारो और खाओ।' 8मैंने कहा, 'प्रभु! कभी नहीं! मेरे मुँह में कभी कोई अपवित्र अथवा अशुद्ध वस्तु नहीं पड़ी।' 9उत्तर में स्वर्ग से दूसरी बार यह वाणी सुनाई दी, 'परमेश्‍वर ने जिसे शुद्ध घोषित किया, तुम उसे अशुद्ध मत कहो।', 10तीन बार ऐसा ही हुआ और इसके पश्‍चात् सब कुछ फिर स्वर्ग में ऊपर खींच लिया गया। 11उसी समय कैसरिया से मेरे पास भेजे हुए तीन मनुष्य उस घर के सामने आ पहुँचे, जहाँ हम ठहरे हुए थे। 12आत्मा ने मुझे आदेश दिया कि मैं बिना भेद-भाव उनके साथ जाऊँ। ये छ: भाई मेरे साथ हो लिये और हमने उस व्यक्‍ति के घर में प्रवेश किया। 13उसने हमें बताया कि उसने अपने घर में एक स्वर्गदूत को खड़े हुए देखा, जिसने उससे यह कहा, 'किसी को याफा नगर भेजिए और सिमोन को, जो पतरस कहलाते हैं, बुलाइए। 14वह जो उपदेश देंगे, उसके द्वारा आप को और आपके सारे परिवार को मुक्‍ति प्राप्त होगी।'

15"मैंने बोलना आरम्भ किया ही था कि पवित्र आत्मा, जैसे कलीसिया के प्रारम्भ में हम पर उतरा था, वैसे ही उन लोगों पर उतर आया। 16उस समय मुझे प्रभु का वह कथन स्मरण हुआ, 'योहन ने तो जल से बपतिस्मा दिया, परन्तु तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे।' 17जब परमेश्‍वर ने उन्हें वही वरदान दिया, जो हमें प्रभु येशु मसीह में विश्‍वास करने वालों को मिला है, तो मैं कौन था जो परमेश्‍वर के मार्ग में बाधा डालता?"

18ये बातें सुन कर यहूदी विश्‍वासी शान्त हो गये और उन्होंने यह कहते हुए परमेश्‍वर की स्तुति की, "परमेश्‍वर ने गैर-यहूदियों को भी यह वरदान दिया कि वे हृदय-परिवर्तन कर जीवन प्राप्त करें।"

अन्ताकिया में कलीसिया की स्थापना

19स्तीफनुस को लेकर यरूशलेम में सताव प्रारम्भ हुआ था। जो लोग इसके कारण बिखर गये थे, वे फीनीके प्रदेश, कुप्रुस+ द्वीप तथा अन्ताकिया महानगर तक पहुँच गये। वे यहूदियों के अतिरिक्‍त किसी को संदेश नहीं सुनाते थे। 20किन्तु उन में से कुछ कुप्रुस+ तथा कुरेने के निवासी थे। जब वे अन्ताकिया पहुँचे, तब उन्होंने यूनानी भाषा-भाषियों* को भी प्रभु येशु का शुभ-समाचार सुनाया। 21प्रभु का हाथ उन

---

*कुछ प्राचीन प्रतियों में 'यूनानियों को' + अथवा, 'साइप्रस'।
10 : 46 प्रे 2 : 4; 19 : 6; मक 16 : 17 **10 : 48** यो 4 : 40 **11 : 2** प्रे 10 : 45 **11 : 3** गल 2 : 12; इफ 2 : 11 **11 : 5** प्रे 10 : 9-48 **11 : 16** प्रे 1 : 5 **11 : 18** प्रे 13 : 48; 14 : 27 **11 : 19** प्रे 8 : 1-4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पर था। अत: बहुत–से लोग विश्वास कर प्रभु
की ओर अभिमुख हो गये।
22जब उनके विषय में यरूशलेम की
कलीसिया के कानों तक समाचार पहुँचा, तब
उसने बरनबास को अन्ताकिया भेजा। 23जब
बरनबास ने वहाँ पहुँच कर परमेश्वर का
अनुग्रह देखा, तो वह आनन्दित हो उठे। उन्होंने
सब को प्रोत्साहित किया कि वे सम्पूर्ण हृदय
से प्रभु के प्रति निष्ठावान बने रहें; 24क्योंकि वह
भले मनुष्य थे और पवित्र आत्मा तथा विश्वास
से परिपूर्ण थे। इस प्रकार बहुत–से लोग प्रभु में
सम्मिलित हो गये।
25इसके पश्चात् बरनबास शाऊल की खोज
में तरसुस चले गये। 26और जब वह उन्हें मिले
तो वह शाऊल को अन्ताकिया ले आये। वे
दोनों पूरे एक वर्ष तक वहाँ की कलीसिया के
साथ रहे और बहुत–से लोगों को शिक्षा देते
रहे। सब से पहले अन्ताकिया में ही येशु के
शिष्य 'मसीही' कहलाए।

यरूशलेम की कलीसिया को सहायता

27उन दिनों कुछ नबी यरूशलेम से
अन्ताकिया में आये। 28उन में एक, जिसका
नाम अगबुस था, उठ खड़ा हुआ और आत्मा
की प्रेरणा से बोला कि सारी पृथ्वी पर घोर
अकाल पड़ने वाला है। यह अकाल वास्तव में
सम्राट क्लौदियुस के राज्यकाल में पड़ा।
29शिष्यों ने निश्चय किया कि यहूदा प्रदेश में
रहने वाले विश्वासी भाई–बहिनों की सहायता
के लिए उन में से प्रत्येक अपने–अपने सामर्थ्य
के अनुसार कुछ भेजेगा। 30तदनुसार उन्होंने
बरनबास तथा शाऊल के हाथ धर्मवृद्धों के पास
दान भेजा।

पतरस की गिरफ्तारी और मुक्ति

12 प्राय: इसी समय राजा हेरोदेस* ने
कलीसिया के कुछ सदस्यों पर
हिंसात्मक कार्यवाही की। 2उसने योहन्न के
भाई याकूब को तलवार के घाट उतार दिया
3और जब उसने यह देखा कि इससे यहूदी
प्रसन्न हुए, तो उसने पतरस को भी गिरफ्तार कर
लिया। उन दिनों बेखमीर रोटियों का पर्व** था।
4उसने पतरस को पकड़वा कर बन्दीगृह में
डलवाया और उसे चार–चार सैनिकों के चार
दलों के पहरे में रख दिया। वह पास्का
(फसह) पर्व के बाद उसे लोगों के सामने पेश
करना चाहता था। 5जब पतरस पर इस प्रकार
बन्दीगृह में पहरा बैठा हुआ था, तब कलीसिया
उनके लिए आग्रह के साथ परमेश्वर से प्रार्थना
कर रही थी।
6जिस दिन हेरोदेस पतरस को पेश करने
वाला था, उसके पहले की रात को पतरस, दो
हथकड़ियों में बँधे हुये, दो सैनिकों के बीच सो
रहे थे और द्वार के सामने भी सन्तरी पहरा दे
रहे थे। 7प्रभु का दूत अचानक आ खड़ा हुआ
और कोठरी प्रकाश से भर गई। उसने पतरस
की बगल थपथपा कर उन्हें जगाया और कहा,
"जल्दी उठिए!" इस पर पतरस की हथकड़ियाँ
खुलकर गिर पड़ीं। 8तब दूत ने उन से कहा,
"कमर बाँधिए और चप्पल पहन लीजिए।"
पतरस ने यही किया। दूत ने फिर कहा, "चादर
ओढ़ कर मेरे पीछे चले आइए।" 9पतरस उसके
पीछे–पीछे बाहर निकल गये। वह नहीं जानते
थे कि जो कुछ दूत द्वारा हो रहा है, वह
वास्तविक है। उन्होंने सोचा कि मैं स्वप्न देख
रहा हूँ। 10वे पहला पहरा और फिर दूसरा पहरा
पार कर उस लोहे के फाटक तक पहुँचे, जहाँ
से शहर की ओर मार्ग जाता है। वह उनके लिए
अपने आप खुल गया। वे बाहर निकले और
गली के छोर तक आये कि दूत अचानक पतरस
को छोड़कर चला गया। 11तब पतरस होश में
आये और बोले, "अब मुझे निश्चय हो गया
कि प्रभु ने अपने दूत को भेज कर मुझे हेरोदेस
के पंजे से छुड़ाया और यहूदियों की सारी

* अर्थात, राजा हेरोदेस अग्रिप्पा–प्रथम ** अर्थात, 'पास्का' अथवा 'फसह' पर्व का समय।

11 : 21 प्रे 2 : 47**11 : 22** प्रे 4 : 36 **11 : 23** प्रे 13 : 43 **11 : 24** प्रे 5 : 14; 6 : 5 **11 : 25** प्रे 9 : 30 **11 : 26** गल 2 : 11; प्रे 26 : 28; 1 पत 4 : 16 **11 : 27** प्रे 13 : 1; 15 : 32 **11 : 28** प्रे 21 : 10 **11 : 29** गल 2 : 10 **11 : 30** प्रे 12 : 25 **12 : 1** प्रे 4 : 3 **12 : 5** याक 5 : 16 **12 : 6** प्रे 5 : 22–23 **12 : 7** प्रे 5 : 19 **12 : 11** दान 3 : 28

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आशाओं पर पानी फेर दिया है।''
[12]वह अपनी परिस्थिति समझ कर मरियम
के घर आये। मरियम मारकुस कहलाने वाले
योहन की माता थी। वहाँ बहुत-से लोग एकत्र
हो कर प्रार्थना कर रहे थे। [13]पतरस ने प्रवेश-
द्वार खटखटाया और रोदे नामक एक लड़की
पता लगाने आयी कि कौन है। [14]वह पतरस की
आवाज पहचान कर आनन्द के मारे द्वार
खोलना भूल गयी और यह सूचना देने दौड़ते
हुए अन्दर आयी कि पतरस द्वार पर खड़े हैं।
[15]लोगों ने उससे कहा, ''तुम प्रलाप कर रही
हो।'' किन्तु जब वह दृढ़ता से कहती रही कि
बात ऐसी ही है, तो वे बोले, ''वह उनका
स्वर्गदूत होगा।'' [16]इस बीच पतरस द्वार
खटखटाये ही जा रहे थे। जब उन्होंने द्वार
खोला और पतरस को देखा, तो वे बड़े अचम्भे
में पड़ गये। [17]पतरस ने हाथ से चुप रहने का
संकेत किया और उन्हें बताया कि किस प्रकार
परमेश्वर उनको बन्दीगृह से बाहर निकाल
लाया है। फिर पतरस ने कहा, ''याकूब और
भाई-बहिनों को इन बातों की खबर दे देना।''
और वह वहाँ से निकल कर किसी दूसरी जगह
चले गये।
[18]जब दिन निकला, तो इस बात पर सैनिकों
में खलबली मची कि आखिर पतरस का क्या
हुआ। [19]हेरोदेस ने पतरस की खोज करायी
और जब उनका कहीं भी पता नहीं चला, तो
उसने पहरेदारों की जाँच-पड़ताल करने के
बाद उन्हें प्राणदण्ड देने का आदेश दिया। तब
वह यहूदा प्रदेश छोड़कर कैसरिया चला गया
और वहीं रहने लगा।

हेरोदेस अग्रिप्पा प्रथम की मृत्यु

[20]राजा हेरोदेस सोर और सीदोन के निवासियों
से अत्यन्त क्रुद्ध हो गया था। वे सब एकमत हो
हेरोदेस के पास आये। वे राजा के कंचुकी
ब्लास्तुस को मना कर सन्धि करना चाहते थे;
क्योंकि उनका देश अनाज के लिए राजा
हेरोदेस के क्षेत्र पर निर्भर था। [21]नियत दिन आने
पर हेरोदेस ने राजसी वस्त्र पहने, और सिंहासन
पर बैठ कर वह उन को भाषण देने लगा।
[22]जनता पुकार उठी, ''यह मनुष्य की नहीं,
किसी देवता की वाणी है!'' [23]उसी क्षण प्रभु
के दूत ने उस पर प्रहार किया, क्योंकि उसने
परमेश्वर की महिमा नहीं की थी। हेरोदेस के
शरीर में कीड़े पड़ गये और वह मर गया।

बरनबास और शाऊल की नियुक्ति

[24]परमेश्वर का वचन बढ़ता और फैलता
गया। [25]बरनबास और शाऊल यरूशलेम में
अपना सेवा-कार्य पूरा कर लौटे* और अपने
साथ योहन को भी ले आये, जो मारकुस
कहलाता था।

13 महानगर अन्ताकिया की स्थानीय
कलीसिया में कई नबी और शिक्षक
थे : जैसे बरनबास, शिमोन जो 'कलुआ'**
कहलाता था, कुरेने-निवासी लूकियुस, शासक
हेरोदेस का दूध-भाई मनाहेन और शाऊल।
[2]जब वे प्रभु की उपासना में लगे हुये थे और
उपवास कर रहे थे तो पवित्र आत्मा ने कहा,
''मैंने बरनबास तथा शाऊल को एक विशेष
कार्य के लिए बुलाया है। उन्हें मेरे लिए अलग
करो।'' [3]तब उन्होंने उपवास तथा प्रार्थना कर
बरनबास तथा शाऊल पर हाथ रखे और उन्हें
विदा किया।

कुप्रुस* का जादूगर**

[4]इस प्रकार पवित्र आत्मा द्वारा प्रेषित बरनबास
और शाऊल सिलूकिया बन्दरगाह गये और
वहां से वे जलयान पर कुप्रुस*** द्वीप चले।
[5]सलमिस पहुंच कर वे यहूदियों के सभागृहों
में परमेश्वर के वचन का प्रचार करते रहे।
योहन भी उनके साथ रह कर उनकी सहायता
करता था।
[6]वे पूरे द्वीप का दौरा करने के बाद पाफुस

* पाठांतर, 'यरूशलेम से लौटे' ** मूल में 'नीगेर' ***अथवा, 'साइप्रस'

12 : 12 प्रे 12 : 25; 15 : 37 **12 : 15** प्रे 26 : 24; लू 24 : 37 **12 : 18** प्रे 5 : 21-22 **12 : 20** 1 रा 5 : 25; यहेज 27 : 17 2 मक 9 : 5-28 **12 : 22** यहेज 28 : 2 **12 : 23** दान 5 : 20 **12 : 24** प्रे 6 : 7; यश 55 : 11 **12 : 25** प्रे 11 : 29; 12 : 12; 15 : 37 **13 : 1** प्रे 11 : 27 **13 : 2** प्रे 9 : 15 **13 : 3** प्रे 6 : 6; 14 : 23; 1 तिम 4 : 14; 5 : 22 **13 : 4** प्रे 15 : 39 **13 : 5** प्रे 12 : 12, 25; 13 : 13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आये। वहां बर-येशु नामक एक यहूदी जादूगर
और झूठे नबी से उनकी भेंट हुई,[7]जो राज्यपाल
सेरगियुस-पौलुस के साथ रहता था। राज्यपाल
एक विचारशील व्यक्ति था। वह बरनबास तथा
शाऊल को बुला कर परमेश्वर का वचन सुनना
चाहता था।[8]परन्तु बर-येशु ने, जिसका उपनाम
एलिमास (अर्थात् जादूगर) था, उनका विरोध
किया और राज्यपाल को विश्वास करने से
रोकना चाहा।[9]तब शाऊल ने, जो पौलुस भी
कहलाते थे, पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो कर
उस पर दृष्टि गड़ायी [10]और कहा, "तू शैतान
की संतान है! तू धूर्तता और कपट से कूट-कूट
कर भरा हुआ है और हर प्रकार की धार्मिकता
का शत्रु है! क्या तू प्रभु के सीधे मार्ग टेढ़े बनाने
से बाज़ नहीं आयेगा? [11]अब देख, प्रभु का हाथ
तेरे विरुद्ध उठा है। तू अन्धा हो जायेगा और कुछ
समय तक सूर्य का प्रकाश नहीं देख सकेगा।"
उसी क्षण उस की आँखों के सामने धुंधलापन
और अंधेरा छा गया और वह इधर-उधर टटोलने
लगा कि कोई उसका हाथ पकड़ कर उसे ले
चले।[12]यह घटना देख कर राज्यपाल ने विश्वास
किया। वह प्रभु की शिक्षा से चकित था।

पिसिदिया में पौलुस (शाऊल) का आगमन

[13]पौलुस और उनके साथी जलयान द्वारा
पाफुस से पंफुलिया प्रदेश के पेरगे नगर में
पहुँचे। वहाँ योहन उन्हें छोड़ कर यरूशलेम
लौट गया। [14]पौलुस और बरनबास पेरगे से
आगे बढ़ कर पिसिदिया प्रदेश के अन्ताकिया
नगर में आये। वे विश्राम के दिन सभागृह में जा
कर बैठ गये। [15]व्यवस्था तथा नबियों का पाठ
समाप्त हो जाने पर सभागृह के अधिकारियों ने
उन्हें यह कहला भेजा, "भाइयो! यदि लोगों के
प्रोत्साहन के लिये आप कुछ कहना चाहते हैं,
तो कहिए।" [16]इस पर पौलुस उठे और हाथ
से उन्हें चुप रहने का संकेत कर कहने लगे :

पौलुस का भाषण

"इस्राएली भाइयो और परमेश्वर-भक्त
सज्जनो! सुनिए। [17]इस्राएली प्रजा के परमेश्वर
ने हमारे पूर्वजों को चुना, उन्हें मिस्र देश में
प्रवास के समय महान् बनाया और वह अपने
बाहुबल से उन्हें वहां से निकाल लाया। [18]उसने
चालीस वर्ष तक निर्जन प्रदेश में उनका
व्यवहार सहन किया।+ [19]इसके बाद उसने कनान
देश में सात जातियों को नष्ट किया और उनकी
भूमि [20]लगभग साढ़े चार सौ वर्षों के लिए
हमारे पूर्वजों के अधिकार में दे दी। इसके
पश्चात् उसने नबी शमूएल के समय तक उनके
लिए न्यायकर्त्ताओं को नियुक्त किया। [21]तब
उन्होंने अपने लिए एक राजा की माँग की और
परमेश्वर ने उनके लिए बिन्यामिन कुल में
उत्पन्न कीश के पुत्र शाऊल को नियुक्त किया,
जो चालीस वर्ष तक राज्य करता रहा। [22]फिर
परमेश्वर ने उसे हटाकर दाऊद को उनका राजा
बनाया और उनके विषय में यह साक्षी दी, 'मुझे
अपने मन के अनुकूल एक मनुष्य, यिशय का
पुत्र दाऊद मिल गया है। वह मेरी सब इच्छाएं
पूरी करेगा।' [23]परमेश्वर ने अपनी प्रतिज्ञा के
अनुसार उन्हीं दाऊद के वंश में इस्राएल के
लिए एक मुक्तिदाता अर्थात् येशु को उत्पन्न
किया है। [24]उनके आगमन से पहले अग्रदूत
योहन ने इस्राएल की सारी प्रजा को पश्चात्ताप
के बपतिस्मा का उपदेश दिया था। [25]अपना
जीवन-कार्य *पूरा करते समय योहन ने कहा,
'तुम लोग मुझे जो समझते हो, मैं वह नहीं हूँ।
किन्तु देखो, मेरे बाद वह आने वाले हैं, जिनके
पैरों के जूते खोलने योग्य भी मैं नहीं हूँ।'

[26]"भाइयो! अब्राहम के वंशजो और यहाँ
उपस्थित परमेश्वर के भक्तो! मुक्ति का यह

+ कुछ प्राचीन प्रतियों में, 'उनकी देखभाल की'। *अक्षरशः, "दौड़"

13 : 8 2 तिम 3 : 8 **13 : 10** हो 14 : 9 **13 : 11** प्रे 9 : 8; यो 9 : 39 **13 : 13** प्रे 12 : 12, 25; 15 : 38 **13 : 15** प्रे 15 : 21 **13 : 17** यश 1 : 2; नि 6 : 1, 6; 12 : 37, 41; 14 : 8 **13 : 18** नि 16 : 35; गण 14 : 34; व्य 1 : 31 **13 : 19** व्य 7 : 1; यहो 14 : 2 **13 : 20** शास 2 : 16; 1 शम 3 : 20 **13 : 21** 1 शम 8 : 5; 10 : 21, 24 **13 : 22** भज 89 : 20; यश 44 : 28; 1 शम 13 : 14; 16 : 12-13 इब्र 1 : 5; 5 : 5 **13 : 23** 2 शम 7 : 12; यश 11 : 1 **13 : 24** लू 3 : 3 **13 : 25** यो 1 : 20, 27; लू 3 : 16 मक 1 : 7 **13 : 26** प्रे 13 : 46; भज 107 : 20

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सन्देश हम सब के पास भेजा गया है।
27यरूशलेम के निवासियों तथा उनके शासकों
ने येशु को नहीं पहचाना। उन्हें दण्डाज्ञा दिला
कर उन्होंने अनजाने ही नबियों के वे कथन पूरे
कर दिये, जो प्रत्येक विश्राम-दिवस को पढ़
कर सुनाये जाते हैं। 28उन्हें प्राणदण्ड के योग्य
कोई दोष उन में नहीं मिला, फिर भी उन्होंने
राज्यपाल पिलातुस से मांग की कि उनका वध
किया जाये। 29 उन्होंने उनके विषय में धर्मशास्त्र
में जो कुछ लिखा है, वह सब पूरा करने के
पश्चात् उन्हें क्रूस से उतारा और कबर में रख
दिया। 30परमेश्वर ने उन्हें तीसरे दिन मृतकों में
से पुनर्जीवित किया 31और वह बहुत दिनों तक
उन लोगों को दर्शन देते रहे, जो उनके साथ
गलील प्रदेश से यरूशलेम आये थे। अब वे ही
जनता के सामने उनके साक्षी हैं।

32"हम आप लोगों को यह शुभ समाचार
सुनाते हैं कि परमेश्वर ने हमारे पूर्वजों से जो
प्रतिज्ञा की थी, 33उसे उनकी संतान के लिए,
अर्थात् हमारे लिए पूरा किया है। उसने येशु को
पुनर्जीवित किया है, जैसा कि भजन संख्या दो*
में लिखा है,

'तू मेरा पुत्र है।
आज मैंने तुम को उत्पन्न किया है।'

34"परमेश्वर ने उन्हें मृतकों में से पुनर्जीवित
किया और अब फिर कभी उनकी विकृति नहीं
होगी। इस बात के प्रमाण में परमेश्वर ने
यह कहा था, 'मैं तुझे पवित्र और अटल आशिष
दूंगा, जिसकी प्रतिज्ञा मैंने दाऊद से की थी।'
35इसलिए अन्यत्र धर्मशास्त्र में यह कहा है,

'तू अपने पवित्रजन को कबर में गलने नहीं
देगा।'

36"दाऊद तो अपने समय में परमेश्वर का
अभिप्राय पूरा कर मर गये।** वह अपने पूर्वजों
के पास कबर में रखे गये और उनकी विकृति
हो गयी; 37किन्तु परमेश्वर ने जिन्हें पुनर्जीवित
किया, उनकी विकृति नहीं हुई।

38"भाइयो! आप अच्छी तरह समझ लें कि
जो सन्देश आप को सुनाया जा रहा है, वह यह
है कि येशु के द्वारा पापों की क्षमा प्राप्त होती
है। मूसा की व्यवस्था जिन बातों से आपको
मुक्त न कर सकी, 39उनसे येशु के द्वारा मुक्त
होकर प्रत्येक विश्वासी धार्मिक ठहराया जाता
है।

40 "सावधान रहें, कहीं ऐसा न हो कि
नबियों का यह कथन आप लोगों पर चरितार्थ
हो जाये, 41'निन्दको! देखो, आश्चर्य करो और
दूर हटो! मैं इन दिनों वह कार्य सम्पन्न करने
वाला हूँ, जिसके विषय में यदि कोई तुम्हें
बताता, तो तुम उस पर कभी विश्वास नहीं
करते।' "

42जब पौलुस और बरनबास सभागृह से
निकल रहे थे, तो लोगों ने उन से निवेदन किया
कि वे अगले विश्राम-दिवस को इसी विषय पर
फिर बोलें।

43सभा के विसर्जन के बाद बहुत-से यहूदी
और भक्त नव-यहूदी पौलुस और बरनबास के
पीछे हो लिये। पौलुस और बरनबास ने उन से
बात की और आग्रह किया कि वे परमेश्वर की
कृपा में बने रहें।

ग़ैर-यहूदियों के बीच धर्मप्रसार

44अगले विश्राम-दिवस को प्रभु का वचन
सुनने के लिए लगभग सारा नगर उमड़ पड़ा।
45यहूदी इतनी बड़ी भीड़ देख कर ईर्ष्या से जल
गये और पौलुस की निन्दा करते हुए उनकी
बातों का खण्डन करने लगे। 46पौलुस और
बरनबास ने निडर हो कर कहा, "यह आवश्यक
था कि पहले आप लोगों को परमेश्वर का वचन
सुनाया जाता, परन्तु आप लोग इसे अस्वीकार
करते हैं और अपने को शाश्वत जीवन के योग्य

---

* पाठांतर 'एक'। ** अक्षरशः 'सो गए'।

13 : 27 प्रे 3 : 17; यो 16 : 3 **13 : 28** मत 27 : 22-23 **13 : 29** मत 27 : 59-60 **13 : 30** प्रे 3 : 15 **13 : 31** प्रे 1 : 3 **13 : 32** प्रे 13 : 23 **13 : 33** भज 2 : 7 **13 : 34** यश 55 : 3 (यू० पाठ) **13 : 35** प्रे 2 : 27; भज 16 : 10 **13 : 26** प्रे 2 : 29; 1 रा 2 : 10; शास 2 : 10 **13 : 18** गण 15 : 30; प्रे 10 : 43; इब्र 9 : 9; 13 : 20 **13 : 39** रोम 2 : 13; 3 : 20; 8 : 3; 10 : 4; गल 2 : 16 **13 : 40** हब 1 : 5 (यू० पाठ) **13 : 43** प्रे 11 : 23 **13 : 45** प्रे 13 : 50; 14 : 2 **13 : 46** प्रे 3 : 26; 18 : 6; मत 10 : 6; लू 7 : 30

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नहीं समझते। इसलिए हम अब ग़ैर-यहूदियों
के पास जाते हैं। 47प्रभु ने हमें यह आदेश दिया
है, 'मैंने तुम्हें अन्यजातियों के लिए ज्योति
नियुक्त किया है जिससे तुम पृथ्वी के सीमान्तों
तक मुक्ति का माध्यम बनो।' "
48ग़ैर-यहूदी यह सुन कर आनन्दित हो गये
और प्रभु के वचन की स्तुति करने लगे। जितने
लोग शाश्वत जीवन के लिए ठहराए गये थे,
उन्होंने विश्वास किया 49और सारे प्रदेश में प्रभु
का वचन फैल गया।
50किन्तु यहूदियों ने प्रतिष्ठित भक्त महिलाओं
तथा नगर के नेताओं को उभाड़ा और पौलुस
तथा बरनबास के विरुद्ध उपद्रव खड़ा कर दिया
और उन्हें अपने इलाक़े से निकाल दिया।
51अतः पौलुस और बरनबास ने उनके विरुद्ध
साक्षी देने के लिए अपने पैरों की धूल झाड़ दी,
और वे इकोनियुम नगर में आये। 52शिष्य आनन्द
और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण थे।

इकोनियुम में धर्मप्रचार

14 ऐसी ही घटना इकोनियुम नगर में घटी:
पौलुस और बरनबास ने यहूदियों के
सभागृह में प्रवेश किया और ऐसा भाषण दिया
कि यहूदी तथा यूनानी, दोनों बड़ी संख्या में
विश्वासी बन गये। 2किन्तु जिन यहूदियों ने
विश्वास करना अस्वीकार किया था, उन्होंने
ग़ैर-यहूदियों को उभाड़ा और उनके मन में
विश्वासी भाई-बहिनों के प्रति द्वेष भर दिया।
3पौलुस तथा बरनबास बहुत समय तक वहां
रहे और प्रभु पर भरोसा रख कर निर्भीकता-
पूर्वक प्रचार करते रहे। प्रभु ने भी उनके हाथों
द्वारा चिह्न तथा आश्चर्य-कर्म दिखा कर अपने
अनुग्रह का सन्देश प्रमाणित किया।
4इसका परिणाम यह हुआ कि नगर की
जनता में फूट पड़ गयी। कुछ लोगों ने यहूदियों
का और कुछ लोगों ने प्रेरितों का पक्ष लिया।
5जब ग़ैर-यहूदियों तथा यहूदियों ने अपने
शासकों से मिलकर प्रेरितों के साथ दुर्व्यवहार
करने तथा उनपर पथराव करने का प्रयत्न
किया, 6तब प्रेरितों को इसका पता चला और
वे लुकाओनिया के लुस्त्रा तथा दिरबे नामक
नगरों और उनके आसपास के प्रदेश की ओर
भाग गये 7और वहां भी वे प्रभु येशु का शुभ
समाचार सुनाने लगे।

लुस्त्रा के लँगड़े को स्वास्थ्य-लाभ

8लुस्त्रा नगर में एक ऐसा व्यक्ति बैठा हुआ
था, जिसके पैरों में शक्ति नहीं थी। वह जन्म
से ही लँगड़ा था और कभी चल-फिर नहीं
सका था। 9वह पौलुस का प्रवचन सुन रहा था।
तब पौलुस ने उस पर दृष्टि गड़ायी और उस
में स्वस्थ हो जाने योग्य विश्वास देख कर
10ऊँचे स्वर से कहा, "उठो और अपने पैरों पर
सीधा खड़े हो जाओ।" वह उछल पड़ा और
चलने-फिरने लगा।
11जब लोगों ने देखा कि पौलुस ने क्या
किया है, तो वे लुकाओनियाई भाषा में बोल
उठे, "देवता मनुष्यों का रूप धारण कर हमारे
पास उतरे हैं।" 12उन्होंने बरनबास का नाम
ज्यूस देवता रखा और पौलुस का हिरमेस
देवता, क्योंकि वह प्रमुख वक्ता थे। 13नगर के
बाहर ज्यूस देवता का मन्दिर था। वहां का
पुजारी माला लिये सांड़ों के साथ फाटक के
पास आ पहुंचा। वह अपार जनसमूह के साथ
बलि बढ़ाना चाहता था। 14जब प्रेरित बरनबास
और पौलुस ने यह सुना, तो वे इस ईश-निन्दा
के विरोध में अपने वस्त्र फाड़ कर भीड़ में कूद
पड़े और उच्च स्वर में बोले, 15"मित्रो! आप
यह क्या कर रहे हैं? हम भी तो आप लोगों के
समान सुख-दुःख भोगने वाले मनुष्य हैं। हम
यह शुभ-समाचार देने आये हैं कि आप इन
निःसार वस्तुओं को छोड़ कर उस जीवन्त
परमेश्वर की ओर अभिमुख हों, जिसने आकाश,
पृथ्वी, समुद्र और उन में जो कुछ है, वह सब

---

13 : 47 यश 49 : 6 **13 : 48** प्रे 11 : 18; रोम 8 : 29 **13 : 51** प्रे 18 : 6; मत 10 : 14 **14 : 2** प्रे 13 : 45 **14 : 3** प्रे 19 : 11; मक 16 : 20; इब्र 2 : 4 **14 : 5** प्रे 14 : 19; 2 तिम 3 : 11 **14 : 6** मत 10 : 23 **14 : 7** प्रे 11 : 19-20 **14 : 8** प्रे 3 : 2; 9 : 33 यो 9 : 1 **14 : 9** प्रे 3 : 4; मत 9 : 28 **14 : 11** प्रे 28 : 6 **14 : 15** नि 20 : 11; भज 146 : 6; यश 37 : 16; यिर 32 : 17; याक 5 : 17

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बनाया है। 16उसने बीते युगों में सब जातियों को अपने-अपने मार्ग पर चलने दिया। 17फिर भी वह अपने भले कार्यों द्वारा अपने विषय में साक्षी देता रहा: वह आपके लिए आकाश से पानी बरसाता और नियत मौसम में फसलें उगाता है; वह अन्न प्रदान कर आपका हृदय आनन्द से भरता है।'' 18इन शब्दों द्वारा प्रेरितों ने भीड़ को कठिनाई से रोका कि वह उनके लिए बलि न चढ़ाये।

प्रथम प्रचार-यात्रा की समाप्ति

19किन्तु अन्ताकिया तथा इकोनियुम से कुछ यहूदी आ पहुंचे। उन्होंने जनता को अपने पक्ष में मिला लिया। उन्होंने पौलुस को पत्थरों से मारा और मृत समझ कर उन्हें नगर के बाहर घसीट कर ले गये। 20पर जब शिष्य पौलुस के चारों ओर एकत्र हुए, तो वह उठे और नगर में गए। दूसरे दिन वह बनरबास के साथ दिरबे चले गये।

21उन्होंने उस नगर में शुभ समाचार का प्रचार किया और बहुत शिष्य बनाये। इसके बाद वे लुस्त्रा और इकोनियुम हो कर अन्ताकिया लौटे। 22वे शिष्यों का मन सुदृढ़ करते और उन्हें विश्वास में स्थिर रहने के लिए प्रोत्साहित करते थे, और कहते थे कि हमें बहुत-से कष्ट सह कर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना है। 23उन्होंने प्रत्येक कलीसिया में उनके लिए धर्मवृद्धों को नियुक्त किया और प्रार्थना तथा उपवास करने के बाद उन्हें प्रभु के हाथों सौंप दिया, जिन पर वे विश्वास कर चुके थे।

24वे पिसिदिया प्रदेश पार कर पंफुलिया प्रदेश पहुँचे 25और पेरगे नगर में शुभ संदेश सुनाने के बाद अत्तालिया नगर में आये। 26वहाँ से उन्होंने जलयान पर महानगर अन्ताकिया को प्रस्थान किया, जहाँ उन्हें उस कार्य के लिए परमेश्वर के अनुग्रह को अर्पित किया गया था, जो उन्होंने अब पूरा कर लिया था।

27वहाँ पहुँच कर उन्होंने कलीसिया की सभा बुलायी और बताया कि परमेश्वर ने उनके द्वारा क्या-क्या किया और कैसे गैर-यहूदियों के लिए विश्वास का द्वार खोला। 28वे बहुत समय तक वहाँ शिष्यों के साथ रहे।

अन्ताकिया में मतभेद और वाद-विवाद

15 कुछ लोग यहूदा प्रदेश से महानगर अन्ताकिया में आकर भाइयों को यह शिक्षा देने लगे: ''यदि मूसा से चली आयी हुई प्रथा के अनुसार आप लोगों का खतना नहीं होगा, तो आप को मुक्ति नहीं मिलेगी।'' 2इस विषय पर पौलुस और बरनबास तथा उन लोगों के बीच तीव्र मतभेद और वाद-विवाद छिड़ गया, और यह निश्चय किया गया कि पौलुस तथा बरनबास, अन्ताकिया के कुछ लोगों के साथ, यरूशलेम जायेंगे और इस प्रश्न पर प्रेरितों तथा धर्मवृद्धों से परामर्श करेंगे।

3अन्ताकिया की कलीसिया ने उन्हें विदा किया। उन्होंने फीनीके तथा सामरी प्रदेशों से हो कर यात्रा की और वहाँ के भाई-बहिनों को बताया कि गैर-यहूदी किस प्रकार परमेश्वर की ओर अभिमुख हुए। यह विवरण देकर उन्होंने सब को बहुत आनन्दित किया। 4जब वे यरूशलेम पहुँचे, तो कलीसिया ने, प्रेरितों ने तथा धर्मवृद्धों ने भी उनका स्वागत किया। पौलुस और बरनबास ने बताया कि परमेश्वर ने उनके द्वारा क्या-क्या कार्य किये।

यरूशलेम की परिषद

5फरीसी सम्प्रदाय के कुछ सदस्य, जो विश्वासी हो गये थे, यह कहते हुए उठ खड़े हुए कि अन्यजाति के विश्वासी भाइयों का खतना करना चाहिए और उन्हें आदेश देना चाहिए कि वे मूसा की व्यवस्था का पालन करें। 6प्रेरित और धर्मवृद्ध इस विषय पर विचार करने के लिए एकत्र हुए। 7जब बहुत वाद-विवाद हो चुका तब पतरस ने उठ कर यह कहा :

''भाइयो! आप जानते हैं कि परमेश्वर ने प्रारम्भ से आप लोगों में से ही यह चयन किया

---

14 : 16 प्रे 17 : 30 **14 : 17** भज 147 : 8; यिर 5 : 24 **14 : 19** 2 कुर 11 : 25; 2 तिम 3 : 11 **14 : 21** मत 28 : 19 **14 : 22** प्रे 11 : 23; 1 थिस 3 : 3; मत 7 : 14 **14 : 23** प्रे 13 : 3 **14 : 26** प्रे 13 : 1-2 **14 : 27** 1 कुर 16 : 9; प्रे 11 : 18 **15 : 1** गल 5 : 2-3 **15 : 2** प्रे 11 : 30; गल 2 : 1 **15 : 4** प्रे 14 : 27 **15 : 7** प्रे 10 : 44; 11 : 15

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

था कि गैर-यहूदी मेरे मुख से शुभसमाचार का
वचन सुनें और विश्वास करें। 8परमेश्वर मनुष्य
का हृदय जानता है। उसने गैर-यहूदियों को
हमारे ही समान पवित्र आत्मा प्रदान किया। इस
प्रकार उसने उनके पक्ष में साक्षी दी 9और विश्वास
द्वारा उनका हृदय शुद्ध कर हम में और उन में
कोई भेद नहीं किया। 10जो जूआ न तो हमारे
पूर्वज ढोने में समर्थ थे और न हम, उसे शिष्यों
के कन्धों पर लाद कर आप लोग अब परमेश्वर
की परीक्षा क्यों ले रहे हैं? 11हमारा विश्वास तो
यह है कि हम, और वे भी, प्रभु येशु की कृपा
द्वारा ही मुक्ति प्राप्त करेंगे।''

12इस पर सारी सभा चुप हो गयी और
बरनाबास तथा पौलुस की बातें सुनने लगी। वे
उन महान चिह्नों तथा आश्चर्य-कर्मों के विषय
में बता रहे थे, जिन्हें परमेश्वर ने उनके माध्यम
से अन्यजातियों के बीच दिखाया था।

13जब वे बोल चुके थे, तो याकूब ने अपनी
प्रतिक्रिया व्यक्त की, ''भाइयो! मेरी बात
सुनिए। 14शिमोन* ने हमें बताया कि प्रारम्भ में
परमेश्वर ने किस प्रकार गैर-यहूदियों में अपने
नाम के लिए 'निज लोग' चुनने की कृपा की।
15यह नबियों की वाणी के अनुसार ही है;
क्योंकि धर्मग्रन्थ में लिखा है:

16'इसके पश्चात् मैं लौटूंगा, और दाऊद के
गिरे हुए निवास-स्थान को पुनः बनाऊँगा। मैं
उसके खँडहरों का पुनर्निर्माण करूँगा, और
उसे फिर खड़ा करूंगा, 17जिससे मानव-जाति
के शेष लोग, अर्थात् सभी जातियाँ जिनको
अपनाने के लिए मैंने उन्हें अपना नाम दिया है,
प्रभु की खोज में लगे रहें। यह कथन उस प्रभु
का है 18जो सृष्टि के आरम्भ से यह प्रकट करता
आया है।'**

19''इसलिए भाइयो! मैं इस निष्कर्ष पर
पहुँचा हूँ कि जो गैर-यहूदी परमेश्वर की ओर
अभिमुख होते हैं, उन पर व्यवस्था का
अनावश्यक भार न डाला जाये, 20बल्कि पत्र
लिख कर उन्हें बताया जाये कि वे मूर्तियों की
अशुद्धताओं से, व्यभिचार से+, गला घोंटे हुए
पशुओं के मांस से और रक्त के खान-पान से
परहेज करें; 21क्योंकि प्राचीन काल से नगर-
नगर में मूसा की इन बातों के प्रचारक विद्यमान
हैं, जो प्रत्येक विश्राम-दिवस को सभागृहों में
मूसा की व्यवस्था से पाठ करते हैं।''

परिषद का निर्णय

22तब समस्त कलीसिया की सहमति से
प्रेरितों तथा धर्मवृद्धों ने निश्चय किया कि उन
में से कुछ लोगों को चुन कर पौलुस तथा
बरनबास के साथ महानगर अन्ताकिया भेजा
जाये। उन्होंने दो व्यक्तियों को चुना, जो भाई-
बहिनों में प्रमुख थे, अर्थात् यहूदा को, जो
बरसब्बास कहलाता था, तथा सीलास को,
23और उनके हाथ यह पत्र भेजा :

''प्रेरित तथा धर्मवृद्ध, आप लोगों के भाई,
अन्ताकिया, सीरिया तथा किलिकिया के गैर-
यहूदी भाई-बहिनों को नमस्कार करते हैं।
24हमने सुना है कि हमारे यहाँ के कुछ लोगों
ने, जिन्हें हमने कोई अधिकार नहीं दिया था,
अपनी बातों से आप लोगों में घबराहट उत्पन्न
की और आपके मन को उलझन में डाल दिया
है।++ 25इसलिए हमने सर्वसम्मति से निर्णय
किया है कि प्रतिनिधियों का चुनाव करें और
उन को अपने प्रिय भाई बरनबास और पौलुस
के साथ, 26जिन्होंने हमारे प्रभु येशु मसीह के
नाम पर अपना जीवन अर्पित किया है, आप
लोगों के पास भेजें। 27इसलिए हम यहूदा तथा
सीलास को भेज रहे हैं। वे भी आप लोगों को
यह सब मैखिक रूप से बता देंगे। 28पवित्र आत्मा

---

* यहाँ पतरस के यूनानी नाम ''सिमोन'' का इब्रानी सम रूप प्रयुक्त हुआ। ** अथवा, ''जो ये कार्य सम्पन्न करता है, यद्यपि ये प्राचीन काल से ज्ञात हैं।'' + अथवा, 'अवैध विवाहों से'। ++कुछ प्राचीन प्रतियों के अनुसार, 'कि आपको खतना करवाना और व्यवस्था का पालन करना ही होगा।'

15 : 9 प्रे 10 : 34 **15 : 10** गल 3 : 10; 5 : 1; मत 11 : 30 **15 : 11** गल 2 : 16; इफ 2 : 4-10 **15 : 13** प्रे 21 : 18; गल 2 : 9 **15 : 14** प्रे 15 : 7-9; लू 1 : 68 **15 : 15** आमो 9 : 11-12 (यू० पाठ) **15 : 16** यिर 12 : 15 **15 : 18** यश 45 : 21 **15 : 20** उत 9 : 4; लेव 3 : 17; 5 : 2; 17 : 10-16 **15 : 21** प्रे 13 : 15 **15 : 24** प्रे 15 : 1

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

को और हमें यह उचित जान पड़ा कि
निम्नलिखित आवश्यक बातों को छोड़ आप
लोगों पर कोई और भार न डाला जाये: 29आप
लोग मूर्तियों पर चढ़ाये हुए मांस से, रक्त के
खान-पान से, गला घोंटे हुए पशुओं के मांस
से और व्यभिचार से** परहेज करें। इन से अपने
को बचाये रखने में आप लोगों का कल्याण है।
शुभकामना!"

अन्ताकिया में प्रतिनिधि-मण्डल

30वे विदा हो कर महानगर अन्ताकिया चले
गये। जब उन्होंने मंडली को एकत्र किया तब
वह पत्र उन्हें सौंप दिया। 31मंडली के सदस्यों
ने पत्र पढ़ा तो वे प्रोत्साहनपूर्ण संदेश से प्रसन्न
हुए। 32यहूदा और सीलास स्वयं नबी थे।
उन्होंने भी भाई-बहिनों को देर तक सम्बोधित
कर प्रोत्साहित और विश्वास में दृढ़ किया।
33वे कुछ समय वहाँ रहे और इसके बाद वे
भाई-बहनों की मंगल-कामनाएँ ले कर विदा
हुए और उन लोगों के पास लौटे, जिन्होंने उन्हें
भेजा था। [34किन्तु सीलास ने वहाँ रहने का
निश्चय किया और यहूदा अकेले ही यरूशलेम
लौटा।*] 35पौलुस और बरनबास अन्ताकिया
में रह गये और अन्य बहुत लोगों के साथ प्रभु
के वचन की शिक्षा देते और शुभ समाचार
सुनाते रहे।

पौलुस और बरनबास का अलग-अलग होना

36कुछ दिन पश्चात् पौलुस ने बरनबास से
कहा, "आइए, हमने जिन-जिन नगरों में प्रभु
के वचन का प्रचार किया है, वहाँ चल कर
भाई-बहिनों से मिलें और यह देखें कि वे कैसे
हैं।" 37बरनबास चाहते थे कि वे योहन को
भी, जो मारकुस कहलाता था, अपने साथ ले
जायें। 38परन्तु पौलुस ने यह उपयुक्त नहीं
समझा कि जिस व्यक्ति ने उन्हें पम्फुलिया में
छोड़ दिया था और आगे उनके काम में हाथ
नहीं बँटाया था, उसे अपने साथ ले जायें। 39इस
पर दोनों में इतना तीव्र मतभेद हो गया कि वे
एक दूसरे से अलग हो गये। बरनबास मारकुस
को अपने साथ ले कर जलमार्ग से कुप्रुस***
द्वीप चले गए।

40पौलुस ने सीलास को चुना। भाई-बहिनों
ने उन्हें प्रभु के अनुग्रह को अर्पित किया और
पौलुस चल पड़े। 41उन्होंने सीरिया देश तथा
किलिकिया का भ्रमण किया और कलीसियाओं
को विश्वास में दृढ़ किया।

द्वितीय प्रचार-यात्रा में तिमोथी भी सम्मिलित

16 पौलुस दिरबे और लुस्त्रा नगर भी
पहुँचे। वहां तिमोथी नामक एक शिष्य
था, जो विश्वासी यहूदी माता तथा यूनानी पिता
का पुत्र था। 2लुस्त्रा और इकोनियुम के भाई-
बहिनों में उसका अच्छा नाम था। 3पौलुस चाहते
थे कि वह उनके साथ यात्रा में चले। उस प्रदेश
में रहने वाले यहूदियों के कारण पौलुस ने
तिमोथी का खतना कराया, क्योंकि सब जानते
थे कि उसका पिता यूनानी है। 4तब उन्होंने नगर-
नगर भ्रमण कर लोगों तक उस निर्णय को
पहुँचाया, जो यरूशलेम में प्रेरितों और धर्मवृद्धों
ने किया था, कि वे लोग उसका पालन करें।
5इस प्रकार स्थानीय कलीसियाएँ विश्वास में
सुदृढ़ होतीं और संख्या में प्रतिदिन बढ़ती गईं।

त्रोआस नगर में : पौलुस को दर्शन

6पवित्र आत्मा ने पौलुस, सीलास और
तिमोथी को आसिया प्रदेश में वचन का प्रचार
करने से मना किया। इसलिए उन्होंने फ्रुगिया
तथा गलातिया प्रदेशों का दौरा किया। 7जब वे
मुसिया प्रदेश की सीमा पर पहुँचे, तो उन्होंने
बिथुनिया में प्रवेश करने का प्रयत्न किया;
किन्तु येशु के आत्मा ने उन्हें अनुमति नहीं दी।
8इसलिए वे मुसिया पार कर त्रोआस नगर में
आये।

9वहाँ पौलुस ने रात में एक दर्शन देखा: एक
मकिदुनिया-निवासी उनके सामने खड़ा हो
कर यह अनुरोध कर रहा है, "आप समुद्र पार
कर मकिदुनिया में आइए और हमारी सहायता

** अथवा, "अवैध विवाहों से" * कुछ प्राचीन प्रतियों के अनुसार। *** अथवा, 'साइप्रस'

15 : 29 मत 23 : 4 **15 : 32** प्रे 11 : 27; 13 : 1 **15 : 36** 1 थिस 3 : 5 **15 : 37** प्रे 12 : 12, 25 **15 : 38** प्रे 13 : 13; कुल 4 : 10 **15 : 39** प्रे 4 : 36; 13 : 4 **16 : 1** प्रे 17 : 14; 19 : 22; 2 तिम 1 : 5; फिल 2 : 19-22 **16 : 4** प्रे 15 : 23-29 **16 : 6** प्रे 18 : 23

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कीजिए।'' 10ज्यों ही उन्होंने यह दर्शन पाया,
हम लोग मकिदुनिया पहुँचने का प्रयत्न करने
लगे; क्योंकि हमने जान लिया था कि परमेश्वर
उन लोगों में शुभ समाचार सुनाने के लिए हमें
बुला रहा है।

यूरोप में पौलुस का आगमन

11त्रोआस से हमने समुद्र-यात्रा आरम्भ
की। हम जलयान से सीधे समुथ्राके तक गये
और दूसरे दिन नेआपुलिस 12और वहाँ से
फिलिप्पी पहुँचे। फिलिप्पी मकिदुनिया का
मुख्य नगर* और रोमन उपनिवेश है। हम कुछ
दिन फिलिप्पी नगर में रहे। 13विश्राम के दिन
हम यह समझ कर शहर के बाहर नदी के तट
पर आये कि वहाँ कोई प्रार्थना-गृह होगा। हम
बैठ गये और वहाँ एकत्र स्त्रियों से बातचीत
करने लगे। 14उन महिलाओं में एक का नाम
लुदिया था। वह थुआतीरा नगर की रहने वाली
थी। वह बहुमूल्य बैंगनी कपड़ों का व्यापार
करती और परमेश्वर की आराधना करती थी।
वह हमारी बातें सुन रही थी। प्रभु ने उसके हृदय
का द्वार खोला ताकि वह पौलुस की बातों को
उत्सुकता से सुने। 15जब उसने तथा उसके
परिवार ने बपतिस्मा ग्रहण कर लिया तब
लुदिया ने हमसे यह अनुरोध किया, ''यदि
आप लोग मानते हैं कि मैं सचमुच प्रभु में
विश्वास करती हूँ तो आइए, मेरे यहाँ
ठहरिए।'' और उसने हमें बाध्य कर दिया।

पौलुस और सीलास की गिरफ्तारी

16हम किसी दिन प्रार्थना-गृह जा रहे थे कि
एक कम उम्र वाली दासी से हमारी भेंट हो
गयी। उसमें भविष्य बताने वाली** आत्मा थी।
और वह भविष्य बता-बता कर अपने मालिकों
के लिए बहुत कमाती थी। 17वह पौलुस और
हम लोगों के पीछे लग गई और चिल्लाने लगी,
''ये लोग सर्वोच्च परमेश्वर के सेवक हैं और
आप लोगों को मुक्ति का मार्ग बताते हैं।''
18वह बहुत दिनों तक ऐसा ही करती रही।
अन्त में पौलुस तंग आ गये और उन्होंने मुड़
कर उस आत्मा से कहा, ''मैं तुझे येशु मसीह
के नाम से आदेश देता हूँ कि तू इसमें से निकल
जा!'' और वह उसी क्षण उस लड़की में से
निकल गयी।
19जब उसके मालिकों ने देखा कि उसकी
आमदनी की आशा चली गयी, तो वे पौलुस
तथा सीलास को पकड़ कर चौक में अधिकारियों
के पास खींच ले गये। 20उन्होंने पौलुस और
सीलास को दण्डाधिकारियों के सामने पेश
किया और कहा, ''ये व्यक्ति हमारे शहर में
अशान्ति फैला रहे हैं। ये यहूदी हैं 21और ऐसी
प्रथाओं का प्रचार करते हैं, जिन्हें अपनाना या
जिन पर चलना हम रोमियों के लिए उचित नहीं
है।'' 22भीड़ भी उनके विरोध में एकत्र हो
गयी। तब दण्डाधिकारियों ने उनके कपड़े फाड़
डाले और उन्हें बेंत लगाने का आदेश दिया।
23उन्होंने पौलुस और सीलास को बेंतों से बहुत
मारा और बन्दीगृह में डाल दिया। उन्होंने
बन्दीगृह के अधीक्षक को आदेश दिया कि वह
सावधानी से उनकी रखवाली करे। 24अधीक्षक
ने यह आदेश पाकर उन्हें भीतरी बन्दीगृह में
रखा और उनके पैर काठ में जकड़ दिये।

पौलुस और सीलास की मुक्ति

25आधी रात के समय जब पौलुस तथा
सीलास प्रार्थना कर रहे थे और परमेश्वर की
स्तुति गा रहे थे और कैदी उन्हें सुन रहे थे 26तो
एकाएक इतना भारी भूकम्प हुआ कि बन्दीगृह
की नींव हिल गयी। उसी क्षण सब द्वार खुल
गये और सब कैदियों की बेड़ियाँ खुल गयीं।
27बन्दीगृह का अधीक्षक जाग उठा और
बन्दीगृह के द्वार खुले देख कर समझा कि कैदी
भाग गये हैं। इसलिए उसने तलवार खींच कर
आत्महत्या करनी चाही; 28किन्तु पौलुस ने
ऊँचे स्वर से पुकार कर कहा, ''अपने आपको
कोई हानि न पहुँचाओ। हम सब यहीं हैं।''
29तब अधीक्षक दीपक मँगा कर भीतर दौड़ा

* पाठान्तर ''मकिदुनिया प्रदेश के प्रथम जिले का एक नगर'' ** अथवा, ''पेटबोली बोलने वाली''

16 : 14 यो 6 : 44 **16 : 16** प्रे 19 : 24 **16 : 17** मक 1 : 24, 34 **16 : 18** प्रे 19 : 13; मक 16 : 17 **16 : 20** प्रे 17 : 6; 1 रा 18 : 17 **16 : 22** 2 कुर 11 : 25; फिल 1 : 30; 1 थिस 2 : 2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और काँपते हुए पौलुस तथा सीलास के चरणों
पर गिर पड़ा। 30उसने उन्हें बाहर ले जा कर
कहा, "सज्जनो, मुक्ति प्राप्त करने के लिए मुझे
क्या करना चाहिए?" 31उन्होंने उत्तर दिया,
"आप प्रभु येशु पर विश्वास कीजिए, तो
आप को और आपके परिवार को मुक्ति प्राप्त
होगी।" 32उन्होंने अधीक्षक को और उसके
परिवार के सब सदस्यों को परमेश्वर का वचन
सुनाया। 33उसने रात को उसी घड़ी उन्हें ले जा
कर उनके घाव धोये। इसके तुरन्त बाद उसने
और उसके सारे परिवार ने बपतिस्मा ग्रहण
किया। 34तब उसने पौलुस और सीलास को
अपने यहाँ ले जा कर भोजन कराया और अपने
सारे परिवार के साथ आनन्द मनाया; क्योंकि
उसने परमेश्वर पर विश्वास किया था।

35दिन होने पर दण्डाधिकारियों ने आरक्षियों
द्वारा कहला भेजा कि उन व्यक्तियों को छोड़
दो। 36बन्दीगृह के अधीक्षक ने पौलुस को यह
सन्देश सुनाया, "दण्डाधिकारियों ने कहला
भेजा है कि आप लोगों को छोड़ दिया जाये।
अब आप बाहर चलिये और शान्ति से
जाइए।" 37किन्तु पौलुस ने आरक्षियों से कहा,
"हम रोमन नागरिक हैं। फिर भी हम पर लगाये
हुए अभियोग की जाँच किये बिना उन्होंने हमें
सब के सामने बेंतों से मारा और बन्दीगृह में
डाला, और अब वे हमें चुपके से निकाल रहे
हैं। ऐसा नहीं होगा। वे खुद आ कर हमें बाहर
ले जायें।"

38आरक्षियों ने दण्डाधिकारियों को ये बातें
सुनायीं। दण्डाधिकारी यह सुन कर कि पौलुस
और सीलास रोमन नागरिक हैं, डर गये।
39उन्होंने आ कर क्षमा मांगी और उन्हें बन्दीगृह
से बाहर ले जा कर अनुरोध किया कि वे नगर
छोड़कर चले जायें। 40पौलुस और सीलास
बन्दीगृह से निकल कर लुदिया के घर गये। वे
भाई-बहिनों से मिले और उन्हें प्रोत्साहित कर
वहाँ से चले गये।

थिस्सलुनीके नगर में यहूदियों का विरोध

17 वे अम्फिपुलिस तथा अपुल्लोनिया नगरों
से होते हुए थिस्सलुनीके पहुँचे, जहाँ
यहूदियों का एक सभागृह था। 2पौलुस अपनी
रीति के अनुसार वहाँ उन से मिलने गये। उन्होंने
तीन विश्राम-दिवसों पर उनके साथ तर्क-
वितर्क किया और धर्मग्रन्थ की व्याख्या करते
हुए 3यह प्रमाणित किया कि मसीह के लिए
दुःख भोगना और मृतकों में से जी उठना
आवश्यक था। उन्होंने यह भी कहा, "येशु ही,
जिनका मैं आप लोगों के बीच प्रचार करता हूँ,
मसीह हैं।" 4उन में कुछ लोगों ने विश्वास
किया और वे पौलुस तथा सीलास के साथ
सम्मिलित हो गये। बहुत-से ईश्वर-भक्त
यूनानियों और अनेक प्रतिष्ठित महिलाओं ने भी
यही किया।

5इस से यहूदी ईर्ष्या से जलने लगे और
उन्होंने बाजार के कुछ गुण्डों की सहायता से
भीड़ एकत्र की और नगर में दंगा खड़ा कर
दिया। वे पौलुस और सीलास को नगर-सभा
के सामने पेश करने के उद्देश्य से यासोन के घर
आ धमके। 6उन्हें न पा कर वे यासोन और कई
भाइयों को यह चिल्लाते हुए नगर-अधिकारियों
के पास खींच ले गये, "ये लोग, जो सारी
दुनिया को उलट-पुलट कर रहे हैं, अब यहाँ
आ पहुँचे हैं। 7यासोन ने इन्हें अपने यहाँ ठहराया
है। ये सब लोग सम्राट के कानूनों का विरोध
करते हैं और कहते हैं कि येशु नामक कोई और
राजा है।" 8यह सुन कर भीड़ और अधिकारी
बेचैन हो गये। 9उन्होंने यासोन और दूसरों से
जमानत ली और उन्हें जाने दिया।

बिरीया नगर में भी यहूदियों का विरोध

10भाई-बहिनों ने शीघ्र ही रातों-रात पौलुस
और सीलास को बिरीया नगर भेज दिया। वहाँ
पहुँच कर वे यहूदियों के सभागृह में गये। 11ये
यहूदी थिस्सलुनीके के यहूदियों से अधिक
उदार थे। वे बड़ी उत्सुकता से प्रभु का संदेश

---

16 : 30 प्रे 2 : 37 **16 : 37** प्रे 22 : 25 **16 : 39** मत 8 : 34 **17 : 1** 1 थिस 2 : 2 **17 : 3** लू 24 : 26-27, 45-46 **17 : 6** प्रे 16 : 20 **17 : 7** लू 23 : 2; यो 19 : 12; रोम 16 : 21 **17 : 11** यो 5 : 39

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सुनते थे और उसकी सच्चाई की जाँच करने के लिए प्रतिदिन धर्मग्रन्थ का परिशीलन करते थे।
12उन में बहुत लोग विश्वासी बन गये। इसके अतिरिक्त प्रतिष्ठित यूनानी महिलाओं ने और बहुत पुरुषों ने विश्वास किया।

13जब थिस्सलुनीके के यहूदियों को यह पता चला कि पौलुस बिरीया में परमेश्वर के वचन का प्रचार कर रहे हैं, तो वे भी वहाँ आकर लोगों को उभाड़ने और उत्तेजित करने लगे।
14इसलिए भाई-बहिनों ने पौलुस को तुरन्त विदा कर दिया कि वह समुद्र के तट पर चले जायें। सीलास और तिमोथी वहीं रह गये।
15पौलुस के साथी उन्हें अथेने नगर तक ले गये और पौलुस का यह आदेश ले कर लौटे कि जितनी जल्दी हो सके, सीलास और तिमोथी उनके पास चले आयें।

अथेने नगर में पौलुस का धर्मप्रचार

16जब पौलुस अथेने नगर में सीलास और तिमोथी की प्रतीक्षा कर रहे थे, तो नगर में देवी-देवाताओं की मूर्तियों की भरमार देख कर उन्हें बहुत क्षोभ हुआ।
17इस कारण वह न केवल सभागृह में यहूदियों तथा ईश्वर-भक्तों के साथ, बल्कि प्रतिदिन चौक में आने-जाने वाले लोगों के साथ भी तर्क-वितर्क करते थे।
18वहाँ कुछ एपिकूरी तथा स्तोइकी* दार्शनिकों से भी उनका सम्पर्क हुआ। उनमें से कुछ लोगों ने कहा, ''यह बकवादी हम से क्या कहना चाहता है?'' दूसरों ने कहा, ''यह विदेशी देवताओं का प्रचारक जान पड़ता है'', क्योंकि पौलुस येशु तथा ''पुनरुत्थान'' ** का शुभ समाचार सुना रहे थे।

19इसलिए वे पौलुस को अपने साथ अरियोपिगुस परिषद*** में ले गये और उनसे कहा, ''क्या हम जान सकते हैं कि आप यह कौन-सी नयी शिक्षा दे रहे हैं?
20आप कुछ ऐसी बातें कहते हैं जो हमारे कानों को अनोखी लगती हैं। हम जानना चाहते हैं कि उनका अर्थ क्या है।''
21क्योंकि अथेने नगर के सब निवासी और वहाँ के रहने वाले विदेशी नयी-नयी बातें सुनाने अथवा सुनने के अतिरिक्त और किसी काम में समय नहीं बिताते थे।

अथेने की परिषद में पौलुस का भाषण

22अरियोपिगुस परिषद के सामने* खड़े होकर पौलुस ने यह कहा, ''अथेने नगर के रहने वाले सज्जनो! मैं देख रहा हूँ कि आप लोग हर प्रकार से बड़े धर्म-प्रेमी हैं।
23जब मैं घूमता-फिरता आपकी आराध्य वस्तुओं को देख रहा था, तो मुझे एक वेदी मिली जिस पर यह लिखा था, 'अज्ञात देवता को'। आप लोग अनजाने जिसकी पूजा करते हैं, मैं उसी का संदेश आपको सुनाता हूँ।

24''जिस परमेश्वर ने विश्व तथा उसमें जो कुछ है, वह सब बनाया है, और जो आकाश और पृथ्वी का प्रभु है, वह हाथ से बनाये हुए मन्दिरों में निवास नहीं करता।
25और न उसे किसी वस्तु का अभाव है कि वह मनुष्यों के हाथों से सेवा ग्रहण करे; क्योंकि वह तो स्वयं सब को जीवन, प्राण और सब वस्तुएं प्रदान करता है।
26उसने एक ही मूल से** समस्त मनुष्यजाति को उत्पन्न किया है कि वह सारी पृथ्वी पर बस जाए। उसने मनुष्यों के नियत समयों और निवास के सीमा-क्षेत्रों को निर्धारित किया है
27कि वे परमेश्वर को ढूंढ़े और उसे खोजते हुए सम्भवतः उसे प्राप्त करें—यद्यपि वास्तव में वह हम में से किसी से भी दूर नहीं है।
28क्योंकि उसी में हम जीवित रहते, चलते-फिरते तथा अस्तित्व रखते हैं। आपके ही कुछ कवियों ने कहा है, 'हम भी ईश्वर की संतान

---

* एपिकूरी अर्थात् भोगवादी विचारधारा के लोग; स्तोइकी अर्थात् कठोर नैतिकतावादी ** मूल शब्द में श्लेष है। मूल शब्द में किसी देवी के नाम का अर्थ निहित है। *** अथवा, 'अरियोपिगुस सभा स्थल' * अथवा, 'अरियोपिगुस सभा स्थल के मध्य में' ** पाठान्तर, 'एक ही रक्त से'

17 : 13 1 थिस 2 : 14 **17 : 14** प्रे 16 : 1 **17 : 18** 1 कुर 15 : 12 **17 : 23** प्रज्ञ 13 : 1 **17 : 24** 1 रा 8 : 27; यश 42 : 5; मत 11 : 25; प्रे 7 : 48 **17 : 25** भज 50 : 12; 2 मक 14 : 35 **17 : 26** व्य 32 : 8; 2 मक 7 : 23 **17 : 27** यश 55 : 6; प्रज्ञ 13 : 6-9 **17 : 28** भज 145 : 18; यिर 23 : 23 **17 : 29** उत 1 : 27; यश 40 : 18; प्रे 19 : 26; 1 कुर 12 : 2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हैं।' [29]यदि हम परमेश्वर की संतान हैं, तो हमें
यह नहीं समझना चाहिए कि परमात्मा सोने,
चाँदी या पत्थर की मूर्ति के सदृश है, जो मनुष्य
की कला तथा कल्पना की उपज है।

[30]"परमेश्वर ने अज्ञानता के युगों को
अनदेखा कर दिया; परन्तु अब उसकी आज्ञा
यह है कि सर्वत्र सभी मनुष्य पश्चात्ताप करें,
[31]क्योंकि उसने वह दिन निश्चित किया है,
जिस में वह एक पूर्व-निर्धारित व्यक्ति द्वारा
समस्त संसार का न्यायपूर्वक विचार करेगा।
परमेश्वर ने उस व्यक्ति को मृतकों में से
पुनर्जीवित कर सब को अपने इस निश्चय का
प्रमाण दिया है।"*

[32]मृतकों के पुनरुत्थान की बात सुनते ही
कुछ लोगों ने उपहास किया; परन्तु कुछ लोगों
ने यह कहा, "इस विषय पर हम फिर कभी
आपकी बात सुनेंगे।" [33]अत: पौलुस उनके
बीच से चले गये। [34]फिर भी कुछ व्यक्ति उनके
साथ हो लिये और विश्वासी बन गये, जैसे
परिषद् का सदस्य दियोनिसियुस, दमरिस
नामक महिला तथा अन्य कई व्यक्ति।

कुरिन्थुस की कलीसिया की स्थापना

18 इसके बाद पौलुस अथेने नगर छोड़कर
कुरिन्थुस नगर में आये, [2]जहाँ अक्विला
नामक यहूदी से उनकी भेंट हुई। अक्विला का
जन्म पोंतुस प्रदेश में हुआ था। वह अपनी पत्नी
प्रिस्किल्ला के साथ कुछ समय पूर्व ही इटली देश
से आया था, क्योंकि सम्राट क्लौदियुस ने यह
आदेश दिया था कि सब यहूदी रोम से चले
जायें। पौलुस उन से मिलने गया [3]और उनके
साथ रहने तथा काम करने लगे; क्योंकि वे एक
ही व्यवसाय करते थे: तम्बू बनाने का। [4]पौलुस
प्रत्येक विश्राम-दिवस पर सभागृह में तर्क-
वितर्क करते और यहूदियों तथा यूनानियों को
समझाने का प्रयत्न करते थे।

[5]जब सीलास और तिमोथी मकिदुनिया से
आये तो पौलुस वचन सुनाने में अपना पूरा
समय देने लगे और यहूदियों को यह साक्षी देते
रहे कि येशु ही मसीह हैं। [6]किन्तु जब वे लोग
पौलुस का विरोध करने और निन्दा करने लगे,
तो उन्होंने अपने वस्त्र की धूल झाड़ कर उनसे
यह कहा, "तुम्हारा रक्त तुम्हारे सिर पड़े! मेरा
अन्त:करण शुद्ध है। मैं अब से गैर-यहूदियों के
पास जाऊँगा।" [7]वह सभागृह छोड़ कर चले
गये और तितियुस*** यूस्तुस नामक ईश्वर-
भक्त के यहाँ आ गये, जिसका घर सभागृह से
लगा हुआ था। [8]सभागृह के अध्यक्ष क्रिस्पुस
ने अपने सारे परिवार के साथ प्रभु में विश्वास
किया। कुरिन्थुस के अनेक निवासियों ने भी
पौलुस की बातें सुन कर विश्वास किया और
बपतिस्मा ग्रहण किया। [9]प्रभु ने एक रात को
दर्शन दे कर पौलुस से यह कहा, "डर मत,
बल्कि बोलते जा और चुप मत रह। [10]मैं तेरे
साथ हूँ। कोई भी तुझ पर आक्रमण कर तेरी
हानि नहीं कर पायेगा; क्योंकि इस नगर में
बहुत-से लोग मेरे अपने हैं।" [11]पौलुस लोगों
को परमेश्वर के वचन की शिक्षा देते हुए वहाँ
डेढ़ वर्ष रहे।

रोमन उच्चाधिकारी गल्लियो

[12]जिस समय गल्लियो यूनान देश** का
उपराज्यपाल था, यहूदियों ने संयुक्त रूप से
पौलुस पर आक्रमण किया और उन्हें न्यायालय
के सम्मुख पेश किया। [13]उन्होंने यह आरोप
लगाया, "यह व्यक्ति परमेश्वर की ऐसी
उपासना-पद्धति सिखलाता है, जो व्यवस्था के
विरुद्ध है।" [14]पौलुस अपनी सफाई में बोलने
ही वाले थे कि गल्लियो ने यहूदियों से यह कहा,
"यहूदियो! यदि यह अन्याय या अपराध का
मामला होता, तो मैं अवश्य धैर्यपूर्वक तुम
लोगों की बात सुनता। [15]परन्तु यह वाद-विवाद
शब्दों, नामों और तुम्हारी व्यवस्था से सम्बन्ध
रखता है। तो तुम्हीं जानो, मैं ऐसी बातों का

---

* अथवा, 'सबको विश्वास उपलब्ध कराया है।' **अथवा, "अखया प्रदेश" *** अथवा, 'तीतुस'।

17 : 30 प्रे 14 : 16; 17 : 23; लू 24 : 27 **17 : 31** प्रे 10 : 42; भज 9 : 8; 66 : 13; रोम 1 : 4 **18 : 2** रोम 16 : 3 **18 :3** प्रे 20 : 34; 1 कुर 4 : 12 **18 : 5** प्रे 17 : 14-15 **18 : 6** प्रे 13 : 46, 51; 20 : 26 **18 : 8** 1 कुर 1 : 14 **18 : 9** 1 कुर 2 : 3 **18 : 10** यहो 1 : 5, 9; हो 2 : 23; यश 41 : 10; 43 : 5; यिर 1 : 8; यो 10 : 16 **18 : 14** प्रे 25 : 18-20 **18 : 15** यो 18 : 31

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
न्याय करना नहीं चाहता।'' 16और उसने उन्हें
न्यायालय से बाहर निकाल दिया।
17तब सब* ने सभागृह के अध्यक्ष सोस्थेनेस
को पकड़ कर न्यायालय के सामने ही पीटा,
किन्तु गल्लियो ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया।

अन्ताकिया में पौलुस की वापसी

18पौलुस बहुत दिन तक कुरिन्थुस में रहे।
इसके पश्चात् वह भाई-बहिनों से विदा ले कर
प्रिस्किल्ला तथा अक्विला के साथ, जलमार्ग
द्वारा सीरिया देश चले गये। उन्होंने किसी
व्रत के कारण किंख्रेअय बन्दरगाह में सिर मुंड़ा
लिया।
19जब वे इफिसुस नगर पहुँचे, तो पौलुस ने
प्रिस्किल्ला तथा अक्विला को वहीं छोड़ दिया
और स्वयं सभागृह में जाकर यहूदियों के साथ
वाद-विवाद किया। 20उन्होंने पौलुस से निवेदन
किया, ''आप कुछ समय और ठहरिए।''
किन्तु पौलुस ने स्वीकार नहीं किया 21और उन
से विदा लेकर कहा, ''यदि परमेश्वर ने चाहा,
तो मैं आप लोगों के पास फिर आऊँगा।'' वह
इफिसुस छोड़ कर जलमार्ग द्वारा 22कैसरिया
बन्दरगाह पहुँचे। वहाँ से वह कलीसिया का
अभिवादन करने गये, और यरूशलेम से
महानगर अन्ताकिया चले गये।

तृतीय प्रचार-यात्रा का आरम्भ

23पौलुस कुछ समय अन्ताकिया में रहे। तब
उन्होंने प्रस्थान किया और गलातिया और
फ्रुगिया के क्षेत्रों से होते हुए एक नगर से दूसरे
नगर का भ्रमण करते हुए सब शिष्यों को
विश्वास में सुदृढ़ करते रहे।

इफिसुस नगर में अपुल्लोस

24उस समय अपुल्लोस नामक यहूदी
इफिसुस नगर पहुँचा। उसका जन्म सिकन्दरिया
में हुआ था। वह शक्तिशाली वक्ता और
धर्मग्रन्थ का पण्डित था। 25उसे प्रभु के मार्ग की
शिक्षा मिली थी। वह आत्मिक उत्साह के साथ
बोलता और येशु के विषय में सही बातें
सिखलाता था, यद्यपि वह केवल योहन के
बपतिस्मा से परिचित था। 26वह सभागृह में
निर्भीकता से बोलने लगा। प्रिस्किल्ला और
अक्विला उसकी शिक्षा सुनने के बाद उसे
अपने साथ ले गये और उन्होंने अधिक उपयुक्त
ढंग से उसे परमेश्वर का मार्ग समझाया।
27जब अपुल्लोस ने समुद्र पार यूनान देश
जाना चाहा, तो भाई-बहिनों ने उसको प्रोत्साहित
किया और शिष्यों के नाम पत्र दे कर निवेदन
किया कि वे उसका स्वागत करें। अपुल्लोस ने
यूनान पहुंच कर उन लोगों की बड़ी सहायता
की, जो प्रभु की कृपा के कारण विश्वासी बन
चुके थे। 28क्योंकि उसने अकाट्य तर्कों से
सबके सामने यहूदियों का खण्डन किया और
धर्मग्रंथ के आधार पर यह प्रमाणित किया कि
येशु ही मसीह हैं।

इफिसुस में योहन बपतिस्मादाता के शिष्य

19 जिस समय अपुल्लोस कुरिन्थुस नगर
में था, पौलुस भीतरी प्रदेशों का दौरा
समाप्त कर इफिसुस पहुँचे। वहां उन्हें कुछ
शिष्य मिले। 2पौलुस ने उनसे पूछा, ''क्या
विश्वासी बनते समय आप लोगों को पवित्र
आत्मा प्राप्त हुआ था?'' उन्होंने उत्तर दिया,
''हमने यह भी नहीं सुना है कि पवित्र आत्मा
होता है।'' 3इस पर पौलुस ने पूछा, ''तो, आप
को किसका बपतिस्मा मिला?'' उन्होंने उत्तर
दिया, ''योहन का बपतिस्मा।'' 4पौलुस ने कहा,
''योहन पश्चात्ताप का बपतिस्मा देते थे। वह
लोगों से कहते थे कि जो मेरे बाद आने वाले
हैं उन पर, अर्थात् येशु पर विश्वास करना।''
5उन्होंने यह सुन कर प्रभु येशु के नाम पर
बपतिस्मा लिया। 6जब पौलुस ने उन पर हाथ
रखा, तो पवित्र आत्मा उन पर उतरा और वे
अध्यात्म भाषाएं बोलने और नबूवत करने लगे।
7वे कुल मिला कर लगभग बारह पुरुष थे।

---

* अन्य प्राचीन प्रतियों के अनुसार, 'सब यूनानियों'

18 : 17 1 कुर 1 : 1 **18 : 18** गण 6 : 9, 18; प्रे 21 : 24 **18 : 21** रोम 1 : 10; 1 कुर 4 : 19; याक 4 : 15 **18 : 22** प्रे 21 : 15 **18 : 24** 1 कुर 3 : 6 **18 : 25** प्रे 19 : 3; रोम 12 : 11; प्रेक 3 : 15 **18 : 27** 2 कुर 3 : 1; कुल. 4 : 10 **18 : 28** प्रे 9 : 22; 17 : 3 **19 : 2** प्रे 2 : 38 **19 : 4** मत 3 : 11 **19 : 6** प्रे 8 : 17; -10, 44-46

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इफिसुस की कलीसिया का विकास

8पौलुस तीन महीनों तक सभागृह जाते रहे।
वह परमेश्वर के राज्य के विषय में निर्भीकता-
पूर्वक बोलते और यहूदियों को समझाते थे।
9किन्तु उन में कुछ लोग हठधर्मी थे और वे न
केवल अविश्वासी बने रहे, बल्कि सभा में इस
मार्ग की निन्दा भी करने लगे। इसलिए पौलुस
ने उन से सम्बन्ध तोड़ लिया और अपने शिष्यों
को वहाँ से हटा लिया। वह प्रतिदिन* तुरन्नुस
की पाठशाला में धर्म-चर्चा करने लगे। 10यह
क्रम दो वर्षों तक चलता रहा और इस तरह
आसिया प्रदेश के निवासियों ने—चाहे वे
यहूदी हों या यूनानी, सब ने प्रभु का वचन सुना।
11परमेश्वर ने पौलुस द्वारा अलौकिक सामर्थ्य
के कार्य किये; 12यहां तक कि, जब उनके शरीर
से स्पर्श किये हुए रूमाल और अँगोछे रोगियों
पर डाल दिये जाते थे, तो उनकी बीमारियाँ दूर
हो जाती थीं और दुष्ट आत्माएं निकल जाती
थीं।

स्किवास के सात पुत्र

13इधर-उधर घूमने वाले कुछ यहूदी भूत-
प्रेत साधकों ने भी प्रयास किया कि दुष्ट आत्मा
से ग्रसित लोगों पर प्रभु येशु के नाम का
उच्चारण करें। वे यह कहते थे, "पौलुस
जिनका प्रचार करते हैं, तुम को उन्हीं येशु की
शपथ!" 14महापुरोहित स्किवास के सात पुत्र
भी यही करते थे। 15किसी अवसर पर दुष्ट
आत्मा ने उन्हें उत्तर दिया, "मैं येशु को जानती
हूँ। पौलुस कौन है, यह भी जानती हूँ; परन्तु तुम
लोग कौन हो ?" 16जो मनुष्य दुष्ट आत्मा के
वश में था, उसने झपट कर सब को पछाड़ा और
उनकी ऐसी दुर्गति की कि वे नंगे और घायल
हो कर उस घर से निकल भागे। 17इफिसुस के
निवासियों को—चाहे वे यहूदी हों या यूनानी,
सब को, यह बात मालूम हो गयी। सब पर भय
छा गया और प्रभु येशु के नाम का गुणगान होने
लगा।
18विश्वासियों में भी बहुत लोगों ने आ कर
प्रकट रूप से स्वीकार किया कि वे भूत-प्रेत
साधते थे। 19अनेक जादू-टोना करने वालों ने
अपनी पुस्तकों को एकत्र कर सबके सामने
जला दिया। जब लोगों ने हिसाब लगाया, तो
पता चला कि उन पुस्तकों का मूल्य पचास
हजार चांदी के सिक्के था।
20इस प्रकार प्रभु का वचन प्रबलता से
फैलता गया और उसका प्रभाव बढ़ता रहा।

इफिसुस में दंगा

21इन घटनाओं के पश्चात् पौलुस ने
मकिदुनिया तथा यूनान का दौरा करते हुए
यरूशलेम जाने का निश्चय किया। उन्होंने
कहा, "वहाँ पहुँचने के पश्चात् मैं रोम भी
अवश्य देखूंगा।" 22उन्होंने अपने सहयोगियों
में से दो, अर्थात् तिमोथी और एरस्तुस को
मकिदुनिया भेजा; किन्तु वह स्वयं कुछ दिन
तक आसिया में ठहरे रहे।
23इन्हीं दिनों की बात है : इस मार्ग को ले
कर एक भारी दंगा हो गया। 24देमेत्रियुस नामक
सुनार अरतिमिस देवी के मन्दिर की रजत
प्रतिमाएं बनवा कर कारीगरों को बहुत काम
दिलाता था। 25उसने इन कारीगरों तथा इस
व्यवसाय के अन्य मजदूरों को एकत्र कर कहा,
"भाइयो! आप लोग जानते हैं कि इस व्यवसाय
से हमें कितनी आमदनी होती है। 26लेकिन आप
देखते और सुनते हैं कि उस पौलुस ने न केवल
इफिसुस में, बल्कि प्रायः समस्त आसिया में
बहुत-से लोगों को समझा-बुझा कर बहका
दिया है। उसका कहना है कि हाथ के बनाये
हुए देवता, देवता नहीं हैं। 27इससे यह आशंका
उत्पन्न हो गयी है कि न केवल हमारे व्यवसाय
की प्रतिष्ठा समाप्त हो जायेगी, बल्कि महती
देवी अरतिमिस के मन्दिर का महत्व भी नष्ट
हो जायेगा। जिस देवी की पूजा सारा आसिया

* कुछ प्राचीन प्रतियों के अनुसार, "तुरन्नुस नामक व्यक्ति की पाठशाला में प्रतिदिन ग्यारह बजे से चार बजे तक।"

19 : 9 2 तिम 1 : 15; प्रे 9 : 2; 2 कुर 6 : 17; तीत 3 : 10-11 **19 : 11** प्रे 14 : 3 **19 : 12** प्रे 5 : 15 **19 : 13** लू 9 : 49 **19 : 15** मक 1 : 34; लू 4 : 41 **19 : 17** प्रे 5 : 5, 11 **19 : 20** प्रे 6 : 7; 12 : 24 **19 : 21** प्रे 23 : 11; रोम 1 : 13 **19 : 22** प्रे 17 : 14; रोम 16 : 23; 1 कुर 4 : 17 **19 : 23** प्रे 19 : 9; 2 कुर 1 : 8-9 **19 : 24** प्रे 16 : 16 **19 : 26** प्रे 17 : 29

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तथा समस्त संसार करता है, वह अपने प्रताप
से वंचित हो जायेगी।'' 28वे यह सनु कर क्रुद्ध
हो उठे और चिल्लाने लगे : ''इफिसियों की
अरतिमिस देवी महान है!'' 29समस्त नगर में
खलबली मच गयी। वे गायुस और अरिस्तर्खुस
को, जो मकिदुनिया के निवासी और पौलुस के
सहयात्री थे, घसीट कर ले गये और सब मिल
कर नाट्यशाला की ओर दौड़ पड़े। 30पौलुस
उस सभा में जाना चाहते थे, किन्तु शिष्यों ने
जाने नहीं दिया। 31आसिया के कुछ अधिकारी
पौलुस के मित्र थे। उन्होंने भी सन्देश भेज कर
अनुरोध किया कि वह नाट्यशाला जाने का
दुस्साहस न करें।

32सभा में कोलाहल मचा हुआ था। कोई
कुछ चिल्ला रहा था, तो कोई कुछ; अधिकांश
लोग यह भी नहीं जानते थे कि वे क्यों एकत्र
हुए हैं। 33तब कुछ यहूदियों ने सिकन्दर को
समझा कर आगे ढकेल दिया। सिकन्दर ने हाथ
से संकेत किया कि वह लोगों को स्पष्टीकरण
देना चाहता है; 34किन्तु जब उन्हें पता चला कि
वह यहूदी है, तो वे सब-के-सब एक स्वर से
दो घण्टों तक चिल्लाते रहे : ''इफिसियों की
अरतिमिस देवी महान है!'' 35नगर के प्रशासक
ने भीड़ को शान्त करने के बाद कहा, ''इफिसुस
नगर के सज्जनो ! कौन मनुष्य यह नहीं जानता
कि इफिसुस नगर महती देवी अरतिमिस के
मंदिर का और आकाश से गिरी हुई उनकी मूर्ति
का संरक्षक है। 36यदि यह बात निर्विवाद है,
तो आप लोगों को शान्त हो जाना चाहिए और
सोच-विचार किये बिना कुछ नहीं करना
चाहिए। 37आप लोग जिन व्यक्तियों को यहाँ
पकड़ कर लाये हैं, उन्होंने न तो मन्दिर को
अपवित्र किया है और न हमारी देवी की निन्दा
की है। 38यदि देमेत्रियुस और उनके कारीगरों
को किसी से कोई शिकायत है, तो अदालत
खुली है और उपराज्यपाल भी विद्यमान हैं।
दोनों पक्ष एक-दूसरे पर अभियोग लगायें।
39परन्तु यदि आप कुछ और चाहते हैं, तो
नागरिकों की वैध सभा में उस पर विचार किया
जायेगा। 40यों भी आज के दंगे के कारण हम
पर अभियोग लगाया जा सकता है, क्योंकि हम
इस अव्यवस्था का कोई उचित कारण नहीं बता
पायेंगे।'' उसने इतना कह कर सभा विसर्जित
कर दी।

मकिदूनिया, यूनान और त्रोआस में पौलुस

20 दंगा शान्त होने पर पौलुस ने शिष्यों को
बुला भेजा और उन को प्रोत्साहित
किया। तब वह उन से विदा ले कर मकिदूनिया
चल दिये। 2उन्होंने समस्त प्रदेश का दौरा किया
और बहुत-से उपदेशों द्वारा विश्वासियों का
उत्साह बढ़ाते हुए वह दक्षिण यूनान देश पहुँचे।
3वहाँ तीन महीने बिताने के बाद वह जलमार्ग
से सीरिया देश जाने वाले थे, तो उन्हें पता चला
कि यहूदी उनके विरुद्ध षड्यन्त्र रच रहे हैं।
इसलिए उन्होंने मकिदूनिया हो कर लौटने का
निश्चय किया। 4पुर्रुस का पुत्र सोपत्रुस, जो
बिरीया का निवासी था; थिस्सलुनीके नगर के
अरिस्तर्खुस तथा सेकुन्दुस; दिरबे नगर का
गायुस; तिमोथी और आसिया प्रदेश के तुखिकुस
और त्रोफिमुस—ये पौलुस के साथ जा रहे थे।
5वे हम से पहले चले गये और त्रोआस
बन्दरगाह में हमारी प्रतीक्षा करने लगे। 6हमने
बेखमीर रोटी के पर्व के पश्चात् फिलिप्पी नगर
से जलयात्रा आरंभ की और पाँच दिन बाद
त्रोआस में उनके पास पहुँचे, जहाँ हम सात दिन
रहे।

त्रोआस में पौलुस का आश्चर्य-कर्म

7हम शनिवार की संध्या को* रोटी तोड़ने के
लिए** एकत्र हुए। पौलुस, जो दूसरे दिन जाने
वाले थे, भाई-बहिनों से धर्म-चर्चा कर रहे थे।
वह आधी रात तक बोलते रहे। 8हम ऊपरी मंजिल
के कमरे में एकत्र थे और वहाँ बहुत-से दीपक
जल रहे थे। 9यूतुखुस नामक एक युवक खिड़की
की चौखट पर बैठा हुआ था। जब पौलुस बहुत

* अक्षरशः, ''सप्ताह के प्रथम दिन।'' ** अथवा, ''प्रभु-भोज के लिए''।

19 : 29 प्रे 20 : 4 20 : 4 प्रे 17 : 10; 19 : 29; रोम 16 : 21 20 : 5 प्रे 16 : 8 20 : 7 1 कुर 16 : 2; प्रे 2 : 42, 46

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
देर तक बोलते रहे, तो उसे गहरी नींद आ गयी।
वह नींद के झोंके में तीसरी मंज़िल से नीचे गिर
गया। वह मृत अवस्था में उठाया गया।
10पौलुस नीचे उतरे। वह उस पर लेट गये और
उसे गले लगा कर बोले, ''आप घबरायें नहीं।
यह अब भी जीवित है।'' 11तब पौलुस ऊपर
गये और उन्होंने रोटी तोड़ी और खायी। तब
वह देर तक—दिन निकलने तक—बातचीत
करते रहे और इसके बाद वह चले गये। 12लोग
उस नवयुवक को जीवित ले आये। इससे लोगों
को बड़ी सान्त्वना मिली।

मिलेतुस की यात्रा

13हम पहले ही जलयान से अस्सुस नगर के
लिए चल दिये थे। वहाँ हम पौलुस को जलयान
में चढ़ाने वाले थे। उन्होंने ऐसा प्रबन्ध किया
था, क्योंकि वह स्थल मार्ग से वहां पहुंच रहे
थे। 14पौलुस अस्सुस में हम से मिले और हम
ने उन्हें जलयान में चढ़ा लिया। हम मितुलेने
द्वीप आये। 15वहाँ से हम ने लंगर उठाया और
दूसरे दिन खियुस द्वीप के सामने पहुँचे। हम
अगले दिन समुद्र पार कर सामोस द्वीप और*
उसके दूसरे दिन मिलेतुस बन्दरगाह में आये।
16पौलुस ने निश्चय किया था कि वह इफिसुस
को छोड़कर आगे बढ़ जायेंगे, जिससे उन्हें
आसिया प्रदेश में समय बिताना न पड़े। वह
इसलिए जल्दी में थे कि यदि किसी प्रकार हो
सके, तो वह पेंतेकोस्त पर्व के दिन यरूशलेम
में हों।

इफिसुस के धर्मवृद्धों से विदा

17पौलुस ने मिलेतुस से संदेश भेज कर
इफिसुस की कलीसिया के धर्मवृद्धों को
बुलाया 18और उनके पहुंचने पर उनसे यह
कहा, ''आप लोग जानते हैं कि जिस दिन से
मैं पहले-पहल आसिया पहुँचा, उस दिन से
मेरा आचरण आपके बीच कैसा रहा। 19किस
प्रकार मैं आँसू बहा कर बड़ी विनम्रता से उन
संकटों में प्रभु की सेवा करता रहा, जो यहूदियों
के षड्यन्त्रों के कारण मुझ पर आये थे। 20जो
बातें आप लोगों के लिए हितकर थीं, उन्हें
बताने में मैंने कभी संकोच नहीं किया, बल्कि
मैं सब के सामने और घर-घर जा कर उनके
सम्बन्ध में शिक्षा देता रहा। 21मैं यहूदियों तथा
यूनानियों, दोनों के सम्मुख स्पष्ट साक्षी देता रहा
कि वे पश्चात्ताप कर परमेश्वर की ओर
अभिमुख हो जाएं और हमारे प्रभु येशु में
विश्वास करें।

22''अब मैं आत्मा की प्रेरणा से विवश हो
कर यरूशलेम जा रहा हूँ। वहाँ मुझ पर क्या
बीतेगी, मैं यह नहीं जानता; 23केवल यह जानता
हूं कि प्रत्येक नगर में पवित्र आत्मा मुझे स्पष्ट
चेतावनी दे रहा है कि वहाँ बेड़ियाँ और कष्ट
मेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं। 24किन्तु मेरी दृष्टि में
मेरे जीवन का कोई मूल्य नहीं। मैं तो केवल
अपनी दौड़ समाप्त करना और वह सेवाकार्य
पूरा करना चाहता हूँ, जिसे प्रभु येशु ने मुझे
सौंपा है—अर्थात् मैं परमेश्वर के अनुग्रह के
शुभ समाचार की साक्षी देता रहूँ।

25''मैं आप लोगों के बीच राज्य का सन्देश
सुनाता रहा। अब, मैं जानता हूँ कि आप में कोई
भी मेरा मुँह फिर कभी नहीं देख पायेगा।
26इसलिए मैं आज आप के सम्मुख साक्षी देता
हूं कि मैं आप सब के रक्त से निर्दोष हूं;
27क्योंकि मैंने आप लोगों को परमेश्वर का
सम्पूर्ण अभिप्राय बताने में कुछ भी उठा नहीं
रखा।

28''आप लोग अपने लिए और सारे झुण्ड
के लिए सावधान रहिए। पवित्र आत्मा ने आप
को झुण्ड की रखवाली का भार सौंपा है, ताकि
आप परमेश्वर+ की कलीसिया के सच्चे चरवाहे
बने रहें, जिसे उसने अपने पुत्र का रक्त** दे कर
प्राप्त किया है। 29मैं जानता हूँ कि मेरे चले जाने
के बाद खूँखार भेड़िये आप लोगों के बीच घुस

* अनेक प्राचीन प्रतियों के अनुसार, ''और त्रोगुल्यन में रुकने के पश्चात्''। + पाठांतर, ''प्रभु।'' **अथवा, 'स्वयं अपना रक्त'।

20 : 10 1 रा 17 : 21 **20 : 16** प्रे 18 : 21 **20 : 18** प्रे 18 : 19; 19 : 10 **20 : 19** प्रे 20 : 3 **20 : 22** प्रे 19 : 21 **20 : 23** प्रे 9 : 16; 21 : 4, 11 **20 : 24** प्रे 21 : 13 **20 : 26** प्रे 18 : 6 **20 : 28** भज 74 : 2; 1 तिम 4 : 16; 1 पत 5 : 2 **20 : 29** मत 7 : 15; 10 : 16; यो 10 : 12

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आयेंगे, जो झुण्ड पर दया नहीं करेंगे। 30आप
लोगों में भी ऐसे लोग निकल आयेंगे, जो
शिष्यों को भटका कर अपने अनुयायी बनाने के
लिए भ्रान्तिपूर्ण बातों का प्रचार करेंगे। 31इसलिए
जागते रहिए और याद रखिए कि मैं आँसू बहा-
बहा कर तीन वर्षों तक दिन-रात आप लोगों
में हर एक को सावधान करता रहा। 32अब मैं
आप लोगों को परमेश्वर के तथा उसके
अनुग्रहपूर्ण वचन के संरक्षण में सौंपता हूं, जो
आपका निर्माण करने तथा सब पवित्र किए हुए
भक्तों के साथ आप को विरासत दिलाने में
समर्थ है।

33 "मैंने कभी किसी की चाँदी, सोना
अथवा वस्त्र का लोभ नहीं किया। 34आप लोग
स्वयं जानते हैं कि मैंने अपनी और अपने
साथियों की आवश्यकताएं पूरी करने के लिए
अपने इन हाथों से काम किया। 35मैंने सदा आपके
सम्मुख उदाहरण रखा कि हमें किस प्रकार
परिश्रम करते हुए निर्बलों की सहायता करनी
चाहिए और प्रभु येशु के शब्द स्मरण रखना
चाहिए, जो उन्होंने स्वयं कहे थे: 'लेने की
अपेक्षा देना धन्य है'।"

36इतना कह कर पौलुस ने उन सब के साथ
घुटने टेक कर प्रार्थना की। 37सब फूट-फूट कर
रोने और पौलुस को गले लगा कर चुम्बन करने
लगे। 38वे दुःखी हुए, विशेष कर पौलुस की
इस बात से कि वे फिर कभी उनका मुंह नहीं
देखेंगे। इसके बाद वे पौलुस को जलयान तक
छोड़ने आये।

यरूशलेम की यात्रा

21 इफिसुस के धर्मवृद्धों से विदा लेने के
बाद हम लंगर उठाकर सीधे कोस द्वीप
पहुँचे। दूसरे दिन हम रोदुस द्वीप में आये और
वहाँ से पतारा नगर* चले गये। 2पतारा में हमें
एक जलयान मिला, जो फीनीके प्रदेश जाने
वाला था; इसलिए हम उस पर सवार हो कर
चल दिये। 3हमें कुप्रुस द्वीप दिखाई पड़ा, किन्तु
हम उसे बायें हाथ छोड़ कर सीरिया की ओर
आगे बढ़े और सोर नगर में उतरे, क्योंकि वहां
जलयान से माल उतारना था। 4हम शिष्यों का
पता लगाकर सात दिन वहाँ रहे। उन्होंने आत्मा
से प्रेरित हो कर पौलुस से कहा कि वह
यरूशलेम जाने का विचार छोड़ दें। 5जब ये
दिन पूरे हुए और हम विदा लेकर जाने वाले थे,
तो सब लोग, स्त्रियों तथा बच्चों सहित, नगर
के बाहर तक हमें पहुंचाने आये। हमने समुद्र-
तट पर घुटने टेक कर प्रार्थना की 6और उन से
विदा ले कर हम जलयान पर चढ़े और वे अपने
घर लौट गए।

7जब हम सोर से प्तुलिमयिस नगर पहुँचे,
तो हमारी यह समुद्र-यात्रा समाप्त हुई। वहाँ
हम भाई-बहिनों का अभिवादन करने गये और
एक दिन उनके यहाँ रहे। 8वहाँ से चल कर हम
दूसरे दिन कैसरिया पहुँचे।

हम शुभसमाचार-प्रचारक फिलिप के घर
गये और उसके यहाँ ठहरे। वह "सात सेवकों"
में से एक था।** 9उसके चार कुँआरी लड़कियाँ
थीं, जिन्हें परमेश्वर की नबूवत करने का
वरदान प्राप्त था। 10जब हमें वहाँ रहते कई दिन
हो गये थे, तो अगबुस नामक नबी यहूदा प्रदेश
से आया। 11उसने हमारे पास आ कर पौलुस
का कमरबन्द लिया और उससे अपने हाथ-पैर
बाँध कर कहा, "पवित्र आत्मा यह कहता है:
जिस व्यक्ति का यह कमरबन्द है, उसे
यरूशलेम में यहूदी इसी तरह बाँधेंगे और गैर-
यहूदियों के हाथ सौंप देंगे।" 12यह सुन कर
हम और वहां के लोग पौलुस से अनुरोध करने
लगे कि वह यरूशलेम न जायें। 13इस पर पौलुस
ने कहा, "आप लोग यह क्या कह रहे हैं? आप
रो-रो कर मेरा हृदय क्यों दुःखी कर रहे हैं? मैं
प्रभु येशु के नाम के कारण यरूशलेम में न
केवल बँधने, बल्कि मरने को भी तैयार हूँ।"

* कुछ प्रतियों के अनुसार, 'पतारा और मुरा नगर' ** कृपया, देखिए प्रेरितों 6 : 3

20 : 30 1 यो 2 : 19; गल 4 : 17 **20 : 31** मक 13 : 35.37; 1 थिस 2 : 11 **20 : 32** व्य 33 : 3 **20 : 33** 1 शम 12 : 3; 1 कुर 9 : 12; मत 10 : 8 **20 : 34** प्रे 18 : 3; 1 कुर 4 : 12; 1 थिस 2 : 9 **20 : 36** प्रे 21 : 5 **20 : 37** रोम 16 : 16; 1 पत 5 : 14 **20 : 38** प्रे 20 : 25 **21 : 4** प्रे 11: 12; 20 : 23 **21 : 5** प्रे 20 : 36 **21 : 8** प्रे 8 : 40 **21 : 9** प्रे 2 : 17 **21 : 10** प्रे 11 : 28 **21 : 11** प्रे 20 : 23 **21 : 12** मत 16 : 22 **21 : 13** प्रे 20 : 24

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

14जब वह हमारी बात मानने के लिए तैयार नहीं
हुए, तो हम यह कह कर चुप हो गये, "प्रभु
की इच्छा पूरी हो!"

यरूशलेम में याकूब से भेंट

15इन दिनों के उपरांत हमने तैयारी की और
यरूशलेम की ओर चल दिये। 16कैसरिया के
कुछ शिष्य हमारे साथ आये और हमें कुप्रुस-
निवासी मनासोन के घर ले गये।** मनासोन
आरम्भ के दिनों का शिष्य था और हम उसके
यहाँ ठहरने वाले थे।
17जब हम यरूशलेम पहुँचे , तो भाई-
बहिनों ने सहर्ष हमारा स्वागत किया। 18दूसरे
दिन पौलुस हमारे साथ याकूब के यहाँ गये।
वहाँ सब धर्मवृद्ध एकत्र थे। 19पौलुस ने उनका
अभिवादन किया और परमेश्वर ने उनके सेवा-
कार्य द्वारा गैर-यहूदियों के बीच जो कुछ किया
था, सब एक-एक करके उन्हें बताया। 20उन्होंने
यह सुन कर परमेश्वर की स्तुति की और पौलुस
से कहा, "भाई! आप देखते हैं कि हजारों
यहूदियों ने विश्वास कर लिया है और वे सब
व्यवस्था के कट्टर समर्थक भी हैं। 21उन्होंने
आपके विषय में सुना है कि आप गैर-यहूदियों
के बीच रहने वाले यहूदियों को यह शिक्षा देते
हैं कि वे मूसा की शिक्षा को त्याग दें; क्योंकि
आप उन से कहते हैं कि वे न तो अपने बच्चों
का खतना करें और न पुरानी प्रथाओं का पालन
करें। 22अब क्या किया जाये? वे अवश्य सुनेंगे
कि आप आ गये हैं। 23इसलिए आप हमारा
कहना मानिए। यहाँ चार व्यक्ति हैं जिन्होंने व्रत
लिया है। 24इन्हें ले जाइए और इनके साथ
अपने को शुद्ध कीजिए और इनके मुण्डन का
शुल्क दीजिए। इस प्रकार सब यह जान जायेंगे
कि उन्होंने आपके विषय में जो सुना है, वह
मिथ्या है, और आप स्वयं व्यवस्था का पालन
करते तथा उसके अनुसार चलते हैं। 25जहाँ तक
विश्वासी ग़ैर-यहूदियों का प्रश्न है, हमने पत्र
लिख कर अपना यह निर्णय भेज दिया है कि
वे मूर्तियों पर चढ़ाये हुए मांस से, रक्त के
खान-पान से, गला घोंटे हुए पशुओं के मांस
से और व्यभिचार से + परहेज करें!"
26अत: पौलुस उन व्यक्तियों को ले गये।
दूसरे दिन उनके साथ स्वयं को शुद्ध करने के
बाद पौलुस ने मन्दिर में प्रवेश किया तथा यह
सूचित किया कि किस तिथि को शुद्धीकरण की
अवधि पूरी होगी और उन में से प्रत्येक के लिए
भेंट चढ़ायी जायेगी।

मन्दिर में पौलुस की गिरफ्तारी

27सात दिन की अवधि पूरी होने पर थी कि
आसिया के यहूदियों ने पौलुस को मन्दिर में
देख कर समस्त जनसमूह को भड़का दिया। वे
पौलुस को पकड़ कर 28चिल्लाने लगे,
"इस्राएली भाइयो! हमारी सहायता कीजिये!
यह वही व्यक्ति है, जो सब जगह सब लोगों
में ऐसी शिक्षा का प्रचार करता है, जो हमारी
जाति, हमारी व्यवस्था और इस मन्दिर के
विरुद्ध है। यही नहीं, इसने यूनानियों को मन्दिर
में लाकर इस पवित्र स्थान को भ्रष्ट कर दिया
है।" 29वे इफिसुस-निवासी त्रोफ़िमुस को
पौलुस के साथ नगर में देख चुके थे। इसलिये
उन्होंने यह समझा कि पौलुस उसे मन्दिर में
लाये हैं।
30सारे शहर में खलबली मच गयी और
लोग चारों ओर से दौड़ते हुए एकत्र हो गये।
वे पौलुस को पकड़ कर मन्दिर के बाहर खींच
लाये और मन्दिर के द्वार तुरन्त बन्द कर दिये
गये। 31वे पौलुस का वध करना चाहते ही थे
कि रोमन सैन्यदल के नायक को सूचना मिली
कि समस्त यरूशलेम में उपद्रव मचा हुआ है।
32वह तुरन्त सैनिकों तथा शतपतियों को ले कर
भीड़ की ओर दौड़ पड़ा। जब लोगों ने सेना-
नायक तथा सैनिकों को देखा, तो उन्होंने
पौलुस को पीटना बन्द कर दिया। 33सेना-नायक
ने निकट आ कर पौलुस को गिरफ्तार कर लिया
और उसे दो बेड़ियों से बाँधने का आदेश दिया।

** अथवा, "और कुप्रुस-निवासी मनासोन को अपने साथ ले गए।" + अथवा, "अवैध विवाहों से"

21 : 14 मत 6 : 10; 26 : 39; लू 22 : 42; यो 21 : 18 **21 : 18** प्रे 15 : 13; गल 1 : 19 **21 : 20** प्रे 15 : 1
21 : 21 प्रे 16 : 3; रोम 10 : 4 **21 : 24** प्रे 18 : 18 **21 : 25** प्रे 15 : 20, 29 **21 : 26** गण 6 : 1-20; 1 कुर
9 : 29 **21 : 28** प्रे 6 : 13; यहेज 44 : 7 **21 : 29** प्रे 20 : 4; 2 तिम 4 : 20 **21 : 33** प्रे 21 : 11; 20 : 23

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तब उसने पूछा कि यह कौन है और इसने क्या
किया है। 34भीड में कोई कुछ चिल्ला रहा था,
तो कोई कुछ। होहल्ला के मारे सेना-नायक
तथ्य तक नहीं पहुंच सका; इसलिए उसने
पौलुस को किले में ले जाने का आदेश दिया।
35जब पौलुस सीढ़ियों पर पहुंचे, तो भीड़ की
हिंसक वृत्ति के कारण सैनिकों को उन्हें
उठाकर ले जाना पड़ा। 36भीड़ "मारो! मारो!"
चिल्लाते हुए पीछे-पीछे आ रही थी।
37जब सैनिक पौलुस को किले के अन्दर ले
जा रहे थे, तो पौलुस ने सेना-नायक से कहा,
"क्या मैं आप से कुछ निवेदन कर सकता हूँ?"
उसने उत्तर दिया, "क्या तुम यूनानी भाषा
जानते हो? 38क्या तुम वह मिस्री नहीं हो,
जिसने कुछ समय पहले विद्रोह किया था और
चार हजार कृपाणधारी लोगों को निर्जन प्रदेश
में ले गया था?" 39पौलुस ने कहा, "मैं यहूदी
हूँ और किलिकिया के तरसुस नगर का निवासी
हूँ। मैं किसी साधारण नगर का नागरिक नहीं
हूं। मेरा निवेदन है कि आप मुझे भीड़ को
सम्बोधित करने की अनुमति दें।" 40उसने
अनुमति दे दी। तब पौलुस ने सीढ़ियों पर खड़े
हो कर हाथ से लोगों को चुप रहने के लिए
संकेत किया। जब सब चुप हो गये, तो पौलुस
ने उन्हें इब्रानी भाषा में सम्बोधित किया :

भीड़ के सम्मुख पौलुस का भाषण

22 "भाइयो और गुरुजनो! अब मेरे पक्ष
के समर्थन में मेरा वक्तव्य सुनिये।"
2जब लोगों ने सुना कि वह उन्हें इब्रानी भाषा
में सम्बोधित कर रहे हैं, तो वे और भी चुप हो
गये। पौलुस ने यह कहा, 3"मैं यहूदी हूँ। मेरा
जन्म किलिकिया के तरसुस नगर में हुआ था,
किन्तु मैंने इस नगर में गमालिएल के चरणों में
बैठकर अपनी शिक्षा-दीक्षा पाई।* पूर्वजों की
व्यवस्था का मैंने विधिवत् अध्ययन किया। मैं
परमेश्वर का वैसा ही उत्साही उपासक बना,
जैसे आप आप सब हैं। 4मैंने इस 'मार्ग' को नष्ट
करने के लिए इसके अनुयायियों को बहुत
सताया। मैंने इसके स्त्री-पुरुषों को बाँध-बाँध
कर बन्दीगृह में डाल दिया था। 5प्रधान
महापुरोहित तथा धर्मवृद्धों की समस्त धर्म-
महासभा मेरी इस बात के साक्षी हैं। उन्हीं से
पत्र ले कर मैं दमिश्क के भाइयों के पास जा
रहा था, जिससे वहाँ के लोगों को भी बाँध कर
यरूशलेम ले आऊँ और दण्ड दिलाऊँ।
6"जब मैं यात्रा करते-करते दमिश्क के
पास पहुँचा, तो दोपहर के लगभग एकाएक
आकाश से एक प्रचण्ड ज्योति मेरे चारों ओर
चमक उठी। 7मैं भूमि पर गिर पड़ा और मैंने
एक आवाज सुनी। कोई मुझसे कह रहा था,
'शाऊल! शाऊल! तू मुझे क्यों सता रहा है?'
8मैंने उत्तर दिया 'प्रभु! आप कौन हैं!' उन्होंने
मुझ से कहा, 'मैं येशु नासरी हूँ, जिस को तू
सता रहा है।' 9मेरे साथियों ने ज्योति तो देखी,
किन्तु मुझ से बात करने वाले की आवाज नहीं
सुनी। 10मैंने कहा, 'प्रभु! मुझे क्या करना
चाहिए?' प्रभु ने उत्तर दिया, 'उठ और दमिश्क
जा। जो भी कार्य तेरे करने के लिये निर्धारित
किया गया है, वह सब तुझे वहाँ बताया
जायेगा।' 11जब उस ज्योति के तेज के कारण
मुझे कुछ दिखाई न दिया, तो मैं अपने साथियों
के हाथ पकड़े हुए दमिश्क में आया।
12"वहाँ हनन्याह नामक एक व्यक्ति थे।
वह व्यवस्था पर चलने वाले धर्मनिष्ठ थे और
वहाँ रहने वाले यहूदियों में उनका अच्छा नाम
था। 13 वह मेरे पास आकर खड़े हो गये और
मुझसे बोले, 'भाई शाऊल! दृष्टि प्राप्त
कीजिए।' उसी क्षण मुझे दृष्टि मिल गई और
मैंने उन्हें देखा। 14तब हनन्याह ने कहा, 'हमारे
पूर्वजों के परमेश्वर ने पहले से आप को
इसलिए चुना कि आप उसकी इच्छा को जानें,
धर्मात्मा येशु के दर्शन करें और उनके मुख की

---

* अथवा, "किन्तु इस नगर में मेरा पालन-पोषण हुआ। गमालिएल के चरणों में बैठकर, मैंने..."

21 **36** प्रे 22 : 22; लू 23 : 18 **21 : 38** प्रे 5 : 36-37 **21 : 39** प्रे 9 : 11 **22 : 1** प्रे 7 : 2; 13 : 26 **22 : 2** प्रे 21 : 40 **22 : 3-21** प्रे 9 : 1-29; 26 : 9-20 **22 : 3** प्रे 5 : 34; रोम 10 : 2 **22 : 4** प्रे 8 : 3 **22 : 14** प्रे 3 : 14

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वाणी सुनें; 15क्योंकि आपको परमेश्वर की
ओर से सब मनुष्यों के सामने उन बातों की
साक्षी देनी है, जिन्हें आपने देखा और सुना है।
16अब आप देर क्यों करते हैं? उठिए, बपतिस्मा
ग्रहण कीजिए और येशु का नाम लेकर अपने
पापों को धो डालिए।'

17"जब मैं यरूशलेम लौटा और मन्दिर में
प्रार्थना कर रहा था, तो मैं आत्मा से आविष्ट हो
गया। 18मैंने देखा कि प्रभु येशु मुझ से यह कह
रहे हैं : 'जल्दी कर और यरूशलेम से शीघ्र
चला जा, क्योंकि वे मेरे विषय में तेरी साक्षी
स्वीकार नहीं करेंगे।' 19मैंने कहा, 'प्रभु! वे
जानते हैं कि मैं ही आप में विश्वास करने वालों
को हर सभागृह में गिरफ्तार करता था और उन्हें
कोड़े लगवाता था। 20और जब आपके साक्षी
स्तीफनुस का रक्त बहाया जा रहा था, तो मैं
उसका समर्थन करता हुआ वहाँ खड़ा था। जो
लोग उनका वध कर रहे थे, मैं उनके वस्त्रों की
रखवाली कर रहा था।' 21इस पर प्रभु ने मुझ
से कहा, 'जा, क्योंकि मैं तुझे अन्य-जातियों के
पास दूर-दूर तक भेजूँगा'।"

पौलुस की रोमन नागरिकता

22लोग पौलुस के इस कथन तक सुनते रहे;
किन्तु अब वे चिल्ला उठे, "इस मनुष्य को
पृथ्वी से मिटा दो। यह जीवित रहने योग्य नहीं
है।" 23जब वे चिल्लाने, अपने वस्त्र उछालने
और आकाश में धूल उड़ाने लगे, 24तो सेना-
नायक ने पौलुस को किले में ले जाने और कोड़े
लगाकर उसकी जाँच करने का आदेश दिया,
जिससे यह पता चले कि लोग पौलुस के विरुद्ध
इस प्रकार क्यों चिल्ला रहे हैं।

25जब वे कोड़े लगाने के लिए उन्हें बाँध रहे
थे, तो पौलुस ने पास खड़े शतपति से पूछा,
"क्या आप कानून के अनुसार ऐसे व्यक्ति को
कोड़े लगा सकते हैं, जो रोमन नागरिक है और
दोषी भी प्रमाणित नहीं हुआ है?" 26यह सुनकर
शतपति सेना-नायक को इसकी सूचना देने
गया और बोला, "आप यह क्या करने जा रहे
हैं? यह व्यक्ति रोमन नागरिक है।"

27सेना-नायक ने पौलुस के पास आ कर
पूछा, "मुझे बताओ, क्या तुम रोमन नागरिक
हो?" पौलुस ने कहा, "जी हाँ।" 28इस पर
सेना-नायक ने कहा, "मुझे यह नागरिकता
मोटी रकम देने पर प्राप्त हुई।" पौलुस ने उत्तर
दिया, "मैं तो जन्म से ही रोमन नागरिक
हूँ।" 29तब जो लोग पौलुस की जाँच करने
वाले थे, वे तुरन्त हट गये और सेना-नायक भी
यह जान कर सहम गया कि पौलुस रोमन
नागरिक हैं और उसने पौलुस को बेड़ियों से
बँधवाया है।

धर्म-महासभा के सामने पौलुस

30दूसरे दिन सेना-नायक ने पौलुस के
बन्धन खोल दिये और महापुरोहितों तथा
समस्त धर्म-महासभा को एकत्र हो जाने का
आदेश दिया; क्योंकि वह जानना चाहता था कि
यहूदी पौलुस पर कौन-सा अभियोग लगा रहे
हैं। तब वह पौलुस को नीचे ले गया और धर्म-
महासभा के सामने उनको खड़ा किया।

23 1पौलुसनेधर्म-महासभाकीओर एकटक
दृष्टि से देखा, और कहा, "भाइयो! मैं
इस दिन तक परमेश्वर की दृष्टि में शुद्ध अन्तः
-करण से जीवन व्यतीत करता रहा।" 2इस पर
प्रधान महापुरोहित हनन्याह ने पास खड़े लोगों
को आदेश दिया कि वे पौलुस के मुंह पर थप्पड़
मारें। 3पौलुस ने उससे कहा, "परमेश्वर तुम को
मारेगा! तुम पुती हुई दीवार हो! तुम व्यवस्था
के अनुसार मेरा न्याय करने बैठे हो और तुम
व्यवस्था का उल्लंघन कर मुझे मारने का आदेश
देते हो।" 4पास खड़े लोग पौलुस से बोले,
"तुम परमेश्वर के प्रधान महापुरोहित को
अपशब्द कह रहे हो?" 5पौलुस ने उत्तर दिया,
"भाइयो! मैं नहीं जानता था कि यह प्रधान
महापुरोहित हैं। धर्मग्रंथ में लिखा है: 'अपनी
प्रजा के शासक की निन्दा मत करना'।"

---

22 : 16 2 तिम 2 : 22 **22 : 17** प्रे 9 : 26; 11 : 30; गल 1 : 18 -19 **22 : 19** प्रे 22 : 4 **22 : 20** प्रे 7 : 58; 8 : 1 **22 : 21** प्रे 9 : 15; 13 : 2 **22 : 22** प्रे 21 : 35 **22 : 25** प्रे 16 : 37; 23 : 27 **23 : 1** 22 : 1; 24 : 16 **23 : 2** यो 18 : 22-23 **23 : 3** मत 23 : 27; यहेज 13 : 10-15; लेव 19 : 15 **23 : 5** नि 22 : 28

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

6पौलुस यह जानते थे कि धर्म-महासभा में
दो दल हैं: एक सदूकियों का और दूसरा
फ़रीसियों का। इसलिए उन्होंने पुकार कर
कहा, "भाइयो! मैं हूँ फ़रीसी और फरीसियों
की सन्तान! मृतकों के पुनरुत्थान की आशा के
कारण मुझ पर मुकदमा चल रहा है।" 7उनका
यह कहना था कि फ़रीसियों तथा सदूकियों में
विवाद होने लगा और सभा में फूट पड़ गयी;
8क्योंकि सदूकियों की धारणा है कि न तो
पुनरुत्थान है, न स्वर्गदूत और न आत्मा। परन्तु
फ़रीसी इन सब पर विश्वास करते हैं। 9इस प्रकार
बड़ा कोलाहल मच गया। फ़रीसी दल के कुछ
शास्त्री उठकर झगड़ने और यह कहने लगे,
"हम इस मनुष्य में कोई दोष नहीं पाते। यदि
कोई आत्मा अथवा स्वर्गदूत इससे कुछ बोला
हो, तो....।"

10जब विवाद बहुत बढ़ गया तो सेना-
नायक को भय हुआ कि कहीं वे पौलुस के
टुकड़े-टुकड़े न कर दें; इसलिए उसने सैनिकों
को आदेश दिया कि वे सभा में नीचे जा कर
पौलुस को उनके बीच से निकाल लें और किले
में ले जायें।

11उसी रात प्रभु ने पौलुस के समीप खड़े
होकर कहा, "निर्भय हो! जैसे तूने यरूशलेम
में मेरे विषय में साक्षी दी है, वैसे ही तुझे रोम
में भी साक्षी देनी होगी।"

पौलुस के विरुद्ध षड्यन्त्र

12दिन होने पर कुछ यहूदियों ने मिलकर
षड्यंत्र रचा और उन्होंने यह शपथ ली कि वे
तब तक न तो खायेंगे और न पियेंगे, जब तक
वे पौलुस का वध न कर दें। 13जिन लोगों ने
यह षड्यंत्र रचा था, वे चालीस से अधिक थे।
14वे महापुरोहितों तथा धर्मवृद्धों के पास जा
कर बोले, "हमने घोर शपथ ली है कि हम तब
तक कुछ नहीं खायेंगे, जब तक हम पौलुस का
वध न कर दें। 15इसलिए आप धर्म-महासभा
की सहमति से सेनानायक को सूचित करें कि
वह पौलुस को आप के पास भेज दें मानो आप
और अच्छी तरह उसके मामले की जाँच करना
चाहते हैं। उसके यहाँ पहुँचने से पहले ही हम
उसे मार देने के लिए तैयार हैं।"

16लेकिन पौलुस के भानजे ने इस घात के
विषय में सुना। वह किले में पहुंचा और भीतर
जा कर पौलुस को इसकी सूचना दी। 17पौलुस
ने एक शतपति को बुलाया और उससे कहा,
"इस लड़के को सेना-नायक के पास ले
जाइए, क्योंकि इसको उनसे कुछ कहना है।"
18उसने लड़के को सेना-नायक के पास ले
जाकर कहा, "बन्दी पौलुस ने मुझे बुला कर
निवेदन किया कि मैं इस लड़के को आपके
पास लाऊँ, क्योंकि यह आप से कुछ कहना
चाहता है।" 19सेना-नायक ने उसका हाथ
पकड़ा और उसे एकान्त में ले जा कर पूछा,
"तुम मुझ को कौन-सी बात बतलाना चाहते
हो?" 20उसने कहा, "यहूदी धर्मगुरुओं ने
मंत्रणा की है कि वे आप से यह निवेदन करें
कि आप कल पौलुस को धर्ममहासभा में ले
आयें मानो वे और अच्छी तरह उनके मामले
की जाँच करना चाहते हैं। 21आप उन लोगों की
बात नहीं मानिए क्योंकि उनमें चालीस से
अधिक व्यक्ति पौलुस की घात में बैठे हुए हैं।
उन्होंने शपथ ली है कि वे तब तक न तो खायेंगे
और न पियेंगे, जब तक वे पौलुस का वध न
कर दें। वे अभी तैयार हैं, और आपके निर्णय
की प्रतीक्षा में हैं।" 22सेना-नायक ने पौलुस के
भानजे को आदेश दिया, "किसी को भी यह
नहीं बताना कि तुमने मुझे यह सूचना दी है।"
और उसने लड़के को जाने दिया।

पौलुस को कैसरिया भेजना

23तब सेना-नायक ने दो शतपतियों को
बुलाया और उनसे कहा, "आज रात नौ बजे
तक कैसरिया जाने के लिए दो सौ सैनिक, सत्तर
घुड़सवार और दो सौ भाला-बरदार तैयार
रखो। 24पौलुस के लिए भी घोड़ों का प्रबन्ध
करो, जिससे वे उसे सकुशल राज्यपाल फेलिक्स
के पास पहुँचा सकें।"

---

23 : 6 प्रे 4 : 2; 22 : 3; 26 : 5 **23 : 8** मत 22 : 23 **23 : 9** प्रे 25 : 25; 5 : 39 **23 : 11** प्रे 18 : 9; 19 : 21; 28 : 16, 23 **23 : 14** यो 16 : 2-3

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

25उसने इस आशय का एक पत्र भी लिखा:
26"महामहिम राज्यपाल फ़ेलिक्स को
क्लौदियुस लुसियस का अभिवादन। 27यहूदियों
ने इस व्यक्ति को पकड़ लिया था और वे इसे
मार डालना चाहते थे; परन्तु मैंने अपने सैनिकों
के साथ वहाँ पहुँच कर इसे छुड़ा लिया, क्योंकि
मुझे पता चला कि यह रोमन नागरिक है। 28मैं
यह जानना चाहता था कि वे इस पर कौन-सा
अभियोग लगाते हैं; इसलिए मैं इसे उनकी
धर्म-महासभा में ले गया। 29वहां मुझे पता चला
कि वे अपनी व्यवस्था के कतिपय प्रश्नों के
विषय में इस पर अभियोग लगा रहे हैं। पर यह
कोई ऐसा आरोप नहीं है, जो मृत्यु या कैद के
योग्य हो। 30जब मुझे यह सूचना मिली कि इस
मनुष्य के विरुद्ध षड्यन्त्र रचा जा रहा है, तो
मैंने इसे तुरन्त आपके पास भेज दिया। मैंने
इसके अभियोगियों को भी अनुदेश दिया है कि
वे आपके सामने इसके विरुद्ध अपना प्रतिवेदन
प्रस्तुत करें।"*

31आदेश के अनुसार सैनिक पौलुस को ले
गये और उन को उसी रात अन्तिपत्रिस पहुँचा
दिया। 32दूसरे दिन उन्होंने घुड़सवारों को
पौलुस के साथ जाने दिया और वे स्वयं किले
को लौट आये। 33घुड़सवारों ने कैसरिया पहुँच
पर राज्यपाल को वह पत्र दिया और पौलुस को
उसके सम्मुख प्रस्तुत किया। 34राज्यपाल ने पत्र
पढ़ कर पौलुस से पूछा कि वह किस प्रदेश के
हैं। यह जान कर कि वह किलिकिया के हैं,
35उसने कहा, "जब तुम्हारे अभियोगी आ
जाएंगे, तब तुम्हारी सुनवाई होगी।" और उसने
आदेश दिया कि पौलुस को हेरोदेस के
राजभवन में पहरे में रखा जाये।

रोमन राज्यपाल फेलिक्स के सामने सुनवाई

24 पांच दिन के पश्चात् प्रधान महापुरोहित
हनन्याह कुछ धर्मवृद्धों और तेरतुल्लुस
नामक वकील के साथ कैसरिया पहुँचा।
उन्होंने राज्यपाल के सामने पौलुस के विरुद्ध
निवेदन-पत्र प्रस्तुत किया। 2तब पौलुस को
बुलाया गया और तेरतुल्लुस ने यह कहते हुए
उन पर अभियोग लगाया, "महामहिम फ़ेलिक्स
महोदय! हम आप के कारण अपार शान्ति में
जीवन बिताते हैं और आपकी दूरदर्शिता से
हमारी जाति की भलाई के लिए अनेक सुधार
सम्पन्न हुए हैं। 3यह बात हम लोग सब प्रकार
से सब स्थानों में हार्दिक कृतज्ञता के साथ
स्वीकार करते हैं। 4मैं आपका अधिक समय
नहीं लेना चाहता। मेरा नम्र निवेदन है कि आप
हमारे दो शब्द सुनने की कृपा करें। 5हमारा
अनुभव है कि यह मनुष्य संक्रामक रोग के
सदृश है। यह दुनिया भर के सब यहूदियों में
आंदोलन करता-फिरता है और नासरी कुपंथ
का मुखिया है। 6यह मन्दिर को अपवित्र करने
की चेष्टा कर ही रहा था कि हमने इसे पकड़
लिया। [इसे हमने अपनी व्यवस्था के अनुसार
दंड दिया होता 7किन्तु सेना-नायक लुसियस
ने आकर इसे बड़ी कठिनाई से हमारे हाथ से
छीन लिया8 और इस पर अभियोग लगाने वालों
को आदेश दिया कि वे आपके सम्मुख
उपस्थित हों।**] 8आप स्वयं इस से पूछताछ
कर उन सब बातों की सच्चाई का पता लगा
सकते हैं, जिनके विषय में हम इस पर
अभियोग लगाते हैं।" 9यहूदी धर्मगुरुओं ने यह
कहते हुए तेरतुल्लुस के अभियोग का समर्थन
किया कि ये बातें सही हैं।

10राज्यपाल ने पौलुस को बोलने का संकेत
किया, तो उन्होंने यह उत्तर दिया :

"मैं यह जान कर प्रसन्नता के साथ अपनी
सफाई दे रहा हूँ कि आप बहुत वर्षों से इस जाति
के न्यायाधीश हैं। 11आप पता लगा सकते हैं कि
मुझे उपासना के लिए यरूशलेम में आये अभी
बारह दिन से अधिक नहीं हुए हैं। 12किसी ने
न तो मन्दिर में, न सभागृह में और न कहीं शहर

---

* कुछ प्राचीन प्रतियों के अनुसार पत्र का अन्त है : "शेष शुभ!" ** कुछ प्राचीन प्रतियों में ये शब्द नहीं पाए जाते।

23 : 26 लू 1 : 3 **23 : 27** प्रे 21 : 23; 22 : 25 **23 : 28** प्रे 22 : 30 **23 : 29** प्रे 18 : 14-15 **23 : 30** प्रे 24 : 8 **23 : 34** प्रे 22 : 3 **24 : 3** प्रे 23 : 26; 26 : 25 **24 : 5** प्रे 17 : 6 **24 : 6** प्रे 21 : 28 **24 : 8** प्रे 23 : 30 **24 : 11** प्रे 21 : 17

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

में मुझे किसी से विवाद करते या लोगों को
भड़काते देखा है। 13जिन बातों के विषय में ये
अब मुझ पर अभियोग लगा रहे हैं, ये आप को
उनका कोई प्रमाण नहीं दे सकते।

14"मैं आपके सामने इतना अवश्य स्वीकार
करूँगा कि ये जिसे कुपंथ कहते हैं, मैं उसी मार्ग
के अनुसार अपने पूर्वजों के परमेश्वर की
उपासना करता हूँ; क्योंकि जो कुछ व्यवस्था
तथा नबी-ग्रंथों में लिखा है, मैं उस सब पर
विश्वास करता हूँ।15मुझे परमेश्वर से आशा है,
जैसे इनको भी है कि धर्मियों तथा अधर्मियों
दोनों का पुनरुत्थान होगा। 16इसलिए मैं परमेश्वर
तथा मनुष्यों की दृष्टि में अपना अन्तःकरण
निर्दोष बनाये रखने का निरन्तर प्रयत्न करता
रहता हूँ।

17"कई वर्षों तक विदेश में रहने के बाद
मैं अपने लोगों को दान पहुँचाने और मन्दिर में
भेंट चढ़ाने आया था। 18आसिया के कुछ यहूदियों
ने मुझे शुद्ध दशा में मन्दिर के भीतर यह सब
करते पाया। मेरे साथ न तो कोई भीड़ थी और
न वहाँ कोई उपद्रव हुआ। 19यदि उन्हें मेरे विरुद्ध
कुछ कहना था, तो उन को यहाँ आपके सम्मुख
उपस्थित हो कर मुझ पर अभियोग लगाना
चाहिए था। 20नहीं तो ये ही बतायें कि जब मैं
धर्म-महासभा के सामने खड़ा था, तो इन्होंने
मुझ में कौन-सा दोष पाया था। 21हाँ, एक बात
अवश्य हुई कि मैंने उनके बीच खड़ा हो कर
ऊँचे स्वर से यह कहा था, 'मृतकों के
पुनरुत्थान के विषय में आज आप लोगों के
सामने मुझ पर मुक़दमा चल रहा है'।"

कैसरिया में पौलुस का कारावास

22फ़ेलिक्स को इस "मार्ग" के विषय में
अच्छी जानकारी थी। उसने सुनवाई स्थगित
कर दी और यहूदी धर्मगुरुओं से कहा, "सेना-
नायक लुसियस के आने पर मैं आप लोगों के
मुकदमे का फ़ैसला करूँगा।" 23उसने शतपति
को आदेश दिया कि पौलुस को पहरे में रखा
जाये, किन्तु उन्हें कुछ स्वतन्त्रता रहे और उनके
मित्रों में किसी को भी उनकी सेवा-परिचर्या
करने से नहीं रोका जाये।

24कुछ दिनों के बाद फ़ेलिक्स अपनी यहूदी
पत्नी द्रुसिल्ला के साथ आया। उसने पौलुस को
बुला भेजा और उनसे येशु मसीह में विश्वास
के संबंध में वार्ता सुनी। 25जब पौलुस धार्मिकता,
आत्मसंयम और अंतिम न्याय के विषय में
बोलने लगे, तो फ़ेलिक्स पर भय छा गया और
उसने कहा, "तुम इस समय जा सकते हो।
अवसर मिलने पर मैं तुमको फिर बुलाऊँगा।"
26उसे पौलुस से घूस में कुछ धन मिलने की
आशा थी; इसलिए भी वह उन्हें बार-बार
बुलाता और उनके साथ बातचीत करता था।

27किन्तु जब दो वर्षों के बाद राज्यपाल
फ़ेलिक्स के स्थान पर पोर्कियुस फ़ेस्तुस
नियुक्त हुआ, तब फ़ेलिक्स यहूदी धर्मगुरुओं
को प्रसन्न करने के उद्देश्य से पौलुस को
बन्दीगृह में ही छोड़ गया।

रोमन सम्राट से पौलुस की अपील

25 अपने प्रदेश में पहुँचने के तीन दिन बाद
फ़ेस्तुस कैसरिया से यरूशलेम गया।
2वहां यहूदियों के महापुरोहित तथा प्रमुख नेता
पौलुस पर अभियोग लगाने उसके पास आये।
3उन्होंने फ़ेस्तुस से यह अनुरोध किया कि वह
पौलुस को यरूशलेम बुलाने की कृपा करे,
क्योंकि वे मार्ग में ही पौलुस को मार डालने का
षड्यन्त्र रच रहे थे। 4किन्तु फेस्तुस ने यह उत्तर
दिया, "पौलुस कैसरिया में बन्दी है। मैं स्वयं
शीघ्र ही वहां जाने वाला हूँ, 5इसलिए आप लोगों
के मुख्य अधिकारी मेरे साथ चलें। यदि उस
व्यक्ति ने कुछ अनुचित कार्य किया है, तो वे
उस पर अभियोग लगायें।"

6फ़ेस्तुस कोई आठ-दस दिन उनके बीच
रह कर कैसरिया लौटा। दूसरे दिन न्यायासन पर
बैठ कर उसने आदेश दिया कि पौलुस को
लाया जाए। 7जब पौलुस आये, तो यरूशलेम

---

24 : 14 प्रे 24 : 5 **24 : 15** दान 12 : 2; यो 5 : 28–29 **24 : 16** प्रे 23 : 1 **24 : 17** रोम 15 : 25–26; गल 2 : 10 **24 : 18** प्रे 21 : 27 **24 : 21** प्रे 23 : 6 **24 : 22** प्रे 23 : 26 **24 : 23** प्रे 27 : 3 **24 : 27** प्रे 25 : 9 **25 : 2** प्रे 24 : 1 **25 : 3** प्रे 23 : 15

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
से आये हुए यहूदी अधिकारियों ने उन्हें घेर
लिया और उन पर अनेक गम्भीर अभियोग
लगाने लगे, जिन्हें वे प्रमाणित नहीं कर सके।
8पौलुस ने अपने पक्ष के समर्थन में उत्तर दिया,
"मैंने न तो यहूदियों की व्यवस्था के विरुद्ध
कोई अपराध किया है, न मन्दिर के विरुद्ध,
और न रोमन सम्राट के विरुद्ध।" 9किन्तु फ़ेस्तुस
ने यहूदी अधिकारियों को प्रसन्न करने के लिए
पौलुस से पूछा, "क्या तुम यरूशलेम जाना
चाहते हो, जिससे वहाँ मेरे सामने इन बातों के
विषय में तुम्हारा न्याय किया जाये?" 10पौलुस
ने उत्तर दिया, "मैं सम्राट के न्यायासन के
सम्मुख खड़ा हूं। मेरा न्याय यहीं होना चाहिए।
आप अच्छी तरह जानते हैं कि मैंने यहूदियों के
विरुद्ध कोई अपराध नहीं किया है। 11यदि मैंने
प्राणदण्ड के योग्य कोई अपराध किया, तो मैं
मरने से मुंह नहीं मोड़ता। किन्तु यदि इनके द्वारा
मुझ पर लगाये गये अभियोगों में कोई सच्चाई
नहीं है, तो कोई मुझे इनके हवाले नहीं कर
सकता। मैं सम्राट की दुहाई देता हूँ!" 12फ़ेस्तुस
ने परिषद् से परामर्श करने के बाद यह उत्तर
दिया, "तुमने सम्राट की दुहाई दी है, तुम सम्राट
के पास ही जाओगे।"

राजा अग्रिप्पा-द्वितीय के सामने पौलुस की पेशी

13कुछ दिन बीतने के पश्चात् राजा अग्रिप्पा
और उसकी बहिन बिरनीके राज्यपाल फेस्तुस
का अभिवादन करने कैसरिया में आये। 14वे वहाँ
कई दिन ठहरे। फेस्तुस ने पौलुस का मामला
राजा के सामने प्रस्तुत करते हुए कहा, "फ़ेलिक्स
यहाँ एक व्यक्ति को बन्दीगृह में छोड़ गया है।
15जब मैं यरूशलेम में था, तो यहूदियों के
महापुरोहितों तथा धर्मवृद्धों ने उसके विरुद्ध
मुझे सूचना दी और अनुरोध किया कि उसे
दण्डाज्ञा दी जाये। 16मैंने उत्तर दिया, 'जब तक
अभियुक्त को अभियोगियों के आमने-सामने
न खड़ा किया जाये और उसे अभियोग के
विषय में सफ़ाई देने का अवसर न मिले, तब
तक अभियुक्त को अभियोगियों के हवाले
करना रोमियों की प्रथा नहीं है।' 17इसलिए वे
यहाँ आये और मैंने अविलम्ब दूसरे ही दिन
न्यायासन पर बैठ कर उस व्यक्ति को लाने का
आदेश दिया। 18अभियोगियों ने उसे घेर लिया,
किन्तु जिन अपराधों का मुझे अनुमान था,
उनके विषय में उन्होंने उस पर कोई अभियोग
नहीं लगाया। 19उन्हें केवल अपने धर्म से
सम्बन्धित कुछ बातों में उससे मतभेद था और
येशु नामक व्यक्ति के विषय में भी जो मर चुका
है, किन्तु पौलुस जिसके जीवित होने का दावा
करता है। 20मेरी समझ में नहीं आया कि इन
बातों की छानबीन कैसे की जाये। इसलिए मैंने
पौलुस से पूछा कि क्या तुम यरूशलेम जाना
चाहोगे, जिससे वहाँ इन बातों के विषय में
तुम्हारा न्याय किया जाये। 21किन्तु पौलुस ने
दुहाई दी कि महाराजाधिरात का फ़ैसला हो
जाने तक उसे संरक्षण में रखा जाये। इसलिए
मैंने आदेश दिया कि जब तक मैं उसे सम्राट के
पास न भेजूँ, तब तक वह पहरे में रहे।"
22अग्रिप्पा ने फ़ेस्तुस से कहा, "मैं भी उस
व्यक्ति की बातें सुनना चाहता हूँ।" फ़ेस्तुस ने
कहा, "आप कल सुन लीजिए।"
23दूसरे दिन अग्रिप्पा और बिरनीके बड़ी
धूमधाम के साथ आये। उन्होंने सेना-नायकों
तथा प्रतिष्ठित नागरिकों के साथ सभाभवन में
प्रवेश किया। फ़ेस्तुस के आदेशानुसार पौलुस
को प्रस्तुत किया गया। 24फ़ेस्तुस ने कहा,
"महाराज अग्रिप्पा और यहाँ उपस्थित सब
सज्जनो! आप लोग इस व्यक्ति को देखिए,
जिसके सम्बन्ध में यरूशलेम में और यहाँ भी
समस्त यहूदी समुदाय ने मुझ से चिल्ला-
चिल्लाकर मांग की कि यह व्यक्ति जीवित
रहने योग्य नहीं है। 25किन्तु मैंने इस में प्राणदण्ड
के योग्य कोई अपराध नहीं पाया और जब इसने
महाराजाधिराज की दुहाई दी, तो मैंने इसे भेजने
का निश्चय किया। 26हमारे प्रभु सम्राट को
इसके विषय में लिखने की कोई निश्चित

---

25 : 9 प्रे 24 : 27 **25 : 14** प्रे 24 : 27 **25 : 19** प्रे 18 : 15 **25 : 22** लू 23 : 8 **25 : 23** मत 10 : 18 **25 : 24** प्रे 22 : 22; 2 : 7

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सामग्री मेरे पास नहीं है; इसलिए मैंने इस आशा
से आप लोगों के सामने और विशेष रूप से
आप ही के सामने, हे महाराज अग्रिप्पा! इस
व्यक्ति को उपस्थित किया है, कि इसकी जाँच
के बाद मुझे कुछ लिखने का आधार मिल
जाये। 27किसी बन्दी को भेजना और उस पर
लगाये अभियोगों का उल्लेख नहीं करना, यह
मुझे असंगत लगता है।''

अग्रिप्पा के सामने पौलुस का स्पष्टीकरण

26 राजा अग्रिप्पा ने पौलुस से कहा, ''तुन्हें
अपने सम्बन्ध में बोलने की अनुमति
है।'' इस पर पौलुस ने अपना हाथ उठाया और
अपने पक्ष का समर्थन करते हुए कहा :
2'' महाराज अग्रिप्पा! यहूदियों ने मुझ पर
बहुत-से अभियोग लगाये हैं। इस सम्बन्ध में
मैं आज आपके सामने अपनी सफ़ाई दे रहा हूँ;
यह मैं अपना सौभाग्य मानता हूँ, 3क्योंकि आप
यहूदियों की सब प्रथाओं तथा विवादों से
विशेष रूप से परिचित हैं। मेरी प्रार्थना है कि
आप धैर्यपूर्वक मेरी बात सुनें।
4''मेरा जीवन बचपन से अपनी जाति के
लोगों के बीच, और यरूशलेम में ही बीता है।
इसलिए सब यहूदी जानते हैं कि आरम्भ से ही
मेरा आचरण कैसा था। 5वे मुझे बहुत समय से
जानते हैं और यदि चाहें, तो साक्षी दे सकते हैं
कि मैंने फ़रीसी के रूप में अपने धर्म के सब
से कट्टर सम्प्रदाय के अनुरूप जीवन बिताया
है। 6परन्तु अब मुझ पर मुकदमा चल रहा है,
क्योंकि मुझे उस प्रतिज्ञा की आशा है, जो
परमेश्वर ने हमारे पूर्वजों से की थी। 7इसी प्रतिज्ञा
की पूर्ति के लिए हमारे बारह कुल उत्साह से
दिन-रात परमेश्वर की उपासना करते हैं।
महाराज! इसी आशा के सम्बन्ध में यहूदी
अधिकारी मुझ पर अभियोग लगाते हैं। 8आप
लोगों को यह बात क्यों अविश्वसनीय लगती
है कि परमेश्वर मृतकों को पुनर्जीवित करता
है?
9''मैं स्वयं इस बात से कायल हो चुका था
कि मुझे हर तरह से येशु नासरी के नाम का
विरोध करना चाहिये। 10मैंने यरूशलेम में ऐसा
किया भी। मैंने महापुरोहितों से अधिकार प्राप्त
कर अनेक सन्तों को बन्दीगृह में डाल दिया
और जब उन्हें प्राणदण्ड दिया गया, तो मैंने
इसके लिए अपनी सहमति दी थी। 11मैं उन्हें
प्रत्येक सभागृह में बार-बार दण्ड दिला कर
येशु की निन्दा के लिए बाध्य करने का प्रयत्न
करता था। मैं उनके प्रति क्रोध में इतना पागल
हो गया था कि मैं विदेशी नगरों में भी जा कर
उन को सताता था।
12''इस अभिप्राय से मैं एक दिन महापुरोहितों
से अधिकार और अनुमति प्राप्त कर दमिश्क
नगर को जा रहा था। 13तब, महाराज! दोपहर
के समय मैंने मार्ग में स्वर्ग की ज्योति देखी, जो
सूर्य से भी अधिक देदीप्यमान थी और जो मेरे
और मेरे साथियों के चारों ओर चमक रही थी।
14हम सब भूमि पर गिर पड़े और मुझे इब्रानी
भाषा में एक आवाज सुनाई दी। कोई मुझ से
कह रहा था, 'शाऊल! शाऊल! तू मुझे क्यों
सता रहा है? अंकुश पर लात मारना तेरे लिए
कठिन है।' 15मैंने कहा, 'प्रभु! आप कौन हैं?'
प्रभु ने उत्तर दिया, 'मैं येशु हूँ जिसको तू सता
रहा है। 16उठ और अपने पैरों पर खड़ा हो। मैंने
तुझे इसलिए दर्शन दिया है कि तुझे अपना
सेवक और साक्षी नियुक्त करूँ। तू मेरे विषय
में जो देख चुका है और बाद में जो देखेगा,
उसके सम्बन्ध में साक्षी देगा। 17मैं निज लोगों
से तथा अन्यजातियों से भी तेरी रक्षा करूंगा,
जिनके पास मैं तुझे भेज रहा हूं। 18मैं उनकी
आँखें खोलने के लिए, उन्हें अन्धकार से ज्योति
की ओर उन्मुख करने के लिए, अर्थात् शैतान
की शक्ति से विमुख हो परमेश्वर की ओर
अभिमुख करने के लिए, तुझे उनके पास भेज
रहा हूं, जिससे वे मुझ में विश्वास करने के
कारण अपने पापों की क्षमा पाएं और पवित्र

---

26 : 5 प्रे 23 : 6; फिल 3 : 5 **26 : 6** प्रे 28 : 20 **26 : 7** प्रे 24 : 15 **26 : 8** 2 मक 7 : 9 **26 : 9-20** प्रे 9 : 29; 22 : 3-21 **26 : 16** यहेज 2 : 1, 3 **26 : 17** यिर 1 : 7; 1 इति 16 : 35 **26 : 18** व्य 33 : 3; यश 35 : 5; 42 : 7, 16; प्रे 20 : 32; इफ 2 : 2; कुल 1 : 13 **26 : 19** गल 1 : 16

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

किए हुए भक्तों के बीच स्थान प्राप्त कर
सकें।'
19 "इस कारण, हे महाराज अग्रिप्पा! मैंने
उस स्वर्गिक दर्शन की आज्ञा का उल्लंघन नहीं
किया। 20मैंने पहले दमिश्क तथा यरूशलेम के
लोगों में, और उसके बाद समस्त यहूदा प्रदेश
तथा ग़ैर-यहूदियों में भी यह प्रचार किया कि
वे पश्चात्ताप करें, परमेश्वर की ओर अभिमुख
हो जायें और पश्चात्ताप के अनुरूप आचरण
करें। 21यही कारण है कि जब मैं मन्दिर में था,
तब यहूदियों ने मुझे पकड़ा और मार डालने की
चेष्टा की। 22किन्तु मैं परमेश्वर की सहायता से
आज तक दृढ़ रहा और छोटे-बड़े, सब के
सामने साक्षी देता रहा। जिन बातों के विषय में
नबियों ने और मूसा ने भविष्यवाणी की है, उन
से अधिक मैं कुछ नहीं कहता। 23अर्थात्, यह
कि मसीह दुःख भोगेंगे और मृतकों में सब से
पहले पुनर्जीवित हो कर निज लोगों को तथा
अन्य जातियों को भी ज्योति का सन्देश
देंगे।"

श्रोताओं की प्रतिक्रिया

24पौलुस इस प्रकार अपनी सफ़ाई दे ही रहे
थे कि फ़ेस्तुस ऊँचे स्वर से बोल उठा,
"पौलुस! तुम पागल हो। तुम्हारा प्रकाण्ड
पाण्डित्य तुम को पागल बना रहा है।"
25पौलुस ने उत्तर दिया, "माननीय फ़ेस्तुस! मैं
पागल नहीं हूं, बल्कि मैं सच्ची तथा विवेकपूर्ण
बातें कर रहा हूँ। 26महाराज को इन बातों की
जानकारी है, इसलिए मैं उनके सामने निस्संकोच
बोल रहा हूं। मुझे निश्चय है कि इन बातों में
एक भी इन से छिपी हुई नहीं है; क्योंकि यह
घटना किसी अँधेरी कोठरी में नहीं घटी है।
27महाराज अग्रिप्पा! क्या आप नबियों पर
विश्वास करते हैं? मैं जानता हूँ कि आप
विश्वास करते हैं।" 28अग्रिप्पा ने पौलुस से
कहा, "थोड़े में ही* तुम मुझसे स्वीकार कराओगे
कि तुमने मुझे मसीही बना लिया है!" 29पौलुस
ने उत्तर दिया, "थोड़े में हो या बहुत में,
परमेश्वर से मेरी यह प्रार्थना है कि न केवल
आप, बल्कि जो लोग आज मेरी बातें सुन रहे
हैं, वे सब-के-सब इन बेड़ियों को छोड़ कर
मेरे सदृश बन जायें।"
30तब राजा अग्रिप्पा, राज्यपाल फ़ेस्तुस और
बिरनीके तथा उनके साथ बैठे हुए लोग उठ
गये। 31जाते समय उन्होंने आपस में कहा,
"यह व्यक्ति प्राणदण्ड या क़ैद के योग्य कोई
अपराध नहीं कर रहा है।" 32 अग्रिप्पा ने फ़ेस्तुस
से कहा, "यदि इस व्यक्ति ने सम्राट की दुहाई
न दी होती, तो यह मुक्त किया जा सकता
था।"

रोम के लिए प्रस्थान

27 जब यह निश्चित हो गया कि हम
जलमार्ग से इटली जायेंगे, तो पौलुस
और कुछ अन्य बन्दियों को यूलियुस नामक
शतपति के हाथ सौंप दिया गया। यूलियुस
सम्राट औगुस्तुस के सैन्यदल का था। 2 हम
आसिया प्रदेश के बन्दरगाहों को जाने वाले
अद्रमुत्तियुम नगर के एक जहाज पर सवार हो
कर रवाना हो गये। मकिदुनिया देश के
थिस्सलुनीके नगर का रहने वाला अरिस्तर्खुस
नामक एक विश्वासी भी हमारे साथ था। 3दूसरे
दिन हमने सीदोन में लंगर डाला। यहां यूलियुस
ने पौलुस के प्रति उदारता दिखाई और उसने
पौलुस को मित्रों के यहां जाने तथा उनकी
सहायता स्वीकार करने की अनुमति दे दी।
4वहां से लंगर उठाकर हम कुप्रुस द्वीप के
किनारे-किनारे हो कर चले, क्योंकि हवा
प्रतिकूल थी। 5इसके बाद हम किलिकिया तथा
पंफुलिया के तटवर्ती सागर को पार कर
लुकिया के मुरा नामक बन्दरगाह पर पहुंचे।
6वहाँ शतपति को सिकन्दरिया का एक जलयान
मिला, जो इटली जाने वाला था और उसने हम

* अथवा, "अनायास" या "अल्प समय में ही।" अथवा 'तुम इतनी जल्दी मुझे कायल कर मसीही बनाना चाहते हो?'
26 : 20 मत 3 : 8 **26 : 21** प्रे 21 : 30-31 **26 : 22** लू 24 : 44-47 **26 : 23** 1 कुर 15 : 20 **26 : 26** यो 18 : 20 **26 : 28** प्रे 11 : 26; 1 पत 4 : 16 **26 : 32** प्रे 25 : 11 **27 : 1** 25 : 12 **27 : 2** 19 : 29; 20 : 4 **27 : 3** प्रे 24 : 23; 28 : 2, 16

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

को उस पर चढ़ा दिया।
[7]हम कई दिनों तक धीरे-धीरे आगे बढ़ते
हुए कठिनाई से क्नीदुस पहुँचे। अब हवा हमें
आगे बढ़ने से रोक रही थी; इसलिए हम
सलमोने अन्तरीप के सामने से गुज़र कर क्रेते
द्वीप के किनारे-किनारे चलते हुए, [8]कठिनाई से
'सुन्दर बन्दरगाह' नामक स्थान पर पहुँचे, जो
लसैया नगर के निकट था।

भूमध्य सागर में तूफ़ान

[9]बहुत समय बीत चुका था और समुद्री यात्रा
अब ख़तरनाक हो गयी थी। शरतकालीन
उपवास का दिन* भी बीत चुका था, इसलिए
पौलुस ने लोगों को यह सलाह दी, [10]"सज्जनो!
मुझे लग रहा है कि यह यात्रा संकटमय होगी।
हमें न केवल माल और जलयान की हानि
उठानी पड़गी, बल्कि अपने प्राणों की भी।"
[11]किन्तु शतपति ने पौलुस की बातों की अपेक्षा
कप्तान और जलयान के मालिक की बात पर
अधिक ध्यान दिया। [12]वह बन्दरगाह शीत-
ऋतु बिताने के लिए उपयुक्त नहीं था, इसलिए
अधिकांश लोग वहाँ से चल देने के पक्ष में थे।
उन्हें किसी-न-किसी तरह फीनिक्स तक
पहुँचने और वहाँ शीत-ऋतु बिताने की आशा
थी। फीनिक्स क्रेते द्वीप का बन्दरगाह है, जो
दक्षिण-पश्चिम और उत्तर-पश्चिम की ओर
खुला हुआ है।
[13]जब दक्षिणी हवा मन्द-मन्द बहने लगी,
तो वे समझे कि हमारा काम बन गया है। उन्होंने
लंगर उठाया और क्रेते के समीप से गुजरने का
प्रयत्न किया। [14]परन्तु शीघ्र ही स्थल की ओर
से 'उत्तरपूर्वी' नामक तूफ़ानी हवा बहने लगी।
[15]जलयान तूफ़ान की चपेट में आ कर हवा का
सामना करने में असमर्थ हो गया, इसलिए हम
विवश हो कर बहते चले जा रहे थे। [16]कौदा
नामक छोटे टापू की आड़ में पहुँच कर हम
किसी तरह जलयान की डोंगी पर नियन्त्रण कर
पाये। [17]उन्होंने उसे ऊपर खींचा और जलयान
को नीचे से ले कर ऊपर तक रस्सों से कस कर
बाँध दिया। सूरतिस के उथले जल में फँस जाने
के भय से उन्होंने पाल उतार कर जलयान को
धारा के साथ बहने दिया। [18]दूसरे दिन तूफ़ान
हमें ज़ोरों से झकझोरता रहा, इसलिए वे
जलयान का माल समुद्र में फेंकने लगे। [19]तीसरे
दिन उन्होंने अपने हाथों से जलयान का साज-
सामान भी फेंक दिया। [20]जब कई दिन तक न
तो सूरज दिखाई पड़ा और न तारे ही, और
तूफ़ानी हवा वेग से बहती रही, तो हमारे बच
जाने की आशा भी समाप्त हो गयी।
[21]वे बहुत समय से कुछ भी नहीं खा रहे थे,
इसलिए पौलुस ने उनके बीच खड़ा हो कर
कहा, "सज्जनो! उचित तो यह था कि आप
लोग मेरी बात पर ध्यान देते और क्रेते से प्रस्थान
नहीं करते। तब आप को न तो यह संकट सहना
पड़ता और न यह हानि उठानी पड़ती। [22]फिर
भी मैं आप लोगों से अनुरोध करता हूँ कि आप
धैर्य रखें। आप में से किसी का जीवन नहीं,
केवल जलयान नष्ट होगा; [23]क्योंकि मैं जिस
परमेश्वर का सेवक तथा उपासक हूँ, उसके दूत
ने आज रात मेरे समीप खड़े होकर [24]मुझ से
कहा, 'पौलुस, डरिए नहीं। आप को रोमन
सम्राट के सामने उपस्थित होना ही है। और
देखिए, परमेश्वर ने आपके सब सहयात्री
आपको दे दिये हैं।' [25]इसलिए सज्जनो! धैर्य
रखिए। मुझे परमेश्वर पर विश्वास है कि जैसा
मुझ से कहा गया है, वैसा ही होगा: [26]हम अवश्य
किसी द्वीप से जा लगेंगे।"

नौका-डूबी

[27]तूफ़ान की चौदहवीं रात आयी और हम
अब तक भूमध्य सागर** पर इधर-उधर बह
रहे थे। लगभग आधी रात को नाविकों ने
अनुभव किया कि हम स्थल के निकट पहुँच
रहे हैं। [28]उन्होंने थाह ली, तो सैंतीस मीटर जल
पाया और थोड़ा आगे बढ़ने पर फिर थाह ली,
तो छब्बीस मीटर पाया। [29]उन्हें भय था कि

---

* अथवा, "प्रायश्चित दिवस"। ** अथवा, "आद्रिया समुद्र"।

27 : 9 2 कुर 13 : 25-26; लेव 16 : 29 **27 : 14** योना 1 : 4-16; मत 8 : 23-27 **27 : 24** प्रे 23 : 11 **27 : 26** प्रे 28 : 1

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कहीं हम चट्टानों से न टकरा जायें; इसलिए
उन्होंने जलयान के पिछले भाग+ से चार लंगर
डाले और वे उत्सुकता से प्रातःकाल होने की
प्रतीक्षा करने लगे। 30किन्तु नाविक जलयान
से भागना चाह रहे थे, इसलिए उन्होंने जलयान
के अगले भाग* से लंगर डालने के बहाने डोंगी
पानी में उतार दी। 31इस पर पौलुस ने शतपति
और सैनिकों से कहा, "यदि ये जलयान पर
नहीं रहेंगे, तो आप लोग बच नहीं सकते।"
32इस पर सैनिकों ने डोंगी के रस्से काट कर
उसे समुद्र में छोड़ दिया।

33जब पौ फटने लगी, तो पौलुस ने सब को
अपने साथ भोजन करने के लिए उत्साहित
किया। पौलुस ने कहा, "आप लोगों को
चिन्ता करते-करते और निराहार रहते चौदह
दिन हो गये हैं। आप लोगों ने कुछ भी नहीं
खाया। 34इसलिए मैं आप लोगों से भोजन
करने का अनुरोध करता हूँ। इसी में आपका
कल्याण है। आप लोगों में किसी का बाल भी
बाँका नहीं होगा।" 35पौलुस ने यह कह कर
रोटी ली, सब के सामने परमेश्वर को धन्यवाद
दिया और वह उसे तोड़ कर खाने लगे। 36इससे
सबको प्रोत्साहन मिला और उन्होंने भी भोजन
किया। 37जलयान में हम कुल मिला कर दो
सौ छिहत्तर प्राणी थे। 38जब सब खा कर तृप्त
हो गये, तो उन्होंने गेंहू को समुद्र में फेंक कर
जलयान को हलका किया।

39जब दिन निकला, तो वे उस देश को नहीं
पहचान सके, किन्तु उनकी दृष्टि एक खाड़ी पर
पड़ी जिसका तट रेतीला था। उन्होंने विचार
किया कि यदि हो सके, तो जलयान को उसी
तट पर लगा दिया जाये। 40उन्होंने लंगर खोल
कर समुद्र में छोड़ दिये, साथ ही पतवारों के
बंधन ढीले कर दिए और अगला पाल हवा में
तान कर तट की ओर चले। 41परन्तु जलयान
जलमग्न बालू में धंस गया। अतः उन्होंने
जलयान को वैसे ही रहने दिया। उसका अगला
भाग गड़कर अचल हो गया और पिछला भाग
लहरों के थपेड़ों से टूटने लगा।

42 कहीं ऐसा न हो कि बन्दी तैर कर भाग
जायें, इसलिए सैनिक उन्हें मार डालना चाहते
थे; 43किन्तु शतपति ने पौलुस को बचाने के
विचार से उनकी योजना रोक दी। उसने आदेश
दिया कि जो तैर सकते हैं, वे पहले समुद्र में कूद
कर तट पर निकल जाएं 44और शेष लोग तख्तों
या जलयान की दूसरी चीज़ों के सहारे पीछे आ
जायें। इस प्रकार सब-के-सब तट पर सकुशल
पहुँच गये।

माल्टा द्वीप में पौलुस का स्वागत

28 बच जाने के बाद हमें पता चला कि द्वीप
का नाम माल्टा है। 2वहाँ के निवासियों
ने हमारे साथ बड़ा अच्छा व्यवहार किया। पानी
बरसने लगा था और ठण्ड पड़ रही थी, इसलिए
उन्होंने आग जला कर हम-सब का स्वागत
किया। 3पौलुस लकड़ियों का गट्ठा एकत्र कर
आग पर रख ही रहे थे कि एक साँप ताप के
कारण उस में से निकला और उनके हाथ से
लिपट गया। 4द्वीप के निवासी उनके हाथ में
साँप लिपटा देख कर आपस में कहने लगे,
"निश्चय ही यह व्यक्ति हत्यारा है। यह समुद्र
से तो बच गया है, किन्तु ईश्वरीय न्याय ने इसे
जीवित नहीं रहने दिया।" 5पौलुस ने साँप को
आग में झटक दिया और उन्हें कोई हानि नहीं
हुई। 6वे प्रतीक्षा करने लगे कि वह सूज जायेंगे
या अचानक गिरकर मर जायेंगे। किन्तु जब देर
तक प्रतीक्षा करने के बाद उन्होंने देखा कि
पौलुस को कोई हानि नहीं हो रही है, तो उनका
विचार बदल गया और वे कहने लगे कि यह
कोई देवता है।

7उस स्थान के समीप ही द्वीप के मुखिया
पुब्लियुस के खेत थे। उसने हमारा स्वागत
किया और तीन दिन तक प्रेम-भाव से हमारा

+ अथवा, , "दुम्बाल" * अथवा, "गलही"

27 : 33 प्रे 27 : 27 **27 : 34** 1 शम 14 : 45; 2 शम 14 : 11; मत 10 : 30; भज 107 : 28 **27 : 35** यो 6 : 11; 1 तिम 4 : 4; लू 22 : 19 **27 : 44** प्रे 27 : 22-25 **28 : 2** पे 27 : 3; 2 कुर 11 : 27 **28 : 5** मक 16 : 18 **28 : 6** प्रे 14 : 11

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आतिथ्य-सत्कार किया। 8अब ऐसा हुआ कि
पुब्लियुस का पिता बुख़ार और पेचिश से
पीड़ित था। अतः पौलुस उसके पास घर में
गए। उन्होंने प्रार्थना की और उस पर हाथ रख
कर उस को स्वस्थ कर दिया। 9जब यह बात
हुई तब द्वीप के अन्य रोगी भी आये और स्वस्थ
हो गये। 10इसलिए लोगों ने बहुत उपहार देकर
हमारा आदर-सम्मान किया* और जब हम
वहाँ से चलने लगे, तो जो कुछ हमें जरूरी था,
उन्होंने वह सब जुटा दिया।

माल्टा से रोम की ओर

11हम तीन महीने के पश्चात् सिकन्दरिया के
एक जलयान पर चढ़े, जिसने इस द्वीप में शीत-
ऋतु बितायी थी। इस जलयान का चिह्न था
''मिथुन''।** 12हम सुरकूसा बंदरगाह में लंगर
डाल कर तीन दिन वहाँ रहे। 13हम वहाँ से
लंगर खोलकर रेगियुम तक आये। दूसरे दिन
दक्षिणी हवा चलने लगी, इसलिए हम एक दिन
बाद पुतियुली बंदरगाह पहुँचे। 14 वहाँ विश्वासी
भाई-बहिनों से भेंट हुई और हम उनके अनुरोध
पर सात दिन उनके साथ रहे। इस प्रकार हम
रोम तक आ गए।

15वहाँ के भाई-बहिन हमारे आगमन का
समाचार सुनकर, अप्पियुस के चौक तक और
''तीन सराय'' नामक स्थान तक हमारा स्वागत
करने आये। उन्हें देख कर पौलुस ने परमेश्वर
को धन्यवाद दिया और वह प्रोत्साहित हुए।
16जब हम रोम पहुंचे, तो पौलुस को यह
अनुमति मिल गई कि वह पहरा देने वाले
सैनिक के साथ जहाँ चाहें, रह सकते हैं।

रोम में यहूदियों से सम्पर्क

17तीन दिन के पश्चात् पौलुस ने प्रमुख
यहूदियों को अपने पास बुलाया और उनके
एकत्र हो जाने पर उनसे कहा, ''भाइयो! मैंने
न तो हमारी जाति के विरुद्ध कोई अपराध किया
और न पूर्वजों की प्रथाओं के विरुद्ध, फिर भी
मुझे यरूशलेम में बन्दी बनाया गया और
रोमियों के हवाले कर दिया गया है। 18वे जांच
के बाद मुझे मुक्त करना चाहते थे, क्योंकि
उन्होंने मुझमें प्राणदण्ड के योग्य कोई कार्य
नहीं पाया। 19किन्तु जब वहां के यहूदी इसका
विरोध करने लगे, तो मुझे सम्राट की दुहाई देनी
पड़ी, यद्यपि यह नहीं कि मुझे अपने ही लोगों
पर कोई अभियोग लगाना था। 20इसी कारण
मैंने आप लोगों को आमंत्रित किया कि आपसे
मिलूं और बातें करूं। क्योंकि इस्राएल की
आशा के कारण ही मैं इस जंजीर से जकड़ा गया
हूँ।'' 21उन्होंने पौलुस से कहा, ''हम लोगों
को यहूदा प्रदेश से आपके विषय में कोई पत्र
नहीं मिला और न वहाँ आये हुए किसी भाई
ने आपके विषय में कोई संदेश दिया या आपकी
बुराई की। 22किन्तु हम आप से आपके विचार
सुनना चाहते हैं, क्योंकि हमें मालूम है कि इस
पंथ का सर्वत्र विरोध हो रहा है।''

रोम के यहूदियों की प्रतिक्रिया

23अतः यहूदियों ने पौलुस के साथ एक दिन
निश्चित किया और बड़ी संख्या में उनके यहाँ
एकत्र हुए। पौलुस सुबह से शाम तक उनके
लिए व्याख्या करते रहे। उन्होंने परमेश्वर के
राज्य के विषय में साक्षी दी और मूसा की
व्यवस्था तथा नबी-ग्रंथों के आधार पर उनको
येशु के संबंध में समझाने का प्रयत्न किया।
24उनमें कुछ लोग पौलुस के तर्क मान गये और
कुछ अविश्वासी बने रहे। 25जब वे आपस में
सहमत नहीं हुए और विदा होने लगे, तो पौलुस
ने उन से यह एक बात कही, ''पवित्र आत्मा
ने नबी यशायाह के मुख से आप लोगों के
पूर्वजों से ठीक ही कहा है,
26इन लोगों के पास जा कर यह कहो :
तुम सुनोगे अवश्य,
पर नहीं समझोगे।
तुम देखोगे अवश्य,
पर तुम्हें सूझ नहीं पड़ेगा;
27क्योंकि इन लोगों का मन मोटा हो गया है।

* अथवा, ''हमें बहुत उपहार दिए''। ** अर्थात्, ''यमजदेव''— दो देवता ''कस्तोर'' तथा ''पोलुक्स''।
28 : 16 प्रे 27 : 3 **28 : 17** प्रे 23 : 1 **28 : 19** प्रे 25 : 11 **28 : 20** प्रे 26 : 6-7 **28 : 22** प्रे 24 : 14;
लू 2 : 34 **28 : 26** यश 6 : 9-10; (यू० पाठ); मत 13 : 14; मक 4 : 12; यो 12 : 40

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
ये कानों से ऊँचा सुनने लगे हैं।
इन्होंने अपनी आँखें बन्द कर ली हैं।
कहीं ऐसा न हो कि ये आँखों से देखें,
कानों से सुनें, मन से समझें
और मुझ-प्रभु की ओर अभिमुख हो जायें,
और मैं इन्हें स्वस्थ कर दूँ।'
28 "इसलिए आप सब को मालूम हो कि
परमेश्वर का यह मुक्ति-संदेश गैर-यहूदियों
को भेजा गया है। वे अवश्य सुनेंगे।"
29 [जब पौलुस यह कह चुके, तो वे आपस
में उग्र विवाद करते हुए चले गये। *]
उपसंहार
30 पौलुस पूरे दो वर्षों तक अपने किराये के
मकान में+ रहे। वह उन सब लोगों का स्वागत
करते थे, जो उनसे मिलने आते थे। 31 वह
निर्भीकता से तथा निर्विघ्न रूप से परमेश्वर के
राज्य का सन्देश सुनाते और प्रभु येशु मसीह के
विषय में शिक्षा देते रहे।

* कुछ प्रतियों में पद 29 नहीं पाया जाता। + अथवा, "अपने व्यय से"।
28 : 28 भज 67 : 2; 98 : 3; लू 3 : 6; प्रे 13 : 46 **28 : 31** प्रे 1 : 3; 28 : 23

रोम नगर की कलीसिया के नाम संत पौलुस का पत्र

भूमिका

सन्त पौलुस ने रोम नगर की कलीसिया को यह पत्र विशेष उद्देश्य से लिखा था। उन्होंने धर्मप्रचार और प्रसार करने के लिए यात्रा की एक योजना बनाई थी। वह अपनी इस योजना के अनुसार रोम नगर की कलीसिया में सेवा-कार्य करने वाले थे, और तत्पश्चात् वहाँ से कलीसिया की सहायता से स्पेन देश जाना चाहते थे।

सन्त पौलुस ने मसीही विश्वास को जैसा समझा था, वैसा ही उन्होंने रोम नगर की कलीसिया को इस पत्र में समझाया है, और मसीही जीवन में उसके व्यावहारिक अर्थ को, अभिप्रेत तात्पर्य को स्पष्ट किया है। प्रस्तुत पुस्तक में सन्त पौलुस के संदेश की सर्वोत्तम, सर्वोत्कृष्ट अभिव्यक्ति हुई है।

पत्र के आरम्भ में संत पौलुस रोम नगर के विश्वासी भाई-बहिनों का अभिवादन करते, और उन्हें बताते हैं कि वह उनके लिये निरंतर प्रार्थना करते हैं। इस प्राक्कथन के तुरन्त बाद वह अपने **मुख्य विषय** पर आ जाते हैं : शुभ समाचार में परमेश्वर की धार्मिकता, जो आदि से अन्त तक विश्वास पर ही आधारित है, प्रकट हो रही है, जैसा कि धर्मशास्त्र में लिखा है: "धार्मिक मनुष्य विश्वास के द्वारा जीवन प्राप्त करेगा।" (1 : 17)

तत्पश्चात् संत पौलुस इस विषय को और आगे बढ़ाते हैं। सब मनुष्यों को—यहूदी और गैर-यहूदी सबको—परमेश्वर के साथ अपना संबंध सुधारना होगा, उससे मेल-मिलाप करना होगा; क्योंकि सब मनुष्य पाप के वश में हैं। प्रत्येक व्यक्ति प्रभु येशु में अपने विश्वास के द्वारा परमेश्वर से मेल-मिलाप कर सकता है।

इसकेउपरान्त संत पौलुस प्रभु येशु में **नये जीवन का वर्णन** करते हैं, जो मनुष्य को परमेश्वर के साथ नया संबंध स्थापित करने के फलस्वरूप प्राप्त होता है। विश्वासी मनुष्य को परमेश्वर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

में शान्ति प्राप्त होती है और वह परमेश्वर के आत्मा द्वारा पाप और मृत्यु के अधिकार से मुक्त हो जाता है।

अध्याय 5 से 8 तक संत पौलुस विश्वासी मनुष्य के जीवन में परमेश्वर के आत्मा के सामर्थ्य तथा परमेश्वर की व्यवस्था के अभिप्राय का विवेचन करते हैं। तत्पश्चात् वह मनुष्य-जाति के कल्याण हेतु बनाई गई **परमेश्वर की योजना** में यहूदी तथा गैर-यहूदी कैसे सम्मिलित हो सकते हैं, इस समस्या का समाधान करने का भरसक प्रयत्न करते हैं। और अन्त में वह समस्या का समाधान करते हुये इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि अनेक यहूदियों ने प्रभु येशु को जो अस्वीकार किया था, वह परमेश्वर की योजना का ही एक अंग था जिससे समस्त मनुष्यजाति प्रभु येशु के माध्यम से परमेश्वर के अनुग्रह के सिंहासन के समीप लाई जा सके। सन्त पौलुस यह मानते हैं कि वे यहूदी प्रभु येशु को सदा अस्वीकार नहीं करते रहेंगे।

पुस्तक के अन्त में संत पौलुस बताते हैं कि मसीही व्यक्ति को किस प्रकार अपना जीवन जीना चाहिए, अर्थात् वह अपने पड़ोसी-समाज में प्रेम के मार्ग पर कैसे चल सकता है। सन्त पौलुस इस संदर्भ में अनेक विषयों की चर्चा करते हैं: परमेश्वर की सेवा, शासन के अधिकारियों तथा पड़ोसियों के प्रति मसीही व्यक्ति के कर्त्तव्य, अच्छे-बुरे की समझ अर्थात विवेक का प्रश्न।

पत्र का उपसंहार करते हुये संत पौलुस कुछ व्यक्तियों के नाम अपना निजी नमस्कार लिखते हैं, और अंतिम पदों में परमेश्वर की स्तुति।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

प्राक्कथन तथा मुख्य विषय	1 : 1—17
मनुष्य को मुक्ति चाहिए	1 : 18—3 : 20
परमेश्वर का मुक्ति-मार्ग	3 : 21—4 : 25
मसीह में नया-जीवन	5 : 1—8 : 39
परमेश्वर की योजना में यहूदी एवं गैर-यहूदी का स्थान	9 : 1—11 : 36
मसीही आचरण	12 : 1—15 : 13
निजी संदेश तथा समापन	15 : 14—16 : 27

अभिवादन

1 यह पत्र येशु मसीह के सेवक पौलुस की
ओर से है, जो परमेश्वर के द्वारा प्रेरित होने
के लिए बुलाया गया है और उसके शुभ
समाचार के प्रचार के लिए पृथक किया गया है।
2 परमेश्वर ने पहले से ही अपने नबियों के द्वारा
पवित्र धर्मग्रन्थों में उस शुभ समाचार की
प्रतिज्ञा की थी, 3-4 जो उसकेपुत्र हमारे प्रभु येशु
मसीह के विषय में है। वह शरीर की दृष्टि से
दाऊद के वंश में उत्पन्न हुए, पर पवित्र आत्मा
की दृष्टि से मृतकों में से जी उठने के कारण
सामर्थ्य के साथ परमेश्वर के पुत्र प्रमाणित हुए।
5 उन्हीं येशु से हमें प्रेरित बनने का वरदान मिला
है कि उनके नाम के निमित्त सब जातियों के
लोग विश्वास की अधीनता स्वीकार करें।
6 उनमें से आप भी हैं, जो येशु मसीह के ही लोग
होने के लिए बुलाये गये हैं।*
7 आप-सब के नाम, जो रोम नगर में
परमेश्वर के प्रिय हैं और संत होने के लिए
बुलाये गये हैं।

* अथवा, "जो येशु मसीह के द्वारा बुलाये गये हैं"

1 : 1 प्रे 9 : 15; 13 : 2; गल 1 : 10.15 **1 : 2** तीत 1 : 2; रोम 16 : 25-26 **1 : 3** रोम 9 : 5; 2 शम 7 : 12; मत 22 : 42; 2 तिम 2 : 8 **1 : 4** प्रे 13 : 33 **1 : 5** प्रे 26 : 16-18; रोम 15 : 18; गल 2 : 7, 9 **1 : 7** 1 कुर 1 : 2; 2 कुर 1 : 1; इफ 1 : 1; गण 6 : 25-26

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हमारा पिता परमेश्वर और प्रभु येशु मसीह आप को अपनी कृपा और शान्ति प्रदान करें।

धन्यवाद की प्रार्थना

8सर्वप्रथम मैं आप सब के लिए येशु मसीह द्वारा अपने परमेश्वर को धन्यवाद देता हूँ; क्योंकि संसार भर में आप लोगों के विश्वास की चर्चा फैल गयी है। 9जिस परमेश्वर की उपासना मैं उसके पुत्र के शुभ समाचार द्वारा सारे हृदय से करता हूँ, वही मेरा साक्षी है कि मैं अपनी प्रार्थनाओं में आप लोगों को निरन्तर स्मरण करता हूँ 10और सदा यह निवेदन करता हूँ कि परमेश्वर की इच्छा से किसी-न-किसी तरह मुझे अन्त में आप लोगों के पास आने का सुअवसर मिले। 11क्योंकि मुझे आप से मिलने की बड़ी इच्छा है; मैं आप को विश्वास में सुदृढ़ बनाने के लिए आपको भी एक आध्यात्मिक वरदान देना चाहता हूँ; 12या यों कहें: मैं चाहता हूँ कि मैं आप लोगों के यहाँ रह कर आपके विश्वास से प्रोत्साहन प्राप्त करूँ और आप मेरे विश्वास से। 13भाइयो और बहिनो! मैं नहीं चाहता कि आप लोग इस बात से अनजान रहें कि मैंने बार-बार आपके यहाँ आने की योजना बनायी ताकि जैसे अन्य जातियों में वैसे आपके बीच भी मैं कुछ ''फल'' प्राप्त करूँ; किन्तु अब तक इस योजना में कोई-न-कोई बाधा आती रही। 14मैं अपने को यूनानियों और गैर-यूनानियों, ज्ञानियों और अज्ञानियों के प्रति उत्तरदायी समझता हूँ*। 15इसलिए मैं आप रोम निवासियों को भी शुभ समाचार सुनाने के लिए उत्सुक हूँ।

शुभ समाचार का सामर्थ्य

16शुभ समाचार से मैं लज्जित नहीं होता! यह परमेश्वर का सामर्थ्य है, जो प्रत्येक विश्वासी के लिए—पहले यहूदी और फिर यूनानी के लिए—मुक्ति का स्रोत है। 17शुभ समाचार में परमेश्वर की धार्मिकता**, जो आदि से अन्त तक विश्वास पर आधारित है, प्रकट हो रही है, जैसा कि धर्मग्रन्थ में लिखा है: ''धार्मिक मनुष्य विश्वास के द्वारा जीवन प्राप्त करेगा''।+

मनुष्य -जाति का दोष

18परमेश्वर का क्रोध स्वर्ग से उन लोगों के सब प्रकार के अधर्म और अन्याय पर प्रकट हो रहा है, जो अन्याय द्वारा सत्य को दबाये रखते हैं। 19कारण यह है कि परमेश्वर के विषय में जो कुछ जाना जा सकता है, वह उन पर प्रकट है; स्वयं परमेश्वर ने उसे उन पर प्रकट किया है। 20संसार की सृष्टि के समय से ही परमेश्वर के अदृश्य स्वरूप को, अर्थात् उसकी शाश्वत शक्तिमत्ता और उसके ईश्वरत्व को, बुद्धि की आँखों द्वारा उसके कार्यों में देखा जा सकता है। इसलिए वे अपने आचरण की सफाई देने में असमर्थ हैं; 21क्योंकि उन्होंने परमेश्वर को जानते हुए भी उसे परमेश्वर के रूप में समुचित आदर और धन्यवाद नहीं दिया। उनका समस्त चिन्तन व्यर्थ चला गया और उनका विवेकहीन मन अन्धकारमय हो गया। 22वे अपने को बुद्धिमान समझते हैं, किन्तु वे मूर्ख बन गये हैं। 23उन्होंने अनश्वर परमेश्वर की महिमा के बदले नश्वर मनुष्य, पक्षियों, पशुओं तथा सर्पों की अनुकृतियों की शरण ली।

24इसलिए परमेश्वर ने उन्हें उनके मन की दुर्वासनाओं के अनुसार दुराचरण का शिकार होने दिया और वे एक-दूसरे के शरीर को अपवित्र करते हैं। 25उन्होंने परमेश्वर के सत्य के स्थान पर झूठ को अपनाया और सृष्ट वस्तुओं की उपासना और आराधना की, किन्तु उस सृष्टिकर्ता की नहीं, जो युगों-युगों तक धन्य है।

---

* शब्दश: ''ऋणी हूँ'' ** मूल में ''दिकयोसुने'' धर्मवैज्ञानिकों ने इस शब्द के अनेक अर्थ किए हैं; जैसे मुक्ति, विधान, नीतिमत्ता, धर्म, पाप-मुक्ति की योजना, न्याय-प्रियता आदि। + अथवा; ''विश्वास के आधार पर धार्मिक ठहरा हुआ व्यक्ति जीवन प्राप्त करेगा।''अथवा, ''जो मनुष्य विश्वास के द्वारा परमेश्वर की दृष्टि मे धार्मिक ठहरा है, वह जिएगा।''

1 : 8 रोम 16 : 19; 1 थिस 1 : 8 **1 : 9** फिल 1 : 8; इफ 1 : 16 **1 : 10** प्रे 19 : 21; रोम 15 : 23, 32 **1 : 11** प्रे 28 : 31 **1 : 12** 2 पत 1 : 1 **1 : 13** यो 15 : 16 **1 : 16** भज 119 : 46; 1 कुर 1 : 18, 24; प्रे 13 : 46 **1 : 17** रोम 3 : 21-22; हब 2 : 4; भज 143 : 1, 2, 11 **1 : 18** मी 7 : 9; सप 3 : 8-9; यो 16 : 9; 2 थिस 2 : 12 **1 : 19** प्रे 14 : 15-17; 17 : 24-28 **1 : 20** भज 19 : 1; इब्र 11 : 3 अय्य 12 : 7-9; प्रज्ञ 13 : 1-9; प्रव 17 : 8 **1 : 21** इफ 4 : 18; पक 14 : 7 **1 : 22** यिर 10 : 14; 1 कुर 1 : 20 **1 : 23** भज 106 : 20; व्य 4 : 15-19; प्रज्ञ 11 : 15; 12 : 24; 13 : 10-19 **1 : 24** प्रे 14 : 16 **1 : 25** रोम 9 : 5

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आमेन! [26]यही कारण है कि परमेश्वर ने उन्हें
उनकी घृणित वासनाओं का शिकार होने दिया।
उनकी स्त्रियाँ प्राकृतिक संसर्ग छोड़ कर
अप्राकृतिक संसर्ग करने लगीं। [27]इसी प्रकार
उनके पुरुष भी स्त्रियों का प्राकृतिक संसर्ग
छोड़ कर एक-दूसरे के लिए वासना से जलने
लगे। पुरुष पुरुषों के साथ कुकर्म करते हैं और
इस प्रकार वे अपने भ्रष्ट आचरण का उचित
फल स्वयं भोग रहे हैं।

[28]उन्होंने परमेश्वर का सच्चा ज्ञान प्राप्त
करना उचित नहीं समझा, इसलिए परमेश्वर ने
उन्हें उनकी भ्रष्ट बुद्धि पर छोड़ दिया, जिससे
वे अनुचित आचरण करने लगे। [29]वे हर प्रकार
के अन्याय, दुष्टता, लोभ और बुराई से भर गये।
वे ईर्ष्या, हत्या, बैर, छल-कपट और दुर्भाव से
परिपूर्ण हैं। वे चुगलखोर, [30]परनिन्दक, परमेश्वर
के बैरी, धृष्ट, घमण्डी और डींग मारने वाले
लोग हैं। वे बुराई करने में चतुर हैं, अपने माता-
पिता की आज्ञा नहीं मानते [31]और विवेकहीन
तथा विश्वासघाती हैं। उन में प्रेम और दया का
अभाव है। [32]वे परमेश्वर का यह निर्णय जानते
हैं कि ऐसे कुकर्म करने वालों का उचित दण्ड
मृत्यु है। फिर भी वे न केवल स्वयं ये ही कार्य
करते हैं, बल्कि ऐसे कुकर्म करने वालों की
प्रशंसा भी करते हैं।

परमेश्वर का न्याय

2 इसलिए, हे दूसरों पर दोष लगाने वाले!
तुम चाहे जो भी हो, अक्षम्य हो। तुम दूसरों
पर दोष लगाने के कारण अपने को दोषी ठहराते
हो; क्योंकि तुम, जो दूसरों पर दोष लगाते हो,
ये ही कुकर्म स्वयं करते हो। [2]हम जानते हैं कि
परमेश्वर ऐसे कुकर्म करने वालों को न्यायानुसार
दण्डाज्ञा देता है। [3]हे मनुष्य! तुम ऐसे कुकर्म
करने वालों पर दोष लगाते हो और स्वयं ये ही
कार्य करते हो, तो क्या तुम समझते हो कि
परमेश्वर की दण्डाज्ञा से बच जाओगे? [4]अथवा
क्या तुम परमेश्वर की असीम दयालुता,
सहनशीलता और धैर्य का तिरस्कार करते और
यह नहीं समझते कि परमेश्वर की दयालुता
तुम्हें पश्चात्ताप की ओर ले जाना चाहती है?
[5]किन्तु तुम अपने इस हठ और अपने हृदय के
अपश्चात्ताप के कारण कोप के दिन के लिए
अपने विरुद्ध कोप का संचय कर रहे हो, जब
परमेश्वर का निष्पक्ष न्याय प्रकट होगा। [6]वह
प्रत्येक मनुष्य को उसके कर्मों के अनुसार फल
देगा। [7]जो लोग धैर्यपूर्वक भलाई करते हुए
महिमा, सम्मान और अमरत्व की खोज में लगे
रहते हैं, परमेश्वर उन्हें शाश्वत जीवन प्रदान
करेगा; [8]और जो लोग स्वार्थी हैं और सत्य के
विद्रोह करते हुए अधर्म पर चलते हैं, वे
परमेश्वर के क्रोध और प्रकोप के पात्र होंगे।
[9]बुराई करने वाले प्रत्येक मनुष्य को—पहले
यहूदी और फिर यूनानी को—कष्ट और संकट
सहना पड़ेगा [10]और भलाई करने वाले प्रत्येक
मनुष्य को—पहले यहूदी और फिर यूनानी
को—महिमा, सम्मान और शान्ति मिलेगी;
[11]क्योंकि परमेश्वर किसी के साथ पक्षपात नहीं
करता।

[12]जो मूसा की व्यवस्था के अधीन नहीं थे,
यदि उन्होंने पाप किया होगा, तो वे बिना
व्यवस्था के नष्ट हो जायेंगे; और जिन्होंने
व्यवस्था के अधीन रह कर पाप किया होगा,
उनका व्यवस्था के अनुसार न्याय किया जायेगा।
[13]क्योंकि व्यवस्था के सुनने वाले लोग परमेश्वर
की दृष्टि में धार्मिक नहीं हैं, वरन् व्यवस्था का
पालन करने वाले धार्मिक ठहराए जायेंगे।
[14]जब गैर-यहूदी, जिन्हें मूसा की व्यवस्था
नहीं मिली, अपने आप उसकी आज्ञाओं का
पालन करते हैं, तो वे व्यवस्था-विहीन होते हुए
भी स्वयं अपने लिए व्यवस्था हैं; [15]क्योंकि वे
अपने आचरण से इसका प्रमाण देते हैं कि
व्यवस्था की आज्ञाएँ उनके हृदय पर अंकित हैं।
उनका अन्तःकरण भी इसके सम्बन्ध में साक्षी
देता है। उनके विचार उन्हें कभी दोषी, तो कभी

---

1 : 27 लेव 18 : 22; 20 : 13; 1 कुर 6 : 9 **2 : 1** मत 7 : 2; यो 8 : 7 **2 : 4** 2 पत 3 : 15 प्रज्ञ 11 : 23 **2 : 6** भज 62 : 12; नीति 24 : 12; मत 16 : 27; यो 5 : 29; 2 कुर 5 : 10 **2 : 8** 1 थिस 1 : 8 **2 : 9** रोम 1 : 16; 3 : 9 **2 : 11** प्रे 10 : 34; 1 पत 1 : 17 **2 : 13** मत 7 : 21; 1 यो 3 : 7; याक 1 : 22, 25 **2 : 14** प्रे 10 : 35 **2 : 15** रोम 1 : 32; व्य 30 : 14; यिर 31 : 33

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

निर्दोष ठहराते हैं। 16यह सब उस दिन प्रकट किया जायेगा, जब परमेश्वर, मेरे शुभ समाचार के अनुसार, येशु मसीह द्वारा मनुष्यों के गुप्त विचारों का न्याय करेगा।

यहूदी तथा मूसा की व्यवस्था

17और तुम, जो यहूदी कहलाते हो! तुम व्यवस्था पर निर्भर रहते हुए परमेश्वर पर गर्व करते हो, 18उसकी इच्छा जानते हो और व्यवस्था द्वारा शिक्षित होने के कारण भले-बुरे को पहचान सकते हो। 19-20तुम्हें व्यवस्था द्वारा ज्ञान और सत्य का आदर्श स्वरूप प्राप्त हो गया है, इसलिए तुम अपने को अन्धों का पथप्रदर्शक, अन्धकार में रहने वालों का प्रकाश, अज्ञानियों का शिक्षक और भोले-भाले लोगों का गुरु समझते हो। 21पर तुम, जो दूसरों को शिक्षा देते हो, अपने को शिक्षा नहीं देते! तुम प्रचार करते हो, "चोरी मत करो", और स्वयं चोरी करते हो! 22तुम कहते हो, "व्यभिचार मत करो", और स्वयं व्यभिचार करते हो! तुम मूर्तियों से घृणा करते हो और मन्दिरों को लूटते हो! 23तुम व्यवस्था पर गर्व करते हो और व्यवस्था के उल्लंघन द्वारा परमेश्वर का अनादर करते हो! 24क्योंकि जैसा कि धर्मग्रन्थ में लिखा है, "तुम लोगों के कारण गैर-यहूदियों में परमेश्वर के नाम की निन्दा हो रही है।"

25खतना कराने से अवश्य लाभ होता है, यदि तुम व्यवस्था का पालन करते हो; किन्तु यदि तुम व्यवस्था का उल्लंघन करते हो, तो तुम्हारा खतना निरर्थक है। 26इसी प्रकार, यदि कोई बेखतना व्यक्ति व्यवस्था के आदेशों का पालन करता है, तो क्या उसका बेखतनापन खतना नहीं माना जायेगा? 27जो शरीर का खतना कराये बिना व्यवस्था का पूर्ण पालन करता है, वह तुम्हारा न्याय करेगा; क्योंकि तुम लिखित व्यवस्था और खतने से सम्पन्न होते हुए भी व्यवस्था का उल्लंघन करते हो। 28क्योंकि यहूदी वह नहीं, जो बाह्य रूप से यहूदी है; और खतना वह नहीं, जो बाह्य और शारीरिक है। 29किन्तु यहूदी वह है, जो अपने अभ्यन्तर में यहूदी है और खतना वह है, जो हृदय का है और लिखित व्यवस्था के अनुसार नहीं, बल्कि आत्मा के अनुसार है। ऐसे व्यक्ति को मनुष्यों की नहीं, बल्कि परमेश्वर की प्रशंसा प्राप्त है।

यहूदी और गैर-यहूदी दोनों पाप के अधीन

3 तो दूसरों की अपेक्षा यहूदी को अधिक क्या मिला? और खतने से क्या लाभ? 2हर प्रकार से बहुत कुछ! सर्वप्रथम यहूदियों को परमेश्वर का वचन सौंपा गया है। 3यदि यहूदियों में कुछ अविश्वासी निकले, तो क्या हुआ? क्या उनका अविश्वास परमेश्वर की विश्वसनीयता नष्ट कर देगा? 4कभी नहीं! भले ही प्रत्येक मनुष्य झूठा निकल जाये, किन्तु परमेश्वर सच्चा प्रमाणित होगा; जैसा कि धर्मग्रन्थ में लिखा है: "तेरे वचन तुझे धार्मिक ठहराते हैं। जब तेरा न्याय होता है तब तू विजयी होता है।"

5यदि हमारा अधर्म परमेश्वर की धार्मिकता प्रदर्शित करता है, तो हम क्या कहें? क्या यह कि जब परमेश्वर क्रुद्ध होकर हमें दण्ड देता है, तब वह अन्याय करता है? मैं यह मानवीय तर्क के अनुसार कह रहा हूँ। 6कभी नहीं! यदि परमेश्वर अन्यायी होता, तो वह संसार का न्याय कैसे कर सकता? 7परन्तु यदि मेरी असत्यवादिता परमेश्वर की सत्यप्रियता और उसकी महिमा को बढ़ावा देती है, तो पापी की तरह मुझे क्यों दण्डनीय ठहराया जाता है? 8यदि ऐसी बात है, तो हम बुराई क्यों न करें, जिससे भलाई उत्पन्न हो? जैसा कि कुछ लोग जो हमारी निंदा करते हैं, कहते हैं कि हम यही सिखाते हैं। ऐसे लोग दण्डाज्ञा के योग्य हैं।

कोई भी मनुष्य धार्मिक नहीं है

9तो, क्या हम यहूदी दूसरों की अपेक्षा बेहतर स्थिति में हैं? कदापि नहीं! हम यह

---

2 : 16 2 तिम 2 : 8 **2 :17** याक 2 : 19 **2 : 18** फिल 1 : 10 **2 :19** मत 15 : 14; लू 18 : 9 **2 : 20** तिम 3 : 5 **2 : 21** भज 50 : 16-21; मत 23 : 3-4 **2 : 24** यश 52 : 5 (यू॰ पाठ); यहेज 36 : 20 **2 : 25** यिर 4 : 4; 9 : 24-25 **2 : 26** गल 5 : 6 **2 : 28** यो 8 : 15,39; 7 : 24 **2 : 29** उत 49 : 8; व्य 30 : 6; कुल 2 : 11; 2 कुर 3 : 6 **3 : 2** रोम 9 : 4; व्य 4 : 7-8; भज 147 : 19-20; 103 : 7; 1 पत 4 : 11 **3 : 3** रोम 9 : 6; 11 : 29; 2 तिम 2 : 13 **3 : 4** भज 116 : 11; 51 : 4 (यू॰ पाठ) **3 : 8** रोम 6 : 1-2 **3 : 9** रोम 1 : 18—2 : 24

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आरोप लगा चुके हैं कि सब, चाहे यहूदी हों
या यूनानी, पाप के अधीन हैं, [10]जैसा कि धर्मग्रन्थ
में लिखा है:

''कोई भी धार्मिक नहीं है—एक भी नहीं।
[11]कोई भी समझदार नहीं,
परमेश्वर की खोज में लगा रहने वाला कोई नहीं!
[12]सब भटक गये, सब समान रूप से भ्रष्ट हो गये हैं।
कोई भी भलाई नहीं करता—एक भी नहीं।
[13]उनका गला खुली हुई कबर है;
उनकी वाणी में छल कपट है
और उनके होंठों के तले साँप का विष है।
[14]उनका मुँह अभिशाप और कटुता से भरा है।
[15]उनके पैर रक्तपात करने दौड़ते हैं,
[16]उनके मार्ग में विनाश है और विपत्ति।
[17]वे शान्ति का मार्ग नहीं जानते
[18]और उनकी आखों में परमेश्वर का भय है ही नहीं।''

[19]हम जानते हैं कि व्यवस्था जो कुछ कहती
है, वह उन लोगों से कहती है, जो व्यवस्था के
अधीन हैं, जिससे प्रत्येक व्यक्ति का मुँह बन्द
हो जाए और परमेश्वर के सामने समस्त संसार
दण्ड के योग्य माना जाए। [20]क्योंकि व्यवस्था
के कर्मकाण्ड द्वारा कोई भी मनुष्य परमेश्वर के
सामने धार्मिक नहीं ठहराया जायेगा: व्यवस्था
केवल पाप का ज्ञान कराती है।

विश्वास द्वारा पापमुक्ति

[21]परन्तु परमेश्वर का मुक्ति-विधान*, जिसके
विषय में मूसा की व्यवस्था और नबियों ने साक्षी
दी थी, अब व्यवस्था से पृथक ही प्रकट किया
गया है। [22]परमेश्वर के इस विधान में मुक्ति
येशु मसीह में विश्वास करने से प्राप्त होती है
और यह मुक्ति उन सब के लिए है, जो विश्वास
करते हैं।** अब भेद-भाव नहीं रहा। [23]क्योंकि
सब ने पाप किया और सब परमेश्वर की महिमा
से वंचित हो गए हैं। [24]परमेश्वर की कृपा से
सब मुफ्त में उस पापमुक्ति के द्वारा धार्मिक
ठहराए जाते हैं, जो येशु मसीह में प्राप्त होती
है। [25]परमेश्वर ने चाहा कि येशु अपना रक्त
बहा कर पाप का प्रायश्चित करें, जिसका फल
विश्वास द्वारा प्राप्त होता है। परमेश्वर ने इस
प्रकार अपनी धार्मिकता का प्रमाण दिया;
क्योंकि उसने अपनी सहनशीलता के अनुरूप
पिछले युगों के पापों को अनदेखा कर दिया
था। [26]उसने इस युग में अपनी धार्मिकता का
प्रमाण देना चाहा, जिससे यह स्पष्ट हो जाये कि
वह स्वयं धार्मिक है और उन सब को धार्मिक
ठहराता है, जो येशु में विश्वास करते हैं।

[27]इसलिए किसी को अपने पर गर्व करने का
अधिकार नहीं रहा। किस विधान के कारण यह
अधिकार जाता रहा? यह कर्मकाण्ड के विधान
के कारण नहीं, बल्कि विश्वास के विधान के
कारण हुआ; [28]क्योंकि हम मानते हैं कि मनुष्य
व्यवस्था के कर्मकाण्ड से पृथक ही, विश्वास
के द्वारा धार्मिक ठहरता है। [29]क्या परमेश्वर
केवल यहूदियों का परमेश्वर है? क्या वह गैर-
यहूदियों का परमेश्वर नहीं? वह निश्चय ही
गैर-यहूदियों का भी परमेश्वर है। [30]क्योंकि
केवल एक ही परमेश्वर है, जो खतना कराने
वाले यहूदियों को उनके विश्वास के आधार पर
धार्मिक ठहराएगा और उसी विश्वास द्वारा गैर-
यहूदियों को भी। [31]तो, क्या हम इस विश्वास
द्वारा व्यवस्था को रद्द करते हैं? कदापि नहीं!
हम व्यवस्था की पुष्टि करते हैं।

अब्राहम का विश्वास

4 अब हम अपने कुलपति अब्राहम के विषय
में क्या कहें? क्या उन्हें शरीर की दृष्टि से

---

*अथवा, 'धार्मिकता' ** शब्दशः ''परमेश्वर की धार्मिकता येशु मसीह में विश्वास द्वारा सब विश्वास करने वालों के लिए है।''

3 : 10 भज 14 : 1-3 (यू० पाठ) 53 : 2-4 (यू० पाठ) **3 : 13** भज 5 : 9 (यू० पाठ); 140 : 3 **3 : 14** भज 10 : 7 (यू० पाठ); **3 : 15** यश 59 : 7-8 **3 :18** भज 36 : 1 **3 : 19** रोम 2 : 12; गल 3 : 22 **3 : 20** भज 143 : 2; रोम 7 : 7; गल 2 : 16 **3 : 21** प्रे 10 : 43; रोम 1 : 17 **3 : 23** रोम 9 : 19; 5 : 12 **3 : 24** रोम 5 : 1; इफ 2 : 8 **3 : 25** लेव 16 : 12-15; 1 यो 2 : 2; इब्र 4 : 16; इफ 1 : 7 **3 : 27** 1 कुर 1 : 9, 31 **3 : 28** गल 2 : 16 **3 : 29** रोम 10 : 12 **3 : 30** रोम 4 : 11-12 **3 : 31** रोम 4 : 3; 8 : 4; मत 5 : 17

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कुछ प्राप्त हुआ अथवा अनुग्रह से ?* 2यदि
अब्राहम अपने कर्मों के कारण धार्मिक ठहराए
गये, तो वह अपने पर गर्व कर सकते हैं। किन्तु
वह परमेश्वर के सामने ऐसा नहीं कर सकते;
3क्योंकि धर्मग्रन्थ क्या कहता है ?— "अब्राहम
ने परमेश्वर में विश्वास किया और यह उनके
लिए धार्मिकता माना गया।" 4जो कर्म करता
है, उसे मजदूरी अनुग्रह के रूप में नहीं, बल्कि
अधिकार के रूप में मिलती है। 5जो कर्म नहीं
करता, किन्तु उस में विश्वास करता है, जो
अधर्मी को धार्मिक बनाता है तो उसका यह
विश्वास धार्मिकता माना जाता है। 6इसी तरह
दाऊद उस मनुष्य को धन्य कहते हैं, जिसे
परमेश्वर कर्मों के अभाव में भी धार्मिक मानता
है:

7 "धन्य हैं वे, जिनके अपराध क्षमा हुए हैं,
जिनके पाप ढक दिये गये हैं!
8धन्य है वह मनुष्य, जिसके पाप का लेखा प्रभु
नहीं रखता!"

9क्या यह धन्यता खतने वाले यहूदियों से ही
सम्बन्ध रखती है, या गैर-यहूदी लोगों से भी ?
देखिए, हम कहते हैं: "अब्राहम का विश्वास
उनके लिए धार्मिकता माना गया है।" 10उनका
विश्वास कैसे धार्मिकता माना गया है ? क्या उस
समय तक उनका खतना हुआ था या नहीं ? उस
समय तक उनका खतना नहीं हुआ था, वह
बेखतने ही थे। 11बेखतने रहते समय उन को
विश्वास द्वारा जो धार्मिकता प्राप्त हुई थी, उस
पर मुहर की तरह खतने का चिह्न लगाया गया।
इस प्रकार वह उन सब के भी पिता बने, जो
खतना कराये बिना विश्वास करते हैं, जिससे
उनका भी विश्वास उनके लिए धार्मिकता माना
जाये। 12अब्राहम उन खतने वालों के भी पिता
बने, जो न केवल खतने पर निर्भर रहते हैं,
बल्कि हमारे पिता अब्राहम के उस विश्वास के
पथ पर चलते हैं, जो उन्हें खतने से पहले प्राप्त
था।

13परमेश्वर ने अब्राहम और उनके वंश से
प्रतिज्ञा की कि वे पृथ्वी के उत्तराधिकारी होंगे।
यह इसलिए नहीं हुआ कि अब्राहम ने व्यवस्था
का पालन किया, बल्कि इसलिए कि उन्होंने
विश्वास किया और परमेश्वर ने उन्हें धार्मिक
माना है। 14यदि व्यवस्था के अधीन रहने वाले
ही उत्तराधिकारी बनते हैं, तो विश्वास व्यर्थ है
और प्रतिज्ञा रद्द हो जाती है; 15क्योंकि व्यवस्था
का परिणाम परमेश्वर का प्रकोप है, जब कि
व्यवस्था के अभाव में किसी आज्ञा का उल्लंघन
नहीं होता। 16सब कुछ विश्वास पर, और
इसलिए अनुग्रह पर ही निर्भर रहता है। वह
प्रतिज्ञा न केवल उन लोगों पर, जो व्यवस्था का
पालन करते हैं, बल्कि समस्त वंश पर लागू
होती है—उन सब पर, जो अब्राहम की तरह
विश्वास करते हैं। अब्राहम हम सब के पिता
हैं 17जैसा कि धर्मग्रन्थ में लिखा है: "मैंने तुम
को बहुत-सी जातियों का पिता नियुक्त किया
है।"

परमेश्वर की दृष्टि में अब्राहम हमारे पिता
हैं। उन्होंने उस परमेश्वर में विश्वास किया, जो
मृतकों को पुनर्जीवित करता है और उन
वस्तुओं को भी अस्तित्व में लाता है जिनका
अस्तित्व नहीं है। 18अब्राहम ने निराशाजनक
परिस्थिति में भी आशा रख कर विश्वास किया
और वह बहुत जातियों के पिता बन गये, जैसा
कि उन से कहा गया था, "तुम्हारे असंख्य
वंशज होंगे।" 19यद्यपि वह जानते थे कि
उनका शरीर अशक्त** हो गया है—उनकी
अवस्था लगभग एक सौ वर्ष की थी—और
उनकी पत्नी सारा बाँझ है, तो भी उनका
विश्वास विचलित नहीं हुआ; 20उन्हें परमेश्वर
की प्रतिज्ञा पर सन्देह नहीं हुआ, बल्कि उन्होंने

---

* अथवा, "अब हम अब्राहम के विषय में क्या कहें ? उन्हें क्या प्राप्त हुआ, जो शरीर के नाते हमारे पूर्वज हैं ?"
** शब्दश:, "मृत"

4 : 3 उत 15 : 6; गल 3 : 6; याक 2 : 23 **4 : 4** रोम 11 : 6; मत 20 : 7, 14 **4 : 6** भज 32 : 1-2 **4 : 9** उत 15 : 6 **4 : 11** उत 17 : 10-11 **4 : 12** मत 3 : 9; 1 पत 2 : 21; 2 कुर 12 : 18 **4 : 13** उत 18 : 18; 22 : 17-18 **4 : 15** रोम 3 : 20; 5 : 13; 7 : 8, 10 **4 : 17** उत 17 : 5; यश 48 : 13 **4 : 18** उत 15 : 5 **4 : 19** उत 17 : 17 **4 : 20** इब्र 11 : 7,11,34

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अपने विश्वास की दृढ़ता द्वारा परमेश्वर का
सम्मान किया। 21उन्हें पक्का निश्चय था कि
परमेश्वर ने जिस बात की प्रतिज्ञा की है, वह
उसे पूरा करने में समर्थ है। 22इस विश्वास के
कारण "परमेश्वर ने उन्हें धार्मिक माना है।"

23धर्मग्रन्थ का यह कथन न केवल अब्राहम
से, 24बल्कि हम से भी सम्बन्ध रखता है। यदि
हम परमेश्वर में विश्वास करेंगे, जिसने हमारे
प्रभु येशु को मृतकों में से जिलाया, तो हम भी
विश्वास के कारण धार्मिक माने जायेंगे। 25वही
येशु हमारे अपराधों के कारण पकड़वाये गये
और हमें धार्मिक ठहराने के लिए जी उठे।

परमेश्वर से हमारा मेल हो गया है

5 यदि हम विश्वास के कारण धार्मिक
ठहराए गए हैं, तो हमें हमारे प्रभु येशु
मसीह द्वारा परमेश्वर में शान्ति प्राप्त होती है।
2मसीह ने हमारे लिए उस अनुग्रह तक पहुँचने
का द्वार भी खोला है, जो हमें विश्वास से प्राप्त
होता है और जिसमें हम स्थित हैं। हम इस बात
पर गौरव करते हैं कि हमें परमेश्वर की महिमा
के भागी बनने की आशा है। 3इतना ही नहीं,
हम दु:ख- तकलीफ पर भी गौरव करें, क्योंकि
हम जानते हैं कि दु:ख-तकलीफ से धैर्य, 4धैर्य
से सच्चरित्रता और सच्चरित्रता से आशा उत्पन्न
होती है। 5आशा व्यर्थ नहीं होती, क्योंकि
परमेश्वर ने हमें पवित्र आत्मा प्रदान किया है
और उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम ही हमारे
हृदय में उंडेला गया है।

6जब हम निस्सहाय थे, तभी निर्धारित समय
पर मसीह हम अधर्मियों के लिए मरे। 7धार्मिक
मनुष्य के लिए शायद ही कोई अपने प्राण
अर्पित करे। फिर भी हो सकता है कि भले
मनुष्य के लिए कोई मरने को तैयार हो जाये,
8किन्तु हम पापी ही थे, जब मसीह हमारे लिए
मरे। इस से परमेश्वर ने हमारे प्रति अपने प्रेम
का प्रमाण दिया है। 9यदि हम मसीह के रक्त
के कारण धार्मिक ठहराए गये, तो हम निश्चय
ही मसीह द्वारा परमेश्वर के प्रकोप से बच
जायेंगे। 10हम शत्रु ही थे, जब परमेश्वर के
साथ हमारा मेल उसके पुत्र की मृत्यु द्वारा हो
गया था; और परमेश्वर के साथ मेल हो जाने
के बाद उसके पुत्र के जीवन द्वारा निश्चय ही
हमारा उद्धार होगा। 11इतना ही नहीं, अब तो
हमारे प्रभु येशु मसीह द्वारा परमेश्वर से हमारा
मेल हो गया है; इसलिए हम उन्हीं के द्वारा
परमेश्वर पर भरोसा रख कर गौरव करते हैं।

आदम द्वारा मृत्यु तथा मसीह द्वारा जीवन

12यह बात विचारणीय है कि एक ही मनुष्य
द्वारा संसार में पाप का प्रवेश हुआ और पाप द्वारा
मृत्यु का। इस प्रकार मृत्यु सब मनुष्यों में फैल
गयी, क्योंकि सब पापी हैं।* 13मूसा की व्यवस्था
से पहले संसार में पाप था; किन्तु व्यवस्था के
अभाव में पाप का लेखा नहीं रखा जाता है।
14फिर भी आदम से लेकर मूसा तक मृत्यु उन
लोगों पर भी राज्य करती रही, जिन्होंने आदम
की तरह किसी आज्ञा के उल्लंघन द्वारा पाप नहीं
किया था।

आदम उस व्यक्ति का प्रतीक था, जो
आनेवाला था। 15फिर भी आदम के अपराध
तथा परमेश्वर के वरदान में कोई तुलना नहीं है।
यह सच है, कि एक ही मनुष्य के अपराध के
कारण सब+ लोग मरे; किन्तु इस परिणाम से
कहीं अधिक महान है परमेश्वर का अनुग्रह
और वह अनुग्रहपूर्ण वरदान, जो एक ही
मनुष्य—येशु मसीह—द्वारा सब को मिला।
16एक मनुष्य के अपराध तथा परमेश्वर के
वरदान में कोई तुलना नहीं है। एक के अपराध
के फलस्वरूप दण्डाज्ञा तो दी गयी, किन्तु
बहुत-से अपराधों के बाद जो वरदान दिया
गया, उसकेद्वारा पाप से मुक्ति मिल गयी है।

* अथवा, 'जिसके कारण सब ने पाप किया है।' + शब्दश: 'बहुत'

4 : 22 उत 15 : 6 **4 : 23** रोम 15 : 4 **4 : 24** 1 पत 1 : 21 **4 : 25** यश 53 : 4-5; 1 कुर 15 : 17 **5 : 1** रोम 3 : 24, 28; 4 : 24; यश 53 : 5 **5 : 2** इफ 3 : 12; रोम 3 : 23 **5 : 3** याक 1 : 2-3; 1 पत 1 : 5-7 **5 : 5** भज 22 : 5; 25 : 20; इब्र 6 : 18-19 **5 : 8** यो 3 : 16; 1 यो 4 : 10 **5 : 9** रोम 1 : 18; 2 : 5, 8 **5 : 10** रोम 8 : 7 **5 : 12** उत 2 : 17; 3 : 19; रोम 6 : 23; प्रज्ञ 2 : 24 **5 : 13** रोम 4 : 15 **5 : 14** 1 कुर 15 : 21-22, 45. 55

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

17यह सच है कि मृत्यु का राज्य एक मनुष्य के
अपराध के फलस्वरूप—एक ही के
द्वारा—प्रारम्भ हुआ, किन्तु इस परिणाम से
कहीं अधिक जिन लोगों को परमेश्वर का
अनुग्रह तथा धार्मिकता का वरदान प्रचुर मात्रा
में मिलेगा, वे एक ही मनुष्य—येशु मसीह के
द्वारा—जीवन का राज्य प्राप्त करेंगे।

18इस प्रकार हम देखते हैं कि जिस तरह एक
ही मनुष्य के अपराध के फलस्वरूप सब को
दण्डाज्ञा मिली, उसी तरह एक ही मनुष्य के
धार्मिक कार्य के फलस्वरूप सब को पापमुक्ति
और जीवन मिला। 19जिस तरह एक ही मनुष्य
के आज्ञाभंग के कारण सब पापी ठहराये गये,
उसी तरह एक ही मनुष्य के आज्ञापालन के
कारण सब धार्मिक ठहराये जायेंगे।

20बाद में व्यवस्था दी गयी और इस से
अपराधों की संख्या बढ़ गयी। किन्तु जहाँ पाप
की वृद्धि हुई, वहाँ अनुग्रह की उससे कहीं
अधिक वृद्धि हुई। 21इस प्रकार पाप, मृत्यु के
माध्यम से, राज्य करता रहा; किन्तु हमारे प्रभु
येशु मसीह द्वारा अनुग्रह, धार्मिकता के माध्यम
से, अपना राज्य स्थापित करेगा और हमें
शाश्वत जीवन में ले जायेगा।

पाप और मृत्यु पर विजय

6 क्या इसका अर्थ यह है कि हमें पाप करते
रहना चाहिए, ताकि अनुग्रह की वृद्धि हो?
2कदापि नहीं! हम, जो पाप की ओर से मर
चुके हैं, अब कैसे पाप में जीते रहेंगे? 3क्या आप
लोग यह नहीं जानते कि येशु मसीह का जो
बपतिस्मा हम सब को मिला है, वह उनकी
मृत्यु का बपतिस्मा है? 4हम उनकी मृत्यु का
बपतिस्मा ग्रहण कर उनके साथ इसलिए
दफनाये गये हैं कि, जिस तरह मसीह पिता के
महिमामय सामर्थ्य से मृतकों में से जी उठे हैं,
उसी तरह हम भी एक नया जीवन जीयें।
5यदि हम इस प्रकार मसीह के समान मर
कर उनके साथ एक हो गये हैं, तो हम उन्हीं
के समान पुनरुत्थान में भी उनके साथ एक
होंगे। 6हमें कभी नहीं भूलना चाहिए कि हमारा
पुराना स्वभाव मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया
जा चुका है, जिससे पाप का शरीर मर जाये और
हम फिर पाप के दास न बनें; 7क्योंकि जो मर
चुका है, वह पाप की गुलामी से मुक्त हो गया
है।

8हमें विश्वास है कि यदि हम मसीह के साथ
मर गये हैं, तो हम उन्हीं के जीवन के भी भागी
होंगे; 9 क्योंकि हम जानते हैं कि मसीह मृतकों
में से जी उठने के बाद फिर कभी नहीं मरेंगे।
अब मृत्यु का उन पर कोई वश नहीं। 10जब वह
मरे, तो पाप की ओर से एक बार ही मर गये;
परन्तु अब वह जीवित होकर परमेश्वर के लिए
ही जीते हैं। 11आप लोग भी अपने को ऐसा ही
समझें— पाप के लिए मरा हुआ और येशु
मसीह में परमेश्वर के लिए जीवित।

12अब आप लोग अपने मरणशील शरीर में
पाप का राज्य स्वीकार नहीं करें और उसकी
वासनाओं के अधीन नहीं रहें। 13आप अपने
अंगों को अधर्म के साधन बनने के लिए पाप को
अर्पित नहीं करें। आप अपने को मृतकों में से
पुनर्जीवित समझकर परमेश्वर के प्रति अर्पित
करें और अपने अंगों को धार्मिकता के साधन
बनने के लिए परमेश्वर को सौंप दें। 14आप लोगों
पर पाप का कोई अधिकार नहीं रहेगा। अब
आप व्यवस्था के नहीं, बल्कि अनुग्रह के
अधीन हैं।

धार्मिकता के अधीन

15तो, क्या हम इसलिए पाप करें कि हम
व्यवस्था के नहीं, बल्कि अनुग्रह के अधीन हैं?
कदापि नहीं! 16क्या आप यह नहीं समझते कि
आप अपने को आज्ञाकारी दास के रूप में
जिसके प्रति अर्पित करते हैं और जिसकी आज्ञा
का पालन करते हैं, आप उसी के दास बन जाते

5 : 18 1 कुर 15 : 22 **5 :19** यश 53 : 11 **5 : 20** रोम 4 : 15; 7 : 8; गल 3 : 19 **5 : 21** रोम 6 : 23 **6 : 1** रोम 3 : 5-8 **6 : 2** गल 2 : 19; 1 पत 2 : 24 **6 : 3** गल 3 : 27 **6 : 4** 1 पत 2 : 21; कुल 2 : 12 **6 : 5** फिल 3 : 10-11 **6 : 6** गल 5 : 24 **6 : 7** 1 पत 4 : 1 **6 : 10** इब्र 9 : 26-28; 1 पत 3 : 18 **6 : 11** 2 कुर 5 : 15; 1 पत 2 : 24 **6 : 12** उत 4 : 7 **6 : 13** रोम 12 : 1; इफ 2 : 5; 5 : 14 **6 : 14** 1 यो 3 : 6 **6 : 15** रोम 5 : 17, 21 **6 : 16** यो 8 : 34; 2 पत 2 : 19

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हैं? यह दासता चाहे पाप की हो, जिसका
परिणाम मृत्यु है; चाहे परमेश्वर की हो, जिसके
आज्ञापालन का परिणाम धार्मिकता है।
[17]परमेश्वर को धन्यवाद कि आप लोग, जो
पहले पाप के दास थे, अब सम्पूर्ण हृदय से उस
मानक शिक्षा के मार्ग पर चलने लगे, जो
अनुगमन के लिए आपको दी गयी है। [18]आप
पाप से मुक्त हो कर धार्मिकता के दास बन गये
हैं। [19]मैं आपकी मानवीय दुर्बलता के कारण
साधारण मानव जीवन का उदाहरण दे रहा हूँ।
आप लोगों ने जिस तरह पहले अपने शरीर को
अशुद्धता और अधर्म के अधीन किया था,
जिससे वह दूषित हो गया था, उसी तरह अब
आप अपने शरीर को धार्मिकता के अधीन कर
दीजिए, जिससे वह पवित्र हो जाये।
[20]क्योंकि जब आप पाप के दास थे, तो
धार्मिकता के नियन्त्रण से मुक्त थे। [21]उस समय
आप को उन कर्मों से क्या लाभ हुआ? अब
उनके कारण आप को लज्जा होती है; क्योंकि
उनका परिणाम मृत्यु है। [22]किन्तु अब पाप से
मुक्त हो कर आप परमेश्वर के दास बन गये
और पवित्रता का फल उत्पन्न कर रहे हैं, जिसका
परिणाम है शाश्वत जीवन; [23]क्योंकि पाप का
वेतन मृत्यु है, किन्तु परमेश्वर का वरदान है
हमारे प्रभु येशु मसीह में शाश्वत जीवन।

विवाहित जीवन से एक दृष्टान्त

7 भाइयो और बहिनो! क्या आप यह नहीं
जानते—मैं विधि-शास्त्र के जानने वालों
से बोल रहा हूँ—कि मनुष्य पर विधि-नियम
का अधिकार तभी तक है, जब तक वह जीवित
है? [2]विवाहित स्त्री तब तक विधि द्वारा अपने
पति से बंधी रहती है, जब तक वह जीवित
रहता है। यदि पति मर जाता है, तो वह अपने
पति के बन्धन से मुक्त हो जाती है। [3]यदि वह
अपने पति के जीवन-काल में किसी दूसरे की
पत्नी बन जाती है, तो वह व्यभिचारिणी
कहलायेगी। किन्तु यदि पति मर जाता है, तो
वह उस बन्धन से मुक्त हो जाती है। और यदि
वह किसी दूसरे की पत्नी बन जाती है, तो वह
व्यभिचारिणी नहीं है।
[4]मेरे भाइयो-बहिनो! आप भी मसीह की
देह से संयुक्त होने के कारण व्यवस्था की ओर
से मर गये और अब किसी दूसरे के, अर्थात्
उन्हीं मसीह के हो गये हैं, जो मृतकों में से जी
उठे। यह इसलिए हुआ कि हम परमेश्वर के
लिए फल उत्पन्न करें। [5]जब हम अपने शारीरिक
स्वाभाव के अधीन थे, तो व्यवस्था से बल
पाकर पापमय वासनाएँ हमारे अंगों में क्रियाशील
थीं और मृत्यु के फल उत्पन्न करती थीं। [6]किन्तु
अब हम उन बातों के लिए मर गये हैं, जो हमें
बन्धन में जकड़ती थीं, इसलिए हम व्यवस्था
से मुक्त हो गये हैं। इस प्रकार हम पुरानी
लिखित व्यवस्था के अनुसार नहीं, बल्कि
आत्मा की नवीन पद्धति के अनुसार परमेश्वर
की सेवा करते हैं।

व्यवस्था और पाप

[7]क्या इसका अर्थ यह है कि व्यवस्था पाप
है? कदापि नहीं! फिर भी व्यवस्था के द्वारा ही
पाप का पता चला। यदि व्यवस्था ने नहीं कहा
होता : "लालच मत करो" तो मैं यह नहीं
जानता कि लालच क्या है। [8]इस आज्ञा से लाभ
उठा कर पाप ने मुझ में हर प्रकार का लालच
उत्पन्न किया। व्यवस्था के अभाव में पाप
निर्जीव है। [9]एक समय था, जब व्यवस्था नहीं
थी और मैं जीवित था। किन्तु आज्ञा के आने
से पाप जीवित हुआ [10]और मैं मर गया। इस
प्रकार वह आज्ञा, जिसे जीवन की ओर ले जाना
चाहिए था, मेरे लिए मृत्यु का कारण बनी;
[11]क्योंकि पाप ने, आज्ञा से लाभ उठा कर, मुझे
धोखा दिया और आज्ञा के द्वारा मुझे मार दिया।
[12]इस प्रकार हम देखते हैं कि व्यवस्था पवित्र
है और आज्ञा पवित्र, उचित एवं कल्याणकारी।
[13]तो, जो बात कल्याणकारी थी, क्या वह मेरे
लिए मृत्यु का कारण बनी? कदापि नहीं! किन्तु

---

6 : 18 यो 8 : 32 6 : 21 रोम 8 : 6, 13; यहेज 16 : 61, 63 6 : 22 पत 1 : 9 6 : 23 रोम 5 : 12 7 : 1 1 कुर 7 : 39 7 : 3 मत 5 : 32 7 : 4 कुल 2 : 14 7 : 5 रोम 6 : 21 7 : 6 रोम 8 : 1-2; 6 : 2, 4 7 : 7 नि 20 : 14, 17; व्य 5 : 18, 21 7 : 8 रोम 5 : 13 7 : 10 याक 1 : 15; लेव 18 : 5 7 : 11 इब 3 : 13 7 : 12 तिम 1 : 8 7 : 13 रोम 5 : 20

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जो बात कल्याणकारी थी, उसी के द्वारा पाप मेरे
लिए मृत्यु का कारण बना। इस प्रकार पाप का
वास्तविक स्वरूप प्रकट हो गया और वह आज्ञा
के माध्यम से बहुत अधिक पापमय प्रमाणित
हुआ।

मनुष्य स्वभाव से पाप के अधीन है

[14]हम जानते हैं कि व्यवस्था आध्यात्मिक
है, किन्तु मैं शारीरिक और पाप के हाथ बिका
हुआ दास हूँ, [15]मैं अपना ही आचरण नहीं
समझता हूँ। क्योंकि मैं जो करना चाहता हूँ, वह
नहीं, बल्कि वही करता हूँ, जिस से मैं घृणा
करता हूँ। [16]यदि मैं वही करता हूँ, जो मैं नहीं
करना चाहता, तो मैं ऐसा करते हुए भी व्यवस्था
से सहमत हूँ और उसे कल्याणकारी समझता
हूँ; [17]किन्तु मैं कर्ता नहीं रहा, बल्कि कर्ता है—
मुझ में निवास करने वाला पाप। [18]मैं जानता हूँ
कि मुझ में, अर्थात् मेरे शारीरिक स्वभाव में,
मसीह का निवास नहीं है; क्योंकि अच्छे कार्य
करने की इच्छा तो मुझ में विद्यमान है, किन्तु
उन्हें कार्यान्वित करने की शक्ति मुझमें नहीं है।
[19]मैं जो भलाई करना चाहता हूँ वह नहीं कर
पाता, बल्कि मैं जो बुराई नहीं चाहता, वही कर
डालता हूँ। [20]किन्तु यदि मैं वही करता हूँ, जिसे
मैं नहीं चाहता, तो कर्ता मैं नहीं हूँ, बल्कि कर्ता
है—मुझ में निवास करने वाला पाप। [21]इस
प्रकार, मेरा अनुभव यह है कि जब मैं भलाई
करने की इच्छा करता हूँ, तो बुराई ही कर पाता
हूँ। [22]मेरा अन्तर्मन परमेश्वर की व्यवस्था पर
मुग्ध है, [23]किन्तु मैं अपने शरीर के अंगों में एक
अन्य व्यवस्था का अनुभव करता हूँ, जो मेरे
अन्तर्मन के नियम से संघर्ष करती है और मुझे
पाप के उस नियम के अधीन करती है, जो मेरे
अंगों में विद्यमान है। [24]मैं कितना अभागा मनुष्य
हूँ! इस मृत्यु के अधीन रहने वाले शरीर से मुझे
कौन मुक्त करेगा? [25]परमेश्वर ही! हमारे प्रभु
येशु मसीह के द्वारा। परमेश्वर को धन्यवाद!
सारांश यह, कि मैं अन्तर्मन से परमेश्वर के
नियम का, किन्तु साथ ही साथ अपने शरीर से
पाप के नियम का पालन करता हूँ।

पवित्र आत्मा द्वारा पवित्रीकरण

8 जो लोग येशु मसीह से संयुक्त हैं, उनके
लिए अब कोई दण्डाज्ञा नहीं रह गयी है;
[2]क्योंकि, ओ मनुष्य! पवित्र आत्मा के विधान
ने, जो येशु मसीह द्वारा जीवन प्रदान करता है,
तुझ को पाप तथा मृत्यु के नियम से मुक्त कर
दिया है। [3]मानव स्वभाव की दुर्बलता के कारण
मूसा की व्यवस्था जो कार्य करने में असमर्थ
थी, वह कार्य परमेश्वर ने कर दिया है। उसने
पाप के प्रायश्चित्त के लिए अपने पुत्र को भेजा,
जिसने पापी मनुष्य के सदृश शरीर धारण
किया। इस प्रकार परमेश्वर ने मानव शरीर में
पाप को दण्डित किया, [4]जिससे हम लोगों में—
जो कि शारीरिक स्वभाव के अनुसार नहीं,
बल्कि आत्मा के अनुसार आचरण करते हैं—
धार्मिकता के संबंध में व्यवस्था की मांग पूर्ण
हो जाए।

[5-6] क्योंकि जो शारीरिक स्वभाव से*
संचालित हैं, वे शारीरिक आचरण की बातों की
चिन्ता करते हैं और इसका परिणाम मृत्यु है; जो
आत्मा से संचालित हैं, वे आत्मा की बातों की
चिन्ता करते हैं और इसका परिणाम जीवन और
शान्ति है। [7]क्योंकि शारीरिक आचरण की चिन्ता
करना परमेश्वर के प्रतिकूल है। यह शारीरिक
चिन्ता परमेश्वर के नियम के अधीन नहीं होती
और हो भी नहीं सकती। [8]जो लोग शारीरिक
स्वभाव के वश में हैं, वे परमेश्वर को प्रसन्न
नहीं कर सकते। [9]यदि परमेश्वर का आत्मा
सचमुच आप लोगों में निवास करता है, तो
आप शारीरिक स्वभाव के वश में नहीं, बल्कि
आत्मा से ही प्रभावित हैं। जिस मनुष्य में मसीह
का आत्मा निवास नहीं करता, वह मसीह का
नहीं। [10]यदि मसीह आप में निवास करते हैं,

---

* शब्दश: ''शरीर के अनुसार''।

7 : 14 भज 51 : 5; यो 3 : 6 **7 : 18** उत 6 : 5; 8 : 21 **7 : 23** गल 5 : 17; याक 4 : 1; 1 पत 2 : 11 **7 : 25** 2 कुर 15 : 57 **8 : 2** रोम 3 : 27; 7 : 23-24 **8 : 3** यो 1 : 14; फि 2 : 7; प्रे 13 : 38; 15 : 10; इब 2 : 17; 4 : 15 **8 : 4** गल 5 : 16, 25 **8 : 6** रोम 6 : 21 **8 : 7** मत 12 : 34; याक 4 : 4; यो 8 : 43; 12 : 39 **8 : 9** 1 कुर 3 : 16; 12 : 3 **8 : 10** गल 2 : 20; फिल 1 : 21; 1 पत 4 : 6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तो पाप के फलस्वरूप शरीर भले ही मृत हो,
किन्तु परमेश्वर के मुक्ति-विधान के फलस्वरूप
पवित्र आत्मा ही तुम्हारा जीवन है।* 11जिसने
येशु को मृतकों में से जिलाया, यदि उसका
आत्मा आप लोगों में निवास करता है, तो
जिसने येशु मसीह को मृतकों में से जिलाया, वह
अपने आत्मा द्वारा, जो आप में निवास करता
है, आपके नश्वर शरीर को भी जीवन प्रदान
करेगा।

12इसलिए, भाइयो और बहिनो ! हम ऋणी
तो हैं, किन्तु शारीरिक स्वभाव के नहीं कि हम
उसके अनुसार जीवन बिताएँ। 13यदि आप
शारीरिक स्वभाव के अनुसार ही जीवन बितायेंगे,
तो अवश्य मर जायेंगे। लेकिन यदि आप आत्मा
की प्रेरणा से शरीर की प्रवृत्तियों का दमन करेंगे,
तो आप को जीवन प्राप्त होगा। 14जो लोग
परमेश्वर के आत्मा से संचालित हैं, वे सब
परमेश्वर के पुत्र-पुत्रियाँ हैं— 15आप लोगों
को दासत्व का आत्मा नहीं मिला है, जिस से
प्रेरित हो कर आप फिर डरने लगें। आप लोगों
को दत्तक संतान बनने का आत्मा ही मिला है,
जिस से प्रेरित हो कर हम पुकार कर कहते हैं,
"अब्बा, हे पिता!" 16यह आत्मा स्वयं हमें
आश्वासन देता है** कि हम सचमुच परमेश्वर
की सन्तान हैं। 17यदि हम सन्तान हैं, तो हम
विरासत के अधिकारी भी हैं— हां, परमेश्वर
के उत्तराधिकारी, वरन् मसीह के सह-
उत्तराधिकारी। केवल एक शर्त्त है कि हम
मसीह के साथ दुःख सहें, जिससे हम उनके
साथ महिमान्वित भी हों।

भावी महिमा

18मैं समझता हूँ कि हम पर जो महिमा प्रकट
होने को है, उसकी तुलना में इस समय का
दुःख नगण्य है; 19क्योंकि समस्त सृष्टि उत्कण्ठा
से उस दिन की प्रतीक्षा कर रही है, जब मनुष्य
परमेश्वर की संतान के रूप में प्रकट होंगे।+
20यह सृष्टि तो इस संसार की असारता के
अधीन हो गयी है—अपनी इच्छा से नहीं,
बल्कि उसकी इच्छा से, जिसने उसे अधीन
बनाया है— किन्तु यह आशा भी बनी रही
21कि वह विकृति की दासता से मुक्त हो
जायेगी और परमेश्वर की सन्तान की महिमामय
स्वतन्त्रता की सहभागी बनेगी। 22हम जानते हैं
कि समस्त सृष्टि मिलकर अब तक मानो
प्रसव-पीड़ा में कराह रही है 23और सृष्टि ही
नहीं, वरम् हम भी भीतर-ही-भीतर कराहते
हैं। हमें तो पवित्र आत्मा मिल चुका है, जो
परमेश्वर के कृपादानों का प्रथम फल है।
लेकिन हम अपने शरीर की विमुक्ति की
प्रतीक्षा कर रहे हैं, जब हम परमेश्वर की दत्तक
संतान होंगे। 24इस आशा में हमारा उद्धार हुआ
है। यदि कोई वह बात देखता है, जिसकी वह
आशा करता है, तो यह आशा नहीं कही जा
सकती। मनुष्य जिस वस्तु को देख रहा है,
उसकी आशा क्यों करेगा? 25हम उसकी आशा
करते हैं, जिसे हम अब तक नहीं देख सके हैं।
इसलिए हमें धैर्य के साथ उसकी प्रतीक्षा करनी
पड़ती है।

26पवित्र आत्मा भी हमारी दुर्बलता में हमारी
सहायता करता है। हम यह नहीं जानते कि हमें
कैसे प्रार्थना करना चाहिए, किन्तु आत्मा स्वयं
आहें भरकर—जो शब्दों द्वारा प्रकट नहीं की जा
सकती हैं—हमारे लिए विनती करता है।
27परमेश्वर हमारे हृदय का रहस्य जानता है।
वह समझता है कि आत्मा का अभिप्राय क्या
है, क्योंकि आत्मा परमेश्वर की इच्छानुसार
सन्तों के लिए विनती करता है।

28हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम
करते हैं और उसके उद्देश्य के अनुसार बुलाये
गये हैं, परमेश्वर उनके कल्याण के लिए सभी

---

* अथवा, "तुम्हारी आत्मा को जीवन प्राप्त है।" ** अथवा, "हमारी आत्मा के साथ एक ही साक्षी देता है।"
+शब्दशः, "परमेश्वर के पुत्रों के प्रकट होने की प्रतीक्षा कर रही है।"

8 : 12 रोम 6 : 7, 18 **8 : 13** गल 6 : 8; इफ 4 : 22-24 **8 : 15** 2 तिम 1 : 7; गल 4 : 5-6 **8 : 16** 2 कुर 1 : 22 **8 : 17** गल 4 : 7; प्रक 21 : 7 **8 : 18** 2 कुर 4 : 17; रोम 5 : 2; प्रज्ञ 3 : 5-6 **8 : 19** कुल 3 : 4 **8 : 20** सभ 1 : 2; उत 3 : 17-19; 5 : 29 **8 : 21** 2 पत 3 : 13; 1 यो 3 : 2 **8 : 23** 2 कुर 5 : 2; गल 5 : 5 **8 : 24** 2 कुर 5 : 7 **8 : 27** भज 139 : 1; 1 कुर 4 : 5 **8 : 28** इफ 1 : 11; 3 : 11

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बातों में उनकी सहायता करता है;* 29क्योंकि
परमेश्वर ने निश्चित किया कि जिन्हें उसने
पहले से अपना समझा, वे उसके पुत्र के
प्रतिरूप बनाये जायेंगे, जिससे उसका पुत्र इस
प्रकार बहुत-से भाई-बहिनों में पहिलौठा हो।
30उसने जिन्हें पहले से निश्चित किया, उन्हें
बुलाया भी है: जिन्हें बुलाया, उन्हें धार्मिक भी
ठहराया है और जिन्हें धार्मिक ठहराया है, उन्हें
महिमान्वित भी किया है।

परमेश्वर का प्रेम

31और कहना ही क्या है? यदि परमेश्वर
हमारे पक्ष में है, तो कौन हमारे विरुद्ध होगा?
32उसने अपने निजी पुत्र को भी नहीं बचाया,
उसने हम सब के लिए उसे समर्पित कर दिया।
तो, इतना देने के बाद, क्या वह हमें अपने पुत्र
के साथ सब कुछ नहीं देगा? 33जिन्हें परमेश्वर
ने चुना है, उन पर कौन अभियोग लगा सकेगा?
जिन्हें परमेश्वर ने दोष-मुक्त कर दिया है,
34उन्हें कौन दोषी ठहरायेगा? क्या येशु मसीह
ऐसा करेंगे? वह तो मर गये, बल्कि जी उठे और
परमेश्वर के दाहिने हाथ विराजमान हो कर
हमारे लिए निवेदन करते रहते हैं। 35कौन हम
को मसीह के प्रेम से अलग कर सकता है? क्या
विपत्ति या संकट? क्या अत्याचार, भूख,
नग्नता, जोखिम या तलवार? 36जैसा कि धर्मग्रन्थ
में लिखा है, ''तेरे कारण दिन-भर हमारा वध
किया जाता है। हमें वध होने वाली भेड़ जैसा
समझा गया।'' 37किन्तु इन सब बातों में हम
उन्हीं के द्वारा पूर्ण विजय प्राप्त करते हैं,
जिन्होंने हमसे प्रेम किया है। 38मुझे दृढ़ विश्वास
है कि न तो मृत्यु न जीवन, न स्वर्गदूत न
नरकदूत, न वर्तमान न भविष्य, न सामर्थ्यगण,
39न आकाश में या पाताल में कोई शक्ति और
न समस्त सृष्टि में कोई वस्तु हमें परमेश्वर के
उस प्रेम से अलग कर सकती है, जो हमें हमारे
प्रभु येशु मसीह द्वारा मिला है।

परमेश्वर और उसके मनोनीत लोग

9 मैं मसीह में सच कहता हूँ और मेरा अन्तः-
करण पवित्र आत्मा में इस बात की साक्षी
है कि मैं झूठ नहीं बोलता— 2मेरे हृदय में भारी
पीड़ा है तथा मुझे निरन्तर दुःख होता है। 3मैं तो
यहां तक चाहता हूँ कि अपने उन भाई-बहिनों
के कल्याण के लिए, जो शरीर के नाते मेरे
सजातीय हैं, स्वयं ही शापग्रस्त हो जाऊँ और
मसीह से अलग हो जाऊँ। 4वे इस्राएली हैं।
परमेश्वर ने उन्हें गोद लिया था। उन्हें परमेश्वर
के सान्निध्य की महिमा प्राप्त हुई। परमेश्वर ने
उनके साथ विधानों की स्थापना की तथा उन्हें
मूसा की व्यवस्था प्रदान की है। उन्हें उपासना-
विधि तथा प्रतिज्ञाएँ मिली हैं। 5महान पूर्वज उन्हीं
के हैं और शरीर के नाते मसीह उन्हीं में से हैं।
परम प्रधान परमेश्वर की युगानुयुग स्तुति
हो!** आमेन!

6फिर भी यह नहीं समझना चाहिए कि
परमेश्वर का वचन रद्द हो गया है; क्योंकि
इस्राएल के वंश में उत्पन्न सभी लोग सच्चे
इस्राएली नहीं हैं 7और अब्राहम के वंश में जन्म
लेने से ही सभी उनकी सच्ची सन्तान नहीं हो
जाते; क्योंकि धर्मग्रन्थ कहता है, ''जो इसहाक
के वंश में जन्म लेते हैं, वे ही तेरे वंशज माने
जायेंगे।'' 8इसका अर्थ यह है कि जो प्रकृति
के अनुसार जन्म लेते हैं, वे परमेश्वर की सन्तान
नहीं हैं, बल्कि जिनका जन्म प्रतिज्ञा के अनुसार
हुआ, वे ही वंशज माने जाते हैं; 9क्योंकि प्रतिज्ञा
के ये शब्द थे: ''मैं निर्धारित समय पर फिर
आऊँगा और तब सारा को एक पुत्र उत्पन्न
होगा।'' 10इतना ही नहीं—रिबका के गर्भ में
एक ही पुरुष, अर्थात् हमारे पूर्वज इसहाक से
जुड़वां बच्चे हुए। 11-12उसके दोनों बच्चों का
जन्म भी नहीं हुआ था और उन्होंने उस समय

* अथवा, ''उनके लिए सब बातें मिलकर भलाई ही उत्पन्न करती हैं।'' ** अथवा, ''वह परम प्रधान परमेश्वर हैं; उनकी युगानुयुग स्तुति हो।''

8 : 29 कुल 1 : 18; इब्र 1 : 6 **8 : 31** भज 118 : 6; मत 1 : 23 **8 : 32** यो 3 : 16 **8 : 33** यश 50 : 8 **8 : 34** भज 110 : 1; 1 यो 2 : 1 **8 : 36** भज 44 : 22; 2 कुर 4 : 11 **8 : 37** यो 16 : 33 **9 : 3** नि 32 : 32 **9 : 4** नि 4 : 22; व्य 7 : 6; 14 : 1-2 **9 : 5** रोम 1 : 25; मत 1 : 1; लू 3 : 23 यो 1 : 1 **9 : 6** रोम 2 : 28; गण 23 : 19 **9 : 7** उत 21 : 12 **9 : 8** गल 4 : 23 **9 : 9** उत 18 : 10 **9 : 10** उत 25 : 11 **9 : 12** उत 25 : 23

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तक कोई पाप या पुण्य का काम नहीं किया था,
जब रिबका से यह कहा गया, "अग्रज अपने
अनुज के अधीन रहेगा।" यह इसलिए हुआ
कि परमेश्वर के निर्वाचन का उद्देश्य बना रहे,
जो मनुष्य के कर्मों पर नहीं, बल्कि बुलाने वाले
के निर्णय पर निर्भर है। 13इसलिए धर्मग्रन्थ में
लिखा है, "मैंने याकूब से प्रेम किया और
एसाव से बैर।"

14इस सम्बन्ध में हम क्या कहें? क्या
परमेश्वर अन्याय करता है? कदापि नहीं!
15उसने मूसा से कहा, "मैं जिस पर दया करना
चाहूँगा, उसी पर दया करूँगा और जिस पर
तरस खाना चाहूँगा, उसी पर तरस खाऊँगा।"
16इसलिए यह मनुष्य की इच्छा या उसके
परिश्रम पर नहीं, बल्कि दया करने वाले
परमेश्वर पर निर्भर रहता है। 17धर्मग्रन्थ मिस्र
देश के राजा फरओ से कहता है, "मैंने तुझे
इसलिए ऊपर उठाया है कि तुझ में अपना
सामर्थ्य प्रदर्शित करूँ और सारी पृथ्वी पर अपने
नाम का प्रचार करूँ।" 18इसलिए परमेश्वर जिस
पर चाहे, दया करता है और जिसे चाहे,
हठधर्मी बना देता है।

परमेश्वर परम स्वतन्त्र है

19तुम मुझ से कहोगे, "तो, परमेश्वर मनुष्य
को क्यों दोष देता है? परमेश्वर की इच्छा का
विरोध कौन कर सकता है?" 20अरे भई! तुम
कौन हो, जो परमेश्वर से विवाद करते हो? क्या
गढ़ी हुई प्रतिमा अपने गढ़ने वाले से कहती है,
"तुमने मुझे ऐसा क्यों बनाया?" 21क्या कुम्हार
को यह अधिकार नहीं कि वह मिट्टी के एक
ही लोंदे से एक पात्र विशिष्ट प्रयोजन के लिए
बनाये और दूसरा पात्र साधारण प्रयोजन के
लिए? 22यदि परमेश्वर ने अपना क्रोध प्रदर्शित
करने तथा अपना सामर्थ्य प्रकट करने के उद्देश्य
से बहुत धैर्य से कोप के उन पात्रों को सहन
किया, जो विनाश के लिए तैयार थे, तो कौन
आपत्ति कर सकता है? 23उसने ऐसा इसलिए
किया कि वह दया के उन पात्रों पर अपनी
महिमा का वैभव प्रकट करना चाहता था, जिन्हें
उसने पहले से ही उस महिमा के लिए तैयार
किया था।

24ऐसे दया के पात्र हम हैं, जिन्हें उसने न
केवल यहूदियों में से बुलाया है, बल्कि गैर-
यहूदियों में से भी। 25जैसा कि वह नबी होशे
के ग्रन्थ में कहता है, "जो लोग मेरी प्रजा नहीं
थे, मैं उन्हें अपनी प्रजा कहूँगा और जो मुझे प्रिय
नहीं थे, मैं उन्हें प्रिय कहूँगा। 26और जिस स्थान
पर उसने उन से यह कहा था, 'तुम मेरी प्रजा
नहीं हो' वहीं वे जीवन्त परमेश्वर की संतान
कहलायेंगे।"

इस्राएली कर्मकाण्ड पर निर्भर रहे

27नबी यशायाह इस्राएल के विषय में पुकार
कर कहते हैं, "इस्राएलियों की संख्या समुद्र
के बालू-कणों के सदृश क्यों न हो, फिर भी
उन में अवशेष मात्र मुक्ति पायेगा, 28क्योंकि प्रभु
पूर्ण रूप से एवं शीघ्र ही पृथ्वी पर अपना वचन
पूरा करेगा।" 29नबी यशायाह ने पहले भी कहा
था, "यदि स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु ने हमारे
लिए कुछ वंशज शेष नहीं छोड़े होते, तो हम
सदोम और गमोरा नगरों के सदृश पूर्णतः नष्ट
हो गये होते।"

30हम क्या कहें? इसका निष्कर्ष यह है कि
गैर-यहूदियों ने, जो धार्मिकता की खोज में
नहीं लगे हुए थे, धार्मिकता, अर्थात् विश्वास
पर आधारित धार्मिकता प्राप्त की। 31परन्तु
इस्राएल, जो धार्मिकता की व्यवस्था के प्रति
उत्साह दिखलाता था, व्यवस्था की परिपूर्णता
तक नहीं पहुँच सका। 32ऐसा क्यों हुआ? क्योंकि
इस्राएली विश्वास पर नहीं, बल्कि कर्मकाण्ड
पर निर्भर रहते थे। उनके पैर "ठोकर के

9 : 13 मल 1 : 2-3 **9 : 14** व्य 32 : 4 **9 : 15** नि 33 : 19 **9 : 16** इफ 2 : 8 इफ 2 : 8 **9 : 17** नि 9 : 16 (यू॰ पाठ) **9 : 18** नि 4 : 21; 7 : 3; 9 : 12; 14 : 4, 17 **9 : 20** अय्य 33 : 13; यश 29 : 16; 45 : 9; प्रज्ञ 12 : 12 **9 : 21** यिर 18 : 6; प्रज्ञ 15 : 7; प्रव 33 : 13 **9 : 22** यिर 50 : 25; प्रज्ञ 12 : 20 **9 : 23** इफ 1 : 3-12; रोम 2 : 4; 8 : 29 **9 : 25** हो 2 : 23 **9 : 26** हो 1 : 10 **9 : 27** यश 10 : 22-23 (यू॰ पाठ); रोम 11 : 5 **9 : 29** यश 1 : 9; (यू॰ पाठ); व्य 29 : 23 **9 : 30** रोम 10 : 20 **9 : 31** रोम 10 : 2-3 **9 : 32** यश 8 : 14 **9 : 33** यश 28 : 16 (यू॰ पाठ); मत 21 : 42; 1 पत 2 : 6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
पत्थर'' से लग गये और वे गिर पड़े। 33जैसे
कि धर्मग्रन्थ में लिखा है, ''देखो, मैं सियोन में
ठोकर का पत्थर, लोगों को गिराने वाली शिला
रख रहा हूँ। परन्तु जो उस पर विश्वास करता
है, उसे लज्जित नहीं होना पड़ेगा।''

10 भाइयो और बहिनो! मेरी हार्दिक
अभिलाषा और परमेश्वर से मेरी प्रार्थना
यह है कि इस्राएली मुक्ति प्राप्त करें। 2मैं उनके
विषय में यह साक्षी दे सकता हूँ कि उन में
परमेश्वर के प्रति उत्साह है, किन्तु यह उत्साह
विवेकपूर्ण नहीं है। 3वे उस धार्मिकता को नहीं
जानते, जिसे परमेश्वर चाहता है, और अपनी
धार्मिकता की स्थापना करने में लगे रहते हैं।
इसलिए उन्होंने परमेश्वर द्वारा निर्धारित धार्मिकता
के अधीन रहना अस्वीकार किया; 4क्योंकि
मसीह व्यवस्था को परिपूर्णता तक पहुँचाते हैं
और प्रत्येक विश्वास करने वाले को धार्मिकता
प्रदान करते हैं।

अब यहूदी और यूनानी में कोई भेद नहीं रहा

5मूसा व्यवस्था पर आधारित धार्मिकता के
विषय में लिखते हैं, ''जो मनुष्य इन बातों का
पालन करेगा, उसे इनके द्वारा जीवन प्राप्त
होगा।'' 6किन्तु विश्वास पर आधारित धार्मिकता
का वक्तव्य यह है, ''तुम अपने मन में यह मत
कहो कि कौन स्वर्ग जायेगा?'' अर्थात् मसीह
को नीचे ले आने के लिए, 7अथवा ''कौन
अधोलोक में उतरेगा?'', अर्थात् मसीह को
मृतकों में से ऊपर ले आने के लिए। 8किन्तु उस
धार्मिकता का कथन क्या है?, ''वचन तुम्हारे
पास है, वह तुम्हारे मुख में और तुम्हारे हृदय
में है।'' यह विश्वास का वह वचन है, जिसका
हम प्रचार करते हैं। 9क्योंकि यदि तुम मुख से
स्वीकार करते हो कि येशु प्रभु हैं और हृदय से
विश्वास करते हो कि परमेश्वर ने उन्हें मृतकों
में से जिलाया, तो तुम्हें मुक्ति प्राप्त होगी।
10हृदय से विश्वास करने पर मनुष्य धार्मिक
ठहरता है और मुख से स्वीकार करने पर उसे
मुक्ति प्राप्त होती है। 11धर्मग्रन्थ कहता है, ''जो
कोई उस पर विश्वास करता है, उसे लज्जित
नहीं होना पड़ेगा।'' 12इसलिए यहूदी और यूनानी
में कोई भेद नहीं है—सब का प्रभु एक ही है।
वह उन सब के प्रति उदार है, जो उसकी दुहाई
देते हैं; 13क्योंकि ''जो कोई प्रभु के नाम की
दुहाई देगा, उसे मुक्ति प्राप्त होगी।''

14परन्तु यदि लोगों को उस में विश्वास नहीं,
तो वे उसकी दुहाई कैसे दे सकते हैं? यदि
उन्होंने उसके विषय में कभी सुना नहीं, तो उस
में विश्वास कैसे कर सकते हैं? यदि कोई
प्रचारक न हो, तो वे उसके विषय में कैसे सुन
सकते हैं? 15और यदि वह भेजा नहीं जाये, तो
कोई प्रचारक कैसे बन सकता है? धर्मग्रन्थ में
लिखा है, ''कल्याण का शुभ समाचार सुनाने
वालों के चरण कितने सुन्दर लगते हैं!''
16किन्तु सब ने शुभ समाचार का स्वागत नहीं
किया। नबी यशायाह कहते हैं ''प्रभु! किसने
हमारे सन्देश पर विश्वास किया है?'' 17इस
प्रकार हम देखते हैं कि संदेश सुनने से विश्वास
उत्पन्न होता है और जो सुनाया जाता है, वह
मसीह का वचन है।

18अब मैं यह पूछता हूँ: ''क्या उन्होंने सुना
नहीं?'' उन्होंने अवश्य सुना है, क्योंकि ''उनकी
वाणी समस्त संसार में फैल गयी है और उनके
शब्द पृथ्वी के सीमान्तों तक।'' 19मैं फिर पूछता
हूँ: क्या इस्राएल ने वह सन्देश नहीं समझा?
पहले तो प्रभु ने मूसा के द्वारा यह कहा, ''मैं
एक ऐसे राष्ट्र के प्रति, जो राष्ट्र नहीं है, तुम में
ईर्ष्या उत्पन्न करूँगा और एक विवेकहीन राष्ट्र
के प्रति तुम में क्रोध उत्पन्न करूँगा।'' 20फिर
यशायाह ने साहस कर प्रभु का यह कथन
सुनाया, ''जो मुझे नहीं खोजते थे, उन्होंने मुझे
पाया और जो मेरे विषय में प्रश्न नहीं पूछते थे,
उन पर मैंने अपने को प्रकट किया।'' 21किन्तु

---

10 : 1 प्रे 22 : 3 **10 : 3** रोम 9 : 31-32 **10 : 4** मत 5 : 17; यो 3 : 18; इब्र 8 : 13 **10 : 5** लेव 18 : 5; गल 3 : 12 **10 : 6** व्य 30 : 12-13 **10 : 8** व्य 30 : 14 **10 : 9** मत 10 : 32; 1 कुर 12 : 3 **10 : 11** यश 28 : 16 (यू० पाठ) **10 : 12** प्रे 10 : 34; 15 : 9 **10 : 13** योए 2 : 32 **10 : 15** यश 52 : 7 **10 : 16** यश 53 : 1 (यू० पाठ) **10 : 17** यो 17 : 20 **10 : 18** भज 19 : 4 1(यू० पाठ) **10 : 19** व्य 32 : 51 **10 : 20** यश 65 : 1 (यू० पाठ) **10 : 21** यश 65 : 2 (यू० पाठ);

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इस्राएल के विषय में नबी ने प्रभु का यह कथन
सुनाया, "आज्ञा न मानने वाली एवं विद्रोही
प्रजा की ओर मैं दिन भर अपने हाथ फैलाये
रहा।"

परमेश्वर ने अपनी प्रजा इस्राएल को नहीं त्यागा

11 इसलिए मन में यह प्रश्न उठता है,
"क्या परमेश्वर ने अपनी प्रजा को
त्याग दिया है?" निश्चय ही नहीं! मैं भी तो
इस्राएली हूँ, अब्राहम के वंश का हूँ और
बिन्यामिन के कुल का। 2परमेश्वर ने अपनी
उस प्रजा को, जिसे उसने अपनाया, नहीं त्यागा
है। क्या आप नहीं जानते कि धर्मग्रन्थ नबी
एलीयाह के विषय में क्या कहता है, जब वह
परमेश्वर के सामने इस्राएल पर अभियोग
लगाते हैं?— 3"प्रभु! उन्होंने तेरे नबियों का
वध किया है। उन्होंने तेरी वेदियों को नष्ट कर
डाला है। मैं अकेला बच गया हूँ और वे मेरे
प्राण लेना चाहते हैं।" 4इस पर दिव्य वाणी ने
उन से क्या कहा? "मैंने सात हज़ार लोगों को
अपने लिए बचा रखा है, जिन्होंने बअल देवता
के सामने घुटना नहीं टेका है।" 5इसी प्रकार
इस समय भी परमेश्वर की कृपा ने एक
"अवशेष" चुना है। 6यदि यह उसकी कृपा
द्वारा हुआ, तो निर्वाचन लोगों के कर्मों पर
आधारित नहीं है। नहीं तो कृपा, कृपा नहीं रह
जाती।

7तो इसका निष्कर्ष क्या है? इस्राएल जिस
बात की खोज में था, उसे नहीं पा सका, किन्तु
चुने हुए लोगों ने उसे पा लिया और शेष लोगों
का हृदय कठोर बन गया। 8जैसा कि धर्मग्रन्थ
में लिखा है,—

"परमेश्वर ने उनकी बुद्धि को जड़ बना
दिया।
उसने उन्हें ऐसी आँखे दे दीं,
जो देखती नहीं
और ऐसे कान,
जो सुनते नहीं
और उनकी यह दशा आज तक बनी हुई
है।"

9और दाऊद कहते हैं,
"उनका भोजन उनके लिए फन्दा और जाल
बने;
वह उनके लिए पतन और दण्ड का कारण
हो।
10उनकी आँखें धुँधली पड़ जायें,
जिससे वे देख न सकें।
तू उनकी कमर सदा झुकाये रख।"

गैर-यहूदी घमण्ड न करें

11पर मैं पूछता हूँ: "क्या यहूदी ठोकर लगने
के कारण सदा के लिए पतित हो गये हैं?"
निश्चय ही नहीं! उनके अपराध के कारण ही
गैर-यहूदियों को मुक्ति उपलब्ध है, जिससे
यहूदी मुक्ति प्राप्त करने के लिए उनसे स्पर्धा
करें। 12जब यहूदियों के अपराध तथा उनकी
अपूर्णता से समस्त गैर-यहूदी संसार की
समृद्धि हो गयी है, तो उनकी परिपूर्णता से क्या
कुछ नहीं होगा!

13मैं आप गैर-यहूदियों से यह कहता हूँ। मैं
तो गैर-यहूदियों में प्रचार करने भेजा गया* और
इस धर्मसेवा पर गर्व भी करता हूँ। 14किन्तु मैं
अपने सजातियों में प्रतिस्पर्धा उत्पन्न करने की,
और इस प्रकार उन में कुछ लोगों का उद्धार
करने की आशा भी रखता हूँ; 15क्योंकि यदि
उनके परित्याग के फलस्वरूप परमेश्वर के
साथ संसार का मेल हो गया है, तो उनके
स्वीकार का परिणाम क्या होगा? मृतकों के
लिए+ जीवन!

16यदि गुँधे हुए आटे का पहला पेड़ा पवित्र
है, तो सारा गुँधा हुआ आटा पवित्र है और यदि
जड़ पवित्र है, तो डालियाँ भी पवित्र हैं। 17यदि

---

* अथवा, "प्रेरित हूँ"। +शब्दशः, "मृतकों में से"

11 : 1 भज 94 : 14; 1 शम 12 : 22; यिर 31 : 37; फिल 3 : 5 11 : 2 1 रा 19 : 10, 14 11 : 4 1 रा 19 : 18 11 : 5 रोम 9 : 27 11 : 6 गल 3 : 18 11 : 7 रोम 9 : 31 11 : 8 यश 29 : 10; व्य 29 : 4 11 : 9 भज 69 : 22-23 (यू० पाठ); 35 : 8 11 : 11 व्य 32 : 11; प्रे 13 : 46; रोम 10 : 19 11 : 14 तिम 4 : 16 11 : 16 गण 15 : 17-31 11 : 17 इफ 2 : 11-19 11 : 18 यो 4 : 22

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कुछ डालियाँ तोड़ कर अलग कर दी गयी हैं
और तुम, ओ गैर-यहूदियो ! जो जंगली जैतून
हो, उनकी जगह पर कलम लगाये गये और
जैतून की जड़ तथा उसके रस-भंडार के
भागीदार बने, [18]तो तुम अपने को डालियों से
बढ़ कर न समझो। यदि तुम गर्व करना चाहते
हो, तो याद रखो कि तुम जड़ को नहीं संभालते,
बल्कि जड़ तुम को सँभालती है। [19]तुम कहोगे,
"डालियाँ इसलिए काट कर अलग कर दी
गयीं कि मुझे कलम लगाया जाये।" [20]ठीक है,
वे अविश्वास के कारण काट कर अलग कर
दिये गये और तुम विश्वास के बल पर अपने
स्थान पर बने हुए हो। अतएव घमण्ड न करो,
वरन् सावधान रहो। [21]यदि परमेश्वर ने मूल
डालियों पर दया नहीं की, तो वह तुम पर भी
दया नहीं करेगा। [22]परमेश्वर की दयालुता और
कठोरता, दोनों पर विचार करो: पतित लोगों के
प्रति उसकी कठोरता है और तुम्हारे प्रति उसकी
ईश्वरीय दयालुता। शर्त यह है कि तुम उसकी
दयालुता के योग्य बने रहो। नहीं तो तुम भी
काट कर अलग कर दिये जाओगे। [23]दूसरी ओर,
यदि वे अपने अविश्वास में बने नहीं रहेंगे, तो
वे भी कलम लगाये जायेंगे; क्योंकि परमेश्वर
उन्हें फिर कलम लगाने में समर्थ है। [24]यदि तुम
प्रकृति से जंगली जैतून की डालियाँ हो और
उस से कट कर अपनी प्रकृति के विरुद्ध असली
जैतून में कलम लगाये गये हो, तो वे कहीं
अधिक सुगमता से अपनी प्रकृति के अनुकूल
अपने निजी जैतून में कलम लगाये जा सकेंगे।

परमेश्वर सब पर करुणा करता है

[25]भाइयो और बहिनो ! कहीं ऐसा न हो कि
आप अपने को बहुत बुद्धिमान समझ बैठें।
इसलिए मैं आप लोगों पर यह रहस्य प्रकट
करना चाहता हूँ—इस्राएल का एक भाग तब
तक अन्धा बना रहेगा, जब तक गैर-यहूदियों
की पूरी जनसंख्या का प्रवेश न हो जाये। [26]ऐसा
हो जाने पर सम्पूर्ण इस्राएल को मुक्ति प्राप्त
होगी। जैसा कि धर्मग्रन्थ में लिखा है, "सियोन
में मुक्तिदाता का आगमन होगा और वह याकूब
से अधर्म को दूर कर देगा। [27]जब मैं उनके
पाप हर लूँगा, तो यह उनके लिए मेरा विधान
होगा।" [28]शुभ समाचार की दृष्टि से, वे तो आप
गैर-यहूदियों के कारण परमेश्वर के शत्रु हैं;
किन्तु निर्वाचन की दृष्टि से, वे पूर्वजों के कारण
परमेश्वर के कृपापात्र हैं; [29]क्योंकि परमेश्वर न
तो अपने वरदान वापस लेता और न अपना
आह्वान टाल देता है। [30]जिस तरह आप लोग
पहले परमेश्वर की अवज्ञा करते थे और अब,
यहूदियों की अवज्ञा के कारण, परमेश्वर के
कृपापात्र बन गए हैं, [31]उसी तरह उन्होंने अब
परमेश्वर की अवज्ञा की, ताकि आपके कृपापात्र
बनने के कारण वे भी दया प्राप्त करें।
[32]परमेश्वर ने सब को अवज्ञा के पाप में फँसने
दिया, क्योंकि वह सब पर दया दिखाना चाहता
था। [33]अहा ! कितना अगाध है परमेश्वर का
वैभव, बुद्धि और ज्ञान! कितने दुर्बोध हैं उसके
निर्णय! कितने रहस्यमय हैं उसके मार्ग!
[34]जैसा धर्मग्रंथ में कहा गया, "प्रभु का मन
कौन जान सका? उसका परामर्शदाता कौन
हुआ? [35]किसने परमेश्वर को कभी कुछ दिया
है, जो वह बदले में कुछ पाने का दावा कर
सके?"

[36]सब कुछ परमेश्वर से, परमेश्वर के द्वारा
तथा परमेश्वर के लिए है। उसी की युगयुगों
तक महिमा हो! आमेन!

ईश्वरीय वरदानों का सदुपयोग

12 अत:, भाइयो और बहिनो! मैं परमेश्वर
की दया के नाम पर अनुरोध करता हूँ
कि आप जीवन्त, पवित्र तथा सुग्राह्य बलि के
रूप में अपने को परमेश्वर के प्रति अर्पित करें;

---

11 : 20 रोम 12 : 16 **11 : 22** यो 15 : 2, 4; इब्र 3 : 4 **11 : 23** 2 कुर 3 : 16 **11 : 25** लू 21 : 24; रोम 12 : 16; यो 10 : 16 **11 : 26** भज 14 : 7; यश 59 : 20 (यू० पाठ) 27 : 9; मल 23 : 39 **11 : 27** यिर 31 : 33-34; यश 27 : 9 (यू० पाठ) **11 : 32** गल 3 : 22; 1 तिम 2 : 4 **11 : 33** रोम 9 : 23; 10 : 12; यश 45 : 15 प्रज्ञ 17 : 1 **11 : 34** यश 40 : 13 (यू० पाठ); अय्य 15 : 8; यिर 23 : 18; 1 कुर 2 : 16 **12 : 1** रोम 6 : 11, 13; 1 पत 2 : 5; यो 4 : 24

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यही आपकी आत्मिक उपासना है। 2आप इस
संसार के अनुरूप आचरण न करें, बल्कि सब
कुछ नयी दृष्टि से देखें और अपना स्वभाव
बदल लें। इस प्रकार आप जान जायेंगे कि
परमेश्वर क्या चाहता है और उसकी दृष्टि में
क्या भला, सुग्राह्य तथा सर्वोत्तम है।
3उस कृपा के अधिकार से, जो मुझे प्राप्त हुई
है, मैं आप लोगों में हर एक से यह कहता हूँ:
अपने को औचित्य से अधिक महत्त्व मत
दीजिए। परमेश्वर द्वारा प्रदत्त विश्वास की मात्रा
के अनुरूप हर एक को अपने विषय में
सन्तुलित विचार रखना चाहिए। 4जिस प्रकार
हमारे एक शरीर में अनेक अंग होते हैं और सब
अंगों का कार्य एक नहीं होता, 5उसी प्रकार हम
अनेक होते हुए भी मसीह में एक ही शरीर और
एक-दूसरे के अंग होते हैं। 6हम को प्राप्त अनुग्रह
के अनुसार हमारे वरदान भी भिन्न-भिन्न होते
हैं। हमें नबूवत का वरदान मिला, तो विश्वास
के अनुरूप उसका उपयोग करें; 7सेवा-कार्य का
वरदान मिला, तो सेवा-कार्य में लगे रहें।
शिक्षक शिक्षा देने में और 8उपदेशक उपदेश
देने में लगे रहें। दान देने वाला उदारता से दे,
अधिकारी यत्नपूर्वक नेतृत्व करे और परोपकारक
सहर्ष परोपकार करे।

मसीही जीवन के नियम

9आप लोगों का प्रेम निष्कपट हो। आप
बुराई से घृणा करें तथा भलाई में लगे रहें।
10आप सच्चे भाई-बहिनों की तरह एक दूसरे
को हृदय से प्यार करें। हर व्यक्ति दूसरों को
अपने से श्रेष्ठ माने। 11आप लोग प्रयत्न करने
में आलसी न हों, आध्यात्मिक उत्साह से पूर्ण
रहें और प्रभु की सेवा करें। 12आप आशावान
हों और आनन्द मनाएं।++ आप संकट में धैर्य
रखें तथा प्रार्थना में लगे रहें, 13सन्तों की
आवश्यकताओं के लिए दान दिया करें और
अतिथियों की सेवा करें। 14अपने अत्याचारियों
के लिए आशीर्वाद माँगें—हाँ, आशीर्वाद, न कि
अभिशाप! 15आनन्द मनाने वालों के साथ
आनन्द मनायें, रोने वालों के साथ रोयें।
16आपस में मेल-मिलाप का भाव बनाये रखें।
घमण्डी न बनें, बल्कि दीन-दुःखियों से
मिलते-जुलते रहें। अपने आप को बुद्धिमान् न
समझें। 17बुराई के बदले बुराई नहीं करें। जो
बातें सब मनुष्यों की दृष्टि में सात्विक हैं, उन्हें
अपना लक्ष्य बनाएँ।* 18जहाँ तक हो सके,
अपनी ओर से सब के साथ शान्तिपूर्ण संबंध
रखें। 19प्रिय भाइयो और बहिनो! आप स्वयं
बदला न लें, बल्कि उसे परमेश्वर के प्रकोप पर
छोड़ दें; क्योंकि धर्मग्रंथ में लिखा है: "प्रभु
कहता है: प्रतिशोध लेना मेरा काम है, मैं ही
बदला लूंगा।" 20परंतु यह भी लिखा है, "यदि
आपका शत्रु भूखा है, तो उसे भोजन खिलायें
और यदि वह प्यासा है, तो उसे पानी पिलायें;
क्योंकि ऐसा करने से वह आपके प्रेमपूर्ण
व्यवहार से पानी-पानी हो जाएगा।"+ 21आप
बुराई से हार न मानें, बल्कि भलाई द्वारा बुराई
पर विजय प्राप्त करें।

अधिकारियों के प्रति कर्त्तव्य

13 प्रत्येक व्यक्ति शासन के अधिकारियों
के अधीन रहे, क्योंकि परमेश्वर की
अनुमति से ही अधिकार दिया जाता है** और
वर्तमान अधिकारों की व्यवस्था परमेश्वर की

* अथवा, "सब मनुष्यों के सामने सात्विक आचरण करने में मन लगाएँ।" + शब्दशः, "आप उसके सिर पर जलते अंगारों का ढेर लगाएँगे।" ** अथवा, "ऐसा कोई अधिकार नहीं जो परमेश्वर की ओर से न हो।" ++ अथवा, "आशा में आप आनन्द मनाएं।"

12 : 2 इफ 4 : 23; 5 : 10, 17; रोम 1 : 28; गल 1 : 4 **12 : 3** 1 कुर 12 : 11; उफ 4 : 7 **12 : 4** 1 कुर 12 : 12 **12 : 5** 1 कुर 12 : 27; इफ 4 : 25 **12 : 6** 1 कुर 12 : 4 **12 : 7** पत 4 : 10-11 **12 : 8** मत 6 : 3; 2 कुर 8 : 2; 9 : 7 **12 : 9** 1 पत 1 : 22; 1 तिम 1 : 5; आमो 5 : 15 **12 : 10** 2 पत 1 : 7; फिल 2 : 3 **12 : 11** प्रक 3 : 15; प्रे 18 : 25 **12 : 12** 1 थिस 5 : 17 **12 : 13** इब्र 13 : 2 **12 : 14** मत 5 : 44; प्रे 7 : 59; 1 कुर 4 : 12 **12 : 15** भज 35 : 13; प्रव 7 : 34 **12 : 16** नीति 3 : 7; रोम 15 : 5; 11 : 20 **12 : 17** यश 5 : 21; 1 थिस 5 : 15 **12 : 18** मक 9 : 50; इब्र 12 : 14 **12 : 19** व्य 32 : 35; लेव 19 : 18; मत 5 : 39; 2 थिस 1 : 6-7; रोम 13 : 4; इब्र 10 : 30 **12 : 20** नीति 25 : 21-22 (यू० पाठ); मत 5 : 44 **13 : 1** तीत 3 : 1; यो 19 : 11; नीति 8 : 15; प्रज्ञ 6 : 3

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ओर से है। 2इसलिए जो ऐसे अधिकार का
विरोध करता है, वह परमेश्वर की व्यवस्था के
विरुद्ध विद्रोह करता है और विद्रोही अपने सिर
पर दण्डाज्ञा बुलाते हैं। 3शासक सत्कर्म करने
वालों में नहीं, बल्कि कुकर्म करने वालों में भय
उत्पन्न करते हैं। क्या तुम अधिकारियों के भय
से मुक्त रहना चाहते हो ? तो सत्कर्म करते रहो
और वे तुम्हारी प्रशंसा करेंगे, 4क्योंकि वे तुम्हारी
भलाई के लिए परमेश्वर के सेवक हैं। किन्तु
यदि तुम कुकर्म करते हो, तो उन से अवश्य
डरो; क्योंकि वे व्यर्थ ही तलवार नहीं बाँधते।
वे परमेश्वर के सेवक हैं और उसके प्रकोप का
साधन होकर कुकर्मियों को दंड देते हैं।
5इसलिए न केवल प्रकोप से बचने के लिए,
बल्कि अन्तःकरण के कारण भी आप को
अधिकारियों के अधीन रहना चाहिए। 6आप
लोग इसीलिए राजकर चुकाते हैं। अधिकारीगण
परमेश्वर के जनसेवक हैं और वे अपनी इस
सेवा में लगे रहते हैं। 7आप सब के प्रति अपना
कर्तव्य पूरा करें। जिसे राजकर देना चाहिए,
उसे राजकर दिया करें। जिसे चुंगी देनी चाहिए,
उसे चुंगी दिया करें। जिस पर श्रद्धा रखनी
चाहिए, उस पर श्रद्धा रखें और जिसे सम्मान
देना चाहिए, उसे सम्मान दें।

सब आज्ञाओं का सार : पारस्परिक प्रेम

8पारस्परिक प्रेम का ऋण छोड़ कर और
किसी बात में किसी के ऋणी न बनें। जो दूसरों
को प्यार करता है, उसने व्यवस्था का पूर्ण रूप
से पालन किया है। 9उदाहरणार्थ, 'व्यभिचार
मत करो, हत्या मत करो, चोरी मत करो,
लालच मत करो'—इनका तथा अन्य सभी
दूसरी आज्ञाओं का सारांश यह है: अपने
पड़ोसी से अपने समान प्रेम करो। 10प्रेम पड़ोसी
के साथ अन्याय नहीं करता। इसलिए जो प्रेम
करता है, वह व्यवस्था को परिपूर्ण करता
है।

येशु के पुनरागमन का दिन

11आप समय पहचानते हैं। आप जानते हैं
कि नींद से जागने की घड़ी आ गयी है। जिस
समय हमने विश्वास किया था, उस समय की
अपेक्षा अब हमारी मुक्ति अधिक निकट है।
12रात प्रायः बीत चुकी है, दिन निकलने को है;
इसलिए हम, अन्धकार के कर्मों को त्याग कर,
ज्योति के शस्त्र धारण कर लें। 13हम दिन के
योग्य सदाचारण करें। हम रंगरेलियों और
नशेबाजी, व्यभिचार और भोगविलास, झगड़े
और ईर्ष्या से दूर रहें। 14आप प्रभु येशु मसीह
को धारण करें और शरीर की वासनाएँ तृप्त
करने का विचार छोड़ दें।

दूसरों के लिए पाप का कारण न बनें

14 यदि कोई विश्वास में दुर्बल है, तो
आप उसकी पापशंकाओं पर विवाद
किये बिना उसका स्वागत करें। 2कोई व्यक्ति
मानता है कि उसे हर प्रकार का भोजन करने
की अनुमति है, जब कि जिसका विश्वास
दुर्बल है, वह साग-सब्जी ही खाता है। 3खाने
वाला व्यक्ति शाकाहारी को तुच्छ न समझे और
शाकाहारी खाने वाले व्यक्ति को दोषी नहीं
माने, क्योंकि परमेश्वर ने उसे अपनाया है।
4दूसरे के सेवक पर दोष लगाने वाले तुम कौन
हो ? उसका दृढ़ बना रहना या पतित हो जाना
उसके अपने स्वामी से सम्बन्ध रखता है और
वह अवश्य दृढ़ बना रहेगा; क्योंकि उसका प्रभु
उसे दृढ़ बनाये रखने में समर्थ है। 5कोई एक
दिन को दूसरे दिन से श्रेष्ठ मानता है, जब कि
कोई सब दिनों को बराबर समझता है। हर
व्यक्ति इसके सम्बन्ध में अपनी-अपनी धारणा
बना ले। 6जो किसी दिन को शुभ मानता है, वह
उसे प्रभु के नाम पर शुभ मानता है और जो
खाता है, वह प्रभु के नाम पर खाता है; क्योंकि
वह परमेश्वर को धन्यवाद देता है। जो परहेज़
करता है, वह प्रभु के नाम पर परहेज़ करता है,

---

13 : 3 1 पत 2 : 13-14; 3 : 13 **13 : 4** रोम 12 : 19; भज 82 : 6 **13 : 7** मत 22 : 21 **13 : 8** गल 5 : 14; 1 तिम 1 : 5 **13 : 9** नि 20 : 13-17; लेव 19 : 18; व्य 5 : 17 **13 : 10** 1 कुर 13 : 4; मत 22 : 40 **13 : 11** इफ 5 : 14; 1 थिस 5 : 6-7 **13 : 12** यो 2 : 8; इफ 5 : 11; 2 तिम 1 : 10 **13 : 13** लू 21 : 34; इफ 5 : 18 **13 : 14** गल 3 : 37 **14 : 1** रोम 15 : 1; 1 कुर 8 : 9 **14 : 2** उत 1 : 29; 9 : 3 **14 : 3** कुल 2 : 16 **14 : 4** मत 7: 1; याक 4 : 11-12 **14 : 5** गल 4 : 10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और वह भी परमेश्वर को धन्यवाद देता है। 7कारण, हम में कोई न तो अपने लिए जीता है और न अपने लिए मरता है। 8यदि हम जीते रहते हैं, तो प्रभु के लिए जीते हैं और यदि मरते हैं, तो प्रभु के लिए मरते हैं। इस प्रकार हम चाहे जीते रहें या मर जायें, हम प्रभु के ही हैं। 9मसीह इसलिए मर गये और जी उठे कि वह मृतकों तथा जीवितों, दोनों के प्रभु हो जायें। 10तो तुम क्यों अपने भाई अथवा बहिन का न्याय करते हो ? तुम क्यों अपने भाई अथवा बहिन को तुच्छ समझते हो ? हम-सब परमेश्वर के न्यायासन के सामने खड़े होंगे, 11क्योंकि धर्मग्रन्थ में लिखा है—

''प्रभु यह कहता है:
मैं स्वयं अपने जीवन की शपथ लेता हूँ;
हरएक मनुष्य मेरे सम्मुख घुटना टेकेगा।
प्रत्येक जीभ मुझ-परमेश्वर की स्तुति
करेगी।''*

12इस से स्पष्ट है कि हम में हर एक को अपने-अपने कर्मों का लेखा परमेश्वर को देना पड़ेगा।

13इसलिए अब से हम एक-दूसरे पर दोष लगाना छोड़ दें; हम यह निश्चय कर लें कि अपने भाई अथवा बहिन के मार्ग में न तो रोड़ा अटकायेंगे और न जाल बिछाएँगे। 14मैं जानता हूँ और प्रभु येशु का शिष्य होने के नाते मेरा विश्वास है कि कोई भी वस्तु अपने में अशुद्ध नहीं है; किन्तु यदि कोई यह समझता है कि अमुक वस्तु अशुद्ध है, तो वह उसके लिए अशुद्ध हो जाती है। 15यदि तुम अपने भोजन के कारण अपने भाई अथवा बहिन को दुःख देते हो, तो तुम प्रेम-मार्ग पर नहीं चलते। जिस मनुष्य के लिए मसीह मर गये हैं, तुम अपने भोजन के कारण उसके विनाश का कारण न बनो। 16हमारी** दृष्टि में जो भला है, वह निन्दा का विषय न बने; 17क्योंकि परमेश्वर का राज्य खाने-पीने का नहीं, बल्कि वह धार्मिकता, शान्ति और आनन्द का विषय है, जो पवित्र आत्मा से प्राप्त होते हैं। 18जो इन बातों द्वारा मसीह की सेवा करता है, वह परमेश्वर को प्रिय और मनुष्यों द्वारा सम्मानित है। 19हम ऐसी बातों में लगे रहें, जिन से शान्ति को बढ़ावा मिलता है और जिनके द्वारा हम एक-दूसरे का निर्माण कर सकें। 20भोजन के कारण परमेश्वर की कृति का विनाश मत करो। यह सच है कि सब कुछ अपने में शुद्ध है, किन्तु भोजन द्वारा दूसरे के मार्ग में रोड़े अटकाना बुरा है। 21उत्तम तो यह है कि मांस-मदिरा का सेवन न किया जाए, और न अन्य कोई ऐसा कार्य किया जाए जिससे तुम्हारा भाई अथवा बहिन पथभ्रष्ट*** हो। 22तुम परमेश्वर के सामने अपनी धारणा अपने तक सीमित रखो। धन्य है वह, जिसका अन्तःकरण उसे दोषी नहीं मानता, जब वह अपनी धारणा के अनुसार आचरण करता है! 23किन्तु जो खाने के विषय में सन्देह करता है और तब भी खाता है, वह दोषी है; क्योंकि उसका यह कार्य विश्वास के अनुसार नहीं है, और जो कार्य विश्वास के अनुसार नहीं है, वह पाप है।

हमेशा दूसरों का हित सोचें

15 हम लोगों को, जो समर्थ हैं, अपनी सुख-सुविधा का नहीं, बल्कि दुर्बलों की कमजोरियों का ध्यान रखना चाहिए। 2हम में प्रत्येक को अपने पड़ोसी की भलाई तथा चरित्र-निर्माण के लिए उसकी सुख-सुविधा का ध्यान रखना चाहिए। 3मसीह ने भी अपने सुख का ध्यान नहीं रखा। जैसा कि धर्मग्रंथ में लिखा है, ''तेरी निन्दा करने वालों ने मेरी निन्दा की है।'' 4धर्मग्रन्थ में जो कुछ पहले लिखा गया था, वह हमारी शिक्षा के लिए लिखा गया था, ताकि हमें उस से धैर्य तथा सांत्वना मिलती

* अथवा, ''मुझ-परमेश्वर को स्वीकार करेगी।'' ** पाठांतर, ''आप लोगों की''। *** पाठांतर, ''क्षुब्ध''।

14 : 8 गल 2 : 20; 1 थिस 5 : 10; लू 20 : 38 **14 : 10** प्रे 17 : 31; 2 कुर 5 : 10; मत 25 : 31-32 **14 : 11** यश 45 : 23 (यू० पाठ); 49 : 18; फिल 2 : 10-11 **14 : 12** गल 6 : 5 **14 : 14** मत 15 : 11; प्रे 10 : 15; तीत 1 : 15 **14 : 15** 1 कुर 8 : 11-13 **14 : 16** तीत 2 : 5 **14 : 17** लू 17 : 20 **14 : 19** रोम 12 : 18; 15 : 2 **14 : 20** तीत 1 : 15 **14 : 21** 1 कुर 8 : 13 **15 : 2** 1 कु 9 : 19; 10 : 24, 33 **15 : 3** भज 69 : 9 **15 : 4** रोम 4 : 23-24; 1 कु 10 : 11; 1 मक 12 : 9; 2 मक 15 : 9

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रहे और इस प्रकार हम अपनी आशा बनाये
रख सकें। 5परमेश्वर ही धैर्य तथा सांत्वना का
स्रोत है। वह आप लोगों को यह वरदान दे कि
आप येशु मसीह की शिक्षा के अनुसार आपस
में मेल-मिलाप का भाव बनाए रखें, 6जिससे
आप सब मिलकर एक स्वर से हमारे प्रभु
येशु मसीह के पिता, परमेश्वर की स्तुति करते
रहें।

सब के लिए शुभ संदेश

7जिस प्रकार मसीह ने हमें परमेश्वर की
महिमा के लिए अपनाया, उसी प्रकार आप
एक-दूसरे को भ्रातृभाव से अपनायें। 8मैं यह
कहना चाहता हूँ कि मसीह यहूदियों के सेवक
इसलिए बने कि वह, पूर्वजों को दी गयी
प्रतिज्ञाएँ पूरी कर, परमेश्वर की सत्यप्रतिज्ञता
प्रमाणित करें 9और इसलिए भी कि गैर-यहूदी,
परमेश्वर की दया प्राप्त कर, उसकी स्तुति करें।
जैसा कि धर्मग्रन्थ में लिखा है, ''इस कारण मैं
अन्य-जातियों के बीच तेरी स्तुति करूँगा और
तेरे नाम की महिमा का गीत गाऊँगा।''
10धर्मग्रन्थ यह भी कहता है, ''ओ राष्ट्रो!
परमेश्वर की प्रजा के साथ आनन्द मनाओ।''
11और फिर यह, ''हे समस्त राष्ट्रो! प्रभु की
स्तुति करो। सभी जातियाँ प्रभु की स्तुति
करें।'' 12और नबी यशायाह भी यह कहते हैं,
''यिशय का वंश-मूल प्रकट होगा, राष्ट्रों पर
शासन करने के लिए उसका उत्थान होगा और
राष्ट्र उसी की आशा करेंगे।''

13आशा का स्रोत, परमेश्वर आप लोगों को
विश्वास द्वारा प्रचुर आनन्द और शान्ति प्रदान
करे, जिससे पवित्र आत्मा के सामर्थ्य से आप
लोगों की आशा परिपूर्ण हो।

पौलुस की धर्मसेवा

14मेरे भाइयो और बहिनो! मुझे दृढ़ विश्वास
है कि आप लोग, सद्भाव और हर प्रकार के
ज्ञान से परिपूर्ण हो कर, एक-दूसरे को
सत्परामर्श देने योग्य हैं। 15फिर भी कुछ बातों
का स्मरण दिलाने के लिए मैंने आप को
निस्संकोच हो कर लिखा है। परमेश्वर से मुझे
यह अनुग्रह मिला 16कि मैं, गैर-यहूदियों के
लिए येशु मसीह का जन-सेवक बनकर,
परमेश्वर के शुभ समाचार की सेवा पुरोहित के
रूप में करूँ, जिससे गैर-यहूदी, पवित्र आत्मा
द्वारा पवित्र किये जाने के बाद, परमेश्वर को
अर्पित और सुग्राह्य हो जायें।

17इसलिए मैं येशु मसीह के कारण ही
परमेश्वर की सेवा पर गौरव कर सकता हूँ।
18मैं केवल उन बातों की चर्चा करने का साहस
करूँगा, जिन्हें मसीह ने गैर-यहूदियों को
विश्वास की अधीनता स्वीकार करने के लिए
मेरे द्वारा वचन और कर्म से, 19शक्तिशाली चिह्नों
और चमत्कारों से और परमेश्वर के आत्मा के
सामर्थ्य से सम्पन्न किया है। मैंने यरूशलेम
और उसके आसपास के प्रदेश से ले कर
इल्लुरिकुम तक मसीह के शुभ-समाचार का
प्रचार-कार्य पूरा किया है। 20इस में मैंने एक
बात का विशेष ध्यान रखा। मैंने कभी वहां
शुभसमाचार का प्रचार नहीं किया, जहाँ मसीह
का नाम सुनाया जा चुका था; क्योंकि मैं दूसरों
द्वारा डाली हुई नींव पर निर्माण करना नहीं
चाहता था, 21बल्कि धर्मग्रन्थ का यह कथन
पूरा करना चाहता था, ''जिन्हें कभी उसका
सन्देश नहीं मिला था, वे उसके दर्शन करेंगे
और जिन्होंने कभी उसके विषय में नहीं सुना,
वे समझेंगे।''

पौलुस की भावी योजना

22यही कारण है कि अब तक आप लोगों
के यहाँ मेरे आगमन में बराबर बाधा पड़ी है।
23अब तो इधर के प्रदेशों में मेरा कोई कार्यक्षेत्र
नहीं रहा और मैं कई वर्षों से चाह रहा हूँ कि
24स्पेन देश जाते समय आप लोगों के यहाँ
आऊँ। मुझे आशा है कि मैं उस यात्रा में आप
लोगों के दर्शन करूँगा और कुछ समय तक
आपकी संगति का लाभ उठाने के बाद आप

15 : 5 फिल 3 : 16 **15 : 8** मत 15 : 24; प्रे 3 : 25 **15 : 9** रोम 11 : 30; भज 18 : 49; 2 शम 22 : 50 **15 : 10** व्य 32 : 43 **15 : 11** भज 117 : 1 **15 : 12** यश 11 : 10; (यू॰ पाठ); प्रक 5 : 5 **15 : 15** रोम 1 : 5; 12 : 3 **15 : 16** रोम 11 : 13; फिल 2 : 17 **15 : 18** 2 कुर 3 : 5 **15 : 19** मक 16 : 17 **15 : 20** 2 कुर 10 : 15-16 **15 : 21** यश 52 : 15 (यू॰ पाठ); **15 : 22** रोम 1 : 10-13 **15 : 24** कुर 16 : 6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लोगों की सहायता से स्पेन की यात्रा कर सकूँगा। 25मैं अब सन्तों की सेवा में यरूशलेम जा रहा हूँ। 26क्योंकि मकिदुनिया तथा यूनान की कलीसियाओं ने यह शुभ संकल्प किया है कि वे सहभागिता के रूप में यरूशलेम के गरीब संतों के लिए कुछ सहायता भेजें।

27उनका यह संकल्प उचित ही है—वास्तव में वे यरूशलेम के सन्तों के ऋणी भी हैं, क्योंकि यदि गैर-यहूदी लोग यहूदियों की आध्यात्मिक सम्पत्ति के भागी बने, तो गैर-यहूदियों को अपनी लौकिक सम्पत्ति से उनकी सार्वजनिक सेवा करना चाहिए। 28यह कार्य समाप्त कर, अर्थात् यह दान विधिवत् उनके हाथों मैं सौंपने के बाद*, मैं आप लोगों के यहाँ हो कर स्पेन जाऊँगा। 29मुझे विश्वास है कि जब मैं आपके यहाँ आऊँगा, तो मसीह का परिपूर्ण आशीर्वाद लिये आऊँगा।

30भाइयो और बहिनो! हमारे प्रभु येशु मसीह और पवित्र आत्मा के प्रेम के नाम पर मैं आप लोगों से अनुरोध करता हूँ कि आप मेरे लिए परमेश्वर से संघर्षमय प्रार्थना करने में मेरा साथ देते रहें, 31जिससे मैं यहूदा प्रदेश के अविश्वासियों से बचा रहूँ और जिस सेवा-कार्य के लिए मैं यरूशलेम जा रहा हूँ, वह वहाँ के संतों को सुग्राह्य हो 32और मैं आनन्द के साथ आप लोगों के यहाँ पहुँच कर परमेश्वर की इच्छानुसार आप लोगों की संगति में विश्राम कर सकूँ। 33शान्ति का परमेश्वर आप सब के साथ रहे। आमेन!

व्यक्तिगत नमस्कार

16 मैं किंख्रेअय नगर की कलीसिया की धर्म-सेविका, हमारी बहिन फीबे के लिए आप लोगों से निवेदन करता हूँ। 2आप प्रभु में उसका सन्तों के योग्य स्वागत करें, और यदि उसे आपकी आवश्यकता हो, तो हर प्रकार से उसकी सहायता करें; क्योंकि उसने बहुतों की और मेरी भी बड़ी सहायता की है। 3येशु मसीह में अपने दोनों सहयोगी प्रिस्का और अक्विला को नमस्कार, 4जिन्होंने मेरे प्राण बचाने के लिए अपना सिर दाँव पर रख दिया। मैं ही नहीं, बल्कि गैर-यहूदियों की सब कलीसियाएँ उनका आभार मानती हैं। 5उनके घर में एकत्र होने वाली कलीसिया को नमस्कार। मसीह के निमित्त आसिया के "प्रथम फल", मेरे प्रिय इपैनितुस को नमस्कार 6और मरियम को भी, जिसने आप लोगों के लिए इतना कठिन परिश्रम किया। 7मेरे सम्बन्धियों और बन्दीगृह में मेरे साथियों अन्द्रोनिकुस और बहिन युनियास को नमस्कार। ये प्रेरितों में प्रतिष्ठित हैं और मुझ से पहले मसीह के शिष्य बने थे। 8प्रभु में मेरे प्रिय अमप्लियातुस को नमस्कार। 9मसीह में हमारे सहयोगी उरबानुस और मेरे प्रिय स्ताखुस को नमस्कार। 10मसीह के सुयोग्य सेवक अपिल्लैस को और अरिस्तोबुलुस के परिवार को नमस्कार। 11मेरे सम्बन्धी हेरोदियोन को और नरकिस्सुस के परिवार को नमस्कार, जो प्रभु में हैं। 12प्रभु की सेवा में परिश्रम करने वाली त्रूफैना और त्रुफ़ोसा को नमस्कार। प्रिय पिरसिस को नमस्कार, जिसने प्रभु की सेवा में बहुत परिश्रम किया है। 13प्रभु के कृपापात्र रूफुस और उसकी माता को, जो मेरी भी माता है, नमस्कार। 14असुंक्रितुस, फ्लेगोन, हिरमेस, पत्रुबास, हिरमास और उनके साथ रहने वाले भाइयों को नमस्कार। 15फिलोलुगुस और युलिया, नेरेउस और उसकी बहिन, और उलुंपास तथा उनके साथ रहने वाले सभी सन्तों को नमस्कार। 16शान्ति के पवित्र चुम्बन से एक दूसरे का अभिवादन कीजिए। मसीह की सब कलीसियाएँ आप लोगों को नमस्कार कहती हैं।

17भाइयो और बहिनो! मैं आप लोगों से अनुरोध करता हूँ कि आप उन लोगों से

* अक्षरशः, "यह फल मुद्रांकित करने के बाद"

15 : 25 प्रे 19 : 21; 20 : 22 **15 : 26** 1 कुर 16 : 1; 2 कुर 8 : 1; 9 : 2, 12 **15 : 27** रोम 9 : 4; 1 कुर 9 : 11 **15 : 29** रोम 1 : 11 **15 : 30** 2 कुर 1 : 11; फिल 1 : 27; कुल 4 : 3; 2 थिस 3 : 1 **16 : 3** प्रे 18 : 2,18, 26 **16 : 5** 1 कु 16 : 15 **16 : 7** 2 कुर 8 : 23 **16 : 13** मक 15 : 21 **16 : 16** 1 कुर 16 : 20; 1 पत 5 : 14**16 : 17** मत 7 : 15

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सावधान रहें, जो फूट डालते और दूसरों के
लिए पाप का कारण बनते हैं। इस प्रकार का
व्यवहार उस शिक्षा से मेल नहीं खाता, जो आप
को मिली है। आप ऐसे लोगों से दूर रहें। [18]वे
हमारे प्रभु मसीह की सेवा नहीं, बल्कि अपने
पेट की पूजा करते हैं। वे चिकनी-चुपड़ी और
खुशामद-भरी बातों से भोले-भाले लोगों को
भुलावे में डालते हैं। [19]विश्वास के प्रति आप
लोगों की आज्ञाकारिता की चर्चा सर्वत्र फैल
गयी है— यह मेरे लिए आनन्द का विषय है।
मैं चाहता हूँ कि आप भलाई में निपुण और
बुराई के विषय में अनजान रहें। [20]शान्ति का
परमेश्वर शीघ्र ही शैतान को आपके पैरों तले
कुचल देगा। हमारे प्रभु येशु की कृपा आप
लोगों पर बनी रहे।

[21]मेरा सहयोगी तिमोथी और मेरे सम्बन्धी
लूकियुस, यासोन और सोसिपत्रुस आप को
नमस्कार कहते हैं। [22]मैं, तेरतियुस, जिसने यह
पत्र लिपिबद्ध किया, प्रभु में आप लोगों को
नमस्कार कहता हूँ। [23]मेरा और समस्त
कलीसिया का आतिथ्य-सत्कार करने वाला
गायुस, इस नगर का कोषाध्यक्ष एरास्तुस और
भाई क्वार्तुस आप लोगों को नमस्कार कहते हैं।
[[24]हमारे प्रभु येशु मसीह की कृपा आप सब
पर बनी रहे। आमेन।]*

[25]उस परमेश्वर की स्तुति हो, जो आप
लोगों को मेरे शुभसमाचार तथा येशु मसीह के
संदेश के अनुसार सुदृढ़ रखने में समर्थ है। यह
शुभसंदेश उस रहस्य का उद्‌घाटन है, जो युगों
से छिपा हुआ था, [26]परन्तु अब प्रकाशित हो
गया है। यह नबियों के ग्रंथों द्वारा, शाश्वत
परमेश्वर के आदेशानुसार, सब जातियों में
उद्‌घोषित किया गया है, जिससे वे विश्वास
की अधीनता स्वीकार करें।

[27]उसी एकमात्र ज्ञानस्वरूप परमेश्वर की,
येशु मसीह द्वारा, युगयुगों तक महिमा हो।
आमेन।

* कुछ प्राचीन प्रतियों में पद 24 नहीं पाया जाता।

16 : 18 फिल 3: 19; यहेज 13 : 18; कुल 2 : 4; 2 पत 2 : 3 **16 : 19** रोम 1 : 8; मत 10 : 16; 1 कुर 14 : 20 **16 : 20** रोम 15 : 33; उत 3 : 15 **16 : 21** प्रे 16 : 1; 19 : 22; **16 : 26** 2 तिम 1 : 10; रोम 1 : 5 **16 : 27** 1 तिम 1 : 17; यहू 25

कुरिन्थुस नगर की कलीसिया के नाम संत पौलुस का पहला पत्र

भूमिका

कुरिन्थुस एक समृद्ध महानगर था। इसमें भिन्न-भिन्न जाति के लोग निवास करते थे। यह यूनानी नगर था, और रोमन साम्राज्य के अखया [यूनान] प्रदेश की राजधानी था। कुरिन्थुस की ख्याति समस्त रोमन साम्राज्य में थी : व्यापार का केन्द्र, यूनानी संस्कृति का गौरव, तथा अनेक धर्मों का केन्द्र। इनके साथ ही कुरिन्थुस नगर अपने अप्राकृतिक तथा अनैतिक अनाचार के लिए भी बदनाम था।

संत पौलुस ने कुरिन्थुस नगर में कलीसिया की स्थापना की। इसका समय प्रायः निश्चित है। देल्फी नामक स्थान में प्राप्त शिलालेख से पता चला है कि गल्लियो (प्रे 18 : 12) सन् 52 ई० में वहां का रोमन उपराज्यपाल था। उसने संत पौलुस के संबंध में पूछताछ की। थोड़े दिनों के पश्चात् संत पौलुस इफिसुस नगर को गए। जब कुरिन्थुस की कलीसिया में मसीही जीवन तथा विश्वास से संबंधित कुछ समस्याएं उत्पन्न हुईं, तब पौलुस ने उन समस्याओं का निदान करते हुए यह पत्र लिखा।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

संत पौलुस कलीसिया में दलबन्दी तथा अनैतिक आचरण की समस्याओं से मुख्यत: चिन्तित थे। कलीसिया में संयम, विवाह, अन्त:करण, विवेक, आराधना-क्रम, पवित्र आत्मा के वरदानों और पुनरुत्थान के संबंध में भी प्रश्न उठे थे। संत पौलुस ने गहरी सूझ-बूझ से शुभ समाचार के परिप्रेक्ष्य में इन प्रश्नों के प्रभावपूर्ण उत्तर दिये हैं।

इस पत्र का अध्याय 13 संभवत: सब से अधिक पढ़ा और उद्‌धृत किया जाता है। इस अध्याय में प्रेम को सर्वोत्तम मार्ग बताया गया है। संत पौलुस कहते हैं कि परमेश्वर द्वारा मनुष्य-जाति को दिये गए समस्त वरदानों में सर्वश्रेष्ठ है—प्रेम।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

अभिवादन	1 : 1-9
कलीसिया में दलबन्दी	1 : 10—4 : 21
नैतिकता और पारिवारिक जीवन	5 : 1—7 : 40
मसीही और अन्यधर्मी	8 : 1—11 : 1
कलीसियाई जीवन और आराधना	11 : 2—14 : 40
मसीह का तथा मानव-मात्र का पुनरुत्थान	15 : 1-58
यहूदा प्रदेश के गरीब सन्तों के लिए दान	16 : 1- 4
व्यक्तिगत संदेश तथा उपसंहार	16 : 5-24

अभिवादन

1 कुरिन्थुस नगर में परमेश्वर की कलीसिया के नाम पौलुस का, जो परमेश्वर की इच्छा द्वारा येशु मसीह का प्रेरित होने के लिए बुलाया गया है, और भाई सोस्थेनेस का पत्र। 2आप लोग येशु मसीह द्वारा पवित्र किये गये हैं और उन सब के साथ सन्त बनने के लिए बुलाये गये हैं, जो कहीं भी हमारे प्रभु येशु मसीह—अर्थात् अपने तथा हमारे प्रभु—का नाम लेते हैं।

3हमारा पिता परमेश्वर और प्रभु येशु मसीह आप लोगों को अनुग्रह तथा शान्ति प्रदान करें।

धन्यवाद

4आप को येशु मसीह द्वारा परमेश्वर का अनुग्रह प्राप्त हुआ है। इसके लिए मैं अपने परमेश्वर को निरन्तर धन्यवाद देता हूँ। 5-6मसीह का संदेश* आपके बीच इस प्रकार दृढ़ हो गया है कि आप मसीह से संयुक्त हो कर, अभिव्यक्ति और ज्ञान के सब प्रकार के वरदानों से सम्पन्न हो गये हैं। 7अत: आप में किसी कृपादान की कमी नहीं है और अब आप हमारे प्रभु येशु मसीह के प्रकट होने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। 8परमेश्वर अन्त तक आप लोगों को विश्वास में सुदृढ़ बनाये रखेगा, जिससे आप हमारे प्रभु येशु मसीह के दिन निर्दोष पाये जायें। 9परमेश्वर सत्यप्रतिज्ञ है। उसी ने आप लोगों को अपने पुत्र हमारे प्रभु येशु मसीह के सहभागी बनने के लिए बुलाया है।

दलबन्दी

10भाइयो और बहिनो! हमारे प्रभु येशु मसीह के नाम पर मैं आप लोगों से यह अनुरोध करता हूँ—आप लोग एकमत हो कर दलबन्दी से दूर रहें। आप एक-दूसरे से मेल-मिलाप करें और हृदय तथा मन से पूर्ण रूप से एक हो जायें। 11ओ मेरे भाइयो-बहिनो! खलोए के घर वालों से मुझे पता चला कि आप लोगों में फूट पड़ गयी है। 12मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि आप में से कोई कहता है, ''मैं पौलुस का हूँ''; कोई कहता है, ''मैं अपुल्लोस का हूँ''; तीसरा

* अथवा, ''साक्षी''।

1 : 1 प्रे 18 : 17 **1 : 2** 1 कुर 6 : 11; प्रे 9 : 14 **1 : 3** रोम 1 : 7 **1 : 7** लू 17 : 30; 2 थिस 1 : 7 तीत 2 : 13 **1 : 8** फिल 1 : 6; 1 थिस 3 : 13; 5 : 23 **1 : 9** 1 थिस 5 : 24; 1 यो 1 : 3 **1 : 10** फिल 1 : 2; 3 : 16 **1 : 12** प्रे 18 : 24-27; 1 कुर 3 : 4; यो 1 : 42

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कहता है, "मैं कैफा का हूँ" और कोई कहता है, "मैं तो मसीह का हूँ।" 13क्या मसीह खण्ड-खण्ड हो गये हैं ? क्या पौलुस आप लोगों के लिए क्रूस पर मारे गये थे ? क्या आप लोगों को पौलुस के नाम पर बपतिस्मा मिला है ? 14परमेश्वर को धन्यवाद कि मैंने क्रिस्पुस और गायुस को छोड़ कर आप लोगों में से किसी को बपतिस्मा नहीं दिया ! 15इसलिए कोई यह नहीं कह सकता कि आप को पौलुस के नाम पर बपतिस्मा मिला है। 16हाँ ! मैंने स्तिफनास के परिवार को भी बपतिस्मा दिया। जहाँ तक मुझे स्मरण है, मैंने इनके अतिरिक्त किसी और को बपतिस्मा नहीं दिया; 17क्योंकि मसीह ने मुझे बपतिस्मा देने नहीं, बल्कि शुभसमाचार का प्रचार करने भेजा है। मैंने इस कार्य के लिए सांसारिक ज्ञान से परिपूर्ण भाषा का उपयोग नहीं किया, जिससे मसीह के क्रूस के सन्देश का प्रभाव फीका न पड़े।

क्रूस की शिक्षा

18जो विनाश के मार्ग पर चलते हैं, वे क्रूस की शिक्षा को 'मूर्खता' समझते हैं। किन्तु हम लोगों के लिए, जो मुक्ति के मार्ग पर चलते हैं, वह परमेश्वर का सामर्थ्य है; 19क्योंकि धर्मग्रन्थ में लिखा है, "मैं ज्ञानियों का ज्ञान नष्ट करूंगा और समझदारों की समझ व्यर्थ कर दूँगा।" 20हम में इस संसार के ज्ञानी, शास्त्री और दार्शनिक कहाँ हैं ? क्या परमेश्वर ने इस संसार के ज्ञान को मूर्खतापूर्ण नहीं प्रमाणित किया है ? 21परमेश्वर की प्रज्ञा का विधान ऐसा था कि संसार अपने ज्ञान द्वारा परमेश्वर को नहीं पहचान सका। इसलिए परमेश्वर ने शुभ समाचार के प्रचार की 'मूर्खता' द्वारा विश्वासियों को बचाना चाहा। 22यहूदी चमत्कार माँगते और यूनानी ज्ञान चाहते हैं, 23किन्तु हम क्रूसित मसीह का ही प्रचार करते हैं। यह यहूदियों के विश्वास में बाधा है और गैर-यहूदियों के लिए 'मूर्खता'। 24किन्तु परमेश्वर के चुने हुए लोगों के लिए, चाहे वे यहूदी हों या यूनानी, यही मसीह परमेश्वर का सामर्थ्य और परमेश्वर की प्रज्ञा है; 25क्योंकि परमेश्वर की 'मूर्खता' मनुष्यों के ज्ञान से अधिक विवेकपूर्ण और परमेश्वर की 'दुर्बलता' मनुष्यों की शक्ति से अधिक शक्तिशाली है।

26भाइयो और बहिनो ! इस बात पर विचार कीजिए कि बुलाये जाते समय संसार की दृष्टि में आप लोगों में से बहुत कम लोग ज्ञानी, शक्तिशाली अथवा कुलीन थे। 27ज्ञानियों को लज्जित करने के लिए परमेश्वर ने उन लोगों को चुना है, जो संसार की दृष्टि में मूर्ख हैं। शक्तिशालियों को लज्जित करने के लिए उसने उन लोगों को चुना है, जो संसार की दृष्टि में दुर्बल हैं। 28गण्य-मान्य लोगों का घमण्ड चूर करने के लिए उसने उन लोगों को चुना है, जो संसार की दृष्टि में तुच्छ, नीच और नगण्य हैं, 29जिससे कोई भी निरा मनुष्य परमेश्वर के सामने गर्व न करे। 30उसी परमेश्वर के वरदान से आप लोग येशु मसीह के अंग बन गये हैं। परमेश्वर ने मसीह को हमारा ज्ञान, धार्मिकता, पवित्रता और पापमुक्ति बना दिया है। 31इसलिए, जैसा कि धर्मग्रन्थ में लिखा है, "यदि कोई गर्व करना चाहे, तो वह प्रभु पर गर्व करे।"

2 भाइयो और बहिनो ! जब मैं परमेश्वर के रहस्य की घोषणा सुनाने आप लोगों के यहाँ आया, तो मैंने शब्दाडम्बर अथवा पाण्डित्य का प्रदर्शन नहीं किया। 2मैंने निश्चय किया था कि मैं आप लोगों में येशु मसीह और क्रूस पर उनकी मृत्यु के अतिरिक्त किसी और विषय पर ध्यान नहीं दूँगा। 3वास्तव में मैं आप लोगों के बीच रहते समय दुर्बल, संकोची और बहुत डरा हुआ था। 4मेरे प्रवचन तथा मेरे सन्देश में

1 : 14 प्रे 18 : 8; रोम 16 : 23 **1 : 17** यो 4 : 2; मत 28 : 19 **1 : 18** 2 कुर 4 : 3; रोम 1 : 16 **1 : 19** यश 29 : 14 (यू० पाठ) **1 : 20** अय्य 12 : 17; यश 19 : 12; 33 : 18 **1 : 21** मत 11 : 25; लू 8 : 12; प्रज्ञ 13:1-9 **1 : 22** मत 12 : 38; यो 4 : 48; प्रे 17 : 18, 32 **1 : 23** 1 कुर 2 : 14; रोम 9 : 32 **1 : 24** कुल 2 : 3 **1 : 25** 2 कुर 13 : 4 **1 : 26** मत 11 : 25; यो 7 : 48; याक 2 : 1-5 **1 : 29** रोम 3 : 27; इफ 2 : 9 **1 : 30** यिर 23 : 5-6; 2 कुर 5 : 21; यो 17 : 19 **1 : 31** यिर 9 : 23-24 **2 : 1** 1 कुर 1 : 17 **2 : 2** गल 6 : 14 **2 : 3** प्रे 18 : 9; 2 कुर 11 : 30

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

विद्वत्तापूर्ण शब्दों का आकर्षण नहीं, बल्कि आत्मा का सामर्थ्य था, 5जिससे आप लोगों का विश्वास मानवीय प्रज्ञा पर नहीं, बल्कि परमेश्वर के सामर्थ्य पर आधारित हो।

परमेश्वर की प्रज्ञा

6उन लोगों के बीच, जो परिपक्व हो गये हैं, हम भी प्रज्ञा की बातें करते हैं। यह प्रज्ञा न तो इस युग-संसार की है और न इस युग-संसार के अधिपतियों की। ये तो समाप्त हो जाने वाले हैं। 7हम परमेश्वर की उस रहस्यमय प्रज्ञा और उद्देश्य की घोषणा करते हैं, जो अब तक गुप्त रहे, जिन्हें परमेश्वर ने संसार को सृष्टि से पहले ही हमारी महिमा के लिए निश्चित किया था, 8और जिन को इस युग-संसार के अधिपतियों में से किसी न नहीं जाना। यदि वे लोग उन्हें जानते, तो महिमामय प्रभु को क्रूस पर नहीं चढ़ाते। 9हम उन बातों के विषय में बोलते हैं, जिनके सम्बन्ध में धर्मग्रन्थ यह कहता है, "परमेश्वर ने अपने भक्तों के लिए जो तैयार किया है, उस को किसी ने कभी देखा नहीं, किसी ने सुना नहीं, और न कोई उसकी कल्पना ही कर पाया।" 10परमेश्वर ने अपने आत्मा द्वारा हम पर वही प्रकट किया है, क्योंकि आत्मा सब कुछ की, परमेश्वर के रहस्य की भी, थाह लेता है।

11मनुष्य की निजी आत्मा के अतिरिक्त कौन किसी का अन्तरतम जानता है? इसी तरह परमेश्वर के आत्मा के अतिरिक्त कोई भी परमेश्वर का अन्तरतम नहीं जानता। 12हमें संसार का आत्मा नहीं, बल्कि वह आत्मा मिला है जो परमेश्वर से है, जिससे हम परमेश्वर से प्राप्त वरदान पहचान सकें। 13हम इन वरदानों की व्याख्या करते समय मानवीय बुद्धि से प्रेरित शब्दों का नहीं, बल्कि आत्मा द्वारा प्रदत्त शब्दों का प्रयोग करते हैं। इस प्रकार हम आध्यात्मिक शब्दावली में* आध्यात्मिक तथ्यों की विवेचना करते हैं। 14प्राकृत मनुष्य परमेश्वर के आत्मा की शिक्षा स्वीकार नहीं करता। वह उसे मूर्खता मानता और उसे समझने में असमर्थ है, क्योंकि आत्मा की सहायता से ही उस शिक्षा की परख हो सकती है। 15आध्यात्मिक मनुष्य सब बातों की परख करता है, किन्तु कोई भी उस मनुष्य की परख नहीं कर सकता; 16क्योंकि जैसा धर्मग्रंथ में कहा गया, "प्रभु का मन कौन जानता है? कौन उसे परामर्श दे सकता है?" और हम में तो मसीह का मन विद्यमान है।

परमेश्वर के सेवक

3 भाइयो और बहिनो! जहां तक मेरा संबंध है, मैं आप लोगों से उस तरह बातें नहीं कर सका, जिस तरह आध्यात्मिक व्यक्तियों से की जाती है। मुझे आप लोगों से उस तरह बातें करनी पड़ीं, जिस तरह अनात्म** मनुष्यों से, मसीह में निरे बच्चों से, की जाती है। 2मैंने आप को दूध पिलाया। मैंने आप को ठोस भोजन इसलिए नहीं दिया कि आप इसे नहीं पचा सकते थे। 3आप इस समय भी इसे पचा नहीं सकते, क्योंकि आप अब तक शारीरिक स्वभाव के हैं। आप लोगों में ईर्ष्या और झगड़ा होता है। क्या यह इस बात का प्रमाण नहीं कि आप शारीरिक स्वभाव के हैं और निरे मनुष्यों-जैसा आचरण करते हैं? 4जब कोई कहता है, "मैं पौलुस का हूँ" और कोई कहता है, "मैं अपुल्लोस का हूँ", तो क्या यह निरे मनुष्यों जैसा आचरण नहीं है?

5अपुल्लोस क्या है? पौलुस क्या है? हम तो धर्मसेवक मात्र हैं, जिन के माध्यम से आप लोग विश्वासी बने। हममें प्रत्येक ने वही कार्य किया, जिसे प्रभु ने उस को सौंपा। 6मैंने पौधा रोपा, अपुल्लोस ने उसे सींचा, किन्तु परमेश्वर ने उसे बड़ा किया। 7न तो रोपने वाले का कोई

---

* अथवा "आध्यात्मिक मनुष्यों के लिए"। ** अथवा, 'शारीरिक'।

2 : 5 इफ 1 : 17; 1 थिस 1 : 5 **2 : 6** फिल 3 : 15 **2 : 7** रोम 16 : 25 **2 : 8** लू 13 : 34; याक 2 : 1; कुल 1 : 26; बारू 3 : 14-17 **2 : 9** यश 64 : 4; प्रव 1 : 9-10 **2 : 10** मत 13 : 11; नीति 20 : 27 **2 : 12** यो 16 : 13-14 **2 : 13** 1 कुर 1 : 4 **2 : 14** यो 8 : 47; 14 : 17 **2 : 15** 1 यो 2 : 20 **2 : 16** रोम 11 : 34; यश 40 : 13 (यू० पाठ) **3 : 1** यो 16 : 12 **3 : 2** 1 पत 2 : 2 इब्र 5 : 12-13 **3 : 3** 1 कुर 1 : 10-12; 11 : 28 **3 : 5** प्रे 18 : 24, 27 **3 : 6** प्रे 18 : 4, 11

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

महत्त्व है और न सींचने वाले का, बल्कि बढ़ाने वाले अर्थात् परमेश्वर का ही महत्त्व है। 8रोपने वाला और सींचने वाला एक ही काम करते हैं और प्रत्येक अपने-अपने परिश्रम के अनुरूप अपनी मज़दूरी पायेगा। 9हम परमेश्वर के सहकर्मी हैं और आप लोग हैं—परमेश्वर का खेत।

आप परमेश्वर का भवन भी हैं। 10परमेश्वर से प्राप्त अनुग्रह के अनुसार मैंने गृह निर्माण के कुशल कारीगर की तरह नींव डाली है। कोई दूसरा ही इसके ऊपर भवन का निर्माण कर रहा है। हर एक को सावधान रहना है कि वह किस तरह निर्माण करता है। 11जो नींव डाली गयी है, उसे छोड़ कर दूसरी नींव कोई नहीं डाल सकता, और वह नींव है येशु मसीह। 12यदि इस नींव पर अन्य व्यक्ति अपने-अपने निर्माण-कार्य में सोना, चांदी, बहुमूल्य पत्थर, लकड़ी, घास अथवा भूसा काम में लायेंगे, 13तो हर एक का यह कार्य प्रकट किया जायेगा। न्याय का दिन, जो आग के साथ प्रदीप्त होगा, उसे प्रकट कर देगा और उस आग द्वारा हर एक के कार्य की परीक्षा ली जायेगी। 14जिसका निर्माण-कार्य बना रहेगा, उसे पुरस्कार मिलेगा। 15जिसका निर्माण-कार्य जल जायेगा, उसे पुरस्कार नहीं मिलेगा। फिर भी वह बच जायेगा, जैसे कोई आग पार कर बच जाता है। 16क्या आप यह नहीं जानते कि आप परमेश्वर का मन्दिर हैं और परमेश्वर का आत्मा आप में निवास करता है? 17यदि कोई परमेश्वर का मन्दिर नष्ट करेगा, तो परमेश्वर उसे नष्ट करेगा; क्योंकि परमेश्वर का मन्दिर पवित्र है और वह मन्दिर आप हैं।

18कोई भी अपने को धोखा न दे। यदि आप में से कोई स्वयं को संसार की दृष्टि से ज्ञानी समझता हो, तो वह सचमुच ज्ञानी बनने के लिए अपने को मूर्ख बना ले; 19क्योंकि इस संसार का ज्ञान परमेश्वर की दृष्टि में 'मूर्खता' है। धर्मग्रन्थ में यह लिखा है, ''वह ज्ञानियों को उनकी चतुराई में ही फँसाता है।'' 20और यह भी लिखा है, ''प्रभु जानता है कि ज्ञानियों के तर्क-वितर्क निस्सार हैं।'' 21इसलिए कोई मनुष्यों पर गर्व न करे। सब कुछ आपका है। 22चाहे वह पौलुस, अपुल्लोस अथवा कैफा हो, संसार हो, जीवन अथवा मृत्यु हो, भूत अथवा भविष्य हो—वह सब आपका ही है। 23परन्तु आप मसीह के और मसीह परमेश्वर के हैं।

धर्मसेवा का मूल्यांकन

4 लोग हमें मसीह के सेवक और परमेश्वर के रहस्यों के प्रबन्धकर्त्ता समझें। 2अब प्रबन्धकर्त्ता से यह आशा की जाती है कि वह विश्वासपात्र हो। 3मेरे लिए इस बात का कोई महत्त्व नहीं कि आप लोग अथवा मनुष्यों का कोई न्यायालय मुझे योग्य समझे। मैं स्वयं भी अपना न्याय नहीं करता। 4मैं अपने में कोई दोष नहीं पाता, किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि मैं निर्दोष हूँ। प्रभु ही मेरे न्यायकर्त्ता हैं। 5इसलिए समय से पूर्व, प्रभु के आने तक, आप किसी बात का न्याय मत कीजिए। वही अन्धकार में छिपी हुई बातों को प्रकाश में लायेंगे और मनुष्यों के हृदय के गुप्त अभिप्राय प्रकट करेंगे। उस समय हर एक को परमेश्वर की ओर से यथायोग्य श्रेय दिया जायेगा।

6भाइयो और बहिनो! मैंने आप लोगों के लिए अपने और अपुल्लोस के विषय में यह स्पष्टीकरण दिया है, जिससे आप हमारे उदाहरण से यह शिक्षा ग्रहण करें कि ''कोई भी व्यक्ति धर्मग्रन्थ की मर्यादा का उल्लंघन न करे'' और आप एक का पक्ष लेते हुए और दूसरे का तिरस्कार करते हुए अहंकारी न बनें।

7कौन है वह, जो तुम को दूसरों की अपेक्षा अधिक महत्त्व देता है? तुम्हारे पास क्या है, जो तुम्हें न दिया गया हो? और यदि तुम को सब कुछ दान में मिला है, तो इस पर क्यों गर्व करते हो, मानो यह तुम्हें न दिया गया हो?

8लगता है कि अभी से आप लोग तृप्त हो

---

3 : 9 मत 13 : 3-9; इफ 2 : 20 **3 : 10** 1 कुर 15 : 10; 2 पत 3 : 15 **3 : 11** 1 पत 2 : 4-6 **3 : 13** 1 कुर 4 : 15; 2 थिस 1 : 8 **3 : 16** 1 कुर 6 : 19; 2 कुर 6 : 16 **3 : 18** प्रक 3 : 17-18 **3 : 19** अय्य 5 : 12-13 **3 : 20** भज 94 : 11 **4 : 1** तीत 1 : 7 **4 : 2** लू 12 : 42 **4 : 4** भज 143 : 2; प्रज्ञ 17 : 11 **4 : 5** 1 कुर 3 : 8 **4 : 6** रोम 12 : 3 **4 : 7** रोम 12 : 6 **4 : 8** प्रक 3 : 17, 21

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गये हैं। आप धनी हो गये हैं। आप को हमारे
बिना राज्य मिल चुका है। कितना अच्छा होता
यदि आप को सचमुच राज्य मिला होता! तब
हम भी शायद आपके राज्य के सहभागी बन
जाते! 9मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि परमेश्वर
ने हम प्रेरितों को मृत्यु-दंड पाए व्यक्तियों की
तरह जुलूस के अंत में प्रदर्शित किया है, क्योंकि
हम विश्व के लिए—स्वर्गदूतों और मनुष्यों,
दोनों के लिए—तमाशा बन गये हैं। 10हम मसीह
के कारण मूर्ख हैं, किन्तु आप मसीह के
समझदार अनुयायी हैं। हम दुर्बल हैं और आप
बलवान् हैं। आप लोगों को सम्मान मिल रहा
है और हमें तिरस्कार। 11हम इस समय भी भूखे
और प्यासे हैं, फटे-पुराने कपड़े पहनते हैं, मार
खाते हैं, भटकते फिरते हैं 12और अपने हाथों
से परिश्रम करते-करते थक जाते हैं। लोग
हमारा अपमान करते हैं और हम आशीर्वाद देते
हैं। वे हम पर अत्याचार करते हैं और हम सहते
जाते हैं। 13वे हमारी निन्दा करते हैं और हम
नम्रतापूर्वक अनुनय-विनय करते हैं। लोग अब
भी हमारे साथ ऐसा व्यवहार करते हैं, मानो हम
पृथ्वी के कचरे और समाज के कूड़ा-करकट
हों।

पौलुस का पितातुल्य प्रेम

14मैं आप लोगों को लज्जित करने के लिए
यह नहीं लिख रहा हूँ, बल्कि आप को अपने
प्यारे बच्चे मान कर समझा रहा हूँ; 15क्योंकि हो
सकता है कि मसीह में आपके हजार शिक्षक*
हों, किन्तु आपके अनेक पिता नहीं हैं। मैंने शुभ
समाचार द्वारा येशु मसीह में आप लोगों को
उत्पन्न किया है। 16इसलिए मैं आप लोगों से
यह अनुरोध करता हूँ कि आप मेरा अनुसरण
करें। 17मैंने प्रभु में अपने प्रिय एवं विश्वासी पुत्र
तिमोथी को इस कारण आप के यहाँ भेजा है।
वह आप को येशु मसीह की संगति में मेरी
जीवन-चर्या का स्मरण दिलाएगा, जिसके
अनुरूप मैं सब जगह हर कलीसिया में शिक्षा
देता हूँ। 18किन्तु कुछ व्यक्ति यह समझ कर
घमण्ड से फूले नहीं समा रहे हैं कि मैं आप के
यहाँ नहीं आऊँगा। 19यदि प्रभु की इच्छा हो,
तो मैं शीघ्र ही आप लोगों के यहाँ आऊँगा और
उनकी बातों से नहीं, बल्कि उनकी कार्यक्षमता
से उन घमण्डियों को परखना चाहूँगा; 20क्योंकि
परमेश्वर का राज्य बातों में नहीं, बल्कि
शक्तिशाली कार्यों में है। 21आखिर आप लोग
क्या चाहते हैं? क्या मैं छड़ी लिये आप के पास
आऊँ या प्रेम और कोमलता का भाव ले कर?

कलीसिया में दुराचार

5 आप लोगों के बीच हो रहे व्यभिचार की
चर्चा चारों ओर फैल गयी है—ऐसा
व्यभिचार जो गैर-यहूदियों में भी नहीं होता।
किसी ने अपने पिता की पत्नी को रख लिया
है। 2तब भी आप घमण्ड में फूले हुए हैं! आप
को शोक मनाना और जिसने यह काम किया,
उसका बहिष्कार करना चाहिए था। 3मैं तो शरीर
से अनुपस्थित होते हुए भी आत्मा से आप लोगों
के बीच हूँ। जिसने यह काम किया, मैं उसका
न्याय कर चुका हूँ, मानो मैं वास्तव में वहाँ
उपस्थित हूँ। 4और मेरा निर्णय यह है: अपने
प्रभु येशु के नाम पर हम—अर्थात् आप लोग
और मैं आत्मा में—एकत्र हो जायेंगे और अपने
प्रभु येशु के अधिकार से 5उस व्यक्ति को शैतान
के हवाले कर देंगे, जिससे उसके शरीर** का
विनाश हो, किन्तु प्रभु के दिन उसकी आत्मा
का उद्धार हो।

6आप लोगों का आत्मसन्तोष आप को
शोभा नहीं देता। क्या आप यह नहीं जानते कि
थोड़ा-सा ख़मीर सारे गूंधे हुए आटे को ख़मीरा
बना देता है? 7आप पुराना ख़मीर निकाल कर
शुद्ध हो जाइए, जिससे आप नया गूंधा हुआ

* शब्दशः, "बाल-संरक्षक"। **अथवा, "शारीरिक-स्वभाव, सांसारिकता"।

4 : 9 रोम 8 : 36; इब्र 10 : 33 **4 : 10** 1 कुर 3 : 18 **4 : 11** 2 कुर 11 : 23-27 **4 : 12** प्रे 18 : 3; 20 : 34; 1 कुर 9 : 15; 1 थिस 2 : 9; 2 थिस 3 : 8; 1 पत 3 : 9; रोम 12 : 14; भज 109 : 29 **4 : 13** व्य 17 : 7, 22 : 24 **4 : 15** गल 4 : 19 **4 : 16** 1 कुर 11 : 1 **4 : 17** प्रे 19 : 22; फिल 2 : 20 **4 : 19** प्रे 18 : 21; याक 4 : 15 **4 : 20** 1 कुर 2 : 4; लू 17 : 20 **5 : 1** लेव 18 : 7-8 **5 : 3** कुल 2 : 5 **5 : 4** मत 16 : 19; 18 : 8; 2 कुर 13 : 10 **5 : 5** 1 तिम 1 : 20; 1 पत 4 : 6 **5 : 6** गल 5 : 9 **5 : 7** नि 12 : 21; 13 : 7; यश 53 : 7; 1 पत 1 : 19

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आटा बन जायें। आप को बेख़मीर रोटी-जैसा बनना चाहिए, क्योंकि हमारा पास्का-पर्व+ का मेमना अर्थात् मसीह बलि चढ़ाये जा चुके हैं। 8इसलिए हमें न तो पुराने ख़मीर से और न बुराई और दुष्टता के ख़मीर से, बल्कि शुद्धता और सच्चाई की बेखमीर रोटी से पर्व मनाना चाहिए।

9मैंने आप लोगों को अपने पत्र में लिखा था कि व्यभिचारियों से मेल-जोल मत रखें। 10मेरा अभिप्राय यह नहीं था कि इस संसार के व्यभिचारियों, लोभियों, धोखेबाज़ों या मूर्तिपूजकों से कोई भी सम्बन्ध नहीं रखें। ऐसा करने के लिए आप को संसार को ही छोड़ देना पड़ता, 11बल्कि मैंने लिखा कि यदि 'भाई' कहलाने वाला कोई व्यक्ति व्यभिचारी, लोभी, मूर्तिपूजक, निन्दक, शराबी या धोख़ेबाज है, तो उसके साथ भोजन तक नहीं करें। 12-13बाहर वालों का न्याय करना मेरा काम नहीं। परमेश्वर बाहर वालों का न्याय करेगा। पर भीतर वाले, सहधर्मी लोगों का न्याय क्या आप स्वयं नहीं कर सकते? जैसा धर्मग्रंथ में कहा गया, "अपने बीच में से दुष्ट को निकाल दो।"

विश्वासियों में मुकदमेबाज़ी

6 यदि आप लोगों में कोई आपसी झगड़ा हो, तो आप न्याय के लिए सन्तों के पास नहीं, बल्कि अन्यधर्मियों के पास जाने का साहस कैसे कर सकते हैं? 2क्या आप नहीं जानते कि सन्त संसार का न्याय करेंगे? यदि आप को संसार का न्याय करना है, तो क्या आप छोटे-से मामलों का फ़ैसला करने योग्य नहीं हैं? 3क्या आप यह नहीं जानते कि हम स्वर्गदूतों का न्याय करेंगे? तो फिर साधारण जीवन के मामलों की बात ही क्या! 4यदि आप लोगों में साधारण जीवन के मामलों के बारे में कोई झगड़ा हो, तो आप क्यों ऐसे लोगो को पंच बनाते हैं, जो कलीसिया की दृष्टि में नगण्य** हैं? 5मैं आप को लज्जित करने के लिए यह कह रहा हूं। क्या आप लोगों में एक भी समझदार व्यक्ति विद्यमान नहीं है, जो भाई-भाई के बीच न्याय कर सकता है? 6इसकी क्या जरूरत है कि भाई अपने भाई पर मुक़दमा चलाये, यहां तक कि अविश्वासियों की अदालत में जाए? 7वास्तव में पहला दोष तो यह है कि आप एक दूसरे पर मुक़दमा चलाते हैं। इसकी अपेक्षा आप अन्याय क्यों नहीं सह लेते? अपनी हानि क्यों नहीं होने देते? 8परन्तु, आप तो स्वयं अन्याय करते और दूसरों को हानि पहुचाते हैं और वह भी अपने भाइयों को!

9क्या आप यह नहीं जानते कि अन्याय करने वाले व्यक्ति परमेश्वर के राज्य के अधिकारी नहीं होंगे? धोखे में न रहें! व्यभिचारी, मूर्तिपूजक, परस्त्रीगामी, कामातुर और पुरुषगामी, 10चोर, लोभी, शराबी, निन्दक और धोखेबाज परमेश्वर के राज्य के अधिकारी नहीं होंगे। 11आप लोगों में से कुछ ऐसे ही थे। किन्तु अब प्रभु येशु मसीह के नाम पर और हमारे परमेश्वर के आत्मा के द्वारा आप धोये गए तथा पवित्र किये गए और धार्मिक ठहराये गये हैं।

वेश्यागमन की निन्दा

12आप में से कोई यह कहेगा, "मुझे सब कुछ करने की अनुमति है।" हां, किन्तु सब कुछ हितकर नहीं। मैं कह सकता हूं, "मुझे सब कुछ करने की अनुमति है," किन्तु मैं किसी भी चीज का गुलाम नहीं बनूंगा। 13कोई यह भी कहेगा, "किन्तु भोजन पेट के लिए है और पेट भोजन के लिए।" हां, किन्तु परमेश्वर दोनों का अन्त कर देगा। शरीर व्यभिचार के लिए नहीं, बल्कि प्रभु के लिए है और प्रभु, शरीर के लिए। 14परमेश्वर ने जिस तरह प्रभु को पुनर्जीवित किया, उसी तरह वह हम लोगों को भी अपने सामर्थ्य से पुनर्जीवित करेगा।

15क्या आप लोग यह नहीं जानते कि आपका शरीर मसीह का अंग है? तो, क्या मैं

+ अथवा, 'फसह-पर्व'। ** अथवा, "तो आप उन्हीं लोगों को पंच बनाइए, जो कलीसिया में नगण्य हैं।"

5 : 8 नि 12 : 3-20 **5 : 9** 2 थिस 3 : 14; मत 18 : 17 **5 : 11** 2 थिस 3 : 6; तीत 3 : 10; 2 यो 10 **5 : 12** मक 4 : 11 **5 : 13** ब्य 13 : 5; 17 : 7 (यू० पाठ) 22 : 24 **6 : 2** दान 7 : 22 प्रक 3 : 21 **6 : 7** मत 5 : 39; 1 थिस 5 : 15; 1 पत 3 : 9 **6 : 10** गल 5 : 19-21 **6 :11** तीत 3 : 3-7 **6 : 12** 1 कुर 10 : 23 **6 : 13** 1 थिस 4 : 3-5 **6 : 14** 1 कुर 15 : 15, 20; 2 कुर 4 : 14; रोम 8 : 11 **6 : 15** 1 कुर 12 : 27

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मसीह का अंग ले कर उसे वेश्या का अंग बना
दूं? कभी नहीं! 16क्या आप लोग यह नहीं
जानते कि जिसका मिलन वेश्या से होता है, वह
उसके साथ एक शरीर हो जाता है? क्योंकि
धर्मग्रन्थ कहता है, "वे दोनों एक शरीर हो
जायेंगे।" 17किन्तु जिसका मिलन प्रभु से होता
है, वह उसके साथ एक आत्मा बन जाता है।
18व्यभिचार से दूर रहें। मनुष्य के दूसरे सभी
पाप उसके शरीर से बाहर हैं, किन्तु व्यभिचार
करने वाला अपने ही शरीर के विरुद्ध पाप
करता है।

19क्या आप यह नहीं जानते कि आपका
शरीर पवित्र आत्मा का मन्दिर है? वह आप को
परमेश्वर से प्राप्त हुआ है और वह आप में
निवास करता है। आपका अपने पर अधिकार
नहीं है; 20क्योंकि आप लोग मूल्य दे कर खरीदे
गये हैं। इसलिए आप लोग अपने शरीर से
परमेश्वर की महिमा प्रकट करें।

विवाह-सम्बन्धी प्रश्न का उत्तर

7 अब वे बातें लें, जिनके विषय में आप
लोगों ने पत्र में लिखकर पूछा है: "स्त्री
से संबंध नहीं रखना पुरुष के लिए उत्तम है"।
इसके विषय में मेरा विचार यह है: 2व्यभिचार
की आशंका के कारण हर पुरुष की अपनी पत्नी
हो और हर स्त्री का अपना पति। 3पति अपनी
पत्नी के प्रति अपने कर्तव्य का पालन करे और
स्त्री अपने पति के प्रति। 4पत्नी का अपने शरीर
पर अधिकार नहीं, वह पति का है और उसी
प्रकार पति का भी अपने शरीर पर अधिकार
नहीं, वह पत्नी का है। 5आप लोग एक- दूसरे
को उस अधिकार से वंचित नहीं करें और यदि
ऐसा करें, तो दोनों की सहमति से और कुछ
समय के लिए, जिससे प्रार्थना का अवकाश
मिले और इसके बाद पहले-जैसे रहें। कहीं
ऐसा न हो कि शैतान असंयम के कारण आप
को प्रलोभन में डाल दे। 6मैं यह आदेश के रूप
में नहीं, बल्कि अनुमति के रूप में कह रहा हूं।
7मैं तो चाहता हूँ कि सब मनुष्य मुझ-जैसे हों,
किन्तु परमेश्वर की ओर से हर एक को विशिष्ट
वरदान मिला है—किसी को एक प्रकार का,
किसी को दूसरे प्रकार का।

8मैं अविवाहितों और विधवाओं से यह
कहता हूँ: यदि वे मुझ-जैसे रहें, तो यह उनके
लिए उत्तम है। 9यदि वे आत्मसंयम नहीं रख
सकते, तो विवाह करें; क्योंकि वासना से
जलने* की अपेक्षा विवाह करना अच्छा है।

10विवाहितों को मेरा नहीं, बल्कि प्रभु का
यह आदेश है कि पत्नी अपने पति से अलग न
हो 11और यदि वह अलग हो जाये, तो उसे या
तो अविवाहित रहना चाहिए या अपने पति से
पुन: मेल कर लेना चाहिए। पति भी अपनी
पत्नी का परित्याग नहीं करे।

12दूसरे लोगों से प्रभु का नहीं, बल्कि मेरा
कहना यह है: यदि किसी विश्वासी भाई की
पत्नी हमारे प्रभु में विश्वास नहीं करती और
अपने पति के साथ रहने को सहमत है, तो वह
भाई उसका परित्याग नहीं करे 13और यदि किसी
विश्वासी स्त्री का पति हमारे प्रभु में विश्वास
नहीं करता और वह अपनी पत्नी के साथ रहने
को सहमत है, तो वह स्त्री अपने पति का
परित्याग नहीं करे; 14क्योंकि विश्वास नहीं
करने वाला पति अपनी पत्नी द्वारा पवित्र किया
गया है और विश्वास नहीं करने वाली पत्नी
अपने विश्वास-युक्त पति द्वारा पवित्र की गयी
है। नहीं तो आपकी सन्तान दूषित होती, किन्तु
अब वह पवित्र है। 15 दूसरी ओर, यदि विश्वास
नहीं करने वाला जीवन साथी अलग हो जाना
चाहे, तो वह अलग हो जाये। ऐसी स्थिति में
विश्वास करने वाला भाई या बहिन बाध्य नहीं
है। फिर भी परमेश्वर ने आप को शान्ति का
जीवन बिताने के लिए बुलाया है। 16क्या जाने,
हो सकता है कि पत्नी अपने पति की मुक्ति का

---

* अथवा, 'नरक-अग्नि में जलने'

6 : 16 उत 2 : 24 **6 : 17** यो 17 : 21-22; इफ 6 : 30; 2 कुर 3 : 17 **6 : 19** 1 कुर 3 : 16 **6 : 20** 1 कुर 7 : 23; 1 पत 1 : 18-19; फिल 1 : 20 **7 : 1** उत 2 : 18 **7 : 7** मत 19 : 12 **7 : 9** 1 तिम 5 : 14 **7 : 10** मत 5 : 32 **7 : 14** रोम 11 : 16 **7 : 15** रोम 14 : 19 **7 : 16** 1 पत 3 : 1

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कारण बन जाये और पति अपनी पत्नी की
मुक्ति का कारण।

परमेश्वर ने आप को जिस स्थिति में बुलाया है, उसी में रहिये

17सामान्य नियम यह है कि हर एक व्यक्ति
जिस स्थिति में परमेश्वर द्वारा बुलाया गया है,
उसी में बना रहे और उसे प्रभु से जो वरदान
मिला है, उसी के अनुरूप जीवन बिताये। मैं
सभी कलीसियाओं के लिए यही नियम निर्धारित
करता हूँ। 18यदि बुलाये जाने के समय किसी
का ख़तना हो चुका हो, तो वह इस बात को
छिपाने की चेष्टा न करे और यदि बुलाये जाने
के समय उसका ख़तना नहीं हुआ हो, तो वह
अपना ख़तना नहीं कराये। 19न तो ख़तने का
कोई महत्त्व है और न उसके अभाव का। महत्त्व
परमेश्वर की आज्ञाओं के पालन का है। 20हर
एक व्यक्ति जिस स्थिति में बुलाया गया था,
वह उसी में रहे। 21तुम बुलाये जाने के समय
दास थे ? तो इसकी चिन्ता न करो, और यदि तुम
स्वतन्त्र भी हो जा सको, तो अवसर का लाभ
उठा लो;* 22क्योंकि प्रभु द्वारा बुलाये जाने के
समय जो दास था, वह प्रभु द्वारा दास्यमुक्त है
और उसी प्रकार प्रभु द्वारा बुलाये जाने के समय
जो स्वतन्त्र था, वह मसीह का दास है। 23आप
लोग मूल्य देकर खरीदे गये हैं, अब मनुष्यों के
दास न बनें। 24भाइयो और बहिनो! हर एक
व्यक्ति जिस स्थिति में बुलाया गया था, वह
उसी में परमेश्वर की संगति में रहे।

अविवाहित लोगों तथा विधवाओं को परामर्श

25कुआँरों अथवा कुआँरियों के विषय में
मुझे प्रभु की ओर से कोई आदेश नहीं मिला है,
किन्तु प्रभु की दया से विश्वास के योग्य होने
के नाते मैं अपनी सम्मति दे रहा हूँ। 26मैं समझता
हूँ कि वर्तमान संकट में यही अच्छा है कि
मनुष्य जिस स्थिति में है, उसी स्थिति में रहे।
27तुम ने किसी स्त्री से विवाह किया है ? तो
उससे मुक्त होने का प्रयत्न न करो। क्या तुम
अविवाहित हो ? तो विवाह के लिये पत्नी की
खोज न करो। 28फिर भी यदि तुम विवाह करते
हो, तो इसमें कोई पाप नहीं और यदि कुआँरी
विवाह करती है, तो वह पाप नहीं करती। किन्तु
ऐसे लोगों को इस जीवन में अवश्य ही कष्ट
सहने पड़ेंगे। इन से मैं आप लोगों को बचाना
चाहता हूँ।

29भाइयो और बहिनो! मैं आप लोगों से यह
कहता हूँ : समय थोड़ा ही रह गया है। अब से
जो विवाहित हैं, वे भी इस तरह रहें मानो
विवाहित नहीं हैं; 30जो शोक करते हैं, वे ऐसे
रहें मानो शोक नहीं कर रहे हैं; जो आनन्द
मनाते हैं, वे ऐसे मनायें मानो आनन्द नहीं मना
रहे हैं; जो व्यवसाय करते हैं, वे ऐसे करें मानो
उनके पास कुछ नहीं है; 31जो इस संसार की
चीजों का उपभोग करते हैं, वे ऐसे करें मानो
उनका उपभोग नहीं करते हैं; क्योंकि संसार का
वर्तमान रूप लुप्त होता जा रहा है।

32मैं तो चाहता हूँ कि आप लोगों को कोई
चिन्ता न हो। जो अविवाहित है, वह प्रभु की
बातों की चिन्ता करता है। वह प्रभु को प्रसन्न
करना चाहता है। 33जो विवाहित है, वह
सांसारिक बातों की चिन्ता करता है। वह अपनी
पत्नी को प्रसन्न करना चाहता है। 34उस में
परस्पर-विरोधी भावों का संघर्ष है। जिसका
पति नहीं रह गया और जो कुआँरी है, वे प्रभु
की बातों की चिन्ता करती हैं। वे तन और मन
से पवित्र होने की कोशिश में लगी रहती हैं। जो
विवाहिता है, वह सांसारिक बातों की चिन्ता
करती है और अपने पति को प्रसन्न करना
चाहती है। 35मैं आप लोगों की भलाई के लिए
यह कह रहा हूँ। मैं आपकी स्वतन्त्रता पर रोक
लगाना नहीं चाहता। मैं तो आप लोगों के सामने
प्रभु की अनन्य भक्ति का आदर्श रख रहा हूँ।

36यदि कोई समझता है कि वह अपनी प्रबल
प्रवृत्तियों के कारण अपनी मंगेतर युवती के
साथ अशोभनीय व्यवहार कर सकता है और

* अथवा, "अपनी गुलामी की स्थिति का लाभ उठाओ।"

7 : 17 1 कुर 7 : 20–24 **7 : 18** 1 मक 1 : 15 **7 : 19** गल 5 : 6; 6 : 15; रोम 2 : 25 **7 : 22** इफ 6 : 6; फिले 16 **7 : 25** 1 तिम 1 : 12–13 **7 : 28** लू 21 : 23 **7 : 29** रोम 13 : 11; लू 14 : 26 **7 : 31** यो 2 : 15–17 **7 : 33** लू 14 : 20; इफ 5 : 29

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उसे इसके सम्बन्ध में कुछ करना आवश्यक मालूम पड़ता है, तो वह जो चाहता है, कर सकता है। वे विवाह करें—इसमें कोई पाप नहीं। 37किन्तु जिसका मन सुदृढ़ है, जो किसी भी तरह बाध्य नहीं है और अपनी इच्छा के अनुसार चलने का अधिकारी है, यदि उसने अपने मन में यह संकल्प किया है कि वह अपनी मंगेतर युवती का कुआँरापन सुरक्षित रखेगा, तो वह अच्छा करता है। 38इस प्रकार जो अपनी मँगेतर युवती से विवाह करता है, वह अच्छा करता है और जो विवाह नहीं करता, वह और भी अच्छा करता है।*

39जब तक किसी स्त्री का पति जीवित है, वह तब तक विवाह-संबंध से बंधी रहती है। यदि पति मर जाता है, तो वह स्वतंत्र हो जाती और जिसके साथ चाहे, विवाह कर सकती है—परन्तु यह विवाह प्रभु में हो! 40फिर भी यदि वह वैसी ही रह जाये, तो वह अधिक धन्य है। यह मेरा विचार है और मुझे विश्वास है कि परमेश्वर का आत्मा मुझमें भी विद्यमान है।

मूर्तियों को अर्पित मांस

8 अब मूर्तियों को अर्पित मांस के विषय में। इसके संबंध में हम सब को ज्ञान प्राप्त है—यह मानी हुई बात है; किन्तु वह 'ज्ञान' मनुष्य को अहंकारी बनाता है, जब कि प्रेम निर्माण करता है। 2यदि कोई समझता है कि वह कुछ जानता है, तो वह अब तक यह नहीं जानता कि किस प्रकार जानना चाहिए। 3किन्तु यदि कोई परमेश्वर से प्रेम करता है, तो यह इसलिए कि परमेश्वर उसे जानता है।

4मूर्तियों को अर्पित मांस खाने के विषय में हम जानते हैं कि संसार में मूर्ति की कोई वास्तविकता नहीं है—एकमात्र परमेश्वर के अतिरिक्त कोई और परमेश्वर नहीं है। 5यद्यपि भले ही आकाश में या पृथ्वी पर तथाकथित देवता हों, और सच पूछिए तो इस प्रकार के बहुत-से देवता और प्रभु हैं; 6फिर भी हमारे लिए तो एक ही परमेश्वर है—वह पिता, जिससे सब कुछ उत्पन्न होता है और जिसके पास हमें जाना है—और एक ही प्रभु हैं, अर्थात् येशु मसीह, जिनके द्वारा सब कुछ बना है और हम भी उन्हीं के द्वारा अस्तित्व में है।+

7परन्तु यह ज्ञान सब को प्राप्त नहीं है। कुछ लोग हाल में मूर्तिपूजक थे। वे मांस, देवता को अर्पित समझ कर खाते हैं और उनका अन्तः-करण दुर्बल होने के कारण दूषित हो जाता है। 8"भोजन हमें परमेश्वर के निकट नहीं पहुंचा सकता।" यदि हम उसे नहीं खाते तो उससे हमें कोई हानि नहीं और यदि हम उसे खाते हैं, तो उससे हमें कोई लाभ नहीं। 9किन्तु इसका ध्यान रखिए कि आपकी स्वतन्त्रता दुर्बल लोगों के लिए पाप का कारण न बने। 10मान लीजिए कि आप को 'ज्ञान' प्राप्त हो और आप किसी मन्दिर में भोजन करने जायें। यदि ऐसा कोई व्यक्ति आप को यह करते देख ले, जिसका अन्तःकरण दुर्बल है, तो क्या उसे मूर्तियों को अर्पित मांस खाने के लिए प्रोत्साहन नहीं मिलेगा? 11इस तरह आपके 'ज्ञान' के कारण उस दुर्बल भाई अथवा बहिन का विनाश हो जाता है, जिसके लिए मसीह मरे। 12भाइयों और बहिनों के विरुद्ध इस प्रकार पाप करने से और उनके दुर्बल अन्तःकरण को ठेस पहुंचाने से आप मसीह के विरुद्ध पाप करते हैं। 13इसलिए यदि मेरा भोजन मेरे भाई अथवा बहिन के लिए

---

* 36-38 पदों का अनुवाद इस प्रकार भी हो सकता है : "यदि कोई समझता है कि वह अपनी कन्या से, जिसका यौवन-काल समाप्त हो रहा है, अच्छा व्यवहार नहीं करता और उसे उसके सम्बन्ध में कुछ करना आवश्यक मालूम पड़ता है, तो वह जो चाहता है, कर सकता है। ऐसी कन्याएं विवाह करें; इस में कोई पाप नहीं। किन्तु जिस व्यक्ति का मन सुदृढ़ है, जो किसी भी तरह बाध्य नहीं है और अपनी इच्छा के अनुसार चलने का अधिकारी है, यदि उसने अपनी कन्या को कुआँरी रखने का संकल्प किया है, तो वह अच्छा करता है। इस प्रकार जो अपनी कन्या का विवाह कराता है, वह अच्छा करता है और जो उसका विवाह नहीं कराता है, वह और भी अच्छा करता है।" + अथवा, "जिन के द्वारा सब कुछ आया है और जिन के द्वारा हम पिता के पास जाते हैं।"

7 : 39 रोम 7 : 2 **8 : 1** प्रे 15 : 29 **8 : 2** गल 6 : 3 **8 : 3** गल 4 : 9 **8 : 4** 1 कुर 10 : 19; व्य 6 : 4 **8 : 5** 2 थिस 2 : 4; भज 82 : 6; यो 10 : 34 **8 : 6** 1 कुर 12 : 5-6; मला 2 : 10; कुल 1 : 16 **8 : 7** 1 कुर 10 : 27 **8 : 8** रोम 14 : 17 **8 : 9** गल 5 : 13 **8 : 11** रोम 14 : 15 **8 : 13** रोम 14 : 21

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पाप का कारण बनता है, तो मैं फिर कभी मांस
नहीं खाऊंगा। कहीं ऐसा न हो कि मैं अपने भाई
अथवा बहिन के लिए पाप का कारण बन
जाऊँ।

पौलुस अपने अधिकारों का उपयोग नहीं करते

9 क्या मैं स्वतन्त्र व्यक्ति नहीं ? क्या मैं प्रेरित
नहीं ? क्या मैंने हमारे प्रभु येशु को नहीं
देखा ? क्या आप लोग प्रभु में मेरे परिश्रम के
परिणाम नहीं ? 2मैं दूसरों की दृष्टि में भले ही
प्रेरित न होऊँ, किन्तु आपके लिए अवश्य हूँ;
क्योंकि आप लोग प्रभु में मेरे प्रेरितत्व के
प्रमाण* हैं। 3जो लोग मुझ पर अभियोग लगाते
हैं, उन से अपने पक्ष के समर्थन में मुझे यह
कहना है : 4क्या हमें खाने-पीने का अधिकार
नहीं ? 5क्या अन्य प्रेरितों, प्रभु के भाइयों और
कैफ़ा की भांति हमें अपनी मसीही पत्नी को
अपने साथ ले चलने की अधिकार नहीं ? 6क्या
मैं और बरनबास ही अपने जीवन-निर्वाह के
लिए काम करने को बाध्य हैं ?

7क्या यह कभी सुनने में आया कि कोई
अपने खर्च से सेना में सेवा करता है ? कौन
अंगूर-उद्यान लगा कर उसका फल नहीं
खाता ? कौन पालतू पशु पालकर उन पशुओं का
दूध नहीं पीता ? 8यह मैं साधारण जीवन के
उदाहरणों के आधार पर ही नहीं कह रहा हूँ
बल्कि व्यवस्था भी यही कहती है; 9क्योंकि मूसा
की व्यवस्था में लिखा है, ''तुम दंवरी करते
बैल के मुंह पर मोहरा मत लगाओ।'' क्या
परमेश्वर को बैलों की चिन्ता है 10या वह हमारे
लिए यह कहता है ? यह निश्चय ही हमारे लिए
लिखा गया है; क्योंकि यह उचित है कि उपज
का हिस्सा पाने की आशा से जोतने वाला हल
चलाये और दांवने वाला दँवरी करे। 11यदि हम
ने आप लोगों के लिए आध्यात्मिक बीज बोये
हैं, तो क्या आप से भौतिक फसल की आशा
करना कोई बड़ी बात है ? 12यदि दूसरे लोगों
का आप पर यह अधिकार है, तो क्या उनकी
अपेक्षा हमारा अधिक अधिकार नहीं ? फिर भी
हमने इस अधिकार का उपयोग नहीं किया है।
वरन् हम मसीह के शुभसमाचार के प्रचार में
कोई बाधा न डालें, इसलिए हम हर प्रकार का
कष्ट सहते हैं। 13क्या आप लोग यह नहीं
जानते कि मन्दिर में धर्मसेवा करने वालों को
मन्दिर से भोजन मिलता है और वेदी की सेवा
करने वाले वेदी के चढ़ावे के भागीदार हैं ?
14इसी तरह प्रभु ने भी आदेश दिया कि
शुभसमाचार के प्रचारक शुभसमाचार से जीविका
चला सकते हैं।

15परन्तु मैंने इन अधिकारों का उपयोग नहीं
किया और यह मैं इसलिए नहीं लिख रहा हूँ
कि अब मेरे लिए ऐसा किया जाये। मैं भले ही
मर जाऊँ, किन्तु मैं अपने को इस गौरव से
वंचित नहीं होने दूंगा। 16मैं इस पर गर्व नहीं
करता कि मैं शुभसमाचार का प्रचार करता हूँ।
मैं तो ऐसा करने के लिए विवश हूँ। धिक्कार
मुझे यदि मैं शुभसमाचार का प्रचार न करूँ !
17यदि मैं अपनी इच्छा से यह करता, तो मुझे
पुरस्कार का अधिकार होता। किन्तु मैं अपनी
इच्छा से यह नहीं करता। मुझे जो कार्य सौंपा
गया है, मैं उसे पूरा करता हूँ। 18तो, पुरस्कार
पर मेरा कौन-सा दावा है ? वह यह है कि मैं
बिना कुछ लिये शुभसमाचार का प्रचार करता
हूँ और शुभसमाचार-सम्बन्धी अपने अधिकारों
का पूरा उपयोग नहीं करता।

19सब लोगों से स्वतन्त्र होने पर भी मैंने
अपने को सब का दास बना लिया है, जिससे
मैं अधिक-से-अधिक लोगों को उद्धार के
लिए प्राप्त कर सकूँ। 20मैं यहूदियों के लिए
यहूदी-जैसा बना, जिससे मैं यहूदियों को प्राप्त
कर सकूँ। जो लोग व्यवस्था के अधीन हैं,

---

* शब्दशः, ''छाप''।

9 : 1 1 कुर 15 : 8; प्रे 26 : 16; 22 : 17 **9 : 2** 2 कुर 3 : 2-3 **9 : 4** लू 10 : 8 **9 : 5** यो 1 : 42 **9 : 9** व्य 25 : 4; 1 तिम 5 : 18 **9 : 10** 2 तिम 2 : 6 **9 : 11** रोम 15 : 27 **9 : 12** प्रे 20 : 34-35; 1 कुर 13 : 7; 2 कुर 11 : 9 **9 : 13** गण 18 : 8, 31; व्य 18 : 1-3 **9 : 14** लू 10 : 7; गल 6 : 6 **9 : 15** प्रे 18 : 3 **9 : 16** यिर 20 : 9 **9 : 17** 1 कुर 4 : 1 **9 : 18** 2 कुर 11 : 7; 1 कुर 8 : 9 **9 : 19** मत 20 : 26-27 **9 : 20** प्रे 16 : 3; 21 : 20-26

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उनको प्राप्त करने के लिए मैं व्यवस्था के
अधीन-जैसा बना, यद्यपि मैं वास्तव में व्यवस्था
के अधीन नहीं हूँ। 21जो लोग व्यवस्था के
अधीन नहीं हैं, उन्हें प्राप्त करने के लिए मैं
उनके-जैसा व्यवस्था-विहीन बना, यद्यपि मसीह
की व्यवस्था के अधीन होने के कारण मैं
वास्तव में परमेश्वर की व्यवस्था से स्वतन्त्र
नहीं हूँ। 22मैं दुर्बलों के लिए दुर्बल-जैसा बना,
जिससे मैं उनको प्राप्त कर सकूँ। मैं सब के
लिए सब कुछ बन गया हूँ, जिससे किसी न
किसी तरह कुछ लोगों का उद्धार कर सकूँ।
23मैं यह सब शुभसमाचार के कारण कर रहा
हूँ, जिससे मैं भी अन्यों के साथ उसके
कृपादानों का भागीदार बन जाऊँ।

24क्या आप यह नहीं जानते कि दौड़ में तो
सभी प्रतियोगी दौड़ते हैं, किन्तु पुरस्कार एक
को ही मिलता है? अतः आप इस प्रकार दौड़ें
कि पुरस्कार प्राप्त करें। 25सब प्रतियोगी हर
बात में संयम रखते हैं। वे नश्वर मुकुट प्राप्त
करने के लिए ऐसा करते हैं, जब कि हम
अनश्वर मुकुट के लिए। 26इसलिए मैं एक
निश्चित लक्ष्य सामने रख कर दौड़ता हूँ। मैं
ऐसा मुक्केबाज हूँ जो हवा में मुक्का नहीं
मारता। 27मैं अपने शरीर को कष्ट देता हूँ और
उसे वश में रखता हूँ। कहीं ऐसा न हो कि दूसरों
को प्रवचन देने के बाद मैं स्वयं अयोग्य
प्रमाणित होऊँ।

इस्राएल के प्राचीन इतिहास से चेतावनी

10 भाइयो और बहिनो! मैं आप लोगों को
याद दिलाना चाहता हूँ कि हमारे सभी
पूर्वज बादल की छाया में चले, सब ने समुद्र पार
किया, 2और इस प्रकार बादल और समुद्र का
''बपतिस्मा'' ग्रहण कर सब-के-सब मूसा के
सहभागी बने। 3सब ने एक ही आध्यात्मिक
भोजन ग्रहण किया 4और एक ही आध्यात्मिक
पेय का पान किया, क्योंकि वे एक आध्यात्मिक
चट्टान का जल पीते थे, जो उनके साथ-साथ
चलती थी और वह चट्टान थी—मसीह। 5फिर
भी उन में से अधिकांश लोग परमेश्वर के
कृपापात्र नहीं बन सके और निर्जन प्रदेश में ढेर
हो गये।

6ये घटनाएँ उदाहरण स्वरूप हैं और हम को
यह शिक्षा देती हैं कि हमें उनके समान बुरी
चीजों का लालच नहीं करना चाहिए। 7उनमें
से कुछ लोगों के समान आप मूर्तिपूजक न बनें,
जिन के विषय में यह लिखा है, ''वे खाने-पीने
के लिए बैठे और आनन्द मनाने के लिए
उठे।'' 8हम व्यभिचार नहीं करें, जैसा कि उन
में से कुछ लोगों ने व्यभिचार किया और एक
ही दिन में तेईस हजार मर गये। 9हम मसीह की
परीक्षा नहीं लें, जैसा कि उनमें से कुछ लोगों
ने किया और साँपों ने उन्हें नष्ट कर दिया।
10आप लोग नहीं भुनभुनायें, जैसा कि उनमें
से कुछ भुनभुनाये और विनाशक दूत ने उन्हें नष्ट
कर दिया।

11यह सब उदाहरण स्वरूप उन पर बीता
और हमें चेतावनी देने के लिए लिखा गया है,
जो युग के अन्त में विद्यमान हैं। 12इसलिए जो
यह समझता है कि मैं विश्वास में दृढ़ हूँ, वह
सावधान रहे। कहीं ऐसा न हो कि वह विचलित
हो जाये। 13आप को अब तक ऐसा प्रलोभन
नहीं दिया गया है, जो मनुष्य की शक्ति से परे
हो। परमेश्वर सत्यप्रतिज्ञ है। वह आप को ऐसे
प्रलोभन में पड़ने नहीं देगा, जो आपकी शक्ति
से परे हो। वह प्रलोभन के समय आप को
उससे निकलने का मार्ग दिखायेगा, जिससे
आप उसे सहन कर सकें।

मूर्तिपूजा से दूर रहें

14मेरे प्रिय भाइयो और बहिनो! आप
मूर्तिपूजा से दूर रहें। 15मैं आप लोगों को समझदार
जान कर यह कह रहा हूँ। आप स्वयं मेरी बातों
पर विचार करें। 16क्या आशिष का कटोरा,

---

9 : 21 गल 2 : 3 **9 : 22** 2 कुर 11 : 29; रोम 11 : 14 **9 : 24** 2 तिम 4 : 7; फिल 3 : 14 **9 : 25** 2 तिम 2 : 4-5; 4 : 8 ; 1 पत 5 : 4; याक 1 : 12; प्रज्ञ 4 : 2; 5 : 16 **9 : 27** रोम 8 : 13; 13 : 14 **10 : 1** नि 13 : 21; 14 : 22 **10 : 3** नि 16 : 4, 35; व्य 8 : 3 **10 : 4** नि 17 : 6 **10 : 5** गण 14 : 16, 23, 30 **10 : 6** गण 11: 4, 34 **10 : 7** नि 32 : 4 **10 : 8** गण 25 :1,9 **10 : 9** गण 21 : 5-6 **10 : 10** गण 14 : 2, 36; इब्र 3 : 11, 17 **10 : 11** 1पत 4 : 7 **10 : 13** यहूदी 8 : 25-27; प्रव 15 : 11-20 **10 : 14** 1यो 5 : 21 **10 : 16** मत 26 : 27; प्रे 2 : 42

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जिस पर हम आशिष मांगते हैं, हमें मसीह के
रक्त का सहभागी नहीं बनाता? क्या वह रोटी,
जिसे हम तोड़ते हैं, हमें मसीह के शरीर का
सहभागी नहीं बनाती? 17रोटी तो एक ही है,
इसलिए अनेक होने पर भी हम एक देह हैं।
क्योंकि हम सब एक ही रोटी के सहभागी हैं।
18जो शरीर के नाते इस्राएल वंश के लोग हैं,
उनकी प्रथाओं पर ध्यान दीजिए। क्या बलि-
भोज खाने वाले व्यक्ति वेदी के सहभागी नहीं
हैं?

19मैं यह नहीं कहता कि मूर्ति को चढ़ाये हुए
मांस की कोई विशेषता है अथवा यह कि मूर्ति
का कुछ महत्त्व है। 20किन्तु जैसा धर्मग्रन्थ में
कहा गया है, "जो बलि चढ़ायी जाती है वह
परमेश्वर को नहीं, बल्कि भूतों को चढ़ायी
जाती है।" मैं यह नहीं चाहता कि आप लोग
भूतों के सहभागी बनें। 21आप प्रभु के कटोरे
और भूतों के कटोरे, दोनों में से पी नहीं सकते।
आप प्रभु की मेज़ और भूतों की मेज़, दोनों के
सहभागी नहीं बन सकते। 22क्या हम प्रभु को
चुनौती देना चाहते हैं? क्या हम उससे अधिक
बलवान हैं?

व्यावहारिक निर्देश

23"सब कुछ करने की अनुमति है," किन्तु
सब कुछ हितकर नहीं। "सब कुछ करने की
अनुमति है," किन्तु सब कुछ से निर्माण नहीं
होता। 24सब कोई अपना नहीं, बल्कि दूसरों के
हित का ध्यान रखें। 25बाजार में जो मांस बिकता
है, उसे आप अन्तःकरण की शान्ति के लिए
पूछताछ किये बिना खा सकते हैं; 26क्योंकि जैसा
धर्मग्रन्थ में कहा गया है, "पृथ्वी और उसमें जो
कुछ है वह सब प्रभु का है।" 27जब
अविश्वासियों में से कोई आप को निमन्त्रण
देता है और आप जाना चाहते हैं, तो जो कुछ
परोसा जाता है उसे आप, अन्तःकरण की
शान्ति के लिए पूछताछ किये बिना, खा सकते
हैं। 28परन्तु यदि कोई आप से कहे, "यह देवता
को चढ़ाया हुआ मांस है," तो बतलाने वाले
और अन्तःकरण के कारण उसे मत खाइए।
29मेरा अभिप्राय आपके अन्तःकरण से नहीं,
बल्कि दूसरे व्यक्ति के अन्तःकरण से है;
क्योंकि मेरी स्वतन्त्रता दूसरे के अन्तःकरण के
कारण बाधित नहीं है। 30यदि मैं धन्यवाद की
प्रार्थना करने के बाद भोज में सम्मिलित हो गया
हूँ, तो जिस भोजन के लिए मैं परमेश्वर को
धन्यवाद देता हूँ, उस के कारण किसी को मेरी
निन्दा करने का अधिकार नहीं।

31इसलिए आप लोग चाहे खायें या पियें, या
जो कुछ भी करें, सब परमेश्वर की महिमा के
लिए करें। 32आप किसी के लिए ठेस का
कारण न बनें—न यहूदियों के लिए, न
यूनानियों और न परमेश्वर की कलीसिया के
लिए। 33मैं भी अपने हित का नहीं, बल्कि
दूसरों के हित का ध्यान रख कर सब बातों में
सब को प्रसन्न करने का प्रयत्न करता हूँ, जिससे
वे मुक्ति प्राप्त कर सकें।

11 आप लोग मेरा अनुसरण करें, जिस
तरह मैं मसीह का अनुसरण करता हूँ।

सार्वजनिक उपासना में सिर ढकने की प्रथा

2आप मेरी हर बात का ध्यान रखते हैं और
जो परम्पराएँ मैंने आपको सौंपी हैं, उन में दृढ़
बने रहते हैं। इसके लिए मैं आप लोगों की
प्रशंसा करता हूँ। 3फिर भी मैं आप को यह
बताना चाहता हूँ कि मसीह प्रत्येक पुरुष के
शीर्ष हैं; पुरुष अपनी पत्नी का शीर्ष है, लेकिन
मसीह का शीर्ष परमेश्वर ही हैं। 4जो पुरुष सिर
ढक कर प्रार्थना या नबूवत करता है, वह अपने
शीर्ष मसीह का अपमान करता है 5और जो स्त्री
बिना सिर ढके प्रार्थना या नबूवत करती है, वह
अपने शीर्ष पति का अपमान करती है; क्योंकि

---

10 : 17 1 कुर 12 : 27; रोम 12 : 5 **10 : 18** लेब 7 : 6, 15 **10 : 19** 1 कुर 8 : 4 **10 : 20** व्य 32 : 17 (यू० पाठ); लेव 17 : 7; भज 106 : 37; प्रक 9 : 20 **10 : 21** 2 कुर 6 : 15-16; मला 1 : 7, 12 **10 : 22** व्य 32 : 21 **10 : 23** 1 कुर 6 : 12 **10 : 24** रोम 15 : 2 **10 : 25** 1 कुर 14 : 2-10, 22 **10 : 26** भज 24 : 1 **10 : 27** लू 10 : 8 **10 : 28** 1 कुर 8 : 7 **10 : 30** 1 तिम 4 : 4 **10 : 31** कुल 3 : 17 **10 : 32** रोम 14 : 13 **10 : 33** 1 कुर 9 : 20-22 **11 : 1** 1 कुर 4 : 16; फिल 3 : 17 **11 : 3** 1 कुर 3 : 23; इफ 5 : 23; उत 3 : 16 **11 : 4** 1 कुर 12 : 10; 14 : 1

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तब वह उस स्त्री जैसी है जिसका सिर मूंड़ा
हुआ है। [6]यदि कोई स्त्री अपना सिर नहीं
ढकती, तो क्यों न वह अपना सिर मुँड़वा ले!
यदि कटे हुए केश या मूँड़ा हुआ सिर स्त्री के
लिए लज्जा की बात है, तो वह अपना सिर ढक
ले। [7]पुरुष को अपना सिर नहीं ढकना चाहिए;
क्योंकि वह परमेश्वर का प्रतिरूप और उसकी
महिमा का प्रतिबिम्ब है, जब कि स्त्री पुरुष की
महिमा का प्रतिबिम्ब है। [8]पुरुष स्त्री से नहीं
बना, बल्कि स्त्री पुरुष से बनी [9]और पुरुष की
सृष्टि स्त्री के लिए नहीं हुई, बल्कि पुरुष के
लिए स्त्री की सृष्टि हुई। [10]इसलिए प्रार्थना में
स्वर्गदूतों के कारण स्त्री को मान-मर्यादा* का
चिह्न अपने सिर पर पहनना चाहिए। [11]फिर
भी प्रभु में स्त्री के बिना पुरुष कुछ नहीं है और
पुरुष के बिना स्त्री कुछ नहीं; [12]क्योंकि जैसे
पुरुष से स्त्री की सृष्टि हुई वैसे ही पुरुष का जन्म
स्त्री से होता है, किन्तु सब का मूलस्रोत
परमेश्वर है। [13]आप स्वयं विचार करें, क्या यह
उचित है कि स्त्री बिना सिर ढके परमेश्वर से
प्रार्थना करे? [14]क्या प्रकृति स्वयं आप को यह
शिक्षा नहीं देती कि लम्बे केश रखना पुरुष के
लिए लज्जा की बात है, [15]जब कि स्त्री के लिए
यह गौरव की बात है, क्योंकि उसे आवरण के
रूप में लम्बे केश मिले हैं?

[16]यदि कोई इसके विषय में विवाद करना
चाहे, तो वह यह जान ले कि न तो हमारे यहाँ
कोई दूसरी प्रथा प्रचलित है और न परमेश्वर
की कलीसियाओं में ही।

प्रभु-भोज का दुरुपयोग

[17]मैं ये आदेश देते हुए इस पर अपना
असन्तोष प्रकट करना चाहता हूँ कि आपकी
सभाओं से आप को लाभ से अधिक हानि होती
है। [18]पहली बात तो यह है कि मेरे सुनने में
आया कि जब आप के यहाँ धर्मसभा होती है,
तो दलबन्दी स्पष्ट हो जाती है और मैं एक सीमा
तक उस पर विश्वास भी करता हूँ। [19]आप लोगों
में फूट होना एक प्रकार से अनिवार्य है, जिससे
यह स्पष्ट हो जाये कि आप में से कौन लोग खरे
हैं।

[20]आप लोग जिस तरह सभा के लिए एकत्र
होते हैं, वह प्रभु-भोज कहलाने योग्य नहीं;
[21]क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति झटपट अपना-अपना
भोजन खाने में लग जाता है। इस तरह कोई
भूखा रह जाता है और कोई जरूरत से ज्यादा
पीता है। [22]क्या खाने-पीने के लिए आपके
अपने घर नहीं हैं? या क्या आप परमेश्वर की
कलीसिया का तिरस्कार करना और गरीबों को
नीचा दिखाना चाहते हैं? मैं आप लोगों से क्या
कहूँ? क्या मैं आपकी प्रशंसा करूँ? मैं इस बात
के लिए आप की प्रशंसा नहीं कर सकता।

प्रभु-भोज का अनुष्ठान

[23]जो परम्परा मैंने आपको सौंपी है, वह मुझे
प्रभु से प्राप्त हुई थी: अर्थात् जिस रात को प्रभु
येशु पकड़वाये गये, उन्होंने रोटी ली [24]और
धन्यवाद की प्रार्थना करने के बाद उसे तोड़ा
और कहा, "यह मेरी ही देह है, जो तुम्हारे लिए
है। यह मेरी स्मृति में किया करो।" [25]इसी तरह,
भोजन के बाद उन्होंने कटोरा लेकर कहा,
"यह कटोरा मेरे ही रक्त द्वारा स्थापित नया
विधान है। जब-जब तुम उसमें से पियो, तो
यह मेरी स्मृति में किया करो।"

[26]इस प्रकार जब-जब आप यह रोटी खाते
और इस कटोरे में से पीते हैं, तो प्रभु के आने
तक उनकी मृत्यु की घोषणा करते हैं।

प्रभु-भोज में उचित रीति से सम्मिलित होना

[27]इसलिए जो व्यक्ति अयोग्य रीति से यह
रोटी खाता या प्रभु के कटोरे में से पीता है, वह
प्रभु की देह और रक्त के विरुद्ध अपराध करता
है। [28]अपने अन्तःकरण की परीक्षा करने के
बाद ही मनुष्य यह रोटी खाये और इस कटोरे
में से पिये; [29]क्योंकि जो कोई देह का अर्थ

* अक्षरशः 'अधिकार'

11 : 7 उत 1 : 27; 5 : 1 **11 : 8** उत 2 : 22-23; 1 तिम 2 : 13 **11 : 9** उत 2 : 18 **11 : 10** उत 6 : 2 **11 : 18** 1 कुर 1 : 10-12; 3: 3 **11 :19** 1 यो 2 : 19; व्य 13 : 3 **11 : 22** याक 2 : 5-6 **11 : 23** मत 26 : 26-28; मक 14 : 22-24; लू 22 : 19-20 **11 : 24** नि 12 : 14; व्य 16 : 3 **11 : 25** नि 24 : 8; जक 9 : 11 **11 : 26** मत 26 : 29 **11 : 27** इब्र 6 : 6; 10 : 29 **11 : 28** मत 26 : 22; 2 कुर 13 : 5

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
स्वीकार किये बिना* खाता और पीता है, वह
अपने ही दण्ड के निमित्त खाता और पीता है।
30यही कारण है कि आप में से बहुत-से लोग
रोगी और दुर्बल हैं और कुछ लोग मर भी गये
हैं। 31यदि हम अपने अन्त:करण की ठीक-
ठीक जाँच करते, तो हमें दोषी नहीं ठहराया
जाता। 32फिर भी जब प्रभु ही हमें दोषी ठहराते
हैं, तो यह हमारे सुधार के लिए है, जिससे हम
संसार के साथ दण्डनीय न हों।
33इसलिए मेरे भाइयो और बहिनो! जब
आप प्रभु-भोज के लिए एकत्र हों, तो एक
दूसरे की प्रतीक्षा करें। 34यदि किसी को भूख
लगे, तो वह अपने घर में खाये, जिससे आपकी
सभा आपके दण्ड का कारण न बने।
शेष बातों की व्यवस्था मैं आने पर करूँगा।

पवित्र आत्मा के वरदान

12 भाइयो और बहिनो! हम चाहते हैं कि
आप लोगों को आध्यात्मिक वरदानों
के विषय में निश्चित जानकारी हो।
2आप जानते हैं कि जब आप अन्यधर्मी थे,
तो आप विवश हो कर गूंगी मूर्तियों की ओर
खिंच जाते थे। 3इसलिए मैं आप लोगों को बता
देता हूँ कि कोई भी व्यक्ति परमेश्वर के आत्मा
से प्रेरित हो कर यह नहीं कहता, "येशु शापित
हो" और कोई भी व्यक्ति पवित्र आत्मा की
प्रेरणा के बिना यह नहीं कह सकता, "येशु ही
प्रभु हैं।"
4वरदान तो नाना प्रकार के होते हैं; किन्तु
आत्मा एक ही है। 5सेवाएँ तो नाना प्रकार की
होती हैं, किन्तु प्रभु एक ही हैं। 6प्रभावशाली
कार्य तो नाना प्रकार के होते हैं, किन्तु एक ही
परमेश्वर द्वारा सब में सब कार्य सम्पन्न होते हैं।
7प्रत्येक व्यक्ति को सब के कल्याण के लिए
आत्मा का प्रकाश+ मिलता है। 8किसी को आत्मा
द्वारा प्रज्ञा का संदेश सुनाने का, किसी को उसी
आत्मा द्वारा ज्ञान के शब्द बोलने का 9और किसी
को उसी आत्मा द्वारा विश्वास करने का वरदान
मिलता है। एक ही आत्मा किसी को रोगियों
को स्वस्थ करने का, 10किसी को प्रभावशाली
आश्चर्य कर्म करने का, किसी को नबूवत करने
का, किसी को आत्माओं की परख करने का,
किसी को भिन्न-भिन्न अध्यात्म भाषाओं में
बोलने का और किसी को उन भाषाओं की
व्याख्या करने का वरदान देता है। 11एक ही
और वही आत्मा यह सब करता है। वह अपनी
इच्छा के अनुसार प्रत्येक को अलग-अलग
वरदान देता है।

एक ही शरीर के अनेक अंग

12मनुष्य का शरीर एक है, यद्यपि उसके
बहुत-से अंग होते हैं। और सभी अंग, अनेक
होते हुए भी, एक ही शरीर बन जाते हैं। मसीह
के विषय में भी यही बात है। 13हम यहूदी हों
या यूनानी, दास हों या स्वतन्त्र, हम सब-के-
सब एक ही आत्मा का बपतिस्मा ग्रहण कर
एक ही शरीर बन गये हैं। हम सब को एक ही
आत्मा का पान कराया गया है।
14शरीर में भी तो एक नहीं, बल्कि बहुत-
से अंग हैं। 15यदि पैर कहे, 'मैं हाथ नहीं हूँ,
इसलिए शरीर का नहीं हूँ", तो क्या वह इस
कारण शरीर का अंग नहीं? 16यदि कान कहे,
"मैं आँख नहीं हूँ, इसलिए शरीर का नहीं हूँ",
तो क्या वह इस कारण शरीर का अंग नहीं?
17यदि सारा शरीर आँख ही होता, तो वह कैसे
सुन सकता? यदि सारा शरीर कान ही होता, तो
वह कैसे सूँघ सकता?
18वास्तव में परमेश्वर ने अपनी इच्छानुसार
प्रत्येक अंग को शरीर में स्थान दिया है। 19यदि
सब-के-सब एक ही अंग होते, तो शरीर कहाँ
होता? 20वास्तव में बहुत-से अंग होने पर भी
एक ही शरीर होता है। 21आँख हाथ से नहीं
कह सकती, "मुझे तुम्हारी जरूरत नहीं", और
सिर पैरों से नहीं कह सकता, "मुझे तुम्हारी

* शब्दश:, "इस देह को पहचाने बिना" + अथवा, "पवित्र आत्मा को प्रकट करने की प्रेरणा"

11 : 30 इक 4 : 14; 1 थिस 5 : 6; 1 कुर 15 : 20 **11 : 32** इब्र 12 : 5-6 **12 : 2** हब 2 : 18-19 **12 : 3** मक 9 : 39; मत 7 : 21 1 यो 4 : 2-3 **12 : 4** रोम 12 : 6; इफ 4 : 4 **12 : 5** इफ 4 : 11 **12 : 7** 1 कुर 14 : 26 **12 : 10** 1 कुर 14 : 5; प्रे 2 : 4 **12 : 11** रोम 12 : 3; इफ 4 : 7; 1 कुर 7 : 7 **12 : 12** 1 कुर 10 : 17 **12 : 13** गल 3 : 28

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जरूरत नहीं।'' 22वरन् इसके विपरीत, शरीर
के जो अंग सब से दुर्बल समझे जाते हैं, वे
अधिक आवश्यक हैं। 23शरीर के जिन अंगों
को हम कम आदरणीय समझते हैं, उनका
अधिक आदर करते हैं और अपने अशोभनीय
अंगों की लज्जा का अधिक ध्यान रखते हैं।
24हमारे शोभनीय अंगों को इसकी जरूरत नहीं
होती। तो, जो अंग कम आदरणीय हैं, परमेश्वर
ने उन्हें अधिक आदर दिलाते हुए शरीर का
संगठन किया है। 25यह इसलिए हुआ कि शरीर
में फूट उत्पन्न न हो, बल्कि उसके सभी अंग
एक दूसरे का ध्यान रखें। 26यदि एक अंग को
पीड़ा होती है, तो उसके साथ सभी अंगों को
पीड़ा होती है और यदि एक अंग का सम्मान
किया जाता है, तो उसके साथ सभी अंग आनन्द
मनाते हैं।

27इसी तरह आप सब मिल कर मसीह की
देह हैं और आप में से प्रत्येक उसका एक अंग
है। 28परमेश्वर ने कलीसिया में भिन्न-भिन्न
व्यक्तियों को नियुक्त किया है : पहले प्रेरितों
को, दूसरे नबियों को, तीसरे शिक्षकों और तब
आश्चर्यकर्म करने वालों को; तब उन व्यक्तियों
को, जिनको स्वस्थ करने का वरदान मिला है;
परोपकारकों, प्रशासकों और विभिन्न अध्यात्म
भाषाओं में बोलने वालों को। 29क्या सब प्रेरित
हैं? सब नबी हैं? सब शिक्षक हैं? सब आश्चर्य-
कर्म करने वाले हैं? 30क्या सब को स्वस्थ करने
का वरदान मिला है? सब अध्यात्म भाषाओं में
बोलते हैं? सब व्याख्या करने वाले हैं? 31जो
भी हो, आप श्रेष्ठतर वरदानों की धुन में रहें!

प्रेम सबसे उत्तम मार्ग है

अब मैं आप के सम्मुख सर्वोत्तम मार्ग प्रस्तुत
करता हूँ:

13 मैं भले ही मनुष्यों तथा स्वर्गदूतों की
भाषाओं में बोलूँ; किन्तु यदि मुझ में
प्रेम का अभाव है, तो मैं ठनठनाता पीतल
अथवा झनझनाती झाँझ मात्र हूँ। 2मुझे भले ही
नबूवत करने का वरदान मिला हो, मैं सभी
रहस्य जानता होऊँ, मुझे समस्त ज्ञान प्राप्त हो
गया हो, मेरा विश्वास इतना परिपूर्ण हो कि मैं
पहाड़ों को हटा सकूँ; किन्तु यदि मुझ में प्रेम
का अभाव है, तो मैं कुछ भी नहीं हूँ। 3मैं भले
ही अपनी सारी सम्पत्ति दान कर दूँ और प्रसिद्धि
पाने के लिए अपना शरीर अर्पित करूँ;* किन्तु
यदि मुझमें प्रेम का अभाव है, तो इससे मुझे
कुछ भी लाभ नहीं।

4प्रेम सहनशील और दयालु है। प्रेम न तो
ईर्ष्या करता है, न डींग मारता, न घमण्ड करता
है। 5प्रेम अशोभनीय व्यवहार नहीं करता। वह
अपना स्वार्थ नहीं खोजता। प्रेम न तो झुँझलाता
है और न बुराई का लेखा रखता है। 6वह दूसरों
के पाप से नहीं, बल्कि उनके सदाचरण से
प्रसन्न होता है। 7वह सब कुछ ढाँक देता है, सब
कुछ पर विश्वास करता है, सब कुछ की आशा
करता और सब कुछ सह लेता है।

8नबूवतें जाती रहेंगी, अध्यात्म भाषाएँ मौन
हो जायेंगी और ज्ञान मिट जायेगा, किन्तु प्रेम का
कभी अन्त नहीं होगा; 9क्योंकि हमारा ज्ञान तथा
हमारी नबूवत अपूर्ण हैं 10और जब पूर्णता आ
जायेगी, तो जो अपूर्ण है, वह जाता रहेगा। 11मैं
जब बच्चा था, तो बच्चों की तरह बोलता, सोचता
और समझता था; किन्तु सयाना हो जाने पर मैंने
बचकानी बातें छोड़ दीं। 12अभी तो हमें दर्पण
में धुँधला-सा दिखाई देता है, परन्तु तब हम
आमने-सामने देखेंगे। अभी तो मेरा ज्ञान अपूर्ण
है; परन्तु तब मैं उसी तरह पूर्ण रूप से जान
जाऊँगा, जिस तरह परमेश्वर मुझे जान गया है।
13अभी तो विश्वास, आशा और प्रेम—ये
तीनों बने हुए हैं। किन्तु इन में से प्रेम ही सब
से महान है।

पवित्र आत्मा के वरदानों द्वारा आध्यात्मिक निर्माण

14 आप प्रेम की साधना करते रहें। आप
आध्यात्मिक वरदानों की धुन में रहें;

*अथवा, "अपना शरीर भस्म होने के लिए अर्पित कर दूँ।"

12 : 27 रोम 12 : 5; इफ 5 : 30 **12 : 28** इफ 4 : 11-12 **12 : 31** 1 कुर 14 : 1 **13 : 2** मत 7 : 22; 17 : 20 **13 : 3** मत 6 : 2 **13 : 5** जक 8 : 17; फिल 2 : 4 **13 : 6** रोम 12 : 9 **13 : 7** नीति 10 : 12; 1 कुर 9 : 12 रोम 15 : 1 **13 : 8** 1पत 4 : 8 **13 : 12** 2 कुर 5 : 7; याक 1 : 23 **13 : 13** 1 थिस 1 : 3; 1 यो 4 : 16

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
किन्तु विशेष रूप से नबूवत के वरदान की
अभिलाषा किया करें। 2क्योंकि जो अध्यात्म
भाषा* में बोलता है, वह मनुष्यों से नहीं, बल्कि
परमेश्वर से बोलता है। कोई भी उसे नहीं
समझता : वह आत्मा से प्रेरित होकर रहस्यमय
बातें करता है। 3किन्तु जो नबूवत करता है, वह
मनुष्यों से आध्यात्मिक निर्माण, प्रोत्साहन और
सान्त्वना की बातें करता है। 4जो अध्यात्म भाषा
में बोलता है, वह अपना ही आध्यात्मिक
निर्माण करता है; किन्तु जो नबूवत करता है,
वह कलीसिया का आध्यात्मिक निर्माण करता
है। 5मैं तो चाहता हूँ कि आप सब को अध्यात्म
भाषाओं में बोलने का वरदान मिले, किन्तु
इससे अधिक यह चाहता हूँ कि आप को
नबूवत करने का वरदान मिले। यदि अध्यात्म
भाषाओं में बोलने वाला व्यक्ति कलीसिया के
आध्यात्मिक निर्माण के लिए उनकी व्याख्या
नहीं करता, तो इसकी अपेक्षा नबूवत करने
वाले का महत्त्व अधिक है।

6भाइयो और बहिनो! मान लीजिए कि मैं
आप लोगों के यहाँ आकर अध्यात्म भाषाओं
में बोलूँ और परमेश्वर द्वारा प्रकाशित सत्य,
ज्ञान, नबूवत अथवा शिक्षा न प्रदान करूँ, तो मेरे
बोलने से आप को क्या लाभ होगा? 7बाँसुरी
या वीणा– जैसे निर्जीव वाद्यों के विषय में भी
यही बात है। यदि उनसे उत्पन्न स्वरों में कोई
भेद नहीं है, तो यह कैसे पता चलेगा कि बाँसुरी
या वीणा पर क्या बजाया जा रहा है? 8यदि तुरही
का स्वर अस्पष्ट है, तो कौन अपने को युद्ध के
लिए तैयार करेगा? 9आपके विषय में भी यही
बात है। यदि आप अध्यात्म भाषा में बोलते
समय सुबोध शब्द नहीं बोलते, तो यह कैसे
पता चलेगा कि आप क्या कह रहे हैं? आप
केवल हवा से बातें करेंगे। 10संसार में न जाने
कितने प्रकार के शब्द हैं और उन में एक भी
निरर्थक नहीं है। 11यदि मैं किसी शब्द का अर्थ
नहीं जानता, तो मैं बोलने वाले के लिए परदेशी
हूँ और बोलनेवाला मेरे लिए परदेशी है।
12आप के विषय में भी यही बात है। आप लोग
आध्यात्मिक वरदानों की धुन में रहते हैं;
इसलिए ऐसे वरदानों से सम्पन्न होने का प्रयत्न
करें, जो कलीसिया के आध्यात्मिक निर्माण में
सहायक हों।

13अध्यात्म भाषा में बोलने वाला प्रार्थना
करे, जिससे उसको व्याख्या करने का वरदान
भी मिल जाये; 14क्योंकि यदि मैं अध्यात्म भाषा
में प्रार्थना करता हूँ, तो मेरी आत्मा प्रार्थना करती
है, किन्तु मेरी बुद्धि निष्क्रिय है। 15तो क्या करना
चाहिए? मैं अपनी आत्मा से प्रार्थना करूँगा
और अपनी बुद्धि से भी। मैं अपनी आत्मा से
गीत गाऊँगा और अपनी बुद्धि से भी। 16यदि
आप आत्मा से आविष्ट होकर परमेश्वर की
स्तुति करते हैं, तो वहाँ उपस्थित साधारण
व्यक्ति आपका धन्यवाद सुनकर कैसे "आमेन"
कह सकता है? वह यह भी नहीं जानता कि
आप क्या कह रहे हैं। 17आपका धन्यवाद भले
ही सुन्दर हो, किन्तु इससे दूसरे व्यक्ति का
आध्यात्मिक निर्माण नहीं होता। 18परमेश्वर को
धन्यवाद! मुझे आप सब से अधिक अध्यात्म
भाषाओं में बोलने का वरदान मिला है, 19किन्तु
अध्यात्म भाषा में दस हजार शब्द बोलने की
अपेक्षा मैं दूसरों को शिक्षा देने के लिए धर्मसभा
में** अपनी बुद्धि से पाँच शब्द बोलना ज्यादा
पसन्द करूँगा।

20भाइयो और बहिनो! सोच-विचार में
बच्चे मत बनिए। हाँ, बुराई के संबंध में शिशु
बने रहिए; किन्तु सोच-विचार में पूर्ण सयाने
बनिए। 21व्यवस्था में लिखा है, "प्रभु कहता
है : मैं अन्यभाषा-भाषियों द्वारा विदेशी भाषा
में इस प्रजा से बोलूँगा; फिर भी वह मेरी बात
पर ध्यान नहीं देगी।" 22इससे स्पष्ट है कि
अध्यात्म भाषाएँ विश्वासियों के लिए नहीं,
बल्कि अविश्वासियों के लिए चिह्न स्वरूप हैं
और नबूवत अविश्वासियों के लिए नहीं,

---

*अथवा, "अपरिचित, दिव्य भाषा" **अथवा, "कलीसिया में"

14 : 1 1 कुर 12 : 10, 31 **14 : 6** गण 11 : 29 **14 : 15** इफ 5 : 19 **14 : 20** इफ 4 : 14; इब्र 5 : 12-13; फिल 3 : 12, 15 **14 : 21** व्य 28 : 49; यश 28 : 11-12 **14 : 23** प्रे 2 : 13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बल्कि विश्वासियों के लिए है। [23]जब सारी
कलीसियां सहभागिता के लिए एकत्र होती है,
तब यदि सब लोग अध्यात्म भाषाओं में बोलने
लगें और उस समय कोई अदीक्षित या
अविश्वासी व्यक्ति भीतर आ जायें, तो क्या वे
यह नहीं कहेंगे कि आप प्रलाप कर रहे हैं?
[24]परन्तु यदि सब नबूवत करें और कोई
अविश्वासी या अदीक्षित व्यक्ति भीतर आ
जाये, तो वह उनकी बातों से प्रभावित हो कर
अपने को पापी समझेगा और अपने अन्त:करण
की जाँच करेगा। [25] उसके हृदय के रहस्य
प्रकट हो जायेंगे। वह मुँह के बल गिर कर
परमेश्वर की आराधना करेगा और यह स्वीकार
करेगा कि परमेश्वर सचमुच आप लोगों के
बीच विद्यमान है।

धर्मसभा के लिए नियम

[26]इसका निष्कर्ष क्या है? हे भाइयो और
बहिनो! जब-जब आप आराधना हेतु एकत्र
होते हैं, तो कोई भजन सुनाता है, कोई शिक्षा
देता है, कोई अपने पर प्रकट किया हुआ सत्य
बताता है, कोई अध्यात्म भाषा में बोलता है और
कोई उसकी व्याख्या करता है; किन्तु यह सब
आध्यात्मिक निर्माण के लिए होना चाहिए।
[27]जहाँ तक अध्यात्म भाषाओं में बोलने का
प्रश्न है, दो या अधिक-से-अधिक तीन व्यक्ति
बारी-बारी से ऐसा करें और कोई दूसरा व्यक्ति
इसकी व्याख्या प्रस्तुत करे। [28]यदि कोई व्याख्या
करने वाला नहीं हो, तो अध्यात्म भाषा में
बोलने वाला धर्मसभा में चुप रहे। वह अपने से
और परमेश्वर से बोले।

[29]नबूवत करने वालों में से दो या तीन बोलें
और दूसरे लोग उनकी वाणी की परीक्षा करें।
[30]यदि बैठे हुए लोगों में से किसी पर कोई सत्य
प्रकट किया जाता हो, तो पहला वक्ता चुप रहे।
[31]आप सभी लोग नबूवत कर सकते हैं, किन्तु
आप एक-एक कर के बोलें, जिससे सब को
शिक्षा और प्रोत्साहन मिले। [32]नबूवत करते समय
नबी अपनी आत्मा पर नियन्त्रण रख सकता है;
[33]क्योंकि परमेश्वर अव्यवस्था का नहीं, वरन्
शान्ति का परमेश्वर है।

सन्तों की सभी कलीसियाओं की तरह
[34]आपकी धर्मसभाओं में भी स्त्रियाँ चुप रहें।
उन्हें इस तरह बोलने की अनुमति नहीं दी जाती
है। वे आत्मनियंत्रित* रहें, जैसा कि व्यवस्था
भी कहती है। [35]यदि वे किसी बात की जानकारी
प्राप्त करना चाहती हैं, तो वे घर में अपने पतियों
से पूछें। धर्मसभा में बोलना स्त्री के लिए
उपयुक्त नहीं है।

[36]क्या परमेश्वर का वचन आप ही लोगों के
यहाँ से फैला, या केवल आप लोगों तक पहुँचा
है?

[37]यदि कोई समझता है कि वह नबूवत या
अन्य आध्यात्मिक वरदानों से सम्पन्न है, तो वह
यह अच्छी तरह जान ले कि मैं जो कुछ आप
लोगों को लिख रहा हूँ, वह प्रभु का आदेश है।
[38]यदि कोई यह अस्वीकार करता है, तो वह
प्रभु द्वारा अस्वीकार किया जाता है। **

[39]मेरे भाइयो और बहिनो! निष्कर्ष यह है:
आप नबूवत के वरदान की अभिलाषा किया
करें और अध्यात्म भाषाओं में बोलने वालों को
न रोकें। [40]परन्तु सब कुछ उचित और व्यवस्थित
रूप से किया जाये।

मसीह का पुनरुत्थान

15 भाइयो और बहिनो! मैं आप लोगों को
उस शुभ-समाचार का स्मरण दिलाना
चाहता हूँ, जिसका प्रचार मैंने आपके बीच
किया, जिसे आपने ग्रहण किया और जिस में
आप दृढ़ बने हुए हैं। [2]यदि आप शुभ-समाचार
उसी रूप में बनाये रखेंगे, जिस रूप में मैंने उसे
आपको सुनाया है, तो उसके द्वारा आप को
मुक्ति प्राप्त होगी। नहीं तो आपका विश्वास
करना व्यर्थ होगा।

---

*अथवा, "अधीनतापूर्वक" ** अथवा, "यदि कोई इसकी उपेक्षा करेगा तो उसकी भी उपेक्षा की जाएगी।"

14 : 24 प्रे 4 : 13 **14 : 25** यो 4 : 19; 16 : 8; यश 45 : 14; दान 2 : 47; जक 8 : 23 **14 : 26** 1 कुर 11 : 18; 12 : 8; इफ 4 : 12 **14 : 29** 1 थिस 5 : 21; प्रे 17 : 11 **14 : 34** 1 कुर 11 : 3; तीत 2 : 5; 1 तिम 5 : 12; इफ 5 : 22; उत 3 : 16 **14 : 37** 1 यो 4 : 6 **14 : 40** कुल 2 : 5

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
3मैंने आप लोगों को सबसे पहले* वह
विश्वास सौंप दिया जो मुझे प्राप्त हुआ था,
अर्थात् धर्मग्रन्थ के अनुसार मसीह हमारे पापों
के लिए मरे, 4वह कबर में रखे गए और
धर्मग्रन्थ के अनुसार तीसरे दिन जी उठे। 5वह
कैफा को और बाद में बारहों को दिखाई दिये।
6फिर वह एक ही समय पाँच सौ से अधिक
भाइयों और बहिनों को दिखाई दिये। उन में से
अधिकांश आज भी जीवित हैं, यद्यपि कुछ का
देहान्त हो चुका+ है। 7बाद में वह याकूब को
और फिर सब प्रेरितों को दिखाई दिये।
8सब से अन्त में वह मुझे भी दिखाई दिये,
जो मानो असमय जन्मा था! 9मैं प्रेरितों में सब
से छोटा हूँ। सच पूछिए, तो मैं प्रेरित कहलाने
योग्य भी नहीं; क्योंकि मैंने परमेश्वर की
कलीसिया पर अत्याचार किया है। 10मैं जो कुछ
भी हूँ परमेश्वर की कृपा से हूँ और जो कृपा मुझे
उससे मिली, वह व्यर्थ नहीं हुई। मैंने उन सबसे
अधिक परिश्रम किया है—मैंने नहीं, बल्कि
परमेश्वर की कृपा ने, जो मुझ में विद्यमान है।
11अस्तु, चाहे मैं हूँ चाहे वे हों, हम वही संदेश
सुनाते हैं और उसी पर आप लोगों ने विश्वास
किया है।

मृतकों का पुनरुत्थान

12यदि यही संदेश सुनाया जाता है कि मसीह
मृतकों में से जी उठे, तो आप लोगों में से कुछ
यह कैसे कहते हैं कि मृतकों का पुनरुत्थान नहीं
होता? 13यदि मृतकों का पुनरुत्थान नहीं होता,
तो मसीह भी नहीं जी उठे। 14यदि मसीह नहीं
जी उठे, तो हमारा संदेश सुनाना व्यर्थ है और
आप लोगों का विश्वास करना भी व्यर्थ है।
15तब हम ने परमेश्वर के विषय में मिथ्या साक्षी
दी; क्योंकि हमने परमेश्वर के विषय में यह
साक्षी दी है कि उसने मसीह को पुनर्जीवित
किया और यदि मृतकों का पुनरुत्थान नहीं
होता, तो उसने ऐसा नहीं किया। 16कारण, यदि
मृतकों का पुनरुत्थान नहीं होता, तो मसीह भी
नहीं जी उठे। 17यदि मसीह नहीं जी उठे, तो
आप लोगों का विश्वास करना मिथ्या है और
आप अब तक अपने पापों में फंसे हुए हैं। 18इतना
ही नहीं, जो लोग मसीह में विश्वास करते हुए
मरे++ हैं, उनका भी विनाश हुआ है। 19यदि मसीह
पर हमारी आशा इस जीवन तक ही सीमित है,
तो हम सब मनुष्यों में सब से अधिक दयनीय
हैं।
20किन्तु वास्तविकता यह है कि मसीह
मृतकों में से जी उठे हैं। जो लोग मृत्यु में सो
गये हैं, उन में से वह सब से पहले जी उठे।
21मृत्यु तो मनुष्य द्वारा आयी थी, इसलिए
मनुष्य द्वारा ही मृतकों का पुनरुत्थान हुआ है।
22जिस तरह सब मनुष्य आदम में मरते हैं, उसी
तरह सब मसीह में पुनर्जीवित किये जायेंगे।
23सब अपने क्रम के अनुसार, सब से पहले
मसीह और बाद में उनके पुनरागमन के समय
वे, जो मसीह के हैं। 24जब मसीह प्रत्येक
आधिपत्य, अधिकार तथा शक्ति को नष्ट कर
अपना राज्य पिता परमेश्वर को सौंप देंगे, तब
युगान्त आ जाएगा। 25क्योंकि वह तब तक
राज्य करेंगे, जब तक परमेश्वर सब शत्रुओं को
उनके चरण तले न डाल दे। 26सब के अन्त में
नष्ट किया जाने वाला शत्रु है—मृत्यु। 27धर्मग्रन्थ
कहता है कि, "परमेश्वर ने सब कुछ उसके
चरण तले डाल दिया है"; किन्तु जब वह
कहता है कि "सब कुछ" उसके अधीन है, तो
यह स्पष्ट है कि परमेश्वर, जिसने सब कुछ
मसीह के अधीन किया है, इस "सब कुछ"
में सम्मिलित नहीं है। 28जब सब कुछ पुत्र के
अधीन कर दिया जायेगा, तब पुत्र स्वयं उस
परमेश्वर के अधीन हो जायेगा, जिसने सब
कुछ उसके अधीन कर दिया और इस प्रकार

+ अथवा, "प्रमुख सत्य के रूप में" + शब्दशः "सो गए" ++ शब्दशः, "सो गए"

15 : 3 यश 53 : 8–9 **15 : 4** 2 रा 20 : 5; यश 54 : 7; हो 6 : 2; यो 2 : 22; भज 16 : 10 **15 : 5** लू 24 : 34; मक 16 : 14 **15 : 7** लू 24 : 50 **15 : 8** 1 कुर 9 : 1; प्रे 9 : 3; गल 1 : 16 **15 : 9** इफ 3 : 8; मत 5 : 19; 1 तिम 1 : 15 **15 : 10** 2 कुर 11 : 5; 6 : 1 **15 : 15** प्रे 1 : 22; 5 : 32 **15 : 16** 1 कुर 6 : 14 **15 : 20** 1 कुर 11 : 30; कुल 1 : 18 **15 : 21** उत 3 : 17–19; रोम 5 : 12, 18 **15 : 23** 1 थिस 4 : 16; प्रक 20 : 5 **15 : 24** दान 2 : 44 **15 : 25** भज 110 : 1; मत 22 : 44 **15 : 26** प्रक 20 : 14; 21 : 4 **15 : 27** भज 8 : 6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

परमेश्वर सब पर पूर्ण शासन करेगा।*
29यदि ऐसा नहीं है, तो वे लोग क्या करें जो
मृतकों के लिए बपतिस्मा लेते हैं ?** यदि मृतकों
का पुनरुत्थान बिलकुल नहीं होता, तो वे मृतकों
के लिए बपतिस्मा क्यों लें ? 30और हम स्वयं—
हम क्यों हर समय संकटों का सामना करते हैं ?
31हे भाइयो और बहिनो ! आप हमारे प्रभु येशु
मसीह में मेरे गौरव हैं। मैं आपकी शपथ खा
कर कहता हूँ कि मुझे प्रतिदिन मृत्यु का सामना
करना पड़ता है। 32यह मैं मनुष्य की दृष्टि से***
कह रहा हूँ: यदि मुझे इफिसुस नगर में "हिंस्र
पशुओं" से लड़ना पड़ा तो इससे मुझे क्या
लाभ ? यदि मृतकों का पुनरुत्थान नहीं होता, तो
"हम खायें और पियें ; क्योंकि कल हमें मरना
ही है!" 33धोखा न खाइए; बुरी संगति उत्तम
चरित्र को भी नष्ट कर देती है। 34होश में आइए,
जैसा कि उचित है,+ और पाप करना छोड़
दीजिए। आप में कुछ लोग परमेश्वर के
सम्बन्ध में कुछ नहीं जानते—मैं आप को
लज्जित करने के लिए यह कह रहा हूँ।

पुनर्जीवित शरीर

35अब कोई यह प्रश्न पूछ सकता है,
"मृतक कैसे जी उठते हैं ? वे कौन-सा शरीर
ले कर आते हैं ?" 36अरे मूर्ख ! तू जो बोता है,
वह जब तक नहीं मरता तब तक उसमें जीवन
नहीं आता। 37तू जो बोता है, वह उस शरीर-
रूप में नहीं है जो बाद में उत्पन्न होगा, बल्कि
तू निरा दाना बोता है, चाहे वह गेहूँ का हो या
दूसरे प्रकार का। 38परमेश्वर अपनी इच्छा के
अनुसार उसे शरीर प्रदान करता है—प्रत्येक
दाने को उसका अपना शरीर। 39प्रत्येक देह एक-
जैसी नहीं होती। मनुष्यों, पशुओं, पक्षियों और
मछलियों की देह अपने-अपने प्रकार की होती
है। 40स्वर्गिक देह है और पार्थिव देह भी, किन्तु
स्वर्गिक देह का तेज एक प्रकार का है और
पार्थिव देह का तेज दूसरे प्रकार का। 41सूर्य,
चन्द्रमा और नक्षत्रों का तेज अपने-अपने प्रकार
का होता है, क्योंकि एक नक्षत्र का तेज दूसरे
नक्षत्र के तेज से भिन्न है।
42मृतकों के पुनरुत्थान के विषय में भी यही
बात है। जो बोया जाता है, वह नश्वर है। जो
जी उठता है, वह अनश्वर है। 43जो बोया जाता
है, वह दीन-हीन है। जो जी उठता है, वह
महिमान्वित है। जो बोया जाता है, वह दुर्बल
है, जो जी उठता है, वह शक्तिशाली है। 44एक
प्राकृत शरीर बोया जाता है और एक आध्यात्मिक
शरीर जी उठता है। प्राकृत शरीर भी होता है और
आध्यात्मिक शरीर भी। 45धर्मग्रन्थ में लिखा है
कि "प्रथम मनुष्य आदम एक जीवन्त प्राणी
बन गया।" अन्तिम आदम तो एक जीवनदायक
आत्मा बन गया। 46जो पहला है, वह
आध्यात्मिक नहीं, बल्कि प्राकृत है। इसके बाद
ही आध्यात्मिक आता है। 47प्रथम मनुष्य मिट्टी
का बना है और पृथ्वी का है, द्वितीय मनुष्य++
स्वर्ग का है। 48 मिट्टी का बना मनुष्य जैसा था,
वैसे ही मिट्टी के बने मनुष्य हैं और स्वर्गिक
मनुष्य जैसा है, वैसे ही वे हैं जो स्वर्ग के हैं।
49जिस तरह हमने मिट्टी के बने मनुष्य का रूप
धारण किया है, उसी तरह हम स्वर्गिक मनुष्य
का भी रूप धारण करेंगे।
50भाइयो और बहिनो ! मेरे कहने का अभिप्राय
यह है कि मांस और रक्त वाला मनुष्य परमेश्वर
के राज्य का अधिकारी नहीं हो सकता और
नश्वरता अनश्वरता की अधिकारी नहीं होती।
51-52मैं आप को एक रहस्य बता रहा हूँ। हम
सब नहीं मरेंगे*, बल्कि क्षण भर में, पलक
मारते, अन्तिम तुरही बजते ही हम सब-के-
सब रूपान्तरित हो जायेंगे। तुरही बजेगी, मृतक

---

*अथवा, "सब में परमेश्वर ही सब कुछ होगा।" ** अथवा, "उन लोगों का क्या होगा जो बपतिस्मा लेते हैं ? क्या यह बपतिस्मा 'मृतकों' के लिए होता है ?" *** अथवा, "लोकोक्ति की भाषा में" + अथवा, "धर्म के प्रति जागरूक रहिए" ++ पाठान्तर, "द्वितीय मनुष्य अर्थात् प्रभु (येशु)" * शब्दशः "सो जाएंगे"

15 : 29 2 मक 12 : 44 **15 : 30** रोम 8 : 36; 2 कुर 11 : 26 **15 : 31** 2 कुर 4 : 10-11 **15 : 32** यश 22 : 13 **15 : 34** 1 कुर 6 : 5; रोम 13 : 11; इफ 5 : 14 **15 : 36** यो 12 : 24 **15 : 38** उत 1 : 11 **15 : 43** फिल 3 : 20-21 **15 : 45** उत 2 : 7; यो 6 : 63, 2 कुर 3 : 6, 17 **15 : 49** उत 5 : 3 **15 : 50** 1 कुर 6 : 13 **15 : 51** 1 थिस 4 : 15, 17 **15 : 52** मत 24 : 31; 1 थिस 4 : 16

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
अनश्वर बन कर पुनर्जीवित होंगे और हम
रूपान्तरित हो जायेंगे; 53क्योंकि यह आवश्यक
है कि यह नश्वर शरीर अनश्वरता को और यह
मरणशील शरीर अमरता को धारण करे।
54जब यह नश्वर शरीर अनश्वरता को
धारण करेगा, जब यह मरणशील शरीर अमरता
को धारण करेगा, तब धर्मग्रन्थ का यह कथन
पूरा हो जायेगाः
"मृत्यु विजय में विलीन हो गई
55ओ मृत्यु! कहाँ है तेरी विजय?
ओ मृत्यु ! कहाँ है तेरा डंक ?"
56मृत्यु का डंक तो पाप है और पाप को
व्यवस्था से बल मिलता है। 57परमेश्वर को
धन्यवाद , जो हमारे प्रभु येशु मसीह द्वारा हमें
विजय प्रदान करता है!
58मेरे प्रिय भाइयो और बहिनो! आप
विश्वास में दृढ़ तथा अटल बने रहें। आप प्रभु
के कार्य में निरंतर बढ़ते जाएं, और आप यह
निश्चित जानिए कि प्रभु के लिए किया गया
आप का परिश्रम व्यर्थ नहीं है।

यरूशलेम की कलीसिया के लिए दान

16 सन्तों के लिए जो दान एकत्र किया जा
रहा है, उसके विषय में आप लोग उस
निर्देश का पालन करें, जिसे मैंने गलातिया की
कलीसियाओं के लिए निर्धारित किया है।
2आप में से हर एक व्यक्ति प्रति इतवार को*
अपनी आय के अनुसार कुछ अलग कर दे और
अपने यहाँ सुरक्षित रखे। इस तरह मेरे पहुँचने
के बाद ही दान एकत्र करने की जरूरत नहीं
होगी। 3जिन लोगों को आप उपयुक्त समझेंगे,
आने पर मैं उन्हें पत्र दूँगा और वे आपका
उपहार यरूशलेम पहुँचा देंगे, 4और यदि यही
उचित जान पड़े कि मैं स्वयं जाऊँ, तो वे मेरे
साथ चलेंगे।

पौलुस की यात्राएं

5मैं मकिदुनिया का दौरा समाप्त कर+ आप
लोगों के यहाँ आऊँगा, क्योंकि मैं मकिदुनिया
जाने वाला हूँ। 6यदि हो सका, तो मैं आप के
यहाँ कुछ समय तक रहूँगा और शायद शीत
ऋतु भी बिताऊँगा। इसके बाद मुझे जहाँ भी
जाना होगा, आप मेरे लिए वहाँ जाने का प्रबन्ध
कर सकेंगे। 7 मैं इस बार चलते-चलते आप से
मिलना नहीं चाहता। प्रभु की इच्छा होने पर मैं
कुछ समय तक आप लोगों के यहाँ रहने की
आशा करता हूँ। 8मैं पेंतेकोस्त पर्व तक इफिसुस
नगर में रहूँगा, 9क्योंकि यहाँ उपयोगी कार्य के
लिए मेरे सामने एक विशाल द्वार खुला है;
किन्तु बहुत-से विरोधी भी हैं।
10जब तिमोथी आयेंगे, तो इसका ध्यान
रखियेगा कि उन्हें आप के यहाँ कोई चिन्ता न
हो, क्योंकि वह मेरी तरह प्रभु के कार्य में लगे
रहते हैं। 11उनकी उपेक्षा कोई नहीं करे। आप
लोग मेरे पास उनके सकुशल वापस आने का
प्रबन्ध करें, क्योंकि मैं भाइयों के साथ उनकी
प्रतीक्षा कर रहा हूँ। 12भाई अपुल्लोस के विषय
में मुझे यह कहना है कि मैंने उनसे बहुत
अनुरोध किया कि वह भाइयों के साथ आप
के यहाँ जायें, किन्तु वह अभी एकदम जाना
नहीं चाहते। अवकाश मिलने पर वह आयेंगे।
13आप लोग जागते रहें, विश्वास में दृढ़ रहें
और साहसी तथा समर्थ बनें। 14आप जो कुछ
भी करें, प्रेम से करें।
15भाइयो और बहिनो! आप लोगों से मेरा
एक अनुरोध है। आप स्तिफनास के परिवार को
जानते हैं। वे लोग यूनान के "प्रथम फल" हैं
और सन्तों की सेवा में लगे रहते हैं। 16आप
ऐसे लोगों का नेतृत्व स्वीकार करें और उन सब
का भी, जो उनके साथ परिश्रम करते हैं।
17स्तिफनास, फुरतूनातुस और अखइकुस के
आगमन से मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। उन्होंने आप

* शब्दशः , "सप्ताह के प्रथम दिन" + अथवा, "मकिदुनिया का दौरा करते समय"

15 : 53 2 कुर 5 : 4 **15 : 55** यश 25 : 8; हो 13 : 14 (यू० पाठ) **15 : 56** रोम 7 : 13; 6 : 14 **15 : 58** 2 इति 15 : 7; प्रक 14 : 13 **16 : 1** प्रे 11 : 29; गल 2 : 10; 2 कुर 8 : 9 **16 : 2** प्रे 20 : 7 **16 : 5** प्रे 39 : 21 **16 : 6** रोम 15 : 24; तीत 3 : 12 **16 : 7** प्रे 18 : 21; 20 : 2 **16 : 8** प्रे 19 : 1, 10 **16 : 9** 2 कुर 2 : 12; कुल 4 : 3; प्रक 3 : 8 **16 : 10** 1 कुर 4 : 17; फिल 2 : 20; **16 : 11** 1 तिम 4 : 12 **16 : 12** 1 कुर 1 : 12; 3 : 6 **16 : 13** भज 31 : 24; इफ 6 : 10 **16 : 15** 1 कुर : 16; रोम 16 : 5 **16 : 16** फिल 2 : 29

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लोगों की कमी** पूरी कर दी [18]और मेरे तथा आपके मन की चिन्ता को दूर कर दिया। आप ऐसे लोगों का सम्मान करें।

नमस्कार

[19]आसिया की कलीसियाएँ आप लोगों को नमस्कार कहती हैं। अक्विला और प्रिस्का एवं उनके घर में एकत्र होने वाली कलीसिया आप को प्रभु में हार्दिक नमस्कार कहती है। [20]सब भाई-बहिन आप लोगों को नमस्कार कहते हैं। शान्ति के पवित्र चुम्बन से एक दूसरे का अभिवादन करें।

[21]यह नमस्कार मेरे हाथ का लिखा हुआ है— पौलुस। [22]यदि आप लोगों में कोई "प्रभु" से प्रेम नहीं करता, वह "शापित" हो+ । प्रभु !आइए!**

[23]प्रभु येशु की कृपा आप लोगों के साथ रहे!

[24] येशु मसीह में मेरा प्रेम आप-सब के साथ रहे।

** अथवा, "अनुपस्थिति" + देखिए 12 : 3 का प्रसंग ** मूल में आरामी शब्द " मारना-था" जिसका अर्थ है: "हमारे प्रभु, आइए!" अथवा, "मारन-अथा" जिसका अर्थ है: "हमारे प्रभु आ रहे हैं!"

16 : 18 1थिस 5 : 12 **16 : 19** प्रे 18 : 2, 18, 26; रोम 16 : 3, 5 **16 : 20** रोम 16 : 16; 2 कुर 13 : 12; 1 पत 5 : 14 **16 : 21** कुल 4 : 18; 2 थिस 3 : 17 **16 : 22** रोम 9 : 3; फिल 4 : 5; गल 1 : 8-9

कुरिन्थुस नगर की कलीसिया के नाम संत पौलुस का दूसरा पत्र

भूमिका

जब कुरिन्थुस नगर की कलीसिया के साथ संत पौलुस के संबंध कुछ तनावपूर्ण थे, तब उस कठिन समय में भी संत पौलुस ने अपना पत्र-व्यवहार जारी रखा। इस बीच में उन्हें स्वयं कुरिन्थुस चलकर आकस्मिक जांच करनी पड़ी (2 कुर 2 : 1)। लेकिन कलीसिया के कुछ अशान्त सदस्यों ने पौलुस के प्रति गंभीर आक्रमणकारी रुख अपनाया। पौलुस तुरन्त इफिसुस नगर को वापस गये। फिर भी वह अपने विरोधियों से मेल-मिलाप करने की हार्दिक इच्छा करते थे। पौलुस ने तीतुस को उनके पास भेजा और तब वह स्वयं उनकी ओर निकल पड़े। वह मकिदुनिया प्रदेश तक ही पहुंचे, कि तीतुस आकर यह सुखद समाचार देते हैं कि विरोधियों से मेल-मिलाप हो गया है! इस समाचार से सांत्वना पाकर पौलुस ने यह नया पत्र लिखा (2 कुर 7 : 6)।

प्रस्तुत पत्र के प्रथम भाग में संत पौलुस कुरिन्थुस नगर की कलीसिया के साथ अपने संबंधों की चर्चा करते हैं। वह इस भाग में उन कारणों पर प्रकाश डालते हैं कि उन्होंने क्यों विरोधियों को विरोध और अपमान का इतनी कठोरता से उत्तर दिया। इसी भाग में वह अपनी प्रसन्नता भी अभिव्यक्त करते हैं कि उनकी कठोरता का अच्छा परिणाम ही निकला, और विरोधियों ने पश्चाताप और मेल-मिलाप किया।

तत्पश्चात् संत पौलुस यहूदा प्रदेश के गरीब मसीहियों की सहायतार्थ उदार दान देने का अनुरोध कुरिन्थुस की कलीसिया से करते हैं।

अंतिम अध्यायों में प्रेरित पौलुस अपने "प्रेरितत्व" का बचाव करते हैं। कुरिन्थुस नगर की कलीसिया में कुछ ऐसे लोग आ गये थे, जिन्होंने स्वयं को "सच्चे" प्रेरित घोषित कर रखा था, और प्रेरित पौलुस को "झूठा" !

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

विषय-वस्तु की रूप-रेखा

भूमिका	1 : 1-11
पौलुस और कुरिन्थुस नगर की कलीसिया	1 : 12—7 : 16
यहूदा प्रदेश के गरीब मसीहियों के लिए दान	8 : 1—9 : 15
पौलुस का अपने प्रेरितत्व का बचाव	10 : 1—13 : 10
उपसंहार	13 : 11-14

अभिवादन

1 कुरिन्थुस नगर में परमेश्वर की कलीसिया तथा समस्त यूनान देश में रहने वाले सभी सन्तों के नाम पौलुस, जो परमेश्वर की इच्छा से येशु मसीह का प्रेरित नियुक्त हुआ है, और भाई तिमोथी का पत्र।

2हमारा पिता परमेश्वर, और प्रभु येशु मसीह आप लोगों को अनुग्रह तथा शान्ति प्रदान करें!

परमेश्वर को धन्यवाद

3धन्य है परमेश्वर, हमारे प्रभु येशु मसीह का पिता, परमदयालु पिता और हर प्रकार की सान्त्वना का परमेश्वर! 4वह सब कष्टों में हमें सान्त्वना देता रहता है, जिससे परमेश्वर की ओर से हमें जो सान्त्वना मिलती है, उसी के द्वारा हम दूसरों को भी, उनके हर प्रकार के कष्ट में सान्त्वना देने के लिए, समर्थ हो जायें; 5क्योंकि जिस प्रकार हम प्रचुर मात्रा में मसीह के दुःखभोग के सहभागी हैं, उसी प्रकार मसीह द्वारा हम को प्रचुर मात्रा में सान्त्वना भी मिलती है। 6यदि हमें क्लेश है, तो आप लोगों की सान्त्वना और मुक्ति के लिए, और यदि हमें सान्त्वना मिलती है, तो इसलिए कि हम आप लोगों को सान्त्वना दे सकें, जिससे आप धैर्य के साथ वह दुःख सहने में समर्थ हों, जो हम भी भोगते हैं। 7आप लोगों के विषय में हमारी आशा सुदृढ़ है; क्योंकि हम जानते हैं कि जिस प्रकार आप हमारे दुःख में सहभागी हैं, उसी प्रकार आप हमारी सान्त्वना में भी सहभागी होंगे।

8भाइयो और बहिनो! हम आप लोगों से यह नहीं छिपाना चाहते कि आसिया में जो कष्ट हमें सहना पड़ा, वह बहुत ही भारी और हमारी सहनशक्ति के परे था—यहां तक कि हमने जीवित रहने की आशा भी छोड़ दी थी 9और हम यह समझ रहे थे कि हमें प्राणदण्ड मिल चुका है। यह इसलिए हुआ कि हम अपने पर नहीं, बल्कि परमेश्वर पर भरोसा रखें, जो मृतकों को पुनर्जीवित करता है। 10उसने हमें उस महान् मरण-संकट से बचाया और वह ऐसा ही करता रहेगा। उसी पर हमारी यह आशा आधारित है कि वह भविष्य में भी हमें बचायेगा। 11आप लोग भी प्रार्थना द्वारा हमारी सहायता करें। इस प्रकार बहुत-सी प्रार्थनाओं के कारण हमें आशिष मिलेगी और उसके लिए बहुत-से लोग हमारी ओर से परमेश्वर को धन्यवाद भी देंगे।

पौलुस की कुरिन्थुस-यात्रा स्थगित

12हमें एक बात का गर्व है—हमारा अन्तःकरण हमें विश्वास दिलाता है कि हमने मनुष्यों के साथ और विशेष कर आप लोगों के साथ जो व्यवहार किया है, वह संसार की बुद्धिमानी के अनुसार नहीं, बल्कि उस सच्चाई और ईमानदारी के अनुसार था जो परमेश्वर की कृपा का वरदान है। 13-14हम आपके नाम जो पत्र लिखते हैं, उन में ऐसी कोई बात नहीं है, जिसे पढ़ कर आप नहीं समझ सकते। मुझे आशा है कि आप जो बात अब आंशिक रूप में समझते हैं, उसे बाद में पूर्ण रूप में समझेंगे और वह बात यह है कि जिस तरह आप हमारे प्रभु येशु के आगमन के दिन हम पर गर्व करेंगे, उसी

---

1 : 1 1 कुर 1 : 1 **1 : 2** रोम 1 : 7 **1 : 3** रोम 15 : 5; इफ 1 : 3; 1 पत 1 : 3 **1 : 5** भज 34 : 19; 94 : 19 **1 : 6** 2 कुर 4 : 15-17 **1 : 8** प्रे 19 : 23; 1 कुर 15 : 32. **1 : 10** 2 तिम 4 : 18 **1 : 12** 2 कुर 2 : 17; इब्र 13 : 18; 1 कुर 1 : 17 **1 : 14** 2 कुर 5 : 12; फिल 2 : 16

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तरह हम भी आप लोगों पर गर्व करेंगे।
15मुझे इसका पूरा भरोसा है; इसलिए मैंने,
आप लोगों को दो बार आध्यात्मिक लाभ का
अवसर देने के विचार से, पहले आपके पास
आने का निश्चय किया था। 16मैं आप के यहां
हो कर मकिदुनिया जाना और वहां से आप के
पास लौटना चाहता था, जिससे आप मेरी यहूदा
प्रदेश की यात्रा का प्रबन्ध करें। 17मेरा निश्चय
यही था। तो, क्या मैंने अकारण ही अपना
विचार बदल लिया? क्या मैं सांसारिक मनुष्य
की तरह निश्चय करता हूँ? क्या मुझ में कभी
'हां' और कभी 'नहीं'-जैसी बात है? 18परमेश्वर
की सच्चाई की शपथ! मैंने आप लोगों को जो
सन्देश दिया, उसमें कभी 'हां' और कभी
'नहीं'-जैसी बात नहीं है; 19क्योंकि सिल्वानुस,
तिमोथी और मैंने आपके बीच जिनका प्रचार
किया, उन परमेश्वर-पुत्र येशु मसीह में कभी
'हां' और कभी 'नहीं'- जैसी बात नहीं—उन
में मात्र 'हां' है। 20उन्हीं में परमेश्वर की समस्त
प्रतिज्ञाओं की 'हां' विद्यमान है; इसलिए हम
परमेश्वर की महिमा के लिए उन्हीं के द्वारा
'आमेन' कहते हैं। 21परमेश्वर, आप के साथ-
साथ, हमें भी मसीह में सुदृढ़ बनाये रखता है
और उन्हीं अभिषिक्त मसीह में हमारा अभिषेक
करता है। 22परमेश्वर ने हम पर अपनी मुहर
लगायी और अग्रिम राशि के रूप में हमारे हृदयों
को पवित्र आत्मा प्रदान किया है।
23मैं परमेश्वर को साक्षी बना कर अपने
जीवन की शपथ खा कर कहता हूँ—मैं इसलिए
अब तक कुरिन्थुस नहीं आया कि मैं आप लोगों
को दुःख से बचाए रखना चाहता था। 24आपके
विश्वास पर मनमाना अधिकार जताना हमारा
उद्देश्य नहीं है। हम आप लोगों की सुख-
शान्ति के लिए आपके सहयोगी हैं और आप
लोग तो यों भी विश्वास में दृढ़ हैं।

2 इसलिए मैंने निश्चय किया कि मैं आपको
फिर दुःख देने के लिए आप के यहां नहीं
आऊँगा। 2यदि मैं आपको दुःख देता हूँ, तो
कौन मुझे प्रसन्न कर सकता है? जिस व्यक्ति
को मुझे दुःख देना पड़ा, वही मुझे प्रसन्न कर
सकता है। 3तब मैंने इस बात को लेकर पत्र
लिखा, जिससे कहीं ऐसा न हो कि मेरे आने
पर, जिन लोगों से मुझे आनन्द मिलना चाहिए,
वे मुझे दुःखी बनायें; क्योंकि आप सब के
विषय में मेरा दृढ़ विश्वास है कि मेरा आनन्द
आप सब का आनन्द भी है। 4मैंने बड़े कष्ट में,
हृदय की गहरी वेदना सहते हुए और आँसू
बहा-बहा कर वह पत्र लिखा था। मैंने आप
लोगों को दुःख देने के लिए नहीं लिखा था,
बल्कि इसलिए कि आप यह जान जायें कि मैं
आप लोगों को कितना अधिक प्यार करता हूँ।

अपराधी को दण्ड और क्षमा

5यदि किसी ने दुःख दिया है, तो उसने मुझे
नहीं, बल्कि एक प्रकार से आप सब को दुःख
दिया है, हालांकि हमें इस बात को अधिक
महत्त्व नहीं देना चाहिए।* 6आप लोगों के
समुदाय ने उस व्यक्ति को जो दण्ड दिया है,
वह पर्याप्त है। 7अब आप को ही उसे क्षमा और
सान्त्वना देनी चाहिए। कहीं ऐसा न हो कि वह
अत्यधिक दुःख में डूब जाये। 8इसलिए मैं आप
से निवेदन करता हूँ कि आप उसके प्रति प्रेम
दिखाने का निर्णय करें। 9मैंने आपकी परीक्षा
लेने के उद्देश्य से भी लिखा था। मैं यह जानना
चाहता था कि आप सभी बातों में आज्ञाकारी
हैं या नहीं। 10जिसे आप क्षमा करते हैं, उसे मैं
भी क्षमा करता हूं। जहां तक मुझे क्षमा करनी
थी, मैंने आप लोगों के कारण मसीह के
प्रतिनिधि के रूप में+ क्षमा प्रदान की है; 11क्योंकि
हम शैतान के फन्दे में नहीं पड़ना चाहते हैं। हम
उसकी चालें अच्छी तरह जानते हैं।

---

* अथवा, "यह बात मैं बढ़ा-चढ़ाकर नहीं कह रहा हूँ"; अथवा, "मैं बहुत कठोर बनना नहीं चाहता"। +अथवा, "मसीह की उपस्थिति में"।

1 : 16 1 कुर 16 : 5-6 **1 : 17** 2 कुर 5 : 16 **1 : 20** प्रक 3 : 14 **1 : 21** 1 यू 2 : 27 **1 : 22** 2 कुर 5 : 5; रोम 8 : 16; इफ 1 : 13-14 **1 : 23** रोम 1 : 9; 2 कुर 11 : 31 **1 : 24** 1 पत 5 : 3 **2 : 1** 2 कुर 12 : 21; 1 कुर 4 : 21 **2 : 4** प्रे 20 : 31 **2 : 5** 1 कुर 5 : 1 **2 : 9** 2 कुर 7 : 15 **2 : 10** लू 10 : 16 **2 : 11** लू 22 : 31

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सन्त पौलुस को सान्त्वना

12मैं मसीह के शुभ-समाचार का प्रचार
करने त्रोआस नगर में पहुंचा और वहां प्रभु के
कार्य के लिए द्वार खुला हुआ था। 13फिर भी
मेरे मन को शान्ति नहीं मिली, क्योंकि मैंने वहां
अपने भाई तीतुस को नहीं पाया। इसलिए मैंने
वहां के लोगों से विदा ले कर मकिदुनिया के
लिए प्रस्थान किया।

14परमेश्वर को धन्यवाद, जो हमें निरन्तर
मसीह की विजय-यात्रा में ले चलता और
हमारे द्वारा अपने नाम के ज्ञान की सुगन्ध सर्वत्र
फैलाता है! 15क्योंकि लोग चाहे मुक्ति प्राप्त
कर रहे हैं या विनष्ट हो रहे हैं, हम उनके बीच
परमेश्वर के लिए मसीह की मधुर सुगन्ध हैं।
16विनष्ट हो जाने वालों के लिए यह गंध घातक
हो कर मृत्यु की ओर ले जाती है; किन्तु मुक्ति
प्राप्त करने वालों के लिए यह जीवनदायक हो
कर जीवन की ओर ले जाती है। इस कार्य को
योग्य रीति से कौन सम्पन्न कर सकता है?
17हम उन बहुसंख्यक लोगों के समान नहीं हैं,
जो परमेश्वर के वचन का सौदा करते हैं, बल्कि
हम परमेश्वर से प्रेरित हो कर और मसीह से
संयुक्त रह कर, परमेश्वर की आंखों के सामने,
सच्चाई से वचन का प्रचार करते हैं।

नये विधान की धर्म-सेवा

3 क्या हम फिर अपनी प्रशंसा करने लगे?
क्या कुछ अन्य लोगों की तरह यह हमारे
लिए आवश्यक है कि हम आप को सिफ़ारिशी
पत्र दिखायें अथवा आप से मांगें? 2आप लोग
तो हैं—हमारा पत्र, जो हमारे हृदय पर अंकित
रहता है और जिसे सब लोग देख और पढ़
सकते हैं। 3आप लोग निश्चय ही मसीह का
वह पत्र हैं, जिसे उन्होंने हमारी सेवा द्वारा
लिखवाया है। वह पत्र स्याही से नहीं, बल्कि
जीवन्त परमेश्वर के आत्मा से, पत्थर की
पट्टियों पर नहीं, बल्कि मानव हृदय की पट्टियों
पर लिखा हुआ है।

4हम यह दावा इसलिए कर सकते हैं कि हमें
मसीह के कारण परमेश्वर पर भरोसा है।
5इसका अर्थ यह नहीं है कि हमारी कोई अपनी
योग्यता है। हम अपने को किसी बात का श्रेय
नहीं दे सकते। हमारी योग्यता का स्रोत
परमेश्वर है। 6उसने हमें एक नये विधान के
सेवक होने के योग्य बनाया है और यह विधान
अक्षरों में लिखी हुई व्यवस्था का नहीं, बल्कि
आत्मा का है; क्योंकि अक्षर तो मृत्यु-जनक है,
किन्तु आत्मा जीवनदायक है। 7यदि मृत्यु-जनक
व्यवस्था का सेवाकार्य, जो पत्थरों पर अक्षर
अंकित करने में संपन्न हुआ, इतना तेजस्वी था
कि इस्राएली लोग मूसा के मुख के तेज के
कारण—जो क्रमशः क्षीण हो रहा था—उनके
मुख पर दृष्टि स्थिर नहीं कर सके, 8तो फिर
पवित्र आत्मा का सेवाकार्य अधिक तेजोमय
क्यों न होगा? 9यदि दोषी ठहराने की प्रक्रिया
में सेवाकार्य इतना तेजस्वी था, तो दोषमुक्त
करने की प्रक्रिया में सेवाकार्य कहीं अधिक
तेजोमय होगा। 10इस वर्तमान परमश्रेष्ठ तेज के
सामने वह पूर्ववर्त्ती तेज अब निस्तेज हो गया
है। 11यदि क्षीण होने वाला इतना तेजस्वी था,
तो सदा स्थिर रहने वाला कितना अधिक
तेजोमय होगा!

12अपनी इस आशा के कारण हम बड़ी
निर्भीकता से बोलते हैं। 13हम मूसा के सदृश
नहीं हैं। वह अपने मुख पर परदा डाले रहते थे,
जिससे इस्राएली उनके क्रमशः क्षीण होने वाले
तेज की अंतिम झलक भी न देख पायें।
14इस्राएलियों की बुद्धि कुण्ठित हो गयी थी
और आज भी, जब प्राचीन विधान पढ़ कर
सुनाया जाता है, तो वही परदा पड़ा रहता है।
वह पड़ा रहता है, क्योंकि मसीह ही उसे हटा

2 : 12 प्रे 14 : 27; 1 कुर 16 : 9 **2 : 13** प्रे 20 : 1 **2 : 15** 1 कुर 1 : 18 **2 : 16** लू 2 : 34; 2 कुर 3 : 5-6 **2 : 17** 2 कुर 1 : 12; 1 पत 4 : 11 **3 : 1** 2 कुर 5 : 12; रोम 16 : 1; प्रे 18 : 27 **3 : 2** 1 कुर 9 : 2 **3 : 3** नि 24 : 12; 31 : 18; 34 : 1; नीति 3 : 3; 7 : 3; यहेज 11 : 19; 36 : 26; यिर 31 : 23; रोम 15 : 16 **3 : 5** 2 कुर 2 : 16 **3 : 6** यिर 34 : 31; 2 कुर 11 : 25; रोम 7 : 6; यो 6 : 63 **3 : 7** नि 34 : 30 **3 : 8** गल 3 : 2, 5 **3 : 9** व्य 27 : 26; रोम 1 : 17; 3 : 21 **3 : 10** नि 34 : 29 **3 : 13** नि 34 : 33, 35 **3 : 14** रोम 11 : 25

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सकते हैं।* [15]जब मूसा की ग्रन्थ पढ़ कर सुनाया जाता है, तो उनके मन पर आज भी वह परदा पड़ा रहता है। [16]किन्तु, जैसा मूसा के संबंध में कहा गया है : ''जब वह प्रभु की ओर अभिमुख हो जाते हैं, तो परदा हटा दिया जाता है''; [17]क्योंकि प्रभु तो आत्मा है+ और जहां प्रभु का आत्मा है, वहां स्वतन्त्रता है। [18]जहां तक हम-सब का प्रश्न है, हमारे मुख पर परदा नहीं है और हम-सब दर्पण की तरह प्रभु का तेज प्रतिबिम्बित करते हैं। इस प्रकार हम धीरे-धीरे प्रभु के तेजोमय प्रतिरूप में रूपान्तरित हो जाते हैं और वह रूपान्तरण प्रभु अर्थात् आत्मा** का कार्य है।

हम अपना नहीं, बल्कि प्रभु येशु मसीह का प्रचार करते है

4 परमेश्वर की दया ने हमें यह सेवा-कार्य सौंपा है, इसलिए हम कभी हार नहीं मानते। [2]हम लोक-लज्जावश कुछ बातें छिपाना नहीं चाहते। हम न तो छल-कपट करते और न परमेश्वर का वचन विकृत करते हैं। हम प्रकट रूप से सत्य का प्रचार करते हैं। यही उन सब मनुष्यों के पास हमारी सिफारिश है, जो परमेश्वर के सामने हमारे विषय में निर्णय करना चाहते हैं++। [3]यदि हमारे शुभसमाचार पर किसी तरह परदा पड़ा है, तो यह परदा उन लोगों के लिए पड़ा है, जो विनाश के मार्ग पर चलते हैं। [4]इस युग-संसार के देवता ने अविश्वासियों का मन इतना अन्धा कर दिया है कि वे परमेश्वर के प्रतिरूप, अर्थात् मसीह के तेजोमय शुभ समाचार की ज्योति को देखने में असमर्थ हैं। [5]हम अपना नहीं, बल्कि प्रभु येशु मसीह का प्रचार करते हैं। हम येशु के कारण अपने को आप लोगों का दास समझते हैं। [6]परमेश्वर ने आदेश दिया था कि ''अन्धकार में प्रकाश हो जाये।'' उसी ने हमारे हृदय को अपनी ज्योति से आलोकित कर दिया है, जिससे हम परमेश्वर का वह तेज जान जायें, जो येशु मसीह के मुखमण्डल पर चमकता है।

[7]यह अमूल्य निधि हममें—मिट्टी के पात्रों में रखी रहती है, जिससे यह स्पष्ट हो जाये कि यह अलौकिक सामर्थ्य हमारा अपना नहीं, बल्कि परमेश्वर का है। [8]हम कष्टों से घिरे रहते हैं, परन्तु कभी हार नहीं मानते। हम परेशान होते हैं, परन्तु कभी निराश नहीं होते। [9]हम पर अत्याचार किया जाता है, परन्तु हम अपने को परित्यक्त नहीं पाते। हम को गिराया जाता है, परन्तु हम नष्ट नहीं होते। [10]हम हर समय अपने शरीर में येशु के दुःखभोग तथा मृत्यु का अनुभव करते हैं, जिससे येशु का जीवन भी हमारे शरीर में प्रत्यक्ष हो जाये। [11]हमें जीवित रहते हुए येशु के कारण निरन्तर मृत्यु का सामना करना पड़ता है, जिससे येशु का जीवन भी हमारे नश्वर शरीर में प्रत्यक्ष हो जाये। [12]इस प्रकार हम में मृत्यु क्रियाशील है और आप लोगों में जीवन।

[13]धर्मग्रन्थ में लिखा है, ''मैंने विश्वास किया और इसलिए मैं बोला।'' हम विश्वास के उसी मनोभाव*** से प्रेरित हैं। हम विश्वास करते हैं और इसलिए हम बोलते हैं। [14]हम जानते हैं कि जिसने प्रभु येशु को पुनर्जीवित किया, वही येशु के साथ हम को भी पुनर्जीवित कर देगा और आप लोगों के साथ हम को भी अपने पास रख लेगा। [15]सब कुछ आप लोगों के लिए हो रहा है, ताकि जिस प्रकार परमेश्वर का अनुग्रह अधिक से अधिक लोगों में फैलता जा रहा है, उसी प्रकार परमेश्वर की महिमा के

---

* शब्दशः, ''मसीह में ही वह पूर्णतः क्षीण हो जाता है''। + अथवा, ''धर्मग्रंथ के इस कथन में 'प्रभु' का तात्पर्य आत्मा ही है'', अथवा, ''आत्मा तो प्रभु है''। **अथवा, ''प्रभु के आत्मा''। ++अथवा, ''हम परमेश्वर के सम्मुख प्रत्येक मनुष्य के अन्तःकरण को अपने विषय में निश्चित कराते हैं।'' ***अथवा, ''आत्मा''।

3 : 16 रोम 11 : 23, 26; नि 34 : 34 **3 : 17** यू 7 : 39; 8 : 36; रोम 8 : 2 **3 : 18** नि 16 : 7; 24 : 17 **4 : 1** 2 कुर 3 : 6; 1 कुर 7 : 25 **4 : 2** 2 कुर 2 : 17; 1 थिस 2 : 5 **4 : 3** 1 कुर 1 : 18 **4 : 4** इब्र 1 : 3; इफ 2 : 2; 2 थिस 2 : 11; कुल 1 : 15 **4 : 5** 2 कुर 1 : 24 **4 : 6** 2 कुर 3 : 18; उत 1 : 3; यश 9 : 1 **4 : 7** 2 कुर 5 : 1; प्रे 9 : 15 **4 : 8** 2 कुर 1 : 8; 7 : 5 **4 : 10** 1 कुर 15 : 31 **4 : 11** रोम 8 : 36 **4 : 13** भज 116 : 10 (यू० पाठ) **4 :14** 1 कुर 6 : 14; **4 : 15** 2 कुर 1 : 3-6

पढ़ें Aagamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लिए धन्यवाद की प्रार्थना करने वालों की
संख्या बढ़ती जाये।

पुनरुत्थान पर दृढ़ विश्वास

16यही कारण है कि हम हिम्मत नहीं हारते।
हमारे शरीर की शक्ति भले ही क्षीण होती जा
रही हो, किन्तु हमारे अभ्यन्तर में दिन-प्रतिदिन
नये जीवन का संचार होता रहता है; 17क्योंकि
हमारा क्षण-भर का हलका-सा कष्ट हमें हमेशा
के लिए भारी मात्रा में अपार महिमा दिलाता है।
18इसलिए हमारी आंखें दृश्य पर नहीं, बल्कि
अदृश्य वस्तुओं पर टिकी हुई हैं, क्योंकि जो
वस्तुएं हम देखते हैं, वे अल्पकालिक हैं।
अनदेखी वस्तुएं अनन्तकाल तक बनी रहती हैं।

5 हम जानते हैं कि जब यह तम्बू, पृथ्वी पर
हमारा यह घर, गिरा दिया जायेगा तो हमें
परमेश्वर द्वारा निर्मित एक निवास मिलेगा। वह
एक ऐसा घर है, जो हाथ का बना हुआ नहीं
है और अनन्तकाल तक स्वर्ग में बना रहेगा।
2इसलिए हम इस शरीर में कराहते रहते और
उसके ऊपर अपना स्वर्गिक निवास धारण करने
की तीव्र अभिलाषा करते हैं, 3बशर्ते हम नग्न
नहीं, बल्कि वस्त्र पहने पाये जायें।* 4हम इस
तम्बू में रहते समय भार से दबते हुए कराहते
रहते हैं; क्योंकि बिना पुराना वस्त्र उतारे हम
उसके ऊपर नया धारण करना चाहते हैं; जिससे
जो मरणशील है, वह अमर जीवन में विलीन
हो जाये। 5परमेश्वर ने स्वयं इस उद्देश्य के लिए
हमें गढ़ा है और अग्रिम राशि के रूप में हमें
पवित्र आत्मा प्रदान किया है।

6इसलिए हम सदा ही परमेश्वर पर भरोसा
रखते हैं। हम यह जानते हैं कि हम जब तक
इस शरीर में हैं, तब तक हम प्रभु से दूर, परदेश
में निवास करते हैं; 7क्योंकि हम आंखों-देखी
बातों पर नहीं, बल्कि विश्वास पर चलते हैं।
8हमें तो परमेश्वर पर पूरा भरोसा है। हम शरीर
का घर छोड़ कर प्रभु के यहां बस जाना अधिक
पसन्द करते हैं। 9इसलिए हम चाहे घर में हों
चाहे परदेश में, हमारी एकमात्र अभिलाषा यह
है कि हम प्रभु को अच्छे लगें, 10क्योंकि हम-
सब को मसीह के न्यायासन के सामने प्रस्तुत
किया जायेगा। प्रत्येक व्यक्ति ने शरीर में रहते
समय जो कुछ किया है, चाहे वह भलाई हो या
बुराई, उसे उसका प्रतिफल मिलेगा।

मसीह के द्वारा परमेश्वर से मेल-मिलाप

11इस कारण प्रभु का भय हम में बना रहता
है। हम मनुष्यों को समझाने का प्रयत्न करते
रहते हैं। हमारा सारा जीवन परमेश्वर के लिए
प्रकट है और मैं आशा करता हूं कि वह आप
लोगों के अन्तःकरण के लिए भी प्रकट होगा।
12हम फिर आप लोगों के सामने अपनी प्रशंसा**
नहीं करेंगे। हम चाहते हैं कि आप को हम पर
गर्व करने का अवसर मिले और आप उन लोगों
का मुंह बन्द कर सकें, जो हृदय की बातों पर
नहीं, बल्कि दिखावे की बातों पर गर्व करते हैं।
13यदि हमें अपनी सुध-बुध नहीं रह गयी थी,
तो यह परमेश्वर के लिए था और यदि हम अब
सन्तुलित हैं, तो यह आप लोगों के कल्याण के
लिए है; 14क्योंकि मसीह का प्रेम हमें प्रेरित+
करता रहता है। हम तो यह समझ गये हैं कि
जब एक सब के लिए मर गया, तब सभी मर
गये हैं। 15मसीह सब के लिए मरे, जिससे जो
जीवित हैं, वे अब से अपने लिए नहीं, बल्कि
उनके लिए जीवन बिताएं, जो उनके लिए मर
गये और जी उठे हैं। 16इसलिए हम अब से
किसी को भी सांसारिक दृष्टि से*** नहीं देखते।
हमने मसीह को पहले सांसारिक दृष्टि से देखा,
किन्तु अब हम ऐसा नहीं करते।
17इसका अर्थ यह है कि यदि कोई मसीह

---

*पाठांतर, "बशर्ते वस्त्र उतारने के बाद भी हम नग्न नहीं पाये जाएं"। **अथवा, "सिफारिश"। +अथवा, "विवश"
***अक्षरशः, "शरीर के अनुसार"।

4 : 16 इफ 3 : 16 **4 : 17** रोम 8 : 17-18 **4 : 18** इब्र 11 : 1, 3; कुल 1 : 16 **5 : 1** 2 पत 1 : 13-14; अय्य
4 : 19; प्रज्ञ 9 : 15 **5 : 2** रोम 8 : 23 **5 : 4** 1 कुर 15 : 53 **5 : 5** 2 कुर 1 : 22; इफ 1 : 13; रोम 8 : 16, 23
5 : 6 इब्र 11 : 13 **5 : 7** 1 कुर 13 : 12 **5 : 8** फिल 1 : 23 **5 : 9** भज 39 : 12 **5 : 10** प्रे 17 : 31; रोम
2 : 16; 14 : 10 **5 : 11** 2 कुर 4 : 2 **5 : 12** 2 कुर 3 : 1 **5 : 15** 1 तिम 2 : 6; रोम 14 : 7-8 **5 : 17** रोम
8 : 1, 10; गल 6 : 15; प्रक 21 : 5; यश 43 : 18; 65 : 17

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

के साथ एक हो गया है, तो वह नयी सृष्टि बन
गया है। पुरानी बातें समाप्त हो गयी हैं और अब
नई बातें आ गयी हैं। [18]परमेश्वर ने यह सब
किया है—उसने मसीह के द्वारा अपने से हमारा
मेल कराया और इस मेल-मिलाप का सेवा-
कार्य हमें सौंपा है। [19]इसका अर्थ यह है कि
परमेश्वर ने मनुष्यों के अपराध उनके खर्चे में
न लिख कर मसीह के द्वारा अपने से संसार का
मेल कराया और इस मेल-मिलाप के सन्देश
का प्रचार हमें सौंप दिया।

[20]इसलिए हम मसीह के राजदूत हैं, मानो
परमेश्वर हमारे द्वारा आप लोगों से अनुरोध कर
रहा है। हम मसीह के नाम पर आप से यह
विनती करते हैं कि आप परमेश्वर से मेल कर
लें। [21]मसीह, जो पाप से अपरिचित ही थे,
उनको परमेश्वर ने हमारे लिए पाप++ बना दिया,
जिससे हम उनके द्वारा परमेश्वर की धार्मिकता
प्राप्त कर सकें।

धर्म-प्रचारक का कष्टमय जीवन

6 परमेश्वर के सहकर्मी होने के नाते हम
आप लोगों से यह अनुरोध करते हैं कि
परमेश्वर की जो कृपा आप को मिली है, उसे
व्यर्थ न होने दें; [2]क्योंकि वह कहता है, ''उपयुक्त
समय में मैंने तुम्हारी प्रार्थना सुनी; उद्धार के दिन
मैंने तुम्हारी सहायता की।'' और देखिए, अभी
उपयुक्त समय है, अभी उद्धार का दिन है।

[3]हम किसी के मार्ग में रोड़े नहीं अटकाते,
जिससे हमारे सेवा-कार्य पर कलंक न लगे!
[4]किन्तु हम हर परिस्थिति में स्वयं को परमेश्वर
के योग्य सेवक प्रमाणित करते हैं : हम कष्ट,
अभाव और संकट को बड़े धीरज से सहन
करते हैं। [5]हमें कोड़ों से मारा गया, कारागार में
डाला गया, हम पर भीड़ ने उत्पात किया। हमने
अत्यधिक परिश्रम किया, हम रात-रात भर
जागे और भूखे रहे। [6]हमने अपने निर्दोष आचरण,
ज्ञान, सहनशीलता, दयालुता, पवित्र आत्मा के
कार्यों, निष्कपट प्रेम, [7]सत्य के प्रचार तथा
परमेश्वर के सामर्थ्य से स्वयं को परमेश्वर के
योग्य सेवक प्रमाणित किया है। धार्मिकता के
शस्त्र से हमने न केवल अपना बचाव किया,
वरन् आक्रमण भी किया।** [8]सम्मान तथा
अपमान, प्रशंसा तथा निन्दा—यह सब हमें
प्राप्त हुआ। हम कपटी समझे गए, किन्तु हम
सत्य बोलते हैं। [9]हम अज्ञात हैं, किन्तु सब लोग
हमें जानते हैं। हम मरने-मरने को हैं, किन्तु
देखिए, हम जीवित हैं। हम मार खाते हैं, किन्तु
मरते नहीं। [10]हम दुःखी हैं, फिर भी हम हर
समय आनन्दित हैं। हम दरिद्र हैं, फिर भी हम
बहुतों को सम्पन्न बनाते हैं। हमारे पास कुछ
नहीं है; फिर भी सब कुछ हमारा है।

कुरिन्थुस-निवासी पवित्रता की परिपूर्णता तक पहुंचने का प्रयत्न करें

कुरिन्थुस-निवासियो! हम ने आप लोगों से
खुल कर बातें की हैं। हम ने आपके सामने
अपना हृदय खोल कर रख दिया है। [12]आप लोगों
के प्रति हम में कोई संकीर्णता नहीं है, बल्कि
आपके हृदय में संकीर्णता है। [13]इसके बदले
आप भी हमारे प्रति अपना हृदय खोल दें। यह
मैं पिता की तरह अपने बच्चों से कह रहा हूं।

[14]आप लोग अविश्वासियों के साथ बेमेल
जूए में मत जुतें। धार्मिकता का अधर्म से क्या
नाता? ज्योति का अन्धकार से क्या सम्बन्ध?
[15]मसीह की शैतान* से क्या संगति? विश्वासी
की अविश्वासी से क्या सहभागिता? [16]परमेश्वर
के मन्दिर का देवमूर्तियों से क्या समझौता?
क्योंकि हम जीवन्त परमेश्वर के मन्दिर हैं,
जैसा कि परमेश्वर ने कहा है:
''मैं उन के बीच निवास करूंगा

++ अथवा, ''पाप-बलि''। * मूल में, ''बेलियार''—एक विशिष्ट दुष्टात्मा। **मूल में 'दाहिने एवं बायें हाथ में धार्मिकता के शस्त्र से'

5 : 18 रोम 5 : 10 **5 : 19** रोम 3 : 24–25; कुल 1 : 19–20 **5 : 20** यश 52 : 7 **5 : 21** यो 8 : 46; इब्र 4 : 15; गल 3 : 13; 1 कुर 1 : 30; फिल 3 : 9; 1 पत 2 : 22 **6 : 1** 2 कुर 1 : 24; 5 : 20 **6 : 2** यश 49 : 8; लू 4 : 19, 21 **6 : 4** 2 कुर 4 : 2 **6 : 5** 2 कुर 11 : 23–27 **6 : 6** 1 तिम 4 : 12 **6 : 7** 1 कुर 2 : 4 **6 : 9** 2 कुर 4 : 10; भज 118 : 18 **6 : 10** फिल 4 : 12–13 **6 : 11** भज 119 : 32 **6 : 13** 1 कुर 4 : 14 **6 : 14** इफ 5 : 11 **6 : 16** 1 कुर 3 : 16; लेव 26 : 12; यहेज 37 : 27 **6 : 17** यिर 51 : 45; यहेज 20 : 34, 41; यश 52 : 11; प्रक 18 : 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और उनके साथ चलूंगा।
मैं उनका परमेश्वर होऊंगा
और वे मेरी प्रजा होंगे।
17इसलिए दूसरों के बीच में से निकल कर
अलग हो जाओ—
यह प्रभु का कहना है।
और किसी अपवित्र वस्तु का स्पर्श मत करो,
तब मैं तुम्हें अपनाऊंगा।
18मैं तुम्हारे लिए पिता-जैसा होऊंगा
और तुम मेरे लिए पुत्र-पुत्रियों-जैसे होगे;
यह सर्वशक्तिमान् प्रभु का कथन है।"

7 प्रिय भाइयो और बहिनो! हमें इस प्रकार
की प्रतिज्ञाएं मिली हैं। इसलिए हम शरीर
और मन के हर प्रकार के दूषण से अपने को
शुद्ध करें और परमेश्वर पर श्रद्धा-भक्ति रखते
हुए पवित्रता की परिपूर्णता तक पहुंचने का
प्रयत्न करते रहें।

कलीसिया के पश्चात्ताप से सन्त पौलुस को सान्त्वना

2आप हमारे प्रति उदार बनें। हमने किसी के
साथ अन्याय नहीं किया, किसी को आर्थिक
हानि नहीं पहुंचायी और किसी से अनुचित
लाभ नहीं उठाया। 3मैं आप लोगों को दोष देने
के लिए यह नहीं कह रहा हूं। मैं तो आप से
कह चुका हूं कि आप हमारे हृदय में घर कर
गये हैं—हम जीवन-मरण के साथी हैं। 4मैं आप
लोगों से खुल कर बातें करता हूं। मैं आप लोगों
पर बड़ा गर्व करता हूं। इससे मुझे भरपूर
सान्त्वना मिलती है और मेरे सब कष्टों में
आनन्द उमड़ता रहता है।
5जब हम मकिदुनिया पहुंचे, तो हमारे शरीर
को कोई विश्राम नहीं मिल रहा था। हम हर
तरह से कष्टों से घिर रहे थे। हमारे चारों ओर
संघर्ष थे और हमारे अन्दर आशंकाएं थीं।
6किन्तु दीन-हीन लोगों को सान्त्वना देने वाले
परमेश्वर ने हम को तीतुस के आगमन द्वारा
सांत्वना दी। 7और उनके आगमन द्वारा ही नहीं,
बल्कि उस सान्त्वना द्वारा भी, जो उन्हें आप
लोगों की ओर से मिली थी। मुझ से मिलने की
आपकी उत्सुकता, आपका पश्चात्ताप+ और मेरे
प्रति आपकी चिन्ता—इसके विषय में उन्होंने
हम को बताया और इससे मेरा आनन्द और भी
बढ़ गया। 8यद्यपि मैंने आप लोगों को उस पत्र
द्वारा दुःख दिया, फिर भी मुझे उस पर खेद नहीं
है। मुझे यह देख कर खेद हुआ था कि उस पत्र
ने आप को थोड़े समय के लिए दुःखी बना दिया
था, 9किन्तु अब मुझे प्रसन्नता है। मुझे इसलिए
प्रसन्नता नहीं कि आप लोगों को दुःख हुआ,
बल्कि इसलिए कि उस दुःख के कारण आपका
हृदय-परिवर्तन हुआ। आप लोगों ने उस दुःख
को परमेश्वर की इच्छानुसार स्वीकार किया
और इस तरह आप को मेरी ओर से कोई हानि
नहीं हुई; 10क्योंकि जो दुःख परमेश्वर की
इच्छानुसार स्वीकार किया जाता, उसका परिणाम
होता है हृदय-परिवर्तन तथा उद्धार। इसमें
पछताना नहीं पड़ता। परंतु सांसारिक दुःख का
परिणाम है मृत्यु।
11आप देखते हैं कि आपने जो दुःख
परमेश्वर की इच्छानुसार स्वीकार किया, उससे
आप में कितनी निष्ठा उत्पन्न हुई, अपनी
सफाई देने की कितनी तत्परता, कितना रोष,
कितनी आशंका, कितनी अभिलाषा, कितना
उत्साह और न्याय चुकाने की कितनी इच्छा!
इस प्रकार आपने इस मामले में हर तरह से
निर्दोष होने का प्रमाण दिया है। 12वास्तव में
मैंने वह पत्र इसलिए नहीं लिखा था कि मुझे
अन्याय करने वाले अथवा अन्याय सहने वाले
व्यक्ति की अधिक चिन्ता थी, बल्कि इसलिए
कि आप लोग परमेश्वर के सामने यह अच्छी
तरह समझ लें कि हमारे प्रति आपकी कितनी
निष्ठा है। 13इस से हमें सान्त्वना मिली।
इस सान्त्वना के अतिरिक्त हम तीतुस का
आनन्द देखकर और भी आनन्दित हो उठे।
—आप सब ने उनका मन हरा कर दिया! 14मैंने

+ अथवा, "वेदना"।

6 : 18 2 शम 7 : 8; यश 43 : 6; यिर 31 : 9; 32 : 38; हो 1 : 10; आमो 4 : 13 **7 : 2** 2 कुर 12 : 17; प्रे 20 : 33 **7 : 3** 2 कुर 6 : 11-13 **7 : 5** प्रे 20 : 1-2 **7 : 6** 2 कुर 1 : 3-4; 2 : 13; भज 113 : 6; 138 : 6; यश 66 : 2 **7 : 8** 2 कुर 2 : 4 **7 : 10** मत 27 : 3-5; इब्र 12 : 17

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उनके सामने आप लोगों पर जो गर्व प्रकट
किया था, उसके लिए मुझे लज्जित नहीं होना
पड़ा। मैंने आप लोगों से जो भी कहा, वह सत्य
पर आधारित था। इस प्रकार तीतुस के सामने
मैंने आप पर गर्व प्रकट करते हुए जो कहा था,
वह सच निकला। 15जब उन्हें याद आता है कि
आप सब ने उनकी बात मानी और डरते-कांपते
हुए उनका स्वागत किया, तो आप के प्रति
उनका प्रेम और भी बढ़ जाता है। 16मैं पूर्ण रूप
से आप लोगों पर भरोसा रखता हूं, इससे मैं
आनन्दित हूं।

आप लोग मकिदुनिया की उदारता का अनुकरण करें

8 भाइयो और बहनो! मैं आप लोगों को उस
अनुग्रह के विषय में बताना चाहता हूं,
जिसे परमेश्वर ने मकिदुनिया की कलीसियाओं
को प्रदान किया है। 2कष्टों की अग्निपरीक्षा में
भी उनका आनन्द अपार रहा और घोर दरिद्रता
की दशा में रहते हुए भी उन्होंने बड़ी उदारता
का परिचय दिया है। 3उनके विषय में मेरी
साक्षी है कि उन्होंने अपने सामर्थ्य के अनुसार,
बल्कि उस से भी अधिक, स्वेच्छा से दान दिया
है। 4उन्होंने स्वयं ही बड़े आग्रह के साथ मुझ
से अनुरोध किया कि उन्हें भी सन्तों की
सहायता के लिए सेवा-कार्य में भाग लेने का
सौभाग्य मिले। 5वे अपनी उदारता में हमारी
आशा से बहुत अधिक आगे बढ़ गये। उन्होंने
पहले परमेश्वर के प्रति और बाद में, परमेश्वर
की इच्छा के अनुसार, हमारे प्रति अपने को
अर्पित किया। 6इसलिए हमने तीतुस से अनुरोध
किया है कि उन्होंने जिस परोपकार का कार्य
आरम्भ किया था, वह उसको आप लोगों के
बीच पूरा भी करें। 7आप लोग हर बात में—
विश्वास, अभिव्यक्ति, अन्तर्दृष्टि, सब प्रकार
के धर्मोत्साह और हमारे प्रति प्रेम में बढ़े-चढ़े
हैं; इसलिए आप लोगों को इस परोपकार में भी
बड़ी उदारता दिखानी चाहिए। 8मैं इस सम्बन्ध
में कोई आदेश नहीं दे रहा हूँ, बल्कि दूसरे
लोगों की लगन का उदाहरण देकर मैं आपके
प्रेम की सच्चाई की परीक्षा लेना चाहता हूं।
9आप लोग हमारे प्रभु येशु मसीह की उदारता
जानते हैं। वह धनी थे, किन्तु आप लोगों के
कारण निर्धन बन गये, जिससे आप उनकी
निर्धनता द्वारा धनी बन जायें।

10मैं इस सम्बन्ध में एक सुझाव देता हूं।
आप लोगों ने पिछले वर्ष जो कार्य प्रारम्भ किया
और जिसकी योजना आपने स्वयं बनायी थी,
अब उसे पूरा करने में ही आपका कल्याण है।
11आपने जिस तत्परता से उसका निर्णय किया
था, उसी तत्परता से उसे पूरा करें और अपने
सामर्थ्य के अनुसार दान दें। 12यदि दान देने की
उत्सुकता है, तो सामर्थ्य के अनुसार जो कुछ
भी दिया जाये, वह परमेश्वर को ग्राह्य है।
किसी से यह आशा नहीं की जाती है कि वह
अपने सामर्थ्य से अधिक दान दे। 13मैं यह नहीं
चाहता कि दूसरों को आराम देने से आप लोगों
को कष्ट हो। यह बराबरी की बात है। 14इस
समय आप लोगों की समृद्धि उनकी तंगी दूर
करेगी, जिससे किसी दिन उनकी समृद्धि
आपकी तंगी दूर कर दे और इस तरह बराबरी
हो जाये। 15जैसा धर्मग्रन्थ में लिखा है, "जिसने
बहुत बटोर लिया था, उसके पास अधिक नहीं
निकला और जिसने थोड़ा बटोर लिया था,
उसके पास कम नहीं निकला।"

16परमेश्वर को धन्यवाद, जिसने तीतुस के
हृदय में आप लोगों के प्रति मेरे जैसा उत्साह
उत्पन्न किया है। 17उन्होंने मेरा प्रस्ताव स्वीकार
किया और अब वह अपनी इच्छी से बड़ी
उत्सुकता से आप के पास आ रहे हैं। 18हम उनके
साथ उस भाई को भेज रहे हैं, जो शुभ समाचार
के प्रचार के कारण सभी कलीसियाओं में
प्रशंसा का पात्र है। 19इसके अतिरिक्त, प्रभु की
महिमा के लिए और अपनी सद्भावना प्रकट
करने के लिए हम परोपकार का जो सेवा-कार्य
कर रहे हैं, उसके लिए कलीसियाओं ने उसे
हमारी यात्रा का साथी नियुक्त किया है। 20इस

---

7 : 15 2 कुर 2 : 9 **8 : 1** रोम 15 : 26 **8 : 5** 2 कुर 9 : 1; प्रे 11 : 29 **8 : 7** 1 कुर 1 : 5; 16 : 1-2 **8 : 9** मत 8 : 20 **8 : 12** नीति 3 : 27-28; मक 12 : 43 **8 : 14** 2 कुर 9 : 12 **8 : 15** नि 16 : 18 **8 : 19** कुर 16 : 3-4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
प्रकार हम इस उदार दान के प्रबन्ध में
आलोचना से बच कर रहना चाहते हैं; 21क्योंकि
न केवल प्रभु की दृष्टि में, बल्कि मनुष्यों की
दृष्टि में भी हम अच्छा आचरण करने का ध्यान
रखते हैं। 22इन दोनों के साथ हम अपने एक
और भाई को भेज रहे हैं। हमने बारम्बार अनेक
मामलों में उसके धर्मोत्साह की परीक्षा ली है।
इस कार्य के लिए उसका उत्साह और भी बढ़
गया है, क्योंकि उसे आप लोगों पर पूरा भरोसा
है। 23जहां तक तीतुस का प्रश्न है, वह आप
लोगों के बीच मेरी धर्मसेवा के साथी और
सहयोगी हैं। हमारे अन्य भाई कलीसियाओं के
भेजे हुए प्रतिनिधि* और मसीह के गौरव हैं।
24इसलिए आप कलीसियाओं की जानकारी में
उन्हें अपने प्रेम का प्रमाण दें और इस बात का
भी प्रमाण दें कि हम आप पर जो गर्व करते हैं,
वह उचित ही है।

यरूशलेम के गरीब भाई-बहनों की सहायता करें

9 सन्तों की सहायता के लिए उस सेवा-
कार्य के विषय में मुझे आप लोगों को
लिखने की कोई ज़रूरत नहीं है। 2मैं इसके विषय
में आपकी सद्भावना जानता हूं। मैं मकिदुनिया-
निवासियों से यह कहते हुए गर्व प्रकट करता
हूं कि यूनान की कलीसिया+ पिछले वर्ष से
तैयार है। आपके उत्साह से बहुतों को प्रेरणा
मिली है। 3मैं इन भाइयों को इसलिए भेज रहा
हूं कि हमने इस विषय पर आप पर जो गर्व
प्रकट किया है, वह निराधार न निकले। मैं
चाहता हूं कि आप तैयार हों, जैसा कि मैंने
कहा। 4कहीं ऐसा न हो कि कुछ मकिदुनिया-
निवासी मेरे साथ आ कर यह देखें कि आप
तैयार नहीं हैं और हमको—और आप को
भी—लज्जित होना पड़े, जब कि हमने इस
विषय में आप पर इतना भरोसा दिखलाया है।
5इसलिए मैंने भाइयों से यह अनुरोध करना
आवश्यक समझा कि वे पहले आप के यहां
आयें और ऐसा प्रबन्ध करें कि आपने जो भेंट
देने की प्रतिज्ञा की है, वह मेरे पहुंचने से पहले
तैयार हो और वह भेंट आपकी कृपणता का
नहीं, बल्कि आपकी उदारता का प्रमाण हो।
6इस बात का ध्यान रखें कि जो थोड़ा बोता है,
वह थोड़ा काटता है; और जो बहुत बोता है,
वह बहुत काटता है।

7हर एक ने अपने मन में जितना निश्चित
किया है, उतना ही दे। वह अनिच्छा से अथवा
लाचारी से ऐसा न करे, क्योंकि ''परमेश्वर
प्रसन्नता से देने वाले को प्यार करता है।''
8परमेश्वर आप लोगों को प्रचुर मात्रा में हर
प्रकार का वरदान देने में समर्थ है, जिससे आप
को कभी किसी तरह की कोई कमी नहीं हो,
बल्कि हर शुभ कार्य के लिए भी आपके पास
बहुत कुछ बच जाए। 9धर्मग्रन्थ में लिखा है,
''उसने उदारतापूर्वक** दरिद्रों को दान दिया
है; उसकी धार्मिकता सदा बनी रहती है।''
10जो बोने वाले को बीज और खाने वाले को
भोजन देता है, वह आप को बोने के लिए बीज
देगा, उसे बढ़ायेगा और आपकी धार्मिकता की
अच्छी फ़सल उत्पन्न करेगा। 11इस तरह आप
लोग हर प्रकार के धन से सम्पन्न हो कर
उदारता दिखाने में समर्थ होंगे। आपका दान,
हमारे द्वारा वितरित हो कर, परमेश्वर के प्रति
धन्यवाद का कारण बनेगा; 12क्योंकि यह
सार्वजनिक सेवा-कार्य न केवल सन्तों की
आवश्यकताओं को पूरा करता है, बल्कि
परमेश्वर को धन्यवाद देने के लिए बहुत-से
लोगों को प्रेरित भी करता है। 13आपका यह
सेवा-कार्य प्रामाणिक मान कर लोग परमेश्वर
की महिमा करेंगे, क्योंकि आप पूर्ण समर्पण के
साथ++ मसीह के शुभ समाचार पर विश्वास
करते और सहभागिता की भावना से उनकी
तथा सब की उदारतापूर्वक सहायता करते हैं।
14 वे आपके लिए परमेश्वर से प्रार्थना करेंगे।
वे आप को प्यार करते हैं, क्योंकि वे जानते हैं

*अथवा, ''प्रेरित''। +मूल में, ''अखया''। **अक्षरशः, ''चारों ओर बिखेरते हुए''। ++अथवा, ''अधीनता पूर्वक''।

8 : 21 नीति 3 : 4 (यू० पाठ) **8 : 23** 2 कुर 7 : 13; 12 : 18; रोम 16 : 7 **8 : 24** 2 कुर 7 : 14 **9 : 1** 2 कुर 8 : 4,20 **9 : 6** नीति 11 : 24; 19 : 17 **9 : 7** रोम 12 : 8; 1 इति 29 : 17; प्रव 20 : 10-15 **9 : 9** भज 112 : 9 **9 : 10** यश 55 : 10; हो 10 : 12 **9 : 11** 2 कुर 1 : 11; 4 : 15 **9 : 12** 2 कुर 8 : 14

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
कि परमेश्वर ने आप लोगों पर कितना अनुग्रह
किया है। 15परमेश्वर को उसके अनिर्वचनीय
अनुग्रह-दान के लिए धन्यवाद!

प्रेरितीय अधिकार का प्रयोग

10 मैं—पौलुस—मसीह की नम्रता और
दयालुता के नाम पर आप लोगों से यह
निवेदन कर रहा हूं। कुछ लोग कहते हैं कि मैं
आप लोगों के सामने दीन-हीन हूं, किन्तु दूर
रहने पर निर्भीक। 2मैं आप लोगों से अनुरोध
कर रहा हूं—आप ऐसा करें कि आप लोगों के
साथ रहते समय मुझे निर्भीकता न दिखलानी
पड़े, क्योंकि जो लोग समझते हैं कि हम
सांसारिक मनुष्य की तरह* आचरण करते हैं,
मैंने उनके साथ कठोर व्यवहार करने का
संकल्प किया है। 3हम संसार में रहते हैं अवश्य,
किन्तु हम सांसारिक मनुष्य की तरह संघर्ष नहीं
करते। 4-5हमारे संघर्ष के अस्त्र-शस्त्र सांसारिक
नहीं हैं, बल्कि उन में परमेश्वर का सामर्थ्य
विद्यमान है, जिससे वे हर प्रकार के किले नष्ट
कर सकते हैं। हम कुतर्कों और घमण्ड से
उत्पन्न उन सब बातों का खण्डन करते हैं, जो
परमेश्वर को जानने में बाधक हैं। हम प्रत्येक
विवेकशील मनुष्य+ को मसीह की अधीनता
स्वीकार करने को बाध्य करते हैं। 6और जब
आप लोगों ने उस अधीनता को पूर्ण रूप से
स्वीकार किया, तो हम किसी भी अवज्ञाकारी
को दण्ड देने के लिए तैयार हैं। 7जो बात आंखों
के सामने स्पष्ट है, उसे आप लोग देख लें। यदि
कोई समझता है कि वह मसीह का है, तो वह
फिर विचार करने पर यह समझ लेगा कि जिस
तरह वह मसीह का है, उसी तरह हम भी मसीह
के हैं। 8आपके विनाश के लिए नहीं, बल्कि
आपके आध्यात्मिक निर्माण के लिए हमें प्रभु
से जो अधिकार मिला है, यदि मैं उस पर कुछ
अधिक गर्व कर रहा हूं, तो मुझे इस बात की
कोई लज्जा नहीं है। 9आप यह न समझें कि मैं
अपने पत्रों द्वारा आप को भय दिखाना चाहता
हूं। 10कुछ लोगों का कहना है—उसके पत्र
कठोर और प्रभावशाली हैं, किन्तु जब वह
स्वयं आता है, तो उसका शरीर दुर्बल लगता है
और उसकी बोलने की शक्ति नहीं के बराबर
है। 11जो लोग यह कहते हैं, वे इस पर विचार
करें कि हम दूर रहते हुए पत्रों में जो बातें लिखते
हैं, उन्हें आप के यहां विद्यमान रहते हुए कार्य
में कर दिखायेंगे।

सन्त पौलुस महत्वाकांक्षी नहीं हैं

12जो लोग अपनी ही सिफारिश करते हैं,
हम उनके बराबर होने या उनसे अपनी तुलना
करने का साहस नहीं करते। वे अपने ही
मापदण्ड से अपना मूल्यांकन करते और अपने
से अपनी तुलना करते हैं। इस प्रकार वे अपनी
मूर्खता का परिचय देते हैं। 13हम अपनी सीमा
का उल्लंघन करते हुए गर्व नहीं करेंगे।
परमेश्वर ने हमारे लिए कार्य-क्षेत्र की जो सीमा
निर्धारित की और जिसमें आप लोग भी
सम्मिलित हैं, हम उसके भीतर रहेंगे। 14हम
अपने कार्य-क्षेत्र का उल्लंघन नहीं करते,
यद्यपि हम आपके यहां अवश्य आए थे। आप
लोग हमारे क्षेत्र के भीतर हैं, क्योंकि हम ने
पहले-पहल आप के यहां मसीह के शुभ
समाचार का प्रचार किया। 15हम अपनी सीमा
का उल्लंघन करते हुए दूसरे के परिश्रम पर गर्व
नहीं करते, बल्कि हम आशा करते हैं कि ज्यों-
ज्यों आप लोगों का विश्वास बढ़ता जायेगा,
आप लोगों में हमारे कार्य-क्षेत्र का भी विस्तार
होगा 16और हम अन्य दूरवर्त्ती क्षेत्रों में शुभ
समाचार का प्रचार करेंगे। इस तरह दूसरों के
क्षेत्र में जो कार्य हो चुका है, हमें उस पर
गर्व करने की जरूरत नहीं होगी। 17धर्मग्रन्थ में
कहा गया है, "यदि कोई गर्व करना चाहे, तो
वह प्रभु पर गर्व करे।" 18इसलिए जो
अपनी सिफ़ारिश करता है, वह नहीं, बल्कि
जिसे प्रभु की सिफ़ारिश प्राप्त है, वही सुयोग्य
है।

* शब्दशः, "शरीर के अनुसार"। + शब्दशः, "विचार"।

10 : 1 कुर 2 : 3; गल 5 : 2 10 : 2 1 कुर 4 : 21 10 : 4 इफ 6 : 13–17 10 : 6 2 कुर 2 : 9 10 : 8 2 कुर 12 : 6; 1 कुर 5 : 4-5 10 : 11 2 कुर 13 : 2, 10 10 : 12 2 कुर 3 : 1; 5 : 12 10 : 13 रोम 12 : 3 10 : 15 रोम 15 : 20 10 : 16 प्रे 19 : 21 10 : 17 यिर 9 : 23; 1 कुर 1 : 31 10 : 18 1 कुर 4 : 5

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आप लोग झूठे धर्मप्रचारकों से सावधान रहें

11 ओह, यदि आप लोग मेरी थोड़ी-सी
नादानी सह लेते! कृपया, आप मुझ को
सह लीजिए। 2मैं जितनी तत्परता से आप लोगों
की चिन्ता करता हूं, वह परमेश्वर की चिन्ता-
जैसी है। मैंने आपके एकमात्र दूल्हे मसीह के
साथ आपकी सगाई सम्पन्न की, जिससे मैं आप
को पवित्र कुआँरी की तरह उनके सामने प्रस्तुत
कर सकूं। 3मुझे डर है कि जिस प्रकार सांप ने
अपनी धूर्तता से हव्वा को धोखा दिया था, उसी
प्रकार आप लोगों का मन भी न बहका दिया
जाये और आप मसीह के प्रति अपनी निष्कपट
और सच्ची भक्ति न खो बैठें; 4क्योंकि जब
कोई आप लोगों के पास एक ऐसे येशु का प्रचार
करने आता है, जो हमारे द्वारा प्रचारित येशु से
भिन्न हैं, या एक ऐसा आत्मा अथवा शुभ
समाचार ग्रहण करने को कहता है, जो आप के
द्वारा स्वीकृत आत्मा अथवा शुभ समाचार से
भिन्न है, तो आप लोग उस व्यक्ति का तुरन्त
स्वागत करते हैं। 5आपके उन महान् प्रेरितों से
मैं अपने को किसी भी तरह कम नहीं समझता।
6मैं अच्छा वक्ता नहीं हूं, किन्तु मुझमें ज्ञान
का अभाव नहीं। इसका प्रमाण हम सब तरह
से और हर प्रकार की बातों में आप लोगों को
दे चुके हैं। 7आप लोगों को ऊपर उठाने के लिए
मैंने अपने को दीन-हीन बनाया और बिना कुछ
लिये आप लोगों के बीच परमेश्वर के शुभ
समाचार का प्रचार किया। क्या इस में मेरा कोई
दोष था? 8आप लोगों की सेवा करने के लिए
मैंने अन्य कलीसियाओं से ही अपनी जीविका
के लिए दान ग्रहण कर मानो उनको लूट लिया।
9आप लोगों के यहां रहते समय मैं आर्थिक
संकट में पड़ने पर भी किसी के लिए भी भार
नहीं बनता था। मकिदुनिया से आने वाले
भाइयों ने मेरी आवश्यकताओं को पूरा किया।
मैं आप पर बोझ नहीं बना और कभी नहीं
बनूंगा। 10मुझ में विद्यमान मसीह की सच्चाई
की शपथ! यूनान भर में कोई या कुछ भी मुझे
इस गौरव से वंचित नहीं कर सकेगा। 11ऐसा
क्यों? क्या इसलिए कि मैं आप को प्यार नहीं
करता? परमेश्वर जानता है कि मैं आप लोगों
को कितना प्यार करता हूं। 12मैं जो करता आ
रहा हूं, वही करता जाऊंगा, जिससे उन
तथाकथित प्रेरितों को इस बात पर गर्व करने का
मौका न मिले कि वे प्रचार-कार्य में मेरे बराबर
हैं; 13क्योंकि वे झूठे प्रेरित और कपटपूर्ण
कार्यकर्ता हैं, जो मसीह के प्रेरित होने का
स्वांग रचते हैं। 14यह आश्चर्य की बात नहीं,
क्योंकि स्वयं शैतान ज्योतिर्मय स्वर्गदूत का
स्वांग रचता है। 15इसलिए उसके सेवक भी
धार्मिकता के सेवक बनने का स्वांग रचते हैं,
किन्तु जैसे उनके काम है वैसे ही उनका अन्त
होगा।

सन्त पौलुस अपने कष्टों पर गर्व करते हैं

16मैं फिर कहता हूं, कोई मुझे नासमझ नहीं
समझे और यदि आप मुझे ऐसा समझते हों, तो
मुझे थोड़ी-सी डींग मारने की छूट भी दें। 17इस
सम्बन्ध में मैं जो कहने वाला हूं, वह प्रभु के
अधिकार से नहीं, वरन् नासमझ के समान
निस्संकोच गर्व से कहूंगा: 18जब बहुत-से लोग
उन बातों की डींग मारते हैं, जो संसार की दृष्टि
में महत्त्व रखती हैं, तो मैं भी वही करूंगा।
19समझदार होने के नाते आप लोग नासमझ
लोगों का व्यवहार खुशी से सहते हैं। 20जब कोई
आपकी स्वतन्त्रता छीनता, आपकी धन-संपत्ति
खा जाता, आपका शोषण करता, आपके प्रति
तिरस्कारपूर्ण व्यवहार करता अथवा आप को
थप्पड़ मारता है, तो आप यह सब सह लेते हैं।
21मैं लज्जा के साथ स्वीकार करता हूं कि आप
लोगों के साथ इस प्रकार का व्यवहार करने का
मुझे साहस नहीं हुआ।
आप इसे मेरी नादानी समझें, किन्तु जिन
बातों के विषय में वे लोग डींग मारने का साहस
करते हैं, मैं भी उन बातों के विषय में वही कर

---

11 : 2 इफ 5 : 26-27 11 : 3 उत 3 : 4,13 11 : 4 गल 1 : 8-9 11 : 5 2 कुर 12 : 11; 1 कुर 15 : 10; गल 2 : 6, 9 11 : 6 2 कुर 2 : 1-2, 13; इफ ३ : 4 11 : 7 1 कुर 9 : 12, 19 11 : 8 फिल 4 : 11, 15 11 : 9 2 कुर 12 : 13 11 : 10 1 कुर 9 : 15 11 : 13 2 कुर 2 : 17; फिल 3 : 2 11 : 16 2 कुर 12 : 6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सकता हूं। 22वे इब्रानी हैं? मैं भी हूं! वे इस्राएली हैं? मैं भी हूं! वे अब्राहम की सन्तान हैं? मैं भी हूं! 23वे मसीह के सेवक हैं? मैं नादानी की झोंक में कहता हूं कि मैं इस में उन से बढ़ कर हूं। मैंने उन से अधिक परिश्रम किया, अधिक समय बन्दीगृह में बिताया और अधिक बार कोड़े खाये। मैं बारम्बार मौत के मुंह में पड़ा। 24यहूदियों ने मुझे पांच बार एक-कम-चालीस कोड़े लगाये। 25मैं तीन बार बेंतों से पीटा और एक बार पत्थरों से मारा गया। तीन बार ऐसा हुआ कि जिस जलयान पर मैं यात्रा कर रहा था, वह टूट गया और एक बार वह पूरे चौबीस घण्टे खुले समुद्र पर इधर-उधर बहता रहा। 26मैं बारम्बार यात्रा करता रहा। मुझे नदियों के खतरे का सामना करना पड़ा, डाकुओं के खतरे, यहूदियों के खतरे, गैर-यहूदियों के खतरे, नगरों के खतरे, निर्जन स्थानों के खतरे, समुद्र के खतरे और कपटी भाइयों के खतरे का। 27मैंने कठोर परिश्रम किया और बहुत-सी रातें जागते हुए बितायीं। मुझे अकसर भोजन नहीं मिला। भूख-प्यास, ठण्ड और कपड़ों का अभाव—यह सब मैं सहता रहा 28और इन बातों के अतिरिक्त सब कलीसियाओं के विषय में मेरी चिन्ता, जो हर समय मुझे व्याकुल किये रहती है। 29जब कोई दुर्बल है, तो क्या मैं उसकी दुर्बलता से प्रभावित नहीं? जब किसी का पाप में पतन होता है, तो क्या मैं इसका तीखा अनुभव नहीं करता?

30यदि किसी बात पर गर्व करना है, तो मैं अपनी दुर्बलताओं पर गर्व करूंगा। 31प्रभु येशु मसीह का पिता और परमेश्वर युगानुयुग धन्य है। वह जानता है कि मैं झूठ नहीं बोल रहा हूं। 32जब मैं दमिश्क नगर में था, तो राजा अरेतास के राज्यपाल ने मुझे गिरफ्तार करने के लिए नगर पर पहरा बैठा दिया। 33मैं चारदीवारी की खिड़की से टोकरे में नीचे उतार दिया गया और इस प्रकार उसके हाथ से बच निकला।

पौलुस का दिव्य दर्शन

12 डींग मारने से कोई लाभ नहीं, फिर भी मुझे ऐसा ही करना पड़ रहा है। इसलिए दिव्य दर्शनों और प्रभु द्वारा दिए गए प्रकाशनों की चर्चा करूंगा। 2मैं मसीह के एक भक्त को जानता हूं, जो चौदह वर्ष पहले तीसरे स्वर्ग तक ऊपर उठा लिया गया—सदेह अथवा विदेह, यह मैं नहीं जानता, परमेश्वर ही जानता है।

3मैं उस मनुष्य के विषय में जानता हूं कि वही स्वर्गधाम में उठा लिया गया—सदेह अथवा विदेह, यह मैं नहीं जानता, परमेश्वर ही जानता है। 4उस मनुष्य ने ऐसी बातों की चर्चा सुनी, जो अनिर्वचनीय हैं और जिन्हें प्रकट करने की किसी मनुष्य को अनुमति नहीं है। 5मैं ऐसे व्यक्ति पर गर्व करना चाहूंगा। अपनी दुर्बलताओं के अतिरिक्त मैं अपने विषय में किसी और बात पर गर्व नहीं करूंगा। 6यदि मैं गर्व करना चाहूं, तो यह नादानी नहीं होगी, क्योंकि मैं सत्य ही बोलता। किन्तु मैं यह नहीं करूंगा। लोग जैसा मुझे देखते और मुझसे सुनते हैं, उससे बढ़ कर मुझे कुछ भी नहीं समझें। 7मुझ पर बहुत-से ईश्वरीय प्रकाशन प्रकट किये गये हैं। मैं इन पर घमण्ड न करूं, इसलिए मेरे शरीर में एक कांटा चुभा दिया गया है। मुझे शैतान का दूत मिला है, ताकि वह मुझे घूंसे मारता रहे और मैं घमण्ड न करूं। 8मैंने तीन बार प्रभु से निवेदन किया कि यह मुझ से दूर हो; 9किन्तु प्रभु ने कहा—"मेरी कृपा तुम्हारे लिए पर्याप्त है, क्योंकि तुम्हारी दुर्बलता में मेरा सामर्थ्य पूर्ण रूप से प्रकट होता है।" इसलिए मैं बड़ी खुशी से अपनी दुर्बलताओं पर गौरव करूंगा, जिससे मसीह का सामर्थ्य मुझ पर छाया रहे। 10मैं मसीह के कारण अपनी दुर्बलताओं पर, अपमानों, कष्टों, अत्याचारों और संकटों पर गर्व करता हूं; क्योंकि मैं जब दुर्बल हूं, तभी बलवान हूं।

---

11 : 22 फिल 3 : 5 **11 : 23** 1 कुर 15 : 10 **11 : 24** व्य 25 : 3 **11 : 25** प्रे 16 : 22; 14 : 19; 27 : 41 **11 : 27** 2 कुर 6 : 5 **11 : 28** प्रे 20 : 18-21 **11 : 29** 1 कुर 9 : 22 **11 : 30** 2 कुर 12 : 6 **11 : 31** 2 कुर 1 : 23 **11 : 33** प्रे 9 : 24-25 **12 : 4** लू 23 : 43; प्रक 2 : 7 **12 : 5** 2 कुर 11 : 30 **12 : 6** 2 कुर 10 : 8; 11 : 16 **12 : 7** अय्य 2 : 6, **12 : 10** फिल 4 : 13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कुरिन्थुस की कलीसिया के विषय में पौलुस की चिन्ता

11मैं मूर्खतापूर्ण बातें कर रहा हूं—आप
लोगों ने मुझे इसके लिए बाध्य किया। आप को
मेरी सिफारिश करनी चाहिए थी, क्योंकि
यद्यपि मैं कुछ भी नहीं हूं, फिर भी मैं उन महान्
प्रेरितों से किसी भी तरह कम नहीं हूं। 12आपके
यहां रहते समय मैंने प्रेरित के सच्चे लक्षण
प्रदर्शित किये, अर्थात् अचल धैर्य, चिह्न, चमत्कार
तथा सामर्थ्य के कार्य। 13अन्य कलीसियाओं
की तुलना में आप लोगों में किस बात की कमी
रह गयी है? हां, मैं आप लोगों के लिए भार नहीं
बना। आप मुझे इस अन्याय के लिए क्षमा प्रदान
करें।

14अब मैं तीसरी बार आप लोगों के यहां
आने की तैयारियां कर रहा हूं, और आप के
लिए भार नहीं बनूंगा; क्योंकि मैं आप लोगों को
चाहता हूँ, आपकी सम्पत्ति को नहीं। बच्चों को
अपने माता-पिता के लिए धन एकत्र करना
नहीं चाहिए, बल्कि माता-पिता को अपने
बच्चों के लिए। 15मैं तो आप लोगों के लिए
सहर्ष अपना सब कुछ खर्च करूंगा और अपने
को भी अर्पित करूंगा। यदि मैं आप लोगों को
इतना प्यार करता हूं, तो क्या आप मुझे कम
प्यार करेंगे?

16आप लोग शायद यह कहेंगे—वास्तव में
वह हम पर बोझ नहीं बना, किन्तु वह धूर्त है
और उसने छल-कपट से हमें फंसा लिया।
17जिन व्यक्तियों को मैंने आप लोगों के पास
भेजा, क्या मैंने उन में से किसी के द्वारा आप
से लाभ उठाया? 18मैंने तीतुस से आपके यहां
जाने के लिए निवेदन किया और उसके साथ
एक भाई को भेजा। क्या तीतुस ने आप लोगों
से लाभ उठाया? क्या हम दोनों एक ही आत्मा
से प्रेरित हो कर एक ही पथ पर नहीं चले?

19आप लोग यह समझते होंगे कि अब तक
हम आप के सामने अपनी सफ़ाई दे रहे हैं। बात
ऐसी नहीं है। हम यह सब मसीह में, परमेश्वर
की उपस्थिति में कह रहे हैं। प्रिय भाइयो और
बहिनो! सब कुछ आपके आध्यात्मिक निर्माण
के लिए हो रहा है। 20मुझे आशंका है—कहीं
ऐसा न हो कि आने पर मैं आप लोगों को जैसा
पाना चाहता, वैसा नहीं पाऊं और आप मुझे
जैसा नहीं चाहते, वैसा ही पायें। कहीं ऐसा न
हो कि मैं आपके यहां फूट, ईर्ष्या, बैर,
स्वार्थपरता, परनिन्दा, चुग़लख़ोरी, अहंकार
और उपद्रव पाऊं। 21कहीं ऐसा न हो कि मेरे
आपके यहां पहुंचने पर मेरा परमेश्वर मुझे फिर
आपके सामने नीचा दिखाये और मुझे उन
बहुसंख्यक लोगों के लिए शोक मनाना
पड़े, जिन्होंने पहले पाप किया और अपनी
अशुद्धता, व्यभिचार और लम्पटता के लिए
पश्चात्ताप नहीं किया है।

कुरिन्थुस में सन्त पौलुस का तीसरा आगमन

13 अब मैं तीसरी बार आप लोगों के यहां
आने वाला हूं। धर्मग्रंथ में कहा गया है,
"दो या तीन गवाहों की गवाही द्वारा सब कुछ
प्रमाणित किया जायेगा।" 2 जब मैं दूसरी बार
आप के यहां आया, तो उन लोगों से, जिन्होंने
पहले पाप किया था, और अन्य सभी लोगों से
भी, मैंने जो बात कही थी, वही पहुंचने से पहले
दुहरा रहा हूं कि मैं लौटने पर किसी पर दया
नहीं करूंगा; 3क्योंकि आप इसका प्रमाण चाहते
हैं कि मसीह मेरे माध्यम से बोलते हैं और
मसीह आपके प्रति दुर्बल नहीं हैं; वह आप
लोगों में अपना सामर्थ्य प्रदर्शित करते हैं। 4यह
सच है कि वह दुर्बलता में क्रूस पर चढ़ाये गये,
किन्तु वह परमेश्वर के सामर्थ्य द्वारा जीवित हैं।
हम उनकी तरह दुर्बल हैं, किन्तु आप अनुभव
करेंगे कि हम परमेश्वर के सामर्थ्य द्वारा मसीह
के साथ जीवित हैं। 5आप लोग अपनी ही
परीक्षा ले कर देखें कि आप विश्वास के
अनुरूप जीवन बिताते हैं या नहीं। आप लोग
अपनी ही जांच करें। क्या आप अपने को नहीं

---

12 : 11 2 कुर 11 : 5 **12 : 12** रोम 15 : 19 **12 : 13** 2 कुर 11 : 9 **12 : 14** 2 कुर 13 : 1 **12 : 15** फिल 2 : 17 **12 : 18** 2 कुर 8 : 6, 16-18 **12 : 20** 2 कुर 10 : 2; 1 कुर 4 : 6 **12 : 21** 2 कुर 2 : 1; 13 : 2 **13 : 1** व्य 19 : 15; मत 18 : 16; 1 तिम 5 : 19 **13 : 4** फिल 2 : 7-8 **13 : 5** 1 कुर 11 : 28

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पहचानते कि येशु मसीह आप लोगों में क्रियाशील हैं? यदि नहीं, तो आप जांच में खोटे निकले! 6मैं आशा करता हूँ कि आप मानेंगे कि हम खोटे नहीं हैं। 7हम परमेश्वर से यह प्रार्थना करते हैं कि आप कोई बुराई नहीं करें—इसलिए नहीं कि हम खरे प्रमाणित हों, बल्कि इसलिए कि आप भलाई करें, चाहे हम खोटे ही क्यों न दीख पड़ें। 8कारण, हम सत्य के विरुद्ध कुछ नहीं कर सकते, हम सत्य का समर्थन ही कर सकते हैं। 9जब, आप लोग समर्थ हैं, तो हम दुर्बल होना सहर्ष स्वीकार करते हैं। हम इसके लिए भी प्रार्थना करते हैं कि आप लोगों का सुधार हो। 10मैं दूर रहते हुए ये बातें इसलिए लिख रहा हूँ कि आप के यहाँ रहते हुए मुझे, प्रभु द्वारा प्रदत्त अधिकार के अनुसार, आप लोगों के साथ कठोर व्यवहार न करना पड़े; क्योंकि मुझे यह अधिकार आप के विनाश के लिए नहीं, बल्कि आप के आध्यात्मिक निर्माण के लिए मिला है।

उपसंहार

11भाइयो और बहिनो, अब विदा! सब-कुछ सुव्यवस्थित कीजिए। मेरे अनुरोध पर ध्यान दीजिए। एक मत रहिए, और शांति बनाए रखिए। तब प्रेम तथा शान्ति का परमेश्वर आप के साथ होगा। 12शान्ति के पवित्र चुम्बन से एक दूसरे का अभिवादन कीजिए। सब संत आप लोगों को नमस्कार कहते हैं।

13प्रभु येशु मसीह की कृपा, परमेश्वर का प्रेम तथा पवित्र आत्मा की सहभागिता आप सब के साथ हो।

13 : 8 1 कुर 13 : 6 **13 : 10** 2 कुर 2 : 3; 10 : 8 : 11 **13 : 11** फिल 4 : 4; रोम 15 : 33 **13 : 12** 1 कुर 16 : 20

गलातिया प्रदेश की कलीसियाओं के नाम संत पौलुस का पत्र

भूमिका

जब प्रभु येशु का शुभ समाचार गैर-यहूदियों को सुनाया गया और उसको ग्रहण भी किया गया, तब प्रश्न उठा कि क्या नव-मसीही को एक सच्चा मसीही बनने के लिए मूसा की व्यवस्था का पालन करना चाहिए अथवा नहीं। संत पौलुस इस प्रश्न पर गम्भीरता से विचार-विमर्श करते हैं और कहते हैं कि यह आवश्यक नहीं है। मसीह में जीवन का ठोस आधार विश्वास है, जिसके द्वारा मनुष्य परमेश्वर से पुनः मेल-मिलाप करता है। जो व्यक्ति विश्वास करता है, वह परमेश्वर की दृष्टि में धार्मिक ठहरता है।

एशिया माइनर में एक प्रदेश था गलातिया। यह रोम-साम्राज्य के अन्तर्गत था। यहाँ कुछ कलीसियाएं थीं, जहाँ बाहर से ऐसे प्रचारक आए जो शुभ समाचार की स्वतन्त्रता का विरोध करते थे, और विश्वासियों को यह सिखाते थे कि परमेश्वर से मेल-मिलाप करने के लिए, उसकी दृष्टि में धार्मिक ठहरने के लिए, मूसा की व्यवस्था का पालन करना आवश्यक है।

व्यवस्था की गुलामी के संबंध में इस गलत शिक्षा के कारण कुछ गैर-यहूदी नव-मसीही भटक गये थे। इन भटके हुए मसीहियों को सच्चे विश्वास और धर्माचरण में पुनः लाने के लिए संत पौलुस ने यह **"गलातिया प्रदेश की कलीसियाओं के नाम पत्र"** लिखा।

संत पौलुस आरम्भ में ही यह स्पष्ट कर देते हैं कि उन्हें प्रभु येशु मसीह के सच्चे प्रेरित कहलाने की योग्यता प्राप्त हुई है। शुभ समाचार सुनाना उनका अधिकार है। वह इस बात पर जोर देते

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
हैं कि उनको स्वयं परमेश्वर ने अपना प्रेरित चुना है, किसी मनुष्य अथवा किसी मानवीय अधिकार ने उन्हें नियुक्त नहीं किया है। उन्हें परमेश्वर ने एक विशिष्ट सेवा के लिए नियुक्त किया है, और वह यह है: **संत पौलुस गैर-यहूदियों के प्रेरित हैं**। तत्पश्चात् वह इस विचार को और आगे बढ़ाते हैं कि केवल विश्वास से ही मनुष्य परमेश्वर की दृष्टि में धार्मिक ठहरता है। अन्तिम अध्यायों में संत पौलुस बताते हैं कि सच्चा मसीही आचरण प्रेम से उत्पन्न होता है, और प्रेम मसीह में विश्वास का प्रतिफल है।

विषय -वस्तु की रूपरेखा

भूमिका	1 : 1-10
संत पौलुस का प्रेरितीय अधिकार	1 : 11—2 : 21
परमेश्वर की कृपा का शुभ समाचार	3 : 1—4 : 31
मसीही स्वतन्त्रता और दायित्व	5 : 1—6 : 10
उपसंहार	6 : 11-18

अभिवादन

1 यह पत्र मुझ-पौलुस की ओर से है, जो न
तो मनुष्यों की ओर से और न किसी मनुष्य
द्वारा प्रेरित नियुक्त हुआ हूँ, बल्कि स्वयं येशु
मसीह और पिता-परमेश्वर ने मुझे प्रेरित
नियुक्त किया है, जिसने उन्हें मृतकों में से
पुनर्जीवित किया। 2मैं और जितने भाई-बहिन
मेरे साथ हैं, गलातिया प्रदेश की कलीसियाओं
का अभिवादन करते हैं।
3हमारा पिता परमेश्वर और प्रभु येशु मसीह
आप लोगों को अनुग्रह तथा शान्ति प्रदान करें।
4मसीह ने हमारे पापों के कारण अपने को
अर्पित किया, जिससे वह हमारे पिता परमेश्वर
की इच्छानुसार वर्तमान पापमय युग-संसार से
हमारा उद्धार करें। 5उसी की युगयुगों तक
महिमा हो! आमेन!

शुभ समाचार केवल एक है

6मुझे आश्चर्य होता है कि जिसने आप
लोगों को मसीह के अनुग्रह द्वारा बुलाया, उसे
आप इतना शीघ्र त्याग कर किसी दूसरे शुभ
समाचार के अनुयायी बन गये हैं। 7दूसरा तो है
ही नहीं, किन्तु कुछ लोग आप में अशान्ति
उत्पन्न करते और मसीह का शुभ समाचार
विकृत करना चाहते हैं। 8लेकिन जो शुभ समाचार
हमने आप को सुनाया, यदि कोई—चाहे वह
स्वयं हम या कोई स्वर्गदूत ही क्यों न हो—उससे
भिन्न शुभ समाचार आप को सुनाये, तो वह
अभिशप्त हो! 9मैं जो कह चुका हूं, वही
दुहराता हूं : जो शुभ समाचार आप को मिला
है, यदि कोई उससे भिन्न शुभ समाचार आपको
सुनाये, तो वह अभिशप्त हो!
10मैं अब किसका कृपापात्र बनने की
कोशिश कर रहा हूँ—मनुष्यों का अथवा
परमेश्वर का? क्या मैं मनुष्यों को प्रसन्न करना
चाहता हूँ? यदि मैं अब तक मनुष्यों को प्रसन्न
करना चाहता, तो मैं मसीह का सेवक नहीं
होता।

प्रेरित पौलुस द्वारा प्रचारित शुभ समाचार मनुष्य -रचित नहीं है

11भाइयो और बहिनो! मैं आप लोगों को
विश्वास दिलाता हूँ कि मैंने जो शुभ समाचार
सुनाया, वह मनुष्य -रचित नहीं है। 12मैंने किसी
मनुष्य के हाथ से उसे न तो ग्रहण किया और
न सीखा, बल्कि स्वयं येशु मसीह ने उसे मुझ
पर प्रकट किया।
13आप लोगों ने सुना होगा कि जब मैं यहूदी
धर्म-विधि का अनुयायी था, तो मेरा आचरण
कैसा था। मैं परमेश्वर की कलीसिया पर घोर
अत्याचार करता और उसको नष्ट करने का
प्रयत्न करता था। 14मैं अपने पूर्वजों की

1 : 1 गल 1 : 11-12 **1 : 3** रोम 1 : 7 **1 : 4** गल 2 : 20; 1 तिम 2 : 6; तीत 3 : 14; 1 यो 5 : 19 **1 : 7** प्रे 15 : 1, 24 **1 : 8** 1 कुर 16 : 22 **1 : 10** 1 थिस 2 : 4 **1 : 13** प्रे 26 : 4-20 **1 : 14** प्रे 22 : 3

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

परम्पराओं का पालन अत्यंत धर्मोत्साह से करता था और यहूदी धर्म-विधि के पालन में अपने समय के बहुत-से हम-उम्र यहूदियों से बहुत आगे था। 15किन्तु परमेश्वर ने मुझे माता के गर्भ से ही अपने कार्य के लिए अलग कर लिया था और उसने अपने अनुग्रह से मुझे बुलाया; 16उसने मुझ पर—और मेरे द्वारा—*अपने पुत्र को प्रकट करने का निश्चय किया, जिससे मैं गैर-यहूदियों में उसके पुत्र के शुभ समाचार का प्रचार करूँ। इसके बाद मैंने किसी निरे मनुष्य+ से परामर्श नहीं किया 17और जो मुझ से पहले प्रेरित थे, उनसे मिलने के लिए मैं यरूशलेम नहीं गया; बल्कि मैं तुरन्त अरब देश गया और बाद में दमिश्क नगर लौटा।

18मैं तीन वर्ष बाद कैफा** से जानकारी प्राप्त करने यरूशलेम गया और उनके साथ पन्द्रह दिन रहा। 19प्रभु के भाई याकूब को छोड़ कर मेरी भेंट अन्य प्रेरितों में से किसी से नहीं हुई। 20परमेश्वर मेरा साक्षी है कि मैंने आप को जो लिखा है उसमें कुछ भी झूठ नहीं है।

21इसके बाद मैं सीरिया और किलिकिया प्रदेश गया। 22उस समय यहूदा प्रदेश की कलीसियाएँ, जो मसीह में हैं, मुझे व्यक्तिगत रूप से नहीं जानती थीं। 23उन्होंने इतना ही सुना था कि जो व्यक्ति हम पर अत्याचार करता था, वह अब उस विश्वास का शुभ समाचार सुना रहा है, जिसका वह नष्ट करने का प्रयत्न करता था 24और वे मेरे विषय में परमेश्वर की स्तुति करती थीं।

यरूशलेम में प्रेरित पौलुस के कार्य का अनुमोदन

2 इसके बाद चौदह वर्ष बीतने पर मैं बरनबास के साथ फिर यरूशलेम गया। मैं तीतुस को भी अपने साथ ले गया। 2परमेश्वर ने मुझ पर प्रकट किया था कि मुझे जाना चाहिए। मैंने उन लोगों के सामने —परन्तु एकान्त में प्रतिष्ठित व्यक्तियों के सामने—वह शुभ समाचार प्रस्तुत किया जिसका प्रचार मैं गैर-यहूदियों के बीच करता हूँ, जिससे ऐसा न हो कि जो दौड़-धूप मैं कर रहा हूँ अथवा कर चुका हूँ, वह व्यर्थ हो जाए। 3किन्तु उन्होंने तीतुस को, जो मेरे साथ आये थे और यूनानी हैं, इसके लिए बाध्य नहीं किया कि वह अपना खतना करायें। 4यह प्रश्न उन झूठे भाइयों के कारण उठा था, जिन्हें कलीसिया में गुप्त रूप से लाया गया था, जो चुपचाप घुस आए थे कि येशु मसीह से प्राप्त हमारी स्वतन्त्रता का भेद लें और हमें गुलाम बना लें। 5हम उन लोगों के सामने एक क्षण के लिए भी नहीं झुके। हम शुभ समाचार का सत्य आप के लिए पूर्ण रूप से बनाये रखना चाहते थे।

6किन्तु जो व्यक्ति प्रतिष्ठित माने जाते थे—वे पहले कैसे थे, इससे मेरे विचार में कोई अन्तर नहीं पड़ता, क्योंकि परमेश्वर मुंह-देखा न्याय नहीं करता—इन प्रतिष्ठत व्यक्तियों से मुझे कोई नई बात प्राप्त नहीं हुई। 7वरन् इसके विपरीत, उन्होंने मान लिया कि मुझे उसी तरह गैर-यहूदियों+++ में शुभ समाचार का प्रचार-कार्य सौंपा गया था, जिस तरह पतरस को यहूदियों++ में। 8(क्योंकि जिस परमेश्वर ने पतरस को यहूदियों का प्रेरित बनाकर उनके द्वारा सेवा-कार्य किया, उसी ने मुझे गैर-यहूदियों का प्रेरित बनाकर मेरे द्वारा सेवा-कार्य किया।) 9जो व्यक्ति कलीसिया के स्तम्भ समझे जाते थे—अर्थात् याकूब, कैफा और योहन—उन्होंने कृपा का वह वरदान पहचाना जो मुझे मिला है। उन्होंने मुझे और बरनबास को अपने सहयोगी समझकर हमें सहभागिता का दाहिना हाथ दिया। वे इस बात के लिए सहमत हुए कि हम गैर-यहूदियों के पास जायें और वे यहूदियों के पास। 10उन्होंने केवल एक बात कही कि हम गरीबों को स्मरण रखें। वास्तव में मैं स्वयं यह कार्य करने के लिए उत्सुक था।

---

* मूल में, "मुझ में" +शब्दश:, "मांस और रक्त" ** अथवा, "पतरस" ++ शब्दश:, "खतनावालों" +++शब्दश:, "खतना रहितों"

1 : 15 रोम 1 : 1; यिर 1 : 5; यश 49 : 1 **1 : 16** गल 2 : 7; मत 16 : 17 **1 : 18** प्रे 9 : 26 **1 : 19** मत 13 : 55 **1 : 21** प्रे 9 : 30 **2 : 1** प्रे 15 : 2 **2 : 2** गल 6 : 9 **2 : 3** प्रे 16 : 3 **2 : 4** प्रे 15 : 1, 24 **2 : 5** गल 3 : 1 **2 : 7** प्रे 9 : 15; 15 : 12; 22 : 21 **2 : 9** यो 1 : 42 **2 : 10** प्रे 11 : 30; 12 : 25

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

महानगर अन्ताकिया में कैफा (पतरस) का विरोध

11जब कैफा अन्ताकिया आये, तो मैंने उनके मुंह पर उनका विरोध किया, क्योंकि वह दोषी थे। 12वह पहले गैर-यहूदियों के साथ भोजन करते थे; किन्तु जब याकूब के यहाँ से कुछ व्यक्ति आये, तो वह खतना की प्रथा माननेवाले यहूदी भाई-बहिनों के भय से गैर-यहूदियों से किनारा करने और उन से अलग रहने लगे। 13दूसरे यहूदी भाई-बहिनों ने भी इस प्रकार का ढोंग रचा, यहाँ तक कि बरनबास भी उनके ढोंग के कारण भटक गये।

14जब मैंने देखा कि उनका आचरण शुभ समाचार के सत्य के अनुकूल नहीं है, तो मैंने सब के सामने कैफा से यह कहा, ''यदि आप, जो जन्म से यहूदी हैं, यहूदी के सदृश नहीं बल्कि गैर-यहूदी के सदृश आचरण करते हैं, तो आप अन्यजातियों को यहूदियों के सदृश आचरण करने को क्यों विवश करते हैं?''

विश्वास द्वारा परमेश्वर के साथ उचित संबंध

15हम लोग गैर-यहूदियों के पापी वंशज नहीं, बल्कि जन्म से यहूदी हैं। 16फिर भी हम जानते हैं कि मनुष्य व्यवस्था के कर्मकाण्ड द्वारा नहीं, बल्कि येशु मसीह में विश्वास करने से धार्मिक ठहरता है। इसलिए हमने येशु मसीह में विश्वास किया है, जिससे हम व्यवस्था के कर्मकाण्ड द्वारा नहीं, बल्कि मसीह में विश्वास करने से धार्मिक ठहराये जायें; क्योंकि व्यवस्था के कर्मकाण्ड द्वारा ''कोई भी मनुष्य परमेश्वर की दृष्टि में धार्मिक नहीं ठहरेगा।''

17यदि हम भी, जो मसीह द्वारा धार्मिक ठहरना चाहते हैं, पापी प्रमाणित हो जाते हैं, तो क्या इसका निष्कर्ष यह है कि मसीह पाप को बढ़ावा देते हैं? कभी नहीं! 18मैंने जिन वस्तुओं का विनाश किया है, यदि मैं उनका पुनर्निर्माण करूँगा, तो अपने को अवश्य परमेश्वर की इच्छा का उल्लंघन करने वाला प्रमाणित करूँगा, 19क्योंकि मैं व्यवस्था द्वारा व्यवस्था के लिए मर चुका हूँ, जिससे मैं परमेश्वर के लिए जी सकूँ। मैं मसीह के साथ क्रूस पर मर गया हूं। 20मैं अब जीवित नहीं रहा, बल्कि मसीह मुझ में जीवित हैं। अब मैं अपने शरीर में जो जीवन जीता हूँ, उसका एकमात्र प्रेरणा-स्रोत है—परमेश्वर के पुत्र में विश्वास, जिसने मुझ से प्रेम किया और मेरे लिए अपने को अर्पित किया। 21मैं परमेश्वर के अनुग्रह का तिरस्कार नहीं कर सकता। यदि व्यवस्था द्वारा मनुष्य धार्मिक ठहर सकता है, तो मसीह व्यर्थ ही मरे।

विश्वास द्वारा आत्मा का वरदान

3 नासमझ गलातियो! किसने आप लोगों पर जादू डाला है? आप की आँखों के सम्मुख तो स्पष्ट रूप से यह दिखलाया गया कि येशु मसीह क्रूस पर चढ़ाये गये थे! 2मैं आप लोगों से इतना ही जानना चाहता हूँ: आप को व्यवस्था के कर्मकाण्ड के कारण आत्मा का वरदान मिला या विश्वास का शुभ संदेश सुनने के कारण? 3क्या आप लोग इतने नासमझ हैं कि आपने जो कार्य आत्मा द्वारा प्रारम्भ किया, उसे अब बाह्य विधि-पालन* द्वारा पूर्ण करना चाहते हैं? 4क्या आप लोगों को व्यर्थ ही इतने अनुभव प्राप्त हुए? मुझे ऐसा विश्वास नहीं है+। 5जब परमेश्वर आप लोगों को आत्मा का वरदान देता है और आप के बीच आश्चर्यपूर्ण सामर्थ्य के कार्य करता है, तो क्या वह व्यवस्था के कर्मकाण्ड के कारण ऐसा करता है अथवा इसलिए कि आपने विश्वास का शुभ संदेश सुना है?

अब्राहम से की गयी प्रतिज्ञा और विश्वास

6धर्मग्रन्थ में कहा गया है कि ''अब्राहम ने परमेश्वर में विश्वास किया और इसी से वह धार्मिक माने गये।'' 7इसलिए आप लोग यह निश्चित रूप से जान लें कि जो लोग विश्वास करते हैं, वे ही अब्राहम की सन्तान हैं। 8धर्मग्रन्थ पहले से यह जानता था कि परमेश्वर

---

* अक्षरशः , ''शरीर से'' +शब्दशः ''यदि वे व्यर्थ होते तो!'' अथवा '' क्या वे सचमुच व्यर्थ थे?''

2 : 16 प्रे 15 : 10-11; इफ 2 : 8; रोम 3 : 20-28; 4 : 5; 11 : 6; भज 143 : 2 **2 : 19** रोम 7 : 6 **2 : 20** यो 13 : 1; 17 : 23; 1 यो 3 : 16; गल 1 : 4 **3 : 6** उत 15 : 6 **3 : 8** उत 12 : 3; 18 : 18; प्रे 3 : 25

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

विश्वास द्वारा गैर-यहूदियों को धार्मिक
ठहरायेगा, इसलिए उसने पहले से अब्राहम को
यह शुभ समाचार सुनाया कि "तेरे द्वारा पृथ्वी
की समस्त जातियाँ आशीर्वाद प्राप्त करेंगी।"
9इसलिए जो विश्वास पर निर्भर रहते हैं, वे
विश्वास करने वाले अब्राहम के साथ ही
आशीर्वाद प्राप्त करते हैं।

10परन्तु जो व्यवस्था के कर्मकाण्ड पर
निर्भर रहते हैं, वे शाप के अधीन हैं; क्योंकि
लिखा है: "जो व्यक्ति व्यवस्था-ग्रन्थ में
लिखी हुई सभी बातों का पालन नहीं करता
रहता है, वह शापित है।"

11यह तो स्पष्ट है कि कोई भी व्यक्ति
व्यवस्था के कारण परमेश्वर की दृष्टि में
धार्मिक नहीं ठहरता; क्योंकि धर्मग्रन्थ में लिखा
है: "धार्मिक मनुष्य विश्वास के द्वारा जीवन
प्राप्त करेगा** ।" 12और व्यवस्था का विश्वास
से कोई सम्बन्ध नहीं है; क्योंकि उसमें लिखा
है, "जो इन बातों का पालन करेगा, उसे इन्हीं
के द्वारा जीवन प्राप्त होगा।"

13मसीह हमारे लिए शापित हुये और इस
तरह उन्होंने हम को व्यवस्था के अभिशाप से
मुक्त किया; क्योंकि लिखा है: "जो कोई काठ
पर लटकाया जाता है, वह शापित है।" 14यह
इसलिए हुआ कि येशु मसीह के द्वारा अब्राहम
का आशीर्वाद गैर-यहूदियों को भी प्राप्त हो
और हमें विश्वास द्वारा वह आत्मा मिले,
जिसकी प्रतिज्ञा की गयी थी।

अब्राहम के वंशज कौन?

15भाइयो और बहिनो! मैं आप लोगों को
साधारण जीवन का उदाहरण दे रहा हूँ। किसी
मनुष्य का प्रामाणिक वसीयतनामा++ न तो कोई
रद्द कर सकता और न उसमें कुछ जोड़ सकता
है। 16अब, प्रतिज्ञाएँ अब्राहम और उनके वंशज
को दी गयी हैं। धर्मग्रन्थ नहीं कहता "उनके
वंशजों को" मानो बहुतों को, बल्कि "उनके
वंशज को", मानो एक को ही, और वह वंशज
मसीह हैं। 17मेरे कहने का अभिप्राय यह है: जो
विधान परमेश्वर द्वारा प्रामाणिक किया जा
चुका है, उसे चार सौ तीस वर्ष बाद होने वाली
व्यवस्था न तो रद्द कर सकती है और न उसकी
प्रतिज्ञा को व्यर्थ बना सकती है। 18यदि व्यवस्था
के माध्यम से उत्तराधिकार प्राप्त होता, तो
प्रतिज्ञा से उसका कोई सम्बन्ध नहीं; किन्तु
प्रतिज्ञा द्वारा ही परमेश्वर ने उसे अब्राहम को
देने का अनुग्रह किया।

19तब व्यवस्था का प्रयोजन क्या है? जिस
वंशज को प्रतिज्ञा दी गयी थी, उसके आने के
समय तक व्यवस्था अपराधों के कारण जोड़ दी
गयी थी। वह स्वर्गदूतों द्वारा मध्यस्थ के माध्यम
से घोषित की गयी है। 20मध्यस्थता तो कम से
कम दो के बीच में की जाती है*; किन्तु परमेश्वर
एक है।

21तो क्या व्यवस्था और परमेश्वर की
प्रतिज्ञाओं में विरोध है? कभी नहीं! यदि ऐसी
व्यवस्था की घोषणा हुई होती, जो जीवन प्रदान
करने में समर्थ थी, तो व्यवस्था के पालन द्वारा
ही मनुष्य धार्मिक ठहरता। 22परन्तु धर्मग्रन्थ ने
सब कुछ पाप की शक्ति के अधीन बंदी बना
दिया है, जिससे येशु मसीह में विश्वास के द्वारा
विश्वास करने वालों के लिए प्रतिज्ञा पूरी की
जाये।

23विश्वास के आगमन से पहले हम को
उसके प्रकट होने के समय तक व्यवस्था के
संरक्षण में बन्दी बना दिया गया था। 24इस प्रकार
मसीह के पास लाने के लिए व्यवस्था हमारी
संरक्षक+ रही, जिससे हम विश्वास के द्वारा
धार्मिक ठहरें। 25किन्तु अब विश्वास आया है

** अथवा, "विश्वास के आधार पर धार्मिक ठहरा हुआ व्यक्ति जीवन प्राप्त करेगा।" ++ मूल शब्द में श्लेष है: "विधान" का अर्थ पद 17 में स्पष्ट है। * अक्षरशः "मध्यस्थ केवल एक का नहीं होता।" +अथवा "शिक्षक", यूनानी "पैदगोगॉस" साधारणतः एक दास, जो बच्चों को स्कूल तक पहुंचाता था।

3 : 9 रोम 4 : 16 **3 : 10** व्य 27 : 26 (यू० पाठ) **3 : 11** हब 2 : 4; रोम 1 : 17; इब्र 10 : 38 **3 : 12** लेव 18 : 5; रोम 10 : 5 **3 : 13** रोम 8 : 3; व्य 21 : 33; 2 कुर 5 : 21 **3 : 16** उत 12 : 7; 13 : 15; 17 : 7; 22 : 18; 24 : 7 **3 : 17** नि 12 : 40 **3 : 18** रोम 11 : 6 **3 : 19** रोम 5 : 20; इब्र 2 : 2; प्रे 7 : 38, 53 **3 : 21** रोम 8 : 2-4 **3 : 22** रोम 3 : 9-19; 11 : 32 **3 : 23** गल 4 : 3; 1 पत 1 : 5 **3 : 25** रोम 10 : 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और हम संरक्षक के अधीन नहीं रहे।
26क्योंकि आप लोग सब-के-सब येशु
मसीह में विश्वास करने के कारण परमेश्वर की
संतान हैं; 27क्योंकि जितने लोगों ने मसीह का
बपतिस्मा ग्रहण किया, उन्होंने मसीह को
धारण किया है। 28अब न तो कोई यहूदी है और
न यूनानी, न तो कोई दास है और न स्वतन्त्र,
न तो कोई पुरुष है और न स्त्री—आप सब येशु
मसीह में एक हो गये हैं। 29यदि आप लोग
मसीह के हैं, तो अब्राहम के वंशज हैं और
प्रतिज्ञा के अनुसार उत्तराधिकारी।

विश्वास हमें परमेश्वर की सन्तान बना देता है

4 मेरे कहने का अभिप्राय यह है: जब तक
उत्तराधिकारी नाबालिग* है, वह सारी
सम्पत्ति का स्वामी होते हुए भी दास से किसी
तरह भिन्न नहीं। 2वह पिता द्वारा निर्धारित समय
तक अभिभावकों और गृह-प्रबन्धकों के अधीन
रहता है। 3इसी तरह, जब तक हम नाबालिग*
थे, तब तक संसार के तत्वों** के अधीन दास
बने हुए थे; 4किन्तु समय पूरा हो जाने पर
परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा। वह एक नारी
से उत्पन्न हुए और व्यवस्था के अधीन उत्पन्न
हुए, 5जिससे वह व्यवस्था के अधीन रहने
वालों को छुड़ा सकें और हम परमेश्वर की
दत्तक संतान++ बन जायें। 6आप लोग संतान ही
हैं। इसका प्रमाण यह है कि परमेश्वर ने हमारे
हृदय में अपने पुत्र का आत्मा भेजा है, जो पुकार
कर यह कहता है, ''अब्बा! पिता!'' 7इसलिए
अब आप दास नहीं, संतान हैं और संतान होने
के नाते आप परमेश्वर की कृपा से उत्तराधिकारी
भी हैं।

गलातियों के विषय में संत पौलुस की आशंका

8आप लोग पहले, जब आप को परमेश्वर
का ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ था, ऐसे देवताओं की
दासता स्वीकार करते थे, जिनका वस्तुतः
अस्तित्व नहीं है। 9किन्तु अब आप परमेश्वर
को पहचान चुके हैं या यों कहें कि परमेश्वर
ने आप को अपना लिया है, तो आप कैसे फिर
उन अशक्त एवं असार तत्त्वों की शरण ले
सकते हैं? क्या आप एक बार फिर उनकी
दासता स्वीकार करना चाहते हैं? 10आप लोग
विशेष दिन, महीने, ऋतुएँ और वर्ष मनाते हैं।
11मुझे आशंका है, कहीं ऐसा न हो कि मैंने आप
लोगों के बीच व्यर्थ परिश्रम किया हो।

12भाइयो और बहिनो! आप मुझ-जैसे बनें,
जिस तरह मैं आप लोगों-जैसा बन गया हूँ।
यही आप से मेरा अनुरोध है। आप लोगों ने मेरे
साथ कोई अन्याय नहीं किया। 13आप जानते
हैं कि अस्वस्थ होने के कारण मुझे आप को
पहली बार शुभ समाचार सुनाने का अवसर
मिला। 14यद्यपि मैं अपने शरीर की दुर्बलता के
कारण आप लोगों के लिए परीक्षा बना, फिर
भी आपने न तो मेरा तिरस्कार किया और न मेरे
प्रति घृणा प्रकट की, बल्कि आपने मेरा ऐसा
स्वागत किया, मानो मैं परमेश्वर का दूत या
स्वयं येशु मसीह हूं। 15उस समय आप लोग
अपने को धन्य समझते थे। अब आप लोगों का
वह मनोभाव कहाँ गया? मैं आप के विषय में
यह कह सकता हूँ कि यदि सम्भव होता, तो
आप अपनी आँखें निकाल कर मुझे दे देते!
16क्या मैं अब आपका शत्रु इसलिए बन गया
हूँ कि मैं आप लोगों से सत्य बोल रहा हूँ?
17जो लोग आपकी कृपा प्राप्त करने में लगे
हुए हैं, वे अच्छे उद्देश्य से ऐसा नहीं कर रहे हैं।
वे आप को मुझ से अलग करना चाहते हैं,
जिससे आप उन्हें सिर-आँखों पर रखें। 18यह
अच्छी बात है कि लोग आपकी कृपा चाहते हैं;
परन्तु यह अच्छे उद्देश्य से हो और सदा रहे,
केवल उस समय तक नहीं जब तक मैं आपके
बीच विद्यमान हूं। 19मेरे प्रिय बच्चो! जब तक
तुम में मसीह का स्वरूप नहीं बन जाये, तब
तक मैं तुम्हारे लिए फिर प्रसव-पीड़ा सह रहा

* अथवा, अवयस्क ** अथवा, ''दैवी शक्तियों'' ++ अक्षरशः ''पुत्र''

3 : 26 यो 1 : 12; रोम 8 : 17 **3 : 27** रोम 6 : 3; 13 : 14 **3: 28** रोम 10 : 12; 1 कुर 12 : 13 **3 : 29** रोम 9 : 7 **4 : 3** गल 3 : 23; 5 : 1; कु 2 : 20 **4 : 4** इफ 1 : 10 **4 : 5** गल 3 : 13, 26 **4 : 6** रोम 8 : 15 **4 : 7** गल 3 : 29; रोम 8 : 16-17 **4 : 10** रोम 14 : 5; कुल 2 : 26 **4 : 11** 2 यो 1 : 8 **4 : 12** 2 कुर 2 : 5 **4 : 13** प्रे 16 : 6; 1 कुर 2 : 3 **4 : 14** प्रे 14 : 11-12 **4 : 16** आमो 5 : 10 **4 : 17** गल 1 : 7 **4 : 19** 1 कुर 4 : 15

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हूँ। 20मैं कितना चाहता हूँ कि मैं अभी तुम्हारे
बीच विद्यमान होता जिससे मैं उपयुक्त भाषा
का प्रयोग कर सकूं, क्योंकि मेरी समझ में नहीं
आता कि मैं तुम से क्या कहूँ।

दो विधानः एक दासता का और दूसरा स्वतन्त्रता का

21आप जो व्यवस्था के अधीन रहना चाहते
हैं, मुझे यह बताइए : क्या आप यह नहीं सुनते
कि व्यवस्था क्या कहती है? 22उसमें लिखा है
कि अब्राहम के दो पुत्र थे—एक दासी से और
दूसरा स्वतन्त्र पत्नी से। 23दासी के पुत्र का जन्म
प्रकृति के अनुसार हुआ, किन्तु स्वतन्त्र पत्नी के
पुत्र का जन्म प्रतिज्ञा के अनुसार।

24इन बातों का एक लाक्षणिक अर्थ है। वे
दो स्त्रियाँ दो विधानों की प्रतीक हैं। एक
विधान, अर्थात् सीनय पर्वत का विधान, दासता
के लिए सन्तति उत्पन्न करता है। यह हागार है।
25हागार का सीनय पर्वत अरब में है, पर यह
वर्तमान यरूशलेम के सदृश्य है; क्योंकि
यरूशलेम अपनी सन्तति के साथ दासता के
अधीन है। 26किन्तु दिव्य यरूशलेम स्वतन्त्र है।
वही हमारी माता है; 27क्योंकि लिखा है,

''ओ वन्ध्या! तुमने कभी पुत्र नहीं जना,
अब आनन्द मनाओ।
तुमने प्रसव-पीड़ा का अनुभव नहीं किया,
उल्लास के गीत गाओ;
क्योंकि विवाहिता की अपेक्षा परित्यक्ता के
अधिक पुत्र होंगे।''

28भाइयो और बहिनो! इसहाक के समान
आप परमेश्वर की प्रतिज्ञा की संतान हैं।
29किन्तु जिसका जन्म प्रकृति के अनुसार हुआ,
वह उस पर अत्याचार करता था, जिसका जन्म
आत्मा के अनुसार हुआ था। अब भी ऐसा ही
होता है; 30किन्तु धर्मग्रन्थ क्या कहता है?
''दासी और उसके पुत्र को घर से निकाल दो।
दासी का पुत्र स्वतन्त्र पत्नी के पुत्र के साथ
विरासत का उत्तराधिकारी नहीं होगा।''
31इसलिए भाइयो और बहिनो! हम दासी की
नहीं, बल्कि स्वतन्त्र स्त्री की सन्तान हैं।

मसीह द्वारा प्रदत्त स्वतन्त्रता

5 मसीह ने स्वतन्त्र बने रहने के लिए ही हमें
स्वतन्त्र किया है, इसलिए आप लोग दृढ़
रहें और फिर दासता के जूए में नहीं जुतें। 2मैं,
पौलुस, आप लोगों से यह कहता हूँ : यदि आप
खतना करायेंगे, तो आप को मसीह से कोई
लाभ नहीं होगा। 3मैं खतना कराने वाले हर एक
व्यक्ति से फिर कहता हूँ कि उसे समस्त
व्यवस्था का पालन करना है। 4यदि आप अपनी
धार्मिकता के लिए व्यवस्था पर निर्भर रहना
चाहते हैं, तो आपने मसीह से अपना सम्बन्ध
तोड़ लिया और परमेश्वर की कृपा को खो
दिया है। 5हम तो उस धार्मिकता की तीव्र
अभिलाषा करते हैं, जो विश्वास पर आधारित
है और आत्मा द्वारा प्राप्त होती है।* 6यदि हम
येशु मसीह से संयुक्त हैं, तो न तो खतने का
कोई महत्त्व है और न उसके अभाव का। महत्व
विश्वास का है, जो प्रेम द्वारा क्रियाशील होता
है।

7आप लोग अच्छी प्रगति कर रहेथे। आप
को किसने आगे बढ़ने से रोका कि आप सत्य
को न मानें? 8उस व्यक्ति ने जो भी तर्क दिया
हो, वह तर्क परमेश्वर की ओर से नहीं आया
जो आप लोगों को बुलाता है; 9याद रखें, थोड़ा-
सा खमीर सारे गूंधे हुए आटे को खमीरा बना
देता है। 10मुझे प्रभु में आप लोगों पर यह भरोसा
है कि आप विचलित नहीं होंगे। जो व्यक्ति
आप लोगों में अशान्ति उत्पन्न कर रहा है, वह
चाहे जो भी हो, परमेश्वर का दण्ड भोगेगा।
11प्यारो+! यदि मैं अब तक खतने का प्रचार
करता होता, तो मुझ पर अब तक अत्याचार

---

* अथवा ''हम पवित्र आत्मा के द्वारा अपने विश्वास के कारण उस धार्मिकता की प्रतीक्षा करते हैं जिसकी हमें आशा है।'' + शब्दशः, ''भाइयो''

4 : 21 गल 3 : 23 **4 : 22** उत 16 : 15; 21 : 2, 9 **4 : 23** रोम 9 : 7-9; उत 17 : 16 **4 : 24** गल 5 : 1; रोम 8 : 15 **4 : 26** इब्र 12 : 22 **4 : 27** यश 54 : 1 **4 : 29** उत 21 : 9 **4 : 30** उत 21 : 10, 12; यो 8 : 35 **4 : 31** गल 3 : 29 **5 : 1** गल 4 : 5, 31; प्रे 15 : 10 **5 : 2** 2कुर 10 : 1 **5 : 6** गल 6 : 15; 1 कुर 7 : 19 **5 : 8** गल 1 : 6 **5 : 9** 1 कुर 5 : 6 **5 : 10** गल 1 : 7; 2 कुर 11 : 15 **5 : 11** 1 कुर 1 : 23

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

क्यों किया जा रहा है ? यदि मैं ऐसा करता, तो
क्रूस के कारण जो बाधा होती है, वह समाप्त
हो जाती। 12अच्छा यही होता कि जो लोग आप
में अशान्ति उत्पन्न कर रहे हैं, वे अपने को
नपुंसक बना लेते!

स्वतन्त्रता का प्रेम द्वारा नियन्त्रण

13भाइयो और बहिनो! आप जानते हैं कि
आप लोग स्वतन्त्र होने के लिए बुलाये गये हैं।
अत: आप इस स्वतन्त्रता को शारीरिक वासनाओं
का साधन न बनाएं, वरन् प्रेम से एक दूसरे की
सेवा करें, 14क्योंकि समस्त व्यवस्था इस एक
आज्ञा में पूर्ण हो जाती है: "अपने पड़ोसी से
अपने समान प्रेम करो।" 15यदि आप लोग एक
दूसरे को काटने और फाड़ डालने की चेष्टा
करेंगे, तो सावधान रहें। कहीं ऐसा न हो कि
आप एक दूसरे का सर्वनाश कर दें।

पवित्र आत्मा द्वारा संचालन

16मैं यह कहना चाहता हूँ, आप लोग पवित्र
आत्मा की प्रेरणा के अनुसार++ चलेंगे तो शरीर
की वासनाओं को तृप्त नहीं करेंगे। 17शारीरिक
स्वभाव* तो पवित्र आत्मा के विरुद्ध इच्छा
करता है, और पवित्र आत्मा शारीरिक स्वभाव
के विरुद्ध। ये दोनों एक दूसरे के विरोधी हैं।
इसलिए आप जो चाहते हैं, वही नहीं कर पाते
हैं। 18यदि आप का संचालन पवित्र आत्मा से
होता है, तो आप व्यवस्था के अधीन नहीं हैं।

19शारीरिक स्वभाव के कर्म प्रत्यक्ष हैं,
अर्थात् व्यभिचार, अशुद्धता, लम्पटता, 20मूर्ति-
पूजा, जादू-टोना, बैर, फूट, ईर्ष्या, क्रोध,
स्वार्थपरता, मनमुटाव, दलबन्दी, 21द्वेष**,
मतवालापन, रंगरलियाँ और इसी प्रकार की
अन्य बातें। मैं आप लोगों से कहता हूँ, जैसा
कि मैंने पहले भी कहा है, जो लोग इस प्रकार
का आचरण करते हैं, वे परमेश्वर के राज्य के
अधिकारी नहीं होंगे।

22परन्तु पवित्र आत्मा का फल है: प्रेम
आनन्द, शान्ति, सहनशीलता, दयालुता,
हितकामना, ईमानदारी, 23नम्रता और संयम।
इनके विरुद्ध कोई विधि नहीं है। 24जो लोग
येशु मसीह के हैं, उन्होंने वासनाओं तथा
कामनाओं सहित अपने शारीरिक स्वभाव को
क्रूस पर चढ़ा दिया है। 25यदि हमें पवित्र आत्मा
द्वारा जीवन प्राप्त हो गया है, तो हम पवित्र
आत्मा की प्रेरणा के अनुसार जीवन बितायें।

मनुष्य जो बोता है, वही काटता है

26हम मिथ्याभिमानी न बनें, एक दूसरे को
न भड़कायें और और एक दूसरे से ईर्ष्या न करें।

6 भाइयो और बहिनो! यदि यह पता चले कि
किसी ने कोई अपराध किया है, तो आप
लोग, जो आध्यात्मिक हैं, उसे नम्रतापूर्वक
सुधारें। आप स्वयं सावधान रहें: कहीं ऐसा न
हो कि आप भी प्रलोभन में पड़ जायें। 2ऐसे भारी
बोझ ढोने में एक दूसरे की सहायता करें और
इस प्रकार मसीह की विधि पूरी करें।

3क्योंकि यदि कोई समझता है कि मैं कुछ
हूं, जब कि वह कुछ नहीं है, तो वह अपने को
धोखा देता है। 4हर एक व्यक्ति अपने कार्य की
जाँच करे। तब उसके पड़ोसी का कार्य नहीं,
बल्कि यह कार्य, उसके गर्व करने का उचित
कारण होगा। 5क्योंकि हर एक को अपना भार
स्वयं उठाना होगा।

6जो व्यक्ति धर्म-वचन की शिक्षा पा रहा है,
वह अपनी सब उत्तम वस्तुओं में अपने शिक्षक
को संभागी करे।

7धोखा न खाइए। परमेश्वर का उपहास नहीं
किया जा सकता। मनुष्य जो बोता है, वही
काटता है। 8जो अपनी शारीरिक प्रवृत्ति के लिए
बोता है, वह शरीर की भूमि में विनाश की
फसल काटेगा; किन्तु जो पवित्र आत्मा के लिए
बोता है, वह पवित्र आत्मा की भूमि में शाश्वत
जीवन की फसल काटेगा। 9हम भलाई करते-
करते हिम्मत न हार बैठें; क्योंकि यदि हम दृढ़

++ शब्दश:, "आत्मा द्वारा" * शब्दश:, "शरीर" ** पाठान्तर, "द्वेष, हत्या"

5 : 12 भज 12 : 3 **5 : 13** 1 पत 2 : 16 **5 : 14** लेव 19 : 18 **5 : 17** रोम 7 : 15, 23; याक 4 : 5; 1 पत 2 : 11 **5 : 18** रोम 8 : 14 **5 : 19** 1 कुर 6 : 9-10 **5 : 21** इफ 5 : 5; प्रक 22 : 15 **5 : 22** इफ 5 : 9 **5 : 23** 1 तिम 1 : 9 **5 : 24** रोम 6 : 6; कुल 3 : 5; 1 पत 2 : 11 **5 : 25** रोम 8 : 4 **5 : 26** फिल 2 : 3 **6 : 1** मत 18 : 15; याक 5 : 19 **6 : 4** 2 कुर 13 : 5 **6 : 5** रोम 14 : 12 **6 : 6** 1 कुर : 14 **6 : 8** रोम 8 : 13; यो 6 : 63; 3 : 6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बने रहेंगे तो समय आने पर अवश्य फसल
काटेंगे। 10इसलिए जब तक हमें अवसर मिल
रहा है, हम सब की भलाई करते रहें, विशेष
रूप से उन लोगों की, जो विश्वास के कारण
हमारे परिवार के हैं।

हम पूर्ण रूप से नयी सृष्टि बन जायें

11इन बड़े-बड़े अक्षरों को देखिये; मैं
आपको अपने हाथ से लिख रहा हूँ। 12जो लोग
बाह्य विधि-पालन द्वारा झूठी प्रशंसा पाना
चाहते हैं+, वे ही खतना करवाने के लिए आप
को बाध्य करते हैं; यह केवल इसलिए कि
मसीह के क्रूस के कारण उन पर अत्याचार न
किया जाये। 13क्योंकि खतना कराये हुए लोग
स्वयं व्यवस्था का पालन नहीं करते; बल्कि वे
आपका खतना कराना चाहते हैं, जिससे वे इस
बात पर गर्व कर सकें कि आपने अपने शरीर
में इस धर्मविधि को स्वीकार किया है। 14परन्तु
परमेश्वर न करे कि हमारे प्रभु येशु मसीह के
क्रूस के अतिरिक्त-किसी अन्य बात पर गर्व
करूँ। उन्हीं के कारण संसार मेरी दृष्टि में क्रूसित
हो चुका है और मैं संसार की दृष्टि में। 15किसी
का खतना हुआ हो अथवा नहीं, इसका कोई
महत्त्व नहीं। महत्त्व इस बात का है कि हम पूर्ण
रूप से नयी सृष्टि बन जायें। 16इस नियम के
अनुसार चलनेवालों पर और परमेश्वर के
"इस्राएल" पर शान्ति और करुणा हो!

17अब से कोई मुझे तंग न करे। मैं येशु के
दागों को अपने शरीर पर लिये फिरता हूँ।
18भाइयो और बहिनो! हमारे प्रभु येशु मसीह
की कृपा आप लोगों पर बनी रहे*। आमेन!

+ अक्षरशः, "वे शरीर में प्रदर्शन चाहते हैं" * अक्षरशः, " आप लोगों की आत्मा के साथ"

6 : 9 2 थिस 3 : 13 **6 : 10** 2 पत 1 : 7; यो 9 : 4; 12 : 35; इफ 2 : 19 **6 : 12** गल 5 : 11; फिल 3 : 18 **6 : 14** 1 कुर 1 : 31; 2 : 2 **6 : 15** गल 5 : 6; 1 कुर 7 : 19 **6 : 16** भज 125 : 5, 128 : 6; फिल 3 : 3 **6 : 17** 2 कुर 4 : 10

इफिसुस नगर की कलीसिया के नाम संत पौलुस का पत्र

भूमिका

प्रस्तुत पत्र का मुख्य संदेश परमेश्वर की यह मंगलमय इच्छा है कि समय पूरा होने पर ऐसा प्रबन्ध हो कि स्वर्ग और पृथ्वी की समस्त वस्तुओं का मसीह में ऐक्य हो जाए (1 : 10)। इस पत्र के द्वारा लेखक पौलुस परमेश्वर के समस्त भक्तों से अनुरोध करते हैं कि वे परमेश्वर की योजना के अनुरूप आचरण करें, ताकि समस्त मानव जाति मसीह में एक हो सके। इस पत्र की विषय-वस्तु तथा **"कुलुस्से नगर की कलीसिया के नाम पत्र"** की विषय-वस्तु में बड़ी समानता है।

पत्र के **प्रथम भाग में (अध्याय 1 से 3 तक)** लेखक एकता के विषय को विकसित करता है कि किस प्रकार पिता परमेश्वर ने अपने निज लोगों के साथ अन्य लोगों को भी चुना, किस प्रकार उन्हें क्षमा प्राप्त हुई, और मानव-पुत्र येशु के द्वारा वे किस प्रकार अपने पापों से मुक्त होकर स्वतंत्र हो गये। इस विषय के अन्त में बताया गया कि किस प्रकार उन्हें पवित्र आत्मा के द्वारा परमेश्वर की महान आशिष का वचन दिया गया है।

द्वितीय भाग में (अध्याय 4 से 6 तक) लेखक अपने पाठकों से अनुरोध करता है कि वे इस प्रकार अपना जीवन व्यतीत करें, जिससे एक साथ मिल-जुल कर रहने से मसीह में उनकी एकता वास्तविक, सार्थक बन सके।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मसीह में विश्‍वासी भाई-बहिनों की एकता को स्पष्‍ट करने के लिए अनेक अलंकारों, रूपकों, उपमाओं का प्रयोग किया गया है, जैसे: कलीसिया ''देह'' के समान है और मसीह कलीसिया के ''शीर्ष'' [सिर] हैं; अथवा कलीसिया एक भवन के सदृश है और मसीह उसकी नींव का पत्थर हैं; अथवा कलीसिया एक पत्नी के समान है जिसे मसीह ने प्रेम से अपनाया है।

पत्र चरमोत्कर्ष पर तब पहुँचता है, जब लेखक मसीह में परमेश्‍वर की कृपा, अनुग्रह का वर्णन करता है। हर एक वस्तु मसीह के प्रेम, बलिदान, क्षमा, अनुग्रह तथा शुद्धता के प्रकाश में देखी गई है।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

भूमिका	1 : 1-2
मसीह और कलीसिया	1 : 3—3 : 21
मसीह में नया जीवन	4 : 1—6 : 20
उपसंहार	6 : 21-24

अभिवादन

1 इफिसुस नगर के* सन्तों और येशु मसीह
में सच्चे विश्‍वासियों के नाम पौलुस का पत्र,
जो परमेश्‍वर की इच्छा से येशु मसीह का प्रेरित
नियुक्त हुआ है।
[2]हमारा पिता परमेश्‍वर और प्रभु येशु मसीह
आप लोगों को अनुग्रह तथा शान्ति प्रदान करें!

सभी मनुष्यों के लिए परमेश्‍वर की अपार कृपा

[3]धन्य है परमेश्‍वर, हमारे प्रभु येशु मसीह का
पिता! उसने मसीह द्वारा हम लोगों को स्वर्ग के
हर प्रकार के आध्यात्मिक वरदान प्रदान किये
हैं।
[4]उसने संसार की सृष्‍टि से पहले मसीह में
हम को चुना, जिससे हम मसीह से संयुक्त हो
कर उसकी दृष्‍टि में पवित्र तथा निष्कलंक बनें।
[5]उसने प्रेम से प्रेरित हो कर आदि में ही
निर्धारित किया कि हम येशु मसीह द्वारा उसकी
दत्तक संतान बनें।
यह परमेश्‍वर की मंगलमय इच्छा से हुआ
[6]ताकि उसके महिमामय अनुग्रह की स्तुति हो।
वह अनुग्रह हमें उसके प्रिय पुत्र द्वारा मिला,
[7]जो अपने रक्‍त द्वारा हमें विमोचन, अर्थात्
अपराधों की क्षमा दिलाते हैं।
यह परमेश्‍वर की अपार कृपा का परिणाम
है, [8]जिसके द्वारा वह हमें प्रचुर मात्रा में प्रज्ञा
तथा बुद्धि प्रदान करता रहता है। [9-10]अपनी उस
मंगलमय इच्छा के अनुसार, जो उसने मसीह
में पहले से ही निर्धारित की, परमेश्‍वर समय
पूरा होने पर ऐसा प्रबंध करेगा कि वह सब
कुछ, जो स्वर्ग तथा पृथ्वी में है, मसीह की
अध्यक्षता में संयुक्त कर देगा। उसने अपने
संकल्प का यह रहस्य हम पर प्रकट किया है।
[11-12]परमेश्‍वर सब बातों में अपने मन की
योजना पूरी करता है। अपने उद्देश्य के अनुसार
उसने निर्धारित किया कि हम मसीह में विरासत
प्राप्‍त करें और हम लोगों के कारण उसकी
महिमा की स्तुति हो। हम लोगों ने तो सब से
पहले मसीह पर भरोसा रखा था।
[13]आप लोगों ने भी सत्य का वचन, अपनी
मुक्ति का शुभसमाचार, सुनने के बाद मसीह
में विश्‍वास किया है और आप पर उस पवित्र
आत्मा की मुहर लग गयी, जिसकी प्रतिज्ञा की
गयी थी। [14]पवित्र आत्मा हमें विरासत की
अग्रिम राशि के रूप में उस उद्देश्य से दिया गया
है, कि सम्पूर्णता प्राप्‍त करने पर हमारा पूर्ण
विमोचन हो**, जिससे परमेश्‍वर की महिमा

* कुछ प्राचीन प्रतियों में ये स्थान-सूचक शब्द नहीं मिलते। **अथवा, ''कि परमेश्‍वर की समस्त प्रजा का विमोचन हो''

1 : 1 रोम 1 : 7; कुल 1 : 1; 1 कुर 1 : 1 **1 : 2** कुल 1 : 2 **1 : 3** इफ 2 : 6 **1 : 4** इफ 5 : 27; यो 15 : 16; 17 : 24; रोम 8 : 29 **1 : 5** यो 1 : 12 **1 : 6** मत 3 : 17; कुल 1 : 13 **1 : 7** कुल 1 : 14, 20; इफ 2 : 7; 3 : 8, 16 **1 : 8** कुल 1 : 9 **1 : 9** इफ 3 : 9; रोम 16 : 25 **1 : 10** गल 4 : 4; कुल 1 : 16 **1 : 11** कुल 1 : 12; रोम 8 : 28 **1 : 13** इफ 4 : 30; कुल 1 : 5-6 **1 : 14** 2 कुर 1 : 22; 5 : 5

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और स्तुति हो।

सन्त पौलुस की धन्यवाद-प्रार्थना

15मैंने प्रभु येशु में आप लोगों के विश्वास
और सभी सन्तों के प्रति आपके प्रेम के विषय
में सुना है। 16मैं आप लोगों के कारण परमेश्वर
को निरन्तर धन्यवाद देता और अपनी प्रार्थनाओं
में आप लोगों का स्मरण करता रहता हूँ।
17महिमामय पिता, हमारे प्रभु येशु मसीह का
परमेश्वर, आप लोगों को प्रज्ञा तथा ईश्वरीय
प्रकाशन का आत्मा प्रदान करे, जिससे आप
परमेश्वर को सचमुच जान सकें। 18वह आप
लोगों के मन की आंखों को ज्योति प्रदान करे,
जिससे आप यह देख सकें कि उसके द्वारा
बुलाये जाने के कारण आप लोगों की आशा
कितनी महान है और सन्तों के साथ आप लोगों
को जो विरासत मिली है, वह कितनी वैभवपूर्ण
तथा महिमामय है, 19और हम-विश्वासियों के
कल्याण के लिए सक्रिय रहने वाले ईश्वरीय
महा-सामर्थ्य का प्रभाव कितना अपार है।
20परमेश्वर ने मसीह में वही सामर्थ्य प्रदर्शित
किया, जब उसने मृतकों में से उन्हें पुनर्जीवित
किया और स्वर्ग में अपनी दाहिनी ओर बैठाया।
21परमेश्वर ने उन्हें प्रत्येक आधिपत्य, अधिकार,
शक्ति, प्रभुत्व एवं नामी पद से बहुत ऊपर
स्थान दिया—चाहे ये इस युग के हों अथवा
आने वाले युग के। 22उसने सब कुछ मसीह के
पैरों-तले डाल दिया और उन को सब पर
अधिकार देकर कलीसिया का शीर्ष नियुक्त
किया। 23कलीसिया मसीह की देह है, मसीह
की परिपूर्णता है, जो सब कुछ सब तरह से
पूर्णता तक पहुँचा देते हैं ** ।

मसीह द्वारा नवजीवन

2 आप लोग अपने अपराधों और पापों के
कारण मर गये थे; 2क्योंकि आपका आचरण
पहले इस युग-संसार की रीति के अनुकूल,
आकाश में अधिकार जमाने वाले नायक के
अनुकूल था। आप उस आत्मा के वश में थे, जो
अब तक परमेश्वर के विरोधियों में क्रियाशील
है। 3हम सभी पहले उन विरोधियों में सम्मिलित
थे, जब हम अपनी कुप्रवृत्तियों के वशीभूत हो
कर अपने शरीर और मन की वासनाओं को
तृप्त करते थे। हम दूसरों की तरह अपने स्वभाव
के कारण परमेश्वर के कोप के पात्र थे।
4-5परन्तु परमेश्वर की दया अपार है। हम
अपने पापों के कारण मर गये थे; किन्तु उसने
हम से इतना प्रेम किया कि उसने हमें मसीह
के साथ जीवन प्रदान किया। उसकी कृपा ने
आप लोगों का उद्धार किया। 6उसने येशु मसीह
के साथ हम लोगों को पुनर्जीवित किया और
उन्हीं के साथ स्वर्ग में बैठाया। 7उसने हम को
येशु मसीह में जो दयालुता दिखायी, उसके द्वारा
उसने आगामी युगों के लिए अपने अनुग्रह की
असीम समृद्धि को प्रदर्शित किया।
8परमेश्वर की कृपा ने विश्वास द्वारा आप
लोगों का उद्धार किया है। यह आपके किसी
पुण्य का फल नहीं है। यह तो परमेश्वर का
वरदान है। 9यह आपके किसी कर्म का पुरस्कार
नहीं है और इसलिए इसका श्रेय कोई भी नहीं
ले सकता। 10परमेश्वर ने हमारी रचना की।
उसने येशु मसीह में हमारी सृष्टि की, जिससे
हम उन शुभ कार्यों को पूर्ण करते रहें, जिन्हें
परमेश्वर ने हमारे लिए तैयार किया है।

नयी मानवता की एकता

11आप जन्म से गैर-यहूदी हैं और उन लोगों
द्वारा ''बेखतने वाले'' कहे जाते हैं, जिनके
शरीर में खतना किया गया है। 12आप स्मरण
रखें कि पहले आप मसीह से अलग थे,
इस्राएल के समुदाय के बाहर थे। आप परमेश्वर

** अथवा, ''जो स्वयं परमेश्वर द्वारा सब में सब तरह से परिपूर्ण किये जाते हैं''

1 : 15 कुल 1 : 4, 9 **1 : 16** कुल 1 : 3 **1 : 17** कुल 1 : 10 **1 : 18** व्य 33 : 3-4; कुल 1 : 17 **1 : 19** 2 कुर 13 : 4; कु 1 : 11; 2 : 12 **1 : 20** भज 110 : 1 **1 : 21** कुल 1 : 16; 2 : 10 **1 : 22** भज 8 : 6; मत 28 : 18; इफ 4 : 15; कुल 1 : 18 **1 : 23** रोम 12 : 5; कुल 1 : 19; 1 कुर 12 : 27; इफ 4 : 10 **2 : 1** कुल 1 : 21; 2 : 13 **2 : 2** इफ 6 : 12; तीत 3 : 3; यो 12 : 31; कुल 1 : 13 **2 : 3** कुल 3 : 6 **2 : 5** लू 15 : 24, 32; इफ 5 : 14; रोम 6 : 13 **2 : 6** फिल 3 : 20; रोम 8 : 10 **2 : 7** इफ 1 : 7 **2 : 8** गल 2 : 16 **2 : 9** 1 कुर 1 : 29 **2 : 10** तीत 2 : 14 **2 : 11** इफ 5 : 8 **2 : 12** रोम 9 : 4; 1 थि 4 : 13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

की प्रतिज्ञा के अनुसार ठहराए गए विधानों से
अपरिचित थे, इस संसार में आशा से वंचित
और परमेश्वर से रहित थे। 13आप लोग पहले
दूर थे, किन्तु येशु मसीह से संयुक्त हो कर आप
अब मसीह के रक्त द्वारा निकट आ गये हैं;
14क्योंकि वही हमारी शान्ति हैं। उन्होंने यहूदियों
और गैर-यहूदियों को एक कर दिया है। दोनों
में जो भेद डालने वाली शत्रुता की दीवार थी,
उसे उन्होंने गिरा दिया है और अपनी मृत्यु द्वारा*
15विधि-निषेधों की व्यवस्था को रद्द कर
दिया। इस प्रकार, उन्होंने यहूदियों तथा गैर-
यहूदियों को अपने से मिला कर एक नयी
मानवता की सृष्टि की और शान्ति स्थापित की
है। 16उन्होंने क्रूस द्वारा दोनों का एक ही देह
में परमेश्वर के साथ मेल कराया और इस प्रकार
शत्रुता को नष्ट कर दिया। 17तब उन्होंने आकर
दोनों को शान्ति का शुभसमाचार सुनाया : आप
लोगों को, जो दूर थे और उन लोगों को, जो
निकट थे; 18क्योंकि उनकेद्वारा हम दोनों एक
ही आत्मा से प्रेरित हो कर पिता के पास पहुँच
सकते हैं।

19आप लोग अब परदेशी अथवा प्रवासी
नहीं रहे, बल्कि सन्तों के सह-नागरिक तथा
परमेश्वर के परिवार के सदस्य बन गये हैं।
20आप लोगों का निर्माण उसभवन के रूप में
हुआ है, जो प्रेरितों तथा नबियों की नींव पर
खड़ा है और जिसका कोने का पत्थर स्वयं येशु
मसीह हैं। 21उन्हीं के द्वारा समस्त भवन
संघटित हो कर प्रभु के लिए पवित्र मन्दिर का
रूप धारण कर रहा है। 22उन्हीं के द्वारा आप
लोग भी इस भवन में जोड़े जाते हैं, जिससे आप
पवित्र आत्मा में परमेश्वर के लिए एक निवास
स्थान बनें।

शुभसमाचार के सेवक सन्त पौलुस

3 इसलिए मैं पौलुस, जो आप गैर-यहूदियों
की भलाई के लिए येशु मसीह के कारण
कैदी+ हूं, आप से एक प्रार्थना करना चाहता हूं।
2आप लोगों ने अवश्य सुना होगा कि परमेश्वर
ने आप लोगों की भलाई के लिए मुझे अपने
कृपामय प्रबन्ध के अनुसार सेवा-कार्य सौंपा
है। 3यह रहस्य मुझ पर ईश्वरीय प्रकाशन द्वारा
प्रकट हुआ है। इसका संक्षिप्त विवरण मैं ऊपर
दे चुका हूँ। 4उसे पढ़ कर आप लोग जान सकते
हैं कि मैं मसीह का रहस्य कहाँ तक समझता
हूँ। 5वह रहस्य पिछली पीढ़ियों में मनुष्य को
नहीं बताया गया था और अब आत्मा के द्वारा
उसके पवित्र प्रेरितों और नबियों पर प्रकट
किया गया है। 6वह रहस्य यह है कि शुभसमाचार
के द्वारा यहूदियों के साथ गैर-यहूदी एक ही
विरासत के उत्तराधिकारी हैं, एक ही देह के
अंग हैं और येशु मसीह-विषयक प्रतिज्ञा के
सहभागी हैं।

7परमेश्वर ने अपने सामर्थ्य के प्रभाव से मुझे
यह कृपा प्रदान की कि मैं उस शुभसमाचार का
सेवक बनूँ। 8मुझे, जो सन्तों में सब से छोटा हूँ,
यह अनुग्रह मिला है कि मैं गैर-यहूदियों को
मसीह की अपार कृपानिधि का शुभसमाचार
सुनाऊँ 9और सब मनुष्यों पर वह रहस्यमय
प्रबन्ध प्रकट करूँ, जो युगों से समस्त विश्व के
सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर में गुप्त रहा है। 10इस तरह,
अब कलीसिया के माध्यम से स्वर्गिक क्षेत्र के
अधिपतियों एवं अधिकारियों पर भी परमेश्वर
की बहुविध प्रज्ञा का ज्ञान प्रकट होगा।
11परमेश्वर ने अनन्त काल से जो उद्देश्य अपने
मन में रखा था, उसने उसे हमारे प्रभु येशु मसीह
द्वारा पूरा किया। 12हम मसीह में विश्वास करते

---

* शब्दशः, "अपने शरीर में"। दूसरा अनुवाद, "उसे उन्होंने अपनी मृत्यु द्वारा गिरा दिया और..." अथवा, "उन्होंने यहूदियों और गैर-यहूदियों को अपने शरीर में एक कर दिया। दोनों में..." + अथवा, "येशु मसीह का बंदी"।

2 : 13 यश 57 : 19; 52 : 7; कुल 1 : 20 **2 : 14** यश 9 : 5; गल 3 : 28; कुल 2 : 14 **2 : 15** 2 कुर 5 : 17 **2 : 16** कुल 1 : 20, 22 **2 : 17** यश 57 : 19; जक 9 : 10 **2 : 18** इफ 3 : 12 **2 : 19** इफ 3 : 6; इब्र 12 : 22-23 **2 : 20** मत 16 : 18; यश 28 : 16 **2 : 21** कुल 2 : 19 **2 : 22** 1 पत 2 : 5 **3 : 1** फिल 1 : 7, 13; कुल 1 : 24 **3 : 2** कुल 1 : 25 **3 : 3** इफ 1 : 9-10; कुल 1 : 26 **3 : 6** इफ 2 : 13, 18-19 **3 : 7** कुल 1 : 25, 29 **3 : 8** 1 कुर 15 : 9-10; इफ 1 : 7; गल 1 : 16 **3 : 9** रोम 16 : 25; कुल 1 : 26-27 **3 : 10** 1 पत 1 : 12; रोम 11 : 33; कुल 1 : 26 **3 : 11** इफ 1 : 11 **3 : 12** यो 14 : 6; इब्र 4 : 16; रोम 5 : 2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हैं और इस कारण हम पूरे भरोसे के साथ निर्भय
हो कर परमेश्वर के पास जाते हैं। [13]इसलिए
आप लोगों से मेरी प्रार्थना है कि आप लोगों के
लिए मैं जो कष्ट सह रहा हूँ, उसके कारण आप
हिम्मत न हारें, क्योंकि इसी में आप लोगों का
गौरव है।

मसीह के प्रेम का ज्ञान प्राप्त करने की प्रार्थना

[14-15]मैं उस पिता के सामने, जो स्वर्ग में
और पृथ्वी पर प्रत्येक परिवार का मूल आधार
है*, घुटने टेक कर यह प्रार्थना करता हूँ [16]कि
वह अपने आत्मा के द्वारा आप लोगों को अपनी
महिमामयी निधि में से आन्तरिक शक्ति और
सामर्थ्य + प्रदान करे, [17]जिससे विश्वास द्वारा
मसीह आपके हृदय में निवास करें, प्रेम में
आपकी जड़ें गहरी हों और नींव सुदृढ़ हो।
[18]इस तरह, आप लोग अन्य सभी सन्तों के
साथ मसीह के प्रेम की चौड़ाई, लम्बाई, ऊँचाई
और गहराई समझ सकेंगे। [19]आप लोगों को
उनके प्रेम का ज्ञान प्राप्त होगा, यद्यपि वह ज्ञान
से परे है। इस प्रकार आप लोग, परमेश्वर की
समस्त पूर्णता तक पहुँच कर, स्वयं परिपूर्ण हो
जायेंगे।

[20]जिसका सामर्थ्य हम में क्रियाशील है और
जो वे सब कार्य सम्पन्न कर सकता है, जो हमारी
प्रार्थना और कल्पना से अत्यधिक परे हैं,
[21]उसी की महिमा कलीसिया में और येशु
मसीह में पीढ़ी-दर-पीढ़ी, युग-युगों तक होती
रहे! आमेन!

एकता के लिए अनुरोध

4 परमेश्वर ने आप लोगों को बुलाया है।
आप अपने इस बुलावे के अनुसार आचरण
करें—यह आप लोगों से मेरा अनुरोध है, जो
प्रभु के कारण कैदी हूँ। [2]आप पूर्ण रूप से
विनम्र, सौम्य तथा सहनशील बनें, प्रेम से एक
दूसरे को सहन करें [3]और शान्ति के सूत्र में बंध
कर उस एकता को, जिसे पवित्र आत्मा प्रदान
करता है, बनाये रखने का प्रयत्न करते रहें।

[4]एक ही देह है, एक ही आत्मा और एक ही
आशा है, जिसके लिए आप लोग बुलाये गये
हैं। [5]एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास और एक
ही बपतिस्मा है; [6]एक ही परमेश्वर है, जो सब
का पिता, सब के ऊपर, सब के साथ और सब
में व्याप्त है।

कलीसिया की परिपूर्णता हेतु मसीह के वरदान

[7]मसीह ने जिस मात्रा में देना चाहा, उसी
मात्रा में हम में से प्रत्येक को कृपा प्राप्त हुई है।
[8]इसलिए धर्मग्रन्थ कहता है, "वह ऊँचाई पर
चढ़ा और बन्दियों को बांध ले गया। उसने
मनुष्यों को वरदान दिये।" [9]'वह 'चढ़ा'—इसका
अर्थ यह है कि वह पहले पृथ्वी के निचले
प्रदेशों में उतरा। [10]जो 'उतरा', वह वही है जो
आकाश से भी ऊँचे चढ़ा, जिससे वह सब कुछ
परिपूर्ण कर दे।

[11]उन्होंने कुछ लोगों को प्रेरित, कुछ को
नबी, कुछ को शुभसमाचार-प्रचारक और कुछ
को धर्मपाल** तथा शिक्षक होने का वरदान
दिया। [12]इस प्रकार उन्होंने सेवा-कार्य के लिए
सन्तों को योग्य बनाया, जिससे मसीह की देह
का निर्माण उस समय तक होता रहे, [13]जब तक
हम सब विश्वास तथा परमेश्वर के पुत्र के ज्ञान
में एक नहीं हो जायें और मसीह की परिपूर्णता
के अनुसार परिपक्वता की मात्रा में पूर्ण
मनुष्यत्व प्राप्त न कर लें।

[14]इस प्रकार हम बालक नहीं बने रहेंगे और
भ्रम में डालने के उद्देश्य से निर्मित धूर्त्त मनुष्यों
के प्रत्येक सिद्धान्त के झोंके से विचलित हो कर
बहकाये नहीं जायेंगे। [15]हम प्रेमपूर्वक सत्य का
अनुसरण करें, और मसीह में सब प्रकार की

---

* शब्दश:, "जिससे प्रत्येक 'पितृत्व' का नामकरण होता है" + शब्दश:, "जिससे आप शक्ति पाकर उसके आत्मा के द्वारा भीतरी मनुष्यत्व में सामर्थ्यवान बनें" ** शब्दश: "चरवाहा, मेषपाल" अथवा "पास्टर"

3 : 13 लू 1 : 24 **3 : 16** इफ 1 : 7; 6 : 10; कुल 1 : 11 **3 : 17** यो 14 : 23; कुल 1 : 23; 2 : 7 **3 : 18** कुल 2 : 2; प्रव 1 : 3 **3 : 19** कुल 2 : 3 **3 : 20** कुल 1 : 29 **4 : 1** कुल 1: 10 **4 : 2** कुल 3 : 12 **4 : 3** कुल 3 : 14, 15 **4 : 4** रोम 12 : 5 **4 : 5** यो 10 : 16; 1 कुर 8 : 6 **4 : 6** 1 कुर 12 : 6 **4 : 7** रोम 12 : 3, 6; 1 कुर 12 : 11 **4 : 8** भज 68 : 18; कुल 2 : 15 **4 : 9** यो 3 : 13 **4 : 11** 1 कुर 12 : 28; प्रे 21 : 8 **4 : 12** 1 पत 2 : 5; 2 तिम 3 : 17 **4 13** कुल 1 : 28 **4 : 14** 1 कुर 14 : 20; इब्र 13 : 9 **4 : 15** इफ 1 : 22; 5 : 23; कुल 1 : 18

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उन्नति करते जाएं। मसीह ही कलीसिया का
शीर्ष हैं 16और उनसे समस्त देह को बल
मिलता है। तब देह अपनी सब सन्धियों द्वारा
सुसंघटित हो कर प्रत्येक अंग की समुचित
सक्रियता से अपनी परिपूर्णता तक पहुंचती और
प्रेम द्वारा अपना निर्माण करती है।

आप लोग नवीन स्वाभाव धारण कर लें

17मैं आप लोगों से यह कहता हूँ और प्रभु
के नाम पर यह अनुरोध करता हूँ कि आप अब
से विधर्मियों-जैसा आचरण नहीं करें, जो
निस्सार बातों की चिन्ता करते हैं। 18उनकी बुद्धि
पर अन्धकार छाया हुआ है। वे अपने अज्ञान
और हृदय की कठोरता के कारण ईश्वरीय
जीवन से विमुख हो गये हैं। 19वे नैतिक बोध
से शून्य हो कर लम्पटता के वशीभूत हो गये हैं
और उन में हर प्रकार के अशुद्ध कर्म की
लालसा निवास करती है।

20आप लोगों को मसीह से ऐसी शिक्षा नहीं
मिली। 21यदि आप लोगों ने उनके विषय में
सुना और उस सत्य के अनुसार शिक्षा ग्रहण की
है जो येशु में प्रकट हुआ, 22तो आप लोगों को
अपना पहला आचरण और पुराना स्वभाव
त्याग देना चाहिए, क्योंकि वह बहकाने वाली
दुर्वासनाओं के कारण बिगड़ता जा रहा है।
23आप लोग पूर्ण रूप से नवीन आध्यात्मिक
विचारधारा अपनायें 24और एक नवीन स्वभाव
धारण करें, जिसकी सृष्टि परमेश्वर के अनुसार
हुई है और जो धार्मिकता तथा सच्ची पवित्रता
में व्यक्त होता है।

नये जीवन के नियम

25इसलिए आप लोग झूठ बोलना छोड़ दें
और अपने-अपने पड़ोसी से सत्य बोलें,
क्योंकि हम एक दूसरे के अंग हैं। 26यदि आप
क्रुद्ध हो जायें, तो इस कारण पाप न करें—सूरज
के डूबने तक अपना क्रोध कायम नहीं रहने दें।
27शैतान को अवसर नहीं देना चाहिए। 28जो चोरी
किया करता था, वह अब से चोरी नहीं करे,
बल्कि किसी अच्छे व्यवसाय में अपने हाथों से
परिश्रम करे। इस प्रकार वह दरिद्रों की भी कुछ
सहायता कर सकेगा। 29आपके मुख से कोई
अश्लील बात नहीं, बल्कि ऐसे शब्द निकलें,
जो अवसर के अनुरूप हों, और दूसरों के
निर्माण तथा कल्याण में सहायक हों। 30परमेश्वर
ने विमोचन-दिवस के लिए आप लोगों पर
पवित्र आत्मा की मुहर लगायी है। आप
परमेश्वर के उस पवित्र आत्मा को दुःख नहीं
दें। 31आप लोग सब प्रकार की कटुता, उत्तेजना,
क्रोध, लड़ाई-झगड़ा, परनिन्दा और हर तरह
की बुराई अपने बीच में से दूर करें। 32एक दूसरे
के प्रति दयालु तथा सहृदय बनें। जिस तरह
परमेश्वर ने मसीह में आप लोगों को क्षमा कर
दिया, उसी तरह आप भी एक दूसरे को क्षमा
करें।

5 आप लोग परमेश्वर की प्रिय सन्तान हैं,
इसलिए उसका अनुसरण करें। 2आप प्रेम
के मार्ग पर चलें, जिस तरह मसीह ने हम लोगों
से प्रेम किया और सुगन्धित भेंट तथा बलि के
रूप में परमेश्वर के प्रति अपने को हमारे लिए
अर्पित कर दिया।

3जैसा कि सन्तों के लिए उचित है, आप
लोगों के बीच किसी प्रकार के व्यभिचार और
अशुद्धता अथवा लोभ की चर्चा तक न हो,
4और न भद्दी, मूर्खतापूर्ण या अश्लील बातचीत;
क्योंकि यह अशोभनीय है—बल्कि आप
परमेश्वर को धन्यवाद दिया करें। 5आप लोग
यह निश्चित रूप से जान लें कि कोई व्यभिचारी,
लम्पट अथवा लोभी—जो मूर्तिपूजक के बराबर
है—मसीह और परमेश्वर के राज्य का अधिकारी

---

4 : 16 कुल 2 : 19 **4 : 17** रोम 1 : 21; कुल 2 : 4, 6 **4 : 18** इफ 2 : 12; कुल 1 : 21; 1 पत 1 : 14 **4 : 19** कुल 3 : 5 **4 : 22** रोम 8 : 13; कुल 3 : 9; गल 6 : 8 **4 : 23** रोम 12 : 2 **4 : 24** उत 1 : 26; प्रज्ञ 9 : 3 **4 : 25** जक 8 : 16; कुल 3 : 8 **4 : 26** भज 4 : 4 (यू० पाठ), याक 1 : 19-20 **4 : 28** 1 थिस 4 : 11 **4 : 29** इफ 5 : 4; कुल 3 : 16-17; 4 : 6 **4 : 30** इफ 1 : 13; यश 63 : 10 **4 : 31** कुल 3 : 8 **4 : 32** मत 6 : 14; 18 : 22-35; कुल 3 : 12-13 **5 : 1** मत 5 : 48; कुल 3 : 12 **5 : 2** गल 2 : 20; इब्र 10 : 10; कुल 3 : 13; भज 40 : 6; नि 29 : 18; यहेज 20 : 41 **5 : 3** इफ 4 : 19; कुल 3 : 5 **5 : 4** इफ 4 : 29; कुल 3 : 8 **5 : 5** 1 कुर 6 : 9-10; कुल 3 : 5; प्रे 8 : 21

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नहीं होगा। 6कोई निरर्थक तर्कों से आप लोगों को धोखा न दे। इन बातों के कारण परमेश्वर का क्रोध विद्रोही लोगों पर आ पड़ता है। 7इसलिए उन लोगों से कोई सम्बन्ध न रखें। 8आप लोग पहले 'अन्धकार' थे, अब प्रभु के शिष्य होने के नाते 'ज्योति' बन गये हैं। इसलिए ज्योति की सन्तान की तरह आचरण करें। 9जहाँ ज्योति है, वहाँ हर प्रकार की भलाई, धार्मिकता तथा सच्चाई उत्पन्न होती है। 10आप यह पता लगाते रहें कि कौन-सी बातें प्रभु को प्रिय हैं। 11जो व्यर्थ के काम लोग अन्धकार में करते हैं, उन में आप सम्मिलित न हों, वरन् उनकी बुराई प्रकट करें। 12जो काम वे गुप्त रूप से करते हैं, उनकी चर्चा करने में भी लज्जा आती है। 13ज्योति इन सब बातों की बुराई प्रकट करती और इनका वास्तविक रूप स्पष्ट कर देती है। 14ज्योति जिसे आलोकित करती है, वह स्वयं ज्योति बन जाता है। इसलिए कहा गया है :

"हे सोने वाले, जाग!
मृतकों में से जी उठ
और मसीह तुम को आलोकित करेंगे।"

15अपने आचरण का पूरा-पूरा ध्यान रखें। मूर्खों की तरह नहीं, बल्कि बुद्धिमानों की तरह चल कर। 16वर्तमान समय से पूरा लाभ उठायें, क्योंकि ये दिन बुरे हैं। 17आप लोग नासमझ न बनें, बल्कि प्रभु की इच्छा क्या है, यह पहचानें। 18मदिरा पी कर मतवाले नहीं बनें, क्योंकि इससे विषय-वासना उत्पन्न होती है, बल्कि पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जायें। 19मिल कर भजन, स्तोत्र और आध्यात्मिक गीत गायें; पूरे हृदय से प्रभु के आदर में गाते-बजाते रहें। 20हमारे प्रभु येशु मसीह के नाम पर सब समय, सब कुछ के लिए, पिता-परमेश्वर को धन्यवाद देते रहें।

मसीही परिवार का आदर्श

21हम मसीह के प्रति श्रद्धा-भक्ति रखने के कारण एक दूसरे के अधीन रहें। 22पत्नियो! जैसे प्रभु के अधीन वैसे ही आप अपने-अपने पति के अधीन रहें। 23क्योंकि पति उसी तरह पत्नी का शीर्ष है, जिस तरह मसीह कलीसिया का शीर्ष हैं और स्वयं अपनी उस देह के मुक्तिदाता हैं। 24जिस तरह कलीसिया मसीह के अधीन रहती है, उसी तरह पत्नी को भी सब बातों में अपने पति के अधीन रहना चाहिए।

25पतियो! आप अपनी पत्नी से उसी तरह प्रेम रखें, जिस तरह मसीह ने कलीसिया से प्रेम किया। उन्होंने उसके लिए अपने को अर्पित किया, 26जिससे वह उसे वचन तथा जल के स्नान द्वारा शुद्ध कर पवित्र बना सकें; 27क्योंकि वह एक ऐसी कलीसिया अपने सामने उपस्थित करना चाहते थे जो महिमामय हो, जिस में न दाग हो, न झुर्री और न कोई दूसरा दोष, वरन् जो पवित्र और निष्कलंक हो। 28इसी प्रकार उचित है कि पति अपनी पत्नी से प्रेम करे, मानो वह उसकी अपनी देह है। क्योंकि जो अपनी पत्नी से प्रेम करता है, वह अपने आपसे प्रेम करता है। 29कोई अपने शरीर से बैर नहीं करता; वरन् वह उसका पालन-पोषण करता और उसकी देख-भाल करता रहता है। मसीह कलीसिया के साथ ऐसा ही करते हैं, 30क्योंकि हम उनकी देह के अंग हैं। 31धर्मग्रन्थ में लिखा है, "इस कारण पुरुष अपने माता-पिता को छोड़ेगा और अपनी पत्नी के साथ रहेगा और वे दोनों एक देह होंगे।" 32यह एक महान रहस्य है—यह मैं मसीह और कलीसिया के संदर्भ में कह रहा हूं।

33जो भी हो, आप लोगों में हर एक पति अपनी पत्नी को अपने समान प्रेम करे और पत्नी अपने पति का आदर-सम्मान करे।

---

5 : 6 रोम 1 : 18; कुल 2 : 4, 8 **5 : 8** इफ 2 : 11, 13; लू 16 : 8; 1 पत 2 : 9; यो 12 : 36 **5 : 10** रोम 12 : 2 **5 : 11** यो 16 : 8 **5 : 12** रोम 1 : 24 **5 : 13** यो 3 : 20-21 **5 : 14** यश 26 : 19; 60 : 1; रोम 13 : 11 ; 6 : 13 **5 : 15** मत 10 : 16; कुल 4 : 5 **5 : 17** रोम 12 : 2 **5 : 18** नीति 23 : 31; लू 21 : 34 **5 : 19** कुल 3 : 16; भज 33 : 2-3 **5 : 20** कुल 3 : 17 **5 : 21** 1 पत 5 : 5 **5 : 22** उत 3 : 16; कुल 3 : 18; 1 पत 3 : 1 **5 : 23** 1 कुर 11 : 3; कुल 1 : 18 **5 : 25** कुल 3 : 19 **5 : 26** तीत 3 : 5 **5 : 27** भज 45 : 13; 2 कुर 11 : 2 **5 : 30** इफ 1 : 23; 1 कुर 6 : 15; उत 2 : 23 **5 : 31** उत 2 : 24 **5 : 32** प्रक 19 : 7

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

6 बच्चो! प्रभु में अपने माता-पिता की आज्ञा
मानो, क्यों कि यह उचित है।2 “अपने माता-
पिता का आदर करो।” यह पहली ऐसी आज्ञा
है जिसके साथ एक प्रतिज्ञा भी जुड़ी हुई है, 3जो
इस प्रकार है, “जिससे तुम्हारा कल्याण हो और
तुम बहुत दिनों तक पृथ्वी पर जीते रहो।”
4आप, जो पिता हैं, अपने बच्चों का क्रोध नहीं
भड़काएं; बल्कि प्रभु के अनुरूप शिक्षा और
उपदेश द्वारा उनका पालन-पोषण करें।
5दासों से मेरा अनुरोध है कि जो लोग इस
पृथ्वी पर आपके स्वामी हैं, आप डरते-काँपते
और निष्कपट हृदय से उनकी आज्ञा पूरी करें,
मानो आप मसीह की सेवा कर रहे हों। 6आप
मनुष्यों को प्रसन्न करने के उद्देश्य से दिखावा
मात्र के लिए नहीं, बल्कि मसीह के दासों की
तरह ऐसा करें, जो सारे हृदय से परमेश्वर की
इच्छा पूरी करते हैं। 7आप प्रसन्नता से अपना
सेवा-कार्य करते रहें, मानो आप मनुष्यों की
नहीं, बल्कि प्रभु की सेवा करते हों; 8क्योंकि
आप जानते हैं कि प्रत्येक मनुष्य, चाहे वह दास
हो या स्वतन्त्र, जो भी भलाई करेगा, उसका
पुरस्कार वह प्रभु से प्राप्त करेगा।
9आप जो स्वामी हैं, दासों के साथ ऐसा ही
व्यवहार करें। आप धमकियाँ देना छोड़ दें;
क्योंकि आप जानते हैं कि स्वर्ग में उनका और
आपका एक ही स्वामी है, और वह किसी के
साथ पक्षपात नहीं करता।

परमेश्वर के अस्त्र-शस्त्र धारण करें

10अन्त में : आप- लोग प्रभु से और उनके
अपार सामर्थ्य से बल ग्रहण करें। 11आप
परमेश्वर के अस्त्र-शस्त्र धारण करें, जिससे
आप शैतान की धूर्तता का सामना करने में समर्थ
हों; 12क्योंकि हमें निरे मनुष्यों से* नहीं, बल्कि
वर्तमान अन्धकार के अधिपतियों, अधिकारियों
तथा महाशासकों से, स्वर्गिक क्षेत्र के दुष्ट
आत्माओं से ही संघर्ष करना पड़ता है।
13इसलिए आप परमेश्वर के अस्त्र-शस्त्र से
सुसज्जित हों, जिससे आप दुर्दिन में शत्रु का
सामना करने में समर्थ हों और अन्त तक अपना
कर्त्तव्य पूरा कर विजय प्राप्त करें।
14आप सत्य का कमरबन्द कस कर,
धार्मिकता का कवच धारण करें 15और शान्ति
का शुभ समाचार सुनाने के लिए उत्साह की
चप्पल पहन कर खड़े हों। 16साथ ही विश्वास
की ढाल धारण किये रहें। उस से आप दुष्ट के
सब अग्निमय बाण बुझा सकेंगे। 17इसके अति-
रिक्त मुक्ति का टोप पहन लें और आत्मा की
तलवार-अर्थात् परमेश्वर का वचन—ग्रहण करें।
18आप लोग हर समय पवित्र आत्मा में सब
प्रकार की प्रार्थना तथा निवेदन करते रहें। आप
लोग जागते रहें और सब सन्तों के लिए लगन
से निरन्तर प्रार्थना करते रहें। 19आप मेरे लिए
भी प्रार्थना करें, जिससे बोलते समय मुझे शब्द
दिये जायें और मैं निर्भीकता से उस शुभ
समाचार का रहस्य घोषित कर सकूँ, 20जिस शुभ
समाचार का मैं बेड़ियों से बंधा हुआ राजदूत हूँ।
आप प्रार्थना करें, जिससे मैं निर्भीकता से शुभ
समाचार की घोषणा कर सकूँ, जैसा कि मुझे
बोलना चाहिए।

उपसंहार

21प्रभु की संगति में प्रिय भाई और विश्वस्त
सेवक तुखिकुस आप लोगों को यह सब बता
देंगे, ताकि आप भी जान लें कि मैं कैसे हूँ और
क्या कर रहा हूँ। 22मैं उन्हें इसलिए आप लोगों
के पास भेज रहा हूँ कि आप मेरे विषय में पूरा
समाचार जान जायें और इसलिए भी कि वह
आप के हृदय को ढाढ़स बंधायें।
23पिता-परमेश्वर और प्रभु येशु मसीह की
ओर से सभी भाई-बहिनों को शान्ति और
विश्वास के साथ प्रेम भी मिले। 24परमेश्वर की
कृपा उन सब पर बनी रहे, जो हमारे प्रभु येशु
मसीह से अक्षय प्रेम करते हैं!

---

* अक्षरशः, “रक्त और माँस से”

6 : 1 कुल 3 : 20 **6 : 2** नि 20 : 12 **6 : 3** व्य 5 : 16 **6 : 4** कुल 3 : 21; यश 50 : 5; नीति 19 : 18; व्य 6 : 7, 20-25, भज 78 4 **6 : 5** कुल 3 : 22-25; तीत 2 : 9-10; 1 पत 2 : 18 **6 : 8** 2 कुर 5 : 10 **6 : 9** कुल 4 : 1; 2 इति 19 : 7; प्रे 10 : 34 **6 : 10** 1 कुर 16 : 13; 1 यो 2 : 14 **6 : 11** इफ 4 : 14; 2 कुर 10 : 4 **6 : 12** इफ 2 : 2; यू 14 : 30; कुल 1 : 13; 1पत 5 : 8-9 **6 : 13** 1 रा 20 : 11 **6 : 14** यश 11 : 5; 59 : 17; लू 12 : 35; 1 पत 1 : 13; 1 थिस 5 : 8 **6 : 15** यश 52 : 7; 40 : , .9 **6 : 16** 1 पत 5 : 9; 1 यो 5 : 4 **6 : 17** 1 थिस 5 : 8; हो 6 : 5; यश 11 : 4; 49 : 2; 51 : 16 **6 : 18** मत 26 : 41; कुल 4 : 2-3 **6 : 19** कुल 4 : 3; 2 थिस 3 : 1; प्रे 4 : 29 **6 : 20** 2 कुर 5 : 20; कुल 4 : 4 **6 : 21** प्रे 20 : 4; कुल 4 : 7; 2 तिम 4 : 12 **6 : 22** कुल 4 : 7-8 **6 : 24** 1 पत 1 : 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

फिलिप्पी नगर की कलीसिया के नाम संत पौलुस का पत्र

भूमिका

यह पत्र सन्त पौलुस ने यूरोप महाद्वीप में सर्वप्रथम स्थापित कलीसिया के नाम पर लिखा था। यह कलीसिया स्वयं सन्त पौलुस ने फिलिप्पी नगर में स्थापित की थी। यह नगर मकिदुनिया प्रदेश में रोमन साम्राज्य का मुख्य उपनिवेश था। इसी महत्वपूर्ण नगर की कलीसिया को सन्त पौलुस ने यह पत्र लिखा। उस समय सन्त पौलुस कारागार में बन्दी थे। इसके अतिरिक्त कुछ मसीही भी उनका विरोध कर रहे थे। एक बात और सन्त पौलुस को परेशान कर रही थी, और वह थी फिलिप्पी नगर की कलीसिया में व्याप्त झूठी शिक्षा। फिर भी प्रस्तुत पत्र में आनन्द और आत्मविश्वास के स्वर प्रमुख हैं, जिनसे यह ज्ञात होता है कि सन्त पौलुस का प्रभु येशु में कितना गहरा विश्वास था।

प्रस्तुत पत्र लिखने का एक कारण तो यह था कि जब सन्त पौलुस को आर्थिक सहायता की आवश्यकता थी, तब फिलिप्पी नगर के विश्वासी भाई-बहिनों ने उन्हें आर्थिक भेंट भेजी थी। इस सहायता के लिए धन्यवाद देने के उद्देश्य से सन्त पौलुस ने यह पत्र लिखा। इसी अवसर का उपयोग करते हुए सन्त पौलुस उन्हें धैर्य बंधाते, आश्वासन देते , भरोसा दिलाते हैं कि वे सन्त पौलुस के कष्टों तथा स्वयं अपने कष्टों के बावजूद साहस और आशा रखें, संकट में आनन्द मनाएं, प्रसन्न रहें। वह उनसे अनुरोध करते हैं कि वे येशु मसीह जैसे विनम्र बनें, और स्वार्थ तथा अहंकार की भावनाओं के वशीभूत न हों। वह उन्हें स्मरण दिलाते हैं कि मसीह में उनका जीवन परमेश्वर के अनुग्रह का वरदान है, जो उन्होंने विश्वास के द्वारा ही प्राप्त किया है, न कि मूसा की व्यवस्था के अनुसार धार्मिक कर्मकाण्ड करके। अत: सन्त पौलुस उस आनन्द तथा शान्ति का उल्लेख करते हैं, जो परमेश्वर उन विश्वासियों को प्रदान करता है जो मसीह में जीवन व्यतीत करते हैं।

इस पत्र की विशिष्ट बात यह है कि इसमें मसीही विश्वास और जीवन में निहित आनन्द, हर्ष, भरोसा, एकता, धैर्य की भावनाएं रेखांकित की गई हैं। इसमें हम एक स्थानीय यूनानी समुदाय के स्वजनों-सज्जनों तथा धर्मप्रेरित पौलुस के बीच के स्नेहमय संबंधों की झलक पाते हैं।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

भूमिका	1 : 1-11
संत पौलुस की निजी परिस्थितियां	1 : 12-26
मसीह में जीवन	1 : 27—2 : 18
तिमोथी तथा इपफ्रोदितुस की योजना	2 : 19-30
कर्मकाण्डियों एवं शत्रुओं के प्रति चेतावनियां	3 : 1—4 : 9
पौलुस के मित्र	4 : 10-20
उपसंहार	4 : 21-23

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अभिवादन

1 फिलिप्पी नगर में रहने वाले तथा येशु मसीह
से संयुक्त+ सब सन्तों और उनके अध्यक्षों
एवं धर्मसेवकों* के नाम येशु मसीह के सेवक
पौलुस और तिमोथी का पत्र।
2हमारा पिता परमेश्वर और प्रभु येशु
मसीह आप लोगों को अनुग्रह तथा शान्ति प्रदान
करें!

धन्यवाद और प्रार्थना

3जब-जब मैं आप लोगों को स्मरण करता
हूँ, तो अपने परमेश्वर को धन्यवाद देता हूँ। 4मैं
हमेशा अपनी हर प्रार्थमा में आनन्द के साथ
आप सब के लिए निवेदन करता हूँ; 5क्योंकि
आप प्रारम्भ से अब तक शुभ समाचार के कार्य
में सहयोग देते आ रहे हैं। 6जिस परमेश्वर ने
आप लोगों में यह शुभ कार्य आरम्भ किया, वह
येशु मसीह के दिन तक उसे पूर्ण भी करेगा,
इसका मुझे पक्का विश्वास है। 7आप सब के
विषय में मेरा यह विचार उचित है। आप मेरे
हृदय में बस गये हैं++, क्योंकि जब मैं कैद में
हूँ या शुभ समाचार की सच्चाई की रक्षा और
पुष्टि कर रहा हूँ, तो आप सब मेरे इस अनुग्रह
में सहभागी हो जाते हैं जो मुझ पर हुआ है।
8परमेश्वर मेरा साक्षी है कि मैं येशु मसीह की
करुणा से प्रेरित हो कर आप लोगों को कितना
चाहता हूँ।
9परमेश्वर से मेरी प्रार्थना यह है कि आपका
प्रेम, ज्ञान में तथा हर प्रकार की अन्तर्दृष्टि में,
उत्तरोत्तर बढ़ता जाये, 10जिससे जो श्रेय है, आप
उसे पहचानें। इस तरह आप लोग मसीह के
दिन के लिए निर्मल-चित्त तथा निर्दोष* होंगे
11और परमेश्वर की महिमा तथा प्रशंसा के
लिए उस धार्मिकता से परिपूर्ण होंगे, जो येशु
मसीह के द्वारा ही फलती-फूलती है।

शुभ समाचार के कारण बन्दी पौलुस

12भाइयो और बहिनो! मैं आप लोगों को
बता देना चाहता हूँ कि मुझ पर जो बीता है, वह
शुभ समाचार के प्रचार में बाधक नहीं बल्कि
सहायक सिद्ध हुआ। 13राजभवन+++ और
जनसाधारण में यह बात अब सब जगह फैल
गयी है कि मैं मसीह के कारण बन्दी हूँ।
14अधिकांश भाई-बहिनों को मेरी कैद से बल
मिला है। वे प्रभु पर भरोसा रख कर पहले से
अधिक साहस के साथ निर्भीकता से परमेश्वर
का वचन सुनाते हैं। 15कुछ लोग तो ईर्ष्या एवं
स्पर्द्धा से ऐसा करते हैं और कुछ लोग सद्भाव
से मसीह का प्रचार करते हैं। 16ये लोग प्रेम से
प्रेरित हो कर ऐसा करते हैं। ये जानते हैं कि मैं
शुभ समाचार की रक्षा के कारण कैदी हूँ।
17किन्तु वे दूसरे लोग प्रतिस्पर्द्धा से प्रेरित हो
कर शुद्ध उद्देश्य से मसीह का प्रचार नहीं करते।
वे समझते हैं कि वे इस प्रकार मेरी कैद को और
भारी बना देंगे। 18लेकिन इससे क्या? बहाने से
हो या सच्चाई से, चाहे जिस प्रकार हो, मसीह
का प्रचार तो हो रहा है। मैं इसी से आनन्दित
हूँ।
और मैं आनन्द मनाता ही रहूँगा, 19क्योंकि
मैं जानता हूँ कि आपकी प्रार्थनाओं और येशु
मसीह के आत्मा की सहायता द्वारा इन सब
बातों का परिणाम यह होगा कि मैं मुक्त हो
जाऊँगा। 20मेरी हार्दिक अभिलाषा और आशा
यह है कि मुझे किसी बात पर लज्जित नहीं होना
पड़े, वरन् मैं पूर्ण निर्भीकता से बोलूँ, जिससे
सदा की भांति अब भी—चाहे मैं जीवित रहूँ या
मर जाऊँ—मसीह मेरी देह द्वारा महिमान्वित
हों। 21मेरे लिए तो जीवित रहना मसीह है, और
मर जाना लाभ है! 22किन्तु यदि मैं सशरीर
जीवित रहूँ, तो सफल परिश्रम कर सकता हूँ;

+ अथवा, ''की संगति में'' * मूल में ''एपिस्कॉपस'' (निरीक्षक, बिशप) और ''दिअकॉनस'' (सहायक, डीकन) ++ अथवा, ''मैं आपके हृदय में बस गया हूं''। * शब्दशः, ''ठोकर न खानेवाले''। +++ मूल में ''प्राइतोरियम'', अर्थात् अंगरक्षकों का निवास स्थान, सैन्य शिविर।

1 : 1 1 कुर 1 : 2; 1 तिम 3 : 1, 8 **1 : 2** रोम 1 : 7 **1 : 3** 1 : 3 रोम 1 : 8; 1 कुर 1 : 4 **1 : 6** फिल 2 : 13; 1 कुर 1 : 6-8 **1 : 8** रोम 1 : 9; 2 कुर 1 : 23; 1 थिस 2 : 5 **1 : 10** रोम 2 : 18; 12 : 2; 1 थिस 5 : 23; इब्र 5 : 14 **1 : 11** इफ 4 : 9; 1 : 6, 12, 14; यो 15 : 8 **1 : 12** 2 तिम 2 : 9 **1 : 13** फिल 4 : 22; इफ 3 : 1 **1 : 18** फिल 2 : 17-18 **1 : 19** 2 कुर 1 : 11 **1 : 20** 1 पत 4 : 16 **1 : 21** गल 2 : 20 **1 : 22** रोम 1 : 13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इसलिए मैं नहीं समझ पाता कि क्या चुनूँ। 23मैं
दोनों ओर खिंचा हुआ हूँ। मैं तो चल देना और
मसीह के साथ रहना चाहता हूं। यह निश्चय ही
सर्वोत्तम है; 24किन्तु शरीर में मेरा विद्यमान
रहना आप लोगों के लिए अधिक हितकर है।
25मुझे पक्का विश्वास है कि मैं जीवित रहूंगा
और आप के साथ रह कर आपकी सहायता
करूँगा, जिससे आपकी प्रगति हो और विश्वास
में आपका आनन्द बढ़े। 26इस प्रकार जब मैं
फिर आप के यहाँ आऊंगा, तो आप मेरे कारण
येशु मसीह पर और भी गौरव कर सकेंगे।

संघर्ष में दृढ़ बने रहें

27आप लोग एक बात का ध्यान रखें :
आपका आचरण मसीह के शुभ समाचार के
योग्य हो। इस तरह मैं चाहे आ कर आप से
मिलूँ, चाहे दूर रह कर आप के विषय में सुनूँ,
मुझे यही मालूम हो कि आप एकप्राण हो कर
विश्वास में अटल बने हुए हैं+, एकहृदय हो कर
शुभसमाचार में विश्वास के लिए मेरे साथ
प्रयत्नशील हैं 28और विरोधियों से तनिक भी
नहीं डरते। आपकी यह दृढ़ता परमेश्वर का
वरदान है और यह विरोधियों के लिए विनाश
का, किन्तु आपके लिए मुक्ति का संकेत है।
29आप लोगों को न केवल मसीह में विश्वास
करने का, बल्कि उनके कारण दु:ख भोगने का
भी वरदान मिला है। 30क्योंकि आप भी उस
संघर्ष में लगे हुए हैं, जो आपने मुझे करते देखा
और जिस में मैं अब भी लगा हुआ हूँ, जैसा कि
आप सुनते होंगे।

एकता बनाये रखें

2 यदि आप लोगों के लिए मसीह में
सांत्वना, प्रेम से उत्प्रेरणा तथा पवित्र
आत्मा की सहभागिता कुछ महत्व रखती हो,
यदि हार्दिक अनुराग तथा सहानुभूति का कुछ
अर्थ हो, 2तो आप लोग एकचित्त, एकहृदय
तथा एकमत हो कर प्रेम के सूत्र में बँध जायें
और इस प्रकार मेरा आनन्द परिपूर्ण कर दें।
3आप दलबन्दी तथा मिथ्याभिमान से दूर
रहें। हर व्यक्ति नम्रतापूर्वक दूसरों को अपने से
श्रेष्ठ समझे। 4कोई भी केवल अपने हित का
नहीं, बल्कि दूसरों के हित का भी ध्यान रखे।

मसीह की विनम्रता का अनुसरण करें

5आप लोग अपने मनोभावों को येशु मसीह
के मनोभावों के अनुसार बना लें: 6यद्यपि मसीह
परमेश्वर-स्वरूप थे, फिर भी उन्होंने परमेश्वर
के तुल्य होने को अपने अधिकार में करने* की
वस्तु नहीं समझा; 7वरन् दास का स्वरूप ग्रहण
कर उन्होंने अपने को रिक्त कर दिया, और वह
मनुष्यों के समान बन गए। मानवीय रूप में
प्रकट होकर 8मसीह ने अपने को दीन बना
लिया और यहाँ तक आज्ञाकारी रहे कि मृत्यु,
हाँ क्रूस की मृत्यु भी, स्वीकार की। 9इसलिए
परमेश्वर ने उन्हें अत्यन्त उन्नत किया और
उनको वह नाम प्रदान किया जो सब नामों में
श्रेष्ठ है, 10जिससे येशु के नाम पर स्वर्ग, पृथ्वी
तथा अधोलोक के सब निवासी घुटने टेकें
11और पिता-परमेश्वर की महिमा के लिए सब
लोग यह स्वीकार करें कि येशु मसीह प्रभु हैं।

संसार में ज्योति के सदृश चमकें

12मेरे प्रिय भाइयो और बहिनो! जिस प्रकार
आप लोग सदा मेरी बात मानते रहे हैं, उसी
प्रकार अब भी—मेरी उपस्थिति से अधिक मेरी
अनुपस्थिति में और भी अधिक उत्साह से आप
लोग डरते-काँपते हुए अपनी मुक्ति के कार्य
में लगे रहें। 13परमेश्वर अपना प्रेमपूर्ण उद्देश्य
पूरा करने के लिए आप लोगों में सद् इच्छा भी
उत्पन्न करता और उसके अनुसार कार्य करने
का बल भी प्रदान करता है।
14आप लोग बिना भुनभुनाए और बिना
बहस किये अपने सब कर्त्तव्य पूरा करें,

+ अथवा, "एक आत्मा में स्थिर हैं"। * अथवा, "अपनी सुविधा", शब्दश: "लूट"

1 : 23 2 कुर 5 : 8; 1 रा 19 : 4 **1 : 27** कुल 1 : 10; 1 थिस 2 : 12; फिल 4 : 3 **1 : 30** प्रे 16 : 22 **2 : 3** गल 5 : 26; रोम 12 : 10 **2 : 4** 1 कुर 10 : 24, 33 **2 : 6** यो 1 : 1-2; 17 : 5; उत 1 : 27 **2 : 7** यश 53 : 3; 2 कुर 8 : 9; इब्र 2 : 14, 17 **2 : 8** इब्र 12 : 2; 5 : 8; यो 10 : 17; प्रे 2 : 33 **2 : 9** इफ 1 : 21; इब्र : 3-4 **2 : 10** यश 45 : 23 (यू० पाठ); यो 5 : 23; प्रक 5 : 13 **2 : 12** 1 पत 1 : 17 **2 : 13** यो 15 : 5; 2 कुर 3 : 5; 1 थिस 2 : 13 **2 : 14** 1 पत 4 : 9

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

15जिससे आप निष्कपट और निर्दोष बने रहें
और इस कुटिल एवं पथभ्रष्ट पीढ़ी के बीच
परमेश्वर की निष्कलंक सन्तान बन कर आकाश
के तारों की तरह चमकें 16और जीवन के वचन
पर अटल रहें। इस प्रकार मैं मसीह के आगमन
के दिन के लिए इस बात पर गर्व कर सकूँगा
कि मेरी दौड़-धूप और मेरा परिश्रम व्यर्थ नहीं
हुआ। 17यदि मुझे आपके विश्वास-रूपी यज्ञ
और जन-सेवा में अपने प्राण की आहुति भी
देनी पड़ेगी, तो मैं आनन्दित होऊँगा और आप
सब के साथ आनन्द मनाऊँगा। 18आप भी इसी
कारण आनन्दित हों और मेरे साथ आनन्द
मनायें।

तिमोथी और इपफ्रोदितुस की सिफारिश

19मुझे प्रभु येशु में आशा है कि मैं निकट
भविष्य में तिमोथी को आपके यहाँ भेजूँगा ।
आप लोगों के विषय में समाचार जान कर मुझे
भी सान्त्वना मिलेगी। 20मेरे पास कोई ऐसा
व्यक्ति नहीं है जो तिमोथी के समान सच्चे हृदय
से आप लोगों के कल्याण का ध्यान रखेगा।
21सब-के-सब येशु मसीह का नहीं, बल्कि
अपना हित खोजते हैं। 22किन्तु तिमोथी की
सच्चरित्रता आप लोग जानते हैं। जिस तरह
कोई पुत्र अपने पिता के साथ रहता है, उसी
तरह उन्होंने शुभसमाचार की सेवा में मेरा साथ
दिया है। 23मैं आशा करता हूँ कि ज्यों ही मुझे
मालूम हो जायेगा कि मेरे साथ क्या होने वाला
है, मैं तिमोथी को तुरन्त आप के पास भेजूँगा।
24फिर भी मुझे प्रभु पर भरोसा है कि मैं भी शीघ्र
ही आऊँगा।
25मैंने अपने भाई, सहयोगी और संघर्ष में
अपने साथी इपफ्रोदितुस को आप के पास
भेजना आवश्यक समझा। आप लोगों ने उसे
मेरी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए
अपने दूत और जनसेवक के रूप में मेरे पास
भेजा था। 26वह आप-सब को देखने के लिए
उत्सुक था और इसलिए भी व्याकुल था कि
आप लोगों को उसकी बीमारी का पता चल
गया था। 27वास्तव में वह बहुत बीमार था और
मरने पर था; किन्तु उस पर परमेश्वर की दया
हुई, और न केवल उस पर बल्कि मुझ पर भी,
जिससे मुझे दुःख पर दुःख न सहना पड़े। 28मैं
इसलिए भी उसे भेजने को उत्सुक हूँ कि आप
उसके दर्शनों से आनन्दित हों और मेरी चिन्ता
भी कम हो। 29आप प्रभु में पूर्ण आनन्द के साथ
उसका स्वागत करें। आप को ऐसे लोगों का
सम्मान करना चाहिए। 30उसने मसीह के कार्य
के लिए मृत्यु का सामना किया और अपने
जीवन को जोखिम में डाला जिससे वह मेरे
प्रति जन-सेवा का वह कार्य पूरा करे, जिसे
आप लोग स्वयं करने में असमर्थ थे।

3 मेरे भाइयो और बहिनो! अन्त में यह: आप
प्रभु में आनन्दित रहें* !

खतना कराने वालों से सावधान रहें

आप लोगों को दुबारा वे ही बातें लिखने में
मुझे कोई कष्ट नहीं, और इस में आपका
कल्याण है। 2आप उन कुत्तों+ से सावधान रहें,
दुष्ट कार्यकर्ताओं से सावधान रहें, अंगच्छेद
करने वालों से सावधान रहें। 3सच पूछिए तो
''खतने वाले'' हम हैं; हम परमेश्वर के आत्मा
से प्रेरित हो कर उपासना करते हैं और बाह्य
प्रथाओं** पर नहीं, बल्कि येशु मसीह पर गर्व
करते हैं—4हालाँकि मैं भी बाह्य प्रथाओं पर
गर्व कर सकता हूँ। यदि कोई यह समझता है
कि वह बाह्य प्रथाओं पर गर्व कर सकता है, तो
मैं और भी ऐसा कर सकता हूँ। 5आठवें दिन
मेरा खतना हुआ था। मैं इस्राएली, बिन्यामिन
वंशीय और इब्रानियों की इब्रानी सन्तान हूँ।
व्यवस्था-पालन की दृष्टि से मैं फरीसी था।
6मेरा धर्मोत्साह ऐसा था कि मैंने कलीसिया पर

* अथवा, ''विदाई'' + अथवा, ''श्वशील लोगों'', ** अक्षरशः ''शरीर''

2 : 15 फिल 1 : 10; मत 5 : 14; 10 : 16; इफ 5 : 8; व्य 32 : 5; प्रे 2 : 40 **2 : 16** 1 थिस 2 : 19; गल 2 : 2; यश 49 : 4; 65 : 23 **2 : 17** रोम 15 : 16; 2 तिम 4 : 6 **2 : 18** फिल 3 : 1; 4 : 4 **2 : 20** 1 कुर 16 : 10 **2 : 21** 2 तिम 4 : 10, 16; गल 4 : 17 **2 : 24** फिल 1 : 25 **2 : 25** फिल 4 : 18 **2 : 29** 1 कुर 16 : 16; 1 तिम 5 : 17 **3 : 1** फिल 2 : 18; 4 : 4 **3 : 2** प्रक 22 : 15 **3 : 3** रोम 2 : 29 **3 : 4** 2 कुर 11 : 18, 22 **3 : 5** प्रे 26 : 5; लू 1 : 59; 2 : 21

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
अत्याचार किया। व्यवस्था पर आधारित
धार्मिकता की दृष्टि से मैं निर्दोष था।
[7]किन्तु मैं जिन बातों को लाभ समझता था,
उन्हें मसीह के कारण हानि समझने लगा हूँ।
[8]इतना ही नहीं, मैं अपने प्रभु येशु मसीह को
जानना सर्वश्रेष्ठ लाभ मानता हूँ और इस ज्ञान की
तुलना में हर वस्तु को हानि ही मानता हूँ। उन्हीं
के लिए मैंने सब कुछ छोड़ दिया है और उसे
कूड़ा समझता हूँ, जिससे मैं मसीह को प्राप्त
करूँ [9]और उनके साथ पूर्ण रूप से एक हो
जाऊँ। मुझे अपनी धार्मिकता का नहीं, जो
व्यवस्था के पालन से मिलती है, बल्कि उस
धार्मिकता का भरोसा है, जो मसीह में विश्वास
करने से मिलती है। उस धार्मिकता का उद्‌गम
परमेश्वर है और उसका आधार विश्वास है।
[10]मैं यह चाहता हूँ कि मसीह को जान लूँ।
उनके पुनरुत्थान के सामर्थ्य का अनुभव करूँ
और मृत्यु में उनके सदृश बन कर उनके
दुःखभोग का सहभागी बन जाऊँ, [11]जिससे मैं
किसी तरह मृतकों के पुनरुत्थान तक पहुँच
सकूँ।

मेरा अनुकरण करें

[12]मैं यह नहीं कहता कि मैं अब तक यह सब
कर चुका हूँ अथवा मुझे पूर्णता प्राप्त हो गयी
है; किन्तु मैं आगे बढ़ रहा हूँ ताकि वह लक्ष्य
मेरी पकड़ में आये, जिसके लिए येशु मसीह
ने मुझे अपने अधिकार में ले लिया है। [13]भाइयो
और बहिनो! मैं यह नहीं समझता हूँ कि वह
लक्ष्य अब तक मेरी पकड़ में आया है। मैं इतना
ही कहता हूँ कि पीछे की बातें भुला कर और
आगे की बातों पर दृष्टि लगा कर [14]मैं बड़ी
उत्सुकता से अपने लक्ष्य की ओर दौड़ रहा हूँ,
ताकि मैं स्वर्ग में वह पुरस्कार प्राप्त कर सकूँ
जिसके लिए परमेश्वर ने हमें येशु मसीह में
बुलाया है।
[15]हम में जितने लोग परिपक्व हैं, उनका
यही मनोभाव होना चाहिए और यदि किसी
विषय पर आपका दृष्टिकोण भिन्न हो, तो
परमेश्वर आपको इसके सम्बन्ध में ज्योति
प्रदान करेगा। [16]जो भी हो, जहाँ तक हम पहुँच
चुके हैं,उस पर हम दृढ़ रहें।**
[17]भाइयो और बहिनो! आप सब मिल कर
मेरा अनुसरण करें। हमारे जीवन में आप लोगों
को एक नमूना मिला। इसके अनुसार चलने
वालों पर ध्यान देते रहें; [18]क्योंकि जैसा कि मैं
आप से बार-बार कह चुका हूँ और अब रोते
हुए कहता हूँ, बहुत-से लोग ऐसा आचरण
करते हैं कि मसीह के क्रूस के शत्रु बन जाते
हैं। [19]उन लोगों का अन्त सर्वनाश है। वे भोजन
को अपना ईश्वर बना लेते हैं और ऐसी बातों
पर गर्व करते हैं, जिन पर लज्जा करनी चाहिए।
उनका मन संसार की वस्तुओं में लगा हुआ है।
[20]हमारा स्वदेश तो स्वर्ग है और हम स्वर्ग से
आने वाले अपने मुक्तिदाता प्रभु येशु मसीह की
राह देखते रहते हैं। [21]वह जिस सामर्थ्य द्वारा
सब कुछ अपने अधीन कर सकते हैं, उसी के
द्वारा वह हमारे तुच्छ शरीर का रूपान्तरण करेंगे
और उसे अपने महिमामय शरीर के अनुरूप
बना देंगे।

4 इसलिए प्रिय भाइयो और बहिनो, प्रभु में
इस तरह दृढ़ रहिए। मेरे प्राणप्यारो! मुझे
आप लोगों से मिलने की बड़ी इच्छा है। आप
मेरे आनन्द और मेरे मुकुट हैं।

एकता, आनन्द और शान्ति

[2]मैं युओदिया और सुनतुखे, दोनों बहिनों से
अनुरोध करता हूँ कि तुम प्रभु में समझौता कर
लो*। [3]सुजुगस! मैं तुमसे, अपने सच्चे साथी+
से प्रार्थना करता हूँ कि तुम इन दोनों की

---

* अथवा, "एक भावना से रहो" +मूल नाम "सुजुगस" का वही अर्थ है: एक जूए में संयुक्त ** अथवा, 'जहाँ तक.... उसी के अनुकूल हम आचरण करते रहें।'

3 : 7 मत 13 : 44, 46 **3 : 9** रोम 3 : 21-22 **3 : 10** रोम 6 : 3-5; 8 : 17; गल 6 : 17 **3 : 11** प्रे 4 : 2; प्रक 20 : 5-6 **3 : 12** 1 तिम 6 : 12; प्रे 9 : 6 **3 : 14** 1 कुर 9 : 24 **3 : 15** 1 कुर 2 : 6 **3 : 16** गल 6 : 16 **3 : 17** 1 कुर 11 : 1; 1 थिस 1: 7; 1 पत 5 : 3 **3 : 18** 1 कुर 1 : 23; गल 6 : 12 **3 : 19** रोम 16 : 18 **3 : 20** इफ 2 : 6; कुल 3 : 1; इब्र 12 : 22 **3 : 21** 1 कुर 15: 43, 49, 53 **4 :1** 2 कुर 1 : 14; 1 थिस 2 : 19-20 **4 : 3** भज 69 : 28; लू 10 : 20

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सहायता करो। इन दोनों बहिनों ने, क्लेमेंस
और मेरे अन्य सहयोगियों सहित, जिनके नाम
जीवन की पुस्तक में हैं, शुभसमाचार के प्रचार
में मेरे साथ कठोर परिश्रम किया है।
4आप लोग प्रभु में हर समय आनन्दित रहें।
मैं फिर कहता हूँ, आनन्दित रहें। 5सब लोग
आपके सौम्य स्वभाव को जान जायें। प्रभु
निकट हैं। 6किसी बात की चिन्ता न करें। हर
जरूरत में प्रार्थना करें और विनय तथा धन्यवाद
के साथ परमेश्वर के सामने अपने निवेदन
प्रस्तुत करें। 7और परमेश्वर की शान्ति, जो
हमारी समझ से परे है, आपके हृदय और
विचारों को येशु मसीह में सुरक्षित रखेगी।
8भाइयो और बहिनो! अन्त में यह : जो
कुछ सच है, आदरणीय है; जो कुछ न्यायसंगत
है, निर्दोष है; जो कुछ प्रीतिकर है, मनोहर है,
जो कुछ भी उत्तम है, प्रशंसनीय है: ऐसी बातों
का मनन किया करें। 9आप लोगों ने मुझ से जो
सीखा, ग्रहण किया, सुना और मुझ में देखा,
उसके अनुसार आचरण करें और शान्ति का
परमेश्वर आप लोगों के साथ रहेगा।

आर्थिक सहायता के लिए धन्यवाद

10मुझे प्रभु में बड़ा आनन्द इसलिए हुआ कि
मेरे प्रति आप लोगों की शुभचिंता इतने दिनों
के बाद फिर पल्लवित हुई। इस से पहले भी आप
को मेरी चिन्ता अवश्य थी, किन्तु उसे प्रकट
करने का सुअवसर नहीं मिल रहा था। 11मैं यह
इसलिए नहीं कह रहा हूँ कि मुझे किसी बात
की कमी है, क्योंकि मैंने हर परिस्थिति में
स्वावलम्बी होना सीख लिया है। 12मैं दरिद्रता
तथा सम्पन्नता, दोनों से परिचित हूँ। चाहे
परितृप्ति हो या भूख, समृद्धि हो या अभाव—मुझे
जीवन के उतार-चढ़ाव का पूरा अनुभव है* ।
13जो मुझे बल प्रदान करता है, उसकी सहायता
से मैं सब कुछ कर सकता हूँ।
14फिर भी आप लोगों ने संकट में मेरा साथ
दे कर अच्छा किया। 15फिलिप्पी निवासियो!
आप लोग जानते हैं कि अपने शुभसमाचार-
प्रचार के प्रारम्भ में जब मैं मकिदुनिया प्रदेश से
चला गया, तो आप लोगों को छोड़ कर किसी
भी कलीसिया ने मेरे साथ लेन-देन का सम्बन्ध
नहीं रखा। 16जब मैं थिस्सलुनीके नगर में था,
तो आप लोगों ने मेरी आवश्यकता पूरी करने
के लिए एक बार नहीं, बल्कि दो बार बहुत
कुछ भेजा था। 17मैं दान पाने के लिए उत्सुक
नहीं हूं। मैं इसलिए उत्सुक हूँ कि हिसाब में
आपकी जमा-बाकी बढ़ती जाये। 18अब मुझे
पूर्ण राशि प्राप्त हो गई है; मैं सम्पन्न हूँ।
इपफ्रोदितुस से आपकी भेजी हुई वस्तुएँ पा कर
मैं समृद्ध हो गया हूँ। आप लोगों की यह भेंट
एक मधुर सुगन्ध है, एक सुग्राह्य बलि है, जो
परमेश्वर को प्रिय है। 19मेरा परमेश्वर येशु मसीह
द्वारा+ अपनी अतुल महिमा के कोष से आपकी
सब आवश्यकताओं को पूरा करेगा। 20हमारे
पिता परमेश्वर की महिमा युगानुयुग हो!
आमेन।

नमस्कार और आशीर्वाद

21-22येशु मसीह की संगति में प्रत्येक सन्त
को मेरा नमस्कार। जो भाई मेरे साथ हैं और
सभी सन्त, विशेष कर रोमन सम्राट के कर्मचारी,
आप लोगों को नमस्कार कहते हैं।
23प्रभु येशु मसीह की कृपा आप लोगों पर
बनी रहे!

---

* शब्दशः "हर दशा और सब परिस्थितियों में मुझे इनके रहस्य की दीक्षा मिली" + अथवा, "येशु मसीह में संचित"
4: 4 2 कुर 13 : 11; फिल 3 : 1; 1 थिस 5 : 16 **4 : 5** इब्र 10 : 37; याक 5 : 8-9 **4 : 6** मत 6 : 25-34; कुल 4 : 2; 1 पत 5 : 7; भज 145 : 18; यो 14 : 27 **4 : 7** कुल 3 : 15 **4 : 8** रोम 12 : 17; 2 कुर 13 : 11-13 **4 : 9** 1 थिस 5 : 23 रोम 16 : 20; 1 कुर 14 : 33 **4 : 11** 1 तिम 6 : 6 **4 : 12** 2 कुर 6 : 10 **4 : 13** 2 कुर 12 : 10; 2 तिम 4 : 17 **4 : 15** 2 कुर 11 : 9 **4 : 17** 1 कुर 9 : 11 **4 : 18** फिल 2 : 25; नि 29 : 18; यहेज 20 : 41 **4 : 22** फिल 1 : 13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कुलुस्से नगर की कलीसिया के नाम संत पौलुस का पत्र

भूमिका

एशिया माइनर के नगर कुलुस्से की कलीसिया को यह पत्र सन्त पौलुस ने लिखा था। यद्यपि इस कलीसिया की स्थापना सन्त पौलुस ने नहीं की थी, किन्तु जिस प्रदेश में यह कलीसिया स्थापित थी, उस क्षेत्र के प्रति संत पौलुस गम्भीर दायित्व अनुभव करते थे। अत: वह इफिसुस नगर से कुलुस्से नगर की कलीसिया को धर्मसेवक भेजते रहते थे। इफिसुस नगर पूर्व दिशा में रोम के उपनिवेश आसिया प्रदेश की राजधानी था।

सन्त पौलुस को पता चला था कि कुलुस्से नगर की कलीसिया में कुछ झूठे शिक्षक घुस आये हैं। ये शिक्षक कलीसिया को जोर देकर सिखाते थे कि परमेश्वर को जानने तथा पूर्ण उद्धार प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि लोग ''आधिपत्य तथा अधिकार'' नामक आकाश-मण्डल की दैवी शक्तियों की पूजा करें। इसके अतिरिक्त ये शिक्षक कलीसिया के सदस्यों को सिखाते थे कि वे खतना जैसी धार्मिक प्रथा का पालन करें, तथा भोजन सम्बन्धी अन्य यहूदी नियमों का कड़ाई से पालन करें। इनके अतिरिक्त और बातों में वे निषेधात्मक शिक्षा देते थे।

सन्त पौलुस ने इस भ्रामक शिक्षा का विरोध किया, और इस पत्र के द्वारा एक सच्चा, मसीही शुभसमाचार भेजा। उनके शुभ सन्देश का सारांश यह था कि प्रभु येशु मसीह किसी भी व्यक्ति को पूर्ण उद्धार प्रदान करने में सक्षम हैं। वस्तुत: उपरोक्त शिक्षाओं में जटिल कर्मकाण्ड है, जो सहज विश्वासी को प्रभु येशु से दूर ले जाता है। वरन् सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर ने मसीह में इस सृष्टि की रचना की है, और वह मसीह में ही सृष्टि को अपने से संयुक्त कर रहा है। मसीह से संयुक्त होकर ही संसार अपने उद्धार की आशा कर सकता है। तत्पश्चात् संत पौलुस विराट ''विश्व मसीह'' के सम्बन्ध में इस महान शिक्षा की व्याख्या करते हैं, और मसीही आचरण के लिए इसका महत्व बताते हैं।

पत्र लिखते अथवा लिखवाते समय संत पौलुस कैदी थे। इस पत्र को तुखिकुस नामक विश्वासी भाई कुलुस्से नगर ले गया था। ध्यान देने योग्य तथ्य है कि उसके साथ दास उनेसिमुस गया था, जिसकी अनुशंसा में सन्त पौलुस ने फिलेमोन के नाम पत्र लिखा है।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

भूमिका	1 : 1-8
मसीह का स्वभाव और कार्य	1 : 9—2 : 19
मसीह में नया जीवन	2 : 20—4 : 6
उपसंहार	4 : 7-18

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अभिवादन

1 कुलुस्से नगर के सन्तों और मसीह में सच्चे
विश्वासी भाई-बहनों के नाम पौलुस, जो
परमेश्वर की इच्छा से येशु मसीह का प्रेरित
नियुक्त हुआ है, और भाई तिमोथी का पत्र।
2हमारा पिता परमेश्वर आप लोगों को अनुग्रह
तथा शान्ति प्रदान करे!

धन्यवाद

3-4हम ने येशु मसीह में आप लोगों के
विश्वास और सभी सन्तों के प्रति आपके प्रेम
के विषय में सुना है। इसलिए हम आप लोगों
के लिए प्रार्थना करते समय परमेश्वर को—अपने
प्रभु येशु मसीह के पिता को—निरन्तर धन्यवाद
देते हैं। 5आप का विश्वास और प्रेम उस आशा
पर आधारित है, जो स्वर्ग में आपके लिए
सुरक्षित है और जिसके विषय में आपने तब
सुना, जब शुभसमाचार का सत्य संदेश 6आप
के पास पहुँचा। यह समस्त संसार में फलता
और बढ़ता जा रहा है। आप लोगों के यहाँ यह
उस दिन से फलता और बढ़ता जा रहा है, जिस
दिन आपने परमेश्वर के अनुग्रह के विषय में
सुना और उसके सत्य का मर्म समझा। 7आप
को हमारे प्रिय साथी-सेवक इपफ्रास से इसकी
शिक्षा मिली है। इपफ्रास आपके हित के लिए
मसीह के विश्वासी सेवक हैं। 8उन्होंने हमें बताया
है कि पवित्र आत्मा ने आप लोगों में कितना प्रेम
उत्पन्न किया है।

कुलुस्से-निवासियों के लिए प्रार्थना

9जिस दिन से हमने यह सुना, हम निरन्तर
आप लोगों के लिए प्रार्थना करते रहे हैं। हम
परमेश्वर से यह निवेदन करते हैं कि वह आप
को समस्त प्रज्ञा तथा आध्यात्मिक अन्तर्दृष्टि
प्रदान करें, जिससे आप उसकी इच्छा पूर्ण रूप
से समझ सकें। 10इस प्रकार आप प्रभु के योग्य
जीवन बिता कर सब बातों में उसे प्रसन्न करेंगे,
हर प्रकार के भले कार्य करते रहेंगे और
परमेश्वर के ज्ञान में फलते और बढ़ते जायेंगे।
11आप परमेश्वर की महिमामय शक्ति से
अत्यधिक बल पा कर सदा दृढ़ बने रहेंगे, सब
कुछ आनन्द के साथ सह सकेंगे 12और पिता
को धन्यवाद देंगे जिसने आप को इस योग्य
बनाया है कि आप ज्योति के राज्य में रहने वाले
सन्तों की विरासत के सहभागी बनें।

परमेश्वर के उद्देश्य के अनुसार मसीह और उनके कार्य

13परमेश्वर हमें अन्धकार की अधीनता से
निकाल कर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में ले
आया। 14उन्हीं के द्वारा हमें विमोचन, अर्थात्
पापों की क्षमा मिली है।

15मसीह+ अदृश्य परमेश्वर के प्रतिरूप तथा
समस्त सृष्टि में पहलौठे हैं; 16क्योंकि उन्हीं में
सब कुछ की सृष्टि हुई है। सब कुछ—चाहे वह
स्वर्ग में हो या पृथ्वी पर, चाहे दृश्य हो या
अदृश्य, सिंहासन हो या प्रभुत्व, आधिपत्य हो
या अधिकार—सब कुछ उनके द्वारा और उनके
लिए सृष्ट किया गया है। 17वही समस्त सृष्टि के
पहले से विद्यमान हैं और समस्त सृष्टि उन में
ही टिकी हुई है।*

18मसीह देह अर्थात् कलीसिया का शीर्ष हैं।
वही मूल कारण** हैं और मृतकों में से प्रथम
जी उठने वाले भी, इसलिए वह सभी बातों में
सर्वश्रेष्ठ हैं।

19परमेश्वर ने चाहा कि उनमें सब प्रकार की
परिपूर्णता निवास करे। 20मसीह ने क्रूस पर जो
रक्त बहाया, उसके द्वारा परमेश्वर ने शान्ति की
स्थापना की।

+ मूल में ''जो'' * शब्दशः, ''वही सब कुछ के पहले से हैं और सब कुछ उनमें संस्थित है।'' ** अथवा, ''आदि''

1 : 1 इफ 1 : 1 **1 : 2** रोम 1 : 7; इफ 1 : 2 **1 : 3** इफ 1 : 16; 1 थिस 1 : 2-3 **1 : 4** इफ 1 : 15; 1 कुर 13 : 13 **1 : 5** 1 पत 1 : 4; इफ 1 : 13, 18 **1 : 6** 1 तिम 3 : 16; इफ 1 : 13 **1 : 7** कुल 4 : 12 **1 : 9** इफ 1 : 8, 15-17; फिल 1 : 9 **1 : 10** इफ 1 : 17; 2 : 10; 4 : 1; फिल 1 : 27 **1 : 11** 1 कुर 1 : 5; इफ 1 : 18-19; 3 : 16 **1 : 12** इफ 1 : 11, 18 **1 : 13** कुल 2 : 15; लू 22 : 53; इफ 2 : 2; 6 : 12; 1 : 6 **1 : 14** इफ 1 : 7 **1 : 15** इब्र 1 : 3; 2 कुर 4 : 4; 1 तिम 6 : 16; यो 1 : 18; प्रज्ञ 7 : 26 **1 : 16** यो 1 : 3, 10; इफ 1 : 10, 21 **1 : 17** नीति 8 : 25-27; इफ 1 : 22 **1 : 18** इफ 1 : 22; 4 : 15; 5 : 23; प्रे 4 : 2; 26 : 23; प्रक 1 : 5 **1 : 19** कुल 2 : 9; इफ 1 : 23; यो 1 : 16

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यही परमेश्वर का शुभ संकल्प था कि वह
मसीह के द्वारा सब कुछ का, चाहे वह पृथ्वी
पर हो या स्वर्ग में, अपने से मेल कराये।

विश्वास में दृढ़ बने रहें

21आप लोग भी अपने कुकर्मों के कारण
परमेश्वर से दूर हो गये थे और आपके मन में
शत्रुता भर गयी थी। 22किन्तु अब परमेश्वर ने
अपने पुत्र के मानव शरीर में मृत्यु द्वारा आपके
साथ मेल कर लिया है, जिससे वह आप को
पवित्र, निर्दोष और अनिन्दनीय बना कर अपने
सामने प्रस्तुत कर सके। 23किन्तु आप को
विश्वास के आधार पर दृढ़ और अटल बना
रहना चाहिए और उस आशा से विचलित नहीं
होनी चाहिए, जो आप को शुभसमाचार द्वारा
दिलायी गयी है। वह शुभसमाचार आकाश के
नीचे की समस्त सृष्टि को सुनाया गया है और
मैं, पौलुस, उसका सेवक बना हूँ।

सन्त पौलुस का कठोर परिश्रम

24इस समय मैं आप लोगों के लिए जो
दुःख उठाता हूँ, उसके कारण प्रसन्न हूँ। मैं
मसीह के कष्टों का शेष भाग अपने शरीर में*
उनकी देह, अर्थात् कलीसिया के लिए परिपूरित
करता हूँ। 25मैं परमेश्वर के प्रबन्ध के अनुसार
कलीसिया का सेवक नियुक्त हुआ, ताकि मैं
आप लोगों के हित के लिए 26परमेश्वर का रहस्य
सुनाऊँ, जो युगों तथा पीढ़ियों तक गुप्त रहा
और अब उसके सन्तों के लिए प्रकट किया
गया है। 27परमेश्वर ने उन्हें दिखलाना चाहा कि
गैर-यहूदियों में इस रहस्य की कितनी महिमामय
समृद्धि है। वह रहस्य यह है कि मसीह आप
लोगों के बीच हैं+ और उन में आप लोगों की
महिमा की आशा है।

28हम उन्हीं मसीह का प्रचार करते हैं,
प्रत्येक मनुष्य को उपदेश देते और प्रत्येक
मनुष्य को पूर्ण ज्ञान की शिक्षा देते हैं, जिससे
प्रत्येक मनुष्य को मसीह में सिद्ध बनाकर उनके
सम्मुख प्रस्तुत करें। 29इस उद्देश्य की पूर्ति के
लिए मैं उनके सामर्थ्य से, जो मुझ में प्रबल रूप
से क्रियाशील है, प्रेरित हो कर कठिन परिश्रम
करते हुए संघर्ष में लगा रहता हूँ।

2 मैं चाहता हूं कि आप यह जानें कि मैं आप
लोगों के लिए, लौदीकिया नगर के
विश्वासियों और उन सब के लिए जो मुझे
व्यक्तिगत रूप से नहीं जानते, कितना कठोर
परिश्रम करता रहता हूँ, 2जिससे वे हिम्मत न
हारें, प्रेम की एकता में बँधे रहें, सुनिश्चित
अन्तर्ज्ञान की परिपूर्णता प्राप्त करें और इस
प्रकार परमेश्वर के रहस्य के मर्म तक पहुँच
जायें। वह रहस्य स्वयं मसीह है, 3क्योंकि उन्हीं
में प्रज्ञा तथा ज्ञान की सम्पूर्ण निधि निहित है।
4मैं यह इसलिए कह रहा हूँ कि कोई व्यक्ति
भ्रामक तर्कों द्वारा आप लोगों को नहीं बहकाये।
5मैं शारीरिक रूप से दूर होते हुए भी आत्मा में
आप लोगों के साथ हूँ और मुझे यह देख कर
आनन्द होता है कि आपका जीवन सुव्यस्थित
और मसीह में आपका विश्वास सुदृढ़ है।

मसीह में जीवन की पूर्णता

6आपने येशु मसीह को प्रभु के रूप में
स्वीकार किया है; इसलिए उन्हीं से संयुक्त हो
कर जीवन बितायें। 7उन्हीं में आपकी जड़ें
गहरी हों और उन्हीं में अपना आध्यात्मिक
निर्माण करें। आप को जिस विश्वास की शिक्षा
प्राप्त हुई है, उसी में दृढ़ बने रहें और आपके
हृदय में धन्यवाद की प्रार्थना उमड़ती रहे।
8सावधान रहें। कहीं ऐसा न हो कि कोई आप
लोगों को ऐसे खोखले और भ्रामक दर्शनशास्त्र
द्वारा बहकाये, जो मनुष्यों की परम्परागत शिक्षा
के अनुसार है और मसीह पर नहीं बल्कि संसार

---

* अथवा, "जो मेरे शरीर में रह गया है उसे" + अथवा, "आप लोगों में विद्यमान हैं"।

1 : 20 इफ 1 : 7, 10; 2 : 13; 1 यो 2 : 2 **1 : 21** इफ 2 : 1, 12; 4 : 18; रोम 5 : 10 **1 : 22** इफ 2 : 11; 5 : 27 **1 : 23** मक 16 : 15; 1 तिम 3 : 16; इफ 3 : 17; इब्र 3 : 14 **1 : 24** 3 : 1, 13 **1 : 25** इफ 3 : 2, 7-8 **1 : 26** रोम 16 : 25-26; इफ 3 : 3, 5, 9-10 **1 : 27** 1 तिम 1 : 1; रोम 16 : 25; इफ 3 : 9; 1 : 18 **1 : 28** इफ 4 : 13 **1 : 29** फिल 4 : 13; इफ 3 : 7, 20 **2 : 2** कुल 1 : 26; इफ 3 : 16-18 **2 : 3** यश 45 : 3; नीति 2 : 3-4; इफ 3 : 19; 1 कुर 1 : 24, 30 **2 : 4** रोम 16 : 18; इफ 4 : 17; 5 : 6 **2 : 5** 1 कुर 5 : 3; 14 : 40 **2 : 6** इफ 4 : 17 **2 : 7** इफ, 3 : 17; 2 : 20, 22 **2 : 8** इफ 5 : 6 **2 : 9** यो 1 : 14, 16

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

के तत्त्वों पर आधारित है।
9क्योंकि ईश्वरत्व की परिपूर्णता मसीह में
सशरीर निवास करती है 10और उन में आप इस
परिपूर्णता के सहभागी हैं। सभी आधिपत्य और
अधिकार मसीह के अधीन हैं** 11उन्हीं में आप
गैर-यहूदियों का भी एक खतना हुआ है। वह
खतना हाथ से नहीं किया जाता, वह मसीह का
खतना अर्थात् बपतिस्मा है, जिसके द्वारा
पापमय स्वभाव के शरीर को उतार दिया जाता
है। 12आप लोग बपतिस्मा के समय मसीह के
साथ दफनाये गये और उन्हीं के साथ पुनर्जीवित
भी किये गये हैं, क्योंकि आप लोगों ने परमेश्वर
के सामर्थ्य में विश्वास किया जिसने उन्हें
मृतकों में से पुनर्जीवित किया। 13आप लोग
पापों के कारण और अपने स्वभाव के खतने के
अभाव के कारण मर गये थे। परमेश्वर ने आप
लोगों को मसीह के साथ पुनर्जीवित किया है।
उसने हमारे सब अपराधों को क्षमा किया है।
14उसने हमें दोषी ठहराने वाले दस्तावेज को++
रद्द कर दिया, जो विधि-नियमों के कारण हमारे
विरुद्ध था, और उसे क्रूस पर ठोंक कर उठा
दिया है। 15उसने प्रत्येक आधिपत्य और
अधिकार को अपदस्थ किया*, संसार की दृष्टि
में उन को नीचा दिखाया और क्रूस की विजय-
यात्रा में उन्हें बन्दियों के समान घुमाया।

झूठे सिद्धान्तों से सावधान

16इसलिए किसी को यह अधिकार नहीं कि
वह खान-पान, पर्व, अमावस्या या विश्राम-
दिवस के विषय में आप लोगों पर दोष लगाये।
17ये सब आने वाली बातों की छाया मात्र हैं;
ठोस वास्तविकता मसीह ही है। 18आप अपने
को ऐसे लोगों द्वारा अपने पुरस्कार से वंचित न
होने दें, जो तपस्या, स्वर्गदूतों की पूजा और
अपने तथा-कथित दिव्य दृश्यों को अनुचित
महत्त्व देते हैं। वे लोग अपनी सांसारिक बुद्धि
के कारण घमण्ड से फूल जाते हैं 19और इस
प्रकार शीर्ष अर्थात् मसीह से संयुक्त नहीं रह
पाते। मसीह वह शीर्ष हैं जिससे समस्त शरीर
सन्धियों और स्नायुओं द्वारा पोषित और
संगठित हो कर परमेश्वर की इच्छानुसार बढ़ता
है।
20यदि आप मसीह के साथ मर कर संसार
के तत्त्वों से मुक्त हो गये हैं, तो आप उसके
आदेशों का पालन क्यों करें, मानो आपका
जीवन अब तक संसार के अधीन हो? 21"उस
से परहेज करना, यह मत चखना, वह मत
छूना"—22ये सब मनुष्यों के आदेश हैं,
मानवीय सिद्धान्तों पर आधारित हैं और ऐसी
वस्तुओं से सम्बन्ध रखते हैं, जो उपयोग में
आने पर नष्ट हो जाती हैं।
23मनमानी व्यक्तिगत साधना, तपस्या और
कठोर आत्म-संयम द्वारा ज्ञान का दिखावा तो
होता है, किन्तु ये शरीर की वासनाओं का दमन
करने में असमर्थ हैं।

मसीह के साथ पुनर्जीवित होने का परिणाम

3 यदि आप लोग मसीह के साथ ही जी उठे
हैं, तो स्वर्ग+ की वस्तुएं खोजते रहें, जहाँ
मसीह परमेश्वर की दाहिनी ओर विराजमान
हैं। 2आप संसार की नहीं, स्वर्ग की वस्तुओं की
चिन्ता किया करें। 3आप तो मर चुके हैं, आपका
जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ
है। 4मसीह ही आपका जीवन हैं। जब मसीह
प्रकट होंगे तब आप भी उनके साथ महिमान्वित
हो कर प्रकट हो जायेंगे।
5इसलिए आप लोग अपने शरीर में इन बातों
को निर्जीव करें जो संसार की हैं, अर्थात्
व्यभिचार, अशुद्धता, कामुकता, विषयवासना
और लोभ को जो मूर्तिपूजा के सदृश है। 6इन

** शब्दश:, "का शीर्ष मसीह है" ++अथवा, "हमें बाँधने वाले बन्धपत्र को" * अथवा, "निरस्त्र किया" + शब्दश: "ऊपर"

2 : 10 इफ 1 : 21 **2 : 11** रोम 2 : 29; 1 पत 3 : 21 **2 : 12** कुल 3 : 1; रोम 6 : 4; इफ 1 : 19-20 **2 : 13** इफ 2 : 1-5 **2 : 14** इफ 2 : 14-15 **2 : 15** कुल 1 : 13 **2 : 16** रोम 14 : 1-12 **2 : 17** इब्र 8 : 5; 10 : 1. **2 : 19** इफ 2 : 21; 4 : 15-16 **2 : 20** गल 4 : 3,9 **2 : 21** गल 6 : 8 **2 : 22** यश 29 : 13; मत 15 : 9 **2 : 23** रोम 13 : 14; 1 तिम 4 : 3 **3 : 1** कुल 2 : 12; भज 110 : 1 **3 : 2** मत 6 : 33 **3 : 3** रोम 6 : 2 **3 : 4** 1 कुर 15 : 43; फिल 1 : 21; गल 2 : 20 **3 : 5** रोम 6 : 6; 8 : 13; इफ 4 : 19; 5 : , .5 **3 : 6** इफ 5 : 6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बातों के कारण अवज्ञा की संतान पर परमेश्वर
का कोप आ पड़ता है। 7आप भी पहले यह सब
कर चुके हैं, जब आप इस प्रकार का पापमय
जीवन बिताते थे। 8अब तो आप लोगों को
क्रोध, उत्तेजना, द्वेष, परनिन्दा और अश्लील
बातचीत सर्वथा छोड़ देनी चाहिए। 9कभी एक
दूसरे से झूठ नहीं बोलें।

आप लोगों ने अपना पुराना स्वभाव++ और
उसके कर्मों को उतार कर 10एक नया स्वभाव
धारण किया है। यह स्वभाव अपने सृष्टिकर्ता
का प्रतिरूप बन कर नवीन होता रहता और पूर्ण
ज्ञान की ओर आगे बढ़ता है। 11इस नवीनता में*
कोई भेद नहीं रहता, इसमें न यूनानी है, न
यहूदी; न खतना है, न खतने का अभाव; न बर्बर
है, न स्कूती**, न दास और न स्वतन्त्र। केवल
मसीह हैं, जो सब कुछ और सब में हैं।

12आप लोग परमेश्वर की पवित्र एवं
परमप्रिय चुनी हुई प्रजा हैं। इसलिए आप लोगों
को सहानुभूति, अनुकम्पा, विनम्रता, कोमलता
और सहनशीलता धारण करनी चाहिए। 13आप
एक दूसरे को सहन करें और यदि किसी को
किसी से कोई शिकायत हो, तो एक दूसरे को
क्षमा करें। प्रभु ने आप लोगों को क्षमा कर
दिया। आप लोग भी ऐसा ही करें। 14परन्तु सब
से बड़ी बात यह है कि आपस में प्रेम-भाव
बनाये रखें। वह सब कुछ एकता में बाँध कर
पूर्णता तक पहुँचा देता है। 15मसीह की शान्ति
आपके हृदय में राज्य करे। इसी शान्ति के लिए
आप लोग, एक ही देह के अंग बन कर, बुलाये
गये हैं। आप लोग कृतज्ञ बने रहें। 16मसीह का
वचन अपनी परिपूर्णता में आप लोगों में निवास
करे। आप बड़ी समझदारी से एक-दूसरे को
शिक्षा और उपदेश दिया करें। आप कृतज्ञ हृदय
से परमेश्वर के आदर में भजन, स्तोत्र और
आध्यात्मिक गीत गाया करें। 17आप जो भी
कहें या करें, वह सब प्रभु येशु के नाम पर किया
करें। उन्हीं के द्वारा आप लोग पिता-परमेश्वर
को धन्यवाद देते रहें।

आदर्श मसीही परिवार

18पत्नियो! प्रभु में जैसे उचित है, वैसे ही
आप अपने-अपने पति के अधीन रहें। 19पतियो!
आप अपनी-अपनी पत्नी से प्रेम रखें और
उनके साथ कठोर व्यवहार नहीं करें। 20बच्चो!
सभी बातों में अपने माता-पिता की आज्ञा
मानो, क्योंकि प्रभु इससे प्रसन्न होता है। 21आप
जो पिता हैं, अपने बच्चों को खिझाया नहीं करें।
कहीं ऐसा न हो कि उनका दिल टूट जाये।

22दासों से मेरा अनुरोध यह है कि आप सब
बातों में उन लोगों की आज्ञा मानें, जो इस पृथ्वी
पर आपके स्वामी हैं। आप मनुष्यों को प्रसन्न
करने के उद्देश्य से दिखावे मात्र के लिए नहीं,
बल्कि निष्कपट हृदय से तथा प्रभु+ पर श्रद्धा-
भक्ति रख कर ऐसा करें। 23आप लोग जो भी
काम करें, मन लगा कर करें, मानो मनुष्यों के
लिए नहीं, बल्कि प्रभु के लिए काम कर रहे हों;
24क्योंकि आप जानते हैं कि प्रभु पुरस्कार के
रूप में आप को विरासत प्रदान करेगा। आप
स्वामी अर्थात् मसीह के दास हैं++। 25जो अन्याय
करता है, उसे अन्याय का बदला मिलेगा किसी
के साथ पक्षपात नहीं होगा।

4 स्वामियो! आप यह जान कर अपने दासों
के साथ न्यायपूर्ण और उचित व्यवहार करें
कि स्वर्ग में आप के भी एक स्वामी हैं।

प्रार्थना करें

2आप लोग सजग हो कर प्रार्थना और
धन्यवाद में लगे रहें। 3आप हमारे लिए भी
प्रार्थना करें, जिससे परमेश्वर शुभ सन्देश
सुनाने को हमारे लिए द्वार खोल दे और मसीह

++ शब्दशः "मनुष्यत्व" * मूल में "वहाँ" ** काला सागर के उत्तरी तट पर उस समय रहने वाली "शक" जाति, जो पिछड़ी हुई मानी जाती थी। +मूल में "प्रभु" और "स्वामी" एक ही शब्द है ++ अथवा, "आप प्रभु मसीह की सेवा करें"।

3 : 8 इफ 4 : 25-31; 5 : 4 **3 : 9** इफ 4 : 22 **3 : 10** इफ 4 : 24; उत 1 : 27 **3 : 11** गल 3 : 28 **3 : 12** 1 पत 2 : 9; इफ 4 : 2, 32; 5 : 2 **3 : 13** मत 6 : 14; इफ 4 : 32 **3 : 14** इफ 4 : 3; रोम 13 : 8, 10 **3 : 15** इफ 4 : 4; फिल 4 : 7; 1 कुर 12 : 13, 27 **3 : 16** इफ 5 : 19 **3 : 17** 1 कुर 10 : 31; इफ 5 : 20 **3 : 18** इफ 5 : 22-6 : 9 **3 : 19** 1 पत 3 : 7 **3 : 25** रोम 2 : 11 **4 : 1** लेव 25 : 43, 53 **4 : 2** 1 थिस 5 : 17; इफ 6 : 18; फिल 4 : 6 **4 : 3** रोम 15 : 30; इफ 6 : 18-19; 2 थिस 3 : 1; 1 कुर 16 : 9

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

का रहस्य, जिस के लिए मैं अभी बेड़ियों से
जकड़ा हुआ हूँ, घोषित करने का सुअवसर
प्रदान करे। 4आप प्रार्थना करें, जिससे मैं इस
रहस्य को उपयुक्त शब्दों में प्रकट कर सकूँ।

दूसरों के साथ उचित व्यवहार

5आप बाहरवालों के साथ बुद्धिमानी से
व्यवहार करें। वर्तमान समय से पूरा-पूरा लाभ
उठायें। आपकी बातचीत सदा मनोहर और
सुरुचिपूर्ण* हो और आप प्रत्येक को समुचित
उत्तर देना सीखें।

अन्तिम अभिवादन

7विश्वस्त धर्मसेवक और प्रभु की सेवा में
मेरे साथी, हमारे प्रिय भाई तुखिकुस आप लोगों
को मेरे विषय में सब बातें बतायेंगे। 8मैं उन्हें
आप लोगों के पास इसलिए भेज रहा हूँ कि
आप हमारे विषय में पूरा समाचार जानें और
इसलिए भी कि वह आप को प्रोत्साहन दें।
9इनके साथ आपके देशवासी, हमारे विश्वस्त
और प्रिय भाई उनेसिमुस भी जा रहे हैं। ये दोनों
आप लोगों को यहाँ का पूरा हाल बतायेंगे।
10अरिस्तर्खुस , जो मेरे साथ कैदी हैं, और
बरनबास का भांजा मारकुस आप लोगों को
नमस्कार कहते हैं। मारकुस के विषय में आप
को अनुदेश मिल चुके हैं। यदि वह आप लोगों
के यहाँ आयें, तो उनका स्वागत करें।
11यहोशुअ** उपनाम यूस्तुस भी आप लोगों
को नमस्कार कहते हैं। खतनेवाले भाइयों में से
ये तीन ही परमेश्वर के राज्य के लिए मेरे साथ
काम कर रहे हैं। इन से मुझे बड़ी सान्त्वना
मिली है। 12आपके देशवासी इपफ्रास आप
लोगों को नमस्कार कहते हैं। येशु मसीह के
यह सेवक निरन्तर आप लोगों के लिए संघर्षमय
प्रार्थना करते हैं, जिससे आप लोग सब बातों
में परमेश्वर की इच्छा पूर्ण रूप से पूरी करने में
सुदृढ़ बने रहें। 13मैं इनके विषय में यह साक्षी
दे सकता हूँ कि यह आप लोगों के लिए और
लौदीकिया तथा हियेरापुलिस के निवासियों के
लिए बहुत कष्ट उठा रहे हैं। 14प्रिय वैद्य लूकस
और देमास आप लोगों को नमस्कार कहते हैं।
15लौदीकिया के भाई-बहिनों को नमस्कार।
बहिन नुम्फा और उनके घर में एकत्र होने वाली
कलीसिया को नमस्कार। 16जब यह पत्र आप
लोगों के यहाँ पढ़ कर सुनाया जा चुकेगा, तब
आप ऐसा प्रबन्ध करें कि यह लौदीकिया नगर
की कलीसिया में भी पढ़कर सुनाया जाये और
लौदीकिया की कलीसिया के नाम लिखा हुआ
पत्र आप लोग भी पढ़ें। 17आप लोग भाई
अर्खिप्पुस से यह कहें, "जो धर्मसेवा आप
को प्रभु के नाम पर सौंपी गयी है, उसे अच्छी
तरह पूरा करने का ध्यान रखिए।"
18यह नमस्कार पौलुस का है- यह मेरे
अपने हाथ का लिखा हुआ है। मेरी बेड़ियाँ याद
रखें। आप लोगों पर कृपा बनी रहे!

---

* अक्षरशः, "सलोनी" ** अथवा, "येशु"

4 : 4 इफ 6 : 20 **4 : 5** इफ 5 : 15-16; 1 थिस 4 : 12 **4 : 6** इफ 4 : 29; मक 9 : 50; 1 पत 3 : 15; प्रज्ञ 8 : 12 **4 : 7** इफ 6 : 21 **4 : 8** इफ 6 : 22 **4 : 9** फिले 10 **4 : 10** प्रे 19 : 29; 27 : 2; 18 : 27 **4 :12** कुल 1 : 7 **4 : 14** 2 तिम 4 : 10-11; फिले 24 **4 : 17** फिले 2 **4 : 18** 1 कुर 16 : 21; 2 थिस 3 : 17

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

थिस्सलुनीके नगर की कलीसिया के नाम संत पौलुस का पहला पत्र

भूमिका

रोमन साम्राज्य के अन्तर्गत मकिदुनिया नामक एक यूनानी प्रदेश था। इसकी राजधानी थिस्सलुनीके नगर थी। लगभग सन् 50 ई० में प्रेरित पौलुस ने अपने सहयोगी तिमोथी के साथ यहाँ एक कलीसिया की स्थापना की थी। उन्होंने प्रभु येशु का सन्देश उन ईश्वर-भक्त यूनानियों को सुनाया, जो यहूदी धर्म में रुचि लेने लगे थे। किन्तु प्रेरित पौलुस की सफलता देखकर यहूदी लोग उनके प्रति ईर्ष्यालु हो उठे। यहूदियों के विरोध के कारण सन्त पौलुस को थिस्सलुनीके नगर छोड़ना पड़ा और वह बिरीया नगर चले गए। वह वहाँ से अकेले ही आगे निकलकर, अथेने नगर से होते हुए, कुरिन्थुस नगर में आए। तब उन्हें तिमोथी की ओर से थिस्सलुनीकी कलीसिया के सम्बन्ध में निजी समाचार प्राप्त हुआ।

अतः प्रेरित पौलुस ने थिस्सलुनीके नगर के सब विश्वासियों को पुनः आश्वस्त करने तथा उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए प्रस्तुत पत्र लिखा।

वह उनके विश्वास और प्रेम के लिए उन्हें धन्यवाद देते हैं। वह उन्हें स्मरण दिलाते हैं कि जब वह तिमोथी के साथ थिस्सलुनीके नगर में थे, तब उनका जीवन कैसा था। तत्पश्चात् वह प्रभु येशु के पुनरागमन को लेकर उठे उन प्रश्नों का उत्तर देते हैं: पुनरागमन के समय जो शाश्वत जीवन हमें प्राप्त होगा, क्या यह शाश्वत जीवन उन विश्वासियों को भी प्राप्त होगा जो प्रभु येशु के आगमन के पूर्व मृत हो चुके हैं ? प्रभु येशु का पुरागमन कब होगा ? प्रेरित पौलुस इस अवसर का लाभ उठाते हुए थिस्सलुनीकी कलीसिया के सदस्यों से कहते हैं कि वे विश्वास और आशा से प्रभु येशु के पुनरागमन की प्रतीक्षा करते हुए अपने व्यवसाय-उद्यम में संलग्न रहें। यह पत्र नया विधान में संकलित समस्त लिखित सामग्री में से सब से पुराना अंश माना जाता है।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

अभिवादन	1 : 1
कृतज्ञता और प्रशंसा	1 : 2—3: 13
व्यावहारिक उपदेश	4 : 1-12
पुनरागमन के सम्बन्ध में निर्देश	4 : 13—5 : 11
सद्बोध	5 : 12-22
उपसंहार	5 : 23-28

अभिवादन

1 पिता परमेश्वर और प्रभु येशु मसीह में
थिस्सलुनीके नगर की कलीसिया के नाम
पौलुस, सिल्वानुस और तिमोथी का पत्र।
आप को अनुग्रह तथा शान्ति प्राप्त हो!

थिस्सलुनीकियों का जीवन और विश्वास

2-3 जब-जब हम आप लोगों को अपनी
प्रार्थनाओं में याद करते हैं, तो हम हमेशा आप
सब के लिए परमेश्वर को धन्यवाद देते हैं।
आपका सक्रिय विश्वास, प्रेम से प्रेरित आपका

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

परिश्रम तथा हमारे प्रभु येशु मसीह पर आपका
अटल भरोसा—यह सब हम अपने पिता-
परमेश्वर के सामने निरन्तर स्मरण करते हैं।
4भाइयो और बहिनो! परमेश्वर आप को प्यार
करता है। हम जानते हैं कि परमेश्वर ने आप
को चुना है, 5क्योंकि हमने निरे शब्दों द्वारा नहीं,
बल्कि सामर्थ्य, पवित्र आत्मा तथा दृढ़ विश्वास
के साथ आप लोगों के बीच शुभ समाचार का
प्रचार किया। आप जानते हैं कि आपके
कल्याण के लिए आप के बीच हमारा आचरण
कैसा था।
6आप ने हमारा तथा प्रभु का अनुसरण किया
और घोर कष्टों का सामना करते हुए पवित्र
आत्मा की प्रेरणा से आनन्दपूर्वक शुभसंदेश
स्वीकार किया। 7इस प्रकार आप मकिदुनिया
प्रदेश तथा यूनान देश के सब विश्वासियों के
लिए आदर्श बन गये। 8आप के यहाँ से प्रभु का
संदेश न केवल मकिदुनिया तथा यूनान में
फैला, बल्कि परमेश्वर में आप के विश्वास की
चर्चा सर्वत्र हो रही है। हमें कुछ नहीं कहना है।
9लोग स्वयं हमें बताते हैं कि आप के यहाँ
हमारा कैसा स्वागत हुआ और आप किस
प्रकार देवमूर्तियाँ छोड़ कर परमेश्वर की ओर
अभिमुख हुए, जिससे आप सच्चे तथा जीवन्त
परमेश्वर के सेवक बनें 10और उसके पुत्र अर्थात्
येशु की प्रतीक्षा करें, जिन्हें परमेश्वर ने मृतकों
में से जिलाया। यही येशु स्वर्ग से उतरेंगे और
हमें आने वाले प्रकोप से बचायेंगे।

थिस्सलुनीके में प्रेरित पौलुस का धर्मप्रचार

2 भाइयो और बहिनो! आप स्वयं जानते हैं
कि आप लोगों के यहाँ हमारा आगमन
व्यर्थ नहीं हुआ।
2आप जानते हैं कि हमें कुछ समय पहले
फिलिप्पी नगर में दुर्व्यवहार और अपमान
सहना पड़ा था। फिर भी हमने अपने परमेश्वर
पर भरोसा रख कर, घोर विरोध का सामना
करते हुए, निर्भीकता से आप लोगों के बीच
परमेश्वर के शुभ समाचार का प्रचार किया।
3हमारा आग्रह न तो भ्रम पर आधारित है, न
दूषित अभिप्राय से प्रेरित है और न उस में कोई
छल-कपट है। 4परमेश्वर ने हमें योग्य समझ
कर शुभ समाचार सौंपा है। इसलिए हम मनुष्यों
को नहीं, बल्कि हमारा हृदय परखनेवाले
परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए उपदेश देते
हैं। 5आप लोग जानते हैं और परमेश्वर भी
इसका साक्षी है कि हमारे मुख से चाटुकारी की
बातें कभी नहीं निकलीं और न हमने लोभ से
प्रेरित हो कर कुछ किया। 6हमने मनुष्यों का
सम्मान पाने की चेष्टा नहीं की—न आप लोगों
का सम्मान और न दूसरों का—7यद्यपि हम
मसीह के प्रेरित होने के नाते अपना अधिकार
जता सकते थे। किन्तु हम आपके मध्य बालकों
के समान विनम्र बन कर रहे।* अपने बच्चों का
लालन-पालन करनेवाली माता की तरह हमने
आप लोगों के साथ ममतापूर्ण व्यवहार किया।
8आपसे हमारा अनुराग तथा हमारा प्रेम यहाँ
तक बढ़ गया था कि हम आप को परमेश्वर के
शुभ समाचार के साथ अपना जीवन भी अर्पित
करना चाहते थे। 9भाइयो और बहिनो! आप
को हमारा कठोर परिश्रम याद होगा। आप के
बीच परमेश्वर के शुभ समाचार की घोषणा
करते समय हम दिन-रात काम-धन्धा करते
रहे, जिससे किसी पर भार न डालें।
10आप, और परमेश्वर भी, इस बात के
साक्षी हैं कि आप विश्वासियों के साथ हमारा
आचरण कितना पवित्र, धार्मिक और निर्दोष
था। 11आप जानते हैं कि हम पिता की तरह
आप में से प्रत्येक को 12उपदेश और सान्त्वना

* पाठान्तर, "आपके बीच हमारा व्यवहार कोमल रहा।"

1 : 1 प्रे 15 : 40; 17 : 1; 2 थिस 1 : 1 **1 : 2** 2थिस 1 : 11 **1 : 3** कुल 1 : 4-5; 1 कुर 13 : 13 **1 : 5** 1 कुर 2 : 5 **1 : 6** 1 कुर 4 : 16; प्रे 13 : 52; 2 थिस 3 : 9 **1 : 7** 1 थिस 4 : 10; 1 पत 5 : 3; फिल 3 : 7 **1 : 8** रोम 1 : 8 **1 : 9** प्रे 14 : 15; यो 17 : 3; 1 कुर 12 : 2 **1 : 10** 1 थिस 5 : 9; तीत 2 : 13; प्रे 17 : 31 **2 : 1** 1 थिस 1 : 5, 9; 2 थिस 3 : 7 **2 : 2** प्रे 16 : 20-24; 17 : 1-5 **2 : 4** यिर 11 : 20; गल 1 : 10; 1 तिम 1 : 11 **2 : 5** प्रे 20 : 33; मक 12 : 40; 2 पत 2 : 3 **2 : 6** यो 5 : 41, 44 **2 : 9** 1 कुर 4 : 12; प्रे 20 : 34 **2 : 11** प्रे 20 : 31 **2 : 12** इफ 4 : 1; फिल 1 : 27; 2 थिस 1 : 5; 1 पत 5 : 10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

देते और अनुरोध करते थे कि आप उस
परमेश्वर के योग्य जीवन बितायें, जो आप को
अपने राज्य की महिमा के लिए बुलाता है।
13हम इसलिए निरन्तर परमेश्वर को धन्यवाद
देते हैं कि जब आपने हम से परमेश्वर का
सन्देश सुना और ग्रहण किया, तो आपने उसे
मनुष्यों का वचन नहीं, बल्कि—जैसा कि वह
वास्तव में है—परमेश्वर का वचन समझ कर
स्वीकार किया और यह वचन अब आप
विश्वासियों में क्रियाशील है।
14भाइयो और बहिनो! आप लोगों ने यहूदा
प्रदेश में स्थित परमेश्वर की कलीसियाओं का
अनुकरण किया है, जो येशु मसीह में हैं,
क्योंकि आप को अपने सजातीय लोगों से वही
दुर्व्यवहार सहना पड़ा, जो उन्होंने यहूदा-
वासियों से सहा है। 15उन यहूदियों ने प्रभु येशु
तथा नबियों का वध किया और हम पर घोर
अत्याचार किया। वे परमेश्वर को अप्रसन्न
करते हैं और सब मनुष्यों के विरोधी हैं,
16क्योंकि वे गैर-यहूदियों को मुक्ति का सन्देश
सुनाने से हमें रोकना चाहते हैं और इस प्रकार
वे अपने पापों का घड़ा निरन्तर भरते जाते हैं
और अब परमेश्वर का क्रोध उनके सिर पर आ
पड़ा है।

पौलुस थिस्सलुनीके जाने को उत्सुक

17भाइयो एवं बहिनो! जब हम कुछ समय
के लिए आप लोगों के प्रेम से नहीं, बल्कि
आपके दर्शनों से वंचित थे, तो हमारी आप से
फिर मिलने की अभिलाषा और बढ़ती गई।
18इसलिए हमने, विशेषकर मैं पौलुस ने, बार-
बार आप के यहाँ आना चाहा, किन्तु शैतान ने
हमारा रास्ता रोक दिया। 19जब हम अपने प्रभु
येशु के आगमन पर उनके सामने खड़े होंगे, तो
आप लोगों को छोड़ कर हमारी आशा या
आनन्द या गौरवपूर्ण मुकुट और क्या हो सकता
है? 20हमारा गौरव और आनन्द तो आप लोग
ही हैं।

3 अन्त में हम से नहीं रहा गया। हम ने अथेने
नगर में अकेले रहने का निश्चय किया
2और मसीह के शुभ समाचार के प्रचार में
परमेश्वर के सहयोगी अपने भाई तिमोथी को
आपके यहाँ भेजा कि वह आपको धैर्य बँधायें
और विश्वास में दृढ बनाये रखें, 3जिससे कोई
भी विश्वासी भाई और बहिन इन विपत्तियों के
कारण विचलित न हों। आप लोग जानते हैं कि
हमारे लिए ऐसे कष्टों का आना अनिवार्य है।
4आप के यहाँ रहते समय हम आप से कहा
करते थे कि विपत्तियाँ हम पर आ पड़ेंगी और
जैसा कि आप जानते हैं, हुआ भी वही। 5इसलिए
जब मुझ से नहीं रहा गया, तो आप लोगों के
विश्वास का समाचार जानने के लिए मैंने
तिमोथी को भेजा, क्योंकि हम डरते थे कि कहीं
लुभाने वाले शैतान ने आप को लुभाया हो और
हमारा परिश्रम व्यर्थ हो गया हो।
6तिमोथी अभी-अभी आप के यहाँ से लौटे
हैं और आप के विश्वास तथा प्रेम के विषय में
अच्छा समाचार लाये हैं। वह हमें बताते हैं कि
आप सदा हम को प्रेम से याद करते हैं और हमें
फिर देखने के लिए उतने ही उत्सुक हैं, जितने
हम आप लोगों को देखने के लिए। 7ओ भाइयो
और बहिनो! हमें अपने सब कष्टों और संकटों
में आप लोगों के विश्वास से सान्त्वना मिली
है। 8यह जान कर हम में अब नये जीवन का
संचार हुआ है कि आप प्रभु में दृढ़ बने हुए हैं।
9आपने हमारे परमेश्वर के सामने हमें कितना
आनन्द प्रदान किया है! हम आप लोगों के
विषय में परमेश्वर को पर्याप्त धन्यवाद कैसे दे
सकते हैं? 10हम रात-दिन आग्रह के साथ
परमेश्वर से यह प्रार्थना करते रहते हैं कि हम
आप को दुबारा देख सकें और आप के विश्वास
में जो कमी रह गयी है, उसे पूरा कर सकें।
11हमारा पिता परमेश्वर और हमारे प्रभु येशु
हमारे लिए आप के पास पहुँचने का मार्ग सुगम
बनायें। 12प्रभु ऐसा करें कि जिस तरह हम आप

---

2 : 13 1 थिस 1 : 2; गल 1 : 11; 2 थिस 2 : 13 **2 : 15** प्रे 2 : 23; 7 : 52 **2 : 16** उत 15 : 16; मत 23 : 32-33 **2 : 17** रोम 1 : 11, 13 **2 : 19** फिल 2 : 16; 4 : 1; 2 थिस 1 : 4 **3 : 1** प्रे 17 : 14-15 **3 : 2** प्रे 16 : 1-3 **3 : 3** इफ 3 : 13; 2 तिम 3 : 12; 2 थिस 1 : 4 **3 : 4** 2 थिस 3 : 10; प्रे 14 : 22 **3 : 5** फिल 2 : 16 **3 : 6** प्रे 18 : 5 **3 : 7** 2 थिस 1 : 4 **3 : 11** 2 थिस 2 : 16

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लोगों को प्यार करते हैं, उसी तरह आपका प्रेम
एक दूसरे के प्रति और सब के प्रति बढ़ता और
उमड़ता रहे। 13इस प्रकार वह उस दिन तक
आपके हृदय को हमारे पिता परमेश्वर के सामने
पवित्र और निर्दोष बनाये रखें, जब हमारे वही
प्रभु येशु अपने सब सन्तों के साथ आयेंगे।
आमेन!

शुद्धता, भ्रातृ-प्रेम और परिश्रम के लिए अनुरोध

4 भाइयो और बहिनो! आप लोग हमसे यह
शिक्षा ग्रहण कर चुके हैं कि किस प्रकार
आचरण करना और परमेश्वर को प्रसन्न करना
चाहिए, और आप इसके अनुसार चलते भी हैं।
अन्त में, हम प्रभु येशु के नाम पर आपसे आग्रह
के साथ अनुनय करते हैं कि आप इस विषय
में और आगे बढ़ते जायें। 2आप लोग जानते हैं
कि हमने प्रभु येशु की ओर से आप को कौन-
कौन आदेश दिये हैं।

3परमेश्वर की इच्छा यही है कि आप लोग
पवित्र बनें और व्यभिचार से दूर रहें। 4आप में
से प्रत्येक व्यक्ति संयम सीख कर अपने शरीर
को पवित्र बनाये रखे और उसका सम्मान करे*।
5उन विधर्मियों की तरह जो कि परमेश्वर को
नहीं जानते, कोई भी वासना के वशीभूत न हो।
6कोई भी मर्यादा का उल्लंघन न करे और इस
सम्बन्ध में** अपने भाई अथवा बहिन के प्रति
अन्याय नहीं करे; क्योंकि प्रभु इन सब बातों का
बदला लेता है, जैसा कि हम आप लोगों को
स्पष्ट शब्दों में समझा चुके हैं। 7क्योंकि पर-
मेश्वर ने हमें अशुद्धता के लिए नहीं, बल्कि
पवित्रता के लिए बुलाया है। 8इसलिए जो इस
आदेश का तिरस्कार करता है, वह मनुष्य का
नहीं, बल्कि परमेश्वर का तिरस्कार करता है जो
आप को अपना पवित्र आत्मा प्रदान करता है।

9भ्रातृप्रेम के विषय में आप लोगों को
लिखने की कोई आवश्यकता नहीं; क्योंकि
आप लोग परमेश्वर से ही एक दूसरे को प्यार
करना सीख चुके हैं 10और सारी मकिदुनिया के
भाई-बहिनों के प्रति प्रेम का निर्वाह करते हैं।
प्यारो+! मेरा अनुरोध है कि आप इस विषय में
और भी उन्नति करें। 11आप इस बात पर गर्व
करें कि आप शान्ति में जीवन बिताते हैं और
हर एक अपने-अपने काम में लगा रहता है।
आप लोग मेरे आदेश के अनुसार अपने हाथों
से अपना काम करें। 12इस प्रकार आचरण करने
से अन्य लोग आपका आदर करेंगे और आप
को किसी बात की कमी नहीं होगी।

मृतकों का पुनरुत्थान और मसीह का पुनरागमन

13भाइयो और बहिनो! हम चाहते है कि
मृतकों++ के विषय में आप को निश्चित
जानकारी हो। कहीं ऐसा न हो कि आप उन
लोगों की तरह शोक मनायें, जिन्हें कोई आशा
नहीं है। 14हम तो विश्वास करते हैं कि येशु मर
गये और फिर जी उठे। उसी तरह परमेश्वर
मृतकों को येशु के द्वारा और उन्हीं के साथ ले
आएगा।***

15हमें प्रभु से जो शिक्षा मिली है, उसके
आधार पर हम आप से यह कहते हैं: हम, जो
जीवित हैं और जो प्रभु के आने तक शेष रहेंगे,
मृतकों से पहले महिमा में प्रवेश नहीं करेंगे;
16क्योंकि जब आदेश दिया जायेगा और प्रधान
स्वर्गदूत की वाणी तथा परमेश्वर की तुरही
सुनाई पड़ेगी, तो प्रभु स्वयं स्वर्ग से उतरेंगे। जो
मसीह में मर गए हैं, वे पहले जी उठेंगे।
17इसके बाद हम, जो जीवित हैं और जो उस
समय तक शेष रहेंगे, उन लोगों के साथ बादलों
में ऊपर उठा**** लिये जायेंगे और आकाश में

---

* अथवा, "आपमें से प्रत्येक पुरुष अपनी पत्नी के साथ पवित्रता और सम्मान सहित जीवन व्यतीत करना सीखे।" ** अथवा, "व्यवसाय में" +मूल में, "भाइयो" ++ अक्षरशः, "सोये हुए लोगों" *** अथवा, "उन्हें भी, जो येशु में मर गए, उन्हीं के साथ ले आएगा।" **** अथवा, "आरोहित कर...।"

3 : 13 फिल 1 : 10; 2 थिस 1 : 7, 10 **4 : 1** थिस 3 : 6 **4 : 3** 1 थिस 5 : 23; इब्र 10 : 10; 1 पत 1 : 16 **4 : 4** 1 कुर 6 : 13, 15 **4 : 5** यिर 10 : 25; भज 79 : 6 **4 : 6** भज 94 : 2; 1 कुर 6 : 8 **4 : 7** 2 थिस 2 : 13-14 **4 : 8** लू 10 : 16; यहेज 37 : 14; 1 यो 3 : 24 **4 : 9** यो 13 : 34; यिर 31 : 33-34 **4 : 10** 2 थिस 3 : 4 **4 : 11** इफ 4 : 28; 2 थिस 3 : 8, 12 **4 : 12** कुल 4 : 5; 1 कुर 5 : 12-13 **4 : 13** 1 कुर 15 : 20; इफ 2 : 12 **4 : 14** रोम 14 : 9; 1 कुर 15 : 3-4, 12 **4 : 15** 1 कुर 15 : 51; 7 : 10, 25; प्रव 48 : 11 **4 : 16** 1 कुर 15 : 32; 2 थिस 1 : 7 **4 : 17** 1 यो 12 : 26; 17 : 24

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रभु से मिलेंगे। इस प्रकार हम सदा प्रभु के साथ
रहेंगे। [18]आप इन बातों की चर्चा करते हुए एक
दूसरे को सान्त्वना दिया करें।

प्रभु का आगमन : जागरूकता की आवश्यकता

5 भाइयो और बहिनो! आप लोग अच्छी तरह
जानते हैं कि प्रभु का दिन, रात के चोर की
तरह, आयेगा। इसलिए इसके निश्चित समय
के विषय में* आप को कुछ लिखने की कोई
आवश्यकता नहीं है। [3]जब लोग यह कहेंगे,
"अब तो शान्ति और सुरक्षा है", तभी विनाश,
गर्भवती की प्रसव-पीड़ा की तरह, उन पर
अचानक आ पड़ेगा और वे उससे नहीं बच
सकेंगे।

[4]भाइयो और बहिनो! आप तो अन्धकार में
नहीं हैं कि चोर की भाँति वह दिन आपको आ
दबाए। [5]आप सब ज्योति की सन्तान हैं, दिन
की सन्तान हैं। हम रात या अन्धकार की सन्तान
नहीं हैं। [6]इसलिए हम दूसरों की तरह नहीं
सोयें, बल्कि जागते हुए सतर्क रहें। [7]जो सोते
हैं, वे रात को सोते हैं। जो मतवाले होते हैं, वे
रात को ही मतवाले होते हैं। [8]हम, जो दिन के
हैं, विश्वास एवं प्रेम का कवच और मुक्ति की
आशा का टोप पहन कर सतर्क बने रहें।

[9]परमेश्वर यह नहीं चाहता कि हम उसके
कोपभाजन बनें, बल्कि अपने प्रभु येशु मसीह
के द्वारा मुक्ति प्राप्त करें। [10]मसीह हमारे लिए
मरे, जिससे हम चाहे जीवित हों या मर गये हों,
उन से संयुक्त हो कर जीवन बितायें। [11]इसलिए
आप परस्पर प्रोत्साहन दीजिए और एक दूसरे
का आध्यात्मिक निर्माण कीजिए, जैसा कि
आप कर भी रहे हैं।

विभिन्न परामर्श और अभिवादन

[12]ओ भाइयो और बहिनो! हमारी आप से
एक प्रार्थना है। आप उन व्यक्तियों का आदर
करें, जो आप के बीच परिश्रम करते हैं, प्रभु में
आपके अधिकारी हैं और आप को चेतावनी
देते हैं। [13]आप प्रेमपूर्वक उनका अत्यधिक
सम्मान करें, क्योंकि वे आपके लिए परिश्रम
करते हैं। आपस में मेल रखें।

[14]भाइयो और बहिनो! हम आप से अनुरोध
करते हैं कि आप आलसियों को चेतावनी दें,
भीरुओं को सान्त्वना दें, दुर्बलों को सँभालें
और सब के साथ सहनशीलता का व्यवहार
करें। [15]आप इस बात का ध्यान रखें कि बुराई
के बदले कोई भी किसी के साथ बुराई नहीं
करे। आप सदैव एक दूसरे की और सब मनुष्यों
की भी भलाई करने का प्रयत्न करें।

[16]आप हर समय प्रसन्न रहें, [17]निरन्तर प्रार्थना
करते रहें, [18]सब बातों के लिए परमेश्वर को
धन्यवाद दें; क्योंकि येशु मसीह के अनुसार
आप लोगों के विषय में परमेश्वर की इच्छा
यही है।

[19]आत्मा की प्रेरणा का दमन नहीं करें+
[20]और नबूवत के वरदान की उपेक्षा नहीं करें,
[21]बल्कि सब कुछ परखें और जो अच्छा हो,
उसे स्वीकार करें। [22]हर प्रकार की बुराई से
बचते रहें।

[23]शान्ति का दाता परमेश्वर आप को पूर्ण
रूप से पवित्र करे। आप का सम्पूर्ण व्यक्तित्व
आत्मा, प्राण तथा शरीर हमारे प्रभु येशु मसीह
के आगमन-दिवस पर निर्दोष पाया जाए।
[24]परमेश्वर यह सब करेगा, क्योंकि उसने
आपको बुलाया है और वह विश्वसनीय है।

[25]प्यारो**! आप हमारे लिए भी प्रार्थना करें।

[26]शान्ति के पवित्र चुम्बन से सब भाई-
बहिनों का अभिवादन करें।

[27]आप को प्रभु की शपथ—यह पत्र सब
भाई-बहिनों को पढ़ कर सुनाया जाये।

[28]हमारे प्रभु येशु मसीह की कृपा आप पर
बनी रहे।

---

* शब्दश: "समयों और कालों के विषय में" +शब्दश:, "आत्मा को न बुझायें" ** मूल में, "भाइयो"

5 : 1 मत 24 : 36 **5 : 2** मत 24 : 42-44; 2 पत 3 : 10; प्रक 3 : 3; 16 : 15 **5 : 3** यिर 6 : 14 यो 16 : 21-22; मत 24 : 39; लू 21 : 34-35 **5 : 5** रोम 13 : 12; इफ 5 : 9 **5 : 8** इफ 6 : 14-17; यश 59 : 17 **5 : 9** 1 थिस 1 : 10; 2 थिस 2 : 14 **5 : 10** 1 थिस 4 : 14 रोम 14 : 8-9 **5 : 11** यहू 1 : 20 **5 : 12** 1 कुर 16 : 18; 1 तिम 5 : 17 **5 : 14** 2 थिस 3 : 6,11,15 **5 : 15** नीति 20 : 22; रोम 12 : 17; 1 पत 3 : 9 **5 : 16** फिल 4 : 4 **5 : 17** लू 18 : 1; रोम 12 : 12; कुल 4 : 2 **5 : 18** इफ 5 : 20 **5 : 20** 1 कुर 14 : 29-30, 39 **5 : 21** यो 4 : 1 **5 : 22** अय्य 1 : 18; 2 : 3 **5 : 23** 2 थिस 3 : 16 **5 : 24** 1 कुर 1 : 9; 2 थिस 3 : 3 **5 : 25** 2 थिस 3 : 1 **5 : 26** 1 कुर 16 : 20

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

थिस्सलुनीके नगर की कलीसिया के नाम संत पौलुस का दूसरा पत्र

भूमिका

प्रभु येशु के पुनरागमन को लेकर थिस्सलुनीके नगर की कलीसिया में भ्रम फैला हुआ था। थिस्सलुनीकी कलीसिया के कुछ सदस्य विश्वास करने लगे थे कि प्रभु येशु के पुनरागमन का दिन तो आ चुका है। प्रेरित पौलुस इस विचार को दूर करते हुए कहते हैं कि इसके पूर्व कि प्रभु येशु का पुनरागमन हो, बुराई और दुष्टता अपनी चरमसीमा पर पहुँच जाएंगी और अधर्मियों का नेतृत्व करेगा एक रहस्यमय "मसीह-विरोधी" दुष्टजन!

प्रेरित पौलुस प्रस्तुत पत्र में इस बात पर जोर देते हैं कि दुःख, संकट, अत्याचार, सताव होने पर भी मसीहीजन अपने विश्वास में अडिग रहें, और जैसे प्रेरित पौलुस और उनके सहयोगी अपनी जीविका के लिए हाथों से परिश्रम करते हैं, वैसे ही थिस्सलुनीकी कलीसिया के सदस्य व्यर्थ की बातों में न पड़कर सतत परिश्रम और सत्कर्म करते रहें।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

अभिवादन	1 : 1 —2
प्रशंसा और हितकामना	1 : 3 —12
पुनरागमन के सम्बन्ध में निर्देश	2 : 1 —17
उपदेश और मसीही आचरण	3 : 1 —16
उपसंहार	3 : 17 —18

अभिवादन

1 हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु येशु मसीह
में थिस्सलुनीके नगर की कलीसिया के नाम
पौलुस, सिल्वानुस और तिमोथी का पत्र।
2 हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु येशु मसीह
आप को अनुग्रह तथा शान्ति प्रदान करें!

मसीह के पुनरागमन पर न्याय

3 भाइयो और बहिनो! आप लोगों के विषय
में परमेश्वर को निरन्तर धन्यवाद देना हमारा
उचित कर्त्तव्य है; क्योंकि आपका विश्वास
बहुत अच्छी तरह फल-फूल रहा है और
आप-सब का एक दूसरे के प्रति प्रेम बढ़ रहा
है। 4 इसलिए हम स्वयं परमेश्वर की
कलीसियाओं में आप लोगों पर गौरव करते हैं,
क्योंकि आप धैर्य और विश्वास के साथ हर
प्रकार का अत्याचार और कष्ट सहन करते हैं।
5 इसके द्वारा परमेश्वर का वह निर्णय न्यायोचित
सिद्ध हो जाता है, जो आप को परमेश्वर के
राज्य के योग्य समझेगा, जिसके लिए आप अब
दुःख भोगते हैं।

6 परमेश्वर की दृष्टि में यह सर्वथा न्याय-
संगत है कि वह उन लोगों को कष्ट दे जो
आपको कष्ट दे रहे हैं 7-8 और आप को, जो
कष्ट सह रहे हैं, और हम को, उस समय विश्राम
दे, जब प्रभु येशु प्रकट होंगे और अपने
शक्तिशाली दूतों के साथ प्रज्वलित अग्नि में

1 : 1 1 थिस 1 : 1 **1 : 2** रोम 1 : 7 **1 : 3** 2 थिस 2 : 13; 1 थिस 1 : 2-3 **1 : 4** 2 कुर 7 : 4; प्रक 1 : 9; 1 थिस 2 : 19; 3 : 2, 7 **1 : 5** 1 थिस 2 : 12; फिल 1 : 28; लू 20 : 35 **1 : 6** प्रक 18 : 6-7; रोम 12 : 19 **1 : 7** मत 25 : 31; 1 थिस 3 : 13; 4 : 16 **1 : 8** रोम 2 : 8; यश 66 : 15; यिर 10 : 25; भज 79 : 6; 1 पत 4 : 17

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आकाश से उतरेंगे। तब वह उन लोगों को
दण्डित करेंगे, जो परमेश्वर को स्वीकार नहीं
करते और हमारे प्रभु येशु का शुभ समाचार
सुनने से इन्कार करते हैं। 9ऐसे लोगों को प्रभु
के सान्निध्य और उनके तेजोमय सामर्थ्य से
पृथक होकर अनंत विनाश का दण्ड मिलेगा।
10यह उस दिन होगा जब प्रभु अपने संतों में
महिमा-मंडित होने और उन सब में आश्चर्य
का कारण बनने आयेंगे, जिन्होंने विश्वास
किया है। और विश्वास का विषय तो वह साक्षी
है, जो हमने आपको दी है।

11अत: हम निरन्तर आप लोगों के लिए यह
प्रार्थना करते हैं कि हमारा परमेश्वर आप को
अपने बुलावे के योग्य बना दे और आपकी
प्रत्येक सदिच्छा तथा विश्वास से किया हुआ
आपका प्रत्येक कार्य अपने सामर्थ्य से पूर्णता
तक पहुँचा दे। 12इस प्रकार हमारे परमेश्वर की
और प्रभु येशु मसीह की कृपा के द्वारा हमारे प्रभु
येशु का नाम आप में गौरवान्वित होगा, और
आप लोग भी उन में गौरवान्वित होंगे।

मसीह का आगमन

2 भाइयो और बहिनो! हमारे प्रभु येशु मसीह
के आगमन और उनके सामने हम लोगों
के एकत्र होने के विषय में हमारा एक निवेदन
यह है: 2किसी आत्मिक प्रकाशन, वक्तव्य
अथवा पत्र के कारण, जो हमारी ओर से जान
पड़े, आप लोग आसानी से यह समझ कर न
उत्तेजित हों और न घबरायें कि प्रभु का दिन आ
चुका है। 3कोई आप लोगों को किसी भी तरह
न बहकाये। वह दिन तब तक नहीं आ सकता
जब तक पहले धर्म-विद्रोह न हो जाये और वह
"अधर्म-पुरुष" प्रकट न हो, जिसका विनाश
अनिवार्य है। 4वह अपने घमण्ड में उन सब का
विरोध करता और उन से अपने को बड़ा मानता
है, जो देवता कहलाते या पूज्य समझे जाते हैं,
यहाँ तक कि वह परमेश्वर के मन्दिर में
विराजमान हो कर स्वयं ईश्वर होने का दावा
करता है।

5क्या आप लोगों को याद नहीं है कि आप
के बीच रहते समय मैं आप को ये सब बातें
समझाया करता था? 6आप जानते हैं कि कौन-
सी शक्ति अभी अवरोध करती है, जिससे वह
अपने समय से पहले प्रकट न हो। 7क्योंकि अधर्म
का रहस्य अभी भी क्रियाशील है, किन्तु वह
तब तक गुप्त रहेगा, जब तक अवरोध करने
वाला न हट जाये। 8तब वह "अधर्मी" प्रकट
होगा, जिसे प्रभु येशु अपने मुख के निश्वास से
नष्ट करेंगे और अपने आगमन के प्रताप से भस्म
कर देंगे।

9परन्तु "अधर्मी" का आगमन शैतान के
प्रभाव से है, जो हर प्रकार के शक्तिशाली चिह्न
और कपटपूर्ण चमत्कार दिखाकर 10नाश होने
वाले व्यक्तियों को हर प्रकार के अधर्ममय भ्रम
में डालता है; क्योंकि उन्होंने उस सत्य से प्रेम
करना स्वीकार नहीं किया, जो उन्हें बचाने में
समर्थ था। 11यही कारण है कि परमेश्वर उन
पर महाभ्रम प्रेषित करता है, जिससे वे झूठ पर
विश्वास करें और 12वे सब दण्डित किये जायें,
जिन्होंने सत्य पर विश्वास नहीं किया और
अधर्म का पक्ष लिया है।

मुक्ति प्राप्त करने के लिए आप चुने गये हैं

13भाइयो और बहिनो! प्रभु आपको प्यार
करता है। हमें प्रभु परमेश्वर को आप लोगों के
विषय में निरन्तर धन्यवाद देना चाहिए। परमेश्वर
ने प्रथम फल के रूप में* आपको चुना, जिससे
आप पवित्र करनेवाले आत्मा द्वारा और सत्य में
अपने विश्वास द्वारा मुक्ति प्राप्त करें। 14उसी
उद्देश्य के लिए उसने हमारे शुभ समाचार के
प्रचार द्वारा आप को बुलाया, जिससे आप हमारे
प्रभु येशु मसीह की महिमा को प्राप्त करें।

---

* अथवा, "आरम्भ से"

1 : 9 यश 2 : 10, 19, 21 **1 : 10** 1 थिस 3 : 13; कुल 3 : 4; भज 89 : 7; 69 : 36; यश 49 : 3; 2 : 11, 17 **1 : 11** 1 थिस 1 : 2-3 **1 : 12** यश 24 : 15; 66 : 5; मला 1 : 11 **2 : 1** 1 थिस 4 : 13-17 **2 : 3** 1 तिम 4 : 1; यू 17 : 12; 1 यो 2 : 18; 4 : 3 **2 : 4** दान 11 : 36; यहेज 28 : 2 **2 : 7** प्रे 20 : 29 **2 : 8** यश 11 : 4 अय्य 4 : 9; प्रक 19 : 15, 20 **2 : 9** मत 24 : 24; प्रक 13 : 11-13 **2 : 10** 2 कुर 2 : 15; 4 : 3 **2 : 11** 2 तिम 4 : 4 **2 : 13** इफ 1 : 4; व्य 33 : 12; 1 थिस 2 : 13; 4 : 7 **2 : 14** 1 थिस 4 : 7; 5 : 9

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

15इसलिए भाइयो और बहिनो ! आप विश्वास
में दृढ़ बनें और उन परम्पराओं का पालन करें,
जिनकी शिक्षा आपको मौखिक रूप से या पत्र
के द्वारा हम से मिली है। 16स्वयं हमारे प्रभु येशु
मसीह तथा हमारा पिता परमेश्वर, जिसने हमसे
इतना प्रेम किया और हमें चिरस्थायी सान्त्वना
तथा उज्ज्वल आशा का वरदान दिया है, 17आप
केहृदय को सान्त्वना देते रहें तथा हर प्रकार के
भले काम और वचन में सुदृढ़ बनाये रखें।

हमारे लिए प्रार्थना कीजिये

3 भाइयो और बहिनो! अन्त में यह: आप
हमारे लिए प्रार्थना करें जिससे प्रभु का
वचन शीघ्र ही फैल जाये तथा सब जगह
सम्मान के साथ स्वीकार किया जाए। जैसा कि
आपलोगों के बीच में हुआ है; 2और यह भी
कि टेढ़े तथा दुष्ट लोगों से हम बच निकलें,
क्योंकि सभी विश्वासी नहीं हैं। 3परन्तु प्रभु
विश्वसनीय+ है। वह आप लोगों को सुदृढ़
बनाये रखेगा और बुराई से++ आपकी रक्षा करेगा।
4हम को, प्रभु में, आप लोगों पर पूरा भरोसा
है कि आप हमारे आदेशों का पालन कर रहे हैं
और करते रहेंगे। 5प्रभु परमेश्वर* आपके हृदय
को ईश्वरीय प्रेम तथा मसीह के धैर्य की ओर
अभिमुख करे।

परिश्रम की रोटी

6प्यारो** ! हम आप को अपने प्रभु येशु
मसीह के नाम पर आदेश देते हैं कि आप उन
भाई-बहिनों से अलग रहें, जो काम नहीं करते
और उस परम्परा के अनुसार नहीं चलते, जो
आप लोगों को हम से प्राप्त हुई है। 7आप लोगों
को हमारा अनुकरण कैसा करना चाहिए—आप
यह स्वयं जानते हैं। आपके बीच रहते समय
हम अकर्मण्य नहीं थे। 8हमने किसी के यहाँ
मुफ्त में रोटी नहीं खायी, बल्कि हम कठोर
परिश्रम से रात-दिन काम करते रहे ताकि आप
लोगों में से किसी के लिए भी भार न बनें।
9हमें इसका अधिकार नहीं था—ऐसी बात
नहीं है, बल्कि हम आपके सामने एक आदर्श
रखना चाहते थे, जिसका आप अनुकरण कर
सकें। 10आप के बीच रहते समय हमने आप
को यह नियम दिया : यदि कोई काम करना न
चाहे, तो वह खाने भी न पाए। 11अब हमारे
सुनने में आता है कि आप में से कुछ लोग
आलस्य का जीवन बिताते हैं। वे स्वयं काम
नहीं करते और दूसरों के काम में बाधा डालते
हैं। 12हम ऐसे लोगों को प्रभु येशु मसीह के नाम
पर यह आदेश देते हैं और उन से अनुरोध करते
हैं कि वे चुपचाप काम करते रहें और अपनी
कमाई की रोटी खायें।

13भाइयो और बहिनो! आप लोग भलाई
करते हुए हिम्मत न हारें। 14यदि कोई इस पत्र
में बताई गई हमारी बातों को न माने, तो उस
पर नजर रखें और उससे सम्बन्ध तोड़ लें,
जिससे वह अपने आचरण पर लज्जित हो।
15फिर भी आप उसके साथ शत्रु-जैसा व्यवहार
नहीं करें, बल्कि उसे भाई अथवा बहिन की
तरह समझायें।

उपसंहार

16शान्ति का प्रभु स्वयं आप लोगों को हर
समय और हर प्रकार शान्ति प्रदान करता रहे!
प्रभु आप सब के साथ हो!

17मैं-पौलुस अपने हाथ से यह नमस्कार
लिख रहा हूँ। यह मेरे सब पत्रों की पहचान है।
मैं इसी प्रकार लिखता हूँ।

18हमारे प्रभु येशु मसीह की कृपा आप सब
पर बनी रहे!

+ अथवा, ''सत्यप्रतिज्ञ''। ++ अथवा, ''बुरे व्यक्ति से, दुष्ट शैतान से'' * अथवा, ''प्रभु येशु आपके हृदय को परमेश्वर के प्रेम...'' ** मूल में ''भाइयो''

2 : 16 1 थिस 3 : 11-13 **3 : 1** कुल 4 : 3; 1 थिस 5 : 25 **3 : 3** 1 थिस 5 : 24 **3 : 4** 1 थिस 4 : 10; गल 5 : 10; 2 कुर 7 : 16 **3 : 6** मत 18 : 17; रोम 16 : 17; 1 थिस 5 : 14; 4 : 1 **3 : 7** 1 थिस 2 : 1; 1 : 6; फिल 3 : 17 **3 : 8** 1 कुर 4 : 12; 1 थिस 2 : 9 **3 : 9** 1 कुर 4 : 16 मत 10 : 10; 1 थिस 1 : 6-7 **3 : 10** उत 3 : 19; 1 थिस 3 : 4; 4 : 11 **3 :11** 1 थिस 5 : 14 **3 : 12** 1 थिस 4 : 11 **3 : 13** गल 6 : 9 **3 : 14** 1 कुर 5 : 9, 11 **3 : 15** थिस 5 : 13-14 **3 : 16** 1 थिस 5 : 23 **3 : 17** 1 कुर 16 : 21

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तिमोथी के नाम संत पौलुस का पहला पत्र

भूमिका

युवक तिमोथी एशिया माइनर के रहने वाले नव-मसीही थे। उनकी माँ यहूदी जाति की तथा पिता यूनानी जाति का था। वह प्रेरित पौलुस की धर्मप्रचार यात्राओं में उनकी सहायता करने के लिए उनके सहयात्री बन गए थे। स्थान-स्थान पर विश्वासी-गण (कलीसिया) की स्थायी देखभाल करने के लिए ''पास्तर'' (मेषपालक, धर्मसेवक) नियुक्त हुए। उनके मार्गदर्शन के लिए ''पास्तरीय संदेशपत्रों'' की रचना हुई। प्रस्तुत पत्र **''तिमोथी के नाम संत पौलुस का पहला पत्र''** कहलाता है। लेखक ने प्रस्तुत पत्र में तीन प्रमुख बातें समझायी है:

(1) सर्वप्रथम वह कलीसिया में व्याप्त झूठी शिक्षा के विरुद्ध कठोर चेतावनी देते हैं। यह झूठी शिक्षा यहूदी तथा गैर-यहूदी धार्मिक विचारों का विचित्र सम्मिश्रण थी। इस शिक्षा के अनुसार भौतिक संसार बुरा है। मनुष्य विशेष गुप्त ज्ञान के द्वारा मुक्ति, उद्धार पा सकता है, और जो मनुष्य मुक्ति पाना चाहता है, उसे विशेष प्रकार के भोज्य पदार्थों से परहेज करना होगा, और अविवाहित रहना होगा।

(2) तत्पश्चात् लेखक कलीसियाई संगठन तथा आराधना-विधि के विषय में निर्देश देते हैं। वह इस पर विशेष प्रकाश डालते हैं कि मसीही धर्मसेवक का चरित्र किस प्रकार का होना चाहिए, और उसमें कौन-कौन से सद्‌गुण होने चाहिए।

(3) अन्त में तिमोथी को यह सलाह दी जाती है कि उन्हें प्रभु येशु के सच्चे सेवक के रूप में कैसा आचरण करना चाहिए, और कलीसिया के भिन्न-भिन्न समूहों के प्रति उनका क्या दायित्व है।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

अभिवादन	**1 : 1 - 2**
कलीसिया तथा उसके धर्म-सेवक	**1 : 3—3 : 16**
तिमोथी को उनके कार्य के लिए निर्देश	**4 : 1—6 : 21**

अभिवादन

1 1-2विश्वास में सच्चे पुत्र तिमोथी के नाम
पौलुस का पत्र, जो हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर
और हमारी आशा के आधार येशु मसीह के
आदेशानुसार येशु मसीह का प्रेरित है।
पिता परमेश्वर और हमारे प्रभु येशु मसीह
तुम्हें अनुग्रह, दया और शान्ति प्रदान करें!

भ्रामक धारणाओं से सावधान रहो

3मैंने मकिदुनिया प्रदेश के लिए प्रस्थान
करते समय तुम से इफिसुस नगर में रह जाने
का अनुरोध किया था, जिससे तुम कुछ लोगों
को यह आदेश दे सको कि वे भ्रान्त धारणाओं
की शिक्षा नहीं दें 4और कल्पित कथाओं एवं
अंतहीन वंशावलियों के फेर में नहीं पड़ें। इन
से वाद-विवाद को बढ़ावा मिलता है, किन्तु
उस ईश्वरीय प्रबन्ध का ज्ञान प्राप्त नहीं होता,
जो विश्वास पर आधारित है। 5इस आदेश का
लक्ष्य वह प्रेम है, जो शुद्ध हृदय, निर्दोष अन्तः-
करण और निष्कपट विश्वास से उत्पन्न होता
है। 6कुछ लोग इस मार्ग को छोड़ कर निरर्थक

1 : 1 कुल 1 : 17 1 : 2 तीत 1 : 4 1 : 3 प्रे 20 : 1 1 : 4 1 तिम 4 : 7 1 : 5 रोम 13 : 10; गल 5 : 6 1 : 6 1 तिम 6 : 4, 20

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वाद-विवाद में भटक गये हैं। 7वे व्यवस्था के
शास्त्री होने का दावा करते हैं, किन्तु वे जिन
शब्दों का प्रयोग करते हैं और जिन विषयों पर
इतना बल देते हैं, उन्हें स्वयं नहीं समझते हैं।
8हम-सब जानते हैं कि व्यवस्था उत्तम वस्तु
है बशर्ते उसका उचित रीति से उपयोग किया
जाये। 9हमें याद रहे कि व्यवस्था धर्मियों के
लिए निर्धारित नहीं हुई, बल्कि उपद्रवी और
निरंकुश लोगों के लिए, विधर्मियों और पापियों,
नास्तिकों और धर्मविरोधियों, मातृ-पितृ-
घातकों, हत्यारों, 10व्यभिचारियों और
पुरुषगामियों, मानव-विक्रेताओं, असत्य-
वादियों, झूठी शपथ खानेवालों और उन सब
मनुष्यों के लिए जो उस हितकारी शिक्षा का
विरोध करते हैं, 11जो शुभसमाचार के अनुरूप
है। यह शुभ समाचार परमधन्य परमेश्वर की
महिमा प्रकट करता है और मुझे सौंपा गया है।

परमेश्वर की कृपा के लिए कृतज्ञता

12हमारे प्रभु येशु मसीह को मैं धन्यवाद देता
हूँ, जिन्होंने मुझे बल दिया और मुझे विश्वास
के योग्य समझ कर अपनी सेवा में नियुक्त
किया है। 13मैं तो पहले ईश-निन्दक, अत्याचारी
और उद्दण्ड था; किन्तु मुझ पर दया की गयी है,
क्योंकि अविश्वास के कारण मैं यह नहीं
जानता था कि मैं क्या कर रहा हँ। 14हमारे प्रभु
का अनुग्रह प्रचुर मात्रा में मुझे प्राप्त हुआ और
साथ ही वह विश्वास और प्रेम भी, जो हमें येशु
मसीह द्वारा मिलता है।
15यह कथन विश्वसनीय और सर्वथा मानने
योग्य है कि येशु मसीह पापियों को बचाने के
लिए संसार में आये, और उन में से सबसे बड़ा
पापी मैं हूँ। 16मुझ पर इसीलिए दया की गयी
है कि येशु मसीह सब से पहले मुझ में अपनी
सम्पूर्ण सहनशीलता प्रदर्शित करें और उन
लोगों के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत करें, जो
शाश्वत जीवन प्राप्त करने के लिए उनमें
विश्वास करेंगे। 17युगों के अधिपति, अविनाशी,
अदृश्य और अतुल्य परमेश्वर का सम्मान तथा
महिमा युगानुयुग होती रहे!

विश्वास को विशुद्ध रखो

18-19पुत्र तिमोथी! जो नबूवतें पहले तुम्हारे
विषय में हो चुकी हैं, उनके अनुरूप मैं तुम्हें
यह भार सौंप रहा हूँ। तुम उनसे बल ग्रहण करो
और विश्वास एवं शुद्ध अन्तःकरण से सज्जित
हो कर अच्छी लड़ाई लड़ो। कुछ लोगों ने
अपने अन्तःकरण की वाणी का तिरस्कार किया
और इस कारण उनकी विश्वास-रूपी नौका
डूब गई! 20इन में हुमिनयुस और सिकन्दर हैं।
मैंने उन्हें शैतान के हवाले कर दिया, जिससे वे
यह शिक्षा लें कि परमेश्वर की निन्दा नहीं करनी
चाहिए।

सामूहिक आराधना

2 मैं सब से पहले यह अनुरोध करता हूँ कि
सभी मनुष्यों के लिए, विशेष रूप से
2राजाओं और सब अधिकारियों के लिए,
अनुनय-विनय, प्रार्थना, निवेदन तथा धन्यवाद
अर्पित किया जाये, जिससे हम भक्ति तथा
मर्यादा के साथ निर्विघ्न तथा शान्त जीवन बिता
सकें। 3यह उचित भी है और हमारे उद्धारकर्ता
परमेश्वर को प्रिय भी है, 4क्योंकि वह चाहता
है कि सभी मनुष्य मुक्ति प्राप्त करें और सत्य
को जानें। 5केवल एक ही परमेश्वर है और
परमेश्वर तथा मनुष्यों के बीच केवल एक ही
मध्यस्थ हैं, अर्थात् येशु मसीह, जो स्वयं मनुष्य
हैं 6और जिन्होंने सब के विमोचन के लिए
अपने को अर्पित किया। उन्होंने उपयुक्त समय
पर इसके सम्बन्ध में अपनी साक्षी दी। 7मैं सच
कहता हूँ, झूठ नहीं बोलता। मैं इसी का प्रचारक
तथा प्रेरित, गैर-यहूदियों के लिए विश्वास तथा
सत्य का शिक्षक नियुक्त हुआ हूँ।
8मैं चाहता हूँ कि सब जगह पुरुष, बैर तथा
विवाद छोड़कर, श्रद्धापूर्वक हाथ ऊपर उठा

1 : 8 रोम 7 : 12 **1 : 10** 1 तिम 6 : 3 **1 : 11** 1 तिम 6 : 15 **1 : 12** प्रे 9 : 15; 1 कुर 15 : 9-10; गल 1 : 13-16 **1 : 15** लू 15 : 2; 19 : 10 **1 : 17** रोम 16 : 27 **1 : 18** 1 तिम 6 : 12; यहू 3 **1 : 19** 1 तिम 3 : 9; 6 : 10 **1 : 20** 2 तिम 2 : 17; 1 कुर 5 : 5 **2 : 1** फिल 4 : 6 **2 : 3** 1 तिम 1 : 1; 4 : 10 **2 : 4** यहेज 18 : 23; 2 पत 3 : 9 **2 : 5** रोम 3 : 29-30; इब्र 12 : 24 **2 : 6** गल 1 : 4; 2 : 20; तीत 2 : 14 **2 : 7** 2 तिम 1 : 11; गल 2 : 7-8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कर प्रार्थना करें। 9मैं यह भी चाहता हूँ कि
स्त्रियाँ शिष्ट वेशभूषा में मर्यादा और शालीनता
का ध्यान रखें और कृत्रिम केश-विन्यास,
स्वर्ण, मोतियों एवं कीमती वस्त्रों से नहीं,
10बल्कि सत्कर्मों से अपना बनाव-सिंगार करें,
जैसा कि उन स्त्रियों को शोभा देता है, जो
ईश्वर-भक्त होने का दावा करती हैं।

11धर्मशिक्षा के समय स्त्रियाँ पूर्ण अधीनता
के साथ शान्त रहें। 12मेरी अनुमति नहीं है कि
वे ही शिक्षा दें अथवा पुरुषों पर अधिकार
जतायें। वे शांत रहें; 13क्योंकि पहले आदम की
रचना हुई, तब हव्वा की। 14और आदम बहकावे
में नहीं पड़ा, बल्कि स्त्री ने बहकावे में पड़ कर
अपराध किया। 15फिर भी यदि स्त्रियाँ संयम से
विश्वास, प्रेम और पवित्रता में दृढ़ बनी रहेंगी,
तो वे+ अपने मातृत्व द्वारा मुक्ति प्राप्त करेंगी।

कलीसिया के कार्यकर्ता

3 यह कथन विश्वसनीय है। यदि कोई
धर्माध्यक्ष* बनना चाहता है, तो वह एक
अच्छा कार्य करने की कामना करता है।
2धर्माध्यक्ष को चाहिए कि वह अनिन्दनीय,
पत्नीव्रती**, संयमी, समझदार, भद्र, अतिथि-
प्रेमी और कुशल शिक्षक हो। 3वह मद्यसेवी या
क्रोधी नहीं, बल्कि सहनशील हो। वह झगड़ालू
या लोभी न हो। 4वह अपने घर का अच्छा
प्रबन्ध करे और गम्भीरतापूर्वक अपने बच्चों को
अनुशासन में रखे। 5यदि कोई अपने घर का
प्रबन्ध नहीं कर सकता, तो वह परमेश्वर की
कलीसिया की देखभाल कैसे करेगा? 6वह
नवदीक्षित नहीं हो, अन्यथा वह घमंड से भर
जायेगा और उसे भी वैसा ही दंड मिलेगा जैसा
शैतान को मिला था। 7यह भी आवश्यक है कि
बाहरी जनता में उसके विषय में अच्छी बातें
कही जाती हों। कहीं ऐसा न हो कि उसकी
बदनामी हो और वह शैतान के फन्दे में पड़
जाये।

8इसी तरह धर्मसेवक++ आचरण में गम्भीर
तथा निष्कपट हों। वे न तो मद्यसेवी हों और न
लोभी। 9वे निर्मल अन्तःकरण से विश्वास के
रहस्य के प्रति ईमानदार रहें। 10पहले उनकी
परीक्षा ली जाये और निष्कलंक प्रमाणित हो
जाने के बाद ही वे धर्मसेवकों का कार्य करें।

11इसी प्रकार धर्मसेविकाएँ+++ परनिन्दक
नहीं, बल्कि गम्भीर, संयमी और सब बातों में
विश्वसनीय हों।

12धर्मसेवक पत्नीव्रती हों और अपने बच्चों
तथा घर का अच्छा प्रबन्ध करने वाले हों। 13जो
धर्मसेवक अपना सेवाकार्य अच्छी तरह पूरा
करते हैं, वे प्रतिष्ठा प्राप्त करते हैं और येशु
मसीह के विश्वास के विषय में निर्भीकता से
बोल सकते हैं।

धर्म का रहस्य

14मुझे आशा है कि मैं शीघ्र ही तुम्हारे पास
आऊँगा, किन्तु यह पत्र इसलिए लिख रहा हूँ:
15यदि मेरे आने में देर हो जाये, तो तुम्हें इस बात
की जानकारी रहे कि परमेश्वर के परिवार***
में लोगों का आचरण कैसा होना चाहिए।
परमेश्वर का परिवार जीवन्त परमेश्वर की
कलीसिया है; वह सत्य का स्तम्भ और
मूलाधार है।

16धर्म का यह रहस्य निस्सन्देह महान् है:
मसीह मनुष्य के रूप में प्रकट हुए,
पवित्र आत्मा के द्वारा सत्य प्रमाणित हुए†,
और स्वर्गदूतों को दिखाई दिये।
अन्यजातियों में उनका प्रचार हुआ,
संसार भर में उन पर विश्वास किया गया
और वह महिमा में ऊपर उठा**** लिये
गये।

+ मूल में, ''वह'' * अथवा, ''निरीक्षक, अधीक्षक'' ** अथवा, ''एकपत्नीव्रत'' ++ अथवा, ''डीकन, उपपुरोहित'' +++अथवा, ''उनकी पत्नियाँ'' *** अथवा, ''घर'' † शब्दशः, ''जो देह में प्रकट हुए, आत्मा में धार्मिक ठहराये गये''। **** अथवा, ''आरोहित कर...।''

2 : 9 1 पत 3 : 3-5 **2 : 10** 1 तिम 5 : 10 **2 : 11** इफ 5 : 22 **2 : 12** 1 कुर 14 : 34; उत 3 : 16 **2 : 13** उत 1 : 27; 2 : 7, 22; 1 कुर 11 : 8-9 **2 : 14** उत 3 : 6; 2 कुर 11 : 3 **3 : 1** प्रे 20 : 28 **3 : 2** तीत 1 : 6-7 **3 : 4** 1 शम 2 : 12 **3 : 7** 1 तिम 5 : 10; 2 कुर 8 : 21; 1 कुर 5 : 12-13 **3 : 8** फिल 1 : 1; प्रे 6 : 3 **3 : 11** तीत 2 : 3 **3 : 15** 2 तिम 2 : 20; इफ 2 : 19-22 **3 : 16** यो 1 : 14; 16 : 10; रोम 1 : 4; मक 16 : 19

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

झूठे प्रचारकों से सावधान

4 पवित्र आत्मा स्पष्ट शब्दों में कहता है कि
अन्तिम समय में कुछ लोग विश्वास
अस्वीकार करेंगे, क्योंकि वे बहकाने वाली
आत्माओं पर और भूत-प्रेतों से प्राप्त शिक्षाओं
पर ध्यान देंगे। 2वे कपटी लोगों के पाखण्ड द्वारा
भटकाये जायेंगे, जिनके अन्तःकरण पर शैतान
की मुहर लग चुकी है, 3जो विवाह का निषेध
करते हैं और कुछ भोज्य वस्तुओं से परहेज
करने का आदेश देते हैं—यद्यपि परमेश्वर ने
उन वस्तुओं की सृष्टि इसलिए की है कि सत्य
जानने वाले विश्वासी धन्यवाद देते हुए उन्हें
ग्रहण करें। 4क्योंकि परमेश्वर ने जो कुछ
बनाया, वह सब अच्छा है और ऐसा कुछ भी
त्याज्य नहीं है, जो धन्यवाद के साथ ग्रहण
किया जाता है। 5वह परमेश्वर के वचन और
प्रार्थना द्वारा पवित्र हो जाता है।

प्रभु येशु का उत्तम सेवक

6तुम ये सब बातें भाइयों एवं बहिनों को
समझाओ। इस प्रकार तुम येशु मसीह के उत्तम
सेवक बने रहोगे, और विश्वास के सिद्धान्तों से
एवं उस प्रामाणिक शिक्षा से बल ग्रहण करते
रहोगे, जिसका तुम ईमानदारी से पालन करते
आ रहे हो। 7अधार्मिक एवं निस्सार+ कल्पित
कथाओं से दूर रहो और भक्ति की साधना में
लगे रहो।
8शरीर के व्यायाम से कुछ लाभ तो होता है,
किन्तु भक्ति से जो लाभ मिलता है, वह असीम
है; क्योंकि वह जीवन का आश्वासन देती है,
इहलोक में भी और परलोक में भी। 9यह कथन
विश्वसनीय और सर्वथा मानने योग्य है। 10यही
कारण है कि हम परिश्रम करते रहते और संघर्ष
में लगे रहते हैं; क्योंकि हमने जीवन्त परमेश्वर
पर भरोसा रखा है, जो सब मनुष्यों का और
विशेष रूप से विश्वासियों का उद्धारकर्ता है।
11तुम ये आदेश और यह शिक्षा दिया करो।
12तुम्हारी युवावस्था के कारण कोई तुम्हारा
तिरस्कार न करे। तुम वचन, कर्म, प्रेम,
विश्वास और शुद्धता में विश्वासियों के आदर्श
बनो। 13मेरे आने तक धर्मग्रन्थ का पाठ करने
और प्रवचन तथा शिक्षा देने में लगे रहो। 14उस
आध्यात्मिक वरदान की उपेक्षा मत करो, जो
तुम में विद्यमान है और तुम्हें नबूवत द्वारा
धर्मवृद्धों के हाथ रखते समय* प्राप्त हुआ था।
15इन बातों का ध्यान रखो और इन में पूर्ण रूप
से लीन रहो, जिससे सब लोग तुम्हारी उन्नति
देख सकें। 16तुम अपने विषय में जागरूक रहो
तथा अपनी शिक्षा के विषय में सावधान रहो।
इन बातों में दृढ़ बने रहो। ऐसा करने से तुम
अपनी तथा अपने श्रोताओं की मुक्ति का कारण
बनोगे।

विश्वासियों से व्यवहार

5 बड़े-बूढ़े को कभी नहीं डाँटो, बल्कि
उससे इस प्रकार अनुरोध करो, मानो वह
तुम्हारा पिता हो। युवकों को भाई, 2वृद्धाओं को
माता और युवतियों को बहिन समझ कर उनके
साथ शुद्ध मन से व्यवहार करो।

विधवाएँ

3उन विधवाओं का सम्मान और सहायता
करो, जो सचमुच "विधवा" हैं। यदि किसी
विधवा के अपने पुत्र-पुत्रियाँ अथवा पौत्र-
पौत्रियाँ हों, तो वे यह समझें कि उन्हें सब से
पहले अपने निजी परिवार के प्रति धर्म निभाना
और अपने माता-पिता के उपकारों को थोड़ा-
बहुत लौटाना चाहिए, क्योंकि यह परमेश्वर
को प्रिय है। 5जो सचमुत विधवा है, जिसका
कोई भी नहीं है, वह परमेश्वर पर भरोसा रख
कर रात-दिन प्रार्थना तथा उपासना में लगी
रहती है। 6किन्तु जो भोग-विलास का जीवन
बिताती है, वह जीते हुए भी मर चुकी है। 7तुम
इसके सम्बन्ध में उन्हें चेतावनी दो, जिससे
उनका चरित्र निर्दोष बना रहे।

+शब्दशः, "दादी-नानी की सी" * अक्षरशः "धर्मवृद्ध-मण्डल के हस्तारोपण के समय"

4 : 1 2 तिम 3 : 1; 2 पत 3 : 3; यहू 18; 1 यो 2 : 18 **4 : 3** उत 9 : 3; 1 कुर 10 : 30-31 **4 : 4** उत 1 : 31; प्रे 10 : 15 **4 : 7** 1 तिम 1 : 4; 6 : 20; 2 तिम 2 : 16, 23; तीत 1 : 14; 3 : 9 **4 : 8** 1 तिम 6 : 6 **4 : 9** 1 तिम 1 : 15 **4 : 10** 1 तिम 2 : 3-4 **4 : 12** तीत 2 : 15 **4 : 14** 1 तिम 5 : 22; 2 तिम 1 : 6; प्रे 6 : 6; 8 : 17 **4 : 16** रोम 11 : 14 **5 : 1** लेव 19 : 32 **5 : 5** यिर 49 : 11; लू 2 : 37; 18 : 7; यहूदी 8 : 4-6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

8यदि कोई व्यक्ति अपने सम्बन्धियों की,
विशेष कर अपने निजी परिवार की देख-रेख
नहीं करता, वह विश्वास को त्याग चुका और
अविश्वासी से भी बुरा है।
9विधवाओं की सूची में उसी का नाम लिखा
जाये, जो साठ वर्ष से कम की न हो और जो
पतिव्रता पत्नी रह चुकी हो 10और अपने भले
कामों के कारण नेकनाम हो, जिसने अपने
बच्चों का अच्छा पालन-पोषण किया हो,
अतिथियों की सेवा की हो, सन्तों के पैर धोये
हों, दीन-दुखियों की सहायता की हो, अर्थात्
हर प्रकार के परोपकार में लगी रही हो। 11कम
उमर की विधवाओं का नाम सूची में न लिखा
जाये। कारण यह है कि जब उनकी वासना उन्हें
मसीह से विमुख करती है, तो वे विवाह करना
चाहती हैं 12और इस प्रकार अपनी पहली
प्रतिज्ञा+ भंग कर दोषी बनती हैं । 13इसके
अतिरिक्त वे आलसी रहना सीख जाती हैं।
घर-घर घूमना उनकी आदत हो जाती है और
वे आलसी ही नहीं रहतीं, बल्कि बकबक
करतीं, दूसरों के काम में दखल देतीं और
अशोभनीय बातों की चर्चा करती हैं। 14इसलिए
मैं चाहता हूँ कि कम उमर की विधवाएँ विवाह
करें, माता बनें, अपने घर का प्रबन्ध करें और
विरोधी को हमारी निन्दा करने का अवसर न
दें; 15क्योंकि कुछ विधवाएं सन्मार्ग से भटक
कर शैतान के मार्ग पर चलने लगी हैं।
16यदि विश्वासी स्त्री के परिवार में विधवाएँ
हैं, तो वह उनकी सहायता करे, जिससे उनका
भार कलीसिया पर नहीं पड़े और कलीसिया
उन्हीं की सहायता कर सके जो वास्तव में
विधवाएं हैं।

धर्मवृद्ध

17जो धर्मवृद्ध नेतृत्व करने में सफलता प्राप्त
करते हैं, वे दुगुने सम्मान के योग्य समझे
जायें—विशेष रूप से वे, जो प्रचार और शिक्षा-
कार्य में लगे हुए हैं; 18क्योंकि धर्मग्रन्थ कहता
है, ''तुम दँवरी करते बैल के मुँह पर मोहरा मत
लगाओ'' और फिर, ''मजदूर को अपनी
उचित मजदूरी का अधिकार है।'' 19जब तक
दो या तीन गवाह उसका समर्थन न करें, तब
तक किसी धर्मवृद्ध के विरुद्ध कोई अभियोग
स्वीकार मत करो। 20जो पाप करते हैं, उन्हें सब
के सामने चेतावनी दो, जिससे दूसरे लोगों को
भी पाप करने में डर लगे। 21मैं परमेश्वर और
येशु मसीह एवं मनोनीत स्वर्गदूतों को साक्षी
बना कर तुम से यह अनुरोध करता हूँ कि तुम,
पूर्वाग्रह से मुक्त हो कर और किसी के साथ
पक्षपात किये बिना, इन बातों का पालन करो।
22तुम उचित विचार किये बिना किसी पर
हस्तारोपण मत करो * और दूसरों के पापों के
सहभागी मत बनो। अपने को शुद्ध बनाये रखो।
23तुम अब से केवल पानी मत पियो, बल्कि
पाचन-शक्ति बढ़ाने के लिए और बारम्बार
अस्वस्थ रहने के कारण तुम थोड़े से दाखरस
का सेवन करो। 24कुछ लोगों के पाप न्यायिक
जाँच से पहले ही प्रकट हैं और कुछ लोगों के
पाप केवल बाद में प्रकट होते हैं। 25इसी प्रकार,
कुछ लोगों के सत्कर्म प्रकट हैं और यदि नहीं
हैं, तो वे देर तक छिप भी नहीं सकते।

दासों के कर्तव्य

6 जिन लोगों पर गुलामी का जूआ रखा हुआ
है, वे अपने स्वामियों को सब प्रकार के
आदर के योग्य समझें; जिससे परमेश्वर के नाम
और कलीसिया की शिक्षा की निन्दा न हो।
2जिनके स्वामी विश्वास में उनके भाई हैं, वे
इसके कारण उनका कम आदर नहीं करें,
बल्कि और अच्छी तरह उनकी सेवा करें; क्योंकि
जो लोग उनकी शुभ सेवा से लाभ उठाते हैं, वे
विश्वासी और प्रिय भाई-बहिन हैं।

भक्ति-सम्मत शिक्षा और धन में अनासक्ति

तुम इन बातों की शिक्षा और उपदेश दिया
करो। 3यदि कोई भिन्न शिक्षा देता है और हमारे
प्रभु येशु मसीह के हितकारी उपदेशों में और

+ अथवा, '' निष्ठा'' * अथवा, ''किसी का शीघ्रता से सेवाकार्य के लिए अभिषेक न करो''
5 : 10 इब्र 13 : 2; यो 13 : 14 5 : 13 2 थिस 3 : 11- 5 : 14 1 कुर 7 : 9 5 : 17 रोम 12 : 8; फिल 2 : 29
5 : 18 व्य 25 : 4; 1 कुर 9 : 9; लू 10 : 7 5 : 19 व्य 19 : 15; मत 18 : 16; 2 कुर 13 : 1 5 : 20 गल 2 : 14
5 : 22 1 तिम 4 : 14 6 : 1 इफ 6 : 5; तीत 2 : 9-10 6 : 2 फिले 16
5 : 21 लू 9 : 26

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भक्ति-सम्मत शिक्षा में मन नहीं लगाता, [4]तो
मैं समझता हूँ कि घमण्ड ने उसे अन्धा बना
दिया है; वह कुछ नहीं समझता और उसे वाद-
विवाद तथा निरर्थक शास्त्रार्थ करने का रोग हो
गया है। इस प्रकार के विवादों से ईर्ष्या, फूट,
परनिन्दा, दूसरों पर कुत्सित सन्देह [5]और निरन्तर
झगड़े उत्पन्न होते हैं। यह सब ऐसे लोगों के
योग्य है, जिनका मन विकृत और सत्य से
वंचित हो गया है और जो यह समझते हैं कि
भक्ति लाभ का एक साधन है।

[6]वैसे भक्ति है भी महान लाभ का साधन,
यदि वह संतोष से युक्त हो। [7]हम न तो इस
संसार में कुछ अपने साथ लाये हैं और न यहाँ
से कुछ साथ ले जा सकते हैं। [8]यदि हमारे पास
भोजन-वस्त्र है, तो हमें इस से सन्तुष्ट रहना
चाहिए। [9]जो लोग धन बटोरना चाहते हैं, वे
प्रलोभन और फन्दे में पड़ जाते हैं और ऐसी
मूर्खतापूर्ण तथा हानिकर वासनाओं के शिकार
बनते हैं, जो मनुष्यों को पतन और विनाश के
गर्त्त में ढकेल देती हैं; [10]क्योंकि धन का लालच
सभी बुराइयों की जड़ है। इसी लालच में पड़
कर कई लोग विश्वास के मार्ग से भटक गये
और उन्होंने अपने हृदय को अनेक दुःखों से
छलनी बना दिया है।

तिमोथी से अनुरोध

[11]परमेश्वर का सेवक होने के नाते+ तुम इन
सब बातों से अलग रह कर धार्मिकता, भक्ति,
विश्वास, प्रेम, धैर्य तथा विनम्रता की साधना
करो। [12]विश्वास के उत्तम संघर्ष में संघर्ष करते
रहो और उस शाश्वत जीवन पर अधिकार प्राप्त
करो, जिसके लिए तुम बुलाये गये हो और
जिसके विषय में तुमने बहुत-से गवाहों के
सामने अपने विश्वास की उत्तम साक्षी दी है।

[13]परमेश्वर की उपस्थिति में, जो सब को
जीवन प्रदान करता है, और येशु मसीह की
उपस्थिति में, जिन्होंने राज्यपाल पोंतियुस
पिलातुस के सम्मुख उत्तम साक्षी दी, मैं तुम को
यह आदेश देता हूँ [14]कि हमारे प्रभु येशु मसीह
के प्रकट होने तक निष्कलंक तथा निर्दोष रूप
से अपने दायित्व का पालन करो। [15]यह
प्रकटीकरण यथासमय परमधन्य तथा एकमात्र
अधीश्वर के द्वारा होगा। वह राजाओं का राजा
और प्रभुओं का प्रभु है, [16]जो अमरता का एकमात्र
स्रोत है, जो अगम्य ज्योति में निवास करता है,
जिसे न तो किसी मनुष्य ने कभी देखा है और
न कोई देख सकता है। उसे सम्मान प्राप्त हो
तथा उसका सामर्थ्य युगानुयुग बना रहे! आमेन!

[17]इस वर्तमान संसार के धनवानों से अनुरोध
करो कि वे घमण्ड न करें और नश्वर धन-
सम्पत्ति पर नहीं, बल्कि परमेश्वर पर भरोसा
रखें, जो हमारे उपभोग की सब वस्तुएं पर्याप्त
मात्रा में देता है। [18]वे भलाई करते रहें, सत्कर्मों
के धनी बनें, दानशील हों और परस्पर सहयोग
दें। [19]इस प्रकार वे अपने लिए एक ऐसी पूँजी
एकत्र करेंगे, जो भविष्य का उत्तम आधार होगी
और जिसके द्वारा वे वास्तविक जीवन प्राप्त कर
सकेंगे।

उपसंहार

[20]तिमोथी! जो निधि* तुम्हें सौपी गयी है,
उसे सुरक्षित रखो। अधार्मिक शब्द-आडम्बर
और मिथ्या 'ज्ञान' के वाद-प्रतिवादों से दूर
रहो। [21]ऐसे ज्ञान के कितने ही अनुयायी
विश्वास के मार्ग से भटक गये हैं।

परमेश्वर की कृपा आप सब पर बनी रहे!

+ शब्दशः, "ओ परमेश्वर के जन!" * अथवा, "धरोहर"।

6 : 3 गल 1 : 6-9; 2 तिम 1 : 13 **6 : 5** 2 तिम 3 : 8; 4 : 4; तीत 1 : 14 **6 : 6** 1 तिम 4 : 8; इब्र 13 : 5; फिल 4 : 11-12; भज 37 : 16; नीति 15 : 16 **6 : 7** सभ 5 : 14-15; अय्य 1 : 21 **6 : 8** नीति 30 : 8 **6 : 9** नीति 23 : 4; 28 : 22 **6 : 10** नि 23 : 8; व्य 16 : 19; इफ 5 : 5 **6 : 11** 2 तिम 2 : 22 **6 : 12** 1 कुर 9 : 25-26; 2 तिम 4 : 7 **6 : 13** यो 18 : 36-37; 19 : 11 **6 : 15** 1 तिम 1 : 11; प्रक 17 : 14 ; व्य 10 : 17 **6 : 16** नि 33 : 20; यो 1 : 18 **6 : 17** भज 62 : 10; लू 12 : 20; रोम 12 : 16 **6 : 19** मत 6 : 20 **6 : 20** 1 तिम 4 : 7; 2 तिम 1 : 14 **6 : 21** 1 तिम 1 : 6; 2 तिम 2 : 18

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तिमोथी के नाम संत पौलुस का दूसरा पत्र

भूमिका

यह पत्र वस्तुत: तिमोथी के नाम दूसरा ''पास्तरीय पत्र'' है। प्रस्तुत पत्र के अनुसार संत पौलुस ने तिमोथी को कुछ और निजी सलाह देने के लिए लिखा था। तिमोथी सन्त पौलुस के युवा सहयोगी थे। पत्र का मुख्य विषय सहनशीलता है, दु:ख-विरोध को सहन करना धीरज के साथ। लेखक तरुण तिमोथी को प्रोत्साहित करते हैं कि वह प्रभु येशु की साक्षी निष्ठापूर्वक देते रहें, और पुराना विधान का उद्देश्य सामने रखते हुए शुभ समाचार की शिक्षाओं पर दृढ़ रहें। दु:ख तथा विरोध के बावजूद वह, धर्म-शिक्षक और प्रचारक होने के नाते, अपना कर्त्तव्य-कर्म करते रहें। संत पौलुस अपने युवा सहयोगी को विशेष चेतावनी देते हैं कि वह मूर्खतापूर्ण तथा व्यर्थ वाद-विवाद ,तर्क-वितर्क से दूर रहें, क्योंकि यह न केवल खतरनाक है बल्कि इससे कछ लाभ नहीं होता है। इस प्रकार के तर्क-वितर्क सुननेवाले व्यक्ति अन्ततः नष्ट हो जाते हैं।

अपने सहयोगी को ये बातें लिखते समय संत पौलुस स्वयं अपने जीवन का उदाहरण देते हैं: अपना विश्वास, धैर्य, प्रेम, सहनशीलता और सताव पड़ने पर दु:ख को हर्ष से भोगना।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

अभिवादन	1 : 1-2
प्रशंसा और प्रबोधन	1 : 3—2 : 13
परामर्श और चेतावनी	2 : 14—4 : 5
संत पौलुस का उदाहरण	4 : 6-18
उपसंहार	4 : 19-22

अभिवादन

1 यह पत्र प्रिय पुत्र तिमोथी के नाम पौलुस की ओर से है, जो परमेश्वर की इच्छा से येशु मसीह का प्रेरित है; क्योंकि वह उस जीवन का संदेश सुनाने के लिए भेजा गया है, जो येशु मसीह में है और जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने की है।

पिता परमेश्वर और हमारे प्रभु येशु मसीह तुम्हें कृपा, दया तथा शान्ति प्रदान करें!

झूठी शिक्षा से सावधान

3मैं अपने पूर्वजों की तरह शुद्ध
अन्तःकरण से परमेश्वर की सेवा करता हूँ और
उसे धन्यवाद देता हुआ निरन्तर रात-दिन तुम्हें
अपनी प्रार्थनाओं में याद करता हूँ। 4जब मुझे
तुम्हारे आँसुओं का स्मरण आता है, तो तुम से
फिर मिलने की तीव्र अभिलाषा हो जाती है,
जिससे मेरा आनन्द परिपूर्ण हो जाये। 5तब मुझे
तुम्हारा निष्कपट विश्वास सहज ही याद आता
है। यह विश्वास पहले तुम्हारी नानी लोइस तथा
तुम्हारी माता युनीके में विद्यमान था और मुझे
निश्चय है, अब यह तुम में भी विद्यमान है।
6इसी कारण मैं तुम्हें स्मरण दिलाता हूँ कि
तुम परमेश्वर के वरदान की वह ज्वाला
प्रज्वलित बनाये रखो, जो मेरे हाथों के आरोपण

1 : 3 प्रे 23 : 1; 24 : 16; फिल 3 : 5 1 : 5 प्रे 16 : 1 1 : 6 1 थिस 5 : 19; 1 तिम 4 : 14

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

से तुम में विद्यमान है।7परमेश्वर ने हमें कायरता
का नहीं, बल्कि सामर्थ्य, प्रेम तथा आत्मसंयम
का आत्मा प्रदान किया है।8तुम न तो हमारे प्रभु
की साक्षी देने में लज्जा अनुभव करो और न मुझ
से, जो उनके लिए बन्दी हूँ, बल्कि परमेश्वर
के सामर्थ्य पर भरोसा रख कर, तुम मेरे साथ
शुभसमाचार के लिए कष्ट सहते रहो।9परमेश्वर
ने हमारा उद्धार किया और हमें पवित्र जीवन
बिताने के लिए बुलाया है। उसने हमारे किसी
पुण्य के कारण नहीं, बल्कि अपने उद्देश्य तथा
अपनी कृपा के कारण ऐसा किया है। वह कृपा
अनादि काल से येशु मसीह द्वारा हमें प्राप्त थी,
10किन्तु अब वह हमारे मुक्तिदाता येशु मसीह
के प्रकट होने से स्पष्ट प्रकाशित हुई है। येशु ने
मृत्यु का विनाश किया और अपने शुभसमाचार
द्वारा अमर जीवन को आलोकित किया है। 11मैं
उस शुभ समाचार का प्रचारक, प्रेरित तथा
शिक्षक नियुक्त किया गया हूँ।

12इस कारण मैं यहाँ यह कष्ट सह रहा हूँ,
किन्तु मैं इस से लज्जित नहीं हूँ; क्योंकि मैं
जानता हूँ कि मैंने किस पर भरोसा रखा है। मुझे
निश्चय है कि वह मुझे सौंपी हुई निधि को उस
दिन तक सुरक्षित रखने में समर्थ है।

13जो हितकारी उपदेश तुम को मुझ से
मिला, उसे अपना मापदण्ड मान लो और येशु
मसीह की संगति के विश्वास तथा प्रेम में दृढ़
बने रहो। 14जो उत्तम निधि तुम्हें सौंपी गयी,
उसे हम में निवास करने वाले पवित्र आत्मा की
सहायता से सुरक्षित रखो। 15तुम जानते हो कि
आसिया क्षेत्र में सब ने मुझे छोड़ दिया है। उन
में फुगिलुस और हेरमोगेनेस भी हैं। 16प्रभु की
दया उनेसिफुरुस के परिवार पर बनी रहे,
क्योंकि उनेसिफुरुस ने मुझे अकसर ढाढ़स
बँधाया है। वह मेरी बेड़ियों से लज्जित नहीं
हुआ, 17बल्कि उसने रोम नगर पहुँच कर मेरा
पता लगाने का कष्ट किया और वह मुझ से
मिलने आया। 18प्रभु उसे यह वरदान दे कि वह
उस दिन प्रभु की दया प्राप्त करे। उसने इफिसुस
नगर में कितनी सेवा की है, तुम यह अच्छी तरह
जानते हो।

प्रभु येशु मसीह का निष्ठावान सैनिक

2 मेरे पुत्र! तुम येशु मसीह की संगति की
कृपा से बल ग्रहण करते रहो।2तुम्हें अनेक
साक्षियों के सामने मुझ से जो शिक्षा मिली, उसे
तुम ऐसे विश्वस्त व्यक्तियों को सौंप दो, जो
स्वयं दूसरों को शिक्षा देने योग्य हों।3येशु मसीह
के उत्तम सैनिक की तरह तुम उनके साथ कष्ट
सहते जाओ। 4जो सेना में नाम लिखा चुका है,
वह नागरिक जीवन की झंझटों में अपने को
नहीं फँसाता, जिससे वह सेना के अधिकारी को
प्रसन्न कर सके।5किसी भी खिलाड़ी को पुरस्कार
नहीं मिल सकता, जब तक कि वह खेल-कूद
के नियमों का पालन नहीं करता।6परिश्रम करने
वाले किसान को सबसे पहले फसल का हिस्सा
मिलना चाहिए।7तुम मेरी बातों पर अच्छी तरह
विचार करो, क्योंकि प्रभु सब बातें पूर्ण रूप से
समझने में तुम्हारी सहायता करेंगे।

8दाऊद के वंश में उत्पन्न, मृतकों में से
पुनर्जीवित येशु मसीह को स्मरण रखो—यह
मेरे शुभ समाचार का विषय है।9इस शुभ समाचार
की सेवा में मैं कष्ट पाता हूँ; और अपराधी की
तरह बन्दी हूँ परन्तु परमेश्वर का वचन बन्दी
नहीं है। 10मैं चुने हुए लोगों के लिए सब कुछ
सहता हूँ, जिससे वे भी येशु मसीह के द्वारा
मुक्ति तथा सदा बनी रहने वाली महिमा प्राप्त
करें।

11यह कथन विश्वसनीय है :
"यदि हम मसीह के साथ मर गये,
तो हम उनके साथ जीवन भी प्राप्त करेंगे।
12यदि हम दृढ़ रहें,
तो हम उनके साथ राज्य भी करेंगे।
यदि हम उन्हें अस्वीकार करेंगे,

---

1 : 7 रोम 8 : 15 **1 : 8** रोम 1 : 16 **1 : 9** तीत 3 : 5 **1 : 10** रोम 16 : 26; इब्र 2 : 14; 1 कुर 15 : 55, 57 **1 : 11** 1 तिम 2 : 7 **1 : 13** 1 तिम 6 : 3; तीत 2 : 1 **1 : 14** 1 तिम 6 : 20 **1 : 15** 2 तिम 4 : 16 **1 : 18** यहू 21 **2 : 3** 2 तिम 1 : 8; 4 : 5 **2 : 5** 2 तिम 4 : 8 **2 : 6** 1 कुर 9 : 7, 10 **2 : 8** रोम 1 : 3; 2 : 16; 1 कुर 15 : 4, 20; 2 शम 7 : 12 **2 : 9** इफ 3 : 1, 13; फिल 1 : 12-14; 2 : 17 **2 : 10** कुल 1 : 24 **2 : 11** 2 कुर 4 : 11 **2 : 12** मत 10 : 33

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तो वह भी हमें अस्वीकार करेंगे।
13यदि हम विश्वास न करें,
तो भी वह विश्वसनीय बने रहते हैं;
क्योंकि वह अपने स्वभाव के विरुद्ध नहीं
जा सकते* ।''

प्रामाणिक सेवक

14लोगों को इन बातों का स्मरण दिलाते रहो
और परमेश्वर को साक्षी बना कर उन से
अनुरोध करो कि निरे शब्दों के विषय में वाद-
विवाद न करें। इससे कोई लाभ नहीं होता,
बल्कि यह सुननेवालों के विनाश का कारण बन
जाता है। 15अपने को परमेश्वर के सामने
सुग्राह्य और एक ऐसे कार्यकर्ता के रूप में
प्रस्तुत करने का प्रयत्न करते रहो, जिसे लज्जित
होने का कोई कारण न हो और जो निष्कपट
रूप से सत्य का प्रचार करे। 16अधार्मिक शब्द-
आडम्बर से अलग रहो। जो लोग उसमें लगे
रहते हैं, वे धर्म के मार्ग से और दूर भटक जाते
हैं, 17और उनकी बातों का प्रभाव सड़े घाव की
तरह फैल जाता है। ऐसे लोगों में हुमिनयुस
और फिलेतुस हैं, 18जो यह कह कर सच्चाई से
दूर भटक गये हैं कि पुनरुत्थान हो चुका है। इस
प्रकार वे कुछ लोगों के विश्वास में बाधा पहुँचा
रहे हैं।

19किन्तु परमेश्वर ने जो पक्की नींव डाली
है, वह सुदृढ़ है और उस में ये शब्द अंकित हैं,
''प्रभु उन लोगों को जानता है, जो उसके अपने
हैं'' और ''जो प्रभु का नाम लेता है, वह अधर्म
से दूर रहे।'' 20किसी भी बड़े घर में न केवल
सोने और चांदी के, बल्कि लकड़ी और मिट्टी
के भी पात्र पाये जाते हैं। कुछ पात्र ऊंचे प्रयोजन
के लिए हैं और कुछ साधारण प्रयोजन के
लिए। 21जो मनुष्य सब प्रकार के दूषण अपने
से दूर करेगा, वह एक ऐसा पात्र बनेगा, जो ऊंचे
प्रयोजन के लिए है, अर्थात् जो पवित्र है, गृह-
स्वामी के योग्य और हर प्रकार के सत्कार्य के
लिए उपयुक्त है।

22तुम युवावस्था की वासनाओं से दूर रहो
और उन सब के साथ, जो शुद्ध हृदय से प्रभु
का नाम लेते हैं, धार्मिकता, विश्वास, प्रेम तथा
शान्ति की साधना करते रहो। 23निरर्थक तथा
ऊटपटांग विवादों से अलग रहो। तुम जानते हो
कि इन से झगड़ा पैदा होता है 24और प्रभु के
सेवक को झगड़ालू नहीं, बल्कि सबके प्रति
मिलनसार तथा सहनशील होना चाहिए। वह
शिक्षा देने के लिए तैयार रहे 25और इस आशा
से विरोधियों को नम्रता से समझाये कि वे
परमेश्वर की दया से पश्चात्ताप करें और
सच्चाई पहचानें। 26इस प्रकार होश में आ कर
वे शैतान के फन्दे से निकल जायें, जिस में
फंस कर वे उसकी इच्छापूर्ति के दास बन गये
हैं।

अन्तिम दिनों का अधर्म

3 तुम निश्चित रूप से जान लो कि अन्तिम
दिनों में संकटपूर्ण समय आ पड़ेगा।
2मनुष्य स्वार्थी, लोभी, डींग मारने वाले,
अहंकारी और परनिन्दक होंगे। वे अपने माता-
पिता की आज्ञा नहीं मानेंगे। उन में कृतज्ञता,
पवित्रता, 3प्रेम और दया का अभाव होगा। वे
चुगलखोर, असंयमी, क्रूर, हर प्रकार की
भलाई के बैरी, 4विश्वासघाती, दुःसाहसी और
घमण्डी होंगे। वे परमेश्वर के नहीं, बल्कि
भोगविलास के पुजारी बनेंगे। 5वे भक्ति का
स्वांग तो रचेंगे ही, किन्तु इसका वास्तविक
स्वरूप अस्वीकार करेंगे। तुम ऐसे लोगों से दूर
रहो। 6ये लोग घरों में छिपे-छिपे घुस जाते हैं
और उन मूर्ख स्त्रियों को अपने जाल में फंसाते
हैं, जो अपने पापों के भार से दब कर नाना
प्रकार की वासनाओं से संचालित हैं, 7जो सदा
सीखना चाहती हैं, किन्तु सच्चाई के ज्ञान तक

---

* अक्षरशः, ''अपने को अस्वीकार नहीं कर सकते''

2 : 13 रोम 3 : 2-3; गण 23 : 19 **2 : 14** 1 तिम 6 : 4; तीत 3 : 9 **2 : 15** 1 तिम 4 : 6; लू 12 : 42; तीत 2 : 7-8 **2 : 16** 1 तिम 4 : 7 **2 : 17** 1 तिम 1 : 20 **2 : 19** गण 16 : 5, 26; यो 10 : 14; यश 26 : 13; 28 : 16-17 **2 : 20** 1 कुर 3 : 12 **2 : 21** 2 तिम 3 : 17 **2 : 22** 1 तिम 6 : 11; 1 : 5 **2 : 23** 1 तिम 4 : 7 **2 : 24** तीत 1 : 7 **2 : 25** 1 तिम 2 : 4 **3 : 1** 1 तिम 4 : 1 **3 : 2** रोम 1 : 29 **3 : 4** फिल 3 : 19 **3 : 5** मत 7 : 15, 21; रोम 2 : 20; तीत 1 : 16 **3 : 6** तीत 1 : 11; मत 23 : 14 **3 : 7** 2 तिम 2 : 25

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पहुँचने में असमर्थ हैं। [8]जिस तरह यन्नेस और यम्ब्रेस ने मूसा का विरोध किया था, उसी तरह ये लोग सच्चाई का विरोध करते हैं। इनकी बुद्धि भ्रष्ट हो गयी है और इनका विश्वास कच्चा है। [9]किन्तु इन्हें सफलता नहीं मिलेगी, क्योंकि मूसा के विरोधियों की तरह इनकी मूर्खता भी सब पर प्रकट हो जायेगी।

दृढ़ विश्वास की शिक्षा

[10]तुमने मेरी शिक्षा, मेरे आचरण, मेरे उद्देश्य, मेरे विश्वास, सहनशीलता, प्रेम और धैर्य का अनुकरण किया है। [11]तुम जानते हो कि अन्ताकिया, इकोनियुम तथा लुस्त्रा जैसे नगरों में मुझ पर क्या-क्या अत्याचार हुए और मुझे कितना सताया गया। मैंने कितने अत्याचार सहे! किन्तु प्रभु सब में मेरी रक्षा करता रहा है। [12]वास्तव में जो लोग येशु मसीह के शिष्य बन कर भक्तिपूर्वक जीवन बिताना चाहेंगे, उन सबको अत्याचार सहना ही पड़ेगा। [13]किन्तु पापी और धूर्त लोग दूसरों को और अपने को धोखा देते हुए बदतर होते जायेंगे। [14]परन्तु, जहाँ तक तुम्हारा संबंध है, तुम उस पर आचरण करते रहो जो तुमने सीखा है और जिसमें तुमने दृढ़ विश्वास किया है। याद रखो कि किन लोगों से तुमने यह सब सीखा है [15]और यह कि तुम बचपन से पवित्र आलेखों से परिचित हो। ये पवित्र आलेख तुम्हें उस मुक्ति का ज्ञान दे सकते हैं, जो येशु मसीह में विश्वास करने से प्राप्त होती है। [16]पूरा धर्मग्रन्थ परमेश्वर की प्रेरणा से लिखा गया है। वह शिक्षा देने के लिए, भ्रान्त धारणाओं का खण्डन करने के लिए, जीवन के सुधार के लिए और सदाचरण का प्रशिक्षण देने के लिए उपयोगी है, [17]जिससे परमेश्वर का भक्त सुयोग्य और हर-प्रकार के सत्कार्य के लिए उपयुक्त बन जाये।

समय-असमय शुभ समाचार सुनाओ

4 परमेश्वर की उपस्थिति में और येशु मसीह की उपस्थिति में, जो जीवितों तथा मृतकों का न्याय करने के लिए आनेवाले हैं, मैं मसीह के प्रकटीकरण तथा उनके राज्य के नाम पर तुमसे यह अनुरोध करता हूं: [2]शुभ संदेश सुनाओ, समय-असमय लोगों से आग्रह करते रहो। बड़े धैर्य से तथा शिक्षा देने के उद्देश्य से लोगों को समझाओ, डांटो और प्रोत्साहित करो; [3]क्योंकि वह समय आ रहा है, जब लोग हितकारी शिक्षा नहीं सुनेंगे, बल्कि मनमाना आचरण करेंगे और चाटुकार+ उपदेशकों की भीड़ अपने पास जमा कर लेंगे। [4]वे सच्चाई के प्रति अपने कान बन्द करेंगे और कल्पित कथाओं के पीछे दौड़ेंगे। [5]परन्तु तुम सब बातों में सन्तुलित बने रहो, धैर्य से कष्ट सहो, शुभसमाचार के प्रचार में लगे रहो और अपने सेवा-कार्य के सब कर्त्तव्य पूरे करते जाओ।

सन्त पौलुस का अन्तिम निवेदन

[6]मैं प्रभु को अर्पित किया जा रहा हूँ। मेरे चले जाने का समय आ गया है। [7]मैं अच्छी लड़ाई लड़ चुका हूँ, अपनी दौड़ पूरी कर चुका हूँ और मैंने अब तक विश्वास को सुरक्षित रखा है। [8]अब मेरे लिए धार्मिकता का वह मुकुट तैयार है, जिसे धर्मनिष्ठ न्यायी प्रभु मुझे "उस दिन" प्रदान करेंगे, मुझ को ही नहीं, बल्कि उन सब को जिन्होंने प्रेम के साथ उनके प्रकट होने के दिन की प्रतीक्षा की है।

समाचार

[9]तुम शीघ्र ही मेरे पास आने का प्रयत्न करो; [10]क्योंकि देमास इस वर्तमान युग-संसार की ओर आकर्षित हो गया और वह मुझे छोड़ कर थिस्सलुनीके नगर चला गया है। क्रेसेन्स गलातिया प्रदेश को चला गया और तीतुस,

---

+ शब्दश: "अपने कानों को तृप्त करने के लिए"।

3 : 8 नि 7 : 11, 22; 1 तिम 6 : 5; 1 : 12 **3 : 11** प्रे 13 : 50; 14 : 5, 19; भज 34 : 19 **3 : 12** मत 16 : 24; प्रे 14 : 22 **3 : 13** 1 तिम 4 : 1 **3 : 14** 2 तिम 2 : 2 **3 : 15** यो 5 : 39; भज 119 : 99 **3 : 16** 2 पत 1 : 19–21; रोम 15 : 4 **3 : 17** 1 तिम 6 : 11 **4 : 1** प्रे 10 : 42; 1 पत 4 : 5; रोम 14 : 9-10 **4 : 2** प्रे 29 : 20, 31 **4 : 3** 2 तिम 1 : 13; 1 तिम 4 : 1 **4 : 4** 1 तिम 4 : 7; 2 थिस 2 : 11 **4 : 5** 2 तिम 2 : 3; इफ 4 : 11 **4 : 6** फिल 2 : 17 **4 : 7** 1 कुर 9 : 25; 1 तिम 6 : 12; फिल 3 : 14 **4 : 8** 2 तिम 2 : 5; याक 1 : 12; 1 पत 5 : 4; प्रक 2 : 10 **4 : 9** 2 तिम 1 : 4 **4 : 10** कुल 4 : 14

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दलमतिया प्रदेश को। 11केवल लूकस मेरे साथ
है। मारकुस को अपने साथ ले कर आओ,
क्योंकि मुझे सेवा-कार्य में उस से बहुत
सहायता मिलती है। 12मैंने तुखिकुस को इफिसुस
नगर भेजा है। 13आते समय मेरा लबादा, जिसे
मैंने त्रोआस बन्दरगाह में करपुस के यहाँ छोड़
दिया था, और मेरी पुस्तकें, विशेषकर मेरे
चर्मपत्र लेते आना।

14सिकन्दर सुनार ने मेरे साथ बहुत अन्याय
किया है। प्रभु उस को उसके कर्मों का फल
देगा। 15तुम भी उस से सावधान रहो, क्योंकि
उसने हमारी शिक्षा का बहुत विरोध किया है।

16जब मुझे पहली बार न्यायालय में अपनी
सफाई देनी पड़ी, तो किसी ने मेरा साथ नहीं
दिया—सब ने मुझे छोड़ दिया। आशा है, उन्हें
इसका लेखा देना नहीं पड़ेगा। 17परन्तु प्रभु ने
मेरी सहायता की और मुझे बल प्रदान किया,
जिससे मैं शुभ संदेश पूर्ण रूप से सुना सकूँ और
सभी जातियां उसे सुन सकें। मैं सिंह के मुँह से
बच निकला।

18प्रभु मुझे दुष्टों के हर फन्दे से छुड़ायेगा।
वह मुझे सुरक्षित रखेगा और अपने स्वर्गराज्य
तक पहुँचा देगा। उसी की महिमा युगानुयुग
हो। आमेन!

नमस्कार और आशीर्वाद

19प्रिस्का और अक्विला को तथा उनेसिफुरुस
के परिवार को नमस्कार। 20एरस्तुस कुरिंथुस
में रह गया और मैंने त्रोफिमुस को, जो बीमार
था, मिलेतुस बन्दरगाह में छोड़ दिया। 21शीत
ऋतु से पहले आने का प्रयत्न करो। युबुलुस,
पूदेन्स, लीनुस, क्लौदिया और अन्य सब भाई-
बहिन तुम को नमस्कार कहते हैं।

22प्रभु तुम्हारे साथ रहे! परमेश्वर की कृपा
आप सब पर बनी रहे!

---

4 : 11 प्रे 15 : 37; कुल 4 : 10 **4 : 12** प्रे 20 : 4; इफ 6 : 21; कुल 4 : 7 **4 : 14** 1 तिम 1 : 20; 2 शम 3 : 39; भज 28 : 4; 62 : 18 नीति 24 : 12 **4 : 16** 2 तिम 1 : 15 **4 : 17** भज 22 : 21; प्रे 23 : 11; 27 : 23 **4 : 19** 2 तिम 1 : 16; प्रे 18 : 2 **4 : 20** प्रे 19 : 22; 20 : 4; 21 : 29

तीतुस के नाम संत पौलुस का पत्र

भूमिका

युवक तीतुस गैर-यहूदी जाति से मसीही विश्वासी बने थे। वह सन्त पौलुस की धर्मप्रचार-यात्राओं में उनके सहयोगी और सहायक थे।

प्रस्तुत पत्र के अनुसार सन्त पौलुस ने युवक तीतुस को उस समय लिखा, जब तीतुस क्रेते द्वीप में शुभ समाचार सुना रहे थे। सन्त पौलुस उन्हें वहां छोड़कर गए थे कि वह कलीसिया के कार्य का निरीक्षण करें। इस ''पास्तरीय पत्र'' में तीन बातें स्पष्ट हैं—

1. लेखक कलीसिया के अगुओं के चरित्र के विषय में युवक तीतुस को बताते हैं कि उनका चरित्र किस प्रकार का होना चाहिए, जबकि क्रेते द्वीपवासी अपने दुश्चरित्र के लिए बदनाम थे।

2. लेखक कलीसिया के वृद्ध-वृद्धाओं और युवकों तथा गुलामों को धर्म-शिक्षा किस प्रकार देना चाहिए, इसके विषय में सलाह देते हैं। वृद्धाएँ बाद में युवतियों को शिक्षा देंगी।

3. लेखक अन्त में तीतुस को मसीही आचरण के विषय में बताते हैं कि मसीही व्यक्ति को शान्ति तथा भाईचारे की भावना से जीवन व्यतीत करना चाहिए और उसे घृणा, व्यर्थ के वाद-विवाद और दलबन्दी से दूर रहना चाहिए।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

विषय-वस्तु की रूपरेखा

भूमिका	1 : 1-4
कलीसिया के धर्मसेवक	1 : 5-16
कलीसिया के वृद्ध-वृद्धाओं तथा युवक-युवतियों के कर्त्तव्य	2 : 1-15
प्रबोधन और चेतावनी	3 : 1-11
उपसंहार	3 : 12-15

अभिवादन

1 यह पत्र, एक ही विश्वास में सहभागिता के नाते सच्चे पुत्र तीतुस के नाम, पौलुस की ओर से है, जो परमेश्वर का सेवक तथा येशु मसीह का प्रेरित है, ताकि वह परमेश्वर के कृपापात्रों का विश्वास दृढ़ करे और उस सत्य का ज्ञान सिखाए, जो धर्म के अनुकूल है 2और शाश्वत जीवन की आशा का आधार है। सत्यवादी परमेश्वर ने अनादि काल से इस जीवन की प्रतिज्ञा की थी। 3अब, उपयुक्त समय में, उसने अपना अभिप्राय* उस सन्देश द्वारा स्पष्ट कर दिया, जिसका प्रचार हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर के आदेश-अनुसार मुझे सौंपा गया है।

4पिता-परमेश्वर और हमारे मुक्तिदाता येशु मसीह तुम्हें अनुग्रह तथा शान्ति प्रदान करें!

क्रेते द्वीप में तीतुस का कार्य

5मैंने तुम्हें इसलिए क्रेते द्वीप में रहने दिया कि जो कार्य वहां अधूरा रह गया है, तुम उसकी उचित व्यवस्था करो और मेरे अनुदेश के अनुसार प्रत्येक नगर में धर्मवृद्धों को नियुक्त करो।

6उन में से प्रत्येक अनिन्दनीय और पत्नीव्रती** हो। उसके पुत्र-पुत्रियाँ विश्वासी हों, लम्पटता और अनुशासनहीनता के दोष से मुक्त हों। 7परमेश्वर का भंडारी होने के नाते धर्माध्यक्ष को चाहिए कि वह अनिन्दनीय हो। वह स्वेच्छाचारी, क्रोधी, मद्यसेवी, झगड़ालू या लोभी न हो। 8वह अतिथि-प्रेमी, हितैषी, समझदार, न्यायी, प्रभुभक्त और संयमी हो। 9वह धर्मसमत्त विश्वसनीय वचन पर दृढ़ रहे, जिससे वह हितकारी शिक्षा द्वारा उपदेश दे सके और आपत्ति करनेवालों को निरुत्तर कर सके।

10बहुत-से लोग, विशेष कर यहूदी विश्वासियों+ में, निरंकुश, बकवादी और कपटी हैं। 11ऐसे लोगों का मुँह बन्द कर देना चाहिए, क्योंकि वे घिनावने लाभ के लिए अनुचित बातें सिखाते हैं और इस प्रकार परिवार के परिवार चौपट कर देते हैं। 12क्रेते द्वीप के निवासियों में से एक, उनके अपने 'नबी' ने उनके विषय में कहा है, "क्रेते के निवासी सदा झूठ बोलते हैं; वे हिंस्र पशु, पेटू और आलसी हैं।" 13यह कथन सत्य-साक्षी निकला। इसलिए तुम उन्हें कड़ी चेतावनी देते रहो, जिससे वे विश्वास में परिपक्व हो जाएं 14और यहूदियों की कल्पित कथाओं तथा सत्य का तिरस्कार करने वाले मनुष्यों के आदेशों पर ध्यान न दें। 15जो शुद्ध हैं, उनके लिए सब कुछ शुद्ध है। किन्तु जो दूषित और अविश्वासी हैं, उनके लिए कुछ भी शुद्ध नहीं है, क्योंकि उनका मन और अन्तःकरण, दोनों दूषित हैं। 16वे परमेश्वर को जानने का दावा तो करते हैं, किन्तु अपने कर्मों द्वारा उसे अस्वीकार करते हैं। वे घृणित, अवज्ञाकारी और किसी भी भले काम के नितान्त अयोग्य हैं।

सच्चे धर्म सिद्धान्त

2 तुम ऐसी बातें सिखाओ, जो हितकारी शिक्षा के अनुकूल हों। 2वृद्धों को समझाओ

---

* अथवा, "वचन"। ** अथवा, "एकपत्नीव्रत"। + मूल में, "खतनेवालों"

1 : 3 इफ 1 : 9-10; 1 तिम 1 : 1, 11 1 : 4 1 तिम 1 : 2 1 : 6 1 तिम 3 : 2-4 1 : 7 1 कुर 4 : 1; 1 पत 5 : 2; 2 तिम 2 : 24 1 : 9 तीत 2 : 1; 1 तिम 1 : 10; 2 तिम 4 : 3 1 : 11 2 तिम 3 : 6; यो 10 : 12; 1 पत 5 : 2 1 : 13 2 तिम 4 : 2 1 : 14 1 तिम 4 : 7 1 : 15 मत 15 : 11; रोम 14 : 20 1 : 16 2 तिम 3 : 5 2 : 1 1 तिम 6 : 3; 2 तिम 1 : 13 2 : 2 1 तिम 5 : 1

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कि उन्हें संयमी, गम्भीर एवं समझदार होना
चाहिए और विश्वास, भ्रातृप्रेम एवं धैर्य में
परिपक्व। [3]इसी प्रकार वृद्धाओं का आचरण
प्रभु-भक्तों के अनुरूप हो। वे किसी की झूठी
निन्दा न करें और न मदिरा की व्यसनी हों। वे
अपने सदाचरण द्वारा [4]तरुण स्त्रियों को ऐसी
शिक्षा दें कि वे अपने पति और अपने बच्चों को
प्यार करें, [5]समझदार, शुद्ध और सुशील हों,
अपने घर का अच्छा प्रबन्ध करें और अपने पति
के अधीन रहें, जिससे लोग परमेश्वर के शुभ-
संदेश की निन्दा न कर सकें।

[6]नवयुवकों को समझाओ कि वे सब बातों
में संयम से रहें [7]और तुम स्वयं अपने भले कार्यों
से उन्हें अच्छा उदाहरण दो। तुम्हारी शिक्षा
प्रामाणिक और गम्भीर हो। [8]तुम्हारे उपदेश
हितकर और अनिन्दनीय हों। इस प्रकार
विरोधी किसी भी बात के विषय में हमारी
निन्दा न कर सकने के कारण लज्जित होगा।

[9]दासों को समझाओ कि वे सब बातों में
अपने स्वामियों के अधीन रहें, उनको संतुष्ट
रखें; आपत्ति किये बिना उनकी आज्ञाएँ मानें
[10]और चोरी-चालाकी नहीं करें, बल्कि अपने
को पूर्ण रूप से विश्वसनीय प्रमाणित करें। यह
सब करने से वे हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर की
हितकारी शिक्षा की प्रतिष्ठा बढ़ायेंगे।

मसीही प्रेरणा का स्रोत

[11]परमेश्वर की कृपा सब मनुष्यों की मुक्ति
के लिए प्रकट हो गयी है। [12]वह हमें यह शिक्षा
देती है कि अधार्मिकता तथा विषय-वासना
त्याग कर हम इस युग-संसार में संयम, न्याय
तथा भक्ति का जीवन बितायें [13]और उस मंगल
दिन की प्रतीक्षा करें, जब हमारी आशाएँ पूरी
हो जायेंगी और हमारे महान् परमेश्वर एवं
मुक्तिदाता* येशु मसीह की महिमा प्रकट
होगी। [14]येशु ने हमारे लिए अपने को बलि
चढ़ाया, जिससे वह हमें हर प्रकार की बुराई से
मुक्त करें और हमें एक ऐसी प्रजा बनायें, जो
शुद्ध हो, जो उनकी अपनी हो और जो भलाई
करने के लिए उत्सुक हो।

[15]तुम इन बातों की शिक्षा देते हुए उपदेश
दिया करो और अधिकारपूर्वक लोगों को
समझाओ। कोई तुम्हारा तिरस्कार नहीं करे।

मसीही आचरण

3 लोगों को याद दिलाओ कि शासकों तथा
अधिकारियों के अधीन रहना और उनकी
आज्ञाओं का पालन करना उनका कर्तव्य है। वे
हर प्रकार के सत्कर्म के लिए तत्पर रहें, [2]किसी
की निन्दा न करें, झगड़ालू नहीं, बल्कि
सहनशील हों और सब लोगों के साथ नम्र
व्यवहार करें।

[3]क्योंकि हम भी तो पहले नासमझ,
अवज्ञाकारी, भटके हुए, हर प्रकार की वासनाओं
और भोगों के वशीभूत थे। हम विद्वेष और ईर्ष्या
में जीवन बिताते थे। हम घृणित थे और एक
दूसरे से बैर करते थे। [4]किन्तु हमारे उद्धारकर्ता
परमेश्वर की भलाई तथा मनुष्यों के प्रति उसका
प्रेम प्रकट हो गया। [5]उसने नवजीवन के जल**
और पवित्र आत्मा की संजीवन शक्ति द्वारा
हमारा उद्धार किया। उसने हमारे किसी पुण्य
धर्म-कर्म के कारण ऐसा नहीं किया, बल्कि
इसलिए कि वह दयालु है। [6]उसने हमारे
मुक्तिदाता येशु मसीह द्वारा हमें प्रचुर मात्रा में
पवित्र आत्मा का वरदान दिया, [7]जिससे हम
उसकी कृपा द्वारा धार्मिक ठहराये जायें और
शाश्वत जीवन के उत्तराधिकारी बनने की आशा
कर सकें।

[8]यह बात विश्वसनीय है और मैं चाहता हूँ
कि तुम इस पर बल देते रहो। जो लोग परमेश्वर

---

* अथवा, ''और महान् परमेश्वर एवं हमारे मुक्तिदाता।'' ** अक्षरशः ''पुनर्जन्म के स्नान''.

2 : 3 1 तिम 3 : 11 **2 : 5** इफ 5 : 22 **2 : 7** 1 तिम 4 : 12; 1 पत 5 : 3 **2 : 8** 1 पत 2 : 15 **2 : 9** इफ 6 : 5; 1 तिम 6 : 1; 1 पत 2 : 18 **2 : 10** तीत 1 : 3 **2 :12** इफ 1 : 4; 1 यो 2 : 16 **2 : 13** 1 कुर 1 : 7; रोम 5 : 2; फिल 3 : 20 **2 : 14** गल 1 : 4; 1 तिम 2 : 6; इफ 2 : 10; भज 130 : 8; नि 19 : 5; व्य 14 : 2; यहेज 37 : 23; 1 पत 3 : 13 **2 : 15** 1 तिम 4 : 12 **3 : 1** 1 पत 2 : 13 **3 : 2** फिल 4 : 5 **3 : 3** 1 कुर 6 : 11; इफ 2 ; 5 : 8 **3 : 4** तीत 2 : 11; रोम 2 : 4; नीति 8 : 31 **3 : 5** इफ 2 : 8-9; 5 : 26; 5 : 26; यो 3 : 5; 2 तिम 1 : 9 **3 : 6** योए 2 : 28 प्रे 2 : 33 **3 : 7** रोम 3 : 24

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

में विश्वास कर चुके हैं, वे भले कामों में लगे रहने के लिए उत्सुक हों। यह उत्तम है और मनुष्यों के लिए लाभदायक भी।

9निरर्थक विवादों, वंशावलियों, दलबन्दी और व्यवस्था सम्बन्धी झगड़ों से दूर रहो। यह सब अलाभकर और व्यर्थ है। 10जो व्यक्ति अपने भ्रांत विश्वास के कारण फूट डालता है, उसे एक-दो बार चेतावनी दो और इसके बाद यह जान कर उस से दूर रहो 11कि ऐसा व्यक्ति पथभ्रष्ट और पापी है। वह स्वयं अपने को दोषी ठहराता है।

शेष निर्देश

12जब मैं अरतिमास अथवा तुखिकुस को तुम्हारे पास भेजूँगा, तब शीघ्र ही निकोपुलिस नगर में मेरे पास आने का प्रयत्न करना। मैंने वहाँ शीत ऋतु बिताने का निश्चय किया है।

13विधि-विशेषज्ञ जेनास और अपुल्लोस की यात्रा का अच्छा प्रबन्ध करो, जिससे उन्हें किसी बात की कमी न हो। 14हमारे अपने लोग भी कोई अच्छा व्यवसाय करना सीखें। इस प्रकार वे अपनी मूल आवश्यकताएं पूरी कर सकेंगे* और उनका जीवन निष्फल न होगा।

15मेरे सब साथी तुम को नमस्कार कहते हैं। जो विश्वास के नाते हमें प्यार करते हैं, उन को नमस्कार!

आप सब पर परमेश्वर की कृपा बनी रहे!

* अथवा, "हमारे लोग भी भले कामों में लगना सीखें, जिससे वे दूसरों की मूल आवश्यकताएँ पूरी कर सकें।"
3 : 9 1 तिम 4 : 7 **3 : 10** 2 यो 1 : 10; मत 18 : 15–16 **3 : 11** 1 तिम 6 : 4–5 **3 : 12** 2 तिम 4 : 12 **3 : 13** प्रे 18 : 24; 1 कुर 3 : 5–6 **3 : 14** तीत 2 : 14; मत 7 : 19; इफ 4 : 28–29

फिलेमोन के नाम संत पौलुस का पत्र

भूमिका

फिलेमोन एक प्रतिष्ठित मसीही था। सम्भवत: वह कुलुस्से नगर की कलीसिया का सदस्य था। वह उनेसिमुस नामक एक गुलाम का मालिक था। यह गुलाम अपने मालिक के पास से भाग गया, और संयोग से रोम में सन्त पौलुस के सम्पर्क में आया। उस समय सन्त पौलुस कारागार में बन्दी थे। सन्त पौलुस के सम्पर्क में आकर उनेसिमुस मसीही बन जाता है। **फिलेमोन के नाम पत्र** में सन्त पौलुस ने फिलेमोन से अनुरोध किया कि वह उनेसिमुस को क्षमा कर दे और उसे स्वीकार कर ले, क्योंकि सन्त पौलुस उसे वापस भेज रहे थे। सन्त पौलुस ने फिलेमोन से अपील की कि वह उनेसिमुस का स्वागत न केवल क्षमाप्राप्त दास के रूप में करें, बल्कि मसीही बन्धु के रूप में।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

अभिवादन पद 1—3
फिलेमोन की प्रशंसा पद 4—7
उनेसिमुस के लिए अनुरोध पद 8—22
उपसंहार पद 23—25

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अभिवादन

1-2हमारे प्रिय भाई और सहकर्मी फ़िलेमोन,
हमारी बहिन अपफिया, संघर्ष में हमारे साथी
अरखिप्पुस और आपके+ घर में एकत्र होने
वाली कलीसिया के नाम येशु मसीह के कारण
बन्दी पौलुस और भाई तिमोथी का पत्र।
3हमारा पिता परमेश्वर और प्रभु येशु मसीह
आप लोगों को अनुग्रह तथा शान्ति प्रदान करें!

धन्यवाद

4जब-जब मैं अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हें
स्मरण करता हूँ, तो अपने परमेश्वर को सदा
धन्यवाद देता हूँ; 5क्योंकि प्रभु येशु और सब
सन्तों के प्रति तुम्हारे प्रेम तथा विश्वास की चर्चा
सुनता रहता हूँ। 6मेरी यह प्रार्थना है कि विश्वास
में तुम्हारी सहभागिता सक्रिय हो और तुम्हें यह
ज्ञान प्राप्त हो कि हम मसीह के लिए कौन-
कौन भले काम करने में समर्थ हैं। 7भाई! मुझे
यह जान कर बड़ा आनन्द हुआ और सान्त्वना
मिली कि तुमने अपने भ्रातृप्रेम द्वारा संतों का
हृदय हरा कर दिया है।

भगोड़े दास के लिए क्षमाप्रार्थना

8इसलिए, यद्यपि मसीह में निस्संकोच
होकर मैं तुम्हें उचित कार्य करने का आदेश दे
सकता हूँ, 9फिर भी मैं भ्रातृप्रेम के नाम पर तुम
से केवल निवेदन करता हूँ। मैं पौलुस, जो बूढ़ा
हो चला और आजकल येशु मसीह के कारण
कैदी भी हूँ, 10उनेसिमुस के लिए तुम से निवेदन
कर रहा हूँ। वह मेरा मानस पुत्र है, क्योंकि मैंने
इन जंजीरों में उसको जन्म दिया है। पहले वह
तुम्हारे लिए "अनुपयोगी" था, परन्तु 11अब वह
तुम्हारे लिए "उपयोगी"* बन गया है और मेरे
लिए भी। 12मैं अपने कलेजे के इस टुकड़े को
तुम्हारे पास वापस भेज रहा हूँ। 13मैं, जो
शुभसमाचार के कारण क़ैदी हूँ, इसे यहाँ अपने
पास रखना चाहता था, जिससे यह तुम्हारी ओर
से मेरी सेवा करे। 14किन्तु तुम्हारी सहमति के
बिना मैंने कुछ नहीं करना चाहा जिससे तुम यह
उपकार लाचारी से नहीं, बल्कि स्वेच्छा से
करो। 15उनेसिमुस शायद इसलिए कुछ समय
तक तुम से ले लिया गया था कि वह तुम को
सदा के लिए प्राप्त हो। 16अब दास के रूप में
नहीं, बल्कि दास से कहीं बढ़ कर अतिप्रिय
भाई के रूप में। यह मुझे अत्यन्त प्रिय है, फिर
मनुष्य होने के नाते और प्रभु के शिष्य होने के
नाते भी यह तुम को कहीं अधिक प्रिय होगा!
17इसलिए यदि तुम मुझे धर्म-भाई समझते
हो, तो इसे उसी तरह अपनाओ जिस तरह मुझे।
18यदि तुम्हें इस से कोई हानि हुई है या इस पर
तुम्हारा कुछ कर्ज है, तो उसे मेरे खाते में लिख
लो! 19मैं, पौलुस अपने हाथ से लिख रहा
हूँ—मैं उसे चुका दूँगा। क्या मैं तुम्हें इसका
स्मरण दिलाऊँ कि तुम पर भी मेरा कुछ कर्ज
है? तुम तो मेरे ही हो। 20भाई! प्रभु के नाम पर
मुझे तुम से कुछ तो लाभ हो! तुम मसीह के
कारण मेरा हृदय हरा कर दो। 21मैं यह जान कर
तुम्हारी आज्ञाकारिता पर पूरे भरोसे के साथ
लिख रहा हूँ कि मैं जो अनुरोध कर रहा हूँ, तुम
उस से भी अधिक करोगे।

उपसंहार

22एक बात और। तुम मेरे रहने का प्रबन्ध
करो, क्योंकि मुझे आशा है कि तुम सब की
प्रार्थनाओं के फलस्वरूप परमेश्वर मुझे तुम
लोगों को पुनः लौटा देगा।
23इपफ्रास, जो येशु मसीह के कारण मेरे
साथ बन्दी है, 24और मेरे सहकर्मी मारकुस,
अरिस्तर्खुस, देमास और लूकस तुम्हें नमस्कार
कहते हैं।
25प्रभु येशु मसीह की कृपा तुम पर बनी रहे!

+ मूल में एकवचन "तुम्हारे"। * "उनेसिमुस" नाम का अर्थ है, "उपयोगी"

1 इफ 3 : 1 **2** कुल 4 : 17; 2 तिम 2 : 3 **3** रोम 1 : 7 **6** फिल 1 : 9 **7** 2 कुर 7 : 4 **10** कुल 4 : 9; गल 4 : 19; 1 कुर 4 : 15 **13** फिल 2 : 30 **14** 2 कुर 9 : 7; 1 पत 5 : 2 **16** 1 तिम 6 : 2; 1 कुर 7 : 22 **19** गल 6 : 11; 2 थिस 3 : 17 **22** फिल 1 : 25; 2 : 24 **23** कुल 1 : 7; 4 : 12 **24** कुल 4 : 10, 14

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इब्रानियों के नाम पत्र

भूमिका

यह पत्र उन "इब्रानी" अर्थात् यहूदी मसीहियों के नाम लिखा गया था, जो अपने प्रति लगातार बढ़ते विरोध के कारण मसीही प्रेमाचरण को छोड़कर कर्मकांडी पूजा-विधियों में अधिक विश्वास करने लगे थे। लेखक उनके डिगते हुए विश्वास को स्थिर करता, प्रभु येशु का उदाहरण देकर उनको प्रोत्साहित करता है। वह उनको बताता है कि प्रभु येशु ही परमेश्वर के अन्तिम और सच्चे प्रकाशन हैं। इस सम्बन्ध में वह तीन सच्चाइयों पर विशेष बल देता है: (1) प्रभु येशु परमेश्वर के शाश्वत पुत्र हैं, जिन्होंने दुःख भोगकर पिता की आज्ञा का पालन किया। वह परमेश्वर-पुत्र होने के नाते पुराने विधान के नबियों, स्वर्गदूतों तथा मूसा से भी श्रेष्ठ हैं। (2) परमेश्वर ने प्रभु येशु को शाश्वत पुरोहित घोषित किया है, और वह पुराने विधान के पुरोहितों से श्रेष्ठ हैं। (3) प्रभु येशु पर विश्वास करने से मनुष्य पाप, भय और मृत्यु से बच जाता है। महापुरोहित होने के कारण प्रभु येशु विश्वासी को सच्ची मुक्ति प्रदान करते हैं। यह सच्ची मुक्ति कर्मकांडी नियमपालन और पशुबलि चढ़ाने से प्राप्त नहीं होती।

लेखक पुस्तक के ग्यारहवें अध्याय में इस्राएली इतिहास के विख्यात व्यक्तियों के अनुपम विश्वास का उदाहरण देता है, और अपने पाठकों से अनुरोध करता है कि वे अन्त तक अपने विश्वास में स्थिर रहें और अपनी आंखें प्रभु येशु पर लगाए रहें, फिर चाहे उन्हें कितना ही दुःख और सताव क्यों न सहना पड़े।

पुस्तक के अन्त में चेतावनी और उपयोगी सुझाव दिये गए हैं।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

प्रस्तावना: प्रभु येशु परमेश्वर के सिद्ध प्रकाशन हैं	1 : 1-3
मसीह स्वर्गदूतों से श्रेष्ठ हैं	1 : 4—2:18
मसीह मूसा और यहोशुअ से श्रेष्ठ हैं	3 : 1—4 :13
मसीह पुरोहितों के पुरोहित हैं	4 : 14—7:28
मसीह का विधान सर्वश्रेष्ठ है	8 : 1—9 : 28
मसीह का बलिदान सर्वश्रेष्ठ है	10 : 1—31
विश्वास की आवश्यकता और श्रेष्ठता	11 : 1—12:25

परमेश्वर हम से अपने पुत्र द्वारा बोला है

1 प्राचीन काल में परमेश्वर बारम्बार और
विविध रूपों में हमारे पूर्वजों से नबियों द्वारा
बोला था। 2परन्तु वर्तमान अन्तिम युग में वह
हम से पुत्र द्वारा बोला है। उसने उस पुत्र के द्वारा
समस्त विश्व की सृष्टि की और उसी को सब
कुछ का उत्तराधिकारी नियुक्त किया है। 3यह
पुत्र, परमेश्वर की महिमा का प्रतिबिम्ब और
उसके तत्व का प्रतिरूप* है। यह पुत्र अपने+
शक्तिशाली शब्द द्वारा समस्त सृष्टि को बनाये

* शब्दशः, "छाप"। + अथवा, "उसके"।

1 : 2 भज 2 : 8; यू 1 : 3; कुल 1 : 16; मत 21 : 38; प्रज्ञ 7 : 22 1 : 3 इब्र 9 : 14, 26; 2 कुर 4 : 4; कुल 1 : 15; मक 16 : 19; प्रज्ञ 7 : 25-26; 8 : 1

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रखता है। उसने मनुष्यों को पापों से शुद्ध किया
और वह उच्च स्वर्ग में महामहिम परमेश्वर की
दाहिनी ओर विराजमान हुआ। 4उसका पद
स्वर्गदूतों से ऊँचा ठहरा; क्योंकि जो नाम उसे
उत्तराधिकार में मिला है, वह उनके नाम से
कहीं अधिक श्रेष्ठ है।

परमेश्वर का पुत्र स्वर्गदूतों से श्रेष्ठ है

5क्या परमेश्वर ने कभी किसी स्वर्गदूत से
यह कहा, "तू मेरा पुत्र है, आज मैंने तुझे उत्पन्न
किया है" और "मैं उसके लिए पिता बन
जाऊँगा और वह मेरा पुत्र होगा"? 6फिर वह
अपने पहलौठे को संसार के सामने प्रस्तुत करते
हुए कहता है, "परमेश्वर के समस्त स्वर्गदूत
इसकी आराधना करें", 7जब कि वह स्वर्गदूतों
के विषय में यह कहता है, "वह अपने दूतों को
पवन बनाता है और अपने सेवकों को धधकती
आग।" 8किन्तु पुत्र के विषय में, "हे परमेश्वर!
तेरा सिंहासन युग-युगों तक बना रहता है और
तेरा राजदण्ड न्याय का अधिकारदण्ड है। 9तूने
धर्म का पक्ष ले कर अधर्म से बैर किया है,
इसलिए हे परमेश्वर! तेरे परमेश्वर ने तुझे तेरे
साथियों के ऊपर उठा कर आनन्द के तेल से
तेरा अभिषेक किया है।" 10और फिर, "हे
प्रभु! तूने आदि में पृथ्वी की नींव डाली।
आकाश तेरे हाथों का कार्य है। 11वे तो नष्ट हो
जायेंगे, किन्तु तू बना रहता है। वे सब वस्त्र की
तरह पुराने हो जायेंगे। 12तू चादर की भाँति उन्हें
समेट लेगा। वे वस्त्र की तरह बदल दिये
जायेंगे, किन्तु तू एकरूप रहता है और तेरे वर्षों
का अन्त नहीं होगा।" 13क्या उसने स्वर्गदूतों
में किसी से कभी यह कहा, "तू तब तक मेरी
दाहिनी ओर बैठ, जब तक मैं तेरे शत्रुओं को
तेरे चरणों की चौकी न बना दूँ?" 14क्या सब
स्वर्गदूत परिचारक नहीं हैं जो उन लोगों की
सेवा के लिए भेजे जाते हैं, जो मुक्ति के
उत्तराधिकारी होंगे?

मुक्ति-सन्देश का महत्त्व

2 इसलिए हमें जो सन्देश मिला है, उस पर
अच्छी तरह ध्यान देना चाहिए। कहीं ऐसा
न हो कि हम मार्ग से भटक जायें। 2यदि स्वर्गदूतों
द्वारा दिये हुए सन्देश का इतना महत्त्व था कि
उसके प्रत्येक अतिक्रमण अथवा तिरस्कार को
उचित दण्ड मिला, 3तो हम कैसे बच सकेंगे,
यदि हम उस महान् मुक्ति का तिरस्कार करेंगे,
जिसकी घोषणा पहले पहल प्रभु द्वारा हुई थी?
जिन लोगों ने प्रभु को सुना, उन्होंने उनके
सन्देश को हमारे लिए प्रमाणित किया। 4परमेश्वर
ने भी चिह्नों, चमत्कारों, नाना प्रकार के
सामर्थ्यपूर्ण कार्यों और अपनी इच्छा के अनुसार
प्रदत्त पवित्र आत्मा के वरदानों द्वारा उनकी
साक्षी का समर्थन किया।

मसीह मुक्तिदाता हैं

5परमेश्वर ने उस भावी संसार को, जिसकी
चर्चा हम कर रहे हैं, स्वर्गदूतों के अधीन नहीं
किया है। 6धर्मग्रंथ के किसी स्थान पर कोई यह
साक्षी देता है,

"मनुष्य क्या है, जो तू उसकी सुधि ले?
मनुष्य का पुत्र क्या है, जो तू उसकी देखभाल
करे?
7तूने उसे स्वर्गदूतों से कुछ काल के लिए छोटा
बनाया
और उसे महिमा तथा सम्मान का मुकुट
पहनाया।
8तूने सब कुछ उसके पैरों तले अधीन कर
दिया।"

जब परमेश्वर ने सब कुछ उसके अधीन कर
दिया, तो उसने कुछ भी ऐसा नहीं छोड़ा जो
उसके अधीन न हो। वास्तव में हम अब तक
यह नहीं देखते कि सब कुछ उसके अधीन है।
9परन्तु हम यह देखते हैं कि येशु कुछ काल के
लिए स्वर्गदूतों से छोटे बनाए गए थे, किन्तु मृत्यु
की यन्त्रणा सहने के कारण येशु को महिमा

1 : 4 फिल 2 : 9 **1 : 5** इब्र 5 : 5; भज 2 : 7; 2 शम 7 : 14; प्रे 13 : 33 **1 : 6** रोम 8 : 29; भज 97 : 7 व्य 32 : 43 (यू० पाठ) **1 : 7** भज 104 : 4 (यू० पाठ) **1 : 8** भज 45 : 6-7 **1 : 9** यश 61 : 1, 3 **1 : 10** भज 102 : 25-27 (यू० पाठ) **1 : 13** भज 110 : 1 **1 : 14** भज 34 : 7; 91 : 11; तोबी 12 : 14-15 **2 : 2** प्रे 7 : 38, 53; गल 3 : 19 **2 : 3** इब्र 10 : 29; 12 : 25 **2 : 4** मक 16 : 20; 1 कुर 12 : 4, 11 **2 : 6** भज 8 : 4-6 **2 : 8** 1 कुर 15 : 27 **2 : 9** फिल 2 : 8-9

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और सम्मान का मुकुट पहनाया गया है। इस प्रकार वह परमेश्वर की कृपा से प्रत्येक मनुष्य के लिए मृत्यु का स्वाद चख सकें।

10परमेश्वर, जिसके कारण और जिसके द्वारा सब कुछ होता है, बहुत-से पुत्र-पुत्रियों* को महिमा तक ले जाना चाहता था। इसलिए यह उचित था कि वह उन सब की मुक्ति के प्रवर्तक को, अर्थात् येशु को दुःखभोग द्वारा पूर्ण सिद्ध बनाए। 11जो पवित्र करता है और जो पवित्र किये जाते हैं, उन सब का पिता एक ही है; इसलिए येशु को उन्हें अपने भाई-बहिन+ मानने में लज्जा नहीं होती 12और वह कहते हैं, "मैं अपने भाई-बहिनों+ के सामने तेरे नाम का बखान करूँगा। मैं सभा के बीच तेरा गुणगान करूँगा।" 13फिर, "मैं तुझ-परमेश्वर पर पूरा भरोसा रखूँगा"; और फिर, "मैं और वह सन्तति, जिसे परमेश्वर ने मुझे दिया है, हम प्रस्तुत हैं।"

14परिवार की समस्त सन्तति का रक्त-मांस एक ही होता है, इसलिए येशु ने भी हमारा रक्त-मांस धारण किया, जिससे वह अपनी मृत्यु द्वारा मृत्यु पर अधिकार रखने वाले शैतान को परास्त करें 15और उन मनुष्यों को मुक्त कर दें, जो मृत्यु के भय के कारण जीवन-भर दासत्व में जकड़े रहे। 16निस्संदेह येशु स्वर्गदूतों की नहीं, बल्कि अब्राहम के वंशजों की सुधि लेते हैं। 17इसलिए यह आवश्यक था कि वह सभी बातों में अपने भाई-बहिनों+ के सदृश बन जायें, जिससे वह परमेश्वर-सम्बन्धी बातों में मनुष्यों के दयालु और विश्वस्त महापुरोहित के रूप में प्रजा के पापों का प्रायश्चित कर सकें। 18येशु की परीक्षा ली गयी है और उन्होंने स्वयं दुःख भोगा है इसलिए वह परीक्षा में पड़े हुए लोगों की सहायता कर सकते हैं।

मसीह मूसा से श्रेष्ठ हैं

3 भाइयो एवं बहिनो! आप पवित्र हैं, आप ईश्वरीय बुलावे में सहभागी हैं; इसलिए आप हमारे विश्वास-वचन के महापुरोहित येशु का ध्यान करें, जिनको परमेश्वर ने प्रेषित किया। 2जिस तरह मूसा परमेश्वर के घराने के सब कार्यों में विश्वस्त रहे, उसी तरह येशु भी परमेश्वर के प्रति विश्वस्त रहे, जिसने उन्हें नियुक्त किया। 3किसी घर की अपेक्षा घर का निर्माता अधिक सम्मान के योग्य समझा जाता है। इसी तरह, मूसा की अपेक्षा येशु अधिक सम्मान के योग्य समझे गये हैं; 4क्योंकि हर घर किसी के द्वारा निर्मित किया जाता है, किन्तु परमेश्वर सबका निर्माता है। 5मूसा तो परमेश्वर के घराने के सब कार्यों में विश्वस्त रहे, किन्तु सहायक के रूप में—भविष्य में परमेश्वर के प्रकट होने वाले सन्देश के विषय में साक्षी देने के लिए— 6जब कि मसीह, परमेश्वर के घराने का अध्यक्ष बन कर, पुत्र के रूप में विश्वस्त रहे। परमेश्वर का घराना हम हैं, बशर्ते हम पूर्ण भरोसा करें और वह आशा अक्षुण्ण बनाये रखें, जिस पर हम गर्व करते हैं।

विश्वास द्वारा परमेश्वर के विश्राम-स्थान में प्रवेश

7इसलिए आप पवित्र आत्मा के इस कथन पर ध्यान दें:

"यदि तुम 'आज' परमेश्वर की वाणी सुनो,
8तो अपना हृदय कठोर न करना,
जैसा कि पहले, विद्रोह के समय, हुआ था।
उस दिन तुम्हारे पूर्वजों ने निर्जन प्रदेश में
मेरी परीक्षा ली।
9उन्होंने वहां मुझे चुनौती दी,
यद्यपि उन्होंने चालीस वर्षों तक मेरे कार्य
देखे थे।
10इसलिए मैं उस पीढ़ी पर अप्रसन्न हो गया

---

* मूल में "पुत्रों"। + अथवा, "भाई"; मूल बहुवचन का द्विलिंगी अर्थ भी होता है।

2 : 10 रोम 11 : 36 **2 : 11** मक 3 : 34-35; मत 25 : 40; यो 20 : 17 **2 : 12** भज 22 : 22 **2 : 13** यश 8 : 17-18 (यू० पाठ); 2 शम 22 : 3 **2 : 14** 2 तिम 1 : 10; यो 12 : 31; प्रक 12 : 10; 1 कुर 15 : 56 **2 : 16** यश 41 : 8-9 **2 : 17** भज 22 : 22; फिल 2 : 7 **2 : 18** इब्र 4 : 15 **3 : 1** इब्र 4 : 14 **3 : 2** गण 12 : 7 **3 : 5** गण 12 : 7 **3 : 6** इफ 2 : 19; कुल 1 : 23 **3 : 7** भज 95 : 7-11 (यू० पाठ) **3 : 8** नि 17 : 7; गण 20 : 2-5

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और मैंने कहा, ''इनका हृदय सदा भटकता
रहता है;
और ये मेरे मार्ग नहीं जानते हैं।''
11अत: मैंने क्रुद्ध हो कर यह शपथ खायी:
''ये मेरे विश्रामस्थान में प्रवेश नहीं
करेंगे।'' ''
12भाइयो और बहिनो! आप सावधान रहें।
आप लोगों में से किसी के मन में इतनी बुराई
और अविश्वास न हो कि वह जीवन्त परमेश्वर
से विमुख हो जाये। 13जब तक ''आज'' बना
रहता है, आप लोग प्रतिदिन एक दूसरे को
प्रोत्साहन देते जायें, जिससे कोई भी पाप के
फन्दे में पड़ कर कठोर न बने। 14हम तो मसीह
के भागीदार बन गये हैं, बशर्ते हम अपना
आधारभूत विश्वास अन्त तक अक्षुण्ण बनाये
रखें।
15धर्मग्रन्थ कहता है, ''यदि तुम आज
उसकी वाणी सुनो तो अपना हृदय कठोर न
करना, जैसा कि पहले, विद्रोह के समय हुआ
था।'' 16जिन लोगों ने वाणी सुन कर विद्रोह
किया, वे कौन थे? निश्चय ही वे सब लोग, जो
मूसा के नेतृत्व में मिस्र देश से निकल आये थे।
17परमेश्वर चालीस वर्षों तक किन लोगों पर
अप्रसन्न रहा? निश्चय ही उन लोगों पर,
जिन्होंने पाप किया था और जिनके शव निर्जन
प्रदेश में पड़े रहे। 18किन लोगों के विषय में
उसने शपथ खाकर कहा कि ''ये मेरे विश्रामस्थान
में प्रवेश नहीं करेंगे''? निश्चय ही उनके विषय
में, जिन्होंने विश्वास करना अस्वीकार किया।
19इस प्रकार हम देखते हैं कि वे अपने
अविश्वास के कारण प्रवेश नहीं कर पाये।
4 परमेश्वर के विश्रामस्थान में प्रवेश करने
की वह प्रतिज्ञा अब तक कायम है;
इसलिए हम सतर्क रहें कि आप लोगों में से
कोई भी अयोग्य न ठहरे, और उसमें प्रवेश
करने से वंचित न रह जाये। 2हम को उन लोगों
की तरह एक मंगलमय समाचार सुनाया गया
है। परन्तु उन लोगों ने जो सन्देश सुना, उन्हें
उससे कोई लाभ नहीं हुआ; क्योंकि संदेश
सुनने वालों ने विश्वासपूर्वक उसको ग्रहण नहीं
किया।* 3इसलिए यदि हम विश्वासी बन गये
हैं तो हम परमेश्वर के उस विश्राम-स्थान में
प्रवेश करते हैं, जिसके विषय में उसने कहा,
''मैंने क्रुद्ध हो कर यह शपथ खायी: ये मेरे
विश्रामस्थान में प्रवेश नहीं करेंगे।'' परमेश्वर
का कार्य तो संसार की सृष्टि के समय ही समाप्त
हो गया है, 4क्योंकि धर्मग्रन्थ सातवें दिन के
विषय में यह कहता है, ''परमेश्वर ने अपना
समस्त कार्य समाप्त कर सातवें दिन विश्राम
किया'' 5और उपर्युक्त उद्धरण में हम यह
पढ़ते हैं, ''ये मेरे विश्रामस्थान में प्रवेश नहीं
करेंगे।''
6यह निश्चित है कि कुछ लोगों को प्रवेश
करना है; किन्तु जिन लोगों को पहले वह
मंगलमय समाचार सुनाया गया था, वे अवज्ञा
करने के कारण प्रवेश नहीं कर पाये। 7इसलिए
परमेश्वर एक दूसरा दिन, अर्थात् ''आज''
निर्धारित करता है और वह बहुत वर्षों के बाद
दाऊद के मुख से उपर्युक्त शब्द कहता है,
''यदि तुम 'आज' उसकी वाणी सुनो, तो
अपना हृदय कठोर न करना।''
8यदि ''यहोशुअ+'' इस्राएलियों को
विश्रामस्थान में ले गया होता, तो परमेश्वर बाद
में किसी दूसरे दिन की चर्चा नहीं करता।
9इसलिए अब भी परमेश्वर की प्रजा के लिए
एक विश्राम-दिवस बना हुआ है। 10जिस व्यक्ति
ने परमेश्वर के विश्रामस्थान में प्रवेश किया है,
उसने, अर्थात् ''येशु''+ ने अपना कार्य समाप्त
कर उसी प्रकार विश्राम किया है, जिस प्रकार
परमेश्वर ने अपना कार्य समाप्त कर विश्राम
किया। 11इसलिए हम उस विश्रामस्थान में
प्रवेश करने का पूरा-पूरा प्रयत्न करें; कहीं ऐसा

* कुछ प्राचीन प्रतियों में, ''वे सुननेवालों के साथ विश्वास में संयुक्त नहीं थे।'' + यहोशुअ तथा येशु का मूल रूप एक ही है।

3 : 11 गण 14 : 21-23 **3 : 13** 1 थिस 5 : 11 **3 : 14** इब्र 6 : 11; 10 : 23; 11 : 1 **3 : 15** भज 95 : 8 (यू० पाठ) **3 : 16** नि 17 : 1 **3 : 17** गण 14 : 29; 1 कुर 10 : 10 **3 : 18** गण 14 : 22-23 **4 : 1** भज 95 : 11 **4 : 4** उत 2 : 2 **4 : 8** व्य 31 : 7; यहो 22 : 4 **4 : 10** प्रक 14 : 13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

न हो कि उन लोगों की अवज्ञा के अनुकरण में
किसी का पतन हो जाए।
[12]क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवन्त,
सशक्त और किसी भी दुधारी तलवार से तेज
है। वह प्राण और आत्मा के, अथवा ग्रंथियों
और मज्जा के विच्छेद तक पहुँचता और हमारे
हृदय के भावों तथा विचारों को परखता है।
[13]परमेश्वर से कोई भी सृष्ट वस्तु छिपी नहीं है।
उसकी आंखों के सामने सब कुछ खुला और
अनावृत्त है। उसी को हमें लेखा देना पड़ेगा।

नवीन विधान के महापुरोहित मसीह

[14]हमारे अपने एक महान् महापुरोहित हैं;
अर्थात् परमेश्वर-पुत्र येशु जो ऊर्ध्वलोक को
पार कर चुके हैं। इसलिए हम अपने विश्वास-
वचन में सुदृढ़ रहें। [15]हमारे महापुरोहित हमारी
दुर्बलताओं में हम से सहानुभूति रख सकते हैं,
क्योंकि पाप को छोड़ कर सभी बातों में हमारी
ही तरह उनकी परीक्षा ली गयी है। [16]इसलिए
हम पूर्ण भरोसे के साथ अनुग्रह के सिंहासन के
पास जायें, जिससे हमें दया मिले और हम वह
कृपा प्राप्त करें, जो हमारी आवश्यकताओं में
हमारी सहायता करेगी।

5 प्रत्येक महापुरोहित मनुष्यों में से चुना
जाता है और परमेश्वर-सम्बन्धी बातों में
मनुष्यों का प्रतिनिधि नियुक्त किया जाता है,
जिससे वह भेंट और पापों के प्रायश्चित की
बलि चढ़ाये। [2]वह अज्ञानियों और भूले-भटके
लोगों के साथ सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार कर
सकता है, क्योंकि वह स्वयं दुर्बलताओं से घिरा
हुआ है। [3]यही कारण है कि उसे न केवल
जनता के लिए, बल्कि अपने लिए भी पापों के
प्रायश्चित की बलि चढ़ानी पड़ती है। [4]कोई भी
अपने आप यह गौरवपूर्ण पद नहीं अपनाता।
प्रत्येक महापुरोहित हारून की भाँति परमेश्वर
द्वारा बुलाया जाता है। [5]इसी प्रकार, मसीह ने
अपने को महापुरोहित बनने का गौरव नहीं
प्रदान किया; परन्तु परमेश्वर ने किया और उन
से कहा, "तू मेरा पुत्र है, आज मैंने तुझे उत्पन्न
किया है।" [6]अन्यत्र भी वह कहता है, "तू
मलकीसेदेक के अनुरूप* सदा पुरोहित बना
रहेगा।"
[7]मसीह ने इस पृथ्वी पर रहते समय पुकार-
पुकार कर और आँसू बहा-बहा कर परमेश्वर
से, जो उन्हें मृत्यु से बचा सकता था, प्रार्थना
और अनुनय-विनय की। श्रद्धाभक्ति के कारण
उनकी प्रार्थना सुनी गयी। [8]पुत्र होने पर भी
उन्होंने दुःख सह कर आज्ञापालन सीखा।
[9-10]वह पूर्ण रूप से सिद्ध बन कर और
परमेश्वर से मलकीसेदेक के अनुरूप महापुरोहित
की उपाधि प्राप्त कर उन सब के शाश्वत मुक्ति
के स्रोत बन गये, जो उनकी आज्ञाओं का पालन
करते हैं।

आप धर्म और विश्वास में उन्नति करें

[11]इसके सम्बन्ध में हमें बहुत कुछ कहना
है। पर इन बातों को समझाना कठिन है, क्योंकि
आप लोग ढीले पड़ गये हैं और ऊंचा सुनने लगे
हैं! [12]इस समय तक आप लोगों को शिक्षक
हो जाना चाहिए था, किन्तु यह आवश्यक हो
गया है कि कोई आप को दुबारा परमेश्वर के
वचनों का प्रारम्भिक ज्ञान दे। आप लोगों को
ठोस भोजन की नहीं, बल्कि दूध की आवश्यकता
है। [13]जो दूध पर ही निर्वाह करता है, वह शिशु
है और धार्मिकता की शिक्षा समझने में असमर्थ
है, [14]जब कि सिद्ध व्यक्ति ठोस भोजन करते
हैं। वे अनुभवी हैं और अभ्यास के कारण
उनकी ज्ञानेन्द्रियां भला-बुरा पहचानने में समर्थ
हैं।

6 इसलिए हम मसीह-सम्बन्धी प्रारम्भिक
शिक्षा से आगे बढ़कर सिद्धता** की ओर
प्रगति करें। अब हम मृत्यु की ओर ले जाने वाले

* अथवा, 'की श्रेणी में' **अथवा, 'प्रौढ़ता की ओर'

4 : 12 यिर 23 : 29; यश 49 : 2; इफ 6 : 17; प्रक 19 : 15; यो 12 : 48 **4 : 13** प्रज्ञ 1 : 6 **4 : 14** इब्र 3 : 1; 6 : 20; 7 : 26; 8 : 1; 9 : 11 **4 : 15** इब्र 2 : 17 **4 : 16** 1 यो 3 : 21; रोम 3 : 25 **5 : 2** इब्र 4 : 15 **5 : 3** लेव 9 : 7; 16 : 6 **5 : 4** नि 28 : 1 **5 : 5** भज 2 : 7; प्रे 13 : 33 **5 : 6** इब्र 7 : 1; भज 110 : 4 **5 : 7** मत 26 : 39-46 **5 : 8** फिल 2 : 8 **5 : 9** यश 45 : 17; यो 17 : 1, 5 **5 : 12** 1 कुर 3 : 1-3; 1 पत 2 : 2 **5 : 13** इफ 4 : 14 **5 : 14** फिल 1 : 10; रोम 16 : 19; उत 2 : 17 **6 : 1** इब्र 9 : 14

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कर्मों से हृदय-परिवर्तन, परमेश्वर में विश्वास,
2शुद्धिकरण-विधियों+ सम्बन्धी शिक्षा,
हस्तारोपण, मृतकों के पुनरुत्थान और अनंत
दंड जैसी शिक्षाओं की नींव फिर न डालें,
बल्कि उन से ऊपर उठें। 3यदि परमेश्वर की
अनुमति होगी, तो हम यही करेंगे।

4वास्तव में, जिन लोगों को एक बार दिव्य
ज्योति मिली है, जो स्वर्गीय वरदान का
आस्वादन कर चुके और पवित्र आत्मा के
भागीदार बन गये हैं, 5जिन्हें परमेश्वर के संदेश
की उत्तमता और आगामी युग की शक्तियों का
अनुभव हो चुका है—6यदि वे पथभ्रष्ट हो जाते
हैं, तो उन्हें पुनः पश्चात्ताप के मार्ग पर ले आना
असम्भव है; क्योंकि वे अपनी ओर से परमेश्वर
के पुत्र को फिर क्रूस पर आरोपित करते और
उनका उपहास कराते हैं।**

7जो भूमि अपने ऊपर बार-बार पड़ने वाला
पानी सोख लेती और उन लोगों के लिए
उपयोगी फसल उगाती है, जो उन पर खेती
करते हैं, तो वह परमेश्वर की आशिष प्राप्त
करती है। 8किन्तु यदि वह काँटे और ऊँटकटारे
उगाती है, तो वह बेकार है। उस पर अभिशाप
पड़ने वाला है और अन्त में उसे जलाया
जायेगा।

9प्रिय भाइयो और बहिनो! यद्यपि हम इस
प्रकार बोल रहे हैं, फिर भी हमें निश्चय है कि
आप लोगों की दशा इस से कहीं अच्छी है और
आप मुक्ति के मार्ग पर चलते हैं। 10परमेश्वर
अन्याय नहीं करता। वह आपके कार्यों को एवं
उस प्रेम को नहीं भुला सकता, जो आपने,
उसके नाम की महिमा के उद्देश्य से, इस प्रकार
दिखाया कि आपने सन्तों की सेवा की और अब
भी कर रहे हैं। 11मैं चाहता हूँ कि आपकी आशा
परिपूर्ण हो जाने तक आप लोगों में हर एक
व्यक्ति यही तत्परता दिखलाता रहे। 12आप लोग
ढिलाई न करें, वरन् उन लोगों का अनुसरण
करें, जो अपने विश्वास और धैर्य के कारण
प्रतिज्ञाओं के उत्तराधिकारी होते हैं।

परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं

13परमेश्वर ने जब अब्राहम से प्रतिज्ञा की
थी, तो उसने अपने नाम की शपथ खायी;
क्योंकि उस से बड़ा कोई नहीं था, जिसका नाम
ले कर वह शपथ खाये। 14उसने कहा, "मैं तुम
पर आशिष बरसाता रहूँगा और तुम्हारे वंशजों
को असंख्य बना दूँगा" 15अब्राहम ने बहुत
समय तक धैर्य रखने के बाद प्रतिज्ञा का फल
प्राप्त किया। 16लोग अपने से बड़े का नाम ले
कर शपथ खाते हैं। उन में शपथ द्वारा कथन की
पुष्टि होती है और सारा विवाद समाप्त हो जाता
है। 17परमेश्वर प्रतिज्ञा के उत्तराधिकारियों को
सुस्पष्ट रूप से अपने संकल्प की अपरिवर्त्तनीयता
दिखलाना चाहता था, इसलिए उसने शपथ खा
कर प्रतिज्ञा की। 18वह इन दो अपरिवर्तनीय
कार्यों, अर्थात् प्रतिज्ञा और शपथ में, झूठा
प्रमाणित नहीं हो सकता। इस से हमें, जिन्होंने
परमेश्वर की शरण ली है, यह प्रबल प्रेरणा
मिलती है कि हमें जो आशा दिलायी गयी है,
हम उसे धारण किये रहें। 19वह आशा हमारी
आत्मा के लिए एक सुस्थिर एवं सुदृढ़ लंगर के
सदृश है, जो परदे के उस पार स्वर्गिक
मन्दिरगर्भ में पहुँचता है, 20जहाँ येशु हमारे
अग्रदूत के रूप में प्रवेश कर चुके हैं; क्योंकि
वह मलकीसेदेक के अनुरूप सदा के लिए
महापुरोहित बन गये हैं।

7 जब अब्राहम राजाओं का संहार कर लौट
रहे थे, तब शालेम के राजा और सर्वोच्च
परमेश्वर के पुरोहित मलकीसेदेक उन से
मिलने आये और उन्होंने अब्राहम को आशीर्वाद
दिया। 2अब्राहम ने उन्हें सब वस्तुओं का
दशमांश दिया। "मलकी-सेदेक" का अर्थ
है—धार्मिकता का राजा। वह "शालेम" के
राजा भी हैं, जिसका अर्थ है "शान्ति" के

+ अथवा, "बपतिस्मों" ** अथवा, "क्योंकि इस नवीकरण के लिए उन्हें परमेश्वर के पुत्र को क्रूस पर पुनः आरोपित करना और उनका उपहास करना होता।"

6 : 4 इब्र 10 : 26-27; मत 12 : 31; 1 यो 5 : 16 **6 : 5** 1 पत 2 : 3 **6 : 7** उत 1 : 11-12 **6 : 8** उत 3 : 17-18 **6 : 10** इब्र 10 : 32-34 **6 : 11** इब्र 3 : 14; फिल 1 : 6 **6 : 13** उत 22 : 16-17 **6 : 16** नि 22 : 11 **6 : 18** गण 23 : 19; 1 शम 15 : 29 **6 : 19** लेव 16 : 2, 12 **6 : 20** इब्र 5 : 6 **7 : 1** उत 14 : 17-20

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

राजा। 3उनके न तो पिता है, न माता और न कोई
वंशावली। उनके जीवन का न तो आरम्भ है
और न अन्त। वह परमेश्वर के पुत्र के सदृश
हैं और वह सदा पुरोहित बने रहते हैं।
4आप इस बात पर विचार करें कि
मलकीसेदेक कितने महान् हैं! कुलपति अब्राहम
ने भी उन्हें लूट के उत्तम भाग का दशमांश
दिया। 5पुरोहित-पदधारी लेवी-वंशी व्यवस्था
के आदेशानुसार लोगों से अर्थात् अपने अन्य-
वंशी जाति-भाइयों से दशमांश लेते हैं, यद्यपि
वे अन्य-वंशी भी अब्राहम के वंशज हैं। 6किन्तु
मलकीसेदेक लेवी-वंशी नहीं थे। तो भी
उन्होंने अब्राहम से दशमांश लिया और प्रतिज्ञाओं
के अधिकारी को आशीर्वाद दिया। 7अब यह
निर्विवाद है कि जो छोटा है, वह अपने से बड़े
का आशीर्वाद पाता है। 8इसके अतिरिक्त दशमांश
पाने वाले लेवी-वंशी मरणशील मनुष्य हैं, जब
कि मलकीसेदेक के विषय में धर्मग्रन्थ कहता
है कि वह जीवित बने रहते हैं। 9यहभी कहा
जा सकता है कि दशमांश पाने वाले लेवी ने
अब्राहम के माध्यम से दशमांश दिया। 10क्योंकि
जब अब्राहम से मलकीसेदेक की भेंट हुई, तो
लेवी एक प्रकार से अपने पूर्वज अब्राहम के
शरीर में विद्यमान थे।

मसीह मलकीसेदेक के अनुरूप सदा पुरोहित बने रहेंगे

11इस्राएली प्रजा को लेवियों के पुरोहितत्व
के आधार पर व्यवस्था मिली थी। यदि इस
पुरोहितत्व के माध्यम से पूर्णता प्राप्त हो सकती
थी, तो यह क्यों आवश्यक था कि एक अन्य
पुरोहित की चर्चा की जाये जो हारून की नहीं,
बल्कि मलकीसेदेक की श्रेणी में आ जायेगा?
12पुरोहितत्व में परिवर्तन होने पर व्यवस्था में
भी परिवर्तन अनिवार्य है। 13ये बातें जिस पुरोहित
के विषय में कही गयी हैं, वह एक अन्य वंश
का है और उस वंश का कोई भी व्यक्ति वेदी
का सेवक नहीं बना; 14क्योंकि यह तो प्रत्यक्ष
है कि हमारे प्रभु येशु यहूदा के कुल में उत्पन्न
हुए हैं और मूसा ने पुरोहितों के विषय में लिखते
समय उस कुल का उल्लेख नहीं किया।
15यह सब और भी स्पष्ट हो जाता है यदि हम
इस पर विचार करें कि एक अन्य पुरोहित प्रकट
हुए, जो मलकीसेदेक के सदृश हैं, 16जो वंश-
परम्परा पर आधारित किसी व्यवस्था के
आदेशानुसार नहीं, बल्कि अविनाशी जीवन के
सामर्थ्य से पुरोहित बन गये हैं। 17उन्हीं के विषय
में धर्मग्रन्थ यह साक्षी देता है, "तू मलकीसेदेक
के अनुरूप सदा पुरोहित बना रहेगा।"
18शक्तिहीन और निष्फल होने के कारण पुराना
आदेश रद्द कर दिया गया है, 19क्योंकि व्यवस्था
कुछ भी पूर्णता तक नहीं पहुँचा सकी। हमें इस
से श्रेष्ठ आशा प्रदान की गयी है और इसके
माध्यम से हम परमेश्वर के निकट पहुँचते हैं।
20शपथ के साथ ही येशु की नियुक्ति हुई
थी, जब कि वे शपथ के बिना पुरोहित नियुक्त
हुए थे; 21क्योंकि मसीह की नियुक्ति के समय
प्रभु परमेश्वर ने शपथ खायी थी। जैसा कि
धर्मग्रन्थ कहता है, "मैंने शपथ ली है और मेरी
यह शपथ अपरिवर्तनीय है: तू सदा पुरोहित
बना रहेगा।" 22इस प्रकार, हम देखते हैं कि
येशु जिस विधान का उत्तरदायित्व लेते हैं, वह
कहीं अधिक श्रेष्ठ है।*
23इसके अतिरिक्त पहले के पुरोहित बड़ी
संख्या में नियुक्त किये जाते रहे हैं, क्योंकि मृत्यु
के कारण अधिक समय तक पुरोहित-पद पर
बना रहना उनके लिए सम्भव नहीं था। 24किन्तु
येशु सदा बने रहते हैं, इसलिए उनका पुरोहितत्व
अद्वितीय एवं चिरस्थायी है। 25यही कारण है
कि जो लोग उनके द्वारा परमेश्वर की शरण लेते
हैं, वह उन्हें पूर्णतः बचाने में समर्थ हैं; क्योंकि
वह उनकी ओर से निवेदन करने के लिए सदा
जीवित हैं।
26यह उचित ही था कि हमें इस प्रकार के
महापुरोहित मिलें, जो पवित्र, निर्दोष, निष्कलंक,

* अक्षरशः "येशु जिस विधान के प्रतिभू (जामिन, गारंटीकर्त्ता) हैं, वह कहीं अधिक श्रेष्ठ है।"

7 : 3 भज 110 : 4 **7 : 5** गण 18 : 21 **7 : 14** उत 49 : 10; यश 11 : 1 **7 : 17** इब्र 5 : 6 **7 : 19** इब्र 9 : 9 **7 : 22** इब्र 8 : 6; 12 : 24 **7 : 25** रोम 8 : 34; 1 यो 2 : 1 **7 : 26** इब्र 4 : 14

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पापियों से सर्वथा भिन्न और स्वर्ग से भी उच्चतर
हों। 27अन्य महापुरोहित पहले अपने पापों और
बाद में प्रजा के पापों के लिए प्रतिदिन बलि
चढ़ाया करते हैं। येशु को इसकी आवश्यकता
नहीं होती, क्योंकि उन्होंने यह कार्य सदा के
लिए एक ही बार में पूरा कर लिया जब उन्होंने
अपने को बलि चढ़ाया। 28व्यवस्था तो दुर्बल
मनुष्यों को महापुरोहित नियुक्त करती है,
किन्तु व्यवस्था के समाप्त हो जाने के बाद
परमेश्वर की शपथ के अनुसार वह पुत्र महा-
पुरोहित नियुक्त किया जाता है, जिसे सदा के
लिए पूर्ण सिद्ध बना दिया गया है।

नये विधान के महापुरोहित मसीह

8 इन बातों का सारांश यह है: हमारे एक ऐसे
महापुरोहित हैं, जो स्वर्ग में महामहिम
परमेश्वर के सिंहासन की दाहिनी ओर विराजमान
हो कर 2उस वास्तविक पवित्र स्थान तथा
शिविर के धर्मसेवक* हैं जो मनुष्य द्वारा नहीं,
बल्कि प्रभु द्वारा संस्थापित है। 3प्रत्येक
महापुरोहित भेंट और बलि चढ़ाने के लिए
नियुक्त है, इसलिए यह आवश्यक है कि उसके
पास चढ़ावे के लिए कुछ हो। 4यदि येशु पृथ्वी
पर रहते, तो वह पुरोहित भी नहीं होते; क्योंकि
व्यवस्था के अनुसार भेंट चढ़ाने के लिए
पुरोहित विद्यमान हैं— 5यद्यपि वे एक ऐसे
आराधना-स्थल में आराधना करते हैं जो स्वर्ग
की वास्तविकता की प्रतिकृति और छाया मात्र
है। यही कारण है कि जब मूसा शिविर का
निर्माण करने वाले थे, तो उन्हें परमेश्वर की
ओर से यह आदेश मिला, "देखो, जो नमूना
तुम्हें पर्वत पर दिखाया गया, उसी के अनुसार
तुम सब कुछ बनाना।" 6अब, जो धर्मसेवा
मसीह को मिली है, वह कहीं अधिक ऊँची है;
क्योंकि वह एक ऐसे विधान के मध्यस्थ हैं, जो
श्रेष्ठतर है और श्रेष्ठतर प्रतिज्ञाओं पर आधारित
है।
7यदि पहला विधान परिपूर्ण होता, तो उसके
स्थान पर दूसरे की क्या आपश्यकता थी?
8परमेश्वर उन लोगों की निन्दा करते हुए कहता
है, "प्रभु यह कहता है: वे दिन आ रहे हैं, जब
मैं इस्राएल के घराने के लिए और यहूदा के
घराने के लिए एक नया विधान स्थापित
करूँगा। 9यह उस विधान की तरह नहीं होगा
जिसे मैंने उनके पूर्वजों के लिए उस समय
निर्धारित किया था, जब मैंने उन्हें मिस्र से
निकालने के लिए उनके हाथ थामे थे। प्रभु यह
कहता है: उन्होंने मेरे विधान का पालन नहीं
किया, इसलिए मैंने भी उनकी सुध नहीं ली।
10प्रभु यह कहता है: वह समय बीत जाने के
बाद मैं इस्राएल के लिए यह विधान निर्धारित
करूँगा—मैं अपने नियम उनके मन में रख
दूँगा, मैं उन्हें उनके हृदय पर अंकित करूँगा।
मैं उनका परमेश्वर होऊँगा और वे मेरी प्रजा
होंगे। 11इसकी आवश्यकता नहीं रहेगी कि
सहनागरिक एक-दूसरे को शिक्षा दें अथवा
भाई-बहिन एक-दूसरे से कहें, 'प्रभु का ज्ञान
प्राप्त कीजिए', क्योंकि छोटे और बड़े, सब-
के सब मुझे जानेंगे। 12मैं उनके अपराध क्षमा
कर दूंगा और उनके पापों को स्मरण नहीं
रखूँगा।" 13परमेश्वर इस विधान को "नया"
कह कर पुकारता है, इसलिए उसने प्रथम
विधान रद्द कर दिया है। जो पुराना और
जराग्रस्त हो गया है, वह लुप्त होने को है।

आत्मिक तथा सांसारिक आराधना

9 प्रथम विधान के भी अपने आराधना सम्बन्धी
नियम थे और उसका अपना पार्थिव
आराधना-स्थल था। 2एक शिविर खड़ा कर
दिया गया। उसके अगले कक्ष में दीपाधार था,
मेज थी और भेंट की रोटियाँ थीं। यह पवित्र-
स्थान कहलाता था। 3दूसरे परदे के पीछे का
कक्ष परमपवित्र-स्थान कहलाता था। 4वहाँ
धूपदान की स्वर्णमय वेदी और विधान की

---

* अथवा, "सर्वजन सेवक।"

7 : 27 लेव 16 : 6, 15 **7 : 28** इब्र 5 : 1-2 **8 : 1** इब्र 4 : 14 **8 : 5** कुल 2 : 17; नि 25 : 40 **8 : 6** इब्र 7 : 22; 12 : 24; 2 कुर 3 : 6 **8 : 8** इब्र 10 : 16-17; यिर 31 : 31-34 (यू० पाठ) **8 : 13** रोम 10 : 4 **9 : 2** नि 25 : 23, 30-31 **9 : 3** नि 26 : 33 **9 : 4** नि 16 : 33; 25 : 16, 21; गण 17 : 25

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

स्वर्ण से मढ़ी हुई मंजूषा थी। मंजूषा में ''मन्ना''
से भरा हुआ स्वर्णमय पात्र था, हारून की छड़ी
थी, जो पल्लवित हो उठी थी, और विधान की
शिला-पट्टियां थीं 5और मंजूषा के ऊपर
प्रायश्चित का स्थान+ आच्छादित करने वाले
महिमामय ''करूब'' विराजमान थे। इन सब
का विस्तृत विवरण यहाँ अपेक्षित नहीं है।
6ऐसे ही आराधना-स्थल का प्रबन्ध किया
गया था। आराधना की विधियाँ सम्पन्न करने के
लिए पुरोहित हर समय इस शिविर के अगले
कक्ष में जाया करते थे, 7किन्तु केवल महापुरोहित,
वर्ष में एक ही बार, पिछले कक्ष में वह रक्त
लिये प्रवेश करता था, जिसे वह अपने और
प्रजा के दोषों** के लिए प्रायश्चित के रूप में
चढ़ाता था। 8इस प्रकार पवित्र आत्मा यह
दिखलाना चाहता है कि जब तक शिविर का
अगला कक्ष खड़ा है, तब तक परमपवित्र-
स्थान का मार्ग खुला नहीं है। 9वह वर्तमान समय
का प्रतीक है। वहाँ जो भेंट और बलि चढ़ायी
जाती है, वह उपासक के आभ्यन्तर को पूर्णता
तक नहीं पहुँचा सकती। 10वे बाह्य नियम हैं
जो खान-पान एवं नाना प्रकार की शुद्धीकरण-
विधियों से सम्बन्ध रखते हैं और पुनर्निर्माण के
युग के आगमन तक ही लागू हैं।
11किन्तु अब मसीह हमारे भावी कल्याण के
महापुरोहित के रूप में आये हैं। उन्होंने एक
ऐसे महान् और सिद्धतर शिविर को पार किया,
जो मनुष्य के हाथ से नहीं बना और इस पृथ्वी
का नहीं है। 12उन्होंने बकरों तथा बछड़ों का
नहीं, बल्कि अपना रक्त ले कर सदा के लिए
एक ही बार पवित्र स्थान में प्रवेश किया और
इस तरह मनुष्यों के लिए सदा-सर्वदा बना रहने
वाला उद्धार प्राप्त किया है। 13पुरोहित बकरों
तथा साँड़ों का रक्त और कलोर की राख अशुद्ध
लोगों पर छिड़कता है और उनका शरीर फिर
शुद्ध हो जाता है। यदि उस में पवित्र करने की
शक्ति है 14तो फिर मसीह का रक्त, जिन्होंने
अपने आपको शाश्वत आत्मा के द्वारा निर्दोष
बलि के रूप में परमेश्वर को अर्पित किया,
हमारे अन्तःकरण को मृत कर्मों से क्यों नहीं
शुद्ध करेगा और हमें जीवन्त परमेश्वर की सेवा
के योग्य क्यों नहीं बनायेगा? 15मसीह प्रथम
विधान के अन्तर्गत किये हुए अपराधों की क्षमा
के लिए मर गये हैं और इस प्रकार वह एक नये
विधान के मध्यस्थ हैं। परमेश्वर जिन्हें बुलाता
है, वे अब उसकी प्रतिज्ञा के अनुसार अनन्त
काल तक बनी रहने वाली विरासत प्राप्त करते
हैं।
16वसीयतनामे* के विषय में वसीयतकर्ता
की मृत्यु का प्रमाणपत्र देना पड़ता है, 17क्योंकि
मृत्यु के बाद ही वसीयतनामा मान्य होता है।
जब तक वसीयतकर्ता जीवित है, तब तक
वसीयतनामा मान्य नहीं होता। 18इसलिए रक्त
के बिना प्रथम विधान का प्रवर्तन नहीं हुआ था;
19क्योंकि जब मूसा ने सारी प्रजा के सामने
व्यवस्था की सब आज्ञाओं को पढ़ कर सुनाया
था, तो उन्होंने जल, लाल ऊन और जूफे के
साथ बछड़ों और बकरों का रक्त लिया और
उसे व्यवस्था-ग्रन्थ और सारी प्रजा पर छिड़कते
हुए 20कहा था, ''यह उस विधान का रक्त है,
जिसे परमेश्वर ने आप लोगों के लिए निर्धारित
किया है।'' 21उन्होंने शिविर और धर्मसेवा में
प्रयुक्त सभी पात्रों पर भी वह रक्त छिड़क दिया
था। 22व्यवस्था के अनुसार प्रायः सब कुछ रक्त
द्वारा शुद्ध किया जाता है और रक्त के बिना क्षमा
नहीं मिलती। 23जो वस्तुएँ स्वर्ग की वस्तुओं

+ अथवा, ''दया-आसन'', ''करुणा का सिंहासन''। ** अथवा, ''भूलचूकों'', ''अनजाने में किये गये अपराधों''।
* मूल यूनानी शब्द के दो अर्थ हैं—वसीयतनामा और विधान। लेखक दोनों का उपयोग करते हैं। वास्तव में नये विधान का प्रवर्तन मसीह की मृत्यु से प्रारम्भ होता है, अतः वह एक तरह से उनका वसीयतनामा भी है।

9 : 5 नि 25 : 18; 26 : 34 **9 : 6** गण 18 : 3-4 **9 : 7** नि 30 : 10; लेव 16 : 2, 14-15 **9 : 8** इब्र 10 : 19 **9 : 9** इब्र 10 : 1-2 **9 : 10** लेब 11 : 2; 15 : 18; गण 19 : 13 **9 : 11** इब्र 6 : 20; 10 : 1 **9 : 13** लेव 16 : 3, 14-15; गण 19 : 9, 17 **9 : 14** इब्र 6 : 1; 1 पत 18 : 19; 1 यो 1 : 7; प्रक 1 : 5; 1 कुर 14 : 45 **9 : 15** इब्र 12 : 24; 1 तिम 2 : 5 **9 : 19** नि 24 : 3; लेव 14 : 4; गण 19 : 6 **9 : 20** नि 24 : 6-8; मत 26 : 28 **9 : 21** लेव 8 : 15, 19 **9 : 22** लेव 17 : 11; इफ 1 : 7 **9 : 23** इब्र 8 : 5

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

की प्रतीक मात्र थीं, यदि उनका शुद्धीकरण इस प्रकार की विधियों द्वारा आवश्यक था, तो स्वयं स्वर्गिक वस्तुओं के लिए एक श्रेष्ठतर बलि-अर्पण आवश्यक ही है।

मसीह के बलिदान द्वारा पापों से शुद्धि

24मसीह ने हाथ के बने हुए उस पवित्र-स्थान में प्रवेश नहीं किया, जो वास्तविक "पवित्र-स्थान" का प्रतिरूप मात्र है। उन्होंने स्वर्ग में ही प्रवेश किया है, जिससे वह अब हमारी ओर से परमेश्वर के सामने उपस्थित हो
सकें। 25पार्थिव आराधना-स्थल का महापुरोहित किसी दूसरे का रक्त ले कर प्रतिवर्ष पवित्र-स्थान में प्रवेश करता है। परन्तु मसीह को उसी तरह बार-बार अपने को अर्पित करने की
आवश्यकता नहीं है। 26यदि ऐसा होता तो संसार के प्रारम्भ से उन्हें बार-बार दुःख भोगना पड़ता, किन्तु अब युग के अन्त में वह एक ही बार प्रकट हुए जिससे वह आत्मबलिदान द्वारा
पाप को मिटा दें। 27जिस तरह मनुष्यों के लिए एक ही बार मरना और इसके बाद उनका न्याय
होना निर्धारित है, 28उसी तरह मसीह बहुतों के पाप हरने के लिए एक ही बार अर्पित हुए। वह दूसरी बार प्रकट होंगे—पाप के कारण नहीं, बल्कि उन लोगों को मुक्ति दिलाने के लिए, जो उनकी प्रतीक्षा करते हैं।

एकमात्र समर्थ बलिदान

10 व्यवस्था भावी कल्याण का वास्तविक रूप नहीं, उसकी छाया मात्र दिखाती है। उसके नियमों के अनुसार प्रतिवर्ष बलि ही बलि चढ़ायी जाती है। व्यवस्था उन बलियों के द्वारा आराधकों को सदा के लिए पूर्णता तक
पहुँचाने में असमर्थ है। 2यदि वह इस में समर्थ होती, तो बलि चढ़ाना समाप्त हो जाता; क्योंकि तब आराधक एक ही बार में शुद्ध हो जाते और
उन में पाप का बोध नहीं रहता। 3किन्तु अब तो उन बलियों द्वारा प्रतिवर्ष पापों का स्मरण
दिलाया जाता है। 4साँड़ों तथा बकरों का रक्त
पाप नहीं हर सकता, 5इसलिए मसीह ने संसार में आ कर यह कहा:

"तूने न तो यज्ञ चाहा और न चढ़ावा,
किन्तु तूने मेरे लिए एक शरीर तैयार किया है।
6तू न तो होम-बलि से प्रसन्न हुआ और न पाप-बलि से;
7इसलिए मैंने कहा—हे परमेश्वर!
मैं तेरी इच्छा पूरी करने आया हूँ,
जैसा कि धर्मग्रन्थ के कुण्डल पत्र में
मेरे विषय में लिखा हुआ है।"

8ऊपर के उद्धरण में मसीह का कथन है, "तूने यज्ञ, चढ़ावा, होम-बलि अथवा पाप-बलि नहीं चाही। तू उन से प्रसन्न नहीं हुआ", यद्यपि ये सब बलि व्यवस्था के अनुसार ही
चढ़ायी जाती हैं। 9तब मसीह का यह भी कथन है, "देख, मैं तेरी इच्छा पूरी करने आया हूँ।" इस प्रकार वह पहले को रद्द करते और दूसरे
का प्रवर्त्तन करते हैं। 10उसी ईश्वरीय इच्छा के अनुसार, येशु मसीह की देह के अर्पण द्वारा, जो सदा के लिए एक ही बार सम्पन्न हुआ, हम पवित्र किये गये हैं।

11प्रत्येक पुरोहित खड़ा होकर प्रतिदिन धर्म-अनुष्ठान करता है और निरन्तर निर्धारित बलियां चढ़ाया करता है, जो पापों को कदापि
दूर नहीं कर सकती हैं। 12किन्तु मसीह, पापों के लिए एक ही बलि चढ़ाने के बाद, सदा के लिए परमेश्वर की दाहिनी ओर विराजमान हो
गये हैं, 13जहाँ वह उस समय की प्रतीक्षा कर रहे हैं, जब उनके शत्रु उनके चरणों की चौकी
बनेंगे। 14मसीह ने अपने एकमात्र अर्पण द्वारा उन लोगों को सदा के लिए पूर्णता तक पहुँचा
दिया है, जिनको वह पवित्र करते हैं। 15इसके सम्बन्ध में पवित्र आत्मा की साक्षी भी हमारे पास है। क्योंकि धर्मग्रन्थ में प्रभु के इस कथन
के पश्चात् कि 16"समय आने पर मैं उनके लिए यह विधान निर्धारित करूँगा", प्रभु

---

9 : 24 इब्र 11 :12; 1 यो 2 : 1 **9 : 26** 1 कुर 10 : 11; गल 4 : 4 **9 : 27** उत 3 : 19 **9 : 28** इब्र 10 : 10; इब्र 12 : 14; यश 53 : 12; फिल 3 : 20; 2 तिम 4 : 8; 1 पत 2 : 24 **10 : 1** इब्र 8 : 5; 7 : 19 **10 : 3** लेव 16 : 21 **10 : 5** भज 40 : 6-8 **10 : 10** इब्र 9 : 12, 28 **10 : 11** नि 29 : 38; गण 28 : 3 **10 : 13** भज 110 : 1

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कहता है : "मैं अपने नियम उनके हृदय में
रखूंगा, मैं उन्हें उनके मन पर अंकित करूँगा
17और मैं उनके पापों और अपराधों को स्मरण
भी नहीं रखूंगा।" 18जब पाप क्षमा कर दिये
गये हैं, तो फिर पाप के लिए बलि-अर्पण की
आवश्यकता नहीं रही।

हम विश्वास के साथ परमेश्वर के पास आएं

19भाइयो और बहिनो! अब हम पूर्ण भरोसा
करते हैं कि येशु के रक्त द्वारा हम "पवित्र-
स्थान" में प्रवेश कर सकते हैं। 20उन्होंने हमारे
लिए एक नवीन तथा जीवन्त मार्ग खोल दिया,
जो उनकी देह-रूपी परदे से हो कर जाता है।
21अब हमें एक महान् पुरोहित प्राप्त हैं, जो
परमेश्वर के भवन* पर नियुक्त किये गये हैं।
22इसलिए हम अपने दोषी अंत:करण से शुद्ध
होने के लिए हृदय पर छिड़काव कर और अपने
शरीर को स्वच्छ जल से धो कर निष्कपट हृदय
से तथा पूर्ण विश्वास के साथ परमेश्वर के पास
आएं। 23हम अपनी आशा की साक्षी देने में
अटल एवं दृढ़ बने रहें, क्योंकि जिसने हमें
वचन दिया है, वह विश्वसनीय है। 24हमें इस
बात का ध्यान रखना चाहिए कि हम किस
प्रकार प्रेम तथा परोपकार के लिए एक दूसरे को
प्रोत्साहित कर सकते हैं।

25हम अपनी सभाओं में एकत्र होना न
छोड़ें, जैसा कि कुछ लोग किया करते हैं,
बल्कि हम एक दूसरे को ढाढ़स बंधाएं। जब
आप उस दिन को निकट आते देख रहे हैं, तो
ऐसा करना और भी आवश्यक हो जाता है।

26क्योंकि सत्य का ज्ञान प्राप्त करने के बाद
भी यदि हम जान-बूझ कर पाप करते रहते हैं,
तो पापों के लिए कोई बलि शेष नहीं रह जाती,
27एक भयानक आशंका ही शेष रह जाती
है—न्याय की, और एक भीषण अग्नि की, जो
विद्रोहियों को निगल जाना चाहती है। 28जो
व्यक्ति मूसा की व्यवस्था का उल्लंघन करता
है, यदि उसे दो या तीन गवाहों के आधार पर
निर्ममता से प्राण-दण्ड दिया जाता है, 29तो आप
लोग विचार करें कि जो व्यक्ति परमेश्वर के
पुत्र का तिरस्कार करता है, विधान के उस रक्त
को तुच्छ समझता है जिस के द्वारा वह पवित्र
किया गया था, और अनुग्रह के आत्मा का
अपमान करता है, तो ऐसा व्यक्ति कितने घोर
दण्ड के योग्य समझा जायेगा; 30क्योंकि हम
जानते हैं कि किसने यह कहा है, "प्रतिशोध
लेना मेरा अधिकार है, मैं ही बदला लूँगा" और
फिर, "प्रभु अपनी प्रजा का न्याय करेगा।"
31जीवन्त परमेश्वर के हाथ पड़ना कितनी
भयंकर बात है!

32आप लोग उन बीते दिनों को स्मरण करें
जब आप ज्योति मिलने के तुरन्त बाद, दु:खों
के घोर संघर्ष का सामना करते हुए, दृढ़ बने
रहे। 33आप लोगों में कुछ को सब के देखते-
देखते अपमान और अत्याचार सहना पड़ा
अथवा कुछ को ऐसी स्थिति में पड़े हुओं के
भागीदार बनना पड़ा। 34आपने बन्दियों से
सहानुभूति रखी और जब आप लोगों की धन-
सम्पत्ति जब्त की गयी, तो आप ने यह सहर्ष
स्वीकार किया; क्योंकि आप जानते थे कि
इससे कहीं अधिक उत्तम और चिरस्थायी
सम्पत्ति आपके पास विद्यमान है। 35इसलिए
आप लोग अपना वह पूर्ण भरोसा नहीं
छोड़ें—इसका पुरस्कार महान् है।

36आप लोगों को धैर्य की आवश्यकता है,
जिससे परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के बाद
आप को वह मिल जाये, जिसकी प्रतिज्ञा
परमेश्वर कर चुका है; 37क्योंकि धर्मग्रन्थ यह
कहता है, "जो आने वाला है, वह थोड़े ही

* अथवा, "घराने"।

10 : 16 इब्र 8 : 10; यिर 31 : 33 **10 : 17** इब्र 8 : 12; यिर 31 : 34 **10 : 19** इब्र 9 : 8, 24 **10 : 20** मत 27 : 51; यो 14 : 6 इब्र 9 : 11–12 **10 : 21** जक 6 : 11; गण 12 : 7 **10 : 22** यहेज 36 : 25; इफ 5 : 26 **10 : 23** इब्र 4 : 14 **10 : 24** इब्र 13 : 1 **10 : 25** इब्र 3 : 13; प्रे 2 : 42 **10 : 26** इब्र 6 : 4–8; 1 तिम 2 : 4 **10 : 27** यश 26 : 11 (यू० पाठ) **10 : 28** गण 15 : 30; 35 : 30; व्य 17 : 6 **10 : 29** इब्र 2 : 3; नि 24 : 8 **10 : 30** व्य 32 : 35–36; भज 135 : 14; रोम 12 : 19; इब्र 12 : 29 **10 : 32** इब्र 6 : 4 **10 : 33** 1 कुर 4 : 9 **10 : 34** मत 6 : 20; 19 : 21, 29 **10 : 35** इब्र 11 : 6 **10 : 36** इब्र 6 : 12; लू 21 : 19 **10 : 37** यश 26 : 20; हब 2 : 3–4 (यू० पाठ); लू 21 : 28; याक 5 : 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

समय बाद आयेगा। वह देर नहीं करेगा। 38मेरा धार्मिकजन विश्वास के द्वारा जीवन प्राप्त करेगा; किन्तु यदि कोई पीछे हटे, तो मैं उस पर प्रसन्न नहीं होऊँगा।'' 39हम उन लोगों में से नहीं हैं, जो हटने के कारण नष्ट हो जाते हैं, बल्कि हम उन लोगों में से हैं, जो अपने विश्वास द्वारा जीवन* प्राप्त करते हैं।

विश्वास का महत्व

11 विश्वास उन बातों का पक्का निश्चय+ है, जिनकी हम आशा करते हैं और उन वस्तुओं के अस्तित्व के विषय में दृढ़ धारणा है, जिन्हें हम नहीं देखते। 2विश्वास के कारण हमारे पूर्वज परमेश्वर के कृपापात्र समझे गए। 3विश्वास द्वारा हम जान लेते हैं कि परमेश्वर के शब्द द्वारा विश्व का निर्माण हुआ है और अदृश्य से दृश्य की उत्पत्ति हुई है।

4विश्वास के कारण हाबिल ने काइन की अपेक्षा कहीं अधिक श्रेष्ठ बलि चढ़ायी। विश्वास के कारण वह धार्मिक समझा गया, क्योंकि परमेश्वर ने उसका चढ़ावा स्वीकार किया। उसकी मृत्यु हुई; किन्तु विश्वास के कारण वह आज भी बोल रहा है।

5विश्वास के कारण हनोक ले++ लिया गया ताकि उसे मृत्यु का अनुभव न हो। वह फिर नहीं दिखाई पड़ा, क्योंकि परमेश्वर ने उसे उठा लिया था। धर्मग्रन्थ उसके विषय में कहता है कि उठाये जाने के पहले ''उसने परमेश्वर को प्रसन्न किया था।'' 6और विश्वास के बिना परमेश्वर को प्रसन्न करना, असंभव है। अत: जो परमेश्वर के निकट पहुँचना चाहता है, उसे विश्वास करना आवश्यक है कि परमेश्वर है और वह उन लोगों को प्रतिफल देता है, जो उसकी खोज में लगे रहते हैं।

7 नूह अपने विश्वास के कारण अदृश्य घटनाओं से परमेश्वर के द्वारा सचेत किया गया। उसने इस चेतावनी का सम्मान किया और अपना परिवार बचाने के लिए जलयान का निर्माण किया। उसने अपने विश्वास द्वारा संसार को दोषी ठहराया और वह उस धार्मिकता का अधिकारी बना, जो विश्वास पर आधारित है।

8विश्वास के कारण अब्राहम ने परमेश्वर का बुलावा स्वीकार किया कि वह उस देश को जाएं जिसको वह विरासत में प्राप्त करने वाले थे। अब्राहम यह न जानते हुए भी कि वह कहाँ जा रहे हैं, उन्होंने उस देश के लिए प्रस्थान किया। 9विश्वास के कारण परदेशी की तरह प्रतिज्ञात देश में कुछ समय तक निवास किया। वह इसहाक तथा याकूब के समान, जो उनके साथ एक ही प्रतिज्ञा के उत्तराधिकारी थे, तम्बुओं में रहने लगे। 10अब्राहम ने ऐसा किया, क्योंकि वह उस पक्की नींव वाले नगर की प्रतीक्षा में थे, जिसका वास्तुकार तथा निर्माता परमेश्वर है।

11विश्वास के कारण ही आयु ढल जाने पर भी अब्राहम ने प्रजनन** की शक्ति पाई—सारा भी बांझ थी—क्योंकि उनका विचार यह था कि जिसने प्रतिज्ञा की हैं, वह सच्चा है। 12और इसलिए एक मरणासन्न व्यक्ति, अर्थात् अब्राहम से वह सन्तति उत्पन्न हुई, जो आकाश के तारों की तरह असंख्य है और सागर-तट के बालू के कणों की तरह अगणित।

13प्रतिज्ञा का फल पाये बिना ये सब विश्वास करते हुए मर गये। परन्तु उन्होंने उसको दूर से देखा और उसका स्वागत किया। वे अपने को पृथ्वी पर परदेशी तथा प्रवासी मानते थे। 14जो इस तरह की बातें कहते हैं, वे यह स्पष्ट कर देते हैं कि वे स्वदेश की खोज में लगे हुए हैं। 15यदि

---

* शब्दश: ''प्राण की सुरक्षा''। + अथवा ''आधार'' अथवा, ''आश्वासन'', अथवा, ''स्थिर प्रतीक्षा'' ++ अथवा ''आरोहित'' अथवा 'ऊपर उठा लिया गया।' **कुछ प्राचीन प्रतियों में, 'सारा ने गर्भधारण की...'

10 : 38 रोम 1 : 17; गल 3 : 11 **11 : 1** इब्र 3 : 14; 2 कुर 5 : 7 **11 : 2** प्रव 44 : 10-50 : 21; 1 मक 2 : 51-64 **11 : 3** उत 1 : 1 **11 : 4** उत 4 : 4; मत 23 : 35 **11 : 5** उत 5 : 21-24 (यू० पाठ); प्रव 44 : 16 **11 : 6** इब्र 7 : 25; 10 : 35 **11 : 7** उत 6 : 8-9; 13-22; 7 : 1; रोम 3 : 22, 24; 4 : 20 **11 : 8** उत 12 : 1-4 **11 : 9** उत 23 : 4; 26 : 3; 35 : 12 **11 : 11** उत 17 : 19; 21 : 2 **11 : 12** उत 15 : 5; 22 : 17; 32 : 12; रोम 4 : 19 **11 : 13** भज 39 : 12; 1 इति 29 : 15; उत 23 : 4; 47 : 9; 1 पत 1 : 1; 2 : 11

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उस देश की बात सोचते जो वे पीछे छोड़ आए थे तो उन्हें वहाँ लौटने का अवसर था। 16पर नहीं, वे तो एक उत्तम स्वदेश अर्थात् स्वर्ग की खोज में लगे हुए थे; इसलिए परमेश्वर को उन लोगों का परमेश्वर कहलाने में लज्जा नहीं होती। उसने तो उनके लिए एक नगर का निर्माण किया है।

17जब परमेश्वर ने अब्राहम की परीक्षा ली, तब विश्वास के कारण अब्राहम ने इसहाक को अर्पित किया। वह अपने एकलौते पुत्र को बलि चढ़ाने को तैयार हो गये, यद्यपि उनसे यह प्रतिज्ञा की गयी थी 18और कहा गया था कि 'इसहाक से तेरा वंश चलेगा।' 19अब्राहम यह मानते थे कि परमेश्वर मृतकों को भी जिला सकता है। और एक प्रकार से प्रतीक रूप में उन्होंने अपने पुत्र को फिर प्राप्त किया।

20विश्वास के कारण इसहाक ने याकूब एवं एसाव को भविष्य के लिए आशीर्वाद दिया। 21विश्वास के कारण याकूब ने मरते समय यूसुफ के हर एक पुत्र को आशीर्वाद दिया और उन्होंने अपनी छड़ी की मूठ के सहारे झुक कर परमेश्वर की आराधना की। 22विश्वास के कारण यूसुफ ने मरते समय मिस्र से इस्राएलियों के निर्गमन का उल्लेख किया और अपनी अस्थि के विषय में आदेश दिया।

23विश्वास के कारण मूसा के माता-पिता ने यह देख कर कि शिशु सुन्दर है, उसे जन्म के बाद तीन महीनों तक छिपाये रखा और वे राजा के आदेश से भयभीत नहीं हुए।

24विश्वास के कारण बड़े हो जाने पर मूसा ने फरओ* की पुत्री का बेटा कहलाना अस्वीकार किया। 25उन्होंने पाप का अल्पस्थायी सुख भोगने की अपेक्षा परमेश्वर की प्रजा के साथ अत्याचार सहना अधिक उचित समझा। 26उन्होंने मिस्र की धन-सम्पत्ति की अपेक्षा मसीह का अपयश अधिक मूल्यवान् समझा, क्योंकि उनकी दृष्टि भविष्य में प्राप्त होने वाले पुरस्कार पर लगी हुई थी। 27विश्वास के कारण उन्होंने मिस्र देश को छोड़ दिया। वह राजा फरओ के क्रोध से भयभीत नहीं हुए, बल्कि दृढ़ बने रहे, मानो वह अदृश्य परमेश्वर को देख रहे थे।

28विश्वास के कारण मूसा ने ''पास्का''** की विधियों का पालन किया और रक्त छिड़का, जिससे पहलौठों का विनाशक दूत इस्राएलियों के पहलौठे पुत्रों पर हाथ न डाले। 29विश्वास के कारण उन लोगों ने लाल समुद्र को पार किया, मानो वह सूखी भूमि था और जब मिस्रियों ने वैसा ही करने की चेष्टा की, तो वे डूब मरे। 30जब इस्राएली सात दिनों तक यरीहो नगर की शहरपनाह की परिक्रमा कर चुके तब विश्वास के कारण वह गिर पड़ी। 31विश्वास के कारण राहाब नामक वेश्या अविश्वासियों के साथ नष्ट नहीं हुई, क्योंकि उसने गुप्तचरों का मैत्रीपूर्ण स्वागत किया था।

32मैं और क्या कहूँ? यदि मैं गिदओन, बाराक, शिमशोन, यिफ्ताह, दाऊद, शमूएल और नबियों की भी चर्चा करने लगूँ, तो मेरे पास समय नहीं रहेगा। 33उन्होंने अपने विश्वास द्वारा राज्यों को अपने अधीन कर लिया, न्याय का पालन किया, प्रतिज्ञाओं का फल पाया, सिंहों का मुँह बन्द किया 34और प्रज्वलित आग बुझायी। वे तलवार की धार से बच गये और दुर्बल होते हुए भी शक्तिशाली बन गये। उन्होंने युद्ध में वीरता का प्रदर्शन किया और विदेशी सेनाओं को भगा दिया। 35स्त्रियों ने अपने पुनर्जीवित मृतकों को फिर प्राप्त किया। कुछ लोग यन्त्रणा सह कर मर गये और वे उस से इसलिए छुटकारा नहीं चाहते थे कि उन्हें श्रेष्ठतर

---

* अथवा, ''फिरौन'' ** अथवा ''फसह''

11 : 16 नि 3 : 6; मक 12 : 26-27 **11 : 17** उत 22 : 1-2; याक 2 : 22 **11 : 18** उत 21 : 12 **11 : 19** रोम 4 : 17 **11 : 20** उत 27 : 27, 29, 39-40 **11 : 21** उत 47 : 31 (यू॰ पाठ) 48 : 15-16 **11 : 22** उत 50 : 24 **11 : 23** नि 2 : 2 **11 : 24** नि 2 : 10-11 **11 :26** इब्र 13 : 13; 10 : 34-35; भज 89 : 50; 69 : 9 **11 : 27** नि 2 : 15; 12 : 51 **11 : 28** नि 12 : 12-13 **11 : 29** नि 14 : 22, 27 **11 : 30** यहो 6 : 20 **11 : 31** यही 2 : 1-12; 6 : 17, 23; याक 2 : 25 **11 : 32** शास 6 : 11; 4 : 6; 15 : 20; 12 : 7 **11 : 33** शास 14 : 6; दान 6 : 22; 1 शम 17 : 34-35 **11 : 34** दान 3 : 23-25 **11 : 35** 1 रा 17 : 23; 2 रा 4 : 36; 2 मक 6 : 18—7 : 42

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पुनरुत्थान प्राप्त हो। 36उपहास, कोड़ों, बेड़ियों
और बन्दीगृह द्वारा कुछ लोगों की परीक्षा ली
गयी है। 37कुछ लोग पत्थरों से मारे गये, कुछ
आरे से चीर दिये गये+ और कुछ तलवार से
मौत के घाट उतारे गये। कुछ लोग दरिद्रता,
अत्याचार और उत्पीड़न के शिकार बन कर
भेड़ों और बकरियों की खाल ओढ़े, इधर-उधर
भटकते रहे। 38संसार उनके योग्य नहीं था।
उन्हें उजाड़ स्थानों, पहाड़ी प्रदेशों, गुफाओं
और धरती के गड्ढों की शरण लेनी पड़ी। 39वे
सब अपने विश्वास के कारण परमेश्वर के
कृपापात्र समझे गये। फिर भी उन्हें प्रतिज्ञा का
फल प्राप्त नहीं हुआ, 40क्योंकि परमेश्वर ने हम
को दृष्टि में रख कर एक श्रेष्ठतर योजना बनायी
थी। वह चाहता था कि वे हमारे साथ ही पूर्णता
तक पहुँचें।

परमेश्वर हमारा पिता है

12 जब विश्वास के साक्षी इतनी बड़ी
संख्या में †हमारे चारों ओर विद्यमान
हैं, तो हम हर प्रकार की बाधा दूर कर, और उस
पाप†† को छोड़ कर जो लक्ष्य से सहज ही
हमारा ध्यान हटा देता है, और येशु पर अपनी
दृष्टि लगा कर धैर्य के साथ उस दौड़ में आगे
बढ़ते जायें, जिस में हमारा नाम लिखा गया है।
**2हम अपने विश्वास के प्रवर्तक एवं सिद्धिकर्ता
येशु पर दृष्टि रखे रहें, जिन्होंने कलंक की कोई
परवाह नहीं की और भविष्य में आनन्द की
प्राप्ति के लिए क्रूस का कष्ट सहन किया तथा
परमेश्वर के सिंहासन की दाहिनी ओर विराजमान
हुए। 3कहीं ऐसा न हो कि आप लोग निराश
होकर हिम्मत हार जायें, इसलिए आप उनका
स्मरण करते रहें, जिन्होंने पापियों का इतना घोर
विरोध सहा। 4अब तक आप को पाप से संघर्ष
करने में अपना रक्त नहीं बहाना पड़ा। 5क्या आप
लोग धर्मग्रन्थ का यह प्रबोधन भूल गये हैं,
जिस में परमेश्वर आप को अपनी संतान ++
कह कर सम्बोधित करता है?

"मेरे बच्चो++! प्रभु के अनुशासन की उपेक्षा
मत करो
और उसकी फटकार से हिम्मत मत हारो;
6क्योंकि प्रभु जिसे प्यार करता है,
उसे ताड़ना देता है
और जिसे अपनी संतान मानता है,
उसे कोड़े लगाता है।"

7आप जो कष्ट सहते हैं, उसे प्रभु का
अनुशासन समझें; क्योंकि वह इसका प्रमाण है
कि परमेश्वर आप को अपनी संतान मान कर
व्यवहार करता है। और कौन ऐसे बच्चे हैं,
जिन्हें माता-पिता ताड़ित नहीं करते? 8यदि सब
ताड़ित किये जाते हैं और आप ही ताड़ित नहीं
किये जाते, तो आप औरस नहीं, बल्कि जारज
संतान हैं।

9हमारे माता-पिता* हमें ताड़ना देते थे और
हम उनका सम्मान करते थे, तो हमें कहीं
अधिक तत्परता से अपने आत्मिक पिता की
अधीनता स्वीकार करनी चाहिए, जिससे हमें
जीवन प्राप्त हो। 10वे तो अपनी-अपनी समझ
के अनुसार इस अल्पकालिक जीवन के लिए
हमें तैयार करने के उद्देश्य से ताड़ित करते थे।
परन्तु परमेश्वर हमारे कल्याण के लिए ऐसा
करता है, क्योंकि वह हमें अपनी पवित्रता का
भागीदार बनाना चाहता है। 11कोई भी अनुशासन,
अनुशासन की अवधि में सुखद नहीं, दुःखद
प्रतीत होता है; किन्तु जो ताड़ना-प्रताड़ना द्वारा
प्रशिक्षित होते हैं, वे बाद में धार्मिकता का
शान्तिप्रद फल प्राप्त करते हैं। 12इसलिए ढीले
हाथों तथा शिथिल घुटनों को सबल बना लें
13और सीधे पथ पर आगे बढ़ते जायें जिससे

+ कुछ प्रतियों में ये शब्द भी पाए जाते हैं : "उनके विश्वास को परखा गया।" † शब्दशः, "मेघ के सदृश"। †† पाठांतर, "उलझाने वाले" अथवा 'जो हमें सहज ही घेर लेता है' ** शब्दशः, "जो हमारे लिए ठहरायी गयी है"। ++ मूल में "पुत्र"। * मूल में, "शारीरिक पिता"।

11 : 36 यिर 20 : 2; 37; 15 **11 : 37** 2 इति 24 : 21 **12 : 1** इब्र 10 : 36; इफ 4 : 22; 1 कुर 9 : 24; रोम 7 : 21 **12 : 2** इब्र 2 : 10; भज 110 : 1 **12 : 3** मत 10 : 24; लू 2 : 34 **12 : 5** नीति 3 : 11-12 (यू० पाठ); अय्य 5 : 17 **12 : 6** भज 94 : 12; प्रक 3 : 19 **12 : 8** भज 73 : 14-15; 1 पत 5 : 9 **12 : 9** गण 16 : 22 **12 : 11** 2 कुर 4 : 17-18; याक 3 : 17 **12 : 12** यश 35 : 3 (यू० पाठ) **12 : 13** नीति 4 : 26 (यू० पाठ)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लँगड़े पांव टूटें नहीं, बल्कि स्वस्थ हो जायें।

उपदेश और चेतावनी

14सब के साथ शान्ति बनाये रखें और
पवित्रता की साधना करें। इसके बिना कोई
व्यक्ति प्रभु के दर्शन नहीं कर पायेगा। 15आप
सावधान रहें—कोई व्यक्ति परमेश्वर की कृपा
से वंचित न हो। ऐसी कोई कड़वी जड़ फूटने
न पाये, जो हानिकर हो और समस्त समुदाय
को दूषित कर दे।

16आप लोगों में न तो कोई व्यभिचारी हो
और न एसाव के सदृश कोई अधर्मी, जिसने
एक ही बार के भोजन के लिए अपना पहलौठे
का अधिकार बेच दिया। 17आप लोग जानते हैं
कि वह बाद में अपने पिता की आशिष प्राप्त
करना चाहता था, किन्तु वह अयोग्य समझा
गया। यद्यपि उसने रोते हुए इसके लिए आग्रह
किया, तो भी वह अपने पिता का मन बदलने
में असमर्थ रहा।**

18आप लोग ऐसे स्थूल तत्त्व+ के निकट नहीं
पहुँचे हैं, जिसे आप स्पर्श कर सकते हैं। यहाँ
न तो धधकती अग्नि है और न काले बादल;
न घोर अन्धकार और न झंझावात; 19यहां न
तुरही का निनाद है और न बोलने वाले की ऐसी
वाणी, जिसे सुन कर इस्राएली यह विनय करते
थे कि वह फिर हम से कुछ न कहे; 20क्योंकि
वे इस आदेश से घबरा गये थे, ''यदि पशु भी
इस पर्वत का स्पर्श करेगा, तो वह पत्थरों से मारा
जायेगा।'' 21वह दृश्य इतना भयानक था कि
मूसा बोल उठे, ''मैं भय से काँप रहा हूँ।''

22आप लोग सियोन पर्वत, जीवन्त परमेश्वर
के नगर, स्वर्गीय यरूशलेम के पास पहुँचे हैं,
जहाँ लाखों स्वर्गदूत आनन्द-उत्सव मनाते हैं
23और स्वर्ग के प्रथम जन्म सिद्ध नागरिकों की
सभा++ एकत्र होती है; जहां सब का न्यायकर्त्ता
परमेश्वर, पूर्णता-प्राप्त धर्मियों की आत्माएँ
24और नवीन विधान के मध्यस्थ येशु विराजमान
हैं— जिनका छिड़काया हुआ रक्त हाबिल के
रक्त से कहीं अधिक कल्याणकारी वाणी बोल
रहा है।

25आप लोग सावधान रहें। आप बोलने
वाले की बात सुनना अस्वीकार नहीं करें। जिन
लोगों ने पृथ्वी पर चेतावनी देने वाले की वाणी
को अनसुना कर दिया था, यदि वे नहीं बच
सके, तो हम कैसे बच सकेंगे, यदि हम स्वर्ग
से चेतावनी देनेवाले की वाणी अनसुनी कर
देंगे ?

26उस समय उसकी वाणी ने पृथ्वी को हिला
दिया था; किन्तु अब वह यह घोषित करता है,
''मैं एक बार और न केवल पृथ्वी को, बल्कि
आकाश को भी हिलाऊँगा।'' 27''एक बार
और''—इन शब्दों से यह संकेत मिलता है कि
जो वस्तुएं हिलायी जायेंगी, वे सृष्ट होने के
कारण हटाई जायेंगी और जो नहीं हिलायी
जायेंगी, वे बनी रहेंगी। 28हमें जो राज्य मिला
है, वह नहीं हिलाया जा सकता, इसलिए हम
परमेश्वर को धन्यवाद देते रहें और उसकी
इच्छानुसार भक्ति एवं श्रद्धा के साथ उसकी
आराधना करते रहें, 29क्योंकि हमारा परमेश्वर
भस्म कर देने वाली अग्नि है।

हम परमेश्वर को कैसे प्रसन्न करें ?

13 आपका भ्रातृप्रेम बना रहे। 2आप लोग
आतिथ्य-सत्कार भूलें नहीं, क्योंकि
इसी के कारण कुछ लोगों ने अनजाने ही अपने
यहाँ स्वर्गदूतों का सत्कार किया है। 3आप बन्दियों
की इस तरह सुध लेते रहें, मानो आप उनके
साथ बन्दी हों और जिन पर अत्याचार किया
जाता है, उनको भी स्मरण करें; क्योंकि आप
पर भी अत्याचार किया जा सकता है।*

** अथवा, ''तो भी उसे हृदय-परिवर्तन का अवसर नहीं प्राप्त हुआ''। + पाठभेद, '' पर्वत''। ++ अथवा, ''स्वर्ग में नामांकित पहिलौठों की कलीसिया''। * शब्दश: ''आप भी शरीरधारी हैं''।

12 : 14 भज 34 : 14; मत 5 : 8; रोम 12 : 18; 2 तिम 2 : 22 **12 :15** व्य 29 : 18 (यू॰ पाठ); प्रे 8 : 23 **12 : 16** उत 25 : 33-34; **12 : 17** उत 27 : 30-40 **12 : 18** नि 19 : 12, 16, 18; व्य 4 : 11 **12 : 19** नि 19 : 19; 20 : 19; व्य 5 : 23 **12 : 20** नि 19 : 13 **12 : 21** व्य 9 : 19 **12 : 22** प्रक 14 : 1; 21 : 2; 5 : 11; गल 4 : 26 **12 : 23** लू 10 : 20 **12 : 24** इब्र 9 : 15; 11 : 4; उत 4 : 10; 1 पत 1 : 2 **12 : 25** इब्र 2 : 2-3; 10 : 28-29 **12 : 26** हाग 2 : 6 (यू॰ पाठ) **12 : 29** यश 33 : 14; व्य 4 : 24; 9 : 3 **13 : 1** यो 13 : 34; 2 पत 1 : 7 **13 : 2** रोम 12 : 13; 1 पत 4 : 9; उत 18 : 3; 19 : 2-3; तोब 5 : 4-5 **13 : 3** मत 25 : 36

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

[4]आप लोगों में विवाह सम्मानित और
दाम्पत्य जीवन अदूषित हो; क्योंकि परमेश्वर
लम्पटों और व्यभिचारियों का न्याय करेगा।
[5]आप लोग धन का लालच न करें। जो
आपके पास है, उस से सन्तुष्ट रहें; क्योंकि
परमेश्वर ने स्वयं कहा है, "मैं तुझको नहीं
छोड़ूँगा। मैं तुझको कभी नहीं त्यागूँगा।"
[6]इसलिए हम विश्वस्त हो कर यह कह सकते
हैं, "प्रभु मेरी सहायता करता है, मैं नहीं
डरूँगा। मनुष्य मेरा क्या कर सकता है?"
[7]आप लोग उन धर्मनेताओं की स्मृति कायम
रखें, जिन्होंने आप को परमेश्वर का सन्देश
सुनाया और उनके आचरण के सुखद परिणाम
का मनन करते हुए उनके विश्वास का अनुकरण
करें। [8]येशु मसीह एकरूप रहते हैं—कल,
आज और अनन्त काल तक। [9]नाना प्रकार के
अनोखे सिद्धान्तों के फेर में नहीं पड़ें। उत्तम यह
है कि हमारा मन भोजन से नहीं, बल्कि
परमेश्वर की कृपा से बल प्राप्त करे। भोजन-
सम्बन्धी निषेध-विधियों का पालन करने
वालों को इन से लाभ नहीं हुआ।
[10]हमारी भी एक वेदी है। जो सांसारिक
शिविर में उपासना करते हैं, उन्हें इस वेदी पर
से खाने का अधिकार नहीं है। [11]महापुरोहित
जिन बलिपशुओं का रक्त पाप-बलि के लिए
पवित्र-स्थान में ले जाता है, उनके शरीर पड़ाव
के बाहर जलाये जाते हैं। [12]इसी प्रकार येशु ने
फाटक के बाहर दुःख भोगा, जिससे वह अपने
रक्त द्वारा जनता को पवित्र करें। [13]इसलिए हम
उनके अपमान का भार ढोते हुए "पड़ाव के
बाहर" उनके पास चलें; [14]क्योंकि इस पृथ्वी
पर हमारा कोई स्थायी नगर नहीं। हम तो
भविष्य के नगर की खोज में लगे हुए हैं। [15]हम
येशु के द्वारा परमेश्वर को स्तुति-रूपी
बलि—अर्थात् उसके नाम की महिमा करने
वाले होंठों का फल—निरन्तर चढ़ाया करें।
[16]आप लोग परोपकार और एक दूसरे की
सहायता करना कभी नहीं भूलें, क्योंकि इस
प्रकार की बलि परमेश्वर को प्रिय है।
[17]आपके धर्मनेताओं को रात-दिन आपकी
आध्यात्मिक भलाई की चिन्ता रहती है, क्योंकि
वे इसके लिए उत्तरदायी हैं। इसलिए आप लोग
उनका आज्ञापालन करें और उनके अधीन रहें,
जिससे वे अपना कर्तव्य आनन्द के साथ, न कि
आहें भरते हुए, पूरा कर सकें; क्योंकि इस से
आप को कोई लाभ नहीं होगा।
[18]आप हमारे लिए प्रार्थना करें। हमें विश्वास
है कि हमारा अन्तःकरण शुद्ध है, क्योंकि हम
हर परिस्थिति में सही आचरण करना चाहते हैं।
[19]मैं विशेष रूप से इसलिए आप लोगों से
प्रार्थना का आग्रह करता हूँ कि मैं शीघ्र ही आप
लोगों के पास लौट सकूँ।

उपसंहार

[20]शान्ति का परमेश्वर, जिसने शाश्वत
विधान के रक्त द्वारा भेड़ों के महान् चरवाहे,
हमारे प्रभु येशु को मृतकों में से पुनर्जीवित
किया, [21]आपलोगों को समस्त गुणों से सम्पन्न
करे, जिससे आप उसकी इच्छा पूरी करें। वह
येशु मसीह द्वारा हम में वह कार्य पूरा करे, जो
उसे प्रिय है। उसी परमेश्वर की स्तुति युगानुयुग
होती रहे। आमेन!
[22]भाइयो एवं बहिनो! आप से अनुरोध हैं
कि आप मेरे प्रोत्साहन के इन वचनों को धीरज
के साथ स्वीकार करें। मैंने संक्षेप में ही आप
को यह पत्र लिखा है।
[23]मुझे आप लोगों को एक समाचार सुनाना
है। हमारे भाई तिमोथी रिहा कर दिये गये हैं।
यदि वह समय पर पहुँचेंगे, तो मैं उनके साथ
आप से मिलने आऊँगा।
[24]अपने सभी धर्मनेताओं को और सभी
सन्तों को मेरा नमस्कार कहना। इटली के
विश्वासी भाई-बहिन आप लोगों को नमस्कार
कहते हैं।
[25]आप सब पर परमेश्वर की कृपा बनी रहे!

---

13 : 4 गल 5 : 19., 21; इफ 5 : 5; प्रज्ञ 3 : 13 **13 : 5** व्य 31 : 6, 8; यहो 1 : 5; 1 तिम 6 : 6 **13 : 6** भज 118 : 6 **13 : 7** 1 कुर 4 : 16 **13 : 8** 1 कुर 3 : 11; 2 कुर 1 : 21 प्रक 1 : 17 **13 : 9** इफ 4 : 14; रोम 14 : 17 **13 : 10** इब्र 8 : 4-5 **13 : 11** लेव 16 : 27 **13 : 12** मत 21 : 39 यो 9 : 22 **13 : 13** इब्र 11 : 26; 12 : 2 **13 : 14** इब्र 11 : 10; 12 : 22 **13 : 15** लेव 7 : 12; 2 इति 29 : 31; भज 50 : 14, 23; यश 57 : 19; हो 14 : 2 **13 : 16** रोम 12 : 13; फिल 4 : 18 **13 : 17** 1 थिस 5 : 12; यहेज 3 : 17 **13 : 18** 2 कुर 1 : 12; प्रे 24 : 16 **13 : 20** यश 63 : 11; 55 : 3; जक 9 : 11; यिर 32 : 40 **13 : 21** यहेज 37 : 26 यो 10 : 12; 1 पत 2 : 25 **13 : 22** याक 1 : 21 **13 : 23** 1 थिस 3 : 2 **13 : 25** कुल 4 : 18

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

संत याकूब का पत्र

भूमिका

संत याकूब का पत्र अनेक व्यावहारिक उपदेशों का संकलन है। यह पत्र विश्व के समस्त विश्वासियों के नाम लिखा गया था। इसलिए, नया विधान के क्रम में इसे शेष सात "विश्वव्यापी पत्रों" में प्रथम स्थान पर रखा गया है। लेखक ने व्यावहारिक उपदेशों की शिक्षा समझाने के लिए अत्यन्त प्रभावपूर्ण अलंकारिक भाषा, तथा उदाहरणों का प्रयोग किया है। इन उपदेशों का सम्बन्ध मसीही व्यक्ति के विश्वास और दैनिक आचरण से है। लेखक उसे समझ और मार्गदर्शन प्रदान करता है कि मसीही व्यक्ति को अपना विश्वास जीवन में किस प्रकार जीना चाहिए।

लेखक ने यहूदी-मसीही दृष्टिकोण से दिन-प्रतिदिन के जीवन के अनेक महत्वपूर्ण विषयों पर लिखा है, जैसे गरीबी और अमीरी, प्रलोभन, उत्तम आचरण, पूर्वाग्रह, विश्वास और आचरण, जीभ पर नियंत्रण, बुद्धि, लड़ाई-झगड़े, अहंकार, विनम्रता, दूसरों की निन्दा करना, धीरता, प्रार्थना की शक्ति।

सम्पूर्ण पत्र में लेखक ने विश्वास और आचरण के मध्य जो घनिष्ठ सम्बन्ध है, उस पर जोर दिया है और कहा है कि जैसे आत्मा के बिना शरीर निर्जीव है वैसे ही कर्म के बिना विश्वास निर्जीव है। मसीही धर्म को अपने दैनिक जीवन में धारण करने का अर्थ है, विश्वास के अनुरूप कर्म करना।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

अभिवादन	1 : 1
विश्वास और बुद्धि	1 : 2-8
गरीबी और अमीरी	1 : 9-11
परख और प्रलोभन	1 : 12-18
कथनी और करनी	1 : 19-27
भेद-भाव के प्रति चेतावनी	2 : 1-13
कर्म और विश्वास	2 : 14-26
वाणी पर नियंत्रण	3 : 1-18
मसीही-जन का सांसारिक जीवन	4 : 1—5 : 6
अन्य उपदेश	5 : 7-20

अभिवादन

1 यह पत्र परमेश्वर और प्रभु येशु मसीह के सेवक याकूब की ओर से है। संसार भर में बिखरे हुए बारह कुलों को नमस्कार!

विश्वास और विपत्ति

2मेरे भाइयो और बहिनो! जब आप पर अनेक प्रकार की विपत्तियाँ आएं, तब इसे बड़े
आनन्द की बात समझिए। 3आप जानते हैं कि
आपके विश्वास का इस प्रकार का परीक्षण धैर्य
उत्पन्न करता है। 4धैर्य को कार्यान्वयन की
पूर्णता तक पहुँचने दीजिए, जिससे आप लोग
स्वयं पूर्ण तथा सिद्ध बन जायें और आप में
किसी बात की कमी नहीं रहे।
5यदि आप लोगों में से किसी में बुद्धि का

1 : 1 1 पत 1 : 1; प्रे 15 : 23 1 : 2 रोम 5 : 3-5; 1 पत 1 : 6; मत 5 : 12; प्रज्ञ 3 : 5-6 1 : 3 1 पत 1 : 7

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अभाव हो, तो वह परमेश्वर से प्रार्थना करे और
उसे बुद्धि मिलेगी; क्योंकि परमेश्वर खुले हाथ
और खुशी से सब को देता है। 6किन्तु उसे
विश्वास के साथ और सन्देह किये बिना प्रार्थना
करनी चाहिए; क्योंकि जो सन्देह करता है, वह
समुद्र की लहरों के सदृश है, जो हवा से इधर-
उधर उछाली जाती हैं। 7ऐसा व्यक्ति यह न
समझे कि उसे प्रभु की ओर से कुछ मिलेगा;
8क्योंकि ऐसा मनुष्य दुचिता है और उसका
सारा आचरण अस्थिर है।

दरिद्रता और सम्पन्नता

9जो भाई अथवा बहिन* दरिद्र है, वह
परमेश्वर द्वारा प्रदत्त अपनी श्रेष्ठता पर गौरव
करे। 10जो धनी है, वह अपनी हीनता पर गौरव
करे; क्योंकि वह घास के फूल की तरह नष्ट हो
जायेगा। 11जब सूर्य उगता है और लू चलने
लगती है, तो घास मुरझाती है, फूल झड़ता है
और उसकी कान्ति नष्ट हो जाती है। इसी तरह
धनी और उसका पूरा व्यापार समाप्त हो
जायेगा।

परीक्षा और प्रलोभन

12धन्य है वह, जो विपत्ति में दृढ़ बना रहता
है! परीक्षा में खरा उतरने पर उसे जीवन का वह
मुकुट प्राप्त होगा, जिसे प्रभु ने अपने भक्तों को
देने की प्रतिज्ञा की है। 13प्रलोभन में पड़ा हुआ
कोई भी व्यक्ति यह न कहे कि परमेश्वर मुझे
प्रलोभन देता है। परमेश्वर न तो बुराई के
प्रलोभन में पड़ सकता और न किसी को
प्रलोभन देता है। 14जो प्रलोभन में पड़ता है,
वह अपनी ही वासना द्वारा खींचा और बहकाया
जाता है। 15वासना के गर्भ से पाप का जन्म होता
है और पाप विकसित हो कर मृत्यु को जन्म
देता है।

16मेरे प्रिय भाइयो और बहिनो! आप गलती
न करें। 17सभी उत्तम दान और सभी पूर्ण
वरदान ऊपर के हैं और नक्षत्रों के उस सृष्टिकर्त्ता
पिता के यहाँ से उतरते हैं, जिस में न तो कोई
परिवर्तन है और न परिक्रमा के कारण कोई
अन्धकार। 18उसने अपनी ही इच्छा से सत्य के
वचन द्वारा हम को जीवन प्रदान किया है,
जिससे हम एक प्रकार से उसकी सृष्टि के प्रथम
फल बनें।

वचन के श्रोता ही नहीं, बल्कि उसके पालनकर्त्ता भी बनें

19मेरे प्रिय भाइयो और बहिनो! आप यह
अच्छी तरह समझ लें। प्रत्येक व्यक्ति सुनने के
लिए तत्पर रहे, किन्तु बोलने और क्रोध करने
में देर करे; 20क्योंकि मनुष्य का क्रोध उस
धार्मिकता में सहायक नहीं होता, जिसे परमेश्वर
चाहता है। 21इसलिए आप लोग हर प्रकार की
मलिनता और समस्त बुराई को दूर कर
नम्रतापूर्वक परमेश्वर का वह वचन ग्रहण करें,
जो आप में रोपा गया है और आपकी आत्मा
का उद्धार करने में समर्थ है। 22आप लोग अपने
को धोखा नहीं दें। वचन के श्रोता ही नहीं,
बल्कि उसके पालनकर्त्ता भी बनें। 23जो व्यक्ति
वचन सुनता है, किन्तु उसके अनुसार आचरण
नहीं करता, वह उस मनुष्य के सदृश है जो
दर्पण में अपना प्राकृतिक चेहरा देखता है।
24वह अपने को देख कर चला जाता है और
उसे याद नहीं रहता कि उसका अपना स्वरूप
कैसा है। 25किन्तु जो व्यक्ति उस व्यवस्था को,
जो पूर्ण है और हमें स्वतन्त्रता प्रदान करती है,
ध्यान से देखता और उसका पालन करता रहता
है, वह उस श्रोता के सदृश नहीं, जो तुरन्त भूल
जाता है, बल्कि वह कर्ता बन जाता और उस
व्यवस्था को अपने जीवन में चरितार्थ करता है।
वह अपने आचरण के कारण धन्य होगा।

26यदि कोई अपने को धर्मात्मा मानता है,
किन्तु अपनी जीभ पर नियन्त्रण नहीं रखता, तो

---

* मूल में, "भाई"।

1 : 5 नीति 2 : 3-6; प्रज्ञ 8 : 21; प्रव 51 : 13-14 **1 : 6** मक 11 : 24 **1 : 9** याक 2 : 5 **1 : 10** भज 102 : 4, 11; 1 पत 1 : 24 **1 : 11** यश 40 : 6-7 (यू० पाठ) **1 : 12** दान 12 : 12; 2 तिम 4 : 8; 1 पत 5 : 4; 1 कुर 9 : 25 **1 : 13** प्रव 15 : 11-20; प्रक 2 : 10 **1 : 14** रोम 7 : 7-10 **1 : 17** 1 यो 1 : 5; मत 7 : 11 **1 : 18** यो 1 : 13; 1 पत 1 : 23 **1 : 19** सभ 7 : 9; प्रव 5 : 11 **1 : 20** इफ 4 : 26 **1 : 21** कुल 3 : 8; 1 पत 2 : 1 **1 : 22** मत 7 : 26; रोम 2 : 13 **1 : 25** याक 2 : 12; रोम 8 : 2; यो 13 : 17 **1 : 26** भज 34 : 13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वह अपने आप को धोखा देता है और उसका
धर्माचरण व्यर्थ है। [27]पिता परमेश्वर की दृष्टि
में शुद्ध और निर्मल धर्म यह है: विपत्ति में पड़े
हुए अनाथों और विधवाओं की सहायता करना
और अपने को संसार के दूषण से बचाये रखना।

दरिद्रों का सम्मान करना चाहिए

2 मेरे भाइयो और बहिनो! आप लोग हमारे
महिमान्वित प्रभु येशु मसीह में विश्वास
करते हैं, इसलिए भेदभाव और चापलूसी से दूर
रहिए। [2]मान लीजिए कि आप लोगों की सभा
में सोने की अंगूठी और कीमती वस्त्र पहने कोई
व्यक्ति प्रवेश करता है और साथ ही फटे-पुराने
कपड़े पहने कोई कंगाल। [3]यदि आप कीमती
वस्त्र पहने व्यक्ति का विशेष ध्यान रख कर
उससे कहें, "आप यहाँ इस आसन पर
विराजिए" और कंगाल से कहें, "तू वहाँ खड़ा
रह" अथवा "मेरे पावदान के पास बैठ", [4]तो
क्या आपने मन में भेदभाव नहीं आने दिया और
गलत विचार के अनुसार निर्णय नहीं किया?
[5]मेरे प्रिय भाइयो और बहिनो! सुन लीजिए।
क्या परमेश्वर ने उन लोगों को नहीं चुना है, जो
संसार की दृष्टि में दरिद्र हैं, ताकि वे विश्वास
के धनी हो जायें और उस राज्य के उत्तराधिकारी
बनें, जिसे उसने अपने भक्तों को* प्रदान करने
की प्रतिज्ञा की है? [6]तब भी आपने दरिद्र का
तिरस्कार किया है। क्या धनी आप लोगों का
शोषण नहीं करते और आप को अदालतों में
घसीट कर नहीं ले जाते? [7]क्या वे उस सुन्दर
नाम की निन्दा नहीं करते, जिस से आप पुकारे
जाते हैं? [8]धर्मग्रन्थ कहता है, "तुम अपने
पड़ोसी को अपने समान प्रेम करो।" यदि आप
इसके अनुसार सुनहरी आज्ञा+ पूरी करते हैं, तो
अच्छा करते हैं। [9]किन्तु यदि आप पक्षपात
करते हैं, तो पाप करते हैं और व्यवस्था के
अनुसार दोषी ठहरते हैं।
[10]यदि कोई पूरी व्यवस्था का पालन करता
है, किन्तु उसकी एक धारा का ही उल्लंघन
करता है, तो वह समस्त व्यवस्था के प्रति
अपराध करता है; [11]क्योंकि जिसने कहा,
"व्यभिचार मत करो," उसने यह भी कहा,
"हत्या मत करो।" इसलिए यदि आप व्यभिचार
नहीं करते, किन्तु हत्या करते हैं, तो आप
व्यवस्था का उल्लंघन करते हैं। [12]आपकी
बातचीत और आपका आचरण उन लोगों के
सदृश हो, जिनका न्याय स्वतन्त्रता प्रदान करने
वाली व्यवस्था के अनुसार किया जायेगा।
[13]जिसने दया नहीं दिखायी है, उसका न्याय
दया के साथ नहीं किया जायेगा; किन्तु दया
न्याय पर विजय पाती है।

कर्मों के अभाव में विश्वास व्यर्थ

[14]मेरे भाइयो और बहिनो! यदि कोई यह
कहता है कि मैं विश्वास करता हूँ, किन्तु उसके
अनुसार आचरण नहीं करता, तो इस से क्या
लाभ? क्या विश्वास ही उसका उद्धार कर
सकता है? [15]मान लीजिए कि किसी भाई या
बहिन के पास न पहनने के कपड़े हों और न
दैनिक भोजन। [16]यदि आप लोगों में से कोई
उनसे कहे, "शांति से जाइए, गरम-गरम कपड़े
पहनिए और भर पेट खाइए", किन्तु वह उन्हें
शरीर के लिए आवश्यक वस्तुएँ नहीं दे, तो इस
से क्या लाभ? [17]इसी तरह कर्मों के अभाव में
विश्वास अपने आप में निर्जीव होता है।
[18]और ऐसे मनुष्य से कोई कह सकता है,
"तुम विश्वास करते हो, किन्तु मैं उसके
अनुसार आचरण करता हूँ। मुझे अपना विश्वास
दिखाओ जिस पर तुम नहीं चलते और मैं अपने
आचरण द्वारा तुम्हें अपने विश्वास का प्रमाण
दूँगा।" [19]तुम विश्वास करते हो कि केवल एक
परमेश्वर है। अच्छा करते हो। दुष्ट आत्माएं भी
ऐसा विश्वास करती हैं और काँपती रहती हैं।
[20]मूर्ख! क्या तुम इसका प्रमाण चाहते हो
कि कर्मों के अभाव में विश्वास व्यर्थ है? [21]क्या

---

* शब्दशः, "अपने प्रेम करनेवालों को"। + शब्दशः "राजसी व्यवस्था"।

2 : 1 1 कुर 2 : 8 2 : 2 इब्र 10 : 25 2 : 5 1 कुर 1 : 26; लू 12 : 21 2 : 8 लेव 19 : 18 2 : 9 व्य 1 : 17 2 : 10 मत 5 : 19 2 : 11 नि 20 : 13-14; व्य 5 : 17-18 2 : 12 याक 1 : 25 2 : 13 मत 5 : 7; 18 : 30, 34; 25 : 45-46 2 : 14 मत 7 : 21; 21 : 29 2 : 16 1 यो 3 : 17 2 : 18 गल 5 : 6 2 : 19 मक 5 : 7 2 : 21 उत 22 : 9-10, 12; प्रव 44 : 19-21; 1 मक 2 : 52

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हमारे पिता अब्राहम अपने कर्मों के कारण
धार्मिक नहीं ठहराए गये, जब उन्होंने वेदी पर
अपने पुत्र इसहाक को अर्पित किया? [22]तुम देखते
हो कि उनका विश्वास उनके कर्मों के साथ
क्रियाशील था और उनके कर्मों द्वारा ही पूर्णता
प्राप्त कर सका। [23]इस प्रकार धर्मग्रन्थ का यह
कथन पूरा हुआ, "अब्राहम ने परमेश्वर में
विश्वास किया और इसी से वह धार्मिक माने
गये और परमेश्वर के मित्र कहलाये।" [24]आप
लोग देखते हैं कि मनुष्य केवल विश्वास से
नहीं, बल्कि कर्मों से धार्मिक ठहराया जाता है।
[25]इसी प्रकार वेश्या राहाब अपने कर्मों से
धार्मिक ठहराई गई, क्योंकि उसने अपने घर में
दूतों का स्वागत किया और उन्हें दूसरे रास्ते से
विदा किया। [26]जिस तरह आत्मा के बिना शरीर
निर्जीव है, उसी तरह कर्मों के अभाव में
विश्वास निर्जीव है।

जीभ पर नियन्त्रण आवश्यक

3 मेरे भाइयो और बहिनो! आप लोगों में
बहुत लोग गुरु न बनें, क्योंकि आप जानते
हैं कि हम गुरुओं से अधिक कड़ाई से लेखा
मांगा जायेगा। [2]हम सब बारम्बार गलत काम
करते हैं। जो कभी गलत बात नहीं कहता, वह
पहुँचा हुआ मनुष्य है और वह अपने पूर्ण शरीर
को नियंत्रण में रख सकता है। [3]यदि हम घोड़ों
को वश में रखने के लिए उनके मुँह में लगाम
लगाते हैं, तो उनके सारे शरीर को इधर-उधर
घुमा सकते हैं। [4]जलयान का भी उदाहरण
लीजिए। वह कितना ही बड़ा क्यों न हो और
तेज हवा से भले ही बहाया जा रहा हो, तब भी
वह कर्णधार की इच्छा के अनुसार एक छोटी-
सी पतवार से चलाया जाता है। [5]इसी प्रकार
जीभ शरीर का एक छोटा-सा अंग है, किन्तु
वह शक्तिशाली होने का दावा कर सकती है।
देखिए, एक छोटी-सी चिनगारी कितने विशाल
वन में आग लगा सकती है। [6]जीभ भी एक
आग है। उसमें अधर्म का संसार भरा पड़ा है।
हमारे अंगों में जीभ ही है जो हमारा समस्त
शरीर दूषित करती और नरकाग्नि से प्रज्वलित
हो कर हमारे भव-चक्र में आग लगा देती है।
[7]हर प्रकार के पशु और पक्षी, रेंगने वाले और
जलचर जीवजन्तु, सब-के-सब मानव-जाति
द्वारा वश में किये जा सकते हैं अथवा वश में
किये जा चुके हैं, [8]किन्तु कोई मनुष्य अपनी
जीभ को वश में नहीं कर सकता। वह एक ऐसी
बुराई है, जो कभी शान्त नहीं रहती और
प्राणघातक विष से भरी हुई है।
[9]हम उस से अपने प्रभु एवं पिता की स्तुति
करते हैं और उसी से मनुष्यों को अभिशाप देते
हैं, जो परमेश्वर के स्वरूप में बनाए गए हैं।
[10]एक ही मुख से स्तुति भी निकलती है और
अभिशाप भी। मेरे भाइयो और बहिनो! यह
उचित नहीं है। [11]क्या जलस्त्रोत की एक ही
धारा से मीठा पानी भी निकलता है और कड़वा
भी? [12]क्या अंजीर के पेड़ पर जैतून लगते हैं
या दाखलता पर अंजीर? खारे जलस्त्रोत से भी
मीठा पानी नहीं निकलता।

संसार की बुद्धि और ईश्वरीय प्रज्ञा

[13]आप लोगों में जो ज्ञानी और समझदार
होने का दावा करता है, वह अपने सदाचरण
द्वारा, अपने नम्र तथा बुद्धिमान व्यवहार द्वारा
इस बात का प्रमाण दे। [14]यदि आपका हृदय
कटु ईर्ष्या और स्वार्थ से भरा हुआ है, तो डींग
मार कर सत्य के विपरीत झूठा दावा मत करें।
[15]इस प्रकार की बुद्धि ऊपर से नहीं आती,
बल्कि वह पार्थिव, पाशविक और शैतानी है।
[16]जहाँ ईर्ष्या और स्वार्थ है, वहाँ अशान्ति और
हर तरह की बुराई पायी जाती है। [17]किन्तु ऊपर
से आयी हुई प्रज्ञा सब से पहले निर्दोष है, और
वह शान्तिप्रिय, सहनशील, विनम्र, करुणामय,
परोपकारी, पक्षपातहीन और निष्कपट भी है।
[18]धार्मिकता शान्ति के क्षेत्र में बोयी जाती है

---

2 : 22 इब्र 11 : 17 **2 : 23** यश 41 : 8; उत 15 : 6; रोम 4 : 3; 2 इति 20 : 7 **2 : 24** यो 8 : 39; रोम 4 : 12 **2 : 25** इब्र 11 : 31; यहो 2 : 4; 6 : 17 **2 : 26** याक 2 : 17 **3 : 1** याक 1 : 19 **3 : 2** याक 1 : 26; प्रव 5 : 9-15; 14 : 1; 28 : 13-26 **3 : 6** मत 15 : 11, 18-19; 12 : 36-37 **3 : 8** भज 140 : 3 **3 : 9** उत 1 : 27 **3 : 13** याक 2 : 18 1 पत 2 : 12; प्रव 19 : 20-30; **3 : 14** इफ 4 : 31 **3 : 15** याक 1 : 5, 17 **3 : 17** इब्र 12 : 11

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और शान्ति स्थापित करने वाले उसका फल
प्राप्त करते हैं।

संसार का मित्र परमेश्वर का शत्रु बन जाता है

4 आप लोगों में द्वेष और लड़ाई-झगड़ा
कहां से आता है? क्या इसका कारण यह
नहीं है कि आपकी वासनाएँ आप के अन्दर
लड़ाई करती हैं? 2आप अपनी लालसा पूरी
नहीं कर पाते और इसीलिए हत्या करते हैं।
आप जिस चीज़ के लिए ईर्ष्या करते हैं, उसे
नहीं पाते और इसलिए लड़ते-झगड़ते हैं। आप
प्रार्थना नहीं करते, इसलिए आप लोगों के पास
कुछ नहीं होता। 3जब आप मांगते भी हैं, तो
इसलिए नहीं पाते कि अच्छी तरह प्रार्थना नहीं
करते। आप अपनी वासनाओं की तृप्ति के लिए
प्रार्थना करते हैं।
4व्यभिचारियों के सदृश आचरण करने वाले
अनिष्ठावान लोगो! क्या तुम यह नहीं जानते कि
संसार से मित्रता रखने का अर्थ है परमेश्वर से
बैर करना? जो संसार का मित्र होना चाहता है,
वह परमेश्वर का शत्रु बन जाता है। 5क्या तुम
समझते हो कि धर्मग्रन्थ अकारण कहता है कि
परमेश्वर ने जिस आत्मा को हम में समाविष्ट
किया, उस को वह बड़ी ममता से चाहता है?
6वह प्रचुर मात्रा में अनुग्रह भी देता है, जैसा कि
धर्मग्रन्थ में लिखा है, ''परमेश्वर घमण्डियों
का विरोध करता, किन्तु विनीतों को अनुग्रह
प्रदान करता है।'' 7अतः आप लोग परमेश्वर
के अधीन रहें। शैतान का सामना करें और वह
आप के पास से भाग जायेगा। 8परमेश्वर के
पास जायें और वह आप के पास आयेगा।
पापियो! अपने हाथ शुद्ध करो। कपटियो!
अपना हृदय पवित्र करो। 9अपनी दुर्गति पहचान
कर शोक मनाओ और आंसू बहाओ। अपनी
हंसी शोक में और अपना आनन्द विषाद में
बदल डालो। 10प्रभु के सामने दीन-हीन बनो
तो वह तुम्हें ऊँचा उठायेगा।

दूसरों की निन्दा नहीं करनी चाहिए

11भाइयो और बहिनो! आप एक दूसरे की
निन्दा नहीं करें। जो अपने भाई अथवा बहिन
की निन्दा करता या अपने भाई अथवा बहिन
का न्याय करता है, वह व्यवस्था की निन्दा और
व्यवस्था का न्याय करता है। यदि आप व्यवस्था
का न्याय करते हैं, तो आप व्यवस्था के पालक
नहीं, बल्कि न्यायकर्ता बन बैठते हैं। 12केवल
एक ही विधायक और एक ही न्यायकर्ता है, जो
बचाने और नष्ट करने में समर्थ है। अपने
पड़ोसी का न्याय करने वाले तुम कौन हो?

भविष्य अनिश्चित है

13तुम लोग जो यह कहते हो, ''हम आज
या कल अमुक नगर जायेंगे, एक वर्ष तक वहां
रह कर व्यापार करेंगे और धन कमायेंगे'', मेरी
बात सुनो। 14तुम नहीं जानते कि कल तुम्हारा
क्या हाल होगा। तुम्हारा जीवन एक कुहरा मात्र
है—वह एक क्षण दिखाई दे कर लुप्त हो जाता
है। 15तुम लोगों को यह कहना चाहिए, ''यदि
प्रभु की इच्छा होगी, तो हम जीवित रहेंगे और
यह अथवा वह काम करेंगे''। 16किन्तु तुम अपनी
धृष्ठता पर धृष्टता करते हो। इस प्रकार का
घमण्ड बुरा है। 17जो मनुष्य भलाई करना जानता
है किन्तु करता नहीं, उसे पाप लगता है।*

धनवानों को चेतावनी

5 धनवानो, मेरी बात सुनो! तुम लोगों को
रोना और विलाप करना चाहिए, क्योंकि
विपत्तियाँ तुम पर आ पड़ने वाली हैं। 2तुम्हारी
सम्पत्ति सड़ गयी है। तुम्हारे कपड़ों में कीड़े
लग गये हैं। 3तुम्हारे सोना-चाँदी पर मोरचा
जम गया है। वह मोरचा तुम्हारे विरुद्ध साक्षी
देगा; वह आग की तरह तुम्हारा शरीर खा

---

* अथवा, 'वह भी पाप करता है।'

3 : 18 यश 32 : 17; मत 5 : 9 **4 : 1** रोम 7 : 23; 1 पत 2 : 11 **4 : 4** लू 6 : 26; रोम 8 : 7; 1 यो 2 : 15 **4 : 5** नि 20 : 3, 5; मत 6 : 24; गल 5 : 17 **4 : 6** नीति 3 : 34 (यू० पाठ); अय्य 22 : 29; मत 23 : 12; 1 पत 5 : 5 **4 : 7** इफ 6 : 12; 1 पत 5 : 8-9 **4 : 8** जक 1 : 3; यश 1 : 16 **4 : 10** 1 पत 5 : 6 **4 : 12** मत 7 : 1; रोम 2 : 1; 14 : 4 **4 : 13** नीति 27 : 1; प्रज्ञ 2 : 4; 5 : 9-13 **4 : 14** लू 12 : 20; भज 39 : 5, 11 **4 : 15** प्रे 18 : 21 **4 : 17** लू 12 : 47; रोम 14 : 23 **5 : 1** लू 6 : 24 **5 : 2** मत 6 : 19 **5 : 3** नीति 16 : 27; प्रव 29 : 10-12 **5 : 4** लेव 19 : 13; मला 3 : 5; व्य 24 : 14; यश 5 : 9; अय्य 31 : 38-40

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जायेगा। यह युग का अन्त है और तुम लोगों ने
धन का ढेर लगा लिया है।
4मजदूरों ने तुम्हारे खेतों की फसल लुनी
और तुमने उन्हें मजदूरी नहीं दी। वह मजदूरी
पुकार रही है और लुनने वालों की दुहाई
स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु के कानों तक पहुँच
गयी है। 5तुम लोगों ने पृथ्वी पर सुख और
भोग-विलास का जीवन बिताया है और वध
के दिन के लिए अपने को हृष्ट-पुष्ट बना लिया
है। 6तुम ने धर्मी को दोषी ठहरा कर मार डाला
है और उसने तुम्हारा कोई विरोध नहीं किया।
7भाइयो और बहिनो! प्रभु के आगमन तक
धैर्य रखिए। किसान को देखिए, जो खेत की
क़ीमती फसल की बाट जोहता है। उसे
शरत्कालीन और वसन्तकालीन वर्षा के आने
तक धैर्य रखना पड़ता है। 8आप लोग भी धैर्य
रखिए। हिम्मत न हारिए, क्योंकि प्रभु का
आगमन निकट है।
9भाइयो और बहिनो! एक दूसरे की शिकायत
नहीं कीजिए, जिससे आप पर दोष न लगाया
जाये। देखिए, न्यायकर्ता द्वार पर खड़े हैं।
10भाइयो और बहिनो! जो नबी प्रभु के नाम पर
बोले हैं, उन्हें सहिष्णुता तथा धैर्य का अपना
आदर्श समझ लीजिए। 11हम उन्हें धन्य समझते
हैं, जो दृढ़ बने रहे। आप लोगों ने अय्यूब के
धैर्य के विषय में सुना है और आप जानते हैं कि
प्रभु ने अन्त में उसके साथ कैसा व्यवहार
किया; क्योंकि प्रभु दयालु और करुणामय है।

शपथ नहीं खाना चाहिए

12मेरे भाइयो और बहिनो! सब से बड़ी बात
यह है कि आप शपथ नहीं खायें—न तो स्वर्ग
की, न पृथ्वी की और न किसी अन्य वस्तु की।
आपकी बात इतनी हो: हाँ की हाँ, नहीं की
नहीं। कहीं ऐसा न हो कि आप दण्ड के योग्य
हो जायें।

प्रार्थना की शक्ति

13यदि आप लोगों में से कोई कष्ट में हो, तो
वह प्रार्थना करे। कोई प्रसन्न हो, तो भजन
गाये। 14कोई अस्वस्थ हो, तो कलीसिया के
धर्मवृद्धों को बुलाये और वे प्रभु के नाम पर उस
पर तेल का विलेपन करने के बाद उसके लिए
प्रार्थना करें। 15वह विश्वासपूर्ण प्रार्थना रोगी
को बचायेगी और प्रभु उसे खड़ा कर देगा। यदि
उसने पाप किया है, तो उसे क्षमा मिलेगी।
16इसलिए आप लोग एक दूसरे के सामने
अपने-अपने पाप स्वीकार करें और एक दूसरे
के लिए प्रार्थना करें, जिससे आप स्वस्थ हो
जायें। धर्मात्मा की भक्तिमय प्रार्थना बहुत
प्रभावशाली होती है।
17नबी एलियाह हमारी ही तरह सामान्य
मनुष्य थे। उन्होंने आग्रह के साथ इसलिए
प्रार्थना की कि पानी न बरसे और साढ़े तीन वर्ष
तक पृथ्वी पर पानी नहीं बरसा। 18उन्होंने दुबारा
प्रार्थना की। आकाश से पानी बरसा और पृथ्वी
पर फ़सल उगने लगी।

पापियों का सुधार

19मेरे भाइयो और बहिनो! यदि आप लोगों
में से कोई सत्य मार्ग से भटक जाये और कोई
दूसरा उसे वापस ले आये, 20तो यह समझिए
कि जो किसी पापी को कुमार्ग से वापस ले
आता है, वह उसकी आत्मा को मृत्यु से बचाता
है और बहुत-से पाप ढांप देता है।

---

5 : 5 लू 16 : 19, 25; यिर 12 : 3 **5 : 6** प्रज्ञ 2 : 10-20 **5 : 7** व्य 11 : 14; योए 2 : 23; जक 10 : 1; यिर 5 : 24; लू 21 : 19; इब्र 10 : 36 **5 : 8** इब्र 10 : 25; 1 थिस 2 : 16; 3 : 13 **5 : 10** मत 5 : 12 **5 : 11** दान 12 : 12; अय्य 1 : 21-22; भज 103 : 8; 11, 1 : 4 **5 : 12** मत 5 : 34-37 **5 : 13** भज 50 : 15; कुल 3 : 16 **5 : 14** मक 6 : 13 **5 : 15** मक 16 : 18 **5 : 16** प्रव 4 : 26 **5 : 17** 1 रा 17 : 1; लू 4 : 25; प्रे 14 : 15; प्रव 48 : 2-3 **5 : 18** 1 रा 18 : 42 **5 : 19** गल 6 : 1 **5 : 20** भज 51 : 13; नीति 10 : 12; 1 पत 4 : 8; तोब 12 : 9

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

संत पतरस का पहला पत्र

भूमिका

"संत पतरस का पहला पत्र" परमेश्वर के चुने हुए लोगों को सम्बोधित किया गया है, जो एशिया माइनर के उत्तरी देशों में बसे हुए थे। पत्र का प्रमुख उद्देश्य उनके विश्वास को बढ़ाना, उन्हें विश्वास में स्थिर रखना था; क्योंकि वे अपने विश्वास के कारण अत्याचार और कष्ट सह रहे थे। लेखक उन्हें प्रभु येशु के दुःख, मृत्यु और पुनरुत्थान का स्मरण दिलाता है, और यों उन्हें आशा का सन्देश देता है कि वे अपने वर्तमान दुःख और सताव को धैर्य के साथ सह जाएं। यह उनके सच्चे विश्वास की परख का समय है, और उन्हें अपने सच्चे विश्वास का पुरस्कार उस दिन प्राप्त होगा "जब मसीह महिमा में प्रकट होंगे।"

संकट की घड़ी में प्रोत्साहन के उपदेश के साथ-साथ लेखक अपने पाठकों को मसीह के सच्चे अनुयायी के सदृश जीवन व्यतीत करने का प्रबोधन देता है कि वे आपस में सच्चा प्रेम रखें।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

अभिवादन	1 : 1-2
परमेश्वर के उद्धार का स्मरण	1 : 3-12
पवित्र जीवन व्यतीत करने का प्रबोधन	1 : 13—2 : 10
संकट-सताव के समय विश्वासी-जन का दायित्व	2 : 11—4 : 19
मसीही दीनता और सेवा	5 : 1-11
उपसंहार	5 : 12-14

अभिवादन

1 येशु मसीह के प्रेरित पतरस का यह पत्र
परमेश्वर के उन बिखरे हुए कृपापात्रों के
नाम है, जो पोंतुस, गलातिया, कप्पदूकिया,
आसिया तथा बिथुनिया प्रदेशों में प्रवासियों की
तरह रहते हैं; 2जो पिता परमेश्वर के पूर्व-ज्ञान
के अनुसार बुलाये गये हैं और पवित्र आत्मा के
द्वारा पवित्र किये गये हैं, जिससे वे येशु मसीह
की आज्ञा का पालन करें और उनके रक्त से
अभिसिंचित हों। आप लोगों को प्रचुर मात्रा में
अनुग्रह और शान्ति प्राप्त हो!

मसीही आशा

3धन्य है परमेश्वर, हमारे प्रभु येशु मसीह का
पिता! मृतकों में से येशु मसीह के पुनरुत्थान
द्वारा उसने अपनी महती दया से हमें जीवन्त
आशा से परिपूर्ण नवजीवन* प्रदान किया। 4जो
विरासत आप लोगों के लिए स्वर्ग में रखी हुई
है, वह अक्षय, अदूषित तथा अविनाशी है।
5आपके विश्वास के कारण परमेश्वर का
सामर्थ्य आप को उस मुक्ति के लिए सुरक्षित
रखता है, जो अभी से प्रस्तुत है और समय के
अन्त में प्रकट होने वाली है। 6यह आप लोगों

---

* अक्षरशः, "नया जन्म"।

1 : 1 याक 1 : 1 **1 : 2** रोम 8 : 29; इब्र 12 : 24 **1 : 3** याक 1 : 18; 1 कुर 15 : 20 **1 : 4** कुल 1 : 12 **1 : 5** यो 10 : 28; 17 : 11; 1 कुर 2 : 5; रोम 5 : 3-4; गल 3 : 23 **1 : 6** 1 पत 5 : 10; इब्र 12 : 11; याक 1 : 2; 2 कुर 4 : 17

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

के लिए बड़े आनन्द का विषय है, हालांकि
अभी, थोड़े समय के लिए, आप को अनेक
प्रकार के कष्ट सहने पड़ रहे हैं। 7यह इसलिए
होता है कि आपका विश्वास परीक्षा में खरा
निकले। सोना भी तो आग में तपाया जाता है
और आपका विश्वास नश्वर सोने से कहीं
अधिक मूल्यवान् है। इस प्रकार आपका
विश्वास येशु मसीह के प्रकट होने पर स्तुति,
प्रशंसा और प्रतिष्ठा का कारण बने। 8आपने येशु
को कभी देखा नहीं, फिर भी आप उन्हें प्यार
करते हैं। आप अब भी उन्हें नहीं देखते, फिर
भी उन में आप विश्वास करते हैं। और इस
विश्वास के कारण आप एक अकथनीय एवं
महिमामय आनन्द से परिपूर्ण हैं। 9इस विश्वास
का प्रतिफल है, आपकी आत्मा का उद्धार।
10यही उद्धार नबियों के चिन्तन तथा
अनुसन्धान का विषय था। उन्होंने आप लोगों
को मिलने वाले अनुग्रह के विषय में नबूवत
की। 11मसीह का आत्मा उन नबियों में विद्यमान
था और पहले से ही वह मसीह के दु:खभोग
तथा इसके बाद आने वाली महिमा की साक्षी
देता था। नबी यह जानना चाहते थे कि आत्मा
किस समय और किन परिस्थितियों की ओर
संकेत कर रहा है। 12उन पर प्रकट किया गया
था कि जब वे सन्देश सुनाते थे, तब वे अपने
लिए नहीं, बल्कि आप लोगों के हित के लिए
सेवा करते थे। अब शुभसमाचार के प्रचारक,
स्वर्ग से भेजे हुए पवित्र आत्मा की प्रेरणा से,
आप लोगों को वही सन्देश सुनाते हैं। स्वर्गदूत
भी इन बातों की पूरी जानकारी प्राप्त करने के
लिए उत्सुक हैं।

पवित्र मसीही जीवन

13इसलिए आप लोग अपने मन की शक्तियों
को कर्म करने के लिए तत्पर करें*। आप संयमी
बने रहें और उस अनुग्रह की पूरी आशा करें,
जो येशु मसीह के प्रकट होने पर आप को प्राप्त
होगा। 14आप आज्ञाकारी सन्तान बन कर
अपनी वासनाओं के अनुसार आचरण नहीं
करें, जैसा कि पहले किया करते थे जब आप
लोगों को ज्ञान नहीं मिला था। 15जिसने आप
को बुलाया, वह पवित्र है। आप भी उसके
सदृश अपने समस्त आचरण में पवित्र बनें;
16क्योंकि धर्मग्रन्थ में लिखा है, "पवित्र बनो,
क्योंकि मैं पवित्र हूँ।"
17यदि आप उसे "पिता" कह कर पुकारते
हैं, जो पक्षपात किये बिना प्रत्येक मनुष्य का
उसके कर्मों के अनुसार न्याय करता है, तो जब
तक आप यहाँ परदेश में रहते हैं, तब तक उस
पर श्रद्धा रखते हुए जीवन बितायें। 18आप लोग
जानते हैं कि पूर्वजों से चली आयी हुई निरर्थक
जीवनचर्या से आपका उद्धार सोने-चांदी जैसी
नश्वर चीजों की क़ीमत पर नहीं हुआ है,
19बल्कि एक निर्दोष तथा निष्कलंक मेमने
अर्थात् मसीह के मूल्यवान् रक्त की क़ीमत पर।
20वह संसार की सृष्टि से पहले ही नियुक्त किये
गये थे, किन्तु समय के अन्त में आप के लिए
प्रकट हुए। 21उन्हीं के द्वारा आप लोग अब
परमेश्वर के प्रति विश्वासी+ हैं। परमेश्वर ने
उन्हें मृतकों में से जिलाया और महिमान्वित
किया; इसलिए आपका विश्वास और आपकी
आशा परमेश्वर पर आधारित है।

निष्कपट भ्रातृप्रेम

22आप लोगों ने आज्ञाकारी बन कर सत्य को
स्वीकार किया और इस प्रकार निष्कपट
भ्रातृप्रेम के लिए अपनी आत्मा को पवित्र कर
लिया है; इसलिए अब आप लोगों को शुद्ध
हृदय और सच्ची लगन से एक दूसरे से प्रेम
करना चाहिए। 23आपने दुबारा जन्म लिया है।

---

* अक्षरशः, "मन की कमर कसिए"। +पाठांतर, "विश्वस्त"।

1 : 7 नीति 17 : 3; मला 3 : 3; रोम 2 : 7, 10; याक 1 : 3 **1 : 8** यो 17 : 20; 20 : 29; 2 कुर 5 : 7; 2 तिम 4 : 8 **1 : 9** रोम 6 : 22 **1 : 10** मत 13 : 17; लू 10 : 24 **1 : 11** भज 22 : 1; यश 52 : 13—53 : 12; लू 24:26 **1: 12** इफ 3 : 10; लू 2 : 13 **1 : 13** लू 12 : 35; इफ 6 : 14 **1 : 14** रोम 12 : 2; इफ 2 : 3; 4 : 17 **1 : 16** लेव 11 : 44; 19 : 2; 20 : 7 **1 : 17** भज 89 : 26; यिर 3 : 19; मला 1 : 6; मत 6 : 9; रोम 2 : 11 **1 : 18** यश 52 : 3; 1 कुर 6 : 20; 7 : 23 **1 : 19** यश 53 : 7; इब्र 9 : 14 **1 : 20** रोम 16 : 25; इफ 1 : 4 **1 : 21** यो 14 : 6; रोम 4 : 24; कुल 1 : 27 **1 : 22** 1 यो 5 : 1 **1 : 23** दान 6 : 26; यो 1 : 13; याक 1 : 18

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आप लोगों का यह जन्म नश्वर बीज से नहीं,
किंतु अनश्वर बीज से, परमेश्वर के जीवन्त एवं
शाश्वत वचन से हुआ है; 24क्योंकि धर्मग्रन्थ में
लिखा है—

''समस्त शरीरधारी घास के सदृश हैं
और उनका सौन्दर्य घास के फूल की तरह।
घास मुरझाती है और फूल झड़ता है,
25किन्तु प्रभु का वचन युग-युगों तक बना
रहता है।''

और यह वचन वह शुभ समाचार है, जो
आप को सुनाया गया है।

जीवंत पत्थर और पवित्र राष्ट्र

2 आप लोग हर प्रकार की बुराई, छल-
कपट, पाखण्ड, ईर्ष्या और परनिन्दा को
सर्वथा छोड़ दें। 2-3आप लोगों ने अनुभव
किया है+ कि प्रभु कितना भला है; इसलिए
नवजात शिशुओं की तरह शुद्ध वचन-रूपी दूध
के लिए तरसते रहें, जो मुक्ति प्राप्त करने के
लिए आपका पोषण करेगा।

4प्रभु वह जीवन्त पत्थर हैं, जिसे मनुष्यों ने
तो बेकार समझ कर निकाल दिया, किन्तु जो
परमेश्वर द्वारा चुना हुआ और उसकी दृष्टि में
मूल्यवान् है। आप उनके पास आयें 5और जीवन्त
पत्थरों के समान आत्मिक भवन में निर्मित हो
जाएं। इस प्रकार आप पवित्र पुरोहित-वर्ग बन
कर ऐसी आत्मिक बलि चढ़ा सकेंगे, जो येशु
मसीह द्वारा परमेश्वर को स्वीकार हो। 6इसलिए
धर्मग्रन्थ में यह लेख है, ''मैं सियोन में एक
चुना हुआ मूल्यवान् कोने का पत्थर* रखता हूँ
और जो उस पर विश्वास करेगा, उसे निराश
नहीं होना पड़ेगा।''

7आप लोगों के लिए, जो विश्वास करते हैं,
वह पत्थर मूल्यवान् है। जो विश्वास नहीं
करते, उनके लिए धर्मग्रन्थ यह कहता है,
''कारीगरों ने जिस पत्थर को बेकार समझ कर
निकाल दिया था, वही कोने की नींव बन गया
है।'' 8और यह भी लिखा है, ''वह ऐसा पत्थर
है जिससे लोगों को ठेस लगती है, ऐसी चट्टान
है जिससे वे ठोकर खाते हैं।'' वे वचन पर
विश्वास करना नहीं चाहते, इसलिए वे ठोकर
खा कर गिर जाते हैं। यही उनकी नियति है।

9परन्तु आप लोग चुने हुए वंश, राजकीय
पुरोहित-वर्ग, पवित्र राष्ट्र तथा परमेश्वर की
अपनी निजी प्रजा हैं, जिससे आप उसी के
महान् कार्यों की घोषणा करें, जो आप लोगों
को अन्धकार में से निकाल कर अपनी अलौकिक
ज्योति में बुला लाया है। 10पहले आप प्रजा
नहीं थे, अब आप परमेश्वर की प्रजा हैं। पहले
आप कृपा से वंचित थे, अब आप उसके
कृपापात्र हैं।

परमेश्वर के सेवक

11प्रिय भाइयो एवं बहिनो++, आप परदेशी
और प्रवासी हैं, इसलिए मैं आप से अनुरोध
करता हूँ कि आप अपनी शारीरिक वासनाओं
का दमन करें, जो आत्मा के विरुद्ध संघर्ष करती
हैं। 12अन्यधर्मियों के बीच आप लोगों का
आचरण निर्दोष हो। इस प्रकार जो अब आप
को कुकर्मी कहकर आपकी निन्दा करते हैं, वे
आपके सत्कर्मों को देख कर कृपा-दिवस
पर** परमेश्वर की स्तुति करेंगे।

13आप लोग प्रभु के कारण हर प्रकार के
मानवीय शासकों की अधीनता स्वीकार
करें—चाहे वह अधीनता सम्राट् की हो,
जिसके पास सर्वोपरि अधिकार है; 14चाहे वह
राज्यपालों की हो, जो कुकर्मियों के दण्ड तथा
सत्कर्मियों की प्रशंसा के लिए सम्राट् द्वारा
नियुक्त किये जाते हैं। 15परमेश्वर चाहता है
कि आप अपने अच्छे कामों के द्वारा अनर्गल

+शब्दशः, ''इसका स्वाद चखा है''। * अथवा, ''केन्द्र शिला''। ++ मूल में ''प्यारो''। ** अथवा, ''न्याय-दिवस''।

1 : 24 यश 40 : 6-7 (यू० पाठ); याक 1 : 10-11 **1 : 25** यश 40 : 8; मत 24 : 35 **2 : 1** इफ 4 : 22; याक 1 : 21 **2 : 2** 1 कुर 3 : 2; इब्र 5 : 12-13; मत 18 : 3 **2 : 3** भज 34 : 8 **2 : 4** भज 118 : 22; यश 28 : 16; मत 21 : 42; प्रे 4 : 11 **2 : 5** इफ 2 : 21-22; रोम 12 : 1 **2 : 6** यश 28 : 16 (यू० पाठ); रोम 9 : 33 **2 : 7** भज 118 : 22; मत 21 : 42 **2 : 8** यश 8 : 14; रोम 9 : 33 **2 : 9** यश 43 : 20 (यू० पाठ); नि 19 : 6; प्रे 26 : 18; 2 कुर 4 : 6; इफ 5 : 8; फिल 2 : 15; प्रक 1 : 6 **2 : 10** हो 1 : 6.9; 2 : 1, 23; रोम 9 : 25 **2 : 11** भज 39 : 12; गल 5 : 17, 24; इफ 2 : 19; याक 4 : 1 **2 : 12** यश 10 : 3; मत 5 : 16; याक 3 : 13 **2 : 13** रोम 13 : 1-7; तीत 3 : 1 **2 : 15** 1 पत 3 : 16

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बातें करने वाले मूर्खों का मुँह बन्द कर दें।
16आप लोग स्वतन्त्र व्यक्तियों की तरह आचरण
करें; किन्तु स्वतन्त्रता की आड़ में बुराई न करें,
बल्कि परमेश्वर के सेवकों की तरह आचरण
करें। 17सब मनुष्यों का सम्मान करें। भाई-
बहिनों से प्रेम करें, परमेश्वर पर श्रद्धा रखें और
सम्राट् का सम्मान करें।

मसीह के दुःखभोग का उदाहरण

18जो सेवक हैं, वे न केवल अच्छे और
सहृदय स्वामियों की, बल्कि कठोर स्वामियों
की भी अधीनता आदरपूर्वक स्वीकार करें।
19कारण, यदि कोई व्यक्ति धैर्य से दुःख भोगता
और अन्याय सहता है, क्योंकि वह समझता है
कि परमेश्वर यही चाहता है, तो यह पुण्य की
बात है। 20यदि आप अपनी भूल-चूक के
कारण मार खाते और धैर्य रखते हों, तो इसमें
क्या बड़ी बात हुई ? किंतु सत्कर्म करने के बाद
भी यदि आप को दुःख भोगना पड़ता है और
आप उसे धैर्य से सहते हैं, तो यह परमेश्वर की
दृष्टि में पुण्य की बात है।

21इसलिए तो आप बुलाये गये हैं, क्योंकि
मसीह ने आप लोगों के लिए दुःख भोगा और
आप को उदाहरण दिया, जिससे आप उनके
पद-चिह्नों पर चलें। 22उन्होंने कोई पाप नहीं
किया और उनके मुख से कभी छल-कपट की
बात नहीं निकली। 23जब उन्हें गाली दी गयी,
तो उन्होंने उत्तर में गाली नहीं दी और जब उन्हें
सताया गया, तो उन्होंने धमकी नहीं दी। उन्होंने
अपने को उसी पर छोड़ दिया, जो न्यायपूर्वक
विचार करता है। 24वह अपने शरीर में हमारे
पापों को क्रूस के काठ पर ले गये, जिससे हम
पाप के लिए मृत हो कर धार्मिकता के लिए
जीने लगें। आप उनके घावों द्वारा स्वस्थ हो गये
हैं। 25आप लोग भेड़ों की तरह भटक गये थे,
किन्तु अब आप अपनी आत्मा के चरवाहे तथा
रक्षक के पास लौट आये हैं।

पति-पत्नी

3 पत्नियो !आप अपने पतियों के अधीन रहें।
यदि उन में से कुछ अब तक शुभ संदेश
स्वीकार नहीं करते, तो वे आपका श्रद्धापूर्ण
तथा पवित्र जीवन देखकर—शब्दों के कारण
नहीं, 2बल्कि अपनी पत्नियों के आचरण के
कारण—विश्वास की ओर आकर्षित हो जायेंगे।
3आप लोगों का श्रृंगार बाहरी नहीं हो, जैसे
कृत्रिम केश-विन्यास, स्वर्ण आभूषणों अथवा
सुन्दर वस्त्रों से बनाव-सजाव। 4वह हृदय के
अभ्यन्तर का श्रृंगार हो, अर्थात् विनम्र तथा
शान्त स्वभाव का अनश्वर अलंकरण, जो
परमेश्वर की दृष्टि में बहुत मूल्यवान है।
5प्राचीन काल में परमेश्वर में पूर्ण आशा रखने
वाली तथा अपने-अपने पति के अधीन
रहनेवाली पवित्र स्त्रियाँ इसी तरह अपना श्रृंगार
करती थीं। 6सारा का उदाहरण लें, जो अब्राहम
का आज्ञापालन करती और उन्हें 'स्वामी' कह
कर पुकारती थी। जब आप भलाई करती रहेंगी
और किसी आशंका से नहीं घबरायेंगी, तो आप
उनकी सुपुत्रियाँ सिद्ध होंगी।

7पतियो ! आप समझदारी से अपना विवाहित
जीवन व्यतीत कीजिए। अपनी पत्नी का ध्यान
रखें और उसे शारीरिक दृष्टि से 'अबला' समझ
कर तथा अपने साथ शाश्वत् जीवन के अनुग्रह
की उत्तराधिकारिणी जान कर उसका समुचित
आदर करें। यदि आप ऐसा करेंगे, तो आपकी
प्रार्थनाओं में कोई बाधा नहीं पड़ेगी।

भले काम करने में दुःख भोगना

8अन्त में यह: आप सब-के-सब एकमत,
सहानुभूतिशील, भ्रातृप्रेमी, दयालु तथा विनम्र
बनें। 9आप बुराई के बदले बुराई न करें और
गाली के बदले गाली नहीं, बल्कि आशीर्वाद
दें। ऐसा ही करने के लिए आप बुलाये गये हैं,

---

2 : 16 गल 5 : 13 **2 : 17** रोम 12 : 10; नीति 24 : 21; मत 22 : 11 **2 : 18** इफ 6 : 5; तीत 2 : 9 **2 : 20** 1 पत 3 : 14, 17; 4 : 13-14; मत 5 : 10 **2 : 21** मत 16 : 24; यो 13 : 15 **2 : 22** यश 53 : 9 यो 8 : 46; 2 कुर 5 : 21 **2 : 24** यश 53 : 12; 1 यो 3 : 5; रोम 6 : 11; इब्र 9 : 28 **2 : 25** यश 53 : 6 (यू० पाठ); यहेज 34 : 5; 1 पत 5 : 4; यो 10 : 12 **3 : 1** इफ 5 : 11; तीत 2 : 5 **3 : 2** 1 पत 2 : 12 **3 : 3** यश 3 : 18-24; 1 तिम 2 : 9 **3 : 6** उत 18 : 12; नीति 3 : 25 **3 : 7** इफ 5 : 25 **3 : 8** रोम 12 : 16 **3 : 9** 1 पत 2 : 23; मत 5 : 44; 1 थिस 5 : 15

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जिससे आप विरासत के रूप में आशीर्वाद प्राप्त
कर सकें; 10क्योंकि
"जो जीवन से प्रेम करना और अच्छे दिन
देखना चाहता है,
वह अपनी जीभ को बुराई से
और अपने होंठों को कपटपूर्ण बातें बोलने
से बचाए;
11वह बुराई से दूर रहे और भलाई करे;
वह शान्ति को ढूंढ़े तथा उसके लिए प्रयत्न
करे।
12क्योंकि प्रभु की कृपादृष्टि धर्मियों पर बनी
रहती है
और उसके कान उनकी प्रार्थना सुनते हैं,
किन्तु प्रभु कुकर्मियों से मुंह फेर लेता है।"
13यदि आप भलाई करने में लगे रहेंगे, तो
कौन आप के साथ बुराई करेगा? 14और यदि
आप को धार्मिकता के कारण दुःख सहना
पड़ता है, तो आप धन्य हैं। आप उन लोगों से
न तो डरें और न घबरायें। 15-16मसीह को प्रभु
मानकर उनपर हार्दिक श्रद्धा रखें। जो लोग
आपकी आशा के आधार के विषय में आप से
प्रश्न करते हैं, उन्हें विनम्रता तथा आदर के साथ
उत्तर देने के लिए सदा तैयार रहें। अपना अन्तः
करण शुद्ध रखें। इस प्रकार जो लोग आप
को बदनाम करते हैं और आपके भले
मसीही आचरण की निन्दा करते हैं, उन्हें
लज्जित होना पड़ेगा। 17यदि परमेश्वर की यही
इच्छा है, तो बुराई करने के कारण दण्ड भोगने
की अपेक्षा भलाई करने के कारण दुःख सहना
कहीं अच्छा है।

मसीह का उदाहरण

18मसीह ने भी एक बार ही पापों के
प्रायश्चित के लिए दुःख भोगा; धर्मी अधर्मियों
के लिए मर गये, जिससे वह आप लोगों को
परमेश्वर के पास ले जायें। वह शरीर की दृष्टि
से तो मारे गये, किन्तु आत्मा द्वारा जिलाये गये।
19इसी स्थिति में वह बन्दी आत्माओं को मुक्ति
का सन्देश सुनाने गये। 20उन लोगों ने पूर्वकाल
में आज्ञा भंग की थी, जब परमेश्वर नूह के दिनों
में जलयान-निर्माण के समय धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा
कर रहा था। उस जलयान में प्रवेश कर थोड़े
ही अर्थात् आठ व्यक्ति जल के द्वारा बचाये गये
थे। 21यह बपतिस्मा का प्रतीक है, जो अब
आपका उद्धार करता है। बपतिस्मा का अर्थ
शरीर का मैल धोना नहीं, बल्कि शुद्ध हृदय से
अपने को परमेश्वर के प्रति समर्पित करना है।
यह बपतिस्मा येशु मसीह के पुनरुत्थान द्वारा
हमारा उद्धार करता है।
22मसीह ने दूतों, अधिकारियों और शक्तियों
को अपने अधीन कर स्वर्ग में प्रवेश किया और
अब वह परमेश्वर की दाहिनी ओर विराजमान
हैं।

निष्पाप जीवन

4 मसीह ने अपने शरीर में दुःख भोगा;
इसलिए आप भी शस्त्र की तरह यही
मनोभाव धारण करें कि जिसने अपने शरीर में
दुःख भोगा है, उसने पाप से सम्बन्ध तोड़ लिया
है 2और उसे मानवीय वासनाओं के अनुसार
नहीं, बल्कि परमेश्वर की इच्छानुसार अपना
शेष जीवन बिताना चाहिए। 3आप लोगों ने
पहले सांसारिक लोगों की जीवनचर्या के
अनुसार व्यभिचार, भोग-विलास, मदिरापान,
रंगरलियों, मादकता और घृणित मूर्तिपूजा में
जो समय बिताया, वही बहुत हुआ। 4अब आप
उन लोगों के साथ विलासिता के दलदल में
गोता नहीं लगाते, इसलिए उन्हें आश्चर्य होता
और वे आपकी निन्दा करते हैं। 5उन्हें जीवितों
और मृतकों का न्याय करनेवाले परमेश्वर को
अपने आचरण का लेखा देना पड़ेगा। 6यही
कारण है कि मृतकों को भी शुभ समाचार
सुनाया गया, जिससे यद्यपि वे शरीर में मनुष्यों
की तरह दण्डित हुए थे, फिर भी आत्मा में वे

---

3 : 10 भज 34 : 12-16 (यू० पाठ); याक 1 : 26 **3 : 14** 1 पत 2 : 20; मत 5 : 10; यश 8 : 12 **3 : 15** यश 8 : 13; 1 पत 1 : 3, 13 **3 : 16** 1 पत 2 : 12 **3 : 17** 1 पत 2 : 20-24 **3 : 18** रोम 6 : 10; इफ 2 : 18; इब्र 9 : 28; 10 : 10 **3 : 19** 1 पत 4 : 6 **3 : 20** पत 7, 17 **3 : 21** इफ 5 : 26; इब्र 10 : 22 **3 : 22** इफ 1 : 20-21; भज 110 : 1; कुल 2 : 16 **4 : 1** रोम 6 : 2, 7 **4 : 2** 1 यो 2 : 16-17 **4 : 3** इफ 2 : 2-3; तीत 3 : 3 **4 : 5** प्रे 10 : 42; 2 तिम 4 : 1; रोम 14 : 9-10 **4 : 6** 1 पत 3 : 19; रोम 8 : 10; 1 कुर 5 : 5

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

परमेश्वर के अनुरूप जीवित रहें।

परमेश्वर के वरदानों के उत्तम भंडारी

7सब का अन्त निकट आ गया है। आप लोग सन्तुलन तथा संयम रखें, जिससे आप प्रार्थना कर सकें।
8मुख्य बात यह है कि आप आपस में गहरा प्रेम बनाये रखें, क्योंकि प्रेम बहुत-से पाप ढाँक देता है।
9आप बिना कुड़बुड़ाए एक दूसरे का आतिथ्य-सत्कार करें।
10जिसे जो वरदान मिला है, वह—परमेश्वर के बहुविध अनुग्रह के सुयोग्य भण्डारी की तरह—दूसरों की सेवा में उसका उपयोग करे।
11जो प्रवचन देता है, उसे स्मरण रहे कि वह परमेश्वर के शब्द बोल रहा है। जो धर्मसेवा करता है, वह जान ले कि परमेश्वर ही उसे बल प्रदान करता है। इस प्रकार सब बातों में येशु मसीह द्वारा परमेश्वर की महिमा प्रकट हो जायेगी। महिमा तथा सामर्थ्य युगानुयुग परमेश्वर का ही है। आमेन !

एक सच्चे मसीही के नाते दुःख सहना

12प्रिय भाइयो एवं बहिनो ! आप लोगों की परीक्षा अग्नि से ली जा रही है। आप इस पर आश्चर्य नहीं करें, मानो यह कोई असाधारण घटना हो।
13यदि आप लोगों पर अत्याचार किया जाये, तो मसीह के दुःखभोग के सहभागी बन जाने के नाते आप प्रसन्न हो जायें। जिस दिन मसीह की महिमा प्रकट होगी, आप लोग अत्यधिक आनन्दित हो उठेंगे।
14यदि मसीह के नाम के कारण आप लोगों का अपमान किया जाये, तो अपने को धन्य समझें, क्योंकि यह इसका प्रमाण है कि परमेश्वर का महिमामय आत्मा आप पर छाया रहता है।
15सावधान रहें कि हत्यारा, चोर या कुकर्मी होने अथवा दूसरों के कामों में हस्तक्षेप करने के नाते आप लोगों में से कोई व्यक्ति दुःख न भोगे।
16परन्तु यदि किसी को मसीही होने के नाते दुःख भोगना पड़े, तो उसे लज्जित नहीं होना चाहिए, बल्कि वह परमेश्वर की महिमा के लिए इस नाम को स्वीकार करे;
17क्योंकि न्याय का समय प्रारम्भ हो गया है और यह स्वयं परमेश्वर के परिवार से प्रारम्भ हो रहा है। यदि वह इस प्रकार हम से प्रारम्भ हो रहा है, तो अन्त में उन लोगों का क्या होगा, जो परमेश्वर के शुभ समाचार में विश्वास करना नहीं चाहते?
18यदि धर्मी को कठिनाई से मुक्ति मिलती है, तो विधर्मी और पापी का क्या होगा?
19इसलिए जो लोग परमेश्वर की इच्छा के अनुसार दुःख भोगते हैं, वे भलाई करते रहें और विश्वसनीय सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर को अपनी आत्मा सौंप दें।

परमेश्वर के धर्म-सेवक

5 आप लोगों में जो धर्मवृद्ध हैं, उन से मेरा एक अनुरोध है। मैं भी धर्मवृद्ध हूँ, मसीह के दुःखभोग का साक्षी और भविष्य में प्रकट होने वाली महिमा का सहभागी।
2आप लोगों को परमेश्वर का जो झुण्ड सौंपा गया, उसका चरवाहा बनें, परमेश्वर की इच्छा के अनुसार उसकी देखभाल करें—लाचारी से नहीं, बल्कि स्वेच्छा से; घिनावने लाभ के लिए नहीं, बल्कि सेवाभाव से;
3अपने सौंपे हुए लोगों पर अधिकार न जता कर, बल्कि झुण्ड के लिए आदर्श बन कर, यह सेवा करें।
4जिस समय प्रधान चरवाहा प्रकट होंगे, आप लोगों को कभी न मुरझाने वाली महिमा का मुकुट प्राप्त होगा।
5और तुम, नवयुवको ! धर्मवृद्धों की अधीनता स्वीकार करो।

आप सब नम्रतापूर्वक एक दूसरे की सेवा के लिए कमर कस कर तैयार रहें; क्योंकि

---

4 : 7 1 कुर 10 : 11; 1 यो 2 : 18 **4 : 8** नीति 10 : 12; याक 5 : 20; 1 कुर 13 : 7; 1 पत 1 : 22; तोब 12 : 9 **4 : 9** इब्र 13 : 2 **4 : 10** लू 12 : 42 **4 : 11** रोम 3 : 2; 12 : 7; 1 कुर 10 : 31 **4 : 12** 1 पत 1 : 6–7 **4 : 13** प्रे 5 : 41; याक 1 : 2; रोम 8 : 17; 2 तिम 2 : 12 **4 : 14** 1 पत 2 : 20; यश 11 : 2; भज 89 : 50–51 **4 : 16** प्रे 11 : 26; फिल 1 : 20 **4 : 17** यहेज 9 : 6; यिर 25 : 29; 2 थिस 1 : 8 **4 : 18** नीति 11 : 31 (यू० पाट); लू 23 : 31 **4 : 19** भज 31 : 5; लू 23 : 46 **5 : 1** 2 यो 1; 3 यू 1; रोम 8 : 17; प्रक 1 : 9 **5 : 2** यो 10 : 12; 21 : 16; फिले 14; तीत 1 : 11; प्रे 20 : 28; 1 तिम 3 : 2–7 **5 : 3** 2 कुर 1 : 24; तीत 2 : 7; फिल 3 : 17; 1 थिस 1 : 7 **5 : 4** 1 पत 2 : 25; इब्र 13 : 20; 1 कुर 9 : 25; 2 तिम 4 : 8 **5 : 5** इफ 5 : 21; मत 23 : 12; यो 13 : 4, 14; याक 4 : 6; नीति 3 : 34 (यू० पाठ);

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

परमेश्वर घमण्डियों का विरोध करता है, किन्तु
वह विनम्र लोगों पर दया करता है।
6आप परमेश्वर के समर्थ हाथ के नीचे
विनम्र बने रहें, जिससे वह आप को उपयुक्त
समय में ऊपर उठाये। 7आप अपनी सारी चिन्ताएँ
उस पर छोड़ दें, क्योंकि उसे आपकी चिंता है।
8आप संयम रखें और जागते रहें! आपका
विरोधी, शैतान, दहाड़ते हुए सिंह की तरह
विचरता है और ढूँढ़ता रहता है कि किसे फाड़
खाये। 9आप विश्वास में दृढ़ हो कर उसका
सामना करें। आप जानते हैं कि संसार भर में
आपके भाई-बहिन भी इस प्रकार का दुःख
भोग रहे हैं।
10परमेश्वर ने, जो सम्पूर्ण अनुग्रह का स्रोत
है, आप लोगों को येशु मसीह में अपनी शाश्वत
महिमा का भागीदार बनने के लिए बुलाया है।
वह, आपके थोड़े ही समय तक दुःख भोगने
के बाद, आप को परिपूर्ण, सुस्थिर, समर्थ तथा
सुदृढ़ बनायेगा। 11उसका सामर्थ्य युगानुयुग
बना रहता है। आमेन!

उपसंहार

12मैंने आप लोगों को यह संक्षिप्त पत्र
सिलवानुस से लिखवाया है, जिन को मैं अपना
विश्वसनीय भाई मानता हूँ। मैं आप को
समझाता हूं, और विश्वास दिलाता हूँ कि इस
में जो लिखा हुआ है, वह परमेश्वर का सच्चा
अनुग्रह है। उस अनुग्रह में सुदृढ़ बने रहें।
13इस "बेबीलोन" नगर की कलीसिया के
सदस्य, जो आपकी तरह परमेश्वर के कृपापात्र
हैं, और मेरा पुत्र मारकुस आप लोगों को
नमस्कार कहते हैं। 14प्रेम के चुम्बन से एक
दूसरे का अभिवादन करें। आप सब को, जो
मसीह में हैं, शान्ति मिले।

---

5 : 6 अय्य 22 : 29; याक 4 : 10 **5 : 7** भज 55 : 22; मत 6 : 25; फिल 4 : 6; प्रव 2 : 1-18 **5 : 8** 1 थिस 5 : 6; याक 4 : 7; लू 18 : 3 **5 : 9** इफ 6 : 11-13 **5 : 10** 1पत 1 : 6; 1 थिस 2 : 12 **5 : 12** इब्र 13 : 22 **5 : 13** प्रे 12 : 12, 25; 2 तिम 4 : 11 **5 : 14** 1 कुर 16 : 20

संत पतरस का दूसरा पत्र

भूमिका

"संत पतरस का दूसरा पत्र" आरम्भिक मसीहियों की अनेक मण्डलियों को लिखा गया था। इसका मुख्य उद्देश्य झूठे धर्मशिक्षकों की शिक्षा और उससे उत्पन्न अनैतिकता का विरोध करना था। लेखक ने आरम्भिक विश्वासियों से कहा कि झूठी शिक्षा और उससे उत्पन्न अनैतिकता से वे तभी बच सकते हैं, जब वे परमेश्वर और प्रभु येशु के सच्चे ज्ञान को कसकर पकड़े रहें। यह सच्चा ज्ञान उन लोगों द्वारा पहुंचाया गया था, जिन्होंने स्वयं प्रभु येशु को देखा था और उनके साथ रहकर उन्हें शिक्षा देते हुये सुना था। प्रस्तुत पत्र का लेखक उन लोगों की भ्रांत शिक्षा से अत्यधिक चिंतित है, जो यह सिखाते हैं कि प्रभु येशु का पुनरागमन नहीं होगा, वह फिर नहीं लौटेंगे। पत्र का लेखक लिखता है कि प्रभु येशु के पुनः लौटने में इसलिये विलम्ब हो रहा है कि "परमेश्वर नहीं चाहता है कि किसी का विनाश हो, वरन् उसकी इच्छा है कि सबको हृदय-परिवर्तन का अवसर मिले।"

विषय-वस्तु की रूपरेखा

अभिवादन	1 : 1-2
मसीही आह्वान	1 : 3-21
झूठे धर्मशिक्षक	2 : 1-22
प्रभु येशु का आगमन	3 : 1-18

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अभिवादन

1 येशु मसीह के सेवक और प्रेरित शिमोन*
पतरस का यह पत्र उन लोगों के नाम है,
जिन्हें हमारे परमेश्वर और मुक्तिदाता येशु
मसीह की धार्मिकता द्वारा हमारे ही समान
विश्वास का बहुमूल्य वरदान मिला है। 2आप
लोगों को परमेश्वर और हमारे प्रभु येशु के ज्ञान
द्वारा प्रचुर मात्रा में अनुग्रह और शान्ति प्राप्त
हो!

मसीहियों का बुलावा

3परमेश्वर के दिव्य सामर्थ्य ने हमें वह सब
प्रदान किया, जो भक्तिमय जीवन के लिए
आवश्यक है और हमको उसी का ज्ञान प्राप्त
करने योग्य बनाया है, जिसने हमें अपनी
महिमा और प्रताप द्वारा बुलाया।
4उस महिमा और प्रताप के द्वारा उसने
हमारे लिए अपनी अमूल्य और महती प्रतिज्ञाओं
को पूरा किया है। इस प्रकार आप उस दूषण
से बच गये, जो वासना के कारण संसार में
व्याप्त है और आप ईश्वरीय स्वभाव के
सहभागी बन गये हैं। 5इसलिए आप पूरी लगन
से प्रयत्न करते रहें कि आपका विश्वास सद्‌गुण
से, आपका सद्‌गुण ज्ञान से, 6आपका ज्ञान संयम
से, आपका संयम धैर्य से, आपका धैर्य भक्ति
से, 7आपकी भक्ति भ्रातृ-भाव से और आपका
भ्रातृ-भाव प्रेम से युक्त हो। 8यदि ये गुण आप
लोगों में विद्यमान हैं और बढ़ते जाते हैं, तो ये
हमारे प्रभु येशु मसीह का ज्ञान प्राप्त करने में
आप को निष्क्रिय एवं असफल नहीं होने देंगे।
9जिस व्यक्ति में ये गुण विद्यमान नहीं हैं, वह
अन्धा है, टटोलता फिरता है और यह भी भूल
जाता है कि उसके पुराने पाप धुल चुके हैं।
10इसलिए भाइयो और बहिनो! आप अपना
बुलावा और चुनाव सुदृढ़ बनाने का पूरा-पूरा
प्रयत्न करते रहें। यदि आप ऐसा करेंगे, तो
निश्चय ही कभी विचलित नहीं होंगे 11और
हमारे प्रभु एवं मुक्तिदाता येशु मसीह के
शाश्वत राज्य में आप को उदारतापूर्वक प्रवेश
दिलाया जाएगा।

प्राप्त सत्य में दृढ़ बने रहें

12यद्यपि आप लोग ये बातें जानते हैं और
प्राप्त सत्य में दृढ़ बने हुए हैं, फिर भी मैं इनका
स्मरण दिलाता रहूँगा। 13मैं जब तक इस शरीर-
रूपी शिविर में विद्यमान हूँ, आप लोगों को
स्मरण दिला कर सचेत रखना अपना कर्त्तव्य
समझता हूँ; 14क्योंकि मैं जानता हूँ कि मुझे
शीघ्र ही यह शिविर छोड़ना पड़ेगा—जैसा कि
हमारे प्रभु येशु मसीह ने मुझे बताया है। 15मैं
इसका पूरा ध्यान रखूँगा कि मेरे चले जाने के
बाद भी आप लोग सब समय इन बातों को
स्मरण रख सकें।

मसीह की महिमा के गवाह

16जब हमने आप लोगों को अपने प्रभु येशु
मसीह के सामर्थ्य तथा आगमन के विषय में
बताया, तो हमने चतुराई से गढ़ी हुई कल्पित
कथाओं का सहारा नहीं लिया, बल्कि अपनी
ही आँखों से उनका प्रताप उस समय देखा,
17जब उन्हें पिता-परमेश्वर से सम्मान तथा
महिमा प्राप्त हुई और भव्य ऐश्वर्य में से उनके
प्रति एक वाणी यह कहती हुई सुनाई पड़ी,
"यह मेरा पुत्र, मेरा प्रिय है। मैं इस से प्रसन्न
हूँ।" 18जब हम पवित्र पर्वत पर उनके साथ
थे, तो हमने स्वयं स्वर्ग से आती हुई यह वाणी
सुनी थी।
19इस घटना द्वारा नबियों की वाणी हमारे
लिए और भी विश्वसनीय सिद्ध हुई। इस पर
ध्यान देने में आप लोगों का कल्याण है, क्योंकि
जब तक पौ नहीं फटती और आपके हृदय में
प्रभात का तारा उदित नहीं होता, तब तक
नबियों की वाणी अँधेरे में चमकते हुए दीपक
के सदृश है। 20किन्तु आप लोग सब से पहले
यह अच्छी तरह समझ लें कि धर्मग्रन्थ की कोई
भी नबूवत व्यक्तिगत व्याख्या का विषय नहीं
है, 21 क्योंकि मनुष्य की इच्छा से कभी नबूवत

* अन्यत्र इस नाम का यूनानी रूपान्तर "सिमोन" मिलता है।

1 : 2 यहू 2 **1 : 3** 1 पत 2 : 9 **1 : 5** गल 5 : 6, 22; यहू 3 **1 : 7** गल 6 : 10 **1 : 9** 1 यो 2 : 9, 11 **1 : 11** यो 3 : 5; 10 : 7 **1 : 12** यहू 5 **1 : 13** 2 कुर 5 : 1 **1 : 4** यो 21 : 18-19 **1 : 17** मत 17 : 5 **1 : 21** 2 तिम 3 : 16-17

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मुखरित नहीं हुई, बल्कि पवित्र आत्मा से प्रेरित हो कर* मनुष्य परमेश्वर की ओर से बोले।

झूठे शिक्षकों से सावधान

2 फिर भी इस्राएलियों में झूठे नबी भी प्रकट हुए और इसी प्रकार आप लोगों में झूठे धर्मशिक्षक उठ खड़े होंगे, जो गुप्त रूप से अनर्थकारी भ्रामक धारणाओं का प्रचार करेंगे। वे उस स्वामी को भी अस्वीकार करेंगे, जिसने उन्हें मोल लिया है, और इस प्रकार वे शीघ्र ही अपने विनाश का कारण बनेंगे। 2बहुत-से लोग उनकी विलासिता का अनुकरण करेंगे और उनके कारण सत्य के मार्ग की निन्दा होगी। 3वे लोभ के कारण अपनी मनगढ़न्त बातों द्वारा आप से अनुचित लाभ उठायेंगे। उनकी दण्डाज्ञा का निर्णय बहुत पहले हो चुका है और वह उनका पीछा कर रहा है। उनका विनाश सोया हुआ नहीं है!

4स्मरण रखें : परमेश्वर ने पापी स्वर्गदूतों को भी क्षमा नहीं किया, बल्कि उन्हें नरक+ के अंधकार में न्याय-दिवस के लिए जंजीरों में जकड़ दिया है। 5उसने पुरातन संसार को भी नहीं बचाया, बल्कि विधर्मियों के संसार को जल-प्रलय द्वारा नष्ट कर दिया, हालाँकि उसने सात अन्य व्यक्तियों के साथ धार्मिकता के प्रचारक नूह को सुरक्षित रखा। 6परमेश्वर ने उन लोगों को चेतावनी देने के लिए, जो भविष्य में अधर्म करना चाहेंगे, सदोम और गमोरा नामक नगरों को भस्म कर विनाश का दण्ड दिया। 7किन्तु उसने धर्मी लोट को बचाया, जो उन दुष्ट लोगों के व्यभिचारपूर्ण आचरण के कारण दुःखी था। 8वह धर्मात्मा उन लोगों के बीच रह कर दिन पर दिन उनके कुकर्म देखता और सुनता था, इसलिए उसकी धर्मपरायण आत्मा को घोर कष्ट होता था। 9इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रभु धर्मात्माओं को संकटों से छुड़ाने और विधर्मियों को दण्ड देने के लिए उन्हें न्याय के दिन तक रख छोड़ने में समर्थ है, 10विशेष रूप से उन लोगों को, जो अशुद्ध वासनाओं के वशीभूत हो कर भोग-विलास में जीवन बिताते और प्रभुत्व को तुच्छ समझते हैं। वे उद्धत एवं घमण्डी हैं और स्वर्गिक सत्वों की निन्दा करने से नहीं डरते, 11जब कि स्वर्गदूत, जो उन लोगों से कहीं अधिक समर्थ और शक्तिशाली हैं, प्रभु की ओर से उनके विरुद्ध निन्दात्मक अभियोग नहीं लगाते। 12किन्तु वे विवेकहीन पशुओं के समान हैं, जो स्वभावतः शिकार बनने और मारे जाने के लिए पैदा होते हैं। वे ऐसी बातों की निन्दा करते हैं, जिन्हें नहीं समझते। वे पशुओं की तरह++ नष्ट हो जायेंगे 13और इस प्रकार अपने अधर्म का दण्ड भोगेंगे। वे दिन-दोपहर भोग-विलास में बिताना पसन्द करते हैं। वे कलंकित एवं दूषित हैं और आप लोगों के साथ दावत उड़ाते समय कपट-पूर्ण बातें करने में उन्हें आनन्द आता है। 14उनकी आँखें व्यभिचार से भरी हैं और उन में कभी तृप्त न होनेवाली पाप की भूख बनी हुई है। वे दुर्बल आत्माओं को लुभाते हैं। उनका मन लोभ में प्रशिक्षित हो चुका है। यह अभिशप्त सन्तति 15सन्मार्ग छोड़ कर बोसोर* के पुत्र बिलआम के मार्ग पर भटक गयी है। बिलआम अधर्म की मजदूरी चाहता था, 16किन्तु उसे अपने अपराध की डाँट सुननी पड़ी। एक गूंगा गधा मनुष्य की तरह बोलने लगा और इस प्रकार नबी का पागलपन नियन्त्रित हो गया।

17वे लोग सूखे जलस्रोत और आँधी द्वारा उड़ाये हुए बादल हैं। गहरा अन्धकार ही उनके लिए रख छोड़ा गया है। 18जो लोग अभी-अभी भ्रान्ति का जीवन बिताने वालों से अलग हुए हैं, वे उन्हें व्यर्थ शब्दाडम्बर और शरीर की घृणित वासनाओं द्वारा लुभाते हैं। 19वे उन्हें

---

*शब्दशः, "उभारे हुए", "संचालित"। + अथवा, "यातना-कुण्ड" ++ अथवा, "निश्चित रूप से"। * पाठान्तर, "बओर"।

2 : 1 मत 24 : 11; 1 तिम 4 : 1; व्य 13 : 1-3; यहू 4 **2 : 2** यश 52 : 5 **2 : 3** रोम 16 : 18; 2 कुर 9 : 5; 1 थिस 2 : 5 **2 : 4** यहू 6; उत 6 : 1 **2 : 5** 2 पत 3 : 6; उत 8 : 18; प्रज्ञ 10 : 4 **2 : 6** उत 19 : 24; यहू 7 **2 : 7** प्रज्ञ 10 : 6-8 **2 : 8** यहेज 9 : 4 **2 : 9** 1 कुर 10 : 13; प्रक 3 : 10; यहू 6 **2 : 10** यहू 7-8, 16 **2 : 11** यहू 9 **2 : 12** 10 **2 : 13** यहू 12 **2 : 15** गण 22 : 7; प्रक 2 : 14; यहू 11 **2 : 16** गण 22 : 28 **2 : 17** यहू 12-13 **2 : 18** यहू 19 **2 : 19** यो 8 : 34; रोम 6 : 16

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

स्वतन्त्रता का प्रलोभन देते हैं, जब कि वे स्वयं
भ्रष्टता के दास हैं; क्योंकि जो जिसके अधीन
है, वह उसी का दास है। 20जो व्यक्ति हमारे
प्रभु एवं मुक्तिदाता येशु मसीह का ज्ञान प्राप्त
कर संसार के दूषण से बच गये, वे यदि फिर
उसी में फँस कर उसके अधीन हो जाते हैं, तो
उनकी यह पिछली दशा पहली से भी बुरी होती
है। 21ऐसे लोग अपने को प्रदत्त पवित्र आदेशों
का ज्ञान प्राप्त कर उन से मुँह फेर लेते हैं। उनके
लिए अच्छा यही होता कि उन्हें धर्म-मार्ग का
ज्ञान कभी प्राप्त नहीं हुआ होता। 22उन लोगों
में सही अर्थ में यह कहावत चरितार्थ होती है,
"कुत्ता अपने ही वमन के पास लौटता है" और
"नहलायी हुई सूअरी फिर कीचड़ में लोटती
है।"

प्रभु का पुनरागमन

3 प्रिय भाइयो एवं बहिनो! मैं आप लोगों को
दूसरी बार पत्र लिख रहा हूँ। इन पत्रों में
मैं कुछ बातों का स्मरण दिला कर आप लोगों
की सद्बुद्धि को सचेत करना चाहता हूँ। 2आप
लोग पवित्र नबियों की भविष्यवाणियाँ और
प्रभु एवं मुक्तिदाता की वह आज्ञा याद रखें, जो
आपके प्रेरितों ने सुनाई थी। 3आप लोग सर्वप्रथम
यह जान लें कि अन्तिम दिनों में उपहास करने
वाले धर्मनिन्दक आयेंगे। वे अपनी दुर्वासनाओं
के अनुरूप आचरण करेंगे 4और कहेंगे, "उनके
आगमन की प्रतिज्ञा का क्या हुआ? हमारे पूर्वज
तो चल बसे, किन्तु सृष्टि के प्रारम्भ से सब कुछ
ज्यों-का-त्यों बना हुआ है।" 5वे जान-बूझकर
यह भूल जाते हैं कि प्राचीन काल में एक
आकाश था और एक पृथ्वी, जो परमेश्वर के
शब्द द्वारा जल से उत्पन्न हो कर जल पर बनी
हुई थी। 6उस समय का संसार जल में ही नष्ट
हो गया, क्योंकि प्रलय ने उसे जलमग्न कर
दिया। 7परमेश्वर के शब्द ने वर्तमान आकाश
और पृथ्वी को आग के लिए रख छोड़ा है। उन्हें
न्याय-दिवस तक के लिए रख छोड़ा गया है।
उस दिन विधर्मी मनुष्यों का विनाश किया
जायेगा।

8प्रिय भाइयो एवं बहिनो! यह बात अवश्य
याद रखें कि प्रभु की दृष्टि में एक दिन हजार
वर्ष के समान है और हजार वर्ष एक दिन के
समान। 9प्रभु अपनी प्रतिज्ञाएँ पूरी करने में
विलम्ब नहीं करता, जैसा कि कुछ लोग
समझते हैं; किन्तु वह आप लोगों के प्रति
सहनशील है और यह चाहता है कि किसी का
सर्वनाश नहीं हो, बल्कि सबको पश्चात्ताप
करने का अवसर मिले। 10प्रभु का दिन चोर
की तरह आ जायेगा। उस दिन आकाश गरजता
हुआ विलीन हो जायेगा, मूलतत्व जल कर
पिघल जायेंगे और पृथ्वी तथा उस पर किए गए
मनुष्यों के कर्म प्रत्यक्ष हो जाएंगे। 11यदि यह
सब इस प्रकार नष्ट होने को है, तो आप लोगों
को चाहिए कि पवित्र तथा भक्तिपूर्ण जीवन
व्यतीत करें। 12आप परमेश्वर के उस आगामी
दिवस की प्रतीक्षा करें और उसे शीघ्र लाने का
प्रयास करें। आकाश जल कर विलीन हो
जायेगा और मूलतत्व ताप के कारण पिघल
जायेंगे। 13परन्तु हम परमेश्वर की प्रतिज्ञा के
आधार पर एक नये आकाश तथा एक नयी
पृथ्वी की प्रतीक्षा करते हैं, जहाँ धार्मिकता
निवास करेगी।

जागते हुए सावधान रहें

14इसलिए, प्रिय भाइयो एवं बहिनो! इन
बातों की प्रतीक्षा करते हुए इस प्रकार प्रयत्न
करते रहें कि आप लोग प्रभु की दृष्टि में
निष्कलंक और निर्दोष प्रमाणित हों, और शांति
प्राप्त करें। 15यदि हमारे प्रभु अपनी सहनशीलता
के कारण देर करते हैं, तो इसे अपनी मुक्ति में
सहायक समझें, जैसा कि हमारे प्रिय भाई
पौलुस ने अपने को प्रदत्त प्रज्ञा के अनुसार आप
को लिखा। 16वह अपने सब पत्रों में ऐसा ही

---

2 : 20 मत 12 : 45 **2 : 21** लू 12 : 47-48; रोम 7 : 12; यहू 3 **2 : 22** नीति 26 : 11 **3 : 1** 2 पत 1 : 13 **3 : 2** यहू 17 **3 : 3** 1 तिम 4 : 1; यहू 18 **3 : 4** यश 5 : 19; यहेज 12 : 22; मत 24 : 48 **3 : 5** भज 24 : 2; उत 1 : 2, 9; मत 24 : 38 **3 : 6** 2 पत 2 : 5; उत 7 : 21 **3 : 8** भज 90 : 4 **3 : 9** हब 2 : 3; 1 तिम 2 : 4 **3 : 10** 1 थिस 5 : 2-3; प्रक 20 : 11; मत 24 : 29, 35 **3 : 12** यश 34 : 4; यहू 5 **3 : 13** यश 65 : 17; 66 : 22; प्रक 21 : 1, 27 **3 : 14** 1 कुर 1 : 7-8; यहू 24 **3 : 15** रोम 2 : 4; 1 कुर 3 : 10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

करते हैं, जहाँ वह इन बातों की चर्चा करते हैं।
उन पत्रों में कुछ ऐसी बातें हैं, जो कठिनाई से
समझ में आती हैं। अशिक्षित और चंचल लोग
धर्मग्रन्थ की अन्य बातों की भाँति उनका भी
गलत अर्थ लगाते और इस प्रकार अपना
सत्यानाश करते हैं।

उपसंहार

17प्रिय भाइयो एवं बहिनो! मैंने आप लोगों
को पहले से ही सचेत किया है। आप सावधान
रहें। कहीं ऐसा न हो कि आप उन दुष्टों के
बहकावे में आएं और अपने सुदृढ़ स्थान से
डगमगा कर गिर जायें। 18आप लोग हमारे प्रभु
और मुक्तिदाता येशु मसीह के अनुग्रह और
ज्ञान में बढ़ते रहें। उन्हीं की अभी और
युगानुयुग महिमा हो ! आमेन।

3 : 17 मक 13 : 5, 9, 33 3 : 18 यहू 25

संत योहन का पहला पत्र

भूमिका

"संत योहन का पहला पत्र" दो मुख्य उद्देश्यों को सामने रखकर लिखा गया था। **पहला उद्देश्य :** पाठकों को उत्साहित करना कि वे परमेश्वर तथा उसके पुत्र प्रभु येशु के सत्संग में जीवन बिताएं। **दूसरा उद्देश्य :** उनको चेतावनी देना कि वे झूठी शिक्षा से बचें; अन्यथा यह झूठी शिक्षा उनके सत्संग को नष्ट कर देगी।

झूठी शिक्षा के मानने वाले यह विश्वास करते थे कि बुराई का जन्म भौतिक संसार के सम्पर्क में आने से होता है। अत: प्रभु येशु, अर्थात् परमेश्वर-पुत्र, मनुष्य हो ही नहीं सकते थे। सत्य केवल ज्ञान का विषय है; उसकी प्राप्ति के लिए यथार्थ जीवन-आचरण महत्वहीन है। इस प्रकार के ज्ञानवाद के शिक्षक दावा करते थे कि मुक्ति के लिये यह आवश्यक है कि मनुष्य इस भौतिक संसार से किसी भी प्रकार का सम्बन्ध न रखे। वे यह शिक्षा भी देते थे कि शाश्वत जीवन के लिए नैतिकता अथवा पड़ोसी के प्रति प्रेमपूर्ण व्यवहार, आदि मानवीय मूल्य अपनाने की आवश्यकता नहीं है।

इस झूठी शिक्षा का प्रतिवाद करते हुए लेखक स्पष्ट लिखता है कि प्रभु येशु वास्तविक, यथार्थ मनुष्य थे। लेखक इस बात पर जोर देता है कि जो व्यक्ति प्रभु येशु पर विश्वास करता है, और परमेश्वर से प्रेम करता है, वह अपने पड़ोसी से भी प्रेम करे, अर्थात् हम एक-दूसरे से भी प्रेम करें।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

प्रस्तावना	1 : 1-4
ज्योति और अंधकार	1 : 5 —2 : 28
परमेश्वर की संतति और शैतान की संतति	2 : 29—3 : 24
सत्य और झूठ	4 : 1-6
प्रेम एक कर्त्तव्य-कर्म है	4 : 7-27
विजयी विश्वास	5 : 1-21

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रस्तावना : जीवनदायक "शब्द"

1 हमारा विषय वह शब्द* है, जो आदि से
विद्यमान था। हम ने उसे सुना है। हमने उसे
अपनी आँखों से देखा है। हमने उसका
अवलोकन किया और अपने हाथों से उसका
स्पर्श किया है। वह शब्द जीवन है 2और यह
जीवन प्रकट किया गया है। यह शाश्वत जीवन,
जो पिता के यहाँ था और हम पर प्रकट किया
गया है—हमने इसे देखा है, हम इसके विषय
में साक्षी देते और तुम्हें इसका सन्देश सुनाते हैं।
3हमने जो देखा और सुना है, वही हम तुम
लोगों को भी बताते हैं, जिससे तुम्हें भी हमारे
साथ सहभागिता प्राप्त हो। निस्संदेह, हमारी
सहभागिता पिता के साथ और उसके पुत्र येशु
मसीह के साथ है।
4हम तुम्हें यह इसलिए लिख रहे हैं, जिससे
हम सब का आनन्द परिपूर्ण हो जाये।

परमेश्वर ज्योति है

5वह संदेश जो हमने येशु से सुना और अब
तुम को भी सुनाते हैं, यह है—परमेश्वर ज्योति
है और उस में कोई भी अन्धकार नहीं ! 6यदि
हम कहते हैं कि हमें उसके साथ सहभागिता
प्राप्त है, किन्तु अन्धकार में चल रहे हैं, तो हम
झूठ बोलते हैं और सत्य के अनुसार आचरण
नहीं करते। 7परन्तु यदि हम ज्योति में चलते
हैं—जिस तरह वह स्वयं ज्योति में है—तो
हमारी एक-दूसरे से सहभागिता है और उसके
पुत्र येशु का रक्त हमें हर पाप से शुद्ध कर देता
है।

पाप से दूर रहना

8यदि हम कहते हैं कि हम निष्पाप हैं, तो
हम अपने आप को धोखा देते हैं और हम में
सत्य नहीं है। 9यदि हम अपने पाप स्वीकार
करते हैं, तो परमेश्वर हमारे पाप क्षमा करेगा
और हमें हर अपराध से शुद्ध करेगा; क्योंकि
वह विश्वसनीय तथा धार्मिक है। 10यदि हम
कहते हैं कि हमने पाप नहीं किया है, तो हम
उसे झूठा सिद्ध करते हैं और उसका वचन हम
में नहीं है।

येशु मसीह हमारे सहायक हैं

2 मेरे बच्चो ! मैं तुम लोगों को यह इसलिए
लिख रहा हूँ कि तुम पाप न करो। किन्तु
यदि कोई पाप करे, तो पिता के पास हमारे एक
सहायक विद्यमान हैं, अर्थात् धर्मात्मा येशु
मसीह। 2उन्होंने हमारे पापों के लिए प्रायश्चित
किया है और न केवल हमारे पापों के लिए,
बल्कि समस्त संसार के पापों के लिए भी।
3यदि हम परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन
करेंगे, तो उसी से हमें पता चलेगा कि हम
उसको जानते हैं। 4जो कहता है कि मैं उसे
जानता हूँ किन्तु उसकी आज्ञाओं का पालन
नहीं करता, वह झूठा है और उस में सत्य नहीं
है। 5परन्तु जो उसके वचन का पालन करता
है, उस में सचमुच परमेश्वर का प्रेम परिपूर्णता
तक पहुँचता है। हम परमेश्वर में हैं, इसका यह
प्रमाण है: 6जो व्यक्ति कहता है कि मैं उस में
निवास करता हूँ, उसे वैसा ही आचरण करना
चाहिए, जैसा आचरण मसीह ने किया।

नयी आज्ञा

7प्रियो ! मैं तुम्हें कोई नयी आज्ञा नहीं लिख
रहा हूँ। यह वही पुरानी आज्ञा है, जो प्रारम्भ से
ही तुम्हें प्राप्त है। यह पुरानी आज्ञा वह वचन
है, जिसे तुम सुन चुके हो। 8फिर भी जो आज्ञा
मैं तुम्हें लिख रहा हूँ, वह नयी है। वह नयी
इसलिए है कि वह मसीह में चरितार्थ हुई और
तुम में भी चरितार्थ हो रही है; क्योंकि अन्धकार
हट रहा है और सत्य की ज्योति अब चमकने
लगी है।
9जो कहता है कि मैं ज्योति में हूँ और अपने
भाई अथवा बहिन* से बैर करता है, वह अब
तक अन्धकार में है। 10जो अपने भाई अथवा
बहिन से प्रेम करता है, वही ज्योति में निवास

---

* अथवा, "वचन"। ** मूल में, "भाई"।

1 : 1 यो 1 : 1,14 **1 : 2** यो 1 : 4 **1 : 4** यो 15 : 11; 16 : 24 **1 : 5** याक 1 : 17 **1 : 6** 1यो 2 : 4; यो 3 : 21 **1 : 7** इब्र 9 : 14; प्रक 1 : 5; 7 : 14 **1 : 9** नीति 28 : 13 **2 : 1** रोम 8 : 34; इब्र 7 : 25; यो 14 : 16 **2 : 2** कुल 1 : 20; यो 11: 51 **2 : 4** 1 यो 1 : 8 **2 : 5** यो 14 : 21,23; 1 यो 5 : 3 **2 : 6** यो 13 : 15 **2 : 7** यो 13 : 34; मत 5 : 17 **2 : 8** रोम 13 : 12; यो 13 : 34; 15 : 10,12 **2 : 9** 1 यो 4 : 20 **2: 10** रोम 14 : 13,15; यो 11 : 9

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

करता है और कोई कारण नहीं कि उसे ठोकर
लगे। 11परन्तु जो अपने भाई अथवा बहिन से
बैर करता है, वह अन्धकार में है और अन्धकार
में चलता है। वह यह नहीं जानता कि वह कहाँ
जा रहा है; क्योंकि अन्धकार ने उसे अन्धा बना
दिया है।

तुम सच्चे विश्वासी हो

12बच्चो! मैं तुम्हें इसलिए लिख रहा हूँ कि
येशु के नाम के कारण तुम्हारे पाप क्षमा किये
गये हैं।

13पिताओ! मैं तुम्हें इसलिए लिख रहा हूँ
कि तुम उसे जानते हो, जो आदि काल से
विद्यमान है।

युवको! मैं तुम्हें इसलिए लिख रहा हूँ कि
तुमने दुष्ट पर विजय पायी है।

14बच्चो! मैं तुम्हें इसलिए लिखता हूँ कि तुम
पिता को जानते हो।

पिताओ! मैं तुम्हें इसलिए लिख रहा हूँ कि
तुम उसे जानते हो, जो आदि काल से विद्यमान
है।

युवको! मैं तुम्हें इसलिए लिख रहा हूँ कि
तुम शक्तिशाली हो। परमेश्वर का वचन तुम में
बना रहता है और तुम ने दुष्ट पर विजय पायी
है।

15तुम न तो संसार से प्रेम करो और न संसार
की वस्तुओं से। जो संसार से प्रेम करता है, उस
में पिता का प्रेम नहीं।

16संसार में जो शरीर की वासना, आँखों का
लोभ और धन-सम्पत्ति का घमण्ड है, वह सब
पिता से नहीं, बल्कि संसार से आता है।
17संसार और उसकी वासना समाप्त हो रही है;
किन्तु जो परमेश्वर की इच्छा पूरी करता है, वह
युग-युग तक बना रहता है।

मसीह-विरोधियों से सावधान

18बच्चो! यह अन्तिम समय है। तुम लोगों
ने सुना होगा कि एक मसीह-विरोधी* व्यक्ति
का आना अनिवार्य है। अब तक अनेक
मसीह-विरोधी प्रकट हुए हैं। इससे हम जानते
हैं कि अन्तिम समय आ गया है। 19वे मसीह-
विरोधी हमारा साथ छोड़ कर चले गये, किन्तु
वे हमारे अपने नहीं थे। यदि वे हमारे अपने
होते, तो वे हमारे ही साथ रहते। वे चले गये,
जिससे यह स्पष्ट हो जाये कि उन में कोई भी
हमारा अपना नहीं था।

20तुम लोगों का तो पवित्र व्यक्ति की ओर
से अभिषेक+ हुआ है और तुम सब सत्य को
जानते हो। 21मैं तुम लोगों को इसलिए नहीं
लिख रहा हूँ कि तुम सत्य को नहीं जानते,
बल्कि इसलिए कि तुम सत्य को जानते हो और
यह भी जानते हो कि जो कुछ झूठ है, वह सत्य
से नहीं।

22झूठा व्यक्ति कौन है? वह, जो येशु को
मसीह नहीं मानता। वही मसीह-विरोधी है।
वह पिता और पुत्र, दोनों को अस्वीकार करता
है। 23जो पुत्र को अस्वीकार करता है, उस में
पिता का निवास नहीं। जो पुत्र को स्वीकार
करता है, उस में पिता का निवास है।

24जो वचन तुम लोगों ने प्रारम्भ से सुना, वह
तुम में बना रहे। जो वचन तुम लोगों ने प्रारम्भ
से सुना, यदि वह तुम में बना रहेगा, तो तुम भी
पुत्र तथा पिता में बने रहोगे। 25मसीह ने** हम
से जो प्रतिज्ञा की, वह है—शाश्वत जीवन।

26ये बातें मैंने तुम को उन लोगों के विषय
में लिखी हैं, जो तुम्हें भटकाना चाहते हैं। 27जो
अभिषेक तुम लोगों ने मसीह से प्राप्त किया है,
वह तुम में विद्यमान रहता है; इसलिए तुम को
आवश्यकता नहीं कि कोई व्यक्ति तुम्हें सिखाए।
मसीह से प्राप्त हुआ अभिषेक ही तुम्हें सब
कुछ सिखलाता है। उसकी शिक्षा सत्य है,
असत्य नहीं। उस शिक्षा के अनुसार तुम मसीह
में बने रहो।

28बच्चो! अब तुम उन में बने रहो, जिससे

---

* अथवा, "झूठा मसीह, मिथ्या मसीह"। + अथवा, "अभ्यंजन", "नव-दीक्षा"। ** मूल में, "उसने"।

2 : 11 यो 11 : 10; 12 : 35 **2 : 12** 1 कुर 6 : 11 **2 : 13** 1 यो 1 : 1 **2 : 14** इफ 6 : 10 **2 : 15** याक 4 : 4 **2 : 16** नीति 27 : 20; याक 4 : 16; तीत 2 : 12 **2 : 17** मत 7 : 21; 1 पत 4 : 2 **2 : 18** मत 24 : 5, 24; 1 पत 4 : 7; 1 कुर 10 : 11 **2 : 19** प्रे 20 : 30; 1 कुर 11 : 19 **2 : 20** यो 6 : 69; 16 : 13; 1 कुर 2 : 15; यिर 31 : 34 **2 : 23** 1 यो 4 : 15; यो 5 : 23; 15 : 23 **2 : 27** यो 14 : 26; 16 : 13; यिर 31 : 34

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जब वह प्रकट हों, तो हमें पूरा भरोसा हो और
उनके आगमन पर उनके सामने हमें लज्जित न
होना पड़े।

हम परमेश्वर की सन्तान हैं

29यदि तुम जानते हो कि परमेश्वर धार्मिक
है, तो यह भी समझ लो कि जो धर्माचरण करता
है, वह परमेश्वर की सन्तान है।

3 पिता ने हमसे कितना महान प्रेम किया है!
हम परमेश्वर की सन्तान कहलाते हैं और
हम वास्तव में वही हैं। संसार हमें नहीं जानता,
क्योंकि उसने परमेश्वर को नहीं जाना है।

2प्रियो! अब हम परमेश्वर की सन्तान हैं,
किन्तु यह अभी तक प्रकट नहीं हुआ कि हम
क्या बनेंगे। हम इतना ही जानते कि जब मसीह
प्रकट होंगे, तो हम उनके सदृश बन जायेंगे;
क्योंकि हम उनको वैसा ही देखेंगे जैसा कि वह
वास्तव में हैं।

3जो कोई मसीह से ऐसी आशा करता है,
उसे वैसा ही पवित्र बनना चाहिए, जैसा कि वह
पवित्र हैं। 4जो व्यक्ति पाप करता है, वह अधर्म
का कार्य करता है; क्योंकि पाप का अर्थ है
अधर्म का साथ देना। 5तुम जानते हो कि मसीह
हमारे पाप हरने के लिए प्रकट हुए। उन में कोई
पाप नहीं है। 6जो कोई उन में निवास करता
है, वह पाप नहीं करता। जो कोई पाप करता
है, उसने उन्हें नहीं देखा है और वह उन्हें नहीं
जानता।

7बच्चो! कोई तुम्हें बहकाये नहीं। जो
धर्माचरण करता है, वह मसीह की तरह
धार्मिक है। 8जो पाप करता है, वह शैतान से
है; क्योंकि शैतान प्रारम्भ से पाप करता आया
है। परमेश्वर का पुत्र इसीलिए प्रकट हुआ कि
वह शैतान के कार्य समाप्त कर दे।

9जो कोई परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह
पाप नहीं करता; क्योंकि परमेश्वर का बीज-
रूपी वचन* उसमें बना रहता है। वह पाप नहीं
कर सकता, क्योंकि वह परमेश्वर से उत्पन्न
हुआ है। 10परमेश्वर की सन्तान और शैतान की
सन्तान की पहचान यह है: जो भी व्यक्ति
धर्माचरण नहीं करता, वह परमेश्वर की सन्तान
नहीं है और वह भी नहीं, जो अपने भाई अथवा
बहिन से प्रेम नहीं करता।

हम एक दूसरे से प्रेम करें

11जो सन्देश तुम ने प्रारम्भ से सुना है, वह
यह है कि हमें एक दूसरे से प्रेम करना चाहिए।
12हम काइन की तरह नहीं बनें। वह दुष्ट की
सन्तान था और उसने अपने भाई की हत्या की।
उसने उसकी हत्या क्यों कर दी? क्योंकि उसके
अपने कर्म बुरे थे और उसके भाई के कर्म
धार्मिक।

13भाइयो और बहिनो! यदि संसार तुम से
बैर करे, तो उस पर आश्चर्य मत करो। 14हम
जानते हैं कि हमने मृत्यु से निकल कर जीवन
में प्रवेश किया है; क्योंकि हम अपने भाई-
बहिनों से प्रेम करते हैं। जो प्रेम नहीं करता, वह
मृत्यु में बना रहता है। 15जो कोई अपने भाई
अथवा बहिन से बैर करता है, वह हत्यारा है
और तुम जानते हो कि किसी भी हत्यारे में
शाश्वत जीवन नहीं होता।

16हम प्रेम का मर्म इसी से पहचान गये कि
येशु ने हमारे लिए अपना प्राण अर्पित किया तो
हमें भी अपने भाई-बहिनों के लिए अपना प्राण
अर्पित करना चाहिए। 17किसी के पास संसार
की धन-दौलत हो और वह अपने भाई अथवा
बहिन को तंगहाली में देख कर उस पर दया न
करे+, तो परमेश्वर का प्रेम उस में कैसे बना रह
सकता है?

18बच्चो! हम शब्दों और बातों** से नहीं,

---

* मूल में, "बीज" +शब्दशः, "उसके प्रति अपना हृदय कठोर कर ले"। ** शब्दशः, "जीभ"।

2 : 28 1 यो 3 : 2; 4 : 17 **2 : 29** 1 यो 3 : 7, 10 **3 : 1** 1 यो 5 : 20; यो 1 : 12-13; 16 : 3 **3 : 2** 1 यो 2 : 28; रोम 8 : 17; 2 कुर 3 : 18; फिल 3 : 21; कुल 3 : 4; नि 34 : 29 **3 : 4** 1 यो 5 : 17; मत 7 : 23 **3 : 5** यश 53 : 4; 1 पत 2 : 24 **3 : 6** रोम 6 : 14; **3 : 7** 1 यो 2 : 29 **3 : 8** यो 8 : 44 **3 : 9** 1 यो 5 : 18; 1 पत 1 : 23; याक 1 : 18 **3 : 11** यो 13 : 34; 15 : 12 **3 : 12** उत 4 : 8; 15 : 18 **3 : 13** मत 5 : 11 यो 18 : 19 **3 : 14** 1 यो 2 : 11; यो 5 : 24 **3 : 15** मत 5 : 21-22; यो 8 : 44 **3 : 16** यो 13 : 1; 15 : 13; गल 2 : 20 **3 : 17** 1 यो 4 : 20; व्य 15 : 7 **3 : 18** याक 1 : 22; 2 : 15-16

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

किन्तु कामों और सत्य द्वारा प्रेम करें। 19इसी
से हम जान जायेंगे कि हम सत्य की सन्तान हैं।
और जब कभी हमारा अन्त:करण हम पर दोष
लगायेगा, तो हम परमेश्वर के सामने अपने को
आश्वासन दे सकेंगे; 20क्योंकि परमेश्वर हमारे
अन्त:करण से बड़ा है और वह सब कुछ
जानता है।

21प्रियो! यदि हमारा अन्त:करण हम पर
दोष नहीं लगाता है, तो हम परमेश्वर पर पूरा
भरोसा रख सकते हैं। 22हम उस से जो कुछ
माँगेंगे, वह हमें वही प्रदान करेगा; क्योंकि हम
उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं और वही
करते हैं, जो उसे अच्छा लगता है। 23और उसकी
आज्ञा यह है कि हम उसके पुत्र येशु मसीह के
नाम में विश्वास करें और एक दूसरे से प्रेम करें,
जैसा कि मसीह ने हमें आज्ञा दी है। 24जो
परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करता है, वह
परमेश्वर में निवास करता है और परमेश्वर उस
में। और हम जानते हैं कि वह हम में निवास
करता है, क्योंकि उसने हम को अपना आत्मा
प्रदान किया है।

सत्य और असत्य का निर्णय

4 प्रियो! प्रत्येक आत्मा पर विश्वास मत
करो। आत्माओं की परीक्षा कर देखो कि
वे परमेश्वर की ओर से हैं या नहीं; क्योंकि
बहुत-से झूठे नबी संसार में आये हैं। 2परमेश्वर
के आत्मा को तुम इस प्रकार जान सकते हो :
प्रत्येक आत्मा, जो यह स्वीकार करती है कि
येशु मसीह देहधारण कर आये, वह परमेश्वर
की ओर से है 3और प्रत्येक आत्मा, जो इस
प्रकार येशु को स्वीकार नहीं करती, वह
परमेश्वर की ओर से नहीं है और वह मसीह-
विरोधी की आत्मा है। तुमने सुना है कि वह
संसार में आने वाला है और अब तो वह संसार
में आ चुका है।

4बच्चो! तुम परमेश्वर के हो और तुम ने उन
लोगों पर विजय पायी है; क्योंकि जो तुम में है,
वह उस से महान् है, जो संसार में है। 5वे संसार
के हैं और इसलिए वे संसार की बातें करते हैं
और संसार उनकी सुनता है। 6किन्तु हम परमेश्वर
के हैं और जो परमेश्वर को जानता है, वह
हमारी सुनता है। जो परमेश्वर का नहीं है, वह
हमारी बात सुनना नहीं चाहता।

हम इस प्रकार सत्य की आत्मा और भ्रान्ति
की आत्मा को जान सकते हैं।

परमेश्वर प्रेम है

7प्रियो! हम एक दूसरे से प्रेम करें, क्योंकि
प्रेम परमेश्वर से उत्पन्न होता है। जो प्रेम करता
है, वह परमेश्वर की सन्तान है और परमेश्वर
को जानता है। 8जो प्रेम नहीं करता, वह
परमेश्वर को नहीं जानता; क्योंकि परमेश्वर
प्रेम है। 9परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को
संसार में इसलिए भेजा कि हम उसके द्वारा
जीवन प्राप्त करें। 10प्रेम इसमें नहीं है कि हमने
परमेश्वर से प्रेम किया, बल्कि परमेश्वर ने हम
से प्रेम किया और हमारे पापों के प्रायश्चित के
लिए अपने पुत्र को भेजा।

11प्रियो! यदि परमेश्वर ने हमसे इतना प्रेम
किया, तो हम को भी एक दूसरे से प्रेम करना
चाहिए। 12परमेश्वर को किसी ने कभी
नहीं देखा। यदि हम एक दूसरे से प्रेम करते हैं,
तो परमेश्वर हम में निवास करता है और हम
में उसका प्रेम परिपूर्णता तक पहुंच जाता है।

13परमेश्वर ने हमें अपना आत्मा प्रदान
किया है, इसलिए हम जान जाते हैं कि हम उस
में और वह हम में निवास करता है।

14पिता ने अपने पुत्र को संसार के उद्धारकर्ता
के रूप में भेजा। हमने यह देखा है और हम
इसकी साक्षी देते हैं। 15जो यह स्वीकार करता
है कि येशु परमेश्वर के पुत्र हैं, परमेश्वर उस
में निवास करता है और वह परमेश्वर में। 16इस
प्रकार हम अपने प्रति परमेश्वर का प्रेम जान

3 : 21 रोम 5 : 1; इब्र 4 : 16 **3 : 22** मक 11 : 24 **3 : 23** यो 6 : 29; 15 : 17 **3 : 24** 1 यो 4 : 13; रोम 8 : 9 **4 : 1** 1 थिस 5 : 21; मत 7 : 15 **4 : 2** 1 कुर 12 : 3 **4 : 3** 1 यो 2 : 28; 2 थिस 2 : 3-7; यो 8 : 17 **4 : 4** रोम 8 : 31; मत 12 : 29 **4 : 5** यो 15 : 19 **4 : 6** यो 8 : 47 **4 : 7** 1 यो 2 : 29 **4 : 9** यो 3 : 16 **4 : 10** 1 यो 2 : 2 **4 : 11** मत 18 : 33 **4 : 12** यो 1 : 18 **4 : 13** 1 यो 3 : 24; रोम 5 : 5 **4 : 14** यो 3 : 17 **4 : 15** 1 यो 5 : 5

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गये और इस में विश्वास करते हैं। परमेश्वर प्रेम
है और जो प्रेम में बना रहता है, वह परमेश्वर
में और परमेश्वर उस में निवास करता है।
17इस प्रकार प्रेम हम में अपनी परिपूर्णता
तक पहुँच जाता है, जिससे हम न्याय के दिन
पूरा भरोसा रख सकें; क्योंकि जैसे मसीह हैं
वैसे हम भी इस संसार में हैं।
18प्रेम में भय नहीं होता। पूर्ण प्रेम भय को
दूर कर देता है, क्योंकि भय में दण्ड की
आशंका रहती है और जो डरता है, उसका प्रेम
पूर्णता तक नहीं पहुँचा है।
19हम प्रेम करते हैं, क्योंकि परमेश्वर ने
पहले हमसे प्रेम किया। 20यदि कोई यह कहे
कि मैं परमेश्वर से प्रेम करता हूँ और वह अपने
भाई अथवा बहिन से बैर करे, तो वह झूठा है।
यदि वह अपने भाई अथवा बहिन से, जिसे वह
देखता है, प्रेम नहीं करता, तो वह परमेश्वर से
जिसे उसने कभी नहीं देखा, प्रेम नहीं कर
सकता। 21इसलिए हमें मसीह से यह आदेश
मिला है कि जो परमेश्वर से प्रेम करता है,
उसे अपने भाई-बहिनों से भी प्रेम करना
चाहिए।

विश्वास द्वारा संसार पर विजय

5 जो कोई विश्वास करता है कि येशु ही
मसीह हैं, वह परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है
और जो कोई जन्मदाता से प्रेम करता है, वह
उसकी सन्तान से भी प्रेम करता है। 2इसलिए
यदि हम परमेश्वर से प्रेम करते हैं और उसकी
आज्ञाओं का पालन करते हैं, तो हम सचमुच
परमेश्वर की संतान से प्रेम करते हैं।
3क्योंकि परमेश्वर का प्रेम यह है कि हम
उसकी आज्ञाओं का पालन करें। उसकी
आज्ञाएँ भारी नहीं हैं, 4क्योंकि जो परमेश्वर से
उत्पन्न हुआ है, वह संसार पर विजय प्राप्त
करता है। वह विजय, जो संसार को परास्त
करती है, हमारा विश्वास ही है। 5संसार का
विजेता कौन है? केवल वही जो यह विश्वास
करता है कि येशु परमेश्वर के पुत्र हैं।

प्रभु येशु के विषय में साक्षी

6वह येशु मसीह ही हैं जिनका आगमन जल
और रक्त द्वारा हुआ—न केवल जल में, बल्कि
जल और रक्त में। आत्मा इसके विषय में साक्षी
देता है, क्योंकि आत्मा सत्य है।
7इस प्रकार ये तीन साक्षी देते हैं— 8आत्मा,
जल और रक्त और तीनों एक ही बात कहते
हैं। 9हम मनुष्यों की साक्षी स्वीकार करते हैं,
किन्तु परमेश्वर की साक्षी निश्चय ही कहीं
अधिक प्रामाणिक है। उसकी साक्षी यह है कि
परमेश्वर ने अपने पुत्र के विषय में साक्षी दी है।
10जो परमेश्वर के पुत्र में विश्वास करता है,
उसके हृदय में परमेश्वर की यह साक्षी विद्यमान
है। जो परमेश्वर में विश्वास नहीं करता, वह
उसे झूठा समझता है; क्योंकि वह पुत्र के विषय
में परमेश्वर की साक्षी स्वीकार नहीं करता।
11और वह साक्षी यह है—परमेश्वर ने हमें
शाश्वत जीवन प्रदान किया है और यह जीवन
उसके पुत्र में है। 12जिसे पुत्र प्राप्त है, उसे वह
जीवन प्राप्त है और जिसे परमेश्वर का पुत्र
प्राप्त नहीं है, उसे वह जीवन प्राप्त नहीं।

शाश्वत जीवन

13तुम सब परमेश्वर के पुत्र के नाम में
विश्वास करते हो। मैं तुम्हें यह पत्र लिख रहा
हूँ जिससे तुम यह जानो कि तुम्हें शाश्वत जीवन
प्राप्त है।
14हमें परमेश्वर पर यह पूर्ण भरोसा है कि
यदि हम उसकी इच्छानुसार उस से कुछ भी
माँगते हैं, तो वह हमारी सुनता है। 15यदि हम
यह जानते हैं कि हम जो भी माँगें, वह हमारी
सुनता है, तो हम यह भी जानते हैं कि हमने जो
कुछ परमेश्वर से माँगा है वह हमें मिल गया
है।
16यदि कोई अपने भाई अथवा बहिन को

---

4 : 17 1 यो 2 : 28 **4 : 21** मक 12 : 29–31 **5 : 1** 1 यो 4 : 15–16; 1 पत 1 : 22–23 **5 : 3** यो 14 : 15, 23–24; मत 11 : 30 **5 : 4** यो 16 : 33 **5 : 5** 1 यो 4 : 4 **5 : 6** यो 19 : 34–35 **5 : 9** यो 5 : 32, 36; 8 : 18 **5 : 10** रोम 8 : 16; 1 कुर 15 : 15 **5 : 12** यो 3 : 36 **5 : 13** यो 20 : 31 **5 : 14** यो 3 : 21–22; यो 14 : 13; 16 : 23 **5 : 16** मत 12 : 31; इब्र 6 : 4–6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ऐसा पाप करते देखता है जो प्राणघातक न हो+, तो वह उसके लिए प्रार्थना करे और परमेश्वर उसका जीवन सुरक्षित रखेगा। यह उन लोगों पर लागू है जिनका पाप प्राणघातक नहीं है; क्योंकि एक पाप ऐसा भी होता है जो प्राणघातक है। उसके विषय में मैं नहीं कहता कि प्रार्थना करनी चाहिए। 17सब अधर्म पाप है, किन्तु ऐसा पाप भी है जो प्राणघातक नहीं है।

18हम जानते हैं कि जो परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह पाप नहीं करता। परमेश्वर का पुत्र उसकी रक्षा करता है और दुष्ट शैतान उसे स्पर्श तक नहीं करने पाता। 19हम जानते हैं कि हम परमेश्वर के हैं, जब कि समस्त संसार उस दुष्ट के वश में है।

20हम जानते हैं कि परमेश्वर-पुत्र आया है और उसने हमें सच्चे परमेश्वर को पहचानने की समझ दी है। हम सच्चे परमेश्वर में निवास करते हैं; क्योंकि हम उसके पुत्र येशु मसीह में निवास करते हैं। यही सच्चा परमेश्वर और शाश्वत जीवन है। 21बच्चो! प्रतिमूर्तियों* से अपने को बचाए रखो।

+अथवा, "जिसका परिणाम मृत्यु न हो"। * अथवा, "प्रतिमाओं, असत्य मान्यताओं"

5 : 18 1 यो 3 : 9; यो 17 : 15 5 : 19 गल 1 : 4; यो 8 : 47 5 : 20 यो 17 : 3; रोम 9 : 5 5 : 21 1 कुर 10 : 14

संत योहन का दूसरा पत्र

भूमिका

"संत योहन का दूसरा पत्र" किसी धर्मवृद्ध द्वारा किसी अज्ञात "निर्वाचित महिला तथा उसके बच्चों के नाम" लिखा गया था—सम्भवत: स्थानीय कलीसिया तथा उसके सदस्यों के नाम। धर्मवृद्ध अपने संक्षिप्त सन्देश में एक-दूसरे से प्रेम करने तथा झूठे धर्मशिक्षकों तथा उनकी झूठी शिक्षा से सावधान रहने को कहते हैं।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

अभिवादन	पद 1-3
प्रेम का महत्व	पद 4-6
झूठे धर्मसिद्धान्तों से सावधान	पद 7-11
उपसंहार	पद 12-13

अभिवादन

1मैं, धर्मवृद्ध, यह पत्र परमेश्वर की उस कृपापात्र "महिला" और उसके बच्चों* के नाम लिख रहा हूँ, जिनसे मैं सच्चा प्रेम करता हूँ। और मैं ही नहीं, बल्कि वे सभी, जो सत्य को जानते हैं। 2यह प्रेम उस सत्य पर आधारित है, जो हम में विद्यमान है और अनन्तकाल तक हमारे साथ रहेगा।

3यदि हम सत्य और प्रेम में बने रहेंगे, तो हमें पिता परमेश्वर और पिता के पुत्र येशु मसीह की ओर से कृपा, दया और शान्ति प्राप्त होगी।

प्रेम और सत्य

4मुझे यह देख कर बड़ा आनन्द हुआ कि आप के कुछ बच्चे* सत्य के मार्ग पर चल रहे हैं, जैसा कि हमें पिता की ओर से आदेश मिला है। 5अब, हे महिला! मेरा आप से एक निवेदन है। मैं आप को कोई नया आदेश नहीं, बल्कि वही आदेश लिख रहा हूँ, जो हमें प्रारम्भ से

* अथवा, "(स्थानीय) कलीसिया, और उसके सदस्यों"

1 1 पत 5 : 1; 3 यो 1 5 1 यो 2 : 7

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मिला है कि हम एक दूसरे से प्रेम करें। 6और
प्रेम का अर्थ यह है कि हम परमेश्वर की
आज्ञाओं के मार्ग पर चलते रहें। जो आदेश
आप को प्रारम्भ से प्राप्त है, वह यह है कि आप
को प्रेम के मार्ग पर चलना चाहिए।
7भ्रम में डालनेवाले बहुत-से उपदेशक
संसार में फैल गये हैं। वे यह नहीं मानते कि
येशु मसीह देहधारण कर आये थे। यह भ्रम में
डालनेवाले और मसीह-विरोधी का लक्षण है।
8आप लोग सावधान रहें जिससे आप अपने
परिश्रम का फल न खो बैठें, बल्कि अपना पूरा
पुरस्कार प्राप्त करें। 9जो कोई मसीह की शिक्षा
की सीमा के अन्दर नहीं रहता, बल्कि उस से
बाहर चला जाता है, उसे परमेश्वर प्राप्त नहीं
है। जो शिक्षा की सीमा के अन्दर रहता है, उसे
पिता और पुत्र, दोनों प्राप्त हैं। 10यदि कोई आप
लोगों के पास आता है और यह शिक्षा साथ नहीं
लाता, तो आप उसको अपने घर में न ठहराएं,
और न ही उसका स्वागत करें; 11क्योंकि जो
व्यक्ति उसका स्वागत करता है, वह उसके दुष्ट
कर्मों में सहभागी होता है।

उपसंहार

12मुझे आप लोगों को बहुत कुछ लिखना है,
किन्तु मैं यह कागज और स्याही से नहीं करना
चाहता। मुझे आशा है कि मैं आपके यहाँ आ
कर आमने-सामने बातचीत करूँगा, जिससे
हमारा आनन्द परिपूर्ण हो।
13आपकी निर्वाचित "बहिन" की सन्तान*
आप लोगों को नमस्कार कहती है।

* अथवा, "(स्थानीय) कलीसिया के सदस्य"।

7 1 यो 2 : 18; 4 : 1-3 **8** गल 4 : 11 **9** 1 यो 2 : 23 **10** 2 थिस 3 : 6; 3 यो 8; 1 रा 13 : 17 **12** 3 यो 13

संत योहन का तीसरा पत्र

भूमिका

यह पत्र किसी धर्मवृद्ध द्वारा गायुस नामक एक धर्म-अगुए के नाम लिखा गया था। गायुस ने सजातीय एवं अन्यजातीय भाई-बहिनों की सहायता की थी। अतः लेखक अपने प्रस्तुत पत्र में उसकी प्रशंसा करता है, और दियोत्रिफेस नामक व्यक्ति से सावधान रहने को कहता है।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

अभिवादन	**पद 1**
गायुस की प्रशंसा	**पद 2-8**
दियोत्रिफेस दण्डनीय है	**पद 9-10**
देमेत्रियुस वन्दनीय हैं	**पद 11-12**
उपसंहार	**पद 13-15**

अभिवादन

1मैं, धर्मवृद्ध, यह पत्र प्रिय गायुस के नाम
लिख रहा हूँ, जिनसे मैं सच्चा प्रेम करता हूँ।

गायुस

2 प्रियवर ! मेरी हार्दिक कामना है कि सब
तरह से आपका कल्याण हो और आपकी
आत्मा की तरह, आपका शरीर भी पूर्ण स्वस्थ
रहे; 3क्योंकि जब कुछ भाई-बहिन यहाँ आये
और उन्होंने आपकी सच्चाई के विषय में साक्षी
दी और बताया कि किस प्रकार आप सत्य के
मार्ग पर चलते हैं, तो मैं बड़ा आनन्दित हुआ।
4मुझे और किसी बात से इतना आनन्द नहीं

1 2 यो 1 **2** 2 यो 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

होता, जितना यह सुन कर कि मेरे बच्चे सत्य
के मार्ग पर चलते हैं।
5प्रियवर ! आप भाई-बहिनों के लिए—और
ऐसे भाई-बहिनों के लिए जिन से आप
अपरिचित हैं—जो कुछ कर रहे हैं, वह एक
सच्चे विश्वासी के योग्य है। 6उन्होंने यहाँ की
कलीसिया के सामने आपके प्रेम की साक्षी दी
है। यदि आप उनकी अगली यात्रा का ऐसा
प्रबन्ध करेंगे, जो परमेश्वर के योग्य हो, तो
अच्छा काम करेंगे; 7क्योंकि वे मसीह का कार्य
करने निकले हैं और अन्यधर्मी लोगों से कुछ
नहीं लेते। 8इसलिए ऐसे लोगों का सेवा-
सत्कार करना हमारा कर्त्तव्य है, जिससे हम
सत्य की सेवा में उनकी सहकर्मी बनें।

दियोत्रिफेस

9मैंने कलीसिया के नाम एक पत्र लिखा,
किन्तु दियोत्रिफेस, जो वहाँ का नेता बनना
चाहता है, हमारा अधिकार स्वीकार नहीं
करता। 10इसलिए मैं जब आऊँगा तो उसके
आचरण की निन्दा करूँगा। वह न केवल
हमारी बदनामी करता है, बल्कि वह स्वयं
भाई-बहिनों का आतिथ्य-सत्कार करना नहीं
चाहता और जो लोग ऐसा करना चाहते हैं, वह
उन्हें रोकता और कलीसिया से उनका बहिष्कार
करता है।
11प्रियवर ! आप बुराई का नहीं, बल्कि
भलाई का अनुकरण करें। जो भलाई करता है,
वह परमेश्वर से है; किन्तु जो बुराई करता है,
वह परमेश्वर के विषय में कुछ नहीं जानता।

देमेत्रियुस

12देमेत्रियुस के विषय में सभी लोग अच्छी
साक्षी देते हैं, यहाँ तक कि सत्य स्वयं ही ऐसा
करता है। हम भी उनके विषय में यही साक्षी
देते हैं और आप जानते हैं कि हमारी साक्षी
सच्ची है।

उपसंहार

13मुझे आप को और बहुत कुछ लिखना था,
किन्तु मैं यह कागज और स्याही से नहीं करना
चाहता। 14मुझे आशा है कि मैं शीघ्र ही आप
के पास आऊँगा और हम आमने-सामने
बातचीत करेंगे। 15आप को शान्ति मिले ! मित्रगण
आप को नमस्कार कहते हैं। आप वहां हर एक
मित्र को नमस्कार कहें।

6 तीत 3 : 13 **7** प्रे 5 : 41; 20 : 35; 1 कुर 9 : 12, 15 **8** इब्र 13 : 2; 2 यो 10 **11** 1 यो 3 : 6, 9 **12** यो 19 : 35; 21 : 24 **13** 2 यो 12

संत यहूदा का पत्र

भूमिका

"**संत यहूदा का पत्र**" झूठे धर्मशिक्षकों से सावधान रहने के उद्देश्य से लिखा गया था। ये झूठे धर्मशिक्षक स्वयं को प्रभु येशु पर विश्वास करने वाले "ज्ञानी" मानते थे। इस पत्र की विषय-सामग्री "**संत पतरस के दूसरे पत्र**" की विषय-सामग्री से मिलती-जुलती है। "**संत यहूदा के पत्र**" का लेखक अपने पाठकों के उत्साह को बढ़ाते हुए कहता है, "मुझे आवश्यक प्रतीत हुआ कि तुम्हें उस विश्वास की रक्षा के लिए प्रोत्साहित करूँ, जो संतों को सदा के लिए मिला है।" इस पत्र की विशेषता यह है कि लेखक यहूदियों के व्यापक धर्मसाहित्य का उल्लेख करता है।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

अभिवादन	**पद 1-2**
झूठे धर्मशिक्षकों का दुश्चरित्र	**पद 3-16**
विश्वास पर स्थिर रहने के लिए प्रबोधन	**पद 17-23**
आशिष-वचन	**पद 24-25**

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अभिवादन

1यह पत्र येशु मसीह के सेवक और याकूब
के भाई यहूदा की ओर से उन के नाम है, जो
परमेश्वर द्वारा बुलाए गए हैं, जो पिता परमेश्वर
द्वारा पवित्र* किए गए हैं, और जो येशु मसीह
के आगमन के लिए सुरक्षित हैं।
2आप लोगों को दया, शान्ति और प्रेम प्रचुर
मात्रा में प्राप्त हो !

बहकाने वाले धर्मशिक्षक

3प्रिय भाइयो एवं बहिनो ! हम जिस मुक्ति
के सहभागी हैं, मैं उसके विषय में बड़ी
उत्सुकता से आप लोगों को लिखना चाहता
था, किन्तु अब मुझे आवश्यक प्रतीत हुआ कि
इस पत्र द्वारा आप लोगों से यह अनुरोध करूँ
कि आप उस विश्वास की रक्षा के लिए संघर्ष
करें, जो सदा के लिए सन्तों को सौंपा गया है;
4क्योंकि कुछ व्यक्ति आप लोगों के बीच छिप
कर घुस आये हैं। इन धर्मद्रोही लोगों की
दण्डाज्ञा प्राचीन काल से धर्मग्रन्थ में लिखी हुई
है। ये धर्मद्रोही हमारे परमेश्वर की कृपा को
विलासिता का बहाना बनाते और हमारे एकमात्र
स्वामी एवं प्रभु येशु मसीह को अस्वीकार करते
हैं।
5यद्यपि आप लोग यह सब जानते हैं, फिर
भी मैं आप को याद दिलाना चाहता हूँ कि प्रभु
ने** मिस्र देश से इस्राएली प्रजा का अद्वितीय
उद्धार करने के बाद भी उन लोगों का विनाश
किया, जो विश्वास करने से इनकार करते हैं।
6जिन स्वर्गदूतों ने अपनी मर्यादा का उल्लंघन
किया और अपना निजी निवासस्थान छोड़
दिया, परमेश्वर उन्हें न्याय के महान् दिन के
लिए नरक के अन्धकार में अकाट्य बेड़ियों से
बांधे रखता है। 7सदोम, गमोरा और उनके
आसपास के नगरों ने उन स्वर्गदूतों की तरह
व्यभिचार किया और वे अप्राकृतिक वासनाओं
के दास बन गये। वे हमें चेतावनी देने के लिए
आग का अनन्त दण्ड भोग रहे हैं। 8फिर भी ये
व्यक्ति अपने उन्माद में शरीर को अपवित्र
करते, प्रभुत्व को तुच्छ समझते और स्वर्गिक
सत्वों की निन्दा करते हैं। 9किन्तु जब प्रधान
स्वर्गदूत मीखाएल शैतान से वाद-विवाद कर
रहे थे और मूसा के शव को ले कर उस से संघर्ष
कर रहे थे, तो उन्हें शैतान को निन्दात्मक शब्दों
में दोषी ठहराने का साहस नहीं हुआ। उन्होंने
इतना ही कहा, "प्रभु तेरी भर्त्सना करे।"
10परन्तु ये व्यक्ति उन बातों की निन्दा करते हैं,
जिन्हें वे नहीं समझते और जो बातें ये
विवेकहीन पशुओं की तरह सहज ही समझते
हैं, इनके कारण वे नष्ट हो जाते हैं।
11धिक्कार इन लोगों को ! ये काइन के मार्ग
पर चल रहे हैं। ये तुच्छ लाभ के लिए बिलआम
की तरह भटक गये और कोरह की तरह विद्रोह
करने के कारण विनष्ट हो गये हैं। 12ये आपके
प्रीति-भोजों के लिए कलंक-जैसे हैं, जहाँ वे
बिना किसी श्रद्धा के खाते-पीते हैं। ये अपने ही
भरण-पोषण को ध्यान में रखते हैं। ये पवन
द्वारा उड़ाये हुए जलहीन बादल हैं। ये ऐसे वृक्ष
हैं, जो फसल के समय पर फल नहीं देते, जो
दो बार मर चुके हैं और जड़ से उखाड़े गये हैं।
13ये समुद्र की उद्दाम लहरें हैं, जो अपनी
लज्जाजनक वासनाओं का फेन उछालती हैं। ये
उल्काओं के सदृश हैं। इनके लिए गहरा
अन्धकार अनन्त काल तक रख छोड़ा गया है।
14आदम की सातवीं पीढ़ी में हनोक ने इन
लोगों के विषय में यह कहते हुए भविष्यवाणी
की, "देखो, प्रभु अपने सहस्रों पवित्र दूतों के
साथ आ कर 15सभी मनुष्यों का न्याय करेगा।
विधर्मियों ने जितने कुकर्म किये और धर्मद्रोही
पापी प्रभु के विरुद्ध जितने दुर्वचन बोले हैं, प्रभु
उन सब बातों के लिए हर एक को दोषी

*पाठांतर, "प्रेम" ** पाठान्तर, "यहोशुअ (अथवा येशु) ने"।

1 मत 13 : 55 **2** 2पत 1 : 2 **3** 1 तिम 1 : 18; 2 पत 1 : 5; 2 : 21 **4** गल 2 : 4; 2 पत 2 :1 **5** गण 14 : 35; 1 कुर 10 : 5; 2 पत 1 : 12 **6** उत 6 : 1; यो 8 : 44; 2 पत 2 : 4, 9 **7** उत 19 : 4-25; 2 पत 2 : 6.10 **8** 2 पत 2 : 10 **9** दान 12 : 1; जक 3 : 2; 2 पत 2 : 11 **10** 2 पत 2 : 12 **11** उत 4 : 8; 2 पत 2 : 15; गण 31 : 16; 16 : 22 **12** यहेज 34 : 8; 2 पत 2 : 13 **13** यश 57 : 20; 2 पत 2 : 17 **14** उत 5 : 21; व्य 33 : 2; जक 14 : 5 **15** मत 25 : 31

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ठहरायेगा। [16]ये वे लोग हैं जो कुड़बुड़ाते और अपना भाग्य कोसते रहते हैं, अपनी दुर्वासनाओं के अनुसार आचरण करते, डींग मारते और लाभ के लिए खुशामद करते हैं।

विश्वासियों को परामर्श

[17]प्रिय भाइयो एवं बहिनो! आप लोग हमारे प्रभु येशु मसीह के प्रेरितों की भविष्यवाणियाँ याद रखें। [18]उन्होंने आप से यह कहा है, "अन्तिम समय में उपहास करने वाले नास्तिक प्रकट होंगे, जो अपनी अधर्मपूर्ण वासनाओं के अनुरूप आचरण करेंगे।" [19]ये व्यक्ति आप लोगों में फूट डालते हैं। ये संसारी मनुष्य हैं और आत्मा से वंचित हैं।

[20]किन्तु प्रिय भाइयो और बहिनो! आप अपने परमपावन विश्वास की नींव पर अपने जीवन का निर्माण करें। पवित्र आत्मा में प्रार्थना करते रहें। [21]परमेश्वर के प्रेम में सुदृढ़ बने रहें और हमारे प्रभु येशु मसीह की दया की आशा करें जो शाश्वत् जीवन की ओर ले जाती है। [22]कुछ लोगों का विश्वास दृढ़ नहीं है।* उन पर दया करें। [22]कुछ लोगों को आग में से निकाल कर उनकी रक्षा करें। किंतु कुछ लोगों पर दया करते समय आप सतर्क रहें और विषय-वासना से दूषित उनके वस्त्र से भी घृणा करें।**

आशीर्वाद

[24]जो आप को प्रतन से सुरक्षित रखने में और आप को दोषरहित और आनन्दित बना कर अपनी महिमा में प्रस्तुत करने में समर्थ है, [25]जो हमें हमारे प्रभु येशु मसीह द्वारा मुक्ति प्रदान करता है, उसी एकमात्र परमेश्वर को+ अनादि काल से, अभी और युग-युगान्तर तक महिमा, प्रताप, सामर्थ्य और अधिकार प्राप्त हो! आमेन !

---

* अथवा, "कुछ लोग शंका करते हैं।" **मूल यूनानी पद 22-23 अस्पष्ट हैं। + अथवा, "जो हमारा उद्धारकर्ता तथा एकमात्र परमेश्वर है, उसी को हमारे प्रभु येशु मसीह द्वारा"

16 2 पत 2 : 10, 18 **17** 2 पत 3 : 2 **18** 1 तिम 4 : 1; 2 पत 3 : 5 **19** 1 कुर 2 : 14 **20** कुल 2 : 7; 1 थिस 5 : 11 **23** आमो 4 : 11; जक 3 : 2; याक 5 : 19; प्रक 3 : 4 **24** 1 थिस 5 : 23; फिल 1 : 10 2 पत 3 : 14 **25** रोम 16 : 27; 1 तिम 1 : 17; 2 पत 3 : 18

प्रकाशन ग्रन्थ

भूमिका

"प्रकाशन ग्रन्थ" (संत योहन को प्रभु येशु का प्रकाशन) तब लिखा गया था जब रोम के साम्राज्य में नव-मसीहियों को प्रभु येशु पर उनके विश्वास के कारण सताया जा रहा था। ये मसीही प्रभु येशु को आध्यात्मिक साम्राज्य का 'प्रभु' मानते थे। प्रस्तुत ग्रंथ के लेखक का उद्देश्य अपने पाठकों को आशा और प्रोत्साहन देना है। वह अपने पाठकों को प्रबोधन देता है कि वे अपने वर्तमान सताव और संकट की घड़ी में, दुःख और अत्याचार की दशा में भी, प्रभु येशु पर अपना विश्वास बनाए रखें। लेखक अपना नाम "योहन" बताता है; वह स्वयं प्रभु येशु की साक्षी के कारण पतमुस द्वीप पर निष्कासित हुआ था।

लेखक ने अपने अनेक दर्शनों और प्रकाशनों का प्रतीकात्मक भाषा और शैली में वर्णन किया है। इस प्रतीकात्मक भाषा को लेखक के युग के मसीही पाठक तो समझते थे; किन्तु गैर-मसीही पाठकों के लिए यह रहस्यमयी, अनजान भाषा थी।

किसी महान कला-कृति की विषय-वस्तु के समान लेखक ने दर्शनों की श्रृंखला में बार-बार और भिन्न-भिन्न तरीके से अपनी विषय-वस्तु को दुहराया है। आधुनिक युग के धर्म-वैज्ञानिकों में इन दर्शनों के गूढ़ अर्थ के संबंध में मतैक्य नहीं है; किन्तु प्रस्तुत ग्रन्थ के मूल विषय

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

में किसी को सन्देह नहीं है। मूल विषय यह है: येशु ही प्रभु हैं, और परमेश्वर बुराई की समस्त शैतानी शक्तियों को प्रभु येशु के द्वारा सदा के लिए पूर्णत: नष्ट कर देगा। परमेश्वर अन्तिम विजय के उपरान्त अपने विश्वासियों को, अनन्त पुरस्कार स्वरूप, एक नयी पृथ्वी और एक नया आकाश प्रदान करेगा।

विषय-वस्तु की रूपरेखा

प्रस्तावना	1 : 1-3
पहला दर्शन और सात कलीसियाओं के नाम	
अलग-अलग सात पत्र	1 : 4—3 : 22
सात मुहरबन्द वाली पुस्तक	4 : 1—8 : 1
सात तुरहियाँ	8 : 2—11 : 18
सर्प तथा महिला, दो पशु, और अन्य दर्शन	11 : 19—14 : 20
परमेश्वर के प्रकोप के सात प्याले	15 : 1—16 : 21
बेबीलोन महानगर का विनाश	17 : 1—19 : 5
युगांत के दर्शन : मेमने का विवाहोत्सव, पशु की पराजय, अन्तिम न्याय और नया यरूशलेम नगर	19 : 6—22 : 5
उपसंहार	22 : 6-21

प्रस्तावना

1 यह येशु मसीह का प्रकाशन है। यह उन्हें
परमेश्वर की ओर से प्राप्त हुआ जिससे वह
अपने सेवकों को निकट भविष्य में होने वाली
घटनाएँ दिखायें। उन्होंने अपने दूत को भेज
कर इस प्रकाशन का ज्ञान अपने सेवक योहन
को कराया। [2]योहन अनुप्रमाणित करते हैं कि
उन्होंने जो कुछ देखा, वह परमेश्वर का वचन
और येशु मसीह की साक्षी है।

[3]धन्य है वह, जो इस नबूवत को पढ़ कर
सुनाता है और धन्य हैं वे, जो इसके शब्द सुनते
हैं और इस में लिखी हुई बातों का ध्यान रखते
हैं; क्योंकि वह समय निकट आ गया है!

अभिवादन

[4]आसिया की सात कलीसियाओं को योहन
का सन्देश।

जो है, जो था और जो आनेवाला है, उसकी
ओर से, उसके सिंहासन के सामने उपस्थित
रहनेवाली सात आत्माओं [5]और येशु मसीह की
ओर से आप लोगों को अनुग्रह और शान्ति
प्राप्त हो! मसीह विश्वसनीय साक्षी, पुनर्जीवित
मृतकों में से पहलौठे और पृथ्वी के राजाओं के
अधिराज हैं।

वह हम से प्रेम करते हैं। उन्होंने अपने रक्त
से हमें पापों से मुक्त किया [6]और अपने पिता
परमेश्वर के लिए हमें पुरोहितों का राजवंश
बनाया+। उनकी महिमा और उनका सामर्थ्य
युग-युगों तक बना रहे! आमेन!

[7]देखो, वही बादलों पर++ आने वाले हैं।
सब लोग उन्हें देखेंगे। जिन्होंने उन को बेधा,
वे भी उन्हें देखेंगे और पृथ्वी के समस्त कुल
उन के कारण विलाप करेंगे। यह निश्चित है।
आमेन!

[8]जो है, जो था और जो आनेवाला है, वही
सर्वशक्तिमान् प्रभु परमेश्वर कहता है, "अल्फा
और ओमेगा* मैं हूँ।"

+अथवा, "हमें एक राज्य, अर्थात् अपने पिता परमेश्वर के लिए पुरोहित बनाया"। ++ अथवा, "बादलों सहित"।
* यूनानी वर्णमाला के प्रथम और अन्तिम वर्ण अर्थात्, 'आदि और अंत'।

1 : 1 दान 2 : 28-29; प्रक 22 : 6, 16; यो 17 : 7-8 **1 : 2** प्रक 6 : 9 **1 : 3** प्रक 22 : 7,10 **1 : 4** नि 3 : 14-15; यश 41 : 4; प्रक 3 : 1; 5 : 6 **1 : 5** भज 89 : 27,37; 130 : 8; यश 40 : 2; यो 18 : 37; कुल 1 : 18; इब्र 9 : 14; प्रक 3 : 14; 7 : 14; 19 : 16 **1 : 6** प्रक 5 : 10; 1 पत 2 : 5,9; नि 19 : 6; यश 61 : 6 **1 : 7** दान 7 : 13; जक 12 : 10-14; यो 19 : 37; लू 23 : 27-28 **1 : 8** नि 3 : 14; यश 41 : 4; प्रक 4 : 8; 21 : 6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मसीह के दर्शन

9मैं आप लोगों का भाई योहन हूँ और येशु
के संकट, राज्य तथा धैर्य में आपका सहभागी।
परमेश्वर का संदेश सुनाने तथा येशु के विषय
में साक्षी देने के कारण मैं पतमुस नामक द्वीप
में था। 10मैं प्रभु-दिवस पर आत्मा से आविष्ट
हो गया और मैंने अपने पीछे तुरही-जैसी वाणी
को उच्च स्वर से यह कहते सुना, 11"तुम जो
कुछ देख रहे हो, उसे पुस्तक में लिखो और उसे
सात कलीसियाओं को भेज दो—इफ़िसुस,
स्मुरना, पिरगमुन, थुआतीरा, सरदीस,
फिलदेलफिया, और लौदीकिया को।"

12मुझ से कौन बोल रहा है, उसे देखने के
लिए मैं मुड़ गया और मुड़ कर मैंने सोने के सात
दीपाधार देखे, 13और उनके बीच में मानव
पुत्र-जैसे एक व्यक्ति को। वह पैरों तक लम्बा
वस्त्र पहने था और उसके वक्षस्थल पर स्वर्ण
मेखला बाँधी हुई थी। 14उसके सिर के बाल
हिम-श्वेत ऊन की तरह उजले थे और उसकी
आँखें अग्नि की तरह धधक रही थीं। 15उसके
पैर भट्टी में तपाये हुए पीतल की तरह चमक
रहे थे और उसकी वाणी समुद्र की तरह गर्जन
कर रही थी। 16वह अपने दाहिने हाथ में सात
तारे धारण किये था। उसके मुख से एक तेज
दुधारी तलवार निकल रही थी और उसका
मुखमण्डल मध्याह्न के सूर्य की तरह चमक रहा
था।

17मैं उसे देखते ही मृतक-जैसा उसके
चरणों पर गिर पड़ा। उसने मुझ पर अपना
दाहिना हाथ रख कर कहा, "मत डरो। प्रथम
और अन्तिम मैं हूँ। 18जीवन का स्रोत मैं हूँ। मैं
मर गया था और देखो, मैं युगानुयुग तक जीवित
रहूँगा। मृत्यु और अधोलोक की कुंजियाँ मेरे
पास हैं। 19इसलिए तुमने जो कुछ देखा—जो
अभी है और जो बाद में होने वाला है—वह सब
लिखो। 20जिन सात तारों को तुमने मेरे दाहिने
हाथ में देखा, उनका और सोने के सात
दीपाधारों का रहस्य इस प्रकार है: सात तारे
सात कलीसियाओं के दूत हैं और सात दीपाधार
सात कलीसियाएँ हैं।

सात कलीसियाओं के नाम पत्र : इफिसुस

2 "इफिसुस की कलीसिया के दूत को यह
लिखो:

"जो अपने दाहिने हाथ में सातों तारों को
धारण किये है और सोने के सात दीपाधारों के
बीच घूम रहा है, उसका सन्देश इस प्रकार है:
2मैं तुम्हारे आचरण, तुम्हारे परिश्रम और धैर्य
से परिचित हूँ। मैं जानता हूँ कि तुम दुष्टों को
सह नहीं सकते। जो अपने को प्रेरित कहते हैं,
किन्तु हैं नहीं, तुमने उनकी परीक्षा ली है और
उन्हें झूठा पाया है। 3तुम्हारे पास धैर्य है। तुमने
मेरे नाम के कारण कष्ट सहा है और हार नहीं
मानी। 4किन्तु मुझे तुम से शिकायत यह है कि
तुमने मेरे प्रति अपना पहले-जैसा प्रेम छोड़
दिया है। 5इस पर विचार करो कि तुम कितने
ऊँचे स्थान से गिर गये हो। पश्चात्ताप करो और
पहले-जैसा आचरण करो। पश्चात्ताप नहीं
करोगे, तो मैं तुम्हारे पास आ कर तुम्हारा
दीपाधार उसके स्थान पर से हटा दूँगा। 6फिर
भी तुम में यह अच्छाई है कि मेरे समान तुम भी
निकोलास के अनुयायियों के कामों से घृणा
करते हो।

7"जिसके कान हों, वह सुन ले कि आत्मा
कलीसियाओं से क्या कहता है। जो विजय
प्राप्त करेगा, उसको मैं उस जीवन-वृक्ष का
फल खाने के लिए दूंगा जो परमेश्वर की स्वर्ग-
वाटिका के बीच में है।

स्मुरना

8"स्मुरना की कलीसिया के दूत को यह
लिखो :

---

1 : 11 प्रक 2 : 8; 22 : 13 **1 : 13** यहेज 1 : 26; 8 : 2; दान 7 : 13; 10 : 5 **1 : 14** दान 7 : 9; 10 : 6; प्रक 2 : 18,19 : 12 **1 : 15** यहेज 1 : 24; 43 : 2 **1 : 16** शास 5 : 31; प्रक 2 : 12,16; 19 : 15 **1 : 17** यश 44 : 6; 48 : 12; दान 8 : 18; 10 : 15-19 **1 : 19** यश 48 : 6; दान 2 : 29 **1 : 20** मला 2 : 7; दान 2 : 29; प्रक 1 : 12; मत 5 : 14-15 **2 : 1** प्रक 1 : 13,16,20 **2 : 2** 1 यो 4 : 1 **2 : 6** भज 139 : 21 **2 : 7** प्रक 22 : 2; यहेज 31 : 8 (यू० पाठ); उत 2 : 9; 3 : 22,24; लू 23 : 43; 2 कुर 12 : 4 **2 : 8** यश 44 : 6; 48 : 12

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

''जो प्रथम और अन्तिम है, जो मर गया था
और पुनर्जीवित हो गया है, उसका सन्देश इस
प्रकार है: 9मैं तुम्हारे संकट और दरिद्रता से
परिचित हूँ, फिर भी तुम धनी हो; और मैं यह
भी जानता हूँ कि वे लोग तुम्हारी कितनी
बदनामी करते हैं, जो अपने को ''यहूदा-
वासी''* कहते हैं, किन्तु जो यहूदा के नहीं,
बल्कि शैतान के सभागृह के सदस्य हैं। 10तुम्हें
जो कष्ट भोगना होगा, उस से मत डरो। शैतान
तुम्हारी परीक्षा लेने के उद्देश्य से तुम लोगों में
से कुछ को क़ैद में डाल देगा और तुम लोग दस
दिनों तक संकट में पड़े रहोगे। तुम मृत्यु तक
विश्वस्त बने रहो और मैं तुम्हें जीवन का मुकुट
प्रदान करूँगा।
11''जिसके कान हों, वह सुन ले कि आत्मा
कलीसियाओं से क्या कहता है। जो विजय
प्राप्त करेगा, उसको द्वितीय मृत्यु से कोई हानि
नहीं होगी।

पिरगमुन

12''पिरगमुन की कलीसिया के दूत को यह
लिखो:
''जिसके पास तेज दुधारी तलवार है,
उसका सन्देश इस प्रकार है: 13मैं जानता हूँ कि
तुम्हारा निवास कहाँ है—वह उस स्थान में है,
जहाँ शैतान की गद्दी है। फिर भी तुम मेरा नाम
दृढ़ बनाये रखते हो और तुमने उन दिनों भी मुझ
में अपना विश्वास नहीं त्यागा, जब मेरा
विश्वस्त साक्षी अन्तिपास तुम्हारे नगर में, जो
शैतान का निवास स्थान है, मारा गया। 14किन्तु
मुझे तुम से कुछ शिकायतें हैं। तुम्हारे बीच कुछ
ऐसे लोग रहते हैं, जो बिलआम की शिक्षा को
मानते हैं। बिलआम ने बालाक को सिखाया कि
वह इस्राएलियों को पथभ्रष्ट करे, जिससे वे
मूर्तियाँ को अर्पित मांस खायें और व्यभिचार
करें। 15तुम्हारे बीच कुछ ऐसे लोग भी हैं, जो
निकोलास के अनुयायियों की शिक्षा मानते हैं।
16इसलिए पश्चात्ताप करो; नहीं तो मैं शीघ्र ही
तुम्हारे पास आऊँगा और अपने मुख की
तलवार से उन लोगों से युद्ध करूँगा।
17''जिसके कान हों, वह सुन ले कि आत्मा
कलीसियाओं से क्या कहता है। जो विजय
प्राप्त करेगा, उसको मैं थोड़ा-सा गुप्त ''मन्ना''
और अनुग्रह का प्रतीक श्वेत पत्थर+ प्रदान
करूँगा। उस पत्थर पर एक नया नाम अंकित
होगा, जिसको पानेवाले के अतिरिक्त और
कोई नहीं जानता।

थुआतीरा

18''थुआतीरा की कलीसिया के दूत को यह
लिखो:
''जिसकी आँखें अग्नि की तरह धधकती हैं
और जिसके पैर पीतल की तरह चमकते हैं,
उस परमेश्वर-पुत्र का सन्देश इस प्रकार है:
19मैं तुम्हारे आचरण, तुम्हारे प्रेम, तुम्हारे
विश्वास, तुम्हारी धर्मसेवा और तुम्हारे धैर्य से
परिचित हूँ। मैं जानता हूँ कि तुम्हारे ये पिछले
कार्य तुम्हारे पहले के कार्यों से बढ़कर हैं।
20किन्तु मुझे तुम से यह शिकायत है कि तुम
उस स्त्री ईजेबेल को अपने बीच रहने देते हो।
वह अपने को नबिया कहती है और अपनी
शिक्षा द्वारा मेरे सेवकों को व्यभिचार करने और
मूर्तियों को अर्पित मांस खाने के लिए बहकाती
है। 21मैंने उसे पश्चात्ताप करने का समय दिया,
किन्तु वह अपने व्यभिचार के लिए पश्चात्ताप
करना नहीं चाहती। 22देखो, मैं उसे रोग-शय्या
पर पटक दूँगा और यदि उसके साथ व्यभिचार
करनेवाले उसके कर्मों से विमुख नहीं होंगे, तो
मैं उन पर घोर विपत्ति ढाऊँगा। 23मैं उसकी
सन्तति का संहार करूंगा और सब कलीसियाएँ
यह जान जायेंगी कि मैं वह हूँ, जो मन और
हृदय की थाह लेता है और मैं तुम में से हर एक
को उसके कर्मों का फल दूँगा। 24थुआतीरा के
शेष लोगों से, जो इस शिक्षा को नहीं मानते

---

* अथवा, ''यहूदी'' +शब्दशः, ''(मतदान में प्रयुक्त) श्वेत गुटिका''

2 : 9 प्रक 3 : 9; याक 2 : 5; 2 कुर 11 : 14-15 **2 : 10** दान 1 : 12 1 : 12,14; मत 10 : 28; प्रख 3 : 11; 2 तिम 4 : 8 **2 : 11** प्रक 20 : 14 **2 : 12** यश 49 : 2; इब्र 4 : 12; प्रक 1 : 16; 19 : 15 **2 : 13** प्रक 2 : 9; 3 : 8 **2 : 14** गण 31 : 16; 25 : 1-2; यहू 11 **2 : 17** भज 78 : 24; प्रक 3: 12; यश 62 : 2; 65 : 15 **2 : 18** दान 10 : 6 **2 : 20** 1 रा 16 : 31; 2 रा 9 : 22; गण 25 : 1-2 **2 : 23** भज 7 : 9; 62 : 12; यिर 17 : 10; मत 16 : 27

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और शैतान के तथा-कथित गहरे भेदों को
नहीं जानते, उन सब से मैं यह कहता हूँ : मैं
तुम लोगों पर कोई नया बोझ नहीं डालूँगा।
25जो शिक्षा तुम्हारे पास है, उस पर मेरे आने
तक दृढ़ बने रहो।
26"जो विजय प्राप्त करेगा, और अन्त तक
मेरे कार्यों को पूरा करता रहेगा, मैं उसे राष्ट्रों पर
वह अधिकार प्रदान करूँगा, 27-28जिसे मेरे पिता
ने मुझे प्रदान किया है। वह लोह-दण्ड से राष्ट्रों
पर शासन करेगा और उन्हें मिट्टी के पात्रों की
तरह चकनाचूर कर देगा और मैं उस विजयी
को प्रभात का तारा प्रदान करूँगा। 29जिसके कान
हों, वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या
कहता है।

सरदीस

3 "सरदीस की कलीसिया के दूत को यह
लिखो :
"जो परमेश्वर की सातों आत्माओं को और
सातों तारों को धारण किये है, उसका सन्देश
इस प्रकार है: मैं तुम्हारे आचरण से परिचित हूँ।
लोग तुम्हें जीवित मानते हैं, किन्तु तुम तो मर
चुके हो। 2जागो! तुम में जो जीवन शेष है और
बुझने-बुझने को है, उस में प्राण डालो। मैंने
तुम्हारे आचरण को अपने परमेश्वर की दृष्टि में
अपूर्ण पाया है। 3तुम ने जो शिक्षा स्वीकार की
और सुनी, उसे याद रखो, उसका पालन करो
और पश्चात्ताप करो। यदि तुम नहीं जागोगे, तो
मैं चोर की तरह आऊँगा और तुम्हें मालूम नहीं
है कि मैं किस घड़ी तुम्हारे पास आ जाऊँगा।
4सरदीस नगर में तुम्हारे यहाँ कुछ ऐसे व्यक्ति
भी हैं, जिन्होंने अपने वस्त्रों को दूषित नहीं
किया है। वे उजले वस्त्र पहन कर मेरे साथ
टहलेंगे, क्योंकि वे इसके योग्य हैं।
5"यदि तुम विजय प्राप्त करोगे तो तुम भी
उनके समान उजले वस्त्र पहनोगे। मैं जीवन-
ग्रन्थ में से तुम्हारा नाम नहीं मिटाऊंगा, बल्कि
अपने पिता और उसके स्वर्गदूतों के सामने
तुम्हारा नाम स्वीकार करूंगा। 6जिसके कान
हों, वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या
कहता है।

फ़िलदेलफिया

7"फ़िलदेलफिया की कलीसिया के दूत को
यह लिखो:
"जो पवित्र और सच्चा है, जिसके पास
दाऊद की कुंजी है, जिसके खोलने पर कोई
नहीं बन्द कर सकता और जिसके बन्द करने
पर कोई नहीं खोल सकता, उसका सन्देश इस
प्रकार है:
8"मैं तुम्हारे आचरण से परिचित हूँ। मैंने
तुम्हारे लिए एक द्वार खोला, जिसे कोई नहीं
बन्द कर सकता। तुम्हारी शक्ति सीमित है, फिर
भी तुम ने मेरी शिक्षा का पालन किया और मेरा
नाम अस्वीकार नहीं किया है। 9देखो, शैतान के
सभागृह के उन सदस्यों को, जो अपने को
यहूदा-वासी कहते हैं, किन्तु यहूदा के नहीं हैं
और झूठ बोलते हैं, मैं उनको बाध्य करूँगा कि
वे आ कर तुम्हारे चरणों पर गिरें और यह जानें
कि मैं तुम से प्रेम करता हूँ। 10तुम मेरे आदेशानुसार
दृढ़ बने रहे, इसलिए मैं भी तुम्हें उस परीक्षा के
समय सुरक्षित रखूँगा, जो समस्त पृथ्वी पर
आनेवाली है और उसके निवासियों के विश्वास
को परखेगी। 11मैं शीघ्र ही आने वाला हूँ। जो
शिक्षा तुम्हारे पास है, उस पर दृढ़ बने रहो,
जिससे कोई तुम को तुम्हारे मुकुट से वंचित न
करे।
12"यदि तुम विजय प्राप्त करोगे तो मैं तुम
को अपने परमेश्वर के मन्दिर का स्तम्भ बनाऊँगा।
वह फिर कभी उसके बाहर नहीं जायेगा। मैं
अपने परमेश्वर का नाम, अपने परमेश्वर के
नगर, उस नवीन यरूशलेम का नाम, जो मेरे

---

2 : 25 प्रक 3 : 11 **2 : 26** भज 2 : 8 (यू० पाठ) **2 : 27** प्रक 12 : 5 **3 : 1** प्रक 5 : 6; 1 : 16 **3 : 2** यहेज 34 : 4 **3 : 3** 1 थिस 5 : 2; प्रक 16 : 15; मत 24 : 43 **3 : 4** यहू 23 **3 : 5** नि 32 : 32-33; भज 69 : 28; प्रक 4 : 4; 6 : 11; 7 : 9; फिल 4 : 3; मत 10 : 32 **3 : 7** यश 22 : 22; अय्य 12 : 14 **3 : 8** 1 कुर 16 : 9 **3 : 9** यश 43 : 4; 45 : 14; 49 : 23; 60 : 14; 66 : 23 **3 : 10** प्रक 13 : 10; इब्र 10 : 13; लू 21 : 19; 2 तिम 2 : 12 **3 : 11** प्रक 1 : 3; 2 : 2, 5, 10 **3 : 12** यहेज 48 : 35; गल 2 : 9; यश 62 : 2; 65 : 15; प्रक 14 : 1; 22 : 4; 21 : 2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

परमेश्वर के यहाँ से स्वर्ग से उतरने वाला है
और अपना नया नाम भी उस पर अंकित
करूँगा। [13]जिसके कान हों, वह सुन ले कि
आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है।

लौदीकिया

[14]"लौदीकिया की कलीसिया के दूत को
यह लिखो :
"जो 'आमेन' है, जो विश्वस्त तथा सच्चा
साक्षी एवं परमेश्वर की सृष्टि का मूलस्रोत है,
उसका सन्देश इस प्रकार है: [15]मैं तुम्हारे आचरण
से परिचित हूँ। तुम न तो ठण्डे हो और न गर्म।
कितना अच्छा होता कि तुम ठण्डे या गर्म होते!
[16]लेकिन तुम न तो गर्म हो और न ठण्डे, बल्कि
कुनकुने हो, इसलिए मैं तुम को अपने मुख से
उगल दूँगा। [17]तुम यह कहते हो, 'मैं धनी हूँ,
मैं समृद्ध हो गया, मुझे किसी बात की कमी
नहीं', और तुम यह नहीं समझते कि तुम अभागे
हो, दयनीय हो, दरिद्र, अन्धे और नंगे हो।
[18]मेरी बात मानो। मुझ से आग में तपाया हुआ
सोना खरीद कर धनी हो जाओ; उजले वस्त्र
खरीद कर पहन लो और अपने नंगेपन की
लज्जा ढक लो; अंजन खरीद कर आंखों पर
लगाओ, जिससे तुम देख सको। [19]मैं जिन से
प्रेम करता हूँ, उन्हें डाँटता और दण्डित करता
हूँ। इसलिए उत्साही बनो और पश्चात्ताप करो।
[20]मैं द्वार के सामने खड़ा हो कर खटखटाता हूँ।
यदि तुम मेरी वाणी सुन कर द्वार खोलोगे, तो
मैं तुम्हारे पास भीतर आ कर तुम्हारे साथ भोजन
करूँगा और तुम मेरे साथ।
[21]"जो विजय प्राप्त करता है, उसको मैं
उसी तरह अपने साथ अपने सिंहासन पर
विराजमान होने का अधिकार दूँगा, जिस तरह
मैं विजय प्राप्त कर अपने पिता के साथ उसके
सिंहासन पर विराजमान हूँ। [22]जिसके कान हों,
वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या
कहता है।"

परमेश्वर का सिंहासन

4 इसके बाद मैंने एक दिव्य दृश्य देखा। मैंने
देखा कि स्वर्ग में एक द्वार खुला है और वह
तुरही-जैसी वाणी, जिसे मैंने पहले अपने से
बातें करते सुना था, बोल रही है: "यहाँ, ऊपर
आओ। मैं तुम्हें दिखाऊँगा कि इसके पश्चात्
क्या होने वाला है।"
[2]मैं तुरन्त आत्मा से आविष्ट हो गया। मैंने
देखा कि स्वर्ग में एक सिंहासन रखा हुआ है
और उस पर कोई विराजमान है, [3]जिसका रूप-
रंग सूर्यकान्त एवं रुधिराख्य के सदृश है और
सिंहासन के चारों ओर मरकतमणि-जैसा एक
आभा-मण्डल है। [4]सिंहासन के चारों ओर
चौबीस सिंहासन रखे हुए हैं और उन पर
चौबीस धर्मवृद्ध* विराजमान हैं। वे उजले वस्त्र
पहने हैं और उनके सिर पर सोने के मुकुट हैं।
[5]सिंहासन में से बिजलियाँ, वाणियाँ और
मेघगर्जन निकल रहे हैं। सिंहासन के सामने
सात अग्निदीप जल रहे हैं; वे परमेश्वर की सात
आत्माएँ हैं। [6]सिंहासन के आसपास का फर्श
मानो स्फटिक-सदृश पारदर्शी समुद्र है। सिंहासन
के मध्य और सिंहासन के चारों ओर चार प्राणी
हैं, जिनके आगे और पीछे आखें ही आंखें हैं।
[7]पहला प्राणी सिंह के सदृश है और दूसरा प्राणी
सांड़ के सदृश। तीसरे प्राणी का चेहरा मनुष्य-
जैसा है और चौथा प्राणी उड़ने वाले गरुड़ के
सदृश है। [8]चारों प्राणियों के छह-छह पंख हैं;
वे भीतर-बाहर आँखों से भरे हुए हैं और रात-
दिन निरन्तर यह कहते रहते हैं।

"पवित्र, पवित्र, पवित्र
सर्वशक्तिमान् प्रभु परमेश्वर!
जो था, जो है और जो आनेवाला है।"

---

* अथवा "वयोवृद्ध"। उनकी संख्या यरूशलेम के मंदिर में सेवारत पुरोहितों के चौबीस दलों के समान है।

3 : 14 भज 89 : 37; नीति 8 : 22 यो 1 : 3; कुल 1 : 15 **3 : 15** रोम 12 : 11; प्रक 2 : 2 **3 : 17** गण 12 : 8; 1 कुर 3 : 18; 4 : 8 3 : 18 1 पत 1 : 7; यश 55 : 1; प्रक 16 : 15 **3 : 19** नीति 3 : 12; इब्र 12 : 6; 1 कुर 11 : 32 **3 : 20** यो 14 : 23; मक 13 : 14; लू 12 : 36 **3 : 21** मत 19 : 28 **4 : 1** नि 19 : 16, 24; दान 2 : 29; प्रक 1 : 10, 19 **4 : 2** यहेज 10 : 1; 1 यश 6 : 1; भज 47 : 8 **4 : 3** यहेज 1 : 26-28 **4 : 4** प्रक 3 : 4; 5 : 10; यश 24 : 23 **4 : 5** नि 19 : 16; यहेज 1 : 13; प्रक 8 : 5; 11 : 19; 16 : 18; जक 4 : 2; तोब 12 : 15 **4 : 6** यहेज 1 : 22, 26; 10 : 1; यश 6 : 1 **4 : 7** यहेज 1 : 10; 10 : 14 **4 : 8** यश 1 : 2-3; 41 : 4; यहेज 1 : 18; 10 : 12; नि 3 : 14; आमो 4 : 13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

9जब-जब प्राणी सिंहासन पर विराजमान,
युग-युगों तक जीवत रहने वाले को महिमा,
सम्मान और धन्यवाद देते हैं, 10तब-तब चौबीस
धर्मवृद्ध सिंहासन पर विराजमान को दण्डवत्
करते हैं, युग-युगों तक जीवत रहने वाले की
आराधना करते और यह कहते हुए सिंहासन के
सामने अपने मुकुट डाल देते हैं:

11"हमारे प्रभु परमेश्वर!
तू महिमा, सम्मान और सामर्थ्य का अधिकारी
है;
क्योंकि तूने समस्त विश्व की सृष्टि की।
तेरी ही इच्छा से वह अस्तित्व में आया
और उसकी सृष्टि हुई है।"

मोहर लगी पुस्तक और मेमना

5 इसके बाद मैंने देखा कि जो सिंहासन पर
विराजमान है, उसके दाहिने हाथ में एक
लपेटी हुई पुस्तक है, जिस पर दोनों ओर लिखा
हुआ है और जिसे सात मोहरें लगा कर बन्द कर
दिया गया है। 2और मैंने एक शक्तिशाली स्वर्गदूत
को देखा, जो ऊँचे स्वर से पुकार रहा था,
"पुस्तक खोलने और उसकी मोहरें तोड़ने
योग्य कौन है?" 3किन्तु स्वर्ग में, पृथ्वी पर या
पृथ्वी के नीचे कोई ऐसा व्यक्ति नहीं मिला, जो
पुस्तक खोलने या पढ़ने में समर्थ हो। 4मैं फूट-
फूट कर रोने लगा, क्योंकि पुस्तक खोलने या
पढ़ने योग्य कोई नहीं मिला था। 5इस पर धर्मवृद्धों
में से एक ने मुझ से कहा, "मत रोओ! देखो,
वह, जो यहूदा कुल का सिंह है, जो दाऊद का
श्रेष्ठ वंशज है*, वह विजयी हुआ है। वह पुस्तक
और उसकी सात मोहरें खोलने योग्य है।"

6तब मैंने सिंहासन के पास के चार प्राणियों
और धर्मवृद्धों के बीच खड़े एक मेमने को
देखा। वह मानो वध किया हुआ मेमना था।
उसके सात सींग और सात नेत्र थे—ये परमेश्वर
की सात आत्माएं हैं, जिन्हें परमेश्वर ने सारी
पृथ्वी पर भेजा है। 7तब मेमने ने पास आ कर
सिंहासन पर बैठनेवाले के दाहिने हाथ से पुस्तक
ली। 8जब मेमना पुस्तक ले चुका, तब चार
प्राणी तथा चौबीस धर्मवृद्ध मेमने के सामने गिर
पड़े। प्रत्येक धर्मवृद्ध के हाथ में वीणा थी और
धूप से भरे स्वर्ण पात्र भी—ये सन्तों की प्रार्थनाएँ
हैं। 9वे यह कहते हुए एक नया गीत गा रहे थे:

"तू पुस्तक ग्रहण कर उसकी मोहरें खोलने
योग्य है,
क्योंकि तू वध किया गया था।
और तूने अपना रक्त बहा कर परमेश्वर के
लिए
प्रत्येक कुल, भाषा, प्रजाति और राष्ट्र से
मनुष्यों को ख़रीद लिया।
10तूने उन्हें हमारे परमेश्वर के लिए
पुरोहितों का राजवंश बना दिया है
और वे पृथ्वी पर राज्य करेंगे।"

11मैंने पुनः देखा, और सिंहासन, प्राणियों
और धर्मवृद्धों के चारों ओर खड़े बहुत-से
स्वर्गदूतों की आवाज सुनी—उनकी संख्या
लाखों और करोड़ों में थी। 12वे ऊँचे स्वर से
कह रहे थे:

"बलि किया हुआ मेमना
सामर्थ्य, वैभव, प्रज्ञा, शक्ति,
सम्मान, महिमा तथा स्तुति का अधिकारी
है।"

13तब मैंने समस्त सृष्टि को—आकाश में
और पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे और समुद्र
के अन्दर के प्रत्येक जीव को—यह कहते
सुना:

"सिंहासन पर विराजमान को
तथा मेमने को युगानुयुग स्तुति,
सम्मान, महिमा तथा सामर्थ्य!"

14और चार प्राणी बोले, "आमेन" और
धर्मवृद्धों ने मुँह के बल गिर कर वंदना की।

---

* शब्दशः, "दाऊद की मूल जड़।"

4 : 9 यश 6 : 1; भज 47 : 8; दान 4 : 34; 6 : 26; 12 : 7 **4 : 10** प्रक 5 : 14 **5 : 1** यश 6 : 1; 29 : 11; भज 47 : 8; प्रक 4 : 2; यहेज 2 : 9-10 **5 : 5** उत 49 : 9; यश 11 : 1., 10; प्रक 22 : 16 **5 : 6** यश 53 : 7; 11 : 2; यो 1 : 29, 36; प्रक 4 : 5; जक 4 : 10 **5 : 8** भज 141 : 2; प्रक 14 : 2; 15 : 2; 8 : 3-4 **5 : 9** भज 33 : 3; 144 : 9 **5 : 10** नि 19 : 6; यश 61 : 6; प्रक 1 : 6; 20 : 6; 22 : 5 **5 : 11** 1 रा 22 : 19; दान 7 : 10 **5 : 12** यश 53 : 7; 1 इति 29 : 11; फिल 2 : 8-10 **5 : 14** प्रक 4 : 10; 19 : 4 **6 : 1** प्रक 4 : 6; 5 : 1

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रथम छह मोहरें खोली जाती हैं

6 मैंने देखा कि मेमने ने उन सात मोहरों में
से पहली मोहर खोली। उस समय मैंने
चार प्राणियों में से एक को मेघगर्जन जैसे स्वर
में यह कहते सुना: "आओ!" 2और मेरी आँखों
के सामने एक सफ़ेद घोड़ा दिखाई पड़ा। जो
उस पर सवार था, उसके हाथ में धनुष था। उसे
एक मुकुट दिया गया और वह विजयी की तरह
विजय-यात्रा के लिए निकल पड़ा।

3जब मेमने ने दूसरी मोहर खोली, तो मैंने
दूसरे प्राणी को यह कहते सुना: "आओ!"
4और एक दूसरा घोड़ा प्रकट हुआ। वह लाल
था और जो उस पर सवार था, उसे पृथ्वी पर
से शान्ति उठा देने का अधिकार प्रदान किया
गया, जिससे मनुष्य एक दूसरे का संहार करें।
उसे एक बड़ी तलवार दी गयी।

5जब मेमने ने तीसरी मोहर खोली, तो मैंने
तीसरे प्राणी को यह कहते सुना: "आओ!"
और मेरी आँखों के सामने एक काला घोड़ा
दिखाई पड़ा। जो उस पर सवार था, उसके हाथ
में तराजू था। 6और चार प्राणियों के बीच मुझे
मानो एक वाणी यह कहते सुनाई पड़ी: "दिन
भर की मज़दूरी के मूल्य में मात्र एक किलो गेहूं
अथवा मात्र तीन किलो जौ! किन्तु जैतून के
तेल और दाखरस का दाम मत बढ़ाना।"

7जब मेमने ने चौथी मोहर खोली, तो मैंने
चौथे प्राणी को यह कहते सुना: "आओ!"
8और मेरी आँखों के सामने एक पीला घोड़ा
दिखाई पड़ा। जो उस पर सवार था, उसका
नाम था मृत्यु और उसके पीछे-पीछे अधोलोक
आ रहा था। उन्हें पृथ्वी के चौथाई भाग पर
अधिकार प्रदान किया गया, जिससे वे तलवार,
अकाल, महामारी और पृथ्वी के वन-पशुओं
द्वारा संहार करें।

9जब मेमने ने पाँचवीं मोहर खोली, तो मैंने
वेदी के नीचे उन लोगों की आत्माओं को देखा,
जो परमेश्वर के वचन के विषय में साक्षी देने
के कारण मारे गये थे। 10वे ऊँचे स्वर में यह
कहते हुए पुकार रहे थे: "परमपावन एवं
सत्यप्रतिज्ञ स्वामी! आप न्याय करने में और
पृथ्वी के निवासियों को हमारे रक्त का बदला
चुकाने में कब तक देर करेंगे?" 11उन में प्रत्येक
को एक उजला वस्त्र दिया गया और उन से
थोड़ा समय और धैर्य रखने को कहा गया, जब
तक उनके साथी-सेवकों एवं भाई-बहिनों की
संख्या पूरी न हो जाए, जो उनके समान मारे
जानेवाले थे।

12मैं देखता रहा: मेमने ने छठी मोहर खोली
और एक भारी भूकम्प हुआ। सूर्य कम्बल की
तरह काला हो उठा और पूरा चद्रमा रक्त की
तरह लाल। 13आकाश के तारे पृथ्वी पर गिर
पड़े, जैसे आँधी से हिलाये जाने पर अंजीर का
पेड़ अपने कच्चे फल झाड़ देता है। 14आकाश
विलीन हो गया, मानो किसी ने कागज के
पुलिन्दे को लपेट लिया हो। सभी पर्वत और
द्वीप अपने-अपने स्थान से हटा दिये गये।
15पृथ्वी के राजा, सामन्त, सेनापति, धनवान् और
शक्तिशाली लोग, दास और स्वतन्त्र व्यक्ति—
सब-के-सब पहाड़ों की गुफाअओं और
चट्टानों में छिप गये 16और वे पहाड़ों और
चट्टानों से बोल उठे: "हम पर गिर पड़ो और
सिंहासन पर विराजमान की दृष्टि से और मेमने
के क्रोध से हमें छिपा लो।" 17क्योंकि उन दोनों
के क्रोध का महादिवस आ गया है। अब कौन
टिक सकेगा?

परमेश्वर के कृपापात्र

7 इसके बाद मैंने पृथ्वी के चार कोनों पर चार
स्वर्गदूतों को खड़ा देखा। वे पृथ्वी के चारों
पवनों को रोक रहे थे, जिसके फलस्वरूप कोई
भी पवन न पृथ्वी पर बह रहा था, न समुद्र पर
और न किसी वृक्ष पर ही। 2मैंने एक अन्य दूत
को पूर्व से ऊपर उठते देखा। जीवन्त परमेश्वर

6 : 2 जक 1 : 8; 6 : 1-3 **6 : 8** हो 13 : 14; यिर 15 : 3; यहेज 5 : 12; 14 : 21 **6 : 9** प्रक 8 : 5; 14 : 18; 16 : 7 **6 : 10** जक 1 : 12; भज 79 : 10; व्य 32 : 43; उत 4 : 10; 2 रा 9 : 7; हो 4 : 1 **6 : 11** प्रक 3 : 4; 7 : 9; मत 23 : 32 **6 : 12** यश 13 : 10; यहेज 32 : 7-8; योए 2 : 30; लू 21 : 25 **6 : 13** यश 34 : 4 **6 : 15** भज 48 : 4; यश 2 : 10,19,21; यिर 4 : 29 **6 : 16** हो 10 : 8; लू 23 : 30 **6 : 17** योए 2 : 11,31; मला 3 : 2; सप 1 : 14,18; रोम 2 : 5 **7 : 1** यहेज 37 : 9; दान 7 : 2; जक 6 : 5; मत 24 : 31

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

की मुहर उसके पास थी और उसने उन चार
दूतों से, जिन्हें पृथ्वी और समुद्र को उजाड़ने का
अधिकार मिला था, पुकार कर कहा,3 "जब
तक हम अपने परमेश्वर के सेवकों के मस्तक
पर मुहर न लगायें, तब तक तुम न तो पृथ्वी को
उजाड़ना, न समुद्र को और न वृक्षों को।"
4और मैंने मुहर लगे लोगों की संख्या
सुनी—यह एक लाख चौवालीस हजार थी
और वे इस्राएलियों के सभी कुलों में से थे:
5यहूदा-कुल के बारह हजार मुहर लगे लोग,
रूबेन-कुल के बारह हजार,
गाद-कुल के बारह हजार,
6आशेर-कुल के बारह हजार,
नफ्ताली-कुल के बारह हजार,
मनश्शे कुल के बारह हजार,
7शिमोन-कुल के बारह हजार,
लेवी-कुल के बारह हजार,
इस्साकार-कुल के बारह हजार,
8जबूलून-कुल के बारह हजार,
यूसुफ-कुल के बारह हजार,
और बिन्यामिन-कुल के बारह हजार मुहर
लगे लोग।
9इसके बाद मैंने सभी राष्ट्रों, कुलों, प्रजातियों
और भाषाओं का एक ऐसा विशाल जनसमूह
देखा, जिसकी गिनती कोई भी नहीं कर सकता
था। वे उजले वस्त्र पहने तथा हाथ में खजूर की
डालियाँ लिये सिंहासन तथा मेमने के सामने
खड़े थे 10और ऊँचे स्वर से पुकार-पुकार कर
कह रहे थे: "सिंहासन पर विराजमान हमारे
परमेश्वर और मेमने की जय!"
11तब सिंहासन, धर्मवृद्धों और चार प्राणियों
के चारों ओर सब स्वर्गदूत खड़े हो गये। वे
सब-के-सब सिंहासन के सामने मुँह के बल
गिर पड़े और उन्होंने यह कहते हुए परमेश्वर
की आराधना की :
12"आमेन! हमारे परमेश्वर को
युगानुयुग तक
स्तुति, महिमा, प्रज्ञा, धन्यवाद,
सम्मान, सामर्थ्य और शक्ति! आमेन!"
13धर्मवृद्धों में से एक ने मुझ से पूछा, "ये
उजले वस्त्र पहने कौन हैं और कहाँ से आये
हैं?" 14मैंने उत्तर दिया, "महोदय, आप ही
जानते हैं", और उसने मुझसे कहा, "ये वे
लोग हैं, जो महासंकट में से निकल कर आये
हैं। इन्होंने मेमने के रक्त में अपने वस्त्र धो कर
उजले कर लिये हैं। 15इसलिए ये परमेश्वर के
सिंहासन के सामने खड़े रहते और रात-दिन
उसके मन्दिर में उसकी सेवा करते हैं। जो
सिंहासन पर विराजमान है, वह इन पर अपनी
छत्रछाया करेगा। 16इन्हें फिर कभी न तो भूख
लगेगी और न प्यास, इन्हें न तो धूप से कष्ट होगा
और न किसी प्रकार के ताप से; 17क्योंकि
सिंहासन के सामने विद्यमान मेमना इनका
चरवाहा होगा और इन्हें संजीवन जल के स्रोतों
के पास ले जाएगा। और परमेश्वर इनकी आंखों
से सब आँसू पोंछ डालेगा।"

सातवीं मोहर और सात तुरहियां

8 जब मेमने ने सातवीं मोहर खोली, तब
लगभग आधे घण्टे तक स्वर्ग में सन्नाटा
छाया रहा।
2इसके बाद मैंने देखा कि उन सात स्वर्गदूतों
को, जो परमेश्वर के सामने खड़े रहते हैं, सात
तुरहियाँ दी जा रही हैं। 3तब तक दूसरा स्वर्गदूत,
सोने का धूपदान लिये आया, और वेदी के
सामने खड़ा हो गया। उसे बहुत-सा धूप दिया
गया, जिससे वह उसे सब सन्तों की प्रार्थनाओं
के साथ सिंहासन के सामनेवाली स्वर्ण वेदी पर
चढ़ाये। 4और स्वर्गदूत के हाथ से धूप का
धूआँ, सन्तों की प्रार्थनाओं के साथ, ऊपर उठा
और परमेश्वर के सम्मुख पहुँचा। 5इसके बाद
स्वर्गदूत ने धूपदान ले कर उसे वेदी की आग
से भरा और पृथ्वी पर फेंक दिया। इस पर
मेघगर्जन, वाणियाँ और बिजलियाँ उत्पन्न हुईं
और भूकम्प हुआ।

---

7 : 3 यहेज 9 : 4,6 **7 : 4** प्रक 14 : 1.3 **7 : 9** प्रक 6 : 11 **7 : 10** प्रक 12 : 10 **7 : 11** प्रक 5 : 11; 11 : 16 **7 : 14** उत 49 : 11; दान 12 : 1; मत 24 : 21; इब्र 9 : 14 **7 : 15** प्रक 21 : 3,22 **7 : 16** यश 49 : 10 **7 : 17** यहेज 34 : 23; प्रक 5 : 6; यश 2 : 13; 31 : 16; भज 23 : 2; यिर 25 : 8 **8 : 1** जक 2 : 13; हब 2 : 20 **8 : 3** आमो 9 : 1; प्रकं 5 : 8 **8 : 4** भज 141 : 2 **8 : 5** लेव 16 : 12; नि 19 : 16; यहेज 10 : 2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रथम चार तुरहियों का वादन

6वे सात स्वर्गदूत, जिनके पास सात तुरहियाँ
थीं, अपनी-अपनी तुरही बजाने को तैयार हुए।
7पहले ने तुरही बजायी। इस पर रक्त से
मिश्रित ओले एवं आग उत्पन्न हुई और पृथ्वी
पर डाली गयी। एक तिहाई पृथ्वी भस्म हो
गयी, एक तिहाई वृक्ष भस्म हो गये और सारी
हरी घास भस्म हो गयी।
8दूसरे स्वर्गदूत ने तुरही बजायी। इस पर
मानो अग्नि से प्रज्वलित एक विशाल पर्वत
समुद्र में फेंका गया। एक तिहाई समुद्र रक्त बन
गया, 9समुद्र के एक तिहाई सृष्ट प्राणी मर गये
और एक तिहाई जलयान नष्ट हो गये।
10तीसरे स्वर्गदूत ने तुरही बजायी। इस पर
मशाल की तरह जलता हुआ एक विशाल नक्षत्र
आकाश से गिर पड़ा। वह एक तिहाई नदियों
पर और जलस्रोतों पर गिरा। 11नक्षत्र का नाम
''नागदौना'' है। एक तिहाई जल नागदौना के
सदृश कड़वा हो गया और बहुत-से लोग मर
गये, क्योंकि जल कड़वा हो गया था।
12चौथे स्वर्गदूत ने तुरही बजायी। इस पर
एक तिहाई सूर्य, एक तिहाई चन्द्रमा और एक
तिहाई नक्षत्रों पर आघात हुआ, जिससे उनका
एक तिहाई भाग अन्धकारमय हो गया: दिन के
एक तिहाई भाग में प्रकाश नहीं होता था और
रात की भी यही दशा थी।
13मैंने पुन: देखा और मध्य आकाश में उड़ने
वाले एक गरुड़ को ऊँचे स्वर में यह कहते
सुना, ''धिक्कार! धिक्कार! धिक्कार पृथ्वी के
निवासियों को उन तुरहियों के निनाद के
कारण, जिन्हें शेष तीन स्वर्गदूत बजाने वाले
हैं!''

पांचवीं तुरही

9 पाँचवें स्वर्गदूत ने तुरही बजायी। मैंने एक
तारा देखा, जो आकाश से पृथ्वी पर गिरा
था, और उसे अगाध गर्त्त के विवर की कुंजी दी
गयी। 2उसने अगाध गर्त्त का विवर खोला। इस
पर विवर में से धूआँ निकला, जो बड़ी भट्टी
के धूएँ-जैसा था और विवर के धूएँ से सूर्य और
वायुमण्डल अन्धकारमय हो गया। 3उस धूएँ में
से टिड्डियाँ पृथ्वी पर उतरीं और उन्हें पृथ्वी के
बिच्छुओं-जैसी शक्ति प्रदान की गयी। 4उन्हें
यह आदेश मिला कि वे घास अथवा किसी पौधे
या वृक्ष को हानि नहीं पहुँचायें, बल्कि केवल
उन मनुष्यों को, जिनके माथे पर परमेश्वर की
मुहर नहीं लगी हो। 5टिड्डियों को इन लोगों का
वध करने की नहीं, बल्कि इन्हें पाँच महीनों
तक पीड़ित करने की अनुमति दी गयी। उनकी
ऐसी यन्त्रणा थी, जैसी बिच्छुओं के मारने से
मनुष्यों की होती है। 6उन दिनों मनुष्य मृत्यु की
खोज करेंगे, किन्तु वह उन्हें नहीं मिलेगी। वे
मरने की अभिलाषा करेंगे, किन्तु मृत्यु उन से
भागती रहेगी।
7उन टिड्डियों की आकृति युद्ध के लिए
सुसज्जित अश्वों-जैसी थी। ऐसा लग रहा था
कि उनके सिरों पर स्वर्ण मुकुट थे। उनके मुख
मनुष्यों के मुख-जैसे थे। 8उनके केश स्त्रियों
के केश-जैसे और उनके दाँत सिंहों के दाँतों-
जैसे थे। 9ऐसा लग रहा था कि उनके कवच
लोहे के कवच थे। उनके डैनों की आवाज युद्ध
के लिए तेज दौड़नेवाले बहुसंख्यक रथों और
अश्वों की आवाज-जैसी थी। 10उनकी पूँछें,
जिन में डंक थे, बिच्छुओं की पूँछों-जैसी थीं।
उनकी पूँछों में मनुष्यों को पाँच महीनों तक
हानि पहुँचाने का सामर्थ्य था। 11उनका एक
राजा था, अर्थात् अगाध गर्त्त का दूत, जिसका
नाम इब्रानी में अबद्दोन है और यूनानी में
अप्पुलयोन*।
12पहली महाविपत्ति+ अब बीत चुकी है।
इसके बाद दो महाविपत्तियाँ और आनेवाली हैं।

---

* 'अबद्दोन' का अर्थ है 'विनाश' और अप्पुलयोन' का अर्थ है 'विनाशक'। +शब्दश:, ''धिक्कार''।

8 : 6-7 प्रज्ञ 11 : 5-12 : 2 **8 : 7** यहेज 38 : 22; योए 2 : 30; नि 9 : 23-26 **8 : 8** यिर 51 : 25; नि 7 : 20-21 **8 : 10** यश 14 : 12; दान 8 : 10 **8 : 12** प्रक 6 : 12; नि 10 : 21 **8 : 13** प्रक 9 : 12; 11 : 14 **9 : 1** प्रक 8 :10 ; 20 : 1 **9 : 2** उत 19 : 28; नि 19 : 18; योए 2 : 2,10 **9 : 3** नि 10 : 12,15; प्रज्ञ 16 : 9 **9 : 4** यहेज 9 : 4; प्रक 7 : 3 **9 : 6** अय्य 3 : 21; लू 23 : 30 **9 : 7** योए 2 : 4 **9 : 8** योए 1 : 6 **9 : 9** योए 2 : 5 **9 : 12** प्रक 8 : 13; 11 : 14

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

छठी तुरही

13छठे स्वर्गदूत ने तुरही बजायी। इस पर
परमेश्वर के सम्मुख अवस्थित स्वर्ण वेदी के
चार कोनों में से एक वाणी सुनाई पड़ी।14मैंने
उसे तुरहीधारी छठे स्वर्गदूत से यह कहते
सुना: "महानदी फरात के पास बँधे हुए चार
दूतों को खोल दो।"
15उन चार दूतों के बन्धन खोल दिये गये,
जो उसी घड़ी, दिन, महीने और वर्ष के लिए
प्रस्तुत थे, जब उन्हें एक तिहाई मनुष्यों का वध
करना था। 16घुड़सवार सैनिकों की संख्या
बीस करोड़ थी। मैंने उनकी संख्या की घोषणा
सुनी।
17मुझे उस दृश्य में वे घोड़े और उन पर
सवार सैनिक इस प्रकार दीख पड़े: सैनिक
अग्नि-जैसे लाल, धूम्रकान्त-जैसे नीले और
गन्धक-जैसे पीले कवच पहने हुए थे। घोड़ों
के सिर सिंहों के सिर-जैसे थे और उनके मुँह
से आग, धुआँ और गन्धक निकल रही थी।
18इन तीन विपत्तियों द्वारा, अर्थात् आग, धूएँ
और गन्धक द्वारा, जो घोड़ों के मुँह से निकल
रही थी, एक तिहाई मनुष्यों का वध किया गया।
19क्योंकि उन घोड़ों का सामर्थ्य उनके मुँह में
ही नहीं, उनकी पूँछ में भी था। उनकी पूँछें
साँपों के सदृश थीं, जिनके अपने सिर थे और
वे उन से भी हानि पहुँचाते थे।
20शेष मनुष्यों ने—जो इन विपत्तियों द्वारा
नहीं मारे गये थे—अपने हाथों के कर्मों के लिए
पश्चात्ताप नहीं किया। वे भूत-प्रेतों की पूजा
करते रहे और सोना, चाँदी, पीतल, पत्थर और
लकड़ी की उन देवमूर्तियों की भी, जो न तो
देख सकती हैं, न सुन और चल सकती हैं।
21उन्होंने अपने हत्याकाण्डों, अपने जादू-
टोनों, अपने व्यभिचार और अपनी चोरियों के
लिए भी पश्चात्ताप नहीं किया।

स्वर्गदूत और पुस्तिका

10 इसके बाद मैंने एक दूसरे शक्तिशाली
स्वर्गदूत को आकाश से उतरते देखा।
वह मेघ लपेटे हुए था और उसके सिर पर
इन्द्रधनुष शोभायमान था। उसका मुखमण्डल
सूर्य की तरह चमक रहा था और उसके पैर
अग्निस्तम्भ-जैसे थे। 2वह हाथ में एक खुली
पुस्तिका लिये था। उसने अपना दाहिना पैर
समुद्र पर रखा और बायाँ पैर पृथ्वी पर। 3वह
सिंहगर्जन-जैसे ऊँचे स्वर से चिल्ला उठा और
उसके चिल्लाने के बाद सात मेघगर्जन बोलने
लगे। 4जब सात मेघगर्जन बोल चुके, तो मैं
लिखने ही वाला था कि मैंने स्वर्ग से एक वाणी
को यह कहते सुना, "सात मेघगर्जनों का
सन्देश मुहरबन्द कर गुप्त रखो; उसे मत
लिखो।" 5तब जिस स्वर्गदूत को मैंने समुद्र
और पृथ्वी पर खड़ा देखा था, उसने अपना
दाहिना हाथ स्वर्ग की ओर ऊपर उठाया। 6जो
युग-युगों तक जीता रहता है, जिसने स्वर्ग और
उस में जो कुछ है, पृथ्वी और उस पर जो कुछ
है एवं समुद्र और उस में जो कुछ है, उसकी
सृष्टि की, उसकी शपथ खा कर स्वर्गदूत ने यह
कहा, "अब और देर नहीं होगी। 7जिस दिन
सातवें स्वर्गदूत की तुरही सुनाई पड़ेगी, उस
दिन परमेश्वर का गुप्त रहस्य पूरा हो जायेगा,
जैसा कि उसने अपने सेवकों, अर्थात् नबियों
को सूचित किया था।"
8जो वाणी मैंने स्वर्ग से आते हुए सुनी थी,
वह उस समय फिर मुझे सम्बोधित कर बोली,
"जाओ, जो स्वर्गदूत समुद्र और पृथ्वी पर
खड़ा है, उसके हाथ से वह खुली पुस्तक ले
लो।" 9इसलिए मैंने स्वर्गदूत के पास जाकर
उस से निवेदन किया कि वह मुझे पुस्तिका दे
दे। उसने कहा, "इसे ले लो और खाओ। यह
तुम्हारे पेट में कड़ुवी, किन्तु तुम्हारे मुँह में मधु-

---

9 : 13 प्रक 8 : 3; नि 30 : 1-3 **9 : 14** उत 15 : 18; व्य 1 : 7; यहो 1 : 4; प्रक 16 : 12 **9 : 15** प्रक 8 : 7-12 **9 : 17** प्रज्ञ 11 : 17-18 **9 : 20** यश 2 : 8,20; 17 : 8; दान 5 : 4; 1 कुर 10 : 20; भज 115 : 4; 135 : 15; प्रक 16 : 9,11,21 **9 : 21** 2 रा 9 : 22 **10 : 1** प्रक 5 : 2; 4 : 3 **10 : 3** यिर 25 : 30; हो 11 : 10; आमो 1 : 2 **10 : 4** दान 8 : 26; 12 : 4, 9 **10 : 5** व्य 32 : 40 **10 : 6** उत 14 : 19,22; नह 9 : 6; नि 20 : 11; भज 146 : 6; प्रक 6 : 11; दान 12 : 7 **10 : 7** आमो 3 : 7; दान 9 : 6,10; जक 1 : 6; प्रे 3 : 21; प्रक 11 : 15; 17 : 17 **10 : 9** यहेज 2 : 8; 3 : 1-3

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जैसी मीठी लगेगी।'' 10मैंने स्वर्गदूत के हाथ
से पुस्तिका ले ली और खायी। वह मेरे मुँह में
मधु-जैसी मीठी लगी, किन्तु जब मैं उसे खा
चुका, तो मेरा पेट कड़ुवा हो गया। 11तब मुझ
से कहा गया, ''तुम्हें फिर प्रजातियों, राष्ट्रों,
भाषाओं और बहुत-से राजाओं के विषय में
नबूवत करनी है।''

दो साक्षी

11 इसके बाद किसी ने मुझे मापक-दण्ड
के रूप में एक सरकण्डा दिया और
कहा: ''उठो, परमेश्वर का मन्दिर, वेदी और
वहाँ के आराधकों को नापो। 2किन्तु मन्दिर का
बाहरी प्रांगण छोड़ देना, उसे मत नापना;
क्योंकि वह अन्यधर्मियों के हवाले कर दिया
गया है और वे पवित्र नगर को बयालीस महीनों
तक रौंदते रहेंगे। 3मैं अपने दो साक्षियों को
आदेश दूँगा कि वे उन बारह सौ साठ दिनों तक
टाट ओढ़े नबूवत करते रहें।''

4ये साक्षी वे जैतून के दो पेड़ और दो
दीपाधार हैं, जो पृथ्वी के प्रभु के सामने खड़े
हैं। 5यदि कोई इन्हें हानि पहुँचाना चाहता है,
तो इनके मुख से आग निकलती है और वह
इनके शत्रुओं को नष्ट कर देती है। जो इन्हें
हानि पहुँचाना चाहेगा, उसे इसी प्रकार मरना
होगा। 6इन्हें आकाश का द्वार बन्द करने का
अधिकार है, ताकि इनकी नबूवत के समय
पानी नहीं बरसे। इन्हें पानी को रक्त में बदलने
का और जब-जब ये चाहें, तब-तब पृथ्वी पर
हर प्रकार की महामारी भेजने का अधिकार है।

7जब ये अपनी साक्षी दे चुके होंगे, तो
अगाध गर्त्त में से ऊपर उठनेवाला पशु इन से
युद्ध करेगा और इन्हें परास्त कर इनका वध
करेगा। 8इनकी लाशें उस महानगर के चौक में
पड़ी रहेंगी, जो लाक्षणिक भाषा में सदोम या
मिस्त्र कहलाता है और जहाँ इनके प्रभु को क्रूस
पर चढ़ाया गया था। 9साढ़े तीन दिनों तक हर
प्रजाति, कुल, भाषा और राष्ट्र के लोग इनकी
लाशें देखने आयेंगे और इन्हें कबर में रखने की
अनुमति नहीं देंगे। 10पृथ्वी के निवासी इनके
कारण उल्लसित हो कर आनन्द मनायेंगे और
एक दूसरे को उपहार देंगे, क्योंकि ये दो नबी
पृथ्वी के निवासियों को सताया करते थे।

11किन्तु साढ़े तीन दिनों बाद परमेश्वर की
ओर से इन दोनों में जीवन का श्वास आया और
ये उठ खड़े हुए। तब सब देखनेवालों पर घोर
आतंक छा गया। 12स्वर्ग से एक उच्चवाणी इन
से यह कहती हुई सुनाई पड़ी, ''यहाँ, ऊपर
आओ,'' और ये अपने शत्रुओं के देखते-देखते
बादल में स्वर्ग चले गये। 13उसी समय भारी
भूकम्प हुआ और नगर का दसवाँ भाग मिट्टी
में मिल गया। सात हजार लोग भूकम्प में मर
गये और जो बच गये, उन्होंने भयभीत हो कर
स्वर्ग के परमेश्वर की स्तुति की।

14अब दूसरी महाविपत्ति बीत गयी। देखो,
तीसरी महाविपत्ति शीघ्र ही आनेवाली है।

सातवीं तुरही

15सातवें स्वर्गदूत ने तुरही बजायी। इस पर
स्वर्ग में वाणियाँ सुनाई पड़ीं, जो ऊँचे स्वर से
कह रही थीं :

''इस संसार का राज्य
हमारे प्रभु और उसके मसीह का राज्य बन
गया है।
वह युग-युगों तक राज्य करेंगे।''

16चौबीस धर्मवृद्ध, जो परमेश्वर के सामने
अपने आसनों पर विराजमान हैं, मुँह के बल
गिर पड़े और यह कहते हुए परमेश्वर की
आराधना करने लगे:

17 ''सर्वशक्तिमान् प्रभु परमेश्वर,
जो है और जो था !
हम तुझे धन्यवाद देते हैं,

10 : 11 यिर 1 : 10; 25 : 30; दान 3 : 4 **11 : 1** यहेज 40 : 3; जक 2 : 1-2 **11 : 2** यश 63 : 18; लू 21 : 24; भज 79 : 1; दान 8 : 10 **11 : 3** प्रक 12 : 6, 14; 13 : 5 **11 : 4** जक 4 : 3, 11-14 **11 : 5** 2 रा 1 : 10; 2 शम 22 : 9; यिर 5 : 14 **11 : 6** 1 रा 17 : 1; 1 शम 4 : 8; नि 7 : 17, 19-20 **11 : 7** दान 7 : 3, 21; प्रक 13 : 1.7; 7 : 8 **11 : 8** यश 1 : 10; लू 13 : 34 **11 : 10** यो 16 : 20; एस 9 : 22; 1 रा 18 : 17 **11 : 11** यहेज 37 : 5,10; उत 15 : 12 **11 : 12** 2 रा 2 : 11 **11 : 13** दान 2 : 19; यहेज 38 : 19-20 **11 : 14** प्रक 9 : 12; 12 : 12 **11 : 15** दान 2 : 44; 7 : 14, 27; जक 14 : 9; नि 15 : 18; ओब 21; भज 2 : 2; 10 : 16; 22 : 28 **11 : 16** प्रक 4 : 4, 10; 7 : 11 **11 : 17** नि 3 : 14; यश 41 : 4; प्रक 4 : 8; 18 : 6

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

क्योंकि तू ने अपने सामर्थ्य का प्रदर्शन किया
और राज्याधिकार ग्रहण कर लिया है ।
18 "राष्ट्र क्रुद्ध हो गये थे,
किन्तु अब तेरा क्रोध आ गया है
और वह समय भी
जब मृतकों का न्याय किया जायेगा ;
जब तेरे सेवकों, तेरे नबियों और तेरे सन्तों
को
पुरस्कार दिया जायेगा
और उन सब को भी,
चाहे वे छोटे या बड़े हों,
जो तेरे नाम पर श्रद्धा रखते हैं।
और वह समय आ पहुँचा
जब उन लोगों का विनाश किया जायेगा,
जो पृथ्वी का विनाश करते हैं।"

अन्य दर्शनों का आरंभ

19तब स्वर्ग में परमेश्वर का मन्दिर खुल गया
और मन्दिर में परमेश्वर के विधान की मंजूषा
दिखाई पड़ी। बिजलियाँ, वाणियाँ एवं मेघगर्जन
उत्पन्न हुए, भूकम्प हुआ और भारी ओला-
वृष्टि हुई।

महिला और पंखदार सर्प

12 आकाश* में एक महान् चिह्न दिखाई
दिया: सूर्य का वस्त्र ओढ़े एक महिला
दिखाई पड़ी। उसके पैरों तले चन्द्रमा था और
उसके सिर पर बारह नक्षत्रों का मुकुट। 2वह
गर्भवती थी और प्रसव- वेदना से पीड़ित होकर
चिल्ला रही थी। 3तब आकाश में एक अन्य
चिह्न दिखाई पड़ा: लाल रंग का एक बहुत बड़ा
पंखदार सर्प। **उसके सात सिर थे, दस सींग
थे और हर एक सिर पर एक मुकुट था। 4उसकी
पूँछ ने आकाश के एक तिहाई तारे बुहार कर
पृथ्वी पर फेंक दिये। वह पंखदार सर्प प्रसव-
पीड़ित महिला के सामने खड़ा रहा, जिससे वह
नवजात शिशु को निगल जाये । 5उस महिला
ने एक पुत्र को जन्म दिया, जो पुरुष होकर
लोह-दण्ड से सब राष्ट्रों पर शासन करेगा।
किन्तु उस शिशु को उठा कर परमेश्वर और
उसके सिंहासन तक पहुँचा दिया गया। 6तब
वह महिला निर्जन प्रदेश की ओर भाग गयी,
जहाँ परमेश्वर ने उसके लिए आश्रय तैयार
करवाया था और उसे बारह सौ साठ दिनों+ तक
भोजन मिलने वाला था।
7अब स्वर्ग में युद्ध छिड़ गया। मीखाएल
और उसके दूतों को पंखदार सर्प से लड़ना
पड़ा । पंखदार सर्प और उसके दूतों ने उनका
सामना किया, 8किन्तु वे नहीं टिक सके और
स्वर्ग में उनके लिए कोई स्थान नहीं रहा। 9तब
वह विशालकाय पंखदार सर्प—वह पुराना
साँप, जो दोष लगाने वाला शैतान कहलाता
और सारे संसार को भटकाता है—अपने दूतों
के साथ पृथ्वी पर पटक दिया गया। 10मैंने स्वर्ग
में किसी को ऊँचे स्वर से यह कहते सुना,
"अब हमारे परमेश्वर का उद्धार, सामर्थ्य
तथा राजत्व
और उसके मसीह का अधिकार प्रकट हुआ
है;
क्योंकि हमारे भाई-बहिनों पर अभियोग
लगाने वाला गिरा दिया गया है,
जो दिन-रात हमारे परमेश्वर के सामने
उन पर अभियोग लगाया करता था।
11 "वे मेमने के रक्त के द्वारा
और अपनी साक्षी के वचन के द्वारा
शैतान पर विजयी हुए;
क्योंकि उन्होंने अपने जीवन का मोह छोड़कर
मृत्यु का स्वागत किया।
12 "इसलिए स्वर्ग और उसके निवासी
आनन्द मनायें।

---

* अथवा, "स्वर्ग"। ** अथवा, "अजगर"। + अर्थात, "साढ़े तीन वर्ष" अथवा "बयालीस महीने"।

11 : 18 प्रक 15 : 1; रोम 2 : 5; भज 2 : 1, 5; 46 : 6; 115 : 13; 99 : 1; आमो 3 : 7; जक 1: 6 ; दान 9 : 6, 10 **11 : 19** 1 रा 8 : 1, 6 ; 2 इति 5 : 7; नि 9 : 24; 19 : 16; प्रक 15 : 5; 4 : 5 2 मक 2 : 4-8 **12 : 2** यश 66 : 7; मी 4 : 10 **12 : 3** दान 7 : 7 **12 : 4** दान 8 : 10 **12 : 5** यश 66 : 7 भज 2 : 9; प्रक 19 : 15 **12 : 6** प्रक 11 : 2-3 **12 : 7** दान 10 : 13, 21; 12 : 1; यहू 9; मत 25 : 41 **12 : 9** लू 10 : 18; उत 3 : 1, 14; यो 12 : 31 **12 : 10** प्रक 11 : 15; अय्य 1 : 11; जक 3 : 1 **12 : 11** प्रक 7 : 14; रोम 8 : 37 **12 : 12** यश 44 : 23; 49 : 13

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

किन्तु धिक्कार तुम्हें, ओ पृथ्वी और समुद्र!
क्योंकि यह जान कर कि मेरा थोड़ा समय
ही शेष है,
शैतान तीव्र क्रोध के आवेश में तुम पर उतर
आया है।''
13जब पंखदार सर्प ने देखा कि उसे पृथ्वी
पर पटक दिया गया है, तो वह उस महिला का
पीछा करने लगा, जिसने उस पुत्र-पुरुष को
जन्म दिया था। 14परन्तु महिला को विशालकाय
गरुड़ के दो पंख मिले, जिससे वह निर्जन प्रदेश
में अपने उस आश्रय-स्थान को उड़ जाये, जहाँ
उसे, सर्प की पहुँच से परे, साढ़े तीन वर्ष** तक
भोजन मिलनेवाला था। 15सर्प ने नदी-जैसी
जलधारा अपने मुँह से उगल कर महिला के
पीछे छोड़ दी, जिससे वह महिला को अपनी
बाढ़ में बहा ले जाये। 16किन्तु पृथ्वी ने महिला
की सहायता की और अपना मुँह खोल कर
उस नदी को निगल गयी, जो पंखदार सर्प के
मुँह से निकली थी। 17इस पर पंखदार सर्प को
महिला पर बड़ा क्रोध आया और वह उसकी
शेष सन्तान से युद्ध करने निकला, अर्थात् उन
लोगों से जो परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन
करते और येशु के विषय में दी हुई साक्षी पर
अटल रहते हैं। 18इसके बाद पंखदार सर्प++
समुद्र के बालू पर खड़ा हो गया।

दो पशु

13 तब मैंने एक पशु+ को समुद्र में से ऊपर
आते देखा। उसके दस सींग और सात
सिर थे। उसके सींगों पर दस मुकुट थे और
उसके प्रत्येक सिर पर एक ईशनिन्दक नाम
अंकित था। 2मैंने जिस पशु को देखा, वह चीते
के सदृश था, किन्तु उसके पैर भालू के पैरों-
जैसे थे और उसका मुँह सिंह के मुँह-जैसा था।
पंखदार सर्प ने उसे अपना सामर्थ्य, अपना
सिंहासन और महान् अधिकार प्रदान किया।
3ऐसा लग रहा था कि उसके एक सिर पर
सांघातिक प्रहार किया गया था, किन्तु वह
सांघातिक घाव अच्छा हो गया था। समस्त
संसार आश्चर्यचकित हो कर उस पशु के पीछे
हो लिया। 4लोगों ने पंखदार सर्प की पूजा की,
क्योंकि उसने पशु को अधिकार प्रदान किया था
और उन्होंने यह कहते हुए पशु की भी पूजा की,
''इस पशु की बराबरी कौन कर सकता है ? इस
से युद्ध करने में कौन समर्थ है ?'' 5पशु को
डींग मारने एवं ईश-निन्दा करने की अनुमति
और बयालीस महीनों तक बने रहने का
अधिकार दिया गया। 6इस पर वह परमेश्वर का
अपमान करने और उसके नाम, उसके निवास-
स्थान और उन लोगों की निन्दा करने लगा, जो
स्वर्ग में निवास करते हैं। 7उसे सन्तों से युद्ध
करने एवं उन्हें परास्त करने की अनुमति मिली
और हर एक कुल, प्रजाति, भाषा और राष्ट्र पर
अधिकार दिया गया। 8पृथ्वी के वे सब निवासी
पशु की पूजा करेंगे, जिनके नाम वध किये हुए
मेमने के जीवन-ग्रन्थ में संसार के प्रारम्भ से
अंकित नहीं हैं। 9जिसके कान हों, वह सुन ले।
10जिसे बन्दी बनना है, वह बन्दी बनाया
जायेगा। जिसे तलवार से मरना है, वह तलवार
से मारा जायेगा। अब सन्तों के धैर्य और
विश्वास का समय है।
11तब मैंने एक दूसरा पशु* पृथ्वी में से ऊपर
आते देखा। उसके मेमने के सींग-जैसे दो सींग
थे और वह पंखदार सर्प की तरह बोलता था।
12वह पहले पशु के निरीक्षण में उसके समस्त
अधिकार का उपयोग करता है। वह पृथ्वी और
उसके निवासियों द्वारा पहले पशु की, जिसका
सांघातिक घाव अच्छा हो गया है, पूजा करवाता
है। 13वह महान् चमत्कार दिखाता है, यहाँ तक
कि वह लोगों के देखते आकाश से पृथ्वी पर
आग बरसाता है। 14पशु के निरीक्षण में उस को

** अक्षरशः, ''एक काल, (दो) कालों, और अर्द्धकाल''। ++पाठान्तर, ''इसके बाद मैं''। + पाठकों के लिए उन पर अत्याचार करने वाले साम्राज्य का एक सुस्पष्ट प्रतीक। * आगे उस दूसरे पशु को ''झूठा नबी'' कहा गया है।

12 : 14 दान 7 : 25; 12 : 7 **12 : 17** प्रक 13 : 7; 14 : 12; 19 : 10; 1 यो 5 : 10; उत 3 : 15 **13 : 1** प्रक 11 : 7; 17 : 3, 9,12; दान 7 : 7 **13 : 2** प्रक 12 : 3; दान 7 : 4-6 **13 : 3** प्रक 17 : 8 **13 : 5** दान 7 : 8,11, 25; प्रक 11 : 2; 12 : 6, 14 **13 : 7** प्रक 11 : 7; दान 7 : 21 **13 : 8** दान 12 : 1; भज 69 : 28; यश 53 : 7; प्रक 12 : 12; 3 : 5; 17 : 8 **13 : 10** यिर 15 : 2; मत 26 : 52; प्रक 14 : 12 **13 : 11** प्रक 16 : 13; मत 7 : 15 **13 : 13** मत 24 : 24; 2 थिस 2 : 9-10; 1 रा 18 : 24-39 **13 : 14** प्रक 19 : 20; व्य 13 : 2-4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जिन चमत्कारों को दिखाने की अनुमति मिली
है, उन चमत्कारों द्वारा वह पृथ्वी के निवासियों
को बहकाता है। वह पृथ्वी के निवासियों द्वारा
उस पशु के आदर में एक प्रतिमा बनवाता है,
जो तलवार का प्रहार सहने पर भी जीवित है।
15उसे पशु की प्रतिमा में प्राण डालने की
अनुमति मिली, जिसके फलस्वरूप वह प्रतिमा
बोल सकी और उन सब को मरवा देती थी, जो
पशु की प्रतिमा की आराधना नहीं करते थे।
16वह दूसरा पशु सभी लोगों को—चाहे वे छोटे
हों या बड़े, धनी हों या दरिद्र, स्वतन्त्र हों या
दास—इसके लिए बाध्य करता है कि वे अपने
दाहिने हाथ अथवा अपने माथे पर छाप
लगवायें। 17जिस पर वह छाप—पशु का नाम
अथवा उसके नाम की संख्या—नहीं लगी है,
वह लेन-देन नहीं कर सकता। 18यहाँ समझ
की आवश्यकता है। जो बुद्धिमान् है, वह पशु
के नाम की संख्या निकाले, क्योंकि वह किसी
मनुष्य के नाम की संख्या है और उसकी संख्या
छह सौ छियासठ है। **

मेमने और उसके अनुयायी

14 मैंने फिर देखा। मेमना सियोन पर्वत पर
खड़ा है। उसके साथ एक लाख
चौवालीस हजार व्यक्ति हैं, जिनके माथे पर
उसका नाम और उसके पिता का नाम अंकित
है। 2मैंने तेजी से बहती हुई नदियों के निनाद
और घोर मेघगर्जन की-सी आवाज स्वर्ग से
आती हुई सुनी। मैं जो स्वर सुन रहा था, वह
वीणा बजाने वाले वीणा-वादकों का-सा स्वर
था। 3वे व्यक्ति सिंहासन के सामने और चार
प्राणियों एवं धर्मवृद्धों के सामने मानो एक नया
गीत गा रहे थे। उन एक लाख चौवालीस हजार
व्यक्तियों के सिवा, जिन को पृथ्वी पर से खरीद
लिया गया था, और कोई वह गीत नहीं सीख
सकता था। 4ये वे लोग हैं जो मूर्तिपूजा* के संसर्ग
से दूषित नहीं हुए हैं, ये कुँवारे हैं। जहाँ कहीं
भी मेमना जाता है, ये उसके साथ चलते हैं।
परमेश्वर और मेमने के लिए प्रथम फल के रूप
में इन्हें मनुष्यों में से खरीदा गया है। 5इनके मुख
में झूठ नहीं पाया गया : ये अनिन्दनीय हैं।

न्याय का दिन

6तब मैंने एक अन्य स्वर्गदूत को मध्य
आकाश में उड़ते देखा। पृथ्वी पर रहनेवालों
को, हर एक राष्ट्र, कुल, भाषा और प्रजाति को
सुनाने के लिए उसके पास एक शाश्वत शुभ-
समाचार था। 7वह ऊँचे स्वर से यह कह रहा
था, "परमेश्वर पर श्रद्धा रखो! उसकी स्तुति
करो! क्योंकि उसके न्याय का दिन आ गया है।
जिसने स्वर्ग और पृथ्वी, समुद्र और जलस्रोतों
की रचना की, उसकी आराधना करो।"
8उसके पीछे एक दूसरा स्वर्गदूत आया और
बोला "उसका सर्वनाश हो गया है! महान्
नगरी बेबीलोन का सर्वनाश हो गया है! उसने
सभी राष्ट्रों को अपने व्यभिचार की तीखी
मदिरा+ पिलायी थी।"
9फिर उसके पीछे एक तीसरा स्वर्गदूत आया
और ऊंचे स्वर से बोला, "यदि कोई पशु या
उसकी प्रतिमा की आराधना करेगा और अपने
माथे या अपने हाथ पर उसकी छाप ग्रहण
करेगा, 10तो उसे परमेश्वर के क्रोध की मदिरा
पिलायी जायेगी, जो बिना मिलावट के, उसके
क्रोध के प्याले में ढाली गयी है। और वह पवित्र
स्वर्गदूतों और मेमने के सामने आग और गन्धक
की यन्त्रणा भोगेगा। 11जो लोग पशु या उसकी
प्रतिमा की आराधना करते अथवा उसके नाम
की छाप ग्रहण करते हैं, उनकी यन्त्रणा का
धूआँ युग-युगों तक ऊपर उठता रहेगा और
उन्हें रात-दिन कभी चैन नहीं मिलेगा।"

** कुछ प्राचीन प्रतियों के अनुसार, 'छह सौ सोलह'। इब्रानी और यूनानी भाषाओं में प्रत्येक वर्ण एक निश्चित संख्या का प्रतीक है। देखिए 17 : 8-11 पर। * अथवा, 'देवदासियों' अथवा, 'स्त्रियों'। +अर्थात् "मूर्तिपूजा की मादक मदिरा"।

13 : 15 दान 3 : 5-6 **13 : 16** प्रक 19 : 20 **13 : 18** प्रक 17 : 9 **14 : 1** प्रक 7 : 4; 3 : 12; यहेज 9 : 4 **14 : 2** यहेज 1 : 24; 43 : 2; प्रक 1 : 15 **14 : 3** भज 33 : 3; 40 : 3; 96 : 1; 144 : 9; 149 : 1; यश 42 : 10; प्रक 5 : 9 **14 : 4** 2 कुर 11 : 2; इफ 5 : 27 **14 : 5** भज 32 : 2; यश 53 : 9; सप 3 : 13 **14 : 6** प्रक 8 : 13 **14 : 7** नि 20 : 11; भज 146 : 6 **14 : 8** दान 4 : 30; प्रक 18 : 2; यश 21 : 9; यिर 51 : 7-8 **14 : 9** प्रक 13 : 12-17 **14 : 10** यश 51 : 17; भज 75 : 8; उत 19 : 24; यहेज 38 : 22; यिर 25 : 15; प्रक 16 : 19 **14 : 11** यश 34 : 9-10; प्रक 19 : 3

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

[12]अब सन्तों के धैर्य का समय है, जो
परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते और
येशु में** विश्वास बनाये रखते हैं। [13]मैंने स्वर्ग
में किसी को मुझ से यह कहते सुना, "लिखोः
धन्य हैं वे मृतक, जो अब से प्रभु में विश्वास
करते हुए मरते हैं!" आत्मा कहता है, "ऐसा
ही हो, ताकि वे अपने परिश्रम के बाद विश्राम
करें, क्योंकि उनके सत्कर्म उनके साथ जाते
हैं।"

पृथ्वी की फ़सल

[14]मैंने देखा कि एक उजला बादल दिखाई
पड़ रहा है। उस पर मानव पुत्र-जैसा कोई बैठा
हुआ है। उसके सिर पर सोने का मुकुट है और
हाथ में एक पैना हँसिया। [15]एक अन्य स्वर्गदूत
मन्दिर से निकला और ऊँचे स्वर से पुकारते हुए
बादल पर बैठनेवाले से बोला, "अपना हँसिया
चला कर लुनिए, क्योंकि कटनी का समय आ
गया है और पृथ्वी की फ़सल पक चुकी है।"
[16]बादल पर बैठनेवाले ने अपना हँसिया पृथ्वी
पर चलाया और पृथ्वी की फ़सल कट गयी।
[17]तब एक दूसरा स्वर्गदूत स्वर्ग के मन्दिर से
निकला। वह स्वयं एक पैना हँसिया लिये था।
[18]एक और स्वर्गदूत ने, जिसे अग्नि पर अधिकार
था, वेदी पर से आ कर ऊँचे स्वर से उस स्वर्ग-
दूत से कहा, जो पैना हंसिया लिये था, "अपना
पैना हँसिया चला कर पृथ्वी की दाखबारी के
गुच्छे बटोर लीजिए, क्योंकि उसके अंगूर पक
चुके हैं।" [19]इस पर स्वर्गदूत ने अपना हँसिया
चलाया और पृथ्वी की दाखबारी की फ़सल
बटोर कर उसे परमेश्वर के कोप-रूपी विशाल
कुण्ड में डाल दिया। [20]नगर के बाहर कुण्ड रौंद
दिया गया और उस में से जो रक्त निकला, वह
तीन सौ किलोमीटर+ की दूरी तक, घोड़ों की
बागडोर की ऊँचाई तक, पहुँच गया।

विजय का गीत

15 मैंने स्वर्ग में एक और महान् एवं
आश्चर्यजनक चिह्न देखा। सात
स्वर्गदूत सात विपत्तियाँ लिये थे। ये अन्तिम
विपत्तियाँ हैं, क्योंकि इनके द्वारा परमेश्वर का
क्रोध पूरा हो जाता है।
[2]मैंने आग से मिश्रित काँच के समुद्र-सा
कुछ देखा। वे व्यक्ति जिन्होंने पशु पर, उसकी
प्रतिमा पर और उसके नाम की संख्या पर
विजय पाई थी, काँच के समुद्र के तट पर खड़े
थे। वे परमेश्वर की वीणाएँ लिये [3]परमेश्वर के
सेवक मूसा का गीत और मेमने का गीत गाते
हुए कह रहे थे;

"सर्वशक्तिमान् प्रभु परमेश्वर!
तेरे कार्य महान् और अपूर्व हैं।
राष्ट्रों के राजा!
तेरे मार्ग न्यायसंगत और सच्चे हैं।
[4]प्रभु! कौन तुझ पर श्रद्धा
और तेरे नाम की स्तुति नहीं करेगा?
क्योंकि तू ही पवित्र है।
सभी राष्ट्र आ कर तेरी आराधना करेंगे,
क्योंकि तेरे न्यायसंगत निर्णय प्रकट हो गये
हैं।"

सात प्याले

[5]इसके बाद मैंने देखा कि स्वर्ग में साक्षी-
शिविर का मन्दिर खुल रहा है। [6]उस मन्दिर में
से सात विपत्तियाँ लिये सात स्वर्गदूत निकले।
वे स्वच्छ और उज्जवल छालटी पहने थे और
उनके वक्षस्थल पर स्वर्ण मेखलाएँ बाँधी हुई
थीं। [7]चार प्राणियों में से एक ने सात स्वर्गदूतों
को सात सोने के प्याले दिये, जिन में युग-युगों
तक जीवित रहने वाले परमेश्वर का क्रोध भरा
हुआ था। [8]परमेश्वर की महिमा और उसके
सामर्थ्य के कारण मन्दिर धूएँ से भर गया था

** अथवा, "येशु का"। + मूल में, "सोलह सौ स्तदियन"; चौगुनात्मक संख्या, देखिए 21 : 16 पर।

14 : 12 प्रक 13 : 10; 12 : 17 **14 : 13** इब्र 4 : 10; 1 कुर 15 : 58 **14 : 14** दान 7 : 13; 10 : 16; मत 13 : 39, 41 **14 : 15** योए 3 : 13 **14 : 19** प्रक 19 : 15 **14 : 20** योए 3 : 13; यश 63 : 3 **15 : 1** लेव 26 : 21; प्रक 6 : 17; 11 : 18; 12 : 1 **15 : 2** प्रक 4 : 6; 13 : 15; 5 : 8 **15 : 3** व्य 32 : 4; यहो 14 : 7; नि 15 : 1, 11; 34 : 10; भज 111 : 2; 139 : 14; 145 : 17; यिर 10 : 6-7; प्रक 5 : 9 **15 : 4** भज 86 : 9; मला 1 : 11 **15 : 5** नि 40 : 34; प्रक 11 : 19 **15 : 6** लेव 26 : 21; यहेज 28 : 13 **15 : 7** प्रक 4 : 6-8; 14 : 10 **15 : 8** 1 रा 8 : 10; यश 6 : 4; यहेज 44 : 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और कोई तब तक मन्दिर में प्रवेश नहीं कर
सकता था, जब तक सात स्वर्गदूतों की सात
विपत्तियाँ पूरी न हो जायें।

16 मुझे मन्दिर में से एक गम्भीर वाणी
सुनाई पड़ी, जो सात स्वर्गदूतों से यह
कह रही थी, "जाओ! परमेश्वर के क्रोध के
सात प्याले पृथ्वी पर उँडेल दो।"

2पहला स्वर्गदूत गया और उसने पृथ्वी पर
अपना प्याला उँडेल दिया। जिन लोगों पर पशु
की छाप लगी थी और जो उसकी प्रतिमा की
आराधना करते थे, उनके शरीर पर घृणित और
दुःखदायी फोड़े निकल आये।

3दूसरे स्वर्गदूत ने समुद्र पर अपना प्याला
उँडेला। समुद्र मृतक के रक्त-जैसा बन गया
और समुद्र में रहनेवाले सभी प्राणी मर गये।

4तीसरे स्वर्गदूत ने नदियों और जलस्रोतों पर
अपना प्याला उँडेला। वे रक्त बन गये। 5तब
मैंने जल के स्वर्गदूत को यह कहते सुना,

"हे परमपावन!
जो है और जो था,
तेरे ये निर्णय न्यायसंगत हैं;
6 क्योंकि उन्होंने सन्तों और नबियों का रक्त
बहाया
और तूने उन्हें रक्त पिलाया।
वे अपनी करनी का फल भोग रहे हैं।"

7और मैंने वेदी को यह कहते सुना,
"सर्वशक्तिमान् प्रभु परमेश्वर! तेरे निर्णय
वास्तव में सच्चे और न्यायसंगत हैं!"

8चौथे स्वर्गदूत ने सूर्य पर अपना प्याला
उँडेला। सूर्य को मनुष्यों को आग से जलाने की
अनुमति मिली। 9मनुष्य प्रचण्ड ताप से जल
गये। उन्होंने उन विपत्तियों पर अधिकार रखने
वाले परमेश्वर के नाम की निन्दा की, लेकिन
उन्होंने पश्चात्ताप नहीं किया और परमेश्वर की
स्तुति करना नहीं चाहा।

10पाँचवें स्वर्गदूत ने पशु के सिंहासन पर
अपना प्याला उँडेला। पशु के राज्य पर
अन्धकार छा गया। लोग पीड़ा से विकल हो
कर अपनी जीभें चबाने लगे। 11उन्होंने अपनी
पीड़ाओं और फोड़ों के कारण स्वर्ग के
परमेश्वर की निन्दा की, लेकिन उन्होंने अपने
कर्मों के लिए पश्चात्ताप नहीं किया।

12छठे स्वर्गदूत ने महानदी फरात पर अपना
प्याला उँडेला। फरात नदी का पानी सूख गया,
जिससे पूर्व दिशा के राजाओं का प्रवेश मार्ग
तैयार हो जाये। 13तब मैंने पंखदार सर्प के मुंह
से, पशु के मुँह से और झूठे नबी के मुंह से
मेंढक-जैसे तीन अशुद्ध आत्माओं को निकलते
देखा। 14ये दुष्टात्माएं हैं, जो चमत्कार दिखाती
हैं और सर्वशक्तिमान् परमेश्वर के महादिवस
के युद्ध के लिए समस्त संसार के राजाओं को
एकत्र करने जाती हैं।

15"सावधान! मैं चोर की तरह आ रहा हूँ।
धन्य है वह, जो जागता और वस्त्र पहने रहता
है! कहीं ऐसा न हो कि वह नंगा फिरे और लोग
उसकी नग्नता देखें।" 16उन्होंने राजाओं को
उस स्थान पर एकत्र किया, जो इब्रानी में हर-
मगिदोन* कहलाता है।

17सातवें स्वर्गदूत ने हवा पर अपना प्याला
उँडेला और मन्दिर के सिंहासन में से एक
गम्भीर वाणी यह कहते सुनाई पड़ी, "समाप्त
हो गया है"। 18इस पर बिजलियाँ, वाणियाँ एवं
मेघगर्जन उत्पन्न हुए और भारी भूकम्प हुआ।
पृथ्वी पर मनुष्य की उत्पत्ति के समय से इतना
भारी भूकम्प कभी नहीं हुआ था। 19महानगर
के तीन खण्ड हो गये और राष्ट्रों के नगरों का

* कर्मेल पर्वत के पास "मगिदो" नगर के मैदान में कई बार घमासान युद्ध हुआ था। यह युद्ध-संकट का प्रतीकात्मक स्थान है।

16 : 1 यश 66 : 6; भज 69 : 24; यिर 10 : 25; सप 3 : 8 **16 : 2** नि 9 : 10-11; व्य 28 : 35 **16 : 3** नि 7 : 17-21 **16 : 4** भज 78 : 44 **16 : 5** भज 119 : 137; 145 : 17 **16 : 6** यश 49 : 26; भज 79 : 3 **16 : 7** भज 19 : 9; प्रक 9 : 13; 19 : 2 **16 : 9** प्रक 11 : 21; 9 : 20-21 **16 : 10** नि 10 : 21; यश 8 : 21-22 **16 : 11** दान 5 : 22 **16 : 12** प्रक 9 : 14; यश 11 : 15 **16 : 13** प्रक 3 : 18; 1 थिस 5 : 2 नि 8 : 3; 1 रा 22 : 21-23 **16 : 14** प्रक 13 : 13; 19 : 19 **16 : 15** प्रक 3 : 18; 1 थिस 5 : 2 **16 : 16** न्या 5 : 19, 31; जक 12 : 11; 2 रा 9 : 27 **16 : 17** यश 66 : 6 **16 : 18** नि 19 : 16; दान 12 : 1; प्रक 4 : 5; 8 : 5; 11 : 19 **16 : 19** यश 51 : 17; प्रक 14 : 10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सर्वनाश हो गया। परमेश्वर ने महान् नगरी
बेबीलोन को याद किया और उसे अपने क्रोध
की तीखी मदिरा का प्याला पिलाया। 20सभी
द्वीप विलीन हो गये और पर्वत लुप्त हो गये।
21आकाश से मन-मन भर के बड़े ओले मनुष्यों
पर गिरे। ओला-वृष्टि की विपत्ति के कारण
मनुष्यों ने परमेश्वर की निन्दा की, क्योंकि वह
विपत्ति बहुत भारी थी।

बेबीलोन नगर की मूर्तिपूजा

17 जो सात स्वर्गदूत सात प्याले लिये थे,
उन में से एक ने मेरे पास आ कर कहा,
"आइए, मैं आप को उस महावेश्या का दण्ड
दिखाऊँगा, जो महासमुद्र के किनारे विराजमान
है। 2पृथ्वी के राजाओं ने उसके साथ व्यभिचार
किया और पृथ्वी के निवासी उसके व्यभिचार
की मदिरा पी कर मतवाले हो गये हैं।" 3मैं आत्मा
से आविष्ट हो गया और स्वर्गदूत मुझे निर्जन
प्रदेश की ओर ले गया। मैंने वहाँ एक स्त्री को
एक लाल पशु पर बैठा हुआ देखा। पशु के सारे
शरीर पर ईश-निन्दक शब्द अंकित थे। उसके
सात सिर और दस सींग थे। 4स्त्री बैंगनी और
लाल वस्त्र पहने थी और स्वर्ण, मणियों एवं
मोतियों से विभूषित थी। वह हाथ में सोने का
प्याला लिये थी, जो उसके व्यभिचार के घृणित
एवं दूषित कर्मों से भरा हुआ था। 5उसके माथे
पर एक रहस्यमय नाम अंकित था: "महान्
बेबीलोन। वेश्याओं और पृथ्वी के सभी घृणित
कर्मों की माता।" 6मैंने देखा कि वह स्त्री सन्तों
का रक्त और येशु के साक्षियों का रक्त पी कर
मतवाली है।

मैं उसे देख कर बड़े अचम्भे में पड़ गया।
7स्वर्गदूत ने मुझ से कहा, "आप आश्चर्य क्यों
करते हैं? मैं आप को उस स्त्री का रहस्य
बताऊँगा और उस पशु का भी, जिस पर वह
सवार है और जिसके सात सिर और दस सींग
हैं।

8"आपने जिस पशु को देखा, जो था और
अब नहीं है, वह अगाध गर्त्त में से ऊपर आयेगा
और उसका सर्वनाश हो जायेगा। पृथ्वी के वे
निवासी, जिनके नाम संसार के प्रारम्भ से
जीवन-ग्रन्थ में अंकित नहीं हैं, पशु को देख
कर अचम्भे में पड़ जायेंगे, क्योंकि वह था और
अब नहीं है और फिर आगे आने वाला है। 9इसे
समझने के लिए सूक्ष्म बुद्धि की आवश्यकता
है। सात सिर वे सात पहाड़ हैं, जिन पर वह स्त्री
विराजमान है। वे सात राजा भी हैं: 10उन में
से पाँच का पतन हो चुका है, एक विद्यमान है
और अन्तिम अब तक नहीं आया, किन्तु जब
वह आयेगा, तो थोड़े ही समय तक बना रहेगा।
11वह पशु, जो पहले था और अब नहीं है,
आठवाँ है*; लेकिन वह वास्तव में सात राजाओं
में से एक है और उसका सर्वनाश हो जायेगा।
12आपने जिन दस सींगों को देखा, वे दस राजा
हैं। उन्हें अब तक राज्य नहीं मिला है, परन्तु
उन्हें घड़ी भर के लिए ही पशु के साथ
राज्याधिकार प्रदान किया जायेगा। 13उनका एक
ही अभिप्राय है—वे अपना सामर्थ्य और
अधिकार पशु को अर्पित करेंगे। 14वे मेमने से
युद्ध करेंगे और मेमना उन्हें परास्त कर देगा,
क्योंकि वह प्रभुओं का प्रभु एवं राजाओं का
राजा है। मेमने के साथ उसके अनुयायी भी
विजयी होंगे: वे बुलाये गये हैं, निर्वाचित हैं
और विश्वासी भी हैं।"

15स्वर्गदूत ने मुझ से यह कहा, "आपने
जिस समुद्र को देखा, जहाँ महावेश्या बैठी हुई
है, उस समुद्र का अर्थ है: प्रजातियाँ, जनसमूह,
राष्ट्र और भाषाएँ। 16आपने जिन दस सींगों और
पशु को देखा, वे वेश्या से बैर करेंगे। वे उसे

---

* पाठकों के लिए सुस्पष्ट संकेत था कि सात पर्वतों पर बसे हुए महानगर का "आठवाँ सम्राट" कौन था, जो उन पर अत्याचार कर रहा था।

16 : 20 प्रक 6 : 14; 20 : 11 **16 : 21** नि 9 : 23 **17 : 1** प्रक 15 : 1; यिर 51 : 13 **17 : 2** यश 23 : 17; प्रक 14 : 8; 18 : 3 **17 : 3** दान 7 : 7; प्रक 13 : 1 **17 : 4** यहेज 28 : 13, 16; यिर 51 : 7 **17 : 5** 2 थिस 2 : 7; दान 4 : 30; प्रक 14 : 8; 16 : 19 **17 : 6** प्रक 18 : 24 **17 : 8** प्रक 13 : 1-3; 3 : 5; दान 7 : 3 **17 : 9** प्रक 13 : 1, 18 **17 : 11** प्रक 19 : 20 **17 : 12** दान 7 : 20, 24 **17 : 14** व्य 10 : 17; दान 2 : 47; प्रक 19 : 14, 16 **17 : 15** यश 8 : 7 **17 : 16** प्रक 18 : 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नंगा कर एकाकी छोड़ देंगे, उसका मांस खायेंगे
और उसे आग में जला देंगे; [17]क्योंकि परमेश्वर
ने उन्हें प्रेरित किया कि वे उसका अभिप्राय पूरा
करें और वे एकमत हो कर पशु को तब तक
अपना राज्य सौंप दें, जब तक परमेश्वर का
वचन पूरा न हो जाये। [18]आपने जिस स्त्री को
देखा, वह तो वह महानगर हैं, जो पृथ्वी के
राजाओं पर शासन करता है।''

बेबीलोन का सर्वनाश

18 इसके बाद मैंने एक अन्य स्वर्गदूत को
स्वर्ग से उतरते देखा। वह महान्
अधिकार से सम्पन्न था और पृथ्वी उसके तेज
से प्रदीप्त हो उठी। [2]उसने ऊँचे स्वर से पुकार
कर कहा: ''उसका पतन हो गया है! महानगरी
बेबीलोन का पतन हो गया है! वह भूतों का डेरा,
हर प्रकार के अशुद्ध आत्माओं का अड्डा और
हर प्रकार के अशुद्ध पक्षियों का नीड़ तथा अशुद्ध
एवं घृणित पशुओं का मांद बन गया है, [3]क्योंकि
सभी राष्ट्रों ने उसके व्यभिचार की तीखी मदिरा
पी ली है, पृथ्वी के राजाओं ने उसके साथ
व्यभिचार किया है और पृथ्वी के व्यापारी
उसके अपार बैभव से धनी हो गये हैं।''

[4]मुझे स्वर्ग में से एक अन्य वाणी यह कहते
सुनाई पड़ी, ''मेरी प्रजा! महानगरी में से निकल
जाओ! कहीं ऐसा न हो कि तुम उसके पापों
में भागीदार और उसकी विपत्तियों के शिकार
बनो! [5]क्योंकि उसके पापों का अम्बार आकाश
तक ऊँचा हो गया है और परमेश्वर ने उसके
अपराधों का स्मरण किया है। [6]उस महानगरी
ने जैसा किया, तुम भी उसके साथ वैसा ही
करो। उसके कुकर्मों का दुगुना बदला चुकाओ
और उसने जो प्याला दूसरों के लिए भरा है, उस
में उसके लिए दुगुना ढाल दो। [7]उसने जितनी
डींग मारी और जितना भोगविलास किया है,
उसे उतनी यन्त्रणा और उतना शोक दो। वह
अपने मन में यह कहती है, 'मैं रानी की तरह
सिंहासन पर विराजमान हूँ। मैं विधवा नहीं हूँ
और कभी शोक नहीं मनाऊँगी।' [8]इसलिए एक
ही दिन में उस पर विपत्तियाँ आ पड़ेंगी—मृत्यु,
शोक और अकाल। वह आग में भस्म हो
जायेगी; क्योंकि प्रभु परमेश्वर शक्तिशाली है
और उसने उसे दोषी ठहराया है।''

[9]जब पृथ्वी के राजा, जिन्होंने बेबीलोन के
साथ व्यभिचार और भोगविलास किया, उसके
जलने का धूआँ देखेंगे, तो वे रोयेंगे और उस
पर विलाप करेंगे। [10]वे उसकी यन्त्रणा से भयभीत
हो कर यह कहते हुए दूर ही खड़े रहेंगे,
''शोक! तेरे लिए शोक! महानगरी! शक्तिशाली
नगरी बेबीलोन! तुझे घड़ी-भर में ही दण्ड
मिल गया!''

[11]पृथ्वी के व्यापारी उस पर रोयेंगे और
शोक मनायेंगे, क्योंकि कोई फिर कभी उनका
माल नहीं खरीदेगा—[12]सोना और चाँदी, रत्न
और मोती; मलमल, बैंगनी, रेशमी और लाल
वस्त्र; हर प्रकार की सुगन्धित लकड़ियाँ;
हाथी-दाँत, बहुमूल्य लकड़ी, पीतल, लोहे
और संगमरमर के हर प्रकार के पात्र; [13]दालचीनी,
इलायची, धूप और लोबान; मदिरा, तेल, मैदा
और गेहूँ; बैल और भेड़ें; घोड़े और रथ; दास
और युद्धबन्दी भी। [14]इसलिए व्यापारी बोले,
''ओ महानगरी! तू जिस फल की कामना
करती थी, वह तुझ से दूर चला गया। तेरे सारे
वैभव और तड़क-भड़क का सर्वनाश हो गया।
तू यह सब फिर नहीं देखेगी।''

[15]इन वस्तुओं के व्यापारी, जो बेबीलोन के
वैभव से धनी हो गये, उसकी यन्त्रणा से
भयभीत हो कर दूर ही खड़े रहेंगे। वे यह कहते
हुए रोयेंगे और शोक मनायेंगे, [16]''शोक! शोक!
यह महानगरी मलमल, बैंगनी एवं लाल वस्त्र
पहने थी और स्वर्ण, मणियों एवं मोतियों से
विभूषित थी। [17]यह सारा वैभव घड़ी-भर में ही
उजाड़ हो गया।''

---

17 : 17 प्रक 10 : 7 **18 : 1** प्रक 10 : 1; यहेज 43 : 2 **18 : 2** दान 4 : 30; प्रक 14 : 8; यश 13 : 21; 34 : 11; यिर 50 : 39; 51 : 8 **18 : 3** नहू 3 : 4; यिर 25 :15; 51 : 7 **18 : 4** यश 48 : 20; 52 : 11; यिर 50 : 8 **18 : 5** उत 18 : 20-21; यिर 51 : 9 **18 : 6** भज 137 : 8; यिर 50 : 15, 29 **18 : 7** यिर 50 : 29; यश 47 : 7-8 **18 : 8** यश 47 : 9; यिर 50 : 34; प्रक 17 : 16 **18 : 9** यहेज 26 : 16; 27 : 30-35; यश 23 : 17; प्रक 17 : 2 **18 : 10** यहेज 26 : 17; यश 21 : 9; प्रक 14 : 8 **18 : 11** यहेज 27 : 12-13.36 **18 : 16** प्रक 17 : 4

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जलयानों के कप्तान, जलयात्री, नाविक
और समुद्र के व्यापारी, सब-के-सब दूर ही
खड़े रहे 18और उसके जलने का धूआँ देख कर
ऊँचे स्वर से बोल उठे, "इस महानगरी की
बराबरी कौन नगर कर सका?" 19 वे अपने
सिर पर धूल डाल कर, रोते और विलाप करते
हुए ऊँचे स्वर से कहते थे, "शोक! शोक इस
महानगरी पर! इस के वैभव से जहाज के सब
मालिक धनी बन गये। यह घड़ी-भर में ही
उजाड़ हो गयी।"

20अब स्वर्गवासियो! सन्तो! प्रेरितो और
नबियो! आनन्द मनाओ, क्योंकि परमेश्वर ने
उसके विरुद्ध तुम्हें न्याय दिलाया है।

21तब एक बलवान स्वर्गदूत ने चक्की के बड़े
पाट-जैसा एक पत्थर उठाया और यह कहते
हुए समुद्र में फेंका, "महानगरी बेबीलोन इसी
वेग से गिरा दी जायेगी और उसका फिर कभी
पता नहीं चलेगा।

22"वीणावादकों और संगीतकारों की, मुरली
और तुरही बजाने वालों की आवाज तुझ में फिर
कभी सुनाई नहीं पड़ेगी; किसी भी व्यवसाय के
कारीगर तुझ में फिर कभी नहीं मिलेंगे।

"चक्की की आवाज तुझ में फिर कभी सुनाई
नहीं पड़ेगी; 23दीपक का प्रकाश तुझ में फिर
कभी दिखाई नहीं देगा; वर और वधू का स्वर
तुझ में फिर कभी सुनाई नहीं पड़ेगा। क्योंकि
तेरे व्यापारी पृथ्वी के अधिपति थे और तूने
अपने जादू द्वारा सभी राष्ट्रों को बहकाया।
24बेबीलोन में नबियों, सन्तों और उन सब
लोगों का रक्त पाया गया, जिनका पृथ्वी पर वध
किया गया था।"

विजय का गीत

19 इसके बाद मैंने स्वर्ग में एक विशाल
जनसमुदाय की-सी ऊँची आवाज को
यह गाते हुए सुना,

"प्रभु की स्तुति करो* !
हमारे परमेश्वर को विजय, महिमा और
सामर्थ्य!
2क्योंकि उसके निर्णय सच्चे और न्यायसंगत
हैं।
उसने उस महावेश्या को दण्डित किया है,
जो अपने व्यभिचार द्वारा पृथ्वी को दूषित
करती थी।
परमेश्वर ने उससे अपने सेवकों के रक्त का
प्रतिशोध लिया है।"

3तब उन्होंने फिर पुकार कर कहा, "प्रभु
की स्तुति करो! महानगरी के जलने का धूआँ
युग-युगों तक उठता रहेगा।"

4चौबीस धर्मवृद्ध और चार प्राणी मुँह के
बल गिर पड़े और उन्होंने यह कहते हुए
सिंहासन पर विराजमान परमेश्वर की आराधना
की, "आमेन! प्रभु की स्तुति करो!"

5इसके बाद सिंहासन से एक वाणी यह
कहते सुनाई पड़ी, "तुम सब, जो परमेश्वर की
सेवा करते हो, और तुम छोटे-बड़े जो उस
पर श्रद्धा रखते हो, हमारे परमेश्वर की स्तुति
करो।"

6तब मैंने एक विशाल जन-समुदाय की-सी
आवाज, समुद्र की लहरों और गरजते हुए
बादलों की प्रचंड आवाज को यह कहते हुए
सुना, "प्रभु की स्तुति करो! हमारे सर्वशक्तिमान्
प्रभु परमेश्वर ने राज्याधिकार ग्रहण किया है।
7हम उल्लसित हो कर आनन्द मनायें और
परमेश्वर की महिमा गायें, क्योंकि मेमने के
विवाहोत्सव का समय आ गया है। उसकी
दुलहन अपना श्रृंगार कर चुकी है 8और स्वच्छ
उज्ज्वल मलमल के वस्त्र से उसे सुसज्जित होने
का अनुग्रह प्राप्त हुआ है; क्योंकि यह मलमल
सन्तों के धर्माचरण से बना है।"

---

* मूल में, "हल्लिलू-याह!"

18 : 17 यहेज 27 : 27-29; यश 23 : 14 **18 : 18** यहेज 27 : 32 **18 : 19** यहेज 27 : 30-34 **18 : 20** व्य 32 : 43; यिर 51 : 48; यश 44 : 23 **18 : 21** यहेज 26 : 21; यिर 51 : 63-64 **18 : 22** यश 24 : 8; यहेज 26 : 13 **18 : 23** यिर 7 : 34; 16 : 9; 35 : 10; यश 23 : 8 **18 : 24** यिर 51 : 49; मत 23 : 35; प्रक 6 : 10; 17 : 6 **19 : 1** प्रक 11 : 15 **19 : 2** 2 रा 9 : 7; व्य 32 : 43; भज 19 : 9; 119 : 137; प्रक 16 : 7; 6 : 10 **19 : 3** यश 34 : 10 **19 : 4** प्रक 5 : 14 **19 : 5** भज 22 : 23; 115 : 13; 134 : 1; 135 : 1 **19 : 6** दान 10 : 6; प्रक 11 : 15; यहेज 1 : 24; 43 : 2; भज 93 : 1 **19 : 7** भज 118 : 24; प्रक 21 : 2, 9 **19 : 8** भज 45 : 14; यश 61 : 10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

9स्वर्गदूत ने मुझ से कहा, "यह लिखो :
धन्य हैं वे, जो मेमने के विवाह-भोज में
निमन्त्रित हैं!" और उसने मुझ से यह भी कहा,
"ये परमेश्वर के सत्य वचन हैं।"
10तब मैं उसकी आराधना करने के लिए
उसके चरणों पर गिर पड़ा, लेकिन उस ने मुझ
से यह कहा, "आप ऐसा नहीं करें। मैं भी
आपका और आपके उन भाई-बहिनों का, जो
येशु की दी हुई साक्षी सुरक्षित रखते हैं, साथी
सेवक हूँ। आप परमेश्वर की ही आराधना करें,
क्योंकि येशु की साक्षी नबूवत की आत्मा*
है।"

सफेद घोड़े पर सवार व्यक्ति

11तब मैंने देखा कि स्वर्ग खुला है। एक
सफेद घोड़ा दिखाई पड़ा और उस पर जो सवार
है, वह 'विश्वसनीय' और 'सच्चा' कहलाता
है। वह न्याय के अनुसार विचार और युद्ध
करता है। 12उसकी आँखें अग्नि की तरह
धधकती हैं और उसके सिर पर अनेक मुकुट
हैं। उसके शरीर पर एक नाम अंकित है, जिसे
उसके अतिरिक्त और कोई नहीं जानता। 13वह
रक्त में डुबाया हुआ वस्त्र पहने है और उसका
नाम है—"परमेश्वर का शब्द।" 14स्वर्ग की
सेनाएँ, सफेद एवं स्वच्छ मलमल पहने और
सफेद घोड़ों पर सवार हो कर, उसके पीछे-
पीछे चलती हैं। 15राष्ट्रों को मारने के लिए
उसके मुख से एक तेज तलवार निकल रही है।
वह लोह-दण्ड से उन पर शासन करेगा और
सर्वशक्तिमान परमेश्वर के कोप-रूपी दाखरस
का कुण्ड रौंदेगा। 16उसकी जाँघ के वस्त्र पर+
यह नाम अंकित है— "राजाओं का राजा और
प्रभुओं का प्रभु।"
17मैंने एक स्वर्गदूत को सूर्य में खड़ा देखा।
उसने ऊँचे स्वर से पुकारते हुए मध्य आकाश
में उड़ने वाले सब पक्षियों से कहा, "आओ
और परमेश्वर के महाभोज के लिए एकत्र हो
जाओ। 18तुम राजाओं, सेनापतियों, शूरवीरों,
घोड़ों, घुड़सवारों और सब लोगों का—चाहे वे
स्वतन्त्र हों या दास, छोटे हों या बड़े—मांस
खाओ।"
19तब मैंने पशु और पृथ्वी के राजाओं को
देखा और उन सेनाओं को भी, जो सफेद घोड़े
पर सवार व्यक्ति और उसकी सेना से युद्ध करने
के लिए एकत्र की गयी थीं। 20पशु बन्दी बनाया
गया और उसके साथ वह झूठा नबी भी, जिसने
पशु के निरीक्षण में चमत्कार दिखा कर उन
लोगों को बहकाया था, जिन्होंने पशु की छाप
ग्रहण की थी और उसकी प्रतिमा की आराधना
की थी। वे दोनों जीवित ही धधकते गन्धक के
अग्निकुण्ड में डाल दिये गये। 21शेष लोग
घुड़सवार के मुख से निकलने वाली तलवार से
मारे गये और सब पक्षी उनका मांस खा कर तृप्त
हो गये।

शैतान को एक हजार वर्ष के लिए बन्दी करना

20 इसके बाद मैंने एक स्वर्गदूत को स्वर्ग
से उतरते देखा। उसके हाथ में अगाध
गर्त्त की चाबी और एक बड़ी जंजीर थी। 2उसने
पंखदार सर्प को, उस पुराने साँप अर्थात् दोष
लगानेवाले शैतान को, पकड़ कर एक हजार
वर्ष के लिए बाँधा 3और अगाध गर्त्त में डाल
दिया। उसने अगाध गर्त्त बन्द कर उस पर मोहर
लगायी, जिससे वह सर्प एक हजार वर्ष पूरे हो
जाने तक राष्ट्रों को नहीं बहकाये। इसके बाद
थोड़े समय के लिए उसे छोड़ दिया जाना
आवश्यक है।
4मैंने सिंहासन देखे। जो उन पर बैठने आये,
उन्हें न्याय करने का अधिकार दिया गया। मैंने
उन लोगों की आत्माओं को भी देखा, जिनके
सिर येशु की साक्षी और परमेश्वर के वचन के
कारण काटे गये थे, जिन्होंने पशु और उसकी

---

* अथवा, "नबूवत का आत्मा"। +शब्दशः, "उसके वस्त्र पर और जांघ पर।"

19 : 9 लू 14 : 15 **19 : 10** प्रक 22 : 8; प्रे 10 : 25 **19 : 11** यहेज 1: 1; भज 96 : 13; प्रक 3 : 14; यश 11 : 4 **19 : 12** दान 10 : 6; प्रक 1 : 14; 2 : 18; 3 : 12 **19 : 13** यश 63 : 1; यो 1 : 1; प्रज्ञ 18 : 14-18 **19 : 15** प्रक 12 : 5; यश 63 : 3 **19 : 16** प्रक 17 : 14; 1 तिम 6 : 15; व्य 10 : 17; दान 2 : 47 **19 : 17** यहेज 39 : 4,17,20 **19 : 19** प्रक 16 : 16 **19 : 20** प्रक 13 : 11-17; 20 : 10; दान 7 : 11, 26 **9 : 21** यहेज 39 : 17,20 **20 : 2** उत 3 : 1; जक 3 : 1; प्रक 9 : 1 **20 : 3** 2 थिस 2 : 9-10 **20 : 4** दान 7 : 9,22,27; लू 22 : 30; 1 कुर 6 : 2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रतिमा की आराधना नहीं की थी तथा अपने
माथे और हाथों पर पशु की छाप अंकित नहीं
होने दिया था। वे पुनर्जीवित हो कर मसीह के
साथ एक हजार वर्ष तक राज्य करते रहे। 5शेष
मृतक एक हजार वर्ष पूरे हो जाने से पहले
पुनर्जीवित नहीं हुए। यह पहला पुनरुत्थान है।
6धन्य और पवित्र वह है, जो पहले पुनरुत्थान
में सहभागी है। ऐसे लोगों पर द्वितीय मृत्यु का
कोई अधिकार नहीं है। वे परमेश्वर और मसीह
के पुरोहित होंगे और उनके साथ एक हजार वर्ष
तक राज्य करेंगे।

शैतान की पराजय

7एक हजार वर्ष पूरे हो जाने के बाद शैतान
बन्दीगृह से छोड़ दिया जायेगा 8और वह पृथ्वी
के चार कोनों में बसने वाले राष्ट्रों को बहकाने
के लिए और गोग एवं मागोग की सेनाओं को,
जो समुद्र के बालू-कणों की तरह असंख्य हैं,
युद्ध के लिए एकत्र करने निकलेगा। 9वे सारी
पृथ्वी पर फैल गये। उन्होंने सन्तों के शिविर
और परमेश्वर के प्रिय नगर को घेर लिया,
लेकिन आग आकाश से उतरी और उसने उन्हें
भस्म कर दिया। 10उन्हें बहकाने वाले शैतान
को आग और गन्धक के कुण्ड में डाल दिया
गया, जहाँ पशु और झूठा नबी डाल दिये गये
थे। वे युग-युगों तक दिन रात यन्त्रणा भोगेंगे।

अंतिम न्याय का दिन

11इसके बाद मैंने एक विशाल श्वेत सिंहासन
और उस पर विराजमान व्यक्ति को देखा।
पृथ्वी और आकाश उसके सामने लुप्त हो गये
और उनका कहीं भी पता नहीं चला। 12मैंने छोटे-
बड़े, सब मृतकों को सिंहासन के सामने खड़ा
देखा। पुस्तकें खोली गयीं। तब एक अन्य
पुस्तक—अर्थात् जीवन-ग्रन्थ खोला गया।
पुस्तकों में लिखी हुई बातों के आधार पर
मृतकों का उनके कर्मों के अनुसार न्याय किया
गया। 13समुद्र ने अपने मृतकों को प्रस्तुत
किया। तब मृत्यु तथा अधोलोक ने अपने
मृतकों को प्रस्तुत किया। हर एक का उसके
कर्मों के अनुसार न्याय किया गया। 14इसके बाद
मृत्यु और अधोलोक, दोनों को अग्निकुण्ड में
डाल दिया गया। यह अग्निकुण्ड द्वितीय मृत्यु
है। 15जिसका नाम जीवन-ग्रन्थ में लिखा हुआ
नहीं मिला, वह अग्निकुण्ड में डाल दिया गया।

नया आकाश और नयी पृथ्वी

21 तब मैंने एक नया आकाश और एक
नयी पृथ्वी देखी। पुराना आकाश तथा
पुरानी पृथ्वी, दोनों लुप्त हो गये थे और समुद्र
भी नहीं रह गया था। 2मैंने पवित्र नगरी, नवीन
यरूशलेम को परमेश्वर के यहाँ से आकाश में
उतरते देखा। वह अपने दूल्हे के लिए सजायी
हुई दुलहन की तरह अलंकृत थी।

3तब मुझे सिंहासन से एक गम्भीर वाणी यह
कहते सुनाई पड़ी, "देखो, यह है मनुष्यों के
बीच परमेश्वर का निवास ! वह उनके बीच
निवास करेगा। वे उसकी प्रजा होंगे और
परमेश्वर स्वयं उनके बीच रह कर उनका
अपना परमेश्वर होगा। 4वह उनकी आँखों से
सब आँसू पोंछ डालेगा। इसके बाद न मृत्यु
रहेगी, न शोक, न विलाप और न दुःख, क्योंकि
पुरानी बातें बीत चुकी हैं।"

5तब सिंहासन पर विराजमान व्यक्ति ने
कहा, "देखो, मैं सब कुछ नया कर रहा हूँ।"

इसके बाद उसने कहा, "ये बातें लिखो,
क्योंकि ये विश्वसनीय और सत्य हैं।" 6उसने
फिर मुझ से कहा, "कार्य समाप्त हो गया।
अलफा और ओमेगा, आदि और अन्त मैं हूँ।
मैं प्यासे को संजीवन जल के स्रोत से मुफ्त में
पिलाऊँगा। 7यह विजयी की विरासत है। मैं

---

20 : 5 1 कुर 15 : 23; 1 थिस 4 : 16 **20 : 6** यश 61 : 6; प्रक 5 : 10 **20 : 8** यहेज 7 : 2; 38 : 2, 9, 16 **20 : 9** हब्र 1 : 6; 2 रा 1 : 10; यहेज 38 : 22; 39 : 6 **20 : 10** उत 19 : 24; प्रक 19 : 20 **20 : 11** मत 25 : 31-46; दान 2 : 35 **20 : 12** दान 7 : 10 प्रक 3 : 5; फिल 4 : 3; रोम 2 : 6 **20 :13** यो 5 : 28-29 **20 : 14** 1 कुर 15 : 26, 55 **20 : 15** दान 12 : 1; मत 25 : 41 **21 : 1** यश 65 : 17; 66 : 22; 2 पत 3 : 13; प्रक 20 : 11 **21 : 2** यश 52 : 1; 61 : 10; इब्र 11 : 10; प्रक 19 : 7 **21 : 3** जक 2 : 10; यश 8 : 8 **21 : 4** प्रक 7 : 17; यिर 31 : 16; यश 35 : 10; 65 : 19 **21 : 5** प्रक 4 : 2; 5 : 1; 2 कुर 5 : 17; भज 47 : 8 **21 : 6** प्रक 1 : 8; 22 : 17; यश 55 : 1; जक 14 : 8 **21 : 7** प्रक 2 : 7; 2 शम 7 : 14

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उनका परमेश्वर होऊँगा और वे मेरी संतान
होंगे। [8]लेकिन कायरों, अविश्वासियों, नीचों,
हत्यारों, व्यभिचारियों, ओझों, मूर्तिपूजकों और
हर प्रकार के मिथ्यावादियों का अंत यह
होगा— धधकती आग और गन्धक के कुण्ड
में द्वितीय मृत्यु!''

नवीन यरूशलेम

[9]जो सात स्वर्गदूत वे सात प्याले लिये थे,
जिन में अन्तिम सात विपत्तियाँ भरी हुई थीं, उन
में से एक ने मेरे पास आ कर कहा, ''आइए,
मैं आप को दुलहन, मेमने की पत्नी के दर्शन
कराऊँगा।'' [10]मैं आत्मा से आविष्ट हो गया
और स्वर्गदूत ने मुझे एक विशाल तथा ऊँचे
पर्वत पर ले जा कर पवित्र नगरी यरूशलेम
दिखायी। वह स्वर्ग से परमेश्वर के यहाँ से उतर
रही थी। [11]वह परमेश्वर की महिमा से विभूषित
थी और बहुमूल्य रत्न तथा उज्जवल सूर्यकान्त
की तरह चमक रही थी। [12]उसके चारों ओर
एक बड़ी और ऊँची शहरपनाह थी, जिसमें
बारह फाटक थे और हर एक फाटक के सामने
एक स्वर्गदूत खड़ा था। फाटकों पर इस्राएल के
बारह कुलों के नाम अंकित थे। [13]पूर्व की ओर
तीन, उत्तर की ओर तीन, पश्चिम की ओर तीन
और दक्षिण की ओर तीन फाटक थे।
[14]शहरपनाह नींव के बारह पत्थरों पर खड़ी थी
और उन पर मेमने के बारह प्रेरितों के नाम
अंकित थे।

[15]जो मुझ से बातें कर रहा था, उस के पास
नगर, उसके फाटक और उस के परकोटे नापने
के लिए एक मापक दण्ड, सोने का सरकण्डा
था। [16]नगर वर्गाकार था। उसकी लम्बाई उसकी
चौड़ाई के बराबर थी। स्वर्गदूत ने सरकण्डे से
नगर नापा तो वह दो हजार दो सौ बीस
किलोमीटर* निकला। उसकी लम्बाई, चौड़ाई
और ऊँचाई बराबर थी। [17]उसने उसकी
शहरपनाह नापी, तो वह मनुष्यों में प्रचलित
माप के अनुसार, जिसका स्वर्गदूत ने उपयोग
किया, पैंसठ मीटर ऊंची+ निकली। [18]शहरपनाह
सूर्यकान्त की बनी थी, लेकिन नगर विशुद्ध
स्वर्ण का बना था, जो स्फटिक-जैसा चमकता
था। [19]शहरपनाह की नींव नाना प्रकार के रत्नों
की बनी थी। पहली परत सूर्यकान्त की थी,
दूसरी नीलम की, तीसरी गोदन्ती की, चौथी
मरकत की, [20]पाँचवीं गोमेदक की, छठी
रुधिराख्य की, सातवीं स्वर्णमणि की, आठवीं
फीरोजे की, नवीं पुखराज की, दसवीं रुद्राक्षक
की, ग्यारहवीं धूम्रकान्त की और बारहवीं
चन्द्रकान्त की। [21]बारह फाटक बारह मोतियों
के बने थे, प्रत्येक फाटक एक-एक मोती का
बना था। नगर का चौक पारदर्शी स्फटिक-जैसे
विशुद्ध सोने का बना था।

[22]मैंने उस में कोई मन्दिर नहीं देखा, क्योंकि
सर्वशक्तिमान् प्रभु परमेश्वर उसका मन्दिर है,
और मेमना भी। [23]नगर को सूर्य अथवा चन्द्रमा
के प्रकाश की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि
परमेश्वर की महिमा उसकी ज्योति और मेमना
उसका प्रदीप है। [24]राष्ट्र उसकी ज्योति में चलेंगे
और पृथ्वी के राजा उस में अपना वैभव ले
आयेंगे। [25]उसके फाटक दिन में कभी बन्द नहीं
होंगे और वहाँ कभी रात नहीं होगी। [26]राष्ट्रों का
वैभव और सम्पत्ति उस में लायी जायेगी,
[27]लेकिन उस में न तो कोई अपवित्र वस्तु प्रवेश
कर पायेगी और न कोई ऐसा व्यक्ति, जो घृणित
काम करता या झूठ बोलता है। वे ही प्रवेश कर
पायेंगे, जिनके नाम मेमने के जीवन-ग्रन्थ में
अंकित हैं।

22 इसके बाद उसने मुझे स्फटिक-जैसे
संजीवन-जल की नदी दिखायी, जो
परमेश्वर और मेमने के सिंहासन से बह रही
थी। [2]नगर के चौक के बीचों-बीच बहती हुई

---

* मूल में 'बारह हजार स्तदियन' + मूल में 'एक सौ चौवालीस हाथ'

21 : 8 प्रक 22 : 15; 20 : 14; इब्र 10 : 38-39 **21 : 9** लेव 26 : 21; प्रक 15 : 1 **21 : 10** यश 52 : 1; यहेज 40 : 2 **21 : 11** यश 58 : 8; 60 : 1-2, 19 **21 : 12** यहेज 48 : 31-35 **21 : 15** यहेज 40 : 3, 5 **21 : 16** यहेज 43 : 16; 48 : 16-17 **21 : 18** तोब 13 : 16-17 **21 : 19** यश 54 : 11-12 **21 : 23** यश 24 : 23; 60 : 1-20 **21 : 24** यश 60 : 3, 5 **21 : 25** प्रक 22 : 5; जक 14 : 7 **21 : 27** यश 52 : 1; दान 12 : 1 **22 : 1** यहेज 47 : 1; जक 14 : 8 **22 : 2** उत 2 : 9; प्रक 21 : 21; यहेज 47 : 12

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नदी के तट पर, दोनों ओर एक जीवन-वृक्ष था,
जो बारह प्रकार के फल, हर महीने एक बार
फल, देता था। उस पेड़ के पत्तों से राष्ट्रों की
चिकित्सा होती है। 3वहाँ कुछ भी नहीं रहेगा,
जो अभिशाप के योग्य हो। वहाँ परमेश्वर और
मेमने का सिंहासन होगा। उसके सेवक उसकी
आराधना करेंगे। 4वे उसे आमने-सामने देखेंगे
और उसका नाम उनके माथे पर अंकित होगा।
5वहाँ फिर कभी रात नहीं होगी। उन्हें दीपक
या सूर्य के प्रकाश की जरूरत नहीं पड़ेगी,
क्योंकि प्रभु परमेश्वर उन्हें आलोकित करेगा
और वे युग-युगों तक राज्य करेंगे।

उपसंहार

6स्वर्गदूत ने मुझ से कहा, ''ये बातें
विश्वसनीय और सत्य हैं। जो नबियों को प्रेरित
करता है, उस प्रभु परमेश्वर ने अपने दूत को
भेजा है, जिससे वह अपने सेवकों को निकट
भविष्य में होने वाली घटनाएँ दिखाये।

7[येशु ने कहा,] ''देखो, मैं शीघ्र ही आ
रहा हूं। धन्य है वह, जो इस पुस्तक की नबूवत
के वचनों का पालन करता है!''

8मैं—योहन—ने इन बातों को देखा और
सुना। जब मैं देख और सुन चुका था, तो जिस
स्वर्गदूत ने मुझे इन बातों को दिखाया था, मैं
उसकी आराधना करने के लिए उसके चरणों
पर गिर पड़ा, 9लेकिन उसने मुझ से यह कहा,
''आप ऐसा नहीं करें। मैं भी आपका, आपके
भाई-बहिन नबियों का और उन लोगों का, जो
इस पुस्तक की बातों का पालन करते हैं, साथी
सेवक मात्र हूँ। आप परमेश्वर की ही आराधना
करें।''

10उसने मुझ से फिर कहा, ''आप इस
पुस्तक की नबूवत की बातों को गुप्त नहीं रखें*,
क्योंकि समय निकट है। 11अधर्मी अब अधर्म
करता रहे, कलुषित व्यक्ति कलुषित ही बना
रहे; लेकिन धर्मी धार्मिक आचरण और सन्त
पवित्रता की साधना करता जाये।''

12[येशु ने कहा,] ''देखो, मैं शीघ्र ही आ
रहा हूं। मेरा पुरस्कार मेरे पास है और मैं प्रत्येक
मनुष्य को उसके कर्मों का प्रतिफल दूँगा। 13मैं
अलफा और ओमेगा हूँ, प्रथम और अन्तिम,
आदि और अन्त हूँ।''

14धन्य हैं वे, जो अपने आचरण-रूपी वस्त्र
धोते हैं; वे जीवन-वृक्ष के अधिकारी होंगे और
फाटकों से हो कर नगर में प्रवेश करेंगे। 15कुत्ते,
ओझे, व्यभिचारी, हत्यारे, मूर्तिपूजक, असत्य
से प्रेम करनेवाले और मिथ्याचारी बाहर ही
रहेंगे।

16''मैं—येशु—ने कलीसियाओं के विषय
में ये बातें प्रकट करने के लिए अपना दूत तुम्हारे
पास भेजा है। मैं दाऊद का श्रेष्ठ वंशज+ तथा
सन्तान हूं, प्रभात का उज्ज्वल तारा हूँ।''

17आत्मा तथा वधू, दोनों कहते हैं,
''आइए।'' जो सुनता है, वह उत्तर दे,
''आइए।'' जो प्यासा है, वह आये। जो चाहता
है, वह उपहार में संजीवन जल ग्रहण करे।

18जो लोग इस पुस्तक की नबूवत की बातें
सुनते हैं, मैं उन सब को यह चेतावनी देता हूँ,
''यदि कोई इन में कुछ जोड़ेगा, तो परमेश्वर
इस पुस्तक में लिखी हुई विपत्तियाँ उस पर ढा
देगा 19और यदि कोई नबूवत की इस पुस्तक
की बातों से कुछ निकालेगा, तो परमेश्वर इस
पुस्तक में वर्णित जीवन-वृक्ष और पवित्र नगर
से उसका भाग निकाल देगा।''

20इन बातों की साक्षी देने वाला यह कहता
है, ''मैं अवश्य शीघ्र ही आ रहा हूं।''
आमेन! हे प्रभु येशु! आइए!

21प्रभु येशु की कृपा आप सब पर बनी रहे।

---

* अक्षरशः, ''के वचनों पर मोहर नहीं लगायें।'' + अक्षरशः, ''मूल जड़''।

22 : 3 जक 14 : 11 **22 : 4** मत 5 : 8; प्रक 3 : 12 **22 : 5** प्रक 21 : 25; दान 7 : 18, 27 **22 : 6** प्रक 1 : 1; 1 कुर 14 : 32 **22 : 7** प्रक 3 : 11; 1 : 3 **22 : 8** प्रक 19 : 10 **22 : 10** प्रक 10 : 4; 1 : 3; दान 8 : 26; 12 : 4 **22 : 21** दान 12 : 10 **22 : 12** प्रक 3 : 12; भज 28 : 4; 62 : 12; यिर 17 : 10; यश 40 : 10; रोम 2 : 6 **22 : 13** यश 44 : 6; 48 : 12; प्रक 1 : 17; इब्र 13 : 8 **22 : 14** उत 2 : 9; 3 : 22 **22 : 15** प्रक 21 : 8, 27; 1 कुर 6 : 9–10 **22 : 16** प्रक 1 : 1–2; 5 : 5; यश 11 : 1, 10; लू 1 : 78 **22 : 17** प्रक 21 : 6; जक 14 : 8; यश 55 : 1; यू 7 : 37 **22 : 18** प्रक 15 : 1, 6; व्य 4 : 2; 12 : 32; 29 : 20 **22 : 19** उत 2 : 9; 3 : 22 **22 : 20** 2 तिम 4 : 8

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

परिशिष्ट :

धर्मग्रंथ बाइबिल का ऐतिहासिक संदर्भ

कालानुक्रम सारिणी:

1. सृष्टि का आरम्भिक काल (?–1,500,000 ई० पू०)
2. विश्व-मानवता के आदिम पूर्वज (1,500,000–1,800 ई० पू०)

(क) प्राचीन इस्राएल संबंधी "पुराना विधान" काल

3. इस्राएल के कुलपति एवं कुलमाताएँ (1800–1700 ई० पू०)
4. मिस्र देश में इस्राएल का दीर्घ प्रवास (1700–1240 ई० पू०)
5. मिस्र की गुलामी से इस्राएल का निर्गमन (1240–1200 ई० पू०)
6. इस्राएल का देश-प्रवेश (1200–1160 ई० पू०)
7. इस्राएली कुलों का अराजक संगठन (1160–1000 ई० पू०)
8. इस्राएली राष्ट्र का संयुक्त राज्य (1000–931 ई० पू०)
9. इस्राएल का विभाजित राज्य (931–722 ई० पू०)
10. अवशिष्ट यहूदा-राज्य (722–586 ई० पू०)
11. बेबीलोन में इस्राएल का निष्कासन (586–538 ई० पू०)
12. फारसी साम्राज्य के अधीन इस्राएल का पुनर्निर्माण (538–333 ई० पू०)
13. यूनानी शासन के अधीन विसर्जित इस्राएल द्वारा धर्मसंरक्षण (333–142 ई० पू०)
    - मिस्र देश के पतोलेमी शासन के अधीन (323–200 ई० पू०)
    - सीरिया देश के सेल्यूकी शासन के अधीन (200–142 ई० पू०)

(ख) "पुराना-नया विधान" का संक्रमण काल

14. हस्मोनी वंश के शासन में इस्राएल की पुनः स्वतन्त्रता (142–63 ई० पू०)
15. रोमन साम्राज्य के अधीन इस्राएल का नवीकरण (63 ई० पू०–सन् ई० 135)

(ग) नव विश्वास सम्बन्धी "नया विधान" काल

- प्रभु येशु का जीवन काल (7 ? ई० पू०– सन् 30)
- यहूदियों एवं गैरयहूदियों को मिलानेवाले मसीही पंथ का आरंभ (30–135 ई०)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

"आदि" - काल से : ————————————————

अरबों वर्ष पहले :
- विश्व-मण्डल में एक महाविस्फोट-जैसा कुछ हुआ।
- इस्राएल का प्रतीकात्मक "सृष्टि-सम्वत्" 3760 ई० पू० में आरम्भ।
(विश्व और मानवता की उत्पत्ति के संबंध में तरह-तरह की पौराणिक कथाएँ प्रचलित हैं।)

लाखों वर्ष पहले :
- मध्यजीव महाकल्प के डाइनोसॉर महापशु।

बीस-दस लाख वर्ष पहले :
- पूर्व-मानवों से आदि-मानवों तक के हस्तिपंजर प्राप्त हुए।
(जब तक मानव-सभ्यता के संबंध में न तो साहित्यिक रचनाएँ उपलब्ध हैं, न पुरातात्विक सामग्री—जैसे अभिलेख, प्रचीन स्मारक, मुद्राएँ—तब तक "इतिहास" लिखना असंभव-सा है; फिर भी मानव-विकास के मुख्य सोपान दीखते हैं।)

प्रागैतिहासिक काल से : ————————————————

विभिन्न प्रस्तर-युग :
- आखेट-जीवी (शिकार करनेवाले) मानव के चकमक औजार। गुफाओं में निवास।

लगभग 20,000 ई० पू० में:
- दक्षिण-फ्रांस में लास्को के गुहा-चित्र (भोपाल के निकट भीमबेत्का से तुलना करें)।
- खाद्योत्पादन (कृषि) का अविष्कार।
पशुपालन आरम्भ (दे० उत 4 : 20)।
अग्नि का गृहीकरण।

8000 ई० पू० से
नव-प्रस्तर युग :
- मृद्भांड संस्कृतियाँ : मिट्टी के बरतन।
- प्राचीनतम नगर निर्मित (दे० उत 4 : 17)।

विभिन्न धातु-युग :
- विश्व के विभिन्न भागों के निवासी धातुओं का प्रयोग करने लगे (दे० उत 4 : 22)।

4500 ई० पू० से ताम्र युग :
- फरात एवं दजला नदियों के दोआब (मेसोपोतामिया) में प्रथम नगर-राज्य।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

1. सृष्टि का आरम्भिक काल (?-1,500,000 ई० पू०) — — — — —

- प्राचीन इस्राएल की दृष्टि में, छठी सदी ई० पू० की पुरोहिती शिक्षा के अनुसार, एक ''आदि सप्ताह'' में सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर ने सब कुछ की सृष्टि की। उत 1 : 1-2 : 4 क

- दक्षिणी राज्य यहूदा में नवीं सदी ई० पू० में प्रस्तुत की गई कथा के अनुसार, ''अदन वाटिका'' में मानव की उत्पत्ति; लेकिन प्रभु परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करने से मानव का पतन हुआ। आनन्द-वाटिका से बहिष्कार। उत 2 : 4 ख - 3 : 24

2. विश्व-मानवता के आदिम पूर्वजों का काल (1,500,000-1,800 ई० पू०) — — — — —

- कर्मेल-पर्वत की गुफाओं में प्रागैतिहासिक मानव रहते थे।

- नवीं सदी ई० पू० की दक्षिणी लोक-कथा के अनुसार, कृषक काइन ने पशुपाल हाबिल को मारा। उत 4

- मृत-सागर के तट पर घस्सूली संस्कृति के बरतन।
- यरोही नगर के ''प्रथम प्राचीर'' का निर्माण हुआ।

प्राचीन विश्वसभ्यताएँ

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

- मिस्त्र के नील नदी-तट पर सिंचाई-पद्धति।

3200 ई० पू० से पूर्व-कांस्य युग :

- भारत में भी ताम्र उपकरण प्राप्त हुए।
- मिस्त्र में चित्रात्मक लिपि का प्रयोग आरम्भ; मेसोपोतामिया में मृत्तिका-फलक पर कील-अक्षरों का प्रयोग।

  इस प्रकार घटनाओं का अभिलेखन संभव हुआ।
- पौराणिक (मिथक) कथाएँ : उदाहरणार्थ, मेसोपोतामिया में "गिलगामेश महाकाव्य" (जिसमें जलप्रलय का भी वर्णन है)।

ऐतिहासिक काल में प्रवेश : (अब से साहित्यिक एवं पुरातात्विक सामग्री के ठोस प्रमाण मिलते।)

- उत्तरी-पूर्वी अफ्रिका से दक्षिणी-पश्चिमी एशिया तक आदान-प्रदान का विशाल "उपजाऊ अर्द्ध-चन्द्राकार भूमिक्षेत्र"।

लगभग 2800 ई० पू० में :

- **मिस्त्र** के उत्तरी एवं दक्षिणी प्रदेशों **का एकीकरण :** **"प्राचीन राज्य"** के प्रथम फरओ (राजा); राजधानी मेमफिस; प्रथम पिरामिड निर्मित।
- दक्षिण मेसोपोतामिया में ऊर तथा निप्पूर नगरों का **"सुमेरी नगर राज्य"** : गणित में भाग-गुणन का प्रयोग; विशाल ज़िग्गुरत (शिखिर मन्दिर) निर्मित।

लगभग 2360 ई० पू० में :

- अक्कद नगर (मध्य मेसोपोतामिया) में राजा सार्गोन द्वारा **"अक्कादी साम्राज्य"** स्थापित, जो प्रथम महान सामी (सेमिटिक) राज्य था : विस्तृत सैन्य अभियान; फिर भी लगाश नगर से गूती जाति द्वारा डटकर विरोध।

- सिन्धु-घाटी की सभ्यता : मोहेनजोदड़ो, हड़प्पा एवं लोथान नगर; मातृ-देवी की उपासना। विशिष्ट "सैन्धव-लिपि" का अर्थ अस्पष्ट।
- चीन देश में पीत-नदी की सभ्यता : हिया राजवंश।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

- छठी सदी ई० पू० की पुरोहिती परम्परा के अनुसार **प्रलय-पूर्व के दस वंशज :** आदम और हव्वा, शेत, एनोश, केनन, महल्लेल, यारद, हनोक, मथूशलह, लामेक, नूह। (इन आदिम पूर्वजों के जीवनकाल मेसोपोतामिया के पौराणिक नरेशों के दीर्घ शासनकालों के समान हैं; घटती संख्या पापमय अवनति का द्योतक है।) — उत 5
- विभिन्न परम्पराओं के आधार पर **जल प्रलय** में नूह के बचाव की मिश्रित कथा छठी सदी ई० पू० में प्रस्तुत। — उत 6 — 9
- नूह के तीनों पुत्रों (शेम, हाम तथा याफत) से विश्व कुटुम्ब की 70 जातियाँ। (इस प्रस्तुति में एक-एक व्यक्ति अलग-अलग समूह का प्रतिनिधि है। इस आदि-युग में भ्रमणशील जातियों का देश-देशान्तर में आवागमन होता रहा।) — उत 10
- नवीं सदी ई० पू० की यहूदा-प्रदेशीय परम्परा के अनुसार "बेबीलोन की मीनार" की कथा प्रस्तुत। (भिन्न भाषा-परिवारों में भाषा-उपभाषाओं का विकास एक वास्तविकता है।) — उत 11 : 1-9
- कनान में आद्य अमोरी (कनानी) जाति का प्रवेश; उत्तर-कनान में एबला महानगर की स्थापना : राजा एब्रुम का उल्लेख।
- छठी सदी ई० पू० की पुरोहिती परम्परा के अनुसार **प्रलय के बाद के दस वंशज :** नूह का पुत्र शेम, अर्पक्षद, शेलह, एबर, पेलग, रऊ, सरुग, नाहोर, तेरह, अब्राम (अब्राहम)। — उत 11 : 10-26

प्राचीन विश्वसभ्यताएँ

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

2000 ई० पू० से मध्य-कांस्य युग :
- **मिस्र में ''मध्य राज्य''** के फरओ; राजधानी थेबेस; विशाल पिरामिदों का निर्माण; लेखन के लिए पपाइरस (पटेर-पत्र) का प्रयोग।
- मेसोपोतामिया पर अमोरी जाति का बढ़ता प्रभाव; तत्कालीन सामाजिक प्रथाएँ मारी-नगरराज्य के प्रलेखों से ज्ञात।
- बेबीलोन में **''प्राचीन बेबीलोनी साम्राज्य''** स्थापित।

लगभग 1820 ई० पू० में:
- बेबीलोन के अमोरी राजा हमुराबी द्वारा विधि-संहिता अंकित। लेकिन नूजी नगर से हुर्‍री जाति का आक्रमण।

लगभग 1800 ई० पू० से : — — — — — — — — — — — — — — — —

(इस्लाम की दृष्टि में हजरत इब्राहीम एकेश्वरवाद के महान् प्रवर्तक हैं: निमरोद [दे० उत 10:8] से उनका मुकाबला हुआ; उनके पुत्र हजरत यिश्माएल का अत्यधिक महत्व है।)

अठारहवीं सदी ई०पू० में:
- क्रेते द्वीप पर मीनोआई सभ्यता : क्नोसोस नगर का राजमहल।
- आर्यवर्त में वैदिक सभ्यता पूर्णत: विकसित : ऋग्वेद की ऋचाएँ।
- एशिया माइनर (आधुनिक तुर्की) में आदिम निवासी ''हत्ती'' प्रबल; बाद में आप्रवासी (भारोपीय भाषा परिवार के) ''हित्ती'' प्रभावशाली।
- उत्तर-मेसोपोतामिया में हुर्‍री जाति का ''मित्तानी'' राज्य (भारत-ईरानी शासक)।

लगभग 1750 ई० पू० में:
- मिस्र देश ''हुक्सोस'' नामक विदेशी शासकों के अधीन; उनकी रथ-सेना थी।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

- कनान के बंदरगाह बिब्लोस में मिस्र की लेखन-सामग्री का आयात। उत्तर-कनानी नगरराज्य उगरीत (आधुनिक रास-शमरा) में प्राचीन धर्म साहित्य उपलब्ध : बअल-देवता के स्तुतिगीत।

(क) प्राचीन इस्राएल संबंधी ''पुराना विधान'' काल

3. इस्राएल के कुलपतियों एवं कुलमाताओं का काल (1800-1700 ई० पू०)

- इस्राएल के अमोरी पूर्वज मेसोपोतामिया से निकले और पदन-हारान से होते हुए ''प्रतिज्ञा के देश'' कनान तक पहुँचे। उत 11 : 27 - 13 : 1

- विभिन्न परम्पराओं की मिश्रित प्रस्तुति के अनुसार विश्वासी अब्राहम और उनके वंशजों का आख्यान :
  (1) अब्राहम और सारा से इसहाक (हाजिरा से यिश्माएल; कटूरा से छह अन्य)। उत 13 : 2 - 25 : 18
  (2) इसहाक और रिबका से याकूब (अथवा इस्राएल) और एसाव (ज्येष्ठ पुत्र के अधिकार से वंचित)। उत 25 : 19 - 27 : 45
  (3) याकूब और लिआ से रूबेन, शिमोन, लेवी, यहूदा; उत 27 : 46 - 36 : 43
  '' '' राहेल की सेविका से दान, नफ्ताली;
  '' '' लिआ की सेविका से गाद, आशेर;
  '' '' लिआ से इस्साकार, जबूलून (और पुत्री दीना);
  '' '' राहेल से यूसुफ, बिन्यामिन;

अर्थात् बारह कुल (और यूसुफ कुल से दो अर्द्ध-कुलः मनश्शे तथा एफ्रइम)।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लगभग 1700 ई० पू० से: ——————————————————

- चीन देश में शंग राजवंश की प्रबलता।

1570 ई० पू० में :
- **मिस्र में** फरओ के 18वें वंश की स्थापना से "**नया राज्य**" आरंभ।

1500 ई० पू० से उत्तर-कांस्य युग :
- मिस्र का अत्यधिक विस्तार; कनान देश पर भी अधिकार। फरओ तुतमोसेस-तृतीय फरात नदी तक पहुँचा।

1347 ई० पू० में :
- फरओ आखेन-अतोन (= अमेनोफिस-चतुर्थ) का एकेश्वर-वादी आन्दोलन विफल। उसके पुत्र तुतंकामोन की चिर-शव-मंजूषा (ममी) अब काइरो के संग्रहालय में दर्शनीय।
- व्यापार-मार्ग पर अधिकार के लिए हित्तियों तथा मिस्रियों के बीच घोर संघर्ष।
- यूनान देश में मिसेनेई नरेश; यवनों का ट्रॉय नगर पर कब्जा। भूमध्यसागर के द्वीपों पर जल-दस्यु "समुद्री जातियाँ" बस गईं।
- फेनीके देश (लेबानोन) के साहसी व्यापारी सोर बंदरगाह से दूर पश्चिम तक जाते। सामी (सेमिटिक) भाषाओं के लिए व्यंजनात्मक "आलेफ-बेत-गीमेल" वर्णमाला का आविष्कार।

चौदहवीं सदी ई० पू० के अन्त में :
- उत्तर -मेमोपोतामिया के नीनवे महानगर में "**असीरियाई साम्राज्य**" का उदय।

1290–1224 ई० पू० में:
- मिस्र के 19वें वंश के महान फरओ रामसेस-द्वितीय का शासनकाल: बेगार द्वारा बड़े निर्माण कार्य।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

4. मिस्र देश में इस्राएल के दीर्घ प्रवास का काल (1700-1240 ई० पू०) — — — — —

- यूसुफ के आख्यान के अनुसार अकाल में बुद्धिमतापूर्ण प्रबंध करने पर स्वप्नदर्शी यूसुफ को मिस्र देश में प्रतिष्ठा प्राप्त और इस्राएली समाज का गोशेन प्रदेश में निवास। उत 37 — 50
- जब तक हुक्सोस (विदेशी) शासक रहे, तब तक इस्राएलियों के साथ अच्छा व्यवहार रहा। अब स्थिति बदल जाएगी। नि 1 : 1 - 7
- कनान के मिस्री अधिकारियों द्वारा भेजे गए प्रशासकीय पत्र मिस्र के तेल-एल-अमर्ना स्थान से प्राप्त हुए। यरूशलेम (अर्थात् उर-शलेम, शान्तिनगर) के शासक अब्दी-हीबा के पत्र में "हबीरू" (= इब्रानी ?) गिरोहों का उल्लेख।

(मिस्र में इस्राएल का प्रवासकाल लगभग 400 वर्ष [दे० उत 15 : 13] अथवा 430 वर्ष [नि 12 : 40 लेकिन गल 3 : 17 के अनुसार इससे पहले का कनान में निवास-काल भी सम्मिलित है])

- मिस्र में इस्राएली प्रवासी गुलाम ही बने। नि 1 : 8 - 14

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लगभग 1240 ई० पू० से :

[इस्राएल के यात्रा-पर्व और त्योहार :

(1) प्रथम माह (मार्च-अप्रैल), 14 ता० शाम : पास्का (फसह); मेमना, भोज (लेव 23 : 5; मक 14 : 12; 1 कुर 5 : 7)।
प्रथम माह, 15-21 ता०: बेखमीर रोटी का सप्ताह (लेव 23 : 6; मक 8 : 16; 1 कुर 5 : 8)।
प्रथम माह, 15 ता० के बाद पहला रविवार : जौ का प्रथम फल (लेव 23 : 10-11; मक 16 : 1-2; 1 कुर 15 : 23)।

(2) उस रविवार के बाद सप्त सप्ताह का पेंतकोस्त रविवार : गेहूँ का प्रथम फल (लेव 23 : 16; प्रे 2 : 1; रोम 8 : 23)।

(3) पाँचवें माह, 9 ता०: यरूशलेम के मन्दिर के विनाश का शोक; उपवास (जक 7 : 3; मक 2 : 18)।

(4) सातवें माह, 1 ता०: अमावस्या, नव-वर्ष; तुरही (लेव 23 : 24; 1 कुर 15 : 52)।
सातवें माह, 10 ता०: प्रायश्चित-दिवस, उपवास (लेव 23 : 27; इब्र 9 : 7; प्रे 27 : 9)।
सातवें माह, 15-22 ता०; मण्डपों का अठवारा, कटनी पर्व (लेव 23 : 34; मक 9 : 5; यो 7 : 2)।

(5) नवें माह, 25 ता०-10वें माह, 4 ता० : मन्दिर-प्रतिष्ठान, दीप-पर्व का अठवारा (1 मका 4 : 59; यो 8 : 12; 10 : 22)।

(6) बारहवें माह, ता० 14-15 : पूरीम; भाग्य एवं सुरक्षा के लिए चिट्ठी डालना (एस्तर 9 : 21.26; कुल 1 : 12)]

तेरहवीं सदी ई० पू० के अन्त में :

- इस्राएल के निर्गमन-काल में अन्य पड़ोसी राज्यों की भी स्थापना : एदोम, मोआब, अम्नोन, अराम (सीरिया) ...।

1224-1204 ई० पू० में :

- मिस्री फरओ मरनेफ्ता का शासनकाल : उसके विजय-स्तम्भ पर कनान की पराजित जातियों में "इस्राएल" का भी (अतिशयोक्तिपूर्ण) उल्लेख।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

5. मिस्र की गुलामी से इस्राएल के निर्गमन का काल (1240–1200 ई० पू०) — — — — —

- दलित–उत्पीड़ित इस्राएलियों की विमुक्ति के लिए लेवी कुल में लोकनायक एवं विधि–निर्माता मूसा उठे, जिन्होंने अपने भाई पुरोहित हारून और अपनी बहिन नबिया मिर्याम के साथ जनता का नेतृत्व किया।
- मुख्यत: आठवीं सदी ई० पू० की उतरी (एफ्रइमी) परम्परा के अनुसार बालक मूसा के बचाव और प्रभु–नाम के प्रकटन का वर्णन। नि 1 : 15 – 3 : 22
- नवीं सदी ई० पू० की दक्षिणी (यहूदा–प्रदेशीय) परम्परा के अनुसार फरओ से मुलाकात का वर्णन। नि 4 : 1 – 6 : 1
- प्रभु–नाम के प्रकटन के संबंध में पुरोहिती वर्णन। नि 6 : 2 – 7 : 7
- सदियों के बाद "पास्का" (फसह) के वार्षिक उत्सव के पठन–पाठन के लिए निर्गमन के वृत्तांत का संकलन : दस विपत्तियाँ और रात्रिभोज की विधियाँ। नि 7 : 8 – 13 : 16
- प्रस्थान और "लाल सागर" (नड सागर) का पारगमन। नि 13 : 17 – 15 : 21
- सीनय पर्वत तक यात्रा : निर्जन प्रदेश में "मन्ना" रोटी और जल। नि 15 : 22 – 17 : 7
- अमालेकियों से युद्ध और शासकों की नियुक्ति । नि 17 : 8 – 18 : 27
- सीनय पर्वत पर व्यवस्था (दस आज्ञाओं) की प्राप्ति और विधान की स्थापना। नि 19 — 24
- विश्वास–भंग और विधान की पुन:स्थापना। नि 32 — 34

  विधान की मंजूषा के लिए पवित्र शिविर का प्रबन्ध। नि 25 – 31 ; 35 — 40
- विशेष पुरोहिती व्यवस्था। लेवी ग्रन्थ
- जनगणना : यर्दन के पूर्वी तट तक यात्रा की तैयारी। गण 1 : 1–10 : 10
- सीनय पर्वत से प्रस्थान, और कादेश मरुद्यान से कनान देश का भेद लेना। गण 10 : 11–14 : 45
- अनेक परीक्षाओं से होते हुए एदोम और मोआब के मैदान तक। गण 15–21

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

- देइर-अल्ला स्थान से प्राप्त अरामी अभिलेख में दर्शी बिल्आम का नाम (यद्यपि नवीं सदी ई० पू० में लिखित)।

1200 ई० पू० से : ————————————————

1200 ई० पू० से लौह युग :
- इस्राएली अधिकार-क्षेत्र के दक्षिण-पश्चिम में, भूमध्यसागर के तट पर, अधिक उन्नतिशील "पलिश्ती" नामक समुद्री जाति का बस जाना : उनके पास लौह-शस्त्र थे; वे पंच-नगर राज्य में संयुक्त हुए।

[**"पुराना विधान" की मूल लिपि और भाषा :**
प्राचीन इब्रानी लिपि के स्थान पर सर्वत्र सरल अरामी लिपि इब्रानी भाषा के लिए भी अपनायी गयी है। अतः "पुराना विधान" की लिपि एक ही है।
इब्रानी ग्रंथ-सूची के सभी 39 ग्रंथ इब्रानी भाषा में ही हैं; लेकिन उनमें थोड़े अंश अरामी भाषा में हैं : उत 31 : 47; यिर 10 : 11, एज्रा 4 : 8-6 : 18; 7 : 12-26; दान 2 : 4-7 : 28।
अन्य भाषाओं में से भी ग्रहण किये गये आगत शब्द मिलते हैं, जैसे मिस्री भाषा (अब्रेक, उत 41 : 43); कनानी-उगरीती (बअल, होशे 2 : 16); फारसी (दान 5 : 25); अरबी (ऊंट, गंधरस, यश 60 : 6); संस्कृत-तमिल (बन्दर, मयूर, 1 रा 10 : 22), अक्कादी (अदन, उत 2 : 8); यूनानी (वाद्य-यन्त्र, दान 3 : 5)।]

लगभग 1160 ई० पू० से : ————————————————

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बाइबिल की विषय-वस्तु	तत्संबंधी पाठ
● बिल्आम का इस्राएलियों को आशिष देना।	गण 22-24
● यर्दन के पूर्व के क्षेत्र पर अधिकार।	गण 25-36
● सातवीं सदी के उत्तरार्ध की उपदेशात्मक शैली में प्रस्तुत : मूसा के अन्तिम उपदेश और मृत्यु।	व्यवस्था-विवरण ग्रंथ
6. इस्राएल के देश-प्रवेश का काल (1200-1160 ई० पू०)	— — — — —
● यहोशुअ के नेतृत्व में कनान देश में इस्राएल का निर्णायक प्रवेश।	
● अब तक की विषय-सामग्री बाइबिल के प्रथम खण्ड तौरेत-पंचग्रंथ में मिलती थी। कनान पर विजय के वर्णन से लेकर दक्षिणी राज्य यहूदा के पतन के वृत्तान्त तक की विषय-सामग्री "व्यवस्था-विवरणीय इतिहास" में मिलती है, अर्थात् छठी सदी ई० पू० के मध्य में व्यवस्था-विवरण ग्रंथ की उपदेशात्मक शैली में रचित चार ग्रंथ (यहो + शास + 1-2 शम + 1-2 रा)।	
● विजय-गाथा : यहोशुअ की नियुक्ति और तैयारियाँ।	यहो 1-2
यर्दन-नदी का पारगमन।	यहो 3 : 1-5 : 12
यरीहो नगर का विनाश।	यहो 5 : 13-6 : 27
ऐ-नगर का द्वितीय प्रयास में विनाश।	यहो 7 : 1-8 : 29
एबल-पर्वत पर व्यवस्था का पाठ।	यहो 8 : 30-35
युद्ध के द्वारा सम्पूर्ण देश पर अधिकार।	यहो 9-12
विजित देश का इस्राएली कुलों में आबंटन।	यहो 13-22
● शकेम की सभा में बारह कुलों के "सह-उपासक संघ" की स्थापना।	यहो 23-24
7. इस्राएली कुलों के अराजक संगठन का काल (1160-1000 ई० पू०)	— — — — —
● कनानियों और पड़ोसी जातियों के साथ इस्राएलियों का संघर्ष जारी।	शास 1 : 1-3 : 6
● प्राय: बारह कुलों में से एक-एक उद्धारक शासक (न्यायी) उठे ; प्रथम तीन शासक : ओतनीएल, एहूद, शमगर।	शास 3 : 7-31

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लगभग 1125 ई० पू० में:

लगभग 1050 ई० पू० में :

- चीन देश का चाऊ राजवंश; सामन्त-वाद प्रबल।
- इस्राएल पर पलिश्तियों का दबाव बढ़ता गया (ध्यान दें! समुद्रतटीय "पलिश्ती क्षेत्र" का नाम केवल सन् 135 ई० से, रोम के विरुद्ध यहूदी विप्लव के अन्त में, सम्पूर्ण "पलिश्ती देश" पर लागू होगा)।

लगभग 1030 ई० पू० में :

- इटली देश में प्राचीन एट्रुस्की सभ्यता : छोटे-छोटे समाधि-स्तूप।
- पश्चिम-एशिया में इस समय किसी महाशक्ति की प्रबलता नहीं थी; मिस्र देश का भी ह्रास-काल था।

लगभग 1000 ई० पू० से : ———————————————

- भारत में उत्तर-वैदिक काल : स्थानीय संघ-शासन।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बाइबिल की विषय-वस्तु	तत्संबंधी पाठ
• तअनख की घाटी में इस्राएलियों द्वारा कनानी नायक सीसरा पर भारी विजय : नबिया दबोराह और चौथा शासक बारक।	शास 4-5
शासक गिद्ओन के बाद अबीमेलेक द्वारा राजा बनने का प्रयत्न।	शास 6—8; 9
• शेष सात शासक : तोला, याईर, यिफ्ताह, इब्सान, एलोन, अब्दोन, और बलवीर शिमशोन!	शास 10-16
• इब्रानी भाषा में मौखिक लोक-साहित्य आरंभ : वीर-कथा अथवा गीत, और स्थान-विशेष अथवा प्रथा के संबंध में "हेतुकी" (कारण बतानेवाला वर्णन)।	
• समाज में अराजकता के उदाहरण : दान और बिन्यामिन कुल।	शास 17-21
• शीलोह के आराधना-गृह में "दर्शी" के रूप में अतिरिक्त शासक शमूएल।	1 शम 1-7
• इस्राएल के प्रथम राजा शाऊल का शासन असफल।	1 शम 8 - 15
• सुवीर दाऊद का उदय : राजकुमार योनातन से उसकी मैत्री; लेकिन राजा शाऊल का उस पर ईर्ष्यापूर्ण संदेह।	1 शम 16 - 30
(चौथी सदी ई० पू० में रचित "इतिहास-ग्रंथ" की आरम्भिक नामावली आदम से शाऊल तक)	1 इत 1 - 9
• गिलबोअ पहाड़ की लड़ाई में पलिश्ती विजयी : दोनों शाऊल तथा योनातन का अन्त।	1 शम 31; 2 शम 1; 1 इत 10
• दक्षिणी नगर हेब्रोन में दाऊद यहूदा-प्रदेश का राजा बना।	2 शम 2 - 4
8. इस्राएली राष्ट्र के संयुक्त राज्य का काल (1000-931 ई० पू०)	— — — — —
• राजा दाऊद द्वारा यबूसी गढ़ (यरूशलेम) पर कब्जा, जिससे यरूशलेम नगरी अविभाजित राज्य की राजधानी बनी।	2 शम 5; 1 इत 11-12
(राज-कुल के दस वंशज : यहूदा से तामार द्वारा पेरेस, हेस्रोन, राम, अम्मीनादब, बहशोन, सल्मोन, बोअज, रूत द्वारा ओबेद, यिशय, दाऊद)।	
• पवित्र मंजूषा यरूशलेम को लायी गयी; प्रथम भजन दाऊद के नाम से (यद्यपि भजन-संहिता ग्रंथ सदियों के दौरान प्रयुक्त होनेवाले आराधना-गीतों का संकलन है)।	2 शम 6—7; 1 इत 13—17 कुछ भजन

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

[**बाइबिल इतिहास के कालक्रम का निर्धारण** प्रायः असीरियाई राजलेखों पर आधारित है; क्योंकि उनमें हर वर्ष के लिए एक ''लिम्मू'' नामक वर्ष-वृत्त मिलता है। किसी एक में पूर्ण सूर्य ग्रहण का उल्लेख है, जिससे अन्य उल्लिखित घटनाओं का वर्ष निश्चित किया जा सकता है। साधारणतः राजा का प्रथम शासन-वर्ष उसके राज्यारोहण के बाद आरम्भ होने वाले नव-वर्ष से गिना जाता था। इसलिए शासन काल की गिनती में एक-दो वर्ष का अन्तर आ सकता है। राजा सुलेमान के शासनकाल का अन्त प्रायः 931 ई० पू० निर्धारित किया गया है।]

लगभग 970–931 ई० पू० में:

- मिस्र में ज्ञानी अमेनेमोपे के नीति-वचन (नीति 22 : 17)।
- भारत में महाभारत महाकाव्य से संबंधित जनपद और नगर : इन्द्रप्रस्थ, श्रीकृष्ण-द्वारिका, हस्तिनापुर ...। आदि श्रीराम-कथा से संबंधित प्रसंग : अयोध्यापुरी, मिथिला, प्रयाग ...।

लगभग 931 ई० पू० से : ———————————————————

928 ई० पू० में:

- मिस्री फरओ शीशक द्वारा यरूशलेम की लूट (दे० 1 रा 14 : 25)।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बाइबिल की विषय-वस्तु	तत्संबंधी पाठ
• पड़ोसी राज्य भी दाऊद के अधीन; सोर नगरराज्य के राजा हीराम से अच्छे संबंध। यरूशलेम में राजदरबार की सुव्यवस्था; राजसचिव और लिपिक।	2 शम 8 - 10; 1 इत 18 - 20
• दाऊद का महापाप और दरबारी नबी नातान द्वारा भर्त्सना।	2 शम 11 - 12
• तीनों राजपुत्र अम्नोन, अबशालोम और अदोनियाह युवराज नहीं बन सके (उनके संबंध में प्राय: एक सदी के बाद दक्षिणी लेखक ने एक लघु उपन्यास-जैसा प्रस्तुत किया)।	2 शम 13-19; 1 रा 1
• शेबा का विद्रोह; अकाल और महामारी।	2 शम 20-24; 1 इत 21
• राजा सुलेमान महान का शासनकाल : इस्राएल का "स्वर्ण युग"।	1 रा 2-4; 2 इत 1
• यरूशलेम में "प्रथम मंदिर" का निर्माण; सादोक राजपुरोहित नियुक्त। (याजक कुल के दस वंशज : हारून का पुत्र एलआजर, पीनहास, अबीशूअ, बूक्की, ऊज्जी, जरहयाह, मरायोत, अमरयाह, अहीटूब, सादोक।)	1 रा 5-8; 1 इत 22-29; 2 इत 2-7
• प्रथम नीति-वचन सुलेमान के नाम से (यद्यपि नीति-वचन ग्रंथ सदियों के दौरान रचित लोकोक्तियों एवं सूक्तियों का संकलन है)।	कुछ नीति-वचन
• व्यापारिक संबंध : जहाजी बेड़ा "ओपीर" तक (संभवत: पश्चिमोत्तर भारत का "सुपारा")।	1 रा 9 - 10; 2 इत 8-9
• राजकर तथा बेगार से जनता का शोषण।	1 रा 11

9. इस्राएल के विभाजित राज्य का काल (931-722 ई० पू०) — — — — — —

उत्तरी राज्य इस्राएल (एफ्रइम)	दक्षिणी राज्य यहूदा	
(722 ई० पू० तक : विभिन्न वंश के 19 राजा, 1 रानी)	(587 ई० पू० तक : एक ही राजवंश के 19 राजा, 1 रानी)	
(1) यारोबआम-प्रथम (931-910) राजधानी तिरसाह; मुख्य पूजा-स्थान बेत-एल।	(1) रहबआम (931-913)	1 रा 12-16; 2 इत 10-16
• गेजेर-नगर से प्राप्त पंचांक फलक : प्राचीन इब्रानी लिपि का अनुपम नमूना।		

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

900 ई० पू० में :

- अराम (सीरिया) की राजधानी दमिश्क में शक्तिशाली राजा बेन-हदद-प्रथम (दे० 1 रा 15 : 18)।

- काशी-वाराणसी के राजघाट में प्रथम आवासीय अवशेष।

- अराम के राजा बने-हदद-द्वितीय का इस्राएल के साथ संघर्ष।

853 ई० पू० में :

- असीरियाई सम्राट शलमन-एसेर-तृतीय : कारकर के युद्ध में बारह राज्यों पर विजय।

- मोआब राज्य पुनः स्वतन्त्र; राजा मेशा का स्तंभ-लेख।
- अराम का राजा हजाएल दोनों इस्राएल तथा यहूदा राज्यों से अपना संघर्ष जारी रखता।

841 ई० पू० में :

- असीरियाई सम्राट शलमन-एसेर-तृतीय के "काले सूचीस्तंभ" पर राजा येहू कर-दाता के रूप में।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(2)नादाब (910-909)	(2)अबियाम (913-911)	
(3)बाशा (909-886)	(3)आसा (911-870)	
(4)एलाह (886-885) (5)जिमरी (885 में केवल सात दिन का शासन) (6)ओमरी (885-874) राजधानी सामरी।	● प्रथम विस्तृत बाइबिली साहित्य रचना : "दाऊद के बाद उत्तरीधिकारी कौन?" का प्रश्न लेकर दक्षिणी "यहूदा-परम्परा" की प्रस्तुति (2 शम 9 ...1 रा 2); उसकी अन्य प्रस्तुतियाँ उत, नि, गण ग्रंथों में यथास्थान मिलती हैं।	
(7)अहाब (874-853) ● सोर की राजकुमारी ईजेबेल से विवाह; बअल-देवता की पूजा और प्रभु-भक्तों द्वारा विरोध :गुरु नबी एलियाह।	(4)यहोशाफट (870-848)	1 रा 17-19 ; 21 ; 2 रा 1
		1 रा 20; 22; 2 इत 17-20
● शलमन-एसेर के विजय-स्तंभ पर अहाब का उल्लेख। (8)अहज्याह (853-852)		
(9)यहोराम (852-841) गुरु-नबी एलीशा।	(5) योराम (848-841)	2 इत 21 2 रा 2-13
● नबी एलीशा द्वारा उग्र नेता येहू का अभिषेक।	(6) अहज्याह (841)	2 इत 22
● येहू की "खूनी क्रान्ति" में दोनों इस्राएल तथा यहूदा के राजाओं का वध। दो दुष्ट रानियों ने शासन संभाला :		
(10) रानी ईजेबेल (841 में तुरन्त उसकी हत्या)	(7) राजमाता अतल्याह (841-835)	
(11) येहू (841-814)	पुरोहित यहोयादा का विद्रोह।	2 इत 23
	(8)योआश (835-796)	2 इत 24

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

- यूनानी आदि कवि होमर की अमर कृति ''इलियड'' महाकाव्य।

आठवीं सदी ई० पू० के पूर्वार्द्ध में :

776 ई० पू० में : • यूनान देश में प्रथम ''ओलिम्पिक खेलकूद''।

753 ई० पू०: • रोम-नगर की स्थापना से रोमन संवत् का आरम्भ।

लगभग 750 ई० पू० में :

745-727 ई० पू० में : • असीरियाई सम्राट तिगलत-पिलेसर-तृतीय का शासनकाल: तीव्र राजविस्तार की नीति।

लगभग 740 ई० पू० में :

- दमिश्क का अन्तिम अरामी राजा रासोन : असीरियाई खतरे के विरुद्ध राष्ट्रों की युद्ध-संधि।

734 ई० पू० में : • युद्ध-संधि में सम्मिलित कराने के लिए यहूदा-राज्य पर दबाव।

727-722 ई० पू० में : • असीरियाई सम्राट शलमन-एसेर-पंचम की विजय-यात्रा।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बाइबिल की विषय-वस्तु		तत्संबंधी पाठ
(12) यहोआहाज (814-798)		
(13) यहोआश (798-783)	(9) अमस्याह (796-781)	2 इत 25
● दोनों राज्यों में दीर्घायु और समृद्ध राजा :		
(14) यारोबआम-द्वितीय (783-743)	(10) उज्जियाह = अजर्याह (781-740)	2 रा 14; 2 इत 26
● विस्तृत बाइबिली साहित्य रचना की दूसरी लहर : गुरु नबियों एलियाह एवं एलीशा की कथा-माला (1-2 रा ग्रंथों में) और उत्तरी "एफ्रइमी परम्परा" की प्रस्तुतियाँ (उत, नि, गण ग्रंथों में यथास्थान)।	● यरूशलेम के दक्षिणी-पश्चिमी टीले की रक्षा हेतु "प्रथम शहरपनाह" निर्मित।	
● सामाजिक अन्याय के विरुद्ध नबी आमोस का संदेश।		आमोस नबी-ग्रन्थ
(15) जकर्याह (743)		2 रा 15
(16) शल्लूम (743)		
(17) मनहेम (743-738)		
● अनन्य भक्ति से प्रभु की ओर लौटने के लिए नबी होशे का संदेश।	● यरूशलेम के मन्दिर में नबी यशायाह को पवित्र परमेश्वर का दर्शन।	होशे नबी-ग्रंथ यश 6
	(11) योताम (740-736)	2 इत 27
(18) पकहयाह (738-737)	● नबी यशायाह के आरम्भिक संदेश।	यश 1—5
(19) पेकह (737-732)	● अयोग्य नेताओं के विरुद्ध नबी मीका का संदेश।	मीका नबी-ग्रंथ
	(12) आहाज (736-716)	2 रा 16; 2 इत 28
	● यशायाह द्वारा "इम्मानुएल" की नबूवत।	यश 7-12
(20) होशे (732-722) उत्तरी राज्य में अन्तिम राजा।		2 रा 17

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

722 ई० पू० में :

722 ई० पू० से : ————————————————

721–705 ई० पू० में : • असीरियाई सम्राट सार्गोन–द्वितीय, जिसने सेनाध्यक्ष के रूप में सामरी नगर को गिराने का दावा किया।

704–681 ई० पू० में : • असीरियाई सम्राट सनहेरिब द्वारा सर्वत्र क्रूर विनाश–लीला : लाकीश–नगर के दर्दनाक अन्त का उद्भृत चित्रण नीनवे के राजमहल से प्राप्त हुआ।

701 ई पू० में : • यरूशलेम की घेराबन्दी के समय सम्राट सनहेरिब का आकस्मिक प्रस्थान (चाहे महामारी के कारण, अथवा स्वदेश में विद्रोह के कारण, अथवा मिस्री शासक तिर्हाक के आगमन के कारण ?)।

663 ई० पू० में : • असीरियाई सम्राट अशूरबनिपाल द्वारा मिस्र देश की लूट। नीनवे में "पुस्तकालय" जैसा विश्व–साहित्य भण्डार संकलित।

650 ई० पू० में : • मिस्र का नवोदय : 26 वें राजवंश का फरओ प्सामेतिकुस।

लगभग 630 ई० पू० में:

627 ई० पू० में :

• उत्तर–पूर्व ईरान में महात्मा जरथुश्त्र फारसी धर्म (अवेस्ता) का प्रवर्त्तक।

622 ई० पू० में :

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बाइबिल की विषय-वस्तु		तत्संबंधी पाठ
• सामरी नगर का पतन; उत्तरीय कुलों में से बहुतों को निष्कासित; अन्यजातियाँ इस्राएल में स्थानांतरित।	• अन्य राष्ट्रों के विरुद्ध यशायाह की नबूवतें।	यश 13–23

10.अवशिष्ट यहूदा-राज्य का काल (722–586 ई० पू०)	— — — — —
• उत्तर के शरणार्थी यरूशलेम की ''द्वितीय बस्ती'' में : इस प्रकार उत्तरी एफ्रइमी परंपरा एवं दक्षिणी यहूदा-परंपरा का मिश्रण हुआ।	
• (13) हिजकियाह (716–687) के शासनकाल में नबी यशायाह का नबूवतकाल जारी।	2 रा 18–20 ; 2 इत 29–32; यश 28—33
• नीति-वचनों का प्रथम संस्करण (नीति 25 : 1) और भजनों का संकलन जारी।	अन्य नीति-वचन; भजन
• यरूशलेम की प्रतिरक्षा हेतु ''द्वितीय शहरपनाह'' का निर्माण और शिलोआम नाले की खुदाई (एक इब्रानी अभिलेख में इसकी कार्यकुशलता वर्णित)।	
• नबी यशायाह का संदेश : केवल विश्वास करो! (ऐतिहासिक प्रथम यशायाह के संकलन में अर्थात् यश 1–39 में, प्रकाशनात्मक शैली की कुछ अतिरिक्त नबूवतें)।	यश 36–39 यश 24–27; 34–35
• (14) मनश्शे (687–642) को यरूशलेम के मन्दिर में असीरियाई पूजनव्यवस्था का प्रबन्ध करना पड़ा।	2 रा 21; 2 इत 33
• (15) आमोन (642–640)।	
• (16) योशियाह (640–609)।	2 रा 22–23; 2 इत 34–35
• नबी सफन्याह का संदेश : प्रभु का दिन आ रहा है!	सफन्याह नबी-ग्रंथ
• नबी यिर्मयाह को प्रभु का आह्वान।	यिर 1
• यरूशलेम के मन्दिर में मरम्मत के समय ''व्यवस्था ग्रंथ'' (व्यवस्था विवरण का पूर्वरूप) प्राप्त (दे०2 रा 23:25)।	

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

- बेबीलोन में राजा नबोपोलसर ने **"नव बेबीलोनी साम्राज्य"** की नींव डाली।

612 ई० पू० में :
- मादय देश की सेना द्वारा महानगरी नीनवे का विनाश।

609 ई० पू० में :
- असीरिया की ओर मिस्री फरओ नेको का अभियान।

605 ई० पू० में :
- बेबीलोन के युवराज नबूकदनेसर ने कर्केमीश की लड़ाई में महाविजय प्राप्त की (यिर 46 : 2)।

605–562 ई० पू० में :
- बेबीलोनी सम्राट नबूकदनेसर का दीर्घ शासनकाल : नये सैनिक अभियान।

601 ई० पू० में :
- बेबीलोनी सम्राट नबूकदनेसर का मिस्र पर पहला आक्रमण विफल।

597 ई० पू० में :

593 ई० पू० में :
- निष्कासन के शिविर में नबी–पुरोहित यहेजकेल को आह्वान ; यरूशलेम के संबंध में चेतावनियाँ।

589 ई० पू० में :

15 जन 588 ई० पू० में:
- नबूकदनेसर द्वारा सोर नगर की भी घेराबंदी (13 वर्ष तक!)। फरओ होफ्रा के आगमन के कारण यरूशलेम की घेराबंदी थोड़े समय के लिए रुकी।

18 जुल 586 ई० पू० में :

586 ई० पू० से : — — — — — — — — — — — — — — — —
- नबी यहेजकेल द्वारा निष्कासितों को सांत्वना का संदेश और नये मन्दिर का दर्शन।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बाइबिल की विषय-वस्तु	तत्संबंधी पाठ
• व्यापक धर्मसुधार का आरंभ; नबिया हूल्दाह तथा नबी यिर्मयाह इस जन-आन्दोलन में सम्मिलित।	यिर 2—6
• नीनवे के पतन के संबंध में नबी नहूम का संदेश।	नहूम नबी-ग्रंथ
• फरओ नेको को रोकने के प्रयास में मगिदो नगर के पास धार्मिक राजा योशियाह हताहत। (17) यहोआहाज = शल्लूम (609) उत्तराधिकारी बना, लेकिन तीन महीने के अन्दर फरओ नेको ने यहोआहाज के भाई को राजगद्दी पर बैठाया : (18) यहोयाकीम = एलियाकीम (609-597)।	2 इत 36 : 1-8 यिर 46—51
• बेबीलोनी महाशक्ति के विरुद्ध नबी हबक्कूक का संदेश।	हबक्कूक नबी-ग्रंथ
• नबी यिर्मयाह के सचिव बारूक ने उनकी आरम्भिक नबूवतें लिखीं; जब राजा यहोयाकीम ने चर्मपत्र को नष्ट किया, उसने दुबारा लिखा।	यिर 7—20; 25 यिर 36 ; 45
• यहोयाकीम ने बेबीलोन के विरुद्ध विद्रोह किया; अब यरूशलेम का पतन निश्चित।	2 रा 24 ; 2 इत 36 : 9-10
• बेबीलोनियों द्वारा यरूशलेम की घेराबंदी के समय यहोयाकीम की मृत्यु। (19) यहोयाकीन = कोनियाह (597) राजा बना।	
• तीन महीने के बाद आत्मसमर्पण; राजा सहित प्रतिष्ठित लोगों का "प्रथम बेबीलोनी निष्कासन"।	
• यहोयाकीन का चाचा नियुक्त : (20) सिद्कियाह = मत्तनियाह (597-586) अन्तिम राजा।	यहेज 1-3; 4-24 2 रा 25
• राजा सिद्कियाह का विद्रोह; नबी यिर्मयाह की भी चेतावनियाँ।	यिर 21—24
• यरूशलेम की घेराबंदी का आरम्भ : नबी यिर्मयाह कूप में।	यिर 37—39 यहेज 25—32 2 इत 36: 11-21
• यरूशलेम का पतन और "द्वितीय बेबीलोनी निष्कासन"।	यिर 52
11. बेबीलोन में इस्राएल का निष्कासन काल (586-538 ई० पू०)	— — — — —
• महाशोक का वातावरण।	यहेज33-48;शोकगीत

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

- निष्कासितों के नाम ''यिर्मयाह का पत्र'', मूर्तिपूजा के विरुद्ध द्वितीय सदी ई० पू० की रचना है।

581 ई० पू० में :

571 ई० पू० में : • निष्कासन में नबी यहेजकेल का अन्तिम संदेश (दे०) यहेज 29 : 17)।

561 ई० पू० में : • बेबीलोनी सम्राट नबूकदनेसर की मृत्यु के बाद राजा यहोयाकीन को क्षमा प्राप्त (दे० 2 रा 25 : 27)।

556-539 ई० पू० में : • अन्तिम बेबीलोनी सम्राट नबोनिदुस के धर्मसुधार; व्यापक असंतोष; युवराज बेलशस्सर।

549 ई० पू० में : • अखमानी राजवंश के राजा कुस्रू का दोनों फारस देश और मादय देश पर अधिकार।

546 ई० पू० में : • सरदीस नगर के धनकुबेर क्राइसस पर कुस्रू की विजय।

539 ई० पू० में : • बेबीलोन महानगरी में कुस्रू का प्रवेश : विशालतम **फारसी साम्राज्य** का आरंभ।

538 ई० पू० से : ——————————————————

- फारसी सम्राट कुस्रू की उदार धर्मनीति से निष्कासितों को स्वदेश लौटने की अनुमति।

525 ई० पू० में : • फारसी सम्राट कम्बूसिस का मिस्र पर भी अधिकार।

522-486 ई० पू० में : • फारसी सम्राट दारा-प्रथम का शासनकाल।

520 ई० पू० में :

12 मार्च 515 ई० पू० में:

490 ई० पू० में : • मरथोन का युद्ध : यूनान देश पर फारसियों का पहला आक्रमण असफल।

486 ई० पू० में : • भारत में शाक्यमुनि बुद्धदेव का परिनिर्वाण। मगध का राजा बिंबसार।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

• नबी यिर्मयाह की ओर से भी सात्वना का संदेश।	यिर 26—35
• राज्यपाल गदल्याह की हत्या और "तृतीय बेबीलोनी निष्कासन"। यहूदा-वासी भाग कर यिर्मयाह को भी मिस्र देश ले गये।	यिर 40—44
• निष्कासन-काल में धर्मसाहित्य-रचना की बढ़ोतरी : "व्यवस्था-विवरणीय परम्परा" में व्यवस्था-विवरण ग्रंथ के साथ चार "पूर्व-नबी ग्रंथ" (यहो+शास+1-2 शम+1-2 रा) संपादित; "पुरोहितीय परम्परा" के अनुसार उत+नि+गण ग्रंथों (यथास्थान) और सम्पूर्ण लेवी-ग्रंथ की प्रस्तुति। व्यवस्था-विवरण ग्रंथ जोड़ने से तौरेत-पंचग्रंथ प्रायः तैयार।	
• निष्कासन में अज्ञात नबी "द्वितीय यशायाह" की नबूवतें: स्वदेश लौटने की आशा और आदर्श प्रभु-सेवक।	यश 40—55

12. फारसी साम्राज्य के अधीन इस्राएल का पुनर्निर्माण काल (538-333 ई० पू०) — — — — —

• यहूदा प्रान्त का राज्यपाल शेशबस्सर।	एज्रा 1; 2 इत 36 : 22—23
• राज्यपाल जरुब्बाबेल; महापुरोहित येशूअ।	
• मंदिर के पुनर्निर्माण हेतु नबी हग्गय का संदेश।	हग्गय नबी-ग्रंथ
• समकालीन नबी जकर्याह को भी दर्शन (मूल संदेश केवल नबी-ग्रंथ के प्रथम खण्ड में)।	जक 1-8
• यरूशलेम का "द्वितीय मंदिर" तैयार।	एज्रा 2-6
• अज्ञात नबी अथवा नबिया "तृतीय यशायाह" की उत्साहवर्धक नबूवतें।	यश 56-66

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

- लगभग उसी "आध्यात्म बेला" में जैन तीर्थंकर महावीर और चीन में ज्ञानी कन्फूसियस।
- फारसी सम्राट क्षयर्ष-प्रथम द्वारा "हिन्द" पर भी क्षत्रप शासक नियुक्त।

480 ई० पू० में :
- सलामिस का युद्ध : यूनानियों पर फारस साम्राज्य का दूसरा आक्रमण असफल।

465-423 ई० पू० :
- फारसी सम्राट अर्तक्षत्र-प्रथम का शासनकाल।
- मिस्र की नील नदी पर एलिफंटीन के शिविर में भाड़े के सैनिकों में यहूदी भी भरती। उनके बहुत-से अरामी पटेरपत्र प्राप्त हुए, जिनमें "याहो" के मन्दिर का उल्लेख है, और ज्ञानी अहीकार की बुद्धि-शिक्षा की एक प्रतिलिपि भी मिली।

445-443 ई० पू० में :

428 ई० पू० में :

- "शाही अरामी" का संपर्क-भाषा के रूप में व्यापक प्रयोग।

404-359 ई० पू० में :
- फारसी सम्राट अर्तक्षत्र-द्वितीय का शासनकाल। मिस्र देश फिर स्वतन्त्र।

399 ई० पू० में :
- यूनानी दार्शनिक सुक्रात को विषपान का दण्ड।

387 ई० पू० में :
- एथेन्स नगर में "अकादमी" की स्थापना : प्लेटो का प्रत्ययवाद; बाद में अरस्तू का वास्तववाद।
- चीन में ज्ञानी मेन्सियुस का धर्मदर्शन।
- भारत में संस्कृत वैयाकरण पाणिनि; मुख्य उपनिषद तैयार।
- मकिदूनिया में राजा फिलिप सुदृढ़; यूनान देश पर राज्य करने की अभिलाषा।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

• सीरिया से यहूदा तक का "नदी पार" क्षेत्र पांचवें क्षत्रप-प्रान्त में सम्मिलित।	
• नबी मलाकी द्वारा शुद्ध आराधना के लिए प्रबोधन।	मलाकी नबी-ग्रंथ
• राज्यपाल नहेम्याह का प्रथम कार्यकाल : सामरियों के विरोध पर भी यरूशलेम की शहरपनाह बनी।	नहे 1-7;11-12
• राज्यपाल नहेम्याह का द्वितीय कार्यकाल। उसी समय (?) शास्त्री एवं पुरोहित एज्रा का आगमन : आम सभा में व्यवस्था-ग्रंथ की व्याख्या (तौरेत-पंचग्रंथ का पुरोहिती संपादन समाप्त)।	नहे 13;एज्रा 7-10 नहे 8-10
• "यहूदीपन" की एक संकीर्ण विचारधारा उभर रही है (उदाहरणार्थ, पुरोहिती अधिकार; अन्तर्जातीय विवाह का विरोध); इसके विपरीत अन्यजातियों के प्रति उदार भावना नबी-योना के दृष्टांत और विदेशिनी रूत के आख्यान में दिखाई देती है।	योना नबी-ग्रंथ रूत ग्रंथ
• अ-पुरोहिती ज्ञानियों द्वारा "बुद्धि साहित्य" की रचनाएँ, जैसे नीति-वचन अध्य० 1-9 और "सभा उपदेशक" के तर्क-वितर्क; परम्परावादी धर्मदृष्टि से अलग अय्यूब की विद्रोही वाणी; श्रेष्ठ-गीत में प्रेम-गीत की शैली का भी साहसपूर्ण प्रयोग।	शेष नीति-वचन; सभोपदेशक ग्रंथ अय्यूब ग्रंथ; श्रेष्ठ गीत
• यहूदा-कुल तक सीमित और लेवीय मंदिर-उपासना पर केन्द्रित "इतिहासकार" की रचनाएँ (1-2 इति; एज्रा तथा नहेम्याह ग्रंथ)।	

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

- एदोम देश नबातेनी जाति के अधीन।

लगभग 333 ई० पू० से : —

336–323 ई० पू० में :
- सिकन्दर महान द्वारा **यूनानी साम्राज्य** स्थापित : यूनानवाद की दिग्‌विजय।

333 ई० पू० में :
- मिस्र में (तथा अन्यत्र) "सिकन्दरिया" नगर की स्थापना।
- फारसी साम्राज्य पर अधिकार और सिंधु नदी के पार तक अभियान; राजा पोरस का विरोध।

323 ई० पू० में :
- सिकन्दर के उत्तराधिकारियों में संघर्ष : मकिदूनिया में अन्तिगोनी वंश; मिस्र में (राजधानी सिकन्दरिया) पतोलेमी वंश; सीरिया में (राजधानी अन्ताकिया) सेल्यूकी वंश।
- भारत में चन्द्रगुप्त मौर्य और चाणक्य; पाटलिपुत्र में यूनानी राजदूत मेगस्थेनीस।
- यूनानी दर्शन के विभिन्न पंथ : जेनोन का संयमित स्तोइकवाद; इपिकूरस का भोगवाद।

268 ई० पू० में :
- भारत में सम्राट अशोक प्रियदर्शी : ब्राह्मी अथवा खरोष्ठी लिपि में अंकित प्राकृत अभिलेखों द्वारा तथा कुछएक अरामी-यूनानी अभिलेखों द्वारा बौद्ध "धम्म" का प्रचार।

250 ई० पू० में :
- पार्थियों का स्वतन्त्र "सस्सानी साम्राज्य" स्थापित।
- बैक्ट्रिया (उत्तर-अफ़गानिस्तान) में यवनों का स्वतन्त्र "हिन्द-वाह्लीक" राज्य आरम्भ।
- चीन में ताओवाद का प्रवर्तक लाओत्सु।

221 ई० पू० में :
- चिन-वंश का सम्राट शिह-ह्वांग-टी : विशाल "चीनी भित्ति" से उत्तरी सीमा की रक्षा।

206 ई० पू० से :
- दीर्घकालीन हन-वंश का प्रथम सम्राट ल्यू-पंग।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

• एदोम देश के संबंध में नबी ओबद्याह का कठोर संदेश।	ओबद्याह नबी-ग्रंथ
13. यूनानी शासन के अधीन विसर्जित इस्राएल द्वारा धर्मसंरक्षण का काल (333-142 ई० पू०)	— — — — —
• संभवत : टिड्डी-प्रकोप के प्रतीक में यूनानी आक्रमण के संबंध में नबी योएल का प्रकाशनात्मक संदेश।	योएल नबी-ग्रंथ
• सिकन्दर का यरूशलेम में प्रवेश।	[1मक1:1—8]

मिस्र देश के पतोलेमी शासन के अधीन (323-200 ई० पू०)

• मिस्र के यूनानी शासक यहूदियों के धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करते। फिर भी यरूशलेम में योग्य नेतृत्व का अभाव, जैसे नबी-ग्रंथ "द्वितीय जकर्याह" की नबूवतों में स्पष्ट है।	जक 9—14
• अब से सामूहिक आराधना में व्यवस्था-पंचग्रंथ के साथ नबी-ग्रंथों का भी प्रयोग; इस प्रकार पूर्ववर्ती नबी-ग्रंथों (यहो+शास+1-2 शम+1-2 रा) के बाद परवर्ती नबी-ग्रंथों (यश+यिर+यहेज+बारह छोटे नबी) का भी संकलन किया गया। साथ-ही-साथ एकीकृत भजन-संहिता तथा अन्य लेखों का तीसरे खण्ड के रूप में संकलन आरम्भ हुआ।[प्रवक्ता-ग्रंथ के प्राक्कथन में तीन खण्डों का स्पष्ट उल्लेख है : व्यवस्था, नबी तथा अन्य ग्रंथ]।	शेष भजन
• विसर्जित यहूदी समाज में "पूरीम पर्व" से जुड़ी हुई रानी एस्तर की कथा : यहूदी प्रतिरक्षा की भावना।	एस्तर-ग्रंथ [+शेष-एस्तर]
• विशेषकर मिस्र के यूनानी भाषा-भाषी यहूदियों के लिए बृहद् यूनानी "सप्तति" बाइबिल-अनुवाद का आरंभ। "अरिस्तेअस के पत्र" में अनुवाद-कार्य की प्रशंसा।	

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

- भारत में श्रीमद्भगवद् गीता अपने वर्तमान स्वरूप में प्रस्तुत।
- पतोलेमी तथा सेल्यूकी राजाओं के बीच द्वन्द्वयुद्ध।

200 ई० पू० में :
- सेल्यूकी राजा अन्तियोखुस-तृतीय "महान" पतोलेमी सेना को दक्षिण की ओर ढकेलने में सफल।

190 ई० पू० में :
- मग्नेसिया के युद्ध में रोमन सेना विजयी : सेल्यूकी विस्तार-नीति रुकी।

184 ई० पू० में :
- उत्तर-भारत में पुष्यमित्र शुंग ब्राह्मण धर्म का अनुयायी।

180 ई० पू० में :

175 ई० पू० में :
- सेल्यूकी राजा अन्तियोखुस-चतुर्थ "एपीफनेस" (प्रकट ईश्वर) की उपाधि से विभूषित; दस यूनानी राजवंशजों के बाद (फिलिप, सिकन्दर, अन्तिगोनुस, सेल्यूकस प्र०, अन्तियोखुस प्र०, अन्तियोखुस द्वि०, सेल्यूकस द्वि०, सेल्यूकस तृ०, अन्तियोखुस तृ०, सेल्यूकस च०) यही अन्तियोखुस-चतुर्थ महादुष्ट साबित हुआ। (दे० दान 7 : 24)।

6 दिस० 167 ई० पू० में:

- पार्थी सम्राट मिथ्रदतेस-प्रथम।

14 दिस० 164 ई० पू० में:

- राजा अन्तियोखुस एपीफनेस की असह्य प्राणपीड़ा।
- राजा अन्तियोखुस-पंचम और सेनाध्यक्ष लीसियस।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

- महापुरोहित शिमोन, जिसकी प्रवक्ता-ग्रंथ अध्य० 50 में प्रशंसा की गई है।

सीरिया देश के सेल्यूकी शासन के अधीन (200-142 ई० पू०)

- सेल्यूकी राज्य में "यूनानीकरण" की नीति जोरों पर।
- वृद्ध शिक्षक येशु बेन-सीराह ने मूल इब्रानी प्रवक्ता-ग्रंथ की रचना की, यद्यपि उसकी कृति को बाद में "प्रामाणिक ग्रंथों" की इब्रानी सूची में नहीं रखा गया। उन्हीं दिनों में भक्त यहूदियों ने मूल तोबीत-ग्रंथ तथा बारूक-ग्रंथ की रचना की। फिर भी ऐसी "अन्य-प्रामाणिक" रचनाओं को यूनानी सप्तति बाइबिल-अनुवाद में स्थान मिला। [प्रवक्ता-ग्रंथ] [तोबीत; बारूक; यिरमियाह का पत्र]
- धार्मिक महापुरोहित ओनियाह के स्थान पर यूनान-समर्थक यासोन को नियुक्त। [2मक 3—4]
- यरूशलेम के मन्दिर में "घृणित वस्तु" (ज्यूस की मूर्ति) स्थापित; साढ़े तीन वर्ष तक धर्म-उत्पीड़न। [1 मक 1 :9-64; 2 मक 5—7]

  हस्मोनी परिवार के "मक्काबी" (हथौड़ेबाज) भाइयों के नेतृत्व में भक्त "हसीदियों" का विद्रोह। [1 मक 2:1-4:35; 2 मक 8]
- बेबीलोनी दरबार में धर्मनिष्ठ दानिएल की 6 कथाओं और 4 दर्शनों के वर्णन द्वारा प्रोत्साहन (ध्यान दें कि मूल इब्रानी-अरामी में यह रचना नबी-ग्रंथों में नहीं, वरन् "अन्य लेखों" में मिलती)। दान 1-6; 7-12 [+ शेष-दानिएल]
- वीर यहूदा मक्काबी द्वारा यरूशलेम के मन्दिर का शुद्धीकरण-प्रतिष्ठापन; पूर्ण स्वतन्त्रता के लिए युद्ध जारी। [1मक4:36-5:68; 2 मक 10]

  [1 मक 6 : 1—17; 2 मक 9]
- यहूदियों को फिर धार्मिक स्वतन्त्रता प्राप्त। [मक 6 : 18—63; 2 मक 11—13]

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

162 ई० पू० में :
- अंताकिया में देमेत्रियुस-प्रथम को राज्याधिकार प्राप्त।

---

152 ई० पू० में :
- यवन राजा मिलिन्द बौद्ध धर्म का अनुयायी।
- पाली भाषा में "त्रिपिटक" संग्रह प्रामाणिक माना गया।

148 ई० पू० में :
- मकिदूनिया प्रदेश पर रोम का अधिकार।

146 ई० पू० में :
- रोम द्वारा कार्थेज (उत्तर अफ्रिका) एवं कुरिंथुस नगर पर विजय।

142 ई० पू० में :

लगभग 142 ई० पू० से : –

134 ई० पू० में :

134–104 ई० पू० में :

132 ई० पू० में :
- मिस्र के राजा "यूएरगेतेस" के शासनकाल के 38वें वर्ष में 'प्रवक्ता-ग्रंथ' का यूनानी अनुवाद (प्रव० प्राक्कथन)।

124 ई० पू० में :
- विदिशा का गरुड़ स्तंभ : यवन दूत हेलियोडोरस ने भागवत् धर्म स्वीकारा।

104–103 ई० पू० में :

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

• दानिएल-ग्रंथ में उल्लिखित समय (दान 12 : 12) इब्रानी प्रामाणिक ग्रंथ-रचना का मानो अन्तिम संकेत है।	[1 मक 7—9; 2 मक 14—15]
• प्रवक्ता ग्रंथ अध्य० 44-49 में "पुराना विधान" का सारांश।	प्रे 7:2-53; 13:17-23
(ख) "पुराना-नया विधान" का संक्रमण काल	
• मक्काबी भाई योनातन को महापुरोहित की उपाधि प्राप्त।	[1 मक 10-12]
[मसीह की प्रतीक्षा : यहूदी अपने महान पूर्वजों को याद कर अपने धर्मसाहित्य में आनेवाले अभिषिक्त-जन (मसीह) के ये लक्षण खोजते: नये एलियाह (मल 4 : 5; [प्रव 48: 10]), दाऊद वंशज (यश 11 : 1; यिर 33 : 17; यहेज 34 : 23; 37 : 24; जक 6 : 12; 9 : 9; 12 : 10), सेवक (यश 42 : 1; 49 : 6; 50 : 10; 53 : 11), मानव-पुत्र (दान 7 : 13; भज 8 : 5), वचन-रूपी प्रज्ञा (व्य० वि० 30 : 14; यश 55 : 11; नीति 8 : 22; [प्रव 24 : 3]), अथवा नबी-मध्यस्थ (व्य० नि० 18 : 18; यश 61 : 1; अय्य 19 : 25)]	इब्र 1 : 1-2 ; 11; 1 कुर 10 : 11; लू 24 : 44; मत 2 : 4; प्रे 8 : 34; 26 : 6
• मक्काबी भाई शिमोन यहूदा-प्रदेश का स्वतन्त्र शासक और महापुरोहित (1 मक 13 : 41)।	[1 मक 13—15]
14. हस्मोनी वंश के शासन में इस्राएल की पुनः स्वतन्त्रता का काल (142-63 ई० पू०)	— — — — —
• हस्मोनी शासक-महापुरोहित न दाऊद-वंशी है न हारून-वंशी। भक्त हसीदी असंतुष्ट; कुमरान में एस्सेनी-पंथ।	
• शिमोन की मृत्यु; प्रथम मक्काबी-ग्रंथ की रचना।	[1 मक 16]
• शासक-महापुरोहित योहन हिरकानुस-प्रथम का शासन काल।	
• गरिज्जीम पर्वत पर सामरी संप्रदाय का मंदिर विनष्ट; इदूमियों का बलपूर्वक धर्मपरिवर्तन।	[प्रवक्ता-ग्रंथ का प्राक्कथन]
• द्वितीय मक्काबी-ग्रंथ (1 मक से अलग रचना) प्रस्तुत, जो एक पूर्व-रचना का संक्षिप्त वर्णन है।	[2 मक 1—2]
• प्रगतिशील फरीसी-पंथ और दूसरी ओर परम्परावादी-अवसरवादी सद्दूकी पंथ।	
• अरिस्तोबुलुस-प्रथम को "राजा" की उपाधि भी प्राप्त; गलील प्रदेश पर अधिकार।	

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

103–76 ई० पू० में :

- भारत में मनुधर्मशास्त्र; सांची स्तूप का निर्माण।
- चीन में हन-वंशी सम्राट वू-ती के दरबार में इतिहासकार सू-म-चियेन।
- आंध्र में सातवाहन वंश।

76–67 ई० पू० में :

67 ई० पू० में :

[''**अन्य-प्रामाणिक'' ग्रंथ**-सूची के 7 ग्रंथ और 5 शेष-अंश सप्तति बाइबिल-अनुवाद में मिलते हैं। उनकी लिपि और भाषा यूनानी ही है। मूल रचना प्राय: इब्रानी अथवा अरामी भाषा में है। केवल प्रज्ञा और द्वितीय मक्काबी ग्रंथ की रचना सीधे यूनानी भाषा में हुई।]

63 ई० पू० से : — — — — — — — — — — — — — — — — — —

- मध्य-अमेरिका में ज़पोतेक एवं माया-संस्कृति के आरम्भिक रूप।

54 ई० पू० में :

- मिस्र के सिकन्दरिया नगर में किसी यूनानी भाषा-भाषी यहूदी द्वारा ''प्रज्ञा ग्रंथ'' की रचना।
- पश्चिमोत्तर भारत में पहलव तथा शक राज्य।

48 ई० पू० में :
- रोम में जूलियस कैसर प्रमुख शासक।

44 ई० पू० में :
- ब्रूतुस के षड्यन्त्र से कैसर की हत्या; मार्कुस अन्तोनियुस पूर्व देशों का अधिकारी।

40 ई० पू० में :
- एकाएक पार्थियों ने इस्राएल की राजनीति में हस्तक्षेप किया।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

- राजा सिकन्दर यन्नेउस का शासनकाल; सम्पूर्ण "इस्राएल" क्षेत्र पर अधिकार। लेकिन दमन की नीति : 800 फरीसियों को क्रूसित किया गया।
- देश-भक्ति से ओतप्रोत वीरांगना "यहूदीत" की कथा की रचना। [यहूदीत]
- रानी सिकन्दरा का शासनकाल : फरीसियों के पक्ष में नरम नीति।
- उसका ज्येष्ठ पुत्र हिरकानुस महापुरोहित बना और "हिरकानुस-द्वितीय" के नाम से राजा भी नियुक्त। लेकिन सद्दूकियों के सहयोग से दूसरा पुत्र "अरिस्तोबुलुस-द्वितीय" राजा-महापुरोहित घोषित।
- जब हिरकानुस इदूमियों के शासक अन्तिपतेर की सहायता लेता, तब रोम हस्तक्षेप करता!

15. रोमन साम्राज्य के अधीन इस्राएल के नवीकरण का काल (63 ई० पू० से सन् ई० 135 तक) — — — — —

- रोमन सेनापति पोम्पेइ का यरूशलेम में प्रवेश; हिरकानुस-द्वितीय पुनः महापुरोहित नियुक्त।
- रोमन सेनापति क्रासुस ने यरूशलेम का मंदिर लूटा।
- यहूदी धर्मसाहित्य का और विस्तार; विशेषकर युगांत अथवा अभिषिक्त-जन (मसीह) के संबंध में प्रकाशनात्मक रचनाएँ, उदाहरणार्थ छद्मनाम "हनोक" ग्रंथ। मृतसागर के तट पर स्थित कुमरान-मठ का अपना पंथीय साहित्य भी। [प्रज्ञा-ग्रंथ]
- इदूमी अन्तिपतेर यहूदा का राज्यपाल नियुक्त।
- अन्तियतेर का ज्येष्ठ पुत्र फसाएल यहूदा का राज्यपाल; दूसरा पुत्र हेरोदेस गलील का राज्यपाल।
- पार्थियों ने अरिस्तोबुलुस-द्वितीय के पुत्र अन्तिगोनुस को राजा एवं महापुरोहित नियुक्त किया; इसके विरुद्ध रोमन परिषद् ने अन्तिपतेर के पुत्र हेरोदेस को राजा नियुक्त किया।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

37 ई० पू० में :

31 ई० पू० में :
- अक्सियुम की लड़ाई में अन्तोनियुस अपने प्रतिद्वन्द्वी ओक्तव्यानुस से पराजित; मिस्र की रानी क्लियोपत्रा के साथ निराश अन्तोनियुस की आत्महत्या।

---

29 ई० पू० में :
- रोम में जुलियुस कैसर का दत्तक पुत्र ओक्तव्यानुस "औगुस्तुस" (अर्थात् दिव्य) प्रथम "कैसर" सम्राट।

20 ई० पू० से :
12 ई० पू० में :
- क्विरीनियुस सीरिया का प्रान्तपति : अनेक स्थानीय जनगणनाएँ (दे०लू० 2: 1-2)।
- रोमन साम्राज्य में तथा-कथित "रोमन शान्ति" का वातावरण।

7 और 5 ई० पू० के बीच :
- येशु-जयन्ती का समय अनिश्चित (पश्चिम में जयन्ती को दक्षिणायनान्त-पर्व 25 दिस०, पूर्व में 6 जन० ठहराया गया)।

4 ई० पू० में :

ईसवी सन् का आरंभ :
- रोम की स्थापना से गिने हुए "वर्ष रोमन संवत् 754" को गलती से येशु के जन्म का "ईसवी सन् 1" माना गया।

सन् 6 ई० में :
- रोमन सम्राट औगुस्तुस ने यहूदा-प्रदेश के शासक अर्खेलउस को हटाकर रोमन राज्यपाल नियुक्त किया।

सन् 14-37 ई० में :
- रोमन सम्राट तिबेरियुस का शासनकाल।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

- यरूशलेम पर अधिकार प्राप्त करने से राजा हेरोदेस महान का वास्तविक शासन आरम्भ; उसने रानी सिकन्दरा की पोती मरियाम्ने-प्रथम से विवाह कर हस्मोनी वंश से संबंध जोड़ा।
- हेरोदेस के महान निर्माणकार्य, उदाहरणार्थ : कैसरिया बंदरगाह, यरूशलेम का हेरोदेस-महल।

(ग) नव विश्वास संबंधी "नया विधान" काल

- कुलपिता अब्राहम से और राजा दाऊद से बढ़ई यूसुफ तक आने वाले मसीह की वंशावली। — मत 1: 1-17; लू 3 : 23-38
- रोम के अधीन राजा हेरोदेस महान द्वारा यरूशलेम के मन्दिर का भव्य सुधार (सन् 62 ई० तक! दे०यो 2: 20)।
- पुरोहिती परिवार में "बपतिस्मा (धर्मस्नान) देने वाले" योहन का जन्म। — लू 1 : 5-25. 57-80

प्रभु येशु का जीवन काल (7 ? ई० पू०-सन् 30) — यो 1 : 1-18;

- दाऊद के नगर बतलेहम में "नासरत-वासी" येशु का जन्म। — लू 1:26-56; 2:1-40
- राजा हेरोदेस ने (जिसने पुत्रों सहित अपनी दो पूर्व-पत्नियों को भी मरवाया था) निर्दोष बालकों की हत्या की। — मत 1:18-2:18
- राजा हेरोदेस की मृत्यु : गलील में उग्रवादी यहूदा का विद्रोह; आतंकवादियों को क्रूसित। हेरोदेस महान के उत्तराधिकारी : — प्रे 5:37

  (1) उपपत्नी मल्थाके से अर्खेलउस : सामरी तथा यहूदा-इदूमिया का शासक (4 ई० पू० से सन् 6 ई० तक); — मत 2 : 19-23

  (2) उपपत्नी मल्थाके से हेरोदेस अन्तिपास : गलील और आसपास का शासक (4 ई० पू० से सन् 39 तक);

  (3) उपपत्नी क्लियोपत्रा से फिलिप : त्रखोनिसि और आसपास का शासक (4 ई० पू० से सन् 34 तक)।
- हन्ना महापुरोहित (सन् 6 से 15 ई० तक)।

  किशोर येशु मन्दिर में धर्मगुरुओं के बीच। — लू 2 : 41-52
- बढ़ई यूसुफ तथा दीन सेविका मरियम के पुत्र येशु नासरत के मज़दूर।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सन् 26–36 ई० में : • पोन्तियुस पिलातुस यहूदा-प्रदेश का राज्यपाल।

लगभग 27 ई० में : • गलील-प्रदेश के शासक हेरोदेस ने अपनी पत्नी, नबातेनी अरेतास की पुत्री को त्यागकर, अपने भाई की पत्नी हेरोदियास से विवाह किया।

[**बारह ''प्रेरित''** शिष्यों के नाम : सिमोन पतरस अथवा केफा ''चट्टान''; दो ''गरज के पुत्र'' याकूब और योहन; पतरस का भाई अन्द्रेयास, फिलिप, बरतुलमय अथवा नतनएल; मत्ती अथवा लेवी चुंगी-अधिकारी; थोमा अथवा दिदुमस ''जुड़वां भाई'', हलफई का पुत्र याकूब; तद्दै अथवा याकूब का पुत्र यहूदा; शिमोन कनानी ''उग्रपंथी''; यूदस इसकरियोती ''विश्वासघाती'']

लगभग 29 ई० में : • यहूदी इतिहासकार योसेफुस फ्लावियुस ने भी योहन की हत्या के संबंध में साक्षी दी।

• तरसुस नगर का युवक पौलुस यरूशलेम में आचार्य गमलीएल के चरणों में बैठकर (प्रे 22 : 3) शिक्षा-दीक्षा पाता है। यहूदी शास्त्रियों में कठोर ''शम्मई'' पक्ष के विरुद्ध गमलीएल उदार ''हिल्लेल'' पक्ष का समर्थन करता था (प्रे 5 : 34)।

• मिस्र के सिकन्दरिया नगर में यहूदी दार्शनिक फीलो, जिसने यूनानवादी यहूदी धर्मदर्शन को समर्थन दिया और (कुमरान के) एस्सेनी पंथियों की प्रशंसा की।

• रोमन सम्पर्क-मार्ग विकसित; व्यापारी दूर पूर्व तक जाने लगे : अरिकमेदु (पांडिचेरी) में भी लातीनी लेख के रोमन सिक्के प्राप्त हुए।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बाइबिल की विषय-वस्तु	तत्संबंधी पाठ
• काइफा महापुरोहित (सन् 18 से 36 ई० तक)।	
• योहन बपतिस्मादाता के धर्मोपदेश; यर्दन नदी में येशु नासरी का बपतिस्मा (जल-अभिषेक)।	मत 3; मक 1:1-11; लू 3; यो 1:19—28
• निर्जन प्रदेश में येशु की परीक्षा।	मत 4:1-11; मक 1:12-13; लू 4:1-13
• येशु के सेवाकार्य का आरम्भ; प्रथम शिष्यों को आह्वान।	मत 4:12-22; मक1:14-20;लू:4:14-15;यो 1:29-51
• गलील में येशु का आरम्भिक सेवाकार्य; अपने गृहनगर नासरत में ही विरोध। सहदर्शी शुभसंदेश (मत, मक, लू) नहीं, केवल चौथा शुभसंदेश (यो) एक आरम्भिक यरूशलेम-यात्रा का वर्णन करता।	मत 4:23-13:58; मक 1:21-6:13; लू4:16-9:6;यो 2-5
• हेरोदियास की पुत्री सलोमी की मांग के अनुसार हेरोदेस ने योहन का सिर कटवाया।	मत 14:1-12; मक 6:14-29; लू 9:7-9
• बड़ी भीड़ के सामूहिक भोज में रोटी खिलाने का आश्चर्यकर्म। क्या यहूदियों के उग्रवादी ''जेलोती'' दल का नेता बरअब्बा ने येशु को राजनीतिक ''मसीहा'' के रूप में देखना चाहा?	मत 14:13-16:12; मक6:30-8:26;लू9:10-17; यो 6:1-59
• शिष्य पतरस गुरु येशु को ''मसीह'' (सत्याभिषिक्त) मान लेता है; त्याग की शिक्षा।	मत 16:13-28; मक 8: 27-9:1; लू 9:18-27; यो6:60-71
• पर्वत पर येशु का रूपान्तर और दिव्य वाणी।	मत 17:1-13; मक9:2-13; लू 9:28-36; 2 पत 1: 16-18
• गलील में येशु का शेष सेवाकार्य; उनके प्रति चाहे फरीसी अथवा सदूकी सम्प्रदाय के धर्माधिकारियों का बढ़ता विरोध।	मत 17:14-20:16; मक 9:14-10:31; लू 9:37-50; यो 7:1
• अन्य सहदर्शी शुभसंदेशों से अलग लूका-रचित शुभसंदेश में यरूशलेम-यात्रा की विस्तृत सामग्री।	लू 9:51-18:30
• योहन-रचित शुभसंदेश के अनुसार यरूशलेम में मंडप-पर्व और प्रतिष्ठान-पर्व के समय सेवाकार्य।	यो 7:2-10:42
• यरीहो नगर से होते हुए यरूशलेम की (अन्तिम) यात्रा; चौथे सुभसंदेश की प्रस्तुति में मृत लाजर को जीवनदान : सबसे महान अन्तिम ''चिह्न''।	मत 20:17-34; मक 10: 32-52; लू 18:31-19:27; यो 11

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

6 अप्रैल सन् 30 ई० में :

- रोमन इतिहासकार तासितुस ने भी साक्षी दी कि पोंतियुस पिलातुस ने मसीह को क्रूसदण्ड दिया।

7 अप्रैल सन् 30 ई० में :
- यह दिन निश्चित रूप से शुक्रवार था; योहन-रचित शुभसंदेश के अनुसार वह तैयारी का दिन था; क्योंकि उस वर्ष में यहूदियों का पास्का-महापर्व विश्राम-दिवस, अर्थात् शनिवार को पड़ा।

9 अप्रैल सन् 30 ई० में :
- रविवार, ''प्रभु का दिन'' : शिष्यगण में शनिवार के रात्रिजागरण से ''ईस्टर''-महापर्व मनाने का प्रचलन आरम्भ।

28 मई सन् 30 ई० में :
- रविवार : सप्त-सप्ताह के बाद पचासवाँ अथवा ''पेंतकोस्त''-पर्व का दिन।

सन् 35 ई० में :
- राज्यपाल पिलातुस ने गरिज्जीम पर्वत पर सामरियों का संहार किया।

सन् 36 ई० में :
- पिलातुस पदच्युत।

37-41 ई० में :
- तृतीय रोमन सम्राट कलिगुला का शासनकाल।

लगभग 38 ई० में :

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

• येरूशलेम में प्रवेश और अन्तिम उपदेश; बैतनियाह में येशु का अभ्यंजन; और यूदस का विश्वासघात।	मत 21:1-26:16; मक 11:1-14:11; लू 19:28-22:6; यो 12
• शिष्यों के साथ अन्तिम भोज (जो सहदर्शी शुभसंदेश के अनुसार पास्का-पर्व का भोज था); योहन-रचित शुभसंदेश के अनुसार पैर धोने का उदाहरण; प्रेमाज्ञा और समर्पण की प्रार्थना।	मत 26:17-35; मक 14:12-31; लू 22:7-38; यो13-17
• दुःखभोग-कथा : गतसमने बाग में येशु की गिरफ्तारी; महापुरोहित काइफा के सामने दोषारोपण; राज्यपाल पिलातुस द्वारा दण्डाज्ञा; क्रूस-मृत्य और दफन।	मत 26:36—27:66; मक14:32—15:47; लू 22:39-23:56; यो 18—19

यहूदियों एवं गैरयहूदियों को मिलानेवाले मसीही पंथ का आरंभ (सन् ई० 30-135)

• मृत्युंजय प्रभु येशु की उपस्थिति के संबंध में आधारभूत साक्ष्य: पुनरुत्थान का संदेश और-दर्शन।	मत 28; मक 16; लू 24; यो 20—21
• स्वर्गारोहण के बाद यरूशलेम में शिष्यों का पुनः संगठन : यूदस के स्थान पर मतियाह।	प्रे1; 1 कुर 15: 1—7
• "पवित्र आत्मा" के प्रभावशाली वरदान से शिष्य समूह में नया बल : पतरस का संदेश।	प्रे 2:1-42
• विरोध के बावजूद यरूशलेम में आरंभिक "कलीसिया" अर्थात् शिष्य-मण्डली का आदर्श जीवन।	प्रे 2:43-5:42
• प्रथम शहीद स्तिफनुस, जो यूनानी भाषाभाषी शिष्यों में धर्मसेवक था।	प्रे 6-7
• अत्याचार के कारण यरूशलेम से बहिष्कृत शिष्यों द्वारा अन्यत्र प्रचार : सामरी जादूगर शिमोन और इथियोपियाई खोजा।	प्रे 8
• अत्याचार करनेवाले शाऊल अथवा पौलुस का मनपरिवर्तन; शायद दमिश्क नगर से नबातेनी "अरब" देश की ओर।	प्रे 9:1-22; गल 1:11-17
• प्रेरित पौलुस का दमिश्क नगर को लौटना और शहरपनाह की खिड़की से पलायन।	प्रे 9:23-25; 2 कुर 11: 32-33
• यरूशलेम में पतरस से भेंट करने के बाद पौलुस अपनी जन्मभूमि तरसुस की ओर निकलते।	प्रे 9:26-30; गल 1:18-24

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सन् 39 ई० में : ● सम्राट कलिगुला की मूर्त्ति यरूशलेम के मन्दिर में स्थापित करने के आदेश पर अमल नहीं हुआ।

41–54 ई० में : ● चतुर्थ रोमन सम्राट क्लौदियुस का शासनकाल।

सन् 41 ई० में :

सन् 44 ई० में :

सन् 45 ई० में : ● यूनानी त्यागी–खोजी अप्पुलोनियुस तुअन्नेउस तक्षशिला तक पहुंच जाता।

सन् 48 ई० में : ● हेरोदेस अग्रिप्पा–द्वितीय खल्किस प्रदेश का राजा (53 ई० तक), फिर उत्तरी क्षेत्रों का शासक।

सन् 49 ई० में : ● सम्राट क्लौदियुस ने "खेस्तोस् (ख्रीस्त!) के विद्रोह के कारण" रोम नगर से यहूदियों को निकाला (प्रे 18:2)।

51–52 ई० में : ● कुरिन्थुस नगर में रोमन प्रशासक गल्लियो (प्रे 18:12), जो दार्शनिक सेनेका का भाई था; इसके कार्यकाल का उल्लेख देल्फी–अभिलेख में प्राप्त हुआ।

● प्रेरित थोमा के भारत–आगमन का परंपरागत काल : (क्या वह तक्षशिला में यहूदी प्रवासियों के यहाँ गए [जब कि "प्रेरित थोमा के कार्य" ग्रंथ में राजा गुन्दफार का उल्लेख है, जो वास्तव में 10 ई० पू० तक राज्य कर रहा था] ? क्या उन्होंने केरल में सप्त–कलीसिया की स्थापना की ? कहा जाता है कि वह चेन्नई के पास मैलापुर में तमिल संत–कवि तिरुवल्लुवर से मिले और वहीं अन्तिम साक्ष्य दिया।)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

• पतरस का प्रचार कार्य : कैसरिया का शतपति करनेलियुस प्रथम गैरयहूदी रोमन विश्वासी-भाई।	प्रे 9:31-11:18
• महानगर अन्ताकिया में अन्यजातियों की प्रथम कलीसिया : अब शिष्य ''मसीही'' (अथवा ''नासरी'') कहलाने लगे।	प्रे 11 : 19—26
• सम्राट क्लौदियुस ने ''हेरोदेस अग्रिप्पा-प्रथम'' को गलील, सामरी तथा यहूदा का राजा नियुक्त किया। उसी प्रकार उत्तरी क्षेत्रों पर ''खल्किस का हेरोदेस'' शासक नियुक्त (जिसने अपने भाई की पुत्री बरनीके को ब्याहा)।	
• राजा हेरोदेस अग्रिप्पा द्वारा प्रेरित याकूब को मृत्युदण्ड और प्रेरित पतरस की गिरफ्तारी (और छुटकारा!)।	प्रे 12 : 1—19
राजा हेरोदेस की अविलंब मृत्यु और यहूदा पर फिर रोमन राज्यपाल नियुक्त।	प्रे 12:20—24
• महानगर अन्ताकिया से बरनबास और पौलुस की ''**प्रथम प्रचार-यात्रा**'' : कुप्रुस द्वीप और दक्षिण गलातिया।	प्रे 13—14
• समस्त यहूदा में भीषण अकाल : अदियाबेने की यहूदिनी रानी हेलेन सहायता पहुँचाती।	प्रे11:27—30;12:25
• यरूशलेम में शिष्यों की धर्म-परिषद् : यहूदी मसीहियों तथा गैर-यहूदी मसीहियों में कैसी सहभागिता हो?	प्रे 15:1-35; गल 2:1-10
फिर भी व्यवहारिक समस्याएँ बनी रहीं: येशु का भाई याकूब यहूदी पक्ष में; पौलुस गैर-यहूदी पक्ष में— बीच में पतरस।	गल 2:11-14
• सीलास और तिमोथी के साथ पौलुस की ''**द्वितीय प्रचार-यात्रा**'': छोटा आसिया के त्रोआस नगर से यूरोप की ओर : फिलिप्पी, थिस्सलुनीके, अथेने...कुरिंथुस नगर तक।	प्रे 15:36-18:4
• कुरिंथुस नगर से थिस्सलुनीके नगर के नवशिष्यों के नाम दो पत्र : नया-विधान की प्रथम रचना।	1—2 थिस० पत्र
• डेढ़ वर्ष तक कुरिंथुस में कार्य करने के बाद पौलुस राज्यपाल गल्लियो के न्यायासन के सम्मुख।	प्रे 18:5—17
(क्या फिल 1:13 में उल्लिखित कारावास इस समय का है?)	फिल० पत्र
• इफिसुस नगर से होते हुए पौलुस अन्ताकिया को लौटते हैं।	प्रे 18:18—22

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

52–54 ई० में :

54–68 ई० में :
- पंचम रोमन सम्राट नीरो का शासनकाल। एशिया में पार्थियों से संघर्ष। रोम में ऐश-आराम और खेल-तमाशा का जीवन।

सन् 55 ई० में :
- क्या प्रेरित बरतुलमय मुम्बई के पास कल्याण तक पहुँचा? (इतिहासकार युसेबियुस ने सिकन्दरिया के आचार्य पन्तैनुस के उस साक्षी का उल्लेख किया कि उसने भारत में अरामी शुभसंदेश की एक प्रति पायी। आचार्य पपियस ने भी यह साक्षी दी कि मत्ती ने पहले इब्रानी-अरामी में शुभसंदेश प्रस्तुत किया।)

56–57 ई० में :

[नया विधान'' की मूल लिपि और भाषाः
सम्पूर्ण 27 ग्रंथ यूनानी लिपि और यूनानी भाषा में।
कुछ इब्रानी-अरामी उल्लेख, वाक्यांश अथवा शब्द (उद० मत 27:46; मक 5:41; और ''अब्बा'' पिता, इत्यादि); लातीनी (उद० कैसर); फारसी (उद० स्वर्गलोक, लूक 23:43); संस्कृत (उद० जटामासी, मक 14:3); फेनीकी (उद० एलुमस, प्रे 13:8); इथियोपियाई (उद० कन्दाके, प्रे 8:27)... और अन्य अर्थात् अध्यात्म भाषा (प्रे 2:4) !]

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

• फेलिक्स, जिसने राजा हेरोदेस अग्रिप्पा-द्वितीय की बहिन द्रुसिल्ला को ब्याहा, यहूदा का राज्यपाल नियुक्त।	
• **''तृतीय प्रचार यात्रा''** के दौरान पौलुस उत्तर-गलातिया में (अस्वस्थ होकर) रुके।	प्रे 18:23; गल 4:13—15
• कठिन परिस्थितियों में पौलुस दो वर्ष इफिसुस नगर में शिक्षा देते रहे। क्या इस समय गलातियों के नाम पत्र भेजा?	प्रे 18:24—19:22 गल० पत्र
• यहीं से पौलुस ने कुरिंथुस नगर के अशान्त भाई-बहिनों के नाम पत्र लिखा (1 कुर 16:8)।	1 कुर० पत्र
• बीच में पौलुस को थोड़े समय के लिए कुरिंथुस जाकर अकास्मिक भेंट करनी पड़ी (2 कुर 2:1; 13:1)।	
• इसके बाद पौलुस ने कुरिंथियों के नाम एक ''कठोर पत्र'' लिखा (2 कुर 2:3; 7:8); यह पत्र अप्राप्य है।	(2 कुर 10-13 ?)
• इफिसुस में सुनारों का दंगा।	प्रे 19:23-41
• पौलुस कुरिन्थियों के संबंध में चिन्तित होकर इफिसुस से मकिदूनिया तक पहुँचे (2 कुर 2:12-13)।	प्रे 20:1
• जब तीतुस लौटकर कुरिंथुस से अच्छा समाचार लाया (2 कुर 7:6), तो पौलुस ने सानन्द पत्र लिखा।	2 कुर 1-9 (+10-13 ?)
• पौलुस ने इल्लुरिकुम (मकिदूनिया से उत्तर-पश्चिम की ओर) में भी प्रचार किया (2 कुर 10:16)।	रोम 15:19; प्रे 20:2
• संभवत: इन दिनो में प्रभु येशु के मूल अरामी गुरुवचनों का संकलन किया गया, जिसका यूनानी रूपांतर बाद में लिखित शुभ संदेश, विशेषकर मत्ती-रचित शुभसंदेश, में प्रयुक्त हुआ।	
• कुरिंथुस की कलीसिया से मिलकर पौलुस ने रोम के मसीही भाई-बहिनों को विशेष पत्र लिखा।	रोम० पत्र; प्रे 20:3
• पौलुस की योजना थी कि यूनान के गैरयहूदी मसीहियों का दान लेकर यरूशलेम के गरीब यहूदी मसीहियों की सहायता करें और फिर रोम से होते हुए स्पेन तक पहुंच जाएं।	रोम 15 : 23—32
• कुरिंथुस से निकलकर, फिलिप्पी-त्रोआस-मिलेतुस-कैसरिया से होते हुए, यरूशलेम पहुंचे।	प्रे 20:4—21:17

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

- दक्षिण भारत में चोल राजवंश का शासन; तमिल साहित्य का संगम युग।

  दर्शन, काव्य, नाट्य, चिकित्सा और ज्योतिष में देशभाषा-देववाणी संस्कृत का विकास।

सन् 58 ई० में :

सन् 60 ई० में :

- रोमन सम्राट नीरो अपनी प्रेमिका पोपेअ से विवाह करता, जो यहूदियों के प्रति नेकी करती थी।

सन् 62 ई० में :

- चीन के सम्राट मिंग-ती ने भारत के बौद्ध श्रमणों के पास दूतमंडल भेजा।

सन् 63 ई० में :

सन् 64 ई० में :

- रोम में अग्निकाण्ड (जिसे सम्राट नीरो ने सुलगाया ?) के कारण मसीहियों पर आरोप और घोर अत्याचार; रोमन इतिहासकार तासितुस ने भी इसकी पुष्टि की।

लगभग 65 ई० में :

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

• यरूशलेम के भाई-बहिनों के मध्य पौलुस का स्वागत; लेकिन मंदिर में उपद्रव के कारण उनकी गिरफ्तारी।	प्रे 21:18—36
• भीड़ के सामने, फिर महापुरोहित हनन्याह के सामने पौलुस अपने पक्ष का समर्थन करते।	प्रे 21:37-23:11
• षड्‌यंत्र टालने के लिए पौलुस को कैसरिया बन्दरगाह पहुंचाया गया : राज्यपाल फेलिक्स के सम्मुख अभियोग।	प्रे 23:12-24:26
• क्या कैसरिया में दो वर्ष के कारावास के समय पौलुस ने फिलेमोन के नाम पत्र व अन्य "कारावास के पत्र" लिखे?	फिलेमोन पत्र
• नये राज्यपाल फेस्तुस के समक्ष पौलुस रोमन नागरिक होने के नाते कैसर से अपील करते।	प्रे 24:27-25:12
• राजा अग्रिप्पा-द्वितीय (जो अपनी बहिन बेरनीके के साथ आया था) के सामने पौलुस का भाषण।	प्रे 25:13—26:32
• बंदी के रूप में **रोम की यात्रा :** माल्टा द्वीप पर जलयान डूबा, सांप ने काटा, फिर भी प्रेरित पौलुस की सुरक्षा।	प्रे 27:1-28:15
• पौलुस दो वर्ष तक पहरे में रखे जाते; यहूदियों से वार्तालाप करते और साहसपूर्वक प्रचार करते।	प्रे 28:16-31
• पौलुस कुलुस्से तथा लौदीकिया नगरों के विश्वासी भाई-बहिनों के नाम उच्च शैली का पत्र लिखते।	कुल० पत्र
उसी शैली में इफिसुस नगर की कलीसिया के नाम पत्र, जो शायद बाद में संपादित हुआ।	इफ० पत्र
• उसी वर्ष यरूशलेम में येशु के भाई याकूब पर पत्थरवाह किया गया। याकूब की व्यावहारिक शिक्षा उसके पत्र में ही मिलती है।	याकूब का पत्र
• क्या पौलुस रिहा कर दिया गया और क्या वह स्पेन तक गये, यहाँ तक कि क्रेत द्वीप और इफसुस को भी?	तीत 1:5; 1 तिम 1:3
• रोम में प्रेरित पतरस की, और संभवतः पौलुस की भी शहादत। अत्याचार में धैर्य और भ्रातृप्रेम के लिए पतरस के अन्तिम परामर्श उसके प्रथम पत्र में मिलते।	1 पत० पत्र
• संभवतः रोम में लिखित और पतरस से प्रभावित **मारकुस के अनुसार शुभ-समाचार।**	मक० शुभसमाचार

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सन् 66 ई० में : • रोम के विरुद्ध "प्रथम यहूदी विप्लव" आरम्भ ("दूसरा यहूदी विप्लव" सन् 132 ई० में आरम्भ होगा)।

सन् 68 ई० में : • गल्बा स्वयं को रोमन सम्राट घोषित करता; नीरो की आत्महत्या। फिर दो परस्पर-विरोधी सम्राट उठे : ओथो तथा वितेलियुस।

69–79 ई० में : • अन्ततः स्वयं वेस्पसियानुस ने षष्ठम सम्राट बनकर दस वर्ष तक शासन किया। उसका पुत्र तीतुस यरूशलेम की घेराबंदी करने के लिए भेजा गया।

29 अगस्त 70 ई० में :

सन् 73 ई० में :

लगभग 75 ई० में :

79–81 ई० में : • सप्तम रोमन सम्राट तीतुस का शासनकाल।

81–96 ई० में : • अष्टम रोमन सम्राट दोमिस्यानुस का शासनकाल : मसीहियों पर घोर अत्याचार (दे० प्रक 17:11)।

लगभग 85 ई० में :

सन् 90 ई० में :

• पश्चिमोत्तर भारत में कुषाण-वंशी राजा कनिष्क; गांधार की मूर्तिकला। चतुर्थ बौद्ध संगीति; महायान का आरम्भ।

लगभग 95 ई० में :

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

● रोमन सेनापति वेस्पसियानुस गलील को भेजा गया, जिसने यहूदी इतिहासकार योसेफुस को बंदी बनाया।	
● संभवतः यरूशलेम की घेराबंदी के पहले यहूदी मसीहियों के लिए ''इब्रानियों के नाम पत्र'' की रचना।	इब्रा० पत्र
कुमरान मठ के विनाश के पूर्व एस्सेनी पंथियों ने अपने बहुमूल्य हस्तलेखों को गुफाओं में छिपाया (जो केवल सन् 1947 में उपलब्ध हो सके)।	
● यरूशलेम का पतन; मंदिर का विनाश। (दूसरे विप्लव के अन्त में, सन् 135 ई० में, सब यहूदियों को बहिष्कृत किया जाएगा और यरूशलेम का नाम बदलकर ''ईलिया कपितोलीना'' रखा जाएगा।)	
● मस्सादा किले में अन्तिम यहूदी विद्रोहियों द्वारा सामूहिक आत्महत्या।	
● संभवतः सीरिया में लिखित, गुरु-वचनों के संकलन तथा मारकुस पर आधारित **मत्ती के अनुसार शुभ-समाचार**।	मत० शुभसमाचार
● संभवतः यूनान देश में, पूर्व-रचनाओं के आधार पर, **लूकस के अनुसार शुभ-समाचार** तथा ''प्रेरितों के कार्य''।	लू 1:1-4; लू० शुभसमाचार; प्रेरितों के कार्य
● यबने की सभा में यहूदी शास्त्री बाइबिल की इब्रानी प्रामाणिक ग्रंथ-सूची पर प्रायः सहमत। परन्तु यहूदियों का बृहद् यूनानी बाइबिल-अनुवाद मसीहियों में प्रचलित रहा (जिसमें अतिरिक्त ग्रंथ मिलते)।	
● संभवतः इफिसुस नगर में योहन के शिष्यों द्वारा **योहन के अनुसार शुभ-समाचार** सम्पादित तथा उसी शिष्य-मण्डली में ज्ञानवादी सिद्धसाधकों के विरुद्ध वास्तविक प्रेम के संबंध में तीन पत्र।	यो० शुभसमाचार; 1-2-3 यो० पत्र

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

96–98 ई० में : ● नवम रोमन सम्राट नेरवा का शासनकाल। रोम से ''कुरिंथियों के नाम संत क्लेमेंस का पत्र''।

98–117 ई० में : ● दशम रोमन सम्राट त्रयानुस का शासनकाल। दीक्षार्थियों के लिए ''दिदखे'' (प्रेरितों की शिक्षा) ग्रंथ।

लगभग 100 ई० में :

दूसरी सदी के आरम्भ में :

सन् 110 ई० में : ● रोम में अंताकिया के धर्माध्यक्ष इग्नासियुस शहीद।

117–138 ई० में : ● रोमन सम्राट हद्रियानुस का शासनकाल : मेसोपोतामिया तक राज्य-विस्तार।

सन् 130 ई० में:

सन् 132 ई० में :

सन् 135 ई० में :

● न्यायपूर्ण, शान्तिपूर्ण विश्वकुटुम्ब की स्थापना हेतु मानव-इतिहास की यात्रा जारी ...

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

- पतमुस द्वीप पर किसी वृद्ध दर्शी के सांत्वना-वचन : ''योहन का प्रकाशन-ग्रंथ''। — प्रक० ग्रंथ
- पौलुस से प्रेरणा लेते हुए उनके सहयोगियों तिमोथी तथा तीतुस के नाम ''पास्तरीय पत्र''। — 1-2 तिम०; तीत० पत्र
- ''नया विधान'' की अन्तिम रचनाएँ : ''यहूदा का पत्र'' और ''पतरस का द्वितीय पत्र''। — यहू०; 2 पत० पत्र

- हियेरापुलिस के धर्माध्यक्ष पपियस द्वारा शुभसमाचार-लेखकों के संबंध में साक्षी। इस समय का हस्तलिखित पटेरपत्र नं० 52 नया-विधान की एक प्राचीनतम प्रतिलिपि है।
- शिमोन बर-कोखबा अपने को मसीह घोषित कर द्वितीय यहूदी विप्लव का नेतृत्व करता है।
- यरूशलेम पर रोम का पुनः अधिकार।
- मिस्र देश में नाग-हम्मादी का ज्ञानवादी लेखागारः यहीं से नया-विधान के आरम्भिक अप्रामाणिक ग्रंथ प्राप्त हुए।
- ईश्वरीय प्रेमविधान के पूर्ण कार्यान्वयन हेतु ''युगान्त'' के रहस्य पर आशा-भरी दृष्टि ...

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

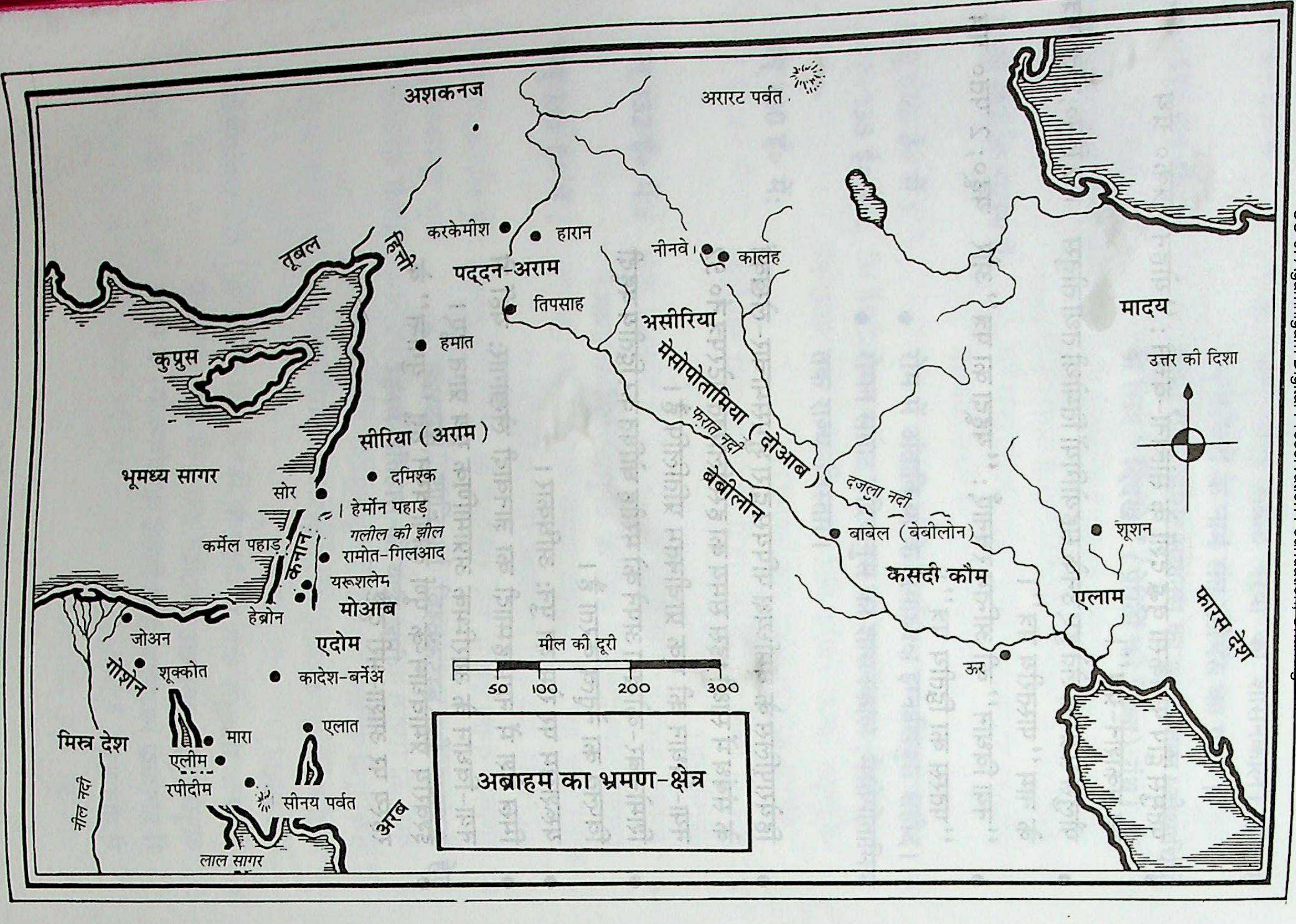

अब्राहम का भ्रमण-क्षेत्र

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

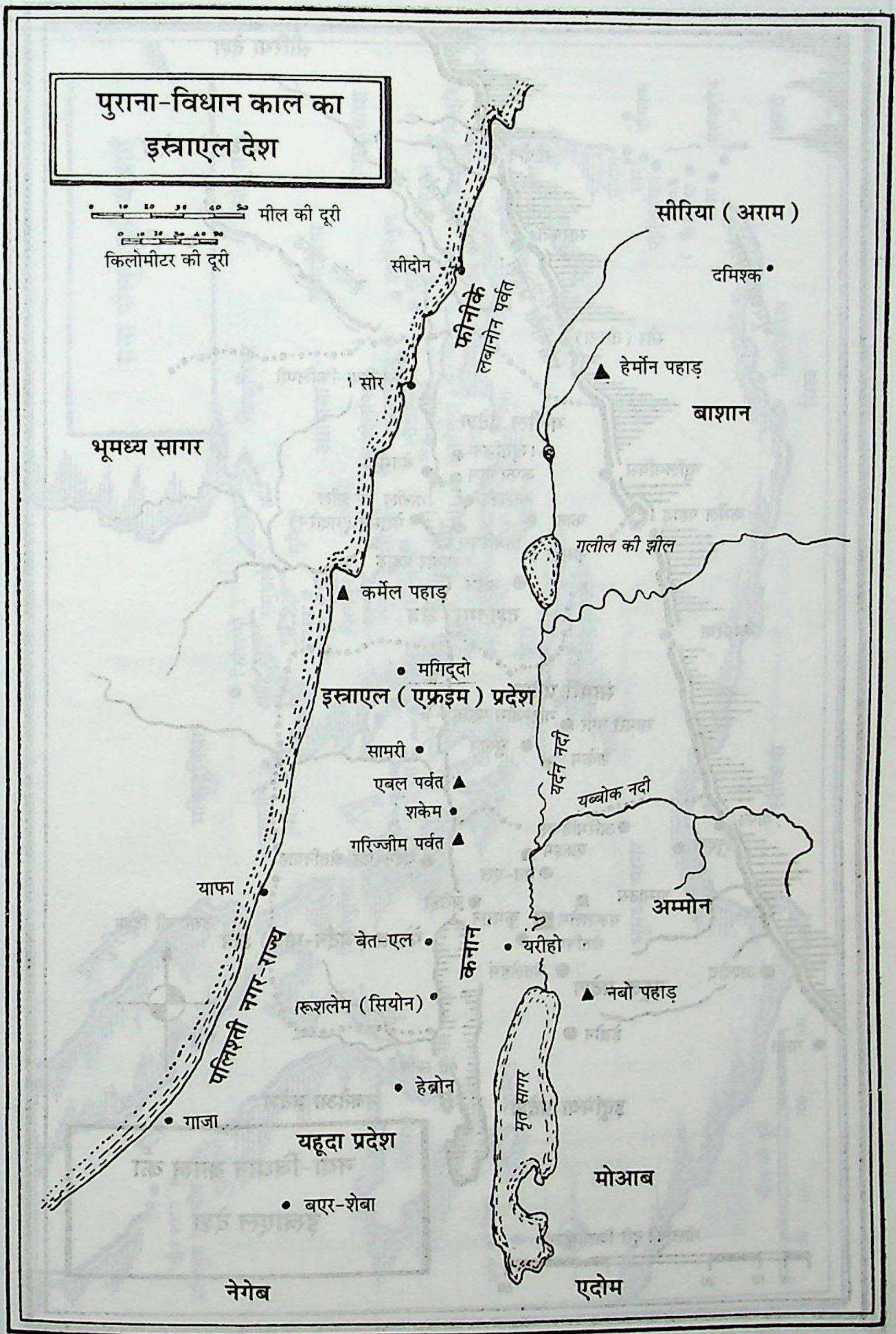

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

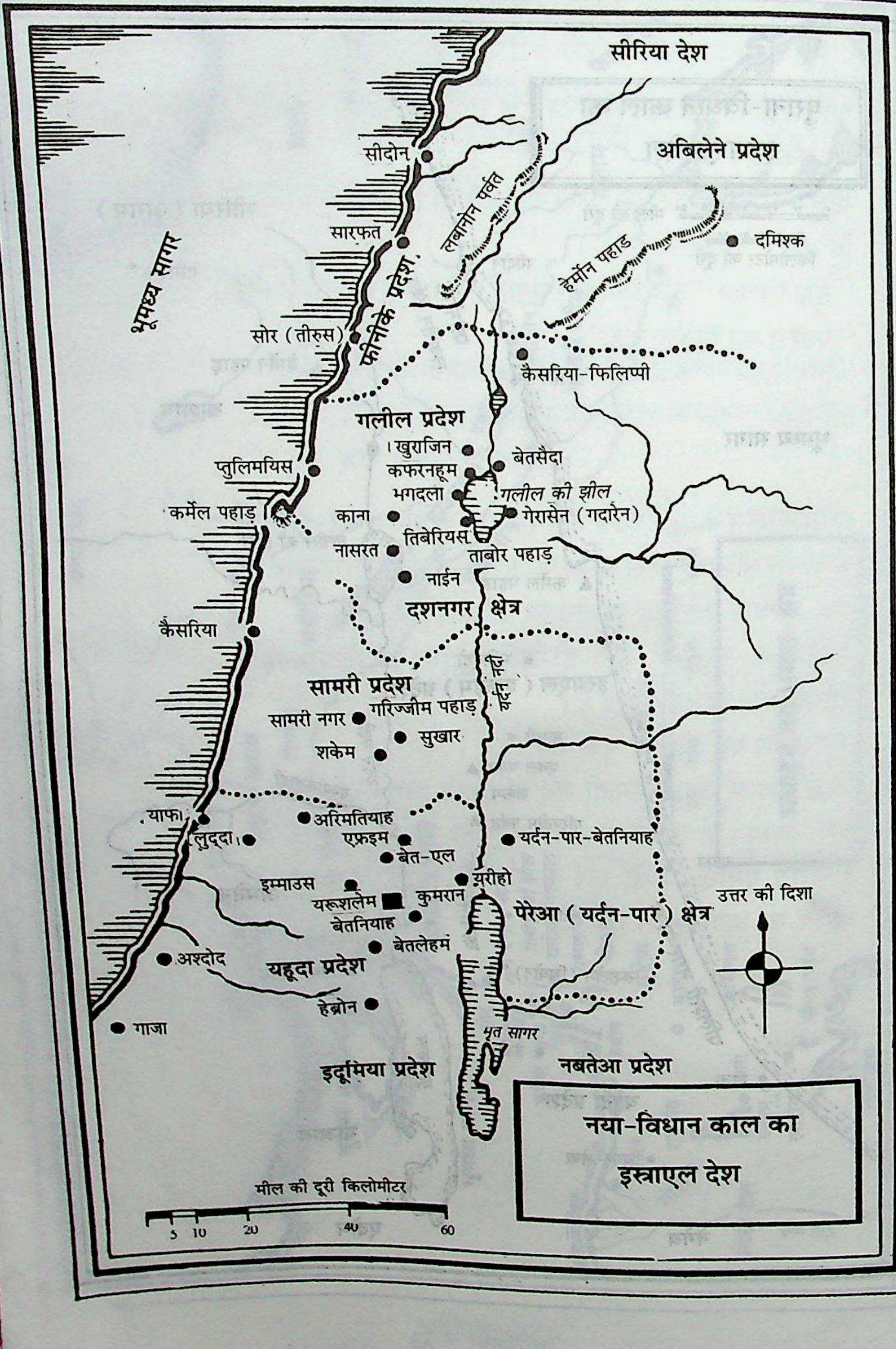

नया-विधान काल का

इस्राएल देश

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

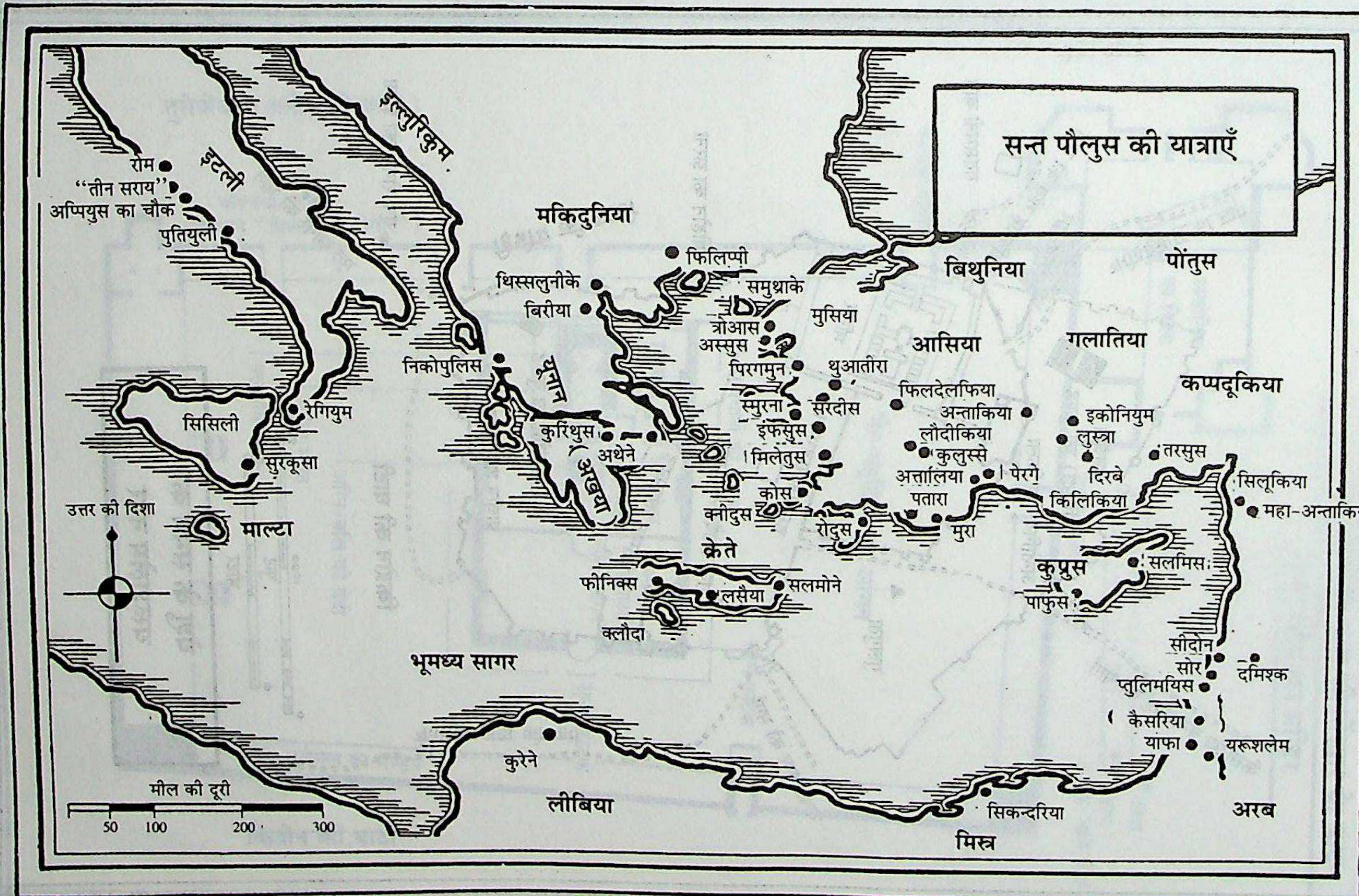

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

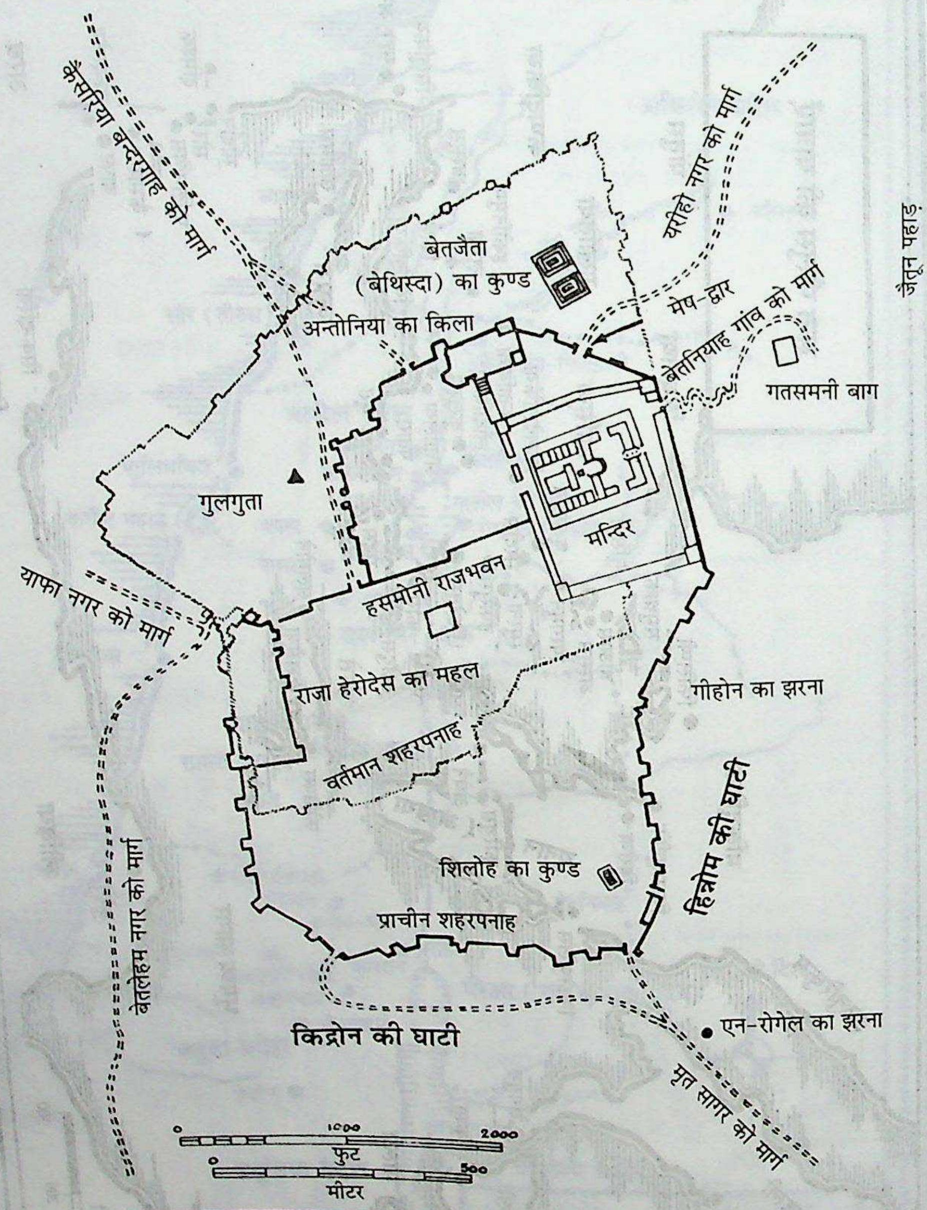

येशु के समय का यरूशलेम नगर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

राजा हेरोदेस द्वारा जीर्णोद्धार के बाद

यरूशलेम का मन्दिर

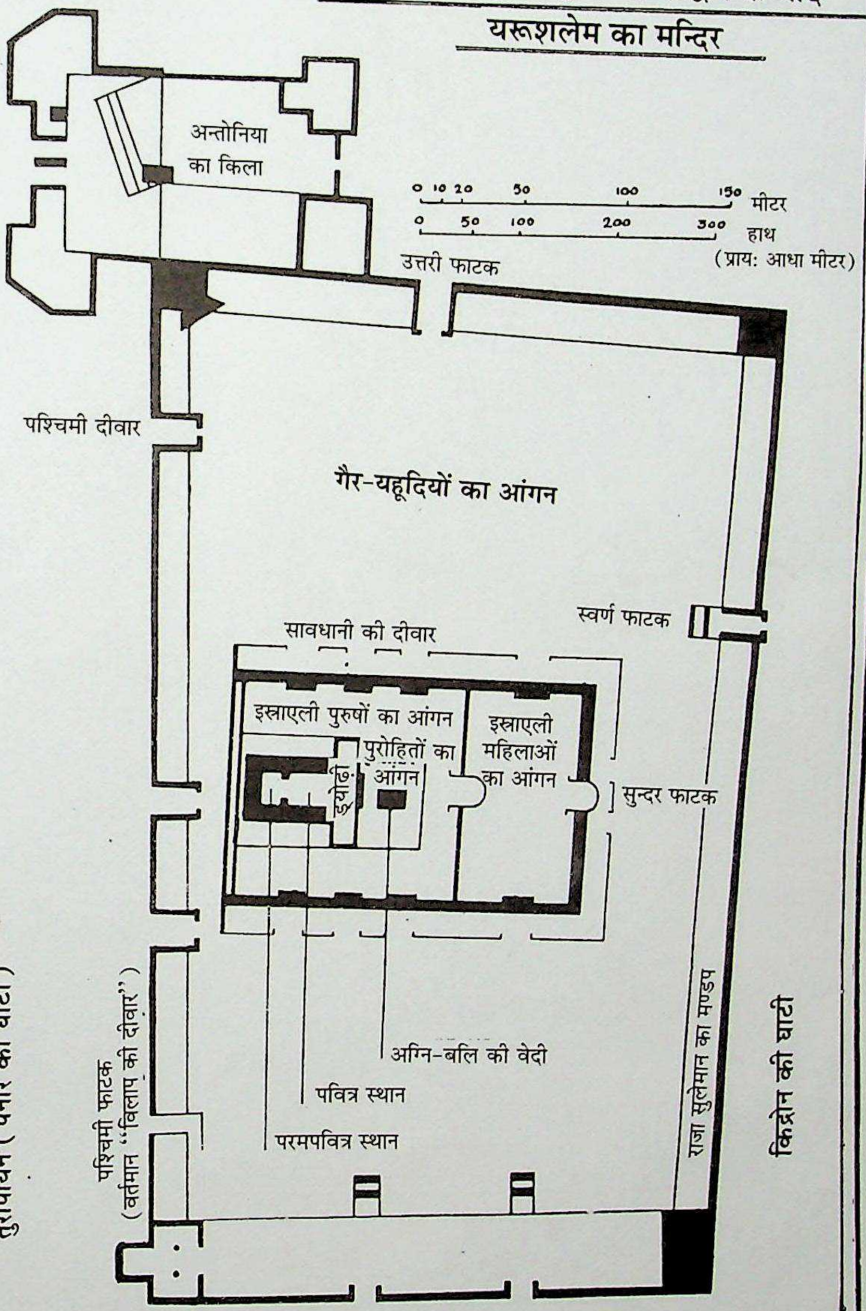

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ISBN 81-221-1843-7